पाइअ-सद्द-महण्णवो

(प्राकृत-शब्द-महार्णवः)

PĀIA-SADDA-MAHAṆṆAVO

(A COMPREHENSIVE PRAKRIT-HINDI DICTIONARY)

PĀIA-SADDA-MAHAṆṆAVO

A COMPREHENSIVE PRAKRIT-HINDI DICTIONARY
with Sanskrit equivalents, quotations
AND
complete references

BY
PANDIT HARGOVIND DAS T. SHETH

MOTILAL BANARSIDASS
Delhi Varanasi Patna Madras

पाइअ-सद्द-महण्णवो

(प्राकृत-शब्द-महार्णवः)

अर्थात्

विविध प्राकृत भाषाओं के शब्दों का संस्कृत प्रतिशब्दों से युक्त, हिन्दी अर्थों से अलंकृत, प्राचीन ग्रन्थों के अनल्प अवतरणों और परिपूर्ण प्रमाणों से विभूषित बृहत्कोश

कर्ता

पंडित हरगोविन्ददास त्रिकमचंद सेठ

मोतीलाल बनारसीदास

दिल्ली वाराणसी पटना मद्रास

© मोतीलाल बनारसीदास
मुख्य कार्यालय : बंगलो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली ११० ००७
शाखाएँ : चौक, वाराणसी २२१ ००१
अशोक राजपथ, पटना ८०० ००४
१२० रायपेट्टा हाई रोड, मैलापुर, मद्रास ६०० ००४

प्राकृत ग्रन्थ परिषद् ग्रन्थाङ्क ७
द्वितीय संस्करण : वाराणसी, १९६३
पुनर्मुद्रण : दिल्ली, १९८६

ISBN: 81-208-0239-x

नरेन्द्रप्रकाश जैन, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली ७
द्वारा प्रकाशित तथा जैनेन्द्रप्रकाश जैन, श्री जैनेन्द्र प्रेस, ए-४५,
फेज-१, नारायणा, नई दिल्ली २८ द्वारा मुद्रित।

PUBLISHER'S NOTE

The present *Pāia-sadd-mahaṇṇavo* or 'The Great Ocean of Prākrit Words' is a comprehensive Prākrit-Hindī Dictionary compiled by Pt. Hargovind Das Trikam Chand Sheth and was first published slightly less than six decades ago in 1928. It is a pioneer work, being the result of several years' single-minded devotion and indefatigable labour on the part of the compiler, to whom the students and scholars of the Prākrit language will ever remain grateful.

The work is of immense value since in addition to serving the needs of the students of Prākrit it has also proved very much helpful to researchers in understanding Old-Hindi words of obscure origin as well as all the other languages of the Middle Indo-Aryan group including Old-Rajasthani, Old-Gujarati, Old Marathi, Old-Bengali, Old-Maithili etc.

After its first appearance in 1928 the work remained out of print for a number of years when its rare copies were sold at fabulous prices–a fact further attesting to its importance, utility and popularity. To fulfil a pressing need a long awaited second edition was brought out by the Prākrit Text Society in 1963 and in view of a persistent demand this reprint is being issued after a long gap for the benefit of the interested scholars.

The Publishers hope that the work will inspire talented scholars for further intensive research in the field culminating, so we wish, in a more comprehensive dictionary of the language including also the cognate Apabhraṁśa language and literature.

संकेत—सूची

अ	=	अव्यय।
अक	=	अकर्मक धातु।
(अप)	=	अपभ्रंश भाषा।
(अशो)	=	अशोक शिलालेख।
उभ	=	सकर्मक तथा अकर्मक धातु।
कर्म	=	कर्मणि-वाच्य।
कवकृ	=	कर्मणि-वर्तमान-कृदन्त।
कृ	=	कृत्य-प्रत्ययान्त।
क्रि	=	क्रियापद।
क्रिवि	=	क्रिया-विशेषण।
गु०	=	गुजराती।
(चूपै)	=	चूलिकापैशाची भाषा।
त्रि	=	त्रिलिङ्ग।
[दे]	=	देश्य-शब्द।
न	=	नपुंसकलिङ्ग।
पुं	=	पुंलिङ्ग।
पुंन	=	पुंलिङ्ग तथा नपुंसकलिङ्ग।
पुंस्त्री	=	पुंलिङ्ग तथा स्त्रीलिङ्ग।
(पै)	=	पैशाची भाषा।
प्रयो	=	प्रेरणार्थक णिजन्त।
ब	=	बहुवचन।
भकृ	=	भविष्यत्कृदन्त।
भवि	=	भविष्यत्काल।
भूका	=	भूतकाल।
भूकृ	=	भूत-कृदन्त।
(मा)	=	मागधी भाषा।
वकृ	=	वर्तमान कृदन्त।
वि	=	विशेषण।
(शौ)	=	शौरसेनी भाषा।
स	=	सर्वनाम।
संकृ	=	संबन्धक कृदन्त।
सक	=	सकर्मक धातु।
स्त्री	=	स्त्रीलिङ्ग।
स्त्रीन	=	स्त्रीलिंग तथा नपुंसकलिङ्ग।
हेकृ	=	हेत्वर्थ कृदन्त।

———

प्रमाण-ग्रन्थों [रेफ़रेन्सेज़] के संकेतों का विवरण

संकेत		ग्रन्थ का नाम	संस्करण आदि		जिसके अंक दिए गए हैं वह
अंग	=	अंगविज्जा	प्राकृत ग्रन्थ परिषद्, वाराणसी—५, १९५७		
अंग	=	अंगचूलिआ	हस्तलिखित।		
अंत	=	अंतगडदसाओ	❀ १ रॉयल एसियाटिक सोसाइटी, लंडन, १९०७	...	
			२ आगमोदय-समिति, बंबई, १९२०	...	पत्र
अच्चु	=	अच्चुअसअअं	वाणीविलास प्रेस, मद्रास, १८७२	...	गाथा
अजि	=	अजिअसंतिथव	स्व-संपादित, कलकत्ता, संवत् १९७८	...	,,
अज्झ	=	अध्यात्ममतपरीक्षा	१ भीमसिंह माणक, संवत् १९३३	...	,,
			२ जैन आत्मानन्द सभा, भावनगर	...	,,
अणु	=	अणुओगदारसुत्त	१ राय धनपतिसिंहजी बहादुर, कलकत्ता, संवत् १९३६	...	
			२ आगमोदय समिति, १९२४ बम्बई,	...	पत्र
अनु	=	अणुत्तरोववाइअदसा	❀ १ रॉयल एसियाटिक सोसाइटी, लंडन, १९०७	...	
			२ आगमोदय-समिति, बम्बई, १९२०	...	पत्र
अभि	=	अभिज्ञानशाकुन्तल	निर्णयसागर प्रेस, बम्बई, १९१६	...	पृष्ठ
अवि	=	अविमारक	त्रिवेन्द्र संस्कृत सिरोज़ ...	...	,,
आउ	=	आउरपच्चक्खाणपयन्नो	१ जैन-धर्म-प्रसारक सभा, भावनगर, संवत् १९६६	...	गाथा
			२ शा. बालाभाई ककलभाई, अहमदाबाद, संवत् १९६२	...	,,
आक	=	१ आवश्यककथा	हस्तलिखित ...	...	
		२ आवश्यक-एर्ज्यालुंगन्	डॉ. इ. ल्युमेन्-संपादित, लाइपजिग, १८९७	...	पृष्ठ
आख्या	=	आख्यानकमणिकोश	प्राकृत ग्रन्थ परिषद्, वाराणसी—५		
आचा	=	आचारांगसूत्र	❀ १ डॉ. डबल्यु. शुब्रिंग् संपादित, लाइपजिग, १९१०	...	
			+ २ आगमोदय-समिति, बम्बई, १९१६		श्रुतस्कन्ध, अध्य०
			३ प्रो. रवजीभाई देवराज-संपादित, राजकोट, १९०६		,,
आचानि	=	आचारांग-निर्युक्ति	आगमोदय-समिति, बम्बई, १९१६	...	गाथा
आचू	=	आवश्यकचूर्णि	हस्तलिखित ...	...	अध्ययन
आत्म	=	आत्मसंबोधकुलक	† हस्तलिखित ...	...	गाथा
आत्महि	=	आत्महितोपदेश-कुलक	,, ...	...	,,
आत्मानु	=	आत्मानुशास्ति-कुलक	,, ...	...	,,
आनि	=	आवश्यकनिर्युक्ति	१ यशोविजय-जैन-ग्रंथमाला, बनारस। २ हस्तलिखित।		

❀ ऐसी निशानी वाले संस्करणों में अकारादि क्रम से शब्द-सूची छपी हुई है, इससे ऐसे संस्करणों के पृष्ठ आदि के अंकों का उल्लेख प्रस्तुत कोश में बहुधा नहीं किया गया है, क्योंकि पाठक उस शब्द-सूची से ही अभिलषित शब्द के स्थल को तुरन्त पा सकते हैं। जहाँ किसी विशेष प्रयोजन से अंक देने की आवश्यकता प्रतीत भी हुई है, वहाँ पर उसी ग्रन्थ की पद्धति के अनुसार अंक दिए गए हैं, जिससे जिज्ञासु को अभीष्ट स्थल पाने में विशेष सुविधा हो।

+ इन संस्करणों में श्रुतस्कन्ध, अध्ययन और उद्देश के अङ्क समान होने पर भी सूत्रों के अङ्क भिन्न-भिन्न हैं। इससे इस कोष में जिस संस्करण से जो शब्द लिया गया है उसी का सूत्राङ्क वहाँ पर दिया गया है। अंक की गिनती उसी उद्देश्य या अध्ययन के प्रथम सूत्र से आरम्भ की गई है।

† श्रद्धेय श्रीयुत केशवलालभाई प्रेमचन्द मोदी, बी. ए., एल् एल्., बी. से प्राप्त।

संकेत		ग्रंन्थ का नाम	संस्करण आदि		जिसके अंक दिए गए हैं वह
आप	=	आराधनाप्रकरण	शा. बालाभाई ककलभाई, अहमदाबाद, संवत् १९६२		गाथा
आरा	=	आराधनासार	मानिकचंद-दिगंबर-जैन-ग्रंथमाला, संवत् १९७३		,,
आव	=	आवश्यकसूत्र	हस्तलिखित ...	...	
आवटि	=	आवश्यक टिप्पण	देवचन्द लालभाई		
आवदी	=	आवश्यक दीपिका	विजयदानसूरि ग्रंथमाला		
आवपगा	=	आवश्यकसूत्रे पत्रे गाथा	(हरिभद्र टीका)		
आवम	=	आवश्यकसूत्र मलयगिरि टीका	हस्तलिखित ...	...	
इंदि	=	इन्द्रियपराजयशतक	भीमसिंह माणेक, बंबई, संवत् १९६८	...	गाथा
इक	=	दि कोस्मोग्राफी देर् इंदेर्	* डॉ. डबल्यु. किर्फेल-कृत, लाइपजिग, १९२०		
उत्त	=	उत्तराध्ययनसूत्र	१ राय धनपतिसिंह बहादुर, कलकत्ता, संवत् १९३६		अध्ययन, गाथा
			२ स्व-संपादित, कलकत्ता, १९२३	...	,,
			+ ३ हस्तलिखित ...	....	,,
उत्त	=	उत्तराध्ययन सूत्र	देवचन्द लालभाई		
उत्त का	=	,,	डॉ. जे. कारपेंटिअर-संपादित, १९२१	...	,,
उत्तनि	=	उत्तराध्ययननिर्युक्ति	हस्तलिखित ...	...	,,
उत्तर	=	उत्तररामचरित	निर्णयसागर प्रेस, बम्बई, १९१५	...	पृष्ठ
उप	=	उपदेशपद	हस्तलिखित ...	...	गाथा
उप टी	=	उपदेशपद-टीका	हस्तलिखित ...	...	मूल-गाथा
उपपं	=	उपदेशपंचाशिका	† ,, ...	...	गाथा
उप पृ	=	उपदेशपद	जैन विद्या-प्रचारक वर्ग, पालीताणा	...	पृष्ठ
उर	=	उपदेशरत्नाकर	देवचन्द लालभाई पुस्तकोद्धार फंड, बम्बई, १९१४	...	अंश, तरंग
उव	=	उवएसमाला	* डॉ. एल्. पी. टेसिटोरि-संपादित, १९१३	...	
उवकु	=	उवदेशकुलक	† हस्तलिखित	...	गाथा
उवर	=	उपदेशरहस्य	मनसुखभाई भगुभाई, अहमदाबाद, संवत् १९६७	...	,,
उवा	=	उवासगदसाओ	* एसियाटिक सोसाइटी, बंगाल, कलकत्ता, १८९०	...	
ऊरु	—	ऊरुभंग	त्रिवेन्द्र संस्कृत-सिरीज ...	...	पृष्ठ
ओघ	=	ओघनिर्युक्ति	आगमोदय समिति, बम्बई, १९१९	...	गाथा
ओघ भा	=	ओघनिर्युक्ति-भाष्य	,, ...	...	,,
औप	=	औपपातिकसूत्र	* डॉ. इ. ल्युमेन्-संपादित, लाइपजिग, १८८३	...	
कप्प	=	कल्पसूत्र	* डॉ. एच्. जेकोबी-संपादित, लाइपजिग, १८७९	...	
कप्पू	=	कर्पूरमञ्जरी	* हार्वर्ड् ओरिएन्टल् सिरीज, १९०१	...	
कम्म १	=	कर्मग्रंथ पहला	* आत्मानन्द-जैन-पुस्तक-प्रचारक मण्डल, आगरा,	१९१८	गाथा
कम्म २	=	,, दूसरा	* ,, ,,	,,	,,
कम्म ३	=	,, तीसरा	* ,, ,,	१९१९	,,
कम्म ४	=	,, चौथा	* ,, ,,	१९२३	,,

+ सुखबोधा नामक प्राकृत-बहुल टीका से विभूषित यह उत्तराध्ययन सूत्र की हस्त-लिखित प्रति आचार्य श्रीविजय-मेघसूरिजी के भंडार से श्रद्धेय श्रीयुत् के. प्रे. मोदी द्वारा प्राप्त हुई थी, इस प्रति के पत्र १८६ हैं।

† श्रद्धेय श्रीयुत् के. प्रे. मोदी द्वारा प्राप्त।

संकेत।		ग्रन्थ का नाम	संस्करण आदि		जिसके अंक दिए गए हैं वह
कम्म ५	=	कर्मग्रन्थ पाँचवाँ	१ भीमसिंह माणेक, बम्बई, संवत् १९६८	...	गाथा
			२ जैन-धर्म-प्रसारक सभा, भावनगर, संवत् १९६८		,,
कम्म ६	=	,, छठवाँ	,, ...	...	,,
कम्मप	=	कर्मप्रकृति	जैन-धर्म-प्रसारक-सभा, भावनगर, १९१७	...	पत्र
करु	=	करुणावज्रायुधम्	आत्मानन्द-जैन-सभा, भावनगर, १९१६	...	पृष्ठ
कर्ण	=	कर्णभार	त्रिवेन्द्र-संस्कृत-सिरीज ...	...	,,
कर्पूर	=	कर्पूरचरित (भाण)	गायकवाड ओरिएन्टल् सिरीज, नं. ८, १९१८		,,
कर्म	=	कर्मकुलक	† हस्त-लिखित		गाथा
कल्पभाष्य	=	बृहत्कल्प-भाष्य	आत्मानन्द सभा		
,, गा०	=	,, गाथा	,,		
कस	=	(बृहत्) कल्पसूत्र	* डॉ. डबल्यु. शुब्रिं-संपादित, लाइपजिग, १९०५	...	
कहा	=	कहावली	अमुद्रित		
काप्र	=	काव्यप्रकाश	वामनाचार्यकृत टीका-युक्त, निर्णयसागर प्रेस, बम्बई	...	पृष्ठ
काल	=	कालकाचार्यकथानक	* डॉ. एच्. जेकोबी-संपादित, जेड्-डी-एम्-जी, खंड ३४, १८८०		
किरात	=	किरातार्जुनीय (व्यायोग)	गायकवाड ओरिएन्टल् सिरीज, नं ८, १९१८		पृष्ठ
कुप्र	=	कुमारपालप्रतिबोध	गायकवाड ओरिएण्टल् सिरीज, १९२०	...	,,
कुमा	=	कुमारपालचरित	* बंबई-संस्कृत-सिरीज, १९००	...	,,
कुम्मा	=	कुम्मापुत्तचरिअ	स्व-संपादित, कलकत्ता, १९१९ ...	...	पृष्ठ
कुलक	=	कुलकसंग्रह	जैन श्रेयस्कर मंडल, म्हेसाणा, १९१४		,,
खा	=	खामणाकुलक	† हस्तलिखित		गाथा
खेत्त	=	लघुक्षेत्रसमास	भीमसिंह माणेक, बंबई, संवत् १९६८	...	,,
गउड	=	गउडवहो	* बंबई-संस्कृत-सिरीज, १८८७ ...	...	
गच्छ	=	गच्छाचारपयन्नो	१ हस्तलिखित ...	...	अधिकार, गाथा
			२ चंदुलाल मोहोलाला कोठारी, अहमदाबाद, संवत् १०८०		,,
			३ सेठ जमनाभाई भगूभाई, अहमदाबाद, १९२४		,,
गण	=	गणधरस्मरण	स्व-संपादित, कलकत्ता, संवत् १९७८	...	गाथा
गणि	=	गणिविज्जापयन्नी	राय धनपतिसिंह बहादुर, कलकत्ता, १८४२	...	,,
गा	=	गाथासप्तशती	+ १ डॉ. ए. वेबर्-संपादित, लाइपजिग, १८८१	...	,,
			२ निर्णयसागर प्रेस, बम्बई, १९११	...	,,
गु	=	गुरुपारतन्त्र्य-स्मरण	स्व-संपादित, कलकत्ता, संवत् १९७८	...	गाथा
गुण	=	गुणानुरागकुलक	अंबालाल गोवर्धनदास, बम्बई, १९१३	...	,,
गुभा	=	गुरुवन्दनभाष्य	भीमसिंह माणेक, बम्बई संवत् १९६२	...	गाथा

† श्रद्धेय के. प्रे. मोदी द्वारा प्राप्त।

+ लाइपजिगवाले संस्करण का नाम "सप्तशतक डेस हाल" है और बम्बईवाले का "गाथासप्तशती"। ग्रन्थ एक ही है, परन्तु बम्बईवाले संस्करण में सात शतकों के विभाग में करीब ७०० गाथाएँ छपी हैं और लाइपजिगवाले में सीधे नंबर से ठीक १०००। एक से ७०० तक की गाथाएँ दोनों संस्करणों में एक-सी हैं, परन्तु गाथाओं के क्रम में कहीं कहीं दो चार नंबरों का आगा-पीछा है। ७०० के बाद का और ७०० के भीतर भी जहाँ गाथांक के अनन्तर 'अ' दिया है वह नंबर केवल लाइपजिग के ही संस्करण का है।

संकेत		ग्रंथ का नाम	संस्करण आदि		जिसके अंक दिए गए हैं वह
गुरु	=	गुरुप्रदक्षिणाकुलक	अंबालाल गोवर्धनदास, बम्बई, १६६३	...	गाथा
गोय	=	गौतमकुलक	भीमसिंह माणेक, बम्बई, संवत् १६६५	...	,,
चउ	=	चउसरणपयन्नो	१ जैन-धर्म-प्रसारक-सभा, भावनगर, संवत् १६६६	...	,,
			२ शा. बालाभाई ककलभाई, अहमदाबाद, संवत् १६६२	...	,,
चउ	=	चउपन्नमहापुरिसचरियं	प्राकृत-ग्रंथ-परिषद्, वाराणसी—५, १६६१	...	,,
चंड	=	प्राकृतलक्षण	* एसियाटिक सोसासायटी, बंगाल, कलकत्ता, १८८०	...	
चंद	=	चंदपन्नत्ति	हस्तलिखित ...	...	पाहुड
चारु	=	चारुदत्त	त्रिवेन्द्र-संस्कृत-सिरीज	...	पृष्ठ
चेइय	=	चेइयवंदणमहाभास	जैन आत्मानन्द सभा, भावनगर, संवत् १६६२	...	गाथा
चैत्य	=	चैत्यवन्दन भाष्य	भीमसिंह माणेक, बम्बई, संवत् १६६२	...	,,
जं	=	जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति	१ देवचंद लालभाई पु० फंड, बम्बई, १६१०	....	वक्षस्कार
			२ हस्तलिखित	...	,,
जय	=	जयतिहुअण-स्तोत्र	जैन प्रभाकर प्रिंटिंग प्रेस, रतलाम, प्रथमावृत्ति	...	गाथा
जिन	=	जिनदत्ताख्यान	सिंघी जैन सिरीज		
जी	=	जीवविचार	आत्मानन्द-जैन-पुस्तक-प्रचारक-मंडल, आगरा, संवत् १६७८		,,
जीत	=	जीतकल्प	हस्तलिखित	...	
जीव	=	जीवाजीवाभिगमसूत्र	देवचंद लालभाई पुस्तकोद्धार फंड, बम्बई, १६१६	...	प्रतिपत्ति
जीवस	=	जीवसमासप्रकरण	† हस्तलिखित	...	गाथा
जीवा	=	जीवानुशासनकुलक	अंबालाल गोवर्धनदास, बम्बई, १६१३	...	,,
जो	=	ज्योतिष्करण्डक	हस्तलिखित	...	पाहुड
टि	=	+ टिप्पण (पाठान्तर)	... ...	...	
टी	=	‡ टीका	... ...	...	
ठा	=	ठाणंगसुत्त (स्थनांगसूत्र)	आगमोदय-समिति, बम्बई, १६१८—१६२०	...	ठाण०
णंदि	=	णंदिसूत्र	१ हस्तलिखित	...	
			२ आगमोदय समिति, बम्बई, १६२४	...	पत्र
णमि	=	णमिऊण-स्मरण	स्व-संपादित, कलकत्ता, संवत् १६७८	...	गाथा
णाया	=	णायाधम्मकहासुत्त	आगमोदय समिति, बम्बई, १६१६	...	श्रुतस्कन्ध, अध्य०
तंदु	=	तंदुलवेयालियपयन्नो	१ हस्तलिखित	...	
			२ दे० ला० पुस्तकोद्धार फंड, बम्बई, १६६२	...	पत्र
ति	=	तिजयपहुत्त	जैन-ज्ञान-प्रसारक-मंडल, बम्बई, १६११	...	गाथा
तित्थ	=	तित्थुग्गालियपयन्नो	हस्तलिखित ...	...	
ती	=	तीर्थंकल्प	हस्तलिखित	...	कल्प
त्रि	=	त्रिपुरदाह (डिम)	गायकवाड ओरिएण्टल् सिरीज, नं ८, १६१८	...	पृष्ठ

† श्रद्धेय श्रीयुत् के० प्रे० मोदी द्वारा प्राप्त।

+ पाठान्तर वाले संस्करणों के जो पाठान्तर हमें उपादेय मालूम पड़े हैं उन्हें भी इस कोष में स्थान दिया है और प्रमाण के पास 'टि' शब्द जोड़ दिया है जिससे उस शब्द को उसी स्थान के टिप्पन का समझना चाहिए।

‡ जहाँ पर प्रमाण में ग्रंथ-संकेत और स्थान-निर्देश के अनन्तर 'टी' शब्द लिखा है वहाँ उस ग्रंथ के उसी स्थान की टीका के प्राकृतांश से मतलब है।

संकेत		ग्रंथ का नाम	संस्करण आदि		जिसके अंक दिए गए हैं वह
दं	=	दंडकप्रकरण	१ जैन-ज्ञान-प्रसारक-मंडल, बम्बई, १६११	...	गाथा
			२ भीमसिंह माणेक, बम्बई, १६०८	...	,,
दंस	=	दर्शनशुद्धिप्रकरण	हस्तलिखित	...	तत्त्व
दशअगस्त्य दशवैचू	=	दशवैकालिक अगस्त्य सिंहचूर्णि	P. T. S. ...	...	
दस	=	दसवैकालिकसूत्र	१ भीमसिंह माणेक, बम्बई, १६००	...	अध्ययन०
			२ डॉ० जीवराज घेलाभाई, अहमदाबाद, १६१२	...	,,
दसचू	=	दशवैकालिकचूलिका	,, ,, ,,	...	चूलिका०
दसनि	=	दशवैकालिकनिर्युक्ति	१ भीमसिंह माणेक, बम्बई, १६००	...	अध्ययन, गाथा
			२ देवचन्द लालभाई		
दशवैवृद्ध	=	दशवैकालिक वृद्ध विवरण	मुद्रित चूर्णि, ऋषभदेव केसरीमल		
दसा	=	दशाश्रुतस्कन्ध	हस्तलिखित	...	,,
दीव	=	दीवसागरपन्नत्ति	,,	...	
दूत	=	दूतघटोत्कच	त्रिवेन्द्र-संस्कृत-सिरीज	....	पृष्ठ
दे	=	देशीनाममाला	बम्बई-संस्कृत-सिरीज, १८८०	...	वर्ग, गाथा
देव	=	देवेन्द्रस्तवप्रकीर्णक	हस्तलिखित	...	
देवदिन्न	=	देवदिन्न कथानक	,,		
देवेन्द्र	=	देवेन्द्रनरकेन्द्रप्रकरण	जैन आत्मानन्द सभा, भावनगर, १६२२	...	गाथा
द्र	=	द्रव्यसित्तरी	१ जैन-धर्म-प्रसारक-सभा, भावनगर, संवत् १६५८	...	,,
			२ शा० वेणीचंद सूरचंद, म्हेसाणा, १६०६	...	,,
द्रव्य	=	द्रव्यसंग्रह	जैन-ग्रंथ-रत्नाकर-कार्यालय, बंबई, १६०६	...	,,
धण	=	ऋषभपंचाशिका	काव्यमाला, सप्तम गुच्छक, बंबई, १८६०	...	,,
धम्म	=	धर्मरत्नप्रकरण सटीक	१ जैन-विद्या-प्रचारक वर्ग, पालीताणा, १६०५	...	मूल-गाथा
			२ हस्तलिखित	...	,,
धम्मि	=	धम्मिलहिंडी (वसुदेवहिंडी अन्तर्गत)	आत्मानन्द सभा	...	
धम्मो	=	धम्मोवएसकुलक	† हस्तलिखित	...	गाथा
धर्म	=	धर्मसंग्रह	जैन-विद्या-प्रचारक-वर्ग, पालीताणा, १६०५	...	अधिकार
धर्मर	=	धर्मरत्नलघुवृत्ति	आत्मानन्द सभा	....	
धर्मवि	=	धर्मविधिप्रकरण सटीक	जेसंगभाई छोटालाल सुतरीया, अहमदाबाद, १६२४	...	पत्र
धर्मसं	=	धर्मसंग्रहणी	दे० ला० पुस्तकोद्धार फंड, बंबई, १६१६–१८	...	गाथा
धर्मा	=	धर्माभ्युदय	जैन-आत्मानन्द-सभा, भावनगर, १६१८	...	पृष्ठ
धात्वा	=	प्राकृतधात्वादेश	एसियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल, १६२४	....	पृष्ठ
ध्व	=	ध्वन्यालोक	निर्णयसागर प्रेस, बंबई	...	,,
नंदीटिप्प	=	नन्दीटिप्पण	P. T. S.		
नलदवरास	=	नलदवदंतीरास (ऋषिवर्धन),	बेन्डर संपादित		

†श्रद्धेय श्रीयुत के० प्रे० मोदी द्वारा प्राप्त ।

संकेत		ग्रन्थ का नाम	संस्करण आदि		जिसके अंक दिए गए हैं वह
नव	=	नवतत्त्वप्रकरण	१ आत्मानन्द-जैन-सभा, भावनगर	...	गाथा
			२ आद्य-जैन-धर्म-प्रवर्तक-सभा, अहमदाबाद, १९०६	...	,,
नाट	=	‡ नाटकीयप्राकृतशब्दसूची			
निचू	=	निशीथचूर्णि	हस्तलिखित	...	उद्देश
निर	=	निरयावलीसूत्र	१ हस्तलिखित	...	वर्ग, अध्य०
			२ आगमोदय-समिति, बम्बई, १९२२	...	,,
निसा	=	निशाविरामकुलक	† हस्तलिखित	...	गाथा
निसी	=	निशीथसूत्र	हस्तलिखित	...	उद्देश
पउम	=	पउमचरिअ	जैन-धर्म-प्रसारक-सभा, भावनगर, प्रथमावृत्ति	...	पर्व, गाथा
पउम	=	पउमचरिय	प्राकृत-ग्रंथ-परिषद्, वाराणसी–५	...	,,
पंच	=	पंचसंग्रह	१ हस्तलिखित	....	द्वार, गाथा
			२ जैन आत्मानन्द सभा, भावनगर, १९१९	...	,,
पंचभा	=	पंचकल्पभाष्य	हस्तलिखित	...	
पंचव	=	पंचवस्तु	,, ...	...	द्वार
पंचा	=	पंचासकप्रकरण	जैन-धर्म-प्रसारक सभा, भावनगर, प्रथमावृत्ति	...	पंचासक
पंचू	=	पंचकल्पचूर्णि	हस्तलिखित ...	...	
पंनि	=	पंचनिर्ग्रन्थीप्रकरण	आत्मानन्द-जैन सभा, भावनगर, संवत् १९७४	...	गाथा
पंरा	=	पंचरात्र	त्रिवेन्द्र संस्कृत-सिरीज	...	पृष्ठ
पंसू	=	पंचसूत्र	हस्तलिखित ...	...	सूत्र

‡ सेंट्रल लाइब्रेरी, बड़ोदा में स्थित एक मुखपृष्ठ-हीन पुस्तक से गृहीत, जिसके पूर्व भाग में क्रमदीश्वर का प्राकृत व्याकरण और उत्तर भागमें 'प्राकृताभिधानम्' शीर्षक से कतिपय ग्रंथों से उद्धृत प्राकृत शब्दों की एक छोटी सी सूची छपी हुई है। इस सूची में उन ग्रंथों के जो संक्षिप्त नाम और पृष्ठाङ्क दिए गये हैं वे ही नाम तथा पृष्ठाङ्क ज्यों के त्यों प्रस्तुत कोष में भी यथास्थान 'नाट' के बाद रखे गये हैं। उक्त पुस्तक में उन ग्रंथों के संक्षिप्त नामों तथा संस्करणों का विवरण इस तरह है;—

मालती	for	मालतीमाधवम्	Calcutta Edition of 1830
चैत	,,	चैतन्यचन्द्रोदयम्	,, 1854
विक्र	,,	विक्रमोर्वशी	,, 1830
साहित्य	,,	साहित्यदर्पण	Edition of Asiatic Society
उत्तर	,,	उत्तररामचरित	Calcutta Edition of 1831
रत्ना	,,	रत्नावली	,, 1832
मृच्छ	,,	मृच्छकटिक	,, 1832
प्राप्र	,,	प्राकृतप्रकाश	Mr. Cowell's Edition of 1854
शकु	,,	शकुन्तला	Calcutta Edition of 1840
मालवि	,,	मालविकाग्निमित्र	Tulberg's Edition of 1850
वेणि	,,	वेणिसंहार	Muktaram's Edition of 1855
पाप्र	,,	संक्षिप्तसारस्य प्राकृताध्यायः	
महावी	,,	महावीरचरितम्	Trithen's Edition of 1848
पिंग	,,	पिंगलः	Ms.

† श्रद्धेय के. प्रे. मोदी द्वारा प्राप्त।

संकेत		ग्रन्थ का नाम	संस्करण आदि		जिसके अंक दिए गए हैं वह
पक्खि	=	पक्खिसूत्र	भीमसिंह माणेक, बम्बई, संवत् १९६२	...	
पच्च	=	महापच्चक्खाणपयन्नो	शा. बालाभाई ककलभाई, अहमदाबाद, संवत् १९६२		गाथा
पडि	=	पंचप्रतिक्रमणसूत्र	१ जैन-ज्ञान-प्रसारक-मंडल, बम्बई, १९११	...	
			२ आत्मानन्द-जैन-पुस्तक-प्रचारक-मंडल, आगरा, १९२१		
पएण	=	पएणवणासुत्त	राय धनपतिसिंह बहादुर, बनारस, संवत् १९४०	...	पद
पएह	=	प्रश्नव्याकरणसूत्र	आगमोदय-समिति, बम्बई, १९१९	...	श्रुतस्कन्ध, द्वार
पभा	=	पच्चक्खाणभाष्य	भीमसिंह माणेक, बम्बई, संवत् १९६२	...	गाथा
पव	=	प्रवचनसारोद्धार	१ ,, संवत् १९३४	...	+ द्वार
			२ दे० ला० पुस्तकोद्धार फंड, बम्बई, १९२२–२५		,,
पस	=	प्रज्ञापनोपाङ्ग-तृतीयपदसंग्रहणी	आत्मानन्द-जैन सभा, भावनगर, संवत् १९७४	...	गाथा
पाअ	=	पाइअलच्छीनाममाला	* बी. बी. एण्ड कंपनी, भावनगर, संवत् १९७३	...	
पार्श्व	=	पार्श्वपराक्रम	गायकवाड ओरिएण्टल सिरीज, नं. ४, १९१७		पृष्ठ
पि	=	ग्रामेटिक् देर् प्राकृत स्प्राखन्	डा. आर्. पिशेल् कृत, १९००	...	पैरा
पिंग	=	प्राकृतपिंगल	* एसियाटिक् सोसाइटी, बंगाल, कलकत्ता, १९०२	...	
पिंड	=	पिंडनियुक्ति	१ हस्तलिखित	...	गाथा
			२ दे० ला० पुस्तकोद्धार फंड, बम्बई, १९२२		,,
पिंडभा	=	पिंडनियुक्तिभाष्य	,,	...	,,
पुप्फ	=	पुष्पमालाप्रकरण	जैन-श्रेयस्कर-मंडल, म्हेसाणा, १९११	...	,,
प्रति	=	प्रतिमानाटक	त्रिवेन्द्र-संस्कृत-सिरीज	...	पृष्ठ
प्रबो	=	प्रबोधचन्द्रोदय	निर्णयसागर प्रेस, बम्बई, १९१०	...	,,
प्रयौ	=	प्रतिज्ञायौगन्धरायण	त्रिवेन्द्र-संस्कृत-सिरीज	...	,,
प्रवि	=	प्रव्रज्या-विधान-कुलक	† हस्तलिखित	...	गाथा
प्राकृ	=	प्राकृतसर्वस्व (मार्कंण्डेयकृत)	विझागापटम्, विशाखापट्टणम्		पृष्ठ
प्राप	=	इन्ट्रडक्शन् टु दि प्राकृत	* पंजाब युनिवर्सिटी, लाहौर, १९१७	...	
प्राप्र	=	प्राकृतप्रकाश	* १ डा. कावेल्-संपादित, लंडन, १८६८	...	
			* २ बंगीय-साहित्य-परिषद्, कलकत्ता, १९१४		
प्रामा	=	प्राकृतमार्गोपदेशिका	* शाह हर्षचन्द्र भूराभाई, बनारस, १९११	...	
प्रारू	=	प्राकृतशब्दरूपावली	* सेठ मनसुखभाई भगुभाई, अहमदाबाद, संवत् १९६८	...	
प्रासू	=	प्राकृतसूक्तरत्नमाला	जैन-विविध-साहित्य-शास्त्र-माला, बनारस, १९१९	...	गाथा
बाल	=	बालचरित	त्रिवेन्द्र-संस्कृत-सिरीज ...	...	पृष्ठ
बृह	=	बृहत्कल्पभाष्य	हस्तलिखित ...	...	उद्देश
भग	=	भगवतीसूत्र	* १ जिनागमप्रकाश सभा, बम्बई, संवत् १९७४	...	
			२ हस्तलिखित		शतक, उद्देश
			३ आगमोदय समिति, बम्बई, १९१८-१९१९-१९२१		,,
भत्त	=	भत्तपरिएणापयन्नो	१ जैन-धर्म-प्रसारक-सभा, भावनगर, संवत् १९६६	...	गाथा
			२ शा. बालाभाई ककलभाई, अहमदाबाद, संवत् १९६२		,,
भववृकथा	=	भवभावनावृत्तिकथा	देवचन्द लालभाई		

+ द्वार—प्रारम्भ के पूर्व के प्रस्ताव के लिए 'पव' के बाद केवल गाथा के अंक दिए गए हैं।

† श्रद्धेय श्रीयुत के. प्रे. मोदी द्वारा प्राप्त।

संकेत		ग्रन्थ का नाम	संस्करण आदि		जिसके अंक दिए गए हैं वह
भवि	=	भविसत्तकहा	* १ डा. एच्. जेकोबी-संपादित, १९१८	...	
			* २ गायकवाड ओरिएण्टल सिरीज, १९२३		
भाव	=	भावकुलक	अंबालाल गोवर्धनदास, बम्बई, १९१३	...	गाथा
भास	=	भाषारहस्य	सेठ मनसुखभाई भगुभाई, अहमदाबाद	...	,,
मंगल	=	मंगलकुलक	† हस्तलिखित ...	...	,,
मध्य	=	मध्यमव्यायोग	त्रिवेन्द्र-संस्कृत-सिरीज ...	...	पृष्ठ
मन	=	मनोनिग्रहभावना	† हस्तलिखित ...	...	गाथा
महा	=	आउसगेव्याल्ते एरस्यालुंगन् इन् महाराष्ट्री	* डॉ. एच्. जेकोबी-संपादित, लाइपजिग, १८८६		
महानि	=	महानिशीथसूत्र	हस्तलिखित ...	...	अध्ययन
मा	=	मालविकाग्निमित्र	निर्णयसागर प्रेस, बम्बई, १९१५	...	पृष्ठ
माल	=	मालतीमाधव	,, ,, ...	...	,,
मुणि	=	मुनिसुव्रतस्वामिचरित	हस्तलिखित ...	...	गाथा
मुद्रा	=	मुद्राराक्षस	बम्बई-संस्कृत-सिरीज, १९१५ ...	...	पृष्ठ
मृच्छ	=	मृच्छकटिक	१ निर्णयसागर प्रेस, बम्बई, १९१६	...	,,
			२ बम्बई-संस्कृत-सिरीज, १८९६	...	,,
मै	=	मैथिलीकल्याण	माणिकचन्द-दिगम्बर-जैन-ग्रन्थमाला, बम्बई, १९७३	...	,,
मोह	=	मोहराजपराजय	गायकवाड़ ओरिएन्टल सिरीज, नं. ९, १९१८	...	,,
यति	=	यतिशिक्षापंचाशिका	† हस्तलिखित ...	...	गाथा
रंभा	=	रंभामंजरी	* निर्णयसागर प्रेस, बम्बई, १८८९	...	,,
रत्न	=	रत्नत्रयकुलक	† हस्तलिखित ...	...	गाथा
रयण	=	रयणसेहरनिवकहा	स्व-संपादित, बनारस, १९१८ ...	...	पृष्ठ
राज	=	अभिधानराजेन्द्र	* जैन-प्रभाकर प्रिंटिंग प्रेस, रतलाम	...	
राय	=	रायपसेणीसुत्त	१ हस्तलिखित ...	...	
			२ आगमोदय-समिति, बम्बई, १९२५	...	पत्र
रुक्मि	=	रुक्मिणी-हरण (ईहामृग)	गायकवाड़ ओरिएन्टल सिरीज, नं. ८, १९१८	...	पृष्ठ
लघु	=	लघुसंग्रहणी	भीमसिंह माणेक, बम्बई, १९०८	...	गाथा
लहुअ	=	लघुअजितशान्ति-स्मरण	स्व-संपादित, कलकत्ता, संवत् १९७८	...	,,
लोक	=	लोकप्रकाश	देवचन्द लालभाई		
वज्जा	=	वज्जालग्ग	एसियाटिक सोसाइटी, बंगाल, कलकत्ता	...	पृष्ठ
वव	=	व्यवहारसूत्र, सभाष्य	१ हस्तलिखित ...	...	उद्देश्य
			२ मुनि माणेक संपादित, भावनगर, १९२६	...	,,
वसु	=	वसुदेवहिंडी	१ हस्तलिखित ...	...	
			२ आत्मानन्द सभा		
वा	=	वाग्भटकाव्यानुशासन	निर्णयसागर प्रेस, बम्बई, १९१५	...	पृष्ठ
वाग	=	वाग्भटालंकार	,, १९१६	...	,,
वि	=	विषयत्यागोपदेशकुलक	† हस्तलिखित ...	...	गाथा

† श्रद्धेय श्रीयुत के. प्रे. मोदी द्वारा प्राप्त ।

संकेत		ग्रन्थ का नाम		संस्करण आदि		जिसके अंक दिए गए हैं वह
विक्र	=	विक्रमोर्वशीय		निर्णयसागर प्रेस, बम्बई, १९१४	...	पृष्ठ
विक्र	=	विक्रान्तकौरव		माणिकचन्द-दिगम्बर-जैन-ग्रन्थ-माला, संवत् १९७२		,,
विचार	=	विचारसारप्रकरण		आगमोदय-समिति, बम्बई, १९२३	...	गाथा
विपा	=	विपाकश्रुत		स्व-संपादित, कलकत्ता, संवत् १९७६		श्रुतस्कन्ध, अध्य०
विवे	=	विवेकमंजरीप्रकरण		स्व-संपादित, बनारस, संवत् १९७५-७६	...	गाथा
विसे	=	विशेषावश्यकभाष्य		स्व-संपादित, बनारस, वीर-संवत् २४२१	...	,,
वृष	=	वृषभानुजा		निर्णयसागर प्रेस, बम्बई, १८९५	...	पृष्ठ
वेणी	=	वेणीसंहार		निर्णयसागर प्रेस, बम्बई, १९१५	...	,,
वै	=	वैराग्यशतक		विठ्ठलभाई जीवाभाई पटेल, अहमदाबाद, १९२०	...	गाथा
श्रा	=	श्राद्धप्रतिक्रमणसूत्रवृत्ति		दे० ला० पुस्तकोद्धार फंड, बम्बई, १९१९	...	मूलगाथा
श्रावक	=	श्रावकप्रज्ञप्ति		१ श्रीयुत केशवलाल प्रेमचन्द संपादित, १९०५	...	गाथा
				२ जैन धर्म शाखा		
श्रु	=	श्रुतास्वाद	†	हस्तलिखित ...	...	,,
षड्	=	षड्भाषाचन्द्रिका	*	बम्बई संस्कृत एन्ड् प्राकृत सिरीज, १९१६	...	
स	=	समराइच्चकहा		एसियाटिक सोसाइटी, बंगाल, कलकत्ता, १९०८-२३	...	पृष्ठ
सं	=	संबोधसत्तरी		विठ्ठलभाई जीवाभाई पटेल, अहमदाबाद, १९२०	...	गाथा
संक्षि	=	संक्षिप्तसार		१ हस्तलिखित ...	...	
				२ संस्कृत प्रेस डिपोजिटरी, कलकत्ता, १८८९	...	पृष्ठ
संग	=	बृहत्संग्रहणी		१ भीमसिंह माणेक, बम्बई, संवत् १९६८	...	गाथा
				२ आत्मानन्द जैन सभा, भावनगर, संवत् १९७३	...	,,
संघ	=	संघाचारभाष्य		हस्तलिखित ...	...	प्रस्ताव
संच	=	शान्तिनाथचरित्र (देवचन्द्रसूरि-कृत)		,, ...	...	
संति	=	संतिकरस्तोत्र		१ जैन-ज्ञान-प्रसारक-मंडल, बम्बई, १९११	...	गाथा
				२ आत्मानन्द-जैन-पुस्तक-प्रचारक-मंडल, आगरा, १९२१	...	,,
संथा	=	संथारगपयन्नो		१ हस्तलिखित ...	...	,,
				२ जैन-धर्म-प्रचारक-सभा, भावनगर, संवत् १९६६	...	,,
संबोध	=	संबोधप्रकरण		जैन-ग्रन्थ-प्रकाशक-सभा, अहमदाबाद, १९१६	...	पत्र
संवे	=	संवेगचूलिकाकुलक	†	हस्तलिखित ...	...	गाथा
संवेग	=	संवेगमंजरी		,, ...	...	,,
सट्ठि	=	सट्ठिसयपयरण		१ स्व-संपादित, बनारस, १९१७	...	,,
				२ सत्यविजय-जैन-ग्रन्थमाला, नं. ६, अहमदाबाद, १९२५		,,
सण	=	सनत्कुमारचरित	*	डॉ. एच. जेकोबी-संपादित, १९२१	...	
सत्त	=	उपदेशसप्ततिका		जैन धर्म-प्रसारक-सभा, भावनगर, संवत १९७६	...	गाथा
सम	=	समवायांगसूत्र		आगमोदय समिति, बम्बई, १९१८	...	पृष्ठ
समु	=	समुद्रमन्थन (समवकार)		गायकवाड ओरिएन्टल सिरीज, नं. ८, १९१८	...	,,
सम्म	=	सम्मतिसूत्र		जैन-धर्म-प्रसारक-सभा, भावनगर, संवत् १९६५	...	गाथा

---

† श्रद्धेय श्रीयुत के. प्रे. मोदी द्वारा प्राप्त ।

संकेत		ग्रन्थ का नाम	संस्करण आदि		जिसके अंक दिए गए हैं वह
सम्मत्त	=	सम्यक्त्वसप्तति सटीक	दे० ला० पुस्तकोद्धार-फंड, बम्बई, १९१६	···	पत्र
सम्य	=	सम्यक्त्वस्वरूप पच्चीसो	अंबालाल गोवर्धनदास, बम्बई, १९१३	···	गाथा
सम्यक्त्वो	=	सम्यक्त्वोत्पादविधिकुलक	† हस्तलिखित	···	,,
सा	=	सामान्यगुणोपदेशकुलक	,,	···	,,
सार्ध	=	गणधरसार्धशतकप्रकरण	जौहरी चुन्नीलाल पन्नालाल, बम्बई, १९१६	···	,,
सिक्खा	=	शिक्षाशतक	† हस्तलिखित	···	,,
सिग्घ	=	सिग्घमवहरउ-स्मरण	स्व-संपादित, कलकत्ता, संवत् १९७८	···	,,
सिरि	=	सिरिसिरिवालकहा	दे० ला० पुस्तकोद्धार फंड, बम्बई, १९२३	···	,,
सुख	=	सुखबोधा टीका (उत्तराध्ययनस्य)	‡ हस्तलिखित	···	अध्ययन, गाथा
सुज्ज	=	सूर्यप्रज्ञप्ति	आगमोदय-समिति, बम्बई, १९१९	···	पाहुड
सुपा	=	सुपासनाहचरिअ	स्व-संपादित, बनारस, १९१८-१९	···	पृष्ठ
सुर	=	सुरसुंदरीचरिअ	जैन-विविध-साहित्य-शास्त्र-माला, बनारस, १९१६	···	परिच्छेद, गाथा
सूअ	=	सूअगडांगसुत्त	+ १ भीमसिंह माणेक, बंबई, १९३६	···	श्रुतस्कंध, अध्य०
			२ आगमोदय-समिति, बंबई, संवत् १९१७	···	,,
सूअनि	=	सूत्रकृताङ्गनिर्युक्ति	१ हस्तलिखित	···	श्रुतस्कंध
			२ आगमोदय-समिति, बंबई, संवत् १९७३	···	गाथा
			३ भीमसिंह माणेक ,, ,, १९३६	···	,,
सूक्त	=	सूक्तमुक्तावली	दे० ला० पुस्तकोद्धार फंड, बंबई, १९२२	···	पत्र
सूत्रचू	=	सूत्रकृतांगचूर्णि	P. T. S.		
से	=	सेतुबंध	निर्णयसागर प्रेस, बंबई, १८९५	···	आश्वासक, पत्र
स्वप्न	=	स्वप्नवासवदत्त	त्रिवेन्द्र-संस्कृत-सिरीज	···	पृष्ठ
हम्मीर	=	हम्मीरमदमर्दन	गायकवाड ओरिएन्टल सिरीज, नं. १०, १९२०	···	,,
हास्य	=	हास्यचूडामणि (प्रहसन)	,,	···	,,
हि	=	हितोपदेशकुलक	† हस्तलिखित	···	गाथा
हित	=	हितोपदेशसारकुलक	,,	···	,,
हे	=	हेमचन्द्र-प्राकृत-व्याकरण	* १ डॉ. आर्. पिशेल्-संपादित, १८७७	···	पद, सूत्र
			२ बंबई-संस्कृत-सिरीज, १९००	···	,,
हेका	=	हेमचन्द्र-काव्यानुशासन	निर्णयसागर प्रेस, बंबई, १९०१	···	पृष्ठ

† श्रद्धेय श्रीयुत के. प्रे. मोदी द्वारा प्राप्त ।

‡ देखो 'उत्त' के नीचे की टिप्पणी ।

+ सूत्र के अंक इन दोनों में भिन्न भिन्न हैं, प्रस्तुत कोष में सूत्रांक केवल भी. मा. के संस्करण के दिए गये है ।

प्रथम संस्करण में लेखक का निवेदन

कोई भी भाषा के ज्ञान के लिए उस भाषा का व्याकरण और कोष प्रधान साधन है। प्राकृत भाषा के प्राचीन व्याकरण अनेक हैं, जिनमें चंड का प्राकृतलक्षण, वररुचि का प्राकृतप्रकाश, हेमाचार्य का सिद्धहेम (अष्टम अध्याय), मार्कण्डेय का प्राकृतसर्वस्व और लक्ष्मीधर की षड्भाषाचन्द्रिका मुख्य हैं। और अर्वाचीन प्राकृत व्याकरणों की संख्या अल्प होने पर भी उनमें जर्मनी के सुप्रसिद्ध प्राकृत-विद्वान् डॉ. पिशल का प्राकृतव्याकरण सर्वश्रेष्ठ है जो अतिविस्तृत और तुलनात्मक है। परन्तु प्राकृत-कोष के विषय में यह बात नहीं है। प्राकृत के प्राचीन कोषों में अद्यापि पर्यन्त केवल दो ही कोष उपलब्ध हुए हैं—पण्डित धनपाल-कृत पाइअलच्छीनाममाला और हेमाचार्य-प्रणीत देशीनाममाला। इनमें पहला अतिसंक्षिप्त—दो सौ से भी कम पद्यों में ही समाप्त और दूसरा केवल देश्य शब्दों का कोष है। इनके सिवा अन्य कोई भी प्राकृत का कोष न होनेसे प्राकृत के हरएक अभ्यासी को अपने अभ्यास में बहुत असुविधा होती थी, खुद मुझे भी अपने प्राकृत-ग्रन्थों के अनुशीलन-काल में इस अभाव का कटु अनुभव हुआ करता था। इससे आज से करीब पनरह साल पहले पूज्यपाद, प्रातः-स्मरणीय, गुरुवर्य शास्त्र-विशारद जैनाचार्य श्री १००८ श्री विजयधर्मसूरीश्वरजी महाराज की प्रेरणा से प्राकृत का एक उपयुक्त कोष बनाने का मैंने विचार किया था।

इसी अरसे में श्री राजेन्द्र सूरिजी का अभिधानराजेन्द्र नामक कोष का प्रथम भाग प्रकाशित हुआ और अभी दो वर्ष हुए इसका अन्तिम भाग भी बाहर हो गया है। बड़ी बड़ी सात जिल्दों में यह कोष समाप्त हुआ है। इस संपूर्ण कोष का मूल्य २६०) रुपये हैं जो परिश्रम और ग्रन्थ-परिमाण में अधिक नहीं कहे जा सकते। यद्यपि इस कोष की विस्तृत आलोचना करने की न तो यहां जगह है, न आवश्यकता ही; तथापि यह कहे बिना नहीं रहा जा सकता कि इसकी तय्यारी में इसके कर्ता और उसके सहकारियों को सचमुच घोर परिश्रम करना पड़ा है और प्रकाशन में जैन श्वेताम्बर संघ को भारी धन-व्यय। परन्तु खेद के साथ कहना पड़ता है कि इसमें कर्ता को सफलता की अपेक्षा निष्फलता ही अधिक मिली है और प्रकाशक के धनका अपव्यय ही विशेष हुआ है। सफलता न मिलने का कारण भी स्पष्ट है। इस ग्रन्थ को थोड़े गौर से देखने पर यह सहज ही मालूम होता है कि इसके कर्ता को न तो प्राकृत भाषाओं का पर्याप्त ज्ञान था और न प्राकृत शब्द-कोष के निर्माण की उतनी प्रबल इच्छा, जितनी जैन-दर्शन-शास्त्र और तर्क-शास्त्र के विषय में अपने पाण्डित्यप्रख्यापन की धून। इसी धून ने अपने परिश्रम को योग्य दिशा में ले जानेवाली विवेक-बुद्धि का भी ह्रास कर दिया है। यही कारण है कि इस कोष का निर्माण, केवल पचहत्तर से भी कम प्राकृत जैन पुस्तकों के ही, जिनमें अर्धमागधी के दर्शनविषयक ग्रंथों की बहुलता है, आधार पर किया गया है और प्राकृत की ही इतर मुख्य शाखाओं के तथा विभिन्न विषयों के अनेक जैन तथा जैनेतर ग्रन्थों में एक का भी उपयोग नहीं किया गया है। इससे यह कोष व्यापक न होकर प्राकृत भाषा का एकदेशीय कोष हुआ है। इसके सिवा प्राकृत तथा संस्कृत ग्रन्थों के विस्तृत अंशों को और कहीं-कहीं तो छोटे-बड़े[1] संपूर्ण ग्रन्थ को ही अवतरण के रूप में उद्धृत करने के कारण पृष्ठ-संख्या में बहुत बड़ा होने पर भी शब्द-संख्या में ऊन ही नहीं, बल्कि आधार-भूत ग्रंथों में आए हुए कई[2] उपयुक्त शब्दों को छोड़ देने से और विशेषार्थ-हीन[3] अतिदीर्घ सामासिक शब्दों की भरती से वास्तविक शब्द-संख्या में यह कोष अतिन्यून भी है। इतना ही नहीं, इस कोष में आदर्श पुस्तकों की, असावधानी की और प्रेस की तो असंख्य अशुद्धियाँ हैं ही, प्राकृत भाषा के अज्ञान से संबन्ध रखनेवाली भूलों की भी कमी नहीं है। और सबसे बढ़कर दोष इस कोष में यह है कि वाचस्पत्य, अनेकान्तजयपताका, अष्टक, रत्नाकरावतारिका आदि केवल संस्कृत के और जैन इतिहास जैसे

---

१. जैसे 'चेइय' शब्द की व्याख्या में प्रतिमाशतक नामक सटीक संस्कृत ग्रन्थ को आदि से लेकर अन्त तक उद्धृत किया गया है। इस ग्रंथ की श्लोक-संख्या करीब पाँच हजार है।

२. अक = अर्क आदि।

३. जैसे अइ-तिक्ख-रोस, अइ-दुक्ख-धम्म, अइ-तिव्व-कम्म-विगम, अकुसल-जोग-णिरोह, अचियंते(?)उर-पर-घर-प्पवेस, अजिम्म(?)-कंत-णयणा, अजस-सय-विसप्पमाण-हियय, अजहण्णुको(?)स-पएसिय आदि। इन शब्दों का इनके अवयवों की अपेक्षा कुछ भी विशेष अर्थ नहीं है।

केवल आधुनिक गुजराती ग्रन्थों के संस्कृत और गुजराती शब्दों पर से कोरी निजी कल्पना से ही बनाये हुए[1] प्राकृत शब्दों की इसमें खूब मिलावट की गई है, जिससे इस कोष की प्रामाणिकता ही एकदम नष्ट हो गई है। ये और अन्य अनेक अक्षम्य दोषों के कारण साधारण अभ्यासी के लिए इस कोष का उपयोग जितना भ्रामक और भयंकर है, विद्वानों के लिए भी उतना ही क्लेशकर है।

इस तरह प्राकृत के विविध भेदों और विषयों के जैन तथा जैनेतर साहित्य के यथेष्ट शब्दों से संकलित, आवश्यक अवतरणों से युक्त, शुद्ध एवं प्रामाणिक कोष का नितान्त अभाव बना ही रहा। इस अभाव की पूर्ति के लिये मैंने अपने उक्त विचार को कार्य-रूप में परिणत करने का दृढ़ संकल्प किया और तदनुसार शीघ्र ही प्रयत्न भी शुरु कर दिया गया, जिसका फल प्रस्तुत कोष के रूप में चौदह वर्षों के कठोर परिश्रम के पश्चात् आज पाठकों के सामने उपस्थित है।

प्रस्तुत कोष की तय्यारी में जो अनेक कठिनाइयाँ मुझे झेलनी पड़ी हैं उनमें सर्व-प्रथम प्राकृत के शुद्ध पुस्तकों के विषय में थी। प्राकृत का विशाल साहित्य-भण्डार विविध-विषयक ग्रंथ-रत्नों से पूर्ण होने पर भी आजतक वह यथेष्ट रूप में प्रकाशित ही नहीं हुआ है। और हस्त-लिखित पुस्तकें तो बहुधा अज्ञान लेखकों के हाथ से लिखी जानेके कारण प्रायः अशुद्ध ही हुआ करती हैं; परन्तु आजतक जो प्राकृत की पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं वे भी, न्यूनाधिक परिमाण में, अशुद्धिओं से खाली नहीं हैं। अलबत, यूरोप की और इस देश की कुछ पुस्तकें ऐसी उत्तम पद्धति से छपी हुई हैं कि जिनमें अशुद्धियाँ बहुत ही कम हैं, और जो कुछ रह भी गई हैं वे उनमें टिप्पणी में दिए हुए अन्य प्रतियों के पाठान्तरों से सुधारी जा सकती हैं। परन्तु दुर्भाग्य से ऐसे संस्करणों की संख्या बहुत ही अल्प—नगण्य हैं। सचमुच, यह बड़े खेद की बात है कि भारतीय और खास कर हमारे जैन विद्वान् प्राचीन पुस्तकों के संशोधन में अधिक हस्तलिखित पुस्तकों का उपयोग करने की और उनके भिन्न-भिन्न पाठों को टिप्पणी के आकार में उद्धृत करने की तकलीफ ही नहीं उठाते। इसका नतीजा यह होता है कि संशोधक की बुद्धि में जो पाठ शुद्ध मालूम होता है वही एक, फिर चाहे वह वास्तव में अशुद्ध ही क्यों न हो, पाठकों को देखने को मिलता है। प्राकृत के इतर मुद्रित ग्रन्थों की तो यह दुर्दशा है ही, परन्तु जैनों के पवित्रतम और अति प्राचीन आगम-ग्रन्थों की भी यही अवस्था है। कई वर्षों के पहले मुर्शिदाबाद के प्रसिद्ध धन-कुबेर राय धनपतिसिंहजी बहादुर ने अनेक आगम-ग्रन्थ भिन्न-भिन्न स्थानों में भिन्न-भिन्न संशोधकों से संपादित करा कर छपवाये थे, जिनमें अधिकांश अज्ञानी संशोधकों से सम्पादित होनेके कारण खूब ही अशुद्ध छपे थे। किन्तु अभी कुछ ही वर्ष हुए हमारी आगमोदय-समिति ने अच्छा फंड एकत्रित करके भी जो आगमों के ग्रन्थ छपवाये हैं वे कागज, छपाई सफाई आदि बाह्य शरीर की सजावट में सुन्दर होने पर भी शुद्धता के विषय में बहुधा पूर्वोक्त संस्करणों की पुनरावृत्ति ही है। क्योंकि, न किसी में आदर्श-पुस्तकों के पाठान्तर देने का परिश्रम किया गया है, न मूल और टीका के प्राकृत शब्दों की संगति की ओर ध्यान दिया गया है, और न तो प्रथम संस्करण की साधारण अशुद्धियाँ सुधारने की यथोचित कोशिश ही की गई है। क्या ही अच्छा हो, यदि श्रीआगमोदयसमिति के कार्य-कर्ताओं का ध्यान इस तथ्य की ओर आकृष्ट हो और वे प्राकृत के विशेषज्ञ और परिश्रमी विद्वानों से संपादित करा कर समस्त (प्रकाशित और अप्रकाशित) आगम-ग्रन्थों का एक शुद्ध (Critical) संस्करण प्रकाशित करें, जिसकी अनिवार्य आवश्यकता है।

इस तरह हस्त-लिखित और मुद्रित प्राकृत-ग्रन्थ प्रायः अशुद्ध होने के कारण आवश्यकतानुसार एकाधिक हस्त-लिखित पुस्तकों का अन्य-ग्रंथों में उद्धृत उन्हीं पाठों का और भिन्न-भिन्न संस्करणों का सावधानी से निरीक्षण करके उनमें से शुद्ध प्राकृत शब्दों का तथा एक ही शब्द के भिन्न-भिन्न परन्तु शुद्ध रूपों का ही यहाँ ग्रहण किया गया है और अशुद्ध शब्द या रूप छोड़ दिए गए हैं। और जिस ग्रंन्थ को एक ही हस्त-लिखित प्रति अथवा एक मुद्रित संस्करण पाया गया है उसमें रही हुई अशुद्धियों का भी संशोधन यथामति किया गया है और संशोधित शब्दों को ही इस कोष में स्थान दिया गया है। साधारण स्थलों को छोड़ कर खास खास स्थानों में ऐसी अशुद्धियों का उल्लेख भी उन पाठों को उद्धृत करके किया गया है, जिससे विद्वान् पाठक को मेरी की हुई शुद्धि की योग्यता या अयोग्यता पर विचार करने की सुविधा हो। इस प्रकार जैसे मूल प्राकृत शब्दों की अशुद्धियों के संशोधन में पूरी सावधानी रक्खी गई है वैसे ही आधुनिक विद्वानों की की हुई छाया (संस्कृत प्रतिशब्द) और अर्थ की भूलों को सुधारने की भी पूरी कोशिश की गई है। सारांश यह कि इस कोष को सर्वाङ्ग-शुद्ध बनाने में संपूर्ण ध्यान दिया गया है। मुझे यह जानकर संतोष हुआ है कि मेरे इस प्रयत्न की कदर भी प्रोफेसर ल्योमेन जैसे प्राकृत के सुप्रसिद्ध जर्मन विद्वान् तक ने की है।[2]

---

१. देखो अग्गर, अखंडणाणरज्ज, अगोरसव्वय, अचिंतगुणसमुदय, अज्झत्तबिंदु, अज्झत्तमयपरिक्खा, अज्झत्थबिंदु, अज्झत्थमयपरिक्खा, अभ(?)त्थओगसाहणजुत्त, अणेगंतजयपडागा प्रभृति शब्दों के रेफरेंस।

२. देखो अन्यत्र उद्धृत किए हुए इस ग्रंथ-विषयक अभिप्रायों में रॉयल एसियाटिक सोसाईटी के जर्नल में प्रकाशित प्रो. ल्युमेन का अभिप्राय।

दूसरी मुख्य कठिनाई अर्थ-व्यय के बारे में थी। मेरी आर्थिक अवस्था ऐसी नहीं थी कि इस महान् ग्रंथ की तय्यारी के लिए पुस्तकादि आवश्यक साधनों के और सहायक मनुष्यों के वेतन-खर्च के अतिरिक्त प्रकाशन का भार भी वहन कर सकूँ। और मुफ्त में किसी से आर्थिक सहायता लेना मैं पसन्द नहीं करता था। इससे इस कठिनाई को दूर करने के लिए अग्रिम ग्राहक बनाने की योजना की गई, जिसमें उन अग्रिम ग्राहकों को हर पचीस रुपये में इस संपूर्ण ग्रन्थ की एक कॉपी देने की व्यवस्था थी। इससे मेरी उक्त कठिनाई सम्पूर्ण तो नहीं, किन्तु बहुत-कुछ कम हो गई। इस योजना को इतने दूर तक सफल बनाने का अधिक श्रेय कलकत्ता के जैन श्वेताम्बर-श्रीसंघ के अग्रगण्य नेता श्रीमान् सेठ नरोत्तमभाई जेठाभाई को है, जिन्होंने शुरू से ही इसकी संरक्षकता का भार अपने पर लेते हुए मुझे हर तरह से इस कार्य में सहायता की है, जिसके लिए मैं उनका चिर-कृतज्ञ हूँ। इसी तरह अहमदाबाद-निवासी श्रद्धेय श्रीयुत् केशवलालभाई प्रेमचन्द मोदी बी. ए., एल्एल् बी. का भी मैं बहुत ही उपकृत हूँ कि जिन्होंने कई मुद्रित पुस्तकों में दी हुई प्राकृत शब्द-सूचियों पर से एकत्रित किया हुआ एक बड़ा शब्द-संग्रह मुझे दिया था; इतना ही नहीं, बल्कि समय समय पर प्राकृत की अनेक हस्त-लखित तथा मुद्रित पुस्तकों का जोगाड़ कर दिया था और उक्त योजना में ग्राहक-सख्या बढ़ा देने का हार्दिक प्रयत्न किया था। प्रातःस्मरणीय, पूज्यपाद, गुरुवर्य मुनिराज श्रीअमीविजयजी महाराज, पूज्य जैनाचार्य श्रीविजयमोहन सूरिजी, जं. यु. भट्टारक श्रीजिनचारित्रसूरिजी तथा स्वतन्त्र-सम्पादक विद्वद्वर्य श्रीयुत् अम्बिकाप्रसादजी वाजपेयी का भी मैं हृदय से उपकार मानता हूँ कि जिनकी प्रेरणा से अग्रिम ग्राहकों की वृद्धि द्वारा मुझे इस कार्य में सहायता मिली है। उन महानुभावों को, जिनके शुभ नाम इसी ग्रन्थ में अन्यत्र दी हुई अग्रिम-ग्राहक-सूची में प्रकाशित किए गए हैं[1], अनेकानेक धन्यवाद हैं कि जिन्होंने यथाशक्ति अल्पाधिक संख्या में इस पुस्तक की कॉपियाँ खरीद कर मेरा यह कार्य सरल कर दिया है। यहाँ पर मेरे मित्र श्रीयुत् सेठ गिरधरलाल त्रिकमलाल और श्रीमान् बाबू डालचंदजी सिंघी के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। इन दोनों महाशयों ने अपनी अपनी शक्ति के अनुसार यथेष्ट संख्या में इस कोष की कॉपियाँ खरीदने के अतिरिक्त मुझे इस कार्य के लिये समय समय पर बिना सूद ऋण देने की भी कृपा की थी। यह कहने में कोई अत्युक्ति नहीं है कि यदि उक्त सब महानुभावों की यह सहायता मुझे प्राप्त न हुई होती तो इस कोष का प्रकाशन मेरे लिए मुश्किल ही नहीं, असंभव था।

यहाँ इस बात का भी उल्लेख करना उचित जान पड़ता है कि आज से करीब दस वर्ष पहले मेरे सहाध्यापक श्रद्धेय प्रोफेसर मुरलीधर बनर्जी एम्. ए. महाशय ने और मैंने मिलकर एक प्रस्ताव विशिष्ट पद्धति का प्राकृत-इंग्लिश कोष तैयार करने के लिए कलकत्ता-विश्वविद्यालय में उपस्थित किया था, परन्तु उस समय वह अनिश्चित काल के लिए स्थगित कर दिया गया था। इसके कई वर्ष बाद जब मेरे इस प्राकृत-हिन्दी कोष का प्रथम भाग प्रकाशित हुआ तब उसे देखकर कलकत्ता-विश्वविद्यालय के कर्णधार स्वर्गीय ऑनरेबल जस्टिस आशुतोष मुकर्जी इतने संतुष्ट हुए कि उन्होंने तुरंत ही विश्वविद्यालय की तरफ से हम दोनों के तत्त्वावधान में इसी तरह के प्रमाण-युक्त एक प्राकृत-इङ्गलिश कोश तैय्यार और प्रकाशित करने का न केवल प्रस्ताव ही पास करवाया, वल्कि उसको कार्य-रूप में परिणत करने के लिए उपयुक्त व्यवस्था भी करायी है। इसके लिए उनको जितने धन्यवाद दिये जायँ, कम हैं। यहाँ पर मैं कलकत्ता-विश्वविद्यालय की भी प्रशंसा किए विना नहीं रह सकता कि जिसके द्वारा मुझे इस कार्य में समय, पुस्तक आदि की अनेक सुविधाएँ मिली हैं, जिससे यह कार्य अपेक्षा-कृत शीघ्रता से पूर्ण हो सका है। इस कोष के उपोद्घात से सम्बन्ध रखनेवाले अनेक ऐतिहासिक जटिल प्रश्नों को सुलझाने में श्रद्धेय प्रोफेसर मुरलीधर बनर्जी एम्. ए. ने अपने कोमती समय का विना संकोच भोग देकर मुझे जो सहायता की है उसके लिए मैं उनका अन्तः-करण से आभार मानता हूँ।

इस कोष के मुद्रण-कार्य के आरम्भ से लेकर प्रायः शेष होने तक, समय समय पर जैसे जैसे जो अतिरिक्त हस्त-लिखित और मुद्रित पुस्तकें या संस्करण मुझे प्राप्त होते जाते थे वैसे वैसे उनका भी यथेष्ट उपयोग इस कोष में किया जाता था। यही कारण है कि तब तक के अमुद्रित भाग के शब्द उनके रेफरेंसों के साथ साथ प्रस्तुत कोष में ही यथास्थान शामिल कर दिए जाते थे और मुद्रित अंश के शब्दों का एक अलग संग्रह तय्यार किया जाता था जो परिशिष्ट[2] के रूप में इसी ग्रंथ में अन्यत्र प्रकाशित किया जाता है। ऐसा करते हुए तृतीय भाग के छपने तक जिन अतिरिक्त पुस्तकों का उपयोग किया गया था उनकी एक अलग सूची भी तृतीय भाग में दी गई थी। उसके बाद के अतिरिक्त पुस्तकों की अलग सूची इसमें न देकर प्रथम की दोनों (द्वितीय और तृतीय भाग में प्रकाशित) सूचियों की जो एक साधारण सूची यहाँ दी जाती है उसीमें उन पुस्तकों का भी वर्णानुक्रम से यथास्थान समावेश किया गया है, जिससे पाठकों को अलग अलग रेफरेंस-सूचियाँ देखने की तकलीफ न हो।

उक्त परिशिष्ट में केवल उन्हीं शब्दों को स्थान दिया गया है जो पूर्व-संग्रह में न आने के कारण एकदम नये हैं या आने पर भी लिंग या अर्थ में पूर्वगत शब्द की अपेक्षा विशेषता रखते हैं। केवल रेफरेंस की विशेषता को लेकर किसी शब्द को परिशिष्ट में पुनरावृत्ति नहीं की गई है।

---

१. 'अग्रिम-ग्राहक सूची' का अंश द्वितीय संस्करण में नहीं छापा गया है—संपादक।

२. 'परिशिष्ट' का संपूर्ण अंश इस द्वितीय संस्करण में यथास्थान समावेश कर दिया गया है—संपादक।

यद्यपि मेरी मातृभाषा हिन्दी नहीं है तथापि वही एकमात्र भारतवर्ष की सर्वाधिक व्यापक और इसलिए राष्ट्र-भाषा के योग्य होने के कारण यहाँ अर्थ के लिए विशेष उपयुक्त समझी गई है।

अन्त में, आर्ष से लेकर अपभ्रंश तक की प्राकृत भाषाओं के विविध-विषयक जैन एवं जैनेतर प्राचीन ग्रंथों के (जिनकी कुल संख्या ढाई सौ से भी ज़्यादा है) अतिविशाल शब्द-राशि से, संस्कृत प्रतिशब्दों से, हिन्दी अर्थों से, सभी आवश्यक अवतरणों से और संपूर्ण प्रमाणों से परिपूर्ण इस बृहत् प्राकृत-कोष में, यथेष्ट सावधानता रखने पर भी, जो कुछ मनुष्य-स्वभाव-सुलभ त्रुटियां या भूलें हुई हों उनको सुधारने के लिए विद्वानों से नम्र प्रार्थना करता हुआ यह आशा रखता हूँ कि वे ऐसी भूलों के विषय में मुझे सतर्क करेंगे ताकि द्वितीयावृत्ति में तदनुसार संशोधन का कार्य सरल हो पड़े। जो विद्वान् मेरे भ्रम-प्रमादों की प्रामाणिक पद्धति से सूचना देंगे, मैं उनका चिर-कृतज्ञ रहूँगा।

यदि मेरी इस कृति से, प्राकृत-साहित्य के अभ्यास में थोड़ी भी सहायता पहुँचेगी तो मैं अपने इस दीर्घ-काल-व्यापी परिश्रम को सफल समझूँगा।

कलकत्ता
ता० ३१-१-२८

हरगोविन्द दास टि. सेठ

प्रथम संस्करण का उपोद्घात

जो भाषा अतिप्राचीन काल में इस देश के आर्य लोगों की कथ्य भाषा—बोलचाल की भाषा—थी, जिस भाषा में भगवान् महावीर और बुद्धदेव ने अपने पवित्र सिद्धान्तों का उपदेश दिया था, जिस भाषा को जैन और बौद्ध विद्वानों ने विविध-विषयक विपुल साहित्य की रचना कर अपनाई है, जिस भाषा में श्रेष्ठ काव्य-निर्माण द्वारा प्रवरसेन, हाल आदि महाकवियों ने अपनी अनुपम प्रतिभा का परिचय दिया है, जिस भाषा के मौलिक साहित्य के आधार पर संस्कृत के अनेक उत्तम ग्रन्थों की रचना हुई है, संस्कृत के नाटक-ग्रन्थों में संस्कृत-भिन्न जिस भाषा का प्रयोग दृष्टिगोचर होता है, जिस भाषा से भारतवर्ष की वर्तमान समस्त आर्य भाषाओं की उत्पत्ति हुई है और जो भाषाएँ भारत के अनेक प्रदेशों में आजकल भी बोली जाती हैं, इन सब भाषाओं का साधारण नाम है प्राकृत, क्योंकि ये सब भाषाएँ एकमात्र प्राकृत के ही विभिन्न रूपान्तर हैं जो समय और स्थान की भिन्नता के कारण उत्पन्न हुई हैं। इसीसे इन भाषाओं के व्यक्ति-वाचक नामों के आगे 'प्राकृत' शब्द का प्रयोग आजतक किया जाता है, जैसे प्राथमिक प्राकृत, आर्ष या अर्धमागधी प्राकृत, पाली प्राकृत, पैशाची प्राकृत, शौरसेनी प्राकृत, महाराष्ट्री प्राकृत, अपभ्रंश प्राकृत, हिन्दी प्राकृत, बंगला प्राकृत आदि।

प्राकृत किसे कहते हैं ?

भारतवर्ष की अर्वाचीन और प्राचीन भाषाएँ और उनका परस्पर सम्बन्ध

भाषातत्त्व के अनुसार भारतवर्ष की आधुनिक कथ्य भाषाएँ इन पाँच भागों में विभक्त की जा सकती है :—(१) आर्य (Aryan), (२) द्राविड़ (Dravidian), (३) मुण्डा (Munda), (४) मन्-ख्मेर (Mon-khmer) और (५) तिब्बत-चीना (Tibeto-Chinese).

भारत की वर्तमान भाषाओं में मराठी, बँगला, ओड़िया, बिहारी, हिन्दी, राजस्थानी, गुजराती, पंजाबी, सिन्धी और काश्मीरी भाषा आर्य भाषा से उत्पन्न हुई हैं। पारसी तथा अंग्रेजी, जर्मनी आदि अनेक आधुनिक युरोपीय भाषाओं की उत्पत्ति भी इसी आर्य भाषा से है। भाषा-गत सादृश्य को देखकर भाषा-तत्त्व-ज्ञाताओं का यह अनुमान है कि इस समय विच्छिन्न और बहु-दूरवर्ती भारतीय आर्य-भाषा-भाषी समस्त जातियाँ और उक्त युरोपीय भाषा-भाषी सकल जातियाँ एक ही आर्य-वंश से उत्पन्न हुई हैं।

तेलगु, तामिल और मलयालम प्रभृति भाषाएँ द्राविड़ भाषा के अन्तर्गत हैं; कोल तथा साँथाली भाषा मुण्डा भाषा के अन्तर्भूत हैं; खासी भाषा मन्ख्मेर भाषा का और भोटानी तथा नागा भाषा तिब्बत-चीना भाषा का निदर्शन है। इन समस्त भाषाओं की उत्पत्ति किसी आर्य भाषा से सम्बन्ध नहीं रखती, अतएव ये सभी अनार्य भाषाएँ हैं। यद्यपि ये अनार्य भाषाएँ भारत के ही दक्षिण, उत्तर और पूर्व भाग में बोली जाती हैं तथापि अंग्रेजी आदि सुदूरवर्ती भाषाओं के साथ हिन्दी आदि आर्य भाषाओं का जो वंश-गत ऐक्य उपलब्ध होता है, इन अनार्य भाषाओं के साथ वह सम्बन्ध नहीं देखा जाता है।

ये सब कथ्य भाषाएँ आजकल जिस रूप में प्रचलित हैं, पूर्वकाल में उसी रूप में न थीं, क्योंकि कोई भी कथ्य भाषा कभी एक रूप में नहीं रहती। अन्य वस्तुओं की तरह इसका रूप भी सर्वदा बदलता ही रहता है—देश, काल और व्यक्ति-गत उच्चारण के भेद से भाषा का परिवर्तन अनिवार्य होता है। यद्यपि यह परिवर्तन जो लोग भाषा का व्यवहार करते हैं उनके द्वारा ही होता है तथापि उस समय वह लक्ष्य में नहीं आता। पूर्वकाल की भाषा के संरक्षित आदर्श के साथ तुलना करने पर बाद में ही वह जाना जाता है। प्राचीन काल की जिन भारतीय भाषाओं के आदर्श संरक्षित हैं—जिन भाषाओं ने साहित्य में स्थान पाया है, उनके नाम ये हैं—वैदिक संस्कृत, लौकिक संस्कृत, पाली, अशोक लिपि तथा उसके बाद की लिपि की भाषा और प्राकृत भाषा-समूह। इनमें प्रथम की दो भाषाएँ कभी जन-साधारण की कथ्य भाषा न थीं, केवल लेख्य—साहित्यिक भाषा—ही थीं। अवशिष्ट भाषाएँ कथ्य और लेख्य उभय रूप में प्रचलित थीं। इस

समय ये समस्त भाषाएँ कथ्य रूप से व्यवहृत नहीं होतीं, इसी कारण ये मृत भाषा (dead languages) कहलाती हैं। उक्त वैदिक आदि सब भाषाएँ आर्य भाषा के अन्तर्गत हैं और इन्हीं प्राचीन आर्य भाषाओं में से कईएक क्रमशः रूपान्तरित होकर आधुनिक समस्त आर्य भाषाएँ उत्पन्न हुई हैं।

ये प्राचीन आर्य भाषाएँ कौन युग में किस रूप में परिवर्तित होकर क्रमशः आधुनिक कथ्य भाषाओं में परिणत हुईं, इसका संक्षिप्त विवरण नीचे दिया जाता है।

प्राचीन भारतीय आर्य भाषाओं का परिणति-क्रम

सर जॉर्ज ग्रियर्सन ने अपनी लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया (Linguistic survey of India) नामक पुस्तक में भारतवर्षीय समस्त आर्य भाषाओं के परिणाम का जो क्रम दिखाया है उसके अनुसार वैदिक भाषा उक्त साहित्य-भाषाओं में सर्व-प्राचीन है। इसका समय अनेक विद्वानों के मत में खिस्ताब्द-पूर्व दो हजार वर्ष (2000 B. C.) और प्रो.

वेद-भाषा और लौकिक संस्कृत

मेक्समूलर के मत में खिस्ताब्द-पूर्व बारह सौ वर्ष (1200 B. C.) है। यह वेद-भाषा क्रमशः परिमार्जित होती हुई ब्राह्मण, उपनिषद् और यास्क के निरक्त की भाषा में और बाद में पाणिनि-प्रभृति के व्याकरण-द्वारा नियन्त्रित होकर लौकिक संस्कृत में परिणत हुई है। पाणिनि आदि के पद-प्रभृति के नियम-रूप संस्कारों को प्राप्त करने के कारण यह संस्कृत कहलाई। मुख्य रूप से 'संस्कृत' शब्द का प्रयोग इसी भाषा के अर्थ में किया जाता है। यह संस्कृत भाषा वैदिक भाषा से उत्पन्न होने से उसके साथ घनिष्ठ सम्बन्ध रखने से वेद-भाषा के अर्थ में भी 'संस्कृत' शब्द बाद के समय से प्रयुक्त होने लग गया है। पाणिनि के बाद संस्कृत भाषा का कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। यह परिवर्तन होने में—वेद-भाषा को लौकिक संस्कृत के रूप में परिणत होने में—प्रायः डेढ़ हजार वर्ष लगे हैं। पाणिनि का समय गोल्डस्टुकर के मत में खिस्ताब्द-पूर्व सप्तम शताब्दी और बोथलिंक के मत में खिस्ताब्द-पूर्व चतुर्थ शताब्दी है।

यहाँ पर इस बात का उल्लेख करना आवश्यक है कि डॉ. हॉर्नेलि और सर ग्रियर्सन के मन्तव्य के अनुसार आर्य लोगों के दो दल भिन्न-भिन्न समय में भारतवर्ष में आये थे[1]। पहले आर्यों के एक दल ने यहाँ आकर मध्यदेश में अपने उपनिवेश की स्थापना की थी। इसके कई सौ वर्षों के बाद आर्यों के दूसरे दल ने भारत में प्रवेश कर प्रथम दल के

वेद और वैदिक सभ्यता

आर्यों को मध्यदेश की चारों ओर भगा कर उनके स्थान को अपने अधिकार में किया और मध्यदेश को ही अपना वास-स्थान कायम किया। उक्त विद्वानों को यह मन्तव्य इसलिए करना पड़ा है कि मध्यदेश के चारों पार्श्वों में स्थित पंजाब, सिन्ध, गुजरात, राजपूताना, महाराष्ट्र, अयोध्या, बिहार, बंगाल और उड़ीसा प्रदेशों की आधुनिक आर्य कथ्य भाषाओं में परस्पर जो निकटता देखी जाती है तथा मध्यदेश की आधुनिक हिन्दी भाषा [पाश्चात्य हिन्दी] के साथ उन सब प्रान्तों की भाषाओं में जो भेद पाया जाता है, उस निकटता और भेद का अन्य कोई कारण दिखाना असम्भव है। मध्यदेशवासी इस दूसरे दल के आर्यों का उस समय का जो साहित्य और जो सभ्यता थी उन्हीं के क्रमशः नाम हैं वेद और वैदिक सभ्यता।

---

१. आर्य लोगों के आदिम वास-स्थान के विषय में आधुनिक विद्वानों में गहरा मत-भेद है। कोई स्कान्डीनेविया को, कोई जर्मनी को, कोई पोलएड को, कोई हंगरी को, कोई दक्षिण रशिया को, कोई मध्य एशिया को आर्यों की आदिम निवास-भूमि मानते हैं तो कोई-कोई पंजाब और काश्मीर को ही इनका प्रथम वसति-स्थान बतलाते हैं। किन्तु अधिकांश विद्वान् भाषा-तत्त्व के द्वारा इस सिद्धान्त पर उपनीत हुए हैं कि युरोपीय और पूर्वदेशीय आर्यों में प्रथम विच्छेद हुआ। पीछे पूर्वदेश के आर्य लोग मेसेपोटेमिया और ईरान में एक साथ रहे और एक ही देव-देवी की उपासना करते थे। उसके बाद वे भी विच्छिन्न होकर एक दल फारस में गया और अन्य दल ने अफगानिस्तान के बीच होकर भारतवर्ष में प्रवेश और निवास किया। परन्तु जैन और हिन्दू शास्त्रों के अनुसार भारतवर्ष ही चिरकाल से आर्यों का आदिम निवास-स्थान है। कोई-कोई आधुनिक विद्वान् ने पुरातत्त्व की नूतन खोज के आधार पर भारतवर्ष से ही कुछ आर्य लोगों का ईरान आदि देशों में गमन और विस्तार-लाभ सिद्ध किया है, जिससे उक्त शास्त्रीय प्राचीन मत का समर्थन होता है।

उक्त वेद-भाषा प्राचीन होने पर भी वह वैदिक युग में जन-साधारण की कथ्य भाषा न थी, ऋषि-लोगों की साहित्य-भाषा थी। उस समय जन-साधारण में वैदिक भाषा के अनुरूप अनेक प्रादेशिक भाषाएँ (dialects) कथ्य रूप से प्रचलित थीं। इन प्रादेशिक भाषाओं में से एक ने परिमार्जित होकर वैदिक साहित्य में स्थान पाया है। ऊपर वैदिक युग से पूर्व काल में आए हुए प्रथम दल के जिन आर्यों के मध्यदेश के चारों तरफ के प्रदेशों में उपनवेशों का उल्लेख किया गया है उन्होंने वैदिक युग अथवा उसके पूर्व-काल में अपने-अपने प्रदेशों की कथ्य भाषाओं में, दूसरे दल के आर्यों की वेद-रचना की तरह, किसी साहित्य की रचना नहीं की थी। इससे उन प्रादेशिक आर्य भाषाओं का तात्कालिक साहित्य में कोई निदर्शन न रहने से उनके प्राचीन रूपों का संपूर्ण लोप हो गया है। वैदिक काल की और इसके पूर्व की उन समस्त कथ्य भाषाओं को सर ग्रियर्सन ने प्राथमिक प्राकृत (Primary Prākrits) नाम दिया है। यही प्राकृत भाषा-समूह का प्रथम स्तर (First stage) है। इसका समय ख्रिस्त-पूर्व २००० से ख्रिस्त-पूर्व ६०० तक का निर्दिष्ट किया गया है। प्रथम स्तर की ये समस्त प्राकृत भाषाएँ स्वर और व्यञ्जन आदि के उच्चारण में तथा विभक्तियों के प्रयोग में वैदिक भाषा के अनुरूप थीं। इससे ये भाषाएँ विभक्ति-बहुल (synthetic) कही जाती है।

प्राकृत-भाषाओं का प्रथम स्तर (ख्रिस्त-पूर्व २००० से ख्रिस्त-पूर्व ६००)

वैदिक युग में जो प्रादेशिक प्राकृत भाषाएँ कथ्य रूप से प्रचलित थीं, उनमें परवर्ति-काल में अनेक परिवर्तन हुए जिनमें ऋ, ॠ आदि स्वरों का, शब्दों के अन्तिम व्यञ्जनों का, संयुक्त व्यञ्जनों का तथा विभक्ति और वचन-समूह का लोप या रूपान्तर मुख्य हैं। इन परिवर्तनों से ये कथ्य भाषाएँ प्रचुर परिमाण में रूपान्तरित हुईं। इस तरह द्वितीय स्तर (second stage) की प्राकृत भाषाओं की उत्पत्ति हुई। द्वितीय स्तर की ये भाषाएँ जैन और बौद्ध धर्म के प्रचार के समय से अर्थात् ख्रिस्त-पूर्व षष्ठ शताब्दी से लेकर ख्रिस्तीय नवम या दशम शताब्दी पर्यन्त प्रचलित रहीं। भगवान् महावीर और बुद्धदेव के समय ये समस्त प्रादेशिक प्राकृत भाषाएँ, अपने द्वितीय स्तर के आकार में, भिन्न-भिन्न प्रदेशों में कथ्य भाषा के तौर पर व्यवहृत होती थीं। उन्होंने अपने सिद्धान्तों का उपदेश इन्हीं कथ्य प्राकृत भाषाओं में से एक में दिया था। इतना ही नहीं, बल्कि बुद्धदेव ने अपना उपदेश संस्कृत भाषा में न लिखकर कथ्य प्राकृत भाषा में लिखने के लिए अपने शिष्यों को आदेश दिया था। इस तरह प्राकृत भाषाओं का क्रमशः साहित्य की भाषाओं में परिणत होने का सूत्रपात हुआ, जिसके फलस्वरूप पश्चिम मगध और सूरसेन देश के मध्यवर्ती प्रदेश में प्रचलित कथ्य भाषा से जैनों के धर्म-पुस्तकों की अर्ध-मागधी और पूर्व मगध में प्रचलित लोक-भाषा से बौद्ध धर्म-ग्रन्थों की पाली भाषा उत्पन्न हुई। पाली भाषा के उत्पत्ति-स्थान के सम्बन्ध में पाश्चात्य विद्वानों का जो मतभेद है उसका विचार हम आगे जा कर करेंगे। ख्रिस्ताब्द से २५० वर्ष पहले सम्राट् अशोक ने बुद्धदेव के उपदेशों को भिन्न-भिन्न प्रदेशों में वहाँ-वहाँ की विभिन्न प्रादेशिक प्राकृत भाषाओं में खुदवाए। इन अशोक शिलालेखों में द्वितीय स्तर की प्राकृत भाषाओं के असंदिग्ध सर्व-प्राचीन निदर्शन संरक्षित हैं। द्वितीय स्तर के मध्य भाग में—प्रायः ख्रिस्तीय पंचम शताब्दी के पूर्व में भिन्न-भिन्न प्रदेशों की अपभ्रंश भाषाओं की उत्पत्ति हुई। इस स्तर की भाषाओं में चतुर्थी विभक्ति का, सब विभक्तियों के द्विवचनों का और आख्यात की अधिकांश विभक्तियों का लोप होने पर भी विभक्तियों का प्रयोग अधिक मात्रा में विद्यमान था। इससे इस स्तर की भाषाएँ भी विभक्ति-बहुल कही जाती हैं।

प्राकृत-भाषाओं का द्वितीय स्तर (ख्रिस्त-पूर्व ६०० से ख्रिस्ताब्द ६००)

सर ग्रियर्सन ने यह सिद्धान्त किया है कि आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं की उत्पत्ति द्वितीय स्तर की प्राकृत भाषाओं से, खासकर उसके शेष भाग में प्रचलित विविध अपभ्रंश भाषाओं से हुई है और आधुनिक भाषाओं को 'तृतीय स्तर की प्राकृत (Tertiary Prākrits)' कह कर निर्देश किया है। इन भाषाओं की उत्पत्ति का समय ख्रिस्तीय दशम शताब्दी है। इनका साधारण लक्षण यह है कि इनमें अधिकांश विभक्तियों का लोप हुआ है, एवं भाषाओं की प्रकृति विभक्ति-बहुल न होकर विभक्तियों के बोधक स्वतन्त्र शब्दों का व्यवहार हुआ है। इससे ये विश्लेषणशील भाषाएँ (Analytical Languages) कही जाती हैं।

प्राकृत भाषाओं का तृतीय स्तर या आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं की उत्पत्ति (ख्रिस्ताब्द ६००)

जिस प्रादेशिक अपभ्रंश से जिस आधुनिक भारतीय आर्य भाषा की उत्पत्ति हुई है उसका विवरण आगे 'अपभ्रंश' शीर्षक में दिया जायगा।

द्वितीय स्तर की प्राकृत भाषाओं का इतिहास

प्रस्तुत कोष में द्वितीय स्तर की साहित्यिक प्राकृत भाषाओं के शब्दों को ही स्थान दिया गया है। इससे इन भाषाओं की उत्पत्ति और परिणति के सम्बन्ध में यहाँ पर कुछ विस्तार से विवेचन करना आवश्यक है।

साधारणतः लोगों की यही धारणा है कि संस्कृत भाषा से ही द्वितीय स्तर की समस्त प्राकृत भाषाएँ और आधुनिक भारतीय भाषाएँ उत्पन्न हुई हैं। कई प्राकृत-वैयाकरणों ने भी अपने प्राकृत-व्याकरणों में इसी मत का समर्थन किया है। परन्तु यह मत कहाँ तक सत्य है, इसका विचार करने के पहले इन भाषाओं के भेदों को जानने की जरूरत है।

प्राकृत का संस्कृत-सापेक्ष विभाग

प्राकृत वैयाकरणों ने प्राकृत भाषाओं के शब्द, संस्कृत शब्दों के सादृश्य और पार्थक्य के अनुसार इन तीन भागों में विभक्त किए हैं:—(१) तत्सम, (२) तद्भव और (३) देश्य या देशी।

(१) जो शब्द संस्कृत और प्राकृत में बिलकुल एक रूप हैं उनको 'तत्सम' या 'संस्कृतसम' कहते हैं, जैसे—अञ्जलि, आगम, इच्छा, ईहा, उत्तम, ऊढा, एरंड, ओङ्कार, किङ्कर, खञ्ज, गण, घण्टा, चित्त, छल, जल, झङ्कार, टङ्कार, डिम्भ, ढक्का, तिमिर, दल, धवल, नीर, परिमल, फल, बहु, भार, मरण, रस, लव, वारि, सुन्दर, हरि, गच्छन्ति, हरन्ति प्रभृति।

(२) जो शब्द संस्कृत से वर्ण-लोप, वर्णागम अथवा वर्ण-परिवर्तन के द्वारा उत्पन्न हुए हैं वे 'तद्भव' अथवा 'संस्कृतभव' कहलाते हैं, जैसेः—अग्र = अग्ग, आर्य = आरिअ, इष्ट = इट्ठ, ईर्ष्या = ईसा, उद्गम = उग्गम, कृष्ण = कसण, खर्जूर = खज्जूर, गज = गअ, धर्म = धम्म, चक्र = चक्क, क्षोभ = छोह, यक्ष = जक्ख, ध्यान = झाण, दंश = डंस, नाथ = णाह, त्रिदश = तिअस, दृष्ट = दिट्ठ, धार्मिक = धम्मिअ, पश्चात् = पच्छा, स्पर्श = फंस, बदर = बोर, भार्या = भारिआ, मेघ = मेह, अरण्य = रण्ण, लेश = लेस, शेष = सेस, हृदय = हिअअ, भवति = हवइ, पिबति = पिअइ, पृच्छति = पुच्छइ, अकार्षीत् = अकासी, भविष्यति = होहिइ इत्यादि।

(३) जिन शब्दों का संस्कृत के साथ कुछ भी सादृश्य नहीं है—कोई भी सम्बन्ध नहीं है, उनको 'देश्य' या 'देशी' बोला जाता है; यथा—अगय (दैत्य), आकासिय (पर्याप्त), इराव (हस्ती), ईस (कीलक), उअचित्त (अपगत), ऊसअ (उपधान), एलविल (धनाढ्य, वृषभ), ओंडल (धम्मिल्ल), कंदोट्ट (कुमुद), खुड्डिअ (सुरत), गयसाउल (विरक्त), घढ (स्तूप), चउक्कर (कार्तिकेय), छंकुई (कपिकच्छू), जच्च (पुरुष), झडप्प (शीघ्र), टंका (जङ्घा), डाल (शाखा), ढंढर (पिशाच, ईर्ष्या), णित्तिरडिअ (त्रुटित), तोमरी (लता), थमिअ (विस्मृत), दाणि (शुल्क), धयण (गृह), निक्खुत्त (निश्चित), पणिआ (करोटिका), फुंटा (केश-बन्ध), बिट्ट (पुत्र), भुंड (सूकर), मड्डा (बलात्कार), रत्ति (आज्ञा), लंच (कुक्कुट), विच्छड्ड (समूह), सयराह (शीघ्र), हुत्त (अभिमुख), उअ (पश्य), खुप्पइ (निमज्जति), छिवइ (स्पृशति), देक्खइ, निअच्छइ (पश्यति), चुक्कइ (भ्रश्यति), चोप्पडइ (म्रक्षति), अहिपच्चुअइ (गृह्णाति) प्रभृति।

उपर्युक्त विभाग प्राकृत के साथ संस्कृत के सादृश्य और पार्थक्य के ऊपर निर्भर करता है। इसके सिवा संस्कृत और प्राकृत के प्राचीन ग्रन्थकारों ने प्राकृत भाषाओं का और एक विभाग किया है जो प्राकृत भाषाओं के उत्पत्ति-स्थानों से संबन्ध रखता है। यह भौगोलिक विभाग (Geographical Classification) कहा जा सकता है।

प्राकृत भाषाओं का भौगोलिक विभाग

भरत-प्रणीत कहे जाते नाट्य-शास्त्र में, [1] सात भाषाओं को जो मागधी, अवन्तिजा, प्राच्या, सूरसेनी, अर्धमागधी, वाह्लीका और दाक्षिणात्या ये नाम हैं, चण्ड के प्राकृत-व्याकरण में जो [2] पैशाचिकी और [3] मागधिका ये नाम मिलते हैं, दण्डी ने काव्यादर्श में जो [4] महाराष्ट्राश्रया, शौरसेनी, गौडी और लाटी ये नाम दिए हैं, आचार्य हेमचन्द्र आदि ने मागधी, शौरसेनी, पैशाची और चूलिकापैशाचिक कह कर जिन नामों का निर्देश

---

१. "मागध्यवन्तिजा प्राच्या सूरसेन्यर्धमागधी।
वाह्लीका दाक्षिणात्या च सप्त भाषाः प्रकीर्तिताः॥" (नाट्यशास्त्र १७, ४८)।

२. "पैशाचिक्यां रणयोर्लनौ' (प्राकृतलक्षण ३, ३८)।

३. "मागधिकायां रसयोर्लशौ' (प्राकृतलक्षण ३, ३९)।

४. '"महाराष्ट्राश्रयां भाषां प्रकृष्टं प्राकृतं विदुः।
सागरः सूक्तिरत्नानां सेतुबन्धादि यन्मयम्॥
शौरसेनी च गौडी च लाटी चान्या च तादृशी।
याति प्राकृतमित्येवं व्यवहारेषु संनिधिम्॥" (काव्यादर्श १, ३४: ३५)।

किया है और मार्कण्डेय ने अपने प्राकृतसर्वस्व में प्राकृतचन्द्रिका के कतिपय श्लोकों को उद्धृत कर महाराष्ट्री, आवन्ती, शौरसेनी, अर्धमागधी, वाह्लीकी, मागधी, प्राच्या और दाक्षिणात्या इन आठ भाषाओं के, छह विभाषाओं में द्राविड़ और ओढ्रज इन दो विभाषाओं के, ग्यारह पिशाच-भाषाओं में काञ्चीदेशीय, पाण्डय, पाञ्चाल, गौड, मागध, व्राचड, दाक्षिणात्य, शौरसेन, कैकय और द्राविड़ इन दस पिशाच-भाषाओं के और सताईस अपभ्रंशों में व्राचड, लाट, वैदर्भ, बार्बर, आवन्त्य, पाञ्चाल, टाक्क, मालव, कैकय, गौड, उड्र, हैव, पाण्ड्य, कौन्तल, सिंहल, कालिङ्ग, प्राच्य, कार्णाट, काञ्च, द्राविड़, गौर्जर, आभीर और मध्यदेशीय इन तेईस अपभ्रंशों के जिन नामों का उल्लेख किया है वे उस भिन्न-भिन्न देश से ही संबन्ध रखते हैं जहाँ-जहाँ वह-वह भाषा उत्पन्न हुई है[1]। षड्भाषाचन्द्रिका के कर्ता ने 'शूरसेन देश में उत्पन्न भाषा शौरसेनी कही जाती है, मगध देश में उत्पन्न भाषा को मागधी कहते हैं और पिशाच-देशों की भाषा पैशाची और चूलिकापैशाची है'[2] यह लिखते हुए यही बात अधिक स्पष्ट रूप में कही है।

प्राकृत वैयाकरणों के मत से तत्सम आदि शब्दों की प्रकृति

पूर्व में प्राकृत भाषाओं के शब्दों के जो तीन प्रकार दिखाए हैं उनमें प्रथम प्रकार के तत्सम शब्द संस्कृत से ही सब देशों के प्राकृतों में लिये गए हैं; दूसरे प्रकार के तद्भव शब्द संस्कृत से उत्पन्न होने पर भी काल-क्रम से भिन्न-भिन्न देश में भिन्न-भिन्न रूप को प्राप्त हुए हैं और तीसरे प्रकार के देश्य शब्द वैदिक अथवा लौकिक संस्कृत से उत्पन्न नहीं हुए हैं, किन्तु भिन्न-भिन्न देश में प्रचलित भाषाओं से गृहीत हुए हैं। प्राकृत वैयाकरणों का यही मत है।

देश्य शब्द

मूल

पहले प्राकृत भाषाओं का जो भौगोलिक विभाग बताया गया है, ये तृतीय प्रकार के देशीशब्द उसी भौगोलिक विभाग से उत्पन्न हुए हैं। वैदिक और लौकिक संस्कृत भाषा पंजाब और मध्यदेश में प्रचलित वैदिक काल की प्राकृत भाषा से उत्पन्न हुई है। पंजाब और मध्यदेश के बाहर के अन्य प्रदेशों में उस समय आर्य लोगों की जो प्रादेशिक प्राकृत भाषाएँ प्रचलित थीं उन्हीं से ये देशीशब्द गृहीत हुए हैं। यही कारण है कि वैदिक और संस्कृत साहित्य में देशीशब्दों के अनुरूप कोई शब्द (प्रतिशब्द) नहीं पाया जाता है।

प्राचीन काल में भिन्न-भिन्न प्रादेशिक प्राकृत भाषाएँ हयात थीं, इस बात का प्रमाण व्यास के महाभारत, भरत के नाट्यशास्त्र और वात्स्यायन के कामसूत्र आदि प्राचीन संस्कृत ग्रन्थों में और जैनों के ज्ञाताधर्मकथा, विपाकश्रुत, औपपातिकसूत्र तथा राजप्रश्नीय आदि प्राचीन प्राकृत ग्रन्थों में भी मिलता है[3]। इन ग्रन्थों में 'नानाभाषा', 'देशभाषा' या 'देशीभाषा' शब्द का प्रयोग प्रादेशिक प्राकृत के अर्थ में ही किया गया है। चंड ने अपने प्राकृत व्याकरण में जहाँ देशीप्रसिद्ध[4] प्राकृत

---

१. ये श्लोक 'पैशाची' और 'अपभ्रंश' के प्रकरण में दिए गए हैं।

२. "शूरसेनोद्भवा भाषा शौरसेनीति गीयते।
मगधोत्पन्नभाषां तां मागधीं संप्रचक्षते।
पिशाचदेशनियतं पैशाचीद्वितयं भवेत् ॥" (षड्भाषाचन्द्रिका, पृष्ठ २)।

३. "नानाचर्मभिराच्छन्ना नानाभाषाश्च भारत। कुशला देशभाषासु जल्पन्तोऽन्योन्यमीश्वराः" (महाभारत, शल्यपर्व ४६, १०३)।
"अत ऊर्ध्वं प्रवक्ष्यामि देषभाषाविकल्पनम्।"
"अथवा च्छन्दतः कार्या देशभाषा प्रयोक्तृभिः" (नाट्यशास्त्र १७, २४; ४६)।
"नात्यन्तं संस्कृतेनैव नात्यन्तं देशभाषया। कथां गोष्ठीषु कथयंल्लोके बहुमतो भवेत्" (कामसूत्र १, ४, ५०)।
"तते णं से मेहे कुमारे......अट्ठारसविहिप्पगारदेसीभासाविसारए.......होत्था"; "तत्थ णं चंपाए नयरीए देवदत्ता नाम गणिया परिवसइ अड्ढा......अट्ठारसदेसीभासाविसारया" (ज्ञाताधर्मकथासूत्र, पत्र ३८; ६२)।
"तत्थ णं वाणियगामे कामज्झया णामं गणिया होत्था......अट्ठारसदेसीभासाविसारया" (विपाकश्रुत, पत्र २१-२२)।
"तए णं दढपइण्णे दारए.......अट्ठारसदेसीभासाविसारए" (औपपातिक सूत्र, पेरा १०६)।
"तए णं से दढपतिण्णे दारए.......अट्ठारसविहदेसिप्पगारभासाविसारए" (राजप्रश्नीयसूत्र, पत्र १४८)।

४. "सिद्धं प्रसिद्धं प्राकृतं त्रेधा त्रिप्रकारं भवति—संस्कृतयोनि......,संस्कृतसमं.......देशीप्रसिद्धं तच्चेदं हर्षितं = ल्हसिअं" (प्राकृतलक्षण पृष्ठ १-२)।

का उल्लेख किया है वहाँ भी देशी शब्द का अर्थ देशीभाषा ही है। ये सब देशी या प्रादेशिक भाषाएँ भिन्न-भिन्न प्रदेशों के निवासी आर्य लोगों की ही कथ्य भाषाएँ थीं। इन भाषाओं का पंजाब और मध्यदेश की कथ्य भाषा के साथ अनेक अंशों में जैसे सादृश्य था वैसे किसी किसी अंश में भेद भी था। जिस जिस अंश में इन भाषाओं का पंजाब और मध्यदेश की प्राकृत भाषा के साथ भेद था उसमें से जिन भिन्न-भिन्न नामों ने और धातुओं ने प्राकृतसाहित्य में स्थान पाया है वे ही हैं प्राकृत के देशी वा देश्य शब्द।

प्राकृत-वैयाकरणों ने इन समस्त देश्य शब्दों में अनेक नाम और धातुओं को संस्कृत नामों के और धातुओं के स्थान में आदेश-द्वारा सिद्ध करके तद्भव-विभाग में अन्तर्गत किए हैं[1]। यही कारण है कि आचार्य हेमचन्द्र ने अपनी देशीनाममाला में केवल देशी नामों का ही संग्रह किया है और देशी धातुओं का अपने प्राकृत-व्याकरण में संस्कृत धातुओं के आदेश-रूप में उल्लेख किया है; यद्यपि आचार्य हेमचन्द्र के पूर्ववर्ती कई वैयाकरणों ने इनकी गणना देशी धातुओं में ही की है[2]। ये सब नाम और धातु संस्कृत के नाम और धातुओं के आदेश-रूप में निष्पन्न करने पर भी तद्भव नहीं कहे जा सकते, क्योंकि संस्कृत के साथ इनका कुछ भी सादृश्य नहीं है।

कोई कोई पाश्चात्य भाषातत्त्वज्ञ का यह मत है कि उक्त देशी शब्द और धातु भिन्न-भिन्न देशों की द्राविड़, मुण्डा आदि अनार्य भाषाओं से लिए गए हैं। यहाँ पर यह कहा जा सकता है कि यदि आधुनिक अनार्य भाषाओं में इन देशी-शब्दों और देशी-धातुओं का प्रयोग उपलब्ध हो तो यह अनुमान करना असंगत नहीं है। किन्तु जबतक यह प्रमाणित न हो कि 'ये देशी शब्द और धातु वर्तमान अनार्य भाषाओं में प्रचलित हैं', तबतक 'ये देशी शब्द और धातु-प्रादेशिक आर्य भाषाओं से ही गृहीत हुए हैं' यह कहना ही अधिक संगत प्रतीत होता है। इन अनार्य भाषाओं में दो-एक देश्य शब्द और धातु प्रचलित होने पर भी 'वे अनार्य भाषाओं से ही प्राकृत भाषाओं में लिए गए हैं' यह अनुमान न कर 'प्राकृत भाषाओं से ही वे देश्य शब्द और धातु अनार्य भाषाओं में गए हैं' यह अनुमान किया जा सकता है। हाँ, जहाँ ऐसा अनुमान करना असंभव हो वहाँ हम यह स्वीकार करने के लिए बाध्य होंगे कि 'ये देश्य शब्द और धातु अनार्य भाषाओं से ही प्राकृत में लिए गए हैं; क्योंकि आर्य और अनार्य ये उभय जातियाँ जब एक स्थान में मिश्रित हो गई हैं तब कोई कोई अनार्य शब्द और धातु का आर्य भाषाओं में प्रवेश करना असंभव नहीं है।

डॉ. काल्डवेल (Caldwell) प्रभृति के मत में वैदिक और लौकिक संस्कृत में भी अनेक शब्द द्राविडीय भाषाओं से गृहीत हुए हैं। यह बात भी संदिग्ध ही है, क्योंकि द्राविडीय भाषा के जिस साहित्य में ये सब शब्द पाये जाते हैं वह वैदिक संस्कृत के साहित्य से प्राचीन नहीं है। इससे 'वैदिक साहित्य में ये सब शब्द द्राविडीय भाषा से गृहीत हुए हैं' इस अनुमान की अपेक्षा 'आर्य लोगों की भाषा से ही अनार्यों की भाषा में ये सब शब्द लिए गए हैं' यह अनुमान ही विशेष ठीक मालूम पड़ता है।

समय

जिन प्रादेशिक देशी-भाषाओं से ये सब देशी शब्द प्राकृत-साहित्य में गृहीत हुए हैं वे पूर्वोक्त प्रथम स्तर की प्राकृत भाषाओं के अन्तर्गत और उनकी समसामयिक हैं। ख्रिस्त-पूर्व षष्ठ शताब्दी के पहले ये सब देशीभाषाएँ प्रचलित थीं, इससे ये देश्य शब्द अर्वाचीन नहीं, किन्तु उतने ही प्राचीन हैं जितने कि वैदिक शब्द।

द्वितीय स्तर की प्राकृत भाषाओं की उत्पत्ति—वैदिक या लौकिक संस्कृत से नहीं, किन्तु प्रथम स्तर की प्राकृतों से

प्राकृत के वैयाकरण-गण प्राकृत शब्द की व्युत्पत्ति में प्रकृति शब्द का अर्थ संस्कृत करते हुए प्राकृत भाषाओं की उत्पत्ति लौकिक संस्कृत से मानते हैं। संस्कृत के कई अलंकार-शास्त्रों के टीकाकारों ने भी तद्भव और तत्सम शब्दों में स्थित

१. देखो हेमचन्द्र-प्राकृत-व्याकरण के द्वितीय पाद के १२७, १२६, १३४, १३६, १३८, १४१, १७४ वगैरह सूत्र और चतुर्थ पाद के २, ३, ४, ५, १०, ११, १२ प्रभृति सूत्र।

२, 'एते चान्यैर्देशीषु पठिता अपि अस्माभिर्धात्वादेशीकृताः' (हे० प्रा० ४, २); अर्थात् अन्य विद्वानों ने वज्जर, पज्जर, उप्पाल प्रभृति धातुओं का पाठ देशी में किया है, तो भी हमने संस्कृत धातु के आदेश-रूप से ही ये यहीं बताए हैं।

'तत्' शब्द का सम्बन्ध संस्कृत से लगाकर इस मत का अनुसरण किया है[1]। कतिपय प्राकृत-व्याकरणों में प्राकृत शब्द की व्युत्पत्ति इस तरह की गई है :—

'प्रकृतिः संस्कृतं, तत्र भवं तत आगतं वा प्राकृतम्' (हेमचन्द्र प्रा० व्या०)।

'प्रकृतिः संस्कृतं तत्र भवं प्राकृतमुच्यते' (प्राकृतसर्वस्व)।

'प्रकृतिः संस्कृतं तत्र भवत्वात् प्राकृतं स्मृतम्' (प्राकृतचन्द्रिका)।

'प्रकृतेः संस्कृतायास्तु विकृतिः प्राकृती मता' (षड्भाषाचन्द्रिका)।

'प्राकृतस्य तु सर्वमेव संस्कृतं योनिः' (प्राकृतसंजीवनी)।

इन व्युत्पत्तियों का तात्पर्य यह है कि प्राकृत शब्द 'प्रकृति' शब्द से बना है, 'प्रकृति' का अर्थ है संस्कृत भाषा, संस्कृत भाषा से जो उत्पन्न हुई है वह है प्राकृत भाषा।

प्राकृत वैयाकरणों की प्राकृत शब्द की यह व्याख्या अप्रामाणिक और अव्यापक ही नहीं है, भाषा-तत्त्व से असंगत भी है। अप्रामाणिक इसलिए कही जा सकती है कि प्रकृति शब्द का मुख्य अर्थ संस्कृत भाषा कभी नहीं होता—संस्कृत के किसी कोष में प्राकृत शब्द का यह अर्थ उपलब्ध नहीं है[2] और गौण या लाक्षणिक अर्थ तबतक नहीं लिया जाता जबतक मुख्य अर्थ में बाध न हो। यहाँ प्रकृति शब्द के मुख्य अर्थ स्वभाव अथवा[3] जन-साधारण लेने में किसी तरह का बाध भी नहीं है। इससे उक्त व्युत्पत्ति के स्थान में 'प्रकृत्या स्वभावेन सिद्धं प्राकृतम्' अथवा 'प्रकृतीनां साधारणजनानामिदं प्राकृतम्' यही व्युत्पत्ति संगत और प्रामाणिक हो सकती है। अव्यापक कहने का कारण यह है कि प्राकृत के पूर्वोक्त तीन प्रकारों में तत्सम और तद्भव शब्दों की ही प्रकृति उन्होंने संस्कृत मानी है, तीसरे प्रकार के देश्य शब्दों की नहीं, अथच देश्य को भी प्राकृत कहा है। इससे देश्य प्राकृत में वह व्युत्पत्ति लागू नहीं होती। प्राकृत की संस्कृत से उत्पत्ति भाषा-तत्त्व के सिद्धान्त से भी संगति नहीं रखती, क्योंकि वैदिक संस्कृत[4] और लौकिक संस्कृत ये दोनों ही साहित्य की मार्जित भाषाएँ हैं। इन दोनों भाषाओं का व्यवहार शिक्षा की अपेक्षा रखता है। अशिक्षित, अज्ञ और बालक लोग किसी काल में साहित्य की भाषा का न तो स्वयं व्यवहार कर सकते हैं और न समझ ही पाते हैं। इसलिए समस्त देशों में सर्वदा ही अशिक्षित लोगों के व्यवहार के लिए एक कथ्य भाषा चालू रहती है जो साहित्य की भाषा से स्वतन्त्र—अलग होती है। शिक्षित लोगों को भी अशिक्षित लोगों के साथ बातचीत के प्रसंग में इस कथ्य भाषा का ही व्यवहार करना पड़ता है। वैदिक समय में भी ऐसी कथ्य भाषा प्रचलित थी। और जिस समय लौकिक संस्कृत भाषा प्रचलित हुई उस समय भी साधारण लोगों की स्वतन्त्र कथ्य भाषा विद्यमान थी, यह नाटक आदि में संस्कृत भाषा के साथ प्राकृत-भाषी पात्रों के उल्लेख से प्रमाणित होता है।

पाणिनि ने संस्कृत भाषा को जो लौकिक भाषा कही है और पतञ्जलि ने इसको जो शिष्ट-भाषा का नाम दिया है, उसका मतलब यह नहीं है कि उस समय प्राकृत भाषा थी ही नहीं, परन्तु उसका अर्थ यह है कि उस समय के शिक्षित लोगों के आपस के वार्तालाप में, वर्तमान काल के पण्डित लोगों में संस्कृत की तरह और भिन्नदेशीय लोगों के साथ के व्यवहार Lingua Franca की माफिक संस्कृत भाषा व्यवहृत होती थी। किन्तु बालक, स्त्रियाँ और अशिक्षित लोग अपनी मातृ-भाषा में बातचीत करते थे जो संस्कृत-भिन्न साधारण कथ्य भाषा थी। साधारण कथ्य भाषा किसी देश में किसी काल में साहित्य की भाषा से गृहीत नहीं होती, बल्कि साहित्य-भाषा ही जन-साधारण की कथ्य भाषा से उत्पन्न होती है। इसलिए 'संस्कृत से प्राकृत भाषा की उत्पत्ति हुई है' इसकी अपेक्षा 'क्या तो वैदिक संस्कृत और क्या लौकिक संस्कृत दोनों ही उस समय की प्राकृत भाषाओं से उत्पन्न हुई हैं' यही सिद्धान्त विशेष युक्ति-संगत है। आजकल के भाषा-तत्त्वज्ञों में इसी सिद्धान्त का अधिक आदर देखा जाता है। यह सिद्धान्त पाश्चात्य विद्वानों का कोई नूतन आविष्कार नहीं है, भारतवर्ष के

---

१. 'प्रकृतेः संस्कृतादागतं प्राकृतम्' (वाग्भटालंकारटीका २, २); 'संस्कृतरूपायाः प्रकृतेरुत्पन्नत्वात् प्राकृतम्' (काव्यादर्श की प्रेमचन्द्र-तर्कवागीश-कृत टीका १, ३३)।

२. 'प्रकृतिर्योनिशिल्पिनोः। पौरामात्यादिलिंगेषु गुणसाम्यस्वभावयोः। प्रत्ययात् पूर्विकायां च' (अनेकार्थसंग्रह ८७६-७)।

३. 'स्वाम्यमात्यः सुहृत्कोशो राष्ट्रदुर्गबलानि च।
राज्याङ्गानि प्रकृतयः पौराणां श्रेणयोऽपि च॥ (अभिधानचिन्तामणि ३, ३७८)।
'यत् कात्यः—अमात्याद्याश्च पौराश्च सद्भिः प्रकृतयः स्मृताः' (अ० चि० ३, ३७८ की टीका)।

४. कोई कोई आधुनिक विद्वान् प्राकृत भाषा की उत्पत्ति वैदिक संस्कृत से मानते हैं, देखो 'पाली-प्रकाश' का प्रवेशक पृष्ठ ३४-३६।

ही प्राचीन भाषातत्त्वज्ञों में भी यह मत प्रचलित था यह निम्नोद्धृत कतिपय प्राचीन ग्रन्थों के अवतरणों से स्पष्ट प्रतीत होता है। रुद्रट-कृत काव्यालङ्कार के एक[1] श्लोक की व्याख्या में खिस्त की ग्यारहवीं शताब्दी के जैन-विद्वान् नमिसाधु ने लिखा है कि:—

"प्राकृतेति । सकलजगज्जन्तूनां व्याकरणादिभिरनाहितसंस्कार: सहजो वचन-व्यापार: प्रकृतिः, तत्र: भवं सैव वा प्राकृतम् । 'आरिसवयणे सिद्धं देवाणं अद्धमागहा वाणी' इत्यादिवचनाद् वा प्राक् पूर्वं कृतं प्राक्कृतं बाल-महिलादि-सुबोधं सकलभाषानिबन्धनभूतं वचनमुच्यते। मेघनिर्मुक्तजलमिवैकस्वरूपं तदेव च देशविशेषात् संस्कारकरणाच्च समासादितविशेषं सत् संस्कृताद्युत्तरविभेदानाप्नोति । अत एव शास्त्रकृता प्राकृतमादौ निर्दिष्टं तदनु संस्कृतादीनि । पाणिन्यादिव्याकरणोदितशब्दलक्षणेन संस्करणात् संस्कृतमुच्यते ।"

इस व्याख्या का तात्पर्य यह है कि—'प्रकृति शब्द का अर्थ है लोगों का व्याकरण आदि के संस्कारों से रहित स्वाभाविक वचन-व्यापार, उससे उत्पन्न अथवा वही है प्राकृत । अथवा 'प्राक् कृत' पर से प्राकृत शब्द बना है, 'प्राक् कृत' का अर्थ है 'पहले किया गया'। बारह अंग-ग्रन्थों में ग्यारह अंग ग्रन्थ पहले किए गए हैं और इन ग्यारह अङ्ग-ग्रन्थों की भाषा आर्ष-वचन में—सूत्र में अर्धमागधी कही गई है[2] जो बालक, महिला आदि को सुबोध—सहज-गम्य है[3] और जो सकल भाषाओं का मूल है । यह अर्धमागधी भाषा ही प्राकृत है। यही प्राकृत, मेघ-मुक्त जल की तरह, पहले एक रूपवाला होने पर भी, देश-भेद से और संस्कार करने से भिन्नता को प्राप्त करता हुआ संस्कृत आदि अवान्तर विभेदों में परिणत हुआ है अर्थात् अर्धमागधी प्राकृत से संस्कृत और अन्यान्य प्राकृत भाषाओं की उत्पत्ति हुई है। इसी कारण से मूल ग्रन्थकार (रुद्रट) ने प्राकृत का पहले और संस्कृत आदि बाद में निर्देश किया है। पाणिन्यादि व्याकरणों में बताए हुए नियमों के अनुसार संस्कार पाने के कारण संस्कृत कहलाती है।'

"अकृत्रिमस्वादुपदैर्जनं जनं जिनेन्द्र साक्षादिव पासि भाषितैः" (द्वात्रिंशद्द्वात्रिंशिका १, १८) ।

"[4]अकृत्रिमस्वादुपदां जैनीं वाचमुपास्महे ।" (हेमचन्द्रकाव्यानुशासन, पृष्ठ १) ।

उक्त पद्यों में क्रमशः महाकवि सिद्धसेन दिवाकर और आचार्य हेमचन्द्र जैसे समर्थ विद्वानों का जिनदेव की वाणी को 'अकृत्रिम' और संस्कृत भाषा को 'कृत्रिम' कहने का भी रहस्य यही है कि प्राकृत जन-साधारण की मातृभाषा होने के कारण अकृत्रिम— स्वाभाविक है और संस्कृत भाषा व्याकरण के संस्कार-रूप बनावटीपन से पूर्ण होने के हेतु कृत्रिम है।

---

१. "प्राकृतसंस्कृतमागधपिशाचभाषाश्च शौरसेनी च ।
षष्ठोऽत्र भूरिभेदो देशविशेषादपभ्रंशः ॥" (काव्यालंकार २, १२) ।

२. बारहवाँ अङ्ग-ग्रंथ, जिसका नाम दृष्टिवाद है और जिसमें चौदह पूर्व (प्रकरण) थे, संस्कृत भाषा में था । यह बहुत काल से लुप्त हो गया है । यद्यपि इसके विषयों का संक्षिप्त वर्णन समवायाङ्गसूत्र में है।
"चतुर्दशापि पूर्वाणि संस्कृतानि पुराऽभवन् ॥११४॥
प्रज्ञातिशयसाध्यानि तान्युच्छिन्नानि कालतः । अधुनैकादशाङ्गयस्ति सुधर्मस्वामिभाषिता ॥११५॥
बालस्त्रीमूढमूर्खादिजनानुग्रहणाय सः । प्राकृतां तामिहाकार्षीत्" (प्रभावकचरित्र, पृ० ९८-९९) ।

३. "मुत्तूण दिट्ठिवायं कालियउक्कालियंगसिद्धं तं । थीबालवायणत्थं पाययमुइयं जिणवरेहिं ॥"
(आचारदिनकर में उद्धृत प्राचीन गाथा) ।
"बालस्त्रीमन्दमूर्खाणां नृणां चारित्रकांक्षिणाम् । अनुग्रहार्थं तत्त्वज्ञैः सिद्धान्तः प्राकृतः कृतः ॥"
(दशवैकालिक टीका पत्र १०० में हरिभद्रसूरि द्वारा और काव्यानुशासन की टीका पृ० १ में आचार्य हेमचन्द्र द्वारा उद्धृत किया हुआ प्राचीन श्लोक) ।

४. "अकृत्रिमाणि—असंस्कृतानि, अत एव स्वादूनि मन्दधियामपि पेशलानि पदानि यस्यामिति विग्रहः" (काव्यानुशासनटीका) । आचार्य हेमचन्द्र की 'अकृत्रिम' शब्द की इस स्पष्ट व्याख्या से प्रतीत होता है कि उनका अपने प्राकृत-व्याकरण में प्राकृत की प्रकृति संस्कृत कहना सिद्धान्त-निरूपण के लक्ष्य से नहीं, परन्तु अपने प्राकृत-व्याकरण की रचना-शैली के उपलक्ष में है, क्योंकि सभी उपलब्ध प्राकृत-व्याकरणों की तरह हेमचन्द्र-प्राकृत-व्याकरण में भी संस्कृत पर से ही प्राकृत-शिक्षा की पद्धति अख्त्यार की गई है और इस पद्धति में प्रकृति—मूल के स्थान में संस्कृत को रखना अनिवार्य हो जाता है । अथवा यह भी असम्भव नहीं है कि व्याकरण-रचना के समय उनका यही सिद्धान्त रहा हो जो बाद में बदल गया हो और इस परिवर्तित सिद्धान्त का काव्यानुशासन में प्रतिपादन किया हो । काव्यानुशासन की रचना व्याकरण के बाद उन्होंने की है यह काव्यानुशासन की "शब्दानुशासनेऽस्माभिः साध्व्यो वाचो विवेचिताः" (पृष्ठ २) इस उक्ति से ही सिद्ध है।

केवल जैन विद्वानों में ही यह मत प्रचलित न था, खिस्त की आठवीं शताब्दी के जैनेतर महाकवि वाक्पतिराज ने भी अपने 'गउडवहो' नामक महाकाव्य में इसी मत को इन स्पष्ट शब्दों में व्यक्त किया है :—

"[1]सयलाओ इमं वाया विसंति एत्तो य णेंति वायाओ ।
एंति समुद्दं चिय णेंति सायराओ च्चिय जलाइं ।।९३।।"

अर्थात् इसी प्राकृत भाषा में सब भाषाएँ प्रवेश करती हैं और इस प्राकृत भाषा से ही सब भाषाएँ निर्गत हुई हैं; जल (आ कर) समुद्र में ही प्रवेश करता है और समुद्र से ही (बाष्प रूप से) बाहर होता है। वाक्पति के इस पद्य का मर्म यही है कि प्राकृत भाषा की उत्पत्ति अन्य किसी भाषा से नहीं हुई है, बल्कि संस्कृत आदि सब भाषाएँ प्राकृत से ही उत्पन्न हुई हैं।

खिस्त की नवम शताब्दी के जैनेतर कवि राजशेखर ने भी अपने 'बालरामायण' में नीचे का श्लोक लिखकर यही मत प्रकट किया है :—

"यद् योनिः किल संस्कृतस्य सुदृशां जिह्वासु यन्मोदते, यत्र श्रोत्रपथावतारिणि कटुर्भाषाक्षराणां रसः ।
गद्यं चूर्णपदं पदं रतिपतेस्तत् प्राकृतं यद्वचस्ताँल्लाटाँल्ललिताङ्गि पश्य नुदती दृष्टेर्निमेषव्रतम् ।।" (४८, ४९)।

जैन और जैनेतर विद्वानों के उक्त वचनों से यह स्पष्ट है कि प्राचीन काल के भारतीय भाषातत्त्वज्ञों में भी यह मत प्रबल रूप से प्रचलित था कि प्राकृत की उत्पत्ति संस्कृत भाषा से नहीं है।

प्राकृत भाषा लौकिक संस्कृत से उत्पन्न नहीं हुई है इसका और भी एक प्रमाण है। वह यह कि प्राकृत के अनेक शब्द और प्रत्ययों का लौकिक संस्कृत की अपेक्षा वैदिक भाषा के साथ अधिक मेल देखने में आता है। प्राकृत भाषा साक्षाद्रूप से लौकिक संस्कृत से उत्पन्न होने पर यह कभी संभव नहीं हो सकता। वैदिक साहित्य में भी प्राकृत के अनुरूप अनेक शब्द और प्रत्ययों के प्रयोग विद्यमान हैं। इससे यह अनुमान करना किसी तरह असंगत नहीं है कि वैदिक संस्कृत और प्राकृत ये दोनों ही एक प्राचीन प्राकृत भाषा से उत्पन्न हुई हैं और यही इस सादृश्य का कारण है। वैदिक भाषा और प्राकृत के सादृश्य के कतिपय उदाहरण हम नीचे उद्धृत करते हैं, ताकि उक्त कथन की सत्यता में कोई संदेह नहीं हो सकता।

वैदिक भाषा और प्राकृत में सादृश्य

१. प्राकृत में अनेक जगह संस्कृत ऋकार के स्थान में उकार होता है, जैसे—वृन्द = वुन्द, ऋतु = उउ, पृथिवी = पुहवी; वैदिक साहित्य में भी ऐसे प्रयोग पाये जाते हैं, जैसे—कृत = कुठ (ऋग्वेद १, ४६, ४)।

२. प्राकृत में संयुक्त वर्णवाले कई स्थानों में एक व्यञ्जन का लोप होकर पूर्व के ह्रस्व स्वर का दीर्घ होता है, जैसे—दुर्लभ = दूलह, विश्राम = वीसाम, स्पर्श = फास; वैदिक भाषा में भी वैसा होता है, यथा—दुर्लभ = दूलभ (ऋग्वेद ४, ९, ८), दुर्णाश = दूणाश (शुक्लयजुः प्रातिशाख्य ३, ४३)।

३. संस्कृत व्यञ्जनान्त शब्दों के अन्त्य व्यञ्जन का प्राकृत में सर्वत्र लोप होता है, जैसे—तावत् = ताव, यशस् = जस; वैदिक साहित्य में भी इस नियम का अभाव नहीं है, यथा—पश्चात् = पश्चा (अथर्वसंहिता १०, ४, ११), उच्चात् = उच्चा (तैत्तिरीयसंहिता २, ३, १४), नीचात् = नीचा (तैत्तिरीयसंहिता १, २, १४)।

४. प्राकृत में संयुक्त र और य का लोप होता है, जैसे—प्रगल्भ = पगब्भ, श्यामा = सामा; वैदिक साहित्य में भी यह पाया जाता है, यथा—अ-प्रगल्भ = अ-पगल्भ (तैत्तिरीयसंहिता ४, ५, ६१); त्र्यच = त्रिच (शतपथब्राह्मण १, ३, ३, ३३)।

५. प्राकृत में संयुक्त वर्ण का पूर्व स्वर ह्रस्व होता है, यथा—पात्र = पत्त, रात्रि = रत्ति, साध्य = सज्झ इत्यादि; वैदिक भाषा में भी ऐसे प्रयोग हैं, जैसे—रोदसीप्रा = रोदसिप्रा (ऋग्वेद १०, ८८, १०), अमात्र = अमत्र (ऋग्वेद ३, ३६, ४)।

६. प्राकृत में संस्कृत द का अनेक जगह ड होता है, जैसे—दण्ड = डण्ड, दंस = डंस, दोला = डोला; वैदिक साहित्य में भी ऐसे प्रयोग दुर्लभ नहीं हैं, जैसे—दुर्दभ = दूडभ (वाजसनेयसंहिता ३, ३६), पुरोदास = पुरोडाश (शुक्लयजुःप्रातिशाख्य ३, ४४)।

---

१. सकला इदं वाचो विशन्तीतश्च निर्यन्ति वाचः । आयन्ति समुद्रमेव निर्यन्ति सागरादेव जलानि ।।९३।।

७. प्राकृत में ध का ह होता है, यथा—बधिर = बहिर, व्याध = वाह; वेद-भाषा में भी ऐसा पाया जाता है, जैसे—प्रतिसंधाय = प्रतिसंहाय (गोपथब्राह्मण २, ४)।

८. प्राकृत में अनेक शब्दों में संयुक्त व्यञ्जनों के बीच में स्वर का आगम होता है, जैसे—क्लिष्ट = किलिट्ठ, स्व = सुव, तन्वी = तणुवी; वैदिक साहित्य में भी ऐसे प्रयोग विरल नहीं है, यथा—सहस्य्रः = सहस्रियः, स्वर्गः = सुवर्गः (तैत्तिरीयसंहिता ४, २, ३); तन्वः = तनुवः, स्वः = सुवः (तैत्तिरीयप्रारण्यक ७. २२, १; ६, २, ७)।

९. प्राकृत में अकारान्त पुंलिङ्ग शब्द के प्रथमा के एकवचन में ओ होता है, जैसे—देवो, जिणो, सो इत्यादि; वैदिक भाषा में भी प्रथमा के एकवचन में कहीं-कहीं ओ देखा जाता है, यथा—संवत्सरो अजायत (ऋग्वेदसंहिता १०, १९०, २), सो चित् (ऋग्वेदसंहिता १, १९१, १०-११)।

१०. तृतीया विभक्ति के बहुवचन में प्राकृत में देव आदि अकारान्त शब्दों के रूप देवेहि, गंभीरेहि, जेट्ठेहि आदि होते हैं; वैदिक साहित्य में भी इसीके अनुरूप देवेभिः, गम्भीरेभिः, ज्येष्ठेभिः आदि रूप मिलते हैं।

११. प्राकृत की तरह वैदिक भाषा में भी चतुर्थी के स्थान में षष्ठी विभक्ति होती है[1]।

१२. प्राकृत में पञ्चमी के एकवचन में देवा, वच्छा, जिणा आदि रूप होते हैं; वैदिक साहित्य में भी इसी तरह के उच्चा, नीचा, पश्चा प्रभृति उपलब्ध होते है।

१३. प्राकृत में द्विवचन के स्थान में बहुवचन ही होता है; वैदिक भाषा में भी इस तरह के अनेकों प्रयोग मौजूद हैं, यथा—'इन्द्रावरुणौ' के स्थान में 'इन्द्रावरुणा', 'मित्रावरुणौ' की जगह 'मित्रावरुणा', 'यौ सुरथौ रथितमौ दिविस्पृशावश्विनौ' के बदले 'या सुरथा रथीतमा दिविस्पृशा अश्विना', 'नरौ हे' के स्थल में 'नरा हे' आदि।

इस तहर अनेक युक्ति और प्रमाणों से यह साबित होता है कि प्राकृत की उत्पत्ति वैदिक अथवा लौकिक संस्कृत से नहीं, किन्तु वैदिक संस्कृत की उत्पत्ति जिस प्रथम स्तर की प्रादेशिक प्राकृत भाषा से पूर्व में कही गई है उसीसे हुई है। इससे यहाँ पर इस बात का उल्लेख करना आवश्यक है कि संस्कृत के अनेक आलंकारिकों ने और प्राकृत के प्रायः समस्त वैयाकरणों ने 'तत्' शब्द से संस्कृत को लेकर 'तद्भव' शब्द का जो व्यवहार 'संस्कृतभव' अर्थ में किया है वह किसी तरह संगत नहीं हो सकता। इसलिए वहाँ 'तत्' शब्द से संस्कृत के स्थान में वैदिक काल के प्राकृत का ग्रहण कर 'तद्भव' शब्द का प्रयोग 'वैदिक काल के प्राकृत से जो शब्द संस्कृत में लिया गया है उससे उत्पन्न' इसी अर्थ में करना चाहिए। संस्कृत शब्द और प्राकृत तद्भव शब्द इन दोनों का साधारण मूल वैदिक काल का प्राकृत अर्थात् पूर्वोक्त प्राथमिक प्राकृत या प्रथम स्तर का प्राकृत है। इससे जहाँ पर 'तद्भव' शब्द का सैद्धान्तिक अर्थ 'संस्कृतभव' नहीं, किन्तु 'वैदिक काल के प्राकृत से उत्पन्न' यही समझना चाहिए।

द्वितीय स्तर की प्राकृत भाषाओं का उत्पत्ति-क्रम और उनके प्रधान भेद

जब उपर्युक्त कथन के अनुसार वैदिक तथा लौकिक संस्कृत और समस्त प्राकृत भाषाओं का मूल एक ही है और वैदिक तथा लौकिक संस्कृत द्वितीय स्तर की सभी प्राकृत भाषाओं से प्राचीन हैं, तब यह कहने की कोई आवश्यकता नहीं है कि द्वितीय स्तर की प्राकृत भाषाओं के उत्पत्ति-क्रम का निर्णय एकमात्र उसी सादृश्य के तारतम्य पर निर्भर करता है जो उभय संस्कृत और प्राकृत तद्भव शब्दों में पाया जाता है। जिस प्राकृत भाषा के तद्भव शब्दों का वैदिक और लौकिक संस्कृत के साथ जितना अधिक सादृश्य होगा वह उतनी ही प्राचीन और जिसके तद्भव शब्दों का उभय संस्कृत के साथ जितना अधिक भेद होगा वह उतनी ही अर्वाचीन मानी जा सकती है, क्योंकि अधिक भेद के उत्पन्न होने में समय भी अधिक लगता है यह निर्विवाद है।

द्वितीय स्तर की जिन प्राकृत भाषाओं ने साहित्य में अथवा शिलालेखों में स्थान पाया है उनके शब्दों की वैदिक और लौकिक संस्कृत के साथ, उपर्युक्त पद्धति से तुलना करने पर, जो भेद (पार्थक्य) देखने में आते हैं उनके अनुसार द्वितीय स्तर की प्राकृत भाषाओं के निम्नोक्त प्रधान भेद (प्रकार) होते हैं, जो क्रम से इन तीन मुख्य काल-विभागों में बाँटे जा सकते हैं—(१) प्रथम युग—खिस्त-पूर्व चार सौ से लेकर खिस्त के बाद एक सौ वर्ष तक (400 B. C. to 100 A. D.); (२) मध्ययुग—खिस्त के बाद एक सौ से पाँच सौ वर्ष तक (100 A. C. to 500 A. D.); (३) शेष युग—खिस्तीय पाँच सौ से एक हजार वर्ष तक (500 A. D. to 1000 A. D.)।

---

१. "चतुर्थ्यर्थे बहुलं छन्दसि" (पाणिनि-व्याकरण २, ३, ६२)।

प्रथम युग (ख्रिस्त-पूर्व ४०० से ख्रिस्त के बाद १००)

(क) हीनयान बौद्धों के त्रिपिटक, महावंश और जातक-प्रभृति ग्रन्थों की पाली भाषा।
(ख) पैशाची और चूलिकापैशाची।
(ग) जैन अंग-ग्रन्थों की अर्धमागधी भाषा।
(घ) अंग-ग्रन्थ-भिन्न प्राचीन सूत्रों की और पउम-चरिअ आदि प्राचीन ग्रन्थों की जैन महाराष्ट्री भाषा।
(ङ) अशोक-शिलालेखों की एवं परवर्ति-काल के प्राचीन शिलालेखों की भाषा।
(च) अश्वघोष के नाटकों की भाषा।

मध्ययुग (ख्रिस्तीय १०० से ५००)

(क) त्रिवेन्द्रम् से प्रकाशित भास-रचित कहे जाते नाटकों की और बाद के कालिदास-प्रभृति के नाटकों की शौरसेनी, मागधी और महाराष्ट्री भाषाएँ।
(ख) सेतुबन्ध, गाथासप्तशती आदि काव्यों की महाराष्ट्री भाषा।
(ग) प्राकृत व्याकरणों में जिनके लक्षण और उदाहरण पाये जाते हैं वे महाराष्ट्री, शौरसेनी, मागधी, पैशाची, चूलिकापैशाची भाषाएँ।
(घ) दिगम्बर जैन ग्रन्थों की शौरसेनी और परवर्ति-काल के श्वेताम्बर ग्रन्थों की जैन महाराष्ट्री भाषा।
(ङ) चंड के व्याकरण में निर्दिष्ट और विक्रमोर्वशी में प्रयुक्त अपभ्रंश भाषा।

शेष युग (ख्रिस्तीय ५०० से १००० वर्ष)

भिन्न-भिन्न प्रदेशों की परवर्ती काल की अपभ्रंश भाषाएँ।

अब इन तीन युगों में विभक्त प्रत्येक भाषा का लक्षण और विशेष विवरण, उक्त क्रम के अनुसार (१) पालि, (२) पैशाची, (३) चूलिकापैशाची, (४) अर्धमागधी, (५) जैन महाराष्ट्री, (६) अशोकलिपि, (७) शौरसेनी, (८) मागधी, (९) महाराष्ट्री, (१०) अपभ्रंश इन शीर्षकों में क्रमशः दिया जाता है।

---

(१) पालि

निर्देश और व्युत्पत्ति

हीनयान बौद्धों के धर्म-ग्रन्थों की भाषा को पालि कहते हैं। कई विद्वानों का अनुमान है कि पालि शब्द 'पङ्क्ति' पर से बना है[1]। 'पङ्क्ति' शब्द का अर्थ है 'श्रेणी'[2]। प्राचीन बौद्ध लेखक अपने ग्रन्थ में धर्म-शास्त्र की वचन-पङ्क्ति को उद्धृत करते समय इसी पालि शब्द का प्रयोग करते थे, इससे बाद के समय में बौद्ध धर्म-शास्त्रों की भाषा का ही नाम पालि हुआ। अन्य विद्वानों का मत है कि पालि शब्द 'पङ्क्ति' पर से नहीं, परन्तु 'पल्लि' पर से हुआ है। पल्लि' शब्द असल में संस्कृत नहीं, परन्तु प्राकृत है, यद्यपि अन्य अनेक प्राकृत शब्दों की तरह यह भी पीछे से संस्कृत में लिया गया है। पल्लि शब्द जैनों के प्राचीन अंग-ग्रन्थों में भी पाया जाता है[3]। 'पल्लि' शब्द का अर्थ है ग्राम या गाँव। 'पालि' का अर्थ गावों में बोली जाती भाषा—ग्राम्य भाषा—होता है। 'पङ्क्ति' पर से 'पालि' होने की कल्पना जितनी क्लेश-साध्य है 'पल्लि' पर से 'पालि' होना उतना ही सहज-बोध्य है। इससे हमें पिछला मत ही अधिक संगत मालूम होता है। 'पालि' केवल ग्रामों की ही भाषा थी, इससे उसका यह नाम हुआ है यह बात नहीं है। बल्कि प्रदेश-विशेष के ग्रामों की तरह शहरों के भी जन-साधारण की यह भाषा थी, परन्तु संस्कृत के अनन्य-भक्त

---

१ "पङ्क्ति = पंक्ति = पंति = पण्ति = पंटि = पंलि = पल्लि = पालि; अथवा पङ्क्ति = पत्ति = पट्टि = पल्लि = पालि" (पालिप्रकाश, प्रवेशक, पृष्ठ ६)।

२ "सेतुस्सिं तन्तिपन्तीसु नालियं पालि कथ्यते" (अभिधानप्रदीपिका ९९६)।

३ देखो, विपाकश्रुत (पत्र ३८, ३९)।

ब्राह्मणों की ही ओर से इस भाषा की तरफ अपनी स्वाभाविक घृणा[1] को व्यक्त करने के लिए इसका यह नाम दिया जाना और अधिक प्रसिद्ध हो जाने के कारण पीछे से बौद्ध विद्वानों का भी मागधी की जगह इस शब्द का प्रयोग करना आश्चर्य-जनक नहीं जान पड़ता।

उक्त प्राकृत भाषा-समूह में पालि भाषा के साथ वैदिक संस्कृत का अधिक सादृश्य देखा जाता है। इसी कारण से द्वितीय स्तर की प्राकृत भाषाओं में पालि भाषा सर्वापेक्षा प्राचीन मालूम पड़ती है।

उत्पत्ति-स्थान

पालि भाषा के उत्पत्ति-स्थान के बारे में विद्वानों का मत-भेद है। बौद्ध लोग इसी भाषा को मागधी कहते हैं और उनके मत से इस भाषा का उत्पत्ति-स्थान मगध देश है। परन्तु इस भाषा का मागधी प्राकृत के साथ कोई सादृश्य नहीं है। डॉ. कोनो (Dr. Konw) और सर ग्रियर्सन ने इस भाषा का पैशाची भाषा के साथ सादृश्य देखकर पैशाची भाषा जिस देश में प्रचलित थी उसी देश को इसका उत्पत्ति-स्थान बताया है, यद्यपि पैशाची भाषा के उत्पत्ति-स्थान के विषय में इन दोनों विद्वानों का मतैक्य नहीं है। डॉ. कोनो के मत में पैशाची भाषा का उत्पत्ति-स्थान विन्ध्याचल का दक्षिण प्रदेश है और सर ग्रियर्सन का मत यह है कि 'इसका उत्पत्ति-स्थान भारतवर्ष का उत्तर-पश्चिम प्रान्त है; वहाँ उत्पन्न होने के बाद संभव है कि कोंकण-प्रदेश-पर्यन्त इसका विस्तार हुआ हो और वहाँ इससे पाली भाषा की उत्पत्ति हुई हो।' परन्तु पालि भाषा अशोक के गुजरात-प्रदेश-स्थित गिरनार के शिलालेख के अनुरूप होने के कारण यह मगध में नहीं, किन्तु 'भारतवर्ष के पश्चिम प्रान्त में उत्पन्न हुई है और वहाँ से सिंहल देश में ले जाई गई है' यही मत विशेष संगत प्रतीत होता है, क्योंकि निम्नोक्त उदाहरणों से पालिभाषा का गिरनार-शिलालेख के साथ सादृश्य और पूर्व-प्रान्त-स्थित धौलि (खंडगिरि) शिलालेख के साथ पार्थक्य देखा जाता है—

संस्कृत	पाली	गिरनारशिला०	धौलिशिला०
राज्ञः	राजिनो, रञ्ञो	राञो	लजिने
कृतम्	कतं	कतं	कटे

इस विषय में डॉ. सुनीतिकुमार चटर्जी का कहना है कि "बुद्धदेव[2] के समस्त उपदेश मागधी भाषासे बाद के समय में मध्यदेश (Doab) की शौरसेनी प्राकृत में अनुवादित हुए थे और वे ही खिस्त-पूर्व प्रायः दो सौ वर्ष से पालि-भाषा के नाम से प्रसिद्ध हुए हैं।" किन्तु सच तो यह है कि पालि भाषा का शौरसेनी और मागधी की अपेक्षा पैशाची के साथ ही अधिक सादृश्य है जो निम्नोक्त उदाहरणों से स्पष्ट जाना जाता है।

संस्कृत	पालि	पैशाची	शौरसेनी	मागधी
*क[3] (लोक)	क (लोक)	क (लोक)	० (लोअ)	० (लोअ)
*ग (नग)	ग (नग)	ग (नग)	० (णअ)	० (णअ)
*च (शची)	च (सची)	च (सची)	० (सई)	० (शई)
*ज (रजत)	ज (रजत)	ज (रजत)	० (रअद)	० (लअद)
*त (कृत)	त (कत)	त (कत)	द (कद)	ड (कड)
र (कर)	र (कर)	र (कर)	र (कर)	ल (कल)

---

१. "लोकायतं कुतर्कं च प्राकृतं म्लेच्छभाषितम्।
न श्रोतव्यं द्विजेनैतदधो नयति तद् द्विजम्॥" (गरुडपुराण, पूर्वखण्ड ९८. १७)।

२. The Origin and Development of the Bengalee Language, VoL. I, page 57.

३. इन उदाहरणों में प्रथम वह अक्षर दिया गया है जिसका उस उस भाषा के नीचे दिए गए अक्षरों में परिवर्तन होता है और अक्षर के बाद ब्राकेट में उसी अक्षरवाला शब्द स्पष्टता के लिए दिया गया है।

* स्वर वर्णों के मध्यवर्ती असंयुक्त वर्ण।

संस्कृत	पालि	पैशाची	शौरसेनी	मागधी
श (वश)	स (वस)	स (वस)	स (वस)	श (वश)
ष (मेष)	स (मेस)	स (मेस)	स (मेस)	श (मेश)
स (सारस)	स (सारस)	स (सारस)	स (सारस)	श (शालश)
न (वचन)	न (वचन)	न (वचन)	ण (वअण)	ण (वअण)
ट्ट (पट्ट)	ट्ट (पट्ट)	ट्ट (पट्ट)	ट्ट (पट्ट)	स्ट (पस्ट)
र्थ (अर्थ)	त्थ (अत्थ)	त्थ (अत्थ)	त्थ (अत्थ)	स्त (अस्त)
स्[1] (वृक्षः)	ओ (रुक्खो)	ओ (रुक्खो)	ओ (रुक्खो)	ए (लुक्खे)

उत्पत्ति-समय

पालि भाषा की उत्पत्ति का समय ख्रिस्त के पूर्व षष्ठ शताब्दी कहा जाता है, किन्तु वह काल बुद्धदेव की समसामयिक कथ्य मागधी भाषा का हो सकता है। पालि कथ्य भाषा नहीं, परन्तु बौद्ध धर्म-साहित्य की भाषा है। संभवतः यह भाषा ख्रिस्त के पूर्व चतुर्थ या पञ्चम शताब्दी में पश्चिम भारत में उत्पन्न हुई थी।

इस पालि-भाषा से आधुनिक सिंहली भाषा की उत्पत्ति हुई है।

प्राकृत शब्द से साधारणतः पालि-भिन्न अन्य भाषाएँ ही समझी जाती हैं। इससे, और पालि भाषा के अनेक स्वतन्त्र कोष होने से, प्रस्तुत कोष में पालि भाषा के शब्दों को स्थान नहीं दिया गया है। इसलिए पालि भाषा की विशेष आलोचना करने की यहाँ आवश्यकता नहीं है।

(२) पैशाची

निदर्शन

गुणाढ्य ने [2]बृहत्कथा पैशाची भाषा में लिखी थी, जो लुप्त हो गई है। इस समय पैशाची भाषा के उदाहरण प्राकृतप्रकाश, आचार्य हेमचन्द्र का प्राकृतव्याकरण, षड्भाषाचन्द्रिका, प्राकृत-सर्वस्व और संक्षिप्तसार आदि प्राकृत-व्याकरणों में आचार्य हेमचन्द्र के कुमारपाल-चरित तथा [3]काव्यानुशासन में, मोहराज-पराजय नामक नाटक में और दो-एक षड्भाषास्तोत्रों में मिलते हैं।

भरत के नाट्यशास्त्र में पैशाची नाम का उल्लेख देखने में नहीं आता है, परन्तु इसके परवर्ती [4]रुद्रट, [5]केशवमिश्र आदि संस्कृत के आलंकारिकों ने इसका उल्लेख किया है। वाग्भट ने इस भाषा को [6]'भूतभाषित' के नाम से अभिहित की है।

विनियोग

[7]वाग्भट तथा [8]केशवमिश्र ने क्रम से भूत और पिशाच-प्रभृति पात्रों के लिए और [9]षड्भाषा-चन्द्रिकाकार ने राक्षस, पिशाच और नीच पात्रों के लिए इसका विनियोग बतलाया है।

---

१. पुंलिंग में प्रथमा के एक वचन का प्रत्यय।

२. आचार्य उद्द्योतन की कुवलय-माला में, दण्डी के काव्यादर्श में, बाण के हर्षचरित में, धनञ्जय के दशरूपक में, सुबन्धु की वासवदत्ता में और अन्यान्य प्राकृत-संस्कृत ग्रंथों में इसका उल्लेख पाया जाता है। क्षेमेन्द्रकृत बृहत्कथामञ्जरी और सोमदेवभट्ट-प्रणीत कथासरित्सागर इसी बृहत्कथा का संस्कृत अनुवाद है। इस बृहत्कथा के ही भिन्न-भिन्न अंशों के आधार पर बाण, श्रीहर्ष, भवभूति आदि संस्कृत के महाकवियों की कादम्बरी, रत्नावली, मालतीमाधव-प्रभृति अनेक संस्कृत ग्रंथों की रचना की गई है।

३. पृष्ठ २२९; २३३।

४. काव्यालंकार २, १२।

५. 'संस्कृतं प्राकृतं चैव पैशाची मागधी तथा' (अलङ्कार शेखर, पृष्ठ ५)।

६. 'संस्कृतं प्राकृतं तस्यापभ्रंशो भूतभाषितम्' (वाग्भटालङ्कार २, १)।

७. 'यद् भूतैरुच्यते किञ्चित् तद्भौतिकमिति स्मृतम्' (वाग्भटालङ्कार २, ३)।

८. 'पैशाचीं तु पिशाचाद्याः प्राहुः' (अलङ्कारशेखर, पृष्ठ ५)।

९. रक्षःपिशाचनीचेषु पैशाचीद्वितयं भवेत् ॥३५॥' (षड्भाषा-चन्द्रिका, पृष्ठ ३)।

षड्भाषाचन्द्रिकाकार पिशाच-देशों की भाषा को ही पैशाची कहते हैं और पिशाच-देशों के निर्देश के लिए नीचे

उत्पत्ति-स्थान

के श्लोकों को उद्धृत करते हैं :—

'पाण्ड्यकेकयवाह्लीकसह्यनेपालकुन्तलाः[1] ।
सुधेष्णभोजगान्धारहैवकन्नोजनास्तथा ।
एते पिशाचदेशाः स्युः'

मार्कण्डेय ने अपने प्राकृतसर्वस्व में प्राकृतचन्द्रिका के

'काञ्चीदेशीयपाण्ड्यं च पाञ्चालं गौड-मागधम् ।
व्राचडं दाक्षिणात्यं च शौरसेनं च कैकयम् ॥
शाबरं द्राविडं चैव एकादश पिशाचजाः ।

इस वचन को उद्धृत कर ग्यारह प्रकार की पैशाची का उल्लेख किया है; परन्तु बाद में इस मत का खण्डन करके सिद्धान्त रूप से इन तीन प्रकार की पैशाची का ग्रहण किया है; यथा—'कैकयं शौरसेनं च पाञ्चालमिति च त्रिधा पैशाच्यः' ।

लक्ष्मीधर और मार्कण्डेय ने जिन प्राचीन वचनों का उल्लेख किया है उनमें पाण्ड्य, काञ्ची और कैकय आदि प्रदेश एक दूसरे से अतिदूरवर्ती प्रान्तों में अवस्थित हैं। इतने दूरवर्ती प्रदेश एकदेशीय भाषा के उत्पत्ति-स्थान कैसे हो सकते हैं? यदि पैशाची भाषा किसी प्रदेश की भाषा न हो कर भिन्न भिन्न प्रदेशों में रहनेवाली किसी जाति-विशेष की भाषा हो तो इसका संभव इस तरह हो भी सकता है कि पूर्वकाल में किसी एक देश-विशेष में रहनेवाली पिशाच-प्राय मनुष्य-जाति बाद में भिन्न-भिन्न देशों में फैलती हुई वहाँ अपनी भाषा को ले गई हो। मार्कण्डेय-निर्दिष्ट तीन प्रकार की पैशाची परस्पर संनिहित प्रदेशों की भाषा है, इससे खूब ही संभव है कि यह पहले केकय देश में उत्पन्न हुई हो और बाद में उसी के समीपस्थ शूरसेन और पञ्जाब तक फैल गई हो। मार्कण्डेय ने शौरसेन-पैशाची और पाञ्चाल-पैशाची की प्रकृति जो कैकय-पैशाची कही है इसका मतलब भी यही हो सकता है। सर ग्रियर्सन के मत में पिशाच-भाषा-भाषी लोगों का आदिम वास-स्थान उत्तर-पश्चिम पञ्जाब अथवा अफगानिस्थान का प्रान्त प्रदेश है और बाद में वहाँ से ही संभवतः इसका अन्य देशों में विस्तार हुआ है। किन्तु डॉ॰ हॉर्नलि का इस विषय में और ही मत है। उनका कहना यह है कि अनार्य जाति के लोग आर्य-जाति की भाषा का जिस विकृत रूप में उच्चारण करते थे वही पैशाची भाषा है, अर्थात् इनके मत से पैशाची भाषा न तो किसी देश-विशेष की भाषा है और न वह वास्तव में भिन्न भाषा ही है। हमें सर ग्रियर्सन का मत ही प्रामाणिक प्रतीत होता है जो मार्कण्डेय के मत के साथ अनेकांश में मिलता-जुलता है।

प्रकृति

वररुचि ने शौरसेनी प्राकृत को ही पैशाची भाषा का मूल कहा है[2]। मार्कण्डेय ने पैशाची भाषा को कैकय, शौरसेन और पाञ्चाल इन तीन भेदों में विभक्त कर संस्कृत और शौरसेनी उभय को कैकय-पैशाची का और कैकय-पैशाची को शौरसेन-पैशाची का मूल बतलाया है। पाञ्चाल-पैशाची के मूल का उन्होंने निर्देश ही नहीं किया है, किन्तु उन्होंने इसके जो केरी (केलिः) और मंदिलं (मन्दिरम्) ये दो उदाहरण दिये हैं इससे मालूम होता है कि इस पाञ्चाल-पैशाची का कैकय-पैशाची से रकार और लकार के व्यत्यय के अतिरिक्त अन्य कोई भेद नहीं है, सुतरां शौरसेन-पैशाची की तरह पाञ्चाल-पैशाची की प्रकृति भी इनके मत से कैकय-पैशाची ही हो सकती है। यहाँ पर यह कहना आवश्यक है कि मार्कण्डेय ने शौरसेन-पैशाची के जो[3] लक्षण दिए हैं उन पर से शौरसेन-पैशाची का

---

१. वर्तमान मदुरा और कन्याकुमारी के आसपास के प्रदेश का नाम पाण्ड्य, पञ्चनद प्रदेश का नाम केकय, अफगानिस्थान के वर्तमान बाल्खनगरवाले प्रदेश का नाम वाह्लीक, दक्षिण भारत के पश्चिम उपकूल का नाम सह्य, नर्मदा के उत्पत्ति-स्थान के निकटवर्ती देश का नाम कुन्तल, वर्तमान काबुल और पेशावरवाले प्रदेश का नाम गान्धार, हिमालय के निम्न-वर्ती पार्वत्य प्रदेश-विशेष का नाम हैव और दक्षिण महाराष्ट्र के पार्वत्य अञ्चल का नाम कन्नोजन है।

२. "प्रकृतिः शौरसेनी" (प्राकृतप्रकाश १०, २)।

३. "सस्य शः", "रस्य लो भवेत्", "चवर्गस्योपरिष्टाद् यः" "कृतादिषु कडादयः", "क्षस्य च्छं", "स्थाविकृतेः ष्टस्य स्तः", "तत्थयोः श ऊर्ध्वं स्यात्", "अतः सोरो (?रे) त्" (प्राकृतसर्वस्व, पृष्ठ १२६)।

शौरसेनी भाषा के साथ कोई भी संबन्ध प्रतीत नहीं होता, क्योंकि कैकय-पैशाची के साथ शौरसेन-पैशाची के जो भेद उन्होंने बतलाए हैं वे मागधी भाषा के ही अनुरूप हैं, न कि शौरसेनी के। इससे इसको शौरसेन-पैशाची न कह कर मागध-पैशाची कहना ही संगत जान पड़ता है।

प्राकृत वैयाकरणों के मत से पैशाची भाषा का मूल शौरसेनी अथवा संस्कृत भाषा है, किन्तु हम पहले यह भलीभाँति दिखा चुके हैं कि कोई भी प्रादेशिक कथ्य भाषा, संस्कृत अथवा अन्य प्रादेशिक भाषा से उत्पन्न नहीं है, परन्तु वह उसी कथ्य अथवा प्राकृत भाषा से उत्पन्न हुई है जो वैदिक युग में उस प्रदेश में प्रचलित थी। इस लिए पैशाची भाषा का भी मूल संस्कृत या शौरसेनी नहीं, किन्तु वह प्राकृत भाषा ही है जो वैदिक युग में भारतवर्ष के उत्तर-पश्चिम प्रान्त की या अफगानिस्थान के पूर्व-प्रान्त-वर्ती प्रदेश की कथ्य भाषा थी।

प्रथम युग का पैशाची भाषा का कोई निदर्शन साहित्य में नहीं मिलता है। गुणाढ्य की बृहत्कथा संभवतः इसी प्रथम युग की पैशाची भाषा में रची गई थी; किन्तु वह आजकल उपलब्ध नहीं है। इस समय हम व्याकरण, नाटक और काव्य में पैशाची भाषा के जो निदर्शन पाते हैं वह मध्ययुग की पैशाची भाषा का है। मध्ययुग की यह पैशाची भाषा खिस्त की द्वितीय शताब्दी से पाँचवीं शताब्दी पर्यन्त प्रचलित थी। समय।

पैशाची भाषा का शौरसेनी भाषा के साथ जिस-जिस अंश में भेद है वह सामान्य रूप से नीचे दिया जाता है। इसके सिवा अन्य सभी अंशों में वह शौरसेनी के ही समान है। इससे इसके बाकी के लक्षण शौरसेनी के प्रकरण से जाने जा सकते हैं। लक्षण

वर्ण-भेद

१. ज्ञ, न्य और ण्य के स्थान में ञ्ञ होता है; यथा—प्रज्ञा = पञ्ञा; ज्ञान = ञ्ञान; कन्यका = कञ्ञका; अभिमन्यु = अभिमञ्ञु; पुण्य = पुञ्ञ।
२. ण और न के स्थान में न होता है; जैसे—गुण = गुन; कनक = कनक।
३. त और द की जगह त होता है; जैसे—भगवती = भगवती; शत = सत; मदन = मतन; देव=तेव।
४. लकार ळ में बदलता है; यथा—सील=सीळ; कुल = कुळ।
५. ट की जगह ट और त होता है; जैसे—कुटुम्बक, कुटुम्बक, कुतुम्बक।
६. महाराष्ट्री के लक्षण में असंयुक्त-व्यञ्जन-परिवर्तन के १ से १३, १५ और १६ अंकवाले जो नियम बतलाए गए हैं वे शौरसेनी भाषा में लागू होते हैं, किन्तु पैशाची में नहीं; यथा—लोक = लोक; शाखा = साखा; भट = भट; मठ = मठ; गरुड = गरुड; प्रतिभास = पतिभास; कनक = कनक; शपथ = सपथ; रेफ = रेफ; शबल = सबळ; यशस् = यस; करणीय = करनीय; अंगार = इंगार; दाह = दाह।
७. यादृश आदि शब्दों का दृ परिणत होता है ति में; यथा—यादृश = यातिस; सदृश = सतिस।

नाम-विभक्ति

१. अकारान्त शब्द की पञ्चमी का एकवचन आतो और आतु होता है; जैसे—जिनातो, जिनातु।

आख्यात

१. शौरसेनी के दि और दे प्रत्ययों की जगह ति और ते होता है; यथा—गच्छति, गच्छते; रमति, रमते।
२. भविष्य-काल में स्सि के बदले एय्य होता है; जैसे—भविष्यति = हुवेय्य।
३. भाव और कर्म में ईअ तथा इज्ज के स्थान में इय्य होता है; यथा—पठ्यते = पठिय्यते, हसिय्यते।

कृदन्त

१. त्वा प्रत्यय के स्थान में कहीं तून और कहीं त्थून और द्धून होते हैं; यथा पठित्वा = पठितून; गत्वा = गन्तून; नष्ट्वा = नत्थून, नद्धून; तष्ट्वा = तत्थून, तद्धून।

(३) चूलिकापैशाची

चूलिकापैशाची भाषा के लक्षण आचार्य हेमचन्द्र ने अपने प्राकृत-व्याकरण में और पंडित लक्ष्मीधर ने अपनी षड्भाषाचन्द्रिका में दिए हैं। आचार्य हेमचन्द्र के कुमारपालचरित और काव्यानुशासन में इस भाषा के निदर्शन पाये जाते हैं। इनके अतिरिक्त हम्मीरमदमर्दन नामक नाटक में और दो-एक छोटे-छोटे षड्भाषास्तोत्रों में भी इसके कुछ नमूने देखने में आते हैं।

निदर्शन

प्राकृतलक्षण, प्राकृतप्रकाश, संक्षिप्तसार और प्राकृतसर्वस्व वगैरह प्राकृत-व्याकरणों में और संस्कृत के अलंकार ग्रन्थों में चूलिकापैशाची का कोई उल्लेख नहीं है; अथ च आचार्य हेमचन्द्र ने और पं. लक्ष्मीधर ने चूलिकापैशाची के जो लक्षण दिए हैं वे चंड, वररुचि, क्रमदीश्वर और मार्कण्डेय-प्रभृति वैयाकरणों ने पैशाची भाषा के लक्षणों में ही अन्तर्गत किए हैं। इससे यह स्पष्ट जाना जाता है कि उक्त वैयाकरण-गण चूलिकापैशाची को पैशाची भाषा के अन्तर्भूत ही मानते थे, स्वतन्त्र भाषा के रूप में नहीं। आचार्य हेमचन्द्र भी अपने अभिधानचिन्तामणि नामक संस्कृत कोष-ग्रन्थ के "भाषाः षट् संस्कृतादिकाः (काण्ड २,१९९) इस वचन की "संस्कृत-प्राकृत-मागधी-शौरसेनी-पैशाच्यपभ्रंशलक्षणाः' यह व्याख्या करते हुए चूलिकापैशाची का अलग उल्लेख नहीं करते। इससे मालूम पड़ता है कि वे भी चूलिकापैशाची को पैशाची का ही एक भेद मानते हैं। हमारा भी यही मत है। इससे यहाँ पर इस विषय में पैशाची भाषा के अनन्तरोक्त विवरण से कुछ अधिक लिखने की आवश्यकता नहीं रहती। सिर्फ आचार्य हेमचन्द्र ने और उन्हीं का पूरा अनुसरण कर पं० लक्ष्मीधर ने इस भाषा के जो लक्षण दिए हैं वे नीचे उद्धृत किए जाते हैं। इनके सिवा सभी अंशों में इस भाषा का पैशाची से कोई पार्थक्य नहीं है।

पैशाची में इसका अन्तर्भाव

लक्षण

१. वर्ग के तृतीय और चतुर्थ अक्षरों के स्थान में क्रमशः प्रथम और द्वितीय होता है[1]; यथा—नगर = नकर, व्याघ्र = वक्ख, राजा = राचा, निर्भर = निच्छर, तडाग = तटाक, ढक्का = ठक्का, मदन = मतन, मधुर = मथुर, बालक = पालक, भगवती = फकवती।

२. र के स्थान में वैकल्पिक ल होता है; यथा—रुद्र = लुद्द, रुद्द।

(४) अर्धमागधी

भगवान् महावीर अपना धर्मोपदेश अर्धमागधी भाषा में देते थे[2]। इसी उपदेश के अनुसार उनके समसामयिक गणधर श्री सुधर्मस्वामी ने अर्धमागधी भाषा में ही आचाराङ्ग-प्रभृति सूत्र-ग्रन्थों की रचना की थी[3]। ये ग्रन्थ उस समय लिखे नहीं गए थे, परन्तु शिष्य परम्परा से कण्ठ-पाठ द्वारा संरक्षित होते थे। दिगम्बर जैनों के मत से ये समस्त ग्रन्थ विलुप्त हो गए हैं, परन्तु श्वेताम्बर जैन दिगम्बरों के इस मन्तव्य से सहमत नहीं हैं। श्वेताम्बरों के मत के अनुसार ये सूत्र-ग्रन्थ महावीर-निर्वाण के बाद ९८० अर्थात् खिस्ताब्द ४५४ में वलभी (वर्तमान वळा, काठियावाड़) में श्रीदेवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण ने वर्तमान आकार में लिपिबद्ध किए। उस समय लिखे जाने पर भी इन ग्रन्थों की भाषा प्राचीन है। इसका एक कारण यह है कि जैसे ब्राह्मणों ने कण्ठ-पाठ-द्वारा बहु-शताब्दी-पर्यन्त वेदों की रक्षा की थी वैसे ही जैन मुनियों ने भी अपनी शिष्य-परम्परा से मुख-पाठ द्वारा करीब एक हजार वर्ष तक अपने इन पवित्र ग्रन्थों को याद रखा था। दूसरा यह है कि जैन धर्म में सूत्र-पाठों के शुद्ध उच्चारण के लिए खूब जोर दिया गया है, यहाँ तक कि मात्रा या अक्षर के भी अशुद्ध या विपरीत उच्चारण करने में दोष माना गया है। तिस पर भी सूत्र-ग्रन्थों की भाषा का सूक्ष्म निरीक्षण करने से इस बात को स्वीकार करना ही पड़ेगा कि भगवान् महावीर के समय की अर्ध-

प्राचीन जैन सूत्रों की भाषा अर्धमागधी

---

१. अन्य वैयाकरणों के मत से यह नियम शब्द के आदि के अक्षरों में लागू नहीं होता है (हे० प्रा० ४, ३२७)।

२. "भगवं च णं अद्धमाहीए भासाए धम्ममाइक्खइ" (समवायाङ्ग सूत्र, पत्र ६०)।
"तए णं समणे भगवं महावीरे कूणिअस्स रएणो भिंभिसारपुत्तस्स'.....'अद्धमागहाए भासाए भासइ।.......'सा वि य णं अद्धमागहा भासा तेसिं सव्वेसिं आरियमणारियाणं अप्पणो सभासाए परिणामेणं परिणमइ" (औपपातिक सूत्र)।

३. "अत्थं भासइ अरिहा, सुत्तं गंथंति गणहरा निउणं" (आवश्यकनिर्युक्ति)।

मागधी भाषा के इन ग्रन्थों में, अज्ञातभाव से ही क्यों न हो, भाषा-विषयक परिवर्तन अवश्य हुआ है। यह परिवर्तन होना असंभव भी नहीं है, क्योंकि ये सूत्र-ग्रन्थ वेदों की तरह शब्द-प्रधान नहीं, किन्तु अर्थ-प्रधान हैं। इतना ही नहीं, बल्कि ये ग्रन्थ जन-साधारण के बोध के लिये ही उस समय की कथ्य भाषा में रचे गये थे[1] और कथ्य भाषा में समय गुजरने के साथ-साथ अवश्य होनेवाले परिवर्तन का प्रभाव, कण्ठ-पाठ के रूप में स्थित इन सूत्रों की भाषा पर पड़ना, अन्ततः उस-उस समय के लोगों को समझाने के उद्देश्य से भी, आश्चर्यकर नहीं है। इसके सिवा, भाषा-परिवर्तन का यह भी एक मुख्य कारण माना जा सकता है कि भगवान् महावीर के निर्वाण से करीब दो सौ वर्ष के बाद (खिस्त-पूर्व ३१०) चन्द्रगुप्त के राजत्व-काल में मगध देश में बारह वर्षो[2] का सुदीर्घ अकाल पड़ने पर साधु लोगों को निर्वाह के लिए समुद्र-तीर-वर्ती प्रदेश (दक्षिण देश) में जाना पड़ा था। उस समय वे सूत्र ग्रन्थों का परिशीलन न कर सकने के कारण उन्हें भूल से गए थे। इससे अकाल के बाद पाटलिपुत्र में संघ ने एकत्रित होकर जिस-जिस साधु को जिस-जिस अङ्ग-ग्रन्थ का जो-जो अंश जिस-जिस आकार में याद रह गया था, उस-उस से उस-उस अङ्ग-ग्रन्थ के उस-उस अंश को उस-उस रूप में प्राप्त कर ग्यारह अङ्ग-ग्रन्थों का संकलन किया[3]। इस घटना से जैसे अङ्गग्रन्थों की भाषा के परिवर्तन का कारण समझ में आ सकता है, वैसे इन ग्रन्थों की अर्धमागधी भाषा में, मगध के पार्श्ववर्ती प्रदेशों की भाषाओं की तुलना में दूरवर्ती महाराष्ट्रप्रदेश की भाषा का जो अधिक साम्य देखा जाता है उसके कारण का भी पता चलता है। जब ऐतिहासिक प्रमाणों से यह बात सिद्ध है कि दक्षिण प्रदेश में प्राचीन काल में जैन धर्म का अच्छी तरह प्रचार और प्रभाव हुआ था तब यह अनुमान करना अयुक्त नहीं है कि उक्त दीर्घकालिक अकाल के समय साधु लोग समुद्र-तीर-वर्ती इस दक्षिण देश में ही गए थे और वहाँ उन्होंने उपदेश-द्वारा जैन धर्म का प्रचार किया था। यह कहने की कोई आवश्यकता नहीं है कि उक्त साधुओं को दक्षिण प्रदेश में उस समय जो भाषा प्रचलित थी उसका अच्छी तरह ज्ञान हो गया था, क्योंकि उसके विना उपदेश-द्वारा धर्म-प्रचार का कार्य वे कर ही नहीं सकते थे। इससे यह असंभव नहीं है कि उन साधुओं की इस नव-परिचित भाषा का प्रभाव, उनके कण्ठ-स्थित सूत्रों की भाषा पर भी पड़ा था। इसी प्रभाव को लेकर उनमें से कईएक साधु-लोग पाटलिपुत्र के उक्त संमेलन में उपस्थित हुए थे, जिससे अङ्गों के पुनः संकलन में उस प्रभाव ने न्यूनाधिक अंश में स्थान पाया था।

उक्त घटना से करीब आठ सौ वर्षों के बाद वलभी (सौराष्ट्र) और मथुरा में जैन ग्रन्थों को लिपि-बद्ध करने के लिए मुनि-संमेलन किए गए थे, क्योंकि इन सूत्र-ग्रन्थों का और उस समय तक अन्य जो जैन ग्रन्थ रचे गए थे उनका भी क्रमशः विस्मरण हो चला था और यदि वही दशा कुछ अधिक समय तक चालू रहती तो समग्र जैन शास्त्रों के लोप हो जाने का डर था जो वास्तव में सत्य था। संभवतः इस समय तक जैन साधुओं का भारतवर्ष के अनेक प्रदेशों में विस्तार हो चुका था और इन समस्त प्रदेशों से अल्पाधिक संख्या में आकर साधु लोगों ने इन संमेलनों में योग-दान किया था। भिन्न-भिन्न प्रदेशों से आगत इन मुनियों से जो ग्रन्थ अथवा ग्रन्थ के अंश जिस रूप में प्राप्त हुआ उसी रूप में वह लिपि-बद्ध किया गया। उक्त मुनियों के भिन्न-भिन्न प्रदेशों में चिर-काल तक विचरने के कारण उन प्रदेशों को भिन्न-भिन्न भाषाओं का,

---

१. "मुत्तूण दिट्ठिवायं कालियउक्कालियंगसिद्धंतं।
थीबालवायणत्थं पाययमुइयं जिणवरेहिं॥"
(आचारविनकर में श्रीवर्धमानसूरि द्वारा उत्धृत की हुई प्राचीन गाथा)।
"बालस्त्रीमन्दमूर्खाणां नृणां चारित्रकाङ्क्षिणाम्।
अनुग्रहार्थं तत्त्वज्ञैः सिद्धान्तः प्राकृतः कृतः॥"
(हरिभद्रसूरि की दशवैकालिक टीका में और हेमचन्द्र के काव्यानुशासन में उद्धृत प्राचीन श्लोक)।

२. देखो Annual Report of Asiatic Society, Bengal, 1898 में डॉ. हॉर्नलि का लेख।

३. "इतश्च तस्मिन् दुष्काले कराले कालरात्रिवत्। निर्वाहार्थं साधुसङ्घस्तीरं नीरनिधेर्ययौ॥५५॥
अगुण्यमानं तु तदा साधूनां विस्मृतं श्रुतम्। अनभ्यसनतो नश्यत्यधीतं धीमतामपि॥५६॥
संघोऽथ पाटलीपुत्रे दुष्कालान्तेऽखिलोऽमिलत्। यदङ्गाध्ययनोद्देशाद्यासीद् यस्य तदाददे॥५७॥
ततश्चैकादशाङ्गानि श्रीसंघोऽमेलयत् तदा। दृष्टिवादनिमित्तं च तस्थौ किञ्चिद् विचिन्तयन्॥५८॥
नेपालदेशमार्गस्थं भद्रबाहुं च पूर्विणम्। ज्ञात्वा संघः समाह्वातुं ततः प्रैषीन्मुनिद्वयम्॥५९॥
(स्थविरावलीचरितं, सर्ग ९)।

उच्चारणों का और विभिन्न प्राकृत भाषाओं के व्याकरणों का कुछ-न-कुछ अलक्षित प्रभाव उनके कण्ठ-स्थित धर्म-ग्रन्थों की भाषा पर भी पड़ना अनिवार्य था ! यही कारण है कि अंग-ग्रन्थों में, एक ही अङ्ग-ग्रन्थ के भिन्न-भिन्न अंशों में और कहीं-कहीं तो एक ही अंग-ग्रन्थ के एक ही वाक्य में परस्पर भाषा-भेद नजर आता है। संभवतः भिन्न-भिन्न प्रदेशों की भाषाओं के प्रभाव से युक्त इसी भाषा-भेद को लक्ष्य में लेकर खिस्त की सप्तम शताब्दी के ग्रन्थकार श्रीजिनदासगणि ने अपनी निशीथ-चूर्णि में अर्धमागधी भाषा का "अट्ठारसदेसीभासानिययं वा अद्धमागहं" यह वैकल्पिक लक्षण किया है। भाषा-परिवर्तन के उक्त अनेक प्रबल कारण उपस्थित होने पर भी अंग-ग्रन्थों की अर्धमागधी भाषा में, पाटलिपुत्र के संमेलन के बाद से, आमूल वा अधिक परिवर्तन न होकर उसके बदले जो सूक्ष्म या अल्प ही भाषा-भेद हुआ है और सैकड़ों की तादाद में उसके प्राचीन रूप अपने असल आकार में जो संरक्षित रह सके हैं उसका श्रेय सूत्रों के अशुद्ध उच्चारण आदि के लिए प्रदर्शित पाप-बन्ध के उस धार्मिक नियम को है जो संभवतः पाटलीपुत्र के संमेलन के बाद निर्मित या दृढ़ किया गया था।

यहाँ पर प्रसंग-वश इस बात का उल्लेख करना उचित प्रतीत होता है कि [1]समवायांग सूत्र में निर्दिष्ट अंग-ग्रन्थ-सम्बन्धी विषय और परिमाण का वर्तमान अङ्ग-ग्रन्थों में कहीं-कहीं जो थोड़ा-बहुत क्रमशः विसंवाद और ह्रास पाया जाता है और अङ्ग-ग्रन्थों में ही बाद के [2]उपाङ्ग-ग्रन्थों का और बाद की [3]घटनाओं का जो उल्लेख दृष्टिगोचर होता है उसका समाधान भी हमको उक्त सम्मेलनों की घटनाओं से अच्छी तरह मिल जाता है।

अर्धमागधी और आर्ष एक हैं

[4]समवायाङ्ग सूत्र, व्याख्याप्रज्ञप्ति सूत्र, औपपातिक सूत्र और प्रज्ञापना सूत्र में तथा अन्यान्य प्राचीन जैन ग्रन्थों में जिस भाषा को अर्धमागधी नाम दिया गया है, [5]स्थानाङ्गसूत्र और अनुयोगद्वारसूत्र में जिस भाषा को 'ऋषिभाषिता' कहा गया है और सम्भवतः इसी 'ऋषिभाषिता' पर से [6]आचार्य हेमचन्द्र आदि ने जिस भाषा की 'आर्ष (ऋषियों की भाषा)' संज्ञा रखी है वह वस्तुतः एक ही भाषा है अर्थात् अर्धमागधी, ऋषिभाषिता और आर्ष ये तीनों एक ही भाषा के भिन्न-भिन्न नाम हैं, जिनमें पहला उसके उत्पत्ति-स्थान से और बाकी के दो उस भाषा को सर्व-प्रथम साहित्य में स्थान देनेवालों से सम्बन्ध रखते हैं। जैन सूत्रों की भाषा यही अर्ध-मागधी, ऋषिभाषिता या आर्ष है। आचार्य हेमचन्द्र ने अपने प्राकृत-व्याकरण में आर्ष प्राकृत के जो लक्षण और उदाहरण

---

१. समवायाङ्ग सूत्र, पत्र १०६ से १२५।

२. "जहा पन्नवणाए पढमए आहारुद्देसए" (व्याख्याप्रज्ञप्ति सूत्र १, १—पत्र १९)।

३. देखो, स्थानाङ्ग सूत्र, पत्र ४१० में वर्णित निह्नव-स्वरूप।

४. देखो, पृष्ठ १९ में दिया हुआ समवायाङ्गसूत्र और औपपातिकसूत्र का पाठ।
"देवा णं भंते ! कयराए भासाए भासंति ? कयरा वा भासा भासिज्जमाणी विसिस्सति ? गोयमा ! देवा णं अद्धमागहाए भासाए भासंति, सावि य णं अद्धमागहा भासा भासिज्जमाणी विसिस्सति।" (व्याख्याप्रज्ञप्तिसूत्र ५, ४—पत्र २२१)।
"से किं तं भासारिया ? भासारिया जे णं अद्धमागहाए भासाए भासंति" (प्रज्ञापनासूत्र १—पत्र ६२)।
मगहद्धविसयभासाणिबद्धं अद्धमागहं, अट्ठारसदेसीभासाणिययं वा अद्धमागहं" (निशीथचूर्णि)।
"आरिसवयणे सिद्धं देवाणं अद्धमागहा वाणी" (काव्यालंकार की नमिसाधुकृतटीका २, १२)।
"सर्वार्धमागधीं सर्वभाषासु परिणामिनीम्।
सर्वेषां सर्वतो वाचं सार्वज्ञीं प्रणिदध्महे॥" (वाग्भटकाव्यानुशासन, पृष्ठ २)।

५. "सक्कता पागता चेव दुहा भणितीओ आहिया।
सरमंडलम्मि गिज्जंते पसत्था इसिभासिता॥" (स्थानाङ्गसूत्र ७—पत्र ३९४)।
"सक्कया पायया चेव भणिईओ होंति दोण्णि वा।
सरमंडलम्मि गिज्जंते पसत्था इसिभासिआ॥" (अनुयोगद्वारसूत्र, पत्र १३१)।

६. देखो, हेमचन्द्र-प्राकृतव्याकरण का सूत्र १, ३।
"आर्षोत्थमार्षतुल्यं च द्विविधं प्राकृतं विदुः" (प्रेमचन्द्रतर्कवागीश द्वारा काव्यादर्शटीका १, ३३ में उद्धृत किया हुआ पद्यांश)।

बताए हैं उनसे तथा "अत एत् सौ पुंसि मागध्याम्[1] (है० प्रा० ४, २८७) इस सूत्र की व्याख्या में जो "[2]यदपि "[3]पोराणमद्धमागहभासानिययं हवइ सुत्तं[4]" इत्यादिना आर्षस्य अर्धमागधभाषानियतत्वमाम्नायि वृद्धैस्तदपि प्रायोऽस्यैव विधानात्, न वक्ष्यमाणलक्षणस्य" यह कहकर उसी के अनन्तर जो दशवैकालिक सूत्र से उद्धृत "कयरे आगच्छइ, से तारिसे जिइंदिए" यह उदाहरण दिया है उससे उक्त बात निर्विवाद सिद्ध होती है।

डॉ. जेकोबी ने प्राचीन जैन सूत्रों की भाषा को प्राचीन महाराष्ट्री कहकर 'जैन महाराष्ट्री' नाम दिया है।[5] डॉ. पिशल ने अपने सुप्रसिद्ध प्राकृत-व्याकरण में डॉ. जेकोबी की इस बात का सप्रमाण खंडन किया है और यह सिद्ध किया है कि आर्ष और अर्धमागधी इन दोनों में परस्पर भेद नहीं है, एवं प्राचीन जैन सूत्रों की—गद्य और पद्य दोनों की भाषा परम्परागत मत के अनुसार अर्धमागधी है[6]। परवर्ती काल के जैन प्राकृत ग्रन्थों की भाषा अल्पांश में अर्धमागधी की और अधिकांश में महाराष्ट्री की विशेषताओं से युक्त होने के कारण 'जैन महाराष्ट्री' कही जा सकती है; परन्तु प्राचीन जैन सूत्रों की भाषा को, जो शौरसेनी आदि भाषाओं की अपेक्षा महाराष्ट्री से अधिक साम्य रखती हुई भी, अपनी उन अनेक खासियतों से परिपूर्ण है जो महाराष्ट्र आदि किसी प्राकृत में दृष्टिगोचर नहीं होती हैं, यह (जैन महाराष्ट्री) नाम नहीं दिया जा सकता।

पंडित बेचरदास अपने गुजराती प्राकृत-व्यारकण की प्रास्तावना में जैन सूत्रों की अर्धमागधी भाषा को [7]प्राकृत (महाराष्ट्री) सिद्ध करने की विफल चेष्टा करते हुए डॉ. जेकोबी से भी दो कदम आगे बढ़ गए हैं, क्योंकि डॉ. जेकोबी जब इस भाषा को प्राचीन महाराष्ट्री—साहित्य-निबद्ध महाराष्ट्री से पुरातन महाराष्ट्री बताते हैं तब पंडित बेचरदास, प्राकृत भाषाओं के इतिहास जानने की तनिक भी परवाह न रखकर, अर्वाचीन महाष्ट्री से इस प्राचीन अर्धमागधी को अभिन्न सिद्ध करने जा रहे हैं! पंडित बेचरदास ने अपने सिद्धान्त के समर्थन में जो दलीलें पेश की हैं वे अधिकांश में भ्रान्त संस्कारों से उत्पन्न होने के कारण कुछ महत्त्व न रखती हुई भी कुतूहल-जनक अवश्य हैं। उन दलीलों का सारांश यह है—(१) अर्धमागधी में महाराष्ट्री से मात्र दो-चार रूपों की ही विशेषता; (२) आचार्य हेमचन्द्र का इस भाषा के लिए स्वतन्त्र व्याकरण या शौरसेनी आदि की तरह अलग-अलग सूत्र न बनाकर प्राकृत (महाराष्ट्री) या आर्ष प्राकृत में ही इसको अन्तर्गत करना; (३) इसमें मागधी भाषा की कतिपय विशेषताओं का अभाव; (४) निशीथचूर्णिकार के अर्धमागधी के दोनों में एक भी लक्षण की इसमें असंगति; (५) प्राचीन जैन ग्रन्थों में इस भाषा का 'प्राकृत' शब्द से निर्देश; (६) नाट्य-शास्त्र में और प्राकृत-व्याकरणों में निर्दिष्ट अर्धमागधी के साथ प्रस्तुत अर्धमागधी की असमानता।

अर्धमागधी महाराष्ट्री से भिन्न है

---

१. मागधी भाषा में अकारान्त पुंलिंग शब्द के प्रथमा के एकवचन में 'ए' होता है।

२. इसका अर्थ यह है कि प्राचीन आचार्यों ने "पुराना सूत्र अर्धमागधी भाषा में नियत है" इत्यादि वचन-द्वारा आर्ष भाषा को जो अर्धमागधी भाषा कही है वह प्रायः मागधी भाषा के इसी एक एकारवाले विधान को लेकर, न कि आगे कहे जानेवाले मागधी भाषा के अन्य लक्षण के विधान को लेकर।

३. इसी वचन के आधार पर डॉ. हॉर्नेलि का चण्ड-कृत प्राकृतलक्षण के इन्ट्रोडक्शन (पृष्ठ १८-१९) में यह लिखना कि हेमचन्द्र के मत में 'पोराण' आर्ष प्राकृत का एक नाम है, भ्रम-पूर्ण है, क्योंकि यहां पर 'पोराण' यह सूत्र का ही विशेषण है, भाषा का नहीं।

४. आवश्यकसूत्र के पारिष्ठापनिकाप्रकरण (दे० ला० पु० फं० पत्र ६२८) में यह संपूर्ण गाथा इस तरह है:—
"पुव्वावरसंजुत्तं वेरग्गकरं सतंतमविरुद्धं। पोराणमद्धमागहभासानिययं हवइ सुत्तं॥"

५. Kalpa Sutra, Sacred Books of the East, VoL. XII.

६. Grammatik der Prākrit-Sprachen, 16-17.

७. जैसे आचार्य हेमचन्द्र ने अपने प्राकृत-व्याकरण में महाराष्ट्री भाषा के अर्थ में प्राकृत शब्द का प्रयोग किया है वैसे पंडित बेचरदास ने भी अपने प्राकृत-व्याकरण में, जो केवल हेमाचार्य के ही प्राकृत-व्याकरण के आधार पर रचा गया है, सर्वत्र साहित्यिक महाराष्ट्री के अर्थ में ही प्राकृत शब्द का व्यवहार किया है।

प्रथम दलील के उत्तर में हमें यहाँ अधिक कहने की कोई आवश्यकता नहीं, इसी प्रकरण के अन्त में महाराष्ट्री से अर्धमागधी की विशेषताओं की जो संक्षिप्त सूची दी गई है वही पर्याप्त है। इसके अतिरिक्त डॉ बनारसीदास की 'अर्धमागधी रीडर', मुनि श्रीरत्नचन्द्रजी की 'जैन-सिद्धान्त कौमुदी' और डॉ. पिशल का 'प्राकृत-व्याकरण' मौजूद है; जिनमें क्रमशः अधिकाधिक संख्या में अर्धमागधी की विशेषताओं का संग्रह है। आचार्य हेमचन्द्र के ही प्राकृत-व्याकरण के 'आर्षम्' सूत्र से, इसकी स्पष्ट और सर्व-भेद-ग्राही व्यापक[1] व्याख्या से और जगह-जगह[2] किए हुए आर्ष के सोदाहरण उल्लेखों से दूसरी दलील की निर्मूलता सिद्ध होती है। यदि आचार्य हेमचन्द्र द्वारा ही निर्दिष्ट की हुई दो-एक विशेषताओं के कारण चूलिकापैशाची अलग भाषा मानी जा सकती है, अथवा आठ-दस विशेषताओं को लेकर शौरसेनी, मागधी और पैशाची भाषाओं को भिन्न-भिन्न भाषा स्वीकार करने में आपत्ति नहीं की जा सकती, तो कोई वजह नहीं है कि उसी वैयाकरण के द्वारा प्रकारान्तर से अथच स्पष्ट रूप से बताई हुई वैसी ही अनेक विशेषताओं के कारण आर्ष या अर्धमागधी भी भिन्न भाषा न कही जाय। तीसरी दलील की जड़ यह भ्रान्त संस्कार है कि 'वही भाषा अर्धमागधी कही जाने योग्य हो सकती है जिसमें मागधी भाषा का आधा अंश हो'। इसी भ्रान्त संस्कार के कारण चौथी दलील में उद्धृत निशीथचूर्णि के अर्धमागधी के प्रथम लक्षण का सत्य और सीधा अर्थ भी उक्त पंडितजी की समझ में नहीं आया है। इस भ्रान्त संस्कार का निराकरण और निशीथचूर्णिकार द्वारा बताए हुए अर्धमागधी के प्रथम लक्षण का और उसके वास्तविक अर्थ का निर्देश इसी प्रकरण में आगे चलकर आर्धमागधी के मूल की आलोचना के समय किया जायगा, जिससे इन दोनों दलीलों के उत्तरों को यहाँ दुहराने की आवश्यकता नहीं है। पाँचवीं दलील भी प्राचीन आचार्यों के द्वारा जैन सूत्र-ग्रन्थों की भाषा के अर्थ में प्रयुक्त किए हुए 'प्राकृत' शब्द को 'महाराष्ट्री' के अर्थ में घसीटने से ही हुई है। मालूम पड़ता है, पंडितजी ने जैसे अपने व्याकरण में 'प्राकृत' शब्द को केवल महाराष्ट्री के लिए रिजर्व कर रखा है वैसे सभी प्राचीन आचार्यों के 'प्राकृत' शब्द को भी वे एकमात्र महाराष्ट्री के ही अर्थ में मुकर्रर किया हुआ समझ बैठे हैं[3]। परन्तु यह समझ गलत है। प्राकृत शब्द का मुख्य अर्थ है प्रादेशिक कथ्य भाषा — लोक-भाषा। प्राकृत शब्द की व्युत्पत्ति भी वास्तव में इसी अर्थ से संगति रखती है यह हम पहले ही अच्छी तरह प्रमाणित कर चुके हैं। खिस्त की षष्ठ शताब्दी के आचार्य दण्डी ने अपने काव्यादर्श में—

'शौरसेनी च गौडी च लाटी चान्या च तादृशी। याति प्राकृतमित्येवं व्यवहारेषु संनिधिम्॥' (१, ३५)।

इन खुले शब्दों में यही बात कही है। इससे भी यह स्पष्ट है कि प्राकृत शब्द मुख्यतः प्रादेशिक लोक-भाषा का ही वाचक है और इससे साधारणतः सभी प्रादेशिक कथ्य भाषाओं के अर्थ में इसका प्रयोग होता आया है। दण्डी के समय तक के सभी प्राचीन ग्रंथों में इसी अर्थ में प्राकृत शब्द का व्यवहार देखा जाता है। खुद दंडी ने भी महाराष्ट्री भाषा में प्राकृत शब्द के प्रयोग को 'प्रकृष्ट' शब्द से विशेषित करते हुए इसी बात का समर्थन किया है[4]। दण्डी के महाराष्ट्री को 'प्रकृष्ट प्राकृत' कहने के बाद ही से विशेष प्रसिद्धि होने के कारण, महाराष्ट्री के अर्थ में 'प्रकृष्ट' शब्द को छोड़ कर केवल प्राकृत शब्द का भी प्रयोग हेमचन्द्र आदि, किन्तु दण्डी के पीछे के ही विद्वानों ने, कहीं कहीं किया है। पंडितजी ने वररुचि के समय से लेकर पीछले आचार्यों का महाराष्ट्री के ही अर्थ में प्राकृत शब्द का व्यवहार करने की जो बात उक्त टिप्पणी में ही लिखी है उससे प्रतीत होता है कि उन्होंने न तो वररुचि का ही व्याकरण देखा है और न उनके पीछे के आचार्यों के ही ग्रन्थों का निरीक्षण करने की कोशिश की है, क्योंकि वररुचि ने तो 'शेषं महाराष्ट्रीवत्' (प्राकृतप्रकाश १२, ३२) कहते हुए इस अर्थ में महाराष्ट्री शब्द का ही प्रयोग किया है, न कि प्राकृत शब्द का। आचार्य हेमचन्द्र ने भी कुमारपालचरित में 'पाइआहि भासाहि' (१, १) में बहुवचन का निर्देश कर और देशीनाममाला (१, ४) में 'विशेष' शब्दलगाकर 'प्राकृत' का प्रयोग साधारण

---

१. 'आर्षं प्राकृतं बहुलं भवति। तदपि यथास्थानं दर्शयिष्यामः। आर्षे हि सर्वे विधयो विकल्प्यन्ते' (हे० प्रा० १, ३)।

२. देखो, हेमचन्द्र-प्राकृत व्याकरण के १, ४६; १, ५७; १, ७९; १, ११८; १, ११९; १, १५१; १, १७७; १, २२८; १, २५४; २, १७; २, २१; २, ८६; २, १०१; २, १०४; २, १४६; २, १७४; ३, १६२; और ४, २८७ सूत्रों की व्याख्या।

३. 'ऊपरना बधा उल्लेखोमां वपरायेलो 'प्राकृत' शब्द प्राकृत भाषानो सूचक छे, अनुयोगद्वारमां 'प्राकृत' शब्द प्राकृत भाषाना अर्थमां वपरायेलो छे. (पृ० १३१ स०)। वैयाकरण वररुचिना समयथी तो ए शब्द ज अर्थमां वपरातो आव्यो छे; अने ए पछीना आचार्योए पण ए शब्दने ए ज अर्थमां वापरेलो छे, माटे कोईए अहीं ए शब्दने मरडवो नहीं।' (प्राकृत-व्याकरण, प्रवेश, पृष्ठ २६ टिप्पणी)।

४. 'महाराष्ट्राश्रयां भाषां प्रकृष्टं प्राकृतं विदुः' (काव्यादर्श १, ३४)।

लोक-भाषा के ही अर्थ में ही किया है। आचार्य दण्डी और हेमचन्द्र ही नहीं, बल्कि खिस्त की नववीं शताब्दी के कवि राजशेखर[1], ग्यारहवीं शताब्दी के नमिसाधु[2], उन्नीसवीं शताब्दी के प्रेमचन्द्रतर्कवागीश प्रभृति[3] प्रभूत जैन और जैनेतर विद्वानों ने इसी अर्थ में प्राकृत शब्द का प्रयोग किया है। इस तरह जब यह अभ्रान्त सत्य है कि प्राचीन काल से लेकर आजतक प्राकृत शब्द प्रादेशिक कथ्य भाषा के अर्थ में व्यवहृत होता आया है और इसका मुख्य और प्राचीन अर्थ साधारणत: सभी और विशेषत: कोई भी प्रादेशिक भाषा है, तब प्राचीन आचार्यों द्वारा भगवान् महावीर की उपदेश-भाषा के और उनके समसामयिक शिष्य सुधर्मस्वामि-प्रणीत जैन सूत्रों की भाषा के ही अभिप्राय में प्रयुक्त किए हुए 'प्राकृत' शब्द का 'अर्ध मगध-प्रदेश (जहाँ भगवान् महावीर और सुधर्मस्वामी का उपदेश और विचरण होना प्रसिद्ध है) की लोक-भाषा (अर्धमागधी)' इस सुसंगत अर्थ को छोड़ कर मगध से सुदूरवर्ती प्रदेश 'महराष्ट्र (जहाँ न तो भगवान् महावीर का और न सुधर्मस्वामी का ही उपदेश या विहार होना जाना गया है) की भाषा (महाराष्ट्री)' यह असंगत अर्थ लगाना, अपनी हीन विवेचना-शक्ति का परिचय देना है। इसी सिलसिले में पंडितजी ने अनुयोगद्वार सूत्र की एक अपूर्ण गाथा उद्धृत की है। यदि उक्त पंडितजी अनुयोगद्वार की गाथा के पूर्वार्ध का यहाँ पर उल्लेख करने के पहले इस गाथा के मूल स्थान को ढूँढ पाते और वे प्राकृत शब्द से जिस भाषा (महाराष्ट्री) का ग्रहण करते हैं इसके और प्राचीन सूत्रों की अर्धमागधी भाषा के इतिहास को न जानते हुए भी सिर्फ उत्तरार्ध-सहित इस गाथा पर ही प्रकरण-संगति के साथ जरा गौर से विचार करने का कष्ट उठाते, तो हमारा यह विश्वास है कि वे कम से कम इस गाथा का यहाँ हवाला देने का साहस और अनुयोगद्वार के कर्त्ता पर अर्धमागधी के विस्मरण का व्यङ्ग-बाण छोड़ने की धृष्टता कदापि नहीं कर पाते। क्योंकि इस गाथा का मूल स्थान है तृतीय अंग-ग्रन्थ जिसका नाम स्थानाङ्ग-सूत्र है। इसी स्थानाङ्ग-सूत्र के सम्पूर्ण स्वर-प्रकरण को अनुयोगद्वार-सूत्र में उद्धृत किया गया है जिसमें वह गाथा भी शामिल है। वह सम्पूर्ण गाथा इस तरह है :—

"सक्कता पागता चेव दुहा भणिईओ आहिया। सरमंडलम्मि गिज्जंते पसत्था इसिभासिता ॥"

इसका शब्दार्थ है—"संस्कृत और प्राकृत ये दो प्रकार की भाषाएँ कही गई हैं, गाये जाते स्वर-समूह (षड्ज-प्रभृति) में ऋषिभाषिता—आर्ष भाषा प्रशस्त है।" यहाँ पर प्रकरण है सामान्यत: गीत की भाषा का। वर्तमान समय की तरह उस समय भी सभी भाषाओं में गीत होते थे। इससे यहाँ पर इन सभी भाषाओं का निर्देश करना ही सूत्रकार को अभिप्रेत है जो उन्होंने संस्कृत—व्याकरण-संस्कार युक्त भाषा और प्राकृत—व्याकरण-संस्कार-रहित—लोक-भाषा इन दो मुख्य विभागों में किया है। इस तरह इस गाथा में पहले गीत की भाषाओं का सामन्य रूप से निर्देश कर बाद में इन भाषाओं में जो प्रशस्त है वह 'ऋषिभाषिता' इस विशेष रूप से बताई गई है। यदि यहाँ पर प्राकृत शब्द का 'प्रादेशिक लोक-भाषा' यह सामान्य अर्थ न लेकर पंडितजी के कथनानुसार 'महाराष्ट्री' यह विशेष अर्थ लिया जाय तो गीत की सभी भाषाओं का निर्देश, जो सूत्रकार को करना आवश्यक है, कैसे हो सकता है? क्या उस समय अन्य लोक-भाषाओं में गीत होते ही न थे? गीत का ठेका क्या संस्कृत और महाराष्ट्री इन दो भाषाओं को ही मिला हुआ था? यह कभी संभावित नहीं है। इसी गाथा के उत्तरार्ध के "पसत्था इसिभासिता" इस वचन से अर्धमागधी की सूचना ही नहीं, बल्कि उसका श्रेष्ठपन भी सूत्रकार ने स्पष्ट रूप में बताया है। इससे पंडितजी के उस कथन में कुछ भी सत्यांश नजर नहीं आता है, जो उनसे सूत्रकार के अर्धमागधी की अलग सूचना न करने के बारे में किया गया है।

जैसे बौद्धसूत्रों की मागधी (पालि) से नाट्य-शास्त्र या प्राकृत-व्याकरणों में निर्दिष्ट मागधी भिन्न है वैसे जैन सूत्रों की अर्धमागधी से नाट्य-शास्त्र की या प्राकृत व्याकरणों की अर्धमागधी भी अलग है। इससे बौद्धसूत्रों की मागधी नाट्य-शास्त्र या प्राकृत-व्याकरणों की मागधी से मेल न रखने के कारण जैसे महाराष्ट्री न कही जाकर मागधी कही जाती है वैसे जैन सूत्रों की अर्धमागधी भाषा भी नाट्य-शास्त्र या प्राकृत-व्याकरणों की अर्धमागधी से समान न होने की वजह से ही महाराष्ट्री न कही जाकर अर्धमागधी ही कही जा सकती है।

---

१. 'परुसो सक्कअ-बंधो पाउअ-बंधोवि होइ सुउमारो' (कर्पूरमञ्जरी, अङ्क १)।

२. 'सूरसेन्यपि प्राकृतभाषैव, तथा प्राकृतमेवापभ्रंशः' (काव्यालङ्कार-टिप्पण २, १२)।

३. 'सर्वासामेव प्राकृतभाषाणां'—(काव्यादर्श-टीका १, ३३), 'तादृशीत्यनेन देशनामोपलक्षिताः सर्वा एव भाषाः प्राकृतसंज्ञयोच्यन्त इति सूचितम्' (काव्यादर्श-टीका १, ३५)।

भरत-रचित कहे जाते नाट्य-शास्त्र में जिन सात भाषाओं का उल्लेख है उनमें एक अर्धमागधी भी है।[१] इसी नाट्यशास्त्र में नाटकों के नौकर, राजपुत्र और श्रेष्ठी इन पात्रों के लिए इस भाषा का प्रयोग निर्दिष्ट किया गया है[२] इससे नाटकों में इन पात्रों की जो भाषा है वह अर्धमागधी कही जाती है। परन्तु नाटकों की अर्धमागधी और जैन सूत्रों की अर्धमागधी में परस्पर समानता की अपेक्षा इतना अधिक भेद है कि यह एक दूसरे से अभिन्न कभी नहीं कही जा सकती। मार्कण्डेय ने अपने प्राकृत-व्याकरण में मागधी भाषा के लक्षण बताकर उसी प्रकरण के शेष में अर्धमागधी भाषा का यह लक्षण कहा है—"[३]शौरसेन्या अदूरत्वादियमेवार्धमागधी" अर्थात् शौरसेनी भाषा के निकट-वर्ती होने के कारण मागधी ही अर्धमागधी है। इस लक्षण के अनन्तर उन्होंने उक्त नाट्य-शास्त्र के उस वचन को उद्धृत किया है, जिसमें अर्धमागधी के प्रयोगार्ह पात्रों का निर्देश है और इसके बाद उदाहरण के तौर पर वेणीसंहार की राक्षसी की एक उक्ति का उल्लेख कर अर्धमागधी का प्रकरण खतम किया है। इससे यह स्पष्ट मालूम होता है कि भरत का अर्धमागधी-विषयक उक्त वचन और मार्कण्डेय का अर्धमागधी-विषयक उक्त लक्षण नाटकीय अर्धमागधी के लिए ही रचित है; जैन सूत्रों की अर्धमागधी के साथ इसका कोई संबन्ध नहीं है। क्रमदीश्वर ने अपने प्राकृत-व्याकरण में अर्धमागधी का जो लक्षण किया है वह यह है—"[४]महाराष्ट्रीमिश्राऽर्धमागधी" अर्थात् महाराष्ट्री से मिश्रित मागधी भाषा ही अर्धमागधी है। जान पड़ता है, क्रमदीश्वर का यह लक्षण भी नाटकीय अर्धमागधी के लिए ही प्रयोज्य है, क्योंकि उक्त नाट्यशास्त्र में जिन पात्रों के लिए अर्धमागधी के प्रयोग का नियम बताया गया है, अनेक नाटकों में उन पात्रों की भाषा भिन्न-भिन्न है[५]। संभवतः इसी भिन्नता के कारण ही क्रमदीश्वर ने और मार्कण्डेय ने अर्धमागधी के भिन्न-भिन्न लक्षण किए हैं।

नाटकीय अर्धमागधी जैन-सूत्रों की अर्धमागधी से भिन्न है

जैसे हम पहले कह चुके हैं, जैन सूत्रों की अर्धमागधी में इतर भाषाओं की अपेक्षा महाराष्ट्री के लक्षण अधिक देखने में आते हैं। किन्तु यह याद रखना चाहिए कि ये लक्षण साहित्यिक महाराष्ट्री से जैन अर्धमागधी में नहीं आये हैं। इसका कारण यह है कि जैन सूत्रों की अर्धमागधी भाषा साहित्यिक महाराष्ट्री भाषा से अधिक प्राचीन है और इससे यहां (अर्धमागधी) महाराष्ट्री का मूल कही जा सकती है।[६] डॉ. हॉर्नेलि ने जैन अर्धमागधी को ही आर्ष प्राकृत कहकर इसीको परवर्ती काल में उत्पन्न नाटकीय अर्धमागधी, महाराष्ट्री और शौरसेनी भाषाओं का मूल माना है। आचार्य हेमचन्द्र ने अपने प्राकृत-व्याकरण में महाराष्ट्री नाम न दे कर प्राकृत के सामान्य नाम से एक भाषा के लक्षण दिए हैं और उनके उदाहरण साधारण तौर से अर्वाचीन महाराष्ट्री-साहित्य से उद्धृत किये हैं; परन्तु जहाँ अर्धमागधी के प्राचीन जैन ग्रन्थों से उदाहरण लिए हैं वहाँ इसको आर्ष प्राकृत का विशेष नाम दिया है। इससे प्रतीत होता है कि आचार्य हेमचन्द्र ने भी एक ही भाषा के प्राचीन रूप को आर्ष प्राकृत और अर्वाचीन रूप को महाराष्ट्री मानते हुए आर्ष प्राकृत को महाराष्ट्री का मूल स्वीकार किया है।

महाराष्ट्री से अर्धमागधी प्राचीन है

नाटकीय अर्धमागधी में मागधी भाषा के लक्षण अधिकांश में पाये जाते हैं इससे 'मागधी से ही अर्धमागधी भाषा की उत्पत्ति हुई है और जैन सूत्रों की भाषा में मागधी के लक्षण अधिक न मिलने से वह अर्धमागधी कहलाने योग्य नहीं' यह जो भ्रान्त संस्कार कई लोगों के मन में जमा हुआ है, उसका मूल है अर्धमागधी शब्द को मागधी भाषा के अर्धांश

---

१. "मागध्यवन्तिजा प्राच्या सूरसेन्यर्धमागधी। वाह्लीका दाक्षिणात्या च सप्त भाषाः प्रकीर्तिताः" (१७, ४८)।

२. "चेटानां राजपुत्राणां श्रेष्ठिनां चार्धमागधी" (भरतीय नाट्यशास्त्र, निर्णयसागरीय संस्करण, १७, ५०)।
मार्कण्डेय ने अपने व्याकरण में इस विषय में भरत का नाम देकर जो वचन उद्धृत किया है वह इस तरह है—"राक्षसी-श्रेष्ठिचेटानुकम्यादिरर्धमागधी' इति भरतः" यह पाठान्तर ज्ञात होता है।

३. प्राकृतसर्वस्व (पृष्ठ १०३)।

४. संक्षिप्तसार (पृष्ठ ३८)।

५. देखो, भास-रचित कहे जाते 'चारुदत्त' और 'स्वप्नवासदत्त' में क्रमशः चेट तथा चेटी की भाषा और शूद्रक के 'मृच्छकटिक' में चेट और श्रेष्ठी चन्दनदास की भाषा।

६. "It thus seems t me very clear, that the Prākrit of Chanda is the ARSHA or ancient (Porana) orm of the Ardhamāgadhi, Mahārāshtri and Sauraseni." (Introduction to Prākrita akshana of Chanda, Page XIX).

में ग्रहण करना, अर्थात् 'अर्धं मागध्याः' यह व्युत्पत्ति कर 'जिसका अर्धांश मागधी भाषा वह अर्धमागधी' ऐसा करना। वस्तुतः अर्धमागधी शब्द की न वह व्युत्पत्ति ही सत्य है और न वह अर्थ ही। अर्धमागधी शब्द की वास्तविक व्युत्पत्ति है 'अर्धमगधस्येयम्' और इसके अनुसार इसका अर्थ है 'मगध देश के अर्धांश की जो भाषा वह अर्धमागधी'। यही बात खिस्त की सातवीं शताब्दी के ग्रन्थकार श्रीजिनदासगणि महत्तर ने निशीथचूर्णि नामक ग्रन्थ में "पोराणमद्धमागहभासानिययं हवइ सुत्तं" इस उल्लेख के 'अर्धमागध' शब्द की व्याख्या के प्रसङ्ग में इन स्पष्ट शब्दों में कही है :—"मगहद्धविसयभासानिबद्धं श्रद्धमागहं" अर्थात् मगध देश के अर्ध प्रदेश की भाषा में निबद्ध होने के कारण प्राचीन सूत्र 'अर्धमागध' कहा जाता है।

अर्धमागधी शब्द की संगत-व्युत्पत्ति

परन्तु, अर्धमागधी का मूल उत्पत्ति स्थान पश्चिम मगध अथवा मगध और शूरसेन का मध्यवर्ती प्रदेश (अयोध्या) होने पर भी जैन अर्धमागधी में मागधी और शौरसेनी भाषा के विशेष लक्षण देखने में नहीं आते। महाराष्ट्री के साथ ही इसका अधिक सादृश्य नजर आता है। यहाँ पर प्रश्न होता है कि इस सादृश्य का कारण क्या है? सर ग्रियर्सन ने अपने प्राकृत-भाषाओं के भौगोलिक विवरण में यह स्थिर किया है कि जैन अर्धमागधी मध्यदेश (शूरसेन) और मगध के मध्यवर्ती देश (अयोध्या) की भाषा थी एवं आधुनिक पूर्वीय हिन्दी उससे उत्पन्न हुई है। किन्तु हम देखते हैं कि अर्धमागधी के लक्षणों के साथ मागधी, शौरसेनी और आधुनिक पूर्वीय हिन्दी का कोई सम्बन्ध नहीं है, परन्तु महाराष्ट्री प्राकृत और आधुनिक मराठी भाषा के साथ उसका सादृश्य अधिक है। इसका कारण क्या? किसीने अभीतक यह ठीक-ठीक नहीं बताया है। यह सम्भव है, जैसा हम पाटलिपुत्र के सम्मेलन के प्रसंग में ऊपर कह आये हैं, चन्द्रगुप्त के राजत्वकाल में (खिस्त-पूर्व ३१०) बारह वर्षों के अकाल के समय जैन मुनि-संघ पाटलीपुत्र से दक्षिण की ओर गया था। उस समय वहाँ के प्राकृत के प्रभाव से अंग-ग्रन्थों की भाषा का कुछ-कुछ परिवर्तन हुआ था। यही महाराष्ट्री प्राकृत का आर्ष प्राकृत के साथ सादृश्य का कारण हो सकता है।

जैन अर्धमागधी का उत्पत्ति-स्थान और उसका 'महाराष्ट्री' के साथ सादृश्य का कारण

सर आर. जि. भाण्डारकर जैन अर्धमागधी का उत्पत्ति-समय खिस्तीय द्वितीय शताब्दी मानते हैं। उनके मत में कोई भी साहित्यिक प्राकृत भाषा खिस्त की प्रथम या द्वितीय शताब्दी से पहले की नहीं है। शायद इसी मत का अनुसरण कर डॉ. सुनीतिकुमार चटर्जी ने अपनी Origin and Development of Bengalee Language नामक पुस्तक में (Introduction, page 18) समस्त नाटकीय प्राकृत-भाषाओं का और जैन अर्धमागधी का उत्पत्ति-काल खिस्तीय तृतीय शताब्दी स्थिर किया है। परन्तु त्रिवेन्द्रम् से प्रकाशित भास-रचित कहे जाते नाटकों का निर्माण-समय अन्ततः खिस्त की दूसरी शताब्दी के बाद का न होने से और अश्वघोष-कृत बौद्ध-धर्म-विषयक नाटकों के जो कतिपय अंश डॉ. ल्युडर्स ने प्रकाशित किए हैं उनका समय खिस्त की प्रथम शताब्दी निश्चित होने से यह प्रमाणित होता है कि उस समय भी नाटकीय प्राकृत भाषाएँ प्रचलित थीं। और डॉ. ल्युडर्स ने यह स्वीकार किया है कि अश्वघोष के नाटकों में जैन अर्धमागधी भाषा के निदर्शन हैं। इससे जैन अर्धमागधी की प्राचीनता का यह भी एक विश्वस्त प्रमाण है। इसके अतिरिक्त, डॉ. जेकोबी जैन सूत्रों की भाषा और मथुरा के शिलालेखों (खिस्तीय सन् ८३ से १७६) की भाषा से यह अनुमान करते हैं कि जैन अंग-ग्रन्थों की अर्धमागधी का काल खिस्त-पूर्व चतुर्थ शताब्दी का शेष भाग अथवा खिस्त-पूर्व तृतीय शताब्दी का प्रथम भाग है। हम डॉ. जेकोबी के इस अनुमान को ठीक समझते हैं जो पाटलिपुत्र के उस सम्मेलन से संगति रखता है जिसका उल्लेख हम पूर्व कर चुके हैं।

उत्पत्ति-समय

संस्कृत के साथ महाराष्ट्री के जो प्रधान-प्रधान भेद हैं, उनकी संक्षिप्त सूची महाराष्ट्री के प्रकरण में दी जायगी। यहाँ पर महाराष्ट्री से अर्धमागधी की जो मुख्य-मुख्य विशेषताएँ हैं उनकी संक्षिप्त सूची दी जाती है। उससे अर्ध मागधी के लक्षणों के साथ महाराष्ट्री के लक्षणों की तुलना करने पर यह अच्छी तरह ज्ञात हो सकता है कि महाराष्ट्री की अपेक्षा अर्धमागधी की वैदिक और लौकिक संस्कृत से अधिक निकटता है जो अर्ध-मागधी की प्राचीनता का एक श्रेष्ठ प्रमाण कहा जा सकता है।

लक्षण

वर्ण-भेद

१. दो स्वरों के मध्यवर्ती असंयुक्त क के स्थान में प्रायः सर्वत्र ग और अनेक स्थलों में त और य होता है; जैसे—

ग—प्रकल्प = पगप्प; आकर = आगर; आकाश = आगास; प्रकार = पगार; श्रावक = सावग; विवर्जक = विवज्जग; निषेवक = णिसेवग; लोक = लोग; आकृति = आगइ।

त—आराधक = आराहत (ठाणांगसूत्र—पत्र ३१७), सामायिक = सामातित (ठा० ३२२), विशुद्धिक = विशुद्धित (ठा० ३२२), अधिक = अहित (ठा० ३६३), शाकुनिक = साउणित (ठा ३६३), नैषधिक = णेसज्जित (ठा० ३६७), वीरासनिक = वीरासणित (ठा० ३६७), वर्धकि = वड्ढति (ठा० ३६८), नैरयिक = नेरतित (ठा० ३६६), सीमंतक = सीमंतत (ठा० ४५८), नरकात् = नरतातो (ठा० ४५८), माडम्बिक = माडंबित (ठा० ४५६), कौटुम्बिक = कोडुंबित (ठा० ४५६), सचक्षुष्केण = सचक्खुतेणं (विपाकश्रुत—पत्र ५), कूणिक = कूणित (विपा० ५ टि), अन्तिकात् = अंतितातो (विपा० ७), राहसिकेन = रहस्सितेणं (विपा ४; १८) इत्यादि।

य—कायिक = काइय, लोक = लोय वगैरह।

२. दो स्वरों के बीच का असंयुक्त ग प्रायः कायम रहता है। कहीं-कहीं इसका त और य होता है; जैसे—आगम = आगम, आगमन = आगमण, आनुगामिक = आणुगामिय, आगमिष्यत् = आगमिस्स, जागर = जागर, अगारिन् = अगारि, भगवन् = भगवं; अतिग = अतित (ठा० ३६७); सागर = सायर।

३. दो स्वरों के बीच के असंयुक्त च और ज के स्थान में त और य उभय ही होता है। च के उदाहरण, जैसे—नाराच = णारात (ठा० ३५७), वचस् = वति (ठा० ३६८; ४५०), प्रवचन = पावतण (ठा० ४५१), कदाचित् = कयाती (विपा० १७; ३०); वाचना = वायणा, उपचार = उवयार; लोच = लोय, आचार्य = आयरिय। ज के कुछ निदर्शन ये हैं—भोजिन् = भोति (सूम० २, ६, १०), वज्र = वतिर (ठा० ३५७), पूजा = पूता (ठा० ३५८), राजेश्वर = रातीसर (ठा० ४५६), आत्मजः = अत्तते (विपा० ४ टि), प्रजात = पयाय, कामध्वजा = कामज्झया, आत्मज = अत्तय।

४. दो स्वरों का मध्यवर्ती त प्रायः कायम रहता है कहीं-कहीं इसका य होता है; यथा—वन्दते = वंदति, नमस्यति = नमंसति, पर्युपास्ते = पज्जुवासति (सूम २, ७; विपा—पत्र ६), जितेन्द्रिय = जितिंदिय (सूम २, ६, ५), सतत = सतत (सूम १, १, ४, १२), भवति = भवति (ठा०—पत्र ३१७), अंतरित = अंतरित (ठा० ३४६), धैवत = धेवत (ठा० ३६३), जाति = जाति, आकृति = आगिति, विहरति = विहरति (विपा—४), पुरतः = पुरतो, करोति = करेति (विपा० ६), ततः = तते (विपा० ६; ७; ८), संदिशतु = संदिसतु, संलपति = संलवति (विपा० ७; ८), प्रभृति = पभिति (विपा० १५; १६), करतल = करयल।

५. स्वरों के बीच में स्थित द का द और त ही अधिकांश में देखा जाता है, कहीं-कहीं य भी होता है, जैसे—

द—प्रदिशः = पदिसो (आचा), भेद = भेद, अनादिकं = अणादियं (सूम २, ७), वदत् = वदमाण, नदति = णदति, जनपद = जणवद, वेदिष्यति = वेदिहिती (ठा०—पत्र क्रमशः ३२१, ३६३, ४५८, ४५६) इत्यादि।

त—यदा = जता, पाद = पात, निषाद = निसात, नदी = नती, मृषावाद = मुसावात, वादिक = वातित, अन्यदा = अन्नता, कदाचित् = कताती (ठा०—पत्र क्रमशः ३१७, ३४६, ३६३, ३६७, ४५०, ४५१, ४५८, ४५६); यदि = जति, चिरादिक = चिरातीत (विपा० पत्र ४) इत्यादि।

य—प्रतिच्छादन = पडिच्छायण, चतुष्पद = चउप्पय वगैरह।

६. दो स्वरों के मध्य में स्थित प के स्थान में प्रायः सर्वत्र व ही होता है; यथा—पापक = पावग, संलपति = संलवति, सोपचार = सोवयार, प्रतिपात = पतिवात, उपनीत = उवणीय, अध्युपपन्न = अज्झोववण्ण, उपगूढ = उवगूढ, आधिपत्य = आहेवच्च, तपक = तवय, व्यपरोपित = ववरोवित इत्यादि।

७. स्वरों के मध्यवर्ती य प्रायः कायम रहता है, अनेक स्थानों में इसका त देखा जाता है; जैसे—

य—वायव = वायव, प्रिय = पिय, निरय = निरय, इन्द्रिय = इन्दिय, गायति = गायइ प्रभृति।

त—स्यात् = सिता, सामायिक = सामातित, कायिक = कातित, पालयिष्यन्ति = पालतिस्संति, पर्याय = परिताल, नायक = णातग; गायति = गातति, स्थायिन् = ठाति, शायिन् = साति, नैरयिक = नेरतित (ठा० पत्र क्रमशः ३१७, ३२२, ३२३, ३५७, ३५८, ३६३, ३६४, ३६७, ३६८, ३६६), इन्द्रिय = इन्दित (ठा० ३२२, ३५५) इत्यादि।

८. दो स्वरों के बीच के व के स्थान में व, त, और य होता है; यथा—

व—वायव = वायव, गौरव = गारव, भवति = भवति, अनुविचिन्त्य = अणुवीति (सूम १, १, ३, १३) इत्यादि।

त—परिवार = परिताल, कवि = कति (ठा० पत्र क्रमशः ३५८, ३६३) इत्यादि।

य—परिवर्तन = परियट्टण, परिवर्तना = परियट्टणा (ठा० ३४६) वगैरह।

९. महाराष्ट्री में स्वर-मध्य-वर्ती असंयुक्त क, ग, च, ज, त, द, प, य, व इन व्यञ्जनों का प्रायः सर्वत्र लोप होता है और प्राकृतप्र[का]श आदि प्राकृत-व्या[क]रणों के अनुसार इन लुप्त व्यञ्जनों के स्थान में अन्य कोई वर्ण नहीं होता। सेतुबन्ध, गाथासप्तशती और क[र्पू]रमञ्जरी आदि नाटकों की महाराष्ट्री भाषा में भी यह लक्षण ठीक-ठीक देखने में

आता है। आचार्य हेमचन्द्र के प्राकृत-व्याकरण के अनुसार उक्त लुप्त व्यञ्जनों के दोनों तरफ अवर्ण (अ या आ) होने पर लुप्त व्यञ्जन के स्थान में 'य्' होता है। 'गउडवहो' में यह 'य्' अधिक मात्रा में (उक्त व्यञ्जनों के पूर्व में अवर्ण-भिन्न स्वर रहने पर भी) पाया जाता है। परन्तु जैन अर्धमागधी में, जैसा हम ऊपर देख चुके हैं, प्रायः उक्त व्यञ्जनों के स्थान में अन्य अन्य व्यञ्जन होते हैं और कहीं कहीं तो वही व्यञ्जन कायम रहता है। हाँ, कहीं कहीं उक्त व्यञ्जनों के स्थान में अन्य व्यञ्जन होने या वही व्यञ्जन रहने के बदले महाराष्ट्री की तरह लोप भी देखा जाता है; किन्तु यह लोप वहाँ पर ही देखने में आता है जहाँ उक्त व्यञ्जनों के बाद अ या आ से भिन्न कोई स्वर होता है; जैसे—लोकः = लोओ, रोचित = रोइत, भोजिन् = भोइ, आतुर = आउर, आदेशि = आएसि, कायिक = काइय, आवेश = आएस वगैरह।

१०. शब्द के आदि में, मध्य में और संयोग में सर्वत्र ण की तरह न भी होता है; जैसे—नदी = नई, ज्ञातपुत्र = नायपुत्त, आरनाल = आरनाल, अनल = अनल, अनिल = अनिल, प्रज्ञा = पन्ना, अन्योन्य = अन्नमन्न, विज्ञ = विन्नु, सर्वज्ञ = सव्वन्नु इत्यादि।

११. एव के पूर्व के अम् के स्थान में आम् होता है; यथा—यामेव = जामेव, तामेव = तामेव, क्षिप्रमेव = खिप्पामेव, एवमेव = एवामेव, पूर्वमेव = पुव्वामेव इत्यादि।

१२. दीर्घ स्वर के बाद के इति वा के स्थान में ति वा और इ वा होता है; जैसे—इन्द्रमह इति वा = इंदमहे ति वा, इंदमहे इ वा इत्यादि।

१३. यथा और यावत् शब्द के य का लोप और ज दोनों ही देखे जाते हैं; जैसे—यथाख्यात = अहक्खाय, यथाजात = अहाजात, यथानामक = जहाणामए, यावत्कथा = आवकहा, यावज्जीव = जावज्जीव।

वर्णागम

१. गद्य में भी अनेक स्थलों में समास के उत्तर शब्द के पहले म् आगम होता है; यथा—निरयंगामी, उड्ढंगारव, दीहंगारव, रहस्संगारव, गोणमाइ, सामाइयमाइयाई, अजहण्णमणुक्कोस, अदुक्खमसुहा आदि। महाराष्ट्री के पद्य में पादपूर्त्ति के लिए ही कहीं कहीं म् आगम देखा जाता है, गद्य में नहीं।

शब्द-भेद

१. अर्धमागधी में ऐसे प्रचुर शब्द हैं जिनका प्रयोग महाराष्ट्री में प्रायः उपलब्ध नहीं होता; यथा—अज्झत्थिय, अज्झोववण्ण, अणुवीति, आघवणा, आघवेत्तग, आणापाणू, आवीकम्म, कण्हुइ, केमहालय, दुरूढ, पच्चत्थिमिल्ल, पाउकुव्वं, पुरत्थिमिल्ल, पोरेवच्च, महतिमहालिया, वक्क, विउस इत्यादि।

२. ऐसे शब्दों की संख्या भी बहुत बड़ी है जिनके रूप अर्धमागधी और महाराष्ट्री में भिन्न भिन्न प्रकार के होते हैं। उनके कुछ उदाहरण नीचे दिए जाते हैं :—

अर्धमागधी	महाराष्ट्री	अर्धमागधी	महाराष्ट्री
अभियागम	अब्भागम	तच्च (तथ्य)	तच्छ
आउंटण	आउंचण	तेगिच्छा	चिइच्छा
आहरण	उआहरण	दुवालसंग	बारसंग
उप्पि	उवरिं, अवरिं	दोच्च	दुइअ
किया	किरिआ	नितिय	णिच्च
कीस, केस	केरिस	निएय	णिअअ
केवच्चिर	किअच्चिर	पडुप्पन्न	पच्चुप्पण्ण
गेहि	गिद्धि	पच्छेकम्म	पच्छाकम्म
चियत्त	चइअ	पाय (पात्र)	पत्त
छच्च	छक्क	पुढो (पृथक्)	पुहं, पिहं
जाया	जत्ता	पुरेकम्म	पुराकम्म
णिगण, णिगिण (नग्न)	णग्ग	पुव्वि	पुव्वं
णिगिणिण (नाग्न्य)	णग्गत्तण	माय (मात्र)	मत्त, मेत्त
तच्च (तृतीय)	तइअ	माहण	बम्हण

अर्धमागधी	महाराष्ट्री	अर्धमागधी	महाराष्ट्री
मिलक्खु, मेच्छ	मिलिच्छ	सीप्राण, सुसाण	मसाण
वग्गू	वाग्रा	सुमिण	सिमिण
वाहणा (उपानह्)	उवाणग्रा	सुहम, सुहुम	सण्ह
सहेज्ज	सहाग्र	सोहि	सुद्धि

और, दुवालस, बारस, तेरस, श्रउणवीसइ, बत्तीस, पणतीस, इगयाल, तेयालीस, पणयाल, श्रढयाल, एगट्ठि, बावट्ठि, तेवट्ठि, छावट्ठि, श्रढसट्ठि, श्रउणत्तरि, बावत्तरि, पण्णत्तरि, सत्तहत्तरि, तेयासी, छलसीइ, बाणउइ प्रभृति संख्या-शब्दों के रूप अर्धमागधी में मिलते हैं, महाराष्ट्री में वैसे नहीं।

नाम-विभक्ति

१. अर्धमागधी में पुंलिंग अकारान्त शब्द के प्रथमा के एकवचन में प्रायः सर्वत्र ए और क्वचित् श्रो होता है, किन्तु महाराष्ट्री में श्रो ही होता है।

२. सप्तमी का एक वचन स्सिं होता है जब महाराष्ट्री में म्मि।

३. चतुर्थी के एक वचन में श्राए या श्राते होता है; जैसे—देवाए, सवणयाए, गमणाए, अट्ठाए, श्रहिताते, श्रसुभाते, श्रखमाते (ठा० पत्र ३५८) इत्यादि महाराष्ट्री में यह नहीं है।

४. अनेक शब्दों के तृतीया के एकवचन में सा होता है; यथा—मणसा, वयसा, कायसा, जोगसा, बलसा, चक्खुसा; महाराष्ट्री में इनके स्थान में क्रमशः मणेण, वएण, काएण, जोगेण, बलेण, चक्खुणा।

५. कम्म और धम्म शब्द के तृतीया के एक वचन में पालि की तरह कम्मुणा और धम्मुणा होता है, जब कि महाराष्ट्री में कम्मेण और धम्मेण।

६. अर्धमागधी में तत् शब्द के पञ्चमी के बहुवचन में तेब्भो रूप भी देखा जाता है।

७. युष्मत् शब्द की षष्ठी का एकवचन संस्कृत की तरह तव और श्रस्मत् की षष्ठी का बहुवचन श्रस्माकं अर्धमागधी में पाया जाता है जो महाराष्ट्री में नहीं है।

आख्यात-विभक्ति

१. अर्धमागधी में भूतकाल के बहुवचन में इंसु प्रत्यय है; जैसे—पुच्छिंसु, गच्छिंसु, श्राभासिंसु इत्यादि। महाराष्ट्री में यह प्रयोग लुप्त हो गया है।

धातु-रूप

१. अर्धमागधी में श्राइक्खइ, कुव्वइ, भुंवि, होक्खती, बूया, श्रब्बवी, होत्था, हुत्था, पहारेत्था, श्राघं, दुरूहइ, विगिंचए, तिवायए, श्रकासी, तिउट्टई, तिउट्टिज्जा, पडिसंधयाति, सारयती, घेच्छिइ, समुच्छिहिति, श्राहंसु प्रभृति प्रभूत प्रयोगों में धातु की प्रकृति, प्रत्यय अथवा ये दोनों जिस प्रकार में पाये जाते हैं, महाराष्ट्री में वे भिन्न भिन्न प्रकार के देखे जाते हैं।

धातु-प्रत्यय

१. अर्धमागधी में त्वा प्रत्यय के रूप अनेक तरह के होते हैं :—

(क) ट्टु; जैसे—कट्टु, साहट्टु, श्रवहट्टु इत्यादि।

(ख) इत्ता, एत्ता, इत्ताणं और एत्ताणं; यथा—चइत्ता, विउट्टित्ता, पासित्ता, करेत्ता, पासित्ताणं, करेत्ताणं इत्यादि।

(ग) इत्तु; यथा—दुरूहित्तु, जाणित्तु, वधित्तु प्रभृति।

(घ) चा; जैसे—किच्चा, णच्चा, सोच्चा, भोच्चा, चेच्चा वगैरह।

(ङ) इया; यथा—परिजाणिया, दुरूहिया आदि।

(च) इनके अतिरिक्त विउक्कम्म, निसम्म, समिच्च, संखाए, श्रणुवीति, लद्धुं, लद्धूण, दिस्सा इत्यादि प्रयोगों में 'त्वा' के रूप भिन्न भिन्न तरह के पाये जाते हैं।

२. तुम् प्रत्यय के स्थान में इत्तए या इत्तते प्रायः देखने में आता है; जैसे—करित्तए, गच्छित्तए, संभुंजित्तए, उवसामित्तते (विपा० १३), विहरित्तए आदि।

३. ऋकारान्त धातु के त प्रत्यय के स्थान में ड होता है; जैसे—कड, मड, श्रभिहड, वावड, संवुड, वियड, वित्थड प्रभृति।

तद्धित

१. तर प्रत्यय का तराय रूप होता है; यथा—अणिट्ठतराए, अप्पतराए, बहुतराए, कंततराए इत्यादि ।

२. आउसो, आउसंतो, गोमी, वुसिमं, भगवंतो, पुरत्थिम, पचत्थिम, ओयंसी, दोसिणो, पोरेवच्च आदि प्रयोगों में मतुप् और अन्य तद्धित प्रत्ययों के जैसे रूप जैन अर्धमागधी में देखे जाते हैं, महाराष्ट्री में वे भिन्न तरह के होते हैं ।

महाराष्ट्री से जैन अर्धमागधी में इनके अतिरिक्त और भी अनेक सूक्ष्म भेद हैं, जिनका उल्लेख विस्तार-भय से यहाँ नहीं किया गया है ।

---

(५) जैन महाराष्ट्री

नाम-निर्देश और साहित्य

जैन सूत्र-ग्रन्थों के सिवा श्वेताम्बर जैनों के रचे हुए अन्य ग्रन्थों की प्राकृत भाषा को 'जैन महाराष्ट्री' नाम दिया गया है । इस भाषा में तीर्थंकर और प्राचीन मुनियों के चरित्र, कथाएँ, दर्शन, तर्क, ज्योतिष, भूगोल, स्तुति आदि विषयों का विशाल साहित्य विद्यमान है ।

प्राकृत के प्राचीन वैयाकरणों ने 'जैन महाराष्ट्री' यह नाम देकर किसी भिन्न भाषा का उल्लेख नहीं किया है । किन्तु आधुनिक पाश्चात्य विद्वानों ने व्याकरण, काव्य और नाटक-ग्रन्थों में महाराष्ट्री का जो रूप देखा जाता है उससे श्वेताम्बर जैनों के ग्रन्थों की भाषा में कुछ कुछ पार्थक्य देख कर इसको 'जैन महाराष्ट्री' नाम दिया है । इस भाषा में प्राकृत-व्याकरणों में बताये हुए महाराष्ट्री भाषा के लक्षण विशेष रूप से मौजूद होने पर भी जैन अर्धमागधी का बहुत-कुछ प्रभाव देखा जाता है ।

समय

जैन महाराष्ट्री के कतिपय ग्रन्थ प्राचीन हैं । यह द्वितीय स्तर के प्रथम युग के प्राकृतों में स्थान पा सकती है । पयन्ना-ग्रन्थ, निर्युक्तियाँ, पउमचरिअ, उपदेशमाला प्रभृति ग्रन्थ प्रथम युग की जैन महाराष्ट्री के उदाहरण हैं । बृहत्कल्प-भाष्य, व्यवहारसूत्र-भाष्य, विशेषावश्यक-भाष्य, निशीथचूर्णि, धर्मसंग्रहणी, समराइच्चकहा प्रभृति ग्रन्थ मध्य-युग और शेष-युग में रचित होने पर भी इनकी भाषा प्रथम युग की जैन महाराष्ट्री के समान है । दशम शताब्दी के बाद रचे गये प्रवचन-सारोद्धार, उपदेशपदटीका, सुपासनाहचरिअ, उपदेशरहस्य प्रभृति ग्रन्थों की भाषा भी प्रायः प्रथम युग की जैन महाराष्ट्री के ही अनुरूप है । इससे यहाँ पर यह कहना होगा कि जैन महाराष्ट्री के ये ग्रन्थ आधुनिक काल में रचित होने पर भी उसकी भाषा, संस्कृत की तरह, अतिप्राचीन काल में ही उत्पन्न हुई थी और यह भी अनुमान किया जा सकता है कि जैन महाराष्ट्री क्रमशः परिवर्तित होकर मध्य-युग की व्यञ्जन-लोप-बहुल महाराष्ट्री में रूपान्तरित हुई है ।

लक्षण

अर्धमागधी के जो लक्षण पहले बताये गए हैं उनमें से अनेक इस भाषा में भी पाये जाते हैं । ऐसे लक्षणों में कुछ ये हैं :—

१. क के स्थान में अनेक स्थलों में ग ।
२. लुप्त व्यञ्जनों के स्थान में य् ।
३. शब्द के आदि और मध्य में भी ण की तरह न ।
४. यथा और यावत् के स्थान में क्रमशः जहा और जाव की तरह अहा और आव भी ।
५. समास में उत्तर पद के पूर्व में 'म्' का आगम ।
६. पाय, माय, तेगिच्छग, पडुप्पण्ण, साहि, सुहुम, सुमिण आदि शब्दों का भी, पत्त, मेत्त, चेइच्छय आदि की तरह प्रयोग ।
७. तृतीया के एकवचन में कहीं कहीं सा प्रत्यय ।
८. आइक्खइ, कुव्वइ प्रभृति धातु-रूप ।
९. सोच्चा, किच्चा, वंदित्तु आदि त्वा प्रत्यय के रूप ।
१०. कड, वावड, संवुड, प्रभृति त-प्रत्ययान्त रूप ।

---

(६) अशोक-लिपि

सम्राट्[1] अशोक ने भारतवर्ष के भिन्न-भिन्न स्थानों में अपने धर्म के उपदेशों को शिलाओं में खुदवाये थे। ये सब शिलालेख उस समय में प्रचलित भिन्न-भिन्न प्रादेशिक भाषाओं में रचित हैं। भाषा-साम्य की दृष्टि से ये सब शिलालेख४४ प्रधानतः इन तीन भागों में विभक्त किये जा सकते हैं:—

(१) पंजाब के शिलालेख। इनकी भाषा संस्कृत के अनुरूप है। इनमें र का लोप नहीं देखा जाता।

(२) पूर्व भारत के शिलालेख। इनकी भाषा का मागधी के साथ सादृश्य देखने में आता है। इनमें र के स्थान में सर्वत्र ल है।

(३) पश्चिम भारत के शिलालेख। ये उज्जयिनी की उस भाषा में है जिसका पालि के साथ अधिक साम्य है।

इन तीनों प्रकार के शिलालेखों के कुछ उदाहरण नीचे दिए जाते हैं जिन पर से इनका भेद अच्छी तरह समझ में आ सकता है।

संस्कृत	कपर्दगिरि (पंजाब)	धौलि (उड़ीसा)	गिरनार (गुजरात)
देवानांप्रियस्य	देवानंप्रियस	देवानंपियस	देवानंपियस
राज्ञः	रञो	लजिने	रानो, रञो
वृक्षाः	—	लुखनि	वच्छा
शुश्रूषा	सुश्रुषा	सुसूसा	सुसुसा
नास्ति	नस्ति, नास्ति	नथि, नथि, नथा	नास्ति

इन शिलालेखों का समय ख्रिस्त-पूर्व २५० वर्ष का है।

इन शिलालेखों की भाषा की उत्पत्ति भगवान् महावीर की एवं सम्भवतः बुद्धदेव की उपदेश-भाषा से ही हुई है।[2]

---

(७) सौरसेनी

संस्कृत-नाटकों में प्राकृत गद्यांश सामान्य रूप से सौरसेनी भाषा में लिखा गया है। अश्वघोष के नाटकों में एक

निदर्शन तरह की सौरसेनी के उदाहरण पाये जाते हैं, जो पालि और अशोकलिपि की भाषा के अनुरूप और पिछले काल के नाटकों में प्रयुक्त सौरसेनी की अपेक्षा प्राचीन है। भास के, कालिदास के और इनके बाद के अधिक नाटकों में सौरसेनी के निदर्शन देखे जाते हैं।

वररुचि, हेमचन्द्र, क्रमदीश्वर, लक्ष्मीधर और मार्कण्डेय आदि के प्राकृत-व्याकरणों में सौरसेनी भाषा के लक्षण और उदाहरण पाये जाते हैं।

दण्डी, रुद्रट और वाग्भट आदि संस्कृत के अलंकारिकों ने भी इस भाषा का उल्लेख किया है।

भरत के नाट्यशास्त्र में सौरसेनी भाषा का उल्लेख हैं, उन्होंने नाटक में नायिका और सखियों के लिए इस भाषा

विनियोग का प्रयोग बताया है।[3]

भरत ने विदूषक की भाषा प्राच्या कही है[4], परन्तु मार्कण्डेय के व्याकरण में प्राच्या भाषा के जो लक्षण दिये गये हैं

प्राच्या भाषा सौरसेनी के अन्तर्गत उनसे और नाटकों में प्रयुक्त विदूषक की भाषा पर से यह मालूम होता है कि सौरसेनी से इस भाषा (प्राच्या) का कुछ विशेष भेद नहीं है। इससे हमने भी प्रस्तुत कोष में उसका अलग उल्लेख न करके सौरसेनी में ही अन्तर्भाव किया है।

दिगम्बर जैनों के प्रवचनसार, द्रव्यसंग्रह प्रभृति ग्रन्थ भी एक तरह की सौरसेनी भाषा में ही रचित हैं। यह भाषा

जैन सौरसेनी श्वेताम्बरों की अर्धमागधी और प्राकृत-व्याकरणों में निर्दिष्ट सौरसेनी के मिश्रण से बनी हुई है। इस भाषा को 'जैन सौरसेनी' नाम दिया गया है। जैन सौरसेनी मध्ययुग की जैन महाराष्ट्री की अपेक्षा जैन अर्द्धमागधी से अधिक निकटता रखती है और मध्ययुग की जैन महाराष्ट्री से प्राचीन है।

---

१. हाल ही में डॉ० त्रिभुवनदास लहेरचंद ने अपने एक गुजराती लेख में अनेक प्रमाण और युक्तियों से यह सिद्ध किया है कि अशोक के शिलालेखों के नाम से प्रसिद्ध शिलालेख सम्राट् अशोक के नहीं, परन्तु जैन सम्राट् संप्रति के खुदवाये हुए हैं।

२. See Dr. A. B. Keith's Sanskrt Drama, Page 87.

३. "नायिकानां सखीनां च सूरसेनाविरोधिनी" (नाट्यशास्त्र १७, ५१)।

४. "प्राच्या विदूषकादीनां" (नाट्यशास्त्र १७, ५१)।

सौरसेनी भाषा की उत्पत्ति[1] सूरसेन देश अर्थात् मथुरा प्रदेश से हुई है।

प्रकृति वररुचि ने अपने व्याकरण में संस्कृत को ही सौरसेनी भाषा की प्रकृति अर्थात् मूल कहा है[2]। किन्तु यह हम पहले ही प्रमाणित कर चुके हैं कि किसी प्राकृत भाषा की उत्पत्ति संस्कृत से नहीं हुई है। सुतरां, सौरसेनी प्राकृत का मूल भी वैदिक या लौकिक संस्कृत नहीं है। सौरसेनी और संस्कृत ये दोनों ही वैदिक युग में प्रचलित सूरसेन अथवा मध्यदेश की कथ्य प्राकृत भाषा से ही उत्पन्न हुई हैं। संस्कृत भाषा पाणिनि-प्रभृति के व्याकरण द्वारा नियन्त्रित होने के कारण परिवर्तन-हीन मृत-भाषा में परिणत हुई। वैदिक काल की सौरसेनी ने प्राकृत-व्याकरण द्वारा नियन्त्रित न होने के कारण क्रमशः परिवर्तित होते हुए पिछले समय की सौरसेनी भाषा का आकार धारण किया। पिछले समय की यह सौरसेनी भी बाद में प्राकृत-व्याकरणों के द्वारा जकड़े जाने के कारण संस्कृत की तरह परिवर्तन-शून्य होकर मृत-भाषा में परिणत हुई है।

समय अश्वघोष के नाटकों में जिस सौरसेनी भाषा के उदाहरण मिलते हैं वह अशोकलिपि की सम-सामयिक कही जा सकती है। भास के नाटकों की सौरसेनी का और जैन सौरसेनी का समय सम्भवतः ख्रिस्त की प्रथम या द्वितीय शताब्दी मालूम होता है।

लक्षण महाराष्ट्री भाषा के साथ सौरसेनी भाषा का जिस-जिस अंश में भेद है वह नीचे दिया जाता है। इसके सिवा महाराष्ट्री भाषा के जो लक्षण उसके प्रकरण में दिये जायँगे उनमें महाराष्ट्री के साथ सौरसेनी का कोई भेद नहीं है। इन भेदों पर यह ज्ञात होता है कि अनेक स्थलों में महाराष्ट्री की अपेक्षा सौरसेनी का संस्कृत के साथ पार्थक्य कम और सादृश्य अधिक है।

वर्ण-भेद

१. स्वर-वर्णों के मध्यवर्ती असंयुक्त त और द के स्थान में द होता है; यथा—रजत = रमद, गदा = गदा।

२. स्वरों के बीच असंयुक्त थ का ह और ध दोनों होते हैं; जैसे—नाथ = णाध, णाह।

३. र्य के स्थान में य्य और ज्ज होता है; यथा—आर्य = अय्य, अज्ज; सूर्य = सुय्य, सुज्ज।

नाम-विभक्ति

१. पञ्चमी के एकवचन में दो और दु ये दो ही प्रत्यय होते हैं और इनके योग में पूर्व के अकार का दीर्घ होता है; यथा—जिनात् = जिणादो, जिणादु।

आख्यात

१. ति और ते प्रत्ययों के स्थान में दि और दे होता है; जैसे—हसदि, हसदे, रमदि, रमदे।

२. भविष्यत्काल के प्रत्यय के पूर्व में स्सि लगता है; यथा—हसिस्सिदि, करिस्सिदि।

सन्धि

१. अन्त्य मकार के बाद इ और ए होने पर ण् का वैकल्पिक आगम होता है; यथा—युक्तम् इदम् = जुत्तं णिमं, जुत्तमिमं; एवम् एतत् = एवं णेदं, एवमेदं।

कृदन्त

१. त्वा प्रत्यय के स्थान में इअ, दूण और त्ता होते हैं; यथा—पठित्वा = पढिअ, पढिदूण, पढित्ता।

---

१. पन्नवणासूत्र के "सोत्तियमइया (?मई य) चेदी वीयभयं सिंधुसोवीरा। महुरा य सूरसेणा पावा भंगी य मासपुरिवट्टा" (पत्र ६१)। इस पाठ पर "चेदिषु शुक्तिकावती, वीतभयं सिन्धुषु, सौवीरेषु मथुरा, सूरसेनेषु पापा, भङ्गे(? ङ्गि)षु मासपुरिवट्टा" इस तरह व्याख्या करते हुए आचार्य मलयगिरि ने सूरसेन देश की राजधानी पावा बतलाकर आजकल के बिहार प्रदेश को ही सूरसेन कहा है। नेमिचन्द्रसूरि ने अपने प्रवचनसारोद्धारनामक ग्रंथ में पन्नवणासूत्र के उक्त पाठ को अविकल रूप में उद्धृत किया है। इसकी टीका में श्रीसिद्धसेनसूरि ने आचार्य मलयगिरि की उक्त व्याख्या को 'अतिव्यवहृत' कहकर, उक्त मूल पाठ की व्याख्या इस तरह की है:—'शुक्तीमती नगरी चेदयो देशः, वीतभयं नगरं सिन्धुसौवीरा जनपदः, मथुरा नगरी सूरसेनाख्यो देशः, पापा नगरी भङ्गयो देशः, मासपुरी नगरी वर्तो देशः' (दे० ला० संस्करण, पत्र ४४६)।

२. प्राकृतप्रकाश (१२, २)।

(८) मागधी

मागधी प्राकृत के सर्व-प्राचीन निदर्शन अशोक-साम्राज्य के उत्तर और पूर्व भागों के खालसी, मिरट, लौरिया (Lauriya), सहसराम, बराबर (Barabar), रामगढ़, धौलि और जौगढ़ (Jaugadha) प्रभृति स्थानों के अशोक-शिलालेखों में पाये जाते हैं। इसके बाद नाटकीय प्राकृतों में मागधी भाषा के उदाहरण देखे जाते हैं। नाटकीय मागधी के सर्व-प्राचीन नमूने अश्वघोष के नाटकों के खण्डित अंशों में मिलते हैं। भास के नाटकों में, कालिदास के नाटकों में और मृच्छकटिक आदि नाटकों में मागधी भाषा के उदाहरण विद्यमान हैं।

निदर्शन

वररुचि के प्राकृतप्रकाश, चण्ड के प्राकृतलक्षण, हेमचन्द्र के सिद्धहेमचन्द्र (अष्टम अध्याय), क्रमदीश्वर के संक्षिप्तसार, लक्ष्मीधर की षड्भाषाचन्द्रिका और मार्कण्डेय के प्राकृतसर्वस्व आदि प्रायः समस्त प्राकृत-व्याकरणों में मागधी भाषा के लक्षण और उदाहरण दिए गए हैं।

भरत के नाट्यशास्त्र में मागधी भाषा का उल्लेख है और उन्होंने नाटक में राजा के अन्तःपुर में रहनेवाले, सुरंग खोदनेवाले, कलवार, अश्वपालक वगैरह पात्रों के लिए और विपत्ति में नायक के लिए भी इस भाषा का प्रयोग करने को कहा है[1]। परन्तु मार्कण्डेय द्वारा अपने प्राकृतसर्वस्व में उद्धृत किये हुए कोहल के "राक्षसभिक्षुक्षपणकचेटाद्या मागधीं प्राहुः" इस वचन से मालूम होता है कि भरत के कहे हुए उक्त पात्रों के अतिरिक्त भिक्षु, क्षपणक आदि अन्य लोग भी इस भाषा का व्यवहार करते थे। रुद्रट, वाग्भट, हेमचन्द्र आदि आलंकारिकों ने भी अपने-अपने अलंकार-ग्रन्थों में इस भाषा का उल्लेख किया है।

विनियोग

मगध देश ही मागधी भाषा का उत्पत्ति-स्थान है। मगध देश की सीमा के बाहर भी अशोक के शिलालेखों में जो इसके निदर्शन पाये जाते हैं उसका कारण यह है कि मागधी भाषा उस समय राज-भाषा होने के कारण मगध के बाहर भी इसका प्रचार हुआ था। सम्भवतः राज-भाषा होने के कारण ही नाटकों में सर्वत्र ही राजा के अन्तःपुर के लोगों के लिए इस भाषा का व्यवहार करने का नियम हुआ था। प्राचीन भिक्षु और क्षपणक भी मगध के ही निवासी होने से, सम्भव है, नाटकों में इनकी भाषा भी मागधी ही निर्दिष्ट की गई है।

उत्पत्ति-स्थान

वररुचि ने अपने प्राकृत-व्याकरण में मागधी की प्रकृति—मूल होने का सम्मान सौरसेनी को दिया है[2]। इसीका अनुसरण कर मार्कण्डेय ने भी सौरसेनी से ही मागधी की सिद्धि कही है[3]। किन्तु मागधी और सौरसेनी आदि प्रादेशिक भाषाओं का भेद अशोक के शिलालेखों में भी देखा जाता है। इससे यह सिद्ध है कि ये सब प्रादेशिक भेद प्राचीन और समसामयिक हैं, एक प्रदेश की भाषा से दूसरे प्रदेश में उत्पन्न नहीं हुए हैं। जैसे सौरसेनी मध्यदेश में प्रचलित वैदिक युग की कथ्य भाषा से उत्पन्न हुई है वैसे मागधी ने भी उस कथ्य भाषा से जन्म-ग्रहण किया है जो वैदिककाल में मगध देश में प्रचलित थी।

प्रकृति

अशोक-शिलालेखों की और अश्वघोष के नाटकों की मागधी भाषा प्रथम युग की मागधी भाषा के निदर्शन हैं। भास के और परवर्ती काल के अन्य नाटकों की और प्राकृत-व्याकरणों की मागधी मध्य-युग की मागधी भाषा के उदाहरण हैं।

समय

शाकारी, चाण्डाली और शाबरी ये तीन भाषाएँ मागधी के ही प्रकार-भेद—रूपान्तर हैं। भरत ने शाकारी भाषा का व्यवहार शबर, शक आदि और उसी प्रकृति के अन्य लोगों के लिए कहा है[4], किन्तु मार्कण्डेय ने राजा के साले की भाषा शाकारी बतलाई है[5]। भरत पुक्कस आदि जातियों की व्यवहार-भाषा को चाण्डाली और अंगारकार, व्याध,

---

१. "मागधी तु नरेन्द्राणामन्तःपुरनिवासिनाम्" (नाट्यशास्त्र १७, ५०)।
"सुरङ्गाखनकादीनां शुण्डकाराश्वरक्षिणाम्। व्यसने नायकानां स्यादात्मरक्षासु मागधी॥" (नाट्यशास्त्र १७, ५६)।

२. "प्रकृतिः सौरसेनी" (प्राकृतप्रकाश ११, २)।

३. "मागधी शौरसेनीतः" (प्राकृतसर्वस्व, पृष्ठ १०१)।

४. "शबराणां शकादीनां तत्स्वभावश्च यो गणः। शकारभाषा योक्तव्या" (नाट्यशास्त्र १७, ५३)।

५. "शकारस्येयं शाकारी, शकारश्च
'राज्ञोऽनूढाभ्राता श्यालस्त्वैश्वर्यसंपन्नः।
मदमूर्खताभिमानी शकार इति दुष्कुलीनः स्यात्' इत्युक्तेः" (प्राकृतसर्वस्व, पृष्ठ १०५)।

शाकारी आदि भाषाएँ मागधी के अन्तर्गत हैं

कठहार और यन्त्र-जीवी लोगों की भाषा को शाबरी कहते हैं[1]। इन तीनों भाषाओं के जो लक्षण और उदाहरण मार्कण्डेय के प्राकृत-व्याकरण में और नाटकों के उक्त पात्रों की भाषा में पाये जाते हैं उनमें और इतर प्राकृत-व्याकरणों की मागधी भाषा के लक्षण और उदाहरणों में तथा नाटकों के मागधी-भाषा-भाषी पात्रों की भाषा में इतना कम भेद और इतना अधिक साम्य है कि उक्त तीन भाषाओं को मागधी से अलग नहीं कही जा सकतीं। यही कारण है कि हमने प्रस्तुत कोष में इन भाषाओं का मागधी में ही समावेश किया है।

मृच्छकटिक के पात्र माथुर और दो द्यूतकारों की भाषा को 'ढक्की' नाम दिया गया है। यह भी मागधी भाषा का ही एक रूपान्तर प्रतीत होता है। मार्कण्डेय ने 'ढक्की' को ही 'टाक्की' नाम से निर्देश किया है, यह उनके वहाँ पर उद्धृत किये हुए एक श्लोक से ज्ञात होता है[2]। मार्कण्डेय ने पदान्त में उ, तृतीया के एकवचन में ए, पञ्चमी के बहुवचन में हुम्

ढक्की या टाक्की भाषा

आदि जो इस भाषा के लक्षण दिए हैं उनपर से इसमें अपभ्रंश का ही विशेष साम्य नजर आता है। इस लिए मार्कण्डेय ने वहाँ पर जो यह कहा है कि 'हरिश्चन्द्र इस भाषा को अपभ्रंश मानता है'[3] वह मत हमें भी संगत मालूम पड़ता है।

मागधी भाषा का सौरसेनी के साथ जो प्रधान भेद है वह नीचे दिया जाता है। इसके सिवा अन्य अंशों में मागधी

लक्षण

भाषा साधारणतः सौरसेनी के ही अनुरूप है।

वर्ण-भेद

१. र के स्थान में सर्वत्र ल होता है[4]; यथा—नर = णल; कर = कल।
२. श, ष और स के स्थान में तालव्य श होता है; यथा—शोभन = शोहण, पुरुष = पुलिश; सारस = शालश।
३. संयुक्त ष और स के स्थान में दन्त्य सकार होता है; यथा—शुष्क = शुस्क; कष्ट = कस्ट; स्खलति = स्खलदि; बृहस्पति = बुहस्पदि।
४. ट्ट और ष्ठ के स्थान में स्ट होता है; यथा—पट्ट = पस्ट; सुष्ठु = शुस्टु।
५. स्थ और र्थ की जगह स्त होता है; जैसे—उपस्थित = उवस्तिद; सार्थ = शस्त।
६. ज, द्य और य के बदले य होता है; यथा—जानाति = याणदि, दुर्जन = दुय्यण; मद्य = मय्य, अद्य = अय्य; याति = यादि, यम = यम।
७. न्य, ण्य, ज्ञ और ञ्ज के स्थान में ञ्ञ होता है; यथा—अन्य = अञ्ञ; पुण्य = पुञ्ञ; प्रज्ञा = पञ्ञा; अञ्जलि = अञ्ञलि।
८. अनादि छ के स्थान में श्च होता है; यथा—गच्छ = गश्च, पिच्छिल = पिश्चिल।
९. क्ष की जगह स्क होता है[5]; जैसे—राक्षस = लस्कश, यक्ष = यस्क।

नाम-विभक्ति

१. अकारान्त पुंलिंग-शब्द के प्रथमा के एकवचन में ए होता है; यथा—जिनः = यिणे, पुरुषः = पुलिशे।
२. अकारान्त शब्द के षष्ठी का एकवचन स्स और आह होता है; यथा—जिनस्य = यिणस्स, यिणाह।
३. अकारान्त शब्द के षष्ठी के बहुवचन में आण और आहँ ये दोनों होते हैं; जैसे—जिनानाम् = यिणाण, यिणाहँ।
४. अस्मत् शब्द के एकवचन और बहुवचन का रूप हगे होता है।

---

१. "चाण्डाली पुक्कसादिषु। अंगारकरव्याधानां काष्ठयन्त्रोपजीविनाम्। योज्या शबरभाषा तु" (नाट्यशास्त्र १७, ५३-४)।

२. "प्रयुज्यते नाटकादौ द्यूतादिव्यवहारिभिः।
वणिग्भिर्हीनदेहैश्च तदाहुष्टक्कभाषितम्" (प्राकृतसर्वस्व, पृष्ठ ११०)।

३. "हरिश्चन्द्रस्त्विमां भाषामपभ्रंश इतीच्छति" (प्राकृतस० पृष्ठ ११०)।

४. मार्कण्डेय यह नियम वैकल्पिक मानते हैं; "रस्य लो वा भवेत्" (प्राकृतस० पृष्ठ १०१)।

५. हेमचन्द्र-प्राकृत-व्याकरण के अनुसार 'क्ष' की जगह जिह्वामूलीय '≍क' होता है; देखो हे० प्रा० ४, २९६।

(९) महाराष्ट्री

निदर्शन

प्राकृत काव्य और गीति की भाषा महाराष्ट्री कही जाती है। सेतुबन्ध, गाथासप्तशती, गउडवहो, कुमारपालचरित प्रभृति ग्रन्थों में इस भाषा के निदर्शन पाये जाते हैं। गाथा (गीति-साहित्य) में महाराष्ट्री प्राकृत ने इतनी प्रसिद्धि प्राप्त की थी कि बाद के नाटकों में गद्य में सौरसेनी बोलनेवाले पात्रों के लिए संगीत या पद्य में महाराष्ट्री भाषा का व्यवहार करने का रिवाज सा बन गया था। यही कारण है कि कालिदास से लेकर उसके बाद के सभी नाटकों में पद्य में प्रायः महाराष्ट्री भाषा का ही व्यवहार देखा जाता है।

चंड ने अपने प्राकृतलक्षण में 'महाराष्ट्री' इस नाम का उल्लेख और इसके विशेष लक्षण न देकर भी आर्ष-प्राकृत अथवा अर्धमागधी के और जैन महाराष्ट्री के लक्षणों के साथ साधारण भाव से इसके लक्षण दिए हैं। वररुचि ने अपने प्राकृत-व्याकरण में इस भाषा के '[1]महाराष्ट्री' नाम का उल्लेख किया है और इसके विशेष लक्षण और उदाहरण दिए हैं। आचार्य हेमचन्द्र ने अपने व्याकरण में 'महाराष्ट्री' नाम का निर्देश न कर 'प्राकृत' इस साधारण नाम से महाराष्ट्री के ही लक्षण और उदाहरण बताए हैं। क्रमदीश्वर का संक्षिप्तसार, त्रिविक्रम की प्राकृतव्याकरणसूत्रवृत्ति, लक्ष्मीधर की षड्भाषाचन्द्रिका और मार्कण्डेय का प्राकृतसर्वस्व प्रभृति प्राकृत-व्याकरणों में इस भाषा के लक्षण और उदाहरण पाये जाते हैं। चंड-भिन्न सभी प्राकृत वैयाकरणों ने महाराष्ट्री का मुख्य रूप से विवरण दिया है और सौरसेनी, मागधी प्रभृति भाषाओं के महाराष्ट्री के साथ जो भेद हैं वे ही बतलाए हैं।

संस्कृत के अलंकार-शास्त्रों में भी भिन्न-भिन्न प्राकृत भाषाओं का उल्लेख मिलता है। भरत के नाट्य-शास्त्र में 'दाक्षिणात्या' भाषा का निर्देश है, किन्तु इसके विशेष लक्षण नहीं दिए गए हैं। संभवतः वह महाराष्ट्री भाषा ही हो सकती है, क्योंकि भरत ने महाराष्ट्री का अलग उल्लेख नहीं किया है। परन्तु मार्कण्डेय के प्राकृतसर्वस्व में उद्धृत प्राकृतचन्द्रिका के [2]वचन में और प्राकृतसर्वस्व के खुद मार्कण्डेय के [3]वचन में महाराष्ट्री और दाक्षिणात्या का भिन्न-भिन्न भाषा के रूप में उल्लेख किया गया है। दण्डी के काव्यादर्श के

> 'महाराष्ट्राश्रयां भाषां प्रकृष्टं प्राकृतं विदुः।
> सागरः सूक्तिरत्नानां सेतुबन्धादि यन्मयम् ॥" (१, ३४)।

इस श्लोक में महाराष्ट्री भाषा का और उसकी उत्कृष्टता का स्पष्ट उल्लेख है। दण्डी के समय में महाराष्ट्री प्राकृत का इतना उत्कर्ष हुआ था कि इसके परवर्ती अनेक ग्रन्थकारों ने केवल इस महाराष्ट्री के ही अर्थ में उस प्राकृत शब्द का प्रयोग किया है जो सामान्यतः सर्व प्रादेशिक भाषाओं का वाचक है। रुद्रट का काव्यालंकार, वाग्भटालंकार, पाइअलच्छी-नाममाला, हेमचन्द्र का प्राकृत-व्याकरण प्रभृति ग्रन्थों में महाराष्ट्री के ही अर्थ में प्राकृत शब्द व्यवहृत हुआ है। अलंकार-शास्त्र-भिन्न पाइअलच्छीनाममाला और देशीनाममाला इन कोष-ग्रन्थों में भी महाराष्ट्री के उदाहरण हैं।

उत्पत्ति-स्थान

डॉ. हॉर्नलि के मत में महाराष्ट्री भाषा महाराष्ट्र देश में उत्पन्न नहीं हुई है। वे मानते हैं कि महाराष्ट्री का अर्थ 'विशाल राष्ट्र की भाषा' है और राजपूताना तथा मध्यदेश प्रभृति इसी विशाल राष्ट्र के अन्तर्गत हैं, इसीसे 'महाराष्ट्री' मुख्य प्राकृत कही गई है। किन्तु दण्डी ने इस भाषा को महाराष्ट्र देश की ही भाषा कही है। सर ग्रियर्सन के मत में महाराष्ट्री प्राकृत से ही आधुनिक मराठी भाषा उत्पन्न हुई है। इससे महाराष्ट्री प्राकृत का उत्पत्ति-स्थान महाराष्ट्र देश ही है यह बात निःसन्देह कही जा सकती है।

प्रकृति

आचार्य हेमचन्द्र ने अपने व्याकरण में महाराष्ट्र को ही 'प्राकृत' नाम दिया है और इसकी प्रकृति संस्कृत कही है। इसी तरह चण्ड, लक्ष्मीधर, मार्कण्डेय आदि वैयाकरणों ने साधारण रूप से सभी प्राकृत भाषाओं का मूल (प्रकृति) संस्कृत बताया है। किन्तु हम यह पहले ही अच्छी तरह प्रमाणित कर आए हैं कि कोई भी प्राकृत भाषा संस्कृत से उत्पन्न नहीं हुई है, बल्कि वैदिक काल में भिन्न-भिन्न प्रदेशों में प्रचलित आर्यों की कथ्य भाषाओं

---

१. "शेषं महाराष्ट्रीवत्" (प्राकृतप्रकाश १२, ३२)।

२. "महाराष्ट्री तथावन्ती सौरसेन्यर्धमागधी। वाह्लीकी मागधी प्राच्येत्यष्टौ ता दाक्षिणात्यया ॥" (प्रा० स० पृष्ठ २)।

३. देखो प्राकृतसर्वस्व, पृष्ठ २ और १०४।

से ही सभी प्राकृत भाषाओं की उत्पत्ति हुई है, सुतरां महाराष्ट्री भाषा की उत्पत्ति प्राचीन काल के महाराष्ट्र-निवासी आर्यों की कथ्य भाषा से हुई है।

समय

कौन समय आर्यों ने महाराष्ट्र में सर्व-प्रथम निवास किया था, इस बात का निर्णय करना कठिन है, परन्तु अशोक के पहले प्राकृत भाषा महाराष्ट्र देश में प्रचलित थी, इस विषय में किसीका मत-भेद नहीं है। उस समय महाराष्ट्र देश में प्रचलित प्राकृत से क्रमशः काव्यीय और नाटकीय महाराष्ट्री भाषा उत्पन्न हुई है। प्राकृतप्रकाश का कर्ता वररुचि यदि वृत्तिकार कात्यायन से अभिन्न व्यक्ति हो तो यह स्वीकार करना होगा कि महाराष्ट्री ने अन्ततः ख्रिस्त-पूर्व दो सौ वर्ष के पहले ही साहित्य में स्थान पाया था। लेकिन महाराष्ट्री भाषा के तद्भव शब्दों में व्यञ्जन वर्णों के लोप की बहुलता देखने से यह विश्वास नहीं होता कि यह भाषा उतनी प्राचीन है। वररुचि का व्याकरण संभवतः ख्रिस्त के बाद ही रचा गया है। जैन अर्धमागधी और जैन महाराष्ट्री में महाराष्ट्री प्राकृत के प्रभाव का हमने पहले उल्लेख किया है। महाराष्ट्री भाषा में रचित जो सब साहित्य इस समय पाया जाता है उसमें ख्रिस्त के बाद की महाराष्ट्री के ही निदर्शन देखे जाते हैं। प्राचीन महाराष्ट्री का कोई साहित्य उपलब्ध नहीं है। प्राचीन महाराष्ट्री में बाद की महाराष्ट्री की तरह व्यञ्जन-वर्ण-लोप की अधिकता नहीं थी, इस बात के कुछ निदर्शन चण्ड के व्याकरण में मिलते हैं। जैन अर्धमागधी और जैन महाराष्ट्री में प्राचीन महाराष्ट्री भाषा का सादृश्य रक्षित है।

आवन्ती और वाह्लीकी महाराष्ट्री के अन्तर्गत है

भरत ने नाट्यशास्त्र में आवन्ती और वाह्लीकी भाषा का उल्लेख कर नाटकों में धूर्त पात्रों के लिए आवन्ती का और द्यूतकारों के लिए वाह्लीकी का प्रयोग कहा है। मार्कण्डेय ने अपने प्राकृतसर्वस्व में 'आवन्ती स्यान्महाराष्ट्रीशौरसेन्योस्तु संकरात्' और 'आवन्त्यामेव वाह्लीकी किन्तु रस्यात्र लो भवेत्' यह कह कर इनका संक्षिप्त लक्षण-निर्देश किया है। मार्कण्डेय ने आवन्ती भाषा के जो त्वा के स्थान में तूण और भविष्यत् काल के प्रत्यय के स्थान में ज और जा प्रभृति लक्षण बतलाए हैं वे महाराष्ट्री के साथ साधारण हैं। उनके दिए हुए किराद, वेदस, पेच्छदि प्रभृति उदाहरणों में जो तकार के स्थान में दकार है वहाँ शौरसेनी के साथ इसका (आवन्ती का) सादृश्य है परन्तु वह भी सर्वत्र नहीं है, जैसे उनके दिए हुए होइ, सुव्वइ, लिज्जइ, भणिए आदि उदाहरणों में। इसी तरह वाह्लीकी में जो र का ल होता है वही एकमात्र मागधी का सादृश्य है। इसके सिवा सभी अंशों में यह भी आवन्ती की तरह महाराष्ट्री के ही सादृश है। सुतरां, ये दोनों भाषाएँ महाराष्ट्री के ही अन्तर्गत कही जा सकती है। इससे हमने भी इनका इस कोष में अलग निर्देश नहीं किया है।

लक्षण

संस्कृत भाषा के साथ महाराष्ट्री भाषा के वे भेद नीचे दिए जाते हैं जो महाराष्ट्री और संस्कृत के साथ अन्य प्राकृत भाषाओं के सादृश्य और पार्थक्य की तुलना के लिए भी अधिक उपयुक्त हैं।

स्वर

१. अनेक जगह भिन्न स्वरों के स्थान में भिन्न-भिन्न स्वर होते हैं; जैसे—समृद्धि = सामिद्धि, ईषत् = ईसि, हर = हीर, ध्वनि = झुणि, शय्या = सेज्जा, पद्म = पोम्म; यथा = जह सदा = सइ, स्त्यान = थीण, सास्ना = सुण्हा, आसार = ऊसार, ग्राह्य = गेज्झ, आली = ओली; इति = इअ, पथिन् = पह, जिह्वा = जीहा, द्विवचन = दुवअण, पिण्ड = पेंड, द्विधाकृत = दोहाइअ; हरीतकी = हरडई, कश्मीर = कम्हार, पानीय = पाणिअ, जीर्ण = जुण्ण, हीन = हूण, पीयूष = पेऊस; मुकुल = मउल, भ्रुकुटि = भिउडि, क्षुत = छीअ, मुसल = मूसल, तुण्ड = तोंड; सूक्ष्म = सण्ह, उद्व्यूढ = उव्वीढ, वातूल = वाउल, नूपुर = णेउर, तूणीर = तोणीर; वेदना = विअणा, स्तेन = थूण; मनोहर = मणहर, गो = गउ, गाअ; सोच्छ्वास = सूसास।

२. महाराष्ट्री में ऋ, ॠ, ऌ, ॡ ये स्वर सर्वथा लुप्त हो गये हैं।

३. ऋ के स्थान में भिन्न-भिन्न स्वर एवं रि होता है; यथा—तृण = तण, मृदुक = माउक्क, कृपा = किवा, मातृ = माइ, माउ; वृत्तान्त = वुत्तंत, मृषा = मुसा, मूसा, मोसा; वृन्त = विंट, वेंट, वोंट; ऋतु = उउ, रिउ; ऋद्धि = रिद्धि, ऋक्ष = रिच्छ; सदृश = सरिस, दृप्त = दरिअ।

४. ऌ के स्थान में इलि होता है; जैसे—क्लृप्त = किलित्त, क्लृन्न = किलिण्ण।

५. ऐ का प्रयोग भी प्रायः महाराष्ट्री में नहीं है। उसके स्थान में सामान्यतः ए और विशेषतः अइ होता है, यथा—शैल = सेल, ऐरावण = एरावण, वैद्य = वेज्ज, वैधव्य = वेहव्व; सैन्य = सेण्ण, सइण्ण; कैलाश = केलास, कइलास; दैव = देव्व, दइव; ऐश्वर्य = अइसरिअ, दैन्य = दइण्ण।

६. ओ का व्यवहार भी[1] प्रायः महाराष्ट्र में नहीं है। उसके स्थान में सामान्यतः ओ और विशेष स्थलों में उ या अउ होता है; यथा—कौमुदी = कोमुई, यौवन = जोव्वण, दौवारिक = दुवारिअ, पौलोमी = पुलोमी; कौरव = कउरव, गौड = गउड, सौध = सउह।

असंयुक्त व्यञ्जन

१. स्वरों के मध्यवर्ती क, ग, च, ज, त, द, य, व इन व्यञ्जनों का प्रायः लोप होता है; जैसे क्रमशः—लोक = लोअ, नग = णअ, शची = सई, रजत = रअअ, यती = जई, गदा = गआ, वियोग = विओअ, लावण्य = लाअण्ण।

२. स्वरों के बीच के ख, घ, थ, ध और भ के स्थान में ह होता है; यथा क्रमशः—शाखा = साहा, श्लाघते = लाहइ, नाथ = णाह, साधु = साहु, सभा = सहा।

३. स्वरों के बीच के ट का ड होता है; यथा—भट = भड, घट = घड।

४. स्वरों के बीच के ठ का ढ होता है; जैसे—मठ = मढ, पठति = पढइ।

५. स्वरों के बीच के ड का ल प्रायः होता है; यथा—गरुड = गरुल, तडाग = तलाअ।

६. स्वरों के बीच के त का अनेक स्थल में ड होता है, यथा—प्रतिभासस = पडिहास, प्रभृति = पहुडि, व्यापृत = वावड, पताका = पडाआ।

७. न के स्थान में सर्वत्र ण होता है; यथा—कनक = कणअ, वचन = वअण, नर = णर, नदी = णई, अन्य = अण्ण, दैन्य = दइण्ण[2]।

८. दो स्वरों के मध्यवर्ती प का कहीं-कहीं व और कहीं-कहीं लोप होता है; यथा—शपथ = सवह, शाप = साव, उपसर्ग = उवसग्ग, रिपु = रिउ, कपि = कइ।

९. स्वरों के बीच के फ के स्थान में कहीं-कहीं भ, कहीं-कहीं ह और कहीं-कहीं ये दोनों होते हैं; यथा—रेफ = रेभ, शिफा = सिभा, मुक्ताफल = मुत्ताहल, सफल = सभल, सहल, शेफालिका = सेभालिआ, सेहालिआ।

१०. स्वरों के मध्यवर्ती ब का व होता है; जैसे—अलाबू = अलावू, सबल = सवल।

११. आदि के य का ज होता है; यथा—यम = जम, यशस् = जस, याति = जाइ।

१२. कृदन्त के अनीय और य प्रत्यय के य का ज्ज होता है; जैसे—करणीय = करणिज्ज, पेय = पेज्ज।

१३. अनेक जगह र का ल होता है; यथा—हरिद्रा = हलिद्दा, दरिद्र = दलिद्द, युधिष्ठिर = जहुट्ठिल, अंगार = इंगाल।

१४. श और ष का सर्वत्र स होता है; यथा—शब्द = सद्द, विश्राम = वीसाम, पुरुष = पुरिस, सस्य = सास, शेष = सेस।

१५. अनेक जगह ह का घ होता है; यथा—दाह = दाघ, सिंह = सिंघ, संहार = संघार।

१६. कहीं-कहीं श, ष और स का छ होता है; जैसे—शाव = छाव, षष्ठ = छट्ठ, सुधा = छुहा।

१७. अनेक शब्दों में स्वर-सहित व्यञ्जन का लोप होता है; यथा—राजकुल = राउल, आगत = आअ, कालायस = कालास, हृदय = हिअ, पादपतन = पावडण, यावत् = जा, त्रयोदश = तेरह, स्थविर = थेर, बदर = बोर, कदल = केल, कर्णिकार = कण्णेर, चतुर्दश = चोद्दह, मयूख = मोह।

संयुक्त व्यञ्जन

१. क्ष के स्थान में प्रायः ख और कहीं-कहीं छ और झ होता है; जैसे—क्षय = खय, लक्षण = लक्खण, अक्षि = अच्छि, क्षीण = छीण, झीण।

२. त्व, थ्व, द्व और ध्व के स्थान में कहीं-कहीं क्रमशः च, छ, ज और झ होता है; यथा—ज्ञात्वा = णच्चा, पृथ्वी = पिच्छी, विद्वान् = विज्जं, बुद्ध्वा = बुज्झा।

३. ह्रस्व स्वर के परवर्ती थ्य, श्च, त्स और प्स के स्थान में छ होता है; जैसे—पथ्य = पच्छ, पश्चात् = पच्छा, उत्साह = उच्छाह, अप्सरा = अच्छरा।

---

१. संस्कृत के 'अयि' शब्द का महाराष्ट्री में 'ऐ' होता है। इसके सिवा किसी किसी के मत में 'ऐ' तथा 'औ' का भी प्रयोग होता है; जैसे—कैतव = कैअव, कौरव = कौरव (हे० प्रा० १, १)।

२. वररुचि के प्राकृत-व्याकरण के 'नो णः सर्वत्र' (२, ४२) सूत्र के अनुसार सर्वत्र 'न' का 'ण' होता है। सेतुबन्ध और गाथा-सप्तशती में इसी तरह सार्वत्रिक 'ण' पाया जाता है। हेमचन्द्र आदि कई प्राकृत वैयाकरणों के मत से शब्द के आदि के 'न' का विकल्प से 'ण' होता है; यथा—नदी = णई, नई; नर = णर, नर। गउडवहो में णकार का वैकल्पिक प्रयोग देखा जाता है।

४. द्य, य्य और र्य का ज होता है; यथा—मद्य = मज्ज, जय्य = जज्ज, कार्य = कज्ज।
५. ध्य और ह्य का झ होता है; यथा—ध्यान = झाण, साध्य = सज्झ, गुह्य = गुज्झ, सह्य = सज्झ।
६. र्त का प्रायः ट होता है; जैसे—नर्तकी = णट्टई, कैवर्त = केवट्ट।
७. ष्ट के स्थान में ठ होता है; यथा—मुष्टि = मुट्ठि, पुष्ट = पुट्ठ, काष्ठ = कट्ठ, इष्ट = इट्ठ।
८. म्न का ण होता है; यथा—निम्न = णिण्ण, प्रद्युम्न = पज्जुण्ण।
९. ज्ञ का ण और ज होता है; जैसे—ज्ञान = णाण, जाण; प्रज्ञा = पण्णा, पज्जा।
१०. स्त का थ होता है; जैसे—हस्त = हत्थ, स्तोत्र = थोत्त, स्तोक = थोव।
११. ड्म और क्म का प होता है; यथा—कुड्मल = कुंपल, रुक्मिणी = रुप्पिणी।
१२. ष्प और स्प का फ होता है; यथा—पुष्प = पुप्फ, स्पन्दन = फंदण।
१३. ह्व का भ होता है, यथा—जिह्वा = जिब्भा, विह्वल = विब्भल।
१४. न्म और ग्म का म होता है; जैसे—जन्मन् = जम्म, मन्मथ = मम्मह, युग्म = जुग्म, तिग्म = तिम्म।
१५. श्म, ष्म, स्म और ह्म का म्ह होता है; यथा—काश्मीर = कम्हार, ग्रीष्म = गिम्ह, विस्मय = विम्हअ, ब्राह्मण = बम्हण।
१६. श्न, ष्ण, स्न, ह्न, ह्ण और क्ष्ण के स्थान में ण्ह होता है; यथा—प्रश्न = पण्ह, उष्ण = उण्ह, स्नान = ण्हाण, वह्नि = वण्हि, पूर्वाह्ण = पुव्वण्ह, तीक्ष्ण = तिण्ह।
१७. ह्ल का ल्ह होता है; यथा—प्रह्लाद = पल्हाअ, कह्लार = कल्हार।
१८. संयोग में पूर्ववर्ती क, ग, ट, ड, त, द, प, श, ष और स का लोप होता है, जैसे—भुक्त = भुत्त, मुग्ध = मुद्ध, षट्पद = छप्पअ, खड्ग = खग्ग, उत्पल = उप्पल, मुद्गर = मुग्गर, सुप्त = सुत्त, निश्चल = णिच्चल, निष्ठुर = णिट्ठुर, स्खलित = खलिअ।
१९. संयोग में परवर्ती म, न और य का लोप होता है; यथा—स्मर = सर, लग्न = लग्ग, व्याध = वाह।
२०. संयोग में पूर्ववर्ती और परवर्ती सभी ल, व और र का लोप होता है; यथा—उल्का = उक्का, विक्लव = विक्कव, शब्द = सद्द, पक्व = पक्क, अर्क = अक्क, चक्र = चक्क।
२१. संयुक्त अक्षरों के स्थान में जो-जो आदेश ऊपर कहा है उसका और संयुक्त व्यञ्जन के लोप होने पर जो-जो व्यञ्जन बाकी रहता है उसका, यदि वह शब्द के आदि में न हो तो, द्वित्व होता है; जैसे—ज्ञात्वा = णच्चा, मद्य = मज्ज, भुक्त = भुत्त, उल्का = उक्का। परन्तु वह आदेश अथवा शेष व्यञ्जन यदि वर्ग का द्वितीय अथवा चतुर्थ अक्षर हो तो द्वित्व न होकर उसके पूर्व में आदेश अथवा शेष व्यञ्जन के अनन्तर-पूर्व व्यञ्जन का आगम होता है; यथा—लक्षण = लक्खण, पश्चात् = पच्छा, इष्ट = इट्ठ, मुग्ध = मुद्ध।

विश्लेषण

१. र्ह, र्श, र्ष के मध्य में और संयोग में परवर्ती ल के पूर्व में स्वर का आगम होकर संयुक्त व्यञ्जनों का विश्लेषण किया जाता है; यथा—अर्हत् = अरह, अरिह, अरुह; आदर्श = आयरिस, हर्ष = हरिस; क्लिष्ट = किलिट्ठ।

व्यत्यय

१. अनेक शब्दों में व्यञ्जन के स्थान का व्यत्यय होता है; यथा—करेणु = कणेरू, आलान = आणाल, महाराष्ट्र = मरहट्ठ, हरिताल = हलिआर, लघुक = हलुअ, ललाट = णडाल, गुह्य = गुय्ह, सह्य = सय्ह।

सन्धि

१. समास में कहीं-कहीं ह्रस्व स्वर के स्थान में दीर्घ और दीर्घ के स्थान में ह्रस्व होता है; यथा—अन्तर्वेदि = अन्तावेइ, पतिगृह = पइहर, यमुनातट = जँउणाअड, नदीस्रोत = णइसोत्त।
२. स्वर पर रहने पर पूर्व स्वर का लोप होता है; जैसे—त्रिदशेश = तिअसीस।
३. संयुक्त व्यञ्जन का पूर्व स्वर ह्रस्व होता है; जैसे—आस्य = अस्स, मुनीन्द्र = मुणिंद, चूर्ण = चुण्ण, नरेन्द्र = णरिंद, म्लेच्छ = मिलिच्छ, नीलोत्पल = णीलुप्पल।

सन्धि-निषेध

१. उद्वृत्त (व्यञ्जन का लोप होने पर अवशिष्ट रहे हुए) स्वर की पूर्व स्वर के साथ प्रायः सन्धि नहीं होती है; यथा—निशाकर = णिसाअर, रजनीकर = रअणीअर।

२. एक पद में स्वरों की सन्धि नहीं होती है; जैसे—पाद = पाअ, गति = गइ, नगर = णअर।
३. इ, ई, और ऊ की, असमान स्वर पर रहने पर, सन्धि नहीं होती है; यथा—वग्गेवि अवयासो, वणुइंदो।
४. ए और ओ की परवर्ती स्वर के साथ सन्धि नहीं होती है; यथा—फले आबंधो, आलक्खिमो एण्हि।
५. आख्यात के स्वर की सन्धि नहीं होती है; जैसे—होइ इह।

नाम-विभक्ति

१. अकारान्त पुंलिंग शब्द के एकवचन में ओ होता है; जैसे—जिनः = जिणो, वृक्षः = वच्छो।
२. पञ्चमी के एकवचन में त्तो, ओ, उ, हि और लोप होता है और त्तो-भिन्न अन्य प्रत्ययों के प्रसंग में अकार का आकार होता है; जैसे—जिनात् = जिणात्तो, जिणाओ जिणाउ, जिणाहि, जिणा।
३. पञ्चमी के बहुवचन का प्रत्यय त्तो, ओ, उ और हि होता है, एवं त्तो से अन्य प्रत्यय में पूर्व के अ का आ होता है, हि के प्रसंग में ए भी होता है, यथा—जिणत्तो, जिणाओ, जिणाउ, जिणाहि, जिणेहि।
४. पञ्चमी के एकवचन के प्रत्यय के स्थान में हिंतो और बहुवचन के प्रत्यय के स्थान में हिंतो और सुंतो इन स्वतन्त्र शब्दों का भी प्रयोग होता है, यथा—जिनात् = जिणा हिंतो; जिनेभ्यः = जिणा हिन्तो, जिणे हिन्तो, जिणा सुंतो, जिणे सुंतो।
५. षष्ठी के एकवचन का प्रत्यय स्स होता है, यथा—जिणस्स, मुणिस्स, तरुस्स।
६. अस्मत् शब्द के प्रथमा के एकवचन के रूप म्मि, अम्मि, अम्हि, हं, अहं और अहयं होता है।
७. अस्मत् शब्द के प्रथमा के बहुवचन के रूप अम्ह, अम्हे, अम्हो, मो, वयं और भे होता है।
८. अस्मत् शब्द के षष्ठी का बहुवचन णे, णो, मज्झ, अम्ह, अम्हं, अम्हे, अम्हो, अम्हाण, ममाण, महाण और मज्झाण होता है।
९. युष्मत् शब्द के षष्ठी का एकवचन तइ, तु, ते, तुम्हं, तुह, तुहं, तुव, तुम, तुमो, तुमाइ, दि, दे, इ, ए, तुब्भ, तुम्ह, तुज्झ उब्भ, उम्ह, उज्झ और उय्ह होता है।

लिङ्ग-व्यत्यय

१. संस्कृत में जो शब्द केवल पुंलिंग है, उनमें से कईएक महाराष्ट्री में स्त्रीलिंग और नपुंसक लिंग भी है, यथा—प्रश्नः = पण्हो, पण्हा; गुणाः = गुणा, गुणाइं; देवा = देवा, देवाणि।
२. अनेक जगह स्त्रीलिंग के स्थान में पुंलिंग होता है, यथा—शरत् = सरओ, प्रावृट् = पाउसो, विद्युता = विज्जुणा।
३. संस्कृत के अनेक क्लीबलिंग शब्दों का प्रयोग महाराष्ट्री में पुंलिंग और स्त्रीलिंग में भी होता है; यथा—यशः = जसो, जन्म = जम्मो, अक्षि = अच्छी, पृष्ठम् = पिट्ठी, चौर्यम् = चोरिआ।

आख्यात

१. ति और ते प्रत्ययों के त का लोप होता है, जैसे—हसति = हसइ, हसए; रमते = रमइ, रमए।
२. परस्मैपद और आत्मनेपद का विभाग नहीं है, महाराष्ट्री में सभी धातु उभयपदी की तरह हैं।
३. भूतकाल के ह्यस्तन, अद्यतन और परोक्ष विभाग न होकर एक ही तरह के रूप होते हैं और भूतकाल में आख्यात की जगह त-प्रययान्त कृदन्त का ही प्रयोग अधिक होता है।
४. भविष्यत्-काल के भी संस्कृत का तरह श्वस्तन और भविष्यत् ऐसे दो विभाग नहीं है।
५. भविष्यत्काल के प्रत्ययों के पहले हि होता है, यथा—हसिष्यति = हसिहिइ, करिष्यति, = करिहिइ।
६. वर्तमान काल के, भविष्यत्काल के और विधि-लिंग और आज्ञार्थक प्रत्ययों के स्थान में ज्ज और ज्जा होता है, यथा—हससि, हसिष्यति, हसेत्, हसतु = हसेज्ज, हसेज्जा।
७. भाव और कर्म में ईअ और इज्ज प्रत्यय होते हैं, यथा—हस्यते = हसीअइ, हसिज्जइ।

कृदन्त

१. शीलाद्यर्थक तृ-प्रत्यय के स्थान में इर होता है, यथा—गन्तृ = गमिर, नमनशील = णमिर।
२. त्वा-प्रत्यय के स्थान में तुम्, अ, तूण, तुआण और त्ता होता है, जैसे—पठित्वा = पढिउं, पढिअ, पढिऊण, पढिउआण, पढित्ता।

तद्धित

१. त्व-प्रत्यय के स्थान में त्त और त्तण होता है, यथा—देवत्व = देवत्त, देवत्तण।

(१०) अपभ्रंश

महर्षि पतञ्जलि ने अपने महाभाष्य में लिखा है कि "भूयांसोऽपशब्दा अल्पीयांसः शब्दाः । एकैकस्य हि शब्दस्य बहवोऽपभ्रंशाः, तद्यथा—गौरित्यस्य शब्दस्य गावी, गोणी, गोता, गोपोतलिका इत्येवमादयोऽपभ्रंशाः" अर्थात् अपशब्द बहुत और शब्द (शुद्ध) थोड़े हैं, क्योंकि एक एक शब्द के बहुत अपभ्रंश हैं, जैसे 'गौः' इस शब्द के गावी, गोणी, गोता, गोपोतलिका इत्यादि अपभ्रंश हैं।

'अपभ्रंश' शब्द का सामान्य और विशेष अर्थ

यहाँ पर 'अपभ्रंश' शब्द अपशब्द के अर्थ में ही व्यवहृत है और अपशब्द का अर्थ भी 'संस्कृत-व्याकरण से असिद्ध शब्द' है, यह स्पष्ट है। उक्त उदाहरणों में 'गावी' और 'गोणी' ये दो शब्दों का प्रयोग प्राचीन[1] जैन-सूत्र-ग्रन्थों में पाया जाता है और[2] चंड तथा[3] आचार्य हेमचन्द्र आदि प्राकृत-वैयाकरणों ने भी ये दो शब्द अपने-अपने प्राकृत-व्याकरणों में लक्षण-द्वारा सिद्ध किये हैं। दण्डी ने अपने काव्यादर्श में पहले प्राकृत और अपभ्रंश का अलग-अलग निर्देश करते हुए काव्य में व्यवहृत आभीर-प्रभृति की भाषा को अपभ्रंश कही हैं और बाद में यह लिखा है कि 'शास्त्र में संस्कृत भिन्न सभी भाषाएँ अपभ्रंश कही गई हैं'[4]। यहाँ पर दण्डी ने शास्त्र-शब्द का प्रयोग महाभाष्य-प्रभृति व्याकरण के अर्थ में ही किया है। पतञ्जलि-प्रभृति संस्कृत-वैयाकरणों के मत में संस्कृत-भिन्न सभी प्राकृत-भाषाएँ अपभ्रंश के अन्तर्गत हैं, यह ऊपर के उनके लेख से स्पष्ट है। परन्तु प्राकृत-वैयाकरणों के मत में अपभ्रंश भाषा प्राकृत का ही एक अवान्तर भेद है। काव्यालंकार की टीका में नमिसाधु ने लिखा है कि "प्राकृतमेवापभ्रंशः" (२, १२) अर्थात् अभ्रंश भी शौरसेनी, मागधी आदि की तरह एक प्रकार का प्राकृत ही है। उक्त क्रमिक उल्लेखों से यह स्पष्ट है कि पतञ्जलि के समय में जिस अपभ्रंश शब्द का 'संस्कृत-व्याकरण-असिद्ध (कोई भी प्राकृत)' इस सामान्य अर्थ में प्रयोग होता था उसने आगे जाकर क्रमशः 'प्राकृत का एक भेद' इस विशेष अर्थ को धारण किया है। हमने भी यहाँ पर अपभ्रंश शब्द का इस विशेष अर्थ में ही व्यवहार किया है।

निदर्शन

अपभ्रंश भाषा के निदर्शन विक्रमोर्वशी, धर्माभ्युदय आदि नाटक-ग्रन्थों में, हरिवंशपुराण, पउमचरिम (स्वयंभूदेवकृत) भविसयत्तकहा, संजममंजरी, महापुराण, यशोधरचरित, नागकुमारचरित, कथाकोश, पार्श्वपुराण, सुदर्शनचरित्र, करकंडुचरित, जयतिहुग्रणस्तोत्र, विलासवईकहा, सणंकुमारचरिम्र, सुपासनाहचरिम्र, कुमारपालचरित, कुमारपाल-प्रतिबोध, उपदेशतरंगिणी प्रभृति काव्यग्रन्थों में, प्राकृतलक्षण, सिद्धहेमचन्द्रव्याकरण (अष्टम अध्याय), संक्षिप्तसार, षड्भाषाचन्द्रिका, प्राकृतसर्वस्व वगैरह व्याकरणों में और प्राकृतपिङ्गल नामक छन्द-ग्रन्थ में पाये जाते हैं।

प्रकृति और समय

डॉ. हॉर्नेलि के मत में जिस तरह आर्य लोगों की कथ्य भाषाएँ अनार्य लोगों के मुख से उच्चारित होने के कारण जिस विकृत रूप को धारण कर पायी थीं वह पैशाची भाषा है और वह कोई भी प्रादेशिक भाषा नहीं है, उस तरह आर्यों की कथ्य भाषाएँ भारत के आदिम-निवासी अनार्य लोगों की भिन्न-भिन्न भाषाओं के प्रभाव से जिन रूपान्तरों को प्राप्त हुई थीं वे ही भिन्न-भिन्न अपभ्रंश भाषाएँ हैं और ये महाराष्ट्री की अपेक्षा अधिक प्राचीन हैं। डॉ. हॉर्नेलि के इस मत का सर ग्रियर्सन-प्रभृति आधुनिक भाषातत्त्वज्ञ स्वीकार नहीं करते हैं। सर ग्रियर्सन के मत में भिन्न-भिन्न प्राकृत भाषाएँ साहित्य और व्याकरण में नियन्त्रित होकर जन-साधारण में अप्रचलित होने के कारण जिन नूतन कथ्य भाषाओं की उत्पत्ति हुई थी वे ही अपभ्रंश हैं। ये अपभ्रंश-भाषाएँ ख्रिस्तीय पञ्चम शताब्दी के बहुत काल पूर्व से ही कथ्य भाषाओं के रूप में व्यवहृत होती थीं, क्योंकि चण्ड के प्राकृत-व्याकरण में और कालिदास की विक्रमोर्वशी में इसके निदर्शन पाये जाने के कारण यह निश्चित है कि ख्रिस्तीय पञ्चम शताब्दी के पहले से ही ये साहित्य में स्थान पाने लगी थीं। ये अपभ्रंश भाषाएँ प्रायः दशम शताब्दी पर्यन्त साहित्य की भाषाएँ थीं। इसके बाद फिर जन-साधारण में अप्रचलित होने से जिन नूतन कथ्य भाषाओं की उत्पत्ति हुई वे ही हिन्दी, बंगला, गुजराती वगैरह आधुनिक

---

१. 'खीरीणियाम्रो गावीम्रो', "गोणं वियालं" (आचा २, ४, ५)।
"णगरगावीम्रो" (विपा १, २ – पत्र २६)।
"गोणीणं संगेल्लं" (व्यवहारसूत्र, उ० ४)।

२. "गोर्वावी" (प्राकृतलक्षण २, १६)। ३. "गोणादयः" (हे० प्रा० २, १७४)।

४. "म्राभीरादिगिरः काव्येष्वपभ्रंश इति स्मृताः।
शास्त्रे तु संस्कृतादन्यदपभ्रंशतयोदितम्" (१, ३६)।

आर्य कथ्य भाषाएँ हैं। इनका उत्पत्ति-समय ख्रिस्त की नववीं या दसवीं शताब्दी है। सुतरां, अपभ्रंश-भाषाएँ ख्रिस्त की पञ्चम शताब्दी के पूर्व से लेकर नववीं या दशवीं शताब्दी पर्यन्त साहित्य की भाषाओं के रूप में प्रचलित थीं। इन अपभ्रंश भाषाओं की प्रकृति वे विभिन्न प्राकृत-भाषाएँ हैं, जो भारत के विभिन्न प्रदेशों में इन अपभ्रंशों की उत्पत्ति के पूर्वकाल में प्रचलित थीं।

भेद

अपभ्रंश के बहुत भेद हैं, प्राकृतचन्द्रिका में इसके ये सताईस भेद बताये गए हैं।

"ब्राचडो लाटवैदर्भावुपनागरनागरौ। बार्बरावन्त्यपाञ्चालटाक्कमालवकैकयाः ॥
गौडोड्रहैवपाश्चात्यपाण्ड्यकौन्तलसैंहलाः। कालिंगयप्राच्यकार्णाटकाञ्च्यद्राविडगौर्जराः ॥
आभीरो मध्यदेशीयः सूक्ष्मभेदव्यवस्थिताः। सप्तविंशत्यपभ्रंशा वैतालादिप्रभेदतः[1] ॥

मार्कण्डेय ने अपने प्राकृतसर्वस्व में प्राकृतचन्द्रिका से सताईस अपभ्रंशों के जो लक्षण और उदाहरण उद्धृत किए हैं[2]। वे इतने अपर्याप्त और अस्पष्ट हैं कि खुद मार्कंडेय ने भी इनको सूक्ष्म कह कर नगण्य बताये हैं और इनका पृथग्-पृथग् लक्षण-निर्देश न कर उक्त समस्त अपभ्रंशों का नागर, ब्राचड और उपनागर इन तीन प्रधान भेदों में ही अन्तर्भाव माना है[3]। परन्तु यह बात मानने योग्य नहीं है, क्योंकि जब यह सिद्ध है कि जिन भाषाओं का उत्पत्ति-स्थान भिन्न-भिन्न प्रदेश है और जिनकी प्रकृति भी भिन्न-भिन्न प्रदेश की भिन्न-भिन्न प्राकृत भाषाएँ हैं तब वे अपभ्रंश भाषाएँ भी भिन्न-भिन्न ही हो सकती हैं और उन सब का समावेश एक दूसरे में नहीं किया जा सकता। वास्तव में बात यह है कि वे सभी अपभ्रंश भिन्न भिन्न होने पर भी साहित्य में निबद्ध न होने के कारण उन सब के निदर्शन ही उपलब्ध नहीं हो सकते थे। इसीसे प्राकृतचन्द्रिकाकार न उनके स्पष्ट लक्षण ही कर पाये हैं और न तो उदाहरण ही अधिक दे सके हैं। यही करण है कि मार्कण्डेय ने भी इन भेदों को सूक्ष्म कहकर टाल दिये हैं। जिन अपभ्रंश भाषाओं के साहित्य-निबद्ध होने से निदर्शन पाये जाते हैं उनके लक्षण और उदाहरण आचार्य हेमचन्द्र ने केवल अपभ्रंश के सामान्य नाम से और मार्कण्डेय ने अपभ्रंश के तीन विशेष नामों से दिये हैं। आचार्य हेमचन्द्र ने 'अपभ्रंश' इस सामान्य नाम से और मार्कण्डेय ने 'नागरापभ्रंश' इस विशेष नाम से जो लक्षण और उदाहरण दिये हैं वे राजस्थानी-अपभ्रंश या राजपूताना तथा गुजरात प्रदेश के अपभ्रंश से ही संबन्ध रखते हैं। ब्राचडापभ्रंश के नाम से सिन्धप्रदेश के अपभ्रंश के लक्षण और उदाहरण मार्कण्डेय ने अपने व्याकरण में दिये हैं, और उपनागर-अपभ्रंश का कोई लक्षण न देकर केवल नागर और ब्राचड के मिश्रण को 'उपनागर-अपभ्रंश' कहा है। इसके सिवा सौरसेनी-अपभ्रंश के निदर्शन मध्यदेश के अपभ्रंश में पाये जाते हैं। अन्य अन्य प्रदेशों के अथवा महाराष्ट्री, अर्धमागधी, मागधी और पैशाची भाषाओं के जो अपभ्रंश थे उनका कोई साहित्य उपलब्ध न होने से कोई निदर्शन भी नहीं पाये जाते हैं।

उत्पत्ति-स्थान

भिन्न-भिन्न अपभ्रंश भाषा का उत्पत्ति-स्थान भी भारतवर्ष का भिन्न भिन्न प्रदेश है। रुद्रट ने और वाग्भट ने अपने अपने अलङ्कार-ग्रन्थ में यह बात संक्षेप में अथच स्पष्ट रूप में इस तरह कही है:—

"षष्ठोऽत्र भूरिभेदो देशविशेषादपभ्रंशः" (काव्यालङ्कार २, १२)।
"अपभ्रंशस्तु यच्छुद्धं तत्तद्देशेषु भाषितम्" (वाग्भटालङ्कार २, ३)।

आधुनिक आर्य कथ्य भाषाओं की प्रकृति

ख्रिस्त की पञ्चम शताब्दी के पूर्व से लेकर दशम शताब्दी पर्यन्त भारत के भिन्न-भिन्न प्रदेश में कथ्य भाषाओं के रूप में प्रचलित जिस जिस अपभ्रंश भाषा से भिन्न-भिन्न प्रदेश की जो जो आधुनिक आर्य कथ्य भाषा (Modern Vernacular) उत्पन्न हुई है उसका विवरण यों है :—

---

१. बंगीयसाहित्यपरिषत्-पत्रिका, १३१७।

२. "टाक्कं टक्कभाषानागरोपनागरादिभ्योऽवधारणीयम्। तुबहुला मालवी। वाडीबहुला पाञ्चाली। उल्लप्राया वैदर्भी। संबोधनाढ्या लाटी। ईकारोकारबहुला औड्री। सवीप्सा कैकेयी। समासाढ्या गौडी। डकारबहुला कौन्तली। एकारिणी च पाण्ड्या। युक्ताढ्या सैंहली। हियुक्ता कालिंगी। प्राच्या तद्देशीयभाषाढ्या। ज(भ)ट्टादिबहुलाऽऽभीरी वर्णविपर्ययात् कार्णाटी। मध्यदेशीया तद्देशीयाढ्या। संस्कृताढ्या च गौर्जरी। चकारात् पूर्वोक्तटक्कभाषाग्रहणम्। रत(ल)हभां व्यत्ययेन पाश्चात्या। रेफ व्यत्येन द्राविडी। ढकारबहुला वैतालिकी। एओबहुला काञ्ची। शेषा देशभाषाविभेदात्।"

३. "नागरो ब्राचडश्चोपनागरश्चेति ते त्रयः। अपभ्रंशाः परे सूक्ष्मभेदत्वान्न पृथङ् मताः" (प्रा० स० पृष्ठ ३)। "अन्येषामपभ्रंशानामेष्वेवान्तर्भावः" (प्रा० स० पृष्ठ १२२)।

महाराष्ट्री-अपभ्रंश से मराठी और कोंकणी भाषा।
मागधी-अपभ्रंश की पूर्व शाखा से बंगला, उड़िया और आसामी भाषा।
मागधी-अपभ्रंश की बिहारी शाखा से मैथिली, मगही और भोजपुरिया।
अर्धमागधी-अपभ्रंश से पूर्वीय हिन्दी भाषाएँ अर्थात् अवधी, बघेली और छत्तीसगढ़ी।
सौरसेनी-अपभ्रंश से बुन्देली, कन्नौजी, ब्रजभाषा, बाँगरू, हिन्दी या उर्दू ये पाश्चात्य हिन्दी भाषा।
नागर-अपभ्रंश से राजस्थानी, मालवी, मेवाड़ी, जयपुरी, मारवाड़ी तथा गुजराती भाषा।
पालि से सिंहली और माल्दीवन।
टाक्की अथवा ढाक्की से लहण्डी या पश्चिमीय पंजाबी।
टाक्की-अपभ्रंश (सौरसेनी के प्रभाव-युक्त) से पूर्वीय पंजाबी।
व्राचड-अपभ्रंश से सिन्धी भाषा।
पैशाची-अपभ्रंश से काश्मीरी भाषा।

लक्षण नागर-अपभ्रंश के प्रधान लक्षण ये हैं :—

वर्ण-परिवर्तन

१. भिन्न-भिन्न स्वरों के स्थान में भिन्न-भिन्न स्वर होते हैं; यथा—कृत्य = कच्च, काच; वचन = वेण, वीण; बाहु = बाह, बाहा; बाहु; पृष्ठ = पट्ठि, पिट्ठि, पुट्ठि; तृण = तण, तिण, तृण; सुकृत = सुकिद, सुकृद; लेखा = लिह, लीह, लेह।
२. स्वरों के मध्यवर्ती असंयुक्त क, ख, त, थ, प और फ के स्थान में प्रायः क्रमशः ग, घ, द, ध, व और भ होता है; यथा—विच्छेदकर = विच्छोहगर; सुख = सुघ, कथित = कधिद, शपथ = शवध, सफल = सभल।
३. अनादि और असंयुक्त म के स्थान में वैकल्पिक सानुनासिक व होता है; यथा—कमल = कवँल, कमल; भ्रमर = भवँर, भमर।
४. संयोग में परवर्ती र का विकल्प से लोप होता है; यथा—प्रिय = पिय, प्रिय; चन्द्र = चन्द, चन्द्र।
५. कहीं-कहीं संयोग के परवर्ती य का विकल्प से र होता है; जैसे—व्यास = व्रास, वास; व्याकरण = व्रागरण, वागरण।
६. महाराष्ट्री में जहाँ म्ह होता है वहाँ अपभ्रंश में म्भ और म्ह दोनों होते हैं; यथा— ग्रीष्म = गिम्भ, गिम्ह; श्लेष्म = सिम्भ, सिम्ह।

नाम-विभक्ति

१. विभक्ति के प्रसंग में ह्रस्व स्वर का दीर्घ और दीर्घ का ह्रस्व प्रायः होता है; यथा—श्यामलः = सामलः, खड्गाः = खग्ग; दृष्टि = दिट्ठि; पुत्री = पुत्ति।
२. साधारणतः सातों विभक्ति के जो प्रत्यय हैं वे नीचे दिये जाते हैं। लिंग-भेद में और शब्द-भेद में अनेक विशेष प्रत्यय भी हैं, जो विस्तार-भय से यहाँ नहीं दिये गए हैं।

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	उ, हो	०
द्वितीया	,,	०
तृतीया	एं	हि
चतुर्थी	सु, हो, स्सु	हं, ०
पञ्चमी	हे, हु	हुं
षष्ठी	सु, हो, स्सु	हं, ०
सप्तमी	इ, हि	हिं

आख्यात-विभक्ति

		एकवचन	बहुवचन
१.	१ पु०	उं	हुं
	२ पु०	हि	ह
	३ पु०	इ, ए	हिं

२. मध्यम पुरुष के एकवचन में आज्ञार्थ में इ, उ और ए होते हैं, यथा—कुरु = करि, करु, करे।
३. भविष्यत्काल में प्रत्यय के पूर्व में स आगम होता है; यथा—भविष्यति = होसइ।

कृदन्त

१. तव्य-प्रत्यय के स्थान में इएव्वउं, एव्वउं और एवा होता है; यथा—कर्तव्य = करिएव्वउं, करेव्वउ, करेवा।
२. त्वा के स्थान में इ, इउ, इवि, अवि, एप्पि, एप्पिणु, एवि, एविणु, होते हैं; यथा—कृत्वा = करि, करिउ, करिवि, करवि, करेप्पि, करेप्पिणु, करेवि, करेविणु।
३. तुम्-प्रत्यय की जगह एवं, अण, अणहं, अणहिं एप्पि, एप्पिणु, एवि, एविणु होते हैं; यथा—कर्तुम् = करेवं, करण, करणहं करणहिं, करेप्पि, करेप्पिणु, करेवि, करेविणु।
४. शीलाद्यर्थक तृ-प्रत्यय के स्थान में अणअ होता है; जैसे—कर्तृ = करणअ, मारयितृ = मारणअ।

तद्धित

१. त्व और ता के स्थान में प्पण होता है; यथा—देवत्व = देवप्पण, महत्त्व = वड्डप्पण।

हम पहले यह कह आये हैं कि वैदिक और लौकिक संस्कृत के शब्दों के साथ तुलना करने पर जिस प्राकृत भाषा में वर्ण-लोप-प्रभृति परिवर्तन जितना अधिक प्रतीत हो, वह उतनी ही परवर्ती काल में उत्पन्न मानी जानी चाहिए। इस नियम के अनुसार, हम देखते हैं कि महाराष्ट्री प्राकृत में व्यञ्जनों का लोप सर्वापेक्षा अधिक है, इससे वह अन्यान्य प्राकृत-भाषाओं के पीछे उत्पन्न हुई है, ऐसा अनुमान किया जाता है। परन्तु अपभ्रंश में उक्त नियम का व्यत्यय देखने में आता है, क्योंकि भिन्न-भिन्न प्रदेशों की अपभ्रंश भाषाएँ यद्यपि महाराष्ट्रीके बाद ही उत्पन्न हुई हैं तथापि महाराष्ट्री में जो व्यञ्जन-वर्ण-लोप देखा जाता है, अपभ्रंश में उसकी अपेक्षा अधिक नहीं, बल्कि कम ही वर्ण-लोप पाया जाता है और ऋ स्वर तथा संयुक्त रकार भी विद्यमान है। इस पर से यह अनुमान करना असंगत नहीं हैं कि वर्ण-लोप की गति ने महाराष्ट्री प्राकृत में अपनी चरम सीमा को पहुँच कर उसको (महाराष्ट्री को) अस्थि-हीन-माँस-पिण्ड की तरह स्वर-बहुल आकार में परिणत कर दिया। अपभ्रंश में उसीकी प्रतिक्रिया शुरू हुई, और प्राचीन स्वर एवं व्यञ्जनों को फिर स्थान देकर भाषा को भिन्न आदर्श में गठित करने की चेष्टा हुई। उस चेष्टा का ही यह फल है कि पिछले समय में संस्कृत-भाषा का प्रभाव फिर प्रतिष्ठित होकर आधुनिक आर्य कथ्य भाषाएँ उत्पन्न हुई हैं।

अपभ्रंशों का भिन्न आदर्श में गठन

प्राकृत पर संकृत का प्रभाव

जैन और बौद्धों ने संस्कृत भाषा का परित्याग कर उस समय की कथ्य भाषा में धर्मोपदेश को लिपिबद्ध करने की प्रथा प्रचलित की थी। इससे जो दो नयी साहित्य-भाषाओं का जन्म हुआ था, वे जैन सूत्रों की अर्धमागधी और बौद्ध-धर्म-ग्रन्थ की पालि भाषा है। परन्तु ये दो साहित्य-भाषाएँ और अन्यान्य समस्त प्राकृत-भाषाएँ संस्कृत के प्रभाव को उल्लंघन नहीं कर सकी हैं। इस बात का एक प्रमाण तो यह है कि इन समस्त प्राकृत-भाषाओं में संस्कृत-भाषा के अनेक शब्द अविकल रूप में गृहीत हुए हैं। ये शब्द तत्सम कहे जाते हैं। यद्यपि इन तत्सम शब्दों ने प्रथम स्तर की प्राकृत-भाषाओं से ही संस्कृत में स्थान और रक्षण पाया था, तो भी यह स्वीकार करना ही होगा कि ये सब शब्द परवर्ती काल की प्राकृत-भाषाओं में जो अपरिवर्तित रूप में व्यवहृत होते थे वह संस्कृत-साहित्य का ही प्रभाव था।

इसके अतिरिक्त, संस्कृत के ही प्रभाव से बौद्धों में एक मिश्र-भाषा उत्पन्न हुई थी। महायान-बौद्धों के महावैपुल्य-सूत्र-नामक कतिपय सूत्र ग्रन्थ हैं। ललितविस्तर, सद्धर्म-पुण्डरीक, चन्द्रप्रदीपसूत्र प्रभृति इसके अन्तर्गत हैं। इन ग्रंथों की भाषा में अधिकांश शब्द तो संस्कृत के हैं ही, अनेक प्राकृत शब्दों के आगे भी संस्कृत की विभक्ति लगाकर उनको भी संस्कृत के अनुरूप किये गए हैं। पाश्चात्य विद्वानों ने इस भाषा को 'गाथा' नाम दिया है। परन्तु यहाँ पर यह कहना आवश्यक है कि इसका यह 'गाथा' नाम असंगत है, क्योंकि यह संस्कृत-मिश्रित-प्राकृत का प्रयोग उक्त ग्रंथों के केवल पद्यांशों में ही नहीं, बल्कि गद्यांश में भी देखा जाता है। इससे इन ग्रंथों की भाषा को 'गाथा' न कहकर 'प्राकृत-मिश्र-संस्कृत' या 'संस्कृत-मिश्र-प्राकृत' अथवा संक्षेप में 'मिश्र-भाषा' ही कहना उचित है।

गाथा-भाषा

डॉ. बर्नफ और डॉ. राजेन्द्र लाल मित्र का मत है कि, 'संस्कृत भाषा, क्रमशः परिवर्तित होती हुई प्रथम गाथा भाषा के रूप में और बाद के पालि-भाषा के आकार में परिणत हुई है। इस तरह गाथा भाषा संस्कृत और पालि की मध्यवर्ती

होने के कारण इन दोनों के (संस्कृत और पालि के) लक्षणों से आक्रान्त है।' यह सिद्धान्त सर्वथा भ्रान्त है, क्योंकि हम यह पहले ही अच्छी तरह प्रमाणित कर चुके हैं कि संस्कृत-भाषा क्रमशः परिवर्तित होकर पालि-भाषा में परिणत नहीं हुई है, किन्तु पालि-भाषा वैदिक-युग की एक प्रादेशिक भाषा से ही उत्पन्न हुई है। और, गाथा-भाषा पालि-भाषा के पहले प्रचलित न थी, क्योंकि गाथा-भाषा के समस्त ग्रन्थों का रचना-काल खिस्त-पूर्व दो सौ वर्षों से लेकर खिस्त की तृतीय शताब्दी पर्यन्त का है, इससे गाथा-भाषा बहुत तो पालि-भाषा की समकालीन हो सकती है, न कि पालि-भाषा की पूर्वावस्था। यह भाषा संस्कृत के प्रभाव को कायम रखकर विभिन्न प्राकृत-भाषाओं के मिश्रण से बनी है, इसमें सन्देह नहीं है। यही कारण है कि इसके शब्दों को प्रस्तुत कोष में स्थान नहीं दिया गया है।

गाथा-भाषा का थोड़ा नमूना ललितविस्तर से यहाँ उद्धृत किया जाता है :—

"अध्रुवं त्रिभवं शरदभ्रनिभं, नटरङ्गसमा जगि जन्मि च्युति।
गिरिनद्यसमं लघुशीघ्रजवं, व्रजतायु जगे यथ विद्यु नभे ॥ १ ॥'
"उदकचन्द्रसमा इमि कामगुणाः, प्रतिबिम्ब इवा गिरिघोष यथा।
प्रतिभाससमा नटरङ्गसमास्तथ स्वप्नसमा विदितार्यजनैः ॥ १ ॥" (पृष्ठ २०४, २०६)।

बुद्धदेव और उसके सारथी की आपस में बातचीत :—

"एषो हि देव पुरुषो जरयाभिभूतः, क्षीणेन्द्रियः सुदुःखितो बलवीर्यहीनः।
बन्धुजनेन परिभूत अनाथभूतः, कार्यासमर्थ अपविद्ध वनेव दारु ॥
कुलधर्म एष अयमस्य हि त्वं भणाहि, अथवापि सर्वजगतोऽस्य इयं ह्यवस्था।
शीघ्रं भणाहि वचनं यथभूतमेतत्, श्रुत्वा तथार्थमिह योनि संचिन्तयिष्ये ॥
नैतस्य देव कुलधर्म न राष्ट्रधर्मः, सर्वे जगस्य जर यौवन धर्षयाति।
तुम्यंपि मातृपितृबान्धवज्ञातिसंघो, जरया अमुक्तं नहि अन्यगतिर्जनस्य ॥
धिक् सारथे अबुधबालजनस्य बुद्धिर्यद् यौवनेन मदमत्त जरां न पश्ये।
आवर्तयस्विह रथं पुनरहं प्रवेक्ष्ये, किं मह्य क्रीडरतिभिर्जरया श्रितस्य ॥"

संस्कृत पर प्राकृत का प्रभाव

पहले जो यह कहा जा चुका है कि वैदिक काल के मध्यदेश-प्रचलित प्राकृत से ही वैदिक संस्कृत उत्पन्न हुआ है और वह साहित्य और व्याकरण के द्वारा क्रमशः मार्जित और नियन्त्रित होकर अन्त में लौकिक संस्कृत में परिणत हुआ है; एवं प्राकृत के अन्तर्गत समस्त तत्सम शब्द संस्कृत से नहीं, परन्तु प्रथम स्तर के प्राकृत से ही संस्कृत में और द्वितीय स्तर के प्राकृत में आये हैं; प्राकृत के अन्तर्गत तद्भव शब्द भी संस्कृत से प्राकृत में गृहीत न होकर प्रथम स्तर के प्राकृत से ही क्रमशः परिवर्तित होकर परवर्ती काल के प्राकृत में स्थान पाये हैं और संस्कृत व्याकरण-द्वारा नियन्त्रित होने से वे शब्द संस्कृत में अपरिवर्तित रूप में ही रह गये हैं; इसी तरह प्राकृत के अधिकांश देशी-शब्द भी वैदिक काल के मध्यदेश-भिन्न अन्यान्य प्रदेशों के आर्य-उपनिवेशों की प्राकृत-भाषाओं से ही बाद की प्राकृत-भाषाओं में आये हैं; इससे उन्होंने (देशी शब्दों ने) मध्यदेश के प्राकृत से उत्पन्न वैदिक और लौकिक संस्कृत में कोई स्थान नहीं पाया है। इस पर से यह सहज ही समझा जा सकता है कि प्राकृत ही संस्कृत भाषा का मूल है।

अब इस जगह हम यह बताना चाहते हैं कि प्राकृत से न केवल वैदिक और लौकिक संस्कृत भाषाएँ उत्पन्न ही हुई हैं, बल्कि संस्कृत ने मृत होकर साहित्य-भाषा में परिणत होने पर भी अपनी अंग-पुष्टि के लिए प्राकृत से ही अनेक शब्दों का संग्रह किया है। ऋग्वेद आदि में प्रयुक्त वंक (वक्र), वहू (वधू), मेह (मेघ), पुराण (पुरातन), तितउ (चालनी), उच्छेक (उत्सेक), प्रभृति शब्द और लौकिक संस्कृत में प्रचलित तितउ (चालनी), आवुत्त (भगिनीपति), खुर (क्षुर), गोखुर (गोक्षुर), गुग्गुलु (गुल्गुलु), छुरिका (क्षुरिका), अच्छ (ऋक्ष), कच्छ (कक्ष), पियाल (प्रियाल), गड्ड (गरुड), चन्दिर (चन्द्र), इन्दिर (इन्द्र), शिथिल (श्लथ), मरन्द (मकरन्द), किसल (किसलय), हाला (सुराविशेष), हेवाक (व्यसन), दाढा (दंष्ट्रा), खिडक्किका (लघुद्वार, भाषा में खिड़की), जारुज (जरायुज), पुराण (पुरातन) वगैरह शब्द प्राकृत

से ही अविकल रूप में गृहीत हुए हैं और मारिष (मार्ष), जहिष्यसि (हास्यसि), ब्रूमि (ब्रवोमि), निकृन्तन (निकर्तन), लटभ (सुन्दर), प्रभृति प्राकृत के ही मूल शब्द मार्जित कर संस्कृत में लिए गए हैं।

प्राकृत-भाषाओं का उत्कर्ष

कोई भी कथ्य भाषा क्यों न हो, वह सर्वदा ही परिवर्तन-शील होती है। साहित्य और व्याकरण उसको नियम के बन्धन में जकड़कर गति-हीन और अपरिवर्तनीय करते हैं। उसका फल यह होता है कि साहित्य की भाषा क्रमशः कथ्य भाषा से भिन्न हो जाती है और जन-साधारण में अप्रचलित मृत-भाषा में परिणत होती है। साहित्य की हरकोई भाषा एक समय की कथ्य भाषा से ही उत्पन्न होती है और वह जब मृत-भाषा में परिणत होती है तब कथ्य भाषा से फिर एक नयी साहित्य की भाषा की सृष्टि होती है। इस तरह एक समय की कथ्य भाषा से ही वैदिक और लौकिक संस्कृत उत्पन्न हुई थी और वह साधारण के पक्ष में दुर्बोध होने पर अर्धमागधी, पालि आदि प्राकृत भाषाओं ने साहित्य में स्थान पाया था। ये सब प्राकृत-भाषाएँ भी समय पाकर जन-साधारण में दुर्बोध हो जाने पर संस्कृत की तरह मृत-भाषा में परिणत हो गई और भिन्न-भिन्न प्रदेश की अपभ्रंश-भाषाएँ साहित्य-भाषाओं के रूप में व्यवहृत होने लगीं। अपभ्रंश-भाषाएँ भी जब दुर्बोध होकर मृत-भाषाओं में परिणत हो चली तब हिन्दी, बंगला, गुजराती, मराठी प्रभृति आधुनिक आर्य कथ्य भाषाएँ साहित्य की भाषाओं के रूप में गृहीत हुई हैं। उक्त समस्त कथ्य भाषाएँ उस-उस युग की साहित्य की मृत-भाषाओं की तुलना में अवश्य ऐसे कतिपय उत्कर्षों से विशिष्ट होनी चाहिए जिनकी बदौलत ही ये उस-उस समय की मृत-भाषाओं को साहित्य के सिंहासन से च्युत कर उस सिंहासन को अपने अधिकार में कर पायी थीं। अब यहाँ हमें यह जानना जरूरी है कि ये उत्कर्ष कौन थे ?

हरकोई भाषा का सर्व-प्रथम उद्देश्य होता है अर्थ-प्रकाश। इसलिए जिस भाषा के द्वारा जितने स्पष्ट रूप से और जितने अल्प प्रयास से अर्थ-प्रकाश किया जाय वह उतना ही उत्कृष्ट भाषा मानी जाती है। इन दो कारणों के वश होकर ही भाषा का निरन्तर परिवर्तन साधित होता है और भिन्न-भिन्न काल में भिन्न-भिन्न कथ्य-भाषाओं से नयी-नयी साहित्य-भाषाओं की उत्पत्ति होती है। वैदिक संस्कृत क्रमशः लुप्त होकर लौकिक संस्कृत की उत्पत्ति उक्त दो कारणों से ही हुई थी। वैदिक शब्द-समूह अप्रचलित होने पर उसके अनावश्यक प्रकृति और प्रत्ययों को बाद देकर जो सहज ही समझ में आ सके वैसी प्रकृति और प्रत्ययों का संग्रह कर वैदिक भाषा से लौकिक संस्कृत की उत्पत्ति हुई थी। संस्कृत-भाषा के प्रकृति-प्रत्यय काल-क्रम से अप्रचलित होकर जब दुःख-बोध्य हो उठे तब उस समय की कथ्य भाषाओं से ही स्पष्टार्थक, सुखोच्चारण-योग्य, मधुर और कोमल प्रकृति-प्रत्ययों का संग्रह कर संस्कृत के अनावश्यक, दुर्बोध, कष्टोच्चारणीय, कठोर और कर्कश प्रकृति-प्रत्यय-सन्धि-समासों का वर्जन कर अर्धमागधी, पाली और अन्यान्य प्राकृत-भाषाएँ साहित्य-भाषाओं के रूप में व्यवहृत होने लगीं। यदि इन सब नूतन साहित्य-भाषाओं में संस्कृत की अपेक्षा अर्थ-प्रकाश की अधिक शक्ति, अल्प आयास से और सुख से उच्चारण-योग्यता प्रभृति गुण न होते तो ये कभी भी संस्कृत जैसी समृद्ध भाषा को साहित्य के सिंहासन से च्युत् करने में समर्थ न होतीं। काल-क्रम से ये सब प्राकृत-साहित्य-भाषाएँ भी जब व्याकरण-द्वारा नियन्त्रित होकर अप्रचलित और जन-साधारण में दुर्बोध हो चलीं तब उस समय प्रचलित प्रादेशिक अपभ्रंश भाषाओं ने इनको हटाकर साहित्य-भाषाओं का स्थान अपने अधिकार में किया। यहाँ पर यह प्रश्न हो सकता है कि साहित्य की प्राकृत-भाषाओं की अपेक्षा इन अपभ्रंश-भाषाओं में वह कौन-सा गुण था जिससे ये अपने पहले की प्राकृत-साहित्य-भाषाओं को परास्त कर उनके स्थान को अपने अधिकार में कर सकीं ? इसका उत्तर यह है कि कोई भी गुण चरम सीमा में पहुँच जाने पर फिर वह गुण ही नहीं रहने पाता, वह दोष में परिणत हो जाता है। संस्कृत की अपेक्षा प्राकृत-भाषाओं में यह उत्कर्ष था कि इनमें संस्कृत के कर्कश और कष्टोच्चारणीय असंयुक्त और संयुक्त व्यञ्जन वर्णों के स्थान में सब कोमल और सुखोच्चारणीय वर्ण व्यवहृत होते थे। किन्तु इस गुण की भी सीमा है, महाराष्ट्री-प्राकृत में यह गुण सीमा का अतिक्रम कर गया, यहाँतक कि संस्कृत के अनेक व्यञ्जनों का एकदम ही लोप कर उनके स्थान में स्वर-वर्णों की परम्परा-द्वारा समस्त शब्द गठित होने लगे। इससे इन शब्दों के उच्चारण सुख-साध्य होने के बदले अधिकतर कष्टसाध्य हुए, क्योंकि बीच बीच में व्यञ्जन-वर्णों से व्यवहित न होकर केवल स्वर-परम्परा का उच्चारण करना कष्टकर होता है। इस तरह प्राकृत-भाषा महाराष्ट्री-प्राकृत में आकर जब इस चरम अवस्था में उपनीत हुई तबसे ही इसका पतन अनिवार्य हो उठा। इसकी प्रतिक्रिया-

स्वरूप अपभ्रंश-भाषाओं में नूतन व्यञ्जन वर्ण बैठा कर सुखोच्चारण-योग्यता करने की चेष्टा हुई। इसका फल यह हुआ कि प्रादेशिक अपभ्रंश-भाषाएँ साहित्य की भाषाओं के रूप में उन्नीत हुईं। आधुनिक प्रादेशिक आर्य-भाषाएँ भी प्राकृत भाषाओं के उस दोष का पूर्ण संशोधन करने के लिए नूतन संस्कृत शब्दों को ग्रहण कर अपभ्रंशों के स्थान को अपने अधिकार में करके नवीन साहित्य-भाषाओं के रूप में परिणत हुई। आधुनिक आर्य-भाषाओं में पूर्व-वर्ती प्राकृतों और अपभ्रंशों की अपेक्षा उत्कर्ष यह है कि इन्होंने शब्दों के सम्बन्ध में प्राकृत और संस्कृत को मिश्रित कर उभय के गुणों का एक सुन्दर सामञ्जस्य किया है। इनके तद्भव और देश्य शब्दों में प्राकृत की कोमलता और मधुरता है और तत्सम शब्दों में संस्कृत की ओजस्विता। आधुनिक आर्य-भाषाओं में संस्कृत और प्राकृत दोनों की अपेक्षा उत्कर्ष यह है कि ये संस्कृत और प्राकृतों के अनावश्यक लिंग, वचन और विभक्तियों के भेदों का वर्जन कर, उनके बदले भिन्न भिन्न स्वतन्त्र शब्दों के द्वारा लिंग, वचन और विभक्तियों के भेदों को प्रकाशित कर और संस्कृत तथा प्राकृतों के विभक्ति-बहुल स्वभाव का परित्याग कर विश्लेषण-शील-भाषा में परिणत हुई हैं। इस तरह इन भाषाओं ने अल्प आयास से वक्ता के अर्थ को अधिकतर स्पष्ट रूप में प्रकाशित करने का मार्ग-प्रदर्शन किया है। उक्त गुणों के कारण ही आधुनिक आर्य-भाषाओं ने वैदिक, संस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंश इन सब साहित्य-भाषाओं के स्थान पर अपना अधिकार जमाया है।

संस्कृत की अपेक्षा प्राकृत-भाषाओं में जो उत्कर्ष—गुण ऊपर बताये हैं वे अनेक प्राचीन ग्रन्थकारों ने पहले ही प्रदर्शित किये हैं। उनके ग्रन्थों से, प्राकृत के उत्कर्ष के संबन्ध में, कुछ वचन यहाँ पर उद्धृत किए जाते हैं :—

[1]"अमिअं पाउअ-कव्वं पढिउं सोउं च जे ण आणंति।
कामस्स तत्त-तत्तिं कुणंति, ते कह ण लज्जंति ? ॥ (हाल की गाथासप्तशती १, २)।

अर्थात् जो लोग अमृतोपम प्राकृत-काव्य को न तो पढ़ना जानते हैं और न सुनना जानते हैं अथच काम-तत्त्व की आलोचना करते हैं उनको शरम क्यों नहीं आती ?

'[2]उम्मिल्लइ लायण्णं पयय-च्छायाए सक्कय-वयाणं।
सक्कय-सक्कारुक्करिसणेण पययस्सवि पहावो ॥' (वाक्पतिराज का गउडवहो ६५)।

संस्कृत शब्दों का लावण्य प्राकृत की छाया से ही व्यक्त होता है; संस्कृत-भाषा के उत्कृष्ट संस्कार में भी प्राकृत का प्रभाव व्यक्त होता है।

'[3]णवमत्थ-दंसणं संनिवेस-सिसिराओ बंध-रिद्धीओ।
अविरलमिणमो आभुवण-बंधमिह णवर पययम्मि ॥' (गउडवहो ७२)।

सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर आजतक प्रचुर परिमाण में नूतन नूतन अर्थों का दर्शन और सुन्दर रचनावाली प्रबन्ध-संपत्ति कहीं भी है तो वह केवल प्राकृत में ही।

'[4]हरिस-विसेसो वियसावओ य मउलावओ य अच्छीण।
इह बहि-हुत्तो अंतो-मुहो य हिययस्स विप्फुरइ ॥' (गउडवहो ७४)।

प्राकृत-काव्य पढ़ने के समय हृदय के भीतर और बाहर एक ऐसा अभूत-पूर्व हर्ष होता है कि जिससे दोनों आँखें एक ही साथ विकसित और मुद्रित होती हैं।

'[5]परुसो सक्कअ-बंधो पाउअ-बंधोवि होइ सुउमारो।
पुरिस-महिलाणं जेत्तिअमिहंतरं तेत्तिअमिमाणं ॥' (राजशेखर की कर्पूरमञ्जरी, अङ्क १)।

संस्कृत-भाषा कर्कश और प्राकृत भाषा सुकुमार है। पुरुष और महिला में जितना अन्तर है, इन दो भाषाओं में भी उतना ही प्रभेद है।

---

१. अमृतं प्राकृतं काव्यं पठितुं श्रोतुं च ये न जानन्ति। कामस्यतत्त्वचिन्तां कुर्वन्ति, ते कथं न लज्जन्ते ? ॥
२. उन्मीलति लावण्यं प्राकृतच्छायया संस्कृतपदानाम्। संस्कृतसंस्कारोत्कर्षणेन प्राकृतस्यापि प्रभावः ॥
३. नवामार्थदर्शनं संनिवेशशिशिरा बन्धर्द्धयः। अविरलमिदमाभुवनबन्धमिह केवलं प्राकृते ॥
४. हर्षविशेषो विकासको मुकुलीकारकश्चाक्ष्णोः। इह बहिर्मुखोऽन्तर्मुखश्च हृदयस्य विस्फुरति ॥
५. परुषः संस्कृतबन्धः प्राकृतबन्धस्तु भवति सुकुमारः। पुरुषमहिलयोर्यावदिहान्तरं तावदनयोः ॥

'गिरः श्रव्या दिव्याः प्रकृतिमधुराः प्राकृतगिरः ।
सुभव्योऽपभ्रंशः सरसरचनं भूतवचनम् ।' (राजशेखर का बालरामायण १, ११) ।

संस्कृत-भाषा सुनने योग्य है, प्राकृत भाषा स्वभाव-मधुर है, अपभ्रंश-भाषा भव्य है और पैशाची-भाषा की रचना रस-पूर्ण है।

'[1]सक्कय-कव्वस्सत्थं जेण न याणंति मंद-बुद्धीया ।
सव्वाणवि सुह-बोहं तेणेमं पाययं रइयं ।।
गुढत्थ-देसि-रहियं सुललिय-वन्नेहिं विरइयं रम्मं ।
पायय-कव्वं लोए कस्स न हियय सुहावेइ ?।। (महेश्वरसूरि का पञ्चमीमाहात्म्य) ।

सामान्य मनुष्य संस्कृत-काव्य के अर्थ को समझ नहीं पाते हैं। इसलिए यह ग्रन्थ उस प्राकृत-भाषा में रचा जाता है जो सब लोगों को सुख-बोध्य है।

गूढ़ार्थक देशी-शब्दों से रहित और सुललित पदों में रचा हुआ सुन्दर प्राकृत-काव्य किसके हृदय को सुखी नहीं करता ?

'[2]उज्झउ सक्कय-कव्वं सक्कय-कव्वं च निम्मियं जेण ।
वंस-हरं व पलित्तं तडयडतट्टत्तणं कुणइ ।।'
(वज्जालग्ग (?) से अपभ्रंशकाव्यत्रयी की प्रस्ता०, पृष्ठ ७६ में उद्धृत) ।

संस्कृत-काव्य को छोड़ो और जिसने संस्कृत-काव्य की रचना की उसका भी नाम मत लो, क्योंकि वह (संस्कृत) जलते हुए बाँस के घर की तरह 'तड़ तड़ तट्ट' आवाज करता है—श्रुतिकटु लगता है।

"[3]पाइअ-कव्वम्मि रसो जो जायइ तह व छेय-भणिएहिं ।
उययस्स य वासिय-सीयलस्स तित्तिं न वच्चामो ।।
ललिए महुरक्खरए जुवई-यण-वल्लहे स-सिंगारे ।
संते पाइय-कव्वे को सक्कइ सक्कयं पढिउं ? ।।" (जयवल्लभ का वज्जालग्ग, पृष्ठ ६)

प्राकृत-भाषा की कविता में और विदग्ध के वचनों में जो रस आता है उससे, बासी और शीतल जल की तरह, तृप्ति नहीं होती है—मन कभी ऊबता नहीं है—उत्कण्ठा निरन्तर बनी ही रहती है।

जब सुन्दर, मधुर, शृङ्गार-रस-पूर्ण और युवतियों को प्रिय ऐसा प्राकृत-काव्य मौजूद है तब संस्कृत पढ़ने को कौन जाता है ?

---

१. संस्कृतकाव्यस्यार्थं येन न जानन्ति मन्दबुद्धयः । सर्वेषामपि सुखबोधं तेनेदं प्राकृतं रचितम् ।।
गुढार्थदेशीरहितं सुललितवर्णैर्विरचितं रम्यम् । प्राकृतकाव्यं लोके कस्य न हृदयं सुखयति ? ।।

२. उज्झयतां संस्कृतकाव्यं संस्कृतकाव्यं च निर्मितं येन । वंशगृहमिव प्रदीप्तं तडतडतट्टत्वं करोति ।।

३. प्राकृतकाव्ये रसो यो जायते तथा वा छेकभणितैः । उदकस्य च वासितशीतलस्य तृप्तिं न व्रजामः ।।
ललिते मधुराक्षरके युवतिजनवल्लभे सशृंगारे । सति प्राकृतकाव्ये कः श्वक्नोति संस्कृतं पठितुम् ? ।।

इस कोष में स्वीकृत पद्धति

१. प्रथम काले टाइपों में क्रम से प्राकृत शब्द, उसके बाद सादे टाइपों में उस प्राकृत शब्द के लिङ्ग आदि का संक्षिप्त निर्देश, उसके पश्चात् काले कोष्ठ (ब्राकेट) में काले टाइपों में प्राकृत शब्द का संस्कृत प्रतिशब्द, उसके अनन्तर सादे टाइपों में हिन्दी भाषा में अर्थ और तदनन्तर सादे टाइपों में ब्राकेट में प्रमाण (रेफरेंस) का उल्लेख किया गया है।

२. शब्दों का क्रम नागरी वर्ण-माला के अनुसार इस तरह रखा गया है :—अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, अं, क, ख, ग आदि। इस तरह अनुस्वार के स्थान की गणना संस्कृत-कोषों की तरह पर-सवर्ण अनुनासिक व्यञ्जन के स्थान में न कर अन्तिम स्वर के बाद और प्रथम व्यञ्जन के पूर्व में ही करने का कारण यह है कि संस्कृत की तरह प्राकृत में [१]व्याकरण की दृष्टि से भी अनुस्वार के स्थान में अनुनासिक का होना कहीं भी अनिवार्य नहीं है और प्राचीन हस्त-लिखित पुस्तकों में प्रायः सर्वत्र अनुस्वार का ही प्रयोग पाया जाता है।

३. प्राकृत शब्द का प्रयोग विशेष रूप से आर्ष (अर्धमागधी) और महाराष्ट्री भाषा के अर्थ में और सामान्य रूप से आर्ष से लेकर अपभ्रंश भाषा तक के अर्थ में किया जाता है। प्रस्तुत कोष के 'प्राकृत-शब्द-महार्णव' नाम में प्राकृत-शब्द सामान्य अर्थ में ही गृहीत है। इससे यहाँ [२]आर्ष, महाराष्ट्री, शौरसेनी, अशोक-शिलालिपि, देश्य, मागधी, पैशाची, चूलिकापैशाची तथा अपभ्रंश भाषाओं के शब्दों का संग्रह किया गया है। परन्तु प्राचीनता और साहित्य की दृष्टि से इन सब भाषाओं में आर्ष और महाराष्ट्री का स्थान ऊँचा है। इससे इन दोनों के शब्द यहाँ पूर्ण रूप से लिए गये हैं और शौरसेनी आदि भाषाओं के प्रायः उन्हीं शब्दों को स्थान दिया गया है जो या तो प्राकृत (आर्ष और महाराष्ट्री) से विशेष भेद रखते हैं अथवा जिनका प्राकृत रूप नहीं पाया गया है, जैसे—'य्येव', 'विधुव', 'संपाद-इत्तअ', 'संभावीअदि' वगैरह। इस भेद की पहिचान के लिए प्राकृत से इतर भाषा के शब्दों और आख्यात-कृदन्त के रूपों के आगे सादे टाइपों में कोष्ठ में उस उस भाषा का संक्षिप्त नाम-निर्देश कर दिया गया है, जैसे [३]'(शौ)', '(मा)' इत्यादि। परन्तु शौरसेनी आदि में भी जो शब्द या रूप प्राकृत के ही समान है वहाँ ये भेद-दर्शक चिह्न नहीं दिए गए हैं।

(क) आर्ष और महाराष्ट्री से शौरसेनी आदि भाषाओं के जिन शब्दों में सामान्य (सर्व-शब्द-साधारण) भेद है उनको इस कोष में स्थान देकर पुनरावृत्ति-द्वारा ग्रन्थ के कलेवर को विशेष बढ़ाना इसलिए उचित नहीं समझा गया है कि वह सामान्य भेद प्राकृत-भाषाओं के साधारण अभ्यासी से भी अज्ञात नहीं है और वह उपोद्घात में भी उस उस भाषा के लक्षण-प्रसङ्ग में दिखा दिया गया है जिससे वह सहज ही ख्याल में आ सकता है।

(ख) आर्ष और महाराष्ट्री में भी परस्पर उल्लेखनीय भेद है। तिस पर भी यहाँ उनका भेद-निर्देश न करने का एक कारण तो यह है कि इन दोनों में इतर भाषाओं से अपेक्षा-कृत समानता अधिक है; दूसरा, प्रकृति की अपेक्षा प्रत्ययों में ही विशेष भेद हैं जो व्याकरण से सम्बन्ध रखता है, कोष से नहीं; तीसरा, जैन ग्रंथकारों ने महाराष्ट्री-ग्रंथों में भी आर्ष प्राकृत के शब्दों का अविकल रूप में अधिक व्यवहार कर उनको महाराष्ट्री का रूप दे दिया है[४]।

४. प्राकृत में यश्रुतिवाला[५] नियम खूब ही अव्यवस्थित है। प्राकृत-प्रकाश, सेतुबन्ध, गाथासप्तशती और प्राकृतपिंगल आदि में इस नियम का एकदम अभाव है जबकि आर्ष, जैन महाराष्ट्री तथा गउडवहो-प्रभृति ग्रन्थों में इस नियम का हद से ज्यादा आदर देखा जाता है; यहाँ तक कि एक ही शब्द में कहीं तो यश्रुति है और कहीं नहीं, जैसे 'पअ' और 'पय', 'लोअ' और 'लोय'। इस कोष में ऐसे शब्दों की पुनरावृत्ति न कर कोई भी (यश्रुतिवाले 'य', से रहित या सहित) एक ही शब्द लिया गया है। इससे क्रम तथा इतर समान शब्द की

---

१. देखो प्राकृतप्रकाश, सूत्र ४, १४; १७; हेमचन्द्र-प्राकृत-व्याकरण, सूत्र १, २५; और प्राकृतसर्वस्व, सूत्र, ४, २३ आदि।

२. प्राकृतसर्वस्व (पृष्ठ १-३) आदि में इनसे अतिरिक्त और भी प्राच्या, शाकारि आदि अनेक उपभेद बताए गए हैं, जिनका समावेश यहाँ शौरसेनी आदि इन्हीं मुख्य भेदों में यथास्थान किया गया है।

३. इन संक्षिप्त नामों का विवरण संकेत-सूची में देखिए।

४. इसी से डॉ. पिशल् आदि पाश्चात्य विद्वानों ने आर्ष-भिन्न जैन प्राकृत-ग्रंथों को भाषा को 'जैन महाराष्ट्री' नाम दिया है। देखो डॉ. पिशल् का प्राकृतव्याकरण और डॉ. टेसेटोरी की उपदेशमाला की प्रस्तावना।

५. हेमचन्द्र-प्राकृत-व्याकरण का सूत्र १, १८०।

तुलना की सुविधा के लिए आवश्यकतानुरूप कहीं कहीं रेफरेंसवाले शब्द के 'अ' के स्थान में 'य' और 'य' की जगह 'अ' किया गया है।

आर्ष ग्रन्थों में यश्रुतिवाले 'य' की तरह 'त' का प्रयोग भी बहुत ही पाया जाता है, जैसे 'अय' (अज) के स्थान में 'अत', 'अईअ' (अतीत) की जगह 'अतीय' आदि। ऐसे शब्दों की भी इस कोष में बहुधा पुनरावृत्ति न करके त-वर्जित शब्दों को ही विशेष रूप से स्थान दिया गया है।

६. संयुक्त शब्दों को उनके क्रमिक स्थान में अलग न देकर मूल (पूर्व भागवाले) शब्द के भीतर ही उत्तर भागवाले शब्द अकारादि क्रम से काले टाइपों में दिए गए हैं और उसके पूर्व° (ऊर्ध्व बिन्दी) का चिह्न दिया गया है। ऐसे शब्द का संस्कृत प्रतिशब्द भी काले टाइपों में° चिह्न दे कर दिए गए हैं। विशेष स्थानों में पाठकों की सुगमता के लिए संयुक्त शब्द उसके क्रमिक स्थान में अलग भी बतलाये गए हैं और उसके अर्थ तथा रेफरेंस के लिए मूल शब्द में जहाँ वे दिए गए हैं, देखने की सूचना की गई है।

(क) इन संयुक्त शब्दों में जहाँ 'देखो°——' से जिस शब्द को देखने को कहा गया है वहाँ उस शब्द के उसी मूल शब्द के भीतर देखना चाहिए न कि अन्य शब्द के अन्दर।

७. त, तण (त्व), आ, या (तल्), अर, यर, तराग (तर), अम, तम (तम) आदि सुगम और सर्वत्र-साधारण प्रत्ययवाले शब्दों में प्रत्ययों को छोड़कर केवल मूल शब्द ही यहाँ लिए गए हैं। परन्तु जहाँ ऐसे प्रत्ययों में रूप आदि की विशेषता है वहाँ प्रत्यय-सहित शब्द भी लिए गए हैं।

८. धातुओं के सब रूप सादे टाइपों में और कृदन्तों के रूप काले टाइपों में धातु के भीतर दिए गए हैं।

(क) भाव तथा कर्म-कर्तरि रूपों का निर्देश भी धातु के भीतर 'कर्म—' से ही किया गया है।[1]

(ख) भूत कृदन्त के रूप तथा अन्य आख्यात तथा कृदन्त के विशिष्ट रूप बहुधा अलग अलग अपने क्रमिक स्थान हें दिए गए हैं।

९. जिन संस्करणों से शब्द-संग्रह किया गया है उनमें रही हुई संपादन की या प्रेस की भूलों को सुधार कर शुद्ध शब्द ही यहाँ दिए गए हैं। पाठकों के ज्ञानार्थ साधारण भूलों को छोड़कर विशेष भूलवाले पाठ रेफरेंस के उल्लेख के अनन्तर-पूर्व में ज्यों के त्यों उद्धृत भी किये गए हैं और भूलवाले भाग की शुद्धि कौंस में '?' (शङ्काचिह्न) के बाद बतला दी गई है; जैसे देखो **क्षोब्भ, बब्भ** आदि शब्द।

(क) जहाँ भिन्न भिन्न ग्रंथों में या एक ही ग्रंथ के भिन्न भिन्न स्थानों में या संस्करणों में एक ही शब्द के अनेक संदिग्ध रूप पाये गए हैं और जिनके शुद्ध रूप का निर्णय करना कठिन जान पड़ा है वहाँ पर ऐसे रूपवाले सब शब्द इस कोष में यथास्थान दिए गए हैं और तुलना के लिए ऐसे प्रत्येक शब्द के अन्त भाग में 'देखो—' लिख कर इतर रूप भी सूचाया गया है; जैसे देखो '**पुक्खलच्छिभय, पोक्खलच्छिलय**'; '**पेसल, पेसलेस**; '**भयालि, सयालि**' आदि शब्द।

१०. एक ही ग्रंथ के एक या भिन्न भिन्न संस्करणों के अथवा भिन्न भिन्न ग्रंथों के पाठ-भेदों के सभी शुद्ध शब्द इस कोष में यथास्थान दिए गए हैं; जैसे—**परिउम्भुसिय** (भगवतीसूत्र २५—पत्र ६२३) और **परिंभुसिय** (भग. २५ टी—पत्र ६२५); **णिव्विदेज्ज** (भी. मा. का सूत्रकृतांग १, २, ३, १२) और **णिव्विंदेज्ज** (आ. स. का सूत्रकृतांग १, २, ३, १२); **पविरल्लिय** (आ. स. का प्रश्नव्याकरण १, ५—पत्र ६१) और **पवित्थरिल्ल** (अभिधानराजेन्द्र का प्रश्नव्याकरण १, ५), **सामकोट्ठ** (समवायांग-सूत्र, पत्र १५३) और **सामिकुट्ट** प्रवचनसारोद्धार, द्वार ७) प्रभृति।

११. संस्कृत की तरह प्राकृत में भी कम से कम शब्द के आदि के 'ब' तथा 'व' के विषय में गहरा मत-भेद है। एक की शब्द कहीं बकारादि पाया जाता है तो कहीं वकारादि। जैसे भगवतीसूत्र में 'बत्थि' है तो विपाकश्रुत में 'वत्थि' छपा है। इससे ऐसे शब्दों को दोनों स्थानों में न देकर जो 'ब' या 'व' उचित जान पड़ा है उसी एक स्थल में वह शब्द दिया गया है और उभय प्रकार के शब्दों के रेफरेंस भी वहाँ ही दिये गये हैं। हाँ, जहाँ दोनों अक्षरों के अस्तित्व का स्पष्ट रूप से उल्लेख पाया गया है वहाँ दोनों स्थलों में वह शब्द दिया गया है, जैसे '**बप्फाउल**' और '**वप्फाउल**'[1] आदि।

१२. लिङ्गादि-बोधक संक्षिप्त शब्द प्राकृत शब्द से ही संबन्ध रखते हैं, संस्कृत-प्रतिशब्द से नहीं।

(क) जहाँ अर्थ-भेद में लिङ्ग आदि का भी भेद है वहाँ उस अर्थ के पूर्व में ही भिन्न लिंग आदि का सूचक शब्द दे दिया गया है। जहाँ ऐसा भिन्न शब्द नहीं दिया है वहाँ उसके पूर्व के अर्थ या अर्थों के समान ही लिंग आदि समझना चाहिए।

---

१. देशीनाममाला ६, ६२ का टीका।

(ख) प्राकृत में लिंग-विधि खूब ही अनियमित है। प्राकृत वैयाकरणों ने भी कुछ अति संक्षिप्त परन्तु [1] व्यापक सूत्रों के द्वारा इस बात का स्पष्ट उल्लेख किया है। प्राचीन ग्रंथों में एक ही शब्द का जिस-जिस लिंग में प्रयोग जहाँ तक हमें दृष्टिगोचर हुआ है, उस-उस लिंग का निर्देश इस कोष में उस शब्द के पास कर दिया गया है। जहाँ लिंग में विशेष विलक्षणता पाई गई है वहाँ उस ग्रंथ का अवतरण भी दे दिया गया है।

(ग) जहाँ स्त्रीलिंग का विशेष रूप पाया गया है वहाँ उस अर्थ के बाद 'स्त्री—' निर्देश करके रेफरेंस के साथ दिया गया है।

(घ) प्राकृत में अनेक ग्रंथों में अव्यय के बाद विभक्ति का प्रयोग पाया जाता है। इससे ऐसे स्थानों में अव्यय-सूचक 'अ' के बाद प्रायः लिंग बोधक शब्द भी दिया गया है; जैसे 'बला' के बाद 'अ. स्त्री' = (अव्यय तथा स्त्रीलिंग)।

१३. देश्य शब्दों के संस्कृत-प्रतिशब्द के स्थान में केवल देश्य का संक्षिप्त रूप 'दे' ही काले टाइपों में कोष्ठ में दिया गया है।

(क) जो धातु वास्तव में देश्य होने पर भी प्राकृत के प्रसिद्ध-प्रसिद्ध व्याकरणों में संस्कृत धातु के आदेश कह कर तद्भव बतलाये गये हैं उनके संस्कृत-प्रतिशब्द के स्थान में 'दे' न देकर प्राचीन वैयाकरणों की मान्यता बतलाने के उद्देश्य से वे वे आदेशि संस्कृत रूप ही दिये गये हैं। इससे संस्कृत से बिलकुल विसदृश रूपवाले इन देश्य धातुओं को वास्तविक तद्भव समझने की भूल कोई न करे।

(ख) जो धातु तद्भव होने पर भी प्राकृत-व्याकरणों में उसको अन्य धातु का आदेश बतलाया गया है उस धातु के व्याकरण-प्रदर्शित आदेशि संस्कृत रूप के बाद वास्तविक संस्कृत रूप भी दिखलाया गया है यथा पेच्छ के [दृश् , प्र + ईक्ष्] आदि।

(ग) प्राचीन ग्रंथों में जो शब्द देश्य रूप से माना गया है परन्तु वास्तव में जो देश्य न होकर तद्भव ही प्रतीत होता है, ऐसे शब्दों का संस्कृत-प्रतिशब्द दिया गया है और प्राचीन मान्यता बतलाने के लिए संस्कृत प्रतिशब्द के पूर्व में 'दे' दिया गया है।

(घ) जो शब्द वास्तव में देश्य ही है, परन्तु प्राचीन व्याख्याकारों ने उसको तद्भव बतलाते हुए उसके जो परिमार्जित—छिल-छाल कर बनाये हुए संस्कृत—रूप अपने ग्रंथों में दिये हैं, परन्तु जो संस्कृत-कोषों में नहीं पाये जाते हैं, ऐसे संस्कृत-प्रतिरूपों को यहाँ स्थान न देते हुए केवल 'दे' ही दिया गया है।

(ङ) जो शब्द देश्य रूप से संदिग्ध है उसके प्रतिशब्द के पूर्व में 'दे' भी दिया है।

१४. प्राचीन व्याख्याकारों के दिये हुए संस्कृत-प्रतिशब्द से भी जो अधिक समानतावाला संस्कृत प्रतिशब्द है वही यहाँ पर दिया गया है, जैसे 'ण्हाणिय' के प्राचीन प्रतिशब्द 'स्नापित' के बदले 'स्नानित'।

१५. अनेक अर्थवाले शब्दों के प्रत्येक अर्थ १, २, ३ आदि अंकों के बाद क्रमशः दिये गये हैं और प्रत्येक अर्थ के एक या अनेक रेफरेंस उस अर्थ के बाद सादे ब्राकेट में दिये हैं।

(क) धातु के भिन्न-भिन्न रूपवाले रेफरेंसों में जो-जो अर्थ पाये गये हैं वे सब १, २, ३ के अंकों से देकर क्रमशः धातु के आख्यात तथा कृदन्त के रूप दिये गये हैं और उस-उस रूपवाले रेफरेंस का उल्लेख उसी रूप के बाद ब्राकेट में कर दिया गया है।

(ख) जिस शब्द का अर्थ वास्तव में सामान्य या व्यापक है, किन्तु प्राचीन ग्रंथों में उसका प्रयोग प्रकरण-वश विशेष या संकीर्ण अर्थ में हुआ है, ऐसे शब्द का सामान्य या व्यापक अर्थ ही इस कोष में दिया गया है; यथा—'हत्थिचग' का प्रकरण-वश होता 'हाथ के योग्य आभूषण' यह विशेष अर्थ यहाँ पर न देकर 'हाथ-सम्बन्धी' यह सामान्य अर्थ ही दिया गया है। 'णक्खत्त (नाक्षत्र)' आदि तद्धितान्त शब्दों के लिए भी यही नियम रखा गया है।

१६. शब्द-रूप, लिंग, अर्थ की विशेषता या सुभाषित की दृष्टि से जहाँ अवतरण देने की आवश्यकता प्रतीत हुई है वहाँ पर वह, पर्याप्त अंश में, अर्थ के बाद और रेफरेंस के पूर्व में दिया गया है।

(क) अवतरण के बाद कोष्ठ में जहाँ अनेक रेफरेंसों का उल्लेख है वहाँ पर केवल सर्व-प्रथम रेफरेंस का ही अवतरण से संबन्ध है, शेष का नहीं।

१७. एक ही ग्रंथ के जिन अनेक संस्करणों का उपयोग इस कोष में किया गया है, रेफरेंस में साधारणतः संस्करण-विशेष का उल्लेख न करके केवल ग्रंथ का ही उल्लेख किया गया है। इससे ऐसे रेफरेंसवाले शब्द को सब संस्करणों का या संस्करण-विशेष का समझना चाहिए।

---

१. हेमचन्द्र-प्राकृत-व्याकरण, सूत्र १, ३३ से ३५।

(क) जहाँ पर संस्करण-विशेष के उल्लेख की खास आवश्यकता प्रतीत हुई है वहाँ पर रेफरेंस की संकेत-सूची में दिये हुए संस्करण के १, २ आदि अंक रेफरेंस के पूर्व में दिये हैं; जैसे पेसल और पेसलेस शब्दों के रेफरेंस 'आचा' के पूर्व में '२' का अंक आगमोदय-समिति के संस्करण का और '३' का अंक प्रो॰ रवजी भाई के संस्करण का बोधक है।

१८. जहाँ कहीं प्राकृत के किसी शब्द के रूप की, अर्थ की अथवा संयुक्त शब्द आदि की समानता या विशेषता के लिये प्राकृत के ही ऐसे शब्दान्तर की तुलना बतलाना उपयुक्त जान पड़ा है वहाँ पर रेफरेंस के बाद 'देखो—' से उस शब्द को देखने की सूचना की गई है।

१९. जहाँ कहीं 'देखो' के बाद काले टाइपों में दिये हुए प्राकृत शब्द के अनन्तर सादे टाइपों में लिंगादि-बोधक या संस्कृत-प्रतिशब्द दिया गया है वहाँ उसी लिंग आदिवाले या संस्कृत प्रतिशब्दवाले ही प्राकृत शब्द से मतलब है, न कि उसके समान इतर प्राकृत शब्द से। जैसे अ शब्द के 'देखो च अ' के च से पुंलिंग च को छोड़कर दूसरा ही अव्यय-भूत च शब्द, और ओसार के 'देखो ऊसार=उत्सार' के 'ऊसार' से तीसरा ही ऊसार शब्द देखना चाहिए; पहले, दूसरे और चौथे ऊसार शब्द को नहीं।

उक्त नियमों से अतिरिक्त जिन नियमों का अनुसरण इस कोष में किया गया है वे आधुनिक नूतन पद्धति के संस्कृत आदि कोषों के देखनेवालों से परिचित और सुगम होने के कारण खुलासे की जरूरत नहीं रखते।

पाइअ-सद्द-महण्णवो।

(प्राकृत-शब्द-महार्णवः)

णासिअ-दोस-समूहं, भासिअणेगंतवाय-ललिअत्थं।
पासिअ-लोआलोअं, वंदामि जिणं महावीरं ॥ १ ॥

निक्कित्तिम-साउ-पयं, अइसइअं सयल-वाणि-परिणमिरं।
वायं अवाय-रहिअं, पणमामि जिणिंद-देवाणं ॥ २ ॥

पाइअ-भासामइअं, अवलोइअ सत्थ-सत्थमइविउलं।
सद्द-महण्णव-णामं, रएमि कोसं स-वण्ण-कम्मं ॥ ३ ॥

अ

अ पुं [अ] १ प्राकृत वर्ण-माला का प्रथम अक्षर (हे १, १; प्रामा)। २ विष्णु, कृष्ण (से १, १)।

अ देखो च अ (श्रा १४, जी २; पउम ११३, १४; कुमा)।

अ [दे] देखो इव; 'चंदो अ' (प्राकृ ७६)।

अ° अ [अ°] निम्न-लिखित अर्थों में से, प्रकरण के अनुसार, किसी एक को बतलानेवाला अव्यय—१ निषेध, प्रतिषेध; 'अइंसण' (सुर ७, २४८), 'सव्वनिसेहे मश्रोऽकारो' (विसे १२३२)। २ विरोध, उल्टापन; 'अधम्म' (णाया १, १८)। ३ अयोग्यता, अनुचितपन; 'अयाल' (पउम २२,८५)। ४ अल्पता, थोड़ापन; 'अधण' (गउड); 'अचेल' (सम ४०)। ५ अभाव, अविद्यमानता; 'अगुण' (गउड)। ६ भेद, भिन्नता; 'अमणुस्स' (णंदि)। ७ साहश्य, तुल्यता; 'अचक्खुदंसण' (सम १५)। ८ अप्रशस्तता, बुरापन; 'अभाइ' (चारु २६)। ९ लघुपन, छोटाई; 'अतड' (बृह १)।

°अ पुं [क] १ सूर्य, सूरज (से ७, ४३)। २ अग्नि, आग। ३ मयूर, मोर (से ६,४३)। ४ न. पानी, जल (से १,१)। ५ शिखर, टोंच (से ६,४३)। ६ मस्तक, सिर (से ६,१८)।

°अ वि [°ज] उत्पन्न, जात (गा ९७१)।

अअंख वि [दे] स्नेह-रहित, सूखा (दे १, १३)।

अअर देखो अवर (पि १६५)।

अअर देखो आयर (पि १६५)।

अइ अ [अयि] १-२ संभावना और आमंत्रण अर्थ का सूचक अव्यय (हे २, २०५; स्वप्न ५८)।

अइ अ [अति] यह अव्यय नाम और धातु के पूर्व में लगता है और नीचे के अर्थों में से किसी एक को सूचित करता है—१ अतिशय, अतिरेक; 'अइउण्ह', 'अइउत्ति', 'अइचिंतंत' (श्रा १४, रंभा, गा २१४)। २ उत्कर्ष, महत्त्व; 'अइवेग' (कप्प)। ३ पूजा, प्रशंसा; 'अइजाय' (ठा ४)। ४ अतिक्रमण, उल्लंघन; 'अइउक्कसो' (दस ५,४,४२)। ५ ऊपर, ऊंचा; 'अइमंच', 'अइपडागा' (औप, णाया १,१)। ६ निन्दा; 'अइपंडिय' (बृह १)।

अइ अ [अति] सामर्थ्य-सूचक अव्यय; 'अइवहइ' (सूअ १, २, ३, ५)।

अइ सक [आ + इ] आगमन करना, आ गिरना; 'अइंति नाराया' (स ३८३)।

अइइ स्त्री [अदिति] पुनर्वसु नक्षत्र का अधिष्ठाता देव (सुज्ज १०)।

अइइ सक [अति+इ] १ उल्लंघन करना। २ गमन करना। ३ प्रवेश करना। वकृ. अइंत (से ६, २६, कप्प)। संकृ. अइच्च (सूअ १, ७, २८)।

अइउट्ट वि [अतिवृत्त] अतिगत, प्राप्त (सूअ १, ५, १, १२)।

अइंच सक [अति + अञ्च्] १ अभिषेक करना, स्थानापन्न करना। २ उल्लंघन करना। ३ अक. दूर जाना (से १३, ८; ८६)।

अइंचिअ वि [अत्यञ्चित] १ अभिषिक्त, स्थानापन्न किया हुआ (से १३,८)। २ उल्लंघित, अतिक्रान्त (से १३,८)। ३ दूर गया हुआ (से १३, ८६)।

अइंछ देखो अइंच (से १३, ८)।

अइंछिअ देखो अइंचिअ (से १३, ८)।

अइंछण न [अत्यञ्चन] १ उल्लंघन (से १३, ३८)। २ आकर्षण, खींचाव (से ८,६४)।

अइंत देखो अइइ = अति + इ।

अइंत वि [अनायत्] १ नहीं आता हुआ । २ जो जाना न जाता हो; 'गाहाहि पणइणीहि य खिज्जइ चित्तं अइंतीहिं' (वज्जा ४) ।

अइंदिय वि [अतीन्द्रिय] इंद्रियों से जिसका ज्ञान न हो सके वह (विसे २८१८) ।

अइंमुत्त देखो अइमुत्त (प्राकृ ३२) ।

अइकम अक [अतिक्रम्] गुजरना, बीतना; 'देवखणस्स समग्रो अइकमइ दुद्धरस्स रायस्स' (सम्मत्त १७४) । देखो अइक्कम = अति + क्रम ।

अइकाय पुं [अतिकाय] १ महोरग—जातीय देवों का एक इन्द्र (ठा २) । २ रावण का एक पुत्र (से १६, ५६) । ३ वि. बड़ा शरीरवाला (णाया १, ६) ।

अइक्कंत वि [अतिक्रान्त] १ अतीत, गुजरा हुआ; 'अइक्कंतजोव्वणा' (ठा ५) । २ तीर्ण, पार पहुँचा हुआ (आव) । ३ जिसने त्याग किया हो वह; 'सव्वसिणेहाइक्कंता' (औप) ।

अइक्कम सक [अति + क्रम्] १ उल्लंघन करना । २ व्रत-नियम का आंशिक रूप से खण्डन करना; 'अइक्कमइ' (भग) । वकृ. अइक्कमंत, अइक्कममाण (सुपा २३८; भग) । कृ. अइक्कमणिज्ज (सूत्र, २,७) ।

अइक्कम पुं [अतिक्रम] १ उल्लंघन (गा ३४८) । २ व्रत या नियम का आंशिक खण्डन (ठा ३, ४) ।

अइक्कमण न [अतिक्रमण] ऊपर देखो (सुपा २३८) ।

अइक्ख वि [अतीक्ष्ण] तीक्ष्णतारहित; 'अइक्खा वेयरणी' (तंदु ४६) ।

अइक्ख वि [अनीक्ष्य] अदृश्य; 'अइक्खा वेयरणी' (तंदु ४३) ।

अइगच्छ, **अइगम** अक [अति + गम्] १ गुजरना, बीतना । २ सक. पहुँचना । ३ प्रवेश करना । ४ उल्लंघन करना । ५ जाना, गमन करना । वकृ. अइगच्छमाण (णाया १,१) । संकृ. अइयच्च (आचा) ; 'अइगंतूण अलोगं' (विसे ६०४) ।

अइगम पुं [अतिगम] प्रवेश (विसे ३८६) ।

अइगमण न [अतिगमन] १ प्रवेश-मार्ग (णाया १, २) । २ उत्तरायण, सूर्य का उत्तर दिशा में जाना (भग) ।

अइगय वि [दे] १ आया हुआ । २ जिसने प्रवेश किया हो वह (दे १,५७); 'ससुरकुलम्मि अइगओ, दिट्ठो य सगउरवं तत्थ' (उप ५६७ टी) । ३ न. मार्ग का पीछला भाग (दे १, ५७) ।

अइगय वि [अतिगत] अतिक्रान्त, गुजरा हुआ; 'हिंडंतस्स अइगयं वरिसमेगं' (महा; से १०, १८; विसे ७ टी) ।

अइगय वि [अतिगत] प्राप्त; 'एवं बुंदिमइगओ गब्भे संवसइ दुक्खिओ जीवो' (तंदु १३) ।

अइचिरं अ [अतिचिरम्] बहुत काल तक (गा ३४६) ।

अइच्च देखो अइइ = अति + इ ।

अइच्छ सक [गम्] जाना, गमन करना । अइच्छइ (हे ४,१६२) ।

अइच्छ सक [अति+क्रम्] उल्लंघन करना । अइच्छइ (ओघ ५१८) । वकृ. अइच्छंत (उत्त १८) ।

अइच्छा स्त्री [अदित्सा] १ देने की अनिच्छा । २ प्रत्याख्यान विशेष (विसे ३५०४) ।

अइच्छिय वि [गत] गया हुआ, गुजरा हुआ (पउम ३, १२२; उप पृ १३३) ।

अइच्छिय वि [अतिक्रान्त] अतिक्रान्त, उल्लंघित (पाअ; विसे ३५८२) ।

अइजाय पुं [अतिजात] पिता से अधिक संपत्ति को प्राप्त करनेवाला पुत्र (ठा ४) ।

अइट्ठ वि [अदृष्ट] १ जो न देखा गया हो वह । २ न. कर्म, दैव, भाग्य (भवि) । °उव्व, °पुव्व वि [°पूर्व] जो पहले कभी न देखा गया हो वह (गा ४१४; ७४८) ।

अइट्ठ वि [अदृष्ट] जो देखा न गया हो वह (हास्य १४६) ।

अइट्ठ वि [अनिष्ट] १ अप्रिय । २ खराब, दुष्ट; 'जो पुणु खलु खुद्दु अइट्ठसंगु, तो किमब्भत्थउ देइ अंगु' (भवि) ।

अइट्ठा सक [अति + स्था] उल्लंघन करना । संकृ. अइट्ठिय (उत्त ७) ।

अइट्ठिय वि [अतिष्ठित] अतिक्रान्त, उल्लंघित (उत्त ७) ।

अइग न [दे] गिरि-तट, तराई, पहाड़ का निम्न भाग (दे १, १०) ।

अइण न [अजिन] चर्म, चमड़ा (पाअ) ।

अइणिय वि [दे. अतिनीत] आनीत, लाया हुआ (दे १,२४) ।

अइणिय, **अइणीय** वि [अतिनीत] १ फेंका हुआ (से ६, ५६) । २ जो दूर ले जाया गया हो (प्राप) ।

अइणीअ वि [अतिगत] गत, गया हुआ (सुख २,१३) ।

अइणीय वि [दे. अतिनीत] आनीत, लाया हुआ (महा) ।

अइणु वि [अतितृ] जिसने नौका का उल्लंघन किया हो वह, जहाज से उतरा हुआ (षड्) ।

अइतह वि [अवितथ] सत्य, सच्चा (उप १०३१ टी) ।

अइतेया स्त्री [अतितेजा] पक्ष की चौदहवीं रात (सुज्ज १०,१४) ।

अइदंपज्ज न [ऐदंपर्य] तात्पर्य, रहस्य, भावार्थ (उप ८६४; ८७६) ।

अइदुसमा, **अइदुस्समा**, **अइदूसमा** स्त्री [अतिदुष्षमा] देखो दुस्समदुस्समा (पउम २०, ८३; ६०; उप पृ १४७) ।

अइदंपज्ज देखो अइदंपज्ज (पंचा १४) ।

अइधाडिय वि [अतिघ्राटित] फिराया हुआ, घुमाया हुआ (पण्ह १,३) ।

अइनिट्ठुहावण वि [अतिविष्टम्भन] स्तब्ध करनेवाला, रोकनेवाला (कुमा) ।

अइन्न न [अजीर्ण] १ बदहजमी, अपच । २ वि. जो हजम न हुआ हो वह । ३ जो पुराना न हुआ हो, नूतन (उव) ।

अइन्न वि [अदत्त] नहीं दिया हुआ । °याण न [°दान] चोरी (आचा) ।

अइपंडुकंबलसिला स्त्री [अतिपाण्डुकम्बलशिला] मेरु पर्वत पर स्थित दक्षिण दिशा की एक शिला (ठा ४) ।

अइपडाग पुं [अतिपताक] १ मत्स्य की एक जाति (विपा १, ८) । २ स्त्री. पताका के ऊपर की पताका (णाया १, १) ।

अइपरिणाम वि [अतिपरिणाम] आवश्यकता न रहने पर भी अपवाद-मार्ग का ही आश्रय लेनेवाला, शास्त्रोक्त अपवादों की मर्यादा का उल्लंघन करनेवाला ;

'जो दव्वखेत्तकालभावकयं जं जहिं जया काले। तल्लेसुस्सुत्तमई, अइपरिणामं वियाणाहि' (बृह १)।

अइपाइअ वि [अतिपातिक] हिंसा करनेवाला (सूअ २, १, ५७)।

अइपास पुं [अतिपार्श्व] भगवान् अरनाथ के समकालिक ऐरवत क्षेत्र के एक तीर्थंकर-देव (तित्थ)।

अइपास सक [अति + दृश्] अतिशय देखना, खूब देखना। अइपासइ (सूअ १, १, ४, ६)।

अइप्पगे अ [अतिप्रगे] पूर्व-प्रभात, बड़ी सबेर (सुर ७, ७८)।

अइप्पमाण वि [अतिप्रमाण] १ तृप्त न होता हुआ भोजन करनेवाला। २ न. तीन बार से अधिक भोजन (पिंड ६४७)।

अइप्पसंग पुं [अतिप्रसङ्ग] १ अतिपरिचय (पञ्चा१०)। २ तर्क-शास्त्र में प्रसिद्ध अति-व्याप्ति-नामक दोष (स १६६; उवर ४८)।

अइप्पसंगि वि [अतिप्रसङ्गिन्] अतिप्रसंग दोषवाला (अज्झ १०)।

अइप्पहाय न [अतिप्रभात] बड़ी सबेर (गा ६८)।

अइबल वि [अतिबल] १ बलिष्ठ, शक्ति-शाली (औप)। २ न. अतिशय बल, विशेष सामर्थ्य। ३ बड़ा सैन्य (हे ४, ३५४)। ४ पुं. एक राजा, जो भगवान् ऋषभदेव के पूर्वीय चतुर्थ भव में पिता या पितामह था (आचू)। ५ भरत चक्रवर्ती का एक पौत्र (ठा ८)। ६ भरत क्षेत्र में आगामी चौबीसी में होनेवाला पाँचवां वासुदेव (सम ५)। ७ रावण का एक योद्धा (पउम ५६, २७)।

अइभद्दा स्त्री [अतिभद्रा] भगवान् महावीर के प्रभास नामक ग्यारहवें गणधर की माता (आचू)।

अइभूइ पुं [अतिभूति] एक जैन मुनि, जो पंचम वासुदेव के पूर्व-जन्म में गुरु थे (पउम २०, १७६)।

अइभूमि स्त्री [अतिभूमि] १ परम प्रकर्ष। २ बहुत जमीन (से३, ४२)। ३ गृहस्थों के घर का वह भाग, जहाँ साधुओं का प्रवेश करने की अनुज्ञा न हो; 'अइभूमिं न गच्छेज्जा, गोयरग्गगओ मुणी' (दस ५, १, २४)।

अइमट्टिया स्त्री [अतिमृत्तिका] कीचवाली मट्टी (जीव ३)।

अइमत्त, **अइमाय** वि [अतिमात्र] बहुत, परिमाण से अधिक (उव ठा ६)।

अइमुंक, **अइमुंत**, **अइमुंतय**, **अइमुत्त**, **अइमुत्तय** पुं [अतिमुक्त, °क] १ स्वनाम ख्यात एक अन्तकृद् (उसी जन्म में मुक्ति पानेवाला) जैन मुनि, जो पोलासपुर के राजा विजय का पुत्र था और जिसने बहुत छोटी ही उम्र में भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी (अन्त)। २ कंस का एक छोटा भाई (आव)। ३ वृक्ष-विशेष (पउम ४२, ८)। ४ माधवी लता (पाअ; स ३५)। ५ न. अन्तगडदसा नामक अंग-ग्रन्थ का एक अध्ययन (अन्त)। (हे १, २६;१७८, पि २४६)।

अइय वि [अतिग] अतिक्रान्त; 'अव्वो अइअ-म्मि तुमे, णवरं जइ सा न जूरिहिइ' (हे २, २०४)। २ करनेवाला; 'ठाणाइय' (औप)।

अइय वि [अतिग] प्राप्त (राय १३४)।

°अइय वि [दयित] १ प्रिय, प्रीतिपात्र। २ दया-पात्र, दया करने योग्य (से ६, ३१)।

अइयच्छ देखो **अइगच्छ**।

अइयण न [अत्यदन] बहुत खाना, अधिक भोजन करना (वव २)।

अइयय वि [अतिगत] गया हुआ (स ३०३)।

अइयर सक [अति + चर्] १ उल्लंघन करना। २ व्रत को दूषित करना। वकृ. **अइयरंत** (सुपा ३५४)।

अइया सक [अति + या] जाना, गुजरना (उत्त २०)।

अइया स्त्री [अजिका] बकरी, छागी (उप २३७)।

°अइया स्त्री [दयिता] स्त्री, पत्नी (से ६, ३१)।

अइयाण न [अतियान] १ गमन, गुजरना। २ राजा वगैरह का नगर आदि में धूम-धाम से प्रवेश करना (ठा ४)।

अइयाय वि [अतियात] गया हुआ, गुजरा हुआ (उत्त २०)।

अइयार पुं [अतिचार] उल्लंघन, अतिक्रमण (भवि)। २ गृहीत व्रत या नियम में दूषण लगाना (श्रा ६)।

अइर अ [अचिर] जल्दी, शीघ्र (स्वप्न ३७)।

अइर न [अजिर] आंगन, चौक (पाअ)।

अइर पुं [दे] आयुक्त, गांवका राज-नियुक्त मुखिया (दे १, १६)।

अइर न [दे. अतर] देखो **अयर** = अतर (सुपा ३०)।

अइर वि [दे] अतिरोहित (पिंड ५६०; ५६१)।

अइरजुवइ स्त्री (दे) नई बहू, दुलहिन (दे १, ४८)।

अइरत्त पुं [अतिरात्र] अधिक तिथि, ज्योतिष की गिनती से जो दिन अधिक होता है वह (ठा ६)।

अइरत्त वि [अतिरक्त] १ गाढा लाल। २ विशेष रागी। **°कंबलसिला**, **°कंबला** स्त्री [°कम्बलशिला, कम्बला] मेरु पर्वत के पांडुक वन में स्थित एक शिला, जिसपर जिनदेवों का जन्माभिषेक किया जाता है (ठा २, ३)।

अइरा अ [अचिरात्] शीघ्र, जल्दी (से ३, १५)।

अइरा, **अइराणी** स्त्री [अचिरा] पांचवें चक्रवर्ती और सोलहवें तीर्थंकर-देव की माता (सम १५२; पउम २०, ४२)।

अइराणी स्त्री [दे] १ इन्द्राणी। २ सौभाग्य के लिए इन्द्राणी-व्रत करनेवाली स्त्री (दे १,५८)।

अइरावण पुं [ऐरावण] इन्द्र का हाथी (पाअ)।

अइरावय पुं [ऐरावत] इन्द्र का हाथी (भवि)।

अइराहा स्त्री [अचिराभा] बिजली, चपला (दे १, ३४ टी)।

अइरि न [अतिरि] धन या सुवर्ण का अति-क्रमण करनेवाला, धनाढ्य (षड्)।

अइरिंप पुं [दे] कथाबन्ध, बातचीत, कहानी (दे १,२६)।

अइरित्त वि [अतिरिक्त] १ बचा हुआ, अवशिष्ट (पउम ११८,११६)। २ अधिक, ज्यादा (ठा २, १); 'पवड्ढमाणाइरित्तगुणनिलओ' (सार्ध ६३)। °**सिज्जासणिय** वि [शय्यासनिक] लम्बी-चौड़ी शय्या और आसन रखनेवाला (साधु) (आचू)।

अइरूव वि [अतिरूप] १ सुरूप, सुडौल (पउम २०,११३)। २ पुं. भूत-जातीय देव-विशेष (पण्ण १)।

अइरेइय वि [अतिरेकित] अतिरेक-युक्त, अतिप्रभूत (राय ७८ टी)।

अइरेग पुं [अतिरेक] १ आधिक्य, अधिकता; 'साइरेगअट्ठवासजाययं' (णाया १, ५)। २ अतिशय (जीव ३)।

अइरेण, अइरेणं अ [अचिरेण] जल्दी, शीघ्र (गा १३५; पउम ६२, ४; उवर ४३)।

अइरेय देखो **अइरेग** (णाया १, १)।

अइव अ [अतीव] अतिशय, अत्यन्त;
'रित्तं अइव महंतं,
चिट्ठइ मज्झम्मि तस्स भवणस्स।
ता तं सव्वं सुपुरिस !
अप्पायत्तं करेज्जासु ।।' (महा)।

अइवट्टण न [अतिवर्त्तन] उल्लंघन, अतिक्रमण (आचा)।

अइवत्त सक [अति + वृत्] अतिक्रमण करना। अइवत्तइ (आचा)।

अइवत्तिय वि [अतिव्रतिक] १ जिसका उल्लंघन किया गया हो वह। २ प्रधान, मुख्य। ३ उल्लंघन करनेवाला (आचा)।

अइवय सक [अति + वृत्] उल्लंघन करना। संकृ. **अइवइत्ता** (सूअ २, २, ६५)।

अइवय सक [अति + व्रज्] १ उल्लंघन करना। २ संमुख जाना। ३ प्रवेश करना। अइवयंति (पण्ह १,६)। वकृ. 'नियगवयणं अइवयंतं गयं सुमिणे पासित्ताणं पडिबुद्धा' (णाया १, १; कप्प)।

अइवय सक [अति + पत्] उल्लंघन करना। २ सम्बन्ध करना। ३ प्रवेश करना। ४ अक. मरना। ५ गिरजाना; 'अवरे रण-सीस-लद्ध-लक्खा संगामम्मि अइवयंति' (पण्ह १, ३); 'लोभघत्था संसारं अइवयंति' (पण्ह १,५)। वकृ. 'जरं वा सरीररूव-विणासिणिं सरीरं वा अइवयमाणिं निवारेसि' (णाया १, ९); **अइवयंत** (कप्प)। प्रयो. **अइवाएमाण** (आचा; ठा ७)।

अइवह सक [अति + वह्] वहन करने में समर्थ होना। अइवहइ (सूअ १, २, ३, ५)।

अइवाइ वि [अतिपातिन्] १ हिंसक (सूअ १, ५)। विनश्वर (विसे १५७८)।

अइवाइत्तु वि [अतिपातयितृ] मारनेवाला (ठा ३, २)।

अइवाइय वि [अतिपातिक] ऊपर देखो (सूअ २, १)।

अइवाएत्तु देखो **अइवाइत्तु** (ठा ७)।

अइवाएमाण देखो **अइवय** = अति + पत्।

अइवाय पुं [अतिपात] १ हिंसा आदि दोष (ओघ ४६)। २ विनाश; 'पाणाइवाएणं' (णाया १, ५)।

अइवाय पुं [अतिवात] १ उल्लंघन। २ भयंकर पवन, तूफान (उप ७६८ टी)।

अइवाह सक [अति + वाहय्] बीताना, गुजारना; 'सो अइवाहेइ दुन्नि दिणे' (धर्मवि ३३)।

अइविरिय वि [अतिवीर्य] १ बलिष्ठ, महापराक्रमी। २ पुं. इक्ष्वाकु वंश का एक राजा (पउम ५, ५)। ३ नन्दावर्त नगर का एक राजा (पउम ३७, ३)।

अइविसाल वि [अतिविशाल] १ बहुत बड़ा, विस्तीर्ण। २ स्त्री. यमप्रभ नामक पर्वत के दक्षिण तरफ की एक नगरी (दीव)।

अइस [अप] वि [ईदृश] ऐसा, इस तरह का (हे ४, ४०३)।

अइसइ वि [अतिशयिन्] अतिशय वाला, विशिष्ट, आश्चर्य-कारक (सुपा २५७)।

अइसइअ वि [अतिशयित] ऊपर देखो (पाअ)।

अइसंधण देखो **अइसंधाण**; 'भितगाणतिसंधणं न कायव्वं' (पंचा ७, २१)।

अइसंधाण [अतिसंधान] ठगाई, वंचना; 'भियगाणइसंधाणं सासयवुड्ढी य जयणा य' (पंचा ७)।

अइसक्कणा स्त्री [अतिष्वष्कणा] उत्तेजना, प्रेरणा, बढ़ावा (निसी)।

अइसय सक [अति + शी] मात करना। वकृ. 'परबलमइसयंतो' (पउम ६०, १९)।

अइसय पुं [अतिशय] १ श्रेष्ठता, उत्तमता (कुमा १, ५)। २ महिमा, प्रभाव; 'वयणाइसओ' (महा)। ३ बहुत, अत्यन्त (सुर, १२, ८१)। ४ चमत्कार (उर १, ३)। °**भरिय** वि [°भृत] पूर्ण, पूरा भरा हुआ (पाअ)।

अइसरिय न [ऐश्वर्य] वैभव, संपत्ति, गौरव (हे १, १५१)।

अइसाइ वि [अतिशायिन्] १ श्रेष्ठ (धम्म ६ टी)। २ दूसरे को मात करनेवाला। स्त्री. °**णी** (सुपा ११४)।

अइसायण न [अतिशायन] उत्कृष्टता, उत्कर्ष (चेइय ५३३)।

अइसार पुं [अतिसार] संग्रहणी रोग, जठर की व्याधि-विशेष (लहुअ १५)।

अइसेस पुं [अतिशेष] १ महिमा, प्रभाव, आध्यात्मिक सामर्थ्य (सम ५६)। २ बचा हुआ, अवशिष्ट (ठा ४, २)। ३ अतिशय वाला (विसे ५५२)।

अइसेसि वि [अतिशेषिन्] १ प्रभावशाली, महिमान्वित। २ समृद्ध (राज)।

अइसेसि वि [अतिशेषिन्] १ महिमान्वित। २ समृद्ध, ज्ञान आदि के अतिशय से सम्पन्न (सट्ठि ४२ टी)।

अइसेसिय वि [अतिशेषित] ऊपर देखो (ओघ ३०)।

अइसेसिय वि [अतिशेषित] ज्ञात, जाना हुआ (वव १)।

अइहर पुं [अतिभर] हद, अवधि, मर्यादा; 'सत्तीय को अइहरो ?' (अच्चु २३)।

अइहारा स्त्री [दे] बिजली, चपला (दे १, ३४)।

अइहि पुं [अतिथि] जिसके आने की तिथि नियत न हो वह, पाहुन, यात्री, भिक्षुक, साधु (आचा)। °**संविभाग** पुं [°संविभाग] साधु को भोजन आदि का निर्दोष दान (धर्म ३)।

अई सक [गम्] जाना, गमन करना। अईइ (हे ४, १६२; कुमा); अइंति (गउड)।

अईअ पुं [अतीत] १ भूतकाल (पच्च६०)। २ वि. जो बीत चुका हो, गुजरा हुआ; 'जे अ अईआ सिद्धा' (पडि)। ३ अतिक्रान्त (सूअ

१, १०; सार्ध ४; विसे ८०८)। ४ जो दूर हो गया हो (उत्त १५)।

अईअ } अ [अतीव] बहुत, विशेष, अत्यन्त
अईव } (भग २, १; पण्ह १, २)।

अईसंत वि [अ + दृश्यमान] जो दिखता न हो (से १, ३५)।

अईसय देखो अइसय (पउम ३,१०५; ७५, २६)।

अईसार पुं [अतीसार] रोग-विशेष, संग्रहणी रोग (सुख १,३)।

अईसार पुं [अतीसार] १ संग्रहणी रोग। २ इस नाम का एक राजा (ठा ५,३)।

अउ देखो आउ = स्त्री; 'उल्लसिओ तमरूवो वलयागारो अउक्काओ' (पव २५५)।

अउअ न [अयुत] १ दस हजार की संख्या। २ 'अउअंग' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह (ठा २, ४)।

अउअंग न [अयुताङ्ग] 'अच्छणिउर' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह (ठा २, ४)।

अउंठ वि [अकुण्ठ] निपुण, कार्य-दक्ष (गउड)।

अउचित्त न [औचित्य] उचितपन (प्राकृ १०)।

अउज्झ वि [अयोध्य] १ युद्ध में जिसका सामना न किया जा सके वह (सम१३७)। २ जिस पर रिपु-सैन्य आक्रमण न कर सके ऐसा किला, नगर आदि (ठा ४)।

अउज्झा स्त्री [अयोध्या] नगरी-विशेष, इक्ष्वाकुवंश के राजाओं की राजधानी, विनीता, कोसला, साकेतपुर आदि नामोंसे विख्यात नगरी, जो आजकल भी अयोध्या नाम से ही प्रसिद्ध है (ठा २)।

अउण वि [एकोन] जिसमें एक कम हो वह। यह शब्द बीस से लेकर तीस, चालीस आदि दहाई संख्या के पूर्व में लगता है और जिसका अर्थ उस संख्या से एक कम होता है। °ट्ठि स्त्री [°षष्टि] उनसाठ, ५६ (कप्प)। °त्तरि स्त्री [°सप्तति] उनसत्तर, ६६ (कप्प) °त्तीस स्त्रीन [°त्रिंशत्] उनतीस, २६ (गाया १, १३)। °सट्ठि स्त्री [°षष्टि] उनसाठ, ५६ (कप्प)। °पन्न, °वन्न स्त्रीन [पञ्चाशत्] उनपचास, ४६ (जी ३०; पउम १०२, ७०)। देखो एगूण।

अउणतीसइ स्त्री देखो अउण-त्तीस (उत्त ३६, २४०)।

अउणप्पन्न देखो अउणापन्न (जीवस २०८)।

अउणासट्ठि देखो अउण-सट्ठि (सुज्ज ६)।

अउणोणिउत्ति स्त्री [अपुनर्निवृत्ति] अन्तिम निवृत्ति, मोक्ष (अच्चु १०)।

अउण्ण } न [अपुण्य] १ पाप (सुर ६,
अउन्न } २०)। २ वि. अपवित्र। ३ पुण्य-रहित, पापी (पउम २८, ११२; सुर २, ५१)।

अउम देखो ओम (गुभा १४)।

अउमर वि [अद्मर] खानेवाला, भक्षक (प्राकृ २८)।

अउल वि [अतुल] असाधारण, अद्वितीय (उप ७२८ टी; पण्ह १, ४)।

अउलीन वि [अकुलीन] कुल-हीन, कुजाति, संकर (गा २५३)।

अउव्व वि [अपूर्व] अनोखा, अद्वितीय (गा ११६)।

अउस पुं [दे] उपासक, पुजारी (प्रयौ ८२)।

अए अ [अये] आमन्त्रण-सूचक अव्यय (कप्पू)।

अओ अ [अतस्] १ यहां से लेकर (सुपा ४७८)। २ इसलिए, इस कारण से (उप ७३०)।

अओ° [अयस्°] लोह। °घण पुं [घन] लोहे का हथौड़ा; 'सीसंपि भिंदंति अओघणेहिं' (सूअ १, ५, २, १४)। °मय वि [°मय] लोहे की बनी हुई चीज (सूअ २, २)। °मुह पुं [°मुख] १-२ इस नाम का अन्तर्द्वीप और उसके निवासी (ठा ५)। ३ वि. लोहे की माफिक मजबूत मुंह वाला; 'पक्खीहिं खज्जंति अओमुहेहिं' (सूअ १, ५, २, ४)। °मुही स्त्री [°मुखी] एक नगरी (उप ७६४)।

अओग्ग वि [अयोग्य] नालायक (स ७६४)।

अओज्झा देखो अउज्झा (प्रति ११५)।

अं अ [दे] स्मरण-द्योतक अव्यय; 'अं दट्ठव्वा मालइलआ' (प्राकृ ८०)।

अंक पुं [अङ्क] १ उत्संग, कोला (स्वप्न २१६)। २ रत्न की एक जाति (कप्प)। ३ नौ की एक संख्या; 'कासी विक्कमवच्छरम्मि य गए बाणंकसुन्नोडुवे' (सुर १६, २४६)। ४ संख्या-दर्शक चिह्न; १, २, ३ (पण्ण २)। ५ नाटक का एक अंश; 'सुरणा मणुस्सभवणाइएसु निज्झाइआ अंका' (चण ४५)। ६ सफेद मणि की एक जाति (उत्त ३४)। ७ चिह्न, निशान (चंद २०)। ८ मनुष्य के बत्तीस प्रशस्त लक्षणों में से एक (पण्ह १, ४)। ९ आसन-विशेष (चंद ४)। °कण्ड पुंन. [°काण्ड] रत्नप्रभा पृथ्वी के खर-काण्ड का एक हिस्सा, जो अंक रत्नों का है (ठा १०)। °करेल्लुग, °करेल्लुअ पुं [°करेल्लुक] पानी में होनेवाली एक जाति की वनस्पति (आचा)। °ट्ठिइ स्त्री [°स्थिति] अंक रेखाओं की विचित्र स्थापना, ६४ कलाओं में एक कला (कप्प)। °धर पुं [°धर] चन्द्रमा (जीव ३)। °धाई स्त्री [°धात्री] पांच प्रकार की धाई-माताओं में से एक, जिसका काम बालक को उत्संग में ले उसका जी बहलाना है (णाया १, १)। °लिवि स्त्री [°लिपि] अठारह लिपियों में की एक लिपि, वर्णमाला-विशेष (सम ३५)। °वणिय पुं [°वणिक्] अंक-रत्नों का व्यापारी (राय)। °वालि, °वाली स्त्री [°पालि, °पाली] आलिंगन (काप्र १६४)। °हर देखो °धर (जीव ३)।

अंक [दे अङ्क] निकट, समीप, पास (दे १, ५)।

अंक पुंन [अङ्क] एक देव-विमान (देवेन्द्र १३२)।

अंककरेलुअ, °ग देखो अंक-करेल्लुअ (आचा २, १, ८, ५)।

अंकण न [अङ्कन] १ चिह्नित करना (आव)। २ बैल आदि पशुओं को लोहे की गरम सलाई आदि से दागना (पण्ह १,१)। ३ वि. अंकित करनेवाला, गिनती में लानेवाला; 'अंकणं जोइसस्स······सूरं' (कप्प)।

अंकणा स्त्री [अङ्कना] ऊपर देखो (णाया १, १७)।

अंकदास पुं [अङ्कदास] बालक को उत्संग में लेकर उसका जी बहलानेवाला नौकर (सम्मत्त २१७)।

अंकवाणिय देखो अंक-वणिय (राय १२६)।

अंकार पुं [दे] सहायता, मदद (दे १,६)।

अंकावई स्त्री [अङ्कावती] १ महाविदेह क्षेत्र के रम्य नामक विजय की राजधानी (ठा २)। मेरु की पश्चिम दिशा में बहती हुई शीतोदा महानदी की दक्षिण दिशा में वर्तमान एक वक्षस्कार पर्वत (ठा ५, २)।

अंकिअ न [दे] आलिंगन (दे १,११)।

अंकिअ वि [अङ्कित] चिह्नित, निशानवाला (औप)।

अंकिइल्ल पुं [दे] नट, नर्तक, नचवैया (गाया १, १)।

अंकुडग पुं [अङ्कुटक] नागदन्तक, खूँटी, ताख (जं १)।

अंकुर पुं [अङ्कुर] प्ररोह, फुनगी (जी ६)।

अंकुरिय वि [अङ्कुरित] अंकुर-युक्त, जिसमें अंकुर उत्पन्न हुए हों वह (उवा)।

अंकुस पुं [अङ्कुश] १ आंकडी, लोहे का एक हथियार, जिससे हाथी चलाये जाते हैं; 'अंकुसेण जहा णागो धम्मे संपडिवाइओ' (उत्त २२)। २ ग्रह-विशेष (ठा २, ३)। ३ सीता का एक पुत्र, कुस (पउम ६७, १६)। ४ नियन्त्रण करनेवाला, काबू में रखनेवाला (गउड)। ५ एक देव-विमान (राज)। ६ पुंन. गुरु-वन्दन का एक दोष (पव २)।

अंकुस पुंन [अङ्कुश] १ एक देव-विमान (देवेन्द्र १४०)। २ पुं. अंकुशाकार खूँटी (राय ३७)।

अंकुसइय न [दे. अंकुशित] अंकुश के आकार-वाली चीज (दे १, ३८; से ६, ६३)।

अंकुसय पुं [अङ्कुशक] देखो **अंकुस**। २ संन्यासी का एक उपकरण, जिससे वह देव-पूजा के वास्ते वृक्ष के पल्लवों को काटता है (औप)।

अंकुसा स्त्री [अङ्कुशा] चौदहवें तीर्थंकर श्री अनन्तनाथ भगवान् की शासन-देवी (पव २८)।

अंकुसिअ वि [अङ्कुशित] अंकुश की तरह मुड़ा हुआ (से १४, २६)।

अंकुसी स्त्री [अङ्कुशी] देखो **अंकुसा** (संति १०)।

अंकूर देखो **अंकुर**; 'सा पुण विरतमित्ता निंबंकूरे विसेसेइ' (सुअनि ६१ टी)।

अंकेल्लण न [दे] घोड़ा आदि को मारने का चाबुक, कोड़ा, औंगी (जं ४)।

अंकेल्लि पुं [दे] अशोक-वृक्ष (दे१, ७)।

अंकोल्ल पुं [अङ्कोठ] वृक्ष-विशेष (हे १,२००)।

अंग ब. पुं [अङ्ग] १ इस नाम का एक देश, जिसको आजकल बिहार कहते हैं (सुर २, ६७)। २ रामका एक सुभट (पउम ५६,३७)। ३ न. आचारांग सूत्र आदि बारह जैन आगम-ग्रंथ (विपा २, १)। ४ वेदांग, वेद के शिक्षादि छः अंग (आचू)। ५ कारण, हेतु (पव १)। ६ आत्मा, जीव (भवि)। ७ पुंन. शरीर (प्रासू ८४)। ८ शरीरके मस्तक आदि अवयव (कम्म १, ३४)। ९ अ. मित्रता का आमन्त्रण, सम्बोधन (राय)। १० वाक्यालंकार में प्रयुक्त किया जाता अव्यय (ठा ४)। °**इ** पुं [°जित्] इस नामका एक गृहस्थ, जिसने भगवान् पार्श्वनाथ के पास दीक्षा ली थी (निर)। °**इसि** पुं [°र्षि] चंपा नगरी का एक ऋषि (आचू)। [°**चूलिया**] स्त्री [°**चूलिका**] अंग-ग्रंथों का परिशिष्ट (पक्खि)। °**च्छहिय** वि [°**छिन्नाङ्ग**] जिसका अंग काटा गया हो वह (सूअ २, २, ६३)। °**जाय** वि [°जात] बच्चा, लड़का (उप ६४८)। °**द** देखो °**य** = °द (ठा ८)। °**पविट्ठ** न [°प्रविष्ट] १ बारह जैन अंग-ग्रन्थों में से कोई भी एक (कम्म १, ६)। २ अंग-ग्रंथों का ज्ञान (ठा २, १)। °**बाहिर** न [°बाह्य] १ अंग-ग्रंथों के अतिरिक्त जैन आगम (आचू)। २ अंग-ग्रंथों से भिन्न जैन आगमों का ज्ञान (ठा २)। °**मंग** न [°ाङ्ग] १ अंग-प्रत्यंग (राय)। २ हर एक अवयव (षड्)। °**मंदिर** न [°मन्दिर] चम्पा नगरी का एक देव-गृह (भग १, १)। °**मद्द**, °**मद्दय** पुं [°मर्द, °मर्दक] १ शरीर की चंपी करनेवाला नौकर। २ वि. शरीर को मलनेवाला, चंपी करनेवाला (सुपा १०८; महा; भग ११, १)। °**य** पुं [°द] १ वाली नामक विद्याधरराज का पुत्र (पउम १०, १०; ५६, ३७)। २ न. बाजूबंद, केहुंटा (पण्ह १, ४)। °**य** वि [°ज] १ शरीर में उत्पन्न। २ पुं. पुत्र, लड़का (उप १३४ टी)। °**या** स्त्री [°जा] कन्या, पुत्री (पाअ)। °**रक्ख**, °**रक्खग** वि [°रक्ष, °रक्षक] शरीर की रक्षा करनेवाला (सुपा ५२७; इक)। °**राग**, °**राय** पुं [°राग] शरीर में चन्दनादि का विलेपन (औप; गा १८६)। °**राय** पुं [°राज] १ अंगदेश का राजा (उप ७६५)। अंग देश का राजा कर्ण (णाया १, १६; वेणी १०४)। °**रिसि** देखो °**इसि**। °**रुह** वि [°रुह] देखो °**य** = °ज (सुपा ५१२; पउम ५६, ३२)। °**रुहा** स्त्री [°रुहा] पुत्री, लड़की (सुपा १५०)। °**विज्जा** स्त्री [°विद्या] १ शरीर के स्फुरण का शुभाशुभ फल बतलानेवाली विद्या (उत्त ८)। २ उस नाम का एक जैन ग्रंथ (उत्त ८)। °**वियार** पुं [°विचार] देखो पूर्वोक्त अर्थ (उत्त १५)। °**संभूय** वि [°संभूत] संतान, बच्चा (उप ६४८)। °**हारय** पुं [°हारक] शरीर के अवयवों के विक्षेप, हाव-भाव (अजि ३१)। °**ादाण** न [°ादान] पुरुषेन्द्रिय, पुरुष-चिह्न (निसी)।

अंग पुं [अङ्ग] भगवान् आदिनाथ के एक पुत्र का नाम (ती १४)। २ न. लगातार बारह दिनों का उपवास (संबोध ५८)। °**ज** देखो °**य** (धर्मवि १२६)। °**हर** वि. [°धर] अङ्ग-ग्रंथों का जानकार (विचार ४७३)।

अंग वि [आङ्ग] १ शरीर का विकार (ठा ८)। २ शरीर-संबंधी, शारीरिक (सुअ २, २)। ३ न. शरीर के स्फुरण आदि विकारों के शुभाशुभ फल को बतलानेवाला शास्त्र, निमित्त-शास्त्र (सम ४६)।

°**अंग** वि [चङ्ग] सुन्दर, मनोहर (भवि)।

अंगइया स्त्री [अङ्गदिका] एक नगरी, तीर्थ-विशेष (उप ५५२)।

अंगंगीभाव पुं [अङ्गाङ्गीभाव] अभेद-भाव, अभिन्नता; 'अंगंगीभावेण परिणएणन्नसरिस-जिणधम्मे' (सुपा २१८)।

अंगण न [अङ्गण] आंगन, चौक (सुर ३, ७१)।

अंगणा स्त्री [अङ्गना] स्त्री, औरत (सुर ३, १८)।

अंगदिआ देखो **अङ्गइया** (ती)।

अंगवड्ढण न [दे] रोग, बीमारी (दे १, ४७)।

अंगवलिज्ज न [दे] शरीर को मोड़ना (दे १, ४२)।

अंगार पुं [अङ्गार] १ जलता हुआ कोयला (हे १, ४७)। २ जैन साधुओं के लिए भिक्षा का एक दोष (आचा)। °**मद्दग** पुं [°मर्दक] एक अभव्य जैन-आचार्य (उप २५४)। °**वई** स्त्री [°वती] सुंसुमार नगर के राजा धुन्धुमार की एक कन्या का नाम (धम्म ८ टी)।

अंगारग, अंगारय पुं [अङ्गारक] १-२ ऊपर देखो (गा २६१)। ३ मंगल-ग्रह (पण्ह १, ५)। ४ पहला महाग्रह (ठा २)। ५ राक्षस-वंश का एक राजा (पउम ५, २६२)।

अंगारिय वि [अङ्गारित] कोयले की तरह जला हुआ, विवर्ण (नाट; आचा)।

अंगाल देखो **अंगार**; 'निदड्ढंगालनिभं' (पिंड ६७५)।

अंगालग देखो **अंगारग** (राज)।

अंगालिय न [दे] ईख का टुकड़ा (दे १, २८)।

अंगालिय देखो **अंगारिय** (आचा)।

अंगि पुं [अङ्गिन्] १ प्राणी, जीव (गण ८)। २ वि. शरीरवाला। ३ अंग-ग्रन्थों का ज्ञाता (कप्प)।

अंगिरस न [अङ्गिरस] एक गोत्र, जो गोतम-गोत्र की शाखा है (ठा ७)।

अंगिरस वि [आङ्गिरस] १ अंगिरस-गोत्र में उत्पन्न (ठा ७)। २ पुं. एक तापस (पउम ४, ८६)।

अंगीकड, अंगीकय वि [अङ्गीकृत] स्वीकृत (ठा ५; सुपा ५२६)।

अंगीकर, अंगीकुण सक [अङ्गी + कृ] स्वीकार करना। अंगीकरेइ (महा; नाट)। अंगीकरेहि (स ३०६) संकृ. **अंगीकरेऊण** (विसे २६४२)।

अंगुअ पुं [इङ्गुद] १ वृक्ष-विशेष। २ न. इंगुद वृक्ष का फल (हे १, ८९)।

अंगुट्ठ पुं [अङ्गुष्ठ] अंगूठा (ठा १०) °**पसिण** पुं [°प्रश्न] १ एक विद्या। २ 'प्रश्न-व्याकरण' सूत्र का एक लुप्त अध्ययन (ठा १०)।

अंगुट्ठी स्त्री [दे] सिरका अवगुण्ठन, घूंघट (दे १, ६; स २८४)।

अंगुत्थल न [दे] अंगुठी, अंगुलीय (दे १, ३१)।

अंगुब्भव वि [अङ्गोद्भव] संतान, बच्चा (उप २६४)।

अंगुम सक [पूरय्] पूर्ति करना, पूरा करना। अंगुमइ (हे ४, ६८)।

अंगुमिय वि [पूरित] पूर्ण किया हुआ (कुमा)।

अंगुरि, °री स्त्री [अङ्गुलि, °ली] उंगली (गा २७७)।

अंगुल न [अङ्गुल] यव के आठ मध्यभाग के बराबर का एक नाप, मान-विशेष (भग ३, ७)। °**पोहत्तिय** वि [°पृथक्त्विक] दो से लेकर नव अंगुल तक का परिमाण वाला (जीव १)।

अंगुलि स्त्री [अङ्गुलि] उंगली (कुमा।)। °**कोस** पुं [°कोश] अंगुलि-त्राण, दास्ताना (राय)। °**प्फोडण** न [°स्फोटन] उंगली फोड़ना, कड़ाका करना (तंदु)।

अंगुलिअ, अंगुलिज्जक, अंगुलिज्जग न [अङ्गुलीयक] अंगुठी (दे ५, ६; कप्प; पि २५२)।

अंगुलिणी स्त्री [दे] प्रियंगु, वृक्ष-विशेष (दे १, ३२)।

अंगुली स्त्री [अङ्गुली] देखो **अंगुलि** (कप्प)।

अंगुलीय, अंगुलीयग, अंगुलीयय, अंगुलेज्जक, अंगुलेयय पुंन [अङ्गुलीयक] अंगुठी (सुर १०, ६४); 'पायवडिएण सामिय! समप्पिओ अंगलीयओ तीए' (पउम ५४, ६; सुर १, १३२; पि २५२; पउम ४६, ३९)।

अंगुलेयग देखो **अंगुलेयय** (सुख २, २६)।

अंगुवंग, अंगोवंग न [अङ्गोपाङ्ग] १ शरीर के अवयव (पण्ण २३)। २ नख वगैरह शरीर के छोटे-छोटे अवयव; 'नहकेसमंसुअंगुलीओट्ठा खलु अंगोवंगाणि' (उत्त ३)। °**णाम** न [°नामन्] शरीर के अवयवों के निर्माण में कारण-भूत कर्म-विशेष (कम्म १, ३४; ४८)।

अंगोहलि स्त्री [दे] शिर को छोड़कर बाकी शरीर का स्नान (उप पृ २३)।

अंघो अ [अङ्ग] भय-सूचक अव्यय (प्रति ३९; प्रयौ २०५)।

अंच सक [कृष्] १ खींचना। २ जोतना, चास करना। ३ रेखा करना। ४ उठाना। अंचइ (हे ४,१८७)। संकृ. **अंचेइत्ता** (आव)।

अंच सक [अञ्च्] पूजना, पूजा करना। अंचए (भवि)।

अंच सक [अञ्च्] जाना। अंचति (पंचा १६, २३); 'अञ्चु गइ पूयणम्मि य', 'सोधीए पारमंचइ' (बृह ४)।

अंचल पुं [अञ्चल] कपड़े का शेष भाग (कुमा)।

अंचि पुं [अञ्चि] गमन, गति (भग १५)।

अंचि पुं [आञ्चि] आगमन, आना (भग १५)।

अंचिय वि [अञ्चित] १ युक्त, सहित (सुर ४, ६७)। २ पूजित (सुपा २१८)। ३ प्रशस्त, श्लाघित (प्रासू १८)। ४ न. एक प्रकार का नृत्य (ठा ४, ४; जीव ३)। ५ एक बार का गमन (भग १५)। °**यंचि** पुं [°ञ्चि] १ गमनागमन, आना-जाना (भग १५)। २ ऊंचा-नीचा होना (ठा १०)।

अंचियरिभिय न [अञ्चितरिभित] एक तरह का नाट्य (राय ५३)।

अंचिया स्त्री [अञ्चिका] आकर्षण (स१०२)।

अंछ सक [कृष्] १ खींचना; 'अंछंति वासुदेवं अगडतडम्मि ठियं संतं' (विसे ७९४)। २ अक. लम्बा होना। वकृ. **अंछमाण** (विसे ७९९)। प्रयो. अंछावेइ (णाया १, १)।

अंछण न [कर्षण] खींचाव (पण्ह २, ५)।

अंछिय वि [दे] आकृष्ट, खींचा हुआ (दे १, १४)।

अंज सक [अञ्ज्] आंजना। कृ. **अंजियव्व** (स ५४३)।

अंजण पुं [अञ्जन] १ कृष्ण पुद्गल-विशेष (सुज्ज २०)। २ देव-विशेष (सिरि ६६७)।

अंजण पुं [अञ्जन] १ पर्वत-विशेष (ठा ५)। २ एक लोकपाल देव (ठा ४)। ३ पर्वत-विशेष का एक शिखर, जो दिग्हस्ती कहा जाता है (ठा २, ३; ८)। ४ वृक्ष-विशेष (आव)। ५ न. एक जाति का रत्न (णाया १, १)। ६ देवविमान-विशेष (सम ३५)। ७ काजल, कज्जल (प्रासू ३०)। ८ जिसका

सुरमा बनता है ऐसा एक पार्थिव द्रव्य (जी ४)। ६ आंखको आंजना (सूअ १, ६)। १० तैल आदि से शरीर की मालिश करना (राज)। ११ लेप (स ५८२)। १२ रत्नप्रभा पृथिवी के खर-काण्ड का दशवाँ अंश-विशेष (ठा १०)। °केसिया स्त्री [°केशिका] वनस्पति-विशेष (पण्ण १७; राय)। °जोग पुं [°योग] कला-विशेष (कप्प)। °दीव पुं [°द्वीप] द्वीप-विशेष (इक)। °पुलय पुं [°पुलक] एक जाति का रत्न (ठा १०)। २ पर्वत-विशेष का एक शिखर (ठा ८)। °प्पहा स्त्री [°प्रभा] चौथी नरक-पृथिवी (इक)। °रिट्ठ पुं [°रिष्ट] इन्द्र-विशेष (भग ३, ८)। °सलागा स्त्री [°शलाका] १ जैन-मूर्तिकी प्रतिष्ठा। २ अंजन लगाने की सलाई (सूअ १, ५)। °सिद्ध वि [°सिद्ध] आंख में अंजन-विशेष लगाकर अदृश्य होने की शक्तिवाला (निसी)। °सुन्दरी स्त्री [°सुन्दरी] एक सती स्त्री, हनुमान् की माता (पउम १५, १२)।

अंजणइसिआ स्त्री [दे] वृक्ष-विशेष, श्याम तमाल का पेड़ (दे १, ३७)।

अंजणई स्त्री [दे] वल्ली-विशेष (पण्ण १)।

अंजणईस न [दे] देखो **अंजणइसिआ** (दे १, ३७)।

अंजणग देखो **अंजण**।

अंजणा स्त्री [अंजना] १ हनूमान की माता (पउम १, ६०)। २ स्वनाम-ख्यात चौथी नरक-पृथिवी (ठा २, ४)। ३ एक पुष्करिणी (जं ४)। °तणय पुं [°तनय] हनूमान् (पउम ४७, २८)। °सुन्दरी स्त्री [°सुन्दरी] हनूमान् की माता (पउम १८, ५८)।

अंजणाभा स्त्री [अञ्जनाभा] चौथी नरक-पृथिवी (इक)।

अंजणिआ स्त्री [दे] देखो **अंजणइसिआ** (दे १, ३७)।

अंजणी स्त्री [अञ्जनी] कज्जल का आधार-पात्र (सूअ १, ४)।

अंजलि, °ली पुंस्त्री [अञ्जलि] १ हाथ का संपुट (हे १, ३५)। एक या दोनों संकुचित हाथों को ललाट पर रखना; 'एगेण वा दोहि वा मउलिएहिं हत्थेहिं णिडालसंसितेहिं अंजली भण्णति' (निचू)। ३ कर-संपुट, नमस्कार रूप विनय, प्रणाम (प्रासू ११०; स्वप्न ६३)। °उड पुं [°पुट] हाथ का संपुट (महा)। °करण न [°करण] विनय-विशेष, नमन (दे)। °पग्गह पुं [°प्रग्रह] १ नमन, हाथ जोड़ना (भग १४, ३)। २ संभोग-विशेष (राज)।

अंजस वि (दे) ऋजु, सरल (दे १, १४)।

अंजिय वि [अञ्जित] आंजा हुआ, अंजन-युक्त किया हुआ (से ६, ४८)।

अंजु वि [ऋजु] १ सरल, अकुटिल; 'अंजुधम्मं जहा तच्चं, जिणाणं तह सुणेह मे' (सूअ १, १; १, १, ४, ८)। २ संयम में तत्पर, संयमी; 'पुट्ठोवि नाइवत्तइ अंजू' (आचा)। ३ स्पष्ट, व्यक्त (सूअ १, १)।

अंजुआ स्त्री [अञ्जुका] भगवान् अनन्तनाथ की प्रथम शिष्या (सम १५२)।

अंजू स्त्री [अञ्जू] १ एक सार्थवाह की कन्या (विपा १, १०)। २ 'विपाकश्रुत' का एक अध्ययन (विपा १, १)। ३ एक इन्द्राणी (ठा ८)। ४ 'ज्ञाताधर्मकथा' सूत्र का एक अध्ययन (णाया २)।

अंठि पुंन [अस्थि] हड्डी, हाड़ (षड्); 'अहिअमहुरस्स अंबस्स अजोग्गदाए अण्ठी न भक्खीअदि' (चारु ६)।

अंड, अंडअ, अंडग न [अण्ड, °क] १ अंडा (कप्प; औप)। २ अंड-कोश (महानि ४)। ३ 'ज्ञाताधर्मकथा' सूत्र का तृतीय अध्ययन (णाया १, १)। °कड वि [°कृत] जो अण्डे से बनाया गया हो; 'बंभणा माहणा एगे, आह अण्डकडे जगे' (सूअ १, ३)। °बंध पुं [°बन्ध] मन्दिर के शिखर पर रखा जाता अण्डाकार गोला (गउड)। °वाणियय पुं [°वाणिजक] अण्डों का व्यापारी (विपा १, ३)।

अंडग, अंडय वि [अण्डज] १ अण्डे से पैदा होनेवाले जंतु; पक्षी, सांप, मछली वगैरह (ठा ३, १; ८)। २ रेशम का धागा। ३ रेशमी वस्त्र (उत्त २६)। ४ शण का वस्त्र (सूअ २, २)।

अंडय पुं [दे, अण्डज] मछली, मत्स्य (दे १, १६)।

अंडाउय वि [अण्डज] अण्डे से पैदा होनेवाला (पउम १०२, ६७)।

अंत पुं [अन्त] १ स्वरूप, स्वभाव (से ६, १८)। २ प्रान्त भाग (से ६, १८)। ३ सीमा, हद (जी ३३)। ४ निकट, नजदीक (विपा १, १)। ५ भग, विनाश (विसे ३४५४, जी ४८)। ६ निर्णय, निश्चय (ठा ३)। ७ प्रदेश, स्थान; 'एगंतमंतमवक्कमइ' (भग ३, २)। ८ राग और द्वेष; 'दोहिं अंतेहिं अदिस्समाणो' (आचा)। ९ रोग, बीमारी (विसे ३४५४)। १० वि. इन्द्रियों को प्रति-कूल लगनेवाली चीज, असुन्दर, नीरस वस्तु (पण्ह २, ४)। ११ मनोहर, सुन्दर (से ६, १८)। १२ नीच, क्षुद्र, तुच्छ (कप्प)। °कर वि [°कर] उसी जन्म में मुक्ति पानेवाला (सूअ १, १५)। °करण वि [°करण] नाशक (पण्ह १, ६)। °काल पुं [°काल] १ मृत्यु काल। २ प्रलय काल (से ५, ३२)। °किरिया स्त्री [°क्रिया] मुक्ति, संसार का अन्त करना (ठा ४, १)। °कुल न [°कुल] क्षुद्र कुल (कप्प)। °गड वि [°कृत्] उसी जन्म में मुक्ति पानेवाला (उप ४६१)। °गडदसा स्त्री [°कृद्दशा] जैन अंग-ग्रंथों में आठवाँ अंग-ग्रंथ (अणु १)। °चर वि [°चर] भिक्षा में नीरस पदार्थों की ही खोज करनेवाला (पण्ह २, १)।

अंत वि [अन्त्य] अन्तिम, अन्त का (पण्ण १५)। °क्खरिया स्त्री [°क्षरिका] १ ब्राह्मी लिपि का एक भेद (पण्ण १)। २ कला-विशेष (कप्प)।

अंत न [अन्त्र] आंत (सुपा १८२, गा ५८५)।

अंत अ [अन्तर्] मध्य में, बीच में (हे १, १४)। °उर न [°पुर] देखो **अंतेउर** (नाट)। °करण, °क्करण [°करण] मन, हृदय; 'करुणारसपरवसंतकरणेण' (उप ६ टी; नाट)। °गय वि [°गत] मध्यवर्ती, बीचवाला (हे १, ६०)। °द्धा स्त्री [°धा] १ तिरोधान। २ नाश (आचू)। °द्धाण न [°धान] अदृश्य होना, तिरोहित होना

(उप १३९ टी)। °द्धाणी स्त्री [°र्धानी] जिससे अदृश्य हो सके ऐसी विद्या (सूअ २, २)। °द्धाभूअ वि [°धाभूत] नष्ट, विगत; 'नट्ठेत्ति वा विगतेत्ति वा अंतद्धाभूतेत्ति वा एगट्ठा' (आचू)। °प्पाअ पुं [°पात] अन्तर्भाव, समावेश (हे २, ७७)। °भाव पुं [°भाव] समावेश (विसे)। °मुहुत्त न [°मुहूर्त] कुछ कम मुहूर्त्त, न्यून मुहूर्त्त (जी १४)। °रद्धा स्त्री [°धा] १ तिरोधान। २ नाश, 'वुड्ढी सइअन्तरद्धा' (श्रा १६)। °रद्धा स्त्री [°अद्धा] मध्य-काल, बीच का समय (आचा)। °रप्प पुं [°आत्मन्] आत्मा, जीव (हे १, १४)। °रहिय, °रिहिद (शौ) वि [°हित] १ व्यवहित, अंतराल-युक्त (आचा)। २ गुप्त, अदृश्य (सम ३६; उप १६६ टी; अभि १२०)। °वेइ पुं [°वेदि] गंगा और यमुना के बीच का देश (कुमा)।

°अंत वि [°कान्त] सुन्दर, मनोहर (से १, ५६)।

अंतअ वि [आयात्] आता हुआ (से ६, ४६)।

अंतअ वि [अन्तग] पार-गामी, पार-प्राप्त (से ६, १८)।

अंतअ वि [अन्तद] १ अविनाशी, शाश्वत। २ जिसकी सीमा न हो वह (से ६,१८)।

अंतअ, अंतग } वि [अन्तक] १ मनोहर, सुन्दर (से ६, १८)। २ अन्तर्गत, समाविष्ट (सूअ १, १५)। ३ पर्यन्त, प्रान्त भाग; 'जे एवं परिभासंति अन्तए ते समाहिए' (सूअ १,३)। ४ यम, मृत्यु (से ६, १८; उप ६६६ टी); 'समागमं कंखति अन्तगस्स' (सूअ १, ७)।

अंतग वि [अन्तग] १ पार-गामी। २ दुस्त्यज, जो कठिनाई से छोड़ा जा सके; 'चिचाएा अन्तगं सोयं निरवेक्खो परिव्वए' (सूअ १, ६)।

अंतगय देखो अंत-ग्गय (वव १)।

°अंतण न [यन्त्रण] बन्धन, नियन्त्रण (प्रयौ २४)।

अंतद्धाण वि [अन्तर्धान] तिरोधान-कर्त्ता(पिंड ५००)।

अंतब्भाव देखो अंत-भाव (अज्झ १४२)।

अंतर न [अन्तर] १ मध्य, भीतर; 'गामंतरे पविट्ठो सो' (उप ६ टी)। २ भेद, विशेष, फरक (प्रासू १६८)। ३ अवसर, समय (गाया १, २)। ४ व्यवधान (जं १)। ५ अवकाश, अन्तराल (भग ७,८)। ६ विवर, छिद्र (पाअ)। ७ रजोहरण। ८ पात्र। ९ पुं. आचार, कल्प। १० सूत के कपड़े पहनने का आचार, सौत्र कल्प (कप्प)। °कप्प पुं [°कल्प] जैन साधु का एक आत्मिक प्रशस्त आचरण (पंचू) °कंद पुं [°कन्द] कन्द की एक जाति, वनस्पति-विशेष (पराग १)। °करण न [°करण] आत्मा का शुभ अध्यवसाय-विशेष (पंच)। °गिह न [°गृह] १ घर का भीतरी भाग। २ दो घरों के बीच का अंतर (बृह ३)। °णई स्त्री [°नदी] छोटी नदी (ठा ६)। °दीव पुं [°द्वीप] १ द्वीप-विशेष (जी २३)। २ लवण समुद्र के बीच का द्वीप (पराग १)। °सत्तु पुं [°शत्रु] भीतरी शत्रु, काम-क्रोधादि (सुपा ८५)।

अंतर सक [अन्तरय्] व्यवधान करना, बीच में डालना। अंतरेहि, अंतरेमि (विक्र १३६)।

अंतर वि [आन्तर] १ अभ्यन्तर, भीतरी;'सयलसुराणंपि अंतरो अप्पाणो' (अच्चु २०)। २ मानसिक (उवर ७१)।

अंतरंग वि [अन्तरङ्ग] भीतरी (विसे २०२७)।

अंतरंजी स्त्री [आन्तरञ्जी] नगरी-विशेष (विसे २३०३)।

अंतरपल्ली स्त्री [अन्तरपल्ली] मूल स्थान से ढाई गव्यूत की दूरी पर स्थित गाँव (पव७०)।

अंतरमुहुत्त देखो अंत-मुहुत्त (पंच २,१३)।

अंतरा अ [अन्तरा] १ मध्य में, बीच में (उप ६५४)। २ पहले, पूर्व में (कप्प)।

अंतराइय न [आन्तरायिक] १ कर्म-विशेष, जो दान आदि करने में विघ्न करता है (ठा २)। २ विघ्न, रुकावट (पराह २,१)।

अंतराईय न [अन्तरायीय] ऊपर देखो (सुपा ६०१)।

अंतरापह पुं [अन्तरापथ] रास्ता का बीचला भाग (सुख १, १५)।

अंतराय पुंन. [अन्तराय] देखो अंतराइय (ठा २, ४; स २०३)।

अंतराल पुं [अन्तराल] अंतर, बीच का भाग (अभि ८२)।

अंतरावण पुंन [अन्तरापण] दूकान, हाट (चारु ३)।

अंतरावास पुं [अन्तरवर्ष, अन्तरावास] वर्षा-काल (कप्प)।

अंतरिक्ख पुंन [अन्तरिक्ष] अन्तराल, आकाश (भग १७, १०, स्वप्न ७०)। °जाय वि [°जात] जमीन के ऊपर रही हुई प्रासाद, मंच आदि वस्तु (आचा २, ५)। °पासणाह पुं [°पार्श्वनाथ] खानदेश में अकोला के पास का एक जैन-तीर्थ और वहाँ की भगवान श्रीपार्श्वनाथ की मूर्ति (ती)।

अंतरिक्ख वि [आन्तरिक्ष] १ आकाश-संबंधी, आकाश का (जी ५)। २ ग्रहों के परस्पर युद्ध और भेद का फल बतलानेवाला शास्त्र (सम ४६)।

अंतरिज्ज न [अन्तरीय] १ वस्त्र, कपड़ा। २ शय्या का नीचला वस्त्र; 'अंतरिज्जं णाम णियंसणं, अहवा अंतरिज्जं नाम सेजाए हेट्ठिल्लं पोत्तं' (निचू १५)।

अंतरिज्ज न [दे] करधनी, कटीसूत्र (दे १, ३५)।

अंतरिज्जिया स्त्री [अन्तरीया] जैनीय वेशवाटिक गच्छ की एक शाखा (कप्प)।

अंतरित, अंतरिय } वि [अन्तरित] व्यवहित, अंतर-वाला (सुर ३, १४३; से १, २७)।

अंतरिया स्त्री [दे] समाप्ति, अंत (जं २)।

अंतरिया स्त्री [अन्तरिका] छोटा अन्तर, थोड़ा व्यवधान (राय)।

अंतरीव न [अन्तरीप] द्वीप, 'सरवरगिहंतराले जिणभवणं आसि अंतरीवं व' (धर्मवि १४३)।

अंतरेण अ [अन्तरेण] बिना, सिवाय (उत्त १)।

अंतरेण अ [अन्तरेण] बीच में, मध्य में (स ७६७)।

अंतलिक्ख देखो **अंतरिक्ख** (णाया १, १; चारु ७)।

°**अंति** देखो **पंति** (से ६, ६६)।

अंतिम वि [अन्तिम] चरम, शेष, अन्त्य (ठा १)।

अंतिय न [अन्तिक] १ समीप, निकट (उत्त १)। २ अवसान, अंत; 'अह भिक्खू गिलाएज्जा आहारस्सेव अंतिया' (आचा १,८)। ३ अन्तिम, चरम (सूअ २, २)।

अंतीहरी स्त्री [दे] दूती (दे १, ३५)।

अंतेआरि वि [अन्तश्चारिन्] बीच में जानेवाला, बीचक (हे १, ६०)।

अंतेउर न [अन्तःपुर] १ राजस्त्रियों का निवासगृह। २ रानी, 'सणंकुमारो वि तेसिं वंदणत्थं संतेउरो गओ तमुज्जाणं' (महा)।

अंतेउरिगा, **अंतेउरिया**, **अंतेउरी** } स्त्री [आन्तःपुरिकी, °री] अन्तःपुर में रहनेवाली स्त्री, राज्ञी (उप ६ टी; सुपा २२८, २८६)। २ रोगी का नाममात्र लेने से उसको नीरोग बनानेवाली एक विद्या (वव ५)।

अंतेल्ली स्त्री [दे] १ मध्य, बीच। २ उदर, पेट। ३ कल्लोल, तरंग (दे १, ५५)।

अंतेवासि वि [अन्तेवासिन्] शिष्य (कप्प)।

अंतेवुर देखो **अंतेउर** (प्रति ५७)।

अंतो अ [अन्तर्] बीच, भीतर; 'गामंतो संपत्ता' (उप ६ टी; सुर ३, ७४)। °**खरिया** स्त्री [°खरिका] नगर में रहनेवाली वेश्या (भग १५)। °**गइया** स्त्री [°गतिका] स्वागत के लिए सामने जाना, 'सव्वाए विभूईए अंतोगइयाए तणयस्स' (सुर १५, १६१)। °**गय** वि [°गत] मध्यवर्ती, समाविष्ट (उप ६८६ टी)। °**णिअंसणी** स्त्री [°निवसनी] जैन साध्वियों को पहनने का एक वस्त्र (बृह ३)। °**दहण** न [°दहन] हृदय-दाह (तंदु)। °**मज्झावसाणिय** पुंन [°मध्यावसानिक] अभिनय का एक भेद (राय)। °**मुहुत्त** न [°मुहूर्त्त] कम मुहूर्त्त, ४८ मिनिट से कम समय (कप्प)। °**वाहिणी** स्त्री [°वाहिनी] क्षुद्र नदी (ठा २, ३)। °**वीसंभ** पुं [°विश्रम्भ] हार्दिक विश्वास (हे १ ६०)। °**सल्ल** न [°शल्य] १ भीतरी शल्य, घाव (ठा ४)। २ कपट, माया (औप)। °**साला** स्त्री [°शाला] घरका भीतरी भाग, 'कोलालभंडं अंतोसालाहिंतो बहिया नीणेइ' (उवा; पि ३४३)। °**हुत्त** वि [°मुख] भीतर, 'अंताहुत्तं डज्झइ जायासुण्णे घरे हलिअउत्तो' (गा ३७३)।

अंतोहुत्त वि [दे] अधोमुख, औंधा मुंह वाला (दे १, २१)।

अंत्रडी (अप) स्त्री [अन्त्र] आंत, आंतो (हे ४, ४४५)।

°**अंद** पुं [चन्द्र] १ चन्द्रमा, चांद 'पसुवइणो रोसारुणपडिमासंकंतगोरिमुहअंदं' (गा १)। २ कपूर (से ६, ४७)। °**राअ** पुं (°राग) चन्द्रकान्त मणि (से ६, ४७)।

°**अंदरा** स्त्री [°कन्दरा] गुफा (से ६, ४७)।

°**अंदल** पुं [कन्दल] वृक्ष-विशेष (से ७, ४७)।

°**अंदावेदि** (शौ) देखो **अंतावेइ** (हे ४, २८६)।

अंदु, **अंदुया** } स्त्री [अन्दु] शृंखला, जंजीर (औप, स ५३०)।

अंदेउर (शौ) देखो **अंतेउर** (हे ४, २६१)।

अंदोल अक [अन्दोल्] १ हिचकना, झूलना। २ कंपना, हिलना। ३ संदिग्ध होना, 'अंदोलइ दोलासु व माणो गरुओवि विलयाणं' (स ५२१)। वकृ. **अंदोलंत**, **अंदोलिंत**, **अंदोलमाण** (से ८,५१,११,२५; सुर ३,११६)।

अंदोल सक [अन्दोलय्] कंपाना, हिलाना। वकृ. **अंदोलंत** (सुर ३, ६७)।

अंदोलग पुं [आन्दोलक] हिंडोला (राय)।

अंदोलण न [आन्दोलन] १ हिचकना, झूलना (सुर ४, २२५)। २ हिंडोला। ३ मार्ग-विशेष (सूअ १, ११)।

अंदोलय देखो **अंदोलग** (सुर ३, १७५)।

अंदोलि वि [आन्दोलिन्] हिलानेवाला, कंपानेवाला (गा २३७)।

अंदोलिर वि [आन्दोलितृ] झुलनेवाला (सुपा ७८)।

अंदोल्लण देखो **अंदोलण**।

अंध वि [अन्ध] १ अन्धा, नेत्र-हीन (विपा १, १)। २ अज्ञान, ज्ञानरहित 'एए णं अंधा मूढा तमप्पइट्ठा' (भग ७, ७)। °**कंटइज्ज** न [°कण्टकीय] अंध पुरुष के कंटक पर चलने के माफिक अविचारित गमन करना (आचा)। °**तम** न [°तमस्] निबिड अन्धकार (सूअ १, ५)। °**पुर** न [°पुर] नगर-विशेष (बृह ४)।

अंध पुं [अन्ध] पांचवां नरक का चौथा नरकेन्द्रक, एक नरक-स्थान (देवेन्द्र ११)।

अंध पुं. ब. [अन्ध्र] इस नाम का एक देश (पउम ६८, ६७)।

अंध वि [आन्ध्र] आन्ध्र देश का रहनेवाला (पण्ह १, १)।

अंधंधु पुं [दे] कूप, कुँआ (दे १, १८)।

अंधकार देखो **अंधयार** (चंद ४)।

अंधग पुं [दे] वृक्ष, पेड़ (भग १८, ४)। °**वण्हि** पुं [°वह्नि] स्थूल अग्नि (भग १८,४)।

अंधग देखो **अंध** (भग १८, ४)। °**वण्हि** पुं [°वह्नि] सूक्ष्म अग्नि (भग १८, ४)। °**वण्हि** पुं (°वृष्णि) यदुवंश का एक राजा, जो समुद्रविजयादि के पिता था (अंत २)।

अंधय, **अंधयग** } पुं [अन्धक] १ अंधा, नेत्र-हीन (पण्ह १, २)। २ वानर-वंश का एक राज कुमार (पउम ६, १८६)।

अंधयार पुंन [अन्धकार] अंधेरा, अंधकार (कप्प; स ४२६)। °**पक्ख** पुं [°पक्ष] कृष्णपक्ष (सुज्ज १३)।

अंधयारण न [अन्धकार] अन्धेरा (भवि)।

अंधयारिय वि [अन्धकारित] अंधकार-वाला (से १, १५; ६३)।

अंधरअ, **अंधल** } वि [अन्ध] अंधा, नेत्रहीन (गा ७०४; हे २, १७३)।

अंधलरिल्ली स्त्री [अन्धयित्री] अंध बनानेवाली एक विद्या (सुपा ४२८)।

अंधार पुं [अन्धकार] अंधेरा (ओघ १११, २७०)।

अंधार सक [अन्धकारय्] अन्धकार-युक्त करना। कर्म. 'मेहच्छन्ने सूरे अंधारिजइ न किं भुवणं' (कुप्र ३८७)।

अंधारिय वि [अन्धकारित] अंधकार वाला (सुपा ५४, सुर ३, २३०)।

अंधाव सक [अन्धय्] अंधा करना। अंधावेइ (विक्र ८४)।

अंधिअ वि [अन्धित] अन्ध बना हुआ (सम्मत्त १२१)।

अंधिआ स्त्री [अन्धिका] द्यूत-विशेष (दे २, १)।

अंधिआ स्त्री [अन्धिका] चतुरिन्द्रिय जंतु की एक जाति (उत्त ३६,१४७)।

अंधिल्लग वि [अन्ध] अन्धा, जन्मान्ध (पराह २, ५)।

अंधिल्लय देखो अंधिल्लग; (पिंड ५७२)।

अंधीकिद (शौ) वि [अन्धीकृत] अंध किया हुआ (स्वप्न ४६)।

अंधु पुं [अन्धु] कूप, कुंआ (प्रामा; दे १,१८)।

अंवेल्लग देखो अंधिल्लग (पिण्ड)।

°अंप पुं [कम्प] कंपन (से ५, ३२)।

अंब पुं [अम्ब] एक जात के परमाधार्मिक देव, जो नरक के जीवों को दुख देते हैं (सम २८)।

अंब पुं [आम्र] १ आम का पेड। २ न. आम, आम्र-फल (हे १, ८४)। **°गट्ठिया** स्त्री [दे] आम की आंठी, गुठली (निचू १५)। **°चोयग** न [दे] १ आम का रुंछा (निचू १५)। २ आम की छाल (आचा २,७,२)। **°डगल** न [दे] आम का टुकड़ा (निचू १५) **°डालग** न [दे] आम का छोटा टुकड़ा (आचा २,७,२)। **°पेसिया** स्त्री [°पेशिका] आम का लम्बा टुकड़ा (निचू १५)। **°भित्त** न [दे] आम का टुकड़ा (निचू १५)। **°सालग** न [दे] आम की छाल (निचू १५)। **°सालवण** न [°शालवन] चैत्य-विशेष (राय)।

अंब न [अम्ल] १ तक्र, मट्ठा (जं ३)। २ खट्टा रस। ३ खट्टी चीज (विसे)। ४ वि. निष्ठुर वचन बोलनेवाला (बृह १)।

अंब वि [आम्ल] १ खट्टी वस्तु। २ मट्ठे से संस्कृत चीज (जं ३)।

अंब वि [ताम्र] लाल, रक्तवर्णवाला (से ३, ३४)।

अंबग देखो **अंब** = आम्र (अणु) **°ट्ठिया** स्त्री [°ास्थि] आम की गुठली (अणु)।

अंबट्ठ पुं [अम्बष्ठ] १ देश-विशेष (पउम ६८, ६५)। २ जिसका पिता ब्राह्मण और माता वैश्य हो वह (सूअ १, ६)।

अंबड पुं [अम्बड] १ एक परिव्राजक, जो महाविदेह क्षेत्र में जन्म लेकर मोक्ष जायगा (औप)। २ भगवान् महावीर का एक श्रावक, जो आगामी चौबीसी में २२ वाँ तीर्थंकर होगा (ठा ९)।

अंबड वि [दे] कठिन (दे १,१६)।

अंबधाई स्त्री [अम्बाधात्री] धाई माता (सुपा २६८)।

अंबमसी स्त्री [दे] कठिन और वासी कनिक (दे १, ३७)।

अंबय देखो **अंब** (सुपा ३३४)।

अंबर पुंन [अम्बर] एक देव-विमान (देवेन्द्र १४४)।

अंबर न [अम्बर] १ आकाश (पाअ; भग २, २)। २ वस्त्र, कपड़ा (पाअ; निचू १)। **°तिलय** पुं [°तिलक] पर्वत-विशेष (आव)। **°वत्थ** न [°वस्त्र] स्वच्छ वस्त्र (कप्प)।

अंबरस पुंन [अम्बरस] आकाश, गगन (भग २०, २—पत्र ७७५)।

अंबरिस पुंन [अम्बरीष] १ भट्ठी, भाड़ (भग ३, ६)। २ कोष्ठक (जीव)। ३ पुं. नारक-जीवों को दुःख देनेवाले एक प्रकार के परमाधार्मिक देव (पव १८०)।

अंबरिसि पुं [अम्बऋषि] १ ऊपर का तीसरा अर्थ देखो (सम २८)। २ उज्जयिनी नगरी का निवासी एक ब्राह्मण (आव)।

अंबरीस देखो **अंबरिस**।

अंबरीसि देखो **अंबरिसि**।

अंबसमिआ } देखो **अंबमसी**।
अंबसमी }

अंबहुंडी स्त्री [अम्बहुण्डी] एक देवी (महानि २)।

अंबा स्त्री [अम्बा] १ माता, मां (स्वप्न २२४)। २ भगवान् नेमिनाथ की शासनदेवी (संति १०)। ३ वल्लो-विशेष (पराग १)।

अंबाड सक [खरण्ट्] खरडना, लेप करना; 'चमढेति खरएटेति अंबाडेति त्ति वुत्तं भवति' (निचू ४)।

अंबाड सक [तिरस् + कृ] उपालंभ देना, तिरस्कार करना; 'तओ हक्कारिय अंबाडिआ भणिआ य' (महा)।

अंबाडग } पुं [आम्रातक] १ आमला का
अंबाडय } (पराग १; पउम ४२, ६)। २ न. आमला का फल (अनु ६)।

अंबाडिय वि [तिरस्कृत] १ तिरस्कृत (महा)। २ उपालब्ध (स ५१२)।

अंबिआ स्त्री [अम्बिका] १ भगवान् नेमिनाथ की शासनदेवी (ती १०)। २ पांचवें वासुदेव की माता (पउम २०, १८४)। **°समय** पुं [°समय] गिरनार पर्वत पर का एक तीर्थ स्थान (ती ४)।

अंबिर न [आम्र] आम का फल (दे १,१५)।

अंबिल पुं [आम्ल] १ खट्टा रस (सम ४१)। २ वि. खटाई वाली चीज, खट्टी वस्तु (ओघ ३४०)। ३ नामकर्म-विशेष (कम्म १,४१)।

अंबिलिया स्त्री [अम्लिका] १ इमली का पेड़ (उप १०३१ टी)। २ इमली का फल (श्रा २०)।

अंबु न [अम्बु] पानी, जल (पाअ)। **°अ, °ज** न [°ज] कमल, पद्म (अच्चु ५५; कुमा)। **°णाह** पुं [°नाथ] समुद्र (वव ६)। **°रुह** न [°रुह] कमल (पाअ)। **°वह** पुं [°वह] मेघ, वारिस (गउड)। **°वाह** पुं [°वाह] मेघ, वारिस (गउड)।

अंबुपिसाअ पुं [दे] राहु (गा ८०४)।

अंबुसु पुं [दे] श्वापद जन्तु विशेष, हिंसक पशु-विशेष, शरभ (दे १, ११)।

अंबेट्टिआ } स्त्री [दे] एक प्रकार का जूआ,
अंबेट्टी } मुष्टि-द्यूत (दे १, ७)

अंबेसि पुं [दे] द्वार-फलक, दरवाजे का तख्ता (दे १, ८)।

अंबोच्ची स्त्री [दे] फूलों को बिननेवाली स्त्री (दे १, ६; नाट)।

अंभ पुं [अम्भस्] पानी, जल (श्रा १२)।

अंभु (अप) पुं [अश्मन्] पत्थर, पाषाण (षड्)।

अंभो पुं [अम्भस्] पानी, जल। **°अ** न [°ज] कमल (दे ७, ३८)। **°इणी** स्त्री [°जिनी] कमलिनी, पद्मिनी (मै ६१)। **°निहि** पुं [°निधि] समुद्र (श्रा १२)।

°रुह न [°रुह] कमल, पद्म; 'कुंभंभोरुहसर-जलनिहिणो, दिव्वविमाणरयणगणसिहिणो' (उप ६ टी)।

अंभोहि पुं [अम्भोधि] समुद्र (कुप्र २७१)।

अंस पुं [अंश] १ भाग, अवयव, खंड, टुकड़ा (पाअ)। २ भेद, विकल्प (विसे)। ३ पर्याय, धर्म, गुण (विसे)।

अंस पुं [अंश] विद्यमान कर्म, सत्ता-स्थित कर्म; 'अंस इति संतकम्मं भन्नई' (कम्म ६,६)। °हर वि [°धर] भागीदार (उत्त१३, २२)।

अंस } पुं [अंस] कान्ध, कंधा (गाया
अंसलग } १, १८; तंदु)।

अंसि देखो अस = अस्।

अंसि स्त्री [अश्रि] १ कोण, कोना (उप पृ ६८)। २ धार, नोक (ठा ८)।

अंसिया स्त्री [अंशिका] भाग, हिस्सा (बृह ३)।

अंसिया स्त्री [अर्शिका] १ बवासीर का रोग (भग १६, ३)। २ नासिका का एक रोग (निचू ३)। ३ फुनसी, फोड़ा (निचू ३)।

अंसु पुं [अंशु] किरण (लहुअ ६)। °मालि पुं [°मालिन्] सूर्य, सूरज (रयण १)।

अंसु देखो अंसुय = अंशुक (पंच ३, ४०)।

अंसु पुं [अंशु] किरण। °मंत, °वंत वि [°मत्] १ किरणवाला। २ पुं. सूर्य (प्राकृ ३५)।

अंसु न [अश्रु] आँसू, नेत्र-जल। °मंत, °वंत वि [°मत्] अश्रुवाला (प्राकृ३५)।

अंसु } न [अश्रु] आंसू, नेत्र-जल (हे १,
अंसुअ } २६; कुमा)।

अंसुय न [अंशुक] १ वस्त्र, कपड़ा (से ६, ८२)। २ बारीक वस्त्र (बृह २)। ३ पोशाक, वेश (कप्प)।

अंसोत्थ देखो अस्सोत्थ (पि ७४, १५२, ३०६)।

अंह पुंन [अंहस्] मल, 'मउयं व वाहिओ सो निरंहसा तेण जलपवाहेण' (धर्मवि १४६)।

अंहि पुं [अंह्रि] पाद, पाँव (कप्पू)।

अकइ वि [अकति] असंख्यात, अनन्त (ठा ३)।

अकंड देखो अयंड (गा ६६५)।

अकंडतलिम वि [दे] १ स्नेह रहित। जिसने शादी न की हो वह (दे १, ६०)।

अकंपण वि [अकम्पन] १ कंप रहित। २ पुं. रावण का एक पुत्र (से १४,७०)।

अकंपिय वि [अकम्पित] १ कम्परहित २ पुं. भगवान् महावीर का आठवाँ गणधर (सम १६)।

अकज्ज देखो अकय = अकृत्य (उव)।

अकण्ण } वि [अकर्ण] १ कर्ण रहित।
अकन्न } २-३ पुं. स्वनामख्यात एक अंतर्द्वीप और उसमें रहनेवाला (ठा ४, २)।

अकप्प पुं [अकल्प] अयोग्य आचार, शास्त्रोक्त विधि-मर्यादा से बाहर का आचरण (कप्प)।

अकप्प वि [अकल्प्य] अनाचरणीय, शास्त्र-निषिद्ध आहार-वस्त्र आदि अग्राह्य वस्तु (वव १)।

अकप्पिय पुं [अकल्पिक] जिसको शास्त्र का पूरा-पूरा ज्ञान न हो ऐसा जैन साधु (वव १)।

अकप्पिय देखो अकप्प = अकल्प्य (दस ५)।

अकम वि [अक्रम] १ क्रम रहित। २ क्रिवि. एक साथ (कुमा)।

अकम्म } न [अकर्मन्, °क] १ कर्म
अकम्मग } का अभाव (बृह १)। २ पुं मुक्त, सिद्ध जीव (आचा)। ३ कृषि आदि कर्म रहित (देश, भूमि वगैरह) (जी २४)। °भूमग, °भूमय वि [°भूमक] अकर्म-भूमि में उत्पन्न होने वाला (जीव १)। °भूमि, °भूमी स्त्री [°भूमि, भूमी] जिस भूमि में कल्प वृक्षों से ही आवश्यक वस्तुओं की प्राप्ति होने से कृषि वगैरह कर्म करने की आवश्यकता नहीं है वह, भोग-भूमि (ठा ३, ४)। °भूमिय वि [°भूमिज] अकर्म-भूमि में उत्पन्न (ठा ३, १)।

अकम्हा अ [अकस्मात्] अचानक, निष्कारण (सुपा ५६६)।

अकय वि [अकृत] नहीं किया हुआ (कुमा)। °मुह वि [°मुख] अपठित, अशिक्षित (बृह ३)। °त्थ वि [°र्थ] असफल (नाट)।

अकय वि [अकृत्य] १—२ करने के अयोग्य या अशक्य। ३ न. अनुचित काम। °कारि वि [°कारिन्] अकृत्य को करनेवाला (पउम ८०, ७१)।

अकय्य (मा) ऊपर देखो (नाट)।

अकरण न [अकरण] १ नहीं करना (कस) २ मैथुन, 'जइ सेवंति अकरणं पंचण्हवि बाहिरा हुंति' (वव ३)।

अकाइय वि [अकायिक] १ शारीरिक चेष्टा से रहित। २ पुं. मुक्तात्मा (भग ८, २)।

अकाम पुं [अकाम] १ अनिच्छा (सूअ २, ६)। २ वि. इच्छारहित, निष्काम (सुपा २०६)। °णिज्जरा स्त्री [°निर्जरा] कर्म-नाश की अनिच्छा से बुभुक्षा आदि कष्टों को सहन करना (ठा४,४)।

अकामग } [अकामक] ऊपर देखो।
अकामय } ३ अवांछनीय, इच्छा करने के अयोग्य (पण्ह १, १; णाया१, १)।

अकामिय वि [अकामिक] निराश (विपा १, १)।

अकाय वि [अकाय] १ शरीररहित। २ पुं मुक्तात्मा (ठा २, ३)।

अकार पुं [अकार] 'अ' अक्षर, प्रथम स्वर वर्ण (विसे ४६५)।

अकारग पुं [अकारक] १ अरुचि, भोजन की अनिच्छा रूप रोग (णाया १, १३)। २ वि. अकर्ता (सूअ १, १)। °वाइ वि [°वादिन्] आत्मा को निष्क्रिय माननेवाला (सूअ १, १)।

अकासि अ [दे] निषेध-सूचक अव्यय, अलम्; 'अकासि लज्जाए' (दे १, ८)।

अकिंचण वि [अकिञ्चन] १ साधु, मुनि, भिक्षुक (पण्ह २, ५)। २ गरीब, निर्धन, दरिद्र (पाअ)।

अकिट्ठ वि [अकृष्ट] नहीं जोती हुई जमीन 'अकिट्ठजाय-' (पउम ३३, १४)।

अकिट्ठ वि [अक्लिष्ट] १ क्लेशरहित, बाधा-रहित;

'पेच्छामि तुज्झ कंतं,
संगामे कइवएसु दियहेसु।
मह नाहेण विणिहयं,
रामेण अकिट्ठधम्मेणं' (पउम ५३, ५२)।

अकिरिय वि [अक्रिय] १ आलसी, निरुद्यम। २ अशुभ व्यापार से रहित (ठा ७)। ३ परलोक-विषयक क्रिया को नहीं माननेवाला, नास्तिक (णंदि)। °य वि [°त्मन्] आत्मा को निष्क्रिय माननेवाला, सांख्य (सूअ १, १०)।

अकिरिया स्त्री [अक्रिया] १ क्रिया का अभाव (भग २६, २)। २ दुष्ट क्रिया, खराब व्यापार (ठा ३, ३)। ३ नास्तिकता (ठा ८)। °वाइ वि [°वादिन्] परलोक-विषयक क्रिया को नहीं माननेवाला, नास्तिक (ठा ४,४)।

अकीरिय देखो *अकिरिय*, 'जे केइ लोगम्मि अकीरियाया, अन्नेण पुट्ठा धुयमादिसंति' (सूअ १, १०)।

अकुइया स्त्री [अकुचिका] देखो **अकुय**।

अकुओभय वि [अकुतोभय] जिसको किसी तरफ से भय न हो वह, निर्भय (आचा)।

अकुंठ वि [अकुण्ठ] अपने कार्य में निपुण (गउड)।

अकुय वि [अकुच] निश्चल, स्थिर (निचू १)। स्त्री. **अकुइया** (कप्प)।

अकोप्प वि [अकोप्य] रम्य, सुन्दर (पण्ह १, ४)।

अकोप्प पुं [दे] अपराध, गुनाह (षड्)।

अकोस देखो **अक्कोस** = आक्रोश।

अकोसायंत वि [अकोशायमान] विकसता हुआ, 'रविकिरणतरुणबोहियअकोसायंतपउमगभीरवियडणाभे' (औप)।

अक्क पुं [अर्क] १ सूर्य, सूरज (सुर १०, २२३)। २ आक का पेड़ (प्रासू १६८)। ३ सुवर्ण, सोना; 'जेण अन्नुन्नसरिसो विहिओ रयणक्कसंजोगो' (रयण ५४)। रावण का एक सुभट (पउम ५६,२)। °तूल न [°तूल] आक की रूई (पण्ण १)। °तेअ पुं [°तेजस्] विद्याधर वंश का एक राजा (पउम ५,४६)। °बोंदीया स्त्री [°बोन्दिका] वल्ली-विशेष (पण्ण १)।

अक्क पुं [दे] दूत, संदेश-हारक (दे १,६)।

°**अक्क** देखो चक्क (गा ५३०, से १, ५)।

अक्कअ वि [अकृत] नहीं किया गया। °पुव्व वि [°पूर्व] जो पहले कभी न किया गया हो (से १२, ५०)।

अक्कंड देखो **अकंड** (आउ ५३)।

अक्कंत वि [आक्रान्त] १ बलवान् के द्वारा दबाया हुआ (णाया १, ८)। २ घेरा हुआ, ग्रस्त (आचा)। ३ परास्त, अभिभूत (सूअ १, १, ४)। ४ एक जाति का निर्जीव वायु (ठा ५, ३)। ५ न. *आक्रमण, उल्लंघन* (भग १, ३)। °दुक्ख वि [°दुःख] दुःख से दबा हुआ (सूअ १, १, ४)।

अक्कंत वि [दे] बढ़ा हुआ, प्रवृद्ध (दे १,६)।

अक्कंत वि [अकान्त] अनिष्ट, अनभिलषित, अनभिमत (सूअ १, १, ४, ६)।

अक्कंद अक [आ + क्रन्द्] रोना, चिल्लाना (प्रामा)। वकृ. **अक्कंदंत** (सुपा ५७४)।

अक्कंद (अप) देखो **अक्कम** = आ + क्रम्। **अक्कंदइ**; संकृ. **अक्कंदिऊण** (सण)।

अक्कंद पुं [आक्रन्द] रोदन, विलाप, चिल्लाकर रोना (सुर २, ११४)।

अक्कंद वि [दे] त्राण करनेवाला, रक्षक (दे १, १५)।

अक्कंदावणय वि [आक्रन्दक] रुलानेवाला (कुमा)।

अक्कंदिय न [आक्रन्दित] विलाप, रोदन (से ४, ६४; पउम ११०, ५)।

अक्कम सक [आ + क्रम्] १ आक्रमण करना, दबाना। २ परास्त करना। वकृ. **अक्कमंत** (पि ४८१)। संकृ. **अक्कमित्ता** (पण्ह १,१)।

अक्कम पुं [आक्रम] १ दबाना, चढ़ाई करना। २ पराभव (आव)।

अक्कमण न [आक्रमण] १—२ ऊपर देखो (से १४, ६६)। ३ पराक्रम (विसे १०४६)। ४ वि. आक्रमण करनेवाला (से ६, १)।

अक्कमिअ देखो **अक्कंत** = आक्रान्त (काप्र १७२; सुपा १२७)।

अक्कसाला स्त्री [दे] १ बलात्कार, जबरदस्ती। २ उन्मत्त-सी स्त्री (दे १,५८)।

अक्का स्त्री [दे] बहिन (दे १, ६)।

अक्का स्त्री [अक्का] कुट्टनी, दूती (कुप्र १०)।

अक्कासी स्त्री [अक्कासी] व्यन्तर-जातीय एक देवी (ती ६)।

अक्किज्ज वि [अक्रेय] खरीदने के अयोग्य (ठा ६)।

अक्किट्ठ वि [अक्लिष्ट] १ क्लेश-वर्जित (जीव ३)। २ बाधारहित (भग ३, २)।

अक्किट्ठ वि [अकृष्ट] अविलिखित (भग ३,२)।

अक्किय वि [अक्रिय] क्रियारहित (विसे २२०६)।

अक्कुट्ट वि [दे] *अध्यासित, अधिष्ठित* (दे १, ११)।

अक्कुस सक [गम्] जाना। **अक्कुसइ** (हे ४, १६२)।

अक्कुहय वि [अकुहक] निष्कपट, मायारहित (दस ६, २)।

अक्कूर पुं [अक्रूर] *श्रीकृष्ण* के चाचा का नाम (रुक्मि ४६)।

अक्कूर वि [अक्रूर] क्रूरतारहित, दयालु (पव २३६)।

अक्केज्ज देखो **अक्किज्ज**।

अक्केल्लय वि [एकाकिन्] अकेला, एकाकी (नाट)।

अक्कोड पुं [दे] छाग, बकरा (दे १,१२)।

अक्कोडण न [आक्रोडन] इकट्ठा करना, संग्रह करना (विसे)।

अक्कोस न [अक्रोश] जिस ग्राम के अति नजदीक में अटवी, श्वापद या पर्वतीय नदी आदि का उपद्रव हो वह;
'खेत्तं चलमचलं वा, इंदमणिंदं सकोसमक्कोसं। वाघातम्मि अकोसं, अडवीजले सावए तेणे' (बृह ३)।

अक्कोस सक [आ + क्रुश्] आक्रोश करना। वकृ. **अक्कोसित** (सुर १२, ४०)।

अक्कोस पुं [आक्रोश] कटु वचन, शाप, भर्त्सना (सम ४०)।

अक्कोसग वि [आक्रोशक] आक्रोश करनेवाला (उत्त २)।

अक्कोसणा स्त्री [आक्रोशना] अभिशाप, निर्भर्त्सना (णाया १, १६)।

अक्कोसिअ वि [आक्रोशित] कटु वचनों से जिसकी भर्त्सना की गई हो वह (सुर ६, २३४)।

अक्कोह वि [अक्रोध] १ अल्प-क्रोधी (जं २)। २ क्रोधरहित (उत्त २)।

अक्ख पुं [अक्ष] १ जीव, आत्मा (ठा १)। २ रावण का एक पुत्र (से १४, ६५)। ३

चन्दनक, समुद्र में होनेवाला एक द्वीन्द्रिय जन्तु, जिसके निर्जीव शरीर को जैन साधु लोग स्थापनाचार्य में रखते हैं (श्रा १)। ४ पहिया की धुरी, कील (ओघ ५४६)। ५ चौसर का पासा (धरण ३२)। ६ बिभीतक, बहेड़ा का वृक्ष (से ६, ४४)। ७ चार हाथ या ६६ अंगुलों का एक मान (अणु; सम)। ८ रुद्राक्ष (अणु ३)। ९ न. इन्द्रिय (विसे ६१; धरण ३२)। १० द्यूत, जूआ (से ६, ४४)। °चम्म न [°चर्मन्] पखाल, मसक; 'अक्खचम्मं उट्टगंडदेसं' (णाया १, ६)। °पाडय न [°पादक] कील का टुकड़ा, 'राइणा हाहारवं करेमाणेण पहओ सो सुणओ अक्खपाडएणंति' (स २५५)। °माला स्त्री [°माला] जपमाला (पउम ६६, ३१)। °लया स्त्री [°लता] रुद्राक्ष की माला (दे)। °वत्त न [°पात्र] पूजा का पात्र, 'तो लोओ। गहियक्खवत्तहत्थो एइ गिहे······ ······वद्धावणत्थं' (सुपा ५८५)। °वलय न [°वलय] रुद्राक्ष की माला (दे २, ८१)। °वाअ पुं [°पाद] नैयायिक मत के प्रवर्तक गौतम ऋषि (विसे १५०८)। °वाडग पुं [°वाटक] अखाड़ा (जीव ३)। °सुत्तमाला स्त्री [°सूत्रमाला] जपमाला (अणु ३)।

अक्ख देखो **अक्खा** = आ + ख्या। अक्खइ (सण)।

अक्खइय वि [आख्यात] उक्त, कथित (सण)।

अक्खउहिणी देखो **अक्खोहिणी** (प्राकृ ३०)।

अक्खंड वि [अखण्ड] १ संपूर्ण। २ अखण्डित। ३ निरन्तर, अविच्छिन्न; 'अक्खण्डपयाणेहिं रहवीरपुरे गओ कुमरो' (सुपा २६६)।

अक्खंडल पुं [आखण्डल] इन्द्र (पात्र)।

अक्खंडिअ वि [अखण्डित] १ संपूर्ण, खण्ड रहित (से ३, १२)। २ अविच्छिन्न, निरन्तर (उर ८, १०)।

अक्खंत देखो **अक्खा** = आ + ख्या।

अक्खड सक [आ + स्कन्द्] आक्रमण करना, 'अक्खडइ पिया हिअए, अएणं महिलाअएं रमंतस्स' (गा ४४)।

अक्खणवेल न [दे] १ मैथुन, संभोग। २ शाम, संध्या काल (दे १, ५६)।

अक्खणिआ स्त्री [दे] विपरीत मैथुन (पात्र)।

अक्खम वि [अक्षम] १ असमर्थ (सुपा ३७०)। २ अयुक्त, अनुचित (ठा ३, ३)।

अक्खय वि [अक्षत] १ घावरहित, व्रण शून्य (सुर २, ३३)। २ अखण्डित, संपूर्ण (सुर ६, १११)। ३ पुं. ब. अखण्ड चावल (सुपा ३२६)। °यार वि [°चार] निर्दोष आचरणवाला (वव ३)।

अक्खय वि [अक्षय] १ क्षय का अभाव (उवर ८३)। २ जिसका कभी नाश न हो वह (सम १)। °निहि पुंन [°निधि] एक प्रकार की तपश्चर्या (पव २७१)। °तइया स्त्री [°तृतीया] वैशाख शुक्ल तृतीया (आनि)।

अक्खर पुंन [अक्षर] १ अक्षर, वर्ण (सुपा ६५६)। २ ज्ञान, चेतना; 'नक्खरइ अणुवओगेवि, अक्खरं, सो य चेयणाभावो' (विसे ४५५)। ३ वि. अविनश्वर, नित्य (विसे ४५७)। °त्थ पुं [°ार्थ] शब्दार्थ (अभि १५१)। °पुट्ठिया स्त्री [°पुष्टिका] लिपि-विशेष (सम ३५)। **समास** पुं [°समास] १ अक्षरों का समूह। २ श्रुत-ज्ञान का एक भेद (कम्म १, ७)।

अक्खल पुं [दे] १ अखरोट वृक्ष। २ न. अखरोट वृक्ष का फल (पएण १६)।

अक्खलिय वि [दे] १ जिसका प्रतिशब्द हुआ हो वह, प्रतिध्वनित (दे १, २७)। २ आकुल, व्याकुल (सुर ४, ८८)।

अक्खलिय वि [अस्खलित] १ अबाधित, निरुपद्रव (कुमा)। २ जो गिरा न हो वह, अपतित (नाट)।

अक्खवाया स्त्री [दे] दिशा (दे १, ३५)।

अक्खा सक [आ + ख्या] कहना, बोलना। वकृ. **अक्खंत** (सण; धर्म ३)। कवकृ. **अक्खिज्जंत** (सुर ११, १६२)। कृ. **अक्खेअ**, **अक्खाइयव्व** (विसे २६४७; गा २४२)। हेकृ. **अक्खाउं** (दस ८; सत्त ३ टी)।

अक्खा स्त्री [आख्या] नाम (विसे १६११)।

अक्खाइ वि [आख्यायिन्] कहनेवाला, उपदेशक; 'अधम्मक्खाई' (णाया १, १८; विपा १, १)।

अक्खाय न [आख्यातिक] क्रियापद, क्रिया-वाचक शब्द (विसे)।

अक्खाइय वि [आक्षितिक] स्थायी, अनश्वर, शाश्वत; 'एवं ते अलियवयणदच्छा परदोसुप्पाय-णपसत्ता वेढंति अक्खाइयबीएण अप्पाणं कम्मबंधणेण' (पएह १, २)।

अक्खाइया स्त्री [आख्यायिका] उपन्यास, वार्ता, कहानी (कप्पू; भास ५०)।

अक्खाउ वि [आख्यातृ] कहनेवाला (सूअ १, १, ३, १३)।

अक्खाग पुं [आख्याक] म्लेच्छों की एक जाति (सूअ १, ५)।

अक्खाडग } पुं [अक्षवाटक] १ जूआ
अक्खाडय } खेलने का अड्डा। २ अखाड़ा, व्यायाम-स्थान (उप पृ १३०)। ३ प्रेक्षकों को बैठने का आसन (ठा ४, २)।

अक्खाण न [आख्यान] १ कथन, निवेदन (कुमा)। २ वार्ता, उपकथा (पउम ४८, ७७)।

अक्खाणय न [आख्यानक] कहानी, वार्ता (उप ५६७ टी)।

अक्खाय वि [आख्यात] १ प्रतिपादित, कथित (सुपा ३६५)। २ न. क्रियापद (पएह २, २)।

अक्खाय न [अखात] हाथी को पकड़ने के लिए किया जाता गढ़ा, खड्डा (पात्र)।

अक्खाया स्त्री [आख्याता] एक प्रकार की जैन दीक्षा; 'अक्खायाए सुदंसणो सेट्ठी सामिणा पडिबोहिओ' (पंचू)।

अक्खि त्रि [अक्षि] आंख, नेत्र (हे १, ३३, ३५; स २; १०४; प्राप्र; स्वप्न ६१)।

अक्खिअ वि [आक्षिक] पासा से जूआ खेलनेवाला, जुआड़ी (दे ७, ८)।

अक्खिअ वि [आख्यात] प्रतिपादित, कथित (श्रा १४)।

अक्खितर न [अक्ष्यन्तर] आंख का कोटर (विपा १, १)।

अक्खिज्जंत देखो **अक्खा** = आ + ख्या।

अक्खित्त वि [आक्षिप्त] सब तरह से प्रेरित (सिरि ३९६)।

अक्खित्त वि [आक्षिप्त] १ व्याकुल। २ जिस पर टीका की गई हो वह। ३ आकृष्ट, खींचा हुआ (सुर ३,११५)। ४ सामर्थ्य से लिया हुआ (से ४, ३१)।

अक्खित्त न [अक्षेत्र] मर्यादित क्षेत्र के बाहर का प्रदेश (निचू १)।

अक्खिव सक [आ + क्षिप्] १ आक्षेप करना, टीका करना, दोषारोप करना। २ रोकना। ३ गँवाना। ४ व्याकुल करना। ५ फेंकना। ६ स्वीकार करना, 'अक्खिवइ पुरिसगारं' (उवर ४९)। हेकृ. **अक्खिविउं** (निर १, १); 'तओ न जुत्तमिह कालम् अक्खिविउं' (स २०५; पि ५७७)। कर्म. 'अक्खिप्पइ य मे वाणी' (स २३; प्रामा)।

अक्खिव सक [आ+क्षिप्] आक्रोश करना। अक्खिवंति (सिरि ८३१)।

अक्खिवण न [आक्षेपण] व्याकुलता, घबराहट (पण्ह १, ३)।

अक्खीण वि [अक्षीण] १ ह्रास-शून्य, क्षय-रहित, अखूट (कप्प)। २ परिपूर्ण, संपूर्ण (कुमा)। °**महाणसिय** वि [°महानसिक] जिसको निम्नोक्त अक्षीण महानसी शक्ति प्राप्त हुई हो वह (पण्ह २, १) °**महाणसी** स्त्री [°महानसी] वह अद्भुत आत्मिक शक्ति जिससे थोड़ा भी भिक्षान्न दूसरे सैकड़ों लोगों को यावत्-तृप्ति खिलाने पर भी तबतक कम न हो, जबतक भिक्षान्न लानेवाला स्वयं उसे न खाय (पव २७०)। °**महालय** वि [°महालय] जिससे थोड़ी जगह में भी बहुत लोगों का समावेश हो सके ऐसी अद्भुत आत्मिक शक्ति से युक्त (गच्छ २)।

अक्खुअ वि [अक्षत] अक्षीण, त्रुटि-शून्य; 'अक्खुआयारचरित्ता' (पडि)।

अक्खुडिअ वि [अखण्डित] संपूर्ण, अखण्ड, त्रुटिरहित; 'अक्खुडिओ पक्खुडिओ छिक्कंतोवि सबालवुड्ढजणो' (सुपा ११९)।

अक्खुण्ण वि [अक्षुण्ण] जो टूटा हुआ न हो, अविच्छिन्न (बृह १)।

अक्खुद्द वि [अक्षुद्र] १ गंभीर, अतुच्छ (दव्व ५)। २ दयालु, करुण (पंचा २)। ३ उदार (पंचा ७)। ४ सूक्ष्म बुद्धिवाला (धर्म २)।

अक्खुद्द न [अक्षौद्रय] क्षुद्रता का अभाव (उप ९१५)।

अक्खुपुरी स्त्री [अक्षपुरी] नगरी-विशेष (णाया २)।

अक्खुब्भमाण वि [अक्षुभ्यमान] जो क्षोभ को प्राप्त न होता हो (उप पृ ६२)।

अक्खुभिय देखो **अक्खुहिय** (णंदि ४९)।

अक्खुहिय वि [अक्षुभित] क्षोभरहित, अक्षुब्ध (सण)।

अक्खूण सि [अक्षूण] अन्यून, परिपूर्ण; 'भोयणवत्थाहरणं संपायंतेण सव्वमक्खूणं' (उप ७२८ टी)।

अक्खेअ देखो **अक्खा** = आ + ख्या।

अक्खेव पुं [अ+क्षेप] शीघ्रता, जल्दी (सुपा १२६)।

अक्खेव पुं [आक्षेप] १ आकर्षण, खींच कर लाना (पण्ह १, ३)। २ सामर्थ्य, अर्थ की संगति के लिए अनुक्त अर्थ को बतलाना (उप १००२)। ३ आशंका, पूर्वपक्ष (भग २, १; विसे १४३६)। ४ उत्पत्ति, 'दइवेण फलक्खेवे अइप्पसंगो भवे पयडो' (उवर ४८)।

अक्खेवग पुं [आक्षेपक] १ खींचकर लानेवाला, आकर्षक। २ समर्थक पद, अर्थसंगति के लिए अनुक्त अर्थ को बतलानेवाला शब्द (उप ९९९)। ३ सान्निध्यकारक (उवर १८८)।

अक्खेवणी स्त्री [आक्षेपणी] श्रोताओं के मन को आकर्षण करनेवाली कथा (औप)।

अक्खेवि वि [आक्षेपिन्] आकर्षण करनेवाला, खींचकर लानेवाला (पण्ह १, ३)।

अक्खोड सक [कृष्] म्यान से तलवार को खींचना, बाहर करना। अक्खोडइ (हे ४,१८७)।

अक्खोड सक [आ + स्फोटय्] थोड़ा या एक बार झटकना। अक्खोडिज्जा। वकृ. **अक्खोडंत** (दस ४)।

अक्खोड पुं [अक्षोट] १ अखरोट का पेड़। २ न. अखरोट वृक्ष का फल (पण्ण १७; सण)। ३ राजकुल को दी जाती सुवर्ण आदि की भेंट (वव १ टी)।

अक्खोड पुं [आस्फोट] प्रतिलेखन की क्रिया-विशेष (पव २)।

अक्खोडिय वि [कृष्ट] खींचा हुआ, बाहर निकला हुआ (खड्ग) (कुमा)।

अक्खोभ } पुं [अक्षोभ] १ क्षोभ का अभाव, घबराहट का अभाव (णाया १,९)। २ यदुवंश के राजा
अक्खोह } अन्धकवृष्णि का एक पुत्र, जो भगवान् नेमिनाथ के पास दीक्षा लेकर शत्रुंजय पर मोक्ष गया था (अंत १, ७)। ३ न. 'अन्तकृद्दशा' सूत्र का एक अध्ययन (अंत १, ७)। ४ वि. क्षोभरहित, अचल, स्थिर (पण्ह २,५; कुमा)।

अक्खोहणिज्ज वि [अक्षोभणीय] जो क्षुब्ध न किया जा सके (सुपा ११४)।

अक्खोहिणी स्त्री [अक्षौहिणी] एक बड़ी सेना, जिसमें २१८७० हाथी, २१८७० रथ, ६५६१० घोड़े और १०९३५० पैदल होते हैं (पउम ५५, ७; ११)।

अखंड वि [अखण्ड] परिपूर्ण, खण्डरहित (औप)।

अखंडल पुं [आखण्डल] इन्द्र (पउम ४९, ४४)।

अखंडिय वि [अखण्डित] नहीं टूटा हुआ, परिपूर्ण (पंचा १८)।

अखंपण वि [दे] स्वच्छ, निर्मल; 'आयवत्ताइं। धारिंति, ठविंति पुरो अखम्पणं दप्पणं केवि' (सुपा ७४)।

अखज्ज वि [अखाद्य] जो खाने लायक न हो (णाया १,१६)।

अखत्त न [अक्षात्र] क्षत्रिय-धर्म के विरुद्ध, जुलुम; 'चंपइ विज्जावलिओ,
अहह अखत्तं करेइ कोइ इमो'
(धम्म ८ टी)।

अखम देखो **अक्खम** (कुमा)।

अखरय पुं [दे] भृत्य-विशेष, एक प्रकार का दास (पिंड ३६७)।

अखलिअ देखो **अक्खलिय** = अस्खलित (कुमा)।

अखादिम वि [अखाद्य] खाने के अयोग्य, अभक्ष्य; 'कुपहे धावंति, अखादिमं खादंति' (कुमा)।

अखाय वि [अखात] नहीं खुदा हुआ। °तल न [°तल] छोटा तलाव (पाअ)।

अखिल वि [अखिल] १ सर्व, सकल, परिपूर्ण (कुमा)। २ ज्ञान आदि गुणों से पूर्ण; 'अखिले अगिद्धे अणिएअचारी' (सूअ १, ७)।

अखुट्ट वि [दे] अखूट (भवि)।

अखुट्टिअ वि [अतुडित] अखूट, परिपूर्ण (कुमा)।

अखुडिअ देखो **अक्खुडिअ** (कुमा)।

अखेयण्ण वि [अखेदज्ञ] अकुशल, अनिपुण (सूअ १,१०)।

अखोड देखो **अक्खोड** + आस्फोट (पव २ टी)।

अखोहा स्त्री [अक्षोभा] विद्या-विशेष (पउम ७, १३७)।

अग पुं [अग] १ वृक्ष, पेड़। २ पर्वत, पहाड़ (से ६,४१); 'उच्चागयठाणलट्ठसंठियं' (कप्प)।

अगइ स्त्री [अगति] १ नीच गति, नरक या पशु-योनि में जन्म (ठा २, २)। २ निरुपाय (अच्चु ६६)।

अग्गंठिम न [अग्रन्थिम] १ कदली-फल, केला (बृह १)। २ फल की फाँक, टुकड़ा (निचू १६)।

अगंडिगेह वि [दे] यौवनोन्मत्त, जवानी से उन्मत्त बना हुआ (दे १, ४०)।

अगंडूयग वि [अकण्डूयक] नहीं खुजलाने-वाला (सूअ २, २)।

अगंथ वि [अग्रन्थ] १ धनरहित। २ पुंस्त्री. निर्ग्रन्थ, जैन साधु; 'पावं कम्मं अकुव्वमाणे एस महं अगंथे विआहिए' (आचा)।

अगंधण पुं [अगन्धन] इस नाम की सर्पों की एक जाति, 'नेच्छंति वंतयं भोत्तुं कुले जाय। अगंधणे' (दस २)।

अगड पुं [दे. अवट] कूप, इनारा (सुर ११, ८६; उव)। °तड त्रि [°तट] इनारा का किनारा (विसे)। °दत्त पुं [°दत्त] इस नाम का एक राजकुमार (उत्त)। **दद्दुर** पुं [°दर्दुर] कुंए का मेढ़क, अल्पज्ञ, वह मनुष्य जो अपना घर छोड़ बाहर न गया हो (णाया १,८)।

अगड पुं [अवट] कूप के पास पशुओं के जल पीने के लिए जो गर्त बनाया जाता है वह (उप २०५)।

अगड वि [अकृत] नहीं किया हुआ (वव ६)।

अगणि पुं [अग्नि] आग (जी ६)। °काय पुं [°काय] अग्नि के जीव (भग ७,१०)। °मुह पुं [°मुख] देव, देवता (आचू)।

अगणिअ वि [अगणित] अवगणित, अपमानित (गा ४८४; पउम ११७, १४)।

अगणिज्जंत वि [अगण्यमान] जो गुणने में न आता हो, जिसकी आवृत्ति न की जाती हो; 'अगणिज्जंती नासे विज्जा' (प्रासू ६६)।

अगत्थि, **अगत्थिय** पुं [अगस्ति, °क] १ इस नाम का एक ऋषि। २ वृक्ष-विशेष (दे ६, १३३; अनु)। ३ एक तारा, अठासी महाग्रहों में ५४ वाँ महाग्रह (ठा २, ३)।

अगन्न वि [अगण्य] १ जिसकी गिनती न हो सके वह (उप ७२८ टी)।

अगन्न वि [अकर्ण्य] नहीं सुनने लायक, अश्रव्य (भवि)।

अगम पुं [अगम] १ वृक्ष, पेड़; 'दुमा य पायवा रुक्खा अ (? अ) गमा विडिमा तरू' (दसनि १,३५)। २ वि. स्थावर, नहीं चलने वाला (महानि ४)।

अगम न [अगम] आकाश, गगन (भग २०, २)।

अगमिय वि [अगमिक] वह शास्त्र, जिसमें एक सदृश पाठ न हो, या जिसमें गाथा वगैरह पद्य हो ; 'गाहाइ अगमियं खलु कालियसुयं' (विसे ५४९)।

अगम्म वि [अगम्य] १ जाने के अयोग्य। २ स्त्री. भोगने के अयोग्य, भगिनी, पर स्त्री आदि (भवि; सुर १२, ५२)। °गामि वि [°गामिन्] पर स्त्री को भोगनेवाला, पारदारिक (पण्ह १,२)।

अगय न [अगद] औषध, दवाई (सुपा ४४७)।

अगय पुं [दे] दैत्य, दानव (दे १,६)।

अगर पुंन [अगरु] सुगन्धि काष्ठ-विशेष (पण्ह २, ५)।

अगरल वि [अगरल] सुविभक्त, स्पष्ट; 'अगरलाए अमम्मणाए.........भासाए भासेइ' (औप)।

अगरु देखो **अगर** (कुमा)।

अगरुअ वि [अगरुक] बड़ा नहीं, छोटा, लघु (गउड)।

अगरुलहु वि [अगुरुलघु] जो भारी भी न हो और हलका भी न हो वह; जैसे आकाश, परमाणु वगैरह (विसे)। °णाम न [°नामन्] कर्म-विशेष, जिससे जीवों का शरीर न भारी न हलका होता है (कम्म १,४७)।

अगलदत्त पुं [अगडदत्त] एक रथिक-पुत्र (महा)।

अगलय देखो **अगर** (औप)।

अगहण पुं [दे] कापालिक, एक ऐसे संप्रदाय के लोग, जो माथे की खोपड़ी में ही खाने-पीने का काम करते हैं (दे १, ३१)।

अगहिल्ल वि [अग्रहिल] जो भूतादि से आविष्ट न हो, अपागल (उप ५६७ टी)।

°**राय** पुं [°राज] एक राजा, जो वास्तव में पागल न होने पर भी पागल-प्रजा के आक्रण से बनावटी पागल बना था (ती २१)।

अगाढ वि [अगाध] अथाह, बहुत गहरा; 'अगाढपण्णेसु वि भाविअप्पा' (सूअ १,१३)।

अगामिय वि [अग्रामिक] ग्रामरहित, 'अगामियाए...अडवीए' (औप)।

अगार पुं [अकार] 'अ' अक्षर (विसे ४८४)।

अगार न [अगार] १ गृह, घर (सम ३७)। २ पुं. गृहस्थ, गृही, संसारी (दस १)। °त्थ वि [°स्थ] गृही, (आचा)। °धम्म पुं [°धर्म] गृहि-धर्म, श्रावक-धर्म (औप)।

अगारग वि [अकारक] अकर्ता (सूअनि ३०)।

अगारि वि [अगारिन्] गृहस्थ, गृही (सूअ २,६)।

अगारी स्त्री [अगारिणी] गृहस्थ स्त्री (वव ४)।

अगाल देखो **अयाल** (स ८२)।

अगाह वि [अगाध] गहरा, गंभीर (पाअ)।

अगिणि देखो **अग्गि** (संक्षि १२)।

अगिला स्त्री [अग्लानि] अखिन्नता, उत्साह (ठा ५, १)।

अगिला स्त्री [दे] अवज्ञा, तिरस्कार (दे १, १७)।

अगीय वि [अगीत] शास्त्रों का पूरा ज्ञान जिसको न हो वैसा (जैन साधु) (उप ८३३ टी)।

अगीयत्थ वि [अगीतार्थ] ऊपर देखो (वव १) ।

अगुज्झहर वि [दे] गुप्त बात को प्रकाशित करनेवाला (दे १,४३) ।

अगुण देखो अउण (पि २६५) ।

अगुण वि [अगुण] १ गुणरहित, निर्गुण (गउड) । २ पुं. दोष, दूषण (दस ५) ।

अगुणासी देखो एगूणासी (पव २४) ।

अगुणि वि [अगुणिन्] गुण-वर्जित, निर्गुण (गउड) ।

अगुरु, अगुरुअ वि [अगुरु] १ बड़ा नहीं सो, छोटा, लघु । २ पुंन. सुगन्धि काष्ठ विशेष, अगुरु-चन्दन; 'धूवेण कि अगुरुणो किमु कंकणेण' (कप्पू; पउम २,११) ।

अगुरुलहु, अगुरुलहुअ देखो अगुरुलहु (सम ५१, ठा १०) ।

अगुलु देखो अगुरु; 'संखतिणिसागुलुचंदणाइं' (निचू २) ।

अग्ग न [अग्रव] प्रकर्ष (उत्त २०, १५) ।

अग्ग पुंन [दे] १ परिहास । २ वर्णन (संक्षि ४७) ।

अग्ग न [अग्र] १ आगे का भाग, ऊपर का भाग (कुमा) । २ पूर्वभाग, पहले का भाग (निचू १)। ३ परिमाण, 'अग्गं ति वा परिमाणं ति वा एगट्ठा' (आचू १)। ४ वि. प्रधान, श्रेष्ठ (सूपा २४८) । ५ प्रथम, पहला (आव १) । °क्खंध पुं [°स्कन्ध] सैन्य का अग्र भाग (से ३,४०)। °गामिग वि [°गामिक] अग्रगामी, आगे जानेवाला (स १४७) । °ज देखो °य (दे ६, ४६) । °जम्म [°जन्मन्] देखो °य (उप ७२८ टी)। °जाय [°जात] देखो °य (आचा) । °जीहा स्त्री [जिह्वा] जीभ का अग्र-भाग । °णिय, °णी वि [°णी] अगुआ, मुखिया, नायक (कप्प; नाट)। °तावस पुं [°तापस] ऋषि-विशेष का नाम (सुज्ज १०) । °द्ध न [°र्ध] पूर्वार्ध (निचू १) । °पिंड पुं [°पिण्ड] एक प्रकार का भिक्षान्न (आचा) । °प्पहारि वि [°प्रहारिन्] पहले प्रहार करनेवाला (आव १) । °बीय वि [°बीज] जिसमें बीज पहले ही उत्पन्न हो जाता है या जिसकी उत्पत्ति में उसका अग्र-भाग ही कारण होता है; जैसे आम, कोरंटक आदि वनस्पति (पण्ण १; ठा ४,१) । °मणि पुं [°मणि] मुख्य. श्रेष्ठ, शिरोमणि (उप ७२८ टी) । °महिसी स्त्री [°महिषी] पट-रानी (सुपा ४६) । °य वि [°ज] १ आगे उत्पन्न होने वाला । २ पुं. ब्राह्मण । ३ बड़ा भाई । ४ स्त्री. बड़ी बहन (नाट) । °लोग पुं [°लोक] मुक्तिस्थान, सिद्धि-क्षेत्र (श्रा १२)। °हत्थ पुं [°हस्त] १ हाथ का अग्र-भाग (उवा) । २ हाथ का अवलम्बन, सहारा (से ४,३) । ३ अंगुली (प्राप) ।

अग्ग न [अग्र] १ प्रभूत, बहु । २ उपकार (आचानि २८५) । °भाव न [°भाव] धनिष्ठा-नक्षत्र का गोत्र (जं ७, पत्र. ५००) । °माहिसी देखो °महिसी (उत्त १६, १) ।

अग्ग वि [अग्र्य] १ श्रेष्ठ, उत्तम (से ८,४४)। २ प्रधान, मुख्य (उत्त १४) ।

अग्गओ अ [अग्रतस्] सामने, आगे (कुमा)।

अग्गंथ वि [अग्रन्थ] १ धनरहित । २ पुं. जैन साधु (औप) ।

अग्गक्खंध पुं [दे] रणभूमि का अग्रभाग (दे १,२७) ।

अग्गल न [अर्गल] १ किवाड़ बन्द करने की लकड़ी, आगल (दस ५,२) । २ पुं. एक महा-ग्रह (सुज्ज २०) । °पासय पुं [°पाशक] जिसमें आगल दिया जाता है वह स्थान (आचा २,१,५) । °पासाय पुं [°प्रासाद] जहाँ आगल दिया जाता है वह घर (राय) ।

अग्गल वि [दे] अधिक, 'वीसा एक्कग्गला' (पिंग) ।

अग्गला स्त्री [अर्गला] आगल, हुड़का(पाअ)।

अग्गलिअ वि [अर्गलित] जो आगल से बन्द किया गया हो वह (सुर ६,१०) ।

अग्गवेअ पुं [दे] नदी का पूर (दे १,२६) ।

अग्गह पुं [आग्रह] आग्रह, हठ, अभिनिवेश (सूअ १,१,३; स ५१३) ।

अग्गहण न [अग्रहण] १ अज्ञान (सुर १२, ४६) । २ नहीं लेना (से ११,६८) ।

अग्गहण न [दे. अग्रहण] अनादर, अवज्ञा (दे १,१७; से ११,६८) ।

अग्गहणिया स्त्री [दे] सीमंतोन्नयन, गर्भाधान के बाद किया जाता एक संस्कार और उसके उपलक्ष्य में मनाया जाता उत्सव, जिसको गुजराती भाषा में 'अग्घयणी' कहते हैं (सुपा २३) ।

अग्गहि वि [आग्रहिन्] आग्रही, हठी (सूअ १,१३) ।

अग्गहिअ वि [दे] १ निर्मित, विरचित । २ स्वीकृत, कबूल किया हुआ (षड्) ।

अग्गाणी वि [अग्रणी] मुख्य, प्रधान, नायक; 'दक्खिन्नदयाकलिओ अग्गाणी सयलवणिय-सत्थस्स' (सुर ६,१३८) ।

अग्गारण न [उद्गारण] वमन, वान्ति (चारु ७) ।

अग्गाह वि [अगाध] अगाध, गंभीर; 'खीरा-दहिव्व अग्गाहा' (गुरु ४) ।

अग्गाहार पुं [अग्राधार] ग्राम-विशेष का नाम (सुपा ५४५) ।

अग्गाहार पुं [दे. अग्राहार] उच्च जीविका (सुख २,१३) ।

अग्गि पुं [अग्नि] नरकावास-विशेष, एक नरक-स्थान (देवेन्द्र २७) । °मंत, °वंत वि [°मत्] अग्निवाला (प्राक्ट ३५) । °हुत्त देखो °होत्त (उत्त २५,१६; सुख २५,१६) ।

अग्गि पुं स्त्री [अग्नि] १ आग, वह्नि (प्रासू २२); 'एस पुण कावि अग्गी' (सट्ठि ६१) । २ कृत्तिका नक्षत्र का अधिष्ठायक देव (ठा २, ३) । ३ लोकान्तिक देव-विशेष (आवम) । °आरिआ स्त्री [°कारिका] अग्नि-कर्म, होम (कप्पू) । °उत्त पुं [°पुत्र] ऐरवत क्षेत्र के एक तीर्थंकर का नाम (सम १५३)। °कुमार पुं [°कुमार] भवनपति देवों की एक अवान्तर जाति (पण्ण १) । °कोण पुं [°कोण] पूर्व और दक्षिण के बीच की दिशा (सुपा ६८) । °जस पुं [°यशस] देव-विशेष (दीव) । °ज्जोय पुं [°द्योत] भगवान् महावीर का पूर्वीय बीसवें ब्राह्मण-जन्म का नाम (आचू) । °ट्ठ वि [°स्थ] आग में रहा हुआ (हे ४,४२६)। °ट्ठोम पुं [°ष्टोम] यज्ञ-विशेष (पि १०;१५६)। °थंभणी स्त्री [°स्तम्भनी] आग की शक्ति को रोकनेवाली एक विद्या (पउम ७, १३६) । °दत्त पुं [°दत्त] १ भगवान् पार्श्वनाथ के समकालीन ऐरवत क्षेत्र के एक तीर्थंकर देव (तित्थ) । २ भद्रबाहु

स्वामी का एक शिष्य (कप्प)। °दाग पुं [°दान] सातवें वासुदेव के पिता का नाम (पउम २०,१८२)। °देव पुं [°देव] देव-विशेष (दीव)। °भूइ पुं [°भूति] १ भगवान् महावीर का द्वितीय गणधर (कप्प)। २ भगवान् महावीर का पूर्वीय अठारहवें ब्राह्मण-जन्म का नाम (आचू)। °माणव पुं [°माणव] अग्निकुमार देवों का उत्तर-दिशा का इन्द्र (ठा २,३)। °माली स्त्री [°माली] एक इन्द्राणी (दीव)। °वेस पुं [°वेश] १ इस नाम का एक प्रसिद्ध ऋषि (णंदि)। २ न. एक गोत्र (कप्प)। °वेस पुं [°वेश्मन्] १ चतुर्दशी तिथि (जं)। २ दिवस का बाइसवाँ मुहूर्त (चंद १०)। °वेसायग पुं [°वैश्यायन] १ अग्निवेश ऋषि का पौत्र (णंदि; स २२५)। २ अग्निवेश-गोत्र में उत्पन्न (कप्प)। ३ गोशालक का एक दिक्चर (भग १५)। ४ दिन का बाइसवाँ मुहूर्त (सम ५१)। °सक्कार पुं [°संस्कार] विधि-पूर्वक जलाना, दाह देना (आवम)। °सप्पभा स्त्री [°सप्रभा] भगवान् वासुपूज्य की दीक्षा समय की पालकी का नाम (सम)। °सम्म पुं [°शर्मन्] एक प्रसिद्ध तपस्वी ब्राह्मण (आचा)। °सिह पुं [°शिख] १ सातवें वासुदेव का पिता (सम १५२)। २ अग्निकुमार देवों का दक्षिण-दिशा का इन्द्र (ठा २, ३)। °सिह पुं [°सिंह] एक जैन मुनि (उप ४८६)। °सिहाचारण पुं [°शिखाचारण] अग्नि-शिखा में निर्बाधतया गमन करने की शक्ति वाला साधु (पव ६८)। °सीह पुं [°सिंह] सातवें वासुदेव के पिता का नाम (ठा ६)। °सेण पुं [°षेण] ऐरवत क्षेत्र के तीसरे और बाईसवें तीर्थंकर (तित्थ, सम १५३)। °होत्त न [°होत्र] १ अग्न्याधान, होम (विसे १६४०)। २ पुं. ब्राह्मण (पउम ३५,६)। °होत्तवाइ वि [°होत्रवादिन्] होम से ही स्वर्ग की प्राप्ति माननेवाला (सूअ १, ७)। °होत्तिय वि [°होत्रिक] होम करनेवाला (सुपा ७०)।

अग्गिअ पुं [अग्निक] १ यमदग्नि नामक एक तापस (आचू)। २ भस्मक रोग, जिससे जो कुछ खाय वह तुरन्त ही हजम हो जाता है (विपा १,१; विसे २०४८)।

अग्गिअ पुं [दे] इन्द्रगोप, एक जातिका क्षुद्र कीट (दे १,५३)। २ वि. मन्द (दे १,५३)।

अग्गिआय पुं [दे] इन्द्रगोप, क्षुद्र कीट-विशेष (षड्)।

अग्गिच्च वि [आग्नेय] १ अग्नि-सम्बन्धी। २ पुं. लोकान्तिक देवों की एक जाति (णाया १,८)। ३ न. गोत्र-विशेष, जो गोतम गोत्र की शाखा है (ठा ७)।

अग्गिच्चाभ न [आग्नेयाभ] देव-विमान विशेष (सम १४)।

अग्गिज्झ वि [अग्राह्य] लेने के अयोग्य (पउम ३१,५४)।

अग्गिम वि [अग्रिम] १ प्रथम पहला (कप्पू)। २ श्रेष्ठ, प्रधान, मुख्य (सुपा १)।

अग्गियय पुं [आग्नेयक] इस नाम का एक राजपुत्र (उप ६३७)।

अग्गिल देखो अग्गिल्ल = अग्निल (सुज्ज २०)।

अग्गिल्लिय देखो अग्गिम (पंचव २)।

अग्गिल्ल पुं [अग्निल] एक महाग्रह (ठा २, ३)।

अग्गिल्ल वि [अग्रिम] अग्रवर्ती (सिरि ४०६)।

अग्गीय देखो अगीय (उप ८४०)।

अग्गीवय न [दे] घर का एक भाग (पउम १६, ६४)।

अग्गुच्छ वि [दे] प्रमित, निश्चित (षड्)।

अग्गे अ [अग्रे] आगे, पहले (पिंग)। °यण वि [तन] आगे का, पहले का (आवम)। °सर वि [°सर] अगुआ, मुखिया, नायक (श्रा २८)।

अग्गेई स्त्री [आग्नेयी] अग्निकोण, दक्षिण-पूर्व दिशा (धण १८)।

अग्गेणिय न [अग्रायणीय] दूसरा पूर्व, बारहवें जैनागम का दूसरा महान् भाग (सम २६)।

अग्गेणी देखो अग्गेई (आवम)।

अग्गेणीय देखो अग्गेणिय (णंदि)।

अग्गेय वि [आग्नेय] अग्नि (कोण) सम्बन्धी (अणु २१५)।

अग्गेय वि [आग्नेय] १ अग्नि-सम्बन्धी, अग्नि का (पउम १२,१२६; विसे १६६०)। २ न. शस्त्र-विशेष (सुर ८, ४१)। ३ एक गोत्र, जो वत्स गोत्र की शाखा है (ठा ७)। ४ अग्नि-कोण, दक्षिण-पूर्व दिशा (भवि)।

अग्गोदय न [अग्रोदक] समुद्रीय वेला की वृद्धि और हानि (सम ७६)।

अग्घ अक [राज्] विराजना, शोभना, चमकना। अग्घइ (हे ४,१००)।

अग्घ सक [आ-घ्रा] सूँघना। संकृ. अग्घेऊण (सम्मत्त १४२)।

अग्घ सक [अर्ह्] योग्य होना, लायक होना; 'कलं ण अग्घइ' (णाया १,८)।

अग्घ सक [अर्घ्] १ अच्छी कीमत से बेचना। २ आदर करना, सम्मान करना; 'पहिएण पुणो भणियं, तुब्भेहिं सिट्ठि! कम्मि नयरम्मि।
गंतव्वं सो साहइ, पणियं अग्घिस्सए जत्थ'
(सुपा ५०१)। वकृ. अग्घायमाण (णाया १, १)।

अग्घ पुं [अर्घ] १ एक देव-विमान (देवेन्द्र १:२)। २ पूजा (राय १००)।

अग्घ पुं [अर्घ] १ मछली की एक जाति (जीव ३)। २ पूजा-सामग्री (णाया १, १६)। ३ पूजा में जलादि देना (कुमा)। ४ मूल्य, मोल, कीमत (निचू २)। °वत्त न [°पात्र] पूजा का पात्र (गाउड)।

अग्घ वि [अर्घ्य] १ पूजा में दिया जाता जलादि द्रव्य (कप्पू)। २ कीमती, बहुमूल्य (प्राप)।

अग्घव सक [पूर्] पूर्ति करना, पूरा करना। अग्घवइ (हे ४, ६६)।

अग्घविय वि [पूर्ण] १ भरा हुआ, संपूर्ण। २ पूरा किया गया (सुपा १०६, कुमा)।

अग्घविय वि [अर्धित] पूजित, सत्कृत, सम्मानित (से ११, १६; गउड)।

अग्घा सक [आ + घ्रा] सूँघना। वकृ. अग्घाअंत, अग्घायमाण (गा ५६५; णाया १,८)। कवकृ. अग्घाइज्जमाण (पण्ण २८)।

अग्घाइ वि [आघ्रायिन्] सूँघनेवाला, 'सभमरपउमग्घाइणि! वारियवामे! सहसु इण्हिं' (काप्र २६४)।

अग्घाइअ वि [आघ्रात] सूँघा हुआ (गा ६७)।

अग्घाइज्जमाण देखो अग्घा।

अग्घाइर वि [आघ्रातृ] सूंघनेवाला। स्त्री. °री (गा ८८६)।

अग्घाड सक [पूर्] पूर्ति करना, पूरा करना। अग्घाडइ (हे ४, १६९)।

अग्घाड, अग्घाडग पुं [दे] वृक्ष-विशेष, अपामार्ग, चिचड़ा, लटजीरा (दे १,८; पण्ण १)।

अग्घाण वि [दे] तृप्त, संतुष्ट (दे १, १८)।

अग्घाय वि [आघ्रात] सूंघा हुआ (पाअ)।

अग्घायमाण देखो अग्घ = अर्घ्।

अग्घायमाण देखो अग्घा।

अग्घिय वि [राजित] विराजित, शोभित (कुमा)।

अग्घिय वि [अर्घित] १ बहुमूल्य, कीमती; 'अग्घियं नाम बहुमोल्लं' (निचू २)। २ पूजित (दे १,१०७; से २०२)।

अग्घोदय न [अर्घोदक] पूजा का जल (अभि ११८)।

अघ न [अघ] १ पाप, कुकर्म (कुमा)। २ वि. शोचनीय, शोक का हेतु; 'अघं बम्हणभावं' (प्रयौ ८०)।

अघो देखो **अहो** (नाट)।

अचक्खु पुंन [अचक्षुस्] १ आँख के सिवाय बाकी इन्द्रियाँ और मन (कम्म १, १०)। २ आँख को छोड़ बाकी इन्द्रिय और मन से होनेवाला सामान्य ज्ञान (दं १९)। ३ वि. अंधा, नेत्रहीन (कम्म ४)। °**दंसण** न [दर्शन] आँख को छोड़ बाकी इन्द्रियां और मनसे होनेवाला सामान्य ज्ञान (सम १५)। °**दंसणावरण** न [°दर्शनावरण] अचक्षुर्दर्शन को रोकनेवाला कर्म (ठा ९)। °**फास** पुं [°स्पर्श] अंधकार, अंधेरा (णाया १, १४)।

अचक्खुस वि [अचाक्षुष] जो आँख से देखा न जा सके (पण्ह १, १)।

अचक्खुस्स वि [अचक्षुष्य] जिसको देखने का मन न चाहता हो (बृह ३)।

अचर वि [अचर] पृथिव्यादि स्थिर पदार्थ, स्थावर (दंस)।

अचल वि [अचल] १ निश्चल, स्थिर (आचा)। २ पुं. यदुवंश के राजा अन्धकवृष्णि के एक पुत्र का नाम (अंत ३)। एक बलदेव का नाम (पव २०९)। ४ पर्वत, पहाड़ (गउड १२०)। ५ एक राजा, जिसने रामचन्द्र के छोटे भाई के साथ जैन दीक्षा ली थी (पउम ८५,४)। °**पुर** न [°पुर] ब्रह्म-द्वीप के पास का एक नगर (कप्प)। °**प्प** न [°त्मन्] हस्तप्रहेलिका को ८४ लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह, अन्तिम संख्या (इक)। °**भाय** पुं [°भ्रातृ] भगवान् महावीर का नववाँ गणधर (कप्प)।

अचल पुं [अचल] छठवाँ रुद्र पुरुष (विचार ४७२)।

अचल न [दे] १ घर। २ घर का पिछला भाग। ३ वि. कहा हुआ। ४ निष्ठुर, निर्दय। ५ नीरस, सूखा (दे १, ५३)।

अचला स्त्री [अचला] पृथिवी। २ एक इन्द्राणी (णाया २)।

अचिंत वि [अचिन्त] निश्चिन्त, चिन्तारहित।

अचिंत वि [अचिन्त्य] अनिर्वचनीय, जिसकी चिन्ता भी न हो सके वह, अद्भुत (लहुअ ३)।

अचिंतणिज्ज, अचिंतणीअ वि [अचिन्तनीय] ऊपर देखो (अभि २०३; महा)।

अचिंतिय वि [अचिन्तित] आकस्मिक, असंभावित (महा)।

अचित्त वि [अचित्त] जीव-रहित, अचेतन; 'चित्तमचित्तं वा णेव सयं अजिन्नं गिण्हेज्जा' (दस ४)।

अचियंत, अचियत्त वि [दे] १ अनिष्ट, अप्रीतिकर (सूअ २, २; पण्ह २, ३)। २ न. अप्रीति, द्वेष (ओघ २६१)।

अचिरजुवइ देखो **अइरजुवइ** (दे १,१८ टी)।

अचिरा देखो **अइरा** (पउम ३७, ३७)।

अचिराभा स्त्री [अचिराभा] बिजली, विद्युत् (पउम ४२, ३२)।

अचिरेण देखो **अइरेण** (प्राकृ)।

अचेयण वि [अचेतन] चैतन्यरहित, निर्जीव (पण्ह १, २)।

अचेल न [अचेल] १ वस्त्रों का अभाव। २ अल्प-मूल्यक वस्त्र। ३ थोडा वस्त्र (सम ४०)। ४ वि. वस्त्र-रहित, नग्न। ५ जीर्ण वस्त्र वाला। ६ अल्प वस्त्र वाला। ७ कुत्सित वस्त्र वाला, मैला; 'तह थोअ-जुन्न-कुच्छियचेलेहिवि भण्णए अचेलोत्ति' (विसे २६०१)। °**परिसह**, °**परीसह** पुं [°परिषह, °परीषह] वस्त्र के अभाव से अथवा जीर्ण, अल्प या कुत्सित वस्त्र होने से उसे अदीन भाव से सहन करना (सम ४०; भग ८, ८)।

अचेलग, अचेलय वि [अचेलक] १ वस्त्र-रहित, नग्न। २ फटा-टूटा वस्त्र वाला। ३ मलिन वस्त्र वाला। ४ अल्प वस्त्र वाला। ५ निर्दोष वस्त्र वाला; ६ अनियत रूप से वस्त्र का उपभोग करनेवाला (ठा ५, ३);

'परिसुद्धजिण्ण-कुच्छियथोवानियय-
यत्तभोगभोगेहिं।
मुणओ मुच्छारहिया, संतेहिं अचेलया हुंति'
(विसे २५९९)।

अच्च सक [अर्च्] पूजना, सत्कार करना। अच्चेइ (औप)। अच्च (दे २,३५ टी)। कवकृ. **अच्चिज्जंत** (सुपा ७८)। कृ. **अच्चणिज्ज** (णाया १,१)।

अच्च पुं [अर्च्य] १ लव (काल-मान) का एक भेद (कप्प)। २ वि. पूज्य, पूजनीय (हे १, १७७)।

अच्चंग न [अत्यङ्ग] विलासिता के प्रधान अंग, भोग के मुख्य साधन; 'अच्चंगाणं च भोगओ माणं' (पंचा १)।

अच्चंत वि [अत्यन्त] हद से ज्यादा, अत्यधिक, बहुत (सुर ३,२२)। °**थावर** वि [°स्थावर] अनादि-काल से स्थावर-जाति में रहा हुआ (श्रावम)। °**दूसमा** स्त्री [°दुष्षमा] देखो **दुस्समदुस्समा** (पउम २०, ७२)।

अच्चंतिअ वि [आत्यन्तिक] १ अत्यन्त, अधिक, अतिशयित। २ जिसका नाश कभी न हो वह, शाश्वत (सूअ २, ६)।

अच्चग वि [अर्चक] पूजक (चैत्य १२)।

अच्चग्गल वि [अत्यर्गल] निरंकुश, अनियंत्रित (मोह ८७)।

अच्चण न [अर्चन] पूजा, सम्मान (सुर ३, १३; सत्त १२ टी)।

अच्चणा स्त्री [अर्चना] पूजा (अच्चु ५७)।

अच्चणिया स्त्री [अर्चनिका] अर्चन, पूजा (राय १०८)।

अच्चत्त वि [अत्यक्त] नहीं छोड़ा हुआ, अपरित्यक्त (उप पृ १०७)।

अच्चत्थ वि [अत्यर्थ] १ अतिशयित, बहुत

(पराह १, १)। २ गंभीर अर्थ वाला (राय)। ३ क्रिवि. ज्यादा, अत्यंत (सुर १,७)।

अच्चब्भुय वि [अत्यद्भुत] बड़ा आश्चर्य-जनक (प्रासू ४२)।

अच्चय पुं [अत्यय] १ विपरीत आचरण (बृह ३)। विनाश, मरण (उव)।

अच्चय वि [अर्चक] पूजक, 'अणच्चयाणं च चिरंतणाणं, जहारिहं रक्खणवड्ढणंति' (विवे ७० टी)।

अच्चर } न [आश्चर्य] विस्मय, चमत्कार
अच्चरिअ } (विक्र ६४; प्रबो १७; रंभा; भवि;
अच्चरीअ } नाट)।

अच्चहम वि [अत्यधम] अति नीच (कप्पू)।

अच्चा स्त्री [अर्चा] पूजा, सत्कार (गउड)।

अच्चा स्त्री [अर्चा] १ शरीर, देह (सूअ १,१३, १७; १,१५,१८; २,२,६; ठा १, पत्र १६)। २ लेश्या, चित्त-वृत्ति (सूअ १,१३,१७; १, १५,१८)। ३ ऐश्वर्य (ठा ३,१—पत्र ११७)।

अच्चासण पुं [अत्यशन] पक्ष का बारहवां दिन, द्वादशी तिथि (सुज्ज १०, १४)।

अच्चासणया स्त्री [अत्यासनता] खूब बैठना, देर तक या बारंबार बैठना (ठा ६)।

अच्चासणया स्त्री [अत्यशनता] खूब खाना (ठा ६)।

अच्चासण्ण } न [अत्यासन्न] अति समीप,
अच्चासन्न } खूब नजदीक (भग १,१; उवा)।

अच्चासाइय } वि [अत्याशातित] अपमा-
अच्चासादिय } नित, हैरान किया गया (ठा १०; भग ३, २)।

अच्चासाय सक [अत्या + शातय्] अपमान करना, हैरान करना। वकृ. **अच्चासाएमाण** (ठा १०)। हेकृ. **अच्चासाइत्तए** (भग ३,२)।

अच्चाहिअ } वि [अत्याहित] १ महा-भीति,
अच्चाहिद } बड़ा भय। २ झूठा, असत्य (स्वप्न ४७)। ३ ऐसा ज़खमी कार्य, जिसमें प्राण-हानि की सम्भावना हो (अभि ३७)।

अच्चि स्त्री [अर्चिस्] १ कान्ति, तेज (भग २, ५)। २ अग्नि की ज्वाला (पराण १)। ३ किरण (राय)। ४ दीप की शिखा (उत्त ३)। ५ न. लोकान्तिक देवों का एक विमान (सम १४)। °**मालि** पुं [°मालिन्] १ सूर्य, रवि (सूअ १, ६)। २ वि. किरणों से शोभित (राय)। ३ न. लोकान्तिक देवों का एक विमान (सम १४)। °**माली** स्त्री [°माली] १ चन्द्र और सूर्य की तृतीय अग्र-महिषी का नाम (ठा ४, १)। २ 'ज्ञातासूत्र' के द्वितीय श्रुतस्कन्ध के एक अध्ययन का नाम (णाया २)। ३ शक्रेन्द्र की तृतीय अग्रमहिषी की राजधानी का नाम (ठा ४,२)। °**मालिणी** स्त्री [°मालिनी] चन्द्र और सूर्य की एक अग्र-महिषी का नाम (भग १०, ५; इक)।

अच्चिअ वि [अर्चित] १ पूजित, सत्कृत (गा १५०)। २ न. विमान-विशेष (जीव ३, पत्र १३७)।

अच्चित्त देखो अचित्त (ओघ २२; सुर १२, २७)।

अच्चीकर सक [अर्ची + कृ] १ प्रशंसा करना। २ खुशामद करना। अच्चीकरेइ। वकृ. **अच्चीकरंत** (निचू ५)।

अच्चीकरण न [अर्चीकरण] १ प्रशंसा। २ खुशामद,

'अच्चीकरणं रणणो, गुणवयणं तं समासओ दुविहं।
संतमसंतं च तहा, पच्चक्खपरोक्खमेक्केक्कं।' (निचू ५)।

अच्चुअ पुं [अच्युत] १ विष्णु (अच्चु ५)। २ बारहवां देवलोक (सम ३९)। ३ ग्यारहवां और बारहवां देवलोक का इन्द्र (ठा २,३)। ४ अच्युत-देवलोकवासी देव, 'तं चेव आरण-च्चुय ओहिरणाणेण पासंति' (विसे ६९६)। °**नाह** पुं [°नाथ] बारहवां देवलोक का इन्द्र (भवि)। °**वइ** पुं [°पति] इन्द्र-विशेष (सुपा ६१)। °**वडिंसग** न [°ावतंसक] विमान-विशेष का नाम (सम ४१)। °**सग्ग** पुं [°स्वर्ग] बारहवां देवलोक (भवि)।

अच्चुअ पुंन [अच्युत] एक देव-विमान (देवेन्द्र १३५)।

अच्चुआ स्त्री [अच्युता] छठवें और सतरहवें तीर्थंकर की शासनदेवी (संति ६; १०)।

अच्चुइंद पुं [अच्युतेन्द्र] ग्यारहवां और बार-हवां देवलोक का स्वामी, इन्द्र-विशेष (पउम ११७, ७)।

अच्चुक्कड वि [अत्युत्कट] अत्यन्त उग्र (आवम)।

अच्चुग्ग वि [अत्युग्र] ऊपर देखो (पव २२४)।

अच्चुच्च वि [अत्युच्च] खूब ऊंचा, विशेष उन्नत (उप ६८६ टी)।

अच्चुट्ठिय वि [अत्युत्थित] अकार्य करने को तैयार (सूअ १, १४)।

अच्चुण्ह वि [अत्युष्ण] खूब गरम (ठा ५, ३)।

अच्चुत्तम वि [अत्युत्तम] अति श्रेष्ठ (कप्पू)।

अच्चुदय न [अत्युदक] १ बड़ी वर्षा (ओघ ३०)। २ प्रभूत पानी (जीव ३)।

अच्चुदार वि [अत्युदार] अत्यन्त उदार (स ६००)।

अच्चुन्नय वि [अत्युन्नत] बहुत ऊंचा (कप्प)।

अच्चुब्भड वि [अत्युद्भट] अति-प्रबल (भवि)।

अच्चुवयार पुं [अत्युपकार] महान् उपकार (गा ५१४)।

अच्चुवयार पुं [अत्युपचार] विशेष सेवा-सुश्रूषा (गा ५१४)।

अच्चुव्वाय वि [अत्युद्वात] अत्यन्त थका हुआ (बृह ३)।

अच्चुसिण वि [अत्युष्ण] अधिक गरम (आचा २, १, ७)।

अच्चे अक [अति + इ] १ अतिक्रान्त होना, गुजरना। २ सक. उल्लंघन करना। अच्चेइ (उत्त १३, ३१; सूअ १, १५, ८)।

अच्चे सक [अत्या + इ] त्याग करवाना। अच्चेही (सूअ १, २, ३, ७)।

अच्चेअर न [आश्चर्य] आश्चर्य, विस्मय (विक्र १५)।

अच्छ अक [आस्] बैठना। अच्छइ (हे १, २१४)। वकृ. **अच्छंत, अच्छमाण** (सुर ७, १३; णाया १, १)। कृ. **अच्छि-यव्व, अच्छेयव्व** (पि ५७०; सुर १२ २२८)।

अच्छ सक [आ + छिद्] १ काटना, छेदना। २ खींचना। अच्छे (आचा १,१,२, ३)। संकृ. **अच्छित्तु** (श्रावक २२५), **अच्छेत्तु** (पिंड ३६८)।

अच्छ वि [अच्छ] १ स्वच्छ, निर्मल (कुमा)। २ पुं. स्फटिक रत्न (पव २७५)। ३ पुं. ब. आर्य देश-विशेष (प्रव २७५)।

अच्छ पुं [ऋक्ष] रीछ, भालू (पगह १, १)।

अच्छ वि [आच्छ] अच्छे देश में उत्पन्न (पगग ११)।

अच्छ पुं [अच्छ] मेरु पर्वत (सुज्ज ५)। २ न. तीन बार औटा हुआ स्वच्छ पानी (पडि)।

अच्छ न [दे] १ अत्यन्त, विशेष। २ शीघ्र, जल्दी (दे १, ४६)।

°**अच्छ** वि [अक्षि] आंख, नेत्र (कुमा)।

°**अच्छ** पुं [कच्छ] १ अधिक पानीवाला प्रदेश। २ लताओं का समूह। ३ तृण, घास (से ६, ४७)।

°**अच्छ** पुं [वृक्ष] वृक्ष, पेड़ (से ६,४७)।

अच्छअ पुं [अक्षक] १ बहेड़ा का वृक्ष। २ न. स्वच्छ जल (से ६, ४७)।

अच्छअर न [आश्चर्य] विस्मय, चमत्कार (कुमा)।

अच्छंद वि [अच्छन्द] जो स्वाधीन न हो, पराधीन; 'अच्छंदा जे ण भुंजंति ण से चाइत्ति वुच्चइ' (दस २)।

अच्छक्क देखो अत्थक्क (गउड)।

अच्छण न [आसन] १ बैठना (णाया १, १)। २ पालकी वगैरह सुखासन (ओघ ७८)। °**घर** न [°गृह] विश्राम स्थान (जीव ३)।

अच्छग न [दे] १ सेवा, शुश्रूषा (बृह ३)। २ देखना, अवलोकन (वव १)। ३ अहिंसा, दया (दस ८)।

अच्छणिउर न [अच्छनिकुर] अच्छनिकुरांग को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह (ठा २, १)।

अच्छणिउरंग न [अच्छनिकुराङ्ग] संख्या-विशेष, नलिन को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह (ठा २,१)।

अच्छण्ण वि [अच्छन्न] अगुप्त, प्रकट (बृह ३)।

अच्छभल्ल पुं [ऋक्षभल्ल] रीछ, भालू (दे १, ३७; पगह १, १)।

अच्छभल्ल पुं [दे] यक्ष, देव-विशेष (दे १, ३७)।

अच्छरआ देखो **अच्छरा** (षड्)।

अच्छरय पुं [आस्तरक] शय्या पर बिछाने का वस्त्र-विशेष (णाया १, १)।

अच्छरसा } स्त्री [अप्सरस्] १ इन्द्र की
अच्छरा } पटरानी (ठा ६)। २ 'ज्ञाता-धर्मकथा' का एक अध्ययन (णाया २)। ३ देवी (पउम २, ४१)। ४ रूपवती स्त्री (पगह १, ४)।

अच्छरा स्त्री [दे. अप्सरा] चुटकी, चुटकी का आवाज (सूअ २,२,५४)।

अच्छराणिवाय पुं [दे] १ चुटकी। २ चुटकी बजाने में जितना समय लगता है वह, अत्यल्प समय (पगग ३६)।

अच्छरिअ
अच्छरिज्ज } न [आश्चर्य] विस्मय, चमत्कार (हे १, ५८; प्रयौ ८२)।
अच्छरीअ

अच्छल न [अच्छल] निर्दोषता, अनपराध (दे १, १०)।

अच्छवि वि [अच्छवि] जैन-दर्शन में जिसको स्नातक कहते हैं वह, जीवन्मुक्त योगी (भग २५, ६)।

अच्छविकर पुं [अक्षपिकर] एक प्रकार का मानसिक विनय (ठा ८)।

अच्छहल्ल पुं [ऋक्षभल्ल] रीछ, भालू (पाअ)।

अच्छा स्त्री [अच्छा] वरुण देश की राज-धानी (पव २७५)।

°**अच्छा** स्त्री [कक्षा] गर्व, अभिमान (से ६, ४७)।

अच्छाइ वि [आच्छादिन्] ढकनेवाला, आच्छादक (स ३५१)।

अच्छायण न [आच्छादन] १ ढकना (दे ७, ४५)। २ वस्त्र, कपड़ा (आचा)।

अच्छायणा स्त्री [आच्छादना] ढकना, आच्छादित करना (वव ३)।

अच्छायंत वि [अच्छातान्त] तीक्ष्ण, धार-दार (पाअ)।

अच्छि त्रि [अक्षि] आँख, नेत्र (हे १. ३३; ३५)। °**चमढण** न [°मलन] आंख का मलना (बृह २)। °**णिमीलिय** न [°निमीलित] १ आँख को मूंदना, मींचना। २ आँख मिचने में जो समय लगे वह, 'अच्छिणिमीलियमेत्तं, णत्थि सुहं दुक्खमेव अणुबद्धं। णरए णेरइआणं, अहोणिसं पच्चमाणाणं' (जीव ३)। °**पत्त** न [°पत्र] आंख का पक्ष्म, पपनी (भग १४, ८)। °**वेहग** पुं [°वेधक] एक चतुरिन्द्रिय जन्तु, क्षुद्र जीव-विशेष (उत्त ३६)। °**रोडय** पुं [°रोडक] एक चतुरिन्द्रिय जन्तु, क्षुद्र कीट-विशेष (उत्त ३६)। °**ल्ल** वि [°मत्] १ आंख वाला प्राणी। २ चतुरिन्द्रिय जन्तु (उत्त ३६)। °**मल** पुं [°मल] आँख का मैल, कीट्ट (निचू ३)।

अच्छिंद सक [आ + छिद्] १ थोड़ा छेद करना। २ एक बार छेद करना। ३ बलात्कार से छीन लेना। वकृ. **अच्छिंदमाण** (भग ८, ३)।

अच्छिंद पुं [अक्षीन्द्र] गोशालक के एक दिक्चर (शिष्य) का नाम (भग १५)।

अच्छिंदण न [आच्छेदन] १ एक बार छेदना (निचू ३)। २ छीनना। ३ थोड़ा छेद करना, थोडा काटना (भग १५)।

अच्छिक्क वि [दे] अस्पृष्ट, नहीं छुआ हुआ (वव १)।

अच्छिघरुल्ल वि [दे] अप्रीतिकर। २ पुं वेश, पोशाक (दे १, ४१)।

अच्छिज्ज वि [आच्छेद्य] १ जबरदस्ती जो दूसरे से छीन लिया जाय (पिंड)। २ पुं. जैन साधु के लिए भिक्षा का एक दोष (आचा)।

अच्छिज्ज वि [अच्छेद्य] जो तोड़ा न जा सके (ठा ३,२)।

अच्छित्ति स्त्री [अच्छित्ति] १ नाश का अभाव, नित्यता। २ वि. नाश-रहित (विसे)। °**णय** पुं [°नय] नित्यता-वाद, वस्तु को नित्य माननेवाला पक्ष (पव)।

अच्छिद्द वि [अच्छिद्र] १ छिद्र-रहित, निबिड, गाढ़ (जं २)। २ निर्दोष (भग २,५)।

अच्छिण्ण } वि [आच्छिन्न] १ बलात्कार
अच्छिन्न } से छीना हुआ। २ छेदा हुआ, तोड़ा हुआ (पाअ)।

अच्छिण्ण } वि [अच्छिन्न] १ नहीं तोड़ा
अच्छिन्न } हुआ, अलग नहीं किया हुआ (ठा १०)। २ अव्यवहित, अन्तर-रहित (गउड)।

अच्छिप्प वि [अस्पृश्य] छूने के अयोग्य (सुपा २८१)।

अच्छिप्पंत वि [अस्पृशत्] स्पर्श नहीं करता हुआ (श्रा १२)।

अच्छिय वि [आसित] बैठा हुआ (पि ४८०, ५६५)।

अच्छिवडण न [दे] आँख का मूंदना (दे १, ३६)।

अच्छिविअच्छि स्त्री [दे] परस्पर-आकर्षण, आपस की खींचतान (दे १, ४१)।

अच्छिहरिल्ल } **अच्छिहरुल्ल** } देखो अच्छिघरुल्ल (दे १, ४१)।

अच्छी देखो अच्छि (रंभा)।

अच्छुक्क न [दे] अक्षि-कूप-तुला, आँख का कोटर (सुपा २०)।

अच्छुत्ता स्त्री [अच्छुप्ता] १ एक विद्याधिष्ठात्री देवी (ति ८)। २ भगवान् मुनिसुव्रत स्वामी की शासनदेवी (संति १०)।

अच्छुद्धसिरी स्त्री [दे] इच्छा से अधिक फल की प्राप्ति, असंभावित लाभ (षड्)।

अच्छुल्लूढ वि [दे] निष्कासित, बाहर निकाला हुआ, स्थान-भ्रष्ट किया हुआ (बृह १)।

अच्छेज्ज देखो अच्छिज्ज (ठा ३, २; ४)।

अच्छेर | **अच्छेरग** | **अच्छेरय** | न [आश्चर्य] १ विस्मय, चमत्कार (हे १,५८)। २ पुंन. विस्मय-जनक घटना, अपूर्व घटना (ठा १०, १३८)। °**कर** वि [°कर] विस्मय-जनक, चमत्कार उपजानेवाला (श्रा १४)।

अच्छोड सक [आ + छोटय्] १ पटकना, पछाड़ना। २ सिंचना, छिटकना; 'अच्छोडेमि सिलाए, तिलं तिलं किं नु छिंदामि' (सुर १५, २३; सुर २, २४५)।

अच्छोड पुं [आच्छोट] १ सिंचन। २ आस्फालन करना, पटकना (ओघ ३५७)।

अच्छोडण न [आच्छोटन] १ सिंचन। २ आस्फालन (सुर १३, ४१; सुपा ५६३; वेणी १०६)। ३ मृगया, शिकार (दे १, ३७)।

अच्छोडाविय वि [दे. आच्छोटित] बंधित, बंधाया हुआ (स ५२५; ५२६)।

आच्छोडिअ वि [दे] आकृष्ट, खींचा हुआ; 'अच्छोडिअवत्थद्धं' (गा १६०)।

अच्छोडिअ वि [आच्छोटित] सिक्त, सिंचा हुआ (सुर २, २४५)।

अच्छोडिअ वि [आच्छोटित] पटका हुआ, आस्फालित (कुप्र ४३३)।

अछिप्प वि [अस्पृश्य] स्पर्श करने के अयोग्य, 'सो सुणओव्व अछिप्पो कुलुग्गयाणं, न उण पुरिसो' (सुपा ४८७)।

अज देखो अय = अज (पउम ११,२५,२६)।

अजगर देखो अयगर (भवि)।

अजड पुं [दे] जार, उपपति (षड्)।

अजड वि [अजड] १ पक्व, विकसित (गउड)। २ निपुण, चतुर (कुमा)।

अजम वि [दे] १ सरल, ऋजु (षड्)। २ जमाईन (पभा १५)।

अजय वि [अयत] १ पाप-कर्म से अविरत, नियम-रहित (कम्म ४)। २ अनुद्योगी, यत्न-रहित (अघो ५४)। ३ उपयोग-शून्य, बेख्याल (सुपा ५२२)। ४ क्रिवि. बे-ख्याल से, अनुपयोग से; 'अजयं चरमाणो य पाणभूयाइ हिंसइ (दस ४; उवर ४ टी।

अजय पुं [अजय] षट्पद छंद का एक भेद (पिंग)।

अजयणा स्त्री [अयतना] अनुपयोग, ख्याल नहीं रखना, गफलती (गच्छ ३)।

अजर वि [अजर] १ वृद्धावस्था-रहित, बुढ़ापा-वर्जित। २ पुं. देव, देवता (आवम)। ३ मुक्त आत्मा (ओघ)।

अजराउर वि [दे] उष्ण, गरम (दे १,४५)।

अजरामर वि [अजरामर] १ बुढ़ापा और मृत्यु से रहित, 'णत्थि कोइ जगम्मि अजरामरो' (महा)। २ न. मुक्ति, मोक्ष। ३ स्त्री. °**रा** विद्या-विशेष (पउम ७, १३६)।

अजस पुं [अयशस्] १ अपयश, अपकीर्त्ति (उप ७६८)। °**कित्तिणाम** न [°कीर्ति-नामन्] अपकीर्त्ति का कारण-भूत एक कर्म (सम ६७)।

अजस्स क्रिवि [अजस्र] निरन्तर, हमेशा; 'आमरणंतमजस्सं संजमपरिपालणं विहिणा' (पंचा ७)।

अजा देखो अया (कुमा)।

अजाण वि [अज्ञान] अनजान, मूर्ख (रयण ८५)।

अजाणअ वि [अज्ञायक] अनजान, जानकारी-रहित (काल)।

अजाणणा स्त्री [अज्ञान] जानकारी-रहित बे-समझी; 'अधाणणाए तजत्ती न कया तम्मि' (श्रा २८)।

अजाणुय वि [अज्ञायक] अज्ञ, नहीं जानने-वाला (ठा ३, ४)।

अजाय वि [अजात] अनुत्पन्न, अनिष्पन्न। °**कप्प** पुं [°कल्प] शास्त्रों को पूरा-पूरा नहीं जाननेवाला जैन साधु, अगीतार्थ; 'गीयत्थ जायकप्पो अगीओ खलु भवे अजाओ अ' (धर्म ३)। °**कप्पिय** पुं [°कल्पिक] अगीतार्थ जैन साधु (गच्छ १)।

अजिअ वि [अजित] १ अपराजित, अपराभूत। २ पुं. दूसरे तीर्थंकर का नाम (अजि १)। ३ नववें तीर्थंकर का अधिष्ठाता देव (संति ७)। ४ एक भावी बलदेव (ती २१)। °**बला** स्त्री [°बला] भगवान् अजितनाथ की शासनदेवी (पव २७)। °**सेण** पुं [°सेन] १ एक प्रसिद्ध राजा (आव)। २ चौथा कुलकर (ठा १०)। ३ एक विख्यात जैन मुनि (अंत ४)।

अजिअ पुं [अजित] भगवान् मल्लिनाथ का प्रथम श्रावक (विचार ३७८)। °**नाह** पुं [°नाथ] नववां रुद्र पुरुष (विचार ४७१)।

अजिअ वि [अजीव] जीव-रहित, अचेतन (कम्म १, १५)।

अजिअ वि [अजय्य] जो जीता न जा सके (सुपा ७५)।

अजिया स्त्री [अजिता] १ भगवान् अजितनाथ की शासन देवी (संति ६)। २ चतुर्थ तीर्थंकर की एक मुख्य शिष्या (तित्थ)।

अजिण न [अजिन] १ हरिण आदि पशुओं का चमड़ा (उत्त ५; दे ७, २७)। २ वि. जिसने राग-द्वेष का सर्वथा नाश नहीं किया है वह (भग १५)। ३ जिन भगवान् के तुल्य सत्योपदेशक जैन साधु, 'अजिणा जिणसंकासा, जिणा इवावितहं वागरेमाणा' (औप)।

अजिण्ण देखो अइन्न = अजीर्ण (आव)।

अजियंधर पुं [अजितधर] ग्यारह रुद्रों में आठवां रुद्र पुरुष (विचार ४७३)।

अजिर न [अजिर] आंगन, चौक (सण)।

अजीर } देखो **अइन्न**=अजीर्ण (वव १;
अजीरय } णाया १,१३) ।

अजीरण देखो **अइन्न**=अजीर्ण (पिंड २७; पव १३१) ।

अजीव पुं [अजीव] अचेतन, निर्जीव, जड़ पदार्थ (नव २) । °**काय** पुं [°काय] धर्मास्तिकाय आदि अजीव पदार्थ (भग ७,१०) ।

अजुअ पुं [दे] वृक्ष-विशेष, सप्तच्छद, सतौना (दे १, १७) ।

अजुअ न [अयुत] दश हजार, 'दोरिण सहस्सा रहाणं, पंच अजुयाणि हयाणं' (महा) ।

अजुअलवण्ण पुं [अयुगलपर्ण] सतौना (दे १,४८) ।

अजुअलवण्णा स्त्री [दे] इमली का पेड़ (दे १, ४८) ।

अजुत्त वि [अयुक्त] अयोग्य, अनुचित (विसे) । °**कारि** वि [°कारिन्] अयोग्य कार्य करनेवाला (सुपा ६०४) ।

अजुत्तीय वि [अयुक्तिक] युक्ति-शून्य, अन्याय्य (सुर १२, ५४) ।

अजुय देखो **अउअ**;'पंच अजुयाणि हयाणं सत्त कोडीओ पाइक्कजणाण' (सुख ६, १) ।

अजेअ वि [अजय] जो जीता न जा सके, 'सो मउडरयणपहावेण अजेओ दोमुहराया' (महा) ।

अजोग पुं [अयोग] मन, वचन और काया के सब व्यापारों का जिसमें अभाव होता है वह सर्वोत्कृष्ट योग, शैलेशी-करण (औप) ।

अजोग वि [अयोग्य] अयोग्य, लायक नहीं वह (नीचू ११) ।

अजोगि पुं [अयोगिन्] १ सर्वोत्कृष्ट योग को प्राप्त योगी । २ मुक्त आत्मा (ठा २,१; कम्म ४, ४७; ५०) ।

अज्ज सक [अर्ज्] पैदा करना, उपार्जन करना, कमाना । अज्जइ (हे ४,१०८) । संकृ. **अज्जिय** (पिंग) ।

अज्ज वि [अर्य] १ वैश्य । २ स्वामी, मालिक (दे १, ५) ।

अज्ज वि [आर्य] १ निर्दोष । २ आर्य-गोत्र में उत्पन्न (णंदि ४६)। ३ शिष्ट-जनोचित,'अज्जाइं कम्माइं करेहि रायं' (उत्त १३,३२) । °**खउड** पुं [°खपुट] एक जैन आचार्य (कुप्र ४४०) ।

अज्ज वि [आर्य] १ उत्तम, श्रेष्ठ (ठा ४,२) । २ मुनि, साधु (कप्प) । ३ सत्यकार्य करनेवाला (वव १) । ४ पूज्य, मान्य (विपा १, १) । ५ पुं. मातामह (निसी) । ६ पितामह (णाया १, ८) । ७ एक ऋषि का नाम (णंदि) । ८ न. गोत्र-विशेष (णंदि) । ६ जैन साधु, साध्वी और उनकी शाखाओं के पूर्व में यह शब्द प्रायः लगता है, जैसे **अज्जवइर, अज्जचंदणा, अज्जपोमिला** (कप्प) । °**उत्त** पुं [°पुत्र] १ पति, भर्ता (नाट) । २ मालिक का पुत्र (नाट) । °**घोस** पुं [°घोष] भगवान् पार्श्वनाथ का एक गणधर (ठा ८) । °**मंगु** पुं [°मङ्गु] एक प्राचीन जैनाचार्य (सार्ध २२) । °**मिस्स** वि [°मिश्र] पूज्य, मान्य (अभि ११) । °**समुद्द** पुं [°समुद्र] एक प्रसिद्ध जैनाचार्य (सार्ध २२) ।

अज्ज अ [अद्य] आज (सुर २, १६७) । °**त्त** वि [°तन] अधुनातन, आजकल का (रंभा) । °**त्ता** स्त्री [°ता] आज कल (कप्प) । °**प्पभिइ** अ [°प्रभृति] आज से ले कर (उवा) ।

अज्ज पुं [दे] १ जिनेन्द्र देव । २ बुद्ध देव (दे १, ५) ।

अज्ज न [आज्य] घी, घृत (पाअ) ।

अज्ज° देखो **रि**=ऋ ।

अज्जं अ [अद्य] आज (गा ५८) ।

अज्जंत वि [आयत्] आगामी । °**काल** पुं [°काल] भविष्य काल (पाअ) ।

अज्जंहिज्जो अ. [अद्यह्यः] आजकल (उप पृ ३३४) ।

अज्जकालिअ वि [अद्यकालिक] आजकल का (अणु १५८) ।

अज्जग देखो **अज्जय**=अर्जक; 'अजगतरुमंजरिव्व' (सुपा ५३) ।

अज्जग देखो **अज्जय**=आर्यक (निर १, १)।

अज्जण सक [अर्ज्] उपार्जन करना । संकृ. **अज्जणित्ता** (सूअ १, ५, २, २३) ।

अज्जण } [अर्जन] उपार्जन, पैदा करना
अज्जणण } (श्रा १२; सत्त १८); 'रज्जं केरिसमेवं करेसुवायं तदज्जणो' (उप ७ टी) ।

अज्जम पुं [अर्यमन्] १ सूर्य (पि २६१) । २ देव-विशेष (जं ७) । ३ उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र का अधिष्ठायक देव (ठा २, ३) । ४ न. उत्तरा-फाल्गुनी नक्षत्र (ठा २, ३) ।

अज्जय पुं [आर्यक] १ मातमह, मां का बाप (पउम ९०, २) । २ पितामह, पिता का पिता (भग ६, ३३); 'जं पुण अज्जय-पज्जय-जणयज्जियअत्थमज्झओ दाणं परमत्थओ कलंकं तयं तु पुरिसाभिमाणीण' (सुर १, २२०) ।

अज्जय वि [अर्जक] १ उपार्जन करनेवाला, पैदा करनेवाला (सुपा १२४) । २ पुं. वृक्ष-विशेष (पण्ण १) ।

अज्जय पुं [दे] १ सुरस नामक तृण । २ गुरेटक नामक तृण (दे १, ५४) । ३ तृण, घास (निचू ११) ।

अज्जल पुं [आर्यल] म्लेच्छों की एक जाति (पण्ण १) ।

अज्जव न [आर्जव] सरलता, निष्कपटता (नव २६) ।

अज्जव (अप) देखो **अज्ज**=आर्य । °**खंड** पुं [खण्ड] आर्य-देश (भवि) ।

अज्जवया स्त्री [आर्जव] ऋजुता, सरलता (पक्खि) ।

अज्जवि वि [आर्जविन्] सरल, निष्कपट (आचा) ।

अज्जविय न [आर्जव] सरलता (सूअ १, ५, २, २३) ।

अज्जा स्त्री [आर्या] १ साध्वी (गच्छ २) । २ गौरी, पार्वती (दे १, ५) । ३ आर्या छन्द (जं २) । ४ भगवान् मल्लिनाथ की प्रथम शिष्या (सम १५२) । ५ मान्या, पूज्या स्त्री (पि १०६, १४३, १४५) । ६ एक कला (औप) ।

अज्जा स्त्री [आज्ञा] आदेश, हुकुम (हे २, ८३) ।

अज्जाय वि [अजात] अनुत्पन्न, 'अज्जायस्सियरस्सवि एस सहावो त्ति दुग्घडं जाए' (धर्मसं २७०) ।

अज्जाव सक [आ+ज्ञापय्] आज्ञा करना, हुकुम फरमाना । कृ. **अज्जावेयव्व** (सूअ २, १) ।

अज्जिअ वि [अर्जित] उपार्जित, पैदा किया हुआ (श्रा १४) ।

अज्जिआ स्त्री [आर्यिका] १ मान्या, पूज्या स्त्री। २ साध्वी, संन्यासिनी (सम ६५; पि ४४८)। ३ माता की माता (दस ७)। ४ पिता की माता (स २५५)।

अज्जिइ्ढीअ वि [दे] दत्त, दिया हुआ (वंव १ टी)।

अज्जिणण देखो अज्जणग (उप ६६४)।

अज्जीव देखो अजीव, 'धम्माधम्मा पुग्गल, नह कालो पंच हुंति अजीवा' (नव १०)।

अज्जु (अप) अ [अद्य] आज (हे ४, ३४३; भवि; पिंग)।

अज्जुअ (शौ) देखो अज्ज = आर्य (नाट)।

अज्जुआ (शौ) देखो अज्जा = आर्या (पि १०५)।

अज्जुण पुं [अर्जुन] १ तीसरा पाण्डव (णाया १, १६)। २ वृक्ष-विशेष (णाया १, ६; औप)। ३ गोशालक के एक दिक्चर (शिष्य) का नाम (भग १५)। ४ न. श्वेत सुवर्ण, सफेद सोना; 'सव्वज्जुणसुवण्णमई' (औप)। ५ तृण-विशेष (पण्ण १)। ६ अर्जुन वृक्ष का पुष्प (णाया १, ६)।

अज्जुणग } [अर्जुनक] १—६ ऊपर देखो।
अज्जुणय } ७ एक माली का नाम (अंत १८)।

अज्जू स्त्री [आर्या] सास, श्वश्रू (हे १, ७७)।

अज्जोग देखो अजोग = अयोग (पंच १)।

अज्जोगि देखो अजोगि (पंच १)।

अज्जोरुह न [दे] वनस्पति-विशेष (पण्ण १)।

अज्झक्ख वि [अध्यक्ष] अधिष्ठाता (कप्पू)।

अज्झ पुं [दे] यह (पुरुष, मनुष्य) (दे १, ५०)।

अज्झत्त देखो अज्झप्प (सूअ १, २, २, १२)।

अज्झत्थ वि [दे] आगत, आया हुआ (दे १, १०)।

अज्झत्थ } न [अध्यात्म] १ आत्मा में, आत्म-
अज्झप्प } संबंधी, आत्म-विषयक; (उत्त १; आचा)। २ मन में, मन संबंधी, मनो-विषयक (उत्त ६; सूअ १, १६, ४)। ३ मन, चित्त; 'अज्झप्पसाणयणं' (दसनि १, २६)। ४ शुभ-ध्यान, 'अज्झप्प-रए सुसमाहि-अप्पा, सुत्तत्थं च विआणइ जे स भिक्खू' (दस १०, १५)। ५ पुं. आत्मा (ओघ ७४५)। °जोग पुं [°योग] योग-विशेष, चित्त की एकाग्रता (सूअ १, १६, ४)। °दोस पुं [°दोष] आध्यात्मिक दोष—क्रोध, मान, माया और लोभ (सूअ १, ६)। °वत्तिय वि [°प्रत्ययिक] चित्त-हेतुक, मन से ही उत्पन्न होनेवाला शोक, चिन्ता आदि (सूअ २, २, १६)। °विसोहि स्त्री [°विशुद्धि] आत्म-शुद्धि (ओघ ७४५)। °संवुड वि [°संवृत] मनो-निग्रही, मन को काबू में रखने-वाला (आचा)। °सुइ स्त्री [°श्रुति] अध्यात्म-शास्त्र, आत्म-विद्या, योग-शास्त्र (पण्ह २, १)। °सुद्धि स्त्री [°शुद्धि] मन की शुद्धि (आचू १)। °सोहि स्त्री [°शुद्धि] मनः-शुद्धि (आचू १)।

अज्झत्थिय वि [आध्यात्मिक] आत्म-विषयक, आत्मा या मन से संबंध रखनेवाला (विपा १, १; भग २, १)।

अज्झत्थीअ देखो अज्झत्थिय (पव १२१)।

अज्झप्पिअ वि [आध्यात्मिक] १ अध्यात्म का जानकार (अज्झ २)। २ अध्यात्म-सम्बन्धी (सूअनि ६४)।

अज्झय वि [दे] प्रातिवेशिमक, पड़ोसी (दे १, १७)।

अज्झयण पुंन [अध्ययन] १ शब्द, नाम (चंद १)। २ पढ़ना, अभ्यास (विसे)। ३ ग्रन्थ का एक अंश (विपा १, १)।

अज्झयणि वि [अध्ययनिन्] पढ़ने वाला, अभ्यासी (विसे १४६५)।

अज्झयाव सक [अधि + आप्] पढ़ाना, सीखाना। । अज्झयावित्ति (विसे ३१६६)।

अज्झवस सक [अध्यव + सो] विचार करना, चिंतन करना। वकृ. अज्झवसंत (सुपा ५६५)।

अज्झवसण } न [अध्यवसान] चिन्तन,
अज्झवसाण } विचार, आत्म-परिणाम; 'तो कुमरेणं भणियं, मुणिपुंगव ! रइसुहज्झवस-णंपि। किं इयफलयं जायइ ?' (सुपा ५६१; प्रासू १०४; विपा १, २)।

अज्झवसाय पुं [अध्यवसाय] विचार, आत्म-परिणाम, मानसिक संकल्प (आचा; कम्म ४, ८२)।

अज्झवसिय वि [अध्यवसित] निश्चित, (धर्मसं ४२८)।

अज्झवसिय वि [अध्यवसित] १ जिसका चिन्तन किया गया हो वह (औप)। २ न. चिन्तन, विचार (अणु)।

अज्झवसिय न [दे] मुंड़ा हुआ मुंह (दे १, ४०)।

अज्झसिय वि [दे] देखा हुआ, दृष्ट (दे १, ३०)।

अज्झस्स सक [आ + क्रुश] आक्रोश करना, अभिशाप देना। अज्झस्सइ (दे १, १३)।

अज्झस्स } वि [आक्रुष्ट] जिस पर आक्रोश
अज्झस्सिय } किया गया हो वह (दे १, १३)।

अज्झहिय वि [अध्यधिक] अत्यंत, अतिश-यित (महा)।

अज्झा स्त्री [दे] १ असती, कुलटा। २ प्रशस्त स्त्री। ३ नवोढ़ा, दुलहिन। ४ युवती स्त्री। ५ यह (स्त्री) (दे १, ५०; गा ८३८, ८६८; वज्जा ६४)।

अज्झा } सक [अधि + इ] अध्यन करना,
अज्झाअ } पढ़ना। अज्झामि; (सुख २, १३)। हेकृ. अज्झाइउं (सुख २, १३)।

अज्झाअ सक [अध्यापय्] पढ़ाना। कर्म. अज्झाइज्जइ (सुख २, १३)।

अज्झाइअव्व वि [अध्येतव्य] पढ़ने योग्य, 'सुअं मे भविस्सइ त्ति अज्झाइअव्वं भवइ' (दस ६, ४, ३)।

अज्झाय पुं [अध्याय] १ पठन, अभ्यास (नाट)। २ ग्रन्थ का एक अंश (विसे ११११; प्राप)।

अज्झारुह पुं [अध्यारुह] १ वृक्ष-विशेष। २ वृक्षों के ऊपर बढ़नेवाली वल्ली या शाखा वगैरह (पण्ण १)।

अज्झारोव पुं [अध्यारोप] आरोप, उपचार (धर्मसं ३५२; ३५३)।

अज्झारोवण न [अध्यारोपण] १ आरोपण, ऊपर चढ़ाना। २ पूछना, प्रश्न करना (विसे २६२८)।

अज्झारोह पुं [अध्यारोह] देखो अज्झारुह (सूअ २, ३, ७, १८, १६)।

अज्झाव देखो अज्झाअ = अध्यापय्। अज्झा-वेइ (सुख २, १३)। वकृ. अज्झावअंत (हास्य १२४)।

अज्झावग देखो अज्झावय (दसनि १, १ टी)।

अज्झावण न [अध्यापन] पाठन (सिरि २७)।
अज्झावणा स्त्री [अध्यापना] पढ़ाना (कम्म १, ६०)।
अज्झावय वि [अध्यापक] पढ़ानेवाला, शिक्षक, गुरु (वसु; सुर ३, २६)।
अज्झावस अक [अध्या + वस्] रहना, वास करना। वकृ. **अज्झावसंत** (उवा)।
अज्झास पुं [अध्यास] १ ऊपर बैठना। २ निवास-स्थान (सुपा २०)।
अज्झासणा स्त्री [अध्यासना] सहन करना (राज)।
अज्झासिअ वि [अध्यासित] १ आश्रित, अधिष्ठित। २ स्थापित, निवेशित (नाट)।
अज्झाहय वि [अध्याहत] १ उत्तेजित, 'सीयलेणं सुरहिगंधमट्टियागंधेणं हत्थी अज्झाहओ वणं संभरेइ' (महा)।
अज्झीण वि [अक्षीण] १ अक्षय, अखूट। २ न. अध्ययन (विसे ६५८)।
अज्झुववज्ज देखो अज्झोववज्ज (पि ७७; औप)।
अज्झुववण्ण देखो अज्झोववण्ण (विपा १, १)।
अज्झुववाय देखो अज्झोववाय (उप पृ २८१)।
अज्झुसिअ वि [अध्युषित] आश्रित (पिंड ४५०)।
अज्झुसिर वि [अशुषिर] छिद्र-रहित (ओघ ३१३)।
अज्झेउ वि [अध्येतृ] पढ़नेवाला (विसे १४६५)।
अज्झेल्ली स्त्री [दे] दोहने पर भी जिसका दोहन हो सके ऐसी गैया (दे १, ७)।
अज्झेसणा स्त्री [अध्येषणा] अधिक प्रार्थना, विशेष याचना (राज)।
अज्झोयरग } पुं [अध्यवपूरक] १ साधु के **अज्झोयरय** } लिए अधिक रसोई करना। २ साधु के लिए बढ़ाकर की हुई रसोई (औप; पव ६७)।
अज्झोलिआ स्त्री [दे] वक्षःस्थल के आभूषण में की जाती मोतियों की रचना (दे १, ३३)।
अज्झोवगमिय वि [आभ्युपगमिक] स्वेच्छा से स्वीकृत (पण्ण ३४)।

अज्झोववज्ज अक [अध्युप + पद्] अत्यासक्त होना, आसक्ति करना। अज्झोववज्जइ (पि ७७)। भविअज्झोववज्जिहिइ (औप)।
अज्झोववण्ण } वि [अध्युपपन्न] अत्यंत **अज्झोववन्न** } आसक्त (विपा १,२; णाया १, २; महा; पि ७७)।
अज्झोववाय पुं [अध्युपपाद] अत्यन्त आसक्ति, तल्लीनता (पण्ह २,५)।
अझावणा देखो **अज्झावणा**; 'पसमो पसन्नवयणो विहिणा सव्वाणझावणाकुसलो' (संबोध २४)।
अट } सक [अट्] भ्रमण करना, घूमना। **अट्ट** } अटइ (षड्; हे १, १९५); परिअट्टइ (हे ४, २३०)।
अट्ट सक [क्वथ्] क्वाथ करना। अट्टइ (हे ४, ११९; षड्; गउड)।
अट्ट अक [शुष्] सूखना, शुष्क होना। अट्टंति (से ५, ६१)। वकृ. **अट्टंत** (से ५, ७३)।
अट्ट वि [आर्त] १ पीड़ित, दुःखित (विपा १,१)। २ ध्यान-विशेष—इष्ट-संयोग, अनिष्ट-वियोग, रोग-निवृत्ति और भविष्य के लिए चिन्ता करना (ठा ४, १)। °**ण्ण** वि [°ज्ञ] पीड़ित की पीड़ा को जाननेवाला (षड्)।
अट्ट वि [ऋत] गत, प्राप्त (णाया १, १; भग १२, २)।
अट्ट पुंन [अट्ट] १ दूकान, हाट (श्रा १४)। २ महल के ऊपर का घर, अटारी (कुमा)। ३ आकाश (भाग) २०, २)।
अट्ट वि [दे] १ कृश, दुर्बल। २ बड़ा, महान्। ३ निर्लज, बेशरम। ४ आलसी, सुस्त। ५ पुं. शुक, तोता। ६ शब्द, आवाज। ७ न. सुख। ८ झूठ, असत्योक्ति (दे १, ५०)।
अट्टट्ट वि [दे] गया हुआ, गत (दे १, १०)।
अट्टट्टहास पुं [अट्टट्टहास] देखो **अट्टहास** (उव)।
अट्टण न [अट्टन] १ व्यायाम, कसरत (औप)। २ पुं. इस नाम का एक प्रसिद्ध मल्ल (उत्त ४)। °**साला** स्त्री [°शाला] व्यायाम-शाला, कसरत-शाला (औप; कप्प)।
अट्टण न [अटन] परिभ्रमण (धर्म ३)।
अट्टणा स्त्री [आवर्तना] आवृत्ति (प्राकृ ३१)।

अट्टमट्ट वि [दे] निरर्थक, व्यर्थ, निकम्मा (सुख ५,८)।
अट्टमट्ट पुं [दे] १ आलवाल, कियारी (हे २, १७४)। २ अशुभ संकल्प-विकल्प, पाप-संबद्ध अव्यवस्थित विचार;
'अणवट्ठियं मणो जस्स झाइ बहुयाइं अट्टमट्टाइं।
तं चिंतियं च न लहइ, संचिणइ य पावकम्माइं' (उव)।
अट्टय पुं [अट्टक] १ हाट, दूकान (श्रा १२)। २ पात्र के छिद्र को बन्द करने में उपयुक्त द्रव्य-विशेष (बृह १)।
अट्टयक्कली स्त्री [दे] कमर पर हाथ रखकर खड़ा रहना (पाअ)।
अट्टहास पुं [अट्टहास] बहुत हंसना, खिलखिला कर हँसना (पि २७१)।
अट्टालग } पुंन [अट्टालक] महल का उपरि-**अट्टालय** } भाग, अटारी (सम १३७; पउम २, ६)।
अट्टि स्त्री [आर्ति] पीड़ा, दुःख (आचा)।
अट्टिय वि [आर्तित] शोकादि से पीड़ित, 'अट्टा अट्टियचित्ता, जह जीवा दुक्खसागरमुवेंति' (औप)।
अट्टिय वि [अर्दित] व्याकुल, व्यग्र; 'अट्टदुहट्टियचित्ता' (औप)।
अट्ठ पुं [अर्थ] संयम (सूअ १,२,२,१६)।
अट्ठ पुंन [अर्थ] १ वस्तु, पदार्थ (उवा २; अच्चु); 'अट्ठदंसी' (सूअ १, १४), 'अट्ठाइं, हेऊइं, पसिणाइं' (भग २, १)। २ विषय, 'इंदियट्ठा' (ठा ६)। ३ शब्द का अभिधेय, वाच्य (सूअ १,६)। ४ मतलब, तात्पर्य (विपा २,१; भास १८)। ५ तत्त्व, परमार्थ, 'तुब्भेत्थ भो भारहरा गिराणं, अट्ठं न याणाह अहिज्ज वेए' (उत्त १२, ११); 'इओ चुएसु दुहमट्ठदुग्गं' (सूअ १, १०, ६)। ६ प्रयोजन, हेतु (हे २,३३)। ७ अभिलाष, इच्छा; 'अट्ठो भंते! भोगेहिं, हंता अट्ठो' (णाया १,१६; उत्त ३)। ८ उद्देश्य, लक्ष्य (सूअ १, २, १)। ९ धन, पैसा (श्रा १४; आचा)। १० फल, लाभ; 'अट्ठजुत्ताणि सिक्खेज्जा णिरट्ठाणि उ वज्जए' (उत्त १)। ११ मोक्ष, मुक्ति (उत्त १)। °**कर** पुं [°कर] । १ मंत्री। २ निमित्त शास्त्र का विद्वान् (ठा ४, ३)। °**जाय** वि [°जातार्थ]

जिसकी आवश्यकता हो, जिसका प्रयोजन हो वह; 'अट्ठेण जस्स कज्जं संजातं एस अट्ठजाओ य' (वव २)। °जाय वि [°याच] धनार्थी, धन की चाहवाला (वव २)। °सइय वि [°शतिक] सौ अर्थवाला, जिसका सौ अर्थ हो सके ऐसा (वचन आदि) (जं २)। °सेण पुं [°सेन] देखो अट्ठिसेण, देखो अत्थ=अर्थ।

अट्ठ त्रि.ब. [अष्टन्] संख्या-विशेष, आठ, ८ (जी ४१)। °चत्ताल वि [°चत्वारिंश] अठतालीसवाँ (पउम ४८,१२६)। °चत्तालीस त्रि [°चत्वारिंशत्] अठतालीस (पि ४४५)। °ट्ठमिया स्त्री [°ष्टमिका] जैन साधुओं का ६४ दिन का एक व्रत, प्रतिमा-विशेष (सम ७७)। °तालीस वि [°चत्वारिंशत्] अठतालीस (नाट)। °तीस त्रि [°त्रिंशत्] संख्या-विशेष, अठतीस (सम ६५; पि ४४२; ४४५)। °तीसइम वि [°त्रिंश] अठतीसवाँ (पउम ३८, ५८)। °त्तरि स्त्री [°सप्तति] अठत्तर, ७८ की संख्या (पि ४४६)। °त्तीस त्रि [°त्रिंशत्] अठतीस (सुपा ६५९; पि ४४५)। °दस त्रि [°दशन्] अठारह, १८ (संति ३)। °दसुत्तरसय वि [°दशोत्तरशत] एक सौ अठारहवाँ (पउम ११८,१२०)। °दह त्रि [°दशन्] अठारह, १८ की संख्या (पिंग)। °पएसिय वि [°प्रदेशिक] आठ अवयव वाला (ठा १०)। °पया स्त्री [°पदा] एक वृत्त, छन्द-विशेष (पिंग) °पाहरिअ वि [प्राहरिक] आठ प्रहर संबंधी (सुर १५, २१८)। °भाइया स्त्री [°भागिका] तरल वस्तु नापने का बत्तीस पलों का एक परिमाण (अणु)। °म न [°म] तेला, लगातार तीन दिनों का उपवास (सुर ४,५५)। °मंगल पुंन [°मङ्गल] स्वस्तिक आदि आठ मांगलिक वस्तु (राय)। °मभत्त पुंन [°मभक्त] तेला, लगातार तीन दिनों का उपवास (णाया १,१)। °मभत्तिय वि [°मभक्तिक] तेला करनेवाला (विपा २, १)। °मी स्त्री [°मी] तिथि-विशेष, अष्टमी (विपा २, १)। °मुत्ति पुं [°मूर्ति] महादेव, शिव (ठा ६)। °याल त्रि [°चत्वारिंशत्] अठतालीस (भवि)। °वन्न त्रि [°पञ्चाशत्] संख्या-विशेष, अट्ठावन, ५८ (कम्म १, ३२)। °वरिस, °वारिस वि [°वार्षिक] आठ वर्ष की उम्र का (सुर २,१४६; ८,१०१)। °विह वि [°विध] आठ प्रकार का (जी २४)। °वीस स्त्रीन [°विंशति] अट्ठाईस (कम्म १, ५)। °सट्ठि स्त्री [°षष्टि] संख्या-विशेष, अठसठ (पि ४४२-६)। °समइय वि [°सामयिक] जिसकी अवधि आठ 'समय' की हो वह (औप)। °सय न [°शत] एक सौ आठ, १०८ (ठा १०)। °सहस्स न [°सहस्र] एक हजार और आठ (औप)। °सामइय देखो °समइय (ठा ८)। °सिर वि [°शिरस्, °सिर] अष्ट-कोण, आठ कोण वाला (औप)। °सेण पुं [°सेन] देखो अट्ठिसेण। °हत्तर वि [°सप्ततितम] अठत्तरवाँ (पउम ७८, ५७)। °हत्तरि स्त्री [°सप्तति] अठत्तर की संख्या, ७८ (सम ८६)। °हा अ [°धा] आठ प्रकार का (पि ४५१)।

°अट्ठ न [काष्ठ] काठ, लकड़ी (प्रयौ ७४)।

अट्ठंग वि [अष्टाङ्ग] जिसका आठ अंग हो वह। °णिमित्त न [°निमित्त] वह शास्त्र जिसमें भूमि, स्वप्न, शरीर, स्वर आदि आठ विषयों के फलाफल का प्रतिपादन हो (सूअ १, १२)। °महाणिमित्त न [°महानिमित्त] अनन्तर-उक्त अर्थ (कप्प)।

अट्ठंस वि [अष्टास्र] अष्ट-कोण (सूअ २,१, १५)।

अट्ठदिट्ठि स्त्री [अष्टदृष्टि] योग की आठ दृष्टियाँ, वे ये हैं:—मित्रा, तारा, बला, दीप्रा, स्थिरा, कान्ता, प्रभा और परा (सिरि ६२३)।

अट्ठय न [अष्टक] आठ का समूह (वव १)।

अट्ठा स्त्री [अष्टा] १ मुष्टि, 'चउहिं अट्ठाहिं लोयं करेइ' (जं २; स १८२)। २ मुट्ठीभर चीज (पंचव २)।

अट्ठा स्त्री [आस्था] श्रद्धा, विश्वास (सूअ २,१)।

अट्ठा स्त्री [अर्थ] लिए, वास्ते; 'तइया य मणी दिव्वो, समप्पिओ जीवरक्खट्ठा' (सुर ६, ६; ठा ५, २)। °दंड पुं [°दण्ड] कार्य के लिए की गई हिंसा (ठा ५, २)।

अट्ठाइस वि [अष्टाविंश] अठाईसवाँ (पिंग)।

अट्ठाइस, अट्ठाईस स्त्रीन [अष्टाविंशति] संख्या-विशेष, अठाईस (पिंग; पि ४४२)।

अट्ठाण न [अस्थान] १ अयोग्य स्थान (ठा ६; विसे ८४५)। २ कुत्सित स्थान, वेश्या का मुहल्ला वगैरह (वव२)। ३ अयोग्य, गैरव्याजबी 'अट्ठाणमेयं कुसला वयंति, दगेण जे सिद्धिमुयाहरंति' (सूअ १, ७)।

अट्ठाण न [आस्थान] सभा, सभा-गृह (ठा ५, १)।

अट्ठाणउइ स्त्री [अष्टानवति] अठानबे, ९८ (सम ९९)।

अट्ठाणउय वि [अष्टानवत] अठानबेवाँ, ९८वाँ (पउम ९८, ७८)।

अट्ठाणवइ देखो अट्ठाणउइ (कुप्र २१६)।

अट्ठाणिय वि [अस्थानिक] अपात्र, अनाश्रय; 'अट्ठाणिए होइ बहू गुणाणं, जेणणाणसंकाइ मुसं वएज्जा' (सूअ १, १३)।

अट्ठायमाण वकृ [अतिष्ठत्] नहीं बैठता हुआ (पंचा १६)।

अट्ठार, अट्ठारस त्रि. ब. [अष्टादशन्] संख्या विशेष, अठारह (पउम ३५, ७९; संति ९)। °विह वि [°विध] अठारह प्रकार का (सम ३५)।

अट्ठारसग न [अष्टादशक] १ अठारह का समूह (पंचा १४, ३)। २ वि. जिसका मूल्य अठारह मुद्रा हो वह (पव १११)।

अट्ठारसम वि [अष्टादश] १ अठारहवाँ (पउम १८,५८)। २ न. लगातार आठ दिनों का उपवास (णाया १, १)।

अट्ठारसिय वि [अष्टादशिक] अठारह वर्ष की उम्र का (वव ४)।

अट्ठारह, अट्ठाराह देखो अट्ठार (षड्; पिंग)।

अट्ठावण्ण, अट्ठावन्न स्त्रीन [अष्टापञ्चाशत्] संख्या-विशेष, पचास और आठ, ५८ (पि २६५; सम ७४)।

अट्ठावन्न वि [अष्टापञ्चाश] अठावनवाँ (पउम ५८, १९)।

अट्ठावय पुं [अष्टापद] १ स्वनाम-ख्यात पर्वत-विशेष, कैलास (पण्ह १, ४)। २ न. एक जाति का जुआ (पण्ह १,४)। ३ द्यूत-फलक, जिस पर जुआ खेला जाता है वह (पण्ह १, ४)। ४ सुवर्ण, सोना (धण ८)। °सेल पुं [°शैल] १ मेरु-पर्वत। २ स्वनाम-ख्यात पर्वत-विशेष, जहाँ भगवान् ऋषभदेव निर्वाण पाये थे; 'जम्मि तुमं अहिसित्तो, जत्थ य सिवसुक्खसंपयं पत्तो। ते अट्ठावयसेला, सीसामेला गिरिकुलस्स' (धण ८)।

अट्ठावय न [**अर्थपद**] गृहस्थ (दस ३,४)।

अट्ठावय न [**अर्थपद**] अर्थ-शास्त्र, संपत्ति-शास्त्र (सूअ १,६ पण्ह १,४)।

अट्ठावीस स्त्रीन [**अष्टाविंशति**] अठाईस, २८ (पि ४४२, ४४५)।

अट्ठावीसइ स्त्री [**अष्टाविंशति**] संख्या-विशेष, अठाईस, २८। **°विह** वि [**°विध**] अठाईस प्रकार का (पि ४५१)।

अट्ठावीसइम वि [**अष्टाविंश**] १ अठाईसवाँ (पउम २८, १४१)। २ न. तेरह दिनों के लगातार उपवास (णाया १,१)।

अट्ठासट्ठि स्त्री [**अष्टाषष्टि**] संख्या-विशेष, अठसठ, ६८ (पिंग)।

अट्ठासि, **अट्ठासीइ** स्त्री [**अष्टाशीति**] संख्या-विशेष अठासी, ८८ (पिंग; सम ७३)।

अट्ठासीय वि [**अष्टाशीत**] अठासीवाँ (पउम ८८, ४४)।

अट्ठाह न [**अष्टाह**] आठ दिन (णाया १,८)।

अट्ठाहिया स्त्री [**अष्टाह्निका**] १ आठ दिनों का एक उत्सव (पंचा ८)। २ उत्सव (णाया १,८)।

अट्ठि वि [**अर्थिन्**] प्रार्थी, गरजवाला, अभिलाषी (आचा)।

अट्ठि पुं [**अस्थि**] १ हड्डी, हाड़; 'अयं अट्ठी' (सूअ २, १, १६)। २ फल की गुट्ठी (दस ५,१,७३)।

अट्ठि, **अट्ठिग**, **अट्ठिय** स्त्रीन [**अस्थि, °क**] १ हड्डी, हाड़ (कुमा; पण्ह १, ३)। २ जिसमें बीज उत्पन्न न हुए हों ऐसा अपरिपक्व फल (बृह १)। ३ पुं. कापालिक, 'अट्ठी विज्जा कुच्छियभिक्खू' (बृह १; वव २)। **°मिंजा** स्त्री [**°मिञ्जा**] हड्डी के भीतर का रस (ठा ३,४)। **°सरक्ख** पुं [**°सरजस्क**] कापालिक (वव ७)। **°सेण** न [**°षेण**] १ वत्स-गोत्र की शाखारूप एक गोत्र। २ पुं. इस गोत्र का प्रवर्तक पुरुष और उसकी सन्तान (ठा ७)।

अट्ठिय वि [**अर्थिक**] १ गरजू, याचक, प्रार्थी (सूअ १, २, ३)। २ अर्थ का कारण, अर्थ सम्बन्धी। ३ मोक्ष का हेतु, मोक्ष का कारण-भूत; 'पसन्ना लाभइस्संति विउलं अट्ठियं सुयं' (उत्त १)।

अट्ठिय वि [**आर्थिक**] १ अर्थ का कारण, अर्थ-सम्बन्धी। २ मोक्ष का कारण (उत्त १)।

अट्ठिय वि [**अर्थित**] अभिलषित, प्रार्थित (उत्त १)।

अट्ठिय वि [**अस्थित**] १ अव्यवस्थित, अनियमित (पण्ह १, ३)। २ चंचल, चपल (से २, २४)।

अट्ठिय वि [**आस्थिक**] हड्डी-सम्बन्धी, हाड़ का; 'अट्ठियं रसं सुणआ' (भत्त १४२)।

अट्ठिय वि [**आस्थित**] स्थित, रहा हुआ, (से १, ३५)।

अट्ठिय पुं [**अस्थिक**] १ वृक्ष-विशेष। २ न. फल-विशेष, अस्थिक वृक्ष का फल (दस ५, १, ७३)।

अट्ठिल्लय पुं [**अस्थि**] फल की गुट्ठी (पिंड ६०३)।

अट्ठुत्तर वि [**अष्टोत्तर**] आठ से अधिक (औप)। **°सय** न [**°शत**] एक सौ और आठ (काल)। **°सय** वि [**°शततम**] एक सौ आठवाँ (पउम १०८, ५०)।

अड, **अड** देखो **अट्ठ** = अष्टन् (पिंग; पि ४४२; ४४६; भग; सम १३४)।

अड सक [**अट्**] भ्रमण करना, फिरना; 'अडति संसारे' (पण्ह १,१)। वकृ. **अडमाण** (णाया १, १४)।

अड पुं [**अवट**] १ कूप, इनारा (पाअ)। २ कूप के पास पशुओं के पानी पीने के लिए जो गर्त किया जाता है वह (हे १, २७१)। **°अड** देखो **तड** = तट (गा ११७; से १, ५५)।

अडइ, **अडई** स्त्री [**अटवि, °वी**] भयानक जंगल, वन (सुपा १८१, नाट)।

अडडडिभय न [**दे**] विपरीत मैथुन (दे १, ४२)।

अडखम्म सक [**दे**] संभालना, रक्षण करना। कर्म. 'अडखम्मिज्जंति सवरिआहि वणे' (दे १, ४१)।

अडखम्मिअ वि [**दे**] संभाला हुआ, रक्षित (दे १,४१)।

अडड न [**अटट**] 'अटटांग' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह (ठा ३, ४)।

अडडंग न [**अटटाङ्ग**] संख्या-विशेष, 'तुडिय' या 'महातुडिय' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह (ठा ३, ४)।

अडण न [**अटन**] भ्रमण, घूमना (ठा ६)।

अडणि स्त्री [**दे**] मार्ग, रास्ता (दे १, १६)।

अडपल्लण न [**दे**] वाहन-विशेष (जीव)।

अडयणा, **अडया** स्त्री [**दे**] कुलटा, व्यभिचारिणी स्त्री (दे १, १८; पाअ; गा २०४; ६६२; वज्जा ८६)।

अडयाल न [**दे**] प्रशंसा, तारीफ (पण्ण २)।

अडयाल, **अडयालीस** स्त्रीन [**अष्टचत्वारिंशत्**] अठतालीस, ४८ की संख्या (जीव ३; सम ७०)। **°सय** न [**°शत**] एक सौ और अठतालीस, १४८ (कम्म २, २५)।

अडवडण न [**दे**] स्खलना, रुक-रुक चलना, 'तुरयावि परिस्संता अडवडणं काउमारद्धा' (सुपा ६४५)।

अडव, **अडवी** स्त्री [**अटवि, °वी**] भयंकर जंगल, गहरा वन (पण्ह १, १; महा)।

अडसट्ठि स्त्री [**अष्टषष्टि**] अठसठ (पि ४४२)। **°म** वि [**°तम**] अठसठवाँ (पउम ६८,५१)।

अडाड पुं [**दे**] बलात्कार, जबरदस्ती (दे १, १९)।

अडिल्ल पुं [**अटिल**] एक जाति का पक्षी (पण्ण १)।

अडिल्ला स्त्री [**अडिल्ला**] छन्द-विशेष (पिंग)।

अडोलिया स्त्री [**अटोलिका**] १ एक राज-पुत्री, जो युवराज की पुत्री और गर्दभराज की बहिन थी। २ मूषिका, चूही (बृह १)।

अडोविय वि [**अटोपित**] भरा हुआ (पण्ह १, ३)।

अड्ड वि [**दे**] जो आड़े आता हो, बीच में बाधक होता हो वह; 'सो कोहाडओ अड्डो आवडिओ' (उप १४६ टी)।

अड्डुक्ख सक [**क्षिप्**] फेंकना, गिराना। **अड्डुक्खइ** (हे ४, १४३; षड्)।

अड्डुक्खिय वि [**क्षिप्त**] फेंका हुआ (कुमा)।

अड्डुण न [**अड्डुन**] १ चर्म, चमड़ा। २ ढाल, फलक; 'नवमुग्गवण्णअड्डुणढक्किआजाणुभीसणसरीरा' (सुर २, ५)।

अड्डिअ वि [**दे**] आरोपित (वव १ टी)।

अड्डिया स्त्री [**अड्डिका**] मल्लों की क्रिया-विशेष (विसे ३३५७)।

अड्ढ देखो **अद्ध** = अर्ध (हे २,४१; चंद १०; सुर ६, १२६; महा)।

अड्ढ वि [आढ्य] १ संपन्न, वैभव-शाली, धनी (पाअ; उवा)। २ युक्त, सहित (पंचा १२)। ३ पूर्ण, परिपूर्ण; 'विगुणमवि गुणड्ढं' (प्रासू ७१)।

अड्ढअक्कली स्त्री [दे] देखो **अट्टयक्कली** (दे १, ४५)।

अड्ढत्त वि [आरब्ध] शुरू किया हुआ, प्रारब्ध (से १३, ६)।

अड्ढाइज्ज, अड्ढाइय वि [अर्धतृतीय] ढाई (सम १०१; सुर १,४४; भवि; विस १४०१)।

°**अड्ढिय** वि [कृष्ट] खींचा हुआ (से ५,७२)।

अड्ढुट्ठ वि [अर्धचतुर्थ] साढ़े तीन, 'अड्ढुट्ठाइं सयाइं' (पि ४५०)।

अड्ढेज्ज न [आढ्यत्व] धनीपन, श्रीमंताई (ठा १०)।

अड्ढेज्जा स्त्री [आढ्येज्या] श्रीमंत से किया हुआ सत्कार (ठा १०)।

अड्ढोरुग पुं [अर्धोरुक] जैन साध्वियों के पहनने का एक वस्त्र (ओघ ३१५)।

अढ (अप) देखो **अट्ठ** = अष्टन् (पि ६७;३०४; ४४२; ४४५)।

अढाइस (अप) स्त्रीन [अष्टाविंशति] संख्या-विशेष, अठाईस, २८ (पि ४४५)।

अढारसग देखो **अट्ठारसग** (पिंड ४०२)।

अढारसम देखो **अट्ठारसम** (भग १८; णाया १, १८)।

अण अ [°अ, अन्°] देखो अ° (हे २,१६०; से ११, ६४)।

अण सक [अण्] १ आवाज करना। २ जाना। ३ जानना। ४ समझाना। अणइ (विसे ३४४१)।

अण पुं [अण] १ शब्द, आवाज। २ गमन, गति (विसे ३४४०)। ३ कषाय, क्रोध आदि आन्तर शत्रु (विसे १२८७)। ४ गाली, आक्रोश, अभिशाप (तंदु)। ५ न. पाप (पण्ह १, १)। ६ कर्म (आचा)। ७ वि. कुत्सित, खराब (विसे २७६७ टी)।

अण पुं [अन] देखो **अणंताणुबंधि** (कम्म २, ५; १४; २६)।

अण पुं [अनस्] शकट, गाड़ी (धर्म २)।

अण देखो **अण्ण** = अन्य; 'अणहिअआवि पिआणं' (से ११, १६; २०)।

अण न [ऋण] १ करजा, ऋण (हे १,१४१)। २ कर्म (उत्त १)। °**धारग** वि [°धारक] करजदार, ऋणी (णाया १, १७)। °**बल** वि [°बल] उत्तमर्ण, लेनदार (पण्ह १, २)। °**भंजग** वि [°भञ्जक] देउलिया (पण्ह १,३)।

°**अण** देखो **गण** (से ६, ६६)।

°**अण** देखो **जण**; 'अणणं महिलाअणं रमंतस्स' (गा ४४); 'गुरुअणपरवस पिअ किं (काप्र ६१); 'दासअणाणं' (अच्चु ३२)।

°**अण** देखो **तण** (से ६, ६६)।

°**अणअरद** देखो **अणवरय** (नाट)।

अणइवर वि [अनतिवर] जिससे बढ़कर दूसरा न हो, सर्वोत्तम; 'अच्छराओ...... अणइवरसोमचारुरूवाओ' (औप)।

अणइवुट्ठि स्त्री [अनतिवृष्टि] अवृष्टि, वर्षा का अभाव; 'दुब्भिक्खडमरदुम्मारिईइअइवुट्ठी अणइवुट्ठी य' (संबोध २)।

अणईइ वि [अनीति] ईति-रहित, शलभादि-कृत उपद्रव से रहित 'अणईइपत्ता' (औप)।

अणंग पुं [अनङ्ग] १ काम, विषयाभिलाष, रमणेच्छा (श्रा १६; आव ६)। २ कामदेव, मन्मथ (गा २३३; गउड; कप्पू)। ३ एक राज-कुमार, जो आनन्दपुर के राजा जीतारि का पुत्र था (गच्छ २)। ४ न. विषय-सेवन के मुख्य अंगो के अतिरिक्त स्तन, कुक्षि, मुख आदि अंग (ठा ५, २)। ५ बनावटी लिंग आदि (ठा ५, २)। ६ बारह अंग-ग्रन्थों से भिन्न जैन शास्त्र (विसे ८४४)। ७ वि. शरीर-रहित, अंग-हीन, मृत, 'पहरइ कह णु अणंगो, कह णु हु विधंति कोसुमा बाणा' (गउड);'पईवमज्झे पडई पयंगो, रूवाणुरत्तो हवई अणंगो' (सत्त ४८)। °**घरिणी** स्त्री [°गृहिणी] रति, कामदेव की पत्नी (सुपा ६६७)। °**पडिसेविणी** स्त्री [°प्रतिषेविणी] अमर्यादित रीति से विषय-सेवन करनेवाली स्त्री (ठा ५, २)। °**पविट्ठ** न [°प्रविष्ट] बारह अंग-ग्रन्थों से भिन्न जैन ग्रन्थ (विसे ५२७)। °**बाण** पुं [°बाण] काम के बाण (गा ७४८)। °**लवण** पुं [°लवन] रामचन्द्रजी का एक पुत्र, लव (पउम ६७,६)। °**सर** पुं [°शर] काम के बाण (गा १०००)। °**सेणा** स्त्री [°सेना] द्वारका की एक विख्यात गणिका (णाया १, ५, १६)।

अणंत पुं [अनन्त] चालू अवसर्पिणी काल के चौदहवें तीर्थंकर-देव, 'विमलमणंतं च जिणं' (पडि)। २ विष्णु, कृष्ण (पउम ५, १२२)। ३ शेष नाग (से ६,८६)। ४ जिसमें अनन्त जीव हों ऐसी वनस्पति कन्द-मूल वगैरह (ओघ ४१)। ५ न. केवल-ज्ञान (णाया १, ८)। ६ आकाश (भग २ , २)। ७ वि. नाश-वर्जित, शाश्वत (सूअ १,१,४; पण्ह १,३)। ८ निःसीम, अपरिमित, असंख्य से भी कहीं अधिक (विसे)। ९ प्रभूत, बहुत, विशेष (प्रासू २६; ठा ४,१)। °**काइय** वि [°कायिक] अनन्त जीववाली वनस्पति, कन्द-मूल आदि (धर्म २)। °**काय** पुं [°काय] कन्द-मूल आदि अनन्त जीववाली वनस्पति (पण्ण १)। °**खुत्तो** अ [°कृत्वस्] अनन्त बार (जी ४४)। °**जीव** पुं [°जीव] देखो °**काइय** (पण्ण १)। °**जीविय** वि [°जीविक] देखो °**काइय** (भग ८,३)। °**णाण** न [°ज्ञान] केवल-ज्ञान (दस २)। °**णाणि** वि [°ज्ञानिन्] केवल-ज्ञानी, सर्वज्ञ (सूअ १, ६)। °**दंसि** वि [°दर्शिन्] सर्वज्ञ (पउम ४८, १०५)। °**पासि** वि [°दर्शिन्] ऐरवत क्षेत्र के बीसवें जिन-देव (तित्थ)। °**मिस्सिया** स्त्री [°मिश्रिका] सत्यमिश्र भाषा का एक भेद; जैसे अनन्तकाय से भिन्न प्रत्येक वनस्पति से मिली हुई अनन्तकाय को भी अनन्तकाय कहना (पण्ण ११)। °**मीसय** न [°मिश्रक] देखो °**मिस्सिया** (ठा १०)। °**रह** पुं [°रथ] विख्यात राजा दशरथ के बड़े भाई का नाम (पउम २२, १०१)। °**विजय** पुं [°विजय] भरतक्षेत्र के २४ वें और ऐरवत क्षेत्र के बीसवें भावी तीर्थंकर का नाम (सम १५४)। °**वीरिय** वि [°वीर्य] १ अनन्त बलवाला। २ पुं. एक केवलज्ञानी मुनि का नाम (पउम १४,१५८)। ३ एक ऋषि, जो कार्तवीर्य के पिता थे (आचू १)। ४ भरतक्षेत्र के एक भावी तीर्थंकर का नाम (ती २१)। °**संसारिय** वि [°संसारिक] अनन्त काल तक संसार में जन्म-मरण पानेवाला (उप ३८४)। °**सेण** पुं [°सेन] १ चौथा

कुलकर (सम १५०)। २ एक अन्तकृद् मुनि (अंत ३)।

अणंतइ पुं [अनन्तजित्] चालू काल के चौदहवें जिन-देव; (पउम ५, १४८)।

अणंतग } १ देखो **अणंत** (ठा ५,३)। २ न. **अणंतय** } वस्त्र-विशेष (ओघ ३६)। ३ पुं. ऐरवत क्षेत्र के एक जिनदेव (सम १५३)।

अणंतय न [अनन्तक] वस्त्र, कपड़ा (पव २)।

अणंतर वि [अनन्तर] १ व्यवधान-रहित, अव्यवहित; 'अणंतरं चयं चइत्ता' (णाया १,८)। २ पुं. वर्तमान समय (ठा १०)। ३ क्रिवि. बाद में, पीछे (विपा १, १)।

अणंतरहिय वि [अनन्तर्हित] १ अव्यवहित, व्यवधान-रहित (आचा)। २ सजीव, सचित्त, चेतन (निचू ७)।

अणंतसो अ [अनन्तशस्] अनन्त बार (दं ४५)।

अणंताणुबंधि पुं [अनन्तानुबन्धिन्] अनन्त काल तक आत्मा को संसार में भ्रमण करानेवाले कषायों की चार चौकड़ियों में प्रथम चौकड़ी, अतिप्रचंड क्रोध, मान, माया और लोभ (सम १६)।

अणंस वि [अनंश] अखण्ड (धर्मसं ७०६)।

अणक्क पुं [दे] १ एक म्लेच्छ देश। २ एक म्लेच्छ जाति (पण्ह १, १)।

अणक्ख पुं [दे] १ रोष, गुस्सा, क्रोध (सुपा १३;१३०;६१०; भवि)। २ लज्जा (स ३७६)।

अणक्खर न [अनक्षर] श्रुत-ज्ञान का एक भेद—वर्ण के बिना संपर्क के, छींकना, चुटकी बजाना, सिर हिलाना आदि संकेतों से दूसरे का अभिप्राय जानना (णंदि)।

अणगार वि [अनगार] १ जिसने घर-बार त्याग किया हो वह, साधु, यति, मुनि (विपा १, १; भग १७, ३)। २ घर-रहित, भिक्षुक, भीखमँगा (ठा ६)। ३ पुं. भरतक्षेत्र के भावी पाँचवें तीर्थंकर का एक पूर्वभवीय नाम (सम १५४)।

°**सुय** न [°श्रुत] 'सूत्रकृतांग' सूत्र का एक अध्ययन (सूअ २, ५)।

अणगार वि [ऋणकार] १ करजा करनेवाला। २ दुष्ट शिष्य, अपात्र (उत्त १)।

अणगार वि [अनाकार] आकृति-शून्य, आकार-रहित; 'उवलंभव्ववहाराभावओ नाणगारं च' (विसे ६५)।

अणगारि पुं [अनगारिन्] साधु, यति, मुनि (सम ३७)।

अणगारिय वि [आनगारिक] साधु-संबन्धी, मुनि का (विसे २६७३)।

अणगाल पुं [अकाल] दुर्भिक्ष, अकाल (बृह ३)।

अणगिण वि [अनग्न] १ जो नंगा न हो, वस्त्रों से आच्छादित। २ पुं. कल्पवृक्ष की एक जाति, जो वस्त्र देता है (तंदु)।

अणग्घ देखो **अनघ** (कुप्र १)।

अणग्घ वि [ऋणघ्न] ऋण-नाशक, कर्म-नाशक (दंस)।

अणग्घ } वि [अनर्घ्य] १ अमूल्य, बहुमूल्य, **अणग्घेय** } कीमती (आव ४); 'रयणाइं अणग्घेयाइं हुंति पंचप्पयारवण्णाइं' (उप ५६७ टी; स ८०)। २ महान्, गुरु। ३ उत्तम, श्रेष्ठ; 'तं भगवंतं अणहं नियसत्तीए अणग्घभत्तीए, सक्कारेमि' (विवे ६५; ७१)।

अणघ वि [अनघ] शुद्ध, निर्मल, स्वच्छ (पंचव ४)।

अणच्छ देखो **करिस** = कृष्। अणच्छइ (हे ४, १८७)।

अणच्छिआर वि [दे] अच्छिन्न, नहीं छेदा हुआ (दे १, ४४)।

अणज्ज वि [अन्याय्य] अयोग्य, जो न्याय-युक्त नहीं (पण्ह १, १)।

अणज्ज वि [अनार्य] आर्य-भिन्न, दुष्ट, खराब, पापी (पण्ह १, १; अभि १२३)।

अणज्जव (अप) ऊपर देखो। °**खंड** पुं [°खण्ड] अनार्य देश, (भवि ३१२, २)।

अणज्झवसाय पुं [अनध्यवसाय] अव्यक्त ज्ञान, अति सामान्य ज्ञान (विसे ६२)

अणज्झाय पुं [अनध्याय] १ अध्ययन का अभाव। २ जिसमें अध्ययन निषिद्ध है वह काल (नाट)।

अणट्ट वि [अनार्त] आर्त-ध्यान से रहित, 'अणट्टा किति पव्वए' (उत्त १८, ५०)।

अणट्ठ पुं [अनर्थ] १ नुकसान, हानि (णाया १, ६; उप ६ टी)। २ प्रयोजन का अभाव (आव ६)। ३ वि. निष्कारण, वृथा, निष्फल (निचू १; पण्ह २, १)।

°**दंड** पुं [°दण्ड] निष्कारण हिंसा, बिना ही प्रयोजन दूसरे की हानि (सूअ २, २)।

अणड पुं [दे] जार, उपपति (दे १,१८; षड्)।

अणड्ढ वि [अनर्ध] विभाग-रहित, अखण्ड (ठा ३, ३)।

अणण्ण वि [अनन्य] १ अभिन्न, अपृथग्भूत (निचू १)। २ मोक्ष-मार्ग, 'अणण्णं चरमाणे से ण छणे ण छणावए' (आचा)। ३ असाधारण, अद्वितीय (सुपा १८६; सुर १, ७)।

°**तुल्ल** वि [°तुल्य] असाधारण, अनुपम (उप ६४८ टी)। °**दंसि** वि [°दर्शिन्] पदार्थ को सत्य-सत्य देखनेवाला (आचा)। °**परम** वि [°परम] संयम, इन्द्रिय-निग्रह; 'अणण्णपरमे णाणी, णो पमाए कयाइवि' (आचा)। °**मण**, °**मणस** वि [°मनस्क] एकाग्र चित्तवाला, तल्लीन (औप; पउम ९, ६३)। °**समाण** वि [°समान] असाधारण, अद्वितीय (उप ५६७ टी)।

अणत्त वि [अनात्त] अगृहीत, अस्वीकृत (ठा २,३)।

अणत्त वि [अनार्त्त] अपीडित, 'दव्वावइमाईसुं अत्तमणत्ते गवेसणं कुणइ' (वव १)।

अणत्त वि [ऋणार्त्त] ऋण से पीड़ित (ठा ३, ४)।

अणत्त वि [अनात्र] दुःखकर, सुख-नाशक; 'णेरइआणं भंते! किं अत्ता पोग्गला अणत्ता वा' (भग १४, ९)।

अणत्त न [दे] निर्माल्य, देवोच्छिष्ट द्रव्य (दे १, १०)।

अणत्थ देखो **अणट्ठ** (पउम ६२, ४; श्रा २७; सण)।

अणथंत वकृ [अतिष्ठत्] १ नहीं रहता हुआ। २ अस्त होता हुआ, 'अणथंते दिवसयरे जो चयइ चउव्विहंपि आहारं' (पउम १४ १३४)।

अणन्न देखो **अणण्ण** (सुपा १८६; सुर १, ७; पउम ९, ६३)।

अणपन्निय देखो **अणवण्णिय** (भग १०,३)।

अणप्प वि [अनर्प्य] अर्पण करने के अयोग्य या अशक्य (ठा ६)।

अणप्प वि [अनल्प] अधिक, बहुत (औप)।

अणप्प पुं [अनात्मन्] निज से भिन्न, आत्मा से परे (पउम ३७, २२)। °ज्ज वि [°ज्ञ] १ निर्बोध, मूर्ख। २ पागल, भूताविष्ट, पराधीन (निचू १)। °वसग वि [°वश] परवश, पराधीन (पउम ३७, २२)।

अणप्प पुं. [दे] खड्ग, तलवार (दे १, १२)।

अणप्पिय वि [अनर्पित] १ नहीं दिया हुआ। २ साधारण, सामान्य, अविशेषित (ठा १०)। °णय पुं [°नय] सामान्य-ग्राही पक्ष (विसे)।

अणब्भंतर वि [अनभ्यन्तर] भीतरी तत्त्व को नहीं जाननेवाला, रहस्य-अनभिज्ञ; 'अणब्भंतरा खु अम्हे मदणगदस्स वुत्तंतस्स' (अभि ६१)।

अणभिग्गह न [अनभिग्रह] 'सर्वे देवा वन्द्याः' इत्यादि रूप मिथ्यात्व का एक भेद (श्रा ६)।

अणभिग्गहिय न [अनभिग्रहिक] ऊपर देखो (ठा २, १)।

अणभिग्गहिय वि [अनभिगृहीत] १ कदाग्रह-शून्य (श्रा ६)। २ अस्वीकृत (उत २८)।

अणभिण्ण } वि [अनभिज्ञ] अजान, निर्बोध
अणभिन्न } (अभि १७४; सुपा १६८)।

अणभिलप्प वि [अनभिलाप्य] अनिर्वचनीय, जो वचन से न कहा जा सके (लहुअ ७)।

अणमिस वि [अनिमिष] १ विकसित, खिला हुआ (सुर ३, १४३)। २ निमेष-रहित, पलक-वर्जित (सुपा ३५४)।

अणय पुं [अनय] अनीति, अन्याय (श्रा २७; स ५०१)।

अणयार देखो **अणगार** (पउम ११, ७)।

अणरण्ण पुं [अनरण्य] साकेतपुर का एक राजा जो, पीछे से ऋषि हुआ था (पउम १०, ८७)।

अणरह }
अणरिह } वि [अनर्ह] अयोग्य, नालायक, (कुमा); 'णवि दिज्जंति अणरिहे,
अणरुह } अणरिहत्ते तु इमो होइ' (पंचभा)।

अणरहू स्त्री [दे] नवोढ़ा, दुलहिन (षड्)।

अणरामय पुं [दे] अरति, बेचैनी (दे १, ४५; भवि)।

अणराय वि [अराजक] राज-शून्य, जिसमें राजा न हो वह (बृह १)।

अणराह पुं [दे] सिर में पहनी जाती रंग-बिरंगी पट्टी (दे १, २४)।

अणरिक्क वि [दे] अवकाश-रहित, फुरसत-रहित (दे १, २०)। २ दधि, क्षीर आदि गोरस भोज्य (निचू १६)।

अणरिह } वि [अनर्ह] अयोग्य, नालायक
अणरुह } (णाया १, १)।

अणलं अ [अनलम्] असमर्थ (आचा २, ५, १, ७)।

अणल पुं [अनल] १ अग्नि, आग (कुमा)। २ वि. असमर्थ। ३ अयोग्य, 'अणलो अपच्चलोत्ति य होंति अजोगो व एगट्ठा' (निचू ११)।

अणव वि [ऋणवत्] १ करजदार। पुं. दिवस का छब्बीसवाँ मुहूर्त (चंद)।

अणवकय वि [अनपकृत] जिसका अपकार न किया गया हो वह (उव)।

अणवगल्ल वि [अनवग्लान] ग्लानि-रहित, निरोग;
'सट्ठस्स अणवगल्लस्स, निरुवकिट्ठस्स, जंतुणा एगे ऊसासनीसासे एस पाणुत्ति वुच्चइ' (ठा २, ४)।

अणवच्च वि [अनपत्य] सन्तान-रहित, निर्वंश (सुपा २५६)।

अणवज्ज न [अनवद्य] १ पाप का अभाव, कर्म का अभाव (सूअ १, १, २)। २ वि. निर्दोष, निष्पाप (षड्)।

अणवज्ज वि [अणवर्ज्य] ऊपर देखो (विसे)।

अणवट्ठप्प वि [अनवस्थाप्य] १ जिसको फिरसे दीक्षा न दी जा सके ऐसा गुरु अपराध करनेवाला (बृह ४)। २ न. गुरु प्रायश्चित्त का एक भेद (ठा ३, ४)।

अणवट्ठिय वि [अनवस्थित] १ अव्यवस्थित, अनियमित (प्रासू १३७; सुर ४, ७६)। २ चंचल, अस्थिर; 'अणवट्ठियं च चित्तं' (सुर १२, १३८)। ३ पल्य-विशेष, नाप-विशेष (कम्म ४, ७३)।

अणवण्णिय पुं [अणपन्निक, अणपर्णिक] वानव्यंतर देवों की एक जाति (पण्ह १, ४; भग १०, २)।

अणवत्थ वि [अनवस्थ] अव्यवस्थित, अनियमित, असमंजस (दे १, १३६)।

अणवत्था स्त्री [अनवस्था] १ अवस्था का अभाव (उव)। २ एक तर्क-दोष (विसे)। ३ अव्यवस्था, 'जणणी जायइ जाया, जाया माया पिया य पुत्तो य। अणवत्था संसारे, कम्मवसा सव्वजीवाणं' (पिवे १०७)।

अणवदग्ग वि [दे] १ अनन्त, अपरिमित, निस्सीम (भग १, १)। २ अविनाशी (सूअ २, ५)।

अणवद्द वि [अनवद्य] निष्पाप, निर्दोष, शुद्ध (प्राकृ २१)।

अणवन्निय देखो **अणवण्णिय** (औप)।

अणवयग्ग देखो **अणवदग्ग** (सम १२५; पण्ह १, ३; प्राप)।

अणवयमाण वकृ [अनपवदत्] १ अपवाद नहीं करता हुआ। २ सत्यवादी (वव ३)।

अणवरय वि [अनवरत] १ सतत, निरन्तर, अविच्छिन्न। २ न. सदा, हमेशा (गा २८०; ६)।

अणवराइस (अप) वि [अनन्यादृश] असाधारण, अद्वितीय (कुमा)।

अणवसर वि [अनवसर] आकस्मिक, अचिन्तित (पाअ)।

अणवाह वि [अबाध] बाधा-रहित, निर्बाध (सुपा २६८)।

अणवेक्खिय वि [अनपेक्षित] उपेक्षित, जिसकी परवाह न हो।

अणवेक्खिय वि [अनवेक्षित] १ नहीं देखा हुआ। २ अविचारित, नहीं सोचा हुआ। °कारि वि [°कारिन्] साहसिक। °कारिया स्त्री [°कारिता] साहस कर्म (उप ७६८ टी)।

अणसण न [अनशन] आहार का त्याग, उपवास (सम ११६)।

अणसिय वि [अनशित] उपोषित, उपवासी (आवम)।

अणह वि [अनघ] निर्दोष, पवित्र (औप; गा २७२; से ६, ३)।

अणह वि [दे] अक्षत, क्षति-रहित, व्रण-शून्य (दे १, १३; सुपा ६, ३३; सण)।

अणह न [अनभस्] भूमि, पृथिवी (से ६, ३)।

अणहप्पणय वि [दे] अनष्ट, विद्यमान (दे १, ४८)।

अणहवगय वि [दे] तिरस्कृत, भर्त्सित (षड्)।

अणहा स्त्री [अधुना] इस समय (प्राकृ ८०)।

अणहारय पुं [दे] खल्ल, खला, जिसका मध्य-नीचा हो वह जमीन (दे १, ३८)।

अणहिअअ वि [अहृदय] हृदय-रहित, निष्ठुर, निर्दय (प्राप; गा ४१)।

अणहिगय वि [अनधिगत] १ नहीं जाना हुआ। २ पुं. वह साधु, जिसको शास्त्रों का ज्ञान न हो, अगीतार्थ (वव १)।

अणहिण्ण देखो **अणभिण्ण** (प्राप)।

अणहियास वि [अनध्यास] असहिष्णु, सहन नहीं करनेवाला (उव)।

अणहिल } न [अणहिल्ल] गुजरात देश की
अणहिल्ल } प्राचीन राजधानी, जो आजकल 'पाटन' नाम से प्रसिद्ध है (ती २६; कुमा)। °**वाडय** न [पाटक] देखो **अणहिल** (गु १०; मुणि १०८८८)।

अणहीण वि [अनधीन] स्वतन्त्र, अनायत्त (संग १६१)।

अणहुल्लिय वि [दे] जिसका फल प्राप्त न हुआ हो वह (सम्मत्त १४३)।

अणाइ वि [अनादि] आदि-रहित, नित्य (सम १२५)। °**णिहण, निहण** वि [°निधन] आद्यन्त-वर्जित, शाश्वत (उव; सम्म ६५; श्राव ४)। °**मंत,** °**वंत** वि [मत्] अनादि काल से प्रवृत्त (पउम ११८, ३२; भवि)।

अणाइज्ज वि [अनादेय] १ अनुपादेय, ग्रहण करने के अयोग्य। २ नाम-कर्म का एक भेद, जिसके उदय से जीव का वचन, युक्त होने पर भी ग्राह्य नहीं समझा जाता है (कम्म १,२७)।

अणाइय वि [अनादिक] आदि-रहित, नित्य (सम १२५)।

अणाइय वि [अज्ञातिक] स्वजन-रहित, अकेला (भग १, १)।

अणाइय वि [अणातीत] पापी, पापिष्ठ (भग १, १)।

अणाइय पुं [ऋणातीत] संसार, दुनिया (भग १, १)।

अणाइय वि [अनादृत] जिसका आदर न किया गया हो वह (उप ८३३ टी)।

अणाइल वि [अनाविल] १ अकलुषित, निर्मल (पण्ह २, १)।

अणाईअ देखो **अणाइय** (उप १०३१ टी; पि ७०)।

अणाउ } पुं [अनायुष्क] १ जिन-देव (सूत्र
अणाउय } १, ६)। २ मुक्तात्मा, सिद्ध (ठा १)।

अणाउल वि [अनाकुल] अव्याकुल, धीर (सूत्र १, २, २; णाया १, ८)।

अणाउत्त वि [अनायुक्त] उपयोग-शून्य, बे-ख्याल, असावधान (ओघ)।

अणाएज्ज देखो **अणाइज्ज** (सम १५६)।

अणागय पुं [अनागत] १ भविष्य काल, 'अणागयमपस्संता, पच्चुप्पन्नगवेसगा। ते पच्छा परितप्पंति, खीणे आउम्मि जोव्वणे' (सूत्र १,३,४)। २ वि. भविष्य में होनेवाला (सूत्र १,२)। °**द्धा** स्त्री [°द्धा] भविष्य काल (नव ४२)।

अणागलिय वि [अनर्गलित] नहीं रोका हुआ (उवा)।

अणागलिय वि [अनाकलित] १ नहीं जाना हुआ, अलक्षित (णाया १,६)। २ अपरिमित, 'अणागलियतिव्वचंडरोसं सप्परूवं विउव्वइ' (उवा)।

अणागार वि [अनाकार] १ आकार-रहित, आकृति-शून्य (ठा १०)। २ विशेषता-रहित (कम्म ४,१२)। ३ न. दर्शन, सामान्य ज्ञान (सम ६५)।

अणाजीव वि [अनाजीव] १ आजीविका-रहित। २ आजीविका की इच्छा नहीं रखने-वाला। ३ निःस्पृह, निरीह (दस ३)।

अणाजीवि वि [अनाजीविन्] ऊपर देखो, 'अगिलाई अणाजीवी' (पडि; निचू १)।

अणाड पुं [दे] जार, उपपति (दे १, १८)।

अणाढिय वि [अनादृत] १ जिसका आदर न किया गया हो वह, तिरस्कृत (आव ३)। २ पुं. जम्बूद्वीप का अधिष्ठायक एक देव (ठा २,३)। ३ स्त्री. जम्बूद्वीप के अधिष्ठायक देव की राज-धानी (जीव ३)।

अणाणुगामिय वि [अनानुगामिक] १ पीछे नहीं जानेवाला (ठा ५,१)। २ न. अवधि-ज्ञान का एक भेद (णंदि)।

अणादि देखो **अणाइ** (स ६८३)।

अणादिय } देखो **अणाइय** (इक; पण्ह १,१;
अणादीय } ठा ३,१)।

अणादेज्ज देखो **अणाइज्ज** (पण्ह १, ३)।

अणाभिग्गह न [अनाभिग्रह] मिथ्यात्व का एक भेद (पंच ४, २)।

अणाभोग पुं [अनाभोग] १ अनुपयोग, बे-ख्याली, असावधानी (श्राव ४)। २ न. मिथ्यात्व-विशेष (कम्म ४, ५१)।

अणामिय वि [अनामिक] १ नाम-रहित। २ पुं. असाध्य रोग (तंदु)। ३ स्त्री. कनिष्ठांगुली के ऊपर की अंगुली।

अणाय वि [अज्ञात] नहीं जाना हुआ, अपरि-चित (पउम २४, १७)।

अणाय पुं [अनाक] मर्त्यलोक, मनुष्य-लोक (से १, १)।

अणाय पुं [अनात्मन्] आत्म-भिन्न; आत्मा से परे (सम १)।

अणायग वि [अनायक] नायक-रहित (पउम ९६, ७०)।

अणायग वि [अज्ञातक] स्वजन-रहित, अकेला (निचू ६)।

अणायग वि [अज्ञायक] अजान, निर्बोध (निचू ११)।

अणायतण } न [अनायतन] १ वेश्या आदि
अणाययण } नीच लोगों का घर (दस ५,१)। २ जहाँ सज्जन पुरुषों का संसर्ग न होता हो वह स्थान (पण्ह २, ४)। ३ पतित साधुओं का स्थान (श्राव ३)। ४ पशु, नपुंसक वगैरह के संसर्गवाला स्थान (ओघ ७६३)।

अणायत्त वि [अनायत्त] पराधीन (पउम २६, २६)।

अणायर पुं [अनादर] अ-बहुमान, अपमान (पाअ)।

अणायरण न [अनाचरण] अनाचार, खराब आचरण।

अणायरणया स्त्री [अनाचरण] ऊपर देखो (सम ७१)।

अणायरिय देखो अणज्ज = अनार्य (पण्ह १, १; पउम १४, ३०)।

अणायार देखो अणगार = अनाकार (विसे)।

अणायार पुं [अनाचार] १ शास्त्र-निषिद्ध आचरण (स १८८)। २ गृहीत नियमों का जान-बूझ कर उल्लंघन करना, व्रत-भङ्ग (वव १)।

अणारिय देखो अणज्ज = अनार्य (उत्ता)।

अणारिस वि [अनार्ष] जो ऋषि-प्रणीत न हो वह (पउम ११, ८०)।

अणारिस वि [अन्यादृश] दूसरे के जैसा (नाट)।

अणालत्त वि [अनालपित] अनुक्त, अकथित, नहीं बुलाया हुआ (उवा)।

अणालवय पुं [अनालपक] मौन, नहीं बोलना (पाअ)।

अणाव सक [आ + नायय्] मंगवाना, अणावेमि (सिरि ९४६)।

अणावरण वि [अनावरण] १ आवरण-रहित। २ न. केवल-ज्ञान (सम्म ७१)।

अणाविअ वि [आनायित] मंगवाया हुआ (सिरि ६६; ७१८)।

अणाविट्ठि } स्त्री [अनावृष्टि] वर्षा का अभाव
अणावुट्ठि } (पउम २०, ८७; सम ६०)।

अणाविल वि [अनाविल] १ निर्मल, स्वच्छ (गउड)।

अणासंसि वि [अनाशंसिन्] अनिच्छु, निस्पृह (बृह १)।

अणासण देखो **अणसण** (सूअ १,२,१,१४)।

अणासय पुं [अनाश, °क] अनशन, भोजनाभाव; 'खारस्स लोणस्स अणासएणं' (सूअ १, ७, १३)।

अणासव वि [अनाश्रव] १ आश्रव-रहित। २ पुं. आश्रव का अभाव, संवर। ३ अहिंसा, दया (पण्ह २, १)।

अणासिय वि [अनशित] भूखा (सूअ १, ५, २)।

अणाह वि [अनाथ] २ शरण-रहित (निचू ३)। २ स्वामि-रहित, मालिक-रहित। ३ रंक, गरीब, बेचारा (णाया १, ८)। ४ पुं. एक जैन मुनि (उत्त २०)।

अणाहार पुं [अनाहार] एक दिन का उपवास (संबोध ५८)।

अणाहि } वि [अनाधि, °क] मानसिक
अणाहिय } पीड़ा से रहित (से ३, ४४; पि ३६५)।

अणाहिट्ठि पुं [अनाधृष्टि] एक अन्तकृद् मुनि (अन्त ३)।

अणिइण देखो **अणगिण** (विचार २२)।

अणिइय वि [अनियत] १ अनियमित, अव्यवस्थित। २ पुं. संसार (भग ६,३३)।

अणिउंचिय वि [अनिकुञ्चित] टेढ़ा नहीं किया हुआ, सरल (गउड)।

अणिउँत | देखो **अइमुत्त** (दे १, ३८; हे
अणिउँतय | १, १७८; कुमा)।
अणिउँत्तय |

अणिएय वि [अनियत] अनियमित, अप्रतिबद्ध; 'अखिले अगिद्धे अणिएयचारी, अभयंकरे भिक्खू अणाविलप्पा' (सूअ १, ७, २८)।

अणिंदिय वि [अनिन्दित] १ जिसकी निन्दा न की गई हो वह, उत्तम (धर्म १)। २ पुं. किन्नर देव की एक जाति (पराण १)।

अणिंदिय वि [अनिन्द्रिय] १ इंद्रिय-रहित। २ पुं. मुक्त जीव। ३ केवलज्ञानी (ठा १०)। ४ वि. अतीन्द्रिय, जो इंद्रियों से जाना न जा सके; 'नय विजइ तग्गहणे लिंगंपि अणिंदियत्तणओ' (सुर १२,४८; स १६८; विसे १८८२)।

अणिंदिया स्त्री [अनिन्दिता] ऊर्ध्व लोक में रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८)।

अणिक्क वि [अनेक] एक से ज्यादा (नव ४३)। °**वाइ** वि [°वादिन्] अक्रियावादी (ठा ८)।

अणिक्किणी स्त्री [अनीकिनी] ऐसी सेना जिसमें २१८७ हाथी, २१८७ रथ, ६५६१ घोड़े और १०९३५ प्यादें हों (पउम ५६, ६)।

अणिक्खित्त वि [अनिक्षिप्त] नहीं छोड़ा हुआ, अपरित्यक्त, अविच्छिन्न; 'अणिक्खित्तेणं उवोकम्मेणं संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ' (उवा; औप)।

अणिगण } देखो **अणगिण** (जीव ३; सम
अणिगिण } १७)।

अणिग्गह वि [अनिग्रह] स्वच्छन्द, असंयत (पण्ह १, २)।

अणिच्च वि [अनित्य] नश्वर, अस्थायी (नव २४; प्रासू ६५)। °**भावणा** स्त्री [°भावना] सांसारिक पदार्थों की अनित्यता का चिन्तन (पव ६७)। °**णुप्पेहा** स्त्री [°नुप्रेक्षा] देखो पूर्वोक्त अर्थ (ठा ४, १)।

अणिट्ठ वि [अनिष्ट] अप्रीतिकर, द्वेष्य (उव)।

अणिट्ठिय वि [अनिष्ठित] असंपूर्ण (गउड)।

अणिण देखो **अणिरिण** (नाट)।

अणिदा स्त्री [दे. अनिदा] १ बिना ख्याल किये की गई हिंसा (भग १६, ५)। २ चित्त की विकलता। ३ ज्ञान का अभाव (भग १,२)।

अणिमा पुंस्त्री [अणिमन्] आठ सिद्धियों में एक सिद्धि, अत्यन्त छोटा बन जाने की शक्ति (पउम ७, १३६)।

अणिमिस न [अनिमिष] फल-विशेष (दस ५, १, ७३)।

अणिमिस } वि [अनिमिष, °मेष] १ निमेष
अणिमेस } शून्य (सुर ३, १७३)। २ पुं. मत्स्य, मछली (दस ५, १)। ३ देव, देवता (वव १; श्रा १६)। °**नयण** पुं [नयन] देव, देवता (विसे ३४८६)।

अणिय न [अनीक] सैन्य, लश्कर (कप्प)।

अणिय न [अनृत] असत्य, झूठ (ठा १०)।

अणिय न [दे] धार, अग्र-भाग (पण्ह २,२)।

अणिय वि [अनित्य] अस्थिर, अनित्य (उव)।

अणियट्ट पुं [अनिवर्त] १ मोक्ष, मुक्ति (आचा १,५,१)। २ एक महाग्रह (ठा २, ३)।

अणियट्टि वि [अनिवर्तिन्] १ निवृत्त नहीं होनेवाला, पीछे नहीं लौटनेवाला (औप)। २ न. शुक्ल-ध्यान का एक भेद (ठा ४,१)। ३ पुं. एक महाग्रह (चंद २०)। ४ आगामी उत्सर्पिणी काल में होनेवाले एक तीर्थंकर देव का नाम (सम १५४)।

अणियट्टि वि [अनिवृत्ति] १ निवृत्ति-रहित, व्यावृत्ति-वर्जित (कर्म २, २)। २ नववाँ गुणस्थानक (कर्म २)। °**करण** न [°करण] आत्मा का विशुद्ध परिणाम-विशेष (आचा)। °**बादर** न [°बादर] १ नववां गुण-स्थानक। २ नववें गुण-स्थानक में प्रवृत्त जीव (आव ४)।

अणियण देखो **अणगिण** (जीव ३)।

अणियय वि [अनियत] १ अव्यवस्थित, अनियमित (उव)। २ कल्पवृक्ष की एक जाति, जो वस्त्र देती है (ठा १०)।

अणिया देखो **अणिदा** (पिंड)।

अणिया स्त्री [दे] धार, अग्र-भाग, गुजराती में 'अणी', 'संखाणियाइ पइया' (धर्मवि १७)।

अणिरिक वि [दे] परतन्त्र, पराधीन। (काप्र ५४; गा ६६१)।

अणिरिण वि [अनृण] ऋण-वर्जित, उऋण, अनृणी (अभि ४६; चारु ६६)।

अणिरुद्ध वि [अनिरुद्ध] १ अप्रतिहत, नहीं रोका हुआ। (सूअ १, १२)। २ एक अन्तकृद् मुनि (अन्त १)।

अणिल पुं [अनिल] १ वायु, पवन (कुमा)। २ एक अतीत तीर्थंकर का नाम (तित्थ)। ३ राक्षस-वंशीय एक राजा (पउम ५, २६४)।

अणिला स्त्री [अनिला] बाईसवें तीर्थंकर की एक शिष्या (पव ६)।

अणिल्ल न [दे] प्रभात, सबेरा (दे १,१६)।

अणिंस न [अनिश] निरन्तर, सदा, हमेशा (गा २६२, प्रासू २६)।

अणिसट्ठ } **अणिसिट्ठ** } वि [अनिसृष्ट] १ अनिक्षिप्त। २ असंमत, अननुज्ञात। ३ ऐसी भिक्षा, जिसके मालिक अनेक हों और जो सब की अनुमति से ली न गई हो; साधु की भिक्षा का एक दोष (पिंड; औप)।

अणिसीह वि [अनिशीथ] शास्त्र-विशेष, जो प्रकाश में पढ़ा या पढ़ाया जाय (आवम)।

अणिस्सकड वि [अनिश्रीकृत] जिस पर किसी खास व्यक्ति का अधिकार न हो, सर्वसाधारण (धर्म २)।

अणिस्सा स्त्री [अनिश्रा] अनासक्ति, आसक्ति का अभाव (उव)।

अणिस्सिय वि [अनिश्रित] १ अनासक्त, आसक्तिरहित (सूअ १, १६)। २ प्रतिबन्ध-रहित, रुकावटरहित (दस १)। ३ अनाश्रित, किसी के साहाय्य की इच्छा न रखनेवाला (उत्त १६)। ४ न. ज्ञान-विशेष, अवग्रह-ज्ञान का एक भेद, जो लिंग या पुस्तक के बिना ही होता है (ठा ६)।

अणिह वि [अनीह] १ धीर, सहिष्णु (सूअ १,२,२)। २ निष्कपट, सरल (सूअ १,८)। ३ निर्मम, निःस्पृह (आचा)।

अणिह वि [अस्निह] स्नेहरहित (सूअ १,२, २, ३०)।

अणिह वि [दे] १ सदृश, तुल्य। २ न. मुख, मुँह (दे १, ५१)।

अणिहय वि [अनिहत] अहत, नहीं मारा हुआ। °**रिउ** पुं [°**रिपु**] एक अन्तकृद् मुनि (अन्त ३)।

अणीइस वि [अनीदृश] इस माफिक नहीं, विलक्षण (स ३०७)।

अणीय न [अनीक] सेना, लश्कर (औप)।

अणीयस पुं [अनीयस] एक अन्तकृद् मुनि का नाम (अन्त ३)।

अणीस वि [अनीश] असमर्थ (अभि ६०)।

अणीसकड देखो **अणिस्सकड** (धर्म २)।

अणीहारिम वि [अनिर्हारिम] गुफा आदि में होनेवाला मरण-विशेष (भग १३, ८)।

अणु अ [अनु] यह अव्यय नाम और धातु के साथ लगता है और नीचे के अर्थो में से किसी एक को बतलाता है; १ समीप, नजदीक; 'अणुकुंडल' (गउड)। २ लघु, छोटा; 'अणुगाम' (उत्त ३)। ३ क्रम, परिपाटी; 'अणुगुरु' (बृह १)। ४ में, भीतर; 'अणुजत्त' (महा)। ५ लक्ष्य करना, 'अणु जिणं अकारि संगीयं इत्थीहिं' (कुमा); 'अणु धारं संदट्ठभमोत्तिए तुह असिम्मि सच्चविया' (गउड)। ६ योग्य, उचित; 'अणुजुत्ति' (सूअ १,४,१)। ७ वीप्सा, 'अणुदिणं' (कुमा)। ८ बीच का भाग, 'अणुदिसी' (वि ४१३)। ९ अनुकूल, हितकर; 'अणुधम्म' (सूअ १,२,१)। १० प्रतिनिधि, 'अणुप्पभु' (निचू २)। ११ पीछे, बाद; 'अणुमज्जण' (गउड)। १२ बहुत, अत्यंत; 'अणुवंक' (मा ६२)। १३ मदद करना, सहायता करना; 'अणुपरिहारि' (ठा ३,४)। १४ निरर्थक भी इसका प्रयोग होता है, देखो 'अणुक्कम', 'अणुसरिस'।

अणु वि [अणु] १ थोड़ा, अल्प (पण्ह २,३)। २ छोटा (आचा)। ३ पुं. परमाणु (सम्म १३६)। °**मय** वि [°**मत**] उत्तम कुल, श्रेष्ठ वंश (कप्प)। °**विरइ** स्त्री [°**विरति**] देखो **देसविरइ** (कम्म १, १८)।

अणु पुं [दे] धान-विशेष, चावल की एक जाति (दे १, ५)।

°**अणु** स्त्री [तनु] शरीर, 'सुअणु' (गा २६६)।

अणुअ देखो **अणु** = अणु (पाअ)।

अणुअ त्रि [अज्ञ] अजान, मूर्ख (गा १८४, ३४५)।

अणुअ पुं [दे] १ आकृति, आकार। २ पुंस्त्री. धान्य-विशेष (दे १, ५२; श्रा १८)।

अणुअ वि [अनुग] अनुसरण करनेवाला, 'अधम्माणुए' (विपा १, १)।

अणुअ त्रि [अनुज] १ पीछे से उत्पन्न। २ पुं. छोटा भाई। ३ स्त्री. छोटी बहिन (अभि ८२; पउम २८,१०२)।

अणुअंच सक [अनु + कृष्] पीछे खींचना। संकृ. **अणुअंचिवि** (भवि)।

अणुअंप सक [अनु + कम्प्] दया करना। कृ. **अणुअंपणिज्ज** (हास्य १४४)।

अणुअंपा स्त्री [अनुकम्पा] दया, करुणा (से ६, २४; गा १६३)।

अणुअंपि वि [अनुकम्पिन्] दयालु, करुणा करनेवाला (अभि १७३)।

अणुअत्तय वि [अनुवर्त्तक] अनुकूल आचरण करनेवाला, अनुसरण करनेवाला (विसे ३४०२)।

अणुअत्ति देखो **अणुवत्ति** (पुप्फ ३२६)।

अणुअर वि [अनुचर] १ सहायताकारी, सहचर (पाअ)। २ सेवक, नौकर (प्रामा)।

अणुअर वि [अनुचर] अनुसरण-कर्ता (हास्य १२१)।

अणुअल्ल न [दे] प्रभात, सुबह (दे १, १६)।

अणुआ स्त्री [दे] लाठी (दे १, ५२)।

अणुआर पुं [अनुकार] अनुकरण (नाट)।

अणुआरि वि [अनुकारिन्] अनुकरण करनेवाला (नाट)।

अणुआस पुं [अनुकास] प्रसार, विकास (णाया १, १)।

अणुइअ पुं [दे] धान्य-विशेष, चना (दे १, २१)।

अणुइअ देखो **अणुदिय**।

अणुइण्ण वि [अनुकीर्ण] १ व्याप्त, भरा हुआ। २ नहीं गिरा हुआ, अपतित; 'अवाइण्णपत्ता अणुइण्णपत्ता निद्धूयजरढपंडुपत्ता' (औप)।

अणुइण्ण वि [अनुद्गीर्ण] बाहर नहीं निकला हुआ (ओघ)।
अणुइण्ण देखो **अणुचिण्ण**।
अणुइण्ण देखो **अणुदिण्ण**।
अणुऊल वि [अनुकूल] अप्रतिकूल, अनुकूल (गा ५२३)।
अणुऊल सक [अनुकूलय्] अनुकूल करना। भवि. अणुऊलइस्सं (पि ५२८)।
अणुओअ पुं [अनुयोग] १ व्याख्या, टीका, सूत्र का विस्तार से अर्थ-प्रतिपादन (ओघ २)। २ पृच्छा, प्रश्न (अभि ४४)।
अणुओइय वि [अनुयोजित] प्रवर्तित, प्रवृत्त कराया हुआ (णंदि)।
अणुओग देखो **अणुओअ** (विसे ६)।
अणुओग पुं [अनुयोग] सम्बन्ध (गु १७)।
अणुओगि पुं [अनुयोगिन्] सूत्रों का व्याख्याता आचार्य, 'अणुओगी लोगाणं कल संसयणासओ दढं होइ' (पंचव ४)।
अणुओगिअ वि [अनुयोगिक] दीक्षित, मुनि-शिष्य (णंदि)।
अणुओयण न [अनुयोजन] संबन्धन, जोड़ना (विसे १३८९)।
अणुकंप सक [अनु+कम्प्] १ दया करना। २ भक्ति करना। ३ हित करना। वकृ. **अणुकंपंत** (नाट)। कृ. **अणुकंपणिज्ज, अणुकंपणीअ** (अभि ९४; रयण १५)।
अणुकंप वि [अनुकम्प्य] अनुकम्पा के योग्य (दे १, २२)।
अणुकंप, अणुकंपय वि [अनुकम्प, °क] १ दयालु, करुण। २ भक्त, भक्तिमान् (उत्त १२); 'हिआणुकंपएण देवेणं हरिणगमेसिणा' (कप्प)। ३ हितकर, 'आयाणुकंपए णाममेगे, नो पराणुकंपए' (ठा ४. ४)।
अणुकंपण न [अनुकम्पन] १ दया, कृपा (वव ३)। २ भक्ति, सेवा; 'माउअणुकंपणट्ठाए' (कप्प)।
अणुकंपा स्त्री [अनुकम्पा] ऊपर देखो (णाया १, १); 'आयरियणुकंपाए गच्छो अणुकंपिओ महाभागो' (कप्प-टी)। °**दाण** न [°दान] करुणा से गरीबों को अन्न आदि देना, 'अणुकंपादाणं सड्ढयाण न कहिंपि पडिसिद्धं' (धर्म २)।
अणुकंपि वि [अनुकम्पिन्] १ दयालु, कृपालु (माल ७१)। २ भक्ति करनेवाला (सूअ १, ३, २)।
अणुकंपिअ वि [अनुकम्पित] जिस पर अनुकम्पा की गई हो वह (नाट)।
अणुकड्ढ सक [अनु+कृप्] १ खींचना। २ अनुसरण करना। वकृ. **अणुकड्ढमाण, अणुकड्ढेमाण** (विपा १, १; णंदि)।
अणुकड्ढि स्त्री [अनुकृष्टि] अनुवर्तन, अनुसरण (पंच ५)।
अणुकड्ढिय वि [अनुकृष्ट] अनुकृत, अनुसृत (स १८२)।
अणुकप्प पुं [अनुकल्प] १ बड़े पुरुषों के मार्ग का अनुकरण। २ वि. महापुरुषों का अनुकरण करनेवाला, 'णाणचरणड्ढगाणं पुव्वायरियाण अणुकिरित्ति कुणइ, अणुगच्छइ गुणधारी, अणुकप्पं तं वियाणाहि' (पंचभा)।
अणुकम पुं [अनुक्रम] परिपाटी, क्रम (महा)। °**सो** अ [°शस्] क्रम से, परिपाटी से (जी २८)।
अणुकर सक [अनु+कृ] अनुकरण करना, नकल करना। अणुकरेइ (स ४३६)।
अणुकरण न [अनुकरण] नकल (वव ३)।
अणुकह सक [अनु+कथय्] अनुवाद करना, पीछे बोलना।
अणुकहण न [अनुकथन] अनुवाद (सूअ १, १३)।
अणुकार पुं [अनुकार] अनुकरण, नकल (कप्पू)।
अणुकारि वि [अनुकारिन्] अनुकरण करनेवाला, 'किन्नराणुकारिणा महुरगेएण' (महा)।
अणुकिइ स्त्री [अनुकृति] अनुकरण, नकल; पुव्वायरियाणं नाणग्गहणेण य तवोविहाणेसु य अणुकिइं करेइ' (पंचू)।
अणुकिण्ण वि [अनुकीर्ण] व्याप्त, भरा हुआ (पउम ६१, ७)।
अणुकित्तण न [अनुकीर्तन] वर्णन, प्रशंसा, श्लाघा (पउम ६३, ७३)।
अणुकित्ति देखो **अणुकिइ** (पंचभा)।
अणुकुइय वि [अनुकुचित] १ पीछे फेंका हुआ। २ ऊंचा किया हुआ (निचू ८)।
अणुकुण सक [अनु+कृ] अनुकरण करना। अणुकुणइ (विक्र १२९)।
अणुकूल देखो **अणुऊल** (हे २, २१७)।
अणुकूलण न [अनुकूलन] अनुकूल करना, प्रसन्न करना: 'तं कहइ। तम्मज्झे जिट्ठमुणी तच्चित्तणुकूलणत्थं जं' (सुपा २३४)।
अणुकूलि वि [अनुकूलिन्] अनुकूल-कारक, 'सुहथिरजोगाणुकूलिणो भणिया' (संबोध ९)।
अणुक्कंत वि [अन्वाक्रान्त] आचरित, अनुष्ठित (आचा)।
अणुक्कंत वि [अनुक्रान्त] आचरित, विहित, अनुष्ठित; 'एस विही अणुक्कंते माहणेणं मइमया (आचा)।
अणुक्कम सक [अनु+क्रम्] क्रम से कहना। भवि. अणुक्कमिस्सामि (जीवस १)।
अणुक्कम सक [अनु+क्रम्] अतिक्रमण करना। वकृ. **अणुक्कमंत** (सूअ १, ५, १, ७)।
अणुक्कम देखो **अणुकम** (महा; नव १६)।
अणुक्कमण न [अनुक्रमण] गमन, गति, (सूअ १, ५, २, २१)।
अणुक्कुइअ वि [अनुकुचित] थोड़ा संकुचित (पव ६२)।
अणुक्कोस पुं [अनुक्रोश] दया, करुणा (ठा ४, ४)।
अणुक्कोस पुं [अनुत्कर्ष] १ उत्कर्ष का अभाव। २ वि. २ उत्कर्षरहित (भग ८, १०)।
अणुक्खित्त वि [अनुत्क्षिप्त] ऊंचा न किया हुआ, 'दिट्ठं धणुक्खित्तमुहं एसो मग्गो कुलवहूणं' (गा ५२६)।
अणुग वि [अनुग] अनुचर, नौकर (दे ७, ६६)।
अणुग वि [अनुग] अनुसरण-कर्ता (गच्छ ३, ३१)।
अणुगंतव्व देखो **अणुगम** = अनु + गम्।
अणुगंपा स्त्री [अनुकम्पा] करुणा, दया (स १५८)।
अणुगंपिय वि [अनुकम्पित] जिस पर करुणा की गई हो वह (स ४७५)।
अणुगच्छ देखो **अणुगम** = अनु + गम्। अणुगच्छइ; वकृ. **अणुगच्छंत, अणुगच्छमाण**

(नाट; सूत्र १,१४)। कवकृ. °अणुगच्छिज्जंत (णाया १,२)। संकृ. अणुगच्छित्ता (कप्प)।

अणुगच्छण देखो **अणुगमण** (पुप्फ ४०८)।

अणुगच्छिर वि [अनुगामिन्] अनुसरण करनेवाला (सण)।

अणुगज्ज अक [अनु + गर्ज्] प्रतिध्वनि करना, प्रतिशब्द करना। वकृ. **अणुगज्जेमाण** (णाया १, १८)।

अणुगम सक [अनु + गम्] १ अनुसरण करना, पीछे-पीछे जाना। २ जानना, समझना। ३ व्याख्या करना, सूत्र के अर्थों का स्पष्टीकरण करना। कर्म. अणुगम्मइ (विसे ९१३)। ववकृ. **अणुगम्मंत, अणुगम्ममाण** (उप ६ टी; सुपा ७८;३०८)। संकृ. **अणुगम्म** (सूत्र १, १४)। कृ. **अणुगंतव्व** (सुर ७, १७६; पण्ण १)।

अणुगम पुं [अनुगम] १ अनुसरण, अनुवर्त्तन (दे २,६१)। २ जानना, ठीक-ठीक समझना, निश्चय करना (ठा १)। ३ सूत्र की व्याख्या, सूत्र के अर्थ का स्पष्टीकरण (वव १)। ४ अन्वय, एक की सत्ता में दूसरे की विद्यमानता (विसे २९०)। ५ व्याख्या, टीका (विसे १३५७); अणुगम्मइ तेण तहिं, तओ व अणुगमणमेव वाणुगमो। 'अणुणोणुरूवओ वा, जं सुत्तत्थाणमणुसरणं' (विसे ९१३)।

अणुगमण न [अनुगमन] ऊपर देखो।

अणुगमिअ वि [अनुगत] अनुसृत (कुप्र ४३)।

अणुगमिर वि [अनुगन्तृ] अनुसरण करनेवाला (दे ६, १२७)।

अणुगय वि [अनुगत] १ अनुसृत, जिसका अनुसरण किया गया हो वह (पण्ह १, ४)। २ ज्ञात, जाना हुआ (विसे)। ३ अनुवृत्त, जो पूर्व से बराबर चला आया हो (पण्ह १, ३)। ४ अतिक्रान्त (विसे ९५६)।

अणुगर देखो **अणुकर**। अणुगरेइ (स ३३४)। वकृ. **अणुगरिंत** (स ६८)।

अणुगरण देखो **अणुकरण** (कुप्र १७६)।

अणुगवेस सक [अनु + गवेष्] खोजना, शोधना, तलाश करना। अणुगवेसइ (कस)। वकृ. **अणुगवेसेमाण** (भग ८, ५)। कृ **अणुगवेसियव्व** (कस)।

अणुगह देखो **अणुग्गह** = अनु + ग्रह् (नाट)।

अणुगहिअ देखो **अणुगिहिअ** (दे ८, २६)।

अणुगाम पुं [अणुग्राम] १ छोटा गाँव, (उत्त ३)। २ उपपुर, शहर के पास का गाँव (ठा ५, २)। ३ विवक्षित गाँव से दूसरा गाँव, 'गामाणुगामं दुइज्जमाणे' (विपा १, १; औप; आचा)।

अणुगामि } वि [अनुगामिन्, °मिक]
अणुगामिय } १ अनुसरण करनेवाला, पीछे-पीछे जानेवाला (औप)। २ निर्दोष हेतु, शुद्ध कारण (ठा ३, ३)। ३ अवधिज्ञान का एक भेद (कम्म १, ८)। ४ अनुचर, सेवक (सूत्र १, २, ३)।

अणुगारि वि [अनुकारिन्] अनुकरण करनेवाला, नकालची (महा; धर्म ५; स ६३०)।

अणुगिइ स्त्री [अनुकृति] अनुकरण, नकल (श्रा १)।

अणुगिण्ह देखो **अणुग्गह** = अनु + ग्रह। वकृ. **अणुगिण्हमाण, अणुगिण्हेमाण** (निर १, १; णाया १, १६)।

अणुगिद्ध वि [अनुगृद्ध] अत्यन्त आसक्त, लोलुप (सूत्र १, ७)।

अणुगिद्धि स्त्री [अनुगृद्धि] अत्यासक्ति (उत्त ३२)।

अणुगिल सक [अनु + गॄ] भक्षण करना। संकृ. **अणुगिलित्ता** (णाया १, ७)।

अणुगिहीअ वि [अनुगृहीत] जिस पर मेहरबानी की गई हो वह (स १४; १६३)।

अणुगीय वि [अनुगीत] १ पीछे कहा हुआ, अनूदित। २ पूर्व ग्रन्थकार के भाव के अनुकूल किया हुआ ग्रन्थ, व्याख्यान आदि (उत्त १३)। ३ जिसका गान किया गया हो वह, कीर्तित, वर्णित। ४ न. गाना, गीत; 'उज्जाणे···मत्तभिंगाणुगीए' (पउम ३३, १४८)।

अणुगुण वि [अनुगुण] १ अनुकूल, उचित, योग्य (नाट)। २ तुल्य, सदृश गुणवाला;
जाण अलंकारसमो, विहवो
मइलेइ तेवि वड्ढंतो।
विच्छाएइ मियंकं, तुसार-
वरिसो अणुगुणेवि' (गउड)।

अणुगुरु वि [अनुगुरु] गुरु-परम्परा के अनुसार जिस विषय का व्यवहार होता हो वह (बृह १)।

अणुगूल वि [अनुकूल] अनुकूल (स ३७८)।

अणुगेज्झ वि [अनुग्राह्य] अनुग्रह के योग्य, कृपा-पात्र (प्राप)।

अणुगेण्ह देखो **अणुग्गह** = अनु + ग्रह्। अणुगेण्हंतु (वि ५१२)।

अणुग्गह सक [अनु + ग्रह्] कृपा करना, मेहरबानी करना। कृ **अणुग्गहइदव्व, अणुग्गाहिदव्व** (शौ) (नाट)।

अणुग्गह पुं [अनुग्रह] १ कृपा, मेहरबानी (कप्पू)। २ उपकार (औप)। ३ वि. जिस पर अनुग्रह किया जाय वह (वव १)।

अणुग्गह पुं [अनवग्रह] जैन साधुओं को रहने के लिए शास्त्र-निषिद्ध स्थान,
'णो गोयरे णो वणगोणियाणं, णो बद्ध
दुज्झंति य जत्थ गावो।
अण्णत्थ गोणेहिसु जत्थ खुण्णं, स उग्गहो
सेसमणुग्गहो तु' (बृह ३)।

अणुग्गहिअ }
अणुग्गहीअ } वि [अनुगृहीत] जिस पर कृपा की गई हो वह, आभारी (महा; सुपा १६२; स ६७)।
अणुग्गिहीअ }

अणुग्घाइम न [अनुद्घातिम] १ महा-प्रायश्चित का एक भेद (ठा ३,४)। २ वि. महा-प्रायश्चित का पात्र (ठा ३,४)।

अणुग्घाइय वि [अनुद्घातिक] १ अनुद्घातिक नामक महा-प्रायश्चित का पात्र (ठा ५, ३)। २ न. ग्रन्थांश-विशेष, जिसमें अनुद्घातिक प्रायश्चित का वर्णन है (पण्ह २, ५)।

अणुग्घाय वि [अनुद्घात] १ उद्घात-रहित। २ न. निशीथ सूत्र का वह भाग, जिसमें अनुद्घातिक प्रायश्चित्त का विचार है; 'उग्घायमणुग्घायं आरोवण तिविहमो निसीहं तु' (आव ३)।

अणुग्घाय न [अनुद्घात] गुरु-प्रायश्चित्त (वव १)।

अणुग्घायण न [अणोद्घातन] कर्मों का नाश (आचा)।

अणुग्घास सक [अनु + ग्रासय्] खीलाना, भोजन कराना; 'असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा अणुग्घासेज वा अणुपाएज वा' (निसी ७)। वकृ. **अणुग्घासंत** (निचू ७)।

अणुचय पुं [अनुचय] फैलाकर इकट्ठा करना (उप पृ १५)।

अणुचर सक [अनु + चर्] १ सेवा करना। २ पीछे-पीछे जाना, अनुसरण करना। ३ अनुष्ठान करना। अणुचरइ (आरा ६)। अणुचरंति (स १३०)। कर्म. अणुचरिज्जइ। (विसे २५५४)। वकृ. **अणुचरंत** (पुप्फ ३१३) संकृ. **अणुचरित्ता** (चउ १४)।

अणुचर देखो **अणुअर** (उत्त २८)।

अणुचरग वि [अनुचरक] सेवा करनेवाला (पव ६६)।

अणुचरिय वि [अनुचरित] अनुष्ठित, विहित, किया हुआ (कप्प)।

अणुचि सक [अनु + च्यु] मरना, एक जन्म से दूसरे जन्म में जाना। संकृ. **अणुचिऊण** (महा)।

अणुचिंत सक [अनु + चिन्त्] विचारना, याद करना, सोचना। अणुचिंते (संथा ६६)। वकृ. **अणुचिंतेमाण** (णाया १,१)। संकृ. **अणुचीइ, अणुचीति, अणुवीइ** (आचा; सूअ १, १, ३, १३; दस ७)।

अणुचिंतण न [अनुचिन्तन] सोच-विचार, पर्यालोचन (आव ४)।

अणुचिंता स्त्री [अनुचिन्ता] ऊपर देखो (आव ४)।

अणुचिट्ठ सक [अनु + स्था] १ अनुष्ठान करना। २ करना। अणुचिट्ठइ। (महा)।

अणुचिण्ण वि [अनुचीर्ण] १ अनुष्ठित, आचरित, विहित; 'मोहतिगिच्छा य कया, विरियायारो य अणुचिण्णो' (ओघ २४६)। २ प्राप्त, मिला हुआ; 'कायसंफासमणुचिण्णा एगइया पाणा उद्दाइया' (आचा)। ३ परिणमित (जीव १)।

अणुचिण्णव वि [अनुचीर्णवत्] जिसने अनुष्ठान किया हो वह (आचा)।

अणुचिन्न देखो **अणुचिण्ण** (सुपा १६२; रयण ७५; पुप्फ ७५)।

अणुचिय वि [अनुचित] अयोग्य (बृह १)।

अणुचीइ, **अणुचीति** } देखो **अणुचिंत**।

अणुच्च वि [अनुच्च] ऊंचा नहीं, नीचा। °**कुइय** वि [°कुचिक] नीची और अस्थिर शय्या वाला (कप्प)।

अणुच्छहंत वि [अनुत्सहमान] उत्साह नहीं रखता हुआ (पउम १८,१८)।

अणुच्छित्त वि [अनुत्क्षिप्त] नहीं छोड़ा हुआ, अत्यक्त (गउड २३८)।

अणुच्छित्त वि [अनुत्थित] १ गर्व-रहित, विनीत। २ स्फीत, समृद्ध। ३ सब से उन्नत, सर्वोच्च; 'पडिवद्धं नवर तुमे, नरिंदचक्कं पयाववियडंपि। गहवलयमणुच्छित्ते धुवेव्व; परियत्तइ णरिंद' (गउड)।

अणुच्छूढ वि [अनुत्क्षिप्त] अत्यक्त, नहीं छोड़ा हुआ (गा ५२६)।

अणुज पुं [अनुज] छोटा भाई (स ३८८)।

अणुजत्त न [अनुयात्र] यात्रा में, 'अएणया अणुजत्तं निग्गओ पेच्छइ कुसुमियं चूयं' (महा)।

अणुजत्ता स्त्री [अनुयात्रा] निर्गम, निःसरण (पिंड ८८)।

अणुजा सक [अनु + या] अनुसरण करना, पीछे चलना। अणुजाइ (विसे ७१६)।

अणुजाइ वि [अनुयायिन्] अनुसरण करनेवाला (सुपा ४०५)।

अणुजाइ स्त्री [अनुयाति] अनुसरण (धर्मवि ४६)।

अणुजाण न [अनुयान] १ पीछे-पीछे चलना। २ महोत्सव-विशेष, रथयात्रा (बृह १)।

अणुजाण सक [अनु + ज्ञा] अनुमति देना, सम्मति देना। अणुजाणइ (उव)। भूका. अणुजाणित्था (पि ५१७)। हेकृ. **अणुजाणित्तए** (ठा २,१)।

अणुजणण न [अनुज्ञान] अनुमति, सम्मति (सूअ १, ९)।

अणुजाणावण न [अनुज्ञापन] अनुमति लेना, अणुजाणावणविहिणा' (पंचा ६, १३)।

अणुजाणिय वि [अनुज्ञात] सम्मत, अनुमत (सुपा ५८४)।

अणुजाय वि [अनुयात] १ अनुगत, अनुसृत (उप १३७ टी)।

अणुजाय वि [अनुजात] १ पीछे से उत्पन्न। २ सदृश, तुल्य; 'वसभाणुजाए' (सुज १२)।

अणुजीव सक [अनु + जीव्] आश्रय करना। अणुजीवंति (उत्त १८, १४)।

अणुजीवि वि [अनुजीविन्] १ आश्रित, नौकर, सेवक; 'पयईए च्चिय अणुजीविवच्छले' (सुपा ३३७; पात्र; स २४३)। °**त्तण** न [°त्व] आश्रय, नौकरी (पि ५९७)।

अणुजुंज सक [अनु + युज्] प्रश्न करना। कर्म. अणुजुज्जते (धर्मसं २१३)।

अणुजुत्ति स्त्री [अनुयुक्ति] योग्य युक्ति, उचित न्याय (सूअ १, ३, ३)।

अणुजेट्ठ वि [अनुज्येष्ठ] १ बड़े के नजदीक का (आवम)। २ छोटा, उतरता (पउम २२, ७६)।

अणुजोग देखो **अणुओअ** (ठा १०)।

अणुज्ज वि [अनूर्ज] उत्साह-रहित, अनुत्साही, हताश (कप्प)।

अणुज्ज वि [अनोजस्क] तेजरहित, फीका; 'अणुज्जं दीणवयणं विहरइ' (कप्प)।

अणुज्ज वि [अनूद्य] उद्देश्य, लक्ष्य (धर्म १)।

अणुज्जा स्त्री [अनुज्ञा] अनुमति, सम्मति (पउम ३८, २४)।

अणुज्जा देखो **अणोज्जा** (आचा २, १५, ३)।

अणुज्जिय वि [अनूर्जित] बल-रहित, निर्बल (बृह ३)।

अणुज्जुय वि [अनृजुक] असरल, वक्र, कपटी (गा ७८९)।

अणुज्झा सक [अनु + ध्या] चिन्तन करना, ध्यान करना। संकृ. **अणुज्झाइत्ता** (आवम)।

अणुज्झाण न [अनुध्यान] चिन्तन, विचार (आवम)।

अणुझा देखो **अणुज्झा**। वकृ. **अणुझायंत** (कुमा)।

अणुझिअअ वि [दे] १ प्रयत, प्रयत्न-शील। २ जागता, सावधान (षड्)।

अणुझिज्जिर वि [अनुक्षयिन्] क्षीण होनेवाला (वज्जा १, २)।

अणुट्ठ वि [अनुत्थ] नहीं उठा हुआ, स्थित (ओघ ७०)।

अणुट्ठा सक [अनु + स्था] १ अनुष्ठान करना, शास्त्रोक्त विधान करना। २ करना। कृ. **अणु-**

ट्ठियव्व, अणुट्ठेअ (सुपा ५३७; सुर १४, ८५)।

अणुट्ठाइ वि [अनुष्ठायिन्] अनुष्ठान करने-वाला (आचा)।

अणुट्ठाण न [अनुष्ठान] १ कृति। २ शास्त्रोक्त विधान (आचा)।

अणुट्ठाण न [अनुत्थान] क्रिया का अभाव (उवा)।

अणुट्ठावण न [अनुष्ठापन] अनुष्ठान कराना (कस)।

अणुट्ठिय वि [अनुष्ठित] विधि से संपादित, विहित, किया हुआ (षड्; सुर ४, १६६)।

अणुट्ठिय वि [अनुत्थित] १ बैठा हुआ। २ आलसी, प्रमादी (आचा)।

अणुट्ठियव्व देखो **अणुट्ठा**।

अणुट्ठुभ न [अनुष्टुप्] एक प्रसिद्ध छंद, 'पञ्चक्खरगणणाए अणुट्ठुभाणं हवंति दस सहस्सा (सुपा ६५६)।

अणुट्ठेअ देखो **अणुट्ठा**

अणुण देखो **अणुणी**। अणुणह (भवि)।

अणुणंत देखो **अणुणी**।

अणुणय पुं [अनुनय] विनय, प्रार्थना (महा; अभि ११९)।

अणुणाइ वि [अनुनादिन्] प्रतिध्वनि करने वाला, 'गज्जियसद्दस्स अणुणाइणा' (कप्प)।

अणुणाय पुं [अनुनाद] प्रतिध्वनि, प्रतिशब्द (विसे ३२०४)।

अणुणाय वि [अनुज्ञात] अनुमत, अनुमोदित (पंचू)।

अणुणास पुंन [अनुनास] अनुनासिक, जो नाक से बोला जाता है वह अक्षर। २ वि. सानुस्वार, अनुस्वार-युक्त (ठा ७); कागस्सर-मणुणासं च' (जीव ३ टी)।

अणुणासिअ पुं [अनुनासिक] देखो ऊपर का पहला अर्थ (वज्जा ६)।

अणुणी सक [अनु + नी] १ अनुनय करना, विनय करना, प्रार्थना करना। २ समझाना, दिलासा देना, सान्त्वना देना। वकृ. **अणुणंत**; 'पुरोहियं तं कमसोणुणंतं' (उत्त १४; भवि); **अणुणेंत** (गा ६०२)। कवकृ. **अणुणिज्जंत**, **अणुणिज्जमाण**, **अणुणीअमाण** (सुपा ३६७; से २, १६, पि ५३६)।

अणुणीअ वि [अनुनीत] जिसका अनुनय किया गया हो वह (दे ८, ४८)।

अणुणेंत देखो **अणुणी**।

अणुण्णय वि [अनुन्नत] १ नीचा, नम्र (दस ५, १)। २ गर्वरहित, निरभिमानी; 'एत्थवि भिक्खू अणुण्णए विणीए' (सूअ १, १६)।

अणुण्णव सक [अनु + ज्ञापय्] १ अनु-मति देना। २ आज्ञा देना, हुकुम देना। कर्म. अणुण्णविज्जइ (उवा)। वकृ. **अणुण्णवेमाण** (ठा ६)। कृ **अणुण्णवेयव्व** (ओघ ३८५ टी)। संकृ. **अणुण्णवित्ता**, **अणुण्णविय** (आवम; आचा २, २, ६)।

अणुण्णवणया } स्त्री [अनुज्ञापना] १ अनु-
अणुण्णवणा } मति, सम्मति। २ आज्ञा, फरमाइश (सम ४४; ओघ ३८४ टी)।

अणुण्णवणी स्त्री [अनुज्ञापनी] अनुमति-प्रका-शक भाषा, अनुमति लेने का वाक्य (ठा ४,३)।

अणुण्णा स्त्री [अनुज्ञा] १ अनुमति, अनुमोदन (सूअ २,२)। २ आज्ञा। °कप्प पुं [°कल्प] जैन साधुओं के लिए वस्त्र-पात्रादि लेने के विषय में शास्त्रीय विधान (पंचभा)।

अणुण्णा स्त्री [अनुज्ञा] १ पठन-विषयक गुरु-आज्ञा-विशेष (अणु ३)। २ सूत्र के अर्थ का अध्ययन (वव १)।

अणुण्णाय वि [अनुज्ञात] १ जिसको आज्ञा दी गई हो वह। २ अनुमत, अनुमोदित (ठा ३, ४)।

अणुण्ह वि [अनुष्ण] ठंडा, जो गरम नहीं है वह (पि ३१२)।

अणुतड पुं [अनुतट] भेद, पदार्थों का एक जाति का पृथक्करण; जैसे संतप्त लोहे को हथौड़े से पीटने से स्फुलिंग (चिनगारी) पृथक् होते हैं (ठा ५)।

अणुतडिया स्त्री [अनुतटिका] १ ऊपर देखो (पण्ण ११)। २ तलाव, द्रह आदि का भेद (भास ७)।

अणुतप्प अक [अनु+तप्] अनुताप करना, पछताना। अणुतप्पइ (स १८४)।

अणुतप्पि वि [अनुतापिन्] पश्चात्ताप करने-वाला (वव)।

अणुताव सक [अनु + तापय्] तपाना। संकृ. **अणुतावित्ता** (सूअ २, ४, १०)।

अणुताव पुं [अनुताप] पश्चात्ताप (पाअ; स १८४)।

अणुतावय वि [अनुतापक] पश्चात्ताप कराने-वाला (सूअ २, ७, ८)।

अणुतावि देखो **अणुतप्पि** (उप ७२८ टी)।

अणुत्त वि [अनुक्त] अकथित (पंच ५)।

अणुत्तंत देखो **अणुवत्त**।

अणुत्तप्प वि [अनुत्त्रप्य] १ परिपूर्ण शरीर। २ पूर्ण शरीरवाला, 'होइ अणुत्तप्पो सो अवि-गलइंदियपडिपुण्णो' (वव २)।

अणुत्तर वि [अनुत्तर] १ सर्वश्रेष्ठ, सर्वोत्तम (ठा १०)। २ एक सर्वोत्तम देवलोक का नाम (अनु)। ३ छोटा, 'अणुत्तरो भाया' (पउम ६, ४)। °ग्गा स्त्री [°अग्र्या] एक पृथिवी, जहां मुक्त जीवों का निवास है (सूअ १,६)। °णाणि वि-[°ज्ञानिन्] केवलज्ञानी (सूअ १, २, ३)। °विमाण न [°विमान] एक सर्वोत्कृष्ट देवलोक (भग ६,६)। °ोववाइय वि [°ौपपातिक] अनुत्तर देवलोक में उत्पन्न (अनु)। °ोववाइयदसा स्त्री. ब. [°ौपपातिकदशा] नववां जैन अंग-ग्रंथ (अनु)।

अणुत्थाण देखो **अणुट्ठाण** (स ६४६)।

अणुत्थाह्य वि [अनुत्साह] हतोत्साह, निराश (कुमा)।

अणुदत्त पुं [अनुदात्त] नीचे से बोला जाने-वाला स्वर (बृह १)।

अणुदय पुं [अनुदय] १ उदय का अभाव। २ कर्म-फल के अनुभव का अभाव (कम्म २, १३, १४, १५)।

अणुदवि न [दे] प्रभात, सुबह (दे १, १६)।

अणुदिअ वि [अनुदित] जिसका उदय न हुआ हो (भग)।

अणुदिअस न [अनुदिवस] प्रतिदिन, हमेशा (नाट)।

अणुदिज्जंत वि [अनुदीयमान] उदय में न आता हुआ (भग)।

अणुदिण न [अनुदिन] प्रतिदिन, हमेशा (कुमा)।

अणुदिण्ण } वि [अनुदित] १ उदय को
अणुदिन्न } अप्राप्त। २ फल-दान में अतत्पर

(कर्म) (भग १, ३, ३); 'उदिरण = उदित' (भग १, ४, ७ टी)।

अणुदिण्ण } व [अनुदीरित] १ जिसकी **अणुदिन्न** } उदीरणा दूर भविष्य में हो। २ जिसकी उदीरणा भविष्य में न हो (भग १, ३)।

अणुदिय वि [अनुदित] उदय को अप्राप्त 'मिच्छत्तं जमुदिन्नं तं खीणं अणुदियं च उव-संतं' (भग १, ३ टी)।

अणुदियह न [अनुदिवस] प्रतिदिन, हमेशा (सुर १, ११५)।

अणुदिव न [दे] प्रभात, प्रातःकाल (षड्)।

अणुदिसा } स्त्री [अनुदिक्] विदिक्, **अणुदिसी** } ईशान कोण आदि विदिशा (विसे २७०० टी; पि ६८, ४१३, कप्प)।

अणुदिट्ठ वि [अनुदिष्ट] जिसका उद्देश्य न किया गया हो वह (पण्ह २, १)।

अणुद्ध वि [अनूर्ध्व] ऊंचा नहीं, नीचा (कुमा)।

अणुद्धय वि [अनुद्धत] सरल, भद्र, विनयी (उप ७६८ टी)।

अणुद्धरि पुं [अनुद्धरिन्] एक क्षुद्र जन्तु, कुंथु (कप्प)।

अणुद्धिय वि [अनुद्धृत] १ जिसका उद्धार न किया गया हो वह। २ बाहर नहीं निकाला हुआ, 'जं कुणइ भावसल्लं अणुद्धियं इत्थ सव्वदुहमूलं' (श्रा ४०)।

अणुद्धुय वि [अनुद्धूत] अपरित्यक्त, नहीं छोड़ा हुआ (कप्प)।

अणुधम्म पुं [अणुधर्म] गृहस्थ-धर्म (विसे)।

अणुधम्म पुं [अनुधर्म] अनुकूल—हितकर धर्म; 'एसोणुधम्मो मुणिणा पवेइओ' (सूअ १, २, १)। °**चारि** वि [°चारिन्] हित-कर धर्म का अनुयायी, जैन-धर्मी (सूअ १, २, २)।

अणुधम्मिय वि [अनुधार्मिक] धर्म के अनु-कूल, धर्मोचित; 'एयं खु अणुधम्मियं तस्स' (आचा)।

अणुधाव सक [अनु + धाव्] पीछे दौड़ना। वकृ. **अणुधावंत** (से ४, २१)।

अणुधावण सक [अनुधावन] पीछे दौड़ना (सुपा ५०३)।

अणुधाविर वि [अनुधावितृ] पीछे दौड़ने-वाला (उप ७२८ टी)।

अणुनाइ वि [अनुनादिन्] प्रतिध्वनि करने-वाला (कप्प)।

अणुनाय वि [अनुज्ञात] अनुमत, जिसको अनुमति दी गई हो वह; 'आहवणे मोक्कलयं अणुनायाए तए नाह' (सुपा ४७७)।

अणुनास देखो **अणुणास** (जीव ३ टी)।

अणुन्नव देखो **अणुण्णव**। वकृ. **अणुन्नवेमाण** (ठा ५, ३)। कृ. **अणुन्नवेयव्व** (कस)। संकृ. **अणुन्नवेत्ता** (कस)।

अणुन्नवणा देखो **अणुण्णवणा** (ओघ ६३०; कस)।

अणुन्नवणी देखो **अणुण्णवणी** (ठा ४, १)।

अणुन्ना देखो **अणुण्णा** (सुर ४, १३३; प्रासू १८१)।

अणुन्नाय देखो **अणुण्णाय** (ओघ १; महा)।

अणुपंथ पुं [अनुपथ] १ समीप का मार्ग (कस)। २ मार्ग के समीप, रास्ता के पास (बृह २)।

अणुपत्त वि [अनुप्राप्त] प्राप्त, मिला हुआ (सुर ४, २११)।

अणुपन्न वि [अनुपन्न] प्राप्त (कुप्र ४०१)।

अणुपयट्ट वि [अनुप्रवृत्त] अनुसृत, अनुगत (महा)।

अणुपयाण न [अनुप्रदान] दान का बदला प्रतिग्रहण (संबोध ३४)।

अणुपरियट्ट सक [अनुपरि + अट्] घूमना, परिभ्रमण करना। संकृ. **अणुपरियट्टित्ताणं**; 'देवे णं भंते महिड्ढिए.......पभू लवणस-मुद्दं अणुपरियट्टित्ताणं हव्वमागच्छित्तए ?' (भग १८, ७)। कृ. **अणुपरियट्टियव्व** (णाया १, ६)। हेकृ. **अणुपरियट्टेउं** (णाया १, ६)।

अणुपरियट्ट अक [अनुपरि + वृत्] फिरना, फिरते रहना; 'दुक्खाणमेव आवट्टं अणुपरिय-ट्टइ'। (आचा)। वकृ. **अणुपरियट्टमाण** आचा)। संकृ. **अणुपरियट्टित्ता** (औप)।

अणुपरियट्टण न [अनुपर्यटन] परिभ्रमण (सूअ १, १, २)।

अणुपरियट्टण न [अनुपरिवर्तन] परिवर्तन, फिरना (भग १, ६)।

अणुपरिवट्ट देखो **अणुपरियट्ट** = अनुपरि + वृत्। वकृ. **अणुपरिवट्टमाण** (पि २८६)।

अणुपरिवाडि, °**डी** स्त्री [अनुपरिपाटि, °टी] अनुक्रम (से १५, ६६; पउम २०, ११, ३२, १६)।

अणुपरिहारि वि [अणुपरिहारिन्] 'परि-हारी' को मदद करनेवाला, त्यागी मुनि की सेवा-शुश्रूषा करनेवाला (ठा ३, ४)।

अणुपरिहारि वि [अनुपरिहारिन्] ऊपर देखो (ठा ३, ४)।

अणुपवन्न वि [अनुप्रपन्न] प्राप्त (सूअ २, ३, २१)।

अणुपवाएत्तु वि [अनुप्रवाचयितृ] पढ़ाने-वाला, पाठक, उपाध्याय (ठा ५, २)।

अणुपवाय देखो **अणुप्पवाय** = अनुप्र + वाचय्।

अणुपविट्ठ वि [अनुप्रविष्ट] पीछे से प्रविष्ट (णाया १, १; कप्प)।

अणुपविस सक [अनुप्र + विश्] १ पीछे से प्रवेश करना। २ प्रवेश करना, भीतर जाना। अणुपविसइ (कप्प)। वकृ. **अणुप-विसंत** (निवू २)। संकृ. **अणुपविसित्ता** (कप्प)।

अणुपवेस पुं [अनुप्रवेश] प्रवेश, भीतर जाना। (निचू ७)।

अणुपस्स सक [अनु + दृश्] पर्यालोचन करना, विवेचना करना। संकृ. **अणुपस्सिय** (सूअ १, २, २)।

अणुपस्सि वि [अनुदर्शिन्] पर्यालोचक, विवेचक (आचा)।

अणुपाल सक [अनु + पालय्] १ अनुभव करना। २ रक्षण करना। ३ प्रतीक्षा करना, राह देखना। अणुपालेइ (महा); वकृ. 'साया-सोक्खम् **अणुपालंतेण**' (पक्खि); **अणुपालित**, **अणुपालेमाण** (महा)। संकृ. **अणुपालेऊण**, **अणुपालित्ता**, **अणुपालिय** (महा; कप्प; पि ५७०)।

अणुपालण न [अनुपालन] रक्षण, प्रति-पालन (पंचभा)।

अणुपालणा देखो **अणुवालणा** (विसे २५२० टी)।

अणुपालिय वि [अनुपालित] रक्षित, प्रतिपालित (ठा ८)।

अणुपास देखो **अणुपस्स**। वकृ. **अणुपासमाण** (दसचू २)।

अणुपिट्ठ न [अनुपृष्ठ] अनुक्रम, 'अणुपिट्ठसिद्धाइं' (सम्म)।

अणुपिहा देखो **अणुपेहा** (द्रव्य ३५)।

अणुपुंख न [अनुपुङ्ख] मूल तक, अन्त-पर्यन्त; 'अणुपुंखमावडंतावि आवया तस्स ऊसवा हुंति' (कुप्र ३३)।

अणुपुव्व वि [अनुपूर्व] क्रमवार, आनुक्रमिक (ठा ४, ४)। क्रिवि. क्रमशः (पाअ)। °**सो** [शस्] अनुक्रम से (आचा)।

अणुपुव्व न [आनुपूर्व्य] क्रम, परिपाटी, अनुक्रम (राय)।

अणुपुव्वी स्त्री [आनुपूर्वी] ऊपर देखो (पाअ)।

अणुपेक्खा स्त्री [अनुप्रेक्षा] भावना, चिन्तन, विचार (पउम १४, ७७)।

अणुपेहण न [अनुप्रेक्षण] ऊपर देखो (उप १४२ टी)।

अणुपेहा स्त्री [अनुप्रेक्षा] ऊपर देखो (पि ३२३)।

अणुपेहि वि [अनुप्रेक्षिन्] चिन्तन-कर्ता (सूअ १, १०, ७)।

अणुप्पइन्न वि [अनुप्रकीर्ण] एक दूसरे से मिला हुआ, मिश्रित (कप्प)।

अणुप्पणी सक [अनुप्र+णी] १ प्रणय करना। २ प्रसन्न करना। वकृ. **अणुप्पणंत** (उप पृ २८)।

अणुप्पगंथ [अणुप्रग्रन्थ] सन्तोषी, अल्प परिग्रह वाला (ठा ६)।

अणुप्पगंथ वि [अनुप्रग्रन्थ] ऊपर देखो (ठा ६)।

अणुप्पण्ण वि [अनुत्पन्न] अविद्यमान (नीचू ५)।

अणुप्पत्त देखो **अणुपत्त** (कप्प)।

अणुप्पदा सक [अनुप्र+दा] दान देना, फिर-फिर देना। अणुप्पदेइ (कस)। कृ. **अणुप्पदायव्व** (कस)। हेकृ. **अणुप्पदाउं** (उवा)।

अणुप्पदाण न [अनुप्रदान] दान, फिर-फिर दान देना (आव ६)।

अणुप्पभु पुं [अनुप्रभु] स्वामी के स्थानापन्न, प्रतिनिधि (निचू २)।

अणुप्पया देखो **अणुप्पदा**। अणुप्पएइ (कस)। हेकृ. **अणुप्पयाउं** (उवा)।

अणुप्पयाण देखो **अणुप्पदाण** (आचा)।

अणुप्पवत्त सक [अनुप्र+वृत्] अनुसरण करना। हेकृ. **अणुप्पवत्तए** (विसे २२०७)।

अणुप्पवाइत्तु } वि [अनुप्रवाचयितृ]
अणुप्पवाएत्तु } अध्यापक, पाठक, पढ़ानेवाला (ठा ५, १; गच्छ १)।

अणुप्पवाद पुं [अनुप्रवाद] कथन (सूअ २, ७, १३)।

अणुप्पवाय सक [अनुप्र+वाचय्] पढ़ाना। वकृ. **अणुप्पवाएमाण** (जं ३)।

अणुप्पवाय न [अनुप्रवाद] नववां पूर्व, बारहवें जैन अंग-ग्रन्थ का एक अंश-विशेष (ठा ६)।

अणुप्पविट्ठ देखो **अणुपविट्ठ** (कस)।

अणुप्पवित्ति स्त्री [अनुप्रवृत्ति] अनुप्रवेश, अनुगम (विसे २१६०)।

अणुप्पविस देखो **अणुपविस**। अणुप्पविसइ (उवा)। संकृ. **अणुप्पवेसेत्ता** (निचू १)।

अणुप्पवेस देखो **अणुपवेस** (नाट)।

अणुप्पवेसण न [अनुप्रवेशन] देखो **अणुपवेस** (नाट)।

अणुप्पसाद (शौ) सक [अनुप्र+सादय्] प्रसन्न करना। अणुप्पसादेदि (नाट)।

अणुप्पसूय वि [अनुप्रसूत] उत्पन्न, पैदा किया हुआ (आचा)।

अणुप्पाइ वि [अनुपातिन्] युक्त, संबद्ध, संबन्धी (निचू १)।

अणुप्पिय वि [अनुप्रिय] अनुकूल, इष्ट (सूअ १, ७)।

अणुप्पेंत वि [अनुत्प्रयत्] दूर करता, हटाता हुआ;

'जम्मि अविसएणहियत्तणेण ते
गारवं वलग्गंति।
तं विसममणुप्पेंतो गरुयाण विही खलो होइ'
(गउड)।

अणुप्पेच्छ देखो **अणुप्पेह**;

'तह पुव्विं किं न कयं, न वाहए
जेण मे समत्थोवि।
एहिंह किं कस्स व कुप्पिमोत्ति धीरा!
अणुप्पेच्छ' (उव)।

अणुप्पेसिय वि [अनुप्रेषित] पीछे से भेजा हुआ (नाट)।

अणुप्पेह सक [अनुप्र+ईक्ष्] चिन्तन करना, विचारना अणुप्पेहंति (पि ३२३)। कृ. **अणुप्पेहियव्व** (पंसू १)।

अणुप्पेहा स्त्री [अनुप्रेक्षा] चिन्तन, भावना, विचार, स्वाध्याय-विशेष (उत्त २९)।

अणुप्फास पुं [अनुस्पर्श] अनुभाव, प्रभाव; 'लोहस्सेव अणुप्फासो मन्ने अन्नयरामवि' (दस ६)।

अणुफुसिय वि [अनुप्रोञ्छित] पोंछा हुआ, साफ किया हुआ (स ३४४)।

अणुबंध सक [अनु+बन्ध] १ अनुसरण करना। २ संबन्ध बनाये रखना। अणुबंधंति (उत्तर ७१)। वकृ. **अणुबंधंत** (वेणी १८३)। कवकृ. **अणुबंधीअमाण; अणुबंधिज्जमाण** (नाट)। हेकृ. **अणुबंधिदुं** (शौ) (मा ६)।

अणुबंध पुं [अनुबन्ध] १ सततपन, निरन्तरता, विच्छेद का अभाव (ठा ६; उवर १२८)। २ संबन्ध (स १३८; गउड)। ३ कर्मों का संबन्ध (पंचा १५)। ४ कर्मों का विपाक, परिणाम (उवर ४; पंचा १८)। ५ स्नेह, प्रेम (स २७६),

'नयणाण पडउ वज्जं, अहवा वज्जस्स
वड्डिलं किंपि।
अमुणियजणेवि दिट्ठे, अणुबंधं जाणि कुव्वंति'
(सुर ४, २०)। ६ शास्त्र के आरम्भ में कहने लायक अधिकारी, विषय, प्रयोजन और संबन्ध (आव १)। ७ निर्बन्ध, आग्रह (स ४५८)।

अणुबंधअ वि [अनुबन्धक] अनुबन्ध करनेवाला (नाट)।

अणुबंधण न [अनुबन्धन] अनुकूल बन्धन (उत्त २९, ४५; सुख २९, ४५)।

अणुबंधणा स्त्री [अनुबन्धना] अनुसन्धान, विस्मृत अर्थ का सन्धान (पंचा १२,४५)।

अणुबंधि वि [अनुबन्धिन्] अनुबन्धवाला, अनुबन्ध करनेवाला (धर्म २; स १२७)।

अणुबंधिअ न [दे] हिक्का-रोग, हिचकी (दे १, ४४)।

अणुबंधेल्ल वि [अनुबन्धिन्] विच्छेद-रहित, अनुगमवाला, अविनश्वर (उप २३३)।

अणुबज्झ, अणुबद्ध वि [अनुबद्ध] १ बंधा हुआ, संबद्ध (से ११, ६०)। २ सतत, अविच्छिन्न; 'अणुबद्धतिव्ववेरा परोप्परं वेयणं उदीरेंति' (पएह १, १)। ३ व्याप्त (णाया १, २)। ४ प्रतिबद्ध (णाया १, २)। ५ अत्यंत, बहुत; 'अणुबद्धनिरंतरवेयणासु' (पएह १, १)। ६ उत्पन्न (उत्तर ६२)।

अणुबद्ध वि [अनुबद्ध] १ अनुगत (पंचा ६, २७)। २ पीछे बंधा हुआ (सिरि ४४४)।

अणुबूह देखो अणुवूह।

अणुब्भड वि [अनुद्भट] अनुद्धत, अनुल्वण (उत्त २)।

अणुब्भूय वि [अनुद्भूत] अप्रकट, अनुत्पन्न (नाट)।

अणुभअ देखो **अणुभव** = अनुभव (नाट)।

अणुभव सक [अनु + भू] १ अनुभव करना, जानना, समझना। २ कर्मफल को भोगना। अणुभवंति (पि ४७५)। वकृ. **अणुभवंत** (पि ४७५)। संकृ. **अणुभविअ, अणुभवित्ता** (नाट; पएह १, १)। हेकृ. **अणुभविउं** (उत्त १८)।

अणुभव पुं [अनुभव] १ ज्ञान, बोध, निश्चय (पंचा ५)। २ कर्म-फल का भोग (विसे)।

अणुभवण न [अनुभवन] ऊपर देखो (श्राव ४; विसे २०६०)।

अणुभवि वि [अनुभविन्] अनुभव करनेवाला (विसे १६५८)।

अणुभव्व वि [अनुभव्य] आसन्न भव्य (संबोध ५४)।

अणुभाग पुं [अनुभाग] १ प्रभाव, माहात्म्य (सूअ १,५,१)। २ शक्ति, सामर्थ्य (पएए २)। ३ कर्मो का विपाक —फल (सूअ १,५,१)। ४ कर्मो का रस, कर्मो में फल उत्पन्न करने की शक्ति; 'ताण रसो अणुभागो' (कम्म १,२ टी; नव ३१)। °**बंध** पुं [°बन्ध] कर्म-पुद्गलों में फल उत्पन्न करने की शक्ति का बनना (ठा ४, २)।

अणुभाय, अणुभाव पुं [अनुभाव] १-४ ऊपर देखो (प्रासू ३५; ठा ३,३; गउड; आचा; सम ६)। ५ मनोगत भाव की सूचक चेष्टा, जैसे भौंह का चढ़ाना वगैरह (नाट)। ६ कृपा, मेहरबानी (स ३५५)।

अणुभावग वि [अनुभावक] बोधक, सूचक; (आवम)।

अणुभास सक [अनु + भाष्] १ अनुवाद करना, कही हुई बात को उसी शब्द में, शब्दान्तर में या दूसरी भाषा में कहना। २ चिन्तन करना, 'अणुभासइ गुरुवयणं' (आचू ६; वव ३)। वकृ. **अणुभासयंत, अणुभासमाण** (स १८४; विसे २५१२)।

अणुभासण न [अनुभाषण] अनुवाद, उक्त बात का कहना (नाट)।

अणुभासणा स्त्री [अनुभाषणा] ऊपर देखो (ठा ५, ३; विसे २५२० टी)।

अणुभासय वि [अनुभाषक] अनुवादक, अनुवाद करनेवाला (विसे ३२१७)।

अणुभासयंत देखो **अणुभास**।

अणुभुंज सक [अनु + भुज्] भोग करना। वकृ. **अणुभुंजमाण** (सं १६)।

अणुभूइ स्त्री [अनुभूति] अनुभव (विसे १६११)।

अणुभूय वि [अनुभूत] ज्ञात निश्चित (महा)। °**पुव्व** वि [°पूर्व] पहले ही जिसका अनुभव हो गया हो वह (णाया १, १)।

अणुभूस सक [अनु + भूष्] भूषित करना, शोभित करना। अणुभूसेदि (शौ) (नाट)।

अणुमइ स्त्री [अनुमति] अनुमोदन, सम्मति (श्रा ६)।

अणुमंतव्व देखो **अणुमण्ण** (विसे १६६०)।

अणुमग्ग न [दे] पीछे-पीछे, 'एवं विचिंतयंती अणुमग्गेणेव चलिया हं' (सुर ४,१४२; महा)। °**गामि** वि [°गामिन्] पीछे-पीछे जानेवाला (पि ४०५)।

अणुमज्ज सक [अनु + मस्ज्] विचार करना। संकृ. **अणुमज्जित्ता** (जीवस १६६)।

अणुमण्ण, अणुमन्न सक [अनु + मन्] अनुमति देना, अनुमोदन करना। अणुमण्णे, अणुमन्नइ (पि ४५७; महा)। वकृ. **अणुमण्णमाण** (उवर ३१)। संकृ. **अणमन्निऊण** (महा)।

अणुमन्निय, अणुमय वि [अनुमत] अनुमोदित, सम्मत (उप पृ २६१)।

अणुमर अक [अनु + मृ] १ मरना। २ सती होना, पति के मरने से मर जाना; 'जं केवलिणो अणुमरंति' (आउ ३५)। भवि. अणुमरिहिइ (पि ५२२)।

अणुमर अक [अनु + मृ] क्रम से मरना, पीछे-पीछे मरना; 'इय पारंपरमरणे अणुमरइ सहस्ससो जाव' (पिंड २७४)।

अणुमरण न [अनुमरण] ऊपर देखो (गउड)।

अणुमहत्तर वि [अनुमहत्तर] मुखिया का प्रतिनिधि (निचू ३)।

अणुमाण न [अनुमान] १ अटकल-ज्ञान, हेतु के द्वारा अज्ञात वस्तु का निर्णय (गा ३४५; ठा ४, ४)।

अणुमाण न [अनुमान] १ अभिप्राय-ज्ञान (सूअ १,१३,२०)। २ अनुसार (तंदु २७)।

अणुमाण सक [अनु + मानय्] अनुमान करना। संकृ. **अणुमाणइत्ता** (वव १)।

अणुमाय वि [अणुमात्र] बहुत थोड़ा, थोड़ा परिमाणवाला (दस ५, २)।

अणुमाल अक [अनु + मालय्] शोभित होना, चमकना। संकृ. **अणुमालिवि** (भवि)।

अणुमिण सक [अनु + मा] अटकल से जानना। कर्म. अणुमिणिज्जइ (धर्मसं १२१६), अणुमीयए (दसनि ४,३०)।

अणुमेअ वि [अनुमेय] अनुमान के योग्य (मै ७३)।

अणुमेरा स्त्री [अनुमर्यादा] मर्यादा, हद (कस)।

अणुमोइय वि [अनुमोदित] अनुमत, संमत, प्रशंसित (आउर, भवि)।

अणुमोय सक [अनु + मुद्] अनुमति देना, प्रशंसा करना। अणुमोयइ (उव)। अणुमोएमो (चउ ५८)।

अणुमोयग वि [अनुमोदक] अनुमोदन करनेवाला (विसे)।

अणुमोयण न [अनुमोदन] अनुमति, सम्मति, प्रशंसा (उव; पंचा ६)।

अणुम्मुक्क वि [अनुन्मुक्त] नहीं छोड़ा हुआ (पएह १, ४)।

अणुम्मुह वि [अनुन्मुख] अ-संमुख, विमुख, 'किह साहुस्स अणुम्मुहो चिट्ठामि त्ति' (महा)।

अणुय पुं [अणुक] धान्य-विशेष (पव १५६)।

अणुयंपा देखो **अणुकंपा** (गउड; स २१४)।

अणुयत्त देखो **अणुवत्त** = अनु + वृत्। अणुयत्तइ (भवि)। वकृ. **अणुयत्तंत, अणुयत्तमाण** (पंचभा; विसे १४५१)। संकृ. **अणुयत्तिऊण** (गउड)।

अणुयत्त देखो **अणुवत्त** = अनुवृत्त (भवि)।

अणुयत्तणा स्त्री [अनुवर्तना] १ बीमार की सेवा-शुश्रूषा करना (बृह १)। २ अनुसरण। ३ अनुकूल वर्तन (जीव १)।

अणुयत्तिय वि [अनुवृत्त] अनुकूल किया हुआ, प्रसादित (सुपा १३०)।

अणुयरिय वि [अनुचरित] आचरित, अनुष्ठित (णाया १, १)।

अणुया देखो **अणुण्णा** (सूत्र २, १)।

अणुयाव देखो **अणुताव** (स १८३)।

अणुयास पुं [अनुकाश] विशेष विकास (णाया १, १)।

अणुरंगा स्त्री [दे] गाड़ी (बृह १)।

अणुरंगि वि [अनुरङ्गिन्] अनुकरण-कर्ता (सुज १०, ८)।

अणुरंगिय वि [अनुरङ्गित] रंगा हुआ (भवि)।

अणुरंज सक [अनु + रञ्जय्] अनुरागी करना, प्रीणित करना। वकृ. **अणुरंजअंत** (नाट)। संकृ. **अणुरंजिअ** (नाट)।

अणुरंजण न [अनुरञ्जन] राग, आसक्ति (विसे २६७७)।

अणुरंजिएल्लय } वि [अनुरञ्जित] अनुरक्त किया हुआ, अनुरागी बनाया हुआ (जं ३; महा)।
अणुरंजिय }

अणुरक्क वि [अनुरक्त] अनुराग-प्राप्त, प्रेम-प्राप्त (नाट)।

अणुरज्ज अक [अनु + रञ्ज्] अनुरक्त होना, प्रेमी होना; 'अणुरज्जंति खणेणं जुवईउ खणेण पुण विरज्जंति' (महा)।

अणुरत्त देखो **अणुरक्क** (णाया १, १६)।

अणुरसिय वि [अनुरसित] बोलाया हुआ, आहूत (णाया १, ६)।

अणुराइ } वि [अनुरागिन्] अनुराग-वाला, प्रेमी (स ३३०; महा; सुर १३, १२०)।
अणुराइल्ल }

अणुराग पुं [अनुराग] प्रेम, प्रीति (सुर ४, २२८)।

अणुरागय वि [अन्वागत] १ पीछे आया हुआ। २ ठीक-ठीक आया हुआ। ३ न. स्वागत (भग २, १)।

अणुरागि देखो **अणुराइ** (महा)।

अणुराय देखो **अणुराग** (प्रासू १११)।

अणुराहा स्त्री [अनुराधा] नक्षत्र-विशेष (सम ६)।

अणुरुंध सक [अनु + रुध्] १ अनुरोध करना। २ स्वीकार करना। ३ आज्ञा का पालन करना। ४ प्रार्थना करना। ५ अक. अधीन होना। कर्म. अणुरुंधिज्जइ (हे ४, २४८ प्रामा)।

अणुरूअ } वि [अनुरूप] १ योग्य, उचित (से ६, ३६)। २ अनुकूल (सुपा ११२)। ३ सदृश, तुल्य (णाया १, १६)। ४ न. समानता, योग्यता (सम्म)।
अणुरूव }

अणुरोह पुं [अनुरोध] १ प्रार्थना, 'ता ममाणुरोहेण एत्थ घरे निच्चमेव आगंतव्वं' (महा)। २ दाक्षिण्य, दक्षिणता (पाअ)।

अणुरोहि वि [अनुरोधिन्] अनुरोध करनेवाला (स १२१)।

अणुलग्ग वि [अनुलग्न] पीछे लगा हुआ (गा ३४५; सुर ३, २२६; सूक्त ७)।

अणुलद्ध वि [अनुलब्ध] १ पीछे से मिला हुआ। २ फिर से मिला हुआ (नाट)।

अणुलाव पुं [अनुलाप] फिर-फिर बोलना (ठा ७)।

अणुलिंप सक [अनु + लिप्] १ पोतना, लेप करना। २ फिर से पोतना। संकृ. **अणुलिंपित्ता** (पि ५८२)। हेकृ. **अणुलिंपित्तए** (पि ५७८)।

अणुलिंपण न [अनुलेपन] लेप, पोतना (पण्ह २, ३)।

अणुलित्त वि [अनुलिप्त] लिप्त, पोता हुआ (कप्प)।

अणुलिह सक [अनु + लिह्] १ चाटना। २ छूना। वकृ. **अणुलिहंत** (सम १३१); 'गयणयलमणुलिहंतं' (पउम ३६, १२)।

अणुलेवण न [अनुलेपन] १ लेप, पोतना (स्वप्न ६४)। २ फिर से पोतना (पण्ण २)।

अणुलेविय वि [अनुलेपित] लिप्त, पोता हुआ; 'कम्माणुलेविओ सो' (पउम ८२, ७१)।

अणुलोम सक [अनुलोमय्] १ क्रम से रखना। २ अनुकूल करना। संकृ. **अणुलोमइत्ता** (ठा ६)।

अणुलोम न [अनुलोम] १ अनुक्रम, यथाक्रम; 'वत्थं दुहाणुलोमेण तह य पडिलोमओ भवे वत्थं' (सुर १६, ४८)।

अणुलोम वि [अनुलोम] सीधा, अनुकूल (जं २)।

अणुल्लग देखो **अणुल्लय** (सुख ३६, १३०)।

अणुल्लण वि [अनुल्बण] अनुद्धत, अनुद्भट (बृह ३)।

अणुल्लय पुं [अनुल्लक] एक द्वीन्द्रिय क्षुद्र जन्तु (उत्त ३६)।

अणुल्लाव पुं [अनुल्लाप] खराब कथन, दुष्ट उक्ति (ठा ३)।

अणुव पुं [दे] बलात्कार, जबरदस्ती (दे १, १६)।

अणुवइट्ठ वि [अनुपदिष्ट] १ अ-कथित, अ-व्याख्यात। २ जो पूर्व-परम्परा से न आया हो, 'अणुवइट्ठं नाम जं णो आयरियपरंपरागयं' (नीचू ११)।

अणुवउत्त वि [अनुपयुक्त] असावधान (विसे)।

अणुवएस पुं [अनुपदेश] १ अयोग्य उपदेश (पंचा १२)। २ उपदेश का अभाव। ३ स्वभाव (ठा २, १)।

अणुवओग वि [अनुपयोग] १ उपयोग-रहित। २ उपयोग का अभाव, असावधानता (अणु)।

अणुवंक वि [अनुवक्र] अत्यंत वक्र, बहुत टेढ़ा; 'जाव अंगारओ रासिं विअ अणुवंकं परिगमणं ण करेदि' (माल ६२)।

अणुवंदण न [अनुवन्दन] प्रति-नमन, प्रति-प्रणाम (सार्ध ३६)।

अणुवक्क देखो **अणुवंक** (पि ७४)।

अणुवक्ख वि [अनुपाख्य] नाम-रहित, अनिर्वचनीय (बृह १)।

अणुवक्खड वि [अनुपस्कृत] संस्कार-रहित (पाक) (निचू १)।

अणुवच्च सक [अनु + व्रज्] अनुसरण करना, पीछे-पीछे जाना। अणुवच्चइ (हे ४, १०७)।

अणुवच्चिअ वि [अनुव्रजित] अनुसृत (कुमा)।

अणुवजीवि वि [अनुपजीविन्] १ अना-श्रित। २ आजीविका-रहित (पंचा १५)।

अणुवजुत्त वि [अनुपयुक्त] असावधान, ख्याल-शून्य (अभि १३१)।

अणुवज्ज सक [गम्] जाना। अणुवज्जइ (हे ४, १६२)।

अणुवज्ज सक [दे] सेवा-शुश्रूषा करना (दे १, ४१)।

अणुवज्जण न [दे] सेवा-शुश्रूषा (दे १,४१)।

अणुवज्जिअ वि [दे] जिसकी सेवा-शुश्रूषा की गई हो वह (दे १, ४१)।

अणुवज्जिअ वि [दे] गत, गया हुआ (दे १, ४१)।

अणुवट्ट देखो **अणुवत्त**=अनु + वृत्। कृ. **अणुवट्टणीअ** (नाट)।

अणुवट्टि देखो **अणुवत्ति**=अनुवर्तिन् (विसे २४१७)।

अणुवड सक [अनु + पत्] अभिन्न होना। अणुवडइ (उवर ७१)।

अणुवडिअ वि [अनुपतित] पीछे गिरा हुआ (हम्मीर ५०)।

अणुवत्त सक [अनु + वृत्] १ अनुसरण करना। २ सेवा-शुश्रूषा करना। ३ अनुकूल बरतना। ४ व्याकरण आदि के पूर्व सूत्र के पद का, अन्वय के लिए नीचे के सूत्र में जाना। अणुवत्तइ (स ४२)। वकृ. **अणुत्तंत, अणुवत्तंत, अणुवत्तमाण** (प्राप्र; विसे ३५६८; नाट)। कृ. **अणुवट्टणीअ, अणुवत्तणीअ, अणुवत्तियव्व** (नाट; उप १०३१ टी)।

अणुवत्त वि [अनुद्वृत्त] अनुत्पन्न (पिंड १८)।

अणुवत्त वि [अनुवृत्त] १ अनुसृत, अनुगत। २ अनुकूल किया हुआ। ३ प्रवृत्त (वव २)।

अणुवत्तग वि [अनुवर्तक] अनुकूल प्रवृत्ति करनेवाला, सेवा करनेवाला (उव)।

अणुवत्तग वि [अनुवर्तक] अनुसरण-कर्ता (सूअ १, २, २, ३२)।

अणुवत्तण न [अनुवर्त्तन] १ अनुसरण (स २३६)। २ अनुकूल प्रवृत्ति (गा २६५)। ३ पूर्व सूत्र के पद का अन्वय के लिए नीचे के सूत्र में जाना (विसे ३५६८)।

अणुवत्तणा स्त्री [अनुवर्त्तना] ऊपर देखो (उवर १४८)।

अणुवत्तय देखो **अणुवत्तग**; 'अन्नमन्नच्छंदाणु-वत्तया' (णाया १, ३)।

अणुवत्ति स्त्री [अनुवृत्ति] १ अनुसरण (स ४५६)। २ अनुकूल प्रवृत्ति। ३ अनुगम (विसे ७०५)।

अणुवत्ति वि [अनुवर्त्तिन्] अनुकूल प्रवृत्ति करनेवाला, भक्त, सेवक;

'तुह चंडि ! चलणकमलाणुवत्तिणो कह
ण संजमिज्जंति।
सेरिहवहसंकियमहिसहीरमाणेण व जमेण'
(गउड)।

अणुवत्ति वि [अनुवर्त्तिन्] ऊपर देखो (धर्मवि ५२; मोह १०२)।

अणुवम वि [अनुपम] उपमा-रहित, बेजोड़, अद्वितीय (श्रा २७)।

अणुवमा स्त्री [अनुपमा] एक प्रकार का खाद्य द्रव्य (जीव ३)।

अणुवमिय वि [अनुपमित] देखो **अणुवम** (सुपा ६८)।

अणुवय देखो **अणुव्वय** (पउम २, ९२)।

अणुवय सक [अनु + वद्] अनुवाद करना, कहे हुए अर्थ को फिर से कहना। वकृ. **अणु-वयमाण** (आचा)।

अणुवरय वि [अनुपरत] १ असयत, अनि-ग्रही (ठा २, १)। २ क्रिवि. निरन्तर, हमेशा (रयण २५)।

अणुवलद्धि स्त्री [अनुपलब्धि] १ अभाव, अप्राप्ति। २ अभाव-ज्ञान; 'दुविहा अणुवलद्धीउ' (विसे १६८२)।

अणुवलब्भमाण वि [अनुपलभ्यमान] जो उपलब्ध न होता हो, जो जानने में न आता हो (दसनि १)।

अणुवलेवय वि [अनुपलेपक] उपलेप-रहित, अलिप्त (पराह १, २)।

अणुवसंत वि [अनुपशान्त] अशान्त, कुपित (उत १६)।

अणुवसम पुं [अनुपशम] उपशम का अभाव (उव)।

अणुवसु वि [अनुवसु] रागवाला, प्रीतिवाला (आचा)।

अणुवह न [अनुपथ] पीछे, 'कुमराणुवहेण सो लग्गो' (उप ६ टी)।

अणुवहण न [अनुवहन] वहन, 'तवोवहाणं-सुयाणमणुवहणं' (श्रु १३५)।

अणुवहय वि [अनुपहत] अविनाशित (पिंड)।

अणुवहुआ स्त्री [दे] नवोढ़ा स्त्री, दुलहिन (दे १, ४८)।

अनुवाइ वि [अनुपातिन्] १ अनुसरण करनेवाला (ठा ६)। २ सम्बन्ध रखनेवाला (सम १५)।

अणुवाइ वि [अनुवादिन्] अनुवाद करने-वाला, उक्त अर्थ को कहनेवाला (सूअ १, १२; सत्त १४ टी)।

अणुवाइ वि [अनुवाचिन्] पढ़नेवाला, अभ्यासी; 'संपुन्नवीसवरिसो अणुवाई सव्वमु-त्तस्स' (सत्त १४ टी)।

अणुवाएज्ज वि [अनुपादेय] ग्रहण करने के अयोग्य; (आवम)।

अणुवाद देखो **अणुवाय**=अनुवाद (विसे ३५७७)।

अणुवादि देखो **अणुवाइ**=अनुपातिन् (उत्त १६, ६)।

अणुवाय पुं [अनुपात] १ अनुसरण (पण्ण १७)। २ संबन्ध, संयोग (भग १२, ४)। ३ आगमन (पंचा ७)।

अणुवाय पुं [अनुवात] १ अनुकूल पवन (राय)। २ वि. अनुकूल पवन वाला प्रदेश—स्थान (भग १६, ६)।

अणुवाय वि [अनुपाय] उपाय-रहित, निरु-पाय (उप पृ १४)।

अणुवाय पुं [अनुवाद] अनुभाषण, उक्त बात को फिर से कहना (उवा; दे १, १३१)।

अणुवायण न [अनुपातन] अवतारण, उता-रना (धर्म २)।

अणुवायय वि [अनुवाचक] कहनेवाला, अभिधायक, 'पोसहसद्दो रूढीए एत्थ पव्वाणु-वायओ भणिओ' (सुपा ६१६)।

अणुवाल देखो **अणुपाल**। वकृ. **अणुवालेंत** (स २३)। संकृ. **अणुवालिऊण** (स १०२)।

अणुवालण न [अनुपालन] रक्षण, परिपालन (आचा)।

अणुवालणा स्त्री [अनुपालना] १ ऊपर देखो (पंचू)। २ °**कप्प** पुं [°कल्प] साधु-गण के नायक की अकस्मात् मृत्यु हो जाने पर गण की रक्षा के लिए शास्त्रीय विधान (पंचभा)।

अणुवालय वि [अनुपालक] १ रक्षक, परिपालक। २ पुं. गोशालक के एक भक्त का नाम (भग २४, २०)।

अणुवास सक [अनु+वासय्] व्यवस्था करना। अणुवासेज्जासि (आचा)।

अणुवास पुं [अनुवास] एक स्थान में अमुक काल तक रह कर फिर वहीं वास करना (पंचभा)।

अणुवासण न [अनुवासन] १ ऊपर देखो। २ यन्त्र-द्वारा तेल आदि को अपान से पेट में चढ़ाना (णाया १, १३)।

अणुवासणा स्त्री [अनुवासना] ऊपर देखो (पंचभा; णाया १, १३) °**कप्प** पुं [°कल्प] अनुवास के लिए शास्त्रीय व्यवस्था (पंचभा)।

अणुवासग वि [अनुपासक] १ सेवा नहीं करनेवाला। २ पुं. जैनेतर गृहस्थ (निचू ८)।

अणुवासर न [अनुवासर] प्रतिदिन, हमेशा (सुर १, २४१)।

अणुवित्ति स्त्री [अनुवृत्ति] १ अनुकूल वर्तन (कुमा)। २ अनुसरण (उप ८३३ टी)।

अणुविद्ध वि [अनुविद्ध] संबद्ध, जुड़ा हुआ (से ११, १५)।

अणुविस सक [अनु+विश्] प्रवेश करना। अणुविसंति (सिक्खा ७७)।

अणुविहाण न [अनुविधान] १ अनुकरण। २ अनुसरण (विसे २०७)।

अणुवीइ स्त्री [अनुवीचि] अनुकूलता, 'वेयाणुवीइं मा कासि चोइज्जंतो गिलाइ से भुज्जो' (सूअ १, ४, १, १९)।

अणुवीइ, अणुवीई, अणुवीति, अणुवीतिय अ [अनुविचिन्त्य] विचार कर, पर्यालोचना कर (पि ५९३; आचा; दस ७)। देखो अणुचिंत।

अणुवीइत्तु, अणुवीय देखो अणुवीई (सूअ १, १२, २; १, १०, १)।

अणुवूह सक [अनु+बृंह्] अनुमोदन करना, प्रशंसा करना। अणुवूहेइ (कप्प)।

अणुवूहेत्तु वि [अनुबृंहितृ] अनुमोदन करने वाला (ठा ७)।

अणुवेद सक [अनु+वेदय्] अनुभव करना। वकृ. **अणुवेदयंत** (सूअ १, ५, १)।

अणुवेध, अणुवेह पुं [अनुवेध] १ अनुगम, अन्वय, सम्बन्ध (धर्मसं ७१२; ७१५)। २ संमिश्रण (पिंड ५६)।

अणुवेयण न [अनुवेदन] फल-भोग, अनुभव (स ४०३)।

अणुवेल अ [अनुवेल] निरन्तर, सदा (पाअ)।

अणुवेलंधर पुं [अनुवेलन्धर] नाग-कुमार देवों का एक इन्द्र (सम ३३)।

अणुवेह देखो **अणुप्पेह**। वकृ. **अणुवेहमाण** (सूअ १, १०)।

अणुव्वइय वि [अनुव्रजित] अनुसृत (स ६९७)।

अणुव्वज सक [अनु+व्रज्] १ अनुसरण करना। २ सामने जाना। अणुव्वजे (सूअ १, ४, १, ३)।

अणुव्वय न [अणुव्रत] छोटा व्रत, साधुओं के महाव्रतों की अपेक्षा लघु व्रत, जैन गृहस्थ के पालने के नियम (ठा ५, १)।

अणुव्वय न [अनुव्रत] ऊपर देखो (ठा ५, १)।

अणुव्वय पुं [अणुव्रत] श्रावक-धर्म (पंचा १०, ८)।

अणुव्वयण न [अनुव्रजन] अनुगमन (धर्मवि ५४)।

अणुव्वयय वि [अनुव्रजक] अनुसरण करनेवाला, 'अन्नमन्नमणुव्वया' (णाया १, ३)।

अणुव्वया स्त्री [अनुव्रता] पतिव्रता स्त्री (उत्त २०)।

अणुव्वस वि [अनुवश] अधीन, आयत्त, 'एवं तुब्भे सरागतथा अन्नमन्नमणुव्वसा' (सूअ १, ३, ३)।

अणुव्वाण वि [अनुद्वान] १ अ-बन्ध, खुला हुआ (उप २११ टी)। २ स्निग्ध, चिकना; 'पव्वाणं किंचिउव्वाणमेव किंचिच्च होअणुव्वाणं' (ओघ ४८८)।

अणुव्विग्ग वि [अनुद्विग्न] अ-खिन्न, खेद-रहित (णाया १, ८; मा २८५)।

अणुव्विवाग न [अनुविपाक] विपाक के अनुसार, 'एवं तिरिक्खे मणुयासुरेसु चउरंतणंतं तयणुव्विवागं' (सूअ १, ५, २)।

अणुव्वीइय देखो **अणुवीइ** (जीव)।

अणुसंकम सक [अनुसं+क्रम्] अनुसरण करना। अणुसंकमंति (उत्त १३, २५)।

अणुसंग पुं [अनुषङ्ग] १ प्रसंग, प्रस्ताव (प्रासू ३६, भवि)। २ संसर्ग, सोहबत; 'मज्झिमठिई पुण एसा; अणुसङ्गेणं हवन्ति गुण-दोसा' (सट्ठि २८; २७)।

अणुसंगिअ वि [आनुषङ्गिक] प्रासङ्गिक (प्रवि १५)।

अणुसंचर सक [अनुसं+चर्] १ परिभ्रमण करना। २ पीछे चलना। अणुसंचरइ (आचा; सूअ १, १०)।

अणुसंज देखो **अणुसज्ज**। अणुसंजंति (पव ९८)।

अणुसंध सक [अनुसं+धा] १ खोजना, ढूंढना, तलाश करना। २ विचार करना। ३ पूर्वापर का मिलान करना। **अणुसंधेमि** (पि ५००)। संकृ. **अणुसंधिवि** (भवि)।

अणुसंधण, अणुसंधाण न [अनुसंधान] गवेषणा, खोज (संबोध ४४)। २ पूर्वापर की संगति (धर्मसं ३०३)।

अणुसंधण, अणुसंधाण न [अनुसंधान] १ खोज, शोध। २ विचार, चिन्तन; 'अत्ताणुसंधणपरा सुसावगा एरिसा हुंति' (श्रा २०)। ३ पूर्वापर का मिलान (पंचा १२)।

अणुसंधिअ न [दे] अविच्छिन्न हिक्का, निरन्तर हिचकी (दे १, ५९)।

अणुसंभर सक [अनु+स्मृ] याद करना। अणुसंभरइ (दसनि ४, ५५)।

अणुसंवेयण न [अनुसंवेदन] १ पीछे से जानना। २ अनुभव करना (आचा)।

अणुसंसर सक [अनुसं+सृ] गमन करना, भ्रमण करना; 'जो इमाओ दिसाओ वा विदिसाओ वा अणुसंसरइ' (आचा)।

अणुसंसर सक [अनुसं+स्मृ] स्मरण करना, याद करना। अणुसंसरइ (आचा)।

अणुसज्ज अक [अनु+संज्] १ अनुसरण करना, पूर्व काल से कालान्तर में अनुवर्तन

करना। २ प्रीति करना। ३ परिचय करना। अणुसज्जन्ति (स)। भूका. अणुसज्जित्था (भग ६,७)।

अणुसज्जणा स्त्री [अनुसज्जना] अनुसरण, अनुवर्तन (वव १)।

अणुसट्ठ वि [अनुशिष्ट] जिसको शिक्षा दी गई हो वह, शिक्षित (सुर ११, २६)।

अणुसट्ठि वि [अनुशिष्टि] १ शिक्षण, सीख, उपदेश (ठा ३, ३)। २ स्तुति, श्लाघा: 'अणुसट्ठी य थुइ त्ति एगट्ठा' (वव १)। ३ आज्ञा, अनुज्ञा, सम्मति: 'इच्छामो अणुसट्ठिं पव्व जं देह में भयवं' (सुर ६, २०६)।

अणुसमय न [अनुसमय] प्रतिक्षण (भग ४१, १)।

अणुसय पुं [अनुशय] १ पश्चात्ताप, खेद (से २, १६)। २ गर्व, अभिमान (अणु)।

अणुसर सक [अनु + सृ] पीछा करना, अनुवर्तन करना। अणुसरइ (सण)। वकृ. **अणुसरंत** (महा)। कृ. **अणुसरियव्व** (ठा ५, १)।

अणुसर सक [अनु + स्मृ] याद करना, चिन्तन करना। वकृ. **अणुसरंत** (पउम ९९, ७) कृ. **अणुसरियव्व** (आवम)।

अणुसरण न [अनुसरण] १ पीछा करना। २ अनुवर्तन (विसे ६१३)।

अणुसरण न [अनुस्मरण] अनुचिन्तन, याद करना (पंचा १; स २३१)।

अणुसरि देखो **अणुसारि**; 'आसायण परिहारो भत्ती सत्तीइ पवयणाणुसरी' (संबोध ४)।

अणुसरिउ वि [अनुस्मर्तृ] याद करनेवाला (विसे ९२)।

अणुसरिच्छ, **अणुसरिस** } वि [अनुसदृश] १ समान, तुल्य (पउम ६४, ७०)। २ योग्य, लायक (से ११, ११५; पउम ८५, २६)।

अणुसार पुं [अनुस्वार] १ वर्ण-विशेष, बिन्दी। २ वि. अनुनासिक वर्ण (विसे ५०१)।

अणुसार पुं [अनुसार] अनुसरण, अनुवर्तन (गउड; भवि)। २ माफिक, मुताबिक; 'कहियाणुसारओ सव्वमुवगयं सुमइणा सम्मं' (सार्ध १४४)।

अणुसारि वि [अनुसारिन्] अनुसरण करने वाला (गउड; स १०१; सार्ध २९)।

अणुसास सक [अनु + शास्] १ सीख देना, उपदेश देना। २ आज्ञा करना। ३ शिक्षा करना, सजा देना। अणुसासंति (पि १७२)। वकृ. **अणुसासंत** (पि ३९७)। कवकृ. **अणुसासिज्जंत** (सुपा २७३)। कृ. **अणुसासणिज्ज** (कुमा)। हेकृ. **अणुसासिउं** (पि ५७६)।

अणुसासण न [अनुशासन] १ सीख, उपदेश (सूअ १, १५)। २ आज्ञा, हुकुम (सूअ १, २, ३)। ३ शिक्षा, सजा (पंचा ६)। ४ अनुकम्पा, दया; 'अणुकंप त्ति वा अणुसासणं ति वा एगट्ठा' (पंचचू)।

अणुसासणा स्त्री [अनुशासना] ऊपर देखो (णाया १, १३)।

अणुसासिय वि [अनुशासित] शिक्षित (उत्त १; पि १७३)।

अणुसिक्खिर वि [अनुशिक्षितृ] सीखनेवाला,
'जं जं करेसि जं जं, जंपसि जह जह
तुमं नियच्छेसि।
तं तं अणुसिक्खिरीए, दीहो दिअहो ण संपडइ'।
(गा ३७८)।

अणुसिट्ठ देखो **अणुसट्ठ** (सूअ १, ३, ३)।

अणुसिट्ठि देखो **अणुसट्ठि** (ओघ १७३; बृह १; उत्त १०)।

अणुसिण वि [अनुष्ण] गरम नहीं वह, ठण्डा (कम्म १, ४६)।

अणुसील सक [अनु + शीलय्] पालन करना, रक्षण करना। **अणुसीलइ** (सण)।

अणुसुत्ति वि [दे] अनुकूल (दे १, २५)।

अणुसुमर सक [अनु + स्मृ] याद करना। अणुसुमरइ (धर्मवि ५६)। प्रयो. अणुसुमरावेइ (धर्मवि ९५)।

अणुसुय अक [अनु + स्वप्] सोने का अनुकरण करना। अणुसुयइ (तंदु १३)।

अणुसूआ स्त्री [दे] शीघ्र ही प्रसव करनेवाली स्त्री (दे १, २३)।

अणुसूय वि [अनुस्यूत] अनुविद्ध, मिला हुआ (सूअ २, ३)।

अणुसूयग वि [अनुसूचक] जासूस की एक श्रेणी,
'सूयग तहाणुसूयग-पडिसूयग-सव्वसूयगा एव।
पुरिसा कयवित्तीया, वसंति सामंतनगरेसु।
महिला कयवित्तीया, वसंति सामंतनगरेसु॥'
(वव १)।

अणुसेढि स्त्री [अनुश्रेणि] १ सीधी लाइन। २ न. लाइनसर (पि ६६; ३०४)।

अणुसोय पुं [अनुस्रोतस्] १ अनुकूल प्रवाह (ठा ४, ४)। २ वि. अनुकूल, 'अणुसोयसुहो लोगो पडिसोओ आसमो सुविहियाणं' (दसचू २)। ३ न. प्रवाह के अनुसार,
'अणुसोयपट्ठिए बहुजणम्मि
पडिसोयलद्धलक्खेणं।
पडिसोयमेव अप्पा, दायव्वो होउकामेणं॥'
(दसचू २)।

अणुसोय सक [अनु + शुच्] सोचना, चिन्ता करना, अफसोस करना। वकृ. **अणुसोयमाण** (सुपा १३३)।

अणुस्सर देखो **अणुसर** = अनु + स्मृ। संकृ. **अणुस्सरित्ता** (सूअ १, ७, १६)।

अणुस्सर देखो **अणुसर** = अनु + सृ। वकृ. **अणुस्सरंत** (स १४०)।

अणुस्सरण न [अनुस्मरण] चिन्तन करना, याद करना (उव; स ५३५)।

अणुस्सार पुं [अनुस्वार] १ अनुस्वार, बिन्दी। २ वि. अनुस्वारवाला अक्षर, अनुस्वार के साथ जिसका उच्चारण हो वह (णंदि; विसे ५०३)।

अणुस्सुय वि [अनुत्सुक] उत्कण्ठा-रहित (सूअ १, ६)।

अणुस्सुय वि [अनुश्रुत] १ अवधारित (उत्त ५)। २ सुना हुआ (सूअ १, २, २)। ३ न. भारत-आदि पुराण-शास्त्र (सूअ १, ३, ४)।

अणुहर सक [अनु + हृ] अनुकरण करना, नकल करना। अणुहरइ (पि ४७७)।

अणुहरिय वि [अनुहृत] जिसका अनुकरण किया गया हो वह, अनुकृत;
'अणुहरियं धीर तुमे, चरियं निययस्स
पुव्वपुरिसस्स।
भरह-महानरवइणो, तिहुयणविक्खाय-कित्तिस्स'
(महा)।

अणुहव सक [अनु + भू] अनुभव करना। अणुहवइ (पि ४७५)। वकृ. **अणुहवमाण** (सुर १, १७१)। कृ. **अणुहवियव्व, अणु-**

हुवर्णाय (पउम १७,१४; सुपा ५८१)। संकृ. अणुहवेऊण, अणुहविउं (प्राकृ; पंचा २)।

अणुहवण न [अनुभवन] अनुभव (स २८७)।

अणुहविय वि [अनुभूत] जिसका अनुभव किया गया हो वह (सुपा ६)।

अणुहारि वि [अनुहारिन्] अनुकरण करने वाला, नक्कालची (कुमा)।

अणुहाव देखो **अणुभाव** (स ४०३; ६५६)।

अणुहियासण न [अन्वध्यासन] धैर्य से सहन करना (जं २)।

अणुहु सक [अनु + भू] अनुभव करना। वकृ. **अणुहुंत** (पउम १०३, १५२)।

अणुहुंज सक [अनु + भुज्] भोग करना, भोगना। अणुहुंजइ (भवि)।

अणुहुत्त देखो **अणुहूअ** (गा ६५६)।

अणुहूअ वि [अनुभूत] १ जिसका अनुभव किया गया हो वह (कुमा)। २ न. अनुभव (से ४, २७)।

अणुहो सक [अनु + भू] अनुभव करना। अणुहोंति (पि ४७५)। वकृ. **अणुहोंत** (पउम १०६, १७)। कवकृ. **अणुहोईअंत, अणुहोइज्जंत, अणुहोइज्जमाण; अणुहोईअमाण** (पड्)। कृ. **अणुहोदव्व** (शौ) (अभि १३१)।

अणूकप्प देखो **अणुकप्प**; 'एत्तो वोच्छं अणूकप्पं' (पंचभा)।

अणूण त्रि [अनून] कम नहीं, अधिक (कुमा)।

अणूय } पुं [अनूप] अधिक जलवाला देश, **अणूव** } जल-बहुल स्थान (विसे १७०३; वव ४)।

अणेअ वि [अनेक] देखो **अणेक** (कुमा अभि २४६)।

अणेकज्झ वि [दे] चञ्चल, चपल (दे १, ३०)।

अणेक } वि [अनेक] एक से अधिक, बहुत **अणेग** } (औप; प्रासू ५३)। °**करण** न [°करण] पर्याय, धर्म, अवस्था (सम्म १०६)। °**राइय** वि [°रात्रिक] अनेक रातों में होने-वाला, अनेक रात संबन्धी (उत्सवादि) (कस)। °**सो अ** [°शस्] अनेक बार (श्रा १४)।

अणेगंत पुं [अनेकान्त] अनिश्चय, नियम का अभाव (विसे)। °**वाय** पुं [°वाद] स्याद्वाद, जैनों का मुख्य सिद्धान्त, सत्व-असत्व आदि अनेक विरुद्ध धर्मों का भी एक वस्तु में सापेक्ष स्वीकार,

'जेण विणा लोगस्सवि, ववहारो
सव्वहा न निव्वडइ।
तस्स भुवणेक्कगुरुणो नमो अणेगंतवायस्स'
(सम्म १६६)।

अणेगंतिय त्रि [अनैकान्तिक] ऐकान्तिक नहीं, अनिश्चित, अनियमित (भग १, १)।

अणेगावाइ वि [अनेकवादिन्] पदार्थों को सर्वथा अलग-अलग माननेवाला, अक्रियावाद-मत का अनुयायी (ठा ८)।

अणेच्छंत वि [अनिच्छत्] नहीं चाहता हुआ (उप ७६८ टी)।

अणेज वि [अनेज] निश्चल, निष्कम्प (आक)।

अणेज्ज वि [अज्ञेय] जानने के अयोग्य, जानने के अशक्य (महा)।

अणेलिस वि [अनीदृश] अनुपम, असाधारण, 'जे धम्मं सुद्धमक्खाति पडिपुण्णमणेलिसं' (सूअ १, ११)।

अणेवंभूय वि [अनेवम्भूत] विलक्षण, विचित्र 'अणेवंभूयंपि वेयणं वेदंति' (भग ५,५)।

अणेस देखो **अण्णेस**। वकृ. **अणेसंत** (नाट)।

अणेसण न [अन्वेषण] खोज, तलाश (महा)।

अणेसणा स्त्री [अनेषणा] एषणा का अभाव (उवा)।

अणेसणिज्ज वि [अनेषणीय] अकल्पनीय, जैन साधुओं के लिए अग्राह्य (भिक्षा-आदि) (ठा ३, १; णाया १, ५)।

अणोउया स्त्री [अनृतुका] जिसको ऋतु-धर्म न आता हो वह स्त्री (ठा ५, २)।

अणोकंत वि [अनवक्रान्त] जिसका पराभव न किया गया हो वह, अजित, 'परवाईहिं अणोकंता' (औप)।

अणोग्गह देखो **अणुग्गह** = अनवग्रह; 'नागरगो संवट्टो अणोग्गहो' (बृह ३)।

अणोग्घसिय वि [अनवघर्षित] नहीं घिसा हुआ, अमार्जित (राय)।

अणोज्ज वि [अनवद्य] निर्दोष, शुद्ध (णाया १, ८)।

अणोज्जंगी स्त्री [अनवद्याङ्गी] भगवान् महा-वीर की पुत्री का नाम (आचू)।

अणोज्जा स्त्री [अनवद्या] ऊपर देखो (कप्प)।

अणोणअ वि [अनवनत] नहीं झुका हुआ (से १, १)।

अणोत्तप्प देखो **अणुत्तप्प** (पव ६४)।

अणोम वि [अनवम] हीन-रहित, परिपूर्ण (आचा)।

अणोमाण न [अनपमान] अनादर का अभाव, सत्कार; 'एवं उग्गमदोसा विजढा
पइरिक्कया अणोमाणं।
मोहतिगिच्छा य कया,
विरियायारो य अणुचिण्णो'
(ओघ २४६)।

अणोरपार वि [दे] १ प्रचुर, प्रभूत (आवम)। २ अनादि-अनन्त (पंचा १५; जी ४४)। ३ अति विस्तीर्ण (पण्ह १, ३)।

अणोरुम्मिअ वि [अनुद्रान] अ-शुष्क, गीला (कुमा)।

अणोलय न [दे] प्रभात, प्रातःकाल (दे १, १६)।

अणोवणिहिया स्त्री [अनौपनिधिकी] आनु-पूर्वी का एक भेद, क्रम-विशेष (अणु)।

अणोवणिहिया स्त्री [अनुपनिहिता] ऊपर देखो (पि ७७)।

अणोल्ल वि [अनार्द्र] १ शुष्क, सूखा हुआ (गा ५४१)। °**मण** वि [°मनस्क] अकरुण, निष्ठुर, निर्दय (काप्र ८६)।

अणोवदग्ग वि [अनवदग्र] अनन्त (सूअ १, १२, ६)।

अणोवम वि [अनुपम] उपमा-रहित, अद्वि-तीय (पउम ७६, २६; सुर ३, १३०)।

अणोवमिय वि [अनुपमित] ऊपर देखो (पउम २, ६३)।

अणोवसंखा स्त्री [अनुपसंख्या] अज्ञान, सत्य ज्ञान का अभाव (सूअ २, १२)।

अणोवहिय वि [अनुपधिक] १ परिग्रह-रहित, संतोषी। २ सरल, अकपटी (आचा)।

अणोवाहणग } वि [अनुपानत्क] जूता-**अणोवाहणय** } रहित, जो जूता न पहिना हो (औप; पि ७७)।

अणोसिय वि [अनुषित] १ जिसने वास न किया हो। २ अव्यवस्थित, 'अणोसिए णं न करेइ णाणं' (धर्म ३; सूत्र १,१४)।

अणोहंतर वि [अनोघन्तर] पार जाने के लिए असमर्थ, 'मुणिणा हु एयं पवेइयं अणोहंतरा एए, नो य ओहं तरित्तए' (आचा)।

अणोहट्टय वि [अनपघट्टक] निरंकुश, स्वच्छन्दी (णाया १, १६)।

अणोहीण वि [अनवहीन] हीनता-रहित (पि १२०)।

अण्ण सक [भुज्] भोजन करना, खाना। अण्णइ (षड्)।

अण्ण स [अन्य] दूसरा, पर (प्रासू १३१)। °उत्थिय वि [°तिर्थिक, °यूथिक] अन्य दर्शन का अनुयायी (सम ६०)। °गहण न [°ग्रहण] १ गान के समय होनेवाला एक प्रकार का मुख-विकार। १ पुं. गानेवाला, गान्धर्विक, गवैया (निचू १७)। °धम्मिय वि [°धार्मिक] भिन्न धर्म वाला (ओव १५)।

अण्ण न [अन्न] १ नाज, चावल आदि धान्य (सूत्र १, ४, २)। २ भक्ष्य पदार्थ (उत्त २०)। ३ भक्षण, भोजन (सूत्र १, २)। °इलाय, °गिलाय वि [°ग्लायक] बासी अन्न को खानेवाला (औप; भग १६, ३)। °विहि पुंस्त्री [°विधि] पाक-कला (औप)।

अण्ण न [अर्णस्] पानी, जल (उत्त ५)।

अण्ण वि [दे] १ आरोपित। २ खण्डित (षड्)।

°**अण्ण** देखो **कण्ण** = कर्ण (गा ५६४, कप्पू)।

अण्णअ पुं [दे] १ जवान, तरुण। २ धूर्त, ठग। ३ देवर (दे १, ५५)।

अण्णइअ वि [दे] १ तृप्त (दे १, १६)। २ सब विषयों में तृप्त, सर्वार्थ-तृप्त (षड्)।

अण्णओ अ [अन्यतस्] दूसरे से, दूसरी तरफ (उत्त १)। देखो **अन्नओ**।

अण्णण्ण वि [अन्योन्य] परस्पर, आपस में (षड्)।

अण्णण्ण वि [अन्यान्य] और और, अलग-अलग;

'अण्णण्णाइं उवेंता,
संसारवहम्मि णिरवसाणम्मि।
मरणंति धीरहियआ,
वणइट्ठाणाइंव कुलाइं' (गउड)।

अण्णत्त अ [अन्यत्र] दूसरे में, भिन्न स्थान में (गा ६५५)।

अण्णत्ति स्त्री [दे] अवज्ञा, अपमान, निरादर (दे १, १७)।

अण्णत्तो देखो **अण्णओ** (गा ६३६)।

अण्णत्थ देखो **अण्णत्त** (विपा १, २)।

अण्णत्थ वि [अन्यस्थ] दूसरे (स्थान) में रहा हुआ (गा ५५०)।

अण्णत्थ वि [अन्वर्थ] यथार्थ, यथा नाम तथा गुण वाला; 'ठियमण्णत्थे तयत्थनिरवेक्खं' (विसे)।

अण्णमण्ण देखो **अण्णण्ण** = अन्योन्य; 'अण्णमण्णमणुरत्तया' (णाया १, २)।

अण्णमय वि [दे] पुनरुक्त, फिर से कहा हुआ (दे १, २८)।

अण्णय देखो **अन्नय** (धर्मसं ३६२)।

अण्णयर वि [अन्यतर] दो में से कोई एक (कप्प)।

अण्णया अ [अन्यदा] कोई समय में (उप ६ टी)।

अण्णव पुं [अर्णव] १ समुद्र। २ संसार, 'अण्णवंसि महोघंसि एगे तिण्णे दुरुत्तरे' (उत्त ५)।

अण्णव न [ऋणवत्] एक लोकोत्तर मुहूर्त का नाम (जं ७)।

अण्णह न [अन्वह] प्रतिदिन, हमेशा (धर्म १)।

अण्णह देखो **अण्णत्त** (षड्)।

अण्णह, **अण्णहा** } अ [अन्यथा] अन्य प्रकार से, विपरीत रीति से, उलटा (षड्; महा)। °भाव पुं [°भाव] वैपरीत्य, उलटापन (बृह ४)।

अण्णहिं देखो **अण्णत्त** (षड्)।

अण्णा स्त्री [आज्ञा] आज्ञा, आदेश (गा २३; अभि ६३; मुद्रा ५७)।

अण्णाइट्ठ वि [अन्वादिष्ट] आदिष्ट, जिसको आदेश दिया गया हो वह; 'अज्जुणए मालागारे मोग्गरपाणिणा जक्खेणं अण्णाइट्ठे समाणे' (अंत २०)।

अण्णाइट्ठ वि [अन्वाविष्ट] १ व्याप्त (भग १४, १)। २ पराधीन, परवश (भग १८ ६)।

अण्णाइस (अप) वि [अन्यादृश] दूसरे के जैसा (पि २४५)।

अण्णाण न [अज्ञान] १ अज्ञान, अजानकारी, मूर्खता (दे १, ७)। २ मिथ्या ज्ञान, झूठा ज्ञान (भग ८, २)। ३ वि. ज्ञान-रहित, मूर्ख (भग १, ६)।

अण्णाण न [दे] दाय, विवाह-काल में वधू को अथवा वर को जो दान दिया जाता है वह (दे १, ७)।

अण्णाणि वि [अज्ञानिन्] १ ज्ञान रहित, मूर्ख (सूत्र १, ७)। २ मिथ्या-ज्ञानी (पंच १)। ३ अज्ञान को ही श्रेयस्कर माननेवाला, अज्ञान-वादी (सूत्र १, १२)।

अण्णाणिय वि [आज्ञानिक] १ अज्ञानवादी, अज्ञानवाद का अनुयायी (आव ६; सम १०६)। २ मूर्ख, अज्ञानी (सूत्र १, १, २)।

अण्णाय वि [अज्ञात] अविदित, नहीं जाना हुआ (पण्ह २ १)।

अण्णाय पुं [अन्याय] न्याय का अभाव (श्रा १२)।

अण्णाय वि [दे] आर्द्र, गीला (से ४, ६)।

अण्णाय वि [अन्याय्य] न्याय से च्युत, न्याय-विरुद्ध; 'जे विग्गहीए अण्णायभासी, न से समे होइ अझंझपत्ते' (सूत्र १, १३)।

अण्णाय्य (शौ) ऊपर देखो (मा २०)।

अण्णारिच्छ वि [अन्यादृक्ष] दूसरे के जैसा (प्रामा)।

अण्णारिस वि [अन्यादृश] दूसरे के जैसा (पि २४५)।

अण्णासय वि [दे] विस्तृत, बिछाया हुआ (षड्)।

अण्णिज्जमाण देखो **अण्णे**।

अण्णिय वि [अन्वित] युक्त, सहित (सूत्र १, १०; नाट)।

अण्णिया स्त्री [दे] देखो **अण्णी** (दे १, ५१)।

अण्णिया स्त्री [अन्निका] एक विख्यात जैन मुनि की माता का नाम (ती ३६)। °उत्त पुं [°पुत्र] एक विख्यात जैन मुनि (ती ३६)।

अण्णी स्त्री [दे] १ देवर की स्त्री। २ पति की बहिन, ननद। ३ फूफा, पिता की बहिन (दे १, ५१)।

अण्णु } वि [अज्ञ] अजान, निर्बोध, मूर्ख
अण्णुअ } (षड्; गा १८४)।

अण्णुण्ण वि [अन्योन्य] परस्पर, आपस में (गउड)।

अण्णूण वि [अन्यून] परिपूर्ण (उप पृ २२४)।

अण्णे सक [अनु + इ] अनुसरण करना। अण्णेइ (विसे २५२६)। अण्णेंति (पि ४६३)। कवकृ. **अण्णिज्जमाण**; (अन्वीयमान) (विपा १, १)।

अण्णेस सक [अनु + इष्] १ खोजना, ढूँढना, तहकीकात करना। २ चाहना, वांछना। ३ प्रार्थना करना। अण्णेसइ (पि १६३)। वकृ. **अण्णेसंत, अण्णेसअंत, अण्णेसमाण** (महा; काल)।

अण्णेसण न [अन्वेषण] खोज, तलाश, तहकीकात (उप ६ टी)।

अण्णेसणा स्त्री [अन्वेषणा] १ खोज, तहकीकात (प्राप)। २ प्रार्थना (आचा)। ३ गृहस्थ से दी जाती भिक्षा का ग्रहण (ठा. ३, ४)।

अण्णेसय वि [अन्वेषक] गवेषक (पव ७१)।

अण्णेसि वि [अन्वेषिन्] खोज करनेवाला (आचा)।

अण्णेसिय वि [अन्वेषित] जिसकी तहकीकात की गई हो वह, 'अण्णेसिया सव्वओ तुब्भे न कहिंचि दिट्ठा' (महा)।

अण्णोण्ण देखो **अण्णुण्ण**. 'अण्णोण्णसमणु-बद्धं णिच्छयओ भणियविसयं तु' (पंचा ६; स्वप्न ५२)।

अण्णोसरिअ वि [दे] अतिक्रान्त, उल्लंघित (दे १, ३६)।

अण्ह सक [भुज्] १ खाना, भोजन करना। २ पालन करना। ३ ग्रहण करना। अण्हइ (हे ४, ११०; षड्)। अण्हाइ (औप)। अण्हए (कुमा)।

°अण्ह न [अहन्] दिवस, दिन; 'पुव्वावरण्ह-कालसमयंसि' (उवा)।

अण्हग } पुं [आश्रव] कर्म-बन्ध के कारण
अण्हय } हिंसादि (पण्ह १,१;५; औप)।

°अण्हा स्त्री [तृष्णा] तृषा, प्यास (गा ६३)।

अण्हेअअ वि [दे] भ्रान्त, भूला हुआ (दे १, २१)।

अतक्किय वि [अतर्कित] १ अचिन्तित, आकस्मिक; 'अतक्कियमेव एरिसं वसणमहं पत्ता' (महा)। २ ठीक-ठीक नहीं देखा हुआ, अपरिलक्षित (वव ८)। ३ क्रिवि. 'अतक्कियं चेव......विहरिओ रायहत्थी' (महा)।

अतड त्रि [अतट] छोटा किनारा, 'अतडुक्-वातो सो चेव मग्गो' (बृह १)।

अतण्हाअ वि [अतृष्णाक] तृष्णा-रहित, निःस्पृह (अच्चु ६४)।

अतत्त न [अतत्व] असत्य, झूठ, गैरव्याजबी (उप ५०८)।

अतत्थ वि [अत्रस्त] नहीं डरा हुआ, निर्भीक (कुमा)।

अतत्थ वि [अतथ्य] असत्य, झूठा (आचा)।

अतर देखो **अयर** (पव १; कम्म ५; भवि)।

अतव पुंन [अतपस्] १ तपश्चर्या का अभाव (उत्त २३)। २ वि. तप-रहित (बृह ४)।

अतव पुं [अस्तव] अ-प्रशंसा, निन्दा (कुमा)।

अतसी देखो **अयसी** (पण्ण १)।

अतह वि [अतथ] असत्य, अ-वास्तविक, झूठा (सूअ १,१,२; आचा)।

अतह वि [अतथा] उस माफिक नहीं,

'जाओ च्चिय कायव्वे उच्छाहेंति गरुयाण कित्तीओ।
ताओ च्चिय अतह-णिवेयणेण अलसेंति हिययाइं' (गउड)।

अतार वि [अतार] तरने को अशक्य (णाया १, ६; १४)।

अतारिम वि [अतारिम] ऊपर देखो (सूअ १, ३, २)।

अतिउट्ट अक [अति + त्रुट्] १ खूब टूटना, टूट जाना। २ सब बन्धन से मुक्त होना। अतिउट्टइ (सूअ १, १५, ५)।

अतिउट्ट सक [अति + वृत्] १ उल्लंघन करना। २ व्याप्त होना। °तिउट्टइ (सूअ १, १५, ६ टी)।

अतिउट्ट वि [अतिवृत्त] १ अतिक्रान्त। २ अनुगत, व्याप्त; 'जंसी गुहाए जलणेतिउट्टे अविजाणओ डज्झइ लुत्तपण्णो' (सूअ १,५, १,१२)।

अतित्थ न [अतीर्थ] १ तीर्थ (चतुर्विध संघ) का अभाव, तीर्थ की अनुत्पत्ति। २ वह काल, जिसमें तीर्थ की प्रवृत्ति न हुई हो या उसका अभाव रहा हो (पण्ण १)। °**सिद्ध** वि [°सिद्ध] अतीर्थ काल में जो मुक्त हुआ हो वह, 'अतित्थसिद्धा य मरुदेवी' (नव ५६)।

अतिहि देखो **अइहि**।

अतीगाढ वि [अतिगाढ] १ अति-निबिड। २ क्रिवि. अत्यंत, बहुत; 'अतीगाढं भीओ जक्खाहिवो' (पउम ८, ११३)।

अतुल वि [अतुल] अनुपम, असाधारण (पण्ह १, १)।

अतुलिय वि [अतुलित] असाधारण, अद्वितीय (भवि)।

अत्त देखो **अप्प** = आत्मन् (सुर ३, १७४; सम ५७; गंदि)। °**लाभ** पुं [°लाभ] स्वरूप की प्राप्ति, उत्पत्ति (कम्म २, २५)।

अत्त वि [आर्त्त] पीड़ित, दुःखित, हैरान (सुर ३, १४३; कुमा)।

अत्त वि [आत्त] १ गृहीत, लिया हुआ (णाया १, १)। २ स्वीकृत, मंजूर किया हुआ (ठा २, ३)। ३ पुं. ज्ञानी मुनि (बृह १)।

अत्त वि [आप्त] १ ज्ञानादि-गुण-संपन्न, गुणी। २ राग-द्वेष वर्जित, वीतराग। ३ प्रायश्चित्त-दाता गुरु,

'णाणमादीणि अत्ताणि, जेण अत्तो उ सो भवे।
रागद्दोसपहीणो वा, जे व इट्ठा विसोहिए'

(वव १०)। ४ मोक्ष, मुक्ति (सूअ १, १०)। ५ एकान्त हितकर (भग १४, ६)। ६ प्राप्त, मिला हुआ (वव १०); 'अत्तप्पसण्णलेस्से' (उत्त १२)।

अत्त वि [आत्र] दुःख का नाश करनेवाला, सुख का उत्पादक (भग १४, ६)।

अत्त अ [अत्र] यहां, इस स्थान में (नाट)। °**भव** वि [°भवत्] पूज्य, माननीय (अभि ६१; पि २९३)।

अत्तअ देखो **अत्तय** = अत्यय (प्राकृ २१)।

अत्तकम्म वि [आत्मकर्मन्] १ जिससे कर्म-

बन्धन हो वह। २ पुं. आधाकर्म दोष (पिंड ६५)।

अत्तट्ठ वि [आत्मार्थ] १ आत्मीय, स्वकीय (धर्म २)। २ पुं. स्वार्थ, 'इह कामनियत्तस्स अत्तट्ठे नावरज्झइ' (उत्त ८)।

अत्तट्ठिय वि [आत्मार्थिक] १ आत्मीय। २ जो अपने लिए किया गया हो, 'उवक्खडं भोयण माहणाणं अत्तट्ठियं सिद्धमहेगपक्खं' (उत्त १२)।

अत्तण, **अत्तणअ** देखो अप्प = आत्मन् (मृच्छ २३६)। °केरक वि [आत्मीय] निजी, स्वकीय (नाट; पि ४०१)।

अत्तणअ, **अत्तणक** (शौ) वि [आत्मीय] स्वकीय, अपना, निजका (पि २७७; नाट)।

अत्तणिज्जिय वि [आत्मीय] स्वकीय (ठा ३, १)।

अत्तणीअ (शौ) ऊपर देखो (स्वप्न २७)।

अत्तमाण देखो आवत्त = आ + वृत्।

अत्तय पुं [आत्मज] पुत्र, लड़का। °या स्त्री [°जा] पुत्री, लड़की (विपा १. १)।

अत्तव्व वि [अत्तव्य] खाने लायक, भक्ष्य (नाट)।

अत्ता स्त्री [दे] १ माता, माँ (दे १, ५१; चारु ७०)। २ सासू (दे १, ५१; गा ६६७; हेका ३०)। ३ फूफा। ४ सखी (दे १, ५१)।

°अत्ता देखो जत्ता (प्रति ८२)।

अत्ताण देखो अत्त = आत्मन्; (पि ४०१)।

अत्ताण वि [अत्राण] १ शरण-रहित, रक्षक-वर्जित (पण्ह १, १)। २ पुं. कन्धे पर लाठी रखकर चलनेवाला मुसाफिर। ३ फटे-टूटे कपड़े पहनकर मुसाफिरी करनेवाला यात्री (बृह १)।

अत्ति पुं [अत्रि] इस नाम का एक ऋषि (गउड)।

अत्ति स्त्री [अर्त्ति] पीड़ा, दुःख (कुमा; सुपा १८५)। °हर वि [°हर] पीड़ा-नाशक, दुःख का नाश करनेवाला (अभि १०३)।

अत्तिहरी स्त्री [दे] दूती, समाचार पहुँचाने-वाली स्त्री (षड्)।

अत्तीकर सक [आत्मी + कृ] अपने अधीन करना, वश करना। अत्तीकरेइ; वकृ. **अत्ती-करंत** (निचू ४)।

अत्तीकरण न [आत्मीकरण] अपने वश करना (निचू ४)।

अत्तुक्करिस, **अत्तुक्कोस** पुं [आत्मोत्कर्ष] अभिमान, गर्व; 'तम्हा अत्तुक्करिसो वज्जेयव्वो जइजणेणं' (सूअ १, १३; सम ७१)।

अत्तुक्कोसिय वि [आत्मोत्कर्षिक] गर्विष्ठ, अभिमानी (औप)।

अत्तेय पुं [आत्रेय] १ अत्रि ऋषि का पुत्र (पि १०; ८३)। २ एक जैन मुनि (विसे २७६९)।

अत्तो अ [अतस्] १ इससे, इस हेतु से (गउड)। २ यहां से (प्रामा)।

अत्थ देखो अट्ठ = अर्थ (कुमा; उप ७२८; ८८४ टी; जी १; प्रासू ६५; गउड); 'अरोइ-अत्थे कहिए विलावो' (गोय ७); 'अत्थसद्दो फलत्थोयं' (विसे १०३६; १२४३)। °जोणि स्त्री [°योनि] धनोपार्जन का उपाय, साम, दाम, दण्ड रूप अर्थ-नीति (ठा ३, ३)। °णय पुं [°नय] शब्द को छोड़ अर्थ को ही मुख्य वस्तु माननेवाला पक्ष (अणु)। °सत्थ न [शास्त्र] अर्थ-शास्त्र, संपत्ति-शास्त्र (णाया १, १)। °वइ पुं [°पति] १ धनी। २ कुबेर (वव ७)। °वाय पुं [°वाद] १ गुणवर्णन। २ दोष-निरूपण। ३ गुण-वाचक शब्द। ४ दोष-वाचक शब्द (विसे)। °वि वि [°वित्] अर्थ का जानकार (पिंड १ भा)। °सिद्ध वि [°सिद्ध] १ प्रभूत धनवाला (जं ७)। २ पुं. ऐरवत क्षेत्र के एक भावी जिनदेव (तित्थ)। °लिय न [°लीक] धन के लिए असत्य बोलना (पण्ह १, २)। °लोयण न [°लोचन] पदार्थ का सामान्य ज्ञान (आचू १)। °लोयण न [°लोकन] पदार्थ का निरीक्षण,

'अत्थालोयण-तरला, इयरकईणं भमंति बुद्धीओ।
अत्थच्चेय निरारम्भमेंति हियय कइन्दाणं॥'
(गउड)।

अत्थ पुं [अस्त] १ जहां सूर्य अस्त होता है वह पर्वत (से १०, १०))। २ मेरु पर्वत (सम ६५)। ३ वि. अविद्यमान (णाया १, १३)। °गिरि पुं [°गिरि] अस्ताचल (सुर ३, २७७; पउम १६. ४५)। °सेल पुं [°शैल] अस्ताचल (सुर ३, २२६)। °चल पुं [°चल] अस्त-गिरि (कप्पू)।

अत्थ न [अस्त्र] हथियार, आयुध (पउम ८, ५०; से १४, ६१)।

अत्थ सक [अर्थय्] मांगना, याचना करना, प्रार्थना करना, विज्ञप्ति करना। अत्थयए (निचू ४)।

अत्थ अक [स्था] बैठना। अत्थइ (आरा ७१)।

अत्थ, **अत्थं** देखो अत्त = अत्र (कप्प; पि २६३, ३६१)।

अत्थंडिल वि [अस्थण्डिल] साधुओं के रहने के लिए अयोग्य स्थान, क्षुद्र जन्तुओं से व्याप्त स्थान (ओघ १३)।

अत्थंत वकृ [अस्तं यत्] अस्त होता हुआ (वज्जा २२)।

अत्थकिरिआ स्त्री [अर्थक्रिया] वस्तु का व्यापार, पदार्थ से होनेवाली क्रिया (धर्मसं ४६६)।

अत्थक्क न [दे] १ अकाण्ड, अकस्मात्, बे-समय (उप ३३०; से ११, २४; श्रा ३०; भवि); 'अत्थक्कगज्जिउब्भंतहित्थहिअआ पहिअ-जाआ' (गा ३८६)। २ वि. अखिन्न (वज्जा ६)। ३ क्रिवि. अनवरत, हमेशा (गउड)।

अत्थग्घ वि [दे] १ मध्य-वर्ती, बीच का; 'सभए अत्थग्घे वा ओइणेसुं घणं पट्ट' (ओघ ३४)। २ अगाध, गंभीर। ३ न. लम्बाई, आयाम। ४ स्थान, जगह (दे १, ५४)।

अत्थण न [अर्थन] प्रार्थना, याचना (उप ७२८ टी)।

अत्थणिऊर पुंन [अर्थनिपूर] देखो **अच्छ-णिउर** (अणु ६६)।

अत्थणिऊरंग पुंन [अर्थनिपूराङ्ग] देखो **अच्छणिउरंग** (अणु ६६)।

अत्थत्थि वि [अर्थार्थिन्] धन की इच्छा-वाला (उव १३६)।

अत्थम अक [अस्तम् + इ] अस्त होना, अदृश्य होना। अत्थमइ (पि ५५८)। वकृ. **अत्थमंत** (पउम ८२, ५६)।

अत्थमण न [अस्तमयन] अस्त होना, अदृश्य होना (ओघ ६०७; से ८, ८५; गा २८४)।

अत्थमाविय वि [अस्तमापित] अस्त कर-वाया हुआ (सम्मत्त १६१)।

अत्थमिय वि [अस्तमित] १ अस्त हुआ,

डूब गया, अदृश्य हुआ (ओघ ५०७, महा; सुपा १५५)। २ हीन, हानि-प्राप्त (ठा ४,३)।

अत्थयारिआ स्त्री [दे] सखी, वयस्या (दे १ १६)।

अत्थर सक [आ + स्तृ] बिछाना, शय्या करना, पसारना। अत्थरइ (उव)। संकृ. अत्थरिऊण (महा)।

अत्थरण न [आस्तरण] १ बिछौना, शय्या (से १४, ५०)। २ बिछाना, शय्या करना (विसे २३२२)।

अत्थरय वि [आस्तरक] १ आच्छादन करनेवाला (राय)। २ पुं. बिछौने के ऊपर का वस्त्र (भग ११, ११; कप्प)।

अत्थरय वि [अस्तरजस्क] निर्मल, शुद्ध (भग ११, ११)।

अत्थवण देखो **अत्थमण** (भवि)।

अत्थसिद्ध पुं [अर्थसिद्ध] पक्ष का दशवाँ दिवस, दशमी तिथि (सुज्ज १०, १४)।

अत्था देखो **अट्ठा** = आस्था।

अत्था, **अत्थाअ** } सक [अस्ताय्] अस्त होना, डूब जाना, अदृश्य होना। अत्थाइ; अत्थाए (पउम ७३, ३५)। अत्थाअंति (से ७, २३)। वकृ. **अत्थाअंत** (से ७, ६६)।

अत्थाअ वि [अस्तमित] अस्त हुआ, डूबा हुआ; 'तावच्चिय दिवसयरो अत्थाओ विगयकिरणसंघाओ' (पउम १०,६६; से ६,५२)।

अत्थाइया स्त्री [दे] गोष्ठी-मण्डप (स ३६)।

अत्थाण न [आस्थान] सभा, सभा-स्थान (सुर १, ८०)।

अत्थाणिय वि [अस्थानिन्] गैर-स्थान में लगा हुआ, 'अत्थाणियनयणहिं' (भवि)।

अत्थाणी स्त्री [आस्थानी] सभा-स्थान (कुमा)।

अत्थाणीअ वि [आस्थानीय] सभा-संबन्धी (कुप्र ७८)।

अत्थाम वि [अस्थामन्] बल-रहित, निर्बल (गाया १,१)।

अत्थार पुं [दे] सहायता, साहाय्य (दे १,६; गाप्र)।

अत्थारिय पुं [दे] नौकर, कर्मचारी (वव ६)।

अत्थावग्गह देखो **अत्थुग्गह** (पण्ण ५)।

अत्थावत्ति स्त्री [अर्थापत्ति] अनुक्त अर्थ को अटकल से समझना, एक प्रकार का अनुमान-ज्ञान; जैसे 'देवदत्त पुष्ट है और दिन में नहीं खाता है' इस वाक्य से 'देवदत्त रात में खाता है' ऐसा अनुक्त अर्थ का ज्ञान (उप ६६८)।

अत्थाह वि [अस्ताघ] १ अथाह, थाह-रहित, गंभीर (गाया १, १४)। २ नासिका के ऊपर का भाग भी जिसमें डूब सके इतना गहरा जलाशय (बृह ४)। ३ पुं. अतीत चौबीसी में भारत में समुत्पन्न इस नाम के एक तीर्थंकर-देव (पव ६)।

अत्थाह वि [दे] देखो **अत्थग्घ** (दे १, ५४; भवि)।

अत्थि वि [अर्थिन्] १ याचक, माँगनेवाला (सुर १०,१००)। २ धनी, धनवाला (पंचा)। ३ मालिक; स्वामी (विसे)। ४ गरजू, चाहनेवाला;

'धणओ धणत्थियाणं, कामत्थीणं च सव्वकामकरो।
सग्गापवग्गसंगमहेऊ जिणदेसिओ धम्मो॥'
(महा)।

अत्थि न [अस्थि] हाड़, हड्डी (महा)।

अत्थि अ [अस्ति] १ सत्त्व-सूचक अव्यय है, 'अत्थेगइया मुंडा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया' (औप); 'अत्थि णं भंते ! विमाणाइं' (जीव ३)। २ प्रदेश, अवयव; 'चत्तारि अत्थिकाया' (ठा ४, ४)। °**अवत्तव्व** वि [°अवक्तव्य] सप्तभङ्गी का पांचवाँ भङ्ग, स्वकीय द्रव्य आदि की अपेक्षा से विद्यमान और एक ही साथ कहने को अशक्य पदार्थ;

'सब्भावे आइट्ठो देसो देसो अ उभयहा जस्स।
तं अत्थिअवत्तव्वं च होइ दविअं विअप्पवसा'
(सम्म ३८)।

°**काय** पुं [°काय] प्रदेशों का—अवयवों का समूह (सम १०)। °**णत्थवत्तव्व** वि [°नास्त्यवक्तव्य] सप्तभङ्गी का सातवाँ भङ्ग, स्वकीय द्रव्यादि की अपेक्षा से विद्यमान, परकीय द्रव्यादि की अपेक्षा से अविद्यमान और एक ही समय में दोनों धर्मों से कहने को अशक्य पदार्थ;

'सब्भावासब्भावे, देसो देसो अ उभयहा जस्स।
तं अत्थिणत्थवत्तव्वयं च दविअं विअप्पवसा'
(सम्म ४०)।

°**त्त** न [°त्व] सत्व, विद्यमानता, हयाती (सुर २, १४२)। °**ता** स्त्री [°ता] सत्व, हयाती (उप पृ ३७४)। °**त्तिनय** पुं [°इतिनय] द्रव्यार्थिक नय (विसे ५३७)। °**नत्थि** वि [°नास्ति] सप्तभङ्गी का तीसरा भङ्ग—प्रकार, स्वद्रव्यादि की अपेक्षा से विद्यमान और परकीय द्रव्यादि की अपेक्षा से अविद्यमान वस्तु;

'अह देसो सब्भावे देसोसब्भावपज्जवे निअओ।
तं दविअमत्थिनत्थि अ, आएसविसेसिअं जम्हा'
(सम्म ३७)।

°**नत्थिप्पवाय** न [°नास्तिप्रवाद] बारहवें जैन अङ्ग-ग्रन्थ का एक भाग, चौथा पूर्व (सम २६)।

अत्थिक्क न [आस्तिक्य] आस्तिकता, आत्मा-परलोक आदि पर विश्वास (श्रा ६; पुप्फ ११०)।

अत्थिय देखो **अत्थि** = अर्थिन् (महा; औप)।

अत्थिय वि [अर्थिक] धनी, धनवान् (हे २, १५६)।

अत्थिय न [अस्थिक] १ हड्डी, हाड़। २ पुं. वृक्ष-विशेष। ३ न. बहु बीजवाला फल-विशेष (पण्ण १)।

अत्थिय वि [आस्तिक] आत्मा, परलोक आदि की हयाती पर श्रद्धा रखनेवाला (धर्म २)।

अत्थिर देखो **अथिर** (पंचा १२)।

अत्थीकर सक [अर्थी + कृ] प्रार्थना करना, याचना करना। अत्थीकरेइ (निचू ४)। वकृ. **अत्थीकरंत** (निचू ४)।

अत्थीकरण न [अर्थीकरण] प्रार्थना, याचना (निचू ४)।

अत्थु सक [आ+स्तृ] बिछाना, शय्या करना। कर्म. अत्थुव्वइ; कवकृ. **अत्थुव्वंत** (विसे २३२१)।

अत्थुअ वि [आस्तृत] बिछाया हुआ (पाअ; विसे २३२१)।

अत्थुग्गह पुं [अर्थावग्रह] इन्द्रियाँ और मन द्वारा होनेवाला ज्ञान-विशेष, निर्विकल्पक ज्ञान (सम ११; ठा २, १)।

अत्थुग्गहण न [अर्थावग्रहण] फल का निश्चय (भग ११, ११)।

अत्थुड वि [दे] लघु, छोटा; (दे १, ६)।

अत्थुरण न [दे. आस्तरण] बिछौना (स ६७)।

अत्थुरिय वि [दे. आस्तृत] बिछाया हुआ (स २३९; दे १, ११३)।

अत्थुवड न [दे] भल्लातक, भिलावाँ वृक्ष का फल (दे १, २३)।

अत्थेक्क वि [दे] आकस्मिक, अचिन्तित (से १२, ४७)।

अत्थोग्गह देखो अत्थुग्गह (सम ११)।

अत्थोग्गहण देखो अत्थुग्गहण (भग ११, ११)।

अत्थोडिग वि [दे] आकृष्ट, खींचा हुआ (महा)।

अत्थोभय वि [अस्तोभक] 'उत', 'वै' आदि निरर्थक शब्दों के प्रयोग से अदूषित (सूत्र) (बृह १)।

अत्थोवग्गह देखो अत्थुग्गह (पराण १५)।

अथक्क न [दे] १ अकाण्ड, अनवसर, अकस्मात् (षड्)। २ वि. पसरनेवाला, फैलनेवाला (कुमा)।

अथव्वण पुं [अथर्वण] चौथा वेद-शास्त्र (कप्प; णाया १, ५)।

अथिर वि [अस्थिर] १ चंचल, चपल (कुमा)। २ अनित्य, विनश्वर (कुमा)। ३ अदृढ़, शिथिल (ओघ)। ४ निर्बल (वव २)। ५ मजबूती से नहीं बैठा हुआ, नहीं जमा हुआ (अभ्यास); 'अथिरस्स पुव्वगहियस्स, वत्तणा जं इह थिरीकरणं' (पंचा १२)। °णाम न [°नामन्] नाम-कर्म का एक भेद (सम ६७)।

अद सक [अद्] खाना, भोजन करना। अदइ, अदए (षड्)।

अदंसण देखो अद्दंसण (पंचभा)।

अदंसण पुं [दे] चोर, डाकू (दे १, २९; षड्)।

अदंसिया स्त्री [अदंशिका] एक प्रकार की मीठी चीज (पराण १७)।

अदक्खु वि [अदृष्ट] १ नहीं देखा हुआ। २ असर्वज्ञ (सूत्र १, २, ३)।

अदक्खु वि [अदक्ष] अनिपुण, अकुशल (सूत्र १, २, ३)।

अदक्खु वि [अदृश्य] १ नहीं देखनेवाला, अन्धा। २ असर्वज्ञ, 'अदक्खुव ! दक्खुवाहियं सद्दहसु अदक्खुदंसणा' (सूत्र १, २, ३)।

अदण न [अदन] भोजन (बृह १)।

अदत्त वि [अदत्त] नहीं दिया हुआ (पराण १, ३)। °हार वि [°हार] चोर (आचा)। °हारि वि [°हारिन्] चोर (सूत्र १,५,१)। °दाण न [°दान] चोरी (सम १०)। °दाणवेरमण न [°दानविरमण] चोरी से निवृत्ति, तृतीय व्रत (पराह २, ३)।

अदन्न देखो अदण्ण (सिरि ३१०)।

अदब्भ वि [अदभ्र] अनल्प, बहुत (जं ३)।

अदय वि [अदय] निर्दय, निष्ठुर (निचू २)।

अदिइ देखो अइइ (ठा २, ३)।

अदिण्ण देखो अदत्त (ठा १)।

अदित्त वि [अदृप्त] १ दर्प-रहित, नम्र (बृह १)। २ अहिंसक (ओघ ३०२)।

अदिन्न देखो अदत्त (सम १०)।

अदिस्स देखो अद्दिस्स (सम ६०; सुपा १५३)।

अदिहि स्त्री [अधृति] अधीराई, धीरज का अभाव (पाअ)।

अदीण वि [अदीन] दीनता-रहित। °सत्तु पुं [°शत्रु] हस्तिनापुर का एक राजा (णाया १, ८)।

अदु अ [दे] १ आनन्तर्य-सूचक अव्यय, अब (आचा)। २ इससे (सूत्र १, २, २)।

अदु अ [दे] १ अथवा, या (सूत्र १, ४, २, १५; उत्त ८, १२; दसचू २, १४)। २ अधिकारान्तर का सूचक (सूत्र १, ४, २, ७)।

अदुत्तरं अ [दे] आनन्तर्य-सूचक अव्यय, अब, बाद (णाया १, १)।

अदुय न [अद्रुत] अ-शीघ्र, धीरे-धीरे (भग ७,६) °बंधण न [°बन्धन] दीर्घ काल के लिए बन्धन (सूत्र २, २)।

अदुव, **अदुवा** अ [दे] या, अथवा, और; 'हिंसेज्ज पाणभूयाइं, तसे अदुव थावरे' (दस ५, ५; आचा)।

अदोलि, **अदोलिर** वि [अदोलिन्] स्थिर, निश्चल (कुमा)।

अद्द वि [आर्द्र] १ गीला, भीगा हुआ, अकठिन (कुमा)। २ पुं. इस नाम का एक राजा। ३ एक प्रसिद्ध राजकुमार और पीछे से जैन मुनि। ४ वि. आर्द्र राजा के वंशज। ५ नगर-विशेष (सूत्र २, ६)। °कुमार पुं [°कुमार] एक राजकुमार और बाद में जैन मुनि; 'अद्दकुमारो दढप्पहारी अ' (पडि)। °मुत्था स्त्री [°मुस्ता] कन्द-विशेष, नागर मोथा (श्र २०)। °मलग न [°मलक] १ हरा आमला। २ पीलु-वृक्ष की कली (धर्म २)। ३ शण वृक्ष की कली (पव ४)। °रिट्ठ पुं [°रिष्ट] कमल कौआ (आवम)।

अद्द पुं [अब्द] १ मेघ, वर्षा, बारिश (हे २, ७९)। २ वर्ष, संवत्सर, संवत् (सुर १३, ७०)।

अद्द पुं [अर्द] आकाश (भग २०, २)।

अद्द पुंन [दे] १ परिहास। २ वर्णन (संक्षि ४७)।

अद्द सक [अर्द्] मारना, पीटना (वव १०)।

अद्दइअ न [अद्वैत] १ भेद का अभाव। २ वि. भेद-रहित ब्रह्म वगैरह (नाट)।

अद्दइज्ज वि [आर्द्रीय] १ आर्द्रकुमार-सम्बन्धी। २ इस नाम का 'सूत्रकृताङ्ग' सूत्र का एक अध्ययन (सूत्र २, ६)।

अद्दंसण न [अदर्शन] १ दर्शन का निषेध, नहीं देखना (सुर ७, २४८)। २ वि. परोक्ष, जिसका दर्शन न हो; 'एक्कपएच्चिय हाहिति मज्झ अद्दंसणा इरिह' (सुपा ६१७)। ३ नहीं देखनेवाला, अन्धा। ४ 'थीणद्धी' या अधम निद्रा वाला (गच्छ १; पव १०७)। °भूअ, °हूय वि [°भूत] जो अदृश्य हुआ हो (सुर १०, ५६; महा)।

अद्दण, **अद्दण्ण** वि [दे] आकुल, व्याकुल (दे १, १५; बृह १; निचू १०)।

अद्दन्न देखो अद्दण्ण (सुख १, १४)।

अद्दव वि [आद्रव] गला हुआ (आव ६)।

अद्दव्व न [अद्रव्य] अवस्तु, वस्तु का अभाव; (पंचा ३)।

अद्दह सक [आ + द्रह] उबालना, पानी-तैल वगैरह को खूब गरम करना। अद्दहेइ, अद्दहेमि; संकृ. अद्दहेत्ता (उवा)।

अद्दहिय वि [आहित] रखा हुआ, स्थापित (विपा १, ६)।

अद्दा स्त्री [आर्द्रा] १ नक्षत्र-विशेष (सम २)। २ छन्द-विशेष (पिंग)।

अद्दाअ पुं [दे] १ आदर्श, दर्पण (दे १, १४; पण्ण १५; निचू १३)। °**पसिण** पुं [°प्रश्न] विद्या-विशेष, जिससे दर्पण में देवता का आगमन होता है (ठा १०)। °**विज्जा** स्त्री [°विद्या] चिकित्सा का एक प्रकार, जिससे बीमार को दर्पण में प्रतिबिम्बित कराने से वह नीरोग होता है (वव ५)।

अद्दाइअ वि [दे] आदर्श वाला, आदर्श से पवित्र (बृह १)।

अद्दाग [दे] देखो **अद्दाअ** (सम १२३)।

अद्दि पुं [अद्रि] पहाड़, पर्वत (गउड)।

अद्दिट्ठ वि [अदृष्ट] १ नहीं देखा हुआ (सुर १, १७२)। २ दर्शन का अविषय (सम्म ६६)।

अद्दिय वि [आर्द्रित] आर्द्र किया हुआ भिंगाया हुआ (विक्र २३)।

अद्दिय वि [अर्दित] पीटा हुआ, पीड़ित (वव १०)।

अद्दिस्स वि [अदृश्य] देखने के अयोग्य या अशक्य (सुर ६, १२०; सुपा ८५; श्रा २७)।

अद्दिस्संत, **अद्दिस्समाण** } वकृ. [अदृश्यमान] नहीं दिखाता हुआ (सुपा १५४; ४५७)।

अद्दीण वि [अद्रीण] क्षोभ को अप्राप्त, अक्षुब्ध, निर्भीक (पण्ह २, १)।

अद्दीण देखो **अदीण** (ओघ ५३७)।

अद्दुदुमाअ वि [दे] पूर्ण, भरा हुआ (षड्)।

अद्देस वि [अदृश्य] देखने के अशक्य (स १७०)।

अद्देसीकारिणी स्त्री [अदृश्यीकारिणी] अदृश्य बनानेवाली विद्या (सुपा ४५४)।

अद्देस्सीकरण वि [अदृश्यीकरण] १ अदृश्य करना। २ अदृश्य करनेवाली विद्या, 'किंपुण विज्जासिज्झा अद्देस्सीकरणसंगओ वावि' (सुपा ४५५)।

अद्दोहि वि [अद्रोहिन्] द्रोह-रहित, द्वेष-वर्जित (धर्म ३)।

अद्ध पुंन [अर्ध] १ आधा (कुमा)। २ खण्ड, अंश (पि ४०२)। °**करिस** पुं [°कर्ष] परिमाण-विशेष, फल का आठवाँ भाग (अणु)। °**कुडव**, °**कुलव** पुं [°कुडव, °कुलव] एक प्रकार का धान्य का परिमाण (राय)। °**क्खेत्त** न [°क्षेत्र] एक अहोरात्र में चन्द्र के साथ योग प्राप्त करनेवाला नक्षत्र (चंद १०) °**खल्ला** स्त्री [°खल्वा] एक प्रकार का जूता (बृह ३)। °**घडय** पुं [°घटक] आधा परिमाणवाला घड़ा, छोटा घड़ा (उवा)। °**चंद** पुं [°चन्द्र] १ आधा चन्द्र (गा ५७१)। २ गल-हस्त, गला पकड़ कर बाहर करना (उप ७२८ टी)। ३ न. एक हथियार (उप पृ ३६५)। ४ अर्ध चन्द्र के आकारवाले सोपान (णाया १, १)। ५ एक तरह का बाण, 'एसो तुह तिक्खेणं सीसं छिंदामि अद्धचंदेण' (सुर ८, ३७)। °**चक्कवाल** न [°चक्रवाल] गति-विशेष (ठा ७)। °**चक्कि** पुं [°चक्रिन्] चक्रवर्ती राजा से अर्ध विभूति वाला राजा, वासुदेव (कम्म १, १२)। °**च्छट्ठ**, °**छट्ठ** वि [°षष्ठ] साढ़े पाँच (पि ४५०; सम १००)। °**ट्ठम** वि [°ष्टम] साढ़े सात (ठा ६)। °**णाराय** न [°नाराच] चौथा संहनन, शरीर के हाड़ों की रचना-विशेष (जीव १)। °**णारीसर** पुं [°नारीश्वर] शिव, महादेव (कप्पू)। °**तइय** वि [°तृतीय] ढ़ाई (पउम ४८, ३५)। °**तेरस** वि [°त्रयोदश] साढ़े बारह (भग)। °**तेवन्न** वि [°त्रिपञ्चाश] साढ़े बावन (सम १३४)। °**द्ध** वि [°र्ध] चौथा भाग, पौआ (बृह ३)। °**नवम** वि [°नवम] साढ़े आठ (पि ४५०)। °**नाराय** देखो °**णाराय** (कम्म १, ३८)। °**पंचम** वि [°पञ्चम] साढ़े चार (सम १०२)। °**पलिअंक** वि [°पर्यङ्क] आसन-विशेष (ठा ५, १)। °**पहर** पुं [°प्रहर] ज्यौतिष शास्त्र प्रसिद्ध एक कुयोग (गण १८)। °**बब्बर** पुं [°बर्बर] देश-विशेष (पउम २७, ५)। °**मागहा**, °**ही** स्त्री [°मागधी] प्राचीन जैन साहित्य की प्राकृत भाषा, जिसमें मागधी भाषा के भी कोई २ नियम का अनुसरण किया गया है; 'पोराणमद्धमागहभासानिययं हवइ सुत्तं' (हे ४, २८७; पि १६; सम ६०; पउम २,३४)। °**मास** पुं [°मास] पक्ष; पनरह दिन (दे १०)। °**मासिय** वि [°मासिक] पाक्षिक, पक्ष-सम्बन्धी(महा)। °**यंद** देखो °**चंद** (उप ७२८ टी)। °**रज्जिय** वि [°राज्यिक] राज्य का आधा हिस्सेदार, अर्ध राज्य का मालिक (विपा १, ६)। °**रत्त** पुं [°रात्र] मध्य रात्रि का समय, निशीथ (गा २३१)। °**वेयाली** स्त्री [°वेताली] विद्या-विशेष (सूअ २, २)। °**संकासिया** स्त्री [°सांकाशिका] एक राज-कन्या का नाम (आव ४)। °**सम** न [°सम] एक वृत्त, छन्द-विशेष (ठा ७)। °**हार** पुं [°हार] १ नवसरा हार (राय; औप)। २ इस नाम का एक द्वीप। ३ समुद्र-विशेष (जीव ३)। °**हारभद्द** [°हारभद्र] अर्धहार-द्वीप का अधिष्ठाता देव (जीव ३)। °**हारमहाभद्द** पुं [°हारमहाभद्र] पूर्वोक्त ही अर्थ (जीव ३)। °**हारमहावर** पुं [°हारमहावर] अर्धहार समुद्र का एक अधिष्ठायक देव (जीव ३)। °**हारवर** पुं [°हारवर] १ द्वीप-विशेष। २ समुद्र-विशेष। ३ उनका अधिष्ठायक देव (जीव ३)। °**हारवरभद्द** पुं [°हारवरभद्र] अर्धहारवर द्वीप का एक अधिष्ठाता देव (जीव ३)। °**हारवरमहावर** पुं [°हारवरमहावर] अर्धहारवर समुद्र का एक अधिष्ठाता देव (जीव ३)। °**हारोभास** पुं [°हारावभास] १ द्वीप-विशेष। २ समुद्र-विशेष (जीव ३)। **हारोभासभद्द** पुं [°हारावभासभद्र] अर्धहारावभास नामक द्वीप का एक अधिष्ठाता देव (जीव ३)। °**हारोभासमहाभद्द** पुं [°हारावभासमहाभद्र] पूर्वोक्त ही अर्थ (जीव ३)। °**हारोभासमहावर** पुं [°हारावभासमहावर] अर्धहारावभास नामक समुद्र का एक अधिष्ठाता देव (जीव ३)। °**हारोभासवर** पुं [°हारावभासवर] देखो पूर्वोक्त अर्थ (जीव ३)। °**ाढ़य** पुं [°ाढ़क] एक प्रकार का परिमाण, आढ़क का आधा भाग (ठा ३, १)।

अद्ध पुं [अध्वन्] मार्ग, रास्ता (महा; आचा)।

अद्धंत पुं [दे] १ पर्यन्त, अन्त भाग (दे १, १८; से ६, ३२; पाअ); 'भरिजंतमिद्धपहद्धंतो (विक्र १०१)। २ पुं.ब. कतिपय, कईएक (से १३, ३२)।

अद्धक्खण न [दे] १ प्रतीक्षा करना, राह देखना (दे १, ३४)। २ परीक्षा करना (दे १, ३४)।

अद्धक्खिअ न [दे] १ संज्ञा करना, इशारा करना, संकेत करना (दे १, ३४)।

अद्धक्खिअ वि [अर्धाक्षिक] विकृत आंख वाला (महानि ३)।

अद्धजंघा } स्त्री [दे· अर्धजङ्घा] एक प्रकार
अद्धजघी } का जूता, मोचक नामक जूता, जिसे गुजराती में 'मोजड़ी' कहते हैं (दे १, ३३; २ ५; ६. १३६)।

अद्धद्धा स्त्री [दे· अद्धाद्धा] दिन अथवा रात्रि का एक भाग (सत्त ६ टी)।

अद्धपेडा स्त्री [अर्धपेटा] सन्दूक के अर्ध भाग के आकारवाली गृह-पंक्ति में भिक्षाटन (उत्त ३०, १६)।

अद्धर पुं [अध्वर] यज्ञ, याग (पाअ)।

अद्धर वि [दे] प्रच्छन्न, गुप्त; 'तम्हा एयस्स चिट्ठियमद्धरट्ठिओ चेब पिच्छामि, तओ राया तप्पिट्टिलग्गो' (सम्मत्त १६१)।

अद्धविआर न [दे] १ मण्डन, भूषा; 'मा कुण अद्धविआरं' (दे १, ४३)। २ मंडल, छोटा मंडल (दे १, ४३)।

अद्धा स्त्री [दे· अद्धा] १ काल, समय, वक्त, (ठा २,१; नव ४२)। २ संकेत (भग ११, ११)। ३ लब्धि, शक्ति-विशेष (विसे)। ४ अ. तत्त्वतः, वस्तुतः। ५ साक्षात्, प्रत्यक्ष (पिंग)। ६ दिवस। ७ रात्रि (सत्त ६ टी)। °काल पुं [°काल] सूर्य आदि की क्रिया (परिभ्रमण) से व्यक्त होनेवाला समय, 'सूरकिरियाविसिट्ठो गोदोहाइकिरियासु निरवेक्खो। अद्धाकालो भण्णइ' (विसे)। °छेय पुं [°छेद] समय का एक छोटा परिमाण, दो आवलिका परिमित काल (पंच)। °पच्चक्खाण न [°प्रत्याख्यान] अमुक समय के लिए कोई व्रत या नियम करना (आव ६)। °मीसय न [°मिश्रक] एक प्रकार की सत्य-मृषा भाषा (ठा १०)। °मीसया स्त्री [°मिश्रिता] देखो पूर्वोक्त अर्थ (पण्ण ११)। °समय पुं [°समय] सर्व-सूक्ष्म काल (पण्ण ४)।

अद्धाण पुं [अध्वन्] मार्ग, रास्ता (णाया १, १४; सुर ३,२२७)। °सीसय न [°शीर्षक] मार्ग का अन्त, अटवी आदि का अन्त भाग (वव ४; बृह ३)।

अद्धाण पुं [अध्वन्] मार्ग, रास्ता; 'हवइ सलाभं नरस्स अद्धाणं' (सुख ८, १३)। °सीसय न [°शीर्षक] जहां पर संपूर्ण सार्थ के लोग आगे जाने के लिए एकत्र हों वह मार्ग-स्थान (वव ४)।

अद्धाणिय वि [आध्विक] पथिक, मुसाफिर (बृह ४)।

अद्धासिय वि [अध्यासित] १ अधिष्ठित, आश्रित (सुर ७, २१४; उत्त २६४ टी)। २ आरूढ (स ६३०)।

अद्धि देखो **इड्ढि**;

'धण्णा बहिरंधरआ, ते चिअ जीअंति माणुसे लोए।
ण सुणंति खलवअणं, खलाण अद्धि न पेक्खंति' (गा ७०४)।

अद्धिइ स्त्री [अधृति] धीरज का अभाव, अधीरज (पउम ११८. ३६)।

अद्धुइअ वि [अर्धोदित] थोड़ा कहा हुआ (पि १५८)।

अद्धुग्घाड वि [अर्धोद्घाट] आधा खुला, 'अद्धोग्घाडा थणया' (पउम ३८, १०७)।

अद्धुट्ठ वि [अर्धचतुर्थ] साढ़े तीन (सम १०१; विसे ६६३)।

अद्धुत्त वि [अर्धोक्त] थोड़ा कहा हुआ (वव १०)।

अद्धुव वि [अध्रुव] १ चंचल, अस्थिर, विनश्वर (स ३३६; पंचा १६; पउम २६, ३०)। २ अनियत (आचा)।

अद्धेअद्ध वि [अर्धार्ध] १ द्विधा-भूत, दो टुकड़ेवाला, खण्डित। २ क्रिवि. आधा-आधा जैसे हो;

'अद्धेअद्धप्फुडिआ, अद्धेअद्धकडउक्खअसिलावेढ़ा।
पवअभुआहअविसढ़ा, अद्धेअद्धसिहरा पडंति महिहरा ॥' (से ६, ६६)।

अद्धोरु } देखो **अड्ढोरुग** (दे ३, ४५; ओघ
अद्धोरुग } ६७६)।

अद्धोवमिय वि [अद्धौपम्य, अद्धौपमिक] काल का वह परिमाण जो उपमा से समझाया जा सके, पल्योपम आदि उपमा-काल (ठा २, ४; ८)।

अध अ [अधस्] नीचे (आचा; पि १६०)।

अध (शौ) अ [अथ] अब, बाद (कप्पू)।

अधइं (शौ) [अथ किम्] १ हाँ। २ और क्या। ३ जरूर, अवश्य (कप्पू)।

अधं अ [अधस्] नीचे (पि ३४०)।

अधट्ठ वि [अधृष्ट] अ-ढीठ (कुमा)।

अधण वि [अधन] निर्धन, गरीब;

'रमइ विहवी विसेसे, थिइमेत्तं थोयवित्थरो महइ।
मग्गइ सरीरमधणो, रोई जीए च्चिय कयत्थो ॥' (गउड; सण)

अधणि वि [अधनिन्] धन-रहित, निर्धन (श्रा १४)।

अधण्ण वि [अधन्य] अकृतार्थ, निन्द्य (पण्ह १,१)।

अधम देखो **अहम** (उत्त ६)।

अधमण्ण } वि [अधमर्ण] करजदार, देनदार
अधमन्न } (धर्मवि १४६; १३५)।

अधम्म पुं [अधर्म] १ पाप-कार्य, निषिद्ध कर्म, अनीति; 'अधम्मेण चेव वित्तिं कप्पेमाणे विहरइ' (णाया १, १८)। २ एक स्वतन्त्र और लोक-व्यापी अजीव वस्तु, जो जीव वगैरह को स्थिति करने में सहायता पहुँचाती है (सम २; नव ५)। ३ वि. धर्म-रहित, पापी (विपा १, १)। °केउ पुं [°केतु] पापिष्ठ (णाया १, १८)। °क्खाइ वि [°ख्याति] प्रसिद्ध पापी (विपा १, १)। °क्खाइ वि [°ख्यायिन्] पाप का उपदेश देनेवाला (भग ३, ७)। °त्थिकाय पुं [°ास्तिकाय] **अधम्म** का दूसरा अर्थ देखो (अणु)। °बुद्धि वि [°बुद्धि] पापी, पापिष्ठ (उप ७२८ टी)।

अधम्मिट्ठ वि [अधर्मिष्ठ] १ धर्म को नहीं करनेवाला (भग १२, २)। २ महा-पापी, पापिष्ठ (णाया १, १८)।

अधम्मिट्ठ वि [अधर्मेष्ट] अधर्म-प्रिय, पाप-प्रिय (भग १२, २)।

अधम्मिट्ठ वि [अधर्मेष्ट] पापियों का प्यारा (भग १२, २)।

अधम्मिय देखो **अहम्मिय** (ठा ४, १)।

अधर देखो **अहर** (उवा; सुपा १३८)।

अधवा (शौ) देखो **अहवा** (कप्पू)।

अधा स्त्री [अधस्] अधो-दिशा, नीचली दिशा (ठा ६)।

अधि देखो **अहि** = अधि।

अधिइ देखो **अद्धिइ** (सुपा ३५६)।

अधिकरण देखो **अहिगरण** (पण्ह १, २)।

अधिग वि [**अधिक**] विशेष, ज्यादा (बृह १)।

अधिगम देखो **अहिगम** (धर्म २; विसे २२)।

अधिगरण देखो **अहिगरण** (निचू १)।

अधिगरणिया देखो **अहिगरणिया** (पराग २१)।

अधिगार देखो **अहिगार** (सूअनि ५८)।

अधिण्ण } (अप) वि [**अधीन**] आयत्त,
अधिन्न } परवश (पि ६१; हे ४, ४२७)।

अधिमासग पुं [**अधिमासक**] अधिक मास (निचू २०)।

अधिरोविअ वि [**अधिरोपित**] आरोपित, 'सूलाधिरोविओ सो' (धर्मवि १३७)।

अधीगार देखो **अहिगार** (सूअनि १८०)।

अधीय देखो **अहीय** (उत्त २०, २२)।

अधीस वि [**अधीश**] नायक, अधिपति (कुम्मा २३)।

अधुव देखो **अद्धुव** (गाया १, १, पउम ६५, ४६)।

अधो देखो **अहो** = अधस् (पि ३४२)।

अनंदि स्त्री [**अनन्दि**] अमङ्गल, अकुशल; 'तं मोएउ अनंदिं' (अजि ३७)।

अनन्न देखो **अणण्ण** (कुमा)।

अनय देखो **अणय** (सुपा ३७१)।

अनल देखो **अणळ** (हे १, २२८; कुमा)।

अनागय देखो **अणागय** (भग)।

अनागार देखो **अणागार** (भग)।

अनाय देखो **अणाय** (सुपा ४७०; पि ३८०)।

अनालंफ (चूपै) वि [**अनारम्भ**] पाप-रहित (कुमा)।

अनालंफ (चूपै) वि [**अनालम्भ**] अहिंसक, दयालु (कुमा)।

अनिगिण देखो **अणगिण** (सम १७)।

अनिदाया }
अनिद्दाया } देखो **अणिदा** (पराग ३४)।

अनिमित्ती स्त्री [**अनिमित्ती**] लिपि-विशेष (विसे ४६४ टी)।

अनियमिय वि [**अनियमित**] १ अव्यवस्थित। २ असंयत, इन्द्रियों का निग्रह नहीं करनेवाला; 'गओ य नरयं अनियमियप्पा' (पउम ११४, २६)।

अनियट्टि देखो **अणियट्टि** (सम २६; कम्म २; सत्त ७१ टी)।

अनियय देखो **अणियय** (ओघ २)।

अनिरुद्ध देखो **अणिरुद्ध** (अंत १४)।

अनिल देखो **अणिळ** (हे १, २२८; कुमा)।

अनिसट्ठ देखो **अणिसट्ठ** (ठा ३, ४)।

अनिहारिम } देखो **अणीहारिम** (भग; ठा
अनीहारिम } २, ४)।

अनु (अप) देखो **अण्णहा** (कुमा)।

अनुकूल देखो **अणुकूल** (सुपा ४७४)।

अनुग्गह देखो **अणुग्गह** (अभि ४१)।

अनुचिट्ठिय देखो **अणुट्ठिय** (स १५)।

अनुज्जुय देखो **अणुज्जुय** (पि ५७)।

अनुहव देखो **अणुहव** = अनु + भू। वकृ. **अनुहवंत** (रंभा)।

अन्न देखो **अण्ण** (सुपा ३६०; प्रासू ४३; पण्ह २, १; ठा ३, २; ५, १; आ ६)।

अन्नइय देखो **अण्णइय** (भवि)।

अन्नओ देखो **अण्णओ**। °**हुत्त** क्रिवि [°**मुख**] दूसरी तरफ (सुर ३, १३६)।

अन्नत्तो देखो **अण्णत्तो** (कुमा)।

अन्नत्थ } देखो **अण्णत्थ** (आचा; स १५०;
अन्नत्थं } कुमा)।

अन्नदो देखो **अण्णत्तो** (कुमा)।

अन्नमन्न देखो **अण्णमण्ण** (गाया १, १)।

अन्नन्न देखो **अण्णण्ण** (महा; कुमा)।

अन्नय पुं [**अन्वय**] एक की सत्ता में ही दूसरे की विद्यमानता, जैसे अग्नि की हयाती में ही धूम की सत्ता, नियमित सम्बन्ध (उप ४१३; स ६५१)।

अन्नयर देखो **अण्णयर** (सुपा ३७०)।

अन्नया देखो **अण्णया** (महा)।

अन्नव देखो **अण्णव** (सुपा ८५; ५२६)।

अन्नह देखो **अण्णह** (सुर १, १५६; कुमा)।

अन्नहा देखो **अण्णहा** (पउम १००, २४; महा; सुर १, १४३; प्रासू ७)।

अन्नहि देखो **अण्णहि** (कुमा)।

अन्ना स्त्री [**दे**] माता, जननी (दस ७, १६; १६)।

अन्नाइट्ठ वि [**अन्वाविष्ट**] आक्रान्त, 'तुमं णं आउसो कासवा ! ममं तवेणं अन्नाइट्ठे समाणे अंतो छण्हं मासाणं पित्तज्जरपरिगयसरीरे दाहवक्कंतीए छउमत्थे चेव कालं करेस्ससि' (भग १५)।

अन्नाण देखो **अण्णाण** = अज्ञान (कुमा; सुर १, १५; महा; उवर ६५; कम्म ४, ६; ११)।

अन्नाणि देखो **अण्णाणि** (उव; सुपा ५८८)।

अन्नाणिय देखो **अण्णाणिय** (पउम ४, २७)।

अन्नाय देखो पहला और दूसरा **अण्णाय** (सुर ६, २; सुपा २५६; सुर २, ६; २०२; सम्म ६६; सुपा २३३; सुर २, १६५; सुपा, ३०८); 'नाएण जं न सिद्धं को खलु सहलो तयत्थमन्नाओ ?' (उप ७१८ टी)।

अन्नारिस देखो **अण्णारिस** (हे १, १४२; महा)।

अन्नाहुत्त वि [**दे**] पराङ्मुख (सुख २,१७)।

अन्नि वि [**अन्यदीय**] परकीय, 'अन्नं वा अन्निं वा' (सूअ २, २, ६)।

अन्निज्जमाण देखो **अणिज्जमाण** (गाया १, १६)।

अन्निय देखो **अण्णिय**।

अन्नियसुय पुं [**अन्निकासुत**] एक विख्यात जैन मुनि (उव)।

अन्निया देखो **अण्णिया** (संथा ५६)।

अन्नुत्ति स्त्री [**अन्योक्ति**] साहित्य-प्रसिद्ध एक अलङ्कार (मोह ३७; सम्मत्त १४५)।

अन्नुन्न } देखो **अण्णुण्ण** (हे १, १५६;
अन्नुमन्न } कप्प)।

अन्नूण वि [**अन्यून**] अ-हीन (धर्मवि १२६)।

अन्नेस देखो **अण्णेस**। वकृ. **अन्नेसमाण** (उप ६ टी)।

अन्नेसण देखो **अण्णेसण** (सुर १०, २२८; सण)।

अन्नेसणा देखो **अण्णेसणा** (ठा ३, ४)।

अन्नेसय वि [**अन्वेषक**] गवेषक, खोज करनेवाला (स ५३५)।

अन्नेसि } देखो **अण्णेसि** (पि ५१६;
अन्नेसिय } आचा)।

अन्नोन्न देखो **अण्णोण्ण** (कुमा; महा)।

अप स्त्री. ब. [**अप्**] पानी, जल (सुज्ज

१०)। °काय पुं. [°काय] पानी के जीव (दं १३)।

अपइट्ठाण देखो अप्पइट्ठाण (आचा; ठा ४, ३)।

अपइट्ठिअ पुं [अप्रतिष्ठित] १ नरक-स्थान विशेष (देवेन्द्र २६)। देखो अप्पइट्ठिअ।

अपइट्ठिय देखो अप्पइट्ठिय (ठा ४, १)।

अपएस वि [अप्रदेश] १ निरंश, अवयव-रहित (भग २०, ५)। २ पुं. खराब स्थान (पंचा ७)।

अपंग पुं [अपाङ्ग] १ नेत्र का प्रान्त भाग। २ तिलक। ३ वि. हीन अंग वाला (नाट)।

अपंडिअ वि [दे] अ-नष्ट, विद्यमान (षड्)।

अपंडिअ [अपण्डित] १ सद्बुद्धि-रहित (बृह १)। २ मूर्ख (अच्चु ५)।

अपकरिस पुं [अपकर्ष] ह्रास (धर्मसं ८३७)।

अपगंड वि [अपगण्ड] १ निर्दोष। २ न. फेन, पानी का भाग (सूअ १, ३)।

अपचय पुं [अपचय] अपकर्ष, हीनता (उत्त १)।

अपच्च देखो अवच्च; 'अपच्चणिव्विसेसाणि सत्ताणि' (पि ३६७)।

अपच्चय पुं [अप्रत्यय] अविश्वास (पण्ह १, २)।

अपच्चल वि [अप्रत्यल] १ असमर्थ। २ अयोग्य (नचू ११)।

अपच्छ वि [अपथ्य] १ अ-हितकर (पउम ८२, ७२)। २ न. नहीं पचनेवाला भोजन, 'थेवेण अपच्छासेवणेण रोगुव्व वड्ढेइ' (सुपा ४३८)।

अपच्छिम वि [अपश्चिम] अन्तिम (णंदि; पाअ; उप २६४ टी)।

अपज्जत्त, अपज्जत्तग वि [अपर्याप्त] १ अपर्याप्त, असमर्थ (गउड)। २ पर्याप्ति (आहारादि ग्रहण करने की शक्ति) से रहित (ठा २, १; नव ४)। °नाम न [°नामन्] नाम-कर्म का एक भेद (सम ६७)।

अपज्जवसिय वि [अपर्यवसित] १ नाश-रहित (सम्म ६१)। २ अन्त-रहित (ठा १)।

अपडिच्छिर वि [दे] जड़-बुद्धि, मूर्ख (दे १, ४३)।

अपडिण्ण, अपडिन्न वि [अप्रतिज्ञ] १ प्रतिज्ञा-रहित, निश्चय-रहित (आचा)। २ राग-द्वेष आदि बन्धनों से वर्जित (सूअ १, ३, ३)। ३ फल की इच्छा न रखकर अनु-ष्ठान करनेवाला, निष्काम; 'गन्धेसु वा चन्दण-माहु सेट्ठं, एवं मुणीणं अपडिन्नमाहु' (सूअ १,६)।

अपडिपोग्गल वि [अप्रतिपुद्गल] दरिद्र, निर्धन (निचू ५)।

अपडिबद्ध वि [अप्रतिबद्ध] १ प्रतिबन्ध-रहित, बेरोक; 'अपडिबद्धो अनलो व्व' (पण्ह २, ५)। २ आसक्ति-रहित (पव १०४)।

अपडिवाइ देखो अप्पडिवाइ (ठा ६; ओघ ५३२; णंदि)।

अपडिसंलीण वि [अप्रतिसंलीन] असंयत, इन्द्रिय आदि जिसके काबू में न हों (ठा ४, २)।

अपडिहट्टु अ [अप्रतिहृत्य] न दे कर (कस; बृह ३)।

अपडिहय देखो अप्पडिहय (णाया १, १६)।

अपडीकार वि [अप्रतीकार] इलाज-रहित, उपाय-रहित (पण्ह १, १)।

अपडुप्पण्ण, अपडुप्पन्न वि [अप्रत्युत्पन्न] १ अ-वर्त-मान, अ-विद्यमान (पि १६३)। २ प्रतिपत्ति में अ-कुशल (वव ६)।

अपणट्ठ वि [अप्रनष्ट] नाश को अप्राप्त (सुर ४, २४०)।

अपत्त देखो अप्पत्त (बृह १; ठा ५, २; सूअ १, १४)।

अपत्तिअंत वकृ. [अप्रतियत्] विश्वास नहीं करता हुआ (गा ६७८; पि ४८७)।

अपत्तिय देखो अप्पत्तिय (भग १६, ३; पंचा ७)।

अपत्थ देखो अपच्छ (उत्त ७; पंचा ७)।

अपभासिय देखो अवभासिय = अपभाषित (वव १)।

अपमत्त देखो अप्पमत्त (आचा)।

अपमाण न [अप्रमाण] १ झूठा, असत्य (श्रा १२)। २ वि. ज्यादा, अधिक (उत्त २४)।

अपमाय वि [अप्रमाद] १ प्रमाद-रहित। २ पुं. प्रमाद का अभाव, सावधानी (पण्ह २, १)।

अपय वि [अपद] १ पाँव-रहित, वृक्ष, द्रव्य, भूमि वगैरह पैर रहित वस्तु (णाया १, ८)। २ पुं. मुक्तात्मा, 'अपयस्स पयं नत्थि' (आचा)। ३ सूत्र का एक दोष (बृह १; विसे)।

अपय स्त्री [अप्रज] सन्तानरहित (बृह १)।

अपर देखो अवर (निचू २०)। २ वैशेषिक दर्शन में प्रसिद्ध अवान्तर सामान्य (विसे २४६१)।

अपरच्छ वि [अपराक्ष] असमक्ष, परोक्ष (पण्ह १, ३)।

अपरद्ध देखो अवरज्झ (कप्प)।

अपरंतिया स्त्री [अपरान्तिका] छन्द-विशेष (अजि ३४)।

अपराइय वि [अपराजित] १ अ-परिभूत (पण्ह १, ४)। २ पुं. सातवें बलदेव के पूर्व-जन्म का नाम (सम १५३)। ३ भरतक्षेत्र का छठवाँ प्रतिवासुदेव (सम १५४)। ४ उत्तम-पंक्ति के देवों की एक जाति (सम५६)। ५ भगवान् ऋषभदेव का एक पुत्र (राज)। ६ एक महाग्रह (ठा २,३)। ७ न. अनुत्तर देव-लोक का एक विमान—देवावास (सम ५६)। ८ रुचक पर्वत का एक शिखर (ठा ८)। ९ जम्बूद्वीप की जगती का उत्तर द्वार (ठा ४,२)।

अपराइया स्त्री [अपराजिता] १ विदेह-वर्ष की एक नगरी (ठा २, ३)। २ आठवें बलदेव की माता (सम १५२)। ३ अंगारक ग्रह की एक पटरानी का नाम (ठा ४, १)। ४ एक दिशा-कुमारी देवी (ठा ८)। ५ ओषधि-विशेष (ती ७)। ६ अञ्जनाद्रि पर्वत पर स्थित एक पुष्करिणी (ती २)।

अपराजिय देखो अपराइय (कप्प; सम ५६; १०२; ठा २, ३)।

अपराजिया देखो अवराइया (ठा २, ३)।

अपराजिया स्त्री [अपराजिता] १ भगवान मल्लिनाथ की दीक्षा-शिविका (विचार १२९)। २ पक्ष की दशवीं रात (सुज्ज १०, १४)।

अपरिग्गह वि [अपरिग्रह] १ धन-धान्य आदि परिग्रह से रहित (पण्ह २, ३)। २

ममता-रहित, निर्मम; 'अपरिग्गहा अणारंभा भिक्खू ताणं परिव्वए' (सूअ १, १, ४)।

अपरिग्गहा स्त्री [अपरिग्रहा] वेश्या (वव २)।

अपरिग्गहिआ स्त्री [अपरिगृहीता] १ वेश्या, कन्या वगैरह अविवाहिता स्त्री (पडि)। २ पति-हीना स्त्री, विधवा (धर्म २)। ३ घर-दासी। ४ पनहारी। ५ देव-पुत्रिका, देवता को भेंट की हुई कन्या (आचू ५)।

अपरिच्छण्ण, **अपरिच्छन्न** वि [अपरिच्छन्न] १ नहीं ढका हुआ, अनावृत (वव ३)। २ परिवार रहित (वव १)।

अपरिणय वि [अपरिणत] १ रूपान्तर को अप्राप्त (ठा २, १)। २ जैन साधु की भिक्षा का एक दोष। (आचा)।

अपरित्त वि [अपरीत] अपरिमित, अनन्त (पएण १८)।

अपरिसेस वि [अपरिशेष] सब, सकल, निःशेष (पण्ह १, २; पउम ३, १४०)।

अपरिहारिय वि [अपरिहारिक] १ दोषों का परिहार नहीं करनेवाला। (आचा)। २ पुं. जैनेतर दर्शन का अनुयायी गृहस्थ (निचू २)।

अपवग्ग पुं [अपवर्ग] मोक्ष, मुक्ति (सुर ८, १०६; सत्त ११)।

अपविद्ध वि [अपविद्ध] १ प्रेरित (से ७, ११)। २ न. गुरु-वन्दन का एक दोष, गुरु को वन्दन करके तुरन्त ही भाग जाना (गुभा २३)।

अपह वि [अप्रभ] निस्तेज (दे १, १६४)।

अपहत्थ देखो **अवहत्थ** (भवि)।

अपहारि वि [अपहारिन्] अपहरण करने-वाला (स २१७)।

अपहिय वि [अपहृत] छीना हुआ (पउम ७६, ५)।

अपहु वि [अप्रभु] १ असमर्थ। २ नाथ-रहित, अनाथ (पउम १०१, ३५)।

अपाइय वि [अपात्रित] पात्र-रहित, भाजन-वर्जित; 'नो कप्पइ निग्गंथीए अपाइयाए होत्तए' (कस)।

अपाउड वि [अपावृत] नहीं ढका हुआ, वस्त्र-रहित, नग्न (ठा ५, १)।

अपादाण न [अपादान] कारक-विशेष, जिसमें पञ्चमी विभक्ति लगती है (विसे २११७)।

अपाण न [अपान] १ पान का अभाव। (उप ८४५)। २ पानी जैसा ठंढा पेय वस्तु-विशेष। (भग १५)। ३ पुंन. अपान वायु। ४ गुदा (सुपा ६२०)। ५ वि. जल-वर्जित, निर्जल (उपवास); 'छट्ठेणं भत्तेणं अपाणएणं' (जं २)।

अपायावगम पुं [अपायापगम] जिनदेव का एक अतिशय (संबोध २)।

अपार वि [अपार] पार-रहित, अनन्त (सुपा ४५०)।

अपारमग्ग पुं [दे] विश्राम, विश्रान्ति (दे १, ४३)।

अपाव वि [अपाप] १ पाप-रहित (सूअ १, १, ३)। २ न. पुण्य (उव)।

अपावा स्त्री [अपापा] नगरी-विशेष, जहां भगवान् महावीर का निर्वाण हुआ था, यह आजकल 'पावापुरी' नाम से प्रसिद्ध है और बिहार से आठ माईल पर है (राज)।

अपिट्ट वि [दे] पुनरुक्त, फिरसे कहा हुआ (षड्)।

अपिय वि [अप्रिय] अनिष्ट (जीव १)।

अपिह अ [अपृथक्] अ-भिन्न (कुमा)।

अपुणबंधग, **अपुणबंधय** वि [अपुनर्बन्धक] फिर से उत्कृष्ट कर्मबन्ध नहीं करने वाला, तीव्र भाव से पाप को नहीं करने वाला (पंचा ३; उप २५३; ६५१)।

अपुणब्भव पुं [अपुनर्भव] १ फिर से नहीं होना। २ वि. जिससे फिर जन्म न हो वह, मुक्ति-प्रद (पण्ह २, ४)।

अपुणब्भाव वि [अपुनर्भाव] फिर से नहीं होनेवाला (पंच १)।

अपुणभव देखो **अपुणब्भव** (कुमा)।

अपुणरागम पुं [अपुनरागम] १ मुक्त आत्मा। २ मुक्ति, मोक्ष (दसचू १)।

अपुणरावत्तग, **अपुणरावत्तय** पुं [अपुनरावर्त्तक] १ फिर नहीं घूमने वाला, मुक्त आत्मा। २ मोक्ष, मुक्ति (पि ३४३; औप; भग १ १)।

अपुणरावत्ति पुं [अपुनरावर्तिन्] मुक्त आत्मा (पि ३४३)।

अपुणराविंत्ति पुं [अपुनरावृत्ति] मोक्ष, मुक्ति (पडि)।

अपुणरुत्त वि [अपुनरुक्त] फिर से अकथित, पुनरुक्ति-दोष से रहित; 'अपुणरुत्तेहिं महा-वित्तेहिं संथुणइ' (राय)।

अपुणागम देखो **अपुणरागम** (पि ३४३)।

अपुणागमण न [अपुनरागमन] १ फिर से नहीं आना। २ फिर से अनुत्पत्ति; 'अपुणा-गमणाय व तं तिमिरं उम्मूलिअं रविणा' (गउड)।

अपुण्ण न [अपुण्य] १ पाप। २ वि. पुण्य-रहित, कम-नसीब, हत-भाग्य (विपा १, ७)।

अपुण्ण वि [अपूर्ण] अधूरा, अपरिपूर्ण (विपा १, ७)।

अपुण्ण वि [दे] आक्रान्त (षड्)।

अपुत्त, **अपुत्तिय** वि [अपुत्र, °क] १ पुत्र-रहित (सुपा ४१२; ३१४)। २ स्वजन-रहित, निर्मम, निःस्पृह (आचा)।

अपुन्न देखो **अपुण्ण** (णाया १, १३)।

अपुम न [अपुंस्] नपुंसक (ओघ २२३)।

अपुल्ल देखो **अप्पुल्ल** (चंड)।

अपुव्व वि [अपूर्व] १ नूतन, नवीन। २ अद्भुत, आश्चर्यकारक। ३ असाधारण, अद्वितीय (हे ४, २७०; उप ६ टी)। °**करण** न [°करण] १ आत्मा का एक अभूतपूर्व शुभ परिणाम (आचा)। २ आठवां गुण-स्थानक (पव २२४; कम्म २, ६)।

अपूय, **अपूव** पुं [अपूप] एक भक्ष्य पदार्थ, पूआ, पूड़ी (औप; पएण ३६; दे १, १३४; ६, ८१)।

अपेक्ख सक [अप+ईक्ष्] अपेक्षा करना, राह देखना। हेकृ. **अपेक्खिदुं** (शौ) (नाट)।

अपेच्छ वि [अप्रेक्ष्य] १ देखने के अशक्य। २ देखने के अयोग्य (उव)।

अपेय वि [अपेय] पीने के अयोग्य, मद्य आदि (कुमा)।

अपेय वि [अपेत] गया हुआ, नष्ट; 'अपेय-चक्खु' (बृह १)।

अपेहय वि [अपेक्षक] अपेक्षा करने वाला (आव ४)।

अपोरिसिय } वि [अपौरुषिक] पुरुष से
अपोरिसीय } ज्यादा परिमाण वाला, अगाध (णाया १, ५; १४)।

अपोरिसीय वि [अपौरुषेय] पुरुष से नहीं बनाया हुआ, नित्य (ठा १०)।

अपोह सक [अप+ऊह्] निश्चय करना, निश्चय रूप से जानना। अपोहए (विसे ५६१)।

अपोह पुं [अपोह] १ निश्चय-ज्ञान (विसे ३९६)। २ पृथग्भाव, भिन्नता (ओघ ३)।

अप्प देखो **अत्त**=आप्त; 'अप्पोलंभनिमित्तं पढमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्तेत्ति बेमि' (णाया १, १)।

अप्प वि [अल्प] १ थोड़ा, स्तोक (सुपा २८०; स्वप्न ६७)। २ अभाव (जीव ३; भग १४, १)।

अप्प पुं [आत्मन्] १ आत्मा, जीव, चेतन (णाया १, १)। २ निज, स्व; 'अप्पणा अप्पणो कम्मक्खयं करित्तए' (णाया १, ५)। ३ देह, शरीर (उत्त ३)। ४ स्वभाव, स्वरूप (आचा)। °**घाइ** वि [°घातिन्] आत्म-हत्या करनेवाला (उप ३५७ टी)। °**छंद** वि [°च्छन्द] स्वैरी, स्वच्छन्दी (उप ८३३ टी)। °**ज्ज** वि [°ज्ञ] १ आत्मज्ञ (हे २, ८३)। २ स्वाधीन (निचू १)। °**ज्जोइ** पुं [°ज्योतिस्] ज्ञानस्वरूप, 'किंजोइरयं पुरिसो अप्पज्जोइ त्ति णिद्दिट्ठो' (विसे)। °**ण्णु** वि [°ज्ञ] आत्म-ज्ञानी (षड्)। °**वस** वि [°वश] स्वतन्त्र, स्वाधीन (पात्र; पउम ३७, २२)। °**वह** पुं [°वध] आत्म-हत्या, अपघात (सुर २, १९६; ५, २३७)। °**वाइ** वि [°वादिन्] आत्मा के अतिरिक्त दूसरे पदार्थ को नहीं माननेवाला (णंदि)।

अप्प पुं [दे] पिता, बाप (दे १, ६)।

अप्प सक [अर्पय्] अर्पण करना, भेंट करना। अप्पेइ (हे १, ६३)। अप्पअइ (नाट)। संकृ. **अप्पिअ** (सुपा २८०)। कृ. **अप्पेयव्व** (सुपा २६५; ५१६)।

अप्पआस देखो **अप्पगास** (नाट)।

अप्पआस सक [श्लिष्] आलिङ्गन करना। अप्पआसइ (षड्)।

अप्पइट्ठाण पुंन [अप्रतिष्ठान] १ मोक्ष, मुक्ति (आचा)। २ सातवीं नरक-भूमि का बीचला आवास (सम २; ठा ५, ३)।

अप्पइट्ठिअ वि [अप्रतिष्ठित] १ अप्रतिबद्ध। २ अशरीरी, शरीर-रहित (आचा २, १६, १२)। देखो **अपइट्ठिअ**।

अप्पउलिय वि [अपक्वौषधि] नहीं पकी हुई फल-फलहरी (स ५०)।

अप्पओजग वि [अप्रयोजक] अ-गमक, अ-निश्चायक (हेतु) (धर्मसं १२२३)।

अप्पंभरि वि [आत्मम्भरि] अकेलपेट्टू, स्वार्थी (उप ५७०)।

अप्पकंप वि [अप्रकम्प] निश्चल, स्थिर (ठा १०)।

अप्पकेर वि [आत्मीय] स्वकीय, निजी (प्रामा)।

अप्पक्क वि [अपक्व] नहीं पका हुआ, कच्चा (सुपा ४१३)।

अप्पग देखो **अप्प** (आव ४; आचा)।

अप्पगास पुं [अप्रकाश] प्रकाश का अभाव, अन्धकार (निचू १)।

अप्पगुत्ता स्त्री [दे] कपिकच्छू, कौंच वृक्ष (दे १, २९)।

अप्पजाणुअ वि [आत्मज्ञ] आत्मा का जानकार (प्राकृ १८)।

अप्पजाणुअ वि [अल्पज्ञ] अज्ञ, मूर्ख (प्राकृ १८)।

अप्पज्झ वि [दे] आत्म-वश, स्वाधीन (दे १, १४)।

अप्पडिआर वि [अप्रतिकार] इलाज-रहित, उपाय-रहित (मा ४३)।

अप्पडिकंटय वि [अप्रतिकण्टक] प्रतिपक्ष-शून्य, प्रतिस्पर्धि-रहित (राय)।

अप्पडिकम्म वि [अप्रतिकर्मन्] संस्कार-रहित, परिष्कार-वर्जित; 'सुण्णागारे व अप्पडिकम्मे' (पण्ह २, ५)।

अप्पडिक्कंत वि [अप्रतिक्रान्त] दोष से अनिवृत्त, व्रत-नियम में लगे हुए दूषणों की जिसने शुद्धि न की हो वह (औप)।

अप्पडिकुट्ठ वि [अप्रतिकुष्ट] अनिवारित, नहीं रोका हुआ (ठा २, ४)।

अप्पडिचक्क वि [अप्रतिचक्र] अतुल्य, असमान (णंदि)।

अप्पडिण्ण } देखो **अपडिण्ण** (आचा)।
अप्पडिन्न }

अप्पडिबंध पुं [अप्रतिबन्ध] १ प्रतिबन्ध का अभाव। २ वि. प्रतिबन्ध-रहित (सुपा ६०८)।

अप्पडिबद्ध देखो **अपडिबद्ध** (उत्त २९; पि २१८)।

अप्पडिबुद्ध वि [अप्रतिबुद्ध] १ अ-जागृत। २ कोमल, सुकुमार (अभि १९१)।

अप्पडिम वि [अप्रतिम] असाधारण, अनुपम (उप ७६८ टी; सुपा ३५)।

अप्पडिरूव वि [अप्रतिरूप] ऊपर देखो (उप ७२८ टी)।

अप्पडिलद्ध वि [अप्रतिलब्ध] अप्राप्त (णाया १, १)।

अप्पडिलेस्स वि [अप्रतिलेश्य] असाधारण मनो-बलवाला (औप)।

अप्पडिलेहण न [अप्रतिलेखन] अपर्यवेक्षण, अनवलोकन, नहीं देखना (आव ६)।

अप्पडिलेहणा स्त्री [अप्रतिलेखना] ऊपर देखो (कप्प)।

अप्पडिलेहिय वि [अप्रतिलेखित] अ-पर्यवेक्षित, अनवलोकित, नहीं देखा हुआ (उवा)।

अप्पडिलोम वि [अप्रतिलोम] अनुकूल (भग २५, ७; अभि २४)।

अप्पडिवरिय पुं [अप्रतिवृत] प्रदोष काल (बृह १)।

अप्पडिवाइ वि [अप्रतिपातिन्] १ जिसका नाश न हो ऐसा, नित्य (सुर १४, २९)। २ अवधिज्ञान का एक भेद, जो केवल ज्ञान को बिना उत्पन्न किये नहीं जाता (विसे)।

अप्पडिहत्थ वि [अप्रतिहस्त] असमान, अद्वितीय (से १३, १२)।

अप्पडिहय वि [अप्रतिहत] १ किसी से नहीं रुका हुआ (पण्ह २, ५)। २ अखण्डित, अबाधित; 'अप्पडिहयसासणे' (णाया १,१६)। ३ विसंवाद-रहित 'अप्पडिहयवरनाणदंसणधरे' (भग १, १)।

अप्पडीबद्ध देखो **अपडिबद्ध**; 'निम्ममनिरहंकारा निग्गयसरीरेवि अप्पडीबद्धा' (संथा ६०)।

अप्पड्ढिय वि [अल्पर्द्धिक] थोड़ी ऋद्धि-वाला, अल्प वैभववाला (सुपा ४३०)।

अप्पण न [अर्पण] १ भेंट, उपहार, दान (श्रा २७)। २ प्रधान रूप से प्रतिपादन (विसे १८४३)।

अप्पण देखो अप्प = आत्मन् (आचा; उत्त १; महा; हे ४, ४२२)।

अप्पण वि [आत्मीय] स्वकीय, निजका; 'नो अप्पणा पराया गुरुणो कइयावि होंति सुद्धाणं' (सट्ठि १०५)।

अप्पणय वि [आत्मीय] स्वकीय, निजी (पउम ५०,१६; सुपा २७६; हे २,१५३)।

अप्पणा अ [स्वयम्] स्वयं, आप, निज, खुद (षड्)।

अप्पणिज्ज, अप्पणिज्जिय वि [आत्मीय] स्वकीय, स्वीय (ठा १; आवम)।

अप्पणो अ [स्वयम्] आप, खुद, निज; 'विअसंति अप्पणो चेव कमलसरा' (हे २, २०६)।

अप्पण्ण देखो अक्कम = आ + क्रम्। अप्पण्णइ (प्राकृ ७३)।

अप्पण्णुअ देखो अप्पजाणुअ = आत्मज्ञ, अल्पज्ञ (प्राकृ १८)।

अप्पतक्किय वि [अप्रतर्कित] अवितर्कित, असंभावित (स ५३०)।

अप्पत्त पुंन [अपात्र] १ अयोग्य, नालायक, कुपात्र; 'अण्णेवि हु अप्पत्ता पररिद्धिं नेय विसहंति' (सुर ३, ४५; गा १५७)। २ वि. आधार-रहित, भाजन-शून्य (सुर १३, ४५)।

अप्पत्त वि [अपत्र] १ पत्ता से रहित (वृक्ष) (सुर ३, ४५)। २ पांख से रहित (पक्षी) (सूअ १, १४)।

अप्पत्त वि [अप्राप्त] अलब्ध, अनवाप्त (सुर १३,४५; ओघ ८६)। °कारि वि [°कारिन्] वस्तु का बिना स्पर्श किये ही (दूर से) ज्ञान उत्पन्न करनेवाला, 'अप्पत्तकारि णयणं' (विसे)।

अप्पत्ति स्त्री [अप्राप्ति] नहीं पाना (सुर ४, २१३)।

अप्पत्तिय पुंन [अप्रत्यय] अविश्वास (स ६६७; सुपा ५१२)।

अप्पत्तिय न [अप्रीति] १ अप्रीति, प्रेम का अभाव (ठा ४, ३)। २ क्रोध, गुस्सा (सूअ १, १, २)। ३ मानसिक पीड़ा (आचा)। ४ अपकार (निचू १)।

अप्पत्तिय वि [अपात्रिक] पात्र-रहित, आधार-वर्जित (भग १६, ३)।

अप्पत्तियण न [अप्रत्ययन] अविश्वास, अश्रद्धा (उप ३१२)।

अप्पत्थ वि [अप्रार्थ्य] १ प्रार्थना करने के अयोग्य। २ नहीं चाहने लायक (सुपा ३३६)।

अप्पत्थण न [अप्रार्थन] १ अयाच्ञा। २ अनिच्छा, अचाह (उत्त ३२)।

अप्पत्थिय वि [अप्रार्थित] १ अयाचित। २ अनभिलषित, अवांछित (जं ३)। °पत्थय, °पत्थिय वि [°प्रार्थक, °र्थिक] मरणार्थी, मौत को चाहनेवाला; 'कीस णं एस अप्पत्थिय-पत्थए दुरंतपंतलक्खणे' (भग ३, २; णाया १, ६; पि ७१)।

अप्पत्थुय वि [अप्रस्तुत] प्रसंग के अनुपयुक्त, विषयान्तर (सुपा १०६)।

अप्पदुट्ठ वि [अप्रद्विष्ट] जिसपर द्वेष न हो वह, प्रीतिकर (ओघ ७४४)।

अप्पदुस्समाण वकृ [अप्रद्विष्यत्] द्वेष नहीं करता हुआ (अंत १२)।

अप्पप्प त्रि [अप्राप्य] प्राप्त करने के अशक्य (विसे २६८७)।

अप्पभाय न [अप्रभात] १ बड़ी सबेर। २ वि. प्रकाश-रहित, कान्ति-वर्जित; 'अज्ज पुण अप्पभाए गयणे' (सुर ११, ११०)।

अप्पभु वि [अप्रभु] १ असमर्थ (भग)। २ पुं. मालिक से भिन्न, नौकर वगैरह (धर्म ३)।

अप्पमज्जिय वि [अप्रमार्जित] साफ नहीं किया हुआ (उवा)।

अप्पमत्त वि [अप्रमत्त] प्रमाद-रहित, सावधान, उपयोगवाला (पण्ह २,५; हे १,२३१; अभि १८५)। °संजय पुंस्त्री [°संयत] १ प्रमाद-रहित मुनि। २ न. सातवां गुण-स्थानक (भग ३, ३)।

अप्पमाण देखो अपमाण (बृह ३; पण्ह २,३); 'अइक्कमित्ता जिणरायआणं, तवंति तिव्वं तवमप्पमाणं। पढंति नाणं तह दिंति दाणं, सव्वंपि तेसिं कयमप्पमाणं' (सत्त २०)।

अप्पमाय पुं [अप्रमाद] प्रमाद का अभाव (निचू १)।

अप्पमेय वि [अप्रमेय] १ जिसका माप न हो सके, अनन्त (पउम ७५, २३)। २ जिसका ज्ञान न हो सके (धर्म १)। ३ प्रमाण से जिसका निश्चय न किया जा सके वह (पण्ह १, ४)।

अप्पय देखो अप्प (उव; पि ४०१)।

अप्परिच्चत्त वि [अपरित्यक्त] नहीं छोड़ा हुआ, अपरिमुक्त (सुपा ११०)।

अप्परिवडिय वि [अपरिपतित] अनष्ट, विद्यमान (श्रा ६)।

अप्पलहुअ वि [अप्रलघुक] महान्, बड़ा (से १, १)।

अप्पलीण वि [अप्रलीन] असंबद्ध, सङ्ग-वर्जित (सूअ १, १, ४)।

अप्पलीयमाण वकृ [अप्रलीयमान] आसक्ति नहीं करता हुआ (आचा)।

अप्पवित्त वि [अप्रवृत्त] प्रवृत्ति-रहित (पंचा १४)।

अप्पवित्ति स्त्री [अप्रवृत्ति] प्रवृत्ति का अभाव (धर्म १)।

अप्पसंत वि [अप्रशान्त] अशान्त, कुपित (पंचा २)।

अप्पसंसणिज्ज वि [अप्रशंसनीय] प्रशंसा के अयोग्य (तंदु)।

अप्पसज्झ वि [अप्रसह्य] १ सहने के अशक्य। २ सहन करने के अयोग्य (वव ७)।

अप्पसण्ण वि [अप्रसन्न] उदासीन (नाट)।

अप्पसत्थ वि [अप्रशस्त] अचारु, असुन्दर, खराब (ठा ३, ३; भग; श्रा ४)।

अप्पसत्तिय वि [अल्पसत्त्विक] अल्प सत्त्व वाला, 'सुसमत्थाविसमत्था कीरंति अप्पसत्तिया पुरिसा' (सूअ १, ४, १)।

अप्पसारिय वि [अप्रसारिक] निर्जन, विजन (स्थान) (उत्त १७०)।

अप्पहवंत वकृ [अप्रभवत्] समर्थ नहीं होता हुआ, नहीं पहुँच सकता हुआ (स ३०५)।

अप्पहिय वि [अप्रथित] १ अविस्तृत। २ अप्रसिद्ध (सुपा १२५)।

अप्पाअप्पि स्त्री [दे] उत्कण्ठा, औत्सुक्य (पिंग)।

अप्पाउड वि [अप्रावृत] अनाच्छादित, नग्न (सूअ २, २)।

अप्पाउय वि [अल्पायुष्क] थोड़ा आयु-वाला (ठा ३, ३; पउम १४, ३०)।

अप्पाउरण वि [अप्रावरण] १ नग्न। २ न. वस्त्र का अभाव। ३ वस्त्र नहीं पहनने का नियम (पंचा ५; पव ४)।

अप्पाण देखो अप्प = आत्मन् (पराह १, २; ठा २, २; प्रासू; हे ३, ५६)। °**रक्खि** वि [°रक्षिन्] आत्मा की रक्षा करनेवाला (उत्त ४)।

अप्पाबहु, **अप्पाबहुय** न [अल्पबहुत्व] न्यूनाधिकता, कम-बेशीपन (नव ३२; ठा ४, २)।

अप्पावय वि [अप्रावृत] १ वस्त्र-रहित, नग्न (पराह २, १)। २ खुला हुआ, बन्द नहीं किया हुआ (सूअ १, ५, १)।

अप्पाविय वि [अर्पित] दिया हुआ (सुपा ३३१)।

अप्पाह सक [सं + दिश्] संदेश देना, खबर पहुँचाना। अप्पाहइ (षड्; हे ४, १८०)। अप्पाहेइ (गा ६३२)। संकृ. **अप्पाहट्टु**, **अप्पाहिवि** (पि ५७७; भवि)।

अप्पाह सक [आ + भाष्] संभाषण करना। अप्पाहइ (प्राकृ ७०)।

अप्पाह सक [अधि + आपय्] पढ़ाना, सीखाना। कर्म. अप्पाहिज्जइ (से १०, ७४)। वकृ. **अप्पाहेंत** (से १०, ७५)। हेकृ. **अप्पाहेउं** (पि २८६)।

अप्पाहणी स्त्री [दे] संदेश, समाचार (पिंड ४३०)।

अप्पाहण्ण न [अप्राधान्य] मुख्यता का अभाव, गौणता (पंचा १; भास ११)।

अप्पाहिय वि [संदिष्ट] संदेश दिया हुआ (भवि)।

अप्पाहिय वि [अध्यापित] १ पाठित, शिक्षित (से ११, ३८; १४, ६१)। २ न. सीख, उपदेश; 'अप्पाहियसरणं' (उप ५६२ टी)।

अप्पिड्ढि, **ड्ढिय** वि [अल्पर्द्धिक] अल्प संपत्ति वाला (भग; पउम २, ७४)।

अप्पिण सक [अर्पय्] अर्पण करना, भेंट करना, देना; 'अहीरोवि वारगेण अप्पिणइ' (आक)। अप्पिणामि (पि ५५७)। अप्पिणंति (विसे ७ टी)।

अप्पिणण न [अर्पण] दान, भेंट (उप १७४)।

अप्पिणिच्चिय वि [आत्मीय] स्वकीय, निजी (भग)।

अप्पिय वि [अर्पित] १ दिया हुआ, भेंट किया हुआ (विपा १, २; हे १, ६३)। २ विवक्षित, प्रतिपादन करने को इष्ट; 'जह दवियमप्पियं तं तहेव अत्थित्ति पज्जवनयस्स' (सम्म ४२)। ३ पुं. पर्यायार्थिक नय, 'अप्पियमयं विसेसो सामन्नमणप्पियनयस्स' (विसे)।

अप्पिय वि [अप्रिय] १ अनिष्ट, अप्रीतिकर (भग १, ५; विपा १, १)। २ न. मन का दुःख। ३ चित्त की शंका, 'अदु णाईणं व सुहीणं वा अप्पियं दट्ठु एगता होंति' (सूअ १, ४, १, १४)।

अप्पीइ स्त्री [अप्रीति] अप्रेम, अरुचि (सुपा २६४)।

अप्पीकय वि [आत्मीकृत] आत्मा से संबद्ध (विसे)।

अप्पुट्ठ वि [अस्पृष्ट] नहीं छूआ हुआ, असं-युक्त; 'जं अप्पुट्ठा भावा ओहिनाणस्स हुंति पचक्खा' (सम्म ८१)।

अप्पुट्ठ वि [अपृष्ट] नहीं पूछा हुआ (सुपा १११)।

अप्पुण्ण वि [दे. आपूर्ण] पूर्ण (षड्)।

अप्पुल्ल वि [आत्मीय] आत्मा में उत्पन्न (हे २, १६३; षड्; कुमा)।

अप्पुव्व देखो अपुव्व; 'अप्पुव्वो पडिबंधो जीवियमवि चयइ मह कज्जे' (सुपा ३११)।

अप्पेयव्व देखो अप्प = अर्पय्।

अप्पोलि स्त्री [अप्रज्वलिता] कच्ची फल-फुलहरी (श्रा २१)।

अप्पोल्ल वि [दे] पोल-रहित, नक्कर (बृह ३)।

अप्फडिअ वि [आस्फालित] आस्फालित, आहत (विसे २६९२ टी)।

अप्फाल सक [आ + स्फालय्] १ आस्फो-टन करना, हाथ से आघात करना। २ ताडना, पीटना। ३ ताल ठोकना। अप्फालेइ (महा)। कवकृ. **अप्फालिज्जंत** (राय)। संकृ. **अप्फा-लिऊण** (काप्र १८९; महा)।

अप्फालण न [आस्फालन] १ ताल ठोकना। २ ताड़न, आघात (गा ५४८; से ५, २२; सुपा ८७)।

अप्फालिय वि [आस्फालित] १ हाथ से ताडित, आहत (पि ३११)। २ वृद्धि प्राप्त, उन्नत (राज)।

अप्फुंद सक [आ + क्रम्] १ आक्रमण करना। २ जाना, 'संभाराओ व्व णहं अप्फुंदइ मलिअरविअरं कुसुमरओ' (से ६, ५७)।

अप्फुडिय देखो अफुडिय (जं २; दस ६)।

अप्फुण्ण वि [दे. आक्रान्त] आक्रान्त, दबाया हुआ (हे ४, २५८)।

अप्फुण्ण वि [अपूर्ण] अपूर्ण, अधूरा (गउड)।

अप्फुण्ण, **अप्फुन्न** वि [दे. आपूर्ण] पूर्ण, भरा हुआ (दे १, २०; सुर १०, १७०; पाअ); 'महया पुत्तसोएणं अप्फुन्ना समाणी' (निर १, १)।

अप्फुल्लय देखो अप्पुल्ल (गउड)।

अप्फोआ स्त्री [दे] वनस्पति-विशेष (पराण १)।

अप्फोड सक [आ + स्फोटय्] १ आस्फा-लन करना, हाथ से ताल ठोकना। २ ताड़न करना। वकृ. **अप्फोडंत** (णाया १, ८; सुर १३, १८२)।

अप्फोडण न [आस्फोटन] आस्फालन (गउड)।

अप्फोडिय, **अप्फोलिय** वि [आस्फोटित] १ आस्फा-लित, आहत। २ न. आस्फा-लन, आघात (पराह १, ३; कप्प)।

अप्फोया स्त्री [दे] वनस्पति-विशेष (राय ८० टी)।

अप्फोव वि [दे] वृक्षादि से व्याप्त, गहन, निबिड (उत्त १८)।

अफल वि [अफल] निष्फल, निरर्थक (द्र १)।

अफाय पुं [दे] भूमि-स्फोट, वनस्पति-विशेष (पण्ण १)।

अफास वि [अस्पर्श] १ स्पर्श-रहित (भग)। २ खराब स्पर्श वाला (सूत्र १, ५, १)।

अफासुय वि [अप्रासुक] १ सचित्त, सजीव (भग ५,६)। २ अग्राह्य (भिक्षा) (ठा ३,१)।

अफुड वि [अस्फुट] अस्पष्ट, अव्यक्त (सुर ३, १०६; २१३; गा २६६; उप ७२८ टी)।

अफुडिअ वि [अस्फुटित] अखण्डित, नहीं टूटा हुआ (कुमा)।

अफुस वि [अस्पृश्य] स्पर्श करने के अयोग्य (भग)।

अफुसिय वि [अभ्रान्त] भ्रम-रहित (कुमा)।

अफुस्स देखो अफुस (ठा ३, २)।

अबंभ न [अब्रह्म] मैथुन, स्त्री-सङ्ग (पण्ह १,४)। **°चारि** वि [°चारिन्] ब्रह्मचर्य नहीं पालनेवाला (पि ४०५; ४१५)।

अबद्धिय पुं [अबद्धिक] 'कर्मो का आत्मा से स्पर्श ही होता है, न कि क्षीर-नीर की तरह ऐक्य' ऐसा माननेवाला एक निह्नव—जैनाभास। २ न. उसका मत (ठा ७; विसे)।

अबल वि [अबल] बल रहित, निर्बल (पउम ४८, ११७)।

अबला स्त्री [अबला] स्त्री, महिला, जनाना (पाअ)।

अबस पुं [अबश] वडवानल (से १, १)।

अबहिट्ठ न [दे. अबहित्थ] मैथुन, स्त्री-सङ्ग (सूत्र १, ६)।

अबहिम्मण वि [अबहिर्मनस्क] धर्मिष्ठ, धर्म-तत्पर (आचा)।

अबहिल्लेस } वि [अबहिलेश्य] जिसकी
अबहिल्लेस्स } चित्त-वृत्ति बाहर न घूमती हो, संयत (भग; पण्ह २, ५)।

अबाधा देखो अबाहा (जीव ३)।

अबाह पुं [अबाह] देश-विशेष (इक)।

अबाहा स्त्री [अबाधा] १ बाध का अभाव (ओघ ५२ भा; भग १४, ८)। २ व्यवधान, अन्तर (सम १६)। ३ बाध-रहित समय (भग)।

अबाहिर अ [अबहिस्] बाहर नहीं, भीतर (कुमा)।

अबाहिरय वि [अबाह्य] भीतरी, आभ्यन्तर (वव १)।

अबाहिरिय वि [अबाहिरिक] जिसके किले के बाहर वसति न हो ऐसा गाँव या शहर (बृह १)।

अबीय देखो अवीय (कप्प)।

अबुज्झ अ [अबुद्ध्वा] नहीं जान कर, 'केसिंचि तक्काइ अबुज्झ भावं' (सूत्र १, १३, २०)।

अबुद्ध वि [अबुध] १ अजान, मूर्ख। (दस २)। २ अविवेकी (सूत्र १, ११)।

अबुद्धिय } वि [अबुद्धिक] बुद्धि-रहित, मूर्ख
अबुद्धीय } (णाया १, १७; सूत्र १, २,१; पउम ८, ७४)।

अबुह वि [अबुध] १ अजान। (सूत्र १, २, १; जी १)। २ मूर्ख, बेवकूफ (पण्ह १, १)।

अबोह वि [अबोध] १ बोध-रहित, अजान। २ पुं. ज्ञान का अभाव (धर्म १)।

अबोहि पुंस्त्री [अबोधि] १ ज्ञान का अभाव (सूत्र २,६)। २ जैन धर्म की अप्राप्ति। ३ बुद्धि-विशेष का अभाव (भग १, ६)। ४ मिथ्या-ज्ञान, 'अबोहिं परियाणामि बोहिं उवसंपज्जामि' (आव ४)। ५ वि. बोधि-रहित (भग)।

अबोहिय न [अबोधिक] ऊपर देखो (दस ६; सूत्र १, १, २)।

अब्° स्त्री. ब. [अप्°] पानी, जल (श्रा २३)।

अब्बंभ देखो अबंभ (सुपा ३१०)।

अब्बंभण्ण } न [अब्रह्मण्य] ब्रह्मण्य का
अब्बम्हण्ण } अभाव (नाट; प्रयौ ७६)।

अब्बीय देखो अवीय (चेइय ७३८)।

अब्बुद्धसिरी स्त्री [दे] इच्छा से भी अधिक फल की प्राप्ति (दे १, ४२)।

अब्बुय पुं [अर्बुद] पर्वत-विशेष, जो आज-कल 'आबू' नाम से प्रसिद्ध है (राज)।

अब्बुय न [अर्बुद] जमा हुआ शुक्र और शोणित (तंदु ७)।

अब्भ न [अभ्र] १ आकाश। (राय; पाअ)। २ मेघ, बादल (ठा ४, ४; पाअ)।

अब्भ सक [आ + भिद्] भेदन करना। अब्भे (आचा १, १, २, ३)।

अब्भंग सक [अभि + अञ्ज्] तैल आदि से मर्दन करना, मालिश करना। अब्भंगइ, अब्भंगेइ (महा)। संकृ. **अब्भंगिउं, अब्भंगेत्ता, अब्भंगित्ता** (ठा ३, १; पि २३४)। हेकृ. **अब्भंगेत्तए** (कस)।

अब्भंग पुं [अभ्यङ्ग] तैल-मर्दन, मालिश (निचू ३)।

अब्भंगण न [अभ्यञ्जन] ऊपर देखो (णाया १, १; महा)।

अब्भंगिएल्लय } वि [अभ्यक्त] तैलादि से
अब्भंगिय } मर्दित, मालिश किया हुआ (ओघ ८२; कप्प)।

अब्भंतर न [अभ्यन्तर] १ भीतर, में (गा ६२३)। २ वि. भीतर का, भीतरी (राय; महा)। ३ समीप का, नजदीक का (सम्बन्धी) (ठा ८)। **°ठाणिज्ज** वि [°स्थानीय] नजदीक के सम्बन्धी, कौटुम्बिक लोग (विपा १, ३)। **°तव** पुं [°तपस्] विनय, वैयावृत्य, प्रायश्चित्त, स्वाध्याय, ध्यान और कायोत्सर्ग रूप अन्तरंग तप (ठा ६)। **°परिसा** स्त्री [°परिषद्] मित्र आदि समान जनों की सभा (राय)। **°लद्धि** स्त्री [°लब्धि] अवधि-ज्ञान का एक भेद (विसे)। **°संबुक्का** स्त्री [°शम्बूका] भिक्षा की एक चर्या, गति-विशेष (ठा ६)। **°सगडुद्धिया** स्त्री [°शकटोर्द्धिका] कायोत्सर्ग का एक दोष (पव ५)।

अब्भंतर वि [अभ्यन्तर] भीतरी, भीतर का (जं ७; ठा २, १; पण्ण ३६)।

अब्भंसि वि [अभ्रंशिन्] १ भ्रष्ट नहीं होनेवाला (नाट)। २ अनष्ट (कुमा)।

अब्भक्खइज्ज देखो अब्भक्खा

अब्भक्खण न [दे] अकीर्ति, अपयश (दे १, ३१)।

अब्भक्खा सक [अभ्या + ख्या] झूठा दोष लगाना, दोषारोप करना। अब्भक्खाइ (भग ५; ७)। कृ. **अब्भक्खइज्ज** (आचा)।

अब्भक्खाण न [अभ्याख्यान] झूठा अभियोग, असत्य दोषारोप (पण्ह १,२)।

अब्भट्ट देखो अब्भत्थिय; 'उ(?अ)ब्भट्टपरिन्नायं' (पिंड २८१)।

अब्भड अ [दे] पीछे जाकर (हे ४, ३९५)।

अब्भणुजाण सक [अभ्यनु + ज्ञा] अनुमति,

देना, सम्मति देना। अब्भणुजाणिस्सदि (शौ) (पि ५३४)।

अब्भणुण्णा [अभ्यनुज्ञा] अनुमति, सम्मति (राज)।

अब्भणुण्णाय वि [अभ्यनुज्ञात] अनुमत, संमत (ठा ५, १)।

अब्भणुन्ना देखो **अब्भणुण्णा**।

अब्भणुन्नाय देखो **अब्भणुण्णाय** (णाया १, १; कप्प; सुर ३, ८८)।

अब्भण्ण न [अभ्यर्ण] १ निकट, नजदीक। २ वि. समीपस्थ (पउम ६८, ६८)। °**पुर** न [°पुर] नगर-विशेष (पउम ६८, ५८)।

अब्भत्त वि [अभ्यक्त] १ तैलादि से मर्दित, मालिश किया हुआ। २ सिक्त, सींचा हुआ; 'दिसि-दिसि चब्भत्तभूरिकेयारो, पत्तो वासा-रत्तो' (सुर २, ७८)।

अभ्यत्थ वि [अभ्यस्त] पठित, शिक्षित (सुपा ६७)।

अब्भत्थ सक [अभि + अर्थय्] १ सत्कार करना। २ प्रार्थना करना। अब्भत्थम्ह (पि ४७०)। संकृ. **अब्भत्थइअ, अब्भत्थिअ** (नाट)। कृ. **अब्भत्थणीय** (अभि ७०)।

अब्भत्थण न [अभ्यर्थन] १ सत्कार। २ प्रार्थना (कप्पू; हे ४, ३८४)।

अब्भत्थणा, अब्भत्थणिया स्त्री [अभ्यर्थना] १ आदर, सत्कार (से ४, ४८)। २ प्रार्थना, विज्ञप्ति (पंचा ११; सुर १, १६);
'न सहंइ अब्भत्थणियं, असइ
गयाणंपि पिट्ठिमंसाइं।
दट्ठूण भासुरमुहं, खलसीहं
को न बीहेइ' (वज्जा १२)।

अब्भत्थिय वि [अभ्यर्थित] १ आदृत, सत्कृत। २ प्रार्थित (सुर १, २१)।

अब्भन्न देखो **अब्भण्ण** (पाअ)।

अब्भपडल न [दे] उपधातु-विशेष, भोडल, अभ्रक, अबरक (उत्त ३६, ७५)।

अब्भपिसाअ पुं [दे. अभ्रपिशाच] राहु (दे १, ४२)।

अब्भय पुं [अर्भक] बालक, बच्चा (पाअ)।

अब्भय पुं [अभ्रक] अबरख (जी ४)।

अब्भरहिय वि [अभ्यर्हित] सत्कार-प्राप्त, गौरवशाली (बृह १)।

अब्भवहरिय वि [अभ्यवहृत] भुक्त (सुख २, १७)।

अब्भवहार पुं [अभ्यवहार] भोजन, खाना (विसे २२१)।

अब्भवालुया स्त्री [दे] अभ्रक का चूर्ण (उत्त ३६, ७५)।

अब्भव्व देखो **अभव्व**; 'अब्भव्वाणं सिद्धा णंतगुणा णंतया भव्वा' (पसं ८४)।

अब्भस सक [अभि + अस्] सीखना, अभ्यास करना। वकृ. **अब्भसंत** (स ६०६)। कृ. **अब्भसियव्व** (सुर १४, ८५)।

अब्भसण न [अभ्यसन] अभ्यास (दसनि १)।

अब्भसिय वि [अभ्यस्त] सीखा हुआ (सुर १, १८०; ६, १६)।

अब्भहर पुं [दे] अभ्रक (पंच ३, ३९)।

अब्भहिय वि [अभ्यधिक] विशेष, ज्यादा (सम २; सुर १, १७०)।

अब्भाअच्छ वि [अभ्या + गम्] संमुख आना, सामने आना। अब्भाअच्छइ (षड्)।

अब्भाइक्ख देखो **अब्भक्खा**। अब्भाइक्खइ, अब्भाइक्खेज्जा (आचा)।

अब्भागम पुं [अभ्यागम] १ संमुखागमन। २ समीप स्थिति (निचू २)।

अब्भागमिय, अब्भागय वि [अभ्यागत] १ संमुखागत। २ पुं. आगन्तुक, पाहुन, अतिथि (सूअ १,२,३; सुपा ५)।

अब्भायत्त, अब्भायत्थ वि [दे] प्रत्यागत, वापस आया हुआ (दे १, ३१)।

अब्भास पुं [अभ्यास] गुणकार (अणु ७४; पिंड ५५५)।

अब्भास न [अभ्यास] १ निकट, नजदीक (से ६, ६०; पाअ)। २ वि. समीपवर्ती, पार्श्व-स्थित (पाअ)। ३ पुं. शिक्षा, पढ़ाई, सीख। ४ आवृत्ति (पाअ; बृह १)। ५ आदत (ठा ४, ४)। ६ आवृत्ति से उत्पन्न संस्कार (धर्म २)। ७ गणित का संकेत-विशेष (कम्म ४, ७८; ८३);

अब्भास सक [अभि + अस्] अभ्यास करना, आदत डालना;
'जं अब्भासइ जीवो, गुणं च दोसं च
एत्थ जम्मम्मि।
तं पावइ पर-लोए, तेण य
अब्भास-जोएण' (धर्म २; भवि)।

अब्भाहय वि [अभ्याहत] आघात-प्राप्त (महा)।

अब्भिंग देखो **अब्भंग** = अभि+अंज्। प्रयो. अब्भिंगावेइ (पि २३४)।

अब्भिंग देखो **अब्भंग** = अभ्यंग (णाया १, १८)।

अब्भिंगण देखो **अब्भंगण** (कप्प)।

अब्भिंगिय देखो **अब्भंगिय** (कप्प)।

अब्भिंतर देखो **अब्भंतर** (कप्प; सं ७; पण्ह ३, ५; णाया १, १३)।

अब्भिंतरओ अ [अभ्यन्तरतस्] १ भीतर से। २ भीतर में (आवम)।

अब्भिंतरिय वि [आभ्यन्तरिक] भीतर का, अन्तरंग (सम ६७; कप्प; णाया १, १)।

अब्भिंतरुद्धि पुं [अभ्यन्तरोध्विन्] कायोत्सर्ग का एक दोष, दोनों पैर के अंगूठों को मिलाकर और पृष्णियों को बाहर फैलाकर किया जाता ध्यान-विशेष (चेइय ४८७)।

अब्भिट्ट वि [दे] संगत, सामने आकर भिड़ा हुआ; 'हत्थी हत्थीण समं अब्भिट्टो रहवरो सह रहेणं' (पउम ६, १८२; ६८, २७)।

अब्भिड सक [सं+गम्] संगति करना, मिलना। अब्भिडइ (कुमा; हे ४, १६४)। अब्भिडसु (सुपा १५२)।

अब्भिडिअ वि [संगत] संगत, युक्त (पाअ; दे १, ७८)।

अब्भिडिअ वि [दे] सार, मजबूत (दे १, ७८)।

अब्भिण्ण वि [अभिन्न] भेदरहित (धर्म २)।

अब्भुअ देखो **अब्भुदय** (से १५, ६५; स ३०)।

अब्भुक्ख सक [अभि + उक्ष्] सींचन करना। वकृ. **अब्भुक्खंत** (वज्जा ८६)।

अब्भुक्खण न [अभ्युक्षण] सिंचन करना, छिड़काव (स ५७६)।

अब्भुक्खणीया स्त्री [अभ्युक्षणीया] सीकर, आसार, पवन से गिरता जल (बृह १)।

अब्भुक्खिय वि [अभ्युक्षित] सिक्त (स ३४०)।

अब्भुगम पुं [अभ्युद्गम] उदय, उन्नति (सूअ १,१४)।

अब्भुग्गय वि [अभ्युद्गत] १ उन्नत। २ उत्पन्न (णाया १, १)। ३ ऊँचा किया हुआ, उठाया हुआ (औप)। ४ चारों तरफ फैला हुआ (चंद १८)।

अब्भुग्गय वि [अभ्रोद्गत] ऊँचा, उन्नत (भग १२, ५)।

अब्भुच्चय पुं [अभ्युच्चय] समुच्चय (भास ६५)।

अब्भुज्जय वि [अभ्युद्यत] १ उद्यत, उद्यम-युक्त (णाया १, ५)। २ तैयार (णाया १, १; सुपा २२२)। ३ पुं. एकाकी विहार (धम्म १२ टी)। ४ जिनकल्पिक मुनि (पंचव ४)।

अब्भुट्ठ उभ [अभ्युत्+स्था] १ आदर करने के लिए खड़ा होना। २ प्रयत्न करना। ३ तैयारी करना। अब्भुट्ठेइ (महा)। वकृ. **अब्भुट्ठमाण** (स ४१६)। संकृ. **अब्भुट्ठित्ता** (भग)। हेकृ. **अब्भुट्ठित्तए** (ठा २, १)। कृ. **अब्भुट्ठेयव्व** (ठा ८)।

अब्भुट्ठण न [अभ्युत्थान] आदर के लिए खड़ा होना (से १०,११)।

अब्भुट्ठा देखो **अब्भुट्ठ**।

अब्भुट्ठाण देखो **अब्भुट्ठण** (सम ५१; सुपा ३७६)।

अब्भुट्ठिय वि [अभ्युत्थित] १ सम्मान करने के लिए जो खड़ा हुआ हो (णाया १, ८)। २ उद्यत, तैयार; 'अब्भुट्ठिएसु मेहेसु' (णाया १, १; पडि)।

अब्भुट्ठेत्तु [अभ्युत्थातृ] अभ्युत्थान करने-वाला (ठा ५, १)।

अब्भुण्णय वि [अभ्युन्नत] १ उन्नत, ऊँचा (पण्ह १, ४)।

अब्भुण्णयंत वकृ. [अभ्युन्नयत्] १ ऊंचा करता हुआ। २ उत्तेजित करता हुआ, 'तीएवि जलंति दीववत्तिमब्भुण्णअंतीए' (गा २६४)।

अब्भुत्त अक [स्ना] स्नान करना। अब्भुत्तइ (हे ४, १४)। वकृ. **अब्भुत्तंत** (कुमा)।

अब्भुत्त अक [प्र+दीप्] १ प्रकाशित होना। २ उत्तेजित होना। **अब्भुत्तइ** (हे ४, १५२)। अब्भुत्तए (कुमा)। प्रयो. अब्भुत्तेंति (से ५, ५९)।

अब्भुत्तिअ वि [प्रदीप्त] १ प्रकाशित। २ उत्तेजित (से १५, ३८)।

अब्भुत्थ वि [अभ्युत्थ] उत्पन्न, 'पुव्वभवब्भु-त्थसिणेहाओ' (महा)।

अब्भुत्थ } देखो **अब्भुट्ठा**। वकृ. **अब्भुत्थंत**
अब्भुत्था } (से १२, १८)। संकृ. **अब्भु-त्थित्ता** (काल)।

अब्भुदय पुं [अभ्युदय] १ उन्नति, उदय (प्रयौ २६); 'अब्भुयभूयब्भुदयं लद्धूणं नरभवं सुदीहद्धं' (उप ७६८ टी)।

अब्भुद्धर सक [अभ्युद्+धृ] उद्धार करना। अब्भुद्धरामि (भवि)।

अब्भुद्धरण न [अभ्युद्धरण] १ उद्धार (स ५४३)। २ वि. उद्धार-कारक (हे ४,३३४)।

अब्भुन्नय देखो **अब्भुण्णय** (णाया १, १)।

अब्भुब्भड वि [अभ्युद्भट] अत्युद्भट, विशेष उद्धत (भवि)।

अब्भुय न [अद्भुत] १ आश्चर्य, विस्मय (उप ७६८ टी)। २ वि. आश्चर्य-कारक (राय; सुपा; ३५)। ३ पुं. साहित्य शास्त्र प्रसिद्ध रसों में से एक;

'विम्हयकरो अपुव्वो, अभूयपुव्वो य जो
रसो होइ।
हरिसविसाउप्पत्ती, लक्खणओ अब्भुओ नाम'
(अणु)।

अब्भुवगच्छ सक [अभ्युप+गम्] १ स्वीकार करना। २ पास जाना। प्रयो., संकृ. **अब्भुवगच्छाविय** (पि १६३)।

अब्भुवगच्छाविअ वि [अभ्युपगमित] स्वीकार कराया हुआ, 'ताहे तेहिं कुमारेहिं संबो मज्जं पाएत्ता अब्भुवगच्छाविओ विगयमओ चिंतेइ' (आक पृ ३०)।

अब्भुवगम पुं [अभ्युपगम] १ स्वीकार, अङ्गीकार (सम १४५; स १७०)। २ तर्क-शास्त्र-प्रसिद्ध सिद्धान्त-विशेष (बृह १; सूअ १, १२)।

अब्भुवगमणा स्त्री [अभ्युपगमना] स्वीकार, अङ्गीकार (उप ८०९)।

अब्भुवगय वि [अभ्युपगत] १ स्वीकृत (सुर ६, ५८)। २ समीप में गया हुआ (आचा)।

अब्भुववण्ण वि [अभ्युपपन्न] अनुग्रह-प्राप्त, अनुगृहीत (नाट; पि १६३; २७६)।

अब्भुववत्ति स्त्री [अभ्युपपत्ति] अनुग्रह, मेहरबानी (अभि १०४)।

अब्भुवे सक [अभ्युप+इ] स्वीकार करना। अब्भुवेजामि (णाया १,१६ टी, पत्र २०५)।

अब्भो देखो **अव्वो** (षड्)।

अब्भोक्खिय वि [अभ्युक्षित] सिक्त, सींचा हुआ (सुर ६, १६१)।

अब्भोज्ज वि [अभोज्य] भोजन के अयोग्य (पिंड १६०)।

अब्भोय (अप) देखो **आभोग** (भवि)।

अब्भोवगमिय वि [आभ्युपगमिक] स्वेच्छा से स्वीकृत। °**1** स्त्री [°1] स्वेच्छा से स्वीकृत तपश्चर्यादि की वेदना (ठा ४, ३)।

अब्हिड देखो **अब्भिड**। अब्हिडइ (षड्)।

अब्हुत्त देखो **अब्भुत्त** अब्हुत्तइ (षड्)।

अभग्ग वि [अभग्न] १ अखण्डित, अत्रुटित (पडि)। २ इस नाम का एक चोर (विपा १, १)।

अभत्त वि [अभक्त] १ भक्ति नहीं करनेवाला (कुमा)। २ न. भोजन का अभाव (वव ७)। °**ट्ठ** पुं [°ार्थ] उपवास (आचू; पडि; सुपा ३१७)। °**ट्ठिय** वि [°ार्थिक] उपोषित, जिसने उपवास किया हो वह (पंचव २)।

अभय न [अभय] १ भय का अभाव, धैर्य (राय)। २ जीवित, मरण का अभाव (सूअ १,६)। ३ वि. भय-रहित, निर्भीक (आचा)। ४ पुं. राजा श्रेणिक का एक विख्यात पुत्र और मन्त्री, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी (अनु १; णाया १, १)। °**कुमार** पुं [°कुमार] देखो अनन्तरोक्त अर्थ (पडि)। °**दय** वि [°दय] भय-विनाशक, जीवित-दाता (पडि)। °**दाण** न [°दान] जीवित-दान (पण्ह २, ४)। °**देव** पुं [°देव] कईएक विख्यात जैनाचार्य और ग्रन्थकारों का नाम (मुणि १०८७४; गु १४; ती ४०; सार्ध ७३)। °**प्पदाण** न [°प्रदान] जीवित का दान (सूअ १,६)। °**वत्त** न [°वत्त्व] निर्भयता,

अभय (सुपा १८)। °सेण पुं [°सेन] एक राजा का नाम (पिंड)।

अभयंकर वि [अभयंकर] अभय देनेवाला, अहिंसक (सूअ १, ७, २८)।

अभयकरा स्त्री [अभयकरा] भगवान् अभिनन्दन की दीक्षा-शिविका (विचार १२९)।

अभया स्त्री [अभया] १ हरीतकी, हर्रे, हरडई (निचू १५)। २ राजा दधिवाहन की स्त्री का नाम (ती ३५)।

अभयारिट्ठ न [अभयारिष्ट] मद्य-विशेष (सूअ १, ८)।

अभवसिद्धिय, अभवसिद्धीय पुं [अभवसिद्धिक] अभव्य, मुक्ति के लिये अयोग्य जीव (ठा २, २; णंदि; ठा १)।

अभविय, अभव्व वि [अभव्य] १ असुन्दर, अचारु (विसे)। २ पुं. मुक्ति के लिये अयोग्य जीव (विसे; कम्म ३,२३)।

अभाअ वि [अभाग] अस्थान, अयोग्य स्थान (से ८,४२)।

अभाइ वि [अभागिन्] अभागा, हत-भाग्य, कमनसीब (चारु २६)।

अभागधेज्ज वि [अभागधेय] ऊपर देखो (पउम २८, ८६)।

अभाव पुं [अभाव] १ ध्वंस, नाश (बृह १)। २ अविद्यमानता, असत्व (पंचा ३)। ३ असम्भव (दस १)। ४ अशुभ परिणाम (उत्त १)।

अभाविय वि [अभावित] अयोग्य, अनुचित (ठा १०; बृह ३)।

अभावुग वि [अभावुक] जिसपर दूसरे के संग की असर न पड़ सके वह, 'विसहरमणी अभावुगदव्वं जीवो उ भावुगं तम्हा' (सुपा १७५; ओघ ७७३)।

अभासग, अभासय वि [अभाषक] १ बोलने की शक्ति जिसको उत्पन्न न हुई हो वह। २ नहीं बोलनेवाला। ३ पुं. केवल त्वग्-इन्द्रियवाला, एकेन्द्रिय जीव। ४ मुक्त आत्मा (ठा २, ४; भग; अणु)।

अभासा स्त्री [अभाषा] १ असत्य वचन। २ सत्य-मिश्रित असत्य वचन (भग २५, ३)।

अभि अ [अभि] निम्न-लिखित अर्थों में से किसी एक को बतलानेवाला अव्यय—१ संमुख, सामने; 'अभिगच्छणया' (औप)। २. चारों ओर, समन्तात्; 'अभिदो' (स्वप्न ४२)। ३ बलात्कार, 'अभिओग' (धर्म २)। ४ उल्लंघन, अतिक्रमण; 'अभिक्कंत' (आचा)। ५ अत्यन्त, ज्यादा; 'अभिदुग्ग' (सूअ १, ५, २)। ६ लक्ष्य, 'अभिमुहं'। ७ प्रतिकूल, 'अभिवाय' (आचा)। ८ विकल्प। ९ संभावना (निचू १)। १० निरर्थक भी इस अव्यय का प्रयोग होता है, 'अभिमंतिय' (सुर १६, ६२)।

अभिअण पुं [अभिजन] १ कुल। २ जन्म-भूमि (नाट)।

अभिआवण्ण वि [अभ्यापन्न] संमुख-आगत (सूअ १, ४, २)।

अभिइ स्त्री [अभिजित्] नक्षत्र-विशेष (ठा २, ३)।

अभिइ सक (अभि + इ] सामने जाना, संमुख जाना। वकृ. **अभिइंत** (उप १४२ टी)।

अभिउंज देखो **अभिजुंज**। संकृ. **अभिउंजिय** (ठा ३, ४; दस १०)।

अभिओअ, अभिओग पुं [अभियोग] १ आज्ञा, हुकुम (औप; ठा १०)। २ बलात्कार, 'अभिओगे अ निओगे' (श्रा ५)। ३ बलात्कार से कोई भी कार्य में लगाना (धर्म २)। ४ अभिभव, पराभव (आव ५)। ५ कार्मण-प्रयोग, वशीकरण, वश करने का चूर्ण या मन्त्र-तन्त्रादि;

'दुविहो खलु अभिओगो, दव्वे भावे य
होइ नायव्वो।
दव्वम्मि होइ जोगो, विज्जा मंता य भावम्मि'
(ओघ ५६७)।

६ गर्व, अभिमान (आव ५)। ७ आग्रह, हठ (नाट)। °पण्णत्ति स्त्री [°प्रज्ञप्ति] विद्या-विशेष (णाया १,१६)। देखो **अहिओय**।

अभिओग पुं [अभियोग] उद्यम, उद्योग (सिरि ५८)।

अभिओगी स्त्री [आभियोगी] भावना-विशेष, ध्यान-विशेष, जो अभियोगिक देव-गति (नौकर-स्थानीय देव-जाति) में उत्पन्न होने का हेतु है (बृह १)।

अभिओयण न [अभियोजन] देखो **अभिओग** (आव; पण्ण २०)।

अभिंगण, अभिंजण देखो **अब्भंगण** (नाट; रंभा)।

अभिकंख सक [अभि + काङ्क्ष्] इच्छा करना, चाहना। अभिकंखेज्जा (आचा)। वकृ. **अभिकंखमाण** (दस ६, ३)।

अभिकंखा स्त्री [अभिकाङ्क्षा] अभिलाषा, इच्छा (आचा)।

अभिकंखि, अभिकंखिर वि [अभिकाङ्क्षिन्] अभिलाषी, इच्छुक (पि ४०५; सुपा १२६)।

अभिकंत वि [अभिक्रान्त] १ गत, अतिक्रान्त; 'अणभिक्कंतं च खलु वयं संपेहाए' (आचा)। २ संमुख गत। ३ आरब्ध। ४ उल्लंघित (आचा; सूअ २, २)।

अभिक्कम सक [अभि + क्रम्] १ जाना, गुजरना। २ सामने जाना। ३ उल्लंघन करना। ४ शुरू करना। वकृ. **अभिक्कममाण** (आचा)। संकृ. **अभिक्कम्म** (सूअ १,१,२)।

अभिक्कम पुं [अभिक्रम] १ उल्लंघन। २ प्रारम्भ। ३ संमुख-गमन। ४ गमन, गति (आचा)।

अभिक्ख, अभिक्खण अ [अभीक्ष्ण] बारंबार (उप १४७ टी; ठा २,४; वव ३)।

अभिक्खा स्त्री [अभिख्या] नाम (विसे १०४८)।

अभिगच्छ सक [अभि + गम्] प्राप्त करना। अभिगच्छइ (दस ४, २१, २२, ६, २, २)।

अभिगच्छ सक [अभि + गम्] सामने जाना। अभिगच्छंति (भग २, ५)।

अभिगच्छणया स्त्री [अभिगमन] संमुख-गमन (औप)।

अभिगच्छणा देखो **अभिगच्छणया** (वव १)।

अभिगज्ज अक [अभि + गर्ज्] गर्जना, खूब जोर से आवाज करना। वकृ. **अभिगज्जंत** (णाया १, १८; सुर १३, १८२)।

अभिगम देखो **अभिगच्छ**। कृ. अभिगमणीय (उप ६७६)।

अभिगम पुं [अभिगम] १ प्राप्ति, स्वीकार (पव्कि)। २ आदर, सत्कार (भग २, ५)। ३ (गुरु का) उपदेश, सीख (णाया १, १)।

४ ज्ञान, निश्चय (पव १४६)। ५ सम्यक्त्व का एक भेद (ठा २, १)। ६ प्रवेश (से ८, ३३)।

अभिगमण न [अभिगमन] ऊपर देखो (स्वप्न १६; णाया १, १२)।

अभिगमि वि [अभिगमिन्] १ आदर करने वाला। २ उपदेशक। ३ निश्चय-कारक। ४ प्रवेश करने वाला ५ स्वीकार करने वाला, प्राप्त करने वाला (पएण ३४)।

अभिगय वि [अभिगत] १ प्राप्त। २ सत्कृत। ३ उपदिष्ट। ४ प्रविष्ट (बृह १)। ५ ज्ञात, निश्चित (णाया १, १)।

अभिगहिय न [अभिग्रहिक] मिथ्यात्व-विशेष (कम्म ४, ५१)।

अभिगिज्झ अक [अभि + गृध्] अति लोभ करना, आसक्त होना। वकृ. अभिगिज्झंति (सूअ २, २)।

अभिगिण्ह } **अभिगिन्ह** } सक [अभि + ग्रह्] ग्रहण करना, स्वीकारना। अभिगिण्हइ (कप्प)। संकृ. **अभिगिन्हित्ता, अभिगिज्झ** (पि ५८२; ठा २, १)।

अभिग्गह पुं [अभिग्रह] १ प्रतिज्ञा, नियम। (ओघ ३)। २ जैन साधुओं का आचार-विशेष (बृह १)। ३ प्रत्याख्यान, (नियम-विशेष) का एक भेद (आव ६)। ४ कदाग्रह, हठ (ठा २, १)। ५ एक प्रकार का शारीरिक विनय (वव १)।

अभिग्गहणी स्त्री [अभिग्रहणी] भाषा का एक भेद, असत्य-मृषा वचन (संबोध २१)।

अभिग्गहिय वि [अभिग्रहिक] अभिग्रह वाला (ठा २, १; पव ६)।

अभिग्गहिय वि [अभिगृहीत] १ जिसके विषय में अभिग्रह किया गया हो वह (कप्प; पव ६)। २ न. अवधारण, निश्चय (पएण ११)।

अभिघट्ट सक [अभि + घट्ट] वेग से जाना। कवकृ. **अभिघट्टिज्जमाण** (राय)।

अभिघाय पुं [अभिघात] प्रहार, मार-पीट, हिंसा (पएह १, १; बृह ४)।

अभिचंद पुं [अभिचन्द्र] १ यदुवंश के राजा अन्धकवृष्णि का एक पुत्र, जिसने जैन दीक्षा ली थी (अंत ३)। २ इस नाम का एक कुलकर पुरुष (पउम ३, ५५)। ३ मुहूर्त-विशेष। (सम ५१)।

अभिजण देखो **अभिअण** (स्वप्न २६)।

अभिजस न [अभियशस्] इस नाम का एक जैन साधुओं का कुल (एक आचार्य की संतति) (कप्प)।

अभिजाइ स्त्री [अभिजाति] कुलीनता, खानदानी (उत्त ११)।

अभिजाण सक [अभि + ज्ञा] जानना। वकृ. **अभिजाणमाण** (आचा)।

अभिजात पुं [अभिजात] पक्ष का ग्यारहवाँ दिन (सुज्ज १०,१४)।

अभिजाय वि [अभिजात] १ उत्पन्न, 'अभिजायसड्ढो' (उत्त १४)। २ कुलीन (राज)।

अभिजुंज सक [अभि + युज्] १ मन्त्र-तन्त्रादि से वश करना। २ कोई कार्य में लगाना। ३ आलिंगन करना। ४ स्मरण कराना, याद दिलाना। संकृ. **अभिजुंजिय, अभिजुंजियाणं, अभिजुंजित्ता** (भग २, ५; सूअ १, ५, २; आचा; भग ३, ५)।

अभिजुत्त वि [अभियुक्त] १ व्रत-नियम में जिसने दूषण न लगाया हो वह (णाया १, १४)। २ जानकार, पण्डित (णंदि)। ३ दुश्मन से घिरा हुआ (वेणी १२०)।

अभिज्झा स्त्री [अभिध्या] लोभ, लोलुपता, आसक्ति (सम ७१; पएह १, ५)।

अभिज्झिय वि [अभिध्यित] अभिलषित, वांछित (पएण २८)।

अभिट्ठिअ वि [अभीष्ट] अभिलषित (वज्जा १६४)।

अभिट्ठुय वि [अभिष्टुत] वर्णित, श्लाघित, प्रशंसित (आव २)।

अभिड्डुय देखो **अभिद्दुय** (सूअ १, २, ३)।

अभिणअंत } **अभिणइज्जंत** } देखो **अभिणी**

अभिणंद सक [अभि + नन्द्] १ प्रशंसा करना, स्तुति करना। २ आशीर्वाद देना। ३ प्रीति करना। ४ खुशी मनाना। ५ चाहना, इच्छा करना। ६ बहुमान करना, आदर करना। अभिणंदइ (स १६३)। वकृ. **अभिणंदंत** (औप; णाया १, १; पउम ५, १३०)। कवकृ. **अभिणंदिज्जमाण** (ठा ६; णाया १, १)।

अभिणंदिय वि [अभिनन्दित] जिसका अभिनन्दन किया गया हो वह (सुपा ३१०)।

अभिणंदण न [अभिनन्दन] १ अभिनन्दन। २ पुं. वर्तमान अवसर्पिणीकाल के चतुर्थ जिनदेव (सम ४३)। ३ लोकोत्तर श्रावणमास। (सुज्ज १०)।

अभिणय पुं [अभिनय] शारीरिक चेष्टा के द्वारा हृदय का भाव प्रकाशित करना, नाट्य-क्रिया (ठा ४, ४)।

अभिणव वि [अभिनव] नूतन, नया (जीव ३)।

अभिणिक्खंत वि [अभिनिष्क्रान्त] दीक्षित, प्रव्रजित (स २७८)।

अभिणिगिण्ह सक [अभिनि + ग्रह्] रोकना, अटकाना। संकृ. **अभिणिगिज्झ** (पि ३३१, ५९१)।

अभिणिचारिया स्त्री [अभिनिचारिका] भिक्षा के लिए गति-विशेष (वव ४)।

अभिणिपया स्त्री [अभिनिप्रजा] अलग-अलग रही हुई प्रजा (वव ६)।

अभिणिबुज्झ सक [अभिनि + बुध्] जानना, इन्द्रिय आदि द्वारा निश्चित रूप से ज्ञान करना। अभिणिबुज्झए (विसे ८१)।

अभिणिबोह पुं [अभिनिबोध] ज्ञान-विशेष, मति-ज्ञान (सम्म ८६)।

अभिणियट्टण न [अभिनिवर्त्तन] पीछे लौटना, वापस जाना (आचा)।

अभिणिविट्ठ वि [अभिनिविष्ट] १ तीव्र रूप से निविष्ट। २ आग्रही (उत्त १४)।

अभिणिवेस पुं [अभिनिवेश] आग्रह, हठ (णाया १, १२)।

अभिणिवेसि वि [अभिनिवेशिन्] कदाग्रही (अज्झ १५७)।

अभिणिवेह पुं [अभिनिवेध] उलटा मापना (आवम)।

अभिणिव्वागड वि [दे. अभिनिर्व्याकृत] भिन्न परिधि वाला, पृथग्भूत (घर वगैरह) (वव १, ६)।

अभिणिव्वट्ट सक [अभिनि+वृत्] रोकना, प्रतिषेध करना; 'से मेहावी अभिणिव्वट्टेज्जा कोहं च माणं च मायं च लोभं च पेज्जं च दोसं च मोहं च गब्भं च जम्मं च मारं च नरयं च तिरियं च दुक्खं च' (आचा)।

अभिणिव्वट्ट सक [अनिर्+वृत्] १ संपादित करना, निष्पन्न करना। २ उत्पन्न करना। संकृ—**अभिणिव्वट्टित्ता,** (भग ५, ४)।

अभिणिव्वट्ट वि [अभिनिर्वृत्त] १ निष्पन्न। २ उत्पन्न, 'इह खलु अत्तत्ताए तेहिं तेहिं कुलेहिं अभिसेएण अभिसंभूआ अभिसंजाया अभिणिव्वट्टा अभिसंवुड्ढा अभिसंबुद्धा अभिनिक्खंता अणुपुव्वेण महामुणी' (आचा)।

अभिणिव्वुड वि [अभिनिर्वृत्त] १ मुक्त, मोक्ष-प्राप्त (सूअ १, २, १)। २ शान्त, अकुपित (आचा)। ३ पाप से निवृत्त (सूअ १, २, १)।

अभिणिसज्जा स्त्री [अभिनिषद्या] जैन साधुओं के रहने का स्थान-विशेष (वव १)।

अभिणिसट्ठ देखो **अभिणिसिट्ठ** (सुज्ज ६)।

अभिणिसिट्ठ वि [अभिनिसृष्ट] बाहर निकला हुआ (जीव ३)।

अभिणिसेहिया स्त्री [अभिनैषेधिकी] जैन साधुओं के स्वाध्याय करने का स्थान-विशेष (वव १)।

अभिणिस्सव अक [अभिनिर्+स्रु] निकलना। अभिणिस्सवंति (राय ७४)।

अभिणी सक [अभि+नी] अभिनय करना, नाट्य करना। वकृ. **अभिणअंत** (मै ७५)। कवकृ. **अभिणइज्जंत** (सुपा ३५६)।

अभिणूम न [अभिनूम] माया, कपट (सूअ १, २, १)।

अभिण्ण वि [अभिज्ञ] जानकार, निपुण (उप ५८०)।

अभिण्ण वि [अभिन्न] १ अत्रुटित, अविदारित, अखण्डित (उवा; पंचा ११)। २ भेदरहित, अपृथग्भूत (बृह ३)।

अभिण्णपुड पुं [दे] खाली पुड़िया, लोगों को ठगने के लिए लड़के जिसको रास्ता पर रख देते हैं (दे १, ४४)।

अभिण्णाण न [अभिज्ञान] निशानी, चिह्न (श्रा १४)।

अभिण्णाय वि [अभिज्ञात] जाना हुआ, विदित (आचा)।

अभितज्ज सक [अभि+तर्ज्] तिरस्कार करना, ताड़न करना। वकृ. **अभितज्जेमाण** (णाया १, १८)।

अभितत्त वि [अभितप्त] १ तपाया हुआ, गरम किया हुआ (सूअ १, ४, १, २७)।

अभितव सक [अभि+तप्] १ तपाना। २ पीड़ा करना, 'चत्तारि अगणिओ समारभित्ता जेहिं कूरकम्मा भितवंति, बालं' (सूअ १, ५, १, १३)। कवकृ. **अभितप्पमाण;** 'ते तत्थ चिट्ठंतिभितप्पमाणा मच्छा व जीवंतुवजोतिपत्ता' (सूअ १, ५, १, १३)।

अभिताव सक [अभि+तापय्] १ तपाना, गरम करना। २ पीडित करना। अभितावयंति (सूअ १, ५, १, २१, २२)।

अभिताव पुं [अभिताप] १ दाह। २ पीड़ा (सूअ १, ५, १, २, ६)।

अभितास सक [अभि+त्रासय्] त्रास उपजाना, भयभीत करना। वकृ. **अभितासेमाण** (णाया १, १८)।

अभित्थु सक [अभि+स्तु] स्तुति करना, श्लाघा करना, वर्णन करना। अभित्थुणंति, अभित्थुणामि (पि ४६४; विसे १०५४)। वकृ. **अभित्थुणमाण** (कप्प)। कवकृ. **अभित्थुव्वमाण** (रयण १८)।

अभित्थुय वि [अभिष्टुत] स्तुत, श्लाघित (संथा)।

अभिथु देखो **अभित्थु**। वकृ. **अभिथुणंत** (णाया १, १)। कवकृ. **अभिथुव्वमाण** (कप्प; ठा ६)।

अभिदुग्ग वि [अभिदुर्ग] १ दुःखोत्पादक स्थान। २ अतिविषम स्थान (सूअ १, ५, १, १७)।

अभिदो (शौ) अ [अभितः] चारों ओर से (स्वप्न ४२)।

अभिद्दव सक [अभि+द्रु] पीड़ा करना, दुःख उपजाना, हैरान करना; 'नुदंति वायाहिं अभिद्दवं णरा' (आचा २, १६, २)।

अभिद्दविय वि [अभिद्रुत] उपद्रुत, हैरान किया हुआ (सुर १२, ६७)।

अभिद्दुय देखो **अभिद्दविय** (णाया १, ६; स ५६)।

अभिधाइ वि [अभिधायिन्] वाचक, कहनेवाला (विसे ३४७२)।

अभिधार सक [अभि+धारय्] १ चिन्तन करना। २ स्पष्ट करना। अभिधारए (दस ५, २, २५; उत्त २, २१); अभिधारयामो (सूअ २, ६, १६)। वकृ. **अभिधारयंत** (उत्तनि ३)।

अभिधारण न [अभिधारण] धारणा, चिन्तन (बृह ३)।

अभिधेज्ज } **अभिधेय** } पुं [अभिधेय] अर्थ, वाच्य, पदार्थ (विसे १ टी)।

अभिनंद देखो **अभिणंद**। वकृ. **अभिनंदमाण** (कप्प)। कवकृ. **अभिनंदिज्जमाण** (महा)।

अभिनंदण देखो **अभिणंदण** (कप्प)।

अभिनंदि स्त्री [अभिनंदि] आनन्द, खुशी; 'पावेउ अ नंदिसेणमभिनंदिं' (अजि ३७)।

अभिनिक्खंत देखो **अभिणिक्खंत** (आचा)।

अभिनिक्खम अक [अभिनिर्+क्रम्] दीक्षा (संन्यास) लेना, दीक्षा लेने की इच्छा करना, गृहवास से बाहर निकलना। वकृ. **अभिनिक्खमंत** (पि ३९७)।

अभिनिगिण्ह देखो **अभिणिगिण्ह** (आचा)।

अभिनिबुज्झ देखो **अभिणिबुज्झ**। अभिनिबुज्झइ (विसे ९८)।

अभिनिवट्ट देखो **अभिणिवट्ट**। संकृ. **अभिनिवट्टित्ताणं** (पि ५८३)।

अभिनिविट्ठ देखो **अभिणिविट्ठ** (भग)।

अभिनिवेस सक [अभिनि+वेशय्] १ स्थापन करना। २ करना। अभिनिवेसए (दस ८, ५६)।

अभिनिवेसिय न [अभिनिवेशिक] मिथ्यात्व का एक प्रकार, सत्य वस्तु का ज्ञान होने पर भी उसे नहीं मानने का दुराग्रह (श्रा ६; कम्म ४, ५१)।

अभिनिव्वट्ट देखो **अभिणिव्वट्ट** (कप्प; आचा)।

अभिनिव्वट्ट अक [अभिनि + वृत्] पृथक् होना। वकृ. **अभिनिव्वट्टमाण** (सूत्र २, ३, २१)।

अभिनिव्वट्ट सक [अभिनिर् + वृत्] खींचना। संकृ. 'कोसाओ असिं अभिनिव्वट्टित्ता (सूत्र २, १, १६)।

अभिनिव्वागड वि [अभिनिर्व्याकृत] विभिन्न द्वार वाला (मकान)। (वव १ टी)।

अभिनिव्विट्ठ वि [अभिनिर्विष्ट] संजात, उत्पन्न (कप्प)।

अभिनिव्वुड देखो **अभिणिव्वुड** (पि २१६)।

अभिनिसढ वि [अभिनिःसट] जिसका स्कन्ध प्रदेश बाहर निकल आया हो वह (भग १५, पत्र ६६६)।

अभिनिस्सव देखो **अभिणिस्सव** अभिनिस्सवंति (राय ७५)।

अभिनिस्सव अक [अभिनि + स्रु] टपकना, झरना। अभिनिस्सवइ (भग)।

अभिन्न देखो **अभिण्ण** (प्राप्र)।

अभिन्नाण देखो **अभिण्णाण** (ओघ ४३६; सुर ७, १०१)।

अभिन्नाय देखो **अभिण्णाय** (कप्प)।

अभिपल्लाणिय वि [अभिपर्याणित] अध्यारोपित, ऊपर रखा हुआ (कुमा)।

अभिपवुट्ठ वि [अभिप्रवृष्ट] बरसा हुआ (आचा २, ३, १, १)।

अभिपाइय वि [आभिप्रायिक] अभिप्राय सम्बन्धी, मनःकल्पित (अणु)।

अभिप्पाय पुं [अभिप्राय] आशय, मन-परिणाम (आचा; स ३४; सुपा २६२)।

अभिप्पेय वि [अभिप्रेत] इष्ट; अभिमत (स २३)।

अभिभव सक [अभि + भू] पराभव करना, परास्त करना। अभिभवइ (महा)। संकृ. **अभिभविय, अभिभूय** (भग ६, ३३; पण्ह १, २)।

अभिभव पुं [अभिभव] पराभव, पराजय, तिरस्कार (आचा; दे १, ५७)।

अभिभवण न [अभिभवन] ऊपर देखो (सुपा ४७६)।

अभिभास सक [अभि + भाष्] संभाषण करना। अभिभासे (पि १६६)।

अभिभूइ स्त्री [अभिभूति] पराभव, अभिभव (द्र ३०)।

अभिभूय वि [अभिभूत] पराभूत, पराजित (आचा; सुर ४, ७९)।

अभिमंजु देखो **अभिमण्णु** (हे ४, ३०५)।

अभिमंत सक [अभि + मन्त्रय्] मंत्रित करना, मन्त्र से संस्कारना। संकृ. **अभिमंतिऊण, अभिमंतिय** (निचू १; आवम)।

अभिमंतिय वि [अभिमन्त्रित] मन्त्र से संस्कारित (सुर १६, ६२)।

अभिमन्न सक [अभि + मन्] १ अभिमान करना। २ सम्मत करना। अभिमन्नइ (विसे २१६०, २६०३)।

अभिमय वि [अभिमत] इष्ट, अभिप्रेत (सूत्र २, ४)।

अभिमाण पुं [अभिमान] अभिमान, गर्व (निचू १)।

अभिमार पुं [अभिमार] वृक्ष विशेष (राज)।

अभिमुह वि [अभिमुख] १ संमुख, सामने स्थित। २ क्रिवि. सामने (भग)।

अभिमुहिय वि [अभिमुखित] संमुख किया हुआ (सूअनि १४६)।

अभियागम पुं [अभ्यागम] संमुख आगमन (सूत्र १, १, ३, २)।

अभियावन्न वि [अभ्यापन्न] संमुख प्राप्त (सूत्र १, ४, २, २८)।

अभिरइ स्त्री [अभिरति] १ रति, संभोग। २ प्रीति, अनुराग, (विसे ३२२३)।

अभिरम अक [अभि + रम्] १ क्रीड़ा करना, संभोग करना। २ प्रीति करना। ३ तल्लीन होना, आसक्ति करना। अभिरमइ (महा)। वकृ. **अभिरमंत, अभिरममाण** (सुपा १२०; गाया १, २; ४)।

अभिरमिय वि [अभिरमित] अनुरक्त किया हुआ, 'अभिरमियकुमुयवणसंडं ससिमंडलं पलोयइ' (सुपा ३४)।

अभिरमिय वि [अभिरमित] संभुक्त, 'जेणाभिरमियं परकलत्तं' (धर्मवि १२८)।

अभिरमिय, अभिरय वि [अभिरत] १ अनुरक्त (सुपा ३४)। २ तल्लीन, तत्पर; 'साहू तवनियमसंजमाभिरया' (पउम ३७, ६३; स १२२)।

अभिराम वि [अभिराम] सुन्दर, मनोहर (गाया १, १३; स्वप्न ४५)।

अभिराम सक [अभि + रामय्] तत्परता से कार्य में लगाना। अभिरामयंति (दस ६, ४, १)।

अभिरुइय वि [अभिरुचित] पसंद, मन का अभिमत (गाया १, १; उवा; सुपा ३४४; महा)।

अभिरुय सक [अभि + रुच्] पसंद पड़ना, रुचना। अभिरुयइ (महा)।

अभिरूवंसि वि [अभिरूपिन्] सुन्दर रूप वाला, मनोहर (आचा २, ४, २, १)।

अभिरुह सक [अभि + रुह्] १ रोकना। २ ऊपर चढ़ना, आरोहना। संकृ.

'चत्तारि साहिए मासे बहवे
पाणजाइया आगम्म।
अभिरुज्झ कायं विहरिंसु,
आरुहिया णं तत्थ हिंसिंसु'
(आचा)।

अभिरोहिय वि [अभिरोधित] चारों ओर से निरुद्ध, रोका हुआ (गाया १, ६)।

अभिरोहिय वि [अभिरोहित] ऊपर देखो, 'परचक्करायाभिरोहिया'; ('परचक्रराजेनापरसैन्यनृपतिनाभिरोहिताः सर्वतः कृतनिरोधा या सा तथा' टी) (गाया १, ६)।

अभिलंघ सक [अभि + लङ्घ्] उल्लंघन करना। वकृ. **अभिलंघमाण** (गाया १, १)।

अभिलप्प वि [अभिलाप्य] कथन-योग्य, निर्वचनीय (आचू १)।

अभिलस सक [अभि + लष्] चाहना, वाञ्छना। अहिलसइ (उव)।

अभिलाअ, अभिलाव पुं [अभिलाप] १ शब्द, ध्वनि (ठा ३, १; भास २७)। २ संभाषण (गाया १,८; विसे)।

अभिलास पुं [अभिलाष] इच्छा, चाह (गाया १,६; प्रयौ ६१)।

अभिलासि, अभिलासिण वि [अभिलाषिन्] चाहने वाला, इच्छुक (वसु; स ६५४; पउम ३१, १२८)।

अभिलासुग वि [अभिलाषुक] अभिलाषी (उप ३५७ टी)।

अभिलोयण न [अभिलोकन] जहाँ खड़े रह कर दूर की चीज देखी जाय वह स्थान (पण्ह २, ४)।

अभिलोयण न [अभिलोचन] ऊपर देखो (पण्ह २, ४)।

अभिवंद सक [अभि + वन्द्] नमस्कार करना, प्रणाम करना। वकृ. **अभिवंदंत** (पउम २३, ६); कृ. 'जे साहुणो ते अभिवंदियव्वा' (गोय १४); **अभिवंदणिज्ज** (विसे २६४३)।

अभिवंदणा स्त्री [अभिवन्दना] प्रणाम, नमस्कार (चेइय ६३६)।

अभिवंदय वि [अभिवन्दक] प्रणाम करने वाला (औप)।

अभिवड्ढ अक [अभि + वृध्] बढ़ना, बड़ा होना, उन्नत होना। अभिवड्ढामो; भूका. अभिवड्ढित्था (कप्प)। वकृ.**अभिवड्ढेमाण** (जं ७)।

अभिवड्ढि देखो **अभिवुड्ढि** (इक)।

अभिवड्ढि देखो **अहिवड्ढि** (सुज १० १२ टी)।

अभिवड्ढिय वि [अभिवर्धित] १ बढ़ाया हुआ। २ अधिक मास। ३ अधिक मासवाला वर्ष (सम ५६; चन्द ११)।

अभिवड्ढे सक [अभि + वर्धय्] बढ़ाना। अभिड्ढेति (सुज ६)। वकृ. **अभिवड्ढेमाण** (सुज ६)। संकृ. **अभिवड्ढेत्ता** (सुज ६)।

अभिवत्त वि [अभिव्यक्त] आविर्भूत (धर्मसं ८८)।

अभिवत्ति स्त्री [अभिव्यक्ति] प्रादुर्भाव (उप २८५)।

अभिवय सक [अभि + व्रज्] सामने जाना। वकृ. **अभिवयंत** (णाया १, ८)।

अभिवाइय वि [अभिवादित] प्रणत, नमस्कृत (सुपा ३१०)।

अभिवात पुं [अभिवात] १ सामने का पवन। २ प्रतिकूल (गरम या रूक्ष) पवन (आचा)।

अभिवाद } सक [अभि + वादय्] प्रणाम
अभिवाय } करना, नमस्कार करना। अभिवाएइ (महा)। अभिवादये (विसे १०५४)। वकृ. **अभिवायमाण** (आचा)। कृ. **अभिवायणिज्ज** (सुपा ५६८)।

अभिवाय देखो **अभिवात** (आचा)।

अभिवायण न [अभिवादन] प्रणाम, नमस्कार (आचा; दसचू)।

अभिवाहरण न [अभिव्याहरण] बुलाहट, पुकार (पंचा २)।

अभिवाहार पुं [अभिव्याहार] प्रश्नोत्तर, सवाल-जवाब (विसे ३३९६)।

अभिविहि पुंस्त्री [अभिविधि] मर्यादा, व्याप्ति (पंचा १५; विसे ८७४)।

अभिवुट्ठि स्त्री [अभिवृष्टि] वृष्टि, वर्षा (पव ४०)।

अभिवुड्ढ देखो **अभिवड्ढ**। संकृ. **अभिवुड्ढित्ता** (सुज १)।

अभिवुड्ढि स्त्री [अभिवृद्धि] १ वृद्धि, बढ़ाव। २ उत्तरभाद्रपद नक्षत्र का अधिष्ठाता देव (जं ७)।

अभिवुड्ढे देखो **अभिवड्ढे**। संकृ. **अभिवुड्ढेत्ता** (सुज ६)।

अभिवेदणा स्त्री [अभिवेदना] अत्यन्त पीड़ा (सूअ १, ५, १, १६)।

अभिव्वंजण न [अभिव्यञ्जन] देखो **अभिवत्ति** (सूअ १, १, १)।

अभिव्वाहार देखो **अभिवाहार** (विसे ३३१२)।

अभिसंकण न [अभिशङ्कन] शंका, वहम (संबोध ४६)।

अभिसंका स्त्री [अभिशङ्का] संशय, संदेह (सूअ १, ६, १, १४)।

अभिसंकि वि [अभिशङ्किन्] १ संदेह करनेवाला। २ भीरु, डरनेवाला; 'उज्जु माराभिसंकी मरणा पमुच्चति' (आचा; णाया १, १८)।

अभिसंग पुं [अभिष्वङ्ग] आसक्ति (ठा ३, ४)।

अभिसंजाय वि [अभिसंजात] उत्पन्न (आचा)।

अभिसंथुण सक [अभिसं + स्तु] स्तुति करना, वर्णन करना। वकृ· **अभिसंथुणमाण** (णाया १, ८)।

अभिसंधारण न [अभिसंधारण] पर्यालोचन, विचारना (आचा)।

अभिसंधि पुंस्त्री [अभिसंधि] आशय, अभिप्राय (उप २११ टी)।

अभिसंधिय वि [अभिसंहित] गृहीत, उपात्त (आचा)।

अभिसंभूय वि [अभिसंभूत] उत्पन्न, प्रादुर्भूत (आचा)।

अभिसंबुद्ध वि [अभिसंबुद्ध] ज्ञान-प्राप्त, बोध-प्राप्त (आचा)।

अभिसंवुड्ढ वि [अभिसंवृद्ध] बढ़ा हुआ, उन्नत अवस्था को प्राप्त (आचा)।

अभिसमण्णागय } वि [अभिसमन्वागत]
अभिसमन्नागय } १ अच्छी तरह जाना हुआ, सुनिर्णीत (भग ५, ४)। २ व्यवस्थित (सूअ २,१)। ३ प्राप्त, लब्ध (भग १५; कप्प; णाया १, ८)।

अभिसमागम सक [अभिसमा + गम्] १ सामने जाना। २ प्राप्त करना। ३ निर्णय करना, ठीक-ठीक जानना। संकृ. **अभिसमागम्म** (आचा; दस ५)।

अभिसमागम पुं [अभिसमागम] १ संमुख गमन। २ प्राप्ति। ३ निर्णय (ठा ३, ४)।

अभिसमे सक [अभिसमा+इ] देखो **अभिसमागम** = अभिसमा + गम। अभिसमेइ (ठा ३, ४)। संकृ. **अभिसमेच्च** (आचा)।

अभिसर सक [अभि + सृ] प्रिय के पास जाना। वकृ. **अभिसरंत** (मोह ६१)।

अभिसरण न [अभिसरण] १ सामने जाना, संमुख गमन (पण्ह १, १)। २ प्रिय के पास जाना (कुमा)।

अभिसव पुं [अभिषव] १ मद्य आदि का अर्क। २ मद्य-मांस आदि से मिश्रित चीज (पव ६)।

अभिसारिआ देखो **अहिसारिआ** (गा ८७१)।

अभिसिंच सक [अभि + सिच्] अभिषेक करना। अभिसिंचति (कप्प)। कवकृ. **अभिसिच्चमाण** (कप्प)। प्रयो., हेकृ. **अभिसिंचावित्तए** (पि ५७८)।

अभिसित्त वि [अभिषिक्त] जिसका अभिषेक किया गया हो वह (आवम)।

अभिसेअ } **अभिसेग** } पुं [अभिषेक] १ राजा, आचार्य आदि पद पर आरूढ़ करना (संथा; महा)। २ स्नान-महोत्सव, 'जिणाभिसेगे' (सुपा ५०)। ३ स्नान (औप; स ३२)। ४ जहां पर अभिषेक किया जाता है वह स्थान (भग)। ५ शुक्र-शोणित का संयोग, 'इह खलु अत्तत्ताए तेहिं तेहिं कुलेहिं अभिसेएण अभिसंभूया' (आचा १, ६, १)। ६ वि. आचार्य आदि पद के योग्य (बृह ३)। ७ अभिषिक्त (निचू १५)।

अभिसेगा स्त्री [अभिषेका] १ साध्वी, संन्यासिनी (निचू १५)। २ साध्वियों की मुखिया, प्रवर्त्तिनी (धर्म ३; निचू ६)।

अभिसेज्जा स्त्री [अभिशय्या] देखो **अभिणिसज्जा** (वव १)। २ भिन्न स्थान (विसे ३४६१)।

अभिसेवण न [अभिषेवण] पूजा, सेवा, भक्ति (पउम १४, ४६)।

अभिसेवि वि [अभिषेविन्] सेवा-कर्ता (सूअ २, ६, ४४)।

अभिस्संग पुं [अभिष्वङ्ग] आसक्ति (विसे २६६४)।

अभिहट्टु अ [अभिहृत्य] बलात्कार करके, जबरदस्ती करके (आचा; पि ५७७)।

अभिहड वि [अभिहृत] १ सामने लाया हुआ (पंचा १३)। २ जैन साधुओं की भिक्षा का एक दोष (ठा ३, ४)।

अभिहण सक [अभि + हन्] मारना, हिंसा करना (पि ४६६)। वकृ. **अभिहणमाण** (जं ३)।

अभिहणण न [अभिहनन] अभिघात, हिंसा (भग ८, ७)।

अभिहय वि [अभिहत] मारा हुआ, आहत (पडि)।

अभिहा स्त्री [अभिधा] नाम, आख्या (सण)।

अभिहाण न [अभिधान] १ नाम, आख्या (कुमा)। २ वाचक, शब्द (वव ६)। ३ कथन, उक्ति (विसे)।

अभिहाण न [अभिधान] १ उच्चारण (सूअनि १३८)। २ कथन, उक्ति (धर्मसं ११११)। ३ कोशग्रन्थ (चेइय ७४)।

अभिहिय वि [अभिहित] कथित, उक्त (आचा)।

अभिहेअ वि [अभिधेय] वाच्य, पदार्थ (विसे ८४१)।

अभीइ } **अभीजि** } स्त्री [अभिजित्] १ नक्षत्र-विशेष (सम ८, १५)। २ पुं. एक राजकुमार (भग १३, ६)। ३ राजा श्रेणिक का एक पुत्र, जिसने जैन दीक्षा ली थी (अनु)।

अभीरु वि [अभीरु] १ निडर, निर्भीक (आचा)। २ स्त्री. मध्यम ग्राम की एक मूर्च्छना (ठा ७)।

अभेज्झा देखो **अभिज्झा** (पराह १, ३)।

अभोज्ज वि [अभोज्य] भोजन के अयोग्य (णाया १, १६)। °**घर** न [°गृह] भिक्षा के लिए अयोग्य घर, धोबी आदि नीच जाति का घर (बृह १)।

अम सक [अम्] १ जाना। २ आवाज करना। ३ खाना। ४ पीडना। ५ अक. रोगी होना, 'अम गत्याईसु' (विसे ३४५३); 'अम रोगे वा' (विसे ३४५४)। अमइ (विसे ३४५३)।

अमग्ग पुं [अमार्ग] १ कुमार्ग, खराब रास्ता (उव)। २ मिथ्यात्व, कषाय आदि हेय पदार्थ; 'अमग्गं परियाणामि मग्गं उवसंपज्जामि' (आव ४)। ३ कुमत, कुदर्शन (दंस)।

अमग्घाय पुं [अमाघात] १ द्रव्य का अ-हरण। २ मारिनिवारण, अभय-घोषणा (पंचा ६)।

अमच्च पुं [अमात्य] मन्त्री, प्रधान (औप; सुर ४, १०४)।

अमच्च पुं [अमर्त्य] देव, देवता (कुमा)।

अमज्झ वि [अमध्य] १ मध्य रहित, अखण्ड (ठा ३, २)। २ परमाणु (भग २०, ६)।

अमण न [अमन] १ ज्ञान, निर्णय (ठा ३, ४)। २ अन्त, अवसान (विसे ३४५३)।

अमण } **अमणक्ख** } वि [अमनस्क] १ अप्रीतिकर, अभीष्ट (ठा ३, ३)। ३ मनरहित (आव ४; सूअ २, ४, २)।

अमणाम वि [अमनआप] अनिष्ट, अमनोहर (सम १४६; विपा १, १)।

अमणाम वि [अमनोम] ऊपर देखो (भग; विपा १, १)।

अमणाम वि [अवनाम] पीड़ा-कारक, दुःखोत्पादक (सूअ २, १)।

अमणुस्स पुं [अमनुष्य] १ मनुष्य-भिन्न देव आदि (णंदि)। २ नपुंसक (निचू १)।

अमत्त न [अमत्र] भाजन, पात्र (सूअ १, ६)।

अमम वि [अमम] १ ममता-रहित, निःस्पृह (पराह २, ५; सुपा ५००)। २ पुं. आगामी काल में होने वाले एक जिनदेव का नाम (सम १५३)। ३ युग्म रूप से होने वाले मनुष्यों की एक जाति (जं ४)। दिन के २५ वां मुहूर्त का नाम (चंद १०)। °**त्त** वि [°त्व] निःस्पृह, ममता-रहित (पंचव ४)।

अमय वि [अमय] विकार-रहित,

'अमओ य होइ जीवो, कारणविरहा
जहेव आगासं।
समयं च होअनिच्चं, मिम्मयघडतंतुमाईयं'
(विसे)।

अमय न [अमृत] १ अमृत, सुधा (प्रासू ६६)। २ क्षीर समुद्र का पानी (राय)। ३ पुं. मोक्ष, मुक्ति (सम्म १६७; प्रामा)। ४ वि. नहीं मरा हुआ, जीवित; 'अमओ हं नय विमुआमि' (पउम ३३,८२)। °**कर** पुं [°कर] चन्द्र, चन्द्रमा (उप ७६८ टी)। °**किरण** पुं [°किरण] चन्द्र (सुपा ३७७)। °**कुंड** पुं [°कुण्ड] चन्द्र, चाँद (श्रा २७)। °**घोस** पुं [°घोष] एक राजा का नाम (संथा)। °**फल** न [°फल] अमृतोपम फल (णाया १, ६)। °**मइय**—°**मय** वि [°मय] अमृत-पूर्ण (कुमा; सुर ३,१२१; २३३)। °**मऊह** पुं [°मयूख] चन्द्र (मै ६८)। °**वल्लरि**, °**वल्लरी** स्त्री [°वल्लरि, °री] अमृतलता, वल्ली-विशेष, गुडूची। °**वल्लि**, °**वल्ली** स्त्री [°वल्लि, °ल्ली] वल्ली-विशेष, गुडूची (श्रा २०; पव ४)। °**वास** पुं [°वर्ष] सुधा-वृष्टि (आचा)। देखो **अमिय** = अमृत।

अमय पुं [दे] १ चन्द्र, चन्द्रमा (दे १,१५)। २ असुर, दैत्य (षड्)।

अमयघडिअ पुं [दे. अमृतघटित] चन्द्रमा, चाँद (कुप्र २१)।

अमयणिग्गम पुं [दे. अमृतनिर्गम] १ चन्द्र, चन्द्रमा (दे १,१५)।

अमर वि [आमर] दिव्य, देव-सम्बन्धी; 'अमरा आउहभेया' (पउम ६१, ४६)।

अमर पुं [अमर] १ देव, देवता (पाग्र)। २ मुक्त आत्मा (ग्रौप)। ३ भगवान् ऋषभदेव का एक पुत्र (राज)। ४ अनन्तवीर्य नामक भावी जिनदेव के पूर्वजन्म का नाम (ती २१)। ५ वि. मरणरहित, 'पावंति अविग्घेणं जीवा अयरामरं ठाणं' (पडि)। °**कंका** स्त्री [°कङ्का] एक नगरी का नाम (उप ६४८ टी)। °**केउ** पुं [°केतु] एक राजकुमार (दंस)। °**गिरि** पुं [°गिरि] मेरु पर्वत (पउम ६५, ३७)। °**गेह** न [°गेह] स्वर्ग (उप ७२८ टी)। °**चन्दण** न [°चन्दन] १ हरि-चन्दन वृक्ष। २ एक प्रकार का सुगन्धित काष्ठ (पाग्र)। °**तरु** पुं [°तरु] कल्पवृक्ष (सुपा ४४)। °**दत्त** पुं [°दत्त] एक श्रेष्ठि-पुत्र का नाम (धम्म)। °**नाह** पुं [°नाथ] इन्द्र (पउम १०१, ७५)। °**पुर** न [°पुर] स्वर्ग (पउम २,१४)। °**पुरी** स्त्री [°पुरी] स्वर्गपुरी, अमरावती (उप पृ १०५)। °**पभ** पुं [°प्रभ] वानर-द्वीप का एक राजा (पउम ६, ६६)। °**वइ** पुं [°पति] इन्द्र (पउम १०१, ७०; सुर १, १)। °**वहू** स्त्री [°वधू] देवी (महा)। °**सामि** पुं [°स्वामिन्] इन्द्र (विसे १४३६ टी)। °**सेण** पुं [°सेन] १ एक राजा का नाम (दंस)। २ एक राजकुमार का नाम (णाया १, ८)। °**लय** त्रि [°लय] स्वर्ग, 'चविउममरालयाए' (उप ७२८ टी; सुपा ३५)। °**वई** स्त्री [°वती] १ देव-नगरी, स्वर्ग-पुरी (पाग्र)। २ मर्त्य लोक की एक नगरी, राजा श्रीसेन की राजधानी (उप ६८६ टी)।

अमरंगणा स्त्री [अमराङ्गना] देवी (श्रा २७)।

अमरिंद पुं [अमरेन्द्र] देवों का राजा, इन्द्र (भवि)।

अमरिस पुं [अमर्ष] १ असहिष्णुता (हे २, १०५)। २ कदाग्रह (उत्त ३४)। ३ क्रोध, गुस्सा (पण्ह १, ३; पाग्र)।

अमरिसण न [अमर्षण] १—३ ऊपर देखो। ४ वि. असहिष्णु; क्रोधी (पण्ह १,४)। ५ सहिष्णु, क्षमाशील (सम १५३)।

अमरिसण वि [अमसृण] उद्यमी, उद्योगी (सम १५३)।

अमरिसिय वि [अमर्षित] १ मत्सरी, असहिष्णु (ग्रावम; स ५६५)।

अमरी स्त्री [अमरी] देवी (कुमा)।

अमरीस पुं [अमरेश] इन्द्र (चेइय ३१०)।

अमल वि [अमल] १ निर्मल, स्वच्छ (उव; सुपा ३४)। २ पुं. भगवान् ऋषभदेव के एक पुत्र का नाम (राज)।

अमला स्त्री [अमला] शक्र की एक अग्र-महिषी का नाम, इन्द्राणी-विशेष (ठा ८)।

अमवस्सा देखो **अमावस्सा** (पंचा १६, २०)।

अमाइ, **अमाइल्ल** वि [अमायिन्] निष्कपट, सरल (ग्राचा; ठा १०; द्र ४७)।

अमाघाय देखो **अमग्घाय** (उवा)।

अमाण वि [अमान] १ गर्वरहित, नम्र (कप्प)। २ असंख्य, 'ठाणट्ठाणविलोइज्जमाणमाणोसहिसमूहो' (उत्र ६ टी)।

अमाय वि [अमात] नहीं समाया हुआ; 'सुसाहुवग्गस्स मणे अमाया' (सत्त ३५)।

अमाय वि [अमाय] निष्कपट, सरल (कप्प)।

अमायि देखो **अमाइ** (भग)।

अमारि स्त्री [अमारि] हिंसा-निवारण, जीवित-दान (सुपा ११२)। °**घोस** पुं [°घोष] अहिंसा की घोषणा (सुपा ३०६)। °**पडह** पुं [°पटह] हिंसा-निषेध का डिण्डिम, 'अमारिपडहं च घोसावेइ' (रयण ६०)।

अमावसा, **अमावस्सा**, **अमावासा** स्त्री [अमावास्या] तिथि-विशेष, अमावस (कप्प; सुपा २२६; णाया १, १०; चंद १०)।

अमिज्ज वि [अमेय] माप करने के लिए अशक्य, असंख्य (कप्प)।

अमिज्झ न [अमेध्य] १ अशुचि वस्तु 'भरियममिज्झस्स दुरहिगंधस्स' (उप ७२८ टी)। २ विष्ठा (सुपा ३१३)।

अमित्त पुंन [अमित्र] रिपु, दुश्मन (ठा, ४, ४; से ५, १७)।

अमिय देखो **अमय** = अमृत (प्रासू १; गा २; विसे; ग्रावम; पिंग)। °**कुंड** न [°कुण्ड] नगर-विशेष का नाम (सुपा ५७८)। °**गइ** स्त्री [°गति] एक छन्द का नाम (पिंग)। °**णाणि** पुं [°ज्ञानिन्] ऐरवत क्षेत्र के एक तीर्थंकर देव का नाम (सम १५३)। °**भूय** वि [°भूत] अमृत-तुल्य (ग्राउ)। °**मेह** पुं [°मेघ] अमृतवर्षा (जं ३)। °**रुइ** पुं [°रुचि] चन्द्र, चन्द्रमा (श्रा १६)।

अमिय वि [अमित] परिमाण-रहित, असंख्य, अनन्त (भग ५, ४; सुपा ३१; श्रा २७)। °**गइ** पुं [°गति] दक्षिण दिशा के एक इन्द्र का नाम, दिक्कुमारों का इन्द्र (ठा २, ३)। °**जस** पुं [°यशस्] एक चक्रवर्ती राजा का नाम (महा)। °**णाणि** वि [°ज्ञानिन्] १ सर्वज्ञ (विसे)। २ ऐरवत क्षेत्र के एक जिन-देव का नाम (सम १५३)। °**तेय** पुं [°तेजस्] एक जैन मुनि का नाम (उप ७६८ टी)। °**बल** पुं [°बल] इक्ष्वाकु वंश के एक राजा का नाम (पउम ५,४)। °**वाहण** पुं [°वाहन] दिक्कुमार देवों के एक इन्द्र का नाम (ठा २, ३)। °**वेग** पुं [°वेग] राक्षस वंश के एक राजा का नाम (पउम ५, २६१)। °**ासणिय** वि [°ासनिक] एक स्थान पर नहीं बैठनेवाला, चंचल (कप्प)।

अमिल न [दे] ऊन का बना हुआ वस्त्र (श्रा १८)। २ पुं. मेष, भेड़ (ग्रोघ ३६८)।

अमिल वि [दे. आमिल] अमिल देश में बना हुआ (ग्राचा २, ५, १, ५)।

अमिला स्त्री [अमिला] १ बीसवें जिनदेव की प्रथम शिष्या (सम १५२)। २ पाड़ी, छोटी भैंस (बृह १)।

अमिलाण, **अमिलाय** वि [अम्लान] १ म्लान-रहित, ताजा, हृष्ट (सुर ३,६५; भग ११,११)। २ पुं. कुरण्टक वृक्ष। ३ न. कुरण्टक वृक्ष का पुष्प (दे १,३७)।

अमु स [अदस्] वह, अमुक (पि ४३२)।

अमुअ स [अमुक] वह, कोई, अमका-ढमका (ग्रोघ ३२ भा; सुपा ३१४)।

अमुअ देखो **अमय** = अमृत (प्रासू ५१; गा ६७६)।

अमुअ देखो **अमय** = अमय (काप्र ७७७)।

अमुअ वि [अस्मृत] स्मरण में नहीं आया हुआ (भग ३, ६)।

अमुइ वि [अमोचिन्] नहीं छोड़नेवाला (उव)।

अमुग देखो **अमुअ** = अमुक (कुमा)।

अमुगत्थ वि [अमुत्र] अमुक स्थान में (सुपा ६०२)।

अमुण त्रि [अज्ञ] अजान, मूर्ख (बृह १)।

अमुणिय वि [अज्ञात] अविदित (सुर ४, २०)।

अमुणिय वि [अज्ञान] मूर्ख, अजान (पराह १, २)।

अमुत्त वि [अमुक्त] अपरित्यक्त (ठा १०)।

अमुत्त वि [अमूर्त्त] रूपरहित, निराकार (सुर १४, ३६)।

अमुदग्ग, **अमुयग्ग** न [अमुदग्र] १ अतीन्द्रिय मिथ्याज्ञान विशेष, जैसे देवताओं के पुद्गलरहित शरीर को देखकर जीव का शरीर पुद्गल से निर्मित नहीं है ऐसा निर्णय (ठा ७)।

अमुस वि [अमृष] सच्चा, सत्य; 'अमुसे वरे' (सूत्र १, १०, १२)।

अमुसा स्त्री [अमृषा] सत्यवचन (सूत्र १, १०)। °**वाइ** वि [°वादिन्] सत्यवादी (कुमा)।

अमुह वि [अमुख] निरुत्तर (वव ६)।

अमुहरि वि [अमुखरिन्] अवाचाल, मित-भाषी (उत्त १)।

अमूढ वि [अमूढ] अमुग्ध, विचक्षण (गाया १, ६)। °**णाण** न [°ज्ञान] सत्य-ज्ञान (आवम)। °**दिट्ठि** स्त्री [°दृष्टि] १ सम्यग्दर्शन (पव ६)। २ अविचलित बुद्धि (उत्त २)। ३ वि. अविचलित दृष्टि वाला, सम्यग्दृष्टि (गच्छ १)।

अमूस वि [अमृष] सत्यवादी (कुमा)।

अमेज्ज देखो **अमिज्ज** (भग ११,११)।

अमेज्झ देखो **अमिज्झ** (महा)।

अमोल्ल वि [अमूल्य] जिसकी कीमत न हो सके वह, बहुमूल्य (गउड; सुपा ५१६)।

अमोसलि न [दे. अमुशलि] वस्त्रादि निरीक्षण का एक प्रकार (ओघ २६५)।

अमोसा देखो **अमुसा** (कुमा)।

अमोह वि [अमोघ] १ अवन्ध्य, सफल (सुपा ८३; ५७५)। २ पुं. सूर्य के उदय और अस्त के समय किरणों के विकार से होने वाली रेखा विशेष (भग ३, ६)। एक यक्ष का नाम (विपा १,४)। °**दंसि** वि [°दर्शिन्] १ ठीक-ठीक देखनेवाला (दस ६)। २ न. उद्यान-विशेष। ३ पुं. यक्ष-विशेष (विपा १, ३)। °**पहारि** वि [°प्रहारिन्] अचूक प्रहार करनेवाला, निशानबाज (महा)। °**रह** पुं [°रथ] इस नाम का एक रथिक (महा)।

अमोह पुं [अमोह] १ मोह का अभाव, सत्य-ग्रह (विसे)। २ रुचक पर्वत का एक शिखर (ठा ८)। ३ वि. मोहरहित, निर्मोह (सुपा ८३)।

अमोह पुं [अमोघ] १ सूर्य-बिम्ब के नीचे कभी-कभी दीखती श्याम आदि वर्णवाली रेखा (अणु १२१)। २. पुंन. एक देवविमान (देवेन्द्र १४४)।

अमोहण न [अमोहन] १ मोह का अभाव (वव १०)। २ वि. मुग्ध नहीं करनेवाला (कप्प)।

अमोहा स्त्री [अमोघा] १ एक जम्बूवृक्ष, जिसके नाम से यह जम्बूद्वीप कहलाता है (जीव ३)। २ एक पुष्करिणी (दीव)।

अम्म देखो **अंब** = आम्ल (उर २, ६)।

अम्मएव पुं [आम्रदेव] एक जैन आचार्य (पव २७६; गा ६०६)।

अम्मगा देखो **अम्मया** (उवा)।

अम्मच्छ वि [दे] असंबद्ध (षड्)।

अम्मड देखो **अंबड** (औप)।

अम्मडी (अप) स्त्री [अम्बा] माता, माँ (हे ४, ४२४)।

अम्मणुअंचिय न [दे] अनुगमन, अनुसरण (दे १, ४६)।

अम्मधाई देखो **अंबधाई** (विपा १, ६)।

अम्मया स्त्री [अम्बा] १ माता, जननी (उवा)। २ पांचवें वासुदेव की माता का नाम (सम १५२)।

अम्महे (शौ) अ. हर्ष-सूचक अव्यय (हे ४, २८४)।

अम्मा स्त्री [दे. अम्बा] माता, माँ (दे १, ५)। °**पिइ**, °**पिउ**, °**पियर**, °**पीइ** पुं. ब. [°पितृ] माँ-बाप, माता-पिता (वव ३; कप्प; सुर ३,८३; ठा ३,१; सुर ३,८८; ७,१७०)। °**पेइय** वि [°पैतृक] माँ-बाप-संबन्धी (भग १, ७)।

अम्माइआ स्त्री [दे] अनुसरण करने वाली स्त्री, पीछे-पीछे जानेवाली स्त्री (दे १,२२)।

अम्मो अ [?] १ आश्चर्य-सूचक अव्यय (हे २, २०८; स्वप्न २६)। २ माता का संबोधन, हे माँ (उवा; कुमा)।

अम्मोगइया स्त्री [दे] संमुख-गमन, स्वागत करने के लिए सामने जाना; 'राया सयमेव अम्मोगइयाए निग्गओ' (सुख २, १३)।

अम्मोस वि [अमर्ष्य] अक्षम्य, क्षमा के अयोग्य (सुपा ४८७)।

अम्ह स [अस्मत्] हम, निज, खुद (हे २, ६६; १४२)। °**केर**, °**क्केर**, °**च्चय** त्रि [°ीय] अस्मदीय, हमारा (हे २, ६६; सुपा ४६६)।

अम्हत्त वि [दे] प्रमृष्ट, प्रमार्जित (षड्)।

अम्हार, **अम्हारय** (अप) वि [अस्मदीय] हमारा (षड्; कुमा)।

अम्हारिच्छ वि [अस्मादृक्ष] हमारे जैसा (प्रामा)।

अम्हारिस वि [अस्मादृश] हमारे जैसा (हे १, १४२; षड्)।

अम्हेच्चय वि [अस्माक] अस्मदीय, हमारा (कुमा; हे २, १४९)।

अम्हो अ [अहो] आश्चर्य-सूचक अव्यय (षड्)।

अय पुं [अग] १ पहाड़, पर्वत। २ साँप, सर्प। ३ सूर्य, सूरज (श्रा २३)।

अय पुं [अज] १ छाग, बकरा (विपा १,४)। २ पूर्वभाद्रपद नक्षत्र का अधिष्ठायक देव (ठा २, ३)। ३ महादेव। ४ विष्णु। ५ रामचन्द्र। ६ ब्रह्मा। ६ कामदेव (श्रा २३)। ८ महाग्रह-विशेष (ठा ६)। ६ बीजोत्पादक शक्ति से रहित धान्य (पउम ११, २५)। °**करक** पुं [°करक] एक महाग्रह का नाम (ठा २, ३)। °**वाल** पुं [°पाल] आभीर (श्रा २३)।

अय पुं [अय] १ गमन, गति (विसे २७६३; श्रा २३)। २ लाभ, प्राप्ति। ३ अनुभव (विसे)। ४ न. पुण्य (ठा १०)। ५ भाग्य, नसीब (श्रा २३)।

अय न [अक] १ दुःख। २ पाप (श्रा २३)।

अय न [अयस्] लोहा, लोह (ओघ ६२)। °**आगर** पुं [°आकर] १ लोहे की खान (निचू ५)। २ लोहे का कारखाना (ठा ८)। °**कंत,** °**क्खंत** पुं [°कान्त] लोह-चुम्बक (आवम)। °**कडिल्ल** न [दे. °कडिल्ल] कटाह (ओघ)। **कुंडी** स्त्री [°कुण्डी] लोहे का भाजन-विशेष (विपा १,६)। °**कोट्ठय** पुं [°कोष्ठक] लोहे का कुशूल, लोहे का गोला; 'पोट्टं अयकोट्ठओ व्व वट्टं' (उवा)। °**गोलय** पुं [°गोलक] लोहे का गोला (आ १९)। °**दव्वी** स्त्री [°दर्वी] लोहे की कड़छी या कर-छुल, जिससे दाल, कढ़ी आदि हिलाया जाता है (दे २, ७)। °**पाय** न [°पात्र] लोहे का भाजन। °**सलागा** स्त्री [°शलाका] लोहे की सलाई (उप २११ टी)।

अय सक [अय्] १ गमन करना, जाना। २ प्राप्त करना। ३ जानना। वकृ. **अयमाण** (सम ६३)।

अयंछ सक [कृष्] १ खींचना। २ जोतना, चास करना। ३ रेखा करना। अयंछइ (हे ४, १८७)।

अयंछिर वि [कर्षिन्] कर्षणशील, खींचने-वाला (कुमा)।

अयंड पुं [अकाण्ड] १ अनुचित समय (महा)। २ अकस्मात्, हठात् (पउम ५,१६४; मे ४४; गउड)। ३ क्रिवि. अनधारित, अतर्कित (पाअ)।

अयंत वकृ [आयत्] आता हुआ, प्रवेश करता हुआ (आवम)।

अयंतिय वि [अयन्त्रित] अनादरणीय (उत्त २०, ४२)।

अयंपिर वि [अजल्पितृ] नहीं बोलनेवाला, मौनी (पि २९६; ५९६)।

अयंपुल पुं [अयंपुल] गोशालक का एक शिष्य (भग ८, ५)।

अयंस पुं [आदर्श] दर्पण, काँच। °**मुह** पुं [°मुख] १ इस नाम का एक द्वीप। २ द्वीप-विशेष का निवासी (इक)।

अयंसंधि वि [इदंसंधि] उपयुक्त कार्य को यथासमय करनेवाला (आचा)।

अयकरय पुं [अयकरक] एक महाग्रह (सुज २०)।

अयक } **अयग** } पुं [दे] दानव, असुर (दे १,६)।

अयगर पुं [अजगर] अजगर, मोटा साँप (पराह १, १; पउम ६३, ५४)।

अयड पुं [दे. अवट] कूप, कुंआ (दे १,१८)।

अयण न [अतन] सतत होना, निरन्तर होना (विसे ३५७८)।

अयण न [अयन] १ गमन। २ प्राप्ति, लाभ (विसे ८३)। ३ ज्ञान, निर्णय (विसे ८३)। ४ गृह, मन्दिर; 'चंडियायणं' (स ४३५)। ५ वि. प्रापक, प्राप्त करनेवाला (विसे ६६०)। ६ पुंन. वर्ष का आधा भाग, जिसमें सूर्य दक्षिण से उत्तर में या उत्तर से दक्षिण में जाता है (ठा २, ४);

'एक्के अअणे दिअहा, बीए रअणीओ
होंति दीहाओ।
विरहाअणो अउव्वो, इत्थ दुवे च्चेअ वड्ढंति'
(गा ८४६)।

अयण न [अदन] १ भक्षण। २ खुराक, भोजन (स १३०; उर ८, ७)।

अयणु वि [अज्ञ] अजान, मूर्ख (सुर ३, १६६)।

अयणु वि [अतनु] स्थूल, मोटा, महान् (सण)।

अयतंचिअ वि [दे] पुष्ट, उपचित (दे १, ४७)।

अयर वि [अजर] वृद्धावस्थारहित 'अयरामरं ठाणं' (पडि; उव)।

अयर पुंन [अतर] १ सागर, समुद्र (दे २८)। २ समय का मान-विशेष, सागरोपम (संग २१,२५; धण ४३)। ३ वि. तरने के अशक्य (बृह १)। ४ असमर्थ, अशक्त (निचू १)। ५ ग्लान, बीमार (बृह १)।

अयरामर वि [अजरामर] १ जरा और मरण से रहित (नव २)। २ न. मुक्ति, मोक्ष (पउम ८, १२७)।

अयल देखो **अचल** = अचल (पाअ; गउड; उप पृ १०५; अंत ३; पउम ८५,४; सम ८८; कप्प; सम १६)।

अयला देखो **अचला** (पउम १२०, १५६)।

अयस देखो **अजस** (गउड; प्रासू २३; १५३; गा १७८)।

अयंसि वि [अयशस्विन्] अजसी, यशो-रहित, कीर्ति-शून्य (गउड)।

अयसि } **अयसी** } स्त्री [अतसी] धान्य-विशेष, अलसी, तीसी (भग; ठा ७; गाया १, ५)।

अया स्त्री [अजा] १ बकरी। २ माया, अविद्या। ३ प्रकृति, कुदरत (हे ३, ३२; षड्)। °**किवाणिज्ज** पुं [°कृपाणीय] न्याय-विशेष; जैसे बकरी के गले पर अनधारी छुरी पड़ती है उस माफिक अनधारा किसी कार्य का होना (आचा)। °**पाल** पुं [°पाल] आभीर, बकरी चरानेवाला (स २६०)। °**वय** पुं [°व्रज] बकरी का बाड़ा (भग १६,३)।

अयागर देखो **अय-आगर** (ठा ८)।

अयाण न [अज्ञान] ज्ञान का अभाव (सत्त ६३)।

अयाण वि [अज्ञ, अज्ञान] अजान, अज्ञानी, मूर्ख (ओघ ७४; पउम २२, ८३; गा २७५; दे ७, ७३)।

अयाणअ वि [अज्ञायक] ऊपर देखो (पाअ; भवि)।

अयाणंत देखो **अजाणंत** (ओघ ११)।

अयाणमाण देखो **अजाणमाण** (नव ३६)।

अयाणिय देखो **अजाणिय** (उप ७२८ टी)।

अयाणुय देखो **अजाणुय** (सुर ३,१६८; सुपा ५४३)।

अयार पुं [अकार] 'अ' अक्षर (विसे ४७८)।

अयाल पुं [अकाल] अयोग्य समय, अनुचित काल (पउम २२, ८५)।

अयालि पुं [दे] दुर्दिन, मेघाच्छन्न दिवस (दे १, १३)।

अयालिय वि [अकालिक] आकस्मिक, अकाण्डोत्पन्न; 'पडउ पडउ एयस्स हत्थतले अयालिया विज्जू' (रंभा)।

अयि देखो **अइ** = अयि (हे २, २१७)।

अयुजरेवइ स्त्री [दे] अचिर-युवति, नवोढा, दुलहिन (षड्)।

अयोमय देखो **अओ-मय** (अंत १६)।

अय्यावत्त (शौ) पुं [आर्यावर्त] भारत, हिन्दुस्तान (कुमा)।

अय्युण (मा) देखो **अज्जुण** (हे ४, २९२)।

अर पुं [अर] १ धुरी, पहिये के बीचका काष्ठ। २ अठारहवाँ जिनदेव और सातवाँ

चक्रवर्ती राजा; 'सुमिणे अरं महरिहं पासइ जणणी अरो तम्हा' (आव २; सम ५३; उत्त १८)। ३ समय का एक परिमाण, कालचक्र का बारहवाँ हिस्सा। (ती २१)।

°अर पुं [°कर] १ किरण। गा ३४३; से १, १७)। २ हस्त, हाथ (से १, २८)। ३ शुल्क, चुंगी (से १, २८)।

अरइ स्त्री [अरति] अर्श, मसा (आचा २, १३, १)।

अरइ स्त्री [अरति] १ बेचैनी। (भग; आचा; उत्त२)। °कम्म न [°कर्मन्] अरति का हेतुभूत कर्मविशेष (ठा ६)। °परिसह, °परीसह पुं [°परिषह, °परीषह] अरति को सहन करना (पंच ८)। °मोहणिज्ज न [°मोह-नीय] अरति का उत्पादक कर्म-विशेष (कम्म १)। °रइ स्त्री [°रति] सुख-दुःख (ठा १)।

°अरंग देखो तरंग (से २, २६)।

अरंजर पुंन [अरञ्जर] घड़ा, जल-घट (ठा ४, ४)।

°अरक्ख देखो वरक्ख (से ६, ४४)।

अरक्खरी स्त्री [अराक्षरी] नगरी-विशेष (आक)।

अरग देखो अर (पण्ह २, ४; भग ३, ५)।

अरज्झिय वि [अरहित] निरन्त, रसतत; 'अरज्झियाभितावा' (सूअ १, ५, १)।

अरडु पुं [अरट्टु] वृक्ष-विशेष (उप १०३१ टी)।

अरण न [अरण] हिंसा (उव)।

अरणि पुं [अरणि] १ वृक्ष-विशेष। २ इस वृक्ष की लकड़ी, जिसको घिसने पर अग्नि जल्दी पैदा होती है (आवम; णाया १, १८)।

अरणि पुंस्त्री [दे] १ रास्ता, मार्ग। २ पंक्ति, कतार। (षड्)।

अरणिया स्त्री [अरणिका] वनस्पति-विशेष (आचा)।

अरणेट्टय पुं [दे. अरणेटक] पत्थरों के टुकड़ों से मिली हुई सफेद मिट्टी (जी ३)।

अरण्ण वि [आरण्य] जंगल में रहने वाला (सूअ १, १, १, १६)।

अरण्ण न [अरण्य] वन, जंगल (हे १, ६६)। °वडिंसग न [°ावतंसक] देवविमान विशेष (सम ३६)। °साण पुं [°श्वन्] जंगली कुत्ता (कुमा)।

अरण्णय वि [आरण्यक] जंगली, जंगल-वासी (अभि ५२)।

अरत्त वि [अरक्त] राग-रहित, नीराग (आचा)।

अरन्न देखो अरण्ण (कप्प; उव)।

अरबाग पुं [दे] एक अनार्य देश, अरब देश (पव २७४)।

अरमंतिया स्त्री [अरमन्तिका] अरमणता, कार्य में अतत्परता (उवा)।

अरय देखो अर (खेत्त १०८)।

अरय वि [अरजस्] १ रजोगुण-रहित (पउम ६, १४६)। २ एक महाग्रह का नाम (ठा २, ३)। ३ वि. धूलीरहित, निर्मल (कप्प)। ४ न. पांचवें देव लोक का एक प्रतर (ठा ६)। ५ रजोगुण का अभाव; 'अरो य अरयं पत्तो पत्तो गइमणुत्तरं' (उत्त १८)।

अरय वि [अरत] अनासक्त, निःस्पृह (आचा)।

अरय पुंन [अरजस्] एक देवविमान (देवेन्द्र १४१)।

अरया स्त्री [अरजा] कुमुद नामक विजय की राजधानी (जं ४)।

अरयणि पुं [अरत्नि] परिमाण विशेष, खुली अंगुलीवाला हाथ (ठा ४, ४)।

अरर न [अरर] १ युद्ध। २ ढकना। °कुरी स्त्री [°कुरी] नगरी-विशेष (धम्म ६ टी)।

अररि पुंन [अररि] किवाड़, द्वार (प्रामा)।

अरल न [दे] १ चीरी, कीट-विशेष। २ मशक, मच्छड़ (दे १, ५३)।

अरलाया स्त्री [दे] चीरी, कीट-विशेष (दे १, २६)।

अरलु देखो अरडु (पउम ४२, ८)।

अरविंद न [अरविन्द] कमल, पद्म (पण्ह २, ४)।

अरविंदर वि [दे] दीर्घ, लम्बा (दे १,४५)।

अरस पुं [अरस] रसरहित, नीरस (णाया १, ५)।

अरस पुं [अर्शस्] व्याधि-विशेष, बवासीर (श्रा २२)।

अरस न [अरस] तप-विशेष, निर्विकृति तप (संबोध ५८)।

अरह वि [अर्हत्] १ पूजा के योग्य, पूज्य (षड्; हे २, १११)। २ पुं. जिनदेव, तीर्थंकर (सम्म ६७)। °मित्त पुं [°मित्र] एक व्यापारी का नाम (गच्छ २)।

अरह देखो अरिह = अर्ह। अरहइ (प्राकृ २८)।

अरह वि [अरहस्] १ प्रकट। २ जिससे कुछ भी न छिपा हो। ३ पुं. जिनदेव, सर्वज्ञ (ठा ४, १, ६)।

अरह वि [अरथ] परिग्रहरहित (भग)।

अरहंत वकृ [अर्हत्] १ पूजा के योग्य, पूज्य (षड्; हे २, १११; भग ८, ५)। २ पुं. जिन भगवान्, तीर्थंकरदेव (आचा; ठा ३, ४)।

अरहंत वि [अरहोन्तर्] १ सर्वज्ञ, सब कुछ जाननेवाला। २ पुं. जिन भगवान् (भग २,१)।

अरहंत वि [अरथान्त] १ निःस्पृह, निर्मम। २ पुं. जिनदेव (भग)।

अरहंत वकृ [अरहयत्] १ अपने स्वभाव को नहीं छोड़नेवाला। २ पुं. जिनेश्वर देव (भग)।

अरहट्ट पुं [अरघट्ट] अरहट, रहट, पानी का चरखा, पानी निकालने का यन्त्र विशेष (गा ४९०; प्रासू ५५); 'भमिओ कालमणंतं अर-हट्टघडिव्व जलमज्झे' (जीवा १)।

अरहट्टिय वि [अरघट्टिक] अरहट चलाने-वाला (कुप्र ५४)।

अरहणा स्त्री [अर्हणा] १ पूजा। २ योग्यता (प्राकृ २८)।

अरहण्णय पुं [अरहन्नक] एक व्यापारी का नाम (णाया १, ८)।

अरहन्न पुं [अर्हन्न] एक जैन मुनि का नाम (सुख २, ६)।

अराइ पुं [अराति] रिपु, दुश्मन (कुमा)।

अराइ स्त्री [अरात्रि] दिन, दिवस (कुमा)।

अरागि वि [अरागिन्] रागरहित, वीतराग (पउम ११७, ४१)।

अरि देखो अरे (तंदु ५०; ५२ टी)।

अरि पुं [अरि] दुश्मन, रिपु (पउम ७३,१६)। °छव्वग्ग पुं [°षड्वर्ग] छः आन्तरिक

-ं—काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मात्सर्य (सूअ १,१,४)। °दमण वि [°दमन] १ रिपु विनाशक। २ पुं. इक्ष्वाकु वंश के एक राजा का नाम (पउम ५, ७)। ३ एक जैन मुनि जो भगवान् अजितनाथ के पूर्वजन्म के गुरु थे (पउम २०,७)। °दमणी स्त्री [°दमनी] विद्या विशेष (पउम ७, १४५)। °विद्धंसी स्त्री [°विध्वंसिनी] रिपु का नाश करनेवाली एक विद्या (पउम ७, १४०)। °संतास पुं [°संत्रास] राक्षसवंश में उत्पन्न लङ्का का एक राजा (पउम ५, २६५)। °हंत वि [°हन्तृ] १ रिपु-विनाशक। २ पुं. जिनदेव (आवम)।

अरिअल्लि पुंस्त्री [दे] व्याघ्र, शेर (दे १,२४)।

अरिंजय पुं [अरिञ्जय] १ भगवान् ऋषभदेव का एक पुत्र। २ न. नगर-विशेष (पउम ५, १०६; इक; सुर ५, १०३)।

अरिट्ठ पुं [अरिष्ट] १ वृक्ष-विशेष (पएण १)। २ पनरहवें तीर्थंकर का एक गणधर (सम १५२)। ३ पुंन. एक देवविमान (देवेन्द्र १३३)। ४ न. गोत्र-विशेष, जो माण्डव्य गोत्र की शाखा है (ठा ७)। ५ रत्न की एक जाति (उत्त ३४, ४; सुपा ६)। ६ फल-विशेष, रीठा (पएण १७; उत्त ३४, ४)। ७ अनिष्ट-सूचक उत्पात (आचू)। °णेमि, °नेमि पुं [°नेमि] वर्तमान काल के बाईसवें जिनदेव (सम १७; अंत ५; कप्प; पडि)।

अरिट्ठा स्त्री [अरिष्टा] कच्छ नामक विजय की राजधानी (ठा २, ३)।

अरित्त न [अरित्र] पतवार, कन्हर, नाव की पीछे का डांड़, जिससे नाव दाहिने-बांये घुमायी जाती है (धर्मवि १३२)।

अरिरिहो अ [अरिरिहो] पादपूरक अव्यय (हे २, २१७)।

अरिस देखो **अरस** (णाया १, १३)।

अरिसल्ल, **अरिसिल्ल** वि [अर्शस्वत्] बवासीर रोगवाला (पाअ; विपा १,७)।

अरिह वि [अर्ह] १ योग्य, लायक (सुपा २६६; प्राप्र)। २ पुं. जिनदेव (औप)।

अरिह सक [अर्ह्] १ योग्य होना। २ पूजा के योग्य होना। ३ पूजा करना। अरिहइ (महा)। अरिहेति (भग)।

अरिह देखो **अरह** = अर्हत् (हे २, १११; षड्)। °दत्त, °दिण्ण पुं [°दत्त] जैन मुनि-विशेष का नाम (कप्प)।

अरिहणा देखो **अरहणा** (प्राकृ २८)।

अरिहंत देखो **अरहंत** = अर्हत् (हे २, १११; षड्; णाया १, १)। °चेइय न [°चैत्य] १ जिन-मन्दिर (उवा; आचू)। °सासण न [°शासन] १ जैन आगम-ग्रन्थ। २ जिन-आज्ञा। (पण्ह २, ५)।

°**अरु** देखो **तरु** (से २, १६, ५, ८५)।

अरु वि [अरुज्] रोग-रहित (तंदु ४६)।

अरु देखो **अरूव** (तंदु ४६)।

अरुग न [दे. अरुक] व्रण, घाव; 'अरुगं इहरा कुत्थइ' (बृह ३)।

अरुंतुद वि [अरुन्तुद] १ मर्म-वेधक। २ मर्म-स्पर्शी; 'इय तदरुंतुदवायावाणेहिं विधियस्सावि' (सम्मत्त १५८)।

अरुण पुं [अरुण] १ सूर्य, सूरज (से ३, ६)। २ सूर्य का सारथी। ३ संध्याराग, सन्ध्या की लाली (से ८, ७)। ४ द्वीप-विशेष। ५ समुद्र-विशेष, 'गंतूण होइ अरुणो, अरुणो दीवो तओ उदही' (दीव)। ६ एक ग्रह-देवता का नाम (ठा २, ३; पत्र ७८)। ७ गन्धावती-पर्वत का अधिष्ठाता देव (ठा २, ३; पत्र ६६)। ८ देव-विशेष (णंदि)। ६ रक्त रंग, लाली। (गउड)। १० न. विमान-विशेष (सम १४)। ११ वि. रक्त, लाल (गउड)। °कंत न [°कान्त] देवविमान-विशेष (उवा)। [°कील] न [°कील] देवविमान-विशेष (उवा)। °गंगा स्त्री [°गङ्गा] महाराष्ट्र-देश की एक नदी (ती २८)। °गव न [°गव] देवविमान-विशेष (उवा)। °ज्झय न [°ध्वज] एक देवविमान का नाम (उवा)। °प्पभ, °प्पह न [°प्रभ] इस नाम का एक देवविमान (उवा)। °भद्द पुं [°भद्र] एक देवता का नाम (सुज्ज १६)। °भूय न [°भूत] एक देवविमान (उवा)। °महाभद्द पुं [°महाभद्र] देव-विशेष (सुज्ज १६)। °महावर पुं [°महावर] १ द्वीप-विशेष। २ समुद्र-विशेष (इक)। °वडिंसय न [°ावतंसक] एक देवविमान (उवा)। °वर पुं [°वर] १ द्वीप-विशेष। २ समुद्र-विशेष (सुज्ज १६)। °वरोभास पुं [°वरावभास] १ द्वीप-विशेष। २ समुद्र-विशेष (सुज्ज १६)। °सिट्ठ न [°शिष्ट] एक देवविमान (उवा)। °ाभ न [°ाभ] देवविमान-विशेष (उवा)।

अरुण न [दे] कमल, पद्म (दे १, ८)।

अरुण पुंन [अरुण] १ एक देव-विमान। (देवेन्द्र १३१)। °प्पभ पुं [°प्रभ] १ अनुवेलन्धर नामक नागराज का एक आवास-पर्वत। २ उस पर्वत का निवासी देव। (ठा ४, २; पत्र २२६)। °ाभ पुं [°ाभ] कृष्ण पुद्गल-विशेष (सुज्ज २०)।

अरुणिम पुंस्त्री [अरुणिमन्] लाली, रक्तता; 'पाणिपल्लवारुणिमरमणीयं' (सुपा ५८)।

अरुणिय वि [अरुणित] रक्त, लाल (गउड)।

अरुणुत्तरवडिंसग न [अरुणोत्तरावतंसक] इस नाम का एक देवविमान (सम १४)।

अरुणोद पुं [अरुणोद] समुद्र-विशेष (सुज्ज १६)।

अरुणोदय पुं [अरुणोदक] समुद्र-विशेष (भग)।

अरुणोववाय पुं [अरुणोपपात] ग्रन्थ-विशेष का नाम (णंदि)।

अरुय वि [अरुष्] व्रण, घाव (सूअ १, ३, ३)।

अरुय वि [अरुज्] निरोगी, रोगरहित (सम १; अजि २१)।

अरुह देखो **अरह** = अर्हत् (हे २,१११; षड; भवि)।

अरुह वि [अरुह] १ जन्मरहित। २ पुं. मुक्त आत्मा (पव २७५; भग १, १)। ३ जिन देव (पउम ५, १२२)।

अरुह देखो **अरिह** = अर्ह्। अरुहसि (अभि १०४)। वकृ. **अरुहमाण** (षड्)।

अरुह वि [अर्ह] योग्य (उत्तर ८४)।

अरुहंत देखो **अरहंत** = अर्हत् (हे २, १११; षड्)।

अरुहंत वि [अरोहत्] १ नहीं उगता हुआ, जन्म नहीं लेता हुआ (भग १, १)।

अरूव वि [अरूप] रूपरहित, अमूर्त; (पउम ७५, २६)।

अरूवि वि [अरूपिन्] ऊपर देखो (ठा ६, ३; आचा; पराग १)।

अरे अ [अरे] १–२ संभाषण और रति-कलह का सूचक अव्यय (हे २,२०१; षड्)।

अरे अ [अरे] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ आक्षेप। २ विस्मय, आश्चर्य। ३ परिहास, ठट्ठा (संक्षि ३८, ४७)।

अरोअ अक [उत् + लस्] उल्लास पाना, विकसित होना। अरोअइ (हे ४, २०२; कुमा)।

अरोअअ पुं [अरोचक] रोग-विशेष, अन्न की अरुचि (श्रा २२)।

अरोइ वि [अरोचिन्] अरुचि वाला, रुचि-रहित; 'अरोइ अत्थे कहिए विलावो' (गोय ७)।

अरोग वि [अरोग] रोगरहित (भग १८, १)। °**या** स्त्री [°ता] आरोग्य, नीरोगता (उप ७२८ टी)।

अरोगि वि [अरोगिन्] नीरोग, रोग-रहित। °**या** स्त्री [°ता] आरोग्य, तंदुरुस्ती (महा)।

अरोग्ग } देखो आरोग्य = आरोग्य (आचा २,
अरोय } १५, २)।

अरोस वि [अरोष] १ गुस्सा-रहित। २–३ पुं. एक म्लेच्छ देश और उसमें रहनेवाली म्लेच्छ जाति (पराह १, १)।

अल न [अल] १ बिच्छू के पुच्छ का अग्र भाग,

'अलमेव विच्छुआणं, मुहमेव
अहीणं तह य मंदस्स।
दिट्ठि-बियं पिसुणाणं,
सव्वं सव्वस्स भय-जणयं'
(प्रासू १९)।

२ अलादेवी का एक सिंहासन (णाया २)। ३ वि. समर्थ (आचा)। °**पट्ट** न [°पट्ट] बिच्छू की पूँछ जैसे आकारवाला एक शस्त्र (विपा १, ६)।

°**अल** देखो **तल** (गा ७५; से १, ७८)।

अलं अ [अलम्] १ पर्याप्त, पूर्ण; 'अलमाणंदं जणंतीए' (सुर १३, २१)। २ प्रतिषेध, निवारण, बस (उप २, ७)।

अलं अ [अलम्] अलङ्कार, भूषा (सुअनि २०२)।

अलंकर सक [अलं + कृ] भूषित करना, विराजित करना। अलंकरेंति (पि ५०९)। वकृ. **अलंकरंत** (माल १४३)। संकृ. **अलंकरिअ** (पि ५८१)। प्रयो., कर्म. अलंकरावीयउ (स ६४)।

अलंकरण न [अलङ्करण] १ आभूषण, अलंकार (रयण ७४, भवि)। २ वि. शोभा-कारक, 'मज्झमलोअस्स अलंकरणि सुलोअणि' (विक्र १४)।

अलंकरिय वि [अलंकृत] सुशोभित, विभूषित; 'किं नयरमलंकरियं जम्ममहेणं तए महापुरिस।' (सुपा ५८४; सुर ४, ११८)।

अलंकार पुं [अलङ्कार] १ शास्त्र-विशेष, साहित्यशास्त्र (सिरि ५५; सिक्खा २)। २ पुंन. एक देवविमान (देवेन्द्र १३५)।

अलंकार पुं [अलंकार] १ भूषण, गहना (औप; राय)। २ भूषा, शोभा (ठा ४, ४)। °**सहा** स्त्री [°सभा] भूषा-गृह, शृङ्गार-घर (इक)।

अलंकारिय पुं [अलंकारिक] नापित, नाई, हजाम (णाया १, १३)। °**कम्म** न [°कर्मन्] हजामत, क्षौर कर्म (णाया १, १३)। °**सहा** स्त्री [°सभा] हजामत बनाने का स्थान (णाया १, १३)।

अलंकिय वि [अलंकृत] १ विभूषित, सुशोभित (कप्प; महा)। २ न. संगीत का एक गुण (जीव ३)।

अलंकुण देखो **अलंकर**। अलंकुणंति (रयण ५२)।

अलंघ वि [अलङ्घ्य] १ उल्लंघन करने के अयोग्य (सुर १, ४१)। २ उल्लंघन करने के अशक्य (उप ५६७ टी)।

अलंघणिय } वि [अलङ्घनीय] ऊपर देखो
अलंघणीय } (महा; सुपा ६०१; पि ९६; नाट)।

अलंप पुं [दे] कुक्कुट, मुर्गा (दे १, १३)।

अलंबुसा स्त्री [अलम्बुषा] १ एक दिक्कुमारी देवी का नाम। (ठा ८)। २ गुल्म-विशेष। (पाअ)।

अलंभि स्त्री [अलाभ] अप्राप्ति (ओघ २३; भा)।

अलका स्त्री [अलका] नगरी-विशेष, पहले प्रतिवासुदेव की राजधानी (पउम २०, २०१)। देखो **अलया**।

अलक्ख पुं [अलक्ष] १ इस नाम का एक राजा, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा लेकर मुक्ति पाई थी (अंत १८)। २ न. 'अंतगडदसा' सूत्र के एक अध्ययन का नाम। (अंत १८)।

अलक्ख वि [अलक्ष्य] लक्ष्य में न आ सके ऐसा (सुर ३, १३६; महा)।

अलक्खमाण वि [अलक्ष्यमाण] जो पहिचाना न जा सकता हो, गुप्त (उप ५९३ टी)।

अलक्खिय वि [अलक्षित] १ अज्ञात, अपरिचित। (से १३, ४५)। २ न पहचाना हुआ। (सुर ४; १४०)।

अलग देखो **अलय** = अलक (महा)।

अलगा देखो **अलया** (अंत १)।

अलग्ग न [दे] कलंक देना, दोष का झूठा आरोप (दे १, ११)।

अलचपुर न [अचलपुर] नगर-विशेष (कुमा)।

अलज्ज वि [अलज्ज] निर्लज्ज, बेशरम (पराह १, ३)।

अलज्जिर वि [अलज्जालु] ऊपर देखो (गा ६०; ४४५; ६६१; महा)।

अलट्टपलट्ट न [दे] पार्श्व का परिवर्तन (दे १, ४८)।

अलत्त पुं [अलक्त] आलता, स्त्रियाँ हाथ-पैर को लाल करने के लिए जो रंग लगाती हैं वह (अनु ५)।

अलत्तय पुं [अलक्तक] १ ऊपर देखो। (सुपा ४०६)। २ वि. आलता से रंगा हुआ (अनु)।

°**अलधोय** देखो **कलधोय** (से ६, ४६)।

अलमंजुल वि [दे] आलसी, सुस्त (दे १, ४६)।

अलमंथु वि [अलमस्तु] १ समर्थ। २ निषेधक, निवारक। (ठा ४, २)।

अलमल पुं [दे] दुर्दान्त बैल (दे १,२५)।

अलमलवसह पुं [दे] उन्मत्त बैल (दे १, २५)।

अलय न [दे] विद्रुम, प्रवाल (दे १, १६; भवि)।

अलय पुं [अलक] १ बिच्छू का कांटा। (विपा १, ६)। २ केश, धुँघराले बाल। (पाम; स ६६)।

अलया स्त्री [अलका] कुबेर की नगरी (पाम; गाया १, ४)। देखो **अलका**।

अलव वि [अलप] मौनी, नहीं बोलनेवाला (सूम २,६)।

अलवलवसह पुं [दे] धूर्त बैल (षड्)।

अलस वि [अलस] १ आलसी, सुस्त (प्रासू ७)। २ मन्द, धीमा (पाम)। ३ पुं. क्षुद्र कीट-विशेष, भू-नाग, वर्षाऋतु में साँप सरीखा लाल रंग का जो लम्बा जन्तु उत्पन्न होता है वह (जी १५; पुप्फ २६५)।

अलस वि [दे] १ मधुर आवाजवाला, 'खं अलसं कलमंजुलं' (पाम)। २ कुसुम्भ रंग से रंगा हुआ। ३ न. मोम (दे १, ५२)।

°**अलस** देखो **कलस** (से १, ६; ११, ४०; गा ३६६)।

अलसग } पुं [अलसक] १ विसूचिका रोग **अलसय** } (उवा)। २ श्वयथु, सूजन (आचा)।

अलसाइअ वि [अलसायित] जिसने आलसी की तरह आचरण किया हो, मन्द (गा ३५२)।

अलसाय अक [अलसाय्] आलसी होना, आलसी की तरह काम करना। अलसाअइ (पि ५५८)। वकृ. **अलसायंत, अलसायमाण** (से १४, १; उप पृ ३१५; गच्छ १)।

अलसी देखो **अयसी** (आचा; षड्; हे २, ११)।

अला स्त्री [अला] १ इस नाम की एक देवी (ठा ६)। २ एक इन्द्राणी का नाम (णाया २)। °**वडिंसग** न [°वतंसक] अलादेवी का भवन (णाया २)।

°**अला** देखो **कला** (गा ६५७)।

अलाउ न [अलाबु] तुम्बी फल, लौकी, तुम्बा (औप प्रासू १५१)।

अलाऊ } स्त्री [अलाबू] तुम्बी-लता **अलाबू** } (कुमा; षड्)।

अलाय न [अलात] १ उल्मुक, जलता हुआ काष्ठ (दे १,१०७; ओघ २१भा)। २ अङ्गार, कोयला (से ३, ३४)।

अलावणी स्त्री [अलाबुवीणा] वीणा-विशेष (प्राकृ ३७)।

अलावु देखो **अलाउ** (जं ३)।

अलावू देखो **अलाऊ** (पि १४१; २०१)।

अलाह पुं [अलाभ] नुकसान, गैरलाभ; 'ववहरमाणाण पुणो होइ सुलाहो कयावलाहो वा" (सुपा ४४६)।

अलाहि देखो **अलं** (उव ७२८ टी; हे २,१८६; णाया १, १; गा १२७)।

अलि पुं [अलि] भ्रमर (कुमा)। °**उल** न [°कुल] भ्रमरों का समूह (हे ४, २५३)। °**विरुय** न [°विरुत] भ्रमर का गुञ्जारव (पाम)।

अलि पुंस्त्री [अलि] वृश्चिक राशि (विचार १०६)।

अलिअल्ली स्त्री [दे] १ कस्तूरी। २ व्याघ्र, शेर (दे १, ५६)।

अलिआ स्त्री [दे] सखी (दे १, १६)।

अलिआर न [दे] दूध (दे १, २३)।

अलिंजर न [अलिञ्जर] १ घड़ा, कुम्भ (ठा ४, २)। २ कुंड, पात्र-विशेष (दे १, ३७)।

अलिंजरअ पुं [अलिञ्जरक] १ घड़ा (उवा)। रंगने का कुंडा, रंग-पात्र (पाम)।

अलिंद न [अलिन्द] पात्र-विशेष, एक प्रकार का जलपात्र (ओघ ४७६)।

अलिंदग पुं [अलिन्दक] १ द्वार का प्रकोष्ठ (स ४७६)। २ घर के बाहर के दरवाजे का चौक। ३ बाहर का अग्र भाग (बृह २; राज)।

अलिंदय पुंन [आलिन्दक] धान्य रखने का पात्र-विशेष (अणु १५१)।

अलिण पुं [दे] वृश्चिक, बिच्छू (दे १, ११)।

अलिणी स्त्री [अलिनी] भ्रमरी (कुमा)।

अलित्त न [अरित्र] नौका खेवने का डांड़, चप्पू (आचा २, ३ १)।

अलिय न [अलिक] कपाल (पाम)।

अलिय न [अलीक] १ मृषावाद, असत्य वचन (पाम)। २ वि. झूठा, खोटा; 'अलिअपोरुसालाव'—(पाम)। ३ निष्फल, निरर्थक (पण्ह १, २)। °**वाइ** वि [°वादिन्] मृषावादी (पउम ११, २७; महा)।

अलिल्ल सक [कथय्] कहना, बोलना। अलिल्लह (पिंग)।

अलिल्लह न [दे] १ छन्द विशेष का नाम। २ वि. अप्रयोजक, नियमरहित (पिंग)।

अलिल्ला स्त्री [अलिल्ला] इस नाम का एक छन्द (पिंग)।

अलीग } देखो **अलिय** = अलीक (सुर ४, **अलीय** } २२३; सुपा ३००; महा)।

अलीवहू स्त्री [अलिवधू] भ्रमरी (कुमा)।

अलीसअ स्त्री पुं [दे] शाक-वृक्ष, साग का पेड़ (दे १, २७)।

अलुक्खि वि [अरूक्षिन्] कोमल (भग ११, ४)।

अलेसि वि [अलेश्यिन्] १ लेश्यारहित। २ पुं. मुक्त आत्मा (ठा ३, ४)।

अलोग पुं [अलोक] जीव-पुद्गल आदि रहित आकाश (भग)।

अलोणिय वि [अलवणिक] लूणरहित, नमक-शून्य; 'नय अलोणियं सिलं कोइ चट्टेइ' (महा)।

अलोय देखो **अलोग** (सम १)।

अलोभ पुं [अलोभ] १ लोभ का अभाव, संतोष। २ वि. लोभरहित, संतोषी (भग; उव)।

अलोल वि [अलोल] अलम्पट, निर्लोभ (दस १०; पि ८५)।

अलोह देखो **अलोभ** (कप्प)।

अल्ल न [दे] दिन, दिवस (दे १, ५)।

अल्ल देखो **अद्द** (हे १, ८२)।

अल्ल अक [नम्] नमना, नीचे झुकना। ओअल्लंति (से ६, ४३)।

अल्लई स्त्री [आर्द्रकी] लता-विशेष, आर्द्रक-लता (पण्ण १७)।

अल्लग देखो **अल्लय** = आर्द्रक (धर्म २)।

अल्लत्थ सक [उत् + क्षिप्] ऊंचा फेंकना। अल्लत्थइ (हे ४, १४४)।

अल्लत्थ न [दे] १ जलार्द्रा, गीला पंखा। २ केयूर, भूषण-विशेष (दे १, ५४)।

अल्लत्थिअ वि [उत्क्षिप्त] ऊंचा फेंका हुआ (कुमा)।

अल्लय न [आर्द्रक] आदी, अदरक (जी ६)। °**तिय** न [°त्रिक] आदी, हल्दी और कचूर (जी ६)।

अल्लय वि [दे] परिचित, ज्ञात (दे १,१२)।

अल्लय पुं [अल्लक] इस नाम का एक विख्यात जैन मुनि और ग्रन्थकार, उद्योतन-

सूरि का उपाध्याय-अवस्था का नाम (सुर १६, २३६)।

अल्लल्ल पुं [दे] मयूर, मोर (दे १, १३)।

अल्लविय [अप] देखो **आलत्त** = आलपित (भवि)।

अल्ला स्त्री [दे] माता, माँ (दे १,५)।

अल्लि } देखो अल्ली। अल्लिइ (षड्)।
अल्लिअ } अल्लिअइ (दे १,५८; हे ४,५४)। वकृ. **अल्लिअंत** (से १२, ७१; पउम १२, ५१)।

अल्लिअ सक [उप + सृप्] समीप में जाना। अल्लिअइ (हे ४,१३६)। वकृ. **अल्लिअंत** (कुमा)। प्रयो. अल्लियावेइ (पि ४८२; ५५१)।

अल्लिअ वि [आर्द्रित] गीला किया हुआ (गा ४४०)।

अल्लियावण न [आलायन] आलीन करना, श्लिष्ट करना, मिलान (भग ८, ६)।

अल्लिल्ल पुं [दे] भमरा (षड्)।

अल्लिव सक [अर्पय्] अर्पण करना। अल्लिवइ (हे ४,३६; भवि; पि १९६;४८५)।

अल्ली } सक [आ + ली] १ आना। २
अल्लीअ } प्रवेश करना। ३ जोड़ना। ४ आश्रय करना। ५ आलिंगन करना। ६ अक. संगत होना। अल्लीअइ (हे ४, ५४)। भूका. अल्लीसी (प्रामा) हेकृ. **अल्लीउं** (बृह ६)।

अल्लीण वि [आलीन] १ आश्लिष्ट। २ आगत। ३ प्रविष्ट। ४ संगत। ५ योजित। ६ थोड़ा लीन (हे ४, ५४)। ७ आश्रित (कप्प)। ८ तल्लीन, तत्पर (वव १०)।

अल्लेस वि [अलेश्य] लेश्यारहित (कम्म ४, ५०)।

अल्लोग देखो **अलोग** (द्रव्य १६)।

अल्हाद पुं [आह्लाद] खुशी, प्रमोद, आनन्द (प्राप्र)।

अव अ [अप] इन अर्थों का सूचक अव्यय— १ विपरीतता, उल्टापन; 'अवकय, अवंगुय'। २ वापसी, पीछेपन; 'अवक्कमई'। ३ बुरापन, खराबपन; 'अवमग्ग, अवसद्द'। ४ न्यूनता, कमी; 'अवड्ढ'। ५ रहितपन, वियोग; 'अवबाण'। ६ बाहरपन; 'अवक्कमण'।

अव अ [अव] निम्नलिखित अर्थों का सूचक अव्यय—१ निम्नता, 'अवइएण'। २ पीछेपन; 'अवचुल्ली'। ३ तिरस्कार, अनादर; 'अवगणत'। ४ खराबी, बुराई; 'अवगुण'। ५ गमन। ६ अनुभव (राज)। ७ हानि, ह्रास; 'अवक्कास'। ८ अभाव, 'अवलद्धि'। ९ मर्यादा (विसे ८२)। १० निरर्थक भी इसका प्रयोग होता है; 'अवपुट्ठ, अवगल्ल'।

अव सक [अव्] १ रक्षण करना; 'अवंतु मुणिणो य पयकमलं' (रयण ६)। २ जाना, गमन करना। ३ इच्छा करना। ४ जानना। ५ प्रवेश करना। ६ सुनना। ७ माँगना, याचना। ८ करना, बनाना। ९ चाहना। १० प्राप्त करना। ११ आलिङ्गन। १२ मारना, हिंसा करना। १३ जलाना। १४ अक. प्रीति करना। १५ तृप्त होना। १६ प्रकाशना। १७ बढ़ना। अव (श्रा २३; विसे २०२०)।

अव पुं [अव] शब्द, आवाज (श्रा २३)।

अवअक्ख सक [दृश्] देखना। अवअक्खइ (हे ४, १८१; कुमा)।

अवअक्खिअ न [दे] निवापित मुख, मुंड़ाया हुआ मुंह (दे १,४०)।

अवअच्छ न [दे] कक्षा-वस्त्र (दे १,२६)।

अवअच्छ अक [ह्लाद्] आनन्द पाना, खुश होना। अवअच्छइ (हे ४, १२२)।

अवअच्छ सक [ह्लादय्] खुश करना। अवअच्छइ (हे ४, १२२)।

अवअच्छिअ [दे] देखो **अवअक्खिअ** (दे १, ४०)।

अवअच्छिअ वि [ह्लादित] १ हृष्ट, आह्लाद प्राप्त। २ खुश किया हुआ, हर्षित (कुमा)।

अवअज्झ सक [दृश्] देखना। अवअज्झइ (षड्)।

अवअणिअ वि [दे] असंघटित, असंयुक्त (दे १, ४३)।

अवअण्ण पुं [दे] ऊखल, गूगल (दे १,२६)।

अवअत्त वि [अपवृत्त] स्खलित (से १०, १८)।

अवआस सक [दृश्] देखना। अवआसइ (हे ४, १८१; कुमा)।

अवइ वि [अव्रतिन्] व्रतशून्य, अविरत, असंयत (बृह १)।

अवइण्ण वि [अवतीर्ण] १ उतरा हुआ, नीचे आया हुआ। २ जन्मा हुआ (कप्पू; पउम ७६, २८)।

अवइद (शौ) वि [अवचित] एकत्रित, इकट्ठा किया हुआ (अभि ११७)।

अवइद (शौ) वि [अपकृत] १ जिसका अहित किया गया हो वह। २ न. अपकार, अहित (चारु ४०)।

अवइन्न देखो **अवइण्ण** (सुर ३, १२२)।

अवउज्ज सक [अवकुब्ज्] नीचे नमना। संकृ. **अवउज्जिय** (आचा २, १, ७)।

अवउज्झ सक [अप + उज्झ्] परित्याग करना। छोड़ देना। संकृ. **अवउज्झिऊण** (बृह ३)।

अवउज्झ° देखो **अववह**।

अवउडग } देखो **अवओडग** (णाया १, २;
अवउडय } अनु)।

अवउंठण न [अवगुण्ठन] १ ढकना। २ मुंह ढकने का वस्त्र, घूँघट (चारु ७०)।

अवऊढ वि [अवगूढ] आलिंगित, 'संझावहू-अवऊढो णववारिहरोव्व विज्जुलापडिभिन्नो' (हे २, ६; स ४६६)।

अवऊसण न [अपवसन] तपश्चर्या-विशेष (पंचा १६)।

अवऊसण न [अपजोषण] ऊपर देखो (पंचा १६)।

अवऊहण न [अवगूहन] आलिङ्गन (गा ३३४; ५५९; वज्जा ७४)।

अवएड पुं [अवएज] तापिका-हस्त, पात्र-विशेष (णाया १, १ टी—पत्र ४३)।

अवएस पुं [अपदेश] बहाना, छल (पात्र)।

अवओडग न [अवकोटक] गले को मरोड़ना, कृकाटिका को नीचे ले जाना (विपा १, २)। **°बंधण** न [°बन्धन] १ हाथ और सिर को पृष्ठ भाग से बाँधना (पण्ह १, २)। २ वि. रस्सी से गला और हाथ को मोड़कर पृष्ठ भाग के साथ जिसको बांधा जाय वह (विपा १, २)।

अवंग पुं [अपाङ्ग] नेत्र का प्रान्त भाग (सुर ३, १२४; ११, ६१)।

अवंग पुं [दे] कटाक्ष (दे १, १५)।

अवंगु } **अवंगुय** } वि [दे. अपावृत] नहीं ढका हुआ, खुला (औप; पराह २, ४)।

अवंगुण सक [दे] खोलना। अवंगुणेज्जा (आचा २, २, २, ४)।

अवंचिअ वि [अवाञ्चित] अधोमुख, अवाङ्-मुख (वज्जा १०)।

अवंचिअ वि [अवञ्चित] नहीं ठगा हुआ (वज्जा १०)।

अवंझ वि [अवन्ध्य] सफल, अचूक (सुपा ३२५)। °**पवाय** न [°प्रवाद] ग्यारहवाँ पूर्व, जैन ग्रन्थांश-विशेष (सम २६)।

अवंतर वि [अवान्तर] भीतरी, बीच का (आवम)।

अवंति पुं [अवन्ति] भगवान् आदिनाथ का एक पुत्र (ती १४)।

अवंति } **अवंती** } स्त्री [अवन्ति, °न्ती] १ मालव देश। २ मालव देश की राजधानी, जो आजकल राजपूताना में 'उज्जैन' नाम से प्रसिद्ध है (महा; सुपा ३६६; आवम)। °**गंगा** स्त्री [°गङ्गा] आजीविक मत में प्रसिद्ध काल-विशेष (भग २४, १)। °**वड्ढण** पुं [°वर्धन] इस नाम का एक राजा (आव ४)। °**सुकुमाल** पुं [°सुकुमाल] एक श्रेष्ठि-पुत्र, जो आर्यसुहस्ति आचार्य के पास दीक्षा लेकर देव-लोक के नलिनीगुल्म विमान में उत्पन्न हुआ है (पडि)। °**सेण** पुं [°षेण] एक राजा (आक)।

अवंदिम वि [अवन्द्य] वन्दन करने के अयोग्य, प्रणाम के अयोग्य (दसचू १)।

अवकंख सक [अव + काङ्क्ष्] १ चाहना। २ देखना। अवकंखइ (भग)। वकृ. **अवकंखमाण** (णाया १, ६)।

अवकंत देखो **अवक्कंत**; 'कुमरोवि सत्थराओ उट्ठेत्ता सणियमवकंतो' (महा)।

अवकप्प सक [अव + कल्पय्] कल्पना करना, मान लेना। अवकप्पंति (सूअ १, ३, ३, ३)।

अवकय वि [अपकृत] १ जिसका अपकार किया गया हो वह (उव)। २ अपकार, अहित (सुपा ६४१)।

अवकर सक [अप + कृ] अहित करना। अवकरेंति (सूअ १, ४, १, २३)।

अवकरिस पुं [अपकर्ष] अपकर्ष, ह्रास, हानि (सम ६०)।

अवकलुसिय वि [अपकलुषित] मलिन (गउड)।

अवकस सक [अव + कृष्] त्याग करना। संकृ. **अवकसित्ता** (चउ १४)।

अवकारि वि [अपकारिन्] अहित करने वाला (पउम ६, ८५)।

अवकिण्ण वि [अवकीर्ण] परित्यक्त (दे १, १३०)।

अवकिण्णग } **अवकिण्णअ** } पुं [अपकीर्णक] करकण्डु नामक एक जैन महर्षि का पूर्व नाम (महा)।

अवकित्ति स्त्री [अपकीर्त्ति] अपयश (दे १, ६०)।

अवकिदि स्त्री [अपकृत्ति] अपकार, अहित (प्राकृ १२)।

अवकीरण न [अवकरण] छोड़ना, त्याग, उत्सर्ग (आव ५)।

अवकीरिअ वि [दे. अवकीर्ण] विरहित, वियुक्त (दे १, ३८)।

अवकीरियव्व वि [अवकरितव्य] त्याज्य, छोड़ने लायक (पराह १, ५)।

अवकूजिय न [अवकूजित] हाथ को ऊँचा-नीचा करना (निचू १७)।

अवकेसि पुं [अवकेशिन्] फल-वन्ध्य वन-स्पति (उर २, ८)।

अवकोडक देखो **अवओडग** (पराह १, १)।

अवक्कंत वि [अपक्रान्त] १ पीछे हटा हुआ, वापस लौटा हुआ (सुपा २६२; उप १३४ टी; महा)। २ निकृष्ट, जघन्य (ठा ६)।

अवक्कंत पुं [अवक्रान्त] प्रथम नरक भूमि का ग्यारहवाँ नरकेन्द्रक—नरक-स्थान विशेष (देवेन्द्र ५)।

अवक्कंति स्त्री [अपक्रान्ति] १ अपसरण। २ निर्गमन (णाया १, ८)।

अवक्कंति स्त्री [अवक्रान्ति] गमन गति (आचा)।

अवक्कम अक [अप + क्रम] १ पीछे हटना। २ बाहर निकलना। अवक्कमइ (महा, कप्प)। वकृ. **अवक्कममाण** (विपा १,६)। संकृ. **अवक्कमइत्ता, अवक्कम्म** (कप्प, वव १)।

अवक्कम सक [अव + क्रम्] जाना। अवक्कमइ (भग)। संकृ. **अवक्कमित्ता** (भग)।

अवक्कमण न [अपक्रमण] १ बाहर निकलना (ठा ५,२)। २ पलायन, भागना; 'निग्गमणमवक्कमणं निस्सरणं पलायणं च एगट्ठा' (वव १०)। ३ पीछे हटना (णाया १, १)।

अवक्कमण न [अपक्रमण] अवतरण, 'उत्तरावक्कमणं' (भग ६, ३३)।

अवक्कय पुं [अवक्रय] भाड़ा, भाटि (बृह १)।

अवक्कय वि [अपकृत] जिसका अहित किया गया हो वह (चंड)।

अवक्करस पुं [दे] दारु, मद्य (दे १, ४६; पाअ)।

अवक्करिस } **अवक्कास** } पुं [अपकर्ष] हानि, अपचय (विसे १७६६; भग १२, ५)।

अवक्कास पुं [अवकर्ष] ऊपर देखो (भग १२, ५)।

अवक्कास पुं [अप्रकाश] अन्धकार, अँधेरा (भग १२, ५)।

अवक्कोस पुं [अवक्रोश] मान, अहंकार (सम ७१)।

अवक्ख सक [दृश्] देखना। अवक्खइ (षड्)। अवक्खए (भवि)। वकृ. **अवक्खंत** (कुमा)।

अवक्खंद पुं [अवस्कन्द] १ शिबिर, छावनी, सैन्य का पड़ाव। २ नगर का रिपु-सैन्य द्वारा वेष्टन, घेरा (हे २, ४; स ४१२)।

अवक्खर पुं [अवस्कर] पुरीष, विष्ठा (प्राकृ २१)।

अवक्खारण न [अपक्षारण] १ निर्भर्त्सना, कठोर वचन। २ सहानुभूति का अभाव (पराह १, २)।

अवक्खेव पुं [अवक्षेप] विघ्न, बाधा (विपा १, ६)।

अवक्खेवण न [अवक्षेपण] १ बाधा, अन्तराय। २ क्रिया-विशेष, नीचे जाना। (आवम; विसे २४६२)।

अवखेर सक [दे] १ खिन्न करना। २ तिरस्कार करना। अवखेरइ (भवि)। वकृ. **अवखेरंत** (भवि)।

अवग पुंन [दे· अवक] जल में होने वाली वनस्पति-विशेष (सूत्र २, ३, १८)।

अवगइ स्त्री [अपगति] १ खराब गति। २ गोपनीय स्थान (सुपा ३४५)।

अवगंड न [अवगण्ड] १ सुवर्ण। २ पानी का फेन (सूत्र १, ६)।

अवगंतव्व देखो **अवगम** = अवगम्।

अवगच्छ सक [अव + गम्] जानना। अवगच्छइ (महा)। अवगच्छे (स १५२)।

अवगच्छ अक [अप + गम्] दूर होना, निकल जाना। अवगच्छइ (महा)।

अवगण } सक [अव + गणय्] अनादर
अवगण्ण } करना, तिरस्कारना। वकृ· अवगणंत (श्रा २७)। संकृ· अवगण्णिय (आरा १०५)।

अवगणणा स्त्री [अवगणना] अवज्ञा, अनादर (दे १, २७)।

अवगणिय } वि [अवगणित] अवज्ञात,
अवगण्णिय } तिरस्कृत (दे; जीव १)।

अवगद वि [दे] विस्तीर्ण, विशाल (दे १, ३०)।

अवगन्न देखो **अवगण**। अवगन्नइ (भवि)। संकृ· **अवगन्निवि** (भवि)।

अवगन्निय देखो **अवगण्णिय** (सुपा ४२१; भवि)।

अवगम पुं [अपगम] १ अपसरण (सुपा ३०२)। २ विनाश (स १५३; विसे ११८२)।

अवगम सक [अव + गम्] १ जानना। २ निर्णय करना। संकृ· **अवगमित्तु** (सार्ध ६३)। कृ· **अवगंतव्व** (स ५२६)।

अवगम पुं [अवगम] १ ज्ञान। २ निर्णय, निश्चय (विसे १८०)।

अवगमण न [अवगमन] ऊपर देखो (स ६७०, विसे १८६; ४०१)।

अवगमिअ } वि [अवगत] १ ज्ञात, विदित
अवगय } (सुपा २१८)। २ निश्चित, अवधारित (दे ३, २३; स १४०)।

अवगय वि [अपगत] गुजरा हुआ, विनष्ट (णाया १, १; दस १०, १६)।

अवगर सक [अप + कृ] अपकार करना, अहित करना। अवगरेइ (स ६३६)।

अवगरिस देखो **अवकरिस** विसे (१५८३)।

अवगल वि [दे] आक्रान्त (षड्)।

अवगल्ल वि [अवग्लान] बीमार (ठा २, ४)।

अवगहण न [अवग्रहण] निश्चय, अवधारण (पव २७३)।

अवगाढ देखो **ओगाढ** (ठा १; भग; स १७२)।

अवगाढु वि [अवगाहितृ] अवगाहन करने वाला (विसे २८२२)।

अवगार पुं [अपकार] अपकार, अहित-करण (सुर २, ४३)।

अवगारय वि [अपकारक] अपकार-कारक (स ६९०)।

अवगारि वि [अपकारिन्] ऊपर देखो (स ६९०)।

अवगास पुं [अवकाश] १ फुरसत (महा)। २ जगह, स्थान (आवम)। ३ अवस्थान, अवस्थिति (ठा ४, ३)।

अवगाह सक [अव + गाह्] अवगाहन करना। अवगाहइ (सण)।

अवगाह पुं [अवगाह] १ अवगाहन। २ अवकाश (उत्त २८)।

अवगाहण न [अवगाहन] अवगाहन, 'तित्थावगाहणत्थं आगंतव्वं तए तत्थ' (सुपा ५६३)।

अवगाहणा देखो **ओगाहणा** (ठा ४, ३; विसे २०८८)।

अवगिंचण न [दे· अववेचन] पृथक्करण (उप पृ ९६)।

अवगिज्झ देखो **ओगिज्झ**। संकृ· **अवगिज्झिय** (कप्प)।

अवगीय वि [अवगीत] निन्दित (उप पृ १८१)।

अवगुंठण देखो **अवउंठण** (दे १, ६)।

अवगुंठिय वि [अवगुण्ठित] आच्छादित (महा)।

अवगुण पुं [अवगुण] दुर्गुण, दोष (हे ४, ३९५)।

अवगुण सक [अव + गुणय्] खोलना, उद्घाटन करना। अवगुणेज्जा (आचा २, २, २, ४)। अवगुणंति (भग १५)।

अवगूढ वि [अवगूढ] १ आलिंगित (हे २, १६८)। २ व्याप्त (णाया १, ८)।

अवगूढ न [दे] व्यलीक, अपराध (दे १, २०)।

अवगूहण न [अवगूहन] आलिंगन (सुर १४, २२०; पउम ७४, २४)।

अवगूहाविय वि [अवगूहित] आश्लेषित (स ६९९)।

अवग्ग वि [अव्यक्त] १ अस्पष्ट। २ पुं· अगीतार्थ, शास्त्रानभिज्ञ साधु (उप ८७४)।

अवग्गह देखो **उग्गह** (पव ३०)।

अवग्गहण न [अवग्रहण] देखो **उग्गह** (विसे १८०)।

अवच देखो **अवय** = अवच (भग)।

अवचइय वि [अपचयिक] अपकर्षप्राप्त, ह्रासवाला (आचा)।

अवचय पुं [अपचय] ह्रास, अपकर्ष (भग ११, ११; स २८२)।

अवचय पुं [अवचय] इकट्ठा करना (कुमा)।

अवचयण न [अवचयन] ऊपर देखो (दे ३, ५६)।

अवचि अक [अप + चि] हीन होना, कम जाना। अवचिज्जइ (भग)। अवचिज्जंति (भग २५, २)।

अवचि } सक [अव+चि] इकट्ठा करना
अवचिण } (फूल आदि को वृक्ष से तोड कर)। अवचिणइ (नाट)। भवि· अवचिणिस्सं (पि ५३१)। हेकृ· **अवचिणेदुं** (शौ) (पि ५०२)।

अवचिय वि [अवचित] हीन, ह्रासप्राप्त (विसे ८९७)।

अवचिय वि [अपचित] इकट्ठा किया हुआ (पाअ)।

अवचुण्णिय वि [अवचूर्णित] तोड़ा हुआ, चूर-चूर किया हुआ (महा)।

अवचुल्ल पुं [अवचुल्ल] चूल्हे का पीछला भाग (पिंडभा ३४)।

अवचूल देखो **ओऊल** (णाया १, १६, पत्र २१९)।

अवच्च वि [अवाच्य] १ बोलने के अयोग्य। २ बोलने के अशक्य (धर्मसं ६९८)।

अवच्च न [अपत्य] संतान, बच्चा (कप्प; आव १; प्रासू ८३)। °व वि [°वत्] संतान-वाला (सुपा १०६)।

अवच्चिज्ज देखो **अवच्चीय** (सुअनि २०५)।

अवच्चीय वि [अपत्यीय] संतानीय, संतान-संबन्धी (ठा ६)।

अवच्छुण्ण न [दे] क्रोध से कहा जाता मार्मिक वचन (दे १, ३६)।

अवच्छेय पुं [अवच्छेद] विभाग, अंश (ठा ३, ३)।

अवछंद वि [अपच्छन्दस्क] छन्द के लक्षण से रहित, छन्दोदोष-दुष्ट (पिंग)।

अवजस पुं [अपयशस्] अपकीर्ति (उप पृ १८७)।

अवजाण सक [अप+ज्ञा] १ अपलाप करना, 'बालस्स मंदयं बीयं जं च कडं अवजाणई भुज्जो' (सूअ १, ४, १, २६)।

अवजाय पुं [अपजात] पिता की अपेक्षा हीन वैभववाला पुत्र (ठा ४, १)।

अवजिब्भ पुं [अपजिह्व] दूसरी नरक-पृथिवी का आठवां नरकेन्द्रक—नरक-स्थान विशेष (देवेन्द्र ६)।

अवजीव वि [अपजीव] जीवरहित, मृत, अचेतन (गउड)।

अवजुय वि [अवयुत] पृथग्भूत, भिन्न (वव ७)।

अवज्ज न [अवद्य] १ पाप (पण्ह २, ४)। २ वि. निन्दनीय (सूअ १, १, २)।

अवज्जस सक [गम्] जाना, गमन करना। अवजसइ (हे ४, १६२)। वकृ. **अवज्जसंत** (कुमा)।

अवज्जा स्त्री [अवज्ञा] अनादर (स ६०४)।

अवज्झ वि [अवध्य] मारने के अयोग्य (णाया १, १६)।

अवज्झ सक [दृश्] देखना (संक्षि ३६)।

अवज्झस न [दे] १ कटी, कमर। २ वि. कठिन (दे १, ५६)।

अवज्झा स्त्री [अवध्या] १ अयोध्या नगरी (इक)। २ विदेह वर्ष की एक नगरी (ठा २, ३)।

अवज्झाण न [अपध्यान] बुरा चिन्तन, दुर्ध्यान (सुपा ५४६; उप ४६६; सम ५०; विसे ३०१३)।

अवज्झाण } पुंन [अपध्यान] दुर्ध्यान, 'चउ-
अवझाण } व्विहो अवज्झाणो' (श्रावक २८६; पंचा १, २३; संबोध ४५)।

अवज्झाय वि [उ.पध्यात] १ दुर्ध्यान का विषय। २ अवज्ञात, तिरस्कृत (णाया १,१४)।

अवज्झाय (अप) देखो **उवज्झाय** (दे १,३७)।

अवट्ट सक [अप+वृत्] घुमाना, फिराना; 'अवट्ट अवट्ट त्ति वाहरंते कण्णहारे रज्जुपरिवत्तणुज्जएसुं निज्जामएसुं अयंडम्मि चेव गिरिसिहरनिवडियं पिव विवन्नं जाणवत्तं' (स ३५५)।

अवट्ट अक [अप+वृत्] पीछे हटना। अवट्टइ (प्राकृ ७२)।

अवट्टा स्त्री [आवर्त्ता] राजमार्ग से बाहर की जगह (उप ६६१)।

अवट्टंभ पुं [अवष्टम्भ] अवलम्बन, आश्रय (पउम २६, २७; स ३३१)।

अवट्टंभ पुं [अवष्टम्भ] दृढ़ता, हिम्मत (धर्मवि १४०)।

अवट्टंभ देखो **अवठंभ**। कर्म. अवट्टभंति (स ७४९)।

अवट्ठंभण } न [अवष्टम्भन] अवलम्बन,
अवट्ठहण } सहारा (स ७४६ टी; ७४६)।

अवट्ठद्ध वि [अवष्टब्ध] रोका हुआ (द्रव्य २७)।

अवट्ठद्ध वि [अवष्टब्ध] १ अवलम्बित। २ आक्रान्त, 'अवट्ठद्धा महाविसाएणं' (स ५८४)।

अवट्ठव सक [अव+स्तम्भ्] अवलम्बन करना, सहारा लेना। संकृ. **अवट्ठविअ** (विक्र ६४)।

अवट्ठाण न [अवस्थान] १ अवस्थिति, अवस्था। २ व्यवस्था (बृह ५)।

अवट्ठिअ वि [अवस्थित] १ अवगाहन करके स्थित (सूअ १,६,११)। २ कर्म-बन्ध विशेष, प्रथम समय में जितनी कर्म-प्रकृतियों का बन्ध हो द्वितीय आदि समयों में भी उतनी ही प्रकृतियों का जो बन्ध हो वह (पंच ५,१२)।

अवट्ठिअ वि [अवस्थित] १ स्थिर रहनेवाला (भग)। २ नित्य, शाश्वत (ठा ३,३)। ३ जो बढ़ता-घटता न हो (जीव ३)।

अवट्ठिइ स्त्री [अवस्थिति] अवस्थान (ठा ३, ४; विसे ७५८)।

अवठंभ सक [अव+स्तम्भ्] अवलम्बन करना। संकृ.

'धाएण मओ, सद्देण मई, चोजेण वाहवहुयावि।
अवठंभिऊण धणुहं वाहेणवि मुक्किया पाणा'
(वज्जा ४६)।

अवठंभ पुं [दे] ताम्बूल, पान (दे १, ३६)।

अवड पुं [अवट] कूप, कुंआ (गउड)।

अवड } पुं [दे] १ कूप, कुंआ। २ आराम,
अवडअ } बगीचा (दे १, ५३)।

अवडअ पुं [दे] १ चञ्चा, घास-फूस का पुतला, तृण-पुरुष (दे १, २०)।

अवडंक पुं [अवटङ्क] प्रसिद्धि, ख्याति; 'जण-कयावडंकेण निग्घिणसम्मो णाम' (महा)।

अवडक्किअ वि [दे] कूप आदि में गिरकर मरा हुआ, जिसने आत्म-हत्या की हो वह (दे १, ४७)।

अवडाह सक [उत्+क्रुश्] ऊंचे स्वर से रुदन करना। अवडाहेमि (दे १, ४७)।

अवडाहिअ न [दे] १ ऊंचे स्वर से रोदन (दे १, ४७)। २ वि. उत्कृष्ट (षड्)।

अवडिअ वि [दे] खिन्न, परिश्रान्त (दे १, २१)।

अवडु पुं [अवटु] कृकाटिका, घंटी या घांटी, कण्ठमणि (पाअ)।

अवडुअ पुं [दे] उदूखल, उलूखल (दे १,२६)।

अवडुल्लिअ वि [दे] कूप आदि में गिरा हुआ (षड्)।

अवडू स्त्री [दे] कृकाटिका, घट्टी, गर्दन का ऊंचा हिस्सा (भग १५, पत्र ६७६)।

अवड्ढ वि [अपार्ध] १ आधा (सुज्ज १०)। २ आधा दिन, 'अवड्ढं पच्चक्खाइ' (पडि; भग १६, ३)। ३ आधे से कम (भग ७, १; नव ४१)। °क्खेत्त न [°क्षेत्र] १ नक्षत्र-विशेष (चंद १०)। २ मुहूर्त-विशेष (ठा ६)।

अवण पुं [दे] १ पानी का प्रवाह। २ घर का फलहक (दे १, ५५)।

अवण न [अवन] १ गमन। २ अनुभव (णंदि; विसे ८३)।

अवणण देखो **अवणयण** (पिंड ४७३)।

अवणद्ध वि [अवनद्ध] १ संबद्ध, जोड़ा हुआ (सुर २, ७)। २ आच्छादित (भग)।

अवणम अक [अव+नम्] नीचे नमना। वकृ. **अवणमंत** (राय)।

अवणमिय वि [अवनत] अवनत (सुपा ४२६)।
अवणमिय वि [अवनमित] नीचे किया हुआ, नमाया हुआ (सुर २, ४१)।
अवणय वि [अवनत] नमा हुआ (दस ५)।
अवणय पुं [अपनय] १ अपनय, हटाना (ठा ८)। २ निन्दा (पव १४०; विसे १४०३ टी)।
अवणयण न [अपनयन] हटाना, दूर करना (सुपा ११; स ४८३; उप ४९६)।
अवणाम पुं [अवनाम] ऊर्ध्व-गमन, ऊंचा जाना; 'तुलाए णामावणामव्व' (धर्मसं २४२)।
अवणि स्त्री [अवनि] पृथिवी, भूमि (उप ३३६ टी)।
अवणित देखो **अवणी** = अप + नी।
अवणिंद पुं [अवनीन्द्र] राजा, भूप (भवि)।
अवणिय देखो **अवणीय**; 'तं कुणसु चित्तनिवसणमवणियनीसेसदोसमलं' (विवे १३८)।
अवणी देखो **अवणि** (सुपा ३१०)। °**सर** पुं [°श्वर] राजा, भूमिपति (भवि)।
अवणी सक [अप + नी] दूर करना, हटाना। अवणेइ, अवणेमि (महा)। वकृ. **अवणित, अवणेंत** (निचू १; सुर २, ८)। कवकृ. **अवणेज्जंत** (उप १४६ टी)। कृ. **अवणेअ** (द्र ३७)।
अवणीय वि [अपनीत] दूर किया हुआ (सुपा ५४)।
अवणीयवयण न [अपनीतवचन] निन्दा-वचन (आचा २, ४, १, १)।
अवणेंत देखो **अवणी** = अप + नी।
अवणोय पुं [अपनोद] अपनयन, हटाना (विसे ६८२)।
अवणोयण न [अपनोदन] अपनयन, दूरी-करण (स ६२१)।
अवण्ण वि [अवर्ण] १ वर्णरहित, रूपरहित (भग)। २ पुं. निन्दा (पंचव ४)। ३ अपकीर्ति (ओघ १८४ भा)। °**व** वि [°वत्] निन्दक, 'तेसिं अवण्णवं बाले महामोहं पकुव्वइ' (सम ५१)। °**वाय** पुं [°वाद] निन्दा (द्र २६)।
अवण्ण न [दे] अवज्ञा, निरादर (दे १, १७)।
अवण्णा स्त्री [अवज्ञा] निरादर, तिरस्कार (औप)।

अवण्हअ पुं [अपह्नव] अपलाप (षड्)।
अवण्हवण न [अपह्नवन] अपलाप (आचा)।
अवण्हाण न [अवस्नान] साबुन आदि से स्नान करना (णाया १, १३; विपा १, १)।
अवतंस देखो **अवयंस** = अवतंस (कुमा)।
अवतंस पुं [अवतंस] मेरुपर्वत (सुज्ज ५)।
अवतंसिय वि [अवतंसित] विभूषित (कुमा)।
अवतट्ठ वि [अवतष्ट] तनूकृत, छिला हुआ (सूअ १, ५, २)।
अवतट्ठि देखो **अवयट्ठि** = अवतष्टि (सूअ १, ७)।
अवतारण न [अवतारण] १ उतारना। २ योजना करना (विसे ६४०)।
अवतासण न [अवत्रासन] डराना (पव ७३ टी)।
अवतित्थ न [अपतीर्थ] कुत्सित घाट, खराब किनारा (सुपा १५)।
अवत्त वि [अव्यक्त] १ अस्पष्ट (विसे)। २ कम उमर वाला (बृह १)। ३ असंस्कृत (गच्छ १)। ४ पुं. देखो **अवग्ग** (निचू २)।
अवत्त वि [अवात] पवनरहित (गच्छ १)।
अवत्त वि [अवाप्त] प्राप्त, लब्ध।
अवत्त न [अवत्र] आसन-विशेष (निचू १)।
अवत्तय वि [दे] विसंस्थुल, अव्यवस्थित (दे १, ३४)।
अवत्तव्व वि [अवक्तव्य] १ वचन से कहने के अशक्य, अनिर्वचनीय। २ सप्तभंगी का चतुर्थ भंग;
'अत्थंतरभूएहि अ नियएहि दोहि समयमाईहिं। वयणविसेसाईअं दव्वमव्वत्तयं पडइ' (सम्म ३६)।
अवत्तिय न [अव्यक्तिक] १ एक जैनाभास मत, निह्नवप्रचालित एक मत। २ वि. इस मत का अनुयायी (ठा ७)।
अवत्थंतर न [अवस्थान्तर] जुदी दशा, भिन्न अवस्था (सुर ३, २०६)।
अवत्थग वि [अपार्थक] १ निरर्थक, व्यर्थ। २ असम्बद्ध अर्थवाला (सूत्र वगैरह) (विसे)।
अवत्थद्ध वि [अवष्टब्ध] अवलम्बन-प्राप्त, जिसको सहारा मिला हो वह (णाया १, १८)।
अवत्थय वि [अपार्थक] निरर्थक (विसे ६६६ टी)।

अवत्थरा स्त्री [दे] पाद-प्रहार, लात मारना (दे १, २२)।
अवत्था स्त्री [अवस्था] दशा, अवस्थिति (ठा ८, कुमा)।
अवत्थाण न [अवस्थान] अवस्थिति (ठा ४, १; स ६२७; महा; सुर १, २)।
अवत्थाव सक [अव + स्थापय्] १ स्थिर करना, ठहराना। २ व्यवस्थित करना। हेकृ. **अवत्थाविदुं; अवत्थावइदुं** (शौ) (पि ५७३; नाट)।
अवत्थाविद (शौ) वि [अवस्थापित] अवस्थित किया हुआ (नाट)।
अवत्थिय देखो **अवट्ठिय** (महा; स २७४)।
अवत्थिय वि [अवस्तृत] फैलाया हुआ, प्रसारित (णाया १, ८)।
अवत्थु न [अवस्तु] १ अभाव, असत्त्व (भवि; आवम)। २ वि. निरर्थक, निष्फल (पण्ह १, २)।
अवथंभ देखो **अवठंभ**। संकृ. **अवथंभिय** (चेइय ४८१)।
अवदग्ग देखो **अवयग्ग** (सूअ २, २; ५)।
अवदल वि [अपदल] १ निःसार, सार-रहित। २ कच्चा, अपक्व (ठा ४, ४)।
अवदहण न [अवदहन] दम्भन, गरम लोहे के कोश आदि से चर्म (फोड़े आदि) पर दागना (णाया १, ४)।
अवदाण न [अवदान] शुद्ध कर्म (ती १५)।
अवदाय वि [अवदात] १ पवित्र, निर्मल; 'दिणयरकरावदायं भत्तं पेहित्तु चक्खुणा सम्मं' (सुपा ४११)। २ श्वेत, सफेद (पण्ह १, ४; पाअ)।
अवदार न [अपद्वार] १ छोटी खिड़की। २ गुप्त द्वार (उप ६६१)।
अवदाल सक [अव + दलय्] खोलना। अवदालेइ (औप)। संकृ. **अवदालेत्ता** (औप)।
अवदालिय वि [अवदलित] विकसित, विजृम्भित; 'अवदालियपुंडरीयनयणे' (औप; पण्ह १, ४; उवा)।
अवदिसा स्त्री [अपदिक्] भ्रान्त दिशा (स ५२६)।
अवदेस देखो **अवएस** (अभि ७६)।

अवद्दार } देखो अवदार (गाया १, २;
अवद्दाल } प्राकृ)।

अवद्दाहणा स्त्री. देखो अवदहण (विपा १, १)।

अवद्दुस न [दे] उलूखल आदि घर का सामान्य उपकरण, गुजराती में जिसको 'राचरचिलु' कहते हैं (दे १, ३०)।

अवद्धंस पुं [अवध्वंस] विनाश (ठा ४, ४)।

अवधंसि वि [अपध्वंसिन्] विनाशकारक (उत्त ४, ७)।

अवधार सक [अव + धारय्] निश्चय करना। कृ. अवधारियव्व (पंचा ३)।

अवधारण न [अवधारण] निश्चय, निर्णय (श्रा ३०)।

अवधारणा स्त्री [अवधारणा] दीर्घकाल तक याद रखने की शक्ति (सम्मत्त ११८)।

अवधारिय वि [अवधारित] निश्चित, निर्णीत (वसु)।

अवधारियव्व देखो अवधार।

अवधाव सक [अप + धाव्] पीछे दौड़ना। अवधावइ (सरण)। वकृ. अवधावंत (स २३२)।

अवधिक्का स्त्री [दे] उपदेहिका, दीमक (पएह १, १)।

अवधीरिय वि [अवधीरित] तिरस्कृत, अपमानित (बृह १, ४)।

अवधुण } सक [अव + धू] १ परित्याग
अवधूण } करना। २ अवज्ञा करना। संकृ. अवधूणिअ, अवधूणिअ (माल २३२; वेणी ११०)।

अवधूय वि [अवधूत] १ अवज्ञात, तिरस्कृत (ओघ १८ भा. टी)। २ विक्षिप्त (आव ४)।

अवनिद्दय पुं [अपनिद्रक] उजागर, निद्रा का अभाव (सुर ६, ८३)।

अवन्न देखो अवण्ण = अवर्ण (भग; उव; ओघ ३५१)।

अवन्ना देखो अवण्णा (ओघ ३८२ भा; सुर १६, १३१; सुपा ३७२)।

अवपंगुण } सक [दे] खोलना। अवपंगुणे
अवपंगुर } (सूअ १, २, २, १३)। अवपंगुरे (दस ५, १, १८)।

अवपक्का स्त्री [अवपाक्या] तापिका, तवी, छोटा तवा (णाया १, १ टी—पत्र ४३)।

अवपुट्ठ वि [अवस्पृष्ट] जिसका स्पर्श किया गया हो वह,
'जीए ससिकंतमणिमंदिराइं
　　निसि ससिकरावपुट्ठाइं।
वियलियबाहजलाइं रोयंतिव,
　　तरणितविय।इं' (सुपा ३)।

अवपुसिय वि [दे] संघटित, संयुक्त (दे १, ३६)।

अवपूर सक [अव + पूरय्] पूर्ण करना। अवपूरंति (स ७१२)।

अवपेक्ख सक [अवप्र + ईक्ष्] अवलोकन करना। अवपेक्खह (उत्त ६, १३)।

अवप्पओग पुं [अपप्रयोग] उलटा प्रयोग, विरुद्ध औषधियों का मिश्रण (बृह १)।

अवप्फार पुं [अवस्फार] विस्तार, फैलाव; 'ता किमिमिणा अहोपुरिसियावप्फारपाएणं' (स २८८)।

अवबंध पुं [अवबन्ध] बन्ध, बन्धन (गउड)।

अवबद्ध वि [अवबद्ध] बंधा हुआ, नियन्त्रित (धर्म ३)।

अवबाण वि [अपबाण] बाणरहित (गउड)।

अवबुज्झ सक [अव + बुध्] १ जानना। २ समझना, 'जत्थ तं मुज्झसी रायं, पेच्चत्थं नावबुज्झसे' (उत्त १८, १३)। वकृ. अवबुज्झमाण (स ८५)। संकृ. अवबुज्झेऊण (स १६७)।

अवबोह पुं [अवबोध] १ ज्ञान, बोध (सुपा १७)। २ विकास (गउड)। ३ जागरण (धर्म २)। ४ स्मरण, याद (आचा)।

अवबोहय वि [अवबोधक] अवबोध-कारक, 'भवियकमलावबोहय, मोहमहातिमिरपसरभरसूर' (काल)।

अवबोहि पुं [अवबोधि] १ ज्ञान। २ निश्चय, निर्णय (आचू १, विसे ११५४)।

अवभास अक [अव + भास्] चमकना, प्रकाशित होना।

अवभास पुं [अवभास] प्रकाश (सुज्ज ३)।

अवभास पुं [अवभास] ज्ञान (धर्मसं १३३३)।

अवभासण वि [अवभासन] प्रकाश-कर्त्ता (सुख १, ४०)।

अवभासय वि [अवभासक] प्रकाशक (विसे ३१७; २०००)।

अवभासि वि [अवभासिन्] देदीप्यमान, प्रकाशने वाला (गउड)।

अवभासिय वि [अवभासित] प्रकाशित (विसे)।

अवभासिय वि [अपभाषित] आक्रुष्ट, अभिशप्त (वव १)।

अवम देखो ओम (आचा)

अवमग्ग पुं [अपमार्ग] कुमार्ग, खराब रास्ता (कुमा)।

अवमग्ग पुं [अपामार्ग] वृक्ष-विशेष, चिचड़ा, लटजीरा (दे १, ८)।

अवमच्चु पुं [अपमृत्यु] अकाल मृत्यु, बिना मौत मरण (दे ६, ३; कुमा)।

अवमज्ज सक [अव + मृज्] पोंछना, झाड़ना, साफ करना। संकृ. अवमज्जिऊण (स ३४८)।

अवमण्ण सक [अव + मन्] तिरस्कार करना। अवमण्णंति (उवर १२२)।

अवमद्द पुं [अवमर्द] मर्दन, विनाश (पएह १, २)।

अवमद्दग वि [अवमर्दक] मर्दन करने वाला (णाया १, १६)।

अवमन्न सक [अव + मन्] अवज्ञा करना, निरादर करना। अवमन्नइ (महा)। वकृ. अवमन्नंत (सूअ १,३,४) संकृ. अवमन्निऊण (महा)।

अवमन्निय } वि [अवमत] अवज्ञात, अव-
अवमय } गणित (सुर १६, १२७; महा; उव)।

अवमाण पुं [अपमान] तिरस्कार (सुर १, २३५)।

अवमाण पुंन [अवमान] १ अवज्ञा, तिरस्कार। २ परिमाण (ठा ४, १)।

अवमाण सक [अव + मानय्] अवगणना करना। अवमाणइ (भवि)।

अवमाणण न [अवमानन] अनादर, अवज्ञा (पएह १, ५; औप)।

अवमाणण न [अपमानन] तिरस्कार, अपमान (स १०)।

अवमाणणा स्त्री [अवमानना] अवगणना (काल)।

अवमाणि वि [अवमानिन्] अवज्ञा करने वाला (अभि ६६)।

अवमाणिअ वि [अपमानित] तिरस्कृत (से १०,६६; सुपा १०९)।

अवमाणिअ वि [अवमानित] १ अवज्ञात, अनादृत (सुर २, १७६)। २ अपूरित, 'अवमाणियदोहला' (भग ११, ११)।

अवमार पुं [अपस्मार] भयंकर रोग-विशेष, पागलपन (आचा)।

अवमारिअ वि [अपस्मारित, °रिक] अपस्मार रोग वाला (आचा)।

अवमारुअ पुं [अवमारुत] नीचे चलता पवन (गउड)।

अवमिच्चु देखो **अवमच्चु** (प्राकृ)।

अवमिय वि [दे] जिसको घाव हो गया हो वह, व्रणित (बृह ३)।

अवमुक्क वि [अवमुक्त] परित्यक्त (पि ५६६)।

अवमेह वि [अपमेघ] मेघ-रहित (गउड)।

अवय देखो **अपय** = अपद (सूअ १, ८; ११)।

अवय न [अब्ज] कमल, पद्म (पण्ण १)।

अवय वि [अवच] १ नीचा, अनुच्च (उत्त ३)। २ जघन्य, हीन, अश्रेष्ठ (सूअ १, १०)। ३ प्रतिकूल (भग १, ६)।

अवयंस पुं [अवतंस] १ शिरोभूषण विशेष (कुमा; गा १७३)। २ कान का आभूषण (पाअ)।

अवयंस सक [अवतंसय्] भूषित करना। अवअंसअंति (पि १४२; ४९०)।

अवयक्ख सक [अप + ईक्ष्] अपेक्षा करना, राह देखना। अवयक्खइ (णाया १, ६)। वकृ. **अवयक्खंत, अवयक्खमाण** (णाया १, ६; भग १०, २)।

अवयक्ख सक [अव + ईक्ष्] १ देखना। २ पीछे से देखना। वकृ. **अवयक्खंत** (ओघ १८८ भा)।

अवयक्खा स्त्री [अपेक्षा] अपेक्षा (णाया १, ६)।

अवयग्ग न [दे] अन्त, अवसान (भग १, १)।

अवयच्छ सक [अव + गम्] जानना। अवयच्छइ (स ११३)। संकृ. **अवयच्छिय** (स २१०)।

अवयच्छ सक [दृश्] देखना। अवयच्छइ (हे ४, १८१)। वकृ. **अवयच्छंत** (कुमा)।

अवयच्छिय वि [दृष्ट] देखा हुआ (णाया १, ८)।

अवयच्छिय वि [दे] प्रसारित, 'फुंकारपवणपिसुणियमवयच्छियमकरमहा यं' (स ११३)।

अवयज्झ सक [दृश्] देखना। अवयज्झइ (हे ४, १८१)। संकृ. **अवयज्झिऊण** (कुमा)।

अवयट्ठि स्त्री [अवतष्टि] तनूकरण, पतला करना (आचा)।

अवयट्ठि वि [अवस्थायिन्] अवस्थिति करने वाला, स्थिर रहने वाला (आचा)।

अवयट्ठि स्त्री [अवकृष्टि] आकर्षण (आचा)।

अवयड्ढिअ वि [दे] युद्ध में पकड़ा हुआ (दे १, ४६)।

अवयण न [अवचन] कुत्सित वचन, दूषित भाषा (ठा ६)।

अवयर सक [अव + तृ] १ नीचे उतरना। २ जन्म ग्रहण करना। अवयरइ (है १, १७२)। वकृ. **अवयरंत, अवयरमाण** (पउम ८२, ६३; सुपा १८१)। संकृ. **अवयरिउं** (प्रासू)।

अवयरिअ पुं [दे] वियोग, विरह (दे १, ३६)।

अवयरिअ वि [अपकृत] १ जिसका अपकार किया गया हो वह। २ न. अपकार, अहित-करण; 'को हेऊ तुह गमणे तुह अवयरियं मए किं व' (सुपा ४२१)।

अवयरिअ वि [अवतीर्ण] १ जन्मा हुआ। २ नीचे उतरा हुआ (सुर ६, १८६)।

अवयव पुं [अवयव] १ अंश, विभाग। २ अनुमान-प्रयोग का वाक्यांश (दसनि १; हे १, २४५)।

अवयवि वि [अवयविन्] अवयव वाला (ठा १; विसे २३५०)।

अवयाढ देखो **ओगाढ** (नाट; गउड)।

अवयाण न [दे] खींचने की डोरी, लगाम (दे १, २४)।

अवयाय पुं [अववाय] अपराध, दोष (उप १०३१ टी)।

अवयाय वि [अवदात] निर्मल (सिरि १०२७)।

अवयार पुं [अपकार] अहित-करण (स ४३७; कुमा; प्रासू ६)।

अवयार पुं [अवतार] १ उतरना। २ देहान्तर-धारण, जन्म-ग्रहण। ३ मनुष्य रूप में देवता का प्रकाशित होना; 'अज्ज! एवं तुमं देवावयारो विय आगईए' (स ४१६; भवि)। ४ संगति, योजना (विसे १००८)। ५ प्रवेश (विसे १०४३)।

अवयार पुं [अवतार] समावेश (पव ८६)।

अवयार पुं [दे] माघ-पूर्णिमा का एक उत्सव, जिसमें इख से दतवन आदि किया जाता है (दे १, ३२)।

अवयारण न [अवतारण] उतारना (सिरि १००४)।

अवयारय देखो **अवगारय** (स ६६०)।

अवयारि वि [अपकारिन्] अपकार करने वाला (स १७६; विवे ७६)।

अवयालिय वि [अवचालित] चलायमान किया हुआ (स ४२)।

अवयास सक [श्लिष्] आलिंगन करना। अवयासइ (हे ४, १९०)। कवकृ. **अवयासिज्जमाण** (औप)। संकृ. **अवयासिय** (णाया १, २)।

अवयास सक [अव + काश्] प्रकट करना। संकृ. **अवयासेऊण** (तंदु)।

अवयास देखो **अवगास** (गउड, कुमा)।

अवयास पुं [श्लेष] आलिंगन (ओघ २४४ भा)।

अवयासण न [श्लेषण] आलिंगन (बृह १)।

अवयासाविय वि [श्लेषित] आलिंगन कराया हुआ (विपा १, ४)।

अवयासिय वि [श्लिष्ट] आलिंगित (कुमा; पाअ)।

अवयासिणी स्त्री [दे] नासा-रज्जु, नाक में डाली जाती डोर (दे १, ४६)।

अवर वि [अपर] अन्य, दूसरा, तद्भिन्न (आ २७; महा)। °हा अ [°था] अन्यथा (पंचा ८)।

अवर स [अपर] १ पिछला काल या देश (महा)। २ पिछले काल या देश में रहा हुआ, पाश्चात्य (सम १३; महा)। ३ पश्चिम दिशा में स्थित, 'अवरद्दारेणं' (स ६४६)। °**कंका** स्त्री [°कङ्का] १ घातकी-खंड के भरतक्षेत्र की एक राजधानी। २ इस नाम के 'ज्ञातधर्मकथा' सूत्र का एक अध्ययन (णाया १, १६)। °**ण्ह** पुं [°ाह्ण] १ दिन का अन्तिम प्रहर (ठा ४, २)। २ दिन का उत्तरी भाग (आचू १; गा २६६; प्रासू ५४)। °**दाहिण** पुं [°दक्षिण] १ नैऋत्य कोण। २ वि. नैऋत्य भाग में स्थित (पंचा २)। °**दाहिणा** स्त्री [°दक्षिणा] पश्चिम और दक्षिण दिशा के बीच की दिशा, नैऋत कोण (वव ७)। °**फाणु** स्त्री [°पार्ष्णि] एड़ी, अड्डी का पिछला भाग (...)। °**राय** पुं [°रात्र] देखो **अवरत्त**=अपरात्र (आचा)। °**विदेह** पुं [°विदेह] महाविदेह नामक वर्ष का पश्चिम भाग (ठा २, ३ पडि)। °**विदेहकूड** न [°विदेहकूट] पर्वत-विशेष का शिखर-विशेष (जं ४)। देखो **अपर**।

अवर स [अवर] ऊपर देखो (महा; णाया १, १; वव ७; पंचा २)।

अवरंमुह वि [अपराङ्मुख] १ संमुख। २ तत्पर (पि २६६)।

अवरच्छ देखो **अपरच्छ** (पण्ह १, ३)।

अवरज्ज पुं [दे] १ गत दिन। २ आगामी दिन। ३ प्रभात, सुबह (दे १, ५६)।

अवरज्झ अक [अप + राध्] १ अपराध करना, गुनाह करना। २ नष्ट होना। अवरज्झइ (महा; उव)। वकृ. **अवरज्झंत** (राज)।

अवरत्त पुं [अपररात्र, अवररात्र] रात्रि का पिछला भाग (भग; णाया १, १)।

अवरत्त वि [अपरक्त] १ विरक्त, उदास (उप पृ ३०८)। २ नाराज, नाखुश (मुद्रा २६७)।

अवरत्तअ } पुं [दे] पश्चाताप, अनुताप (दे **अवरत्तेअ** } १, ४५; पाअ)।

अवरदक्खिणा देखो **अवर-दाहिणा** (पव १०६)।

अवरद्ध न [अपराद्ध] १ अपराध, गुनाह (सुर २, १२१)। २ वि. जिसने अपराध किया हो वह, अपराधी; 'सगडे दारए ममं अंतेउरंमि अवरद्धे' (विपा १, ४; स २८)। ३ विनाशित, नष्ट किया हुआ (णाया १, १)।

अवरद्धिग वि [अपराधिक] १ अपराधी, दोषी। २ पुं. लूता-स्फोट। ३ सर्पादि-दंश (पिंड १४)।

अवरद्धिग } पुंस्त्री [अपराधिक] १ सर्प-**अवरद्धिय** } दंश। २ फुनसी, छोटा फोड़ा (ओघ ३४१; पिंड)।

अवरा स्त्री [अपरा] विदेहवर्ष की एक नगरी (ठा २, ३)।

अवरा स्त्री [अपरा] पश्चिम दिशा (पव १०६)।

अवराइया देखो **अपराइया** (पउम २५, १; जं ४; ठा २, ३)।

अवराइस देखो **अण्णाइस** (षड्; हे ४, ४१३)।

अवराजिय देखो **अपराइय** (इक)।

अवराजिया देखो **अपराइया** (इक)।

अवराह पुं [अपराध] १ अपराध, गुनाह (आव १)। २ अनिष्ट, बुराई; 'अवराहेसु गुणेसु य निमित्तमेत्तं परो होइ' (प्रासू १२२)।

अवराह पुं [दे] कटी, कमर (दे १, २८)।

अवराहिअ न [अपराधित] १ अपराध, गुनाह; 'जंपइ जणो महल्लं कस्सवि अवराहियं जायं' (पउम ६४, २५; स ३२०)। २ अपकार, अनिष्ट, अहित;

'सिरि चडिआ खंति प्फलइं, पुणु डालइं मोडंति।
तोवि महद्दुम सउणाहं, अवराहिउ न करंति' (हे ४, ४४५)।

अवराहिल्ल वि [अपराधिन्] अपराधी (प्राकृ ५०)।

अवराहुत्त वि [अपराभिमुख] १ पराङ्मुख। २ पश्चिम दिशा की तरफ मुँह किया हुआ (आव ४)।

अवरि } अ [उपरि] ऊपर (दे १,२६; प्राप्र)।
अवरिं }

अवरिक्क वि [दे] अवसररहित, अनवसर (दे १, २०)।

अवरिगलिअ वि [अपरिगलित] पूर्ण, भरपूर (से ११, ८८)।

अवरिज्ज वि [दे] अद्वितीय, असाधारण (दे १, ३६; षड्)।

अवरिल्ल वि [उपरि] उत्तरीय वस्त्र, चादर (हे २, १६६; कुमा; गउड; पाअ)।

अवरिल्ल वि [अपरीय] पाश्चात्य, पश्चिम दिशा संबन्धी; 'तो णं तुब्भे अवरिल्लं वणसंडं गच्छेज्जाह' (णाया १, ६)।

अवरिहड्ढपुसण न [दे] १ अकीर्ति, अजस। २ असत्य, झूठ। ३ दान (दे १, ६०)।

अवरुंड सक [दे] आलिङ्गन करना। अवरुंडइ (दे १.११; सुर ३, १८२; भवि)। कर्म. अवरुंडिज्जइ (दे १, ११)। संकृ. अवरुंडिऊण (दे १, ११; स ४२१)।

अवरुंडण } न [दे] आलिङ्गन (भवि; पाअ; **अवरुंडिअ** } दे १, ११)।

अवरुत्तर पुं [अपरोत्तर] १ वायव्य कोण। २ वि. वायव्य कोण में स्थित (भग)।

अवरुत्तरा स्त्री [अपरोत्तरा] वायव्य दिशा, पश्चिम और उत्तर के बीच की दिशा (वव ७)।

अवरुद्ध वि [अवरुद्ध] घिरा हुआ (विसे २६७५)।

अवरुप्पर देखो **अवरोप्पर** (कुमा; रंभा)।

अवरुह अक [अव + रुह्] नीचे उतरना। अवरुहेहि (मै १४)।

अवरूव देखो **अपुव्व** (प्राकृ ८५)।

अवरोप्पर } वि [परस्पर] आपस में (हे ४, **अवरोवर** } ४०६; गउड; सुपा २२; सुर ३, ७६; षड्)।

अवरोह पुं [अवरोध] १ अन्तःपुर, जनानखाना (सुपा ६३)। २ अन्तःपुर में रहनेवाली स्त्री (विपा १, ४)। ३ नगर को सैन्य से घेरना (निचू ८)। ४ संक्षेप (विसे ३५५५)। ५ प्रतिबन्ध, 'कहं सव्वत्थित्तावरोहो त्ति' (विसे १७२३)। °**जुवइ** स्त्री [°युवति] अन्तःपुर की स्त्री (पि ३८७)।

अवरोह पुं [अवरोह] उगनेवाला (तृण आदि) (गउड)।

अवरोह पुं [दे] कटि, कमर (दे १, २८)।

अवलंब सक [अव + लम्ब्] १ सहारा लेना, आश्रय लेना। २ लटकना। अवलंबइ (कस)। अवलंबेइ (महा)। वकृ. **अवलंबमाण** (सम्म ५८)। कवकृ. **अवलंबिज्जंत** (पि ३६७)। संकृ. **अवलंबिऊण, अवलंबिय** (आव ५; आचा २, १, ६)। हेकृ.

अवलंबित्तए (दसा ७)। कृ. अवलंबणिय, अवलंबिअव्व (से १०, २६)।

अवलंब, अवलंबग पुं [अवलम्ब, °क] १ सहारा, आश्रय (श्रा १६)। २ वि. लटकनेवाला (औप; वव ४)। ३ सहारा लेनेवाला (पच्च ८०)।

अवलंबण न [अवलम्बन] १ लटकना। २ आश्रय, सहारा (ठा ५, २; राय)।

अवलंबणया स्त्री [अवलम्बनता] अवग्रह-ज्ञान (णंदि १७५)।

अवलंबि वि [अवलम्बिन्] अवलम्बन करनेवाला (गउड; विसे २३२६)।

अवलंबिय वि [अवलम्बित] १ लटका हुआ। २ आश्रित (णाया १, १)।

अवलंबिर देखो अवलंबि (गा ३६७)।

अवलक्खण न [अपलक्षण] खराब लक्षण, बुरी आदत (भवि)।

अवलग्ग वि [अवलग्न] १ आरूढ़। २ लगा हुआ, संलग्न (महा)।

अवलत्त वि [अपलपित] अपह्नुत, छिपाया हुआ (स २१२)।

अवलद्ध वि [अपलब्ध] अनादर से प्राप्त (ठा ६)।

अवलद्धि स्त्री [अवलब्धि] अप्राप्ति (भग)।

अवलय न [दे] घर, मकान (दे १, २३)।

अवलव सक [अप + लप्] १ असत्य बोलना। २ सत्य को छिपाना। कवकृ. अवलविज्जंत (सुपा १३२)। कृ. अवलवणिज्ज (सुपा ३१५)।

अवलाव पुं [अपलाप] अपह्नव (निचू १)।

अवलिअ न [दे] असत्य, झूठ (दे १,२२)।

अवलिंब पुं [अवलिम्ब] जीव या पुद्गलों से व्याप्त स्थान-विशेष (ठा २, ४)।

अवलिच्छअ वि [दे] अप्राप्त, अनासादित (से ६, ७८)।

अवलित्त वि [अवलिप्त] व्याप्त (सूअ १, १३, १४)।

अवलित्त वि [अवलिप्त] १ लिप्त। २ गर्वित; 'अलसो सढोवलित्तो, आलंबण-तप्परो अइपमाई। एवं ठिओवि मन्नइ, अप्पाणं सुट्ठिओ मित्ति' (उव)।

अवलुअ देखो अवल्लय (आचा २,३,१,६)।

अवलुआ स्त्री [दे] क्रोध, गुस्सा (दे १,३६)।

अवलुत्त वि [अवलुप्त] लोप-प्राप्त (नाट)।

अवलेअ, अवलेव पुं [अवलेप] १ अहंकार, गर्व। २ लेप, लेपन (पाअ; महा; नाट)। ३ अवज्ञा, अनादर (गउड)।

अवलेह पुं [अवलेह] चटनी (वज्जा १०४)।

अवलेहणिया स्त्री [अवलेखनिका] १ बांस का छिलका (ठा ४,२)। २ धूलि आदि झाड़ने का एक उपकरण (निचू १)।

अवलेहि, अवलेहिया स्त्री [अवलेखि, °का] १ बांस का छिलका (कम्म १, २०)। २ लेह्य विशेष (पव ४)। ३ चावल के आटा के साथ पकाया हुआ दूध (पभा ३२)।

अवलोअ सक [अव+लोक्] देखना, अवलोकन करना। वकृ. अवलोअंत, अवलोएमाण (रयण ३६; णाया १, १) संकृ. अवलोइऊण (काल)। कृ. अवलोयणीय (सुपा ७०)।

अवलोग, अवलोय पुं [अवलोक] अवलोकन, दर्शन (उप ६८६ टी; सुपा ६; स २७६; गउड)।

अवलोयण न [अवलोकन] १ दर्शन, विलोकन (गउड)। २ स्थान-विशेष, 'तुंगं अवलोयणं चेव' (पउम ८०,४)। ३ शिखर-विशेष (ती ४)।

अवलोयणी स्त्री [अवलोकनी] देवी-विशेष (सम्मत्त १६०)।

अवलोव पुं [अपलोप] छिपाना, लोप करना (पण्ह १, २)।

अवलोवणी स्त्री [अपलोपनी] विद्या-विशेष (पउम ७, १३६)।

अवलोह वि [अपलोह] लोहरहित (गउड)।

अवल्लय न [दे. अवल्लक] नौका खेवने का उपकरण-विशेष (आचा २, ३, १)।

अवल्लाव, अवल्लावय पुं [दे. अपलाप] असत्यकथन, अपलाप (दे १, ३८)।

अवव न [अवव] संख्या-विशेष, 'अववाङ्ग' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह (ठा २, ४)।

अववंग न [अववाङ्ग] संख्या-विशेष, 'अडड' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह (ठा २, ४)।

अववक्कल वि [अपवल्कल] त्वचारहित (गउड)।

अववक्का स्त्री [अवपाक्या] तापिका, छोटा तवा (भग ११, ११)।

अववग्ग पुं [अपवर्ग] मोक्ष, मुक्ति (आवम)।

अववट्टण न [अपवर्तन] १ अपसरण। २ कर्मपरमाणुओं की दीर्घ स्थिति को छोटी करना (पंच ५)।

अववट्टणा स्त्री [अपवर्तना] ऊपर देखो (पंच ५)।

अववत्त वि [अपवृत्त] १ वापस लौटा हुआ। २ अपसृत (दे १, १५२)।

अववरक पुं [अपवरक] कोठरी, छोटा घर (मुद्रा ८१)।

अववह सक [अप+वह्] बाहर फेंकना, दूर हटाना। कर्म. अ उज्झइ (पंचा १६, ६)।

अववाइअ वि [आपवादिक] अपवाद-संबंधी (अज्झ १०८)।

अववाइय वि [अपवादिक] अपवादवाला (नाट)।

अववाय पुं [अपवाद] १ विशेष नियम, अपवाद (उप ७८१)। २ निन्दा, अवर्ण-वाद (पण्ह २,२)। ३ अनुज्ञा, संमति (निचू १)। ४ निश्चय, निर्णय वाली हकीकत (निचू ५)।

अववास सक [अव+काश्] अवकाश देना, जगह देना। अववासइ (प्राप्र)।

अववाह सक [अव + गाह्] अवगाहन करना। अववाहइ (प्राप्र)।

अवविह पुं [अवविध] गोशालक के एक भक्त का नाम (भग ८, ५)।

अववीड पुं [अवपीड] निष्पीड़न, दबाना (गउड)।

अववीडण न [अवपीडन] ऊपर देखो (गउड)।

अवस वि [अवश] १ अस्वाधीन, पराधीन (सूअ १, ३, १)। २ स्वतन्त्र, स्वाधीन (से १, १)।

अवस वि [अवश] अकाम, अनिच्छु (धर्मसं ७००)।

अवसं अ [अवश्यम्] अवश्य, जरूर, निश्चय (हे ४, ४२७)।

अवसउण न [अपशकुन] अनिष्ट-सूचक निमित्त, खराब शकुन (ओघ ८१ भा; गा २६१; सुपा ३६३)।

अवसंकि वि [अपशङ्किन्] अपसरण-कर्ता (सूअ १, १२, ४)।

अवसक्क सक [अव + ष्वष्क्] पीछे हट जाना। अवसक्केजा (आचा)।

अवसक्कण न [अवष्वष्कण] अपसरण, पीछे हटना (पंचा १३)।

अवसक्कि वि [अवष्वष्किन्] पीछे हटने वाला (आचा)।

अवसण्ण वि [दे] झरा हुआ, टपका हुआ (षड्)।

अवसण्ण वि [अवसन्न] निमग्न, 'नागो जहा पंकजलावसण्णो' (उत्त १३, ३०)।

अवसद्द पुं [अपशब्द] १ अशुद्ध शब्द (सुर १६, २४८)। २ खराब वचन (हे १, १७२)। ३ अपकीर्त्ति, अपयश (कुमा)।

अवसप्प अक [अव + सृप्] पीछे हटाना। २ निवृत्त होना। ३ उतरना। अवसप्पंति (पि १७३)।

अवसप्पण न [अपसर्पण] अपसरण, अपवर्त्तन (पउम ५६, ७८)।

अवसप्पि वि [अपसर्पिन] १ पीछे हटनेवाला। २ निवृत्त होनेवाला (सूअ १, २, २)।

अवसप्पिअ वि [अपसर्पित] १ अपसृत। २ निवृत्त। ३ अवतीर्ण (भवि)।

अवसप्पिणी देखो **ओसप्पिणी** (भग ३, २; भवि)।

अवसमिआ (दे) देखो **अंबसमी** (दे १, ३७)।

अवसय वि [अपशद] नीच, अधम (ठा ४, ४)।

अवसर अक [अप+सृ] १ पीछे हटना। २ निवृत्त होना। अवसरइ (हे १, १७२)। कृ. **अवसरियव्व** (उप १४६ टी)।

अवसर सक [अव + सृ] आश्रय करना। संकृ. 'ओसरणम् अवसरित्ता' (चउ १८)।

अवसर पुं [अवसर] १ काल, समय (पाअ)। २ प्रस्ताव, मौका (प्रासू ५७; महा)।

अवसरण देखो **ओसरण** (पव ६२)।

अवसरण न [अपसरण] १ पीछे हटना। २ निवृत्ति (गउड)।

अवसरिय वि [आवसरिक] सामयिक, समयोपयुक्त (सण)।

अवसरीर पुं [अपशरीर] रोग, व्याधि; 'सव्वावसरीरहिओ' (उप ५६७ टी)।

अवसवस वि [अपस्ववश] पराधीन, परतन्त्र (गाया १, १६)।

अवसव्व न [अपसव्य] वाम पार्श्व (णंदि १५१)।

अवसव्वय न [अपसव्यक] शरीर का दहिना भाग (उप पृ २०८)।

अवसह पुं [आवसथ] घर, मकान (उत्त ३२)।

अवसह न [दे] १ उत्सव। २ नियम (दे १, ५८)।

अवसाइअ वि [अप्रसादित] प्रसन्न नहीं किया हुआ (से १०, ६३)।

अवसाण न [अवसान] १ नाश। २ अन्त भाग (गउड; पि ३६६)।

अवसाय पुं [अवश्याय] हिम, बर्फ (गउड)।

अवसारिअ वि [अप्रसारित] न फैला हुआ, अविस्तारित (से, १)।

अवसारिअ वि [अपसारित] १ आकृष्ट, खींचा हुआ (से १, १)। २ दूर किया हुआ, हटाया हुआ (सुपा २२२)।

अवसावण न [अवस्रावण] १ काँजी (बृह १)। २ भात वगैरह का पानी (सूक्त ८६)।

अवसावणिया स्त्री [अवस्वापनिका] सुलानेवाली विद्या (धर्मवि १२४)।

अवसिअ वि [अपसृत] पीछे हटा हुआ (से १३, ६३)।

अवसिअ वि [अवसित] १ समाप्त, परिपूर्ण। २ ज्ञात, जाना हुआ (विसे २४८२)।

अवसिज्ज अक [अव + सद्] हारना, पराजित होना; 'एक्कोवि नावसिज्जइ' (विसे २४८४)।

अवसित्त वि [अवसिक्त] सींचा हुआ (रंभा ३१)।

अवसिद (शौ) वि [अवसित] समाप्त, पूर्ण (अभि १३३, प्रति १०६)।

अवसिद्धंत पुं [अपसिद्धान्त] दूषित सिद्धांत (विसे २४५७; ६)।

अवसीय अक [अव + सद्] क्लेश पाना, खिन्न होना। वकृ. **अवसीयंत** (पउम ३३, १३१)।

अवसुअ अक [उद् + वा] सूखना, शुष्क होना। अवसुअइ (षड्)।

अवसेअ पुं [अवसेक] सिंचन, छिड़काव (अभि २१०)।

अवसेअ वि [अवसेय] जानने योग्य (विसे २६७१)।

अवसें (अप) देखो **अवसं** (हे ४, ४२७)।

अवसेण देखो **अवसं**; 'अवसेण भुंजियव्वा (पउम १०२, २०१)।

अवसेस पुं [अवशेष] १ अवशिष्ट, बाकी (सुपा ७७)। २ वि. सब, सर्व (उप २११ टी)।

अवसेसिय वि [अवशेषित] १ समाप्त किया हुआ, पार पहुंचाया हुआ (से ४, ४७)। २ बाकी का, अवशिष्ट (भग)।

अवसेह सक [गम्] जाना। अवसेहइ (हे ४, १६२)। अवसेहंति (कुमा)।

अवसेह अक [नश्] भागना, पलायन करना। अवसेहइ (हे ४, १७८; कुमा)।

अवसोइआ स्त्री [अवस्वापिका] निद्रा (सुपा ६०६)।

अवसोग वि [अपशोक] १ शोक-रहित। २ देव-विशेष (दीव)।

अवसोण वि [अपशोण] थोड़ा लाल (गउड)।

अवसोवणी स्त्री [अवस्वापनी] निद्रा (सुपा ४७)।

अवस्स वि [अवश्य] जरूरी, नियत (आवम, आव ४)। °**कम्म** न [°कर्मन्] आवश्यक क्रिया (आचू १)। °**करणिज्ज** वि [°करणीय] अवश्य करने लायक कर्म, सामयिक आदि। °**किरिया** स्त्री [°क्रिया] आवश्यक अनुष्ठान (आचू १)। °**किच्च** वि [°कृत्य] आवश्यक कार्य (दे)।

अवस्सं अ [अवश्यम्] जरूर, निश्चय (पि ३१५)।

अवस्सप्पिणी देखो **अवसप्पिणी** (संबोध ४८)।

अवस्साअ देखो **अवसाय** (विक्र)।

अवस्सिय वि [अवाश्रित] आश्रित, अवलग्न (अनु ६)।

अवह सक [रच्] निर्माण करना, बनाना। अवहइ (हे ४, ९४)।

अवह स [उभय] दोनों, युगल (हे २, १३८)।

अवह वि [अवह] न बहता हुआ, जो चालू नहीं है, बंद; 'ओसप्पिणीइ अवहो इमाइ जाओ तओ य सिद्धिपहो (धर्मवि १५१)।

अवहइ स्त्री [अपहृति] विनाश (विसे २०-१९)।

अवहट्ट वि [दे] अभिमानी, गर्वित (दे १, २३)।

अवहट्टु देखो **अवहर**=अप+हृ।

अवहड वि [अपहृत] ले लिया गया, छीना हुआ (सुपा २६६; पण्ह १, ३)।

अवहड वि [अवहृत] ऊपर देखो (प्राकृ)।

अवहड न [दे] मुसल (दे १, ३२)।

अवहण्ण पुं [दे] ऊखल, ओखल, उदूखल (दे १, २६)।

अपहत्थ पुं [अपहस्त] मारने के लिए या निकाल बाहर करने के लिए ऊंचा किया हुआ हाथ, 'अवहत्थेण हओ कुमरो' (महा)।

अवहत्थ सक [अपहस्तय्] १ हाथ को ऊंचा करना। २ त्याग करना, छोड़ देना। अवहत्थेइ (महा)। संकृ. **अवहत्थिऊण, अवहत्थेऊण** (पि ५८६; महा)।

अवहत्थरा स्त्री [दे] लात मारना, पाद-प्रहार (दे १, २२)।

अवहत्थिय वि [अपहस्तित] परित्यक्त, दूर किया हुआ (महा; काप्र ५२४; गा ३५३; सुपा १६३; एांदि)।

अवहय वि [अपहत] नष्ट, नाश-प्राप्त (से १४, २८)।

अवहय वि [अघातक] अहिंसक (ओघ ७५०)।

अवहर सक [गम्] जाना। अवहरइ (हे ४, १६२)।

अवहर अक [नश्] भाग जाना, पलायन करना। अवहरइ (हे ४, १७८; कुमा)।

अवहर सक [अप+हृ] १ छीन लेना, अप-हरण करना। २ भागाकार करना, भाग देना। अवहरइ (महा) अवहरेज्जा (उवा)। कवकृ. **अवहरिज्जंत, अवहीरमाण** (सुर ३, १४२; भग २५, ४; एाया १, १८)। संकृ. **अवहरिऊण, अवहट्टु** (महा; आचा; भग)।

अवहर सक [अप+हृ] परित्याग करना। संकृ. **अवहट्टु** (सूअ १, ४, १, १७)।

अवहर वि [अपहर] अपहारक, छीन लेने-वाला (गा १५६)।

अवहरण न [अपहरण] छीन लेना (कुमा; सुपा २५०)।

अवहरिअ वि [गत] गया हुआ (कुमा)।

अवहरिअ वि [अपहृत] छीन लिया हुआ (सुर ३, १४१; कुम्मा ६)।

अवहस सक [अव, अप+हस्] तुच्छ करना, तिरस्कार करना, उपहास करना। अव-हसइ (एामा १, १८)।

अवहसिय वि [अप°, अवहसित] तिरस्कृत, उपहसित (एाया १, ८; सुर १२, ६७)।

अवहाउ सक [दे] आक्रोश करना। अवहाडेमि (दे १, ४७ टी)।

अवहाडिअ वि [दे] उत्कृष्ट, जिस पर आक्रोश किया गया हो वह (दे १, ४७)।

अवहाण न [अवधान] १ ख्याल, उपयोग (सुर १०, ७१; कुमा)। २ ज्ञान, जानना (वसे ८२)।

अवहाय पुं [दे] विरह, वियोग (दे १, ३६)।

अवहाय अ [अपहाय] छोड़ कर, त्याग कर (भग १९)।

अवहार सक [अव+धारय्] निर्णय करना, निश्चय करना। कर्म. अवहारिज्जइ (स १६६)। हेकृ. **अवहारेउं** (भास १६)।

अवहार (अप) देखो **अवहर**=अप+हृ। अवहारइ (भवि)। संकृ. **अवहारिवि** (भवि)।

अवहार पुं [अपहार] १ अपहरण (पण्ह १, ३; सुपा २७५)। २ दूर करना, परित्याग (एाया १, ६)। ३ चोरी (सुपा ४४६)। ४ बाहर करना, निकालना (निचू ७)। ५ भागा-कार (भग २५, ४)। ६ नाश, विनाश (सुर ७, १२५)।

अवहार पुं [अवधार] निश्चय, निर्णय। °व वि [वन्] निश्चय वाला (ठा १०)।

अवहार पुं [अवधार्य] ध्रुव राशि, गणित-प्रसिद्ध राशिविशेष (सुज्ज १०, ६ टी)।

अवहारण न [अवधारण] निश्चय, निर्णय (से ११, १५; स १६६)।

अवहारय वि [अपहारक] छीननेवाला, अप-हरण करनेवाला (सूर ११, १२)।

अवहारि वि [अपहारिन्] अपहारक, छीनने-वाला (सुपा ५०३)।

अवहारिय वि [अवधारित] निश्चित (स ५७६; पउम २३, ६; सुपा ३३१)।

अवहाव सक [कृप्] दया करना, कृपा करना। अवहावेइ (षड्; हे ४, १५१)। अवहावसु (कुमा)।

अवहाविअ वि [अवधावित] गमन के लिए प्रेरित (सिरि ४३४)।

अवहास पुं [अवभास] प्रकाश, तेज (गउड; प्राप्र)।

अवहासिणी स्त्री [अवहासिनी] नासारज्जु, 'मोत्तव्वे जोत्तअपग्गहम्मि अवहासिणी मुक्का' (गा ६६४)।

अवहासिय वि [अवभासित] प्रकाशित (सुपा १४२)।

अवहि देखो **ओहि** (सुपा ८६; ५७८; विसे ८२; ७३७)।

अवहिट्ठ वि [दे] दर्पित, अभिमानी, गर्वित (षड्)।

अवहिट्ठ न [दे] मैथुन, संभोग (सूअ १, ६, १०)।

अवहिय वि [अपहृत] छीन लिया हुआ (पउम २०, ६६; सुर ११, ३२; सुपा ४१३)।

अवहिय वि [अपहित] अहित (चंड)।

अवहिय वि [अवधृत] नियमित (विसे २६३३)।

अवहिय न [अवधृत] अवधारण (वव १)।

अवहिय वि [अवहित] सावधान, ख्यालवाला (पाअ; महा; एाया १, २; पउम १०, ६५;

सुपा ४२३)। °मण वि [°मनस्] तल्लीन, एकाग्र-चित्त (सुपा ६)।

अवहिय वि [रचित] निर्मित, बनाया हुआ (कुमा)।

अवहीण वि [अवहीन] हीन, उतरता, कम दरजा वाला (नाट; पि १२०)।

अवहीय वि [अपधीक] निन्द्य बुद्धिवाला, दुर्बुद्धि (पराह १, २)।

अवहीर सक [अव + धीरय्] अवज्ञा करना, तिरस्कार करना। अवहीरेइ (महा)। वकृ. **अवहीरंत** (सुपा ३१२)। कवकृ. **अवहीरिज्जंत** (सुपा ३७६)। संकृ. **अवहीरिऊण** (महा)।

अवहीरण न [अवधीरण] अवहेलना, तिरस्कार (गा १४६; अभि ६८; गउड)।

अवहीरणा स्त्री [अवधीरणा] ऊपर देखो (से १३, १६; वेणी १८)।

अवहीरमाण देखो **अवहर** = अप + हृ।

अवहीरिअ वि [अवधीरित] अवज्ञात, तिरस्कृत (से ११, ७; गउड)।

अवहील देखो **अवहीर**। अवहीलह (सरण)।

अवहीला स्त्री [अवहेला] अनादर (सिरि १७६)।

अवहूय वि [अवधूत] मार भगाया हुआ (संबोध ५२)।

अवहेअ वि [दे] दया-योग्य, कृपा-पात्र (दे १, २२)।

अवहेड सक [मुच्] छोड़ना, त्याग करना। अवहेडइ (हे ४, ९१)। संकृ. **अवहेडिउं** (कुमा)।

अवहेडग } पुंन [अवहेटक] आधे सिर का
अवहेडय } दर्द, आधा सीसी रोग (उत्तनि ३)।

अवहेडिय वि [दे] नीचे की तरफ मोड़ा हुआ, अवमोटित (उत्त १२)।

अवहेरि } स्त्री [अवहेला] अवगणना, तिर-
अवहेरी } स्कार (उप २६०, ५६७ टी; भवि; सुपा २६१, महा)।

अवहेलअ वि [अवहेलक] तिरस्कारक (सुपा १०६)।

अवहेलण वि [अवहेलन] उपेक्षा करने वाला (सूअ २, ६, ५३)।

अवहोअ पुं [दे] विरह, वियोग (षड्)।

अवहोडय देखो **अवओडग**; 'सो बद्धो अवहोडएण' (सुख २, २५)।

अवहोमुह वि [उभयमुख] दोनों तरफ मुंह वाला (प्राकृ ३०)।

अवहोल अक [अव + होलय्] १ झूलना। २ संदेह करना। वकृ. **अवहोलन्त** (णाया १, ८)।

अवाइ वि [अपायिन्] १ दुःखी। २ दोषी, अपराधी; 'निब्भिच्चसच्चवाई होइ अवाई य नेहलोएवि' (सुपा २७५)।

अवाईण वि [अवाचीन] अधोमुख (णाया १, १)।

अवाईण वि [अवातीन] वायु से अनुपहत (णाया १, १)।

अवाउड वि [अ-व्यापृत] किसी कार्य में न लगा हुआ (उप पृ ३०२)।

अवाउड वि [अप्रावृत] अनाच्छादित, नग्न, दिगम्बर (णाया १, १; ठा ५, १)।

अवाडिअ वि [दे] वञ्चित, प्रतारित (षड्)।

अवाण देखो **अपाण** (पात्र; विपा १, ६)।

अवाय पु [अपाय] पानी का आगमन (श्रा २३)।

अवाय वि [अपाय] भाग्यरहित (श्रा २३)।

अवाय वि [अपाग] वृक्षरहित (श्रा २३)।

अवाय वि [अपाक] पापरहित (श्रा २३)।

अवाय पुं [अवाय] प्राप्ति (श्रा २३)।

अवाय पुं [अपाय] १ अनर्थ, अनिष्ट (ठा १)। २ दोष, दूषण (सुर ४, १२०)। ३ उदाहरण-विशेष (ठा ४, ३)। ४ विनाश (धर्म १)। ५ वियोग, पार्थक्य (णंदि)। ६ संशय-रहित निश्चयात्मक ज्ञान-विशेष (ठा ४, ४; णंदि)। °दंसि वि [°दर्शिन्] भावी अनर्थों को जाननेवाला (ठा ८; द्र ४६)। °विजय न [°विचय, °विजय] ध्यान-विशेष (ठा ४,२)।

अवाय पुं [अवाय] संशय-रहित निश्चयात्मक ज्ञान-विशेष, मति ज्ञान का एक भेद (ठा ४, ४; णंदि)।

अवाय वि [अम्लान] अम्लान, म्लानरहित, ताजा; 'अवायमल्लमंडिया' (स ३७२)।

अवायाण न [अपादान] कारक-विशेष, स्थानान्तरीकरण (ठा ८; विसे २०९९)।

अवार वि [अपार] पार-रहित, अनन्त (से ६८)।

अवार पुं [दे] दूकान, हाट (दे १, १२)।

अवारी स्त्री [दे] ऊपर देखो (दे १, १२)।

अवालुआ स्त्री [दे] होठ का प्रान्त भाग (दे १, २८)।

अवाव पुं [अवाप] रसोई, पाक। °कहा स्त्री [°कथा] रसोई-सम्बन्धी कथा (ठा ४, २)।

अवास } (अप) देखो **अवसें** (षड्)।
अवासें }

अवाह पुं [अवाह] देश-विशेष (इक)।

अवाहा देखो **अबाहा** (औप)।

अवि अ [अपि] निम्नलिखित अर्थों का सूचक अव्यय—१ प्रश्न (से ५, ४)। २ अवधारण, निश्चय (आचा; गा ५०२)। ३ समुच्चय (विसे ३५५१; भग १, ७)। ४ संभावना (विसे ३५४८; उत्त ३)। ५ विलाप (पात्र)। ६–७ वाक्य के उपन्यास और पादपूर्ति में भी इसका प्रयोग होता है (आचा; पउम ८, १४६; षड्)।

अवि पुं [अवि] १ अज। २ मेष (विसे १७७४)।

अविअ वि [दे] उक्त, कथित (दे १, १०)।

अविअ वि [अवित] रक्षित (दे ५, ३५)।

अविअ अ [अपिच] विशेषण-सूचक अव्यय (पंचा ७, २१)।

अविअ अ [अपिच] समुच्चय-द्योतक अव्यय (सुर २, २४६; भग ३, २)।

अविअ पुं [अविक] मेष, भेड़ (आचा)।

अविउ वि [अवित्] अज्ञ, मूर्ख (सट्ठि ४६)।

अविउक्कंतिय वि [अव्युत्क्रान्तिक] उत्पत्ति-रहित (भग)।

अविउसरण न [अव्युत्सर्जन] अपरित्याग, पास में रखना (भग)।

अविकंप वि [अविकम्प] निश्चल (पंचा १८, ३५)।

अविकरण न [अविकरण] गृहीत वस्तुओं को यथास्थान न रखना (बृह ३)।

अविक्ख देखो **अवेक्ख**। अविक्खइ (महा)। हेकृ. **अविक्खिउं** (स ३०७)। कृ. **अविक्खणिज्ज** (विसे १७१६)।

अविक्खग वि [अपेक्षक] अपेक्षा करने वाला (विसे १७१६)।

अविक्खण न [अवेक्षण] अवलोकन, निरीक्षण (भवि)।

अविक्खण न [अपेक्षण] अपेक्षा, परवाह (विसे १७१६)।

अविक्खा देखो **अवेक्खा** (कुमा)।

अविक्खिय वि [अपेक्षित] १ अपेक्षित। २ न. अपेक्षा, परवाह; 'नाविक्खियं सभाए' (श्रा १४)।

अविक्खिय वि [अवेक्षित] अवलोकित (सुपा ७२)।

अविगइय वि [अविकृतिक] घृत आदि विकार-जनक वस्तुओं का त्यागी (सूम्र २, २)।

अविगडिय वि [अविकटित] अनालोचित (वव १)।

अविगप्प देखो **अवियप्प** (सुर ४, १८६)।

अविगप्पग वि [अविकल्पक] १ विकल्परहित। २ न. कल्पना-रहित प्रत्यक्ष ज्ञान (धर्मसं ७४०)।

अविगल वि [अविकल] अखण्ड, पूर्ण (उप २८३)।

अविगिच्छ वि [अविचिकित्स्य] जिसका इलाज न हो सके ऐसा, असाध्य व्याधि;
'तालपुडं गरलाणं, जह बहुवाहीण खित्तिम्रो वाही।
दोसाणमसेसाणं, तह अविगिच्छो मुसादोसो' (श्रा १२)।

अविगीय पुं [अविगीत] अगीतार्थ, शास्त्रों के रहस्य का अनभिज्ञ साधु (वव ३)।

अविग्गह वि [अविग्रह] १ शरीर-रहित। २ युद्ध-रहित, कलह-वर्जित (सुपा २३४)। ३ सरल, सीधा (भग)। °**गइ** स्त्री [°गति] अकुटिल गति (भग १४, ५)।

अविच्छ वि [अवीप्स्य] वीप्सारहित, व्याप्ति रहित (षड्)।

अविजाणय वि [अविज्ञायक] अनजान, मूर्ख (सूम्र १, ५, १)।

अविज्ज वि [अबीज] बीजशक्ति से रहित (पउम ११, २५)।

अविणय पुं [अविनय] विनय का अभाव (ठा ३, ३)।

अविणयवइ } पुं [दे] जार, उपपति (दे १, **अविणयवर** } १८)।

अविणयवई स्त्री [दे] असती, कुलटा (दे १, १८)।

अविणिद्द वि [अविनिद्र] निद्रा-विच्छेदरहित (गा ६६)।

अविण्णा स्त्री [अविज्ञा] अनुपयोग, ख्याल का अभाव (सूम्र १, १, १)।

अवितह वि [अवितथ] सत्य, सच्चा (महा; उव)।

अविद } अ [अविद, °दा] विषाद-सूचक **अविदा** } अव्यय (पि २२; स्वप्न ५८)।

अविधि पुंस्त्री [अविधि] १ विरुद्ध विधि। २ विधि का अभाव (बृह ३; आव १)।

अविन्नाण वि [अविज्ञान] १ अजान। २ अज्ञात, अपरिचित (पउम ५, २१६)।

अवियड्ढ वि [अविदग्ध] अनिपुण (सुपा ५८२)।

अवियत्त न [अप्रीतिक] १ प्रीति का अभाव (ठा १०)। २ वि. अप्रीतिकारक (पण्ह १, १)।

अवियत्त वि [अव्यक्त] अस्फुट, अस्पष्ट; 'अवियत्तं दंसणं अणागारं' (सम्म ६५)।

अवियप्प वि [अविकल्प] १ भेदरहित, 'वंजणपज्जायस्स उ पुरिसो पुरिसो त्ति निच्चमवियप्पो' (सम्म ३५)। २ क्रिवि. निःसंशय, संशयरहित; 'सविअप्पनिव्विअप्पं इय पुरिसं जो भणिज्ज अवियप्पं' (सम्म ३५)।

अवियाउरी स्त्री [दे. अविजनयित्री] वन्ध्या स्त्री (णाया १, २)।

अवियाणय देखो **अविजाणय** (आचा)।

अविरइ स्त्री [अविरति] १ विराम का अभाव, अनिवृत्ति। २ पाप कर्म से अनिवृत्ति (सम १०; पण्ह २,५)। ३ हिंसा (कम्म ४)। ४ अब्रह्म, मैथुन (ठा ६)। ५ विरति-परिणाम का अभाव (सूम्र २,२)। ६ वि. विरतिरहित (नाट)। °**वाय** पुं [°वाद] १ अविरति की चर्चा। २ मैथुन-चर्चा (ठा ६)।

अविरइय वि [अविरतिक] विरति से रहित, पापनिवृत्ति से वर्जित, पाप कर्म में प्रवृत्त (भग; कस)।

अविरत्त वि [अविरक्त] वैराग्यरहित (णाया १, १४)।

अविरय वि [अविरत] १ विरामरहित, अविच्छिन्न (गा १५५)। २ पाप निवृत्ति से रहित (ठा २, १)। ३ चतुर्थ गुणस्थानक वाला जीव (कम्म ४,६३)। ४ क्रिवि. सदा, हमेशा (पाअ)। °**सम्मद्दिट्ठि** स्त्री [°सम्यग्दृष्टि] चतुर्थ गुणस्थानक (कम्म २,२)।

अविरल वि [अविरल] निबिड, घन (णाया १, १)।

अविरहि वि [अविरहिन्] विरहरहित (कुमा)।

अविराम वि [अविराम] १ विरामरहित। २ क्रिवि. निरन्तर, हमेशा (पाअ)।

अविराय वि [अविलीन] अभ्रष्ट (कुमा)।

अविराहिय वि [अविराधित] अखण्डित, आराधित (भग १५)।

अविरिय वि [अवीर्य] वीर्यरहित (भग)।

अविल पुं [दे] १ पशु। २ वि. कठिन (दे १, ५२)।

अविलंबिय वि [अविलम्बित] विलम्बरहित, शीघ्र (कप्प)।

अविला स्त्री [अविला] मेषी, भेड़ी (पाअ)।

अविवेग पुं [अविवेक] १ विवेक का अभाव २ वि. विवेकरहित। °**वंत** वि [°वत्] अविवेकी (पउम ११३, ३९)।

अविसंधि वि [अविसंधि] पूर्वापर विरोध से रहित, संगत, संबद्ध (औप)।

अविसंवाइ वि [अविसंवादिन्] विसंवादरहित, प्रमाण भूत, सत्य (कुमा; सुर ६, १७८)।

अविसम वि [अविषम] सदृश, तुल्य (कुमा)।

अविसाइ वि [अविषादिन्] विषादरहित (पण्ह २, १)।

अविसेस वि [अविशेष] तुल्य, समान (ठा २,३; उप ८७७)।

अविसेसिय वि [अविशेषित] (ठा १०)।

अविस्स न [अविश्र] मांस और रुधिर (पव ४०)।

अविस्साम वि [अविश्राम] १ विश्रामरहित (पण्ह १,१)। २ क्रिवि. निरन्तर, सदा (उप ७२८ टी)।

अविहड पुं [दे] बालक, बच्चा (बृह १)।
अविहव वि [अविभव] दरिद्र (गउड)।
अविहवा स्त्री [अविधवा] जिसका पति जीवित हो वह स्त्री, सधवा (गाया १,१)।
अविहा देखो **अविदा** (अभि २२४)।
अविहाड वि [अविघाट] अविकट (वव ७)।
अविहाविअ वि [दे] १ दीन, गरीब। २ न. मौन (दे १, ५६)।
अविहाविअ वि [अविभावित] अनालोचित (गउड)।
अविहि देखो **अविधि** (दस १)।
अविहिअ वि [दे] मत्त, उन्मत्त (षड्)।
अविहिंत वकृ [अविघ्नत्] नहीं मारता हुआ, हिंसा नहीं करता हुआ;
'वज्जेमित्ति परिणओ, संपत्तीए विमुच्चई वेरा। अविहिंतोवि न मुच्चइ, किलिट्ठभावोत्ति वा तस्स' (ओघ ६०)।
अविहिंस वि [अविहिंस] अहिंसक (आचा)।
अविहिंसा स्त्री [अविहिंसा] अहिंसा (सूअ १; २, १)।
अविहीर वि [अप्रतीक्ष] प्रतीक्षा नहीं करने वाला (कुमा)।
अविहेडय वि [अविहेटक] आदर करनेवाला (दस १०, १०)।
अवी देखो **अवि** (उत्त २०, ३८)।
अवीइय अ [अविविच्य] अलग न हो कर (भग १०, २)।
अवीइय [अविचिन्त्य] विचार न कर (भग १०, २)।
अवीय वि [अद्वितीय] १ असाधारण, अनुपम (कुमा)। २ एकाकी, असहाय (विपा १,२)।
अवुक्क सक [वि + ज्ञपय्] विज्ञप्ति करना, प्रार्थना करना। अवुक्कइ (हे ४, ३८)। वकृ. **अवुक्कंत** (कुमा)।
अवुड्ढ वि [अवृद्ध] तरुण, जवान (कुमा)।
अवुग्गह देखो **अविग्गह** (ठा ५, १)।
अवुह देखो **अबुह** (सण)।
अवूह देखो **अवोह** (गाया १, १)।
अवे सक [अव + इ] जानना। अवेसि (विसे १७७३)।
अवे अक [अप+इ] दूर होना, हटना। अवेइ (स २०)। अवेह (मुद्रा १६१)।
अवेक्ख सक [अप + ईक्ष्] अपेक्षा करना। अवेक्खइ (महा)।
अवेक्ख सक [अव+ईक्ष्] अवलोकन करना। अवेक्खाहि (स ३१७) संकृ. **अवेक्खिऊण** (स ५२७)।
अवेक्खा स्त्री [अपेक्षा] अपेक्षा, परवाह (सुर ३, ८४; स ५६२)।
अवेक्खि वि [अपेक्षिन्] अपेक्षा करनेवाला (गउड)।
अवेक्खिय वि [अपेक्षित] जिसकी अपेक्षा हुई हो वह (अभि २१६)।
अवेक्खिय वि [अवेक्षित] अवलोकित (अभि १६६)।
अवेय वि [अपेत] रहित, वर्जित (विसे २२१३)। °**रुइ** वि [°रुचि] रुचि-रहित, निरीह (उप ७२८ टी)।
अवेय, **अवेयग** वि [अवेद, °क] १ पुरुष-वेदादि वेद से रहित (पराग १)। २ मुक्त, मोक्ष-प्राप्त (ठा २, १)।
अवेसि देखो **अंबेसि** (दे १, ८; पाअ)।
अवेह देखो **अवेक्ख** = अव + ईक्ष्। अवेहइ (सूअ ६)।
अवोअड वि [अव्याकृत] अव्यक्त, अस्पष्ट (भास ७६)।
अवोच्छिण्ण देखो **अव्वोच्छिण्ण** (आचा)।
अवोच्छित्ति देखो **अव्वोच्छित्ति** (ठा ५, ३)।
अवोह सक [अप+ऊह्] १ विचार करना; २ निर्णय करना। अवोहए (आवम)।
अवोह पुं [अपोह] १ विकल्पज्ञान, तर्क-विशेष। २ त्याग, वर्जन (उप ६६७)। ३ निर्णय, निश्चय (णंदि)।
अव्वईभाव पुं [अव्ययीभाव] व्याकरण-प्रसिद्ध एक समास (अणु)।
अव्वंग वि [अव्यङ्ग] अक्षत, अखण्ड (वव ७)।
अव्वंग न [अव्यङ्ग] १ पूर्ण अंग, पूरा शरीर। २ वि. अविकल, अन्यून, संपूर्ण; 'परि-हियअव्वंगधोयसियवसणा' (धर्मवि १७, १५)।
अव्वक्खित्त वि [अव्याक्षिप्त] १ विक्षेप-रहित। २ तल्लीन, एकाग्र (उत्त २०)।
अव्वग्ग वि [अव्यग्र] व्यग्रताशून्य, अनाकुल (उत्त १५)।
अव्वत्त, **अव्वत्तय** वि [अव्यक्त] १ अस्पष्ट, अस्फुट उप ७६८ टी; सुर ४, २१४; श्रा २७)। २ छोटी उमर का बालक, बच्चा (निचू १८)। ३ अगीतार्थ, शास्त्र-रहस्यान-भिज्ञ (साधु) (धर्म २; आचा)। ४ पुं. अव्यक्त मत का प्रवर्तक एक जैनाभास मुनि (ठा ७)। ५ न. सांख्य मत में प्रसिद्ध प्रकृति (आवम)। °**मय** न [°मत] एक जैनाभास मत (विसे)।
अव्वत्तव्व वि [अवक्तव्य] १ अवचनीय। २ पुं. कर्मबन्ध विशेष, जब जीव सर्वथा कर्म-बन्धरहित होकर फिर जो कर्मबन्ध करे वह (पव ५, १२)।
अव्वत्तिय देखो **अवत्तिय** (औप; विसे; आवम)।
अव्वभिचारि वि [अव्यभिचारिन्] ऐका-न्तिक (पंचा २, ३७)।
अव्वय न [अव्यय] 'च' आदि निपात (चेइय ६८३)।
अव्वय न [अव्रत] १ व्रत का अभाव (श्रा १६; सम १३२)। २ वि. व्रतरहित (विसे २५४२)।
अव्वय वि [अव्यय] १ अक्षय, अखूट (सुपा ३२१)। २ नित्य, शाश्वत (भग २, १)।
अव्ववसिय वि [अव्यवसित] १ अनिश्चित, संदिग्ध। २ अपराक्रमी (ठा ३, ४)।
अव्वसण वि [अव्यसन] १ व्यसन-रहित। २ पुंन. लोकोत्तर रीति से १२ वाँ दिन (जं ७)।
अव्वह वि [अव्यथ] १ व्यथारहित। २ न. निश्चल ध्यान (ठा ४, १; औप)।
अव्वहिय वि [अव्यथित] १ अपीडित (पंचा ५)। २ निश्चल (बृह १)।
अव्वा स्त्री [अर्वाक्] पर से भिन्न, 'णो हव्वाए णो पाराए' (सूअ २, १, ६)।
अव्वा स्त्री [दे. अम्बा] माता, जननी (दे १, ५; षड्)।
अव्वाइद्ध वि [अव्याविद्ध] १ अविपर्यस्त, अविपरीत। २ न. सूत्र का एक गुण, अक्षरों की उलट-पुलट का अभाव (बृह १; गच्छ २)।

अव्वागड वि [अव्याकृत] अव्यक्त, अस्फुट (आचा; सत्त ६ टी)।

अव्वाण वि [आव्यान] थोड़ा स्निग्ध (ओघ ४८८)।

अव्वाबाह वि [अव्याबाध] १ हरज-रहित, बाधा-वर्जित (आव ३)। २ न. रोग का अभाव (भग १८, १०)। ३ सुख (आवम)। ४ मोक्ष-स्थान, मुक्ति (भग १, १)। ५ पुं. लोकान्तिक देव-विशेष (णाया १, ८)।

अव्वाबाह पुंन [अव्याबाध] एक देवविमान (देवेन्द्र १४५)।

अव्वावड वि [अव्यापृत] १ जो व्यवहार में न लाया गया हो, व्यापार-रहित। २ एक प्रकार का वास्तु (बृह ३)।

अव्वावन्न वि [अव्यापन्न] अविनष्ट, नाश को अप्राप्त (भग १, ७)।

अव्वावार वि [अव्यापार] व्यापार-वर्जित (स ५०)।

अव्वाहय वि [अव्याहत] १ रुकावट-वर्जित (ठा ४,४; सुपा ८६)। २ अनुपहत, आघात-रहित (णंदि)। °**पुव्वावरत्त** न [°पूर्वापरत्व] जिसमें पूर्वापर का विरोध या असंगति न हो ऐसा (वचन) (राय)।

अव्वाहार पुं [अव्याहार] न बोलना, मौन (पाअ)।

अव्वाहिय वि [अव्याहृत] न बुलाया हुआ (जीव ३; आचा)।

अव्विरय वि [अविरत] विरति-रहित (सट्ठि ८)।

अव्वो अ. नीचे के अर्थों में से, प्रकरण के अनुसार, किसी एक अर्थ का सूचक अव्यय—१ सूचना। २ दुःख। ३ संभाषण। ४ अपराध। ५ विस्मय। ६ आनन्द। ७ आदर। ८ भय। ९ खेद। १० विषाद। ११ पश्चात्ताप;
'अव्वो हरंति हिययं,
तहवि न वेसा हवंति जुवईण।
अव्वो किंपि रहस्सं, मुणंति धुत्ता जणब्भहिआ।।
अव्वो सुपहायमिणं,
अव्वो अज्जम्ह सप्फलं जीअं।
अव्वो अइअम्मि तुमे, नवरं जइ सा न
जूरिहिइ।।' (हे २, २०४)।

अव्वोगड वि [अव्याकृत] १ अविशेषित (बृह २)। २ फैलाव-रहित (दसा ३)। ३ नहीं बांटा हुआ। ४ अस्फुट, अस्पष्ट। ५ न. एक प्रकार का वास्तु (बृह ३)।

अव्वोच्छिण्ण वि [अव्युच्छिन्न, अव्यवच्छिन्न] १ आन्तर-रहित, सतत, विच्छेद-वर्जित (वव ७)। २ नित्य। ३ अव्याहत (गउड)।

अव्वोच्छित्ति स्त्री [अव्युच्छित्ति, अव्यवच्छित्ति] १ सातत्य, प्रवाह, बीच में विच्छेद का अभाव, परंपरा से बराबर चला आना (आवम)। °**नय** पुं [°नय] वस्तु को किसी न किसी रूप से स्थायी माननेवाला पक्ष, द्रव्यार्थिक नय (भग ७, ३)।

अव्वोच्छिन्न देखो **अव्वोच्छिण्ण** (ओघ ३२२; स २५६)।

अव्वोयड देखो **अव्वोगड** (भग १०,४; भास ७१)।

अस सक [अश्] व्याप्त करना। असइ, असए (षड्)।

अस अक [अस्] होना। अस्सि; 'हाहा हओहमस्सि त्ति कट्टु' (भग १५)। अंसि (प्राप)। अत्थि (हे ३, १४६; १४७; १४८)। भूका. आसि, आसी (भग; उवा)।

अस सक [अश्] भोजन करना, खाना। असइ, 'भव्वमणोसालूरं नासइ दोसोवि जत्थाही' (सार्ध १०६; भवि)। वकृ. **असंत** (भवि)। कृ. **असियव्व** (सुपा ४३८)।

अस वकृ [असत्] अविद्यमान, असत्; 'दुहओ ण विणस्संति, नो य उप्पज्जए असं' (सूअ १, १, १, १६)।

असइ स्त्री [असृति] १ उलटा रखा हुआ हस्त तल। २ धान्य मापने का एक परिमाण। ३ उससे मापा हुआ धान्य (अणु; णाया १,७)।

असइ स्त्री [दे. असत्त्व] अभाव, अविद्यमानता;
'पढमं जईण दाऊण,
अप्पणा पणमिऊण पारेइ।
असईय सुविहियाणं, भुंजेइ य कयदिसालोओ'
(उवा)।

असइ, **असइं**, **असई** अ [असकृत्] अनेक बार, बारंबार (भवि; आचा; उप ८३३ टी)।

असई स्त्री [असती] १ कुलटा, व्यभिचारिणी स्त्री (सुपा ६)। २ दासी (भग ८,६)। °**पोस** [पुं पोष] धन के लिए दासी, नपुंसक या पशुओं का पालन; 'असईपोसं च वज्जिज्जा' (श्रा २२)। °**पोसणया** स्त्री [°पोषणा] देखो अनन्तरोक्त अर्थ (पडि)।

असउण पुंन [अशकुन] अपशकुन (पंचा ७)।

असंक वि [अशङ्क] १ शङ्का-रहित, असंदिग्ध। २ निडर, निर्भय (आचा; सुर २, २६)।

असंकल वि [अशृङ्खल] शृङ्खला-रहित, अनियन्त्रित (कुमा)।

असंकि वि [अशङ्किन्] संदेह न करने वाला (सूअ १, १, २)।

असंकिलिट्ठ वि [असंक्लिष्ट] १ संक्लेश-रहित। २ विशुद्ध, निर्दोष (औप; पण्ह २,१)।

असंख वि [असंख्य] संख्या-रहित, परिमाण-रहित (सुपा ५६६; जी २७; ४०)।

असंख न [असंख्य] सांख्य मत से भिन्न दर्शन (सुपा ५६६)।

असंखड स्त्रीन [दे] कलह, झगड़ा; 'जत्थ य समणीणमसंखडाइं गच्छम्मि नेव जायंति' (गच्छ ३, ११)। स्त्री. °**डी** (पव १०६)।

असंखड न [दे] कलह, झगड़ा (निचू १)।

असंखडिय वि [दे] कलह करने वाला, झगड़ाखोर (बृह १)।

असंखय देखो **असंख** = असंख्य (सं ८५)।

असंखय वि [असंस्कृत] १ संस्कार-हीन। २ संधान करने के अशक्य (राज)।

असंखिज्ज वि [असंख्येय] गिनती या परिमाण करने के अशक्य (नव ३५)।

असंखिज्जय देखो **असंखेज्जय** (अणु)।

असंखेज्ज देखो **असंखिज्ज** (भग)।

असंखेज्जइ° वि [असंख्येय] असंख्यातवां। °**भाग** पुं [°भाग] असंख्यातवां हिस्सा (औप; भग)।

असंखेज्जय पुंन [असंख्येयक] गणना-विशेष (अणु)।

असंग वि [असङ्ग] १ निस्सङ्ग, अनासक्त (पणह २)। २ पुं. आत्मा (आचा)। ३ मुक्त जीव। ४ न. मोक्ष, मुक्ति (पंचव ३; औप)।

असंगय न [दे] वस्त्र, कपड़ा (दे १,३४)।

असंगहिय वि [असंगृहीत] १ जिसका संग्रह न किया गया हो वह। २ अनाश्रित (ठा ८)।

असंगहिय त्रि [असंग्रहिक] १ संग्रह न करने वाला। २ पुं. नैगम नय का एक भेद (विसे)।

असंगिअ पुं [दे] १ अश्व, घोड़ा। २ वि. अनवस्थित, चञ्चल (दे १, ५५)।

असंघयण वि [असंहनन] संहनन से रहित। २ वज्र, ऋषभ, नाराच आदि प्राथमिक तीन संघयणों से रहित (निचू २०)।

असंजण न [असञ्जन] निःसङ्गता, अनासक्ति (निचू १)।

असंजम पुं [असंयम] १ हिंसा, झूठ आदि सावद्य अनुष्ठान (सूअ १, १३)। २ हिंसा आदि पाप-कार्यों से अनिवृत्ति (धर्म ३)। ३ अज्ञान (आचा)। ४ असमाधि (वव १)।

असंजय वि [असंयत] १ हिंसा आदि पाप कार्यों से अनिवृत्त (सूअ १, १०)। २ हिंसा आदि करने वाला (भग ६,३)। ३ पुं. साधु-भिन्न, गृहस्थ (आचा)।

असंजल पुं [असंज्वल] १ ऐरवत वर्ष के एक जिनदेव का नाम (सम १५३)।

असंजोगि वि [असंयोगिन्] १ संयोग-रहित। २ पुं. मुक्त जीव, मुक्तात्मा (ठा २,१)।

असंत वकृ. [असत्] १ अविद्यमान (नव ३३)। २ झूठ, असत्य (पण्ह १. २)। ३ असुंदर, अचारु (पण्ह २, २)।

असंत देखो **अस** = अश्।

असंत त्रि [अशान्त] शान्तरहित, क्रुद्ध (पण्ह २, २)।

असंत वि [असत्त्व] सत्त्व-रहित, बल-शून्य (पण्ह १, २)।

असंथड वि [दे. असंस्तृत] अशक्त, असमर्थ (आचा; बृह ५)।

असंथरंत वकृ. [दे. असंस्तरत्] १ समर्थ न होता हुआ। २ खोज न करता हुआ (वव ४)। ३ तृप्त न होता हुआ (ओघ १८२)।

असंथरण न [दे. असंस्तरण] १ निर्वाह का अभाव (बृह १)। २ पर्याप्त लाभ का अभाव (पंचव .)। ३ असमर्थता, अशक्त अवस्था (धर्म ३; निचू १)।

असंथरमाण वकृ [दे. असंस्तरमाण] देखो **असंथरंत** (वव ४; ओघ १८१)।

असंधिम वि [असंधिम] संधान-रहित, अखण्ड (बृह ५)।

असंभंत पुं [असंभ्रान्त] प्रथम नरक का छठवाँ नरकेन्द्रक—नरक-स्थान विशेष (देवेन्द्र ४)।

असंभव्व वि [असंभाव्य] जिसकी संभावना न हो सके ऐसा (श्रा १२)।

असंभावणीय वि [असंभावनीय] ऊपर देखो (महा)।

असंलप्प वि [असंलप्य] अनिर्वचनीय (अणु)।

असंलोय पुं [असंलोक] १ अप्रकाश। २ वह स्थान जिसमें लोगों का गमनागमन न हो, भीड़रहित स्थान (आचा)।

असंवर पुं [असंवर] आश्रव, संवर का अभाव (ठा ५, २)।

असंवरीय वि [असंवृत] १ अनाच्छादित। २ नहीं रुका हुआ (कुमा)।

असंवुड वि [असंवृत] असंयत, पाप-कर्म से अनिवृत्त (सूअ १, १, ३)।

असंसइय वि [असंशयित] असंदिग्ध (सूअ २, २)।

असंसट्ठ वि [असंसृष्ट] १ दूसरे से न मिला हुआ (बृह २)। २ लेप-रहित (औप)। ३ स्त्री. पिण्डैषणा का एक भेद (पव ९६)।

असंसत्त वि [असंसक्त] १ अमिलित (उत्त २)। २ अनासक्त (दस ८; उत्त ३)।

असंसय वि [असंशय] १ संशय-रहित (बृह १)। २ क्रिवि. निःसंदेह, नक्की (अभि ११०)।

असंसार पुं [असंसार] संसार का अभाव, मोक्ष (जीव १)।

असंसि वि [अस्रंसिन्] अविनश्वर (कुमा)।

असक्क वि [अशक्य] जिसको न कर सके वह (सुपा ६५१)।

असक्क वि [अशक्त] असमर्थ (कुमा)।

असक्कय वि [असंस्कृत] संस्कार-रहित (पण्ह १, २)।

असक्कय वि [असत्कृत] सत्कार-रहित (पण्ह १, २)।

असक्कणिज्ज वि [अशकनीय] अशक्य (कुमा)।

असगाह, **असग्गह**, **असग्गाह** पुं [असद्ग्रह] १ कदाग्रह (उप ६७२; सुपा १३४)। २ अति-निर्बन्ध, विशेष आग्रह (भवि)।

असच्च न [असत्य] १ झूठ वचन (प्रासू १५१)। २ वि. झूठा (पण्ह १, २)। °**मोस** न [°मृष] झूठ से मिला हुआ सत्य (द्र २२)। °**वाइ** वि [°वादिन्] झूठ बोलने वाला (सम ५०; पउम ११, ३४)। °**ामोस** न [°ामृष] न सत्य और न झूठ ऐसा वचन (आचा)। °**ामोसा** स्त्री [°ामृषा] देखो अनन्तरोक्त अर्थ (पंच १)। °**संध** वि [°संध] १ असत्य-प्रतिज्ञ। २ असत्य अभिप्राय वाला (महा, पण्ह १, २)।

असज्ज, **असज्जमाण** वकृ [असजत्] संग न करता हुआ (आचा; उत्त १४)।

असज्झाइय वि [अस्वाध्यायिक] पठन-पाठन का प्रतिबन्धक कारण (पव २६८)।

असज्झाय पुं [अस्वाध्याय] अनध्याय, वह काल जिसमें पठन-पाठन का निषेध किया गया है (गच्छ ३, ३०)।

असड्ढ वि [अश्रद्ध] श्रद्धारहित (कुमा)।

असढ वि [अशठ] सरल, निष्कपट (सुपा ५५०)। °**करण** वि [°करण] निष्कपट भाव से अनुष्ठान करने वाला (बृह ६)।

असण न [अशन] १ भोजन, खाना (निचू ११)। २ जो खाया जाय वह, खाद्य पदार्थ (पव ४)।

असण पुं [असन] १ बीजक नामक वृक्ष (पण्ण १; णाया १, १; औप; पाअ; कुमा)। २ न. क्षेपण, फेंकना (विसे २७९५)।

असणि पुंस्त्री [अशनि] १ एक प्रकार की बिजली (सुज २०)। २. पुं. एक नरक-स्थान (देवेन्द्र २६)।

असणि पुंस्त्री [अशनि] १ वज्र (पाअ)। २ आकाश से गिरता अग्नि-कण (पण्ण १)। ३ वज्र का अग्नि (जी ६)। ४ अग्नि (स ३३२)। ५ अस्त्रविशेष (स ३८५)। °**प्पह** पुं [°प्रभ] रावण के मामा का नाम (से १२, ६१)। °**मेह** पुं [°मेघ] १ वह वर्षा जिसमें ओले गिरते हैं। २ अति भयंकर वर्षा, प्रलय-मेघ (भग ७, ६)। °**वेग** पुं [°वेग] विद्याधरों का एक राजा (पउम ६, १५७)।

असणी स्त्री [अशनी] एक इन्द्राणी (ठा ४, १)।

असणी स्त्री [अशनी] जिह्वा, जीभ; 'अवखाणसणी कम्माण मोहणं तह वयाण बंभं च' (सुख २, ४२)।

असण्ण वि [असंज्ञ] संज्ञारहित, अचेतन (लहुअ ६)।

असण्णि वि [असंज्ञिन्] १ संज्ञि-भिन्न, मनोज्ञान से रहित (जीव) (ठा २, २)। २ सम्यग्दृष्टि भिन्न, जैनेतर (भग १, २)। °**सुय** न [°श्रुत] जैनेतर शास्त्र (णंदि)।

असत्त वि [अशक्त] असमर्थ (सुर ३, २४४; १०, १७४)।

असत्त वि [असक्त] अनासक्त (आचा)।

असत्त न [असत्त्व] अभाव, असत्ता (णंदि)।

असत्ति स्त्री [अशक्ति] सामर्थ्य का अभाव। °**मत** वि [°मत्] असमर्थ, अशक्त (पउम ६६, ३६)।

असत्थ वि [अस्वस्थ] अतंदुरुस्त, बीमार (सुर ३, १२७)।

असत्थ न [अशस्त्र] १ शस्त्र-भिन्न। २ संयम, निर्दोष अनुष्ठान (आचा)।

असद्द पुं [अशब्द] १ अकीर्त्ति, अपयश (गच्छ २)। २ वि. शब्दरहित (बृह ३)।

असद्ध वि [अश्रद्ध] श्रद्धारहित। स्त्री. °**द्धी** (उप पृ ३६४)।

असन्नि देखो **असण्णि** (भग; जी ४३)।

असबल वि [अशबल] १ अमिश्रित। २ निर्दोष, पवित्र (पण्ह २, १)।

असब्भ वि [असभ्य] अशिष्ट, जंगली (स ६५०)। °**भासि** वि [°भाषिन्] असभ्य-भाषी (सुर ६, २१०)।

असब्भाव पुं [असद्भाव] १ यथार्थता का अभाव, झूठ (पिंड)। २ वि. असत्य, अयथार्थ (उत्त ३; औप)।

असब्भावि वि [असद्भाविन्] झूठा, असत्य (महा)।

असब्भूय वि [असद्भूत] असत्य (भग)।

असम वि [असम] १ असमान, असाधारण (सुर ३, २४)। २ एक, तीन, पांच आदि एकाई संख्या वाला, विषम। °**सर** पुं [°शर] कामदेव (गउड)।

असमवाइ न [असमवायिन्] नैयायिक और वैशेषिक मत प्रसिद्ध कारण-विशेष (विसे २०९६)।

असमंजस वि [असमञ्जस] १ अव्यवस्थित, गैरव्याजबी (आचा; सुर २, १३१; सुपा ६२३; उप १०००)। २ क्रिवि. अव्यवस्थित रूप से (पात्र)।

असमिक्खिय वि [असमीक्षित] अनालोचित, अविचारित (पण्ह १, २)। °**कार** वि [°कारिन्] साहसिक। °**कारिया** स्त्री [°कारिता] साहस कर्म (उप ७६८ टी)।

असरासय वि [दे] निर्दय, निष्ठुर हृदय वाला (दे १, ४०)।

असलील वि [अश्लील] असभ्य भाषा (मोह ८७)।

असव पुं [असु] प्राण, 'विउत्तासवो विअ ठिओ कंचि कालं' (स ३५७)।

असवण्ण वि [असवर्ण] असमान, असाधारण (सण)।

असवार पुं [अश्ववार] घुड़सवार (धर्मवि ४१)।

असह वि [असह] १ असहिष्णु (कुमा; सुपा ६२०)। २ असमर्थ (वव १)। ३ खेद करने वाला (पात्र)।

असहण वि [असहन] असहिष्णु, क्रोधी (पात्र)।

असहाय वि [असहाय] १ सहायरहित (भग)। २ एकाकी (बृह ४)।

असहिज्ज वि [असाहाय्य] १ सहायता-रहित। २ सहायता का अनिच्छुक (उवा)।

असहीण वि [अस्वाधीन] परतन्त्र, पराधीन (दस ८)।

असहु वि [असह] १ असहिष्णु (उव)। २ असमर्थ, अशक्त (ओघ ३६; भा)। ३ बीमार, ग्लान (निचू १)। ४ सुकुमार, कोमल (ठा ३, ३)।

असहेज्ज देखो **असहिज्ज** (भग)।

असागारिय वि [असागारिक] गृहस्थों के आवागमन से रहित स्थान (वव ३)।

असाढभूइ पुं [अषाढभूति] एक जैन मुनि (पिंड ४७४)।

असाढय न [असाढक] तृण-विशेष (पण्ण १, पत्र ३३)।

असाय न [असात] दुःख, पीड़ा (पण्ह १, १); 'रागंधा इह जीवा,
दुल्लहलोयम्मि गाढमणुरत्ता।
जं वेइंति असायं, कत्तो तं हुंदि नरएवि'
(सुर ८, ७६)।
°**वेयणिज्ज** न [°वेदनीय] दुःख का कारण-भूत कर्म (ठा २, ४)।

असार, **असारय** वि [असार, °क] निस्सार, सार-रहित (महा; कुमा)।

असारा स्त्री [दे] कदली-वृक्ष, केला का पेड़ (दे १, १२)।

असालिय पुंस्त्री [दे] सर्प की एक जाति (सूअ २, ३, २४)।

असासय वि [अशाश्वत] अनित्य, विनश्वर (णाया १, १; गा २४७)।

असाहण न [असाधन] असिद्धि (सुर ४, २४८)।

असाहारण वि [असाधारण] अतुल्य, अनुपम (भग; दंस)।

असि पुं [असि] १ खड्ग, तलवार (पात्र)। २ इस नाम की नरकपाल देवों की एक जाति (भग ३, ६)। ३ स्त्री. बनारस की एक नदी का नाम (ती ३८)। °**कुंड** न [°कुण्ड] मथुरा का एक तीर्थ-स्थान (ती ७)। °**घाय** पुं [°घात] तलवार का घाव (पउम ५६, २५)। °**चम्मपाय** न [°चर्मपात्र] तलवार की म्यान, कोश (भग ३, ५)। °**धारा** स्त्री [°धारा] तलवार की धार (उत्त १९)। °**धेणु**, °**धेणुआ** स्त्री [°धेनु, °धेनुका] छुरी (गउड; पात्र)। °**पत्त** न [°पत्र] १ तलवार (विपा १, ६)। २ तलवार के जैसा तीक्ष्ण पत्र (भग ३, ६)। ३ तलवार की पतरी (जीव ३)। ४ पुं. नरकपाल देवों की एक जाति (सम २९)। °**पुत्तगा** स्त्री [°पुत्रिका] छुरी (उप पृ ३३४)। °**मुट्ठि** स्त्री [°मुष्टि] तलवार की मूठ (पात्र)। °**रयण** न [°रत्न] चक्रवर्ती राजा की एक उत्तम तलवार (ठा ७)। °**लट्ठि** स्त्री [°यष्टि] खड्ग-लता, तलवार (विपा १, ३)। °**वण** न [°वन] खड्गाकार पत्ते वाले वृक्षों का जंगल (पण्ह १, १)। °**वत्त** देखो

[°पत्त] (से ३, ४२)। °हर वि [°धर] तलवार-धारक, योद्धा (से ६,१८)। °हारा देखो °धारा (उव)।

असिइ (अप) देखो असीइ (सण)।

असिण न [अशन] भोजन, खाना; 'अग्ग-पिंडं परिट्ठविज्जमाणं पेहाए, पुरा असिणा इवा अवहारा इवा' (आचा २, १, ५, १)।

असित्थ न [असिक्थ] आटा लगे हुए हाथ या बर्तन का कपड़े से छना हुआ धोवन (पडि)।

असिद्ध वि [असिद्ध] १ अनिष्पन्न। २ तर्क-शास्त्र प्रसिद्ध दुष्ट हेतु (विसे २८२४)।

असिय वि [अशित] भुक्त, खादित (पाअ; सुपा २१२)।

असिय वि [असित] १ कृष्ण, श्वेतरहित (पाअ)। २ अशुभ (विसे)। ३ अबद्ध, अ-यन्त्रित (सूअ १, २, १); 'सिया एगे अणु-गच्छंति, असिया एगे अणुगच्छंति' (आचा)। °क्ख पुं [°ाक्ष] यक्ष-विशेष (सण)।

असिय न [दे] दात्र, दाँती (दे १, १४)।

असियव्व देखो अस = अश्।

असिलेसा स्त्री [अश्लेषा] नक्षत्र-विशेष (सम ११)।

असिलोग पुं [अश्लोक] अकीर्त्ति, अजस (सम १२)।

असिव न [अशिव] १ विनाश। २ असुख। ३ देवतादि कृत उपद्रव (ओघ ७)। ४ मारी रोग (वव ४)।

असिविण पुं [अस्वप्न] देव, देवता (प्रामा)।

असिव्व देखो असिय (वव ७; प्राप्र)।

असिसुई स्त्री [अशिश्वी] शिशुरहित स्त्री (प्राकृ २८)।

असिह वि [अशिख] शिखारहित (वव ४)।

असीइ स्त्री [अशीति] संख्या-विशेष, अस्सी, ८० (सम ८८)। °म वि [°तम] अस्सीवाँ, ८० वाँ (पउम ८०, ७४)।

असीइग वि [अशीतिक] अस्सी वर्ष की उम्र वाला (तंदु १७)।

असीम वि [असीमन्] निस्सीम, 'असीमंत-भत्तिराएण' (उप ७२८ टी)।

असील वि [अशील] १ दुःशील, असदा-चारी (पण्ह १, २)। २ न. असदाचार, अब्रह्मचर्य। °मंत वि [°वत्] १ अब्रह्मचारी (ओघ ७७७)। २ असंयत (सूअ १, ७)।

असु पुं. ब. [असु] १ प्राण (स ३८३)। २ न. चित्त। ३ ताप (प्राप्र; वृष ५१)।

असु देखो अंसु (प्राप्र)।

असुइ वि [अशुचि] १ अपवित्र, अस्वच्छ, मलिन (औप; वव ३)। २ न. अमेध्य, विष्ठा (ठा ६; प्रासू १६६)।

असुइ वि [अश्रुति] शास्त्रश्रवण-रहित (भग ७, ६)।

असुईकय वि [अशुचीकृत] अपवित्र किया हुआ (उप ७२८ टी)।

असुग पुं [असुक] देखो असु = असु (हे १, १७७)।

असुज्झंत वि [अदृश्यमान] नहीं दिखाता हुआ, 'अन्नंपि जं असुज्झंतं। भुंजंतएण रत्ति' (पउम १०३, २५)।

असुणि वि [अश्रोतृ] न सुननेवाला, 'अलि-यपयंपिरि अणिमित्तकोवणे असुणि सुणसु मह वयणं' (वज्जा ७२)।

असुद्ध वि [अशुद्ध] १ अस्वच्छ, मलिन। २ न. मैला, अशुचि। °विसोहय पुं [°विशो-धक] भंगी, मेहतर (सुर १६, १६५)।

असुभ देखो असुह = अशुभ (सम ६७; भग)।

असुय वि [अश्रुत] न सुना हुआ (ठा ४, ४)। °णिस्सिय न [°निश्रित] शास्त्र-श्रवण के बिना ही होनेवाली बुद्धि—ज्ञान (णंदि)। °पुव्व वि [°पूर्व] पहले कभी नहीं सुना हुआ (महा; णाया १,१; पउम ६५,१४)।

असुय वि [असुत] पुत्ररहित (उत्त २)।

असुर पुं [असुर] १ दैत्य, दानव (पाअ)। २ देवजाति-विशेष, भवनपति और व्यन्तर देवों की जाति (पण्ह १, ४)। ३ दास-स्था-नीय देव (आउ ३६)। °कुमार पुं [°कुमार] भवनपति देवों की एक अवान्तर जाति (ठा १, १; महा)। °राय पुं [°राज] असुरों का इन्द्र (पि ४००)। °वंदि पुं [°बन्दिन्] राक्षस (से ६; ५०)।

असुरिंद पुं [असुरेन्द्र] असुरों का राजा, इन्द्र-विशेष (णाया १, ८; सुपा ७७)।

असुह न [अशुभ] १ अमंगल, अनिष्ट (सुर ४, १६३)। २ पाप-कर्म (ठा ४, ४)। ३ वि. खराब, असुन्दर (जीव १; कुमा)। °णाम न [°नामन्] अशुभ फल देनेवाला कर्म-विशेष (सम ६७)।

असुह न [असुख] दुःख (ठा ३, ३)।

असूअ सक [असूय्] असूया करना। असू-एहि (मै ७)।

असूया स्त्री [असूचा] १ सूचना का अभाव। २ दूसरे के दोषों को न कह कर अपना ही दोष कहना (निचू १०)।

असूया स्त्री [असूया] असूया, असहिष्णुता (दंस)।

असूरिय वि [असूर्य] १ सूर्यरहित, अन्ध-कारमय स्थान। २ पुं. नरक-स्थान (सूअ १, ५, १)।

असेव्व देखो असिव (प्राप्र)।

असेव्व वि [असेव्य] सेवा के अयोग्य (गउड)।

असेस वि [अशेष] निःशेष, सर्व (प्राप)।

असोअ } पुं [अशोक] १ देव-विशेष (राय असोग } ८१)। २ पुंन. एक देवविमान (देवेन्द्र १४२)। ३ शक्र आदि इन्द्रों का एक आभाव्य विमान (देवेन्द्र २६३)। °वडिंसय पुंन [°ावतंसक] सौधर्म देवलोक का एक विमान (राय ५६)।

असोग पुं [अशोक] १ सुप्रसिद्ध वृक्ष-विशेष (औप)। २ महाग्रह-विशेष (ठा २, ३)। हरा रंग (राय)। ४ भगवान् मल्लिनाथ का चैत्य-वृक्ष (सम १५२)। ५ देव-विशेष (जीव ३)। ६ न. तीर्थ-विशेष (ती १०)। ७ यक्ष-विशेष (विपा १, ३)। ८ वि. शोक-रहित। °चंद पुं [°चन्द्र] १ राजा श्रेणिक का पुत्र, राजा कोणिक (आवम)। २ एक प्रसिद्ध जैनाचार्य (सार्ध ७७)। °ललिय पुं [°ललित] चतुर्थ बलदेव का पूर्व-जन्मीय नाम (सम १५३)। °वण न [°वन] अशोक वृक्षों वाला वन (भग)। °वणिया स्त्री [°वनिका] अशोक वृक्ष वाला बगीचा (णाया १, १६)। °सिरि पुं [°श्री] इस नाम का एक प्रख्यात राजा, सम्राट् अशोक (विसे ८६२)।

असोगा स्त्री [अशोका] १ इस नाम की एक इन्द्राणी (ठा ४, १)। २ भगवान् श्री शीतलनाथ की शासनदेवी (पव २७)। ३ एक नगरी का नाम (पउम २०, १८६)।

असोभण वि [अशोभन] असुन्दर, खराब (पउम ६६, १६)।

असोय देखो **असोग** (भग; महा; रंभा)।

असोय पुं [अश्वयुक्] आश्विन मास (सम २९)।

असोय वि [अशौच] १ शौचरहित (महा)। २ न. शौच का अभाव, अशुचिता। °**वाइ** वि [°वादिन्] अशौच को ही माननेवाला (ओघ ३१८)।

असोयणया स्त्री [अशोचनता] शोक का अभाव (पक्खि)।

असोया देखो **असोगा** (ठा २, ३; संति ६)।

असोल्लिय वि [अपक्व] कच्चा (उवा)।

असोहि स्त्री [अशोधि] १ अशुद्धि। २ विराधना (ओघ ७८८)। °**ठाण** न [°स्थान] १ पाप-कर्म। २ अशुद्धि स्थान। ३ दुर्जन का संसर्ग। ४ अनायतन (ओघ ७६३)।

अस्स न [आस्य] मुख, मुँह (गा ८८६)।

अस्स वि [अस्व] १ द्रव्यरहित, निर्धन। २ २ निर्ग्रन्थ, साधु, मुनि (आचा)।

अस्स पुं [अश्व] १ घोड़ा (उप ७६८ टी)। २ अश्विनी नक्षत्र का अधिष्ठायक देव (ठा २, ३)। ३ ऋषि-विशेष (जं ७)। °**कण्ण** पुं [°कर्ण] १ एक अन्तर्द्वीप। २ इस अन्तर्द्वीप का निवासी (णंदि)। °**कण्णी** स्त्री [°कर्णी] वनस्पति-विशेष (पण्ण १)। °**करण** न [°करण] जहाँ घोड़ा रखने में आता हो वह स्थान, अस्तबल (आचा २, १०, १४)। °**ग्गीव** पुं [°ग्रीव] पहले प्रतिवासुदेव का नाम (सम १५३)। °**तर** पुंस्त्री [°तर] खचड़ (पण्ण १)। °**मुह** पुं [°मुख] १-२ इस नाम का एक अन्तर्द्वीप और उसके निवासी (णंदि; पण्ण १)। °**मेह** पुं [°मेघ] यज्ञ-विशेष, जिसमें अश्व मारा जाता है (अणु)। °**सेण** पुं [°सेन] १ एक प्रसिद्ध राजा, भगवान् पार्श्वनाथ का पिता (पव ११)। २ एक महाग्रह का नाम (चन्द २०)।

°**यर** पुं [°दिर] विद्याधर वंश के एक राजा का नाम (पउम ५, ४२)।

अस्स न [अस्र] १ अश्रु, आँसू। २ रुधिर, खून (प्राकृ २६)।

अस्संख वि [असंख्य] संख्या-रहित (उप १७)।

अस्संगिअ वि [दे] आसक्त (षड्)।

अस्संघयणि वि [असंहननिन्] संहनन रहित, किसी प्रकार के शारीरिक बन्ध से रहित (भग)।

अस्संजम देखो **असंजम** (उव)।

अस्संजय वि [अस्वयत] १ गुरु की आज्ञानुसार चलनेवाला, अस्वच्छंदी (श्रा ३१)।

अस्संजय देखो **असंजय** (उव)।

अस्संदम पुं [अश्वन्दम] अश्व-पालक (सुपा ६४५)।

अस्सच्च देखो **असच्च**; 'सुरिणो हवउ वयणमस्सच्चं' (उप १४६ टी)।

अस्सण्णि देखो **असण्णि** (विसे ५१६)।

अस्सत्थ पुं [अश्वत्थ] वृक्ष-विशेष, पीपल (नाट)।

अस्सत्थ वि [अस्वस्थ] रोगी, बीमार (सुर ३, १५१; माल ६५)।

अस्सन्नि देखो **असण्णि** (सुर १४,६६; कम्म ४, २; ३)।

अस्सम पुं [आश्रम] १ स्थान, जगह। २ ऋषियों का स्थान (अभि ६६; स्वप्न २५)।

अस्समिअ वि [अश्रमित] श्रमरहित; अनभ्यासी (भग)।

अस्सवार देखो **असवार** (सम्मत्त १४२)।

अस्सस अक [आ + श्वस्] आश्वासन लेना। हेकृ. **अस्ससिदुं** (शौ) (अभि १२०)।

अस्साइय वि [आस्वादित] जिसका आस्वादन किया गया हो वह (दे)।

अस्साएमाण देखो **अस्साय** = आस्वादय्।

अस्साद सक [आ + सादय्] प्राप्त करना। अस्सादेंति; अस्सादेस्सामो (भग १५)।

अस्साद सक [आ + स्वादय्] आस्वादन करना।

अस्सादण देखो **अस्सायण** (सुज्ज १०, १६)।

अस्सादिय वि [आसादित] प्राप्त किया हुआ (भग १५)।

अस्साय देखो **अस्साद** = आ + सादय्।

अस्साय देखो **अस्साद** = आ + स्वादय्। वकृ. **अस्साएमाण** (भग १२, १)। कृ. **अस्सायणिज्ज** (णाया १, १२)।

अस्साय देखो **असाय** (कम्म २,७; भग)।

अस्सायण पुं [आश्वायन] १ अश्व ऋषि का संतान (जं ७)। २ अश्विनी नक्षत्र का गोत्र (इक)।

अस्सावि वि [आस्राविन्] झरता हुआ, टपकता हुआ, सच्छिद्र; 'जहा अस्साविणि नावं जाइअंधो दुरूहए' (सूअ १, १,२)।

अस्सास सक [आ + श्वासय्] आश्वासन देना, दिलासा देना। अस्सासअदि (शौ) (पि ४९०)। अस्सासि (उत्त २,४०; पि ४९१)।

अस्सासण पुं [आश्वासन] एक महाग्रह (सुज्ज २०)।

अस्सि स्त्री [अश्रि] १ कोण, घर आदि का कोना (ठा ६)। २ तलवार आदि का अग्रभाग—धार (उप पृ ६६)।

अस्सि पुं [अश्विन्] अश्विनी नक्षत्र का अधिष्ठायक देव (ठा २, ३)।

अस्सिणी स्त्री [अश्विनी] इस नाम का एक नक्षत्र (सम ८)।

अस्सिय वि [आश्रित] आश्रय-प्राप्त, 'विरागमेगमस्सिओ' (वसु; ठा ७; संथा १८)।

अस्सु पुंन [अश्रु] आँसू, 'अस्सू' (संक्षि १७)।

अस्सु (शौ) न [अश्रु] आँसू (अभि ५९; स्वप्न ८५)।

अस्सुंक वि [अशुल्क] जिसकी चुंगी या फीस माफ की गई हो वह (उप ५६७ टी)।

अस्सुद (शौ) देखो **असुय** = अश्रुत (अभि १६३)।

अस्सुय वि [अस्मृत] याद नहीं किया हुआ (भग)।

अस्सेसा देखो **असिलेसा** (सम १७; विसे ३४०८)।

अस्सोई स्त्री [आश्वयुजी] आश्विन मास की पूर्णिमा (चंद १०)।

अस्सोई स्त्री [आश्वयुजी] आश्विन मास की अमावस (सुज्ज १०, ६ टी) देखो **आसोया**।

अस्सोकंता स्त्री [अश्वोत्क्रान्ता] संगीत-शास्त्र प्रसिद्ध मध्यम ग्राम की पांचवीं मूर्च्छना (ठा ७)।

अस्सोत्थ देखो **अस्सत्थ** (पि ७४; १५२; ३०६)।

अस्सोयव्व वि [अश्रोतव्य] सुनने के अयोग्य (सुर १४, २)।

अह अ [अथ] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ अब, बाद (स्वप्न ४३; दं ३१; कुमा)। २ अथवा, और;
'छिज्जउ सीसं अह होउ बंधणं चयउ सव्वहा लच्छी।
पडिवन्नपालणे सुपुरिसाण जं होइ तं होउ ॥'
(प्रासू ३)।
३ मंगल (कुमा)। ४ प्रश्न। ५ समुच्चय। ६ प्रतिवचन, उत्तर (बृह १)। ७ विशेष (ठा ७)। ८ यथार्थता, वास्तविकता (विसे १२७६)। ९ पूर्वपक्ष (विसे १७८३)। १०-११ वाक्य की शोभा बढ़ाने के लिए और पाद-पूर्त्ति में भी इसका प्रयोग होता है (सूअ १, ७; पंचा १६)।

अह न [अहन्] दिवस, दिन (श्रा १४; पाअ)।

अह अ [अधस्] नीचे (सुर २, ३८)। °लोग पुं [°लोक] पाताल-लोक (सुपा ४०)। °त्थ वि [°स्थ] नीचे रहा हुआ, निम्न-स्थित (पउम १०२, ६५)।

अह स [अदस्] यह, वह (पाअ)।

अह न [दे] दुःख (दे १, ६)।

अह न [अघ] पाप (पाअ)।

अह° देखो **अहा** (हे १,२४५; कुमा)। °क्कम, °क्कमेणो अ [°क्रम] क्रम के अनुसार, अनुक्रम से (ओघ ५ भा; स ६)। °क्खाय, °खाय न [°ख्यात] निर्दोष चारित्र, परिपूर्ण संयम (ठा ५,२; नव २६; कुमा)। °क्खायसंजय वि [°ख्यातसंयत] परिपूर्ण संयम वाला (भग २५, ७)। °च्छंद देखो **अहाछंद** (सं...)। °त्थ वि [°स्थ] ठीक-ठीक रहा हुआ, यथास्थित (ठा ९, ३)। °त्थ वि [°र्थ] वास्तविक (ठा ५, ३)। °प्पहाण अ [°प्रधान] प्रधान के हिसाब से (भग १५)।

अहइं अ [अथकिम्] स्वीकार-सूचक अव्यय—हाँ, अच्छा (नाट; प्रयौ ५)।

अहंकार पुं [अहंकार] अभिमान, गर्व (सूअ १, ६; स्वप्न ८२)।

अहंकारि वि [अहंकारिन्] अभिमानी, गर्विष्ठ (गउड)।

अहंणिस न [अहर्निश] रात-दिन, सर्वदा (पिंग)।

अहकम्म देखो **अहेकम्म** (पिंड १३९)।

अहण वि [अधन] निर्धन, धनरहित (विसे २८१२)।

अहण्णिस न [अहर्निश] रात-दिन, निरन्तर (नाट)।

अहत्ता अ [अधस्तात्] नीचे (भग)।

अहन्न वि [अधन्य] अप्रशस्य, हतभाग्य (सुर २, ३७)।

अहन्निस देखो **अहण्णिस** (सुपा ४६२)।

अहम वि [अधम] अधम, नीच (कुमा)।

अहमंति वि [अहमन्तिन्] अभिमानी, गर्विष्ठ (ठा १०)।

अहमहमिआ, **अहमहमिगया**, **अहमहमिगा** स्त्री [अहमहमिका] मैं इससे पहले हो जाऊं ऐसी चेष्टा, अत्युत्कण्ठा (गा ५८०; सुपा ५४; १३२; १४८)।

अहमिंद पुं [अहमिन्द्र] १ उत्तम-श्रेणीय पूर्ण स्वाधीन देवजाति विशेष, ग्रैवेयक और अनुत्तर विमान के निवासी देव (इक)। २ अपने को इन्द्र समझने वाला, गर्विष्ठ; 'संपइ पुण रायाणो नरिंद ! सव्वेवि अहमिंदा' (सुर १, १२६)।

अहम्म देखो **अधम्म** (सूअ १, १, २; भग; नव ६; सुर २,४४; सुपा २५८; प्रासू १३६)।

अहम्म वि [अधर्म्य] धर्मच्युत, धर्मरहित, गैरव्याजबी (सण)।

अहम्माणि वि [अहम्मानिन्] अभिमानी (श्रावम)।

अहम्मि वि [अधर्मिन्] धर्म रहित, पापी (सुपा १७२)।

अहम्मिट्ठ देखो **अधम्मिट्ठ** (भग १२, २; राय)।

अहम्मिय वि [अधार्मिक] अधर्मी, पापी (विपा १, १)।

अहय वि [अहत] १ अनुबद्ध, अव्यवच्छिन्न (ठा ८, पत्र ४१८)। २ अक्षत, अखण्डित (सूअ २, २)। ३ जो दूसरी तरफ लिया गया हो (चंद १६)। ४ नया, नूतन (भग ८, ६)।

अहर वि [दे] अशक्त, असमर्थ (दे १, १७)।

अहर पुं [अधर] १ होठ, ओष्ठ (गांदि)। २ वि. नीचे का, नीचला (पण्ह १, ३)। ३ नीच, अधम (पण्ह १, २)। ४ दूसरा, अन्य (प्रामा)। °गइ स्त्री [°गति] अधोगति, दुर्गति, नीच गति; 'अहरगइं निंति कम्माइं' (पिंड)।

अहरिय वि [अधरित] तिरस्कृत (सुपा ४७)।

अहरी स्त्री [अधरी] पेषण-शिला, जिस पर मसाला वगैरह पीसा जाता है वह पत्थर, सिलवट (उवा)। °लोट्ट पुं [°लोष्ट] जिससे पीसा जाता है वह पत्थर, लोढ़ा (उवा)।

अहरीकय वि [अधरीकृत] तिरस्कृत, अवगणित (सुपा ४)।

अहरीभूय वि [अधरीभूत] तिरस्कृत,
'उयरेण धरंतीए, नररयणमिमं महप्पहं देवि !
अहरीभूयमसेसं, जयंपि तुह रयणगब्भाए'
(सुपा ३५)।

अहरुट्ठ पुंन [अधरोष्ठ] नीचे का होठ (पण्ह १, ३; हे १; ८४; षड्)।

अहरेम देखो **अहिरेम**। अहरेमइ (हे ४, १६९)।

अहरेमिअ वि [पूरित] पूरा किया हुआ (कुमा)।

अहल वि [अफल] निष्फल, निरर्थक (प्रासू १३५; रंभा)।

अहलंद न [यथालन्द] पाँच रात का समय (पव ७०)।

अहलंदि देखो **अहालंदि** (पव ७०)।

अहव देखो **अहवा** (हे १, ६७)।

अहवइ (अप) देखो **अहवा** (कुमा)।

अहवण, **अहवा** अ [अथवा] १ वाक्यालंकार में प्रयुक्त किया जाता अव्यय (अणु; सूअ २, २)। २ या, अथवा (बृह १; निचू १; पंचा ३; हे १, ६७)।

अहव्व देखो **अभव्व** (गा ३६०)।

अहव्वण पुं [अथर्वन्] चौथा वेद-शास्त्र (औप)।

अहव्वा स्त्री [दे] असती, कुलटा स्त्री (दे १, १८)।

अहह अ [अहह] इन अर्थों का सूचक

अव्यय—१ आमन्त्रण। २ खेद। ३ आश्चर्य। ४ दुःख। ५ आधिक्य, प्रकर्ष (हे २, २१७; श्रा १४; कप्पू; गा ६५६)।

अहा° अ [**यथा**] जैसे, माफिक, अनुसार (हे १, २४५)। °**छंद** वि [°**च्छन्द**] १ स्वच्छन्दी, स्वैरी (उप ८३३ टी)। २ न. मरजी के अनुसार (वव २)। °**जाय** वि [°**जात**] १ नग्न, प्रावरण-रहित (हे १, १४५)। २ न. जन्म के अनुसार। ३ जैन साधुओं में दीक्षा काल के परिमाण के अनुसार किया जाता वन्दन—नमस्कार (धर्म २)। °**णुपुव्वी** स्त्री [°**नुपूर्वी**] यथाक्रम, अनुक्रम (णाया १, १; उप १, ८)। °**तच्च** न [°**तत्त्व**] तत्त्व के अनुसार (भग २, १)। °**तच्च** न [°**तथ्य**] सत्य-सत्य (सम १६)। °**पडिरूव** वि [°**प्रतिरूप**] १ उचित, योग्य (श्रौप)। २ न. यथायोग्य (विपा १, १)। °**पवत्त** वि [°**प्रवृत्त**] १ पूर्व की तरह ही प्रवृत्त, अपरिवर्तित (णाया १, ९)। २ न. आत्मा का परिणाम-विशेष (स ४७)। °**पवित्तिकरण** न [°**प्रवृत्तिकरण**] आत्मा का परिणाम-विशेष (कम्म ९)। °**बायर** वि [°**बादर**] निस्सार, सार-रहित (णाया १, १)। °**भूय** वि [°**भूत**] तात्त्विक, वास्तविक (ठा १, १)। °**राइणिय**, °**रायणिय** न [°**रात्निक**] यथा-ज्येष्ठ, बड़े के क्रम से (णाया १, १; आचा)। °**रिय** न [**ऋजु**] सरलता के अनुसार (आचा)। °**रिह** न [°**र्ह**] यथोचित (ठा २, १)। २ वि. उचित, योग्य (धर्म १)। °**रीय** न [°**रीत**] १ रीति के अनुसार। २ स्वभाव के माफिक (भग ५, २)। °**लंद** पुं [°**लन्द**] काल का एक परिमाण, पानी से भींजा हुआ हाथ जितने समय में सूख जाय उतना समय (कप्प)। °**वगास** न [°**वकाश**] अवकाश के अनुसार (सूअ २, ३)। °**वच्च** वि [°**पत्य**] पुत्र-स्थानीय (भग ३, ७)। °**संथड** वि [°**संस्तृत**] शयन के योग्य (आचा)। °**संविभाग** पुं [°**संविभाग**] साधु को दान देना (उवा)। °**सच्च** न [°**सत्य**] वास्तविकता, सचाई (आचा)। °**सत्ति** न [°**शक्ति**] शक्ति के अनुसार (पंसू ४)। °**सुत्त** न [°**सूत्र**] आगम के अनुसार (सम ७७)। °**सुह** न [°**सुख**] इच्छानुसार (णाया १, १; भग)। °**सुहुम** वि [°**सूक्ष्म**] सारभूत (भग ३, १)। देखो **अह°**।

अहालंद वि [**यथालन्द**] यथानुज्ञात (काल), इच्छानुसार (समय) (आचा २, ७, १, २)।

अहालंदि पुं [**यथालन्दिन्**] 'यथालन्द' अनुष्ठान करने वाला मुनि (पव ७०)।

अहासंखड वि [**दे**] निष्कम्प, निश्चल (निचू २)।

अहासल वि [**अहास्य**] हास्य-रहित (सुपा ६१०)।

अहाह अ [**अहाह**] देखो **अहह** (हे २, २१७)।

अहि देखो **अभि** (गउड; पाअ; पंचव ४)।

अहि अ [**अधि**] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ आधिक्य, विशेषता; 'अहिगंध, अहिमास'। २ अधिकार, सत्ता; 'अहिगय'। ३ ऐश्वर्य, 'अहिट्ठाण'। ४ ऊँचा, ऊपर, 'अहिट्ठा'।

अहि पुं [**अहि**] १ सर्प, साँप (पणण १; प्रासू १६; ३६; १०५)। २ शेष नाग (पिंग)। °**च्छत्ता** स्त्री [°**च्छत्रा**] नगरी-विशेष (णाया १, १६; ती ७)। °**मड** पुंन [°**मृतक**] साँप का मुर्दा (णाया १, ६)। °**वइ** पुं [°**पति**] शेष नाग (अच्चु ६०)। °**विंछिअ** पुं [°**वृश्चिक**] सर्प के मूत्र से उत्पन्न होने वाली वृश्चिक जाति (कुमा)।

अहिअल न [**दे**] क्रोध, गुस्सा (दे १, ३६; षड्)।

अहिआअ न [**अभिजात**] कुलीनता, खानदानी (गा ३८)।

अहिआइ स्त्री [**अभिजाति**] कुलीनता (षड्)।

अहिआर पुं [**दे**] लोक-यात्रा, जीवन-निर्वाह (दे १, २६)।

अहिउत्त वि [**दे**] व्याप्त, खचित (गउड)।

अहिउत्त वि [**अभियुक्त**] १ विद्वान्, पण्डित। २ उद्यत, उद्योगी (पाअ)। ३ शत्रु से घिरा हुआ (वेणी १२३ टि)।

अहिऊर सक [**अभि + पूरय्**] पूर्ण करना, व्याप्त करना। कर्म. अहिऊरिज्जंति (गउड)।

अहिऊल सक [**दह्**] जलाना, दहन करना। अहिऊलइ (हे ४, २०८; षड्; कुमा)।

अहिओग पुं [**अभियोग**] १ संबन्ध (गउड)। २ दोषारोपण (स २२६)। देखो **अभिओअ** (भवि)।

अहिंद पुं [**अहीन्द्र**] १ सर्पों का राजा, शेष नाग (अच्चु १)। २ श्रेष्ठ सर्प (कुमा)। °**उर** न [°**पुर**] वासुकि-नगर। °**उरणाह** पुं [°**पुरनाथ**] विष्णु, अच्युत (अच्चु २६)।

अहिंसग वि [**अहिंसक**] हिंसा न करने वाला (श्रोघ ७४७)।

अहिंसण न [**अहिंसन**] अहिंसा (धर्म १)।

अहिंसय देखो **अहिंसग** (पणह २, १)।

अहिंसा स्त्री [**अहिंसा**] दूसरे को किसी प्रकार से दुःख न देना (निचू २; धर्म ३; सूअ १, ११)।

अहिंसिय वि [**अहिंसित**] अमारित, अपीड़ित (सूअ १, १, ४)।

अहिकंख देखो **अभिकंख**. वकृ. **अहिकंखंत** (पंचव ४)।

अहिकंखिर वि [**अभिकाङ्क्षिन्**] अभिलाषी, इच्छुक (सण)।

अहिकखि देखो **अहिकंखिर** (सूअ १, १२, २२)।

अहिकय वि [**अधिकृत**] जिसका अधिकार चलता हो वह, प्रस्तुत (विसे १५८)।

अहिकरण देखो **अहिगरण** (निचू ४)।

अहिकरणी देखो **अहिगरणी** (ठा ८)।

अहिकार देखो **अहिगार** (उत्त १४, १७)।

अहिकारि देखो **अहिगारि** (रंभा)।

अहिकिच्च अ [**अधिकृत्य**] अधिकार कर, उद्देश्य कर (आचू १)।

अहिक्खण न [**दे**] उपालंभ, उलहना (दे १, ३५)।

अहिक्खित्त वि [**अधिक्षिप्त**] १ तिरस्कृत। २ निन्दित। ३ स्थापित। ४ परित्यक्त। ५ क्षिप्त (नाट)।

अहिक्खिव सक [**अधि + क्षिप्**] १ तिरस्कार करना। २ फेंकना। ३ निन्दना। ४ स्थापित करना। ५ छोड़ देना। अहिक्खिवइ (उव)। अहिक्खिवाहि (स ३२६)। वकृ. **अहिक्खिवंत** (पउम ६५, ४४)।

अहिक्खेव पुं [अधिक्षेप] १ तिरस्कार। २ स्थापन। ३ प्रेरणा (नाट)।

अहिखिव देखो अहिक्खिव वकृ. **अहिखिवंत** (स ५७)।

अहिग देखो अहिय = अधिक (विसे १९४३ टी)।

अहिखीर सक [दे] १ पकड़ना। २ आघात करना। अहिखीरइ (भवि)।

अहिगंध वि [अधिगन्ध] अधिक गन्ध वाला (गउड)।

अहिगम सक [अधि + गम्] १ जानना। २ निर्णय करना। ३ प्राप्त करना। कृ. **अहिगम्म** (सम्म १६७)।

अहिगम सक [अभि + गम्] १ सामने जाना २ आदर करना। कृ. **अहिगम्म** (सण)।

अहिगम पुं [अधिगम] १ ज्ञान (विसे ९०८)। 'जीवाईणमहिगमो मिच्छत्तस्स खओवसमभावे' (धर्म २)। २ उपलम्भ, प्राप्ति (दे ७, १४)। ३ गुरु आदि का उपदेश (विसे २६७५)। ४ सेवा, भक्ति (सम ५१)। ५ न. गुरु आदि के उपदेश से होनेवाली सद्धर्म-प्राप्ति—सम्यक्त्व (सुपा ६४८)। °रुइ स्त्री [°रुचि] १ सम्यक्त्व का एक भेद। २ सम्यक्त्व वाला (पव १४५)।

अहिगम देखो अभिगम (औप; से ८, ३३; गउड)।

अहिगमण न [अधिगमन] १ ज्ञान। २ निर्णय। ३ प्राप्ति, उपलम्भ (विसे)।

अहिगमय वि [अधिगमक] जनानेवाला, बतलानेवाला (विसे ५०३)।

अहिगमिय वि [अधिगत] १ ज्ञात। २ निश्चित (सुर १, १८१)।

अहिगम्म देखो अहिगम = अधि + गम्।

अहिगम्म देखो अहिगम = अभि + गम्।

अहिगय वि [अधिकृत] १ प्रस्तुत (रयण ३६)। २ न. प्रस्ताव, प्रसंग (राज)।

अहिगय वि [अधिगत] १ उपलब्ध, प्राप्त (उत्त १०)। २ ज्ञात (दे ६, १४८)। ३ पुं. गीतार्थ मुनि, शास्त्राभिज्ञ साधु (वव १)।

अहिगर पुं [दे] अजगर (जीव १)।

अहिगरण पुंन [अधिकरण] १ युद्ध, लड़ाई (उप पृ २६८)। २ असंयम, पाप-कर्म से अनिवृत्ति (उप ८७२)। ३ आत्म-भिन्न बाह्य वस्तु (ठा २, १)। ४ पाप जनक क्रिया (णाया १, ५)। ५ आधार (विसे ८४)। ६ भेंट, उपहार (बृह १)। ७ कलह, विवाद (बृह १)। ८ हिंसा का उपकरण, 'मोहंधेण य रइयं हलउक्खलमुसलपमुहमहिगरणं' (विवे ६१)। °कड, °कर वि [°कर] कलहकारक (सूअ १, २, २; आचा)। °किरिया स्त्री [°क्रिया] पाप-जनक कृति, दुर्गति में ले जानेवाली क्रिया (पण्ह १, २)। °सिद्धंत पुं [°सिद्धान्त] आनुषंगिक सिद्धि करनेवाला सिद्धान्त (सूअ १, १२)।

अहिगरणी स्त्री [अधिकरणी] लोहार का एक उपकरण (भग १६, १)। °खोडि स्त्री [°खोटि] जिसपर अधिकरणी रखी जाती है वह काष्ठ (भग १६, १)।

अहिगरणिया } स्त्री [आधिकरणिकी] देखो
अहिगरणीया } अहिगरण-किरिया (सम १०; ठा २, १; नव १७)।

अहिगरी [दे] अजगरिन, स्त्री अजगर (जीव २)।

अहिगार पुं [अधिकार] १ वैभव, संपत्ति; 'नियअहिगारणुरूवं जम्मणमहिमं विहिस्सामो' (सुपा ४१)। २ हक, सत्ता (सुपा ३५०)। ३ प्रस्ताव, प्रसंग (विसे ४८७)। ४ ग्रन्थ-विभाग (वसु)। ५ योग्यता, पात्रता (प्रासू १३५)।

अहिगारि } वि [अधिकारिन्] १ अमल-
अहिगारिय } दार, राज-नियुक्त सत्ताधीश; 'ता तप्पुराहिगारी समागओ तत्थ तम्मि खणे' (सुपा ३५०; श्रा २७)। २ पात्र, योग्य (प्रासू १३५; सण)।

अहिगिच्च अ [अधिकृत्य] अधिकार करके (उवर ३६; ६६)।

अहिघाय पुं [अभिघात] आस्फालन, आघात (गउड)।

अहिछत्ता स्त्री [अहिच्छत्रा] नगरी-विशेष, कुरुजंगल देश की प्राचीन राजधानी (सिरि ७८)।

अहिजाइ स्त्री [अभिजाति] कुलीनता (प्राप्र)।

अहिजाण सक [अभि + ज्ञा] पहिचानना। भवि. अहिजाणिस्सदि (शौ) (पि ५३४)।

अहिजाय वि [अभिघात] कुलीन (भग ६, ३३)।

अहिजुंज देखो अभिजुंज। संकृ. **अहिजुंजिय** (भग)।

अहिजुत्त देखो अभिजुत्त (प्रबो ८४)।

अहिज्ज सक [अधि + इ] पढ़ना, अभ्यास करना। अहिज्जइ (अंत २)। वकृ. **अहिज्जंत, अहिज्जमाण** (उप १६६ टी; उवा)। संकृ. **अहिज्जित्ता, अहित्ता** (उत्त १; सूअ १,१२) हेकृ. **अहिज्जिउं** (दस ४)।

अहिज्ज वि [अधिज्य] धनुष की डोरी पर चड़ाया हुआ (बाण) (दे ७, ६२)।

अहिज्ज } वि [अभिज्ञ] जानकार, निपुण
अहिज्जग } (पि २६६; प्राकृ; दस)।

अहिज्जण न [अध्ययन] पठन, अभ्यास (विसे ७ टी)।

अहिज्जाण (शौ) देखो **अहिण्णाण** (प्राकृ ८७)।

अहिज्जाविय वि [अध्यापित] पाठित, पढ़ाया हुआ (उप पृ ३३)।

अहिज्जिय वि [अधीत] पठित, अभ्यस्त (सुर ८, १२१; उप ५३० टी)।

अहिज्झिय वि [अभिध्यित] लोभ-रहित, अलुब्ध (भग ६,३)।

अहिट्ठ सक [अधि + ष्ठा] करना। अहिट्ठए (दस ६, ४, २)।

अहिट्ठग वि [अधिष्ठक] अधिष्ठाता, विधायक, कारक;

'नासंदीपलिअंकेसु, न निसिज्जा न पीढए।
निग्गंथापडिलेहाए, बुद्धवुत्तमहिट्ठगा'
(दस ६, ५५)।

अहिट्ठण देखो अहिट्ठाण (पंचा ७, ३३)।

अहिट्ठा सक [अधि + स्था] १ ऊपर चलना। २ आश्रय लेना। ३ रहना, निवास करना। ४ शासन करना। ५ करना। ६ हराना। ७ आक्रमण करना। ८ ऊपर चड़ बैठना। ९ वश करना। अहिट्ठेइ (निचू ५); 'ता अहिट्ठेहि इमं रज्जं' (स २०४)। अहिट्ठेज्जा (पि २५२; ४६६)। वकृ. **अहिट्ठंत** (निचू ५)। कवकृ. **अहिट्ठिज्जमाण** (ठा ४, १)। संकृ. **अहिट्ठेइत्ता** (निचू १२)। हेकृ. **अहिट्ठित्तए** (बृह ३)।

अहिट्ठाण न [अधिष्ठान] १ बैठना (निचू ५)। २ ग्राश्रयण (सूत्र १, २, ३)। ३ मालिक बनना (ग्राचा)। ४ स्थान, ग्राश्रय (स ४६६)।

अहिट्ठायग वि [अधिष्ठायक] ग्रध्यक्ष, ग्रधिपति (कुप्र २१६)।

अहिट्ठावण न [अधिष्ठापन] ऊपर रखना (निचू ५)।

अहिट्ठिय वि [अधिष्ठित] १ ग्रध्यासित (णाया १, १४)। २ ग्रधीन किया हुग्रा (णाया १, १४)। ३ ग्राक्रान्त, ग्राविष्ट (ठा ५, २)।

अहिठाण न [अधिष्ठान] ग्रपान-प्रदेश (पव १३५)।

अहिडुय वि [दे. अभिद्रुत] पीड़ित, 'ग्रहिडुयं पीडिग्रं परद्धं च' (पाग्र)।

अहिणंद देखो **अभिणंद**। वकृ. **अहिणंदमाण** (पउम ११, १२०) कवकृ. **अहिणंदिज्जमाण, अहिणंदीअमाण** (नाट; पि ५६३)।

अहिणंदण देखो **अभिणंदण** (पउम २०,३०; भवि)।

अहिणंदि वि [अभिनन्दिन्] ग्रानन्द मानने वाला (स ६७७)।

अहिणंदिय देखो **अभिणंदिय** (पउम ८, १२३; स १४)।

अहिणय देखो **अभिणय** (कप्पू; सण)।

अहिणव पुं [अभिनव] १ सेतुबन्ध काव्य का कर्ता राजा प्रवरसेन (से १,६)। २ वि. नूतन, नया (णाया १, १; सुपा ३३०)।

अहिणवेमाण देखो **अहिणी**।

अहिणवेमाण देखो **अहिणु**।

अहिणाण देखो **अहिण्णाण** (भवि)।

अहिणिबोह पुं [अभिनिबोध] ज्ञान-विशेष, मतिज्ञान (पणण २६)।

अहिणिवस सक [अभिनि + वस्] बसना, रहना। वकृ. **अहिणिवसमाण** (मुद्रा २३१)।

अहिणिविट्ठ वि [अभिनिविष्ट] ग्राग्रह-ग्रस्त (स २७३)।

अहिणिवेस पुं [अभिनिवेश] ग्राग्रह, हठ (स ६२३; ग्रभि ६५)।

अहिणिवेसि वि [अभिनिवेशिन्] ग्राग्रही (पि ४०५)।

अहिणी स्त्री [अहि] नागिन (वज्जा ११४)।

अहिणी देखो **अभिणी**। वकृ. **अहिणवेमाण** (सुर ३, १५०)।

अहिणील वि [अभिनील] हरा, हरा रंग वाला (गउड)।

अहिणु सक [अभि + नु] स्तुति करना, प्रशंसना। वकृ. **अहिणवेमाण** (सुर ३,७७)।

अहिण्ण वि [अभिन्न] भेदरहित, ग्रपृथग्भूत (गा २६५; ३८०)।

अहिण्णाण न [अभिज्ञान] चिह्न, निशानी (ग्रभि १३)।

अहिण्णु वि [अभिज्ञ] निपुण, ज्ञाता (हे १, ५६)।

अहितत्त वि [अभितप्त] तापित, संतापित (उत्त २)।

अहित्ता देखो **अहिज्ज** = ग्रधि + इ।

अहिदायग वि [अभिदायक] देने वाला, दाता (सुपा ५४)।

अहिदेवया स्त्री [अधिदेवता] ग्रधिष्ठाता देव (सुपा ६०; कप्पू)।

अहिद्दव सक [अभि + द्रु] हैरान करना। ग्रहिद्दवंति (स ३६३)। भवि. ग्रहिद्दविस्सइ (स ३६६)।

अहिद्दुय वि [अभिद्रुत] हैरान किया हुग्रा (स ५१४)।

अहिधाव सक [अभि + धाव्] दौड़ना, सामने दौड़ कर जाना। वकृ. **अहिधावंत** (से १३, २६)।

अहिनाण } देखो **अहिण्णाण** (श्रा १६; सुपा
अहिन्नाण } २५०)।

अहिनिवेस देखो **अहिणिवेस** (स १२५)।

अहिपच्चुअ सक [ग्रह्] ग्रहण करना। ग्रहिपच्चुग्रइ (हे ४, २०६; षड्)। ग्रहिपच्चुअंति (कुमा)।

अहिपच्चुअ सक [आ + गम्] ग्राना। ग्रहिपच्चुग्रइ (हे ४, १६३)।

अहिपच्चुइअ वि [आगत] ग्रायात (कुमा)।

अहिपच्चुइअ न [दे] ग्रनुगमन, ग्रनुसरण (दे १, ४६)।

अहिपड सक [अभि + पत्] सामने ग्राना। ग्रहिपडंति (पव १०६)।

अहिपास सक [अधि + दृश्] १ ग्रधिक देखना। २ समान रूप से देखना। ग्रहिपासए (सूग्र १, २, ३, १२)।

अहिप्पाय देखो **अभिप्पाय** (महा; कप्पू)।

अहिप्पेय देखो **अभिप्पेय** (उप १०३१ टी; स ३४)।

अहिभव देखो **अभिभव** (गउड)।

अहिमंजु पुं [अभिमन्यु] ग्रर्जुन के एक पुत्र का नाम (कुमा)।

अहिमंतण वि [अभिमन्त्रण] मन्त्रित करना, मन्त्र से संस्कारना (भवि)।

अहिमंतिअ वि [अभिमन्त्रित] मन्त्र से संस्कृत (महा)।

अहिमज्जु }
अहिमण्णु } देखो **अहिमंजु** (कुमा; षड्)।
अहिमन्नु }

अहिमय वि [अभिमत] संमत, इष्ट (स २००)।

अहिमयर पुं [अहिमकर] सूर्य, रवि (पाग्र)।

अहिमर पुं [अभिमर] धनादि के लोभ से दूसरे को मारने का साहस करने वाला (सुर १, ६८)। २ गजादिघातक (विसे १७६४)।

अहिमाण पुं [अभिमान] गर्व, ग्रहंकार (प्रासू १७; सण)।

अहिमाणि वि [अभिमानिन्] ग्रभिमानी, गर्विष्ठ (स ४३१)।

अहिमार पुं [अभिमार] वृक्ष-विशेष, 'एगं ग्रहिमारदारुग्रं ग्रग्गी' (उत्तनि ३)।

अहिमास } पुं [अधिमास, °क] ग्रधिक
अहिमासग } मास (ग्रवु १; निचू २०)।

अहिमुह वि [अभिमुख] संमुख, सामने रहा हुग्रा (से १, ४४; पउम ८, १६७; गउड)।

अहिमुहिहूअ } वि [अभिमुखीभूत] सामने
अहिमुहीहूअ } ग्राया हुग्रा (पउम १२, १०५ ४५, ६)।

अहिय वि [अधिक] १ ज्यादा, विशेष (ग्रौप; जी २७; स्वप्न ४०)। २ क्रिवि. बहुत, ग्रत्यन्त (महा)।

अहिय वि [अहित] ग्रहितकर, शत्रु, दुश्मन (महा; सुपा ६६)।

अहिय वि [अधीत] पठित, ग्रभ्यस्त; 'ग्रहियसुग्रो पडिवज्जिय एगल्लविहारपडिमं सो' (सुर ४, १५४)।

अहिया स्त्री [अधिका] भगवान् श्रीनमिनाथ की प्रथम शिष्या (सम १५२)।

अहियाइ देखो **अहिजाइ** (षड्)।

अहियाय देखो **अहिजाय** (पात्र)।

अहियार पुं [अभिचार] शत्रु के वध के लिए किया जाता मन्त्रादि-प्रयोग (गउड)।

अहियार देखो **अहिगार** (स ५४३; पाअ; मुद्रा २६६; सट्ठि ७ टी; भवि; दे ७, ३२)।

अहियारि देखो **अहिगारि** (दे ६, १०८)।

अहियास सक [अधि+आस्, अधि+सह्] सहन करना, कष्टों को शान्ति से झेलना। अहियासइ, अहियासए, अहियासेइ (उव; महा)। कर्म. अहियासिज्जंति (भग)। वकृ. **अहियासेमाण** (आचा)। संकृ. **अहियासित्ता, अहियासेत्तु** (सूत्र १, ३, ४; आचा) हेकृ. **अहियासित्तए** (आचा)। कृ. **अहियासियव्व** (उप ५४३)।

अहियास वि [अध्यास, अधिसह] सहिष्णु (बृह १)।

अहियासण न [अध्यासन अधिसहन] सहन करना (उप ५३६; स १६२)।

अहियासण न [अधिकाशन] अधिक भोजन, अजीर्ण (ठा ६)।

अहियासिय वि [अध्यासित, अधिषोढ] सहन किया हुआ (आचा)।

अहिर पुं [आभीर] अहीर, गोवाला (गा ८११)।

अहिरम देखो **अभिरम**। वकृ. **अहिरमंत** (समु १५४)।

अहिरम अक [अभि+रम्] क्रीड़ा करना, संभोग करना। अहिरमदि (शौ) (नाट)। हेकृ. **अभिरमिदुं** (शौ) (नाट)।

अहिरम्म वि [अभिरम्य] सुन्दर, मनोहर (भवि)।

अहिराम वि [अभिराम] सुन्दर, मनोहर (पात्र)।

अहिरामिण वि [अभिरामिन्] आनन्द देने वाला (सण)।

अहिराय पुं [अधिराज] १ राजा (बृह ३)। २ स्वामी, पति (सण)।

अहिराय न [अधिराज्य] राज्य, प्रभुत्व (सट्ठि ७)।

अहिरिअ देखो **अहिरीअ** (पिंड ६३१)।

अहिरीअ वि [अह्रीक] निर्लज, बेशरम (हे २, १०४)।

अहिरीअ वि [दे] निस्तेज, फीका (दे १, २७)।

अहिरीमाण वि [दे. अहारिन्, अह्रीमनस्] १ अमनोहर, मन को प्रतिकूल। २ अलजा-कारक, 'एगयरे अन्नयरे अभिन्नाय तितिक्ख-माणे परिव्वए, जे य हिरी, जे य अहिरीमाणा' (आचा १, ६, २)।

अहिरूव वि [अभिरूप] १ सुन्दर, मनोहर (अभि २११)। २ अनुरूप, योग्य (विक्र ३८)।

अहिरेम सक [पूर्] पूरा करना, पूर्त्ति करना। अहिरेमइ (हे ४, १६६)।

अहिरेइअ वि [दे] पूर्ण (षड्)।

अहिरोहण न [अधिरोहण] ऊपर चढ़ना, आरोहण (मा ४०)।

अहिरोहि वि [अधिरोहिन्] ऊपर चढ़ने वाला (अभि १७०)।

अहिरोहिणी स्त्री [अधिरोहिणी] निःश्रेणी, सीढ़ी (दे ८, २६)।

अहिल वि [अखिल] सकल, सब (गउड; रंभा)।

अहिलंख, अहिलंघ, अहिलक्ख } सक [काङ्क्ष्] चाहना, अभि-लाष करना। अहिलंखइ, अहि-लंघइ (हे ४, १९२); 'अहिल-क्खंति मुअंति अ रइवावारं विलासिणीहिअ-आइं' (से १०, ५७)।

अहिलक्ख वि [अभिलक्ष्य] अनुमान से जानने योग्य (गउड)।

अहिलव सक [अभि+लप्] संभाषण करना, कहना। कवकृ. **अहिलप्पमाण** (स ८४)।

अहिलस सक [अभि+लष्] अभिलाष करना, चाहना। अहिलसइ (महा)। वकृ. **अहिलसंत** (नाट)।

अहिलसिय वि [अभिलषित] वाञ्छित (सुर ४, २४८)।

अहिलसिर वि [अभिलाषिन्] अभिलाषी, इच्छुक (दे ६, ५८)।

अहिलाण न [अभिलान] मुख का बन्धन विशेष (णाया १, १७)।

अहिलाव पुं [अभिलाप] शब्द, आवाज (ठा २, ३)।

अहिलास पुं [अभिलाष] इच्छा, वाञ्छा, चाह (गउड)।

अहिलासि वि [अभिलाषिन्] चाहनेवाला (नाट)।

अहिलिअ न [दे] १ पराभव। २ क्रोध, गुस्सा (दे १, ५७)।

अहिलिह सक [अभि+लिख्] १ चिन्ता करना। २ लिखना। अहिलिहंति (मुद्रा १०८)। संकृ. **अहिलिहिअ** (वेणी २५)।

अहिलोयण न [अभिलोकन] ऊँचा स्थान (पण्ह २, ४)।

अहिलोल वि [अभिलोल] चपल, चञ्चल (गउड)।

अहिलोहिआ स्त्री [अभिलोभिका] लोलुपता, तृष्णा (से ३,४७)।

अहिल्ल वि [दे] धनवान्, धनी (दे १, १०)।

अहिल्लिया स्त्री [अहिल्या] एक सती स्त्री (पण्ह १, ४)।

अहिव [अधिप] १ ऊपरी, मुखिया (उप ७२८ टी)। २ मालिक, स्वामी (गउड)। ३ राजा, भूप; 'दुट्ठाहिवा दंडपरा हवंति' (गोय ८)।

अहिवइ वि [अधिपति] ऊपर देखो (णाया १, ८; गउड; सुर ६, ६२)।

अहिवंजु देखो **अहिमंजु** (षड्)।

अहिवंदिय वि [अभिवन्दित] नमस्कृत (स ६४१)।

अहिवज्जु देखो **अहिमंजु** (षड्)।

अहिवड अक [अधि+पत्] क्षीण होना। वकृ. 'एवं निस्सारे माणुसत्तणे जीविए अहि-वडंते' (तंदु ३३)।

अहिवड सक [अधि+पत्] आना। वकृ. **अहिवडंत** (राज)।

अहिवड्ढ देखो **अभिवड्ढ** अहिवड्ढामो (कप्प)।

अहिवड्ढि, अहिवद्धि } स्त्री [अभिवृद्धि] उत्तर प्रोष्ठ-पदा नक्षत्र का अधिष्ठाता देवता (सुज्ज १०, १२; जं ७—पत्र ४९८)।

अहिवड्ढिय वि [अभिवर्धित] बढ़ाया हुआ (स २४७)।

अहिवण्ण वि [दे] पीला और लाल रंग वाला (दे १, ३३)।

अनिवण्णु } देखो अहिमंजु (षड्; कुमा।
अहिवन्नु }

अहिवल्ली स्त्री [अहिवल्ली] नाग-वल्ली (सिरि ८७)।

अहिवस सक [अधि+वस्] निवास करना, रहना। वकृ. अहिवसंत (स २०८)।

अहिवाइय वि [अभिवादित] अभिनन्दित (स ३१४)।

अहिवायण देखो अभिवायण (भवि)।

अहिवाल वि [अधिपाल] पालक, रक्षक (भवि)।

अहिवास पुं [अधिवास] बासना, संस्कार (दे ७, ८७)।

अहिवासण न [अधिवासन] संस्काराधान (पंचा ८)।

अहिवासि वि [अधिवासिन्] निवासी (चेइय ६८७)।

अहिवासिअ वि [अधिवासित] सजाया हुआ, तय्यार किया हुआ (दस ३, १ टी)।

अहिविण्णा स्त्री [दे] कृत-सापत्न्या स्त्री, उपपत्नी (दे १, २५)।

अहिसंका स्त्री [अभिशङ्का] भ्रम, संदेह (पउम ४२, २१)।

अहिसंका स्त्री [अभिशङ्का] भय, डर (सूअ १, १२, १७)।

अहिसंजमण न [अभिसंयमन] नियन्त्रण (गउड)।

अहिसंधारण न [अभिसंधारण] अभिप्राय (पंचा ६, ३६)।

अहिसंधि पुंस्त्री [अभिसंधि] अभिप्राय, आशय (पण्ह १, २; स ४६३)।

अहिसंधि पुं [दे] बारंबार (दे १, ३२)।

अहिसक्कण पुंन [अभिष्वष्कण] संमुख गमन (पव २)।

अहिसर सक [अभि+सृ] १ प्रवेश करना। २ अपने दयित—प्रिय के पास जाना। प्रयो., कर्म. अभिसारीअदि (शौ) (नाट)। हेकृ. अभिसारिदुं (शौ) (नाट)।

अहिसरण न [अभिसरण] प्रिय के समीप गमन (स ५३३)।

अहिसरिअ वि [अभिसृत] १ प्रिय के समीप गत। २ प्रविष्ट (आवम)।

अहिसहण न [अभिसहन] सहन करना (ठा ६)।

अहिसाअ देखो अक्कम = आ + कम्। अहिसाअइ (प्राकृ ७३)।

अहिसाम वि [अभिशाम] काला, कृष्ण वर्ण वाला (गउड)।

अहिसाय वि [दे] पूर्ण, पूरा (दे १, २०)।

अहिसारण न [अभिसारण] १ आनयन (से १०, ६२)। २ पति के लिए संकेत स्थान पर जाना (गउड)।

अहिसारिअ वि [अभिसारित] आनीत (से १, १३)।

अहिसारिआ स्त्री [अभिसारिका] नायक को मिलने के लिए संकेत स्थान पर जानेवाली स्त्री (कुमा)।

अहिसिअ न [दे] १ अनिष्ट ग्रह की आशंका से खेद करना—रोना (दे १, ३०)। २ वि. अनिष्ट ग्रह से भयभीत (षड्)।

अहिसिंच देखो अभिसिंच। अहिसिंचइ (महा)। संकृ. अहिसिंचिऊण (स ११६)।

अहिसिंचण न [अभिषेचन] अभिषेक (सम १२५)।

अहिसित्त देखो अभिसित्त (महा; सुर ८, ११६)।

अहिसेअ देखो अभिसेअ (सुपा ३७; नाट)।

अहिसोढ वि [अधिसोढ] सहन किया हुआ (उप १४७ टी)।

अहिस्संग पुं [अभिष्वङ्ग] आसक्ति (नाट)।

अहिहय वि [अभिहत] १ आघात-प्राप्त (से ५, ७७)। २ मारित, व्यापादित (से १४, १२)।

अहिहर सक [अभि+हृ] १ लेना। २ उठाना। ३ अक. शोभना, विराजना। ४ प्रतिभास होना, लगना;

'वीयाभरणा अकयण्णमंडणा
अहिहरंति रमणीओ।
सुण्णाओ व कुसुमफलंतरम्मि
सहयारवल्लीओ।
इह हि हलिद्दाहयदविडसा-
मलीगंडमंडलानीलं।
फलमसअलपरिणामावलंबि
अहिहरइ चूयाण' (गउड)।

अहिहर न [दे] १ देवकुल, पुराना देवमन्दिर। २ वल्मीक (दे १, ५७)।

अहिहव सक [अभि + भू] पराभव करना, जीतना। अहिहवंति (स १६८) कर्म. अहिहवीयंति (स ६६८)।

अहिहाण न [दे. अभिधान] वर्णन, प्रशंसा (दे १, २१)।

अहिहाण देखो अभिहाण (स १६५; गउड; सुर ३, २५; पाअ)।

अहिहू देखो अहिहव। कवकृ. अहिहूअमाण (अभि ३७)।

अहिहूअ वि [अभिभूत] पराभूत, परास्त (दे १, १५८)।

अही सक [अधि + इ] पढ़ना। कर्म. अहीयइ (विसे ३१६६)।

अही स्त्री [अही] नागिन, सर्पिणी (जीव २)।

अहीकरण न [अधिकरण] कलह, झगड़ा (निचू १०)।

अहीगार देखो अहिगार, 'सेसेसु अहीगारो, उवगरणसरीरमुक्खेसु' (आचानि २९४)।

अहीण वि [अधीन] आयत्त, अधीन (पण्ह २, ४)।

अहीण वि [अ-हीन] अन्यून, पूर्ण (विपा १, १; उवा)।

अहीय देखो अहिय = अधिक (पव १६४)।

अहीय वि [अधीत] पठित, अभ्यस्त; 'वेया अहीया ण भवंति ताणं' (उत्त १४, १२; णाया १; १४; सं ७८)।

अहीरग वि [अहीरक] तन्तुरहित (फलादि) (जी १२)।

अहीरु वि [अभीरु] निडर, निर्भीक (भवि)।

अहीलास देखो अहिलास; 'देहम्मि अहिलासो' (तंदु ४१)।

अहीसर पुं [अधीश्वर] परमेश्वर (प्रामा)।

अहुआसेय वि [अहुताशेय] अग्नि के अयोग्य (गउड)।

अहुणा अ [अधुना] अभी, इस समय, आजकल (ठा ३, ३; नाट)।

अहुणि (पै) देखो अहुणा (प्राकृ १२७)।

अहुलण वि [अमार्जक] अनाशक (कुमा)।

अहुल्ल वि [अफुल्ल] अविकसित (कुमा)।
अहुवंत वकृ [अभवत्] न होता हुआ (कुमा)।
अहूण देखो अहीण = अहीन (कुमा)।
अहूव वि [अभूत] जो न हुआ हो °पुव्व वि [°पूर्व] जो पहले कभी न हुआ हो (कुमा)।
अहे अ [अधस्] नीचे (आचा)। °**कम्म** न [कर्मन्] आधाकर्म, भिक्षा का एक दोष (पिंड)। °**काय** पुं [°काय] शरीर का नीचला हिस्सा (सूअ १, ४, १)। °**चर** वि [°चर] बिल आदि में रहने वाले सर्प वगैरह जन्तु (आचा)। °**तारग** पुं [°तारक] पिशाच-विशेष (पराण १)। °**दिसा** स्त्री [°दिक्] नीचे की दिशा (आचा)। °**लोग** पुं [°लोक] पाताल-लोक (ठा २, २)। °**वाय** पुं [°वात] नीचे बहनेवाला वायु (पराण १)। २ अपान-वायु, पर्दन (आवम)। °**वियड** वि [°विकट] भित्यादिरहित स्थान, खुला स्थान; 'तंसि भगवं अपडिन्ने अहेवियडे अहियासए दविए' (आचा)। °**सत्तमा** स्त्री [°सप्तमी] सातवीं या अन्तिम नरकभूमि (सम ४१; णाया १, १६; १६)। देखो अहो = अधस्।
अहे देखो अह = अथ (भग १, ६)।
अहेउ पुं [अहेतु] १ सत्य हेतु का विरोधी, हेत्वाभास (ठा ५, १)। २ वि. कारणरहित, नित्य (सूअ १, १, १)। °**वाय** पुं [°वाद] आगमवाद, जिसमें तर्क—हेतु को छोड़कर केवल शास्त्र ही प्रमाण माना जाता हो ऐसा वाद (सम्म १४०)।
अहेउय वि [अहेतुक] हेतुवर्जित, निष्कारण (पउम ६३, ४)।
अहेकम्म पुंन [अधःकर्मन्] १ अधोगति में ले जाने वाला कर्म। २ भिक्षा का आधाकर्म दोष (पिंड ६५)।
अहेसणिज्ज वि [यथैषणीय] संस्काररहित, कोरा; 'अहेसणिज्जाइं वत्थाइं जाएज्जा' (आचा)।
अहेसर पुं [अहरीश्वर] सूर्य, सूरज (महा)।
अहो देखो अह = अधस् (सम ३६; ठा २, २; ३, १; भग; णाया १, १; पउम १०२, ८१; आव ३)। °**करण** न [°करण] कलह, झगड़ा (निचू १०)। °**गइ** स्त्री [°गति] १ नरक या तिर्यञ्च-योनि। २ अवनति (पउम ८०, ४६)। °**गामि** वि [°गामिन्] दुर्गति में जानेवाला (सम १५३; श्रा ३३)। °**तरण** न [°तरण] कलह, झगड़ा (निचू १०)। °**मुह** वि [°मुख] अधोमुख, अवनत मुख, लज्जित (सुर २, १५८; ३, १३५; सुपा २४२)। °**लोइय** वि [°लौकिक] पाताल लोक से संबन्ध रखने-वाला (सम १४२)। °**हि** वि [°अवधि] १ नीचे दर्जा का अवधिज्ञान वाला (राय)। २ पुंस्त्री. नीचे दर्जा का अवधिज्ञान, अवधिज्ञान का एक भेद (ठा २, २)।
अहो अ [अहनि] दिवस में, 'अहो य राम्रो य सिवाभिलासिणो' (पउम ३१; १२८; पण्ह २, १)।
अहो अ [अहो] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ विस्मय, आश्चर्य। २ खेद, शोक। ३ आमन्त्रण, संबोधन। ४ वितर्क। ५ प्रशंसा। ६ असूया, द्वेष (हे २, २१७; आचा; गउड)। °**दाण** न [°दान] आश्चर्य-कारक दान (उत्त २; कप्प)। °**पुरिसिगा**, °**पुरिसिया** स्त्री [°पुरुषिका] गर्व, अभिमान (स १२३; २८८)। °**विहार** पुं [°विहार] संयम का आश्चर्यजनक अनुष्ठान (आचा)।
अहो अ [अहो] दीनता-सूचक अव्यय (अणु १६)।
अहो° पुंन [अहन्] दिन, दिवस (पिंग)। °**णिस, निस, निसि** न [°निश] रात और दिन, दिन-रात; 'णिरए णेरइयाणं अहोणिसं पच्चमाणाणं' (सूअ १, ५, १; श्रा ५०), 'अंतो अहोनिसिस्स उ' (विसे ८७३)। °**रत्त** पुं [°रात्र] १ दिन और रात्रि परिमित काल, आठ प्रहर (ठा २, ४); 'तिणिण अहोरत्ता पुण न खामिया कयंतेणं' (पउम ४३, ३१)। २ चार-प्रहर का समय (जो २)। °**राइया** स्त्री [°रात्रिकी] ध्यानप्रधान अनुष्ठान-विशेष (पंचा १८; आव ४; सम २१)। °**राइंदिय** न [°रात्रिन्दिव] दिनरात (भग; औप)।
अहोरण न [दे] उत्तरीय वस्त्र, चादर (दे १, २५; गा ७७१)।

इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवे अयाराइसद्दसंकलणो णाम पढमो तरंगो समत्तो।

आ

आ पुं [आ] १ प्राकृत वर्णमाला का द्वितीय स्वर-वर्ण (प्रामा)। इन अर्थों का सूचक अव्यय—२ अ. मर्यादा, सीमा; 'आसमुद्दं' (गउड; विसे ८७४)। ३ अभिविधि, व्याप्ति; 'आमूलसिरं फलिहथंभाओ' (कुमा; विसे ८७४)। ४ थोड़ापन, अल्पता; 'आणीलकक्करुद्दंतुरं वरणं' (गउड); 'आअंब' (से ६, ३१; विसे १२३५)। ५ समन्तात्, चारों ओर; 'अणुकंडलमा विवइएणसरस-कवरीविलंघियंसम्मि' (गउड; विसे ८७५)। ६ अधिकता, विशेषता; 'आदीण' (सूअ १,५)। ७ स्मरण, याद (षड्)। ८ विस्मय, आश्चर्य (ठा ५)। ९-१० क्रियाशब्द के योग में अर्थविस्तृति और विपर्यय; 'आरुहइ', 'आगच्छंत' (षड्; कुमा)। ११ वाक्य की शोभा के लिए भी इसका प्रयोग होता है (णाया १,२)। १२ पादपूर्ति में प्रयुक्त किया जाता अव्यय (षड् २, १, ७६)।

आ अ [आ] नीचे, अधः (राय ३५, ३६)।
आ अ [आस्] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ खेद (गा ६२६)। २ दुःख। ३ गुस्सा, क्रोध (कप्पू)।
आ सक [या] जाना। 'अव्वो ण आमि छेत्तं' (गा ८२१)।
आअ वि [दे] १ अत्यंत, बहुत। २ दीर्घ, लम्बा। ३ विषम, कठिन। ४ न. लोह, लोहा। ५ मुसल, मूषल (दे १, ७३)।
आअ वि [आगत] आया हुआ, 'पत्थंति आअरोसा' (से १२, ६८; कुमा)।
आअअ वि [आगत] आया हुआ (से ३, ४, १२, १८; गा ३०१)।
आअअ वि [आयत] लम्बा, विस्तीर्ण (से ११, ११);
'मरगयसूईविद्धं व मोत्तिअं पिअइ आअअग्गीवो।
मोरो पाउसआले तणग्गलग्गं उअअबिंदुं' (गा ३६४)।
आअंछ सक [कृष्] १ खींचना। २ जोतना, चास करना। ३ रेखा करना। आअंछइ (षड्)।
आअंतव्व देखो **आगम**=आ + गम्।
आअंतुअ देखो **आगंतुय** (स्वप्न २०; अभि १२१)।
आअंपिअ देखो **आकंपिय** (से १०, ५१)।
आअंब वि [आताम्र] थोड़ा लाल (से ६,३१; सुर ३, ११०)।
°**आअंब** पुं [कादम्ब] हंस, पक्षि-विशेष (से ६, ३१)।
आअक्ख सक [आ + चक्ष्] कहना, बोलना, उपदेश करना। आयक्खाहि (भग)। कर्म. आअक्खीअदि (शौ) (नाट)। भूकृ. आअक्खिद (शौ) (नाट)।
आअच्छ देखो **आगच्छ**। आअच्छइ (षड्)। संकृ. **आअच्छिअ, आअच्छिऊण** (नाट; पि ५८१; ५८४)।
आअड्ड अक [दे] परवश होकर चलना। आअड्डइ (दे १, ६६)।
आअड्ड अक [व्या + पृ] व्यापृत होना, काम में लगना। आअड्डइ (सण; षड्)। आअड्डेइ (हे ४, ८१)।
आअड्डिअ वि [दे] परवशचलित, दूसरे की प्रेरणा से चला हुआ (दे १, ६८)।
आअड्डिअ वि [व्यापृत] कार्य में लगा हुआ (कुमा)।
आअण्णण देखो **आयन्नण** (गा ६५६)।
आअत्ति देखो **आयइ** (पिंग)।
आअद देखो **आगय** (प्राकृ १२; संक्षि ६)।
आअम देखो **आगम** (अचु ७; अभि १८४; गा ४७६; स्वप्न ४८; मुद्रा ८३)।
आअमण देखो **आगमण** (से ३, २०; मुद्रा १८७)।
आअर सक [आ + दृ] आदर करना, सत्कार करना। आअरइ (षड्)।
आअर न [दे] १ उदूखल, ऊखल। २ कूर्च (दे १, ७४)।
आअल्ल पुं [दे] १ रोग, बीमारी (दे १, ७५; पाअ)। २ वि. चंचल, चपल (दे १,७५)। देखो **आयल्लया**।
आअल्लि, आअल्ली स्त्री [दे] झाड़ी, लताओं से निबिड प्रदेश (दे १, ६१)।
आअव्व अक [वेप्] काँपना। आअव्वइ (षड्)।
आआमि देखो **आगामि** (अभि ८१)।
आआस देखो **आयंस** (षड्)।
आआसतअ [दे] देखो **आयासतल** (षड्)।
आइ सक [आ + दा] ग्रहण करना, लेना। आइएज्जा (सूअ १,७,२६)। आइयंति (भग)। कर्म. आइयइ (कस)। संकृ. **आइत्तूण, आयइत्ता, आइत्तु** (आचा; सूअ १, १२; पि ५७७)। प्रयो. आइयावेंति (सूअ २,१)। कृ. **आइयव्व** (कस)।
आइ पुं [आदि] १ प्रथम, पहला (सुर २, १३२)। २ वगैरह, प्रभृति (जी ३)। ३ समीप, पास। ४ प्रकार, भेद। ५ अवयव, अंश। ६ प्रधान, मुख्य; 'इअ आसंसंति निसीह! सिहदत्ताइणो दिआ तुज्झ' (कुमा; सूअ १, १५)। ७ उत्पत्ति (सम्म ६५)। ८ संसार, दुनया (सूअ १, ७)। °**गर** वि [°कर] १ आदि प्रवर्त्तक (सम १)। २ पुं. भगवान् ऋषभदेव (पउम २८,३६)। °**गुण** पुं [°गुण] सहभावी गुण (आव ४)। °**णाह** पुं [°नाथ] भगवान् ऋषभदेव (आवम)। °**तित्थयर** पुं [°तीर्थंकर] भगवान् ऋषभदेव (णंदि)। °**देव** पुं [°देव] भगवान् ऋषभदेव (सुर २, १३२)। °**म** पुं [°म] प्रथम, आद्य, पहला (आव ५)। °**मूल** न [°मूल] मुख्य कारण (आचा) °**मोक्ख** पुं [°मोक्ष] संसार से छुटकारा, मोक्ष। २ शीघ्र ही मुक्त होने वाली आत्मा; 'इत्थीओ जे ण सेवंति आइमोक्खा हि ते जणा' (सूअ १,७)। °**राय** पुं [°राज] भगवान् ऋषभदेव (ठा ६)। °**वराह** पुं [°वराह] कृष्ण, नारायण (से ७, २)।
आइ वि [आदिन्] खानेवाला (पंचा १८, ३६)।
आइ स्त्री [आजि] संग्राम, लड़ाई (संथा)।
आइअंतिय देखो **अच्चंतिय** (भग १२, ६)।
आइं अ [दे] वाक्य की शोभा के लिए प्रयुक्त किया जाने वाला अव्यय (भग ३, २)।
आइंखगा, आइंखणिया, आइंखिणिया स्त्री [दे] १ देवता-विशेष, कर्ण-पिशाचिका देवी (पव २;७३ टी—पत्र १८२; बृह १)। २ डोमिनी, चांडाली (बृह १)।
आइंग न [दे] वाद्य-विशेष (पउम ३, ८७; ६६, ६)।
आइंच देखो **आयंच**। आइंचइ (उवा)।
आइंच देखो **अक्कम**=आ + क्रम्। आइंचइ (प्राकृ ७३)।
आइंचवार पुं [आदित्यवार] रविवार (कुप्र ४११)।
आइंचिय वि [आदित्यिक] आदित्य-संबन्धी (सूअनि ८ टी)।
आइंछ देखो **आअंछ**। आइंछइ (हे ४,१८७)।
आइक्ख सक [आ + चक्ष्] कहना, उपदेश देना, बोलना; आइक्खइ (उवा)। वकृ. **आइक्खमाण** (णाया १,१२)। हेकृ. **आइक्खित्तए** (उवा)।
आइक्खग वि [आख्यायक] कहनेवाला, वक्ता (पण्ह २, ४)।
आइक्खण न [आख्यान] कथन, उपदेश (बृह ३)।
आइक्खिय वि [आख्यात] उक्त, उपदिष्ट (स ३२)।
आइक्खिया स्त्री [आख्यायिका] १ वार्त्ता, कहानी (णाया १, १)। २ एक प्रकार की मैली विद्या, जिससे चाएडालिनी भूत-काल आदि की परोक्ष बातें कहती है (ठा ६)।
आइग्ग वि [आविग्न] उद्विग्न, खिन्न (पाअ)।

आइग्घ सक [आ + घ्रा] सूँघना। आइग्घइ, आइग्घाइ (षड्)। हेकृ. **आइग्घिउं** (कुमा)।

आइच्च अ [दे] कदाचित्, कोईबार (पण्ण १७—पत्र ४८५)।

आइच्च पुं [आदित्य] १ सूर्य, सूरज, रवि (सम ५६)। २ लोकान्तिक देव-विशेष (णाया १, ८)। ३ न. देवविमान-विशेष। ४ पुं. तन्निवासी देव (पव)। ५ वि. आद्य, प्रथम (सुज्ज २०)। ६ सूर्य-संबन्धी; 'आइच्चे णं मासे' (सम ५६)। °**गइ** पुं [°गति] राक्षस वंश के एक राजा का नाम (पउम ५,२६१)। °**जस** पुं [°यशस्] भरत चक्रवर्ती का एक पुत्र, जिससे इक्ष्वाकु वंश की शाखारूप सूर्यवंश की उत्पत्ति हुई थी (पउम ५,३; सुर २, १३४)। °**पभ** न [°प्रभ] इस नाम का एक नगर (पउम ५,८२)। °**पीढ** न [°पीठ] भगवान् ऋषभदेव का एक स्मृतिचिह्न—पाद-पीठ (आवम)। °**रक्ख** पुं [°रक्ष] इस नाम का लङ्का का एक राजपुत्र (पउम ५,१६६)। °**रय** पुं [°रजस्] वानर वंश का एक विद्याधर राजा (पउम ८, २३४)।

आइज्ज देखो आएज्ज (नव १५)।

आइज्जमाण वकृ [आर्द्रीक्रियमाण] आर्द्र किया जाता, भीजाया जाता (आचा)।

आइज्झमाण देखो आढा = आ + दृ।

आइट्ठ वि [आदिष्ट] १ उक्त, उपदिष्ट (सुर ४, १०१)। २ विवक्षित (सम्म ३८)।

आइट्ठ वि [आविष्ट] अधिष्ठित, आश्रित (कस)।

आइट्ठि स्त्री [आदिष्टि] धारणा (ठा ७)।

आइड्ढि स्त्री [आत्मर्द्धि] आत्मा की शक्ति, आत्मीय सामर्थ्य (भग १०, ३)।

आइड्ढिय वि [आत्मर्द्धिक] आत्मीय शक्ति-संपन्न (भग १०, ३)।

आइड्ढिय वि [आकृष्ट] खींचा हुआ (हम्मीर १७)।

आइण्ण देखो **आइन्न** = (दे) (तंदु २०)।

आइण्ण देखो **आइन्न** (औप; भग ७, ८; हे ३, १३४)।

आइत्त वि [आदीप्त] थोड़ा प्रकाशित—ज्वलित (णाया १, १)।

आइत्त वि [आयत्त] अधीन, वशीभूत; 'तुज्झ सिरी जा परस्स आइत्ता' (जीवा १०)।

आइत्तु वि [आदातृ] ग्रहण करने वाला (ठा ७)।

आइत्तूण देखो **आइ** = आ + दा।

आइत्थ न [आतिथ्य] अतिथि-सत्कार (प्राकृ २१)।

आइदि स्त्री [आकृति] आकार (प्राप्र; स्वप्न २०)।

आइद्ध वि [आविद्ध] १ प्रेरित (से ७,१०)। २ स्पृष्ट, छूआ हुआ (से ३, ३५)। ३ पहना हुआ, परिहित (आक ३८)।

आइद्ध वि [आदिग्ध] व्याप्त (णाया १, १)।

आइन्न वि [आकीर्ण] १ व्याप्त, भरा हुआ (सुर १, ४६; ३, ७१)। २ पुं. वस्त्र दायक कल्पवृक्ष (ठा १०)।

आइन्न वि [आचीर्ण] आचरित, विहित (आचा; चैत्य ४६)।

आइन्न वि [आदीर्ण] उद्विग्न, खिन्न; 'आइन्नाइं पियराइं तीए पुच्छंति दिव्व-देवन्नं' (सुपा ५६७)।

आइन्न पुं [दे] जात्यश्व, कुलीन घोड़ा (पण्ह १, ४)।

आइप्पण न [दे] १ आटा (गा १६६; दे १, ७८) २ घर की शोभा के लिए जो चूना आदि की सफेदी दी जाती है वह। ३ चावल के आटा का दूध। ४ घर का मण्डन—भूषण (दे १, ७८)।

आइय (अप) वि [आयात] आया हुआ (भवि)।

आइय वि [आचित] १ संचित, एकत्रीकृत। २ व्याप्त, आकीर्ण। ३ ग्रथित, गुम्फित (कप्प; औप)।

आइय वि [आदृत] आदरप्राप्त (कप्प)।

आइयण न [आदान] ग्रहण, उपादान (पण्ह १, ३)।

आइयणया स्त्री [आदान] ग्रहण, उपादान (ठा २, १)।

आइरिय देखो **आयरिय** = आचार्य (हे १, ७३)।

आइल वि [आविल] मलिन, कलुष, अस्वच्छ (पण्ह १, ३)।

आइल्ल } **आइल्लिय** } वि [आदिम] प्रथम, पहला (सम १२६; भग)। 'आइल्लियासु तिसु लेसासु' (पण्ण १७; विसे २६२४)।

आइवाहिअ पुं [आतिवाहिक] देव-विशेष, जो मृत जीव को दूसरे जन्म में ले जाने के लिए नियुक्त है;

'काहे अमाणवंता अग्गिमुहा,
आइवाहिआ तव पुरिसा।
अइलंघेहिंति ममं अच्चुआ!
तमगहणनिउणयरकंतारं'
(अच्चु ८५)।

आइवाहिग पुं [आतिवाहिक] मार्गदर्शक (वासुदेवहिंडी पत्र १५)।

आइस सक [आ + दिश्] आदेश करना, हुकुम करना, फरमाना। आइसह (पि ४७१)। वकृ. **आइसंत** (सुर १६, १३)।

आइसण वि [दे] उज्झित, परित्यक्त (दे १, ७१)।

आईण वि [आदीन] १ अतिदीन, बहुत गरीब (सूअ १, ५)। २ न. दूषित भिक्षा (सूअ १, १०)।

आईण पुं [दे] जातिमान् अश्व, कुलीन घोड़ा (णाया १, १७)।

आईण } **आईणग** } न [आजिन, °क] १ चमड़े का बना हुआ वस्त्र (णाया १, १; आचा)। १ पुं. द्वीप-विशेष। २ समुद्र विशेष (जीव ३)। °**भद्द** पुं [°भद्र] आजिन-द्वीप का अधिष्ठाता देव (जीव ३)। °**महाभद्द** पुं [°महाभद्र] देखो पूर्वोक्त अर्थ (जीव ३)। °**महावर** पुं [°महावर] आजिन और आजिनवर नामक समुद्र का अधिष्ठाता देव (जीव ३)। °**वर** पुं [°वर] १ द्वीप-विशेष। २ समुद्र-विशेष। ३ आजिन और **अजिनवर** समुद्र का अधिष्ठाता देव (जीव ३)। °**वरभद्द** पुं [°वरभद्र] आजिनवरद्वीप का अधिष्ठाता देव (जीव ३)। °**वरमहाभद्द** पुं [°वरमहाभद्र] देखो अनन्तर उक्त अर्थ (जीव ३)। °**वरोभास** पुं [°वरावभास] १ द्वीप-विशेष। २ समुद्र-विशेष (जीव ३)। °**वराभासभद्द** पुं [°वरावभासभद्र] उक्त द्वीप का अधिष्ठायक देव (जीव ३)। °**वराभासमहाभद्द** पुं [°वरावभासमहाभद्र] देखो पूर्वोक्त अर्थ

(जीव ३)। °वरोभासमहावर पुं [वराव-भासमहावर] अजिनवराभास नामक समुद्र का अधिष्ठाता देव (जीव ३)। °वरोभासवर [°वरावभासवर] देखो अनन्तरोक्त अर्थ (जीव ३)।

आईनीइ स्त्री [आदिनीति] सामरूप पहली राजनीति (सुपा ४६२)।

आईय देखो **आइ**=आदि (जी ७; काल)।

आइय वि [आतीत] १ विशेष-ज्ञात। २ संसार-प्राप्त, संसार में घूमनेवाला (आचा)।

आईल पुंन [आचील] पान का थूकना (पव)।

आईव अक [आ+दीप्] चमकना। वकृ. **आईवमाण** (महानि)।

आईसर पुं [आदीश्वर] भगवान् ऋषभदेव (सिरि ५५१)।

आउ स्त्री [दे] १ पानी, जल (दे १, ६१)। २ इस नाम का एक नक्षत्र-देव (ठा २, ३)। °काय, °क्काय पुं [°काय] जल का जीव (उप ६८५; पराण १)। °काइय, °क्काइय पुं [°कायिक] जल का जीव (पराण १; भग २४, १३)। °जीव पुं [°जीव] जल का जीव (सूत्र १, ११)। °बहुल वि [°बहुल] १ जल-प्रचुर। २ रत्नप्रभा पृथिवी का तृतीय काण्ड (सम ८८)।

आउ अ [दे] अथवा, या; 'आउ पलोहेइ मं अज्जउत्तवेसेण कोइ अमाणुसो, आउ सच्चयं चेव अज्जउत्तोत्ति' (स ३४६)।

आउ, **आउअ** न [आयुष्] १ आयु, जीवन-काल (कुमा; रयण १६)। २ उमर, वय (गा ३२१)। ३ आयु के कारणभूत कर्म-पुद्गल (ठा ८)। °काल पुं [°काल] मरण, मृत्यु (आचा)। °क्खय पुं [°क्षय] मरण; मौत (विपा १, १०)। °क्खेम न [°क्षेम] आयु-पालन, जीवन (आचा)। °विज्जा स्त्री [°विद्या] वैद्यकशास्त्र, चिकित्साशास्त्र, (आव)। °व्वेय पुं [°वेद] वैद्यक, चिकित्सा-शास्त्र (विपा १, ७)।

आउंच सक [आ+कुञ्च्] संकुचित करना, समेटना। संकृ. **आउंचिवि** (अप) (भवि)।

आउंचण न [आकुञ्चन] संकोच, गात्रसंक्षेप (कस)।

आउंचणा स्त्री [आकुञ्चना] ऊपर देखो (धर्म ३)।

अउंचिअ वि [आकुञ्चित] १ संकुचित। २ उठा कर धारण किया हुआ (से ६, १७)।

आउंजि वि [आकुञ्चिन्] १ संकुचनेवाला। २ निश्चल (गउड)।

आउंट देखो **आउट्ट**=आ-वर्तय्। आउंटावेमि (णाया १, ५)।

आउंट अक [आ+कुञ्च्] संकोचना; प्रयो., संकृ. **आउंटावित्तु** (पव ५)।

आउंटण न [आकुण्टन] आवर्जन (पंचा १७, १६)।

आउंटण न [आकुञ्चन] संकोच, गात्र-संक्षेप (हे १, १७७)।

आउंबालिय वि [दे] आप्लावित, डूबाया हुआ, पानी आदि द्रवपदार्थ से व्याप्त (पाअ)।

आउक्क, **आउग** देखो **आउ**=आयुष् (सुपा ६५५; भग ६, ३)।

आउच्छ सक [आ+प्रच्छ्] आज्ञा लेना, अनुज्ञा लेना। वकृ. **आउच्छंत**, **आउच्छमाण** (से १२, २१; ४७)। संकृ. **आउच्छिऊण**, **आउच्छिय** (महा; सुपा ६१)।

आउच्छण न [आप्रच्छन] आज्ञा, अनुज्ञा (गा ४७, ५००)।

आउच्छणा स्त्री [आप्रच्छना] प्रश्न (पंचा १२, २६)।

आउच्छा स्त्री [आपृच्छा] आज्ञा (कुप्र १२४)।

आउच्छिय वि [आपृष्ट] जिसकी आज्ञा ली गई हो वह (से १२, ६४)।

आउज्ज देखो **आओज्ज**=आतोद्य (हे १, १५६)।

आउज्ज पुं [आवर्ज] १ संमुख करना। २ शुभ क्रिया (पराण ३६)।

आउज्ज वि [आवर्ज्य] सम्मुख करने योग्य (आवम)।

आउज्ज वि [आयोज्य] जोड़ने योग्य, सम्बन्ध करने योग्य (विसे ७४ ३२८६)।

आउज्जिय वि [आतोद्यिक] वाद्य बजानेवाला (सुपा १६६)।

आउज्जिय वि [आयोगिक] उपयोगवाला, सावधान (भग २, ५)।

आउज्जिय वि [आवर्जित] संमुख किया हुआ (पराण ३६)।

आउज्जिया स्त्री [आवर्जिका] क्रिया, व्यापार (आवम)। °करण न [°करण] शुभ व्यापार-विशेष (पराण ३६)।

आउज्जीकरण न [आवर्जीकरण] शुभ व्यापार-विशेष (पराण ३६)।

आउट्ट सक [आ+वृत्]. १ करना। २ भूलाना। ३ व्यवस्था करना। ४ अक. संमुख होना, तत्पर होना। ५ निवृत्त होना। ६ घूमना, फिरना। आउट्टइ, आउट्टंति (भग ७, १; निचू ३)। वकृ. **आउट्टंत** (सम २२)। संकृ. **आउट्टिऊण** (राज)। हेकृ. **आउट्टित्तए** (कप्प)। प्रयो. आउट्टावेमि (णाया १, ५ टी)।

आउट्ट सक [आ+कुट्ट्] छेदन करना, हिंसा करना। आउट्टामो (आचा)।

आउट्ट वि [आवृत्त] १ निवृत्त, पीछे फिरा हुआ (उप ६६८), 'दप्पकए वाउट्टे जइ खिसति तत्थवि तहेव' (बृह ३)। २ भ्रामित, भुलाया हुआ (उप ६००)। ३ ठीक-ठीक व्यवस्थित (आचा)। ४ कृत, विहित (राज)।

आउट्ट पुं [आकुट्ट] छेदन, हिंसा (सूत्र १, १)।

आउट्ट, **आउट्टिअ** वि [आदृत] आदर-युक्त (पिंड ३११; पव ११२)।

आउट्टण न [आकुट्टन] हिंसा (सूत्र १, १)।

आउट्टण न [आवर्त्तन] १ आराधन, सेवा, भक्ति (वव १, ६)। २ अभिमुख होना, तत्पर होना (सूत्र १, १०)। ३ अभिलाषा, इच्छा (आचा)। ४ घूमाना, भ्रमण। ५ निवृत्ति (सूत्र १, १०)। ६ करना, क्रिया, कृति (राज)।

आउट्टणया स्त्री [आवर्त्तनता] अपायज्ञान (णंदि)।

आउट्टणा स्त्री [आवर्त्तना] ऊपर देखो (निचू २)।

आउट्टावण न [आवर्त्तन] अभिमुख करना, तत्पर करना (आचा २)।

आउट्टि स्त्री [आकुट्टि] १ हिंसा, मारना (आचा; उव)। २ निर्दयता (आप १८)।

आउट्टि स्त्री [आवृत्ति] देखो आउट्टण = आवर्तन (वव १, १; २, १०; सूत्र १, १; आचा)। ५ बार-बार करना, पुनः पुनः क्रिया (सुज १२)।

आउट्टि वि [आकुट्टिन्] १ मारनेवाला, हिंसक; 'जाणं काएण णाउट्टी' (सूत्र)। २ अकार्य-कारक (दसा)।

आउट्टि वि [दे] साढ़े तीन, 'एगे पुण एवमाहंसु ता आउट्टिं चंदा आउट्टिं सूरा सव्वलोयं ओभासेंति (सुज १६)।

आउट्टिम वि [आकुट्टय] कूटकर बैठाने योग्य (जैसे सिक्के में अक्षर) (दसनि २, १७)।

आउट्टिय देखो आउट्ट = आवृत्त (दसा)।

आउट्टिय पुं [आकुट्टिक] दण्ड-विशेष (भत्त २७)।

आउट्टिय वि [आकुट्टित] छिन्न, विदारित (सूत्र)।

आउट्टिया स्त्री [आकुट्टिका] पास में आकर करना (पंचा १५, १८)।

आउट्ठ वि [आतुष्ट] संतुष्ट (निचू १)।

आउड सक [आ+जोडय्] संबन्ध करना, जोड़ना। कवकृ. आउडिज्जमाण (भग ५, ४)।

आउड सक [आ+कुट्] १ कूटना, पीटना। २ ताडन करना, आघात करना। आउडेइ (जं ३)। कवकृ. आउडिज्जमाण (भग ५, ४)।

आउड सक [लिख्] लिखना, 'इति कट्टु णामगं आउडेइ' संकृ. आउडित्ता (जं ३—पत्र २५०)।

आउडिय वि [आकुटित] आहत, ताडित (जं ३—पत्र २२२)।

आउड्ड अक [मस्ज्] मज्जन करना, डूबना। आउड्डइ (हे ४, १०१; षड्)।

आउड्डिअ वि [मग्न] डूबा हुआ, तल्लीन (कुमा)।

आउण्ण वि [आपूर्ण] पूर्ण, भरपूर, व्याप्त; 'कुसुमफलाउण्णहत्थेहिं' (पउम ८, २०३)।

आउत्त वि [आयुक्त] १ उपयोग वाला, सावधान (कप्प)। २ क्रिवि. उपयोग-पूर्वक (भग)। ३ न. पुरीषोत्सर्ग, फरागत जाना (?) (उप ६८५)। ४ पुं. गाँव का नियुक्त किया हुआ मुखिया (दे १, १६)।

आउत्त वि [आगुप्त] १ संक्षिप्त (ठा ३, १)। २ संयत (भग)।

आउत्थ वि [आत्मोत्थ] आत्म-कृत (वव ४)।

आउर वि [आतुर] १ रोगी, बीमार (णंदि)। २ उत्कण्ठित। ३ दुखित, पीडित (प्रासू २८; ६५)।

आउर न [दे] १ लड़ाई, युद्ध। २ वि. बहुत। ३ गरम (दे १, ६५, ७६)।

आउरिय वि [आतुरित] दुःखित, पीडित (आचा)।

आउल वि [आकुल] १ व्याप्त (औप)। २ व्यग्र (आव)। ३ व्याकुल, दुःखित। ४ संकीर्ण (स्वप्न ७३)। ५ पुं. समूह (विसे ७००)।

आउल सक [आकुलय्] १ व्याप्त करना। २ व्यग्र करना। ३ दुःखी करना। ४ संकीर्ण करना। ५ प्रचुर करना। कवकृ—आउलिज्जंत, आउलीअमाण (महा; पि ५६३)।

आउलि स्त्री [आतुलि] वृक्ष-विशेष (दे ५, ५)।

आउलिअ वि [आकुलित] आकुल किया हुआ (गा २५; पउम ३३, १०६; उप पृ ३२)।

आउलीकर सक [आकुली+कृ] देखो आउल= आकुलय्। आउलीकरेंति (भग)। कवकृ. आउलीकिअमाण (नाट)।

आउलीभूअ वि [आकुलीभूत] घबड़ाया हुआ (सुर २, १०)।

आउल्लय न [दे] जहाज चलाने का काष्ठमय उपकरण (सिरि ४२४)।

आउस अक [आ + वस्] रहना, वास करना। वकृ. आउसंत (सम १)।

आउस सक [आ + क्रुश्] आक्रोश करना, शाप देना, निष्ठुर वचन बोलना। आउसइ (भग १५)। आउसेज्ज, आउसेसि (उवा)।

आउस सक [आ + मृश्] स्पर्श करना, छूना। वकृ. आउसंत (सम १)।

आउस सक [आ + जुष्] सेवा करना। वकृ. आउसंत (सम १)।

आउस न [दे] कूर्च (दे १, ६५)। क्षुरकर्म (नंदीटि. टिप्पनक)

आउस देखो आउ = आयुष् (कुमा)।

आउस } वि [अयुष्मत्] चिरायु, दीर्घायु
आउसंत } (सम २६; आचा)।

आउसणा स्त्री [आक्रोशना] अभिशाप, निर्भर्त्सन (णाया १, १८; भग १५)।

आउस्स देखो आउस = आ + क्रुश्। आउस्सति (णाया १, १८)।

आउस्स पुं [आक्रोश] दुर्वचन, असभ्य वचन (सूअ १, ३, ३, १८)।

आउस्सिय वि [आवश्यक] १ जरूरी। २ क्रिवि. जरूर, अवश्य (पण्ण ३६)। °करण न [°करण] १ मन, वचन और काया का शुभ व्यापार। २ मोक्ष के लिए प्रवृत्ति (पण्ण ३६)।

आउह न [आयुध] १ शस्त्र, हथियार (कुमा)। २ विद्याधर वंश के एक राजा का नाम (पउम ५,४४)। °घर न [°गृह] शस्त्रशाला (जं)। °घरसाला स्त्री [°गृहशाला] देखो अनन्तर-उक्त अर्थ (जं)। °घरिय वि [°गृहिक] आयुधशाला का अध्यक्ष—प्रधान कर्मचारी (जं)। °गार न [°गार] शस्त्रगृह (औप)।

आउहि वि [आयुधिन्] योद्धा, शस्त्रधारक (विसे)।

आऊड अक [दे] जुए में पण करना। आऊडइ (दे १, ६६)।

आऊडिय न [दे] द्यूत-पण, जुए में की जाती प्रतिज्ञा (दे १, ६८)।

आऊर सक [आ + पूरय्] भरना, पूर्त्ति करना, भरपूर करना। आऊरेइ (महा)। कृ. आऊरयंत, आऊरमाण (पउम) १०२, ३३; से १२, २८)। कवकृ. आऊरिज्जमाण (पि ५३७)। संकृ. आऊरिवि (अप) (भवि)।

आऊरिय वि [आपूरित] भरा हुआ, व्याप्त (सुर २, १६६)।

आऊसिय वि [आयूषित] १ प्रविष्ट। २ संकुचित (णाया १, ८)।

आएज्ज वि [आदेय] ग्रहण करने के योग्य उपादेय। °णाम, °नाम न [°नामन्] कर्म-विशेष, जिसके उदय से किसी का कोई भी वचन ग्राह्य माना जाता है (सम ६७)।

आएस वि [ऐष्यत्] आगामी, भविष्य में होने वाला (सूअ १, २, ३, २०)।

आएस पुं [आदेश] १ अपेक्षा। २ प्रकार, रीति (णंदि १८४)। ३ वि. नीचे देखो (पिंड २३०)।

आएस देखो **आवेस** (भग १४, २)।

आएस } पुं [आदेश] १ उपदेश, शिक्षा।
आएसग } २ आज्ञा, हुकुम (महा)। ३ विवक्षा, सम्मति (सम्म ३७)। ४ अतिथि, मेहमान (सूअ २, १, ५६)। ५ प्रकार, भेद; 'जीवे णं भंते ! कालाएसेणं किं सपदेसे अपदेसे' (भग ६, ४; जीव २; विसे ४०३)। ६ निर्देश (निचू)। ७ प्रमाण, 'जाव न बहुप्पसन्नं ता मीसं एस इत्थ आएसो' (पिंड २१)। ८ इच्छा, अभिलाषा; देखो **आएसि**। ९ दृष्टान्त, उदाहरण; 'वाघाइयमाएसो अवरद्धो हुज्ज अन्नतरएणं' (आचानि २६७)। १० सूत्र, ग्रन्थ, शास्त्र (विसे ४०५)। ११ उपचार, आरोप; 'आएसो उवयारो' (विसे ३४,८८)। १२ शिष्ट-सम्मत, 'बहुसुयमाइएणं तु,
न बाहियएणेहिं जुगप्पहाणेहिं।
आएसो सो उ भवे,
अहवावि नयंतरविगप्पो' (वव २,८)।

आएसण न [आदेशन] ऊपर देखो (महा)।

आएसण न [आदेशन, आवेशन] लोहा वगैरह का कारखाना, शिल्पशाला (आचा २, २,२,१०; औप)।

आएसि वि [आदेशिन्] १ आदेश करनेवाला। २ अभिलाषी, इच्छुक (आचा)।

आएसिय वि [आदिष्ट] जिसको आज्ञा दी गई हो वह (भवि)।

आएसिय वि [आदेशिक] १ आदेश संबन्धी। २ विवाह आदि के जिमन में बचे हुए वे खाद्य-पदार्थ जिनको श्रमणों में बाँट देने का संकल्प किया गया हो (पिंड २२९)।

आओ अ [दे] अथवा, या; 'हंत किमेयंति, किं ताव सुविणओ, आओ इंदजालं, आओ मइविब्भमो, आओ सच्चयं चेवत्ति' (स ४५४)।

आओग पुं [आयोग] १ लाभ, नफा (औप)। २ अत्यधिक सूद के लिए करजा देना (भग)। ३ परिकर, सरंजाम (औप)।

आओग पुं [आयोग] अर्थोपाय, अर्थोपार्जन का साधन (सूअ २, ७, २)।

आओग्ग पुं [आयोग्य] परिकर, सरंजाम (औप)।

आओज्ज पुंन [आयोग्य] वाद्य, बाजा (महा; षड्)।

आओज्ज वि [आयोज्य] संबन्ध-योग्य, जोड़ने योग्य (विसे २३)।

आओड सक [आ + खोटय्] प्रवेश कराना, घुसेड़ना। आओडावेंति (विपा १,६)।

आओडण न [आकोलन] मजबूत करना (से ६, ६)।

आओडिअ वि [दे] ताडित, मारा हुआ (से ६, ६)।

आओध अक [आ + युध्] लड़ना। आओवेहि (वेणि १११)।

आओस सक [आ + क्रुश्, क्रोशय्] आक्रोश करना, शाप देना। आओसइ (निर १, १) आओसेज्जसि, आओसेमि (उवा)। कवकृ. **आओसेज्जमाण** (अंत २२)।

आओस पुं [दे] प्रदोष-समय, सन्ध्या-काल (ओघ ६१ भा)।

आओसणा स्त्री [आक्रोशना] निर्भर्त्सना, तिरस्कार (निर १, १)।

आओहण न [आयोधन] युद्ध, लड़ाई (उप ६४८ टी; सुर ६, २२०)।

आंत वि [अन्त्य] अन्त का (पंचा १८,३६)।

आकंख सक [आ + काङ्क्ष्] चाहना, इच्छना। आकंखिहि (भवि)।

आकंखा स्त्री [आकाङ्क्षा] चाह, इच्छा, अभिलाषा (विसे ८५६)।

आकंखि वि [आकाङ्क्षिन्] अभिलाषी, इच्छुक (आचा)।

आकंद अक [आ + क्रन्द्] रोना, चिल्लाना। आकंदामि (पि ८८)।

आकंदिय न [आक्रन्दित] १ आक्रन्दन, रोदन। २ वि. जिसने आक्रन्दन किया हो वह (दे ७, २७)।

आकंप अक [आ + कम्प्] १ थोड़ा काँपना। २ तत्पर होना। ३ आराधन करना। संकृ. **आकंपइत्ता, आकंपइत्तु** (राज)।

आकंप पुं [आकम्प] १ थोड़ा काँपना। २ आराधन (वव)। ३ तत्परता, आवर्जन (राज)।

आकंपण न [आकम्पन] ऊपर देखो (वव; धर्म)।

आकंपिय वि [आकम्पित] ईषत् चलित, कम्पित (उप ७२८ टी)।

आकंपिय वि [आकम्पित] आवर्जित, प्रसन्न किया हुआ (पिंड ४३६)।

आकड्ढ पुं [आकर्ष] खींचाव। °**विकड्ढि** स्त्री [°विकृष्टि] खींच-तान (भग १५)।

आकड्ढण न [आकर्षण] खींचाव (निचू)।

आकड्ढिय वि [दे] बाहर निकाला हुआ, 'पुव्वं व वच्छ तीए निब्भच्छिया
ता धरित्तु गलयम्मि।
पच्छिमअसोगवणियादारेणाकड्ढिया
झत्ति।।' (धर्मवि १३३)।

आकण्णण न [आकर्णन] श्रवण (नाट)।

आकण्णिय वि [आकर्णित] श्रुत, सुना हुआ (आचा)।

आकदि देखो **आकिदि** (संक्षि ६)।

आकम्हिय वि [आकस्मिक] अकस्मात् होनेवाला, विना ही कारण होनेवाला; 'बज्झनिमित्ताभावा जं भयमाकम्हियं तंति' (विसे ३४५१)।

आकर पुं [आकर] १ खान। २ समूह (कुमा)।

आकस देखो **आगस**। आकसिस्सामो (आचा २, ३, १, १५) हेकृ. **आकसित्तए** (आचा २, ३, १, १५)।

आकार देखो **आगार** (कुमा; दं १३)।

आकास देखो **आगास** (भग)।

आकासिय वि [दे] पर्याप्त, काफी (षड्)।

आकिइ स्त्री [आकृति] स्वरूप, आकार (हे १, २०९)।

आकिंचण न [आकिञ्चन्य] निस्पृहता, निष्परिग्रहता; 'आकिंचणं च बंभं च जइधम्मो' (नव २३)।

आकिंचणया स्त्री [आकिञ्चनता] ऊपर देखो (सम १२०)।

आकिंचणिय } देखो **आकिंचण** (आचू; सुपा
आकिंचन्न } ६०८)।

आकिट्ठि स्त्री [आकृष्टि] आकर्षण (धर्मवि १५)।

आकिदि देखो आकिइ (कुमा)।

आकुंच सक [आ + कुञ्चय्] संकोच करना। आकुंचइ; संकृ. **आकुंचिवि** (अप) (भवि)।

आकुंचण न [आकुञ्चन] संकोच, संक्षेप (सम्म १३३; विसे २४६२)।

आकुंचिय वि [आकुञ्चित] संकुचित, 'रुद्धं गलयं आकुंचियाओ धमणीओ पसरिया वियणा' (सुर ४, २३८)।

आकुट्ठ न [आक्रुष्ट] १ आक्रोश। २ वि. जिस पर आक्रोश किया गया हो वह (दे ३,३२)।

आकुल दे आउल (कप्प)।

आकूय न [आकूत] १ इङ्गित, इशारा (उप ७२८ टी)। २ अभिप्राय (विसे ६२८)।

आकेवलिय वि [आकेवलिक] असंपूर्ण (आचा)।

आकोडण न [आकोटन] कूट कर घुसेड़ना (पण्ह १, ३)।

आकोस देखो अक्कोस = आक्रोश (पंच ४, २३)।

आकोसाय अक [आकोशाय्] विकसित होना। वकृ. **आकोसायंत** (पण्ह १, ४)।

आक्कंद (मा) देखो आकंद। आक्कंदामि (पि ८८)।

आखंच (अप) सक [आ + कृष्] पीछे खींचना। संकृ. **आखंचिवि** (भवि)।

आखंडल पुं [आखण्डल] इन्द्र (सुपा ४७)। °**धणुह** न [°धनुष्] इन्द्रधनुष् (उप ६८६ टी)। °**भूइ** पुं [°भूति] भगवान् महावीर के मुख्य शिष्य गौतम-स्वामी (पउम ११८, १०२)।

आगइ स्त्री [आगति] आगमन (आचा; विसे २१४६)।

आगइ देखो आकिइ (महा)।

आगंतव्व देखो आगम = आ + गम्।

आगंतगार, **आगंतार** न [आगन्त्रगार] धर्मशाला, मुसाफिरखाना (औप; आचा)।

आगंतु वि [आगन्तृ] आनेवाला (सूअ)।

आगन्तु देखो आगम = आ + गम्।

आगंतुग, **अगंतुय** वि [आगन्तुक] १ आनेवाला। २ अतिथि (स ४७१; चारु २४; सुपा ३३६; ओघ २१६)। ३ कृत्रिम, अस्वाभाविक (सुर १२, १०)।

आगंतूण देखो आगम = आ + गम्।

आगंप सक [आ + कम्पय्] कँपाना, हिलाना। वकृ. **आगंपयंत** (स ३३१; ४४३)।

आगंपिय देखो आकंपिय (पउम ३४, ४३)।

आगच्छ सक [आ + गम्] आना, आगमन करना। आगच्छइ (महा)। भवि. आगच्छिस्सइ (पि ५२३)। वकृ. **आगच्छंत**, **आगच्छमाण** (काल; भग)। हेकृ. **आगच्छित्तए** (पि ५७८)।

आगत देखो आगय (सुर २, २४८)।

आगत्ती स्त्री [दे] कूप-तुला (दे १, ६३)।

आगम सक [आ + गम्] १ आना आगमन करना। २ जानना। भवि. आगमिस्सं (पि ५२३; ५६०)। वकृ. **आगममाण** (आचा)। संकृ. **आगंतूण**, **आगमेत्ता**, **आगम्म** (पि ५८१; ५८२; औप)। कृ. **आगंतव्व** (सुपा १२)। हेकृ. **आगंतुं** (काल)।

आगम पुं [आगम] १ समागम (पंच, १४५)। २ ज्ञान, जानकारी; 'चोद्दसविज्जाठाणाणं आगमे कए' (सुख २, १३)।

आगम पुं [आगम] १ आगमन (से १४, ७५)। २ शास्त्र, सिद्धान्त (जी ४८)। °**कुसल** वि [°कुशल] सिद्धान्तों का जानकार (उत्त)। °**ज्ज** वि [°ज्ञ] शास्त्रों का जानकार (प्रासू)। °**णीइ** स्त्री [°नीति] आगमोक्त विधि (धर्म २)। °**ण्णु** वि [°ज्ञ] शास्त्रों का जानकार (प्रासू)। °**परतंत** वि [°परतन्त्र] सिद्धान्त के अधीन (पंचव)। °**बलिय** वि [°बलिक] सिद्धान्तों का अच्छा जानकार (भग ८, ८)। °**ववहार** पुं [°व्यवहार] सिद्धान्तानुमोदित व्यवहार (वव)।

आगम सक [आ + गम्] प्राप्त करना। संकृ. आगमित्ता (सूअ २, ७, ३६)।

आगमण न [आगमन] आगमन (श्रा ४)।

आगमि वि [आगमिन्] आने वाला, आगामी (विसे ३१५४)।

आगमिअ वि [आगमित] विदित, ज्ञात; 'तत्थ अच्छंतो आगमिओ' (सुख १, ३)।

आगमिय वि [आगमिक] १ शास्त्र-संबन्धी, शास्त्र-प्रतिपादित (उवर १५१)। २ शास्त्रोक्त वस्तु को ही माननेवाला (सम्म १४२)।

आगमिर वि [आगन्तृ] आनेवाला, आगमन करनेवाला (सण)।

आगमिस्स वि [आगमिष्यत्] १ आगामी, होनेवाला (पउम ११८, ६३)। २ आनेवाला (सम १५३)।

आगमिस्सा स्त्री [आगमिष्यन्ती] भविष्य-काल, 'अईअकालम्मि आगमिस्साए' (पच ६०)।

आगमेस, **आगमेसि** देखो आगमिस्स (अंत १६; औप)।

आगम्म देखो आगम = आ + गम्।

आगय वि [आगत] १ आया हुआ (प्रासू ५)। २ उत्पन्न (णाया १, ७)।

आगर देखो आकर = आकर (आचा; उप ८३३ टी)।

आगरि वि [आकरिन्] खान का मालिक, खान का काम करनेवाला (पण्ह १,२)।

आगरिस पुं [आकर्ष] १ ग्रहण, उपादान (विसे २७८०; सम १४७)। २ खींचाव (विसे २७८०; हे १, १७७)। ३ ग्रहण कर छोड़ देना (आवू)। ४ प्राप्ति (भग २५, ७)।

आगरिस सक [आ + कृष्] खींचना। वकृ. आगरिसंत (धर्मसं ३७२)।

आगरिसग वि [आकर्षक] १ खींचनेवाला। २ पुं. अयस्कान्त, लोह-चुम्बक (आवम)।

आगरिसण न [आकर्षण] खींचाव (सम्मत्त २१५)।

आगरिसणी स्त्री [आकर्षणी] विद्या-विशेष (सुर १३, ८१)।

आगरिसिय वि [आकृष्ट] खींचा हुआ (सुपा १६६; महा)।

आगल सक [आ + कलय्] १ जानना। २ लगाना। ३ पहुँचाना। ४ संभावना करना। आगलेइ (उव)। आगलेंति (भग ३, २)। संकृ. 'हत्थिं खंभम्मि आगलेऊण' (महा)।

आगल्ल वि [आग्लान] ग्लान, बीमार (बृह १)।

आगस सक [आ + कृष्] खींचना। आगसाहि (आचा २, ३, १, १४)। संकृ. **आगसिउं** (विसे २२२)।

आगह देखो आगाह। संकृ. **आगहइत्ता** (दस ५, १, ३१)।

आगहिअ वि [आगृहीत] संगृहीत (विसे २२०४)।

आगाढ वि [आगाढ] १ प्रबल, दुःसाध्य; 'कडुगोसहंव आगाढरोगिणो रोगसमदच्छं' (उप ७२८ टी); 'नो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा अन्नमन्नस्स मोए आइइत्तए, नन्नत्थ आगाढेहिं रोगायंकेहिं' (कस)। २ अपवाद, खास कारण (पंचभा)। ३ अत्यन्त गाढ (निचू)। °जोग पुं [°योग] योग-विशेष, गणि-योग (ओघ ५४८)। °पण्ण न [°प्रज्ञ] शास्त्र, आगम; 'आगाढपण्णेसु य भावियप्पा' (वव)। °सुय न [°श्रुत] आगम-विशेष (निचू)।

आगामि वि [आगामिन्] आनेवाला (सुपा ९)।

आगार सक [आ + कराय्] बुलाना, आह्वान करना। संकृ. **आगारेऊण** (आव)।

आगार न [आगार] १ घर, गृह (णाया १, १; महा)। २ वि. गृहस्थ, गृही (ठा)। °त्थ वि [°स्थ] गृही (पि ३०९)।

आगार पुं [आकार] १ अपवाद (उप ७२८ टी; पडि)। २ इंगित, चेष्टा-विशेष (सुर ११, १६२)। ३ आकृति, रूप (सुपा ११५)।

आगारिय वि [आगारिक] गृहस्थ-संबन्धी (विसे)।

आगारिय वि [आकारित] १ आहूत। २ उत्सारित, परित्यक्त (आव)।

आगाल पुं [आगाल] १ समान प्रदेश में रहना। २ सम भाव से रहना (आचा)। ३ उदीरणा-विशेष (राज)।

आगास पुंन [आकाश] आकाश, अन्तराल (उवा)। °गमा स्त्री [°गमा] विद्या-विशेष, जिसके बल से आकाश में गमन कर सकता है (पउम ७, १४४)। °गामि वि [°गामिन्] आकाश में गमन करने वाला, पक्षि-प्रभृति (आचा)। °जोइणी स्त्री [°योगिनी] पक्षि-विशेष, 'आगासजोइणीए निसुओ सद्दोवि वामपासम्मि' (सुपा १८५)। °त्थिकाय पुं [°स्तिकाय] आकाश-प्रदेशों का समूह, अखण्ड आकाश-द्रव्य (पण्ण १)। °थिग्गल न [दे] मेघरहित आकाश का भाग (आवम)। °फलिह, °फालिय पुं [°स्फटिक] निर्मल स्फटिक-रत्न (राय; औप)। °फालिया स्त्री [°फालिका] एक मीठा द्रव्य (पण्ण १७)। °इवाइ वि [°तिपातिन्] विद्या आदि के बल से आकाश में गमन करनेवाला (औप)।

आगासिय वि [आकाशित] आकाश को प्राप्त (औप)।

आगासिय वि [आकर्षित] खींचा हुआ (औप)।

आगासिया स्त्री [आकाशिकी] आकाश में गमन करने की लब्धि-शक्ति (सूअनि १६३)।

आगाह सक [अव + गाह्] अवगाहन करना, स्नान करना। **आगाहइत्ता** (दस ५, १, ३१)।

आगिइ स्त्री [आकृति] आकार, रूप, मूर्ति (सुर २, २२; विपा १, १)।

आगिट्ठि स्त्री [आकृष्टि] आकर्षण (सुपा २३२)।

आगी देखो **आगिइ**; 'छिण्णावलिरुयगागीदिसासु सामाइयं न जं तासु' (विसे २७०७)।

आगु पुं [आकु] अभिलाष, इच्छा (आक)।

आघं देखो **आघव**। 'सूत्रकृतांग' सूत्र के प्रथम श्रुतस्कन्ध का दसवाँ अध्ययन (सूअ १,१०)।

आघंस सक [आ + घृष्] घर्षण करना (निचू)।

आघंस सक [आ + घृष्] घिसना, थोड़ा घिसना। आघंसिज्ज (आचा २, २, १, ४)।

आघंस वि [आघर्ष] जल के साथ घिसकर जो पिया जा सके वह (पिंड ५०२)।

आघंसण न [आघर्षण] एक बार का घर्षण (निचू)।

आघयण न [दे] वध-स्थान (णाया १, ९—पत्र १६७)।

आघव सक [आ + ख्या] १ कहना, उपदेश देना। २ ग्रहण करना। आघवेइ (ठा)। कवकृ. आघविज्जए (भग)। भूका. आघं (सूअ; पि ८८)। वकृ. **आघवेमाण** (पि ४४)। हेकृ. **आघवित्तए** (पि ८८)।

आघवणा स्त्री [आख्यान] कथन, उक्ति (णाया १, ९)।

आघवइत्तु वि [आख्यायक] कथक, वक्ता, उपदेशक (ठा ४, ४)।

आघविय वि [आख्यात] उक्त, कहा हुआ (पि ४४)।

आघविय वि [दे] गृहीत, स्वीकृत (अणु २०)।

आघवेत्तग वि [आख्यापयितृक] उपदेष्टा, वक्ता (आचा)।

आघस सक [आ + घस्] थोडा घिसना। आघसावेज्ज (निचू)।

आघा सक [आ + ख्या] कहना। (आचा)।

आघा सक [आ + घ्रा] सूँघना। वकृ. **आघायंत** (उप ३५७ टी)।

आघाय वि [आख्यात] कथित, उक्त (आचा)।

आघाय वि [आख्यात] १ उक्त, कथित (सूअ १, १३, २)। २ न. उक्ति, कथन (सूअ १, १, २, १)।

आघाय पुं [आघात] १ एक नरक-स्थान (देवेन्द्र २६)। २ विनाश (उक्त ५, ३२; सुख ५, ३२)।

आघाय पुं [आघात] १ वध। २ चोट, प्रहार (कुमा; णाया १, ६)।

आघायंत देखो **आघा** = आ + घ्रा।

आघाव देखो **आघव**। आघावेइ (पि ८८; २०२)।

आघुट्ठ वि [आघुष्ट] घोषित, जाहिर किया हुआ (भवि)।

आघुम्म अक [आ + घूर्ण्] डोलना, हिलना, काँपना, चलना।

आघुम्मिय वि [आघूर्णित] डोला हुआ, कम्पित, चलित; 'आघुम्मियनयणजुओ' (पउम १०, ३२; ८७, ५६)।

आघोस सक [आ + घोषय्] घोषणा करना, ढिंढोरा पिटवाना। आघोसेह (स ६०)।

आघोसण न [आघोषण] ढिंढोरा, घोषणा (महा)।

आचक्ख सक [आ + चक्ष्] कहना। वकृ. **आचक्खंत** (पि २५; ८८; नाट)।

आचक्खिद (शौ) वि [आख्यात] उक्त, कथित (अभि २००)।

आचरिय वि [आचरित] १ अनुष्ठित, विहित। २ न. आचरण (प्रासू १११)।

आचाम सक [आ + चामय्] चाटना, खाना, पीना। वकृ. आचामंत (कुप्र ३६)।

आचार देखो **आयार** = आचार (कुमा)।

आचारिअ देखो **आयरिय** = आचार्य (प्राप)।

आचिक्ख सक [आ + चक्ष्] कहना। कृ. आचिक्खणीय (स ४०)।

आचिक्खिय वि [आख्यात] कथित, उक्त (स ११६)।

आचुण्णिअ वि [आचूर्णित] १ चूर-चूर किया हुआ (पउम १७, १२०)।

आचेलक्क न [आचेलक्य] १ वस्त्र का अभाव (कप्प)। २ वि. आचार-विशेष; 'आचेलक्को धम्मो' (पंचा)।

आच्छेदण न [आच्छेदन] १ नाश। २ वि. नाशक (कुमा)।

आजत्थ देखो आगम + आ = गम्। आजत्थइ (प्राकृ ७४)।

आजाइ देखो आयाइ (ठा; स १७८)।

आजि देखो आइ = आजि (कुमा; दे १,४६)।

आजीरण पुं [आजीरण] स्वनामख्यात एक जैन मुनि, 'आजीरणो य गीओ' (संथा ६७)।

आजीव } पुं [आजीव] १ आजीविका,
आजीवग } जीवन-निर्वाह का उपाय; 'आजीवमेयं तु अबुज्झमाणो पुणो पुणो विप्परियासुवेंति' (सूअ)। २ जैन साधु के लिए भिक्षा का एक दोष—गृहस्थ को अपनी जाति, कुल आदि की समानता बतलाकर उससे भिक्षा ग्रहण करना (ठा ३, ४)। ३ गोशालक मत का अनुयायी साधु (पन)। ४ धन का समूह (सूअ)।

आजीवग पुं [आजीवक] १ धन का गर्व (सूअ)। २ सकल जीव (जीव ३ टी)। देखो आजीवय।

आजीवण न [आजीवन] १ आजीविका, जीवन-निर्वाह का उपाय। २ जैन साधु के लिए भिक्षा का एक दोष (वव)।

आजीवणा स्त्री [आजीवना] ऊपर देखो (दंस; जीत)।

आजीवय देखो आजीवग; 'आजीवयदिट्ठंतेणं चउरासीतिजातिकुलकोडीजोणिपमुहसयसहस्सा भवंतीतिमक्खाया' (जीव ३)।

आजीविय वि [आजीविक] गोशालक के मत का अनुयायी (पराग २०; उवा)।

आजीविआ स्त्री [आजीविका] १ निर्वाह (आव)। २ जैन साधु के लिए भिक्षा का एक दोष (उत्त)।

आजुत्त वि [आयुक्त] अप्रमादी (निचू)।

आजुज्झ अक [आ + युध्] लड़ना। हेकृ. आजुज्झिदुं (शौ) (वेणी १२४)।

आजुह न [आयुध] हथियार (मै २४)।

आजोज्ज देखो आओज्ज (विसे १५०३)।

आडंबर पुं [आडम्बर] १ आटोप, ऊपरी दिखाव (पाअ)। २ वाद्य की आवाज (ठा)। ३ यक्ष-विशेष (आचू)। ४ न. यक्ष का मन्दिर (पव)।

आडंबर पुं [आडम्बर] वाद्य-विशेष, पटह (अणु १२८)।

आडंबरिल्ल वि [आडम्बरवत्] आडम्बरी (पाअ)।

आडविय वि [दे] १ चूर्णित, चूर-चूर किया हुआ (षड्)।

आडविय वि [आटविक] जंगल में रहनेवाला, जंगली (स १२१)।

आडह सक [आ + दह्] चारों ओर से जलाना। आडहइ (पि २२२; २२३)। आडहंति (पि २२२; २२३)।

आडह सक [आ + धा] स्थापन करना, नियुक्त करना। आडहइ। संकृ. आडहेत्ता (औप)।

आडाडा स्त्री [दे] बलात्कार, जबरदस्ती (दे १, ६४)।

आडासेतीय पुं [आडासेतीक] पक्षि-विशेष (पराह १, १)।

आडि स्त्री [आटि] १ पक्षि-विशेष। २ मत्स्य-विशेष (दे ८, २४)।

आडियत्तिय पुं [दे] शिविका-वाहक पुरुष (?) (स ५३७; ५४१)।

आडुआल सक [दे] मिश्र करना, मिलाना। आडुआलइ (दे १, ६६)।

आडुआलि पुं [दे] मिश्रता, मिलावट (दे १, ६६)।

आडोय देखो आडोव = आटोप (सुपा २६२)।

आडोलिय वि [दे] रुद्ध, रोका हुआ (णाया १, १८)।

आडोव सक [आ + टोपय्] १ आडंबर करना। २ पवन द्वारा फूलाना। आडोवेइ (भग)। संकृ. आडोवेत्ता (भग)।

आडोव पुं [आटोप] आडम्बर (उवा; सरा)।

आडोविअ वि [दे] आरोपित, गुस्सा किया हुआ (दे १, ७०)।

आडोविअ वि [आटोपिक] आटोपवाला, स्फारित (पराह १, ३)।

आढई स्त्री [आढकी] वनस्पति-विशेष (पराग १)।

आढग पुंन [आढक] १ चार प्रस्थ (सेर) का एक परिमाण। २ चार सेर परिमित चीज (औप; सुपा ६७)।

आढत्त वि [दे] आक्रान्त, 'एत्थंतरम्मि विजयवम्मनरवइणा आढत्तो लच्छिनिलयसामी सूरतेओ नाम नरवई (स १४०)।

आढत्त वि [आरब्ध] शुरू किया हुआ, प्रारब्ध (ओघ ४८२; हे २, १३८)।

आढत्तिअ } वि [आरब्ध] प्रारंभ किया हुआ
आढविअ } (मंगल २३; चेइय १४८)।

आढप्प° देखो आढव।

आढय देखो आढग (महा; ठा ३, १)।

आढव सक [आ + रभ्] आरंभ करना, शुरू करना। आढवइ (हे ४, १५५; धम्म २२)। कर्म. आढप्पइ, आढवीअइ (हे ४, २५४)।

आढा सक [आ + दृ] आदर करना, मानना। आढाइ (उवा)। वकृ. आढामाण, आढायमाण (पि ५००; आचा)। कवकृ. आइज्जमाण (आचा)।

आढा स्त्री [आदर] संमान (पव २—गाथा १५५; संबोध ५५)।

आढिअ वि [आदृत] सत्कृत, सम्मानित (हे १, १४३)।

आढिअ वि [दे] १ इष्ट, अभीष्ट। २ गणनीय, माननीय। ३ अप्रमत्त, उद्युक्त। ४ गाढ़, निबिड (दे १, ७४)।

आण सक [ज्ञा] जानना, 'किंव न आणह एअं' (से १३, ३)। आणसि (से १५, २८); 'अमिअं पाइअकव्वं पढिउं सोउं च जे ण आणंति' (गा २)। आणे (अभि १६७)।

आण सक [आ + णी] लाना, आनयन करना, ले आना। आणइ (पि १७; भवि)। वकृ. आणमाणे (णाया १, १६)। हेकृ. आणिवि (अप) (भवि)।

आण पुं [आन] १ श्वासोच्छ्वास, सांस। २ श्वास के पुद्गल (पराग)।

°आण देखो जाण = यान (चारु ८)।
आणंछ देखो आअंछ। आणंछइ (षड्)।
आणंत देखो आणी।
आणंतरिय न [आनन्तर्य] १ अविच्छेद, व्यवधान का अभाव (ठा ४, ३)। २ अनुक्रम, परिपाटि; 'आणंतरियंति वा अणुपरिवाडित्ति वा अणुक्कमेत्ति वा एगट्ठा' (आचू)।
आणंद अक [आ + नन्द्] आनन्द पाना, खुश होना।
आणंद सक [आ + नन्दय्] खुश करना। आणंदेदि (शौ) (नाट)। कृ. आणंदिअव्व (रयण १०)।
आणंद पुं [आनन्द] १ अहोरात्र का सोलहवाँ मुहूर्त (सुज्ज १०, १३)। २ एक देव-विमान (देवेन्द्र १३१)।
आणंद पुं [आनन्द] १ हर्ष, खुशी (कुमा)। २ भगवान् शीतलनाथ के मुख्य-शिष्य (सम १५२)। ३ पोतनपुर नगर का एक राजा, जो भगवान् अजितनाथ का मातामह था (पउम ५, ५२)। ४ भावी छठवाँ बलदेव (सम १५४)। ५ नागकुमार-जातीय देवों के स्वामी धरणेन्द्र के एक रथ-सैन्य का अधिपति देव (ठा ५, १)। ६ मुहूर्त-विशेष (सम ५१)। ७ भगवान् ऋषभदेव का एक पुत्र (राज)। ८ भगवान् महावीर के एक साधु शिष्य का नाम (कप्प)। ९ भगवान् महावीर के दस मुख्य उपासकों (श्रावक-शिष्य) में पहला (उवा)। १० देव-विशेष (जं; दीव)। ११ राजा श्रेणिक के एक पौत्र का नाम (निर २, १)। १२ 'उपासगदसा' सूत्र का एक अध्ययन (उवा)। १३ 'अणुत्तरोपपातिक दसा' सूत्र का सातवाँ अध्ययन (भग)। १४ 'निरयावली' सूत्र का एक अध्ययन (निर २, १)। १५ ब. देश-विशेष (पउम ९८, ६६)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष (बृह)। °रक्खिय पुं [°रक्षित] स्वनामख्यात एक जैन साधु (भग)।
आणंदण न [आनन्दन] १ खुशी, हर्ष (सुपा ४४०)। २ वि. खुश करनेवाला, आनन्द-दायक (स ३१३; रयण ३; सण)।
आणंदवड } आणंदवस } पुं [दे] पहली बार की रजस्वला का रक्त वस्त्र (गा ४५७; दे १, ७२; षड्)।

आणंदा स्त्री [आनन्दा] १ देवी-विशेष, मेरु की पश्चिम दिशा में स्थित रुचक पर्वत पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी (ठा ८)। २ इस नाम की एक पुष्करिणी (राज)।
आणंदिय वि [आनन्दित] १ हर्षप्राप्त (औप)। २ रामचन्द्र के भाई भरत के साथ दीक्षा लेनेवाला एक राजा (पउम ८५, ३)।
आणंदिर वि [आनन्दिन्] आनन्दी, खुश रहनेवाला (भवि)।
आणक्ख सक [परि + ईक्ष्] परीक्षा करना। हेकृ. आणक्खेउं (ओघ ३६)।
आणच्छ देखो आअंछ। आणच्छइ (षड्)।
आणट्ठ वि [आनष्ट] सर्वथा नष्ट (उत्त १८, ५०; सुख १८, ५०)।
आणण न [आनन] मुख, मुँह (कुमा)।
आणण न [आनयन] लाना (महा)।
आणत्त वि [आज्ञप्त] आदिष्ट, जिसको हुकुम दिया गया हो वह (णाया १, ८; सुर ४, १००)।
आणत्ति स्त्री [आज्ञप्ति] आज्ञा, हुकुम (अभि ८१)। °अर वि [°कर] आज्ञाकारक, नौकर (से ११, ९५)। °किंकर वि [°किङ्कर] नौकर (पण्ह)। °हर वि [°हर] आज्ञा-वाहक, संदेश-वाहक (अभि ८१)।
आणत्तिया स्त्री [आज्ञप्तिका] ऊपर देखो (उवा; पि ८८)।
आणत्थ न [आनर्थ्य] अनर्थता (सम्मु १५०)।
आणप (अशो) देखो आणव = आ + ज्ञपय्। आणपयति (पि ४)।
आणपाण देखो आणापाण (नव ६)।
आणप्प वि [आज्ञाप्य] आज्ञा करने योग्य (सूअ १, ४, २, १५)।
आणम अक [आ + अन्] श्वास लेना। आणमंति (भग)।
आणमणी देखो आणवणी (भास १८; पि ८८; २४८)।
आणय पुंन [आनत] १ देवलोक-विशेष (सम ३५)। २ पुं. उस देवलोक-वासी देव (उत्त)।
आणय पुंन [आनत] एक देवविमान (देवेन्द्र १३५)।

आणयण न [आनयन] लाना, आनना (श्रा १४; स ३७६)।
आणव सक [आ + ज्ञपय्] आज्ञा देना, फरमाना। आणवइ, आणवेसि (पउम ३३, १००; ९८)। वकृ. आणवेमाण (पि ५५१)। कृ. आणवेयव्व (महा)।
आणव देखो आणाव = आ + नायय्।
आणवण न [आज्ञपन] आज्ञा, आदेश, फरमाइश (उवा; प्रामा)।
आणवण न [आनायन] मँगवाना (सुपा ५७८)।
आणवणिय वि [आज्ञापनिक] आज्ञा फरमानेवाला (राय २५)।
आणवणिया स्त्री [आज्ञापनिका, आनायनिका] देखो दोनों आणवणी (ठा २, १)।
आणवणी स्त्री [आज्ञापनी] १ क्रिया-विशेष, हुकुम करना। २ हुकुम करने से होनेवाला कर्मबन्ध (नव १६)।
आणवणी स्त्री [आनायनी] १ क्रिया-विशेष, मँगवाना। २ मँगवाने से होनेवाला कर्म-बन्ध (नव १९)।
आणा स्त्री [आज्ञा] आदेश, हुकुम (ओघ ६०)। २ उपदेश, 'एसा आणा निग्गंथिया' (आचा)। ३ निर्देश, 'उववाओ णिद्देसो आणा विणओ य होंति एगट्ठा' (वव)। ४ आगम, सिद्धान्त (विसे ८९४; णंदि)। ५ सूत्र की व्याख्या (औप)। °ईसर पुं [°ईश्वर] आज्ञा फरमानेवाला मालिक (विपा १, १)। °जोग पुं [°योग] १ आज्ञा का सम्बन्ध (पंचा)। २ शास्त्र के अनुसार कृति, 'पावं विसाइतुल्लं आणाजोगो अ मंतसमो' (पंचव)। °रुइ स्त्री [°रुचि] सम्यक्त्व-विशेष (उत्त)। २ वि. आगमों पर श्रद्धा रखनेवाला (पंच)। °व वि [°वत्] आज्ञा माननेवाला (पंचा)। °वत्त न [°पत्र] आज्ञापत्र, हुकुमनामा (से १, १८)। °ववहार पुं [°व्यवहार] व्यवहार-विशेष (पंचा)। °विजय न [°विचय, °विजय] धर्मध्यान-विशेष, जिसमें आज्ञा—आगम के गुणों का चिन्तन किया जाता है (औप)।
आणाइ पुं [दे] शकुनि, पक्षी (दे १, ६४)।

आणाइत्त वि [आज्ञावत्] आज्ञा माननेवाला (पंचा)।

आणाइय वि [आनायित] मँगाया हुआ (कुमा २, २१)।

आणापाण पुं [आनप्राण] १ श्वासोच्छ्वास (प्रासू १०४)। २ श्वासोच्छ्वास-परिमित समय (भग)। °पज्जत्ति स्त्री [°पर्याप्ति] श्वासोच्छ्वास लेने की शक्ति (भग ६, ४)।

आणापाणु स्त्री [आनप्राण] ऊपर देखो; 'आणापाणूओ' (भग २५, ५)।

आणापाणुय पुं [आनप्राणक] श्वासोच्छ्वास-परिमित काल (कप्प)।

आणाम पुं [आनाम] श्वास, अन्तःश्वास (भग)।

आणामिय वि [आनामित] १ थोडा नमाया हुआ (पण्ह १, ४)। २ अधीन किया हुआ (पउम ६८, ३७)।

आणाल पुं [आलान] १ बन्धन। २ हाथी बाँधने की रज्जु—डोरी। ३ जहाँ पर हाथी बाँधा जाता है वह स्तम्भ, कील (हे २, १७७; प्रामा)। °क्खंभ, °खंभ पुं [°स्तम्भ] जहाँ हाथी बाँधा जाता है वह स्तम्भ (हे २, ११७)।

आणाव देखो **आणव** = आ + ज्ञपय्। आणावेइ (स १२६)। कवकृ. **आणाविज्जंत** (सुपा ३२३)। कृ. **आणावेयव्व** (आचा)।

आणाव सक [आ + नायय्] मँगवाना। आणावइ (भवि)। संकृ. **आणाविय** (नाट)।

आणाव (अप) सक [आ + नी] लाना। आणावइ (प्राकृ १२०)।

आणावण न [आनायन] दूसरे से मँगवाना, 'सयमाणयणे पढमा बीया आणावणेण अन्नेहिं (संबोध ७)।

आणावण न [आज्ञापन] आज्ञा, हुकुम (षड्)।

आणाविय वि [आज्ञापित] जिसको हुकुम किया गया हो वह, फरमाया हुआ (सुपा २५१)।

आणाविय वि [आनायित] मँगवाया हुआ (सुपा ३८५)।

आणि देखो **आणी**। कृ. **आणियव्व** (रयण ६)। संकृ. **आणिय** (नाट)।

आणिअ वि [आनीत] लाया हुआ (हे १, १०१)।

आणिअ [दे] देखो **आढिअ** (दे १,७४)।

आणिक्क वि [दे] टेढ़ा, वक्र (से ६, ८६)।

आणिक्क न [दे] तिर्यक् मैथुन (दे १, ६१)।

आणी सक [आ + नी] लाना। कर्म. आणीअइ (पि ५४८)। वकृ. 'आणंतीए गुणेसु, दोसेसु परंमुहं कुणंतीए' (मुद्रा २३६)। संकृ. **आणीय** (विसे ६१६)। कवकृ. **आणिज्जंत** (सुपा १६३)।

आणीय वि [आनीत] लाया हुआ (हे १, १०१; काल)।

आणुअ न [दे] १ मुख, मुँह (दे १, ६२; षड्)। २ आकार, आकृति (दे १, ६)।

आणुओगिअ वि [आनुयोगिक] व्याख्याकर्ता (णंदि ५१)।

आणुकंपिय वि [आनुकम्पिक] दयालु, कृपालु (राज)।

आणुगामि वि [अनुगामिन्] नीचे देखो (विसे ७३६)।

आणुगामिय वि [आनुगामिक] १ अनुसरण करनेवाला, पीछे-पीछे जानेवाला (भग)। २ न. अवधिज्ञान का एक भेद (आवम)।

आणुगुण्ण, **आणुगुन्न** न [आनुगुण्य] १ औचित्य, अनुरूपता (पंचा ६, २६)। २ अनुकूलता (धर्मसं ११८६)।

आणुधम्मिय वि [आनुधर्मिक] इतर धर्मवालों को भी अभीष्ट, सर्वधर्म-सम्मत (आचा)।

आणुपाणु देखो **आणापाणु** (कम्म ५, ४०)।

आणुपुव्व न [आनुपूर्व्य] अनुक्रम, परिपाटी (निर १,१)।

आणुपुव्वी स्त्री [आनुपूर्वी] क्रम, परिपाटी (अणु)। °णाम, °नाम न [°नामन्] नाम-कर्म का एक भेद (सम ६७)।

आणुलोमिअ वि [आनुलोमिक] अनुलोम, अनुकूल, मनोहर (दस ७, ५६)।

आणुवित्ति स्त्री [अनुवृत्ति] अनुसरण (सं ६१)।

आणूग पुंन [अनूप] सजलप्रदेश (धर्मसं ६२६)।

आणूव पुं [दे] श्वपच, डोम (दे १, ६४)।

आणे सक [आ + नी] लाना, ले आना। आणेइ (महा)। कृ. **आणेयव्व** (सुपा १६३)। संकृ. **आणेऊण** (महा)।

आणे सक [ज्ञा] जानना। आणेइ (नाट)।

आणेसर देखो **आणा-ईसर** (श्रा १०)।

आत देखो **आय** = आत्मन् (ठा १)।

आतंब देखो **आयंब** = आताम्र (स २६१)।

आतित्थ देखो **आइत्थ** (कुप्र १००; २८६)।

आत्त देखो **अत्त** = आत्मन्; 'आत्तहियं खु दुहेण लब्भइ' (सूअ १, २, २, ३०)।

आत्त देखो **अत्त** = आत्त (अणु २१)।

आत्त वि [आत्मीय] स्वकीय (अणु २१)।

आदंस, **आदंसग** देखो **आयंस** (गा २०४; प्रति ८; सूअ १, ४)।

आद (शौ) देखो **अत्त** = आत्मन् (द्रव्य ६)।

आद देखो **आइ** = आ + दा। आदए (सूअ १, ८, १६)।

आदण्ण, **आदन्न** वि [दे] आकुल, व्याकुल, घबड़ाया हुआ (उप पृ २२१; हे ४, ४२२)।

आदयाण वि [आददान] ग्रहण करता हुआ (श्रु १३८)।

आदर देखो **आयर** = आ + दृ। आदरइ (हे ४, ८३)।

आदरिस देखो **आयंस** (कुमा; दे २, १०७)।

आदाउ वि [आदातृ] ग्रहण करनेवाला (विसे १५६८)।

आदाण देखो **आयाण** (ठा ४, १); 'गब्भादाणेण संजुयासि तुमं' (पउम ६५,६०; उवा)।

आदाण न [आर्द्रहण] उबाला हुआ, गरम किया हुआ (जल तैल आदि) (उवा)।

आदाणिय न [आदानीय] लाभ, नफा (सुख ४, ६)।

आदाणीय देखो **आयाणीय** (कप्प)।

आदाय देखो **आया** = आ + दा।

आदि देखो **आइ** = आदि (कप्प; सूअ १,५)।

आदिच्च देखो **आइच्च** (ठा ५, ३, ८)।

आदिच्छा स्त्री [आदित्सा] ग्रहण करने की इच्छा (आव)।

आदिज्ज देखो **आएज्ज** (भग)।

आदिट्ठ देखो **आइट्ठ** (अभि १०६)।

आदित्त देखो **आइत्त** (वज्जा १६०)।

आदित्तु वि [आदातृ] ग्रहण करनेवाला (ठा ७)।
आदिय सक [आ + दा] ग्रहण करना। आदियइ (उवा)। प्रयो. आदियावेंति (सूअ २, १)।
आदिल्ल } देखो आइल्ल (पि ५९५)।
आदिल्लग }
आदी स्त्री [आदी] इस नाम की एक महानदी (ठा ५, ३)।
आदीण वि [आदीन] १ अत्यंत दीन, बहुत गरीब (सूअ १, ५)। २ न. दूषित भिक्षा। °**भोइ** वि [°भोजिन्] दूषित भिक्षा को लेनेवाला, 'आदीणभोईवि करेति पावं' (सूअ १, १०)।
आदीणिय वि [आदीनिक] अत्यन्त दीन-संबन्धी, 'आदीणियं दुक्कडियं पुरत्था' (सूअ १, ५)।
आदु (शौ) देखो अदु (त्रि ९०)।
आदेज्ज देखो आएज्ज (पण्ह १, ४)।
आदेस देखो ओएस = आदेश (कुमा; वव २, ८)।
आदेस पुं [आदेश] व्यपदेश, व्यवहार (सूअ १, ८, ३)। देखो आएस = आदेश (सूअ २, १, ५६)।
आधरिस सक [आ + धर्षय्] परास्त करना, तिरस्कारना। आधरिसहि (आवम)।
आधा देखो आहा (पिंड)।
आधार देखो आहार = आधार (पण्ह २,५)।
आधोरण पुं [आधोरण] हस्तिपक, महावत, हाथीवान् (धर्मवि १३६)।
आनय देखो आणय (अनु)।
आनामिय देखो आणामिय (पण्ह १, ४)।
आपण देखो आवण (अभि १८८)।
आपण्ण देखो आवण्ण (अभि ६५)।
आपत्ति स्त्री [आपत्ति] प्राप्ति (संबोध ३५; पव १४६)।
आपाइय वि [आपादित] १ जिसकी आपत्ति की गई हो वह। २ उत्पादित, जनित (विसे १७४६)।
आपायण न [आपादन] संपादन (श्रावक ८२; पंचा ६, १६)।
आपीड पुं [आपीड] शिरोभूषण (श्रा २८)।
आपीण देखो आवीण (गउड)।
आपुच्छ सक [आ + प्रच्छ्] आज्ञा लेना, सम्मति लेना। आपुच्छइ (महा)। वकृ. आपुच्छंत (पि ३९७)। कृ. आपुच्छणीय (णाया १, १)। संकृ. आपुच्छित्ता, आपुच्छित्ताणं, आपुच्छिऊण, आपुच्छिउं, आपुच्छिय (पि ५८२; ५८३; कप्प; ठा ५, १)।
आपुच्छण न [आप्रच्छन] आज्ञा, अनुमति (णाया १, ६)।
आपुट्ठ वि [आपृष्ट] जिसकी आज्ञा या सम्मति ली गई हो वह (सुर १०, ५१)।
आपुण्ण वि [आपूर्ण] पूर्ण, भरपूर (दे १, २०)।
आपूर पुं [आपूर] पूरनेवाला, 'मयणासरापूरं...सरंसि' (कप्प)।
आपूर देखो आऊर। कर्म. आपूरिज्जइ (महा)। वकृ. आपूरमाण, आपूरेमाण (भग; राय)।
आपेड }
आपेड्ड } देखो आपीड (पि १२२, महा)।
आपेल्ल }
आप्पण न [दे] पिष्ट, आटा (षड्)।
आफंस पुं [आस्पर्श] अल्प स्पर्श (हे १,४४)।
आफर पुं [दे] द्यूत, जुआ (दे १, ६३)।
आफाल सक [आस्फालय्] आस्फालन करना, आघात करना। संकृ. आफालित्ता, आफालिऊण (पि ५८२; ५८६)।
आफालण देखो अप्फालण (गा ५४६)।
आफुण्ण वि [दे] आक्रान्त (अणु १६२)।
आफोडिअ न [आस्फोटित] हाथ पछाड़ना (पण्ह १, ३)।
आबंध सक [आ + बन्ध्] मजबूत बाँधना। वकृ. आबंधत (हे १, ७)। संकृ. आबंधिऊण (पि ५८६)।
आबंध पुं [आबन्ध] संबन्ध, संयोग (गउड)।
आबद्ध वि [आबद्ध] बंधा हुआ (स ३५८)।
आबाहा स्त्री [आबाधा] १ अल्प बाधा (णाया १, ४)। २ अन्तर (सम १५)। ३ मानसिक पीड़ा (बृह)।
आभंकर पुं [आभङ्कर] १ ग्रह-विशेष (ठा २, ३)। २ न. विमान-विशेष (सम ८)।
°**पभंकर** न [°प्रभङ्कर] विमान-विशेष (सम ८)।
आभक्खाण देखो अब्भक्खाण (उवा)।
आभट्ठ वि [आभाषित] १ कथित, उक्त (सुपा १५१)। २ संभाषित (सुर २,२४८)।
आभरण न [आभरण] अलंकार, आभूषण (पि ६०३)।
आभव्व वि [आभव्य] होने योग्य, संभाव्य (वव; सुपा ३०७)।
आभा स्त्री [आभा] प्रभा, कान्ति, तेज (कुमा; औप)।
आभागि वि [आभागिन्] भोक्ता, भोगी; 'अणेगाणं जम्ममरणाणं आभागी भविज्ज' (वसु; णाया १, १८)।
आभार पुं [आभार] बोझ, भार (सुपा २३६)।
आभास सक [आ + भाष्] कहना, संभाषण करना। आभासइ (हे ४, ४४७)।
आभास पुं [आभास] १ जो वास्तविक में वह न होकर उसके समान लगता हो। २ विपरीत, 'करणाभासेहिं' (कुमा)।
आभासिय पुं [आभाषिक] १ इस नाम का एक म्लेच्छ देश। २ उसमें रहनेवाली म्लेच्छ जाति (पण्ह १, १)। ३ एक अन्तर्द्वीप। ४ उसमें रहनेवाला, 'कहि णं भंते! आभासियमणुयाणं आभासियदीवे नामं दीवे' (जीव ३; ठा ४, २)।
आभासिय देखो आभट्ठ (निर)।
आभिओइय देखो आभिओगिय (महा)।
आभिओग पुं [आभियोग्य] १ किंकर-स्थानीय देव-विशेष (ठा ४, ४)। २ नौकर, किंकर (राय)। ३ किंकरता, नौकरी (दस ६, २)।
आभिओगा स्त्री [आभियोग्या] आभियोगिक भावना (उत्त ३६, २५५)।
आभिओगि वि [आभियोगिन्] किंकर-स्थानीय देव (दस ६)।
आभिओगिय वि [आभियोगिक] १ मन्त्र आदि से आजीविका चलानेवाला (पणण २०)। २ नौकर स्थानीय देव-विशेष (णाया १, ८)। ३ वशीकरण, दूसरे को वश में करने का मन्त्रादि-कर्म (पंचा; महा)।

आभिओगिय वि [आभियोगित] वशीकरण आदि से संस्कृत (आव)।

आभिओग्ग देखो आभिओग (पण्ण २०)।

आभिग्गहिअ वि [आभिग्रहिक] १ अभिग्रह-संबन्धी (पंचा ४, ८)। २ न. मिथ्यात्व-विशेष (पंच ४; २)।

आभिग्गहिय वि [आभिग्रहिक] १ प्रतिज्ञा से संबन्ध रखनेवाला। २ प्रतिज्ञा का निर्वाह करनेवाला (आव)। ३ न. मिथ्यात्व-विशेष (श्रा ६)।

आभिणंदिय पुं [आभिनन्दित] श्रावण मास (चंद)।

आभिट्ट, **आभिडिय** } वि [दे] प्रवृत्त, 'आभिट्टं परमरणं' (पउम ४,४२;६,१९२; वज्जा ४२)।

आभिणिबोहिग देखो आभिणिबोहिय (धर्मसं ८२३)।

आभिणिबोहिय न [आभिनिबोधिक] इन्द्रिय और मन से होनेवाला प्रत्यक्षज्ञान-विशेष (सम ३३)।

आभिप्पाइअ वि [आभिप्रायिक] अभिप्राय-वाला (अणु १४५)।

आभिसेक्क वि [आभिषेक्य] १ अभिषेक के योग्य (निर १, १)। २ मुख्य, प्रधान; 'आभिसेक्कं हत्थिरयणं पडिकप्पेह' (औप)।

आभीर, **आभीरिय** } पुं [आभीर] एक शूद्र-जाति, अहीर, गोवाला (सूअ १, ८; सुर ९, ६२)।

आभूअ वि [आभूत] उत्पन्न (निर १, १)।

आभेडिय [दे] देखो आभिट्ट (उप पृ ४२)।

आभोइअ वि [आभोगित] देखा हुआ (कप्प)।

आभोग पुं [आभोग] १ विलोकन, देखना (उप १४७)। २ प्रदेश, स्थान (सुर २, २२१)। ३ उपकरण, साधन (ओघ ३६)। ४ प्रतिलेखन (ओघ ३)। ५ उपयोग, ख्याल (भग)। ६ विस्तार (णाया १, १)। ७ ज्ञान, जानना (भग २५, ६; ठा ४)। देखो आभोय = आभोग।

आभोगण न [आभोगन] ऊपर देखो (णंदि)।

आभोगि वि [आभोगिन्] परिपूर्ण, 'जह कमलो निरवाओ जाओ जसविहवाभोगी' (सुपा २७५)। °णी स्त्री [°नी] मानसिक निर्णय उत्पन्न करानेवाली विद्या-विशेष (बृह)।

आभोय सक [आ + भोगय्] १ देखना। २ जानना। ३ ख्याल करना। आभोएइ (उवा; णाया)। वकृ. **आभोएमाण** (कप्प)। संकृ. **आभोइत्ता, आभोएऊण, आभोइअ** (दस ५; महा; पंचव)।

आभोय पुं [आभोग] १ सर्प की फणा (स ६१०)। २ देखो **आभोग** (आव; महा; सुर ३, ३२)।

आम अ [आम] अनुमति-प्रकाशक अव्यय—हाँ (गा ४१७; सुर २, २४५; स ४५६)।

आम अ [भवत्] आप (प्राकृ ८१)।

आम पुं [आम] १ रोग, पीड़ा (से ६, ४४)। २ वि. अपक्व, कच्चा (श्रा २०)। ३ अशुद्ध, अपवित्र (आचा)। °जर पुं [°ज्वर] अजीर्ण से उत्पन्न बुखार (गा ५१)।

आमइ वि [आमयिन्] रोगी (वव १)।

आमं अ [आम] १ स्वीकार-सूचक अव्यय—हाँ (सुख २, १३)। २ अतिशय, अत्यन्त (धर्मसं ६४६)।

आमंड न [दे] बनावटी आमला का फल, कृत्रिम आमलक (उप पृ २१४; उप १४५ टी)।

आमंडग न [दे] भाण्ड, पात्र (दे १, ६८)।

आमंत सक [आ + मन्त्रय्] १ आह्वान करना, संबोधन करना। २ अभिनन्दन करना। वकृ. **आमंतेमाण** (आचा)। संकृ. **आमंतित्ता** (कप्प); **आमंतिय** (सूअ १, ४)।

आमंतण न [आमन्त्रण] आह्वान, संबोधन (वव)। °वयण न [°वचन] संबोधन-विभक्ति (विसे ३४५७)।

आमंतणी स्त्री [आमन्त्रणी] १ संबोधन की भाषा, आह्वान की भाषा (दस ६)। २ आठवीं संबोधन-विभक्ति (ठा ८)।

आमंतिय वि [आमन्त्रित] संबोधित (विपा १, ६)।

आमग देखो **आम** (णाया १, ६)।

आमघाय पुं [अमाघात] अमारि-प्रदान, हिंसा-निवारण (पंचा ९, १५; २०; २१)।

आमज्ज सक [आ + मृज्] एक बार साफ करना। आमज्जेज्ज (आचा)। वकृ. **आमज्जंत** (निचू)। प्रयो. **आमज्जावंत** (निचू)।

आमद्द पुं [आमर्द] संघर्ष, आघात (कुमा)।

आमय पुं [आमय] रोग, दर्द (स ५६६; स्वप्न ६०)। °करणी स्त्री [°करणी] विद्या-विशेष (सूअ २, २)।

आमय वि [आमत] संमत, अनुमत (विवे १३६)।

आमराय पुं [आमराज] एक प्रसिद्ध राजा (ती ७)।

आमरिस पुं [आमर्ष] स्पर्श (विसे ११०६)।

आमल पुंन [आमलक] आमला का फल (सम्मत्त १५६)।

आमलई स्त्री [आमलकी] आमला का पेड़ (दे)।

आमलकप्पा स्त्री [आमलकल्पा] नगरी-विशेष (णाया २, १)।

आमलग पुं [आमरक] १ चारों ओर से मारना। २ विपाक-श्रुत का एक अध्ययन (ठा १०)।

आमलग, **आमलय** } पुंन [आमलक] १ आमला का पेड़ (ठा ४)। २ आमला का फल, 'मुक्खोवाओ आमलगो विव करतले देसिओ भगवया' (वसु; कुमा)।

आमलय न [दे] नूपुर-गृह, नूपुर रखने का स्थान (दे १, ६७)।

आमसिण वि [आमसृण] १ थोड़ा चिकना। २ उल्लसित (से १२, ४३)।

आमिल्ल सक [आ + मुच्] छोड़ना। आमिल्लइ (भवि)।

आमिस न [आमिष] नैवेद्य (पंचा ६, २६; कुप्र ४२३; ती १३)।

आमिस न [आमिष] १ मांस (णाया १, ४)। २ वि. मनोहर, सुन्दर (से ६, ३१)। ३ आसक्ति का कारण, 'आमिसं सव्वमुज्झित्ता विहरिस्सामो निरामिसा' (उत्त १४)। ४ आहार, फलादि भोज्य वस्तु (पंचा ६)।

आमुंच सक [आ + मुच्] १ छोड़ना। २ उतारना। ३ पहनना। वकृ. **आमुंचंत** (आक ३८)।

आमुक्क वि [आमुक्त] १ त्यक्त (गा ५३६; गउड)। २ उतारा हुआ (आक ३८)। ३ परिहित (वेणी १११ टी)।

आमुट्ठ वि [आमृष्ट] १ स्पृष्ट । २ उलटा किया हुआ (ओघ) ।

आमुय सक [आ + मुच्] छोड़ना, त्यागना । आमुयइ (गउड) ।

आमुस सक [आ + मृश्] थोड़ा या एक बार स्पर्श करना । वकृ. **आमुसंत, आमुसमाण** (ठा १; आचा; भग ८, ३) ।

आमेडणा स्त्री [आम्रेडना] विपर्यस्त करना, उलटा करना (पण्ह १, ३) ।

आमेल पुं (दे) लट, जटा (दे १, ६२) ।

आमेल, आमेलग, आमेलय पुं [आपीड] फूलों की माला, जो मुकुट पर धारण की जाती है, शिरोभूषण (हे १, १०५; पि १२२; भग ६, ३३) ।

आमेल्ल देखो **आमेल** = आपीड (उवा २०६) ।

आमेल्लिअ वि [आपीडित] अवतंसित, शिरोभूषण से विभूषित (से ६, २१) ।

आमोअ अक [आ + मुद्] खुश होना । संकृ. आमोएवि (अप) (भवि) ।

आमोअ पुं [दे. आमोद] हर्ष, खुशी (दे १, ६४) ।

आमोअ पुं [आमोद] सुगन्ध, अच्छी गन्ध (से १, २३) ।

आमोअ पुं [आमोद] वाद्य-विशेष (राय ४६) ।

आमोअअ वि [आमोदक] १ सुगन्ध उत्पन्न करनेवाला । २ आनन्द-जनक (से ६, ४०) ।

आमोअअ वि [आमोदद] सुगन्ध देनेवाला (से ६, ४०) ।

आमोइअ वि [आमोदित] हृष्ट, हर्षित (भवि) ।

आमोक्ख पुं [आमोक्ष] मोक्ष, मुक्ति, पूर्ण छुटकारा (सूअ १, १; ४, १३) ।

आमोक्खा स्त्री [आमोक्ष] १ छुटकारा । २ परित्याग (सूअ १, ३; पि ४६०) ।

आमोड पुं [दे] जूट, लट, समूह (दे १, ६२) ।

आमोडग न [आमोटक] १ वाद्य-विशेष (आचू) । २ फूलों से बालों का एक प्रकार का बन्धन (उत्तनि ३) ।

आमोडण न [आमोटन] थोड़ा मोड़ना (पण्ह १, १) ।

आमोडिअ वि [आमोटित] मर्दित (माल ६०) ।

आमोद, आमोय देखो **आमोअ** (स्वप्न ५२; सुर ३, ४१; काल) ।

आमोय पुं [आमोक] कतवार-पुञ्ज, कतवार का ढेर, कूड़े का पुञ्ज (आचा २, ७, ३) ।

आमोरअ वि [दे] विशेषज्ञ, अच्छा जानकार (दे १, ६६) ।

आमोस पुं [आमर्श, °र्ष] स्पर्श, छूना; 'संफरिसणमामोसो' (पण्ह २, १ टी; विसे ७८१) ।

आमोस पुं [आमोष] चोर (उत्त ६, २८) ।

आमोसग वि [आमोषक] १ चोर, चोरी करनेवाला (ठा ५, २) । २ चोरों की एक जाति (उर २, ६) ।

आमोसहि पुं [आमर्शौषधि] लब्धि-विशेष, जिसके प्रभाव से स्पर्श मात्र से ही सब रोग नष्ट होते हैं (पण्ह २, १; औप) ।

आय पुं [आय] १ लाभ, प्राप्ति, फायदा (अणु) । २ वनस्पति-विशेष (पएण १) । ३ कारण, हेतु (विसे १२२६; २६७६) । ४ अध्ययन, पठन (विसे ६५८) । ५ गमन (विसे २७६२) ।

आय पुं [आय] अध्ययन, शास्त्रांश-विशेष (अणु २५०) ।

आय वि [आज] १ अज-सम्बन्धी । २ बकरे के बाल से उत्पन्न (वस्त्रादि) (आचा) ।

आय वि [आगत] आया हुआ (काल) ।

आय वि [आत्त] गृहीत, 'आयचरित्तो करेइ सामण्णं, (संथा ३६) ।

आय पुं [आगस्] १ पाप । २ अपराध, गुनाह (श्रा २३) ।

आय पुंस्त्री [आत्मन्] १ आत्मा, जीव (सम १) । २ निज, स्वयं; 'अहालहुस्सगाइं रयणाइं गहाय आयाए एगंतमंतं अवक्कामंति' (भग ३, २) । ३ शरीर, देह (णाया १, ८) । ४ ज्ञान आदि आत्मा के गुण (आचा) । °**गुत्त** वि [°गुप्त] संयत, जितेन्द्रिय; 'आयगुत्ता जिइंदिया' (सूअ) । °**जोगि** वि [°योगिन्] मुमुक्षु, ध्यानी (सूअ) । °**ट्ठि** वि [°र्थिन्] मुमुक्षु, 'एवं से भिक्खू आयट्ठी' (सूअ) । °**तंत** वि [°तन्त्र] स्वाधीन, स्वतन्त्र (राज) । °**तत्त** न [°तत्त्व] परम पदार्थ, ज्ञानादि रत्न-त्रय (आचा) । °**प्पमाण** वि [°प्रमाण] साढ़े तीन हाथ का परिमाण वाला (पव) । °**प्पवाय** न [°प्रवाद] बारहवें जैन अङ्ग ग्रन्थ का एक भाग, सातवाँ पूर्व (सम २६) । °**भाव** पुं [°भाव] १ आत्म-स्वरूप । २ निज अभिप्राय (भग) । ३ विषयासक्ति, 'विण्णइजओ सव्वह आयभावं' (सूअ) । °**य** पुं [°ज] पुत्र, लड़का (भवि) । °**रक्ख** वि [°रक्ष] अङ्गरक्षक (णाया १, ८) । °**व** वि [°वत्] ज्ञानादि आत्मगुणों से संपन्न (आचा) । °**हम्म** वि [°घ्न] आत्मा को अधोगति में ले जानेवाला । २ देखो **आहाकम्म** (पिंड) ।

आय° देखो **आउ**; 'किंचायरक्खिओ जो पुरिसो सो होइ वरिससयआऊ' (सुपा ४५३) ।

आयइ स्त्री [आयति] भविष्य काल (सुर ४, १३१) ।

आयइजणग न [आयतिजनक] तपश्चर्या-विशेष (पव २७१) ।

आयइत्ता देखो **आइ** = आ + दा ।

आयंक पुं [आतङ्क] १ दुःख । २ पीड़ा (आचा) । ३ दुःसाध्य रोग, आशु-घाती रोग (औप) ।

आयंकि वि [आतङ्किन्] रोगी, रोग-युक्त (ठा ५, ३, टी—पत्र ३४२) ।

आयंगुल न [आत्माङ्गुल] परिमाण का एक भेद,

'जेणं जया मणूसा, तेसिं जं होइ माणरूवं तु ।
तं भणियमिहायंगुलमणिययमाणं पुण इमं तु ।'
(विसे ३४० टी) ।

आयंच सक [आ + तञ्च्] सींचना, छिड़कना । आयंचइ, आयंचामि (उवा) ।

आयंचणिया स्त्री [आतञ्चनिका] कुम्भकार का पात्र-विशेष, जिसमें वह पात्र बनाने के समय मिट्टीवाला पानी रखता है (भग १५) ।

आयंचणी स्त्री [आतञ्चनी] ऊपर देखो (भग १५) ।

आयंत वि [आचान्त] जिसने आचमन किया हो वह (णाया १, १; स १८९) ।

आयंत देखो **आया** = आ + या ।

आयंतम वि [आत्मतम] आत्मा को खिन्न करनेवाला (ठा ४, २) ।

आयंतम वि [आत्मतमस्] १ अज्ञानी, अजान । २ क्रोधी (ठा ४, २) ।

आयंदम वि [आत्मदम] १ आत्मा को शान्त

रखनेवाला, मन और इन्द्रियों का निग्रह करनेवाला। २ अश्व आदि को संयत रहने को सिखानेवाला (ठा ४, २)।

आयंप पुं [आकम्प] १ कँपना, हिलना। २ कँपानेवाला (पउम ६६, १८)।

आयंपिय वि [आकम्पित] कँपाया हुआ (स ३५३)।

आयंब अक [वेप्] काँपना, हिलना। आयंबइ (हे ४, १४७)।

आयंब, **आयंबिर** वि [आताम्र] थोड़ा लाल (ओप; सुर ३, ११०, सुपा ६, १४४)।

आयंबिल न [आचाम्ल] तपो-विशेष, आंबिल (णाया १,८)। °**वड्ढमाण** न [°वर्धमान] तपश्चर्या-विशेष (अंत ३२; महा)।

आयंबिलिय वि [आचाम्लिक] आम्बिल-तप का कर्त्ता (ठा ७; पण्ह २, १)।

आयंभर, **आगंभरि** वि [आत्मम्भरि] स्वार्थी, अकेल-पेटू (ठा ४, ३)।

आयंव अक [आ+कम्प्] काँपना, हिलना (प्रामा)।

आयंस, **आयंसग** पुं [आदर्श] १ दर्पण (पण्ह १,४; सूअ १,४)। २ बैल आदि के गले का भूषण-विशेष (अणु)। °**मुह** पुं [°मुख] १ एक अन्तर्द्वीप। २ उसके निवासी मनुष्य (ठा ४, २)।

आयक्ख देखो आइक्ख। आयक्खाहि (भग)।

आयग वि [आजक] देखो आय = आज (आचा)।

आयज्झ अक [वेप्] काँपना, हिलना। आयज्झइ (हे ४, १४१; षड्)। वकृ. आयज्झंत (कुमा)।

आयट्ट सक [आ+वर्त्तय्] १ फिराना, घुमाना। २ उबालना। वकृ. **आअट्टंत** (से ५, ७५; ८, १६)। कवकृ. **आयट्टिज्जमाण** (णाया १, ६)।

आयट्टण न [आवर्त्तन] फिराना (सुपा ५३०)।

आयड्ढ सक [आ+कृष्] खींचना। आयड्ढइ (महा)। कवकृ. **आअड्ढिज्जंत** (से ५, २८)। संकृ. **आयड्ढिऊण** (महा)।

आयड्ढण न [आकर्षण] आकर्षण, खींचाव (सुपा १२, ७६; गा ११८)।

आयड्ढि स्त्री [आकृष्टि] ऊपर देखो (गउड; दे ६, २१)।

आयड्ढि पुं [दे] विस्तार (दे १, ६४)।

आयड्ढिय वि [आकृष्ट] खींचा हुआ (काल; कप्पू)।

आयण्ण सक [आ+कर्णय्] सुनना, श्रवण करना। आअण्णेइ (गा ३६५)। वकृ. **आअण्णंत** (से १, ६५; गा ४६५; ६४३)। संकृ. **आयण्णिऊण** (उवा)।

आयण्णण न [आकर्णन] श्रवण (महा)।

आयण्णिय वि [आकर्णित] सुना हुआ (उवा)।

आययंत वकृ [आददत्] ग्रहण करता हुआ (सूअ २, १)।

आयत्त वि [आयत्त] अधीन, स्ववश (गा ३७६)।

आयन्न देखो आयण्ण। वकृ. **आयन्नंत** (सुर १, २४७)।

आयन्नण देखो आयण्णण (सुर ३, २१०)।

आयम सक [आ+चम्] आचमन करना, कुल्ला करना। हेकृ. **आयमित्तए** (कप्प)। वकृ. **आयममाण** (ठा ५)।

आयमण न [आचमन] शुद्धि, शौच (श्रा १२; गा ३३०; निचू ४; स २०६; २५२)।

आयमिअ देखो आगमिअ (हे १, १७७)।

आयमिणी स्त्री [आयमिनी] विद्या-विशेष (सूअ २, २)।

आयय वि [आयत] १ लम्बा, विस्तृत (उवा; पउम ८, २१५)। २ पुं. मोक्ष (सूअ १,२)।

आयय सक [आ+दद्] ग्रहण करना। आयए, आययंति (दस ५, २, ३१; उत्त ३, ७)। वकृ. आययमाण (पिंड १०७)।

आययण न [आयतन] १ प्रकटीकरण (सूअ १, ६, १६)। २ उपादान कारण (सूअ १, १२, ५)।

आययण न [आयतन] १ घर, गृह (गउड)। २ आश्रय, स्थान (आचा)। ३ देव-मन्दिर (आवम)। ४ धार्मिक जनों का एकत्र होने का स्थान,

'जत्थ साहम्मिया बहवे सीलवंता बहुस्सुया।
चरित्तायारसंपण्णा आययणं तं वियाण हु'

(धम्म)। ५ कर्म-बन्ध का कारण (आचा)। ६ निर्णय, निश्चय (सूअ १, ६)। ७ निर्दोष स्थान (सार्ध १०६)।

आयर सक [आ+चर्] आचरना, करना। आयरइ (महा; उव)। वकृ. **आयरंत**, **आयरमाण** (भग)। कृ. **आयरियव्व** (स १)।

आयर पुं [आकर] १ खानि, खान। २ समूह (काल; कप्पू)।

आयर देखो **आयार** = आचार (पुप्फ ३५६)।

आयर पुं [आदर] १ सत्कार, सम्मान (गउड)। २ परिग्रह, असंतोष (पण्ह १,५)। ३ ख्याल, संभाल (कप्पू)।

आयरंग पुं [आयरङ्ग] इस नाम का एक म्लेच्छ राजा (पउम २७, ६)।

आयरण न [आचरण] प्रवृत्ति, अनुष्ठान (पडि)।

आयरण न [आदरण] आदर (भग १२, ५)।

आयरणा स्त्री [आचरणा] परंपरा का रिवाज (चेइय २५)।

आयरणा स्त्री [आचरणा] आचरण, अनुष्ठान (सट्ठि १४५; उवर १४५)।

अयरिय वि [आचरित] १ अनुष्ठित, विहित, कृत (उवा)। २ न. शास्त्र-सम्मत चाल-चलन;

'असढेण समाइन्नं जं कत्थइ केणइ असावज्जं।
न निवारियमन्नेहि य, बहुमणुमयमेयमायरियं'

(उप ८१३)।

आयरिय पुं [आचार्य] १ गण का नायक, मुखिया (आवम)। २ उपदेशक, गुरु, शिक्षक (भग १, १)। ३ अर्थ पढ़ानेवाला (भग ८, ८)।

आयरिस देखो **आयंस** (हे २, १०५)।

आयल्ल अक [लम्ब्] १ व्याप्त होना। २ लटकना; 'केसकलाउ खंधि ओएल्लइ, परिमोक्कलु नियंबि आयल्लइ' (भवि)।

आयल्लया स्त्री [दे] बेचैनी, 'मयणसरविहुरियंगी सहसा आयल्लयं पत्ता' (पउम ८, १८६); 'विद्धो अणंगबाणेहिं झत्ति आयल्लयं पत्तो' (सुर १६, ११०); 'किं उण पिअवअस्स मअणाअल्लअं अत्तणो उइदेहिं अक्खरेहिं णिवेदेमि' (कप्पू)। देखो **आअल्ल**।

आयल्लिय वि [दे] आक्रान्त, व्याप्त (उप १०३१ टी; भवि)।

आयव पुं [आतपवत्] अहोरात्र का २४वाँ मुहूर्त (सुज्ज १०, १३)।

आयव वि [आतप] १ उद्योत, प्रकाश (गा ४९)। २ ताप, घाम (उत्त)। ३ न. मुहूर्त-विशेष (सम ५१)। °**णाम**, °**नाम** न [°नामन्] नामकर्म का एक भेद (सम ६७)।

आयवत्त न [आतपत्र] छत्र, छाता (णाया १, १)।

आयवत्त पुं [आर्यावर्त्त] भारत, हिंदुस्तान (इक)।

आयवा स्त्री [आतपा] १ सूर्य की एक अग्र-महिषी—पटरानी। २ इस नाम का 'ज्ञाता-धर्मकथा' सूत्र का एक अध्ययन (णाया २, १)।

आयस वि [आयस] लोहे का, लोह-निर्मित (गउड; निचू १)।

आयसी स्त्री [आयसी] लोहे का कोश (पण्ह १, १)।

आया देखो **आय** = आत्मन्।

आया सक [आ + या] आना, आगमन करना। आयंति (सुपा ५७)। आयाइंति, आयाइंसु (कप्प)। वकृ. **आयंत**।

आया सक [आ + दा] ग्रहण करना, स्वीकार करना। **आयइज्ज** (उत्त ६)। कृ. **आयाणिज्ज** (ठा ६)। संकृ. **आयाए**, **आदाय**, **आयाय** (कस; कप्प; महा)।

आयाइ स्त्री [आजाति] १ उत्पत्ति, जन्म (ठा १०)। २ जाति, प्रकार। ३ आचार, आचरण (आचा)। °**ट्ठाण** न [°स्थान] १ संसार, जगत्। २ 'आचाराङ्ग' सूत्र के एक अध्ययन का नाम (ठा १०)।

आयाइ स्त्री [आयाति] १ आगमन। २ उत्पत्ति, गर्भ से बाहर निकलना (ठा २, ३)। ३ आयति, भविष्य काल (दसा)।

आयाए देखो **आया** = आ + दा।

आयाण पुंन [आदान] १ ग्रहण, स्वीकार (आचा)। २ इन्द्रिय (भग ५, ४)। ३ जिसका ग्रहण किया जाय वह, ग्राह्य वस्तु (ठा ४; सूअ २,७)। ४ कारण, हेतु; 'संति मे तउ आयाणा जेहिं कीरइ पावगं' (सूअ १, १); 'किंवा दुक्खायाणं अट्टज्झाणं समारुहसि' (पउम ६५, ४८)। ५ आदि, प्रथम (अणु)।

आयाण न [आदान] १ संयम, चरित्र (सूअ १, १२, २२)। २ वि. आदेय, उपादेय (सूअ १, १४, १७; तंदु २०)। °**पय** न [°पद] ग्रन्थ का प्रथम शब्द (अणु १४०)।

आयाण न [आयान] १ आगमन। २ अश्व का एक आभरण-विशेष (गउड)।

आयाम सक [आ + यमय्] लम्बा करना। कवकृ. **आयामिज्जंत** (से १०, ९)। संकृ. **आयामेत्ता**, **आयामेत्ताणं** (भग; पि ५८३)।

आयाम सक [आ + यम्] शौच करना, शुद्धि करना। आयामइ (पव १०६ टी)।

आयाम सक [दा] देना, दान करना। आयामेइ (भग १५)। संकृ. **आयामेत्ता** (भग १५)।

आयाम पुं [आयाम] लम्बाई, दैर्घ्य (सम २; गउड)।

आयाम पुं [दे] बल, जोर (दे १, ६५)।

आयाम न [आचाम्ल] तपो-विशेष, आयंबिल; 'नाइविगिट्ठो उ तवो छम्मासे परिमियं तु आयामं' (आचानि २७२; २७३)।

आयाम, **आयामग** न [आचाम] अवस्रावण, चावल आदि का पानी (ओघ ३५९; उत्त १५)।

आयामणया स्त्री [आयामनता] लम्बाई (भग)।

आयामि वि [आयामिन्] लम्बा (गउड)।

आयामुही स्त्री [आयामुखी] इस नाम की एक नगरी (स ४३१)।

आयाय देखो **आया** = आ + दा।

आयाय वि [आयात] आया हुआ (पउम १४, १३०; दे १,६६; कुम्मा १६)।

आयार सक [आ + कारय्] बुलाना, आह्वान करना। आआरेदि (शौ) (नाट)। संकृ. **आआरिअ**, **आयारेऊण** (नाट; स ५७८)।

आयार पुं [आकार] १ आकृति, रूप (णाया १, १)। २ इङ्गित, इशारा (पाअ)।

आयार पुं [आकार] 'आ' अक्षर (कुप्र ३२)।

आयार पुं [आचार] १ आचरण, अनुष्ठान (ठा २,३; आचा)। २ चाल-चलन, रीत-भात (पउम ६३, ८)। ३ बारह जैन अङ्गग्रन्थों में पहला ग्रन्थ, 'आयारपढमसुत्ते' (उप ६८०)। ४ निपुण शिष्य (भग १, १)। °**क्खेवणी** स्त्री [°क्षेपणी] कथा का एक भेद (ठा ४)। °**भंडग**, °**भंडय** न [°भाण्डक] ज्ञानादि का उपकरण—साधन (णाया १, १, १६)।

आयारिमय न [आचारिमक] विवाह के समय दिया जाता एक प्रकार का दान (स ७७)।

आयारिय वि [आकारित] १ आहूत, बुलाया हुआ (पउम ६१, २५)। २ न. आह्वान-वचन, आक्षेप-वचन (से १३, ८०; अभि २०९)।

आयाव सक [आ + तापय्] सूर्य के ताप में शरीर को थोड़ा तपाना। २ शीत, आतप आदि को सहन करना। वकृ. **आयावंत** (पउम ६, ६१); **आयावित** (काल); **आयावेंत** (पउम २६, २१); **आयावेमाण** (महा; भग)। हेकृ. **आयावेत्तए** (कस)। संकृ. **आयाविय** (आचा)।

आयाव पुं [आताप] असुरकुमार-जातीय देव-विशेष (भग १३, ६)।

आयाव पुं [आताप] आतप-नामकर्म (पंच ५, १३७)।

आयावग वि [आतापक] शीत आदि को सहन करनेवाला (सूअ २, २)।

आयावण न [आतापन] एक बार या थोड़ा आतप आदि को सहन करना (णाया १,१६)। °**भूमि** स्त्री [°भूमि] शीतादि सहन करने का स्थान (भग ६, ३३)।

आयावणया, **आयावणा** स्त्री [आतापना] ऊपर देखो (ठा ३, ५)।

आयावय वि [आतापक] शीत आदि को सहन करनेवाला (पण्ह २, १)।

आयावल, **आयावलय** पुं [दे] सबेर का तड़का, बालातप (दे १, ७०; पाअ)।

आयावि वि [आतापिन्] देखो **आयावय** (ठा ४)।

आयास सक [आ + यासय्] तकलीफ देना, खिन्न करना। आआसंति (पि ४९०)। संकृ. **आआसिअ** (मा ४५)।

आयास पुं [आयास] १ तकलीफ, परिश्रम, खेद (गउड)। २ परिग्रह, असन्तोष (पण्ह १, ५)। °**लिवि** स्त्री [°लिपि] लिपि-विशेष (पण्ह १)।

आयास देखो **आयंस** (षड्)।

आयास देखो **आगास** (पउम ६६, ४०; हे १, ८४)। °**तिलय** न [°तिलक] नगर-विशेष (भवि)।

आयासइत्तिअ वि [आयासयितृ] तकलीफ देनेवाला (अभि ९३)।

आयासतल न [आकाशतल] चन्द्रशाला, घर के ऊपर की खुली छत (कुप्र ४९२)।

आयासतल न [दे] प्रासाद का पृष्ठ भाग (दे १,७२)।

आयासलव न [दे] पक्षिगृह, नीड़ (दे १, ७२)।

आयासिअ वि [आयासित] परिश्रान्त, खिन्न (गा १६०)।

आयाहम्म वि [आत्मघ्न] १ आत्मविनाशक। २ न. आधाकर्म दोष (पिंड ६५)।

आयाहिण न [आदक्षिण] दक्षिण पार्श्व से भ्रमण करना (उवा)। °**पयाहिण** वि [°प्रदक्षिण] दक्षिण पार्श्व से भ्रमण कर दक्षिण पार्श्व में स्थित होनेवाला (विपा १, १)। °**पयाहिणा** स्त्री [°प्रदक्षिणा] दक्षिण पार्श्व से परिभ्रमण, प्रदक्षिणा (ठा १)।

आयु देखो **आउ** = आयुष्। °**वंत** वि [°वत्] चिरायुष्क, दीर्घ आयुवाला (पण्ह १, ४)।

आर पुं [आर] १ इह-लोक, यह जन्म (सूअ १,२,१,८; १६,२८; १,८,६)। २ मनुष्य-लोक (सूअ १, ६, २८)। ३ नुकीली लोहे की कील (कुप्र ४३४)। ४ न. गृहस्थपन (सूअ १, २, १, ८)।

आर पुं [आर] १ मंगल-ग्रह (पउम १७, १०८; सुर १०, २२४)। २ चौथा नरक का एक नरकावास (ठा ६)। ३ वि. अर्वाक्तन, पूर्व का (सूअ १,६)।

°**आरअ** वि [कारक] कर्त्ता, करनेवाला (गा १७९; ३४८)।

आरओ अ [आरतस्] १ पूर्व, पहले, अर्वाक् (सुअ १, ८; स ६४३)। २ समीप में, पास में (उप ३३१)। ३ शुरू कर के, प्रारम्भ कर के (विसे २२८५)।

आरओ अ [आरतस्] पीछे से (णंदि २४६ टी)।

आरंदर वि [दे] १ अनेकान्त। २ संकट, व्याप्त (दे १, ७८)।

आरंभ सक [आ + रभ्] १ शुरू करना। २ हिंसा करना। आरंभइ (हे ४, १५५)। वकृ. **आरंभंत** (गा ४२, से ८, ८२)। संकृ. **आरंभइत्ता, आरंभिअ** (नाट)।

आरंभ पुं [आरम्भ] १ शुरूआत, प्रारम्भ (हे १, ३०)। २ जीव-हिंसा, वध (श्रा ७)। ३ जीव, प्राणी (पण्ह १, १)। ४ पाप-कर्म (आचा)। °**य** वि [°ज] पाप-कार्य से उत्पन्न (आचा)। °**विणय** पुं [°विनय] आरंभ का अभाव। °**विणइ** वि [°विनयिन्] आरंभ से विरत (आचा)।

आरंभग, आरंभय पुं [आरम्भक] १ ऊपर देखो (सूअ २, ६)। २ वि. शुरू करनेवाला (विसे ६२८; उप पृ ३)। ३ हिंसक, पाप-कर्म करनेवाला (आचा)।

आरंभि वि [आरम्भिन्] १ शुरू करनेवाला (गउड)। २ पाप-कार्य करनेवाला (उप ८६६)।

आरंभिअ पुं [दे] मालाकार, माली (दे १, ७१)।

आरंभिअ वि [आरब्ध] प्रारब्ध, शुरू किया हुआ (भवि)।

आरंभिअ देखो **आरंभ** = आ + रभ्।

आरंभिया स्त्री [आरम्भिकी] १ हिंसा से सम्बन्ध रखनेवाली क्रिया। २ हिंसक क्रिया से होनेवाला कर्म-बन्ध (ठा २, १; नव १७)।

आरक्ख न [आरक्ष्य] कोतवाल का ओहदा, कोतवाली, आरक्षकता (सुख ३, १)।

आरक्ख वि [आरक्ष] १ रक्षण करनेवाला (दे १, १५)। २ पुं. कोतवाल, नगर का रक्षक (पाअ)।

आरक्खग वि [आरक्षक] १ रक्षण करनेवाला, त्राता (कप्प; सुपा ३५१)। २ पुं. क्षत्रियों का एक वंश। ३ वि. उस वंश में उत्पन्न (ठा ६)।

आरक्खि वि [आरक्षिन्] रक्षक, त्राता (ठा ३, १; ओघ २६०)।

आरक्खिग, आरक्खिय वि [आरक्षिक] १ रक्षक, त्राता। २ पुं. कोतवाल (निचू १, १६; सुपा ३३६; महा; स १२७, १५१)।

आरज्झ सक [आ + राध्] आराधन करना। आरज्झइ (प्राकृ ६८)।

आरज्झ वि [आराध्य] पूज्य, माननीय (अच्चु ७१)।

आरड सक [आ + रट्] १ चिल्लाना, बूम मारना। २ रोना। वकृ. **आरडंत** (उप १२८ टी)। संकृ. **आरडिऊण** (महा)।

आरडिअ न [दे] १ विलाप, क्रन्दन। २ वि. चित्र-युक्त (दे १, ७५)।

आरण पुं [आरण] १ देवलोक-विशेष (अनु; सम ३९; इक)। २ उस देवलोक का निवासी देव; 'तं चेव आरणच्चुय ओहीनाणेण पासंति' (संग २२१; विसे ६९६)।

आरण पुंन [आरण] एक देवविमान (देवेन्द्र १३५)।

आरण न [दे] १ अधर, होंठ। २ फलक (दे १, ७६)।

आरणाल न [आरनाल] कांजी, साबूदाना (दे १, ६७)।

आरणाल न [दे] कमल, पद्म (दे १, ६७)।

आरण्ण वि [आरण्य] जंगली, जंगल-निवासी (से ८, ५९)।

आरण्णग, आरण्णय वि [आरण्यक] १ जंगली, जंगल-निवासी, जंगल में उत्पन्न (उप २२६; सा)। २ न. शास्त्र-विशेष, उपनिषद्-विशेष, (पउम ११, १०)।

आरण्णिय वि [आरण्यिक] जंगल में बसनेवाला (तापस आदि) (सूअ २, २)।

आरत वि [आरत] १ थोड़ा रक्त (आचा)। २ अत्यन्त अनुरक्त (पण्ह २, ४)।

आरत्तिय न [आरात्रिक] आरती (सुर १०, १६; कुमा)।

आरद्ध वि [आरब्ध] प्रारब्ध, शुरू किया हुआ (काल)।

आरद्ध वि [दे] १ बढ़ा हुआ। २ सतृष्ण, उत्सुक। ३ घर में आया हुआ (दे १, ७५)।

आरनाल देखो **आरणाल** = आरनाल (पाअ)।

आरनाल न [दे] कमल, पद्म (षड्)।

आरन्निय देखो **आरण्णिय** (सूअ २, २, २१)।

आरब देखो **आरव**।

आरब्भ नीचे देखो।

आरभ देखो **आरंभ** = आ + रभ्। आरभइ (हे ४, १५५; उवर १०)। वकृ. **आरभंत, आरभमाण** (ठा ७)। संकृ. **आरब्भ** (विसे ७६५)।

आरभड न [आरभट] १ नृत्य का एक भेद (ठा ४, ४)। २ इस नाम का एक मुहूर्त्त; 'छच्चेव य आरभडो सोमित्तो पंचअंगुलो होइ' (गरिण)।

आरभड न [आरभट] एक तरह की नाट्य-विधि (राय ५४)। **°भसोल** न [°भसोल] नाट्यविधि-विशेष (राय ५४)।

आरभडा स्त्री [आरभटा] प्रतिलेखना-विशेष (ओघ १६२ भा)।

आरभिय न [आरभित] नाट्यविधि-विशेष (राय)।

आरय वि [आरत] १ उपरत। २ अपगत (सूत्र १, १५)।

आरय वि [आऽरत] उपरत, सर्वथा निवृत्त (सूत्र १, ४, १, १; १, १०, १३)।

आरव पुं [आरव] शब्द, आवाज, ध्वनि (सरण)।

आरव पुं [आरब] इस नाम का एक प्रसिद्ध म्लेच्छ-देश (पराह १, १)।

आरव } वि [आरब] अरब देश में उत्पन्न, **आरवग** } अरब देश का निवासी। स्त्री. °वी (णाया १, १)।

आरविंद वि [आरविन्द] कमल-सम्बन्धी (गउड)।

आरस सक [आ + रस्] चिल्लाना, बूम मारना। वकृ. **आरसंत** (उत्त १६)। हेकृ. **आरसिउं** (काल)।

आरसिय न [आरसित] १ चिल्लाहट; बूम। २ चिल्लाया हुआ (विपा १, २)।

आरसिय पुं [आदर्श] दर्पण (कहावली)।

आरह देखो आरभ। आरहइ (षड्)। संकृ. **आरहिअ** (अभि ६०)।

आरहंत } वि [आर्हत] अर्हन् का, जिन-**आरहंतिय** } देव सम्बन्धी; 'आरहंतेहिं' (दस ६, ४, ४; पव २—गाथा १७०)।

आरा स्त्री [आरा] लोहे की सलाई, पैने में डाली जाती लोहे की खीली (पराह १, १; स ३८)।

आरा अ [आरात्] १ अर्वाक्, पहले (दे १, ६३)। २ पूर्व-भाग (विसे १७४०)।

आराइअ वि [दे] १ गृहीत, स्वीकृत। २ प्राप्त (दे १, ७०)।

आराडि स्त्री [आराटि] चीत्कार, चिल्लाहट (सुख २, १५)।

आराडी स्त्री [दे] देखो **आरडिअ** (दे १, ७५)।

आराम पुं [आराम] बगीचा, उपवन (औप; णाया १, १)।

आराम पुंन [आराम] बगीचा, उपवन; 'आरा-माणि' (आचा २, १०, २)।

आरामिअ पुं [आरामिक] माली (कुमा)।

आराव पुं [आराव] शब्द, आवाज (स ६७७; गउड)।

आराह सक [आ + राधय्] १ सेवा करना, भक्ति करना। २ ठीक-ठीक पालन करना। आराहइ, आराहेइ (महा; भग)। वकृ. **आराहंत** (रयरण ७०)। संकृ. **आरा-हित्ता, आराहेत्ता, आराहिऊण** (कप्प; भग; महा)। हेकृ. **आराहिउं** (महा)।

आराह वि [आराध्य] आराधन-योग्य (आरा ११)।

आराहग वि [आराधक] १ आराधन करने-वाला। २ मोक्ष का साधक (भग ३, १)।

आराहण न [आराधन] १ सेवना (आरा ११)। २ अनशन (राज)।

आराहणा स्त्री [आराधना] १ सेवा, भक्ति। २ परिपालन (णाया १, १२; पंचा ७)। ३ मोक्ष-मार्ग के अनुकूल वर्तन (पक्खि)। ४ जिसका आराधन किया जाय वह (आरा १)।

आराहणा स्त्री [आराधना] आवश्यक, साम-यिक आदि षट्-कर्म (अणु ३१)।

आराहणी स्त्री [आराधनी] भाषा का एक प्रकार (दस ७)।

आराहिय वि [आराधित] १ सेवित, परि-पालित (सम ७०)। १ अनुरूप, योग्य (स ६२३)।

आरिट्ठ वि [दे] यात, गत, गुजरा हुआ (षड्)।

आरिय न [आहृत] आगमन (राय १०१)।

आरिय देखो अज्ज = आर्य। (भग; षड्; सुपा १२८; पउम १४, ३०; सुर ८, ६३)।

आरिय वि [आरित] सेवित, 'आरिओ आय-रिओ सेवितो वा एगट्ठुत्ति' (आचू)।

आरिय वि [आकारित] आहूत, बुलाया हुआ; 'आरिओ आगारिओ वा एगट्ठा' (आव)।

आरिया देखो अज्जा = आर्या (प्राकृ)।

आरिल्ल वि [दे] अर्वाक् उत्पन्न, पहले जो उत्पन्न हुआ हो (दे १, ६३)।

आरिस वि [आर्ष] ऋषि-सम्बन्धी (कुमा)।

आरिहय देखो आरहंत (दस १, १ टी)।

आरुग्ग देखो आरोग्ग = आरोग्य; 'आरुग्ग-बोहिलाभं समाहिवरमुत्तमं दिंतु' (पडि)।

आरुट्ठ वि [आरुष्ट] क्रुद्ध, रुष्ट (पउम ५३, १४१)।

आरुण्ण (अप) सक [आ + श्लिष्] आलिङ्गन करना। आरुण्णइ (प्राकृ ११६)।

आरुभ देखो आरुह = आ + रुह्। वकृ. **आरुभमाण** (कस)।

आरुवणा देखो आरोवणा (विसे २६२८)।

आरुस सक [आ + रुष्] क्रोध करना, रोष करना। संकृ. **आरुस्स** (सूत्र १, ५)।

आरुसिय वि [आरुष्ट] क्रुद्ध, कुपित (णाया १, २)।

आरुह सक [आ + रुह्] ऊपर चढ़ना, ऊपर बैठना। आरुहइ (षड्; महा)। आरुहेइ (भग)। वकृ. **आरुहंत, आरुहमाण** (से ५, १६; श्रा३६)। संकृ. **आरुहिऊण, आरुहिय** (महा; नाट)। हेकृ. **आरुहिउं** (महा)।

आरुह वि [आरुह] उत्पन्न, उद्भूत, जात; 'गामारुह म्हि गामे,
वसामि नअरट्ठिइं ण आणामि।
णाअरिआणं पइणो हरेमि
जा होमि सा होमि' (गा ७०५)।

आरुहण न [आरोहण] ऊपर बैठना (णाया १, २; गा ६३०; सुपा २०३; विपा १, ७ गउड)।

आरुहण न [आरोहण] आरोपण, ऊपर चढ़ाना (पव १५५; राय १०६)।

आरुहिय वि [आरोपित] १ स्थापित। २ ऊपर बैठाया हुआ (से ८, १३)।

आरुहिय } वि [आरूढ] १ ऊपर चढ़ा हुआ **आरूढ** } (महा)। २ कृत, विहित; 'तीए पुरओ पइण्णा आरुहिया दुक्करा मए सामि' (पउम ८, १६१)।

आरेइअ वि [दे] १ मुकुलित, संकुचित। २ भ्रान्त। ३ मुक्त (दे १, ७७)। ४ रोमाञ्चित, पुलकित (दे १, ७७; पात्र)।

आरेण अ [आरेण] १ समीप, पास (उप ३३६ टी)। २ अर्वाक्, पहले (विसे ३६१७)। ३ प्रारम्भ कर (विसे २२८४)।

आरोअ अक [उत् + लस्] विकसित होना, उल्लास पाना। आरोअइ (हे ४, २०२)।

आरोअणा देखो **आरोवणा** (ठा ४, १; विसे २६२७)।

आरोइअ [दे] देखो **आरेइअ** (षड्)।

आरोग्ग सक [दे] खाना, भोजन करना, आरोगना। आरोग्गइ (दे १, ६६)।

आरोग्ग न [आरोग्य] एकासन तप (संबोध ५८)।

आरोग्ग न [आरोग्य] १ नीरोगता, रोग का अभाव (ठा ४, ३; उव)। १ वि. रोग-रहित, नीरोग (कप्प)। ३ पुं. एक ब्राह्मणो-पासक का नाम (उप ५४०)।

आरोग्गरिअ वि [दे] रक्त, रँगा हुआ (षड्)।

आरोग्गिअ वि [दे] भुक्त, खाया हुआ (दे १, ६६)।

आरोद्ध वि [दे] १ प्रवृद्ध, बढ़ा हुआ। २ गृहागत, घर में आया हुआ (षड्)।

आरोय न [आरोग्य] १ क्षेम, कुशल। २ नीरोगता; 'आरोयारोयं पसूया' (आचा २, १५, ६)।

आरोल सक [पुञ्ज्] एकत्र करना, इकट्ठा करना, आरोलइ (हे ४, १०२; षड्)।

आरोलिअ वि [पुञ्जित] एकत्रित, इकट्ठा किया हुआ (कुमा)।

आरोव सक [आ + रोपय्] १ ऊपर चढ़ाना, ऊपर बैठाना। २ स्थापन करना। आरोवेइ (हे ४, ४७)। संकृ. **आरोवेत्ता, आरोविउं, आरोविऊण** (भग; कुमा; महा)।

आरोवण न [आरोपण] ऊपर चढ़ाना (सुपा २४६)। २ सम्भावना (दे १, १७४)।

आरोवणा स्त्री [आरोपणा] १ ऊपर चढ़ाना। २ प्रायश्चित्त-विशेष (वव १)। ३ प्ररूपणा, व्याख्या का एक प्रकार। ४ प्रश्न, पर्यनुयोग (विसे २६२७, २६२८)।

आरोविय वि [आरोपित] १ चढ़ाया हुआ। २ संस्थापित (महा; पात्र)।

आरोस पुं [आरोष] १ म्लेच्छ देश-विशेष। २ वि. उस देश का निवासी (पराह १, १; कस)।

आरोसिअ वि [आरोषित] कोपित, रुष्ट किया हुआ (से ६, ६६; भवि; दे १, ७०)।

आरोह सक [आ + रुह्] ऊपर चढ़ना, बैठना। आरोहइ (कस)।

आरोह सक [आ + रोहय्] ऊपर चढ़ाना। कृ. **आरोहइयव्व** (वव १)।

आरोह पुं [आरोह] १ सवार; हाथी, घोड़ा आदि पर चढ़नेवाला (से १३, ७५)। २ ऊँचाई (बृह)। ३ लम्बाई (वव १, ५)।

आरोह पुं [दे] स्तन, थन, चूँची (दे १, ६३)।

आरोहग वि [आरोहक] १ सवार होनेवाला। २ हस्तिपक, पीलवान, हाथी का रक्षक (ओप)।

आरोहि वि [आरोहिन्] ऊपर देखो (गउड)।

आरोहिय वि [आरूढ] ऊपर बैठा हुआ, ऊपर चढ़ा हुआ (भवि)।

आल न [दे] अनर्थक, मुधा (सिरि ८६४)।

आल न [दे] १ छोटा प्रवाह। २ वि. कोमल, मृदु (दे १, ७३)। ३ आगत (रंभा)।

आल न [आल] कलंकारोप, दोषारोपण (स ४३३); 'न दिज्ज कस्सवि कूडआलं' (सत्त २)।

°**आल** देखो **काल** (गा ५५; से १, २६; ५, ८५; ६, ५६)।

°**आल** देखो **जाल** (से ५, ८५; ६, ५६)।

°**आल** देखो **ताल**; 'समविसमं एमंति हरिआल-वंकियाइं (से ६, ५६)।

आलइअ वि [आलगित] यथास्थान स्थापित, योग्य स्थान में रखा हुआ (कप्प)।

आलइअ वि [आलयिक] गृही, आश्रयवाला (आचा)।

आलइय वि [आलगित] पहना हुआ (आचा २, १५, ५)।

आलंकारिय वि [आलङ्कारिक] १ अलंकार-शास्त्र-ज्ञाता। २ अलंकार-संबन्धी।। ३ अलंकार के योग्य; 'आलंकारियं भंडं उवणेह' (जीव ३)।

आलंकिअ वि [दे] पंगु किया हुआ (दे १, ६८)।

आलंद न [आलन्द] समय का परिमाण-विशेष, पानी से भींजा हुआ हाथ जितने समय में सूख जाय उतने से लेकर पाँच अहोरात्र तक का काल (विसे)।

आलंदिअ वि [आलन्दिक] उपर्युक्त समय का उल्लंघन न कर कार्य करनेवाला (विसे)।

आलंब सक [आ + लम्ब्] आश्रय करना, सहारा लेना। संकृ. **आलंबिय** (भास ११)।

आलंब पुं [आलम्ब] आश्रय, आधार (सुपा ६३५)।

आलंब न [दे] भूमि-छत्र, वनस्पति-विशेष जो वर्षा में होता है (दे १, ६४)।

आलंबण न [आलम्बन] १ आश्रय, आधार, जिसका अवलम्बन किया जाय वह (णाया १, १)। २ कारण, हेतु, प्रयोजन (आवम; आचा)।

आलंबणा स्त्री [आलम्बना] ऊपर देखो (पि ३६७)।

आलंबि वि [आलम्बिन] अवलम्बन करने वाला, आश्रयी (गउड)।

आलंभिय न [आलम्भिक] १ नगर-विशेष (ठा १)। २ भगवती सूत्र के ग्यारहवें शतक का बारहवाँ उद्देश (भग ११, १२)।

आलंभिया स्त्री [आलम्भिका] नगरी-विशेष (भग ११, १२)।

आलक्क पुं [दे] पागल कुत्ता (भत्त १२५)।

आलक्ख सक [आ + लक्षय्] १ जानना। २ चिह्न से पहिचानना। आलक्खिमो (गउड)।

आलक्खिय वि [आलक्षित] १ ज्ञात, परि-चित। २ चिह्न से जाना हुआ (गउड)।

आलग्ग वि [आलग्न] लगा हुआ, संयुक्त (से ५, ३३)।

आलत्त वि आलपित] संभाषित, आभाषित (पउम १६, ४२; सुपा २०८; श्रा ६)।

आलत्तय देखो **अलत्त** (गउड, गा ६४६)।

आलत्थ पुं [दे] मयूर, मोर (दे १, ६५)।

आलद्ध वि [आलब्ध] १ संस्पृष्ट। २ संयुक्त। ३ स्पृष्ट, छुआ हुआ। ४ मारा हुआ (नाट)।

आलप्प वि [आलाप्य] कहने के योग्य, निर्वचनीय; 'सदसदणभिलप्पालप्पमेगं अणेगं' (लहुअ ८)।

आलभ सक [आ + लभ्] प्राप्त करना। आलभिजा (उवर ११)।

आलभण न [आलभन] विनाशन (धर्मसं ८८२)।

आलभिया स्त्री [आलभिका] नगरी-विशेष (उवा, भग ११, २)।

आलय पुंन [आलय] गृह, घर, स्थान (महा; गा १३५)।

आलय पुंन [आलय] बौद्धदर्शन-प्रसिद्ध विज्ञान-विशेष (धर्म ६६५, ६६६, ६६७)।

आलयण न [दे] वास-गृह, शय्या-गृह (दे १, ६६, ८, ५८)।

आलव सक [आ + लप्] १ कहना, बातचीत करना। २ थोड़ा या एक बार कहना। वकृ. **आलवंत** (गा ११८, अभि ३८), **आलवमाण** (ठा ४)। **आलविऊण** (महा), **आलविय** (नाट)।

आलवण न [आलपन] संभाषण, बातचीत, वार्त्तालाप (ओघ ११३, उप १२८ टी; श्रा १६; दे १, ५६; स ६६)।

आलवाल न [आलवाल] कियारी, थाँवला (पाअ)।

आलस वि [आलस] आलसी, सुस्त (भग १२, २)। °त्त न [°त्व] आलस, सुस्ती (श्रा २३)।

आलसिय वि [आलसित] आलसी, मन्द (भग १२, २)।

आलसुय देखो **आलसिय**; 'सावि सायसीला आलसुया कुडिला' (सम्मत्त ५३)।

आलस्स पुंन [आलस्य] सुस्ती, 'आलस्सो रणरणओ' (वज्जा १६२)।

आलस्स न [आलस्य] आलस, सुस्ती (कुमा; सुपा २५१)।

आलस्सि वि [आलस्यिन्] आलसी, सुस्त (गच्छ २, १)।

आलाअ देखो **आलाव** (गा ४२८, ६१६; मै १६)।

आलाण देखो **आणाल** (पाअ, से ५, १७; महा)।

आलाणिय वि [आलानित] नियन्त्रित, मजबूती से बाँधा हुआ; 'दढभुयदंडालाणियकमलाकरिणी निवो समरसीहो' (सुपा ४)।

आलाव पुं [आलाप] १ संभाषण, बातचीत (श्रा ६)। २ अल्प भाषण (ठा ५)। ३ प्रथम भाषण (ठा ४)। ४ एक बार की उक्ति (भग ५, ४)।

आलावक देखो **आलावग** (सुज्ज ८)।

आलावग पुं [आलापक] पेरा, पैराग्राफ, परिच्छेद, ग्रन्थ का अंश-विशेष (ठा २, २)।

आलावण न [आलापन] बाँधने का रज्जु आदि साधन, बन्धन-विशेष। °बंध पुं [°बन्ध] बन्ध-विशेष (भग ८, ६)।

आलावण न [आलापन] आलाप, संभाषण (वज्जा १२४)।

आलावणी स्त्री [आलापनी] वाद्यविशेष (वज्जा ८०)।

आलास पुं [दे] वृश्चिक, बिच्छू (दे १, ६१)।

आलाहि देखो **अलाहि** (षड्)।

आलि पुं [अलि] भ्रमर, भमरा, भौंरा (पडि)।

आलि देखो **आली** (राय; पाअ)।

आलिंग सक [आ + लिङ्ग्] आलिङ्गन करना, भेंटना, गले लगाना। **आलिंगइ** (महा)। संकृ. **आलिंगिऊण** (महा)। हेकृ. **आलिंगिउं** (महा)।

आलिंग पुं [आलिङ्ग] वाद्य-विशेष (राय)।

आलिंग वि [आलिङ्ग्य] १ आलिङ्गन करने योग्य। २ पुं. वाद्य-विशेष (जीव ३)।

आलिंगण न [आलिङ्गन] आलिंगन, भेंट (कप्पू)। °वट्टि स्त्री [°वृत्ति] गाल या कपोल का उपधान—तकिया, शरीर-प्रमाण उपधान (भग ११, ११)।

आलिंगणिया स्त्री [आलिङ्गनिका] देखो **आलिंगणवट्टि** (जीव ३)।

आलिंगिणी स्त्री [आलिङ्गिनी] जानु आदि के नीचे रखने का तकिया (पव ८४)।

आलिंगिय वि [आलिङ्गित] आश्लिष्ट, जिसका आलिगन किया गया हो वह (काल)।

आलिंद पुं [आलिन्द] बाहर के दरवाजे के चौकट्टे का एक हिस्सा (अभि १५६; अवि २८)।

आलिंप सक [आ + लिप्] पोतना, लेप करना। **आलिंपइ** (उव)। हेकृ. **आलिंपित्तए** (कस)। वकृ. **आलिंपंत**। प्रयो. **आलिंपावंत** (निचू ३)।

आलिंपण न [आलेपण] १ लेप करना, विलेपन (रयण ५५)। २ जिसका लेप होता है वह चीज (निचू १२)।

आलिआ देखो **आवलिआ** (पंच ५, १४५)।

आलित्त न [आलित्र] जहाज चलाने का काष्ठ-विशेष (आचा २, ३, १, ६)।

आलित्त वि [आलिप्त] खरण्टित, खरड़ा हुआ, लिपा हुआ (पिंड २३४)।

आलित्त वि [आदीप्त] १ चारों ओर से जला हुआ, 'जह आलित्ते गेहे कोइ पसुत्तं नरं तु बोहेज्जा' (वव १,३; णाया १,१,१४)। २ न. आग लगनी, आग से जलना; 'कोट्टिमघरे वसंते आलित्तम्मि वि न डज्झइ' (वव ४)।

आलिद्ध वि [आश्लिष्ट] आलिंगित (भग १६, ३; सुर ३, २२२)।

आलिद्ध वि [आलीढ] चखा हुआ, आस्वादित (से ६, ५६)।

आलिसंदग पुं [दे. आलिसन्दक] धान्य-विशेष (ठा ५, ३; भग ६, ७)।

आलिसिंदय पुं [दे. आलिसिन्दक] ऊपर देखो (ठा ५, ३)।

आलिह सक [स्पृश्] स्पर्श करना, छूना। आलिहइ (हे ४, १८२)। वकृ. **आलिहंत** (नाट)।

आलिह सक [आ + लिख्] १ विन्यास करना, स्थापन करना। २ चित्र करना, चितरना या चित्र बनाना। वकृ. **आलिहमाण** (सुर १२,४०)।

आलिहिअ वि [आलिखित] चित्रित (सुर १, ८७)।

आली सक [आ + ली] १ लीन होना, आसक्त होना। २ आलिंगन करना। ३ निवास करना। वकृ. **आलीयमाण** (गउड)।

आली स्त्री [आली] १ पंक्ति, श्रेणी। २ सखी, वयस्या (हे १, ८३)। ३ वनस्पति-विशेष (णाया १, ३)।

आलीढ वि [आलीढ] १ आसक्त, 'आमूलालोलधूलीबहुलपरिमलालीढलोलालिमाला' (पडि)। २ न. आसन-विशेष (वव १)।

आलीढ पुंन [आलीढ] योद्धा का युद्ध समय का आसन-विशेष (वव १)।

आलीण वि [आलीन] १ लीन, आसक्त, तत्पर (पउम ३२,६)। २ आलिंगित, आश्लिष्ट (कप्प)।

आलीयग वि [आदीपक] जलानेवाला, आग सुलगानेवाला (णाया १, २)।

आलीयमाण देखो **आली** = आ + ली।

आलील न [दे] समीप का भय, पास का डर (दे १, ६५)।

आलीवग देखो **आलीयग** (पण्ह १, ३)।

आलीवण न [आदीपन] आग लगाना (दे १, ७१; विपा १, १)।

आलीविय वि [आदीपित] आग से जलाया हुआ (पि २४४)।

आलु पुंन [आलु] कन्द-विशेष, आलू (श्रा २०)।

आलुई स्त्री [आलुकी] वल्ली-विशेष (पव १०)।

आलुंख सक [दह्] जलाना, दाह देना। आलुंखइ (हे ४, २०८; षड्)।

आलुंख सक [स्पृश्] स्पर्श करना, छूना। आलुंखइ (हे ४. १८२)।

आलुंखण न [स्पर्शन] स्पर्श, छूना (गउड)।

आलुंखिअ वि [स्पृष्ट] स्पृष्ट, छुआ हुआ (से १,२१; पाअ)।

आलुंखिअ वि [दग्ध] जला हुआ (सुर ६. २०३)।

आलुंघ सक [स्पृश्] छूना। आलुंघइ (प्राकृ ७४)।

आलुंप सक [आ + लुम्प्] हरण करना। आलुंपह (आचा)।

आलुंप वि [आलुम्प] अपहारक, हरण करनेवाला, छीन लेनेवाला (आचा)।

आलुग देखो **आलु** (पण्ण १)।

आलुगा स्त्री [दे] घटी, छोटा घड़ा (उप ६६०)।

आलुयार वि [दे] निरर्थक, व्यर्थ, निष्प्रयोजन; 'ता दंसिमो समग्गं अन्नह किं आलुयारभणिएहिं' (सुपा ३४३)।

आलेक्ख, **आलेक्खिय** } वि [आलेख्य] चित्रित, 'रत्ति परिवट्टेउं लक्खं आलेक्खदिणयराणवि न खमं' (अच्चु २५; से २, ४५; गा ६४१; गउड)।

आलेट्ठुं, **आलेट्ठुअं** } देखो **आसिलिस**।

आलेव पुं [आलेप] विलेपन, लेप; 'आलेवनिमित्तं च देवीओ वलयालंकियबाहाओ घसंति चंदणं' (महा)।

आलेवण न [आलेपन] १ लेप, विलेपन। २ जिसका लेप किया जाता है वह वस्तु; 'जे भिक्खू रत्तिं आलेवणजायं पडिग्गाहेत्ता' (निचू १२)।

आलेसिय वि [आश्लेषित] आलिंगन कराया हुआ (चेइय ३७६)।

आलेह पुं [आलेख] चित्र (आवम)।

आलेहिअ वि [आलेखित] चित्रित (महा)।

आलोअ सक [आ + लोक्] देखना, विलोकन करना। वकृ. **आलोअंत, आलोइंत, आलोएमाण** (गा ५४६; उप पृ ४३; आचा)। कवकृ. **आलोकंत** (से १, २५)। संकृ. **आलोएऊण, आलोइत्ता** (काल; ठा ६)।

आलोअ सक [आ + लोच्] १ देखाना। २ गुरू को अपना अपराध कह देना। ३ विचार करना। ४ आलोचना करना। आलोएइ (भग)। वकृ. **आलोअंत** (पडि)। संकृ. **आलोएत्ता, आलो-इअ** (भग; पि ५८२)। हेकृ. **आलोइत्तए** (ठा २, १)। कृ. **आलोएयव्व, आलोएइयव्व** (उप ६८२; ओघ ७६६)।

आलोअ पुं [आलोक] १ तेज, प्रकाश (से २, १२)। २ विलोकन, अच्छी तरह देखना (ओघ ३)। ३ पृथ्वी का समान-भाग, सम भू-भाग (ओघ ५६५)। ४ गवाक्षादि प्रकाश-स्थान (आचा)। ५ जगत्, संसार (आव)। ६ ज्ञान (पण्ह १, ४)।

आलोअग, **आलोअय** } वि [आलोचक] आलोचना करनेवाला (श्रा ४०; पुप्फ ३५५; ३६०)।

आलोअण न [आलोकन] विलोकन, दर्शन, निरीक्षण (ओघ ५६ भा); 'अत्थालोअणतरला, इअरकईणं भमंति बुद्धीओ। त एव निरारंभं, एंति हिययं कइंदाणं' (गउड)।

आलोअण न [आलोचन] नीचे देखो (पण्ह २, १; प्रासू २४)।

आलोअणा स्त्री [आलोचना] १ देखना, बतलाना। २ प्रायश्चित के लिए अपने दोषों को गुरु को बता देना। ३ विचार करना (भग १७, २; श्रा ४२; स ५०६)।

आलोइअ वि [आलोचित] दृष्ट, निरीक्षित (से ६, ६४)।

आलोइअ वि [आलोचित] प्रदर्शित, गुरु को बताया हुआ (पडि)।

आलोइअ देखो **आलोअ** = आ + लोच्।

आलोइत्तु वि [आलोकयितृ] देखने वाला, द्रष्टा (सम १५)।

आलोइल्ल वि [आलोकवत्] प्रकाश-युक्त (वज्जा १६०)।

आलोकंत देखो **आलोअ** = आ + लोक्।

आलोग देखो **आलोअ** = आलोक (ओघ ५६५)। °**नयर** न [°नगर] नगर-विशेष (पउम ६८, ५७)।

आलोच देखो **आलोअ** = आ + लोच्। वकृ. **आलोचंत** (सुपा ३०७)। संकृ. **आलोचिऊण** (स ११७)।

आलोचण देखो **आलोअण** (उप ३३२)।

आलोड सक [आ + लोडय्] हिलोरना, मथन करना। संकृ. **आलोडिवि** (अप) (सण)।

आलोडिय, **आलोलिय** } वि [आलोडित] मथित, हिलोरा हुआ; 'आलोडिया य नयरी' (पउम ५३, १२६; उप १४२ टी)।

आलोयण न [आलोकन] गवाक्ष (उत्त १६, ४)।

आलोव सक [आ + लोपय्] आच्छादित करना। कवकृ. **आलोविज्जमाण** (स ३८२)।

आलोव देखो **आलोअ** = आलोक; 'मंते अत्थालोवे भेसज्जे भोयणे पियागमणे' (रंभा)।

आलोविय वि [आलोपित] आच्छादित, ढका हुआ (णाया १, १)।

आव वि [यावत्] जितना। आवंति (पि ३६६)।

आव अ [यावत्] जब तक, जब लग। °**कह** वि [°कथ] देखो °**कहिय** (विसे १२६३; श्रा १)। °**कहं** अ [°कथम्]

यावज्जीव, जीवन-पर्यन्त (श्राव)। °कहा स्त्री [°कथा] जीवन-पर्यन्त, 'धरणा श्रावकहाए गुरुकुलवासं न मुंचंति' (उप ६८१)। °कहिय वि [°कथिक] यावज्जीविक, जीवन-पर्यन्त रहनेवाला (ठा ६; उप ५२०)।

आव पुं [आप] १ प्राप्ति, लाभ (पराह २, १)। २ जल का समूह। °बहुल न [°बहुल] देखो आउ-बहुल (कस)।

आव सक [आ + या] आना, आगमन करना; 'वरणवसिराणवि निच्चं आवइ निद्दासुहं ताण' (सुपा ६४७)। आवेइ (नाट)। आवंति (संग १६२)।

आवआस सक [उप + गूह्] आलिंगन करना। आवआसइ (प्राक ७४)।

आवइ स्त्री [आपद्] आपत्ति, विपत्, संकट (सम ५७; सुपा ३२१; सुर ४, २१५; प्रासू ५, १५६)।

आवंग पुं [दे] अपामार्ग, वृक्ष विशेष, लटजीरा (दे १, ६२)।

आवंडु वि [आपाण्डु] थोड़ा सफेद, फीका (गा २६५)।

आवंडुर वि [आपाण्डुर] ऊपर देखो (से ६, ७४)।

आवंत देखो जावंत; 'श्रावंती के यावंती लोगंसि समणा य माहणा य' (श्राचा १, ४, २, ३; १, ५, २, १; ४; पि ३५७)।

आवग्गण न [आवल्गन] अश्व पर चढ़ने की कला (भवि)।

आवच्चेज्ज वि [अपत्यीय] अपत्य-स्थानीय (कप्प)।

आवज्ज देखो आओज्ज (हे १, १५६)।

आवज्ज अक [अ + पद्] प्राप्त होना, लागू होना। आवज्जइ (कस)। कृ. आवज्जियव्व (पराह २, ५)।

आवज्ज सक [आ + वर्जय्] १ संमुख करना। २ प्रसन्न करना; 'आवज्जंति गुणा खलु अबुहंपि जणं अमच्छरियं' (स ११)।

आवज्ज सक [आ + पद्] प्राप्त करना। आवज्जई (उत्त ३२, १०३)। आवज्जे (सूअ १, १, २, १६; २०), आवज्जसु (सुख २, ६)।

आवज्ज } वि [आवर्ज, °क] प्रीत्युत्पादक
आवज्जग } (पिंड ४३८)।

आवज्जण न [आवर्जन] १ संमुख करना। २ प्रसन्न करना (श्राचू)। ३ उपयोग, ख्याल। ४ उपयोग-विशेष। ५ व्यापार-विशेष (विसे ३०५१)।

आवज्जिय वि [आवर्जित] १ प्रसन्न किया हुआ। २ अभिमुख किया हुआ (महा; सुर ६, ३१; सुपा २३२)। °करण न [°करण] व्यापार-विशेष (श्राचू)।

आवज्जिय देखो आउज्जिय = आतोद्यिक (कुमा)।

आवज्जीकरण न [आवर्जीकरण] उपयोग-विशेष या व्यापार-विशेष का करना, उदीरणावलिका में कर्म-प्रक्षेप रूप व्यापार (श्रौप; विसे ३०५०)।

आवट्ट अक [आ + वृत्] १ चक्र की तरह घूमना, फिरना। २ विलीन होना। ३ सक. शोषण करना, सुखाना। ४ पीड़ना, दुःखी करना। आवट्टइ (हे ४, ४१६; सूअ १, ५, २)। वकृ. आवट्टमाण (से ५, ८०)।

आवट्ट देखो आवत्त (श्राचा; सुपा ६४; सूअ १, ३)।

आवट्टणा स्त्री [आवर्तना] आवर्तन (प्राकृ ३१)।

आवट्टिआ स्त्री [दे] १ नवोढ़ा, दुलहिन। २ परतन्त्र स्त्री (दे १, ७७)।

आवड देखो आवत्त = आवर्त्त (राय ३०)।

आवड सक [आ + पत्] १ आना, आगमन करना। २ आ लगना। वकृ. आवडंत (प्रासू १०६)।

आवडण न [आपतन] १ गिरना (से ६, ४२)। २ आ लगना (स ३८४)।

आवणवीहि स्त्री [आपणवीथि] १ हट्ट-मार्ग, बाजार। २ रथ्या-विशेष, एक तरह का मुहल्ला (राय १००)।

आवडिअ वि [आपतित] १ गिरा हुआ (महा)। २ पास में आया हुआ (से १४, ३)।

आवडिअ वि [दे] १ संगत, संबद्ध (दे १, ७८, पाअ)। २ सार, मजबूत (दे १, ७८)।

आवण पुं [आपण] १ हाट, दूकान (णाया १, १, महा)। २ बाजार (प्रामा)।

आवणिय पुं [आपणिक] सौदागर, व्यापारी (पाअ)।

आवण्ण वि [आपन्न] १ आपत्ति-युक्त। २ प्राप्त (गा ४६७)। °सत्ता स्त्री [°सत्त्वा] गर्भिणी, गर्भवती स्त्री (अभि १२४)।

आवण्ण वि [आपन्न] आश्रित (सूअ १, १, १, १६)।

आवत्त सक [आ + वृत्] आना, 'नावत्तइ नागच्छइ पुणो भवे तेण अपुणरावित्ति' (चेइय ३६६)।

आवत्त अक [आ + वृत्] १ परिभ्रमण करना। २ बदलना। ३ चक्राकार घूमना। ४ सक. पठित पाठ को याद करना। ५ घुमाना। आवत्तइ (सुक्त ५१)। वकृ. अत्तमाण, आवत्तमाण (हे १, २७१, कुमा)।

आवत्त पुं [आवर्त्त] १ चक्राकार परिभ्रमण (स्वप्न ६६)। २ मुहूर्त्त-विशेष (सम ५१)। ३ महाविदेह क्षेत्रस्थ एक विजय (प्रदेश) का नाम (ठा २, ३)। ४ एक खुरवाला पशु-विशेष (पराह १, १)। ५ एक लोकपाल का नाम (ठा ४, १)। ६ पर्वतविशेष (ठा ६)। ७ मणि का एक लक्षण (राय)। ८ ग्राम-विशेष (आवम)। ६ शारीरिक चेष्टा-विशेष, कायिक व्यापार-विशेष; 'दुवालसावत्ते कितिकम्मे' (सम २१)। °कूड न [°कूट] पर्वत-विशेष का शिखर-विशेष (इक)। °यंत वकृ [°यमान] दक्षिण की तरफ चक्राकार घूमनेवाला (भग ११, ११)।

आवत्त पुंन [आवर्त्त] १ एक तरह का जहाज (सिरि ३८३)। २ न. लगातार २५ दिनों का उपवास (संबोध ५८)।

आवत्त न [आतपत्र] छत्र, छाता (पाअ)।

आवत्तण न [आवर्त्तन] चक्राकार भ्रमण (हे २, ३०)। °पेढ़िया स्त्री [°पीठिका] पीठिका-विशेष (राय)।

आवत्तय पुं [आवर्त्तक] देखो आवत्त। १० वि. चक्राकार भ्रमण करनेवाला (हे २, ३०)।

आवत्ता स्त्री [आवर्त्ता] महाविदेह-क्षेत्र के एक विजय (प्रदेश) का नाम (इक)।

आवत्ति स्त्री [आपत्ति] १ दोष-प्रसंग, 'सव्वविमोक्खावत्ती' (विसे १६३४)। २ आपदा, कष्ट। ३ उत्पत्ति (विसे ६६)।

आवत्ति स्त्री [आपत्ति] प्राप्ति (धर्मसं ४७३)।

आवदि स्त्री [आवृति] आवरण (संक्षि ६)।
आवन्न देखो **आवण्ण** (पउम ३४, ३०; णाया १, २; स २५६; उत्तर १६०)।
आवय पुं [आवर्त्त] देखो **आवत्त**; 'कितिकम्मं बारसावयं' (सम २१)।
आवय देखो **आवड**। वकृ. **आवयंत, आवयमाण** (पउम ३३, १३; णाया १, १, ८)।
आवया स्त्री [आपगा] नदी (पाअ; स ६१२)।
आवया स्त्री [आपद्] आपदा, विपद्, दुःख (पाअ; धण ४२);
'न गणंति पुव्वनेहं, न य
नीइं नेय लोय-अववायं।
नय भाविआवयाओ, पुरिसा
महिलाण आयत्ता' (सुर २, १८६)।
आवर सक [आ + वृ] आच्छादन करना, ढकना। कर्म. **आवरिज्जइ** (भग ६, ३३)। कवकृ. **आवरिज्जमाण** (भग १५)। संकृ. **आवरित्ता** (ठा)।
आवरण न [आवरण] १ आच्छादन करनेवाला, ढकनेवाला, तिरोहित करनेवाला (सम ७१; णाया १, ८)। २ वास्तु-विद्या (ठा ६)।
आवरणिज्ज वि [आवरणीय] १ आच्छादनीय। २ ढकनेवाला, आच्छादन करनेवाला (औप)।
आवरिय वि [आवृत] आच्छादित, तिरोहित; 'आवरिओ कम्मेहिं' (निचू १)।
आवरिसण न [आवर्षण] छिड़कना, सिंचन (बृह १)।
आवरिसण न [आवर्षण] सुगंध जल की वृष्टि (अणु २५)।
आवरेइया स्त्री [दे] करिका, मद्य परोसने का पात्र-विशेष (दे १, ७१)।
आवलण न [आवलन] मोड़ना (पण्ह १, १)।
आवलि स्त्री [आवलि] १ पङ्क्ति, श्रेणी (महा)। २ पुं. एक विद्यार्थी का नाम (पउम ५, ६५)।
आवलिआ स्त्री [आवलिका] १ पंक्ति, श्रेणी (राय)। २ क्रम, परिपाटी (सुज १०)। ३ समय-विशेष, एक सूक्ष्म काल-परिमाण (भग ६, ७)। °**पविट्ठ** वि [°प्रविष्ट] श्रेणी से व्यवस्थित (भग)। °**बाहिर** वि [°बाह्य] विप्रकीर्ण, श्रेणि-बद्ध नहीं रहा हुआ (भग)।
आवलिय वि [आवलित] वेष्टित (सुअनि २००)।
आवली स्त्री [आवली] १ पंक्ति, श्रेणी (पाअ)। २ रावण की एक कन्या का नाम (पउम ६, ११)।
आवस सक [आ + वस्] रहना, वास करना। आवसेज्जा (सूअ १, १२)। वकृ. 'आगारं आवसंता वि' (सूअ १, ६)।
आवसह पुं [आवसथ] १ घर, आश्रय, स्थान (सूअ १, ४)। २ मठ, संन्यासियों का स्थान (पण्ह, हे २, १८९)।
आवसहिय पुं [आवसथिक] १ गृहस्थ, गृही (सूअ २, २)। २ संन्यासी (सूअ २, ७)।
आवसिय / **आवस्सग** / **आवस्सय** वि [आवश्यक] १ अवश्य-कर्त्तव्य, जरूरी। २ न. सामयिकादि धर्मानुष्ठान, नित्य-कर्म (उत्त; दस १०; णंदि)। ३ जैन ग्रन्थ-विशेष, आवश्यक सूत्र (आवम)। °**णुओग** पुं [°नुयोग] आवश्यक सूत्र की व्याख्या (विसे १)।
आवस्सय पुंन [आपाश्रय] १—३ ऊपर देखो। ४ आधार, आश्रय (विसे ८७४)।
आवस्सिया स्त्री [आवश्यकी] सामाचारी-विशेष, जैन साधु का अनुष्ठान-विशेष (उत्त २६)।
आवह सक [आ + वह्] धारण करना, वहन करना; 'थेवोवि गिहिपसंगो जइणो सुद्धस्स पंकमावहइ' (उव); 'णो पूयणं तवसा आवहेज्जा' (सू १, ७)।
आवह वि [आवह] धारण करनेवाला (आचा)।
आवा सक [आ + पा] १ पीना। २ भोग में लाना, उपभोग करना। हेकृ. 'वंतं इच्छसि **आवेउं**, सेयं ते मरणं भवे' (दस २, ७)।
आवाइया स्त्री [आवापिका] प्रधान होम, 'पत्थुयाए पक्खावाइयाए' (स ७५७)।
आवाग पुं [आपाक] आवा, मिट्टी के पात्र पकाने का स्थान (उप ६४८; विसे २४६ टी)।
आवाड पुं [आपात] भीलों की एक जाति, 'तेणं कालेणं तेणं समएणं उत्तरड्ढभरहे वासे बहवे आवाडा णामं चिलाया परिवसंति' (जं ३)।
आवाणय न [आपाणक] दूकान, 'भिन्नाइं आवाणयाइं' (स ५३०)।
आवाय पुंन [आपात] अभ्यागम, आगमन (पव ६१; ६१ टी)।
आवाय देखो **आवाग** (श्रा २३)।
आवाय पुं [आपात] १ प्रारम्भ, शुरूआत (पाअ; से ११, ७५)। २ प्रथम मेलन (ठा ४, १)। ३ तत्काल, तुरंत (श्रा २३)। ४ पतन, गिरना (श्रा २३)। ५ सम्बन्ध, संयोग (उव; कस)।
आवाय पुं [आवाप] १ आवा, मिट्टी के पात्र पकाने का स्थान। २ आलवाल। ३ प्रक्षेप, फेंकना। ४ शत्रु की चिन्ता। ५ बोना, वपन (श्रा २३)।
आवायण न [आपादन] सम्पादन, (धर्मसं १०९८)।
आवाल देखो **आलवाल** (धर्मवि १६;११२)।
आवाल / **आवालय** न [दे] जल के निकट का प्रदेश (दे २, ७०)।
आवाव देखो **आवाय** = आवाप। °**कहा** स्त्री [°कथा] रसोई सम्बन्धी कथा, वि. कथा-विशेष (ठा ४, २)।
आवास पुं [आवास] १ वास-स्थान (ठा ६; पाअ)। २ निवास, अवस्थान, रहना (पण्ह १, ४; औप)। ३ पक्षि-गृह, नीड (वव १, १)। ४ पड़ाव, डेरा (सुपा २५६; उप पृ १३०)। °**पव्वय** पुं [°पर्वत] रहने का पर्वत (इक)।
आवास / **आवासग** देखो **आवस्सय** = आवश्यक (पि ३४८; ओघ ६३८; विसे ८५०)।
आवासणिया स्त्री [आवासनिका] आवास-स्थान (स १२२)।
आवासय न [आवासक] १ आव[illegible] जरूरी। २ नित्य-कर्त्तव्य धर्मानुष्ठान (हे ४, ४३; विसे ८५८)। ३ पुं. पक्षि-गृह, नीड (वव १,१)। ४ वि. संस्काराधायक, वासक। ५ आच्छादक (विसे ८७५)।
आवासि वि [आवासिन्] रहनेवाला, 'एगंतनियावासी' (उव)।
आवासिय वि [आवासित] संनिवेशित, पड़ाव डाला हुआ (सुपा ४५६; सुर २, १)।

आवाह सक [आ + वाहय्] १ सांनिध्य के लिए देव या देवाधिष्ठित चीज को बुलाना। २ बुलाना। संकृ. आवाहिवि (अप) (भवि)।

आवाह पुं [आबाध] पीड़ा, बाधा (विपा १, ६)।

आवाह पुं [आवाह] १ नव-परिणीता वधू को वर के घर लाना (पण्ह २, ४)। २ विवाह के पूर्व किया जाता पान देने का एक उत्सव (जीव ३)।

आवाहण न [आवाहन] आह्वान (विसे १८८३)।

आवाहिय वि [आवाहित] १ बुलाया हुआ, आहूत (भवि)। २ मदद के लिए बुलाया हुआ देव या देवाधिष्ठित वस्तु, 'एवं च भणंतेणं आवाहियाइं सत्थाइं' (सुर ८, ४२)।

आवि न [दे] १ प्रसव-पीड़ा। २ वि. नित्य, शाश्वत। ३ दृष्ट, देखा हुआ (दे १, ७३)।

आवि अ [चापि] समुच्चय-द्योतक अव्यय (कप्प)।

आवि अ [आविस्] प्रकटता-सूचक अव्यय (सुर १४, २११)।

आविअ सक [आ + पा] पीना, 'जहा दुमस्स पुप्फेसु भमरो आविअइ रसं' (दस १, २)।

आविअ वि [आवृत] आच्छादित (से ६, ६२)।

आविअ पुं [दे] १ इन्द्रगोप, क्षुद्र कीट-विशेष। २ वि. मथित, आलोडित (दे १, ७६)। ३ प्रोत (दे १, ७६; पाअ; षड्)।

आविअ वि [आविच] अविच-देशोत्पन्न (राय)।

आविअज्झा स्त्री [दे] १ नवोढ़ा, दुलहिन। २ परतन्त्रा, पराधीन स्त्री (दे १, ७७)।

आविंध सक [आ + व्यध्] १ विंधना। २ पहनना। ३ मन्त्र से अधीन करना। आविंध (आक ३८)। आविंधामो (पि ४८९); 'पालंबं वा सुवण्णसुत्तं वा आविंधेज पिणिधेज वा' (आचा २, १३, २०)। कर्म. आविज्झइ (उव)।

आविंधण न [आव्यधन] १ पहनना। २ मन्त्र से आविष्ट करना, मन्त्र से अधीन करना (पण्ह १, २; आक ३८)।

आविकम्म पुंन [आविष्कर्मन्] प्रकट-कर्म, प्रकटरूप से किया हुआ काम (आचा २, १५, ५)।

आविग्ग वि [आविग्न] उद्विग्न, उदासीन (से ६, ८६; १३, ६३; दे ७, ६३)।

आविट्ठ वि [आविष्ट] १ आवृत, व्याप्त (सम ५१; सुपा १८७)। २ प्रविष्ट (सूअ १, ३)। ३ अधिष्ठित, आश्रित (ठा ५; भास ३६)।

आविट्ठ वि [आविष्ट] भूत आदि के उपद्रव से युक्त (सम्मत्त १७३)।

आविद्ध वि [आविद्ध] परिहित, पहना हुआ (कप्प)।

आविद्ध वि [दे] क्षिप्त, प्रेरित (दे १, ६३)।

आविब्भाव पुं [आविर्भाव] १ उत्पत्ति। २ प्रादुर्भाव, अभिव्यक्ति; 'आविब्भावतिरोभाव-मेत्तपरिणामिदव्वमेवायं' (विसे)।

आविब्भूय वि [आविर्भूत] १ उत्पन्न। २ प्रादुर्भूत (कप्प)। ३ अभिव्यक्त (सुर १४, २११)।

आविल वि [आविल] १ मलिन, अस्वच्छ (सम ५१)। २ आकुल, व्याप्त (सूअ १, १५)।

आविलिअ वि [दे] कुपित, क्रुद्ध (षड्)।

आविलुंपिअ वि [आकाङ्क्षित] अभिलषित (दे १, ७२)।

आविस सक [आ + विश्] प्रवेश करना, घुसना। आविसेइ (सम्मत्त १७३)।

आविस अक [आ + विश्] १ संबद्ध होना युक्त होना। २ सक. उपभोग करना, सेवना; 'परदारमाविसामित्ति' (विसे ३२५६);

'जं जं समयं जीवो, आविसई जेण जेण भावेण।
सो तम्मि तम्मि समए, सुहासुहं बंधए कम्मं' (उव)

आविहव अक [आविर् + भू] १ प्रकट होना। २ उत्पन्न होना। आविहवइ (स ४८)।

आविहूअ देखो आविब्भूय (स ७१८)।

आवी देखो आवि = आविस्; 'आवी वा जइ वा रहस्से' (उत्त १, १७; सुख १, १७)। °कम्म देखो आविकम्म (आचा २, १५, ५)।

आवीअ वि [आपीत] १ पीत। २ शोषित (से १३, ३१)।

आवीइ वि [आवीचि] निरन्तर, अविच्छिन्न;

'गब्भप्पभिइमावीइसलिलच्छेिए सरं व सुसंतं।
अणुसमयं मरमाणे, जीयंति जणो कहं भणइ?'
(सुपा ६५१)।

°मरण न [°मरण] मरण-विशेष (भग १३, ७)।

आवीकम्म न [आविष्कर्मन्] १ उत्पत्ति। २ अभिव्यक्ति (ठा ६, कप्प)।

आवीड सक [आ + पीड्] १ पीड़ना। २ दबाना। आवीडइ (सण)।

आवीण न [आपीन] स्तन, थन (गउड)।

आवील देखो आमेल = आपीड (स ३१५)।

आवील देखो आवीड। संकृ. आवीलियाण (आचा २, १, ८, १)।

आवीलण न [आपीडन] समूह, निचय (गउड)।

आवुअ पुं [आवुक] नाटक की भाषा में पिता, बाप (नाट)।

आवुण्ण वि [आपूर्ण] पूर्ण, भरपूर (दे २, १०२)।

आवुत्त पुं [दे] भगिनी-पति (अभि १८३)।

आवुद वि [आवृत] ढका हुआ (प्राकृ ८, १२)।

आवुदि स्त्री [आवृति] आवरण (प्राकृ ८, १२)।

आवूर देखो आऊर = आ + पूरय्। वकृ. आवूरंत (पउम ७६, ८)। कवकृ. आवूरिज्जमाण (स ३८२)।

आवूरण न [आपूरण] पूर्त्ति (स ४३६)।

आवूरिय देखो आऊरिय (पउम ६४, ५२; स ७७)।

आवेअ सक [आ + वेदय्] १ विनति करना, निवेदन करना। २ बतलाना। आवेएइ (महा)।

आवेअ पुं [आवेग] कष्ट, दुख (से १०, ५७, ११, ७२)।

आवेउं देखो आवा।

आवेढिय वि [आवेष्टित] वेष्टित, घिरा हुआ (गा २८)।

आवेड } देखो आमेल (हे २, २३४, कुमा)।
आवेडय }

आवेढ पुं [आवेष्ट] १ वेष्टन। २ मण्डलाकार करना (से ७, २७)।

आवेढण न [आवेष्टन] ऊपर देखो (गउड, पि ३०४)।

आवेढिय वि [आवेष्टित] १ चारों ओर से वेष्टित (भग १६, ६; उप पृ ३२७)। २ एक बार वेष्टित (ठा)।

आवेयण न [आवेदन] निवेदन, मनो-भाव का प्रकाश-करण (गउड; दे ७, ८७)।

आवेवअ वि [दे] १ विशेष आसक्त। २ प्रवृद्ध, बढ़ा हुआ (षड्)।

आवेस सक [आ + वेशय्] भूताविष्ट करना। संकृ. आवेसिऊण (स ६४)।

आवेस पुं [आवेश] १ अभिनिवेश। २ जोश। ३ भूतग्रह। ४ प्रवेश (नाट)।

आवेसण न [आवेशन] शून्यगृह, 'आवेसण-सभापवासु पणियसालासु एगया वासो' (आचा)।

आस देखो अस्स = अस्र (प्राकृ २६)।

आस अक [आस्] बैठना। वकृ. 'अजयं आसमाणो य पाणभूयाइं हिंसइ' (दस ४)। हेकृ. आसित्तए, आसइत्तए, आसइत्तु (पि ५७८, कस, दस ६, ५४)।

आस पुं [अश्व] १ अश्व, घोड़ा (णाया १, १७)। २ देव-विशेष, अश्विनी नक्षत्र का अधिष्ठायक देव (जं)। ३ अश्विनी नक्षत्र (चंद २०)। ४ मन, चित्त (पण्ण २)। °कण्ण, °कन्न पुं [°कर्ण] १ एक अन्तर्द्वीप। २ उसका निवासी (ठा ४, २)। °ग्गीव पुं [°ग्रीव] एक प्रसिद्ध राजा, पहला प्रतिवासुदेव (पउम ५, १५६)। °तर पुं [°तर] खच्चर (श्रा १८)। °त्थाम पुं [°स्थामन्] द्रोणाचार्य का प्रख्यात पुत्र (कुमा)। °द्धअ पुं [°ध्वज] विद्याधर वंश का एक राजा (पउम ५, ४२)। °धम्म पुं [°धर्म] देखो पूर्वोक्त अर्थ (पउम ५, ४२)। °धर वि [°धर] अश्वों को धारण करनेवाला (औप)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष (इक)। °पुरा, °पुरी स्त्री [°पुरी] नगरी-विशेष (कस, ठा २, ३)। °मक्खिया स्त्री [°मक्षिका] चतुरिन्द्रिय जीव-विशेष (ओघ ३६७)। °मद्दग, °मद्दय पुं [°मर्दक] अश्व का मर्दन करनेवाला (णाया १, १७)। °मित्त पुं [°मित्र] एक जैनाभास दार्शनिक, जो महागिरि के शिष्य कौण्डिन्य का शिष्य था और जिसने सामुच्छेदिक पंथ चलाया था (ठा ७)। °मुह पुं [°मुख] १ एक अन्तर्द्वीप। २ उसका निवासी (ठा ४, २)। °मेह पुं [°मेघ] यज्ञ-विशेष (पउम ११, ४२)। °रह पुं [°रथ] घोड़ा-गाड़ी (णाया १, १)। °वार पुं [°वार] घुड़-सवार, घुड़-चढ़ैया (सुपा २१४)। °वाहणिया स्त्री [°वाहनिका] घोड़े की सवारी, घोड़े पर सवार होकर फिरना (विपा १, ६)। °सेण पुं [°सेन] १ भगवान् पार्श्वनाथ के पिता (कप्प)। २ पाँचवें चक्रवर्ती का पिता (सम १५२)। °ारोह पुं [°ारोह] घुड़-सवार, घुड़-चढ़ैया (से १२, ६६)।

आस पुंस्त्री [आश] भोजन, 'सामासाए पायरासाए' (सूअ २, १)।

आस पुं [आस] क्षेपण, फेंकना (विसे २७६५)।

आस न [आस्य] मुख, मुँह (णाया १, ८)।

आसइ वि [आश्रयिन्] आश्रय-स्थित, 'थंभासइणी जाया सा देवी सालभंजिव्व' (धर्मवि १४७)।

आसंक सक [आ + शङ्क्] १ संदेह करना, संशय करना। २ अक. भयभीत होना। आसंकइ (स ३०)। वकृ. आसंकंत, आसंकमाण (नाट, माल ८३)।

आसंका स्त्री [आशङ्का] शङ्का, भय, वहम, संशय (सुर ६, १२१; महा; नाट)।

आसंकि वि [आशङ्किन्] आशङ्का करनेवाला (गा २०५)।

आसंकिय वि [आशङ्कित] १ संदिग्ध, संशयित। २ संभावित (महा)।

आसंकिर वि [आशङ्कितृ] आशंका करनेवाला, वहमी (सुर १४, १७; गा २०६)।

आसंग पुं [दे] वास-गृह, शय्या-गृह (दे १, ६६)।

आसंग पुं [आसङ्ग] १ आसक्ति, अभिष्वंग। २ संबन्ध। (गउड)। ३ रोग (आचा)।

आसंगि वि [आसङ्गिन्] १ आसक्त। २ संबन्धी, संयोगी (गउड)। स्त्री. °णी (गउड)।

आसंघ सक [सं + भावय्] १ संभावना करना। २ अध्यवसाय करना। ३ स्थिर करना, निश्चय करना। आसंघइ (से १५, ६०)। वकृ. आसंघंत (से १५, ६२)।

आसंघ पुं [दे] १ श्रद्धा, विश्वास (सुपा ५२६; षड्)। २ अध्यवसाय, परिणाम (से १, १५)। ३ आशंसा, इच्छा, चाह (गउड)।

आसंघा स्त्री [दे] १ इच्छा, वाञ्छा (दे १, ६३)। २ आसक्ति (मै २)।

आसंघिअ वि [दे] १ अध्यवसित। २ अवधारित (से १०, ६६)। ३ संभावित (कुमा; स १३७)।

आसंजिअ वि [आसक्त] पीछे लगा हुआ (सुर ८, ३०; उत्तर ६१)।

आसंदय न [आसन्दक] आसन-विशेष (आचा; महा)।

आसंदय पुंन [आसन्दक] आसन-विशेष, मंच (सुख ६, १)।

आसंदाण न [आसन्दान] अवष्टम्भन, अवरोध, रुकावट (गउड)।

आसंदिआ स्त्री [आसन्दिका] छोटा मञ्च (सूअ १, ४, २, १५; गा ६६७)।

आसंदी स्त्री [आसन्दी] आसन-विशेष, मञ्च (सूअ १, ६; दस ६, ५४)।

आसंधी स्त्री [अश्वगन्धी] वनस्पति-विशेष (सुपा ३२४)।

आसंबर वि [आशाम्बर] १ दिगम्बर, नग्न (प्रामा)। २ जैन का एक मुख्य भेद। ३ उसका अनुयायी (सं २)।

आसंसइय वि [असंशयित] संशय-रहित (सूअ २, २, १६)।

आसंसण न [आशंसन] इच्छा, अभिलाषा (भास ६५)।

आसंसा स्त्री [आशंसा] अभिलाषा, इच्छा (आचा)।

आसंसि वि [आशंसिन्] अभिलाषी, इच्छा करनेवाला (आचा)।

आसंसिअ वि [आशंसित] अभिलषित (गा ७६)।

आसक्खय पुं [दे] प्रशस्त पक्षि-विशेष, श्रीवद (दे १, ६७)।

आसग देखो आस = अश्व (णाया १, १२)।

आसगलिअ वि [दे] आक्रान्त, 'आसगलिओ तिव्वकम्मपरिणईए' (स ४०४)।

आसगलिअ वि [दे] प्राप्त, 'एवं विसयविसुद्धचिंतणेण खविओ कम्मसंघाओ, आसगलियं बोधिबीयं' (स ६७६)।

आसज्ज अ [आसाद्य] प्राप्त करके (विसे ३०)।

आसड पुं [आसड] विक्रम की तेरहवीं शताब्दी का स्वनाम-ख्यात एक जैन ग्रन्थकार (विवे १४३)।

आसण न [आसन] १ जिसपर बैठा जाता है वह चौकी आदि (आव ४)। २ स्थान, जगह (उत्त १, १)। ३ शय्या (आचा)। ४ बैठना, उपवेशन (ठा ६)।

आसणिय वि [आसनित] आसन पर बैठाया हुआ (स २६२)।

आसण्ण न [आसन्न] १ समीप, पास। २ वि. समीपस्थ (गउड)। देखो **आसन्न**।

आसत्त वि [आसक्त] लीन, तत्पर (महा; प्रासू ६४)।

आसत्त वि [आसक्त] १ नीचे लगा हुआ (राय ३५)। २ पुं. नपुंसक का एक भेद, वीर्यपात होने पर भी स्त्री का आलिंगन कर उसके कक्षादि अंगों में जुड़कर सोनेवाला नपुंसक (पव १०६)।

आसत्ति स्त्री [आसक्ति] अभिष्वङ्ग, तल्लीनता (कुमा)।

आसत्थ पुं [अश्वत्थ] पीपल का पेड़ (पउम ५३, ७६)।

आसत्थ वि [आश्वस्त] १ आश्वासन-प्राप्त, स्वस्थ। २ विश्रान्त (णाया १,१; सम १५२; पउम ७, ३८; दे ७, २८)।

आसन्न देखो **आसण्ण** (कुमा; गउड)। °**वत्ति** वि [°वर्त्तिन्] नजदीक में रहनेवाला (सुपा ३५१)।

आसम पुं [आश्रम] तापस आदि का निवास स्थान, तीर्थ-स्थान (पण्ह १,३; औप)। २ ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ्य, वानप्रस्थ और भैक्ष्य (संन्यास) ये चार प्रकार की अवस्था (पंचा १०)।

आसमपय न [आश्रमपद] तापसों के आश्रम से उपलक्षित स्थान (उत्त ३०, १७)।

आसमि वि [आश्रमिन्] आश्रम में रहनेवाला, ऋषि, मुनि वगैरह (पंचव १)।

आसय अक [आस्] बैठना। आसयंति (जीव ३)।

आसय सक [आ + श्री] १ आश्रय करना, अवलम्बन करना। २ ग्रहण करना। आसयइ (कप्प)। वकृ. **आसयंत** (विसे ३२२)।

आसय पुं [आशक] खानेवाला (आचा)।

आसय पुं [आश्रय] आधार, अवलम्बन (उप ७१४, सुर १३, ३६)।

आसय पुं [आशय] १ मन, चित्त, हृदय (सुर १३, ३६; पाअ)। २ अभिप्राय (सूअ १, १५)।

आसय न [दे] निकट, समीप (दे १, ६५)।

आसरिअ वि [दे] संमुख-आगत, सामने आया हुआ (दे १, ६६)।

आसव अक [आ + स्रु] धीरे-धीरे झरना, टपकना। वकृ. **आसवमाण** (आचा)।

आसव सक [आ + स्रु] आना, 'आसवदि जेण कम्मं परिणामेणप्पणो स विण्णेओ भावासवो' (द्रव्य २६)।

आसव पुं [आश्रव] सूक्ष्म छिद्र, देखो; '**सयासव**' (भग १, ६)।

आसव पुं [आसव] मद्य, दारू (उप ७२८ टी)।

आसव पुं [आश्रव] १ कर्मों का प्रवेश-द्वार, जिससे कर्मबन्ध होता है वह हिंसा आदि (ठा २, १)। २ वि. श्रोता, गुरु-वचन को सुननेवाला (उत्त १)। °**सक्कि** वि [°सक्तिन्] हिंसादि में आसक्त (आचा)।

आसवण न [दे] वास-गृह, शय्या-घर (दे १, ६६)।

आसवाहिया स्त्री [अश्ववाहिका] अश्व-क्रीडा (धर्मवि ४)।

आसाअ सक [आ + सादय्] स्पर्श करना, छूना। आसाएज्जा। वकृ. **आसायमाण** (आचा २, ३, २, ३)।

आसस अक [आ + श्वस्] आश्वासन लेना, विश्राम लेना। आससइ, आससमु (पि ८८, ४९६)।

आससण न [आशसन] विनाश, हिंसा (पण्ह १, ३)।

आससा स्त्री [आशंसा] अभिलाषा, 'जेसिं तु परिमाणं, तं दुट्ठुं आससा हाइ' (विसे २५१६)।

आससिय वि [आश्वस्त] आश्वासन-प्राप्त (स ३७८)।

आसा स्त्री [आशा] १ आशा, उम्मीद (औप; से १, २६; सुर ३, १७७)। २ दिशा (उप ६४८ टी)। ३ उत्तर रुचक पर बसनेवाली एक दिक्कुमारी, देवी-विशेष (ठा ८)।

आसाअ सक [आ + स्वादय्] स्वाद लेना, चखना, खाना। आसायंति (भग)। वकृ. **आसाअंत, आसाएंत, आसायमाण** (नाट; से ३, ४३; णाया १, १)।

आसाअ सक [आ + सादय्] प्राप्त करना। वकृ. **आसाएंत** (से ३, ४५)।

आसाअ सक [आ + शातय्] अवज्ञा करना, अपमान करना। आसाएज्जा (महानि ५)। वकृ. **आसायंत, आसाएमाण** (श्रा ६; ठा ४)।

आसाअ पुं [आस्वाद] १ स्वाद, रस (गा ५६३; से ६, ६८; उप ७६८ टी)। २ तृप्ति (से १, २६)।

आसाअ पुं [आऽस्वाद] स्वाद का बिलकुल अभाव (तंदु ४५)।

आसाअ देखो **आसय** = आश्रय (तंदु ४५)।

आसाअ पुं [आसाद] प्राप्ति (से ६, ६८)।

आसाइअ वि [आशातित] १ अवज्ञात, तिरस्कृत (पुप्फ ४५४)। २ न. अवज्ञा, तिरस्कार (विवे ६२)।

आसाइअ वि [आस्वादित] चखा हुआ, थोड़ा खाया हुआ (से ५, ४६)।

आसाइअ वि [आसादित] प्राप्त, लब्ध (हेका ३०; भवि)।

आसाढ पुं [आषाढ] १ आसाढ़ मास (सम ३५)। २ एक निह्नव, जो अव्यक्तिक मत का उत्पादक था (ठा ७)। °**भूइ** पुं [°भूति] एक प्रसिद्ध जैन मुनि (कुम्मा २६)।

आसाढा स्त्री [आषाढा] नक्षत्र-विशेष (ठा २)।

आसाढी स्त्री [आषाढी] आषाढ़ मास की पूर्णिमा (सुज्ज)।

आसाढी स्त्री [आषाढी] १ आषाढ़ मास की पूर्णिमा। २ आषाढ़ मास की अमावस (सुज्ज १०, ६)।

आसादेत्तु वि [आस्वादयितृ] आस्वादन करनेवाला (ठा ७)।

आसामर पुं [आशामर] सातवें वासुदेव और बलदेव के पूर्वभवीय धर्मगुरु का नाम (सम १५३)।

आसायण न [आस्वादन] स्वाद लेना, चखना (पउम २२, २७; णाया १, ६; सुपा १०७)।

आसायण न [आशातन] १ नीचे देखो (विवे ६६)। २ अनन्तानुबन्धि कषाय का वेदन (विसे)।

आसायणा स्त्री [आशातना] विपरीत वर्त्तन, अपमान, तिरस्कार (पड़ि)।

आसार सक [आ + सारय्] तंदुरस्त करना, वीणा को ठीक करना। संकृ. आसारेऊण (सिरि ७६४)।

आसार पुं [आसार] समीकरण, वीणा को ठीक करना (कुप्र १३६)।

आसार पुं [आसार] वेग से पानी का बरसना, (से १, २०; सुपा ६०६)।

आसारिय वि [आसारित] ठीक किया हुआ, 'आसारिया कुमारेण वीणा' (कुप्र १३६)।

आसालिय पुंस्त्री [आशालिक] १ सर्प की एक जाति (पराह १, १)। २ स्त्री. विद्या-विशेष (पउम १२, ६४; ५२, ६)।

आसावल्ली स्त्री [आशापल्ली] एक नगरी (ती १५)।

आसावि वि [आस्राविन्] झरनेवाला, सच्छिद्र (सूअ, १, ११)।

आसास सक [आ + शास्] आशा करना, उम्मीद रखना। आसासदि (वेणी ३०)।

आसास अक [आ + श्वासय्] आश्वासन देना, सान्त्वना करना। आसासइ (वज्जा १६)। वकृ. आसासंत, आसासिंत (से ११, ८७; अभि १२)।

आसास पुं [आश्वास] १ आश्वासन, सान्त्वना (ओघ ७३; सुपा ८३; उप ६६२)। २ विश्राम (ठा ४, ३)। ३ द्वीप-विशेष (आचा)।

आसासअ पुं [आश्वासक] विश्राम-स्थान, ग्रन्थ का अंश, सर्ग, परिच्छेद, अध्याय (से २, ४६)। २ वि. आश्वासन देनेवाला; 'नाणं आसासयं सुमित्तुव्व' (पुप्फ ३८)।

आसासग पुं [आशासक] बीजक-नामक वृक्ष (औप)।

आसासण न [आश्वासन] १ सान्त्वना, दिलासा (सुर ६, ११०; १२, १५; उप पृ ५७)। २ ग्रहों के देव-विशेष (ठा २, ३)।

आसासण पुं [आश्वासन] १ एक महाग्रह (सुज्ज २०)। २ वि. आश्वासन-दाता (कुप्र ११०)।

आसासिअ वि [आश्वासित] जिसको आश्वासन दिया गया हो वह (से ११, १३६; सुर ४, २८)।

आसि सक [आ + श्रि] आश्रय करना। संकृ. आसिज्ज (आरा ६६)।

आसि देखो अस = अस्।

आसि वि [आशिन्] खानेवाला, भोजक (सट्ठि १३)।

आसिअ वि [आश्विक] अश्व का शिक्षक, 'दुट्ठे वि य जो आसे दमेइ तं आसियं बिंति' (वव ४)।

आसिअ वि [आशित] खिलाया हुआ, भोजित (से ८, ६३)।

आसिअ वि [आश्रित] आश्रय-प्राप्त (कप्प; सुर ३, १७; से ६, ६५; विसे ७५६)।

आसिअ वि [आसित] १ उपविष्ट, बैठा हुआ (से ८, ६३)। २ रहा हुआ, स्थित (पउम ३२, ६६)।

आसिअ देखो आसित्त (णाया १, १; कप्प; औप)।

आसिअअ वि [दे] लोहे का, लोह-निर्मित (दे १,६७; सूत्र कृ० चूर्णी सू० गा २८५)।

आसिआ स्त्री [आसिका] बैठना, उपवेशन (से ८, ६३)।

आसिआ देखो आसी = आशिष् (षड्)।

आसिंच सक [आ + सिच्] सींचना। कर्म. आसिच्चंत (चेइय १५१)।

आसिण वि [आशिन्] खानेवाला, भोक्ता; 'मंसासिणस्स' (पउम २६, ३७)।

आसिण पुं [आश्विन] आश्विन मास (पाअ)।

आसित्त वि [आसिक्त] १ थोड़ा सिक्त (भग ६, ३३)। २ सिक्त, सींचा हुआ (आवम)। ३ पुं. नपुंसक का एक भेद (पुप्फ १२८)।

आसित्तिया स्त्री [दे] खाद्य-विशेष, 'विसाहाहिं आसित्तियाओ भोच्चा कज्जं साधेंति' (सुज्ज १०, १७)।

आसियावाय देखो आसीवाय (सूअ १, १४, १६)।

आसिल पुं [आसिल] एक महर्षि (सूअ १, ३, ४, ३)।

आसिलिट्ठ वि [आश्लिष्ट] आलिंगित (नाट)।

आसिलिस सक [आ + श्लिष्] आलिंगन करना। हेकृ. आलेट्ठुअं, आलेट्ठु (हे २, १६४)।

आसिसा देखो आसी = आशिष् (महा; अभि १३३)।

आसी देखो अस = अस्।

आसी स्त्री [आशी] दाढ़ा (विसे)। °विस पुं [°विष] १ जहरीला साँप, 'आसी दाढा तग्गयविसासीविसा मुणेयव्वा' (जीव १ टी; प्रासू १२०)। २ पर्वत-विशेष का एक शिखर (ठा २, ३)। ३ निग्रह और अनुग्रह करने में समर्थ, लब्धि-विशेष को प्राप्त (भग ८, १)।

आसी स्त्री [आशिष्] आशीर्वाद (सुर १, १३८)। °वयण न [°वचन] आशीर्वाद (सुपा ४६०)। °वाय पुं [°वाद] आशीर्वाद (सुर १२, ४३; सुपा १७४)।

आसीण वि [आसीन] बैठा हुआ, 'नमिऊण आसीणा तओ' (वसु)।

आसीवअ पुं [दे] दरजी, कपड़ा सीनेवाला (दे १, ६६)।

आसीसा देखो आसी = आशिष् (षड्)।

आसु पुंन [अश्रु] आँसू (संक्षि १७)।

आसु, आसुं अ [आशु] शीघ्र, तुरंत, जल्दी (सार्ध १८; महा; काल)। °कार पुं [°कार] १ हिंसा, मारना। २ मरने का कारण, विसूचिका वगैरह (आव)। ३ शीघ्र उपस्थित; 'आसुक्कारे मरणे, अच्छिन्नाए य जीवियासाए' (आउ ६)। °पण्ण वि [°प्रज्ञ] १ शीघ्र-बुद्धि। २ दिव्य-ज्ञानी, केवल-ज्ञानी (सूअ १, ६; १४)।

आसुर वि [आसुर] असुर-संबन्धी (ठा ४, ४; आउ ३६)।

आसुरत्त न [आसुरत्व] क्रोधिपन, गुस्सा (दस ८, २५)।

आसुरिय पुं [आसुरिक] १ असुर, असुर रूप से उत्पन्न (राज)। २ वि. असुर-संबन्धी (सूअ २, २, २७)।

आसुरीय वि [असुरीय] असुर-संबन्धी,

'आसुरीयं दिसं बाला गच्छंति अवसातमं' (उत्त ७, १०)।

आसुरुत्त वि [आशुरुप्त] १ शीघ्र क्रुद्ध। २ अति कुपित (णाया १, १)।

आसुरुत्त वि [आसुरोक्त] अति कुपित (णाया १, १)।

आसुरुत्त वि [आशुरुष्ट] अति-कुपित (विपा १, ६)।

आसूणि न [आशूनिन्] १ बलिष्ठ बनानेवाली खुराक। २ रसायन-क्रिया (सूअ १, ६)।

आसूणी स्त्री [आशूनी] श्लाघा, प्रशसा (सूअ १, ६, १५)।

आसूणिअ वि [आशूनित] थोड़ा स्थूल किया हुआ (पण्ह १, ३)।

आसूय न [दे] औपयाचितक, मनौती (पिंड ४०५)।

आसेअणय वि [आसेचनक] जिसको देखने से मन को तृप्ति न होती हो वह (दे १,७२)।

आसेव सक [आ + सेव्] १ सेवना। २ पालना। ३ आचरना। आसेवए (आप ६७)।

आसेवण न [आसेवन] १ परिपालन, संरक्षण (सुपा ४३८)। २ आचरण (स २७१)। ३ मैथुन, रतिसंभोग (दसचू १; पव १७०)।

आसेवणया, आसेवणा स्त्री [आसेवना] १ परिपालन (सूअ १, १४)। २ विपरीत आचरण (पव)। ३ अभ्यास (आचू)। ४ शिक्षा का एक भेद (धर्म ३)।

आसेवा स्त्री [आसेवा] ऊपर देखो (सुपा १०)।

आसेविअ वि [आसेवित] १ परिपालित। २ अभ्यस्त (आचा)। ३ आचरित, अनुष्ठित (स ११८)।

आसोअ पुं [अश्वयुज्] आश्विन मास (रयण ३६)।

आसोअ वि [आशोक] अशोक वृक्ष संबन्धी (गउड)।

आसोइया स्त्री [दे. आसोतिका] ओषधि-विशेष, 'आसोइयाइमीसं चोलं घुसिणं कुमुंभसंमीसं' (सुपा ३६७)।

आसोई स्त्री [आश्वयुजी] आश्विन पूर्णिमा (इक)।

आसोई, आसोया स्त्री [आश्वयुजी] १ आश्विन मास की पूर्णिमा। २ आश्विन मास की अमावस (सुज १०, ७; ६)।

आसोकंता स्त्री [आशोकान्ता] मध्यम ग्राम की एक मूर्च्छना (ठा ७)।

आसोत्थ पुं [अश्वत्थ] पीपल का पेड़ (पण्ण १; उप २३६)।

आह सक [ब्रूञ्] कहना। भूका—आहंसु, आहु (कप्प)।

आह सक [काङ्क्ष्] चाहना, इच्छा करना। आहइ (हे ४, १६२; षड्)। वकृ. आहंत (कुमा)।

आहंडल देखो आखंडल (हम्मीर १५)।

आहंतुं देखो आहण।

आहच्च अ [दे] १ अन्यथा। २ निष्कारण (वव १)। °भाव पुं [°भाव] कादाचित्कता (पव १०७ टी)।

आहच्च न [दे] १ अत्यर्थ, बहुत, अतिशय (दे १, ६२)। २ अ. शीघ्र, जल्दी (आचा)। ३ कदाचित्, कभी (भग ६, १०)। ४ उपस्थित होकर (आचा)। ५ व्यवस्था कर (सूअ २, १)। ६ विभक्त कर (आचा)। ७ छीन कर (दसा)।

आहच्चा स्त्री [आहत्या] प्रहार, आघात (भग १५)।

आहट्ट न [दे] देखो आहट्टु = दे (पव ७३ टी)।

आहट्टु स्त्री [दे] प्रहेलिका, पहेलियाँ, बुझौवल; 'तेसु न विम्हयइ सयं आहट्टकुहेडएहिं व' (पव ७३)।

आहट्टु देखो आहर = आ + हृ।

आहड [आहृत] १ छीन लिया हुआ। २ चोरी किया हुआ (सुपा ६४३)। ३ सामने लाया हुआ, उपस्थापित (स १८८)।

आहड न [दे] सीत्कार, सुरत-शब्द (षड्)।

आहण सक [आ + हन्] आघात करना, मारना। आहणामि (पि ४६६)। संकृ. आहणिअ, आहणिऊण, आहणित्ता (पि ५६१, ५८५, ५८२)। हेकृ. आहंतुं (पि ५७६)।

आहण सक [आ + हन्] उठाना। संकृ. आहु [? हु] णिय (राय १८; २१)।

आहणण न [आहनन] आघात (उप ३६६)।

आहणाविय वि [आघातित] आहत कराया हुआ (स ५२७)।

आहत्तहीय न [याथातथ्य] १ यथावस्थितपन, वास्तविकता। २ तथ्य-मार्ग—सम्यग्ज्ञान आदि। ३ 'सूत्रकृताङ्ग' सूत्र का तेरहवाँ अध्ययन (सूअ १, १३; नि ३३५)।

आहम्म सक [आ + हम्म्] आना, आगमन करना। आहम्मइ (हे ४, १६२)।

आहम्मिअ वि [अधार्मिक] अधर्म-संबन्धी (दस ८, ३१)।

आहम्मिय वि [अधार्मिक] अधर्मी, पापी (सम ५१)।

आहय वि [आहत] आघात प्राप्त, प्रेरित (कप्प)।

आहय वि [आहृत] १ आकृष्ट, खींचा हुआ। २ छीना हुआ (उप २११ टी)।

आहर सक [आ + हृ] १ छीनना, खींच लेना। २ चोरी करना। ३ खाना, भोजन करना। आहरइ (पि १७३)। कवकृ. आहरिज्जमाण (ठा ३)। संकृ. आहट्टु (पि २८६)। हेकृ. आहरित्तए (तंदु)।

आहर सक [आ + हृ] लाना। आहराहि (सूअ १, ४, २, ४), आहरेमो (सूअ २, २, ५५)।

आहरण पुंन [आहरण] १ उदाहरण, दृष्टान्त (ओघ ५३६; उप २६३;६५१)। २ आह्वान, बुलाना (सुपा ३१७)। ३ ग्रहण, स्वीकार। ४ व्यवस्थापन (आचा)। ५ आनयन, लाना (सूअ २, २)।

आहरण पुंन [आभरण] भूषण, अलंकार; 'देहे आहरणा बहू' (श्रा १२; कप्पू)।

आहरणा स्त्री [दे] खर्राट, नाक का खरखर शब्द (ओघ २)।

आहरिसिय वि [आधर्षित] तिरस्कृत, भर्त्सित; 'आहरिसिओ दूओ संभंतेण नियन्तिओ' (आवम)।

आहल्ल (अप) अक [आ + चल्] हिलना, चलना; 'न .. दंतपंतो आहल्लइ, खलइ जीहा' (भवि)।

आहल्ला स्त्री [आहल्या] विद्याधर-राज की एक कन्या (पउम १३, ३५)।

आहव सक [आ + ह्वे] बुलाना। आह

(धर्मवि ८)। संकृ. आहविउं, आहविऊण (धर्मवि ६८; सम्मत्त २१७)।

आहव पुं [आहव] युद्ध, लड़ाई (पात्र; सुपा २८८; ग्रारा ४१)।

आहवण } न [आह्वान] १ बुलाना। **आह्व्वण** } २ ललकारना (श्रा १२; सुपा ६०; पउम ६१, ३०; स ६४)।

आहविअ देखो आहूअ = ग्राहूत (ती ४)।

आहव्व वि [आभाव्य] शास्त्रोक्त क्षेत्रादि (पंचा ११, ३०; पव १०५)।

आहव्वणी स्त्री [आह्वानी] विद्या-विशेष (सूत्र २, २)।

आहा सक [आ + ख्या] कहना। कर्म. ग्राहिज्जइ (पि ५४५); ग्राहिज्जंति (कप्प)।

आहा सक [आ + धा] स्थापन करना। कर्म. ग्राहिज्जइ (सूत्र २, २)। हेकृ. आहेउं (सूत्र १, ६)। संकृ. आहाय (उत्त ५)।

आहा स्त्री [आभा] कान्ति, तेज (कप्पू)।

आहा स्त्री [आधा] १ ग्राश्रय, ग्राधार (पिंड)। २ साधु के निमित्त ग्राहार के लिए मनः-प्रणिधान (पिंड)। °कड वि [°कृत] ग्राधा-कर्म-दोष से युक्त (स १८८)। °कम्म न [°कर्मन्] १ साधु के लिए ग्राहार पकाना। २ साधु के निमित्त पकाया हुग्रा भोजन, जो जैन साधुग्रों के लिए निषिद्ध है (पण्ह २, ३; ठा ३, ४)। °कम्मिय वि [°कर्मिक] देखो पूर्वोक्त ग्रर्थ (ग्रनु)।

आहाण न [आधान] १ स्थापन। २ स्थान, ग्राश्रय; 'सव्वगुणाहाणं' (ग्राव ४; उवर २६)।

आहाण } न [आख्यान, °क] १ उक्ति, **आहाणय** } वचन। २ किंवदन्ती, कहावत, लोकोक्ति (सुर २, ६६; उप ७२८ टी)।

आहातहिय वि [याथातथ्य] सत्य, वास्तविक (सूत्र २,१;२७)। देखो आहत्तहीय।

आहार सक [आ + हारय्] खाना, भोजन करना, भक्षण करना। ग्राहारइ, ग्राहारेंति (भग)। वकृ. आहारेमाण (कप्प)। भकृ. आहारिज्जस्समाण (भग)। हेकृ. आहारित्तए, आहारेत्तए (कप्प)। कृ. आहारेयव्व (ठा ३)।

आहार पुं [आहार] १ खुराक, भोजन (स्वप्न ६०; प्रासू १०४)। २ खाना, भक्षण (पव)। ३ न. देखो आहारग (पउम १०२, ६८)। °पज्जत्ति स्त्री [°पर्याप्ति] भुक्त ग्राहार को खल ग्रौर रस के रूप में बदलने की शक्ति (भग ६, ४)। °पोसह पुं [°पोषध] व्रत विशेष, जिसमें ग्राहार का सर्वथा या ग्रांशिक त्याग किया जाता है (ग्राव ६)। °सण्णा स्त्री [°संज्ञा] ग्राहार करने की इच्छा (ठा ४)।

आहार पुं [आधार] १ ग्राश्रय, ग्रधिकरण (सुपा १२८; संथा १०३)। २ ग्राकाश (भग २०, २)। ३ ग्रवधारण, याद रखना (पुप्फ ३५६)।

आहारग न [आहारक] १ शरीर-विशेष, जिसको चौदह-पूर्वी, केवलज्ञानी के पास जाने के लिए बनाता है (ठा २, २)। २ वि. भोजन करनेवाला (ठा २, २)। ३ ग्राहारक-शरीर-वाला (विसे ३७५)। ४ ग्राहारक शरीर उत्पन्न करने का जिसे सामर्थ्य हो वह (कप्प)। °जुगल न [°युगल] ग्राहारक शरीर ग्रौर उसके ग्रंगोपाङ्ग (कम्म २, १७; २४)। °णाम न [°नामन्] ग्राहारक शरीर का हेतु-भूत कर्म (कम्म १, ३३)। °दुग न [°द्विक] देखो °जुगल (कम्म २, ३, ८, १७)।

आहारण वि [आधारण] १ धारण करनेवाला। २ ग्राधार-भूत (से ६, ५०)।

आहारण वि [आहारण] ग्राकर्षक (से ६, ५०)।

आहारय देखो आहारग (ठा ६, भग; पण्ण २८; ठा ५, १; कर्म १, ३७)।

आहाराइणिया स्त्री [याथारात्निकता] यथा-ज्येष्ठ, ज्येष्ठानुक्रम (कस)।

आहारि वि [आहारिन्] ग्राहार-कर्त्ता (ग्रज्झ १११)।

आहारिम वि [आहार्य] १ खाने योग्य। २ जल के साथ खाया जा सके ऐसा योग्य चूर्ण-विशेष (पिंड ५०२)।

आहारिम वि [आहार्य] ग्राहार के योग्य, खाने लायक (निचू ११)।

आहारिय वि [आहारित] १ जिसने ग्राहार किया हो वह, 'तस्स कंडरीयस्स रण्णो तं पणीयं पाणभोयणं ग्राहारियस्स समाणस्स' (णाया १, १६)। २ भक्षित, भुक्त (भग)।

आहावणा स्त्री [आभावना] ग्रपरिगणना, गणना का ग्रभाव (राज)।

आहावणा स्त्री [आभावना] उद्देश्य (पिंड ३६१)।

आहाविअ वि [आधावित] दौड़ा हुग्रा (सिरि ७५२)।

आहाविर वि [आधावितृ] दौड़नेवाला (सण)।

आहास देखो आभास = ग्रा + भाष्। संकृ. आहासिवि (ग्रप) (भवि)।

आहाह ग्र [आहाह] ग्राश्चर्य-द्योतक ग्रव्यय (हे २, २१७)।

आहि पुंस्त्री [आधि] मन की पीड़ा (धम्म १२ टी)।

आहिआइ स्त्री [आभिजाति] कुलीनता, खानदानी (से १, ११)।

आहिआई स्त्री [आभिजाती] कुलीनता (गा २८५)।

आहिंड सक [आ + हिण्ड्] १ गमन करना, जाना। २ परिश्रम करना। ३ घूमना, परिभ्रमण करना। वकृ. आहिंडंत, आहिंडेमाण (उप २६४ टी; णाया १,१)। संकृ. आहिंडिय (महा; स १६३)।

आहिंडग } वि [आहिण्डक] चलनेवाला, **आहिंडय** } परिभ्रमण करनेवाला (ग्रोघ ११५; ११८; ग्रौप)।

आहिक्क न [आधिक्य] ग्रधिकता (विसे २०८७)।

आहिजाइ देखो आहिआइ (महा)।

आहिजाई देखो आहिआई (गा २४)।

आहितुंडिअ पुं [आहितुण्डिक] गारुडिक, सपहरिया, सपेरा (मुद्रा ११६)।

आहित्थ वि [दे] १ चलित, गत। २ कुपित, क्रुद्ध (दे १,७६; जीव ३ टी)। ३ ग्राकुल, घबड़ाया हुग्रा (दे १, ७६; से १३, ८३; पाग्र); 'ग्राहित्थं उप्पिच्छं च ग्राउलं रोस-भरियं च' (जीव ३ टी)।

आहिद्ध वि [दे] १ रुद्ध, रुका हुग्रा। २ गलित, गला हुग्रा (षड्)।

आहिपत्त न [आधिपत्य] मुखियापन, नेतृत्व (उप १०३१ टी)।

आहिय वि [आहित] १ स्थापित, निवेशित (ठा ४)। २ सम्पूर्ण हितकर (सूत्र)। ३ विरचित,

निर्मित (पाअ)। °ग्गि पुं [°ग्नि] अग्नि-होत्रीय ब्राह्मण (पउम ३५, ५)।

आहिय वि [आहित] १ व्याप्त, 'अचिरेण-हिओ एस जलोयरवाहिणा' (कुप्र ४३)। २ जनित, उत्पादित। ३ प्रथित, प्रसिद्धि-प्राप्त (सूअ १, २, २, २६)। ४ सर्वथा हितकारी (सूअ १ २, २, २७)।

आहिय वि [आख्यात] कहा हुआ, प्रति-पादित, उक्त (पण्ण ३३; सुज्ज १६)।

आहियार पुं [अधिकार] अधिकार, सत्ता, हक (पउम ५५, ८)।

आहिवत्त देखो **आहिपत्त** (काल)।

आहिसारिअ वि [अभिसारित] नायक-बुद्धि से गृहीत, पति-बुद्धि से स्वीकृत (से १३,१७)।

आहीर पुं [आहीर] १ देश-विशेष (कप्प)। २ शूद्र जाति विशेष, अहीर (सूअ १, १)। ३ इस नाम का एक राजा (पउम ६८, ६४)। स्त्री. °री—अहीरिन (सुपा ३६०)।

आहु सक [आ + ह्वे] बुलाना। कृ. आहु-णिज्ज (औप)।

आहु [आ + हु] दान करना, त्याग करना। कृ. आहुणिज्ज (णाया १, १)।

आहु अ [आहु] अथवा, या (नाट)।

आहु पुं [दे] घूक, उल्लू (दे १, ६१)।

आहु देखो **आह** = ब्रू।

आहुइ वि [आहोतृ] दाता, त्यागी (णाया १, १)।

आहुइ स्त्री [आहुति] १ हवन, होम (गउड)। २ होम का पदार्थ, बलि (स १७)।

आहुंदुर, **आहुंदुरु** पुं [दे] बालक, बच्चा (दे १, ६६)।

आहुड न [दे] १ सीत्कार, सुरत समय का शब्द। २ पणित, विक्रय, बेचना (दे १,७४)।

आहुड अक [दे] गिरना। आहुडइ (दे १, ६६)।

आहुडिअ वि [दे] निपतित, गिरा हुआ (दे १, ६६)।

आहुण सक [आ + धु] कँपाना, हिलाना। कवकृ. आहुणिज्जमाण (णाया १, ६)।

आहुणिय वि [आधुनिक] १ आजकल का, नवीन। २ पुं. ग्रह-विशेष (ठा २, ३)।

आहुत्त न [दे. अभिमुख] सम्मुख, सामने; 'कुमरोवि पहाविओ तयाहुत्तं' (महा; भवि)।

आहूअ वि [आहूत] बुलाया हुआ (पाअ)।

आहूअ पुं [आहूक] पिशाच-विशेष (इक)।

आहूअ वि [आभूत] उत्पन्न, जात; 'आहूओ से गब्भो' (वसु)।

आहेउं देखो **आहा** = आ + धा।

आहेड, **आहेडग**, **आहेडय** पुंन [आखेट, °क] शिकार, मृगया (सुपा १६७; स ६७; दे)।

आहेडिय वि [आखेटिक] मृगया-सम्बन्धी, 'आहेडियभसणेण' (सम्मत्त २२६)।

आहेण न [दे] विवाह के बाद वर के घर वधू के प्रवेश होने पर जो जिमाने का उत्सव किया जाता है वह (आचा २, १, ४)।

आहेय वि [आधेय] १ स्थाप्य। २ आश्रित (विसे ६२४)।

आहेर देखो **आहीर** (विसे १४५४)।

आहेवच्च न [आधिपत्य] नेतृत्व, मुखियापन (सम ८६)।

आहेवण न [आक्षेपण] १ आक्षेप। २ क्षोभ उत्पन्न करना (पण्ह १, २)।

आहोअ देखो **आभोग** (से १, ४६; ६, ३; गा ८८; गउड)।

आहोअ देखो **आभोय** = आ + भोजय्। संकृ. आहोइऊण (स ५५)।

आहोइअ वि [आभोगित] ज्ञात, दृष्ट (स ४८५)।

आहोइअ वि [आभोगिक] उपयोग ही जिसका प्रयोजन हो वह, उपयोग-प्रधान (कप्प)।

आहोड सक [ताडय्] ताड़न करना, पिटना आहोडइ (हे ४, २७)।

आहोरण [आधोरण] हस्तिपक, महावत (पाअ; स ३६६)।

आहोहि, **आहोहिय** वि [आधोवधिक] अवधि-ज्ञानी का एक भेद, नियत क्षेत्र को अवधिज्ञान से देखनेवाला (भग; सम ६६)।

इअ पाइअसद्दमहण्णवे आयाराइसद्दसंकलणो बिइओ तरंगो समत्तो।

इ

इ पुं [इ] १ प्राकृत वर्णमाला का तृतीय स्वर-वर्ण (प्रामा)। २-३ वाक्यालङ्कार और पाद-पूर्ति में प्रयुक्त किया जाता अव्यय (कप्प; हे २, ११७; षड्)।

इ देखो **इइ** (उवा)।

इ सक [इ] १ जाना, गमन करना। २ जानना। एइ, एंति (कुमा)। वकृ. एंत (कुमा)। संकृ. इच्चा (आचा)। हेकृ. इत्तए, एत्तए (कप्प; कस)।

इअहरा देखो **इयरहा** (प्राकृ ३७)।

इइ अ [इति] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ समाप्ति (आचा)। २ अवधि, हद (विसे)। ३ मान, परिमाण (पव ८४)। ४ निश्चय (निचू २,१५)। ५ हेतु, कारण (ठा ३)। ६ एवम्, इस तरह, इस प्रकार (उत्त २२)। देखो **इति**।

इओ अ [इतस्] १ इससे, इस कारण (पि १७४)। २ इस तरफ (सुपा ३६४)। ३ इस (लोक) में (विसे २६८२)।

इओअ अ [इतश्च] प्रसंगान्तर-सूचक अव्यय (श्रा २८)।

इंखिणिया स्त्री [दे. इङ्खिनिका] निन्दा, गर्हा (सूअ १,२)।

इंखिणी स्त्री [दे. इङ्खिनी] ऊपर देखो (सूअ १, २)।

इंगार, **इंगाल** देखो **अंगार** (पि १०२; जी ६; प्राप्र)। °**कम्म** न [°कर्मन्] कोयला आदि उत्पन्न करने का और बेचने का व्यापार (पडि)। °**सगडिया** स्त्री [°शकटिका] अंगीठी, आग रखने का बर्तन (भग)।

इंगारडाह पुंन [अङ्गारदाह] आवा, मिट्टी के पात्र पकाने का स्थान (आचा २, १०, २)।

इंगाल वि [आङ्गार] अङ्गार-संबन्धी (दस ५)।

इंगालग देखो **अंगारग** (ठा २, ३)।

इंगालय देखो **इंगालग** (सुज्ज २०)।

इंगाली स्त्री [दे] ईख का टुकड़ा, गंडेरी (दे १, ७६; पाअ)।

इंगाली स्त्री [आङ्गारी] देखो **इंगाल-कम्म** (श्रा २२)।

इंगिअ न [इङ्गित] इशारा, संकेत, अभिप्राय के अनुरूप चेष्टा (पाअ)। °**ज्ज**, °**ण्ण**, **ण्णु** वि [°ज्ञ] इशारे से समझनेवाला (प्राप्र; हे २, ८३; पि २७६)। °**मरण** न [°मरण] मरण-विशेष (पंचा)।

इंगिअजाणुअ देखो **इंगिअज्ज** (प्राकृ १८)।

इंगिणी स्त्री [इङ्गिनी] मरण-विशेष, अनशन-क्रिया-विशेष (सम ३३)।

इंगुअ न [इङ्गुद] इंगुदी वृक्ष का फल (कुमा; पउम ४१, ६)।

इंगुई, **इंगुदी** स्त्री [इङ्गुदी] वृक्ष-विशेष, इसके फल तैलमय होते हैं, इसका दूसरा नाम व्रण-विरोपण भी है, क्योंकि इसके तैल से व्रण बहुत शीघ्र अच्छे होते हैं (आचा; अभि ७३)।

इंघिअ वि [दे] घ्रात, सूँघा हुआ (दे १,८०)।

°**इंणर** देखो **किण्णर** (से ८, ६१)।

इंत देखो **ए** = आ + इ।

इंद पुं [इन्द्र] १ देवताओं का राजा, देवराज (ठा २)। २ श्रेष्ठ, प्रधान, नायक; 'णरिंद' (गउड), 'देविंद' (कप्प)। ३ परमेश्वर, ईश्वर (ठा ४)। ४ जीव, आत्मा; 'इंदो जीवो सव्वोवलद्धिभोगपरमेसरत्तणओ' (विसे २९९३)। ५ ऐश्वर्य-शाली (आवम)। ६ विद्याधरों का प्रसिद्ध राजा (पउम ६,२; ७,८)। ७ पृथ्वीकाय का एक अधिष्ठायक देव (ठा ५, १)। ८ ज्येष्ठा नक्षत्र का अधिष्ठायक देव (ठा २, ३)। ९ उन्नीसवें तीर्थंकर के एक स्वनाम-ख्यात गणधर (सम १५२)। १० सप्तमी तिथि (कप्प)। ११ मेघ, वर्षा; 'किं जयइ सव्वत्था दुब्भिक्खं अह भवे इंदो' (दसनि १०५)। १२ न. देवविमान-विशेष (सम ३७)। °**इ** पुं [°जित्] १ इस नाम का राक्षस वंश का एक राजा, एक लंकेश (पउम ५, २६२)। २ रावण के एक पुत्र का नाम (से १२, ९८)। °**ओव** देखो °**गोव** (पि १६८)। °**काइय** पुं [°कायिक] त्रीन्द्रिय जीव-विशेष (पण्ण १)। °**कील** पुं [°कील] दरवाजा का एक अवयव (औप)। °**कुंभ** पुं [°कुम्भ] १ बड़ा कलश (राय)। २ उद्यान-विशेष (णाया १, ६)। °**केउ** पुं [°केतु] इन्द्र-ध्वज, इन्द्र-यष्टि (पण्ह १, ४; २, ४)। °**खील** देखो °**कील** (औप; पि २०६)। °**गाइय** देखो °**काइय** (उत्त ३६)। °**गाह** पुं [°ग्रह] इन्द्रावेश, किसी के शरीर में इन्द्र का अधिष्ठान, जो पागलपन का कारण होता है; 'इंदगाहा इवा खंदगाहा इवा' (भग ३, ७)। °**गोव**, °**गोवग**, °**गोवय** पुं [°गोप] वर्षा ऋतु में होनेवाला रक्त वर्ण का क्षुद्र जन्तु-विशेष, जिसको गुजराती में 'गोकुल गाय' कहते हैं (उत्र ३२; सुर २, ८७; जी १७; पि १६८)। °**ग्गह** पुं [°ग्रह] ग्रह-विशेष (जीव ३)। °**ग्गि** पुं [°ग्नि] १ विशाखा नक्षत्र का अधिष्ठायक देव (अणु)। २ महाग्रह-विशेष (ठा २, ३)। °**ग्गीव** पुं [°ग्रीव] ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष (ठा २,३)। °**जसा** स्त्री [°यशस्] काम्पिल्य नगर के ब्रह्मराज की एक पत्नी (उत्त १३)। °**जाल** न [°जाल] माया-कर्म, छल, कपट (स ४५४)। °**जालि**, °**जालिअ** वि [°जालिन्, °क] मायावी, बाजीगर (ठा ४; सुपा २०३)। °**जुइण्ण** पुं [°द्युतिज्ञ] स्वनाम-ख्यात इक्ष्वाकु-वंश का एक राजा (पउम ५, ६)। °**ज्झय** पुं [ध्वज] बड़ी ध्वजा (पि २९९)। °**ज्झया** स्त्री [°ध्वजा] इन्द्र द्वारा भरतराज को दिखाई हुई अपनी दिव्य अङ्गुलि के उपलक्ष में राजा भरत से उस अङ्गुलि के समान आकृति की की हुई स्थापना और उसके उपलक्ष में किया गया उत्सव (आचू २०)। °**णील** पुंन [°नील] नीलम, नीलमणि, रत्न-विशेष (गउड; पि १६०)। °**तरु** पुं [°तरु] वृक्ष-विशेष, जिसके नीचे भगवान् संभवनाथ को केवल-ज्ञान हुआ था (पउम २०, २८)। °**त्त** न [°त्व] १ स्वर्ग का आधिपत्य, इन्द्र का असाधारण धर्म। २ राजत्व। ३ प्राधान्य (सुपा २५३)। °**दत्त** पुं [°दत्त] इस नाम का एक प्रसिद्ध राजा (उप ९३६)। २ एक जैन मुनि (विपा २,७)। °**दिण्ण** पुं [°दिन्न] स्वनाम-ख्यात एक जैन आचार्य (कप्प)। °**धणु** न [°धनुष्] १ शक्र-धनु, सूर्य की किरण मेघों पर पड़ने से आकाश में जो धनुष का आकार दीख पड़ता है वह। २ विद्याधर-वंश के एक राजा का नाम (पउम ८,१८६)। °**नील** देखो °**णील** (पउम ३, १३२)। °**पाडिवया** स्त्री [°प्रतिपत्] कार्तिक (गुजराती आश्विन) मास के कृष्णपक्ष की पहली तिथि (ठा ४)। °**पुर** न [°पुर] १ इन्द्र का नगर, अमरावती (उप पृ १२६)। २ नगर-विशेष, राजा इन्द्रदत्त की राजधानी (उप ९३६)। °**पुरग** न [°पुरक] जैनीय वेशवाटिक गण के चौथे कुल का नाम (कप्प)। °**प्पभ** पुं [°प्रभ] राक्षस वंश के एक राजा का नाम, जो लङ्का का राजा था (पउम ५, २६१)। °**भूइ** पुं [°भूति] भगवान् महावीर का प्रथम—मुख्य शिष्य, गौतमस्वामी (सम १९; १५२)। °**मह** पुं [°मह] १ इन्द्र की आराधना के लिए किया जाता एक उत्सव। २ आश्विन पूर्णिमा (ठा ४, २)। °**माली** स्त्री [°माली] राजा आदित्य की पत्नी (पउम ९, १)। °**मुद्धाभिसित्त** पुं [°मूर्द्धाभिषिक्त] पक्ष की सातवीं तिथि, सप्तमी (चंद्र १०)। °**मेह** पुं [°मेघ] राक्षस वंश में उत्पन्न एक राजा (पउम ५, २६१)। °**य** पुं [°क] १ देखो **इन्द्र** (ठा ६)। २ नरक-विशेष। ३

द्वीप-विशेष। ४ न. विमान-विशेष (इक)। °याल देखो °जाल (महा)। °रह पुं [°रथ] विद्याधर वंश के एक राजा का नाम (पउम ५, ४४)। °राय पुं [°राज] इन्द्र (तित्थ)। °लट्ठि स्त्री [°यष्टि] इन्द्र-ध्वज (गाया १, १)। °लेहा स्त्री [°लेखा] राजा त्रिकसंयत की पत्नी (पउम ५, ५१)। °वज्जा स्त्री [°वज्रा] छन्द-विशेष का नाम, जिसके एक पाद में ग्यारह अक्षर होते हैं (पिंग)। °वसु स्त्री [°वसु] ब्रह्मराज की एक पत्नी (राज)। °वाय पुं [°वात] एक माण्डलिक राजा (भवि)। °वारण पुं [°वारण] इन्द्र का हाथी, ऐरावत (कुमा)। °सम्म पुं [°शर्मन्] स्वनाम-ख्यात एक ब्राह्मण (आवम)। °सामणिअ पुं [°सामानिक] इन्द्र के समान ऋद्धि-वाला देव (महा)। °सिरी स्त्री [°श्री] राजा ब्रह्मदत्त की एक पत्नी (राज)। °सुअ पुं [°सुत] इन्द्र का लड़का, जयन्त (दे ६,१६)। °सेणा स्त्री [°सेना] १ इन्द्र का सैन्य। २ एक महानदी (ठा ५, ३)। °हणु देखो °धणु (हे १, १८७)। °उह न [°युध] इन्द्रधनु (गाया १,१)। °उहप्पभ पुं [°युधप्रभ] वानरद्वीप का एक राजा (पउम ६, ६६)। °मअ पुं [°मय] राजा इन्द्रायुधप्रभ का पुत्र, वानरद्वीप का एक राजा (पउम ६,६७)।

इंद पुंन [इन्द्र] एक देवविमान (देवेन्द्र १४१)।

इंद वि [ऐन्द्र] १ इन्द्र-संबन्धी (गाया १, १)। २ न. संस्कृत का एक प्राचीन व्याकरण (आवम)।

इंदगाइ पुं [दे] साथ में संलग्न रहनेवाले कीट-विशेष (दे १, ८१)।

इंदग्गि पुं [दे] बर्फ, हिम (दे १, ८०)।

इंदग्गिधूम न [दे] बर्फ, हिम (दे १, ८०)।

इंदड्ढलअ पुं [दे] इन्द्र का उत्थापन (दे १, ८२)।

इंदमह वि [दे] १ कुमारी में उत्पन्न। २ न. कुमारता, यौवन (दे १, ८१)।

इंदमहकामुअ पुं [दे. इन्द्रमहकामुक] कुत्ता, श्वान (दे १, ८२; पाअ)।

इंदा स्त्री [इन्द्रा] १ एक महानदी (ठा ५, ३)। २ धरणेन्द्र की एक अग्र-महिषी (णाया २)।

इंदा स्त्री [ऐन्द्री] पूर्व-दिशा (ठा १०)।

इंदाणी स्त्री [इन्द्राणी] १ इन्द्र की पत्नी (सुर १, १७०)। २ एक राज-पत्नी (पउम ६, २१९)।

इंदासणि पुं [इन्द्राशनि] एक नरक-स्थान (देवेन्द्र २६)।

इंदिंदिर पुं [इन्दिन्दिर] भ्रमर, भमरा, भौंरा (पाअ; दे १, ७९)।

इंदिय पुंन [इन्द्रिय] १ आत्मा का चिह्न, ज्ञान के साधन-भूत इन्द्रिय—श्रोत्र, चक्षु, घ्राण, जिह्वा, त्वक् और मन; 'तं तारिसं नो पयलेंति इंदिया' (दसचू १, १९; ठा ६)। २ अंग, शरीर के अवयव; 'नो निग्गंथे इत्थीणं इंदियाइं मणोहराइं मणोरमाइं आलोइत्ता निज्झाइत्ता भवइ' (उत्त १६)। °अवाय पुं [°पाय] इन्द्रियों द्वारा होनेवाला वस्तु का निश्चयात्मक ज्ञान-विशेष (पण्ण १५)। °ओगाहणा स्त्री [°ावग्रहणा] इन्द्रियों द्वारा उत्पन्न होनेवाला ज्ञान-विशेष (पण्ण १५)। °जय पुं [°जय] १ इन्द्रियों का निग्रह, इन्द्रियों को वश में रखना; 'अजि-इंदिएहिं चरणं, कट्ठं व घुणेहि कीरइ असारं। तो धम्मत्थीहि दड्ढं, जइअव्वं इंदियजयम्मि' (इंदि ४)। २ तपो-विशेष (पव २७०)। °ट्ठाण न [°स्थान] इन्द्रियों का उपादान कारण, जैसे श्रोत्रेन्द्रिय का आकाश, चक्षु का तेज वगैरह (सूअ १, १)। °णिव्वत्तणा स्त्री [°निर्वर्त्तना] इन्द्रियों के आकार की निष्पत्ति (पण्ण १५)। °णाण न [°ज्ञान] इन्द्रिय-द्वारा उत्पन्न ज्ञान, प्रत्यक्ष ज्ञान (वव १०)। °त्थ पुं [°र्थ] इन्द्रिय से जानने योग्य वस्तु, रूप-रस-गन्ध वगैरह (ठा ६)। °पज्जत्ति स्त्री [°पर्याप्ति] शक्ति-विशेष, जिसके द्वारा जीव धातुओं के रूप में बदले हुये आहार को इन्द्रियों के रूप में परिणत करता है (पण्ण १)। °विजय पुं [°विजय] देखो °जय (पंचा १८)। °विसय पुं [°विषय] देखो °त्थ (उत्त ५)।

इंदिय न [इन्द्रिय] लिंग, पुरुष-चिह्न (धर्मसं ९८१)।

इंदियाल देखो इंद-जाल (सुपा ११७; महा)।

इंदियाल } देखो इंद-जालि; 'तुह कोउयत्थ-
इंदियालि } मित्थं विहियं मे खयरइंदियालेण' (सुपा २४२); 'जह एस इंदियाली, दंसइ खणनस्सराइं रूवाइं' (सुपा २४३)।

इंदियालीअ देखो इंद-जालिअ; 'न भवामि अहं खयरो नरपुंगव! इंदियालीओ' (सुपा २४३)।

इंदिर पुं [इन्दिर] भ्रमर, भमरा, भौंरा; 'झंकारमुहरिंदिराइं' (विक्र २९)।

इंदिरा स्त्री [इन्दिरा] लक्ष्मी (सम्मत्त २२६)।

इंदीवर न [इन्दीवर] कमल, पद्म (पउम १०, ३९)।

इंदु पुं [इन्दु] चन्द्र, चन्द्रमा (पाअ)।

इंदुत्तरवडिंसग न [इन्द्रोत्तरावतंसक] देव-विमान-विशेष (सम ३७)।

इंदुर पुंस्त्री [उन्दुर] चूहा, मूषक (नाट)।

इंदोकंत न [इन्दुकान्त] विमान-विशेष (सम ३७)।

इंदोव देखो इंद-गोव (पाअ; दे १, ७९)।

इंदोवत्त पुं [दे] इन्द्रगोप, कीट-विशेष (दे १, ८१)।

इंद्र देखो इंद = इन्द्र (पि २६८)।

इंध न [चिह्न] निशानी, चिह्न (हे १, १७७; २, ५०; कुमा)।

इंधण न [इन्धन] १ इंधन, जलावन, लकड़ी वगैरह दाह्य-वस्तु (कुमा)। २ अस्त्र-विशेष (पउम ७१, ६४)। ३ उद्दीपन, उत्तेजन (उत्त १४)। ४ पलाल, पुआल, तृण वगैरह, जिससे फल पकाये जाते हैं (निचू १५)। °साला स्त्री [°शाला] वह घर, जिसमें जलावन रक्खे जाते हैं (निचू १६)।

इंधिय वि [इन्धित] उद्दीपित, प्रज्वलित (बृह ४)।

इक्क न [दे] प्रवेश, पैठ; 'इक्कमप्पए पवेसणं' (विसे ३४८३)।

इक्क देखो एक्क (कुमा; सुपा ३७७; दं ४०; पाअ; प्रासू १०; कस; सुर १०, २१२; श्रा १०; दं २१; रयण २; श्रा ६; पउम ११, ३२)।

इक्कड पुं [इक्कड] तृण-विशेष (पण्ह २; ३; पण्ण १)।

इक्कड वि [ऐक्कड] इक्कड़ तृण का बना हुआ (आचा २, २, ३, १४)।

इक्कण वि [दे] चोर, चुरानेवाला (दे १,८०); 'बाहुलयामूलेसुं रइयाओ जणमणेक्कणाओ उ। बाहुसरियाउ तीसे' (स ७६)।

इक्कार देखो एक्कारह (कम्म ६, ६६)।

इक्किक्क वि [एकैक] प्रत्येक (जी ३३; प्रासू ११८; सुर ८, ४२)।

इक्किल्ल स्त्रीन [एकचत्वारिंशत्] एकचालीस, ४१ (कम्म ६, ५६)।

इक्कुस न [दे] नीलोत्पल, कमल (दे १, ७९)।

इक्ख सक [ईक्ष्] देखना। इक्खइ (उव)। इक्ख (सूअ १, २, १, २१)।

इक्खअ वि [ईक्षक] देखनेवाला (गा ५५७)।

इक्खण न [ईक्षण] अवलोकन, प्रेक्षण (पउम १०१, ७)।

इक्खाउ देखो इक्खागु (विक्र ६४)।

इक्खाग वि [ऐक्ष्वाक] इक्ष्वाकु नामक प्रसिद्ध क्षत्रियवंश में उत्पन्न (तित्थ)।

इक्खाग } पुं [इक्ष्वाकु] १ एक प्रसिद्ध क्षत्रिय
इक्खागु } राजवंश, भगवान् ऋषभदेव का वंश। २ उस वंश में उत्पन्न (भग ९, ३३; कप्प; औप; अजि १३)। ३ कोशल देश (णाया १,८)। °**भूमि** स्त्री [°भूमि] अयोध्या नगरी (आव २)।

इक्खु पुं [इक्षु] १ ईख, ऊख (हे २, १७; पि ११७)। २ धान्य-विशेष, 'बरट्टिका' नाम का धान्य (श्रा १८)। °**गंडिया** स्त्री [°गण्डिका] गंडेरी, ईख का टुकड़ा (आचा)। °**घर** न [°गृह] उद्यान-विशेष (विसे)। °**चोयग** न [दे] ईख का कुचा (आचा)। °**डालग** न [°दे] १ ईख की शाखा का एक भाग (आचा)। २ ईख का छेद (निचू १)। °**पेसिया** स्त्री [°पेशिका] गण्डेरी (निचू १६)। °**भित्ति** स्त्री [दे] ईख का टुकड़ा (निचू १६)। °**मेरग** न [°मेरक] गण्डेरी, कटे हुए ऊख के गुल्ले (आचा)। °**लट्ठि** स्त्री [°यष्टि] ईख की लाठी, इक्षु-दण्ड (आचू)। °**वाड** पुं [°वाट] ईख का खेत, 'सुचिरं पि अच्छमाणो नलथंभो इच्छुवाडमज्झम्मि' (आव ३)। °**सालग** न [दे] १ ईख की लम्बी शाखा (आचा)। २ ईख की बाहर की छाल (निचू १६)। देखो उच्छु।

इग देखो एक्क (कम्म १, ८, ३३; सुपा ४०६; श्रा १४; नव ८; पि ४४५; श्रा ४४; सम ७५)।

इगयाल स्त्रीन [एकचत्वारिंशत्] एकचालीस, ४१ (कम्म ६, ५६)।

इगवीसइम वि [एकविंश] एक्कीसवाँ (पव ४६)।

इगुचाल वि [एकचत्वारिंशत्] संख्या-विशेष, ४१—चालीस और एक (भग; पि ४४५)।

इगुणवीस वि [एकोनविंश] उन्नीसवाँ (पव ४६)।

इगुणीस } स्त्री [एकोनविंशति] उन्नीस (पव
इगुवीस } १८; कम्म ६, ५९)।

इगुसट्ठि स्त्री [एकोनषष्टि] उनसठ (कम्म ६, ६१)।

इग्ग वि [दे] भीत, डरा हुआ (दे १, ७९)।

इग्ग देखो एक्क (नाट)।

इग्घिअ वि [दे] भर्त्सित, तिरस्कृत (दे १, ८०)।

इच्चा देखो इ सक।

इच्चाइ पुंन [इत्यादि] वगैरह, प्रभृति (जी ३)।

इच्चेवं अ [इत्येवम्] इस प्रकार, इस माफिक (सूअ १, ३)।

इच्छ सक [इष्] इच्छा करना, चाहना। इच्छइ (उव; महा)। वकृ. इच्छंत, इच्छमाण (उत्त १; पंचा ५)।

इच्छ सक [आप् + स = ईप्स्] प्राप्त करने को चाहना। कृ. इच्छियव्व (वव १)।

इच्छकार देखो इच्छा-कार (पडि)।

इच्छक्कार पुं [इच्छाकार] 'इच्छा' शब्द (पंचा १२, ४)।

इच्छा स्त्री [इच्छा] पक्ष की ग्यारहवीं रात्रि, 'अवंति-अपराजिया य ग(? इ)च्छा य' (सुज्ज १०, १४)।

इच्छा स्त्री [इच्छा] अभिलाषा, चाह, वाञ्छा (उवा; प्रासू ४८)। °**कार** पुं [°कार] स्वकीय-इच्छा, अभिलाष (पडि)। °**छंद** वि [°च्छन्द] इच्छा के अनुकूल (आव ३)। °**णुलोम** वि [°नुलोम] इच्छा के अनुकूल (पण्ण ११)। °**णुलोमिय** वि [°नुलोमिक] इच्छा के अनुकूल (आचा)। °**पणिय** वि [°प्रणीत] इच्छानुसार किया हुआ (आचा)। °**परिमाण** न [°परिमाण] परिग्राह्य वस्तुओं के विषय की इच्छा का परिमाण करना, श्रावक का पांचवाँ व्रत (ठा ५)। °**मुच्छा** स्त्री [°मूर्च्छा] अत्यासक्ति, प्रबल इच्छा (पण्ह १, ३)। °**लोभ** पुं [°लोभ] प्रबल लोभ (ठा ६)। °**लोभिय** वि [°लोभिक] महालोभी (ठा ६)। °**लोल** पुं [°लोल] १ महान् लोभ। २ वि. महालोभी (बृह ६)।

°**इच्छा** स्त्री [दित्सा] देने की इच्छा (आव)।

इच्छिअ [इष्ट] इष्ट, अभिलषित, वाञ्छित (सुर ४, १५३)।

इच्छिअ वि [ईप्सित] प्राप्त करने को चाहा हुआ, अभिलषित (भग; सुपा ६२५)।

इच्छिअ वि [इच्छित] जिसकी इच्छा की गई हो वह (भग)।

इच्छिर वि [एषितृ] इच्छा करनेवाला (कुमा)।

इच्छु देखो इक्खु (कुमा; प्रासू ३३)।

इच्छु वि [इच्छु] अभिलाषी (गा ७४०)।

इज्ज सक [आ + इ] आना, आगमन करना। वकृ. इज्जंत,

'विणयम्मि जो उवाएणं, चोइओ कुप्पई नरो।
दिव्वं सो सिरिमिज्जंतिं, दंडेण पडिसेहए ॥'
(दस ९, २, ४)।

इज्ज पुंन [इज्या] यज्ञ, याग; 'भिक्खट्ठा बंभइज्जम्मि' (उत्त १२, ३)।

इज्जा स्त्री [इज्या] १ याग, पूजा। २ ब्राह्मणों का सन्ध्यार्चन (अणु ठा १०)।

इज्जा स्त्री [दे] माता, जननी (अणु)।

इज्जिसिय वि [इज्यैषिक] पूजा का अभिलाषी (सम १, ३३)।

इज्झ अक [इन्ध्] चमकना (हे २, २८)। वकृ. इज्झमाण (राय)।

इट्टग पुं [दे] सेवइँ, गु० सेव (पिंडनि० गा० ४६१, ४६६)।

इट्टगा स्त्री [इष्टका] नीचे देखो (पण्ह २, २; पिंड)।

इट्टगा स्त्री [दे] खाद्य-विशेष, सेव (पिंड ४६१; ४६६; ४७२)।

इट्टवाय देखो इट्टा-वाय (सम्मत्त १३७)।

इट्टा स्त्री [इष्टका] ईंट (गउड; हे २, ३४)। °**पाय**, °**वाय** पुं [°पाक] ईंटों का पकना। २ जहाँ पर ईंटें पकाई जाती हैं वह स्थान (ठा ८)।

इट्टाल न [इट्टाल] ईंट का टुकड़ा (दस ५, १, ६५)।

इट्ठ वि [इष्ट] १ अभिलषित, अभिप्रेत, वाञ्छित (विपा १, १; सुपा ३७०)। २ पूजित, सत्कृत (औप)। ३ आगमोक्त, सिद्धान्त से अविरुद्ध (उप ८८२)।

इट्ठ न [इष्ट] १ स्वाभ्युपगत, स्व-सिद्धान्त (धर्मसं ५१९)। २ न. तपो-विशेष, निर्वि-कृति-तप (सम्बोध ५८)। ३ यागक्रिया (स ७१३)।

इट्ठि स्त्री [इष्टि] १ इच्छा, अभिलाषा, चाह (सुपा २४६)। २ याग-विशेष (अभि २२७)।

°इट्ठि स्त्री [कृष्टि] खींचाव, खींचना (गा १८)।

इडा स्त्री [इडा] शरीर के बाएँ भाग में स्थित नाड़ी (कुमा)।

इड्डुर न [दे] गाड़ी (ओघ ४७६)।

इड्डुरग } न [दे] रसोई ढकने का बड़ा पात्र
इड्डुरय } (राय १४०)।

इड्डुरिया स्त्री [दे] मिष्टान्न-विशेष, एक प्रकार की मिठाई (सुपा ४८५)।

इड्ढ वि [ऋद्ध] ऋद्धि-सम्पन्न (भग)।

इड्ढि स्त्री [ऋद्धि] १ वैभव, ऐश्वर्य, सम्पत्ति (सुर ३, १७)। २ लब्धि, शक्ति, सामर्थ्य (उत्त ३)। ३ पदवी (ठा ३,४)। °गारव न [°गौरव] सम्पत्ति या पदवी आदि प्राप्त होने पर अभिमान और प्राप्त न होनेपर उसकी लालसा (सम ३; ठा ३, ४)। °पत्त वि [°प्राप्त] ऋद्धिशाली (पण्ण ११; सुपा ३६०)। °म, °मंत वि [°मत्] ऋद्धिवाला (निचू १; ठा ६)।

इड्ढिरसिय वि [दे] याचक-विशेष, मांगन की एक जाति (भग ६, ३३ टी)।

इणं } अ [एतत्] यह (दे १, ७९)।
इणमो }

°इण्ण देखो दिण्ण (से ४, ३५)।

°इण्ण देखो किण्ण (से ८, ७१)।

इण्ह न [चिह्न] चिह्न, निशान (से १, १२; षड्)।

°इण्हा स्त्री [तृष्णा] तृष्णा, प्यास, स्पृहा (गा ६३)।

इण्हिं अ [इदानीम्] इस समय, इस वक्त (दि १, ७६; पाअ)।

इतरेतरासय पुं [इतरेतराश्रय] तर्कशास्त्र-प्रसिद्ध एक दोष, परस्पर एक दूसरे की अपेक्षा (धर्मसं ११५८)।

इति देखो इइ (पि १८)। °हास पुं [°हास] पूर्ववृत्तान्त, अतीतकाल की घटनाओं का विवरण, पुरावृत्त (कप्प)। २ पुरातत्त्वशास्त्र (भग)।

इत्तए देखो इ सक।

इत्तर वि [इत्वर] १ अल्प, थोड़ा (अणु)। २ अल्प-कालिक, थोड़े समय के लिए जो किया जाता हो वह (ठा ६)। ३ थोड़े समय तक रहनेवाला (श्रा १६)। °परिग्गहा स्त्री [°परिग्रहा] थोड़े समय के लिए रक्खी हुई वेश्या, रखैल, रखात आदि (आव ६)। °परिग्गहिया स्त्री [°परिगृहीता] देखो °परिग्गहा (आव ६)।

इत्तरिय वि [इत्वरिक] ऊपर देखो (निचू २; आचा; उवा; पंचा १०)।

इत्तरिय देखो इयर (सूअ २, २)।

इत्तरी स्त्री [इत्वरी] थोड़े काल के लिए रखी हुई वेश्या आदि (पंचा १)।

इत्तहे (अप) अ [अत्र] यहां पर (कुमा)।

इत्ताहे अ [इदानीम्] इस समय, इस वक्त, अधुना (पाअ)।

इत्ति देखो इइ (कुमा)।

इत्तिय वि [इयत्, एतावत्] इतना (हे २, १५६; कुमा; प्रासू १३८ षड्)।

इत्तिरिय वि [इत्वरिक] अल्पकालिक, जो थोड़े समय के लिए किया जाता हो (स ४६; बिसे १२६५)।

इत्तिल देखो इत्तिय (हे २, १५६)।

इत्तो देखो इओ (श्रा १७)।

इत्तोअ देखो इओअ (श्रा १४)।

इत्तोप्पं [दे] यहां से लेकर, इतःप्रभृति (पाअ)।

इत्थ अ [अत्र] यहां, इसमें (कप्प; कुमा; प्रासू १४१)।

इत्थं अ [इत्थम्] इस तरह, इस प्रकार (पण्ण २)। °थ वि [°स्थ] नियत आकार-वाला, नियमित (जीव १)।

इत्थंथ वि [इत्थंस्थ] इस तरह रहा हुआ (दस ६, ४, ७)।

इत्थत्थ पुं [इत्थर्थ] वह अर्थ (भग)।

इत्थत्थ पुं [स्त्र्यर्थ] स्त्री-विषय (पि १६२)।

इत्थयं देखो इत्थ (श्रा १२)।

इत्थि स्त्रीन [स्त्री] महिला, नारी; 'इत्थीणि वा पुरिसाणि वा' (आचा २, ११, ३)।

इत्थि } स्त्री [स्त्री] जनाना, औरत, महिला
इत्थी } (सूअ २, ३; हे २, १३०)। °कला स्त्री [°कला] स्त्री के गुण, स्त्री को सीखने योग्य कला (जं २)। °कहा स्त्री [°कथा] स्त्री-विषयक वार्त्तालाप (ठा ४)। °णपुंसग पुंन [°नपुंसक] एक प्रकार का नपुंसक (निचू १)। °णाम न [°नामन्] कर्म-विशेष, जिसके उदय से स्त्रीत्व की प्राप्ति होती है (णाया १, ८)। °परिसह पुं [°परिषह] ब्रह्मचर्य (भग ८, ८)। °विप्पजह वि [°विप्रजह] १ स्त्री का परित्याग करनेवाला। २ पुं. मुनि, साधु (उत्त ८)। °वेद, °वेय पुं [°वेद] १ स्त्री को पुरुष संग की इच्छा। २ कर्म-विशेष, जिसके उदय से स्त्री को पुरुष के साथ भोग करने की इच्छा होती है (भग; पण्ण २३)।

इत्थेण त्रि [स्त्रैण] स्त्रियों का समूह, स्त्री-जन; 'लज्जसि किं न महंतो दीणाओ मारिसित्थेणा' (उप ७२८ टी)।

इदाणिं देखो इयाणिं (आचा)।

इदाणि (शौ) देखो इयाणिं (प्राकृ ८७)।

इदाणीं } देखो इदाणिं (संक्षि १६)।
इदाणी }

इदिवित्त (शौ) न [इतिवृत्त] इतिहास (मोह १२८)।

इदुर न [दे] धान्य रखने का एक तरह का पात्र (अणु १५१)।

इदुदंड पुं [दे] भौंरा, मधुकर (दे १, ७६)।

इद्धग्गिधूम न [दे] तुहिन, हिम (षड्)।

इद्धि देखो इड्ढि (षड्)।

इध (शौ) देखो इह (हे ४, २६८)।

इब्भ पुं [इभ्य] धनी, आढ्य (पाअ)।

इब्भ पुं [दे] वणिक्, व्यापारी (१, ७६)।

इभ पुं [इभ] हाथी, हस्ती (जं ३; कुमा)।

इभपाल पुं [इभपाल] महावत (सम्मत्त १५७)।

इम स [इदम्] यह (हे ३, ७२)।

इमेरिस वि [एतादृश] ऐसा, इसके जैसा (सण)।

इय देखो **इम** (महा)।

इय देखो **इइ** (षड्; हे १, ९१; औप)।

इय न [दे] प्रवेश, पैठ (आवम)।

इय वि [इत] १ गत, गया हुआ (सूअ १, ६)। २ प्राप्त; 'उदयमिश्रो जस्सीसो जयम्मि चंदुव्व जिणचंदो' (सार्ध ७१; विसे)। ३ ज्ञात, जाना हुआ (आचा)।

इयण्हिं अ [इदानीम्] हाल में, इस समय, अधुना (ठा ., ३)।

इयर वि [इतर] १ अन्य, दूसरा (जी ४६; प्रासू १००)। २ हीन, जघन्य (आचा १, ६, २)।

इयरहा अ [इतरथा] अन्यथा, नहीं तो, अन्य प्रकार से (कम्म १, ६०)।

इयरेयर वि [इतरेतर] अन्योन्य, परस्पर (राज)।

इयाणि } अ [इदानीम्] हाल में, इस
इयाणिं } समय (भग; पि १४४)।

इर देखो **किल** (हे २, १८६; नाट)।

इरमंदिर पुं [दे] करभ, ऊँट (दे १, ८१)।

इराव पुं [दे] हाथी (दे १, ८०)।

इरावदी (शौ) स्त्री [इरावती] नदी-विशेष (नाट)।

°इरि देखो **गिरि**; 'विभइरिपवरसिहरे' (पउम १०, २७)।

इरिण न [ऋण] करजा, ऋण (चारु ६६)।

इरिण न [दे] कनक, सुवर्ण (दे १, ७६; गउड)।

इरिय सक [ईर्] जाना, गति करना। इरियामि (उत्त १८, २६; सुख १८, २६)।

इरिया स्त्री [दे] कुटी, कुटिया (दे १, ८०)।

इरिया स्त्री [ईर्या] गमन, गति, चलना (आचा)। **°वह** पुं [°पथ] १ मार्ग में जाना (ओघ ५४)। २ जाने का मार्ग, रास्ता (भग ११, १०)। ३ केवल शरीर से होनेवाली क्रिया (सूअ २, २)। **°वहिय** न [°पथिक] केवल शरीर की चेष्टा से होनेवाला कर्मबन्ध, कर्म-विशेष (सूअ २, २; भग ८, ८)। **°वहिया** स्त्री [°पथिकी] कषाय-रहित केवल कायिक क्रिया, क्रिया-विशेष (पडि; ठा २)। **°समिइ** स्त्री [°समिति] विवेक से चलना, दूसरे जीव को किसी प्रकार की हानि न हो ऐसा उपयोग-पूर्वक चलना (ठा ८)। **°समिय** वि [°समित] विवेक-पूर्वक चलनेवाला (विपा २, १)।

इल पुं [इल] १ वाराणसी का वास्तव्य स्वनाम-ख्यात एक गृहपति—गृहस्थ (णाया २)। २ न. इलादेवी के सिंहासन का नाम (णाया २)। **°सिरी** स्त्री [°श्री] इल नामक गृहस्थ की स्त्री (णाया २)।

°इलंतअ देखो **किलंत** (से ३, ४७)।

इला स्त्री [इला] १ पृथिवी, भूमि (से २, ११)। २ धरणेन्द्र की एक अग्र-महिषी (णाया २)। ३ इल नामक गृहस्थ की पुत्री (णाया २)। ४ रुचक पर्वत पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी (ठा ८)। ५ राजा जनक की माता (पउम २१, ३३)। ६ इलावर्धन नगर में स्थित एक देवता (आवम)। **°कूड** न [°कूट] इलादेवी के निवास-भूत एक शिखर (ठा ४)। **°पुत्त** पुं [°पुत्र] इलादेवी के प्रसाद से उत्पन्न एक श्रेष्ठि-पुत्र, जिसने नटिनी पर मोहित होकर नट का पेशा सीखा और अन्त में नाच करते-करते ही शुद्ध भावना से केवलज्ञान प्राप्त कर मुक्ति पाई (आचू)। **°वइ** पुं [°पति] एलापत्य गोत्र का आदि पुरुष (णंदि)। **°वडंसय** न [°ावतंसक] इलादेवी का प्रासाद (णाया २)।

इलाइपुत्त देखो **इला-पुत्त**; 'धन्नो इलाइपुत्तो चिलाइपुत्तो अ बाहुमुणी' (पडि)।

इलिया स्त्री [इलिका] क्षुद्र जीव-विशेष, चीनी और चावल में उत्पन्न होनेवाला कीट-विशेष (जी १७)।

इली स्त्री [इली] शस्त्र-विशेष, एक जाति की तलवार की तरह का हथियार (पण्ह १,३)।

इल्ल पुं [दे] १ प्रतीहार, चपरासी। २ लवित्र, दाँती। ३ वि. दरिद्र, गरीब। ४ कोमल, मृदु। ५ काला, कृष्ण वर्णवाला (दे १, ८२)।

इल्लपुलिंद पुं [दे] व्याघ्र, शेर (चंड)।

इल्लि पुं [दे] १ शार्दूल, व्याघ्र। २ सिंह। ३ छाता (दे १, ८३)।

इल्लिय वि [दे] आसिक्त, उप्पेलणफुल्लाविअहल्ल-अफुल्लासवेल्लिअमल्लिआअक्खतल्लएण' (विक्र २३)।

इल्लिया स्त्री [इल्लिका] क्षुद्र जीव-विशेष, अन्न में उत्पन्न होनेवाला कीट-विशेष (जी १६)।

इल्लीर न [दे] १ आसन-विशेष। २ छाता। ३ दरवाजा, गृह-द्वार (दे १, ८३)।

इव अ [इव] इन अर्थों का द्योतक अव्यय—१ उपमा। २ सादृश्य, तुलना। ३ उत्प्रेक्षा (हे २, १८२; सण)।

इसअ वि [दे] विस्तीर्ण (षड्)।

इसणा देखो **एसणा** (रंभा)।

इसाणी स्त्री [ऐशानी] ईशान कोण, पूर्व और उत्तर के बीच की दिशा (नाट)।

इसि पुं [ऋषि] १ मुनि, साधु, ज्ञानी, महात्मा (उत्त १२; अवि १४)। २ ऋषिवादि-निकाय का दक्षिण दिशा का इन्द्र, इन्द्र-विशेष (ठा २, ३)। **°गुत्त** पुं [°गुप्त] १ स्वनाम-ख्यात एक जैन मुनि (कप्प)। २ न. जैन मुनियों का एक कुल (कप्प)। **°गुत्तिय** न [°गुप्तीय] जैन मुनियों का एक कुल (कप्प)। **°दास** पुं [°दास] १ इस नाम का एक सेठ, जिसने जैन दीक्षा ली थी। २ 'अनुत्तरोववाइदसा' सूत्र का एक अध्ययन (अनु २)। **°दत्त**, **°दिण्ण** पुं [°दत्त] एक जैन मुनि (कप्प)। **°पालिय** पुं [°पालित] ऐरवत क्षेत्र के पाँचवें तीर्थंकर का नाम (सम १५३)। **°पालिया** स्त्री [°पालिता] जैन मुनियों की एक शाखा (कप्प)। **°भद्दपुत्त** पुं [भद्रपुत्र] एक जैन श्रावक (भग ११, १२)। **°भासिय** न [°भाषित] १ अंगग्रन्थों के अतिरिक्त जैन आचार्यों के बनाए हुए उत्तराध्ययन आदि शास्त्र (आवम)। २ 'प्रश्नव्याकरण' सूत्र का तृतीय अध्ययन (ठा १०)। **°वाइ**, **°वाइय**, **°वादिय** पुं [°वादिन्] व्यन्तरों की एक जाति (औप; पण्ह १, ४)। **°वाल** पुं [°पाल] १ ऋषिवादि-व्यन्तरों का उत्तर दिशा का इन्द्र (ठा २, ३)। २ पांचवें वासुदेव का पूर्वभवीय नाम (सम १५३)। **°वालिय** पुं [°पालित] ऋषिवादिव्यन्तरों के एक इन्द्र का नाम (देव)।

इसिण पुं [इसिन] अनार्य देश-विशेष (णाया १, १)।

इसिणअ वि [इसिनक] इसिन-नामक अनार्य देश में उत्पन्न (णाया १, १; इक)।
इसिया स्त्री [इषिका] सलाई, शलाका (सुअ २, १)।
इसु पुं [इषु] बाण (पाअ)।
इस्स वि [एष्यत्] १ भविष्य काल, 'अुत्तं संपयमिस्सं' (विसे)। २ होनेवाला, भावी; 'संभरइ भूय मिस्सं' (विसे ५०८)।
इस्सर देखो ईसर (प्राप्र; पि ८७; ठा २, ३)।
इस्सरिय देखो ईसरिय (पउम ५, २७०; सम १३; प्रासू ७५)।
इस्सा स्त्री [ईर्ष्या] द्रोह, असूया (उत्त ३४, २३)।
इस्सास पुं [इष्वास] १ धनुष, कार्मुक, शरासन। २ बाण-क्षेपक, तीरंदाज (प्राकृ)।
इह पुं [इभ] हाथी, हस्ती (प्राकृ)।
इह अ. [इदानीम्] इस समय, अधुना (प्राकृ ८०)।
इह अ [इह] यहाँ, इस जगह (आचा; स्वप्न २२)। °**पारलोइअ** वि [ऐहिकपारलौकिक] इस और परलोक से सम्बन्ध रखनेवाला (स १५६)। °**भविय** वि [ऐहभविक] इस जन्म संबन्धी (भग)। °**लोअ,** °**लोग** पुं [°लोक] वर्तमान जन्म, मनुष्य-लोक (ठा ३; प्रासू ७५; १५३)। °**लोय,** °**लोइय** वि [ऐहलौकिक] इस जन्म-संबन्धी, वर्तमान-जन्म-संबन्धी (कप्प; सुपा ४०८; पण्ह १, ३; स ४८१); 'इहलोयपारलोइयसुहाइं सव्वाइं तेण दिन्नाइं' (स १५५)।
इहअ, इहइं ऊपर देखो (षड्; पउम २१, ७)।
इहइं अ [इदानीम्] हाल, संप्रति, इस समय (पाअ)।
इहं, इहयं देखो इह = इह (औप; आ १४)।
इहरहा, इहरा देखो इयर-हा (उप ८६०; भत्त ३६; हे २, २१२)।
इहरा देखो इहइं = इदानीम् (गउड)।
इहामिय देखो ईहामिय (पि ९४)।
इहिं अ [इह] यहाँ (रंभा)।

॥ इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवे इआराइसद्दसंकलणो णाम तइओ तरंगो समत्तो ॥

ई

ई पुं [ई] प्राकृत वर्णमाला का चतुर्थ वर्ण, स्वर-विशेष (प्रामा)।
ईअ स [एतत्, इदम्] यह (पि ४२६; ४२९)।
ईअ अ [इति] इस तरह, 'ईय मणोविसईणं' (विसे ५१४)।
ईइ पुंस्त्री [ईति] धान्य वगैरह को नुकसान पहुँचानेवाला चूहा आदि प्राणि-गण (औप)।
ईइस वि [ईदृश] ऐसा, इस तरह का, इसके समान (महा; स १५)।
ईजिह अक [घ्रा] तृप्त होना। ईजिहइ (प्राकृ ६५)।
°**ईड** देखो कीड = कीट; 'दुद्दंसणणिबईडसारिच्छं' (गा ३०)।
ईडा स्त्री [ईडा] स्तुति (चेइय ८९८)।
ईण वि [ईन] प्रार्थी, अभिलाषी; 'आहाकडं चेव निकाममीणे' (सूअ १, १०, ८)।
°**ईण** देखो दीण (से ८, ६१)।
ईति देखो ईइ (सम ६०)।
ईदिस देखो ईइस (स १४०; अभि १८२; कप्पू)।
ईर सक [ईर्] १ प्रेरणा करना। २ कहना। ३ गमन करना। ४ फेंकना। ईरेइ (विसे १०६०); कृ. 'ठाणगमणगुणजोगजुंजणजुगंतरनिवातियाए दिट्ठीए ईरियव्वं' (पण्ह २, १)। भूकृ. ईरिद (शौ) (अभि ३०)।
ईरिय वि [ईरित] प्रेरित (विसे ३१४४)।
ईरिया देखो इरिया (सम १०; ओघ ७४८; सुर २, १०४)।
ईरिस देखो ईइस (कुमा; स्वप्न ५५)।
ईस न [दे] खूँटा, खीला, कीलक (दे १, ८४)।
ईस सक [ईर्ष्] ईर्ष्या करना, द्वेष करना। ईसाअंति (गा २४०)।
ईस पुं [ईश] देखो ईसर = ईश्वर (कुमा; पउम १०२, ५८)। २ न. ऐश्वर्य, प्रभुता (पण्ण २)।
ईस देखो ईसि (कप्पू)।
ईसअ पुं [दे] रोझ, हरिण की एक जाति (दे १, ८४)।
ईसत्थ न [इष्वस्त्रशास्त्र] धनुर्वेद, बाण-विद्या (औप; पण्ह १, ५); 'विन्नाणनाणकुसला ईसत्थकयस्समा वीरा' (पउम ९८, ४०; पि ११७)।
ईसर पुं [दे] मन्मथ, कामदेव (दे १, ८४)।
ईसर पुं [ईश्वर] १ परमेश्वर, प्रभु (हे १, ८४)। २ महादेव, शिव (पउम १०९, १२)। ३ स्वामी, पति (कुमा)। ४ नायक, मुखिया (विपा १, १)। ५ देवताओं का एक आवास, बेलंधर देवों का आवास-विशेष (सम ७३)। ६ एक पाताल-कलश (ठा ४, २)। ७ आढ्य, धनी (सुपा ४३९)। ८ ऐश्वर्य-शाली, वैभवी (जीव ३)। ९ युवराज। १० माण्डलिक, सामन्त-राजा। ११ मन्त्री (अणु)। १२ इन्द्र-विशेष, भूतवादि-निकाय का इन्द्र (ठा २, ३)। १३ पाताल-विशेष (ठा ४)। १४ एक राजा का नाम। १५ एक जैन मुनि (महानि ६)। १६ यक्ष-विशेष (पव २७)।

ईसर पुं [**ईश्वर**] अणिमा आदि आठ प्रकार के ऐश्वर्य से सम्पन्न (अणु २२)।

ईसरिय न [**ऐश्वर्य**] वैभव, प्रभुता, ईश्वरपन (पउम ८९, ६३)।

ईसा स्त्री [**ईषा**] १ लोकपालों की अग्रमहिषियों की एक पार्षदा (ठा ३, २)। २ पिशाचेन्द्र की एक परिषद् (जीव ३)। ३ हल का एक काष्ठ (दे २, ६६)।

ईसा स्त्री [**ईर्षा**] ईर्ष्या, द्रोह (गउड)। °**रोस** पुं [°**रोष**] क्रोध, गुस्सा (कप्पू)।

ईसाइय वि [**ईर्ष्यायित**] जिसको ईर्ष्या हुई हो वह (सुपा ६१)।

ईसाण पुं [**ईशान**] १ देवलोक-विशेष, दूसरा देवलोक (सम २)। २ दूसरे देवलोक का इन्द्र (ठा २, ३)। ३ उत्तर और पूर्व के बीच की दिशा, ईशान-कोण (सुपा ६८)। ४ मुहूर्त-विशेष (सम ५१)। ५ दूसरे देवलोक के निवासी देव (ठा १०)। ६ प्रभु, स्वामी (विसे)। °**वडिंसग** न [°**ावतंसक**] विमान-विशेष का नाम (सम २५)।

ईसाण पुं [**ईशान**] अहोरात्र का ग्यारहवाँ मुहूर्त (सुज १०, १३)।

ईसाणा स्त्री [**ऐशानी**] ईशान-कोण (ठा १०)।

ईसाणी स्त्री [**ऐशानी**] १ ईशान-कोण। २ विद्या-विशेष (पउम ७, १४१)।

ईसालु वि [**ईर्ष्यालु**] ईर्ष्यालु, असहिष्णु, द्वेषी (महा; गा ६३४; प्राप्र)। स्त्री. °**णी** (पउम ३६, ४५)।

ईसास देखो **इस्सास**; 'ईसासट्ठाए' (निर; पि १६२)।

ईसि अ [**ईषत्**] १ थोड़ा, अल्प (पण्ण ३६)। २ पृथिवी-विशेष, सिद्धि-क्षेत्र, मुक्त-भूमि (सम २२)। °**पब्भार** वि [°**प्राग्भार**] थोड़ा अवनत (पंचा १८)। °**पब्भारा** स्त्री [°**प्राग्भारा**] पृथिवी-विशेष, सिद्धि-क्षेत्र (ठा ८; सम २२)।

ईसिअ न [**ईर्ष्यित**] १ ईर्ष्या, द्वेष (गा ५१०)। २ वि. जिसपर ईर्ष्या की गई हो वह (दे २, १६)।

ईसिअ न [**दे**] १ भील के सिर पर का पत्र-पुट, भीलों की एक तरह की पगड़ी। २ वि. वशीकृत, वश किया हुआ (दे १, ८४)।

ईसिं } देखो **ईसि** (महा; सुर २, ६६; कस;
ईसीं } पि १०२)।

ईह सक [**ईक्ष्, ईह्**] १ देखना। २ विचारना। ३ चेष्टा करना। **ईहए** (विसे ५६१)। वकृ. **ईहंत, ईहमाण** (गउड; सुपा ८८; विसे २५८); संकृ. 'अनिमाणो ईहिऊण मइपुव्वं' (पच ८६; विसे २५७)।

ईहण न [**ईहन**] नीचे देखो (आचू १)।

ईहा स्त्री [**ईहा**] १ विचार, ऊहापोह, विमर्श (णाया १, १; सुपा ५७२)। २ चेष्टा, प्रयत्न (ओघ ३)। ३ मति-ज्ञान का एक भेद (पण्ण १५; ठा ५)। ४ इच्छा (स ६१२)। °**मिग,** °**मिय** पुं [°**मृग**] १ वृक, भेड़िया (णाया १, १; भग ११, ११)। २ नाटक का एक भेद (राय)।

ईहा स्त्री [**ईक्षा**] अवलोकन, विलोकन (औप)।

ईहिय वि [**ईहित**] चेष्टित (सूअ १, १, ३)। २ विमर्शित, विचारित, ईहा-विषयीकृत (विसे २५७)।

॥ इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवे ईआराइसद्दसंकलणो
णाम चउत्थो तरंगो समत्तो ॥

उ

उ पुं [**उ**] प्राकृत वर्णमाला का पञ्चम अक्षर, स्वर-विशेष (प्रामा)। २ उपयोग रखना, ख्याल करना; 'उत्ति उवओगकरणे' (विसे ३१६८)। ३ गति-क्रिया (आवम)।

उ अ [**उ**] निम्नोक्त अर्थों का सूचक अव्यय—१ संबोधन, आमन्त्रण। २ कोप-वचन, क्रोधोक्ति। ३ अनुकम्पा, दया। ४ नियोग, हुकुम। ५ विस्मय, आश्चर्य। ६ अंगीकार, स्वीकार। ७ प्रश्न, पृच्छा (हे २, २१७)।

उ अ [**तु**] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ विशेषण। २ कारण (वव १)।

उ अ [**तु**] इन अर्थों का द्योतक अव्यय—१ समुच्चय, और (कप्प)। २ अवधारण, निश्चय (आवम)। ३ किन्तु, परन्तु (ठा ३, १)। ४ नियोग, आज्ञा। ५ प्रशंसा। ६ विनिग्रह। ७ शंका की निवृत्ति (उव)। ८ पादपूर्ति के लिए भी इसका प्रयोग होता है (उव)।

उ देखो **उव**; 'उग्रो उपे' (षड् २, १, ६८)।

उ° अ [**उत्**] निम्नोक्त अर्थों का सूचक अव्यय—१ ऊँचा, ऊर्ध्व; 'उक्कमंत' (आवम)। २ विपरीत, उलटा; 'उक्कम' (विसे)। ३ अभाव, रहितता; 'उक्कर' (णाया १, १)। ४ ज्यादा, विशेष; 'उक्कोविय' (उप पृ ७८; विसे ३५७६)।

उअ अ [**दे**] विलोकन करो, देखो (दे १, ८६ टी; हे २, २११)।

उअ अ [**उत**] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ विकल्प, अथवा। २ वितर्क, विमर्श (कुमा)। ३ प्रश्न, पृच्छा। ४ समुच्चय। ५ बहुत, अतिशय (हे १, १७२)।

उअ अ [**दे**] ऋजु, सरल (षड्)।

उअ देखो **उव** (गा ५०; से ६, ६)।

उअ न [**उद**] पानी, जल। °**सिंधु** पुं [°**सिन्धु**] समुद्र, सागर (पि ३४०)।

उअ वि [उदञ्च्] उत्तर, उत्तर दिशा में स्थित। °महिहर पुं [°महिधर] हिमाचल-पर्वत (गउड)।

उअअ न [उदक] पानी, जल (गा ५३; से ६, ८८)।

उअअ देखो उदय (से १०, ३१)।

उअअ न [उदर] पेट, उदर (से ६, ८८)।

उअअ वि [दे] ऋजु, सरल, सीधा (दे १, ८८)।

उअअद (शौ) देखो उवगय (नाट)।

उअआरअ वि [उपकारक] उपकार करनेवाला (गा ५०)।

उअआरि वि [उपकारिन्] ऊपर देखो (विक २५)।

उअइव्व वि [उपजीव्य] आश्रय करने योग्य, सेवा करने योग्य (से ६, ६)।

उअऊह सक [उप + गूह्] आलिंगन करना। संकृ. उअऊहेऊण (पि ५८६)।

उअएस देखो उवएस (गा १०१)।

उअंचण न [उदञ्चन] १ ऊँचा फेंकना। २ ढकने का पात्र, आच्छादक पात्र (दे ४,११)।

उअंचिद (शौ) वि [उदञ्चित] १ ऊँचा उठाया हुआ, ऊँचा फेंका हुआ (नाट)।

उअंत पुं [उदन्त] हकीकत, वृत्तान्त, समाचार (पाअ; प्रामा)।

उअकिद (शौ) वि [उपकृत] जिसपर उपकार किया गया हो वह (पि ६४)।

उअक्किअ वि [दे] पुरस्कृत, आगे किया हुआ (दे १, १०७)।

उअगअ देखो उवगय (गा ६४४)।

उअचित्त वि [दे] अपगत, निवृत्त (दे १, १०८)।

उअजीवि वि [उपजीविन्] आश्रित (अभि १८६)।

उअज्झाअ देखो उवज्झाय (नाट)।

उअट्टी स्त्री [दे] नीवी, स्त्री के कटि-वस्त्र की नाडी; 'उअट्टी उवओ नीवी' (पाअ)।

उअट्ठिअ देखो उवट्ठिय (प्राप)।

उअणिअ }
उअणीअ } देखो उवणीय (प्राकृ ६)।

उअण्णास देखो उवण्णास (नाट)।

उअत्तंत देखो उव्वट्ट = उद् + वृत्।

उअत्थाण देखो उवट्ठाण (नाट)।

उअत्थिअ देखो उवट्ठिय (से ११, ७८)।

उअदिट्ठ देखो उवइट्ठ (नाट)।

उअभुत्त देखो उवभुत्त (रंभा)।

उअभोग देखो उवभोग (नाट)।

उअमिज्जंत वकृ [उपमीयमान] जिसकी तुलना की जाती हो वह (काप्र ८९६)।

उअर न [उदर] पेट (कुमा)।

उअरिं }
उअरि } देखो उवरि (गा ६४; से ८, ७५)।

उअरी स्त्री [दे] शाकिनी, देवी-विशेष (दे १, ९८)।

उअरुज्झ देखो उवरुज्झ। उअरुज्झदि (शौ) (नाट)।

उअरोअ }
उअरोह } देखो उवरोह (प्राप; नाट)।

उअलद्ध देखो उवलद्ध (नाट)।

उअविट्ठअ न [औपविष्टक] आसन (प्राकृ १०)।

उअविय वि [दे] उच्छिष्ट, 'इहरा भे णिसिभत्तं उअवियं चेव गुरुमादी' (बृह १)।

उअसप्प देखो उवसप्प। उअसप्प (रुक्मि ५१)।

उअसम }
उअसम्म } देखो उवसम = उप + शम्। उअसमइ, उवसम्मइ (प्राकृ ६९)।

उअह अ [दे] देखो, देखिए (दे १, ९८; प्राप्र)।

उअहस देखो उवहस। उअहसइ (प्राकृ ३४)।

उअहार देखो उवहार (नाट)।

उअहारी स्त्री [दे] दोग्ध्री, दोहनेवाली स्त्री (दे १, १०८)।

उअहि पुं [उदधि] १ समुद्र, सागर (गउड)। २ स्वनाम-ख्यात एक विद्याधर राजकुमार (पउम ५, १६६)। ३ काल परिमाण, सागरोपम (सुर २, १३६)। ४ स्वनाम ख्यात एक जैन मुनि (पउम २०, ११७)। देखो उदहि।

उअहि देखो उवहि = उपधि (पव ६)।

उअहुज्जंत देखो उवभुंज।

उअहोअ देखो उवभोग (प्रवो ३०; नाट)।

उआअ देखो उवाय (नाट)।

उआअण देखो उवायण (माल ४९)।

उआर देखो उराल (सुपा ६०७; कप्पू)।

उआर देखो उवयार (षड्, गउड)।

उआलंभ देखो उवालंभ = उपा + लभ्। कृ. उआलंभणिज्ज (नाट)।

उआलंभ देखो उवालंभ = उपालम्भ (गा २०१)।

उआलभ देखो उआलंभ = उपा + लभ्। उआलभेमि (त्रि ८२)।

उआलि स्त्री [दे] अवतंस, शिरोभूषण (दे १, ९०)।

उआस वि [उदास] नीचे देखो (पिंग)।

उआस देखो उवास = उपा + आस्। कवकृ. उआसिज्जमाण (हास्य १४०)।

उआसीण वि [उदासीन] १ उदासी, दिलगीर। २ मध्यस्थ, तटस्थ (स ५४९; नाट)।

उआहरण देखो उदाहरण (मन ३)।

उइ सक [उप + इ] समीप जाना। उएइ, उएउ (पि ४९३)।

उइ अक [उद् + इ] उदित होना। उएइ (रंभा)। वकृ. उइयंत (रंभा)।

उइ देखो उउ; 'अन्नोवि हुंतु उइओ सरिसा परं ते' (रंभा)। °राय पुं [°राज] वसन्त ऋतु (रंभा)।

उइअ वि [उदित] १ उदय प्राप्त, उद्गत (सुपा १२७)। २ उक्त, कथित (विसे २३३; ८४६)। °परक्कम पुं [°पराक्रम] इक्ष्वाकु-वंश के एक राजा का नाम (पउम ५, ६)।

उइअ वि [उचित] योग्य, लायक (से ८, १०३)।

उइंतण न [दे] उत्तरीय वस्त्र, चादर (दे १, १०३; कुमा)।

उइंद पुं [उपेन्द्र] इन्द्र का छोटा भाई, विष्णु का वामन अवतार, जो अदिति के गर्भ से हुआ था (हे १, ६)।

उइट्ठ वि [अपकृष्ट] हीन, संकुचित; 'आउसिय-अक्खचम्मउइट्ठगंडदेसं' (णाया १, ८)।

उइण्ण देखो उदिण्ण (ठा ५, विसे ५०३)।

उइण्ण वि [उदीच्य] उत्तर दिशा-सम्बन्धी, उत्तर दिशा में उत्पन्न (आवम)।

उइन्न देखो ओइण्ण (सम्मत्त ७७)।

उइयंत देखो उइ = उद् + इ।

उईण देखो उदीण (राय)।

उईर देखो उदीर; 'उईरेइ अइपीडं' (श्रा २७)। वकृ. उईरंत (पुप्फ १३)। संकृ. उईरइत्ता (सूअ १, ६)।

उईरण देखो **उदीरण** (ठा ४; पुप्फ १६५)।

उईरणया } देखो **उदीरणा** (विसे २५१५;
उईरणा } टी; कम्मप १५८; विसे २६६२)।

उईरिय देखो **उदीरिय** (पुप्फ २१६)।

उउ त्रि [ऋतु] १ ऋतु, दो मास का काल विशेष, वसन्त आदि छः प्रकार का काल (औप; अन्त ७); 'उऊए', 'उऊइं' (कप्प)। २ स्त्री-कुसुम, रजो-दर्शन, स्त्री-धर्म (ठा ५, २)। °**बद्ध** पुं [°बद्ध] शीत और उष्णकाल, वर्षा-काल के अतिरिक्त आठ मास का समय (ओघ २६; २६९; ३४८)। °**मास** पुं [°मास] १ श्रावण मास (वव १ टी)। २ तीस दिनवाला मास (सम)। °**य** वि [°ज] ऋतु में उत्पन्न, समय पर उत्पन्न होनेवाला (पण्ह २, ५; णाया १, १); 'उयअगुरुवर-पवरधूवणउउयमल्लाणुलेवणविहीसु। गंधेसु रज्जमाणा रमंति घाणिंदियवसट्टा' (णाया १, १७)। °**संधि** पुंस्त्री [°संधि] ऋतु का सन्धि-काल, ऋतु का अन्त समय (आचा)। °**संवच्छर** पुं [°संवत्सर] वर्ष-विशेष (ठा ५)। देखो **उइ** = उउ।

उउंबर देखो **उंबर** = उदुम्बर (कुमा; हे १, २७०; षड्)।

उउवद्दिय न [ऋतुबद्ध] मास-कल्प, एक मास तक एक स्थान में साधु का निवासा-नुष्ठान (आचा २, २, ७)।

उऊखल } पुंन [उदूखल] उलूखल, गूगल
उऊहल } (कुमा; षड्; हे १, १७१)

उएट्ट पुं [दे] शिल्प विशेष (अणु १४९)।

उओग्गिअ वि [दे] सम्बद्ध, संयुक्त (षड्)।

उं अ [दे] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ क्षेप, निन्दा। २ विस्मय। ३ खेद। ४ वितर्क। ५ सूचन (प्राकृ ७९)।

उंघ अक [नि + द्रा] नींद लेना। उंघइ। (हे ४, १२)।

उंचहिआ स्त्री [दे] चक्रधारा (दे १, १०६)।

उंछ पुंन [उञ्छ] भिक्षा (सूअ १, २, ३ १४)।

उंछ पुं [उञ्छ] भिक्षा, माधुकरी (उप ६७७; ओघ ४२४)।

उंछअ पुं [दे] वस्त्र छापने का काम करने वाला शिल्पी, छापी; जो कपड़ा छापता है, छीट बनाता है वह (दे १, ९८; पाअ)।

उंज सक [सिच्] सींचना, छीड़कना। उंजिज्जा (राज)। भवि—उंजिस्सइ (सुपा १३६)।

उंज सक [युज्] प्रयोग करना, जोड़ना; 'अहमवि उंजेमि तह किंपि' (धम्म ८ टी)।

उंजायण न [उञ्जायन] गोत्र-विशेष, जो वशिष्ठ-गोत्र की एक शाखा है (ठा ७)।

उंजिअ वि [सिक्त] सिक्त, छीड़का हुआ (सुपा १३६)।

उंड } वि [दे] १ गभीर, गहरा (दे १,
उंडग } ८५; सुपा १५; उप १४७ टी; ठा
उंडय } १०; श्रा १६)। २ पुं. पिण्ड; 'बालाई मंसउडग मज्जाराई विराहेज्जा' (ओघ २४६ भा)। ३ चलते समय पाँव में पिण्ड रूप से लग जाय उतना गहरा कीचड़, कर्दम (ओघ ३३ भा)। ४ शरीर का एक भाग, मांस पिंड; 'हिययउंडए' (विपा १, ५)।

उंडग } न [दे] स्थंडिल, स्थान, जगह (दस
उंडुअ } ४, १, ५, १, ८७)।

उंडल न [दे] १ मञ्च, मचान, उच्चासन। २ निकर, समूह (दे १, १२९)।

उंडिया स्त्री [दे] मुद्रा-विशेष (राज)।

उंडी स्त्री [दे] पिण्ड, गोलाकार वस्तु; 'तत्थ णं एगा वरमऊरी दो पुट्ठे परियागते पिट्ठुं-डीपंडुरे निव्वणे निरुवहए भिन्नमुट्ठिप्पमाणे मऊरीअंडए पसवति' (णाया १, ३)।

उंदर } पुंस्त्री [उन्दुर] मूषक, चूहा (गउड;
उंदुर } पण्ह १, १; उवा; दे १, १०२)।

उंदु न [दे] मुख, मुँह (अणु २९)। °**रुक्क** न [दे] मुँह से वृषभ आदि की तरह आवाज करना (अणु २९)।

उंदुरअ पुं [दे] लम्बा दिवस (दे २, १०५)।

उंदुरु पुंस्त्री [उन्दुरु] मूषक, चूहा (दस २, ७)।

उंब पुं [उम्ब] वृक्ष-विशेष, 'निंबंबउंबउंबर' (उप १०३१ टी)।

उंबर पुं [उदुम्बर] १ वृक्ष-विशेष, गूलर का पेड़ (पण्ण १)। २ न. गूलर का फल (प्राप्र)। ३ देहली, द्वार के नीचे की लकड़ी (दे १, ९०)। °**दत्त** पुं [°दत्त] १ यक्ष-विशेष (विपा १, ७)। २ एक सार्थवाह का पुत्र (विपा १, ७)। °**पंचग**, °**पणग** न [°पञ्चक] बड़, पीपल, गूलर, प्लक्ष और काकोदुम्बरी इन पांच वृक्षों के फल (सुपा ४९; भग ६, ३३)। °**पुप्फ** न [°पुष्प] गूलर का फूल (भग ६, ३३)।

उंबर वि [दे] बहुत, प्रचुर (दे १, ९०)।

उंबरउप्फ न [दे] नवीन अभ्युदय, अपूर्व उन्नति (दे १, ११६)।

उंबरय पुं [दे] कुष्ठ रोग का एक भेद (सिरि ११४)।

उंबा स्त्री [दे] बन्धन (दे १, ८६)।

उंबी स्त्री [दे] पका हुआ गेहूँ (दे १, ८६; सुपा ४७३)।

उंबेभरिया स्त्री [दे] वृक्ष-विशेष (पण्ण १)।

उंभ सक [दे] पूर्ति करना, पूरा करना (राज)।

उकिट्ठ देखो **उक्किट्ठ** (पिंग)।

उकुरुडिया [दे] देखो **उक्कुरुडिया** (निर १, १)।

उक्क वि [उत्क] १ उत्सुक, उत्कण्ठित (सुर ३, ५३)। एक विद्याधर राजा का नाम (पउम १०, २०)।

उक्क वि [उक्त] कथित (पिंग)।

उक्क न [दे] पाद-पतन, पांव पर गिर कर नमस्कार करना (दे १, ८५)।

उक्कअ वि [दे] प्रसृत, फैला हुआ (षड्)।

उक्कंचण } न [दे] १ झूठी प्रशंसा करना,
उक्कंचणया } खुशामद (णाया १, २)। २ ऊँचा करना, उठाना (सूअ २, २)। ३ भाड़ निकालना (निचू ५)। ४ घूस, रिशवत (दसा २)। ५ मूर्ख पुरुष को ठगनेवाले धूर्त का, समीपस्थ विचक्षण पुरुष के भय से थोड़ी देर के लिए निश्चेष्ट रहना (औप)। °**दीव** पुं [°दीप] ऊँचा डंडवाला प्रदीप (अन्त)।

उक्कंछण न [दे] देखो **उक्कंचण** (राज)।

उक्कंठ अक [उत् + कण्ठ्] उत्कण्ठा करना, उत्सुक होना। उक्कंठेहि (मै ७३)। वकृ. उक्कंठंत (मै ६३)। हेकृ. उक्कंठिउं (शौ) (अभि १४७)।

उक्कंठा स्त्री [उत्कण्ठा] उत्सुकता, औत्सुक्य (हे १, २५; ३०)।

उक्कंठिय
उक्कंठिर
उक्कंठुलय } वि [उत्कण्ठित] उत्सुक (गा ५४२; सुर ३, ८६; पउम ११, ११८; वज्जा ६०)।

उक्कंड वि [उत्कण्डित] खूब छटा हुआ, विशेष कण्डित (पिंड १७१)।

उक्कंडय सक [उत्कण्टय्] पुलकित करना, 'दियसेवि भूअसंभावणाए उक्कंटयंति अंगाइं' (गउड)।

उक्कंडय वि [उत्कण्टक] पुलकित, रोमाञ्चित (गउड)।

उक्कंडा स्त्री [दे] घूस, रिशवत (दे १, ६२)।

उक्कंडिअ वि [दे] १ आरोपित। २ खण्डित (षड्)।

उक्कंत वि [उत्क्रान्त] ऊँचा गया हुआ (भवि)।

उक्कंति
उक्कंती } स्त्री [दे] देखो उक्कंदा (दे १, ८७)।

उक्कंद वि [दे] विप्रलब्ध, ठगा हुआ, वञ्चित (षड्)।

उक्कंदल वि [उत्कन्दल] अंकुरित (गउड)।

उक्कंदि
उक्कंदी } स्त्री [दे] कूपतुला (दे १, ८७)।

उक्कंप अक [उत् + कम्प्] काँपना, हिलना।

उक्कंप पुं [उत्कम्प] कम्प, चलन (सण; गा ७३५)।

उक्कंपिय वि [उत्कम्पित] १ चञ्चल किया हुआ (राज)। २. न. कम्प, हिलन; 'णीसासुक्कंपिअपुलइएहिं जाणंति णच्चिउं धण्णा। अम्हारिसीहिं दिट्ठे, पिअम्मि अप्पावि वीसरिओ' (गा ३६१)।

उक्कंपिय वि [दे] धवलित, सफेद किया हुआ (कप्प)।

उक्कंबण न [दे. अवकम्बन] काठ पर काठ के हाते से घर की छत बाँधना, घर का संस्कार-विशेष (बृह १)।

उक्कंबिय वि [दे. अवकम्बित] काठ से बाँधा हुआ (राज)।

उक्कच्छ वि [उत्कच्छ] स्फुट, स्पष्ट (पिंग)।

उक्कच्छा स्त्री [उत्कच्छा] छन्द-विशेष (पिंग)।

उक्कच्छिआ स्त्री [औपकक्षिकी] जैन साध्वियों को पहनने का वस्त्र-विशेष (ओघ ६७७)।

उक्कज्ज वि [दे] अनवस्थित, चञ्चल (षड्)।

उक्कट्ठि स्त्री [अपकृष्टि] अपकर्ष, हानि (वृह १)।

उक्कट्ठि स्त्री [उत्कृष्टि] उत्कर्ष, 'महता उक्कट्ठिसीहणादकलकलरवेणं' (सुज्ज १९— पत्र २७८)। देखो उक्किट्ठि।

उक्कड वि [उत्कट] १ तीव्र, प्रचण्ड, प्रखर (णंदि; महा)। २ विशाल, विस्तीर्ण (कप्प; सुर १, १०६)। ३ प्रबल (उवा; सुर ६, १७२)।

°**उक्कड** देखो दुक्कड (उप ६४६)।

उक्कडिय वि [दे] तोड़ा हुआ, छिन्न (पाअ)।

उक्कडिय देखो उक्कुडुय (कस)।

उक्कड्ढ सक [उत् + कर्षय्] उत्कृष्ट करना, बढ़ाना। उक्कड्ढए (कम्म ५, ९८ टी)।

उक्कड्ढग पुं [अपकर्षक] १ चोर की एक-जाति—जो घर से धन आदि ले जाते हैं। २ जो चोरों को बुलाकर चोरी कराते हैं। ३ चोर की पीठ ठोकने वाले, चोर के सहायक (पण्ह १, ३ टी)।

उक्कड्ढिय वि [उत्कर्षित] १ उत्पाटित, उठाया हुआ। २ एक स्थान से उठा कर अन्यत्र स्थापित (पिंड ३६१)।

उक्कण्ण वि [उत्कर्ण] सुनने के लिए उत्सुक (से ६, १६)।

उक्कत्त सक [उत् + कृत्] काटना, कतरना। वकृ. उक्कत्तंत (सुपा २१६)।

उक्कत्त वि [उत्कृत्त] कटा हुआ, छिन्न (विपा १, २)।

उक्कत्तण न [उत्कर्त्तन] काट डालना, छेदन (पुप्फ ३८४)।

उक्कत्तिय देखो उक्कत्त = उत्कृत्त (पउम ५६, २४)।

उक्कत्थण न [उत्कत्थन] उखाड़ना (पण्ह १, १)।

उक्कप्प पुं [उत्कल्प] शास्त्र-निषिद्ध आचरण (पंचभा)।

उक्कनाह पुं [दे] उत्तम अश्व की एक जाति (सम्मत्त २१६)।

उक्कम सक [उत् + क्रम्] १ ऊँचा जाना। २ उलटे क्रम से रखना। वकृ. उक्कमंत (आवम)। संकृ. उक्कमिऊणं (विसे ३५३१)।

उक्कम पुं [उत्क्रम] उलटा क्रम, विपरीत क्रम (विसे २७१)।

उक्कमण न [उत्क्रमण] ऊर्ध्व गमन। २ बाहर जाना (सम्मु १७२)।

उक्कमित वि [उपक्रान्त] १ प्रारब्ध। २ क्षीण; 'अब्भागमितम्मि वा दुहे, अहवा उक्कमिते भवंतीए। एगस्स गती य आगती, विदुमं ता सरणं ण मन्नइ।' (सूअ १, २, ३, १७)।

उक्कर सक [उत् + कृ] खोदना। कवकृ. उक्करिज्जमाण (आवम)।

उक्कर पुं [उत्कर] १ समूह, संघात; 'सक्क-रुक्कररसड्ढे' (सुपा ५१८)। २ कर-रहित, राज-देय शुल्क से रहित (णाया १, १)।

उक्करड देखो उक्कर = उत्कर; 'कस्सावि उत्तरीयं गहिऊण कओ अ उक्करडो' (सिरि ७६५)।

उक्करड पुं [दे] १ अशुचि-राशि। २ जहाँ मैला इकट्ठा किया जाता है वह स्थान (श्रा २७; सुपा ३५५)।

उक्करिअ वि [दे] १ विस्तीर्ण, आयत। २ आरोपित। ३ खण्डित (षड्)।

उक्करिअ वि [उत्कीर्ण] खोदित, खोदा हुआ; 'टंकुक्करियव्व निच्चलनिहित्तलोयणा' (महा)।

उक्करिद (शौ) वि [उत्कृत] ऊँचा किया हुआ (स्वप्न ३६)।

उक्करिया स्त्री [उत्करिका] जैसे एरण्ड के बीज से उसका छिलका अलग होता है उस तरह अलग होना, भेद-विशेष (भग ५, ४)।

उक्करिस सक [उत् + कृष्] १ खींचना। २ गर्व करना, बड़ाई करना। वकृ. उक्करिसंत (से १४, ६)।

उक्करिस देखो उक्कस्स = उत्कर्ष (उव; विसे १७६६)।

उक्करिसण न [उत्कर्षण] १ उत्कर्ष, बड़ाई, महत्व। २ स्थापन, आधान;
'उम्मिल्लइ लायरणं
पययच्छायाए सक्कय वयाणं।
सक्कयसक्कारुक्करिसणेण
पययस्सवि पहावो ॥' (गउड)।

उक्करिसिय वि [उत्कृष्ट] खींच निकाला हुआ, उन्मूलित (से १४, ३)।

उक्कल देखो **उक्कड** (ठा ५, ३)।

उक्कल अक [उत्+कल्] उत्कट रूप से बरतना। उक्कलइ (सुख २, ३७)।

उक्कल वि [उत्कल] १ धर्म-रहित। २ न. चोरी (पराह १, ३, टी)। २ पुं. देश-विशेष, जिसको आजकल 'उड़िया' या 'उड़ीसा' कहते हैं (प्रबो ७८)।

उक्कलंब सक [उत्+लम्बय्] फांसी लटकाना। **उक्कलंबेमि** (स ६३)।

उक्कलंबण न [उल्लम्बन] फांसी लटकाना। (स ३५८)।

उक्कला देखो **उक्कलिया** (उत्त ३६, १३८)।

उक्कलिय वि [दे] उबला हुआ; गुजराती में 'उकलेलु';'उसिणोदगं तिदंडुक्कलियं' (विचार २५७)।

उक्कलिया स्त्री [उत्कलिका] १ लूता, मकड़ी एक प्रकार का कीड़ा जो जाल बनाता है; 'उक्कलियंडे' (कप्प)। २ नीचे की तरफ बहनेवाला वायु (जी ७)। ३ छोटा समुदाय, समूह-विशेष (ठा ३, १)। ४ लहरी, तरंग (राज)। ५ ठहर-ठहर कर तरंग की तरह चलनेवाला वायु (आचा)।

उक्कस सक [गम्] जाना, गमन करना। उक्कसइ (हे ४, १६२; कुमा)। प्रयो. उक्कसावेइ। वकृ. **उक्कसावंत** (निचू १०)।

उक्कस देखो **ओकस**। वकृ. **उक्कसमाण** (कस)। हेकृ. **उक्कसित्तए** (आचा २, ३, १, १५)।

उक्कस देखो **उक्कुस** (कुमा)।

उक्कस देखो **उक्कस्स** = उत्कर्ष (सूम १, १, ४, १२); 'तवस्सी अइउक्कसो' (दस ५, २, ४२)।

उक्कसण न [उत्कर्षण] १ अभिमान करना (सूम १, १३)। २ ऊँचा जाना। ३ निवर्तन, निवृत्ति। ४ प्रेरणा (राज)।

उक्कसाइ वि [उत्कशायिन्] सत्कारादि के लिए उत्कण्ठित (उत्त ३)।

उक्कसाइ वि [उत्कषायिन्] प्रबल कषाय-वाला (उत्त १५)।

उक्कस्स अक [अप+कृष्] १ ह्रास प्राप्त होना, हीन होना। २ फिसलना, गिरना, पैर रपटने से गिर जाना। वकृ. **उक्कस्समाण** (ठा ५)।

उक्कस्स पुं [उत्कर्ष] १ गर्व, अभिमान (सूम १, १, ४, २)। २ अतिशय, उत्कृष्टता (भवि)।

उक्कस्स वि [उत्कर्षवत्] १ उत्कृष्ट, ज्यादा से ज्यादा; 'उक्कस्सठिईयाणं' (ठा १, १,); 'उक्कस्सा उदीरणया' (कम्मप १६६)। २ अभिमानी, गर्विष्ठ (सूम १, १)।

उक्का स्त्री [उल्का] १ लूका, आकाश से जो एक प्रकार का अंगार सा गिरता है (ओघ ३१० भा; जी ६)। २ छिन्न-मूल दिग्दाह (आचू)। ३ अग्नि-पिण्ड (ठा ८)। ४ आकाश-वह्नि (दस ४)। °**मुह** पुं [°मुख] १ अन्तर्द्वीप-विशेष। २ उसके निवासी लोक (ठा ४, २)। °**वाय** पुं [°पात] तारा का गिरना, लूका गिरना। (भग ३, ६)।

उक्का स्त्री [दे] कूप-तुला (दे १, ८७)।

उक्काम सक [उत्+क्रामय्] दूर करना, पीछे हटाना; 'उक्कामयंति जीवं धम्माओ तेण ते कामा' (दसनि २—पत्र ८७)।

उक्कारिया देखो **उक्करिया** (पराण ११; भास ७)।

उक्कालिय वि [उत्कालिक] वह शास्त्र, जिसका अमुक समय में ही पढ़ने का विधान न हो (ठा २, १)।

उक्कास देखो **उक्कस्स** = उत्कर्ष (भग १२, ५)।

उक्कास वि [दे] उत्कृष्ट, ज्यादा से ज्यादा (षड्)।

उक्कासिअ वि [दे] उत्थित, उठा हुआ (दे १, ११४)।

उक्किट्ठ वि [उत्कृष्ट] १ ज्यादा (पव—गा १५)। २ पुंन. इमली आदि के पत्तों का समूह (दस ५, १, ३४)। ३ लगातार दो दिन का उपवास (संबोध ५८)।

उक्किट्ठ वि [उत्कृष्ट] १ उत्कृष्ट, उत्तम (हे १, १२८; दं २६)। २ फल का शस्त्र द्वारा किया हुआ टुकड़ा (दस ५, १, ३४)।

उक्किट्ठि स्त्री [उत्कृष्टि] हर्षध्वनि, आक्रन्द की आवाज (औप; भग २, १)। देखो **उक्कट्ठि**।

उक्किण्ण वि [उत्कीर्ण] १ खोदित, खोदा हुआ (अभि १८२)। २ नष्ट (आचू २)।

उक्कित्त वि [उत्कृत्त] कटा हुआ (से ५, ५१)।

उक्कित्तण न [उत्कीर्त्तन] १ कथन (पउम ११८, ६३)। २ प्रशंसा, श्लाघा (चउ १)।

उक्कित्तिय वि [उत्कीर्त्तित] कथित, कहा हुआ (सुज्ज २० टी)।

उक्किन्न वि [उत्कीर्ण] १ चर्चित, उपलिप्त; 'चंदणोक्किन्नगायशरीरे' (तंदु २६)। २ खोदा हुआ (दसनि २, १७)।

उक्किर सक [उत्+कृ] खोदना, पत्थर आदि पर अक्षर वगैरह का शस्त्र से लिखना। उक्किरइ (पि ४७७)।

उक्किरणग न [उत्करणक] अक्षत आदि से बढ़ाना, बधावा, वर्धापन; 'पुप्फारुहणगाइं उक्किरणगाइं। पूयं च चेइयाणं तेवि सरज्जेसु कारिंति' (धर्मवि ४६)।

उक्किरिय देखो **उक्करिअ** = उत्कीर्ण (श्रा १४; सुपा ५१८)।

उक्कीर देखो **उक्किर**। **उक्कीरसि** (अणु)। वकृ. **उक्कीरमाण** (अणु)।

उक्कीरिअ देखो **उक्करिअ** = उत्कीर्ण (उप पृ ३१५)।

उक्कीलिय न [उत्क्रीडित] उत्तम क्रीड़ा (पउम ११५, ६)।

उक्कीलिय वि [उत्कीलित] कीलक से नियंत्रित, 'उक्कीलिउव्व परियंभिउव्व सुन्नुव्व मुक्कजीउव्व' (सुपा ४७५)।

उक्कुंचण न [उत्कुञ्चन] ऊँचे चढ़ाना (सूम २, २, ६२)।

उक्कुंड वि [दे] मत्त, उन्मत्त (दे १, ६१)।

उक्कुक्कुर अक [उत्+स्था] उठना, खड़ा होना। उक्कुक्कुरइ (हे ४, १७, षड्)।

उक्कुज्ज अक [उत् + कुब्ज्] ऊँचा होकर नीचा होना। संकृ. उक्कुज्जिय (आचा)।

उक्कुजिय न [उत्कूजित] अव्यक्त शब्द (नीचू)।

उक्कुट्ट न [उत्कुष्ट] वनस्पति का कूटा हुआ चूर्ण (आचा; निचू १, ४)।

उक्कुट्ठ वि [उत्कुष्ट] ऊँचे स्वर से आक्रुष्ट (दे १, ४७)।

उक्कुडुग, उक्कुडुय वि [उत्कुटुक] आसन-विशेष, निषद्या-विशेष (भग ७, ६; ओघ १५६ भा; णाया १, १)। स्त्री. उक्कुडुई (ठा ५, १)। °ासणिय वि [°ासनिक] उत्कुटुक-आसन से स्थित (ठा ५, १)।

उक्कुद्द अक [उत् + कूर्द्] कूदना, उछलना। उक्कुद्दइ (उत २७, ५)।

उक्कुरुआ देखो उक्कुरुडिया (ती ११)।

उक्कुरुड पुं देखो उक्कुरुडी (कुप्र ५५)।

उक्कुरुड पुं [दे] राशि, ढेर (दे १, ११०)।

उक्कुरुडिगा, उक्कुरुडिया, उक्कुरुडी स्त्री [दे] घूरा, कूड़ा डालने की जगह (उव ५६३ टी; विपा १, १, णाया १, २; दे १, ११०)।

उक्कुस सक [गम्] जाना, गमन करना। उक्कुसइ (हे ४, १६२)।

उक्कुस वि [उत्कृष्ट] उत्तम, श्रेष्ठ (कुमा)।

उक्कूइय न [उत्कूजित] अव्यक्त महा-ध्वनि (पण्ह १, १)।

उक्कूल वि [उत्कूल] १ सन्मार्ग से भ्रष्ट करनेवाला। २ किनारे से बाहर का। ३ न. चोरी (पण्ह १, ३)।

उक्कूव अक [उत् + कूज्] अव्यक्त आवाज करना, चिल्लाना। वकृ. उक्कूवमाण (विपा १, ८; निर ३, १)।

उक्केर पुं [उत्कर] १ समूह, राशि, ढेर (कुमा; महा)। २ करण-विशेष, कर्मों की स्थित्यादि को बढ़ाना (विसे २५१४)। ३ भिन्न, एरण्ड के बीज की तरह जो अलग किया गया हो वह (राज)।

उक्केर पुं [दे] उपहार, भेंट (दे १, ६६)।

उक्केल्लाविय वि [दे] उकेलाया हुआ, खुलवाया हुआ; 'राइणा उक्केलियाइं चोल्लयाइं, निरूवियाइं समन्तओ, जाव दिट्ठं कत्थइ सुवण्णं, कत्थइ रुप्पयं, कत्थइ मणिमोत्तियपवालाइं' (महा)।

उक्कोट्टिय वि [दे] अवरोध-रहित किया हुआ, घेरा उठाया हुआ (स ६३९)।

उक्कोड न [दे] राज-कुल में दातव्य द्रव्य, राजा आदि को दिया जाता उपहार (वव १ टी)।

उक्कोडा स्त्री [दे] घूस, रिशवत (दे १, ९२; पण्ह १, ३; विपा १, १)।

उक्कोडिय वि [दे] घूस लेकर कार्य करनेवाला, घुसखोर (णाया १, १; औप)।

उक्कोडी स्त्री [दे] प्रतिशब्द, प्रतिध्वनि (दे १, ६४)।

उक्कोय वि [उत्कोप] प्रखर, उत्कट (सण)।

उक्कोयण देखो उक्कोवण (भवि)।

उक्कोया स्त्री [उत्कोचा] १ घूस, रिशवत। २ मूर्ख को ठगने में प्रवृत्त धूर्त पुरुष का, समीपस्थ विचक्षण पुरुष के भय से थोड़ी देर के लिए अपने कार्य को स्थगित करना (राज)।

उक्कोल पुं [दे] घाम, धूप, गरमी (दे १, ८७)।

उक्कोवण न [उक्कोपन] उद्दीपन, उत्तेजन; 'मयणुक्कोवण' (भवि)।

उक्कोविअ वि [उत्कोपित] अत्यंत क्रुद्ध किया हुआ (उप पृ ७८)।

उक्कोस सक [उत् + क्रुश्] १ रोना, चिल्लाना। २ तिरस्कार करना। वकृ. उक्कोसंत (राज)।

उक्कोस वि [उत्कर्ष] उत्कृष्ट, प्रधान, मुख्य (पंचा १, २)।

उक्कोस पुं [उत्कर्ष] १ प्रकर्ष, अतिशय; 'उक्कोसजहन्नेणं अंतमुहुत्तं चिय जियंति' (जी ३८; औप)। २ गर्व, अभिमान (सूअ १, २, २, २६; सम ७१; ठा ४, ४—पत्र २७४)।

उक्कोस वि [उत्कृष्ट] उत्कृष्ट, अधिक से अधिक; 'सुरनेरइयाण ठिई उक्कोसा सागराणि तित्तीसं' (जी ३६); 'कोसतिगं च मणुस्सा उक्कोससरीरमाणेणं' (जी ३२); 'तओ वियडतीओ पडिगाहित्तए, तं जहा—उक्कोसा, मज्झिमा, जहण्णा' (ठा ३; उव)।

उक्कोस पुं [उत्क्रोश] १ कुरर, पक्षि-विशेष (पण्ह १, १)। २ वि. जोर से चिल्लानेवाला (राज)।

उक्कोसण न [उत्क्रोशन] १ क्रन्दन। २ निर्भर्त्सन, तिरस्कार;

'उक्कोसणतज्जणताडणाओ
अवमाणहीलणाओ य।
मुणिणो मुणियपरभवा
दढप्पहारिव्व विसहंति' (उव)।

उक्कोसा स्त्री [उत्क्रोशा] कोशानामक एक प्रसिद्ध वेश्या (धर्म वि ६७)।

उक्कोसिअ वि [उत्क्रोशित] भर्त्सित, तिरस्कृत, दुतकारा हुआ (उप पृ ७८)।

उक्कोसिअ वि [उत्कर्षिन्] देखो उक्कोस = उत्कृष्ट (कप्प; भत्त ३७)।

उक्कोसिअ पुं [उत्कौशिक] १ गोत्र-विशेष का प्रवर्तक एक ऋषि। २ न. गोत्र-विशेष; 'थेरस्स णं अज्जवइरसेणस्स उक्कोसियगोत्तस्स (कप्प)।

उक्कोसिअ वि [दे] पुरस्कृत, आगे किया हुआ (षड्)।

उक्कोसिया स्त्री [उत्कृष्टि] उत्कर्ष, आधिक्य (भग)।

उक्कोस्स देखो उक्कोस = उत्कृष्ट (विसे ५८७)।

उक्ख सक [उक्ष्] सींचना (सूअ २, २, ५५)।

उक्ख [उक्ष] १ संबन्ध (राज)। २ जैन साध्वियों के पहनने के वस्त्र-विशेष का एक अंश (बृह १)।

उक्ख देखो उच्छ = उक्षन् (पाअ)।

उक्खइअ वि [उत्खचित] व्याप्त, भरा हुआ (से १, ३३)।

उक्खंड सक [उत् + खण्डय्] तोड़ना, टुकड़ा करना। वकृ. उक्खंडंत (नाट)।

उक्खंड पुं [दे] १ संघात, समूह। २ स्थपुट, विषमोन्नत प्रदेश (दे १, १२६)।

उक्खंडण न [उत्खण्डन] उत्कर्त्तन, विच्छेदन (विक्र २८)।

उक्खंडिअ वि [उत्खण्डित] खण्डित, छिन्न (से ५, ४३)।

उक्खंडिअ वि [दे] आक्रान्त, दबाया हुआ (से १, ११२)।

उक्खंद पुं [अवस्कन्द] १ घेरा डालना। २ छल से शत्रु-सैन्य को मारना (पण्ह १, २)।
उक्खंभ पुं [उत्तम्भ] अवलम्ब, सहारा (संथा)।
उक्खंभिय देखो उत्थंभिय (भवि)।
उक्खंभिय न [औत्तम्भिक] अवलम्ब, सहारा (राज)।
उक्खडमड्डा अ [दे] पुनः पुनः, बारंबार; 'उक्खडमड्डुत्ति वा भुज्जो भुज्जोत्ति वा पुणो पुणोत्ति वा एगट्ठा' (वव १)।
उक्खण सक [उत् + खन्] उखाड़ना, उन्मूलन करना, काटना। उक्खणाहि (पण्ह १, १)। संकृ. उक्खणिऊण (नीचू १)। कर्म. उक्खम्मंति (पि ५४०)। कवकृ. उक्खम्मंत (से ७, २८)। कृ. उक्खम्मिअव्व (से १०, २६)।
उक्खण सक [दे] खाँड़ना, मुसल वगैरह से व्रीहि आदि का छिलका दूर करना (दे १, ११५)।
उक्खण वि [दे] अवकीर्ण, चूर्णित (षड्)।
उक्खणण न [उत्खनन] उन्मूलन, उत्पाटन (वण्ह १, १)।
उक्खणण न [दे] खाँड़ना, निस्तुषीकरण (दे १, ११५ टी)।
उक्खणिअ न [दे] खण्डित, निस्तुषीकृत (दे १, ११५)।
उक्खत्त देखो उक्खय (पि ६०; १६३; ५६६)।
उक्खम्म° देखो उक्खण = उत् + खन्।
उक्खय वि [उत्खात] १ उखाड़ा हुआ, उन्मूलित (गाया १, ७; हे १, ६७; षड्; महा)। २ खुला हुआ, उद्घाटित;
'एत्थन्तरम्मि पत्तो, सुदाढविज्जाहरो तहिं भवणे।
उक्खयखग्गा दिट्ठा, जूयारा तेणवि दुवारे'
(सुपा ४००)।
उक्खल } देखो उऊखल (हे २, ९०; सूअ
उक्खलग } १, ४, २, १२)।
उक्खलिय वि [दे. उत्खण्डित] उन्मूलित, उत्पाटित (से ६, २६)।
उक्खलिया } स्त्री [दे] थाली, पात्र-विशेष
उक्खली } (दे १, ८८); 'उक्खलिया थाली जा साधुणिमित्तं सा आहाकम्मिया' (निचू १)।

उक्खा स्त्री [ऊखा] स्थाली, भाजन-विशेष (आचा २, १, १)।
उक्खाइद (शौ) वि [उत्खातित] उद्धृत (उत्तर ९७)।
उक्खाय देखो उक्खय (हे १, ६७; गा २७३)।
उक्खाल सक [उत् + खन्, खालय्] उखाड़ना, उन्मूलन करना। संकृ. उक्खलइत्ता (रंभा)।
उक्खिण देखो उक्खण = उत् + खन्। उक्खिणमि (भवि)। संकृ. उक्खिणिवि (अप) (भवि)।
उक्खिण्ण वि [दे] १ अवकीर्ण, ध्वस्त, चूर्णित। २ आच्छन्न, गुप्त। ३ पार्श्व में शिथिल, एक तरफ से ढीला (दे १, १३०)।
उक्खित्त } वि [उत्क्षिप्त] १ फेंका हुआ।
उक्खित्तय } २ ऊँचा उड़ाया हुआ (पाअ)। ३ ऊँचा किया हुआ (णाया १, १)। ४ उन्मूलित, उत्पाटित (राज)। ५ बाहर निकाला हुआ (पण्ह २, १)। ६ उत्थित (पिंग)। ७ न. गेय-विशेष (राय; ठा ४, ४)। °चरय वि [°चरक] पाक पात्र से बाहर निकाले हुए भोजन को ही ग्रहण करने का नियमवाला (साधु) (पण्ह २, १)।
उक्खिप्प देखो उक्खिव = उत् + क्षिप्।
उक्खिय वि [उक्षित] सिक्त, सींचा हुआ; 'चंदणोक्खियगायसरीरे' (सूअ २, २, ५५; कप्पू)।
उक्खिल्ल सक [दे] उखाड़ना। प्रयो.; हेकृ. 'उक्खिल्लाविउ माढत्तो थूभो' (ती ७)।
उक्खिव सक [उप + क्षिप्] स्थापन करना, 'सुयस्स य भगवओ चेव नामं उक्खिविस्सामो' (स १९२)।
उक्खिव सक [उत् + क्षिप्] १ फेंकना। २ ऊँचा फेंकना। ३ उड़ाना। ४ बाहर करना। ५ काटना। ६ उठाना। उक्खिवेइ (सूक्त ५६)। वकृ. 'पाएवि उक्खिवंती न लज्जति णट्टिया सुणेवत्था' (बृह ३)। संकृ. उक्खिविउं; उक्खिप्प (पि ५७५; आचा २, २, ३)। कवकृ. उक्खिप्पंत, उक्खिप्पमाण (से ६, ३५; पण्ह १, ४), उच्छिप्पंत (से २, १३)।

उक्खिवण न [उत्क्षेपण] १ फेंकना, दूर करना। २ वि. दूर करनेवाला (कुमा)।
उक्खिवणा स्त्री [उत्क्षेपणा] बाहर करना, दूर करना (बृह १)।
उक्खिविय देखो उक्खित्त (सुर २, १८०)।
उक्खुंड पुं [दे] १ उल्मुक, अलात, मशाल। २ समूह। ३ वस्त्र का एक अंश, अञ्चल (दे १, १२९)।
उक्खुड सक [तुड्] तोड़ना, टुकड़ा करना। उक्खुडइ (हे ४, ११६)।
उक्खुडिअ वि [तुडित] १ खण्डित, छिन्न, भिन्न (कुमा; से ४, २१; सुपा २६२)। २ व्यय किया हुआ, खर्च किया हुआ;
'एत्तियकाला इण्हिं, उक्खुडियं
सालिमाइयं नाउं।
तुह जोग्गं तो सहसा,
पुणो पुणो कुट्टियं हिययं'
(सुपा १५)।
उक्खुत्त वि [दे. उत्कृत्त] काटा हुआ, 'रणणं दुरदंतुक्खुत्तविसंवलियं तिलच्छेत्तं' (गा ७६६)।
उक्खुब्भ अक [उत् + क्षुभ्] क्षुब्ध होना। उक्खुब्भइ (प्राकृ ७५)।
उक्खुरुहुंचिअ वि [दे] उत्क्षिप्त, फेंका हुआ (दे १, ४)।
उक्खुलंप सक [दे] खुजवाना। संकृ. उक्खुलंपिय (आचा २, १, ६, २)।
उक्खुहिअ वि [उत्क्षुब्ध] क्षुब्ध, क्षोभ-प्राप्त (से ७, १६)।
उक्खेव पुं [उत्क्षेप] १ उत्पाटन, उन्मूलन (औप)। २ ऊँचा करना (गउड)। ३ जो उठाया जाय वह; 'उक्खेवे निक्खेवे महल्लभाणम्मि' (पिंड ५७०)।
उक्खेव पुं [उपक्षेप] उपोद्घात, भूमिका (उवा; विपा १, २, ३, ४)।
उक्खेवग वि [उत्क्षेपक] १ ऊँचा फेंकनेवाला। २ पुं. एक जाति का पंखा, व्यजन-विशेष (पण्ह २, ५)।
उक्खेवण न [उत्क्षेपण] १ फेंकना (पउम ३७, ५०)। २ उन्मूलन, उत्पाटन (सूअ २, १)।

उक्खेविअ वि [उत्क्षेपित] जलाया हुआ (धूप) (भवि)।

उक्खोडिअ वि [उत्खोटित] १ उत्क्षिप्त, उड़ाया हुआ (पाअ)। २ छिन्न, उखाड़ा हुआ (दे १, १०५; १११)।

उग अक [उत् + गम्] उदित होना। उगइ (नाट)।

उग (अप) वि [उद्गत] उदित (पिंग)।

उगाहिअ वि [दे] उत्क्षिप्त, फेंका हुआ (षड्)।

उगुणपन्न स्त्रीन [एकोनपञ्चाशत्] ऊनपचास, ४६ (सुज्ज १०, ६ टी)।

उगुणवीसा स्त्री [एकोनविंशति] उन्नीस, १६ (सुज्ज १०, ६ टी)।

उगुणुत्तर न [एकोनसप्तति] उनहत्तर, ६६; 'उगुणुत्तराइं' (सुज्ज १०, ६ टी)।

उगुनउइ स्त्री [एकोननवति] नवासी, ८६ (कम्म ६, ३०)।

उगुसीइ स्त्री [एकोनाशीति] उनासी, ७६ कम्म ६, ३०)।

उग्ग अक [उद् + गम्] उदित होना। उग्गे (पिंग)। वकृ. उग्गंत; 'देव ! पणयजणकल्लाणकंदुट्ठविसट्टगुणग्गंतमिह-(?हि)। राणुगारिणो' (धर्मा ५)।

उग्ग सक [उद् + घाटय्] खोलना। उग्गइ (हे ४, ३३)।

उग्ग वि [उग्र] १ तेज, तीव्र, प्रबल (पउम ८३, ४)। २ पुं. क्षत्रिय की एक जाति, जिसको भगवान् आदिदेव ने आरक्षक-पद पर नियुक्त की थी (ठा ३, १)। °वई स्त्री [°वती] ज्योतिः-शास्त्र-प्रसिद्ध नन्दा-तिथि की रात (जं ७)। °सिरि पुं [°श्रीक] राक्षस वंश का एक राजा, स्वनाम-ख्यात एक लंकेश (पउम ५, २६४)। °सेण पुं [°सेन] मथुरा नगरी का एक यदुवंशीय राजा (णाया १, १६; अंत)।

उग्गंठ सक [उत् + ग्रन्थ्] खोलना, गाँठ खोलना। संकृ. उग्गंठिऊण (हम्मीर १७)।

उग्गंध वि [उद्गन्ध] अत्यन्त सुगन्धित (गउड)।

उग्गच्छ, **उग्गम** } अक [उद् + गम्] उदय होना। उग्गच्छदि (शौ) (नाट)। उग्गमइ (वज्जा १६)। उग्गमेज्ज (काल)। वकृ. **उग्गमंत, उग्गममाण** (सुपा ३८; पण्ण १)।

उग्गम पुं [उद्गम] १ उत्पत्ति, उद्भव; 'तत्थुग्गमो पसूई पभवो एमाई होंति एगट्ठा' (राज)। २ उदयः 'सूरुग्गमो' (सुर ३, २५०)। ३ उत्पत्ति से सम्बन्ध रखनेवाला एक भिक्षा-दोष (ओघ ६५; ५३० भा; ठा १०)।

उग्गमण न [उद्गमन] उदय (सिरि ४२८; सुज्ज ६)।

उग्गमिय वि [उद्गमित] उपार्जित (निचू २)।

उग्गय वि [उद्गत] उत्पन्न, जात (आव ३)। २ उदित, उदय-प्राप्त (सुर ३, २४७)। ३ व्यवस्थित (राज)।

उग्गह सक [रचय्] रचना, बनाना, निर्माण करना। करना। उग्गहइ (हे ४,६४)।

उग्गह सक [उद् + ग्रह] ग्रहण करना। उग्गहेइ (भग)। संकृ. **उग्गहित्ता** (भग)।

उग्गह पुं [अवग्रह] इन्द्रिय द्वारा होनेवाला सामान्य ज्ञान-विशेष (विसे)। २ अवधारण, निश्चय (उत्त)। ३ प्राप्ति, लाभ (आचू)। ४ पात्र, भाजन (पंचा ३)। ५ साध्वियों का एक उपकरण (ओघ ६६६; ६७६)। ६ योनिद्वार (बृह ३)। ७ ग्रहण करने योग्य वस्तु (पण्ह १, ३)। ८ आश्रय, आवासस्थान, वसति (आचा); 'अहापडिरूवं उग्गहं ओगिण्हित्ता' (णाया १, १)। ६ वह वस्तु, जिसपर अपना प्रभुत्व हो, अधीन चीज (बृह ३)। १० देव या गुरु से जितनी दूरी पर रहने का शास्त्रीय विधान है उतनी जगह, मर्यादित भू-भाग, गुर्वादि की चारों तरफ की शरीर-प्रमाण जमीन; 'अणुजाणह मे मिउग्गहं' (पडि)। °णंत, °णंतग न [°ानन्त, °क] जैन साध्वियों का एक गुह्याच्छादक वस्त्र, जांघिया, लँगोटः 'छादंतोग्गहणंतं' (बृह ३)। °पट्ट, °पट्टग पुंन [°पट्ट, °क] देखो पूर्वोक्त अर्थं; 'नो कप्पइ निग्गंथाणं उग्गहणंतगं वा उग्गहपट्टगं वा धारित्तए वा परिहरित्तए वा' (बृह ३)।

उग्गह पुं [अवग्रह] परोसने के लिए उठाया हुआ भोजन (सूअ २, २, ७३)।

उग्गहण न [अवग्रहण] इन्द्रिय द्वारा होनेवाला सामान्य ज्ञानः 'अत्थाणं उग्गहणं अवग्गहं' (विसे १७६)।

उग्गहिअ वि [रचित] १ निर्मित, विहित (कुमा)।

उग्गहिअ वि [अवगृहीत] १ सामान्य रूप से ज्ञात। २ परोसने के लिए उठाया हुआ (ठा १)। ३ गृहीत। ४ आनीत। ५ मुख में प्रक्षिप्त; 'तिविहे उग्गहिए पण्णत्ते;—जं च उग्गिण्हइ, जं च साहरइ, जं च आसगम्मि पक्खिवति' (वव २, ८)।

उग्गहिअ वि [दे] निपुण-गृहीत, अच्छी तरह लिया हुआ (दे १, १०४)।

उग्गा सक [उद् + गै] १ ऊँचे स्वर से गान करना। २ वर्णन करना। ३ श्लाघा करना; 'उग्गाइ गाइ हसइ,

असंवुडो सय करेइ कंदप्पं।

गिहिकज्जचिंतगो वि य,

ओसन्ने देइ गेण्हइ वा' (उव)।

वकृ. **उग्गायंत** (सुर ८, १८६)। कवकृ. **उग्गीयमाण** (पउम २, ४१)।

उग्गाढ वि [उद्गाढ] १ अति गाढ़, प्रबल (उप ६८६ टीः सुपा ६४)। २ स्वस्थ, तन्दुरुस्त (बृह १)।

उग्गामिय वि [उद्गमित] ऊपर उठाया हुआ, ऊँचा किया हुआ (सुख १, १४)।

उग्गायंत देखो **उग्गा**।

उग्गार, **उग्गाल** } पुं [उद्गार] १ वचन, उक्तिः 'ते पिसुणा जे ण सहंति णिग्गुणा परगुणुग्गारे' (गउड)। २ शब्द, आवाज, ध्वनिः 'तियसरहपेल्लियघणो णहदुंदुहिबहलगज्जिउग्गारो', 'अहिताडियकंसुग्गारझंझणापडिरवाहोओ' (गउड)। ३ डकार। ४ वमन, ओकाई (नाटः कस); 'जिणझाणालणडज्झंतमयणधूमुग्गारेणं पिव···केसकलावेणं (स ३१३; निचू १०)। ५ जल का छोटा प्रवाह; 'उग्गालो छिछोली' (पाअ)। ६ रोमन्थ, पगुरानाः 'रोमंथो उग्गालो' (पाअ)।

उग्गाल पुं [दे. उद्गाल] पान की पिचकारी (पव ३८)।

उग्गाल पुं [उद्गार] विनिर्गम, बाहर निकलना (वव १)।

उग्गाह सक [उद् + ग्रह्] ग्रहण करना; 'भायणवत्थाइं पमज्जइ, पमज्जइत्ता भायणाइं उग्गाहेइ' (उवा)। संकृ. 'उग्गाहेत्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ' (उवा)।

उग्गाह सक [अव + गाह्] अवगाहन करना, 'उग्गाहेंति नाणाविहाओ चिगिच्छा-संहियाओ' (स १७)।

उग्गाह सक [उद् + ग्राहय्] १ तगादा करना। २ ऊँचे से चलना। उग्गाहइ (प्राकृ ७२)।

उग्गाह पुं. देखो उग्गाहा (पिंग)।

उग्गाहण न [उद्ग्राहण] तगादा, दी हुई चीज की माँग (सुपा ५७८)।

उग्गाहणिआ स्त्री [उद्ग्राहणिका] ऊपर देखो, 'उआरणपालयाणं पासम्मि गओ तया सोवि। उग्गाहणियाहेउं' (सुपा ६३२)।

उग्गाहणी स्त्री [उद्ग्राहणी] ऊपर देखो (द्र ६)।

उग्गाहा स्त्री [उद्गाथा] छन्द-विशेष (पिंग)।

उग्गाहिअ वि [दे. उद्ग्राहित] १ गृहीत, लिया हुआ। २ उत्क्षिप्त, फेंका हुआ। ३ प्रवर्तित (दे १, १३७)। ४ उच्चालित, ऊँचे से चलाया हुआ (पाअ; स २१३)।

उग्गाहिम वि [अवगाहिम] तली हुई वस्तु। (पण्ह २, ५)।

उग्गिण्ण } वि [उद्गीर्ण] १ उक्त, कथित
उग्गिन्न } (भवि)। २ वान्त, उद्गीर्ण (णाया १, १)। ३ उठाया हुआ, ऊपर किया हुआ;
'उग्गिन्नखग्गमबलं अवलोइय
नरवईवि विम्हइओ।
चिंतेइ अहो धट्ठा, मज्झ वहट्ठा
इह पविट्ठा' (सुर १६, १४७);
'निद्दय ! निर्यबिणीवह-
कलंकमलिणोव्व रे तुमं जाओ।
उग्गिन्नखग्गपसरंतकंतिसा-
मलियसव्वंगो' (सुपा ९३८)।

उग्गिर देखो उग्गिल। उग्गिरेइ (मुद्रा १२१)। वकृ. उग्गिरंत (काल)।

उग्गिरण न [उद्गरण] १ वान्ति, वमन, कय। २ उक्ति, कथन;
'माणंसिणोवि अवमाणवंचणा
ते परस्स न करेंति।
सुहदुक्खुग्गिरणत्थं, साहू
उयहिव्व गंभीरा' (उव)।

उग्गिल सक [उद् + गृ] १ कहना, बोलना। २ डकार करना। ३ उलटी करना, वमन करना। ४ उठाना। वकृ. 'अग्गिजालुग्गिलंत वयणं' (णाया १, ८)। संकृ. उग्गिलित्ता (कस), उग्गिलेत्ता (निचू ०)।

उग्गिलिअ देखो उग्गिण्ण (पाअ)।

उग्गीय वि [उद्गीत] १ उच्च स्वर से गाया हुआ (दे १,१६३)। २ न. संगीत गीत, गान (से १, ६५)।

उग्गीयमाण देखो उग्गा।

उग्गीर देखो उग्गिर। वकृ. 'खग्गं उग्गीरंतो इत्थिवहत्थं, हयासलोयाणं' (सुपा १५८)।

उग्गीरिअ देखो उग्गिण्ण; 'उग्गीरिओ ममोवरि, जमजीहादीहतरलकरवालो' (सुपा१५८)।

उग्गीव वि [उद्ग्रीव] उत्कण्ठित, उत्सुक (कुमा)। °किय वि [°कृत] उत्कण्ठित किया हुआ (उप १०३१ टी)।

उग्गुलुंछिआ स्त्री [दे] हृदय-रस का उछलना, भावोद्रेक (दे १, ११८)।

उग्गोव सक [उद् + गोपय्] १ खोजना। २ प्रकट करना। ३ विमुग्ध करना। वकृ. 'इत्थी वा पुरिसे वा सुविणंते एगं महं किण्हसुत्तगं वा जाव सुकिल्लसुत्तगं वा पासमाणे पासति उग्गोवेमाणे उग्गोवेइ' (भग १६, ६)।

उग्गोवणा स्त्री [उद्गोपना] १ खोज, गवेषणा;
'एसण गवेसणा मग्गणा
य उग्गोवणा य बोद्धव्वा।
एए उ एसणाए नामा
एगट्ठिया होंति' (पिंड ७३)।
२ देखो उग्गम; 'उग्गम उग्गोवण मग्गणा य एगट्ठियाणि एयाणि' (पिंड ८५)।

उग्गोविय वि [उद्गोपित] विमोहित, भ्रान्त; 'उग्गोवियमिति अप्पाणं मन्नति' (भग १६, ६)।

उग्घ देखो उंव। उग्घइ (षड्)।

उग्घट्टि } स्त्री [दे] अवतंस, शिरो-भूषण (दे
उग्घट्टी } १, ९०)।

उग्घड सक [उद् + घाटय्] खोलना (प्रामा)।

उग्घड अक [उद् + घट्] खुलना। उग्घडइ (सिरि ५०४)। उग्घडंति (धर्म वि ७६)।

उग्घडिअ वि [उद्घाटित] खुला हुआ (धर्म वि ७७)।

उग्घडिअ वि उद्घाटित] खुला हुआ। २ छिन्न, नष्ट किया हुआ (से ११, १३०)।

उग्घर वि [उद्गृह] गृह-त्यागी, जिसने घरबार छोड़ कर संन्यास लिया हो वह, साधु;
'चंदोव्व कालपक्खे परिहाई पए पए पमायपरो।
तह उग्घरविग्घरनिरंगणो वि नय इच्छियं लहइ'
(णाया १, १० टी)।

उग्घव देखो अग्घव। उग्घवइ (हे ४, १६९ टि; राज)।

उग्घसिय न [अवघर्षित] घर्षण (राय ६७)।

उग्घाअ पुं [दे] १ समूह, संघात (दे १, १२६; स ७७; ४३६; गउड; से ५, ३४)। २ स्थपुट, विषमोन्नत प्रदेश (दे १,१२६)।

उग्घाअ पुं [उद्घात] १ आरम्भ, प्रारम्भ; 'उग्घाओ आरंभो' (पाअ)। २ प्रतिघात ठोकर लगना। ३ लघूकरण, भाग-पात (ठा ३)। ४ उपोद्घात, भूमिका (विसे १३४८)। ५ ह्रास (ठा ५, २)। ६ न. प्रायश्चित-विशेष। ७. निशीथ सूत्र का एक अंश, जिसमें उक्त प्रायश्चित्त का वर्णन है; 'उग्घायमणुग्घायं आरोवण तिविहमो निसीहं तु' (आव ३)।

उग्घाअ सक [उद् + घातय्] विनाश करना। उग्घाएइ (उत्त २९, ६)।

उग्घाइम वि [उद्घातिम] १ लघु, छोटा। २ न. लघु प्रायश्चित्त (ठा ३)।

उग्घाइय वि [उद्घातित] १ विनाशित (ठा १०)। २ न. लघु प्रायश्चित्त (ठा ५)।

उग्घाइय वि [उद्घातित] लघु प्रायश्चित्त वाला (वव १)।

उग्घाइय न [उद्घातिक] लघु प्रायश्चित्त (कस)।

उग्घाड सक [उद् + घाटय्] १ खोलना। २ प्रकट करना। ३ बाहर करना। उग्घाडइ (हे ४, ३३)। उग्घाडए (महा)। संकृ **उग्घाडिऊण** (महा)। कृ. **उग्घाडिअव्व** (श्रा १६)। कवकृ. **उग्घाडिज्जंत** (से ५, १२)।

उग्घाड पुं [उद्घाट] प्रकट, प्रकाश; 'किंतु कम्रो बहुएहिं उग्घाडो नियकम्माणं' (सिरि ५२८)।

उग्घाड देखो **उग्घाड** = उद् + घाटय्। हेकृ. 'तं जिणहरस्स दारं केणवि नो सक्कियं उघाडेउं' (सिरि ५२८)।

उग्घाड वि [उद्घाट] १ खुला हुआ, अनाच्छादित (पउम ३९, १०७)। २ थोड़ा बन्द किया हुआ; 'उग्घाडकवाडउग्घाडणाए' (आव ४)। ३ व्यक्त, प्रकट। ४ परिपूर्ण, अन्यून; 'एत्थंतरम्मि उग्घाडपोरिसीसूयगो बली पत्तो' (सुपा ६७)।

उग्घाडण न [उद्घाटन] १ खोलना (आव ४)। २ बाहर करना, बाहर निकालना (उप पृ ३९७)।

उग्घाडणा स्त्री [उद्घाटना] ऊपर देखो (आव ४)।

उग्घाडिअ वि [उद्घाटित] १ खुला हुआ। २ प्रकटित, प्रकाशित (से २, ३७)।

उग्घायण न [उद्घातन] १ नाश, विनाश (आचा)। २ पूज्य-स्थान, उत्तम जगह। ३ सरोवर में जाने का मार्ग (आचा २, ३)।

उग्घार पुं [उद्घार] सिञ्चन, छिड़काव; 'विणितरुहिरुग्घारं निवडिओ धरणिवट्टे' (स ५९८)।

उग्घिट्ठ } वि [उद्घृष्ट] संघृष्ट, 'नमिरसुर-
उग्घुट्ठ } किरीडुग्घिट्ठपायारविंदे' (लहुअ ४; से ६, ८०)।

उग्घुट्ठ वि [उद्घुष्ट] घोषित, उद्घोषित (सुर १०, १४; सण); 'अमरवहुग्घुट्ठजयजयारवं' (महा)।

उग्घुट्ठ वि [दे] उत्प्रोञ्छित, लुप्त, दूरीकृत, विनाशित (दे १, ९९); 'उरघालिरवेणीमुहथणलग्गुग्घुट्ठमहिरआ जणअसुआ' (से ११, १०२)।

उग्घुस सक [मृज्] साफ करना, मार्जन करना। उग्घुसइ (हे ४, १०५)।

उग्घुस सक [उद् + घुष्] देखो **उग्घोस**। संकृ. **उग्घुसिअ** (नाट)।

उग्घुसिअ वि [मृष्ट] मार्जित, साफ किया हुआ (कुमा)।

उग्घोस सक [उद् + घोषय्] घोषणा करना, ढिंढोरा पिटवाना, जाहिर करना। उग्घोसेह (विपा १, १)। वकृ. **उग्घोसेमाण** (विपा १, १; णाया १, ५)। कवकृ. **उग्घोसिज्जमाण** (विपा १, २)।

उग्घोस पुं [उद्घोष] नीचे देखो (स्वप्न २१)।

उग्घोसणा स्त्री [उद्घोषणा] डुग्गी पिटवाना, ढिंढोरा पिटवा कर जाहिर करना (विपा १, १)।

उग्घोसिय वि [मार्जित] साफ किया हुआ, 'उग्घोसियसुनिम्मलं व आयंसमंडलतलं' (पण्ह २, ५)।

उग्घोसिय वि [उद्घोषित] जाहिर किया हुआ, घोषित (भवि)।

उघूण वि [दे] पूर्ण, भरपूर (षड्)।

उचिय वि [उचित] योग्य, लायक, अनुरूप (कुमा; महा)। °**ण्णु** वि [°ज्ञ] विवेकी (उप ७६८ टी)।

उच्च न [दे] नाभि-तल (दे १, ८६)।

उच्च } वि [उच्च, °क, उच्चैस्] १ ऊँचा
उच्चअ } (कुमा)। २ उत्तम, उत्कृष्ट (हे २, १५४; सूअ १, १०)। °**च्छंद** वि [°च्छन्दस्] स्वैर, स्वेच्छाचारी (पण्ह १, २)। °**णागरी** देखो °**नागरी** (कप्प)। °**त्त** न [त्व] १ ऊँचाई (सम १२; जी २८)। २ उत्तमता (ठा ४, १)। °**त्तभयग**, °**त्तभयय** पुं [°त्वभृतक] जिससे समय और वेतन का इकरार कर यथासमय नियत काम लिया जाय वह नौकर (राज; ठा ४, १)। °**त्तरिया** स्त्री [°त्तरिका] लिपि-विशेष (सम ३५)। °**त्थवणय** न [°स्थापनक] लम्बगोलाकार वस्तु-विशेष, 'धण्णस्स णं अणगारस्स गीवाए अयमेयारूवे तवरूवलावन्ने होत्था, से जहानामए करगगीवा इवा कुंडियागीवा इवा उच्चत्थवणए इवा' (अनु)। °**वंचिआ** स्त्री [°वंचिका] ऊँचा-नीचा करना, जैसे-तैसे रखना;

'कह तंपि तुइ ण णाअं जह सा
आसंदिआण बहुआणं।
काऊण उच्चवचिअं तुह
दंसणलेहला पडिआ'
(गा ६९७)।

°**वाय** पुं [°वाद] प्रशंसा, श्लाघा (उप ७२८ टी)। देखो **उच्चा**।

उच्चइअ वि [उच्चयित] एकत्रीकृत, इकट्ठा किया हुआ (काल)।

उच्चंडिय वि [दे] ऊँचा चढ़ाया हुआ (हम्मीर २८)।

उच्चंतय पुं [उच्चन्तग] दन्त-रोग, दाँत में होनेवाला रोग-विशेष (राज)।

उच्चंपिअ वि [दे] १ दीर्घ, लम्बा, आयत (दे १, ११६)। २ आक्रान्त, दबाया हुआ, रोंदा हुआ; 'सीसं उच्चंपिअं' (तंदु)।

उच्चड्डिअ वि [दे] उत्क्षिप्त, ऊँचा फेंका हुआ (दे १, १०६)।

उच्चत्त वि [उत्त्यक्त] पतित, त्यक्त (पाअ)।

उच्चत्तवरत्त न [दे] १ दोनों तरफ का स्थूल भाग। २ अनियमित भ्रमण, अव्यवस्थित विवर्तन (दे १, १३९)। ३ दोनों तरफ से ऊँचा-नीचा करना (पाअ)।

उच्चत्थ वि [दे] दृढ़, मजबूत (दे १, ९७)।

उच्चदिअ वि [दे] मुषित, चुराया हुआ (षड्)।

उच्चप्प वि [दे] आरूढ़, ऊपर बैठा हुआ (दे १, १००)।

उच्चय सक [उत् + त्यज्] त्याग देना, छोड़ देना। कृ. **उच्चयणिज्ज** (पउम ६६, २८)।

उच्चय पुं [उच्चय] १ समूह, राशि; 'रयणोच्चयं विसालं' (सुपा ३४; कप्प)। २ ऊँचा ढेर करना (भग ८, ९)। ३ नीवी, स्त्री के कटी-वस्त्र की नाड़ी (पाअ)। °**बंध** पुं [°बन्ध] बन्ध-विशेष, ऊपर ऊपर रख कर चीजों को बाँधना (भग ८, ९)।

उच्चय पुं [अवचय] इकट्ठा करना, एकत्रीकरण (दे २, ५६)।

उच्चर सक [उत्+चर्] १ पार जाना, उत्तीर्ण होना । २ कहना, बोलना । ३ अक. समर्थ होना, पहुँच सकना । ४ बाहर निकलना । उच्चरए (सूक्त ४६); 'मूलदेवेण य निरूवियाइं पासाइं जाव दिट्ठं निसियासिहत्थेहिं वेढियमत्तारायं मग्गएसेहिं । चिंतियं चः णाहमेएसिं उच्चरामि, कायव्वं च मए वइरनिज्जायणं; निराउहो संपयं, ता न पोरिसस्सावसरोत्ति चिंतिय भणियं' (महा) । वकृ.

'भरिउच्चरंतपरिअप्पिअसंभरणपिसुणो वराईए । परिवाहो विअ दुक्खस्स वहइ णअणट्ठिओ वाहो' (गा ३७७) ।

उच्चरण न [उच्चरण] कथन, उच्चारण; 'सिद्धसमक्खं सोहिं वय-उच्चरणाइ काऊण' (सुपा ३१७) ।

उच्चरिय वि [उच्चरित] १ उत्तीर्ण, पार-प्राप्त; 'तीए हत्थिसंभमुच्चरियाए उज्झिऊण भयं, जीवियदायगोत्ति मुणिऊण तुमं साहिलासं पलोइओ' (महा) । २ उच्चरित, कथित, उक्त (विसे १०८३) ।

उच्चलण न [उच्चलन] उन्मर्दन, उत्पीड़न (पाअ) ।

उच्चलिय वि [उच्चलित] चलित, गत (भवि) ।

उच्चल्ल वि [दे] १ अध्यासित, आरूढ़ । २ विदारित, छिन्न (षड्) ।

उच्चल्ल सक [उत्+चल्] १ चलना, जाना । २ समीप में आना ।

उच्चल्लिय वि [उच्चलित] १ गत, गया हुआ । २ समीप में आया हुआ;

'जिणभवणदुवारट्ठियउच्चल्लिय-
फुल्लमालिओहस्स ।
पुप्फाइं गेण्हंतो, अंतो
विहिणा पविट्ठो हं'
(सुर ३, ७४) ।

उच्चा अ [उच्चैस्] १ ऊँचा, 'तो तेण दुट्ठहरिणा उच्चा हरिऊण लोय-पच्चक्खं । उवणीओ सो रण्णे' (महा) । २ उत्तम, श्रेष्ठ (ठा २, १) । °**गोत्त**, °**गोय** न [°गोत्र] १ उत्तम गोत्र, श्रेष्ठ-वंश । २ कर्म विशेष, जिसके प्रभाव से जीव उत्तम माने-जाते कुल में उत्पन्न होता है (ठा २, ४; आचा) । °**वय** न [°व्रत] १ महाव्रत (उत्त १) । २ वि. महाव्रतधारी (उत्त १५) ।

उच्चाअ वि [दे] १ श्रान्त, थका हुआ (ओघ ५१८) । २ पुं. आलिंगन, परिरम्भ (सुपा ३३२) ।

उच्चाइय वि [दे. उत्त्याजित] उत्थापित, उठाया हुआ; 'उच्चाइया नंगरा' (स २०६) ।

उच्चाग पुं [उच्चाग] हिमाचल पर्वत । °**य** वि [°ज] हिमाचल में उत्पन्न; 'उच्चागयठाणलट्ठसंठियं' (कप्प) ।

उच्चाड वि [दे] विपुल, विशाल (दे १, ९७) ।

उच्चाड सक [दे] १ रोकना, निवारना । २ अक. अफसोस करना, दिलगीर होना (हे २, १९३ टि) ।

उच्चाडण न [उच्चाटन] १ एक स्थान से दूसरे स्थान में उठा ले आना, स्व-स्थान से भ्रष्ट करना । २ मन्त्र-विशेष, जिसके प्रभाव से वस्तु अपने स्थान से उड़ायी जा सकती है; 'उच्चाडणथंभणमोहणाइ सव्वंपि मह करगयं व' (सुपा ५९९) ।

उच्चाडणी स्त्री [उच्चाटनी] विद्या-विशेष जिसके द्वारा वस्तु अपने स्थान से उड़ायी जा सकती है (सुर १३, ८१) ।

उच्चाडिर वि [दे] १ रोकनेवाला, निवारण करनेवाला । २ अफसोस करनेवाला, दिलगीर; 'किं उल्लावेंतीए, उअ जूरंतीए किं नु भीआए । उच्चाडिरीए वेव्वेत्ति, तीए भणिअं न विम्हरिमो' (हे २, १९३) ।

उच्चार सक [उत्+चारय्] १ बोलना, उच्चारण करना । २ मलोत्सर्ग करना, पाखाना जाना । उच्चारेइ (उवा) । वकृ. **उच्चारयंत** (स १०७) । **उच्चारेमाण** (कप्प; णाया १, १) । कृ. **उच्चारेयव्व** (उवा) ।

उच्चार पुं [उच्चार] १ उच्चारण । २ विष्ठा, मलोत्सर्ग (सम १०; उवा; सुपा ६११) ।

उच्चार वि [दे] विमल, स्वच्छ (दे १, ९७) ।

उच्चारण न [उच्चारण] कथन, 'इसि हस्सपंचक्खरूच्चारणद्धाए' (ओप) ।

उच्चारिअ वि [दे] गृहीत, उपात्त (दे १, ११४) ।

उच्चारिअ वि [उच्चारित] १ कथित, उक्त । २ पाखाना गया हुआ (राज) ।

उच्चाल सक [उत्+चालय्] १ ऊँचा फेंकना । २ दूर करना । संकृ. '**उच्चालइय** निहाणिसु अदुवा आसणाओ खलइंसु' (आचा) ।

उच्चालइय वि [उच्चालयितृ] दूर करनेवाला त्यागनेवाला; 'जं जाणेज्जा उच्चालइयं तं जाणेज्जा दुरालइयं' (आचा) ।

उच्चालिय वि [उच्चालित] उठाया हुआ, ऊँचा किया हुआ, उत्थापित; 'उच्चालियम्मि पाए इरियासमियस्स संकमट्ठाए' (ओघ ७४८; दसनि ४५) ।

उच्चाव सक [उच्चय्] ऊँचा करना, उठाना । संकृ. **उच्चावइत्ता**; 'दोवि पाए उच्चावइत्ता सव्वओ समंत समभिलोएज्ज' (पएण १७) ।

उच्चावय वि [उच्चावच] १ ऊँचा और नीचा (णाया, १, १; पएण ३४) । २ उत्तम और अधम (भग १५) । ३ अनुकूल और प्रतिकूल (भग १, ९) । ४ असमञ्जस, अव्यवस्थित (णाया १, १६) । ५ विविध, नानाविध; 'उच्चावयाहिं सेज्जाहिं तवस्सी भिक्खू थामवं' (उत्त ८) । ६ उत्कृष्टतर, विशेष उत्तम; 'तए णं तस्स आणंदस्स समणोवासगस्स उच्चावएहिं सीलव्वयगुणवेरमणपच्चक्खाणपोसहोववासेहिं अप्पाणं भावेमाणस्स' (उवा; ओप) ।

उच्चाविय वि [उच्चित] ऊँचा किया हुआ (वज्जा १३२) ।

उच्चिट्ठ अक [उत्+स्था] खड़ा होना । उच्चिट्ठ (काल) ।

उच्चिडिम वि [दे] मर्यादा-रहित, निर्लज्ज; 'उच्चिडिमं मुक्कमजायं' (पाअ) ।

उच्चिण सक [उत्+चि] फूल वगैरह को तोड़ कर एकत्रित करना, इकट्ठा करना । उच्चिणइ (हे ४, २४१) । वकृ. **उच्चिणंत** (भवि) ।

उच्चिणग न [उच्चयन] अवचयन, एकत्रीकरण (सुपा ४९९) ।

उच्चिणिय वि [उच्चित] इकट्ठा किया हुआ, अवचित (पाअ) ।

उच्चिणिर वि [उच्चेतृ] फूल वगैरह को चुननेवाला (कुमा) ।

उच्चिय देखो उचिय; 'तस्स सुग्रोच्चियपन्नत्तणेण संतोसमणुपत्ता' (उप १६६ टी)।

उच्चिवलय न [दे] कलुषित जल, मैला पानी (पाम्र)।

उच्चुंच वि [दे] दृप्त, गर्विष्ठ, अभिमानी (दे १, ९९)।

उच्चुग वि [दे] अनवस्थित (षड्)।

उच्चुड अक [उत्+चुड्] अपसरण करना, हटना। वकृ. **उच्चुडंत** (गउड ७३३)।

उच्चुप्प सक [चट्] चढ़ना, आरूढ़ होना, ऊपर बैठना। उच्चुप्पइ (हे ४, २५९)।

उच्चुप्पिअ वि [दे. चटित] आरूढ़, ऊपर चढ़ा हुआ (दे १, १००)।

उच्चुरण [दे] उच्छिष्ट, जूठा (षड्)।

उच्चुलउलिअ न [दे] कुतूहल से शीघ्र शीघ्र जाना (दे १, १२१)।

उच्चुल्ल वि [दे] १ उद्विग्न, खिन्न। २ अधिरूढ, आरूढ। ३ भीत, डरा हुआ (दे १, १२७)।

उच्चूड पुं [उच्चूड] निशान का नीचे लटकता हुआ शृंगारित वस्त्रांश (उव ४४६)।

उच्चूर वि [दे] नानाविध, बहुविध (राज)।

उच्चूल पुं [अवचूल] १ निशान का नीचे लटकता हुआ शृङ्गारित वस्त्रांश (उप ४४६ टी)। २ औंधा-सिर—पैर ऊपर और सिर नीचे कर—खड़ा किया हुआ (विपा १, ६)।

उच्चे देखो **उच्चिण**। उच्चेइ (हे ४, २४१)। हेकृ. **उच्चेउं** (गा १५९)।

उच्चेय वि [उच्चेतस्] चिन्तातुर मनवाला (पाम्र)।

उच्चेल्लर न [दे] १ ऊसर भूमि। २ जघनस्थानीय केश (दे १, १३६)।

उच्चेव वि [दे] प्रकट, व्यक्त (दे १, ९७)।

उच्चोड पुं [दे] शोषण, 'चंदणुच्चोडकारी चंडो देहस्स दाहो' (कप्पू; प्राप)।

उच्चोदय पुं [उच्चोदय] चक्रवर्ती का एक देवकृत प्रासाद (उत्त १३, १३)।

उच्चोल पुं [दे] १ खेद, उद्वेग। २ नीवी, स्त्री के कटी-वस्त्र की नाड़ी (दे १, १३१)।

उच्छ पुं [उक्षन्] बैल, वृषभ (हे २, १७)।

उच्छ पुं [दे] १ आँत का आवरण (दे १, ८५)। २ वि. न्यून, हीन; 'उच्छत्तं वा न्यूनत्वम्' (पण्ह २, १)।

उच्छअ पुं [उत्सव] क्षण, उत्सव (हे २, २२)।

°उच्छअ वि [पृच्छक] प्रश्न-कर्ता (गा ९०)।

उच्छइअ वि [उच्छदित] आच्छादित, 'पालंबउच्छइयवच्छयलो' (काल)।

उच्छंखल वि [उच्छृङ्खल] १ शृङ्खला-रहित, अवरोध-वर्जित, बन्धन-शून्य। २ उद्धत, निरंकुश (गउड)।

उच्छंखलिय वि [उच्छृङ्खलित] अवरोधरहित किया हुआ, खुला किया हुआ; 'उच्छंखलियवणाणं सोहग्गं किंपि पवणाणं' (गउड)।

उच्छंग पुं [उत्सङ्ग] मध्य भाग; 'मउडुच्छंगपरिग्गहमियंकजोण्हावभासिणो पसुवइणो' (गउड; से १०,२)। २ क्रोड, गोद, कोरा (पाम्र); 'उच्छंगे णिविसेत्ता' (आवम)। ३ पृष्ठ देश (औप)।

उच्छंगिअ वि [उत्सङ्गित] कोरा, कोली या गोद में लिया हुआ (उप ६४८ टी)।

उच्छंगिअ वि [दे] आगे किया हुआ, आगे रखा हुआ (दे १, १०७)।

उच्छंघ देखो उत्थंघ (हे ४, ३६ टी)।

उच्छंट पुं [दे] झड़प से की हुई चोरी (दे १, १०१; पाम्र)।

उच्छट्ट पुं [दे] चोर, डाकू (दे १, १०१)।

उच्छडिअ वि [दे] चुराई हुई चीज, चोरी का माल (दे १, ११२)।

°उच्छण न [प्रच्छन] प्रश्न, पूछना (गा ५००)।

उच्छण्ण देखो **उच्छन्न** (हे १, ११४)।

उच्छत न [अपच्छत्र] १ अपने दोष को ढकने का व्यर्थ प्रयत्न, गुजराती में 'ढांकपिछोडो'। २ मृषावाद, झूठ वचन (पण्ह १, २)।

उच्छन्न वि [उत्सन्न] छिन्न, खण्डित, नष्ट (कुमा; सुपा ३८४)।

उच्छप्प सक [उत्+सर्पय्] उन्नत करना, प्रभावित करना। उच्छप्पइ (सुपा ३५२)। वकृ. **उच्छप्पंत** (सुपा २९६)।

उच्छप्पण न [उत्सर्पण] उन्नति, अभ्युदय (सुपा २७१)।

उच्छप्पणा स्त्री [उत्सर्पणा] ऊपर देखो, 'जिणपवयणम्मि उच्छप्पणाउ कारेइ विविहाम्रो' (सुपा २०६; ६४९)।

उच्छल अक [उत्+शल्] १ उछलना, ऊँचा जाना। २ कूदना। ३ पसरना, फैलना। वकृ. **उच्छलंत** (कप्प; गउड)।

उच्छलण न [उच्छलन] उछलना (दे १, ११८; ६, ११५)।

उच्छलिअ वि [उच्छलित] उछला हुआ, ऊँचा गया हुआ (गा ११७; ६२४; गउड)। २ प्रसृत, फैला हुआ; 'ता ताण वरगंधो। उच्छालयो छलिउं पिव गधं गोसीसचंदणवणस्स' (सुपा ३८५)।

उच्छलिर वि [उच्छलितृ] उछलनेवाला (धर्मवि १४; कुप्र ३७३)।

उच्छल्ल देखो **उच्छल**। उच्छल्लइ (पि ३२७); 'उच्छल्लंति समुद्दा' (हे ४, ३२६)।

उच्छल्ल वि [उच्छल] उछलनेवाला (भवि)।

उच्छल्लणा स्त्री [दे] अपवर्त्तना, अपप्रेरणा; 'कप्पडप्पहारनिद्दयआरक्खियखरफरुसवयणतज्जणगलच्छल्लुच्छल्लणाहि विमणा चारगवसहि पवेसिया' (पण्ह १, ३)।

उच्छल्लिअ देखो **उच्छलिअ** (भवि)।

उच्छल्लिअ वि [दे] जिसकी छाल काटी गई हो वह, 'तरुणो उच्छल्लिआ य दंतीहिं' (दे १, १११)।

उच्छव देखो **उच्छअ** (कुमा)। २ उत्सेक (भवि)।

उच्छविअ न [दे] शय्या, बिछौना (दे १, १०३)।

उच्छह सक [उत्+सह्] उद्यम करना। वकृ. **उच्छहं** (दस ९, ३, ६)।

उच्छह अक [उत्+सह्] उत्साहित होना। वकृ. **उच्छहंत** (भवि)।

उच्छहिय वि [उत्सहित] उत्साह-युक्त (सण)।

उच्छाइअ वि [अवच्छादित] आच्छादित, ढका हुआ (पउम ६१, ४२; सुर ३, ७१)।

उच्छाडिअ (अप) वि [अवच्छादित] ढका हुआ (भवि)।

उच्छाण देखो **उच्छ** = उक्षन् (प्रामा)।

उच्छाय पुं [उच्छ्राय] उत्सेध, ऊँचाई (ठा ७)।

उच्छाय सक [अव + छादय्] आच्छादन करना, ढकना। संकृ. **उच्छाइऊण** (चेइय ४८५)।

उच्छायण वि [अवच्छादन] आच्छादक, ढकनेवाला (स ३२३)।

उच्छायण वि [उच्छादन] नाशक (स ३२३; ५६३)।

उच्छायणया } स्त्री [उच्छादना] १ उच्छेद, **उच्छायणा** } विनाश (भग १५)। २ व्यवच्छेद, व्यावृत्ति (राज)।

उच्छार देखो **उत्थार**=आ + क्रम् (हे ४, १६० टी)।

उच्छाल सक [उत् + शालय्] उछालना, ऊँचा फेंकना। वकृ. **उच्छालिंत** (कुम्मा ४)।

उच्छालण न [उच्छालन] उछालना, उत्क्षेपण (कुम्मा ५)।

उच्छालिअ वि [उच्छालित] फेंका हुआ, उत्क्षिप्त (सुपा ६७)।

उच्छास देखो **ऊसास** (मै ६८)।

उच्छाह सक [उत् + साहय्] उत्साह दिलाना, उत्तेजित करना। **उच्छाहइ** (सुपा ३५२)।

उच्छाह पुं [उत्साह] १ उत्साह (ठा २,१)। २ दृढ़ उद्यम, स्थिर प्रयत्न (सुज २०)। ३ उत्कंठा, उत्सुकता (चंद २०)। ४ पराक्रम, बल। ५ सामर्थ्य, शक्ति (आचू १; हे १, ११४; २, ४८; पउम २०, ११८)।

उच्छाह पुं [दे] सूत का डोरा (दे १,६२)।

उच्छाहण न [उत्साहन] उत्तेजन, प्रोत्साहन (उप ५६७ टी)।

उच्छाहिय वि [उत्साहित] प्रोत्साहित, उत्तेजित (पिंड)।

उच्छिंद सक [उत् + छिद्] उन्मूलन करना, उखाड़ना। संकृ. **उच्छिंदिअ** (सूत्र ४४)।

उच्छिंदण न [दे] उधार लेना, करजा लेना, सूद पर लेना (पिंड ३१७)।

उच्छिंपग वि [अवच्छिम्पक] चोरों को खान-पान वगैरह की सहायता देनेवाला (पण्ह १, ३)।

उच्छिंपण न [उत्क्षेपण] १ ऊपर फेंकना। २ बाहर निकालना (पण्ह १, १)।

उच्छिट्ठ वि [उच्छिष्ट] जूठा, उच्छिष्ट (सुपा ११७; ३७५; प्रासू १५८)।

उच्छिट्ठ वि [उच्छिष्ट] अशिष्ट, असभ्य (दस ३, १ टी)।

उच्छिण्ण वि [उच्छिन्न] उच्छिन्न, उन्मूलित (ठा ५)।

उच्छित्त वि [दे] १ उत्क्षिप्त, फेंका हुआ। २ विक्षिप्त, पागल (दे १, १२४)।

उच्छित्त वि [उत्क्षिप्त] फेंका हुआ (से ५, ६१; पाअ)।

उच्छित्त देखो **उव्विग्ग** (से २, १५; गउड)।

उच्छित्त वि [उत्सिक्त] सींचा हुआ, सिक्त (दे १, १२३)।

उच्छिन्न देखो **उच्छिण्ण** (कप्प)।

उच्छिप्पंत देखो **उक्खिव**।

उच्छिय वि [उच्छ्रित] उन्नत, ऊँचा (राज)।

उच्छिरण वि [दे] उच्छिष्ट, जूठा (षड्)।

उच्छिल्ल न [दे] १ छिद्र, विवर (दे १, ९५)। २ वि. अवजीर्ण (षड्)।

उच्छु देखो **इक्खु** (पाअ; गा ७४१; पि १७७; ओघ ७७१; दे १,११७)। °**जंत** न [°यंत्र] ईख पेरने का सांचा (दे ६, ५१)।

उच्छु पुं [दे] पवन, वायु (दे १, ८५)।

उच्छुअ वि [उत्सुक] उत्कण्ठित (हे २, २२)।

उच्छुअ न [दे] डरते-डरते की हुई चोरी (दे १, ९५)।

उच्छुअरण न [दे] ईख का खेत (दे १, ११७)।

उच्छुआर वि [दे] संछन्न, ढका हुआ (दे १, ११५)।

उच्छुंडिअ वि [दे] १ बाण वगैरह से आहत। २ अपहृत, छीना हुआ (दे १, १३५)।

उच्छुग देखो **उच्छुअ** (सुर ८,६१)। °**भूय** वि [°भूत] जो उत्कण्ठित हुआ हो (सुर २, २१४)।

उच्छुच्छु वि [दे] दृप्त, अभिमानी (दे १, ९६)।

उच्छुण्ण वि [उत्क्षुण्ण] १ खण्डित, तोड़ा हुआ, 'उच्छुण्णं मद्दिअं च निद्दलिअं' (पाअ)। २ आक्रान्त, 'रइणावि अणुच्छुण्णा, वीसत्थं मारुएण वि अणालिद्धा। तिअसेहिंवि परिहरिआ, पवंगमेहिं मलिआ सुवेलुच्छंगा' (से १०, २)।

उच्छुद्ध वि [दे] १ विक्षिप्त। २ पतित (ओघ २२० भा)।

उच्छुभ सक [अप + क्षिप्] आक्रोश करना, गाली देना। **उच्छुभइ** (भग १५)।

उच्छुभण न [उत्क्षेपण] ऊँचा फेंकना (पव ७३ टी)।

उच्छुर वि [दे] अविनश्वर, स्थायी (दे १, ९०)।

उच्छुरण न [दे] १ ईख का खेत। २ ईख, ऊख (दे १, ११७)।

उच्छुल्ल पुं [दे] १ अनुवाद। २ खेद, उद्वेग (दे १, १३१)।

उच्छूढ वि [दे] आरूढ़, ऊपर बैठा हुआ (षड्)।

उच्छूढ वि [उत्क्षिप्त] १ त्यक्त, उज्झित (णाया १, १ उव)। २ मुषित, चुराया हुआ (राज)। ३ निष्कासित, बाहर निकाला हुआ (औप)।

उच्छूढ वि [उत्क्षुब्ध] ऊपर देखो; 'उच्छूढसरीरघरा अन्नो जीवो सरीरमन्नं ति' (उव पि ६६)।

उच्छूर देखो **उल्लूर** = तुड् (हे ४, ११६ टि)।

उच्छूल देखो **उच्चूल** (उव)।

उच्छेअ पुं [उच्छेद] १ नाश, उन्मूलन; 'एगंतुच्छेअम्मिवि सुहदुक्खविअप्पणमजुत्तं' (सम्म १८)। २ व्यवच्छेद, व्यावृत्ति; 'उच्छेओ सुत्तत्थाणं ववच्छेउत्ति वुत्तं भवति' (नीचू १)।

उच्छेयण न [उच्छेदन] विनाश, उन्मूलन; 'चिंतेइ एस समओ एयस्सुच्छेयणे मज्झ' (सुपा ३३५)।

उच्छेर अक [उत् + श्रि] १ ऊँचा होना, उन्नत होना। २ अधिक होना, अतिरिक्त होना। वकृ. **उच्छेरंत** (काप्र १९४)।

उच्छेव पुं [उत्क्षेप] १ ऊँचा करना, उठाना। २ फेंकना (वव २, ४)।

उच्छेव पुं [उत्क्षेप] प्रक्षेप (वव ४)।

उच्छेवण न [उत्क्षेपण] ऊपर देखो (से ६, २४)।

उच्छेवण न [दे] घृत, घी (दे १, ११६)।

उच्छेह पुं [उत्सेध] ऊँचाई (दे १, १३०)।

उच्छोडिय वि [उच्छोटित] छुड़ाया हुआ, मुक्त किया हुआ; 'उच्छोडिय-बंधो सो रन्ना भणिओ य भद्द! उवविससु' (सुर १, १०५); 'पासट्ठियपुरिसेहिं तक्खणमुच्छोडिया य से बंधा' (सुर २, ३६)।

उच्छोभ वि [उच्छोभ] १ शोभा-रहित। २ न. पिशुनता, चुगली (राज)।

उच्छोल सक [उत्+मूलय्] उन्मूलन करना, उखाड़ना। वकृ. **उच्छोलंत** (राज)।

उच्छोल सक [उत्+क्षालय्] प्रक्षालन करना, धोना। वकृ. **उच्छोलंत** (निचू १७)। प्रयो., वकृ. **उच्छोलावंत** (निचू १६)।

उच्छोलण न [उत्क्षालन] प्रभूत जल से प्रक्षालन, 'उच्छोलणं च कक्कं च तं विज्जं परियाणिया' (सूअ १, ६; औप)।

उच्छोलणा स्त्री [उत्क्षालना] प्रक्षालन (दस ४)।

उच्छोला स्त्री [दे] प्रभूत जल, 'नहदंतकेसरोमे जमेइ उच्छोलधोयणो अजओ' (उव)।

उच्छोलित्तु वि [उत्क्षालयितृ] डुबोनेवाला, निमग्न करनेवाला (सूअ २, २, १८)।

उजु देखो उज्जु (आचा; कप्प)।

उजुअ देखो उज्जुअ (नाट)।

उज्ज देखो ओय = ओजस् (कप्प)।

उज्ज न [ऊर्ज] १ तेज, प्रताप। २ बल (कप्प)।

उज्जअणी } स्त्री [उज्जयनी, °यिनि]
उज्जइणी } नगरी-विशेष, मालव देश की प्राचीन राजधानी, आजकल भी यह 'उज्जैन' नाम से प्रसिद्ध है (चारु ३९; पि ३८६)।

उज्जंगल न [दे] बलात्कार, जबरदस्ती। २ वि. दीर्घ, लम्बा (दे १, १३५)।

उज्जगरय पुं [उज्जागरक] १ जागरण, निद्रा का अभाव;

'जत्थ न उज्जगरओ,
जत्थ न ईसा विसूरणं माणं।
सब्भावचाडुयं जत्थ,
नत्थि नेहो तहिं नत्थि'
(वज्जा ६८)।

उज्जग्गिर न [उज्जागर] जागरण, निद्रा का अभाव (दे १; ११७; वज्जा ७४)।

उज्जग्गुज्ज वि [दे] स्वच्छ, निर्मल (दे १ ११३)।

उज्जड वि [दे] उजाड़, वसति-रहित (दे १, ९६);

'उक्किरणारयभरोणयत-
लजज्जरभूविसट्टबिलविसमा
थोउज्जडक्कविडंवा इमाओ
ता उन्दरथलीओ' (गउड)।

उज्जणिअ वि [दे] वक्र, टेढ़ा (दे १; १११)।

उज्जम अक [उद्+यम्] उद्यम करना, प्रयत्न करना। उज्जमइ (धम्म १४)। उज्जमह (उव)। वकृ. **उज्जमंत, उज्जममाण** (पराह १, ३); 'ण करेइ दुक्खमोक्खं उज्जममाणावि संजमतवेसु' (सूअ १, १३)। कृ. **उज्जमिअव्व, उज्जमेयव्व** (सुर १४, ८३; सुपा २८७; २२४)। हेकृ. **उज्जमिउं** (उव)।

उज्जम पुं [उद्यम] उद्योग, प्रयत्न (उव; जी ५०; प्रासू ११५)।

उज्जमण (अप) न [उद्यापन] उद्यापन, व्रत-समाप्ति-कार्य (भवि)।

उज्जमि वि [उद्यमिन्] उद्योगी (कुप्र ४१६)।

उज्जमिय (अप) वि [उद्यापित] समापित (व्रत) (भवि)।

उज्जम्ह अक [उत्+जृम्भ्] जोर से जँभाई लेना। उज्जम्हइ (प्राकृ ६४)।

उज्जय हि [उद्यत] उद्योगी, उद्युक्त, प्रयत्न-शील (पाअ; काप्र १६६; गा ४४८)। **°मरण** न [°मरण] मरण-विशेष (आचा)।

उज्जयंत पुं [उज्जयन्त] गिरनार पर्वत, 'इय उज्जयंतकप्पं, अवियप्पं जो करेइ जिणभत्तो' (ती; विवे १८); 'ता उज्जयंतसत्तंजएसु तित्थेसु दोसुवि जिणिंदे' (मुणि १०९७५)।

उज्जर वि [दे] १ मध्य-गत, भीतर का। २ पुं. निर्जरण, क्षय (तंदु ४१)।

उज्जल अक [उद्+ज्वल्] १ जलना। २ प्रकाशित होना, चमकना। उज्जलंति (विक्र ११४)। वकृ. **उज्जलंत** (णंदि)।

उज्जल वि [उज्ज्वल] १ निर्मल, स्वच्छ (भग ७, ८; कुमा)। २ दीप्त, चमकीला (कप्प; कुमा)।

उज्जल वि [दे] देखो उज्जल्ल (हे २, १७४ टि)।

उज्जलग वि [उज्ज्वलन] चमकीला, देदीप्यमान; 'जालुज्जलणगअंबरंव कत्थइ पयंतं अइवेगचंचलं सिहिं' (कप्प)।

उज्जलिअ पुं [उज्ज्वलित] तीसरी नरक-भूमि का सातवाँ नरकेन्द्रक—नरक-स्थान विशेष (देवेन्द्र ८)।

उज्जलिअ वि [उज्ज्वलित] १ उद्दीप्त, प्रकाशित (पउम ११८, ८८; औप)। २ ऊँची ज्वालाओं से युक्त (जीव ३)। ३ न. उद्दीपन (राज)।

उज्जल्ल वि [दे] स्वेद-सहित, पसीनावाला, मलिन; 'मुंडा कंडूविणट्ठंगा उज्जल्ला असमाहिया' (सूअ १, ३)। २ बलवान, बलिष्ठ (हे २, १७४)।

उज्जल्ल न [औज्ज्वल्य] उज्ज्वलता (गा ९२९)।

उज्जल्ला स्त्री [दे] बलात्कार, जबरदस्ती (दे १, ९७)।

उज्जव अक [उद्+यत्] प्रयत्न करना। वकृ. 'सुट्ठुवि उज्जवमाणं पंचेव करंति रित्तयं समणं' (उव)।

उज्जवण देखो उज्जावण (भवि)।

उज्जह सक [उद्+हा] प्रेरणा करना। संकृ. **उज्जहित्ता** (उत्त २७, ७)।

उज्जाअर } पुं [उज्जागर] जागरण, निद्रा
उज्जागर } का अभाव (गा ४८२; वज्जा ७६)।

उज्जाडिअ वि [दे] उजाड़ किया हुआ (भवि)।

उज्जाण न [उद्यान] उद्यान, बगीचा, उपवन (अणु; कुमा)। **°जत्ता** स्त्री [°यात्रा] गोष्ठी, गोठ (णाया १, १)। **°पालअ, °वाल** वि [°पालक, °पाल] बगीचा का रक्षक, माली (सुपा २०८; ३०५)।

उज्जाणिअ वि [औद्यानिक] उद्यान-संबंधी, बगीचा का (भग १४, १)।

उज्जाणिअ वि [दे] निम्नीकृत, नीचा किया हुआ (दे १, ११३)।

उज्जाणिआ } स्त्री [औद्यानिका] गोष्ठी,
उज्जाणिगा } गोठ; 'उज्जाणं जत्थ लोगो उज्जाणिमाए वच्चइ' (निचू ८; स १५१)।

उज्जाणी स्त्री [औद्यानी] गोष्ठी, गोठ (सुपा ४८५)।

उज्जायण न [उद्यायन] गोत्र-विशेष (सुज्ज १०, १ टी)।

उज्जाल सक [उत् + ज्वालय्] उज्ज्वल करना, विशेष निर्मल करना। संकृ. उज्जालियं (श्रावक ३७६)।

उज्जाल सक [उद् + ज्वालय्] १ उजाला करना। २ जलाना। संकृ. **उज्जालिय, उज्जालित्ता** (दस ५; आचा)।

उज्जालण न [उज्ज्वालन] जलाना (दस ५)।

उज्जालण न [उज्ज्वालन] उज्ज्वल करना (सिरि ६८०)।

उज्जालय वि [उज्ज्वालक] आग सुलगानेवाला (सूत्र १, ७, ५)।

उज्जालिअ वि [उज्ज्वालित] जलाया हुआ, सुलगाया हुआ (सुर ६, ११७)।

उज्जावण न [उद्यापन] व्रत का समाप्ति-कार्य (प्रासू)।

उज्जाविय वि [दे] विकासित (सरण)।

उज्जिंत देखो **उज्जयंत** (णाया १, १६);

'उज्जिंतसेलसिहरे, दिक्खा
णाणं निसीहिआ जस्स।
तं धम्मचक्कवट्टिं,
अरिट्ठनेमिं नमंसामि' (पडि)।

उज्जीरिअ वि [दे] निर्भर्त्सित, अपमानित, तिरस्कृत (दे १, ११२)।

उज्जीवण न [उज्जीवन] १ पुनर्जीवन, जिलाना; 'तस्सपभावो एसो कुमरस्सुज्जीवणे जाओ' (सुपा ५०४)। २ उद्दीपन (सण)।

उज्जीविय वि [उज्जीवित] पुनर्जीवित, जिलाया हुआ (सुपा २७०)।

उज्जु वि [ऋजु] सरल, निष्कपट, सीधा (औप; आचा)। °**कड** वि [°कृत] १ निष्कपट तपस्वी (आचा; उत्त)। °**कड** वि [°कृत्] माया-रहित आचरणवाला (आचा)। °**जड**, °**जड्ड** वि [°जड] सरल किन्तु मूर्ख, तात्पर्य को नहीं समझनेवाला (पंचा १६; उत्त २६)। °**मइ** स्त्री [°मति] १ मनःपर्यव ज्ञान का एक भेद, सामान्य मनोज्ञान, सामान्य रीति से दूसरों के मनोभाव को जानना। २ वि. उक्त मनो-ज्ञानवाला (परह २, १; औप)। °**वालिया** स्त्री [°वालिका] नदी-विशेष, जिसके किनारे भगवान् महावीर को केवल-ज्ञान उत्पन्न हुआ था (कप्प; स ४३२)। °**सुत्त** पुं [°सूत्र] वर्तमान वस्तु को ही माननेवाला नय-विशेष (ठा ७)। °**सुय** पुं [°श्रुत] देखो पूर्वोक्त अर्थ; 'पच्चुप्पन्नग्गाही उज्जुसुओ णयविही मुणेअव्वो' (अणु)। °**हत्थ** पुं [°हस्त] दाहिना हाथ (ओघ ५११)।

उज्जु पुं [ऋजु] संयम (सूत्र १, १३, ७)।

उज्जुअ वि [ऋजुक] ऊपर देखो (आचा; कुमा; गा १५६; ३५२)।

उज्जुआइअ वि [ऋजुकारित] सरल किया हुआ (से १३; २०)।

उज्जुग देखो **उज्जुअ** (पि ५७)।

उज्जुत्त वि [उद्युक्त] उद्यमी, प्रयत्नशील (सुर ४, १५; पाअ)।

उज्जुरिअ वि [दे] १ क्षीण, नष्ट। २ शुष्क, सूखा (दे १, ११२)।

उज्जूढ वि [उद्व्यूढ] धारण किया हुआ (संबोध ५३)।

उज्जेणग पुं [उज्जयनक] श्रावक-विशेष, एक उपासक का नाम (आचू ४)।

उज्जेणी देखो **उज्जइणी** (महा; काप्र ३३३)।

उज्जोअ सक [उद् + द्योतय्] प्रकाश करना, उद्योत करना। उज्जोएइ (महा)। वकृ. **उज्जोयंत, उज्जोइंत, उज्जोयमाण, उज्जोएमाण** (णाया १, १; सुपा ४७; सुर ८, ८७; सुपा २४२; जीव ३)।

उज्जोअ पुं [उद्योग] प्रयत्न, उद्यम (पउम ३, १२६; सूक्त ३६ पुप्फ २८; २६)।

उज्जोअ पुं [उद्द्योत] १ प्रकाश, उजेला। °**गर** वि [°कर] प्रकाशक; 'लोगस्स उज्जोअगरे, धम्मतित्थयरे जिणे' (पडि; पाअ; हे १, १७७)। २ उद्द्योत का कारण-भूत कर्म-विशेष (सम ६७; कम्म १)। °**त्थ** न [°स्त्र] शस्त्र-विशेष (पउम १२, १२८)।

उज्जोअग वि [उद्द्योतक] प्रकाशक, 'सव्वजगुज्जयोगस्स' (णंदि)।

उज्जोअण न [उद्द्योतन] १ प्रकाशन, अवभासन। २ वि. प्रकाश करनेवाला (उप ७२८ टी)। ३ पुं. सूर्य, रवि। ४ एक प्रसिद्ध जैनाचार्य (गु ७; सार्ध ६२)।

उज्जोअय वि [उद्द्योतक] १ प्रकाशक। २ प्रभावक, उन्नति करनेवाला (उर ८, १२)।

उज्जोइंत देखो **उज्जोअ** = उद् + द्योतय्।

उज्जोइय वि [उद्द्योतित] प्रकाशित (सम १५३; सुपा २०५)।

उज्जोएमाण देखो **उज्जोअ** = उद् + द्योतय्।

उज्जोमिआ स्त्री [दे] रश्मि, रस्सी (दे १, ११५)।

उज्जोव देखो **उज्जोअ** = उद् + द्योतय्। वकृ. **उज्जोवंत, उज्जोवयंत, उज्जोवेंत, उज्जोवेमाण** (पउम २१, १५; स २०७; ६३१; ठा ८)।

उज्जोवण न [उद्द्योतन] प्रकाशन (स ६३१)।

उज्जोविय देखो **उज्जोइय** (कप्प; णाया १, १; परह १, ४; पउम , १६०; स ३६)।

उज्झ सक [उज्झ्] त्याग करना, छोड़ देना। उज्झइ (महा)। कवकृ. **उज्झिज्जमाण** (उप २११ टी)। संकृ. **उज्झिअ, उज्झिउं, उज्झिऊण** (अभि ६०; पि ५७६; राज)। हेकृ. **उज्झित्तए** (णाया १, ८)। कृ. **उज्झियव्व** (उप ५६७ टी)।

उज्झ पुं [उज्झ, उद्ध्य] उपाध्याय, पाठक (विसे ३१६८)।

उज्झअ } वि [उज्झक] त्याग करनेवाला,
उज्झग } छोड़नेवाला (सूत्र १, ३; उप १७६ टी)।

उज्झण न [उज्झन] परित्याग (उप १७६; पृ ४०३; पउम १, ६०; औप)।

उज्झणया } स्त्री [उज्झना] परित्याग (उप
उज्झणा } ५६३; आव ४)।

उज्झणिअ वि [दे] विक्रीत, बेचा हुआ। २ निम्नीकृत, नीचा किया हुआ (षड्)।

उज्झमण न [दे] पलायन, भागना (दे १, १०३)।

उज्झमाण वि [दे] पलायित, भागा हुआ (षड्)।

उज्झर पुं [निर्झर] पर्वत से गिरनेवाला जल-प्रवाह, पहाड़ का झरना (णाया १, १; गउड; गा ६३६)। °**वण्णी** स्त्री [°पर्णी] उदक-पात, जल-प्रपात (निचू ५)।

उज्झरिअ वि [दे] टेढ़ी नजर से देखा हुआ। २ विक्षिप्त। ३ क्षिप्त, फेंका हुआ। ४ परित्यक्त, उज्झित (दे १, १३३)।

उज्झल वि [दे] प्रबल, बलिष्ठ (षड्)।

उज्झलिअ वि [दे] १ प्रक्षिप्त, फेंका हुआ। २ विक्षिप्त (षड्)।

उज्झस पुं [दे] उद्यम, उद्योग, प्रयत्न (दे १, ९५)।

उज्झसिअ वि [दे] उत्कृष्ट, उत्तम (षड्)।

°उज्झा देखो **अउज्झा** (उप पृ ३७४)।

उज्झाय पुं [उपाध्याय] विद्या-दाता गुरु, शिक्षक, पाठक (महा; सुर १, १८०)।

उज्झासि त्रि [उद्भासिन्] चमकनेवाला, देदीप्यमान, 'कंकणुज्झासिहत्था' (रंभा)।

उज्झिंखिअ न [दे] १ वचनीय, लोकापवाद। २ त्रि. निन्दनीय। ३ कथनीय (दे ३, ५५)।

उज्झिय त्रि [उज्झित] १ परित्यक्त, विमुक्त (कुमा)। २ भिन्न (आव ४)। ३ न. परित्याग (अणु)। **°य** पुं [°क] एक सार्थवाह का पुत्र (विपा १, २)।

उज्झिय त्रि [दे] १ शुष्क, सूखा हुआ। २ निम्नीकृत, नीचा किया हुआ (षड्)।

उज्झिया स्त्री [उज्झिता] एक सार्थवाह-पत्नी (णाया १, ७)।

उट्ट पुंस्त्री [उष्ट्र] ऊँट, करभ (विपा १, ६; हे २, ३४; उवा)। स्त्री. **उट्टी** (राज)।

उट्टार पुं [अवतार] घाट, तीर्थ, जलाशय का तट;

'अह ते तुरउट्टारे बहुभडमयरे सुसत्थकमलवणे।
लीलायंति जहिच्छं समरतलाए कुमारगया'
(पउम ९८, ३०)।

उट्टिगा देखो **उट्टिया** (धर्मसं ७८)।

उट्टिय } वि [औष्ट्रिक] ऊँट सम्बन्धी। ऊँट
उट्टियय } के रोओं का बना हुआ (ठा ५, ३; ओघ ७०९)। ३ पुं. भृत्य, नौकर (कुमा)। ४ घड़ा, घट (उवा)।

उट्टिया स्त्री [उष्ट्रिका] घड़ा, घट, कुम्भ (विपा १, ६; उवा)। **°समण** पुं [°श्रमण] आजीविक-मत का साधु, जो बड़े घड़े में बैठ कर तपस्या करता है (औप)।

उट्ठ अक [उत् + स्था] उठना, खड़ा होना। उट्ठइ (हे ४, १७; महा)। उट्ठेइ (पि ३०९)। वकृ. **उट्ठंत** (गा ३८२; सुपा २९९), **उट्ठिंत** (सुर ८, ४३; १३, ५३)। संकृ. **उट्ठाय, उट्ठित्तु, उट्ठित्ता, उट्ठेत्ता** (राज; आचा; पि ५८२)। हेकृ. **उट्ठिउं** (उप पृ २५८)।

उट्ठ वि [उत्थ] उत्थित, उठा हुआ (ओघ ७० उवा)। **°बइस** अप [°ोपवेश] उठ-बैठ (हे ४, ४२३)।

उट्ठ पुं [ओष्ठ] ओठ, अधर (सम १२५; सुपा ५२३)।

उट्ठ पुं [उष्ट्र] जलचर जंतु-विशेष (सूअ १, ७, १५)।

उट्ठण देखो उट्ठाण (धर्मवि १३०)।

उट्ठंभ सक [अव + स्तभ्] १ आलम्बन देना, सहारा देना। २ आक्रमण करना कर्म. उट्ठब्भइ (हे ४, ३६५)। संकृ. '**उट्ठंभिया** एगया कायं' (आचा १, ९, ३, ११)।

उट्ठवण न [उत्थापन] उत्थापन, ऊँचा करना, उठाना (ओघ २१४; दे १, ८२)।

उट्ठविय वि [उत्थापित] उत्पाटित, उठाया हुआ, खड़ा किया हुआ; 'सा सणियं उट्ठविया भणइ किमागमणकारणं सुणहे' (सुर ६, १६०)।

उट्ठा देखो **उट्ठ** = उत् + स्था (प्रामा)।

उट्ठा स्त्री [उत्था] उत्थान, उठान; 'उट्ठाए उट्ठेइ' (णाया १, १; औप)।

उट्ठाइ वि [उत्थाइन्] उठनेवाला (आचा)।

उट्ठाइअ वि [उत्थित] १ जो तैयार हुआ हो, प्रगुण (पउम १२, ९६)। २ उत्पन्न, उत्थित (स ३७९)।

उट्ठाइअ देखो **उट्ठाविअ** (उवा)।

उट्ठाण न [उत्थान] १ उठान, ऊँचा होना (उव); 'मअसलिलेहिं घडासु अ वोच्छिज्जइ पसरिअं महिरउट्ठाणं' (से १३, ३७)। २ उद्भव, उत्पत्ति (णाया १, १४)। ३ आरम्भ, प्रारम्भ (भग १५)। ४ उद्वसन, बाहर निकलना (णंदि)। **°सुय** न [°श्रुत] शास्त्र-विशेष (णंदि)।

उट्ठाय देखो **उट्ठ** = उत् + स्था।

उट्ठाव सक [उत् + स्थापय्] उठाना। उट्ठावेइ (महा)।

उट्ठावण देखो **उट्ठवण** (कस)।

उट्ठावण देखो **उवट्ठावण**; 'पव्वावणविहिमुट्ठावणं च अज्जाविहिं निरवसेसं' (उव)।

उट्ठावणा देखो **उवट्ठावणा** (भत्त २५)।

उट्ठाविअ वि [उत्थापित] १ उठाया हुआ, खड़ा किया हुआ (नाट)। २ उत्पातित; 'तुमए उट्ठाविओ कली एस' (उप ६४८ टी)।

उट्ठिउं }
उट्ठिंत }
उट्ठित्ता } देखो **उट्ठ** = उत् + स्था।
उट्ठित्तु }

उट्ठिय वि [उत्थित] उत्थित, खड़ा हुआ (सुर ३, ९९)। २ उत्पन्न, उद्भूत (पण्ह १, ३); 'विहीसिया कावि उट्ठिया एसा' (सुपा ५४१)। ३ उदित, उदय-प्राप्त; 'उट्ठियम्मि सूरे' (अणु)। उद्यत, उद्युक्त (आचा)। ५ उद्वसित, बाहर निकला हुआ (ओघ ६५ भा)।

उट्ठिर वि [उत्थातृ] उठनेवाला (सण)।

उट्ठिसिय वि [उद्घुषित] पुलकित, रोमाञ्चित (ओघ; कुमा)।

उट्ठीअ (अप) देखो **उट्ठिय** (पिंग)।

उट्ठुभ } अक [अव + ष्ठीव्] थूकना।
उट्ठुह } उट्ठुभंति, उट्ठुभइ (पि १२०), उट्ठुहइ (भग १५)। संकृ. **उट्ठुहइत्ता** (भग १५)।

उठिअ (अप) देखो **उट्ठिय** (पिंग—पत्र ५८१)।

°उड पुंन [कुट] घट, कुम्भ;

'पडिवक्खमण्णुपुंजे लावण्णउडे अणंगगअकुंभे।
पुरिससअहिअअधरिए कीस थणंती थणे वहसि'
(गा २६०)

°उड पुं [कूट] समूह, राशि; 'सप्पी जहा अंडउडं भत्तारं जो विहिंसइ' (सम ५१)।

°उड देखो **पुड** (उवा; महा; गउड; गा ६६०; सुर २, १३; प्रासू ३९)।

उडंक पुं [उटङ्क] एक ऋषि, तापस-विशेष (निचू १२)।

उडंब वि [दे] लिप्त, लिपा हुआ (षड्)।

उडज }
उडय } पुं [उटज] ऋषि-आश्रम, पर्णशाला, पत्तों से बना हुआ घर (अभि १११; प्रति ८४; अभि ३७; स १०); 'उडवो तावसगेहं' (पाअ);
उडव }

'जमहं दिया य राओ य, हुणामि महुसप्पिसं। तेण मे उडओ दड्ढो, जायं सरणओ भयं' (निचू १)।

उडाहिअ वि [दे] उत्क्षिप्त, फेंका हुआ (षड्)।

उडिअ वि [दे] अन्विष्ट, खोजा हुआ (षड्)।

उडिउ पुं [दे] उड़िद, उरद, माष, धान्य-विशेष (दे १, ९८)।

उडु पुं [उडु] एक देव-विमान (देवेन्द्र १३१)। °**प्पभ** पुंन [°प्रभ] उडु नामक विमान के पूर्व तरफ स्थित एक देव-विमान (देवेन्द्र १३८)। °**मज्झ** पुंन [°मध्य] उडुविमान के दक्षिण तरफ का एक देव-विमान (देवेन्द्र १३८)। °**यावत्त** पुंन [°कावर्त] उडुविमान के पश्चिम तरफ का एक देव-विमान (देवेन्द्र १३८)। °**सिट्ठ** पुंन [°सृष्ट] उडुविमान के उत्तर तरफ का एक देव-विमान (देवेन्द्र १३८)।

उडु न [उडु] १ नक्षत्र (पाअ)। २ विमान-विशेष (सम ६९)। °**प**, °**व** पुं [°प] १ चन्द्र, चन्द्रमा (औप; सुर १६, २४९)। २ जहाज, नौका (दे १, १२२)। ३ एक की संख्या (सुर १६, २४९)। °**वइ** पुं [°पति] चन्द्र (सम ३०; पण्ह १, ४)। °**वर** पुं [°वर] सूर्य (राज)।

उडु देखो उउ (ठा २, ४; ओघ १२३ भा)।

उडुंबरिज्जिया स्त्री [उदुम्बरीया] जैन मुनियों की एक शाखा (कप्प)।

उडुहिअ न [दे] १ विवाहिता स्त्री का कोप। २ वि. उच्छिष्ट, जूठा (दे १, १३७)।

उडूखल } **उडूहल** } पुंन [उडूखल] उलूखल, उदूखल (पिंड ३६१; प्राकृ ७)।

उड्ड पुं [उड्र] १ देश-विशेष, उत्कल, ओड़, ओड़ नामों से प्रसिद्ध देश, जिसको आजकल उड़ीसा कहते हैं (स २८६)। २ इस देश का निवासी, उड़िया; 'सगजवण-बब्बर-गाय मुरुं-डोड्ड-भडग—' (पण्ह १, १)।

उड्ड त्रि [दे] कुंआ आदि को खोदनेवाला, खनक (दे १, ८५)।

उड्डण पुं [दे] १ बैल, साँड़। २ वि. दीर्घ, लम्बा (दे १, १२३)।

उड्डंस देखो **उद्दंस** (उत्त ३६, १३८)।

उड्डस पुं [दे] खटमल, खटकीरा, उड़िस (दे १, ९६)।

उड्डहण पुं [दे] चोर, डाकू (दे १, ९१)।

उड्डाअ पुं [दे] उद्गम, उदय, उद्भव (दे १, ९१)।

उड्डाण न [उड्डयन] उड़ान, उड़ना; 'मोरोवि अहव घिप्पइ, हंत तइजम्मि उड्डाणे' (सुर ८, ५२)।

उड्डाण पुं [दे] १ प्रतिशब्द, प्रतिध्वनि। २ कुरर, पक्षि-विशेष। ३ विष्ठा, पुरीष। ४ मनोरथ, अभिलाष। ५ वि. गर्विष्ठ, अभिमानी (दे १, १२८)।

उड्डामर वि [उड्डामर] उद्भट, प्रबल (कुप्र १४५)।

उड्डामर वि [उड्डामर] १ भय, भीति। २ आडम्बरवाला, टीपटापवाला (पाअ)।

उड्डामरिअ वि [उड्डामरित] भय-भीत किया हुआ (कप्पू)।

उड्डाव सक [उद् + डायय्] उड़ाना। उड्डावइ (भवि)। वकृ. **उड्डावंत** (हे ४, ३५२)।

उड्डाव वि [उड्डायक] उड़ानेवाला (पिंड ४७१)।

उड्डावण न [उड्डायन] १ उड़ाना, 'मत्तजल-वायसुड्डावणेण जलकलुसणं किमिमं' (कुमा)। २ आकर्षण; 'हियउड्डावणे' (णाया १,१४)।

उड्डाविअ वि [उड्डायित] उड़ाया हुआ (गा ११०; पिंग)।

उड्डाविर वि [उड्डायितृ] उड़ानेवाला (वज्जा ६४)।

उड्डास पुं [दे] संताप, परिताप (दे १,९६)।

उड्डाह पुं [उद्दाह] १ भयङ्कर दाह, जला देना (उप २०८)। २ मालिन्य, निन्दा, उप-घात (ओघ २२१)।

उड्डिअ वि [औड्र] उड़ीसा देश का निवासी (नाट)।

उड्डिअ वि [दे] उत्क्षिप्त, फेंका हुआ (षड्)।

उड्डिअंत देखो **उड्डी** = उत् + डी।

उड्डिआहरण न [दे] छुरी पर रक्खे हुए फूल को पाँव की दो उँगलियों से लेते हुए चल जाना; 'छुरिअग्गमुक्कपुप्फं घेत्तुअ पायंगुलीहि उप्पयणं। तं उड्डिआहरणं' 'कुसुमं यत्रोड्डीय, क्षुरिकाग्राल्लाघवेन संगृह्य। पादाङ्गुलिभिर्गच्छति, तद्विज्ञातव्यमुड्डिआहरणं' (दे १, १२१)।

उड्डिय वि [उड्डीन] उड़ा हुआ; 'तरुउड्डिय-पक्खिणव्व पगे' (धर्मवि १३९)।

उड्डिहिअ वि [दे] ऊपर फेंका हुआ (पाअ)।

उड्डी अक [उद् + डी] उड़ना। उड्डेइ, उड्डिंति (पि ४७४)। वकृ. **उड्डिअंत**, **उड्डेंत** (दे ६, ६४; उप १०३१ टी)। संकृ. **उड्डेऊण**, **उड्डेवि** (पि ५८६; भवि)।

उड्डी स्त्री [औड्री] लिपि-विशेष, उत्कल देश की लिपि (विसे ४६४ टी)।

उड्डीण वि [उड्डीन] उड़ा हुआ (णाया १, १; पाअ; सुपा ४६४)।

उड्डुअ पुं [दे] डकार, उद्गार; 'जंभाइएणं उड्डुएणं वायनिसग्गेणं' (पडि)।

उड्डुइय } **उड्डोअ** } पुं [दे] देखो **उड्डुअ** (चेइय ४३४; ४३७)।

उड्डुवाडिय पुं [उड्डुवाटिक] भगवान् महावीर के एक गण का नाम (कप्प)। देखो **उद्दवाइअ**।

उड्डुहिअ देखो **उडुहिअ** (दे १, १३७)।

उड्डोय देखो **उड्डुअ** (राज)।

उड्ढ न [ऊर्ध्व] १ ऊपर, ऊँचा (अणु)। २ वमन, उलटी; 'उड्ढणिरोहो कुट्ठं' (बृह ३)। ३ वि. उत्तम, मुख्य; 'अहत्ताए नो उड्ढत्ताए परिणमंति' (भग ६, ३; श्रावम)। ४ खड़ा, दण्डायमान; 'खाणुव्व उड्ढदेहो काउस्सग्गं तु ठाइज्जा' (आव ६)। ५ ऊपर का, उपरितन (उवा)। °**कंडूयग** पुं [°कण्डूयक] तापसों का एक सम्प्रदाय जो नाभि के ऊपर भाग में ही खुजलाते हैं (भग ११, ९)। °**काय** पुं [°काय] शरीर का उपरितन भाग (राज)। °**काय** पुं [°काक] काक, वायस; 'ते उड्ढ-काएहि पखज्जमाणा अवरेहिं खज्जंति सणप्फ-एहिं' (सूअ १,५,२,७)। °**गम** वि [°गम] ऊपर जानेवाला (सुपा ४५९)। °**गामि** वि [°गामिन्] ऊपर जानेवाला (सम १५३)। °**चर** वि [°चर] ऊपर चलनेवाला, आकाश में उड़नेवाला (गृध्रादि) (आचा)। °**दिसा** स्त्री [°दिश्] ऊर्ध्व दिशा (उवा; आव ६)। °**रेणु** पुं [°रेणु] परिमाण-विशेष, आठ

श्लक्ष्णश्लक्ष्णिका (इक)। **°लोग, °लोय** पुं [°लोक] स्वर्ग, देव-लोक (ठा ५, ३; भग)। **°वाय** पुं [°वात] ऊँचा गया हुआ वायु, वायु-विशेष (जीव १)।

उड्ढं ऊपर देखो; 'उड्ढंजाणू अहोसिरे झाण-कोट्ठोवगए' (भग १, १; महा; श्रा ३३)।

उड्ढंक न [दे] मार्ग का उन्नत भू-भाग (सूअ १, २)।

उड्डुल, उड्डुल्ल पुं [दे] उल्लास, विकास (दे १, ९१)।

उड्ढविय वि [ऊर्ध्वित] ऊँचा किया हुआ (वज्जा १४६)।

उड्ढा स्त्री [ऊर्ध्वा] ऊर्ध्व-दिशा (ठा ६)।

उड्ढि [दे] देखो उद्धि (सुज्ज १०, ८)।

उड्ढि देखो वुड्ढि (षड्)।

उड्ढि देखो इड्ढि (षड्)।

उड्ढिय देखो उद्धरिअ = उद्धृत (रंभा)।

उड्ढिया स्त्री [दे] १ पात्र-विशेष (स १७३)। २ कम्बल वगैरह ओढ़ने का वस्त्र (स ५८६)।

उणं देखो पुण = पुनर् (पिंड ८२)।

उण न [ऋण] ऋण, करजा (षड्)।

उण, उणा, उणाइ देखो पुण (प्रामा; प्रासू ६१; कुमा; हे १, ६५)।

उणपन्न स्त्रीन [एकोनपञ्चाशत्] उनचास, ४९ (देवेन्द्र ९६)।

उणाइ पुं [उणादि] व्याकरण का एक प्रकरण (पण्ह २, २)।

उणाइ पुं [दे] प्रिय, पति, नायक; 'उणाइ-साहढोल्लाः प्रियार्थे' (संक्षि ४७)।

उणो देखो पुण (गउड; वि ३४१; हे १,६५)।

उण्ण न [ऊर्ण] भेड़ या बकरी के रोम, रोआँ। देखो उन्न। **°कप्पास** पुं [°कार्पास] ऊन, भेड़ के रोम (निचू १)। **°णाभ** पुं [°नाभ] मकड़ी, कीट-विशेष (राज)।

°उण्ण देखो पुण्ण = पूर्ण (से ८, ६१; ६५)।

उण्णअ सक [उद् + नद्] पुकारना, आह्वान करना। उण्णअइ (प्राकृ ७४)।

उण्णइ स्त्री [उन्नति] उन्नति, अभ्युदय (गा ४६७)।

उण्णइज्जमाण देखो उण्णो।

उण्णम अक [उद् + नम्] ऊंचा होना, उन्नत होना। वकृ. **उण्णमंत** (पि १६६)। संकृ. **उण्णमिय** (आचा २, १, ५)।

उण्णम वि [दे] समुन्नत, ऊँचा (दे १, ८८)।

उण्णय वि [उन्नत] १ उन्नत, ऊँचा (अभि २०९)। २ गुणवान्, गुणी (णाया १, १)। ३ अभिमानी (सूअ १, १६)। ४ न. अभिमान, गर्व (भग १२, ५)।

उण्णय पुं [उन्नय] नीति का अभाव (भग १२, ५)।

उण्णा स्त्री [ऊर्णा] ऊन, भेड़ के रोम (आवम)। **°पिपीलिया** स्त्री [°पिपीलिका] चींटी, जन्तु-विशेष (दे ६,४८)।

उण्णाअक वि [उन्नायक] १ उन्नति-कारक। २ पुन. छन्दःशास्त्र प्रसिद्ध मध्य-गुरु चतुष्कल की संज्ञा (पिंग)।

उण्णाग पुं [उन्नाक] ग्राम-विशेष (आवम)।

उण्णाम पुं [उन्नाम] १ उन्नति, ऊँचाई (से ६, ५९)। २ गर्व, अभिमान। ३ गर्व का कारण-भूत कर्म (भग १२, ५)।

उण्णाम सक [उद् + नमय्] ऊँचा करना (से ४, ५६)।

उण्णामिय वि [उन्नमित] ऊँचा किया हुआ (गा १६; २५६; से ६, ७१)।

उण्णाल सक [उद् + नमय्] ऊँचा करना। उण्णालइ (प्राकृ ७५)।

उण्णालिय वि [दे] १ कृश, दुर्बल। २ उन्नमित, ऊँचा किया हुआ (दे १, १३६)।

उण्णिअ वि [उन्नीत] वितर्कित; विचारित (से १३, ७७)।

उण्णिअ वि [और्णिक] ऊन का बना हुआ (ठा ६, ३; ओघ ७०९; ८९ भा)।

उण्णिद्द वि [उन्निद्र] १ विकसित, उल्लसित (गउड)। २ निद्रा-रहित (माल ८५)।

उण्णी सक [उद् + नी] १ ऊँचा ले जाना। २ कहना। भवि. उण्णेहं (विसे ३५८५)। कवकृ. **उण्णइज्जमाण** (राज)।

उण्णुइअ पुं [दे] १ हुँकार। २ आकाश की तरफ मुँह किए हुए कुत्ते की आवाज (दे १, १३२)। ३ वि. गर्वित; 'एवं भणिओ संतो उण्णुइओ सो कहेइ सव्वं तु' (वव २, १०)।

उण्ह पुं [उष्ण] १ आतप, गरमी (णाया १, १)। २ वि. गरम, तप्त (कुमा)।

उण्हवण न [उष्णन] गरम करना (पिंड २४०)।

उण्हिआ स्त्री [दे] कृसर, खिचड़ी (दे १, ८८)।

उण्हीस पुंन [उष्णीष] पगड़ी, मुकुट (हे २, ७५)।

उण्होदयभंड पुं [दे] भ्रमर, भमरा, भौंरा (दे १,१२०)।

उण्होला स्त्री [दे] कीट-विशेष (आवम)।

उताहो अ [उताहो] अथवा, या (वि ८५)।

उत्त वि [उक्त] कथित, अभिहित (सुर १०, ७६; स ३७३)।

उत्त वि [उप्त] १ बोया हुआ। २ निष्पादित, उत्पादित; 'देवउत्ते अए लोए बंभउत्तेति यावरे' (सूअ १, १, ३)।

उत्त पुं [दे] वनस्पति-विशेष (राज)।

°उत्त वि [गुप्त] रक्षित (सूअ १, १, ३, ५)।

उत्त देखो पुत्त (गा ८४; सुर ७, १५८)।

उत्तइय, उत्तुइय वि [उत्तेजित] (दश० नि० गा० १११. अग०)।

उत्तंघ देखो **उत्थंघ** = रुध्। **उत्तंघइ** (हे ४, १३३)।

उत्तंघ देखो **उत्तंभ**। उत्तंघइ (प्राकृ ७०)।

उत्तंत देखो वुत्तंत (षड्; विक्र ३९)।

उत्तंपिअ वि [दे] खिन्न, उद्विग्न (दे १, १०२)।

उत्तंभ सक [उत् + स्तम्भ्] १ रोकना। २ अवलम्बन देना, सहारा देना। कर्म. उत्तंभिज्जइ, उत्तंभिज्जंति (पि ३०८)।

उत्तंभण न [उत्तम्भन] १ अवरोध। २ अवलम्बन (उप पृ २२१)।

उत्तंभय वि [उत्तम्भक] १ रोकनेवाला। २ अवलम्बन देनेवाला, सहायक (उप पृ २२०)।

उत्तंस पुं [अवतंस] शिरो-भूषण, अवतंस (गउड; दे २, ५७)।

उत्तंस पुं [उत्तंस] कर्णपूरक, कनफूल, कर्ण-भूषण (पाअ)।

उत्तइय वि [दे] उत्तेजित, अधिक दीपित (दसनि ३, ३५)।

उत्तण वि [दे] गर्वित (सट्ठि ५६ टी)। देखो **उत्तुण**।

उत्तण वि [**उत्तृण**] तृणवाली जमीन, 'खित्तखिलभूमिवल्लराइं उत्तणघडसंकडाइं डज्झंतु' (पण्ह १, १)।

उत्तणुअ वि [**उत्तनुक**] अभिमानी, गर्विष्ठ (पाअ)।

उत्तत्त वि [**उत्तप्त**] अति-तप्त, बहुत गरम (सुपा ३७)।

उत्तत्त वि [**दे**] अध्यासित, आरूढ़ (षड्)।

उत्तत्थ वि [**उत्त्रस्त**] भय-भीत, त्रास-प्राप्त (पण्ह १, ३; पाअ)।

उत्तद्ध देखो उत्तरद्ध (पिंग)।

उत्तप्प वि [**दे**] १ गर्वित, अभिमानी (दे १, १३१; पाअ)। अधिक गुणवाला (दे १३१)।

उत्तप्प वि [**उत्तप्त**] देदीप्यमान (राज)।

उत्तम पुं [**उत्तम**] एक दिन का उपवास (संबोध ५८)।

उत्तम वि [**उत्तम**] १ श्रेष्ठ, प्रशस्त, सुन्दर (कप्प; प्रासू ६)। २ प्रधान, मुख्य (पंचा ४)। ३ परम, उत्कृष्ट; 'उत्तमकट्ठपत्ते' (भग ७,६)। ४ अन्त्य, अन्तिम (राज)। ५ पुं. मेरु-पर्वत (इक)। ६ संयम, त्याग (दसा ५)। ७ राक्षस वंश का एक राजा, स्वनाम-ख्यात एक लंकेश (पउम ५, २६४)। °**ट्ठ** पुं [°**र्थ**] १ श्रेष्ठ वस्तु। २ मोक्ष (उत्त २)। ३ मोक्ष-मार्ग; 'जीवा ठिया परमट्ठम्मि' (पउम २, ८१)। ४ अनशन, मरण (ओघ ७)। °**ण्ण** वि [°**र्ण**] लेनदार (नाट)।

उत्तम वि [**उत्तमस्**] अज्ञान-रहित, 'तिविहतमा उम्मुक्का, तम्हा ते उत्तमा हुंति' (आवनि ५५; कप्प)।

उत्तमंग न [**उत्तमाङ्ग**] मस्तक, सिर (सम ५०; कुमा)।

उत्तमा स्त्री [**उत्तमा**] १ 'णायाधम्मकहा' का एक अध्ययन (णाया २,१)। २ इन्द्राणी (णाया २, १; ठा ४, १)।

उत्तमा स्त्री [**उत्तमा**] पक्ष की प्रथम रात्रि (सुज्ज १०, १४)।

उत्तम्म अक [**उत् + तम्**] खिन्न होना, उद्विग्न होना। उत्तम्मइ (स २०३)। वकृ. **उत्तम्मंत; उत्तम्ममाण** (नाट)। संकृ. **उत्तम्मिअ** (नाट)।

उत्तम्मिअ वि [**उत्तान्त**] खिन्न, दिलगीर (दे १, १०२; पाअ)।

उत्तर अक [**उत् + तॄ**] १ बाहर निकलना। २ सक. पार करना। उत्तरिस्सामो (स १०१)। वकृ. **उत्तरंत**;

'पेच्छंति अणिमिसच्छा पहिआ
हलिअस्स पिट्ठपंडुरिअं।
धूअं दुद्धसमुद्दुत्तरंतलच्छिं
विअ सअण्हा' (गा ३८८);

'उत्तरंताण य मरुं, खंधवारो तिसाए मरिउमारद्धो' (महा)। संकृ. **उत्तरित्तु** (त्रि ५७७)। हेकृ. **उत्तरित्तए** (पि ५७८)।

उत्तर अक [**अव + तृ**] उतरना, नीचे आना। वकृ. **उत्तरमाण**, 'उत्तरमाणस्स तो विमाणाओ' (सुपा ३४०)। **उत्तर** वि [**उत्तर**] १ श्रेष्ठ, प्रशस्त (पउम ११८, ३०)। २ प्रधान, मुख्य (सूअ १, ३)। ३ उत्तर-दिशा में रहा हुआ (जं १)। ४ उपरि-वर्त्ती, उपरितन (उत्त २)। ५ अधिक, अतिरिक्त; 'अट्ठुत्तर—' (औप; सूअ १, २)। ६ अवान्तर, भेद, शाखा; 'उत्तरपगइ' (कम्म १)। ७ ऊन का बना हुआ वस्त्र, कम्बल वगैरह (कप्प)। ८ न. जवाब, प्रत्युत्तर (वव १)। ९ वृद्धि (भग १३, ४)। १० पुं. ऐरवत क्षेत्र के बाईसवें भावी जिनदेव का नाम (सम १५४)। ११ वर्षा कल्प (कप्प)। १२ एक जैन मुनि, आर्य-महागिरि के प्रथम शिष्य (कप्प)। °**कंचुय** पुं [°**कञ्चुक**] बख्तर-विशेष (विपा १, २)। °**करण** न [°**करण**] उपस्कार, संस्कार, विशेष-गुणाधान;

'खंडियविराहियाणं,
मूलगुणाणं सउत्तरगुणाणं।
उत्तरकरणं कीरइ, जह
सगड-रहंग-गेहाणं' (आव ५)।

°**कुरा** स्त्री [°**कुरु**] स्वनाम-ख्यात क्षेत्र-विशेष; 'उत्तरकुराए णं भंते! कुराए केरिसए आगारभावपडोयारे पण्णत्ते' (जीव ३)। °**कुरु** पुं [°**कुरु**] १ वर्ष-विशेष; 'उत्तरकुरुमाणुसच्छरावो' (पि ३२८; सम ७०; पण्ह १, ४; पउम ३५, ५०)। २ देव-विशेष (जं २)। °**कुरुकूड** न [°**कुरुकूट**] १ माल्यवंत पर्वत का एक शिखर (ठा ६)। २ देव-विशेष (जं ४)। °**कोडि** स्त्री [°**कोटि**] संगीतशास्त्र-प्रसिद्ध गान्धार-ग्राम की एक मूर्च्छना (ठा ७)। °**गंधारा** स्त्री [°**गान्धारा**] देखो पूर्वोक्त अर्थ (ठा ७)। °**गुण** पुं [°**गुण**] शाखा गुण, अवान्तर गुण (भग ७, ३)। °**चावाला** स्त्री [°**चावाला**] नगरी-विशेष (आवम)। °**चूल** [°**चूड**] गुरु-वन्दन का एक दोष, गुरु को वन्दन कर बड़े आवाज से 'मत्थएण वंदामि' कहना (धर्म २)। °**चूलिया** स्त्री [°**चूलिका**] देखो अनन्तर-उक्त अर्थ (बृह ३; गुभा २५)। °**ड्ढ** न [°**ार्ध**] पिछला आधा भाग उत्तरार्ध (जं ४)। °**दिसा** स्त्री [°**दिश्**] उत्तर दिशा (सुर २, २२८)। °**द्ध** न [°**ार्ध**] पिछला आधा भाग (पिंग)। °**पगइ**, °**पयडि** स्त्री [°**प्रकृति**] कर्मों के अवान्तर भेद (उत्त ३३; सम ६६)। °**पच्चत्थिमिल्ल** पुं [°**पाश्चात्य**] वायव्य कोण (पि)। °**पट्ट** पुं [°**पट्ट**] बिछौना के ऊपर का वस्त्र (ओघ १५६ भा)। °**पारणग** न [°**पारणक**] उपवासादि व्रत की समाप्ति, पारण (काल)। °**पुरच्छिम**, °**पुरत्थिम** पुं [°**पौरस्त्य**] ईशान कोण, उत्तर और पूर्व के बीच की दिशा (णाया १, १; भग; पि ६०२)। °**पोट्ठवया** स्त्री [°**प्रौष्ठपदा**] उत्तरा भाद्रपदा नक्षत्र (सुज्ज ४)। °**फग्गुणी** स्त्री [°**फाल्गुनी**] उत्तर-फाल्गुनी नक्षत्र (कप्पू; पि ६२)। °**बलिस्सह** पुं [°**बलिस्सह**] १ एक प्रसिद्ध जैन साधु (कप्प)। २ उत्तर बलिस्सह-नामक स्थविर से निकाला हुआ एक गण, भगवान् महावीर का द्वितीय गण—साधु-संप्रदाय (कप्प; ठा ९)। °**भद्दवया** स्त्री [°**भाद्रपदा**] नक्षत्र-विशेष (ठा ९)। °**मंदा** स्त्री [°**मन्दा**] मध्यम ग्राम की एक मूर्च्छना (ठा ७)। °**महुरा** स्त्री [°**मथुरा**] नगरी विशेष (दंस)। °**वाय** पुं [°**वाद**] उत्तरवाद (आचा)। °**विक्किय**, °**वेउव्विय** वि [°**वैक्रिय**] स्वाभाविक-भिन्न वैक्रिय, बनावटी वैक्रिय (कम्म १: कप्प)। °**साला** स्त्री [°**शाला**] १ क्रीडा-गृह। २ पीछे से बनाया हुआ घर। ३ वाहन-गृह, हाथी-घोड़ा आदि बाँधने का स्थान, तबेला (निचू ८)। °**साहग**, °**साहय** वि [°**साधक**] विद्या, मन्त्र वगैरह का

सावन करनेवाले का सहायक (सुपा १५१; ८ ३६६)। देखो उत्तरा°।

उत्तरओ अ [उत्तरतः] उत्तर दिशा की तरफ (ठा ८; भग)।

उत्तरंग न [उत्तरङ्ग] १ दरवाजे का ऊपर का काष्ठ (कुमा)। २ वि. चपल, चंचल (मुद्रा २६८)।

उत्तरकुरु पुं. ब. [उत्तरकुरु] १ देव-भूमि. स्वर्ग (स्वप्न ६०)। २ स्त्री. भगवान् नमिनाथ की दीक्षाशिविका (विचार १२९)।

उत्तरण न [उत्तरण] १ उतरना, पार करना (ठा ५, स ३६२)। २ अवतरण, नीचे आना (ठा १०)।

उत्तरणवरंडिया स्त्री [दे] उडुप, जहाज, डोंगी (दे १, १२२)।

उत्तरविउव्विय वि [उत्तरवैक्रियिक] उत्तर-वैक्रियनामक लब्धि से सम्पन्न (पंच २, २०)।

उत्तरसंग देखो उत्तरा-संग (पव ३८)।

उत्तरा स्त्री [उत्तरा] १ उत्तर दिशा (ठा १०)। २ मध्यम ग्राम की एक मूर्च्छना (ठा ७)। ३ एक दिशा-कुमारी देवी (ठा ८)। ४ दिगम्बर-मत-प्रवर्तक आचार्य शिवभूति की स्वनाम ख्यात भगिनी (विसे)। ५ अहिच्छत्रा नगरी की एक वापी का नाम (ती)। °णंदा स्त्री [°नन्दा] एक दिक्कुमारी देवी (राज)। °पह पुं [°पथ] उत्तरदिशा-स्थित देश, उत्तरीय देश (आवू २)। °फग्गुणी देखो उत्तर-फग्गुणी (सम ७; इक)। °भद्दवया देखो उत्तर-भद्दवया (सम ७; इक)। °यण न [°यण] उत्तरायण, सूर्य का उत्तर दिशा में गमन, माघ से लेकर छः महीना (सम ५३)। °यया स्त्री [°यता] गान्धार-ग्राम की एक मूर्च्छना (ठा ७)। °वह देखो °पह (महा; उव १४२ टी)। °संग पुं [°संग] उत्तरीय वस्त्र का शरीर में न्यास-विशेष, उत्तरासण (कप्प; भग; औप)। °समा स्त्री [°समा] मध्यम ग्राम की एक मूर्च्छना (ठा ७)। °साढा स्त्री [°षाढा] नक्षत्र-विशेष (सम ६; कस)।

°हुत्त न [°भिमुख] १ उत्तर की तरफ। २ वि. उत्तर दिशा की तरफ मुँह किया हुआ (ओघ ६५०; आव ४)।

उत्तरिज्ज } न [उत्तरीय] चादर, दुपट्टा
उत्तरिय } (उवा; प्राप्र; हे १, २४८); 'जरजिण्णं उत्तरियं' (सुपा ५४६),

उत्तरिय वि [उत्तीर्ण] १ उतरा हुआ, नीचे आया हुआ (सुर ६, १५६)। २ पार पहुँचा हुआ (महा)।

उत्तरिय वि [औत्तरिक, औत्तराह] देखो उत्तर (ठा १०; विसे १२४५)।

उत्तरिल्ल वि [औत्तराह] उत्तर दिशा या काल में उत्पन्न या स्थित, उत्तर-सम्बन्धी, उत्तरीय; 'अह उत्तरिल्लरुयगे' (सुपा ४२; सम १००; भग)।

उत्तरीअ देखो उत्तरिय = उत्तरीय (कुमा; हे १, २४८; महा)।

उत्तरीकरण न [उत्तरीकरण] उत्कृष्ट बनाना, विशेष शुद्ध करना; 'तस्स उत्तरीकरणेणं' (पडि)।

उत्तरोट्ठ पुं [उत्तरौष्ठ] १ ऊपर का ओठ (पि ३६७)। २ श्मश्रु, मूँछ (राज)।

उत्तलहअ पुं [दे] विटप, अंकुर (दे १, ११६)।

उत्तव वि [उक्तवत्] जिसने कहा हो वह (पि ५६६)।

उत्तस अक [उत् + त्रस्] १ त्रास पाना, पीड़ित होना। २ डरना, भयभीत होना। वकृ. उत्तसंत (सुर १, २४६; १०, २२०)।

उत्तसिय वि [उत्त्रस्त] १ भयभीत। २ पीड़ित (सुर १, २४६)।

उत्ताड सक [उत् + ताडय्] १ ताड़ना, ताड़न करना। २ वाद्य बजाना। कवकृ. 'उत्ताडिज्जंताणं दद्दरियाणं कुडवाणं' (राय)।

उत्ताडण न [उत्ताडन] १ ताड़ना करना (कुमा)। २ वाद्य बजाना (राज)।

उत्ताण वि [उत्तान] १ उन्मुख, ऊर्ध्व-मुख (पंचा १८)। २ चित्त (विपा १, ६; ठा ४, ४)। ३ विस्फारित; 'उत्ताणणयणपेच्छणिज्जा पासादीया दरिसणिज्जा' (औप)। ४ अनिपुण, अकुशल; 'उत्ताणमई न साहए धम्मं' (धम्म ८)। °साइय वि [°शायिन्] चित्त सोनेवाला (कस)।

उत्ताणअ } ऊपर देखो (भग; गा ११०;
उत्ताणग } कस)।

उत्ताणपत्तय वि [दे] एरण्ड-सम्बन्धी (पत्ती वगैरह); (दे १, १२०)।

उत्ताणिअ वि [उत्तानित] १ चित्त किया हुआ (से ६, ८९; गा ४६०)। २ चित्त सोनेवाला (दसा)।

उत्तार सक [अव + तारय्] नीचे उतारना। वकृ. उत्तारेमाण (ठा ५)।

उत्तार सक [उत् + तारय्] १ पार पहुँचाना। २ बाहर निकालना। ३ दूर करना; 'देहो···नईए खित्तो, तओ एए जइ नो उत्तारिंता तो हं मरिऊण' (सुपा ३५७; काल)।

उत्तार पुं [उत्तार] १ उतरना, पार करना; 'अणुसोओ संसारो पडिसोओ तस्स उत्तारो' (दस २); णइउत्ताराइ' (उवर ३२)। २ परित्याग (विसे १०४२)। ३ उतारनेवाला, पार करानेवाला;

'भवसयसहस्सदुलहे,
जाइजरामरणसागरोत्तारे।
जिणवयणम्मि गुणायर!
खणमवि मा काहिसि पमायं'
(प्रासू १३४)।

उत्तार पुं [दे] आवास-स्थान, गुजराती में 'उतारो' (सिरि ७००)।

उत्तारण न [उत्तारण] १ उतारना २ दूर करना। ३ बाहर निकालना। ४ पार करना;

'ता अज्जवि मोहमहाअहिविसवेगा
फुरंति तुह बाढं।
ताणुत्तारणहेउं, तम्हा
जत्तं कुणसु भद्द।।'
(सुपा ५५७; विसे १०४०)।

उत्तारय वि [उत्तारक] पार उतारनेवाला (स ६४७)।

उत्तारिअ वि [उत्तारित] १ पार पहुँचाया हुआ। २ दूर किया हुआ। ३ बाहर निकाला हुआ; 'तेणवि उत्तारिओ भूमिविवराओ' (महा)।

उत्ताल वि [उत्ताल] १ महान्, बड़ा; 'उत्ताल-तालयाणं वणिएहिं दिज्जमाणाण' (सुपा ५०२)। २ उतावला, शीघ्रकारी; 'कहवि उत्तालो अप्पडिलेहियसेज्जं गिण्हंतो' (सुपा ६२०)। ३ उद्धत (दे १, १०१)। ४ बेताल, ताल विरुद्ध गान का एक दोष; 'गायंतो मा

पगाहि उत्तालं' (ठा ७); 'भीयं दुयमुप्पिच्छुत्थमुत्तालं च कमसो मुरोयव्वं' (जीव ३)।

उत्ताल न [दे] लगातार रुदन, अन्तर-रहित क्रन्दन की आवाज (दे १, १०१)।

उत्तालण देखो **उत्ताडण**।

उत्तावल न [दे] उतावल, शीघ्रता। २ वि. शीघ्रकारी, आकुल; 'हल्लुत्तावलिगिहदासिविहियतक्कालकररिगज्जे' (सुर १०, १)।

उत्तास सक [उत् + त्रासय्] १ भयभीत करना, डराना। २ पीड़ना, हैरान करना। उत्तासेदि (शौ) (नाट)। कृ-उत्तासणिज्ज (तंदु)।

उत्तास पुं [उत्त्रास] १ त्रास, भय। २ हैरानी (कप्पू)।

उत्तासइत्तु वि [उत्त्रासयितृ] १ भय-भीत करनेवाला। २ हैरान करनेवाला (आचा)।

उत्तासणअ, **उत्तासणग** वि [उत्त्रासनक] १ भयंकर, उद्वेग-जनक। २ हैरान करनेवाला (पउम २२, ३५; णाया १, ८)।

उत्तासिय वि [उत्त्रासित] १ हैरान किया हुआ। २ भयभीत किया हुआ (सुर १, २४७; श्राव ४)।

उत्ताहिय वि [दे] उत्क्षिप्त, फेंका हुआ (दे १, १०६)।

उत्ति स्त्री [उक्ति] वचन, वाणी (श्रा १४; सुपा २३; कप्पू)।

उत्तिंग पुं [उत्तिङ्ग] १ गर्दभाकार कीट-विशेष (धर्म २; निचू १३)। २ चींटियों का बिल; 'उत्तिंगपणगदगमट्टीमक्कडासंताणासंकमरो' (पडि)। ३ चींटियों की सन्तान (दसा ३)। ४ तृण के अग्रभाग पर स्थित जल-बिंदु (आचा)। ५ वनस्पति-विशेष, सर्पच्छत्रा, गुजराती में जिसको '**बिलाडी नी टोप**' कहते हैं; 'गहणेसु न चिट्ठिज्जा,
बीएसु हरिएसु वा।
उदगम्मि तहा निच्चं,
उत्तिगपणगेसु वा' (दस ८, ११)।
६ न. छिद्र, विवर, रन्ध्र (निचू १८; आचा २, ३, १, १६)। °**लेण** न [°लयन] कीट-विशेष का गृह—बिल (कप्प)।

उत्तिंगपणग पुंन [उत्तिङ्गपनक] कीटिका-नगर, चीटियों का बिल (दास ५, १, ५६)।

उत्तिट्ठ अक [उत् + स्था] १ उठाना। २ उदित होना। वकृ. 'उत्तिट्ठन्ते दिवायरे' (उत्त ११, २४)।

उत्तिण वि [उत्तृण] तृण-शून्य;
'झंझावाउत्तिणवरविवर-
पलोट्टंतसलिलधाराहिं।
कुड्डुलिहिओहिदिअहं
रक्खइ अज्जा करअलेहिं'
(गा १७०)।

उत्तिणिअ वि [उत्तृणित] तृण-रहित किया हुआ, 'झंझावाउत्तिणिए घरम्मि' (गा १३५)।

उत्तिण्ण वि [उत्तीर्ण] १ बाहर निकला हुआ, 'उत्तिण्णा तलागाओ' (महा)। दिट्ठं च महासरवरं, मज्जिओ जहाविहिं तम्मि, उत्तिण्णो य उत्तरपच्छिमतीरे' (महा)। २ पार पहुँचा हुआ, पार-प्राप्त (स ३३२); 'उत्तिण्णा समुद्दं, पत्ता वीयभयं' (महा)। ३ जो कम हुआ हो; 'संचरइ चिरपडिग्गहलायण्णुत्तिसण्णवेससोहग्गो' (गउड)। ४ रहित, 'सोहइ अदोसभावो गुणोव्व जइ होइ मच्छरुत्तिण्णो (गउड)। ५ निपटा हुआ, जिसने कार्य समाप्त किया हो वह; 'ण्हाणुत्तिण्णाए' (गा ५५५)। ६ उल्लंघित, अतिक्रान्त (राज)।

उत्तिण्ण वि [अवतीर्ण] १ नीचे उतरा हुआ, 'रायादक्खो, तेण साहा गहिया, उत्तिण्णो, निराणंदो किंकायव्वविमूढो गओ चंपं' (महा)।

उत्तित्थ पुंन [उत्तीर्थ] कुपथ, अपमार्ग (भवि)।

उत्तिम देखो **उत्तम** (षड्; पि १०१; हे १, ४१; निचू १)।

उत्तिमंग देखो **उत्तमंग** (महा; पि १०१)।

उत्तिन्न देखो **उत्तिण्ण** (काप्र १४६; कुमा)।

उत्तिरिविडि, **उत्तिवडा** स्त्री [दे] भाजन वगैरह का ऊँचा ढेर, भाजनों की थप्पी; गुजराती में जिसको 'उतरेवड' कहते हैं (दे १, १२२); 'फोडेइ विरालो लोलयाए सारेवि उत्तिवडं' (उप ७२८ टी)।

उत्तुंग वि [उत्तुङ्ग] ऊँचा, उन्नत (महा; कप्पू; गउड)।

उत्तुंड वि [उत्तुण्ड] उन्मुख, ऊर्ध्व-मुख (गउड)।

उत्तुण वि [दे] गर्व-युक्त, दृप्त, अभिमानी (दे १, ६६; गउड)।

उत्तुप्पिय वि [दे] स्निग्ध, चिकना (विपा १, २)।

उत्तुय सक [उत् + तुद] पीड़ा करना, हैरान करना। वकृ. उत्तुयंत (विपा १, ७)।

उत्तुरिद्धि स्त्री [दे] गर्व, अभिमान। २ वि. गर्वित, अभिमानी (दे १, ६६)।

उत्तुर्व वि [दे] दृप्त, देखा हुआ (षड्)।

उत्तुहिअ वि [दे] उत्खाटित, छिन्न, नष्ट (दे १, १०५; १११)।

उत्तूहु पुं [दे] किनारा-रहित इनारा, तट-शून्य कूप (दे १, ६४)।

उत्तेअ वि [उत्तेजस्] १ तेजस्वी, प्रखर। २ पुं. मात्रावृत्त का एक भेद (पिंग; नाट)।

उत्तेअण न [उत्तेजन] उत्तेजन (मुद्रा १६८)।

उत्तेइअ, **उत्तेजिअ** वि [उत्तेजित] उद्दीपित, प्रोत्साहित, प्रेरित (दस ३; पाअ)।

उत्तेड, **उत्तेडय** पुं [दे] बिन्दु (पिण्ड १६); 'सितो य एसो घडउत्तडएहिं' (स २६४)।

उत्थ न [उक्थ] १ स्तोत्र-विशेष। २ योग-विशेष (विसे)।

उत्थ वि [उत्थ] उत्पन्न, उत्थित (सुपा १६६; गउड)।

उत्थ (शौ) देखो **उट्ठ** = उत् + स्था। उत्थेदि (प्राकृ ६४)।

उत्थइय वि [अवस्तृत] १ व्याप्त (से ४, ३८)। २ प्रसारित, फैलाया हुआ। ३ आच्छादित; 'अच्छरगमउयमसूरगउच्छ- (?त्थ)-इयं भद्दासणं रयावेइ' (णाया १, १; पि ३०६)।

उत्थंगिअ देखो **उत्थंघिअ** = उत्तम्भित (पि ५०५)।

उत्थंघ सक [उद् + नमय्] ऊँचा करना, उन्नत करना। उत्थंघइ (हे ४, ३६)।

उत्थंघ सक [उत् + स्तम्भ्] १ उठाना। २ अवलम्बन देना। ३ रोकना (गउड; से ५, ६)। उत्थंघेइ (गा ७२४)।

उत्थंघ सक [उत् + क्षिप्] ऊँचा फेंकना। उत्थंघइ (हे ४, १४४)। संकृ. **उत्थंघिअ** (कुमा)।

उत्थंघ सक [रुध्] रोकना। उत्थंघइ (हे ४, १३३)।

उत्थंघ पुं [उत्तम्भ] ऊर्ध्व-प्रसरण, ऊँचा फैलाना (से ६, ३३)।

उत्थंघण न [उत्तम्भन] ऊपर देखो (गउड)।

उत्थंघि वि [उत्क्षेपिन्] ऊँचा फेंकना (गउड)।

उत्थंघिअ वि [उन्नमित] ऊँचा किया हुआ, उन्नत किया हुआ (कुमा)।

उत्थंघिअ वि [रुद्ध] रोका हुआ (कुमा)।

उत्थंघिअ वि [उत्तम्भित] उत्थापित, उठाया हुआ (से ५, ६०)।

उत्थंभि वि [उत्तम्भिन्] १ आघात-प्राप्त, अवलम्बन करनेवाला;

'धारिज्जइ जलनिहीवि
कल्लोलोत्थंभिसत्तकुलसेलो ।
न हु अन्नजम्मनिम्मिअ-
सुहासुहो कम्म-परिणामो ॥'
(प्रासू १२७)।

उत्थंभिअ वि [उत्तम्भित] १ अवलम्बित। २ रुका हुआ, स्तम्भित; 'अइपीणत्थणउत्थंभिआणणे सुअणु सुणसु मह वअणं' (गा ६२४)। ३ बन्धन-मुक्त किया हुआ (स ५६८)।

उत्थंभिर देखो उत्तंभि (वज्जा १५२)।

उत्थग्घ पुं [दे] संमर्द, उपमर्द (दे १, ९३)।

उत्थप्पण देखो उट्ठयण (कुप्र ११७)।

उत्थय देखो उत्थइय (कप्प); 'निवडंति तणोत्थयकूपियासु तुंगावि मायंगा' (उप ७२८ टी)।

उत्थर सक [आ + क्रम्] आक्रमण करना। संकृ. **उत्थरिवि** (अप) (भवि)।

उत्थर सक [अव + स्तृ] १ आच्छादन करना, ढकना। २ पराभव करना। वकृ. **उत्थरंत, उत्थरमाण** (पण्ह १, ३; राज)।

उत्थर } सक [उत् + स्तृ] आच्छादन
उत्थल्ल } करना (?)। उत्थरइ, उत्थल्लइ (प्राकृ ७५)।

उत्थरिअ वि [आक्रान्त] आक्रान्त, दबाया हुआ; 'उत्थरिओवग्गिआइं अक्कंतं' (पाअ; भवि)।

उत्थरिय वि [दे] १ निस्सृत, निर्गत (स ४७३)।

'अच्छुक्कुत्थरियमहल्लवाह-
भरतीसहा पडिया' (सुपा २०)।

२ उत्थित, उठा हुआ (दे ७, ९२)।

उत्थल न [उत्स्थल] १ ऊँची धूल राशि, उन्नत रजःपुञ्ज (भग ७, ६ टी)। २ उन्मार्ग, कुपथ (से ८, ६)।

उत्थलिअ न [दे] १ घर, गृह। २ वि. उन्मुख-गत, ऊँचा गया हुआ (दे १. १०७; स १८०)।

उत्थल्ल अक [उत् + शल्] उछलना, कूदना। उत्थल्लइ (षड्)।

उत्थल्लपत्थल्ला स्त्री [दे] दोनों पार्श्वों से परिवर्त्तन, उथल-पुथल (दे १, १२२)।

उत्थल्ला स्त्री [दे] १ परिवर्त्तन (दे १, ९३)। २ उद्वर्त्तन (गउड)।

उत्थल्लिअ वि [उच्छलित] उछला हुआ, 'उत्थल्लिअं उच्छलिअं' (पाअ)।

उत्थाइ वि [उत्थायिन्] उठनेवाला (दे ८ १९)।

उत्थाइय वि [उत्थापित] उठाया हुआ, 'पुव्वुत्थाइयनरवरदेसे दंडाहिवं ठवइ महणं' (सुपा ३५२)।

उत्थाण न [उत्थान] १ वीर्य, बल, पराक्रम (विसे २८-२९)। २ उत्थान, उत्पत्ति;

'वंछावाही असज्झो न नियत्तइ ओसहेहिं कएहिं।
तम्हा तीउत्थाणं निरुंभियव्वं हिएसीहिं'
(सुपा ४०४)।

उत्थामिय (अप) वि [उत्थापित] उठाया हुआ (भवि)।

उत्थार सक [आ + क्रम्] आक्रमण करना, दबाना। उत्थारइ (हे ४, १६०; षड्)।

उत्थार देखो उच्छाह = उत्साह (हे २, ४८; षड्)।

उत्थारिय वि [आक्रान्त] आक्रान्त, दबाया हुआ; 'उत्थारिअअंतरंगरिउवग्गो' (कुमा; सुपा ५४६)।

उत्थिय देखो उट्ठिय (हे ४, १६; पि ३०)।

उत्थिय देखो उत्थइअ (पंचा ८)।

°उत्थिय वि [°तीर्थिक] मतानुयायी, दर्शनानुयायी (उवा; जीव ३)।

°उत्थिय वि [°यूथिक] यूथ-प्रविष्ट, 'अण्णउत्थिय—' (उवा; जीव ३)।

उत्थुभण न [अवस्तोभन] अनिष्ट की शान्ति के लिए किया जाता एक प्रकार का कौतुक, थू-थू आवाज करना। (बृह १)।

उद न [उद] जल, पानी; 'अवि साहिए दुवे वासे सीओदं अभोच्चा निक्खंते' (आचा; भग ३, ६)। °**उल्ल** °**ओल्ल** वि [°आर्द्र] पानी से गीला। (ओघ ४८६; पि १६१)। °**गत्ताभ** न [°गर्त्ताभ] गोत्र-विशेष (ठा ७)।

उदइग देखो ओदइय (अणु)।

उदइल्ल वि [उदयिन्] उदयवान्, उन्नतिशील; 'सिरिअभयदेवसूरी अपुव्वसूरो सयावि उदइल्लो' (सुपा ६२२)।

उदंक पुं [उदङ्क] जल का पात्र-विशेष, जिससे जल ऊँचा छिड़का जाता है (जं २)।

उदंच सक [उद् + अञ्च्] ऊँचा जाना (कुमा)।

उदंचण प [उदञ्चन] १ ऊँचा फेंकना। १ वि. ऊँचा फेंकनेवाला (अणु)।

उदंचिर वि [उदञ्चितृ] ऊँचा जानेवाला (कुमा)।

उदंत पुं [उदन्त] हकीकत, समाचार, वृत्तान्त; 'णिअमेऊण कइबलं बीओदंतो व्व राहवस्स उवणिओ' (से ४, ५५; स ३०; भग)।

उदंप पुं [उद्दम्प] कृष्णराज पुत्र उदय (नलदव० रास० ऋषिवर्धन)।

उदग पुंन [उदक] जल, पानी; 'चत्तारि उदगा पण्णत्ता' (ठा ४; जी ५)। २ वनस्पति-विशेष (दस ८, ११)। ३ जलाशय (भग १, ८)। ४ पुं. स्वनाम-ख्यात एक जैन साधु। ५ सातवें भावी जिनदेव (सूअ २, ७)। °**गब्भ** पुं [°गर्भ] बादल, अभ्र (भग २, ५)। °**दोणि** स्त्री [°द्रोणि] १ जल रखने का पात्र-विशेष, ठंढा करने के लिए गरम लोहा जिसमें डाला जाता है वह (भग १६, १)। २ जो अरघट्ट में लगाया जाता है वह छोटा घड़ा (दस ७)। °**पोग्गल** न [°पौद्गल] बादल, मेघ (ठा ३, ३)। °**मच्छ** पुं [°मत्स्य] इन्द्र-धनुष का खण्ड, उत्पात-विशेष (भग ३, ६)। °**माल** पुंस्त्री [°माल] जल का ऊपर चढ़ता तरंग, उदकशिखा, वेला (ठा १०; जीव ३)। °**वत्थि** स्त्री

[°वस्ति] दृति, पानी भरने का मशक (णाया १, १८)। **°सिहा** स्त्री [°शिखा] वेला (ठा १०)। **°सीम** पुं [°सीमन्] पर्वत-विशेष (इक)।

उदग्ग वि [उदग्र] १ सुन्दर, मनोहर; 'तत्तो दट्ठुं तीए रूवं तह जोव्वणमुदग्गं' (सुर ३, १२२)। २ उग्र, उत्कट, प्रखर (ठा ४, २; णाया १, १; सत्त ३०)। ३ प्रधान, मुख्य; 'उदग्गचारित्ततवो महेसी' (उत्त १३)।

उदड्ढ पुं [उद्दग्ध] एक नरक-स्थान (देवेन्द्र २७)।

उदत्त वि [उदात्त] उदार, अकृपण (संबोध ३८)।

उदत्त वि [उदात्त] स्वर-विशेष, जो उच्च स्वर से बोला जाय वह स्वर (विसे ८५२)।

उदन्ना स्त्री [उदन्या] तृषा, तरस, पिपासा (उप १०३१ टी)।

उदय देखो उदग (णाया १, ८; सम १५३; उप ७२८ टी; प्रासू ७२; पएण १)।

उदय पुं [उदय] लाभ (सूत्र २, ६, २४)।

उदय पुं [उदय] १ अभ्युदय, उन्नति; 'जो एवंविहंपि कज्जं आयरइ, सो किं बंभदत्तकुमारस्स उदयं इच्छइ ?' (महा)। २ उत्पत्ति (विसे)। ३ विपाक, कर्म-परिणाम;

'वहमारणअब्भक्खाणदाण
परधरविलोवणाईणं।
सव्वजहन्नो उदओ दसगुणिओ
एक्कसि कयाणं' (उव)।

४ प्रादुर्भाव, उद्गम; 'आइच्चोदए चंदगहा इव निप्पभा जाया सुरा' (महा);

'उदयम्मिवि अत्थमणेवि
धरइ रत्तत्तणं दिवसनाहो।
रिद्धीसु आवईसुवि
तुल्लच्चिय गुण सप्पुरिसा।'
(प्रासू १२)।

५ भरतक्षेत्र के भावी सातवें जिनदेव (सम १५३)। ६ भरतक्षेत्र में होनेवाले तीसरे जिनदेव का पूर्व-भवीय नाम (सम १५४)। ७ स्वनाम-ख्यात एक राजकुमार (पउम २१, ५६)। **°यल** पुं [°चल] पर्वत-विशेष, जहाँ सूर्य उदित होता है (सुपा ८८)।

उदयंत देखो उदि।

उदयण पुं [उदयन] १ राजा सिद्धराज का प्रसिद्ध मंत्री (कुप्र १४३)।

उदयण पुं [उदयन] १ एज राजकुमार, कोशाम्बी नगरी के राजा शतानीक का पुत्र (विपा १, ५)। २ एक विख्यात जैन राजा (कप्प)। ३ न. उन्नति, उदय। ४ वि. उन्नत होनेवाला, प्रवर्धमान (ठा ५, ३)।

उदर न [उदर] १ पेट, जठर (सूत्र १, ८)। २ पेट की बीमारी; 'खयजरवणलूआसाससोसोदराणि' (लहुअ १५)।

उदरंभरि वि [उदरम्भरि] स्वार्थी, अकेलपेटू (पि ३७९)।

उदरि वि [उदरिन्] पेट की बीमारीवाला (पण्ह २, ५)।

उदरिय वि [उदरिक] ऊपर देखो (विपा १, ७)।

उदवाह वि [उदवाह] १ पानी वहन करनेवाला, जल-वाहक। २ पुं. छोटा प्रवाह (भग ३, ६)।

उदसी [दे] [उदश्वित्?] तक।

उदहि पुं [उदधि] १ समुद्र, सागर (कुमा)। २ भवनपति देवों की एक जाति, उदधिकुमार (पण्ह १, ४)। **°कुमार** पुं [°कुमार] देवों की एक जाति (पएण १)। देखो उअहि।

उदाइ पुं [उदायिन्] १ एक जैन राजा, महाराजा कोणिक का पुत्र, जिसको एक दुष्ट ने जैन साधु बनकर धर्मच्छल से मारा था और जो भविष्य में तीसरा जिनदेव होगा (ठा ६; ती)। २ पुं. राजा कूणिक का पट्ट-हस्ती (भग १६, १)।

उदाइण देखो उदायण (कुलक २३)।

उदात्त देखो उदत्त (णंदि १७४ टी)।

उदायण पुं [उदायन] सिन्धु-देश का एक राजा, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी (ठा ८; भग ३, ६)।

उदार देखो उराल (उप पृ १०८)।

उदासि वि [उदासिन्] उदास, उदासीन। **°व** न [°त्व] औदासीन्य (रंभा; स ४५६)।

उदासीण वि [उदासीन] १ मध्यस्थ, तटस्थ (पण्ह १, २)। २ उपेक्षा करनेवाला (ठा ६)।

उदाहड वि [उदाहृत] कथित, दृष्टान्तित (राज)।

उदाहर सक [उदा + हृ] १ कहना। २ दृष्टान्त देना। उदाहरंति (पि १४१); 'भासं मुसं नेव उदाहरिज्जा' (सत्त ४३)। भूका. उदाहु (आचा; उत्त १४, ६), उदाहू (सूत्र १, १२, ४)। वकृ. **उदाहरंत** (सूत्र १, १२, ३)।

उदाहरण न [उदाहरण] १ कथन, प्रतिपादन। २ दृष्टान्त (सूत्र १, १२; विसे)।

उदाहिय वि [उदाहृत] १ कथित, प्रतिपादित। २ दृष्टान्तित (आचा; णाया १, ८)।

उदाहिय वि [दे] उत्क्षिप्त, फेंका गया (षड्)।

उदाहु देखो उदाहर।

उदाहु अ [उताहो] अथवा, या (उवा)।

उदाहू देखो उदाहर।

उदाहो देखो उदाहु = उताहो (स्वप्न ७०)।

उदि अक [उद् + इ] १ उन्नत होना। २ उत्पन्न होना। (विसे १२९६; जीव ३)। वकृ. **उदयंत** (भग; पउम ८२, ५९; सुपा १६८)। कवकृ. **उदिज्जंत** (विसे ५३०)।

उदिक्खिअ वि [उदीक्षित] अवलोकित (दे ६, १४४)।

उदिण्ण वि [उदीच्य] उत्तर-दिशा में उत्पन्न (आवम)।

उदिण्ण } वि [उदीर्ण] १ उदित, उदय-प्राप्त
उदिन्न } (ठा ५); 'इक्को वि इक्को विसओ उदिन्नो' (सत्त ५२)। २ फलोन्मुख (कर्म) (पएण १६; भग)। ३ उत्पन्न; 'जहा उदिएणो नणु कोवि वाही' (सत्त ९; श्रा. २७)। ४ उत्कट, प्रबल; 'अणुत्तरोववाइयाणं भंते ! देवा किं उदिएणमोहा, उवसंतमोहा, खीणमोहा ?' (भग ५, ४)।

उदिय वि [उदित] १ उदित, उद्गत (सम ३६)। २ उन्नत (ठा ४)। ३ उक्त, कथित (विसे ३५७६)।

उदीण वि [उदीचीन] १ उत्तर दिशा से संबन्ध रखनेवाला, उत्तर दिशा में उत्पन्न (आचा; पि १६५)। **°पाईणा** स्त्री [°प्राचीना] ईशान-कोण (भग ५, १)।

उदीणा स्त्री [उदीचीना] उत्तर दिशा (ठा १, १)।

उदीर सक [उद् + ईरय्] १ प्रेरणा करना। २ कहना, प्रतिपादन करना। ३ जो कर्म उदय-प्राप्त न हो उसको प्रयत्न-विशेष से फलोन्मुख करना। उदीरइ, उदीरेंति (भग; पंनि ७८)। भूका. उदीरिसुं, उदीरेंसु (भग)। भवि. उदीरिस्संति (भग)। वकृ. उदीरेंत (ठा ७); 'कुसलवइमुदीरेंतो' (उप ६०४)। कवकृ. उदीरिज्जमाण (पराण २३)। हेकृ. उदीरेत्तए (कस)।

उदीरग देखो उदीरय (पंच ५, ५)।

उदीरण न [उदीरण] १ कथन, प्रतिपादन। २ प्रेरणा। ३ काल-प्राप्त न होने पर भी प्रयत्न-विशेष से किया जाता कर्म-फल का अनुभव (कम्म २, १३)।

उदीरणया, उदीरणा } स्त्री [उदीरणा] ऊपर देखो (कम्म २,१३; १); 'जं करणेणोकड्ढिय उदए दिज्जइ उदीरणा एसा' (कम्मप १४३; १६६)।

उदीरय वि [उदीरक] १ कथक, प्रतिपादक। २ प्रेरक,प्रवर्तक; 'एकमेक्कं विसयविसउदीरएसु' (पराह १,४)। ३ उदीरणा करनेवाला, काल-प्राप्त न होने पर भी प्रयत्न-विशेष से कर्म-फल का अनुभव करनेवाला (कम्मप १५६)।

उदीरिद देखो उदीरिय (राय ७४)।

उदीरिय वि [उदीरित] १ प्रेरित, 'चालियाणं घट्टियाणं खोभियाणं उदीरियाणं केरिसे सद्दो भवति' (राय; जीव ३)। २ कथित, प्रतिपादित; 'घोरे धम्मे उदीरिए' (आचा)। ३ जनित, कृत; 'ससद्दफासा फरुसा उदीरिया' (आचा)। ४ समय-प्राप्त न होने पर भी प्रयत्न-विशेष से खींच कर जिसके फल का अनुभव किया जाय वह (कर्म) (पराण २३; भग)।

उदु देखो उउ (प्राप; अभि १८९; पि ५७)।

उदुंबर देखो उंबर (कस)।

उदुरुह सक [उद् + रुह्] ऊपर चढ़ना। उदुरुहइ (पि ११८)।

उदूखल देखो उऊखल (पि ६६)।

उदूग पुंन [दे] पृथिवी-शिला (पंचा ८, १० टी)।

उदूलिय वि [दे] अवनत, नीचा नमा हुआ (षड्)।

उदूहल देखो उऊहल (आचा; पि ६६)।

उद्द न [दे] १ जल-मानुष। २ ककुद, बैल के कंधे का कूबड़ (दे १, १२३)। ३ मत्स्य-विशेष। ४ उसके चर्म का बना हुआ वस्त्र (आचा)।

उद्द वि [आर्द्र] गीला, आर्द्र (षड्)।

उद्दअ वि [उद्यत] उद्यम-युक्त (प्राकृ २१)।

उद्दंड, उद्दंडग } वि [उद्दण्ड] १ प्रचण्ड, उद्धत (कुमा; गउड)। २ पुं. हाथ में दण्ड को ऊँचा रखकर चलनेवाले तापसों की एक जाति (औप; निचू १)।

उद्दंतुर वि [उद्दन्तुर] १ जिसका दँत बाहर आया हो वह। २ ऊँचा (गउड)।

उद्दंभ पुं [उद्दम्भ] छन्द का एक भेद (पिंग)।

उद्दंस पुं [उद्दंश] मधुमक्षिका, मत्कुण आदि छोटा कीट (कप्प)।

उद्दड्ढ पुं [उद्दग्ध] रत्नप्रभा नरक-पृथिवी का एक नरकावास (ठा ६)। °मज्झिम पुं [°मध्यम] रत्नप्रभा पृथिवी का एक नरकावास (ठा ६)। °विक्त पुं [°विर्त्त] देखो पूर्वोक्त अर्थ (ठा ६)। °विसिट्ठ पुं [°विशिष्ट] देखो पूर्वोक्त अर्थ (ठा ६)।

उद्दद्दर न [दे. ऊर्ध्वदर] सुभिक्ष, सुकाल (बृह १)।

उद्दम पुंन. देखो उज्जम = उद्यम (प्राकृ २१)।

उद्दरिअ वि [दे] १ उत्खात, उखाड़ा हुआ (दे १, १००)। २ स्फुटित, विकसित; 'फुडिअं फलिअं च दलिअं उद्दरिअं' (पाअ)।

उद्दरिअ वि [उद् + दृप्त] गर्वित, उद्धत, अभिमानी (णंदि)।

उद्दलण न [उद्दलन] विदारण (गउड)।

उद्दव सक [उद्, उप + द्रु] १ उपद्रव करना, पीड़ा करना। २ मारना, विनाश करना, हिंसा करना; 'तए णं सा रेवई गाहावईणी अन्नया कयाइ तासिं दुवालसराहं सवत्तीणं अंतरं जाणित्ता छ सवत्तीओ सत्थप्पओगेणं उद्दवेइ, उद्दवेइत्ता छ सवत्तीओ विसप्पओगेणं उद्दवेइ, उद्दवेइत्ता तासिं दुवालसराहं सवत्तीणं कोलघरियं एगमेगं हिरराणकोडिं एगमेगं वयं सयमेव पडिवज्जेइ, २ त्ता महासयएणं समणोवासएणं सद्धिं उरालाइ भोगभोगाइ भुंजमाणी विहरइ' (उवा)। भवि. उद्दवेहिइ (भग १५)। कवकृ. उद्दविज्जमाण (सूअ २, १)। कृ. उद्दवेयव्व (सूअ २, ३)।

उद्दवअ पुं [उद्द्रव, उपद्रव] १ उपद्रव। २ विनाश, हिंसा; 'आरंभो उद्दवओ' (श्रा ७)।

उद्दवइत्तु वि [उद्द्रोतृ, उपद्रोतृ] १ उपद्रव करनेवाला। २ हिंसक, विनाशक; 'से हंता छेत्ता भेत्ता लुंपित्ता उद्दवइत्ता विलुंपित्ता अकडं करिस्सामि त्ति मन्नमाणे' (आचा)।

उद्दवग न [उद्द्रवग, उपद्रवग] १ उपद्रव, हरकत; 'उद्दवणं पुण जाणसु अइवायविवज्जियं' (पिंड; औप)। २ विनाश, हिंसा (सं ८४; आचा)।

उद्दवण न [अपद्रावण] मृत्यु को छोड़कर सब प्रकार का दुःख, 'उद्दवणं पुण जाणसु अइवायविवज्जियं पीडं' (पिंडभा २५; पिंड ६७)।

उद्दवणया, उद्दवणा } स्त्री [उद्द्रवणा, उपद्रवणा] ऊपर देखो (भग; पराह १,१)।

उद्दवाइअ देखो उड्डुवाइय; 'समणस्स णं भगवओ महावीरस्स णव गणा हुत्था, तं०— गोदासे गणे उत्तरबलिस्सहगणे उद्देहगणे चारणगणे उद्दवातित-(इअ)-गणे विस्सवाति-(इअ)-गणे कामड्ढित-(अ)-गणे माणवगणे कोडितगणे' (ठा ६)।

उद्दविअ वि [उद्द्रुत, उपद्रुत] १ पीड़ित; 'संघाइआ संघट्टिआ परियाविआ किलामिआ उद्दविया ठाणाओ ठाणं संकामिया' (पडि)। २ विनाशित; 'नाऊण विभंगेणं नियजिट्ठसुयस्स विलसियं, तो सो सकुडुंबो उद्दविओ' (सुपा ४०६)।

उद्दवेत्तु देखो उद्दवइत्तु (आचा)।

उद्दा सक [उद् + दा] बनाना, निर्माण करना। उद्दाइ (भग)।

उद्दा अक [अव + द्रा] मरना। उद्दाई, उद्दायाति (भग)। संकृ. उद्दाइत्ता (जीव ३; ठा १०; भाग)।

उद्दाइआ स्त्री [उद्द्रोत्री, उपद्रोत्री] उपद्रव करनेवाली स्त्री; 'ताए वा उद्दाइआए कोइ संजओ गहितो होज्जा' (ओघ १८ भा टी)।

उद्दाइन देखो उद्दाय = शुभ्।

उद्दाइत्ता देखो उद्दा = अव + द्रा।

उद्दाण स्त्री [दे] चूल्हा, चूल्ली, जिसपर रसोई पकाई जाती है (दे १, ८७)।

उद्दाण वि [अवद्रात] मृत, 'उद्दाणे भोइयम्मि चेइयाइं वंदामि' (सुख १, ३)।

उद्दाम वि [उद्दाम] १ स्वैर, स्वच्छन्द (पाअ)। २ प्रचण्ड, प्रखर; 'ता सजलजल-हरुद्दामगहिरसद्देण ताए तं कहइ' (सुपा २३४)। ३ अव्यवस्थित (हे १, १७७)।

उद्दाम पुं [दे] १ संघात, समूह। २ स्थपुट, विषमोन्नत प्रदेश (दे १, १२६)।

उद्दामिय वि [उद्दामित] लटकता हुआ, प्रलम्बित; 'तत्थ णं बहवे हत्थी पासति सण्णद्धबद्धवम्मियगुडिते उप्पीलियकच्छे उद्दामियघंटे' (विपा १, २)।

उद्दाय अक [शुभ्] शोभना, शोभित होना, अच्छा मालूम देना। वकृ. 'उववणेसु परहुयरुयपरिभितसंकुलेसु उद्दायंत रत्तइंदगोव यथोवयकारुन्नविलविएसु' (णाया १, १)। **उद्दाइंत** (णाया १, १ टी)।

उद्दार देखो **उराल**=उदार; 'देमि न कस्सवि जंपइ उद्दारजणस्स विविहरयणाइं' (वज्जा १२०)।

उद्दारिअ वि [दे] १ युद्ध से पलायित, रण-द्रुत। २ उत्खात, उन्मूलित (षड्)।

उद्दाल सक [आ+छिद्] खींच लेना, हाथ से छीन लेना। उद्दालइ (हे ४, १२५; षड्; महा)। हेकृ. उद्दालेउं (पि ५७७)।

उद्दाल पुं [अवदाल] १ दबाव, अवदलन; 'तंसि तारिसगंसि सयणिज्जंसि...गंगापुलिण-वालुअउद्दालसालिसए' (कप्प; णाया १, १)। २ वृक्ष-विशेष (जीव ३)। ३ अवसर्पिणी काल का प्रथम आरा—समय-विशेष (जं २)।

उद्दालिय वि [आच्छिन्न] छीना हुआ, खींच लिया गया (पाअ; कुमा; उप पृ ३२३); 'दो सारबलिद्दावि हु तेहिं उद्दालिया' (सुपा २३८)।

उद्दावणया स्त्री [उपद्रावणा] उपद्रव, हैरानी (राज)।

उद्दाह पुं [उद्दाह] १ प्रखर दाह। २ आग (ठा १०)।

उद्दाहग वि [उद्दाहक] आग लगानेवाला (पण्ह १, ३)।

उद्दिट्ठ वि [उद्दिष्ट] १ कथित, प्रतिपादित (विपा २, १)। २ निर्दिष्ट (दस)। ३ दान के लिए संकल्पित (अन्न, पानादि); 'णायपुत्ता उद्दिट्ठभत्तं परिवज्जयंति' (सूअ २, ६)। ४ लक्षित (सूअ २, ६)। ५ न. उद्देश (पंचा १०)। °कड वि [°कृत] साधु के उद्देश से बनाया हुआ, साधु के निमित्त किया हुआ (भोजनादि) (दस १०)।

उद्दिट्ठा स्त्री [दे. उद्दिष्टा] तिथि-विशेष, अमावस्या (औप)।

उद्दित्त वि [उद्दीप्त] प्रज्वलित (बृह १)।

उद्दिस सक [उद्+दिश्] आज्ञा करना। कर्म. उद्दिसिज्जंति (अणु ३)।

उद्दिस सक [उद्+दिश्] १ नाम निर्देश-पूर्वक वस्तु का निरूपण करना। २ देखना। ३ संकल्प करना। ४ लक्ष्य करना। ५ अंगीकार करना। ६ सम्मति लेना। ७ समाप्त करना। ८ उपदेश देना। उद्दिसइ (वव २, ७)। कर्म. 'दस अज्झयणा एक्क-सरगा दससु चेव दिवसेसु उद्दिस्संति' (उवा)। कवकृ. उद्दिसिज्जंत (आवम)। संकृ. 'गओ तासि समीवं, पुच्छियं महुरवाणीए एक्कं कन्नगं उद्दिसिऊण, कओ तुब्भे' (महा; वव ७); 'तदवसाणे य एक्का पवरमहिला बंधुमई उद्दिस्स कुमारउत्तमंगे अक्खए पक्खिवइ (महा); उद्दिसिय (आचा २, १; अभि १०४)। हेकृ. उद्दिसिउं, उद्दिसित्तए (वव १० भा; ठा २, १)। प्रयो. उद्दिसावित्तए, उद्दिसावेत्तए (बृह १; कस)।

उद्दिसिअ देखो **उद्दिट्ठ** (आचा २)।

उद्दिसिअ वि [दे] उत्प्रेक्षित, वितर्कित (दे १, १०६)।

उद्दीरणा देखो **उदीरणा**; 'उद्दीरणउदयाणं जं नाणत्तं तय वोच्छं' (पंच ५, ६८)।

उद्दीवण न [उद्दीपन] १ उत्तेजन। २ वि. उत्तेजक (मै ५८; रंभा)।

उद्दीवणिज्ज वि [उद्दीपनीय] उद्दीपक, उत्तेजक; 'मयणुद्दीवणिज्जेहिं विविहेहिं भूसणेहिं' (रंभा)।

उद्दीविअ वि [उद्दीपित] प्रदीपित, प्रज्वालित (पाअ); 'घीयाए पक्खिविउ तत्तो उद्दीविओ जलणो' (सुर ६, ८८)।

उद्दुय वि [उद्द्रुत] पलायित (पउम ६, ७०)।

उद्दुय वि [उपद्रुत] हैरान किया हुआ (स १३१)।

उद्देस देखो **उद्दिस** उद्देसइ (भवि)।

उद्देस पुं [उद्देश] १ पठन-विषयक गुर्वाज्ञा (अणु ३)। २ नाम का उच्चारण (सिरि १०६०)। ३ वाचन, सूत्र-प्रदान, सूत्रों के मूल पाठ का अध्यापन (पव १)।

उद्देस पुं [उद्देश] १ नाम-निर्देश पूर्वक वस्तु-निरूपण (विसे)। २ शिक्षा, उपदेश; 'उद्देसो पासगस्स णत्थि'। ३ व्यपदेश, व्यवहार (आचा)। ४ लक्ष्य। ५ अभिप्राय, मतलब (विसे)। ६ ग्रन्थ का एक अंश (भग १, १)। ७ प्रदेश, अयव; 'खुब्भंति खुहिअमअरा आवाआलगहिरा समद्दुद्देसा' (से ५, १६; १, २०)। ८ गुरुप्रतिज्ञा, गुरु-वचन (विसे)। ९ जगह, स्थान (कप्पू)।

उद्देस वि [औद्देश] देखो **उद्देसिय**=औद्देशिक (पिंड २३०)।

उद्देसण न [उद्देशन] १ पाठन, बाचना, अध्यापन; 'उद्दिसण वायणत्ति पाठणया चेव एगट्ठा' (पंचभा; पण्ह २, ५)। २ अधिकारिता, योग्यता (ठा ४, ३)।

उद्देसणकाल पुं [उद्देशनकाल] मूलसूत्र के अध्यापन का समय (णंदि २०६)।

उद्देसणा स्त्री [उद्देशना] ऊपर देखो (पंचभा)।

उद्देसिय न [औद्देशिक] १ भिक्षा का एक दोष, साधु के लिए भोजन-निर्माण। २ वि. साधु निमित्त बनाया हुआ (भोजन) (कस); 'उद्देसियं तु कम्मं एत्थं उद्दिस्स कीरए जंति' (पंचा १७; ठा ९; अंत)।

उद्देसिय वि [औद्देशिक] १ उद्देश-सम्बन्धी उद्देश से किया हुआ। १ विवाह आदि के उपलक्ष्य में किए गए जीमन में निमन्त्रितों के भोजन की समाप्ति के अनन्तर बचे हुए वे खाद्य द्रव्य जिनको सर्वजातीय भिक्षुओं को देने का संकल्प किया गया हो (पिंड २२९)।

उद्देह पुं [उद्देह] भगवान् महावीर का एक गण—साधु समुदाय (ठा ६; कप्प)।

उद्देहलिया स्त्री [उद्देहलिका] वनस्पति-विशेष (राज)।

उद्देहिया } स्त्री [दे] उपदेहिका, दीमक, **उद्देही** } त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष (जी १६; स ४३५; ओघ ३२३); 'उवदेहीइ उद्देही' (दे १, ९३)।

उद्दोहग वि [उद्द्रोहक] घातक, हिंसक (पण्ह १, ३)।

उद्ध देखो उड्ढ (से ३, ३३; पि ८३; महा; हे २, ५९; ठा ३, २)।

उद्धअ वि [उद्धत] १ उन्मत्त (से ४, १३; पाअ)। २ गर्वित, अभिमानी (भग ११, १०)। ३ उत्पाटित (णाया १, १)। ४ अतिप्रबल; 'उद्धततमंधकार—' (पण्ह १,३)।

उद्धअ देखो **उद्धरिअ** = उद्धृत; 'पावल्लेण उवेच्च व उद्धयपयधारणा उ उद्धारो' (वव १०)।

उद्धअ वि [दे] शान्त, ठंढा (षड्)।

उद्धंत देखो **उद्धा**।

उद्धंस सक [उत् + धृष्] १ मारना। २ आक्रोश करना, गाली देना। **उद्धंसेइ** (भग १५)। उद्धंसेंति (णाया १, १६)।

उद्धंस सक [उद् + ध्वंस्] विनाश करना। संकृ. **उद्धंसिऊण** (स ३६२)।

उद्धंसण न [उद्धर्षण] १ आक्रोश, निर्भर्त्सन। २ वध, हिंसा (राज)।

उद्धंसणा स्त्री [उद्धर्षणा] ऊपर देखो (ओघ ३८ भा); 'उच्चावयाहिं उद्धंसणाहिं उद्धंसेंति, (णाया १, १६)।

उद्धंसिय वि [उद्धर्षित] आक्रुष्ट, जिसपर आक्रोश किया गया हो वह (निचू ४)।

उद्धच्छवि वि [दे] विसंवादित, अप्रमाणित (दे १, ११४)।

उद्धच्छविअ वि [दे] सज्जित, तैयार (दे १, ११६)।

उद्धच्छिअ वि [दे] निषिद्ध, प्रतिषिद्ध (दे १, १११)।

उद्धट्टु देखो **उद्धर**।

उद्धड वि [उद्धृत] उठा कर रखा हुआ (धर्म ३)।

उद्धण वि [दे] उद्धत, अविनीत (षड्)।

उद्धत्थ वि [दे] विप्रलब्ध, वञ्चित (दे १, ९६)।

उद्धदेहिय न [और्ध्वदेहिक] अग्नि-संस्कार आदि अन्त्येष्टि क्रिया (स १०६)।

उद्धुम सक [उद् + हन्] १ शंख वगैरह फूँकना, वायु भरना। २ ऊँचा फेंकना, उड़ाना। कवकृ. **उद्धुम्मंताणं संखाणं सिंगाणं संखियाणं खरमुहीणं'** (राय); 'पायालसहस्स-वायवसवेगसलिलउद्धुम्ममाणदगरयरयंधकारं (रयणागरसागरं)' (पण्ह १, ३; ओप)।

उद्धर सक [उद् + हृ] १ फँसे हुए को निकालना, ऊपर उठाना। २ उन्मूलन करना। ३ दूर करना। ४ खींचना। ५ जीर्ण मन्दिर वगैरह का परिष्कार-संस्कार करना। ६ किसी ग्रंथ या लेख के अंश-विशेष को दूसरी पुस्तक या लेख में अविकल नकल करना। भवि. उद्धरिस्सइ (स ५६६)। वकृ. पइनगरं पइगामं पायं जिणमंदिराइं पूयंतो, जिन्नाइं **उद्धरंतो'** (सुपा २२४);

'जयइ धरमुद्धरंतो भरणोसारियमुहग्गचलणेण।
णियदेहेण करेण व पंचंगुलिणा महाकुम्मो।'
(गउड)।

संकृ. **उद्धरिउं, उद्धरिऊण, उद्धरित्ता, उद्धरित्तु, उद्धट्टु** (पंचा १६; प्रासू); 'तं लयं सव्वसो छित्ता, **उद्धरित्ता** समूलयं' (उत्त २३; पंचा १६); 'बाहू उद्धट्टु कक्ख-मणुव्वजे' (सूअ १, ४); 'तसे पाणे उद्धट्टु पादं रीइज्जा' (आचा २, ३, १, ४)।

उद्धर (अप) देखो **उद्धुर** (भवि)।

उद्धरण न [उद्धरण] १ ऊपर उठाना। २ फँसे हुए को निकालना (गउड); 'दीणुद्धरणम्मि धणं न पउत्तं' (विवे १३५)। ३ उन्मूलन। ४ अपनयन (सूअ १, ४; ६)।

उद्धरण वि [दे] उच्छिष्ट, जूठा (दे १, ९६)।

उद्धरिअ वि [उद्धृत] १ उत्पाटित, उत्क्षिप्त; 'हक्खुत्तं उच्खूढं उक्खित्त-उप्पाडिआइं उद्धरिअं' (पाअ)। २ किसी ग्रन्थ या लेख के अंश-विशेष को दूसरे पुस्तक या लेख में अविकल नकल कर देना;

'एसो जीववियारो, संखेरूईण जाणणा-हेउं।
संखित्तो उद्धरिओ, रुंदाओ सुय-समुद्दाओ'

(जी ५१); 'जेण उद्धरिया विज्जा, आगासगमा महापरिण्णाओ' (आवम)। ३ आकृष्ट, खींचा हुआ। ४ निष्कासित, बाहर निकाला हुआ; 'उद्धरियसव्वसल्ल—' (पंचा १६)। ५ जीर्ण वस्तु का परिष्कार करना; 'जिणमंदिरं न उद्धरिअं' (विवे १३३)।

उद्धरिअ वि [दे] अर्दित, विनाशित (षड्)।

उद्धल पुं [दे] दोनों तरफ की अप्रवृत्ति (षड्)।

उद्धव पुं [उद्धव] ऊधो, श्रीकृष्ण का चाचा, मित्र और भक्त (रुक्मि ४६)।

उद्धवअ वि [दे] उत्क्षिप्त, फेंका हुआ (दे १, १०६)।

उद्धविअ वि [दे] अर्घित, पूजित (दे १, १०७)।

उद्धा } सक [उद् + धाव्] १ दौड़ना, **उद्धाअ** } वेग से जाना। २ ऊँचे जाना। उद्धाइ (पि १६५)। वकृ. **उद्धंत, उद्धाअंत, उद्धायमाण** (कप्प; से ६, ६६; १३, ६१; औप)।

उद्धाअ अक [ऊर्ध्वाय्] ऊँचा होना। वकृ. **उद्धाअमाण** (से १३, ६१)।

उद्धाअ वि [ऊद्धाव] उद्धावित, ऊँचा गया हुआ; 'छिण्णकडए वहंतं उद्धाअणिअत्तगरुड-मग्गिअसिहरे' (से ६, ३९)।

उद्धाअ पुं [दे] १ विषमोन्नत प्रदेश। २ समूह। ३ वि. थका हुआ, श्रान्त (दे १, १२४)।

उद्धाइअ वि [उद्धावित] १ फैला हुआ, विस्तीर्ण, प्रसृत (से ३, ५२)। २ ऊँचा दौड़ा हुआ (से २, २२)।

उद्धार पुं [उद्धार] १ त्राण, रक्षण (कुमा)। २ ऋण देना, उधार देना (सुपा ५६७; श्रा १४)। ३ अपहरण (अणु)। ४ अपवाद (राज)। ५ धारणा, पढ़े हुए पाठ को नहीं भूलना; 'पावल्लेण उवेच्च व उद्धयपयधारणा उ उद्धारो' (वव १०)। °**पलिओवम** न [°**पल्योपम**] समय का एक परिमाण (अणु)। °**समय** पुं [°**समय**] समय-विशेष (अणु)। °**सागरोवम** न [°**सागरोपम**] समय का एक दीर्घ परिमाण (अणु)।

उद्धरय वि [उद्धारक] उद्धार-कारक (कुप्र २)।

उद्धाव देखो **उद्धा**।

उद्धवण न [उद्धावन] नीचे देखो (श्रा १)।

उद्धावणा स्त्री [उद्धावना] १ प्रबल प्रवृत्ति। २ दूर-गमन, दूर क्षेत्र में जाना (धर्म ३)। ३ कार्य की शीघ्र सिद्धि (वव १)।

°**उद्धि** देखो **बुद्धि** (षड्)।

उद्धि स्त्री [दे] गाड़ी का एक अवयव, गुजराती 'उंध' (सुज्ज १०, ८ टी; ठा ३, २ टी-पत्र १३३)।

उद्धिअ देखो **उद्धरिअ**=उद्धृत (श्रा ४०; औप; राय; वव १; औप; पच्च २८)।

उद्धीमुह वि [ऊर्ध्वीमुख] मुँह ऊँचा किया हुआ (चंद ४)।

उद्धुंधलिय वि [दे] धुँधलाया हुआ (सण)।

उद्धुंणिय देखो **उद्धुय** (सण)।

उद्धुम सक [पू] पूर्ण करना, पूरा करना। उद्धुमइ (हे ४, १५६)।

उद्धुमा सक [उद् + ध्मा] १ आवाज करना। २ जोर से धमनी को चलाना। उद्धुमाइ उद्धुमामइ (षड्; प्रामा)।

उद्धुमाइअ वि [उद्ध्मापित] ठंढा किया हुआ, निर्वापित (से १, ८)।

उद्धुमाय वि [दे] १ परिपूर्ण; 'मायाइ उद्धुमाया' (कुमा); 'पडिहत्थमुद्धुमायं आहिरेइयं च जाण आउण्णे' (णंदि)। २ उन्मत्त; 'मअरंदरसुद्धुमाअमुहलमहुअरं' (से ६, ११)।

उद्धुय वि [उद्धूत] १ पवन से उड़ा हुआ (से ७, १४)। २ प्रसृत, फैला हुआ; 'गंधुद्धुयाभिरामे' (औप)। ३ प्रकम्पित; 'वाउद्धुयविजयवेजयंती' (जीव ३)। ४ उत्कट, प्रबल (सम १३७)। ५ व्यक्त, प्रकट (कप्प)।

उद्धुर वि [उद्धुर] १ ऊँचा, उच्च; उद्धुरं उच्चं' (पाअ)। २ प्रचण्ड, प्रबल (सुर ३,३६; १२, १०६)।

उद्धुव्वंत, **उद्धुव्वमाण** } देखो **उद्धू**।

उद्धुसिय वि [उद्धुषित] १ रोमाञ्च, 'अन्नोन्नजंपिएहिं हसिउद्धुसिएहिं खिप्पमाणो य' (उव)। २ वि. रोमाञ्चित, पुलकित (दे १, ११५; २, १००); 'उद्धुसियरोमकूवो सीयलअनिलेण संकुइयगत्तो' (सुर २, १०१); 'उद्धुसियकेसरसढं' (महा)।

उद्धू सक [उद् + धू] १ कँपाना, चलाना। २ चामर वगैरह बीजना, पंखा करना। कवकृ. **उद्धुव्वंत**, **उद्धुव्वमाण** (पउम २, ४०; कप्प)।

उद्धूणिय देखो **उद्धुय** (सण)।

उद्धूद (शौ) देखो **उद्धुय** (चारु ३५)।

उद्धूल सक [उद् + धूलय्] १ व्याप्त करना। २ धूलि लगाना। उद्धूलेइ (हे ४, २९)।

उद्धूलण न [उद्धूलन] धूलि को अङ्ग पर लगाना;
'जारमसाणसमुब्भवभूइसुहप्फंससिज्जिरंगीए।
ण समप्पइ णवकावालिआइ उद्धूलणारंभो।'
(गा ४०८)।

उद्धूलिय वि [उद्धूलित] १ धूलि से लपेटा हुआ। २ व्याप्त; 'तिमिरोद्धूलिअभवणं' (कुमा)।

उद्धूवणिया स्त्री [उद्धूपनिका] धूप देना,
'केवि हु विरालतन्नयपुरीसमीसेहिं गुग्गुलाईहिं।
उव्वरियम्मि खिवित्ता उद्धूवणियं पयच्छंति।'
(सुर १४, १७४)।

उद्धूविअ वि [उद्धूपित] जिसको धूप किया गया हो वह (विक्र ११३)।

उद्धोस पुं [उद्धर्ष] उल्लास, ऊँचा होना (सट्ठि ६५); 'जं जं इह सुहुमबुद्धीए चिंतिज्जइ तं सव्वं रोमुद्धोसं जणेइ मह अम्मो' (सुपा ६४)।

उन्न न [ऊर्ण] ऊन, भेड़ या बकरी के रोम। °**मय** वि [°मय] ऊन का बना हुआ,
'गोवालियाण विंदं नच्चावइ फारमुत्तियाहारं।
उन्नमयवासनिवसणपीणुन्नयथणहराभोगं॥'
(सुपा ४३२)।

उन्न (अप) वि [विषण्ण] विषाद-प्राप्त, खिन्न (षड्)।

उन्नइ देखो **उण्णइ** (काल; सुपा २५७; प्रासू २८; सार्ध ३४)।

उन्नइज्जमाण देखो **उन्नी**।

उन्नइय वि [उन्नीत] ऊँचा लिया हुआ (पउम १०५, ५७)।

उन्नंद सक [उद् + नन्द्] अभिनन्दन करना। कवकृ. 'हियममालासहस्सेहिं उन्नंदिज्जमाणे' (कप्प)।

उन्नय देखो **उण्णय** (सुपा ४७६; सम ७१; कप्प)।

उन्ना देखो **उण्णा**। °**मय** वि [°मय] ऊन का बना हुआ (सुपा ६४१)।

उन्नाडिय न [उन्नाटित] हर्ष-द्योतक आवाज (स ३७६)।

उन्नाम पुं [उन्नाम] १ ऊँचाई। २ अभिमान, गर्व (सम ७१)।

उन्नामिअ वि [उन्नमित] ऊँचा किया हुआ (पाअ; महा, स ३७७)।

उन्नालिअ वि [दे] देखो **उण्णालिअ**; 'उन्नालिअं उन्नामिअं' (पाअ)।

उन्नाह पुं [उन्नाह] ऊँचाई (पाअ)।

उन्निअ देखो **उण्णिअ**=औणिक (ओघ ७०५)।

उन्निक्ख सक [उन्नि + खन्] उखाड़ना, उन्मूलन करना। भवि. उन्निक्खिस्सामि (सूअ २, १, ६)। कृ. **उन्निक्खेयव्व** (सूअ २, १, ७)।

उन्निक्खमण न [उन्निष्क्रमण] दीक्षा छोड़ कर फिर गृहस्थ होना, साधुपन छोड़कर फिर गृहस्थ बनना (उप १३० टी; ३६६)।

उन्नी देखो **उण्णी**। कवकृ. **उन्नइज्जमाण** (कप्प)।

उन्हाल (अप) पुं [उष्णकाल] ग्रीष्म ऋतु (भवि)।

उपक्खर न [उपस्कर] घर का उपकरण (उत्त ६, ६)।

उपंत न [उपान्त] १ पिछला या पीछे का भाग। २ वि. समीपस्थ (गा ६६३)।

उपरिं, **उपरि** } देखो **उवरिं** (विसे १०२१; षड्)।

उपरिल्ल देखो **उवरिल्ल** (षड्)।

उपवज्जमाण देखो **उववाय**=उप + वादय्।

उपसप्प देखो **उवसप्प**। उपसप्पइ (षड्)। संकृ. **उपसप्पिय** (नाट)।

उपाणहिय पुंस्त्री [उपानत्] जूता, 'अन्नदिणे जंपाणेपाणहिए मुत्तमारूढा' (सुपा ३९२); 'तह तं निउपाणहियाउवि वाहिस्सं' (सुपा ३९२)।

उप्प देखो **ओप्प**=अर्पय्। उप्पेइ (पि १०४; हे १, २६९)।

उप्पइअ वि [उत्पतित] ऊँचा गया हुआ, उड़ा हुआ; 'सेवि य आगासे उप्पइए' (उवा; सुर ३, ६६)। २ उन्नत, ऊँचा (आचा)। ३ उद्भूत, उत्पन्न (उत्त २)। ४ न. उत्पतन, उड़ना (औप)।

उप्पइअ वि [उत्पाटित] उत्थापित, उठाया हुआ; 'खुडिउप्पइअमुणालं दट्ठूण पिअं व सिढिलवलअं णलिणिं' (से १, ३०)।

उप्पइअव्व, उप्पइउं } देखो उप्पय = उत् + पत्।

उप्पंक वि [दे] १ बहु, अत्यन्त। २ पुं. पङ्क, कीचड़, काँदो। ३ उन्नति (दे १, १३०)। ४ समूह, राशि (दे १, १३०; पात्र; गउड; स ४३७)।

उप्पंग पुं [दे] समूह, राशि;
'णवपल्लवं विसएणा, पहिआ
पेच्छंति चूअरुक्खस्स।
कामस्स लेहिउप्पंगराइअं
हत्थभल्लं व ॥' (गा ५८५)।

उप्पज्ज अक [उत् + पद्] उत्पन्न होना। उप्पज्जंति (कप्प)। वकृ. **उप्पज्जंत, उप्पज्जमाण** (से ८, ५५; सम्म १३४; भग; विसे ३३२२)।

उप्पड सक [उत् + पत्] उड़ना, ऊँचा जाना, कूदना (प्रामा)।

उप्पड पुं [उत्पट] त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष, क्षुद्र कीट-विशेष (राज)।

उप्पडिअ देखो उप्पइअ (नाट)।

उप्पण सक [उत् + पू] धान्य वगैरह को सूप आदि से साफ-सुथरा करना। कर्म. 'साली वीही जवा य लुव्वंतु मलिज्जंतु उप्पणिज्जंतु य' (पण्ह १, २)।

उप्पणण न [उत्पवन] सूप आदि से धान्य वगैरह को साफ-सुथरा करना (दे १, १०३)।

उप्पण्ण वि [उत्पन्न] उत्पन्न, संजात, उद्भूत (भग; नाट)।

उप्पत्त वि [दे] १ गलित। २ विरक्त (षड्)।

उप्पत्ति वि [उत्पत्ति] उत्पत्ति, प्रादुर्भाव (उव)।

उप्पत्तिया स्त्री [औत्पत्तिकी] बुद्धि-विशेष, बिना शास्त्राभ्यासादि के ही होनेवाली बुद्धि, स्वाभाविक मति (ठा ४, ४; णाया १, १)।

उप्पन्न देखो उप्पण्ण (उवा; सुर २, १६०)।

उप्पय सक [उत् + पत्] उड़ना, कूदना। उप्पयइ (महा)। वकृ. **उप्पयंत, उप्पयमाण** (उप १४२ टी; णाया १, १६)। संकृ. **उप्पइत्ता** (औप)। कृ. **उप्पइअव्व** (से ६,७८)। हेकृ. **उप्पइउं** (सुर ६, २२२)।

उप्पय देखो उप्पव। वकृ. **उप्पअंत** (से ५, ५६)।

उप्पय पुं [उत्पात] १ उत्पतन, ऊँचे जाना, कूदना, उड्डयन। २ उत्पत्ति; 'अवट्ठिए चले मंदपडिवाउप्पयाई य' (विसे ५७७)। °**निवय** पुं [°निपात] १ ऊँचा-नीचा होना; 'खरपवणुद्धुयसायरतरंगवेगेहिं हीरए नावा। गुरुकुल्लोलवसुट्ठियनंगरनियरेण धरियावि ॥ अणवरयतरंगेहिं उप्पयनिवयं कुणंतिया वहइ' (सुर १३, १९७)। २ नाट्य-विधि का एक प्रकार (जीव ३)।

उप्पयण न [उत्पतन] ऊँचा जाना, उड्डयन (ठा १०; से ६, २४)।

उप्पयण न [उत्प्लवन] जल को लाँघना, तैरना (से ५, ६०)।

उप्पयणी स्त्री [उत्पतनी] विद्या-विशेष (सूअ २, २, २७)।

उप्पिरिं (अप) देखो **उवरि** (हे ४, ३३४; पिंग)।

उप्परिवाडि, °डी स्त्री [उत्परिपाटि, °टी] उलटा क्रम, विपर्यास, विपर्यय; 'उप्परिवाडीवहणे चाउम्मासा भवे लहुगा' (गच्छ १)।

उप्परोप्पर अ [उपर्युपरि] ऊपर-ऊपर (स १४०)।

उप्पल न [उत्पल] १ कमल, पद्म (णाया १, १; भग)। २ विमान-विशेष; (सम ३८)। ३ संख्या-विशेष, 'उप्पलंग' को चौरा... लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह (ठा २, ४)। ४ सुगन्धि द्रव्य-विशेष; 'परमुप्पलगंधिए' (जं ३)। ५ पुं. परिव्राजक-विशेष (आचू १)। ६ द्वीप-विशेष। ७ समुद्र-विशेष (पण्ण १५)। °**वेंटग** पुं [°वृन्तक] आजीविक मत का एक साधु-समाज (औप)।

उप्पलंग न [उत्पलाङ्ग] संख्या-विशेष, 'हुहुय' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह (ठा २, ४)।

उप्पला स्त्री [उत्पला] १ एक इन्द्राणी, काल नामक पिशाचेन्द्र की एक अग्र-महिषी (ठा ४, १)। २ इस नाम का 'ज्ञाताधर्मकथा' का एक अध्ययन (णाया २, १)। ३ स्वनाम ख्यात एक श्राविका (भग १२, १)। ४ एक पुष्करिणी (जीव ३)।

उप्पलिणी स्त्री [उत्पलिनी] कमलिनी, कमल का गाछ या पौधा (पण्ण १)।

उप्पल्ल वि [दे] अध्यासित, आरूढ़ (षड्)।

उप्पव सक [उत् + प्लु] १ लाँघना, पार करना, तैरना। २ ऊँचा जाना, उड़ना। वकृ. **उप्पवंत, उप्पवमाण** (से ५,६१; ८,८६)।

उप्पवइय वि [उत्प्रव्रजित] जिसने दीक्षा छोड़ दी हो वह, साधु होकर फिर गृहस्थ बना हुआ (स ४८५)।

उप्पह पुं [उत्पथ] उन्मार्ग, कुमार्ग; 'पंथाउ उप्पहं नेंति' (निचू ३; से ४, २६; हेका २५६)। °**जाइ** वि [°यायिन्] उलटे रास्ते जानेवाला, विपथ-गामी (ठा ४, ३)।

उप्पा स्त्री देखो **उप्पाय** = उत्पाद (ठा १—पत्र १६; ठा ५, ३—पत्र ३४६)।

उप्पाइ वि [उत्पादिन्] उत्पन्न होनेवाला (विसे २८१९)।

उप्पाइत्ता देखो **उप्पाय** = उत् + पादय्।

उप्पाइत्तु वि [उत्पादयितृ] उत्पादक, उत्पन्न करनेवाला (ठा ७)।

उप्पाइय न [औत्पातिक] भूकंप आदि उत्पातों का सूचक शास्त्र (सूअ १, १२, ९)।

उप्पाइय वि [उत्पादित] उत्पन्न किया हुआ, 'उप्पाइयाविच्छिण्णकोउहलत्ते' (राय)।

उप्पाइय वि [औत्पातिक] १ अस्वाभाविक, कृत्रिम; 'उप्पाइयपव्वयं व चंकमंतं'। २ आकस्मिक, अकस्मात् होनेवाला; 'उप्पाइया वाही' (राज)। ३ न. अनिष्ट-सूचक आकस्मिक उपद्रव, उत्... ; 'भो भो नावियपुरिसा सकन्नधारा समुजया होह। दीसइ कयंतवयणं व भीममुप्पाइयं जेण' (सुर १३, १८९)।

उप्पाएउं, उप्पाएंत, उप्पाएत्तए } देखो **उप्पाय** = उत् + पादय्।

उप्पाड सक [उत् + पाटय्] १ ऊपर उठाना। २ उखाड़ना, उन्मूलन करना। उप्पाडेइ (पण्ह १,१; स ६५; काल)। कृ. **उप्पाडणिज्ज** (सुपा २४६)। संकृ. **उप्पाडिय** (नाट)।

उप्पाड सक [उत् + पादय्] उत्पन्न करना। संकृ. **उप्पाडिऊण** (विसे ३३२ टी)।

उप्पाड पुं [उत्पाट] उन्मूलन, उत्खनन; 'नयणोप्पाडो' (उप १४६ टी; ६८६ टी)।

उप्पाडण न [उत्पाटन] १ उत्थापन, ऊपर उठाना। २ उन्मूलन, उत्खनन (स २६६; राज)।

उप्पाडिय वि [उत्पाटित] १ ऊपर उठाया हुआ (पाअ; प्रासू)। २ उन्मूलित (श्राक)।

उप्पाडिय वि [उत्पादित] उत्पन्न किया हुआ; 'उप्पाडियणाणाणं खंदगसीसाण तेसिं नमो' (भाव १३)।

उप्पादअ वि [उत्पादक] उत्पन्न कर्त्ता (प्रयौ १७)।

उप्पादीअमाण देखो **उप्पाय** = उत् + पादय्।

उप्पाय सक [उत् + पादय्] उत्पन्न करना, बनाना। उप्पाएहि (काल)। वकृ. **उप्पाएंत, उप्पायंत** (सुर २, २२; ६, १३)। संकृ. **उप्पाएत्ता** (भग)। हेकृ. **उप्पाइत्ता, उप्पाएउं; उप्पाएत्तए** (राज, पि ४६५; णाया १, ४)। कवकृ. **उप्पादीअमाण** (शौ) (नाट)।

उप्पाय पुंन [उत्पात] १ उत्पतन, ऊर्ध्व-गमन; 'नं सग्गं गंतुमणा सिक्खंति नहंगणुप्पायं' (सुपा १८०)। २ आकस्मिक उपद्रव; 'पवहणं च पासइ समुद्दमज्झे उप्पाएण छम्मासे भमंतं ताहे अणेण तं उप्पायं उवसामियं' (महा)। ३ आकस्मिक उपद्रव का प्रतिपादक शास्त्र, निमित्त-शास्त्र-विशेष (ठा ६; सम ४७; पण्ह १,४)। °**निवाय** पुं [°निपात] चढ़ना और उतरना (स ४११)।

उप्पाय पुं [उत्पाद] उत्पत्ति, प्रादुर्भाव (सुपा ६; कुमा)। °**पव्वय** पुं [°पर्वत] एक प्रकार के पर्वत, जहां आकर कई व्यन्तर-जातीय देव-देवियां क्रीड़ा के लिए विचित्र प्रकार के शरीर बनाते हैं (सम ३३; जीव ३)। °**पुव्व** न [°पूर्व] प्रथमपूर्व, ग्रन्थांश-विशेष, बारहवें जैन अङ्ग-ग्रन्थ का एक भाग (सम २६)।

उप्पायग वि [उत्पादक] १ उत्पन्न करने-वाला। २ पुं. त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष, कीट-विशेष (वव ८)।

उप्पायण न [उत्पादन] १ उत्पादन, उपार्जन (ठा ३,४)। २ वि. उत्पादक, उपार्जक (पउम ३०, ४०)।

उप्पायणया, उप्पायणा स्त्री [उत्पादना] १ उपार्जन, उत्पन्न करना। जैन साधु की भिक्षा का एक दोष (ओघ ७४६; ठा ३, ४; पिण्ड १)।

उप्पायय वि [उत्पादक] उत्पन्न-कर्ता (सुख २, २५)।

उप्पाल सक [कथ्] कहना, बोलना। उप्पालइ (हे ४, २)। उप्पालसु (कुमा)।

उप्पाव सक [उत् + प्लावय्] १ लँघाना, तैराना। २ कुदाना, उड़ाना। उप्पावेइ (हे २, १०६)। कवकृ. **उप्पियमाण** (उवा)।

उप्पास सक [उत्प्र + अस्] हँसी करना। उप्पासिंति (सुख १, १६)।

उप्पाहल न [दे] उत्कंठा, उत्सुकता (पाअ)।

उप्पि सक [अर्पय्] देना। उप्पिउ (कप्प)।

उप्पिं अ [उपरि] ऊपर; 'कहि णं भंते! जोइसिआ देवा परिवसंति? गोयमा! उप्पिं दीवसमुद्दाणं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए' (जीव ३; णाया १, ६; ठा ३, ४; औप)।

उप्पिंगलिआ स्त्री [दे] हाथ का मध्य भाग, करोत्संग (दे १, ११८)।

उप्पिंजल न [दे] १ सुरत, संभोग। २ रज, धूली। ३ अपकीर्त्ति, अपयश (दे १, १३५)।

उप्पिंजल वि [उत्पिञ्जल] अति-आकुल, व्याकुल (कप्प)।

उप्पिंजल अक [उत्पिञ्जलय्] आकुल की तरह आचरण करना। वकृ. **उप्पिंजलमाण** (कप्प)।

उप्पिच्छ [दे] देखो **उप्पित्थ**; 'आहित्थं उप्पिच्छं च आउलं रोसभरियं च', 'भीयं दुयमुप्पिच्छमुत्तालं च कमसो मुणेयव्वं' (जीव ३); 'हत्थी अह तस्स सवडहुत्तो पहाविओ आयरुप्पिच्छो', 'रक्खससेन्नंपि आयरुप्पिच्छं (पउम ८, १७५; १२, ८७); 'उप्पिच्छमंथरगईहिं' (भत्त ११६)।

उप्पिण देखो **उप्पण**। वकृ. **उप्पिणित** (सुपा ११)।

उप्पित्थ वि [दे] १ त्रस्त, भीत (दे १, १२६; से १०, ६१; स ५७४; पुप्फ ४४३; गउड); 'किं कायव्वविमूढा सरणविहूणा भयुप्पित्था' (सुर १२, १६०)। २ कुपित, क्रुद्ध। ३ विधुर, आकुल (दे १, १२६; पाअ)।

उप्पित्थ वि [दे] स्वास-युक्त (गीत) (राय ७७ टी)।

उप्पिय सक [उत् + पा] १ आस्वादन करना। २ फिर-फिर स्वास लेना। वकृ. **उप्पियंत** (पण्ह १, ३—पत्र ५५; राज)।

उप्पिय वि [अर्पित] अर्पण किया हुआ (हे १, २६६)।

उप्पियण न [उत्पान] फिर-फिर स्वास लेना (राज)।

उप्पियमाण देखो **उप्पाव**।

उप्पिलण न [उत्प्लावन] लाँघना (पिंड ४२२)।

उप्पिलाव देखो **उप्पाव**। उप्पिलावेइ। वकृ. **उप्पिलावंत**; 'जे भिक्खू सरणं नावं उप्पिलावेइ, उप्पिलावंतं वा साइज्जइ' (निचू १८)।

उप्पीड पुं [दे. उत्पीड] समूह, राशि (से ४, ३७; ८, ३)।

उप्पीडण न [उत्पीडन] १ कस कर बाँधना। २ दबाना (से ८, ६७)।

उप्पील सक [उत् + पीडय्] १ कस कर बाँधना। २ उठवाना; 'सरणं वा णावं उप्पीलावेज्जा (आचा २, ३, १, ११)। उप्पीलवेज्जा (पि २४०)।

उप्पील पुं [दे] १ संघात, समूह (दे १, १२६; सुपा ६१; सुर ३, ११६; वज्जा ६०; पुप्फ ७३; धम्म १२ टी); 'हुयासणो दहे सव्वं जालुप्पीलो विणासए' (महा)। २ स्थपुट, विषमोन्नत प्रदेश (दे १, १२६)।

उप्पीलण न [उत्पीडन] पीड़ा, उपद्रव (स २७२)।

उप्पीलिय वि [उत्पीडित] कस कर बाँधा हुआ, 'उप्पीलियचिंधपट्टगहियाउहपहरणा' (पण्ह १, ३; विपा १, २)।

उप्पुअ वि [उत्प्लुत] उच्छलित, कूदा हुआ (से ६, ४८; पराह १, ३)।

उप्पुंसिअ देखो **उप्पुसिअ** (से ६, ८५)।

उप्पुणिअ वि [उत्पूत] सूप से साफ-सुथरा किया हुआ (पाअ)।

उप्पुण्ण वि [उत्पूर्ण] पूर्ण, व्याप्त (स २५)।

उप्पुलइअ वि [उत्पुलकित] रोमाञ्चित (स २८१)।

उप्पुसिअ वि [उत्प्रोञ्छित] लुप्त, प्रोञ्छित (से ६, ८५ गउड)।

उप्पूर पुं [उत्पूर] १ प्राचुर्य (पराह १, ३)। २ प्रकृष्ट-प्रवाह (औप)।

उप्पेक्ख (अप) देखो **उविक्ख**। उप्पेक्ख (पिंग)।

उप्पेक्ख सक [उत्प्र+ईक्ष] संभावना करना, कल्पना करना। उप्पेक्खामि (स १४७)। उप्पेक्खेमि (स ३४६)।

उप्पेक्खा स्त्री [उत्प्रेक्षा] १ अलंकार-विशेष २ वितर्कणा, संभावना (गा ३३९)।

उप्पेक्खिअ वि [उत्प्रेक्षित] संभावित, विकल्पित (दे १, १०६)।

उप्पेय न [दे] अभ्यंग, तैलादि की मालिश; 'पुव्वं च मंगलट्ठा उप्पेयं जइ करेइ गिहियाणं' (वव ६)।

उप्पेल सक [उद्+नमय्] ऊँचा करना, उन्नत करना। उप्पेलइ (हे ४, ३६)।

उप्पेलिअ वि [उन्नमित] ऊँचा किया हुआ, उन्नत किया हुआ (कुमा)।

उप्पेल्ल पुं [उन्नमन] ऊँचा करना (पउम ८, २७२)।

उप्पेस पुं [उत्पेष] त्रास, भय, डर (से १०, ६१)।

उप्पेहड वि [दे] उद्भट, आडम्बरवाला (दे १, ११६; पाअ; स ४४९)।

उप्फ देखो **पुप्फ** (गा ६३९)।

उप्फण सक [उत्+फण्] छाँटना, पवन में धान्य आदि का छिलका दूर करना। उप्फणंति, भूका. उप्फणिसु, भवि. उप्फणिस्संति (आचा २, १, ६, ४)।

उप्फंदोल वि [दे] चल, अस्थिर (दे १, १०२)।

उप्फाल पुं [दे] खल, दुर्जन (दे १, ९०; पाअ)।

उप्फाल सक [उत्+पाटय्] १ उठाना। २ उखाड़ना। उप्फालेइ (हे २, १७४)।

उप्फाल सक [कथ्] कहना, बोलना। उप्फालेइ (हे २, १७४)।

उप्फाल वि [कथक] कहनेवाला, सूचक (स ६४४)।

उप्फालिअ वि [कथित] १ कथित। २ सूचित (पाअ; उप ७२८ टी; स ४७८)।

उप्फिड अक [उत्+स्फिट्] कुण्ठित होना, असमर्थ होना। उप्फिडइ, उप्फेडइ; 'एमाइविगप्पणेहिं वाहिज्जमाणो उप्फि-(प्फे)-डइ परसू' (महा)।

उप्फिड अक [उत्+स्फिट्] मंडूक की तरह कूदना, उड़ना। उप्फिडइ (उत्त २७, ५)। वकृ. **उप्फिडंत** (पव २)।

उप्फिडण न [उत्स्फेटन] कुण्ठित होना (स ६९८)।

उप्फिडिय वि [उत्स्फिटित] १ कुण्ठित। २ बाहर निकला हुआ; 'कत्थइ नक्कुक्कत्तियसिप्पिपुडुप्फिडियमोत्तिया...नो' (सुर १३, २१३)।

उप्फुंकिआ स्त्री [दे] धोबिन, कपड़ा धोनेवाली (दे १, ११४)।

उप्फुंडिअ वि [दे] आस्तृत, बिछाया हुआ (दे १, ११३)।

उप्फुण्ण वि [दे] आपूर्ण, भरा हुआ, व्याप्त (दे १, ९२; सुर १, २३३; ३, २१५)।

उप्फुन्न वि [दे] स्पृष्ट, छुआ हुआ (पव १५८ टी)।

उप्फुल्ल वि [उत्फुल्ल] विकसित (पाअ; से ६, ९६)।

उप्फुल्लिआ स्त्री [उत्फुल्लिका] क्रीड़ा-विशेष, पाँव पर बैठ कर बारंबार ऊँचा-नीचा होना;

'उप्फुल्लिआइ खेल्लउ,
मा णं वारेहि होउ परिऊढा।
मा जहणभारगरुई,
पुरिसाअंतो किलिम्मिहिइ' (गा १९६)।

उप्फुस सक [उत्+स्पृश्] सिंचना, छिड़कना। संकृ. **उप्फुसिऊण** (राज)।

उप्फेणउप्फेणिय क्रिवि [दे] क्रोध-युक्त प्रबल वचन से; 'उप्फेणउप्फेणियं सीहरायं एवं वयासी' (विपा १, ६—पत्र ९०)।

उप्फेस पुं [दे] १ त्रास, भय (दे १, ९४)। २ मुकुट, पगड़ी, शिरोवेष्टन; 'पंच रायककुहा पराणत्ता, तं जहा—खग्गं छत्तं उप्फेसं उवाहणाउ बालवियणी' (ठा ५, १—पत्र ३०३; औप; आचा २, ३, २, २)।

उप्फेसण न [दे] डराना, भयोत्पादन (सुख ३, १)।

उप्फोअ पुं [दे] उद्गम, उदय (दे १, ९१)।

उबुस सक [मृज्] मार्जन करना, शुद्धि करना, साफ करना। उबुसइ (षड्)।

उब्बंध सक [उद्+बन्ध्] १ फाँसी लगाना, फाँसी लगा कर मरना। २ वेष्टन करना। वकृ. 'जलनिहितडम्मि दिट्ठा उब्बंधंती इहप्पाणं' (सुपा १६०)। संकृ. **उब्बंधिअ, उब्बंधिऊण** (नाट; पि २७०; स ३४६)।

उब्बंधण न [उद्बन्धन] फाँसी लगाना, उल्लम्बन (... , ५)।

उब्बण वि [उल्बण] उत्कट (पि २६६)।

उब्बद्ध वि [उद्बद्ध] १ जिसने फाँसी लगाई हो वह, फाँसी लगा कर मरा हुआ। २ वेष्टित; 'भुअंगसंघायउब्बद्धो' (सुर ८, ५७)। ३ शिक्षक के साथ शर्तों से बँधा हुआ, शिक्षक के आयत्त (ठा ३);

'सिप्पाई सिक्खंतो,
सिक्खावेंतस्स देइ जा सिक्खा।
गहियम्मिवि सिक्खम्मि,
जं चिरकालं तु उब्बद्धो' (बृह)।

उब्बिब वि [दे] १ खिन्न, उद्विग्न। २ शून्य ३ क्रान्त। ४ प्रकट वेष वाला। ५ भीत, डरा हुआ। ६ उद्भट (दे १, १२७; वज्जा ६२)।

उब्बिंबल वि [दे] कलुष जलवाला (दे १११ टी)।

उब्बिंबल न [दे] कलुष जल, मैला पानी (दे १, १११)।

उब्बिबिर वि [दे] खिन्न, उद्विग्न (कप्पू)।

उब्बुक्क सक [उद् + बुक्] बोलना, कहना। उब्बुक्कइ (हे ४, २)।

उब्बुक्क न [दे] १ प्रलपित, प्रलाप। २ संकट। ३ बलात्कार (दे १, १२८)।

उब्बुड अक [उद् + ब्रुड्] तैरना।

उब्बुड } पुं [उद्ब्रुड] तैरना। °निबुड, **उब्बुड्ड** } °निब्बुड्डण न [निब्रुड,°ण] उमचुभ करना (पएह १,३; उप १२८ टी)।

उब्बुड्ड वि [उद्ब्रुडित] उन्मग्न, तीर्ण (गा ३७; स ३६०)।

उब्बुड्डण न [उद्ब्रुडन] उन्मज्जन (कप्पू)।

उब्बुह अक [उत् + क्षुभ्] संक्षुब्ध होना। उब्बुहइ (प्राकृ ७५)।

उब्बूर वि [दे] १ अधिक, ज्यादा। २ पुं. संघात, समूह। ३ स्थपुट, विषमोन्नत प्रदेश (दे १, १२६)।

उब्भ सक [ऊर्ध्वय्] ऊँचा करना, खड़ा करना। उब्भेउ (वज्जा ६४), उब्भेह (महा)।

उब्भ देखो **उड्ढ** (हे २, ५६; सुर २, ६; षड्)।

उब्भंड पुं [उद्भाण्ड] १ उत्कट भाँड़, बहुरूपा, निर्लज्ज हुंड़ा, उग्र विदूषक;

'खरउत्ति कहं जाणसि
देहागारा कहिंति से हुंदि।
छिक्कोवण उब्भंडो
णीयासि दारुणसहावो।' (ठा ६ टी)।

२ न. गाली, कुत्सित-वचन; 'उब्भंडवयण—' (भवि)।

उब्भंत वि [दे] ग्लान, बीमार (दे १, ६५; महा)।

उब्भंत वि [उद्भ्रान्त] १ आकुल, व्याकुल, खिन्न (दे १, १४३);

'अवलंबह मा संकह ण इमा गहलंघिआ परिब्भमइ। अत्थक्कगज्जिउब्भंतहित्थहिअआ पहिअजाआ' (ग ३८६); 'भवभमणुब्भंतमाणसा अम्हे' (सुर १५, १२३)। २ मूर्च्छित (से १,८)। ३ भ्रान्तियुक्त, भौचक्का, चकित (हे २, १६४)।

उब्भंत पुं [उद्भ्रान्त] प्रथम नरक-पृथिवी का चौथा नरकेन्द्रक—एक नरक-स्थान (देवेन्द्र ३)।

उब्भग्ग वि [दे] गुण्ठित. व्याप्त; 'तिमिरोब्भग्गणिसाए' (दे १, ६५; नाट)।

उब्भज्जि स्त्री [दे] कोद्रव-समूह (राज)।

उब्भड वि [उद्भट] १ प्रबल, प्रचण्ड; 'उब्भडपवणपकंपिरजयप्पडागाइ अइपयडं' (सुपा ४६); 'उब्भडकल्लोलभीसणारावे' (णमि ४)। २ भयंकर, विकराल (भग ७, ६)। ३ उद्धत, आडंबरी (पाअ);

'अइरोसो अइतोसो अइहासो
दुज्जणेहिं संवासो।
अइउब्भडो य वेसो पंचवि
गरुयंपि लहुअंति।' (धम्म)।

उब्भम पुं [उद्भ्रम] १ उद्वेग २ परिभ्रमण (नाट)।

उब्भव अक [उद् + भू] उत्पन्न होना। उब्भवइ (पि ४७५; नाट)। वकृ. **उब्भवंत** (सुपा ५७१; ६५६)।

उब्भव अक [ऊर्ध्वय्] ऊँचा करना, खड़ा करना।

उब्भव पुं [उद्भव] उत्पत्ति, प्रादुर्भाव (विसे; णाया १, २)।

उब्भविय वि [ऊर्ध्वित] ऊँचा किया हुआ (उप पृ १३०; वज्जा १४)।

उब्भाअ वि [दे] शान्त, ठंढा; (दे १, ६६)।

उब्भाम सक [उद् + भ्रामय्] घुमाना। उब्भामेइ (राय १२६)।

उब्भाम पुं [उद्भ्राम] १ परिभ्रमण (ठा ४)। २ वि. परिभ्रमण करनेवाला (वव १)।

उब्भामइल्ला स्त्री [उद्भ्रामिणी] स्वैरिणी, कुलटा स्त्री (वव ४; बृह ६)।

उब्भामय पुं [उद्भ्रामक] जार, उपपति (पिंड ४२०)।

उब्भामग पुं [उद्भ्रामक] १ पारदारिक, परस्त्री-लम्पट (ओघ ६० भा)। २ वायु-विशेष, जो तृण वगैरह को ऊपर ले उड़ता है (जी ७)। ३ वि. परिभ्रमण करनेवाला (वव १)।

उब्भामिगा } स्त्री [उद्भ्रामिका] कुलटा **उब्भामिया** } स्त्री, स्वैरिणी (वव ६; उप पृ २६४)।

उब्भालण न [दे] १ सूप आदि से साफ-सुथरा करना, उत्पवन। २ वि. अपूर्व, अद्वितीय (दे, १, १०३)।

उब्भालिअ वि [दे] सूप आदि से साफ किया हुआ, उत्पूत; 'उब्भालिअं उप्पुणिअं' (पाअ)।

उब्भाव अक [रम्] क्रीड़ा करना, खेलना। उब्भावइ (हे ४,१६८; षड्)। वकृ. **उब्भावंत** (कुमा)।

उब्भावणया } स्त्री [उद्भावना] १ प्रभा- **उब्भावणा** } वना, गौरव, उन्नति; 'पवयण-उब्भावणया' (ठा १०—पत्र ५१४)। २ उत्प्रेक्षा, वितर्कणा; 'असब्भावउब्भावणाहिं' (णाया १, १२—पत्र १७४)। ३ प्रकाशन, प्रकटीकरण (णंदि)।

उब्भाविअ न [रमण] सुरत, क्रीड़ा, संभोग (दे १, ११७)।

उब्भास सक [उद् + भासय्] प्रकाशित करना। वकृ. **उब्भासंत, उब्भासेंत** (पउम २८, ३६; ३, १५५)।

उब्भासिय वि [उद्भासित] प्रकाशित (हेका २८२);

'भवणाओ नीहरंते जिणम्मि
चाउव्विहेहिं देवेहिं।
इंतेहि य जंतेहि य
कहमिव उब्भासियं गयणं॥'
(सुपा ७७)।

उब्भासुअ वि [दे] शोभाहीन (दे १, ११०)।

उब्भासेंत देखो **उब्भास**

उब्भि देखो **उब्भिय** = उद्भिद् (आचा)।

उब्भिउडि वि [उद्भ्रुकुटि] भौंह चढ़ाया हुआ (गउड)।

उब्भिज्जा स्त्री [उद्भेद्या] भाजी, एक तरह का शाक (पिंड ६२४)।

उब्भिंद सक [उद् + भिद्] १ ऊँचा करना, खड़ा करना। २ विकसित करना। ३ अंकुरित करना। ४ खोलना। कर्म. उब्भिज्जंति। वकृ. **उब्भिंदमाण** (आचा २, ७)। कवकृ. 'भत्तिभरनिब्भरुब्भिज्जमाणघणपुलयपुरियसरीरा' (सुपा ६५६ ६७; भग १६, ६)। संकृ. **उब्भिंदिय, उब्भिंदिउं** (पंचा १३; पि ५७४)।

उब्भिग देखो **उब्भिय** = उद्भिद् (पएह १, ४)।

उब्भिडण ४ [उद्भेदन] लग कर अलग होना, आघात कर पीछे हटना; 'जेसुं चिय कुंठिज्जइ, रहसुब्भिडणमुहलो महिहरेसु। तेसुं चेय णिसिज्जइ, पहिरोहंदोलिरो कुलिसो' ॥ (गउड)।

उब्भिण्ण } वि [उद्भिन्न] १ अंकुरित
उब्भिन्न } (ओघ ११३); उब्भिन्ने पाणियं पडियं' (सुर ७, ११४)। २ उद्घाटित, खोला हुआ। ३ न. जैन साधुओं के लिए भिक्षा का एक दोष, मिट्टी वगैरह से लिप्त पात्र को खोलकर उसमें से दी जाती भिक्षा; 'छगणाइ-णोवउत्तं उब्भिंदिय जं तमुब्भिण्णं' (पंचा १३; ठा ३, ४)। ४ वि. ऊँचा हुआ, खड़ा हुआ; 'हरिसवसुब्भिन्नरोमंचा' (महा)।

उब्भिय वि [उद्भिद्] पृथ्वी को फाड़कर उगनेवाली वनस्पति (पण्ह १, ४)।

उब्भिय वि [ऊर्ध्वित] ऊँचा किया हुआ, खड़ा किया हुआ (सुपा ८९; महा; वज्जा ८८)।

उब्भिय न [उद्भिद्] १ लवण-विशेष, समुद्र के किनारे पर क्षार जलके संसर्ग से होने-वाला नोन (आचा २, १, ६, ५)। २ पुंन. खंजरीट, शलभ आदि प्राणी (संबोध २०; धर्मसं ७२; सूअ १, ६, ८)।

उब्भीकय वि [ऊर्ध्वीकृत] ऊँचा किया हुआ, 'उब्भीकयबाहुजुओ' (उप ५९७ टी)।

उब्भुअ अक [उद् + भू] उत्पन्न होना। उब्भुअइ (हे ४, ६०)।

उब्भुआण वि [दे] १ उबलता हुआ, अग्नि से तप्त जो दूध वगैरह उछलता है वह (दे १, १०५; ७, ८१)।

उब्भुग्ग वि [दे] चल, अस्थिर (दे १, १०२)।

उब्भुत्त सक [उत् + क्षिप्] ऊँचा फेंकना। उब्भुत्तइ (हे ४, १४४)।

उब्भुत्तिअ वि [उत्क्षिप्त] ऊँचा फेंका हुआ (कुमा)।

उब्भुत्तिअ वि [दे] उद्दीपित, प्रदीपित (पाअ)।

उब्भूअ वि [उद्भूत] १ उत्पन्न (सुर ३, २३६)। २ आगन्तुक कारण (विसे १४७६)।

उब्भूइआ स्त्री [औद्भूतिकी] श्रीकृष्ण वासु-देव की एक भेरी जो किसी आगन्तुक प्रयो-जन के उपस्थित होने पर बजाई जाती थी (विसे १४७६)।

उब्भेअ पुं [उद्भेद] उद्गम, उत्पत्ति; 'उम्हा-अंतगिरियडंसीमाणिव्वडियकंदलुब्भेयं' (गउड); 'अभिणवजोव्वणउब्भेयसुन्दरा सयलमणहरा-रावा' (सुर ११, ११६)।

उब्भेइम वि [उद्भेदिम] स्वयं उत्पन्न होने-वाला, उब्भेइमं पुण सयंरुहं जहा सामुद्दं लोणं' (निचू ११)।

उभ पुं [उभ] उभय, दोनों (पंच ६, ५८)।

उभओ अ [उभयतस्] द्विधा, दोनों तरह से, दोनों ओर से (उव; औप)।

उभज्जायण देखो **ओमज्जायण** (सुज्ज १०, १६)।

उभय वि [उभय] युगल, दो, दोनों (ठा ४, ४)। °त्थ अ [°त्र] दोनों जगह (सुपा ६४८)। °लोग पुं [°लोक] यह और पर जन्म (पंचा ११)। °हा अ [°था] दोनों तरफ से, द्विधा (सम्म ३८)।

उमच्छ सक [वञ्च्] ठगना, धूर्त्तता। उमच्छइ (हे ४, ९३)। वकृ. **उमच्छंत** (कुमा)।

उमच्छ सक [अभ्या + गम्] सामने आना। उमच्छइ (षड्)।

उमा स्त्री [उमा] गौरी, पार्वती (पाअ)। २ द्वितीय वासुदेव की माता (सम १५२)। ३ देव-गणिका-विशेष (आचू)। ४ स्त्री-विशेष (कुमा)। °**साइ** [°स्वाति] स्वनाम धन्य एक प्राचीन जैनाचार्य और विख्यात ग्रन्थकार (सार्ध ५०)।

उमाण न [दे] प्रवेश (आचा २, १, ६)।

°**उमार** देखो **कुमार** (अच्चु २६)।

उमीस वि [उन्मिश्र] मिश्रित, 'पलिलसिर-पलिअपीवलकरणघुसणुमीसण्हवणजलं' (कुमा)।

उमुय सक [उद् + मुच्] छोड़ना। वकृ. **उमुयंत** (उत्त ३०, २३)।

उम्मइअ वि [दे] १ मूढ, मूर्ख (दे १, १०२)। २ उन्मत्त (गा ४९८; वज्जा ४२)।

उम्मऊह वि [उन्मयूख] प्रभाशाली (गउड)।

उम्मंड पुं [दे] १ हठ। वि. उद्वृत्त (दे १, १२४)।

उम्मंथिय वि [दे] दग्ध, जला हुआ (वज्जा ९२)।

उम्मग्ग वि [उन्मग्न] १ पानी के ऊपर आया हुआ, तीर्ण (राज)। २ न. उन्मज्जन, तैरना, जल के ऊपर आना (आचा)। °**जला** स्त्री [°जला] नदी-विशेष, जिसमें पत्थर वगैरह भी तैर सकते हैं (जं ३)।

उम्मग्ग पुं [उन्मार्ग] १ कुपथ, उलटा रास्ता, विपरीत मार्ग (सुर १, २४३; सुपा ८५)। २ छिद्र, रन्ध्र (आचा) ३ अकार्य करना (आचा)।

उम्मग्गणा स्त्री [उन्मार्गणा] छिद्र, विवर (आचा)।

उम्मच्छ न [दे] १ क्रोध, गुस्सा (दे १, १२५; से ११, १६; २०)। २ वि. असंबद्ध; ३ प्रकारान्तर से कथित (दे १, १२५)।

उम्मच्छर वि [उन्मत्सर] १ ईर्ष्यालु, द्वेषी (से ११, १४)। २ उद्भट (गा १२७;६७५)।

उम्मच्छविअ वि [दे] उद्भट (दे १, ११६)।

उम्मच्छिअ वि [दे] १ रुषित, रुष्ट; २ आकुल, व्याकुल (दे १, १३७)।

उम्मज्ज न [उन्मज्जन] तरण, तैरना। °**णिमज्जिया** स्त्री [°निमज्जिका] उमचुभ करना; पानी में ऊँचा-नीचा होना (ठा ३, ४)।

उम्मज्जग वि [उन्मज्जक] १ उन्मज्जन करने-वाला, गोता लगाने वाला। २ उन्मज्जन से ही स्नान करनेवाले तापसों की एक जाति (औप; भग ११, ६)।

उम्मड्डा स्त्री [दे] १ बलात्कार, जबरदस्ती (दे १, ९७)। २ निषेध, अस्वीकार (उप ७२८ टी)।

उम्मण वि [उन्मनस्] उत्कण्ठित, उत्सुक (उप पृ ५८)।

उम्मत्त पुं [दे] १ धतूरा, वृक्ष-विशेष। २ एरण्ड, वृक्ष-विशेष (दे १, ८९)।

उम्मत्त वि [उन्मत्त] १ उद्धत, उन्माद-युक्त (बृह १)। २ पागल, भूताविष्ट (पिंड ३८०)। °**जला** स्त्री [°जला] नदी-विशेष (ठा २, ३)।

उम्मत्तय न [दे] धतूरे का फल; "उम्मत्तय-

रसरसिओ पिच्छइ नन्नं विणा कणयं" (मोह २२)।

उम्मत्थ सक [अभ्या + गम्] सामने आना। उम्मत्थइ (हे ४, १६५; कुमा)।

उम्मत्थ वि [दे] अधो-मुख, विपरीत (दे १, ९३)।

उम्मर पुं [दे] देहली, द्वार के नीचे की लकड़ी (दे १, ९५)।

उम्मरिअ वि [दे] उत्खात, उन्मूलित (दे १, १००; षड्)।

उम्मल वि [दे] स्त्यान, कठिन, घट्ट (दे १, ९१)।

उम्मलण न [उन्मर्दन] मसलना (पाअ)।

उम्मल्ल पुं [दे] १ राजा, नृप। २ मेघ, बारिश। ३ बलात्कार। ४ वि. पीवर, पुष्ट (दे १, १३१)।

उम्मल्ला स्त्री [दे] तृष्णा (दे १, ९४)।

उम्महण वि [उन्मथन] नाशक, विनाशकारी (सुर ३, २३१)।

उम्माइअ वि [उन्मादित] उन्मत्त किया हुआ (पउम २४, १९)।

उम्माडिय न [दे] उल्मुक, जलता काष्ठ, गुजराती में 'उबाडु' (सिरि ९८०)।

उम्माण न [उन्मान] १ माप, माशा आदि तुला-मान (ठा २, ४)। २ जो तौला जाता है वह (ठा १०)।

उम्माद देखो **उम्माय** (भग १४, २)।

उन्मादइत्तअ (शौ) वि [उन्मादयितृ] उन्माद करानेवाला (अभि ४२)।

उम्माय अक [उद् + मद्] उन्माद करना, उन्मत्त होना। वकृ. **उम्मायंत** (उप ९८६ टी)।

उम्माय पुं [उन्माद] १ चित्त-विभ्रम, पागलपन (ठा ६; महा)। २ कामाधीनता, विषय में अत्यन्तासक्ति (उत्त १६)। ३ आलिङ्गन (विसे)।

उम्माल देखो **ओमाल** (पाअ)।

उम्मालिय व [उन्मालित] सुशोभित (भवि)।

उम्माह पुं [उन्माथ] विनाश, 'निसेविज्जंतावि (कामभोगा) करेंति अहियगुम्माहयं' (महा)।

उम्माहय वि [उन्माथक] विनाशक; 'अहो उम्माहयत्तं विसयाणं' (महा; भवि)।

उम्माहि वि [उन्माथिन्] विनाशक (महा-टि)।

उम्माहिय वि [उन्माथित] विनाशित (भवि)।

उम्मि पुंस्त्री [ऊर्मि] १ कल्लोल, तरंग (कुमा; दे ३. ६)। २ भीड़, जन-समुदाय (भग २, १)। °**मालिणी** स्त्री [°मालिनी] नदी-विशेष (ठा २, ३)।

उम्मिंठ वि [दे] हस्तिपक-रहित, महावत-रहित, निरंकुश; 'उम्मिंठकरिवरो इव उम्मूलइनयसमूहं सो' (सुपा ३४८; २०३)।

उम्मिण सक [उद् + मी] तौलना, नाप करना। कर्म. उम्मिणिज्जइ (अणु १५३)।

उम्मिय वि [उन्मित] प्रमित, 'कोडाकोडि-जुगुम्मियावि विहिणो हाहा विचित्ता गदी' (रंभा)।

उम्मिलिर वि [उन्मीलितृ] विकासी. 'तत्थ य उम्मिलिरपढमपल्लवारुणियसयलसाहस्स' (सुपा ८६)।

उम्मिल्ल अक [उद् + मील्] १ विकसित होना। २ खुलना। ३ प्रकाशित होना। उम्मिल्लइ (गउड)। वकृ. **उम्मिल्लंत** (से १०, ३१)।

उम्मिल्ल वि [उन्मील] १ विकसित (पाअ; से १०, ५०; स ७६)। २ प्रकाशमान (से ११, ६४; गउड)।

उम्मिल्लण न [उन्मीलन] विकास, उल्लास (गउड)।

उम्मिल्लिय वि [उन्मीलित] १ विकसित, उल्लसित। २ उद्घाटित, खुला हुआ; 'तओ उम्मिल्लियाणि तस्स नयणाणि' (आवम; स २८०)। ३ प्रकाशित। ४ बहिष्कृत; 'पंजरुम्मिल्लियमणिकणगथूभियागे' (जीव ४)। ५ न. विकास (अणु)।

उम्मिस अक [उद् + मिष्] खुलना, विकसना। वकृ. **उम्मिसंत** (विक्र ३४)।

उम्मिसिय वि [उन्मिषित] १ विकसित, प्रफुल्ल (भग १४, १)। २ न. विकास, उन्मेष (जीव ३)।

उम्मिस्स देखो **उम्मीस** (पव ६७)।

उम्मीलण देखो **उम्मिल्लण** (कुमा; गउड)।

उम्मीलणा स्त्री [उन्मीलना] प्रभव, उत्पत्ति (राज)।

उम्मीलिय देखो **उम्मिल्लिय** (राज)।

उम्मीस वि [उन्मिश्र] मिश्रित, युक्त (सुपा ७८; प्रासू ३२)।

उम्मुअ देखो **उमुय**। वकृ. 'जणम्मि पीऊसमिवुम्मुअंतं चक्खु पसरणं सइ निक्खिवेज्जा' (उप पृ २०)।

उम्मुअ न [उल्मुक] अलात, लूका (पाअ)।

उम्मुंच सक [उद् + मुच्] परित्याग करना। वकृ **उम्मुंचंत** (विसे २७५०)।

उम्मुक्क वि [उन्मुक्त] १ विमुक्त, रहित; 'ते वीरा बंधणुम्मुक्का नावकंखंति जीवियं' (सूअ १, ९)। २ उत्क्षिप्त (औप)। ३ परित्यक्त (आवम)।

उम्मुग्ग वि [उन्मग्न] १ जल के ऊपर तैरा हुआ। २ न. तैरना। °**निमुग्गिया** स्त्री [°निमग्नता] उमचुभ करना; 'से भिक्खू वा० उदगंसि पवमाणे नो उम्मुग्गनिमुग्गियं करेज्जा' (आचा २, ३, २, ३)।

उम्मुग्गा } स्त्री. देखो **उम्मग्ग** = उन्मग्न
उम्मुज्जा } (पण्ह १, ३; पि १०४; २३४; आचा)।

उम्मुट्ठ वि [उन्मृष्ट] स्पृष्ट, छुआ हुआ (पाअ)।

उम्मुद्दिअ वि [उन्मुद्रित] १ विकसित, प्रफुल्ल (गउड; कप्पू)। २ उद्घाटित, खोला हुआ; 'उम्मुद्दिओ समुग्गो, तम्मज्झे लहुसमुग्गयं नियइ' (सुपा १४४)।

उम्मुयण न [उन्मोचन] परित्याग, छोड़ देना (सुर २, १९०)।

उम्मुयणा स्त्री [उन्मोचना] त्याग, उज्झन (आव ५)।

उम्मुह वि [दे] दृप्त, अभिमानी (दे १, ९९; षड्)।

उम्मुह वि [उन्मुख] १ संमुख (उप पृ १३४)। २ ऊर्ध्व-मुख (से ६, ८२)।

उम्मूढ वि [उन्मूढ] विशेष मूढ़, अत्यन्त मुग्ध। °**विसूइया** स्त्री [°विसूचिका] रोग-विशेष, हैजा (सुपा १६)।

उम्मूल वि [उन्मूल] उन्मूलन करनेवाला, विनाशक (गा ३५५)।

उम्मूल सक [उद् + मूलय्] उखाड़ना, मूल से उखाड़ फेंकना। उम्मूलेइ (महा)।

वकृ. उम्मूलंत, उम्मूलयंत (से १, ४; स ५६६)। संकृ. उम्मूलिऊण (महा)।

उम्मूलण न [उन्मूलन] उत्पाटन, उत्खनन (पि २७८)।

उम्मूलणा स्त्री [उन्मूलना] ऊपर देखो (पण्ह १, १)।

उम्मूलिअ वि [उन्मूलित] उत्पाटित, मूल से उखाड़ा हुआ (गा ४७५; सुर ३, २४५)।

उम्मेंठ [दे] देखो उम्मिंठ (पउम ७१, २६; स ३३२)।

उम्मेस पुं [उन्मेष] उन्मीलन, विकास (भग १३, ४)।

उम्मोयणी स्त्री [उन्मोचनी] विद्या-विशेष (सुर १३, ८१)।

उम्ह पुंस्त्री [ऊष्मन्] १ संताप, गरमी, उष्णता; 'सरीरउम्हाए जीवइ सयावि' (उप ५६७ टी; गाया १, १; कुमा)। २ भाफ, बाष्प (से २, ३२; हे २, ७४)।

उम्हइअ } वि [ऊष्मायित] संतप्त, गरम
उम्हविय } किया हुआ (से ४, १; पउम २, ६६; गउड)।

उम्हाअ अक [ऊष्माय्] १ गरम होना। २ भाफ निकालना। वकृ. उम्हाअंत, उम्हाअमाण (से ६, १०; पि ५५८)।

उम्हाल वि [ऊष्मवत्] १ गरम, परितप्त। २ बाष्प-युक्त (गउड)।

उम्हाविअ न [दे] सुरत, संभोग (दे १, ११७)।

उयचिय वि [दे] देखो उविअ = परिकर्मित; 'उयचियखोमदुगुल्लपट्टपडिच्छयणे' (णाया १, १—पत्र १३)।

उयट्ट देखो उव्वट्ट = उद् + वृत्। उयट्टंति; भूका. उयट्टिंसु (भग)।

उयट्ट देखो उव्वट्ट = उद्वृत्त।

उयत्त अक [अप + वृत्] हटना। उयत्तति (दस ३, १ टी)।

उयर वि [उदार] श्रेष्ठ, उत्तम; 'देवा भवंति विमलोयरकंतिजुत्ता' (पउम १०, ८८)।

उयरिया स्त्री [अपवरिका] छोटा कमरा (सम्मत्त ११६)।

उयविय देखो उविअ = (दे) (राय ६३ टी)।

उयाइय न [उपयाचित] मनौती (सुपा ८; ५७८)।

उयाय वि [उपयात] उपगत (राज)।

उयारण न [अवतारण] निछावर, उतारा, हर्ष-दान, गुजराती में 'उवारणु' (कुप्र ६५)।

उयाहु देखो उदाहु (सुर १२, ५६; काल; विसे १६१०)।

उय्यकिअ वि [दे] इकट्ठा किया हुआ (षड्)।

उय्यल वि [दे] अध्यासित, आरूढ़ (षड्)।

उर पुंन [उरस्] वक्षःस्थल, छाती (हे १, ३२)। °अ, °ग पुंस्त्री [°ग] सर्प, साँप (काप्र १७१);

'उरगगिरिजलणसागरनह-
तलतरुगणसमो अ जो होइ।
भमरमियधरणिजलरुहरविपव-
णसमो अ सो समणो।' (अणु)।

°तव पुं [°तपस्] तप-विशेष (ठा ४)। °त्थ न [°स्त्र] अस्त्र-विशेष, जिसके फेंकने से शत्रु सर्पों से वेष्टित होता है (पउम ७१, ६६); °परिसप्प पुंस्त्री [°परिसर्प] पेट से चलनेवाला प्राणी (सर्पादि) (जो २०)। °सुत्तिया स्त्री [°सूत्रिका] मोतियों को हार (राज)।

उर न [दे] आरम्भ, प्रारम्भ (दे १, ८६)।

उरंउरेण अ [दे] साक्षात् (विपा १, ३)।

उरत्त वि [दे] खण्डित, विदारित (दे १, ६०)।

उरत्थ वि [उरःस्थ] १ छाती में स्थित। २ छाती में पहनने का आभूषण (आचा २, १३, १)।

उरत्थय न [दे] वर्म, बख्तर, कवच (पात्र)।

उरब्भ पुंस्त्री [उरभ्र] मेष, भेड़ (णाया १, १; पण्ह १, १)।

उरब्भिअ वि [औरभ्रिक] भेड़ चरानेवाला (सूत्र २, २, २८)।

उरब्भिज्ज } वि [उरभ्रीय] १ मेष-सम्बन्धी।
उरब्भिय } २ उत्तराध्ययन सूत्र का एक अध्ययन; 'तत्तो समुट्ठियमेयं उरब्भिज्जंति अज्झयणं' (उत्तनि; राज)।

उरय पुं [उरज] वनस्पति-विशेष (राज)।

उररि पुं [दे] पशु, बकरा (दे १, ८८)।

उरल देखो उराल (कम्म १; भग; दं २२)।

उरविय वि [दे] १ आरोपित। २ खण्डित, छिन्न (षड्)।

उरसिज पुं [उरसिज] स्तन, थन (धर्मवि ६६)।

उरस्स वि [उरस्य] १ सन्तान, बच्चा (ठा १०)। २ हार्दिक, आभ्यन्तर; 'उरस्सबल-समण्णागय—' (राय)।

उराल वि [उदार] १ प्रबल (राय)। २ प्रधान, मुख्य (सुज्ज १)। ३ सुन्दर, श्रेष्ठ (सूत्र १, ६)। ४ अद्भुत (चन्द २०)। ५ विशाल, विस्तीर्ण (ठा ५)। ६ न. शरीर-विशेष, मनुष्य और तिर्यञ्च् (पशु पक्षी) इन दोनों का शरीर (अणु)।

उराल वि [उदार] स्थूल, मोटा (सूत्र १, १, ४, ६)।

उराल वि [दे] भयंकर, भीष्म (सुज्ज १)।

उरालिय न [औदारिक] शरीर-विशेष (सण)।

उरिआ स्त्री [उड्रिका] लिपि-विशेष (सम ३५)।

उरित्तिय न [दे. उरसि-त्रिक] तीन सर-वाला हार (औप)।

°उरिस देखो पुरिस (गा २८२)।

उरु वि [उरु] विशाल, विस्तीर्ण (पात्र)।

उरुगुल्ल पुं [दे] १ अपूप, पूआ। २ खिचड़ी (दे १, १३४)।

उरुमल्ल }
उरुमिल्ल } वि [दे] प्रेरित (षड्; दे १, १०८)।
उरुसोल्ल }

उरोरुह पुं [उरोरुह] स्तन, थन (पव ६२)।

उरोरुह न [उरोरुह] १ स्तन, थन। २ जैन साध्वियों का उपकरण-विशेष (ओघ ३१७ भा)।

°उल देखो कुल (से १, २६; गा ११६; सुर ३, ४१; महा)।

उलय } पुंन [उलप] तृण-विशेष (सुपा
उलव } २८१; प्राप्र)।

उलवी स्त्री [उलपी] तृण-विशेष; 'उलवी वीरणं' (पात्र)।

उलिअ वि [दे] असंकुचित नजरवाला, स्फार दृष्टि (दे १, ८८)।

उलित्त न [दे] ऊँचा कुँआ (दे १, ८६)।

°उलीण देखो कुलीण (गा २५८)।

उलुउंडिअ वि [दे] प्रलुठित, विरेचित (दे १, ११६)।

उलुओसिअ वि [दे] रोमाञ्चित, पुलकित (षड्)।

उलुकसिअ वि [दे] ऊपर देखो (दे १, ११५)।

उलुखंड पुं [दे] उल्मुक, अलात, लूका (दे १, १०७)।

उलुग पुं [उलूक] १ उल्लू, पेचक। २ देश-विशेष (पउम ६८, ६६)।

उलुग पुं [उलूक] उल्लू, घूक, पेचक (धर्मसं ६७१; १२६५)।

उलुगी स्त्री [औलूकी] विद्या-विशेष (विसे २४५४)।

उलुग्ग वि [अवरुग्ण] बीमार (महा)।

उलुग्ग वि [दे] देखो **ओलुग्ग** (महा)।

उलुफुंटिअ वि [दे] १ विनिपातित, विना-शित। २ प्रशान्त (दे १, १३८)।

उलुय देखो **उलूअ**; 'अह कह दिणमणितेयं, उलुयाणं हरइ अंधत्तं' (सट्ठि १०८; सुर १, २६; पउम १७, २४)।

उलुहंत पुं [दे] काक, कौआ (दे १, १०६)।

उलुहलिअ वि [दे] अतृप्त, तृप्तिरहित (दे १, ११७)।

उलुहुलअ वि [दे] अवितृप्त, तृप्तिरहित (षड्)।

उलूअ पुं [उलूक] १ उल्लू, पेचक (पाअ)। २ वैशेषिक मत का प्रवर्तक कणाद मुनि (सम्म १४६; विसे २५०८)।

उलूखल देखो **उऊखल** (कुमा)।

उलूलु पुं [उलूलु] मङ्गल ध्वनि (रंभा)।

उलूहल देखो **उऊखल** (हे १, १७१; महा)।

उल्ल वि [आर्द्र] गीला, आर्द्र (कुमा; हे १, ८२)। °**गच्छ** पुं [°गच्छ] जैन मुनियों का गण-विशेष (कप्प)।

उल्ल सक [आर्द्रय्] १ गीला करना, आर्द्र करना। २ अक. आर्द्र होना। उल्लेइ (हे १, ८२)। वकृ. **उल्लंत, उल्लिंत** (गउड)। संकृ. **उल्लेत्ता** (महा)।

उल्ल न [दे] ऋण, करजा; 'तो मं उल्ले धरिऊण' (सुपा ४८६)।

उल्लअण न [उल्लयन] अर्पण, समर्पण (से ११, ५१)।

उल्लंक पुं [उल्लङ्क] काष्ठ-मय वारक (निचू १२)।

उल्लंघ सक [उत् + लङ्घ्] उल्लंघन करना, अतिक्रमण करना। उल्लंघेज्ज (पि ४५६)। हेकृ. **उल्लंघित्तए** (भग ८, ३३)।

उल्लंघ पुं [उल्लङ्घ] उल्लंघन, अतिक्रमण (संबोध ६)।

उल्लंघण न [उल्लङ्घन] १ अतिक्रमण, उत्प्लवन (पण्ण ३६)। २ वि. अतिक्रमण करनेवाला; 'उल्लंघणे य चंडे य पावसमणे त्ति वुच्चइ' (उत्त ८)।

उल्लंठ वि [उल्लण्ठ] उद्धत; 'जंपंति उल्लंठ-वयणाइं' (काल)।

उल्लंडग पुं [उल्लण्डक] छोटा मृदंग, वाद्य-विशेष (राज)।

उल्लंडिअ वि [दे] बहिष्कृत, बाहर निकाला हुआ (पाअ)।

उल्लंबण न [उल्लम्बन] उद्बन्धन, फाँसी लगा कर लटकना (सम १२५)।

उल्लक्क वि [दे] १ भग्न, टूटा हुआ। २ स्तब्ध; 'उल्लक्कं सिराजालं' (स २६४)।

उल्लट्ट देखो **उव्वट्ट** = उद्-वृत्। उल्लट्टइ (प्राकृ ७२)।

उल्लट्ट वि [दे] उल्लुठित, खाली किया हुआ (दे ७, ८१)।

उल्लट्टिय देखो **उल्लट्ट**—(दे); 'सो पुण नरो पविट्ठो भट्ठो सत्थाउ तं महाअडविं। उल्लट्टिय-कूवोदगमिव कंठगएहिं पाणेहिं' (धर्मवि १२४)।

उल्लण वि [उल्बण] उत्कट (पंचा २)।

उल्लण न [आर्द्रीकरण] गीला करना (उवा ओघ ३६; से २, ८)।

उल्लण न [दे] खाद्य वस्तु-विशेष, ओसामन (पिंड ६२४)।

उल्लणिया स्त्री [आर्द्रयणिका] जल पोंछने का गमछा, टोपिया (उवा)।

उल्लद्दिय वि [दे] भाराक्रान्त, जिसपर बोझा लादा गया हो वह; 'अह तम्मि सत्थलोए उल्लद्दियसयलवसहनियरम्मि' (सुर २. २)।

उल्लरय न [दे] कौड़ियों का आभूषण (दे १, ११०)।

उल्लल अक [उत् + लल्] १ चलित होना, चञ्चल होना। २ ऊँचा चलना। ३ उत्पन्न होना। उल्ललइ (से ११, १३)। वकृ. **उल्ललंत** (काल)।

उल्ललिअ वि [उल्ललित] १ चञ्चल (गा ५६६)। २ उत्पन्न (से ६, ६८)।

उल्ललिअ वि [दे] शिथिल, ढीला (दे १, १०४)।

उल्लव सक [उत् + लप्] १ कहना। २ बकना, बकवाद करना, खराब शब्द बोलना; 'जं वा तं वा उल्लवइ' (महा)। वकृ. **उल्लवंत, उल्लवेमाण** (पउम ६४, ८; सुर १, १६६)।

उल्लव सक [उद् + लू] उन्मूलन करना। संकृ. **उल्लविऊण**। हेकृ. **उल्लविउं**। कृ. **उल्लविअव्व** (प्राकृ ६६)।

उल्लवण न [उल्लपन] १ बकवाद २ कथन; 'जइवि न जुज्जइ जह तह मणवल्लहनामउल्ल-वणं' (सुपा ४६८)।

उल्लविय वि [उल्लपित] १ कथित, उक्त। २ न. उक्ति, वचन; 'अंगपच्चंगसंठाणं चारुल्लविय-पेहणं' (उत्त)।

उल्लविर वि [उल्लपितृ] १ वक्ता, भाषक। २ बकवादी, वाचाट (गा १७२ सुपा २२६)।

उल्लस अक [उत् + लस्] १ विकसित होना। २ खुश होना। उल्लसइ (षड्)। वकृ. **उल्लसंत** (गा ५६०; कप्प)।

उल्लस देखो **उल्लास** (गउड)।

उल्लसिअ वि [उल्लसित] १ विकसित। २ हर्षित (षड्; निचू)।

उल्लसिअ वि [दे. उल्लसित] पुलकित, रोमाञ्चित (दे १, ११५)।

उल्लाय वि [दे] लात मारना, पाद-प्रहार (तंदु)।

उल्लाय वि [उल्लाप] १ वक्र वचन। २ कथन (भग)।

उल्लाल सक [उत् + नमय्] १ ऊंचा करना। २ ऊपर फेंकना। उल्लालइ (हे ४, ३६)। वकृ. **उल्लालेमाण** (अंत २१)।

उल्लाल सक [उत् + लालय्] ताडन करना, बजाना। वकृ. **उल्लालेमाण** (राज)।

उल्लाल पुंन [उल्लाल] छन्द-विशेष (पिंग) ।

उल्लालिअ वि [उन्नमित] २ ऊँचा किया हुआ, ऊपर फेंका हुआ (कुमा; हे ४, ४२२) ।

उल्लालिय वि [उल्लालित] ताडित (राज) ।

उल्लाव सक [उत् + लप् , लापय्] १ कहना, बोलना। २ बकवाद करना। ३ बुलवाना। ४ बकवाद कराना। वकृ. उल्लावंत, उल्लावेंत (से ११, १०; गा ५३६; ६५१; हे २, १९३)।

उल्लाव पुं [उल्लाप] १ शब्द, आवाज (से १, ३०)। २ उत्तर, जवाब (ओघ ५६ भा; गा ५१४)। ३ बकवाद, विकृत वचन। ४ उक्ति, कथन (पउम ७०, ५८)। ५ संभाषण; 'नयणेहिं को न दीसइ;
केण समाणं न होंति उल्लावा।
हिययाणंदं जं पुण,
जणेइ तं माणुसं विरलं ॥' (महा)।

उल्लाविअ वि [उल्लपित] १ उक्त, कथित। २ न. उक्ति, वचन (गा ५८६)।

उल्लाविर वि [उल्लपितृ] १ बोलनेवाला, भाषक (हे २, १९३; सुपा २२६)।

उल्लासग वि [उल्लासक] १ विकसित होनेवाला। २ आनन्दजनक (श्रा २७)।

उल्लासण न [उल्लासन] विकास (सिरि ५३६)।

उल्लासि } वि [उल्लासिन्] ऊपर देखो
उल्लासिर } (कप्पू; लहुअ १; प्रासू ६६)।

उल्लाह सक [उत् + लाघय्] कम करना, हीन करना। वकृ. उल्लाहअंत (उत्तर ६१)।

उल्लिअ वि [दे] उपसर्पित; उपागत (षड्)।

उल्लिअ वि [आर्द्रित] गीला किया हुआ (गउड; हे ३, १६)।

उल्लिअ वि [दे] १ चीरा हुआ, फाड़ा हुआ (उत्त १६, ६४)। २ उपालब्ध, उलाहना दिया हुआ (सम्मत्त ५२)।

उल्लिंच सक [उद् + रिच्] खाली करना। हेकृ. 'उल्लिंचिऊण य समत्थो हत्थउडेहिं समुद्दं' (पुप्फ ४०)।

उल्लिंचिय वि [दे] उद्रिक्त, खाली किया हुआ;
'तह नाहिदहो जुव्वणघणेण
लायन्नवारिणा भरिओ।
नहु निट्ठइ जह उल्लिंचिओवि
पियनयणकलसेहिं' (सुपा ३३)।

उल्लिक्क न [दे] दुश्चेष्टित, खराब चेष्टा (षड्)।

उल्लिगण वि [उल्लिङ्गन] उपदर्शक (पव १)।

उल्लिपण न [उपलेपन] उपलेप (पिंड ३५०)।

उल्लिया स्त्री [दे] राधा-वेध का निशाना, 'विधेऊवा विवरीयभमंतट्ठचक्ककोवरिथिउल्लिया' (स १६२)।

उल्लिर वि [आर्द्र] गीला (वज्जा ११२)।

उल्लिह सक [उद् + लिह्] १ चाटना। २ खाना, भक्षण करना; 'उक्खलिउरिहिअमुररी उग्ग रोरघरम्मि उल्लिहइ' (दे १, ८८)।

उल्लिह सक [उद् + लिख्] १ रेखा करना २ लिखना। ३ घिसना।

उल्लिहण न [उल्लेखन] १ घर्षण (सुपा ४८)। २ विलेखन; 'वहुआइ नहुल्लिहणे' (हे १, ७)।

उल्लिहिय वि [उल्लिखित] १ घृष्ट, घिसा हुआ (णाया १, २)। २ छिला हुआ, तक्षित (पाअ)। ३ रेखा किया हुआ (सुपा १९३; प्रासू ७)।

उल्ली स्त्री [दे] १ चूल्हा (दे १, ८७)। २ दाँत का मैल; 'उल्ली दंतेसु दुग्गंधा' (महा)।

उल्लीण वि [उपलीन] प्रच्छन्न, गुप्त (आचा २, २, ३, ११)।

उल्लुअ वि [दे] १ पुरस्कृत, आगे किया हुआ। २ रक्त, रँगा हुआ (षड्)।

उल्लुअ वि [दे. उद्गत] उदय-प्राप्त (प्राकृ. ७७)।

उल्लुअ वि [उल्लून] १ उन्मूलित। २ न. उन्मूलन (प्राकृ ७०)।

उल्लुंचिअ वि [उल्लुञ्चित] उखाड़ा हुआ, उन्मूलित; 'मुट्ठीहिं कुंतलकलावा उल्लुंचिया' (सुपा ८०; प्रबो ६८)।

उल्लुंटिअ वि [दे] संचूर्णित, टुकड़ा-टुकड़ा किया हुआ (दे १, १०९)।

उल्लुंठ वि [उल्लुण्ठ] उल्लंठ, उद्धत (सुपा ४६५; सुर ६, २१५)।

उल्लुंड अक [वि + रेचय्] झरना, टपकना, बाहर निकलना। उल्लुंडइ (हे ४, २६)। प्रयो. वकृ. उल्लुंडावंत (कुमा)।

उल्लुक्क वि [दे] त्रुटित, टूटा हुआ (दे १, ९२)।

उल्लुक्क सक [तुड्] तोड़ना। उल्लुक्कइ (हे १, ११६; षड्)।

उल्लुक्किअ वि [तुडित] त्रोटित, तोड़ा हुआ (कुमा)।

उल्लुग° } स्त्री [उल्लुका] १ नदी-विशेष
उल्लुगा } (विसे २४२६)। २ उल्लुका नदी के किनारे का प्रदेश (विसे २४२५)। °तीर न [°तीर] उल्लुका नदी के किनारे बसा हुआ एक नगर (विसे २४२४; भग २६, ३)।

उल्लुज्झण न [दे] पुनरुत्थान, कटे हुए हाथ पाँव की फिर से उत्पत्ति (उप ३८१)।

उल्लुट्ट अक [उत् + लुट्] नष्ट होना, ध्वंस पाना। वकृ. 'तहवि य सा रायसिरी उल्लुट्टंती न ताइया ताहिं' (उव)।

उल्लुट्ट वि [दे] मिथ्या, असत्य, झूठा (दे १, ८६)।

उल्लुरुह पुं [दे] छोटा शङ्ख (दे १, १०५)।

उल्लुलिअ वि [उल्लुलित] चलित (गा ५६७)।

उल्लुव देखो उल्लव = उद् + लू। उल्लुवइ; संकृ. उल्लुविऊण (प्राकृ ६६)।

उल्लुह अक [निस् + सृ] निकला। उल्लुहइ (हे ४, २५९)।

उल्लुहुंडिअ वि [दे] उन्नत, उच्छ्रित (षड्)।

उल्लूढ वि [दे] १ आरूढ (दे १, १००; षड्)। २ अङ्कुरित (दे १, १००; पाअ)।

उल्लूढ सक [आ + रुह्] चढ़ना। उल्लूढइ (प्राकृ ७३)।

उल्लूर सक [तुड्] १ तोड़ना। २ नाश करना। उल्लूरइ (हे ४, ११६; कुमा)।

उल्लूरण न [तोडन] छेदन, खण्डन (गा १६६)।

उल्लूरिअ वि [तुडित] विनाशित, 'उल्लूरिअपहिअसत्थेसु' (णामि १०; पाअ)।

उल्लूह वि [दे] शुष्क, सूखा; 'उल्लूहं च नलवणं हरियं जायं' (ओघ ४४९ टी)।

उल्लेत्ता देखो उल्ल = आर्द्रय्।

उल्लेव पुं [दे] हास्य, हँसी (दे १, १०२)।

उल्लेहड वि [दे] लम्पट, लुब्ध (दे १, १०४; पाअ)।

उल्लोइय न [दे] १ पोतना, भीत को चूना वगैरह से सफेद करना (औप)। २ वि. पोता हुआ (णाया १, १; सम १३७)।

उल्लोक वि [दे] त्रुटित, छिन्न (षड्)।

उल्लोच पुं [दे. उल्लोच] चन्द्रातप, चाँदनी (दे १, ६८; सुर १२, १; उप १०७)।

उल्लोढ सक [उल्लोध्रय्] लोध्र आदि से घिसना। उल्लोढिज्ज (आचा २, १३, १)।

उल्लोय पुं [उल्लोक] १ अगासी, छत (णाया १, १; कप्प; भग)। २ थोड़ी देर, थोड़ा विलम्ब (राज)।

उल्लोय देखो उल्लोच (सुर ३, ७०; कुमा)।

उल्लोल अक [उत् + लुल्] लुठना, लेटना। वकृ. उल्लोलंत (निचू १७)। पुं. शोकाकुल स्त्री-रुदन शब्द (चउ० सगरचरिय)।

उल्लोल सक [उद् + लोलय्] पोंछना। उल्लोलेइ; संकृ. उल्लोलेत्ता (आचा २, १५, ५)।

उल्लोल पुं [दे] १ शत्रु, दुश्मन (दे १, ६६)। २ कोलाहल (पउम १६, ३६)।

उल्लोल पुं [उल्लोल] १ प्रबन्ध; 'उद्देसे आसि णाराहिवाण वियडा कहल्लोला' (गउड)। २ वि. उद्भट, उद्धत; 'तरुणजणविब्भमुल्लोल-सागरे' (स ६७)। ३ वि. उत्सुक; 'बहुसो घडंतविहडंतसइसुहासायसंगमुल्लोले। हियए च्चेय समप्पंति चंचला वीइवावारा' (गउड)।

उल्लोव (अप) देखो उल्लोच (भवि)।

उल्हव सक [वि + ध्मापय्] ठंढा करना, आग को बुझाना। उल्हवइ (हे ४, ४१६)।

उल्हविय वि [दे. विध्मापित] बुझाया हुआ, शान्त किया हुआ (पउम २, ६६)।

उल्हसिअ वि [दे] उद्भट, उद्धत, (दे १, ११६)।

उल्हा अक [वि + ध्मा] बुझ जाना। उल्लाइ (स २८३)।

उव अ [उप] निम्न लिखित अर्थों का सूचक अव्यय—१ समीपता; 'उवदंसिय' (पराण १)। २ सदृशता, तुल्यता (उत्त ३)। ३ समस्तपन (राय)। ४ एकबार। ५ भीतर (आव ४)।

उव न [उद] पानी, जल; 'पाउवदाइं च राहाणुवदाइं च' (णाया १,७—पत्र ११७)।

उवअंठ वि [उपकण्ठ] समीप का, आसन्न (गउड)।

उवइट्ठ वि [उपदिष्ट] कथित, प्रतिपादित, शिक्षित (ओघ १४ भा; पि १७३)।

उवइण्ण वि [उपवीर्ण] सेवित (स ३६)।

उवइय वि [उपचित] १ मांसल, पुष्ट (पराह १, ४)। २ उन्नत (ओप)।

उवइय पुंस्त्री [दे] त्रीन्द्रिय जीव-विशेष, देखो ओवइय (जीव १ टी; पराण)।

उवइस सक [उप + दिश्] १ उपदेश देना, सिखाना। २ प्रतिपादन करना। उवइसइ (पि १८४)। उवइसंति (भग)।

उवउंज सक [उप + युज्] उपयोग करना। कर्म. उवउज्जंति (विसे ४८०)। संकृ. उवउंजिऊण, उवउज्ज (पि ५८५; निचू १)।

उवउज्ज पुं [दे] १ उपकार (दे १, १०८)। २ वि. उपकारक (षड्)।

उवउत्त वि [उपयुक्त] १ न्याय्य, वाजबी। २ सावधान, अप्रमत्त (उव; उप ७७३)।

उवऊढ वि [उपगूढ] आलिङ्गित (पाअ; से १, ३८; गा १३३)।

उवऊह सक [उप + गूह्] आलिङ्गन करना। उवऊहइ (प्राकृ ७४)।

उवऊहण न [उपगूहन] आलिङ्गन (से ५, ४८)।

उवऊहिअ वि [उपगूहित] आलिङ्गित (गा ६२१)।

उवएइआ स्त्री [दे] शराब परोसने का पात्र (दे १, ११८)।

उवएस पुं [उपदेश] १ शिक्षा, बोध (उव)। २ कथन, प्रतिपादन। ३ शास्त्र, सिद्धान्त (आचा; विसे ८६४)। ४ उपदेश्य, जिसके विषय में उपदेश दिया जाय वह (धर्म १)।

उवएसग वि [उपदेशक] उपदेश देनेवाला; 'हिच्चाणं पुव्वसंजोगं, सिया किच्चोवएसगा' (सूअ १, १)।

उवएसण न [उपदेशन] देखो उवएस (उत्त २८; ठा ७; विसे २५८३)।

उवएसणया, **उवएसणा** स्त्री [उपदेशना] उपदेश (राज; विसे २५८३)।

उवएसिय वि [उपदेशित] उपदिष्ट; 'सामाइयणिज्जुत्ति वोच्छं उवएसियं गुरुजणेणं' (विसे १०८०; सण)।

उवओग पुं [उपयोग] १ ज्ञान, चैतन्य (पराण १२; ठा ४, ४; दं ४)। २ ख्याल, ध्यान, सावधानी; 'तं पुण संविग्गेणं उवओगजुएण तिव्वसद्धाए' (पंचा ४)। ३ प्रयोजन, आवश्यकता (सुपा ६४३)।

उवओगि वि [उपयोगिन्] उपयुक्त, योग्य, प्रयोजनीय; 'पत्ताईण विसुद्धि साहेउं गिराहए जमुवओगि' (सुपा ६४३; स ५)।

उवंग पुंन [उपाङ्ग] १ छोटा अवयव, क्षुद्र भाग; 'एवमादी सव्वे उवंगा भएांति' (निचू १)। २ ग्रन्थ-विशेष, मूल-ग्रन्थ के अंश-विशेष को लेकर उसका विस्तार से वर्णन करनेवाला ग्रन्थ, टीका; 'संगोवंगाणं सरहस्साणं चउराहं वेयाणं' (औप)। ३ 'औपपातिक' सूत्र वगैरह बाहर जैन ग्रन्थ (कप्प; जं; १; सूक्त ७०)।

उवंजण न [उपाञ्जन] मुक्षण, मालिश (पराह २, १)।

उवकंठ देखो उवअंठ (भवि)।

उपकंठ न [उपकण्ठ] समीप (सिरि ११२१)।

उवकदुअ (शौ) अ [उपकृत्य] उपकार करके (प्राकृ ८८)।

उवकप्प सक [उप + क्लृ] १ उपस्थित करना। २ करना; 'उवकप्पइ करेइ उवणेइ वा होंति एकट्ठा' (पंचभा)। उवकप्पंति (सूअ १, ११)।

उवकप्प पुं [उपकल्प] साधु को दी जानेवाली भिक्षा, अन्नपान वगैरह (पंचभा)।

उवकय वि [उपकृत] जिसपर उपकार किया गया हो वह, अनुगृहीत; 'अणुवकयप-राणुग्गहपरायणा' (आव ४)।

उवकय वि [दे] सज्जित, प्रगुण, तैयार (दे १, ११६)।

उवकर देखो उवयर = उप + कृ। उवकरेउ (उवा)।

उवकर सक [अव + कॄ] व्याप्त करना। भूका. 'अहवा पंसुणा उवकरिंसु' (आचा १, ६, ३, ११)।

उवकरण देखो **उवगरण** (औप)।

उवकस सक [उप+कष्] प्राप्त होना, 'नारीण वसमुवकसंति' (सूअ १, ४)।

उवकसिअ वि [दे] १ संनिहित। २ परिसेवित। ३ सज्जित, उत्पादित (दे १, १३८)।

उवकार देखो **उवगार** (धर्मसं ६२० टी)।

उवकारिया देखो **उवगारिया** (राय ८२)।

उवकिइ } स्त्री [उपकृति] उपकार (दे ४,
उवकिदि } ३४; ८; ४५)।

उवकुल न [उपकुल] नक्षत्र-विशेष, श्रवण आदि बारह (जं ७)।

उवकुल पुंन [उपकुल] कुल नक्षत्र के पास का नक्षत्र (सुज्ज १०, ५)।

उवकोसा स्त्री [उपकोशा] एक गणिका, कोशा वेश्या की छोटी बहिन (कुप्र ४५३)।

उवकोसा स्त्री [उपकोशा] एक प्रसिद्ध वेश्या (उव)।

उवक्कंत वि [उपक्रान्त] १ समीप में आनीत। २ प्रारब्ध, प्रस्तावित (विसे ६८७)।

उवक्कम सक [उप+क्रम्] १ शुरू करना, प्रारम्भ करना। २ प्राप्त करना। ३ जानना। ४ समीप में लाना। ५ संस्कार करना। ६ अनुसरण करना; 'सीसो गुरुणो भावं जमुवक्कमए' (विसे ६२९); 'ता तुब्भे ताव अवक्कमह लहुं, जाव एयासिं भावमुवक्कमामि त्ति' (महा); 'जेणोवक्कामिज्जइ समीवमाणिज्जए' (विसे २०३९); 'जएणं हलकुलिआईहिं खेत्ताइं उवक्कमिज्जंति से तं खेत्तोवक्कमे' (अणु)। वकृ. **उवक्कमंत** (विसे ३४१८)।

उवक्कम पुं [उपक्रम] १ आरम्भ, प्रारम्भ। २ प्राप्ति का प्रयत्न; 'सोच्चा भगवाणुसासणं सच्चे तत्थ करेज्जुवक्कमं' (सूअ १, २, ३, १४)। ३ कर्मों के फल का अनुभव (सूअ १, ३; भग १, ४)। ४ कर्मों की परिणति का कारण-भूत जीव का प्रयत्न-विशेष (ठा ४, २)। ५ मरण, मौत, विनाश; 'हुज्ज इमम्मि समए उवक्कमो जीवियस्स जइ मज्झ' (आउ १५; बृह ४)। ६ दूरस्थित को समीप में लाना; 'सत्थस्सोवक्कमणं उवक्कमो तेण तम्मि अ तओ वा सत्थसमीवीकरणं' (विसे, अणु)। ७ आयुष्य-विघातक वस्तु (ठा ४, २; स २८७)। ८ शस्त्र, हथियार; 'भुम्माहारच्छेए उवक्कमेणं च परिणाए' (धर्म २)। ६ उपचार (स २०५)। १० ज्ञान, निश्चय। ११ अनुवर्त्तन, अनुकूल-प्रवृत्ति (विसे ६२६; ६३०)। १२ संस्कार, परिकर्म; 'खेत्तोवक्कमे' (अणु)।

उवक्कम पुं [उपक्रम] अनुदित कर्मों को उदय में लाना (सूअनि ४७)।

उवक्कमण न [उपक्रमण] उपर देखो (अणु; उवर ४६; विसे ६११; ६१७; ६२१)।

उवक्कमिय वि [औपक्रमिक] उपक्रम से सम्बन्ध रखनेवाला (ठा २, ४; सम १४५; पएण ३५)।

उवक्काम देखो **उवक्कम** = उप + क्रम्। कर्म. उवक्कामिज्जइ (विसे २०३६)।

उवक्काम सक [उप + क्रम्] दीर्घकाल में भोगने योग्य कर्मों को अल्प समय में ही भोगना। कर्म. उवक्कामिज्जइ (धर्मसं ६४८)।

उवक्कामण न [उपक्रमण] उपक्रम कराना (श्रावक १६७)।

उवक्कामण देखो **उवक्कमण** (विसे २०५०)।

उवक्केस पुं [उपक्लेश] १ बाधा। २ शोक (राज)।

उवक्खड सक [उप+स्कृ] १ पकाना, रसोई करना। १ पाक को मसाले से संस्कारित करना। उवक्खडेइ, उवक्खडिंति (पि ५५६)। संकृ. **उवक्खडेत्ता** (आचा)। प्रयो. उवक्खडावेइ, उवक्खडाविंति (पि ५५६; कप्प)। संकृ. **उवक्खडावेत्ता** (पि ५५६)।

उवक्खड } वि [उपस्कृत] १ पकाया
उवक्खडिय } हुआ। २ मसाला वगैरह से संस्कार-युक्त पकाया हुआ (निचू ८; पि ३०६; ५५६; उत्त १२, ११)। ३ पुंन. रसोई, पाक; 'भणियामहाणसगणा जह अज्ज उवक्खडो न कायव्वो' (उप ३५६ टी; ठा ४, २; णाया १, ८; ओघ ५४ भा)। °**म** वि [°म] पकाने पर भी जो कच्चा रह जाता है वह, मूंग वगैरह अन्न-विशेष; 'उवक्खडामं णाम जहा चणयादीणं उवक्खडियाणं जे ण सिज्झंति ते कंकडुयामं उवक्खडियामं भण्णइ' (निचू १५)।

उवक्खर पुं [उपस्कर] १ संस्कार। २ जिससे संस्कार किया जाय वह (ठा ४, २)।

उवक्खर पुं [उपस्कर] घर का उपकरण, साधन (सूअनि ५)।

उवक्खरण न [उपस्करण] ऊपर देखो। °**साला** स्त्री [°शाला] रसोई-घर, पाक-गृह (निचू ६)।

उवक्खा सक [उपा + ख्या] कहना। कर्म. उवक्खाइज्जंति (सूअ २, ४, १०; भग १६, ३—पत्र ७६२)।

उवक्खा स्त्री [उपाख्या] उपनाम (धर्मसं ७२७)।

उवक्खाइत्तु वि [उपख्यापयितृ] प्रसिद्धि करानेवाला; 'अत्ताणं उवक्खाइत्ता भवइ' (सूअ २, २, २६)।

उवक्खाइया स्त्री [उपाख्यायिका] उपकथा, अवान्तर कथा (सम ११६)।

उवक्खाण न [उपाख्यान] उपाख्यान, कथा (पउम ३३, १४६)।

उवक्खित्त वि [उपक्षिप्त] प्रारब्ध, शुरू किया हुआ (मुद्रा ९३)।

उवक्खिव सक [उप+क्षिप्] १ स्थापन करना। २ प्रयत्न करना। ३ प्रारम्भ करना। उवक्खिव (पि ३१६)।

उवक्खीण वि [उपक्षीण] क्षय-प्राप्त (धर्मवि ४२)।

उवक्खेअ पुं [उपक्षेप] १ प्रयत्न, उद्योग। २ उपाय; 'ण भणामि तस्सिं साहणिज्जे किदो उवक्खेओ' (मा ३६)।

उवक्खेव पुं [दे. उपक्षेप] बालोत्पाटन, मुण्डन (तंदु १७)।

उवग वि [उपग] १ अनुसरण करनेवाला (उप २४३; औप)। २ समीप में जानेवाला (विसे २५६५)।

उवगच्छ सक [उप + गम्] १ समीप में आना। २ प्राप्त करना। ३ जानना। ४ स्वीकार करना। उवगच्छइ (उव; स २३७)। उवगच्छंति (पि ५८२)। संकृ. **उवगच्छिऊण** (स ४४)।

उवगणिय वि [उपगणित] गिना हुआ, संख्यात, परिगणित (स ४६१)।

उवगप्पिय वि [उपकल्पित] विरचित (स ७२१)

उवगम देखो उवगच्छ। संकृ. **उवगम्म** (विसे ३११६)। हेकृ. **उवगंतुं** (निचू १९)।

उवगय वि [उपगत] १ पास आया हुआ (से १, १६; गा ३२१)। २ ज्ञात, जाना हुआ (सम ८८; उप पृ ५६; सार्धं १४४)। ३ युक्त, सहित (राय)। ४ प्राप्त (भग)। ५ प्रकर्ष-प्राप्त (सम्म १)। ६ स्वीकृत; 'अज्झप्पबद्धमूला, अएणेहि वि उवगया किरिया' (उवर ५५)। ७ अन्तर्भूत, अन्तर्गत;

'जं च महाकप्पसुयं,
जाणि अ सेसाणि छेअसुत्ताणि।
चरणकरणाणुओगो त्ति
कालियत्थे उवगयाणि'
(विसे १२९५)।

उवगय वि [उपकृत] जिसपर उपकार किया गया हो वह (स २०१)।

उवगर सक [उप + कृ] हित करना। उवगरेमि (स २०९)।

उवगरण न [उपकरण] १ साधन, सामग्री, साधक वस्तु (ओघ ६६६)। २ बाह्य इन्द्रिय-विशेष (विसे १९४)।

उवगरिय न [उपकृत] उपकार (कुप्र ४५)।

उवगस सक [उप + कस्] समीप आना, पास आना। संकृ. **उवगसित्ता** (सूअ १, ४)। वकृ.

'उवगसंतं झंपित्ता, पडिलोमाहिं वग्गुहिं।
भोगभोगे वियारेई, महामोहं पकुव्वइ'
(सम ५०)।

उवगा सक [उप + गै] वर्णन करना, श्लाघा करना, गुणगान करना। कवकृ. **उवगाइज्जमाण, उवगिज्जमाण, उवगीयमाण** (राय; भग ९, ३३; स ६३)।

उवगार देखो **उवयार** = उपकार (सुर २, ४३)।

उवगारग वि [उपकारक] उपकार करनेवाला (स ३२१)।

उवगारि वि [उपकारिन्] ऊपर देखो (सुर ७, १९७)।

उवगारिया स्त्री [उपकारिका] प्रासाद आदि की पीठिका (राय ८१)।

उवगिअ न [उपकृत] १ उपकार। २ वि. जिसपर उपकार किया गया हो वह (स ६३९)।

उवगिज्जमाण देखो **उवगा**।

उवगिण्ह सक [उप + ग्रह्] १ उपकार करना। २ पुष्टि करना। ३ ग्रहण करना। उवगिण्हह (पि ५१२)।

उवगीय वि [उपगीत] १ वर्णित, श्लाघित। २ न. संगीत, गीत, गान; 'वाइयमुवगीयं नट्टमवि सुयं दिट्ठं चिट्ठमुत्तिकरं' (सार्धं १०८)।

उवगीयमाण देखो **उवगा**।

उवगूढ वि [उपगूढ] १ आलिङ्गित (गा ३५१; स ४४८)। २ न. आलिंगन (राज)।

उवगूह सक [उप + गुह्] १ आलिंगन करना। २ गुप्त रीति से रक्षण करना। ३ रचना करना, बनाना। कवकृ. **उवगूहिज्जमाण** (णाया १, १; औप)।

उवगूहण न [उपगूहन] १ आलिंगन। २ प्रच्छन्न-रक्षण। ३ रचना, निर्माण, 'आरुहणणट्टणेहि वालयउवगूहणेहि च' (तंदु)।

उवगूहिय वि [उपगूढ] आलिंगित (आवम)।

उवगूहिय न [उपगूहित] गाढ़ आलिंगन (पव १६९)।

उवग्ग न [उपाग्र] १ अग्र के समीप। २ आषाढ़ मास; 'एसो च्चिय कालो पुणरेव गणं उवग्गम्मि' (वव १)।

उवग्गह पुं [उपग्रह] १ पुष्टि, पोषण (विसे १८५०)। २ उपकार (उप ५९७ टी; स १५४)। ३ ग्रहण, उत्पादन (ओघ २१२ भा)। ४ उपधि, उपकरण, साधन (ओघ ६६६)।

उवग्गह पुं [उपग्रह] सामीप्य-सम्बन्ध (धर्मसं ३६३)।

उवग्गहग वि [उपग्राहक] उपकार-कारक (कुलक २३)।

उवग्गहिअ न [उपगृहीत] उपकार (तंदु ५०)।

उवग्गहिअ वि [उपगृहित] १ उपस्थापित (पएण २३)। २ आलिंगनादि चेष्टा; 'उवहसिएहिं उवग्गहिएहिं उवसद्देहिं' (तंदु)। ३ उपकृत (स १५६)। ४ उपष्टम्भित (राज)।

उवग्गहिअ देखो **ओवग्गहिअ** (पंचव)।

उवग्गाहि वि [उपग्राहिन्] सम्बन्धी, सम्बन्ध रखनेवाला (स ५२)।

उवग्घाय पुं [उपोद्घात] ग्रन्थ के आरम्भ का वक्तव्य, भूमिका (विसे ९९२)।

उवघायग वि [उपघातक] विनाशक (धर्मसं ५१२)।

उवघाइ वि [उपघातिन्] उपघात करनेवाला (भास ८७; विसे २००८)।

उवघाइय वि [उपघातिक] १ उपघात-कारक (विसे २००९)। २ हिंसा से सम्बन्ध रखनेवाला; 'भूओवघाइए' (औप)।

उवघाय पुं [उपघात] १ विराधना, आघात (ओघ ७८८)। २ अशुद्धता (ठा ५)। ३ विनाश (कम्म १, ५४)। ४ उपद्रव (तंदु)। ५ दूसरे का अशुभ-चिन्तन (भास ५१)। °**नाम** न [°नामन्] कर्म-विशेष, जिसके उदय से जीव अपने ही शरीर के पडजीभ, चोरदंत, रसौली आदि अवयवों से क्लेश पाता है वह कर्म (सम ६७)।

उवघायण न [उपघातन] ऊपर देखो (विसे २२३)।

उवचय पुं [उपचय] १ वृद्धि (भग ६, ३)। २ समूह (पिंड २; ओघ ४०७)। ३ शरीर (आव ५)। ४ इन्द्रिय-पर्याप्ति (पएण १५)।

उवचयण न [उपचयन] १ वृद्धि। २ परिपोषण, पुष्टि (राज)।

उवचर सक [उप + चर्] १ सेवा करना। २ समीप में घूमना-फिरना। ३ आरोप करना। ४ समीप में खाना। ५ उपद्रव करना। उवचरइ, उवचरए, उवचरामो, उवचरंति (बृह १; पि ३४९; ४५५; आचा)।

उवचर सक [उप + चर्] व्यवहार करना। उवचरंति (पिंडभा ६)।

उवचरय वि [उपचरक] १ सेवा के मिष से दूसरे के अहित करने का मौका देखनेवाला (सूअ २, २, २८)। २ पुं. जासूस, चर (आचा २, ३, १, ५)।

उवचरिय वि [उपचरित] कल्पित (धर्मसं २४५)।

उवचरिय वि [उपचरित] १ उपासित, सेवित, बहुमानित (स ३०)। २ न. उपचार, सेवा (पंचा ६)।

उवचि सक [उप + चि] १ इकट्ठा करना। २ पुष्ट करना। उवचिणइ, उवचिणाइ; उवचिणंति। भूका. उवचिणिंसु। भवि. उवचिणिस्संति (ठा २, ४; भग)। कर्म उवचिज्जइ, उवचिज्जंति (भग)।

उवचिट्ठ सक [उप + स्था] उपस्थित होना, समीप आना। उवचिट्ठे, उवचिट्ठेज्जा (पि ४८२)।

उवचिणिय देखो **उवचिय** (धर्मवि १०६)।

उवचिय वि [उपचित] १ पुष्ट, पीन (पण्ह १, ४; कप्प)। २ स्थापित, निवेशित (कप्प; पण्ण २)। ३ उन्नति (औप)। ४ व्याप्त (अणु)। ५ वृद्ध, बढा हुआ (आचा)।

उवच्चया स्त्री [उपत्यका] पर्वत के पास की नीची जमीन (ती ११)।

उवच्छंदिद (शौ) वि [उपच्छन्दित] अभ्यर्थित (अभि १७३)।

उवजंगल वि [दे] दीर्घ, लम्बा (दे १, ११६)।

उवजा अक [उप + जन्] उत्पन्न होना। उवजायइ (विसे ३०२१)।

उवजाइ स्त्री [उपजाति] छन्द-विशेष (पिंग)।

उवजाइय देखो **उवयाइय** (श्राद्ध १६; सुपा ३५४)।

उवजाय वि [उपजात] उत्पन्न (सुपा ६००)।

उवजीव सक [उप + जीव्] आश्रय लेना। उवजीवइ (महा)।

उवजीवग वि [उपजीवक] आश्रित (सुपा ११६)।

उवजीवि वि [उपजीविन्] १ आश्रय लेनेवाला; 'न करेइ नेय पुच्छइ निद्धम्मा लिंगमुवजीवी' (उव)। २ उपकारक (विसे २८८६)।

उवजोइय वि [उपज्योतिष्क] १ अग्नि के समीप में रहनेवाला। २ पाक-स्थान में स्थित; 'के इत्थ खत्ता उवजोइया वा अज्झावया वा सह खंडिएहिं' (उत्त १२, १८)।

उवज्ज अक [उत् + पद्] उत्पन्न होना। उवज्जंति (सूअ १, १, ३, १६)।

उवज्जण न [उपार्जन] पैदा करना, कमाना (सुर ८, १४४)।

उवज्जिण सक [उप + अर्ज्] उपार्जन करना। उवज्जिणेमि (स ४४३)।

उवज्झय } पुं [उपाध्याय] १ अध्यापक, **उवज्झाय** } पढानेवाला; (पउम ३६, ९०; षड्)। २ सूत्राध्यापक जैन मुनि को दी जाती एक पदवी (विसे)।

उवडिझय वि [दे] आकारित, बुलाया हुआ (राज)।

उवझाय देखो **उवज्झाय** (सिरि ७७)।

उवट्टण देखो **उव्वट्टण** (राज)।

उवट्टणा देखो **उव्वट्टणा** (भग; विसे २५१५ टी)।

उवट्ठ वि [उपस्थ] एक स्थान में सतत अवस्थित (वव ४)। °**काल** पुं [°काल] आने की वेला, अभ्यागम समय (वव ४)।

उवट्ठंभ पुं [उपष्टम्भ] १ अवस्थान (भग)। २ अनुकम्पा, करुणा (ठा २)।

उवट्ठप्प वि [उपस्थाप्य] १ उपस्थित करने योग्य। २ व्रत—दीक्षा के योग्य; 'वियत्तकिच्चे सेहे य उवट्ठप्पा य आहिया' (बृह ६)।

उवट्ठव सक [उप + स्थापय्] युक्ति से संस्थापित करना। उवट्ठयंति (सूअ २, १ २७)।

उवट्ठव सक [उप + स्थापय्] १ उपस्थित करना। २ व्रतों का आरोपण करना, दीक्षा देना। उवट्ठवेइ, उवट्ठवेह (महा; उवा)। हेकृ. **उवट्ठवेत्तए** (बृह ४)।

उवट्ठवणा स्त्री [उपस्थापना] १ चारित्र-विशेष, एक प्रकार की जैन दीक्षा (धर्म २)। २ शिष्य में व्रत की स्थापना; 'वयट्ठवणमुवट्ठवणा' (पंचभा)।

उवट्ठवणीय वि [उपस्थापनीय] देखो **उवट्ठप्प** (ठा ३)।

उवट्ठा सक [उप + स्था] उपस्थित होना। उवट्ठाएज्जा (भग)।

उवट्ठाण न [उपस्थान] १ बैठना, उपवेशन (णाया १, १)। २ व्रत-स्थापन (महानि ७)। ३ एक ही स्थान में विशेष काल तक रहना (वव ४)। °**दोस** पुं [°दोष] नित्यवास दोष (वव ४)। °**साला** स्त्री [°शाला] आस्थान-मण्डप, सभा-स्थान (णाया १, १; निर १, १)।

उवट्ठाण न [उपस्थान] अनुष्ठान, आचार (सूअ १, १, ३, १४)।

उवट्ठाणा स्त्री [उपस्थाना] जिसमें जैन साधु-लोग एक बार ठहर कर फिर भी शास्त्र-निषिद्ध-अवधि के पहले ही आकर ठहरे वह स्थान (वव ४)।

उवट्ठाव देखो **उवट्ठव**। उवट्ठावेहि (पि ४६८)। हेकृ. **उवट्ठावित्तए, उवट्ठावेत्तए** (ठा)।

उवट्ठावणा देखो **उवट्ठवणा** (बृह ६)।

उवट्ठिय वि [उपस्थित] १ प्राप्त: 'जणवादमुवट्ठिओ' (उत्त १२) २ समीप-स्थित (आव १०)। ३ तैय्यार, उद्यत (धर्म ३)। ४ आश्रित; निम्मत्तमुवट्ठिओ' (आउ; सूअ १, २)। ५ मुमुक्षु, प्रव्रज्या लेने को तैय्यार; 'उवट्ठियं पडिरयं, संजयं सुतवस्सियं। वुक्कम्म धम्माओ भंसेइ, महामोहं पकुव्वइ' (सम ५१)।

उवठावणा देखो **उवट्ठवणा** (पंचा १७, ३०)।

उवडहित्तु वि [उपदहितृ] जलानेवाला, 'अगणिकाएणं कायमुवडहित्ता भवइ' (सूअ २, २)।

उवडिअ वि [दे] अवनत, नमा हुआ (षड्)।

उवणगर न [उपनगर] उपपुर, शाखा-नगर (औप)।

उवणच्च सक [उप + नर्त्तय्] नचाना, नाच कराना। कवकृ. **उवणच्चिज्जमाण** (औप)।

उवणद्ध वि [उपनद्ध] घटित (उत्तर ९१)।

उवणम सक [उप + नम्] १ उपस्थित करना, ला रखना। २ प्राप्त करना। उवणमइ (महा)। वकृ. **उवणमंत** (उप १३९ टी; सूअ १, २)।

उवणमिय वि [उपनमित] उपस्थापित (सण)।

उवणय वि [उपनत] उपस्थित (से १, ३६)।

उवणय पुं [उपनय] १ उपसंहार, दृष्टान्त के अर्थ को प्रकृत में जोड़ना, हेतु का पक्ष में उपसंहार (पव ६६; ओघ ४४ भा)। २ स्तुति, श्लाघा (विसे १४०३ टी; पव १४०)। ३ अवान्तर नय (राज)। ४ संस्कार-विशेष, उपनयन (स २७२)।

उवणय पुं [उपनय] यज्ञोपवीत संस्कार, उपहार, भेंट (राय १२७)।

उवणयण न [उपनयन] १ उपसंहार (वव १)। २ उपस्थापन (पिंड ४४१)।

उवणयण न [उपनयन] उपवीत-संस्कार, यज्ञ-सूत्र धारण संस्कार (पण्ह १, २)।

उवणिअ देखो उवणीय (से ४, ५५)।

उवणिक्खित्त वि [उपनिक्षिप्त] व्यवस्थापित (आचा २)।

उवणिक्खेव पुं [उपनिक्षेप] धरोहर, रक्षा के लिए दूसरे के पास रखा धन (वव ४)।

उवणिग्गम पुं [उपनिर्गम] १ द्वार, दरवाजा (से १२, ६८)। २ उपवन, बगीचा (गउड)।

उवणिग्गय वि [उपनिर्गत] समीप में निकला हुआ (औप)।

उवणिज्जंत देखो उवणी।

उवणिमंत सक [उपनि + मन्त्रय्] निमन्त्रण देना। भवि. उवणिमंतेहिंति (औप)। संकृ. **उवणिमंतिऊण** (स २०)।

उवणिमंतण न [उपनिमन्त्रण] निमन्त्रण (भग ८, ६)।

उवणिवाय पुं [उपनिपात] सम्बन्ध (धर्मसं ४५८)।

उवणिविट्ठ वि [उपनिविष्ट] समीप-स्थित (राय)।

उवणिसआ स्त्री [उपनिषद्] वेदान्त-शास्त्र, वेदान्त-रहस्य, ब्रह्म-विद्या (अच्चु ८)।

उवणिहा स्त्री [उपनिधा] मार्गण, मार्गणा (पंचसं)।

उवणिहि पुंस्त्री [उपनिधि] १ समीप में आनीत, धरोहर (ठा ९)। २ विरचना, निर्माण (अणु)।

उवणिहि पुंस्त्री [उपनिधि] उपस्थापन, अमानत (अणु ५२)।

उवणिहिअ वि [औपनिधिक] १ उपनिधि-सम्बन्धी। °**आ** स्त्री [°की] क्रम-विशेष (अणु ९२)।

उवणिहिय वि [उपनिहित] १ समीप में स्थापित। २ आसन्न-स्थित (सूअ २, २)। °**य** पुं [°क] नियम-विशेष को धारण करनेवाला भिक्षु (सूअ २, २)।

उवणी सक [उप + नी] १ समीप में लाना, उपस्थित करना। २ अर्पण करना। ३ इकट्ठा करना। उवणेंति (उवा); उवणेमो। भवि. उवणेहिइ (पि ५५५; ५७४; ५२१)। कवकृ. **उवणिज्जंत** (से ११, ५३)। संकृ. 'से भिक्खुणो उवणेत्ता अणेगे' (सूअ २, ६, १)।

उवणीअ न [उपनीत] उपनयन (अणु २१७)। °**वयण** न [°वचन] प्रशंसा-वचन (आचा २, ४, १, १)।

उवणीय वि [उपनीत] १ समीप में लाया हुआ (पाअ; महा)। २ अर्पित, उपढौकित (औप)। ३ उपनययुक्त, उपसहृत (विसे ९९९ टी; अणु)। ४ प्रशस्त, श्लाघित (आचा २)। °**चरय** पुं [°चरक] अभिग्रह विशेष को धारण करनेवाला साधु (औप)।

उवण्णत्थ वि [उपन्यस्त] उपन्यस्त, उपढौकित; 'गुव्विणीए उवण्णत्थं विविहं पाणभोअणं। भुंजमाणं विवज्जिज्जा' (दस ५, ३९)।

उवण्णास पुं [उपन्यास] १ वाक्योपक्रम, प्रस्तावना (ठा ४)। २ दृष्टान्त-विशेष (दस १)। ३ रचना (अभि ६८)। ४ छल प्रयोग (प्रयौ २२)।

उवतल न [उपतल] हस्त-तल की चारों ओर का पार्श्वभाग (निचू १)।

उवताव पुं [उपताप] सन्ताप, पीड़ा (सूअ १, ३)।

उवताविय वि [उपतापित] १ पीड़ित। २ तप्त किया हुआ, गरम किया हुआ (सुर २, २२६; सण)।

उवत्त वि [उपात्त] गृहीत (पउम २९, ४९; सुर १४, १६०)।

उवत्थड वि [उपस्तृत] ऊपर-ऊपर आच्छादित (भग)।

उवत्थाण देखो उवट्ठाण (दसनि ४, ५५)।

उवत्थाणा देखो उवट्ठाणा (पि ३४१)।

उवत्थिय देखो उवट्ठिय (सम १७)।

उवत्थु सक [उप + स्तु] स्तुति करना, श्लाघा करना। उवत्थुणाति (पि ४९४)। उवत्थुवंदि (शौ) (उत्तर २२)।

उवदंस सक [उप + दर्शय्] दिखलाना, बतलाना। उवदंसइ (कप्प; महा)। उवदंसेमि (विपा १, १)। भवि. उवदंसिस्सामि (महा)। वकृ. **उवदंसेमाण** (उवा)। कवकृ. **उवदंसिज्जमाण** (णाया १, १३)। संकृ. **उवदंसिय** (आचा २)।

उवदंस पुं [उपदंश] १ रोग-विशेष, गर्मी, सुजाक। २ अवलेह, चाटना (चारु ६)।

उवदंसण न [उपदर्शन] दिखलाना (सण)। °**कूड** पुं [°कूट] नीलवंत नामक पर्वत का एक शिखर (ठा २, ३)।

उवदंसिय वि [उपदर्शित] दिखलाया हुआ (सुपा ३११)।

उवदंसिर वि [उपदर्शिन्] दिखलानेवाला (सण)।

उवदंसेत्तु वि [उपदर्शयितृ] दिखलानेवाला (पि ३९०)।

उवदव पुं [उपद्रव] ऊधम, बखेडा (महा)।

उवदा स्त्री [उपदा] भेंट, उपहार (रंभा)।

उवदाई स्त्री [उदकदायिका] पानी देनेवाली; 'पाउवदाई च ण्हाणोवदाई च बाहिरपेसणकारिं ठवेंति' (णाया १, ७)।

उवदाण न [उपदान] भेंट, नजराना (भवि)।

उवदिस सक [उप + दिश्] उपदेश देना। उवदिसइ (कप्प)।

उवदीव न [दे] द्वीपान्तर, अन्य द्वीप (दे १, १०६)।

उवदेसग वि [उपदेशक] व्याख्याता (औप)।

उवदेसणया देखो उवएसणया (विसे २९, १६)।

उवदेसि वि [उपदेशिन्] उपदेशक (चारु ४)।

उवदेही स्त्री [उपदेहिका] क्षुद्र जन्तु-विशेष, दीमक (दे १, ९३)।

उवद्दव सक [उप + द्रु] उपद्रव करना, ऊधम मचाना। भवि. उवद्दविस्सइ (महा)।

उवद्दव देखो उवदव (ठा ५)।

उवद्दवण न [उपद्रवण] उपद्रव करना, उपसर्ग करना (धर्म ३)।

उवद्दविय वि [उपद्रुत] पीड़ित, भय-भीत किया हुआ (आव ४; विवे ७६)।

उवद्दुअ वि [उपद्रुत] हैरान किया हुआ (भत्त १०५)।

उवधाउ पुं [उपधातु] निकृष्ट धातु (संबोध ५३)।

उवधारणया स्त्री [उपधारणा] अवग्रह-ज्ञान (णंदि १७४)।

उवधारणया स्त्री [उपधारणा] धारणा, धारण करना (ठा ८)।

उवधारिय वि [उपधारित] धारण किया हुआ (भग)।

उवनंद पुं [उपनन्द] स्वनाम-ख्यात एक जैन मुनि (कप्प)।

उवनंद सक [उप + नन्द्] अभिनन्दन करना। कवकृ. **उवनंदिज्जमाण** (कप्प)।

उवनगर देखो **उवनयर** (सुख २, १३)।

उवनयर देखो **उवणयर** (सुपा ३४१)।

उवनिक्खित्त देखो **उवणिक्खित्त** (कस)।

उवनिक्खेव सक [उपनि + क्षेपय्] १ धरोहर रखना। २ स्थापन करना। कृ. **उवनिक्खेवियव्व** (कस)।

उवनिग्गय देखो **उवणिग्गय** (णाया १, १)।

उवनिबंधण न [उपनिबन्धन] १ संबन्ध। २ वि. संबन्ध-हेतु (विसे १६३६)।

उवनिमंत देखो **उवणिमंत**। उवनिमंतेइ, उवनिमंतेमि (कस, उवा)।

उवनिविट्ठ वि [उपनिविष्ट] समीपस्थित (राय २७)।

उवनिहिय वि [औपनिधिक] देखो **उवणिहिय** (पण्ह २, १)।

उवन्नत्थ वि [उपन्यस्त] स्थापित (स ३१०)।

उवन्नास पुं [उपन्यास] निवेदन (दसनि १, ८२)।

उवप्पदाण } न [उपप्रदान] नीति-विशेष,
उवप्पयाण } दान-नीति, अभिमत अर्थ का दान (विपा १, ३; णाया १, १)।

उवप्पुय वि [उपप्लुत] उपद्रुत, भय से व्याप्त (राज)।

उवभुंज सक [उप + भुज्] उपभोग करना, काम में लाना। उवभुंजइ (षड्)। वकृ. **उवभुंजंत** (उप पृ १८०)। कवकृ. **उअहुज्जंत, उवभुज्जंत** (से २,१०; सुर ८,१६१)। संकृ. **उवभुंजिऊण** (महा)।

उवभुंजण न [उपभोजन] उपभोग (सुपा १६)।

उवभुत्त वि [उपभुक्त] १ जिसका उपभोग किया हो वह (वव ३)। २ अधिकृत (उप पृ १२४)।

उवभोअ } पुं [उपभोग] १ भोजनातिरिक्त
उवभोग } भोग, जिसका फिर-फिर भोग किया जाय जैसे—वस्त्र-गृहादि; 'उवभोगो उ पुणो पुणो उवभुज्जइ भवणवलयाई' (उत्त ३३; अभि ३१)। २ जिसका एक बार भोग किया जाय वह, अशन, पान वगैरह (भग ७, २; पडि)।

उवभोग पुं [उपभोग] १ एक बार भोग, आसेवन। २ अन्तरंग भोग (श्रावक २८४)। ३ धारण करना (ठा ५, ३ टी—पत्र ३३८)।

उवभोग्ग } वि [उपभोग्य] उपभोग-योग्य
उवभोज्ज } (राज; बृह ३)।

उवमा स्त्री [उपमा] १ सादृश्य, दृष्टान्त (अणु; उव; प्रासू १२०)। २ सत्य (ठा १०)। ३ खाद्य-पदार्थ-विशेष (जीव ३)। ४ 'प्रश्नव्याकरण' सूत्र का एक लुप्त अध्ययन (ठा १०)। ५ अलङ्कार-विशेष (विसे ९९९ टी)। ६ प्रमाण-विशेष, उपमान-प्रमाण (विसे ४७०)।

उवमाण न [उपमान] १ दृष्टान्त, सादृश्य। २ जिस पदार्थ से उपमा दी जाय वह (दसनि १)। प्रमाण-विशेष (सूत्र १, १२)।

उवमालिय वि [उपमालित] विभूषित, सुशोभित;

'अमलामयपडिपुन्नं, कुवलयमालोवमालियमुहं च।
कणयमयपुण्णकलसं, विलसंतं पासए पुरओ'
(सुपा ३४)।

उवमिय वि [उपमित] १ जिसको उपमा दी गई हो वह। २ जिसकी उपमा दी गई हो वह (आवम)। ३ न. उपमा, सादृश्य (विसे ६८५)।

उवमेअ वि [उपमेय] उपमा के योग्य (मै ७३)।

उवय पुं [दे] हाथी को पकड़ने का गड्ढा (पाअ)।

उवय देखो **ओवय**। वकृ. **उवयंत** (कप्प)।

उवय (अप) देखो **उदय** (भवि)।

उवयर सक [उव + कृ] उपकार करना, हित करना। उवयरेइ (सण)। कृ. **उवयरियव्व** (सुपा ५६४)।

उवयर सक [उप + चर्] १ आरोप करना। २ भक्ति करना। ३ कल्पना करना ४ चिकित्सा करना। कवकृ. **उवयरिज्जंत** (सुपा ५७)।

उवयरण न [उपकरण] साधन, सामग्री; 'माए घरोवअरणं अज्ज हु णत्थि त्ति साहिअं तुमए' (काप्र २९; गउड)। २ उपकार (सत्त ४१ टी)।

उवयरिय वि [उपकृत] १ उपकृत। २ उपकार (वज्जा १०)।

उवयरिय वि [उपचरित] आरोपित (विसे २८३)।

उवयरिया स्त्री [उपचारिका] दासी (उप पृ ३८७)।

उवया सक [उप + या] समीप में जाना। उवयाइ (सूअ १, ४, १, २७)। उवयंति (विसे १४९)।

उवयाइय वि [उपयाचित] १ प्रार्थित, अभ्यर्थित। २ न. मनौती, किसी काम के पूरा होने पर किसी देवता की विशेष आराधना करने का मानसिक संकल्प (ठा १०; णाया १,८)।

उवयाण न [उपयान] समीप में गमन (सूअ १, २)।

उवयार पुं [उपकार] भलाई, हित (उव; गउड; वज्जा ५८)।

उवयार पुं [उपचार] १ पूजा, सेवा, आदर, भक्ति (स ३२; प्रति ४)। २ चिकित्सा, शुश्रूषा (पंचा ६)। ३ लक्षणा, शब्द-शक्ति-विशेष, अध्यारोप; 'जो तेसु धम्मसद्दो सो उवयारेण, निच्छएण इहं' (दसनि १)। ४ व्यवहार; 'णिउणणजुत्तोवयारकुसला' (विपा १, २)। ५ कल्पना; 'उवयारओ खित्तस्स विणिगमणं सव्वओ नत्थि' (विसे)। ६ आदेश (आवम)।

उवयारग वि [उपचारक] सेवा-शुश्रूषा करनेवाला (निचू ११)।

उवयारण न [उपकारण] अन्य-द्वारा उपकार करना; 'उवयारणपारणासु विणओ पउंजियव्वो' (पण्ह २, ३)।

उवयारय वि [उपकारक] उपकार करनेवाला (धम्म ८ टी)।

उवयारि वि [उपकारिन्] उपकारक (स २०८; विक २३; विवे ७६)।

उवयारिअ वि [औपचारिक] उपचार से संबन्ध रखनेवाला (उवर ३४)।

उवयालि पुं [उपजालि] १ एक अन्तकृद् मुनि, जो वसुदेव का पुत्र था और जिसने भगवान् श्रीनेमिनाथजी के पास दीक्षा लेकर शत्रुञ्जय पर मुक्ति पाई थी (अंत १४)। २ राजा श्रेणिक का इस नाम का एक पुत्र, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा लेकर अनुत्तर-विमान में देव-गति प्राप्त की थी (अनु १)।

उवरइ स्त्री [उपरति] विराम, निवृत्ति (विसे २१७७; २६४०; सम ४४)।

उवरंज सक [उप + रञ्ज्] ग्रस्त करना। कर्म. उवरज्जदि (शौ) (मुद्रा ५८)।

उवरग देखो ओअरय; 'उवरगपविट्ठाए कणगमंजरीए निरूवणत्थं दारदेसट्ठिएण दिट्ठं तं पुव्ववण्णियचेट्ठियं' (महा)।

उवरत्त वि [उपरक्त] १ अनुरक्त, राग-युक्त; 'कुमरगुणेसुवरत्ता' (सुपा २५६)। २ राहु से ग्रसित (पाअ)। ३ म्लान (स ४७३)।

उवरम अक [उप + रम्] निवृत्त होना, विरत होना; 'भो उवरमसु एयाओ असुभज्झवसाणाओ' (महा)।

उवरम पुं [उपरम] १ निवृत्ति, विराम, (उप पृ ६३)। २ नाश (विसे ६२)।

उवरय वि [उपरत] १ विरत, निवृत्त (आचा; सुपा ५०८)। २ मृत (स १०४)।

उवरय देखो उवरग; 'उवरयगया दारं पिहिऊण किंपि मुणमुणंती चिट्ठइ' (महा)।

उवरल (अप) देखो उव्वरिय [दे] (पिंग)।

उवराग } पुं [उपराग] सूर्य या चन्द्र का
उवराय } ग्रहण, राहु-ग्रहण (पण्ह, १, २; से ३, ३६; गउड)।

उवराय पुं [उपरात्र] दिन, 'राओवरायं अपडिन्ने अन्नगिलायं एगया भुंजे' (आचा)।

उवरि अ [उपरि] ऊपर, ऊर्ध्व (उव)। **°भासा** स्त्री [°भाषा] गुरु के बोलने के अनन्तर ही विशेष बोलना (पडि)। **°म, °मग, °मय, °ल्ल** वि [°तन] ऊपर का, ऊर्ध्व-स्थित (सम ४३; सुपा ३५; भग; हे २, १६३; सम २२; ८६)। **°हुत्त** वि [°अभिमुख] ऊपर की तरफ (सुपा २६६)।

उवरिं ऊपर देखो (कुमा)।

उवरितण देखो उवरि-म (धर्मवि १५१)।

उवरुंध सक [उप + रुध्] १ अटकाव करना। २ अड़चन डालना। ३ प्रतिबन्ध करना, रोकना। कर्म. उवरुज्झइ, उवरुंधिज्जइ, (हे ४, २४८)।

उवरुद्द पुं [उपरुद्र] नरक के जीवों को दुःख देनेवाले परमाधार्मिक देवों की एक जाति; 'रुद्दोवरुद्द काले अ, महाकाले त्ति यावरे' (सम २८); 'भंजंति अंगमंगाणि, ऊरुबाहुसिराणि करचरणा। कप्पेंति कप्पणीहिं, उवरुद्दा पावकम्मरया' (सूअ १, ५)।

उवरुद्ध वि [उपरुद्ध] १ रक्षित। २ प्रतिरुद्ध, अवरुद्ध; 'पासत्थपमुहचोरोवरुद्धधणभव्वसत्थाणं' (सार्ध ९८; उप पृ ३८५)।

उवरोह सक [उप + रोधय्] अड़चन डालना। कृ. **उवरोहणीय** (सुख १, ४०)।

उवरोह पुं [उपरोध] १ अड़चन, बाधा (विसे १४१३; स ३१६); 'भूओवरोहरहिए' (आव ४)। २ अटकाव, प्रतिबन्ध (बृह १; स १५)। ३ घेरा, नगर आदि का सैन्य द्वारा वेष्टन; 'उवरोहभया कीरइ सप्परिखो पुरवरस्स पागारो' (बृह ३)। ४ निर्बन्ध, आग्रह (स ४५७)।

उवरोहिअ वि [उपरोधित] जिसको उपरोध—निर्बन्ध किया गया हो वह (कुप्र १३५; ४०६)।

उवरोहि वि [उपरोधिन्] उपरोध करनेवाला (आव ४)।

उवल पुं [उपल] १ पाषाण, पत्थर (प्रासू १७५)। २ टाँकी वगैरह को संस्कृत करनेवाला पाषाण-विशेष (पण्ण १)।

उवलम्बण पुं [उपलम्बन] साँकल (सिकड) वाला एक प्रकार का दीपक (अनु)।

उवलंभ सक [उप + लभ्] १ प्राप्त करना। २ जानना। २ उलाहना देना। कर्म. उवलंभिज्जइ (पि ५४१)। वकृ. **उवलंभेमाण** (णाया १, १८)।

उवलंभ पुं [उपलम्भ] १ लाभ, प्राप्ति (सुपा ६)। २ ज्ञान (स ६५१)। ३ उलाहना; 'एवं बहूवलंभे' (उप ६४८ टी)।

उवलंभ देखो उवालंभ = उपालम्भ; 'उवलंभम्मि मिगावई नाहियवाई वि वत्तव्वे' (दसनि १, ७५)।

उवलंभण न [उपलम्भन] प्राप्ति (णंदि २१०)।

उवलंभणा स्त्री [उपलम्भना] उलाहना; 'धण्णं सत्थवाहं बहूहिं खेज्जणाहि य रुंटणाहि य उवलंभणाहि य खेज्जमाणा य रुंटमाणा य उवलंभेमाणा य धण्णस्स एयमट्ठं णिवेदेंति' (णाया १, १८)।

उवलक्ख सक [उप + लक्षय्] जानना, पहिचानना। उवलक्खेइ (महा)। संकृ. **उवलक्खेऊण** (महा)। कृ. **उवलक्खिज्ज** (उप पृ ८७)।

उवलक्ख पुं [उपलक्ष] ज्ञान, खबर, मालूम; 'खित्ताइं अणुवलक्खं रयणाइं रुक्खगहणम्मि' (कुप्र ३२६)।

उपलक्खण न [उपलक्षण] १ पहिचान (सुपा ६१)। २ अन्यार्थ-बोधक संकेत (श्रा ३०)।

उवलक्खिअ वि [उपलक्षित] १ पहिचाना हुआ, परिचित (श्रा १२)।

उवलग्ग वि [उपलग्न] लगा हुआ, लग्न; 'पउमिणिपत्तोवलग्गजलबिंदुनिचयचित्तं' (कप्प; भवि)।

उवलद्ध वि [उपलब्ध] १ प्राप्त। २ विज्ञात; 'जइ सव्वं उवलद्धं, जइ अप्पा भाविओ उवसमेण' (उव; णाया १, १३; १४)। ३ उपालब्ध, जिसको उलाहना दिया गया हो वह (उप ७२८ टी)।

उवलद्धि स्त्री [उपलब्धि] १ प्राप्ति, लाभ। २ ज्ञान (विसे २०६)।

उवलद्धिय देखो उवलद्ध; 'सत्तरत्तछुहियस्स मे भक्खमुवलद्धियं, ता तुमं भक्खिस्सं' (कुप्र ५६)।

उवलद्धु वि [उपलब्धृ] ग्रहण करनेवाला, जाननेवाला (विसे ६२)।

उवलभ देखो उवलंभ = उप + लभ्। वकृ. **उवलभंत** (पि ४५७)। संकृ. **उवलब्भ** (पि ५९०)।

उवलभत्ता } स्त्री [दे] वलय, कङ्कन
उवलयभग्गा } (दे १, १२०)।

उवलल अक [उप + लल्] क्रीड़ा करना, विलास करना। कवकृ. उवलल्लंत (महा)। प्रयो., वकृ. **उवलालिज्जमाण** (णाया १,१)।

उवलल्लय न [दे] सुरत, मैथुन (दे १, ११७)।

उवललिय न [उपललित] क्रीडा-विशेष (णाया १, ६)।

उवलह देखो उवलंभ = उप + लभ्। संकृ. **उवलहिंय** (स ३२), **उवलहिऊण** (स ६१०)।

उवला सक [उप + ला] १ ग्रहण करना। २ आश्रय करना। हेकृ. **उवलाउं** (वव १)।

उवलि देखो **उवल्लि**। उवलिइज्जा (आचा २, ३, १, २)।

उवलिंप सक [उप + लिप्] लीपना, पोतना। भवि. उवलिंपिहिइ (पि ५४९)।

उवलिंप सक [उप + लिप्] चुम्बन करना; 'बलाएं जो उ सीसाएं जीहाए उवलिंपए' (गच्छ १,११६)।

उवलित्त वि [उपलिप्त] लीपा हुआ, पोता हुआ (णाया १, १)।

उवलीण देखो **उवल्लीण**।

उवलुअ वि [दे] सलज्ज, लज्जा-युक्त (दे १, १०७)।

उवलेव पुं [उपलेप] १ लेपना। २ कर्म-बन्ध (ओप)। ३ संश्लेष (आचा)। ४ आश्लेष (सूअ १, १, २)।

उवलेवण न [उपलेपन] ऊपर देखो (भग ११. ६; निचू १; ओप)।

उवलेविय वि [उपलेपित] लीपा हुआ, पोता हुआ (कप्प)।

उवलोभ सक [उप + लोभय्] लालच देना, लोभ दिखाना। संकृ. **उवलोभेऊण** (महा)।

उवलोहिय वि [उपलोभित] जिसको लालच दी गई हो वह (उप ७२८ टी)।

उवल्लि सक [उप + ली] १ रहना, स्थिति करना। २ आश्रय करना। उवल्लियइ (पि १९६; ४७४); 'तओ संजयामेव वासावासं उवल्लिइज्जा' (आचा २, ३, १, १; २)।

उवल्लीण वि [उपलीन] १ स्थित। २ प्रच्छन्न-स्थित; 'उवल्लीणा मेहुणधम्मं विण्ण-वेंति' (आचा २)।

उववइ पुं [उपपति] जार (धर्मवि १२८)।

उववज्ज अक [उप + पद्] १ उत्पन्न होना। २ संगत होना, युक्त होना। उवजइ; भवि. उववज्जिहिइ (भग; महा)। वकृ. **उववज्ज-माण** (ठा ४)। संकृ.। **उववज्जित्ता** (भग १७, ६)। हेकृ. **उववज्जिउं** (सूअ २,१)।

उववज्जण न [उपवर्जन] त्याग, 'असमंजसो-ववज्जणमिह जायइ सव्वसंगचायाओ' (सुपा ४७१)।

उववज्जमाण देखो **उववाय** = उप+वादय्।

उववज्झ वि [उपवाह्य] राज आदि का वल्लभ —प्रधान, सेनापति आदि (दस ६, २, ५)।

उववज्झ वि [औपवाह्य] प्रधान आदि का, प्रधान आदि को बैठने योग्य (दस ६, २,५)।

उववट्ट अक [उप + वृत्] च्युत होना, मरना, एक गति से दूसरी गति में जाना। उववट्टइ (भग)। वकृ. **उववट्टमाण** (भग)।

उववण न [उपवन] बगीचा (णाया १, १; गउड)।

उववण्ण वि [उपपन्न] १ उत्पन्न, 'उववण्णो माणुसम्मि लोगम्मि' (उत्त ६)। २ संगत, युक्त (पंचा ६; उवर ४७)। ३ प्रेरित; 'उववण्णो पावकम्मुणा' (उत्त १६)। ४ न. उत्पत्ति, जन्म (भग १४,१)।

उववत्ति स्त्री [उपपत्ति] १ उत्पत्ति, जन्म (ठा २)। २ युक्ति, न्याय (पउम २, ११७; उवर ४९)। ३ विषय। ४ संभव; 'विसउ त्ति वा संभउ त्ति वा उवव त्ति त्ति वा एगट्ठा' (आचू १)।

उववत्तु वि [उपपत्तृ] उत्पन्न होनेवाला, 'देवलोगेसु देवत्ताए उववत्तारो भवंति' (ओप; ठा ८)।

उववन्न देखो **उववण्ण** (भग; टा २, २; स १५८; १९२)।

उववयण न [उपपतन] देखो **उववाय** = उपपात, 'उववयणं उववाओ' (पंचभा)।

उववसण न [उपवसन] उपवास (सुपा ६१६)।

उववाइय वि [औपपादिक, औपपातिक] १ उत्पन्न होनेवाला; 'अत्थि मे आया उव-वाइए, नत्थि मे आया उववाइए' (आचा)। २ देवरूप या नारक रूप से उत्पन्न होनेवाला (पण्ह १, ४)।

उववाय सक [उप + पादय्] संपादन करना, सिद्ध करना। उववायए (उत्त १, ४३; दस ८, ३३)।

उववाय पुं [उप + वादय्] वाद्य बजाना। कवकृ. **उपवज्जमाण, उववज्जमाण** (कप्प; राज)।

उववाय पुं [उपपात] १ देव या नारक जीव की उत्पत्ति—जन्म (कप्प)। २ सेवा, आदर; 'आणोववायवयणनिद्देसे चिट्ठंति' (भग ३,३)। ३ विनय। ४ आज्ञा; 'उववाओ णिद्देसो आणा विणओ य होंति एगट्ठा' (वव ४)। ५ प्रादुर्भाव (पण्ण १६)। ६ उपसंपादन, संप्राप्ति (निचू ५)। °**कप्प** पुं [°कल्प] साध्वाचार-विशेष, पार्श्वस्थों के साथ रह कर संविग्न-विहार की संप्राप्ति (पंचभा)। °**य** वि [°ज] देव या नारक गति में उत्पन्न जीव (आचा)।

उववास पुंन [उपवास] उपवास, अनाहार, दिन-रात भोजनादि का अभाव (उवा; महा)।

उववासि वि [उपवासिन्] जिसने उपवास किया हो वह (पउम ३३, ५१; सुपा ४७८)।

उववासिय वि [उपवासित] उपवास किया हुआ (भवि)।

उवविअ देखो **उववीअ**; 'सव्वंगं जुव्वणो च (? व) विओ' (धर्मवि ८)।

उवविट्ठ वि [उपविष्ट] बैठा हुआ, निषण्ण (आवम)।

उवविणिग्गय वि [उपविनिर्गत] सतत निर्गत (जीव ३)।

उवविस अक [उप + विश्] बैठना। उव-विसइ (महा)। संकृ. **उवविसिअ** (अभि ३८)।

उवविसण न [उपवेशन] बैठना (कुलक ७)।

उववीअ न [उपवीत] १ यज्ञसूत्र, जनेऊ

(णाया १,१६; गउड)। २ वि. सहित, युक्त; 'गुणसंपओववीओ' (विसे ३४११)।

उववीड अ [उपपीड] उपमर्दन, 'सिविणोव्वीडं आलिंगणेण गाढं पीडिओ' (रंभा)।

उववूह सक [उप + बृंह्] १ पुष्ट करना। २ प्रशंसा करना, तारीफ करना। संकृ. उववूहेऊण (दसनि ३)। कृ. उववूहेयव्व (दसनि ३)।

उववूहण न [उपबृंहण] १ वृद्धि, पोषण (पण्ह ८, १)। २ प्रशंसा, श्लाघा (पंचा २)।

उववूहा स्त्री [उपबृंहा] ऊपर देखो: 'उववूहथिरीकरणे वच्छल्लपभावणे अट्ठ' (पडि)।

उववूहणिय वि [उपबृंहणीय] पुष्टि-कर्त्ता (निचू ८)। स्त्री. पट्ट-विशेष, राजा वगैरह के भोजन-समय में उपभोग में आनेवाला पट्टा (निचू ६)।

उववूहिय वि [उपबृंहित] १ वृद्धि को प्राप्त, पुष्ट (सं १५)। २ प्रशंसित (उप पृ ३८६)।

उववूहिर वि [उपबृंहिन्] १ पोषक, पुष्टिकारक। २ प्रशंसक (सण)।

उववेय वि [उपेत] युक्त, सहित (णाया १, १; औप वसु; सुर १, ३४; विसे ९९६)।

उवसंकम सक [उपसं + क्रम्] समीप आना। वकृ. उवसंकमंत (दस ५, २, १०)।

उवसंखड सक [उपसं + कृ] रांधना, पकाना। कवकृ. **उवसंखडिज्जमाण** (आचा २, १. ४, २)।

उवसंखा स्त्री [उपसंख्या] यथावस्थित पदार्थ-ज्ञान (सूअ १, १२)।

उवसंगह सक [उपसं + ग्रह्] उपकार करना। कर्म. उवसंगहिज्जइ (स १६१)।

उवसंघर सक [उपसं + हृ] उपसंहार करना। उवसंघरमि (भवि)।

उवसंघरिय देखो **उवसंहरिय** (भवि)।

उवसंघिय वि [उपसंहृत] जिसका उपसंहार किया गया हो वह, समापित (विसे १०११)।

उवसंच सक [उपसं + चि] संचय करना। संकृ. **उवसंचिवि** (सण)।

उवसंठिय वि [उपसंस्थित] १ समीप में स्थित। २ उपस्थित (सण)।

उवसंत वि [उपशान्त] १ क्रोधादि विकार-रहित (सूअ १, ६; धर्म ३)। २ नष्ट, अपगत; 'उवसंतरयं करेह' (राय)। ३ पुं. ऐरवत क्षेत्र के स्वनाम-धन्य एक तीर्थङ्कर-देव (पव ७)। °**मोह** पुं [°मोह] ग्यारहवाँ गुण-स्थानक (सम २६)।

उवसंति स्त्री [उपशान्ति] उपशम (आचा)।

उवसंधारिय वि [उपसंधारित] संकल्पित (निचू १)।

उवसंपज्ज [उपसं + पद्] १ समीप में जाना। २ स्वीकार करना। ३ प्राप्त करना। उवसंपज्जइ (स १६१)। वकृ. **उवसंपज्जंत** (वव १)। संकृ. **उवसंपज्जिता, उवसंपज्जित्ताणं** (कप्प; उवा)। हेकृ. **उवसंपज्जिउं** (बृह १)।

उवसंपण्ण वि [उपसंपन्न] १ प्राप्त। २ समीप-गत (धर्म ३)।

उवसंपया स्त्री [उपसंपद्] १ ज्ञान वगैरह की प्राप्ति के लिए दूसरे गुर्वादि के पास जाना (धर्म ३)। २ अन्य गुरु आदि की सत्ता का स्वीकार करना (ठा ३, ३)। ३ लाभ, प्राप्ति (उत्त २६)।

उवसंहर सक [उपसं + हृ] १ हटाना, दूर करना। २ सकेलना, समेटना: 'ता उवसंहर इमं कोवं' (कुप्र २८४)। संकृ. 'उवसंहरिउं नीसेसदेवमायं गओ जाव' (धर्मवि १८)।

उवसंहरिय वि [उपसंहृत] समेटा हुआ, 'वंतरेण य उवसंहरिया माया' (महा)।

उवसंहार पुं [उपसंहार] संकोचन, समेट (द्रव्य १०)।

उवसंहार पुं [उपसंहार] १ समाप्ति। २ उपनय (श्रा ३६)।

उवसग्ग पुं [उपसर्ग] १ उपद्रव, बाधा (ठा १०)। २ अव्यय-विशेष, जो धातु के पूर्व में जोड़े जाने से उस धातु के अर्थ की विशेषता करता है (पण्ह २, २)।

उवसग्ग वि [दे] मन्द, आलसी (दे १, ११३)।

उवसग्गिअ वि [उपसर्गित] हैरान किया हुआ (सिरि १११७)।

उवसज्ज अक [उप + सृज्] आश्रय करना। उवसज्जिज्जा (आचा २, ८, १)।

उवसज्जण न [उपसर्जन] १ अप्रधान, गौण (विसे २२६२)। ३ सम्बन्ध (विसे ३००५)।

उवसत्त वि [उपसक्त] विशेष आसक्तिवाला (उत्त ३२)।

उवसद्द पुं [उपशब्द] सुरत-समय का शब्द (तंदु)।

उवसद्द पुंन [उपशब्द] १ प्रच्छन्न शब्द। २ समीप का शब्द (तंदु ५०)।

उवसप्प सक [उप + सृप्] समीप जाना। संकृ. उवसप्पिऊण (महा; स ५२६)।

उवसप्पि वि [उपसर्पिन्] समीप में जानेवाला (भवि)।

उवसप्पिय वि [उपसर्पित] पास गया हुआ (पाअ)।

उवसम पुं [उप + शम्] १ क्रोध-रहित होना। २ शान्त होना, ठंडा होना। ३ नष्ट होना। उवसमइ (कप्प; कस; महा)। कृ. **उवसमियव्व** (कप्प)। प्रयो. उवसमेइ (विसे १२८४), उवसमावेइ (पि ५५२)। कृ. **उवसमावियव्व** (कप्प)।

उवसम पुं [उपशम] १ क्रोध का अभाव, क्षमा (आचा)। २ इन्द्रिय-निग्रह (धर्म ३)। ३ पन्द्रहवाँ दिवस (चंद १०)। ४ मुहूर्त्त-विशेष (सम ५१)। °**सम्म** न [°सम्यक्त्व] सम्यक्त्व-विशेष (भग)।

उवसमणा स्त्री [उपशमना] आत्मिक प्रयत्न-विशेष, जिससे कर्म-पुद्गल उदय-उदीरणादि के अयोग्य बनाए जांय वह (पंच)।

उवसमि वि [उपशमिन्] उपशमवाला (विसे ५३० टी)।

उवसमिअ पुं [औपशमिक] कर्मों का उपशम (अणु ११३)।

उवसमिय वि [उपशमित] उपशम-प्राप्त (भवि)।

उवसमिय वि [औपशमिक] १ उपशम से होनेवाला। २ उपशम से संबन्ध रखनेवाला (सुपा ६४८)।

उवसाम सक [उप + शमय्] १ शान्त करना। २ रहित करना। उवसामेइ (भग)। वकृ. **उवसामेमाण** (राज)। कृ. **उवसामियव्व** (कप्प)। संकृ. **उवसामइत्तु** (पंच)।

उवसाम पुं [उपशम] उपशान्ति (सिरि २३५)।

उवसाम देखो **उवसम** (विसे १३०६)।

उवसामग वि [उपशमक] १ क्रोधादि को उपशान्त करनेवाला (विसे ५२६; श्राव ४)। २ उपशमसे संबन्ध रखनेवाला; 'उवसामगसेढिगयस्स होइ उवसामगं तु सम्मत्तं' (विसे २७३५)।

उवसामण न [उपशमन] उपशान्ति, उपशम (स ४६९)।

उवसामणया स्त्री [उपशमना] उपशम (ठा ८)।

उवसामय देखो **उवसामग** (सम २६; विसे १३०२)।

उवसामिय वि [औपशमिक] १ उपशम-संबन्धी। २ पुं. भाव-विशेष; 'मोहोवसमसहावो, सव्वो उवसामिओ भावो' (विसे ३४-६४)। ३ न. सम्यक्त्व-विशेष (विसे ५२६)।

उवसामिय वि [उपशमित] शान्त किया हुआ (वव १)।

उवसाह सक [उप+कथ्] कहना। उवसाहइ (सण)।

उवसाहण वि [उपसाधन] निष्पादक (सण)।

उवसाहिय वि [उपसाधित] तैयार किया हुआ (पउम ३४, ८; सण)।

उवसित्त वि [उपसिक्त] सिक्त, छिड़का हुआ (रंभा)।

उवसिलोअ सक [उपश्लोकय्] वर्णन करना, प्रशंसा करना। कृ. **उवसिलोअइदव्व** (शौ) (मुद्रा १६८)।

उवसुत्त वि [उपसुप्त] सोया हुआ (से १५, ११)।

उवसुद्ध वि [उपशुद्ध] निर्दोष (सूअ १, ६)।

उवसूइय वि [उपसूचित] संसूचित (सण)।

उवसेर वि [दे] रति-योग्य (दे १, १०४)।

उवसेवण न [उपसेवन] सेवा, परिचय (पव ६)।

उवसेवय वि [उपसेवक] सेवा करनेवाला, भक्त (भवि)।

उवसोभ अक [उप+शुभ्] शोभना, विराजना। वकृ. **उवसोभमाण, उवसोभेमाण** (भग; णाया १, १)।

उवसोभिय वि [उपशोभित] सुशोभित, विराजित (औप)।

उवसोहा स्त्री [उपशोभा] शोभा, विभूषा (सुर ३, १०४)।

उवसोहिय वि [उपशोधित] निर्मल किया हुआ, शुद्ध किया हुआ (णाया १, १)।

उवसोहिय देखो **उवसोभिय** (सुपा ५; भवि; सार्ध ६६)।

उवस्सग्ग देखो **उवसग्ग** (कस)।

उवस्सय पुं [उपाश्रय] जैन साधुओं के निवास करने का स्थान (सम १८८; ओघ १७ भा; उप ६४८ टी)।

उवस्सा स्त्री [उपाश्रा] द्वेष (वव १)।

उवस्सिय वि [उपाश्रित] १ द्वेषी (वव १)। २ अङ्गीकृत। ३ समीप में स्थित। ४ न. द्वेष (राज)।

उवस्सुदि स्त्री [उपश्रुति] प्रश्न-फल को जानने के लिए ज्योतिषी को कहा जाता प्रथम वाक्य (हास्य १३०)।

उवह स [उभय] दोनों, युगल (कुमा; हे २, १३८)।

उवह अ [दे] 'देखो' अर्थ को बतलानेवाला अव्यय (षड्)।

उवहट्ट सक [समा+रभ्] शुरू करना, आरम्भ करना। उवहट्टइ (षड्)।

उवहड वि [उपहृत] १ उपढौकित, उपस्थापित (राज)। २ भोजन-स्थान में अर्पित भोजन (ठा ३, ३)।

उवहण सक [उप+हन्] १ विनाश करना। २ आघात पहुँचाना। उवहणइ (उव)। कर्म. उवहम्मइ (षड्)। वकृ. **उवहणंत** (राज)।

उवहणण न [उपहनन] १ आघात। २ विनाश (ठा १०)।

उवहत्थ सक [समा+रच्] १ रचना, बनाना। २ उत्तेजित करना। उवहत्थइ (हे ४, ९५)।

उवहत्थिय वि [समारचित] १ बनाया हुआ। २ उत्तेजित (कुमा)।

उवहम्म° देखो **उवहण**।

उवहय वि [उपहत] १ विनाशित (प्रासू १३५)। २ दूषित (बृह १)।

उवहर सक [उप+हृ] १ पूजा करना। २ उपस्थित करना। ३ अर्पण करना। उवहरइ (हे ४, २५९)। भूका. उवहरिंसु (ठा ९)।

उवहस सक [उप+हस्] उपहास करना, हँसी करना। कृ **उवहसणिज्ज** (स ३)।

उवहसिअ वि [उपहसित] १ जिसका उपहास किया गया हो वह (पि १५५)। २ न. उपहास (तंदु)।

उवहा स्त्री [उपधा] माया, कपट (धर्म ३)।

उवहाण न [उपधान] १ तकिया, उसीसा (दे १, १४०; सुर १२, २५; सुपा ४)। २ तपश्चर्या (सूअ १, ३; २, २१)। ३ उपाधि; 'सच्छंपि फलिहरयणं उवहाणवसा कलिज्जए कालं' (उप ७२८ टी)।

उवहार पुं [उपहार] १ भेंट, उपहार (प्रति ७४)। २ विस्तार, फैलाव; 'पहासमुदओवहारेहिं सव्वओ चेव दीवयंतं' (कप्प)।

उवहारणया देखो **उवधारणया** (राज)।

उवहारिअ वि [उपधारित] अवधारित, निश्चित (सूअ २, ७)।

उवहारिआ } स्त्री [दे] दोहनेवाली स्त्री (गा
उवहारी } ७३१; दे १, १०८)।

उवहारुल्ल वि [उपहारवत्] उपहारवाला (संक्षि २०)।

उवहास पुं [उपहास] हँसी, ठट्ठा, दिल्लगी (हे २, २०१)।

उवहास वि [उपहास्य] हँसी के योग्य;
'सुसमत्थो वि हु जो,
जणयअज्जियं संपयं निसेवेइ।
सो अम्मि ! ताव लोए, ममंव
उवहासयं लहइ' (सुर १, २३२)।

उवहासणिज्ज वि [उपहसनीय] हास्यास्पद (पउम १०६, २०)।

उवहि पुं [उदधि] समुद्र, सागर (से ५, ४०; ४२; भवि)।

उवहि पुंस्त्री [उपाधि] १ माया, कपट (आचा)। २ कर्म (सूअ १, २)। ३ उपकरण, साधन; "तिविहा उवही पण्णत्ता' (ठा ३; ओघ २)।

उवहिंड सक [उप+हिण्ड्] पर्यटन करना, घूमना; 'भिक्खत्थं उवहिंडे' (संबोध ४१)।

उवहिय वि [उपहित] १ उपढौकित, अर्पित। २ निहित, स्थापित (आचा; विसे ६३७)। ३ न. उपढौकन, अर्पण (निचू २०)।

उवहिय वि [औपाधिक] माया से प्रच्छन्न विचरनेवाला (णाया १, २)।

उवहुंज सक [उप + भुज्] उपभोग करना, कार्य में लाना। उवहुंजइ (पि ५०७)। कवकृ. **उवहुज्जंत** (पि ५४६)।

उवहुत्त देखो उवभुत्त (पाअ; से १०, ४५)।

उवाइक्कम सक [उपाति + क्रम्] उल्लंघन करना। संकृ. **उवाइकम्म** (आचा २, ८, १)।

उवाइण सक [उपाति + नी] गुजारना। संकृ. **उवाइणित्ता** (आचा २, २, २, ७)।

उवाइण सक [उप + याच्] मनौती करना, किसी काम के पूरा होने पर किसी देवता की विशेष आराधना करने का मानसिक संकल्प करना। हेकृ. 'जति णं अहं देवाणुप्पिया ! दारगं वा दारियं वा पयामि, ताणं अहं तुब्भं जायं च दायं च भागं च अक्खयणिहिं च अणुवड्ढेस्सामि त्ति कट्टु ओवाइयं 'उवाइणित्तए' (विपा १, ७)।

उवाइण सक [उपा + दा] १ ग्रहण करना। २ प्रवेश करना। हेकृ. **उवाइणित्तए** (ठा ३)। प्रयो. 'तं सेयं खलु मम जितसत्तुस्स रण्णो संताणं तच्चाणं तहियाणं अवितहाणं सब्भूताणं जिणपण्णत्ताणं भावाणं अभिगमणट्ठयाए एयमट्ठं उवाइणावित्तए' (णाया १, १२)।

उवाइणाव सक [अति + क्रम्] १ उल्लंघन करना। २ गुजारना, पसार करना। उवाइणावेइ। वकृ. **उवाइणावेंत**। हेकृ. **उवाइणावेत्तए** (कस); **उवाइणावित्तए** (कप्प); 'से गामंसि वा जाव संनिवेसंसि वा बहिया से णं संनिविट्ठं पेहाए कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा तद्दिवसं भिक्खायरियाए गंतूण पडिनियत्तए; नो से कप्पइ तं रयणिं तत्थेव उवाइणावेत्तए। जे खलु निग्गंथे वा निग्गंथी वा तं रयणिं तत्थेव उवाइणावेइ, उवाइणावेंतं वा साइज्जइ, से दुहओ वीइक्कममाणे आवज्जइ चउमासियं परिहारट्ठाणं अणुग्घाइयं' (कस); 'नो से कप्पइ तं रयणिं उवाइणावित्तए' (कप्प)।

उवाइणाविय वि [अतिक्रान्त] १ उल्लंघित। २ गुजारा हुआ, पसार किया हुआ, बिताया हुआ; 'नो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा असणं वा ४ पढमाए पोरुसीए पडिग्गाहेत्ता पच्छिमं पोरिसिं उवाइणावेत्तए। से य आहच्च उवाइणाविए सिया, तं नो अप्पणा भुंजेज्जा' (कस)।

उवाइय देखो उवयाइय (णाया १, २; सुपा १०; महा)।

उवाई स्त्री [उत्लवकी] पोताकी-नामक विद्या की प्रतिपक्षभूत एक विद्या (विसे २४५४)।

उवाएज्ज } वि [उपादेय] ग्राह्य, ग्रहण करने
उवाएय } योग्य (विसे; स १४८)।

उवागच्छ } सक [उपा + गम्] समीप में
उवागम } आना। उवागच्छइ (भग; कप्प)। भवि. उवागमिस्संति (आचा २, ३, १, २) संकृ. **उवागच्छित्ता** (भग; कप्प)। हेकृ. **उवागच्छित्तए** (कप्प)।

उवागम पुं [उपागम] समीप में आगमन (राज)।

उवागमण न [उपागमन] १ समीप में आगमन। २ स्थान, स्थिति (आचानि ३११)।

उवागय वि [उपागत] १ समीप में आया हुआ (आचा २, ३, १, २)। २ प्राप्त, 'एगदिवसंपि जीवो पवज्जमुवागओ अणन्नमणो' (उव)।

उवाडिय वि [उत्पाटित] उखाड़ा हुआ (विपा १, ६)।

उवाणया } स्त्री [उपानह्] जूता (षड्);
उवाणहा } 'पुव्वमुत्तारियाओ उवाणहाओ पएसु ठवियाओ' (सुपा ६१०; सूअ १, ४, २, ६)।

उवादा सक [उपा + दा] ग्रहण करना। कर्म. उवादीयंति (भग)। संकृ. **उवादाय, उवादिएत्ता** (भग)। कवकृ. **उवादीयमाण** (आचा २)।

उवादाण न [उपादान] १ ग्रहण, स्वीकार। २ कार्यरूप में परिणत होनेवाला कारण। ३ जिसका ग्रहण किया जाय वह, ग्राह्य; 'नाओवादाणे च्चिय मुच्छा लोभोत्ति तो रागो' (विसे २९७०)।

उवादिय वि [उपजग्ध] उपभुक्त (राज)।

उवाय पुं [उपाय] १ हेतु, साधन (उत्त ३२)। २ दृष्टान्त; 'उवाओ सोसाधम्मेण य विधम्मेण य' (आचू १)। ३ प्रतीकार (ठा ४, ३)।

उवाय सक [उप + याच्] मनौती करना। वकृ. **उवायमाण** (णाया १, २; १७)।

उवायण न [उपायन] भेंट, उपहार, नज़राना (उप २४५; सुपा २२४; ४१०, गउड)।

उवायणाव देखो **उवाइणाव**। उवायणावेइ। वकृ. **उवायणावेंत**। हेकृ. **उवायणावेत्तए** (कस); **उवायणावित्तए** (कप्प)।

उवायाण देखो **उवादाण** (अच्चु १२; स २; विसे २६७६)।

उवायाय वि [उपायात] समीप में आया हुआ (निर १, १)।

उवारूढ वि [उपारूढ] आरूढ (स ३३१)।

उवालंभ सक [उपा + लभ्] उलाहना देना। उवालम्भइ (कप्प)। वकृ. **उवालंभंत** (पउम १६,४१)। संकृ. **उवालंभित्ता** (बृह ४)। कृ. **उवालंभणिज्ज** (माल १५५)।

उवालंभ पुं [उपालम्भ] उलाहना (णाया १, १; मा ४)।

उवालद्ध वि [उपालब्ध] जिसको उलाहना दिया गया हो वह; 'उवालद्धो य सो सिवो बंभणेणं' (निचू १; माल १६७)।

उवालह सक [उपा + लभ्] उलाहना देना। भवि. उवालहिस्सं (प्राप)।

उवावत्त पुं [उपावृत्त] वह अश्व जो लेटने से श्रम-मुक्त हुआ हो (चारु ७०)।

उवावत्तिद (शौ) वि [उपावृत्तित] उपर्युक्त अश्व से युक्त (चारु ७०)।

उवास सक [उप + आस्] उपासना करना, सेवा करना; 'सुस्सूसमाणो उवासेज्जा सुपण्णं सुतवस्सियं' (सूअ १, ६)। वकृ. **उवासमाण** (ठा ६)।

उवास पुं [अवकाश] खाली जगह, आकाश (ठा २, ४; ८; भग)।

उवासग वि [उपासक] १ सेवा करनेवाला। २ पुं. जैन या बुद्ध दर्शन का अनुयायी गृहस्थ (धर्मसं १०१३)।

उवासग वि [उपासक] १ उपासना करनेवाला, सेवक। २ पुं. श्रावक, जैन गृहस्थ (उत्त २)। °**दसा** स्त्री [°दशा] सातवाँ जैन अंग ग्रन्थ (सम १)। °**पडिमा** स्त्री [°प्रतिमा] श्रावकों को करने योग्य नियम-विशेष (उत्त २)।

उवासण न [उपासन] उपासना, सेवा (स ५४३; मै ८६)।

उवासणा स्त्री [उपासना] १ क्षौर-कर्म, हजामत वगैरह सफाई। २ सेवा, शुश्रूषा; 'उवासणा मंसुकम्ममाइया, गुरुरायाईणं वा उवासणा पज्जुवासणया' (आवम)।

उवासय देखो **उवासग** (सम ११६)।

उवासय पुं [उपाश्रय] जैन मुनियों का निवास-स्थान (उप १४२ टी)।

उवासिय वि [उपासित] सेवित (पउम ६८, ४२)।

उवाहण सक [उपा + हन्] विनाश करना, मारना। वकृ. **उवाहणंत** (पण्ह १, २)।

उवाहणा देखो **उवाणहा** (अनु; णाया १, १५)।

उवाहि पुंस्त्री [उपाधि] १ कर्म-जनित विशेषण (आचा)। २ सामीप्य, संनिधि (भग १, १)। ३ अस्वाभाविक धर्म; 'सुद्धोवि फलिहमणी उपाहिवसओ धरेइ अन्नत्तं' (धम्म ११ टी)।

उवि सक [उप + इ] १ समीप आना। २ स्वीकार करना। ३ प्राप्त करना। उविति (भग)। वकृ. **उविंत** (पि ४९३; प्रामा)।

उविअ देखो **अविअ** = अपि च (स २०६)।

उविअ वि [उपेत] युक्त, सहित (भवि)।

उविअ न [दे] शीघ्र, जल्दी (दे १, ८९)। २ वि. परिकर्मित, संस्कारित; 'णाणामणिकणगरयणविमलमहरिहनिउणोवियमिसिमिसंतविरइयसुसिलिट्ठविसिट्ठलट्ठसंठियपसत्थआविद्धवीरवलए' (णाया १, १)।

उविंद पुं [उपेन्द्र] कृष्ण (कुमा)। °**वज्जा** स्त्री [°वज्रा] ग्यारह अक्षरों के पादवाला एक छन्द (पिंग)।

उविंद पुंन [उपेन्द्र] एक देव-विमान (देवेन्द्र १४१)।

उविक्ख सक [उप + ईक्ष्] उपेक्षा करना, अनादर करना। वकृ. **उविक्खमाण** (द्र १६)।

उविक्खा स्त्री [उपेक्षा] उपेक्षा, अनादर (काल)।

उविक्खिय वि [उपेक्षित] तिरस्कृत, अनादृत (सुपा ३९५)।

उविक्खेव पुं [उद्क्षेप] हजामत, मुण्डन (तन्दु)।

उवियग्ग वि [उद्विग्न] खिन्न, उद्वेग-प्राप्त (राज)।

उवीव अक [उद् + विच्] उद्वेग करना, खिन्न होना। उवीवइ (नाट)।

उवे देखो **उवि**। उवेइ, उवेंति (औप)। वकृ. **उवेंत** (महा)। संकृ. **उवेच्च** (सूअ १, १४)।

उवेक्ख देखो **उविक्ख**। उवेक्खह (सुपा ३५४)। कृ. **उवेक्खियव्व** (स ९०)।

उवेक्खिअ देखो **उविक्खिय** (गा ४२०)।

उवेच्च देखो **उवे**।

उवेय वि [उपेत] १ समीप-गत। २ युक्त, सहित (संस्था ६)।

उवेय वि [उपेय] उपाय-साध्य (राज)।

उवेल्ल अक [प्र + सृ] फैलना, प्रसारित होना। उवेल्लइ (हे ४, ७७)।

उवेस अक [उप + विश्] बैठना। वकृ. **उवेसमाण** (पिंड ५८३)।

उवेह सक [उप + ईक्ष्] उपेक्षा करना, तिरस्कार करना, उदासीन रहना। उवेहइ (धम्म १६)। वकृ. **उवेहंत, उवेहमाण** (स ४६; ठा ६)। कृ. **उवेहियव्व** (सण)।

उवेह सक [उत्प्र + ईक्ष्] १ जानना, समझना। २ निश्चय करना। ३ कल्पना करना। उवेहाहि। वकृ. **उवेहमाण**; 'उवेहमाणे अणुवेहमाणं बूया, उवेहाहि समियाए' (आचा)। संकृ. **उवेहाए** (आचा)।

उवेहण न [उपेक्षण] उपेक्षा, उदासीनता (संबोध १०; हित २३)।

उवेहा स्त्री [उपेक्षा] तिरस्कार, अनादर, उदासीनता (सम ३२)। °**कर** वि [°कर] उपेक्षक, उदासीन (श्रा २८)।

उवेहा स्त्री [उत्प्रेक्षा] १ ज्ञान, समझ। २ कल्पना। ३ अवधारण, निश्चय (औप)।

उवेहिय वि [उपेक्षित] अनादृत, तिरस्कृत (उप १२६; सुपा १३५)।

°**उव्व** देखो **पुव्व** (गा ४१४)।

उव्वंत वि [उद्वान्त] १ वमन किया हुआ। २ निष्क्रान्त, निर्गत (अभि २०६)।

उव्वक्क सक [उद् + वम्] १ बाहर निकालना २ वमन करना। हेकृ. **उव्वक्किउं** (सुपा १३६)।

उव्वक्क } **उव्वक्किय** } वि [उद्वान्त] १ बाहर निकाला हुआ (वव १)। २ वमन किया हुआ;

'संतोसामयपाणं, काउं उव्वक्कियं हयासेण। जं गहिऊणं विरई, कलंकिया मोहमूढेण' (सुपा ४३५)।

उव्वग्ग देखो **ओवग्ग**। संकृ. **उव्वग्गिवि** (भवि)।

उव्वट्ट उभ [उद् + वृत्, वर्त्तय्] १ चलना-फिरना। २ मरना, एक गति से दूसरी गति में जन्म लेना। ३ पिष्टिका आदि से शरीर के मल को दूर करना। ४ कर्म-परमाणुओं की लघु स्थिति को हटाकर लम्बी स्थिति करना। ५ पार्श्व को चलाना-फिराना। ६ उत्पन्न होना, उदित होना। उव्वट्टइ (भग)। वकृ. **उव्वट्टंत, उव्वट्टमाण, उअत्तंत** (भग; नाट; उत्तर १०७; बृह १)। संकृ. **उव्वट्टित्ता, उहट्टु, उव्वट्टिय** (जीव १; विपा १, १; आचा २, ७; स २०६)। हेकृ. **उव्वट्टित्तए** (कस)।

उव्वट्ट देखो **उव्वट्टिय** = उद्वृत्त (भग)।

उव्वट्ट वि [दे] १ नीराग, राग-रहित। २ गलित (दे १, १२६)।

उव्वट्टण न [उद्वर्त्तन] १ शरीर पर से मल वगैरह को दूर करना। २ शरीर को निर्मल करनेवाला द्रव्य—सुगन्धि वस्तु (उवा; णाया १, १३)। ३ दूसरे जन्म में जाना, मरण। ४ पार्श्व का परिवर्त्तन (आव ४)। ५ कर्म-परमाणुओं की ह्रस्व स्थिति को दीर्घ करना (पंच)।

उव्वट्टण न [उद्वर्त्तन] तुले से उसके बीज को अलग करना (पिंड ६०३)।

उव्वट्टण न [अपवर्त्तन] देखो उव्वट्टणा = अपवर्त्तना (विसे २५१४)।

उव्वट्टणा स्त्री [उद्वर्त्तना] १ मरण, शरीर से जीव का निकलना (ठा २, ३)। २ पार्श्व का परिवर्त्तन (आव ४)। ३ जीव का एक प्रयत्न, जिससे कर्म-परमाणुओं की लघु स्थिति दीर्घ होती है, करण-विशेष (भग ३१, ३२)।

उव्वट्टणा स्त्री [अपवर्त्तना] जीव का एक प्रयत्न जिससे कर्मों की दीर्घ स्थिति का ह्रास होता है (विसे २७१५ टी)।

उव्वट्टिअ वि [उद्वर्तित] साफ किया हुआ, प्रमार्जित; 'करीसेण वावि उव्वट्टिए' (पिंड २७६)।

उव्वट्टिय वि [उद्वृत्त] किसी गति से बाहर निकला हुआ, मृत; 'आउक्खएण उव्वट्टिया समाणा' (पण्ह १, १)।

उव्वट्टिय वि [उद्वर्त्तित] १ जिसने किसी भी द्रव्य से शरीर पर का तैल वगैरह का मैल दूर किया हो वह; 'तओ तत्थट्टिओ चेव अब्भंगिओ उव्वट्टिओ उण्हखलउदगेहिं पमज्जिओ' (महा)। २ प्रच्यावित, किसी पद से भ्रष्ट किया हुआ (पिंड)।

उव्वड्ढ वि [उद्वृद्ध] वृद्धि-प्राप्त (आवम)।

उव्वण वि [उल्बण] प्रचण्ड, उद्भट (उप पृ ७०; गउड; धम्म ११ टी)।

उव्वत्त देखो उव्वट्ट = उद् + वृत्। उव्वत्तइ (पि २८६)। वकृ. **उव्वत्तंत, उव्वत्तमाण** (से ५, ४२; स २५८; ६२७)। कवकृ. **उव्वत्तिज्जमाण** (णाया १,३)। संकृ. **उव्वत्तिवि** (भवि)।

उव्वत्त देखो उव्वट्ट (दे)।

उव्वत्त सक [उद् + वर्तय्] १ खड़ा करना। २ उलटा करना। उव्वत्तंति (पव ७१) संकृ **उव्वत्तिया** (दस ५, १, ६३)।

उव्वत्त वि [उद्वर्त्त] खड़ा करनेवाला (पव ७१)।

उव्वत्त वि [उद्वृत्त] १ उत्तान, चित्त (से ५, ६२)। २ उल्लसित (हे ४, ४३४)। ३ जिसने पार्श्व को घुमाया हो वह (आव ३)। ४ ऊर्ध्व-स्थित; 'सो उव्वत्तविसाणो खंधवसभो जाओ' (महा)। ५ घुमाया हुआ, फिराया हुआ (प्राप)।

उव्वत्त वि [अपवृत्त] उलटा रहा हुआ, विपरीत स्थित (से १, ६१)।

उव्वत्तण न [उद्वर्त्तन] १ पार्श्व का परिवर्त्तन (गा २८३; निचू ४)। २ ऊँचा रहना, ऊर्ध्व-वर्त्तन (ओघ १६ भा)।

उव्वत्तिय वि [उद्वर्त्तित] १ परिवर्तित, चक्राकार घुमा हुआ (स ८५); 'भमियं व वणतरूहिं उव्वत्तियं व सयलवसुहाए' (सुर १२,१६६)।

उव्वद्ध देखो उव्वड्ढ (महा)।

उव्वम सक [उद् + वम्] उलटी करना, पीछा निकाल देना। वकृ. **उव्वमंत** (से ५, ६; गा ३४१)।

उव्वमिअ वि [उद्वान्त] उलटी किया हुआ, वमन किया हुआ (पाअ)।

उव्वर अक [उद् + वृ] शेष रहना, बच जाना; तुम्हाण 'दंताण जमुव्वरेइ देज्जाह साहूण तमायरेण' (उप २११ टी)। वकृ. **उव्वरंत** (नाट)।

उव्वर पुं [दे] घर्म, ताप (दे १, ८७)।

उव्वरिअ वि [दे] १ अधिक, बचा हुआ, अवशिष्ट (दे १, १३२; पिंग; गा ४७४; सुपा ११, ५३२; ओघ १६८ भा)। २ अनीप्सित, अनभीष्ट। ३ निश्चित। ४ अगणित। ५ न. ताप, गरमी (दे १, १३२)। ६ वि. अतिक्रान्त, उल्लङ्घित; 'परदव्वहरणविरया निरयाइदुहाण ते खलुव्वरिया' (सुपा ३६८)।

उव्वरिअ न [अपवरिका] कोठरी, छोटा घर (सुर १४, १७४)।

उव्वल सक [उद् + वल्] १ उपलेपन करना। २ पीछे लौटना। हेकृ. **उव्वलित्तए** (कस)।

उव्वल सक [उद् + वलय्] उन्मूलन करना। उव्वलए। वकृ. **उव्वलमाण** (पंच ५,१६६)।

उव्वलण न [उद्वलन] १ शरीर का उपलेपन-विशेष (णाया १, १; १३)। २ मालिश, अभ्यञ्जन (बृह ३, औप)।

उव्वलणा स्त्री [उद्वलना] १ उन्मूलन। २ उद्वलन-योग्य कर्म-प्रकृति (पंच ३, ३४)।

उव्वलिय वि [उद्वलित] पीछे लौटा हुआ (महा)।

उव्वस वि [उद्वस] उजाड़, वसति-रहित (सुपा १८८; ४०६)।

उव्वसिय वि [उद्वसित] ऊपर देखो (गा १६४ सुर २, ११६; सुपा ५४१)।

उव्वसी स्त्री [उर्वशी] १ एक अप्सरा (सण)। २ रावण की एक स्वनाम-ख्यात पत्नी (पउम ७४, ८)।

उव्वह सक [उद् + वह्] १ धारण करना। २ उठाना। उव्वहइ (महा)। वकृ. **उव्वहंत, उव्वहमाण** (पि ३६७; से ६,५)। कवकृ. **उव्वुब्भमाण** (णाया १,६)।

उव्वहण न [उद्वहन] १ धारण। २ उत्थापन। (गउड; नाट)।

उव्वहण न [दे] महान् आवेश (दे १, ११०)।

उव्वा स्त्री [दे] घर्म, ताप (दे १, ८७)।

उव्वा } अक [उद् + वा] १ सूखना,
उव्वाअ } शुष्क होना। उव्वाइ, उव्वाअइ (षड्; हे ४; २४०)।

उव्वाअ वि [उद्वात] शुष्क, सूखा (गउड)।

उव्वाअ } वि [दे] खिन्न, परिश्रान्त (दे १,
उव्वाइअ } १०२; बृह १; वव ४; पाअ; गा ७५८; सुपा ४३६)।

उव्वाउल न [दे] १ गीत। २ उपवन, बगीचा (दे १, १३४)।

उव्वाडुल न [दे] १ विपरीत सुरत। २ मर्यादा-रहित मैथुन (दे १, १३३)।

उव्वाढ वि [दे] १ विस्तीर्ण, विशाल। २ दुःखरहित (दे १, १२६)।

उव्वाण देखो उव्वाअ = उद्वात (कुप्र १६६)।

उव्वाय देखो उवाय = उपाय (सूअ १, ४, १, २)।

उव्वार (अप) सक [उद्+वर्तय्] त्याग करना, छोड़ देना। कर्म. उव्वारिज्जइ (हे ४, ४३८)।

उव्वाल सक [कथ्] कहना, बोलना। उव्वालइ (षड्)।

उव्वास सक [उद् + वासय्] १ दूर करना। २ देशनिकाला करना। ३ उजाड़ करना। उव्वासइ (नाट; पिंग)।

उव्वासिय वि [उद्वासित] १ उजाड़ किया हुआ (पउम २७, ११)। २ देश-बाहर

किया हुआ (सुपा ५४२)। ३ दूर किया हुआ (गा १०६)।

उव्वाह पुं [दे] घर्म, ताप (दे १, ८७)।

उव्वाह पुं [उद्वाह] विवाह (मै २१)।

उव्वाह सक [उद् + बाधय्] विशेष प्रकार से पीड़ित करना। कवकृ. उव्वाहिज्जमाण (आचा; णाया १, २)।

उव्वाहिअ वि [दे] उत्क्षिप्त, फेंका हुआ (दे १, १०६)।

उव्वाहुल न [दे] १ उत्सुकता, उत्कण्ठा (भवि; दे १, १३६)। २ वि. द्वेष्य, अप्रीतिकर (दे १, १३६)।

उव्वाहुलिय वि [दे] उत्सुक, उत्कण्ठित (भवि)।

उव्विआइअ वि [उद्वेदित] उत्पीडित (से १३, २६)।

उव्विक्क न [दे] प्रलपित, प्रलाप (षड्)।

उव्विग्ग वि [उद्विग्न] १ खिन्न। २ भीत, घबड़ाया हुआ (हे २, ७६)।

उव्विग्गिर वि [उद्वेगशील] उद्वेग करनेवाला (वाका ३८)।

उव्विज्ज देखो उव्विय। उव्विज्जइ (प्राकृ ६८), उव्विज्जंति (वै ८६)। संकृ उव्विजिऊण (धर्मवि ११६)।

उव्विड वि [दे] १ चकित, भीत। २ क्लान्त, क्लेश-युक्त (षड्)।

उव्विडिम वि [दे] १ अधिक प्रमाण वाला। २ मर्यादा-रहित, निर्लज्ज (दे १, १३४; चउ० पत्र २६७-३१६ पद्य)।

उव्विण्ण देखो उव्विग्ग (पि २१६)।

उव्विद्ध वि [उद्विद्ध] १ ऊँचा गया हुआ, उच्छ्रित (पण्ह १, ४)। २ गम्भीर, गहरा (सम ४४; णाया १, १)। ३ विद्ध; 'कीलयसएहिं धरणियले उव्विद्धो' (संथा ८७)।

उव्विद्ध वि [उद्विद्ध] जिसकी ऊँचाई का माप किया गया हो वह (पव १५८)।

उव्विन्न देखो उव्विग्ग (हे २, ७६; सुर ४, २४८)।

उव्विय अक [उद् + विज्] उद्वेग करना, उदासीन होना, खिन्न होना; 'को उव्विएज्ज नरवर! मरणस्स अवस्स गंतव्वे' (स १२६)। वकृ. उव्वियमाण (स १३६)।

उव्वियणिज्ज वि [उद्वेजनीय] उद्वेग-प्रद (पउम १६, ३६; सुपा ५६७)।

उव्विरेयग न [उद्विरेचन] खाली करना, 'एवं च भरिउव्विरेयणं कुव्वंतस्स' (काल)।

उव्विल्ल अक [उद् + वेल्] १ चलना, काँपना। २ सक. वेष्टन करना। वकृ. उव्विल्लंत, उव्विल्लमाण (सुपा ८८; उप पृ ७७)।

उव्विल्ल अक [प्र + सृ] फैलना, पसरना। उव्विल्लइ (भवि)।

उव्विल्ल अक [उद् + वेल्] १ तड़फड़ाना, इधर-उधर चलना; 'उव्विल्लइ सयणीए देवो आसन्नचवणुव्व' (धर्मवि ११२)।

उव्विल्ल वि [उद्वेल] चञ्चल, चपल (सुपा ३४)।

उव्विल्लिर वि [उद्वेलितृ] चलनेवाला, हिलनेवाला (सुपा ८८)।

उव्विव अक [उद् + विज्] उद्वेग करना, खिन्न होना। उव्विवइ (षड्)।

उव्विव्व } देखो उव्विव। उव्विव्वइ, उव्वेअइ (प्राकृ ६८)।
उव्वेअ }

उव्विव्व वि [दे] १ क्रुद्ध, क्रोध-युक्त (षड्)। २ उद्भट वेष वाला (पाअ)।

उव्विह सक [उत् + व्यध्] १ ऊँचा फेंकना। २ ऊँचा जाना, उड़ना; 'से जहाणामए केइ पुरिसे उसुं उव्विहइ' (पि १२६)। वकृ. 'मणसावि उव्विहंताइं अणेगाइं आससयाइं पासंति' (णाया १, १७ टी—पत्र २३१)। वकृ. उव्विहमाण (भग १६)। संकृ. उव्विहित्ता (पि १२६)।

उव्विह पुं [उद्विह] स्वनाम-ख्यात एक आजीविक मत का उपासक (भग ८, ५)।

उव्वी पुं [उर्वी] पृथिवी (से २, ३०)। °स पुं [°श] राजा (कुमा)।

उव्वीढ देखो उव्वूढ (कुमा; हे १, १२०)।

उव्वीढ वि [दे] उत्खात, खोदा हुआ (दे १, १००)।

उव्वीढ वि [उद्विद्ध] उत्क्षिप्त, 'तस्स उसुस्स उव्वीढस्स समाणस्स' (पि १२६)।

उव्वील सक [अव + पीडय्] पीड़ा पहुँचाना, मार-पीट करना। वकृ. उव्वीलेमाण (राज)।

उव्वीलय वि [अपव्रीडक] लज्जा-रहित करनेवाला, शिष्य को प्रायश्चित्त लेने में शरम को दूर करने का उपदेश देनेवाला (गुरु) (भग २५, ७; द्र ४६)।

उव्वुज्झमाण देखो उव्वह।

उव्वुण्ण } वि [दे] १ उद्विग्न। २ उत्सिक्त।
उव्वुन्न } ३ शून्य (दे १, १२३)। ४ उद्भट, उल्बण (दे १, १२३; सुर ३, २०५)।

उव्वूढ वि [उद्व्यूढ] १ धारण किया हुआ, पहना हुआ (कुमा)। २ ऊँचा लिया हुआ, ऊपर धारण किया हुआ (से ५, ५४; ६, ११)। ३ परिणीत, कृत-विवाह (सुपा ४५६)।

उव्वेअणीअ वि [उद्वेजनीय] उद्वेग-कारक (नाट)।

उव्वेग पुं [उद्वेग] १ शोक, दिलगीरी (ठा ३, ३)। २ व्याकुलता (भग ३, ६)।

उव्वेढ सक [उद् + वेष्ट्] १ बाँधना। २ पृथक् करना, बन्धन-मुक्त करना। उव्वेढइ (षड्), उव्वेढिज (आचा २, ३, २, २)।

उव्वेढण न [उद्वेष्टन] १ बन्धन। २ वि. बन्धन-रहित किया हुआ (राज)।

उव्वेढिअ वि [उद्वेष्टित] १ बन्धन-रहित किया हुआ। २ परवेष्टित (दे ४, ४६)।

उव्वेत्ताल न [दे] अविच्छिन्न चिल्लाना, निरन्तर रोदन (दे १, १०१)।

उव्वेय देखो उव्वेग (कुमा; महा)।

उव्वेयग वि [उद्वेजक] उद्वेग-कारक (रयण ४०)।

उव्वेयणग } वि [उद्वेजनक] उद्वेग-जनक
उव्वेयणय } (आउ; पण्ह १, १)।

उव्वेयणय पुंन [उद्वेजनक] एक नरक-स्थान (देवेन्द्र २८)।

उव्वेल अक [प्र + सृ] फैलना। उव्वेलइ (षड्)।

उव्वेल वि [उद्वेल] उच्छलित (से २, ३०)।

उव्वेलिअ वि [उद्वेलित] फैला हुआ, प्रसृत (माल १४२)।

उव्वेल्ल देखो उव्वेढ। उव्वेल्लइ (हे ४, २२३)। कर्म. उव्वेल्लिज्जइ (कुमा)।

उव्वेल्ल सक [उद् + वेल्ल्] १ सत्वर जाना। २ त्याग करना। ऊँचा उड़ना, ऊँचा

जाना। ४ अक. फैलना, पसरना। वकृ. **उव्वेल्लंत** (पि १०७)।

उव्वेल्ल वि [उद्वेल] १ उच्छलित, उछला हुआ; 'उव्वेल्ला सलिलनिही' (पउम ६, ७२)। २ प्रसृत, फैला हुआ (पाअ)। ३ उद्भिन्न; 'हरिसवसुव्वेल्लपुलयाए' (स ६२५)।

उव्वेल्लिअ वि [उद्वेल्लित] १ कम्पित (गा ६०५)। २ उत्सारित (बृह ३)। ३ प्रसारित (स ३३५)।

उव्वेल्लिर वि [उद्वेल्लितृ] सत्वर जानेवाला (कुमा)।

उव्वेव देखो उव्विव । उव्वेवइ (षड्)।

उव्वेव देखो उव्वेग (कुमा; सुर ४, ३६; ११, १६४)।

उव्वेवग वि [उद्वेजक] उद्वेग-कारक, 'थद्धा छिद्दप्पेही, अवन्नवाई सयम्मई चवला। वंका कोहणसीला, सीसा उव्वेवगा गुरुणा" (उव)।

उव्वेवणय वि [उद्वेजनक] उद्वेग-जनक (पञ्च ४५)।

उव्वेवय देखो उव्वेवग (स २६२)।

उव्वेसर पुं [उव्वेश्वर] इस नामका एक राजा (कुमा)।

उव्वेह पुं [उद्वेध] १ ऊँचाई (सम १०४)। २ गहराई (ठा १०)। ३ जमीन का अवगाह (ठा १०)।

उव्वेहलिया स्त्री [उद्वेधलिका] वनस्पति-विशेष (पण्ण १)।

उसड्ड वि [दे] ऊँचा (राय)।

उसढ देखो ऊसढ = दे (पव २)।

उसण पुं [उशनस्] ग्रह-विशेष, शुक्र, भार्गव (पाअ)।

उसणसेण पुं [दे] बलभद्र (दे १, ११८)।

उसत्त वि [उत्सक्त] ऊपर बँधा हुआ (णाया १, १)।

उसन्न पुं [उत्सन्न] भ्रष्ट यति-विशेष की एक जाति (सं ६१)।

उसप्पिणी देखो उस्सप्पिणी (जी ४०; विसे २७०६)।

उसभ पुंन [वृषभ] एक देव-विमान (देवेन्द्र १४०)।

उसभ पुं [ऋषभ, वृषभ] १ स्वनाम-ख्यात प्रथम जिनदेव (सम ४३; कप्प)। २ बैल, साँड़ (जीव ३)। ३ वेष्टन-पट्ट (पव २१६)। ४ देव-विशेष (ठा ८)। ३ ब्राह्मण-विशेष (उत्त १)। °**कंठ** पुं [°कण्ठ] १ बैल का गला। २ रत्न-विशेष (जीव ३)। °**कूड** पुं [°कूट] पर्वत-विशेष (ठा ८)। °**णाराय** न [°नाराच] संहनन-विशेष, शरीर-बन्ध-विशेष (पंच)। °**दत्त** पुं [°दत्त] ब्राह्मण-कुण्ड ग्राम का रहनेवाला एक ब्राह्मण, जिसके घर भगवान् महावीर अवतरे थे (कप्प)। °**पुर** न [°पुर] नगर-विशेष (विपा २, २)। °**पुरी** स्त्री [°पुरी] एक राजधानी (ठा ८)। °**सेण** पुं [°सेन] भगवान् ऋषभ-देव के प्रथम गणधर (आचू १)।

उसर (पै) पुंस्त्री [उष्ट्र] ऊँट (पि २५६)।

उसलिअ वि [दे] रोमाञ्चित, पुलकित (षड्)।

उसह देखो उसभ (हे १, १३१; १३३; १४१; षड्; कुमा; सम १५२; पउम ४, ३५)।

उसहसेण पुं [वृषभसेन] तीर्थंकर-विशेष। २ जिनदेव की एक शाश्वती प्रतिमा (पव ५६)।

उसा अ [उषस्] प्रभात-काल (गउड)।

उसिण वि [उष्ण] गरम, तप्त (कप्प ठा ३, १)। ३ पुंन. गरम स्पर्श (उत्त १)। ३ गरमी, ताप (उत्त २)।

उसिय वि [उत्सृत] व्याप्त, फैला हुआ (सम १३७)।

उसिय वि [उषित] रहा हुआ, निवसित (से ८, ६३; भत्त १२८)।

उसिर देखो उसीर = उशीर (सूअ १, ४, २, ८)।

उसीर न [उशीर] सुगन्धि तृण-विशेष, खश (पण्ह २, ५)।

उसीर न [दे] कमल दण्ड, बिस (दे १, ६४)।

उसु पुं [इषु] १ बाण, शर (सूअ १, ५, १)। २ धनुराकार क्षेत्र का बाण-स्थानीय क्षेत्र-परिमाण; 'धणुवग्गाओ नियमा, जीवावग्गं विसोहइत्ताणं। सेसस्स छट्ठभागे, जं मूलं तं उसू होइ' (जो १)। °**कार**, °**गार**, °**यार** पुं [°कार] १ पर्वत-विशेष (सम ६६; ठा २, ३; राज)। २ इस नाम का एक राजा। ३ स्वनाम-ख्यात एक पुरोहित (उत्त १४)। ४ वि. बाण बनानेवाला (राज)। ५ स्वनाम-ख्यात एक नगर (उत्त १४)।

उसुअ पुं [दे] दोष, दूषण (दे १, ८६)।

उसुअ न [इषुक] १ बाण के आकार का एक आभूषण। २ तिलक (पिंड ४२४)।

उसुअ वि [उत्सुक] उत्कण्ठित (सुपा २२४)।

उसुयाल न [दे] उदूखल (राज)।

उसूलग पुं [दे] परिखा, शत्रु-सैन्य का नाश करने के लिए ऊपर से आच्छादित गर्त्त-विशेष (उत्त ६)।

उस्स पुं [दे] हिम, ओस; 'अप्पहरिएसु अप्पुस्सेसु' (बृह ४)।

उस्संकलिअ वि [उत्संकलित] निसृष्ट, परित्यक्त (आचा २)।

उस्संखलअ वि [उच्छृङ्खलक] उच्छृङ्खल, निरंकुश (पि २१३)।

उस्संग पुं [उत्सङ्ग] क्रोड, कोला या कोरा (नाट)।

उस्संघट्ट वि [उत्संघट्ट] शरीर-स्पर्श से रहित (उप ५५५)।

उस्सक्क अक [उत् + ष्वष्क्] १ उत्कण्ठित होना। २ पीछे हटना। ३ सक. स्थगित करना। संकृ. **उस्सक्कइत्ता**। प्रयो. **उस्सक्कावइत्ता** (ठा ६)।

उस्सक्क सक [उत् + ष्वष्क्] प्रदीप्त करना, उत्तेजित करना। संकृ. **उस्सक्किय** (आचा २, १, ७, २)।

उस्सक्कण न [उत्ष्वष्कण] किसी कार्य को कुछ समय के लिये स्थगित करना (धर्म ३)।

उस्सक्कण न [उत्ष्वष्कण] उत्सर्पण (पंचा १३, १०)।

उस्सक्किय वि [उत्ष्वष्कित] नियत काल के बाद किया हुआ (पिंड २९०)।

उस्सग्ग पुं [उत्सर्ग] १ त्याग (आव ५)। २ सामान्य विधि (उप ७८१)।

उस्सग्गि वि [उत्सर्गिन्] उत्सर्ग—सामान्य नियम—का जानकार (पव ६४)।
उस्सण्ण वि [अवसन्न] निमग्न; 'अबंभे उस्सण्णा' (पण्ह १, ४)।
उस्सण्ण अ [दे] प्रायः, प्रायेण (राज)।
उस्सण्हसण्हिआ स्त्री [उत्श्लक्ष्णश्लक्ष्णिका] परिमाण-विशेष, ऊर्ध्व-रेणु का ६४ वाँ हिस्सा (इक)।
उस्सन्न देखो **उस्सण्ण**=दे (सूअ २, २, ६५; तंदु २७)। °**भाव** पुं [°भाव] बाहुल्यभाव (धर्मसं ७५९)।
उस्सन्न वि [उत्सन्न] निज धर्म में आलसी साधु (गुभा १२)।
उस्सप्पण न [उत्सर्पण] १ उन्नति, पोषण। २ वि. उन्नत करनेवाला, बढ़ानेवाला; 'कंदप्प-दप्पउस्सप्पणाइं वयणाइं जंपए जा सो' (सुपा ५०६)।
उस्सप्पणा स्त्री [उत्सर्पणा] उन्नति, प्रभावना (उप ३२६)।
उस्सप्पणा स्त्री [उत्सर्पणा] विख्यात करना, प्रसिद्धि करना (सम्मत्त १६६)।
उस्सप्पिणी स्त्री [उत्सर्पिणी] उन्नत काल विशेष, दश कोटाकोटि-सागरोम-परिमित काल-विशेष, जिसमें सब पदार्थों की क्रमशः उन्नति होती है (सम ७२; ठा १, १; पउम २०, ६८)।
उस्सय पुं [उच्छ्रय] १ उन्नति, उच्चता (विसे ३४१)। २ अहिंसा (पण्ह २, १)। ३ शरीर (राज)।
उस्सयण न [उच्छ्रयण] अभिमान, गर्व (सूअ १, ९)।
उस्सर अक [उत्+सृ] हटना, दूर जाना। उस्सरह (स्वप्न ६)।
उस्सव सक [उत्+श्रि] १ ऊँचा करना। २ खड़ा करना। उस्सवेह; संकृ. **उस्सवित्ता** (कप्प)। प्रयो., संकृ. **उस्सविय** (आचा २, १)।
उस्सव पुं [उत्सव] उत्सव (अभि १९४)।
उस्सवणया स्त्री [उच्छ्रयणता] ऊँचा ढेर करना, इकट्ठा करना (भग)।
उस्सस अक [उत्+श्वस्] १ उच्छ्वास लेना, श्वास लेना। २ उल्लसित होना। उस्ससइ (भग)। कवकृ. **उस्ससिज्जमाण** (ठा १०)।
उस्ससिय वि [उच्छ्वसित] १ उच्छ्वास-प्राप्त। २ उल्लसित (उत्त २०)।
उस्सा स्त्री [उस्रा] गैया, गौ (दे १, ८६)।
उस्सा [दे] देखो **ओसा** (ठा ४, ४)। °**चारण** पुं [°चारण] ओस के अवलम्बन से गति करने का सामर्थ्यवाला मुनि (पव ६८)।
उस्सार सक [उत्+सारय्] १ दूर करना, हटाना। २ बहुत दिन में पाठनीय ग्रन्थ को एक ही दिन में पढ़ाना। वकृ. **उस्सारिंत** (बृह १)। संकृ. **उस्सारित्ता** (महा)। कृ. **उस्सारइदव्व** (शौ) (स्वप्न २०)।
उस्सार पुं [उत्सार] अनेक दिन में पढ़ाने योग्य ग्रन्थ का एक ही दिन में अध्यापन। °**कप्प** पुं [°कल्प] पाठन-संबन्धी आचार-विशेष (बृह १)।
उस्सारग वि [उत्सारक] दूर करनेवाला। २ उत्सार-कल्प के योग्य (बृह १)।
उस्सारण न [उत्सारण] १ दूरीकरण। २ अनेक दिनों में पढ़ाने योग्य ग्रन्थ का एक ही दिन में अध्यापन; 'अरिहइ उस्सारणं काउं' (बृह १)।
उस्सारिय वि [उत्सारित] दूरीकृत, हटाया हुआ (संथा ५७)।
उस्सास पुं [उच्छ्वास] १ उसाँस, ऊँचा श्वास (पण्ह १)। २ प्रबल श्वास (आव २)। °**नाम** न [°नामन्] उसाँस-हेतुक कर्म-विशेष (सम ६७)।
उस्सासय वि [उच्छ्वासक] उसाँस लेनेवाला (विसे २७१५)।
उस्साह देखो **उच्छाह** (सूअनि ६२)।
उस्सिंखल वि [उच्छृङ्खल] स्वैरी, स्वेच्छाचारी, निरङ्कुश (उप १४९ टी)।
उस्सिंघिय वि [दे] आघ्रात, सूँघा हुआ (स २९०)।
उस्सिंच सक [उत्+सिच्] १ सिंचना, सेक करना। २ ऊपर सिंचना। ३ आक्षेप करना। ४ खाली करना; 'पुण्णं वा नावं उस्सिंचेज्जा' (आचा २, ३, १, ११)। उस्सिंचति (निचू १८)। वकृ. **उस्सिंचमाण** (आचा २, १, ६)।
उस्सिंचण न [उत्सेचन] १ सिञ्चन। २ कूपादि से जल वगैरह को बाहर को खींचना (आचा)। ३ सिंचन के उपकरण (आचा २)।
उस्सिंचणा स्त्री [उत्सेचना] देखो **उस्सिंचण** (उत्त ३०, ५)।
उस्सिक्क देखो **उस्सक्क**। संकृ. **उस्सिक्किया** (दस ५, १, ६३)।
उस्सिक्क सक [मुच्] छोड़ना, त्याग करना। उस्सिक्कइ (हे ४, ९१)।
उस्सिक्क सक [उत्+क्षिप्] ऊँचा फेंकना। उस्सिक्कइ (हे ४, १४४)।
उस्सिक्किअ वि [मुक्त] मुक्त, परित्यक्त (कुमा)।
उस्सिक्किअ वि [उत्क्षिप्त] १ ऊँचा फेंका हुआ। २ ऊपर रखा हुआ (स ५०३)।
उस्सिन्न वि [उत्स्विन्न] विकारान्त को प्राप्त, अचित्त किया हुआ (दस ५, २, २१)।
उस्सिय वि [उच्छ्रित] उन्नत, ऊँचा किया हुआ (कप्प)।
उस्सिय वि [उत्सृत] १ व्याप्त। २ ऊँचा किया हुआ (कप्प)।
उस्सिय वि [उत्सृत] अहंकारी (उत्त २९, ४९)।
उस्सीस न [उच्छीर्ष] तकिया (सुपा ४३७; णाया १, १; ओघ २३२)।
उस्सुआव सक [उत्सुकय्] उत्कण्ठित करना, उत्सुक करना। उस्सुआवेइ (उत्तर ७१)।
उस्सुंक, **उस्सुक्क** } वि [उच्छुल्क] शुल्क-रहित, कर-रहित (कप्प; णाया १, १)।
उस्सुक्क वि [उत्सुक] उत्कण्ठित।
उस्सुक्क, **उस्सुग** } न [औत्सुक्य] उत्सुकता (श्रावक ३९८; धर्मसं ९५६; ९५७)।
उस्सुक्काव वि [उत्सुकय्] उत्सुक करना, उत्कण्ठित करना। संकृ. **उस्सुक्कावइत्ता** (राज)।
उस्सुग वि [उत्सुक] उत्कण्ठित (पउम ७९, २९; पण्ह २, ३)।
उस्सुत्त वि [उत्सूत्र] सूत्र-विरुद्ध, सिद्धान्त-विपरीत (वव १; उप १४९ टी)।
उस्सुय देखो **उस्सुग** (भग ५, ४; औप)।
उस्सुय न [औत्सुक्य] उत्कण्ठा, उत्सुकता।

°कर वि [°कर] उत्कण्ठा-जनक (णाया १, १)।
उस्सूण वि [उच्छून] सूजा हुआ, फूला हुआ (उप ५६४; गउड; स २०३)।
उस्सूर न [उत्सूर] सन्ध्या, शाम; 'वच्चामो नियनयरे उस्सूरं वट्टए जेण' (सुर ७, ६३; उप पृ २२०)।
उस्सेअ पुं [उत्सेक] १ सिंचन। २ उन्नति। ३ गर्व (चारु ४५)।
उस्सेइम वि [उत्स्वेदिम] आटा से मिश्रित पानी, आटा-धोया जल (कप्प; ठा ३, ३)।
उस्सेह पुं [उत्सेध] १ ऊँचाई (विपा १, १)। २ शिखर, टोंच (जीव ३)। ३ उन्नति, अभ्युदय; 'पडणंता उस्सेहा' (स ३६६)।
उस्सेहंगुल न [उत्सेधाङ्गुल] एक प्रकार का परिमाण (विसे ३४० टी)।
उह स [उभ] दोनों, युग्म, युगल (षड्)।
उहट्ट अक [अप + घट्ट्] नष्ट होना। उहट्टइ (सम्मत्त १६२)।
उहट्टु देखो उव्वट्ट = उद् + वृत्।
उहय स [उभय] दोनों, युग्म (कुमा; भवि)।
उहर न [उपगृह] छोटा घर, आश्रय-विशेष (पण्ह १, १)।
उहस सक [उप + हस्] उपहास करना। उहसइ (प्राकृ ३४)।
उहार पुं [उहार] मत्स्य विशेष (राज)।
उहिंजल पुं [दे] चतुरिन्द्रिय जन्तु-विशेष (सुख ३६, १४६)।
उहिंजलिआ स्त्री [दे] ऊपर देखो (उत्त ३६, १४६)।
उहु (अप) देखो अहो = अहो (सण)।
उहुर वि [दे] अवाङ्मुख, अधोमुख (गउड)।

॥ इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवे उआराइसद्दसंकलणो
णाम पंचमो तरंगो समत्तो ॥

ऊ

ऊ पुं [ऊ] प्राकृत वर्णमाला का षष्ठ स्वर-वर्ण (हे १, १; प्रामा)।
ऊ अ [दे] निम्नलिखित अर्थों का सूचक अव्यय—१ गर्हा, निन्दा; 'ऊ णिल्लज्ज'। २ आक्षेप, प्रस्तुत वाक्य के विपरीत अर्थ की आशंका से उसे उलटाना; 'ऊ किं मए भणिअं'। ३ विस्मय, आश्चर्य; 'ऊ कह मुणिआ अहयं'। ४ सूचना; 'ऊ केण ण विण्णायं' (हे २, १९९; षड्)।
ऊअट्ट वि [अववृष्ट] वृष्टि से नष्ट (पाअ)।
ऊआ स्त्री [दे] यूका, जूँ (दे १, १३९)।
ऊआस पुं [उपवास] भोजनाभाव (हे १, १७३)।
ऊगिय वि [दे] अलंकृत (षड्)।
ऊज्झाअ देखो उवज्झाय (हे १, १७३; प्रामा)।
°ऊड देखो कूड (से १२, ७८; गा ५८३)।
ऊढ वि [ऊढ] वहन किया हुआ, धारण किया हुआ; 'ऊढकलं वज्जुणपरिमलेसु सुरमंदिरंतेसु' (गउड)।
ऊढ वि [ऊढ] परिणीत, विवाहित (धर्मसं १३६०)।
ऊढा स्त्री [ऊढा] विवाहिता स्त्री (पाअ)।
ऊढिअय वि [दे] १ प्रावृत, आच्छादित। २ न. आच्छादन, प्रावरण (पाअ)।
ऊण वि [ऊन] न्यून, हीन (पउम ११८, ११६)। °वीसइम वि [°विंशतितम] उन्नीसवाँ (पउम १६, ८०)।
ऊण न [ऋण] ऋण, करजा (नाट)।
ऊणंदिअ वि [दे] आनन्दित, हर्षित (दे १, १४१; षड्)।
ऊणिमा स्त्री [पूर्णिमा] पूर्णिमा', तओ तीए चेव ऊणिमाए भरिऊण भंडस्स वहणाई पत्थिओ पारसउलं' (महा)।
ऊणिय वि [ऊनित] कम किया हुआ (जं २)।
ऊणिय पुं [ऊणिक] सेवक-विशेष (प्रश्नव्या० पत्र १३)।
ऊणोयरिआ स्त्री [ऊनोदरिता] कम आहार करना, तप-विशेष (भग २५, ७; नव २८)।
ऊतालीस } स्त्री न [एकोनचत्वारिंशत्]
ऊयाल } उनचालीस, ३९ (सुज्ज २, ३, पत्र ५२; देवेन्द्र. २६४)।
ऊमिगण न [दे] प्रोंखणक, लुमना (धर्म २)।
ऊमिणिय वि [दे] प्रोञ्छित, जिसने स्नान के बाद शरीर पोंछा हो वह (स ७५)।
ऊमित्तिअ न [दे] दोनों पार्श्वों में आघात करना (दे १, १४२)।
ऊर पुं [दे] १ ग्राम, गाँव। २ संघ, समूह (दे १, १४३)।
°ऊर देखो तूर (से ८, ६५)।
°ऊर देखो पूर (से ८, ६५; गा ४५; २३१)।
ऊरण पुं [ऊरण] मेष, भेड़ (राय; विसे)।
ऊरणी स्त्री [दे] मेष, भेड़ (दे १, १४०)।
ऊरणीअ वि [औरणिक] भेड़ी चरानेवाला (अणु १४४)।
°ऊरय वि [पूरक] पूर्ति करनेवाला (भवि)।
ऊरस वि [औरस] पुत्र-विशेष, स्व-पुत्र (ठा १०)।
ऊरिसंकिअ वि [दे] रुद्ध, रोका हुआ (षड्)।
ऊरी अ [ऊरी] १ अंगीकार। २ विस्तार। °कय वि [°कृत] अंगीकृत, स्वीकृत (उप ७२८ टी)।
ऊरु पुं [ऊरु] जङ्घा, जाँघ (णाया १, १८;

कुमा)। °जाल न [°जाल] जाँघ तक लटकने-वाला एक आभूषण (औप)।

ऊरुदग्घ वि [ऊरुदघ्न] जंघा-प्रमाण (गहरा वगैरह) (षड्)।

ऊरुद्दअस वि [ऊरुद्वयस] ऊपर देखो (षड्)।

ऊरुमेत्त वि [ऊरुमात्र] ऊपर देखो (षड्)।

ऊल पुं [दे] गति-भंग (दे १, १३९)।

°ऊल देखो कूल (गा १८९)।

ऊस पुं [उस्र] किरण (हे १, ४३)। °मालि पुं [°मालिन्] सूर्य (कुमा)।

ऊस पुं [ऊष] क्षार-भूमि की मिट्टी (पराण १; जी ४)।

ऊसअ न [दे] उपधान, उसीसा, तकिया (दे १, १४०; षड्)।

ऊसढ वि [उत्सृष्ट] १ परित्यक्त। २ न. उत्सर्जन, मलादि का त्याग; 'नो तत्थ ऊसढं पकरेज्जा, तं जहा; उच्चारं वा' (आचा २, २, १, ३)।

ऊसढ वि [दे. उच्छ्रित] १ उच्च, श्रेष्ठ (आचा २, ४, २, ३; जीव ३)। २ ताजा; 'भद्दं भद्दएति वा, ऊसढं ऊसढेति वा, रसियं रसिए ति वा' (आचा २, ४, २, २)।

ऊसण न [दे] गति-भङ्ग (दे १, १३९)।

ऊसण्हसण्हिया देखो उस्सण्हसण्हिया (पव २५४)।

ऊसत्त देखो उसत्त (कप्प; आवम)।

ऊसत्थ पुं [दे] १ जम्भाई। २ वि. आकुल (दे १, १४३)।

ऊसर अक [उत् + सृ] १ खिसकना। २ दूर होना। ३ सक. त्यागना। ऊसरइ (भवि) संकृ. ऊसरिवि (भवि)।

ऊसर न [ऊषर] क्षार-भूमि, जिसमें बीज नहीं पैदा होता है; 'ऊसरदवदलियदड्ढरुक्खना-एण' (सम्य १७; भक्त ७३)।

ऊसरण न [उत्सरण] आरोहण; 'थाणूसरणं तओ समुप्पयणं' (विसे १२०८)।

ऊसय पुं [उच्छ्रय] १ उत्सेध, ऊँचाई। २ उत्सेधांगुल (जीवस १०४)।

ऊसल अक [उत् + लस्] उल्लसित होना। ऊसलइ (हे ४, २०२; षड्; कुमा)।

ऊसल वि [दे] पीन, पुष्ट (दे १, १४०)।

ऊसलिअ वि [उल्लसित] उल्लसित, पादुर्भूत।

ऊसलिअ वि [दे] रोमाञ्चित, पुलकित (दे १, १४१; पाअ)।

ऊसव देखो उस्सव = उत्सव (स्वप्न ६३)।

ऊसव देखो उस्सव = उत् + श्रि। उस्सवेह (पि ६४; ५५१)। संकृ. ऊसविय (कप्प; भग)।

ऊसविअ वि [दे] १ उद्भ्रान्त (दे १, १४३)। २ ऊँचा किया हुआ (दे १, १४३; णाया १, ८; पाअ)। ३ उद्वान्त, वमित (षड्)।

ऊसविय वि [उच्छ्रित] ऊर्ध्व-स्थित (कप्प)।

ऊसस सक [उत् + श्वस्] १ उसाँस लेना, ऊँचा साँस लेना। २ विकसित होना। ३ पुलकित होना। ऊससइ (पि ६४; ३१५)। वकृ. ऊससंत, ऊससमाण (गा ७४; धण ४; पि ४९६)।

ऊससण न [उच्छ्वसन] उसाँस। °लद्धि स्त्री [°लब्धि] श्वासोच्छ्वास की शक्ति (कम्म १, ४४)।

ऊससिअ न [उच्छ्वसित] १ उसांस (पडि)। २ वि. उल्लसित। ३ पुलकित (स ८३)।

ऊससिर वि [उच्छ्वसितृ] उसांस लेने-वाला (हे २, १४५)।

ऊसाअंत वि [दे] खेद होने पर शिथिल (दे १, १४१)।

ऊसाइअ वि [दे] १ विक्षिप्त। २ उत्क्षिप्त (दे १, १४१)।

ऊसार सक [उत् + सारय्] दूर करना, त्यागना। संकृ. ऊसारिवि (अप) (भवि)।

ऊसार पुं [दे] गर्त्त-विशेष (दे १, १४०)।

ऊसार पुं [उत्सार] परित्याग (भवि)।

ऊसार पुं [आसार] वेग वाली वृष्टि (हे १, ७६; षड्)।

ऊसारि वि [आसारिन्] वेग से बरसनेवाला (कुमा)।

ऊसारिअ वि [उत्सारित] दूर किया हुआ (महा; भवि)।

ऊसास पुं [उच्छ्वास] १ उसास, ऊँचा श्वास (आवृ ५)। २ मरण (बृह १)। °णाम न [°नामन्] कर्म-विशेष (कम्म १ ४४)।

ऊसासय वि [उच्छ्वासक] उसांस लेने-वाला (विसे २७१४)।

ऊसासिअ वि [उच्छ्वासित] बाधा-रहित किया हुआ (दे १२, ९२)।

ऊसाह पुं [उत्साह] उत्साह, उच्छाह (मा १०)।

ऊसि सक [उत् + श्रि] ऊँचा करना, उन्नत करना। संकृ. ऊसिया (उत्त १०, ३५)।

ऊसिक्क सक [उत् + ष्वष्क्] ऊँचा करना। संकृ. ऊसिक्किऊण (भग १, ८ टी)।

ऊसिक्किअ वि [दे] प्रदीप्त, शोभायमान (पाअ)।

ऊसित्त वि [उत्सिक्त] १ गर्वित। २ उद्धत। ३ बढ़ा हुआ। ४ अतिशायित (हे १, ११४)।

ऊसित्त वि [अवसिक्त] उपलिप्त (पाअ)।

ऊसिय देखो उस्सिय = उच्छ्रित (औप; कप्प; सण)।

ऊसीस, ऊसीसग, ऊसीसय न [उच्छीर्ष, °क] उसीसा, सिरहाना (णाया १, ७; पाअ; सुपा ५३; १२०)।

ऊसुअ वि [उत्सुक] उत्कंठित (गा ५४३; कुमा)।

ऊसुअ वि [उच्छुक] जहां से शुक उद्गत हुआ हो वह (हे १, ११४)।

ऊसुइअ वि [उत्सुकित] उत्सुक किया हुआ (गा ३१२)।

ऊसुंभ अक [उत् + लस्] उल्लसित होना। ऊसुंभइ (हे ४, २०२)।

ऊसुंभिअ वि [उल्लसित] उल्लास-प्राप्त (कुमा)।

ऊसुंभिअ न [दे] १ रोदन-विशेष, गला बैठ जाय ऐसा रुदन (दे १,१४२; षड्)।

ऊसुक्किअ वि [दे] विमुक्त, परित्यक्त (दे १, १४२)।

ऊसुग देखो ऊसुअ=उत्सुक (उप ५९७ टी)।

ऊसुग न [दे] मध्य भाग (आचा २, १, ८, ६)।

ऊसुम्मिअ वि [दे] उसीसा या सिरहाना किया हुआ (षड्)।

ऊसुर न [दे] ताम्बूल, पान (हे २, १७४)।

ऊसुरुसुंभिअ [दे] देखो ऊसुंभिअ (दे १, १४२)।

ऊह सक [ऊह्] १ तर्क करना । २ विचारना । ऊहइ (विसे ८३१), ऊहेमि (सुर ११, १८५) । संकृ. ऊहिऊण (श्राउ ५२) ।

ऊह न [ऊधस्] स्तन (विपा १, २) ।

ऊह पुं [ऊह] १ विचार, विवेक-बुद्धि (राज) । २ तर्क, वितर्क (सूत्र २, ४) । ३ संख्या-विशेष (राज) । ४ श्रोघ-संज्ञा, अव्यक्त ज्ञान (विसे ५२२; ४२३) ।

ऊहंग न [ऊहाङ्ग] संख्या-विशेष (राज) ।

ऊहट्ट वि [दे] उपहसित (दे १, १४०) ।

ऊहसिय वि [उपहसित] जिसका उपहास किया गया हो वह (दे १, १४०) ।

ऊहा स्त्री [ऊहा] तर्क, विचार-बुद्धि (श्रावम) ।

ऊहापोह पुं [ऊहापोह] सोच-विचार, मन में होनेवाला तर्क-वितर्क (कुप्र ६१) ।

ऊहिअ वि [ऊहित] अनुमान से ज्ञात (से ६, ४२) ।

ए पुं [ए] स्वर-वर्ण विशेष (हे १,१; प्रामा) ।

॥ इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवे ऊआराइसद्दसंकलणो छट्ठो तरंगो समत्तो ॥

ए

ए पुं [ए] स्वर वर्ण-विशेष (हे १,१; प्रामा) ।

ए अ [ए, ऐ] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ आमन्त्रण, सम्बोधन; 'ए एहि सवडहुत्तो मज्झ' (पउम ८, १७४) । २ वाक्यालंकार, वाक्य-शोभा; 'से जहाणाम ए' (अणु) । ३ स्मरण । ४ असूया, ईर्ष्या । ५ अनुकम्पा, करुणा । ६ आह्वान (हे २, २१७; भवि; गा ६०४) ।

ए सक [आ+इ] आना, आगमन करना । एइ (उवा) । भवि. एहिइ (उवा) । वकृ. एंत (पउम ८, ४३; सुर ११, १४८), इंत (सुर ३, १३), एज्जंत (पि ५६१), एज्जमाण (उप ६४८ टी) ।

ए° देखो **एत्तिअ** (उवा) ।

ए° देखो **एवं** (उवा) ।

एअ वि [एत] आया हुआ, आगत (सम्मत्त ११६) ।

एअ स [एतत्] यह (भग; हे १,११; महा) । **°ारिस** वि [°ादृश] ऐसा, इसके जैसा (द्र ३२) । **°ारूव** वि [°रूप] ऐसा, इस प्रकार का (णाया १, १, महा) ।

एअ देखो **एग** (गउड; नाट; स्वप्न ६०; १०६) । **°आइ** वि [°ाकिन्] अकेला (अभि १६०; प्रति ६५) । **°ारह** त्रि. ब. [°ादशन्] ग्यारह की संख्या, दश और एक (पि २४५) । **°ारहम** वि [°ादश] ग्यारहवाँ (भवि) ।

एअ देखो **एव**=एव (कुमा) ।

एअ } देखो **एवं**; 'एअ वि सिरीअ दिट्ठआ'
एअं } (से ३, ४६; गउड; पिंग) ।

एअंत देखो **एक्कंत** (वेणी १८) ।

एआईस (अप) पुं. ब. [एकविंशति] एक्कीस (पिंग) ।

एयारिच्छ वि [एतादृश] ऐसा, इसके जैसा (प्रामा) ।

एइज्जमाण देखो **एय**=एज् ।

एइय वि [एजित] कम्पित (राय ७४) ।

एइस देखो **एईस** (सुख २, १७) ।

एईस वि [एतादृश] ऐसा (विसे २५४६) ।

एउंजि (अप) अ [एवमेव] १ इसी तरह । २ यही (भवि) ।

एऊण देखो **एगूण** (पिंग) ।

एंत देखो **इ**=इ ।

एंत देखो **ए**=आ+इ ।

एक देखो **एक्क** तथा **एग** (षड्; सम ६६; पउम १०३; १७२; हेका ११६; पण्ह २, ५; पउम ११४, २४; सुपा १६५; कप्प; सम ७१; १५३) । **°इआ** अ [°दा] एक समय में, कोई वक्त (हे २, १६२) । **°ल** (अप) वि [°क] एकाकी (पि ५६५) । **°लिय** वि [°ाकिन्] एकाकी, अकेला (उप ७२८ टी) । **°ाणउइ** स्त्री [°नवति] संख्या-विशेष, एकानबे (सम ६५; पि ४३५) ।

एकूण देखो **अउण**=एकोन (सुज्ज १६) ।

एक्क देखो **एक** तथा **एग** (हे २, ६६; सुपा १४३; सम ६६; ५५; पउम ३१, १२८; गउड; कप्पू; मा १८; सुपा ४८६; मा ४१; पि ५६५; नाट; णाया १, १; गा ६१८; काल; सुर ५, २४२; भग; सम ३६; पउम २१, ६३; कप्प) । **°वए** देखो **एगपए** (गउड, सुर १, ३८) । **°सणिय** वि [°ाशनिक] एक ही बार भोजन करनेवाला (पण्ह २, १) । **°सत्तरि** स्त्री [°सप्तति] संख्या-विशेष, ७१, एकहत्तर (सम ८२) । **°सरग**, **°सरय** वि [°सरक, °सर्ग] एक समान, एक सरीखा (उवा; भग १६; पण्ह २, ५) । **°सि** अ [°शस्] एक बार; 'सव्वजहन्नो उदओ दसगुणिओ एक्कसि कयाणं' (भग); 'एक्कसि कओ पमाओ जीवं पाडेइ भवसमुद्दम्मि' (सुर ८,११२); 'एक्कसि सीलकलंकिअहं देज्जहिं पच्छित्ताइं' (हे ४, ४२८) । **°सि** अ [°त्र] एक (किसी एक) में, 'एक्कसि न खु थिरो सित्ति पिओ कीडइवि उवालद्धो' (कुमा) । **°सि**, **°सिअं** अ [°दा] कोई एक समय में (हे २, १६२) । **°सिं** अ [°शस्] एक बार (पि ४५१) । **°इ** वि [°ाकिन्] अकेला (प्रयौ २३) । **°इ** पुं [°ादि] स्वनाम-ख्यात एक माण्डलिक (सूबा) (विपा १, १) । **°ाणउय** वि

[°नवत] ६१ वाँ (पउम ६१, ३०)। °रसम वि [°दश] ग्यारहवाँ (विपा १, १; उवा; सुर ११, २५०)। °रह त्रि. ब. [°दशन्] ग्यारह, दश और एक (षड्)। °सीइ स्त्री [°शीति] संख्या-विशेष, एकासी (सम ८८)। °सीइविह वि [°शीतिविध] एकासी तरह का (पण्ण १;१७)। °सीय वि [°शीत] एकासीवाँ, ८१ वाँ (पउम ८१, १६)। °ोत्तरसय वि [°ोत्तरशततम] एक सौ एक वाँ, १०१ वाँ (पउम १०१, ७६)। °ोयर पुं [°ोदर] सहोदर भाई, सगा भाई (पउम ६, ६०; ४६, १८)। °ोयरा स्त्री [°ोदरा] सगी बहिन (पउम ८, १०६)।

एक्क वि [एकक] अकेला (हेका ३१)।

एक्क वि [दे] स्नेह-पर, प्रेम-तत्पर (दे १, १४४)।

एक्कई (अप) वि [एकाकिन्] एकाकी, अकेला (भवि)।

एक्कंग न [दे] चन्दन, सुगन्धि काष्ठ-विशेष (दे १, १४४)।

एक्कंत पुं [एकान्त] १ सर्वथा। २ तत्त्व, प्रमेय। ३ जरूर, अवश्य। ४ असाधारणता, विशेष (से ४,२३)। ५ निर्जन, निराला (गा १०२)। देखो एगंत।

एक्कक्क वि [एकैक] हर एक, प्रत्येक (नाट)।

एक्कक्कम [दे] देखो एक्केक्कम (से ५, ५६)।

एक्कगसित्थ न [एकसिक्थ] तपो-विशेष (पव २७१)।

एक्कग्ग देखो एग-ग्ग = एक-क (कुप्र ७६)।

एक्कघरिल्ल पुं [दे] देवर, पति का छोटा भाई (दे १, १४६)।

एक्कणड पुं [दे] कथक, कथा कहनेवाला (दे १, १४५)।

एक्कमुह वि [दे] १ धर्म-रहित, निधर्मी। २ दरिद्र, निर्धन। ३ प्रिय, इष्ट (दे १, १४८)।

एक्कमेक्क वि [एकैक] प्रत्येक, हर एक (हे ३, १; षड्; कुमा)।

एक्कल्ल वि [दे] प्रबल, बलवान् (षड्)।

एक्कल्लपुडिंग न [दे] विरल-बिन्दु-वृष्टि, अल्प बिन्दुवाली बारिश (दे १, १४७)।

एक्कसरिअं अ [दे] १ शीघ्र, तुरन्त। २ संप्रति, आजकल (हे २, २१३; षड्)।

एक्कसिरिआ अ [दे] शीघ्र, जलदी (प्राकृ ८१)।

एक्कसाहिल्ल वि [दे] एक स्थान में रहनेवाला (दे १, १४६)।

एक्कसिंबली स्त्री [दे] शाल्मली-पुष्पों से नूतन फलवाली (दे १, १४६)।

एक्कसेस देखो एग-सेस (अणु १४७)।

एक्कह देखो एग (प्राकृ ३५)।

एक्कार देखो एक्कारह (कम्म ६, १६)।

एक्कार पुं [अयस्कार] लोहार (हे १, १६६; कुमा)।

एक्की स्त्री [एका] एक (स्त्री) (निचू १)।

एक्कूण देखो अउण (पि ४४५)।

एक्केक्कम वि [दे] परस्पर, अन्योन्य (दे १, १४५); 'सुहडा एक्केक्कमं अपेच्छंता' (पउम ६८, १५)।

एक्केल्ल } देखो एग (प्राकृ, ३५)।
एक्कोल्ल }

एग स [एक] १ एक, प्रथम-संख्या (अणु)। २ एकाकी, अकेला (ठा ४, १)। ३ अद्वितीय (कुमा)। ४ असहाय, निःसहाय (विपा १, २)। ५ अन्य, दूसरा; 'एवमेगे वदंति मोसा' (पण्ह १, २)। ६ समान, सदृश, तुल्य (उवा)। °इय देखो एग; 'अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एगं पलिओवमं ठिई पन्नत्ता' (सम २; ठा ७; औप)। °इय वि [°क] अकेला, एकाकी (भग)। °ओ अ [°तस्] एक तरफ (कप्प)। °क्खरिय वि [°ाक्षरिक] एक अक्षरवाला (नाम) (अणु)। °खंधी स्त्री [°स्कन्ध] एक स्कन्धवाला (वृक्ष वगैरह) (जीव ३)। °खुर वि [°खुर] एक खुरवाला (गौ वगैरह पशु) (पण्ण १)। °ग वि [°क] एकाकी, अकेला (श्रा १४)। °ग्ग वि [°ाग्र] तल्लीन, तत्पर (सुर १, ३०)। °चक्खु वि [°चक्षुष्क] एक आँखवाला, एकाक्ष, काना (पण्ह २, ५)। °चत्ताल वि [°चत्वारिंश] एकतालीसवाँ (पउम ४१, ७६)। °चर वि [°चर] एकाकी विहरनेवाला (आचा)। °चरिया स्त्री [°चर्या] एकाकी विहरना (आचा)। °चारि वि [°चारिन्] अकेल-विहारी (सूअ १, १३)। °चूड पुं [°चूड] विद्याधर वंश का एक राजा (पउम ५, ४५)। °च्छत्त वि [°च्छत्र] १ पूर्ण प्रभुत्ववाला, अकण्टक; 'एगच्छत्तं ससागरं भुंजिऊण वसुहं' (पण्ह २, ४)। २ अद्वितीय (कप्र १८६)। °जडि वि [°जटिन्] महाग्रह-विशेष (ठा २, ३)। °जाय वि [°जात] अकेला, निस्सहाय; 'खग्गविसाणं व एगजाए' (पण्ह २, ५)। °ट्ठ वि [°स्थ] इकट्ठा, एकत्रित (भग १४, ६; उप पृ ३४१)। °ट्ठ वि [°ार्थ] एक अर्थवाला, पर्याय-शब्द (ओघ १ भा)। °ट्ठ, °ट्ठं अ [°त्र] एक स्थान में; 'मिलिया सव्वेवि एगट्ठं' (पउम ४७, ४४)। °ट्ठिय वि [°ार्थिक] एक ही अर्थवाला, समानार्थक, पर्याय-शब्द (ठा १)। °ट्ठिय वि [°ास्थिक] जिसके फल में एक ही बीज होता है ऐसा आम वगैरह का पेड़ (पण्ण १)। °णासा स्त्री [°नासा] एक दिक्कुमारी, देवी-विशेष (आव १)। °त्त न [°त्र] एक ही स्थान में; 'एगत्ते ठिओ' (स ४७०)। °त्थ देखो °ट्ठ (सम्म १०६; निचू १)। °नासा देखो °णासा (ठा ८)। °पए अ [°पदे] एक ही साथ, युगपत् (पि १७१)। °पक्ख वि [°पक्ष] १ असहाय (राज)। २ ऐकान्तिक, अविरुद्ध (सूअ १, १२)। °पन्नास स्त्रीन [°पञ्चाशत्] एकावन, पचास और एक। °पन्नासइम वि [°पञ्चाशत्तम] एकावनवाँ, ५१ वाँ (पउम ५१, २८)। °पाइअ वि [°पादिक] एक पाँव ऊँचा रखनेवाला (आतापना में) (कस)। °पासग वि [°पार्श्वक] एक ही पार्श्व की भूमि से सम्बन्ध रखनेवाला (आतापना में) (पण्ह २, १)। °पासिय वि [°पार्श्विक] देखो पूर्वोक्त अर्थ (कस)। °भत्त न [°भक्त] व्रत-विशेष, एकासन (पंचा १२)। °भूय वि [°भूत] १ एकीभूत, मिला हुआ (ठा १)। २ समान (ठा १०)। °मण वि [°मनस्] एकाग्रचित्त, तल्लीन (सुर २, २२६)। °मेग वि [°एक] प्रत्येक, हर एक (सम ६७)। °य वि [°क] एकाकी, अकेला (दस ५)। य° वि [°ग] अकेला जानेवाला (उत्त ३)। °यर वि [°तर] दो में से कोई

भी एक (षड्)। °या अ [°दा] एक समय में (प्राकृ; नव २४)। °राइय वि [°रात्रिक] एक-रात्रि-सम्बन्धी, एक रात में होनेवाला (सम २१; सुर ६, ६०)। °राय न [°रात्र] एक रात्र (ठा ५, २)। °ल्ल वि [एक] एकाकी, अकेला (ठा ७; सुर ४, ५४)। °विह वि [°विध] एक प्रकार का (नव ३)। °विहारि वि [°विहारिन्] एकल-विहारी, अकेला विचरनेवाला (बृह १)। °वीसइम वि [°विंशतितम] एक्कीसवाँ (पउम २१, ८१)। °वीसा स्त्री [°विंशति] एक्कीस (पि ४४५)। °सट्ठ वि [°षष्ट] एकसठवां, ६१ वां (पउम ६१, ७५)। °सट्ठि स्त्री [°षष्टि] एकसठ (सम ७५)। °सत्तर वि [°सप्तत] एकहत्तरवाँ, ७१ वां (पउम ७१, ७०)। °समइय वि [°सामयिक] एक समय में होनेवाला (भग २४, १)। °सरिया स्त्री [°सरिका] एकावली, हार-विशेष (जं १)। °साडिय वि [°शाटिक] एक वस्त्र-वाला, 'एगसाडियमुत्तरासंगं करेइ' (कप्प; णाया १, १)। °सिअं अ [°दा] एक समय में (षड्)। °सेल पुं [°शैल] पर्वत-विशेष (ठा २, ३)। °सेलकूड पुंन [°शैलकूट] एकशैल पर्वत का शिखर-विशेष (जं ४)। °सेस पुं [°शेष] व्याकरण-प्रसिद्ध समास-विशेष (अणु)। °हा अ [°धा] एक प्रकार का (ठा १)। °हुत्त अ [°सकृत्] एक बार (प्रामा)। °णिअ वि [°किन्] अकेला (कस; ओघ २८ भा)। °दस त्रि. ब. [°दशन्] ग्यारह। °दसुत्तरसय वि [°दशोत्तरशततम] एक सौ ग्यारहवाँ, १११ वाँ (पउम १११, २४)। °भोग पुं [°भोग] एकत्र-बन्धन (निचू १)। °मोस वि [°मर्श] १ प्रत्यु-पेक्षरणा का एक दोष, वस्त्र को मध्य में ग्रहण कर दोनों अंचलों को हाथ से घसीट कर उठाना (ओघ २६७)। °यय वि [°यत] एकत्र संबद्ध (कप्प)। °रस देखो °दस (पि ४३५)। °रसी स्त्री [°दशी] तिथि-विशेष, एकादशी (कप्प; पउम ७३, ३४)। °वण्ण स्त्रीन [°पञ्चाशत्] एकावन (पि २६५)। °वलि, °ली स्त्री [°वलि, ली] विविध प्रकार की मणियों से ग्रथित हार (औप)। °वलीपविभत्ति न [°वलीप्रवि-भक्ति] नाटक-विशेष (राय)। °वाइ पुं [°वादिन्] एक ही आत्मा वगैरह पदार्थ को माननेवाला दर्शन, वेदान्त-दर्शन (ठा ८)। °वीस स्त्रीन [°विंशति] संख्या-विशेष, एक्कीस (पउम २०, ७२)। °सण न [°शन, °सन] व्रत-विशेष, एकाशन (धर्म २)। °ह पुंन [°ह] एक दिन (आचा २, ३, १)। °हच्च वि [°हत्य] एक ही प्रहार से नष्ट हो जानेवाला (भग ७, ६)। °हिय वि [°हिक] १ एक दिन का उत्पन्न। २ पुं. ज्वर-विशेष, एकान्तर ज्वर (भग ३,७)। °हिय वि [°धिक] एक से ज्यादा (पंच)। देखो एअ, एक और एक्क।

एगंत देखो एक्कंत (ठा ५; सूअ १, १३; ओघ ५५; पंचा ५; १०)। °दिट्ठि स्त्री [°दृष्टि] १ जैनेतर दर्शन। २ वि. जैनेतर दर्शन को माननेवाला (सूअ २, ६)। ३ स्त्री. निश्चित सम्यक्त्व, निश्चल सत्य-श्रद्धा (सूअ १, १३)। °दूसमा स्त्री [°दुष्षमा] अवसर्पिणी-काल का छठवाँ और उत्सर्पिणी-काल का पहला आरा, काल-विशेष (सूअ १, ३)। °पंडिय पुं [°पण्डित] साधु, संयत (भग)। °बाल पुं [°बाल] १ जैनेतर दर्शन को माननेवाला। २ असंयत जीव (भग)। °वाइ वि [°वादिन्] जैनेतर दर्शन का अनुयायी (राज)। °वाय पुं [°वाद] जैनेतर दर्शन (सुपा ६५८)। °सुसमा स्त्री [°सुषमा] काल-विशेष, अवसर्पिणी काल का प्रथम और उत्सर्पिणी काल का छठवाँ आरा (णंदि)।

एगंतिय वि [ऐकान्तिक] १ अवश्यंभावी (विसे)। २ अद्वितीय; 'एगंतियं कम्मवाहि-ओसहं' (स ५६२)। ३ जैनेतर दर्शन (सम्म १३०)।

एगंतिय न [ऐकान्तिक] मिथ्यात्व का एक भेद—वस्तु को सर्वथा क्षणिक आदि एक ही दृष्टि से देखना (संबोध ५२)।

एगट्ठि देखो एग-सट्ठि (देवेन्द्र १३६; सुज्ज १२)।

एगट्ठिया स्त्री [दे] नौका, जहाज (णाया १, १६)।

एगठाण न [एकस्थान] एक प्रकार का तप (पव २७१)।

एगिंदिय वि [एकेन्द्रिय] एक इन्द्रियवाला, केवल स्पर्शेन्द्रियवाला (जीव) (ठा७)।

एगीभूत वि [एकीभूत] मिला हुआ, एकता-प्राप्त (सुपा ८६)।

एगूण देखो अउण। °चत्ताल वि [°चत्वा-रिंश] उनचालीसवां (पउम ३६, १३४)। °चत्तालीस स्त्रीन [°चत्वारिंशत्] उनचालीस (सम ६६)। °चत्तालीसइम वि [°चत्वा-रिंशत्तम] उनचालीसवाँ (सम ८६)। °णउइ स्त्री [°नवति] नवासी (पि ४४४)। °तीस स्त्रीन [°त्रिंशत्] उनतीस, २६। °तीसइम वि [°त्रिंशत्तम] उनतीसवाँ, २६ वाँ (पउम २६, ४६)। °नउइ देखो °णउइ (सम ६४)। °नउय वि [°नवत] नवासीवाँ (पउम ८६, ६५)। °पन्न, °पन्नास स्त्रीन [°पञ्चाशत्] उनचास (सम ७०; भग)। °पन्नास वि [°पञ्चाश] उनपचासवाँ (पउम ४६, ४०)। °पन्नासइम वि [°पञ्चाशत्तम] उनपचा-सवाँ (सम ६६)। °वीस स्त्रीन [°विंशति] उन्नीस (सम ३६; पि ४४४; णाया १, १६)। °वीसइ स्त्री [°विंशति] उन्नीस (सम ७३)। °वीसइम, °वीसईम, °वीसम वि [°विंशतितम] उन्नीसवाँ (णाया १, १८; पउम १६, ४५; पि ४४६)। °सट्ठ वि [°षष्ट] उनसठवाँ ५६ वाँ (पउम ५६, ८९)। °सत्तर वि [°सप्तत] उनसत्तरवाँ (पउम ६६, ६०)। °सी, °सीइ स्त्री [°शीति] उन्नासी (सम ८७; पि ४४४; ४४६)। °सीय वि [°शीत] उन्नासीवाँ, ७६ वाँ (पउम ७६, ३५)। देखो अउण।

एगूरुय पुं [एकोरुक] १ इस नाम का एक अन्तर्द्वीप। २ वि. उसका निवासी (ठा ४, २)।

एग्ग (अप) देखो एग (पिंग)।

एज पुं [एज] वायु, पवन (आचा)।

एजणया स्त्री [एजना] कम्प, काँपना (सूअनि १६६)।

एज्ज देखो एय = एज्। वकृ. एज्जमाण (राय ३८)।

एज्जंत देखो ए = आ + इ।

एज्जण न [आयन] आगमन (वव ३)।

एज्जमाण देखो ए = आ + इ ।

एड सक [एड्] छोड़ना, त्याग करना । एडेइ (भग) । कवकृ. **एडिज्जमाण** (णाया १, १६) । संकृ. **एडित्ता** (भग) । कृ. **एडेयव्व** (णाया १, ६) ।

एड सक [एडय्] हटाना, दूर करना । एडेह; संकृ. **एडेत्ता** (राय १८) ।

एडक्क पुं [एडक] मेष, भेड़ (उप पृ २३४) ।

एडया स्त्री [एडका] भेड़ी (षड्) ।

एण पुं [एण] कृष्ण मृग, हरिण (कप्पू) । °**णाहि** स्त्री [°नाभि] कस्तूरी (कप्पू) ।

एणंक पुं [एणाङ्क] चन्द्र, चन्द्रमा (कप्पू) ।

एणिज्ज वि [एणेय] हरिण-संबन्धी, हरिण का (मांस वगैरह) (राज) ।

एणिज्जय पुं [एणेयक] स्वनाम-ख्यात एक राजा, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी (ठा ८) ।

एणिस पुं [एणिस] वृक्ष-विशेष (उप १०३१ टी) ।

एणी स्त्री [एणी] हरिणी (पाअ; पणह १, ४) । °**यार** पुं [°चार] हरिणी को चरानेवाला, उनका पोषण करनेवाला (पणह १, १) ।

एणुवासिअ पुं [दे] भेक, मेढ़क (दे १, १४७) ।

एणेज्ज देखो एणिज्ज (विपा १, ८) ।

एण्हं } अ [इदानीम्] अधुना, संप्रति
एण्हिं } (महा; हे २, १३४) ।

एताव देखो एत्तिअ = एतावत्; 'एतावं नरलोओ' (जीवस १८७) ।

एत्तअ वि [इयत्, एतावत्] इतना (अभि ५६; स्वप्न ४०) ।

एत्तए देखो इ = इ ।

एत्तहि (अप) अ [इतस्] यहां से (कुमा) ।

एत्तहे देखो इत्तहे (कुमा) ।

एत्ताहे देखो इत्ताहे (हे २, १३४; कुमा) ।

एत्तिअ } वि [इयत्, एतावत्] इतना
एत्तिल } (हे २, १५७) । °**मत्त**, °**मेत्त** वि [°मात्र] इतना ही (हे १, ८१) ।

एत्तिक (शौ) देखो एत्तिअ = एतावत् (प्राकृ ६५) ।

एत्तुल (अप) ऊपर देखो (हे ४, ४०८; कुमा) ।

एत्तूण अ [दे] अधुना, इस समय (प्राकृ ८०) ।

एत्तो देखो इओ (महा) ।

एत्तोअ अ [दे] यहां से लेकर (दे १, १४४) ।

एत्थ अ [अत्र] यहां, यहां पर (उवा; गउड; चारु १०३) ।

एत्थी देखो इत्थी (उप १०३१ टी) ।

एत्थु (अप) देखो एत्थ (कुमा) ।

एदंपज्ज न [ऐदंपर्य] तात्पर्य, भावार्थ (उप ८५६ टी) ।

एदिहासिअ (शौ) वि [ऐतिहासिक] इतिहास-संबन्धी (प्राप) ।

एद्दह देखो एत्तिअ (हे २, १५७; कुमा; काप्र ७७) ।

एम (अप) अ [एवं] इस तरह, ऐसा (षड्; पिंग) ।

एमइ (अप) अ [एवमेव] इसी तरह, ऐसा ही (षड्; वज्जा ६०) ।

एमाइ } वि [एवमादि] इत्यादि, वगैरह
एमाइय } (सुर ८, २६; उव) ।

एमाण वि [दे] प्रवेश करता हुआ (दे १, १४४) ।

एमिणिआ स्त्री [दे] वह स्त्री, जिसके शरीर को, किसी देश के रिवाज के अनुसार, सूत के धागे से माप कर उस धागे को फेंक दिया जाता है (दे १, १४५) ।

एमेअ } अ [एवमेव] इसी तरह, इसी
एमेव } प्रकार; 'ता भण कि करणिज्जं एमेअ ण वासरो ठाइ' (काप्र २६; हे १, २७१) ।

एम्व (अप) अ [एवम्] इस तरह, इस प्रकार (हे ४, ४१८) ।

एम्वइ (अप) अ [एवमेव] इसी तरह, इस प्रकार (हे ४, ४२०) ।

एम्वहिं (अप) अ [इदानीम्] इस समय, अधुना (हे ४, ४२०) ।

एय अक [एज्] १ काँपना, हिलना । २ चलना । एयइ (कप्प) । वकृ. **एयंत** (ठा ७) । प्रयो., कवकृ. **एइज्जमाण** (राज) ।

एय पुं [एज] गति, चलन (भग २५, ४) ।

एयंत देखो एकंत (पउम १५, ५८) ।

एयण न [एजन] कम्प, हिलन; 'निरेयणं झाणं' (आव ४) ।

एयणा स्त्री [एजना] १ कम्प । २ गति, चलन (सुअ २, २; भग १७, ३) ।

एयाणिं देखो इयाणिं (रंभा) ।

एयावंत वि [एतावत्] इतना (आचा) ।

एरंड पुं [एरण्ड] १ वृक्ष-विशेष, रेंड़, अंडी, एरण्ड का पेड़ (ठा ४, ४; णाया १, १) । २ तृण-विशेष (पण्ण १) । °**मिंजिया** स्त्री [°मिञ्जिका] एरण्ड-फल (भग ७, १) ।

एरंड वि [ऐरण्ड] एरण्ड-वृक्ष-संबन्धी (पत्रादि) (दे १, १२०) ।

एरंडइय } पुं [दे] पागल कुत्ता, 'एरंडए
एरंडय } साणे एरंडइयसाणेत्ति हडकयितः' (बृह १) ।

एरण्णवय न [ऐरण्यवत] १ क्षेत्र-विशेष (सम १२) । २ वि. उस क्षेत्र में रहनेवाला (ठा २) ।

एरवई स्त्री [ऐरावती, अजिरवती] नदी-विशेष (राज; कस) ।

एरवय न [ऐरवत] १ क्षेत्र-विशेष (सम १२; ठा २, ३) । २ पुं. पर्वत-विशेष (ठा १०) ।

एरवय वि [ऐरवत] ऐरवत क्षेत्र का (सुज्ज १, ३) ।

एरवय वि [ऐरवत] ऐरवत क्षेत्र का रहनेवाला (अणु) । °**कूड** न [°कूट] पर्वत-विशेष का शिखर-विशेष (ठा १०) ।

एराणी स्त्री [दे] १ इन्द्राणी व्रत का सेवन करनेवाली स्त्री (दे १, १४७) ।

एरावई स्त्री [ऐरावती] नदी-विशेष (ठा ५, २; पि ४६५) ।

एरावण पुं [ऐरावण] १ इन्द्र का हाथी, जो कि इन्द्र के हस्ति-सैन्य का अधिपति देव है (ठा ५, १; प्रयौ ७८) । °**वाहण** पुं [°वाहन] इन्द्रवाहन (उप ५३० टी) ।

एरावय पुं [ऐरावत] १ ह्रद-विशेष (राज) । २ ह्रद-विशेष का अधिष्ठाता देव (जीव ३) । ३ छन्दः-शास्त्रप्रसिद्ध पञ्चकला-प्रस्तार में आदि के ह्रस्व और अन्त के दो गुरु अक्षरों का संकेत (पिंग) । ४ लकुच वृक्ष । ५ सरल और लम्बा इन्द्र-धनुष । ६ इरावती नदी का समीपवर्त्ती देश । ७ इन्द्र का हाथी (हे १, २०८) ।

एरिस वि [ईदृश] इस तरह का, ऐसा (आचा; कुमा; प्रासू २१) ।

एरिसिअ (अप) ऊपर देखो (पिंग) ।

एल वि [दे] कुशल, निपुण (दे १, १४४)।

एल } पुं [एड, एल] १ मृगों की एक जाति (विपा १, ४)। २ मेष मेड़ (सूअ २, २)। °**मूअ**, °**मूग** वि [°मूक] १ मूक, भेड़ की तरह अव्यक्त बोलनेवाला; 'जलएलमूअमम्मणअलियवयणजंपणे दोसा' (श्रा १२; दस ५; आव ४; निचू ११)।
एलग }

एलगच्छ न [एलकाक्ष] स्वनाम-ख्यात नगर-विशेष (उप २११ टी)।

एलय देखो एल (उवा; पि २४०)।

एलविल वि [दे] १ धनाढ्य, धनी। २ पुं. वृषभ, बैल (दे १, १४८; षड्)।

एला स्त्री [एला] १ इलायची का पेड़ (से ७, ६२)। २ इलायची-फल (सुर १३, ३३)। °**रस** पुं [°रस] इलायची का रस (पण्ह २, ५)।

एलालुय पुंन [एलालुक] आलू की एक जाति, कन्द-विशेष (अनु ६)।

एलावच्च न [एलापत्य] माण्डव्य गोत्र का एक शाखा-गोत्र (ठा ७)।

एलावच्च वि [ऐलापत्य] एलापत्य-गोत्र का (णंदि ४९)।

एलावच्चा स्त्री [एलापत्या] पक्ष की तीसरी रात (चंद १०, १४)।

एलिक्ख वि [ईदृक्ष] ऐसा (उत्त ७, २२)।

एलिध पुं [एलिङ्ग] धान्य-विशेष (पण्ह १)।

एलिया स्त्री [एडिका, एलिका] १ एक जात की मृगी। २ भेड़िया (हे ३, ३२)।

एलिस देखो एरिस (सूअ १, ६, १)।

एलु पुं [एलु] वृक्ष-विशेष (उप १०३१ टी)।

एलुग } पुंन [एलुक] देहली, द्वार के नीचे की लकड़ी (जीव ३; आचा २)।
एलुय }

एल्ल वि [दे] दरिद्र, निर्धन (दे १, १७४)।

एव अ [एव] इन अर्थों का सूचक अव्ययः—१ अवधारण, निश्चय (ठा ३, १; प्रासू १६)। २ सादृश्य, तुल्यता। ३ चार-नियोग। ४ निग्रह। ५ परिभव। ६ अल्प, थोड़ा (हे २, २१७)।

एव देखो एवं (हे १, २९; पउम १५, २४)।

एवइ वि [इयत्, एतावत्] इतना। °**खुत्तो** अ [°कृत्वस्] इतनी बार (कप्प)।

एवइय वि [इयत्, एतावत्] इतना (कप्प; विसे ४४४)।

एवं अ [एवम्] इस तरह, इस रीति से, इस प्रकार (सूअ १, १; हे १, २९)। °**भूअ** पुं [°भूत] १ व्युत्पत्ति के अनुसार उस क्रिया से विशिष्ट अर्थ को ही शब्द का अभिधेय माननेवाला पक्ष (ठा ७)। २ वि. इस तरह का, एवं-प्रकार (उप ८७७)। °**विध**, °**विह** वि [°विध] इस प्रकार का (हे ४, ३२३; काल)।

एवंहास पुं [एवंहास] इतिहास (गउड ८८२)।

एवड (अप) वि [इयत्] इतना (हे ४, ४०८; कुमा; भवि)।

एवमाइ देखो एमाइ (पण्ह १, ३)।

एवमेव } देखो एमेव (हे १, २७१; उवा)।
एवामेव }

एव्वं देखो एवं (षड्; अभि ७२; स्वप्न १०)।

एव्व देखो एव=एव (अभि १३; स्वप्न ४०)।

एव्वहि (अप) अ [इदानीम्] इस समय, अधुना (षड्)।

एव्वारु पुं [इर्वारु] ककड़ी (कुमा)।

एस सक [इष्] १ इच्छा करना। २ खोजना। ३ प्रकाशित करना। एसइ (पिंड ७५)।

एस सक [आ+इष्] करना, 'तम्हा विणयमेसिज्जा' (उत्त १, ७; सुख १, ७)।

एस सक [आ+इष्] १ खोजना, शुद्ध भिक्षा की खोज करना। २ निर्दोष भिक्षा का ग्रहण करना। एसंति (आचा २, ६, २)। वकृ. **एसमाण** (आचा २, ५, १)। संकृ. **एसित्ता, एसिया** (उत्त १; आचा)। हेकृ. **एसित्तए** (आचा २, २, १)।

एस वि [एष्य] १ भावी पदार्थ, होनेवाली वस्तु (आव ५)। २ पुं. भविष्य काल (दसनि १); 'अकयंव संपइ गए कह कीरइ, किह व एसम्मि' (विसे ४२२)।

°**एस** देखो **देस**; 'भण को ण रुस्सइ जणो पत्थिज्जंतो अएसकालम्मि' (गा ४००)।

एसग वि [एषक] अन्वेषक, गवेषक (आचा)।

एसज्ज न [ऐश्वर्य] वैभव, प्रभुत्व, संपत्ति (ठा ७)।

एसण न [एषण] १ अन्वेषण, खोज। २ ग्रहण (उत्त २)।

एसणा स्त्री [एषणा] १ अन्वेषण, गवेषण, खोज (आचा)। २ प्राप्ति, लाभ; 'विसएसणं झियायंति' (सूअ १, ११)। ३ प्रार्थना (सूअ १, २)। ४ निर्दोष आहार की खोज करना (ठा ६)। ५ निर्दोष भिक्षा (आचा २)। ६ इच्छा, अभिलाष (पिंड १)। ७ भिक्षा का ग्रहण (ठा ३,४)। °**समिइ** स्त्री [°समिति] निर्दोष भिक्षा का ग्रहण करना (ठा ५)। °**समिय** वि [°समित] निर्दोष भिक्षा को ग्रहण करनेवाला (उत्त ६; भग)।

एसणिज्ज वि [एषणीय] ग्रहण-योग्य (णाया १, ५)।

एसि वि [एषिन्] अन्वेषक, खोज करनेवाला (आचा)।

एसिय वि [एषिक] १ खोज करनेवाला, गवेषक। २ पुं. व्याध। ३ पाखण्डि-विशेष (सूअ १, ९)। ४ मनुष्यों की एक नीच जाति (आचा २, १, २)।

एसिय वि [एषित] गवेषित, अन्वेषित (भग ७, १)। २ निर्दोष भिक्षा (वव ४)।

एसिय वि [एषित] भिक्षा-चर्या की विधि से प्राप्त (सूअ २, १, ५६)।

एस्सरिय देखो एसज्ज (उव)।

एह अक [एध्] बढ़ना, उन्नत होना। एहइ (षड्)। प्रयो., कवकृ. 'दीसंति दुहमे्हंता' (दस ६)।

एह (अप) वि [ईदृक्] ऐसा, इसके जैसा (षड्; भवि)।

एहत्तरि (अप) स्त्री [एकसप्तति] संख्या-विशेष, ७१ (पिंग)।

एहा स्त्री [एधस्] समिध, इन्धन (उत्त १२, ४३; ४४)।

एहिअ वि [ऐहिक] इस जन्म-संबन्धी (ओघ ६२)।

॥ इअ सिरिपाईअसद्दमहण्णवे एआराइसद्दसंकलणो
सत्तमो तरंगो समत्तो ॥

ऐ

ऐ अ [अयि] इन अर्थों का सूचक अव्यय— १ संभावना। २ आमन्त्रण, संबोधन। ३ प्रश्न। ४ अनुराग, प्रीति। ५ अनुनय; 'ऐ बीहेमि; ऐ उम्मत्तिए' (हे १, १६६)।

॥ इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवे ऐआराइसद्दसंकलणो
अट्ठमो तरंगो समत्तो ॥

ओ

ओ पुं [ओ] स्वर वर्ण-विशेष (हे १, १; प्रामा)।

ओ देखो अव = अप (हे १, १७२; प्राप्र; कुमा; षड्)।

ओ देखो अव (हे १, १७२; प्राप्र; कुमा; षड्)।

ओ देखो उव (हे १, १७२; कुमा)।

ओ देखो उअ = उत (हे १, १७३; कुमा)।

ओ अ [ओ] इन अर्थों का सूचक अव्यय— १ वितर्क। २ प्रकोप, विस्मय (प्राकृ ७८)।

ओ अ [ओ] इन अर्थों का सूचक अव्यय— १ सूचना; 'ओ अविणयतत्तिल्ले'। २ पश्चात्ताप, अनुताप; 'ओ न मए छाया इत्तिआए' (हे २, २०३; षड्; कुमा; प्राप्र)। ३ संबोधन, आमन्त्रण (नाट—चैत ३४)। ४ पादपूर्ति में प्रयुक्त किया जाता अव्यय (पंचा १; विसे २०२४)।

ओअ न [दे] वार्त्ता, कथा कहानी (दे १, १४९)।

ओअअ वि [अपगत] अपसृत; 'ओअआअव–' (पि १६५)।

ओअंक पुं [दे] गर्जित, गर्जना (दे १, १५४)।

ओअंद सक [आ + छिद्] १ बलात्कार से छीन लेना। २ नाश करना। ओअंदइ (हे ४, १२५; षड्)।

ओअंदणा स्त्री [आच्छेदना] १ नाश। २ जबरदस्ती छीनना (कुमा)।

ओअक्ख सक [दृश्] देखना। ओअक्खइ (हे ४, १८१; षड्)।

ओअग्ग सक [वि + आप्] व्याप्त करना। ओअग्गइ (हे ४, १४१)।

ओअग्गिअ वि [व्याप्त] विस्तृत, फैला हुआ (कुमा)।

ओअग्गिअ वि [दे] १ अभिभूत, परिभूत। २ न. केश वगैरह को एकत्रित करना (दे १, १७२)।

ओअग्घिअ, ओअघिअ वि [दे] घ्रात, सूँघा हुआ (दे १, १६२; षड्)।

ओअण्ण वि [अवनत] नमा हुआ, नीचे की तरफ मुड़ा हुआ (से ११, ११८)।

ओअत्त वि [अपवृत्त] औंधा किया हुआ, उलटा किया हुआ; ओअत्ते कुंभमुहे जललव-कणिआवि किं ठाइ ?' (गा ६५४)।

ओअत्तअ वि [अपवर्तितव्य] १ अपवर्त्तन-योग्य। २ त्यागने योग्य, छोड़ने लायक; 'कुसुमम्मि व पव्वाअए भमरोअत्तअम्मि' (से ३, ४८)।

ओअम्मअ वि [दे] अभिभूत, पराभूत (षड्)।

ओअर सक [अव + तॄ] १ जन्म-ग्रहण करना। २ नीचे उतरना। ओयरइ (हे ४, ८५)। वकृ. ओयरंत (ओघ १६१; सुर १४, २१)। हेकृ. ओयरिउं (प्रासू)। कृ. ओयरियव्व (सुर १०, १११)।

ओअरण न [उपकरण] साधन, सामग्री (गा ६८१)।

ओअरण न [अवतरण] उतरना, नीचे आना (गउड)।

ओअरय पुं [अपवरक] कमरा, कोठरी (सुपा ४१५)।

ओअरिअ वि [अवतीर्ण] उतरा हुआ (पाअ)।

ओअरिअ वि [औदरिक] पेट-भरा, पेटू, उदर भरने मात्र की चिन्ता करनेवाला (ओघ ११८ भा)।

ओअरिया स्त्री [अपवरिका] कोठरी, छोटा कमरा (सुपा ४१५)।

ओअल्ल देखो ओवट्ट = अप + वृत्। ओअल्लइ (प्राकृ ७०)।

ओअल्ल अक [अव + चल्] चलना। ओअल्लंति (पि १६७; ४८८)। वकृ. ओअल्लंत (पि १६७; ४८८)।

ओअल्ल पुं [दे] १ अपचार, खराब आचरण, अहित आचरण (षड्; स ५२१)। २ कम्प, कांपना (षड्; दे १, १६५)। ३ गौओं का बाड़ा। ४ वि. पर्यस्त, प्रक्षिप्त। ५ लम्बमान, लटकता हुआ (दे १, १६५)। ६ जिसकी आँखें निमीलित होती हों वह; 'मुच्छिज्जंतोअल्ला अक्कंता णिअअमहिहरेहि पवंगा' (से १३, ४३)।

ओअल्लअ वि [दे] विप्रलब्ध, प्रतारित (षड्)।

ओअव सक [साधय्] साधना, वश में करना, जीतना; 'गच्छाहि णं भो देवाणु-

प्पिआ ! सिंधूए महाणईए पच्चत्थिमिल्लं णिक्खुडं ससिंधुसागरगिरिमेरागं समविसमणिक्खुडाणि अ ओअवेहि' (जं ३)। संकृ. **ओअवेत्ता** (जं ३)।

ओअवण न [साधन] विजय, वश करना, स्वायत्त करना (जं ३—पत्र २४८)।

ओआअ पुं [दे] १ ग्रामाधीश, गाँव का स्वामी। २ आज्ञा, आदेश। ३ हस्ती वगैरह को पकड़ने का गर्त्त। ४ वि. अपहृत, छीना हुआ (दे १, १६६)।

ओआअव पुं [दे] अस्त-समय (दे १, १६२)।

ओआर सक [अप + वारय्] ढांकना, 'कहं सुज्जं हत्थेण ओआरेसि' (मै ४६)।

ओआर पुं [अपकार] अनिष्ट, हानि, क्षति (कुमा)।

ओआर पुं [अवतार] १ अवतारण (ठा १; गउड)। २ अवतार, देहान्तर-धारण (षड्)। ३ उत्पत्ति, जन्म; 'अच्चंतमणोयारो जत्थ जरारोगवाहीणं' (स १३१)। ४ प्रवेश (विसे १०४०)।

ओआर देखो **उवयार** (षड्)।

ओआरण न [अवतारण] उतारना, अवतारित करना (दे ४, ४०)।

ओआरिअ वि [अवतारित] उतारा हुआ (से ११, ९३; उप ५६७ टी)।

ओआल पुं [दे] छोटा प्रवाह (दे १, १५१)।

ओआली स्त्री [दे] १ खड्ग का दोष। २ पंक्ति, श्रेणी (दे १, १६४)।

ओआवल पुं [दे] बालातप, सुबह का सूर्यताप (दे १, १६१)।

ओआस देखो **अवगास** (हे १, १७२; कुमा; २०); 'अम्हारिसाण सुंदर ! ओआसो कत्थ पावाणं' (काप्र ६०३)।

ओआस देखो **उववास** (हे १, १७३; प्राकृ)।

ओआहिअ वि [अवगाहित] जिसका अवगाहन किया गया हो वह (से १, ४; ८, १००)।

ओइंध सक [आ + मुच्] १ छोड़ देना, त्यागना, फेंक देना। २ उतार कर रख देना; 'तो उज्झिऊण लज्जं ओइंधइ कंचुयं सरीराओ' (पउम ३४, १६); तहेव य भडत्ति परिवाडीए ओइंधइ त्ति' (श्राक ३८)।

ओइण्ण वि [अवतीर्ण] उतरा हुआ (पाअ; गा ६३)।

ओइत्त } न [दे] परिधान, वस्त्र (दे १, **ओइत्तग** } १५५)।

ओइल्ल वि [दे] आरूढ (दे १, १५८)।

ओउंठण न [अवगुण्ठन] स्त्री के मुँह पर का वस्त्र, घूँघट (अभि १६८)।

ओउल्लिय वि [दे] पुरस्कृत, आगे किया हुआ (पड्)।

ओऊल न [अवचूल] लटकता हुआ वस्त्राञ्चल, प्रालम्ब (पाअ); 'मरगयलबंतमोत्तिओऊलं' (पउम ८, २८३)। देखो **ओचूल**।

ओं अ [ओम्] प्रणव, मुख्य मन्त्राक्षर (पडि)।

ओंकार पुं [ओङ्कार] 'ओं' अक्षर (उत्त २५ ३१)।

ओंगण अक [क्वण्] अव्यक्त आवाज करना। ओंगणइ (प्राकृ ७३)।

ओंघ देखो **उंघ**। ओंघइ (हे ४, १२ टि)।

ओंडल न [दे] केश-गुम्फ, केश-रचना, धम्मिल्ल (दे १, १५०)।

ओंदुर देखो **उंदुर** (षड्)।

ओंबाल सक [छादय्] ढकना, आच्छादित करना। ओंबालइ (हे ४, २१)।

ओंबाल सक [प्लावय्] १ डुबाना। २ व्याप्त करना। ओंबालइ (हे ४, ४१)।

ओंबालिअ वि [छादित] ढका हुआ (कुमा)।

ओंबालिअ वि [प्लावित] १ डुबाया हुआ। २ व्याप्त (कुमा)।

ओकंबण देखो **उक्कंबण** (आचा २, २, ३, १ टी)।

ओकच्छिया देखो **उकच्छिआ** (पव ६२)।

ओकड्ढ वि [अपकृष्ट] १ खींचा हुआ। २ न. अपकर्षण, खींचाव (उत्त १६)।

ओकड्ढग देखो **उक्कड्ढग** (पण्ह १, ३)।

ओकरग पुं [अवकरक] विष्ठा (मन ३०)।

ओकस सक [अव + कृष्] १ निमग्न होना, गड़ जाना। २ खींचना। ३ बह जाना। वकृ. **ओकसमाण** (कस)।

ओक्कंत वि [अवक्रान्त] निराकृत, पराजित; 'परवाईहिं अणोक्कंता अण्णउत्थिएहिं अणाढंसिज्जमाणा विहरंति' (औप)।

ओक्कंदी देखो **उक्कंदी** (दे १, १७४)।

ओकणी स्त्री [दे] यूका, जूँ (दे १, १५९)।

ओक्किअ न [दे] १ वास, वसन, अवस्थान। २ वमन, उल्टी (दे १, १५१)।

ओक्खंच सक [आ + कृष्] खींचना। कर्म. 'जह जह ओक्खंचिज्जइ, तह तह वेगं पणिएहमाणेण। भयवं ! तुरंगमेणं, इहाणिओ आसमे तुम्हं' (सुर ११, ५१)।

ओक्खंड सक [अव + खण्डय्] तोड़ना, भांगना। कृ. **ओक्खंडेअव्व** (से १०, २६)।

ओक्खंडिअ वि [दे] आक्रान्त (दे १, ११२)।

ओक्खंद देखो **अवक्खंद** (सुर १०, २१०; पउम ३७, २६)।

ओक्खल देखो **उऊखल** (कुमा; प्राप्र)।

ओक्खली [दे] देखो **उक्खली** (दे १,१७४)।

ओक्खमाण (शौ) वि [भविष्यत्] भविष्य में होनेवाला, भावी (प्राकृ ९६)।

ओक्खिण्ण वि [दे] १ अवकीर्ण। २ खण्डित, चूर्णित (कस; दे १, १३०)। २ छन्न, ढका हुआ। ३ पार्श्व में शिथिल (दे १, १३०)।

ओक्खित्त वि [अवक्षिप्त] फेंका हुआ (कस)।

ओखंच देखो **ओक्खंच**।

ओगम देखो **अवगम**। कृ. **ओगमिदव्व** (शौ) (मा ४८)।

ओगय वि [उपगत] प्राप्त (सूअ १, ५, २, १०)।

ओगर देखो **ओग्गर** (पिंग)।

ओगलिअ वि [अवगलित] गिरा हुआ, खिसका हुआ (गा २०५)।

ओगसण न [अपकसन] ह्रास (राज)।

ओगहिअ वि [अवगृहीत] उपात्त, गृहीत (ठा ३)।

ओगाढ वि [अवगाढ] १ आश्रित, अधिष्ठित (ठा २, २)। २ व्याप्त (णाया १, १६)। ३ निमग्न (ठा ४)। ४ गंभीर, गहरा (पउम २०, ६५; से ९, २६)।

ओगास पुं [अवकाश] जगह, स्थान (विवे १३६ टी)।

ओगास पुं [अवकाश] मार्ग, रास्ता (सुख २, २१)।

ओगाह सक [अव + गाह्] पाँव से चलना। वकृ. **ओगाहंत** (पिंड ५७५)।

ओगाह सक [अव + गाह्] अवगाहन करना। ओगाहइ (षड्)। वकृ. **ओगाहंत** (आव २)। संकृ. **ओगाहइत्ता, ओगाहित्ता** (दस ५; भग ५, ४)।

ओगाहण न [अवगाहन] अवगाहन (भग)।

ओगाहणा स्त्री [अवगाहना] १ आधार-भूत आकाश-क्षेत्र (ठा १)। २ शरीर (भग ६, ८)। ३ शरीर परिमाण (ठा ४, १)। ४ अवस्थान, अवस्थिति (विसे)। °णाम न [°नामन्] कर्म-विशेष (भग ६, ८)। °णाम पुं [°नाम] अवगाहनात्मक परिणाम (भग ६, ८)।

ओगाहिम वि [अवगाहिम] पक्वान्न (पंचा ५)।

ओगिज्झ, ओगिण्ह सक [अव + ग्रह्] १ आश्रय लेना। २ अनुज्ञा-पूर्वक ग्रहण करना। ३ जानना। ४ उद्देश करना। ५ लक्ष्य कर कहना। ओगिण्हइ (भग; कप्प)। संकृ. **ओगिज्झिय, ओगिण्हइत्ता, ओगिण्हित्ता, ओगिण्हित्ताणं** (आचा; णाया १, १; कस; उवा)। कृ. **ओघेत्तव्व** (कप्प पि ५७०)।

ओगिण्हण न [अवग्रहण] सामान्य ज्ञान-विशेष, अवग्रह (णंदि)।

ओगिण्हणया स्त्री [अवग्रहणता] १ ऊपर देखो (णंदि)। २ मनो-विषयीकरण, मन से जानना (ठा ८)।

ओगिन्ह देखो **ओगिण्ह**। संकृ. **ओगिन्हित्ता** (निर १, १)।

ओगुंडिय वि [अवगुण्डित] लिप्त (बृह १)।

ओगुट्ठि स्त्री [अपकृष्टि] अपकर्ष, हलकाई, तुच्छता (पउम ५६, १५)।

ओगूहिय वि [अवगूहित] आलिंगित (णाया १, ६)।

ओग्गर पुं [ओग्गर] धान्य-विशेष, व्रीहि-विशेष (पिंग)।

ओग्गह देखो **उग्गह** (सम्म ७५; उव; कस; स ३५; ५६८)।

ओग्गह सक [प्रति + इष्] ग्रहण करना। ओग्गहइ (प्राकृ ७३)।

ओग्गहण देखो **ओगिण्हण**। °पट्टग पुंन [°पट्टक] जैन साध्वियों के पहनने का एक गुह्याच्छादक वस्त्र, जांघिया, लंगोट (कस)।

ओग्गहिय वि [अवगृहीत] १ अवग्रह-ज्ञान से जाना हुआ, अवग्रह का विषय। २ अनुज्ञा से गृहीत। ३ बद्ध, बँधा हुआ (उवा)। ४ देने के लिए उठाया हुआ (औप)।

ओग्गहिय वि [अवग्रहिक] अनुज्ञा से गृहीत, अवग्रहवाला (औप)।

ओग्गारण न [उद्गारण] उद्गार (चारु ७)।

ओग्गाल पुं [दे] छोटा प्रवाह (दे १, १५१)।

ओग्गाल सक [रोमन्थाय्] पगुराना, चबाई हुई वस्तु का पुनः चबाना। ओग्गालइ (हे ४, ४३)।

ओग्गालिर वि [रोमन्थायितृ] पगुरानेवाला, चबाई हुई वस्तु का पुनः चबानेवाला (कुमा)।

ओग्गाह देखो **उग्गाह** = उद् + ग्राहय्। ओग्गाहइ (प्राकृ ७२)।

ओग्गिअ वि [दे] अभिभूत, पराभूत (दे १, १५८)।

ओग्गीअ पुं [दे] हिम, बर्फ (दे १, १४६)।

ओग्घ देखो **उग्घड**। ओग्घइ (प्राकृ ७१)।

ओग्घसिय वि [अवघर्षित] प्रमार्जित, साफ-सुथरा किया हुआ (राय)।

ओघ पुं [ओघ] १ समूह, संघात (णाया १, ५)। २ संसार, 'एते ओघं तरिस्संति समुद्दं ववहारिणो' (सूअ १, ३)। ३ अविच्छेद अविच्छिन्नता (पण्ह १, ४)। ४ सामान्य, साधारण। **सण्णा** स्त्री [°संज्ञा] सामान्य ज्ञान (पण्ण ७)। °**देस** पुं [°देश] सामान्य विवक्षा (भग २५, ३)। देखो **ओह** = ओघ।

ओघट्टिद (शौ) वि [अवघट्टित] आहत (प्रयौ २७)।

ओघसर पुं [दे] १ घर का जल-प्रवाह। २ अनर्थ, खराबी, नुकसान (दे १, १७०; सुर २, ६६)।

ओघसिय देखो **ओग्घसिय**।

ओघाययण न [ओघायतन] १ परम्परा से पूजा जाना स्थान। २ तलाव में पानी जाने का साधारण रास्ता (आचा २, १०, २)।

ओघेत्तव्व देखो **ओगिण्ह**।

ओचार पुं [दे. अपचार] धान्य रखने की बड़ी कोठी—मिट्टी का पात्र-विशेष (अणु १५१)।

ओचिदी (शौ) स्त्री [औचिती] उचितता, औचित्य (रंभा)।

ओचुंब सक [अव + चुम्ब्] चुम्बन करना। संकृ. **ओचुंबिऊण** (भवि)।

ओचुल्ल न [दे] चुल्हा का एक भाग (दे १, १५३)।

ओचूल, ओचूलग देखो **ओऊल** (विपा १, २; गुर ३, ७०)। २ मुख से हटा हुआ शिथिल—ढीला (वस्त्र); 'ओचूलगनियत्था' (जं ३—पत्र २४५)।

ओच्चय देखो **अवचय** (महा)।

ओच्चिया स्त्री [अवचायिका] तोड़ कर (फूलों को) इकट्ठा करनेवाली (गा ७६७)।

ओच्छल्लर न [दे] ऊपर-भूमि। २ जवन के रोम (दे १, १३६)।

ओच्छअ, ओच्छइय वि [अवस्तृत] १ आच्छादित। २ निरुद्ध, रोका हुआ (पण्ह १, ४; गउड; स १६४)।

ओच्छंदिअ वि [दे] १ अपहृत। २ व्यथित, पीड़ित (षड्)।

ओच्छण्ण वि [अवच्छन्न] आच्छादित, ढका हुआ; 'णिच्चोउगो असोगो ओच्छण्णो सालरुक्खेणं' (सम १५२)। देखो **ओच्छन्न**।

ओच्छत्त न [दे] दन्त-धावन, दतवन (दे १, १५२)।

ओच्छन्न देखो **ओच्छण्ण** (स ११२, औप)। २ अवष्टब्ध, आक्रान्त (आचा)।

ओच्छर (शौ) सक [अव + स्तृ] १ बिछाना, फैलाना। २ आच्छादित करना, ढांकना। ओच्छरीअदि (नाट—उत्तम १०५)।

ओच्छविय, ओच्छाइय वि [अवच्छादित] आच्छादित, ढका हुआ; 'गुच्छलयारुक्खगुम्मवल्लिगुच्छओच्छाइयं सुरम्मं वेभारगिरिकडगपायमूलं' (णाया १, १—पत्र २५; २८ टी; महा; स १५०)।

ओच्छाइवि नीचे देखो।

ओच्छाय सक [अव + छादय्] आच्छादन करना। संकृ. **ओच्छाइवि** (भवि)।

ओच्छायण वि [अवच्छादन] ढांकना, पिधान (स ५५७)।

ओच्छाहिय देखो **उच्छाहिय**;

'ओच्छाहिओ परेण व लद्धि-
पसंसाहिं वा समुत्तइओ ।
अवमाणिओ परेण य जो
एसइ माणपिंडो सो ॥'
(पिंड ४६५) ।

ओच्छिअ न [दे] केश-विवरण (दे १, १५०) ।

ओच्छिण्ण वि [अवच्छिन्न] आच्छादित; 'पत्तेहि य पुप्फेहि य ओच्छिण्णपलिच्छिण्णा' (जीव ३) ।

ओच्छुंद सक [आ + क्रम्] १ आक्रमण करना । २ गमन करना । ओच्छुंदंति (से १३, १६) । कर्म. ओच्छुंदइ (से १०, ५५) ।

ओच्छुण्ण वि [आक्रान्त] १ दबाया हुआ । २ उल्लंघित; 'ओच्छुण्णदुग्गमपहा' (से १३, ६३; १५, १३) ।

ओच्छोअअ न [दे] घर की छत के प्रान्त भाग से गिरता पानी;
'रक्खेइ पुत्तअं मत्थएण
ओच्छोअअं पडिच्छंती ।
अंसूहिं पहिअघरिणी ओलि-
ज्जंतं ण लक्खेइ' (गा ६२१)

ओजिम्ह अक [घ्रा] तृप्त होना । ओजिम्हइ (प्राकृ ६५) ।

ओज्जर वि [दे] भीरु, डरपोक (षड्) ।

ओज्जल देखो उज्जल (दे) ।

ओज्जल्ल वि [दे] बलवान्, प्रबल (दे १, १५४) ।

ओज्जाअ पुं [दे] गर्जित, गर्जारव (दे १, १५४) ।

ओज्झ वि [दे] मैला, अस्वच्छ, चोखा नहीं वह (दे १, १४८) ।

ओज्झंत देखो ओज्झा = अप + ध्या ।

ओज्झमण न [दे] पलायन, भाग जाना (दे १, १०३) ।

ओज्झर पुं [निर्झर] झरना, पर्वत से निकलता जल-प्रवाह (गा ६४०; हे १, ९८; कुमा; महा) ।

ओज्झरिअ [दे] देखो उज्झरिअ (दे १, १३३) ।

ओज्झरी स्त्री [दे] ओझ, आंत का आवरण (दे १, १५७) ।

ओज्झा सक [अप + ध्या] खराब चिन्तन करना । कवकृ. ओज्झंत (भवि) ।

ओज्झा देखो अउज्झा (उप पृ ३७४) ।

ओज्झाय देखो उवज्झाय (कुमा; प्राप्र) ।

ओज्झाय वि [दे] दूसरे को प्रेरणा कर हाथ से लिया हुआ (दे १, १५९) ।

ओज्झावग देखो उवज्झाय (उप ३५७ टी) ।

ओट्ठ पुं [ओष्ठ] ओठ, अधर (पउम १, २४; स्वप्न १०४; कुमा) ।

ओट्ठिय वि [औष्ट्रिक] उष्ट्र-सम्बन्धी, उष्ट्र के बालों से बना हुआ (कस; स ५८६) ।

ओडड्ढ वि [दे] अनुरक्त, रागी (दे १, १५६) ।

ओड्ड पुं [ओड्र] १ उत्कल देश । २ वि. उत्कल देश का निवासी, उड़िया (पिंग) ।

ओड्डिअ वि [ओड्रीय] उत्कल-देशीय (पिंग) ।

ओड्ढण न [दे] ओढ़न, उत्तरीय, चादर (दे १, १५५) ।

ओड्ढिणा स्त्री [दे] ओढ़नी (स २११) ।

ओढण न [दे] अवगुण्ठन (प्राकृ ३८) ।

ओण देखो ऊण = ऊन (रंभा) ।

ओणंद सक [अव + नन्द्] अभिनन्दन करना । कवकृ. ओणंदिज्जमाण (कप्प) ।

ओणम अक [अव + नम्] नीचे नमना । वकृ. ओणमंत (से १, ४५) । संकृ. ओणमिअ, ओणमिऊण (आचा २; निचू १) ।

ओणय वि [अवनत] १ नमा हुआ (सुर २, ४९) । २ न. नमस्कार, प्रणाम (सम २१) ।

ओणल्ल अक [अव + लम्ब्] लटकना, 'केसकलावु खंधे ओणल्लइ' (भवि) ।

ओणविय वि [अवनमित] नमाया हुआ, अवनत किया हुआ (गा ६३५) ।

ओणाम सक [अव + नमय्] नीचे नमाना, अवनत करना । ओणामेहि (मृच्छ ११०) । संकृ. ओणामित्ता (निचू) ।

ओणामणी स्त्री [अवनामनी] एक विद्या, जिसके प्रभाव से वृक्ष वगैरह स्वयं फलादि देने के लिए अवनत होते हैं (उप पृ १५५; निचू १) ।

ओणामिय, **ओणाविय** वि [अवनमित] अवनत किया हुआ (से ५, ३९; ६, ४; गा १०३; भवि) ।

ओणिअत्त अक [अपनि + वृत्] पीछे हटना, वापिस आना । वकृ. ओणिअत्तंत (से २, ७) ।

ओणिअत्त वि [अपनिवृत्त] पीछे हटा हुआ, वापिस आया हुआ (से ५, ५८) ।

ओणिमिल्ल वि [अवनिमीलित] मुद्रित, मूँदा हुआ (से ६, ८७; १३, ८२) ।

ओणियट्ट देखो ओनियट्ट (पि ३३३) ।

ओणियव्व पुं [दे] वल्मीक, चीटियों का खुदा हुआ मिट्टी का ढेर (दे १, १५१) ।

ओणीवी स्त्री [दे] नीवी, कटि-सूत्र (दे १, १५०) ।

ओणुणअ वि [दे] अभिभूत, पराभूत (दे १, १५८) ।

ओण्णिद्द न [औन्निद्र्य] निद्रा का अभाव; 'ओण्णिद्दं दोब्बल्लं' (काप्र ८५; दे १, ११७) ।

ओण्णिय वि [और्णिक] ऊन का बना हुआ, ऊर्ण-निर्मित (कस) ।

ओणेज्ज वि [उपनेय] सांचे में ढाल कर बना हुआ फूल आदि, सांचे से बनता मोम का पुतला; 'आउट्टिमउक्किन्नं ओणणे (? णे) ज्जं पीलिमं च रंगं च' (दसनि २, १७) ।

ओत्तलहअ पुं [दे] विटप (दे १, ११९) ।

ओत्ताण देखो उत्ताण (विक्र २८) ।

ओत्थ सक [स्थग्] ढकना । ओत्थइ (प्राकृ ६५) ।

ओत्थअ वि [अवस्तृत] १ फैला हुआ, प्रसृत (से २, ३) । २ आच्छादित, पिहित; 'समंतओ अत्थयं गयणं' (आवम; दे १, १५१; स ७७, ३७९) ।

ओत्थअ वि [दे] अवसन्न, खिन्न (दे १, १५१) ।

ओत्थइअ देखो ओच्छइय (गा ५६६; से ८, ६२; स ५७६) ।

ओत्थर देखो ओच्छर । ओत्थरइ (पि ५०५; नाट) ।

ओत्थर पुं [दे] उत्साह (दे १, १५०) ।

ओत्थरण न [अवस्तरण] बिछौना (पउम ४६, ८४) ।

ओत्थरिअ वि [अवस्तृत] १ बिछाया हुआ । २ व्याप्त (से ७, ४७) ।

ओत्थरिअ वि [दे] १ आक्रान्त । २ जो आक्रमण करता हो वह (दे १, १६६) ।

ओत्थल्ल देखो उत्थल्ल = उत् + स्तृ । ओत्थल्लइ (प्राकृ ७५) ।

ओत्थल्लपत्थल्ला देखो उत्थल्लपत्थल्ला (दे १, १२२) ।

ओत्थाडिय वि [अवस्तृत] बिछाया हुआ (भवि) ।

ओत्थार सक [अव + स्तारय्] आच्छादित करना । कर्म. ओत्थारिज्जंति (स ६६८) ।

ओदइग देखो ओदइय (अज्झ १३६) ।

ओदइय पुंन [औदयिक] १ उदय, कर्म-विपाक (भग ७, १४; विसे २१७४) । २ वि. उदय निष्पन्न (विसे २१७४; सूअ १, १३) । ३ पुं. कर्मोदय रूप भाव; 'कम्मोदयसहावो सव्वो असुहो सुहो य ओदइओ' (विसे ३४९४) । ४ त्रि. उदय होने पर होनेवाला (विसे २१७४) ।

ओदच्च न [औदात्य] उदात्तता, श्रेष्ठता (प्राकृ) ।

ओदज्ज न [औदार्य] उदारता (प्राकृ) ।

ओदण न [ओदन] भात, रींधा हुआ चावल (पण्ह २, ५; ओघ ७१४; चारु १) ।

ओदरिय वि [औदरिक] पेट-भरा, पेट भरने के लिए ही जो साधु हुआ हो वह (निचू १) ।

ओदहण न [अवदहन] तप्त किए हुए लोहे के कोश वगैरह से दागना (राज) ।

ओदारिय न [औदार्य] उदारता (प्राकृ) ।

ओद्द वि [आर्द्र] गीला (प्राकृ २०) ।

ओद्दंपिअ वि [दे] १ आक्रान्त । २ नष्ट (दे १, १७१) ।

ओद्धंस सक [अव + ध्वंस्] १ गिराना । २ हटाना । ३ हराना । कवकृ. 'परवाईहिं अणोक्कंता अण्णउत्थिएहिं अणोद्धंसिज्जमाणा विहरंति' (औप) ।

ओधाव सक [अव + धाव्] पीछे दौड़ना । ओधावइ (महा) ।

ओधुण देखो अवधुण । कर्म. ओधुव्वंति (पि ५३६) । संकृ. ओधुणिअ (पि ५९१) ।

ओधूअ वि [अवधूत] कम्पित (नाट) ।

ओधूसरिअ वि [अवधूसरित] धूसर रंग-वाला, हलका पीला रंगवाला (से १०, २१) ।

ओनडिय वि [अवनटित] अवगणित, तिरस्कृत; 'चंदुओनडियअरुणपहं' (सम्मत्त २१४) ।

ओनियट्ट वि [अवनिवृत्त] देखो ओणिअत्त = अपनिवृत्त (कप्प) ।

ओपल्ल वि [दे] अपदीर्ण, कुण्ठित; 'तते णं से तेतलिपुत्ते नीलुप्पल जाव असिं खंधे ओहरति, तत्थवि य से धारा ओपल्ला' (णाया १, १४) ।

ओप्प वि [दे] मृष्ट, ओप दिया हुआ (षड्) ।

ओप्प सक [अर्पय्] अर्पण करना । ओप्पेइ (हे १, ६३) ।

ओप्पा स्त्री [दे] शाण आदि पर मणि वगैरह का घर्षण करना (दे १, १४८) ।

ओप्पाइय वि [औत्पातिक] उत्पात-सम्बन्धी (औप) ।

ओप्पिअ वि [अर्पित] समर्पित (हे १, ६३) ।

ओप्पिअ वि [दे] शाण पर घिसा हुआ, 'णिवमउडोप्पिअपयणह' (दे १, १४८) ।

ओप्पील पुं [दे] समूह, जत्था (पाअ) ।

ओप्पुंसिअ, **ओप्पुसिअ** } देखो उप्पुसिअ (गउड; पि ४८६) ।

ओबद्ध वि [अवबद्ध] १ बँधा हुआ । २ अवसन्न (वव १) ।

ओबुज्झ सक [अव + बुध्] जानना । वकृ. ओबुज्झमाण (आचा) ।

ओब्भालण देखो उब्भालण (दे १, १०३) ।

ओभग्ग वि [अवभग्न] भग्न, नष्ट (से ३, ६३; १०, २८) ।

ओभावणा स्त्री [अपभ्राजना] लोक-निन्दा, अपकीर्त्ति (राज) ।

ओभास अक [अव + भास्] प्रकाशना, चमकना । वकृ ओभासमाण (भग ११, ९) । प्रयो. ओभासेइ (भग) ओभासंति, ओभासेंति (सुज १९) कृ. ओभासमाण (सूअ १, १४) ।

ओभास सक [अव + भाष्] याचना करना, मांगना । कवकृ. ओभासिज्जमाण (निचू २) ।

ओभास पुं [अवभास] १ प्रकाश (औप) । २ महाग्रह-विशेष (ठा २, ३) ।

ओभासण न [अवभासन] १ प्रकाशन, उद्योतन (भग ८, ८) । २ आविर्भाव । ३ प्राप्ति (सूअ १, १२) ।

ओभासण न [अवभाषण] याचना, प्रार्थना (वव ८) ।

ओभासिय वि [अवभाषित] १ याचित, प्रार्थित (वव ६) । २ न. याचना, प्रार्थना (बृह १) ।

ओभुग्ग वि [अवभुग्न] वक्र, बाँका; (णाया १, ८—पत्र १३३) ।

ओमोडिय वि [अवमुक्त] छुड़ाया हुआ, रहित किया हुआ; 'तेणवि कड्ढिऊणालक्खं पिव सूई-ओमोडिओ नियकुक्कुडो' (महा) ।

ओम वि [अवम] असार, निस्सार (आचा २, ५, २, १) ।

ओम वि [अवम] १ कम, न्यून, हीन (आचा) । २ लघु, छोटा (ओघ २२३ भा) । ३ न. दुर्भिक्ष, अकाल (ओघ १३ भा) । °**कोट्ठ** वि [°कोष्ठ] ऊनोदर, जिसने कम खाया हो वह (ठा ४) । °**चेलग**, °**चेलय** त्रि [°चेलक] जीर्ण और मलिन वस्त्र धारण करनेवाला (उत्त १२; आचा) । °**रत्त** पुं [°रात्र] १ दिन-क्षय, ज्योतिष की गिनती के अनुसार जिस तिथि का क्षय होता है वह (ठा ६) । २ अहोरात्र, रात-दिन (ओघ २८५) ।

ओमइल्ल वि [अवमलिन] मलिन, मैला (से २, २५) ।

ओमंथ [दे] देखो ओमत्थ (पाअ) ।

ओमंथिय वि [दे] अधोमुख किया हुआ, नमाया हुआ (णाया १, १) ।

ओमंथिय वि [अवमस्तिक] शीर्षासन से स्थित, नीचे मस्तक और ऊँचे पैर रखकर स्थित (णंदि १२८ टी) ।

ओमंस वि [दे] अपसृत, अपगत (षड्) ।

ओमज्जण न [अवमज्जन] स्नान-क्रिया (उप ६४८ टी) ।

ओमज्जायण पुं [अवमज्जायन] ऋषि-विशेष (जं ७; इक) ।

ओमज्जिअ वि [अवमार्जित] जिसको स्पर्श कराया गया हो वह, स्पर्शित (स ५६७) ।

ओमट्ठ वि [अवमृष्ट] स्पृष्ट, छुआ हुआ (से ५, २१) ।

ओमत्थ वि [दे] नत, अधोमुख (पात्र)।

ओमत्थिय [दे] देखो **ओमंथिय** (ओघ ३८६)।

ओमल्ल न [निर्माल्य] निर्माल्य, देवोच्छिष्ट द्रव्य (षड्)।

ओमल्ल वि [दे] घनीभूत; कठिन, जमा हुआ (षड्)।

ओमाण पुं [अपमान] अपमान, तिरस्कार (उत्त २६)।

ओमाण न [अवमान] १ जिससे क्षेत्र वगैरह का माप किया जाता है वह, हस्त, दण्ड वगैरह मान (ठा २, ४)। २ जिसका माप किया जाता है वह क्षेत्रादि (अणु)।

ओमाणण न [अवमानन, अप॰] अपमान, तिरस्कार (स ६६७)।

ओमाय वि [अवमित] परिमित, मापा हुआ (सुज्ज ६)।

ओमाल देखो **ओमल्ल** = निर्माल्य (हे १, ३८; कुमा; वज्जा ८८)।

ओमाल अक [उप + मालू] १ शोभना, शोभित होना। २ सक. सेवा करना, पूजना। संकृ. **ओमालिवि** (भवि)। कवकृ. 'अहवावि भत्तिपणमंततियसवहूसीसकुसुमदामेहिं। ओमालिज्जंतकमो, नियमा तित्थाहिवो होइ' (उप ९८६ टी)।

ओमालिअ देखो **ओमल्ल** = निर्माल्य (प्राकृ ३४)।

ओमालिअ वि [उपमालित] १ शोभित। २ पूजित, अर्चित (भवि)।

ओमालिआ स्त्री [अवमालिका] चिमड़ी या मुरझाई हुई माला (गा १६४)।

ओमास पुं [अवमर्श] स्पर्श (से ६, ६७)।

ओमिण सक [अव + मा] मापना, मान करना। कर्म. ओमिणिज्जइ (अणु)।

ओमिणण न [दे] प्रोंखनक, विवाह की एक रीति, वर के लिये सासू की ओर से किया हुआ न्योछावर (पंचा ८,२५)।

ओमिय वि [अवमित] परिच्छिन्न, परिमित (सुज्ज ६)।

ओमील अक [अव + मील्] मुद्रित होना, बन्द होना। वकृ. **ओमीलंत** (से ३, १)।

ओमीस वि [अवमिश्र] १ मिश्रित। २ समीपस्थ। ३ न. सामीप्य, समीपता;
'सुचिरंपि अच्छमाणो,
नेरुलिओ कायमणियओमीसे।
न उवेइ कायभावं,
पाहन्नगुणेण नियएण।'
(ओघ ७७२)।

ओमुक्क वि [अवमुक्त] परित्यक्त (सम्मत्त १५६)।

ओमुग्ग देखो **उम्मुग्ग** (पि १०४; २३४)।

ओमुच्छिअ वि [अवमूर्च्छित] महा-मूर्छा को प्राप्त (पउम ७, १५८)।

ओमुद्धग वि [अवमूर्धक] अधोमुख, 'ओमुद्धगा धरणियले पडंति' (सूअ १, ५)।

ओमुय सक [अव + मुच्] पहनना। ओमुयइ (कप्प)। वकृ. **ओमुयंत** (कप्प)। संकृ. **ओमुइत्ता** (कप्प)।

ओमोय पुं [ओमोक] आभरण, आभूषण (भग ११, ११)।

ओमोयर वि [अवमोदर] भूख की अपेक्षा न्यून भोजन करनेवाला (उत्त ३०)।

ओमोयरिय न [अवमोदरिक] १ न्यून भोजनत्व, तप-विशेष (आचा)। २ दुर्भिक्ष, अकाल (ओघ ७)।

ओमोयरिया स्त्री [अवमोदरिता, ॰रिका] न्यून भोजन रूप तप (ठा ६)।

ओम्माय पुं [उन्माद] उन्मत्तता (संबोध २१)।

ओय न [ओजस्] १ विषम संख्या, जैसे एक, तीन, पाँच आदि (पिंड ६२६)। २ आहार-विशेष, अपनी उत्पत्ति के समय जीव प्रथम जो आहार लेता है वह (सूअनि १७१)।

ओय वि [ओकस्] गृह, घर (वव ५)।

ओय वि [ओज] १ एक, असहाय (सूअ १, ४, २, १)। २ मध्यस्थ, तटस्थ, उदासीन (बृह १)। ३ पुं. विषम राशि (भग २५,३)।

ओय न [ओजस्] १ बल (आचा)। २ प्रकाश, तेज (चंद ५)। ३ उत्पत्ति-स्थान में आहृत पुद्गलों का समूह (पण्ण ८; संग १८२)। ४ आर्तव, ऋतु-धर्म (ठा ३, ३)।

ओयंसि वि [ओजस्विन्] १ बलवान्। २ तेजस्वी (सम १५२; औप)।

ओयट्टण न [अपवर्त्तन] पीछे हटना, वापिस लौटना (उप ७६०)।

ओयड्ढ सक [अप + कृष्] खींचना। कवकृ. **ओयड्ढियंत** (पउम ७१, २६)।

ओयड्ढिया } स्त्री [दे] ओढ़नी, ओढ़ने
ओयड्ढी } का वस्त्र, चादर, दुपट्टा (मुख २, ३०)।

ओयण देखो **ओदण** (पउम ६६, १६)।

ओयत्त वि [अववृत्त] अवनत, अधोमुख (पात्र)।

ओयत्त सक [अप + वर्तय्] उलटाना, खाली करने के लिए नमाना। संकृ. **ओयत्तियाणं** (आचा २, १, ७, ५)।

ओयत्तण न [अपवर्तन] खिसकाना, हटाना (पिंड ५६३)।

ओयविय वि [दे] परिकर्मित (पण्ह १, ४; औप)।

ओया स्त्री [ओजस्] शक्ति, सामर्थ्य (णाया १, १०—पत्र १७०)।

ओया स्त्री [ओजस्] १ प्रकाश (सुज्ज ६)। २ माता का शुक्र-शोणित (तंदु १०)।

ओयाइअ देखो **उवयाइय** (सुपा ६२५; दे ४, २२)।

ओयाय वि [उपयात] उपागत, समीप पहुँचा हुआ (णाया १, ६; निर १, १)।

ओयार सक [अव + तारय्] नीचे उतारना। संकृ. **ओयारिया** (दस ५, १, ६३)।

ओयार पुं [अवतार] घाट, तीर्थ (चेइय ५१८)।

ओयारग वि [अवतारक] १ उतारनेवाला। २ प्रवृत्ति करनेवाला (सम १०६)।

ओयारण देखो **उयारण** (कुप्र ७१)।

ओयावइत्ता अ [ओजयित्वा] १ बल दिखा कर। २ चमत्कार दिखा कर। ३ विद्या आदि का सामर्थ्य दिखा कर (जो दीक्षा दी जाय वह) (ठा ४)।

ओर वि [दे] १ चारु, सुन्दर (दे १,१४६)। २ समीप (दश॰ अग॰ चू॰, आख्या॰ कोश. पत्र ८७ गा॰ ६)।

ओरंपिअ वि [दे] १ आक्रान्त। २ नष्ट (दे १, १७१)।

ओरंपिअ वि [दे] पतला किया हुआ, छिला हुआ (पात्र)।

ओरत्त वि [दे] १ गर्विष्ठ, अभिमानी। २ कुसुम्भ से रक्त। ३ विदारित, काटा हुआ (दे १, १६५; पाअ)।

ओरद्ध देखो **अवरद्ध** = अपराद्ध (प्राकृ ५०)।

ओरम अक [उप + रम्] निवृत्त होना। ओरम (सूअ १, २, १, १०)।

ओरल्ली स्त्री [दे] लम्बा और मधुर आवाज (दे १, १५४; पाअ)।

ओरस सक [अव + तृ] नीचे उतरना। ओरसइ (हे ४, ८५)।

ओरस वि [उपरस] स्नेह-युक्त, अनुरागी (ठा १०)।

ओरस वि [औरस] १ स्वोत्पादित पुत्र, स्व-पुत्र (ठा १०)। २ औरस्य, हृदयोत्पन्न (जीव ३)।

ओरसिअ वि [अवतीर्ण] उतरा हुआ (कुमा)।

ओरस्स वि [औरस्य] हृदयोत्पन्न, आभ्यन्तरिक (प्राकृ)।

ओराल देखो **उराल** = उदार (ठा ४; १० जीव १)।

ओराल देखो उराल (दे) (चंद १)।

ओराल न [औदार] नीचे देखो (विसे ६३१)।

ओरालिय न [औदारिक] १ शरीर विशेष, मनुष्य और पशुओं का शरीर (औप)। २ वि. शोभायमान, शोभा वाला (पाअ)। ३ औदारिक शरीर वाला (विसे ३७५)। °**णाम** न [°नामन्] औदारिक शरीर का हेतुभूत कर्म (कम्म)।

ओरालिय वि [दे] १ व्याप्त। २ उपलिप्त; 'दिट्ठोरुहिरोरालियसिरो' (सुख १, १३)।

ओरालिय वि [दे] १ पोंछा हुआ; 'मुहि करयलु देवि पुणु ओरालिउ मुहकमलु' (भवि)। २ फैलाया हुआ, प्रसारित; 'दसदिसि वहकयंबु ओरालिओ' (भवि)।

ओराली देखो **ओरल्ली** (सुर ११, ८६)।

ओरिंकिय न [अवरिङ्कित] महिष की आवाज, 'कत्थइ महिसोरिंकिय कत्थइ डुहुडुहुडुहुहंतनइ-सलिलं' (पउम ६४, ४३)।

ओरिल्ल पुं [दे] लम्बा काल, दीर्घ काल (दे १, १५५)।

ओरी [दे] समीप (आख्या० कोष. पत्र—८५ गा० १५)।

ओरुंज न [दे] क्रीडा-विशेष (दे १, १५६)।

ओरुंभिय वि [उपरुद्ध] आवृत्त, आच्छादित (गा ६१४)

ओरुण्ण वि [अवरुदित] रोया हुआ (गा ५३८)।

ओरुद्ध वि [अवरुद्ध] रुका हुआ, बन्द किया हुआ (गा ८००)।

ओरुभ सक [अव + रुह्] उतरना। वकृ. **ओरुभमाण** (कस)।

ओरुम्मा अक [उद् + वा] सूखना, सूख जाना। ओरुम्माइ (हे ४, ११)।

ओरुह देखो **ओरुभ**। वकृ. **ओरुहमाण** (संथा ६३; कस)।

ओरुहण न [अवरोहण] नीचे उतरना (पउम २६, ५५; विसे १२०८)।

ओरूहण न [अवरोहण] नीचे उतारना, अवतारण (पव १५५)।

ओरोध देखो **ओरोह** = अवरोध (विपा १, ६)।

ओरोह देखो **ओरुभ**। वकृ. **ओरोहमाण** (कस; ठा ५)।

ओरोह पुं [अवरोध] १ अन्तःपुर, जनानखाना (औप)। २ अन्तःपुर की स्त्री (सुर १, १४३)। ३ नगर के दरवाजा का अवान्तर द्वार (णाया १, १; औप)। ४ संघात, समूह (राज)।

ओलअ पुं [दे] १ श्येन पक्षी, बाज पक्षी। २ अपलाप, निह्नव (दे १, १६०)।

ओलअणी स्त्री [दे] नवोढा, दुलहिन (दे १, १६०)।

ओलइअ वि [दे. अवलगित] १ शरीर में सटा हुआ, परिहित (दे १ १६२; पाअ)। २ लगा हुआ (से १, १६२)।

ओलइणी स्त्री [दे] प्रिया, स्त्री (दे १, १६०)।

ओलंड सक [उत् + लङ्घ्] उल्लंघन करना। ओलंडेंति (णाया १, १—पत्र ६१)।

ओलंब देखो **अवलंब** = अव+लम्ब्। संकृ. **ओलंबिऊण** (महा)।

ओलंब पुं [अवलम्ब] नीचे लटकना (औप; स्वप्न ७३)।

ओलंबण न [अवलम्बन] सहारा, आश्रय। °**दीव** पुं [°दीप] शृङ्खला-बद्ध दीपक (राज)।

ओलंबिय वि [अवलम्बित] आश्रित, जिसका सहारा लिया गया हो वह (निचू १)। २ लटकाया हुआ (औप)।

ओलंबिय वि [उल्लंबित] लटकाया हुआ (सूअ २, २ औप)।

ओलंभ पुं [उपालम्भ] उलाहना, 'अप्पोलंभ-णिमित्तं पढमस्स णायज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते त्ति बेमि' (णाया १, १)।

ओलक्खिअ वि [उपलक्षित] पहिचाना हुआ (पउम १३, ४२; सुपा २५४)।

ओलग्गि (अप) देखो **ओलग्गि** (सिरि ५२४)।

ओलग्ग सक [अव + लग्] १ पीछे लगना। २ सेवा करना। ओलग्गंति (पि ४८८)। हेकृ. **ओलग्गिउं** (सुपा २३४; महा)। प्रयो., संकृ. **ओलग्गाविवि** (सण)।

ओलग्ग वि [अवरुग्ण] १ ग्लान, बीमार। २ दुर्बल, निर्बल (णाया १, १—पत्र २८ टी; विपा १, २)।

ओलग्ग वि [अवलग्न] पीछे लगा हुआ, अनुलग्न (महा)।

ओलग्ग [दे] देखो **ओलुग्ग** (दे १, १६४)।

ओलग्गा स्त्री [दे] सेवा, भक्ति, चाकरी; 'करेउ देवो पसायं मम ओलग्गाए' (स ६३६); 'ओलग्गाए वेलत्ति जंपिउं निग्गओ खुज्जो' (धम्म ८ टी)।

ओलग्गि वि [अवलागिन्] सेवा करने-वाला। स्त्री-°णी (रंभा)।

ओलग्गिअ वि [अवलग्न] सेवित (वज्जा ३२)।

ओलावअ पुं [दे] श्येन, बाज पक्षी (दे १, १६०; स २१३)।

ओलि देखो **ओली** = आली (हे १, ८३)।

ओलिंदअ पुं [अलिन्दक] बाहर के दरवाजे का प्रकोष्ठ (गा २५४)।

ओलिंप सक [दे] खोलना। कवकृ. '**ओलिंप-** [?लिप्प] **माणे** वि तहा तहेव काया कवाडम्मिविभासियव्वा' (पिंड ३५४)।

ओलिंप सक [अव + लिप्] लीपना, लेप लगाना। वकृ. **ओलिंपमाण** (राज)।

ओलिंभा स्त्री [दे] उपदेहिका, दीमक (दे १, १५३; गउड)।

ओलिज्झमाण देखो ओलिह।

ओलित्त वि [अवलिप्त, उपलिप्त] लीपा हुआ, कृतलेप (पण्ह १, ३; उवा; पाअ; दे १, १५८; औप)।

ओलित्ती स्त्री [दे] खड्ग आदि का एक दोष (दे १, १५६)।

ओलिप्प न [दे] हास, हँसी (दे १, १५३)।

ओलिप्पंती स्त्री [दे] खड्ग आदि का एक दोष (दे १. १५६)।

ओलिह सक [अव + लिह्] आस्वादन करना। कवकृ. ओलिज्झमाण (कप्प)।

ओली सक [अव + ली] १ आगमन करना। २ नीचे आना। ३ पीछे आना। 'नीयं च काया ओलिंति' (विसे २०६४)।

ओली स्त्री [आली] पंक्ति, श्रेणी (कुमा)।

ओली स्त्री [दे] कुल-परिपाटी, कुलाचार (दे १, १४८)।

ओलुंकी स्त्री [दे] बालकों की एक प्रकार की क्रीड़ा (दे १, १५३)।

ओलुंड सक [वि + रेचय्] झरना, टपकना, बाहर निकालना। ओलुंडइ (हे ४, २६)।

ओलुंडिर वि [विरेचयितृ] झरनेवाला (कुमा)।

ओलुंप पुं [अवलोप] मसलना, मर्दन करना (गउड)।

ओलुंपअ पुं [दे] तापिका-हस्त, तवा का हाथा (दे १, १६३)।

ओलुग्ग वि [अवरुग्ण] १ रोगी, बीमार (पाअ)। २ भग्न, नष्ट (पण्ह १, १); 'सुक्का भुक्खा निम्मंसा ओलुग्गा ओलुग्ग-सरीरा' (निर १, १)।

ओलुग्ग वि [दे] १ सेवक, नौकर। २ निस्तेज, निर्बल, बल-हीन (दे १, १६४)। ३ निश्छाय, निस्तेज (सुर २, १०२; दे १, १६४; स ४६६; ५०४)।

ओलुग्गाविय वि [दे] १ बीमार। २ विरह, पीड़ित (वज्जा ८६)।

ओलुट्ट वि [दे] १ असंघटमान, असंगत। २ मिथ्या, असत्य (दे १, १६४)।

ओलेहड वि [दे] १ अन्यासक्त। २ तृष्णा-पर। ३ प्रवृद्ध (दे १, १७२)।

ओलोअ देखो अवलोअ। वकृ. ओलोअंत, ओलोएमाण (मा ५; णाया १, १६; १, १)।

ओलोट्ट सक [अप + लुठ्] पीछे लौटना। वकृ. ओलोट्टमाण (राज)।

ओलोयण न [अवलोकन] १ देखना। २ दृष्टि, नजर (उप पृ १२७)।

ओलोयण न [अवलोकन] गवाक्ष, 'दिट्ठा अन्नया तेण ओलोयणगएण' (सुख २, ६)।

ओलोयणा स्त्री [अवलोकना] १ देखना। २ गवेषणा, खोज (वव ४)।

ओल्ल पुं [दे] १ पति, स्वामी। २ दण्ड-प्रतिनिधि पुरुष, राजपुरुष-विशेष (पिंग)।

ओल्ल देखो उल्ल = आर्द्र (हे, १, ८२; काप्र १७२)।

ओल्ल देखो उल्ल = आर्द्रय्। ओल्लेइ (पि १११)। वकृ. ओल्लंत (से १३, ६६)। कवकृ. ओल्लिज्जंत (गा ६२१);

ओल्लट्टण पुं [अवलट्टन] एक नरक-स्थान (देवेन्द्र २८)।

ओल्लण न [आर्द्रयण] गीला करना, भिजाना (पि १११)।

ओल्लणी स्त्री [दे] मार्जिता, इलायची, दाल-चीनी आदि मसाला से संस्कृत दधि (दे १, १५४)।

ओल्लरण न [दे] स्वाप, सोना (दे १, १६३)।

ओल्लरिअ वि [दे] सुप्त, सोया हुआ (दे १६३; सुपा ३१२)।

ओल्लविद (शौ) नीचे देखो (पि १११; मृच्छ १०५)।

ओल्लिअ वि [आर्द्रित] आर्द्र किया हुआ (गा ३३०; सण)।

ओल्ली स्त्री [दे] पनक, काई; गुजराती में 'ऊल' (चेइय ३७३)।

ओल्हव सक [वि + ध्यापय्] बुझाना। ठंढा करना। कवकृ. ओल्हविज्जंत (स ३६२)। कृ. ओल्हवेयव्व (स ३६२)।

ओल्हविअ वि [दे] देखो उल्हविय (सुर १०, १४६)।

ओव न [दे] हाथी वगैरह को बाँधने के लिए किया हुआ गर्त्त (दे १, १४६)।

ओवअण न [अवपतन] नीचे गिरना, अधः पात (से ६, ७७; १३, २२)।

ओवइणी स्त्री [अवपातिनी] विद्या-विशेष, जिसके प्रभाव से स्वयं नीचे आता है या दूसरे को नीचे उतारता है (सूअ २, २)।

ओवइय वि [अवपतित] १ अवतीर्ण, नीचे आया हुआ (से ६, २८; औप)। २ आ पड़ा हुआ, आ डटा हुआ (से ६, २६)। ३ न. पतन (औप)।

ओवइय पुंस्त्री [दे] तीन इन्द्रियवाला एक क्षुद्र जन्तु; 'से किं तं तेइंदिया ? तेइंदिया अणे-गविहा पण्णत्ता, तं जहा:—ओवइया रोहि-णीया हत्थिसोंडा' (जीव १)।

ओवइय वि [औपचयिक] उपचित, परिपुष्ट (राज)।

ओवगारिय वि [औपकारिक] उपकार करने वाला (भग १३, ६)।

ओवगारिय वि [औपकारिक] उपकार के निमित्त का, उपकारार्थक (देवेन्द्र ३०६)।

ओवग्ग सक [अप + क्रम्] १ व्याप्त करना। २ ढकना, आच्छादन करना। ओवग्गइ, ओवग्गउ (से ४, २५, ३, ११)।

ओवग्ग सक [उप + वल्ग्, आ + क्रम्] १ आक्रमण करना। २ पराभव करना। ओवग्गइ (भवि)। संकृ. ओवग्गिवि (भवि)।

ओवग्गहिय वि [औपग्रहिक] जैन साधुओं के एक प्रकार का उपकरण, जो कारण-विशेष से थोड़े समय के लिए लिया जाता है (पव ६०)।

ओवग्गिअ वि [दे. उपवल्गित] १ अभिभूत १ आक्रान्त (से ६, ३०; पाअ; सुर १३, ४२)।

ओवघाइय वि [औपघातिक] उपघात करने वाला, पीड़ा उत्पन्न करनेवाला; 'सुयं वा जइ वा दिट्ठं न लविज्जोवघाइयं' (दस ८)।

ओवच्च सक [उप + व्रज्] पास जाना, 'सुहाए ओवच्च वासहरं' (भवि)।

ओवट्ट अक [अप + वृत्] १ पीछे हटना। २ कम होना, ह्रास-प्राप्त होना। वकृ. ओवट्टंत (उप ७६२)।

ओवट्ट पुं [अपवर्त्त] १ ह्रास, हानि। २ भागाकार, (विसे २०६२)।

ओवट्टण न [अपवर्त्तन] ह्रास, कमी (श्रावक २१६)।

ओवट्टणा स्त्री [अपवर्त्तना] भागाकार, भाग-हरण (राज)।

ओवट्टिअ न [दे] चाटु, खुशामद (दे १, १६२)।

ओवट्ठ वि [अववृष्ट] बरसा हुआ, जिसने वृष्टि की हो वह (से ६, ३४)।

ओवट्ठ पुं [दे· अववर्ष] १ वृष्टि, बारिश (से ६, २५)। २ मेघ-जल का सिञ्चन (दे १, १५२)।

ओवट्ठिइअ वि [औपस्थितिक] उपस्थिति के योग्य, नौकर (प्रयौ ११)।

ओवड अक [अव + पत्] गिरना, नीचे पड़ना। वकृ· **ओवडंत** (से १३, २८)।

ओवडण न [अवपतन] १ अधःपात। २ झम्पा-पात (से २, ३२)।

ओवड्ढ वि [उपार्ध] आधे के करीब। **°ोमोयरिया** स्त्री [°वमोदरिका] बारह कवल का ही आहार करना, तप-विशेष (भग-७, १)।

ओवड्ढि वि [अपवृद्धि] ह्रास (निचू २०)।

ओवड्ढा स्त्री [दे] ओढ़नी का एक भाग (दे १, १५१)।

ओवण न [उपवन] बगीचा, आराम (कुमा)।

ओवणिहिय पुं [औपनिहित, औपनिधिक] भिक्षाचर विशेष; समीपस्थ भिक्षा को लेनेवाला साधु (ठा ५; औप)।

ओवणिहिया स्त्री [औपनिधिकी] आनुपूर्वी-विशेष, अनुक्रम-विशेष (औप)।

ओवत्त सक [अप + वर्त्तय्] १ उलटा करना। २ फिराना, घुमाना। ३ फेंकना। संकृ· **ओवत्तिय** (दस ५)। कृ. **ओवत्तेअव्व** (से १०, ५०)।

ओवत्त वि [अपवृत्त] फिराया हुआ (से ६, ६१)।

ओवत्तिय वि [अपवर्त्तित] १ घुमाया हुआ। २ क्षिप्त (णाया १, १—पत्र ४७)।

ओवत्थाणिय वि [औपस्थानिक] सभा का कार्य करनेवाला नौकर। स्त्री· **°या** (भग ११, ११)।

ओवम देखो **ओवम्म**; 'इंदियपच्चक्खं पिय अणुमाए ओवमं च सद्दगाणं' (जीवस १४२)।

ओवमिय वि [औपमिक] उपमा-सम्बन्धी (अणु)।

ओवमिय, ओवम्म न [औपम्य] १ उपमा (ठा ८; अणु)। २ उपमान, प्रमाण (सूअ १, १०)।

ओवय सक [अव + पत्] १ नीचे उतरना। २ आ पड़ना। वकृ. **ओयवंत, ओवयमाण** कप्प; स ३७०; पि ३९७; णाया १, १ ९)।

ओवयण न [दे. अवपदन] प्रोङ्खणक, चुमना (णाया १, १—पत्र ३९)।

ओवयण न [अवपतन] अवतरण, नीचे उतरना (भग ३, २—पत्र १७७)।

ओवयाइयय वि [औपयाचितक] मनौती से प्राप्त किया हुआ, मनौती से मिला हुआ (ठा १०)।

ओवयारिय वि [औपचारिक] उपचार-संबन्धी (पंचा ६; पुप्फ ४०६)।

ओवर पुं [दे] निकर, समूह (दे १, १५७)।

ओववाइय वि [औपपातिक] १ जिसकी उत्पत्ति होती हो वह (पंच १)। १ पुं. संसारी, प्राणी (आचा)। ३ देव या नारक-जीव (दस ४)। ४ न. देव या नारक जीव का शरीर (पंच १)। ५ जैन आगम-ग्रन्थ विशेष, औप-पातिक सूत्र (औप)।

ओववाइय वि [औपपातिक] एक जन्म से दूसरे जन्म में जानेवाला (सूअ १, १, ११)।

ओवसग्गिय वि [औपसर्गिक] १ उपसर्ग से संबन्ध रखनेवाला, उपद्रव—समर्थ रोगादि। २ शब्द-विशेष, प्र, परा आदि अव्यय रूप शब्द (अणु)।

ओवसमिअ पुंन [औपशमिक] १ उपशम। २ वि. उपशम से उत्पन्न। ३ उपशम होने पर होनेवाला (विसे २१७४)।

ओवसेर न [दे] १ चन्दन, सुगन्धि काष्ठ-विशेष। २ वि. रति-योग्य (दे १, १७३)।

ओवस्सय देखो **उवस्सय**; 'घट्टिज्जइ ओवस्सय-तणयं तेणाइरक्खट्ठा' (पव ८१)।

ओवह सक [अव + वह्] १ बह जाना, बह चलना। २ डूबना। कवकृ. **ओवुब्भमाण** (कस)।

ओवहारिअ वि [औपहारिक] उपहार-संबन्धी (विक ७५)।

ओवहिय वि [औपधिक] माया से गुप्त विचरनेवाला (णाया १, २)।

ओवाअअ पुं [दे] आपातप, जल-समूह की गरमी (षड्)।

ओवाइय देखो **ओववाइय** (राज)।

ओवाइय देखो **उवयाइय** (सुपा ११३)।

ओवाइय वि [आवपातिक] सेवा करनेवाला (ठा १०)।

ओवाडण न [अवपाटन] विदारण, नाश (ठा २, ४)।

ओवाडिय वि [अवपाटित] विदारित (औप)।

ओवाय सक [उप + याच्] मनौती करना। वकृ. **ओवायंत, ओवाइयमाण** (सुर १३, २०९; णाया १, ८—पत्र १३४)।

ओवाय पुं [अवपात] १ सेवा, भक्ति (ठा ३, २; औप)। २ गर्त्त, गड्ढा (पण्ह १, १)। ३ नीचे गिरना (पण्ह १, ४)।

ओवाय वि [औपाय] उपाय-जन्य, उपाय-संबन्धी (उत्त १, २८)।

ओवार सक [अप + वारय्] आच्छादन करना, ढकना। संकृ. **ओवारिअ** (अभि २१३)।

ओवारि न [दे] धान्य भरने का एक प्रकार का लम्बा कोठा, गोदाम (राज)।

ओवारिअ वि [दे] ढेर किया हुआ, राशि-कृत (स ४८७; ४८)।

ओवारिअ वि [अपवारित] आच्छादित, ढका हुआ (मै ६१)।

ओवास अक [अव + काश्] शोभना, विराजना। ओवासइ (प्राप)।

ओवास अक [अव + काश्] अवकाश पाना, जगह मिलना। ओवासइ (प्राप्र; कुमा ७, २३; प्राकृ ६६)।

ओवास पुं [अवकाश] अवकाश, खाली जगह (पाअ; प्राप्र; से १, ५४)।

ओवास पुं [उपवास] उपवास, भोजनाभाव (पउम ४२, ८९)।

ओवासंतर पुंन [अवकाशान्तर] आकाश, गगन (भग २०, २—पत्र ७७६)।

ओवाह सक [अव + गाह्] अवगाहना। ओवाहइ (प्राप्र)।

ओवाहिअ वि [अपवाहित] १ नीचे गिराया हुवा (से ६, ६६; १३, ७२)। २ घुमाकर नीचे डाला हुआ (से ७, ५५)।

ओविअ वि [दे] १ आरोपित, अध्यासित। २ मुक्त, परित्यक्त। ३ हृत, छीना हुआ। ४ न. खुशामद। ५ रुदित, रोदन (दे १, १६७)। ६ वि. परिकर्मित, संस्कारित (कप्प)। ७ खचित, व्याप्त (आवम)। ८ उज्ज्वालित, प्रकाशित (णाया १, १६)। ६ विभूषित, शृंगारित (प्राप)। देखो **उविय**।

ओविद्ध वि [अपविद्ध] १ प्रेरित, आहत (से ७,१२)। २ नीचे गिराया हुआ (से १३, २६)।

ओवील सक [अव + पीडय्] पीड़ा पहुंचाना, मार-पीट करना। वकृ. **ओवीलेमाण** (णाया १, १८—पत्र २३६)।

ओवीलय देखो **उव्वीलय** (पराह १, ३)।

ओवुब्भमाण देखो **ओवह**।

ओवेहा स्त्री [उपेक्षा] १ उपदर्शन, देखना। २ अवधीरण; 'संजयगिहिचोयणाचोयणे य वावारओवेहा' (ओघ १७१ भा)।

°**ओव्वण** देखो **जोव्वण** (से ७, ६२)।

ओव्वत्त अक [अप + वृत्] १ पीछे फिरना, लौटना। २ अवनत होना। संकृ. **ओवत्तिऊण** (ओघ भा ३० टी)।

ओव्वत्त वि [अपवृत्त] पीछे फिरा हुआ। २ नमा हुआ, अवनत (से ८, ८४)।

ओव्वेव्व देखो **उव्वेव** (संक्षि ३५)।

ओस देखो **ऊस** = ऊष (दस ५, १, ३३)।

ओस पुं [दे] देखो **ओसा** (राज)। °**चारण** पुं [°चारण] हिम के अवलम्बन से जानेवाला साधु (गच्छ)।

ओसक्क सक [अव + ष्वष्क्] कम करना, घटाना। संकृ. **ओसक्किया** (दस ५,१,६३)।

ओसक्क अक [अव + ष्वष्क्] १ पीछे हटना, अपसरण करना। २ भागना, पलायन करना। ३ उदीरण करना, उत्तेजित करना। ओसकइ (पि ३०२;३१५)। वकृ. **ओसक्कंत, ओसक्कमाण** (से ५, ७३; स ६४)। संकृ. **ओसक्कइत्ता, ओसक्किय, ओसक्किऊण** (ठा ८; दस ४; सुर २, १५)।

ओसक्क वि [दे. अवष्वष्कित] अपसृत, पीछे हटा हुआ (दे. १, १४६; पाअ)।

ओसक्कण न [अवष्वष्कण] १ अपसरण (स ६३)। २ नियत काल से पहले करना (धर्म ३)। ३ उत्तेजन (बृह २)।

ओसक्किय वि [अवष्वष्कित] नियत काल से पहले किया हुआ (पिंड २६०)।

ओसट्ट अक [वि + सृप्] फैलना, पसरना। ओसट्टइ (गा ८५६)।

ओसट्ट वि [दे] विकसित, प्रफुल्लित (षड्)

ओसडिअ वि [दे] आकीर्ण, व्याप्त (षड्)।

ओसढ न [औषध] दवा, इलाज, भैषज (हे १, २२७)।

ओसढिअ वि [औषधिक] वैद्य, चिकित्सक (कुमा)।

ओसण न [दे] उद्वेग, खेद (दे १ १५५)।

ओसण्ण वि [अवसन्न] १ खिन्न (गा ३८२; से १३, ३०)। २ शिथिल, ढीला (वव ३)। देखो **ओसन्न**।

ओसण्ण वि [दे] त्रुटित, खण्डित (दे १, १५६; षड्)।

ओसण्णं अ [दे] प्रायः बहुत कर (कप्प)।

ओसत्त वि [अवसक्त] संबद्ध, संयुक्त (णाया १, ३; स ४४६)।

ओसधि देखो **ओसहि** (ठा २, ३)।

ओसद्ध वि [दे] पातित, गिराया हुआ (पाअ)।

ओसन्न देखो **ओसण्ण** = अवसन्न (सुर ४, ३४; णाया १, ५; सं ६; पुप्फ २१)। ३ न. एकान्त; 'ओसन्ने देइ गेराहइ वा' (उव)।

ओसन्न वि [अवसन्न] निमग्न (दसचू १, ८)।

ओसन्नं देखो **ओसण्णं** (कम्म १, १३; विसे २२७५)।

ओसप्पिणी स्त्री [अवसर्पिणी] दश कोटाकोटि सागरोपमपरिमित काल-विशेष, जिसमें सर्व पदार्थों के गुणों की क्रमशः हानि होती जाती है (सम ७२; ठा १)।

ओसम सक [उप + शमय्] उपशान्त करना। भवि. ओसमेहिंति (पिंड ३२६)।

ओसमिअ वि [उपशमित] शान्ति-प्राप्त (सम ३७)।

ओसर अक [अव + तृ] १ नीचे आना। २ अवतरना, जन्म लेना। ओसरइ (षड्)।

ओसर अक [अप + सृ] अपसरण करना, पीछे हटना। २ सरकना, खिसकना, फिसलना। ओसरइ (महा; काल)। वकृ. **ओसरंत** (गा १८; ३६३; से ६, २६; ६, ८२; १२, ६; से ६३)।

ओसर सक [अव + सृ] आना, तीर्थंकर आदि महापुरुष का पधारना (उप ७२८ टी)।

ओसर पुं [अवसर] १ अवसर, समय (सूअ १, २)। २ अन्तर (राज)।

ओसरण न [अवसरण] १ जिन-देव का उपदेश स्थान (उप १३३; रयण १)। २ साधुओं का एकत्रित होना (सूअ १, १२)।

ओसरण न. [अपसरण] १ हटना, दूर होना। २ वि. दूर करनेवाला; 'बहुपावकम्मओसरणं' (कुमा १)।

ओसरिअ वि [दे] १ आकीर्ण, व्याप्त। २ आँख के इशारे से संकेतित या इंगित (षड्)। ३ अधोमुख, अवनत। ४ न. आँख का इशारा (दे १, १७१)।

ओसरिअ वि [अवसृत] आगत, पधारा हुआ (उप ७२८ टी)।

ओसरिअ वि [अपसृत] १ पीछे हटा हुआ (पउम १६, २३; पाअ; गा ३५१)। २ न. अपसरण (से २, ८)।

ओसरिअ वि [उपसृत] संमुखागत, सामने आया हुआ; (पाअ)।

ओसरिआ स्त्री [दे] अलिन्दक, बाहर के दरवाजे का प्रकोष्ठ (दे १, १६१)।

ओसव पुं [उत्सव] उत्सव, आनन्द-क्षण (प्राप्र)।

ओसविय देखो **ओसमिअ** (पिंड ३२६)।

ओसविय वि [उच्छ्रयित] ऊँचा किया हुआ (पउम ८, २६६)।

ओसव्विअ वि [दे] १ शोभा-रहित। २ न. अवसाद, खेद (दे १, १६८)।

ओसह न [औषध] दवाई, भैषज (औप; स्वप्न ५६)।

ओसहि°, ही स्त्री [ओषधि] १ वनस्पति (पराण १)। २ नगरी-विशेष (राज)। °**महिहर** पुं [°महिधर] पर्वत-विशेष (अच्चु ४४)।

ओसहिअ वि [आवसथिक] चन्द्रार्घ-दानादि व्रत को करनेवाला (गा ३४६)।

ओसा स्त्री [दे] १ ओस, निशा-जल (जी ५; आचा; विसे २५७६)। २ हिम, बरफ (दे १, १६४)।

ओसाअ पुं [दे] प्रहार की पीड़ा (दे १, १५२)।

ओसाअ पुं [अवश्याय] हिम, ओस (से १३, ५२; दे ८, ५३)।

ओसाअंत वि [दे] १ जँभाई खाता हुआ आलसी। २ बैठता। ३ वेदना-युक्त (दे १, १७०)।

ओसाअण वि [दे] १ महीशान, जमीन का मालिक। २ आपोशान (षड्)।

ओसाण न [अवसान] १ अन्त (ठा ४)। २ समीपता, सामीप्य (सूअ १, ४)।

ओसाण न [अवसान] गुरु के समीप स्थान, गुरु के पास निवास (सूअ १, १४, ४)।

ओसाणिहाण वि [दे] विधि-पूर्वक अनुष्ठित (दे १, १६३)।

ओसाय पुं [अवश्याय] ओस, निशा-जल (जीवस ३१)।

ओसायण न [अवसादन] परिशाटन, नाश (विसे)।

ओसार सक [अप + सारय्] दूर करना। ओसारेहि (स ४०८)। कर्म. ओसारिज्जंतु (स ४१०)। संकृ. **ओसारिवि** (भवि)।

ओसार पुं [दे] गो-वाट, गो-बाड़ा (दे १, १४६)।

ओसार पुं [अपसार] अपसरण (से १३, १४)।

ओसार देखो **ऊसार** = उत्सार (भवि)।

ओसार पुं [अवसार] कवच, बख्तर (से १२, ५६)।

ओसारिअ वि [अपसारित] दूर किया हुआ, अपनीत (गा ६६; पउम २३, ८)।

ओसारिअ वि [अवसारित] अवलम्बित, लटकाया हुआ (औप)।

ओसास (अप) देखो **ओवास** = अवकाश (भवि)।

ओसिअ वि [दे] १ अबल, बल-रहित (दे १, १५०)। २ अपूर्व, असाधारण (षड्)।

ओसिअ वि [उषित] १ बसा हुआ, रहा हुआ (सूअ १, १४, ४)। २ व्यवस्थित (सूअ १, ४, १, २०)।

ओसिअंत वकृ- [अवसीदत्] पीड़ा पाता हुआ (हे १, १०१; से ३, ५१)।

ओसिंघिअ वि [दे] घ्रात, सूँघा हुआ (दे १, १६२; पाअ)।

ओसिंचित्तु वि [अपसेचयितृ] अपसेक करनेवाला (सूअ २, २)।

ओसिक्खिअ न [दे] १ गति-व्याघात। २ अरति-निहित (दे, १, १७३)।

ओसित्त वि [अवसिक्त] भीजाया हुआ, सिक्त (आचा २, १, १, १)।

ओसित्त वि [दे] उपलिप्त (दे १, १५८)।

ओसिय वि [अवसित] १ पर्यवसित। २ उपशान्त (सूअ १, १३)। २ जीत, पराभूत (विसे)।

ओसिरण न [दे] व्युत्सर्जन, परित्याग (षड्)।

ओसीअ वि [दे] अधो-मुख, अवनत (दे १, १५८)।

ओसीर देखो **उसीर** (पराह २, ५)।

ओसीस अक [अप + वृत्] १ पीछे हटना। २ घूमना, फिरना। संकृ. **ओसीसिऊण** (दे १, १५२)।

ओसीस वि [अप + वृत्त] अपवृत्त (दे १, १५२)।

ओसुअ वि [उत्सुक] उत्कण्ठित (प्राप्र)।

ओसुंखिअ वि [दे] उत्प्रेक्षित, कल्पित (दे १६१)।

ओसुंभ सक [अव+पातय्] १ गिरा देना। २ नष्ट करना। कर्म. ओसुब्भंति (स ७, ६१)। वकृ. **ओसुंभइ** (से ४, ५४)। कवकृ. **ओसुब्भंत** (पि ५३५)।

ओसुक्क सक [तिज्] तीक्ष्ण करना, तेज करना। ओसुक्कइ (हे ४, १०४)।

ओसुक्क वि [अवशुष्क] सूखा हुआ (पउम ५३, ७६; ५, १४)।

ओसुक्ख अक [अव + शुष्] सूखना। वकृ. **ओसुक्खंत** (से ६, ६३)।

ओसुद्ध वि [दे] १ विनिपतित (दे १, १५७)। २ विनाशित (से १३, २२)।

ओसुब्भंत देखो **ओसुंभ**।

ओसुय न [औत्सुक्य] उत्सुकता, उत्कण्ठा (औप; पि ३२७ ए)।

ओसोयणी, **ओसोवणिया**, **ओसोवणी** स्त्री [अवस्वापनी] विद्या-विशेष, जिसके प्रभाव से दूसरे को गाढ़ निद्राधीन किया जा सकता है (सुपा २२०; णाया १, १६; कप्प)।

ओस्सक्क पुं [अवष्वष्क] अपसर्पण, पीछे हटना (पव २)।

ओस्सक्कण देखो **ओसक्कण** (पिंड २८५)।

ओस्सा [दे] देखो **ओसा** (कस)।

ओस्साड पुं [अवशाट] नाश, विनाश (सण)।

ओह देखो **ओघ** (पराह १, ४; गा ५१८; निचू १६; ओघ २; धम्म १० टी)। ५ सूत्र, शास्त्र-सम्बन्धी वाक्य (विसे ६५७)।

ओह सक [अव + तॄ] नीचे उतरना। ओहइ (हे ४, ८५)।

ओह पुंन [ओघ] १ उत्सर्ग, सामान्य नियम; (णंदि ५२)। २ सामान्य, साधारण (वव १)। ३ प्रवाह (राय ४७ टी)। ४ सलिल-प्रवेश। ५ आस्रव-द्वार (आचा २, १६, १०)। ६ संसार (सूअ १, ६, ६)। °**सुय** न [°श्रुत] शास्त्र-विशेष (णंदि ५२)।

ओहंक पुं [दे] हास हँसी (दे १, १५३)।

ओहंजलिया स्त्री [दे] क्षुद्र जन्तु-विशेष, चतुरिन्द्रिय जीव-विशेष (जीव १)।

ओहंतर वि [ओघतर] संसार पार करनेवाला (मुनि); (आचा)।

ओहंस पुं [दे] १ चन्दन। २ जिसपर चन्दन घिसा जाता है वह शिला, चन्द्रौटा या होरसा (दे १, १६८)।

ओहट्ट अक [अप + घट्ट्] १ कम होना, ह्रास पाना। २ पीछे हटना। ३ सक. हटाना, निवृत्त करना। ओहट्टइ (हे ४, ४१६)। वकृ. **ओहट्टंत** (से ८, ६०; सुपा २३३)।

ओहट्ट पुं [दे] १ अवगुण्ठन। २ नीवी, कटि-वस्त्र। ३ वि. अपसृत, पीछे हटा हुआ (दे १, १६६; भवि)।

ओहट्ट } वि [अपघट्टक] निवारक, हटाने-
ओहट्टय } वाला, निषेधक (विपा १, २, णाया १, १६; १८)।

ओहट्टिअ वि [दे] दूसरे को दबाकर हाथ से गृहीत (दे १, १५९)।

ओहट्टु पुं [दे] हास, हंसी (दे १, १५३)।

ओहट्ठ वि [अवघृष्ट] घिसा हुआ (पउम ३७, ३)।

ओहड वि [अपहृत] नीचे लाया हुआ (दस ५, १, ३९)।

ओहडणी स्त्री [दे] अर्गला (दे १, १६०)।

ओहत्त वि [दे] अवनत (दे १, १५६)।

ओहत्थिअ वि [अपहस्तित] परित्यक्त, दूर किया हुआ (मै ३५)।

ओहय वि [उपहत] उपघात-प्राप्त (णाया १, १)।

ओहय वि [अवहत] विनाशित (औप)।

ओहर सक [अप + हृ] अपहरण करना। कर्म. ओहरीआमि (पि ६८)।

ओहर अक [अव + हृ] टेढ़ा होना, वक्र होना। २ सक. उलटा करना। ३ फिराना। संकृ. **ओहरिय** (आचा २, १, ७)।

ओहर न [उपगृह] छोटा गृह, कोठरी (पराह १, १)।

ओहरण न [अपहरण] उठा ले जाना, अपहार (उप ९७९)।

ओहरण न [दे] १ विनाशन, हिंसा। २ असंभव अर्थ की सम्भावना (दे १, १७४)। ३ अस्त्र, हथियार (स ५३१; ६३७)। ४ वि. आघ्रात (षड्)।

ओहरिअ वि [दे. अपहृत] १ फेंका हुआ (से १३, ३)। २ नीचे गिराया हुआ (से ३, ३७)। ३ उतारा हुआ, उत्तारित (ओघ ८०६)। ४ अपनीत; 'ओहरिअभरुव्व भार-वहो' (श्रा ४०)।

ओहरिस वि [दे] १ आघ्रात, सूँघा हुआ। २ पुं. चन्दन घिसने की शिला, चन्द्रौटा (दे १, १६९)।

ओहल देखो उऊखल (हे १, १७१; कुमा)।

ओहल सक [अव + खल्] घिसना। भवि- ओहलिही (सुपा १३६)।

ओहलिय वि [अवखलित] घिसा हुआ, 'अंसुजलोहलियगंडयलो' (सुर २, १८६; सरा)।

ओहली स्त्री [दे] ओघ, समूह (सुपा ३६४)।

ओहस सक [उप + हस्] उपहास करना। ओहसइ (नाट)। कवकृ. **ओहसिज्जंत** (से १५, १०)। कृ **ओहसणिज्ज** (स ८)।

ओहसिअ न [दे] १ वस्त्र, कपड़ा। २ वि. धूत, कम्पित (दे १, १७३)।

ओहसिअ वि [उपहसित] जिसका उपहास किया गया हो वह (ग, ६०; दे १, १७३; स ४४८)।

ओहाइअ वि [दे] अधो-मुख (१, १५८)।

ओहाइअ वि [अवधाविन] चरित्र से भ्रष्ट (दसचू १, १)।

ओहाडण न [अवघाटन] प्रायश्चित्त-विशेष (वव १)।

ओहाडण न [अवघाटन] ढकना, पिधान (वव १)।

ओहाडणी स्त्री [दे. अवघाटनी] १ पिधानी (दे १, १६१)। २ एक प्रकार की ओढ़नी (जीव ३)

ओहाडिय वि [अवघाटित] १ पिहित, बन्द किया हुआ; 'वइरामयकवाडोहाडियाओ' (जं १—पत्र ७१)। २ स्थगित (आव ५)।

ओहाण न [उपधान] स्थगन, ढकना (वव ४)।

ओहाण न [अवधान] उपयोग, ख्याल (आचा)।

ओहाण न [अवधावन] अवक्रमण, पीछे हटना (निचू १६)।

ओहाम सक [तुलय्] तौलना, तुलना करना। ओहामइ (हे ४, २५)। वकृ. **ओहामंत** (कुमा)।

ओहामिय वि [तुलित] तौला हुआ (पाअ; सुपा २६९)।

ओहामिय वि [दे] १ अभिभूत (षड्)। २ तिरस्कृत (स ३१३; ओघ ६०)। ३ बन्द किया हुआ, स्थगित; 'जह वीणावंसरवा खणेण ओहामिआ सव्वा' (पउम ४९, ६)।

ओहार सक [अव + धारय्] निश्चय करना। संकृ. **ओहारिअ** (अभि १६४)।

ओहार पुं [दे] १ कच्छप। २ नदी वगैरह के बीच की शुष्क जगह, द्वीप। ३ अंश, विभाग (दे १, १६७)। ४ जलचर-जन्तु-विशेष (पराह १, ३)।

ओहार पुं [अवधार] निश्चय। °व वि [°वत्] निश्चयवाला (द्र ४९)।

ओहारइत्तु वि [अवधारयितृ] निश्चय करने-वाला (राज)।

ओहारइत्तु वि [अवहारयितृ] दूसरे पर मिथ्याभियोग लगानेवाला (राज)।

ओहारण न [अवधारण] नियम, निश्चय (द्र २)।

ओहारणी स्त्री [अवधारणी] निश्चयात्मक भाषा; 'ओहारणिं अप्पियकारिणिं च भासं न भासिज्ज सया स पुज्जो' (दस ८, ३)।

ओहारिणी स्त्री [अवधारिणी] ऊपर देखो (भास १४)।

ओहाव सक [आ + क्रम्] आक्रमण करना। ओहावइ (हे ४, १६०; षड्)।

ओहाव अक [अव + धाव्] पीछे हटना। वकृ. **ओहावंत, ओहावेंत** (ओघ १२६; वव ८)।

ओहावण न [अवधावन] १ अपसर्पण, पलायन (वव १)। २ दीक्षा से भागना, दीक्षा को छोड़ देना (वव ३)।

ओहावण न [अवभावन] अपमान, अपकीर्ति (पिंड ४८९)।

ओहावणा स्त्री [अपहापना] लाघव, लघुता (जय २९)।

ओहावणा स्त्री [अपभावना] तिरस्कार, अनादर (उप १२९ टी; स ४१०)।

ओहावणा स्त्री [आक्रान्ति] आक्रमण (काल)।

ओहाविअ वि [अपभावित] १ तिरस्कृत (सुपा २२४)। २ ग्लान, ग्लानि-प्राप्त (वव ८)।

ओहाविअ वि [अवधावित] पलायित, अप-सृत (दसचू १, २)।

ओहास पुं [अवहास, उपहास] हँसी, हास्य (प्राप्र; मै ४३)।

ओहासण न [अवभाषण] याचना, मांग, विशिष्ट भिक्षा (आव ४)।

ओहासिय वि [अवभाषित] याचित (पंचा १३, १०)।

ओहि पुंस्त्री [अवधि] १ मर्यादा, सीमा, हद (गा १७०;२०६)। २ रूपि-पदार्थ का अतीन्द्रिय ज्ञान-विशेष (उवा; महा)। °जिण पुं [°जिन] अवधिज्ञानवाला साधु (पराह २, १)। °णाण न [°ज्ञान] अवधिज्ञान (वव १)। °णाणावरण न [°ज्ञानावरण] अवधिज्ञान का प्रतिबन्धक कर्म (कम्म १)। °दंसण न [°दर्शन] रूपी वस्तु का अतीन्द्रिय सामान्य ज्ञान (सम १५)। °दंसणावरण न [°दर्शनावरण] अवधिदर्शन का आवारक कर्म (ठा ६)। °नाण देखो °णाण (प्राकृ)। °मरण न [°मरण] मरण-विशेष (भग १३, ७)।

ओहिअ वि [अवतीर्ण] उतरा हुआ (कुमा)।

ओहिअ वि [औघिक] औत्सर्गिक, सामान्य रूप से उक्त (अणु १६६; २००)।

ओहिण्ण वि [अपभिन्न] रोका हुआ, अटकाया हुआ (से १३, २४)।

ओहित्थ न [दे] १ विषाद, खेद। २ रभस, वेग। ३ वि. विचारित (दे १, १६८)।

ओहिर देखो ओहीर। ओहिरइ (षड्)।

ओहिर देखो ओहर = अप + हृ। कर्म. ओहिरिआमि (पि ६८)।

ओहीअंत वि [अवहीयमान] क्रमशः कम होता हुआ (से १२, ४२)।

ओहीण वि [अवहीन] १ पीछे रहा हुआ (अभि ५६)। २ अपगत, गुजरा हुआ (से १२, ६७)।

ओहीर अक [नि + द्रा] सो जाना, निद्रा लेना (हे ४, १२)। वकृ. ओहीरमाण (णाया १, १; विपा २, १; कप्प)।

ओहीर अक [सद्] खिन्न होना। वकृ. ओहीरंतं च सीअंत' (पाअ)।

ओहीरिअ वि [अवधीरित] तिरस्कृत, परिभूत (आचा २, १)।

ओहीरिअ वि [दे] १ उद्गीत। २ अवसन्न, खिन्न (दे १, १६३)।

ओहुअ वि [दे] अभिभूत, पराभूत (दे १, १५८)।

ओहुंज देखो उवहुंज। ओहुंजइ (भवि)।

ओहुड वि [दे] विफल, निष्फल (दे १, १५७)।

ओहुप्पंत वि [आक्रम्यमाण] जिसपर आक्रमण किया जाता हो वह (से ३, १८)।

ओहुर वि [दे] १ अवनत, अवाङ्मुख (गउड)। २ खिन्न, खेद-प्राप्त। ३ स्रस्त, ध्वस्त (दे १, १५७)।

ओहुल्ल वि [दे] १ खिन्न। १ अवनत, नीचे झुका हुआ (भवि)।

ओहूणण न [अवधूनन] १ कम्प। २ उल्लङ्घन। ३ अपूर्व करण से भिन्न ग्रन्थि का भेद करना (आचा १, ६, १)।

ओहूय वि [अवधूत] उल्लङ्घित (बृह १)।

॥ इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवे ओआराइसद्दसंकलणो णवमो तरंगो समत्तो।
तस्समत्तीए अ सरविहाओवि समत्तो॥

क

क पुं [क] १ प्राकृत वर्ण-माला का प्रथम व्यञ्जनाक्षर, जिसका उच्चारण-स्थान कण्ठ है (प्राप; प्रमा)। २ ब्रह्मा (दे ५, २६)। ३ किए हुए पाप का स्वीकार; 'कत्ति कडं मे पावं' (आवम)। ४ न. पानी, जल (स ६११)। ५ सुख (सुर १६,५५)। देखो °अ = क।

क देखो किम् (गउड, महा)।

कअवंत देखो कय-व = कृतवत् (प्राकृ ३५)।

कइ वि. ब. [कति] कितना, 'तं भंते ! कइदिसं ओभासेइ' (भग)। °अ वि [°क] कतिपय, कईएक; 'मोएमि जाव तुज्झं, पियरं कइएसु दियहेसु' (पउम ३४,२७)। °अव वि [°पय] कतिपय, कईएक (हे १, २५०)। °इ अ [°चित] कईएक (उप पृ ३)। °त्थ वि [°थ] कितनावाँ, कौन संख्या का? (विसे ६१७)। °वइय. °वय, °वाह वि [°पय] कईएक (पउम ६१, १६; उवा, षड्; कुमा; हे १, २५०)। °वि अ [°अपि] कईएक (काल; महा)। °विह वि [°विध] कितने प्रकार का (भग)।

कइ वि [कृतिन्] १ विद्वान्, पण्डित। २ पुण्यवान् (सूअ २, १, ६०)।

कइ अ [कचित्] कहीं, किसी जगह में (दसचू २, १४)।

कइ अ [कदा] कब, किस समय?; 'एआई उण मज्झो थणभारं कइ णु उव्वहइ?' (गा ८०३)।

कइ पुं [कपि] बन्दर, वानर (पाअ)। °दीव पुं [°द्वीप] द्वीप-विशेष, वानर-द्वीप (पउम ५५,१६)। °द्धय, °धय पुं [°ध्वज] १ वानर-द्वीप के एक राजा का नाम (पउम ६, ८३)। २ अर्जुन (हे २, ६०)। °हसिअ न [°हसित] १ स्वच्छ आकाश में अचानक बीजली का दर्शन। २ वानर के समान विकृत मुँह का हँसना (भग ३,६)।

कइ देखो कवि = कवि (गउड; सुर १, २७)। °अर (अप) पुं [कवि] श्रेष्ठ कवि (पिंग)। °मा स्त्री [°त्व] कवित्व, कविपन (षड्)। °राय पुं [°राज] १ श्रेष्ठ कवि (पिंग)। २ 'गउडवहो' नामक प्राकृत काव्य के कर्त्ता वाक्पतिराज-नामक कवि; 'आसि कइरायइंघो वप्पइराओ त्ति पणइलवो' (गउड ७९७)।

कइअ वि [क्रयिक] खरीदनेवाला, ग्राहक; 'किणंतो कइओ होइ, विक्किणंतो य वाणिओ' (उत्त ३५, १४)।

कइअंक } पुं [दे] निकर, समूह (दे २,
कइअंकसइ } १३)।

अइअव न [कैतव] कपट, दम्भ (कुमा; प्राप्र)।

कइआ अ [कदा] कब, किस समय ? (गा १३८; कुमा)।

कइउल्ल वि [दे] थोड़ा, अल्प (दे १, २१)।

कइंद पुं [कवीन्द्र] श्रेष्ठ कवि (गउड)।

कइकच्छु स्त्री [कपिकच्छु] वृक्ष-विशेष, केवाँच, कौंछ, कवाछ (गा ५३२)।

कइगई स्त्री [कैकयी] राजा दशरथ की एक रानी (पउम ६५, २१)।

कइत्थ पुं [कपित्थ] १ वृक्ष-विशेष, कैथ का पेड़। २ फल-विशेष, कैथ, कैथा (गा ६४१)।

कइम वि [कतम] बहुत में से कौन सा ? (हे १, ४८; गा ११६)।

कइयव्व देखो कइअव (तंदु ५३)।

कइयहा (अप) अ [कदा] कब, किस समय ? (सण)।

कइयाइ अ [कदाचित्] किसी समय में (कुप्र ४१३)।

कइर देखो कयर = कतर (पिंड ४६६)।

कइर पुं [कदर] वृक्ष विशेष, 'जं कइररुक्ख-हिट्ठा इह दसकोडी दविणमत्थि' (श्रा १६)।

कइरव न [कैरव] कमल, कुमुद (हे १, १५२)।

कइरव पुंन [कैरव] कुमुद, 'कइरवो' (संक्षि ५)।

कइरविणी स्त्री [कैरविणी] कुमुदिनी, कमलिनी (कुमा)।

कइलास पुं [कैलास, °श] १ स्वनाम-ख्यात पर्वत विशेष (पाअ; पउम ५; ५३; कुमा)। २ मेरु पर्वत (निचू १३)। ३ देव-विशेष, एक नाग-राज (जीव ३)। °सय पुं [°शय] महादेव, शिव (कुमा)। देखो केलास।

कइलासा स्त्री [कैलासा, °शा] देव-विशेष की एक राजधानी (जीव ३)।

कइल्लबइल्ल पुं [दे] स्वच्छन्द-चारी बैल (दे २, २५)।

कइविया स्त्री [दे] बरतन-विशेष, पीकदान, पीकदानी (णाया १, १ टी—पत्र ४३)।

कइस (अप) वि [कीदृश] कैसा (कुमा)।

कईया (अप) देखो कइआ (सुपा ११६)।

कईवय देखो कइवय (पउम २८, १६)।

कईस पुं [कवीश] श्रेष्ठ कवि, उत्तम कवि (पिंग)।

कईसर पुं [कवीश्वर] उत्तम कवि (रंभा)।

कउ पुं [क्रतु] यज्ञ (कप्पू)।

कउ (अप) अ [कुतः] कहाँ से (हे ४, ४१६)।

कउअ वि [दे] १ प्रधान, मुख्य। २ पुंन चिन्ह, निशान (दे २, ५६)।

कउच्छेअय पुं [कौक्षेयक] पेट पर बँधी हुई तलवार (हे १, १६२; षड्)।

कउड न [दे. ककुद] देखो कउह = ककुद (षड्)।

कउरअ } पुं [कौरव] १ कुरु देश का
कउरव } राजा। २ पुंस्त्री. कुरु वंश में उत्पन्न। ३ वि. कुरु (देश या वंश) से संबन्ध रखनेवाला। ४ कुरु देश में उत्पन्न (प्राप्र; नाट; हे १, १६२)।

कउल न [दे] १ करीष, गोइँठा का चूर्ण (दे २, ७)।

कउल न [कौल] तान्त्रिक मत का प्रवर्त्तक ग्रन्थ, कौलोपनिषद् वगैरह। २ वि. शक्ति का उपासक। ३ तान्त्रिक मत को जाननेवाला। ४ तान्त्रिक मत का अनुयायी। ५ देवता-विशेष;

'विसासिज्जंतमहापसुदं-
सणसंभमपरोप्परारूढा।
गयणे च्चिय गंधउडिं
कुणंति तुह कउलणारीओ'
(गउड)।

कउलव देखो कउरव (चंड)।

कउसल पुंन [कौशल] चतुराई, 'कउसलो' (संक्षि ६; प्राकृ १०)।

कउसल न [कौशल] कुशलता, दक्षता, होशियारी (हे १, १६२; प्राप्र)।

कउह न [दे] नित्य, सदा, हमेशा (दे २, ५)।

कउह पुंन [ककुद] १ बैल के कंधे का कुब्बड़। २ सफेद छत्र वगैरह राज-चिह्न। ३ पर्वत का अग्रभाग, टोंच (हे १, २२५)। ४ वि. प्रधान, मुख्य;

'कलरिभियमहुरतंतीतलतालवंसकउहाभिरामेसु।
सद्देसु रज्जमाणा, रमंती सोइंदियवसट्टा।'
(णाया १, १७)। देखो ककुह।

कउहा स्त्री [ककुभ्] १ दिशा (कुमा)। २ शोभा, कान्ति। ३ चम्पा के पुष्पों की माला। ४ इस नाम की एक रागिणी। ५ शास्त्र। ६ विकीर्ण केश (हे १, २१)।

कउहि वि [ककुदिन्] वृषभ, बैल (अणु १४२)।

कए } अ [कृते] वास्ते, निमित्त, लिए;
कएणं } 'तत्तो सो तस्स कए, खणेइ खाणी-
कएण } उणेगठाणेसु' (कुम्मा १५; कुमा);

'अवरण्हमजिरीणं कएण कामो वहइ चावं' (गा ४७३);

'लज्जा चत्ता सीलं च
खंडिअं अजसघोसणा दिण्णा।
जस्स कएणं पिअसहि !
सो चेअ जणो जणो जाओ'
(गा ५२५)।

कएल्ल वि [कृत] किया हुआ (सुख २, १५)।

कओ अ [कुतः] कहाँ से ? (आचा; उव; रयण २६)। °हुत्त क्रिवि [दे] किस तरफ; 'कओहुत्तं गंतव्वं ?' (महा)।

कओ अ [क] कहाँ, किस स्थान में; 'कओ वयामो ?' (णाया १, १४)।

कओण्ह वि [कदुष्ण] थोड़ा गरम (धर्मवि ११२)।

कओल देखो कवोल (से ३, ४६)।

कं अ [कम्] उदक, जल (तंदु ५३)।

कंइ अ [दे] किससे, 'कंइ पंइ सिक्खिउ ए गइलालस' (विक १०२)।

कंक पुं [कङ्क] १ पक्षि-विशेष (पण्ह १, १; ४; अनु ४)। २ एक प्रकार का मजबूत और तीक्ष्ण लोहा (उप ४६४)। ३ वृक्ष-विशेष; 'कंकफलसरलनयण—' (उप १०३१ टी)। °पत्त न [°पत्र] बाण-विशेष, एक प्रकार का बाण, जो उड़ता है (वेणी १०२)। °लोह पुंन [°लोह] एक प्रकार का लोहा (उप पृ ३२६; सुपा २०७)। °वत्त देखो °पत्त (नाट)।

कंकइ पुं [कङ्कति] वृक्ष-विशेष; नागबला-नामक ओषधि (उप १०३१ टी)।

कंकड पुं [कङ्कट] वर्म, कवच; 'रामो चावे सकंकडे दिट्ठी देंतो' (पउम ४४, २१; औप)।

कंकडइय वि [कङ्कटित] कवचवाला, वर्मित (पण्ह १, ३)।

कंकडुअ, कंकडुग पुं [काङ्कटुक] दुर्भेद्य माष, उरद की एक जाति, जो कभी पकता ही नहीं; 'कंकडुओ विव मासो, सिद्धि न उवेइ जस्स ववहारो' (वव ३)।

कंकण न [कङ्कण] हाथ का आभरण-विशेष, कँगन (श्रा २८; गा ६६)।

कंकण पुं [दे] चतुरिन्द्रिय जन्तु की एक जाति (उत्त ३६, १४७)।

कंकणी स्त्री [कङ्कण] हाथ का आभरण-विशेष; 'सयमेव मंकणीए धणीए तं कंकणी बद्धा' (कुप्र १८५)।

कंकति पुं [कङ्कति] ग्राम- विशेष (राज)।

कंकतिज्ज पुंस्त्री [काङ्कतीय] माधराज वंश में उत्पन्न (राज)।

कंकय पुं [कङ्कत] १ नागबला-नामक ओषधि। २ सर्प की एक जाति। ३ पुंस्त्री. कंघा, केश सँवारने का उपकरण (सूत्र १, ४)।

कंकलास पुं [कृकलास] कर्कोट, सांप की एक जाति (पाअ)।

कंकसी स्त्री [दे] कंघी, केश सँवारने का उपकरण (ती १५)।

कंकाल न [कङ्काल] चमड़ी और मांस रहित अस्थि-पञ्जर; 'कंकालवेसाए' (श्रा १६); 'अह नरकरंककंकालसंकुले भीसणमसाणे' (वज्जा २०; दे २, ५३)।

कंकावंस पुं [कङ्कावंश] वनस्पति-विशेष; (पएण ३३)।

कंकिल्लि देखो **कंकेल्लि** (सुपा ५५६; कुमा)।

कंकुण देखो **कंकण** = दे (सुख ३६, १४७)।

कंकेलि पुं [कङ्केलि] अशोक वृक्ष (मै ६० विक्र २८)।

कंकेल्लि पुं [दे. कङ्केल्लि] अशोक वृक्ष (दे २, १२; गा ४०४; सुपा १४०; ५६२; कुमा)।

कंकोड न [दे. कर्कोट] १ वनस्पति-विशेष, ककरैल, एक प्रकार की सब्जी, जो वर्षा में ही होती है (दे २, ७; पाअ)। २ पुं. एक नागराज। ३ सांप की एक जाति (हे १, २६; षड्)।

कंकोल पुं [कङ्कोल] १ कङ्कोल, शीतल-चीनी के वृक्ष का एक भेद। २ न. उस वृक्ष का फल; 'सकप्पूरेलाकंकोलं तंबोलं' (उप १०३१ टी)। देखो **कक्कोल**।

कंख सक [काङ्क्ष्] चाहना, वांछना। कंखइ (हे ४, १९२; षड्)।

कंखण न [काङ्क्षण] नीचे देखो (धर्म २)।

कंखा स्त्री [काङ्क्षा] १ चाह, अभिलाष (सूत्र १, १५)। २ आसक्ति, गृद्धि (भग)। ३ अन्य धर्म की चाह अथवा उसमें आसक्ति रूप सम्यक्त्व का एक अतिचार (पडि)। °**मोहणिज्ज** न [°मोहनीय] कर्म-विशेष (भग)।

कंखि वि [काङ्क्षिन्] चाहनेवाला (आचा; गउड; सुर १३, २४३)।

कंखिअ वि [काङ्क्षित] १ अभिलषित। २ कांक्षा युक्त, चाहवाला (उवा; भग)।

कंखिर वि [काङ्क्षितृ] चाहनेवाला, अभिलाषी (गा ५५; सुपा ५३७)।

कंगणी स्त्री [दे] वल्ली-विशेष, कांगनी (पएण १)।

कंगु स्त्रीन [कङ्गु] १ धान्य-विशेष, काँगन या काँगो (ग ७; दे ७, १)। २ वल्ली-विशेष (पएण १)।

कंगुलिया स्त्री [दे. कङ्गुलिका] जिन-मन्दिर की एक बड़ी आशातना, जिन-मन्दिर में या उसके नजदीक लघु या वृद्ध नीति का करना (धर्म २)।

कंचण पुंन [काञ्चन] १ एक देव-विमान (देवेन्द्र १३१)। २ वि. सोने का, सुवर्ण का; 'कंचणं खंडं' (वज्जा १५८)। °**पह** न [°प्रभ] १ रत्न-विशेष। २ वि. रत्न-विशेष का बना हुआ (देवेन्द्र २६६)। °**पायव** पुं [°पादप] वृक्ष-विशेष (स ६७३)।

कंचण पुं [काञ्चन] १ वृक्ष-विशेष। २ स्वनाम-ख्यात एक श्रेष्ठी (उप ७२८ टी)। ३ न. सुवर्ण, सोना (कप्प)। °**उर** न [°पुर] कलिंग देश का एक मुख्य नगर (आक)। °**कूड** न [°कूट] १ सौमनस-नामक वक्षस्कार पर्वत का एक शिखर (ठा ७)। २ देव-विमान-विशेष (सम १२)। ३ रुचक पर्वत का एक शिखर (ठा ८)। °**केअई** स्त्री [°केतकी] लता-विशेष (कुमा)। °**तिलय** न [°तिलक] इस नाम का विद्याधरों का एक नगर (इक)। °**त्थल** न [°स्थल] स्वनाम ख्यात एक नगर (दंस)। °**बलाणग** न [°बलानक] चौरासी तीर्थों में एक तीर्थ का नाम (राज)। °**सेल** पुं [°शैल] मेरु-पर्वत (कप्पू)।

कंचणग पुं [काञ्चनक] १ पर्वत-विशेष (सम ७०)। २ काञ्चनक पर्वत का निवासी देव (जीव ३)।

कंचणा स्त्री [कञ्चना] स्वनाम ख्यात एक स्त्री (पराह १, ४)।

कंचणार पुं [कञ्चनार] वृक्ष-विशेष (पउम ५३, ७९; कुमा)।

कंचणिया स्त्री [काञ्चनिका] रुद्राक्ष माला (औप)।

कंचा (पै) देखो **कण्णा** (प्राप्र)।

कंचि, कंची स्त्री [काञ्चि, °ञ्ची] १ स्वनाम-ख्यात एक देश (कुमा)। २ कटी-मेखला, कमर का आभूषण (पाअ)। ३ स्वनाम-ख्यात एक नगर (सुपा ४०६)।

कंची स्त्री [दे] मुशल के मुँह में रक्खी जाती लोहे की एक वलयाकार चीज, सामी या साम (दे २, १)।

कंचीरय न [दे] पुष्प-विशेष (वज्जा १०८)।

कंचीरय न [काञ्चीरत] सुरत-विशेष (वज्जा १०८)।

कंचु, कंचुअ पुं [कञ्चुक] १ स्त्री का स्तनाच्छादक वस्त्र, चोली (पउम ६, ११; पाअ)। २ सर्प-त्वक्, सांप की केंचली, केंचुली (विसे २५१७)। ३ वर्म, कवच (भग ६,३३)। ४ वृक्ष-विशेष (हे १, २५; ३०)। ५ वस्त्र, कपड़ा; 'तो उज्झिऊण लज्जा (लज्जं), ओइंधइ कंचुयं सरीराओ' (पउम ३४, १५)।

कंचुइ पुं [कञ्चुकिन्] १ अन्तःपुर का प्रतीहार, चपरासी (णाया १, १; पउम ८, ३६; सुर २, १०६)। २ सांप (विसे २५१७)। ३ यव, जव। ४ चणक, चना। ५ जुआर, अगहन में होनेवाला एक प्रकार का अन्न, जोन्हरी। ६ वि. जिसने कवच धारण किया हो वह (हे ४, २६३)।

कंचुइअ वि [कञ्चुकित] कञ्चुकवाला (कुमा; विपा १, २)।

कंचुइज्ज पुं [कञ्चुकीय] अन्तःपुर का प्रतीहार (भग ११, ११)।

कंचुइज्जंत वि [कञ्चुकायमान] कञ्चुक की तरह आचरण करता; 'रोमंचकंचुइज्जंतसव्वगत्तो' (सुपा १८१)।

कंचुग देखो कंचुअ (ओघ ६७६; विसे २५२८)।

कंचुगि देखो °कंचुइ (सण)।

कंचुलिआ स्त्री [कञ्चुलिका] कंचली, चोली (कप्पू)।

कंछुली स्त्री [दे] हार, कण्ठाभरण (भवि)।

कंजिअ न [काञ्जिक] काञ्जिक (सुर ३;१३३; कप्पू)।

कंट देखो कंटग (पिंड २००)।

कंटअंत वि [कण्टकायमान] १ कण्टक जैसा, कण्टक की तरह आचरता (से ६, २४)। २ पुलकित होता (अचु ५८)।

कंटइअ वि [कण्टकित] १ कण्टकवाला (से १,३२)। २ रोमाञ्चित, पुलकित (कुमा; पाअ)।

कंटइज्जंत देखो कंटअंत (गा ६७)।

कंटइल पुं [कण्टकिल] १ एक जात का बाँस। २ वि. कण्टकों से व्याप्त (सूत्र १,५)।

कंटइल्ल देखो कंटइअ (पण्ह १, १; कुमा)।

कंटउच्चि वि [दे] कण्ट-प्रोत (दे २, १७)।

कंटकिल्ल देखो कंटइअ (दे २, ७५)।

कंटग } **कंटय** } पुं [कण्टक] १ कांटा, कण्टक (कस; हे १, ३०)। २ रोमाञ्च, पुलक (गा ६७)। ३ शत्रु, दुश्मन (णाया १, १)। ४ वृश्चिक की पूँछ (वव ६)। ५ शल्य (विपा १, ८)। ६ दुःखोत्पादक वस्तु (उत्त १)। ७ ज्योतिष-शास्त्र-प्रसिद्ध एक कुयोग (गण १६)। **°बोंदिया** स्त्री [°दे] कण्टक-शाखा (आचा २, १, ५)।

कंटाली स्त्री [दे] वनस्पति-विशेष, कण्टकारिका, भटकटैया (दे २, ४)।

कंटिय वि [कण्टिक] १ कण्टकवाला, कण्टक-युक्त। २ वृक्ष-विशेष (उप १०३१ टी)।

कंटिया स्त्री [कण्टिका] वनस्पति-विशेष (बृह १; आचू १)।

कंठी स्त्री [दे] उपकण्ठ, कण्ठिका, पर्वत के नजदीक की भूमि;

'एयाओ परूढारुणफलभरबंधुरिया भूमिखज्जूरा। कंठीओ निव्ववंति व, अमंदकरमंदआभोया' (गउड)।

कंटुल्ल } **कंटोल** } [दे] देखो कंकोड = (दे) (पाअ; दे २, ७)।

कंठ पुं [दे] १ सूकर, सूअर। २ मर्यादा, सीमा (दे २, ५१)।

कंठ पुं [°कण्ठ] १ गला, घांटी (कुमा)। २ समीप, पास। ३ अञ्चल; 'कंठे वत्थाईणं णिबद्धगंठिम्मि' (दे २, १८)। **°दरखलिअ** वि [°दरस्खलित] गद्गद (पाअ)। **°मुरय** न [°मुरज] आभरण-विशेष (णाया १,१)। **°मुरवी** स्त्री [°मुरवी] गले का एक आभरण (औप)। **मुही°** स्त्री [°मुखी] गले का एक आभूषण (राज)। **°सुत्त** न [°सूत्र] १ सुरत-बन्ध-विशेष। २ गले का एक आभूषण (औप)।

कंठ त्रि [कण्ठ्य] १ कण्ठ से उत्पन्न। २ सरल, सुगम (निचू १५)।

कंठकुंची स्त्री [दे] १ वस्त्र वगैरह के अञ्चल में बँधी हुई गाँठ। २ गले में लटकती हुई लम्बी नाडी-ग्रन्थि (दे २, १८)।

कंठदीणार पुं [दे] छिद्र, विवर (दे १, २४)।

कंठमल्ल न [दे] १ ठठरी, मृत-शिविका। २ यान-पात्र, वाहन (दे २, २०)।

कंठमाल पुंस्त्री [कण्ठमाल] रोग-विशेष (कुप्र ४७१)।

कंठय पुं [कण्ठक] स्वनाम-ख्यात एक चौर-नायक (महा)।

कंठाकंठि अ [कण्ठाकण्ठि] गले-गले में ग्रहण कर (णाया १, २—पत्र ८८)।

कंठाल वि [कण्ठवत्] बड़ा गलावाला (धर्मवि १०१)।

कंठिअ पुं [दे] चपरासी, प्रतीहार (दे २, १५)।

कंठिआ स्त्री [कण्ठिका] गले का एक आभूषण (गा ७५)।

कंठीरअ देखो कंठीरव (किरात १७)।

कंठीरव पुं [कण्ठीरव] सिंह, शार्दूल (प्रयौ २१)।

कंड सक [कण्ड्] १ व्रीहि वगैरह का छिलका अलग करना। २ खींचना। ३ खुजवाना। वकृ. कंडंत (ओघ ४६८; गा ६६३); कंडित (णाया १, ७)।

कंड न [काण्ड] १ अंगुल का असंख्यातवां भाग; 'कंडंति एत्थ भन्नइ अंगुलभागो असंखेज्जो' (पव २६० टी)।

कंड पुंन [काण्ड] १ दण्ड, लाठी। २ निन्दित समुदाय। ३ पानी, जल। ४ पर्व। ५ वृक्ष का स्कन्ध। ६ वृक्ष की शाखा। ७ वृक्ष का वह एक भाग, जहां से शाखाएँ निकलती हैं। ८ ग्रन्थ का एक भाग। ९ गुच्छ, स्तबक। १० अश्व, घोड़ा। ११ प्रेत, पितृ और देवता के यज्ञ का एक हिस्सा। १२ रीढ़, पृष्ठ भाग की लम्बी हड्डी। १३ खुशामद। १४ श्लाधा, प्रशंसा। १५ गुप्तता, प्रच्छन्नता। १६ एकान्त, निर्जन। १७ तृण-विशेष। १८ निर्जन पृथ्वी (हे १, ३०)। १९ अवसर, प्रस्ताव (गा ६३३)। २० समूह (णाया १,८)। २१ बाण, शर (उप ६६६)। २२ देव-विमान-विशेष (राज)। २३ पर्वत वगैरह का एक भाग (सम ६५)। २४ खण्ड, टुकड़ा, अवयव (आचू १)। **°च्छारिय** पुं [°ल्छारिक] १ इस नाम का एक ग्राम। २ एक ग्राम-नायक (वव ७)। देखो कंडग, कंडय।

कंड पुं [दे] १ फेन, फीन। २ वि. दुर्बल। ३ विपन्न, विपत्ति-ग्रस्त (दे २, ५१)।

कंडइअ देखो कंटइअ (गा ५५८)।

कंडइज्जंत देखो कंटइज्जंत (गा ६७ अ)।

कंडग न [कण्डक] १ संख्यातीत संयम-स्थान-समुदाय (पिंड ९९; १००)। २ विभाग, पर्वत आदि का एक भाग (सूत्र १,६,१०)।

कंडग पुंन [काण्डक] देखो कंड = काण्ड (आचा आवम)। २५ संयम-श्रेणि-विशेष (बृह ३)। २६ इस नाम का एक ग्राम (आचू १)। देखो कंडय।

कंडण न [कण्डन] व्रीहि वगैरह को साफ करना, तुष पृथक्करण (श्रा २०)।

कंडपंडवा स्त्री [दे] यवनिका, परदा (दे २, २५)।

कंडय पुंन [काण्डक] देखो कंड = काण्ड तथा कंडग। २७ वृक्ष-विशेष, राक्षसों का चैत्य वृक्ष; 'तुलसी भूयाण भवे, रक्खसाणं च कंडओ' (ठा ८)। २८ तावीज, गण्डा, यन्त्र; 'बज्झंति कंडयाइं, पउणीकीरंति अगयाइं' (सुर १६, ३२)।

कंडरीय पुं [कण्डरीक] महापद्म राजा का एक पुत्र, पुण्डरीक का छोटा भाई, जिसने

वर्षों तक जैनी दीक्षा का पालन कर अन्त में उसका त्याग कर दिया था (गाया १, १६; उव)।

कंडरीय वि [कण्डरीक] १ अशोभन, अ-सुन्दर। २ अप्रधान (सूअनि १४७; १५३)।

कंडलि, कंडलिआ स्त्री [कन्दरिका] गुफा, कन्दरा (पि ३३३; हे २, ३८; कुमा)।

कंडवा स्त्री [कण्डवा] वाद्य-विशेष (राय)।

कंडार सक [उत् + कृ] खुदना, छील-छाल कर ठीक करना। संकृ.
'णूणं दुवे इह पआवइणो जअम्मि,
जे देहणिम्मवणजोव्वणदाणदक्खा।
एक्कं घडेइ पढमं कुमरीणमंगं,
कंडारिऊण पअडेइ पुणो दुईओ' (कप्पू)।

कंडावेल्ली स्त्री [काण्डवल्ली] वनस्पति-विशेष (पण्ण १)।

कंडिअ वि [कण्डित] साफ-सुथरा किया हुआ (दे १, ११५)।

कंडियायण न [कण्डिकायन] वैशाली (बिहार) का एक चैत्य (भग १५)।

कंडिल्ल पुं [काण्डिल्य] १ काण्डिल्य-गोत्र का प्रवर्त्तक ऋषि-विशेष। २ पुंस्त्री. काण्डिल्य गोत्र उत्पन्न। ३ न. गोत्र-विशेष, जो माण्डव्य गोत्र की एक शाखा है (ठा ७—पत्र ३६०)। °**यण** पुं [°यन] स्वनाम-ख्यात ऋषि-विशेष (चंद १०)।

कंडु देखो **कंडू** (राज)।

कंडु देखो **कंदु** (सूअ १, ५)।

कंडुअ सक [कण्डूय्] खुजवाना। कंडुअइ (हे १, १२१; उव), कंडुअए (पि ४६२)। वकृ. **कंडुअंत** (गा ४६०); **कंडुअमाण** (प्रासू २८)।

कंडुअ पुं [कान्दविक] हलवाई, मिठाई बेचने-वाला; 'राया चिंतेइ; कओ कंडुयस्स जल-कंतरयणसंपत्ती ?' (आवम)।

कंडुअ, कंडग पुं [कन्दुक] गेंद (दे ३, ५६; राज)।

कंडुज्जुय वि [काण्डर्जु] बाण की तरह सीधा (स ३१७; गा ३५२)।

कंडुयग वि [कण्डूयक] खुजानेवाला (औप)।

कंडुयण न [कण्डूयन] १ खुजली, खाज, पामा, रोग-विशेष। २ खुजवाना; 'पामागहि-यस्स जहा, कंडुयणं दुक्खमेव मूढस्स' (स ५१५; उव २६४ टी; गउड)।

कंडुयय देखो **कंडुयग**; 'अकंडुयएहिं' (पण्ह २, १—पत्र १००)।

कंडुरु पुं [कण्डुरु] स्वनाम-ख्यात एक राजा, जिसने रामचन्द्र के भाई भरत के साथ जैनी दीक्षा ली थी (पउम ८५, ५)।

कंडू स्त्री [कण्डू] १ खुजलाहट, खुजवाना (णाया १, ५)। २ रोग-विशेष, पामा, खाज (णाया १, १३)।

कंडूइ स्त्री [कण्डूति] ऊपर देखो (गा ५३२; सुर २, २३)।

कंडूइअ न [कण्डूयित] खुजवाना (सूअ १, ३, ३; गा १८१)।

कंडूय देखो **कंडुअ** = कण्डूय्। कंडूयइ (महा)। वकृ. **कंडूयमाण** (महा)।

कंडूयग वि [कण्डूयक] खुजवानेवाला (ठा ५, १)।

कंडूयण देखो **कंडुयण** (उप २५६; सुपा १७६; २२७)।

कंडूयय देखो **कंडूयग** (महा)।

कंडूर पुं [दे] बक, बगुला (दे २, ६)।

कंडूल वि [कण्डूल] खाजवाला, कण्डू-युक्त (कुमा)।

कंत सक [कृत्] १ काटना, छेदना। २ कातना, चरखे से सूता बनाना; 'सल्लं कंतंति अप्पणो' (सूअ १, ८, १०)। कंतामि (पिंडभा ३५)।

कंत वि [कान्त] १ मनोहर, सुन्दर (कुमा)। २ अभिलषित, वाञ्छित (णाया १, १)। ३ पुं. पति, स्वामी (पाअ)। ४ देव-विशेष (सुज्ज १६)। ५ न. कान्ति, प्रभा (आचा २,५,१)।

कंत वि [क्रान्त] गत, गुजरा हुआ (प्राप)।

कंता स्त्री [कान्ता] १ स्त्री, नारी (सुर ३, १४; सुपा ५७३)। २ रावण की एक पत्नी का नाम (पउम ७४, ११)। ३ एक योग-दृष्टि (राज)।

कंतार न [कान्तार] १ अरण्य, जंगल (पाअ)। २ दुष्ट, दूषित। ३ निराश्रय। ४ पागल (कप्पू)।

कंतार पुंन [कान्तार] जल-फलादि-रहित अरण्य, 'कंतारो' (सम्मत्त १६६)।

कंति स्त्री [कान्ति] १ तेज, प्रकाश (सुर २, २३६)। २ शोभा, सौन्दर्य (पाअ)। ३ इस नाम की रावण की एक पत्नी (पउम ७४, ११)। ४ अहिंसा (पण्ह २,१)। ५ इच्छा। ६ चन्द्र की एक कला (राज; विक १०७)। °**पुरी** स्त्री [°पुरी] नगरी-विशेष (ती)। °**म, °ल्ल** वि [°मत्] कान्ति युक्त (आवम; गउड, सुपा ८; १८८)।

कंति स्त्री [क्रान्ति] १ परिवर्त्तन, फेरफार। २ गमन, गति (नाट—विक्र ६०)।

कंतु पुं [दे] काम, कामदेव (दे २, १)।

कंथक, कंथग, कंथय पुं [कन्थक] अश्व की एक जाति (ठा ४, ३; उत्त २३); 'जहा से कंबोयाणं आइन्ने कंथए सिया' (उत्त ११)।

कंथा स्त्री [कन्था] कथड़ी, गुदड़ी, पुराने वस्त्र से बना हुआ ओढ़ना (हे १, १८७)।

कंथार पुं [कन्थार] वृक्ष-विशेष (उप २२० टी)।

कंथारिया, कंथारी स्त्री [कन्थारिका, °री] वृक्ष-विशेष (उप १०३१ टी)। °**वण** न [°वन] उज्जैन के समीप का एक जंगल, जहां अवन्तीसुकुमार-नामक जैन मुनि ने अन-शन व्रत किया था (आक)।

कंथेर पुं [कन्थेर] वृक्ष-विशेष (राज)।

कन्थेरी स्त्री [कन्थेरी] कण्टकमय वृक्ष-विशेष (उर ३, २)।

कंद अक [क्रन्द्] कांदना, रोना। कंदइ (पि २३१)। भूका. कंदिंसु (पि ५१६)। वकृ. **कंदंत** (गा ५८४), **कन्दमाण** (णाया १, १)।

कंद वि [दे] १ दृढ़, मजबूत। २ मत्त, उन्मत्त। ३ न. स्तरण, आच्छादन, (दे २, ५१)।

कंद पुं [क्रन्द, क्रन्दित] व्यन्तर देवों की एक जाति (ठा २, ३—पत्र ८५)।

कंद पुं [कन्द] १ गूदेदार और बिना रेशे की जड़; जमीकन्द, सूरन, शकरकन्द, बिलारीकन्द, ओल, गाजर, लहसुन वगैरह (जी ६)। २ मूल, जड़ (गउड)। ३ छन्द-विशेष (पिंग)।

कंद पुं [स्कन्द] कार्त्तिकेय, षडानन (कुमा; हे २, ५; षड्)।

कन्दणया स्त्री [क्रन्दनता] मोटे स्वर से चिल्लाना (ठा ४, १)।

कंदप्प पुं [कन्दर्प] १ कामदेव, अनंग (पाअ)। २ कामोद्दीपक हास्यादि; 'कंदप्पे कुक्कुइए' (पडि; णाया १, १)। ३ देव-विशेष (पव ७३)। ४ काम-संबन्धी कषाय। ५ वि. काम-युक्त, कामी (बृह १)।

कंदप्प वि [कान्दर्प] कान्दर्प-संबन्धी (पव ७३)।

कंदप्पि वि [कन्दर्पिन्] कामोद्दीपक, कन्दर्प का उत्तेजक (वव १)।

कंदप्पिय पुं [कान्दर्पिक] १ मजाक करनेवाला भाण्ड वगैरह (औप; भग)। २ भाण्ड-प्राय देवों की एक जाति (पण्ह २, २)। ३ हास्य वगैरह भाण्ड कर्म से आजीविका चलानेवाला (पण्ण २०)। ४ वि. काम-संबन्धी (बृह १)।

कंदर न [कन्दर] १ रन्ध्र, विवर (णाया १, २)। २ गुहा, गुफा (उवा; प्रासू ७३)।

कंदरा } कंदरी } स्त्री [कन्दरा] गुहा, गुफा (से ४, ३९; राज)।

कंदल पुं [कन्दल] १ अंकुर, प्ररोह (सुपा ४)। २ लता-विशेष (णाया १, ६)।

कंदल न [दे] कपाल (दे २, ४)।

कंदलग पुं [कन्दलक] एक खुरवाला जानवर-विशेष (पण्ण १)।

कंदलिअ } कंदलिल्ल } वि [कन्दलित] अंकुरित (कुमा; पि ५९५)।

कंदली स्त्री [कन्दली] १ लता-विशेष (सुपा ६; पउम ५३, ७९)। २ अंकुर, प्ररोह; 'दारिद्ददुमकंदलीवणदवो' (उप ७२८ टी)।

कंदली स्त्री [कन्दली] कन्द-विशेष (उत्त ३६, ९८, ९९)।

कंदविय पुं [कान्दविक] हलवाई, मिठाई बेचनेवाला (उप २११ टी)।

कंदिंद पुं [क्रन्देन्द्र, क्रन्दितेन्द्र] क्रन्दित-नामक देव-निकाय का इन्द्र (ठा २, ४—पत्र ८५)।

कंदिय पुं [क्रन्दित] १ वाणव्यन्तर देवों की एक जाति (पण्ह १, ४; औप)। २ न. रोदन, आक्रन्द (उत्त २)।

कंदिर वि [क्रन्दिन्] कांदनेवाला (भवि)।

कंदी स्त्री [दे] मूला, कन्द-विशेष (दे २, १)।

कंदु पुंस्त्री [कन्दु] एक प्रकार का बरतन, जिसमें माण्ड वगैरह पकाया जाता है, हाँडा (विपा १, ३; सूअ १, ५)।

कंदुअ पुं [कन्दुक] १ गेंद (पाअ; स्वप्न ३९; मै ६१)। २ वनस्पति-विशेष (पण्ण १)।

कंदुइअ पुं [कान्दविक] हलवाई, मिठाई बेचनेवाला (दे २, ४१; ६ ६३)।

कंदुक देखो कंदुअ (सूअ २, ३, १६)।

कंदुग देखो कंदुअ (राज)।

कंदुट्ट न [दे] देखो कंदोट्ट (पाअ; धर्म ५; सण)।

कंदुब्भव पुंन [दे] कन्द-विशेष (सुख ३६, ९८)।

कंदुय देखो कंदुइअ (कुप्र ९८)।

कंदोइय देखो कंदुइअ (सुपा ३८५)।

कंदोट्ट न [दे] नील कमल (दे २, ६; प्राप्र; षड्; गा ६२२; उत्तर ११७; कप्पू; भवि)।

कंध देखो खंध = स्कन्ध (नाट; वज्जा ३६)।

कंधरा स्त्री [कन्धरा] ग्रीवा, गरदन (पाअ; सुर ४, १९६; गउड ९)।

कंधार पुं [दे] स्कन्ध, ग्रीवा का पीछला भाग (उप पृ ८६)।

कंप अक [कम्प्] कांपना, हिलना। कंपइ (हे १, ३०)। वकृ. कंपंत, कंपमाण (महा; कप्प)। कवकृ कंपिज्जंत (से ६, ३८; १३, ५९)। प्रयो., वकृ. कंपाविंत (सुपा ५९३)।

कंप पुं [कम्प] अस्थैर्य, चलन, हिलन (कुमा; आउ)।

कंपड पुं [दे] पथिक, मुसाफिर (दे २, ७)

कंपण न [कम्पन] १ कम्प, हिलन (भवि)। २ रोग-विशेष। °वाइअ वि [°वातिक] कम्प वायु नामक रोगवाला (अनु ६)।

कंपि वि [कम्पिन्] कांपनेवाला (कप्पू)।

कंपिअ वि [कम्पित] कांपा हुआ (कुमा)।

कंपिर वि [कम्पितृ] कांपनेवाला (गा ६५६; सुपा १५८; श्रा २७)।

कंपिल्ल वि [कम्पवत्] कांपनेवाला, अस्थिर; 'निच्चमकंपिल्लं परभयाहि कंपिल्लनामपुरं' (उप ६ टी)।

कंपिल्लि पुं [काम्पिल्य] १ यदुवंशीय राजा अन्धकवृष्णि के एक पुत्र का नाम (अन्त ३)। २ न. पंजाब देश का एक नगर (ठा १०; उप ६४८ टी)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष (पउम ८, १४३; उवा)।

कंब वि [कम्र] १ कामुक, कामी। २ सुन्दर, मनोहर (पि २९५)।

कंब° देखो कंबा।

कंबर पुं [दे] विज्ञान (दे २, १३)।

कंबल पुंन [कम्बल] १ कामरी, ऊनी कपड़ा (आचा; भग)। २ पुं. स्वनाम-ख्यात एक बलीवर्द (राज)। ३ गौ के गले का चमड़ा, सास्ना, गलकंबल, लहर (विपा १, २)।

कंबा स्त्री [कम्बा] यष्टि, लकड़ी; 'दिट्ठो तज्जणएणं, निसूडिउं कंबघाएहिं बद्धो' (सुपा ३९९)।

कंबि } कंबी } स्त्री [कम्बि, °म्बी] १ दर्वी, कड़छी। २ लीला-यष्टि, छड़ी, शोख से हाथ में रखी जाती लकड़ी (उप पृ २३७)।

कंबिया स्त्री [कम्बिका] पुस्तक का पुट्ठा, किताब का आवरण पृष्ठ (राय ६९)।

कंबु पुं [कम्बु] १ शङ्ख (पण्ह १, ४)। २ इस नाम का एक द्वीप (पउम ४५, ३२)। ३ पर्वत-विशेष (पउम ४५, ३२)। ४ न. एक देव-विमान (सम २२)। °ग्गीव न [°ग्रीव] एक देव-विमान (सम २२)।

कंबोय पुं [कम्बोज] देश-विशेष (पउम २७, ७; स ८०)।

कंबोय वि [काम्बोज] कम्बोज देश में उत्पन्न (स ८०)।

कंभार पुं.ब. [कश्मीर] इस नाम का एक प्रसिद्ध देश (हे २, ६०; षड्)। °जम्म न [°जन्मन्] कुंकुम, केसर (कुमा)। देखो कम्हार।

कंभूर (अप) ऊपर देखो (षड्)।

कंस पुं [कंस] १ राजा उग्रसेन का एक पुत्र, श्रीकृष्ण का मातुल (पण्ह १, ४)। २ महा-ग्रह-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७८)। ३ कांसा, एक प्रकार की धातु (णाया १, ७—पत्र ११८)। °णाभ पुं [°नाभ] ग्रह-विशेष (सुज्ज २०; इक)। °वण्ण पुं [°वर्ण] ग्रह-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७८)। °वण्णाभ पुं [°वर्णाभ] ग्रह-विशेष (ठा २, ३)। °संहारण पुं [°संहारण] कृष्ण, विष्णु (पिंग)।

कंस न [कांस्य] १ धातु-विशेष, कांसा। २ वाद्य-विशेष। ३ परिमाण-विशेष। ४ जल पीने का पात्र, प्याला (हे १, २९; ७०)। °**ताल** न [°ताल] वाद्य-विशेष (जीव ३)। °**वत्ती, °पाई** स्त्री [°पात्री] कांसा का बना हुआ पात्र-विशेष (कप्प; ठा ६)। °**पाय** न [°पात्र] कांसा का बना हुआ पात्र (दस ६)।

कंसार पुं [दे] कसार, एक प्रकार की मिठाई; 'ता करेऊण कंसारं तालपुडसंजुयं चेगं विसमोयगं गोसे उवरोमि एयाणं' (स १८७)।

कंसारी स्त्री [दे] त्रीन्द्रिय क्षुद्र जन्तु की एक जाति (जी १८)।

कंसाल पुं [कांस्याल] वाद्य-विशेष (हे २, ९२; सुपा ५०)।

कंसाला स्त्री [कंसताला, कांस्यताला] वाद्य का एक प्रकार का निर्घोष, ताल (णंदि)।

कंसालिया स्त्री [कांस्यतालिका] एक प्रकार का वाद्य (सुपा २४२)।

कंसिअ पुं [कांस्यिक] १ कसेरा, कँसारी, कांस्य-कार (हे १, ७०)। २ वाद्य-विशेष (सुपा २४२)।

कंसिआ स्त्री [कंसिका] १ ताल (णाया १, १७)। २ वाद्य-विशेष (आचा २)।

ककाणि पुंस्त्री [दे] मर्म स्थान, 'अरुस्स विज्झंति ककाणओ से' (सूअ १, ५, २, १५)।

ककुध } **ककुभ** } देखो कउह = ककुद (पि २०९; हे २, १७४)।

ककुह देखो कउह = ककुद (ठा ५, १; णाया १, १७; विपा १, २)। ५ हरिवंश का एक राजा (पउम २२, ९९)।

ककुहा देखो कउहा (षड्)।

कक्क पुं [कल्क] १ उद्वर्तन-द्रव्य, शरीर पर का मैल दूर करने के लिए लगाया जाता द्रव्य (सूअ १, ९; निचू १)। २ न. पाप (भग १२, ५)। ३ माया, कपट (सम ७१)। °**गरुग** न [°गुरुक] माया, कपट (पण्ह १, २—पत्र २८)।

कक्क पुंन [कल्क] १ चन्दन आदि उद्वर्तन द्रव्य (दस ६, ६४)। २ प्रसूति-रोग आदि में किया जाता क्षार-पातन। ३ लोध्र आदि से उद्वर्तन (पव २—गाथा ११५)। °**कुरुया** स्त्री [°करुका] माया, कपट (पव २)।

कक्क पुं [कर्क] १ चक्रवर्ती का एक देव-कृत प्रासाद (उत्त १३, १३)। २ राशि-विशेष, कर्क राशि (धर्मवि ६६)।

कक्कंध पुं [कर्कन्ध] ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष (ठा २, ३)।

कक्कंधु स्त्री [कर्कन्धु] बैर का वृक्ष (पाअ)।

कक्कड पुं [कर्कट] कर्कराशि (विचार १०६)।

कक्कड न [कर्कट] १ जलजन्तु-विशेष, कुलीर (पाअ)। २ ककड़ी, फल-विशेष (पव ४)। ३ हृदय का एक प्रकार का वायु (भग १०, ३)।

कक्कडच्छ पुं [कर्कटाक्ष] ककड़ी, खीरा (कप्प)।

कक्कडिया } **कक्कडी** } स्त्री [कर्कटिका, °टी] ककड़ी (खीरा) का गाछ (उप ६६१)।

कक्कणा स्त्री [कल्कना] १ पाप। २ माया (पण्ह १, २)।

कक्कब पुं [दे] गुड़ बनाते समय की इक्षु-रस की एक अवस्था, इक्षु रस का विकार-विशेष (पिंड २८३)।

कक्कर पुं [कर्कर] १ कंकर, पत्थर (विपा १, २; गउड; सुपा ५९७; प्रासू १६८)। २ वि. कठिन, परुष (आचू ४)। ३ कर्कर आवाज वाला (उत्त ७)।

कक्करणया स्त्री [कर्करणता] १ दोषोद्भावन, दोषोद्भावनगर्भित प्रलाप (ठा ३, ३—पत्र १४७)।

कक्कराइय न [कर्करायित] १ कर्कर की तरह आचरित। २ दोषोच्चारण, दोष-प्रकटन (आव ४)।

कक्कस वि [कर्कश] १ कठोर, परुष (पाअ; सुपा ५८; आरा ६४; पउम ३१, ६६)। २ प्रखर, चण्ड। ३ तीव्र, प्रगाढ (विपा १, १)। ४ अनिष्ट, हानि-कारक (भग ६, ३३)। ५ निष्ठुर, निर्दय (उत्त)। ६ चबा-चबा कर कहा हुआ वचन (आचा २, ४, १)।

कक्कस } **कक्कसार** } पुं [दे] दध्योदन, करम्ब (दे २, १४)।

कक्कसेण पुं [कर्कसेन] अतीत उत्सर्पिणी-काल में उत्पन्न एक स्वनाम ख्यात कुलकर पुरुष (राज)।

कक्कालुआ स्त्री [कर्कारुका] १ कूष्माण्ड-वल्ली, कोंहड़ा का गाछ; 'कक्कालुआ गोछडलि-त्तवेंटा' (मृच्छ ५९)।

कक्किंकड पुं [दे] कृकलास, गिरगिट; गुजराती में 'काकेडो' (दे २, ५)।

कक्कि पुं [कल्किन्] भविष्य में होनेवाला पाटलिपुत्र का एक रजा (ती)।

कक्किय न [कल्किक] मांस (सूअ १, ११)।

कक्केअण पुंन [कर्केतन] रत्न की एक जाति (कप्प; पउम ३, ७५)।

कक्केरअ पुं [कर्केरक] मणि-विशेष की एक जाति (मृच्छ २०२)।

कक्कोड न [कर्कोट] शाक-विशेष, ककरैल, ककोडा (राज)। देखो **कक्कोडय**।

कक्कोडई स्त्री [कर्कोटकी] ककोडे का वृक्ष ककरैल का गाछ (पाण १—पत्र ३३)।

कक्कोडय न [कर्कोटक] देखो **कक्कोड**। २ पुं. अनुवेलन्धर-नामक एक नाग-राज। ३ उसका आवास पर्वत (भग ३, ६; इक)।

कक्कोल पुं [कङ्कोल] १ वृक्ष-विशेष; शीतल-चीनी के वृक्ष का एक भेद (गउड; स ७१)। २ न. फल-विशेष, जो सुगंधी होता है (पण्ह २, ५)। देखो **कंकोल**।

कक्कोली स्त्री [कङ्कोली] वृक्ष-विशेष (कुप्र २४९)।

कक्ख देखो कच्छ = कक्ष (उव; कप्प; सुर १, ८८; पउम ४४, १; पि ३१८; ४२०)।

कक्खग वि [कक्षाग] १ कक्षा-प्राप्त। २ पुं कक्षा का केश (तंदु ३६)।

कक्खड देखो **कक्कस** (सम ४१; ठा १, १; वज्जा ८८; उव)।

कक्खड वि [दे] पीन, पुष्ट (दे २, ११; कप्प; आचा; भवि)।

कक्खडंगी स्त्री [दे] सखी, सहेली (दे २, १६)।

कक्खल [दे] देखो **कक्कस** (षड्)।

कक्खा देखो कच्छा = कक्षा (पाअ; णाया १, ८; सुर ११, २२१)।

कग्घाड पुं [दे] १ अपामार्ग, चिरचिरा, लटजीरा। २ किलाट, दूध की मलाई (दे २, ५४)।

कग्घायल पुं [दे] किलाट, दूध का विकार, दूध की मलाई (दे २, २२)।

कच्च न [दे. कृत्य] कार्य, काम (दे २, २, (षड्)।

कच्च (पै) देखो कज्ज (प्राप्र)।

कच्च न [काच] काच, शीशा; 'कच्चं माणिक्कं च समं आहरणे पउंजीअदि' (कप्पू)।

कच्चंत वि [कृत्यमान] पीड़ित किया जाता (सूत्र १, २, १)।

कच्चरा स्त्री [दे] १ कचरा, कच्चा खरबूजा। २ कचरा को सूखाकर, तलकर और मसाला डालकर बनाया हुआ खाद्य-विशेष, एक प्रकार का आचार, गुजराती में जिसको 'काचरी' कहते हैं; 'पुणो कच्चरा पप्पड़ा दिण्णभेया' (भत्ति)।

कच्चबार पुं [दे] कतवार, कूड़ा (सुक्त ४४)।

कच्चाइणी स्त्री [कात्यायनी] देवी-विशेष, चण्डी (स ४३७)।

कच्चायण पुं [कात्यायन] १ स्वनाम-ख्यात ऋषि-विशेष (सुज्ज १०)। १ न. कौशिक गोत्र की शाखा-रूप एक गोत्र। ३ पुंस्त्री. उस गोत्र में उत्पन्न (ठा ७—पत्र ३९०)।

कच्चायणी स्त्री [कात्यायनी] पार्वती, गौरी (पाअ)।

कच्चि अ [कच्चित्] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ प्रश्न। २ मंडल। ३ अभिलाप। ४ हर्ष (पि २७१; हे २, २१७; २१८)।

कच्चु (अप) ऊपर देखो (हे ४, ३२९)।

कच्चूर पुं [कर्चूर] वनस्पति-विशेष, कचूर, काली हलदी (श्रा २०)।

कच्चोल } पुंन [कच्चोलक] पात्र-विशेष,
कच्चोलय } प्याला (पउम १०२, १२०; भवि सुपा २०१)।

कच्छ पुं [कक्ष] १ काँख, कखरी। २ वन, जंगल (भग ३, ६)। ३ तृण, घास। ४ शुष्क तृण। ५ वल्ली, लता। ६ शुष्क काष्ठों वाला जंगल। ७ राजा वगैरह का जनानखाना। ८ हाथी को बाँधने की डोर। ९ पार्श्व, बाजू। १० ग्रह-भ्रमण। ११ कक्षा, श्रेणी। १२ द्वार, दरवाजा। १२ वनस्पति-विशेष, गूगल। १४ विभीतक वृक्ष। १५ घर की भीत। १६ स्पर्धा का स्थान। १७ जल-प्राय देश (हे २, १७)।

कच्छ पुं. ब. [कच्छ] १ स्वनाम-ख्यात देश, जो आजकल भी 'कच्छ' नाम से प्रसिद्ध है (पउम ९८, ६५; दे २, १ टी)। २ जलप्राय देश, जल-बहुल देश (णाया १, १—पत्र; ३३; कुमा)। ३ कच्छा, लँगोट (सुर २, १६)। ४ इक्षु वगैरह की वाटिका (कुमा; आचा २, ३)। ५ महाविदेह वर्ष में स्थित एक विजय-प्रदेश (ठा २, ३)। ६ तट, किनारा; 'गोलाणईए कच्छे, चक्खंतो राइआइ पत्ताइं' (गा १७१)। ७ नदी के जल से वेष्टित वन (भग)। ८ भगवान् ऋषभदेव का एक पुत्र (आवम)। ९ कच्छ-विजय का एक राजा। १० कच्छ-विजय का अधिष्ठायक देव (जं ४)। ११ पार्श्ववर्ती प्रदेश। १२ राजा वगैरह के उद्यान के समीप का प्रदेश (उप ९८६ टी)। १२ छन्द-विशेष, दोधक छंद का एक भेद (पिंग)। °कूड न [°कूट] १ माल्यवन्तनामक वक्षस्कार पर्वत का एक शिखर। २ कच्छ-विजय के विभाजक वैताढय पर्वत के दक्षिणोत्तर पार्श्ववर्त्ती दो शिखर (ठा ९)। ३ चित्रकूट पर्वत का एक शिखर (जं ४)। °ाहिव पुं [°ाधिप] कच्छ देश का राजा (भवि)। °ाहिवइ पुं [°ाधिपति] कच्छ देश का राजा (भवि)।

कच्छ पुंन [कच्छ] १ नदी के पास की नीची जमीन। २ मूला आदि की बाड़ी (आचा २, ३, ३, १)।

कच्छकर पुं [दे] काछिआ, सब्जी बेचनेवाला। (लोक प्र० ४६४, २, ३१—सर्ग)।

कच्छगावई स्त्री [कच्छकावती] महाविदेह वर्ष का एक विजय-प्रदेश (ठा २, ३)।

कच्छट्टी स्त्री [दे] कछौटी, लँगोटी, कछनी (रंभा —टि)।

कच्छभ पुं [कच्छप] १ कूर्म, कछुआ (पण्ह १,१; णाया १, १) २ राहु, ग्रह-विशेष (भग १२, ६)। °रिंगिय न [°रिङ्गित] गुरु-वन्दन का एक दोष, कछुए की तरह चलते हुए वन्दन करना (बृह ३; गुभा)।

कच्छभाणिया स्त्री [दे] जल में होनेवाली वनस्पति-विशेष (सूत्र २, ३, १८)।

कच्छभी स्त्री [कच्छपी] १ कच्छप-स्त्री, कूर्मी। २ वाद्य-विशेष (पण्ह २, ५)। ३ नारद की वीणा (णाया १, १७)। ४ पुस्तक-विशेष (ठा ४, २)।

कच्छर पुं [दे] पङ्क, कीच, कर्द (दे २, २)।

कच्छरी स्त्री [कच्छरी] गुच्छ विशेष (पण्ण १—पत्र ३२)।

कच्छव (अप) पुं [कच्छ] स्वनाम-प्रसिद्ध देश-विशेष (भवि)।

कच्छव देखो कच्छभ (पउम ३४, ३३; दे १, १६७ (गउड)।

कच्छवी देखो कच्छभी (बृह ३)।

कच्छह देखो कच्छभ (पाअ)।

कच्छा स्त्री [कक्षा] १ विभाग, अंश (पउम १६, ७०)। २ उरो-बन्धन, हाथी के पेट पर बाँधने की रज्जु; 'उप्पीलियकच्छे' (विपा १, २—पत्र २३; औप)। ३ काँख, बगल (भग ३, ६; प्रामा)। ४ श्रेणी, पंक्ति; 'चमरस्स णं असुरिंदस्स असुरकुमाररण्णो दुमस्स पायत्ताणियाहिवस्स सत्त कच्छाओ पण्णत्ताओ' (ठा ७)। ५ कमर पर बांधने का वस्त्र (गा ६८४)। ६ जनानखाना, अन्तःपुर (ठा ७)। ७ संशय-कोटि। ८ स्पर्धा-स्थान। ९ घर की भीत। १० प्रकोष्ठ (हे २, १७)।

कच्छा स्त्री [कच्छा] कटि-मेखला, कमर का आभूषण (पाअ)। °वई स्त्री [°वती] देखो कच्छगावई (जं ४)। °वईकूड न [°वती-कूट] महाविदेह वर्ष में स्थित ब्रह्मकूट पर्वत का एक शिखर (इक)।

कच्छादब्भ पुं [दे. कक्षादर्भ] रोग-विशेष (सिरि ११७)।

कच्छु स्त्री [कच्छू] १ खुजली, खाज, रोग-विशेष (प्रासू २८)। २ खाज को उत्पन्न करनेवाली औषधि, कपिकच्छु (पण्ह २, ५)। °ल, °ल्ल वि [°मत्] खाज रोग-वाला (राज; विपा, १, ७)।

कच्छुट्टिया स्त्री [दे. कच्छपटिका] कछौटी, लँगोटी (रंभा)।

कच्छुरिअ वि [दे] १ ईर्षित, जिसकी ईर्ष्या की जाय वह। २ न. ईर्ष्या (दे २, १६)।

कच्छुरिअ वि [कच्छुरित] व्याप्त, खचित (कुम्मा ६ टी)।

कच्छुरी स्त्री [दे] कपिकच्छु, केवाँच (दे २, ११)।

कच्छुल पुं [कच्छुल] गुल्म-विशेष (पएण १—पत्र ३२)।

कच्छुल्ल पुं [कच्छुल्ल] स्वनाम ख्यात एक नारद-मुनि (णाया १, १६)।

कच्छू देखो कच्छु (प्रासू ७२)।

कच्छोटी स्त्री [दे] कछौटी, लंगोटी (रंभा—टि)।

कज्ज वि [कार्य] १ जो किया जाय वह। २ करने योग्य। ३ जो किया जा सके (हे २, २४)। ४ न. प्रयोजन, उद्देश्य; 'न य साहेइ सकज्जं' (प्रासू २७, कप्पू)। ५ कारण, हेतु (वव २)। ६ काम, काज;

'अन्नह परिचिंतिज्जइ,
सहरिसकंडुज्जएण हियएण।
परिणमइ अन्नह च्चिय,
कज्जारंभो विहिवसेण'
(सुर ४, १६)।

°**जाण** वि [°ज्ञ] कार्य को जाननेवाला (उप ६४८)। °**सेण** पुं [°सेन] अतीत उत्सर्पिणी-काल में उत्पन्न स्वनाम ख्यात एक कुलकर-पुरुष (सम १५०)।

कज्जआ (शौ) स्त्री [कन्यका] कन्या, कुमारी (प्राकृ ८७)।

कज्जउड पुं [दे] अनर्थ (दे २, १७)।

कज्जमाण वि [क्रियमाण] जो किया जाता हो वह; 'कज्जं च कज्जमाणं च आगमिस्सं च पावगं' (सूत्र १, ८)।

कज्जल न [कज्जल] १ काजल, मसी। २ अञ्जन, सुरमा (कुमा)। °**प्पभा** स्त्री [°प्रभा] सुदर्शना-नामक जम्बू-वृक्ष की उत्तर दिशा में स्थित एक पुष्करिणी (जीव ३)।

कज्जलइअ वि [कज्जलित] १ काजलवाला। २ श्याम, कृष्ण (पाअ)।

कज्जलंगी स्त्री [कज्जलाङ्गी] कज्जल-गृह, दीप के ऊपर रखा जाता पात्र, जिसमें काजल इकट्ठा होता है, कजरौटी (अंत, णाया १, १—पत्र ६)।

कज्जला स्त्री [कज्जला] इस नाम की एक पुष्करिणी (इक)।

कज्जलाव अक [ब्रुड्] डूबना, बूड़ना; 'आउसंतो समणा! एयं ते णावाए उदयं उत्तिंगेण आसवइ, उवरुवरि वा णावा कज्जलावेइ' (आचा २, ३, १, १६)। वकृ. **कज्जलावेमाण** (आचा २, ३, १, १६)।

कज्जलिअ देखो कज्जलइअ (से २, ३६; गउड)।

कज्जव } पुं [दे] १ विष्ठा, मैला। २ तृण
कज्जवय } वगैरह का समूह, कूड़ा, कतवार (दे २, ११; उप १७६; ५६३; स २६४; दे ६, ५६; अणु)।

कज्जिय वि [कार्यिक] कार्यार्थी, प्रयोजनार्थी (वव ३)।

कज्जोवग पुं [कार्योपग] अठासी महाग्रहों में एक ग्रह का नाम (ठा २, ३—पत्र ७८)।

कज्झाल न [दे] सेवाल, एक प्रकार की घास, जो जलाशयों में लगती है (दे २, ८)।

कटरि (अप) अ [कटरे] इन अर्थों का द्योतक अव्यय—१ आश्चर्य, विस्मय; 'कटरि थणंतरु मुद्धडहे, जे मणु विच्चिन माइ' (हे ४, ३५०)। २ प्रशंसा, श्लाघा; 'कटरि भालु सुविसालु, कटरि मुहकमल पसन्निम' (धम्म ११ टी)।

कटार (अप) न [दे] छुरी, क्षुरिका (हे ४, ४४५)।

कट्ट सक [कृत्] काटना, छेदना। कट्टइ (भवि)। संकृ. कट्टि, कट्टिवि, कट्टिअ (रंभा; भवि; पिंग)।

कट्ट वि [कृत्त] काटा हुआ, छिन्न (उप १८०)।

कट्ट न [कष्ट] १ दुःख। २ वि. कष्ट-कारक, कष्टदाई (पिंग)।

कट्टर पुंन [दे] कढ़ी में डाला हुआ घी का बड़ा, खाद्य-विशेष (पिंड ६३७)।

कट्टर न [दे] खण्ड, अंश, टुकड़ा; 'से जहा चित्तयकट्टरे इ वा वियाणपट्टे इ वा' (अनु)।

कट्टराय न [दे] छुरी, शस्त्र-विशेष (स १४३)।

कट्टारी स्त्री [दे] क्षुरिका, छुरी (दे २, ४)।

कट्टिअ वि [कर्त्तित] काटा हुआ, छेदित (पिंग)।

कट्टु वि [कर्त्तृ] कर्त्ता, करनेवाला (षड्)।

कट्टु अ [कृत्वा] करके (णाया १, ५; कप्प भग)।

कट्टोरग पुं [दे] कटोरा, प्याला, पात्र-विशेष; 'तओ पासेहिं करोडगा कट्टोरगा मंकुआ सिप्पाओ य ठविज्जंति' (निचू १)।

कट्ठ न [कष्ट] १ दुःख; पीड़ा, व्यथा (कुमा)। २ पाप। ३ वि. कष्ट-दायक, पीड़ा-कारक (हे २, ३४; ६०)। °**हर** न [°गृह] कठ-घरा, काठ की बनी हुई चारदीवारी (सुर २, १८१)।

कट्ठ न [काष्ठ] काठ, लकड़ी (कुमा; सुपा ३५४)। २ पुं. राजगृह नगर का निवासी एक स्वनाम-ख्यात श्रेष्ठी। (आवम)। °**कम्मंत** न [°कर्मान्त] लकड़ी का कारखाना (आचा २, २)। °**करण** न [°करण] श्यामक-नामक गृहस्थ के एक खेत का नाम (कप्प)। °**कार** पुं [°कार] काठ-कर्म से जीविका चलानेवाला (अणु)। °**कोलंब** पुं [°कोलम्ब] वृक्ष की शाखा के नीचे झुकता हुआ अग्र-भाग (अनु)। °**खाय** पुं [°खाद] कीट-विशेष, घुण (ठा ४)। °**दल** न [°दल] रहर की दाल (राज)। °**पाउया** स्त्री [°पादुका] काठ का जूता, खड़ाऊँ (अनु ४)। °**पुत्तलिया** स्त्री. [°पुत्तलिका] कठपुतली (अणु)। °**पेज्जा** स्त्री [°पेया] १ मूँग वगैरह का क्वाथ। २ घृत से तली हुई तण्डुल की राब (उवा)। °**महु** न [°मधु] पुष्प-मकरन्द (कुमा)। °**मूल** न [°मूल] द्विदल धान्य, जिसका दो टुकड़ा समान होता है ऐसा चना, मूँग आदि अन्न (बृह १)। °**हार** पुं [°हार] त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष, क्षुद्र कीट-विशेष (जीव १)। °**हारय** पुं [°हारक] कठहरा, लकड़हारा (सुपा ३८५)।

कट्ठ वि [कृष्ट] विलिखित, चासा हुआ; 'खीर-दुमहेट्ठपंथकट्ठोल्ला इंधणे य मीसो य' (ओघ ३३६)।

कट्ठण न [कर्षण] आकर्षण, खींचाव (गउड)।

कट्ठहार पुं [काष्ठहार] कठहरा, लकड़हारा, काष्ठवाहक (कुप्र १०४)।

कट्ठा स्त्री [काष्ठा] १ दिशा (सम ८८)। २ हद, सीमा; 'कवडस्स अहो परा कट्ठा' (आ १६)। ३ काल का एक परिमाण, अठारह निमेष (तंदु)। ४ प्रकर्ष (सुज्ज ६)।

कट्ठिअ पुं [दे] चपरासी, प्रतीहार (दे २, १५)।

कट्ठिअ वि [काष्ठित] काठ से संस्कृत भीत वगैरह (आचा २, २)।

कट्ठिण देखो कढिण (नाट—मालती ५६)।

कट्ठेअ वि [काष्ठेय] देखो कट्ठिअ—काष्ठित (आचा २, २, १, ६)।

कट्ठोल देखो कट्ठु = कुष्ट (पिंड १२)।

कड वि [दे] १ क्षीण, दुर्बल। २ मृत, विनष्ट (दे २, ५१)।

कड पुं [कट] १ गण्ड-स्थल, गाल (णाया १, १. पत्र ६५)। २ तृण, घास। ३ चटाई, आस्तरण-विशेष (ठा ४, ४. पत्र २७१)। ४ लकड़ी, यष्टि; 'तेसिं च जुद्धं लयालिट्ठुकडपासाणदंतनिवाएहिं' (वसु)। ५ वंश, बांस (विपा १, ६; ठा ४, ४)। ६ तृण-विशेष (ठा ४, ४)। ७ छिला हुआ काष्ठ (आचा २, २, १)। °च्छेज्ज न [°च्छेद्य] कला-विशेष (औप; जं २)। °तड न [°तट] १ कटक का एक भाग। २ गण्ड-तल (णाया १, १)। °पूयणा स्त्री [°पूतना] व्यन्तरी-विशेष (विसे २५४६)।

कड वि [कृत] १ किया हुआ, बनाया हुआ, रचित (भग; पण्ह २, ४; विपा १, १; कप्प; सुपा २६)। २ पुंन. युग-विशेष, सत्ययुग, (ठा ४, ३)। ३ चार की संख्या (सूअ १, २)। °जुग न [°युग] सत्य-युग, उन्नति का समय, आदि युग, १७२८००० वर्षों का यह युग होता है (ठा ४, ३)। °जुम्म पुं [°युग्म] सम राशि-विशेष, चार से भाग देने पर जिसमें कुछ भी शेष न बचे ऐसी राशि (ठा ४, ३)। °जुम्मकडजुम्म पुं [°युग्मकृतयुग्म] राशि-विशेष (भग ३४, १)। °जुम्मकलिओय [°युग्मकल्योज] राशि-विशेष (भग ३४, १)। °जम्मतेओग पुं [°युग्मत्र्योज] राशि-विशेष (भग ३४, १)। °जुम्मदावरजुम्म पुं [°जुग्मद्वापरयुग्म] राशि-विशेष (भग ३४, १)। °जोगि वि [°योगिन्] १ कृत-क्रिय (निचू १)। २ गीतार्थ, ज्ञानी (ओघ १३४ भा)। ३ तपस्वी (निचू १)। °वाइ पुं [°वादिन्] सृष्टि को नैसर्गिक न मानकर किसी की बनाई हुई माननेवाला, जगत्कर्तृत्ववादी (सूअ १, १, १) °इ पुं [°दि] देखो °जोगि (भग; णाया १, १—पत्र ७४)। देखो कय = कृत।

कडअल्ल पुं [दे] दौवारिक, प्रतीहार (दे २, १५)।

कडअल्ली स्त्री [दे] कण्ठ, गला (दे २, १५)।

कडइअ पुं [दे] स्थपति, बढई (दे २, २२)।

कडइअ वि [कटकित] वलय की तरह स्थित (से १२, ४१)।

कडइल्ल पुं [दे] दौवारिक, प्रतीहार (दे २, १५)।

कडंगर न [कडङ्गर] तुष, छिलका, भूसा (सुपा १२६)।

कडंत न [दे] मूली, कन्द विशेष। २ मुसल (दे २, ५६)।

कडंतर न [दे] पुराना सूर्प आदि उपकरण (दे २, १८)।

कडंतरिअ वि [दे] दारित, विदारित, विनाशित (दे २, २०)।

कडंब पुं [कडम्ब] वाद्य-विशेष (विसे ७८ टी)।

कडंबा पुंस्त्री [कदम्बा] वाद्य-विशेष (राय ४६)।

कडंभुअ न [दे] १ कुम्भग्रीव-नामक पात्र-विशेष। घड़े का कण्ठ-भाग (दे २, २०)।

कडक देखो कडग (नाट—रत्ना ५८)।

कडकडा स्त्री [कडकडा] अनुकरण शब्द-विशेष, कड़ कड़ आवाज (स २५७; पि ५५८; नाट—मालती ५६)।

कडकडिअ वि [कडकडित] जिसने कड़-कड़ आवाज किया हो वह, जीर्ण (सुर ३,१६३)।

कडकडिर वि [कडकडायितृ] कड़-कड़ आवाज करनेवाला (सण)।

कडक्किय न [कडक्कित] कड़कड़ आवाज (सिरि ६६२)।

कडक्ख पुं [कटाक्ष] कटाक्ष, तिरछी चितवन, भाव-युक्त दृष्टि, आँख का संकेत (पाअ; सुर १, ४३; सुपा ६)।

कडक्ख सक [कटाक्षय्] कटाक्ष करना। कडक्खइ (भवि)। संकृ. कडक्खेवि (भवि)।

कडक्खण न [कटाक्षण] कटाक्ष करना (भवि)।

कडक्खिअ वि [कटाक्षित] १ जिसपर कटाक्ष किया गया हो वह (रंभा)। २ न. कटाक्ष (भवि)।

कडग पुंन [कटक] १ कड़ा, वलय, हाथ का आभूषण-विशेष (णाया १,१)। २ यवनिका, परदा; 'अन्नस्स सग्गगमणं होही कडंतरेण तं सव्वं। निसुयमुवज्झाएणं' (उप १६६ टी)। ३ पर्वत का मूल भाग। ४ पर्वत का मध्य भाग। ५ पर्वत की सम भूमि। ६ पर्वत का एक भाग; 'गिरिकंदरकडगविसमदुग्गेसु' (पच्च ८२; पण्ह १, ३; णाया १, ४; १८)। ७ शिबिर, सेना रहने का स्थान (बृह २)। ८ पुं. देश-विशेष (णाया १, १—पत्र ३३)। देखो कडय।

कडच्छु स्त्री [दे] कर्छी, चमची, डोई (दे २, ७)।

कडण न [कदन] १ मार डालना, हिंसा करना। (कुमा)। २ नाश करना। ३ मर्दन। ४ पाप। ५ युद्ध। ६ विह्वलता, आकुलता (हे १, २१७)।

कडण न [कटन] १ घर की छत। २ घर पर छत डालना (गच्छ १)।

कडण न [कटन] चटाई आदि से घर का संस्कार, चटाई आदि से घर के पार्श्व भागों का किया जाता आच्छादन (आचा २, २, ३, १ टी; पव १३३)।

कडणा स्त्री [कटना] घर का अवयव विशेष (भग ८, ६)।

कडणी स्त्री [कटनी] मेखला, 'सुरगिरिकडणिपरिट्ठियचंदाइच्चाण सिरिमणुहरंति' (सुपा ६१५)।

कडतला स्त्री [दे] लोहे का एक प्रकार का हथियार, जो एक धारवाला और वक्र होता है (दे २, १६)।

कडत्तरिअ वि [दे] देखो कडंतरिअ (भवि)।

कडद्दरिअ वि [दे] १ छिन्न, काटा हुआ। २ न. छिद्रता (षड्)।

कडप्प पुं [दे. कटप्र] १ समूह, निकर, कलाप (दे २, १३; षड्; गउड; सुपा ६२; भवि; विक्र ६५)। २ वस्त्र का एक भाग (दे २, १३)।

कडमड पुंन [दे] उद्वेग (संक्षि ४७)।

कडय न [कटक] ऊख आदि की यष्टि (आचा २, १०, २)।

कडय देखो **कडग** (सुर १, १६३; पात्र; गउड; महा; सुपा १६२; दे ५, ३३)। ९ लश्कर, सैन्य (ठा ६)। १० पुं. काशी देश का एक राजा (महा)। °वई स्त्री [°वती] राजा कटक की एक कन्या (महा)।

कडयड पुं [कडकड] कड़-कड़ आवाज, 'कत्थइ खरपवहाणयकडम(? य)डभज्जंतदुम-गहणं' (पउम ९४, ४४)।

कडयडिय वि [दे] परावर्त्तित, फिराया हुआ, घुमाया हुआ; 'नं कुम्मह कडयडिय दिट्ठि नं पविहउ गिरिवरु' (सुपा १७६)।

कडसक्करा स्त्री [दे] वंश शलाका, बाँस की सलाई (विपा १, ६)।

कडसार न [कटसार] मुनि का एक उपकरण, आसन; 'न वि लेइ जिणा पिछीं (? छिं)। नवि कुंडीं (? डिं) कक्कलं च कडसारं' (विचार १२८)।

कडसी स्त्री [दे] श्मशान, मसान (दे २, ६)।

कडहू पुं [कटभू] वृक्ष-विशेष (बृह १)।

कडा स्त्री [दे] कड़ी, सिकड़ी, जंजीर की लड़ी; 'वियडकवाडकडाणं खडक्खग्रो निसुणिओ तत्तो' (सुपा ४१४)।

कडार न [दे] नारिकेल, नरियर (दे २,१०)।

कडार पुं [कडार] १ वर्ण-विशेष, तामड़ा वर्ण, भूरा रंग। २ वि. कपिल वर्णवाला, भूरा रंग का, मटमैला रंग का (पात्र; रयण ७७; सुपा ३३; ९२)।

कडाली स्त्री [दे. कटालिका] घोड़े के मुँह पर बांधने का एक उपकरण (अनु ६)।

कडाह पुं [कटाह] १ कड़ाह, लोहे का पात्र, लोहे की बड़ी कड़ाही (अनु ६; नाट—मृच्छ ३)। २ वृक्ष-विशेष (पउम १३,७९)। ३ पाँजर की हड्डी, शरीर का एक अवयव (पण्ण १)।

कडाहपल्हत्थिअ न [दे] दोनों पार्श्वों का अपवर्त्तन, पार्श्वों को घुमाना-फिराना (दे २, २५)।

कडि स्त्री [कटि] १ कमर, कटी (विपा १, २; अनु ६)। २ वृक्षादि का मध्य भाग (जं १)। °तड न [°तट] १ कटी-तट। २ मध्य भाग (राय)। °पट्टय न [°पट्टक] धोती, वस्त्र-विशेष (बृह ४)। °पत्त न [°पत्र] १ सर्गादि वृक्ष की पत्ती। २ पतली कमर (अनु ५)। °यल न [°तल] कटी-प्रदेश (भवि)। °ल्ल न [°टीय] देखो **कडिल्ल** (दे) का दूसरा अर्थ। °दट्टी स्त्री [°पट्टी] कमर का पट्टा, कमर-पट्टा (सुपा ३३१)। °वत्थ न [°वस्त्र] धोती, कमर में पहनने का कपड़ा (दे २, १७)। °सुत्त न [°सूत्र] कमर का आभूषण, मेखला (सम १८३; कप्पू)। °हत्थ पुं [°हस्त] कमर पर रखा हुआ हाथ (दे २, १७)।

कडि वि [कटिन्] चटाईवाला (अणु १४४)।

कडिअ वि [कटित] १ कट—चटाई से आच्छादित (कप्प)। २ कट से संस्कृत (आचा २, २, १)। ३ एक दूसरे में मिला हुआ; 'घणकडियकडिच्छाए' (ओप)।

कडिअ वि [दे] प्रीणित, खुशी किया हुआ (षड्)।

कडिखंभ पुं [दे] १ कमर पर रखा हुआ हाथ (पात्र; दे २, १७)। २ कमर में किया हुआ आघात (दे, २, १७)।

कडिण पुंन [दे] तृण-विशेष (सूत्र २, २, ७)।

कडित्त देखो **कालत्त** (णाया १, १ टी—पत्र ६)।

कडिभिल्ल न [दे] शरीर के एक भाग में होनेवाला कुष्ठ-विशेष। (बृह ३)।

कडिल्ल वि [दे] १ छिद्र-रहित, निश्छिद्र (दे २, ५२; षड्)। २ न. कटी-वस्त्र, कमर में पहनने का वस्त्र, धोती वगैरह (दे २, ५२; पात्र; षड्; सुपा १५२; कप्पू; भवि; विसे २६००)। ३ वन, जंगल, अटवी; संसारभवकडिल्ले, संजोगवियोगसोगतरुगहणे। कुपहपणट्ठाण तुमं, सत्थाहो नाह! उप्पन्नो।' (पउम २, ४५; वव २; दे २, ५२)। ४ वि. गहन, निबिड, सान्द्र; 'झिल्लिभिल्लायइकडिल्लं' (उप १०३१ टी; दे २, ५२; षड्)। ५ आशीर्वाद, आसीस। ६ पुं. दौवारिक, प्रतीहार। ७ विपक्ष, शत्रु, दुश्मन (दे २, ५२; षड्)। ८ कटाह, लोहे का बड़ा पात्र (ओघ ९२)। ९ उपकरण-विशेष (दस ६)।

कडी देखो **कडि** (सुपा २२९)।

कडु, **कडुअ** } पुं [कटुक] १ कडुआ, तिक्त, रस-विशेष (ठा १)। २ वि. तीता, तिक्त रस-वाला (से १, ६१; कुमा)। ३ अनिष्ट (पण्ह २, ५)। ४ दारुण, भयंकर (पण्ह १, १)। ५ परुष, निष्ठुर (नाट—रत्ना ६६)। ६ स्त्री. वनस्पति-विशेष, कुटकी (हे २, १५५)।

कडुअ (शौ) अ [कृत्वा] करके (हे २, २७२)।

कडुआल पुं [दे] घण्टा, घण्ट (दे २, ५७)। २ छोटी मछली (दे २, ५७; पात्र)।

कडुइअ वि [कटुकित] १ कडुआ किया हुआ। २ दूषित (गउड)।

कडुइया स्त्री [कटुकी] वल्ली-विशेष, कुटकी (पण्ण १)।

कडुच्छय, **कडुच्छु**, **कडुच्छुय** } पुंस्त्री [दे] देखो **कडच्छु**; 'धूवकडुच्छुयहत्था' (सुपा ५१; पात्र; निर ३, १; धम्म)।

कडुयाविय वि [दे] १ प्रहृत, जिस पर प्रहार किया गया हो वह (उप पृ ६५)। २ व्यथित, पीड़ित; 'सा य (चोरधाडी) कुमारपहारक-डुयाविया भग्गा परम्मुहा कया' (महा)। ३ हराया हुआ, पराभूत। ४ भारी विपद् में फँसा हुआ (भवि)।

कडूइद (शौ) वि [कटूकृत] कटुक किया हुआ (नाट)।

कडेवर न [कलेवर] शरीर, देह (राय; हे ४, ३६५)।

कड्ढ सक [कृष्] १ खींचना। २ चास करना। ३ रेखा करना। ४ पढ़ना। ५ उच्चारण करना। कड्ढइ (हे ४, १८७)। वकृ. **कड्ढंत**, **कड्ढमाण** (गा ६८७; महा)। कवकृ. **कड्ढिज्जंत**, **कड्ढिज्जमाण** (से ५, २६; ६, ३६; पण्ह १, ३)। संकृ. **कड्ढिऊण**, **कड्ढेउ**, **कड्ढित्तु**, **कड्ढिय** (महा), 'कड्ढेत्तु, नमोक्कारं' (पंचव), **कड्ढिउं** (पि ५७७)। कृ. **कड्ढेयव्व** (सुपा २३६)।

कड्ढ पुं [कर्ष] खींचाव, आकर्षण (उत्त १९)।

कड्ढण न [कर्षण] १ खींचाव, आकर्षण,

(सुपा २६२)। २ वि. खींचनेवाला, आकर्षक (उप पृ २७७)।

कड्ढणया स्त्री [कर्षणता] आकर्षण (उप पृ २७७)

कड्ढाविय वि [कर्षित] खींचवाया हुआ, बाहर निकलवाया हुआ (भवि)।

कड्ढिअ वि [दे] बाहर निकला हुआ, गुजराती में 'काढेलुं'; 'तो दासीहिं सुणउ व्व कड्ढिओ कुट्टिऊण बहिं' (सिरि ६८६)।

कड्ढिय वि [कृष्ट] १ आकृष्ट, खींचा हुआ (पण्ह १, ३)। २ पठित, उच्चारित (स १८२)।

कड्ढोकड्ढ न [कर्षापकर्ष] खींचातान (उत्त १६)।

कढ सक [क्वथ्] १ क्वाथ करना। २ उबालना। ३ तपाना, गरम करना। कढइ (हे ४, २२०)। वकृ. **कढमाण** (पि २२१)। कवकृ. 'राया जंपइ एयं सिंचह रे रे कढंततिल्लेण' (सुपा १२०), **कढीअमाण** (पि २२१)।

कढकढकढेंत वि [कडकडायमान] कड़-कड़ आवाज करता (पउम २१, ५०)।

कढण न [क्वथन] क्वाथ करना, 'रागगुणेणं पावइ खंडणकढणाइं मंजिट्ठा' (कुप्र २२३)।

कढिअ न [दे] कढ़ी (पिंड ६२४)।

कढिअ वि [क्वथित] १ उबाला हुआ। २ खूब गरम किया हुआ, 'कढिओ खलु निंबरसो अइकडुओ एव जाएइ' (श्रा २७; ओघ १४७; सुपा ४६६)।

कढिआ स्त्री [दे] कढ़ी, भोजन-विशेष (दे २, ६७)।

कढिण, **कढिणग** } वि [कठिन] १ कठिन, कर्कश, कठोर, परुष (पण्ह १, ३, पाअ)। २ न. तृण-विशेष (आचा २, ३, ३)। ३ पर्ण, पत्ता (पण्ह २, ५)।

कढोर वि [कठोर] १ कठिन, परुष, निष्ठुर। २ पुं. इस नाम का एक राजा (पउम ३२, २३)।

कण सक [क्वण] शब्द करना, आवाज करना। कणइ (हे ४, २३६)। वकृ. **कणंत** (सुर १०, २१८; वज्जा ६६)।

कण सक [कण्] आवाज करना। कणइ (हे ४, २३६)।

कण पुं [कण] १ कण, लेश; 'गुणकणमवि परिकहिउं न सक्कइ' (सार्ध ७६)। २ विकीर्ण दाना (कुमा)। ३ वनस्पति-विशेष, (पण्ण १)। ४ पुं. एक म्लेच्छ देश (राज)। ५ ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७७)। ६ तण्डुल, ओदन (उत्त १२)। ७ कनिक (आचा २, १)। ८ बिंदु; 'बिंदुइअं कणइअं' (पाअ)। °इअ वि [°वत्] बिन्दुवाला (पाअ)। [°कुंडग] पुं [कुण्डक] ओदन की बनी हुई एक भक्ष्य वस्तु; 'कणकुंडगं चइत्ताणं विट्ठं भुंजइ सूयरो' (उत्त १२)। °**पूपलिया** स्त्री [°पूपलिका] भोजन-विशेष, कणिक (आटा) की बनाई हुई एक खाद्य वस्तु (आचा २,१)। °**भक्ख** पुं [°भक्ष] वैशेषिक मत का प्रवर्तक एक ऋषि (राज)। °**वित्ति** स्त्री [°वृत्ति] भिक्षा, भीख (सुपा २३४)। °**वियाणग** पुं [°वितानक] देखो **कणग-वियाणग** (सुज्ज २०; इक)। °**संताणय** पुं [°संतानक] देखो **कणग-संताणय** (इक)। °**द** पुं [°द] वैशेषिक मत का प्रवर्तक ऋषि (विसे २१९४)। °**यण्ण** वि [°कीर्ण] बिन्दुवाला) (पाअ)।

कण पुं [क्वण] शब्द, आवाज (उप पृ १०३)।

कणइकेउ पुं [कनकिकेतु] इस नाम का एक राजा (दंस)।

कणइपुर न [कनकिपुर] नगर-विशेष, जो महाराज जनक के भाई कनक की राजधानी थी (ती)।

कणइर पुं [कर्णिकार] कणेर, वनस्पति-विशेष (पण्ण १—पत्र ३२)।

कणइल्ल पुं [दे] शुक, तोता, सुग्गा, सुआ (दे २,२१; षड्; पाअ)।

कणई स्त्री [दे] लता, वल्ली (दे २, २५; षड्; स ४१६; पाअ)।

कणंगर न [कनङ्गर] पाषाण का एक प्रकार का हथियार (विपा १, ६)।

कणकण पुं [कणकण] कण-कण आवाज (आवम)।

कणकणकण अक [दे] कण-कण आवाज करना। कणकणकणंति (पउम २६, ५३)। वकृ. **कणकणकणंत** (पउम ५३, ८६)।

कणकणग पुं [कनकनक] ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष (ठा २, ३)।

कणक्कणिअ वि [कणकणित] कण-कण आवाजवाला (कप्पू)।

कणखल न [दे] उद्यान-विशेष (सट्ठि ६ टी)।

कणग वि [कानक] सुवर्ण-रस पाया हुआ (कपड़ा) (आचा २, ५, १, ५)। °**पट्ट** वि [°पट्ट] सोने का पट्टावाला (आचा २, ५, १, ५)।

कणग देखो **कण** (कप्प)।

कणग [दे] देखो **कणय**=(दे) (पण्ह १, २)।

कणग पुं [कनक] १ ग्रह विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७७)। २ रेखा-सहित ज्योतिः-पिण्ड, जो आकाश से गिरता है (ओघ ३१० भा; जी ६)। ३ बिन्दु। ४ शलाका, सलाई (राज)। ५ घृतवर द्वीप का अधिपति देव (सुज्ज १६)। ६ बिल्व वृक्ष, बेल का पेड़ (उत्तनि. ३)। ७ न. सुवर्ण, सोना (सं ६४; जी ३)। °**कंत** वि [°कान्त] १ कनक की तरह चमकता (आचा २, ५, १)। २ पुं. देव-विशेष (दीव)। °**कुड** न [°कूट] १ पर्वत-विशेष का एक शिखर (जं ४)। २ पुं. स्वर्ण मय शिखरवाला पर्वत (जीव ३)। °**केउ** पुं [°केतु] इस नाम का एक राजा (णाया १, १४)। °**गिरि** पुं [°गिरि] १ मेरु पर्वत। २ स्वर्ण-प्रचुर पर्वत (औप)। °**ज्झय** पुं [°ध्वज] इस नाम का एक राजा (पंचा ५)। °**पुर** न [°पुर] नगर विशेष (विपा २, ६)। °**प्पभ** पुं [°प्रभ] देव-विशेष (सुज्ज १६)। °**प्पभा** स्त्री [°प्रभा] १ देवी-विशेष। २ 'ज्ञाता-धर्मसूत्र' का एक अध्ययन (णाया २, १)। °**फुल्लिअ** न [°पुष्पित] जिसमें सोने के फूल लगाए गए हों ऐसा वस्त्र (निचू ७)। °**माला** स्त्री [°माला] १ एक विद्याधर की पुत्री (उत्त ६)। २ एक स्वनाम ख्यात साध्वी (सुर १५, ६७)। °**रह** पुं [°रथ] इस नाम का एक राजा (ठा ७; १०)। °**लया** स्त्री

[°लता] चमरेन्द्र के सोम नामक लोकपाल-देव की एक अग्रमहिषी (ठा ४, १—पत्र २०४)। °वियाणग पुं [°वितानक] ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष (ठा २, ३; पत्र ७७)। °संताणग पुं [°संतानक] ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७७)। °वलि स्त्री [°वलि] १ सुवर्ण का एक आभूषण, सुवर्ण की मणियों से बना आभूषण (अंत २७)। २ तप-विशेष, एक प्रकार की तपश्चर्या (औप)। ३ पुं. द्वीप-विशेष। ४ समुद्र-विशेष (जीव ३)। °वलिपविभत्ति स्त्री [°वलिप्रविभक्ति] नाट्य का एक प्रकार (राय)। °वलिभद्द पुं [°वलिभद्र] कनकावलि द्वीप का एक अधिष्ठायक देव (जीव ३)। °वलिमहाभद्द पुं [°वलिमहाभद्र] कनकावलिवर नामक समुद्र का एक अधिष्ठायक देव (जीव ३)। °वलिमहावर पुं [°वलिमहावर] कनकावलिवर नामक समुद्र का एक अधिष्ठाता देव (जीव ३)। °वलिवर पुं [°वलिवर] १ इस नाम का एक द्वीप। २ इस नाम का एक समुद्र। कनकावलिवर समुद्र का अधिष्ठाता देव-विशेष (जीव ३)। °वलिवरभद्द पुं [°वलिवरभद्र] कनकावलिवर द्वीप का एक अधिपति देव (जीव ३)। °वलिवरमहाभद्द पुं [°वलिवरमहाभद्र] कनकावलिवर नामक द्वीप का एक अधिष्ठाता देव (जीव ३)। °वलिवरोभास पुं [°वलिवरावभास] १ इस नाम का एक द्वीप। २ इस नाम का एक समुद्र (जीव ३)। °वलिवरोभासभद्द पुं [°वलिवरावभासभद्र] कनकावलिवराव-भास द्वीप का एक अधिष्ठाता देव (जीव ३)। °वलिवरोभासमहाभद्द पुं [°वलिवरा-वभासमहाभद्र] कनकावलिवरावभास द्वीप का एक अधिष्ठाता देव (जीव ३)। °वलि-वरोभासमहावर पुं [°वलिवरावभास-महावर] कनकावलिवरावभास-समुद्र का एक अधिष्ठाता देव (जीव ३)। °वलिवरोभास-वर पुं [°वलिवरावभासवर] कनकावलि-वरावभास-समुद्र का एक अधिष्ठाता देव (जीव ३) °वली स्त्री [°वली] देखो °वलि का पहला और दूसरा अर्थ (पव २७१)। देखो कणय = कनक।

कणगसत्तरि स्त्री [कनकसप्तति] एक प्राचीन जैनेतर शास्त्र (अणु ३६)।

कणगा स्त्री [कनका] १ भीम-नामक राक्ष-सेन्द्र की एक अग्रमहिषी (ठा ४, २—पत्र ७७)। २ चमरेन्द्र के सोम-नामक लोकपाल की एक अग्र-महिषी (ठा ४, २)। ३ 'णाया-धम्मकहा' सूत्र का एक अध्ययन (णाया २, १)। ४ क्षुद्र जन्तु-विशेष की एक जाति, चतुरिन्द्रिय जीव-विशेष (जीव १)।

कणगुत्तम पुं [कनकोत्तम] इस नाम का एक देव (दीव)।

कणय पुं [दे] १ फूलों को इकट्ठा करना, अवचय। २ बाण, शर; 'असिखेडयकणयतो-मर—' (पउम ८, ८८; पण्ह १, १, दे २, ५६; पाअ)।

कणय पुंन [कनक] एक देव विमान (देवेन्द्र १४४)।

कणय देखो कणग = कनक (ओघ ३१० भा; प्रासू १५६; हे १, २२८; उव; पाअ; महा; कुमा)। ८ पुं. राजा जनक के एक भाई का नाम (पउम २८, १३२)। ९ रावण का इस नाम का सुभट (पउम ५६, ३२)। १० धतूरा, वृक्ष-विशेष (से ९, ४८)। ११ वृक्ष-विशेष (पण्ण १—पत्र ३३)। १२ न. छन्द-विशेष (पिंग)। °पव्वय पुं [°पर्वत] देखो कणग-गिरि (सुपा ४३)। °मय वि [°मय] सुवर्ण का बना हुआ (सुपा २०)। °भ न [°भ] विद्याधरों का एक नगर (इक)। °ली स्त्री [°ली] घर का एक भाग (णाया १, १—पत्र १२)। °वली स्त्री [°वली] देखो कणगावली। ३ एक राज-पत्नी (पउम ७, ४५)।

कणयंदी स्त्री [दे] वृक्ष-विशेष, पाउरी, पाढल (दे २, ५८)।

कणविआणय पुं [कणवितानक] देखो कणगवियाणग (सुज्ज २०)।

कणवी स्त्री [दे] कन्या (वज्जा १०८)।

कणवीर पुं [करवीर] १ वृक्ष-विशेष, कनेर (हे १, २५३; सुपा १५१)। २ न. कनेर का फूल (पण्ह १,३)।

कणि पुंस्त्री [दे] स्फुरण, स्फूर्ति; 'कणी फुरणं' (पाअ)।

कणिआर देखो कण्णिआर (कुमा; प्राप्र; हे २, ९५)।

कणिआरिअ वि [दे] १ कानी आँख से जो देखा गया हो वह। २ न. कानी नजर से देखना (दे २, २४)।

कणिक्का स्त्री [कणिका] कनेक, रोटी के लिए पानी से भिजाया हुआ आटा (दे १, ३७)।

कणिक्क वि [कणिक्क] मत्स्य-विशेष (जीव १)।

कणिक्का देखो कणिका (श्रा १४)।

कणिट्ठ वि [कनिष्ठ] १ छोटा, लघु (पउम १५, १२; हे २, १७२)। २ निकृष्ट, जघन्य (रंभा)।

कणिय न [कणित] १ आर्त्त-स्वर। २ आवाज, ध्वनि (आव ४)।

कणिय° } देखो कणिका (कप्प)। २
कणिया } कणिका, चावल का टुकड़ा (आचा २, १, ८)। °कुंडय देखो कण-कुंडग (स ४८७)।

कणिया स्त्री [कणिता] वीणा-विशेष (जीव ३)।

कणिर वि [कणितृ] आवाज करनेवाला (उप पृ १०३; पाअ)।

कणिल्ल न [कनिल्य] नक्षत्र-विशेष का गोत्र (इक)।

कणिल्लिका स्त्री [कनिष्ठिका] छोटी अंगुली (अंगविज्जा, अध्या० ६ श्लो० १७५३)।

कणिस न [कणिश] सस्य-शीर्षक, धान्य का अग्र-भाग (दे २,६)।

कणिस न [दे] किशारु, सस्य-शूक, सस्य का तीक्ष्ण अग्र भाग (दे २, ६; भवि)।

कणीअ } वि [कनीयस्] छोटा, लघु;
कणीअस } 'तस्य भाया कणीससो पहू नामं' (वसु; वेणी १७६; कप्प; अंत १४)।

कणीणिगा स्त्री [कनीनिका] १ आँख की तारा। २ छोटी उंगली (राज)।

कणीर देखो कणेर (चंड)।

कणुय न [कणुक] त्वग् वगैरह का अवयव (आचा २, १, ८)।

कणूया देखो कणिया = कणिका (कस)।

कणेड्ढिआ स्त्री [दे] गुञ्जा, घुँघची (दे २, २१)।

कणेर देखो **कण्णिआर** (हे १, १६८; पि २५८)।

कणेरु } स्त्री [करेणु] हस्तिनी, हथिनी
कणेरुगा } (हे २, ११६; कुमा; गाया १, १—पत्र ६४)।

कणोवअ न [दे] गरम किया हुआ जल, तेल वगैरह (दे २, १६)।

कण्ण पुं [कन्या] राशि-विशेष, कन्या-राशि; 'बुहो य कण्णम्मि वट्टए उच्चो' (पउम १७, ८१)।

कण्ण पुं [कण्व] इस नामका एक परिव्राजक, ऋषि विशेष (औप; अभि २६२)।

कण्ण पुं [कर्ण] १ कोटि भाग, अग्रांश (सुज्ज १, १)। २ एक म्लेच्छ-जाति (मृच्छ १५२)।

कण्ण पुंन [कर्ण] १ कान, श्रवण, श्रोत्र; 'कण्णाइं' (पि ३५८; प्रासू २)। १ पुं. अङ्ग देश का इस नाम का एक राजा, युधिष्ठिर का बड़ा भाई (गाया १, १६)। ३ काना, वस्तु के छोर का एक अंश (अग० सूत्र ५१, ६६)। °**उर**, °**ऊर** न [°पूर] कान का आभूषण (प्राप्र; हेका ४५)। °**गइ** स्त्री [°गति] मेरु-सम्बन्धी एक डोरी (जो १०)। °**जयसिहदेव** पुं [°जयसिंहदेव] गुजरात देश का बारहवीं शताब्दी का एक यशस्वी राजा (ती)। °**देव** पुं [°देव] विक्रम की तेरहवी शताब्दी का सौराष्ट्र-देशीय एक राजा (ती)। °**धार** पुं [°धार] नाविक, निर्यामक (गाया १, ८)। °**पाउरण** पुं [°प्रावरण] १ इस नाम का एक अन्तर्द्वीप। २ उस अन्तर्द्वीप का निवासी (पराग १)। °**पावरण** देखो °पाउरण (इक)। °**पीढ** न [°पीठ] कान का एक प्रकार का आभूषण (ठा ६)। °**पूर** देखो °ऊर (गाया १, ८)। °**रवा** स्त्री [°रवा] नदी-विशेष (पउम ४०, १३)। °**वालिया** स्त्री [°वालिका] कान के ऊपर भाग में पहना जाता एक प्रकार का आभूषण (औप)। °**वेहणग** न [°वेधनक] उत्सव-विशेष, कर्णवेधोत्सव (औप)। °**सक्कुली** स्त्री [°शष्कुली] १ कान का छिद्र। २ कान की लंबाई (गाया १, ८)। °**सोहण** न [°शोधन] कान का मैल निकालने का एक उपकरण (निचू ४)। °**हार** पुं [°धार] देखो °धार (अच्चु २४; स ३२७)। देखो **कन्न**।

कण्णआर देखो **कण्णिआर** (प्राकृ ३०)।

कण्णउज्ज पुं [कान्यकुब्ज] १ देश-विशेष, दोआब, गङ्गा और यमुना नदी के बीच का देश। २ न. उस देश का प्रधान नगर, जिसको आजकल 'कन्नौज' कहते हैं (ती; कप्पू)।

कण्णंबाल न [दे] कान का आभूषण—कुण्डल वगैरह (दे २, २३)।

कण्णगा देखो **कन्नगा** (आव ४)।

कण्णच्छुरी स्त्री [दे] गृह-गोधा, छिपकली (दे २, १६)।

कण्णडय (अप) देखो **कण्ण** (हे ४, ४३२; ४३३)।

कण्णल (अप) वि [कर्णाट] १ देश-विशेष, कर्णाटक। २ वि. उस देश का निवासी (पिंग)।

कण्णलोयण पुंन [कर्णलोचन] देखो **कण्णिलायण** (सुज्ज १०, १६)।

कण्णल्ल पुंन [कर्णल] ऊपर देखो (सुज्ज १०, १६ टी)।

कण्णस वि [कन्यस] अधम, जघन्य (उत्त ५)।

कण्णस्सरिय वि [दे] १ कानी नजर से देखा हुआ। २ न. कानी नजर से देखना (दे २, २४)।

कण्णा स्त्री [कन्या] १ ज्योतिष-शास्त्र-प्रसिद्ध एक राशि। २ कन्या, लड़की, कुमारी (कप्पू; पि २८२)। °**चोलय** न [°चोलक] धान्य-विशेष, जवनाल (णंदि)। °**णय** न [°नय] चोल देश का एक प्रधान नगर; 'चोलदेसावयंसे कण्णाणयनयरे' (ती)। °**लिय** न [°लीक] कन्या के विषय में बोला जाता झूठ (पण्ह १, ३)।

कण्णाआस न [दे] कान का आभूषण—कुण्डल वगैरह (दे २, २३)।

कण्णाइंधण न [दे] कान का आभूषण—कुण्डल वगैरह (दे २, २३)।

कण्णाड पुं [कर्णाट] १ देश-विशेष, जो आजकल 'कर्णाटक' नाम से प्रसिद्ध है। २ वि. उस देश में उत्पन्न, वहां का निवासी (कप्पू)।

कण्णास पुं [दे] पर्यन्त, अन्त-भाग (दे २, १४)।

कण्णि पुं [कर्णि] एक नरक-स्थान (देवेन्द्र २६)।

कण्णिआ स्त्री [कर्णिका] १ पद्म-उदर, कमल का बीज-कोष (दे ६, १४०)। २ कोण, अस्र (अणु; ठा ८)। ३ शालि वगैरह के बीज का मुख-मूल, तुष-मुख (ठा ८)।

कण्णिआर पुं [कर्णिकार] १ वृक्ष विशेष, कनेर का गाछ (कुमा; हे २, ६५; प्राप्र)। २ गोशालक का एक भक्त (भग १४, १०)। ३ न. कनेर का फूल (गाया १, ६)।

कण्णिलायण न [कर्णिलायन] नक्षत्र-विशेष का एक गोत्र (इक)।

कण्णीरह देखो **कन्नीरह**।

कण्णुप्पल न [कर्णोत्पल] कान का आभूषण-विशेष (कप्पू)।

कण्णेर देखो **कण्णिआर** (हे १, १६८)।

कण्णोच्छडिआ स्त्री [दे] दूसरे की बात गुपचुप सुननेवाली स्त्री (दे २, २२)।

कण्णोड्ढ } स्त्री [दे] स्त्री को पहनने का
कण्णोड्ढिआ } वस्त्र विशेष, नीरङ्गी (दे २, २० टी)।

कण्णोढत्ती [दे] देखो **कण्णोच्छडिआ** (दे २, २२)।

कण्णोप्पल देखो **कण्णुप्पल** (नाट)।

कण्णोल्ली स्त्री [दे] १ चञ्चु, चोंच, पक्षी का ठोर, ठोंठ। २ अवतंस, शेखर, भूषण-विशेष (दे २, ५७)।

कण्णोवगणिआ स्त्री [कर्णोपकर्णिका] कर्णाकर्णी, कानाकानी (दे १, ६१)।

कण्णोस्सरिअ [दे] देखो **कण्णस्सरिय** (दे २, २४)।

कण्ह पुं [कृष्ण] कन्द-विशेष (उत्त ३६, ६६)।

कण्ह पुं [कृष्ण] १ श्रीकृष्ण, माता देवकी और पिता वसुदेव से उत्पन्न नववाँ वासुदेव (गाया १, १६)। २ पांचवाँ वासुदेव और बलदेव के पूर्व जन्म के गुरु का नाम (सम १५३)। ३ देशावकाशिक व्रत को अतिचरित

करनेवाला एक उपासक (सुपा ५९२)। ४ विक्रम की तृतीय शताब्दी का एक प्रसिद्ध जैनाचार्य, दिगम्बर जैन मत के प्रवर्तक शिवभूति मुनि के गुरू (विसे २५५३)। ५ काला वर्ण (आचा)। ६ इस नाम का एक परिव्राजक, तापस (औप)। ७ वि. श्याम-वर्ण, काला रंगवाला (कुमा)। °ओराल पुं [°ओराल] वनस्पति-विशेष (पराण १—पत्र ३४)। °कंद पुं [°कन्द] वनस्पति-विशेष, कन्द-विशेष (पराण १—पत्र ३६)। °कणिगार पुं [°कर्णिकार] काली कनेर का गाछ (जीव ३)। °कुमार पुं [°कुमार] राजा श्रेणिक का एक पुत्र (निर १, ४)। °गोमी स्त्री [°गोमिन्] काला शृगालः 'करहगोमी जहा चित्ता, कंटगं वा विचित्तयं' (वव ६)। °णाम न [°नामन्] कर्म-विशेष, जिसके उदय से जीव का शरीर काला होता है (राज)। °पक्खिय वि [°पाक्षिक] १ क्रूर कर्म करनेवाला (सूत्र २, २)। २ बहुत काल तक संसार में भ्रमण करनेवाला (जीव) (ठा १, १)। °बंधुजीव पुं [°बन्धुजीव] वृक्ष-विशेष, श्याम पुष्पवाला दुपहरिया (जीव २)। °भूम, °भोम पुं [°भूम] काली जमीन (आवम; विसे १४५८)। °राइ, °राई स्त्री [°राजि, °जी] १ काली रेखा (भग ६, ५; ठा ८)। २ एक इन्द्राणी, ईशानेन्द्र की एक अग्र-महिषी (ठा ८; जीव ४)। ३ 'ज्ञाता-धर्मकथा' सूत्र का एक अध्ययन—परिच्छेद (णाया २, १)। °रिसि पुं [°ऋषि] इस नाम का एक ऋषि, जिसका जन्म शंखावती नगरी में हुआ था (ती)। °लेस, °लेस्स वि [°लेश्य] कृष्ण-लेश्यावाला (भग)। °लेसा, लेस्सा स्त्री [°लेश्या] जीव का अति निकृष्ट मनः—परिणाम, जघन्य-वृत्ति (भग; सम ११; ठा १, १)। °वडिंसय, °वडेंसय न [°वतंसक] एक देव-विमान (राज; णाया २, १)। °वल्लि, °वल्ली स्त्री [°वल्लि, °ल्ली] वल्ली-विशेष, नागदमनी लता (पराण १)। °सप्प पुं [°सर्प] १ काला साँप (जीव ३)। २ राहु (सुज्ज २०)। देखो कन्ह।

कण्हई अ [कुतश्चित्] किसी से (सूत्र १, २, ३, ६)। देखो कण्हुइ।

कण्हा स्त्री [कृष्णा] १ एक इन्द्राणी, ईशानेन्द्र की एक अग्र-महिषी (ठा ८—पत्र ४२९)। २ एक अन्तकृत् स्त्री (अंत २५)। ३ द्रौपदी, पाराडवों की स्त्री (राज)। ४ राजा श्रेणिक की एक रानी (निर १, ४)। ५ ब्रह्म देश की एक नदी (आवम)।

कण्हुइ अ [क्वचित्] क्वचित्, कहीं भी (सूत्र १, १)। २ कहां से ? (उत्त २)।

कण्हुई देखो **कण्हुइ** (सूत्र २, २, २१)।

कतवार पुं [दे] कतवार, कूड़ा (दे २,११)।

कति देखो **कइ** = कति (पि ४३३; भग)।

कतु देखो **कउ** = क्रतु (कप्प)।

कत्त सक [कृत्] काटना, छेदना, कतरना। कत्ताहि (पराह १, १)। वकृ. **कत्तंत** (ओघ ४६८)।

कत्त सक [कृत्] कातना, चरखे से सूत बनाना। वकृ. **कत्तंत** (पिंड ५७४)।

कत्त वि [क्लृप्त] निर्मित (संक्षि ४०)।

कत्त न [दे] कलत्र, स्त्री (षड्)।

कत्तण न [कर्तन] कातना (पिंड ६०२)।

कत्तण न [कर्त्तन] १ कतरना, काटना (सम १२५; उप पृ २)। २ वि. काटनेवाला, कतरनेवाला (सुर १, ७२)।

कत्तणया स्त्री [कर्त्तनता] लवन, कतराई (सुर १, ७२)।

कत्तर पुं [दे] कतवार, कूड़ा; 'इत्तो य कविलमूसयकत्तरबहुभारितिडुपभिईहिं; केसव-किसी विणट्ठा' (सुपा २३७)।

कत्तरिअ वि [कृत्त, कर्त्तित] कतरा हुआ, काटा हुआ, लून (सुपा ५४६)।

कत्तरी स्त्री [कर्त्तरी] कतरनी, कैंची (कप्प)।

कत्तवीरिअ पुं [कार्त्तवीर्य] नृप-विशेष (सम १५३; प्रति ३९)।

कत्तव्व वि [कर्त्तव्य] १ करने योग्य (स १७२)। २ न. कार्य, काज, काम (श्रा ६)।

कत्ता स्त्री [दे] अन्धिका-द्यूत को कपर्दिका, कौड़ी (दे २, १)।

कत्ति स्त्री [कृत्ति] चर्म, चमड़ा (स ४३६; गउड; णाया १, ८)।

कत्ति° वि [कर्तृ] करनेवाला, 'किरिया ण कत्तिरहिया' (धर्मसं १४५)।

कत्तिकेअ पुं [कार्त्तिकेय] महादेव का एक पुत्र, षडानन (दे ३, ५)।

कत्तिगी स्त्री [कार्त्तिकी] कार्त्तिक मास की पूर्णिमा (पउम ८९, ३०; इक)।

कत्तिम वि [कृत्रिम] कृत्रिम, बनावटी (सुपा ८३; जं २)।

कत्तिय पुं [कार्त्तिक] १ कार्तिक मास (सम ६५)। २ इस नाम का एक श्रेष्ठी (निर १, ३)। ३ भरत क्षेत्र के एक भावी तीर्थंकर के पूर्व भव का नाम (सम १५४)।

कत्तिया स्त्री [कृत्तिका] नक्षत्र-विशेष (सम ११; इक)।

कत्तिआ स्त्री [कर्त्तिका] कतरनी, कैंची (सुपा २९०)।

कत्तिया स्त्री [कार्त्तिकी] १ कार्त्तिक मास की पूर्णिमा (सम ६६)। २ कार्त्तिक मास की अमावास्या (चंद १०)।

कत्तिववियं वि [दे] कृत्रिम, दिखाऊ; 'कत्तिववियाहिं उवहिप्पहाणाहिं' (सूत्रनि. १, ४)।

कत्तु वि [कर्तृ] करनेवाला, 'कत्ता भुत्ता य पुन्नपावाणं' (श्रा ६)।

कत्तो अ [कुतः] कहाँ से, किससे ? (पउम ४७, ८; कुमा)। °च्चय वि [°त्य] कहाँ से उत्पन्न ? (विसे १०१६)।

कत्थ सक [कत्थ्] श्लाघा करना, प्रशंसना। कत्थइ (हे १, १८७)।

कत्थ अ [कुतः] कहाँ से ? (षड्)।

कत्थ अ [क, कुत्र] कहाँ ? (षड्; कुमा; प्रासू १२३)। °इ अ [°चित्] कहीं, किसी जगह (आचा; कप्प; हे २, १७४)।

कत्थ वि [कथ्य] १ कहने योग्य, कथनीय। २ न. काव्य का एक भेद (ठा ४, ४—पत्र २८७)। ३ वनस्पति-विशेष (राज)।

कत्थंत देखो **कह** = कथय्।

कत्थभाणी स्त्री [कस्तभानी] पानी में होनेवाली वनस्पति-विशेष (पराण १—पत्र ३४)।

कत्थूरिया } स्त्री [कस्तूरी] मृग-मद, हरिण
कत्थूरी } की नाभि में होनेवाली सुगन्धित वस्तु (सुपा १४७; स २३६; कप्पू)।

कथ वि [दे] १ उपरत, मृत। २ क्षीण, दुर्बल (षड्)।

कद (मा) देखो **कड** = कृत (प्राकृ १०३)

कदग देखो **कयग** (हम्मीर ३४)।

कदण देखो **कडग** = कदन (कुमा)।

कदली देखो **कयली** (पण्ण १—पत्र ३२)।

कदु देखो **कउ** = क्रतु (प्राकृ १२)।

कदुअ (शौ) अ [कृत्वा] करके (प्राकृ ८८)।

कदुइया स्त्री [दे] वल्ली-विशेष, कद्दू, लौकी (पण्ण १—पत्र ३३)।

कदुसण (मा) वि [कदुष्ण] थोड़ा गरम (प्राकृ १०२)।

कद्दम पुंन [कर्दम] कीचड़, काँदो (कुप्र ६६)। °**ल** वि [°ल] कीचड़वाला (सूअनि १६१)।

कद्दम } पुं [कर्दम] १ काँदो, कीच (पण्ह **कद्दमग** } १ ४)। २ देव विशेष, एक नाग-राज (भग ६, ३)।

कद्दमिअ वि [कर्दमित] पङ्क-युक्त, कीचड़ वाला (से ७, २०; गउड)।

कद्दमिअ पुं [दे] महिष, भैंसा (दे २, १५)।

कन्न देखो **कण्ण** = कर्ण (सुर १ २; सुर २, १७१; सुपा ५२४; धम्म १२ टी; ठा ४, २; सुपा ६५; पाअ)। °**ायंस** पुं [°ावतंस] कान का आभूषण (पाअ)।

कन्न देखो **कण्ण** (कुलक)। °**एव** देखो **कण्ण-देव** (कुप्र ४)। °**वट्टि**, °**ावट्टि** स्त्री [°वृत्ति] किनारा, अग्र भाग (कुप्र ३३१, ३३४; विचार ३२७; पव १२५)।

कन्नउज्ज देखो **कण्णउज्ज** (कुमा)।

कन्नगा स्त्री [कन्यका] कन्या, लड़की, कुमारी (सुर ३, १२२; महा)।

कन्नस वि [कनीयस्] कनिष्ठ, जघन्य; 'कन्नसमज्झिमजेट्ठा' (पव १५७)।

कन्ना देखो **कण्णा** (सुर २, १५४; पाअ)।

कन्नाड देखो **कण्णाड** (भवि)।

कन्नारिय वि [दे] विभूषित, अलंकृत, 'आएहेँ कन्नारिउ गइंदु' (भवि)।

कन्नीरह पुं [कर्णीरथ] एक प्रकार की शिविका, धनाढ्य का एक प्रकार का वाहन (णाया १, ३)।

कन्नुल्लड (अप) पुं [कर्ण] कान, श्रवणेन्द्रिय (कुमा)।

कन्नरय देखो **कण्णिआर** (कुमा)।

कन्नोली [दे] देखो **कण्णोल्ली** (पाअ)।

कन्ह देखो **कण्ह** (सुपा ५६६, कप्प)। °**सह** न [°सह] जैन साधुओं के एक कुल का नाम (कप्प)।

कपंध देखो **कमन्ध** (प्राकृ १३)।

कपिंजल पुं [कपिञ्जल] पक्षि-विशेष—१ चातक। २ गौरा पक्षी (पण्ह १, १)।

कपूर देखो **कप्पूर** (श्रा २७)।

कप्प अक [क्लृप्] १ समर्थ होना। २ कल्पना, काम में आना। ३ सक. काटना, छेदना। कप्पइ, कप्पए (कप्प; महा; पिंग)। कर्म. कप्पिज्जइ (हे ४. ३५७)। कृ. कप्प-णिज्ज (आव ६)। प्रयो. कप्पावेज्ज (निचू १७)। वकृ. कप्पावंत (निचू १७)।

कप्प सक [कल्पय्] १ करना, बनाना। २ वर्णन करना। ३ कल्पना करना। वकृ. **कप्पेमाण** (विपा १, १)। संकृ. **कप्पेऊण** (पंचव १)।

कप्प वि [कल्प्य] ग्रहण-योग्य (पंचा १२)।

कप्प पुं [कल्प] १ प्रक्षालन (पिंड २६६; २७१; ३०५; गच्छ २, ३२)। २ आचार, व्यवहार (वव १; पव ६६)। ३ दशाश्रु-तस्कन्ध सूत्र। ४ कल्प-सूत्र। ५ व्यवहार-सूत्र (वव १)। ६ वि. उचित (पंचा १८, ३०)। °**काल** पुं [°काल] प्रभूत काल (सूत्र १, १, ३, १६)। °**धर** वि [°धर] कल्प तथा व्यवहार सूत्र का जानकार (वव १)।

कप्प पुं [कल्प] १ काल-विशेष, देवों के दो हजार युग परिमित समय; 'कम्माण कप्पिआणं काहि कप्पंतरेसु णिव्वेसं' (अच्चु १८; कुमा)। २ शास्त्रोक्त विधि, अनुष्ठान (ठा ६)। ३ शास्त्र-विशेष (विसे १०७५; सुपा ३२४) ४ कम्बल-प्रमुख उपकरण (ओघ ४०)। ५ देवों का स्थान, बारह देवलोक (भग ५, ४; ठा २; १०)। ६ बारह देवलोक निवासी देव, वैमानिक देव (सम २)। ७ वृक्ष-विशेष, मनोवाञ्छित फल को देनेवाला वृक्ष, कल्प-वृक्ष (कुमा)। ८ शस्त्र-विशेष; 'असिखेडयकप्पतोमरविहत्था' (पउम ६, ७३)। ९ अधिवास, स्थान (बृह १)। १० राजा नन्द का एक मन्त्री (राज)। ११ वि. समर्थ, शक्तिमान् (णाया १, १३)। १२ सदृश, तुल्य; 'केवलकप्पं' (आवम; पण्ह २, २)। °**ट्ठ** पुं [°स्थ] बालक, बच्चा (वव ७)। °**ट्ठिइ** स्त्री [°स्थिति] साधुओं का शास्त्रोक्त अनुष्ठान (बृह ६)। °**ट्ठिया** स्त्री [°स्थिका] १ लड़की, बालिका (वव ४)। २ तरुण स्त्री (बृह १)। °**ट्ठी** स्त्री [°स्था] १ बालिका, लड़की (वव ६)। २ कुलाङ्गना, कुल-वधू (वव ३)। °**तरु** पुं [°तरु] कल्प-वृक्ष (प्रासू १६८; हे २, ७६)। °**त्थी** स्त्री [°स्त्री] देवी, देव-स्त्री (ठा ३)। °**दुम**, °**द्दुम** पुं [°द्रुम] कल्प-वृक्ष (धण ६; महा) °**पायव** पुं [°पादप] कल्प-वृक्ष (पडि, सुपा ३६)। °**पाहुड** न [°प्राभृत] जैन ग्रन्थ विशेष (ती)। °**रुक्ख** पुं [°वृक्ष] कल्प-वृक्ष (पण्ह १, ४)। °**वडिंसय** न [°ावतंसक] १ विमान-विशेष। २ विमान-वासी देव-विशेष (निर)। °**वडिंसया** स्त्री [°ावतंसिका] जैन ग्रन्थ-विशेष, जिसमें कल्पा-वतंसक देव-विमानों का वर्णन है (राय; निर १)। °**विडवि** पुं [°विटपिन्] कल्प-वृक्ष (सुपा १२६)। °**साल** पुं [°शाल] कल्प-वृक्ष (उप १४२ टी)। °**साहि** पुं [°शाखिन्] कल्प-वृक्ष (सुपा ३६६)। °**सुत्त** न [°सूत्र] श्रीभद्रबाहु स्वामि-विरचित एक जैन ग्रन्थ (कप्प; कस)। °**सुय** न [°श्रुत] १ ज्ञान-विशेष। २ ग्रन्थ-विशेष (णंदि)। °**ाईअ** पुं [°ातीत] उत्तम जाति के देव-विशेष, ग्रैवेयक और अनुत्तर विमान के निवासी देव (पण्ह १, ५; पण्ण १)। °**ाग** पुं [°ाक] विधि को जाननेवाला (कस; औप)। °**ाय** पुं [°ाय] कर, चुङ्गी, राज-देय भाग (विपा १, ३)।

कप्पंत पुं [कल्पान्त] प्रलय-काल, संहार-समय (कप्पू)।

कप्पड पुं [कर्पट] १ कपड़ा, वस्त्र (पउम २५, १८; सुपा ३४४; स १८०)। २ जीर्ण वस्त्र, लकुटाकार कपड़ा (पण्ह १, ३)।

कप्पडिअ वि [कार्पटिक] भिक्षुक, भीखमंगा (णाया १, ८; सुपा १३८; बृह १)।

कप्पडिअ वि [कार्पटिक] कपटी, मायावी (णाया १, ८—पत्र १५०)।

कप्पण न [कल्पन] छेदन, काटना (सुपा १३८)।

कप्पणा स्त्री [कल्पना] १ रचना, निर्माण। २ प्ररूपण, निरूपण (निचू १)। ३ कल्पना, विकल्प (विसे १६३२)।

कप्पणी स्त्री [कल्पनी] कतरनी, कैंची (पराह १, १; विपा १, ४; स ३७१)।

कप्पर पुं [कर्पर] खप्पर, कपाल, सिर की खोपड़ी (बृह ४; नाट)। देखो कुप्पर = कर्पर।

कप्परिअ वि [दे] दारित, चीरा हुआ (दे २, २०; वज्जा ३४; भवि)।

कप्पास पुं [कार्पास] १ कपास, रुई। २ ऊन (निचू ३)।

कप्पासत्थि पुं [कार्पासास्थि] त्रीन्द्रिय जीव-विशेष, क्षुद्र जन्तु-विशेष (जीव १)।

कप्पासिअ वि [कार्पासिक] १ कपास बेचनेवाला (अणु १४६)। २ न. जैनेतर शास्त्र-विशेष (अणु ३६, णंदि)।

कप्पासिय वि [कार्पासिक] कपास का बना हुआ, सूती वगैरह (अणु)।

कप्पासी स्त्री [कर्पासी] रुई का गाछ (राज)।

कप्पिआकप्पिअ न [कल्पाकल्प] एक जैन शास्त्र (णंदि २०२)।

कप्पिय वि [कल्पित] १ रचित, निर्मित (औप)। २ स्थापित, समीप में रखा हुआ; 'से अभए कुमारे तं अल्लं मंसं रुहिरं अप्प-कप्पियं करेइ' (निर १,१)। ३ कल्पना निर्मित, विकल्पित (दसनि १)। ४ व्यवस्थित (आचा; सूअ १, २)। ५ छिन्न, काटा हुआ (विपा १, ४)।

कप्पिय वि [कल्पिक] १ अनुमत, अनिषिद्ध (उवर १३०)। २ योग्य, उचित (गच्छ १; वव ८)। ३ पुं. गीतार्थ, ज्ञानी साधु; 'किं वा अकप्पिएणं' (वव १)।

कप्पिया स्त्री [कल्पिका] जैन ग्रन्थ-विशेष, एक उपाङ्ग-ग्रन्थ (जं १; निर)।

कप्पूर पुं [कर्पूर] कपूर, सुगन्धि द्रव्य-विशेष (पराह २, ५; सुर २, ६; सुपा २६३)।

कप्पोवग पुं [कल्पोपक] १ कल्प-युक्त। २ देव-विशेष, बारह देव लोक-वासी देव (पराण २१)।

कप्पोववण्ण पुं [कल्पोपपन्न] ऊपर देखो (सुपा ८८)।

कप्पोववत्तिआ स्त्री [कल्पोपपत्तिका] देव-लोक विशेष में उत्पत्ति (भग)।

कप्फल न [कट्फल] इस नाम की एक वनस्पति, कायफल (हे २, ७७)।

कप्फाड देखो **कवाड** = कपाट (गउड)।

कप्फाड [दे] देखो **कफाड** (पाअ)।

कफ पुं [कफ] कफ, शरीर स्थित धातु-विशेष (राज)।

कफाड पुं [दे] गुफा, गुहा (दे २, ७)।

कबंध (शौ) देखो **कमंध** (प्राकृ ८५)।

कब्बट्ठी स्त्री [दे] छोटी लड़की (पिंड २८५)।

कब्बड, **कब्बडग** पुंन [कर्बट] १ खराब नगर, कुत्सित शहर (भग; पराह १, २)। २ पुं. ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७८)। ३ वि कुनगर का निवासी (उत्त ३०)।

कब्बर देखो **कब्बुर** (प्राकृ ७)।

कब्बाडभयय पुं [दे] ठीका पर जमीन खोदने का काम करनेवाला मजदूर ठा ४. १—पत्र २०३)।

कब्बुर, **कब्बुरय** वि [कर्बुर] १ कबरा, चितकबरा, चितला (गउड, अच्चु ६)। २ पुं. ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष (ठा २, ३; राज)।

कब्बुरिअ वि [कर्बुरित] अनेक वर्णवाला, चितकबरा किया हुआ; 'देहकंतिकब्बुरिय-जम्मगिहं' (सुपा ५४); 'मणिमयतोरणघोर-णितरुणपहाकिरणकब्बुरिअं' (कुम्मा ६; पउम ८२, ११)।

कभ (अप) देखो **कफ** (षड्)।

कभल्ल न [दे] कपाल, खप्पर (अनु ५; उवा)।

कम सक [क्रम्] १ चलना, पाँव उठाना। २ उल्लंघन करना। ३ अक. फैलना, पसरना। ४ होना; 'मणसोवि विसयनियमो न क्कमइ जओ स सव्वत्थ' (विसे २४६); 'न एत्थ उवायंतरं कमइ' (स २०६)। वकृ. **कमंत** (से २, ६)। कृ. **कमणिज्ज** (औप)।

कम सक [कम्] चाहना, वाञ्छना। कवकृ. **कम्ममाण** (दे २, ८५)। कृ. **कमणीय** (सुपा ३४; २६२); **कम्म** (णाया १, १४ टी—पत्र १८८)।

कम अक [क्रम्] १ संगत होना, युक्त होना, घटना। २ अधिक रहना। कमइ (पिंड २३१; पव ६१)।

कम पुं [क्रम] १ पाद, पग, पाँव (सुर १, ८)। २ परम्परा, 'नियकुलकमागयाओ पिउणा विज्जाओ मज्झ दिन्नाओ' (सुर ३, २८)। ३ अनुक्रम, परिपाटी (गउड)। ४ मर्यादा, सीमा (ठा ४)। ५ न्याय, फैसला; 'अवि-आरिअ कमं ण करिस्सदि' (स्वप्न २१)। ६ नियम (बृह १)।

कम पु [क्लम] श्रम, थकावट, क्लान्ति (हे २, १०६; कुमा)।

कमंडलु पुंन [कमण्डलु] संन्यासियों का एक मिट्टी या काष्ठ का पात्र (निर ३, १; पराह १, ४; उप ६४८ टी)।

कमंध पुंन [कबन्ध] रुंड, मस्तकहीन शरीर (हे १, २३६; प्राप्र; कुमा)।

कमढ पुं [दे] १ दही की कलशी। २ पिठर, स्थाली। ३ बलदेव। ४ मुख, मुँह (दे २, ५५)।

कमढ, **कमढग**, **कमढय** पुं [कमठ, °क] १ तापस-विशेष, जिसको भगवान् पार्श्वनाथ ने वाद में जीता था और जो मरकर दैत्य हुआ था (णमि २२)। २ कूर्म, कच्छप (पाअ)। ३ वंश, बाँस। ४ शल्लकी वृक्ष (हे १, १९९)। ५ न. मैल, मल (निचू ३)। ६ साध्वियों का एक पात्र (निचू १; ओघ ३६ भा)। ७ साध्वियों को पहनने का एक वस्त्र (ओघ ६७५; बृह ३)।

कमण न [क्रमण] १ गति, चाल। २ प्रवृत्ति (आचू ४)।

कमणिया स्त्री [क्रमणिका] उपानत्, जूता (बृह ३)।

कमणिल्ल वि [क्रमणीवत्] जूतावाला, जूता पहना हुआ (बृह ३)।

कमणी स्त्री [क्रमण] जूता, उपानत् (बृह ३)।

कमणी स्त्री [दे] निःश्रेणि, सीढ़ी (दे २, ८)।

कमणीय वि [कमनीय] सुन्दर, मनोहर (सुपा ३४; २६२)।

कमल पुं [दे] १ पिठर, स्थाली। २ पटह, ढोल (दे २, ५४)। ३ मुख, मुँह (दे २, ५४; षड्)। ४ हरिण, मृग; 'तत्थ य एगो कमलो सगब्भहरिणीए संगओ वसइ' (सुर

१५, २०२; दे २, ५४; अणु; कप्प; औप)। ५ कलह, झगड़ा (षड्)।

कमल पुंन [कमल] एक देव-विमान (देवेन्द्र १४२)। °णअण पुं [नयन] विष्णु, नारायण (समु १५२)।

कमल न [कमल] १ कमल, पद्म, अरविन्द, (कप्प; कुमा; प्रासू ७१)। २ कमलाख्य इन्द्राणी का सिंहासन। ३ संख्या-विशेष, 'कमलांग' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह (जो २)। ४ छन्द-विशेष (पिंग)। ५ पुं. कमलाख्य इन्द्राणी के पूर्व जन्म का पिता (णाया २)। ६ श्रेष्ठि-विशेष (सुपा २७५)। ७ पिंगल-प्रसिद्ध एक गण, अन्त्य अक्षर जिसमें गुरु हो वह गण (पिंग)। ८ एकजात का चावल, कलम (प्राप्र)। °क्ख पुं [°ाक्ष] इस नाम का एक यक्ष (सण)। °जय न [°जय] विद्याधरों का एक नगर (इक)। °जोणि पुं [°योनि] ब्रह्मा, विधाता (पाअ)। °पुर न [°पुर] विद्याधरों का एक नगर (इक)। °प्पभा स्त्री [प्रभा] १ काल-नामक पिशाचेन्द्र की अग्र-महिषी (ठा ४, १)। २ 'ज्ञाता धर्मकथा' सूत्र का एक अध्ययन (णाया २)। °बन्धु पुं [°बन्धु] १ सूर्य, रवि (पउम ७०, ६२)। २ इस नाम का एक राजा (पउम २२, ६८)। °माला स्त्री [°माला] पोतनपुर नगर के राजा आनन्द की एक रानी, भगवान् अजितनाथ की मातामही—दादी (पउम ५, ५२)। °रय पुं [°रजस्] कमल का पराग (पाअ)। °वडिंसय न [°ावतंसक] कमला-नामक इन्द्राणी का प्रासाद (णाया २)। °सिरी स्त्री [°श्री] कमला-नामक इन्द्राणी की पूर्व जन्म की माता का नाम (णाया २)। °सुंदरी स्त्री [°सुन्दरी] इस नाम की एक रानी (उप ७२८ टी)। °सेणा स्त्री [°सेना] एक राज-पुत्री (महा)। °ाअर, °ागर पुं [°ाकर] १ कमलों का समूह। २ सरोवर, ह्रद वगैरह जलाशय (से १, २६; कप्प)। °ापीड, °ामेल पुं [°ापीड] भरत चक्रवर्ती का अश्व-रत्न (जं ३; पि ६१)। °ासण पुं [°ासन] ब्रह्मा, विधाता (पाअ; दे ७, ६२)।

कमलंग न [कमलाङ्ग] संख्या विशेष, चौरासी लाख महापद्म की संख्या (जो २)।

कमला स्त्री [दे] हरिणी, मृगी (पाअ)।

कमला स्त्री [कमला] १ लक्ष्मी (पाअ; सुपा २७५)। २ रावण की एक पत्नी (पउम ७४, ६)। ३ काल नामक पिशाचेन्द्र की एक अग्र-महिषी, इन्द्राणी विशेष (ठा ४, १)। ४ 'ज्ञाताधर्मकथा' सूत्र का एक अध्ययन (णाया २)। ५ छन्द-विशेष (पिंग)। °अर पुं [°कर] धनाढ्य, धनी (से १, २६)।

कमलिणी स्त्री [कमलिनी] पद्मिनी, कमल का गाछ (पाअ)।

कमलुब्भव पुं [कमलोद्भव] ब्रह्मा (त्रि ८२)।

कमव } अक [स्वप्] सोना, सो जाना। **कमवस** } कमवइ (षड्)। कमवसइ (हे ४, १४६; कुमा)।

कमसो अ [क्रमशः] क्रम से, एक-एक करके (सुर १, ११६)।

कमिअ वि [दे] उपसर्पित, पास आया हुआ (दे २, ३)।

कमिय वि [क्रान्त] उल्लंघित (दस २, ५)।

कमेलग } पुंस्त्री [क्रमेलक] उष्ट्र, ऊँट (पाअ; **कमेलय** } उप १०३१ टी; कप्पू ३३)। स्त्री. °गी (उप १०३१ टी)।

कम्म सक [कृ] हजामत करना, क्षौर-कर्म करना। कम्मइ (हे ४, ७२; षड्)। वकृ. **कम्मंत** (कुमा)।

कम्म सक [भुज्] भोजन करना। कम्मइ (षड्)। कम्मेइ (हे ४, ११०)।

कम्म देखो **कम** = कम्।

कम्म पुंन [कर्मन्] १ जीव द्वारा ग्रहण किया जाता अत्यन्त सूक्ष्म पुद्गल (ठा ४, ४; कम्म १, १)। २ काम, क्रिया, करनी, व्यापार (ठा १; आचा); 'कम्मा णाणफला' (पि १७२)। ३ जो किया जाय वह। ४ व्याकरण-प्रसिद्ध कारक-विशेष (विसे २०६६, ३४२०)। ५ वह स्थान, जहाँ पर चूना वगैरह पकाया जाता है (पण्ह २, ५ - पत्र १२३)। ६ पूर्व-कृति, भाग्य; 'कम्मत्ता दुब्भगा चेव' (सूअ १, ३, १; आचा (षड्)। ७ कार्मण शरीर। ८ कार्मण-शरीर नामकर्म, कर्म-विशेष (कम्म २, २१)। °कर वि [°कर] नौकर, चाकर (आचा)। देखो °गार। °करण न [°करण] कर्म-विषयक बन्धन, जीव-पराक्रम-विशेष (भग ६, १)। °कार वि [°कार] नौकर (पउम १७, ७)। °किब्बिस वि [°किल्बिष] कर्म-चाण्डाल, खराब काम करनेवाला (उत्त ३)। °क्खंध पुं [°स्कन्ध] कर्म-पुद्गलों का पिण्ड (कम्म ५)। °गर देखो °कर (प्राकृ)। °गार पुं [°कार] १ कारीगर, शिल्पी (णाया १, ६)। देखो °कर। °जोग पुं [°योग] शास्त्रोक्त अनुष्ठान (कम्म)। °ट्ठाण न [°स्थान] कारखाना (आचा)। °ट्ठिइ स्त्री [°स्थिति] १ कर्म-पुद्गलों का अवस्थान-समय (भग ६, ३)। २ वि. संसारी जीव (भग १४, ६)। °णिसेग पुं [°निषेक] कर्म-पुद्गलों की रचना-विशेष (भग ६, ३)। °धारय पुं [°धारय] व्याकरण-प्रसिद्ध एक समास (अणु)। °परिसाडणा स्त्री [°परि-शाटना] कर्म-पुद्गलों का जीव-प्रदेशों से पृथक्करण (सूअ १, १)। °पुरिस पुं [°पुरुष] कर्म-प्रधान पुरुष—१ कारीगर, शिल्पी (सूअ १, ४, १)। २ महारम्भ करने-वाले वासुदेव वगैरह राजा लोग (ठा ३, १—पत्र ११३)। °प्पवाय न [°प्रवाद] जैन ग्रन्थांश-विशेष, आठवाँ पूर्व (सम २६)। °बंध पुं [°बन्ध] कर्म-पुद्गलों का आत्मा में लगना, कर्मों से आत्मा का बन्धन (आव ३)। °भूमग वि [°भूमिक] कर्म-भूमि में उत्पन्न (पण्ण १)। °भूमि स्त्री [°भूमि] कर्म-प्रधान भूमि, भरत क्षेत्र वगैरह (जी २३)। °भूमिग देखो °भूमग (पण्ण २३)। °भूमिय वि [°भूमिज] कर्म-भूमि में उत्पन्न (ठा ३, १—पत्र ११४)। °मास पुं [°मास] श्रावण मास (जो १)। °मासग पुं [°माषक] मान-विशेष, पाँच गुञ्जा, पाँच रत्ती (अणु)। °य वि [°ज] १ कर्म से उत्पन्न होनेवाला। १ कर्म-पुद्गलों का बना हुआ शरीर-विशेष, कार्मण शरीर (ठा २, १; ५, १)। °या स्त्री [°जा] अभ्यास से उत्पन्न होनेवाली बुद्धि, अनुभव (णंदि)। °लेस्सा स्त्री [°लेश्या] कर्म द्वारा होनेवाला जीव का परिणाम (भग १४, १)। °वग्गणा स्त्री [°वर्गणा] कर्म-रूप में परिणत होनेवाला

पुद्गल-समूह (पंच)। °वाइ वि [°वादिन्] भाग्य को ही सब कुछ माननेवाला (राज)। °विवाग पुं [°विपाक] १ कर्म परिणाम, कर्म-फल। २ कर्म-विपाक का प्रतिपादक ग्रन्थ (कम्म १, १)। °संवच्छर पुं [°संवत्सर] लौकिक वर्ष (सुज्ज १०)। °साला स्त्री [°शाला] १ कारखाना। २ कुम्भकार का घटादि बनाने का स्थान (बृह २)। °सिद्ध पुं [°सिद्ध] कारीगर, शिल्पी (आवम)। °ाजीव [°ाजीव] १ कारीगर। २ कारीगरी का कोई भी काम बतलाकर भिक्षादि प्राप्त करनेवाला साधु (ठा ५, १)। °ादाण न [°ादान] जिससे भारी पाप हो ऐसा व्यापार (भग ८, ५)। °ायरिअ पुं [°ार्य] कर्म से आर्य, निर्दोष व्यापार करनेवाला (पराण १)। °ावाइ देखो °वाइ (आचा)।

कम्म वि [कार्मण] १ कर्म-सम्बन्धी, कर्म-जन्य, कर्म-निर्मित, कर्म-मय। २ न. कर्म-पुद्गलों का ही बना हुआ एक अत्यन्त सूक्ष्म शरीर, जो भवान्तर में भी आत्मा के साथ ही रहता है (ठा १; कम्म ४)। २ कर्म-विशेष, कार्मण-शरीर का हेतु-भूत कर्म (कम्म २, २१)। ३ कार्मण-शरीर का व्यापार (कम्म ३, १५; कम्म ४)।

कम्मइय न [कर्मचित, कार्मण] ऊपर देखो (पउम १०२, ६८)।

कम्मंत पुं [दे. कर्मान्त] १ कर्म-बन्धन का कारण (आचा; सूत्र २, २)। २ कर्म-स्थान, कारखाना (दे २, ५२)।

कम्मंत वि [कुर्वत्] १ हजामत करता हुआ। २ हजाम, नापित (कुमा)। °साला स्त्री [°शाला] जहाँ पर उस्तरा—बाल बनाने का छुरा आदि सजाया जाता हो वह स्थान (निचू ८)।

कम्मक्कर देखो कम्म-कर (प्राकृ २६)।

कम्मग न [कर्मक, कार्मक, कार्मण] देखो कम्म = कार्मण (ठा २,२; पराण २१; (भग)।

कम्मण न [कार्मण] १ कर्म-मय शरीर (दं २२)। २ औषध, मन्त्र आदि के द्वारा मोहन, वशीकरण, उच्चाटन आदि कर्म (उप १३४ टी; स १०८)। °गारि वि [°कारिन्] कामण करनेवाला (सुर १, ६८)। °जोय पुं [°योग] कार्मण-प्रयोग (णाया १, १४)।

कम्मण न [भोजन] भोजन (कुमा)।

कम्ममाण देखो कम = कम्।

कम्मय देखो कम्मग (भग; पंच)।

कम्मव सक [उप + भुज्] उपभोग करना। कम्मवइ (हे ४, १११; षड्)।

कम्मवण न [उपभोग] उपभोग, काम में लाना (कुमा)।

कम्मस वि [कल्मष] १ मलिन। २ न. पाप (पाअ; हे २, ७९; प्रामा)।

कम्मा स्त्री [कर्मन्] क्रिया, व्यापार (ठा ४, २—पत्र २१०)।

कम्मार पुं [कर्मार] १ लोहार, लोहकार (विसे १५६८)। २ ग्राम-विशेष (आचू १)।

कम्मार, कम्मारग, कम्मारय वि [कर्मकार,°क] १ नौकर, चाकर (स ५३७; ओघ ४, ६४ टी)। २ कारीगर, शिल्पी (जीव ३)।

कम्मारिया स्त्री [कर्मकारिका] स्त्री-नौकर, दासी (सुपा ६३०)।

कम्मि, कम्मिअ वि [कर्मिन्] कर्म करनेवाला, अभ्यासी;

'णवकम्मिएण उअ पामरेण देट्ठूण पाउहारीओ।
मोत्तव्वे जोत्तअपग्गहम्मि अवरासणी मुक्का।।'
(गा ६६४)।

२ पाप कर्म करनेवाला (सूत्र १, ७; ६)।

कम्मिया स्त्री [कर्मिका, कार्मिका] १ अभ्यास से उत्पन्न होनेवाली बुद्धि (णाया १, १)। २ अक्षीण कर्म-विशेष, अवशिष्ट कर्म (भग)।

कम्हल न [कश्मल] पाप (राज)।

कम्हा अ [कस्मात्] क्यों, किस कारण से? (औप)।

कम्हार देखो कंभार (हे २, ७४)। °ज न [°ज] केसर, कुंकुम (कुमा)।

कम्हिअ पुं [दे] माली, मालाकार (दे २, ८)।

कम्हीर देखो कंभार (मुद्रा २४२; पि १२०; ३१२)।

कय पुं [कच] केश, बाल (हे १, १७७; कुमा)।

कय पुं [क्रय] खरीदना (सुपा ३४४)।

कय देखो कड = कृत (आचा; कुमा; प्रासू १५)। °उण्ण, °उन्न वि [°पुण्य] पुण्यशाली, भाग्यशाली (स ६०७; सुपा ६०६)। °क देखो °ग (पराह १, २)। °कज्ज वि [°कार्य] कृतार्थ, सफल-मनोरथ (णाया १, ८)। °करण वि [°करण] अभ्यासी, कृताभ्यास (बृह १, पराह १; ३)। °किच्च वि [°कृत्य] कृतार्थ, सफल मनोरथ (सुपा २७)। °ग वि [°क] १ अपनी उत्पत्ति में दूसरे की अपेक्षा करनेवाला, प्रयत्न-जन्य (विसे १८३७; स ६५३)। पुं. दास-विशेष, गुलाम; 'भयगभत्तं वा बलभत्तं वा कयगभत्तं वा' (निचू ६)। ३ न. सुवर्ण, सोना (राज)। °ग्घ वि [°घ्न] उपकार न माननेवाला, कृतघ्न (सुर २, ४४; सुपा ५८८)। °जाणुअ वि [°ज्ञायक] कृतज्ञ, उपकार को माननेवाला (पि ११८)। °ण्णु वि [°ज्ञ] उपकार को माननेवाला, किए हुए उपकार की कदर करनेवाला (धम्म २६)। °ण्णुया स्त्री [°ज्ञता] कृतज्ञता, एहसानमन्दी, निहोरा मानना (उप पृ ८६)। °त्थ वि [°ार्थ] कृतकृत्य, चरितार्थ, सफल-मनोरथ (प्रासू २३)। °नासि वि [°नाशिन्] कृतघ्न (ओघ १६६)। °न्न, °न्नु देखो °ण्णु; 'जं कित्तिजलहिराया विवेदनयमदिरं कयन्नगुरू' (सुपा ३०१; महा; सं ३३; श्रा २८)। °पंजलि वि [°प्राञ्जलि] कृताञ्जलि, नमस्कार के लिए जिसने हाथ ऊँचा किया हो वह (आव)। °पडिकइ स्त्री [°प्रतिकृति] १ प्रत्युपकार (पंचा १६)। २ विनय-विशेष (वव १)। °पडिकइया स्त्री [प्रतिकृतिता] १ प्रत्युपकार (णाया १, २)। २ विनय का एक भेद (ठा ७)। °बलिकम्म वि [°बलिकर्मन्] जिसने देवता की पूजा की है वह (भग २, ५; णाया १, १६—पत्र २१०; तंदु)। °मंगला स्त्री [°मङ्गला] इस नाम की एक नगरी (संथा)। °माल, °मालय वि [°माल, °क] १ जिसने माला बनाई हो वह। २ पुं. वृक्ष-विशेष, कनेर का गाछ; 'अंकोल्लबिल्लसल्लइकयमालतमालसालड्ढं' (उप १०३१ टी)। ३ तमिस्रा-नामक गुफा का अधिष्ठायक देव (ठा २, ३)। °लक्खण वि [°लक्षण] जिसने अपने शरीर चिन्ह को सफल किया हो वह (भग ६, ३३; णाया १, १)। °व वि [°वत्] जिसने किया हो वह (विसे १५५५)। °वणमाल-

पिय पुं [°वनमालाप्रिय] इस नाम का एक यक्ष (विपा २, १)। °वम्म पुं [°वर्मन्] नृप-विशेष, भगवान् विमलनाथ का पिता (सम १५१)। °वीरिय पुं [°वीर्य] कार्तवीर्य के पिता का नाम (सूअ १, ८)।

कयं अ [कृतम्] अलम्, बस (उवर १४४)।

कयंगला स्त्री [कृतङ्गला] श्रावस्ती नगरी के समीप की एक नगरी (भग)।

कयंत पुं [कृतान्त] १ यम, मृत्यु, मरण (सुपा १६६; सुर २,५)। २ शास्त्र, सिद्धान्त; 'मरणंति कयं तं जं कयंतसिद्धं उ सव्वरहिअं' (सार्ध ११७; सुपा ११६)। ३ रावण का इस नाम एक सुभट (पउम ५६, ३१)। °मुह पुं [°मुख] रामचन्द्र के एक सेनापति का नाम (पउम ६४, ६२)। °वयण पुं [°वदन] राम का एक सेनापति (पउम ६४, २०)।

कयंध देखो कमंध (हे १, २३६; षड्)।

कयंब देखो कलंब (पण्ण १; हे १,२२२)।

कयंब पुं [कदम्ब] समूह, 'अप्पाणं पिव सव्वं जीवकयंबं च रक्खइ सयावि' (संबोध २०)।

कयंबिय वि [कदम्बित] अलंकृत, विभूषित (कप्प)।

कयंबुअ देखो कलंबुअ (कप्प)।

कयग वि [कृतक] प्रयत्न-जन्य (धर्मसं २६६; ४१४)।

कयग वि [क्रायक] खरीदनेवाला (वव १ टी)।

कयग पुं [कतक] १ वृक्ष-विशेष, निर्मली। २ न. कतक-फल, निर्मली-फल, पायपसारी; 'जह कयगमंजणाई जलवुट्ठीओ विसोहिंति' (विसे ५३६ टी।

कयज्ज वि [कदर्य] कंजूस, कृपण (राज)।

कयड्डि पुं [कपर्दिन्] इस नाम का एक यक्ष देवता (सुपा ५४२)।

कयण न [कदन] हिंसा मार डालना (हे १, २१७)।

कयत्थ सक [कदर्थय्] हैरान करना, पीड़ा करना। कयत्थसे (धम्म ८ टी)। कवकृ. कयत्थिज्जंत (स ८)।

कयत्थण न [कदर्थन] हैरानी, हैरान करना, पीड़न (सुपा १८०; महा)।

कयत्थणा स्त्री [कदर्थना] ऊपर देखो (स ४७२; सुर १५, १)।

कयत्थिय वि [कदर्थित] हैरान किया हुआ, पीड़ित (सुपा २२७; महा)।

कयन्न वि [कदन्न] खराब अन्न (धर्मवि १३६)।

कयम वि [कतम] बहुत में से कौन ? (स ४०२)।

कयर वि [कतर] दो में से कौन ? (हे ३, ५८)।

कयर पुं [क्रकर] ४ वृक्ष-विशेष, करीर, करील (स २५६)। २ न. करीर का फल (पभा १४)।

कयल पुं [कदल] १ कदली-वृक्ष, केला का गाछ। २ न. कदली फल, केला (हे १, १६७)।

कयल न [दे] अलिञ्जर, पानी भरने का बड़ा गगरा, झंझर, मटका (दे २, ४)।

कयलि, °ली स्त्री [कदलि, °ली] केला का गाछ (महा; हे १, २२०)। °समागम पुं [°समागम] इस नाम का एक गाँव (आवम)। °हर न [°गृह] कदली-स्तम्भ से बनाया हुआ घर (महा; सुर ३, १४; ११६)।

कयल्लय देखो कय = कृत (सुख २, ३)।

कयवर पुं [दे] १ कतवार, कूड़ा, मैला (णाया १, १; सुपा ३८; ८७; स २६४' भत्त ८६; पाअ; सण; पुप्फ ३१; निचू ७)। २ विष्ठा (आव १)।

कयवरुज्झिया स्त्री [दे. कचवरोज्झिका] कूड़ा साफ करनेवाली दासी (णाया १, ७—पत्र ११७)।

कयवाउ पुं [कृकवाकु] कुक्कुट, कुकड़ा, मुर्गा (गउड)।

कयवाय पुं [कृकवाक] कुक्कुट, कुकड़ा, मुर्गा (पाअ)।

कयसण न [कदशन] खराब भोजन (विवे १३६)।

कयसेहर पुं [दे] कुकड़ा, मुर्गा; 'कयसेहराण सुम्मइ आलावो झत्ति गोसम्मि' (वज्जा ७२)।

कया अ [कदा] कब, किस समय ? (ठा ३, ४; प्रासू १६६)।

कयाइ अ [कदापि] कभी भी, किसी समय भी (उवा)।

कयाइं, कयाइ, कयाई अ [कदाचित्] १ किसी समय, कभी (उवा; वसु); 'अह अन्नया कयाई' (सुपा ५०६; पि ७३)। २ वितर्क-द्योतक अव्यय; 'नट्ठेसि कयाइत्ति' (भग १५)।

कयाण न [क्रयाणक] बेचने योग्य वस्तु, करियाना (उप पृ १२०)।

कयाणग पुंन. देखो कयाण; 'देव निअवाहणाण कयाणगे किं न विक्केह' (सिरि ४७८)।

कयार पुं [दे] कतवार, कूड़ा, मैला (दे २, ११; भवि)।

कयावि देखो कयाइ = कदापि (प्रासू १३१)।

कयोग पुं [कयोग] नट-विशेष, बहुरूपिया (बृह ४)।

कर सक [कृ] करना, बनाना। करइ (हे ४, २३४)। भूका. कासी, काही, काहीअ, करिंसु; करेंसु, अकासि, अकासी (हे ४, १६२; कुमा; भग; कप्प)। भवि. काहिइ, काही, करिस्सइ, करिहिइ, काहं, काहिमि (हे १,५; पि ५३३; कुमा)। कर्म. कज्जइ, करीइ, करिज्जइ (भग; हे ४, २५०)। वकृ. करंत, करिंत, करेंत, करेमाण (पि ५०६; रयण ७२; से २, १५; सुर २, २४०; उवा)। कवकृ. कज्जमाण, किरंत, कीरमाण (पि ५४७; कुमा; गा २७२; रयण ८६)। संकृ. करित्ता, करित्ताणं, करिदूण, काउं, काऊण, काऊणं, कट्टु, करिअ, किच्चा, कियाणं (कप्प; दस ३; षड्; कुमा; भग; अभि ४१; सूअ १,१, १; औप)। हेकृ. काउं, करेत्तए (कुमा, भग ८, २)। कृ. करणिज्ज, करणीअ, करिअव्व, करेअव्व, कायव्व (दस १०; षड्; स २१; प्रासू १४८; कुमा)। प्रयो. करावेइ, करावेई (पि ५५३; ५५२)।

कर पुं [कर] एक महाग्रह (सुज्ज २०)।

कर पुं [कर] १ हस्त, हाथ (सुर १, ५४; प्रासू ५७)। २ महसूल, चुंगी (उप ७६८ टी; सुर १, ५४)। ३ किरण, अंशु (उप ७६८ टी; कुमा)। हाथी की सूँड़ (कुमा)। ५ करका, शिला-वृष्टि, ओला, 'करच्छडाभडियपक्खिउले' (पउम ६६, १५)। °ग्गह पुं [°ग्रह] १ हाथ से ग्रहण करना; 'दइअ-

करग्गहलुलिश्रो धम्मिल्लो' (गा ५४४)। २ पाणि-ग्रहण, शादी (राज)। °य पुं [°ज] नख (काप्र १७२)। °रुह पुंन [°करुह] १ नख (हे १, ३४)। २ पुं. नृप-विशेष (पउम ७७, ८८)। °लाघव न [°लाघव] कला-विशेष, हस्त-लाघव (कप्प)। °वंदण न [°वन्दन] वन्दन का एक दोष, एक प्रकार का शुल्क समझकर वन्दन करना (बृह ३)।

करअडी } स्त्री [दे] स्थूल वस्त्र, मोटा कपड़ा
करअरी } (दे २, १६)।

करआ स्त्री [करका] करका, ओला, शिला-वृष्टि (अच्चु ६४)।

करइल्ली स्त्री [दे] शुष्क-वृक्ष, सूखा पेड़ (दे २, १७)।

करंक पुं [दे. करङ्क] १ भिक्षा-पात्र (दे २, ५५; गउड)। २ अशोक-वृक्ष (दे २, ५५)।

करंक पुंन [करङ्क] १ हड्डी, हाड़; 'करंकच-यभीसणे मसाणम्मि' (सुपा १७५)। २ अस्थि-पञ्जर, हाड़-पञ्जर (उप ७२८ टी)। ३ पानदान, पान वगैरह रखने की छोटी पेटी; 'तंबोलकरंकवाहिणीओ' (कप्पू)। ४ हड्डियों का ढेर (सुर ६, २०३)।

करंज सक [भञ्ज्] तोड़ना, फोड़ना, टुकड़ा करना। करंजइ (हे ४, १०६)।

करंज पुं [करञ्ज] वृक्ष-विशेष, करिञ्ज (पण्ण १; दे १, १३; गा १२१)।

करंज पुं [दे] शुष्क-त्वक्, सूखी त्वचा (दे २, ८)।

करंजिअ वि [भग्न] तोड़ा हुआ (कुमा)।

करंड पुंन [करण्ड] वंशाकार हड्डी (तंदु ३५)।

करंड }
करंडग } पुं [करण्ड, °क] १ करण्ड,
करंडय } डिब्बा, पेटिका (पण्ह १, ५; श्रा १४; ठा ४, ४)।

करंडिया स्त्री [करण्डिका] छोटा डिब्बा (णाया १, ७, सुपा ४२८)।

करंडी स्त्री [करण्डी] १ डिब्बा, पेटिका (श्रा १४)। २ कुंडी, पात्र-विशेष (उप ५६३)।

करंडुय न [दे] पीठ के पास की हड्डी (पण्ह १, ४—पत्र ७८)।

करंत देखो कर = कृ।

करंब पुं [करम्ब] दही और भात का बना हुआ एक खाद्य द्रव्य, दध्योदन (पाअ; दे २, १४; सुपा १३६)।

करंबिय वि [करम्बित] व्याप्त, खचित (सुपा ३४; गउड)।

करकंट पुं [करकण्ट] इस नाम का एक परिव्राजक, तापस-विशेष (औप)।

करकंडु पुं [करकण्डु] एक जैन महर्षि (महा; पडि)।

करकचिय वि [क्रकचित] करवत आदि से फाड़ा हुआ (अणु १५४)।

करकड वि [दे. कर्कर कर्कट] १ कठिन, परुष (उवा)।

करकडी स्त्री [दे. करकटी] चिथड़ा, निन्दनीय वस्त्र-विशेष, जो प्राचीन काल में वध्य पुरुष को पहनाया जाता था (विपा १, २—पत्र २४)।

करकय पुं [क्रकच] करपत्र, करांत, आरा (पण्ण १, १)।

करकर पुं [करकर] 'कर-कर' आवाज (णाया १, ६)। °सुंठ पुंन [°शुण्ठ] तृण-विशेष (पण्ह १—पत्र ४०)।

करकरिग पुं [करकरिक] ग्रह-विशेष, ग्रहाधि-ष्ठायक देव-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७८)।

करग देखो कारग = कारक (णंदि ५०)।

करग पुं [करक] १ करका, ओला (श्रा २०; ओघ ३४३; जी ५)। २ पानी की कलशी, जल-पात्र (अनु ५; श्रा १६; सुपा ३३६; ३६४)। देखो करय = करक।

करगय देखो करकय (स ६६६)।

करग्गह देखो कर-ग्गह (सम्मत्त १७३)।

करचायल पुं [दे] किलाट, दूध की मलाई (दे २, २२)।

करच्छोडिया स्त्री [दे] ताली, ताल (सुग २, १५)।

करट्ट पुं [दे] अपवित्र अन्न को खानेवाला ब्राह्मण (मृच्छ २०७)।

करड पुं [करट] १ काक, कौआ (उर १, १४)। २ हाथी का गण्ड-स्थल (सुपा १३६; पाअ)। ३ वाद्य-विशेष (विक्र ८७)। ४ कुसुम्भ-वृक्ष। ५ करीर-वृक्ष। ६ गिरगिट, सरट। ७ पाखंडी, नास्तिक। ८ श्राद्ध-विशेष (दे २, ५५ टी)।

करड पुं [दे] १ व्याघ्र, शेर। २ वि. कबरा, चितकबरा (दे २, ५५)।

करडा स्त्री [दे] लट्वा—१ एक प्रकार का करञ्ज वृक्ष। २ पक्षि-विशेष, चटक। ३ भ्रमर, भौंरा। ४ वाद्य-विशेष (दे २, ५५)।

करडि पुं [करटिन्] हाथी, हस्ती (सुर २, ६६; सुपा ५०; १३६)।

करडी स्त्री [दे, करटी] वाद्य-विशेष; 'अट्ठसयं करडीणं' (जं २)।

करडुयभत्त न [दे] श्राद्ध-विशेष (पिंड)।

करण न [करण] १ इन्द्रिय (सुर ४, २३६; (कुमा)। २ आसन, पद्मासन वगैरह (कुमा)। ३ अधिकरण, आश्रय (कुमा)। ४ कृति, क्रिया, विधान (ठा ३, ४; सुर ४, २४५)। ५ कारक-विशेष, साधकतम (ठा ३, १; विसे १६३६)। ६ उपाधि, उपकरण (ओघ ६६६)। ७ न्यायालय, न्याय-स्थल (उप पृ ११७)। ८ वीर्य-स्फुरण (ठा ३, १—पत्र १०६)। ९ ज्योतिः-शास्त्र-प्रसिद्ध बव-बालवादि करण (सुर २, १६५)। १० निमित्त, प्रयो-जन (आवू १)। ११ जेल, कैदखाना (भवि)। १२ वि. जो किया जाय वह (ओघ २, भा ३)। १३ करनेवाला (कुमा)। °ाहिवइ पुं [°ाधिपति] जेल का अध्यक्ष (भवि)। °साला स्त्री [°शाला] न्यायालय (दस० वृ० हारि० पत्र. १०८, २)।

करणया स्त्री [करणता] १ अनुष्ठान, क्रिया। २ संयमानुष्ठान (णाया १, १—पत्र ५०)।

करणसाला स्त्री [करणशाला] न्याय-मन्दिर (दस ३, १ टी)।

करणि स्त्री [दे] क्रिया, कर्म (अणु १३७)।

करणि स्त्री [दे] १ रूप, आकार (दे २, ७; सुपा १०५; ४७५; पाअ)। २ सादृश्य, समा-नता (अणु)। ३ अनुकरण, नकल करना (गउड)। ४ स्वीकार, अंगीकार (उप पृ ३८५)।

करणिज्ज देखो कर = कृ।

करणिल्ल वि [दे] समान, सदृश; 'मयणजमल-तोणीरकरणिल्लेणं पयामथोरेणं निरंतरेणं च ऊरुजुयलेणं' (स ३१२); 'बंधूयकरणिल्लेण सहावारुणेण अहरेण' (स ३१२)।

करणीअ देखो कर = कृ।

करपत्त न [करपत्र] करपत्र, क्रकच (विपा १, ६)।

करभ पुं [करभ] ऊँट, उष्ट्र (पण्ह १, १; गउड)।

करभी स्त्री [करभी] १ उष्ट्री, स्त्री-ऊँट, ऊँटनी (पिंड)। २ धान्य भरने का बड़ा पात्र (बृह २; कस)। देखो **करही**।

करम वि [दे] क्षीण, दुर्बल (दे २, ६; षड्)।

करमंद पुं [करमन्द] फलवाला वृक्ष-विशेष (गउड)।

करमद्द पुं [करमर्द] वृक्ष-विशेष, करौंदा (पण्ण १—पत्र ३२)।

करमरी स्त्री [दे] हठ-हृत स्त्री, बाँदी (दे २, १५; षड्; गा ५२७; पाअ)।

करय देखो **करग** (उप ७२८ टी; पण्ण १; कुमा; उत्ता ७)। ३ पक्षि-विशेष (पण्ह १, १)।

करयंदी स्त्री [दे] मल्लिका, बेला का गाछ (दे २, १८)।

करयर अक [करकराय्] 'कर-कर' आवाज करना। वकृ. **करयरंत** (पउम ६४, ३५)।

कररुद्द पुं [कररुद्र] छन्द-विशेष (पिंग)।

करलि, **करली** स्त्री [कदलि, °ली] १ पताका। २ हरिण की एक जाति। ३ हाथी का एक आभरण (हे १, १२०; कुमा)।

करव पुंन [दे. करक] जल-पात्र; 'पालिकरवाउ नीरं पाएउं पुच्छिओ' (सुपा २१४; ६३१)।

करवंदी स्त्री [करमन्दी] लता-विशेष, एक जात का पेड़ (दे, ८, ३५)।

करवत्तिआ स्त्री [करपात्रिका] जल-पात्र-विशेष (श्रा १२)।

करवाल पुं [करवाल] खड्ग, तलवार (पाअ; सुपा ६०)।

करविया स्त्री [दे. करकिका] पान पात्र-विशेष (सुपा ४८८)।

करवीर पुं [करवीर] वृक्ष विशेष, कनेर का गाछ (गउड)।

करसी [दे] देखो **कडसी** (हे २, १७४)।

करह पुं [करभ] १ ऊँट, उष्ट्र (पउम ५६, ४४; पाअ; कुमा; सुपा ४२७)। २ सुगंधी द्रव्य-विशेष (गउड ६६८)।

करहंच न [करहञ्च] छंद-विशेष (पिंग)।

करहाड पुं [करहाट] वृक्ष-विशेष, करहार, शिफा कन्द, मैनफल (गउड)।

करहाडय पुं [करहाटक] १ ऊपर देखो। २ देश-विशेष; 'करहाडयविसए धन्नऊरयसंनिवेसम्मि' (स २५३)।

करही देखो **करभी**। ३ इस नाम का एक छन्द (पिंग)। °**रुह** वि [°रोह] ऊँट सवार, उष्ट्री पर सवारी करने वाला (महा)।

कराइणी स्त्री [दे] शाल्मली वृक्ष, सेमर का पेड़ (दे २, १८)।

करादल्ल पुं [करादल्ल] स्वनाम ख्यात एक राजा (ती ३७)।

कराल वि [कराल] १ उन्नत, ऊँचा (अनु ५)। २ दन्तुरित, जिसका दँत लम्बा और बाहर निकला हो वह (गउड)। ३ भयानक, भयंकर (कप्पू)। ४ फाड़नेवाला। ५ विकसित (से १०, ४१)। ६ व्यवहित (से ११, ६६)। ७ वि. इस नाम का विदेह-देश का राजा (धर्म १)।

कराल सक [करालय्] १ फाड़ना, छिद्र करना। २ विकसित करना। करालेइ (से १०, ४१)।

करालिअ वि [करालित] १ दन्तुरित, लम्बा और बहिर्निर्गत दँतवाला (से १२, १०)। २ व्यवहित किया हुआ, अन्तरालवाला बनाया हुआ (से ११, ६६)। ३ भयंकर बनाया हुआ (कप्पू)।

करली स्त्री [दे] दतवन, दाँत शुद्ध करने का काष्ठ (दे २, १२)।

करावण न [कारण] करवाना, बनवाना, निर्मापन (सुपा ३३२; धम्म ८ टी)।

कराविय वि [कारित] कराया हुआ (स ५६४; महा)।

करि पुं [करिन्] हाथी, हस्ती (पाअ; प्रासू १६६)। °**धरणट्ठाण** न [°धरणस्थान] हाथी को बाँधने का डोर—रज्जू, रस्सा (पाअ)। °**नाह** पुं [°नाथ] १ ऐरावण, इन्द्र का हाथी। २ उत्तम हस्ती (सुपा १०६)। °**बंधण** न [°बन्धन] हाथी पकड़ने का गर्त्त (पाअ)। °**मयर** पुं [°मकर] जल-हस्ती (पाअ)।

करिअ पुं [करिक] एक महाग्रह (सुज २०)।

करिअ, **करिअव्व** देखो **कर** = कृ।

करिआ स्त्री [दे] मदिरा परोसने का पात्र (दे २, १४)।

करिएव्वउं, **करिएव्वउ** (अप) देखो **कायव्व** (हे ४, ४३८; कुमा; पि २५४)।

करिंत देखो **कर**=कृ।

करिणिआ, **करिणी** स्त्री [करिणी] हस्तिनी, हथिनी (महा; पउम ८०, ५३; सुपा ४)।

करिण पुं [करिन्] हाथी, हस्ती; 'रे दुट्ठ करिणाहम ! कुजाय ! संभंतजुवइगहणेण' (उप ६ टी)।

करित्ता, **करित्ताणं**, **करिदूण** देखो **कर** = कृ।

करिमरी [दे] देखो **करमरी** (गा ५४; ५५)।

करिल्ल न [दे] १ वंशांकुर, बाँस का कोपड़, रेतीली भूमि में उत्पन्न होनेवाला वृक्ष-विशेष, जिसे ऊँट खाते हैं (दे २, १०)। २ करेला, तरकारी-विशेष; 'थाणुपुरिसाइकुट्टुप्पलाइसंभियकरिल्लमंसाई' (विसे २६३)। ३ अंकुर, कन्दल (अनु)। ४ पुं. करील वृक्ष, करील (षड्)। ५ वि. वंशांकुर के समान; 'हाहा ते चेय करिल्लपिययमाबाहुसयणदुल्ललियं' (गउड)।

करिस देखो **कड्ढ**=कृष्। करिसइ (हे ४, १८७)। वकृ. **करिसंत** (सुर १, २३०)। संकृ. **करिसित्ता** (पि ५८२)।

करिस पुं [कर्ष] १ आकर्षण, खींचाव। २ विलेखन, रेखा-करण। ३ मान-विशेष, पल का चौथा हिस्सा (जो १)।

करिस देखो **करीस** (हे १, १०१; पाअ)।

करिसग वि [कर्षक] खेती करनेवाला, कृषीवल (उत्त ३; आवम)

करिसण न [कर्षण] १ खींचाव, आकर्षण। २ चासना, खेती करना। ३ कृषि, खेती (पण्ह १, १)।

करिसय देखो **करिसग** (सुपा २, २६०; सुर २, ७७)।

करिसावण पुंन [कार्षापण] सिक्का-विशेष (विसे ५०६; अणु)।

करिसिद (शौ) वि [कर्षित] १ आकर्षित। २ चासा हुआ, खेती किया हुआ (हेका ३३१)।

करिसिय वि [कृशित] दुर्बल किया हुआ (सूअ १, ३)।

करीर पुं [करीर] वृक्ष-विशेष, करीर, करील (उप ७२८ टी; श्रा १६; प्रासू ६२)।

करीस पुं [करीष] जलाने के लिए सुखाया हुआ गोबर, कंडा, गोइठा (हे १, १०१)।

करुण देखो कलुण (स्वप्न ५३; सुपा २१६); 'उज्झइ उयारभावं दक्खिण्णं करुणयं च आमुयइ' (गउड)।

करुणा स्त्री [करुणा] दया, दूसरे के दुःख को दूर करने की इच्छा (गउड; कुमा)।

करुणाइय वि [करुणायित] जिसपर करुणा की गई हो वह (गउड)।

करुणि वि [करुणिन्] करुणा करनेवाला, दयालु (सण)।

करे सक [कारय्] कराना। करेइ (प्राकृ ६०)।

करेअव्व, **करेंत** देखो **कर**=कृ।

करेडु पुं [दे] कृकलास; गिरगिट, सरट (दे २, ५)।

करेणु पुं [करेणु] १ हस्ती, हाथी। २ कनेर का गाछ; 'एसो करेणू' (हे २, ११६)। ३ स्त्री. हस्तिनी हथिनी (हे २, ११६; णाया १, १; सुर ८, १३६)। °**दत्ता** स्त्री [°दत्ता] ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती की एक स्त्री (उत्त १३)। °**सेणा** स्त्री [°सेना] देखो पूर्वोक्त अर्थ (उत्त १३)।

करेणुआ स्त्री [करेणु] हस्तिनी, हथिनी (पात्र; महा)।

करेमाण, **करेअव्व** देखो **कर**=कृ।

करेवाहिय वि [करबाधित] राज-कर से पीड़ित, महसूल से हैरान (औप)।

करोड पुं [दे] १ नारिकेल, नारियल। २ काक, कौआ। ३ वृषभ, बैल (दे २, ५४)।

करोडग पुं [दे] पात्र-विशेष, कटोरा (निचू १)।

करोडि स्त्री [करोटि] सिर की हड्डी (सुख, २, २९)।

करोडिय पुं [करोटिक] कापालिक, भिक्षुक-विशेष (णाया १, ८—पत्र १५०)।

करोडिया, **करोडी** स्त्री [करोटिका, °टी] १ कुंडा, बड़े मुँह का एक पात्र, कांस्य-पात्र-विशेष (अणु; दे ७, १५; पात्र)। २ स्थगिका, पानदान (णाया १, १ टी—पत्र ४३)। ३ मिट्टी का एक तरह का पात्र (औप)। ४ कपाल, भिक्षा-पात्र (णाया १, ८)। ५ परोसने का एक उपकरण (दे, २, ३८)।

करोडी स्त्री [दे] एक प्रकार की चींटी, क्षुद्र-जन्तु-विशेष (दे २, ३)।

करोडी स्त्री [दे] मुरदा, शव (कुप्र १०२)।

कल सक [कलय्] १ संख्या करना। २ आवाज करना। ३ जानना। ४ पहिचानना। ५ संबन्ध करना। कलइ (हे ४, २५९; षड्)। कलयंति (विसे २०२९)। भवि. कलइस्सं (पि ५३३)। कर्म. कलिज्जए (विसे २०२९)। वकृ. कलयंत (सुपा ४)। कवकृ. कलिज्जंत (सुपा ६४)। संकृ. कलिऊण, कलिअ (महा; अभि १८२)। कृ. कलणिज्ज, कलणीअ (सुपा ६२२; पि ९१)।

कल वि [कल] १ मधुर, मनोहर (पात्र)। २ पुं. अव्यक्त मधुर शब्द (गाया १, १६)। ३ कोलाहल, कलकल (चंद १९)। ४ कर्दम, कीचड़, कांदो (भत्त १३०)। ५ धान्य-विशेष, गोल चना, मटर (ठा ५, ३)। °**कंठी** स्त्री [°कण्ठी] कोकिला, कोयल (दे २, ३०; कप्पू)। °**मंजुल** वि [°मञ्जुल] शब्द से मधुर (पात्र)। °**यंठ** पुं [°कण्ठ] कोकिल, कोयल (कुमा)। °**यंठी** देखो °**कण्ठी** (सुर ४, ४८)। °**हंस** पुं [°हंस] एक पक्षी, राज-हंस (कप्प; गउड)।

कलंक पुं [कलङ्क] १ दाग, दोष (प्रासू ६४)। २ लाञ्छन, चिह्न (कुमा; गउड)।

कलंक सक [कलङ्कय्] कलंकित करना। कलंकइ (भवि)। कृ. **कलंकियव्व** (सुपा ४४८; ५८१)।

कलंक पुं [दे] १ बाँस, वंश (दे २, ८)। २ बाँस की बनाई हुई बाड़ (णाया १, १८)।

कलंकण न [कलङ्कन] कलंकित करना (पव ८)।

कलंकल वि [कलङ्कल] असमंजस, अशुभ (औप; संथा)।

कलंकलीभागि वि [कलङ्कलीभागिन्] दुःख-व्याकुल (सूअ २, २, ८१; ८३)।

कलंकलीभाव पुं [कलङ्कलीभाव] १ दुःख से व्याकुलता। २ संसार-परिभ्रमण (आचा २, १६, १२)।

कलंकवई स्त्री [दे] वृति, बाड़; काँटे आदि से परिच्छन्न स्थान-परिधि (दे २, २४)।

कलंकिअ वि [कलङ्कित] कलंकित, दागी (हे ४, ४३८)।

कलंकिल्ल वि [कलङ्किन्] कलंकवाला, दागी (काल; पि ५९५)।

कलंतर न [कलान्तर] व्याज, सूद (कुप्र ३५५)।

कलंद पुं [कलन्द] १ कुण्ड, कुण्डा, रंग-पात्र (उवा)। २ जाति से आर्य एक प्रकार के मनुष्य (ठा ६—पत्र ३५८)।

कलंब पुं [कदम्ब] १ वृक्ष-विशेष, नीप, कदम का गाछ (हे १, ३०; २२२; गा ३७; कप्पू)। °**चीर** न [°चीर] शस्त्र-विशेष (विपा १, ६—पत्र ६६)। °**चीरिया** स्त्री [°चीरिका] तृण-विशेष, जिसका अग्र भाग अति तीक्ष्ण होता है (जीव ३)। °**वालुया** स्त्री [°वालुका] १ कदम्ब के पुष्प के आकार-वाली धूली। २ नरक की नदी; 'कलंबवालुयाए दड्ढपुव्वो अणंतसो' (उत्त १९)।

कलंबु स्त्री [दे] वल्ली-विशेष, नालिका (दे २, ३)।

कलंबुअ न [कदम्बक] कदम्ब-वृक्ष का पुष्प, 'धाराहयकलंबुअं पिव समुस्ससियरोमकूवे' (कप्प)।

कलंबुआ [दे] देखो **कलंबु** (पण्ण १; सुज्ज ४)।

कलंबुआ स्त्री [कलम्बुका] १ कदम्ब पुष्प के समान मांस-गोलक। २ एक गाँव का नाम, जहाँ पर भगवान् महावीर को कालहस्ती ने सताया था (राज)।

कलंबुगा स्त्री [कलम्बुका] जल में होनेवाली वनस्पति की एक जाति (सूअ २, ३, १८)।

कलंबुय पुं [कदम्बक] कदम्ब-वृक्ष (सुज्ज १९)।

कलकल पुं [कलकल] १ कोलाहल, कल-कलरव (श्रा १४)। २ व्यक्त शब्द, स्पष्ट

आवाज (भग ६, ३३; राय)। ३ चूना आदि से मिश्रित जल (विपा १, ६)।

कलकल अक [कलकलाय्] 'कल कल' आवाज करना। वकृ. कलकलंत, कलकलित, कलकलेंत, कलकलमाण (पराह १, १; ३; औप)।

कलकलिअ न [कलकलित] कोलाहल करना (दे ६, ३६)।

कलकलिअ वि [कलकलित] कलकल शब्द से युक्त (सिरि ६६४)।

कलक्ख देखो कडक्ख = कटाक्ष (गा ७०२)।

कलचुलि पुं [करचुलि] १ क्षत्रिय-विशेष। २ इस नाम का एक क्षत्रिय-वंश (पिंग)।

कलण देखो करण; 'तोमुवि कलणेमु हासु सुहसंकप्पो' (अच्चु ८२)।

कलण न [कलन] १ शब्द, आवाज। २ संख्यान, गिनती (विसे २०२८)। ३ धारण करना (सुपा २५)। ४ जानना (सुपा १६)। ५ प्राप्ति, ग्रहण; 'जुत्तं वा सयलकलाकलणं रयणायरमुअस्स' (श्रा १६)।

कलणा स्त्री [कलना] १ कृति, करण; 'जुराणं कंदप्प-दप्पं णिहुवणकलणाकंदलिल्लं कुणंता' (कप्पू)। २ धारण करना, लगाना; 'मज्भरहे सिरिखंडपंककलणा' (कप्पू)।

कलणिज्ज देखो कल = कलय्।

कलत्त न [कलत्र] स्त्री, भार्या (प्रासू ७६)।

कलधोय देखो कलहोय (औप)।

कलभ पुंस्त्री [कलभ] १ हाथी का बच्चा (णाया १, १)। २ बच्चा, बालक; 'उवमासु अपज्जत्तेभकलभदंतावहासमूरुजुअं' (हे १, ७)।

कलभिआ स्त्री [कलभिका] हाथी का स्त्री-बच्चा (णाया १, १—पत्र ६३)।

कलम पुं [दे. कलम] १ चोर, तस्कर (दे २, १०; पाअ; आचा)। २ एक प्रकार का उत्तम चावल (उवा जं २; पाअ)।

कलमल पुं [कलमल] १ पेट का मल (ठा ३, ३)। २ वि. दुर्गन्धि, दुर्गन्धवाला (उप ८३३)।

कलमल पुंन [दे] १ मदन-वेदन (संक्ष ४७)। २ कंपन, थरथराहट, घृणा; 'असुईए अट्ठीणं सोणियकिमिजालपूइमंसाणं। नामंपि चिंतियं खलु कलमलयं जणइ हिययम्मि' (मन ३३)।

कलय देखो कालय (हे १, ६७)।

कलय पुं [दे] १ अर्जुन वृक्ष। २ सोनार, सुवर्णकार (दे २, ५४)।

कलय पुं [कलाद] सोनार, सुवर्णकार (षड्)।

कलयंदि वि [दे] १ प्रसिद्ध, विख्यात। २ स्त्री. वृक्ष-विशेष, पाडरी, पाढल (दे २, ५८)।

कलयज्जल न [दे] ओष्ठ-लेप, होठ पर लगाया जाता लेप-विशेष (भवि)।

कलयल देखो कलकल (हे २, २२०; पाअ; गा ५३५)।

कलयलिर वि [कलकलायितृ] कलकल करने-वाला (वज्जा ६६)।

कलरुद्दाणी स्त्री [कलरुद्राणी] इस नाम का छन्द (पिंग)।

कलल न [कलल] १ वीर्य और शोणित का समुदाय, 'पाइज्जंति रडंता सुतत्ततउतंबसंनिभं कललं' (पउम ११८, ८); 'वसकललसंभ-सोणिय—' (पउम ३९, ५६)। २ गर्भ-वेष्टन चर्म। ३ गर्भ के अवयव रूप रेत-विकार (गउड)। ४ काँदो, कीचड़, कर्दम (गउड)।

कललिय वि [कललित] कर्दमित, कीचवाला किया हुआ; 'अरणोरणकलहविअलियकेसरकी-लालकललियद्दारा' (गउड)।

कलविंक पुं [कलविङ्क] पक्षि विशेष, चटक, गौरिया पक्षी, गौरैया (पाअ' गउड)।

कलवू स्त्री [दे] तुम्बी पात्र (दे २, १२; षड्)।

कलस पुं [कलश] १ कलश, घड़ा; (उवा; णाया १, १)। २ स्कन्धक छन्द का एक भेद, छन्द-विशेष (पिंग)।

कलस पुंन [कलश] १ एक देव विमान। (देवेन्द्र १४०)। २ वाद्य-विशेष (राय ५० टी)।

कलसिया स्त्री [कलशिका] १ छोटा घड़ा (अणु)। २ वाद्य विशेष (आचू १)।

कलह पुं [कलह] क्लेश, झगड़ा (उव; औप)।

कलह देखो कलभ (उव; पउम ७८, २८)।

कलह न [दे] तलवार की म्यान (दे २, ५; पाअ)।

कलह अक [कलहाय्] झगड़ा करना, तड़ाई करना। वकृ कलहंत, कलहमाण (पउम २८, ४; सुपा ११; २३३; ५४६)।

कलहण न [कलहन] झगड़ा करना (उव)।

कलहाअ देखो कलह = कलहाय्। कलहाएदि (शौ) (नाट)। वकृ. कलहाअंत (गा ६०)।

कलहाइअ वि [कलहायित] कलहवाला, झगड़ाखोर (पाअ)।

कलहि वि [कलहिन्] झगड़ाखोर (दे ५, ५४)।

कलहोय न [कलधौत] १ सुवर्ण, सोना (सण)। २ चाँदी, रजत (गउड; पराह १, ४; पाअ)।

कला स्त्री [कला] १ अंश, भाग, मात्रा (अनु ४)। २ समय का सूक्ष्म भाग (विसे २०२८)। ३ चन्द्रमा का सोलहवाँ हिस्सा (प्रासू ६५)। ४ कला, विद्या, विज्ञान (कप्प; राय; प्रासू ११२)। पुरुष-योग्य कला के मुख्य बहत्तर और स्त्री-योग्य कला के मुख्य चौसठ भेद हैं; 'बावत्तरी कला' (अणु); 'बावत्तरिकलापंडियावि पुरिसा' (प्रासू १२९); 'चउसट्ठिकलापंडिया' (णाया १, ३)। पुरुष-कला ये हैं;—१ लिपि-ज्ञान। २ अंकगणित। ३ चित्र-कला। ४ नाट्यकला। ५ गान, गाना। ६ वाद्य बजाना। ७ स्वर-गत (षड्ज, ऋषभ वगैरह स्वरों का ज्ञान)। ८ पुष्कर गत (मृदंग, मुरजादि विशेष वाद्य का ज्ञान)। ९ समताल (संगीत के ताल का ज्ञान)। १० द्यूत कला। ११ जनवाद (लोगों के साथ आलाप संलाप करने की विधि)। १२ पांसे का खेल। १३ अष्टापद (चौपाट खेलने की रीति)। १४ शीघ्र-कवित्व। १५ दक-मृत्तिका (पृथक्करण-विद्या)। १६ पाक कला। १७ पान-विधि (जलपान के गुण-दोष का ज्ञान)। १८ वस्त्र-विधि (वस्त्र की सजावट की रीति)। १९ विलेपन-विधि। २० शयन-विधि। २१ आर्या (छन्द-विशेष) बनाने की रीति। २२ प्रहेलिका (विनोद के लिए पहेलियां—गूढ़ाशय पद्य)। २३ मागधिका (छन्द विशेष)। २४ गाथा (छन्द विशेष)। २५ गीति (छन्द-विशेष)। २६ श्लोक (अनुष्टुप् छन्द)। २७ हिरण्य युक्ति (चांदी के आभूषण की यथास्थान योजना)। २८ सुवर्ण-युक्ति। २९ चूर्ण-युक्ति (सुगन्धि पदार्थ बनाने की रीति)। ३० आभरण-विधि (आभूषणों की सजावट)। ३१ तरुणी परिकर्म (स्त्री को सुन्दर बनाने

की रीति)। ३२ स्त्री-लक्षण (स्त्री के शुभाशुभ चिन्हों का परिज्ञान)। ३३ पुरुष-लक्षण। ३४ अश्व-लक्षण। ३५ गज-लक्षण। ३६ गो-लक्षण। ३७ कुक्कुट-लक्षण। ३८ छत्र-लक्षण। ३९ दण्ड-लक्षण। ४० असि लक्षण। ४१ मणि-लक्षण (रत्न-परीक्षा)। ४२ काकणि-लक्षण (रत्न विशेष की परीक्षा)। ४३ वास्तुविद्या (गृह बनाने और सजाने की रीति)। ४४ स्कन्धावार-मान (सैन्य परिमाण)। ४५ नगर-मान। ४६ चार (ग्रह-चार का परिज्ञान)। ४७ प्रतिचार (ग्रहों के वक्र-गमन वगैरह का ज्ञान, अथवा रोगप्रतीकार-ज्ञान)। ४८ व्यूह (सैन्य रचना)। ४९ प्रतिव्यूह (प्रतिद्वन्द्वि व्यूह)। ५० चक्र व्यूह। ५१ गरुड-व्यूह। ५२ शकट व्यूह। ५३ युद्ध (मल्ल-युद्ध)। ५४ नियुद्ध। ५५ युद्धातियुद्ध (खड्गादि शस्त्र से युद्ध)। ५६ दृष्टि-युद्ध। ५७ मुष्टि-युद्ध। ५८ बाहु-युद्ध। ५९ लता-युद्ध। ६० इषु-शास्त्र (दिव्यास्त्र-सूचक शास्त्र)। ६१ त्सरु-प्रपात (खड्ग-शिक्षा शास्त्र)। ६२ धनुर्वेद। ६३ हिरण्य-पाक (चाँदी बनाने की रीति)। ६४ सुवर्ण-पाक। ६५ सूत्रक्रीड़ा (एक ही सूत को अनेक प्रकार कर दिखाना)। ६६ वस्त्र-क्रीड़ा। ६७ नालिका खेल (द्यूत-विशेष)। ६८ पत्र-च्छेद्य (अनेक पत्रों में अमुक पत्र का छेदन, हस्त-लाघव)। ६९ कट-च्छेद्य (कट की तरह क्रम से छेद करने का ज्ञान)। ७० सजीव (मरी हुई धातु को फिर असल बनाना)। ७१ निर्जीव (धातु-मारण, रसायण)। ७२ शकुन-रुत (शकुन-शास्त्र); (जं २ टी; सम ८३)। °गुरु पुं [°गुरु] कलाचार्य, विद्याध्यापक, शिक्षक (सुपा २५)। °यरिय पुं [°चार्य] देखो पूर्वोक्त अर्थ (णाया १, १)। °वई स्त्री [°वती] १ कलावाली स्त्री। २ एक पतिव्रता स्त्री (उप ७३६; पडि)। °सवण्ण न [°सवर्ण] संख्या-विशेष (ठा १०)।

कलाइआ स्त्री [कलाचिका] प्रकोष्ठ, कोनी से लेकर मणिबन्ध तक का हस्तावयव (पाअ)।

कलाय पुं [कलाद] सोनार, सुवर्णकार (पण्ह १, २; णाया) १, ८)।

कलाय पुं [कलाय] धान्य विशेष, गोल चना, मटर (ठा ३, ५; अनु ५)।

कलाव पुं [कलाप] १ समूह, जत्था (हे १, २३१)। २ मयूर-पिच्छ (सुपा ४८)। ३ शरधि, तूण, जिसमें बाण रक्खे जाते हैं (दे २, १५)। ४ कण्ठ का आभूषण (औप)।

कलावग न [कलापक] १ चार श्लोकों की एक वाक्यता। २ ग्रीवा का एक आभरण (पण्ह २, ५)।

कलावय न [कलापक] चार पद्यों की एक वाक्यता (सम्मत्त १८७)।

कलावि पुंस्त्री [कलापिन्] मयूर, मोर (उप ७२८ टी)।

कलि पुं [कलि] एक नरकावास (देवेन्द्र २६)।

कलि पुं [कलि] १ कलह, झगड़ा (कुमा; प्रासू ६४)। २ युग-विशेष, कलि-युग (उप ८३३)। ३ पर्वत विशेष (ती ५४)। ४ प्रथम भेद (निचू १५)। ५ एक, अकेला (सूअ १, २, २; भग १८, ४)। ६ दुष्ट पुरुष; 'दुट्ठो कली' (पाअ)। °ओग, °ओय पुं [°ओज] युग्म-राशि विशेष (भग १८, ४; ठा ४, ३)। °ओयकडजुम्म पुं [°ओज-कृतयुग्म] युग्म-राशि-विशेष (भग ३४, १)। °ओयकलिओय पुं [°ओजकल्योज] युग्म-राशि विशेष (भग ३४, १)। °ओजते-ओय पुं [°ओजत्र्योज] युग्म-राशि विशेष (भग ३४, १)। °ओयदावरजुम्म पुं [°ओजद्वापरयुग्म] युग्म-राशि-विशेष (भग ३४, १)। °कुंड न [°कुण्ड] तीर्थ-विशेष (ती १५)। °जुग न [°युग] कलि-युग (ती २१)।

कलि पुं [दे] शत्रु, दुश्मन (दे २, २)।

कलिअ वि [कलित] १ युक्त, सहित (पण्ह १, २)। २ प्राप्त, गृहीत। ३ ज्ञात, विदित (दे २, ५६; पाअ)।

कलिअ देखो कल = कलय्।

कलिअ पुं [दे] १ नकुल, न्यौला, नेवला। २ वि. गर्वित, गर्व-युक्त (दे २, ५६)।

कलिआ स्त्री [दे] सखी, सहेली (दे २, ५६)।

कलिआ स्त्री [कलिका] अविकसित पुष्प, कली (पाअ; गा ४४२)।

कलिंग पुं [कलिङ्ग] १ देश-विशेष, यह देश उड़ीसा से दक्षिण की ओर गोदावरी के मुहाने पर है (पउम ९८, ६७; ओघ ३० भा; प्रासू ६०)। २ कलिंग देश का राजा (पिंग)।

कलिंग पुं [कलिङ्ग] भगवान् आदिनाथ का एक पुत्र (ती १४)।

कलिंच देखो किलिंच (गा ७७०)।

कलिंज पुं [कलिञ्ज] कट, चटाई (निचू १७)।

कलिंज न [दे] छोटी लकड़ी (दे २, ११)।

कलिंब पुंन [कलिम्ब] १ बाँस का पात्र-विशेष, 'कलिंबो वंसकप्परी' (गच्छ २)। २ सूखी लकड़ी (भग ८, ३)।

कलित्त न [कटित्र] कमर पर पहना जाता एक प्रकार का चर्म मय कवच (णाया १, १; औप)।

कलिम न [दे] कमल, पद्म (हे २, ६)।

कलिमल देखो कलमल = कलकल (तंदु ४१)।

कलिल वि [कलिल] गहन, घना, दुर्भेद्य (पाअ)।

कलुण वि [करुण] १ दीन, दया-जनक, कृपा-पात्र (हे १, २५४; प्रासू १२६; सुर २, २२९)। २ पुं. साहित्य शास्त्र-प्रसिद्ध नव रसों में एक रस (अणु)।

कलुणा देखो करुणा (राज)।

कलुस वि [कलुष] १ मलिन, अस्वच्छ; 'कलिकलुसं' (विपा १, १; पाअ)। २ न. पाप, दोष, मैल (स १३२; पाअ)।

कलुसिअ वि [कलुषित] पाप-ग्रस्त, मलिन (से १०, ५; गउड)।

कलुसीकय वि [कलुषीकृत] मलिन किया हुआ (उव)।

कलेर पुं [दे] १ कंकाल, अस्थि-पञ्जर। २ वि. कराल, भयानक (दे २, ५३)।

कलेवर न [कलेवर] शरीर, देह (आउ ४८; पिंग)।

कलेसुय न [कलेसुक] तृण-विशेष (सूअ २, २)।

कलोवाइ स्त्री [दे] पात्र-विशेष (आचा २, १, २, १)।

कल्ल न [कल्य] १ कल, गया हुआ या आगामी दिन (पाअ; णाया १, १; दे ८, ६७)। २ शब्द, आवाज। ३ संख्या, गिनती (विसे ३४४२)। ४ आरोग्य, निरोगता; 'कल्लं किलारुग्गं' (विसे ३४३९)। ५ प्रभात, सुबह (अणु)। ६ वि. निरोग, रोग रहित

(ठा ३, ३; दे ८; ६५)। ७ वि. दक्ष, चतुर (दे ८, ६५)।

कल्लवत्त पुं [कल्यवर्त्त] कलेवा, प्रातर्भोजन, जल-पान (स्वप्न ६०; नाट)।

कल्लवाल पुं [कल्यपाल] कलवार, शराब बेचनेवाला (मोह ६२)।

कल्लविअ वि [दे] १ तीमित, आर्द्रित। २ विस्तारित, फैलाया हुआ (दे २, १८)।

कल्ला स्त्री [दे] मद्य, दारू (दे २, २)।

कल्लाकल्लिं, **कल्लाकल्लि** अ [कल्याकल्य] १ प्रतिदिन, हर रोज (विपा १, ३; णाया १, १८)। २ प्रति-प्रभात, रोज सुबह (उवा; प्राप)।

कल्लाण न [कल्याण] सुवर्ण (सिरि ३७३)।

कल्लाण पुंन [कल्याण] १ सुख, मंगल, क्षेम; 'गुणट्ठाणपरिणामे संते जीवाण सयलकल्लाणा' (उप ६००; महा; प्रासू १४६)। २ निर्वाण, मोक्ष (विसे ३४४०)। ३ विवाह, लग्न (वसु)। ४ जिन भगवान् का पूर्व भव से च्यवन, जन्म, दीक्षा, केवल-ज्ञान तथा मोक्ष-प्राप्ति रूप अवसर; 'पंच महाकल्लाणा सव्वेसिं जिणाण होंति णियमेण' (पंचा ६)। ५ समृद्धि, वैभव (कप्प)। ६ वृक्ष-विशेष (पएण १)। ७ तप विशेष (पव)। ८ देश-विशेष। ९ नगर विशेष; 'कल्लाणदेसे कल्लाणनयरे संकरो णाम राया जिण-भत्तो हुत्था' (ती ५१)। १० पुण्य, शुभ-कर्म (आचा)। ११ वि. हित-कारक, सुख-कारक (जीव ३; उत्त ३)। °कडय न [कृतक] नगर-विशेष (ती)। °कारि वि [°कारिन्] सुखावह, मंगल-कारक (णाया १, १६)।

कल्लाणि वि [कल्याणिन्] कल्याण-प्राप्त (राज)।

कल्लाणी स्त्री [कल्याणी] १ कल्याण करने-वाली स्त्री (गउड)। २ दो वर्ष की बछिया (उत्तर १०३)।

कल्लाल पुं [कल्यपाल] कलाल, दारू बेचने-वाला (अणु; आव ६)।

कल्लि अ [कल्ये] कल दिन, कल को (गा ५०२)।

कल्लुग पुं [कल्लुक] द्वीन्द्रिय जीव-विशेष, कीट की एक जाति (जीव ३)।

कल्लुय पुं [कल्लुक] द्वीन्द्रिय जन्तु की एक जाति (पएण १—पत्र ४४)।

कल्लुरिया [दे] देखो कुल्लरिया (राज)।

कल्लेउय पुंन [दे] कलेवा, प्रातराश (ओघ ४६४ टी)।

कल्लोडय पुं [दे] दमनीय बैल, साँड़ (आचा २, ४, २)।

कल्लोडिआ [दे] देखो कल्होडी (नाट)।

कल्लोल पुं [कल्लोल] तरंग, ऊर्मि (औप; प्रासू १२७)।

कल्लोल वि [दे, कल्लोल] शत्रु, दुश्मन (दे २, २)।

कल्लोलिणी स्त्री [कल्लोलिनी] नदी (कप्पू)।

कल्हार न [कह्लार] सफेद कमल (पएण १; दे २, ७६)।

कल्हिं देखो कल्लिं (गा ८०२)।

कल्होड पुं [दे] वत्सतर, बछड़ा (दे २, ६)।

कल्होडी स्त्री [दे] वत्सतरी, बछिया (दे २, ६)।

कव अक [कु] आवाज करना, शब्द करना। कवइ (हे ४, २३३)।

कवइय वि [कवचित] बख्तरवाला, वर्मित (पउम ७०, ७१; औप)।

कवंध देखो कमंध (पएह १, ३; महा; गउड)।

कवग्ग पुं [कवर्ग] 'क' से 'ङ' तक के पाँच अक्षर (धर्मंवि १४)।

कवचिअ देखो कवइय (सिरि १३१६)।

कवचिया स्त्री [कवचिका] कलाचिका, प्रकोष्ठ (राज)।

कवट्टिअ वि [कदर्थित] पीड़ित, हैरान किया हुआ (हे १, १२४)।

कवड न [कपट] माया, छद्म, शाठ्य (पाअ; सुर ४, १६१)।

कवडि देखो कवड्डि; 'तो भणइ कवडिजक्खो अज्जवि तं पुच्छसे एयं' (सुपा ५४२)।

कवड्ड पुं [कपर्द] बड़ी कौड़ी, वराटिका (दे ११०; जी १५)।

कवड्डि पुं [कपर्दिन्] १ यक्ष-विशेष (सुपा ५१२)। २ महादेव, शिव (कुमा)।

कवड्डिया स्त्री [कपर्दिका] कौड़ी, वराटिका (सुपा १४, ५४५)।

कवण वि [किम्] कौन? (पउम ७२, ८; कुमा)।

कवय पुंन [कवच] वर्म, बख्तर (विपा १, २; पउम २४, ३१; पाअ)।

कवय न [दे] वनस्पति-विशेष, भूमिच्छत्र (दे २, ३)।

कवरी स्त्री [कवरी] केश-पाश, धम्मिल्ल (कुमा; वेणी १८३)।

कवल सक [कवलय्] ग्रसना, हड़प करना। कवलेइ (गउड)। कर्म. कवलिज्जइ (गउड)। कवकृ. कवलिज्जंत (सुपा ७०)। संकृ. कव-लिऊण (गउड)।

कवल पुं [कवल] कवल, ग्रास (पव ४; औप)।

कवलण न [कवलन] ग्रसन, भक्षण (काप्र १७०; सुपा ४७४)।

कवलिअ वि [कवलित] ग्रसित, भक्षित (पाअ; सुर २, १४६; सुपा १२१; ३१६)।

कवलिआ स्त्री [दे] ज्ञान का एक उपकरण (आप ८)।

कवल्ल पुं [दे] लोहे का कड़ाह (सूअ १, ५, १, १५)।

कवल्लि, **कवल्ली** स्त्री [दे] पात्र-विशेष, गुड़ वगैरह पकाने का भाजन, कड़ाह, कराह; 'उज्झंतेण य गिम्हे कालसिलाए कवल्लिभूयाए' (संथा १२०; विपा १, ३)।

कवाल, **कवाड** पुंन [कपाट] किवाड़, किवाड़ी (गउड; औप; गा ६२०)।

कवाल न [कपाल] १ खोपड़ी, सिर की हड्डी; 'करकलिअकवालो' (सुपा १५२)। २ घट-कर्पर, भिक्षा-पात्र (आचा; हे १, २३१)।

कवास पुं [दे] एक प्रकार का जूता, अर्धजङ्घा (दे २, ५)।

कवि देखो इक = कपि (सुर १, २४६)।

कवि पुं [कवि] १ कविता करनेवाला (सुर १, १८; सुपा ५६२; प्रासू ६३)। २ शुक्र, ग्रह-विशेष (सुपा ५६२)। °त्त न [°त्व] कविता, कवित्त (सुर १,४२)। देखो कइ = कवि।

कविअ न [कविक] लगाम (पाअ; सुपा २१३)।

कविंजल देखो कपिंजल (आचा २)।

कविकच्छु } देखो कइकच्छु (पण्ह २, ५;
कविगच्छु } श्रा १४; दे १,२६; जीव ३)।

कविट्ठ देखो कइत्थ (पण्ण १; दे ३, ४५)।

कविड न [दे] घर का पिछला आँगन (दे २, ६)।

कवित्थ देखो कइत्थ (उप ३०३१ टी)।

कवियच्छु देखो कइकच्छु (स २३६)।

कविल पुं [दे] श्वान, कुत्ता (दे २,६; पाअ)।

कविल पुं [कपिल] १ वर्ण-विशेष, भूरा रंग, तामड़ा वर्ण (उवा २)। २ पक्षि-विशेष (पण्ह १, ४)। ३ सांख्य मत का प्रवर्त्तक मुनि-विशेष (आवम; औप)। ४ एक ब्राह्मण महर्षि (उत्त ८)। ५ इस नामका एक वासुदेव (णाया १, १६)। ६ राहु का पुद्गल-विशेष (सुज्ज २०)। ७ वि. भूरा रंग का, मटमैला रंग का (पउम ६,७०; से ७,२२)। **°ा** स्त्री [°ा] एक ब्राह्मणी का नाम (आचू)।

कविलडोला स्त्री [दे. कपिलडोला] क्षुद्र जन्तु-विशेष, जिसको गुजराती में 'खडमाकड़ी' कहते हैं (जी १८)।

कविलास देखो कइलास; 'तेसुवि हवेज्ज कविलासमेरुगिरिसंनिभा कूडा' (उव)।

कविलिअ वि [कपिलित] कपिल रंगवाला किया हुआ, भूरे रंग से रंगित (गउड)।

कविल्लुय न [दे] पात्र-विशेष, कड़ाही (बृह ५)।

कविस पुं [कपिश] १ वर्ण-विशेष, काला-पीला रंग, बादामी, कृष्ण-पीत-मिश्रित वर्ण। २ वि. कपिश वर्णवाला (पाअ; गउड)।

कविस न [दे] दारू, मद्य, मदिरा (दे २,२)।

कविसा स्त्री [दे] अर्धजङ्घा, एक प्रकार का जूता (दे २, ५)।

कविसायण पुंन [कपिशायन] मद्य-विशेष, गुड़ का दारू (पण्ण १७—पत्र ५३२)।

कविसीसग } पुंन [कपिशीर्षक] प्राकार
कविसीसय } का अग्र-भाग (औप; णाया १, १; राय)।

कविहसिय पुंन [कपिहसित] आकाश में अकस्मात् होनेवाली भयंकर आवाज करती ज्वाला (अणु १२०)।

कवेल्लुय देखो कविल्लुय (ठा ८—पत्र ४१७)।

कवोड देखो कवोय (पिंड २१७)।

कवोय पुं [कपोत] १ कबूतर, पारावत, परेवा (गउड; विपा १, ७)। २ म्लेच्छ-देश-विशेष (पउम २७, ७)। ३ न कूष्माण्ड, कोहड़ा (भग १५)।

कवोल पुं [कपोल] गाल, गण्ड (सुर ३, १२०; हे ४, ३९५)।

कवोसण (मा) वि [कदुष्ण] थोड़ा गरम (प्राकृ १)।

कव्व न [काव्य] १ कविता, कवित्व (ठा ४, ४; प्रासू १)। २ पुं. ग्रह-विशेष, शुक्र (सुर ३, ५३)। ३ वि. वर्णनीय, श्लाघनीय (हे २, ७९)। **°इत्त** वि [°वत्] काव्यवाला (हे २, १५९)।

कव्व न [क्रव्य] मांस (सुर ३, ५३)।

कव्वट्ठ पुं [दे] बालक, बच्चा (गच्छ ३,१६)।

कव्वड देखो कब्बड (भवि)।

कव्वा स्त्री [क्रव्या] माया (सूत्र० चू० पत्र. १७५ सूत्र गा० ३४५. अध्या० ६ गा० १)।

कव्वाड पुं [दे] दक्षिण हस्त, दाहिना हाथ (दे २, १०)।

कव्वाडिअ वि [दे] काँवर उठानेवाला, बहँगी से माल ढोनेवाला (कुप्र १२१)।

कव्वाय पुं [क्रव्याद] १ राक्षस, पिशाच (पउम ७, १०; दे २, १५; स २१३)। २ वि. कच्चा मांस खानेवाला (पउम २२, ३५)। ३ मांस खानेवाला (पाअ)।

कव्वाल न [दे] १ कर्म-स्थान, कार्यालय। २ गृह, घर (दे २, ५२)।

कस सक [कष्] १ ठार मारना। २ कसना, घिसना। ३ मलिन करना। कसंति (पण्ण १३)। कवकृ. **कसिज्जमाण** (सुपा ६१५)।

कस पुं [कश] चर्म-यष्टि, चाबुक (पण्ह १, ३; णाया १, २; स २८७)।

कस पुं [कष] १ कसौटी, कष-क्रिया; 'तावच्छेयकसेहिं सुद्धं पासइ सुवन्नमुप्पन्नं' (सुपा ३८६)। २ कसौटी का पत्थर (पाअ)। ३ वि. हिंसक, मार डालनेवाला, ठार मारनेवाला (ठा ४, १)। ४ पुंन. संसार, भव, जगत् (उत्त ४)। ५ न. कर्म, कर्म-पुद्गल; 'कम्मं कसं भवो वा कसं' (विसे १२२८)। **°पट्ट, °वट्ट** पुं [°पट्ट] कसौटी का पत्थर (अणु; गा ६२६; सुर २, २४)। **°ाहि** पुंस्त्री [°ाहि] सर्प की एक जाति (पण्ण १)।

कसई स्त्री [दे] फल विशेष, अरण्यचारी वनस्पति का फल (दे २, ६)।

कसट (पै) देखो कट्ठ=कष्ट (हे ४, ३१४; प्राप्र)।

कसट्ट पुं [दे] कतवार, कूड़ा (ओघ ५५७)।

कसण पुं [कृष्ण] १ वर्ण विशेष। २ वि. कृष्ण वर्णवाला, काला, श्याम (हे २, ७५; ११०; कुमा)। **°पक्ख** पुं [°पक्ष] कृष्ण-पक्ष, बदी पखवारा (पाअ)। **°सार** पुं [°सार] १ वृक्ष-विशेष। २ हरिण की एक जाति (नाट—मृच्छ ३)।

कसण वि [कृत्स्न] सकल, सब, सम्पूर्ण (हे १, ७५)।

कसणसिअ पुं [दे] बलभद्र, वासुदेव का बड़ा भाई (दे २, २३)।

कसणिअ वि [कृष्णित] काला किया हुआ (पाअ)।

कसमीर देखो कम्हीर (पउम ९८, ६५)।

कसर पुं [दे] अधम बैल (दे २, ४; गा ७९५); 'णणु सीलभरुव्वहणे, तेवि हु सीयंति का (? क) सरुव्व' (पुप्फ ६३)।

कसर पुंन [दे. कसर] रोग-विशेष, कण्डु-विशेष; 'कच्छुल (? क) सराभिभूआ खरतिक्खणक्खकंडूइअविकयतणू' (जं २—पत्र १६५)।

कसरक्क पुंन [दे. कसरक्क] १ चर्वण-शब्द, खाते समय जो शब्द होता है वह; 'खज्जइ न उ कसरक्केहिं' (हे ४, ४२३; कुमा)। २ कुड्मल, फूल की कली; 'ते गिरिसिहरा ते पीलुपल्लवा ते करीरकसरक्का। लब्भंति करह! मरुविलसियाइं कत्तो वणेत्थम्मि' (वज्जा ४६)।

कसव्व न [दे] बाष्प, भाफ। २ वि. स्तोक, अल्प। ३ प्रचुर, व्याप्त (दे २, ५३)। ४ आर्द्र, गीला; 'रुहिरकसव्वालंबियदीहरवणकोलवब्भनिउरंबं' (स ४३७; दे २, ५३)। ५ कर्कश, परुष; 'बूढोअयकयरवचुण्णकलुसपालासफलकसव्वाओ' (गउड)।

कसा स्त्री [कशा, कसा] चर्म-यष्टि, चाबुक, कोड़ा (विपा १, ६; सुपा ३४५)।

कसा देखो **कासा** (षड्)।

कसाइ वि [कषायिन्] १ कषाय रंगवाला। २ क्रोध-मान-माया-लोभवाला (पराण १८; आचा)।

कसाइअ वि [कषायित] ऊपर देखो (गा ४८२; श्रा ३५; आचा)।

कसाय सक [कशाय्] ताड़न करना, मारना। भूका. कसाइत्था (आचा)।

कसाय पुं [कषाय] १ क्रोध, मान, माया और लोभ (विसे १२२६; दं ३)। २ रस-विशेष, कषैला (ठा १)। ३ वर्ण-विशेष, लाल-पीला रंग (उवा २२)। ४ क्वाथ, काढ़ा। ५ वि. कषैला स्वादवाला। ६ कषाय रंगवाला। ७ सुगन्धी, खुशबूदार (हे २, १६०)।

कसार [दे] देखो **कंसार** (भवि)।

कसि वि [कषिन्] मारनेवाला, विनाशक; 'चत्तारि एए कसिणो कसाया सिंचंति मूलाई पुणब्भवस्स' (सुख १, १)।

कसिअ न [कशिका] प्रतोद, चाबुक; 'अंधो मए भद्दवदीए कसिअं आढत्तं' (प्रयौ १०८)।

कसिआ स्त्री. ऊपर देखो (सुर १३, १७०)।

कसिआ स्त्री [दे] फल-विशेष, अरण्यचारी नामक वनस्पति का फल (दे २, ६)।

कसिट (पै) देखो **कट्ठ** = कष्ट (षड्)।

कसिण देखो **कसण** = कृष्ण, कृत्स्न (हे २, ७५; कुमा; पाअ; दे ४, १२)।

कसुमीरा स्त्री [कश्मीर] एक उत्तर भारतीय देश (प्राकृ २८; ३३)।

कसेरु, **कसेरुय** पुंन [कशेरु, °क] जलीय कन्द-विशेष (गउड; पराण १)।

कसेरुग पुंन [कशेरुक] जलमें होनेवाली वनस्पति की एक जाति (सूअ २, ३, १८; आचा २, १, ८, ५)।

कसोत्ति स्त्री [दे] खाद्य-विशेष, 'महाहिं कसोत्ति भोचा कज्जं सधेंति' (सुज १०, १७)।

कस्स पुं [दे] पङ्क, कर्दम, काँदो (दे २, २)।

कस्सय न [दे] प्राभृत, उपहार, भेंट (दे २, १२)।

कस्सव पुं [काश्यप] १ वंश-विशेष, 'कस्सव-वंसुत्तंसो' (विक्र ६५)। २ ऋषि-विशेष (अभि २६)।

कह सक [कथय्] कहना, बोलना। कहइ (हे ४,२)। कर्म. कत्थइ, कहिज्जइ (हे १, १८७; ४, २४९)। वकृ. **कहंत, कहिंत, कहेमाण** (रयण ७२; सुर ११, १४८)। ववकृ. **कत्थंत, कहिज्जंत, कहिज्जमाण** (राज; सुर १, ४४; गा १९८; सुर १४, ६४)। संकृ. **कहिउं, कहिऊण** (महा; काल)। कृ. **कहणिज्ज, कहियव्व, कहेयव्व, कहणीय** (सूअ १, १, १; सुर ४, १९२; सुपा ३१६; पराह २, ४; सुर १२, १७०)।

कह सक [क्वथ्] क्वाथ करना, उबालना। कहइ (षड्)।

कह पुं [कफ] कफ, शरीरस्थ धातु-विशेष, बलगम (कुमा)।

कह देखो **कहं** (हे १, २९; कुमा; षड्)। °**कहवि** देखो **कहं-कहंपि** (गउड; उप ७२८ टी)। °**वि** देखो **कहं-पि** (प्रासू ११४; १४१)।

कहआ अ [कथंवा] वितर्क और आश्चर्य अर्थ को बतलानेवाला अव्यय (से ७, ३४)।

कहं अ [कथम्] १ कैसे, किस तरह? (स्वप्न ४५; कुमा)। २ क्यों, किस लिए? (हे १, २९, षड्; महा)। °**कहंपि** अ [°कथमपि] किसी तरह (गा १४९)। °**कहा** स्त्री [°कथा] राग-द्वेष को उत्पन्न करनेवाली कथा, विकथा (आचा)। °**चि**, °**ची** अ [°चित्] किसी तरह, किसी प्रकार से (श्रा १२; उप ५३० टी)। °**पि** अ [°अपि] किसी तरह (गउड)।

कहकह पुं [कहकह] प्रमोद-कलकल, खुशी का शोर (ठा ३, १—पत्र ११६; कप्प)।

कहकह अक [कहकहय्] खुशी का शोर मचाना। वकृ. **कहकहिंत** (पराह १, २)।

कहकहकह पुं [कहकहकह] खुशी का शोर (भग)।

कहकह पुं [कथंकथा] बातचीत (आचा २, १५, २);

कहग वि [कथक] १ कहनेवाला, (सट्टि २३)। २ पुं. कथा-कार (उप १०३१ टी)।

कहण न [कथन] कथन, उक्ति (धर्म १)।

कहणा स्त्री [कथना] ऊपर देखो (अंत २; उप ४९७; ६६८)।

कहय देखो **कहग** (दे १, १४५)।

कहल्ल पुंन [दे] कर्पर, खप्पर (अंत १२)।

कहा स्त्री [कथा] कथा, वार्त्ता, हकीकत (सुर २; २५०; कुमा; स्वप्न ८३)।

कहाणग, **कहाणय** न [कथानक] १ कथा, वार्त्ता (श्रा १२; उप पृ ११६)। २ प्रसंग, प्रस्ताव; 'कयं से नामं जालिणित्ति कहाणयविसेसेण' (स १३३; ५८८)। ३ प्रयोजन, कार्य; 'कहाणयविसेसेण समागओ पाडलावहं' (स ५८५)।

कहाव सक [कथय्] कहलाना, बुलवाना। कहावेइ (महा)।

कहावण पुं [कार्षापण] सिक्का-विशेष (हे २, ७१; ९३; कुमा)।

कहाविअ वि [कथित] कहलाया हुआ (सुपा ६५, ४५७)।

कहि, **कहिआ**, **कहिं** अ [क्व, कुत्र] कहां, किस स्थान में? (उवा; भग; नाट; कुमा; उत्त)।

कहित्तु वि [कथयितृ] कहनेवाला, भाषक (सम १५)।

कहिय वि [कथित] कथित, उक्त (उव; नाट)।

कहिया स्त्री [कथिका] कथा, कहानी (उप १०३१ टी)।

कहु (अप) अ [कुतः] कहां से? (षड्)।

कहेड वि [दे] तरुण, जवान (दे २, १३)।

कहेत्तु देखो **कहित्तु** (ठा ४, २)।

काअइंची, **काइंची** स्त्री [काकचिञ्ची] गुञ्जा, घुंघची (प्राकृ ३०)।

काइअ वि [कायिक] शारीरिक, शरीर-संबन्धी (श्रा ३४; प्रामा)।

काइआ, **काइगा** स्त्री [कायिकी] १ शरीर-सबंधी क्रिया, शरीर से निर्वृत्त व्यापार (ठा २,१; सम १०; नव १७) २ शौच-क्रिया (स ६४९)। ३ मूत्र, पेशाब (ओघ २१९; उप पृ २७८)।

काइंदी स्त्री [काकन्दी] इस नाम की एक नगरी, बिहार की एक नगरी (संथा ७६)।

काइणी स्त्री [दे] गुञ्जा, लाल रत्ती (दे २, २१)।

काई स्त्री [काकी] कौए की मादा (विपा १, ३)।

काउ स्त्री [कापोती] लेश्या विशेष, आत्मा का एक प्रकार का परिणाम (भग; आचा)। °**लेसा** स्त्री [°लेश्या] आत्म-परिणाम-विशेष (सम; ठा ३, १)। °**लेस्स** वि [°लेश्य] कापोत लेश्यावाला (पराग १७; भग)। °**लेस्सा** देखो °लेसा (पराग १७)।

काउं देखो **कर** = कृ।

काउंबर पुं [काकोदुम्बर] नीचे देखो (राज)।

काउंबरी स्त्री [काकोदुम्बरी] ओषधि-विशेष, 'निबंबउंबरकाउंबरिबोरि—' (उप १०३१ टी; पएरा १)।

काउकाम वि [कर्त्तुकाम] करने को चाहनेवाला (ओघ ५३७)।

काउड्डावण न [कायोड्डावन] उच्चाटन, दूर-स्थित दूसरे के शरीर का आकर्षण करना (णाया १, १४)।

काउदर पुं [काकोदर] साँप की एक जाति (पराह १, १)।

काउमण वि [कर्त्तुमनस्] करने की चाहवाला (उव; उप पृ ७०; सं ९०)।

काउरिस पुं [कापुरुष] १ खराब आदमी, नीच पुरुष। २ कातर, डरपोक पुरुष (गउड; सुर ८, १५०; सुपा १६२)।

काउल्ल पुं [दे] बक, बगुला (दे २, ६)।

काउसग्ग } पुं [कायोत्सर्ग] १ शरीर पर
काउस्सग्ग } के ममत्व का त्याग (उत्त २६)। २ कायिक-क्रिया का त्याग। ३ ध्यान के लिए शरीर की निश्चलता (पडि)।

काऊ देखो **काउ** (ठा १; कम्म ४, १३)।

काऊणं }
काऊण } देखो **कर** = कृ।

काओदर देखो **काउदर** (स्वप्न ६८)।

काओली स्त्री [काकोली] कन्द-विशेष, वनस्पति-विशेष (पएरा १)।

काओवग पुं [कायोपग] संसारी आत्मा (सूत्र २, ६)।

काओसग्ग देखो **काउसग्ग** (भवि)।

काक पुं [काक] १ कौआ, वायस (अनु ३)। २ ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७८)। °**जंघा** स्त्री [°जङ्घा] वनस्पति-विशेष, चकसेनी, घुंघची (अनु ३)। देखो **काग, काय** = काक।

काकंदग पुं [काकन्दक] एक जैन महर्षि (कप्प)।

काकंदिय पुं [काकन्दिक] एक जैन महर्षि (कप्प)।

काकंदिया स्त्री [काकन्दिका] जैन मुनियों की एक शाखा (कप्प)।

काकंदी देखो **काइंदी** (णाया १, ९; ठा ५, १)।

काकणि देखो **कागणि** (विपा १, २)।

काकलि देखो **कागलि** (ठा १०—पत्र ४७१)।

काग देखो **काक** (दे १, १०६; प्रासू ६०)। °**तालसंजीवगनाय** पुं [°तालसंजीवकन्याय] काकतालीयन्याय (उप १४२ टी)। °**तालिज्ज,** °**तालीअ** न [°तालीय] जैसे कौए का अतर्कित आगमन और ताल-फल का अकस्मात् गिरना होता है ऐसा अवितर्कित संभव, अकस्मात् किसी कार्य का होना (आचा; दे ५, १५)। °**थल** न [°स्थल] देश-विशेष (दे २, २७)। °**पाल** पुं [°पाल] कुष्ठ-विशेष (राज)। °**पिंडी** स्त्री [°पिण्डी] अग्र-पिण्ड (आचा २, १, ६)। देखो **काय** = काक।

कागंदी देखो **काइंदी** (अनु २)।

कागणि स्त्री [दे] १ राज्य, 'असोगसिरिणो पुत्तो अंधो जायइ कागणिं' (विसे ८६२)। २ मांस का छोटा टुकड़ा (औप)।

कागणी देखो **कागिणी** (श्रा २७; ठा ७)।

कागणी स्त्री [काकिणी] सवा गुंजा का एक बांट (अणु १५५)।

कागल पुं [काकल] ग्रीवास्थ उन्नत प्रदेश (अनु)।

कागलि } स्त्री [काकलि, °ली] १ सूक्ष्म
कागली } गीत-ध्वनि, स्वर-विशेष (सुपा ५६; उप पृ ३५)। २ देवी-विशेष, भगवान् अभिनन्दन की शासन-देवी (पव २७)।

कागिणी स्त्री [काकिणी] १ कौड़ी, कपर्दिका (उर ७, ३; उव; श्रा २८ टी)। २ बीस कौड़ी के मूल्य का एक सिक्का (उप ५४५)। ३ रत्न विशेष (सम २७; उप ९८६ टी)।

कागी स्त्री [काकी] १ कौए की मादा (वा २ विद्या-विशेष (विसे २४५३)।

काकोणंद पुं [काकोनन्द] इस नाम की एक म्लेच्छ जाति, 'मिच्छा कागोणंदा विक्खाया महियलम्मि ते सूरा' (पउम ३४, ४१)।

काठिण्ण न [काठिन्य] कठिनता (धर्मसं ५१, ५४)।

काढ पुं [क्वाथ] काढ़ा (कुलक ११)।

काण वि [काण] काना, एकाक्ष (सुपा ६४३)।

काण वि [दे] १ सच्छिद्र, काना (आचा २, १, ८)। २ चुराया हुआ। °**क्कय** पुं [°क्रय] चुराई हुई चीज को खरीदना (सुपा ३४३; ३४४)।

काणच्छि } स्त्री [दे] टेढ़ी नजर से देखना,
काणच्छिया } कटाक्ष (दे २, २४; भवि); 'काणच्छियाओ य जहा विडो तहा करेइ' (आवम)।

काणण न [कानन] १ वन, जंगल (पाअ)। २ बगीचा, उपवन (अनु; औप)।

काणत्थेव पुं [दे] विरल जल-वृष्टि, बूँद-बूँद बरसना (दे २, २६)।

काणद्धी स्त्री [दे] परिहास (दे २, २८)।

काणिक्का स्त्री [दे] बड़ी ईंट (बृह ३)।

काणिट्टा स्त्री [काणेष्टा] लोहे की ईंट (वव ४)।

काणिआर देखो **कण्णिआर** (संक्षि १७)।

काणिय न [काण्य] आँख का रोग, 'काणियं झिम्मियं चेव, कुणियं खुज्जियं तहा' (आचा)।

काणीण पुं [कानीन] कुँवारी कन्या से उत्पन्न पुत्र (भवि)।

कादंब देखो **कायंब** (पराह १, १)।

कादंबरी देखो **कायंबरी** (अभि १८८)।

कादूसण वि [कदूषण] आत्मा को दूषित करनेवाला। स्त्री. °**णिया** (भग ६, ५—पत्र २६८)।

कापुरिस देखो **काउरिस** (णाया १, १)।

काम पुं [काम] रोग, बीमारी (दसनि २, १५)। °**एव** देखो **कामदेव** (कुप्र ४११)। °**ग्घ** न [°घ्न] आयंबिल तप (संबोध ५८)। °**डहण** पुं [°दहन] महादेव, शिव (वज्जा ६८)। °**रुय** देखो **कामरूअ** (धर्मवि ५६)।

काम सक [कामय्] चाहना, वाञ्छना। कामेइ (पि ४९१)। कामेंति (गउड)। वकृ. **कामेंत कामअमाण** (गा २५६; अभि ६१)।

काम पुं [काम] १ इच्छा, कामना, अभिलाषा (उत्त १४; आचा; प्रासू ६६)। २ सुन्दर शब्द, रूप वगैरह विषय (भग ७,७; ठा ४,४)। ३ विषय का अभिलाष (कुमा)। ४ मदन, कन्दर्प (कुमा; प्रासू १)। ५ इन्द्रिय-प्रीति (धर्म १)। ६ मैथुन (पण्ण २)। ७ छन्द-विशेष (पिंग)। °**कंत** न [°कान्त] देव-विमान-विशेष (जीव ३)। °**कम** न [°कम] लान्तक देव-लोक के इन्द्र का एक यात्रा-विमान (ठा १०—पत्र ४३७)। °**काम** वि [°काम] विषय की चाहवाला (पण्ण २)। °**कामि** वि [°कामिन्] विषयाभिलाषी (आचा)। °**कूड** न [°कूट] देव विमान-विशेष (जीव ३)। °**गम** वि [°गम] १ स्वेच्छाचारी, स्वैरी (जीव ३)। २ न देखो °कम (जीव ३)। °**गामि** स्त्री [°गामी] विद्या-विशेष (पउम ७, १३५)। °**गुण** न [°गुण] १ मैथुन (पण्ह १, ४)। २ शब्द-प्रमुख विषय (उत्त १४)। °**घड** पुं [°घट] ईप्सित चीज को देनेवाला दिव्य कलश (श्रा १४)। °**जल** न [°जल] स्नान-पीठ, जिसपर बैठकर स्नान किया जाता है वह पट्ट; 'सिणाणपीढं तु कामजलं' (निचू १३)। °**जुग** पुं [°युग] पक्षि-विशेष (जीव ३)। °**ज्झय** न [°ध्वज] देवविमान-विशेष (जीव ३) °**ज्झया** स्त्री [°ध्वजा] इस नाम की एक वेश्या (विपा १, २)। °**ट्ठि** वि [°र्थिन्] विषयाभिलाषी (णाया १,१)। °**ड्ढिय** पुं [°र्द्धिक] १ जैन साधुओं का एक गण (ठा ६—पत्र ४५१)। २ न. जैन मुनियों का एक कुल (राज)। °**णयर** न [°नगर] विद्याधरों का एक नगर (इक)। °**दाइणी** स्त्री [°दायिनी] ईप्सित फल को देनेवाली विद्या-विशेष (पउम ७, १३५)। °**दुहा** स्त्री [°दुघा] कामधेनु (श्रा १६)। °**देअ, °देव** पुं [°देव] १ अनंग, कन्दर्प (नाट; स्वप्न ५५)। २ एक जैन श्रावक का नाम (उवा)। °**धेणु** स्त्री [°धेनु] ईप्सित फल देनेवाली गौ (काल)। °**पाल** पुं [°पाल] १ देव-विशेष (दीव)। २ बलदेव, हलायुध (पाअ)। °**पिपासय** वि [°पिपासक] विषयाभिलाषी (भग)। °**पुर** न [°पुर] इस नाम का एक विद्याधर-नगर (इक)। °**प्पभ** न [°प्रभ] देवविमान-विशेष (जीव ३)। °**फास** पुं [°स्पर्श] ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठाता देव-विशेष (सुज्ज २०)। °**महावण** न [°महावन] बनारस के समीप का एक चैत्य (भग १५)। °**रूअ** पुं [°रूप] देश-विशेष, जो आसाम में है (पिंग)। °**लेस्स** [°लेश्य] देव-विमान-विशेष (जीव ३)। °**वण्ण** न [°वर्ण] एक देव-विमान (जीव ३)। °**सत्थ** न [°शास्त्र] रति-शास्त्र (धर्म २)। °**समणुण्ण** वि [°समनोज्ञ] कामासक्त, कामान्ध (आचा)। °**सिंगार** न [°शृङ्गार] देव-विमान-विशेष (जीव ३)। °**सिट्ठ** न [°शिष्ट] एक देव-विमान-विशेष (जीव ३)। °**ावट्ट** न [°ावर्त] देव-विमान-विशेष (जीव ३)। °**ावसाइत्त** स्त्री [°ावशायिता] योगी का एक तरह का ऐश्वर्य, जिसमें योगी अपनी इच्छा के अनुसार सर्व पदार्थों का अपने चित्त में समावेश करता है (राज)। °**ासंसा** स्त्री [°ाशंसा] विषयाभिलाष (ठा ४, ४)।

कामं अ [कामम्] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ अवधारण (सूअ २, १)। २ अनुमति, सम्मति (निचू १६)। ३ अभ्युपगम, स्वीकार (सूअ २, ६)। ४ अतिशय, अधिकय (हे २, २१७)।

कामंग न [कामाङ्ग] कन्दर्प का उत्तेजक स्नान वगैरह (सूअ २, २)।

कामंदुहा स्त्री [कामदुघा] कामधेनु, ईप्सित वस्तु को देनेवाली दिव्य गौ (पउम ८२, १४)।

कामंध पुं [कामान्ध] विषयातुर, तीव्र कामी (प्रासू १७६)।

कामकिसोर पुं [दे] गर्दभ, गधा (दे २, ३०)।

कामग वि [कामक] १ अभिलषणीय, वाञ्छनीय (पण्ह १, १)। २ चाहनेवाला, इच्छुक (सूअ १, २, २)।

कामण न [कामन] चाह, अभिलाष; 'परइत्थिकामणेणं जीवा नरयम्मि वच्चंति' (महा)।

कामय देखो **कामग** (उवा)।

कामि वि [कामिन्] विषयाभिलाषी (आचा; गउड)।

कामि वि [कामिन्] अभिलाषी (कुप्र १५४)।

कामिअ वि [कामित] वाञ्छित, अभिलषित (सुपा २५५)।

कामिअ वि [कामिक] १ काम-सम्बन्धी, विषय-सम्बन्धी (भत्त १११)। २ न. तीर्थ-विशेष (ती २८)। ३ सरोवर-विशेष, जिसमें ईप्सित जन्म मिलता है (राज)। ४ वि. इच्छा पूर्ण करनेवाला (स ३६०) ५ वि. इच्छुक, इच्छावाला, साभिलाष (विपा १, १)।

कामिआ स्त्री [कामिका] इच्छा, अभिलाषा; 'अकामिआए चिणंति दुक्खं' (पण्ह १, ३)।

कामिंजुल पुं [कामिञ्जुल] पक्षि विशेष (दे २, २६)।

कामिड्ढि पुं [कामर्द्धि] एक जैन मुनि, आर्य सुहस्तिसूरि का एक शिष्य (कप्प)।

कामिड्ढिय न [कामर्द्धिक] जैन मुनियों का एक कुल (कप्प)।

कामिणी स्त्री [कामिनी] कान्ता, स्त्री (सुपा ५)।

कामिय वि [कामित] यथेष्ट, जितना चाहे उतना (पिंड २७२)।

कामुअ } वि [कामुक] कामी, विषयाभिलाषी
कामुग } (मै २५; महा)। °**सत्थ** न [°शास्त्र] काम-शास्त्र, रति-शास्त्र (उप ५३० टी)।

कामुत्तरवडिंसग न [कामोत्तरावतंसक] देवविमान-विशेष (जीव ३)।

काय पुं [काय] १ वनस्पति की एक जाति (सूअ २, ३, १६)। २ एक महाग्रह (सुज्ज २०)। ३ पुंन. जीव-निकाय, जीव-समूह; 'एयाइं कायाइं पवेदिताइं' (सूअ १, ७, २)। °**मंत** वि [°वत्] बड़ा शरीरवाला (सूअ २, १, १३)। °**वह** पुं [°वध] जीव-हिंसा; (श्रावक ३४६)।

काय पुं [काय] १ शरीर, देह (ठा ३, १; कुमा)। २ समूह, राशि (विसे ६००)। ३ देश-विशेष (पण्ह १, १)। ४ वि. उस देश में रहनेवाला (पण्ण १)। °**गुत्त** वि [°गुप्त] शरीर को वश में रखनेवाला (भग)। °**गुत्ति** स्त्री [°गुप्ति] शरीर को वश में रखना, जितेन्द्रियता (भग)। °**जोअ, °जोग** पुं [°योग] शरीर व्यापार, शारीरिक क्रिया (भग)। °**जोगि** वि [°योगिन्] शरीर-जन्य

क्रियावाला (भग)। °ट्ठिइ स्त्री [°स्थिति] मर कर फिर उसी शरीर में उत्पन्न होकर रहना (ठा २, ३)। °णिरोह पुं [°निरोध] शरीर-व्यापार का परित्याग (आव ४)। °तिगिच्छा स्त्री [°चिकित्सा] १ शरीर-रोग की प्रतिक्रिया। २ उसका प्रतिपादक शास्त्र (विपा १,८)। °भवत्थ वि [°भवस्थ] माता के उदर में स्थित (भग)। °वंझ पुं [वन्ध्य] ग्रह-विशेष (राज)। °समिअ वि [°समित] शरीर की निर्दोष प्रवृत्ति करनेवाला (भग)। °समिइ स्त्री [°समिति] शरीर की निर्दोष प्रवृत्ति (ठा ८)।

काय पुं [काक] १ कौआ, वायस (उप पृ २३; हेका १४८; वा २६)। २ वनस्पति-विशेष, काला उम्बर (पएण १—पत्र ३५)। देखो काक, काग।

काय पुं [काच] काँच, शीशा (महा; आचा)।

काय पुं [दे] १ काँवर, बहँगी, बोझ ढोने के लिए तराजूनुमा एक वस्तु, इसमें दोनों ओर सिकहर लटकाये जाते हैं (गाया १, ८ टी—पत्र १५२)। °कोडिय पुं [°कोटिक] काँवर से भार ढोनेवाला (णाया १, ८ टी)। देखो काव।

काय पुं [दे] १ लक्ष्य, वेध्य, निशाना। २ उपमान, जिस पदार्थ की उपमा दी जाय वह (दे २, २६)।

कायंचुल पुं [दे] कामिञ्जुल, जल-पक्षी-विशेष (दे २, २६)।

कायंदा स्त्री [दे] परिहास, उपहास (दे २, २८)।

कायंदी देखो काइंदी (स ६)।

कायंधुअ पुं [दे] कामिञ्जुल, जल-पक्षी विशेष (दे २, २६)।

कायंब, कायंबग पुं [कादम्ब, °क] १ हंस-पक्षी (पाअ; कप्प)। २ गन्धर्व-विशेष। ३ कदम्ब-वृक्ष (राज)। ४ वि. कदम्ब-वृक्ष-सम्बन्धी; 'कायंबपुप्फगोलयमसूरअइमुत्तयस्स पुप्फं व' (पुप्फ २६८)।

कायंबर न [कादम्बर] मद्य-विशेष, गुड़ का दारू; 'कायंबरपसन्ना' (पउम १०२, १२२)।

कायंबरी स्त्री [कादम्बरी] एक गुहा का नाम (कुप्र ६३)।

कायंबरी स्त्री [कादम्बरी] १ मदिरा, दारू (पाअ; पउम ११३, १०)। २ अटवी-विशेष (स ५५१)।

कायक न [दे. कायक] हरा रंग की रूई से बना हुआ वस्त्र (आचा २, ५, १)।

कायत्थ पुं [कायस्थ] जाति-विशेष, कायथ जाति, कायस्थ नाम से प्रसिद्ध जाति, लेखक, लिखने का काम करनेवाली मनुष्य-जाति (मुद्रा ७६; मृच्छ ११७)।

कायपिउच्छा, कायपिउला स्त्री [दे] कोकिला, कोयल, पिकी (दे २, ३०; षड्)।

कायर वि [कातर] अधीर, डरपोक (णाया १, १; प्रासू ५८)।

कायर वि [दे] प्रिय, स्नेह-पात्र (दे २, ५८)।

कायरिय वि [कातर] १ डरपोक, भयभीत, अधीर; 'धीरेणवि मरियव्वं कायरिएणावि अवस्समरियव्वं' (प्रासू १०६)। २ पुं. गोशालक का एक भक्त (भग ८, ५)।

कायरिया स्त्री [कातरिका] माया, कपट (सूअ १, २, १)।

कायल पुं [दे] १ काक, कौआ (दे २, ५८; पाअ)। २ वि. प्रिय, स्नेह-पात्र (दे २, ५८)।

कायलि देखो कागलि (नाट—मृच्छ ६२)।

कायवंझ [कायवन्ध्य] ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष (राज)।

कायव्व देखो कर = कृ।

कायह वि [कायह] देश-विदेश में बना हुआ (वस्त्र); (आचा २, ५, १, ७)।

काया स्त्री [काया] शरीर, देह (प्रासू ११२)।

कार सक [कारय्] करवाना, बनवाना। कारेइ, कारेह (पि ४७२; सुपा ११३)। भूका. कारेत्था (पि ५१७)। वकृ. कारयंत (सुर १६, १०); कारेमाण (कप्प)। कवकृ. कारिज्जंत (सुपा ५७)। संकृ. कारिऊण (पि ५८४)। कृ. कारेयव्व (पंचा ६)।

कार वि [दे] कटु, कड़वा, तीता (दे २ २६)।

कार पुंन. देखो कारा = कारा (स ६११; णाया १, १)।

कार पुं [कार] १ क्रिया, कृति, व्यापार (ठा १०)। २ रूप, आकृति। ३ संघ का मध्य भाग (वव ३)।

°कार वि [°कार] करनेवाला (पउम १७, ७)।

कारंकड वि [दे] परुष, कठिन (दे २, ३०)।

कारंड, कारंडग, कारंडव पुं [कारण्ड, °क] पक्षि-विशेष; 'हंस-कारंडवचक्कवाओवसोभियं' (भवि औप; स ६०१; णाया १, १; पएह १, १; विक्र ४१)।

कारग वि [कारक] १ करनेवाला (पउम ८२, ७६; उप पृ २१५)। २ करानेवाला (श्रा ६; विसे)। ३ न. कर्ता, कर्म वगैरह व्याकरण प्रसिद्ध कारक (विसे ३३८४)। ४ कारण, हेतु; 'कारणं ति वा कारगं ति वा साहारणं ति वा एगट्ठा' (आचू १)। ५ उदाहरण, दृष्टान्त (ओघ १६ भा)। ६ पुंन. सम्यक्त्व-विशेष, शास्त्रानुसार शुद्ध क्रिया; 'जं जह भणियं तुमए तं तह करणम्मि कारगो होइ' (सम्य १४)।

कारण न [कारण] १ हेतु, निमित्त (विसे २०६८; स्वप्न १७)। २ प्रयोजन (आचा)। ३ अपवाद (कप्प)।

कारणिज्ज वि [कारणीय] प्रयोजनीय (स ३२६)।

कारणिय वि [कारणिक] १ प्रयोजन से किया जाता (उवर १०८)। २ कारण से प्रवृत्त (वव २)। ३ पुं. न्याय-कर्ता, न्यायाधीश (सुपा ११८)।

कारय देखो कारग (श्रा १६; विसे ३४२०)।

कारव सक [कारय्] करवाना, बनवाना। कारवेइ (उव)। वकृ. कारविंत (सुपा ६३२; पुप्फ ४७)। संकृ. कारवित्ता (कप्प)।

कारवण न [कारण] निर्मापन, बनवाना (राज)।

कारवस पुं [कारवश] देश-विशेष (भवि)।

कारवाहिय वि [कारबाधित] देखो करेवाहिय (औप)।

कारविय वि [कारित] कराया हुआ (सुर १, २२६)।

कारह वि [कारभ] करभ-सम्बन्धी (गउड)।

कारा स्त्री [कारा] कैदखाना (दे २, ६०; पाअ)। °गार पुंन [°गार] कैदखाना, जेल (सुपा १२२; सार्ध ५२)। °घर न [°गृह] कैदखाना (अच्चु ८३)। °मंदिर न [°मन्दिर] कैदखाना, जेलखाना (कप्पू)।

कारा स्त्री [दे] लेखा, रेखा (दे २, २६)।

कारायणी स्त्री [दे] शाल्मलि-वृक्ष, सेमर का पेड़ (दे २, १८)।

काराव देखो **कारव**। कारावेइ (पि ५५२)। भवि. काराविस्सं (पि ५२८)।

कारावण देखो **कारवण** (पण्ह १, ३; उप ४०६)।

कारावय वि [कारक] करानेवाला, विधायक (स ५५७)।

काराविय वि [कारित] करवाया हुआ, बनवाया हुआ (विसे १०१६; सुर ३, २४; स १६३)।

कारि वि [कारिन्] कर्ता, करनेवाला; 'एयस्स कारिणो बालिसत्तमारोविया जेण' (उव ५६७ टी); 'एयमणत्थस्स कारिणी अहयं' (सुर ८, ५६)।

कारिका देखो **कारिया** (तंदु ४६)।

कारिम वि [दे] कृत्रिम, बनावटी, नकली (दे २, २७; गा ४५७; षड्; उप ७२८ टी; स ११६; प्रासू २०)।

कारिय देखो **कज्ज**=कार्य (सूअ १, २, ३, १०; दस ६, ६५)।

कारिय वि [कारित] कराया हुआ, बनवाया हुआ (पण्ह २, ५)। कार्य (सूत्र गा १५१)।

कारियल्लई स्त्री [दे] वल्ली-विशेष, करैला का गाछ (पण्ण १—पत्र ३३)।

कारिया स्त्री [कारिका] करनेवाली, कर्त्री (उवा)।

कारिल्ल देखो **कारि** (संबोध ३८)।

कारिल्ली स्त्री [दे] वल्ली विशेष, करैला का गाछ (सूक्त ६१)।

कारीस पुं [कारीष] गोइँठा की अग्नि, कंडा की आग (उत्त १२)।

कारु पुं [कारु] १ कारीगर, शिल्पी (पाअ; प्रासू ८०)। २ नव प्रकार के कारु चर्मकर आदि।

कारुइज्ज वि [कारुकीय] कारीगर से सम्बन्ध रखनेवाला (पण्ह १, २)।

कारुणिय वि [कारुणिक] दयालु, कृपालु (ठा ४, २; सण)।

कारुण्ण } न [कारुण्य] दया, करुणा; (महा
कारुन्न } उप ७२८ टी)।

कारेमाण } देखो **कार**=कारय्।
कारेयव्व }

कारेल्लय न [दे] करैला, तरकारी-विशेष (अनु ६)।

कारोडिय पुं [कारोटिक] १ कापालिक, भिक्षुक-विशेष। २ ताम्बूल-वाहक, स्थगीधर (औप)।

काल न [दे] तमिस्र, अन्धकार (दे २, २६ षड्)।

काल पुं [काल] १ समय वक्त (जी ४६)। २ मृत्यु, मरण (विसे २०६७; प्रासू ११२)। ३ प्रस्ताव, प्रसंग, अवसर (विसे २०६७)। ४ विलम्ब, देरी (स्वप्न ६१)। ५ उमर, वय (स्वप्न ४२)। ६ ऋतु (स्वप्न ४२)। ७ ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७८)। ८ ज्योतिः-शास्त्र प्रसिद्ध एक कुयोग (गण १६)। ९ सातवीं नरक-पृथ्वी का एक नरकावास (ठा ५, ३—पत्र ३४१; सम ५८)। १० नरक के जीवों को दुःख देनेवाले परमाधार्मिक देवों की एक जाति (सम २८)। ११ वेलम्ब इन्द्र का एक लोकपाल (ठा ४, १—पत्र १६८)। १२ प्रभञ्जन इन्द्र का एक लोकपाल (ठा ४, १—पत्र १६८)। १३ इन्द्र-विशेष, पिशाच-निकाय का दक्षिण दिशा का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५)। १४ पूर्वीय लवण समुद्र के पाताल-कलशों का अधिष्ठाता देव (ठा ४, २—पत्र २२६)। १५ राजा श्रेणिक का एक पुत्र (निर १, १)। १६ इस नाम का एक गृहपति (णाया २, १)। १७ अभाव (बृह ४)। १८ पिशाच देवों की एक जाति (पण्ण १)। १९ निधि-विशेष (ठा ६—पत्र ४४६)। २० वर्ण-विशेष, श्याम-वर्ण (पण्ण २)। २१ न. देव-विमान-विशेष (सम ३५)। २२ 'निरयावली' सूत्र का एक अध्ययन (निर १, १)। २३ काली-देवी का सिंहासन (णाया २)। २४ वि. कृष्ण, काला रंग का (सुर २, ५) °कंखि वि [°काङ्क्षिन्] १ समय की अपेक्षा करने-वाला (आचा)। २ अवसर का ज्ञाता (उत्त ६)। °कप्प पुं [°कल्प] १ समय-सम्बन्धी शास्त्रीय विधान। २ उसका प्रतिपादक शास्त्र (पंचभा)। °काल पुं [°काल] मृत्यु-समय (विसे २०६६)। °कूड न [°कूट] उत्कट विष-विशेष (सुपा २३८)। °क्खेव पुं [°क्षेप] विलम्ब, देरी (से १३, ४२)। °गय वि [°गत] मृत्यु-प्राप्त, मृत (णाया १, १; महा)। °चक्क न [°चक्र] १ बीस सागरोपम परिमित समय (णंदि)। २ एक भयंकर शस्त्र; 'जाहे एवमवि न सक्कइ ताहे कालचक्कं विउव्वइ' (आवम)। °चूला स्त्री [°चूडा] अधिक-मास वगैरह का अधिक समय (निचू १)। °ण्णु वि [°ज्ञ] अवसर का जानकार (उप १७६ टी; आचा)। °दट्ठ वि [°दष्ट] मौत से मरा हुआ (उप ७२८ टी)। °देव पुं [°देव] देव-विशेष (दीव)। °धम्म पुं [°धर्म] मृत्यु, मरण (णाया १, १; विपा १, २)। °न्न, °न्नु देखो °ण्णु (पि २७६; सुपा १०९)। °परियाय पुं [°पर्याय] मृत्यु-समय (आचा)। °परिहीण न [°परिहीन] विलम्ब, देरी (राय)। °पाल पुं [°पाल] देव विशेष, धरणेन्द्र का एक लोकपाल (ठा ४, १)। °पास पुं [°पाश] ज्योतिः-शास्त्र-प्रसिद्ध एक कुयोग (गण १८)। °पिट्ठ, °पुट्ठ पुंन [°पृष्ठ] १ धनुष। २ कर्ण का धनुष। ३ काला हरिण। ४ कौञ्च पक्षी (पि ५३)। °पुरिस पुं [°पुरुष] जो पुंवेद कर्म का अनुभव करता हो वह (सूअ १, ४, १, २ टी)। °प्पभ पुं [°प्रभ] इस नाम का एक पर्वत (ठा १०)। °फोडय पुंस्त्री [°स्फोटक] प्राणहर फोड़ा। स्त्री. °डिया (रंभा)। °मास पुं [°मास] मृत्यु-समय; 'कालमासे कालं किच्चा' (विपा १, १; २; भग ७, ६)। °मासिणी स्त्री [°मासिनी] गर्भिणी, गुर्विणी (दस ५, १)। °मिग पुं [°मृग] कृष्ण मृग की एक जाति (जं २)। °रत्ति स्त्री [°रात्रि] प्रलय-रात्रि, प्रलय-काल (गउड)। °वडिंसग न [°वतंसक] देव-विमान-विशेष, काली देवी का विमान (णाया २)। °वाइ वि [°वादिन्] जगत को कालकृत माननेवाला, समय को ही सब कुछ माननेवाला (णंदि)। °वासि पुं [°वर्षिन्] अवसर पर बरसनेवाला मेघ (ठा ४, ३—पत्र २६०)। °संदीव पुं [°संदीप] असुर-विशेष, त्रिपुरासुर (आक)।

°समय पुं [°समय] समय, वक्त (सुज्ज ८)। °समा स्त्री [°समा] समय-विशेष, आरक-रूप समय (जो २)। °सार पुं [°सार] मृग की एक जाति, काला मृग; 'एक्को वि कालसारो ण देइ गंतुं पयाहिणव-लंतो' (गा २५)। °सोअरिय पुं [°सौक-रिक] स्वनाम ख्यात एक कसाई (श्राक)। °गरु, °ागुरु, °यरु न [°ागुरु] सुगन्धि द्रव्य-विशेष, जो धूप के काम में लाया जाता है (णाया १, १; कप्प; औप; गउड)। °ायस, °स न [°ायस] लोहे की एक जाति (हे १, २६९; कुमा, प्राप्र; से ८, ४९)। °ासवेसियपुत्त पुं [°ास्यवैशिकपुत्र] इस नाम का एक जैन मुनि जो भगवान् पार्श्वनाथ की परम्परा में थे (भग)।

कालंजर पुं [कालञ्जर] १ देश-विशेष (पिंग)। २ पर्वत विशेष (आवम)। देखो **कालिंजर**।

कालक्खर सक [दे] १ निर्भर्त्सना करना, फटकारना। २ निर्वासित करना, बाहर निकाल देना; 'तो तेणं भणिया भज्जा, पिए! पुत्तो कालक्खरियइ एसो, तो सा रोसेण भणइ तयभिमुहं, मइ जीवंतीए इमं न होइ ता जाउ दव्वंपि; किं कज्जइ लच्छीए, पुत्त-विउत्ताए पिउणा पिययम ! जयम्मि' (सुपा ३९९; ४००)।

कालक्खर पुंन [कालाक्षर] १ अल्प-ज्ञान, अल्प-शिक्षा; २ वि. अल्प-शिक्षित; 'कालक्ख-रदूसिक्खिअ धम्मिअ रे निंबकीडअसरिच्छ' (गा ८७८)।

कालक्खरिअ वि [दे] १ उपालब्ध, निर्भ-र्त्सित। २ निर्वासित; 'तहवि न विरमइ दुलहो अणहकुलडाए संगमे, तत्तो कालक्ख-रिओ पिउणा' (सुपा ३८८); 'तो पिउणा कालेणं कालक्खरिओ' (सुपा ४८८)।

कालक्खरिअ वि [कालाक्षरिक] देरी से अक्षर जाननेवाला, अशिक्षित; 'भो तुम्हाणं मज्झे अहं एक्को कालक्खरिओ' (कप्पू)।

कालग } **कालय** } पुं [कालक] १ प्रसिद्ध जैनाचार्य (पुप्फ १८९; २४०)। २ भ्रमर, भौंरा (राज)। देखो **काल** (उवा; उप ९८६ टी)।

कालय वि [दे] धूर्त, ठग (दे २, २८)।

कालवट्ठ न [दे. कालपृष्ठ] धनुष (दे २, २८)।

कालवेसिय पुं [कालवैशिक] एक वेश्या-पुत्र (ती ७)।

काला स्त्री [काला] १ श्याम-वर्णवाली। २ तिरस्कार करनेवाली (कुमा)। ३ एक इन्द्राणी, चमरेन्द्र की एक पटरानी (ठा ५, १)। ४ वेश्या-विशेष (ती ७)।

कालाइक्कमय न [कालातिक्रमक] तप-विशेष, दिन के पूर्वार्ध तक आहार-त्याग (संबोध ५८)।

कालाकोण पुंन [काललवण] काला नोन या नमक (दस ३, ८)।

कालि पुं [कालिन्] बिहार का एक पर्वत (ती १३)।

कालिअसूरि पुं [कालिकसूरि] एक प्रसिद्ध प्राचीन जैन आचार्य (विचार ५२९)।

कालिआ स्त्री [दे] १ शरीर, देह। २ काला-न्तर। ३ मेघ, बारिश (दे २, ५८)। ४ मेघ-समूह, बादल (पाअ)।

कालिआ स्त्री [कालिका] १ देवी-विशेष (सुपा १८२)। २ एक प्रकार का तूफानी पवन (उप ७२८ टी; णाया १, ९)।

कालिंग पुं [कालिङ्ग] १ देश विशेष; 'पत्तो कालिंगदेसओ' (श्रा १२)। २ वि. कलिङ्ग देश में उत्पन्न (पउम ९९, ५५)।

कालिंगी स्त्री [कालिङ्गी] वल्ली-विशेष, तरबूज का गाछ (पण्ण १)।

कालिंगी स्त्री [कालिङ्गी] विद्या विशेष (सूअ २, २, २७)।

कालिंजण न [दे] तापिच्छ, श्याम तमाल का पेड़ (दे २, २९)।

कालिंजणी स्त्री [दे] ऊपर देखो (दे २, २९)।

कालिंजर पुं [कालिञ्जर] १ देश-विशेष (पिंग)। २ पर्वत-विशेष (उत्त १३)। ३ न. जंगल-विशेष (पउम ५८, ९)। ४ तीर्थ-स्थान-विशेष (ती ७)।

कालिंदी स्त्री [कालिन्दी] १ यमुना नदी (पाअ)। २ एक इन्द्राणी, शक्रेन्द्र की एक पटरानी (पउम १०२, १५९)।

कालिंब पुं [दे] १ शरीर, देह। २ मेघ, बारिश (दे २, ५९)।

कालिग देखो **कालिय** = कालिक (राज)।

कालिगी स्त्री [कालिकी] संज्ञा-विशेष, बहुत समय पहले गुजरी हुई चीज का भी जिससे स्मरण हो सके वह (विसे ५०८)।

कालिज्ज न [कालेय] हृदय का गूढ़ मांस-विशेष (तंदु)।

कालिम पुंस्त्री [कालिमन्] श्यामता, कृष्णता, दागीपन (सुर ३, ४४; श्रा १२)।

कालिय पुं [कालिय] इस नाम का एक सर्प (सुपा १८१)।

कालिय वि [कालिक] १ काल में उत्पन्न, काल-संबन्धी। २ अनिश्चित, अव्यवस्थित; 'हत्थागया इमे कामा कालिया जे अणागया' (उत्त ५; करु १६)। ३ वह शास्त्र, जिसको अमुक समय में ही पढ़ने की शास्त्रीय आज्ञा है (ठा २, १—पत्र ४९)। °दीव पुं [°द्वीप] द्वीप-विशेष (णाया १, १७—पत्र २२८)। °पुत्त पुं [°पुत्र] एक जैन मुनि जो भगवान् पार्श्वनाथ की परम्परा में से थे (भग)। °सण्णि वि [°संज्ञिन्] कालिकी संज्ञावाला (विसे ५०९)। °सुय न [°श्रुत] वह शास्त्र जो अमुक समय में ही पढ़ा जा सके (णंदि)। °ाणुओग पुं [°ानुयोग] देखो पूर्वोक्त अर्थ (भग)।

काली स्त्री [काली] १ विद्या-देवी-विशेष (संति ५)। २ चमरेन्द्र की एक पटरानी (ठा ५, १; णाया २, १)। ३ वनस्पति-विशेष, काकजङ्घा (अनु ४)। ४ श्यामवर्ण-वाली स्त्री; 'सामा गायइ महुरं, काली गायइ खरं च रुक्खं च' (ठा ७)। ५ राजा श्रेणिक की एक रानी (निर १, १)। ६ चौथी जैन शासन-देवी (संति ९)। ७ पार्वती, गौरी (पाअ)। ८ इस नाम का एक छंद (पिंग)।

कालुण न [कारुण्य] दया, करुणा। °वडिया स्त्री [°वृत्ति] भीख माँग कर आजीविका करना (विपा १, १)।

कालुणिय देखो **कारुणिय** (सूअ १, १, १)।

कालुणीय देखो **कारुणिय** (सूअ १,३,२,९)।

कालुय पुं [दे] अश्व की एक उत्तम जाति (सम्मत्त २१६)।

कालुसिय न [कालुष्य] कलुषता, मलिनता (आउ)।

कालुस्स न [कालुष्य] कलुषपन (सा २)।

कालेज्ज न [दे] तापिच्छ, श्याम तमाल का पेड़ (दे २, २६)।

कालेय न [कालेय] १ काली देवी का अपत्य। २ सुगन्धि द्रव्य-विशेष, कालचन्दन (स ७५)। ३ हृदय का मांस-खण्ड, कलेजा (सूअ १, ५, १; रंभा)।

कालोद देखो **कालोय** (जीव ३)।

कालोदधि पुं [कालोदधि] समुद्र-विशेष (पण्ह १, ५)।

कालोदाइ पुं [कालोदायिन्] इस नाम का एक दार्शनिक विद्वान् (भग ७, १०)।

कालोय पुं [कालोद] समुद्र-विशेष जो घातकी-खण्ड द्वीप को चारों तरफ घिर कर स्थित है (सम ६७)।

काव, कावड पुं [दे] १ काँवर, बहँगी, बोझ ढोनेके लिए तराजूनुमा एक वस्तु, इसमें दोनों ओर सिकहर लटकाये जाते हैं (जीव ३; पउम ७५, ५२)। °**कोडिय** पुं [°कोटिक] काँवर से भार ढोनेवाला (अणु)। देखो **काय** = (दे)।

कावडि, कावोडि स्त्री [दे] काँवर (कुप्र १२१; २४४, दस ४, १ टी)।

कावडिअ पुं [दे] वैवधिक, काँवर से भार ढोनेवाला (पउम ७५, ५२)।

कावध पुं [कावध्य] एक महाग्रह, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष (राज)।

कावलिअ वि [दे] असहन, असहिष्णु (दे २, २८)।

कावलिअ वि [कावलिक] कवल-प्रक्षेप रूप आहार (भग; संग १८१)।

कावालिअ पुं [कापालिक] वाम-मार्गी, अघोर सम्प्रदाय का मनुष्य (सुपा १७४; ३६७; दे १, ३१; प्रबो ११५)।

कावालिआ, कावालिणी स्त्री [कापालिकी] कापालिक-व्रतवाली स्त्री (गा ४०८)।

काविट्ठ न [कापिष्ठ] देव-विमान-विशेष (सम २७; पउम २०, २३)।

काविल न [कापिल] १ सांख्य-दर्शन (सम्म १४५)। २ वि. सांख्य मत का अनुयायी (औप)।

काविलिय वि [कापिलीय] १ कपिल मुनि-संबन्धी। २ न. कपिल-मुनि के वृत्तान्तवाला एक ग्रन्थांश; 'उत्तराध्ययन' सूत्र का आठवाँ अध्ययन (सम ६४)।

काविसायण देखो **कविसायण** (जीव ३)।

कावी स्त्री [दे] नीलवर्णवाली, हरा रंग की चीज (दे २, २६)।

काउरिस देखो **कापुरिस** (स ३७५)।

कावेअ न [कापेय] वानरपन, चञ्चलता (अच्चु ६२)।

कावोय वि [दे] काँवर वहन करनेवाला (अणु ४६)।

कास देखो **कड्ढ** = कृष्। कासइ (षड्)।

कास अक [कास्] १ कहरना, रोग-विशेष से खराब आवाज करना। २ कासना, खाँसी की आवाज करना। ३ खोखार करना। ४ छींक खाना। वकृ. **कासंत**, **कासमाण** (पण्ह १, ३—पत्र ५४; आचा)। संकृ. **कासित्ता** (जीव ३)।

कास पुं [काश, °स] १ रोग-विशेष, खाँसी (णाया १, १३)। २ तृण-विशेष, कास; 'कास-कुसुमंव मन्ने सुनिप्फलं जम्म-जीवियं नियमं' (उप ७२८ टी); 'कासुकुसुमंव विहलं' (आप ५८)। ३ उसका फूल जो सफेद और शोभायमान होता है; 'ता तत्थ नियइ धूलिं ससहर-हरहासकाससंकासं' (सुपा ४२८; कुमा)। ४ ग्रह विशेष, ग्रह-देव-विशेष (ठा २, ३)। ५ रस (ठा ७)। ६ संसार, जगत् (आचा)।

कास देखो **कंस** = कांस्य (हे १,२९; षड्)।

कासंकस वि [कासङ्कष] प्रमादी, संसार में आसक्त (आचा)।

कासग देखो **कासय**; 'जेण रोहंति बीजाइं, जेण जीवंति कासगा' (निचू १)।

कासण न [कासन] खोखारना, खाट्कार (ओघ २३५)।

कासमद्दग पुं [कासमर्दक] वनस्पति-विशेष, गुच्छ-विशेष (पण्ण १—पत्र ३२)।

कासय, कासव पुं [कर्षक] कृषीवल, किसान (दे १, ८७; पाअ); 'जह वा लुणाइ सस्साइं, कासवो परिणयाइं छित्तम्मि। तह भूयाइं कयंतो, वत्थुसहावो इमो जम्हा' (सुपा ६५१)।

कासव पुं [कश्यप] १ इस नाम का एक ऋषि (पामा)। २ हरिण की एक जाति। ३ एक जात की मछली। ४ दक्ष प्रजापति का जामाता। ५ वि. दारू पीनेवाला (हे १, ४३; षड्)।

कासव न [काश्यप] १ इस नाम का एक गोत्र (ठा ७; णाया १, १; कप्प)। २ पुं. भगवान् ऋषभदेव का एक पूर्व पुरुष। ३ वि. काश्यप गोत्र में उत्पन्न, काश्यप-गोत्रीय (ठा ७—पत्र ३९०; उत्त ७; कप्प; सूअ १,६)। ४ पुं. नापित, हजाम (भग ९, १०; आवम)। ५ इस नाम का एक गृहस्थ (अंत १८)। ६ न. इस नाम का एक 'अंतगडदसा' सूत्र का अध्ययन (अंत १८)।

कासवनालिया स्त्री [काश्यपनालिका] श्री-पर्णीफल (आचा २, १, ८, ६; दस ५, २, २१)।

कासविज्जया स्त्री [काश्यपीया] जैन मुनियों की एक शाखा (कप्प)।

कासवी स्त्री [काश्यपी] १ पृथिवी, धरित्री (कुमा)। २ कश्यकप-गोत्रीया स्त्री (कप्प)। °**रइ** स्त्री [°रति] भगवान् सुमतिनाथ की प्रथम शिष्या (सम १५२)।

कासा स्त्री [कृशा] दुर्बल स्त्री (हे १, १२७; षड्)।

कासाइया, कासाई स्त्री [काषायी] कषाय-रंग से रंगी हुई साड़ी, लाल साड़ी (कप्प; उवा)।

कासाय वि [काषाय] कषाय-रंग से रंगा हुआ वस्त्रादि (गउड)।

कासार न [कासार] १ तलाव, छोटा सरोवर (सुपा १६६)। २ पकान्न-विशेष, कँसार (स १८९)। ३ पुं. समूह, जत्था (गउड)। ४ प्रदेश, स्थान (गउड)। °**भूमि** स्त्री [°भूमि] नितम्ब-प्रदेश (गउड)।

कासार न [दे] धातु-विशेष, सीसपत्रक (दे २, २७)।

कासि पुं [काशी] १ देश-विशेष, काशी जिला; 'कासित्ति जणवओ' (सुपा ३१; उत्त १८)। २ काशी देश का राजा (कुमा)।

३ स्त्री. काशी नगरी, बनारस शहर (कुमा)। °पुर न [°पुर] काशी नगरी, बनारस शहर (पउम ६,१३७)। °राय पुं [°राज] काशी देश का राजा (उत्त १८)। °व पुं [°प] काशी देश का राजा (पउम १०४, ११)। °वड्ढण पुं [°वर्धन] इस नाम का एक राजा, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी (ठा ८—पत्र ४३०)।

कासिअ न [दे] १ सूक्ष्म वस्त्र, बारीक कपड़ा। २ सफेद वस्त्र (दे २, ५६)।

कासिअ न [कासित] छींक, क्षुत् (राज)।

कासिज्ज न [दे] काकस्थल-नामक देश (दे २, २७)।

कासिल्ल वि [कासिक] खांसी रोगवाला (विपा १, ७—पत्र ७२)।

कासी स्त्री [काशी] काशी, बनारस (णाया १, ८)। °राय पुं [राज] काशी का राजा (पिंग)। °स पुं [°श] काशी का राजा (पिंग)। °सर पुं [°श्वर] काशी का राजा (पिंग)।

काह सक [कथय्] कहना। काहयंते (सूअ १, १३, ३)।

काहर देखो **काहार** (दस ४, १ टी)।

काहल वि [दे] १ मृदु, कोमल। २ ठग, धूर्त (दे २, ५८)।

काहल वि [कातर] कातर, डरपोक, अधीर (हे १, २१४; २५४)।

काहल पुंन [काहल] १ वाद्य-विशेष (सुर ३, ६६; औप; णंदि)। २ अव्यक्त आवाज (पराह २, २)।

काहला स्त्री [काहला] वाद्य-विशेष, महा-ढक्का (विक्र ८७)।

काहलिया स्त्री [काहलिका] आभूषण-विशेष (पव २७१)।

काहली स्त्री [दे] तरुणी, युवती (दे २,२६)।

काहल्ली स्त्री [दे] १ खर्च करने का धान्यादि। २ तवा, जिसपर पूरी या पूड़ी वगैरह पकायी जाती है (दे २, ५६)।

काहार पुं [दे] कहार, एक जाति जो पानी भरने और डोली वगैरह ढोने का काम करती है (दे २, २७; भवि)।

काहार पुंन [दे] काँवर, बहँगी (सुज १०,६)।

काहावण पुं [कार्षापण] सिक्का-विशेष (हे २, ७१; पराह १; २; षड्; (प्राप्र)।

काहिय वि [काथिक] कथा-कार, वार्ता करने-वाला (बृह १)।

काहिल पुं [दे] गोपाल, ग्वाला, स्त्री. °ला (दे २, ३८)।

काहिल्लिआ स्त्री [दे] तवा, जिसपर पूरी आदि पकायी जाती है (पाअ)।

काहीअ देखो **काहिय** (गच्छ ३, ६)।

काहीइदाण न [कारिष्यतिदान] प्रत्युपकार की आशा से दिया जाता दान (ठा १०)।

काहे अ [कदा] कब, किस समय? (हे २, ६५; अंत २४; प्राप्र)।

काहेणु स्त्री [दे] गुञ्जा, लाल रत्ती (दे २, २१)।

कि देखो **किं** (हे १, २६; षड्)।

कि सक [कृ] करना, बनाना; 'डुकियं करणे' (विसे ३३००)। कवकृ. **किज्जंत** (सुर १, ६०; ३, १४; ५६)।

किअ देखो **कय** = कृत (काप्र ६२५; प्रासू १५; धम्म २४; मै ६५; वज्जा ४)।

किअ देखो **किव** = कृप (षड्)।

किअंत वि [कियत्] कितना (सण)।

किअंत देखो **कयंत** (अच्चु ५६)।

किआडिआ स्त्री [कृकाटिका] गला का उन्नत भाग (पाअ)।

किइ स्त्री [कृति] कृति, क्रिया, विधान (षड्; प्राप्र; उव)। °कम्म न [°कर्मन्] १ वन्दन, प्रणमन (सम २१)। २ कार्य-करण (भग १४,३)। ३ विश्रामणा (व्यव० गा० ६२)।

किं स [किम्] कौन, क्या, क्यों, निन्दा, प्रश्न, अतिशय, अल्पता और सादृश्य को बतलानेवाला शब्द (हे १, २६; ३, ५८; ७१; कुमा; विपा १, १; निचू १३); 'किं बुल्लंति मणीओ जाउ सहस्सेहिं घिप्पंति' (प्रासू ४)। °उण अ [°पुनः] तब फिर, फिर क्या? (प्राप्र)।

किंकत्तव्वया देखो **किंकायव्वया** (आचा २, २, ३)।

किंकम्म पुं [किंकर्मन्] इस नाम का एक गृहस्थ (अंत)।

किंकर पुं [किङ्कर] नौकर, चाकर, दास (सुपा ६०; २२३)। °सच्च पुं [°सत्य] १ पर-मेश्वर, परमात्मा। २ अच्युत, विष्णु (अच्चु २)।

किंकरी स्त्री [किङ्करी] दासी, नौकरानी (कप्पू)।

किंकाइअ देखो **केकाइय** (अणु २१२)।

किंकायव्वया स्त्री [किंकर्त्तव्यता] क्या करना है यह जानना। °मूढ वि [°मूढ] किंकर्तव्य-विमूढ़, हक्काबक्का, भौंचक्का, वह मनुष्य जिसे यह न सूझ पड़े कि क्या किया जाय (महा)।

किंकार पुंन [क्रेङ्कार] अव्यक्त शब्द-विशेष (सिरि ५४१)।

किंकिअ वि [दे] सफेद, श्वेत (दे २, ३१)।

किंकिच्चजड वि [किंकृत्यजड] हक्काबक्का, वह मनुष्य जिसे यह न सूझ पड़े कि क्या किया जाय (श्रा २७)।

किंकिणिआ स्त्री [किङ्किणिका] क्षुद्र-घण्टिका, करधनी (सुपा १५६)।

किंकिणी स्त्री [किङ्किणी] ऊपर देखो (सुपा १५४; कुमा)।

किंकिल्लि देखो **कंकिल्लि** (विचार ४६१)।

किंगिरिड पुं [किङ्किरिट] क्षुद्र कीट-विशेष, त्रीन्द्रिय जीव की एक जाति (राज)।

किंच अ [किञ्च] समुच्चय-द्योतक अव्यय, और भी, दूसरा भी (सुर १, ४०; ४१)।

किंचण न [किञ्चन] १ द्रव्य-हरण, चोरी (विसे ३४५१)। २ अ. कुछ, किञ्चित् (वव २)।

किंचण न [किञ्चन] द्रव्य, वस्तु (उत्त ३२, ८, सुव ३२, ८)।

किंचहिय वि [किञ्चिदधिक] कुछ ज्यादा (सुपा ४३०)।

किंचि अ [किञ्चित्] अल्प, ईषत्, थोड़ा (जी १; स्वप्न ४७)।

किंचिम्मत्त वि [किञ्चिन्मात्र] स्वल्प, बहुत थोड़ा, यत्किञ्चित् (सुपा १४२)।

किंचूण वि [किञ्चिदून] कुछ कम, पूर्ण-प्राय (औप)।

किंजक पुं [किञ्जल्क] पुष्प-रेणु, पराग (णाया १, १)।

किंजक्ख पुं [दे] शिरीष-वृक्ष, सिरस का पेड़ (दे २, ३१)।

किणेदं (शौ)। अ [किमिदम्, किमेतत्] यह क्या? (षड्; कुमा)।

किंतु अ [किन्तु] परन्तु, लेकिन (सुर ४, ३७)।

किंथुग्घ देखो किंतुग्घ (राज)।

किंदिय न [केन्द्र] १ वर्त्तुल का मध्य-स्थल। २ ज्योतिष में इष्ट लग्न से पहला, चौथा, सातवाँ और दसवां स्थान; 'किंदियठाणट्ठिय-गुरुम्मि' (सुपा ३९)।

किंदुअ पुं [कन्दुक] कन्दुक, गेंद (भवि)।

किंधर पुं [दे] छोटी मछली (दे २, ३२)।

किंनर पुं [किन्नर] १ व्यन्तर देवों की एक जाति (पण्ह १, ४)। २ भगवान् धर्मनाथ जी के शासनदेव का नाम (संति ८)। ३ चमरेन्द्र की रथ-सेना का अधिपति देव (ठा ५, १)। ४ एक इन्द्र (ठा २, ३)। ५ देव-गन्धर्व, देव-गायक (कुमा)। °कंठ पुं [°कण्ठ] किन्नर के कण्ठ जितना बड़ा एक मणि (जीव ३)।

किंनरी स्त्री [किन्नरी] किन्नर देव की स्त्री (कुमा)।

किंनु अ [किंनु] पूर्वपक्ष, आक्षेप, आशंका का सूचक अव्यय (वव १)।

किंपय वि [दे] कृपण, कंजूस (दे २, ३१)।

किंपाग पुं [किम्पाक] १ वृक्ष-विशेष, 'हुंति मुहि च्चिय महुरा विसया किंपागभूरुहफलं व' (पुप्फ ३९२; औप)। २ न. उसका फल, जो देखने में और स्वाद में सुन्दर, परन्तु खाने से प्राण का नाश करता है; 'किंपागफलोवमा विसया' (सुर १२, १३८)।

किंपि अ [किमपि] कुछ भी (प्रासू ६०)।

किंपुरिस पुं [किंपुरुष] १ व्यन्तर देवों की एक जाति (पण्ह १, ४)। २ एक इन्द्र, किन्नर-निकाय के उत्तर दिशा का इन्द्र (ठा २, ३)। ३ वैरोचन बलीन्द्र की रथसेना का अधिपति देव (ठा ५, १—पत्र ३०२)। °कंठ पुं [°कण्ठ] मणि की एक जाति, जो किंपुरुष के कण्ठ जितना बड़ा होता है (जीव ३)।

किंबोड वि [दे] स्खलित, गिरा हुआ, भुला हुआ (२, ३१)।

किमज्झ वि [किंमध्य] असार, निःसार (पण्ह २, ४)।

किंवयंती स्त्री [किंवदन्ती] जनश्रुति, जनरव (हम्मीर ३६)।

किंसारु पुं [किंशारु] सस्य-शूक, सस्य का तीक्ष्ण अग्र भाग (दे २, ६)।

किंसुग्घ न [किंस्तुघ्न] ज्योतिष-प्रसिद्ध एक स्थिर करण (विसे ३३५०)।

किंसुअ पुं [किंशुक] १ पलाश का पेड़, टेसू, ढाक (सुर ३ ४६)। २ न. पलाश का पुष्प (हे १, २९; ८६)।

किंकिंडि पुं [दे] सर्प, साँप (दे २, ३२)।

किक्किंधा स्त्री [किष्किन्धा] नगरी-विशेष (से १४, ५५)।

किक्किंधि पु. [किष्किन्धि] १ पर्वत-विशेष (पउम ६, ४५)। २ इस नाम का एक राजा (पउम ६, १५४; १०, २०)। °पुर न [°पुर] नगर विशेष (पउम ६, ४५)।

किच्च वि [कृत्य] १ करने योग्य, कर्त्तव्य, फरज (सुपा ४६५; कुमा)। २ वन्दनीय, पूजनीय; 'न पिट्ठओ न पुरओ नेव किच्चाण पिट्ठओ' (उत्त ३)। ३ पु. गृहस्थ (सूअ १, १, ४)। ४ न. शास्त्रोक्त अनुष्ठान, क्रिया, कृति (आचा २, २, २; सूअ १, १, ४)।

किच्चंत वि [कृत्यमान] १ छिन्न किया जाता, काटा जाता। २ पीड़ित किया जाता, सताया जाता (राज)।

किच्चण न [दे] प्रक्षालन, धोना; 'हरिअच्छेयण छप्पइयवच्चणं किच्चणं च पोत्ताणं' (ओव १६८—पत्र ७२)।

किच्चा स्त्री [कृत्या] १ काटना, कर्त्तन (उप पृ ३५९)। २ क्रिया, काम, कर्म। ३ देव वगैरह की मूर्ति का एक भेद। ४ जादूगरी, जादू। ५ रोग-विशेष, महामारी का रोग (हे १, १२८)।

किच्चा देखो कर = कृ।

किच्चि स्त्री [कृत्ति] १ मृग वगैरह का चमड़ा। २ चमड़े का वस्त्र। ३ भूर्जपत्र, भोजपत्र। ४ कृत्तिका नक्षत्र (हे २, १२; ८९; षड्)।

°पाउरण पुं [°प्रावरण] महादेव, शिव (कुमा)। °हर पुं [°धर] महादेव, शिव (षड्)।

किच्चिरं अ [कियच्चिरम्] कितने समय तक, कब तक? (उप १२८ टी)।

किच्छ न [कृच्छ्र] १ दुःख कष्ट (ठा ५, १)। २ वि. कष्ट-साध्य, कष्ट-युक्त (हे १, १२८)। ३ क्रिवि. दुःख से, मुश्किल से (सुर ८, १४८)।

किज्ज वि [क्रेय] खरीदने योग्य, 'अकिज्जं किज्जमेव वा' (दस ७)।

किज्जंत देखो कि = कृ।

किज्जअ वि [कृत] किया गया, निर्मित (पिंग)।

किट्ट सक [कीर्त्तय्] १ श्लाघा करना, स्तुति करना। २ वर्णन करना। ३ कहना, बोलना। किट्टइ, किट्टेइ (आचा; भग)। वकृ. किट्टमाण (पि २८९)। संकृ. किट्टइत्ता, किट्टित्ता (उत्त २९; कप्प)। हेकृ. किट्टित्तए (कस)।

किट्ट स्त्रीन [किट्ट] १ धातु का मल, मैल (उप ५३२)। २ रंग-विशेष (उर ६, ५)। ३ तेल, घी वगैरह का मैल। स्त्री. °ट्टी (पभा ३३)।

किट्टण देखो कित्तण (बृह ३)।

किट्टि स्त्री [किट्टि] १ अल्पीकरण-विशेष, विभाग-विशेष; 'अपुव्वविसोहीए अणुभागोणू-णविभयणं किट्टी' (पंच १२; आवम)।

किट्टिय वि [कीर्तित] १ वर्णित, प्रशंसित (सूअ २, ६)। २ प्रतिपादित, कथित (सूअ २, २; ठा ७)।

किट्टिया स्त्री [कीटिका] वनस्पति-विशेष (पण्ण १; भग ७, २)।

किट्टिस न [किट्टिस] १ खली, सरसों, तिल आदि का तैल रहित चूर्ण (अणु)। २ एक प्रकार का सूत, सूता (अणु; आवम)।

किट्टिस न [किट्टिस] १ ऊन आदि का बाकी बचा हुआ अंश। २ उससे बना हुआ सूता। ३ ऊन, ऊँट के बाल आदि की मिलावट का सूता (अणु ३४)।

किट्टी देखो किट्ट = किट्ट।

किट्टीकय वि [किट्टाकृत] आपस में मिला हुआ, एकाकार, जैसे सुवर्ण आदि का किट्ट

उसमें मिल जाता है उस तरह मिला हुआ (उव)।

किट्ठ वि [क्लिष्ट] क्लेश-युक्त (भग ३, २; जीव ३)।

किट्ठ वि [कृष्ट] जोता हुआ, हल-विदारित (सुर ११, ५६; भग ३, २)। २ न. देव-विमान विशेष; 'जे देवा सिरिवच्छं सिरिदाम-कंडं मल्लं किट्टं (? ट्ठं) चावोएगयं अर-एगवडिसगं विमाणं देवत्ताए उववएगा' (सम ३६)।

किट्ठि स्त्री [कृष्टि] १ कर्षण। २ खींचाव, आकर्षण। ३ देवविमान-विशेष (सम ६)। °**कूड** न [°कूट] देवविमान-विशेष (सम ६)। °**घोस** न [°घोष] विमान-विशेष (सम ६)। °**जुत्त** न [°युक्त] विमान-विशेष (सम ६)। °**ज्झय** न [°ध्वज] विमान-विशेष (सम ६)। °**प्पभ** न [°प्रभ] देवविमान-विशेष (सम ६)। °**वण्ण** न [°वर्ण] विमान-विशेष (सम ६)। °**सिंग** न [°शृङ्ग] विमान-विशेष (सम ६)। °**सिट्ठ** न [°शिष्ट] एक देव-विमान (सम ६)।

किट्ठियावत्त न [कृष्ट्यावर्त्त] देवविमान-विशेष (सम ६)।

किट्ठुत्तरवडिंसग न [कृष्ट्युत्तरावतंसक] इस नाम एक देव-विमान, देव-भवन (सम ६)।

किडग वि [क्रीडक] क्रीड़ा करनेवाला (सूत्र १, ४, १, २ टी)।

किडि पुं [किरि] सूकर, सूअर (हे १, २५१; षड्)।

किडिकिडिया स्त्री [किटिकिटिका] सूखी हड्डी की आवाज (णाया १, १—पत्र ७४)।

किडिभ पुं [किटिभ] रोग-विशेष, एक प्रकार का क्षुद्र कोढ़ (लहुअ १५; भग ७, ६)।

किडिया स्त्री [दे] खिड़की, छोटा द्वार (स ५८३)।

किड्ड अक [क्रीड्] खेलना, क्रीड़ा करना। वकृ. **किड्डंत** (पि ३६७)।

किड्डकर वि [क्रीडाकर] क्रीड़ा-कारक (औप)।

किड्डा स्त्री [क्रीडा] १ क्रीड़ा, खेल (विपा १, ७)। २ बाल्यावस्था (ठा १०—पत्र ५१६)।

किड्डाविया स्त्री [क्रीडिका] क्रीड़न-धात्री, बालक को खेल-कूद करानेवाली दाई (णाया १, १६—पत्र २११)।

किढि वि [दे] १ संभोग के लिए जिसको एकान्त स्थान में लाया जाय वह (वव ३)। २ स्थविर, वृद्ध (बृह १)।

किढिण न [किठिन] संन्यासियों का एक पात्र, जो बाँस का बना हुआ होता है (भग ७, ६)।

किण सक [क्री] खरीदना। किणइ (हे ४, ५२)। वकृ. 'से किणं किणावेमाणे हणं घायमाणे' (सूअ २, १)। किणंत (सुपा ३६६)। संकृ. **किणित्ता** (पि ५८२)। प्रयो. किणावेइ (पि ५५१)।

किण पुं [किण] १ घर्षण-चिह्न, घर्षण की निशानी (गउड)। २ मांस-ग्रंथि। ३ सूखा घाव (सुपा ३७०; वज्जा ३६)।

किणइअ वि [दे] शोभित, विभूषित (पउम ६२, ६)।

किणण न [क्रयण] कीनना, खरीद, क्रय (उप पृ २५८)।

किणा देखो **किण्णा** (प्राप्र; हे ३, ६९)

किणि वि [क्रयिन्] खरीदनेवाला (सम्बोध १६)।

किणिकिण अक [किणिकिणय्] किण-किण आवाज करना। वकृ. **किणिकिणित** (औप)।

किणिय वि [क्रीत] कीना हुआ, खरीदा हुआ (सुपा ४३४)।

किणिय पुं [किणिक] १ मनुष्य की एक जाति, जो बाजा बनाती और बजाती है (वव ३)। २ रस्सी बनाने का काम करने-वाली मनुष्य जाति; 'किणिया उ वरत्ताओ वलिति' (पंचू)।

किणिय न [किणित] वाद्य-विशेष (राय)।

किणिया स्त्री [किणिका] छोटा फोड़ा, फुनसी;
'अन्नेवि सइं महियलनिसीय-
णुप्पन्नकिणियपोंगिल्ला।
मलिणजरकप्पडोच्छइयविग्गहा
कहवि हिंडंति' (स १८०)।

किणिस सक [शाणय्] तीक्ष्ण करना, तेज करना। किणिसइ (पिंग)।

किणो अ [किमिति] क्यों, किसलिए? (दे २, ३१; हे २, २१६; प्राप्र; गा ६७; महा)।

किण्ण वि [कीर्ण] १ उत्कीर्ण, खुदा हुआ; 'उवलकिण्णव्व कट्ठघडियव्व' (सुपा ५७१)। २ क्षिप्त, फेंका हुआ (ठा ६)।

किण्ण पुं [किण्व] १ फलवाला वृक्ष-विशेष, जिससे दारू बनता है (गउड; आचा)। २ न. सुरा-बीज, किण्व-वृक्ष के बीज, जिसका दारू बनता है (उत्त २)। °**सुरा** स्त्री [°सुरा] किण्व-वृक्ष के फल से बनी हुई मदिरा (गउड)।

किण्ण वि [दे] शोभमान, राजमान (दे २, ३०)।

किण्णं अ [किंनम्] प्रश्नार्थक अव्यय (उवा)।

किण्णर देखो **किंनर** (जं १; राय; इक)।

किण्णा अ [कथम्] क्यों, क्यों कर, कैसे?; 'किण्णा लद्धा किण्णा पत्ता' (विपा २, १—पत्र १०६)।

किण्णु अ [किंनु] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ प्रश्न। २ वितर्क। ३ सादृश्य। ४ स्थान, स्थल। ५ विकल्प (उवा; स्वप्न ३४)।

किण्ह देखो **कण्ह** (गा ६५; णाया १, १; उर ६, ५; पण्ण १७)।

किण्ह न [दे] १ बारीक कपड़ा। २ सफेद कपड़ा (दे २, ५६)।

किण्हग पुं [दे] वर्षाकाल में घड़ा आदि में होनेवाली एक तरह की काई (जीवस ३६)।

किण्हा देखो **कण्हा** (ठा ५, ३—पत्र ३५१; कम्म ४, १३)।

कितव पुं [कितव] द्यूतकर, जूआरी (दे ४, ८)।

कित्त देखो **किच्च** (संक्षि ५)।

कित्त देखो **किट्ट** = कीर्तय्। भवि. कित्तइस्सं (पडि)। संकृ. **कित्तइत्ताण** (पच ११६)।

कित्तण न [कीर्त्तन] १ श्लाघा, स्तुति; 'तव य जिणुत्तम संति कित्तणं' (अजि ४; से ११, १३३)। २ वर्णन, प्रतिपादन। ३ कथन, उक्ति (विसे ६४०; गउड; कुमा)।

कित्तणा स्त्री [कीर्त्तना] कीर्तन, वर्णन, प्रशंसा (चेइय ७४८)।

कित्तय वि [कीर्तक] कीर्तन-कर्ता (पव २१६ टी)।

कित्तवीरिअ देखो **कत्तवीरिअ** (ठा ८)।

कित्ता देखो **किच्चा** = कृत्या (प्राकृ ८)।

कित्ति स्त्री [कीर्त्ति] १ यश, कीर्त्ति, सुख्याति (औप; प्रासू ४३; ७४; ८२)। २ एक विद्या-देवी (पउम ७, १४१)। ३ केसरि-द्रह की अधिष्ठात्री देवी (ठा २, ३—पत्र ७२)। ४ देव-प्रतिमा-विशेष (णाया १, १ टी—पत्र ४३)। ५ श्लाघा, प्रशंसा (पंच ३)। ६ नीलवन्त पर्वत का एक शिखर (जं ४)। ७ सौधर्म देवलोक की एक देवी (निर)। ८ पुं. इस नाम का एक जैन मुनि, जिसके पास पाँचवें बलदेव ने दीक्षा ली थी (पउम २०, २०५)। °**कर** वि [°कर] १ यशस्कर, ख्याति-कारक (णाया १, १)। २ पुं. भगवान् आदिनाथ के एक पुत्र का नाम (राज)। °**चंद** पुं [°चन्द्र] नृप-विशेष (धम्म)। °**धम्म** पुं [°धर्म] इस नाम का एक राजा (दंस)। °**धर** पुं [°धर] १ नृप-विशेष (तंदु)। २ एक जैन मुनि, दूसरे बलदेव के गुरु (पउम २०, २०५)। **पुरिस** पुं [°पुरुष] कीर्त्ति-प्रधान पुरुष, वासुदेव वगैरह (ठा ६)। °**म** वि [°मत्] कीर्त्ति-युक्त। °**मई** स्त्री [°मती] १ एक जैन साध्वी, (आक)। २ ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती की एक स्त्री (उत्त १३)। °**य** वि [°द] कीर्त्ति-कर, यशस्कर (औप)।

कित्ति स्त्री [कृत्ति] चर्म, चमड़ा; 'कुत्तो अम्हाण वग्घकित्ती य' (काप्र ८६३; गा ६४०; वज्जा ४४)।

कित्तिम वि [कृत्रिम] बनावटी, नकली (सुपा २४; ६१३)।

कित्तिय वि [कीर्त्तित] १ उक्त, कथित; 'कित्तियवंदियमहिया' (पडि)। २ प्रशंसित, श्लाघित (ठा २, ४)। ३ निरूपित, प्रति-पादित (तंदु)।

कित्तिय वि [कियत्] कितना (गउड)।

किन्न वि [क्लिन्न] आर्द्र, गीला (हे ४, ३२६)।

किन्ह देखो **कण्ह** (कप्प)।

किपाड वि [दे] स्खलित, गिरा हुआ (षड्)।

किब्बिस न [किल्बिष] १ पाप, पातक (पण्ह १, २)। २ मांस; 'निग्गयं च से बीयपासेणं किब्बिसं' (स २६३)। ३ पुं. चाण्डाल-स्थानीय देव-जाति (भग १२, ५)। ४ वि. मलिन। ५ अधम, नीच (उत्त ३)। ६ पापी, दुष्ट (धर्म ३)। ७ कर्बुर, चितकबरा (तंदु)।

किब्बिसिय पुं [किल्बिषिक] १ चाण्डाल-स्थानीय देव-जाति (ठा ३, ४—पत्र १६२)। २ केवल वेषधारी साधु (भग)। ३ वि. अधम, नीच (सूअ १, १, ३)। ४ पाप-फल को भोगनेवाला दरिद्र, पंगु वगैरह (णाया १, १)। ५ भाण्ड-चेष्टा करनेवाला (औप)।

किब्बिसिया स्त्री [कैल्बिषिकी] १ भावना-विशेष, धर्म-गुरु वगैरह की निन्दा करने की आदत (धर्म ३)। २ केवल वेष-धारी साधु की वृत्ति (भग)।

किम (अप) अ [कथम्] क्यों, कैसे? (हे ४, ४०१)।

किमण देखो **किवण** (आचा)।

किमस्स पुं [किमश्व] नृप-विशेष, जिसने इन्द्र को संग्राम में हराया था और शाप लगने से जो मरकर अजगर हुआ था (निचू १)।

किमी पुं [कृमि] १ क्षुद्र जीव, कीट-विशेष (पण्ह १, ३)। २ पेट में, फुनसी में और बवासीर में उत्पन्न होनेवला जन्तु-विशेष (जी १५)। ३ द्वीन्द्रिय कीट-विशेष (पण्ह १, १—पत्र २३)। °**य** न [°ज] कृमि-तन्तु से उत्पन्न वस्त्र; 'कोसेज्जपट्टमाई जं, किमियं तु पवुच्चइ' (पंचभा)। °**राग, °राय** पुं [°राग] किरमिजी का रंग (कम्म १, २०; दे २, ३२; पण्ह २, ४)। °**रासि** पुं [°राशि] वनस्पति-विशेष (पण्ण १—पत्र ३६)।

किमिघरवसण [दे] देखो **किमिहरवसण** (षड्)।

किमिच्छय न [किमिच्छक] इच्छानुसार दान (णाया १, ८—पत्र १५०)।

किमिण वि [कृमिमत्] कृमि-युक्त; 'किमिणबहुदुरभिगंधेसु' (पण्ह २, ५)।

किमिराय वि [दे] लाक्षा से रक्त (दे २, ३२)।

किमिहरवसण न [दे] कौशेय-वस्त्र, रेशमी वस्त्र (दे २, ३३)।

किमु अ [किमु] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ प्रश्न। २ वितर्क। ३ निन्दा। ४ निषेध (हे २, २१७; पिंग)।

किमुय अ [किमुत] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ प्रश्न। २ विकल्प। ३ वितर्क। ४ अतिशय (हे २, २१८); 'अमरनररायमहियं ति पूइयं तेहि, किमुय सेसेहिं' (विसे १०६१)।

किम्मिय न [दे· किम्मित] जड़ता, जाड्य (राज)।

किम्मीर वि [किर्मीर] १ कर्बुर, कबरा (पाअ)। २ पुं. राक्षस-विशेष, जिसको भीमसेन ने मारा था (वेणी ११७)। ३ वंश-विशेष; 'जाया किम्मीरवंसे' (रंभा)।

किय देखो **कीय** (पिंड ३०६)।

कियंत वि [कियत्] कितना (सम्मत्त २२८)।

कियत्थ देखो **कयत्थ** (भवि)।

कियव्व देखो **कइअव** (उप ७२८ टी)।

किया देखो **किरिया**; 'हयं नाणं कियाहीणं' (हे २, १०४); 'मग्गणुसारी सद्धो पन्न-वणिज्जो कियावरो चेव' (उप १६६; विसे ३५६३ टी; कप्पू)।

कियाडिया स्त्री [दे] कानबूट्टी, कान का ऊपरी भाग (वव १)।

कियाणं देखो **कर** = कृ।

कियाणग न [क्रयाणक] किराना, नमक, मसाला आदि बेचने योग्य चीजें (सुर १,६०)।

किर पुं [दे] सूकर, सूअर (दे २, ३०; षड्)।

किर अ [किल] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ संभावना। २ निश्चय। ३ हेतु, निश्चित कारण। ४ वार्त्ता-प्रसिद्ध अर्थ। ५ अरुचि। ६ अलीक, असत्य। ७ संशय, संदेह (हे २, १८६; षड्; गा १२६; प्रासू १७; दस १)। ८ पाद-पूर्ति में भी इसका प्रयोग होता है (कम्म ४, ७६)।

किर सक [कृ] १ फेंकना। २ पसारना, फैलाना। ३ बिखेरना। वकृ. **किरंत** (से ४, ५८; १४, ५७)।

किरण पुंन [किरण] किरण, रश्मि, प्रभा (सुपा ३५१; गउड; प्रासू ८२)।

किरणिल्ल वि [किरणवत्] किरणवाला, तेजस्वी (सुर २, २४२)।

किराड } पुं [किरात] १ अनार्य देश-विशेष
किराय } (पव १४८)। २ भील, एक जंगली जाति (सुर २, २७; १८०; सुपा ३६१; हे १, १८३)।

किरात (शौ) देखो **किराय** (प्राकृ ८६)।

किरि देखो **किर**=किल (सिरि ८३२, ८३४)।

किरि पुं [किरि] भालू की आवाज; 'कत्थइ किरित्ति कत्थइ हिरित्ति कत्थइ छिरित्ति रिच्छाणं सद्दो' (पउम ६४, ४५)।

किरि पुं [किरि] सूकर, सूअर (गउड)।

किरिआण देखो **कयाण** 'जम्मंतरगहिअपुन्नकिरिआणो' (कुलक २१)।

किरिइरिया } स्त्री [दे] १ कर्णोपकर्णिका,
किरिकिरिआ } एक कान से दूसरे कान गई हुई बात, गप। २ कुतूहल, कौतुक (दे २, ६१)।

किरिकिरिया स्त्री [दे] वाद्य-विशेष, बाँस आदि की कम्बा—लकड़ी से बना हुआ एक प्रकार का बाजा (आचा २, ११, १)।

किरित्तण देखो **कित्तण** (नाट—माल ६७)।

किरिया स्त्री [क्रिया] १ क्रिया, कृति, व्यापार, प्रयत्न (सूअ २, १; ठा ३, ३)। २ शास्त्रोक्त अनुष्ठान, धर्मानुष्ठान (सूअ २, ४; पव १४६)। ३ सावद्य व्यापार (भग १७, १)। ४ °**ट्ठाण** न [°स्थान] कर्मबन्ध का कारण (सूअ २, २; आव ४)। °**वर** वि [°पर] अनुष्ठान-कुशल (षड्)। °**वाइ** वि [°वादिन्] १ आस्तिक, जीवादि का अस्तित्व माननेवाला (ठा ४, ४)। २ केवल क्रिया से ही मोक्ष होता है ऐसा माननेवाला (सम १०६)। °**विसाल** न [°विशाल] एक जैन ग्रन्थांश, तेरहवाँ पूर्व-ग्रन्थ (सम २६)।

किरीड पुं [किरीट] मुकुट, शिरो-भूषण (पाअ)।

किरीडि पुं [किरीटिन्] अर्जुन, मध्यम पाण्डव (वेणी १६२)।

किरीत वि [क्रीत] कीना हुआ, खरीदा हुआ (प्राप्र)।

किरीय पुं [किरीय] १ एक म्लेच्छ देश। २ उसमें उत्पन्न म्लेच्छ जाति (राज)।

किरोलय न [किरोलक] फल-विशेष, किरोलिका वल्ली का फल (उर ६, ५)।

किल देखो **किर**=किल (हे २, १८६; गउड; कुमा)।

किलंत वि [क्लान्त] खिन्न, श्रान्त (षड्)।

किलंज न [किलिञ्ज] बाँस का एक पात्र, जिसमें गैया वगैरह को खाना खिलाया जाता है (उवा)।

किलंज न [किलिञ्ज] तृण-विशेष (धर्मवि १३५; १३६)।

किलकिल अक [किलकिलाय्] 'किल-किल' आवाज करना, हँसना; 'किलकिलइ व्व सहरिसं मणिकंचीकिंकिणिरवेण' (कप्पू)।

किलकिलाइय न [किलकिलायित] 'किल-किल' ध्वनि, हर्ष-ध्वनि (आवम)।

किलणी स्त्री [दे] रथ्या, गली (दे २, ३१)।

किलम्म अक [क्लम्] क्लान्त होना, खिन्न होना। किलम्मइ (कप्पू)। किलम्मसि (वज्जा ६२)। वकृ. **किलम्मंत** (पि १३६)।

किलाचक्क न [क्रीडाचक्र] इस नाम का एक छन्द—वृत्त (पिंग)।

किलाड पुं [किलाट] दूध का विकार-विशेष, मलाई (दे २, २२)।

किलाम सक [क्लमय्] क्लान्त करना, खिन्न करना, ग्लानि उत्पन्न करना। किलामेज्ज (पि १३६)। वकृ. **किलामेंत** (भग ५, ६)। कवकृ. **किलामीअमाण** (मा ४६)।

किलाम पुं [क्लम] खेद, परिश्रम, ग्लानि; 'खमणिज्जो भे किलामो' (पडि; विसे २४०४)।

किलामणया स्त्री [क्लमना] खिन्न करना, उत्पन्न करना (भग ३, ३)।

किलामणा स्त्री [क्लमना] क्लम, क्लेश (महानि ४)।

किलामिअ देखो **किलंत** (अणु १३६)।

किलामिअ वि [क्लमित] खिन्न किया हुआ, हैरान किया हुआ, पीड़ित; 'तण्हाकिलामिअंगो' (पउम १०३, २२; सुर १०, ४८)।

किलिंच न [दे] छोटी लकड़ी, लकड़ी का टुकड़ा; दंतंतरसोहणयं किलिंचमित्तंपि अविदिन्नं' (भत्त १०२; पाअ; दे २, ११)।

किलिंचिअ न [दे] ऊपर देखो (गा ८०)।

किलिंत देखो **किलंत** (नाट—मृच्छ २५; पि १३६)।

किलिकिंच अक [रम्] रमण करना, क्रीड़ा करना। किलिकिंचइ (हे ४, १६८)।

किलिकिंचिअ न [रत] रमण, क्रीड़ा, संभोग (कुमा)।

किलिकिल अक [किलकिलाय्] 'किल-किल' आवाज करना। वकृ. **किलिकिलंत** (उप १०३१ टी)।

किलिकिलि न [किलिकिलि] इस नाम का एक विद्याधरनगर (इक)।

किलिकिलिकिल देखो **किलकिल**। वकृ. **किलिकिलिकिलंत** (पउम ३३, ८)।

किलिगिलिय न [किलिकिलित] 'किल-किल' आवाज करना, हर्ष-द्योतक ध्वनि-विशेष (स ३७०; ३८५)।

किलिट्ठ वि [क्लिष्ट] १ क्लेश-युक्त (उत्त ३२)। २ कठिन, विषम। ३ क्लेश-जनक (प्राप्र; हे २, १०६; उव)।

किलिण्ण देखो **किलिन्न** (स्वप्न ८५)।

किलित्त वि [क्लृप्त] कल्पित, रचित (प्राप्र; षड्; हे १, १४५)।

किलित्ति स्त्री [क्लृप्ति] रचना, कल्पना (पि ५६)।

किलिन्न वि [क्लिन्न] आर्द्र, गीला (हे १, १४५; २, १०६)।

किलिम्म देखो **किलम्म**। किलिम्मइ (पि १७७)। वकृ. **किलिम्मंत** (से ६, ८०; ११, ५०)।

किलिम्मिअ वि [दे] कथित, उक्त (दे २, ३२)।

किलिव देखो **कीव** (वव २; मै ४३)।

किलिस अक [क्लिश्] खेद पाना, थक जाना, दुःखी होना। वकृ. **किलिसंत** (पउम २१, ३८)।

किलिस देखो **किलेस**; 'मिच्छत्तमच्छभीयाण, किलिससलिलम्मि बुड्डाणं' (सुपा ६४)।

किलिसिअ वि [क्लेशित] आयासित, क्लेश-प्राप्त (स १४६)।

किलिस्स देखो **किलिस**=क्लिश्। किलिस्सइ (महा; उव)। वकृ. **किलिस्संत** (नाट—माल ३१)।

किलिस्सिअ वि [क्लिष्ट] क्लेश-प्राप्त, क्लेश-युक्त (उप पृ ११६)।

किलीण देखो किलिण्ण (भवि)।
किलीव देखो कीव (स ६०)।
किलेस अक [क्लिश्] क्लेश पाना, हैरान होना। किलेसइ (प्राकृ २७)।
किलेस पुं [क्लेश] १ खेद, थकावट (ग्रौप)। २ दुःख, पीड़ा, बाधा (पउम २२, ७५; सुज्ज २०)। ३ दुःख का कारण। ४ कर्म, शुभाशुभ-कर्म (बृह १)। °यर वि [°कर] क्लेशजनक (पउम २२, ७५)।
किलेसिय वि [क्लेशित] दुःखी किया हुआ (सुर ४, १६७; १६६)।
किल्ला देखो किड्डा (मै ६१)।
किव पुं [कृप] १ इस नाम का एक ऋषि, कृपाचार्य (हे १, १२८); 'भाइसयसमग्गं गंगेयं विदुरं दोणं जयद्दहं सउणिं कीवं (? सउणि किवं) आसत्थामं' (णाया १, १६—पत्र २०८)।
किवँ (अप) देखो कहं (कुमा)।
किवण वि [कृपण] १ गरीब, रंक, दीन (सूत्र १, १, ३; अच्चु ६७)। २ दरिद्र, निर्धन (पराह १, २)। ३ कंजूस, अदाता (दे २, ३१)। ४ क्लीब, कायर (सूत्र २,२)।
किवा स्त्री [कृपा] दया, मेहरवानी (हे १, १२८)। °वन्न वि [°पन्न] कृपा-प्राप्त, दयालु (पउम ६५,४७)।
किवाण पुंन [कृपाण] खड्ग, तलवार (सुपा १५८; हे १, १२८; गउड)।
किवालु वि [कृपालु] दयालु, दया करनेवाला (पउम ३४, ५०; ६७, २०)।
किविड न [दे] १ खलिहान, अन्न साफ करने का स्थान। २ वि. खलिहान में जो हुआ हो वह (दे २, ६०)।
किविडी स्त्री [दे] १ किवाड़, पार्श्व-द्वार। २ घर का पिछला आँगन (दे, २, ६०)।
किविण देखो किवण (हे १, ४६; १२८; गा १३६; सुर ३, ४४; प्रासू ५१; पराह १, १)।
किवीडजोणि पुं [कृपीटयोनि] अग्नि (सम्मत्त २२६)।
किस सक [कशाय्] ह्रसित करना, अपचित करना। किसए (सूत्र १, २, १, १४)।
किस वि [कृश] १ दुर्बल, निर्बल (उवर ११३)। २ पतला (हे १, १२८; ठा ४, २)।
किसंग वि [कृशाङ्ग] दुर्बल शरीरवाला (गा ६५७)।
किसर पुं [कृशर] १ पक्वान्न-विशेष, तिल, चावल और दूध की बनी हुई एक खाद्य चीज। २ खिचड़ी, चावल और दाल का मिश्रित भोजन-विशेष (हे १, १२८)।
किसर देखो केसर 'महमहिअदसणकिसरं' (हे १, १४६)।
किसरा स्त्री [कृशरा] खिचड़ी, चावल-दाल का मिश्रित भोजन-विशेष (हे १, १२८; दे १, ८८)।
किसल देखो किसलय (हे १, २६६; कुमा)।
किसलइय वि [किसलयित] अंकुरित, नये अंकुरवाला (सुर ३, ३६)।
किसलय पुंन [किसलय] १ नूतन अंकुर (श्रा २०)। २ कोमल पत्ता (जी ६); 'सव्वोवि किसलओ खलु उग्गममाणो अणंतओ भणिओ' (पराग १)। °माला स्त्री [°माला] छन्द-विशेष (अजि १६)।
किसा देखो कासा (हे १, १२७)।
किसाणु पुं [कृशानु] १ अग्नि, वह्नि, आग। २ वृक्ष-विशेष, चित्रक वृक्ष। ३ तीन की संख्या (हे १, १२८; षड्)।
किसि स्त्री [कृषि] खेती, चास (विसे १६१५; सुर १५, २००; प्राप्र)।
किसिअ वि [कृशित] दुर्बलता-प्राप्त, कृशता-युक्त (गा ४०; वज्जा ४०)।
किसिअ वि [कृषित] १ विलखित, रेखा किया हुआ। २ जोता हुआ, कृष्ट। ३ खींचा हुआ (हे १, १२८)।
किसीवल पुं [कृषीवल] कर्षक, किसान; 'पायं परस्स धन्नं भक्खंति किसीवला पुव्विं' (श्रा १६)।
किसोर पुं [किशोर] बाल्यावस्था के बाद की अवस्थावाला बालक; 'सीहकिसोरोव्व गुहाओ निग्गओ' (सुपा ५४१)।
किसोरी स्त्री [किशोरी] कुमारी, अविवाहिता युवती (णाया १, ६)।
किस्स देखो किलिस = क्लिश्। संकृ. किस्सइत्ता (सूत्र १, ३, २)।
किह } देखो कहं (आचा; कुमा; भाग ३, २;
किहं } णाया १, १७)।
कीअ देखो कीव (षड्; प्राप्र)।
कीइस वि [कीदृश] कैसा, किस तरह का (स १४०)।
कीकस पुं [कीकश] १ कृमि-जन्तु-विशेष। २ न. हड्डी, हाड़। ३ वि. कठिन, कठोर (राज)।
कीचअ देखो कीयग (वेणी १७७)।
कीड देखो किड्ड = क्रीड्। भवि. कीडिस्सं (पि २२६)।
कीड पुं [कीट] १ कीड़ा, क्षुद्र जन्तु (उव)। २ कीट-विशेष, चतुरिन्द्रिय जन्तु की एक जाति (उत्त २)।
कीडइल्ल वि [कीटवत्] कीड़ावाला, कीटक-युक्त (गउड)।
कीडण न [क्रीडन] खेल, क्रीड़ा (सुर १, ११८)।
कीडय पुं [कीटक] देखो कीड = कीट (नाट; सुपा ३७०)।
कीडय न [कीटज] कीड़े के तन्तु से उत्पन्न होनेवला वस्त्र, वस्त्र-विशेष (अणु)।
कीडा देखो किड्डा (सुर ३, ११६; उवा)।
कीडाविया देखो किड्डाविया (राज)।
कीडिया स्त्री [कीटिका] पिपीलिका, चींटी (सुर १०, १७६)।
कीडी स्त्री [कीटी] ऊपर देखो (उप १४७ टी; दे २, ३)।
कीण सक [क्री] खरीदना, मोल लेना। कीणइ, कीणए (षड्)। भवि. कीणिस्सं (पि ५११; ५३४)।
कीणास पुं [कीनाश] यम, जम (पाअ; सुपा १८३)। °गिह [°गृह] मृत्यु, मौत (उप १३६ टी)।
कीदिस (शौ) देखो कीरिस (प्राकृ ८३)।
कीय वि [क्रीत] १ खरीदा हुआ, मोल लिया हुआ (सम ३६; पराह २, १; सुपा ३४५)। २ जैन साधुओं के लिए भिक्षा का एक दोष (ठा ३, ४)। ३ न. क्रय, खरीद (दस ३; सूत्र १, ६)। °कड, °गड वि [°कृत] १ मूल्य देकर लिया हुआ (बृह १)। २ साधु के लिए मोल से कीना हुआ, जैन साधु के लिए भिक्षा-दोष-युक्त वस्तु (पि ३३०)।

कीयग पुं [कीचक] विराट देश के राजा का साला, जिसको भीम ने मारा था (उप ६४८ टी); 'नवमं दूयं विराडनयरं, तत्थ णं तुमं कि (? की) यगं भाउसयसमग्गं' (णाया १, १६—पत्र २०६)।

कीया स्त्री [कीका] नयन-तारा, 'मरकतमसारकलितनयणकीयरासिवन्ने' (णाया १, १ टी—पत्र ६)।

कीर पुं [दे. कीर] शुक, तोता, सुग्गा (दे २, २१; उर १, १४)।

कीर पुं [कीर] १ देश-विशेष, काश्मीर देश। २ वि. काश्मीर देश संबन्धी। ३ त्रि. काश्मीर देश में उत्पन्न (विसे ४६४ टी)।

कीरंत, **कीरमाण** } देखो **कर = कृ**।

कीरल पुं [कीरल] देश-विशेष (पउम ६८, ६४)।

कीरिस देखो **केरिस** (गा ३७४; मा ४)।

कीरी स्त्री [कीरी] लिपि-विशेष, कीर देश की लिपि (विसे ४६४ टी)।

कील अक [क्रीड्] क्रीड़ा करना, खेलना। कीलइ (प्राप्र)। वकृ. **कीलंत, कीलमाण** (सुर १,१२१; पि २४०)। संकृ. **कीलेत्ता, कीलिऊण** (सुर १, ११७; पि २४०)।

कील वि [दे] स्तोक, अल्प, थोड़ा (दे २, २१)।

कील देखो **खील** (पाअ)।

कील पुंन [दे कील] कंठ, गला (सूअ १, ५, १, ६)।

कीलण न [कीलन] कील से बन्धन, खीले में नियन्त्रण; 'फणिमणिकीलणदुक्खं विम्हरियं पुहविदेवीए' (मोह २०)।

कीलण न [क्रीडन] क्रीड़ा, खेल (औप)। °**धाई** स्त्री [°धात्री] बालक को खेल-कूद करानेवाली दाई (णाया १, १)।

कीलणअ न [क्रीडनक] खिलौना (अभि २४२)।

कीलणिआ, **कीलणी** } स्त्री [दे] रथ्या, गली (दे २, ३१)।

कीला स्त्री [दे] १ नव-वधू, दुलहिन (दे २, ३३)।

कीला स्त्री [कीला] सुरत समय में किया जाता हृदय-ताड़न विशेष (दे २, ६४)।

कीला स्त्री [क्रीडा] खेल, क्रीडन (सुपा ३५८; सुर १, ११७)। °**वास** पुं [°वास] क्रीड़ा करने का स्थान (इक)।

कीलाल न [कीलाल] रुधिर, खून, रक्त (उप ८६; पाअ)।

कीलालिअ वि [कीलालित] रुधिर-युक्त, खूनवाला (गउड)।

कीलावण न [क्रीडन] खेल कराना (णाया १, २)।

कीलावणय न [क्रीडनक] खिलौना (निर १, १)।

कीलिअ न [क्रीडित] क्रीड़ा, रमण, क्रीडन (सम १५; स २४१)।

कीलिअ वि [कीलित] खूँटा ठोका हुआ, 'लिहियव्व कीलियव्व' (महा; सुपा २५४)।

कीलिआ स्त्री [कीलिका] १ छोटा खूँटा, खूँटी (कम्म १, ३६)। २ शरीर-संहनन-विशेष, शरीर का एक प्रकार का बाँधा, जिसमें हड्डियाँ केवल खूँटी से बँधी हुई हों ऐसा शरीर-बन्धन (सम १४६; कम्म १,३६)।

कीव पुं [क्लीब] १ नपुंसक (बृह ४)। २ वि. कातर, अधीर (सुर २, १४; णाया १, १)।

कीव पुं [दे. कीव] पक्षि-विशेष (पण्ह १, १—पत्र ८)।

कीस वि [कीदृश] कैसा, किस तरह का (भग; पण्ण ३४)।

कीस वि [किंस्व] कौन स्वभाववाला, कैसे स्वभाव का (भग)।

कीस अ [कस्मात्] क्यों, किस से, किस कारण से ? (उवः हे ३, ६८)।

कीस देखो **किलिस्स**। कीसति (उत्त १६, १५; वे ३३)। वकृ. **कीसंत** (वे ८३)।

कु अ [कु] १ अल्प, थोड़ा। २ निषिद्ध, निवारित। ३ कुत्सित, निन्दित (हे २, २१७; से १, २६; सम्म १)। ४ विशेष, ज्यादा (णाया १, १४)। °**उरिस** पुं [°पुरुष] खराब आदमी, दुर्जन (से १२, ३३)। °**चर** वि [°चर] खराब चाल-चलनवाला, सदाचार-रहित (आचा)। °**डंड** पुं [°दण्ड] पाश-विशेष, जिसका प्रान्त भाग काष्ठ का होता है ऐसा रज्जु-पास (पण्ह १, ३)। °**डंडिम** त्रि [°दण्डिम] दण्ड देकर छीना हुआ द्रव्य (विपा १, ३)। °**तित्थ** न [°तीर्थ] १ जलाशय में उतरने का खराब मार्ग (प्रासू ६०)। २ दूषित दर्शन (सूअ १, १, १)। ३ °**तित्थि** वि [°तीर्थिन्] दूषित मत का अनुयायी (कुमा)। °**दंडिम** देखो **डंडिम** (णाया १, १—पत्र ३७)। °**दंसण** न [°दर्शन] दुष्ट मत, दूषित धर्म (पण्ण २)। °**दंसणि** वि [°दर्शनिन्] १ दुष्ट दार्शनिक। २ दूषित मत का अनुयायी (श्रा ६)। °**दिट्ठि** स्त्री [°दृष्टि] १ कुत्सित दर्शन (उत्त २८)। २ दूषित मत का अनुयायी (धम २)। °**दिट्ठिय** त्रि [°दृष्टिक] दुष्ट दर्शन का अनुयायी, मिथ्यात्वी (पउम ३०, ४४)। °**प्पवयण** न [°प्रवचन] १ दूषित शास्त्र। २ वि. दूषित सिद्धान्त को माननेवाला (अणु)। °**प्पावयणिय** वि [°प्रावचनिक] १ दूषित सिद्धान्त का अनुसरण करनेवाला (सूअ १, २, २)। २ दूषित आगम-संबन्धी (अनुष्ठान) (अणु)। °**भत्त** न [°भक्त] खराब भोजन (पउम २०, १६६)। °**मार** पुं [°मार] १ कुत्सित मार (सूअ २, २)। २ अत्यन्त मार, मृत-प्राय करनेवाला ताड़न (णाया १, १४)। °**रंडा** स्त्री [°रण्डा] राँड़, विधवा (श्रा १६)। °**रुव, °रूव** न [°रूप] १ खराब रूप (उप ३६२ टी; पण्ह १, ४)। २ माया-विशेष (भग १२, ५)। °**लिंग** न [°लिङ्ग] १ कुत्सित भेष (दंस)। २ पुं. कीट वगैरह क्षुद्र जन्तु (विसे १७५४)। ३ वि. कुतीर्थिक, दूषित धर्म का अनुयायी (श्रावम)। °**लिंगि** पुं [°लिङ्गिन्] १ कीट वगैरह क्षुद्र जन्तु (ओघ ७४८)। २ वि. कुतीर्थिक, असत्य धर्म का अनुयायी (पण्ह १,२)। °**वय** न [°पद] खराब शब्द;

'सो सोहइ दूसंतो, कइयणरइयाइं
विविहकव्वाइं।
जो भंजिऊण कुवयं, अन्नपयं सुंदरं देइ'
(वज्जा ६)।

°**वियप्प** पुं [°विकल्प] कुत्सित विचार (सुपा ४४)। °**वुरिस** देखो °**उरिस** (पउम ६५, ४५)। °**संसग्ग** पुं [°संसर्ग] खराब सोहबत, दुर्जन-संगति (धर्म ३)। °**सत्थ** पुंन [°शास्त्र] कुत्सित शास्त्र, अनाप्त-प्रणीत सिद्धान्त; 'ईसरमयाइया सव्वे कुसत्था' (निचू

११)। °समय पुं [°समय] १ अनाप्त-प्रणीत शास्त्र (सम्म १)। २ वि. कुतीर्थिक, कुशास्त्र का प्रणेता और अनुयायी (सम्म १)। °सल्लिय वि [°शल्यिक] जिसके भीतर खराब शल्य घुस गया हो वह (पण्ह २,४)। °सील न [°शील] १ खराब स्वभाव (आचा)। २ अब्रह्मचर्य, व्यभिचार (ठा ४, ४)। ३ वि. जिसका आचरण अच्छा न हो वह, दुराचारी (ओघ ७६३)। ४ अब्रह्मचारी, व्यभिचारी (ठा ५, ३)। °स्सुमिण पुंन [°स्वप्न] खराब स्वप्न (श्रा ६)। °हण वि [°धन] अल्प धनवाला, दरिद्र (पण्ह २, १—पत्र १००)।

कु स्त्री [कु] १ पृथिवी, भूमि; 'कुसमयविसासणं' (सम्म १ टी—पत्र ११४; से १, २६)। °त्तिअ न [°त्रिक] १ तीनों जगत्, स्वर्ग, मर्त्य और पाताल लोक। २ तीन जगत् में स्थित पदार्थ (औप)। °त्तिअ वि [°त्रिज] तीनों जगत् में उत्पन्न वस्तु (आवम)। °त्तिआवण पुंन [°त्रिकापण] तीनों जगत् के पदार्थ जहाँ मिल सके ऐसी दूकान (भग; णाया १,१—पत्र ५३)। °वलय न [°वलय] पृथ्वी-मण्डल (श्रा २७)।

कुअरी देखो कुआँरी (पि २५१)।

कुअलअ देखो कुवलय (प्राप्र)।

कुआँरी देखो कुमारी (गा २६८)।

कुइअ वि [कुचित] सकुचा हुआ (पव ६२)।

कुइमाण वि [दे] म्लान, शुष्क (दे २, ४०)।

कुइय वि [कुचित] अवस्यन्दित, क्षरित (ठा ६)।

कुइय वि [कुपित] क्रुद्ध, कोप-युक्त (भवि)।

कुइयण्ण पुं [कुविकर्ण] इस नाम का एक गृहपति, एक गृहस्थ (विसे ६३२)।

कुउअ पुंन [कुतुप] स्नेहपात्र, घी तैल वगैरह भरने का चमड़े का पात्र-विशेष; 'तुप्पाई को (? कु) उआई (पाअ) देखो कुतुव।

कुउआ स्त्री [दे] तुम्बी-पात्र, तुम्बा (दे २, १२)।

कुउव देखो कुउअ (पिंड ५५७)।

कुऊल न [दे] १ नीवी, नारा, इजारबन्द। २ पहने हुए कपड़े का प्रांत भाग, अञ्चल (दे २, ३८)।

कुऊहल न [कुतूहल] १ अपूर्व वस्तु देखने की लालसा—उत्सुकता। २ कौतुक, परिहास (हे १, ११७; कुमा)।

कुओ अ [कुतः] कहाँ से? (षड्)। °इ अ [°चित्] कहीं से, किसी से (स १८५)। °वि अ [°अपि] कहीं से भी (काल)।

कुआरी स्त्री [कुमारी] वनस्पति-विशेष, कुवारपाठा, घीकुवार, घीगुवार (श्रा २०; जी १०)।

कुंकण न [दे] १ कोकनद, रक्त-कमल (पण्ण १—पत्र ४०)। २ पुं. क्षुद्र जन्तु-विशेष, चतुरिन्द्रिय कीड़े की एक जाति (उत्त ३६)।

कुंकण पुं [कोङ्कण] देश-विशेष (अणु; सार्ध ३४)।

कुंकुण देखो कुंकण (सिरि २८६)।

कुंकुम न [कुङ्कुम] केसर, सुगन्धी द्रव्य-विशेष (कुमा; श्रा १८)।

कुंग पुं [कुङ्ग] देश-विशेष (भवि)।

कुंच सक [कुञ्च्] १ जाना, चलना। २ अक. संकुचित होना। ३ टेढ़ा चलना (कुमा; गउड)।

कुंच पुं [क्रौञ्च] १ पक्षि-विशेष (पण्ह १, १; उप पृ २०८; उर १, १४)। २ इस नाम का एक असुर (पाअ)। ३ इस नाम का एक अनार्य देश। ४ वि. उसके निवासी लोग (पव २७४)। °रवा स्त्री [°रवा] दण्डकारण्य की इस नाम की एक नदी (पउम ४२, १५)। °वीरग न [°वीरक] एक प्रकार का जहाज (निचू १६)। °ारि पुं [°ारि] कार्त्तिकेय, स्कन्द (पाअ)। देखो कोंच।

कुंचल न [दे] मुकुल, कली, बौर (दे २, ३६; पाअ)।

कुंचि वि [कुञ्चिन्] १ कुटिल, वक्र। २ मायावी, कपटी (वव १)।

कुंचिगा देखो कोंचिगा।

कुंचिय वि [कुञ्चित] १ संकुचित (सुपा ५८)। २ कुण्डल के आकारवाला, गोलाकृति (औप; जं २)। ३ कुटिल, वक्र (वव १)।

कुंचिय पुं [कुञ्चिक] इस नाम का एक जैन उपासक (भत्त १३३)।

कुंचिया देखो कोंचिगा। रूई से भरा हुआ पहनने का एक प्रकार का कपड़ा (जीत)।

कुंचिया स्त्री [कुञ्चिका] कुञ्जी, ताली (पिंड ३५६)।

कुंजर पुं [कुञ्जर] हस्ती, हाथी (हे १, ६६ पाअ)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष, हस्तिनापुर (पउम ६५, ३४)। °सेणा स्त्री [°सेना] ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती की एक रानी (उत्त २६)। °वत्त न [°वर्त] नगर-विशेष (सुर ३, ८८)।

कुंट वि [कुण्ट] १ कुब्ज, वामन (आचा)। २ हाथ-रहित, हस्त-हीन (पव ११०; निचू ११; आचा)।

कुंटलविंटल न [दे] १ मंत्र-तंत्रादि का प्रयोग, पाखण्ड-विशेष (आवम)। २ वि. मंत्र-तंत्रादि से आजीविका चलानेवाला (आक)।

कुंटार वि [दे] म्लान, सूखा, मलिन (दे २, ४०)।

कुंटि स्त्री [दे] १ गठरी, गाँठ (दे २, ३४)। २ शस्त्र-विशेष, एक प्रकार का औजार; 'मुसलुक्खलहलदंतालकुंटिकुद्दालपमुहसत्थाणं' (सुपा ५२६)।

कुंठ वि [कुण्ठ] १ मन्द, आलसी (श्रा १६)। २ मूर्ख, बुद्धि-रहित (आचा)।

कुंठी स्त्री [दे] सँड़सी, चीमटा (वज्जा ११४)।

कुंड न [कुण्ड] १ कुंडा, पात्र-विशेष (षड्)। २ जलाशय-विशेष (गांदि)। ३ इस नाम का एक सरोवर (ती ३४)। ४ आज्ञा, आदेश; 'वेसमणकुंडधारिणोतिरियजंभगा देवा' (कप्प)। °कोलिय पुं [°कोलिक] एक जैन उपासक (उवा)। °ग्गाम पुं [°ग्राम] मगध देश का एक गाँव (कप्प; पउम २, २१)। °धारि वि [°धारिन्] आज्ञाकारी (कप्प)। °पुर न [°पुर] ग्राम-विशेष (कप्प)।

कुंड न [दे] ऊख पेरने का जीर्ण काण्ड, जो बाँस का बना हुआ होता है (दे २, ३३; ४, ४५)।

कुंडग पुंन [कुण्डक] १ अन्न का छिलका (उत्त १, ५; आचा २, १, ८, ६)। २ चावल से मिश्रित भूसा (उत्त १, ५)।

कुंडभी स्त्री [दे. कुटभी] छोटी पताका (ग्रावम)।

कुंडमोअ पुंन [कुण्डमोद] हाथी के पैर की आकृतिवाला मिट्टी का एक तरह का पात्र (दस ६, ५१)।

कुंडल पुंन [कुण्डल] १ एक देव-विमान (देवेन्द्र १४५)। २ तप-विशेष; 'पुरिमड्ढ' या निर्विकृतिक तप (संबोध ५७)।

कुंडल पुंन [कुण्डल] १ कान का आभूषण (भग; औप)। २ पुं. विदर्भ देश के एक राजा का नाम (पउम ३०, ७७)। ३ द्वीप-विशेष। ४ समुद्र-विशेष। ५ देव-विशेष (जीव ३)। ६ पर्वत-विशेष (ठा १०)। ७ गोल आकार (सुपा ६२)। °**भद्द** पुं [°भद्र] कुण्डल द्वीप का एक अधिष्ठायक देव (जीव ३)। °**मंडिअ** वि [°मण्डित] १ कुण्डल से विभूषित। २ विदर्भ देश का इस नाम का एक राजा (पउम ३०, ७४)। °**महाभद्द** पुं [°महाभद्र] देव-विशेष (जीव ३)। °**महावर** पुं [°महावर] कुण्डलवर समुद्र का अधिष्ठाता देव (सुज्ज १६)। °**वर** पुं [°वर] १ द्वीप-विशेष। २ समुद्र-विशेष। ३ देव-विशेष (जीव ३)। ४ पर्वत-विशेष (ठा ३, ४)। °**वरभद्द** पुं [°वरभद्र] कुण्डलवर द्वीप का एक अधिष्ठायक देव (जीव ३)। °**वरमहाभद्द** पुं [°वरमहाभद्र] कुण्डलवर द्वीप का एक अधिष्ठाता देव (जीव ३)। °**वरोभास** पुं [°वरावभास] १ द्वीप-विशेष। २ समुद्र-विशेष (जीव ३)। °**वरोभासभद्द** पुं [°वरावभासभद्र] कुण्डलवरावभास द्वीप का अधिष्ठाता देव (जीव ३)। °**वरोभासमहाभद्द** पुं [°वरावभासमहाभद्र] देखो पूर्वोक्त अर्थ (जीव ३)। °**वरोभासमहावर** पुं [°वरावभासमहावर] कुण्डलवरावभास समुद्र का अधिष्ठायक देव-विशेष (जीव ३)। °**वरोभासवर** पुं [°वरावभासवर] समुद्र-विशेष का अधिपति देव-विशेष (जीव ३)।

कुंडला स्त्री [कुण्डला] विदेहवर्ष-स्थित नगरी विशेष (ठा २, ३)।

कुंडलि वि [कुण्डलिन्] कुण्डलवाला (भास ३३)।

कुंडलिअ वि [कुण्डलित] वर्त्तुल, गोल आकारवाला (सुपा ६२; कप्पू)।

कुंडलिआ वि [कुण्डलिका] छन्द-विशेष (पिंग)।

कुंडलोद पुं [कुण्डलोद] इस नाम का एक समुद्र (सुज्ज १६)।

कुंडाग पुं [कुण्डाक] संनिवेश-विशेष, ग्राम-विशेष (ग्रावम)।

कुंडि देखो **कुडी** (महा)।

कुंडिअ पुं [दे] ग्राम का अधिपति, गाँव का मुखिया (दे २, ३७)।

कुंडिअपेसण न [दे] ब्राह्मण विष्टि, ब्राह्मण की नौकरी, ब्राह्मण की सेवा (दे २, ४३)।

कुंडिगा, **कुंडिया** } स्त्री [कुण्डिका] नीचे देखो (रंभा; अनु ५; भग; णाया २, ५)।

कुंडिण न [कुण्डिन] विदर्भ देश का एक नगर (कुप्र ४८)।

कुंडी स्त्री [कुण्डी] १ कुण्डा, पात्र-विशेष; 'तेसिमहोभूमीए ठविया कुंडी य तेल्लपडिपुन्ना' (सुपा २६६)। २ कमण्डल, संन्यासी का जल-पात्र (महा)।

कुंढ देखो **कुंठ** (सुपा ४२२)।

कुंढय न [दे] १ चुल्ली, चूल्हा। २ छोटा बरतन (दे २, ६३)।

कुंत पुं [दे] शुक, तोता, सुग्गा (दे २, २१)।

कुंत पुं [कुन्त] १ हथियार-विशेष, भाला (पण्ह १, १; औप)। २ राम के एक सुभट का नाम (पउम ५६, ३८)।

कुंतल पुं [कुन्तल] १ केश, बाल (सुर १, १; सुपा ६१; २००)। २ देश-विशेष (सुपा ६१; उव ४१५)। °**हार** पुं [°हार] धम्मिल्ल, संयत केश, बाँधे हुए बाल (पाअ)।

कुंतल पुं [दे] सातवाहन, नृप-विशेष (दे २, ३६)।

कुंतला स्त्री [कुन्तला] इस नाम की एक रानी (दंस)।

कुंतला स्त्री [दे] करोटिका, परोसने का एक उपकरण (दे २, ३८)।

कुंतली स्त्री [कुन्तली] कुन्तल देश की रहनेवाली स्त्री (कप्पू)।

कुंताकुंति न [कुन्ताकुन्ति] बर्छे की लड़ाई (सिरि १०३२)।

कुंती स्त्री [दे] मंजरी, बौर (दे २, ३४)।

कुंती स्त्री [कुन्ती] पाण्डवों की माता का नाम (उप ६४८)। °**विहार** पुं [°विहार] नासिक-नगर का एक जैन मन्दिर, जिसका जीर्णोद्धार कुन्तीजी ने किया था (ती २८)।

कुंतीपोट्टलय वि [दे] चतुष्कोण, चार कोनवाला, चौकोर (दे २, ४३)।

कुंथु पुं [कुन्थु] १ एक जिन-देव, इस अवसर्पिणी काल में उत्पन्न सत्तरहवाँ तीर्थंकर और छठवाँ चक्रवर्ती राजा (सम ४३; पडि)। २ हरिवंश का एक राजा (पउम २२, ६८)। ३ चमरेन्द्र की हस्ति-सेना का अधिपति देव-विशेष (ठा ५, १—पत्र ३०२)। ४ एक क्षुद्र जन्तु, त्रीन्द्रिय जन्तु की एक जाति (उत्त ३६; जी १७)।

कुंद पुं [कुन्द] १ पुष्प-वृक्ष विशेष (जं २)। २ न. पुष्प-विशेष, कुन्द का फूल (सुर २, ७६; णाया १, १)। ३ विद्याधरों का एक नगर (इक)। ४ पुंन. छन्द-विशेष (पिंग)।

कुंदय वि [दे] कृश, दुर्बल (दे २, ३७)।

कुंदा स्त्री [कुन्दा] एक इन्द्राणी, मानिभद्र इंद्र की पटरानी (इक)।

कुंदीर न [दे] बिम्बी-फल, कुन्दरुन का फल (दे २, ३६)।

कुंदुक्क पुं [कुन्दुक्क] वनस्पति-विशेष (पण्ण १—पत्र ४१)।

कुंदुरुक्क पुं [कुन्दुरुक्क] सुगन्धि पदार्थ-विशेष (णाया १, १—पत्र ४१; सम १३७)।

कुंदुल्लुअ पुं [दे] पक्षि-विशेष, उलूक, उल्लू (पाअ)।

कुंधर पुं [दे] छोटी मछली (दे २, ३२)।

कुंपय पुंन [कूपक] तैल वगैरह रखने का पात्र-विशेष (रयण ३१)।

कुंपल पुंन [कुट्मल, कुड्मल] १ इस नाम का एक नरक। २ मुकुल, कली, कलिका (हे १, २६; कुमा; षड्)।

कुंबर [दे] देखो **कुंधर** (पाअ)।

कुंभ पुं [कुम्भ] १-३ साठ, अस्सी और एक सौ आढक की नाप (अणु १५१; तंदु २६)। ४ ज्योतिष-प्रसिद्ध एक राशि (विचार १०६)। ५ एक राजा (राय ४६)।

कुंभ पुं [कुम्भ] १ स्वनाम-प्रसिद्ध एक राजा, भगवान् मल्लिनाथ का पिता (सम १५१; पउम २०, ४५)। २ स्वनाम-ख्यात जैन महर्षि, अठारहवें तीर्थंकर के प्रथम शिष्य (सम १५२)। ३ कुम्भकर्ण का एक पुत्र (से १२, ६५)। ४ एक विद्याधर सुभट का नाम (पउम १०, १३)। ५ परमाधार्मिक देवों की एक जाति (सम २६)। ६ कलश, घड़ा (महा; कुमा)। ७ हाथी का गण्ड-स्थल (कुमा)। ८ धान्य मापने का एक परिमाण (अणु)। ९ तरने का उपकरण (निचू १)। १० ललाट, भाल-स्थल (पव २)। ११ °अण्ण पुं [°कर्ण] रावण के छोटे भाई का नाम (१५, ११)। °आर पुं [°कार] कुम्हार, घड़ा आदि मिट्टी का बरतन बनानेवाला (हे १, ८)। °उर न [°पुर] नगर-विशेष (दंस)। °गार देखो °आर (महा)। °ग्ग न [°ाग्र] मगध-देश-प्रसिद्ध एक परिमाण (गाया १, ८—पत्र १२५)। °सेण पुं [°सेन] उत्सर्पिणी काल के प्रथम तीर्थंकर के प्रथम शिष्य का नाम (तित्थ)।

कुंभंड न [कूष्माण्ड] फल-विशेष, कोहँड़ा, कुम्हड़ा (कप्पू)।

कुंभार पुं [कुम्भकार] कुम्हार, घड़ा आदि मिट्टी का बरतन बनानेवाला (हे १, ८)। °वाय पुं [°पाक] कुम्हार का बरतन पकाने का स्थान (ठा ८)।

कुंभि पुं [कुम्भिन्] १ हस्ती, हाथी (सण)। २ नपुसक-विशेष, एक प्रकार का पंड पुरुष (पुप्फ १२७)।

कुंभिक देखो **कुंभिय** (राय ३७)।

कुंभिणी स्त्री [दे] जल का गर्त (दे २, ३८)।

कुंभिय वि [कुम्भिक] कुम्भ-परिमाणवाला (ठा ४, २)।

कुंभिल पुं [दे· कुम्भिल] १ चोर, स्तेन (दे २, ६२; विक ५६)। २ पिशुन, दुर्जन (दे २, ६२)।

कंभिल्ल वि [दे] खोदने योग्य (दे २, ३९)।

कुंभी स्त्री [कुम्भी] १ पात्र-विशेष, घड़े के आकारवाला छोटा कोष्ठ (सम १२५)। २ कुंभ, घड़ा (जं ३)। °पाग पुं [°पाक] १ कुंभी में पकना (पण्ह २, ५)। २ नरक की एक प्रकार की यातना (सूअ १, १, १)।

कुंभी स्त्री [कूष्माण्डी] कोहँड़ा का गाछ, 'चलिओ कुंभीफल दंतुरासु' (गउड)।

कुंभी स्त्री [दे] केश-रचना, केश-संयम (दे २ ३४)।

कुंभील पुं [कुम्भील] जलचर प्राणि-विशेष, नक्र, मगर (चारु ६४)।

कुंभुब्भव पुं [कुम्भोद्भव] ऋषि-विशेष, अगस्त्य ऋषि (कप्पू)।

कुकम्मि वि [कुकर्मिन्] खराब कर्म करनेवाला (सूअ १, ७, १८)।

कुकुला स्त्री [दे] नवोढ़ा, दुलहिन (दे २, ३३)।

कुकुस [दे] देखो **कुक्कुस** (दस ५, १३४)।

कुकुहाइय न [कुकुहायित] चलते समय का शब्द-विशेष (तंदु)।

कुकूल पुं [कुकूल] करीषाग्नि, कंडे की आग (पण्ह १, १)।

कुक्क देखो **कोक्क**। कुक्कइ (पि १९७; ४८८)।

कुक्क पुं [दे] कुत्ता, कुक्कुर; 'कुक्केहि कुक्काहि अ बुक्कअंते' (मृच्छ ३६)।

कुक्कयय न [दे] आभरण-विशेष; 'अदु अंजणि अलंकारं कुक्कययं मे पयच्छाहि' (सूअ १, ४, २, ७)। देखो **कुक्कुडय**।

कुक्की स्त्री [दे] कुत्ती, कुक्कुरी (मृच्छ ३६)।

कुक्कुअ वि [कुत्कुच] भाँड की तरह शरीर के अवयवों की कुचेष्टा करनेवाला (धर्म २; पव ६)।

कुक्कुअ न [कौकुच्य] कुचेष्टा, कामोत्पादक अंग-विकार (पउम ११, ६७; आचा)।

कुक्कुअ वि [कुकूज] आक्रन्दन करनेवाला (उत्त २१)।

कुक्कुआ स्त्री [कुचकुचा] अवस्यन्दन, क्षरण, रस-रस कर चूना, रसना (बृह ६)।

कुक्कुइअ वि [कौकुचिक] भाँड़ की तरह कुचेष्टा करनेवाला, काम-चेष्टा करनेवाला (भग; औप)।

कुक्कुइअ न [कौकुच्य] काम-कुचेष्टा, 'भंडाईए व नयणाइयाण सवियारकरणमिह भणियं। कुक्कुइयं' (सुपा ५०९; पडि)।

कुक्कुड पुं [कुर्कुट] चतुरिन्द्रिय जन्तु की एक जाति (उत्त ३६, १४८)।

कुक्कुड पुं [कुक्कुट] १ कुक्कुट, मुर्गा (गा ५८२; उवा)। २ वनस्पति-विशेष (भग १५)। ३ विद्या द्वारा किया जाता हस्त-प्रयोग-विशेष (वव १)। °मंसय न [°मांसक] १ मुर्गा का मांस। २ बीजपूरक वनस्पति का गुदा (भग १५)।

कुक्कुड वि [दे] मत्त, उन्मत्त (दे २, ३७)।

कुक्कुडय न [कुक्कुटक] देखो **कुक्कयय** (सूअ १, ४, २, ७ टी)।

कुक्कुडिया, **कुक्कुडी** स्त्री [कुक्कुटिका, °टी] कुक्कुटी, मुर्गी (णाया १, ३; विपा १, ३)।

कुक्कुडी स्त्री [कुक्कुटी] माया, कपट (पिंड २९७)।

कुक्कुडेसर न [कुक्कुटेश्वर] तीर्थ-विशेष (ती १६)।

कुक्कुर पुं [कुक्कुर] कुत्ता, श्वान (पउम ९४, ८०; सुपा २७७)।

कुक्कुरुड पुं [दे] निकर, समूह (दे २, १३)।

कुक्कुस पुं [दे] धान्य आदि का छिलका, भूसा (दे २, ३६; दस ५, १, ३४)।

कुक्कुह पुं [कुक्कुभ] पक्षि-विशेष (गउड)।

कुक्कुहाइअ न [दे] चलते समय का अश्व का शब्द-विशेष (तंदु ५३)।

कुक्खि [दे· कुक्षि] देखो **कुच्छि** (दे २, ३४; औप; स्वप्न ६१; कप्प ३३)।

कुक्खिंभरि देखो **कुच्छिंभरि** (धर्मवि १४९)।

कुक्खेअअ देखो **कुच्छेअय** (संक्षि ६)।

कुग्गाह पुं [कुग्राह] १ कदाग्रह, हठ (उप ८३३ टी)। २ जल-जन्तु विशेष; 'कुग्गाह-गाहाइयजंतुसंकुलो' (सुपा ६२६)।

कुच पु [कुच] स्तन, थन (कुमा)।

कुचोज्ज न [कुचोद्य] कुतर्क (धर्मसं ११७५)।

कुच्च पुं [कूर्च] कँघी, बाल सँवारने का उपकरण (उत्त २२, ३०)।

कुच्च न [कूर्च] १ दाढ़ी-मूँछ (पाअ; अभि २१२)। २ तृण-विशेष (पण्ह २, ३) देखो **कुच्चग**।

कुच्चंधरा स्त्री [कूर्चधरा] दाढ़ी-मूँछ, धारण करनेवाली (ओघ ८३ भा)।

कुच्चग वि [कौर्चक] शर-नामक गाछ का बना हुआ (आचा २, २, ३, १४)।

कुच्चग } देखो **कुच्च** (आचा २, २, ३; **कुच्चय** } काल)। ३ कूँची, तृण-निर्मित तूलिका, जिससे दीवाल में चूना लगाया जाता है (उप पृ ३४३; कुमा)।

कुच्चिय वि [कूर्चिक] दाढ़ी-मूँछवाला (बृह १)।

कुच्छ सक [कुत्स्] निन्दा करना, धिक्कारना। कृ. कुच्छ कुच्छणिज्ज (श्रा २७; पराह १, ३)।

कुच्छ पुं [कुत्स] १ ऋषि-विशेष। २ गोत्र-विशेष; 'थेरस्स णं अज्जसिवभूइस्स कुच्छसगुत्तस्स' (कप्प)।

कुच्छ देखो **कुच्छ** = कुत्स्।

कुच्छग पुं [कुत्सक] वनस्पति-विशेष (सूत्र २, २)।

कुच्छणिज्ज देखो **कुच्छ** = कुत्स्; 'अन्नेसि कुच्छणिज्जं साणाणं भक्खणिज्जं हिं' (श्रा २७)।

कुच्छा स्त्री [कुत्सा] निन्दा, घृणा, जुगुप्सा (श्रोघ ४४४; उप ३२० टी)।

कुच्छि पुंस्त्री [कुक्षि] १ उदर, पेट (हे १, ३५; उवा; महा)। २ अडतालीस अंगुल का मान (जं २)। °**किमि** पुं [°कृमि] उदर में उत्पन्न होनेवाला कीड़ा, द्वीन्द्रिय जन्तु-विशेष (पराण १)। °**धार** पुं [°धार] १ जहाज का काम करनेवाला नौकर; 'कुच्छिधारकन्नधारगब्भजसंजत्ताणावावाणियगा' (णाया १, ८—पत्र १३३)। २ एक प्रकार का जहाज का व्यापारी (णाया १, १६)। °**पूर** पुं [°पूर] उदर-पूर्ति (वव ४)। °**वेयणा** स्त्री [°वेदना] उदर का रोग-विशेष (जीव ३)। °**सूल** पुंन [°शूल] रोग-विशेष (णाया १, १३; विपा १, १)।

कुच्छिंभरि वि [कुक्षिम्भरि] अकेलपेटू, पेटू, स्वार्थी; 'हा तियचरित्तकुच्छि (? च्छिं) भरिए!' (रंभा)।

कुच्छिमई स्त्री [दे. कुक्षिमती] गर्भिणी, आपन्न-सत्त्वा (दे २, ४१; षड्)।

कुच्छिमदिका (मा) देखो **कुच्छिमई** (प्राकृ १०२)।

कुच्छिय वि [कुत्सित] खराब, निन्दित, गर्हित (पंचा ७; भवि)।

कुच्छिल्ल न [दे] १ वृति का विवर, बाड़ का छिद्र (दे २, २४)। २ छिद्र, विवर (पाअ)।

कुच्छेअय पुं [कौक्षेयक] तलवार, खड्ग (दे १, १६१ षड्)।

कुज पुं [कुज] वृक्ष, पेड़ (जं २)।

कुजय पुं [कुजय] जूआरी, जूआखोर (सूत्र १, २, २)।

कुज्ज वि [कुब्ज] १ कुब्ज, कुबड़ा, वामन (सुपा २; कप्पू)। २ पुंन. पुष्प-विशेष (षड्)।

कुज्जय पुं [कुब्जक] १ वृक्ष-विशेष, शतपत्रिका (पउम ४२, ८; कुमा)। २ न. उस वृक्ष का पुष्प; 'बंधेउं कुज्जयपसूणं' (हे १, १८१)।

कुज्झ सक [क्रुध्] क्रोध करना, गुस्सा करना। कुज्झइ (हे ४, २१७; षड्)।

कुट्ट सक [कुट्ट्] १ कूटना, पीटना, ताड़न करना। २ काटना, छेदना। ३ गरम करना। ४ उपालम्भ देना। भवि. कुट्टइस्सं (पि ५२८)। वकृ. कुट्टित (सुर ११, १)। कवकृ. कुट्टिज्जंत, कुट्टिज्जमाण (सुपा ३४०; प्रासू ६६; राय)। संकृ. कुट्टिय (भग १४, ८)।

कुट्ट पुं [कुट] घड़ा, कुम्भ (सूत्र २, ७)।

कुट्ट पुंन [दे] १ कोट, किला; 'दिज्जंति कवाडाइं कुट्टुवरि भडा ठविज्जंति' (सुवा ५०३)। २ नगर, शहर (सुर १५, ८१)। °**वाल** पुं [°पाल] कोतवाल, नगर-रक्षक (सुर १५, ८१)।

कुट्टण न [कुट्टन] १ छेदन, चूर्णन, भेदन (श्रौप)। २ कूटना, ताड़ना (हे ४, ४३८)।

कुट्टणा स्त्री [कुट्टना] शारीरिक पीड़ा (सूत्र १, १२)।

कुट्टणी स्त्री [कुट्टनी] १ मूसल, एक प्रकार की मोटी लकड़ी, जिससे चावल आदि अन्न कूटे जाते हैं (बृह १)। २ दूती, कुटनी, कुट्टिनी (रंभा)।

कुट्टयरी स्त्री [दे] चंडी, पार्वती (दे २, ३५)।

कुट्टा स्त्री [दे] गौरी, पार्वती (दे २, ३५)।

कुट्टाय पुं [दे] चर्मकार, मोची (दे २, ३७)।

कुट्टित देखो **कुट्ट** = कुट्ट्।

कुट्टिंतिया देखो **कोट्टंतिया** (राज)।

कुट्टिंब [दे] देखो **कोट्टिंब** (पाअ)।

कुट्टिणी स्त्री [कुट्टिनी] कूटनी, दूती (कप्पू; रंभा)।

कुट्टिम देखो **कोट्टिम** = कुट्टिम (भग ८, ६; राय; जीव ३)।

कुट्टिय वि [कुट्टित] १ कूटा हुआ, ताड़ित (सुपा १५; उत्त १६)। २ छिन्न, छेदित (बृह १)।

कुट्ठ पुंन [कुष्ठ] १ पंसारी के यहाँ बेची जाती एक वस्तु, कूठ (विसे २६३; पराह २,५)। २ रोग-विशेष, कोढ़ (वव ६)।

कुट्ठ पुं [कोष्ठ] १ उदर, पेट; 'जहा विसं कुट्ठगयं मंतमूलविसारया। वेज्जा हणंति मंतेहिं' (पडि)। २ कोठा, कुशूल, धान्य भरने का बड़ा भाजन (पराह २, १)। °**बुद्धि** वि [°बुद्धि] एक बार जानने पर नहीं भूलनेवाला (पराह २, १)। देखो **कोट्ठ, कोट्ठग**।

कुट्ठ वि [क्रुष्ट] १ शपित, अभिशप्त। २ न. शाप, अभिशाप-शब्द; 'उड्ढं कुट्ठं केहिं पेच्छंता आगया इत्थं' (सुपा २५०)।

कुट्ठग पुंन [कोष्ठक] शून्य घर (दस ५, १ २०; ८२)।

कुट्ठा स्त्री [कुष्ठा] इमली, चिंचा (बृह १)।

कुट्ठि वि [कुष्ठिन्] कुष्ठ रोगवाला (सुपा २४३; ५७६)।

कुड पुं [कुट] १ घड़ा, कलश (दे २, ३५; गा २२६; विसे १४५६)। २ पर्वत। ३ हाथी वगैरह का बन्धन-स्थान (णाया १, १—पत्र ६३)। ४ वृक्ष, पेड़; 'तडुवियसिहंडमंडियकुडग्गो' (सुपा ५६२)। **कंठ** पुं [°कण्ठ] पात्र-विशेष, घड़ा के जैसा पात्र (दे २, २०)। °**दोहिणी** स्त्री [°दोहिनी] घड़ा भर दूध देनेवाली (गा ५३७)।

कुडंग पुंन [कुटङ्क] १ कुञ्ज, निकुञ्ज, लता वगैरह से ढका हुआ स्थान (गा ६८०; हेका १०५)। २ वन, जंगल (उप २२० टी)। ३ बाँस की जाली, बाँस की बनी हुई छत (बृह १)। ४ गह्वर, कोटर (राज)। ५ वंश-गहन (णाया १, ८; कुमा)।

कुडंग पुंन [दे. कुटङ्क] लता-गृह, लता से ढका हुआ घर (दे २, ३७; महा; पाअ; षड्)।

कुडंगा स्त्री [कुटङ्का] लता-विशेष (पउम ५३, ७६)।

कुडंगी स्त्री [दे. कुटङ्की] बाँस की जाली, एक्कपहारेण निवडिया वंसकुडंगी' (महा; सुर १२, २००; उप पृ २८१)।

कुडंब देखो कुडुंब (महा; गा ६०६)।

कुडग देखो कुड (आवम; सूअ १, १२)।

कुडभी स्त्री [कुटभी] छोटा पताका (सम ६०)।

कुडय न [दे] लता-गृह, लता से आच्छादित घर, कुटीर, झोंपड़ी (दे २,३७)।

कुडय पुंन [कुटज] वृक्ष-विशेष, कुरैया (णाया १. ६; पण्ण १७; स १६४); 'कुडयं दलइ' (कुमा)।

कुडव पुं [कुडव] अनाज या अन्न नापने का एक माप (णाया १, ७; उप पृ ३७०)।

कुडाल देखो कुड्डाल (उवा)।

कुडिअ वि [दे] कुब्ज, वामन, नाटा (पाअ)।

कुडिआ स्त्री [दे] बाड़ का विवर (दे २, २४)।

कुडिच्छ न [दे] १ बाड़ का छिद्र। २ कुटी, झोंपड़ी। ३ वि. त्रुटित, छिन्न (दे २, ६४)।

कुडिल वि [कुटिल] वक्र, टेढ़ा (सुर १, २०; २, ८६)।

कुडिलविडल न [दे. कुटिलविटल] हस्ति-शिक्षा (राज)।

कुडिल्ल न [दे] १ छिद्र, विवर (पाअ)। २ वि. कुब्ज, कुबड़ा (पाअ)।

कुडिल्लय वि [दे. कुटिलक] कुटिल, टेढ़ा, वक्र (दे २, ४०; भवि)।

कुडिव्वय देखो कुलिव्वय (राज)।

कुडी स्त्री [कुटी] छोटा गृह, झोंपड़ी, कुटीर (सुपा १२०; वज्जा ६४)।

कुडीर न [कुटीर] झोंपड़ी, कुटी (हे ४, ३६४; पउम ३३, ८५)।

कुडीर न [दे] बाड़ का छिद्र (दे २, २४)।

कुडुंग पुं [दे] लतागृह, लताओं से ढका हुआ घर (षड्; गा १७५; २३२ अ)।

कुडुंब न [कुटुम्ब] परिजन, परिवार, स्वजन-वर्ग (उवा; महा; प्रासू १६७)।

कुडुंबय पुं [कुस्तुम्बक] १ वनस्पति-विशेष, धनियाँ (पण्ण १—पत्र ४०)। २ कन्द-विशेष; 'पलंडुलसणकंदे य कंदली य कुडुंबए' (उत्त ३६, ६८ का)।

कुडुंबि, कुडुंबिअ वि [कुटुम्बिन्, °क] १ कुटुम्ब-युक्त, गृहस्थ। २ कुनबेवाला, कर्षक (गउड)। ३ सम्बन्धी; 'सोभाग्गसमुद-एणं आणणकुडुंबिएणं' (कप्प)।

कुडुंबीअ न [दे] सुरत, संभोग, मैथुन (षड्)।

कुडुंभग पुं [दे] जल-मण्डूक, पानी का मेढक (निचू १)।

कुडुक्क पुं [दे] लता-गृह (षड्)।

कुडुच्चिअ न [दे] सुरत, संभोग, मैथुन (दे २, ४१)।

कुडुल्ली (अप) स्त्री [कुटी] कुटिया, झोंपड़ी (कुमा)।

कुड्ड पुंन [कुड्य] १ भित्ति, भीत (पउम ६८, ६; हे २, ७८);

'अज्जं गओत्ति अज्जं गओत्ति
अज्जं गओत्ति गणिरीए।
पढमव्विअ दिअहद्धे कुड्डो लेहाहिं
चित्तलिओ (गा २०८)।

कुड्ड न [दे] आश्चर्य, कौतुक, कुतूहल (दे २, ३३; पाअ; षड्; हे २, १७४)।

कुड्डगिलोई [दे] गृह-गोधा, छिपकली (दे २, १६)।

कुड्डलेवणी स्त्री [दे. कुड्यलेपनी] सुधा, चूना, खड़ी, खटिका (दे २, ४२)।

कुड्डाल न [दे] हल के ऊपर का विस्तृत अंश (उवा)।

कुढ पुंन [दे] १ चुराई हुई वस्तु की खोज में जाना (दे २, ६२; सुपा ५०३)। २ छीनी हुई चीज को छुड़ानेवाला, वापस लेनेवाला (दे २, ६२)।

कुढार पुं [कुठार] कुल्हाड़ा, फरसा (हे १, १९९; षड्)।

कुढावय न [दे] अनुगमन, पीछे जाना (विसे १४३९ टी)।

कुढिय वि [दे] कूढ, मूर्ख, बेसमझ; 'कूयंति नेउराइं पुणो पुणो कुढियपुरिसोव्व' (सुर ३, १४२)।

कुढिय वि [दे] जिसके माल की चोरी हो गई हो वह (सुख २, २१)।

कुण सक [कृ] करना, बनाना। कुणइ, कुणउ, कुण (भग; महा; सुपा ३२०)। वकृ. कुणंत, कुणमाण (गा १६५; सुपा ३६; ११३; आचा)।

कुणक्क पुं [कुणक] वनस्पति-विशेष (पण्ण १—पत्र ३५)।

कुणव न [कुणप] १ मुरदा, मृत-शरीर (पाअ; गउड)। २ वि. दुर्गन्धी (हे १, २३१)।

कुणाल पुं. ब. [कुणाल] १ देश-विशेष (णाया १, ८; उप ६८६ टी)। २ प्रसिद्ध महाराज अशोक का एक पुत्र (विसे ८६१)। °**नयर** न [°नगर] एक शहर, उज्जैन; 'आसी कुणालनयरे' (संथा)।

कुणाला स्त्री [कुणाला] इस नाम की एक नगरी (सुपा १०३)।

कुणि, कुणिअ पु [कुणि] १ हस्त-विकल, ठूँठ, हाथ-कटा मनुष्य (पउम २, ७७)। २ जन्म से ही जिसका एक हाथ छोटा हो वह। ३ जिसका एक पाँव छोटा हो वह, खञ्ज (पण्ह २, ५—पत्र १५०; आचा)।

कुणिआ स्त्री [दे] वृति-विवर, बाड़ का छिद्र (दे २, २४)।

कुणिम पुंन [दे. कुणप] १ शव, मृतक, मुरदा (पण्ह २, ३)। २ मांस (ठा ४, ४; औप)। ३ नरकावास-विशेष (सूअ १, ५, १)। ४ शव का रुधिर, वसा वगैरह (भग ७, ६)।

कुणुकुण अक [कुणुकुणाय्] शीत से कम्प होने पर 'कड़कड़' आवाज करना। वकृ. कुणुकुणंत (सुर २, १०३)।

कुण्हरिया स्त्री [दे] वनस्पति-विशेष (पण्ण १—पत्र ३५)।

कुतत्ती स्त्री [दे] मनोरथ, वाञ्छा (दे २, ३६)।

कुतुंब पुं [कुस्तुम्ब] वाद्य-विशेष (राय ४६)।

कुतुंबर पुं [कुस्तुम्बर] वाद्य-विशेष (राय ४६)।

कुतुव पुंन [कुतुप] १ तेल वगैरह भरने का चमड़े का पात्र (दे ५, २२)। देखो कुडअ।

कुत्त पुं [दे] कुत्ता, कुक्कुर (रंभा)।

कुत्त न [दे. कुतक] ठेका, इजारा (विपा १, १—पत्र ११)।

कुत्तार वि [कुतार] अयोग्य तारक (गच्छ १, ३०)।

कुत्तिय पुंस्त्री [दे] एक तरह का कीड़ा, चतुरिन्द्रिय जन्तु-विशेष; 'करालिय कुत्तिय विच्छू' (आप १७; पभा ४१)।

कुत्ती स्त्री [दे] कुत्ती, कुक्कुरी (रंभा)।

कुत्थ अ [कुत्र] कहाँ, किस स्थान में? (उत्तर १०४)।

कुत्थ सक [कोथय्] सड़ाना, 'नो वाऊ हरेज्जा, नो सलिलं कुत्थिज्जा' (पव १५८ टी)। कुच्छे (? त्थे) ज्जा (प्रणु १६१)। भवि. कुच्छि (? त्थि) हिई (पिंड २३८)। कृ. कुत्थ (दसनि १०, २४)।

कुत्थ देखो **कढ**। कुत्थसि, कुत्थसु (गा ५०१ अ)।

कुत्थण स्त्रीन [कोथन] सड़ना, सड़ जाना (वव ४)।

कुत्थर न [दे] १ विज्ञान (दे २, १३)। २ कोटर, वृक्ष की पोल, गह्वर (सुपा २४६)। ३ सर्प वगैरह का बिल (उप ३५७ टी)।

कुत्थल देखो **कोत्थल**; 'कुच्छ (? त्थ) लसमाणउयरो' (धर्मवि २७)।

कुत्थुंब पुं [कुस्तुम्ब] वाद्य-विशेष (राय)।

कुत्थुंभरी स्त्री [कुस्तुम्बरी] वनस्पति-विशेष, धनियाँ (पराग १—पत्र ३१)।

कुत्थुह पुंन [कौस्तुभ] मणि-विशेष, जो विष्णु की छाती पर रहती है (हेका २५७)।

कुत्थुहवत्थ न [दे] नीवी, नारा, इजारबन्द (दे २, ३८)।

कुदो देखो **कुओ** (हे १, ३७)।

कुद्द वि [दे] प्रभूत, प्रचुर (दे २, ३४)।

कुद्दण पुं [दे] रासक, रासा (दे २, ३८)।

कुद्दव पुं [कोद्रव] धान्य-विशेष, कोदों, कोदव (सम्य १२)।

कुद्दाल पुं [कुद्दाल] १ भूमि खोदने का साधन, कुदार, कुदारी (सुपा ५२६)। २ वृक्ष-विशेष (जं २)।

कुद्ध वि [क्रुद्ध] कुपित, क्रोध-युक्त (महा)।

कुपचि (पै) अ [कचित्] किसी जगह में (प्राकृ १२३)।

कुप्प सक [कुप्] कोप करना, गुस्सा करना। कुप्पइ (उव; महा)। वकृ. **कुप्पंत** (सुपा १६७)। कृ. **कुप्पियव्व** (स ६१)।

कुप्प सक [भाप्] बोलना, कहना। कुप्पइ (भवि)।

कुप्प न [कुप्य] सुवर्ण और चाँदी को छोड़ कर अन्य धातु और मिट्टी वगैरह के बने हुए गृह-उपकरण, 'लोहाई उवक्खरो कुप्पं' (बृह १; पडि)।

कुप्पढ पुं [दे] १ गृहाचार, घर का रिवाज। २ समुदाचार; सदाचार (दे २, ३६)।

कुप्पर न [दे] सुरत के समय किया जाता हृदय-ताड़न-विशेष। २ समुदाचार, सदाचार। ३ नर्म, हाँसी, ठट्ठा (दे २, ६४)।

कुप्पर पुं [कूर्पर] १ कफोणि, हाथ का मध्य भाग। २ जानु, घुटना। ३ रथ का अवयव-विशेष (जं ३)।

कुप्पर पुं [कर्पर] देखो **कप्पर**। भीत की परत, भीत का जीर्ण-शीर्ण थर; 'एयाओ पाडलावंडुकुप्परा जुराणभित्तिओ' (गउड)।

कुप्पल देखो **कुंपल** (वि २७७)।

कुप्पास पुं [कूर्पास] कञ्चुक, काँचली, जनानी कुरती (हे १, ७२; कप्पू; पाअ)।

कुप्पिय वि [कुपित] १ कुपित, क्रुद्ध। २ न. क्रोध, गुस्सा; 'कुप्पियं नाम कुज्झियं' (ग्राचू ४)।

कुप्पिस देखो **कुप्पास** (हे १, ७२; दे २, ४०)।

कुबर पुं [कूबर] भगवान् मल्लिनाथ का शासनाधिष्ठायक यक्ष (पव २६)।

कुबेर पुं [कुबेर] भगवान् कुन्थुनाथ के प्रथम श्रावक का नाम (विचार ३७८)।

कुबेर पुं [कुबेर] १ कुबेर, यक्ष-राज, धनेश (पाअ; गउड)। २ भगवान् मल्लिनाथ का शासनाधिष्ठाता यक्ष विशेष (संति ८)। ३ काञ्चनपुर के एक राजा का नाम (पउम ७, ४५)। ४ इस नाम का एक श्रेष्ठी (उप ७२८ टी)। ५ एक जैन मुनि (कप्प)। °**दिसा** पुं [°दिश्] उत्तर दिशा (सुर २, ८५)। °**नयरी** स्त्री [°नगरी] कुबेर की राजधानी, अलका (पाअ)।

कुबेरा स्त्री [कुबेरा] जैन साधु-गरा की एक शाखा (कप्प)।

कुब्बड वि [दे] कुबड़ा, कुब्ज, वामन (श्रा २७)।

कुब्बर पुं [कूबर] वैश्रमण के एक पुत्र का नाम (अंत ५)।

कुभंड पुं [कुभाण्ड] देव-विशेष की जाति (ठा २, ३—पत्र ८५)।

कुभंडिंद पुं [कुभाण्डेन्द्र] इन्द्र-विशेष, कुभाण्ड देवों का स्वामी (ठा २, ३)।

कुमर देखो **कुमार** (हे १, ६७; सुपा २४३; ६५६; कुमा)।

कुमरी देखो **कुमारी** (कप्पू; पाअ)।

कुमार पुं [कुमार] १ प्रथम-वय का बालक, पाँच वर्ष तक का लड़का (ठा १०; णाया १, २)। २ युवराज, राज्यार्ह पुरुष (पराह १, ५)। ३ भगवान् वासुपूज्य का शासनाधिष्ठाता यक्ष (संति ७)। ४ लोहकार, लोहार; 'चवेडमुट्ठिमाईहिं कुमारेहिं अयं पिव' (उत्त २३)। ५ कार्तिकेय, स्कन्द (पाअ)। ६ शुक पक्षी। ७ घुड़सवार। ८ सिन्धु नद। ९ वृक्ष-विशेष, वरुण-वृक्ष (हे १, ६७)। १० अविवाहित, ब्रह्मचारी (सम ५०)। °**ग्गाम** पुं [°ग्राम] ग्राम-विशेष (आचा २, ३)। °**णंदि** पुं [°नन्दिन्] इस नाम का एक सोनार (आवम)। °**धम्म** पुं [°धर्म] एक जैन साधु (कप्प)। °**वाल** पुं [°पाल] विक्रम की बारहवीं शताब्दी का गुजरात का एक सुप्रसिद्ध जैन राजा (दे १, ११३ टी)।

कुमार पुं [दे] कुआर का महीना, आश्विन मास (ठा २, १)।

कुमारा स्त्री [कुमारा] इस नाम का एक संनिवेश, 'तओ भगवं कुमाराए संनिवेसे गओ' (आवम)।

कुमारिय पुं [कुमारिक] कसाई, सौनिक (बृह १)।

कुमारिया स्त्री [कुमारिका] देखो **कुमारी** (पि ३५०)।

कुमारी स्त्री [कुमारी] १ प्रथम वय की लड़की २ अविवाहित कन्या (हे ३, ३२)। ३ वनस्पति-विशेष, घीकुमारी (पव ४)। ४ नवमल्लिका। ५ नदी-विशेष। ६ जम्बू-द्वीप का एक भाग। ७ वनस्पति-विशेष, अपराजिता। ८ सीता। ९ बड़ी इलाची। १० वन्ध्या ककड़ी की लता। ११ पक्षि-विशेष (हे ३, ३२)।

कुमारी स्त्री [दे कुमारी] गौरी, पार्वती (दे २, ३५)।

कुमुअ पुं [कुमुद] १ इस नाम का एक वानर (से १, ३४)। २ महाविदेह-वर्ष का

एक विजय-युगल, भूमि-प्रदेष-विशेष (ठा २, ३—पत्र ८०)। ३ न. चन्द्र-विकासी कमल (णाया १, ३—पत्र ९६: से १, २६)। ४ संख्या-विशेष, कुमुदाङ्ग को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह (जो २)। ५ शिखर-विशेष (ठा ८)। ६ वि. पृथ्वी में आनन्द पानेवाला। ७ खराब प्रीतिवाला (से १, २६)। देखो **कुमुद**।

कुमुअ पुं [कुमुद] देव-विशेष (सिरि ६६७)। °**चंद** पुं [°चन्द्र] आचार्य सिद्धसेन दिवाकर की मुनि अवस्था का नाम (सम्मत्त १४१)।

कुमुअंग न [कुमुदाङ्ग] संख्या-विशेष, 'महाकाल' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह (जो २)।

कुमुआ स्त्री [कुमुदा] १ इस नाम की एक पुष्करिणी (जं ४)। २ एक नगरी (दीव)।

कुमुइणी स्त्री [कुमुदिनी] १ चन्द्र-विकासी कमल का पेड़ (कुमा; रंभा)। २ इस नाम की एक रानी (उप १०३१ टी)।

कुमुद देखो **कुमुअ** (इक)। देव-विमान-विशेष (सम ३३; ३५)। °**गुम्म** न [°गुल्म] देव-विमान-विशेष (सम ३५)। °**पुर** न [°पुर] नगर-विशेष (इक)। °**प्पभा** स्त्री [°प्रभा] इस नाम की एक पुष्करिणी (जं ४)। °**वण** न [°वन] मथुरा नगरी के समीप का एक जङ्गल (ती २१)। °**ागर** पुं [°ाकर] कुमुद-षण्ड, कुमुदों से भरा हुआ वन (पण्ह १, ४)।

कुमुदंग देखो **कुमुअंग** (इक)।

कुमुदग न [कुमुदक] तृण-विशेष (सूअ २, २)।

कुमुली स्त्री [दे] चुल्ली, चूल्हा (दे २, ३९)।

कुम्म पुं [कूर्म] कच्छप, कछुआ (पाअ)। °**ग्गाम** पुं [°ग्राम] मगध देश के एक गाँव का नाम (भग १५)।

कुम्मण वि [दे] म्लान, शुष्क, कुम्हलाया हुआ (दे २, ४०)।

कुम्मार पुं [कूर्मार] मगध देश के एक गाँव का नाम (आचा २, १५, ५)।

कुम्मास पुं [कुल्माष] १ अन्न-विशेष, उरद (ओघ ३५९; पण्ह २, ५)। २ थोड़ा भीजा हुआ मूँग वगैरह धान्य (पण्ह २, ५—पत्र १४८)।

कुम्मी स्त्री [कूर्मी] १ कछुई, कच्छपी। २ नारद की माता का नाम (पउम ११, ५२)। °**पुत्त** पुं [°पुत्र] दो हाथ ऊँचा इस नाम का एक पुरुष, जिसने मुक्ति पाई थी (औप)।

कुंम्ह पुंब. [कुश्मन्] देश-विशेष (हे २,७४)।

कुम्हंड देखो **कोहंड** (प्राकृ २२)।

कुम्हंडी देखो **कोहंडी** (प्राकृ २२)।

कुय पुं [कुच] १ स्तन, थन। २ वि. शिथिल (वव ७)। ३ अस्थिर (निचू १)।

कुयवा स्त्री [दे] वल्ली-विशेष (पण्ण १—पत्र ३३)।

कुरंग पुं [कुरङ्ग] १ मृग की एक जाति (जं २)। २ कोई भी मृग, हरिण (पण्ह १, १; गउड)। स्त्री. °**गी** (पाअ)। °**च्छी** स्त्री [°ाक्षी] हरिण के नेत्र जैसे नेत्रवाली स्त्री, मृगनयनी स्त्री (वज्जा २०)।

कुरंटय पुं [कुरण्टक] वृक्ष-विशेष, पियवासा (उप १०३१ टी)।

कुरकुर देखो **कुरुकुरु**। वकृ. **कुरकुराइंत** (रंभा)।

कुरय पुं [कुरक] वनस्पति-विशेष (पण्ण १—पत्र ३५)।

कुरय न [कुरबक] पुष्प-विशेष (वज्जा १०६)।

कुरर पुं [कुरर] कुरर-पक्षी, उत्क्रोश (पण्ह १, १; उप १०२६)।

कुररी स्त्री [दे] पशु, जानवर (दे २, ४०)।

कुररी स्त्री [कुररी] १ कुरर पक्षी की मादा। २ गाथा छन्द का एक भेद (पिंग)। ३ मेषी, मेढ़ी (रंभा)।

कुरल पुं [कुरल] १ केश, बाल; 'कुरल-कुरलीहिं कलिओ तमालदलसामलो अइसणिद्धो' (सुपा २४; पाअ)। २ पक्षि-विशेष (जीव १)।

कुरली स्त्री [कुरली] १ केशों की वक्र सटा (सुपा १; २४)। २ कुरल-पक्षिणी, 'कुरलिव्व नहंगणे भमइ' (पउम १७, ७९)।

कुरवय पुं [कुरबक] वृक्ष-विशेष, कटसरैया (गा ६; मा ४०; विक्र २९; स ४१४; कुमा; दे ५, ६)।

कुरा स्त्री [कुरा] वर्ष-विशेष, अकर्म भूमि-विशेष (ठा २, ३; १०)।

कुरिण न [दे] बड़ा जंगल, भयंकर अटवी (ओघ ४४७)।

कुरु पुं. ब. [कुरु] १ आर्य देश-विशेष, जो उत्तर भारत में है (णाया १, ८; कुमा)। २ भगवान् आदिनाथ का इस नाम का एक पुत्र (ती १४)। ३ अकर्म-भूमि विशेष (ठा ६)। ४ इस नाम का एक वंश (भवि)। ५ पुंस्त्री. कुरु वंश में उत्पन्न, कुरु वंशीय (ठा ६)। °**अरा**, °**अरी** देखो नीचे °**चरा**, °**चरी** (षड्)। °**खेत्त** °**क्खेत्त** न [°क्षेत्र] १ दिल्ली के पास का एक मैदान, जहाँ कौरव और पाण्डवों की लड़ाई हुई थी। २ कुरु देश की राजधानी, हस्तिनापुर नगर (भवि; ती १६)। °**चंद** पुं [°चन्द्र] इस नाम का एक राजा (धम्म; आवम)। °**चर** वि [°चर] कुरु देश का रहनेवाला। स्त्री. °**चरा**, °**चरी** (हे ३, ३१)। °**जंगल** न [°जङ्गल] कुरु-भूमि, देश-विशेष (भवि; ती ७)। °**णाह** पुं [°नाथ] दुर्योधन (गा ४४३; गउड)। °**दत्त** पुं [°दत्त] इस नाम का एक श्रेष्ठी और जैन महर्षि (उत २; संथा)। °**मई** स्त्री [°मती] ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती की पटरानी (सम १५२)। °**राय** पुं. [°राज] कुरु देश का राजा (ठा ७)। °**वइ** पुं [°पति] कुरु देश का राजा (उप ७२८ टी)।

कुरुकुया स्त्री [कुरुकुचा] पाँव का प्रक्षालन (ओघ ३१८)।

कुरुकुरु अक [कुरुकुराय्] 'कुर-कुर' आवाज करना, कुलकुलाना, बड़बड़ाना। कुरुकुराअसि (पि ५५८)। वकृ. **कुरुकुराअंत** (कप्पू)।

कुरुकुरिअ न [दे] रणरणक, औत्सुक्य (दे २, ४२)।

कुरुगुर देखो **कुरुकुरु**। कुरुगुरेंति (स ५०३)।

कुरुचिल्ल पुं [दे] १ कुलीर, जल-जन्तु-विशेष। २ न. ग्रहण, उपादान (दे २, ४१)। देखो **कुरुविल्ल**।

कुरुच्छ वि [दे] अनिष्ट, अप्रिय (दे २, ३९)।

कुरुड वि [दे] १ निर्दय, निष्ठुर (दे २, ६३; भवि)। २ निपुण, चतुर (दे २, ५३; भवि)।

कुरुग न [दे] राजा का या दूसरे का धन (राज)।

कुरुमाल सक [दे] टटोलना, धीरे धीरे हाथ फेरना। वकृ. **कुरुमालंत** (कुप्र ४४)।

कुरुय न [दे.कुरुक] माया, कपट (सम ७१)।
कुरुया स्त्री [दे. कुरुका] शरीर-प्रक्षालन, स्नान (वव १)।
कुरुर देखो **कुरर** (कुमा)।
कुरुल पुं [दे] १ कुटिल केश, टेढ़ा बाल (दे २, ६३; भवि)। २ वि. निर्दय। ३ निपुण, चतुर (दे २, ६३)।
कुरुल अक [कु] आवाज करना, कौए का बोलना। कुरुलहि (भवि)।
कुरुलिअ न [कुत] वायस का शब्द, कौए की आवाज (भवि)।
कुरुव देखो **कुरु** (पउम ११८, ८३; भवि)।
कुरुवग देखो **कुरवय** (सुपा ७७)।
कुरुविंद पुं [कुरुविन्द] १ मणि-विशेष, रत्न की एक जाति (गउड)। २ तृण-विशेष (पराग १; पराह १, ४—पत्र ७८)। ३ कुटिलिक-नामक रोग, एक प्रकार का जंघा रोग; 'एणीकुरुविंदत्तवट्टाणुपुव्वजंघे' (औप)। °**वत्त** पुंन [°वर्त्त] भूषण-विशेष (कप्प)।
कुरुविंदा स्त्री [कुरुविन्दा] इस नाम की एक वणिग्भार्या (पउम ५५, ३८)।
कुरुविल्ल [दे] देखो **कुरुचिल्ल** (पाअ)।
कुल पुंन [कुल] १ कुल, वंश, जाति (प्रासू १७)। २ पैतृक वंश (उत्त ३)। ३ परिवार, कुटुम्ब (उप ६, ७७)। ४ सजातीय समूह (पराह १,३)। ५ गोत्र (सुपा ८; ठा ४,१)। ६ एक आचार्य की संतति (कप्प)। ७ घर, गृह (कप्प; सूअ १, ४, १)। ८ सान्निध्य, सामीप्य (आचा)। ९ ज्योतिष-शास्त्र-प्रसिद्ध नक्षत्र-संज्ञा (सुज्ज १०; इक); 'कुलो, कुलं' (हे १, ३३)। °**उव्व** पुं [पूर्व] पूर्वज, पूर्व-पुरुष (गउड)। °**कम** पुं [°क्रम] कुलाचार, वंश-परम्परा का रिवाज (सट्ठि ७४)। °**कर** देखो नीचे °**गर** (ठा १०)। °**कोडि** स्त्री [°कोटि] जाति-विशेष (पव १५१; ठा ९; १०)। °**क्कम** देखो **कम** (सट्ठि ६)। °**गर** पुं [°कर] कुल की स्थापना करनेवाला, युग के प्रारम्भ में नीति वगैरह की व्यवस्था करनेवाला महापुरुष (सम १२९; धण ५)। °**गेह** न [°गेह] पितृ-गृह (सण)। °**घर** न [°गृह] पितृ-गृह (औप)। °**ज** वि [°ज] कुलीन; खानदानी कुल में उत्पन्न (द्र ५)। °**जाय** वि [°जात] कुलीन, खानदानी कुल का (सुपा ५९८; पाअ)। °**जुअ** वि [°युत] कुलीन (पव ६४)। °**णाम** न [°नामन्] कुल के अनुसार किया जाता नाम (अणु)। °**तंतु** पुं [°तन्तु] कुल-संतान, कुल-संतति (वव ६)। °**तिलग** पुंन [°तिलक] कुल में श्रेष्ठ (भग ११, ११)। °**त्थ** वि [°स्थ] कुलीन, खानदानी वंश का (गाया १, ५)। °**त्थेर** पुं [°स्थविर] श्रेष्ठ साधु (पंचू)। °**दिणयर** पुं [°दिनकर] कुल में श्रेष्ठ (कप्प)। °**दीव** पुं [°दीप] कुल प्रकाशक, कुल में श्रेष्ठ (कप्प)। °**देव** पुं [°देव] गोत्र-देवता (काल)। °**देवया** स्त्री [°देवता] गोत्र-देवता (सुपा ५९७)। °**देवी** स्त्री [°देवी] गोत्र-देवी (सुपा ६०२)। °**धम्म** पुं [°धर्म] कुलाचार (ठा १०)। °**पव्वय** पुं [°पर्वत] पर्वत-विशेष (सम ६६; सुपा ४३)। °**पुत्त** पुं [°पुत्र] वंश-रक्षक पुत्र (उत्त १)। °**बालिया** स्त्री [°बालिका] कुलीन कन्या (सुर १, ४३; हेका ३०१)। °**भूसण** न [°भूषण] १ वंश को दिपाने या चमकाने वाला। २ पुं. एक केवली भगवान् (पउम ३९,१२२)। °**मय** पुं [°मद] कुल का अभिमान (ठा १०)। °**मयहरिया, °महत्त-रिया** स्त्री [°महत्तरिका] कुल में प्रधान स्त्री, कुटुम्ब की मुखिया (सुपा ७६; आवम)। °**य** देखो °**ज** (सुपा ५९८)। °**रोग** पुं [°रोग] कुल व्यापक रोग (जं २)। °**वइ** पुं [°पति] तापसों का मुखिया, प्रधान संन्यासी (सुपा १६०; उप ३१)। °**वंस** पुं [°वंश] कुल रूप वंश, वंश (भग ११, १०)। °**वंस** पुं [°वंश्य] कुल में उत्पन्न, वंश में संजात (भग ९, ३३)। °**वडिंसय** पुं [°ावतंसक] कुल-भूषण, कुल-दीपक (कप्प)। °**वहू** स्त्री [°वधू] कुलीन स्त्री, कुलाङ्गना (श्राव ५; पि ३८७)। °**संपण्ण** वि [°संपन्न] कुलीन, खानदानी कुल का (औप)। °**समय** पुं [°समय] कुलाचार (सूअ १, १, १)। °**सेल** पुं [°शैल] कुल-पर्वत (सुपा ६००; सं ११९)। °**सेलया** स्त्री [°शैलजा] कुल पर्वत से निकली हुई नदी; 'कुलसेलयाव्वि सरिया तूणं नीययरमणुसरइ' (सुपा ६००)। °**हर** न [°गृह] पितृगृह, पिता का घर (गा १२१; सुपा ३६४; से ९, ५३)। °**ाजीव** वि [°ाजीव] अपने कुल की बड़ाई बतला कर आजीविका प्राप्त करनेवाला (ठा ५,१)। °**ाय** न [°ाय] पक्षी का घर, नीड़ (पाअ)। °**ायार** पुं [°ाचार] कुलाचार वंश-परम्परा से चला आता रिवाज (वव १)। °**ारिय** पुं [°ार्य] पितृ-पक्ष की अपेक्षा से आर्य (ठा ३, १)। °**ालय** वि [°ालय] गृहस्थों के घर भीख माँगनेवाला (सूअ २, ६)।
कुलंकर पुं [कुलङ्कर] इस नाम का एक राजा (पउम ८२, २९)।
कुलंप पुं [कुलम्प] इस नाम का एक अनार्य देश। २ उसमें रहनेवाली जाति (सूअ २,२)।
कुलकुल देखो **कुरकुर**। कुलकुलइ (भवि)।
कुलक्ख पुं [कुलक्ष] १ एक म्लेच्छ देश। २ उसमें रहनेवाली जाति (पराह १, १; इक)।
कुलग्घ पुं [कुलार्घ] एक अनार्य देश (पव २७४)।
कुलडा स्त्री [कुलटा] व्यभिचारिणी स्त्री, पुंश्चली (सुपा ३८४)।
कुलत्थ पुंस्त्री [कुलत्थ] अन्न-विशेष, कुलथी (ठा ५, ३; गाया १,५)। स्त्री. °**त्था** (श्रा १८)।
कुलफंसण पुं [दे] कुल-कलंक, कुल का दाग, कुल की अपकीर्ति (दे २, ४२; भवि)।
कुलय देखो **कुडव** (तंदु २९; अणु १५१)।
कुलय न [कुलक] तीन या चार से ज्यादा परस्पर सापेक्ष पद्य (समत्त ७६)।
कुलल पुं [कुलल] १ पक्षि-विशेष (पराह १, १)। २ गृद्ध पक्षी (उत्त १४)। ३ कुरर पक्षी (सूअ १, ११)। ४ मार्जार, बिड़ाल; 'जहा कुक्कुडपायस्स णिच्चं कुललओ भयं' (दस ४)।
कुललय पुंन [दे] कुल्ला, गंडूष (पव ३८)।
कुलव देखो **कुडव** (जो २)।
कुलसंतइ स्त्री [दे] चुल्ली, चूल्हा (दे २, ३९)।
कुलाअल पुं [कुलाचल] कुलपर्वत (त्रि ८२)।
कुलाण देखो **कुणाल** (राज)।
कुलाल पुं [कुलाल] कुम्भकार, कुम्हार (पाअ; गउड)।

कुलाल पुं [कुलाट] १ मार्जार, बिलाड़। २ ब्राह्मण, विप्र (सूअ २, ६)।

कुलिंगाल पुं [कुलाङ्गार] कुल में कलंक लगानेवाला, दुराचारी (ठा ४, १—पत्र १८५)।

कुलिअ न [कुलिक] खेत में घास काटने का छोटा काष्ठ-विशेष (अरण ४८)।

कुलिक } पुं [कुलिक] १ ज्योतिष-शास्त्र
कुलिय } में प्रसिद्ध एक कुयोग (गण १८)। २ न. एक प्रकार का हल (पराह १, १)।

कुलिय न [कुड्य] १ भीत, भित्ति (सूअ १, २, १)। २ मिट्टी की बनाई हुई भीत (बृह २; कस)।

कुलिया स्त्री [कुलिका] भींत, कुड्य (बृह २)।

कुलिर पुं [कुलिर] मेष वगैरह बारह राशि में चतुर्थ राशि (पउम १७, १०८)।

कुलिव्वय पुं [कुटिव्रत] परिव्राजक का एक भेद, तापस-विशेष, घर में ही रहकर क्रोधादि का विजय करनेवाला (औप)।

कुलिस पुंन [कुलिश] वज्र, इन्द्र का मुख्य आयुध (पाअ; उप ३२० टी)। °**णिणाय** पुं [°निनाद] रावण का इस नाम का एक सुभट (पउम ५६, २६)। °**मज्झ** न [°मध्य] एक प्रकार की तपश्चर्या (पउम २२, २४)।

कुलीकोस पुं [कुटीकोश] पक्षि-विशेष (पराह १, १—पत्र ८)।

कुलीण वि [कुलीन] उत्तम कुल में उत्पन्न (प्रासू ७१)।

कुलीर पुं [कुलीर] जन्तु-विशेष (पाअ; दे २ ४१)।

कुलुंच सक [दह्, म्लै] १ जलाना। २ म्लान करना। संकृ. 'मालइकुसुमाइं कुलुंचिऊण मा जाणि णिव्वुओ सिसिरो' (गा (४२६)।

कुलुक्किय वि [दे] जला हुआ, 'विरहदवग्गिकुलुक्कियकायहो' (भवि)।

कुलोवकुल पुं [कुलोपकुल] ये चार नक्षत्र—अभिजित्, शतभिषा, आर्द्रा और अनुराधा (सुज्ज १०, ५)।

कुल्ल पुं [दे] १ ग्रीवा, कण्ठ। २ वि. असमर्थ, अशक्त। ३ छिन्न-पुच्छ, जिसकी पूँछ कट गई हो वह (दे २, ६१)।

कुल्ल पुंन [दे] चूतड़; गुजराती में 'कुलो' (सुख ८, १३)।

कुल्ल अक [कूर्द्] कूदना। वकृ. 'माउईरक्खसाए बलं मुक्कबुक्कारपाइक्ककुल्लंतवग्गंतसेणामुहं' (पउम ५३, ७६)।

कुल्लउर न [कुल्यपुर] नगर-विशेष (संथा)।

कुल्लड न [दे] १ चुल्ली, चूल्हा (दे २,६३)। २ छोटा पात्र, पुड़वा (दे २, ६३; पाअ)।

कुल्लरिअ पुं [दे] कान्दविक, हलवाई, मिठाई बनानेवाला (दे २, ४१)।

कुल्लरिया स्त्री [दे] हलवाई की दूकान (आवम)।

कुल्ला स्त्री [कुल्या] १ जल की नाली, सारिणी (कुमा; हे २, ७६)। २ नदी, कृत्रिम नदी (कप्पू)।

कुल्लाग पुं [कुल्याक] संनिवेश-विशेष, मगध देश का एक गाव (कप्प)।

कुल्ली देखो **कुल्ला** (धर्मवि ११२)।

कुल्लुडिया स्त्री [कुल्लुडिका] घटिका, घड़ी (सूअ १,४,२)।

कुल्लुरी स्त्री [दे] खाद्य-विशेष, गुजराती—'कुलेर' (पव ४)।

कुल्लूरिअ [दे] देखो **कुल्लरिअ** (महा)।

कुल्ह पुं [दे] शृगाल, सियार (दे २, ३४)।

कुवणय न [दे] लकुट, यष्टि, लड़की, छड़ी (राज)।

कुवलय न [कुवलय] १ नीलोत्पल, हरा रंग का कमल (पाअ)। २ चन्द्र-विकासी कमल (श्रा २७)। ३ कमल, पद्म (गा ५)।

कुवली स्त्री [दे] वृक्ष-विशेष (कुप्र २४६)।

कुविंद पुं [कुविन्द] तन्तुवाय, कपड़ा बुननेवाला (सुपा १८८)। °**वल्ली** स्त्री [°वल्ली] वल्ली-विशेष (पराण १—पत्र ३३)।

कुविय वि [कुपित] क्रुद्ध, जिसको गुस्सा हुआ हो वह (पराह १, १; सुर २, ५; हेका ७३; प्रासू ६४)।

कुविय देखो **कुप्प** = कुप्य (पराह १, ५; सुपा ४०६)। °**साला** स्त्री [°शाला] बिछौना आदि गृहोपकरण रखने की कुटिया, घर का वह भाग जिसमें गृहोपकरण रक्खे जाते हैं (पराह १, ४—पत्र ११३)।

कुवेणी स्त्री [कुवेणी] शस्त्र-विशेष, एक प्रकार का हथियार (पराह १, ३—पत्र ४४)।

कुवेर देखो **कुबेर** (महा)।

कुव्व सक [कृ, कुर्व] करना, बनाना। कुव्वइ (भग)। भूका. कुव्वित्था (पि ५१७)। वकृ. **कुव्वंत, कुव्वमाण** (ओघ १५ भा; गाया १, ६)।

कुस पुंन [कुश] तृण-विशेष, दर्भ, डाभ, काश (विपा १, ६; निचू १)। २ पुं दाशरथी राम के एक पुत्र का नाम (पउम १००, २)। °**ग्ग** [°ग्र] दर्भ का अग्र-भाग जो अत्यन्त तीक्ष्ण होता है (उत्त ७)। °**ग्गनयर** न [°ग्रनगर] नगर-विशेष, बिहार का एक नगर, राजगृह, जो आजकल 'राजगिर' नाम से प्रसिद्ध है (पउम २, ६८)। °**ग्गपुर** न [°ग्रपुर] देखो पूर्वोक्त अर्थ (सुर १,८१)। °**ट्ट** पुं [°वर्त्त] आर्य देश-विशेष (सत्त ६७ टी)। °**ट्ठ** पुं [°र्य] आर्य देश-विशेष, जिसकी राजधानी शौर्यपुर थी (इक)। °**त्त** न [°क्त, °क्त] आस्तरण-विशेष, एक प्रकार का बिछौना (गाया १, १—पत्र १३)। °**त्थलपुर** न [°स्थलपुर] नगर-विशेष (पउम २१, ७६)। °**मट्टिया** स्त्री [मृत्तिका] डाभ के साथ कुटी जाती मिट्टी (निचू १८)। °**वर** पुं [°वर] द्वीप-विशेष (अरण—टी)।

कुस वि [कौश] दर्भ का बना हुआ (आचा २, २, ३, १४)।

कुसण न [दे] तीमन, आर्द्र करना (दे २, ३५)।

कुसण न [दे] गोरस (पिंड २८२)।

कुसणिय वि [दे] गोरस से बना हुआ करम्बा आदि खाद्य, 'कुसु (? स) णियंति' (पिंड २८२ टी)।

कुसल वि [कुशल] १ निपुण, चतुर, दक्ष, अभिज्ञ (आचा; गाया १, २)। २ न. सुख, हित (राय)। ३ पुण्य (पंचा ६)।

कुसला स्त्री [कुशला] नगरी-विशेष, विनीता, अयोध्या (आवम)।

कुसार देखो **कूसार** (स ६८६)।

कुसी स्त्री [कुशी] लोहे का बना हुआ एक हथियार (दे ८, ५)।

कुसीलव पुं [कुशीलव] अभिनयकर्ता नट (कप्पू)।

कुसुंभ पुंन [कुसुम्भ] १ वृक्ष-विशेष, कसुम, बरें (ठा ८—पत्र ४०५)। २ न. कुसुम का पुष्प, जिसका रंग बनता है (जं २)। ३ रंग-विशेष (श्रा १२)।

कुसुंभिअ वि [कुसुम्भित] कुसुम्भ रंगवाला (श्रा १२)।

कुसुंभिल पुं [दे] पिशुन, दुर्जन, चुगलखोर (दे २, ४०)।

कुसुंभी स्त्री [कुसुम्भी] वृक्ष-विशेष, कुसुम का पेड़ (पाअ)।

कसुम अक [कुसुमय्] फूल आना। कुसुमंति (संबोध ४७)।

कुसुम न [कुसुम] १ पुष्प, फूल (पाअ; प्रासू ३४)। २ पुं. इस नाम का भगवान् पद्मप्रभ का शासनाधिष्ठायक यक्ष (संति ७)। °केउ पुं [°केतु] अरुणवर द्वीप का अधिष्ठायक देव (दीव)। °चाय, °चाव पुं [°चाप] कामदेव, मकरध्वज (सुपा ५६; ५३०; महा)। °ज्झय पुं [°ध्वज] वसन्त ऋतु (कुमा)। °णयर न [°नगर] नगर-विशेष, पाटलिपुत्र, आजकल जो 'पटना' नाम से प्रसिद्ध है (आवम)। °दंत पुं [°दन्त] एक तीर्थङ्कर देव का नाम, इस अवसर्पिणी काल के नववें जिनदेव, श्री सुविधिनाथ (पउम १, ३)। °दाम न [°दामन्] फूलों की माला (उवा)। °धणु न [धनुष्] कामदेव (कुमा)। °पुर न [°पुर] देखो ऊपर °णयर (उप ४८६)। बाण पुं [°बाण] कामदेव (सुर ३, १६२; पाअ)। °रअ पुं [°रजस्] मकरन्द (पाअ)। °रद पुं [°रद] देखो दंत (पउम २०, ५)। °लया स्त्री [°लता] छन्द-विशेष (अजि १५)। °संभव पुं [°संभव] मधुमास, चैतमास (अणु)। °सर पुं [°शर] कामदेव (सुर ३, १०६)। °ाअर पुं [°ाकर] इस नाम का एक छन्द (पिंग)। °ाउह पुं [°ायुध] काम, कामदेव (स ५३८)। °ावई स्त्री [°ावती] इस नाम की एक नगरी (पउम ५, २६)। °ासव पुं [°ासव] किंजल्क, पराग, पुष्परेणु (णाया १, १; औप)।

कुसुमसंभव पुं [कुसुमसम्भव] वैशाख मास का लोकोत्तर नाम (सुज्ज १०, १६)।

कुसमाल वि [कुसमवत्] फूलवाला (स ६६७)।

कुसुमाल पुं [दे] चोर, स्तेन (दे २, १०)।

कुसुमालिअ वि [दे] शून्य-मनस्क, भ्रान्त-चित्त (दे २, ४२)।

कुसुमिअ वि [कुसुमित] पुष्पित, पुष्प-युक्त, खिला हुआ (णाया १, १; पउम ३३, १४८)।

कुसुमिल्ल वि [कुसुमवत्] ऊपर देखो (सुपा २२३)।

कुसुर [दे] देखो भसुर (हे २, १७४ टि)।

कुसूल पुं [कुशूल] कोष्ठ, अन्न रखने के लिए मिट्टी का बना एक प्रकार का बड़ा पात्र (पाअ)।

कुस्सुमिण पुं [कुस्वप्न] दुष्ट स्वप्न (संबोध ४२)।

कुह अक [कुथ्] सड़ जाना, दुर्गन्धी होना। कुहइ (भवि; हे ४, ३६५)।

कुह पुं [कुह] वृक्ष, पेड़, गाछ; 'कुहा महीरुहा वच्छा' (दसनि १)।

कुह देखो कहं (गा ५०७ अ)।

कुहंड पुं [कूष्माण्ड] व्यन्तर देवों की एक जाति (औप)।

कुहंड न [कूष्माण्ड] १ कुम्हड़ा, पेठा, कोहँड़ा (कम्म ५, ८५)।

कुहंडिया स्त्री [कूष्माण्डी] कोहँड़ा का गाछ (राय)।

कुहक्क } कुहग } देखो कुहय (धर्मवि १३५; कुप्र ८)।

कुहग पुं [कुहक] कन्द-विशेष, 'लाहिणीहू य थीहू य, कुहगा य तहेव य' (उत्त ३६, ६६ का)।

कुहड वि [दे] कुब्ज, कूबड़ा (दे २, ३६)।

कुहण पुं [कुहन] १ वृक्षों का एक प्रकार, वृक्षों की एक जाति; 'से किं तं कुहणा? कुहणा अणेगविहा पण्णत्ता' (पण्ण १—पत्र ३५)। २ वनस्पति-विशेष। ३ भूमि-स्फोट (पण्ण १—पत्र ३०; आचा)। ४ देश-विशेष। ५ इसमें रहनेवाली जाति (पण्ह १, १—पत्र १४; इक)।

कुहण वि [क्रोधन] क्रोधी, क्रोध करनेवाला (पण्ह १, ४—पत्र १००)।

कुहणी स्त्री [दे] कूर्पर, हाथ का मध्य-भाग (सुपा ४१२)।

कुहय पुंन [कुहक] १ वायु-विशेष, दौड़ते हुए अश्व के उदर-प्रदेश के समीप उत्पन्न होता एक प्रकार का वायु; 'घणगज्जिय-हयकुहए (गच्छ २)। २ इन्द्रजालादि कौतुक; 'अलोलुए अक्कुहए अमाई (दस ६, ३)।

कुहर न [कुहर] १ पर्वत का अन्तराल (णाया १, १—पत्र ६३); 'गेहंव वित्तरहिअं णिज्जरकुहरं व सलिलसुण्णविअं' (गा ६०७)। २ छिद्र, बिल, विवर (पण्ह १, ४; पासू २)। ३ पुं. ब. देश-विशेष (पउम ६८, ६७)।

कुहाड पुं [कुठार] कुल्हाड़, फरसा (विपा १, ६; पउम ६६, २४; स २,४)।

कुहाडी स्त्री [कुठारी] कुल्हाड़ी, कुठार (उप ९६३)।

कुहावणा स्त्री [कुहना] १ आश्चर्य-जनक, दम्भ-क्रिया, दम्भ-चर्या। २ लोगों से द्रव्य हासिल करने के लिए किया हुआ कपट-भेष (जीत)।

कुहिअ वि [दे] लिप्त, पोता हुआ (दे २, ३५)।

कुहिअ वि [कुथित] १ थोड़ी दुर्गन्धवाला (णाया १, १२—पत्र १७३)। २ सड़ा हुआ (उप ५६७ टी)। ३ विनष्ट (णाया १, १)। °पूइय वि [पूतिक] अत्यन्त सड़ा हुआ (पण्ह २, ५)।

कुहिणी स्त्री [दे] १ कूर्पर, हाथ का मध्य भाग। २ रथ्या, महल्ला (दे २, ६२)।

कुहिल पुंस्त्री [कुहुमत्] कोयल पक्षी (पिंग)।

कुहु स्त्री [कुहु] कोकिल पक्षी की आवाज (पिंग)।

कुहुण देखो कुहण=कुहन (उत्त ३६, ६६ का)।

कुहुव्वय पुं [कुहुव्रत] कन्द-विशेष (उत्त ३६, ६८)।

कुहेड पुं [दे] ओषधी-विशेष, गुरेटक, एक प्रकार का हर्रे का गाछ (दे २, ३५)।

कुहेड } कुहेडअ } पुं [कुहेट, °क] १ चमत्कार उपजानेवाला मन्त्र-तन्त्रादि ज्ञान;

'कुहेडविज्जासवदारजीवी न गच्छई सरणं तम्मि काले' (उत्त २०, ४५)। २ आभाणक, वक्रोक्ति-विशेष; 'तेसु न विम्हयइ सयं आहट्टुकुहेडएहिं व' (पव ७३ टी; बृह १)।

कुहेडग पुंन [दे] अजमा (पंचा ५, ३०)।

कुहेडगा स्त्री [कुहेटका] कन्द-विशेष, पिण्डालु (पव ४)।

कूअ देखो **कूव** = कूप (चंड; हम्मीर ३०)।

कूअग न [कूजन] १ अव्यक्त शब्द। २ वि. ऐसी आवाज करनेवाला (ठा ३, ३)।

कूअणया स्त्री [कूजनता] कूजन, अव्यक्त शब्द (ठा ३, ३)।

कूइआ स्त्री [कूपिका] कूई, छोटा कूप (चंड)।

कूइय न [कूजित] अव्यक्त आवाज (महा; सुर ३, ४८)।

कूइया स्त्री [कूजिका] किवाड़ आदि का अव्यक्त आवाज (पिंड ३५६ टी)।

कूचिआ स्त्री [कूर्चिका] दाढ़ी-मूँछ का बाल (संबोध ३१)।

कूचिया स्त्री [कूचिका] बुद्बुद, बुलबुला, पानी का बुलका (विसे १४६७)।

कूज अक [कूज्] अव्यक्त शब्द करना। कूजाहि (चारु ? १)। वकृ. **कूजंत** (मै २६)।

कूजिअ न [कूजित] अव्यक्त आवाज (कुमा; मै २६)।

कूड सक [कूटय्] १ झूठा ठहराना। २ अन्यथा करना। कूडे (अणु ५० टी)।

कूड पुं [दे. कूट] पाश, फाँसी, जाल (दे २, ४३; राय; उत्त ५; सूअ १, ५, २)।

कूड पुंन [कूट] १ असत्य, छल-युक्त, झूठा; 'कूडतुलकूडमाणे' (पडि)। २ भ्रान्ति-जनक वस्तु (भग ७, ६)। ३ माया, कपट, छल, दगा, धोखा (सुपा ६२७)। ४ नरक (उत्त ५)। ५ पीड़ा-जनक स्थान, दुःखोत्पादक जगह (सूअ १, ५, २; उत्त ६)। ६ शिखर, टोंच (ठा ४, २; रंभा)। ७ पर्वत का मध्य भाग (जं २)। ८ पाषाणमय यन्त्र-विशेष, मारने का एक प्रकार का यन्त्र (भग १५)। ९ समूह, राशि (निर १, १)। °**कारि** वि [°कारिन्] धोखेबाज, दगाखोर (सुपा ६२७)। °**ग्गाह** पुं [°ग्राह] धोखे से जीवों को फँसानेवाला (विपा १, २)। स्त्री. °**ग्गाहणी** (विपा १, २)। °**जाल** न [°जाल] धोखे का जाल, फाँसी (उत्त १६)। °**तुला** स्त्री [°तुला] झूठी नाप, बनावटी नाप (उवा १)। °**पास** न [°पाश] एक प्रकार की मछली पकड़ने का जाल (विपा १, ८)। °**प्पओग** पुं [°प्रयोग] प्रच्छन्न पाप (आव ४)। °**लेह** पुं [°लेख] १ जाली लेख, दूसरे के हस्ताक्षर-तुल्य अक्षर बना कर धोखेबाजी करना। २ दूसरे के नाम से झूठो चिट्ठी वगैरह लिखना (पडि; उवा)। °**वाहि** पुं [°वाहिन्] बैल, बलीवर्द (आव ५)। °**सक्ख** न [°साक्ष्य] झूठी गवाही (पंचा १)। °**सक्खि** वि [°साक्षिन्] झूठी साक्षी देनेवाला (श्रा १४)। °**सक्खिज्ज** न [°साक्ष्य] झूठी गवाही (सुपा ३७५)। °**सामलि** स्त्री [°शाल्मलि] १ वृक्ष-विशेष के आकार का एक स्थान, जहाँ गरुड जातीय देवों का निवास है (सम १३; ठा २, ३)। २ नरक स्थित वृक्ष-विशेष (उत्त २०)। °**गार** न [°गार] १ शिखर के आकारवाला घर (ठा ४, २)। २ पर्वत पर बना हुआ घर (आचा २, ३, ३)। ३ पर्वत में खुदा हुआ घर (निचू १२)। ४ हिंसा-स्थान (ठा ४, २)। °**गारसाला** स्त्री [°गारशाला] षड्यन्त्र वाला घर, षड्यन्त्र करने के लिए बनाया हुआ घर (विपा १, ३)। °**हच्च** न [°हत्य] पाषाण-मय यन्त्र की तरह मारना, कुचल डालना (भग १५)।

कूड न [कूट] १ पाश, जाल, फाँस, फंदा (सूअ १, ५, २, १८; राय ११४)। २ लगातार २७ दिन का उपवास (संबोध ५८)।

कूडग देखो **कूड** (आवम)।

कूण अक [कूणय्] संकुचित होना, संकोच पाना (गउड)।

कूणिअ वि [कूणित] संकोच-प्राप्त, संकोचित (गउड)।

कूणिअ वि [दे] ईषद् विकसित, थोड़ा खिला हुआ (दे २, ४४)।

कूणिअ पुं [कूणिक] राजा श्रेणिक का पुत्र (औप)।

कूणिय वि [कूणित] सड़ा हुआ (कुप्र १६०)।

कूय अक [कूज्] अव्यक्त आवाज करना। वकृ. **कूयंत, कूयमाण** (ओघ २१ भा; विपा १, ७)।

कूय पुं [कूप] १ कूप, कुँआ (गउड)। २ घी, तेल वगैरह रखने का पात्र, कुतुप (णाया १, १—पत्र ५८; औप)। °**दद्दुर** पुं [°दर्दुर] १ कूप का मेढ़क। २ वह मनुष्य जो अपना घर छोड़ बाहर न गया हो, अल्पज्ञ (उप ६४८ टी। देखो **कूव**।

कूर वि [क्रूर] १ निर्दय, निष्कृप, हिंसक (पण्ह १, ३)। २ भयंकर, रौद्र (णाया १, ८; सूअ १, ७)। ३ पुं. रावण का इस नाम का एक सुभट (पउम ५६, २९)।

कूर पुंन [कूर] वनस्पति-विशेष (सूअ २, ३, १६)।

कूर न [कूर] भात, ओदन (दे २, ४३)। °**गडुअ**, °**गड्डुअ** पुं [°गडुक] एक जैन महर्षि (आचा; भाव ८)।

कूर° अ [ईषत्] थोड़ा, अल्प (हे २, १२९; षड्)।

कूरपिउड न [दे] भोजन-विशेष, खाद्य-विशेष (आवम)।

कूरि वि [क्रूरिन्] १ निर्दयी, क्रूर चित्तवाला। २ निर्दय परिवारवाला (पण्ह १, ३)।

कूल न [दे] सैन्य का पिछला भाग (दे २, ४३; से १२, ९२)।

कूल न [कूल] तट, किनारा (पाअ; णाया १, १६)। °**धमग** पुं [°ध्मायक] एक प्रकार का वानप्रस्थ जो किनारे पर खड़ा हो आवाज कर भोजन करता है (औप)। **वालग, वालय** पुं [°बालक] एक जैन मुनि (आव; काल)।

कूलंकसा स्त्री [कूलङ्कषा] नदी, तीर को तोड़नेवाली नदी (वेणी १२०)।

कूव पुंन [दे] १ चुराई चीज की खोज में जाना (दे २, ६२; पाअ)। २ चुराई चीज को छुड़ानेवाला, छीनी हुई चीज को लड़ाई वगैरह कर वापस लेनेवाला; 'तए णं सा दोवदी देवी पउमणामं एवं वयासी—एवं खलु देवा० जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे बारवतीए णयरीए कण्हे णामं वासुदेवे मम प्पियभाउए परिवसति; तं जइ णं से छण्हं

मासाणं ममं कूवं नो हव्वमागच्छइ, तए णं अहं देवा० जं तुमं वदसि तस्स आणाओवायवयणणिद्देसे चिट्ठिस्सामि' (णाया १, १६—पत्र २१५); 'दोवईए कूवग्गाहा' (उप ६४८ टी; दे ६, ६२)।

कूव, कूवग, कूवय पुं [कूप, °क] १ कूप, कुँआ, गर्त्त (प्रासू ४५)। २ स्नेह-पात्र, कुतुप, कुप्पा (वज्जा ७२; उप पृ ४१२)। ३ जहाजका मध्य स्तम्भ, जहांपर पाल बांधा जाता है (औप; णाया १,८)। °तुला स्त्री [°तुला] कूपतुला, ढेंकुवा (दे १, ६३; ८७)। °मंडुक्क पुं [°मण्डूक] १ कूप का मेढक। २ अल्पज्ञ मनुष्य, जो अपना घर छोड़ बाहर न जाता हो (निचू १)।

कूवय पुं [कूपक] देखो कूव = कूप (रयण ३२)। स्वनाम-प्रसिद्ध एक जैन मुनि (अंत ३)।

कूवर पुंन [कूवर] १ जहाज का एक अवयव, जहाज का मुख-भाग; 'संचुण्णियकट्ठकूवरा' (णाया १, ६—पत्र १५७)। २ रथ या गाड़ी वगैरह का एक अवयव, युगन्धर (से १२, ८४)।

कूवल न [दे] जवन-वस्त्र (दे २, ४३)।

कूविय न [कूजित] अव्यक्त शब्द, 'तह कहवि कुणइ सो सुरयकूवियं तप्पुरो जेण' (सुपा ५०८)।

कूविय पुं [कूपिक] इस नाम का एक संनिवेश—गांव (आवम)।

कूविय वि [दे] मोष-व्यावर्त्तक, चुराई हुई चीज की खोज कर उसे लानेवाला (णाया १, १८—पत्र २३६)। २ चोर की खोज करनेवाला (णाया १, १)।

कूविया स्त्री [कूपिका] १ छोटा कूप (उप ७२८टी)। २ छोटा स्नेह-पात्र, कुप्पी (राज)।

कूवी स्त्री [कूपी] ऊपर देखो, 'एयाओ अमयकूवीओ' (उप ७२८ टी)।

कूसार पुं [दे] गर्त्ताकार, गर्त्त जैसा स्थान, खड्डा; 'कूसारखलंतपओ' (दे २, ४४; पाअ)।

कूहंड पुं [कूष्माण्ड] व्यन्तर देवों की एक जाति (पण्ह १, ४)।

केसक [क्री] कीनना, खरीदना। केइ, केअइ (षड्)।

के° वि [कियत्] कितना? °च्चिरेण अ [°चिरेण] कितने समय में? (अंत २४)। °च्चिरं अ [°चिरं] कितने समय तक? (पि १४९)। °च्चिरेण देखो °चिरेण (पि १४९)। °दूर न [°दूर] कितना दूर? 'केदूरे सा पुरी लंका?' (पउम ४८, ४७)। °महालय वि [°महालय] कितना बड़ा? (णाया १, ८)। °महालिय वि [°महत्] कितना बड़ा? (पण्ण २१)। °महिड्ढिय वि [°महर्द्धिक] कितनी बड़ी ऋद्धिवाला (पि १४९)।

केअइ पुं [केकय] देश-विशेष, जिसका आधा भाग आर्य और आधा भाग अनार्य है, सिन्धु देश की सीमा पर का देश (इक); 'केयइअद्धं च आरियं भणियं' (पण्ण १; सत्त ६७ टी)।

केअई स्त्री [केतकी] वृक्ष-विशेष, केवड़ा का वृक्ष (कुमा; दे ८, २५)।

केअग, केअय पुं [केतक] १ वृक्ष-विशेष, केवड़ा का गाछ, केतकी (गउड)। २ न. केतकी-पुष्प, केवड़ा का फूल (गउड)। ३ चिन्ह, निशान (ठा १०)।

केअगी स्त्री [केतकी] १ केवड़ा का गाछ या पौधा। २ केवड़ा का फूल (राय ३४)।

केअल देखो केवल (अभि २६)।

केअव देखो कइअव = कैतव; 'जं केअवेण पिम्मं' (गा ७४४)।

केआ स्त्री [दे] रज्जु, रस्सी (दे २, ४४; भग १३, ६)।

केआर पुं [केदार] १ क्षेत्र, खेत (सुर २, ७८)। २ आलवाल, क्यारी (पाअ; गा ६६०)।

केआरवाण पुं [दे] वृक्ष-विशेष, पलाश का पेड़ (दे २, ४५)।

केआरिआ स्त्री [केदारिका] घासवाली जमीन, गोचर भूमि (कप्पू)।

केउ पुं [केतु] १ ध्वज, पताका (सुपा २२९)। २ ग्रह-विशेष (सुज्ज २०; गउड)। ३ चिन्ह, निशान (औप)। ४ तूल-सूत्र, रूई का सूता (गउड)। °खेत्त न [°क्षेत्र] मेघ-वृष्टि से ही जिसमें अन्न पैदा हो सकता हो ऐसा क्षेत्र-विशेष (आव ६)। °मई स्त्री [°मती] किन्नरेन्द्र और किंपुरुषेन्द्र की अग्र-महिषी का नाम, इन्द्राणी-विशेष (भग १०, ५; णाया २)। °माल न [°माल] वैताढ्य पर्वत पर स्थित इस नाम का एक विद्याधर-नगर (इक)।

केउ पुं [दे] कन्द, काँदा (दे २,४४)।

केउ पुंन [केतु] एक देवविमान (देवेन्द्र १३४)।

केउग, केउय पुं [केतुक] पाताल-कलश-विशेष (सम ७१; ठा ४,२—पत्र २२६)।

केऊर पुंन [केयूर] १ हाथ का आभूषण-विशेष, अङ्गद, बाजूबन्द (पाअ; भग ९,३३)। २ पुं. दक्षिण समुद्र का पाताल-कलश (पव २७२)।

केऊरपुत्त पुं [दे] गाय तथा भैंस का बच्चा (संक्षि ४७)।

केऊव पुं [केयूप] दक्षिण समुद्र का एक पाताल-कलश (इक)।

केंकाय अक [केङ्काय्] 'कें-कें' आवाज करना। वकृ. 'पेच्छइ तओ जडागिं केंकायंतं महीपडियं' (पउम ४४, ५४)।

केंसुअ देखो किंसुअ (कुमा)।

केकई स्त्री [कैकयी] १ राजा दशरथ की एक रानी, केकय देश के राजा की कन्या (पउम २२, १०८; उप पृ ३७)। २ आठवें वासुदेव की माता (सम १५२)। ३ अपर-विदेह के विभीषण-वासुदेव की माता (आवम)।

केकय पुं [केकय] १ देश-विशेष, यह देश प्राचीन वाह्लीक प्रदेश के दक्षिण की ओर तथा सिंधु देश की सीमा पर स्थित है। २ इस देश का रहनेवाला (पण्ह १, १)। ३ केकय देश का राजा (पउम २२, १०८)।

केकसिया स्त्री [कैकसिका] रावण की माता का नाम (पउम ७, ५४)।

केका स्त्री [केका] मयूर-वाणी। °रव पुं [°रव] मयूर की आवाज, मयूर-शब्द (णाया १, १—पत्र २५)।

केकाइय न [केकायित] मयूर का शब्द (सुपा ७९)।

केक्कई देखो केकई (पउम ७६, २६)।

केक्कय देखो केकय (पव २७४)।

केकसी स्त्री [कैकसी] रावण की माता (पउम १०३, ११४)।

केक्काइय देखो केकाइय (णाया १, ३—पत्र ६५)।

केगई देखो केकई (पउम १, ६४; २०, १८४)।

केगाइय देखो केकाइय (राज)।

केज्ज वि [क्रेय] बेचने की चीज (ठा ६)।

केढ } पुं [कैटभ] १ इस नाम का एक
केढव } प्रतिवासुदेव राजा (पउम ५, १५६)। २ दैत्य-विशेष (हे १, २४०; कुमा)। °रिउ पुं [°रिपु] श्रीकृष्ण, नारायण (कुमा)।

केत्त देखो केत्तिअ (हास्य १३६)।

केत्तिअ } वि [कियत्] कितना? (हे २,
केत्तिल } १५७; कुमा; षड्; महा)।

केत्तुल (अप) ऊपर देखो (कुमा; षड्; हे ४, ४०८)।

केत्थु (अप) अ [कुत्र] कहाँ, किस जगह? (हे ४, ४०५)।

केद्दह देखो केत्तिअ (हे २, १५७; प्राप्र)।

केम } (अप) देखो कहं (षड्; हे ४, ४०१;
केम्व } ४१८)।

केय न [केत] १ गृह, घर। २ चिह्न, निशानी (पव ४)।

केयण न [केतन] १ वक्र वस्तु, टेढ़ी चीज। २ चंगेरी का हाथा (ठा ४,२—पत्र २१८)। ३ संकेत, संकेत-स्थान (वव ४)। ४ धनुष की मूठ (उत्त ६)। ५ मछली पकड़ने का जाल (सूअ १, ३, १)। ६ स्थान, जगह (आचा)। ७ 'कडवल्लसंठितं' (सूत्र० चूर्णी. पत्र ८२ गा० १७६)।

केयय देखो केकय (सुपा १४२)।

केयव्व वि [क्रेतव्य] खरीदने योग्य वस्तु (उत्त ३५, १५)।

केर } वि [दे. संबन्धिन्] संबन्धी वस्तु,
केरय } संबन्धी चीज (स्वप्न ५१; हे ४, ३५६; ३७३; प्राप्र; भवि)।

केरव न [कैरव] १ कुमुद, सफेद कमल (पाअ; सुपा ४६)। २ कैतव, कपट (हे १, १५२)।

केरिच्छ वि [कीदृक्ष] कैसा, किस तरह का? (हे १, १०५; प्राप्र; काल)।

केरिस वि [कीदृश] कैसा, किस तरह का? (प्रामा)।

केरी स्त्री [क्रकटी] वृक्ष-विशेष, करीर का गाछ; 'निबंबबोरिकेरि—' (उप १०३१ टी)।

केल देखो कयल = कदल (हे १, १६७)।

केलाइय वि [समारचित] साफसुथरा किया हुआ (कुमा)।

केलाय सक [समा + रचय] समारचन करना, साफ कर ठीक करना। केलायइ (हे ४, ६५)।

केलास पुं [कैलास] राहु का कृष्ण पुद्गल-विशेष (सुज्ज २०)।

केलास पुं [कैलास] १ स्वनाम-प्रसिद्ध पर्वत-विशेष (से ६, ७३; गउड; कुमा)। २ इस नाम का एक नाग-राज (इक)। ३ इस नाग-राज का आवास-पर्वत (ठा ४, २)। ५ मिट्टी का एक तरह का पात्र (निर १, ३)। देखो कइलास।

केलि देखो कयलि (कुमा)।

केलि स्त्री [दे] कन्द-विशेष (उत्त ३६, ६८; सुख ३६, ६८)।

केलि } स्त्री [केलि, °ली] १ क्रीड़ा, खेल,
केली } मजाक (कुमा; पाअ; कप्पू)। २ परि-हास, हाँसी, ठट्ठा (पाअ; औप)। ३ काम-क्रीड़ा (कप्पू; औप)। °आर वि [°कार] क्रीड़ा करनेवाला, विनोदी (कप्पू)। °काणग न [°कानन] क्रीडोद्यान (कप्पू)। °किल, °गिल वि [°किल] १ विनोदी, क्रीड़ा-प्रिय (सुपा ३१४)। २ पुं. व्यन्तर-जातीय देव-विशेष (सुपा ३२०)। ३ पुंन. स्थान-विशेष (पउम ५५, १७)। °भवण न [°भवन] क्रीड़ा-गृह, विलास-घर (कप्पू)। °विमाण न [°विमान] विलास-महल (कप्पू)। °सअण न [°शयन] काम-शय्या (कप्पू)। °सेज्जा स्त्री [°शय्या] काम-शय्या (कप्पू)।

केली देखो कयली (हे १, १२०)।

केली स्त्री [दे] असती, कुलटा, व्यभिचारिणी स्त्री (दे २, ४४)।

केलीगिल वि [कैलीकिल] केलीकिल स्थान में उत्पन्न (पउम ५५, १७)।

केव° देखो के° (भग; पण्ण १७—पत्र ५४५; विसे २८६१)।

केवँ (अप) देखो कहं (कुमा)।

केवइय वि [कियत्] कितना? (सम १३४; विसे ६४६ टी)।

केवट्ट पुं [कैवर्त्त] धीवर, मछलीमार, मछुआ (पाअ; स २५८; हे २, ३०)।

केवड (अप) देखो केत्तिअ (हे ४, ४०८; कुमा)।

केवल वि [केवल] १ अकेला, असहाय (ठा २, १; औप)। २ अनुपम, अद्वितीय (भग ६, ३३)। ३ शुद्ध, अन्य वस्तु से अमिश्रित (दस ४)। ४ संपूर्ण, परिपूर्ण (निर १, १)। ५ अनन्त, अन्त-रहित (विसे ८४)। ६ न. ज्ञान-विशेष, सर्वश्रेष्ठ ज्ञान, भूत, भावी वगैरह सर्व वस्तुओं का ज्ञान, सर्वज्ञता (विसे ८२७)। °कप्प वि [°कल्प] परिपूर्ण, संपूर्ण (ठा ३, ४)। °णाण न [°ज्ञान] सर्वश्रेष्ठ ज्ञान, संपूर्ण ज्ञान (ठा २, १)। °णाणि, °नाणि वि [°ज्ञानिन्] १ केवल-ज्ञानवाला, सर्वज्ञ (कप्प; औप)। २ पुं. इस नाम के एक अर्हन् देव, अतीत उत्सर्पिणी-काल के प्रथम तीर्थंकर (पव ६)। °ण्णाण, °नाण; °न्नाण देखो °णाण (विसे ८२६; ८२६; ८२३)। °दंसण न [°दर्शन] परिपूर्ण सामान्य बोध (कम्म ४, १२)।

केवलं अ [केवलम्] केवल, सिर्फ, मात्र (स्वप्न ६२; ६३; महा)।

केवलाअ सक [समा + रभ्] आरम्भ करना, शुरू करना। केवलाअइ (षड्)।

केवलि वि [केवलिन्] केवल ज्ञानवाला, सर्वज्ञ (भग)। °पक्खिय वि [पाक्षिक] १ स्वयंबुद्ध। २ पुं. जिनदेव, तीर्थंकर (भग ६, ३१)।

केवलिअ वि [केवलिक] १ केवलज्ञानवाला (भग)। २ परिपूर्ण, संपूर्ण; 'सामाइयं केवलियं पसत्थं' (विसे २६८१)।

केवलिअ वि [कैवलिक] १ केवल-ज्ञान से संबन्ध रखनेवाला (दं १७)। २ केवलि-प्रोक्त (सूअ १,१४)। ३ केवल-ज्ञानि-संबन्धी (ठा ४, २)। ४ न. केवल ज्ञान, संपूर्ण ज्ञान (आव ४)।

केवलिअ न [कैवल्य] केवल ज्ञान, 'केवलिए संपत्ते' (सत्त ६७ टी; विसे ११८०)।

केवली स्त्री [केवली] ज्योतिष विद्या-विशेष (हास्य १२६, १२६)।

केस पुं [केश] केश, बाल (उप ७६८ टी; प्रयौ २६)। °पुर न [°पुर] वैताढ्य पर स्थित एक विद्याधर-नगर (इक)। °लोअ पुं [°लोच] केशों का उन्मूलन (भग; पण्ह २, ४)। °वाणिज्ज न [°वाणिज्य] केश-वाले जीवों का व्यापार (भग ८,५)। °हत्थ, °हत्थय पुं [°हस्त, °क] केशपाश, समा-रचित केश, संयत बाल (कप्प; पाअ)।

केस देखो **केरिस**। स्त्री. °सी (अणु १३१)।

केस देखो **किलेस** (उप ७६८ टी; धम्म २२)।

केसर पुं [कवीश्वर] उत्तम कवि, श्रेष्ठ कवि (उप ७२८ टी)।

केसर पुंन [केसर] एक देवविमान (देवेन्द्र १४२)।

केसर पुंन [केसर] १ पुष्प-रेणु, पराग, किंजल्क (से १, ५०; दे ६, १३)। २ सिंह वगैरह के कंधा का बाल, केसरा (से १, ५०; सुपा २१५)। ३ पुं. बकुल वृक्ष (कप्पू; गउड; पाअ)। ४ न. इस नाम का एक उद्यान, काम्पिल्य नगर का एक उपवन (उत्त १७)। ५ फल-विशेष (राज)। ६ सुवर्ण, सोना। ७ छन्द-विशेष (हे १, १४६)। ८ पुष्प-विशेष (गउड ११२२)।

केसरा स्त्री [केसरा] १ सिंह वगैरह के स्कन्ध पर के बालों की सटा, 'केसरा य सीहाणं' (प्रासू ५१; गउड; प्रामा)।

केसरि पुं [केसरिन्] १ सिंह, वनराज, कण्ठीरव (उप ७२८ टी; से ८, ९४; पण्ह १, ४)। २ ह्रद-विशेष, नीलवन्त पर्वत पर स्थित एक ह्रद (सम १०४)। ३ नृप-विशेष, भरत-क्षेत्र के चतुर्थ प्रति वासुदेव (सम १५४)। °दह पुं [°द्रह] द्रह-विशेष (ठा २, ३)।

केसरिआ स्त्री [केसरिका] साफ करने का कपड़े का टुकड़ा (भग; विसे २५५२ टी)।

केसरिल्ल वि [केसरवत्] केसरवाला (गउड)।

केसरी स्त्री [केसरी] देखो केसरिआ; 'तिदं-डकुंडियछत्तछलुयंकुसपवित्तयकेसरीहत्थगए' (णाया १, ५—पत्र १०५)।

केसव पुं [केशव] १ अर्ध-चक्रवर्त्ती राजा (सम)। २ श्रीकृष्ण वासुदेव, नारायण (गउड)।

केसि वि [क्लेशिन्] क्लेश-युक्त, क्लिष्ट (विसे ३१५४)।

केसि पुं [केशि] १ एक जैन मुनि, भगवान् पार्श्वनाथ के शिष्य (राय; भग)। २ असुर-विशेष, अश्व के रूप को धारण करनेवाला एक दैत्य, जिसको श्रीकृष्ण ने मारा था (मुद्रा २६२)।

केसि पुं [केशिन्] देखो **केसव** (पउम ७५, २०)।

केसिअ वि [केशिक] केशवाला, बाल-युक्त। स्त्री. °आ (सूअ १, ४, २)।

केसी स्त्री [केशी] सातवें वासुदेव की माता (पउम २०, १८४)।

°केसी स्त्री [°केशी] केशवाली स्त्री, 'विइण्ण-केसी' (उवा)।

केसुअ देखो **किंसुअ** (हे १, २९; ८६)।

केह (अप) वि [कीदृश] कैसा, किस तरह का? (भवि; षड्; कुमा)।

केहिं (अप) अ. लिए, वास्ते (हे ४, ४२५)।

कैअव न [कैतव] कपट, दम्भ (हे १, १; गा १२४)।

कोअ देखो **कोक** (दे २, ४५ टी)।

कोअ देखो **कोव** (गउड)।

कोअंड देखो **कोदंड** (पाअ)।

कोआस अक [वि + कस्] विकसना, खिलना। कोआसइ (हे ४, १९५)।

कोआसिय वि [विकसित] विकसित, प्रफुल्ल, खिला हुआ (कुमा; जं २)।

कोइल पुं [कोकिल] १ कोयल, पिक (पण्ह १, ४; उप २३; स्वप्न ६१)। २ छन्द का एक भेद (पिंग)। °च्छय पुं [°च्छद] वनस्पति-विशेष, तलकण्टक (पण्ण १७—पत्र ५२७)।

कोइला स्त्री [कोकिला] स्त्री-कोयल, पिकी; 'कोइला पंचमं सरं' (अणु; पाअ)।

कोइला स्त्री [दे] कोयला, काष्ठ के अंगार (दे २, ४९)।

कोउआ स्त्री [दे] गोइठा की अग्नि, करीषाग्नि (दे २, ४८; पाअ)।

कोउग } न [कौतुक] १ कुतूहल, अपूर्व वस्तु
कोउय } देखने का अभिलाष (सुर २, २२६)। २ आश्चर्य, विस्मय (वव १)। ३ उत्सव (राय)। ४ उत्सुकता, उत्कण्ठा (पंचव १)। ५ दृष्टि-दोषादि से रक्षा के लिए किया जाता काजल का तिलक, रक्षा-बन्धनादि प्रयोग (राय; औप; विपा १, १; पण्ह १, २; धर्म ३)। ६ सौभाग्य आदि के लिए किया जाता स्नपन, विस्मापन, धूप, होम वगैरह कर्म (वव १, णाया १, १४)।

कोउण्ह वि [कदुष्ण] थोड़ा गरम (धर्मवि ११३)।

कोउहल } देखो **कुऊहल** (हे १, ११७;
कोउहल्ल } १७१; २, ९९; कुमा; प्राप्र)।

कोउहल्लि वि [कुतूहलिन्] कुतूहली, कौतुकी, कुतूहल-प्रिय (कुमा)।

कोऊहल }
कोऊहल्ल } देखो **कुऊहल** (कुमा; पि ६१)।

कोंकण पुं [कोङ्कण] देश-विशेष (स ४१२)।

कोंकणग पुं [कोङ्कणक] १ अनार्य देश-विशेष (इक)। २ वि. उस देश में रहनेवाला (पण्ह १, १; विसे १४१२)।

कोंच पुं [क्रौञ्च] १ इस नाम का एक अनार्य देश (पण्ह १, १)। २ पक्षि-विशेष (ठा ७)। ३ द्वीप-विशेष (ती ४५)। ४ इस नाम का एक असुर (कुमा)। ५ वि. क्रौञ्च देश का निवासी (पण्ह १, १)। °रिवु पुं [°रिपु] कार्त्तिकेय, स्कन्द (कुमा)। °वर पुं [°वर] इस नाम का एक द्वीप (अणु-टी) °वीरग पुंन [°वीरक] एक प्रकार का जहाज (बृह १)। देखो **कुंच**।

कोंचिगा स्त्री [कुञ्चिका] ताली, कुंजी (उप १७७)।

कोंचिय वि [कुञ्चित] आकुञ्चित, संकुचित पण्ह १, ४)।

कोंटलय न [दे] १ ज्योतिष-सम्बन्धी सूचना। २ शकुनादि निमित्त-सम्बन्धी सूचना; 'पउंजणे कोंटलयस्स' (ओघ २२१ भा)।

कोंठ देखो **कुंठ** (हे १, ११६ पि)।

कोंड देखो **कुंड** (हे १, २०२)।

कोंड पुं [कौण्ड . गौड] देश-विशेष (इक)।

कोंडल देखो कुंडल (राज)। °मेत्तग पुं [°मित्रक] एक व्यन्तर देव का नाम (बृह ३)।

कोंडलग पुं [कुण्डलक] पक्षि विशेष (औप)।

कोंडलिआ स्त्री [दे] १ श्वापद जन्तु-विशेष, साही, श्वावित्। २ क्रीड़ा, कीट (दे २,५०)।

कोंडिअ पुं [दे] ग्राम-निवासी लोगों में फूट कराकर छल से गाँव का मालिक बन बैठनेवाला (दे २, ४८)।

कोंडिणपुर न [कौण्डिनपुर] नगर-विशेष (रुक्मि ५१)।

कोंडिया देखो कुंडिया (पराह २, ५)।

कोंडिण्ण देखो कोडिन्न (राज)।

कोंढ देखो कुंढ (हे १, ११६)।

कोंदुल्लु पुं [दे] उलूक, उल्लू, पक्षि-विशेष (दे २, ४६)।

कोंत देखो कुंत (पराह १, १ सुर २, २८)।

कोंतल देखो कुंतल=कुन्तल (प्राकृ ६. संक्षि ४)।

कोंती देखो कुंती (णाया १, १६—पत्र २१३)।

कोंभी देखो कुंभी (प्राकृ ६)।

कोक पुं [कोक] १ चक्रवाक पक्षी (दे ८, ४३)। २ वृक, भेड़िया (इक)।

कोकंतिय पुंस्त्री [दे] जन्तु-विशेष, लोमड़ी, लोखरिआ (पराह १, १)। स्त्री. °या (णाया १, १—पत्र ६५)।

कोकणद देखो कोकणय (संबोध ४७)।

कोकणय न [कोकनद] १ रक्त कुमुद। २ लाल कमल (पराण १; स्वप्न ७२)।

कोकासिय [दे] देखो कोकासिय (पराह १, ४—पत्र ७८)।

कोकुइय देखो कुक्कुइअ (ठा ६—पत्र ३७१)।

कोक्क सक [व्या+हृ] बुलाना, आह्वान करना। कोक्कइ (हे १, ७६; षड्)। वकृ. कोकंत (कुमा)। संकृ. कोक्किवि (भवि)। प्रयो. कोक्कावइ (भवि)।

कोक्कास पुं [कोक्कास] इस नाम का एक वर्धकि, बढ़ई (आचू १)।

कोक्कासिय [दे] देखो कोआसिअ (दे २, ५०)।

कोक्किय वि [व्याहृत] आहूत, बुलाया हुआ (भवि)।

कोक्कुइय देखो कक्कुइअ (कस; औप)।

कोखुब्भ देखो खोखुब्भ वकृ. कोखुब्भमाण (पि ३१६)।

कोच्चप्प न [दे] अलीक-हित, झूठी भलाई, दिखावटी हित (दे २, ४६)।

कोच्चिय पुंस्त्री [दे] शैक्षक, नया शिष्य (वव ६)।

कोच्छ न [कौत्स] १ गोत्र-विशेष। २ पुंस्त्री. कौत्स गोत्र में उत्पन्न (ठा ७—पत्र ३६०)।

कोच्छ वि [कौक्ष] १ कुक्षि सम्बन्धी, उदर से सम्बन्ध रखनेवाला। २ न. उदरप्रदेश; 'गणियायारकणेरुकोत्थ (? च्छ) हत्थी' (णाया १, १—पत्र ६४)।

कोच्छभास पुं [दे. कुत्सभाष] काक, कौआ, वायस; 'न मणी सयसाहस्सो आविज्झइ कोच्छभासस्स' (उव)।

कोच्छेअय देखो कुच्छेअय (हे १, १६१; कुमा; षड्)।

कोज्ज देखो कुज्ज (कप्प)।

कोज्जप्प न [दे] स्त्री-रहस्य (दे २, ४६)।

कोज्जय देखो कुज्जय (णाया १, ८—पत्र १२५)।

कोज्जरिअ वि [दे] आपूरित, पूर्ण किया हुआ, भरा हुआ (षड्)।

कोज्झरिअ वि [दे] ऊपर देखो (दे २, ५०)।

कोटर देखो कोट्टर (चेइय १५१)।

कोटिंब पुं [दे] गौ (निशीथ ३५६५ गा०)।

कोटुंभ पुंन [दे] हाथ से आहत जल, 'कोटुंभो जलकरप्फालो' (पाअ)। देखो कोट्टुंभ।

कोटीवरिस अ [कोटीवर्ष] लाट देश की प्राचीन राजधानी (विचार ४६)।

कोट्ट देखो कुट्ट=कुट्ट्। कवकृ. कोट्टिज्जमाण (आवम)। संकृ. कोट्टिय (जीव ३)।

कोट्ट न [दे] १ नगर, शहर (दे २, ४५)। २ कोट, किला, दुर्ग (णाया १, ८—पत्र १३४; उत्त ३०; बृह १; सुपा ११८)। °वाल पुं [°पाल] कोटवाल, नगर-रक्षक (सुपा ४१३)।

कोट्टंतिया स्त्री [कुट्टयन्तिका] तिल वगैरह को चूरने का उपकरण (णाया १, ७—पत्र ११७)।

कोट्टकिरिया स्त्री [कोट्टक्रिया] देवी-विशेष, दुर्गा आदि रुद्र रूपवाली देवी (अणु २५)।

कोट्टग देखो कुट्टग (उप १७६; पराह १, १)।

कोट्टर देखो कोडर (महा; हे ४, ४२२; गा ५६३ अ)।

कोट्टवीर पुं [कोट्टवीर] इस नाम का एक मुनि, आचार्य शिवभूति का एक शिष्य (विसे २५५२)।

कोट्टा स्त्री [दे] १ गौरी, पार्वती (दे २, ३५—१, १७४)। २ गला, गर्दन (उप ६६१)।

कोट्टाग पुं [कोट्टाक] १ वर्धकि, बढ़ई (आचा २, १; २)। २ न. हरे फलों को सुखाने का स्थान-विशेष (बृह १)।

कोट्टिंब पुं [दे] द्रोणी, नौका, जहाज (दे २, ४७)।

कोट्टिम पुंन [कुट्टिम] १ रत्नमय भूमि (णाया १, २)। २ फरस-बंध जमीन, बँधी हुई जमीन (जं १)। ३ भूमि-तल (सुर ३, १००)। ४ एक या अनेक तलावाला घर (वव ४)। ५ झोंपड़ी, मढ़ी। ६ रत्न की खान। ७ अनार का पेड़ (हे १, ११६; प्राप्र)।

कोट्टिम वि [कृत्रिम] बनावटी, बनाया हुआ, अकुदरती (पउम ६६, ३६)।

कोट्टिल } पुं [कौट्टिक] मुग्दर, मुगरी, मुगरा, **कोट्टिल्ल** } जोड़ी (राज; विपा १,६—पत्र ६६; ६६)।

कोट्टी स्त्री [दे] १ दोह, दोहन। २ विषम स्खलना (दे २, ६४)।

कोट्टुंभ पुंन [दे] हाथ से आहत जल, 'कोटटुंभं करहए तोए' (दे २, ४७)।

कोटटुम अक [रम्] क्रीड़ा करना, रमण करना। कोट्टुमइ (हे ४, १६८)।

कोट्टुवाणी स्त्री [कोट्टुवाणी] जैन मुनि-गण की एक शाखा (कप्प)।

कोट्ठ देखो कुट्ठ=कुष्ठ (भग १६, ६; णाया १, १७)।

कोट्ठ पुं [कोष्ठ] १ धारणा, अवधारित अर्थ का कालान्तर में स्मरण-योग्य अवस्थान (णंदि १७६)। २ सुगन्धी द्रव्य-विशेष (राय ३४)।

कोट्ठ, कोट्ठग, कोट्ठय देखो कुट्ठ = कोष्ठ (णाया १, १; ठा ३, १; पात्र)। ३ आश्रय-विशेष, आवास-विशेष (ओघ २००; वव १)। ४ अपवरक, कोठरी (दस ५, १; उप ४८६)। ५ चैत्य-विशेष (णाया २, १)। °गार न [°गार] धान्य भरने का घर (औप; कप्प)। २ भाण्डागार, भंडार (णाया १, १)।

कोट्ठार पुंन [कोष्ठागार] भाण्डागार, भंडार; (पउम २, ३)।

कोट्ठि वि [कुष्ठिन्] कुष्ठ रोगी (आचा)।

कोट्ठिया स्त्री [कोष्ठिका] छोटा कोष्ठ, लघु कुशूल (उवा)।

कोट्टु पुं [क्रोष्टृ] शृगाल, सियार (षड्)।

कोडंड देखो कोदंड (स २५६)।

कोडंडिय देखो कोदंडिय (कप्प)।

कोडंब न [दे] कार्य, काम, काज (दे २, २)।

कोडय [दे] देखो कोडिअ (पाअ)।

कोडर न [कोटर] गह्वर, वृक्ष का पोल भाग, विवर (गां ५६२)।

कोडल पुं [कोटर] पक्षि-विशेष (राज)।

कोडाकोडि स्त्री [कोटाकोटि] संख्या-विशेष, करोड़ को करोड़ से गुनने पर जो संख्या लब्ध हो वह (सम १०५; कप्प; उव)।

कोडाल पुं [कोडाल] १ गोत्र-विशेष का प्रवर्त्तक पुरुष। २ न. गोत्र-विशेष (कप्प)।

कोडि स्त्री [कोटि] १ धनुष का अग्र भाग (राय ११३)। २ भेद, प्रकार (पिंड ३६५)।

कोडि स्त्री [कोटि] १ संख्या विशेष, करोड़, १००००००० (णाया १, ८; सुर १, ६७; ४, ६१)। २ अग्र-भाग, अणी, नोक (से १२, २६; पाअ)। ३ अंश, विभाग, भाग; 'नत्थिक्कसो पएसो लोए वालग्गकोडिमित्तोवि' (पव्व ३६; ठा ६)। °कोडि देखो कोडाकोडि (सुपा २६६)। °बद्ध वि [°बद्ध] करोड़ संख्यावाला (वव ३)। °भूमि स्त्री [°भूमि] एक जैन तीर्थ (ती ४३)। °सिला स्त्री [°शिला] एक जैन तीर्थ (पउम ४८, ६६)। °सो अ [°शस्] करोड़ों, अनेक करोड़ (सुपा ४२०)। देखो कोडी।

कोडिअ न [दे] १ छोटा मिट्टी का पात्र, लघु सराव, सकोरा (दे २,४७)। २ पुं. पिशुन, दुर्जन, चुगलखोर (षड्)।

कोडिअ पुं [कोटिक] १ एक जैन मुनि (कप्प)। २ एक जैन-मुनि-गण (कप्प; ठा ६)।

कोडिअ वि [कोटित] संकोचित (धर्मसं ३६८)।

कोडिण्ण, कोडिन्न न [कौडिन्य] १ इस नाम का एक नगर (उप ६४८ टी)। २ वाशिष्ठ गोत्र की शाखा रूप एक गोत्र (कप्प)। ३ पुं. कौडिन्य गोत्र का प्रवर्त्तक पुरुष। ४ वि. कौडिन्य-गोत्रीय (ठा ७—पत्र ३६०; कप्प)। ५ पुं. एक मुनि, जो शिवभूति का शिष्य था (विसे २५५२)। ६ महागिरि-सूरि का शिष्य, एक जैन मुनि (कप्प)। ७ गोतम-स्वामी के पास दीक्षा लेनेवाले पाँच सौ तापसों का गुरु (उप १४२ टी)।

कोडिन्ना स्त्री [कौण्डिन्या] कौडिन्य-गोत्रीय स्त्री (कप्प)।

कोडिल्ल पुं [दे] पिशुन, दुर्जन, चुगलखोर (दे २, ४०; षड्)।

कोडिल्ल देखो कोट्टिल्ल (राज)।

कोडिल्ल पुं [कौटिल्य] इस नाम का एक ऋषि, चाणक्य मुनि (वव १; अणु)।

कोडिल्लय न [कौटिल्यक] चाणक्य-प्रणीत नीति-शास्त्र (अणु)।

कोडिसाहिय न [कोटिसहित] प्रत्याख्यान विशेष, पहले दिन उपवास करके दूसरे दिन भी उपवास की ली जाती प्रतिज्ञा (पव ४)।

कोडी देखो कोडि (उव; ठा ३, १; जी ३७)। °करण न [°करण] विभाग, विभजन (पिंड ३०७)। °णार न [°नार] इस नाम का सोरठ देश का एक नगर (ती ५६)। °मातसा स्त्री [°मातसा] गान्धार ग्राम की एक मूर्च्छना (ठा ७—पत्र ३६३)। °वरिस न [°वर्ष] लाट देश की राजधानी, नगर-विशेष (इक; पव १७४)। °वरिसिया स्त्री [°वर्षिका] जैन मुनि-गण की एक शाखा (कप्प)। °सर पुं [°श्वर] करोड़ पति, कोटीश (सुपा ३)।

कोडीण न [कोडीन] १ इस नाम का एक गोत्र, जो कौत्स गोत्र की एक शाखा रूप है। २ वि. इस गोत्र में उत्पन्न (ठा ७—पत्र ३६०)।

कोडुंब न [दे] कार्य, काज (दे २, २)।

कोडुंबि देखो कुडुंबि (ठा ३, १—पत्र १२५)।

कोडुंबिय पुं [कौटुम्बिक] १ कुटुम्ब का स्वामी, परिवार का स्वामी, परिवार का मुखिया (भग)। २ ग्राम-प्रधान, गाँव का आदमी (पण्ह १, ५—पत्र ६४)। ३ वि. कुटुम्ब में उत्पन्न, कुटुम्ब से सम्बन्ध रखनेवाला, कुटुम्ब-सम्बन्धी (महा; जीव ३)।

कोडूसग पुं [कोदूषक] अन्न-विशेष, कोदों की एक जाति (राज)।

कोड्ड [दे] देखो कुड्ड (दे २, ३३; स ६४१; ६४२; हे ४, ४२२; णाया १, १६—पत्र २२४; उप ८६२; भवि)।

कोड्डुम देखो कोट्टुम (कुमा)।

कोड्डुमिअ न [रत] रति-क्रीड़ा-विशेष (कुमा)।

कोड्डिय वि [दे] कुतुहली, कौतुकी, विनोद-शील, उत्कण्ठित (उप ७६८ टी)।

कोड्ढ, कोढ पुं [कुष्ठ] रोग-विशेष, कुष्ठ-रोग पि ६६; णाया १, १३; श्रा २०)।

कोढि वि [कुष्ठिन्] कुष्ठ-रोग से ग्रस्त, कुष्ठ-रोगी (आचा)।

कोढिक, कोढिय वि [कुष्ठिक] कुष्ठ-रोगी, कुष्ठ-ग्रस्त (पण्ह २, ५ विपा १, ७)।

कोण वि [दे] १ काला, श्याम वर्णवाला (दे २, ४५)। २ पुं. लकुट, लकड़ी, यष्टि (दे २, ४५; निचू १; पाअ)। ३ वीणा वगैरह बजाने की लकड़ी, वीणा-वादन-दण्ड (जीव ३)।

कोण, कोणग पुंन [कोण] कोन, अस्र, घर का एक भाग (गउड; दे २, ४५; रंभा)।

कोणव पुं [कौणप] राक्षस, पिशाच (पाअ)।

कोणायल पुं [कोणाचल] भगवान् शान्ति-नाथ के प्रथम श्रावक का नाम (विचार ३७८)।

कोणालग पुं [कोनालक] जलचर पक्षि-विशेष (पण्ह १, १)।

कोणाली स्त्री [दे] गोष्ठी, गोठ (बृह १)।

कोणिअ } पुं [कोणिक] राजा श्रेणिक का
कोणिग } पुत्र, नृप-विशेष (अंत; णाया १, १; महा; उव)।

कोणु स्त्री [दे] लेखा, लकीर, रेखा (दे २,२६)।

कोणेट्टिया स्त्री [दे] गुज्जा, गु० 'चणोठी' (अनु० वृ० हारि० पत्र० ७६) देखो, चणोट्टिया।

कोण्ण पुं [दे. कोण] गृह-कोण, घर का एक भाग, कोना (दे २, ४५)।

कोतव न [कौतव] मूषक के रोम से निष्पन्न सूता (राज)।

कोतुहल देखो कुऊहल (काल)।

कोत्तलंका स्त्री [दे] दारू परोसने का भाण्ड, पात्र-विशेष (२, १४)।

कोत्तिअ वि [कौतुकिक] कौतुकी, कुतूहली (गा ६७२)।

कोत्तिअ पुं [कोत्रिक] १ भूमि-शयन करनेवाला वानप्रस्थ (औप)। २ न. एक प्रकार का मधु (ठा ६)।

कोत्थ देखो कोच्छ = कौक्ष।

कोत्थर न [दे] १ विज्ञान (दे २, १३)। २ कोटर, गह्वर (सुपा २४७; निचू १५)।

कोत्थल पुं [दे] १ कुशूल, कोष्ठ (दे २, ४८)। २ कोथली, थैला (स १६२)। °कारा स्त्री [°कारी] भौंरी, कीट-विशेष (बृह १)।

कोत्थुभ } पुं [कौस्तुभ] वासुदेव के वक्षः
कोत्थुह } स्थल की मणि (ती १०; प्राप्र;
कोथुभ } महा; गा १५१; पण्ह १, ४)।

कोदंड पुं [कोदण्ड] धनुष, धनु, कार्मुक, चाप (अंत १६)।

कोदंडिम } देखो कु-दंडिम (जं ३; कप्प)।
कोर्दंडिय }

कोदूसग देखो कोडूसग (भग ६, ७)।

कोद्दव गेखो कुद्दव (भवि)।

कोद्दविया स्त्री [दे] मातृवाहा, क्षुद्र कीट-विशेष (सुख १८, ३५)।

कोद्दाल देखो कुद्दाल (पण्ह १, १—पत्र २३)।

कोद्दालिया स्त्री [कुद्दालिका] छोटा कुदार, कुदारी (विपा १, ३)।

कोध पुं [कोध] इस नाम का एक राजा, जिसने दाशरथि भरत के साथ जैन दीक्षा ली थी (पउम ८५, ४)।

कोप्प देखो कुप्प = कुप्। कोप्पइ (नाट)।

कोप्प पुं [दे] अपराध, गुनाह (दे २, ४५)।

कोप्प वि [कोप्य] द्वेष्य, अप्रीतिकर; 'अकोप्पजंघजुगला' (पण्ह १, ३)।

कोप्पर पुं [कूर्पर] १ हाथ का मध्य भाग (ओघ २६६ भा; कुमा; हे १, १२४)। २ नदी का किनारा, तट, तीर (ओघ ३०)।

कोबेरी स्त्री [कौबेरी] विद्या-विशेष (पउम ७, १४२)।

कोभग } पुं [कोभक] पक्षि-विशेष (अंत;
कोभगक } औप)।

कोमल वि [कोमल] मृदु, सुकुमार (जी १०; पाअ; कप्पू)।

कोमार वि [कौमार] १ कुमार से संबन्ध रखनेवाला, कुमार-संबन्धी (विपा १, ७१)। २ कुमारी-संबन्धी (पाअ)। ३ कुमारी में उत्पन्न (दे १, ८१)। स्त्री. °रिया, °री (भग १५)। °भिच्च न [°भृत्य] वैद्यक शास्त्र-विशेष, जिसमें बालकों के स्तन पान-संबन्धी वर्णन है (विपा १, ७—पत्र ७५)।

कोमारी स्त्री [कौमारी] विद्या-विशेष (पउम ७, १३७)।

कोमुइया स्त्री [कौमुदिका] श्रीकृष्ण वासुदेव की एक भेरी, जो उत्सव की सूचना के समय बजाई जाती थी (विसे १४७६)।

कोमुई स्त्री [दे] पूर्णिमा, कोई भी पूर्णिमा (दे २, ४८)।

कोमुई स्त्री [कौमुदी] १ शरद् ऋतु की पूर्णिमा (दे २, ४८)। २ चन्द्रिका, चाँदनी (औप; धम्म ११ टी)। ३ इस नाम की एक नगरी (पउम ३६, १००)। ४ कार्तिक की पूर्णिमा (राय)। °नाह पुं [°नाथ] चन्द्रमा, चाँद (धम्म ११ टी)। °महूसव पुं [°महोत्सव] उत्सव-विशेष (पि ३६६)।

कोमुदिया देखो कोमुइया (णाया १, ५—पत्र १००)।

कोमुदी देखो कोमुई = कौमुदी (णाया १, १२)।

कोयव वि [कौतव] चूहे के रोमों से बना हुआ (वस्त्र) (अणु ३४)।

कोयव वि [कौयव] 'कोयव' देश में निष्पन्न (आचा २, ५, १, ५)। देखो कोयवग।

कोयवग } पुं [दे] रूई से भरे हुए कपड़े
कोयवय } का बना हुआ प्रावरण-विशेष, रजाई (णाया १, १७—पत्र २२६)।

कोयवी स्त्री [दे] रूई से भरा हुआ कपड़ा (बृह ३)।

कोरंग पुं [कोरङ्क] पक्षि-विशेष (पण्ह १, १—पत्र ८)।

कोरंट } पुं [कोरण्ट, °क] १ वृक्ष-विशेष
कोरंटग } (पाअ)। २ न. इस नाम का भृगुकच्छ (भडौंच) शहर का एक उपवन (वव १)। ३ कोरण्टक वृक्ष का पुष्प (पण्ह १, ४; जं १)।

कोरअ (शौ) देखो कउरव (प्राकृ ८४)।

कोरय } पुंन [कोरक] फलोत्पादक मुकुल,
कोरव } फल की कली (पाअ); 'चत्तारि कोरवा पन्नत्ता' (ठा ४, १—पत्र १८५)।

कोरव देखो कउरव (सम्मत्त १७६)।

कोरविआ स्त्री [कौरव्या] देखो कोरव्वीया (अणु १३०)।

कोरव्व पुंस्त्री [कौरव्य] १ कुरु-वंश में उत्पन्न (सम १५२; ठा ६)। २ कौरव्य-गोत्रीय। ३ पुं. आठवाँ चक्रवर्ती राजा ब्रह्मदत्त (जीव ३)।

कोरव्वीया स्त्री [कौरवीया] इस नाम की षड्ज ग्राम की एक मूर्च्छना (ठा ७)।

कोरिंट } देखो कोरंट (णाया १, १—
कोरिंटय } पत्र १६; कप्प; पउम ४२, ८;
कोरेंट } औप; उवा)।

कोल पुं [दे] ग्रीवा, नोक, गला (दे २, ४५)।

कोल पुं [क्रोड] १ सूअर, वराह (पण्ह १, १—पत्र ७; स १११)। २ उत्सङ्ग, गोद; 'कोलीकय—' (गउड)।

कोल पुं [कोल] १ देश-विशेष (पउम ६८, ६६)। २ घुण, काष्ठ-कीट (सम ३६)। ३ शूकर, वराह, सूअर (उप ३२० टी; णाया १, १; कुमा; पाअ)। ४ मूषिक के आकार का एक जन्तु (पण्ह १, १—पत्र ७)। ५ अन्न-विशेष (धम्म ५)। ६ मनुष्य की एक नीच जाति (आचू ४)। ७ बदरी-वृक्ष, बेर का गाछ। ८ न. बदरी-फल, बेर (दस ५, १; भग ६, १०)। °पाग न [°पाक] नगर-

विशेष, जहाँ श्रीऋषभदेव भगवान् का मंदिर है, यह नगर दक्षिण में है (ती ४५)। °पाल पुं [°पाल] देव-विशेष, धरणेन्द्र का लोकपाल (ठा ३, १—पत्र १०७)। °सुणय, °सुणह पुंस्त्री [°शुनक] १ बड़ा शूकर, सूअर की एक जाति, जंगली वराह (आचा २, १, ५)। २ शिकारी कुत्ता (पराग ११)। स्त्री. °णिया (पराग ११)। °वास पुंन [°वास] काष्ठ, लकड़ी (सम ३६)।

कोल वि [कौल] १ शक्ति का उपासक, तान्त्रिक मत का अनुयायी। २ तान्त्रिक मत से संबन्ध रखनेवाला; 'कोलो धम्मो कस्स णो भाइ रम्मो' (कप्पू)। ३ न. बदर-फल-संबन्धी (भग ६, १०)। °चुण्ण न [°चूर्ण] बेर का चूर्ण, बेर का सत्तू (दस ५, १)। °ट्ठिय न [°ास्थिक] बेर की गुठिया या गुठली (भग ६, १०)।

कोलंब पुं [दे] पिठर, स्थाली (दे २, ४७; पाग्र)। २ गृह, घर (दे २, ४७)।

कोलंब पुं [कोलम्ब] वृक्ष की शाखा का नामा हुआ अग्र भाग (अनु ५)।

कोलगिणी स्त्री [कोली, कोलकी] कोल-जातीय स्त्री (आचू ४)।

कोलघरिय वि [कौलगृहिक] कुलगृह-संबन्धी, पितृगृह-संबन्धी, पितृगृह से संबन्ध रखनेवाला (उवा)।

कोलज्जा स्त्री [दे] धान्य रखने का एक तरह का गर्त्त (आचा २, १, ७)।

कोलर देखो **कोटर** (गा ५६३ अ)।

कोलव न [कौलव] ज्योतिष-शास्त्र में प्रसिद्ध एक करण (विसे ३३४८)।

कोलाल वि [कौलाल] १ कुम्भकार-संबन्धी। २ न. मिट्टी का पात्र (उवा)।

कोलालिय पुं [कौलालिक] मिट्टी का पात्र बेचनेवाला (बृह २)।

कोलाह पुं [कोलाभ] साँप की एक जाति (पराह १)।

कोलाहल पुं [दे] पक्षी की आवाज, पक्षी का शब्द (दे २, ५०)।

कोलाहल पुं [कोलाहल] तुमुल, शोरगुल, रौला, हल्ला, बहुत दूर जानेवाला अनेक प्रकार का अस्फुट शब्द (दे २, ५०; हेका १०५; उत्त ६)।

कोलाहलिय वि [कोलाहलिक] कोलाहल-वाला, शोरगुलवाला (पउम ११७, १६)।

कोलिअ पुं [दे] एक अधम मनुष्य-जाति (सुख २, १५)।

कोलिअ पुं [दे] कोली, तन्तुवाय, जुलाहा, कपड़ा बुननेवाला (दे २, ६५; गंदि; पव २; उप पृ २१०)। २ जाल का कीड़ा, मकड़ा (दे २,२५; पाग्र; श्रा २०; आव ४; बृह १)।

कोलित्त न [दे] उल्मुक, लूका (दे २, ४६)।

कोलिन्न न [कौलीन्य] कुलीनता, खानदानी (धर्मवि १४६)।

कोलीकय वि [क्रोडीकृत] स्वीकृत, अंगीकृत (गउड)।

कोलीण न [कौलीन] १ किंवदंती, लोक-वार्ता, जन-श्रुति (मा ३७)। २ वि. वंश-परंपरागत, कुलक्रम से आयात। ३ उत्तम कुल में उत्पन्न। ४ तान्त्रिक मत का अनुयायी (नाट—महावी १३३)।

कोलीर न [दे] लाल रंग का एक पदार्थ, कुरुविन्द; 'कोलीररत्तणयणेअ' (दे २, ४६)।

कोलुण्ण न [कारुण्य] दया, अनुकम्पा, करुणा (निचू ११)। °पडिया, °वडिया स्त्री [°प्रतिज्ञा] अनुकम्पा की प्रतिज्ञा (निचू ११)।

कोलेज्ज पुं [दे] नीचे गोल और ऊपर खाई के आकार का धान्य आदि भरने का कोठा (आचा २, १, ७, १)।

कोलेय पुं [कौलेयक] श्वान, कुत्ता (सम्मत्त १६०; धर्मवि ५२)।

कोल्ल पुंन [दे] कोयला, जली हुई लकड़ी का टुकड़ा (निचू १)।

कोल्लइर न [कोल्लकिर] नगर-विशेष (पिंड ४२७)।

कोल्लपाग न [कोल्लपाक] दक्षिण देश का एक नगर, जहाँ श्री ऋषभदेव का मन्दिर है (ती ४५)।

कोल्लर पुं [दे] पिठर, स्थाली, थाली, थरिया (दे २, ४७)।

कोल्ला देखो **कुल्ला** (कुमा)।

कोल्लाग देखो **कुल्लाग** (अंत)।

कोल्लापुर न [कोल्लापुर] दक्षिण देश का एक नगर, महालक्ष्मी का स्थान (ती ३४)।

कोल्लासुर पुं [कोल्लासुर] इस नाम का एक दैत्य (ती ३४)।

कोल्लुग [दे] देखो **कोल्हुअ** (वव १; बृह १)।

कोल्हाहल न [दे] फल-विशेष, बिम्बी-फल (दे २, ३६)।

कोल्हुअ पुं [दे] १ शृगाल, सियार (दे २, ६५; पाग्र; पउम ७, १७; १०५, ४२)। २ कोल्हू, चरखी, ऊख से रस निकालने का कल (दे २, ६५; महा)।

कोव सक [कोपय्] १ दूषित करना। २ कुपित करना। कोवेइ (सूअनि १२५), कोवइज्ज (कुप्र ६४)।

कोव पुं [कोप] क्रोध, गुस्सा (दिवा १, ६; प्रासू १७५)।

कोवण वि [कोपन] क्रोधी, क्रोध-युक्त (पाग्र; सुपा ३८५; सम ३४७; स्वप्न ८२)।

कोवाय पुं [कोपक] अनार्य देश-विशेष (पव २७४)।

कोवासिअ देखो **कोआसिय** (पाग्र)।

कोवि वि [कोपिन्] क्रोधी, क्रोध-युक्त (सुपा २८१; श्रा २०)।

कोविअ वि [कोविद] निपुण, विद्वान्, अभिज्ञ (आचा; सुपा १३०; ३६२)।

कोविअ वि [कोपित] १ क्रुद्ध किया हुआ। २ दूषित, दोष-युक्त किया हुआ; 'वइरो किर दाहो वायणंति नवि कोवियं वयणं' (उव)।

कोविआ स्त्री [दे] शृगाली, सियारिन (दे २, ४६)।

कोविआर पुं [कोविदार] वृक्ष-विशेष (विक्र ३३)।

कोविणी स्त्री [कोपिनी] कोप-युक्त स्त्री (श्रा १२)।

कोशण (मा) वि [कदुष्ण] थोड़ा गरम (प्राकृ १०२)।

कोस पुं [दे] १ कुसुम्भ रंग से रंगा हुआ रक्त वस्त्र। २ समुद्र, जलधि, सागर (दे २, ६५)।

कोस पुं [क्रोश] कोस, मार्ग की लम्बाई का परिमाण, दो मील (कप्प; जी ३२)।

कोस पुं [कोश, ष] १ खजाना, भण्डार (णाया १, १३१; पउम ५, २४)। २ तलवार की म्यान (सूअ १, ६)। ३ कुड्मल; 'कमलकोसव्व' (कुमा)। ४ मुकुल, कली (गउड)। ५ गोल, वृत्ताकार; 'ता मुह-मेलियकरकोसपिहियपसरंतदंतकरपसरं' (सुपा २७; गउड)। ६ दिव्य-भेद, तप्त लोहे का स्पर्श वगैरह शपथ; 'एत्थ अम्हे कोसविसएहिं पच्चाएमो' (स ३२४)। ७ अभिधान-शास्त्र, शब्दार्थ-निरूपक ग्रन्थ, जैसा प्रस्तुत पुस्तक। ८ पुंन. पानपात्र, चषक (पाअ)। ८ न. नगर विशेष; 'कोसं नाम नयरं' (स १३३)। °पाण न [°पान] सौगंध, शपथ (गा ४४८)। °हिव पुं [°धिप] खजानची, भंडारी (सुपा ७३)।

कोसंब पुं [कोशाम्र] फल-वृक्ष-विशेष (पएण १—पत्र ३१)। °गंडिया स्त्री [°गण्डिका] खड्ग-विशेष, एक प्रकार की तलवार (राज)।

कोसंबिया स्त्री [कौशाम्बिका] जैनमुनि-गण की एक शाखा (कप्प)।

कोसंबी स्त्री [कौशाम्बी] वत्स देश की मुख्य-नगरी (ठा १०; विपा १,५)।

कोसग पुं [कोशक] साधुओं का एक चर्म-मय उपकरण, चमड़े की एक प्रकार की थैली (धर्म ३)।

कोसट्टइरिआ स्त्री [दे] चण्डी, पार्वती, गौरी, शिव-पत्नी (दे २, ३५)।

कोसय न [दे कोशक] लघु शराव, छोटा पान पात्र (दे २, ४७; पाअ)।

कोसल न [कौशल] कुशलता, निपुणता, चातुरी (कुमा)।

कोसल न [दे] नीवी, नारा, इजारबन्द (दे २, ३८)।

कोसल, **कोसलग** पुं [कोसल °क] १ देश-विशेष (कुमा; महा)। २ एक जैन महर्षि, सुकोसल मुनि (पउम २२, ४४)। ३ कोसल देश का राजा। ४ वि. कोशल देश में उत्पन्न (ठा ५, २)। ५ °पुर न [°पुर] अयोध्या नगरी (आक १)।

कोसला स्त्री [कोसला] १ नगरी-विशेष, अयोध्या-नगरी (पउम २०, २८)। २ अयोध्या-प्रान्त, कोसल-देश (भग ७, ६)।

कोसलिअ वि [कौशलिक] १ कोसल देश में उत्पन्न, कोसल देश-सम्बन्धी (भग २०, ८)। २ अयोध्या में उत्पन्न, अयोध्या-संबन्धी (जं २)।

कोसलिअ न [दे. कौशलिक] प्राभृत, भेंट, उपहार (दे २, १२; सण; सुपा—प्रस्तावना ५)।

कोसलिआ स्त्री [दे. कौशलिका] ऊपर देखो (दे २, १२; सुपा—प्रस्तावना ५)।

कोसल्ल न [कौशल्य] निपुणता, चतुराई (कुमा; सुपा १६; सुर १०; ८०)।

कोसल्ल न [दे] प्राभृत, भेंट, उपहार; 'तं पुरजणकोसल्लं नरवइणा अप्पियं कुमारस्स' (महा)।

कोसल्लया स्त्री [कौशल्य] निपुणता, चतुराई; 'तह मज्झनीइकोसल्लया य खीणच्चिय इयाणिं' (सुपा ६०३)।

कोसल्ला स्त्री [कौशल्या] दाशरथि राम की माता (उत्त पृ ३७४)।

कोसल्लिअ न [दे. कौशलिक] भेंट, उपहार (दे २, १२; महा; सुपा ४१३; ५२७; सण)।

कोसा स्त्री [कोशा] इस नाम की एक प्रसिद्ध वेश्या, जिसके यहाँ जैन महर्षि श्रीस्थूलभद्र मुनि ने निर्विकार भाव से चातुर्मास (चौमासा) किया था (विवे ३३)।

कोसिण वि [कोष्ण] थोड़ा गरम (नाट—वेणी)।

कोसिय न [कौशिक] १ मनुष्य का गोत्र विशेष (अभि ४१; ठा ३६०)। २ बीसवें नक्षत्र का गोत्र (चंद १०)। ३ पुं. उलूक, घूक, उल्लू (पाअ; सार्ध ५६)। ४ साँप-विशेष, चण्डकोशिक-नामक दृष्टि-विष सर्प, जिसको भगवान् श्रीमहावीर ने प्रबोधित किया था (आवम)। ५ वृक्ष-विशेष। ६ इन्द्र। ७ नकुल। ८ कोशाध्यक्ष, खजानची ९ प्रीति, अनुराग। १० इस नाम का एक राजा। ११ इस नाम का एक असुर। १२ सर्प को पकड़नेवाला, सपेरा, गारुड़िक। १३ अस्थिसार, मज्जा। १४ शृंगाररस (हे १, १५९)। १५ इस नाम का एक तापस (भवि)। १६ पुंस्त्री. कौशिक गोत्र में उत्पन्न, कौशिक-गोत्रीय (ठा ७—पत्र ३९०)। १७ स्त्री. कोसिई (मा १६)।

कोसिया स्त्री [कौशिका] १ भारतवर्ष की एक नदी (कस)। २ इस नाम की एक विद्या-धर-राज-कन्या (पउम ७, ५४)। ३ चमड़े का जूता; 'कोसियमालाभूसियसिरोहरो विगय-वसणो य' (स २२३)। देखो कोसी।

कोसियार पुं [कोशिकार] १ कीट-विशेष, रेशम का कीड़ा (पण्ह १, ३)। २ न. रेशमी वस्त्र (ठा ५, ३)।

कोसी स्त्री [कोशी] १ शिम्बी, छीमी, फली (पाअ)। २ तलवार की म्यान (सूअ २, १, १६)।

कोसी स्त्री [कोशी] देखो कोसिया (ठा ५, ३—पत्र ३५१)। २ गोलाकार एक वस्तु; 'कंचणकोसीपविट्ठदंताणं' (औप)।

कोसुंभ वि [कौसुम्भ] कुसुंभ-सम्बन्धी (रँग) (सिरि १०५७)।

कोसुम वि [कौसुम] फूल सम्बन्धी, फूल का बना हुआ; 'कोसुमा बाणा' (गउड)।

कोसुम्ह देखो कुसुंभ (संक्षि ४)।

कोसेअ, **कोसेज्ज** न [कौशेय] १ रेशमी वस्त्र, रेशमी कपड़ा (दे २, ३३; सम १५३; पण्ह १, ४)। २ तसर का बना हुआ वस्त्र (जीव ३)।

कोह पुं [°क्रोध] गुस्सा, कोप (ओघ २ भा; ठा ४, १)। °मुंड वि [°मुण्ड] क्रोध-रहित (ठा ५, ३)।

कोह पुं [कोथ] सड़ना, शीर्णता (भग ३, ६)।

कोह पुं [दे कोथ] कोथली, थैला (विसे २९८८)।

कोह वि [क्रोधवत्] क्रोध-युक्त, कोप-सहित; 'कोहाए माणाए मायाए लोभाए·····आसाय-णाए' (पडि)।

कोहंगक पुं [कोभङ्गक] पक्षि-विशेष (औप)।

कोहंझाण न [क्रोधध्यान] क्रोध-युक्त चिन्तन (आउ ११)।

कोहंड न [कूष्माण्ड] १ कुष्माण्डी-फल, कोहँड़ा (पि ७६; ८९; १२७)। २ न.

देव-विमान-विशेष (ती ५६)। ३ पुं. व्यन्तर-श्रेणीय देव-जाति-विशेष (पव १६४)।
कोहंडी स्त्री [कूष्माण्डी] कोहँड़े का गाछ (हे १, १२४; दे २, ५० टी)।
कोहण वि [क्रोधन] १ क्रोधी, गुस्साखोर (सम ३७; पउम ३५, ७)। २ पुं. इस नाम का रावण का एक सुभट (पउम ५६, ३२)।
कोहल देखो **कुऊहल** (हे १, १७१)।
कोहलिअ वि [कुतूहलिन्] कुतूहली, कुतूहल-प्रेमी। स्त्री. °आ (गा ७६८)।
कोहलिआ स्त्री [कूष्माण्डिका] कोहँड़ा का गाछ;
'जह लंघेसि परवइं निययवइं
भरसहंपि मोत्तूणं।
तह मण्णे कोहलिए, अज्जं
कल्लंपि फुट्टिहिसि' (गा ७६८)।
कोहली देखो **कोहंडी** (हे २, ७३; दे २, ५० टी)।
कोहल्ल देखो **कोहल** (षड्)।
कोहल्ली स्त्री [दे] तापिका, तवा, पचन-पात्र-विशेष (दे २, ४६)।
कोहल्ली देखो **कोहंडी** (षड्)।
कोहि, **कोहिल्ल** वि [क्रोधिन्] क्रोधी, क्रोधी-स्वभाव का गुस्साखोर (कम्म ४, १४०; बृह २)।
कौरव, **कौलव** देखो **कउरव** (हे १, १, चंड)।
°**क्किसिय** देखो **किसिय** = कृषित (उप ७२८ टी)।
°**क्कूर** देखो **कूर** = कूर। (वा २६)।
°**क्केर** देखो °**केर** (हे २, ६६)।
°**क्खंड** देखो **खंड** (गउड)।
°**क्खंभ** देखो **खंभ** (से ३, ५६)।
°**क्खम** देखो **खम** (अभ २७)।
°**क्खलण** देखो **खलण** (गउड)।
°**क्खिंसा** देखो **खिंसा** (सुपा ५१०)।
°**क्खु** देखो **खु** (कप्पू; अभि ३७; चारु १४)।
°**क्खुत्त** देखो **खुत्त** (गउड)।
°**क्खेड्ड** देखो **खेड्ड** (सुपा ५५२)।
°**क्खेव** देखो **खेव**; 'खारक्खेवं व खए' (उप ७२८ टी)।
°**क्खोडी** देखो **खोडी** (पण्ह १, ३)।

॥ इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवे कयाराइसद्दसंकलणो
दसमो तरंगो समत्तो ॥

ख

ख पुं [ख] १ व्यंजन-वर्ण विशेष, इसका स्थान कण्ठ है (प्रामा; प्राप)। २ न. आकाश, गगन; 'गज्जंते खे मेहा' (हे १, १८७; कुमा; दे ६, १२१)। ३ इन्द्रिय (विसे ३४४३)। °**ग** पुं [°ग] १ पक्षी, खग (पाअ; दे २, ५०)। २ मनुष्य की एक जाति, जो विद्या के बल से आकाश में गमन करती है, विद्याधर-लोक (आरा ५६)। देखो **खय** = खग। °**गइ** स्त्री [°गति] १ आकाश-गति। २ कर्म-विशेष, जो आकाश-गति का कारण है (कम्म २,३; नव ११)। °**गामिणी** स्त्री [°गामिनी] विद्या-विशेष, जिसके प्रभाव से आकाश में गमन किया जा सकता है (पउम ७, १४५)। °**पुप्फ** न [°पुष्प] आकाश-कुसुम, असंभावित वस्तु (कुमा)।
खअ, **खउर** सक [खव्] संपत्ति-युक्त करना। खअइ, खउरइ (प्राकृ ७३)।
खइ वि [क्षयिन्] १ क्षयवाला, नाशवाला। २ क्षय रोगवाला, क्षय-रोगी (सुपा २३३; ५७६)।
खइअ वि [क्षपित] नाशित, उन्मूलित (औप; भवि)।
खइअ वि [खचित] १ व्याप्त, जटित। २ मण्डित, विभूषित (हे १, १९३; औप; स ११४)।
खइअ वि [खादित] १ खाया हुआ, भुक्त, ग्रस्त (पाअ; स २५०; उप पृ ४६)। २ आक्रान्त; 'तह य होंति उ कसाया। खइओ जेहिं मणुस्सो कज्जाकज्जाइं न मुणेइ' (स ११४)। ३ न. भोजन, भक्षण; 'खइएण व पीएण व न य एसो ताइओ हवइ अप्पा' (पञ्च ६२; ठा ४, ४—पत्र २७६)।
खइअ वि [क्षयित] क्षय-प्राप्त, क्षीण; 'किमि-कायखइयदेहो' (सुर १६, १६१)।
खइअ पुं [दे] हेवाक, स्वभाव (ठा ४, ४—पत्र २७६)।
खइअ, **खइग** पुं [क्षायिक] १ क्षय, विनाश, उन्मूलन; 'से किं तं खइए ? खइए अट्ठण्हं कम्मपयडीणं खइएणं' (अणु)। २ वि. क्षय से उत्पन्न, क्षय-संबन्धी, क्षय से संबन्ध रखनेवाला। ३ कर्म-नाश से उत्पन्न; 'कम्मक्खयसहावो खइओ' (विसे ३४६५; कम्म १,१५; ३,१९; ४,२२; सम्य २३; औप)।
खइत्त न [क्षैत्र] खेतों का समूह, अनेक खेत (पि ६१)।
खइया स्त्री [खदिका] खाद्य-विशेष, सेका हुआ व्रीहि—धान, लावा; 'दहिघयपायसखइया-निअोएं' (भवि)।
खइर पुं [खदिर] वृक्ष-विशेष, खैर का गाछ (आचा; कुमा)।
खइर वि [खादिर] खदिर-वृक्ष-संबन्धी (हे १, ६७; सुपा १५१)।
खइव [दे] देखो **खइअ** (ठा ४, ४—पत्र १७६ टी)।

खउड पुं [खपुट] स्वनाम-प्रसिद्ध एक जैनाचार्य (श्रावम; श्राचू)।

खउर श्रक [क्षुभ्] १ क्षुब्ध होना, डर से विह्वल होना। २ सक. कलुषित करना। खउरइ (हे ४, १५५; कुमा); 'खउरेंति धिइग्गहणं' (से ५, ३)।

खउर वि [दे] कलुषित, 'दरदड्ढविवण्णविद्दुमरश्रक्खउरा' (से ५, ४७; स ५७८)।

खउर न [क्षौर] क्षौर-कर्म, हजामत (हेका १८६)।

खउर पुंन [खपुर] खैर वगैरह का चिकना रस, गोंद (बृह ३; निचू १६)। °कढिणय न [°कठिनक] तापसों का एक प्रकार का पात्र (विसे १४६५)।

खउरिअ वि [क्षुब्ध] कलुषित (पाअ; बृह ३)।

खउरिअ वि [क्षौरित] मुण्डित, लुञ्चित, केश-रहित किया हुश्रा (से १०, ४३)।

खउरिअ वि [खपुरित] खरण्टित, चिपकाया हुश्रा (निचू ५)।

खउरीकय वि [खपुरीकृत] गोंद वगैरह की तरह चिकना किया हुश्रा;

'कलुसीकश्रो य किट्टीकश्रो य
खउरीकश्रो य मलिणिश्रो।
कम्मेहि एस जीवो, नाऊणवि
मुज्झई जेण' (उव)।

खओवसम पुं [क्षयोपशम] कुछ भाग का विनाश श्रौर कुछ का दबना (भग)।

खओवसमिय वि [क्षयोपशमिक] १ क्षयोपशम से उत्पन्न, क्षयोपशम-संबन्धी (सम १४५; ठा २, १; भग)। २ पुंन. क्षयोपशम (भग; विसे २१७५)।

खंखर पुं [दे] पलाश-वृक्ष (ती ५३)।

खंगार पुं [खङ्गार] राजा खेंगार, विक्रम की बारहवीं शताब्दी का सौराष्ट्र देश का एक भूपति, जिसको गुजरात के राजा सिद्धराज ने मारा था (ती ५)। °गढ पुं [°गढ] नगर विशेष, सौराष्ट्र का एक नगर, जो श्राजकल 'जूनागढ़' के नाम से प्रसिद्ध है (ती २)।

खंच सक [कृष्] १ खींचना। २ वश में करना। खंचइ (भवि); 'ता गच्छ तुरियं तुरयं मा खंच मुंच मुकलयं' (सुपा १६८)।

खंचिय वि [कृष्ट] १ खींचा हुश्रा (स ५७४)। २ वश में किया हुश्रा (भवि)।

खंज श्रक [खञ्ज्] लंगड़ा होना (कप्पू)।

खंज वि [खञ्ज] लंगड़ा, पंगु, लूला (सुपा २७६)।

खंज न [खञ्ज] गाड़ी में लोहे के डंडे के पास बांधा जाता सण श्रादि का गोल कपड़ा—जो तेल श्रादि से भीजाया हुश्रा रहता है, बिड़श्रा; 'खंजंजणणयणनिभा' (उत्त ३४,४)।

खंजण पुं [खञ्जन] राहु का कृष्ण पुद्गल-विशेष (सुज्ज २०)।

खंजण पुं [खञ्जन] १ पक्षि-विशेष, खञ्जरीट (दे २,७०)। २ वृक्ष-विशेष; 'ताडवडखज्जखंजणसुक्खयरगहीरदुक्खसंचारे' (स २५६)।

खंजण पुं [दे] १ कर्दम, कीचड़ (दे २,६६; पाश्र)। २ कज्जल, काजल, मषी (ठा ४,२)। ३ गाड़ी के पहिए के भीतर का काला कीच (पण्ण १७—पत्र ५२५)।

खंजर पुं [दे] सूखा हुश्रा पेड़ (दे २, ६८)।

खंजा स्त्री [खञ्जा] छन्द-विशेष (पिंग)।

खंजिअ वि [खञ्जित] जो लंगड़ा हुश्रा हो, पंगूभूत (कप्पू)।

खंड सक [खण्डय्] तोड़ना, टुकड़ा करना, विच्छेद करना। खंडइ (हे ४, ३६७)। कवकृ खंडिज्जंत (से १३, ३२; सुपा १३४)। हेकृ. खंडित्तए (उवा)। कृ. खंडियव्व (उप ६२८ टी)।

खंड पुं [खण्ड] एक नरक-स्थान (देवेन्द्र २६)। °कव्व न [°काव्य] छोटा काव्यग्रन्थ (सम्मत्त ८४)।

खंड (श्रप) देखो खग्ग; 'सुंडीरहं खंडइ वसइ लच्छी' (भवि)।

खंड पुंन [खण्ड] १ टुकड़ा, श्रंश, हिस्सा (हे २, ६७; कुमा)। २ चीनी, मिस्री (उर ६, ८)। ३ पृथ्वी का एक हिस्सा; 'छक्खंड—' (सण)। °घडग पुं [°घटक] भिक्षुक का जल-पात्र (णाया १, १६)। °प्पवाया स्त्री [°प्रपाता] वैताढ्य पर्वत की एक गुफा (ठा २, ३)। °भेय पुं [°भेद] विच्छेद-विशेष, पदार्थ का एक तरह का पृथक्करण, पटके हुए घड़े की तरह पृथग्भाव (भग ५, ४)। °मल्लग पुंन [°मल्लक] भिक्षा-पात्र (णाया १, १६)। °सो श्र [°शस्] टुकड़ा-टुकड़ा, खण्ड-खण्ड (पि ५१६)। °भेय देखो °भेय (ठा १०)।

खंड न [दे] १ मुण्ड, शिर, मस्तक। २ दारू का बरतन, मद्य-पात्र (दे २, ६८)।

खंडई स्त्री [दे] श्रसती, कुलटा (दे २, ६७)।

खंडग पुंन [खण्डक] चौथा हिस्सा (पव १४३)।

खंडग न [खण्टक] शिखर-विशेष (ठा ६; इक)।

खंडण न [खण्डन] १ विच्छेद, भञ्जन, नाश (णाया १, ८)। २ कण्डन, धान्य वगैरह का छिलका श्रलग करना; 'खंडणदलणाइं गिहकम्मे' (सुपा १४)। ३ वि. नाश करनेवाला, नाशक (सुपा ४३२)।

खंडणा स्त्री [खण्डना] विच्छेद, विनाश (कप्पू; निचू १)।

खंडपट्ट पुं [खण्डपट्ट] १ द्यूतकार, जूश्रारी (विपा १, ३)। २ धूर्त्त, ठग। ३ श्रन्याय से व्यवहार करनेवाला (विपा १,३)।

खंडरक्ख पुं [खण्डरक्ष] १ दाण्डपाशिक, कोतवाल (णाया १, १, पण्ह १, ३; श्रौप)। २ शुल्कपाल, चुंगी वसूल करनेवाला (णाया १, १; विसे २३६०; श्रौप)।

खंडव न [खाण्डव] इन्द्र का वन-विशेष, जिसको श्रर्जुन ने जलाया था (नाट—वेणी ११४)।

खंडा स्त्री [खण्ड] मिस्री, चीनी, शक्कर, खांड़ (श्रोघ ३७३)।

खंडा स्त्री [खण्डा] इस नाम की एक विद्याधर-कन्या (महा)।

खंडाखंडि श्र [खण्डशस्] टुकड़ा-टुकड़ा; खण्डखण्ड (उवा; णाया १,६)। °डीकय वि [कृत] टुकड़ा-टुकड़ा किया हुश्रा (सुर १६, ५६)।

खंडामणिकंचण न [खण्डामणिकाञ्चन] इस नाम का एक विद्याधर-नगर (इक)।

खंडावत्त न [खण्डावर्त्त] इस नाम का एक विद्याधरनगर (इक)।

खंडाहंड वि [खण्डखण्ड] टुकड़ा-टुकड़ा किया हुआ (सुपा ३८५)।

खंडिअ पुं [खण्डिक] छात्र, विद्यार्थी (ग्रौप)।

खंडिअ वि [खण्डित] छिन्न, विछिन्न (हे १, ५३; महा)।

खंडिअ पुं [दे] १ मागध, भाट, विरुद-पाठक। २ वि. अनिवार्य, निवारण करने को अशक्य (दे २, ७८)।

खंडिआ स्त्री [खण्डिका] खण्ड, टुकड़ा (अभि ६२)।

खंडिआ स्त्री [दे] नाप-विशेष, बीस मन की नाप (सं २४)।

खंडी स्त्री [दे] १ अपद्वार, छोटा गुप्त द्वार (णाया १, १८—पत्र २३६)। २ किले का छिद्र (णाया १, २—पत्र ७९)।

खंडु (अप) देखो खग्ग। गुजराती में 'खांडु' कहते हैं (प्राकृ १२१)।

खंडुअ न [दे] बाहु-वलय, हाथ का आभूषण-विशेष, बाजूबंद (मृच्छ १८१)।

खंडुय देखो खडग (पव १४३)।

खंत पुं [दे] पिता, बाप (पिंड ४३२; सुख २, ३; ५; ८)

खंत देखो खा।

खंत वि [क्षान्त] क्षमा-शील, क्षमा-युक्त (उप ३२० टी; कप्पू; भवि)।

खंतव्व वि [क्षन्तव्य] क्षमा-योग्य, माफ करने लायक (विक्र ३८; भवि)।

खंति स्त्री [क्षान्ति] क्षमा, क्रोध का अभाव (कप्प; महा; प्रासू ४८)।

खंति देखो खा।

खंतिया } स्त्री [दे] माता, जननी (पिंड
खंती } ४३०; ४३१)।

खंद पुं [स्कन्द] १ कार्त्तिकेय, महादेव का एक पुत्र (हे २, ५, प्राप्र; णाया १, १—पत्र ३९)। २ राम का स्कन्द नाम का एक सुभट (पउम ६७, ११)। °कुमार पुं [°कुमार] एक जैन मुनि (उव)। °ग्गह पुं [°ग्रह] १ स्कन्दकृत उपद्रव, स्कन्दावेश (जं २)। २ ज्वर-विशेष (भाग ३, ६)। °मह पुं [°मह] स्कन्द का उत्सव (णाया १, १)। °सिरी स्त्री [°श्री] एक चोर-सेनापति की भार्या का नाम (विपा १, ३)।

खंदग } पुं [स्कन्दक] १-२ ऊपर देखो। ३
खंदय } एक जैन मुनि (उव; भग; अंत; सुपा ४०८)। ४ एक परिव्राजक, जिसने भगवान् महावीर के पास पीछे से जैन दीक्षा ली थी (पुप्फ ८४)।

खंदरुद्द न [स्कन्दरुद्र] शास्त्र-विशेष (धर्मसं ९३५)।

खंदिल पुं [स्कन्दिल] एक प्रख्यात जैनाचार्य, जिसने मथुरा में जैनागमों को लिपि-बद्ध किया (गच्छ १)।

खंध पुं [स्कन्ध] भित्ति, भीत, दीवार (आचा २, १, ७, १)।

खंध पुं [स्कन्ध] १ पुद्गल-प्रचय, पुद्गलों का पिण्ड (कम्म ४, ६९)। २ समूह, निकर (विसे ९००)। ३ कन्धा, काँध (कुमा)। ४ पेड़ का धड़, जहाँ से शाखा निकलती है (कुमा)। ५ छन्द-विशेष (पिंग)। °करणी स्त्री [°करणी] साध्वियों को पहनने का उपकरण-विशेष (ओघ ६७७)। °मंत वि [°मत्] स्कन्धवाला (णाया १, १)। °बीय पुं [°बीज] स्कन्ध ही जिसका बीज होता है ऐसा कदली वगैरह का गाछ (ठा ५, २)। °सालि पुं [°शालिन्] व्यन्तर देवों की एक जाति (राज)।

खंधग्गि पुं [दे. स्कन्धाग्नि] स्थूल काष्ठों की आग (दे २, ७०; पाअ)।

खंधमंस पुं [दे] हाथ, भुजा, बाहू (दे २, ७१)।

खंधमसी स्त्री [दे] स्कन्ध-यष्टि, हाथ (षड्)।

खंधय देखो खंध (पिंग)।

खंधयट्ठि स्त्री [दे. स्कन्धयष्टि] हाथ, भुजा, (दे २, ७१)।

खंधर पुंस्त्री [कन्धर] ग्रीवा, गला, गरदन (सण)। स्त्री. °रा (महा)।

खंधलट्ठि स्त्री [दे. स्कन्धयष्टि] स्कन्ध-यष्टि, हाथ, भुजा (षड्)।

खंधवार देखो खंधावार (महा)।

खंधाआर देखो खंधावार (प्राकृ ३०)।

खंधार पुं. ब. [स्कन्धार] देश-विशेष (पउम ९८,६६)।

खंधार देखो खंधावार (पउम ९६, २८; महा; विसे २४४१)।

खंधाल वि [स्कन्धवत्] स्कन्धवाला (सुपा १२९)।

खंधावार पुं [स्कन्धावार] छावनी, सैन्य का पड़ाव, शिविर (णाया १, ८; स ६०३, महा)।

खंधि वि [स्कन्धिन्] स्कन्धवाला (ग्रौप)।

खंधिल्ल देखो खंधि (स ६९७)।

खंधी स्त्री. देखो खंध (ग्रौप)।

खंधीधार पुं [दे] बहुत गरम पानी की धारा (दे २, ७२)।

खंप सक [सिच्] सिञ्चना, छिड़कना। खंपइ (भवि)।

खंपणय न [दे] वस्त्र, कपड़ा; 'बहुसेयसिन्न-मलमइलखंपणयचिक्कणसरीरो' (सुपा ११)।

खंभ पुं [स्तम्भ] खंभा, थंभा (हे १, १८७; २, ४; ८; भग; महा)।

खंभ सक [स्कभ्] क्षुब्ध होना, विचलित होना। खंभेज्जा, खंभाएज्जा (ठा ५, १—पत्र २९२)।

खंभतित्थ न [स्तम्भतीर्थ] एक जैन तीर्थ, गुजरात का प्राचीन 'खंभण' गाँव (कुप्र २१)।

खंभल्लिअ वि [स्तम्भि] खंभे से बाँधा हुआ (से ९, ८५)।

खंभाइत्त न [स्तम्भादित्य] गूर्जर देश का एक प्राचीन नगर, जो आजकल 'खंभात' नाम से प्रसिद्ध है (ती २३)।

खंभाळण न [स्तम्भालगन] खम्भे से बांधना (पण्ह १, ३)।

खक्खरग पुंन [दे] सूखी रोटी (धर्म २)।

खग्ग पुं [खड्ग] १ पशु विशेष, गेंडा (उप १४८; पण्ह १, १)। २ पुंन. तलवार, असि (हे १, ३४; स ५३१)। °धेणुआ स्त्री [°धेनु] छूरी, चाकू (दंस)। °पुरा स्त्री [°पुरा] विदेह वर्ष की स्वनाम-प्रसिद्ध नगरी (ठा २, ३)। °पुरी स्त्री [°पुरी] पूर्वोक्त ही अर्थ (इक)।

खग्गाखग्गि न [खड्गाखड्गि] तलवार की लड़ाई (सिरि १०३२)।

खग्गि पुं [खड्गिन्] जन्तु-विशेष, गेंड़ा (कुमा)।

खग्गिअ पुं [दे] ग्रामेश, गाव का मुखिया (दे २, ६९)।

खग्गी स्त्री [खड्गी] विदेह वर्ष की नगरी-विशेष (ठा २, ३)।

खग्गूड वि [दे] १ शठ-प्राय, धूर्त्त-सदृश (ओघ ३६ भा)। २ धर्मरहित, नास्तिक-प्राय (ओघ ३५ भा)। ३ निद्रालु। ४ रस-लम्पट (बृह १)।

खच सक [खच्] १ पावन करना, पवित्र करना। २ कसकर बांधना। खचइ (हे ४, ८९)।

खचिअ देखो खइअ = खचित (कुमा)। ३ पिञ्जरित (कप्प)।

खच्चल्ल पुं [दे] ऋक्ष, भल्लूक, भालू (दे २, ६९)।

खच्चोल पुं [दे] व्याघ्र, शेर (दे २, ६९)।

खज्ज पुं [खर्ज] वृक्ष-विशेष (स २५६)।

खज्ज वि [खाद्य] १ खाने योग्य वस्तु (पण्ह १, २)। २ न. खाद्य-विशेष (भवि)।

खज्ज वि [क्षय्य] जिसका क्षय किया जा सके वह (षड्)।

खज्जंत देखो खा।

खज्जग देखो खज्ज = खाद्य (भग १५)।

खज्जमाण देखो खा।

खज्जय देखो खज्ज = खाद्य (पउम ६९, १६)।

खज्जिअ वि [दे] १ जीर्ण, सड़ा हुआ। २ उपालब्ध, जिसको उलाहना दिया गया हो वह (दे २, ७८)।

खज्जिर (अप) वि [खाद्यमान] जो खाया गया हो वह (सण)।

खज्जू स्त्री [खर्जू] खुजली, पामा (राज)।

खज्जूर पुं [खर्जूर] १ खजूर का पेड़ (कुमा; उत्त ३४)। २ न. खजूर का फल (पउम ४१, ९; सुपा ५७)।

खज्जूरी स्त्री [खर्जूरी] खजूर का गाछ (पाअ; पण्ण १)।

खज्जोअ पुं [दे] नक्षत्र (दे २, ६९)।

खज्जोअ पुं [खद्योत] कीट-विशेष, जुगनू, (सुपा ४७; णाया १, ८)।

खट्ट न [दे] १ तीमन, कढ़ी, झोर (दे २, ६७)। २ वि. खट्टा, अम्ल (पण्ण १—पत्र २७; जीव १)। °मेह पुं [°मेघ] खट्टे जल की वर्षा (भग ७, ६)।

खट्टंग न [दे] छाया, आतप का अभाव (दे २, ६८)।

खट्टंग न [खट्वाङ्ग] १ शिव का एक आयुध (कुमा)। २ चारपाई का पाया या पाटी। ३ प्रायश्चित्तात्मक भिक्षा मांगने का एक पात्र। ४ तान्त्रिक मुद्रा-विशेष;
'हत्थट्ठियं कवालं, न मुयइ नूणं खणंपि खट्टंगं।
सा तुह विरहे बालय, बाला कावालिणी जाया'
(वज्जा ८८)।

खट्टक्खड पुं [खट्वाक्षक] रत्नप्रभा नामक पृथिवी का एक नरकावास, 'कालं काऊण रयणप्पभाए पुढवीए खट्टक्खडाभिहाणे नरए पलिओवमाऊ चेव नारगो उववन्नोत्ति' (स ८६)।

खट्टा स्त्री [खट्वा] खाट, पलंग, चारपाई (सुपा ३३७; हे १, १९५)। °मल्ल पुं [°मल्ल] बीमारी की प्रबलता से जो खाट से उठ न सकता हो वह (बृह १)।

खट्टिअ } [दे. खट्टिक] खटीक, सौनिक,
खट्टिक } कसाई (गा ६८२; सूअ २, २; दे २, ७०)।

खड पुं [दे] एक म्लेच्छ-जाति (मृच्छ १५२)।

खड न [दे] तृण, घास (दे २, ६७; कुमा)।

खडइअ वि [दे] संकुचित, संकोच-प्राप्त (दे २, ७२)।

खडंग न [षडङ्ग] छः अंग, वेद के ये छः अंग—शिक्षा, कल्प, व्याकरण, ज्योतिष, छन्द, निरुक्त। °वि वि [°वित्] छहों अंगों का जानकार (पि २६५)।

खडक्कय पुंन [खटत्कृत] आहट देना, ध्वनि के द्वारा सूचना, सिकड़ी वगैरह की आवाज; 'वियडकवाडकडाणं खडक्कओ निसुणिओ तत्तो' (सुपा ४१४)।

खडक्कार पुं [खटत्कार] ऊपर देखो (सुर ११, ११२; विक्र ९०)।

खडक्किआ } स्त्री [दे] खिड़की, छोटा द्वार
खडक्की } (कप्पू; महा; दे २, ७१)।

खडक्किय देखो खडक्कय (धर्मवि ५६)।

खडक्खड पुं [खटत्खट] खट-खट आवाज (मोह ८६)।

खडक्खर देखो छडक्खर (सम्मत्त १४३)।

खडखड पुं [खडखड] देखो खाडखड (इक)।

खडखडग वि [दे] छोटा और लम्बा (राज)।

खडट्टोबिल पुं [दे] एक म्लेच्छ-जाति (मृच्छ १५२)।

खडणा स्त्री [दे] गैया, गौ (गा ६३९ अ)।

खडहड पुं [खटखट] साँकल वगैरह की आवाज, खटत्कार (सुपा ५०२)।

खडहडी स्त्री [दे] जन्तु-विशेष, गिलहरी, गिल्ली (दे २, ७२)।

खडिअ देखो खट्टिअ (गा ६८२ अ)।

खडिअ देखो खलिअ (गा १९२ अ)।

खडिअ पुं [दे] दवात, स्याही का पात्र (धर्मवि ५७)।

खडिआ स्त्री [खटिका] खड़ी, लड़कों को लिखने की खड़ी या खड़िया (कप्पू)।

खडी स्त्री [खटी] ऊपर देखो (प्राकृ)।

खडुआ स्त्री [दे] मौक्तिक, मोती (दे २, ६८)।

खडुक्क अक [आविस् + भू] प्रकट होना, उत्पन्न होना। खडुक्कंति (वज्जा ४६)।

खडुक्क } पुंस्त्री [दे] मुंड सिर पर उंगली
खडुग } का आघात (वव १)।

खड्ड सक [मृद्] मर्दन करना। खड्डइ (हे ४, १२६)।

खड्ड } न [दे] १ श्मश्रु, दाढ़ी-मूँछ (दे २,
खड्डुग } ६६; पाअ)। २ बड़ा, महान् (विसे २५७९ टी)। ३ गर्त्त के आकारवाला (उवा)।

खड्डा स्त्री [दे] १ खानि, आकर (दे २, ६६)। २ पर्वत का खात, पर्वत का गर्त्त (दे २, ६६)। ३ गर्त्त, गड्ढा, खड्डा (सुर २, १०३; स १५२; सुपा १५; श्रा १६; महा; उत्त २; पंचा ७)।

खड्डिअ वि [मृदित] जिसका मर्दन किया गया हो वह (कुमा)।

खड्डुया स्त्री [दे] ठोकर, आघात; 'खड्डुया मे चवेडा मे' (उत्त १, ३८)।

खड्डोलय पुं [दे] खड्डा, गर्त्त, गड्ढा (स ३९३)।

खण सक [खन्] खोदना। खणइ (महा)। कर्म. खम्मइ, खणिज्जइ (हे ४, २४४)। वकृ. खणेमाण (सुर २, १०३)। संकृ-

खणेत्तु (आचा)। कवकृ. खन्नमाण (पि ५४०)।

खण पुं [क्षण] काल-विशेष, बहुत थोड़ा समय (ठा २, ४; हे २, २०; गउड; प्रासू १३४)। °जोइ वि [°योगिन्] क्षणमात्र रहनेवाला (सूत्र १, १, १)। °भंगुर वि [°भङ्गुर] क्षण-विनश्वर, क्षणिक (पउम ८, १०५; गा ४२३; विवे ११४)। °या स्त्री [°दा] रात्रि, रात (उप ७६८ टी।

खणक्खण } अक [खणखणाय्] 'खण-खणखणखण } खण' आवाज करना। खण-खणंति (पउम ३६, ५३)। वकृ. खण-क्खणंत (स ३८४)।

खणग वि [खनक] खोदनेवाला (णाया १, १८)।

खणण न [खनन] खोदना (पउम ८६, ६०; उप पृ २२१)।

खणय देखो खण = क्षण (आचा; उवा)।

खणय वि [खनक] खोदनेवाला (दे १, ८५)।

खणाविय वि [खानित] खुदाया हुआ (सुपा ४५४; महा)।

खणि स्त्री [खनि] खान, आकर (सुपा ३५०)।

खणिक्क } देखो खणिय = क्षणिक; 'सद्दाइया खणिग } कामगुणा खणिक्का' (श्रु १५२; धर्मसं २२८)।

खणित्त न [खनित्र] खोदने का अस्त्र, खन्ती (दे ४, ४)।

खणिय वि [क्षणिक] १ क्षण-विनश्वर, क्षण-भंगुर (विसे १६७२)। २ वि. फुरसत-वाला, काम-धंधा से रहित; 'नो तुम्हे विव अम्हे खणिया इय वुत्तु नीहरिओ' (धम्म ८ टी)। °वाइ वि [°वादिन्] सर्व पदार्थ को क्षण-विनश्वर माननेवाला, बौद्धमत का अनुयायी (राज)।

खणिय वि [खनित] खुदा हुआ (सुपा २५६)।

खणी देखो खणि (पात्र)।

खणुसा स्त्री [दे] मन का दुःख, मानसिक पीड़ा (दे २, ६८)।

खण्ण न [दे] खात, खोदा हुआ (दे २, ६६; बृह ३; वव १)।

खण्ण वि [खन्य] खोदने योग्य (दे २, ३६)।

खण्णु देखो खाणु (दे २, ६६; षड्)।

खण्णुअ पुं [दे. स्थाणुक] कीलक, खोंटी, खूँटा (दे २, ६८; गा ६४; ४२२ अ)।

खत्त न [दे] १ खात, खोदा हुआ (दे २, ६६; पात्र)। २ शस्त्र से तोड़ा हुआ (ओघ ३४०)। ३ सेंध, चोरी करने के लिए दीवाल में किया हुआ छेद (उप पृ ११६; णाया १, १८)। ४ खाद, गोबर (उप ५६७ टी)। °खणग पुं [°खनक] सेंध लगाकर चोरी करनेवाला (णाया १, १८)। °खणण न [°खनन] सेंध लगाना (णाया १, १८)। °मेह पुं [°मेघ] करीष के समान रसवाला मेघ (भग ७, ६)।

खत्त पुं [क्षत्र] क्षत्रिय, मनुष्य-जाति-विशेष (सुपा १६७; उत्त १२)।

खत्त वि [क्षात्र] १ क्षत्रिय-संबन्धी, क्षत्रिय का। २ न. क्षत्रियत्व, क्षत्रियपन; 'अहह अखत्तं करेइ कोइ इमो' (धम्म ८ टी; नाट)।

खत्तय पुं [दे] १ खेत खोदनेवाला। २ सेंध लगाकर चोरी करनेवाला। ३ ग्रह-विशेष, राहु (भग १२, ६)।

खत्ति पुं [दे] एक म्लेच्छ-जाति (मृच्छ १५२)।

खत्ति पुंस्त्री [क्षत्रिन्] नीचे देखो, 'खत्तीण सेट्ठे जह दंतवक्के' (सूत्र १, ६, २२)।

खत्तिअ पुंस्त्री [क्षत्रिय] मनुष्य की एक जाति, क्षत्री, राजन्य (पिंग; कुमा; हे २, १८५; प्रासू ८०)। °कुंडग्गाम पुं [°कुण्डग्राम] नगर-विशेष, जहाँ श्रीमहावीर देव का जन्म हुआ था (भग ६, ३३)। °कुंडपुर न [°कुण्डपुर] पूर्वोक्त ही अर्थ (आचा २, १५, ४)। °विज्जा स्त्री [°विद्या] धनु-विद्या (सूत्र २, २)।

खत्तिणी } स्त्री [क्षत्रियाणी] क्षत्रिय जाति खत्तियाणी } की स्त्री (पिंग; कप्प)।

खद्द न [दे] प्रभूत लाभ (पंचा १७, २१)।

खद्ध वि [दे] १ भुक्त, भक्षित (दे २, ६७; सुपा ६१०; उप पृ २५२; सण; भवि)। २ प्रचुर, बहुत; 'खद्धे भवदुक्खजले तरइ विणा नेय सुगुरुतरिं' (सार्ध. ११४; दे २, ६७; पव २; बृह ४)। ३ विशाल, बड़ा (ओघ ३०७; ठा ३, ४)। ४ अ. शीघ्र, जल्दी (आचा २, १, ६)। °दाणिअ वि. [°दानिक] समृद्ध, ऋद्धि-संपन्न (ओघ ८६)।

खन्न [दे] देखो खण्ण (पात्र)।

खन्नमाण देखो खण = खन्।

खन्नुअ [दे] देखो खण्णुअ (पात्र)।

खपुसा स्त्री [दे] एक प्रकार का जूता (बृह ३)।

खप्पर पुं [कर्पर] १ मनुष्य-जाति-विशेष, 'पत्ते तम्मि दसएणगेसु पवलं जं खप्पराणं बलं' (रंभा)। २ भिक्षा-पात्र, कपाल (सुपा ४६५)। ३ खोपड़ी, कपाल (हे १, १८१)। ४ घट वगैरह का टुकड़ा (पउम २०, १६६)।

खप्पर } वि [दे] रूक्ष, रूखा, निष्ठुर खप्पुर } (दे २, ६६; पात्र)।

खम सक [क्षम्] १ क्षमा करना, माफ करना। २ सहन करना। खमइ (उवर ८३; महा)। कर्म. खमिज्जइ (भवि)। कृ. खम्मियव्व (सुपा ३०७; उप ७२८ टी; सुर ४, १६७)। प्रयो. खमावइ (भवि)। संकृ. खमावइत्ता, खमावित्ता (पडि; काल)। कृ. खमावियव्व (कप्प)।

खम वि [क्षम] १ उचित, योग्य; 'सच्चित्तो आहारो न खमो मणसा वि पत्थेउं' (पच ५४; पात्र)। २ समर्थ, शक्तिमान् (दे १, १७; उप ६५०; सुपा ३)।

खमग पुं [क्षमक, क्षपक] तपस्वी जैन साधु (उप पृ ३६२; ओघ १४०; भत्त ४४)।

खमण न [क्षपण] तपश्चर्या, बेला, तेला आदि तप (पिंड ३१२)।

खमण न [क्षपण, क्षमण] १ उपवास (बृह १; निचू २०)। २ पुं. तपस्वी जैन साधु (ठा १०—पत्र ५१४)।

खमय देखो खमग (ओघ ५६४; उप ४८६; भत्त ४०)।

खमा स्त्री [क्षमा] १ पृथिवी, भूमि; 'उव्वूढ-खमाभारो' (सुपा ३४८)। २ क्रोध का अभाव, क्षान्ति (हे २, १८)। °वइ पुं [°पति] राजा, नृप, भूपति (धर्म १६)। °समण पुं [°श्रमण] साधु, ऋषि, मुनि (पडि)। °हर पुं [°धर] १ पर्वत, पहाड़। २ साधु, मुनि (सुपा ३२६)।

खमावणया } स्त्री [क्षमणा] खमाना, माफी **खमावणा** } माँगना (भग १७, ३; राज)।

खमाविय वि [क्षमित] माफ किया हुआ (हे ३, १५२; सुपा ३६४)।

खमिय वि [क्षमित] माफ किया हुआ (कुप्र १६)।

खम्म देखो **खण** = खन्। खम्मइ (प्राकृ ६८)।

खम्मक्खम पुं [दे] १ संग्राम, लड़ाई। २ मन का दुःख। ३ पश्चात्ताप का निश्वास (दे २, ७६)।

खय देखो **खच**। खग्रइ (षड्)।

खय अक [क्षि] क्षय पाना, नष्ट होना। खग्रइ (षड्)।

खय देखो **खग** (पाम्र)। ३ आकाश तक ऊँचा पहुँचा हुआ (से ६,४२)। °**राय** पुं [°**राज**] पक्षिओं का राजा, गरुड-पक्षी (पाअ)। °**वइ** पुं [°**पति**] गरुड़-पक्षी (से १५, ५०)।

खय न [क्षत] २ व्रण, घाव; 'खारक्खेवं व खए' (उप ७२८ टी)। २ वि. व्रणित, घवाया हुआ; 'सुणओव्व कीडखग्रो' (श्रा १४; सुपा ३४६; सुर १२, ६१)। °**यार** स्त्री पुं [°**चार**] शिथिलाचारी साधु या साध्वी (वव ३)।

खय वि [खात] खोदा हुआ (पउम ६१, ४२)।

खय पुं [क्षय] १ क्षय, प्रलय, विनाश (भग ११, ११)। २ रोग-विशेष, राज-यक्ष्मा (लहुअ १५)। °**कारि** वि [°**कारिन्**] नाश-कारक (सुपा ६५५)। °**काल**, °**गाल** पुं [°**काल**] प्रलय-काल, (भवि; हे ४,३७७)। °**ग्गि** पुं [°**अग्नि**] प्रलय-काल की आग (से १२, ८१)। °**नाणि** पुं [°**ज्ञानिन्**] केवल-ज्ञानी, परिपूर्ण ज्ञानवाला, सर्वज्ञ (विसे ५१८)। °**समय** पुं [°**समय**] प्रलय-काल (लहुअ २)।

खयंकर वि [क्षयकर] नाश-कारक (पउम ७, ८१; ६६, ३४; पुप्फ ८२)।

खयंतकर वि [क्षयान्तकर] नाश-कारक (पउम ७, १७०)।

खयर पुंस्त्री [खचर] १ आकाश में चलने-वाला, पक्षी (जी २०)। २ विद्याधर, विद्या बल से आकाश में चलनेवाला मनुष्य (सुर ३, ८८; सुपा २४०)। °**राय** पुं [°**राज**] विद्याधरों का राजा (सुपा १३४)।

खयर देखो **खइर** = खदिर (अन्त १२; सुपा ५६३)।

खयरक्क वि [खादिरक] खदिर-सम्बन्धी। स्त्री. °**क्का** (सुख २, ३)।

खयाल पुंन [दे] वंश-जाल, बाँस का वन (भवि)।

खर अक [क्षर्] १ झरना, टपकना। २ नष्ट होना। खरइ (विसे ४५५)।

खर वि [खर] १ निष्ठुर, रुखा, परुष, कठोर (सुर २, ६; दे २, ७८; पाअ)। २ पुंस्त्री. गर्दभ, गधा (पण्ह १, १; पउम ५६, ४४)। ३ पुं. छन्द-विशेष (पिंग)। ४ न. तिल का तेल (ओघ ४०६)। °**कंट** न [°**कण्ट**] बबूल वगैरह की शाखा (ठा ३, ४)। °**कंड** न [°**काण्ड**] रत्नप्रभा पृथिवी का प्रथम काण्ड—अंश-विशेष (जीव ३)। °**कम्म** न [°**कर्मन्**] जिसमें अनेक जीवों की हानि होती हो ऐसा काम, निष्ठुर धंधा (सुपा ५०५)। °**कम्मिअ** वि [°**कर्मिन्**] १ निष्ठुर कर्म करनेवाला। २ पुं. कोतवाल, दाण्डपाशिक (ओघ २१८)। °**किरण** पुं [°**किरण**] सूर्य, सूरज (पिंग; सण)। °**दूसण** पुं [°**दूषण**] इस नाम का एक विद्याधर राजा, जो रावण का बहनोई था (पउम १०, १७)। °**नहर** पुं [°**नखर**] श्वापद जन्तु, हिंसक प्राणी सुपा १३६; ४७४)। °**निस्सण** पुं [°**निःस्वन**] इस नाम का रावण का एक सुभट (पउम ५६, ३०)। °**मुह** पुं [°**मुख**] १ अनार्य, देश-विशेष। २ अनार्य देश-विशेष का निवासी (पण्ह १, ४)। °**मुही** स्त्री [°**मुखी**] १ वाद्य-विशेष (पउम ५७, २३; सुपा ५०; औप)। २ नपुंसक दासी (वव ६)। °**यर** वि [°**तर**] १ विशेष कठोर (सुपा ६०६)। २ पुं. इस नाम का एक जैन गच्छ (राज)। °**सन्नय** न [°**संज्ञक**] तिल का तेल (ओघ ४०६)। °**साविआ** स्त्री [°**शाविका**] लिपि-विशेष (सम ३५)। °**स्सर** पुं [°**स्वर**] परमाधार्मिक देवों की एक जाति (सम २६)।

खर वि [क्षर] विनश्वर, अस्थायी (विसे ४५७)।

खरंट सक [खरण्टय्] १ धूत्कारना, निर्भ-र्त्सना करना। २ लेप करना। खरंटए (सूक्त ४६)।

खरंट वि [खरण्ट] १ धूत्कारनेवाला, तिर-स्कारक। २ उपलिप्त करनेवाला। ३ अशुचि पदार्थ (ठा ४, १; सूक्त ४६)।

खरंटण न [खरण्टन] १ निर्भर्त्सन, परुष-भाषण (वव १)। २ प्रेरणा (ओघ ४० भा)।

खरंटणा स्त्री [खरण्टना] ऊपर देखो (ओघ ७५)।

खरंटिअ वि [खरण्टित] निर्भर्त्सित (कुप्र ३१८)।

खरंसुया स्त्री [दे] वनस्पति-विशेष (संबोध ४४)।

खरड पुं [दे] हाथी की पीठ पर बिछाया जाता आस्तरण (पव ८४)।

खरड सक [लिप्] लेपना, पोतना। संकृ. खरडिवि (सुपा ४१५)।

खरड पुं [खरट] एक जघन्य मनुष्य-जाति, 'अह केणइ खरडेणं किणिउं हट्टम्मि वरुणव-णियस्स' (सुपा ३६२)।

खरडिअ वि [दे] १ रूक्ष, रुखा। २ भग्न, नष्ट (दे २, ७६)।

खरडिअ वि [लिप्त] जिसको लेप किया गया हो वह, पोता हुआ (ओघ ३७३ टी)।

खरण न [दे] बबूल वगैरह की कण्टक-मय डाली (ठा ४, ३)।

खरफरुस पुं [खरपरुष] एक नरक स्थान (देवेन्द्र २७)।

खरय पुं [खरक] भगवान् महावीर के कान में से खीला (मांस कील) निकालनेवाला एक वैद्य (चेइय ६६)।

खरय पुं [दे] १ कर्मकर, नौकर (ओघ ४३८)। २ राहु (भग १२, ६)।

खरहर अक [खरखराय्] 'खर-खर' आवाज करना। वकृ. खरहरंत (गउड)।

खरहिअ पुं [दे] पौत्र, पोता, पुत्र का पुत्र (दे २, ७२)।

खरा स्त्री [खरा] जन्तु-विशेष, नेवला की तरह भुज से चलनेवाला जन्तु-विशेष (जीव २)।

खरिअ वि [दे] भुक्त, भक्षित (दे २, ६७; भवि)।

खरिआ स्त्री [दे] नौकरानी, दासी (ओघ ४३८)।

खरिंसुअ पुं [दे. खरिंशुक] कन्द-विशेष (श्रा २०)।

खरुट्ठी स्त्री [खरोष्ट्री] एक प्राचीन लिपि जो दाहिने से बाएँ को लिखी जाती थी। गांधार लिपि। देखो, **खरोट्ठिआ** (पराण १)।

खरुल्ल वि [दे] १ कठिन, कठोर। २ स्थपुट, विषम और ऊँचा (दे २, ७८)।

खरोट्ठिआ स्त्री [खरोष्ट्रिका] लिपि-विशेष (सम ३५)।

खल अक [स्खल] १ पड़ना, गिरना। २ भूलना। ३ रुकना। खलइ (प्राप्र)। वकृ. **खलंत, खलमाण** (से २, २७; गा ५४६; सुपा ६४१)।

खल अक [स्खल्] अपसरण करना, हटना। खलाहि (उत्त १२, ७)।

खल अ. [खलु] पाद पूर्ति में प्रयुक्त होता अव्यय (प्राकृ ८१)।

खल वि [खल] १ दुर्जन, अधम मनुष्य (सुर १, १६)। २ न. धान साफ करने का स्थान (विपा १ ८; श्रा १४)। °**पू** वि [°पू] खलिहान या खलियान को साफ करनेवाला (कुमा; षड्; प्रामा)।

खलइअ वि [दे] रिक्त, खाली (दे २, ७१)।

खलक्खल अक [खलखलाय्] 'खल-खल' आवाज करना। खलक्खलेइ (पि ५५८)।

खलगंडिअ वि [दे] मत्त, उन्मत्त (दे २, ६७)।

खलण न [स्खलन] १ नीचे देखो (आचा; से ८, ५५; गा ४६६; वज्जा २६)।

खलणा स्त्री [स्खलना] १ गिर जाना, निपतन (दे २, ६४)। २ विराधना, भंजन (ओघ ७८८)। ३ अटकायत, रुकावट; 'होजा गुणो, ण खलणं करेमि जइ अस्स वसणस्स' (उप ३३६ टी)।

खलभलिय वि [दे] क्षुब्ध, क्षोभ-प्राप्त (भवि)।

खलहर } **खलहल** } पुं [खलखल] नदी के प्रवाह की आवाज, 'वहमाणवाहिणीणं दिसिदिसिसुव्वंतखलहरासद्दो' (सुर ३, ११; २, ७५)।

खला अक [दे] खराब करना, नुकसान करना; 'ताणवि खलो खलाइ य' (पउम ३७, ६३)।

खलिअ वि [स्खलित] १ रुका हुआ। २ गिरा हुआ, पतित (हे २, ७७; पाअ)। ३ न. अपराध, गुनाह। ४ भूल (से १, ६)।

खलिअ वि [खलिक] खल से व्याप्त, खलिखचित (दे ४, १०)।

खलिण पुंन [खलिन] १ लगाम (पाअ)। २ कायोत्सर्ग का एक दोष (पव ५)।

खलिया स्त्री [खलिका] तिल वगैरह का तैल-रहित चूर्ण, खली, खरी (सुपा ४१४)।

खलियार सक [खली+कृ] १ तिरस्कार करना, धूत्कारना। २ ठगना। ३ उपद्रव करना। खलियारसि, खलियारेंति (सुपा २३७; स ४६८)।

खलियार पुं [खलिकार] तिरस्कार, निर्भर्त्सना (पउम ३६, ११६)।

खलियारण न [खलीकरण] तिरस्कार (पउम ३६, ८४)।

खलियारणा स्त्री [खलीकरणा] वञ्चना, ठगाई (स २८)।

खलियारिअ वि [खलीकृत] १ तिरस्कृत (पउम ६६, २)। २ वञ्चित, ठगा हुआ (स २८)।

खलिर वि [स्खलितृ] स्खलन करनेवाला (वज्जा ५८; सण)।

खली स्त्री [दे. खली] तिल-पिण्डिका, तिल वगैरह का स्नेहरहित चूर्ण, खली (दे २, ६६; सुपा ४१५; ४१६)।

खलीकय देखो **खलियारिअ** (चउ ४४)।

खलीकर देखो **खलियार**=खली+कृ। खलीकरेइ (स २७)। कर्म. खलीकरीयइ, खलीकिज्जइ (स २८; सण)।

खलीण न [खलीन] देखो **खलिण** (सुपा ७७; स ५७४)। २ नदी का किनारा; 'खलीणमट्टियं खणमाणे' (विपा १, १—पत्र—१६)।

खलु अ [खलु] विशेष-सूचक अव्यय (दसनि ४, १६)।

खलु अ [खलु] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ अवधारण, निश्चय (जी ७)। २ पुनः, फिर (आचा)। ३ पादपूर्ति और वाक्य की शोभा के लिए भी इसका प्रयोग होता है (आचा; निचू १०)। °**खित्त** न [°क्षेत्र] जहाँ पर जरूरी चीज मिले वह क्षेत्र (वव ८)।

खलुंक पुं [दे] १ गली बैल, अविनीत बैल, (ठा ४, ३—पत्र २४८)। २ अविनीत शिष्य, कुशिष्य (उत्त २७)।

खलुंकिज्ज पुं [दे] १ गली बैल संबन्धी। २ न. उत्तराध्ययन सूत्र का इस नाम का एक अध्ययन (उत्त २७)।

खलुग देखो **खलुय** (पव ६२)।

खलुय न [खलुक] गुल्फ; पाँव का मणि-बन्ध (विपा १, ६)।

खल्ल न [दे] १ बाड़ का छिद्र। २ विलास (दे २, ७७)। ३ वि. खाली, रिक्त; 'जाया खल्लकवोला परिसोसियमंससोणिया धणियं' (उप ७२८ टी; दे १, ३८)।

खल्ल वि [दे] निम्न-मध्य, जिसका मध्य भाग नीचा हो वह (दे १, ३८)।

खल्लइअ वि [दे] १ संकुचित, संकोच-युक्त। २ प्रहृष्ट, हर्षयुक्त (दे २, ७६; गउड)।

खल्लग } **खल्लय** } पुंन [दे] १ पत्र, पत्ता। २ पत्र-पुट, पत्तों का बना हुआ पुड़वा या दोना (सूअ १, २, २, १६ टी; पिंड २१०; बृह १)।

खल्लग } **खल्लय** } पुंन [दे] १ पाँव का रक्षण करनेवाला चमड़ा, एक प्रकार का जूता (धर्म ३)। २ थैला (उप १०३१ टी)।

खल्ला स्त्री [दे] चर्म, चमड़ा, खाल (दे २, ६६; पाअ)।

खल्लाड देखो **खल्लीड** (निचू २०)।

खल्लिरा स्त्री [दे] संकेत (दे २, ७०)।

खल्लिहड (अप) देखो **खल्लीड** (हे ४, ३८६)।

खल्ली स्त्री [दे] सिर का वह चमड़ा, जिसमें केश पैदा न होता हो (आवम)।

खल्लीड पुं [खल्वाट] जिसके सिर पर बाल न हो, गंजा, चंदला (हे १, ७४; कुमा)।

खल्लूड पुं [खल्लूट] कन्द-विशेष (पराण १—पत्र ३६)।

खव सक [क्षपय्] १ नाश करना। २ डालना, प्रक्षेप करना। ३ उल्लंघन करना। खवेइ (उव), खवयंति (भग १८, ७)। कर्म. खविज्जंति (भग)। वकृ. **खवेमाण** (णाया

१, १८)। संकृ. खवइत्ता, खवित्तु, खवेत्ता (भग १५; सम्य १६, औप)।

खव पुं [दे] १ वाम हस्त, बायाँ हाथ। २ गर्दभ, रासभ (दे २, ७७)।

खवग वि [क्षपक] १ नाश करनेवाला, क्षय करनेवाला। २ पुं. तपस्वी जैन-मुनि (उव; भाव ८)। ३ त्रि. क्षपक श्रेणि में आरूढ़ (कम्म ५)। °सेढि स्त्री [°श्रेणि] क्षपण-क्रम, कर्मों के नाश की परिपाटी (भग ६, ११; उवर ११४)।

खवडिअ वि [दे] स्खलित, स्खलन-प्राप्त (दे २, ७१)।

खवण } न [क्षपण] १ क्षय, नाश (जीत)।
खवणय } २ डालना, प्रक्षेप (कम्म ४, ७५)। ३ पुं. जैन-मुनि (विसे २५८५; मुद्रा ७८)।

खवण देखो खमण; 'विहिय पक्खखवणे सो' (धर्म २३)।

खवणा स्त्री [क्षपणा] अध्ययन, शास्त्र-प्रकरण (अणु २५०)।

खवय पुं [दे] स्कन्ध, कंधा (दे २, ६७)।

खवय देखो खवग (सम २६; आरा १३; आचा)।

खवलिअ वि [दे] कुपित, क्रुद्ध (दे २, ७२)।

खवल्ल पुं [खवल्ल] मत्स्य-विशेष (विपा १, ८—पत्र ८३ टी)।

खवा स्त्री [क्षपा] रात्रि, रात। °जल न [°जल] अवश्याय, हिम (ठा ४, ४)।

खविअ वि [क्षपित] १ विनाशित, नष्ट किया हुआ (सुर ४, ५७; प्राप)। २ उद्वेजित (गा १३४)।

खव्व पुं [दे] १ वाम कर, बाँया हाथ। २ रासभ, गधा (दे २, ७७)।

खव्व वि [खर्व] वामन, कुब्ज, नाटा (पाअ)।

खव्व वि [खर्व] लघु, थोड़ा; 'अखव्वगव्वो कओ आसि' (सिरि ६७५)।

खव्वुर देखो कब्बुर (विक्र २८)।

खव्वुल न [दे] मूँह, मुख (दे २, ६८)।

खस अक [दे] खिसकना, गिर पड़ना। खसइ (पिंग)।

खस पुं. ब. [खस] १ अनार्य देश-विशेष, हिन्दुस्थान के उत्तर में स्थित इस नाम का एक पहाड़ी मुल्क (पउम ९८ ६६)। २ पुंस्त्री. खस देश में रहनेवाला मनुष्य (पण्ह १—पत्र १४; इक)।

खसखस पुं [खसखस] पोस्ता का दाना, उशीर, खस (सं ६६)।

खसफस अक [दे] खसना, खिसकना, गिर पड़ना। वकृ खसफसेमाण (सुर २,१५)।

खसफसि वि [दे] व्याकुल, अधीर। °हूअ वि [°भूत] व्याकुल बना हुआ (हे ४, ४२२)।

खसर देखो कसर = दे कसर (जं २; स ४८०)।

खसिअ देखो खइअ = खचित (हे १, १९३)।

खसिअ न [कसित] रोग-विशेष, खाँसी (हे १, १८१)।

खसिअ वि [दे] खिसका हुआ (सुपा २८१)।

खसु पुं [दे] रोग-विशेष, पामा, गुजराती में 'खस' (सण)।

खह पुंन [खह] आकाश, गगन (भग २०, २—पत्र ७७५)।

खह देखो ख (ठा ३, १)।

खहयर देखो खयर (औप; विपा १, १)।

खहयरी स्त्री [खचरी] १ पक्षिणी, मादा पक्षी। २ विद्याधरी, विद्याधर की स्त्री (ठा ३, १)।

खा } सक [खाद्] खाना, भोजन करना,
खाअ } भक्षण करना। खाइ, खाअइ, खाउ (हे ४, २२८)। खंति (सुपा ३७०; महा)। भवि. खाहिइ (हे ४, २२८)। कर्म. खज्जइ (उव)। वकृ. खत, खायंत, खायमाण (कप्प १४; पउम २२, ७५; विपा १, १); 'खंता पिअंता इह जे मरंति, पुणोवि ते खंति पिअंति रायं!' (कप्प १४)। कवकृ. खज्जंत, खज्जमाण (पउम २२, ४३; गा २४८; पउम १७, ८१; ८२, ४०)। हेकृ. खाइउं (पि ५७३)।

खाअ वि [ख्यात] प्रसिद्ध, विश्रुत (उप ३२६; ६२३; नव २७; हे २, ९०)। °कित्तीय वि [°कीर्त्तिक] यशस्वी, कीर्त्तिमान् (पउम ७, ४८)। °जस वि [°यशस्] वही अर्थ (पउम ५, ८)।

खाअ वि [खादित] भुक्त, भक्षित; 'खाउग्गिणण—' (गा ६६८; भवि)।

खाअ वि [खात] १ खुदा हुआ। २ न. खुदा हुआ जलाशय; 'खाओदगाई' (कप्प)। ३ ऊपर में विस्तारवाली और नीचे में संकुचित ऐसी परिखा। ४ ऊपर और नीचे समान रूप से खुदी हुई परिखा (औप)। ५ खाई, परिखा पाअ)।

खाइ स्त्री [खाति] खाई, परिखा (सुपा २६४)।

खाइ स्त्री [ख्याति] प्रसिद्धि, कीर्त्ति (सुपा ५२९; ठा ३, ४)।

खाइ [दे] देखो खाइं (औप)।

खाइअ देखो खइअ = क्षायिक (विसे ४९; २१७५; सत्त ६७ टी)।

खाइअ वि [खादित] खाया हुआ, भुक्त, भक्षित (प्राप; निर १, १)।

खाइआ स्त्री [दे. खातिका] खाई, परिखा (दे २, ७३; पाअ; सुपा ५२६; भग ५, ७; पण्ह २, ५)।

खाइं अ [दे] १—२ वाक्य की शोभा और पुनः शब्द के अर्थ का सूचक अव्यय (भग ५, ४; औप)।

खाइग देखो खाइअ = क्षायिक (सुपा ५५१)।

खाइम न [खादिम] अन्न-वर्जित फल, औषध वगैरह खाद्य चीज (सम ३९; ठा ४२; औप)।

खाइर वि [खादिर] खदिर-वृक्ष-सम्बन्धी, खैर का, कत्थई (हे १, ६७)।

खाउय न [खाद्यक] खाद्यपदार्थ (मूलशुद्धि गा० १७१, देवदिन्न कथा गा. ९ पछी)।

खाओवसम } देखो खओवसमिय (सुपा
खाओवसमिअ } ५५१; ६४८; सम्य २३)।

खाओवसमिग देखो खाओवसमिअ (अज्झ ६८; सम्यक्त्वो ५)।

खाडइअ वि [दे] प्रतिफलित, प्रतिबिम्बित (दे २, ७३)।

खाडखड पुं [खाडखड] चौथी नरक-पृथिवी का एक नरकावास (ठा ६)।

खाडहिला स्त्री [दे] एक प्रकार का जानवर, गिलहरी, गिल्ली (पण्ह १, १; उप पृ २०५ विसे ३०४ टी)।

खाण पुं [दे] एक म्लेच्छजाति (मृच्छ १५२)।

खाण न [खादन] भोजन, भक्षण; 'खाणेण

अ पाणेण अ तह गहिओ मंडलो अडअणाए' (गा ६६२; पउम १४, १३६)।
खाण न [ख्यान] कथन, उक्ति (राज)।
खाणि स्त्री [खानि] खान, आकर (दे २, ६६; कुमा; सुपा ३४८)।
खाणिअ वि [खानित] खुदवाया हुआ (हे ३, ५७)।
खाणी देखो खाणि (पाअ)।
खाणु } पुं [स्थाणु] स्थाणु, ठूठा वृक्ष, अचल
खाणुय } (पएह २, ५; हे २, ७; कस)।
खादि देखो खाइ = ख्याति (संक्षि ६)।
खाम सक [क्षमय्] खमाना, माफी मांगना। खामेइ (भग)। कर्म. खामिज्जइ, खामीअइ (हे ३, १५३)। संकृ. खामेत्ता (भग)।
खाम वि [क्षाम] १ कृश, दुर्बल; 'खामपंडुकवोलं' (उप ६८६ टी; पाअ)। २ क्षीण, अशक्त (दे ६, ४६)।
खामण न [क्षमण] खमाना (श्रावक ३६५)।
खामणा स्त्री [क्षमणा] क्षमापना, माफी मांगना, क्षमा-याचना (सुपा ५६४; विवे ७६)।
खामिय वि [क्षमित] १ जिसके पास क्षमा मांगी गई हो वह, खमाया हुआ (विसे २३८८; हे ३, १५२)। २ सहन किया हुआ। ३ विलम्बित, विलम्ब किया हुआ; 'तिरिएण अहोरत्ता पुण न खामिया मे कयंतेण (पउम ४३, ३१; हे ३, १५३)।
खाय पुं [खाद] पाँचवीं नरक-भूमि का एक नरक-स्थान (देवेन्द्र ११)।
खायर देखो खाइर (कर्म ६)।
खार पुं [क्षार] १ एक नरक-स्थान (देवेन्द्र ३०) २ भुजपरिसर्प की एक जाति (सूअ २, ३, २५)। ५ बैर, दुश्मनी (सुख १, ३)। °डाह पुंन [°दाह] क्षार पकाने की भट्ठी (आचा २, १०, २)। °तंत पुंन [°तन्त्र] आयुर्वेद का एक भेद, वाजीकरण (ठा ८—पत्र ४२८)।
खार पुं [क्षार] १ क्षरण, झरना, संचलन (ठा ८)। २ भस्म, खाक (णाया १, १२)। ३ खार, क्षार; लवण-विशेष (सूअ १, ७)। ४ लवण, नोन (बृह ४)। ५ जानवर-विशेष (पएण १)। ६ सर्जिका, सज्जी (सूअ १,४,२)। ७ वि. कटु या चरपरा स्वादवाला, कटु चीज (पएण १७—पत्र ५३०)। ८ खारी चीज, नमकीन स्वादवाली वस्तु (भग ७, ६; सूअ १, ७)। °तउसी [°त्रपुषी] कटु त्रपुषी, वनस्पति-विशेष (पएण १७)। °तिल्ल न [°तैल] खारे से संस्कृत तैल (पएह २, ५)। °मेह पुं [°मेघ] क्षार रसवाले पानी की वर्षा (भग ७, ६)। °वत्तिय वि [°पात्रिक] क्षार-पात्र में जिमाया हुआ। २ क्षार-पात्र का आधार-भूत (औप)। °वत्तिय वि [°वृत्तिक] खार में फेंका हुआ, खार से सींचा हुआ (औप; दसा ६)। °वावी स्त्री [°वापी] क्षार से भरी हुई वापी, कूँआ (पएह १, १)।
खारंफिडी स्त्री [दे] गोधा, गोह, जन्तु-विशेष (दे २, ७३)।
खारदूसण वि [खारदूषण] खरदूषण का, खरदूषण-सम्बन्धी (पउम ४५, १५)।
खारय न [दे] मुकुल, कली (दे २, ७३)।
खारायण पुं [क्षारायण] १ ऋषि-विशेष। २ माण्डव्यगोत्र के शाखाभूत एक गोत्र (ठा ७)।
खारि स्त्री [खारी] एक प्रकार की नाप, ३४ सेर की तौल (गा ८१२)।
खारिंभरी स्त्री [खारिम्भरी] खारी-परिमित वस्तु जिसमें अट सके ऐसा पात्र भर दूध देनेवाली (गा ८१२)।
खारिक्क न [दे] फल-विशेष, छुहारा (सिरि ११६६)।
खारिय वि [क्षारित] १ स्रावित, झराया हुआ (वव ६)। २ पानी में घिसा हुआ (भवि)।
खारी देखो खारि (गा ८१२; जो १)।
खारुगणिय पुं [क्षारुगणिक] १ म्लेच्छ देश-विशेष। २ उसमें रहनेवाली म्लेच्छ जाति (भग १२, २)।
खारोदा स्त्री [क्षारोदा] नदी-विशेष (राज)।
खाल सक [क्षालय्] धोना, पखारना, पानी से साफ करना। कृ. खालणिज्ज (उप ३२६)।
खाल स्त्रीन [दे] नाला, मोरी, गंदगी निकलने का मार्ग (ठा २, ३) स्त्री. खाला (कुमा)।
खालण न [क्षालन] प्रक्षालन, पखारना (सुपा ३२८)।
खालिअ वि [क्षालित] धौत, धोया हुआ (ती १३)।
खावण न [ख्यापन] प्रतिपादन (पंचा १०, ७)।
खावणा स्त्री [ख्यापना] प्रसिद्धि, प्रकथन; 'अक्खाणं खावणाविहाणं वा' (विसे)।
खावियंत वि [खाद्यमान] जिसको खिलाया जाता हो वह, 'कागणिमंसाइं खावियंतं' (विपा १, २—पत्र २४)।
खावियग वि [खादितक] जिसको खिलाया गया हो वह, 'कागणिमंसखावियगा' (औप)।
खावेंत वि [ख्यापयत्] प्रख्याति करता हुआ, प्रसिद्धि करता हुआ (उप ८३३ टी)।
खास अक [कास्] खाँसना, खाँसी खाना। खासई (तंदु १६)।
खास पुं [कास] रोग-विशेष, खाँसी की बीमारी, खाँसी (विपा १, १; सुपा ४०४; सण)।
खासि वि [कासिन्] खाँसी का रोगवाला (सुपा ५७६)।
खासिअ न [कासित] खाँसी, खाँसना (हे १, १८१)।
खासिअ पुं [खासिक] १ म्लेच्छ देश विशेष। २ उसमें रहनेवाली म्लेच्छ जाति (पएह १, १—पत्र १४; इक; सूअ १, ५, १)।
खि अक [क्षि] क्षीण होना। कर्म. 'खिज्जइ भवसंतती' (स ६८४)। खीयंति, खीयंते (कम्म ६, ६६; टी)।
खिइ स्त्री [क्षिति] पृथिवी, धरा (पउम २०, १५६; स ४१६)। °गोयर पुं [°गोचर] मनुष्य, मानुष, आदमी (पउम ५३, ४३)। °पइट्ठ न [°प्रतिष्ठ] नगर-विशेष (स ६)। °पइट्ठिय न [°प्रतिष्ठित] १ इस नाम का एक नगर (उप ३२० टी; स ७)। २ राजगृह नाम का नगर, जो आजकल बिहार में 'राजगिर' नाम से प्रसिद्ध है (ती १०)। °सार पुं [°सार] इस नाम का एक दुर्ग (पउम ८०, ३)।
खिंख अक [सिङ्ख्] खिंखिं आवाज करना। खिखेइ। वकृ. खिंखियंत (सुख २, ३३)।
खिंखिणिया स्त्री [किङ्किणिका] क्षुद्र घण्टिका (उवा)।

खिंखिणी स्त्री [किङ्किणी] ऊपर देखो (ठा १०; णाया १, १; अजि २७)।

खिंखिणी स्त्री [दे] शृगाली, स्त्री-सियार (दे २, ७४)।

खिंग पुं [खिङ्ग] रंडीबाज, व्यभिचारी; 'अणेगखिंगजणउव्वासियरसणे' (रंभा)।

खिंस सक [खिंस्] निन्दा करना, गर्हा करना, तुच्छकारना। खिंसए (आचा)। कर्म. खिंसिज्जइ (बृह १)। कवकृ. **खिंसिज्जंत** (उप ५८८)। कृ. **खिंसणिज्ज** (णाया १, ३)।

खिंसण न [खिंसन] अवर्णवाद, निन्दा, गर्हा (औप)।

खिंसणा स्त्री [खिंसना] निन्दा, गर्हा (औप; उप १३४ टी)।

खिंसा स्त्री [खिंसा] ऊपर देखो (ओघ ६०; द्र ४२)।

खिंसिय वि [खिंसित] निन्दित गर्हित (ठा ६)।

खिक्खिंड पुं [दे] कृकलास, गिरगिट, सरट (दे २, ७४)।

खिक्खियंत वि [खिखीयमान] 'खि-खि' आवाज करता (पराह १, ३—पत्र ४६)।

खिक्खिरी स्त्री [दे] डोम वगैरह का स्पर्श रोकने की लकड़ी (दे २, ७३)।

खिच्च पुंन [दे] खीचड़ी, कृसरा (दे १, १३४)।

खिज्ज अक [खिद्] १ खेद करना,, अफसोस करना। २ उद्विग्न होना, थक जाना। खिज्जइ, खिज्जए (स ३४; गउड; पि ४५७)। कृ. **खिज्जियव्व** (महा; गा ५१३)।

खिज्जणिगा स्त्री [खेदनिका] खेद-क्रिया अफसोस, मन का उद्वेग (णाया १, १६—पत्र २०२)।

खिज्जिअ न [दे] उपालम्भ, उलाहना (दे २, ७४)।

खिज्जिअ वि [खिन्न] १ खेद प्राप्त। २ न. खेद (स ५५५)। ३ प्रणय-जन्य रोष (णाया १, ९—पत्र १६५)।

खिज्जिअय न [खेदितक] छन्द-विशेष (अजि ७)।

खिज्जिर वि [खेदितृ] खेद करनेवाला, खिन्न होने की आदतवाला (कुमा ७, ६०)।

खिड्ड न [खेल] खेल, क्रीड़ा, मजाक; 'खिड्डेण मए भणियं एयं' (सुपा ३०२); 'बालत्तणं खिड्डपरो गमेइ' (सत्त ६८)। °**कर** वि [°कर] खेल करनेवाला, मजाक करनेवाला (सुपा ७८)।

खिण्ण वि [खिन्न] १ खिन्न, खेद प्राप्त। २ श्रान्त, थका हुआ (दे १, १२४; गा २२६)।

खिण्ण देखो **खीण** (प्राप)।

खित्त वि [क्षिप्त] १ फेंका हुआ (सुर ३, १०२; सुपा ३५७)। २ प्रेरित (दे १, ६३)। °**इत्त**, °**चित्त** वि [°चित्त] भ्रान्त-चित्त, विक्षिप्त-मनस्क, पागल (ठा ५, २; ओघ ४६७; ठा ५, १)। °**मण** वि [मनस्] चित्त-भ्रमवाला (महा)।

खित्त देखो **खेत्त** (अणु; प्रासू; पडि)। °**देवया** स्त्री [°देवता] क्षेत्र का अधिष्ठायक देव (श्रा ४७)। °**वाल** पुं [पाल] देव-विशेष, क्षेत्र-रक्षक देव (सुपा १५२)।

खित्तज पुं [क्षेत्रज] गोद लिया हुआ लड़का, 'खित्तज सुएणावि कुलं वट्टउ (कुप्र २०८)।

खित्तय न [क्षिप्तक] छन्द-विशेष (अजि २४; २५)।

खित्तय न [दे] १ अनर्थ, नुकसान। २ वि. दीप्त, प्रज्वलित (दे २, ७६)।

खित्तअ वि [क्षैत्रिक] १ क्षेत्र-सम्बन्धी। २ पुं. व्याधि-विशेष; 'तालुपुडं गरलाणं जह बहुवाहीण खित्तिओ वाही' (श्रा १२)।

खिन्न देखो **खिण्ण** = खिन्न (पाअ; महा)।

खिप्प अक [कृप्] १ समर्थ होना। २ दुर्बल होना। खिप्पइ (संक्षि ३५)।

खिप्प वि [क्षिप्र] शीघ्र, त्वरा-युक्त। °**गइ** वि [°गति] १ शीघ्र गतिवाला। २ पुं. अमितगति इन्द्र का एक लोकपाल (ठा ४, १)।

खिप्पं अ [क्षिप्रम्] तुरन्त, शीघ्र, जल्दी (प्रासू ३७; पडि)।

खिप्पंत देखो **खिव**।

खिप्पामेव अ [क्षिप्रमेव] शीघ्र ही, तुरन्त ही (जं ३; महा)।

खिमा स्त्री [क्ष्मा] पृथिवी (चंड)।

खिर अक [क्षर्] १ गिरना, गिर पड़ना। २ टपकना, झरना। खिरइ (हे ४, १७३)। वकृ. **खिरंत** (पउम १०, ३२)।

खिरिय वि [क्षरित] १ टपका हुआ। २ गिरा हुआ (पाअ)।

खिल न [खिल] अकृष्ट-भूमि, ऊसर जमीन (पराह १, २—पत्र २६)।

खिलीकरण न [खिलीकरण] खाली करना, शून्य करना; 'जुवजणधीरखिलीकरणकवाडओ वेसवाडओ' (मै ८)।

खिल्ल सक [कीलय्] रोकना, रुकावट डालना; 'भणइ इमाणं बन्धव! गमणं खिल्लेमि कड्डिउं रेहं' (सुपा १३७)।

खिल्ल अक [खेल्] क्रीड़ा करना, खेल करना, तमाशा करना। वकृ. **खिल्लंत** (सुपा ३६६)।

खिल्ल पुं [दे] फोड़ा, फुनसी; गुजराती में 'खील' (तंदु ३८)।

खिल्लण न [खेलन] खिलौना, खेलनक (सुर १५, २०८)।

खिल्लहड, **खिल्लहल** पुं [दे. खिल्लहड] कन्द विशेष (श्रा २०; धर्म २)।

खिल्लुहडा स्त्री [दे] कन्द-विशेष (संबोध ४४)।

खिव सक [क्षिप्] १ फेंकना। २ प्रेरना। ३ डालना। खिवइ, खिवेइ (महा)। वकृ. **खिवेमाण** (णाया १, २)। कवकृ. **खिप्पंत** (काल)। संकृ. **खिविय** (कम्म ४, ७४)। कृ. **खिवियव्व** (सुपा १५०)।

खिवण न [क्षेपण] १ फेंकना, क्षेपण (से १२, ३६)। २ प्रेरण, इधर-उधर चलाना (से ५, ३)।

खिविय वि [क्षिप्त] १ क्षिप्त, फेंका हुआ। २ प्रेरित (सुपा २)।

खिव्व देखो **खिव**। संकृ. 'अह खिव्विऊण सव्वं, पोए ते पत्थिया रयणभूमिं' (धम्म १२ टी)।

खिस अक [दे] सरकना, खिसकना। संकृ. 'अह नियगामे गच्छंतस्स खिसिऊण वाहणाहिंतो पडियं' (सुपा ५२७; ५२८)।

खीण देखो **खिण्ण** = खिन्न; 'कोवेत्थ सुरयखीणो' (पउम ३२, ३)।

खीण वि [क्षिण] १ क्षय-प्राप्त, नष्ट, विच्छिन्न (सम्म ६०; हे २, ३)। २ दुर्बल, कृश (भग २, ५)। °**दुह** वि [°दुःख] दुःख-रहित (सम १५३)। °**मोह** वि [°मोह] १ जिसका मोह नष्ट हो गया हो वह (ठा ३,

४)। २ न. बारहवाँ गुण-स्थानक (सम २६)। °राग वि [°राग] १ वीतराग, राग-रहित। २ पुं. जिनदेव, तीर्थंकर देव (गच्छ १)।

खीयमाण वि [क्षीयमाण] जिसका क्षय होता जाता हो वह (गा ६८६ टी)।

खीर न [क्षीर] बेला, दो दिन का उपवास (संबोध ५८)। °डिंडिर पुं [°डिण्डीर] देव-विशेष (कुप्र ७६)। °डिंडिरा स्त्री [°डिण्डीरा] देवी-विशेष (कुप्र ७६)। °वर पुं [°वर] १ समुद्र-विशेष। २ द्वीप-विशेष (सुज्ज १६)।

खीर न [क्षीर] १ दुग्ध, दूध (हे २, १७; प्रासू १३; १६८)। २ पानी, जल (हे २, १७)। ३ पुं. क्षीरवर समुद्र का अधिष्ठायक देव (जीव ३)। ४ समुद्र विशेष, क्षीर-समुद्र (पउम ६६, १८)। कयंब पुं [°कदम्ब] इस नाम का एक ब्राह्मण-उपाध्याय (पउम २१, ६)। °काओली स्त्री [°काकोली] वनस्पति-विशेष, खीरविदारी; (पराण १)। °जल पुं [°जल] क्षीर-समुद्र, समुद्र-विशेष (दीव)। °जलनिहि पुं [°जलनिधि] वही पूर्वोक्त अर्थ (सुपा २६५)। °दुम, °द्दुम पुं [°द्रुम] दूधवाला पेड़, जिसमें दूध निकलता है ऐसे वृक्ष की जाति (ओघ ३४६; निचू १)। °धाई स्त्री [°धात्री] दूध पिलानेवाली दाई (णाया १, १)। °पूर पुं [°पूर] उबलता हुआ दूध (पराण १७)। °प्पभ पुं [°प्रभ] क्षीरवर द्वीप का एक अधिष्ठाता देव (जीव ३)। °मेह पुं [°मेघ] दूध-समान स्वादवाले पानी की वर्षा (तित्थ)। °वई स्त्री [°वती] प्रभूत दूध देनेवाली (बृह ३)। °वर पुं [°वर] द्वीप-विशेष (जीव ३)। °वारि न [°वारि] क्षीर समुद्र का जल (पउम ६६, १८)। °हर पुं [°गृह, °धर] क्षीर-सागर (वज्जा २४)। °सव पुं [°श्रव] लब्धि-विशेष, जिसके प्रभाव से वचन दूध की तरह मधुर मालूम हो। २ ऐसी लब्धिवाला जीव (पराह २, १; औप)।

खीरइय वि [क्षीरकित] संजात-क्षीर, जिसमें दूध उत्पन्न हुआ हो वह; 'तए णं साली पत्तिया वत्तिआ गब्भिया पसूया आगयगन्धा खीरा (? र) इया बद्धफला' (णाया १, ७)।

खीरि वि [क्षीरिन्] १ दूधवाला। २ पुं जिसमें दूध निकलता है ऐसे वृक्ष की जाति (उप १०३१ टी)।

खीरिज्जमाण वि [क्षीर्यमाण] जिसका दोहन किया जाता हो वह (आचा २, १, ४)।

खीरिणी स्त्री [क्षीरिणी] १ दूधवाली (आचा २, १, ४)। २ वृक्ष-विशेष (पराण १—पत्र ३१)।

खीरी स्त्री [क्षैरेयी] खीर, पक्वान्न-विशेष (सुपा ६३६; पाअ)।

खीरोअ पुं [क्षीरोद] समुद्र-विशेष, क्षीर-सागर (हे २, १८२; गा ११७; गउड; उप ५३० टी; स ३४४)।

खीरोआ स्त्री [क्षीरोदा] इस नाम की एक नदी (इक ठा २, ३)।

खीरोद देखो खीरोअ (ठा ७)।

खीरोदक, खीरोदय पुं [क्षीरोदक] क्षीर-सागर (णाया १, ८; औप)।

खीरोदा देखो **खीरोआ** (ठा ३, ४—पत्र १६१)।

खील, खीलग, खीलव पुं [कील, °क] खीला, खूँट, खूँटी (स १०६; सूअ १, ११; हे १, १८१; कुमा)। °मग्ग पुं [°मार्ग] मार्ग-विशेष, जहाँ धूली ज्यादा रहने से खूँटे के निशान बनाये गये हों (सूअ १, ११)।

खीलावण न [क्रीडन] खेल कराना, क्रीड़ा कराना। °धाई स्त्री [°धात्री] खेल-कूद करानेवाली दाई (णाया १, १—पत्र ३७)।

खीलिया देखो कीलिआ (जीवस ४८)।

खीलिया स्त्री [कीलिका] छोटी खूँटी (आवम)।

खीव पुं [क्षीब] मद-प्राप्त, मदोन्मत्त, मस्त (दे, ८, ६३)।

खु अ [खलु] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ निश्चय, अवधारण। २ वितर्क, विचार। ३ संशय, संदेह। ४ संभावना। ५ विस्मय, आश्चर्य (हे २, १६८; षड्; गा ६; १४२; ४०१; स्वप्न ६; कुमा)।

खु° देखो खुहा (पराह २, ४; सुपा १६८; णाया १, १३)।

खुइ स्त्री [क्षुति] १ छींक। २ छींक का निशान (णाया १, १६; भग ३, १)।

खुइय वि [दे] १ विच्छिन्न। २ विध्यात, शान्त; 'खुइया चिया' (कुप्र १४०)।

खुंखुणय पुं [दे] नाक का छिद्र (दे २, ७६; पाअ)।

खुंखुणी स्त्री [दे] रथ्या, मुहल्ला (दे २.७६)।

खुंगाह पुं [दे] अश्व की एक उत्तम जाति (सम्मत्त २१६)।

खुंट पुं [दे] खूँट, खूँटी। °मोडय वि [°मोटक] १ खूँटे को मोड़नेवाला, उससे छूटकर भाग जानेवाला। २ पुं. इस नाम का एक हाथी (नाट—मृच्छ ८४)।

खुंडय वि [दे] स्खलित, स्खलना-प्राप्त (दे २, ७१)।

खुंद (शौ) सक [क्षुद्] १ जाना। २ पीसना, कूटना। खुंददि (प्राकृ ६३)।

खुंद अक [क्षुध्] भूख लगना। खुंदइ (प्राकृ ६६)।

खुंपा स्त्री [दे] वृष्टि को रोकने के लिए बनाया जाता एक तृणमय उपकरण (दे २, ७५)।

खुंभण वि [क्षोभण] क्षोभ उपजानेवाला (पराह १, १—पत्र २३)।

खुज्ज अक [परि + अस्] १ फेंकना। २ निरास करना। खुज्जइ (प्राकृ ७२)।

खुज्ज, खुज्जय वि [कुब्ज] १ कूबड़ा। २ वामन (हे १, १८१; गा ५३४)। ३ वक्र, टेढ़ा (ओघ)। ४ एक पार्श्व से हीन (पव ११०)। ५ न. संस्थान-विशेष, शरीर का वामन आकार (ठा ६; सम १४६; औप)। स्त्री· खुज्जा (णाया १, १)।

खुज्जिय वि [कुब्जित] कूबड़ा (आचा)।

खुट्ट सक [तुड्] १ तोड़ना, खण्डित करना, टुकड़ा करना। २ अक. खूटना, क्षीण होना। ३ टूटना, त्रुटित होना। खुट्टइ (नाट—साहित्य २२६; हे ४, ११६); खुट्टंति (उव)।

खुट्ट वि [दे] त्रुटित, खण्डित, छिन्न (हे २, ७४; भवि)।

खुड देखो खुट्ट = तुड्। खुडइ (हे ४, ११६)। खुडेंति (से ८, ४८)। वकृ. 'पवंगभिन्नमत्थया

खुडंतदित्तमोत्तिया' (पउम ५३, ११२; स ४४८)। संकृ. खुडिऊण (स ११३)।

खुडक्क देखो खुडुक्क = (दे)। खुडक्कए (धर्मवि ७१)।

खुडक्किअ [दे] देखो खुडुक्किअ (गा २२६)।

खुडिअ वि [खण्डित] त्रुटित. खण्डित, विच्छिन्न (हे १, ५३; षड्)।

खुडुक्क सक [अप + क्रमय्] हटाना, दूर करना। खुडुक्कइ (प्राकृ ७०)।

खुडुक्क अक [दे] १ नीचे उतरना। २ स्खलित होना। ३ शल्य की तरह चुभना। ४ गुस्सा से मौन रहना। खुडुक्कइ (हे ४, ३९५)। वकृ. खुडुक्कंत (कुमा)।

खुडुक्किअ वि [दे] १ शल्य की तरह चुभा हुआ, खटका हुआ (उप ३५५)। २ रोष-मूक, गुस्सा से मौन धारण करनेवाला। स्त्री. °आ (गा २२६ अ)।

खुड्ड } वि [दे. क्षुद्र क्षुल्लक] १ लघु,
खुड्डग } छोटा (दे २, ७४; कप्प; दस ३; आचा २, २, ३; उत्त १)। २ नीच, अधम दुष्ट (पुप्फ ४४१)। ३ पुं. छोटा साधु, लघु शिष्य (सूअ १, ३, २)। ४ पुंन. अंगुलीय-विशेष, एक प्रकार की अंगूठी (औप; उप २०४)।

खुड्डमड्डा अ [दे] १ बहु, अत्यन्त। २ फिर-फिर (निचू २०)।

खुड्डय देखो खुड्ड (हे २, १७४; षड्; कप्प; सम ३५; णाया १, १)।

खुड्डाग } देखो खुड्डग (औप; पण्ण ३६;
खुड्डाय } णाया १, ७; कप्प)। °णियंठ न [°नैर्ग्रन्थ] उत्तराध्ययन सूत्र का छठवाँ अध्ययन (उत्त ६)।

खुड्डिअ न [दे] सुरत, मैथुन, संभोग (दे २, ७५)।

खुड्डिआ स्त्री [दे. क्षुद्रिका] १ छोटी, लघ्वी (ठा २, ३; आचा २, २, ३)। २ डाबर, नही खुदा हुआ छोटा तलाव (जं १; पण्ह २, ५)।

खुणुक्खुडिआ स्त्री [दे] घ्राण, नाक, नासिका (दे २, ७६)।

खुण्ण वि [क्षुण्ण] १ मर्दित (गा ४४५; निचू १)। २ चूर्णित (दे २, ४५)। ३ मग्न, लीन; 'अजरामरपहखुण्णा साहू सरणं सुकय-पुण्णा' (चउ ३८; संथा)।

खुण्ण वि [दे] परिवेष्टित (दे २, ७५)।

खुत्त वि [दे] निमग्न, डूबा हुआ (दे २, ७४; णाया १,१; गा २७६;३२४; संथा; गउड)।

°खुत्तो अ [°कृत्वस्] बार, दफा (उव; सुर १४, ६१)।

खुद्द वि [क्षुद्र] तुच्छ, नीच, दुष्ट, अधम (पण्ह १, १; ठा ६)।

खुद्द न [क्षौद्र्य] क्षुद्रता, तुच्छता, नीचता (उप ६१५)।

खुद्दिमा स्त्री [क्षुद्रिमा] गान्धार ग्राम की एक मूर्च्छना (ठा ७—पत्र ३९३)।

खुद्ध वि [क्षुब्ध] क्षोभ-प्राप्त, घबड़ाया हुआ (सुपा ३२५)।

खुधा स्त्री [क्षुध्] भूख (धर्मसं १०६२)।

खुधिय वि [क्षुधित] क्षुधातुर, भूखा (सूअ १, ३, १)।

खुन्न देखो खुण्ण = क्षुण्ण (पि ५६८)।

खुन्न देखो खुण्ण = (दे) (पाअ)।

खुप्प सक [प्लुष्] जलाना। खुप्पइ (प्राकृ ६५)।

खुप्प अक [मस्ज्] डूबना, निमग्न होना। खुप्पइ (हे ४, १०१)। वकृ. खुप्पंत (गउड; कुमा; ओघ २३; से १३, ६७)। हेकृ. खुप्पिउं (तंदु)।

खुप्पिवासा स्त्री [क्षुत्पिपासा] भूख और प्यास (पि ३१८)।

खुब्भ अक [क्षुभ्] १ क्षोभ पाना, क्षुभित होना। २ नीचे डूबना। वकृ. खुब्भंत (ठा ७—पत्र ३८३)।

खुब्भण न [क्षोभण] क्षोभ, घबड़ाहट (राज)।

खुभ अक [क्षुभ्] डरना, घबड़ाना। खुभइ (रयण १८)। कृ. खुभियव्व (पण्ह २,३)।

खुभिय वि [क्षुभित] १ क्षोभ-युक्त, घबड़ाया हुआ (पण्ह १, ३)। २ न. क्षोभ, घबड़ाहट (ओघ)। ३ कलह, झगड़ा (बृह ३)।

खुम्म अक [क्षुध्] भूख लगना। खुम्मइ (प्राकृ ६६)।

खुम्मिय वि [दे] नमित, नमाया हुआ (णाया १, १—पत्र ४७)।

खुय न [क्षुत] छींक (चेइय ४३३)।

खुर पुं [खुर] जानवर के पाँव का नख (सुर १, २४८; गउड; प्रासू १७१)।

खुर पुं [क्षुर] छूरा, उस्तरा (णाया १, ८; कुमा; प्रयौ १०७)। °पत्त न [°पत्र] अस्तुरा या उस्तरा, छूरा (विपा १, ६)।

खुरप्प पुंन [क्षुरप्र] एक तरह का जहाज (सिरि ३८३)।

खुरप्प पुं [क्षुरप्र] १ घास काटने का अस्त्र-विशेष, खुरपा (सम १३४)। २ शर-विशेष, एक प्रकार का बाण (वेणी ११७)।

खुरसाण पुं [खुरशान] १ देश-विशेष (पिंग)। २ खुरशान देश का राजा (पिंग)।

खुरहखुडी स्त्री [दे] प्रणय-कोप (षड्)।

खुरासाण देखो खुरसाण (पिंग)।

खुरि वि [खुरिन्] खुरवाला जानवर (आव ३)।

खुरु पुं [खुरु] प्रहरण-विशेष, आयुध-विशेष (सुर १३, १९३)।

खुरुडुक्खुडी स्त्री [दे] प्रणय-कोप (दे २, ७६)।

खुरुप्प देखो खुरप्प (पउम ५६, १६; स ९८४)।

खुल क [दे] वह गाँव जहाँ साधुओं को भिक्षा कम मिलती हो या भिक्षा में घृत आदि न मिलता हो (वव १)।

खुल देखो खुम्म। खुलइ (प्राकृ ६६)।

खुलिअ देखो खुडिअ (पिंग)।

खुलुह पुं [दे] गुल्फ, पैर की गांठ, फीली (दे २, ७५; पाअ)।

खुल्ल न [दे] कुटी, कुटीर (दे २, ७४)।

खुल्ल } वि [क्षुल्ल, °क] १ छोटा, लघु,
खुल्लग } क्षुद्र (पण्ण १)। २ पुं. द्वीन्द्रिय जीव-विशेष (जीव १)।

खुल्लग देखो खुड्डग (कुप्र २७६)।

खुल्लण (अप) देखो खुड्ड (पिंग)।

खुल्लय वि [क्षुल्लक] १ लघु, क्षुद्र, छोटा (भवि)। २ कपर्दक-विशेष, एक प्रकार की कौड़ी (णाया १, १८—पत्र २३५)।

खुल्लासय पुं [दे] खलासी, जहाज का कर्मचारी-विशेष (सिरि ३८५)।

खुल्लिरी स्त्री [दे] संकेत (दे २, ७०)।

खुव पुं [क्षुप] जिसकी शाखा और मूल छोटे होते हैं ऐसा वृक्ष (णाया १, १—पत्र ६५)।

खुवय पुं [दे] तृण-विशेष, कण्टकि-तृण, कँटीला घास (दे २, ७५)।

खुव्व देखो खुभ। खुव्वइ (षड्)।

खुव्वय न [दे] पत्ते का पुड़वा, दोना (वव २)।

खुह देखो खुभ। कृ. खुहियव्व (सुपा ६१६)।

खुहा स्त्री [क्षुध्] भूख, बुभुक्षा (महा; प्रासू १७३)। °परिसह, °परीसह पुं [°परिषह, °परीषह] भूख की वेदना को शान्ति से सहन करना (उत्त २; पंचा १)।

खुहिअ वि [क्षुभित] १ क्षोभ-प्राप्त (से १, ४६; सुपा २४१)। २ क्षोभ, संत्रास (ओघ ७)।

खूण न [क्षूण] नुकसान, हानि (सुर ४, ११३; महा)। २ अपराध, गुनाह (महा)। ३ न्यूनता, कमी (सुपा ७; ४३०)।

खेअ सक [खेदय्] खिन्न करना, खेद उपजाना। खेएइ (विसे १४७२; महा)।

खेअ पुं [खेद] १ खेद, उद्वेग, शोक (उप ७२८ टी)। २ तकलीफ, परिश्रम (स ३१५)। ३ संयम, विरति (उत्त १५)। ४ थकावट, श्रान्ति (आचा)। °ण्ण, °न्न वि [°ज्ञ] निपुण, कुशल, चतुर, जानकार (उप ६०८; ओघ ६४७)।

खेअ देखो खेत्त (सूअ १, ६; आचा)।

खेअ पुं [क्षेप] त्याग, मोचन (से १२, ४८)।

खेअण न [खेदन] १ खेद, उद्वेग। २ वि. खेद उपजानेवाला (कुमा)।

खेअर देखो खयर (कुमा; सुर ३, ६)। °हिव पुं [°धिप] विद्याधरों का राजा (पउम २८, ५७)। °हिवइ पुं [°धिपति] विद्याधरों का राजा (पउम २८, ४४)।

खेअरिंद पुं [खेचरेन्द्र] खेचरों का राजा (पउम ६, ५२)।

खेअरी देखो खहयरी (कुमा)।

खेआलु वि [दे] १ निःसह, मन्द, आलसी। २ असहिष्णु, ईर्ष्यालु (दे २, ७७)।

खेइय वि [खेदित] खिन्न किया हुआ (स ६३४)।

खेचर देखो खेअर (ठा ३, १)।

खेज्जणा स्त्री [खेदना] खेद-सूचक वाणी, खेद (णाया १, १८)।

खेड सक [कृष्] खेती करना, चास करना। खेडइ (सुपा २७६); 'अह अन्नया य दुन्निवि हलाइं खेडंति अप्पणच्चेव' (सुपा २३७)।

खेड सक [खेटय्] हाँकना। खेडए (चेइय ३३७; कुप्र ७१)।

खेड न [खेट] १ धूली का प्राकारवाला नगर (औप; पण्ह १, २)। २ नदी और पर्वतों से वेष्टित नगर (सूअ २, २)। ३ पुं. मृगया, शिकार (भवि)।

खेडग न [खेटक] फलक, ढाल (पण्ह १, ३)।

खेडण न [कर्षण] खेती करना (सुपा २३७)।

खेडण न [खेटन] खदेड़ना, पीछे हटाना (उप २२६)।

खेडणअ न [खेलनक] खिलौना (नाट—रत्ना ६२)।

खेडय पुं [क्ष्वेटक] १ विष, जहर (हे २, ६)। २ ज्वर-विशेष (कुमा)।

खेडय वि [स्फेटक] नाशक, नाश करनेवाला (हे २ ६; कुमा)।

खेडय न [खेटक] छोटा गाव (पात्र; सुर २, ११२)।

खेडावग वि [खेलक] खेल करनेवाला, तमासगिर (उप पृ १८८)।

खेडिअ वि [कृष्ट] हल से विदारित (दे १, १३६)।

खेडिअ पुं [स्फेटिक] १ नाशवाला, नश्वर। २ अनादरवाला (हे २, ६)।

खेड्ड अक [रम्] क्रीड़ा करना, खेल करना। खेड्डइ (हे ४, १६८)। खेड्डंति (कुमा)।

खेड्ड, खेड्डय न [खेल] १ क्रीड़ा, खेल, तमाशा, मजाक (हे २, १७४; महा; सुपा २७; स ५०६)। २ बहाना, छल; 'मय-खेड्डय विहेऊण' (सुपा ५२३)।

खेड्डा स्त्री [क्रीडा] क्रीड़ा, खेल, तमाशा (औप; पउम ८, ३७; गच्छ २)।

खेड्डिया स्त्री [दे] बारी, दफा; 'भद्द! पच्छिमा खेड्डिया' (स ४८५)।

खेत्त पुंन [क्षेत्र] १ आकाश (विसे २०८८)। २ कृषि-भूमि, खेत (बृह १)। ३ जमीन, भूमि। ४ देश, गाँव, नगर वगैरह स्थान (कप्प; पंचू; विसे)। ५ भार्या, स्त्री (ठा १०)। °कप्प पुं [°कल्प] १ देश का रिवाज (बृह ६)। २ क्षेत्र-संबन्धी अनुष्ठान। ३ ग्रन्थ-विशेष, जिसमें क्षेत्र-विषयक आचार का प्रतिपादन हो (पंचू)। °पलिओवम न [°पल्योपम] काल का नाप-विशेष (अणु)। °रिय पुं [°ार्य] आर्य भूमि में उत्पन्न मनुष्य (पण्ण १)। देखो खित्त = क्षेत्र।

खेत्तय पुं [क्षेत्रक] राहु (सुज्ज २०)।

खेत्ति वि [क्षेत्रिन्] क्षेत्रवाला, क्षेत्र का स्वामी (विसे १४६२)।

खेम न [क्षेम] १ कुशल, कल्याण, हित (पउम ६५, १७, गा ४६६; भत्त ३६; रयण ६)। २ प्राप्त वस्तु का परिपालन (णाया १, ५)। ३ वि. कुशलता-युक्त, हित-कर, उपद्रव-रहित (णाया १, १; दस ७)। ४ पुं. पाटलिपुत्र के राजा जितशत्रु का एक अमात्य (आचू १)। °पुरी स्त्री [°पुरी] १ नगरी-विशेष (पउम २०, ७)। २ विदेह-वर्ष की एक नगरी (ठा २, ३)।

खेमंकर पुं [क्षेमङ्कर] १ कुलकर पुरुष-विशेष (पउम ३, ५२)। २ ऐरवत क्षेत्र के चतुर्थ कुलकर-पुरुष (सम १५३)। ३ ग्रह-विशेष ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष (ठा २, ३)। ४ स्वनाम-प्रसिद्ध एक जैन मुनि (पउम २१, ८०)। ५ त्रि. कल्याण-कारक, हित-जनक (उप २११ टी)।

खेमंधर पुं [क्षेमन्धर] १ कुलकर पुरुष-विशेष (पउम ३, ५२) ऐरवत क्षेत्र का पाँचवाँ कुलकर पुरुष-विशेष (सम १५३)। ३ वि. क्षेम-धारक, उपद्रव-रहित (राज)।

खेमग पुं [क्षेमक] स्वनाम-प्रसिद्ध एक अन्त-कृद् जैनमुनि (अंत)।

खेमराय पुं [क्षेमराज] राजा कुमारपाल का एक पूर्व-पुरुष (कुप्र ५)।

खेमलिज्जिया स्त्री [क्षेमलिया] जैनमुनि-गण की एक शाखा (कप्प)।

खेमा स्त्री [क्षेमा] १ विदेह वर्ष की एक नगरी (ठा २, ३)। २ क्षेमपुरी-नामक नगरी-विशेष (पउम २०, १०)।

खेर पुं [दे] एक म्लेच्छ जाति (मृच्छ १५२)।

खेरि स्त्री [दे] १ परिशाटन, नाश; 'धरणखेरिवा' (बृह २)। २ खेद, उद्वेग। ३ उत्कंठा, उत्सुकता (भवि)।

खेल अक [खेल्] खेलना, क्रीड़ा करना, तमाशा करना। खेलइ (कप्पू), खेलउ (गा १०६)। वकृ. **खेलंत** (पि २०६)।

खेल पुं [दे] जहाज का कर्मचारी-विशेष (सिरि ३८५)।

खेल वि [खेल] खेल करनेवाला, नाटक का पात्र (धर्मवि ६) स्त्री. °**लिया** (धर्मवि ६)।

खेल पुं [श्लेष्मन्] श्लेष्मा, कफ, निष्ठीवन, थूथू (सम १०; औप; कप्प; पडि)।

खेलण } न [खेलन, °क] १ क्रीड़ा,
खेलणय } खेल। २ खिलौना (प्राकृ; स १२७)।

खेलोसहि स्त्री [श्लेष्मौषधि] १ लब्धि-विशेष, जिससे श्लेष्म औषधि का काम देने लगे (पण्ह २, १; संति ३)। २ वि. ऐसी लब्धिवाला (आवम; पव २७०)।

खेल्ल देखो **खेल** = खेल्। खेल्लइ (पि २०६)। वकृ. **खेल्लमाण** (स ४४)। प्रयो. संकृ. **खेल्लावेऊण** (पि २०६)।

खेल्ल देखो **खेल** = श्लेष्मन (राज)।

खेल्लण देखो **खेलण** (स २६५)।

खेल्लावण } न [खेलनक] १ खेल कराना,
खेल्लावणय } क्रीड़ा कराना। २ न. खिलौना (उप १४२ टी)। °**धाई** स्त्री [°धात्री] खेल करानेवाली दाई (राज)।

खेल्लिअ न [दे] हसित, हँसी, ठट्ठा (दे २, ७६)।

खेल्लुड देखो **खल्लूड** (राज)।

खेव पुं [क्षेप] १ क्षेपण, फेंकना (उप ७२८ टी)। २ न्यास, स्थापना (विसे ९१२)। ३ संख्या-विशेष (कम्म ४, ८१; ८४)।

खेव पुं [क्षेप] बिलम्ब, देरी (स ७७५)।

खेव पुं [खेद] उद्वेग, खेद, क्लेश; 'न हु कोइ गुरू खेवं वच्चइ सीसेसु सत्तिसुमहेसु (?)' (पउम ९७, २३)।

खेवण न [क्षेपण] प्रेरण (गाया १, २)।

खेवय वि [क्षेपक] फेंकनेवाला (गा २४२)।

खेविय वि [खेदित] खिन्न किया हुआ (भवि)।

खेह पुंन [दे] धूली, रज; 'वग्गिरतुरगखरखुरुक्खयखेहाइन्नरिक्खपहं' (सुर ११, १७१)।

खोअ पुं [क्षोद] १ इक्षु, ऊख। २ द्वीप-विशेष, इक्षुवर द्वीप। ३ समुद्र-विशेष, इक्षुरस समुद्र (अणु ९०)।

खोइय वि [दे] विच्छेदित, 'सव्वे संघी खोइया' (सुख २, १५)।

खोउदय पुं [क्षोदोदक] समुद्र-विशेष (सूअ १, ६, २०)।

खोओद देखो **खोदोद** (सुज्ज १९)।

खोंटग } पुं [दे] खूँटी, खूँटा (उप २७८;
खोंटय } स २६३)।

खोक्ख अक [खोख्] वानर का बोलना, बन्दर का आवाज करना। खोक्खइ (गा १७१ अ)।

खोक्खा } स्त्री [खोखा] वानर की आवाज
खोखा } (गा ५३२)।

खोखुब्भ अक [चोक्षुभ्य्] अत्यन्त भयभीत होना, विशेष व्याकुल होना। वकृ. **खोखुब्भमाण** (औप पण्ह १, ३)।

खोज्ज पुंन [दे] मार्ग-चिह्न (संक्षि ४७)।

खोट्ट सक [दे] खटखटाना, ठकठकाना, ठोकना। कवकृ. **खोट्टिज्जंत** (ओघ ५९७ टी)। संकृ. **खोट्टेउं** (ओघ ५९७ टी)।

खोट्टिय [दे] बनावटी लकड़ी (नंदीटिप्प. पत्र १४६)।

खोट्टी स्त्री [दे] दासी, चाकरानी (दे २, ७७)।

खोड पुं [स्फोट] फोड़ा (प्राकृ १८)।

खोड पुं [दे] १ सीमा-निर्धारक काष्ठ, खूँटा। २ वि धार्मिक, धर्मिष्ठ (दे २, ८०)। ३ खंज, लंगड़ा (दे २, ८०; पिंग)। ४ शृगाल, सियार (मृच्छ १८३)। ५ प्रदेश, जगह; 'सिगक्खोडे कलहो' (ओघ ७६ भा)। ६ प्रस्फोटन, प्रमार्जन (ओघ २६५)। ७ न. राजकुल में देने योग्य सुवर्ण वगैरह द्रव्य (वव १)।

खोडपज्जालि पुं [दे] स्थूल काष्ठ की अग्नि (दे २, ७०)।

खोडय पुं [क्ष्वोटक] नख से चर्म का निष्पीडन (हे २, ६)।

खोडय पुं [स्फोटक] फोड़ा, फुंसी (हे २, ६)।

खोडिय पुं [खोटिक] गिरनार पर्वत का क्षेत्रपाल देवता (ती २)।

खोडी स्त्री [दे] १ बड़ा काष्ठ (पण्ह १, ३—पत्र ५३)। २ काष्ठ की एक प्रकार की पेटी (महा)। ३ नकली लकड़ी (३ आव वृ. हारि. पत्र ४२१)।

खोणि स्त्री [क्षोणि] पृथिवी, धरणी (सण)। °**वइ** पुं [°पति] राजा, भूपति (उप ७६८ टी)।

खोणिंद पुं [क्षोणीन्द्र] राजा, भूमिपति (सण)।

खोणी देखो **खोणि** (सुर १२, ६१; सुपा २३८; रंभा)।

खोद पुं [क्षोद] १ चूर्णन, विदारण (भग १७, ६)। २ इक्षु-रस, ऊख का रस (सूअ १,६)। °**रस** पुं [°रस] समुद्र-विशेष (दीव)। °**वर** पुं [°वर] द्वीप-विशेष (जीव ३)।

खोद पुं [क्षोद] चूर्ण, बुकनी (हम्मीर ३४)।

खोदोअ } पुं [क्षोदोद] १ समुद्र-विशेष,
खोदोद } जिसका पानी इक्षु-रस के तुल्य मधुर है (जीव ३; इक)। २ मधुर पानीवाली वापी (जीव ३)। ३ न. मधुर पानी, इक्षु-रस के समान मिठा जल (पण्ण १)।

खोद्द न [क्षौद्र] मधु, शहद (भग ७, ६)।

खोभ सक [क्षोभय्] १ विचलित करना, धैर्य से च्युत करना। २ आश्चर्य उपजाना। ३ रंज पैदा करना। खोभेइ (महा) वकृ. **खोभंत** (पउम ३, ६६; सुपा ४९३)। हेकृ. **खोभित्तए, खोभइउं** (उवा; पि ३१६)।

खोभ पुं [क्षोभ] १ विचलता, संभ्रम (आव ५)। २ इस नाम का एक रावण का सुभट (पउम ५६, ३२)।

खोभण न [क्षोभण] क्षोभ उपजाना, विचलित करना; 'तेलोक्कखोभणकरं' (पउम २, ८२; महा)।

खोभिय वि [क्षोभित] विचलित किया हुआ (पउम ११७, ३१)।

खोम } न [क्षौम] १ कार्पासिक वस्त्र,
खोमग } कपास का बना हुआ वस्त्र (गाया

१, १—पत्र ४३ टी; उवा १)। २ सन का बना हुआ वस्त्र (सम १२३; भग ११, ११; पण्ह २, ४)। ३ रेशमी वस्त्र (उप १४६; स २००)। ४ वि. अतसी-संबंधी, सन-संबन्धी, (ठा १०; भग १, १ ११)। °पसिण न [°प्रश्न] विद्या-विशेष, जिससे वस्त्र में देवता का आह्वान किया जाता है (ठा १०)।

खोमिय न [क्षौमिक] १ कपास का बना हुआ वस्त्र (ठा ३, ३)। २ सन का बना हुआ वस्त्र (कप्प)।

खोमिय वि [क्षौमिक] १ रेशम सम्बन्धी। २ सन-सम्बन्धी (पव १२७)।

खोय देखो खोद (सम १५१; इक)।

खोर } न [दे] पात्र-विशेष, कचोलक, कटोरा
खोरय } (उप पृ १३५; णंदि)।

खोल पुं [दे] १ छोटा गधा (दे २, ८०)। २ वस्त्र का एक देश (दे २, ८०; ५, ३०; बृह १)। ३ मद्य का नीचला कीट-कर्दम (आचा २, १, ८; बृह १)।

खोल पुं [दे] गुप्तचर, जासूस (पिंड १२७)।

खोल्ल न [दे] कोटर, गह्वर 'खोल्लं कोत्थरं' (निचू १५)।

खोसलय वि [दे] दन्तुल, लम्बे और बाहर निकले हुए दाँतवाला (दे २, ७७)।

खोसिय वि [दे] जीर्ण-प्राय किया हुआ (पिंड ३२१)।

खोह देखो खोभ=क्षोभय्। खोहइ (भवि)। वकृ. खोहेंत (से १५, ३३)। कवकृ. खोहिज्जंत (से २, ३)।

खोह देखो खोभ=क्षोभ (पण्ह १, ४; कुमा सुपा ३६७)।

खोहण देखो खोभण (श्रा १२; सुपा ५०२)।

खोहिय देखो खोभिय (सण)।

॥ इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवे खआराइसद्दसंकलणो एआरहमो तरंगो समत्तो ॥

ग

ग पुं [ग] व्यञ्जन-वर्ण विशेष, इसका स्थान कण्ठ है (प्रामा; प्राप)।

°ग वि [°ग] १ जानेवाला। २ प्राप्त होने-वाला, जैसे—पारग, वसग (आचा; महा)।

गअवंत वि [गतवत्] गया हुआ (प्राकृ ३५)।

गइ स्त्री [गति] १ ज्ञान, अवबोध (विसे २५०२)। २ प्रकार, भेद (से १, ११)। ३ गमन, चलन, देशान्तर-प्राप्ति, (कुमा)। ४ जन्मान्तर-प्राप्ति, भवान्तर-गमन ठा (१,१; दं)। ५ देव, मनुष्य, तिर्यञ्च, नरक और मुक्त जीव की अवस्था, देवादि-योनि (ठा ५, ३)। °तस पुं [°त्रस] अग्नि और वायु के जीव (कम्म ३, १३; ४, १६)। °नाम न [°नामन्] देवादि-गति का कारण-भूत कर्म (सम ६७)। °प्पवाय पुं [°प्रपात] १ गति की नियतता (पण्ण १६)। २ ग्रंथांश-विशेष (भग ८, ७)।

गइंद पुं [गजेन्द्र] १ ऐरावण हाथी, इन्द्र-हस्ती। २ श्रेष्ठ हाथी (गउड; कुमा)। °पय न [°पद] गिरनार पर्वत का एक जल-तीर्थ (ती ३)।

गइल्लय देखो गय=गत (सुख २, २२)।

गउ } पुं [गो] बैल, वृषभ, साँड़ (हे १,
गउअ } १५८)। °पुच्छ पुं न [°पुच्छ] १ बैल की पूँछ। २ बाण-विशेष (कुमा)।

गउअ पुं [गवय] गो-तुल्य आकृतिवाला जंगली पशु-विशेष, नील गाय (कुमा)।

गउआ स्त्री [गो] गैया, गौ (हे १, १५८)।

गउड पुं [गौड] १ स्वनाम ख्यात देश, बंगाल का पूर्वी भाग (हे १, २०२; सुपा ३८६)। २ गौड़ देश का निवासी (हे १, २०२)। ३ गौड़ देश का राजा (गउड; कुमा)। °वह पुं [°वध] वाक्पतिराज का बनाया हुआ प्राकृत-भाषा का एक काव्य-ग्रंथ (गउड)।

गउण वि [गौण] अप्रधान, अमुख्य (दे १, ३)।

गउणी स्त्री [गौणी] शक्ति-विशेष, शब्द की एक शक्ति (दे १, ३)।

गउरव देखो गारव (कुमा; हे १, १६३)।

गउरविय वि [गौरवित] गौरव-युक्त किया हुआ, जिसका आदर—सम्मान किया गया हो वह; 'तज्जणयाइं तत्थागयाइं थेवेहिं चेव दियहेहिं, गउरवियाइं रयणायरेण' (सुपा ३५६; ३६०)।

गउरी स्त्री [गौरी] १ पार्वती, शिव-पत्नी (सुपा १०६)। २ गौर वर्णवाली स्त्री। ३ स्त्री-विशेष (कुमा)। °पुत्त पुं [°पुत्र] पार्वती का पुत्र, स्कन्द, कार्त्तिकेय (सुपा ४०१)।

गंअ देखो गय=गत; 'भीया जहागयगइं पडिवज्ज गंए' (रंभा)।

गंग पुं [गङ्ग] मुनि-विशेष, द्विक्रिय मत का प्रवर्त्तक आचार्य (ठा ७; विसे २४२५)। °दत्त पुं [°दत्त] १ एक जैन मुनि, जो षष्ठ वासुदेव के पूर्वजन्म के गुरू थे (स १५३)। २ नववें वासुदेव के पूर्वजन्म का नाम (पउम २०, ७१)। ३ इस नाम का एक जैन श्रेष्ठी (भग १६, ५)। °दत्ता स्त्री [°दत्ता] एक सार्थवाह की स्त्री का नाम (विपा १, ७)।

गंग° देखो गंगा। °प्पवाय पुं [°प्रपात]

हिमाचल पर्वत पर का एक महान् ह्लद, जहाँ से गंगा निकलती है (ठा २, ३)। °सोअ पुं [°स्रोतस्] गंगा नदी का प्रवाह (पि ८५)।

गंगली स्त्री [दे] मौन, चुप्पी (सुपा २७८; ४८७)।

गंगा स्त्री [गङ्गा] १ स्वनाम-प्रसिद्ध नदी (कस; सम २७; कप्प)। २ स्त्री-विशेष (कुमा)। ३ गोशालक के मत से काल-परिमाण-विशेष (भग १५)। ४ गंगा नदी की अधिष्ठायिका देवी (आवम)। ५ भीष्मपितामह की माता का नाम (णाया १,१६)। °कुंड न [°कुण्ड] हिमाचल पर्वत पर स्थित ह्लद-विशेष, जहां से गंगा निकलती है (ठा ८)। °कूड न [°कूट] हिमाचल पर्वत का एक शिखर (ठा २, ३) °दीव पुं [°द्वीप] द्वीप-विशेष, जहाँ गंगा-देवी का भवन है (ठा २, ३)। °देवी स्त्री [°देवी] गंगा की अधिष्ठायिका देवी, देवी विशेष (इक)। °वत्त पुं [°वर्त्त] आवर्त्त-विशेष (कप्प)। °सय न [°शत] गोशालक के मत में एक प्रकार का काल-परिमाण (भग १५)। °सागर पुं [°सागर] प्रसिद्ध तीर्थ-विशेष, जहां गंगा समुद्र में मिलती है (उत्त १८)।

गंगेअ पुं [गाङ्गेय] १ गंगा का पुत्र, भीष्म-पितामह (णाया १, १६; वेणी १०४)। २ द्वैक्रिय मत का प्रवर्त्तक आचार्य (आचू १)। १ एक जैन मुनि, जो भगवान् पार्श्व-नाथ के वंश के थे (भग ६, ३२)।

गंछ } पुं [दे] वरुड, इस नाम की एक
गंछय } म्लेच्छ जाति (दे २, ८४)।

गंछिय पुं [दे] तेली। गु० घांची (लोक प्र ४६५।१—३१ सर्ग)।

गंज सक [गञ्ज] १ तिरस्कार करना। २ उल्लंघन करना। ३ मर्दन करना। ४ पराभव करना। गंजइ (जय ५)। कृ. गंजणीय (सिरि ३८)।

गंज पुं [दे] गाल (दे २, ८१)।

गंज पुं [गञ्ज] भोज्य-विशेष, एक प्रकार की खाद्य वस्तु (पण्ह २, ५—पत्र १४८)। °साला स्त्री [°शाला] तृण, लकड़ी वगैरह इन्धन रखने का स्थान (निचू १५)।

गंजण न [गञ्जन] १ अपमान, तिरस्कार (सुपा ४८०);
'वेरिएणवि रणुप्पन्ना,
बज्झंति गया न चेव केसरिणो।
संभाविज्जइ मरणं,
न गंजणं धीरपुरिसाणं' (वज्जा ४२)।
२ कलंक, दाग; 'गंजणरहिओ जम्मो' (वज्जा १८)।

गंजण वि [गञ्जन] मर्दनकर्ता (सिरि ५४६)।

गंजा स्त्री [गञ्जा] सुरा-गृह, मद्य की दूकान (दे २, ८५ टी)।

गंजिअ पुं [गाञ्जिक] कल्य-पाल, दारू बेचने-वाला, कलाल (दे २, ८५ टी)।

गंजिअ वि [गञ्जित] १ पराजित, अभिभूत; 'तग्गरिमगंजिओ इव' (उप ९८६ टी)। २ हत, मारा हुआ, विनाशित (पिंग)। ३ पीड़ित (हे ४, ४०९)।

गंजिल्ल वि [दे] १ वियोग-प्राप्त, वियुक्त। २ भ्रान्त-चित्त, पागल (दे २, ८३)।

गंजुल्लिय वि [दे] रोमाञ्चित, पुलकित (जय १२)।

गंजोल वि [दे] समाकुल, व्याकुल (षड्)।

गंजोल्लिअ वि [दे] १ रोमाञ्चित, जिसके रोम खड़े हुए हों वह (दे २, १००; भवि)। २ न. हँसाने के लिए किया जाता अंग-स्पर्श, गुदगुदी, गुदगुदाहट (दे २, १००)।

गंठ सक [ग्रन्थ्] १ गठना, गूँथना। २ रचना, बनाना। गंठइ (हे ४, १२०; षड्)।

गंठ देखो गंथ (राय; सूअ २, ५; धर्म २)।

गंठि स्त्री [गृष्टि] एकबार व्यायी हुई गौ (प्राकृ ३२)।

गंठि पुंस्त्री [ग्रन्थि] १ गांठ, जोड़। २ बांस आदि की गिरह, पर्व (हे १, ३५; ४, १२०)। ३ गठरी, गाठ (णाया १, १; औप)। ४ रोग-विशेष (लहुअ १५)। ५ राग-द्वेष का निबिड़ परिणाम-विशेष (उप २५३);
'गंठित्ति सुदुब्भेओ कक्खडघणरूढगूढगंठि व्व।
जीवस्स कम्मजणिओ घणरागद्दोसपरिणामो' (विसे ११९५)।
°छेअ पुं [°च्छेद] गांठ तोड़नेवाला, चोर-विशेष, पाकेटमार (दे २, ८६)। °भेय पुं [°भेद] ग्रन्थि का भेदन (धर्म १)। °भेयग वि [°भेदक] १ ग्रन्थि को भेदनेवाला। २ पुं. चोर-विशेष (णाया १, १८; पण्ह १, ३)। °वण्ण पुं [°पर्ण] सुगन्धि गाछ विशेष (कप्पू)। °सहिय वि [°सहित] १ गाँठ-युक्त। २ न. प्रत्याख्यान-विशेष, व्रत-विशेष (धर्म २; पडि)।

गंठिम न [ग्रन्थिम] १ ग्रन्थन से बनी हुई माला वगैरह (पण्ह २, ५; भग ९, ३३)। २ गुल्म-विशेष (पण्ण १—पत्र ३२)।

गंठिय वि [ग्रथित] गूँथा हुआ गठा हुआ, पिरोया हुआ (कुमा)।

गंठिय वि [ग्रन्थिक] गाँठवाला (सूअ २, ५)।

गंठिल्ल वि [ग्रन्थिमत्] ग्रन्थि-युक्त, गाँठ-वाला (राज)।

गंड पुं [दे] १ बन, जंगल। २ दाण्डपाशिक, कोतवाल। ३ छोटा मृग (दे २, ९९)। ४ नापित, नाई (दे २, ९९; आचा २, १, २)। ५ न. गुच्छ, समूह; 'कुसुमदामगंडमुव-ट्ठवियं' (महा)।

गंड पुंन [गण्ड] १ गाल, कपोल (भग; सुपा ८)। २ रोग-विशेष, गण्डमाला; 'ता मा करेह बीयं गंडोवरिफोडियातुल्लं' (उप ७६८ टी; आचा)। ३ हाथी का कुम्भस्थल (पव २९)। ४ कुच, स्तन (उत्त ८)। ५ ऊख का जत्था, इक्षु-समूह (उप पृ ३५९)। ६ छन्द-विशेष (पिंग)। ७ फोड़ा, स्फोटक (उत्त १०)। ८ गाँठ, ग्रन्थि (अवि १७; अभि १८४)। °भेअ, °भेअअ पुं [°भेदक] चोर-विशेष, पाकेटमार (अवि १७; अभि १८४)। °माणिया स्त्री [°माणिका] धान्य का एक प्रकार की नाप (राय)। °माला स्त्री [°माला] रोग-विशेष, जिसमें गला फूल जाती है (सण)। °यल न [°तल] कपोल-तल (सुर ४, १२७)। °लेहा स्त्री [°लेखा] कपोल-पाली, गाल पर लगाई हुई कस्तूरी वगैरह की छटा (निर १,१; गउड)। °वच्छा स्त्री [°वक्षस्का] पीन स्तनों से युक्त छाती-वाली स्त्री (उत्त ८)। °वाणिया स्त्री [°पाणिका] बाँस का पात्र-विशेष जो डाला से छोटा होता है (भग ७, ८)। °वास पुं [°पार्श्व] गाल का पार्श्व-भाग (गउड)।

गंड न [गण्ड] दोष, नाग (सूत्र १, ६ १६)। °**माणिया** स्त्री [°मानिका] पात्र-विशेष (राय १४०) °**विइवाय** पुं [°व्यतिपात] ज्योतिष-शास्त्र-प्रसिद्ध एक योग (संबोध ५४)।

गंडइया स्त्री [गण्डकिका] नदी-विशेष (आवम)।

गंडय पुं [गण्डक] १ गेंडा, जानवर-विशेष (पात्र; दे ७, ५७)। २ उद्घोषणा करनेवाला पुरुष, टेर लगानेवाला पुरुष (ओघ ६४४)।

गंडली स्त्री [दे] गँडेरी, ऊख का टुकड़ा (उप पृ १०६)।

गंडा देखो **गंठि** = ग्रन्थि (प्राकृ १८)।

गंडाग पुं [गण्डक] नाई, हजाम (आचा २, १, २, २)।

गंडि पुं [गण्डि] जन्तु-विशेष (उत्त १)।

गंडि वि [गण्डिन्] १ गण्डमाला का रोगवाला (आचा)। २ गण्ड रोगवाला (पराह २, ५)।

गंडिया स्त्री [गण्डिका] १ गँडेरी, ऊख का टुकड़ा (महा)। २ सोनार का एक उपकरण (ठा ४, ४)। ३ एक अर्थ के अधिकारवाली ग्रन्थ-पद्धति (सम १२६)।

गंडिल देखो **गंधिल** (इक)।

गंडिलावई देखो **गंधिलावई** (इक)।

गंडी स्त्री [गण्डी] १ सोनार का एक उपकरण (ठा ४, ४—पत्र २७१)। २ कमल की कर्णिका (उत्त ३६)। °**तिंदुग** न [°तिन्दुक] यक्ष-विशेष (ती ३८)। °**पय** पुं [°पद] हाथी वगैरह चतुष्पद जानवर (ठा ४, ४)। °**पोत्थय** पुंन [°पुस्तक] पुस्तक-विशेष (ठा ४, २)।

गंडीरी स्त्री [दे] गण्डेरी, ऊख का टुकड़ा (दे २, ८२)।

गंडीव न [गाण्डीव] १ अर्जुन का धनुष (बेणी ११२)।

गंडीव न [दे· गाण्डीव] धनुष, कार्मुक (दे २, ८४; महा; पात्र)।

गंडीवि पुं [गाण्डीविन्] अर्जुन, मध्यम पाण्डव (वेणी ५८)।

गंडुअ न [गण्डु] ओसीसा, सिरहाना (महा)।

गंडुअ न [गण्डुत्] तृण-विशेष (दे २, ७५)।

गंडुल पुं [गण्डोल] कृमि-विशेष, जो पेट में पैदा होता है (जी १५)।

गंडुवहाण न [गण्डोपधान] गाल का तकिया (पव ८४)।

गंडूपय पुं [गण्डूपद] जन्तु-विशेष (राज)।

गंडूल देखो **गंडुल** (पराह १, १—पत्र २३)।

गंडूस पुं [गण्डूष] पानी का कुल्ला (गा २७०; सुपा ४४६), 'बहुमइरागंडूसपाणं' (उप ६८६ टी)।

गंडूस पुं [गण्डूष] पानी का कुल्ला (सूत्रनि ५४)।

गंत देखो **गा**।

गंतव्व } देखो **गम** = गम्।
गंता }

गंतिय न [गन्तृक] तृण-विशेष (पराण १—पत्र ३३)।

गंती स्त्री [गन्त्री] गाड़ी, शकट (धम्म १२ टी; सुपा २७७)।

गंतुं देखो **गम** = गम्।

गंतुंपच्चागया स्त्री [गत्वाप्रत्यागता] भिक्षा-चर्या-विशेष, जैन मुनियों की भिक्षा का एक प्रकार (ठा ६)।

गंतुकाम वि [गन्तुकाम] जाने की इच्छावाला (श्रा १४)।

गंतुमण वि [गन्तुमनस्] ऊपर देखो (वसु)।

गंतूण } देखो **गम** = गम्।
गंतूणं }

गंथ देखो **गंठ**—ग्रन्थ्। **गंथइ** (पि ३३३)। कर्म· **गंथीअंति** (पि ५४८)।

गंथ पुं [ग्रन्थ] १ शास्त्र, सूत्र, पुस्तक (विसे ८६४; १३८३)। २ धन-धान्य वगैरह बाह्य मिथ्यात्व, क्रोध, मान आदि आभ्यन्तर उपधि, परिग्रह (ठा २, १; बृह १; विसे २५७३)। ३ धन, पैसा (स २३६)। ४ स्वजन, संबन्धी लोग (पराह २, ४)। °**ाईअ** पुं [°ातीत] जैन साधु (सूत्र १, ६)।

गंथि वि [ग्रन्थिन्] रचना-कर्ता (सम्मत्त १३६)।

गंथि देखो **गंठि** (पराह १, ३—पत्र ४४)।

गंथिम देखो **गंठिम** (णाया १, १३)।

गंदिला स्त्री [गन्दिला] देखो **गंधिल** (इक)।

गंदोणी स्त्री [दे] क्रीड़ा-विशेष, जिसमें आँख बंद की जाती है, आँख-मिचौनी (दे २,८३)।

गंदुअ देखो **गेंदुअ** (षड्)।

गंध पुं [गन्ध] १ गन्ध, नासिका से ग्रहण करने योग्य पदार्थों की वास, महक (औप; भग; हे १, १७७)। २ लव, लेश (से ६, ३)। ३ चूर्ण-विशेष (पराह १, १)। ४ वानव्यन्तर देवों की एक जाति (इक)। ५ न. देव-विमान-विशेष (निर १, ४)। ६ त्रि. गन्धयुक्त पदार्थ (सूत्र १, ६)। °**उडी** स्त्री [°कुटी] गन्ध-द्रव्य का घर (गउड; हे १, ८)। °**कासाइया** स्त्री [°काषायिका] सुगन्धि कषाय रंग की साड़ी (उवा; भग ६, ३३)। °**गुण** पुं [°गुण] गन्धरूप गुण (भग)। °**ट्टय** न [°ट्टक] गन्ध-द्रव्य का चूर्ण (ठा ३, १—पत्र ११७) °**ड्ढ** वि [°ाढ्य] गन्धपूर्ण, सुगन्धपूर्ण (पंचा २)। °**णाम** न [°नामन्] गन्ध का हेतुभूत कर्म-विशेष (अणु)। °**तेल्ल** न [°तैल] सुगन्धित तैल (कप्पू)। °**दव्व** न [°द्रव्य] सुगन्धित वस्तु, सुवासित द्रव्य (उत्त १)। °**देवी** स्त्री [°देवी] देवी-विशेष, सौधर्म देवलोक की एक देवी (निर १, ४)। °**घ्राणि** स्त्री [°घ्राणि] गन्ध-तृप्ति (णाया १, १—पत्र २५; औप)। °**नाम** देखो °**णाम** (सम ६७)। °**मय** पुं [°मृग] कस्तूरी मृग, कस्तुरिया हरिन (सुपा २)। °**मंत** वि [°वत्] १ सुगन्धित, सुगन्ध-युक्त। २ अतिशय गन्धवाला, विशेष गन्ध से युक्त (ठा ५, ३—पत्र ३३३)। °**मादण**, °**मायण** पुं [°मादन] १ पर्वत-विशेष, इस नाम का एक पहाड़ (सम १०३; पराह २, २; ठा २,३—पत्र ६६)। २ पुंन. पर्वत-विशेष का एक शिखर (ठा २, ३—पत्र ८०)। ३ न. नगर-विशेष (इक)। °**वई** स्त्री [°वती] भूतानन्द-नामक नागेन्द्र का आवास-स्थान (दीव)। °**वट्टय** न [°वर्त्तक]

सुगन्धित लेप-द्रव्य (विपा १, ६)। °वट्टि स्त्री [°वर्त्ति] गन्ध-द्रव्य की बनाई हुई गोली (णाया १, १; औप)। °वह पुं [°वह] पवन, वायु (कुमा; गा ५४२)। °वास पुं [°वास] १ सुगन्धित वस्तु का पुट। २ चूर्ण-विशेष (सुपा ६७)। °समिद्ध वि [°समृद्ध] १ सुगन्धित, सुगन्ध-पूर्ण। २ न. नगर-विशेष (आवम; इक)। °सालि पुं [°शालि] सुगन्धित व्रीहि, धान (आवम)। °हत्थि पुं [°हस्तिन्] उत्तम हस्ती, जिसकी गन्ध से दूसरे हाथी भग जाते हैं (सम १; पडि)। °हरिण पुं [°हरिण] कस्तुरिया हिरन (कप्पू)। °हारग पुं [°हारक] १ इस नाम का एक म्लेच्छ देश। २ गन्धहारक देश का निवासी (पण्ह १, १—पत्र १४)।

गंधण पुं [गन्धन] एक सर्प-जाति (दस २, ८)।

गंधपिसाय पुं [दे] गन्धिक, पसारी (दे २, ८७)।

गंधय देखो **गंध** (महा)।

गंधलया स्त्री [दे] नासिका, घ्राण (दे २, ८५)।

गंधवाह पुं [गन्धवाह] पवन (समु १८०)।

गंधव्व पुं [गन्धर्व] १ देव-गायक, स्वर्ग-गायक (उत्त १; सण)। १ एक प्रकार की देव-जाति, व्यंतर देवों की एक जाति (पण्ह १, ४, औप)। ३ यक्ष-विशेष, भगवान् कुन्थुनाथ का शासनाधिष्ठायक यक्ष (संति ८)। ४ न. मुहूर्त्त-विशेष (सम ५१)। ५ नृत्य-युक्त गीत, गान (विपा १, २)। °कंठ न [°कण्ठ] रत्न की एक जाति (राय)। °घर न [°गृह] संगीत-गृह, संगीतालय, संगीत का अभ्यास-स्थान (जं १)। °णगर, °नगर न [°नगर] असत्य-नगर, संध्या के समय में आकाश में दीखता मिथ्या-नगर, जो भावी उत्पात का सूचक है (अणु; पव १६८)। °पुर न [°पुर] देखो °णगर (गउड)। °लिवि स्त्री [°लिपि] लिपि-विशेष (सम ३५)। °विवाह पुं [°विवाह] उत्सव-रहित विवाह, स्त्री-पुरुष की इच्छा के अनुसार विवाह (सण)। °साला स्त्री [°शाला] गान-शाला, संगीत-गृह, संगीतालय (वव १०)।

गंधव्व वि [गान्धर्व] १ गंधर्व-संबन्धी, गंधर्व से संबन्ध रखनेवाला (जं १; अभि ११५)। २ पुं. उत्सव-हीन विवाह, विवाह-विशेष; 'गंधव्वेण विवाहेण सयमेव विवाहिया' (आवम)। ३ न. गीत, गान (पाअ)।

गंधव्वि वि [गन्धर्विन्] गानेवाला (ती ३)।

गंधव्विअ वि [गान्धर्विक] १ गंधर्व-विद्या में कुशल (सुपा १६६)।

गंधा स्त्री [गन्धा] नगरी-विशेष (इक)।

गंधाण न [गन्धान] छन्द-विशेष (पिंग)।

गंधार पुं [गन्धार] देश-विशेष, कन्धार (स ३८)। २ पर्वत-विशेष (स ३६)। ३ न. नगर-विशेष (स ३८)।

गंधार पुं [गान्धार] स्वर-विशेष, रागिनी-विशेष (ठा ७)।

गंधारी स्त्री [गान्धारी] १ सती-विशेष, कृष्ण वासुदेव की एक स्त्री (पडि; अंत १५)। २ विद्यादेवी-विशेष (संति ६)। ३ भगवान् नमिनाथ की शासनदेवी (संति १०)।

गंधारी स्त्री [गान्धारी] विद्या-विशेष (सूअ २, २, २७)।

गंधावइ, **गंधावाइ** पुं [गन्धापातिन्] स्वनाम-प्रसिद्ध एक वृत्त, वैताढ्य पर्वत (इक; ठा २, ३—पत्र ६६; ८०; ठा ४, २—पत्र २२३)।

गंधि वि [गन्धिन्] गंध-युक्त, गंधवाला (कप्प; गउड)।

गंधिअ वि [दे] दुर्गन्ध, खराब गन्धवाला (दे २, ८३)।

गंधिअ पुं [गान्धिक] गन्ध-द्रव्य बेचनेवाला, पसारी (दे २, ८७)।

गंधिअ वि [गन्धिक] गंध-युक्त, 'सुगन्धवर-गन्धगन्धिए' (औप)। °साला स्त्री [°शाला] दारू वगैरह गन्धवाली चीज की दूकान (वव ६)।

गंधिअ वि [गन्धित] गन्ध-युक्त, गन्धवाला (स ३७२; गा ५४५; ८७२)।

गंधिल पुं [गन्धिल] वर्ष-विशेष, विजय-क्षेत्र-विशेष (ठा २, ३; इक)।

गंधिलावई स्त्री [गन्धिलावती] १ क्षेत्र-विशेष, विजयवर्ष-विशेष (ठा २, ३; इक)। २ नगरी-विशेष (द्र ६१)। °कूड न [°कूट] १ गन्धमादन पर्वत का एक शिखर (जं ४)। २ वैताढ्य पर्वत का शिखर-विशेष (ठा ६)।

गंधिल्ली स्त्री [दे] छाया, छाँह (उप १०३१ टी)।

गंधुत्तमा स्त्री [गन्धोत्तमा] मदिरा, सुरा (दे २, ८६)।

गंधेल्ली स्त्री [दे] १ छाया, छांह। २ मधु-मक्षिका (दे २, १००)।

गंधोदग, **गंधोदय** न [गन्धोदक] सुगन्धित जल, सुगन्ध-वासित पानी (औप; विप, १, ६)।

गंधोल्ली स्त्री [दे] १ इच्छा, अभिलाषा। २ रजनी, रात (दे २, ६६)।

गंप्पि, **गंप्पिणु** देखो **गम** = गम्।

गंभीर न [गाम्भीर्य] १ गम्भीरता। २ अनौद्धत्य (सूअनि ६६)।

गंभीर वि [गम्भीर] १ गम्भीर, अस्ताघ, अतुच्छ, गहरा (औप; से ६, ४४; कप्प)। २ पुंन. गहन-स्थान, गहन प्रदेश, जहाँ प्रति-शब्द उत्थित हो (विसे ३४०४; बृह १)। ३ पुं. रावण का एक सुभट (पउम ५६, ३)। ४ यदुवंश के राजा अन्धकवृष्णि का एक पुत्र (अंत ३)। ५ न. समुद्र के किनारे पर स्थित इस नाम का एक नगर (सुर १३, ३०)। °पोय न [°पोत] नगर-विशेष (णाया १, १७)। °मालिणी स्त्री [°मालिनी] महा-विदेह-वर्ष की एक नगरी (ठा २, ३)।

गंभीरा स्त्री [गम्भीरा] १ गंभीर-हृदया स्त्री (वव ५)। २ मात्रा-छन्द का एक भेद (पिंग)। ३ क्षुद्र जंतु-विशेष, चतुरिन्द्रिय जीव विशेष (पण्ण १)।

गंभीरिअ न [गाम्भीर्य] गम्भीरता, गम्भीरपन (हे २, १०७)।

गंभीरिम पुंस्त्री [गाम्भीर्य] ऊपर देखो (सण)।

गगण न [गगन] आकाश, अम्बर (कप्प; स ३४८)। °णंदण न [°नन्दन] वैताढ्य पर्वत पर का एक नगर (इक)। °वल्लभ, °वल्लह न [°वल्लभ] वैताढ्य पर्वत पर का एक नगर (राज; इक)।

गगणंग पुंन [गगनाङ्ग] छन्द-विशेष (पिंग)।

गग्ग पुं [गर्ग] १ ऋषि-विशेष। २ गोत्र-विशेष, जो गौतम गोत्र की एक शाखा है (ठा ७)।

गग्ग पुं [गर्ग] १ एक जैन महर्षि (उत्त २७, १)। २ विक्रम की बारहवीं शताब्दी का एक श्रेष्ठी (कुप्र १४३)।

गग्ग पुं [गार्ग्य] गर्ग गोत्र में उत्पन्न ऋषि-विशेष (उत्त २७)।

गग्गर वि [गद्गद] १ गद्गद आवाजवाला, अति अस्पष्ट वक्ता (प्राप्र)। २ आनंद या दुःख से अव्यक्त कथन (हे १, २१६; कुमा)।

गग्गरी स्त्री [गर्गरी] गगरी, छोटा घड़ा (दे २, ८६; सुपा ३३६)।

गग्गिर देखो गग्गर; 'रुजगग्गिरं गेअं' (गा ८४३; सण)।

गच्छ सक [गम्] १ जाना, गमन करना। २ जानना। ३ प्राप्त करना। गच्छइ (प्राप्र; षड्)। भवि. गच्छं (हे ३, १७१; प्राप्र)। वकृ. गच्छंत, गच्छमाण (सुर ३, ६६; भग १२, ६)। संकृ. गच्छिअ (कुमा)। हेकृ. गच्छित्तए (पि ५६८)।

गच्छ पुंन [गच्छ] १ समूह, सार्थ, संघात (स १४८)। २ एक आचार्य का परिवार (औप; सं ४७)। ३ गुरु-परिवार; 'गुरुपरिवारो गच्छो, तत्थ वसंताण गिज्जरा विउला' (पंचव; धर्म ३)। °वास पुं [°वास] गुरु-कुल में रहना, गच्छपरिवार के साथ निवास (धर्म ३)। °विहार पुं [°विहार] गच्छ की सामाचारी, गच्छ का आचार (वव १)। °सारणा स्त्री [°सारणा] गच्छ का रक्षण (राज)।

गच्छागच्छिं अ. गच्छ-गच्छ से होकर (औप)।

गच्छिल्ल वि [गच्छवत्] गच्छवाला, गच्छ में रहनेवाला (बृह १)।

गज देखो गय = गज (गड्; प्रास १७१; इक)। °सार पुं [°सार] एक जैन मुनि, दण्डक-ग्रन्थ का कर्ता (दं ४७)।

गज्ज पुं [दे] जव, यव, अन्न-विशेष (दे २, ८१; पाअ)।

गज्ज न [गद्य] छन्द-रहित वाक्य, प्रबन्ध (ठा ४, ४—पत्र २८७)।

गज्ज अक [गर्ज्] गरजना, गड़गड़ाना, घड़-घड़ाना। गज्जइ (हे ४, ६८)। वकृ. गज्जंत, गज्जयंत (सुर २, ७५; रयण ५८)।

गज्जण न [गर्जन] १ गर्जन, भयानक ध्वनि, मेघ या सिंह का नाद। २ नगर-विशेष (उप ७६५)।

गज्जणसद्द पुं [दे. गर्जनशब्द] पशु और हाथी की आवाज (दे २, ८८)।

गज्जफल } वि [दे] देश-विशेष में उत्पन्न
गज्जल } (वस्त्र) (आचा २, ५, १, ५; ७)।

गज्जभ पुं [गर्जभ] पश्चिमोत्तर दिशा का पर्वत (आवम)।

गज्जर पुं [दे] कन्द-विशेष, गाजर, गजरा, इसका खाना धर्म-शास्त्र में निषिद्ध है। (श्रा १६; जी ६)।

गज्जल वि [गर्जल] गर्जन करनेवाला (निचू ७)।

गज्जह देखो गज्जभ (आवम)।

गज्जि स्त्री [गर्जि] गर्जन, हाथी वगैरह की आवाज (कुमा सुपा ८६; उप पृ ११७)।

गज्जिअ वि [गर्जित] १ जिसने गर्जन किया हो वह, स्तनित (पाअ)। २ न. गर्जन, मेघ वगैरह की आवाज (पण्ह १, ३)।

गज्जित्तु } वि [गर्जितृ] गर्जन करनेवाला,
गज्जिर } गरजनेवाला (ठा ४, ४—पत्र २३६; गा ५५)।

गज्जिल्लिअ न [दे] १ गुदगुदी, गुदगुदाहट। २ अंग-स्पर्श से होनेवाला रोमांच, पुलक (षड्)।

गज्झ वि [ग्राह्य] ग्रहण-योग्य (स १४०; विसे १७०७)।

गट्टण पुं [गट्टन] धरणेंद्र की नाट्य-सेना का अधिपति (राज)।

गट्ठिया स्त्री [दे] गठिया, गुठली; 'अंबगट्ठिया' (निचू १५)।

गड न [गड] १ विस्तीर्ण शिला, मोटा पत्थर (दे २,११०)। २ गर्त, खाई (सुर १३,४१)।

गड (मा) देखो गय = गत (प्राप्र)।

गडयड पुंन [दे] गर्जन, भयानक ध्वनि, हाथी वगैरह की आवाज; 'ता गडयडं कुणंतो, समागओ गयवरो, तत्थ' 'इत्थंतरे सयं चिय, सो जक्खो गडयडं पकुव्वंतो' (सुपा २८१; ५४२)।

गडयड अक [दे] गर्जन करना, भयानक आवाज करना। वकृ. गडयडंत (सुपा १६४)।

गडयडी स्त्री [दे] वज्र-निर्घोष, गड़गड़ आवाज, मेघ-ध्वनि (दे २, ८५; सण)।

गडबड न [दे] गडबड़, गोलमाल (सुपा ५४१)।

गडिअ } देखो गम = गम्।
गडुअ }

गडुल न [दे] चावल वगैरह का धोया-जल, चावल आदि का धोवन (धर्म २)।

गड्ड पुंस्त्री [गर्त्त] गड़हा, गड्ढा (हे २, ३२; प्राप्र; सुपा ११४)। स्त्री. गड्डा (हे १, ३५)।

गड्ड न [दे] शकट, गाड़ी (ती १५)।

गड्डरिगा } स्त्री [दे] भेड़ी, मेषी, ऊर्णायु;
गड्डरिया } 'गड्डरिगपवाहेणं गयाणुगइयं जणं वियाणंतो' (धम्म; सूअ १, ३, ४)।

गड्डरी स्त्री [दे] १ छागी, अजा, बकरी (दे २, ८४)। २ भेडी, मेषी (सट्ठि ३८)।

गड्डह पुंस्त्री [गर्दभ] गदहा, गधा, खर (हे २, ३७)। °वाहण पुं [°वाहन] रावण, दशानन (कुमा)।

गड्डिआ } स्त्री [दे] गाड़ी, शकट (ओघ ३८६
गड्डी } टी; दे २, ८१; सुपा २५२)।

गड्ढ न [दे] शय्या, बिछौना (दे २, ८१)।

गढ देखो घड = घट्। गढइ (हे ४, ११२)।

गढ पुंस्त्री [दे] गढ, दुर्ग, किला, कोट (दे २, ८१; सुपा २५; १०५)। स्त्री. गढा (कुमा)।

गढिअ वि [घटित] गढ़ा हुआ, जटित (कुमा)।

गढिअ वि [ग्रथित] १ गूँथा हुआ, निबद्ध; 'नेहनिगडगढियाणं' (उप ९८६ टी; पण्ह १, ४)। २ रचित, गुम्फित, निर्मित (ठा २, १)। ३ गृद्ध, आसक्त; (आचा २, २, २; पण्ह १, २)।

गण सक [गणय्] १ गिनना, गिनती करना। २ आदर करना। ३ अभ्यास करना, आवृत्ति करना। ४ पर्यालोचन करना। गणइ, गणेइ (कुमा; महा)। वकृ. गणंत, गणेंत (पंचा ४; से ४,१५)। कृ. गणेयव्व (उप ५५५)।

गण पुं [गण] १ समूह, समुदाय, यूथ, थोक (जी ३४; कुमा; प्रासू ४; ७५; १५१)। २ गच्छ, समान आचार व्यवहारवाले साधुओं का समूह (कप्प)। ३ छन्दः-शास्त्र प्रसिद्ध मात्रा-समूह (पिंग)। ४ शिव का अनुचर (पाअ; कुमा)। ५ मल्लों का समुदाय (अणु)। °**ओ** अ [°तस्] अनेकशः, बहुशः (सूअ २, ६)। °**नायग** पुं [°नायक] गण का मुखिया (णाया १, १)। °**नाह** पुं [°नाथ] १ गण का स्वामी, गण का मुखिया (सुपा २, १०)। २ गणधर, जिनदेव का प्रधान शिष्य (पउम १२, ६)। ३ आचार्य, सूरि (सार्ध २३)। °**भाव** पुं [°भाव] विवेक-विशेष (गउड)। °**राय** पुं [°राज] १ सामन्त राजा (भग ७, ६)। २ सेनापति (आव ३; कप्प)। °**वइ** पुं [°पति] १ गण का स्वामी। २ गणेश, गजानन, शिवपुत्र (गा ३७२ गउड)। ३ जिनदेव का मुख्य शिष्य, गणधर (सिग्घ २)। °**सामि** पुं [°स्वामिन्] गण का मुखिया, गणधर (उप २८० टी)। °**हर** पुं [°धर] १ जिनदेव का प्रधान शिष्य (सम ११३)। २ अनुपम ज्ञानादिगुण-समूह को धारण करनेवाला जैन साधु, आचार्य वगैरह; 'सेज्जंभवं गणहरं' (आवम; पव २७६)। °**हरिंद** पुं [°धरेन्द्र] गणधरों में श्रेष्ठ, प्रधान गणधर (पउम ३, ४३; ५८, १)। °**हारि** पुं [°धारिन्] देखो °हर (गण २३; सार्ध १)। °**जीव** पुं [°जीव] गण के नाम से निर्वाह करनेवाला (ठा ५, १)। °**विच्छेइय, °विच्छेदय, °विच्छेयय** पुं [°विच्छेदक] साधु-गण के कार्य की चिन्ता करनेवाला साधु (आचा २, १, १०; ठा ३, ३; कप्प)। °**हिवइ** पुं [°धिपति] १ शिव-पुत्र, गजानन, गणेश (गा ४०३; पाअ)। २ जिनदेव का प्रधान-शिष्य (पउम २६,४)।

गणग पुं [गणक] १ ज्योतिषी, जोशी, ज्योतिष-शास्त्र का जानकार, दैवज्ञ (णाया १, १)। २ भंडारी, भाण्डागारिक (णाया १, १—पत्र १६)।

गणण न [गणन] गिनती, संख्यान (वव १)।

गणणा स्त्री [गणना] गिनती, संख्या, संख्यान (सुर २, १३२; प्रासू १००; सूअ २, २)।

गणणाइआ स्त्री [दे. गण-नायिका] पार्वती, चण्डी, शिवपत्नी (दे २, ८७)।

गणय देखो **गणग** (औप; सुपा २०३)।

गणसम वि [दे] गोष्ठी-रत, गोठ में लीन (दे २, ८७)।

गणायमह पुं [दे] विवाह-गणक (दे २, ८६)।

गणाविअ वि [गणित] गिनती कराया हुआ (स ६२६)।

गणि वि [गणिन्] १ गण का स्वामी, गण का मुखिया। स्त्री. **गणिणी** (सुपा ६०२)। २ पुं. आचार्य, गच्छनायक, साधु-समुदाय का नायक (ठा ८)। ३ जिनदेव का प्रधान साधु-शिष्य (पउम ६१, १०)। ४ परिच्छेद, निश्चय, सिद्धान्त (णंदि)। °**पिडग** न [°पिटक] १ बारह मुख्य जैन आगम ग्रन्थ, द्वादशाङ्गी (सम १; १०६)। २ निर्युक्ति वगैरह से युक्त जैन आगम (औप)। ३ पुं. यक्ष-विशेष, जिन-शासन का अधिष्ठायक देव (संति ४)। ४ निश्चय-समूह, सिद्धान्त-समूह (णंदि)। °**विज्जा** स्त्री [°विद्या] १ शास्त्र-विशेष। २ ज्योतिष और निमित्त शास्त्र का ज्ञान (णंदि)।

गणि पुंस्त्री [गणि] अध्ययन, परिच्छेद, प्रकरण (णंदि १४३)।

गणिम न [गणिम] गिनती से बेची जाती वस्तु, संख्या पर जिसका भाव हो वह (श्रा १८; णाया १, ८)।

गणिम न [गणिम] १ गणना, गिनती, संख्या। २ वि. संख्येय, जिसकी गिनती की जा सके वह, (अणु १५४)।

गणिय वि [गणित] १ गिना हुआ। २ न. गिनती, संख्या (ठा ६; जं २)। ३ जैन साधुओं का एक कुल (कप्प)। ४ अंक गणित, गणित-शास्त्र (णंदि; अणु)। °**लिवि** स्त्री [°लिपि] लिपि-विशेष, अंक-लिपि (सम ३५)।

गणिय पुं [गणिक] गणित-शास्त्र का ज्ञाता, 'गणियं जाणइ गणिओ' (अणु)।

गणिया स्त्री [गणिका] वेश्या, गणिका (श्रा १२ विपा १, २)।

गणिर वि [गणयितृ] गिनती करनेवाला (गा २०८)।

गणेत्तिआ, गणेत्ती स्त्री [दे] १ रुद्राक्ष का बना हुआ हाथ का आभूषण-विशेष (णाया १, १६—पत्र २१३; औप; भग; महा)। २ अक्ष-माला (दे २, ८१)।

गणेसर पुं [गणेश्वर] १ गण का नायक। २ छन्द-विशेष (पिंग)।

गण्ण वि [गण्य] गणनीय, संख्येय (संबोध १०)।

गण्णा (मा) स्त्री [गणना] गिनती (प्राकृ १०२)।

गत्त न [गात्र] देह, शरीर (औप; पाअ; सुर २, १०१)।

गत्त देखो **गड्ड** (भग १५)। स्त्री. **गत्ता** (सुपा २१४)।

गत्त न [दे] १ ईषा, चौपाई या चारपाई की लकड़ी-विशेष। २ पंक, कर्दम (दे २, ९९)। ३ वि. गत, गया हुआ (षड्)।

°**गत्तण** वि [कर्तन] काटनेवाला, छेदक (सूअ १, १५, २४)।

गत्तडि, गत्ताडी स्त्री [दे] १ गवादनी, गोचर-भूमि (दे २, ८२)। २ गायिका, गानेवाली स्त्री (षड् दे २, ८२)।

गत्थ वि [ग्रस्त] कवलित, ग्रास किया हुआ; 'अइमहच्छलोभगच्छा (? त्था)' (पण्ह १, ३—पत्र ४४; नाट—चैत १४६)।

गद सक [गद्] बोलना, कहना। वकृ. **गदंत** (नाट—चैत ४५)।

गदि देखो **गइ** = गति (देवेन्द्र ३५१)।

गदुअ (शौ) अ [गत्वा] जाकर (प्राकृ ८८)।

गद्द देखो **गज्ज** = गद्य (प्राकृ २१)।

गद्दतोय पुं [गर्दतोय] लोकान्तिक देवों की एक जाति (सम ८५; णाया १, ८)।

गद्दभ पुं [दे] कटु-ध्वनि, कर्ण-कटु आवाज (दे २, ८२; पाअ; स १११; ४२०)।

गद्दभ देखो **गद्दह** = गर्दभ (प्राकृ)।

गद्दभय देखो **गद्दहय** (आचा २, ३, १; आवम)।

गद्दभाल पुं [गर्दभाल] स्वनाम-प्रसिद्ध एक परिव्राजक (भग)।

गद्दभालि पुं [गर्दभालि] एक जैन मुनि (ती २५)।

गद्दभिल्ल पुं [गर्दभिल्ल] उज्जयिनी का एक राजा (निचू १०; पि २९१; ४००)।

गद्दभी स्त्री [गर्दभी] १ गधी, गदही (पि २९१)। २ विद्या-विशेष (काल)।

गद्दह पुं [गर्दभ] १ गदहा, गधा, खर (सम ५०; दे २, ८०; पाअ; हे २, ३७)। २ इस नाम का एक मंत्रि-पुत्र (वृह १)।

गद्दह न [दे] कुमुद, चन्द्र-विकासी कमल (दे २, ८३)।

गद्दहय पुं [गर्दभक] १ क्षुद्र जन्तु-विशेष, जो गोशाला वगैरह में उत्पन्न होता है (जी १७)। २ देखो **गद्दह** (नाट)।

गद्दही देखो **गद्दभी** (नाट—मृच्छ ५८; निचू १०)।

गद्दिअ वि [दे] गर्वित, गर्व-युक्त (दे २, ८३)।

गद्ध पुं [गृध्र] पक्षि-विशेष, गीध, गिद्ध (औप)।

गन्न वि [गण्य] १ माननीय, आदरास्पद; 'हियमप्पणो करेंतो, कस्स न होइ गरुओ गुरुगन्नो', 'सव्वो गुणेहि गन्नो' (उव)। २ न. गणना, गिनती; 'मुल्लस्स कुणइ गन्नं' (सुपा २५३)।

गब्भ पुं [गर्भ] १ कुक्षि, पेट, उदर (ठा ५, १)। २ उत्पत्ति-स्थान, जन्म-स्थान (ठा २, ३)। ३ भ्रूण, अन्तरापत्य (कप्प)। ४ मध्य, अन्तर, भीतर का (णाया १, ८)। °**गरा** स्त्री [°करी] गर्भाधान करनेवाली विद्या-विशेष (सूअ २, २)। °**घर** न [°गृह] भीतर का घर, घर का भीतरी भाग (णाया १, ८)। °**ज** वि [°ज] गर्भ में उत्पन्न होनेवाला प्राणी, मनुष्य, पशु वगैरह (पउम १०२, ९७)। °**त्थ** वि [°स्थ] १ गर्भ में रहनेवाला। २ गर्भ से उत्पन्न होनेवाला मनुष्य वगैरह (ठा २, २)। °**मास** पुं [°मास] कार्तिक से लेकर माघ तक का महीना (वव ७)। °**य** देखो °**ज** (जी २३)। °**वई** स्त्री [°वती] गर्भिणी स्त्री (सुपा २७६)। °**वक्कंति** स्त्री [°व्युत्क्रान्ति] १ गर्भाशय में उत्पत्ति (ठा २, ३)। °**वक्कंतिअ** वि [°व्युत्क्रान्तिक] गर्भाशय में जिसकी उत्पत्ति होती है वह (सम २; २५)। °**हर** देखो **घर** (सुर ६, २१; सुपा १८२)।

गब्भर न [गह्वर] १ कोटर, गुहा। २ गहन, विषम स्थान (आव ४; पि ३३२)।

गब्भर देखो **गहर**; 'गब्भरो' (प्राकृ २४; संक्षि १६)।

गब्भाहाण न [गर्भाधान] संस्कार-विशेष (राय १४६)।

गब्भिज्ज पुं [दे. गर्भज] जहाज का निम्न श्रेणी का नौकर 'कुच्छिधारकन्नधारगब्भिज (? ज्ज) संजत्ताणावावाणियगा' (णाया १, ८—पत्र १३३; राज)।

गब्भिण } वि [गर्भित] १ जिसको गर्भ
गब्भिय } पैदा हुआ हो वह गर्भ-युक्त (हे १, २०८; प्राप्र; णाया १, ७)। २ युक्त, सहित; 'वेडिसदलनीलभित्तिगब्भिणयं' (कुमा; षड्)।

गब्भिल्ल देखो **गब्भिज्ज** (णाया १, १७—पत्र २२८)।

गम सक [गम्] १ जाना, गति करना, चलना। २ जानना, समझना। ३ प्राप्त करना। भूका. गमिही (कुमा)। कर्म. गम्मइ, गमिज्जइ (हे ४, २४९)। कवकृ. **गम्ममाण** (स ३४०)। संकृ. **गतु, गमिअ, गंता, गतूण, गंतूणं** (कुमा; षड्; प्राप्र; औप; कस), **गडुअ, गडिअ, गदुअ** (शौ); (हे ४, २७२; पि ४८१; नाट—मालती ४०), **गमेप्पि, गमेप्पिणु, गंप्पि, गंप्पिणु** (अप); (कुमा)। हेकृ. **गंतुं** (कस; श्रा १४)। कृ. **गंतव्व, गमणिज्ज, गमणीअ** (णाया १, १; गा २४९; उव; भग; नाट)।

गम सक [गमय्] १ ले जाना। २ व्यतीत करना, पसार करना, गुजारना। गमेंति (गउड); 'बुहा! मुहा मा दियहे गमेह' (सत्त ४)। कर्म. गमेज्जंति (गउड)। वकृ. **गमंत** (सुपा २०२)। संकृ. **गमिऊण** (पि) हेकृ **गमित्तए** (पि ५७८)।

गम पुं [गम] १ गमन, गति, चाल (उप २२० टी)। २ प्रवेश (पउम १, २९)। ३ शास्त्र का तुल्य पाठ, एक तरह का पाठ, जिसका तात्पर्य भिन्न हो (दे १, १; विसे ५४९; भग)। ४ व्याख्या, टीका (विसे ९१३)। ५ बोध, ज्ञान, समझ (अणु; णंदि)। ६ मार्ग, रास्ता (ठा ७)।

गम पुं [गम] १ प्रकार (वव १)। २ वि. जंगम (महानि ४)।

गमग वि [गमक] बोधक, निश्चायक (विसे ३१५)।

गमण न [गमन] गमन, गति (भग; प्रासू १३२)। २ वेदन, बोध (णंदि)। ३ व्याख्यान, टीका। ४ पुष्य वगैरह नव नक्षत्र (राज)।

गमणया } स्त्री [गमन] गमन, गति 'लोगंत-
गमणा } गमणयाए' (ठा ४, ३); 'पायवंदए पहारेत्थ गमणाए' (णाया १, १—पत्र २९।

गमणिज्ज देखो **गम** = गम्।

गमणिआ स्त्री [गमनिका] १ संक्षिप्त, व्याख्यान, दिग्-दर्शन (राज)। २ गुजारना, अतिक्रमण; 'कालगमणिया एत्थ उवाओ' (उप ७२८ टी)।

गमणी स्त्री [गमनी] १ विद्या-विशेष, जिसके प्रभाव से आकाश में गमन किया जा सकता है (णाया १, १६—पत्र २१३)। २ जूता; 'सव्वोवि जणो जलं विगाहि तो उत्तारइ गमणीओ चरणाहिंतो' (सुपा ६१०)।

गमणीअ देखो **गम** = गम्।

गमय देखो **गमग** (विसे २९७३)।

गमार वि [दे. ग्राम्य] अविदग्ध, मूर्ख (संक्षि ४७)।

गमाव देखो **गम** = गमय्। गमावइ (सण)।

गमिअ वि [गमिक] प्रकारवाला (वव १)।

गमिद वि [दे] १ अपूर्ण। २ मूढ़। ३ स्खलित (षड्)।

गमिय वि [गमित] १ गुजारा हुआ, अतिक्रांत (गउड)। २ ज्ञापित, बोधित, निवेदित (विसे ५५६)।

गमिय न [गमिक] शास्त्र-विशेष, सदृश पाठवाला शास्त्र; 'भंग-गणियाइं गमियं सरिसगमं च कारणवसेण' (विसे ५४९; ४५४)।

गमिर वि [गन्तृ] जानेवाला (हे २, १४५)।

गमेप्पि } देखो **गम** = गम्।
गमेप्पिणु }

गमेर देखो **गमार** (संक्षि ४७)।

गमेस देखो **गवेस**। गमेसइ (हे ४, १८९)। गमेसंति (कुमा)।

गम्म वि [गम्य] १ जानने योग्य। २ जो जाना जा सके (उत्तर १७०; सुपा ४२६)। ३ हराने योग्य, आक्रमणीय (सुर १२९;

१५, १४४)। ४ जाने योग्य। ५ भोगने योग्य—स्वपत्नी वगैरह (सुर १२, ५२)।

गम्म न [गम्य] गमन, 'अगम्मगम्मं सुविणेसु धन्नं' (सुख ८, १३)।

गम्ममाण देखो **गम** = गम्।

गय वि [दे] १ घूर्णित, भ्रमित, घुमाया गया (दे २, ६६; षड्)। २ मृत, मरा हुआ, निर्जीव (दे २, ६६)।

गय वि [गत] १ गया हुआ (सुपा ३३४)। २ अतिक्रान्त, गुजरा हुआ (दे १, ५६)। ३ विज्ञात, जाना हुआ (गउड)। ४ नष्ट, हत (उप ७२८ टी)। ५ प्राप्त; 'आघईगयंपि सुहए' (प्रासू ८३; १०७)। ६ स्थित, रहा हुआ; 'मणगयं' (उत्त १)। ७ प्रविष्ट, जिसने प्रवेश किया हो (ठा ४, १)। ८ प्रवृत्त (सूअ १, १, १)। ९ व्यवस्थित (औप)। १० न. गति, गमन; 'उसभो गइंदमयगलसुललियगय-विक्कमो भयवं (वसु; सुपा ५७८; आचा)। °**पाण** वि [°प्राण] मृत, मरा हुआ (आ २७)। °**राय** वि [°राग] राग-रहित, वीत-राग, निरीह (उप ७२८ टी)। °**वइया**, °**वई** स्त्री [°पतिका] १ विधवा, राँड़; (औप; पउम २६, ४२)। २ जिसका पति विदेश गया हो वह स्त्री; प्रोषित-भर्तृका (गा ३३२; पउम २६, ४२)। °**वय** वि [°वयस्] वृद्ध, बुड्ढा (पाअ)। °**णुगइअ** वि [°ानुगतिक] अंध, परम्परा का अनुयायी, अंध-श्रद्धालु (उवर ४६)।

गय पुं [गज] १ हाथी, हस्ती, कुंजर (अणु; औप; प्रासू १५४; सुपा ३३४)। २ एक अंतकृत् जैन मुनि, गज सुकुमाल मुनि (अंत ३)। ३ इस नाम का एक सेठ (उप ७६८ टी)। ४ रावण का एक सुभट (पउम ५६, २)। °**उर** न [°पुर] नगर-विशेष, कुरु देश का प्रधान नगर, हस्तिनापुर (उप १०१४; महा; सण)। °**कण्ण**, °**कन्न** पुं [°कर्ण] १ द्वीप-विशेष। २ उसमें रहनेवाला (जीव ३; ठा ४,२)। °**कलभ** पुं [°कलभ] हाथी का बच्चा (राय)। °**गय** वि [°गत] हाथी के ऊपर आरूढ़ (औप)। °**ग्गपय** पुं [°ग्रपद] पर्वत-विशेष (आक)। °**त्थ** वि [°स्थ] हाथी के ऊपर स्थित (पउम ८, ८६)। °**पुर** देखो °**उर** (सूअ १, ५, १)। °**बंधय** पुं [°बन्धक] हाथी को पकड़नेवाली जाति (सुपा ६४२)। °**मारिणी** स्त्री [°मारिणी] वनस्पति-विशेष, गुच्छ विशेष (पण्ण १—पत्र ३२)। °**मुह** पुं [°मुख] १ गणेश, गणपति, शिव-पुत्र (पाअ)। २ यक्ष-विशेष (गण ११)। °**राय** पुं [°राज] प्रधान हाथी, श्रेष्ठ हस्ती (सुपा ३८६)। °**वइ** पुं [°पति] गजेन्द्र, श्रेष्ठ हस्ती (णाया १, १६; सुपा २८६)। °**वर** पुं [°वर] प्रधान हाथी। °**वरारि** पुं [°वरारि] सिंह, शार्दूल, वनराज (पउम १७, ७६)। °**वहू** स्त्री [°वधू] हथिनी, हस्तिनी (पाअ)। °**वीही** स्त्री [°वीथी] शुक्र वगैरह महाग्रहों का चार-क्षेत्र-विशेष (ठा ६)। °**ससण** पुं [°श्वसन] हाथी की सूँड़ (औप)। °**सुकुमाल** पुं [°सुकुमाल] एक प्रसिद्ध जैन मुनि, उसी भव में मुक्ति-गत जैन साधु-विशेष (अंत, पडि)। °**ारि** पुं [°ारि] सिंह, पञ्चानन (भवि)। °**ारोह** पुं [°ारोह] हस्तिपक, महावत (पाअ)।

गय पुं [गद] रोग, बिमारी (ओप; सुपा ५७८)।

गयंक पुं [गजाङ्क] देवों की एक जाति, दिक्कुमार देव (औप)।

गयंद पुं [गजेन्द्र] श्रेष्ठ हाथी (गउड)।

गयकंठ पुं [गजकण्ठ] रत्न-विशेष (राय ६७)।

गयकन्न पुं [गजकर्ण] अनार्य देश-विशेष (पव २७४)।

गयग्गपय न [गजाग्रपद] दशार्णकूट का एक तीर्थ (आचानि ३३२)।

गयण न [गगन] 'ह' अक्षर (सिरि १९६)। °**मणि** पुं [°मणि] सूर्य (कुप्र ५१)।

गयण न [गगन] गगन, आकाश, अम्बर (हे २, १६४; गउड)। °**गइ** पुं [°गति] एक राजकुमार (दंस)। °**चर** वि [°चर] आकाश में चलनेवाला, पक्षी, विद्याधर वगैरह (सुपा २५०)। °**मंडल** पुं [°मण्डल] एक राजा (दंस)।

गयणरइ पुं [दे] मेघ, मेह, बादल (दे २, ८८)।

गयणिंदु पुं [गगनेन्दु] विद्याधर वंश के एक राजा का नाम (पउम ५, ४५)।

गयनिमीलिया स्त्री [गजनिमीलिका] उपेक्षा, उदासीनता (स ५१)।

गयमुह पुं [गजमुख] अनार्य देश-विशेष (पव २७४)।

गयसाउल, **गयसाउल्ल** } वि [दे] विरक्त, वैरागी (दे ८७; षड्)।

गया स्त्री [गदा] लोहे का या पाषाण का अस्त्र-विशेष, लोहे का मुगदर या लाठी (राय)। °**हर** पुं [°धर] वासुदेव; (उत्त ११)।

गया स्त्री [गदा] एक देव-विमान (देवेन्द्र १३३)।

गया स्त्री [गया] स्वनाम-प्रसिद्ध नगर-विशेष (उप २५१)।

°**गर** वि [°कर] करनेवाला, कर्त्ता (सण)।

गर पुं [गर] १ विष-विशेष, एक प्रकार का जहर (निचू १)। २ ज्योतिष-शास्त्र-प्रसिद्ध बवादि करणों में से एक (विसे ३३४८)।

°**गरण** देखो **करण** (रयण ६३)।

गरल न [गरल] १ विष, जहर (पाअ प्रासू ३६)। २ रहस्य। ३ वि. अव्यक्त, अस्पष्ट; 'अ-गरलाए अ-मम्मणाए' (औप)।

गरलिगाबद्ध वि [गरलिकाबद्ध] निक्षिप्त, उपन्यस्त (निचू १)।

गरह सक [गर्ह्] निन्दा करना, घृणा करना। गरहइ, गरहह (भग)। वकृ. **गरहंत** (द्र १५)। कवकृ. **गरहिज्जमाण** (णाया १, ८)। संकृ. **गरहित्ता** (आचा २, १५)। हेकृ. **गरहित्तए** (कस; ठा २, १)। कृ. **गरहणिज्ज**, **गरहणीय**, **गरहियव्व** (सुपा १८४; ३७६; पण्ह २, १)।

गरहण न [गर्हण] निन्दा, घृणा (पि १३२)।

गरहणया, **गरहणा** } स्त्री [गर्हणा] निन्दा, घृणा (भग १७, ३; औप; पण्ह २, १)।

गरहा स्त्री [गर्हा] निन्दा, घृणा (भग)।

गरहिअ वि [गर्हित] निन्दित, घृणित (सं ६३; द्र ३३; सण)।

°**गरिअ** वि [कृत] किया हुआ, निर्मित (दे ७, ११)।

गरिट्ठ वि [गरिष्ठ] अति गुरु, बड़ा भारी (सुपा १०; १२८; प्रासू १५४)।

गरिम पुंस्त्री [गरिमन्] गुरुता, गुरुत्व, गौरव (हे १, ३५; सुपा २३; १०६)।

गरिह देखो **गरह**। गरिहइ, गरिहामि (महा; पडि)।

गरिह पुं [गर्ह] निन्दा, गर्हा (प्राप्र)।

गरिहणया देखो **गरहणया** (उत्त २९, १)।

गरिहा स्त्री [गर्हा] निन्दा, घृणा, जुगुप्सा (ओघ ७९१; स १६०)।

गरु देखो **गुरु**; 'गरुयरगत्ताए खिविऊण' (सुपा २१४)।

गरुअ वि [गुरुक] गुरु, बड़ा, महान् (हे १, १०९; प्राप्र; प्रासू ३९)।

गरुअ सक [गुरुकारय्] गुरु करना, बड़ा बनाना। गरुएइ (पि १२३);

'हंसाण सरेहिं सिरी, सारिज्जइ
अह सराण हंसेहिं।
अण्णाण्णं चित्र एए,
अप्पाणं णवर गरुअंति'
(हेका २५५)।

गरुआ, **गरुआअ** } अक [गुरुकारय्] १ बड़ा बनना। बड़े की तरह आचरण करना। गरुआइ, गरुआअइ (हे ३, १३८)।

गरुइअ वि [गुरुकृत] बड़ा किया हुआ (से ९, २०; गउड)।

गरुई, **गरुवी** } स्त्री [गुर्वी] बड़ी, ज्येष्ठा, महती (हे १, १०७; प्राप्र; निचू १)।

गरुक्क देखो **गरुअ**; 'णवजोव्वणरूअपसाहिणा सिंगारगुणगरुक्केण' (प्राप)।

गरुड देखो **गरुल** (संति १; स २६५; पिंग)। छन्द-विशेष (पिंग)। °त्थ न [°ास्त्र] अस्त्र-विशेष, उरगास्त्र का प्रतिपक्षी अस्त्र (पउम १२, १३०; ७१, ६६)। °द्धय पुं [°ध्वज] विष्णु, वासुदेव (पउम ६१, ५७)। °वूह पुं [°व्यूह] सेना की एक प्रकार की रचना (महा; पि २४०)।

गरुडंक पुं [गरुडाङ्क] १ विष्णु, वासुदेव। २ इक्ष्वाकु वंश के एक राजा का नाम (पउम ५, ७)।

गरुल पुं [गरुड] एक देव-विमान (देवेन्द्र १३४)।

गरुल पुं [गरुड] १ पक्षि-राज, पक्षि-विशेष (पण्ह १, १)। २ यक्ष-विशेष, भगवान् शान्तिनाथ का शासन-यक्ष (संति ८)। ३ भवनपति देवों की एक जाति, सुपर्णकुमार देव (पण्ह १, ४)। ४ सुपर्णकुमार देवों का इन्द्र (सूअ १, ६)। °केउ पुं [°केतु] देखो °ज्झय (राज)। °ज्झय, °द्धय पुं [°ध्वज] १ गरुड पक्षी के चित्रवाली ध्वजा (राय)। २ वासुदेव, कृष्ण। ३ देव-जाति-विशेष, सुपर्णकुमार देव (आवम; सम; पि)। °वूह देखो गरुड-वूह (जं २), °सत्थ न [°शस्त्र] गरुडास्त्र, अस्त्र-विशेष (महा)। °ासण न [°ासन] आसन-विशेष (राय)। °ोववाय न [°ोपपात] शास्त्र-विशेष, जिसको याद करने से गरुड़देव प्रत्यक्ष होते हैं (ठा १०)। देखो **गरुड**।

गरुवी देखो **गरुई** (कुमा)।

गल अक [गल्] १ गल जाना, सड़ना। २ खतम होना, समाप्त होना। ३ झरना, टपकना, गिरना। ४ पिघलना, नरम होना। ५ सक. गिराना, टपकाना; 'जाव रत्ती गलइ' (महा)। वकृ. 'नवेण रस-सोएहिं **गलंतम्**असुइरसं' (महा; सुर ४, ६८; सुपा २०४)। **गलिंत** (पण्ह १; ३; प्रासू ७२)। प्रयो., वकृ. **गलावेमाण** (णाया १, १२)।

गल, **गलअ** } पुं [गल] १ गला, ग्रीवा, कण्ठ (सुपा ३३; पाअ)। २ बडिश, वंसी, मछली पकड़ने का काँटा (उप १८८; विपा १; ८; सुर ८, १४०)। °गज्जि स्त्री [°गर्जि] गले की गर्जना (महा)। °गज्जिय न [°गर्जित] गल-गर्जन (महा)। °लाय वि [°लात] गले में लगाया हुआ, कण्ठ-न्यस्त (औप)।

गलई स्त्री [गलकी] वनस्पति-विशेष (राज)।

गलग देखो **गलअ** (पण्ह १, १)।

गलत्थ देखो **खिव**। गलत्थइ (हे ४, १४३; भवि)।

गलत्थण न [क्षेपण] १ क्षेपण करना, फेंकना। २ प्रेरण (से ५, ५३; सुपा २८)।

गलत्थलिअ वि [दे] १ क्षिप्त, फेंका हुआ। २ प्रेरित (दे २, ८७)।

गलत्थल्ल पुं [दे] गलहस्त, हाथ से गला पकड़ना (णाया १,९; पण्ह १,३—पत्र ५३)।

गलत्थल्लिअ [दे] देखो **गलत्थलिअ** (से ५, ४३; ८, ६१)।

गलत्था स्त्री [दे] प्रेरणा;

'गरुयाणं चिय भुवणम्मि आवया
न उण हुंति लहुयाण।
गहकल्लोलगलत्था, ससिसूराणं न ताराणं'
(उप ७२८ टी)।

गलत्थिअ वि [क्षिप्त] १ प्रेरित (सुपा ६३५)। २ फेंका हुआ (दे २, ८७; कुमा)। ३ बाहर निकाला हुआ (पाअ)।

गलद्धअ पुं [दे] प्रेरित, क्षिप्त (षड्)।

गलहत्थिअ वि [गलहस्तित] गला पकड़कर बाहर निकाला हुआ (वज्जा १३८)।

गलाण देखो **गिलाण** (नाट—चैत ३४)।

गलि देखो **गल** = गल; 'मच्छुव्व गलिं गिलित्ता' (दसचू १, ६)।

गलि, **गलिअ** } वि [गलि, °क] दुर्विनीत, दुर्दम (श्रा १२; सुपा २७६)। °**गद्दह** पुं [°गर्दभ] अविनीत गदहा (उत्त २७)। °बइल्ल पुं [°बलीवर्द] दुर्विनीत बैल (कप्पू)। °स्स पुं [°श्व] दुर्दम घोड़ा (उत्त १)।

गलिअ वि [गलित] १ गला हुआ, पिघला हुआ (कप्प)। २ क्षालित, प्रक्षालित (कुमा)। ३ स्खलित, पतित (से १, २)। ४ नष्ट, नाश-प्राप्त (सुपा २४३; सण)।

गलिअ वि [दे] स्मृत, याद किया हुआ (दे २, ८१)।

गलिंत देखो **गल** = गल।

गलिज्ज वि [गलीय, गल्य] गले का (पिंड ४२४)।

गलिर वि [गलितृ] निरन्तर पिघलता, टपकता; 'बहुसोगगलिरनयणेण' (श्रा १४)।

गलुल देखो **गरुल** (अच्चु १; षड्)।

गलोई, **गलोया** } स्त्री [गुडूची] वल्ली-विशेष, गिलोय, गुरुच (हे १, १२४; जी १०)।

गल्ल पुं [गल्ल] १ गाल, कपोल (दे २, ८१; उवा)। २ हाथी का गण्ड-स्थल, कुम्भ-स्थल (षड्)। °**मसूरिया** स्त्री [°मसूरिका] गाल का उपधान (जीत)।

गल्लक्क पुंन [दे] १ स्फटिक मणि (प्राप; पि २९६)।

गल्लत्थ देखो **गलत्थ**। गल्लत्थइ (षड्)।

गल्लप्फोड पुं [दे] डमरुक, वाद्य-विशेष (दे २, ८६)।

गल्लूरण न [दे] माँस खाते हुए कुपित शेर की गर्जना (माल ६०)।

गल्लोल्ल न [दे] गडुक, पात्र-विशेष (निचू १)।

गव पुंस्त्री [गो] पशु, जानवर (सूत्र १,२,३)।

गवक्ख पुं [गवाक्ष] १ गवाक्ष, वातायन, झरोखा (औप; पण्ह २, ४)। २ गवाक्ष के आकृति का रत्न-विशेष (जीव ३)। °**जाल** न [°जाल] १ रत्न-विशेष का ढेर (जीव ३; राय)। २ जालीवाला वातायन (औप)।

गवच्छ पुं [दे] आच्छादन, ढकना (राय)।

गवच्छिय वि [दे] आच्छादित, ढका हुआ (राय; जीव ३)।

गवत्त न [दे] घास, तृण (दे २, ८५)।

गवत्थिय देखो **गवच्छिय** (पउमच० ४१—५)।

गवय पुं [गवय] गो की आकृति का जंगली पशु-विशेष, नील गाय (पण्ह १, १)।

गवर पुं [दे] वनस्पति-विशेष (पराण १—पत्र ३४)।

गवल पुं [गवल] १ जंगली पशु-विशेष, जंगली महिष (पउम ८८, ६)। २ न. महिष का सिंग (पराण १७; सुपा ६२)।

गवा स्त्री [गो] गैया, गाय (पउम ८०, १३)।

गवादणी देखो **गवायणी** (आचा २, १०, २)।

गवायणी स्त्री [गवादनी] गोचर-भूमि (दे २, ८२)।

गवार वि [दे] गँवार, छोटे गाव का निवासी (वजा ४)।

गवालिय न [गवालीक] गौ के विषय में अनृत भाषण (पण्ह १, २)।

गविअ वि [दे] अवधृत, निश्चित (षड्)।

गविट्ठ वि [गवेषित] खोजा हुआ (सुपा १५४; ६४०; स ४८४; पाअ)।

गविल न [दे] उत्तम कोटि की चीनी, शुद्ध मिस्री (उर ५, ६)।

गवेधुआ स्त्री [गवेधुका] जैनमुनि-गण की एक शाखा (कप्प)।

गवेलग पुंस्त्री [गवेलक] १ मेष, भेड़ (णाया १, १; औप)। २ गौ और भेड़ (ठा ७)।

गवेस सक [गवेषय्] गवेषणा करना, खोजना, तलाश करना। गवेसइ (महा; षड्)। भूका. गवेसित्था (आचा)। वकृ. **गवेसंत, गवेसयंत, गवेसमाण** (आ १२, सुपा ४१०; सुर १, २०२; णाया १, ४)। हेकृ. **गवेसित्तए** (कप्प)।

गवेसइत्तु वि [गवेषयितृ] खोज करनेवाला, गवेषक (ठा ४, २)।

गवेसग वि [गवेषक] ऊपर देखो (उप पृ ३३)।

गवेसण न [गवेषण] खोज, अन्वेषण (औप; सुर ४, १४३)।

गवेसणया स्त्री [गवेषणा] ईहा-ज्ञान, संभावना-ज्ञान (णंदि १७४)।

गवेसणया, **गवेसणा** } स्त्री [गवेषणा] १ खोज, अन्वेषण (औप; सुपा २३३)। २ शुद्ध भिक्षा की याचना (ओघ ३)। ३ भिक्षा का ग्रहण (ठा ३, ४)।

गवेसय देखो **गवेसग** (भवि)।

गवेसाविय वि [गवेषित] १ दूसरे से खोजवाया हुआ, दूसरे द्वारा खोज किया गया (स २०७; ओघ ६२२ टी)। २ गवेषित, अन्वेषित, खोजा हुआ (स ६८)।

गवेसि वि [गवेषिन्] खोज करनेवाला, गवेषक (पुप्फ ४४०)।

गवेसिअ वि [गवेषित] अन्वेषित, खोजा हुआ (सुर १५, १२६)।

गव्व पुं [गर्व] मान, अहंकार, अभिमान (भग १५; पव २१६)।

गव्वर न [गह्वर] कोटर, गुहा (स ३६३)।

गव्वि वि [गर्विन्] अभिमानी, गर्व-युक्त (आ १२; दे ७, ६१)।

गव्विट्ठ वि [गर्विष्ठ] विशेष अभिमानी, गर्व करनेवाला (दे १, १२८)।

गव्विय वि [गर्वित] गर्व-युक्त, जिसको अभिमान उत्पन्न हुआ हो वह (पाअ; सुपा २७०)।

गव्विर वि [गर्विन्] अहंकारी, अभिमानी (हे २, १५६; हेका ४५)। स्त्री. °**री** (हेका ४५)।

गस सक [ग्रस्] खाना, निगलना, भक्षण करना। गसइ (हे ४, २०४; षड्)। वकृ. **गसंत** (उप ३२० टी)।

गसण न [ग्रसन] भक्षण, निगलना (स ३५७)।

गसिअ वि [ग्रस्त] भक्षित, निगलित (कुमा; सुर ६, ६०; सुपा ४८६)।

गह सक [ग्रथ्] गूँथना, गठना। गहेति (सूअनि १४०)।

गह सक [ग्रह्] १ ग्रहण करना, लेना। २ जानना। गहेइ (सण)। वकृ. **गहंत** (आ २७)। संकृ. **गहाय, गहिअ, गहिऊण, गहिया, गहेउं** (पि ५६१; नाट; पि ५८६; सूअ १, ४, १; १, ५, २)। कृ. **गहीअव्व, गहेअव्व** (रयण ७०; भग)।

गह पुं [ग्रह] १ ग्रहण, आदान, स्वीकार (विसे ३७१; सुर ३, ६२)। २ सूर्य, चन्द्र वगैरह ज्योतिष्क-देव (गउड; पण्ह १, २)। ३ कर्म का बन्ध (दस ४)। ४ भूत वगैरह का आक्रमण, आवेश (कुमा; सुर २, १४४)। ५ गृद्धि, आसक्ति, तल्लीनता (आचा)। ६ संगीत का रस-विशेष (दस २)। °**खोभ** पुं [°क्षोभ] राक्षस वंश के एक राजा का नाम, एक लंकेश (पउम ५, २६६)। °**गज्जिय** न [°गर्जित] ग्रहों के संचार से होनेवाली आवाज (जीव ३)। °**गहिय** वि [°गृहीत] भूतादि से आक्रान्त, पागल (कुमा; सुर २, १४४)। °**चरिय** न [°चरित] १ ज्योतिष-शास्त्र (वव ४)। २ ज्योतिष-शास्त्र का परिज्ञान (सम ८३)। °**दंड** पुं [°दण्ड] दण्डाकार ग्रह-पंक्ति (भग ३, ७)। °**नाह** पुं [°नाथ] १ सूर्य, सूरज (आ २८)। २ चन्द्र, चन्द्रमा (उप ७२८ टी)। °**मुसल** न [°मुसल] मुसलाकार ग्रह-पंक्ति (जीव ३)। °**सिंघाडग** न [°शृङ्गाटक] १ पानी-फल के आकारवाली ग्रहपंक्ति (भग ३, ७)। २ ग्रह युग्म, ग्रह की जोड़ी (जीव ३)। °**ाहिव** पुं [°ाधिप] सूर्य, सूरज (आ २८)।

गह पुं [ग्रह] १ संबंध (धर्मसं ३६३)। २ पकड़, धरना (सूअ १, ३, २, ११; धर्मवि ७२)। ३ ग्रहण, ज्ञान (धर्मसं १३६४)। °**भिन्न** न [°भिन्न] जिसके बीच से ग्रह का गमन हो वह नक्षत्र (वव १)। °**सम** न [°सम] गेय काव्य का एक भेद (दसनि २, २३)।

गह° न [गृह] घर, मकान। °वइ पुं [°पति] गृहस्थ, गृही, संसारी (पउम २०, ११६; प्राप्र)। °वइणी स्त्री [°पत्नी] गृहिणी, स्त्री (सुपा २२६)।

गहक्कल्लोल पुं [दे. ग्रहकल्लोल] राहु, ग्रह-विशेष (दे २, ८६; पाअ)।

गहगह अक [दे] हर्ष से भर जाना, आनन्द-पूर्ण होना। गहगहइ (भवि)।

गहण न [ग्रहण] १ आदान, स्वीकार (से ४, ३३; प्रासू १४)। २ आदर, सम्मान। ३ ज्ञान, अवबोध (से ४, ३३)। ४ शब्द, आवाज (आचा २, ३, ३; आवम)। ५ वि. ग्रहण करनेवाला। ६ न. इन्द्रिय (विसे १७०७)। ७ चन्द्र-सूर्य का उपराग—ग्रहण (भग १२, ६)। ८ वि. ग्राह्य, जिसका ग्रहण किया जाय वह (उत्त ३२)। ९ न. शिक्षा-विशेष (आव)।

गहण न [ग्राहण] ग्रहण कराना, अंगीकार कराना; 'जो आसि बंभचेरग्गहणगुरू' (कुमा)।

गहण न [ग्रहण] १ आदान का कारण। २ आक्षेपक, 'चक्खुस्स रूवं गहणं वयंति' (उत्त ३२, २२)।

गहण न [गहन] अरण्य-क्षेत्र (आचा २, ३, ३, १)। °विदुग्ग न [°विदुर्ग] पर्वत के एक प्रदेश में स्थित वृक्ष-वल्ली-समुदाय (सूअ २, २, ८)।

गहण वि [गहन] १ निबिड़, दुर्भेद्य, दुर्गम; 'काले अणाइणिहणे जोणीगहणम्मि भीसणे इत्थ' (जी ४९)। 'फलसारणलिणिगहणा' (गउड)। २ वन, झाड़ी, घना कानन (पाअ; भग)। ३ वृक्ष-गह्वर, वृक्ष का कोटर (विपा १, ३—पत्र ४९)।

गहण न [दे] १ निर्जल-स्थान, जल-रहित प्रदेश (दे २, ८२; आचा २, ३, ३)। २ बन्धक, धरोहर, गिरवी (सुपा ५४८)।

गहणय न [दे] गहना, आभूषण (सुपा १५४)।

गहणया स्त्री [ग्रहण] ग्रहण, स्वीकार, उपादान (औप)।

गहणी स्त्री [ग्रहणी] गुदाशय, गाँड़ (पराह १, ४; औप)।

गहणी स्त्री [ग्रहणी] कुक्षि, पेट (पव १०६)।

गहणी स्त्री [दे] जबरदस्ती हरण की हुई स्त्री, बांदी या बंदी (दे २, ८४; से ६, ४७)।

गहत्थि पुं [गभस्ति] किरण, रश्मि (पाअ)।

गहर पुं [दे] गृध्र, गीध-पक्षी (दे २, ८४; पाअ)।

गहर पुंन [गह्वर] १ निकुंज। २ वन, जंगल। ३ दंभ, कपट। ४ विषम-स्थान। ५ रोदन। ६ गुफा। ७ अनेक अनर्थों का संकट; 'गहरो' (प्राकृ २४)।

गहवइ पुं [गृहपति] कृषक, खेती करनेवाला (पाअ)।

गहवइ वि [दे] १ ग्रामीण, गाँव का रहने-वाला (दे २, १००)। २ पुं. चन्द्रमा, चाँद (दे २, १००; पाअ; वाअ १५)।

गहिअ वि [दे] वक्रित, मोड़ा हुआ, टेढ़ा, किया हुआ (दे २, ८५)।

गहिअ वि [गृहीत] १ उपात्त, स्वीकृत (औप; ठा ४, ४)। २ पकड़ा हुआ (पराह १, ३)। ३ ज्ञात, उपलब्ध, विदित (उत्त २; षड्)।

गहिअ वि [गृद्ध] आसक्त, तल्लीन (आचा)।

गहिआ स्त्री [दे] १ काम-भोग के लिए जिसकी प्रार्थना की जाती हो वह स्त्री (दे २, ८५)। २ ग्रहण करने योग्य स्त्री (षड्)।

गहिर वि [गभीर] गहरा, गम्भीर, अस्ताघ (दे १, १०१; काप्र ९२५; कप्प; गउड; औप; प्राप्र)।

गहिल वि [ग्रहिल] भूतादि से आविष्ट, पागल (श्रा १४)।

गहिलिय } **गहिल्ल** } वि [दे. ग्रहिल] आवेश-युक्त, पागल, भ्रान्त-चित्त (पउम ११३, ४३; षड्; श्रा १२; उप ५९७ टी; भवि)।

गहीअ देखो **गहिअ**=गृहीत (श्रा १२; रयण ६८)।

गहीर देखो **गभीर** (प्रासू ६)।

गहीरिअ न [गाभीर्य] गहराई, गम्भीरपन (हे २, १०७)।

गहीरिम पुंस्त्री [गभीरिमन्] गहराई, गम्भी-रता (हे ४, ४१९)।

गहेअव्व } **गहेउं** } देखो **गह**=ग्रह।

गहेण (अप) देखो **गह**=ग्रह्। **गह्वह** (षड्)।

गा } **गाअ** } सक [गै] १ गाना, आलापना। २ वर्णन करना। ३ श्लाघा करना। गाइ, गाअइ (हे ४, ६)। वकृ. **गंत, गाअंत, गायमाण** (गा ५४६; पि ४७९; पउम ६४, २४)। कवकृ. **गिज्जंत** (गउड; गा ६४२; सुपा २१; सुर ३, ७९)। संकृ. **गाइउं** (महा)।

गाअ पुं [गो] बैल, वृषभ, साँड़ (हे १, १५८)।

गाअ न [गात्र] १ शरीर, देह (सम ६०)। २ शरीर का अवयव (औप)।

गाअ वि [गायक] गानेवाला (कुमा)।

गाअंक पुं [गवाङ्क] महादेव, शिव (कुमा)।

गाअण वि [गायन] गानेवाला, गवैया (सुपा ५५; सण)।

गाइअ वि [गीत] १ गाया हुआ, 'किन्नरेण तो गाइयं गीयं' (सुपा १९)। २ न. गीत, गान, गाना (आव ४)।

गाइआ स्त्री [गायिका] गानेवाली स्त्री (गा ६४४)।

गाइर वि [गाथक] गानेवाला, गवैया (सुपा ५४)।

गाई स्त्री [गो] गैया, गौ (हे १, १५८; दे ४, १८; गा २७१; सुर ७, ९५)।

गाउ } **गाउअ** } **गाऊअ** } न [गव्यूत] १ कोस, क्रोश, दो हजार धनुष-प्रमाण जमीन (पि २५४; औप; इक जी १८; विसे ८२ टी)। २ दो कोस, क्रोश-युग्म (ओघ १२)।

गागर पुं [दे] स्त्री को पहनने का वस्त्र-विशेष, लहँगा, घँघरा या घाघरा; गुजराती में 'घाघरो' (पराह १, ४)। २ मत्स्य-विशेष (पराण १)।

गागरी [दे] देखो **गायरी** (पि ६२)।

गागलि पुं [गागलि] एक जैनमुनि (उत्त १०)।

गागेज्ज वि [दे] मथित, मथा हुआ, आलो-ड़ित (दे २, ८८)।

गागेज्जा स्त्री [दे] नवोढ़ा, दुलहिन (दे २, ८८)।

गाडिअ वि [दे] विधुर, वियुक्त (दे २, ८३)।

गाढ वि [गाढ] १ गाढ़, निविड़, सान्द्र (पाअ; सुर १४, ४८)। २ मजबूत, दृढ़ (सुर ४, २३७)। ३ क्रिवि. अत्यन्त, अतिशय (कप्प)।

गाण न [गान] गीत. गाना (हे ४, ६)।

गाण वि [गायन] गवैया, गीत-प्रवीण (दे २, १०८)।

गाणंगणिअ पुं [गाणङ्गणिक] छः ही मास के भीतर एक साधु-गण से दूसरे गण में जानेवाला साधु (बृह १)।

गाणी स्त्री [दे] गवादनी, गोचर-भूमि (दे २, ८२)।

गाथा देखो **गाहा** (भग; पिंग)।

गाध वि [गाध] अस्ताघ-रहित, कम गहरा (दे ५, २४)।

गाम पुं [ग्राम] १ समूह, निकर; 'चवलो इंदियगामो' (सुर २, १३८)। २ प्राणि-समूह, जन्तु-निकर (विसे २८६६)। ३ गाँव, वसति, ग्राम (कप्प; णाया १, १८; औप)। ४ इन्द्रिय-समूह (भग; औप)। °**कंडग**, °**कंडय** पुं [°कण्टक] १ इन्द्रिय-समूह रूप काँटा (भग; औप)। २ दुर्जनों का रूक्ष आलाप, गाली (आचा)। °**घायग** वि [°घातक] गाँव का नाश करनेवाला (पण्ह १,३)। °**णिद्धमण** न [°निर्धमन] गाँव का पानी जाने का रास्ता, नाला (कप्प)। °**धम्म** पुं [°धर्म] १ विषयाभिलाष, विषय की वाञ्छा (ठा १०)। २ इन्द्रियों का स्वभाव। ३ विषय-प्रवृत्ति (आचा)। ४ मैथुन (सूअ १, २, २)। ५ शब्द, रूप वगैरह इन्द्रियों का विषय (पण्ह १, ४)। ६ गाँव का धर्म, गाँव का कर्तव्य (ठा १०)। °**द्ध** पुंन [°ार्ध] आधा गाँव। २ उत्तर भारत, भारत का उत्तरप्रदेश (निचू १२)। °**मारी** स्त्री [°मारी] गाँव भर में फैली हुई बीमारी-विशेष (जीव ३)। °**रोग** पुं [°रोग] ग्राम-व्यापक बीमारी (जं २)। °**वइ** पुं [°पति] गाँव का मुखिया (पाअ)। °**णुग्गाम** न [°ानुग्राम] एक गाँव से दूसरे गाँव (औप)। °**ायार** पुं [°ाचार] विषय (आवम)।

गामउड } पुं [दे] गाँव का मुखिया (दे २,
गामऊड } ८६; बृह ३)।

गामंतिय न [ग्रामान्तिक] १ गाँव की सीमा (आचा)। २ वि. गाँव की सीमा में रहनेवाला (दसा १)। ३ पुं. जैनेतर दार्शनिक-विशेष (सूअ २, २)।

गामगोह पुं [दे] गाँव का मुखिया (दे २, ८६)।

गामड पुं [ग्रामक] गाँव, छोटा गाँव (श्रा १६)।

गामण न [दे. गमन] भूमि में गमन, भू-सर्पण (भग ११, ११)।

गामणह न [दे] ग्राम-स्थान, ग्राम-प्रदेश (षड्)।

गामणि देखो **गामणी** (दे २, ८६; षड्)।

गामणिसुअ पुं [दे] गाँव का मुखिया (दे २, ८६)।

गामणी पुं [दे] गाँव का मुखिया (दे २, ८६; पाअ)।

गामणी वि [ग्रामणी] १ श्रेष्ठ, प्रधान, नायक (से ७, ६०, धण १; गा ४४६; षड्)। २ पुं. तृण-विशेष (दे २, ११२)।

गामपिंडोलग पुं [दे] भीख से पेट भरने के लिये गाँव का आश्रय लेनेवाला भीखारी (आचा)।

गामरोड पुं [दे] छल से गाँव का मुखिया बन बैठनेवाला, गाँव के लोगों में फूट उत्पन्न कर गाँव का मालिक होनेवाला (दे २, ९०)।

गामहण न [दे] ग्राम-स्थान, गाँव का प्रदेश (दे २, ९०)। २ छोटा गाँव (पाअ)।

गामाग पुं [ग्रामाक] ग्राम-विशेष, इस नाम का एक सन्निवेश (आवम)।

गामार वि [दे. ग्रामीण] ग्रामीण, छोटे गाँव का रहनेवाला (वज्जा ४)।

गामि वि [गामिन्] जानेवाला (गा १६७; आचा)। स्त्री. °**णी** (कप्प)।

गामिअ वि [ग्रामिक] १ देखो **गामिल्ल** (दे २, १००)। २ ग्राम का मुखिया (निचू २)। ३ विषयाभिलाषी (आचा)।

गामिणिआ स्त्री [गामिनिका] गमन करने-वाली स्त्री, 'ललिअहंसबहुगामिणिआहिं' (अजि २६)।

गामिल्ल } वि [ग्रामीण] गाँव का
गामिल्लुअ } निवासी, गँवार; (पउम ७७,
गामीण } १०८; विसे १ टी; दे ८, ४७)। स्त्री. °**ल्ली** (कुमा)।

गामुअ वि [गामुक] जानेवाला (स १७५)।

गामेइआ स्त्री [ग्रामेयिका] गाँव की रहने-वाली स्त्री, गँवार स्त्री (गउड)।

गामेणी स्त्री [दे] छागी, अजा, बकरी (दे २, ८४)।

गामेय देखो **गामेयग** (धर्मवि १३७)।

गामेयग वि [ग्रामेयक] गाँव का निवासी, गँवार (बृह १)।

गामेरड [दे] देखो **गामरोड** (षड्)।

गामेलुअ } देखो **गामिल्ल** (मृच्छ २७५;
गामेल्ल } विपा १, १; विसे १४११)।

गामेस पुं [ग्रामेश] गाँव का अधिपति (दे २, ३७)।

गायण वि [गायन] गवैया, गायक (सिरि ७०१)।

गायरी स्त्री [दे] गगरी, गगरी, कलशी, छोटा घड़ा (दे २, ८६)।

°**गार** वि [°कार] कारक, कर्ता (भवि)।

गार पुं [दे. ग्रावन्] पत्थर, पाषाण, कङ्कड़ (वव ४)।

गार न [अगार] गृह, घर, मकान (ठा ६)। °**त्थ** पुंस्त्री [°स्थ] गृहस्थ, गृही (निचू १)। °**त्थिय** पुंस्त्री [°स्थित] गृहस्थ, गृही, संसारी; 'गारत्थियजणउचियं भासासमिओ न भासिज्जा' (पुप्फ १८१; ठा ६)।

°**गारय** वि [कारक] कर्ता, करनेवाला (स १५१)।

गारव पुंन [गौरव] १ अभिमान, अहंकार। २ अभिलाष, लालसा; 'तओ गारवा पण्णत्ता' (ठा ३, ४; श्रा ३५; सम ८)। ३ महत्व, गुरुत्व, प्रभाव (कुमा)। ४ आदर, सम्मान (षड्; प्राप्र)।

गारवित वि [गौरवित] १ गौरवान्वित, महत्त्वशाली। २ गर्वीला, अभिमानी। ३ लालसावाला, अभिलाषी (सूअ १, १, १)।

गारविल्ल वि [गौरववत्] ऊपर देखो (कम्म १, ५६)।

गारहत्थ वि [गार्हस्थ] गृहस्थ-सम्बन्धी, गृहस्थ का (पव २३५)।

गारि पुंस्त्री [अगारिन्] गृही, संसारी, गृहस्थ (उत्त ५, १६)।

गारिहत्थिय स्त्रीन [गार्हस्थ्य] गृहस्थ-संबन्धी, संसारि-संबन्धी। स्त्री. °या (पव २३५)।

गारुड } वि [गारुड] १ गरुड-संबन्धी।
गारुड्ड } २ सर्प के विष को उतारनेवाला, सर्प-विष को दूर करनेवाला। ३ पुं. सर्प विष को दूर करनेवाला मन्त्र (उप ६८६ टी; से १४, ५७)। ४ न. शास्त्र-विशेष, मन्त्र-शास्त्र-विशेष, सर्पविष-नाशक मन्त्र का जिसमें वर्णन हो वह शास्त्र (ठा ६)। °मंत पुं [°मन्त्र] सर्प-विष का नाशक मन्त्र (सुपा २१६)। °वित्र वि [°वित्] गारुड मन्त्र का जानकार, गारुड शास्त्र का जानकार (उप ६८६ टी)।

गाल सक [गालय्] १ गालना, छानना। २ नाश करना। ३ उल्लंघन करना, अतिक्रमण करना। गालयइ (विसे ६४)। वकृ. गालेमाण (भग ६, ३३)। कवकृ. गालिज्जंत (सुपा १७३) प्रयो. गालावेइ (णाया १, १२)।

गालण न [गालन] छालना, गालना (पण्ह १, १; उप पृ ३७६)।

गालणा स्त्री [गालना] १ गालना, छानना। २ गिरवाना। ३ पिघलवाना (विपा १, १)।

गालवाहिया स्त्री [दे] छोटी नौका, डोंगी; 'एत्थंतरम्मि समागया गालवाहियाए निज्जामया' (स ३५१)।

गालि स्त्री [गालि] गाली, गारी, अपशब्द, असभ्य वचन (सुपा ३७०)।

गालिय वि [गालित] १ छाना हुआ। २ अतिक्रान्त। ३ विनाशित। ४ क्षिप्त; 'गालियमिठो निरंकुसो वियरिओ रायहत्थी' (महा)।

गाली स्त्री [गाली] देखो गालि (पव ३८)।

गाव (अप) देखो गा। गावइ (पिंग)। वकृ. गावंत (पि २५४)।

गाव (अप) देखो गव्व (भवि)।

गाव वि [दे] गत, गया हुआ, गुजरा हुआ (षड्)।

गाव } पुं [ग्रावन्] १ पत्थर, पाषाण
गावाण } (पाअ)। २ पहाड़, गिरि (हे ३, ५६)।

गावि (अप) देखो गव्विय (भवि)।

गावी स्त्री [गो] गौ, गैया (हे २, १७४; विपा १, २; महा)।

गास पुं [ग्रास] ग्रास, कवल (सुपा ४८८)।

गास पुं [ग्रास] भोजन (पव ६५)।

गाह देखो गह = ग्रह्। कर्म. गाहिज्जइ (प्राप्र)।

गाह सक [ग्राहय्] ग्रहण कराना। गाहेइ (औप)।

गाह सक [गाह्] १ गाहना, ढूँढ़ना। २ पढ़ना, अभ्यास करना। ३ अनुभव करना। ४ टोह लगाना। गाहदि (शौ); (मृच्छ ७२)। कवकृ. गाहिज्जंत (वज्जा ४)।

गाह पुं [गाध] अस्ताघ-रहित, थाह (ठा ४, ४)।

गाह पुं [ग्राह] १ गाह, कुंभीर, नक्र, जल-जन्तु-विशेष, मगर (दे २,८६; णाया १, ४; जी २०)। २ आग्रह, हठ (विसे २६८६; पउम १६, १२)। ३ ग्रहण, आदान (निचू १)। ४ गारुड़िक, सर्प को पकड़नेवाली मनुष्य-जाति (बृह १)। °वई स्त्री [°वती] नदी-विशेष (ठा २, ३—पत्र ८०)।

गाहग वि [ग्राहक] १ ग्रहण करनेवाला, लेनेवाला (सुपा ११)। २ समझनेवाला, जाननेवाला (सुपा ३४३)। ३ समझानेवाला, शिक्षक, आचार्य, गुरु (औप)। ४ ज्ञापक, बोधक। स्त्री. गाहिगा (औप)।

गाहक वि [ग्राहक] प्राप्ति करनेवाला, 'गाहगं सयलगुणाणं' (स ६८२)।

गाहण न [ग्राहण] १ ग्रहण कराना। २ ग्रहण, आदान; 'गाहण तवचरियस्सा गहणं चिय गाहणा होंति' (पंचभा)। ३ शास्त्र, सिद्धान्त (वव ४)। ४ बोधक-वचन, शिक्षा, उपदेश (पण्ह २, २)।

गाहणया } स्त्री [ग्राहणा] ऊपर देखो (उप
गाहणा } पृ ३१४; आचा; गच्छ १)।

गाहय देखो गाहग (विसे ८३१; स ४६८)।

गाहा स्त्री [गाथा] अध्ययन, ग्रन्थ-प्रकरण (उत्त ३१, १३)।

गाहा स्त्री [गाथा] १ छन्द-विशेष, आर्या, गीति (ठा ५, ३; अजि ३७; ३८)। २ प्रतिष्ठा। ३ निश्चय; 'सेसपयाण य गाहा' (आव ४)। ४ 'सूत्रकृतांग' सूत्र का सोलहवाँ [illegible] (सूअ १, १, १)।

गाहा स्त्री [दे] गृह, घर, मकान; 'गाहा घरं गिहमिति एगट्ठा' (वव ८)। °वइ पुंस्त्री [°पति] १ गृहस्थ, गृही, संसारी (ठा ४, ४; सुपा २२६)। २ धनी, धनाढ्य (उत्त १)। ३ भंडारी, भाण्डागारिक (सम २७)। स्त्री. °णी (णाया १, ५; उवा)।

गाहाल पुं [ग्राहाल] कीट-विशेष, त्रीन्द्रिय जन्तु विशेष (जीव १)।

गाहावई स्त्री [ग्राहावती] १ नदी-विशेष। २ द्वीप-विशेष। ३ ह्रद-विशेष, जहाँ से ग्राहावती नदी निकलती है (जं ४)।

गाहावय वि [ग्राहित] जिसको ग्रहण कराया गया हो वह (सुर ११, १८३)।

गाहिणी स्त्री [गाहिनी] १ गाहने वाली स्त्री। २ छन्द-विशेष (पिंग)।

गाहिपुर न [गाधिपुर] नगर-विशेष (गउड)।

गाहिय वि [ग्राहित] १ जिसको ग्रहण कराया गया हो वह। २ आमित, उकसाया हुआ (सूअ १, २, १)।

गाहीकय वि [गाथीकृत] एकत्रित, इकट्ठा किया हुआ (सूअनि १, १६)।

गाहु स्त्री [गाहु] छन्द-विशेष (पिंग)।

गाहुलि पुंस्त्री [दे] ग्राह, नक्र, मगर, क्रूर जल-जन्तु विशेष (दे २, ८६)।

गाहुल्लिया देखो गाहा = गाथा (सुपा २६४)।

गिंठि [गृष्टि] १ एक बार व्यायी हुई। २ एक बार व्यायी हुई गाय (हे १, २६)।

गिंधुअ [दे] देखो गेंठुअ (पाअ)।

गिंधुल्ल [दे] देखो गेंठुल्ल (पाअ)।

गिंभ (अप) देखो गिम्ह (हे ४, ४४२)।

गिंह देखो गिह्ह (षड्)।

गिज्जंत देखो गा।

गिज्झ अक [गृध्] आसक्त होना, लम्पट होना। गिज्झइ (हे ४, २१७)। गिज्झह (णाया १, ८)। वकृ. गिज्झंत (औप)। कृ. गिज्झियव्व (पण्ह २, ५)।

गिज्झ वि [गृह्य, ग्राह्य] १ ग्रहण करने योग्य। २ अपनी तरफ में किया जा सके ऐसा (ठा ३, २)।

गिट्ठि देखो गिंठि; 'वारेंतस्सवि बला दिट्ठी गिट्ठिव्व जवसम्मि' (उप ७२८ टी; पाअ; गा ६४०)।

गिड्डिया स्त्री [दे] गेड़ी, गेंद खेलने की लकड़ी (पव ३८)।

गिण देखो **गण** = गणय्। गिणंति (सट्ठि ६७)।

गिण्ह देखो **गह** = ग्रह्। गिण्हइ (कप्प)। वकृ. **गिण्हंत, गिण्हमाण** (सुपा ६१६; णाया १, १)। संकृ. **गिण्हिउं, गिण्हिऊण, गिण्हित्ता** (पि ५७४; ५८५; ५८२)। हेकृ. **गिण्हित्तए** (कप्प)। कृ. **गिण्हियव्व, गिण्हेयव्व** (श्रणु; सुपा ५१३)।

गिण्हण देखो **गहण** = ग्रहण (सिरि ३४७; पिंड ४५६; तंदु ५०)।

गिण्हणा स्त्री [ग्रहण] उपादान, आदान (उत्त १६, २७)।

गिण्हाविअ वि [ग्राहित] ग्रहण कराया हुआ (धर्मवि ११६)।

गिद्ध पुं [गृध्र] पक्षि-विशेष, गीध (पाअ; णाया १; १६)।

गिद्ध वि [गृद्ध] आसक्त, लम्पट, लोलुप (पण्ह १, २; आचू ३)।

गिद्धपिट्ठ न [गृद्ध स्पृष्ट, गृध्रपृष्ठ] मरण-विशेष, आत्महत्या के अभिप्राय से गीध आदि को अपना शरीर खिला देना (पव १५७)।

गिद्धि स्त्री [गृद्धि] एक देव-विमान (देवेन्द्र १३४)।

गिद्धि स्त्री [गृद्धि] आसक्ति, लम्पटता, गार्ध्य (सूअ १, ६)।

गिन्हणा देखो **गिण्हणा** (उत्त १६, २७)।

गिम्ह पुं [ग्रीष्म] ऋतु-विशेष, गरमी का मौसिम (हे २, ७४; प्राप्र)।

गिम्हा स्त्री. देखो गिम्ह; 'गिम्हासु' (सुख २, ३७)।

गिर सक [गृ] १ बोलना, उच्चारण करना। २ गिलना, निगलना। गिरइ (षड्)।

गिरा स्त्री [गिर्] वाणी, भाषा, वाक् (हे १, १६)।

गिरि पुं [गिरि] १ पहाड़, पर्वत (गउड; १, २३)। °**अडी** स्त्री [°तटी] पर्वतीय नदी (गउड)। °**कण्णई,** °**कण्णी** स्त्री [°कर्णी] वल्ली-विशेष, लता-विशेष (पण्ण १—पत्र ३३; श्रा २०)। °**कूड** न [°कूट] १ पर्वत का शिखर। २ पुं. रामचन्द्र का महल (पउम ८०, ४)। °**जण्ण** पुं [°यज्ञ] कोंकण देश में वर्षाकाल में किया जाता एक प्रकार का उत्सव (बृह १)। °**णई** स्त्री [°नदी] पर्वतीय नदी (पि ३८५)। °**णाल** पुं [°नार] प्रसिद्ध पर्वत-विशेष, जो काठियावाड़ में आजकल भी 'गिरनार' के नाम से विख्यात है (प्रौ ३)। °**दारिणी** स्त्री [°दारिणी] विद्या-विशेष (पउम ७, १३६)। °**नई** देखो °**णई** (सुपा ६३५)। °**पक्खंदण** न [°प्रस्कन्दन] पहाड़ पर से गिरना (निचू ११)। °**यडय** न [°कटक] पर्वत का मध्य भाग (गउड)। °**पब्भार** पुं [°प्राग्भार] पर्वत-नितम्ब (संथा)। °**राय** पुं [°राज] मेरु पर्वत (इक)। °**वर** पुं [°वर] प्रधान पर्वत, उत्तम पहाड़ (सुपा १७६)। °**वरिंद** पुं [°वरेन्द्र] मेरु पर्वत (श्रा २७)। **सुआ** स्त्री [°सुता] पार्वती, गौरी (पिंग)।

गिरि पुं [दे] बीज-कोश (दे ६, १४८)।

गिरिंद पुं [गिरीन्द्र] १ श्रेष्ठ पर्वत। २ मेरु पर्वत। ३ हिमाचल (कप्पू)।

गिरिकन्नी देखो **गिरि-कण्णी** (पव ४)।

गिरिडी स्त्री [दे] पशुओं के दाँत को बाँधने का उपकरण-विशेष; 'दंतगिरिडिं पबंधइ' (सुपा २३७)।

गिरिनयर न [गिरिनगर] गिरनार पर्वत के नीचे का नगर, जो आजकल 'जूनागढ' के नाम से प्रसिद्ध है (कुप्र १७६)।

गिरिफुल्लिय न [गिरिपुष्पित] नगर-विशेष (पिंड ४६१)।

गिरिस पुं [गिरिश] महादेव, शिव (पाअ; दे, ६, १२१)। °**वास** पुं [°वास] कैलाश पर्वत (से ६, ७५)।

गिरीस पुं [गिरीश] १ हिमालय पर्वत। २ महादेव, शिव (पिंग)।

गिल सक [गृ] गिलना, निगलना, भक्षण करना। संकृ. **गिलिऊण** (नाट)।

गिलण न [गरण] निगरण, भक्षण (हे ४, ४४५)।

गिला } अक [ग्लै] १ ग्लान होना, बीमार **गिलाअ** } होना। २ खिन्न होना, थक जाना। ३ उदासीन होना। गिलाइ, गिलायइ, गिलाएमि (भग; कस; आचा)। वकृ. **गिलायमाण** (ठा ३, ३)।

गिला स्त्री [ग्लानि] १ बीमारी, रोग। २ खेद, थकावट (ठा ८)।

गिलाण देखो **गिलाअ**; 'गिलाणइ कज्जे' (स ७१७)।

गिलाण वि [ग्लान] १ बीमार, रोगी (सूअ १, ३, ३)। २ अशक्त, असमर्थ, थका हुआ (ठा ३, ४)। ३ उदासीन, हर्ष-रहित (णाया १, १३; हे २, १०६)।

गिलाणि स्त्री [ग्लानि] ग्लानि, खेद, थकावट (ठा ५, १)।

गिलायय वि [ग्लायक] ग्लानि-युक्त, लान (औप)।

गिलासि पुंस्त्री [ग्रासिन्] व्याधि-विशेष, भस्मक रोग (आचा)। स्त्री. °**णी** (आचा)।

गिलिअ वि [गिलित] निगला हुआ, भक्षित (सुपा ३, २०६; सुपा ६४०)।

गिलिअवंत वि [गिलितवत्] जिसने भक्षण किया हो वह (पि ५६६)।

गिलोइया } स्त्री [दे] गृह-गोधा, छिपकली **गिलोई** } (सुपा ६४०; पुप्फ २६७)।

गिल्लि स्त्री [दे] १ हाथी की पीठ पर कसा जाता होदा, हौदा (णाया १, १—पत्र ४३ टी; औप)। २ डोली, दो आदमी से उठाई जाती एक प्रकार की शिविका (सूअ २, २; दसा ६)।

गिव्वाण पुं [गीर्वाण] देव, सुर, त्रिदश (उप ५३० टी)।

गिह न [गृह] घर, मकान (आचा; श्रा २३; स्वप्न ६४)। °**त्थ** पुंस्त्री [°स्थ] गृहस्थ, गृही, संसारी (कप्प; द्र ५)। स्त्री. °**त्था** (पउम ४६, ३३)। °**नाह** पुं [°नाथ] घर का मालिक (श्रा २८)। °**लिंगि** पुंस्त्री [°लिङ्गिन्] गृहस्थ, गृही, संसारी (दंस)। °**वइ** पुंस्त्री [°पति] गृहस्थ, गृही, घर का मालिक (ठा ५, ३; सुपा २३४)। °**वास** पुं [°वास] १ घर में निवास। २ द्वितीयाश्रम, संसारिपन; 'गिहवासं पासं पिव मन्नंतो वसइ दुक्खिओ तम्मि' (धम्म; सूअ १, ६)। °**वट्ट** पुं [°आवर्त्त] द्वितीय आश्रम, संसारिपन (सूअ १, ४, १)। °**ासम** पुं [°आश्रम] घर-वास, द्वितीयाश्रम (स १४८)।

गिहिकोइला स्त्री [गृहकोकिला] गृहगोधा, छिपकली (स ७५८)।

गिहमेहि पुं [गृहमेधिन्] गृहस्थ (धर्मवि २६)।

गिहवइ पुं [गृहपति] देश का अधिपति, सूबेदार; 'तह गिहवईवि देस्स नायगो' (पव ८५)।

गिहि पुं [गृहिन्] गृही, संसारी, गृहस्थ (ओघ १७ भा; नव ४३)। °धम्म पुं [°धर्म] गृहस्थ-धर्म, श्रावक-धर्म (राज)। °लिंग न [°लिङ्ग] गृहस्थ का वेश (बृह १)।

गिहिणी स्त्री [गृहिणी] गृहिणी, भार्या, स्त्री (सुपा ८३; श्रा १६)।

गिहीअ वि [गृहीत] आत्त, उपात्त, ग्रहण किया हुआ (स ४२८)।

गिहेलुग देखो गिहेलुय (आचा २, ५, १, ८)।

गिहेलुय पुं [गृहैलुक] देहली, द्वार के नीचे की लकड़ी (निचू १३)।

गी स्त्री [गिर्] वाणी, भाषा, वाक्; 'थिरमुज्जलं च छायाघणं च गीविलसियं जस्स' (गउड)।

गीआ स्त्री [गीता] श्रीमद्भगवद्गीता, ज्ञानमय उपदेश, छन्द-विशेष (पिंग)।

गीइ स्त्री [गीति] १ छन्द-विशेष, आर्या-वृत्त का एक भेद। २ गान, गीत (ठा ७; उप १३० टी)।

गीइया स्त्री [गीतिका] ऊपर देखो (औप; णाया १, १)।

गीय वि [गीत] १ पद्य-मय वाक्य, गेय, जो गाया जाय वह (पण्ह २, ५; अणु)। २ कथित, प्रतिपादित (णाया १, १)। ३ प्रसिद्ध, विख्यात (संथा)। ४ न. गान, ताल और बाजे के अनुसार गाना (जं २; उत्त १)। ५ संगीत-कला, गान-कला, संगीत-शास्त्र का परिज्ञान (णाया १,१)। ६ पुं. गीतार्थ, उत्सर्ग और अपवाद वगैरह का जानकार जैन साधु, विद्वान् जैन मुनि (उप ७७३)। °जस पुं [°यशस्] इन्द्र-विशेष, गन्धर्व देवों का एक इन्द्र (ठा २, ३; इक)। °त्थ पुं [°ार्थ] १ विद्वान् जैन मुनि (उप ८३३ टी; वव ४; सुपा १२७)। २ संगीत-रहस्य (मै १४)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष (पउम ५५, ५३)। °रइ स्त्री [°रति] १ संगीत-क्रीड़ा (औप)। २ पुं. गन्धर्व देवों का एक इन्द्र (इक, भग, ३, ८)। ३ गन्धर्व-सेना का अधिपति देव-विशेष (ठा ७)। ४ वि. संगीत-प्रिय, गान-प्रिय (विपा १, २)।

गीवा स्त्री [ग्रीवा] कण्ठ, गरदन (पाअ)।

गुंछ देखो गुच्छ (हे १, २६)।

गुंछा स्त्री [दे] १ बिन्दु। २ दाढ़ी-मूंछ। ३ अधम, नीच (दे २, १०१)।

गुंज अक [हस्] हँसना, हास्य करना। गुंजइ (हे ४, १९६)।

गुंज अक [गुञ्ज्] १ गुन-गुन करना, भ्रमर आदि का आवाज करना। २ गर्जना, सिंह वगैरह का आवाज करना; 'गुंजंति सीहा' (महा)। वकृ. **गुंजंत** (णाया १, १—पत्र ५ रंभा)।

गुंज पुं [गुञ्ज] १ गुञ्जारव करता वायु (पउम १३, ४३)। २ पर्वत-विशेष; 'गुंजवरपव्वयं ते' (पउम ८, ६०; ६४)।

गुंजा स्त्री [गुञ्जा] १ लता-विशेष (सुर २, ६)। २ फल-विशेष, घुँघची (णाया १, १; गा ३१०)। ३ भम्भा, वाद्य-विशेष (आचा)। ४ परिणाम-विशेष (ठा ४, १)। ५ गुञ्जारव, गुंजन, गुन-गुन आवाज; "गुंजावक्ककुहरोवगूढं" (राय)। ६ वायु-विशेष, गुञ्जारव करनेवाला वायु (जीव १; जी ७)। °फल, °हल न [°फल] फल-विशेष, घुंघची (सुर २, ६; सुपा २६१)।

गुंजालिआ स्त्री [गुञ्जालिका] गंभीर तथा टेढ़ी वापी—बावली या बावड़ी (आचा २, ३, ३, १)।

गुंजालिया स्त्री [गुञ्जालिका] वक्र-सारिणी, टेढ़ी कियारी (णाया १, १)। २ गोल पुष्करिणी (निचू १२)। ३ वक्र नदी (पण्ण ११)।

गुंजाविअ वि [हासित] हँसाया हुआ (कुमा ७, ४१)।

गुंजिअ न [गुञ्जित] गुन-गुन आवाज, भ्रमर वगैरह का शब्द (कुमा)।

गुंजिर वि [गुञ्जितृ] गुन-गुन आवाज करनेवाला (उप १०३१ टी)।

गुंजुल्ल देखो **गुंजोल्ल** गुंजुल्लइ (हे ४, २०२)।

गुंजेल्लिअ वि [दे] पिण्डीकृत, इकट्ठा किया हुआ (दे २, ९२)।

गुंजोल्ल सक [वि + लुल्] बिखेरना। गुंजोल्लइ (प्राकृ ७३)।

गुंजोल्ल अक [उत् + लस्] उल्लास पाना, विकसित होना। गुंजोल्लइ (हे ४, २०२)।

गुंजोल्लिअ वि [उल्लसित] विकसित, विकसित (कुमा)।

गुंठ सक [उद् + धूलय्, गुण्ठ्] धूल वाला करना, धूली के रंग का करना, धूसरित करना। गुंठइ (हे ४, २९)। वकृ. **गुंठंत** (कुमा)।

गुंठ पुं [दे] अधम अश्व, दुष्ट घोड़ा (दे २, ९१; स ४५४)। २ वि. मायावी, कपटी (वव ३)।

गुंठा स्त्री [दे] माया, दम्भ, छल (वव ३)।

गुंठिअ वि [गुण्ठित] १ धूसरित। २ व्याप्त ३ आच्छादित (दे १, ८५)।

गुंठी स्त्री [दे] नीरंगी, स्त्री का वस्त्र-विशेष (दे २, ९०)।

गुंड न [दे] मुस्ता से उत्पन्न होनेवाला तृण-विशेष (दे २, ९१)।

गुंडण न [गुण्डन] धूलि का लेप, धूल का शरीर में लगाना; 'रयरेणुगुंडणाणि य नो सम्मं सहसि' (णाया १, १—पत्र ७१)।

गुंडिअ वि [गुण्डित] १ धूलि-लिप्त, धूलि-युक्त (पाअ)। २ लिप्त, पता हुआ; 'चुण्णगुंडिअगातं' (विपा १, २—पत्र २४)। ३ घिरा हुआ; 'सउणी जह पंसुगुंडिया' (सूअ १, २, १)। ४ आच्छादित, प्रावृत (आवा)। ५ प्रेरित (पण्ह १, ३)।

गुंथण न [ग्रन्थन] गूँथना, गठना (रयण १८)।

गुंद पुं [गुन्द्र] वृक्ष-विशेष (पाअ)।

गुंदल न [दे. गुन्दल] १ आनन्द-ध्वनि, खुशी की आवाज, हर्ष की तुमुलध्वनि; 'मत्तवरकामिणीसंघकयगुंदलं' (सुर ३, ११५)। 'करिणीहिं कलहेहिं य खणमेक्कं हरिसगुंदलं काउं' (सुपा १३७)। २ हर्ष-भर, आनन्द-संदोह, खुशी की वृद्धि; 'अमंदआणंदगुंदलपुरुव्वं', 'आणंदगुंदलेणं ललइ लीलावईहिं परिकलिओ' (सुपा २२; १३६)। वि. आनन्द-

मग्न, खुशी में लीन; 'तं तह दट्ठुं आणंद-गुंदलं' (सुपा १३४)।

गुंदवडय न [दे] एक प्रकार की मिठाई, गुजराती में जिसको 'गुंदवडा' कहते हैं (सुपा ४८५)।

गुंदा } स्त्री [दे] १ बिन्दु २ अधम, नीच
गुंपा } (दे २, १०१)।

गुंध सक [ग्रन्थ्] गठना। गुंधइ (प्राकृ ६३)।

गुंफ सक [गुम्फ्] गूँथना, गठना। गुंफइ (षड्) वकृ. गुंफंत (कुमा)।

गुंफ पुं [गुम्फ] १ रचना, गूँथना, ग्रन्थन (उप १०३१ टी; दे १, १५०; ६, १४२)।

गुंफ पुं [दे] गुप्ति, कारागार, जेल (दे २, ६०)।

गुंफण न [दे] गोफन, पत्थर फेंकने का अस्त्र-विशेष; 'गुंफणफेरणसुंकारएहिं' (सुर २, ८)।

गुंफी स्त्री [दे] शतपदी, क्षुद्र कीट-विशेष, गोजर, कनखजूरा (दे २, ६१)।

गुग्गुल पुं [गुग्गुल] सुगन्धित द्रव्य-विशेष, गूगल या गुग्गुल (सुपा १५१)।

गुग्गुली स्त्री [गुग्गुल] गूगल का पेड़ (जी १०)।

गुग्गुलु देखो **गुग्गुल** (स ४३६)।

गुच्छ } पुं [गुच्छ] १ गुच्छा, गुच्छक,
गुच्छय } स्तबक (उत्त २; स्वप्न ७२)। २ वृक्षों की एक जाति (पण्ण १)। ३ पत्तों का समूह (जं १)।

गुच्छय देखो **गोच्छय** (ओघ ६६८)।

गुच्छिय वि [गुच्छित] गुच्छा वाला, गुच्छ-युक्त; 'निच्चं गुच्छिया' (राय)।

गुज्ज देखो **गोज्ज** (सुपा २८१)।

गुज्जर पुं [गूर्जर] १ भारत का एक प्रान्त, गुजरात देश (पिंग)। २ वि. गुजरात का निवासी। स्त्री. °री (नाट)।

गुज्जरत्ता स्त्री [गूर्जरत्रा] गुजरात देश (सार्ध ६८)।

गुज्जलिअ वि [दे] संघटित (षड्)।

गुज्झ पुं [गुह्य] एक देव-जाति (दस ७, ५३)।

गुज्झ } वि [गुह्य] १ गोपनीय, छिपाने
गुज्झअ } योग्य (णाया १,१; हे २,१२४)। २ न. गुप्त बात, रहस्य; 'सिमंतिणिहिययगयं गुज्झं पिव तक्खणा फुट्टं' (उप ७२८ टी)। ३ लिंग, पुरुष-चिह्न। ४ योनि, स्त्री-चिह्न (धर्म २)। ५ मैथुन, संभोग (पण्ह १, ४)। °हर वि [°धर] गुप्त बात को प्रकट नहीं करने-वाला (दे २ ४३)। °हर वि [°हर] रहस्य-भेदी, गुप्त बात को प्रसिद्ध करनेवाला (दे २, ६३)।

गुज्झअ } पुं [गुह्यक] देवों की एक जाति
गुज्झग } (ठा ५, ३)।

गुट्ट न [दे] स्तम्ब, तृण-काण्ड; 'अज्जुण-गुट्टं व तस्स जाणूइं' (उवा)।

गुट्ट देखो **गोट्ठ** (पाअ; भत्त १६२)।

गुट्ठी देखो **गोट्ठी** (सूक्त ५८)।

गुड सक [गुड्] १ हाथी को कवच वगैरह से सजाना। २ लड़ाई के लिए तय्यार करना, सजाना; 'गुडह गइंदे पउणीकरेह रहचक्कपा-इक्के' (सुपा २८८)। कवकृ. 'गुडिअगुडिज्जं-तभडं' (से १२, ८७)।

गुड सक [गुड्] नियन्त्रण करना। गुडेइ (संबोध ५४)।

गुड पुं [गुड] १ गुड़, ईख का विकार, लाल शक्कर (हे १, २०२; प्रासू १५१)। २ एक प्रकार का कवच (राज)। °सत्थ न [°सार्थ] नगर-विशेष (आक)।

गुडदालिअ वि [दे] पिण्डीकृत, इकट्ठा किया हुआ (दे २, ६२)।

गुडा स्त्री [गुडा] १ हाथी का कवच। २ अश्व का कवच (विपा १, २)।

गुडिअ वि [गुडित] कवचित, वर्मित, कृत-संनाह (से १२, ७३; ८७; विपा १, २)।

गुडिआ स्त्री [गुटिका] गाली (गा १७७)।

गुडीलड्डिआ स्त्री [दे] चुम्बन (दे २, ६१)।

गुड्डुर पुंन [दे] खीमा या खेमा, तंबू, डेरा, वस्त्र-गृह (सिरि ४८२; ६४४)।

गुण सक [गुणय्] १ गिनना। २ आवृत्ति करना, याद करना। गुणइ (सूक्त ५१; हे ४, ४२२), गुणेइ (उव)। वकृ. **गुणमाण** (उप पृ ३६६)।

गुण पुं [गुण] उच्चारण (सूअनि २०)। २ रसना, मेखला (आचा २, २, १, ७)।

गुण पुंन [गुण] १ गुण, पर्याय, स्वभाव, धर्म (ठा ५, ३)। २ ज्ञान, सुख वगैरह एक ही साथ रहनेवाला धर्म (सम्म १०७; १०६)। ३ ज्ञान, विनय, दान, शौर्य, सदाचार वगैरह दोष-प्रतिपक्षी पदार्थ (कुमा; उत्त १६; अणु; ठा ४, ३; से १, ४)। ४ लाभ, फायदा; 'विहवेहिं गुणाइं मग्गंति' (हे १, ३४; सुपा १०३)। ५ प्रशस्तता, प्रशंसा (णाया १, १)। ६ रज्जू, डोरा, धागा (से १, ४)। ७ व्याकरण-प्रसिद्ध ए, ओ और अर् रूप स्वर-विकार (सुपा १०३)। ८ जैन गृहस्थ को पालने का व्रत-विशेष, गुण-व्रत (पंचव ३)। ९ रूप, रस, गन्ध वगैरह द्रव्याश्रित धर्म; 'गुण-पच्चक्खत्तणओ गुणीवि जाओ घडाव्व पच्चक्खो' (ठा १, १; उत्त २८)। १० प्रत्यञ्चा, धनुष का रोदा (कुमा)। ११ कार्य, प्रयोजन (भग २, १०)। १२ अप्रधान, अमुख्य, गौण (हे १, ३४)। १३ अंश, विभाग (अणु)। १४ उपकार, हित (पंचा ५)। °कर वि [°कर] १ लाभ-कारक। २ उपकार-कारक (पंचा ५)। °कार पुं [°कार] गुणा करना, अभ्यास-राशि (सम ६०)। °चंद पुं [°चन्द्र] १ एक राजकुमार (महावम)। २ एक जैन मुनि और ग्रन्थकार। ३ श्रेष्ठि-विशेष (राज)। °ट्ठाण न [°स्थान] गुणों का स्वरूप-विशेष, मिथ्यादृष्टि वगैरह चउदह गुण-स्थानक (कम्म ४; पव ६०)। °ट्ठिअ पुं [°र्थिक] गुण को प्रधान माननेवाला मत, नय-विशेष (सम्म १०७)। °ड्ढ वि [°ढ्य] गुणी, गुणवान् (सुर ३, २०; १३०)। °ण्ण, °ण्णु, °न्न, °न्नु वि [°ज्ञ] गुण का जानकार (गउड; उवर ८६; उप ५३० टी; सुपा १२२)। °पुरिस पुं [°पुरुष] गुणी पुरुष (सूअ १, ४) °मंत वि [°वत्] गुणी, गुण-युक्त (आचा २,१,६)। °रयणसं-वच्छर न [°रत्नसंवत्सर] तपश्चर्या-विशेष (भग)। °व, °वंत वि [°वत्] गुणी, गुण-युक्त (श्रा ३६; उप ८७५)। °व्वय न [व्रत] जैन गृहस्थ को पालने योग्य-व्रत-विशेष (पडि)। °सिलय न [°शिलक] राजगृह नगर का एक चैत्य (णाया १, १)। °सेढि स्त्री [°श्रेणि] कर्म-पुद्गलों की रचना-

विशेष (पंच)। °सेण पुं [°सेन] इस नाम का एक प्रसिद्ध राजा (स ६)। °हर वि [°धर] १ गुणों को धारण करनेवाला, गुणी। २ तन्तु-धारक। स्त्री. °रा (सुपा ३२७)। °ायर पुं [°ाकर] गुणों की खान, अनेक गुण-वाला, गुणी (पउम १५, ६८; प्रासू १३४)।

गुण देखो एगूण; 'गुणसट्ठि अपमत्ते सुराउबंधं तु जइ इहागच्छे' (कम्म २, ८; ४, ५४; ५६; श्रा ४४)।

°गुण वि [°गुण] गुना, आवृत्त; 'वीसगुणो तीसगुणो' (कुमा; प्रासू २६)।

गुणण न [गुणन] १ गुणकार (पव २३६)। २ ग्रन्थ-परावर्तन, आवृत्ति; 'गुणणु (? गुण-णाणु) प्पेहासु अ असत्तो' (पिंड ६६४)।

गुणणा स्त्री [गुणना] ऊपर देखो (सम्यक्त्वो १५)।

गुणयालीस स्त्रीन [एकोनचत्वारिंशत्] उनचालीस, ३९ (राय ५९)।

गुणवुड्ढि स्त्री [गुणवृद्धि] लगातार आठ दिनों का उपवास (संबोध ५८)।

गुणसेण पुं [गुणसेन] एक जैन आचार्य जो सुप्रसिद्ध हेमाचार्य के प्रगुरु थे (कुप्र १९)।

गुणा स्त्री [दे] मिष्टान्न-विशेष (भवि)।

गुणाविय वि [गुणित] पढ़ाया हुआ, पाठित; 'तत्थ सो अज्जएणा सयलाओ धणुव्वेयाइयाओ महत्थविज्जाओ गुणाविओ' (महा)।

गुणि वि [गुणिन्] गुण-युक्त, गुणवाला (उप ५९७ टी; गउड; प्रासू २६)।

गुणिअ वि [गुणित] १ गुना हुआ, जिसका गुणा किया गया हो वह (श्रा ६)। २ चिंतित, याद किया हुआ (से ११, ३१)। ३ पठित अधीत (ओघ ६२)। ४ जिस पाठ की आवृत्ति की गई हो वह, परावर्तित (वव ३)।

गुणिल्ल वि [गुणवत्] गुणी, गुण-युक्त (पि ५९५)।

गुण्ण देखो गोण्ण (अणु १४०)।

गुण्ह (अप) देखो गिण्ह। गुण्हइ (प्राकृ ११९)।

गुत्त न [गोत्र] साधुत्व, साधुपन (सूअ २, ७, १०)।

गुत्त वि [गुप्त] गुप्त, प्रच्छन्न, छिपा हुआ (णाया १,४; सुर ७,२३४)। २ रक्षित (उत्त १५)। ३ स्व-पर की रक्षा करनेवाला, गुप्ति-युक्त, मन वगैरह की निर्दोष प्रवृत्तिवाला (उप ६०४)। ४ एक स्वनाम-प्रसिद्ध जैनाचार्य (प्राक)।

गुत्त देखो गोत्त (पाअ; भग; आवम)।

गुत्तण्हाण न [दे] पितृ-तर्पण (दे २, ९३)।

गुत्ति स्त्री [गुप्ति] १ कैदखाना, जेल (सुर १, ७३; सुपा ९३)। २ कठघरा (सुपा ९३)। ३ मन, वचन और काया की अशुभ प्रवृत्ति को रोकना। ४ मन वगैरह की निर्दोष प्रवृत्ति ठा २, १; सम ८)। °गुत्त वि [°गुप्त] मन वगैरह की निर्दोष प्रवृत्तिवाला, संयत (पण्ह २, ४)। °पाल पुं [°पाल] जेल का रक्षक, कैदखाना का अध्यक्ष (सुपा ४९७)। °सेण पुं [°सेन] ऐरवत क्षेत्र में उत्पन्न एक जिनदेव (सम १५३)।

गुत्ति स्त्री [गुप्ति] गोपन, रक्षण (गु १२)।

गुत्ति स्त्री [दे] १ बन्धन (दे २,१०१; भवि)। २ इच्छा, अभिलाषा। ३ वचन, आवाज। ४ लता, वल्ली। ५ सिर पर पहनी जाती फूल की माला (दे २, १०१)।

गुत्तिंदिय वि [गुप्तेन्द्रिय] इंद्रिय-निग्रह करनेवाला, संयतेंद्रिय (भग; णाया १, ४)।

गुत्तिय वि [गौप्तिक] रक्षक, रक्षण करनेवाला; 'नगरगुत्तिए सद्दावेइ' (कप्प)।

गुत्तिय वि [गौत्रिक] गोती, समान गोत्र-वाला, गोतिया (कुप्र ३४४)।

गुत्तिवाल देखो गुत्ति-पाल (धर्मवि २६)।

गुत्थ वि [ग्रथित] गुम्फित, गूँथा हुआ (स ३०३; प्राप; गा ६३; कप्पू)।

गुत्थंड पुं [दे] भास-पक्षी, पक्षि-विशेष (दे २, ९२)।

गुद पुंस्त्री [गुद] गाँड़, गुदा (दे ६, ४९)।

गुद्दह न [गोद्रह] नगर-विशेष (मोह ८८)।

गुप्प अक [गुप्] व्याकुल होना। गुप्पइ (हे ४, १५०; षड्)। वकृ. गुप्पंत, गुप्पमाण (कुमा ६, १०२; कप्प; औप)।

गुप्प वि [गोप्य] १ छिपाने योग्य। २ न एकान्त, विजन (ठा ४, १)।

गुप्पई स्त्री [गोष्पदी] गौ का पैर डूबे उतना गहरा, 'को उत्तरिउं जलहिं, निब्बुडुए गुप्पई-नीरे' (धम्म १२ टी)।

गुप्पंत न [दे] १ शयनीय, शय्या। २ वि. गोपित, रक्षित (दे २, १०२)। ३ संमूढ, मुग्ध, घबड़ाया हुआ, व्याकुल (दे २, १०२; से १, २; २, ४)।

गुप्पय देखो गो-पय (सुक्त ११)।

गुप्फ पुं [गुल्फ] फीली, पैर की गाँठ (स ३३; हे २, ९०)।

गुफगुमिअ वि [दे] सुगन्धी, सुगन्ध-युक्त (दे २, ९३)।

गुब्भ देखो गुप्फ (षड्)।

गुभ सक [गुफ्] गूँथना, गठना। गुभइ (हे १, २३६)।

गुम सक [भ्रम्] घूमना, पर्यटन करना, भ्रमण करना। गुमइ (हे ४, १६१)।

गुमगुम } अक [गुमगुमाय्] १ 'गुम-
गुमगुमाअ } गुम' आवाज करना। २ मधुर अव्यक्त ध्वनि करना। वकृ. गुमगुमंत, गुमगुमिंत, गुमगुमायंत (औप; णाया १, १; कप्प; पउम ३३, ६)।

गुमगुमाइय वि [गुमगुमायित] जिसने 'गुम-गुम' आवाज किया हो वह (औप)।

गुमिअ वि [भ्रमित] भ्रमित, घुमाया हुआ (कुमा)।

गुमिल वि [दे] १ मूढ, मुग्ध। २ गहन, गहरा। ३ प्रस्खलित। ४ आपूर्ण, भरपूर (दे २, १०२)।

गुमुगुमुगुम देखो गुमगुम। वकृ. गुमुगुमुगुमंत, गुमुगुमुगुमेंत (पउम २, ४०; ९२, ६)।

गुम्म अक [मुह्] मुग्ध होना, घबड़ाना, व्याकुल होना। गुम्मइ (हे ४, २०७)।

गुम्म पुं [गुल्म] परिवार, परिकर; 'हत्थी-गुम्मसंपरिवुडे' (सूअ २, २, ५५)।

गुम्म पुंन [गुल्म] १ लता, वल्ली, वनस्पति-विशेष (पण्ण १)। २ झाड़ी, वृक्ष-घटा (पाअ)। ३ सेना-विशेष, जिसमें २७ हाथी, २७ रथ, ८१ घोड़ा और १३५ प्यादा हों ऐसी सेना (पउम ५६, ५)। ४ वृन्द, समूह (औप; सूअ २,२)। ५ गच्छ का एक हिस्सा, जैनमुनि-समाज का एक अंश (औप)। ६ स्थान, जगह (ओघ १९३)।

गुम्मइअ वि [दे] १ मूढ़, मूर्ख (दे २,१०३; ओघ १३६; पाअ; षड्)। २ अपूरित, पूर्ण नहीं किया हुआ (षड्)। ३ पूरित, पूर्ण किया हुआ (दे २, १०३)। ४ स्खलित। ५ संचलित, मूल से उच्चलित। ६ विघटित, वियुक्त (दे २, १०३; षड्)।

गुम्मड देखो **गुम्म**। गुम्मडइ (हे ४, २०७)।

गुम्मडिअ वि [मोहित] मोह-युक्त, मुग्ध किया हुआ (कुमा ७, ४७)।

गुम्मागुम्मि अ. जत्थाबन्ध होकर (औप)।

गुम्मिअ वि [मुग्ध] १ मोह प्राप्त, मूढ़ (कुमा ७, ४७)। २ घूर्णित, मद से घूमता हुआ (बृह १)।

गुम्मिअ पुं [गौल्मिक] कोतवाल, नगर-रक्षक (ओघ १९३; ७६६)।

गुम्मिअ वि [दे] मूल से उखाड़ा हुआ, उन्मूलित (दे २, ९२)।

गुम्मी स्त्री [दे] इच्छा, अभिलाषा (दे २, ९०)।

गुम्मी स्त्री [गुल्मी] शतपदी, यूका, खटमल, जूँ (उत्त ३६, १३९; सुख ३६, १३९)।

गुम्ह सक [गुम्फ्] गूँथना, गठना। गुम्हदु (शौ) (स्वप्न ५३)।

गुह्य देखो **गुज्झ** (हे २, १२४)।

गुरव देखो **गुरु**; 'जो गुरवे साहीणे धम्मं साहेइ पोढबुद्धिओ' (पउम ६, ११४)।

गुरु } पुं [गुरु] १ शिक्षक, विद्या-दाता, **गुरुअ** } पढ़ानेवाला (वव १; अणु)। २ धर्मोपदेशक, धर्माचार्य (विसे ९३०)। ३ माता, पिता वगैरह पूज्य लोग (ठा १०)। ४ बृहस्पति, ग्रह-विशेष (पउम १७, १०८; कुमा)। ५ स्वर विशेष, दो मात्रावाला आ, ई वगैरह स्वर, जिसके पीछे अनुस्वार या संयुक्त व्यञ्जन हो ऐसा भी स्वर-वर्ण (पिंग)। ६ वि. बड़ा, महान् (उवा; से ३, ३८)। ७ भारी, बोझिल (ठा १, १; कम्म १)। ८ उत्कृष्ट, उत्तम (कम्म ४, ७२; ७९)। °**कम्म** वि [°कर्मन्] कर्मों का बोझवाला, पापी (सुपा २६५)। °**कुल** न [°कुल] १ धर्माचार्य का सामीप्य (पंचा ११)। २ गुरु-परिवार (उप ६७७)। °**गइ** स्त्री [°गति] गति-विशेष, भारीपन से ऊँचा-नीचा गमन (ठा ८)। °**लाघव** न [°लाघव] सारासार, अच्छा और बुरापन (वव ४)। °**सज्झिल्लग** पुं [°सहाध्यायिक] गुरु के भाई (बृह ४)।

गुरुई देखो **गरुई** (णाया १, १)।

गुरुणी स्त्री [गुर्वी] १ गुरु-स्थानीय स्त्री (सुर ११, २११)। २ धर्मोपदेशिका, साध्वी (उप ७२८ टी)।

गुरेड न [गुरेट] तृण-विशेष (दे १, ५४)।

गुल देखो **गुड** = गुड (ठा ३, १; ९; णाया १, ८; गा ५५४; औप)।

गुल न [दे] चुम्बन (दे २, ९१)।

गुलगुंछ सक [उत् + क्षिप्] ऊँचा फेंकना। गुलगुंछइ (हे ४, १४४)। संकृ. **गुलगुंछिऊण** (कुमा)।

गुलगुंछ देखो **गुलुगुंछ** = उद् + नमय्। गुलगुंछइ (हे ४, ३६)।

गुलगुल अक [गुलगुलाय्] 'गुलगुल' आवाज करना, हाथी का हर्ष से चिंघाड़ना या बोलना। वकृ. **गुलगुलंत, गुलगुलेंत** (उप १०३१ टी; उवा; पउम ८, १७१; १०२, २०)।

गुलगुलाइअ } न [गुलगुलायित] हाथी की **गुलगुलिय** } गर्जना (जं ५; सुपा १३७)।

गुलल सक [चाटौ कृ] खुशामद करना। गुललइ (हे ४, ७३)। वकृ. **गुललंत** (कुमा)।

गुललावणिया स्त्री [गुडलावणिका] एक तरह की मिठाई, गोलपापड़ी। २ गुड़धाना (पव २५९; सुज्ज २० टी)।

गुलहाणिया स्त्री [गुडधानिका] खाद्य-विशेष (पव ४)।

गुलिअ वि [दे] मथित, विलोड़ित (दे २, १०३; षड्)। २ पुं. गेंद, कन्दुक; 'कंदुओ गुलिओ' (पाअ)।

गुलिआ स्त्री [दे] १ बुसिका। २ गेंद, कन्दुक। ३ स्तबक, गुच्छा (दे २, १०३)।

गुलिआ स्त्री [गुलिका] १ गोली, गुटिका (महा; णाया १, १३; सुपा २९२)। २ वर्णक द्रव्य-विशेष, सुगन्धित द्रव्य-विशेष (औप; णाया १, १—पत्र २४)।

गुलुइय वि [दे] गुल्मित, गुल्मवाला, लता समूहवाला (औप; भग)।

गुलुंछ पुं [गुलुञ्छ] गुच्छ, गुच्छा (दे २, ९२)।

गुलुगुंछ देखो **गुलगुंछ** = उत् + क्षिप्। गुलुगुंछइ (हे ४, १४४)।

गुलुगुंछ सक [उत् + नमय्] ऊँचा करना, उन्नत करना। गुलुगुंछइ (हे ४,३६)।

गुलुगुंछिअ वि [उन्नमित] ऊँचा किया हुआ, उन्नमित (दे २, ९३; कुमा)।

गुलुगुंछिअ वि [दे] बाढ़ से अन्तरित (दे २, ९३)।

गुलुगुल देखो **गुलगुल**। गुलुगुलंति (भवि)। वकृ. **गुलुगुलेंत** (पि ५५८)।

गुलुगुलाइय } देखो **गुलगुलाइअ** (औप; **गुलुगुलिय** } पण्ह १, ३; स ३६९)।

गुलुच्छ वि [दे] भ्रमित, घुमाया हुआ, (दे २, ९२)।

गुलुच्छ पुं [गुलुच्छ] गुच्छा, स्तबक (पाअ)।

गुल्लइय वि [गुल्मवत्] लता-समूहवाला, गुल्म-युक्त (णाया १, १—पत्र ५)।

गुव देखो **गुप्प** = गुप्। गुवंति (भग १५)।

°**गुवलय** देखो **कुवलय**; 'मुद्दियगुवलयनिहाणं' (णंदि)।

गुवालिया [दे] देखो **गोआलिआ** (जी १७)।

गुविअ वि [गुप्त] व्याकुल, क्षुब्ध (ठा ३, ४—पत्र १६१)।

गुविल वि [गुपिल] १ गहन, गहरा, गाढ़, निबिड़ (सुर ६, ६९; उप पृ ३०; पण्ह १, ३)। २ न. झाड़ी, जंगल (उप ८३३ टी);

'इक्को करइ कम्मं,
इक्को अणुहवइ दुक्कयविभारं।
इक्को संसरइ जिओ,
जरमरणचउग्गइगुविलं' (पच्च ४४)।

गुविल वि [दे] चीनी का बना हुआ, मिस्रीवाला (मिश्रान्न) (उर ५, १०)।

गुव्विणी स्त्री [गुर्विणी] गर्भवती स्त्री (सुपा २७७)।

गुह देखो **गुभ**। गुहइ (हे १, २३६)।

गुह पुं [गुह] कार्त्तिकेय, एक शिव-पुत्र (पाअ)।

गुहा स्त्री [गुहा] गुफा, कन्दरा (पाअ; ठा २, ३; प्रासू २७१)।

गुहिर वि [दे] गम्भीर, गहरा (पाअ; कप्प)।

गूढ वि [गूढ] गुप्त, प्रच्छन्न, छिपा हुआ (पणह १, ४; जी १०)। °दंत पुं [°दन्त] १ एक अन्तर्द्वीप, द्वीप-विशेष। २ द्वीप-विशेष का निवासी (ठा ४, २)। ३ एक जैन मुनि। ४ 'अनुत्तरोपपातिक दशा' सूत्र का एक अध्ययन (अनु २)। ५ भरत क्षेत्र का एक भावी चक्रवर्ती राजा (सम १५४)।

गूह सक [गुह्] छिपाना, गुप्त रखना। वकृ. गूहंत (स ६१०)।

गूह न [गूथ] गू, विष्ठा (तंदु)।

गूहण न [गूहन] छिपाना (सम ७१)।

गूहिय वि [गूहित] छिपाया हुआ (स १८६)।

गृण्ह, **गृन्ह** } (अप) देखो गिण्ह। गृण्हइ (कुमा)। संकृ. गृण्हेप्पिणु (हे ४, ३६४)।

गेअ वि [गेय] १ गाने योग्य, गाने लायक, गीत (ठा ४, ४—पत्र २८७, वज्जा ४४)। २ न. गीत, गान; 'मणहरगेयभुणीए' (सुर ३, ६६; गा ३३४)।

गेंठुअ न [दे] स्तनों के ऊपर की वस्त्र-ग्रन्थि (दे २, ९३)।

गेंठुल्ल न [दे] कञ्चुक, चोली (दे २, ९४)।

गेंड न [दे] देखो गेंठुअ (दे २, ९३)।

गेंडुई स्त्री [दे] क्रीड़ा, खेल, गम्मत, विनोद (दे २, ९४)।

गेंदुअ पुं [कन्दुक] गेंद, गेंदा, खेलने की एक वस्तु (हे १, ५७; १८२; सुर १, १२१)।

गेज्ज वि [दे] मथित, विलोडित (दे २, ८८)।

गेज्जल न [दे] ग्रीवा का आभरण (दे २, ९४)।

गेज्झ वि [ग्राह्य] ग्रहण-योग्य (हे १, ७८)।

गेडण न [दे] १ फेंकना, क्षेपण। २ दे देना; 'तत्त'बगेडणकए ससंभमा आसमाउ लहुं' (उप ६४८ टी)।

गेड्डु न [दे] १ पङ्क, कीच, काँदो। २ यव, अन्न-विशेष (दे २, १०४)।

गेड्डी स्त्री [दे] गेड़ी, गेंद खेलने की लकड़ी (कुमा)।

गेण्ह देखो गिण्ह। गेण्हइ (हे ४, २०६; उव; महा)। भूका. गेण्हीअ (कुमा)। भवि. गेण्हिस्सइ (महा)। वकृ. **गेण्हंत**, **गेण्हमाण** (सुर ३, ७४; विपा १, १)। संकृ. **गेण्हित्ता**, **गेण्हिऊण**, **गेण्हिअ** (भग; पि ५८६; कुमा)। कृ. **गेण्हियव्व** (उत्त १)।

गेण्हण न [ग्रहण] आदान, उपादान, लेना (उप ३३६; स ३७५)।

गेण्हणया स्त्री [ग्रहणा] ग्रहण, आदान (उप ५२६)।

गेण्हाविय वि [ग्राहित] ग्रहण कराया हुआ (स ५२६; महा)।

गेण्हिअ न [दे] उरः-सूत्र, स्तनाच्छादक-वस्त्र (दे २, ९४)।

गेद्ध देखो गिद्ध (औप)।

गेरिअ, **गेरुअ** } पुंन [गैरिक] १ गेरु, लाल रङ्ग की मिट्टी (स २२३, पि ६०; ११८)। २ मणि-विशेष, रत्न की एक जाति (पणण १—पत्र २६)। ३ वि. गेरु रंग का (कप्पू)। ४ पुं. त्रिदण्डी साधु, सांख्य मत का अनुयायी परिव्राजक (पव ९४)।

गेलण्ण, **गेलन्न** } न [ग्लान्य] रोग, बीमारी, ग्लानि (विसे ५४०; उप ४६६; ओघ ७७; २२१)।

गेविज्ज, **गेवेज्ज**, **गेवेज्जय** } न [ग्रैवेयक] १ ग्रीवा का आभूषण, गले का गहना (औप, णाया १, २)। २ ग्रैवेयक देवों का विमान (ठा ९)। ३ पुं. उत्तम श्रेणी के देवों की एक जाति (कप्प; औप; भग; जी ३३; इक)।

गेवेय देखो गेवेज्ज (आचा २, १३, १)।

गेह पुंन [गेह] घर, 'न नईन वणं न उज्जडो गेहो' (वज्जा ९८)।

गेह न [गेह] गृह, घर, मकान (स्वप्न १६; गउड)। °जामाउय पुं [°जामातृक] घर-जमाई, सर्वदा ससुर के घर में रहनेवाला जामाता (उप पृ ३६६)। °गार वि [°कार] १ घर के आकारवाला। २ पुं. कल्पवृक्ष की एक जाति (सम १७)। °लु वि [°वत्] घरवाला, गृही, संसारी (षड्)। °सम पुं [°श्रम] गृहस्थाश्रम (पउम ३१, ८३)।

गेहि वि [गृद्ध] लोलुप, अत्यासक्त (ओघ ८७)।

गेहि स्त्री [गृद्धि] आसक्ति, गार्ध्य, लालच (स ११३; पणह १, ३)।

गेहि वि [गेहिन्] नीचे देखो (णाया १; १४))।

गेहिअ वि [गेहिक] १ घरवाला, गृही। २ पुं. भर्त्ता, धनी, पति (उत्त २)।

गेहिअ [गृद्धिक] अत्यासक्त, लोलुप, लालची (पणह १, ३)।

गेहिणी स्त्री [गेहिनी] गृहिणी, स्त्री (सुपा ३४१; कुमा; कप्पू)।

गो पुं [गो] भूप, राजा; 'तइओ गो भूपपसुरस्सिणो त्ति' (वव १)। °**माहिसक** न [°माहिषक] गौ और भैंस का झुंड या समूह 'निव्वुयं गोमाहिसकं' (स ६८६)।

गो पुं [गो] १ रश्मि, किरण (गउड)। २ स्वर्ग, देव-भूमि (सुपा १४२)। ३ बैल, बलीवर्द। ४ पशु, जानवर। ५ स्त्री. गैया; 'अपरप्परेयितिरियानियमियदिग्गमणओणिलो गोव्व' (विसे १७५८; पउम १०३, ५०; सुपा २७५)। ६ वाणी, वाग् (सूअ १, १३)। ७ भूमि; 'जं महइ विब्भवणगोयराण लोओ पुलिंदाण' (गउड; सुपा १४२)। °आल देखो °वाल (पुप्फ २१६)। °इल्ल वि [°मत्] गो-युक्त, जिसके पास अनेक गौ हो वह (दे २, ९८)। °उल न [°कुल] १ गौओं का समूह (आव ३)। २ गोष्ठ, गो-बाड़ा; 'सामी गोउलगओ' (आवम)। °उलिय वि [°कुलिक] गो-कुलवाला, गो-कुल का मालिक, गोवाला (महा)। °किलंजय न [°किलञ्जक] पात्र-विशेष, जिसमें गौ को खाना दिया जाता है (भग ७, ८)। °कीड पुं [°कीट] पशुओं की मक्खी, बघी (जी १६)। °क्खीर, °खीर न [°क्षीर] गैया का दूध (सम ६०; णाया १, १)। °ग्गह पुं [°ग्रह] गाय की चोरी, गौ को छीनना (पणह १, ३)। °ग्गहण न [°ग्रहण] गो-ग्रहण (णाया १, १८)। °णिसज्जा स्त्री [°निषद्या] आसन विशेष, गौ की तरह बैठना (ठा १, १)। °तित्थ न [°तीर्थ] १ गौओं का तालाब आदि में उतरने का रास्ता, क्रम से नीची जमीन (जीव ३)। २ लवण समुद्र वगैरह की एक जगह (ठा १०)। °त्तास वि [°त्रास] १ गौओं को त्रास देनेवाला। २ पुं. एक कूटग्राह का पुत्र (विपा

१, २)। °दास पुं [°दास] १ एक जैन-मुनि, भद्रबाहु स्वामी का प्रथम शिष्य। २ एक जैनमुनिगण (कप्प; ठा ६)। °दोहिया स्त्री [°दोहिका] १ गौ का दोहन। २ आसन विशेष, गौ दुहने के समय जिस तरह बैठा जाता है उस तरह का उपवेशन (ठा ५, १)। °दुह वि [°दुह] गौ को दोहनेवाला (षड्)। °धूलिआ स्त्री [°धूलिका] लग्न-विशेष, गौओं को चरा कर लौटने का समय, सायंकाल; 'वेलव्व गोधूलिया' (रंभा)। °पय °प्पय न [°पद] १ गौ का खुर डूबे उतना गहरा; 'लद्धम्मि जम्मि जीवाण जायइ गोपयं व भवजलही' (आप ६६)। २ गोपद-परिमित भूमि (अणु)। ३ गौ का खुर (ठा ४,४)। °भद्द पुं [°भद्र] श्रेष्ठि-विशेष, शालिभद्र के पिता का नाम (ठा १०)। °भूमि स्त्री [°भूमि] गौओं को चरने की जगह (आवम)। °म वि [°मत्] गौवाला (विसे १४६८)। °मड न [°मृत] गौ का शव (णाया १, ११—पत्र १७३)। °मय न [°मय] गोबर, गौ का मल, गो-विष्ठा (भग ५, २)। °मुत्तिया स्त्री [°मूत्रिका] १ गौ का मूत्र, गोमूत्र (ओघ ६४ भा)। २ गोमूत्र के आकारवाली गृहपंक्ति (पंचव २)। °मुहिअ न [°मुखित] गौ के मुख की आकारवाली ढाल (णाया १, १८)। °रहग पुं [°रथक] तीन वर्ष का बैल (सूअ १, ४, २)। °रोयण स्त्रीन [°रोचन] स्वनाम-ख्यात पीत-वर्ण द्रव्य-विशेष, गोमस्तकस्थित शुष्क-पित्त (सुर १,१३७)। स्त्री. °णा (पंचा ४)। °लेहणिया स्त्री [°लेहनिका] ऊषर भूमि (निचू ३)। °लोम पुं [°लोम] १ गौ का रोम, बाल। २ द्वीन्द्रिय जन्तु-विशेष (जीव १)। °वइ पुं [°पति] १ इन्द्र। २ सूर्य। ३ राजा (सुपा १४२)। ४ महादेव। ५ बैल (हे १,२३१)। °वइय पुं [°व्रतिक] गौओं की चर्या का अनुकरण करनेवाला एक प्रकार का तपस्वी (णाया १, १५)। °वय देखो °पय (राज)। °वाड पुं [°वाट] गौओं का बाड़ा (दे १,१४६)। °व्वइय देखो °वइय (औप)। °साला स्त्री [शाला] गौओं का बाड़ा (निचू ८)। °हण न [°धन] गौओं का समूह (गा ६०६; सुर १, ४६)।

गोअ देखो गोव = गोपय्। कृ. गोअणिज्ज (नाट—मालती १२१)।

गोअंट पुं [दे] १ गौ का चरण। २ स्थल-शृङ्गाट, स्थल में होनेवाला शृङ्गाट या सिंघाड़ा का पेड़ (दे २, ६८)।

गोअग्गा स्त्री [दे] रथ्या, मुहल्ला (दे २, ६६)।

गोअल्ला स्त्री [दे] दूध बेचनेवाली स्त्री (दे २, ६८)।

गोअर पुं [गोचर] छात्रालय (दस ५, २, २)।

गोअलिणी स्त्री [गोपालिनी] ग्वालिन, 'जो गयणभूमिभंडोयरम्मि जुन्हादहीय महणेण। पुन्निमगोअलिणीए मक्खणपिंडुव्व निम्मविओ।' (धर्मवि ५५)।

गोआ स्त्री [गोदा] नदी-विशेष, गोदावरी नदी, 'गोआणइकच्छकुडंगवासिणा दरिअसीहेण' (गा १७५)।

गोआ स्त्री [दे] गगरी, कलशी, छोटा घड़ा (दे २, ८१)।

गोआअरी स्त्री [गोदावरी] नदी-विशेष, गोदावरी (गा ३५५)।

गोआलिआ स्त्री [दे] वर्षा ऋतु में उत्पन्न होनेवाला कीट-विशेष (दे २, ६८)।

गोआवरी देखो गोआअरी (हे २, १७४)।

गोउर न [गोपुर] नगर या किले का दरवाजा (सम १३७, सुर १, ५६)।

गोउलिय वि [गोकुलिक] गो-धन पर नियुक्त पुरुष, गोकुल-रक्षक (कुप्र ३१)।

गोंजी, गोंठी स्त्री [दे] मंजरी, बौर (दे २, ६५)।

गोंड देखो कोंड = कौण्ड (इक)।

गोंड न [दे] कानन, वन, जंगल (दे २, ६४)।

गोंडी स्त्री [दे] मंजरी, बौर (दे २, ६५)।

गोंदल देखो गुंदल (भवि)।

गोंदीण न [दे] मयूर-पित्त, मोर का पित्त (दे २, ६७)।

गोंफ पुं [गुल्फ] पाद-ग्रन्थि, पैर की गाँठ (पण्ह १, ४)।

गोकण्ण, गोकन्न पुं [गोकर्ण] १ गौ का कान। २ दो खुरवाला चतुष्पद-विशेष (पण्ह १, १)। ३ एक अन्तर्द्वीप, द्वीप-विशेष। ४ गोकर्ण-द्वीप का निवासी मनुष्य (ठा ४, २)।

गोकिलिंज देखो गो-कलिंजय (राय १४०)।

गोक्खुरय पुं [गोक्षुरक] एक औषधि का नाम, गोखरू (स २५६)।

गोच्चय पुं [दे] प्राजन-दण्ड, कोड़ा, चाबुक (दे २, ६७)।

गोच्छ देखो गुच्छ (से ६, ४७; गा ५३२)।

गोच्छअ, गोच्छग पुंन [गोच्छक] पात्र वगैरह साफ करने का वस्त्र-खण्ड (कस; पण्ह २, ५)।

गोच्छड न [दे] गोमय, गो-विष्ठा (मृच्छ ३४)।

गोच्छा स्त्री [दे] मञ्जरी, बौर (दे २, ६५)।

गोच्छिय देखो गुच्छिय (औप; णाया १, १)।

गोछड देखो गोच्छड (नाट—मृच्छ ४१)।

गोजलोया स्त्री [गोजलौका] क्षुद्र कीट-विशेष, द्वीन्द्रिय जन्तु-विशेष (पण्ण १५)।

गोज्ज पुं [दे] १ शारीरिक दोषवाला बैल (सुपा २८१)। २ गानेवाला, गवैया, गायक; 'वीणावंससणाहं, गीयं नडनट्टछत्तगोज्जेहिं। बंदिजणेण सहरिसं, जयसद्दालायणं च कयं' (पउम ८५, १६)।

गोट्ठ पुं [गोष्ठ] गोबाड़ा, गौओं के रहने का स्थान (महा; पउम १०३, ४०; गा ४४७)।

गोट्ठामाहिल पुं [गोष्ठामाहिल] कर्म-पुद्गलों को जीव प्रदेश से अबद्ध माननेवाला एक जैनाभास आचार्य (ठा ७)।

गोट्ठि देखो गोट्ठी (आवम)।

गोट्ठिल्ल, गोट्ठिल्लग, गोट्ठिल्लय पुं [गौष्ठिक] एक मण्डली के सदस्य, मित्र, समान-वयस्क दोस्त (णाया १, १६—पत्र २०५; विपा १, २—पत्र ३७)।

गोट्ठी स्त्री [गोष्ठी] १ मण्डली, समान वय-वालों की सभा (प्राप्र; दसनि १; णाया १, १६)। २ वार्त्तालाप, परामर्श (कुमा)।

गोड पुं [गौड] १ देश-विशेष (स २८६)। २ वि. गौड़ देश का निवासी (पण्ह १, १)।

गोड पुं [दे] गोड़, पाद, पैर (नाट—मृच्छ [illegible]८)।

गोडा स्त्री [गोला] नदी-विशेष, गोदावरी (गा ५८; १०३)।

गोडी स्त्री [गौडी] गुड़ की बनी हुई मदिरा, गुड़ का दारू (बृह २)।

गोड्ड वि [गौड] १ गुड़ का बना हुआ। २ मधुर, मीठा (भग १८, ६)।

गोड्ड [दे] देखो गोड (मृच्छ १२०)।

गोण पुं [दे] १ साक्षी (दे २, १०४)। २ बैल, वृषभ, बलीवर्द (दे २, १०४; कुमा, हे २, १७४; सुपा ५४७; औप; दस ५, १; आचा २, ३, ३; उप ६०४; विपा १, १)। °इल्ल त्रि [°वत्] गाय वाला, गौओं का मालिक (सुपा ५४७)। °वइ पुंस्त्री [°पति] गौओं का मालिक, गौ वाला (सुपा ५४७)।

गोण (शौ) पुंन [गो] बैल, 'गोणो, गोणं' (प्राकृ ८८)।

गोण वि [गौण] १ गुण निष्पन्न, गुण-युक्त, यथार्थ (विपा १, २; औप)। २ अप्रधान, अमुख्य (औप)।

गोणंगणा स्त्री [गवाङ्गना] गैया, गाय (सुपा ४६५)।

गोणत्त } पुंन [दे] वैद्य का औजार रखने **गोणत्तय** } का थैला (उप ३१७; स ४८४)।

गोणस पुं [गोनस] सर्प की एक जाति, फण-रहित साँप की एक जाति (पण्ह १, १; उप पृ ४०३)।

गोणा स्त्री [दे] गाय, गैया, गऊ (षड्)।

गोणिक्क पुं [दे] गो-समूह, गौओं का समूह (दे २, ६७; पाअ)।

गोणिय त्रि [दे] गौओं का व्यापारी (वव ६)।

गोणी स्त्री [दे] गाय, गैया (ओघ २३ भा)।

गोण्ण देखो गोण = गौण (कप्प; णाया १, १—पत्र ३७)।

गोतिहाणी स्त्री [दे. गोत्रिहायणी] गोवत्सा, गौ की बछड़ी (तंदु ३२)।

गोत्त पुं [गोत्र] १ पर्वत, पहाड़; (श्रा १४)। २ न. नाम, अभिधान, आख्या (से १५, १०)। ३ कर्म-विशेष, जिसके प्रभाव से प्राणी उच्च या नीच जाति का कहलाता है (ठा २, ४)। ४ पुंन. गोत, वंश, कुल, जाति; 'सत्त मूलगोत्ता पण्णत्ता' (ठा ७)। °क्खलिय न [°स्खलित] नाम-विपर्यास, एक के बदले दूसरे के नाम का उच्चारण (से ११, १७)। °देवया स्त्री [°देवता] कुल-देवी (श्रा १४)। °फुस्सिया स्त्री [°स्पर्शिका] वल्ली-विशेष (पण्ण १)।

गोत्त पुंन [गोत्र] १ पूर्वज पुरुष के नाम से प्रसिद्ध अपत्य—संतति (णंदि ४६; सुज्ज १०, १६)। २ त्रि. वाणी का रक्षक (सूत्र १, १३, ६)।

गोत्ति वि [गोत्रिन्] समान गोत्रवाला, कुटुम्बी, स्वजन (सुपा १०६)।

गोत्ति देखो गुत्ति (स २४२)।

गोत्तिअ वि [गोत्रिक] समान गोत्रवाला, स्वजन, भाई-बंद (श्रा २७)।

गोत्थुभ देखो गोथुभ (इक)।

गोत्थूभा देखो गोथूभा (इक)।

गोथुभ } पुं [गोस्तूप] १ ग्यारहवें जिन-**गोथूभ** } देव का प्रथम-शिष्य (सम १५२; पि २०८)। २ वेलन्धर नागराज का एक आवास-पर्वत (सम ६६)। ३ न. मानुषोत्तर पर्वत का एक शिखर (दीव)। ४ कौस्तुभ-रत्न (सम, १५८)।

गोथूभा स्त्री [गोस्तूपा] १ वापी-विशेष, अंजन पर्वत पर की एक वापी (ठा ३, ३)। २ शक्रेन्द्र की एक अग्रमहिषी की राजधानी (ठा ४, २)।

गोदा स्त्री [दे गोदा] नदी-विशेष, गोदावरी (षड्; गा ६५५)।

गोध पुं [गोध] १ म्लेच्छ देश। २ गोध देश का निवासी मनुष्य (राज)।

गोधा स्त्री [गोधा] गोह, हाथ से चलनेवाली एक साँप की जाति (पण्ह १, १; णाया १, ८)।

गोन्न देखो गोण्ण (णाया १, १६—पत्र २००)।

गोपुर देखो गोउर (उत्त ६; अभि १८५)।

गोप्पहेलिया स्त्री [गोप्रहेलिका] गौओं को चरने की जगह (आचा २, १०, २)।

गोफणा स्त्री [दे] गोफन, पत्थर फेंकने का अस्त्र-विशेष (राज)।

गोमड्डा स्त्री [दे] रथ्या, मुहल्ला (दे २, ६६)।

गोमाअ } पुं [गोमायु] शृगाल, सियार, गीदड़ **गोमाउ** } (नाट—मृच्छ ३२०; पि १६५; णाया १, ४; स २२६; पाअ)।

गोमाणसिया स्त्री [गोमानसिका] शय्याकार स्थान-विशेष (जीव ३)।

गोमाणसी स्त्री [गोमानसी] ऊपर देखो (जीव ३)।

गोमि } वि [गोमिन्] जिसके पास अनेक **गोमिअ** } गौ हों वह, (अणु; निचू २)।

गोमिअ देखो गोम्मिअ (राज)।

गोमिअ: [दे] देखो गोमा (अणु २१२)।

गोमिक (मा) [गौरवित] संमानित (प्राकृ १०१)।

गोमी स्त्री [दे] कनखजूरा, त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष (जी १६)।

गोमुह पुं [गोमुख] १ यक्ष-विशेष, भगवान् ऋषभदेव का शासन-यक्ष (संति ७)। २ एक अन्तर्द्वीप, द्वीप विशेष। ३ गोमुख-द्वीप का निवासी मनुष्य (ठा ४, २)। ४ न. उपलेपन (दे २, ८८)।

गोमुही स्त्री [गोमुखी] वाद्य-विशेष; (अणु; राय)।

गोमुही [गोमुखी] वाद्य-विशेष (राय ४६, अणु १२८)।

गोमेअ } पुं [गोमेद] रत्न की एक जाति, **गोमेज्ज** } राहुरत्न (कुमा ७०; उत्त २)।

गोमेह पुं [गोमेध] १ यक्ष-विशेष, भगवान् नेमिनाथ का शासन-देव (सं ८)। २ यज्ञ-विशेष, जिसमें गौ का वध किया जाता है (पउम ११, ४१)।

गोम्मिअ पुं [गौल्मिक] कोतवाल, नगर-रक्षक (पण्ह १, २)।

गोम्ही देखो गोमी (राज)।

गोय देखो गोत्त (सम ३३; कम्म १)। °वाइ पि [°वादिन्] अपने कुल को उत्तम माननेवाला, वंशाभिमानी (आचा)।

गोय न [दे] उदुम्बर—गूलर वगैरह का फल (आव ६)।

गोय न [गोत्र] मौन, वाक्-संयम (सूअ १, १४, २०)। °वाय पुं [°वाद] गोत्र-सूचक वचन (सूअ १, ६, २७)।

गोयम पुं [गोतम] ऋषि-विशेष (ठा ७)। २ छोटा बैल (औप)। ३ न. गोत्र-विशेष (कप्प; ठा ७)।

गोयम वि [गौतम] १ गोतम गोत्र में उत्पन्न, गोतम-गोत्रीय; 'जे गोयमा ते सत्तविहा पराणत्ता' (ठा ७; भग जं १)। २ पुं. भगवान् महावीर का प्रधान-शिष्य (भग १४, ७; उवा)। ३ इस नाम का एक राज-कुमार, राजा अन्धकवृष्णि का एक पुत्र, जो भगवान् नेमिनाथ के पास दीक्षा लेकर शत्रुञ्जय पर्वतपर मुक्त हुआ था (अन्त २)। ४ एक मनुष्य-जाति, जो बैल द्वारा भिक्षा माँग कर अपना निर्वाह चलाती है (णाया १, १४)। ५ एक ब्राह्मण (उप ६१७)। ६ द्वीप विशेष (सम ८०; उप ५९७ टी)। °केसिज्ज न [°केशीय] 'उत्तराध्ययन' सूत्र का एक अध्ययन, जिसमें गौतम स्वामी और केशिमुनि का संवाद है (उत्त २३)। °सगुत्त वि [°सगोत्र] गोतम गोत्रीय (भग; आवम)। °सामि पुं [°स्वामिन्] भगवान् महावीर के सर्व-प्रधान शिष्य का नाम (विपा १, १—पत्र २)।

गोयमज्जिया, गोयमेज्जिया स्त्री [गौतमार्यिका] जैनमुनि-गण की एक शाखा (राज; कप्प)।

गोयर पुं [गोचर] १ गौओं को चरने की जगह, 'णो गोयरे णो वणगारिणयाणं' (बृह ३)। २ विषय; 'अंबुरुहगोयरं णमह··· सयंभुं' (गउड)। ३ इन्द्रिय का विषय, प्रत्यक्ष; 'इअ राया उज्जाणं तं कासी नयणगोअरं सव्वं' (कुमा)। ४ भिक्षाटन, भिक्षा के लिए भ्रमण (ओघ ६६ भा; दस ५, १)। ५ भिक्षा, माधुकरी (उप २०४)। ६ वि. भूमि में विचरनेवाला; 'विझवणगोयराण पुलिंदाण' (गउड)। °चरिआ स्त्री [°चर्या] भिक्षा के लिए भ्रमण (उप १३७ टी; पउम ४, ३)। °भूमि स्त्री [°भूमि] १ पशुओं को चरने की जगह (दे ३, ४०)। २ भिक्षा-भ्रमण की जगह (ठा ६)। °वत्ति वि [°वर्त्तिन्] भिक्षा के लिए भ्रमण करनेवाला (गा २०४)।

गोयरी स्त्री [गौचरी] भिक्षा, माधुकरी (सुपा २६६)।

गोर पुं [गौर] १ शुक्ल-वर्ण, सफेद रंग। २ वि. गौर वर्णवाला, शुक्ल (गउड; कुमा)। ३ अवदात, निर्मल (णाया १, ८)। °खर पुं [°खर] गर्दभ की एक जाति (पराण १)। °गिरि पुं [°गिरि] पर्वत-विशेष, हिमाचल (निचू १)। °मिग पुं [°मृग] १ हरिण की एक जाति। २ न. उस हरिण के चमड़े का बना हुआ वस्त्र (आचा २, ५, १)।

गोरअ देखो **गोरव** (गा ८६)।

गोरंग वि [गौराङ्ग] गोरा शरीरवाला, शुक्ल शरीरवाला (कप्पू)।

गोरंफिडी स्त्री [दे] गोधा, गोह, जन्तु-विशेष (दे २, ६८)।

गोरडित वि [दे] स्रस्त, ध्वस्त (षड्)।

गोरव न [गौरव] १ महत्त्व, गुरुत्व (प्रासू ३०)। २ आदर, सम्मान, बहुमान (विसे ३४७३; रयण ५३)। ३ गमन, गति (ठा ६)।

गोरविअ वि [गौरवित] सम्मानित, जिसका आदर किया गया हो वह (दे ४, ५)।

गोरव्व वि [गौरव्य] गौरव-योग्य (धर्मवि ६४; कुप्र ३७७)।

गोरस पुंन [गोरस] गोरस, दूध, दही, मट्ठा या छाछ वगैरह (णाया १, ८; ठा ४, १)।

गोरस पुं [गोरस] वाणी का आनन्द (सिरि १४०)।

गोरह पुं [दे] हल में जोतने योग्य बैल (आचा २, ४२, ३)।

गोरा स्त्री [दे] लाङ्गल-पद्धति, हल-रेखा। २ चक्षु, आँख। ३ ग्रीवा, गर्दन या डोक (दे २, १०४)।

गोरि° देखो **गोरी** (हे १, ४)।

गोरिअ न [गौरिक] विद्याधर का नगर-विशेष (इक)।

गोरी स्त्री [गौरी] १ शुक्ल-वर्णा स्त्री (हे ३, २८)। २ पार्वती, शिव-पत्नी (कुमा; सुपा २४०; गा १)। ३ श्रीकृष्ण की एक स्त्री का नाम (अंत १५)। ४ इस नाम की एक विद्यादेवी (संति ६)। °कूड न [°कूट] विद्याधर-नगर-विशेष (इक)।

गोरी स्त्री [गौरी] विद्या-विशेष (सूअ २, २, २७)।

गोरूव न [गोरूप] प्रशस्त गाय (धर्मवि ११२)।

गोल पुं [दे] १ साक्षी (दे २, ९५)। २ पुरुष का निन्दा-गर्भ आमन्त्रण (णाया १, ६)। ३ निष्ठुरता, कठोरता (दस ७)।

गोल पुं [गोल] १ वृक्ष-विशेष, 'कदम्बगोल-णिहकंटअंतरणिअंगे' (अच्चु ५८)। २ गोलाकार, वृत्ताकार, मराडलाकार वस्तु (ठा ४, ४, अनु ५)। ३ गोलक, कुंडा (सुपा २७०)। ४ गेंद, कन्दुक (सूअ १, ४)।

गोल पुंस्त्री [दे] गोला, जार से उत्पन्न, कुंड (दस ७, १४)। स्त्री. °ली (दस ७, १६)।

गोलग, गोलय पुं [गोलक] ऊपर देखो (सूअ २, २; उप पृ ३९२ काल)।

गोलव्वायण न [गौलव्यायन] गोत्र-विशेष (सुज्ज १०, १६)।

गोला स्त्री [दे] गौ, गैया (दे २, १०४; पाअ)। २ नदी, कोई भी नदी। ३ सखी, सहेली, संगिनी (दे २, १०४)। गोदावरी नदी (दे २, १०४; गा ५८; १७५; हेका २६७; पि ८५; १६४; पाअ; षड्)।

गोलिय पुं [गौडिक] गुड़ बनानेवाला (वव ६)।

गोलिया स्त्री [दे] १ गोली, गुटिका (राय; अणु)। गेंद, लड़कों के खेलने की एक चीज; 'तीए दासीए घडो गोलियाए भिन्नो' (दसनि २)। ३ बड़ा कुराडा, बड़ी थाली (ठा ८)। °लिछ, °लिच्छ न [°लिञ्छ, °लिच्छ] १ चुल्ली, चूल्हा। २ अग्नि-विशेष (ठा ८—पत्र ४१७)।

गोलियायण न [गोलिकायन] १ गोत्र-विशेष, जो कौशिक गोत्र की एक शाखा है। २ वि. गोलिकायन-गोत्रीय (ठा ७)।

गोली स्त्री [दे] मथनी या मथानी, मथनिया, दही मथने की लकड़ी, रही (दे २, ९५)।

गोल्ल न [दे] बिम्बी-फल, कुन्दरुन का फल (णाया १, ८; कुमा)।

गोल्ल पुं [गौल्य] १ देश-विशेष (आवम)। २ न. गोत्र-विशेष, जो काश्यप गोत्र की शाखा है। ३ वि. गौल्य गोत्र में उत्पन्न (ठा ७)।

गोल्हा स्त्री [दे] बिम्बी, वल्ली-विशेष, कुन्दरुन की लतर (दे २, ९५; आवम; पाअ)।

गोव सक [गोपय्] १ छिपाना। २ रक्षण करना। गोवए, गोवेइ (सुपा ३४६; महा)।

कवक्र. गोविज्जंत (सुपा ३३७; सुर ११, १६२; प्रासू ६५)।

गोव } पुं [गोप] गौओं का रक्षक, ग्वाला,
गोवअ } गोपाल (उवा ७; दे २, ५८; कप्पू)। °जिरि पुं [°गिरि] पर्वत-विशेष; 'गोवगिरिसिहरसंठियचरमजिणाययणदारमवरुद्धं (मुणि १०८६७)।

गोवड्ढण देखो गोवद्धण (पि २६१)।

गोवण न [गोपन] १ रक्षण। २ छिपाना (श्रा २८; उप ५६७ टी)।

गोवद्धण पुं [गोवर्धन] १ पर्वत-विशेष (पि २६१)। २ ग्राम विशेष (पउम २०, ११५)।

गोवय वि [गोपक] छिपानेवाला, ढाँकनेवाला (संबोध ३४)।

गोवर पुंन [दे] गोबर, गोमय, गो-विष्ठा (दे २, ९६; उप ५६७ टी)।

गोवर पुं [गोवर] १ मगध देश का एक गाँव, गौतम-स्वामी की जन्मभूमि (आक)। २ वणिग्-विशेष (उप ५६७ टी)।

गोवल न [गोवल] १ गोधन, गोकुल, गौओं का समूह; 'रिंति गोवलाइं' (सुपा ४३३)। २ गोत्र-विशेष (सुज्ज १०)।

गोवलायण देखो गोवल्लायण (सुज्ज १०)।

गोवलिय पुं [गोबलिक] ग्वाला, अहीर (सुपा ४३३)।

गोवल्ल पुंन [गोवल] गोत्र-विशेष (सुज्ज १०, १६ टी)।

गोवल्लायण वि [गोवलायन] १ गोवल गोत्र में उत्पन्न। २ न. गोत्र विशेष (इक)।

गोवा पुं [गोपा] गौओं का पालन करनेवाला, ग्वाला (प्रामा)।

गोवाय सक [गोपाय्] १ छिपाना। २ रक्षण करना। वकृ. गोवायंत (उप ३५७)।

गोवाल पुं [गोपाल] गौ पालनेवाला, ग्वाला, अहीर (दे २, २८)। °गुज्जरी स्त्री [°गुर्जरी] भैरव रागवाली भाषा-विशेष, गुजरात के अहीरों का गीत (कुमा)।

गोवालय पुं [गोपालक] ऊपर देखो (पउम ५, ९६)।

गोवालि पुं [गोपालिन्] ग्वाला, गोप, अहीर (सुपा ४३२; ४३३)।

गोवालिणी स्त्री [गोपालिनी] गोप-स्त्री, अहीरिन, ग्वालि (सुपा ४३२)।

गोवालिय पुं [गोपालिक] गोप, अहीर, ग्वाला (सुपा ४३३)।

गोवालिया स्त्री [गोपालिका] गोप-स्त्री, गोपी, अहीरिन (णाया १, १६)।

गोवाली स्त्री [गोपाली] वल्ली-विशेष (पण्ण १)।

गोविअ वि [दे] अजल्पाक, नहीं बोलनेवाला (दे २, ९७)।

गोविअ वि [गोपित] १ छिपाया हुआ। २ रक्षित (सुर १, ८८; निर १, ३)।

गोविआ स्त्री [गोपिका] गोपांगना, अहीरिन (कुमा; गा ११४)।

गोविंद पुं [गोपेन्द्र] १ स्वनाम-ख्यात एक योग-विषयक ग्रन्थकार। २ एक जैनमुनि (पंचव; णंदि)।

गोविंद पुं [गोविन्द] १ विष्णु, कृष्ण। २ एक जैन मुनि (ठा १०)। °णिज्जुत्ति स्त्री [°निर्युक्ति] इस नाम का एक जैन दार्शनिक ग्रन्थ (निचू ११)।

गोविल्ल न [दे] कञ्चुक, चोली (दे २, ९४)।

गोवी स्त्री [दे] बाला; कन्या, कुमारी, लड़की (दे २, ९६)।

गोवी स्त्री [गोपी] गोपांगना, अहीरिन (सुपा ४३५)।

गोव्वर [दे] देखो गोवर (उप ५९३; ५९७ टी)।

गोस पुंन [दे] प्रभात, सुबह, प्रातःकाल (दे २, ९६; सण; गउड; वव ६; पंचव २; पाअ; षड्; पव ४)।

गोसंधिय पुं [गोसंधित] गोपाल, अहीर (राज)।

गोसग्ग पुंन [दे गोसर्ग] प्रातःकाल, प्रभात (दे २, ९६; पाअ)।

गोसण्ण वि [दे] मूर्ख, बेवकूफ (दे २, ९७; षड्)।

गोसाल } पुं. ब. [गोशाल] १ देश-विशेष
गोसालग } (पउम ९८, ६५)। २ पुं. भगवान् महावीर का एक शिष्य, जिसने पीछे अपना आजीविक मत चलाया था (भग १५)।

गोसाविआ स्त्री [दे] १ वेश्या, वारांगना (मृच्छ ५५)। २ मूर्ख-जननी (नाट—मृच्छ ७०)।

गोसिय वि [दे] प्रभातिक, प्रातःकाल-संबन्धी (सण)।

गोसीस न [गोशीर्ष] चन्दन-विशेष, सुगन्धित काष्ठ-विशेष (पण्ह २, ४; ५; कप्प; सुर ४, १४; सण)।

गोह पुं [दे] १ गाँव का मुखिया (दे २,८६)। २ भट, सुभट, योद्धा (दे २, ८६; महा)। ३ जार, उपपति (उप पृ २१५)। ४ सिपाही, पुलिस (उप पृ ३३५)। ५ पुरुष, आदमी, मनुष्य (मृच्छ ५७)।

गोह पुं [दे] कोतवाल आदि क्रूर मनुष्य (सुख ३, ६)। २ वि. ग्रामीण, ग्राम्य, गँवार या गँवारू, देहाती (सुख २, १३)।

गोहा देखो गोधा (दे २, ७३; भग ८,३)।

गोहिया स्त्री [गोधिका] १ गोधा, गोह, जल-जन्तु-विशेष (सुर १०, १८६)। २ साँप की एक जाति (जीव २)। ३ वाद्य-विशेष (अणु)।

गोहुर न [दे] गोमय, गो-विष्ठा (दे २, ९६)।

गोहूम पुं [गोधूम] अन्न-विशेष, गेहूँ (कस)।

गोहेर } पुं [गोधेर] जन्तु-विशेष, साँप
गोहेरय } की तरह का जानवर (पउम ४८, ९२; ९१)।

°ग्गह देखो गह = ग्रह (गउड)।

°ग्गहण देखो गहण = ग्रहण (अभि ५६)।

°ग्गहण देखो गहण = ग्रहण (कुमा)।

॥ इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवे गआराइसद्दसंकलणो बारहमो तरंगो समत्तो ॥

घ

घ पुं [घ] कण्ठ-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष (प्राप; प्रामा)।

घअंद न [दे] मुकुर, दर्पण (षड्)।

घइं (अप) म पाद-पूरक और अनर्थक अव्यय (हे ४, ४२४; कुमा)।

घओअ, घओद पुं [घृतोद] १ समुद्र-विशेष, जिसका पानी घी के तुल्य स्वादिष्ट है (इक; ठा ७)। २ मेघ-विशेष (तित्थ) ३ वि. जिसका पानी घी के समान मधुर हो ऐसा जलाशय। स्त्री. °आ, °दा (जीव ३; राय)।

घंघ पुं [दे] गृह, मकान, घर (दे २, १०५)। °साला स्त्री [°शाला] अनाथ-मण्डप, भिक्षुओं का आश्रय-स्थान (ओघ ६३६; वव ७; आचा)।

घंघल (अप) न [झकट] १ झगड़ा, कलह (हे ४, ४२२)। २ मोह, घबराहट (कुमा)।

घंघलिअ वि [दे] घबड़ाया हुआ (संवे ६; धर्मवि १३४)।

घंघोर वि [दे] भ्रमण-शील, भटकनेवाला (दे २, १०६)।

घंचिय पुं [दे] तेली, तेल निकालनेवाला; गुजराती में 'घांची' (सुर १६, १६०)।

घंट पुंस्त्री [घण्ट] घण्टा, कांस्य-निर्मित वाद्य-विशेष (ओघ ८६ भा)। स्त्री. °टा (हे १, १६५; राय)।

घंटिय पुं [घण्टिक] चाण्डाल का कुल-देवता, यक्ष-विशेष (बृह १)।

घंटिय पुं [घाण्टिक] घण्टा बजानेवाला (कप्प)।

घंटिया स्त्री [घण्टिका] १ छोटी घण्टी (प्रामा)। २ किंकिणी, घुँघुरू (सुर १,२४८; जं २)। ३ आभरण-विशेष (णाया १, ६)।

घंस पुं [घर्ष] घर्षण, घिसन (णाया १, १—पत्र ६३)।

घंसण न [घर्षण] घिसन, रगड़ (स ४७)।

घंसिय वि [घर्षित] घिसा हुआ, रगड़ा हुआ (औप)।

घक्कूण देखो घे।

घग्घर न [दे] घँघरा, घघरा, लहँगा, स्त्रियों के पहनने का एक वस्त्र (दे २, १०७)।

घग्घर पुं [घर्घर] १ शब्द-विशेष (गा८००)। २ खोखला गला; 'घग्घरगलम्मि' (दे ६,१७)। ३ खोखला आवाज; 'रुयमाणी घग्घरेण-सद्देण' (सुर २, ११२)। ४ न. श्याद्वल, शैवाल या सेवार वगैरह का समूह (गउड)।

घट्ट सक [घट्ट्] १ स्पर्श करना, छूना। २ हिलना, चलना। ३ संघर्ष करना। ४ आहत करना। घट्टइ (सुपा ११६)। वकृ. घट्टंत (ठा ७)। कवकृ. घट्टिज्जंत (से २, ७)।

घट्ट सक [घट्टय्] हिलाना। संकृ. घट्टियाण (दस ५, १, ३०)।

घट्ट अक [भ्रंश्] भ्रष्ट होना। घट्टइ (षड्)।

घट्ट पुं [दे] १ कुसुम्भ रंग से रँगा हुआ वस्त्र। २ नदी का घाट। ३ वेणु, वंश, बाँस (दे २, १११)।

घट्ट पुं [घट्ट] १ शर्कराप्रभा-नामक नरक-भूमि का एक नरकावास (इक)। २ पुंन. जमाव (श्रा २८)। ३ समूह, जत्था; 'हयघट्टाइं' (सुपा २५६)। ४ वि. गाढ़ा, निबिड; 'मूल घट्टकररुहओ' (सुपा ११)।

घट्टंसुअ न [दे. घटांशुक] वस्त्र-विशेष, बूटेदार कौसुम्भ वस्त्र (कुमा)।

घट्टण वि [घट्टन] चालाक, हिला देनेवाला (पिंड ६३३)।

घट्टण न [घट्टन] १ छूना, स्पर्श करना। २ चलाना, हिलाना (दस ४)।

घट्टणग पुं [घट्टनक] पात्र वगैरह को चिकना करने के लिए उस पर घिसा जाता एक प्रकार का पत्थर (बृह ३)।

घट्टणया, घट्टणा स्त्री [घट्टना] १ आघात, आहनन (औप; ठा ४,४)। २ चलन, हिलन (ओघ ६)। ३ विचार। ४ पृच्छा (बृह ४)। ५ कदर्थना, पीड़ा (आचा)। ६ स्पर्श; छूना (पएण १६)।

घट्टय देखो घट्ट (महा)।

घट्टिय वि [घट्टित] १ आहत, संघर्ष-युक्त (जं १)। २ प्रेरित, चालित (पएह १, ३)। ३ स्पृष्ट, छुआ हुआ (जं १; राय)।

घट्ठ वि [घृष्ट] १ घिसा हुआ (हे २ १७४; औप; सम १३७)।

घड सक [घट्] १ चेष्टा करना। २ करना, बनाना। अक. परिश्रम करना। ४ संगत होना, मिलना। घडइ (हे १, १९५) वकृ. घडंत, घडमाण (से १, ५; निचू १)। कृ. घडियव्व (णाया १, १—पत्र ६०)।

घड सक [घटय्] १ मिलाना, जोड़ना, संयुक्त करना। २ बनाना, निर्माण करना। ३ संचालन करना। घडेइ (हे ४, ५०)। भवि. घडिस्सामि (स ३६४)। वकृ. घडंत (सुपा २५५)। संकृ. घडिअ (दस ५, १)।

घड पुं [घट] घड़ा, कुम्भ, कलश (हे १, १६५)। °कार पुं [°कार] कुम्भकार, मिट्टी का बरतन बनानेवाला (उप पृ ४१५)। °चेडिया स्त्री [°चेटिका] पानी भरनेवाली दासी, पनहारिन (सुपा ४६०)। °दास पुं [°दास] पानी भरनेवाला नौकर, पनिहारा आचा)। °दासी स्त्री [°दासी] पानी भरने-वाली, पनिहारी (सूअ १, १५)।

घड वि [दे] सृष्टीकृत, बनाया हुआ (षड्)।

घडइअ वि [दे] संकुचित (षड्)।

घडग पुं [घटक] छोटा घड़ा (जं २; अणु)।

घडगार देखो घड-कार (वव १)।

घडचडग पुं [घटचटक] एक हिंसा-प्रधान संप्रदाय (मोह १००)।

घडण स्त्रीन [घटन] १ घटना, प्रसंग (त्रि १३)। २ अन्वय, संबंध (चेइय ४६७)।

घडण न [घटन] १ घड़ना या गढ़ना, कृति, निर्माण (से ७, ७१)। २ यत्न, चेष्टा, परि-श्रम (अनु ४; पएह २, १)।

घडणा स्त्री [घटना] मिलान, मेल, संयोग (सूअ १, १, १)।

घडय देखो घडग (जं २)।

घडा स्त्री [घटा] समूह, जत्था (गउड)।

घडाघडी स्त्री [दे] गोष्ठी, सभा, मण्डली (षड्)।
घडाव सक [घटय्] १ बनाना। २ बनवाना। ३ संयुक्त करना, मिलाना। घडावइ (हे ४, ३४०)। संकृ. घडावित्ता (आवम)।
घडि वि [घटिन्] घटवाला (अणु १४४)।
घडि° स्त्री [घटी] देखो घडिआ = घटिका (प्रासू ५५)। °मंतय, °मत्तय न [°मात्रक] छोटे घड़े के आकार का पात्र-विशेष (राज; कस)। °जंत न [°यन्त्र] रेंट, रेंहट, पानी निकालने का कल (पाअ)।
घडिअ वि [घटित] १ कृत, निर्मित (पाअ)। २ संसक्त संबद्ध, श्लिष्ट, मिला हुआ (पाअ; स १६४; औप; महा)।
घडिअघडा स्त्री [दे] गोष्ठी, मण्डली (दे २, १०५)।
घडिआ स्त्री [घटिका] १ छोटा घड़ा, कलशी (गा ४६०; श्रा २७)। २ घड़ी, मुहूर्त (सुपा १०८)। ३ समय बतानेवाला यन्त्र, घटी-यन्त्र, घड़ी (पाअ)। °लय न [°लय] घण्टागृह, घण्टा बजाने का स्थान (सुर ७, १७)।
घडिआ } घडी } स्त्री [दे] गोष्ठी, मण्डली (षड्; दे २, १०५)।
घडिगा देखो घडिआ (सूअ १, ४, २, १४)।
घडी स्त्री [घटी] देखो घडिआ (स २३८; प्रारू)।
घडुक्कय पुं [घटोत्कच] भीम का पुत्र (हे ४, २६६)।
घडुब्भव वि [घटोद्भव] १ घट से उत्पन्न। २ पुं. ऋषि-विशेष, अगस्त्य मुनि (प्रारू)।
घढ न [दे] थूहा, टीला, स्तूप (पाअ)।
घण पुं [घन] १ मेघ, बादल (सुर १३, ४५; प्रासू ७२)। २ हथौड़ा (दे ६, ११)। ३ गणित-विशेष, तीन अंकों का पूरण करना, जैसे दो का घन आठ होता है (ठा १०—पत्र ४६६; विसे ३५४०)। ४ वाद्य का शब्द-विशेष, कांस्यताल वगैरह (ठा २, ३)। ५ वि. दृढ, ठोस (औप)। ६ अविरल, निबिड, निश्छिद्र, सान्द्र (कुमा; औप)। ७ गाढ, प्रगाढ; 'जाया पीई घणा तेसिं' (उप ५६७ टी)। ८ अतिशय, अधिक, अत्यन्त (राय)। ९ कठिन, तरलता-रहित, स्त्यान (जी ७; ठा ३, ४)। १० न. देवविमान-विशेष (सम ३७)। ११ पिण्ड (सूअ १, १, १)। १२ वाद्य-विशेष (सुज्ज १२)। °उदहि देखो घणोदहि (भग)। °णिचिय वि [°निचित] अत्यन्त निबिड (भग ७, ८; औप)। °तव न [तपस्] तपश्चर्या-विशेष (उत्त ३)। °दंत पुं [°दन्त] १ इस नाम का एक अन्तर्द्वीप। २ उसका निवासी मनुष्य (ठा ४, २)। °माल न [°माल] वैताढ्य पर्वत पर स्थित विद्याधर-नगर-विशेष (इक)। °मुइंग पुं [°मृदङ्ग] मेघ की तरह गम्भीर आवाजवाला वाद्य-विशेष (औप)। °रह पुं [°रथ] एक जैन मुनि (पउम २०; १९)। °वाउ पुं [°वायु] स्त्यान वायु, जो नरक-पृथ्वी के नीचे है (उत्त ३६)। °वाय पुं [°वात] देखो °वाउ (भग; जी ७)। °वाहण पुं [°वाहन] विद्याधरों के राजा का नाम (पउम ५, ७७)। °विज्जुआ स्त्री [°विद्युता] देवी-विशेष, एक दिक्कुमारी देवी का नाम (इक)। °समय पुं [°समय] वर्षा-काल, वर्षा ऋतु (कुमा पाअ)।
घणंगुल पुंन [घनाङ्गुल] परिमाण-विशेष, सूची से गुना हुआ प्रतरांगुल (अणु १५८)।
घणसंमद्द पुं [घनसंमर्द] ज्योतिष-प्रसिद्ध योग विशेष, जिसमें चन्द्र या सूर्य ग्रह अथवा नक्षत्र के बीच में होकर जाता है वह योग (सुज्ज १२—पत्र २३३)।
घणघणाइय न [घनघनायित] रथ की घनघनाहट या गड़गड़ाहट, अव्यक्त शब्द-विशेष (पण्ह १, ३)।
घणवाहि पुं [दे] इन्द्र, स्वर्गपति (दे २, १०७)।
घणसार पुं [घनसार] कपूर (पाअ; भवि)। °मंजरी स्त्री [°मञ्जरी] एक स्त्री का नाम (कप्पू)।
घणा स्त्री [घना] धरणेन्द्र की एक अग्र-महिषी, इन्द्राणी-विशेष (णाया २, १—पत्र २५१)।
घणा स्त्री [घृणा] घृणा, जुगुप्सा, गर्हा (प्राप्र)।
घणिय न [घनित] गर्जना, गर्जन (सुज्ज २०)।
घणोदहि पुं [घनोदधि] पत्थर की तरह कठिन जल-समूह (सम ३७)। °वलय न [°वलय] वलयाकार कठिन जल-समूह (पण्ण २)।
घण्ण पुं [दे] १ उर, वक्षस्, छाती। २ वि. रक्त, रंगा हुआ (दे २, १०५)। ३ घात्य, मार डालने योग्य (सूत्र कृ० २—७, पत्र ४१०)।
घत्त सक [क्षिप्] १ फेंकना, डालना। २ प्रेरणा। घत्तइ (हे ४, १४३)। संकृ. 'अंकाओ घत्तिऊण वरवीणं' (पउम ७८, २०; स ३५१)।
घत्त सक [ग्रह्] ग्रहण करना। भवि. घत्तिस्सं (प्रयौ ३३)।
घत्त सक [गवेषय्] खोजना, ढूँढ़ना, अनु-संधान करना। घत्तइ (हे ४, १८९)। संकृ घत्तिअ (कुमा)।
घत्त सक [यत्] यत्न करना, उद्योग करना। घत्तह (तंदु ५६)।
घत्त वि [घात्य] १ मार डालने योग्य। २ जो मारा जा सके (पि २८१, सूअ २, ७, ६; ८)।
घत्तण न [क्षेपण] फेंकना (कुमा)।
घत्ता स्त्री [घत्ता] छन्द विशेष (पिंग)।
घत्ताणंद न [घत्तानन्द] छन्द-विशेष (पिंग)।
घत्ति अ [दे] शीघ्र, जल्दी (प्राकृ ८१)।
घत्तिय वि [क्षिप्त] प्रेरित (स २०७)।
घत्तु वि [घातुक] मारनेवाला, घातक, जल्लाद (उत्त १८, ७)।
घत्थ वि [ग्रस्त] गृहीत, पकड़ा हुआ (पिंड ११९)।
घत्थ वि [ग्रस्त] १ भक्षित, निगला हुआ, कवलित (पउम ७१, ५१; पण्ह १, ५)। २ आक्रान्त, अभिभूत (सुपा ३५२; महा)।
घम्म पुं [घर्म] घाम, गरमी, संताप, धूप (दे १, ८७; गा ४१४)। २ पसीना, स्वेद (हे ४, ३२७)।
घम्मा स्त्री [घर्मा] पहली नरक-पृथिवी (ठा ७)।
घम्मोई स्त्री [दे] तृण-विशेष (दे २, १०६)।
घम्मोडी स्त्री [दे] १ मध्याह्न काल। २ मशक, मच्छर, क्षुद्र जन्तु-विशेष। ३ ग्रामणी नामक-तृण (दे २, ११२)।

घय न [घृत] घी, घृत (हे १, १२६; सुर १६, ६३)। °**आसव** पुं [°आश्रव] जिसका वचन घी की तरह मधुर लगे ऐसा लब्धिमान् पुरुष (आवम)। °**किट्ट** न [°किट्ट] घी का मैल (धर्म २)। °**किट्टिया** स्त्री [°किट्टिका] घी का मैल (पव ४)। °**गोल** न [°गोल] घी और गुड़ की बनी हुई एक प्रकार की मिठाई, मिष्टान्न-विशेष (सुपा ६३३)। °**घट्ट** पुं [°घट्ट] घी का मैल (बृह १)। °**पुन्न** पुं [°पूर्ण] घेवर, मिष्टान्न विशेष (उप १४२ टी)। °**पूर** पुं [°पूर] घेवर या घीवर, मिष्टान्न-विशेष (सुपा ११)। °**पूसमित्त** पुं [°पुष्यमित्र] एक जैन मुनि, आर्यरक्षित सूरि का एक शिष्य (आचू १)। °**मंड** पुं [°मण्ड] ऊपर का घी, घृतसार (जीव ३)। °**मिल्लिया** स्त्री [°इलिका] घी का कीट, क्षुद्र जन्तु-विशेष (जो १६)। °**मेह** पुं [°मेघ] घी के तुल्य पानी बरसनेवाली वर्षा (जं ३)। °**वर** पुं [°वर] द्वीप-विशेष (इक)। °**सागर** पुं [°सागर] समुद्र-विशेष (दीव)।

घयण पुं [दे] भाण्ड, भाँड़ा, भडवा (उप पृ २०४; २७५; पंचव ४)।

घयपूस पुं [घृतपुष्य] एक जैन महर्षि (कुलक २२)।

घर पुंन [गृह] घर, मकान, गृह (हे २, १४४; ठा ५, प्रासू ७५)। °**कुडी** स्त्री [°कुटी] १ घर के बाहर की कोठरी। २ चौक के भीतर की कुटिया (ओघ १०५)। ३ स्त्री का शरीर (तंदु)। °**कोइला**, °**कोइलिआ** स्त्री [°कोकिला] गृहगोधा, छिपकली (पिंड; सुपा ६४०)। °**गोली** स्त्री [°गोली] गृहगोधा, छिपकली (दे २, १०५)। °**गोहिआ** स्त्री [°गोधिका] छिपकली, जन्तु-विशेष (दे २, १६)। °**जामाउय** पुं [°जामातृक] घर-जमाई, ससुर घर में ही हमेशा रहनेवाला जामाता (णाया १, १६)। °**त्थ** पुं [°स्थ] गृही, संसारी, घरबारी (प्रासू १३१)। °**नाम** न [°नामन्] असली नाम, वास्तविक नाम (महा)। °**वाडय** न [°पाटक] ढकी हुई जमीन वाला घर (पाअ)। °**वार** न [°द्वार] घर का दरवाजा (कप्प १६५)। °**सउणि** पुं [°शकुनि] पालतू जानवर (वव २)। °**समुदाणिय** पुं [समुदानिक] आजीविक मत का अनुयायी साधु (औप)। °**सामि** [°स्वामिन्] घर का मालिक (हे २, १४४)। °**सामिणी** स्त्री [°स्वामिनी] गृहिणी, स्त्री (पि ६२)। °**सूर** [°शूर] अलीक शूर, झूठा शूर, घर में ही बहादुरी दिखानेवाला (दे)।

घरंगण न [गृहाङ्गण] घर का आँगन, चौक (गा ४४०)।

घरकुडी स्त्री [गृहकुटी] स्त्री-शरीर (तंदु ४०)।

घरग देखो घर (जीव ३)।

घरघंट पुं [दे] चटक, गौरैया पक्षी (दे २, १०७; पाअ)।

घरघरग पुं [दे] गला का आभूषण-विशेष (जं १)।

घरट्ट पुं [घरट्ट] जाता, चक्की, अन्न पीसने का पाषाण यन्त्र (गा ८००; सण)।

घरट्ट पुं [दे] अरघट्ट, अरहट, पानी का चरखा (निचू १)।

घरट्टी स्त्री [घरट्टी] शतघ्नी, तोप (दे ३, १०)।

घरणी देखो घरिणी; 'तं वरघरणि वरणि व' (७२८ टी; प्रासू ४५)।

घरयंद पुं [दे] आदर्श, दर्पण, शीशा (दे २, १०७)।

घरस पुं [दे. गृहवास] गृहाश्रम, गृहस्थाश्रम (बृह ३)।

घरसण देखो घंसण (सण)।

घरिंत वि [गृहवत्] घरवाला, गृहस्थ (प्राकृ ३५)।

घरिणी स्त्री [गृहिणी] घरवाली, स्त्री, भार्या, पत्नी (उप ७२८ टी; से २, ३८; सुर २ १००; कुमा)।

घरिल्ल पुं [गृहिन्] गृही, संसारी, घरबारी (गा ७३६)।

घरिल्ला स्त्री [गृहिणी] घरवाली, स्त्री, पत्नी (कुमा)।

घरिल्ली स्त्री [दे. गृहिणी] गृहिणी, पत्नी (दे २, १०६)।

घरिस पुं [घर्ष] घर्षण, रगड़ (णाया १, १६)।

घरिसण न [घर्षण] घर्षण, रगड़ (सण)।

घरोइला स्त्री [दे] गृहगोधा, छिपकली; बिस्तुइया (पि १६८)।

घरोल न [दे] गृह-भोजन-विशेष (दे २, १०६)।

घरोलिया, **घरोली** स्त्री [दे] गृहगोधिका, छिपकली; गुजराती में 'घरोली' (पण्ह १, १; दे २, १०५)।

घलघल पुं [घलघल] 'घल-घल' आवाज, ध्वनि-विशेष (विपा १, ६)।

घल्ल सक [क्षिप्] फेंकना, डालना, घालना। घल्लइ, घल्लंति (भवि; हे ४, ३३४; ४२२)।

घल्ल वि [दे] अनुरक्त, प्रेमी (दे २, १०५)।

घल्लय, **घल्लोय** पुं [दे] द्वीन्द्रिय जीव की एक जाति (सुख ३६, १३०; उत्त ३६, १३०)।

घल्लिअ वि [क्षिप्त] फेंका हुआ, डाला हुआ (भवि)।

घल्लिअ वि [दे] घटित, निर्मित, किया हुआ; 'अइरुट्ठेणं तेणावि घल्लिओ तिक्खखग्गगुरुघाओ' (सुपा २४६)।

घस सक [घृष्] १ घिसना, रगड़ना। २ मार्जन करना, सफा करना। घसइ (महा; षड्)। संकृ. 'घसिऊण अरणिकट्ठं अग्गी पज्जालिओ मए पच्छा' (सुर ७, १८६)।

घस स्त्रीन [दे] १ फटी हुई जमीन, फाटवाली भूमि (आचा २, १०, २)। २ शुषिर भूमि, पोली जमीन। ३ क्षार भूमि (दस ६, ३२)।

घसण देखो घंसण (सुपा १४; दे १, १६६)।

घसणिअ वि [दे] अन्विष्ट, गवेषित (षड्)।

घसणी स्त्री [घर्षणी] सर्प-रेखा, टेढ़ी लकीर (स ३५७)।

घसा स्त्री [दे] १ पोली जमीन। २ भूमि-रेखा, लकीर (राज)।

घसिय वि [घृष्ट] घिसा हुआ, रगड़ा हुआ (दसा ५)।

घसिर वि [ग्रसितृ] बहु-भक्षक, बहुत खानेवाला (ओघ १३३ भा)।

घसी स्त्री [दे] १ भूमि-राजि, लकीर। २ नीचे उतरना, अवतरण (राज)।

घसी स्त्री [दे] जमीन का उतार, ढाल (आचा २, १, ५, ३)।

घसुमर वि [घस्मर] खाने की आदतवाला, खाधुक (प्राकृ २८)।

घाइ वि [घातिन्] घातक, नाशक, हिंसक (गा ४३७; विसे १२३८; भग)। °**कम्म** न [°कर्मन्] कर्म-विशेष; ज्ञानावरण, दर्शनावरण, मोहनीय और अन्तराय ये चार कर्म (अंत)। °**चउक्क** न [चतुष्क] पूर्वोक्त चार कर्म (प्रारू)।

घाइअ वि [घातित] १ मारित, विनाशित (णाया १, ८; उव)। २ घवाया हुआ, जो शक्ति-शून्य हुआ हो, सामर्थ्यरहित; 'करणाइं घाइयाइं जाया अह वेयणा मंदा' (सुर ४, २३६)।

घाइआ स्त्री [घातिका] १ विनाश करनेवाली स्त्री, मारनेवाली स्त्री (जं २)। २ घात, हत्या। ३ घाव करना (सुर १६, १५०)।

घाइज्जमाण } देखो घाय = हन्।
घाइयव्व }

घाइयव्व देखो घाय = घातय्।

घाइर वि [घ्रायिन्] सूँघनेवाला (गा ८८६)।

घाउकाम वि [हन्तुकाम] मारने की इच्छावाला (णाया १, १८)।

घाएंत देखो घाय = हन्।

घाड अक [भ्रंश्] भ्रष्ट होना, च्युत होना। घाडइ (षड्)।

घाड पुं [घाट] १ मित्रता, सौहार्द (बृह णाया १, २)। २ मस्तक के नीचे का भाग (णाया १, ८—पत्र १३३)।

घाडिय वि [घाटिक] वयस्य, मित्र (णाया १, २ बृह १)।

घाडेरुय पुं [दे] खरगोश की एक जाति (?) 'जे तुह संगसुहासारज्जुनिबद्धा दुहं मए रुद्धा। घाडेरुयससया इव अबंधणा ते पलायंति' (उप ७२८ टी)।

घाण पुं [दे] १ घानी, कोल्हू, तिल-पीड़न-यन्त्र (पिंड)। २ घान, चक्की आदि में एक बार डालने का परिमाण (सुपा १४)।

घाण पुंन [घ्राण] नाक, नासिका; 'दो घाणा' (पुरण १५; उप ६४८ टी; दे २, ७६)। °**रिस** पुंन [°र्शस्] नासिका में होनेवाला रोग-विशेष, पीनस (ओघ १८४ भा)।

घाणिंदिय न [घ्राणेन्द्रिय] नासिका, नाक (उत्त २६)।

घाय सक [हन्] मारना, मार डालना, विनाश करना। वकृ. घाएइ (उव)। वकृ. 'घाएंत रिउभंडहवे' (पउम ६०, १७)। घायंत (पउम २४, २६; विसे १७६३)। कवकृ. 'से घणे चिलाएणं चोरसेणावइणा पंचहिं चोरसएहिं सद्धिं गिहं घाइज्जमाणं पासइ' (णाया १,१८)। वकृ. घाइयव्व (पउम ६६, ३४)।

घाय सक [घातय्] मरवाना, दूसरे द्वारा मार डालना, विनाश करवाना। वकृ. घायमाण (सूअ २,१)। कृ. घाइयव्व (पउम ६६, ३४)।

घाय पुं [घात] गमन, गति (सुज्ज १, १)।

घाय पुं [घात] १ प्रहार, चोट, वार (पउम ५६; २५)। २ नरक (सूअ १, ५, १)। ३ हत्या, विनाश, हिंसा (सूअ १, १, २)। ४ संसार (सूअ १, ७)

घायग वि [घातक] मार डालनेवाला, विनाशक (स २६४; सुपा २०७)।

घायण न [हनन] १ हत्या, नाश, हिंसा (सुपा ३४६; द्र २६)। २ वि. हिंसक, मार डालनेवाला (स १०८)।

घायण पुं [दे] गायक, गवैया (दे २, १०८; हे २, १७४; षड्)।

घायणा स्त्री [हनन] मारना, हिंसा, वध (पण्ह १, १)।

घायय देखो घायग (विसे १७६३; स २६७)।

घायय पुं [घातक] नरक-स्थान विशेष (देवेन्द्र २६; ३०)।

घायावणा स्त्री [घातना] १ मरवाना, दूसरे द्वारा मारना। २ लूटपाट मचवाना; 'बहुग्गामघायावणाहिं ताविया' (विपा १, ३)।

घार अक [घारय्] १ विष का फैलना, विष की असर से बेचैन होना। २ सक. विष से बेचैन करना। ३ विष से मारना। कर्म. 'घारिज्जंतो य तओ विसेण' (स १८६)। हेकृ. घारिज्जिउं (स १८६)।

घार पुं [दे] प्राकार, किला, दुर्ग (दे २, १०८)।

घारंत पुं [दे] घृतपूर, घेवर, एक प्रकार की मीठाई (दे २, १०८)।

घारण न [घारण] विष की असर से होनेवाली बेचैनी (सुपा १२४)।

घारिय वि [घारित] जो विष की असर से बेचैन हुआ हो; 'तत्तओ भोगो। सव्वत्थ तदुवघाया विसघारियभोगतुल्लोत्ति' (उप ४४२); 'विसवा (? घा) रियस्स जह वा घणचन्दणकामिणीसंगो' (उवर ६७); 'विसघारिओ सि धत्तूरिओ सि मोहेण किव ठगिओ सि' (सुपा १२४; ४४७)।

घारिया स्त्री [दे] मिष्टान्न-विशेष, गुजराती में जिसे 'घारी' कहते हैं (भवि)।

घारी स्त्री [दे] १ शकुनिका, पक्षि-विशेष (दे २, १०७; पाअ)। २ छन्द-विशेष (पिंग)।

घास सक [घृष्] १ घिसना। २ पीड़ा करना। कर्म. घासइ (सूअ १, १३, १५)।

घास पुं [घास] तृण, पशुओं को खाने का तृण (दे २, ८५; औप)।

घास पुं [ग्रास] १ कवल, कौर (औप; उत्त २)। २ आहार, भोजन (आचा; ओघ ३३०)।

घास पुं [घर्ष] घर्षण, रगड़; 'जो मे उवज्जिओ इह करुरुहघसणेण चरणघासेण' (सुपा १४)।

घासेसणा स्त्री [ग्रासैषणा] आहार-विषयक शुद्धि अशुद्धि का पर्यालोचन (ओघ ३३८)।

घि देखो घे। भवि. घिच्छिइ (विसे १०२३)। कर्म. घिप्पंति (प्रासू ४)। संकृ घित्तूण (कुमा ७,४६)। हेकृ. घित्तुं (सुपा २०६)। कृ. घित्तव्व (सुर १४, ७७)।

घिअ न [घृत] घी, घीव, आज्य (गा २२)।

घिअ वि [दे] भर्त्सित, तिरस्कृत, अवधीरित (दे २, १०८)।

घिं° } पुं [ग्रीष्म] १ गरमी की ऋतु, ग्रीष्म
घिंसु } काल; 'घिंसिसिरवासे' (ओघ ३१० भा; उत्त २, ८; पि ६; १०१)। २ गरमी, अभिताप (सूअ १, ४, २)।

घिट्ठ वि [दे] कुब्ज, कूबड़ा (दे २, १०८)।

घिट्ठ वि [घृष्ट] घिसा हुआ, रगड़ा हुआ (सुपा २७८; गा ६२६ अ)।

घिणा स्त्री [घृणा] १ जुगुप्सा, अरुचि। २ दया, अनुकम्पा (हे १, १२८)।

घिणिल्ल वि [घृणावत्] घृणावाला, नफरत करनेवाला (पिंड १७६)।

घित्त (अप) वि [क्षिप्त] फेंका हुआ, डाला हुआ (भवि)।

घित्तुमण वि [ग्रहीतुमनस्] ग्रहण करने की इच्छावाला (सुपा २०६)।

घित्तूण } देखो घि।
घिप्प° }

घिस सक [ग्रस्] ग्रसना, निगलना, भक्षण करना। घिसइ (हे ४, २०४)।

घिसरा स्त्री [दे] मछली पकड़ने का जाल-विशेष (विपा १, ८—पत्र ८५)।

घिसिअ वि [ग्रस्त] कवलित, निगला हुआ, भक्षित (कुमा ७, ४६)।

घुंघुरुड पुं [दे] उत्कर, ढग, ढेर, समूह (दे २, १०६)।

घुंट पुं [दे] घूँट, एक बार पीने योग्य पानी आदि (हे ४, ४२३)।

घुग्घ } (अप) पुंन [घुग्घिका] कपि-चेष्टा,
घुग्घिअ } बन्दर की चेष्टा (हे ४, ४२३; कुमा)।

घुग्घुच्छण न [दे] खेद, तकलीफ, परिश्रम (दे २, ११०)।

घुग्घुरि पुं [दे] मण्डूक, भेक, मेढ़क (दे २, १०६)।

घुग्घुस्सुअ वि [दे] निःशंक होकर गया हुआ (षड्)।

घुग्घुस्सुसय न [दे] साशंक वचन, आशंका-युक्त वाणी (दे २, १०६)।

घुघुघुघुघुघ अक [घुघुघुघाय्] 'घुघु' आवाज करना, घूक या उल्लू का बोलना। वकृ. घुघुघुघुघुघंत (पउम १०५, ५६)।

घुघुअ अक [घुघूय्] ऊपर देखो। वकृ. घुघुयंत (गाया १, ८—पत्र १३३)।

घुट्टग पुं [घृष्टक] लिपे हुए पात्र को घिसने का पत्थर (पिंड १५)।

घुट्टघुणिअ न [दे] पहाड़ की बड़ी शिला (दे २, ११०)।

घुट्ठ वि [घुष्ट] घोषित, ऊँची आवाज से जाहिर किया हुआ (पउम ३, ११८; भवि)।

घुडुक्क अक [गर्ज्] गरजना, गर्जारव करना। घुडुक्कइ (हे ४, ३६५)।

घुण पुं [घुण] काष्ठ-भक्षक कीट, घुन (ठा ४ १; विसे १५३६)।

घुणघुणिआ } स्त्री [दे] कर्णोपकर्णिका,
घुणाघुणी } कानाकानी (दे २, ११०; महा)।

घुणिय वि [घुणित] घुणों से विद्ध, घुना हुआ (बृह १)।

घुण्ण देखो **घुम्म**। वकृ. घुण्णंत (नाट)।

घुण्णिअ वि [घूर्णित] १ घुमा हुआ। २ भ्रान्त, भटका हुआ (दे ८, ४६)।

घुत्तिअ वि [दे] गवेषित, अन्वेषित, खोजा हुआ (दे २,१०६)।

घुन्न } देखो **घुम्म**। घुमइ (पिंग)। वकृ.
घुम } घुन्नंत (पण्ह १, ३)।

घुमघुमिय वि [घुमघुमित] १ जिसने 'घुम-घुम' आवाज किया हो वह। २ न. 'घुम-घुम' ध्वनि; 'महुरगंभीरघुमघुमियत्ररमद्दलं' (सुपा ५०)।

घुम्म अक [घुर्ण्] घूमना, चक्राकार फिरना। घुम्मइ (हे ४, ११७; षड्)। वकृ. **घुम्मंत**, **घुम्ममाण** (हेका ३३; णाया १, ६)। संकृ. **घुम्मिऊण** (महा)।

घुम्मण न [घूर्णन] चक्राकार भ्रमण (कुमा)।

घुम्माविअ वि [घूर्णित] घुमाया हुआ (वज्जा १२२)।

घुम्मिय वि [घूर्णित] घुमा हुआ, चक्र की तरह फिरा हुआ (सुपा ६४)।

घुम्मिर वि [घूर्णितृ] घूमनेवाला, फिरनेवाला, चक्राकार घूमनेवाला (उप पृ ६२; गा १८०; गउड)।

घुयग पुं [दे] एक तरह का पत्थर, जो पात्र वगैरह को चिकना करने के लिए उस पर घिसा जाता है, खराद या चरखी (पिंड)।

घुरहुर देखो **घुरुघुर**। वकृ. **घुरहुरंत** (श्रा १२)।

घुरुक्क अक [दे] घुरकना, घुड़कना, गरजना। 'घुरुक्कंति वग्घा' (महा)।

घुरुक्कार पुं [घुरुत्कार] सूअर आदि की आवाज (किरात ६)।

घुरुघुर अक [घुरुघुराय्] घुरघुराना, 'घुर-घुर' आवाज करना, व्याघ्र वगैरह का बोलना। घुरुघुरंति (पि ५५८)। वकृ. **घुरुघुरायंत** (सुपा ५०५)।

घुरुघुरि पुं [दे] मण्डूक, मेढक, भेक, बेंग (दे २, १०६)।

घुरुघुरु } देखो **घुरुघुर**। घुरुहुरइ (महा)।
घुरुहुर } वकृ. **घुरुघुरुमाण** (महा)।

घुल देखो **घुम्म**। घुलइ (हे ४, ११७)।

घुलिकि स्त्री [दे] हाथी की आवाज, करि-शब्द (पिंग)।

घुलघुल अक [घुलघुलाय्] 'घुल-घुल' आवाज करना। वकृ. **घुलघुलाअमाण** (पि ५५८)।

घुलिअ वि [घूर्णित] चक्राकार घुमा हुआ (कुमा)।

घुल्ला स्त्री [दे] कीट-विशेष, द्वीन्द्रिय जन्तु की एक जाति (पराण १)।

घुसण देखो **घुसिण** (कुमा)।

घुसल सक [मथ्] मथना, विलोड़ना। घुसलइ (हे ४, १२१)।

घुसलिअ वि [मथित] मथित, विलोड़ित (कुमा)।

घुसिण न [घुसृण] कुंकुम, सुगन्धित द्रव्य-विशेष, केसर (हे १, १२८)।

घुसिणल्ल वि [घुसृणवत्] कुंकुमवाला, कुंकुम-युक्त (कुमा)।

घुसिणिअ वि [दे] गवेषित, अन्विष्ट (दे २, १०६)।

घुसिम न [दे] घुसृण, कुंकुम (षड्)।

घुसिरसार न [दे] अवस्नान, विवाह के अव-सर में स्नान के पहले लगाया जाता मसूरादि का पिसान, उबटन (दे २, ११०)।

घुसुल देखो **घुसल**। वकृ. **घुसुलंत**, **घुसुलिंत** (पिंड ५८७; ५७३)।

घुसुलण न [मथन] विलोड़न (पिंड ६०२)।

घूअ पुंस्त्री [घूक] उलूक, उल्लू, पक्षि विशेष (णाया १, ८; पउम १०५, ५६)। स्त्री. **घूई** (विपा १,३)। °**रि** पुं [°रि] काक, कौआ, वायस (तंदु)।

घूणाग पुं [घूणाक] स्वनाम-ख्यात सन्निवेश-विशेष, ग्राम-विशेष (आचू १)।

घूरा स्त्री [दे] १ जंघा, जाँघ। २ खलका, शरीर का अवयव विशेष; 'गद्दभाण वा घूराओ कप्पेंति' (सूअ २, २, ४५)।

घे देखो **गह** = ग्रह्। घेइ (षड्)। भवि.

घेच्छं (विसे ११२७)। कर्म. घेप्पइ (हे ४, २५६)। कवकृ. **घेप्पंत, घेप्पमाण** (गा ५८१; भग; स १५२)। संकृ. **घेऊण, घक्कूण, घेक्कूण, घेत्तुआण, घेत्तुआणं, घेत्तूण, घेत्तूणं** (नाट—मालती ७१; पि ५८४; हे ४, २१०; पि; उव; प्राप्र)। हेकृ. **घेत्तुं, घेत्तूण** (हे ४, २१०; पउम; ११८, २४)। कृ. **घेत्तव्व** (हे ४, २१०; प्राप्र)।

घेउर पुंन [दे] घेवर, घृतपूर, मिष्टान्न-विशेष; 'सा भणइ नियगेहेवि हु घयघेउरभोयणं समाकुणइ' (सुपा १३)।

घेक्कूण देखो घे।

घेत्तुमण वि [ग्रहीतुमनस्] ग्रहणकरने की इच्छावाला (पउम १११, १६)।

घेप्प°, **घेप्पंत**, **घेप्पमाण** } देखो घे।

घेवर [दे] देखो **घेउर** (दे २, १०८)।

घोट्ट, **घोट्टय** } सक [पा] पीना, पान करना। घोट्टइ (हे ४, १०)। वकृ. **घोट्टयंत** (स २५७)। हेकृ. **घोट्टिउं** (कुमा)।

घोड देखो घुम्म। घोडइ (से ५, १०)।

घोड, **घोडग**, **घोडय** } पुंस्त्री [घोट, °क] घोड़ा, अश्व, हय (दे २, १११; पंच ५२; उवा; उप २०८)। २ पुं. कायोत्सर्ग का एक दोष (पव ५)। **°रक्खग** पुं [°रक्षक] अश्वपाल, साईस (उप ५९७ टी)। **°ग्गीव** [°ग्रीव] अश्वग्रीव-नामक प्रतिवासुदेव, नृपविशेष (आवम)। **°मुह** न [°मुख] जैनेतर शास्त्र-विशेष (अणु)।

घोडिय पुं [दे] मित्र, वयस्य (बृह ५)।

घोडी स्त्री [घोटी] १ घोड़ी। २ वृक्ष-विशेष; 'सीयल्लिघोडिवब्बूलकयरखइराइसंकिण्णे' (स २५६)।

घोण न [घोण] घोड़े की नाक (सण)।

घोणस पुं [घोनस] एक प्रकार का साँप (पउम ३९, १७)।

घोणा स्त्री [घोणा] १ नाक, नासिका (पाअ)। २ घोड़े की नाक। ३ सूअर का मुख-प्रदेश (से २, ६४; गउड)।

घोर अक [घुर्] निद्रा में 'घुर-घुर' आवाज करना। घोरंति (गा ८००)। वकृ. **घोरंत** (स ४२४; उप १०३१ टी)।

घोर वि [दे] १ नाशित, विनाशित। २ पुं. गीध, पक्षि-विशेष (दे २, ११२)।

घोर वि [घोर] भयंकर, भयानक, विकट (सूअ १, ५, १; सुपा ३४५; सुर २, २४३; प्रासू १३६)। २ निर्दय, निष्ठुर (पाअ)।

घोरि पुं [दे] शलभ-पशु की एक जाति (दे २, १११)।

घोल देखो घुम्म। घोलइ (हे ४, ११७)। वकृ. **घोलंत** (कप्प; गा ३७१; कुमा)।

घोल सक [घोलय्] १ घिसना, रगड़ना। २ मिलाना (विसे २०४४; से ४, ५२)।

घोल न [दे] कपड़े से छाना हुआ दही (पभा ३३)।

घोलण न [घोलन] घर्षण, रगड़ (विसे २०४४)।

घोलणा स्त्री [घोलना] पत्थर वगैरह का पानी की रगड़ से गोलाकार होना (स ४७)।

घोलवड, **घोलवडय** } न [दे] एक प्रकार का खाद्य द्रव्य, दहीबड़ा (पभा ३३; श्रा २०; सुपा ४६५)।

घोलाविअ वि [घोलित] मिश्रित किया हुआ, मिलाया हुआ (से ४, ५२)।

घोलिअ न [दे] १ शिलातल। २ हठ-कृत, बलात्कार (दे २, ११२)।

घोलिअ वि [घूर्णित] घुमाया हुआ (पाअ)।

घोलिअ वि [घूर्णित] अत्यन्त लीन, 'अज्जरक्खिओ जविएसु अईव घोलिओ' (सुख २, १३)।

घोलिअ वि [घोलित] आम की तरह घोला हुआ (सूअ २, २, ६३)।

घोलिअ वि [घोलित] रगड़ा हुआ, मर्दित (औप)।

घोलिर वि [घूर्णितृ] घूमनेवाला, चक्राकार फिरनेवाला (गा ३३८; स ५७८; गउड)।

घोस सक [घोषय्] १ घोषणा करना, ऊँची आवाज से जाहिर करना। २ घोखना, ऊँची आवाज से अध्ययन करना, जोर-जोर से बोल कर पढ़ना या रटना। घोसइ (हे १, २६०; प्रामा)। प्रयो. **घोसावेइ** (भग)।

घोस पुं [घोष] १ ऊँची आवाज (स १०७; कुमा; गा ५४)। २ आभीर-पल्ली, अहीरों का महल्ला, अहीर टोली (हे १,२६०)। ३ गोष्ठ, गौओं का बाड़ा (ठा २,४—पत्र ८६; पाअ)। ४ स्तनितकुमार देवों को दक्षिण दिशा का इन्द्र (ठा २, ३)। ५ उदात्त आदि स्वर-विशेष (वव १०)। ६ अनुनाद (भग ६, १)। ७ न देव-विमान-विशेष (सम १२, १७)। **°सेण** पुं [°सेन] सातवें वासुदेव का पूर्वजन्म का धर्म-गुरु, एक जैन मुनि (पउम २०, १७६)।

घोस न [घोष] लगातार ग्यारह दिनों का उपवास (संबोध ५८)।

घोसण न [घोषण] १ ऊँची आवाज (निचू १)। २ घोषणा, ढिंढोरा पिटवाकर जाहिर करना (राय)।

घोसणा स्त्री [घोषणा] ऊपर देखो (णाया १, १३; गा ५२४)।

घोसय न [दे] दर्पण का घरा, दर्पण रखने का उपकरण-विशेष (अंत)।

घोसाडई स्त्री [घोषातकी] लता-विशेष (पण्ण १७—पत्र ५३०)।

घोसाडिया देखो **घोसाडई** (राय ३१)।

घोसालई, **घोसाली** } स्त्री [दे] शरद् ऋतु में होनेवाली लता-विशेष (दे २, १११; पण्ण १—पत्र ३३)।

घोसावण न [घोषण] घोषणा, डोंडी या डुग्गी पिटवा कर जाहिर करना (उप २११ टी)।

घोसिअ वि [घोषित] जाहिर किया हुआ (उव)।

॥ इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि घआराइसद्दसंकलणो

तेरहमो तरंगो समत्तो ॥

च

च अ [च] अथवा, या; 'चसद्दो विगप्पेणं' (पंच ३, ४४)।

च पुं [च] तालु-स्थानीय व्यञ्जन-वर्ण-विशेष (प्राप; प्रामा)।

च अ [च] इन अर्थों में प्रयुक्त किया जाता अव्यय—१ और, तथा (कुमा; हे २, २१७)। २ पुनः, फिर (कम्म ४, २३; ६६; प्रासू ५)। ३ अवधारण, निश्चय (पंच १३)। ४ भेद, विशेष (निचू १)। ५ अतिशय, आधिक्य (आचा; निचू ४)। ६ अनुमति, सम्मति (निचू १)। ७ पाद-पूर्त्ति, पाद-पूरण (निचू १)।

चआ स्त्री [त्वक्] चमड़ी, त्वचा (षड्)।

चइअ वि [शकित] जो समर्थ हुआ हो, शक्त (से ६, ५१)।

चइअ देखो चविअ (पउम १०३, १२६)।

चइअ वि [त्यक्त] मुक्त, परित्यक्त (कुमा ३, ४६)।

चइअ वि [त्याजित] छुड़वाया हुआ, मुक्त कराया हुआ (ओघ ११५)।

चइअ देखो चय = त्यज्।

चइअ देखो चु।

चइइअ देखो चेइअ (षड्)।

चइउं, **चइऊण** } देखो चय = त्यज्।

चइऊण देखो चु।

चइत्त देखो चेइअ (हे २, १३; कुमा)।

चइत्त पुं [चैत्र] मास-विशेष, चैत्र मास (हे १, १५२)।

चइत्ता देखो चु।

चइत्ताणं, **चइयव्व** } देखो चय = त्यज्।

चइद (शौ) वि [चकित] भीत, शंकित (अभि २१३)।

चइयव्व देखो चु।

चउ वि [चतुर्] चार, संख्या-विशेष, ४ (उवा; कम्म ४,२; जी ३३)। °**आलीस** स्त्रीन [°चत्वारिंशत्] चौआलीस, ४४ (पि ७५; १६६)। °**कट्ठ** न [°काष्ठा] चारों दिशा (कुमा) °**कट्ठी** स्त्री [°काष्ठी] चौकठा, चौकठ, चौखटा, द्वार के चारों ओर का काठ, द्वार का ढाँचा (निचू १)। °**कोण** वि [°कोण] चार कोणवाला, चतुरस्र (णाया १, १३)। °**ग** न देखो चउक्क = चतुष्क (दं ३०) °**गइ** स्त्री [°गति] नरक, तिर्यंग्, मनुष्य और देव की योनि (कम्म ४, ६६)। °**गइअ** वि [°गतिक] चारों गति में भ्रमण करनेवाला (श्रा ६)। °**गमण** न [°गमन] चारों दिशाएँ (कप्प)। °**गुण**, °**ग्गुण** वि [°गुण] चौगुना (हे १, १७१; षड्)। °**चत्ता** स्त्री [°चत्वारिंशत्] संख्या-विशेष, चौआलीस (भग)। °**चरण** पुं [°चरण] चौपाया, चार पैर के जन्तु, पशु (उप ७६८ टी; सुपा ४०६)। °**चूड** पुं [°चूड] विद्याधर वंश के एक राजा का नाम (पउम ५, ४५)। °**ट्ठ** देखो °**त्थ** (हे २, ३३)। °**ट्ठाणवडिअ** वि [°स्थान-पतित] चार प्रकार का (भग)। °**णउइ** स्त्री [°नवति] संख्या-विशेष, चौरानबे, ९४ (पि ४४६)। °**णउय** वि [°नवत] चौरानबेवाँ, ९४ वाँ (पउम ९४, १०६)। °**णवइ** देखो °**णउइ** (सम ९७; श्रा ४४)। °**ण्ण** (अप)। देखो °**पन्न** (पिंग)। °**तिस**, °**तीस** न [°त्रिंशत्] चौतीस, ३४ (भग; औप)। °**तीसइम** देखो °**त्तीसइम** (पउम ३४,६१)। °**तीसा** स्त्री देखो °**तीस** (प्राकृ)। °**त्तालीस** वि [°चत्वारिंश] चौआलीसवाँ, ४४ वाँ (पउम ४४, ६८)। °**त्तीसइम** वि [°त्रिंश] १ चौतीसवाँ ३४ वाँ (कप्प)। २ न. सोलह दिनों का लगातार उपवास (णाया १, १—पत्र ७२)। °**त्थ** वि [°थ] १ चौथा (हे १, १७१)। २ पुंन. उपवास (भग)। °**त्थचउत्थ** पुंन [°थचतुर्थ] एक एक उपवास (भग)। °**त्थभत्त** न [°थभक्त] एक दिन का उपवास (भग)। °**त्थभत्तिय** वि [°थभक्तिक] जिसने एक उपवास किया हो वह (पण्ह २, १)। °**त्थिमंगल** न [°थीमङ्गल] वधू-वर के समागम का चतुर्थ दिन, जिसके बाद जामाता अकेला अपने घर जाता है, चौठारी (गा ६४६ अ)। °**त्थी** स्त्री [°थी] १ चौथी। २ संप्रदान-विभक्ति, चतुर्थी विभक्ति (ठा ८)। ३ तिथि-विशेष (सम ६)। °**दंत** देखो °**द्दंत** (राज)। °**दस** त्रि. ब. [°दशन्] संख्या-विशेष, चौदह (नव २; जी ४७)। °**दसपुव्वि** पुं [°दशपूर्विन्] चौदह पूर्व ग्रन्थों का ज्ञानवाला मुनि (ओघ २)। °**दसम** वि. देखो °**द्दसम** (णाया १, १४)। °**दसहा** अ [°दशधा] चौदह प्रकार से (नव ५)। °**दसी** स्त्री [°दशी] तिथि विशेष, चतुर्दशी (रयण ७१)। °**द्दंत** पुं [°दन्त] ऐरावत, इन्द्र का हाथी (कप्प)। °**द्दस** देखो °**दस** (भग)। °**द्दसपुव्वि** देखो °**दसपुव्वि** (भग ५, ४)। °**द्दसम** वि [°दश] १ चौदहवाँ, १४ वाँ (पउम १४,१५८)। २ पुंन. लगातार छः दिनों का उपवास (भग)। °**द्दसी** देखो °**दसी** (कप्प)। °**द्दसुत्तरसय** वि [°दशोत्तरशततम] एक सौ चौदहवाँ, ११४ वाँ (पउम ११४, ३५)। °**द्दह** देखो °**दस** (पि १६६; ४४३)। °**द्दही** देखो °**दसी** (प्राप्र)। °**द्दिसं**, °**द्दिसिं** अ [°दिश्] चारों दिशाओं की तरफ, चारों दिशाओं में (भग; महा; ठा ४, २)। °**द्धा** अ [°धा] चार प्रकार से (उव)। °**नाण** न [°ज्ञान] मति, श्रुत, अवधि और मनःपर्यव ज्ञान (भग; महा)। °**नाणि** वि [°ज्ञानिन्] मति वगैरह चार ज्ञानवाला (सुपा ८३; ३२०) °**पण्ण** देखो °**पन्न**। °**पण्णइम** वि [°पञ्चाश] १ चौवनवाँ, ५४ वाँ। २ न. लगातार छब्बीस दिनो का उपवास (णाया २—पत्र २५१)। °**पन्न**, °**पन्नास** स्त्रीन [°पञ्चाशत्] चौवन, ५४ (पउम २०, १७; सम ७२; कप्प)। °**पन्नासइम** वि [°पञ्चाशत्तम] चौवनवाँ, ५४ वाँ (पउम ५४, ४८)। °**पय** देखो °**प्पय** (णाया १, ८; जी २१)। °**पाल** न [°पाल] सूर्याभ देव का प्रहरण-कोश (राय)। °**पइया**, °**प्पइया** स्त्री [°पदिका] १ छन्द-विशेष (पिंग)। २ जन्तु-विशेष की एक जाति (जीव २)। °**प्पई** स्त्री [°पदी] देखो °**पइया** (सुपा १९०)। °**प्पन्न** देखो °**पन्न** (सम ७२)। °**प्पय** पुंस्त्री [°पद] १

चौपाया प्राणी, पशु (जी ३१)। २ न. ज्योतिष-प्रसिद्ध एक स्थिर करण (विसे ३३५०)। **°प्पह** पुं [°पथ] चौहट्टा, चौराहा, चौरास्ता (प्रयौ १००)। **°प्पुड** वि [°पुट] चार पुटवाला, चौसर, चौपड़ (विपा १, १)। **°प्फाल** वि [°फाल] देखो °प्पुड (णाया १, १—पत्र ५३)। **°ब्बाहु** वि [°बाहु] १ चार हाथवाला। २ पुं. चतुर्भुज, श्रीकृष्ण (नाट)। **°ब्भुअ** [°भुज] देखो °बाहु (नाट; सूअ १, ३, १)। **°भंग** पुंन [°भङ्ग] चार प्रकार, चार विभाग (ठा ४, १)। **°भंगी** स्त्री [°भङ्गी] चार प्रकार, चार विभाग (भग)। **°भाइया** स्त्री [°भागिका] चौसठ पल का एक नाप (अणु)। **°मट्टिया** स्त्री [°मृत्तिका] कपड़े के साथ कूटी हुई मिट्टी (निचू १८)। **°मंडलग** न [°मण्डलक] लग्न मण्डप, विवाह-मण्डप (सुपा ६३)। **°मासिअ** देखो चाउम्मासिअ (श्रा ४७)। **°मुह, °म्मुह** पुं [°मुख] १ ब्रह्मा, विधाता (पउम ११, ७२; २८, ४८)। २ वि. चार मुँहवाला, चार द्वारवाला (औप; सण)। **°वग्ग** पुंन [°वर्ग] चार वस्तुओं का समुदाय (निचू १५)। **°वण्ण, °वन्न** स्त्रीन [°पञ्चाशत्] चौवन, पचास और चार, ५४ (पि २६५; २७३; सम ७२)। **°वार** वि [°द्वार] चार दरवाजेवाला (गृह) (कुमा)। **°विह** वि [°विध] चार प्रकार का (दं ३२; नव ३)। **°वीस** स्त्रीन [°विंशति] चौबीस, बीस और चार, २४ (सम ४३; दं १; पि ३४)। **°वीसइ** (अप)। स्त्री [°विंशति] बीस और चार, चौबीस (पि ४४५)। **°वीसइम** वि [°विंशतितम] १ चौबीसवाँ (पउम २४, ४०)। २ न. ग्यारह दिनों का लगातार उपवास (भग)। **°व्वग्ग** देखो °वग्ग (आचा २, २)। **°व्वार** पुंन [°वार] चार बार, चार दफा (हे १, १७१; कुमा)। **°व्विह** देखो °विह (ठा ४, २)। **°व्वीस** देखो °वीस (सम ४३)। **°व्वीसइम** देखो °वीसइम (णाया १, १)। **°सट्ठि** स्त्री [°षष्टि] चौसठ, साठ और चार (सम ७१; कप्प)। **°सट्ठिम** वि [°षष्टितम] चौसठवाँ (पउम ६४, ४७)। **°स्सट्ठि** देखो °सट्ठि (कप्पू)। **°स्साल** न [°शाल] चार शालाओं से युक्त घर (स्वप्न ५१)। **°हट्ट, °हट्टय** पुंन [°हट्ट, °क] चौहट्टा, बाजार (महा; श्रा २७; सुपा ४५५)। **°हत्तर** वि [°सप्तत] चौहत्तरवाँ, ७४ वा (पउम ७४, ४३)। **°हत्तरि** स्त्री [°सप्तति] चौहत्तर, सत्तर और चार (पि २४५; २६४)। **°हा** अ [°धा] चार प्रकार से (ठा ३, १; जी १६)। देखो **चो°**।

चउक्क न [चतुष्क] चौकड़ी, चार वस्तुओं का समूह (सम ४०; सुर १४, ७८; सुपा १४); 'वण्णचउक्केण' (श्रा २३)।

चउक्क [दे. चतुष्क] चौक, चौराहा, जहाँ चार रास्ता मिलता हो वह स्थान, चौमुहानी (दे ३,२; षड्; णाया १, १; औप; कप्प; अणु; बृह १; जीव १; सुर १; ६३; भग)। २ आँगन, प्रांगण (सुर ३, ७२)।

चउक्कर पुं [दे] कार्तिकेय, शिव का एक पुत्र (दे ३, ५)।

चउक्कर वि [चतुष्कर] चार हाथवाला, चतुर्भुज (उत्त ८)।

चउक्किआ स्त्री [दे. चतुष्किका] आँगन, छोटा चौक (सुर ३, ७२)।

चउज्झाइया स्त्री [दे] नाप-विशेष (भग ७, ८)।

चउड पुं [चोड] देश-विशेष (सम्मत्त ६०)।

चउद देखो चउ-दस (संबोध २३)।

चउद्दह वि [चतुर्दश] चौदहवाँ (प्राकृ ५)। स्त्री. °ही (प्राकृ ५)।

चउपंचम वि [चतुष्पञ्च] चार या पाँच (सूअ २, २, २१)।

चउपाडिवय न [चतुष्प्रतिपत्] चार पडवा या परिवा तिथियाँ (पव १०४)।

चउप्पाय पुं [चतुष्पाद] एक दिन का उपवास (संबोध ५८)।

चउप्फल वि [चतुष्फल] चौगुना, 'मद्दलवाय चउप्फललोयं' (सिरि १५७)।

चउबोल स्त्रीन [चौबोल] छन्द-विशेष (पिंग)। स्त्री. °ला (पिंग)।

चउम्मुह पुं [चतुर्मुख] दो दिन का उपवास, बेला (संबोध ५८)।

चउर वि [चतुर] १ निपुण, दक्ष, होशियार (पाअ; वेणी ६६)। २ क्रिवि. निपुणता से होशियारी से; 'केसी गायइ चउरं' (ठा ७)।

चउरंग वि [चतुरङ्ग] १ चार अंगवाला, चार विभागवाला (सैन्य वगैरह) (सण)। २ न. चार अंग, चार प्रकार (उत्त ३)।

चउरंगय न [चतुरङ्गक] एक तरह का जुआ (मोह ८६)।

चउरंगि वि [चतुरङ्गिन्] चार विभागवाला (सैन्य वगैरह)। स्त्री. °णी (सुपा ४५६)।

चउरंत वि [चतुरन्त] १ चार पर्यन्तवाला, चार सीमाएँवाला। २ पुं. संसार (औप)। स्त्री. °ता [°ता] पृथिवी, धरणी (ठा ४, १)।

चउरंत न [चतुरन्त] चक्र, पहिया (चेइय ३४३)।

चउरंस वि [चतुरस्र] चतुष्कोण, चार कोणवाला (भग; आचा; दं १२)।

चउरंसा स्त्री [चतुरंसा] छन्द-विशेष (पिंग)।

चउरय पुं [दे] चौरा, चबूतरा, गाँव का सभा-स्थान (सम १३८ टी)।

चउरस्स देखो **चउरंस** (विसे २७६७)।

चउरचिंध पुं [दे] सातवाहन, राजा शालिवाहन (दे ३, ७)।

चउराणण वि [चतुरानन] १ चार मुँहवाला। २ पुं. ब्रह्मा, विधाता (गउड)।

चउरासी, चउरासीइ स्त्री [चतुरशीति] संख्या-विशेष, चौरासी, ८४ (जी ४५; सण; उवा; पउम २०, १०३; सम ६०; कप्प)।

चउरासीइम वि [चतुरशीतितम] चौरासीवाँ, ८४ वाँ (पउम ८४, १२; कप्प)।

चउरासीय स्त्रीन [चतुरशीति] चौरासी, 'चउरासीयं तु गणहरा तस्स उप्पन्ना' (पउम ४, ३५)।

चउरिंदिय वि [चतुरिन्द्रिय] त्वक्, जिह्वा, नाक और चक्षु इन चार इन्द्रियवाला (जन्तु) (भग ठा १, १; जी १८)।

चउरिमा स्त्री [चतुरिमन्] चतुरता, चतुराई, चातुर्य, निपुणता (सट्ठि १६)।

चउरिया, चउरी स्त्री [दे] लग्न-मण्डप, मड़वा, विवाह-मण्डप; गुजराती में 'चोरी' (रंभा; सुपा ५५२)।

चउरुत्तरसय वि [चतुरुत्तरशततम] एकसौ चारवाँ, १०४ वाँ (पउम १०४, ३५)।

चउवीस वि [चतुर्विंश] चौबीसवाँ (पव ४६)।

चउवीसिगा स्त्री [चतुर्विंशिका] समय-मान-विशेष, चौबीस तीर्थंकर जितने समय में होते हैं उतना काल—एक उत्सर्पिणी या एक अवसर्पिणी-काल (महानि ४)।

चउवेद, चउवेय, चउव्वेद वि [चतुर्वेद] चारों वेदों का ज्ञाता, चतुर्वेदी, चौबे (धर्मसं १२३८; मोह १०)।

चउसट्ठिआ स्त्री [चतुःषष्टिका] रसवाली चीज तौलने का एक नाप, चार पल का एक माप (अणु १५१)।

चउसर वि [दे] चौसर, चार सरा (लड़ी)वाला (हार आदि) (सुपा ५१०; ५१२)।

चउहत्थ पुं [चतुर्हस्त] श्रीकृष्ण (सुख ६, १)।

चउहार पुं [चतुराहार] चार प्रकार का आहार, अशन, पान, खादिम और स्वादिम; 'कंतासिज्जंपि न संछवेमि चउहारपरिहारो' (सुपा ५७३)।

चओर पुंन [दे] पात्र-विशेष, 'भुत्तावसाणे य आयमणवेलाए अवणीएसु चओरेसु' (स २५२)।

चओर, चओरग पुंस्त्री [चकोर] पक्षि-विशेष (पण्ह १, १; सुपा ३७)।

चओवचइय वि [चयोपचयिक] वृद्धि-हानिवाला (उप २५८ टी; आचा)।

चंकम अक [चङ्क्रम्] बार बार चलना। २ इधर उधर घूमना। ३ बहुत भटकना। ४ टेढ़ा चलना। ५ चलना-फिरना। वकृ. **चंकमंत** (उप १३० टी; ६८६ टी)। हेकृ. **चंकमिउं** (स ३५६)। कृ. **चंकमियव्व** (पि ५५६)।

चंकमण न [चङ्क्रमण] १ इधर उधर भ्रमण। २ बहुत चलना। ३ बार बार चलना। ४ टेढ़ा चलना। ५ चलना-फिरना। (सम १०६; णाया १, १)।

चंकमिय वि [चंक्रमित] १ जिसने चंक्रमण या भ्रमण किया हो वह। २-६ ऊपर देखो (उप ७२८ टी; निचू १)।

चंकमिर वि [चंक्रमितृ] चंक्रमण करनेवाला (सण)।

चंकम्म अक [चंक्रम्य] देखो चंकम। वकृ. **चंकम्मंत, चंकम्ममाण** (गा ४६३; ६२३ उप पृ २३; पण्ह २, ५; कप्प)।

चंकम्मण देखो चंकमण (णाया १, १—पत्र ३८)।

चंकम्मिअ देखो चंकमिअ (से ११, ६६)।

चंकार पुं [चकार] च वर्ण, 'च' अक्षर (ठा १०)।

चंग वि [दे. चङ्ग] सुन्दर, मनोहर, रम्य (दे ३, १; उप पृ १२६; सुपा १०६; कप्पू; प्राप्र; सण; भवि)।

चंग क्रिवि [दे] अच्छा, ठीक (२५)।

चंगदेव पुं [चङ्गदेव] हेमाचार्य का गृहस्था-वस्था का नाम (कुप्र २०)।

चंगवेर पुंन [दे] काठ का तख्ता (आचा २, ४, २, ३)।

चंगवेर पुं [दे] काष्ठ-पात्री, काठ का बना हुआ छोटा पात्र-विशेष; 'पीढए चंगवेरे य' (दस ७)।

चंगिम पुंस्त्री [दे. चङ्गिमन्] सुन्दरता, सौन्दर्य, श्रेष्ठता, चारुपन (नाट)। स्त्री. °मा (विवे १००; उप पृ १८१; सुपा ५; १२३; २६३)।

चंगेरी स्त्री [दे] टोकरी, चंगेली, डलिया, कठारी, तृण आदि का बना पात्र-विशेष (विसे ७१०; पण्ह १, १)।

चंच देखो चंछ। चंचइ (प्राकृ ६५)।

चंच पुं [चञ्च] १ पङ्कप्रभा नरक-पृथिवी का एक नरकावास (इक)। २ न. देव-विमान-विशेष (इक)।

चंचपुड पुंन [दे] आघात, अभिघात; 'खुरवलणचंचपुडेहिं धरणिअलं अभिहणमाणं' (जं ३)।

चंचप्पर न [दे] असत्य, झूठ, अनृत; 'चंचप्परं न भणिमो' (दे ३, ४)।

चंचरीअ पुं [चञ्चरीक] भ्रमर, भौंरा (दे ३, ६)।

चंचल वि [चञ्चल] १ चपल, चञ्चल (कप्प; चारु १)। २ पुं. रावण के एक सुभट का नाम (पउम ५६, ३६)।

चंचला स्त्री [चञ्चला] १ चञ्चल स्त्री। २ छन्द-विशेष (पिंग)।

चंचलिअ वि [चञ्चलित] चञ्चल किया हुआ, 'मणयाणिलचंचे (? च) लिअकेसराइं' (विक्र २६)।

चंचा स्त्री [चञ्चा] १ नरकट की चटाई। २ चमरेन्द्र की राजधानी, स्वर्ग-नगरी-विशेष। ३ घास का पुतला (दीव)।

चंचाल (अप) देखो चंचल (सण)।

चंचु स्त्री [चञ्चु] चोंच, पक्षी का ठोर (दे ३, २३)।

चंचुच्चिय न [दे. चञ्चुरित, चञ्चूचित] कुटिल गमन, टेढ़ी चाल (औप)।

चंचुमालइय वि [दे] रोमाञ्चित, पुलकित (कप्प; औप)।

चंचुय पुं [चञ्चुक] १ अनार्य देश-विशेष। २ उस देश का निवासी मनुष्य (पण्ह १, १)।

चंचुर वि [चञ्चुर] चपल, चंचल (कप्पू)।

चंछ सक [तक्ष्] छिलना। चंछइ (षड्)।

चंड सक [पिष्] पीसना। चंडइ (षड्)।

चंड देखो चंद (इक)।

चंड वि [चण्ड] १ प्रबल, उग्र, प्रखर, तीव्र (कप्प)। २ भयानक, डरावना (उत्त २६; औप)। ३ अति क्रोधी, क्रोध-स्वभावी (उत्त १; १०; पिंग; णाया १, १८)। ४ तेजस्वी, तेजिल (उप पृ ३२१)। ५ पुं. राक्षस वंश के एक राजा का नाम (पउम ५, २६४)। ६ क्रोध, कोप (उत्त १)। °**किरण** पुं [°किरण] सूर्य, रवि (उप पृ ३२१)। °**कोसिय** पुं [°कौशिक] एक सर्प, जिसने भगवान् महावीर को सताया था (कप्प)। °**दीव** पुं [द्वीप] द्वीप-विशेष (इक)। °**पज्जोअ** पुं [°प्रद्योत] उज्जयिनी के एक प्राचीन राजा का नाम (आवम)। °**भाणु** पुं [भानु] सूर्य, सूरज (कुम्मा १३)। °**रुद्द** पुं [°रुद्र] प्रकृति-क्रोधी एक जैन आचार्य (भाव १७)। °**वडिंसय** पुं [°वतंसक] नृप-विशेष (महा)। °**वाल** पुं [°पाल] नृप-विशेष (कप्पू)। °**सेण** पुं [°सेन] एक राजा का नाम (कप्पू)। °**लिय** न [°लीक] क्रोध-वश कहा हुआ झूठ (उत्त १)।

चंडंसु पुं [चण्डांशु] सूर्य, सूरज, रवि (कप्पू)।

चंडण देखो **चंदण**; 'चंडणं, चंडणो' (प्राकृ १६)।

चंडमा पुं [चन्द्रमस्] चन्द्रमा, चाँद (पिंग)।

चंडा स्त्री [चण्डा] १ चमरादि इन्द्रों की मध्यम परिषद् (ठा ३, २; भग ४, १)। २ भगवान् वासुपूज्य की शासनदेवी (संति१०)।

चंडातक न [चण्डातक] स्त्री का पहनने का वस्त्र, चोला, लहँगा (दे ३, १३)।

चंडार पुंन [दे] भण्डार, भाण्डागार (कुमा)।

चंडाल पुं [चण्डाल] १ वर्णसंकर जाति-विशेष, शूद्र और ब्राह्मणी से उत्पन्न (आचा; सूअ १, ८)। २ डोम (उत १; अणु)।

चंडालिअ वि [चाण्डालिक] चण्डाल-संबन्धी, चण्डाल जाति में उत्पन्न (उत्त १)।

चंडाली स्त्री [चण्डाली] १ चण्डाल-जातीय स्त्री। २ विद्या-विशेष (पउम ७, १४२)।

चंडिअ वि [दे] कृत, छिन्न, काटा हुआ (दे ३, ३)।

चंडिक पुंन [दे. चाण्डिक्य] रोष, गुस्सा, क्रोध, रौद्रता (दे ३, २; षड्; सम ७१)।

चंडिक्किअ वि [दे. चाण्डिक्यित] १ रोष-युक्त, रौद्राकारवाला, भयंकर (णाया १, १; पण्ह २, २; भग ७, ८; उवा)।

चंडिज्ज पुं [दे] कोप, क्रोध, गुस्सा। २ वि. पिशुन, खल, दुर्जन (दे ३, २०)।

चंडिम पुंस्त्री [चण्डिमन्] चण्डता, प्रचण्डता (सुपा ६६)।

चंडिया स्त्री [चण्डिका] देखो **चंडी** (स २६२; नाट)।

चंडिल वि [दे] पीन, पुष्ट (दे ३, ३)।

चंडिल पुं [चण्डिल] हजाम, नापित (दे ३, २; पाअ; गा २६१ अ)।

चंडी स्त्री [चण्डी] १ क्रोध-युक्त स्त्री, कर्कशा और उग्र स्त्री (गा ६०८)। २ पार्वती, गौरी, शिव-पत्नी (पाअ)। ३ वनस्पति-विशेष (पण्ण १)। °**देवग** वि [°देवक] चण्डी का भक्त (सूअनि ६०)।

चंद पुं [चन्द्र] १ चन्द्र, चन्द्रमा, चाँद (ठा २, ३; प्रासू १३; ५५; पाअ)। २ नृप-विशेष (उप ७२८ टी)। ३ रामचन्द्र, दाशरथी राम (से १, ३४)। ४ राम के एक सुभट का नाम (पउम ५६, ३८)। ५ रावण का एक सुभट (पउम ५६, २)। ६ राशि-विशेष (भवि)। ७ आह्लादक वस्तु। ८ कपूर। ९ स्वर्ण, सोना। १० पानी, जल (हे २, १६४)। ११ एक जैन आचार्य (गच्छ ४)। १२ एक द्वीप का नाम, द्वीप-विशेष (जीव ३)। १३ राधावेध की पुतली का बायां नयन, आँख का गोला (णंदि)। १४ न. देवविमान-विशेष (सम ८)। १५ रुचक पर्वत का एक शिखर (दीव)। °**अंत** देखो °**कंत** (विक्र १३६)। °**उत्त** देखो °**गुत्त** (मुद्रा १६८)। °**कंत** पुं [°कान्त] १ मणि-विशेष (स ३६०)। २ न. देवविमान-विशेष (सम ८)। ३ वि. चन्द्र की तरह आह्लादक (आवम)। °**कंता** स्त्री [°कान्ता] १ नगरी-विशेष (उप ९७३)। २ एक कुलकर-पुरुष की पत्नी (सम १५०)। °**कूड** न [°कूट] १ देवविमान-विशेष (सम ८)। २ रुचक पर्वत का एक शिखर (ठा ८)। °**गुत्त** पुं [°गुप्त] मौर्यवंश का एक स्वनाम-विख्यात राजा (विसे ८६२)। °**चार** पुं [°चार] चन्द्र की गति (चंद १०)। °**चूड**, °**चूल** पुं [°चूड] विद्याधर वंश का एक स्वनाम-प्रसिद्ध राजा (पउम ५, ४५; दंस)। °**च्छाय** पुं [°च्छाय] अंग देश का एक राजा, जिसने भगवान् मल्लिनाथ के साथ दीक्षा ली थी (णाया १, ८)। °**जसा** स्त्री [°यशस्] एक कुलकर पुरुष की पत्नी (सम १५०)। °**ज्झय** न [°ध्वज] देवविमान-विशेष (सम ८)। °**णक्खा** स्त्री [°नखा] रावण की बहिन का नाम (पउम १०, १८)। °**णह** पुं [°नख] रावण का एक सुभट (पउम ५६, ३१)। °**णही** देखो °**णक्खा** (पउम ७,९८)। °**णागरी** स्त्री [°नागरी] जैन मुनि-गण की एक शाखा (कप्प)। °**दरिसणिया** स्त्री [°दर्शनिका] उत्सव-विशेष, बच्चे के पहली बार के चन्द्र-दर्शन के उपलक्ष्य में किया जाता उत्सव (राज)। °**दिण** न [°दिन] प्रति-पदादि तिथि (पंच ५)। °**दीव** पुं [°द्वीप] द्वीप-विशेष (जीव ३)। °**द्ध** न [°र्ध] आधा चन्द्र, अष्टमी तिथि का चन्द्र (जीव ३)। °**पडिमा** स्त्री [°प्रतिमा] तप-विशेष (ठा २, ३)। °**पन्नत्ति** स्त्री [°प्रज्ञप्ति] एक जैन उपाङ्ग ग्रन्थ (ठा २, १—पत्र १२६)। °**पव्वय** पुं [°पर्वत] वक्षस्कार पर्वत-विशेष (ठा २, ३)। °**पुर** न [°पुर] वैताढ्य पर्वत पर स्थित एक विद्याधर-नगर (इक)। °**पुरी** स्त्री [°पुरी] नगरी-विशेष, भगवान् चन्द्रप्रभ की जन्म-भूमि (पउम २०, ३४)। °**प्पभ** वि [°प्रभ] १ चन्द्र के तुल्य कान्तिवाला। २ पुं. आठवें जिनदेव का नाम (धर्म २)। ३ चन्द्रकान्त, मणि-विशेष (पण्ण १)। ४ एक जैन मुनि (दंस)। ५ न. देवविमान-विशेष (सम ८)। ६ चन्द्र का सिंहासन (णाया २, १)। °**प्पभा** स्त्री [°प्रभा] १ चन्द्र की एक अग्र-महिषी (ठा ४, १)। २ मदिरा-विशेष, एक जात का दारू (जीव ३)। ३ इस नाम की एक राज-कन्या (उप १०३१ टी)। ४ इस नाम की एक शिविका, जिसमें बैठकर भगवान् शीतलनाथ और महावीर-स्वामी दीक्षा के लिए बाहर निकले थे (आवम)। °**प्पह** देखो °**प्पभ** (कप्प; सम ४३)। °**भागा** स्त्री [°भागा] एक नदी (ठा ५, ३)। °**मंडल** पुंन [°मण्डल] १ चन्द्र का मण्डल, चन्द्र का विमान (जं ७; भग)। २ चन्द्र का बिम्ब (पण्ह १,४)। °**मग्ग** पुं [°मार्ग] १ चन्द्र का मण्डल-गति से परिभ्रमण। २ चन्द्र का मण्डल (सुज्ज ११)। °**मणि** पुं [°मणि] चन्द्रकान्त, मणि-विशेष (विक्र १२६)। °**माला** स्त्री [°माला] १ चन्द्राकार हार, चन्द्र-हार। २ छन्द-विशेष (पिंग)। °**मालिया** स्त्री [°मालिका] वही पूर्वोक्त अर्थ (औप)। °**मुही** स्त्री [°मुखी] १ चन्द्र के समान आह्लादक मुखवाली स्त्री। २ सीता-पुत्र कुश की पत्नी (पउम १०६, १२)। °**रह** पुं [°रथ] विद्याधर वंश का एक राजा (पउम ५, १५; ४४)। °**रिसि** पुं [°ऋषि] एक जैन ग्रन्थकार मुनि (पंच ५)। °**लेस** न [°लेश्य] देवविमान-विशेष (सम ८)। °**लेहा** स्त्री [°लेखा] १ चन्द्र की रेखा, चन्द्रकला। २ एक राज-पत्नी (ती १०)। °**वडिंसग** न [°वतंसक] १ चन्द्र के विमान का नाम (चंद १८)। २ देखो **चंडवडिंसग** (उत्त १३)। °**वण्ण** न [°वर्ण] एक देवविमान (सम ८)। °**वयण** वि [°वदन] १ चन्द्र के तुल्य आह्लादजनक मुँहवाला। २ पुं.

राक्षस-वंश का एक राजा, एक लंकापति (पउम ५,२६६)। °विकंप पुंन [°विकम्प] चन्द्र का विकम्प-क्षेत्र (जो १०)। °विमाण न [°विमान] चन्द्र का विमान (जं ७)। °विलासि वि [°विलासिन्] चन्द्र के तुल्य मनोहर (राय)। °वेग पुं [°वेग] एक विद्याधर-नरेश (महा)। °संवच्छर पुं [°संवत्सर] वर्ष-विशेष, चान्द्र मासों से निष्पन्न संवत्सर (चंद १०)। °साला स्त्री [°शाला] अट्टालिका, अटारी (दे ३, ६)। °सालिया स्त्री [°शालिका] अट्टालिका (णाया १, १)। °सिंग न [°शृङ्ग] देव-विमान-विशेष (सम ८)। °सिट्ठ न [°शिष्ट] एक देवविमान (सम ८)। °सिरी स्त्री [°श्री] द्वितीय कुलकर पुरुष की माँ का नाम (आचू १)। °सिहर पुं [°शिखर] विद्याधर वंश का एक राजा (पउम ५, ४३)। °सूरदंसावणिया, °सूरपासणिया स्त्री [°सूरदर्शनिका] बालक का जन्म होने पर तीसरे दिन उसको कराया जाता चन्द्र और सूर्य का दर्शन और उसके उपलक्ष्य में किया जाता उत्सव (भग ११, ११; विपा १, २)। °सूरि पुं [°सूरि] स्वनामविख्यात एक जैन आचार्य (सण)। °सेण पुं [°सेन] १ भगवान् आदिनाथ का एक पुत्र। २ एक विद्याधर राज-कुमार (महा)। °सेहर पुं [°शेखर] १ भूप-विशेष (ती ३८)। २ महादेव, शिव (पि ३६५)। °हास पुं [°हास] खड्ग-विशेष, तलवार (से १४, ५२; गउड)।

चंद पुं [चन्द्र] संवत्सर-विशेष, जिसमें अधिक मास न हो वह वर्ष (सुज्ज ११)। °उडु पुं [ऋतु] कुछ अधिक उनसठ दिनों की एक ऋतु (सुज्ज १२)। °परिवेस पुं [°परिवेष] चन्द्र-परिधि (अणु १२०)। °प्पहा स्त्री [°प्रभा] देखो चंद-प्पभा (विचार १२६; कुप्र ४५३)। °ावदी स्त्री [°ावती] एक नगरी (मोह ८८)।

चंद वि [चान्द्र] चन्द्र-संबन्धी (चंद १२)। °कुल न [°कुल] जैन मुनियों का एक कुल (गच्छ ४)।

चंदअ देखो चंद = चन्द्र (हे २, १६४)।

चंदइल्ल पुं [दे] मयूर, मोर (दे ३, ५)।

चंदंक पुं [चन्द्राङ्क] विद्याधर वंश का एक स्वनाम-प्रसिद्ध राजा (पउम ५, ४३)।

चंदग [चन्द्रक] देखो चंद। °विज्झ, °वेज्झ न [°वेध्य] राधावेध; 'चंदगविज्झं लद्धं, केवलसरिसं समाउपरिहीणं' (संथा १२२; निचू ११)।

चंदट्ठिआ स्त्री [दे] १ भुज, शिखर, कन्धा। २ गुच्छा, स्तबक (दे ३, ६)।

चंदण पुं [चन्दन] १ एक देवविमान (देवेन्द्र १४३)। २ रत्न की एक जाति (उत्त ३६, ७७)। ३ पुं. द्वीन्द्रिय जीव-विशेष, अक्ष का जीव (उत्त ३६, १३०)।

चंदण पुंन [चन्दन] १ सुगन्धित वृक्ष-विशेष, चन्दन का पेड़ (प्रासू ६)। २ न. सुगन्धित काष्ठ-विशेष, चन्दन की लकड़ी (भग ११, ११; हे २, १८२)। ३ घिसा हुआ चन्दन (कुमा)। ४ छन्द-विशेष (पिंग)। ५ रुचक पर्वत का एक शिखर (जं)। °कलस पुं [°कलश] चन्दन-चर्चित कुम्भ, माङ्गलिक घट (औप)। °घड पुं [°घट] मंगल-कारक घड़ा (जीव ३)। °बाला स्त्री [°बाला] एक साध्वी स्त्री, भगवान् महावीर की प्रथम शिष्या (पडि)। °वइ पुं [°पति] स्वनाम-ख्यात एक राजा (उप ९८६ टी)।

चंदणग पुंन [चन्दनक] १ ऊपर देखो। २ पुं. द्वीन्द्रिय जन्तु-विशेष, जिसके कलेवर को जैन साधु लोग स्थापनाचार्य में रखते हैं (पण्ह १, १; जी १५)।

चंदणा स्त्री [चन्दना] भगवान् महावीर की प्रथम शिष्या, चन्दनबाला (सम १५२; कप्प)।

चंदणि स्त्री [दे] आचमन, कुल्ला। °उयय न [°उदक] कुल्ला फेंकने की जगह (आचा २, १, ६, २)।

चंदणी स्त्री [दे] चन्द्र की पत्नी, रोहिणी; 'चंदो विय चंदणीजोगो' (महा)।

चंदम पुं [चन्द्रमस्] चन्द्रमा, चाँद (भग)।

चंदरुद्द देखो चंड-रुद्द (पंचा ११, ३५)।

चंदवडाया स्त्री [दे] जिसका आधा शरीर ढका और आधा नंगा हो ऐसी स्त्री (दे ३,७)।

चंदा स्त्री [चन्द्रा] चन्द्र-द्वीप की राजधानी (जीव ३)।

चंदाअव पुं [चन्द्रातप] ज्योत्स्ना, चन्द्रिका, चन्द्र की प्रभा, चाँदनी (से १, २७)। देखो चंदायय।

चंदाणण पुं [चन्द्रानन] ऐरवत क्षेत्र के प्रथम जिनदेव (सम १५३)।

चंदाणणा स्त्री [चन्द्रानना] १ चन्द्र के तुल्य आह्लाद उत्पन्न करनेवाली, चन्द्रमुखी। २ शाश्वती जिन-प्रतिमा-विशेष (ठा १, १)।

चंदाभ वि [चन्द्राभ] १ चन्द्र के तुल्य आह्लाद-जनक। २ पुं. आठवाँ जिनदेव, चन्द्र-प्रभ स्वामी (आचू २)। ३ इस नाम का एक राज-कुमार (पउम ३, ५५)। ४ न. एक देवविमान (सम १४)।

चंदायण न [चान्द्रायण] तप-विशेष, जिसमें चन्द्रमा के घटने-बढ़ने के अनुसार भोजन के कौर घटाने-बढ़ाने पड़ते हैं (पंचा १९)।

चंदायण न [चन्द्रायण] चन्द्र का छः छः मास पर दक्षिण और उत्तर दिशा में गमन (जो ११)।

चंदायय देखो चंदाअव। १ आच्छादन-विशेष, वितान, चँदवा (सुर ३, ७२)।

चंदालग न [दे] ताम्र का भाजन-विशेष (सूअ १, ४, २)।

चंदावत्त न [चन्द्रावर्त्त] एक देवविमान (सम ८)।

चंदाविज्झय देखो चंदग-विज्झ (णंदि)।

चंदिअ वि [चान्द्रिक] चन्द्रका, चन्द्र-संबन्धी (पव १४१)।

चंदिआ स्त्री [चन्द्रिका] चाँदनी, चन्द्र की प्रभा, ज्योत्स्ना (से ५,२; गा ७७)।

चंदिकोज्जलीय वि [दे. चन्द्रिकोज्ज्वलित] चन्द्र-कान्ति से उज्वल बना हुआ (चंद)।

चंदिण न [दे] चन्द्रिका, चन्द्रप्रभा;
'मेहाण दाणं चंदाण,
चंदिणं तरुवराण फलनिवहो।
सप्पुरिसाण विढत्तं,
सामन्नं सयललोआणं॥' (श्रा १०)।

चंदिम देखो चंदम (औप; कप्प)। २ एक जैन मुनि (अनु २)।

चंदिमा स्त्री [चन्द्रिका] चन्द्र की प्रभा, ज्योत्स्ना, चाँदनी (हे १, १८५)।

चंदिमाइय न [चान्द्रिक] 'ज्ञाताधर्मकथा' सूत्र का एक अध्ययन (राज)।

चंदिल पुं [चन्दिल] नापित, हजाम (गा २६१; दे ३, २)।
चंदुत्तरवडिंसग न [चन्द्रोत्तरावतंसक] एक देवविमान (सम ८)।
चंदेरी स्त्री [दे] नगरी-विशेष (ती ४५)।
चंदोज्ज, **चंदोज्जय** न [दे] कुमुद, चन्द्र-विकासी कमल (दे ३, ४)।
चंदोत्तरण न [चन्द्रोत्तरण] कौशाम्बी नगरी का एक उद्यान (विपा १, ५—पत्र ६०)।
चंदोयर पुं [चन्द्रोदर] एक राज-कुमार (धम्म)।
चंदोवग न [चन्द्रोपक] संन्यासी का एक उपकरण (ठा ४, २)।
चंदोवराग पुं [चन्द्रोपराग] चन्द्र-ग्रहण, चन्द्रमा का ग्रहण, राहु-ग्रास (ठा १०; भग ३, ६)।
चंद्र देखो **चंद** (हे २, ८०; कुमा)।
चंप सक [दे] चाँपना, दाबना, दबाना। चंपइ (आरा २५)। कर्म. चंपिज्जइ (हे ४, ३६५)।
चंप सक [चर्च्] चर्चा करना। चंपइ (प्राप्र)। संकृ. चंपिऊण (वज्जा ६४)।
चंप सक [आ + रुह्] चढ़ना। चंपइ (प्राकृ ७३)।
चंप देखो **चंपय** (राय ३०)।
चंपग पुंन [चम्पक] एक देवविमान (देवेन्द्र १४२)।
चंपग देखो **चंपय**; 'असुइट्ठाणे पडिया, चंपगमाला न कीरइ सीसे' (आव ३)।
चंपडण न [दे] प्रहार, आघात; 'सरभसचलंतविअडगुडिअगंधसिंधुरणिवहचलणचंपडणसमुप्पइआ......धूलीजालोली' (विक्र ८४)।
चंपण न [दे] चाँपना, दबाना (उप १३७ टी)।
चंपय पुं [चंपक] १ वृक्ष-विशेष, चम्पा का पेड़ (स १५२; भग)। २ देव-विशेष (जीव ३)। ३ न. चम्पा का फूल (कुमा)। °**माला** स्त्री [°माला] १ छन्द-विशेष (पिंग)। २ चम्पा के फूलों का हार (आव ३)। °**लया** स्त्री [°लता] १ लताकार चम्पक वृक्ष। २ चम्पक वृक्ष की शाखा (जं १; औप)। °**वण** न [°वन] चम्पक वृक्षों की प्रधानतावाला वन (भग)।
चंपयवडिंसय पुं [चम्पकावतंसक] सौधर्म देवलोक में स्थित एक विमान (राय ५६)।
चंपा स्त्री [चम्पा] अंग देश की राजधानी, नगरी-विशेष, जिसको आजकल 'भागलपुर' कहते हैं (विपा १, १; कप्प)। °**पुरी** स्त्री [°पुरी] वही अर्थ (पउम ८, १५६)।
चंपा स्त्री. देखो **चंपय**। °**कुसुम** न [°कुसुम] चम्पा का फूल (राय)। °**वण्ण** वि [°वर्ण] चम्पा के फूल के तुल्य रंगवाला, सुवर्ण-वर्ण। स्त्री. °**ण्णी** (अप) (हे ४, ३३०)।
चंपारण (अप) पुं [चम्पारण्य] १ देश-विशेष, चंपारन, तिरहुत कमिश्नरी (विहार) का एक जिला। २ चंपारन का निवासी (पिंग)।
चंपिअ वि [दे] चाँपा हुआ, दबाया हुआ, मर्दित (सुपा १३७; १३८)।
चंपिअ न [दे] आक्रमण, दबाव (तंदु ४४)।
चंपिज्जिया स्त्री [चम्पीया] जैन मुनिगण की एक शाखा (कप्प)।
चंभ पुं [दे] हल से विदारित भूमि-रेखा (दे ३, १)।
चकप्पा स्त्री [दे] त्वक्, त्वचा, चमड़ी (दे ३, ३)।
चकिद देखो **चइद** (कुमा)।
चकोर पुंस्त्री [चकोर] पक्षि-विशेष, चकोर पक्षी (सुपा ४५७)। स्त्री. °**री** (रयण ४६)।
चक्क पुं [चक्र] १ पक्षि-विशेष, चक्रवाक पक्षि (पाअ; कुमा; सण); 'तो हरिसपुलइयंगो चक्को इव दिट्ठउग्गयपयंगो' (उप ७२८ टी)। २ न. गाड़ी का पहिया (पण्ह १, १)। ३ समूह (सुपा १५०; कुमा)। ४ अस्त्र-विशेष (पउम ७२, ३१; कुमा)। ५ चक्राकार आभूषण, मस्तक का आभरण-विशेष (औप)। ६ व्यूह-विशेष, सैन्य की चक्राकार रचना-विशेष (णाया १, १; औप)। °**कंत** पुं [°कान्त] देव-विशेष, स्वयंभूरमण समुद्र का अधिष्ठाता देव (दीव)। °**जोहि** पुं [°योधिन्] १ चक्र से लड़नेवाला योद्धा (ठा ६)। २ वासुदेव, तीन खंड पृथिवी का राजा (आव १)। °**ज्झय** पुं [°ध्वज] चक्र के निशान-वाली ध्वजा (जं १)। °**पहु** पुं [°प्रभु] चक्रवर्त्ती राजा (सण)। °**पाणि** पुं [°पाणि] १ चक्रवर्त्ती राजा, सम्राट्। २ वासुदेव, अर्ध-चक्रवर्त्ती राजा (पउम ७३, ३)। °**पुर**, °**पुरी** स्त्री [°पुरी] विदेह वर्ष की एक नगरी (ठा २, ३; इक)। °**प्पहु** देखो °**पहु** (सण)। °**यर** पुं [°चर] भिक्षुक, भीखमंगा (उप ६१७)। °**रयण** न [°रत्न] अस्त्र-विशेष, चक्रवर्ती राजा का मुख्य आयुध (पण्ह १, ४)। °**वइ** पुं [°पति] सम्राट् (पिंग)। °**वइ**, °**वट्टि** पुं [°वर्तिन्] छः खण्ड भूमि का अधिपति राजा, सम्राट् (पिंग; सण; ठा ३, १; पडि; प्रासू १७५)। °**वट्टित्त** न [°वर्तित्व] सम्राट्पन, साम्राज्य (सुर ४, ६१)। °**वत्ति** देखो °**वट्टि** (पि २८६)। °**विजय** पुं [°विजय] चक्रवर्त्ती राजा से जीतने योग्य क्षेत्र-विशेष (ठा ८)। °**साला** स्त्री [°शाला] वह मकान, जहाँ तिल पेरा जाता हो, तैलिक गृह (वव १०)। °**सुह** पुं [°शुभ, °सुख] देव-विशेष, मानुषोत्तर पर्वत का अधिपति देव (दीव)। °**सेण** पुं [°सेन] स्वनाम-ख्यात एक राजा (दंस)। °**हर** पुं [°धर] १ चक्रवर्त्ती राजा, सम्राट् (सम १२६; पउम २, ८५; ४, ३६; कप्प)। २ वासुदेव, अर्ध-चक्री राजा (राज)।
चक्क न [चक्र] एक देवविमान (देवेन्द्र १३३)।
चक्कआअ देखो **चक्कवाय** (पि ८२)।
चक्कंग पुं [चक्राङ्ग] पक्षि-विशेष (सुपा ३४)।
चक्कणभय न [दे] नारंगी का फल (दे ३, ७)।
चक्कणाहय न [दे] ऊर्मि, तरङ्ग, कल्लोल (दे ३, ६)।
चक्कम, **चक्कम्म** अक [भ्रम्] घूमना, भटकना, भ्रमण करना। चक्कमइ (दे २, ६)। चक्कम्मइ (हे ४, १६१)। वकृ. चक्कमंत (स ६१०)।
चक्कम्मविअ वि [भ्रमित] घुमाया हुआ, फिराया हुआ (कुमा)।
चक्कय देखो **चक्क** (पण्ण १)।
चक्कल न [दे] कुण्डल, कर्ण का आभूषण। २ दोलाफलक, हिंडोला का पटिया (दे ३, २०)। ३ वि. वर्तुल, गोलाकार पदार्थ (दे

३, २०; भवि; वज्जा ६४; आवम; षड्)। ४ विशाल, विस्तीर्ण (दे ३, २०; भवि)।

चक्कलिअ वि [दे] चक्राकार किया हुआ (से ११, ६८; स ३८४; गउड)। °भिण्ण वि [°भिन्न] गोलाकार खण्ड, गोल टुकड़ा (बृह १)।

चक्कवाई स्त्री [चक्रवाकी] चक्रवाक-पक्षी का मादा, चकवी, चकई (रंभा)।

चक्कवाग } पुं [चक्रवाक] पक्षि-विशेष,
चक्कवाय } चकवा (णाया १, १; पण्ह १, १; स ३३७; कप्पू; स्वप्न ५१)।

चक्कवाल न [चक्रवाल] १ चक्राकार भ्रमण, 'रीइज्ज न चक्कवालेण' (पुप्फ १७८)। २ मण्डल, चक्राकार पदार्थ, गोल वस्तु (पण्ण ३६; औप; णाया १, १६)। ३ गोल जलाशय; 'संसारचक्कवाले' (पच्च ५२)। ४ गोल जल-समूह, जल राशि; 'जह खुहियचक्कवाले पोयं रयणभरियंसमुद्दम्मि। निज्जामगा धरिंती' (पच्च ७६)। ५ आवश्यक कार्य, नित्य-कर्म (पंचव ४) ६ समूह, राशि, ढेर (आउ)। ७ पुं. पर्वत-विशेष (ठा १०)। °विक्खंभ पुं [°विष्कम्भ] चक्राकार घेरा, गोल परिधि (भग; ठा २, ३)। °सामायारी स्त्री [°सामाचारी] नित्य-कर्म विशेष (पंचव ४)।

चक्कवाला स्त्री [चक्रवाला] गोल पंक्ति, चक्राकार श्रेणी (ठा ७)।

चक्काअ देखो चक्कवाय (हे १, ८)।

चक्काग न [चक्रक] चक्राकार वस्तु, 'चक्कागं भंजमाणस्स समो भंगो य दीसइ' (पण्ण १; पि १६७)।

चक्कार पुं [चक्कार] राक्षस वंश का एक राजा, एक लंकापति (पउम ५, २६३)। °बद्ध न [°बद्ध] शकट, गाड़ी (दस ५, १)।

चक्कावाय पुंन. देखो चक्कवाय 'मिलियाइं चक्कावायाइं' (स ७६८)।

चक्काह पुं [चक्राभ] सोलहवें जिन-देव का प्रथम शिष्य (सम १५२)।

चक्काहिव पुं [चक्राधिप] चक्रवर्ती राजा, सम्राट् (सण)।

चक्काहिवइ पुं [चक्राधिपति] ऊपर देखो (सण)।

चक्कि } वि [चक्रिन्, चक्रिक] १ चक्र-
चक्किय } वाला, चक्र-विशिष्ट। २ पुं. चक्रवर्ती राजा, सम्राट् (सण)। ३ तेली। ४ कुम्भार (कप्प; औप; णाया १,१)। °साला स्त्री [°शाला] तेल बेचने की दूकान (वव ९)।

चक्किय वि [चकित] भयभीत, 'समुद्दगंभीरसमा दुरासया, अचक्किया केणइ दुप्पहंसिया' (उत्त ११)।

चक्किय पुं [चाक्रिक] १ चक्र से लड़नेवाला योद्धा। २ भिक्षुक की एक जाति (औप; णाया १, १)।

चक्किया क्रि [शक्नुयात्] सके, कर सके, समर्थ हो सके (कप्प; कस; पि ४६५)।

चक्की स्त्री [चक्री] छन्द-विशेष (पिंग)।

चक्कुलंडा स्त्री [दे] सर्प की एक जाति (दे ३, ५)।

चक्केसर पुं [चक्रेश्वर] १ चक्रवर्त्ती राजा (भवि)। २ विक्रम की तेरहवीं शताब्दी का एक जैन ग्रन्थकार मुनि (राज)।

चक्केसरी स्त्री [चक्रेश्वरी] १ भगवान् आदिनाथ की शासनदेवी (संति ९)। २ एक विद्या-देवी (संति ५)।

चक्कोडा स्त्री [दे] अग्नि-भेद, अग्नि-विशेष (दे ३, २)।

चक्ख (अप) सक [आ + चक्ष्] कहना। चक्खइ (प्राकृ ११९)।

चक्ख सक [आ + स्वादय्] चखना, चीखना, स्वाद लेना। चक्खइ (पि २०२)। वकृ. चक्खंत (गा १७१)। कवकृ. चक्खिज्जंत, चक्खोअंत (पि २०२)। संकृ. चक्खिऊण (से १३, ३९)। हेकृ. चक्खिउं (वज्जा ४६)।

चक्खडिअ न [दे] जीवितव्य, जीवन (दे ३, ६)।

चक्खण न [आस्वादन] आस्वादन, चीखना (उप पृ २५२)।

चक्खिअ वि [अस्वादित] आस्वादित, चीखा हुआ (हे ४, २५८; गा ६०३; वज्जा ४६)।

चक्खिंदिय न [चक्षुरिन्द्रिय] नयनेन्द्रिय, आँख, चक्षु (उत्त २९, ६३)।

चक्खु पुंन [चक्षुष्] १ आँख, नेत्र, चक्षु (हे १, ३३; सुर ३, १५३; सम १)। २ पुं. इस नाम का एक कुलकर पुरुष (पउम ३, ५३)। ३ न. देखो नीचे °दंसण (कम्म ३, १७; ४, ६)। ४ ज्ञान, बोध (ठा ३, ४)। ५ दर्शन, अवलोकन (आचा)। °कंत पुं [°कान्त] देव-विशेष, कुण्डलोद समुद्र का अधिष्ठाता देव (जीव ३)। °कंता स्त्री [°कान्ता] एक कुलकर पुरुष की पत्नी (सम १५०)। °दंसण न [°दर्शन] चक्षु से वस्तु का सामान्य ज्ञान (सम १५)। °दंसणवडिया स्त्री [°दर्शनप्रतिज्ञा] आँख से देखने का नियम, नयनेन्द्रिय का संयम (निचू ९; आचा २, २)। °दय वि [°दय] ज्ञान-दाता (सम १; पडि)। °पडिलेहा स्त्री [°प्रतिलेखा] आँख से देखना (निचू १)। °परिन्नाण न [°परिज्ञान] रूप-विषयक ज्ञान, आँख से होनेवाला ज्ञान (आचा)। °पह पुं [°पथ] नेत्र-मार्ग, नयन-गोचर (पण्ह १, ३)। °फास पुं [°स्पर्श] दर्शन, अवलोकन (औप)। °भीय वि [°भीत] अवलोकन मात्र से ही डरा हुआ (आचा)। °म, °मंत वि [°मत्] १ लोचन-युक्त, आँखवाला (विसे)। २ पुं. एक कुलकर पुरुष का नाम (सम १५०)। °लोल वि [°लोल] देखने का शौकीन, जिसकी नयनेन्द्रिय संयत न हो वह (कस)। °लोलुय वि [°लोलुप] वही पूर्वोक्त अर्थ (कस)। °ल्लोयणलेस्स वि [°लोकनलेश्य] सुरूप, सुन्दर रूपवाला (राय; जीव ३)। °विचिहय वि [वृत्तिहत] दृष्टि से अपरिचित (वव ८)। °स्सव पुं [°श्रवस्] सर्प, साँप (स ३३४)।

चक्खुडुण न [दे] प्रेक्षणक, तमाशा (दे २, ४)।

चक्खुय देखो चक्खुस (आवम)।

चक्खुरक्खणी स्त्री [दे] लज्जा, शरम (दे ३, ७)।

चक्खुस वि [चाक्षुष] आँख से देखने योग्य वस्तु, नयन-ग्राह्य (पण्ह १, १; विसे ३३११)।

चक्खुहर वि [चक्षुर्हर] दर्शनीय (राय १०२)।

चगोर देखो चुओर (प्राकृ)।

चच्च सक [चर्च्] चन्दन आदि का विलेपन करना । चच्चेई (धर्मवि १५)।

चच्च पुं [चर्च] हेमाचार्य के पिता का नाम (कुप्र २०)।

चच्च पुं [चर्च] समालम्भन, चन्दन वगैरह का शरीर में उपलेप (दे ६, ७६)।

चच्चर न [चत्वर] चौहट्टा, चौरास्ता, चौराहा, चौक (णाया १,१; पण्ह १,३; सुर १,६२; (हे २, १२; कुमा)।

चच्चरिअ पुं [दे. चञ्चरीक] भ्रमर, भौंरा (षड्)।

चच्चरिया स्त्री [चर्चरिका] १ नृत्य-विशेष (रंभा)। २ देखो **चच्चरी** (स ३०७)।

चच्चरी स्त्री [चर्चरी] १ गीत-विशेष, एक प्रकार का गान; 'वित्थरियचच्चरीरवमुहरियउ-जाणभूभागे' (सुर ३,५४); 'पारंभियचच्चरी-गीया' (सुपा ५५)। २ गानेवाली टोली, गानेवालों का यूथ; 'पवत्ते मयणमहूसवे निग्गयासु विचित्तवेसासु नयरचच्चरीसु', 'कहं नीयचच्चरी अम्हाण चच्चरीए समासन्नं परिव्वयइ' (स ४२)। ३ छन्द-विशेष (पिंग)। ४ हाथ की ताली की आवाज (आव १)।

चच्चसा स्त्री [दे] वाद्य-विशेष, 'अट्ठसयं चच्च-साणं, अट्ठसयं चच्चसावायगाणं' (राय)।

चच्चा स्त्री [दे] १ शरीर पर सुगन्धि पदार्थ का लगाना, विलेपन (दे ३, १६; पाअ; जं १; णाया १, १; राय)। २ तल-प्रहार, हाथ की ताली (दे ३, १६; षड्)।

चच्चार सक [उपा + लभ्] उपालम्भ देना, उलाहना देना । चच्चारइ (षड्)।

चच्चिक्क वि [दे] १ मण्डित, विभूषित; 'चंदुज्जयचच्चिक्का दिसाउ' (दे ३, ४); 'तरुणप्पहापडलचच्चिक्को' (धम्म ६ टी); 'साहू गुणरयणचच्चिक्का' (चउ ३६)। २ पुंन. विलेपन; चन्दनादि सुगन्धि वस्तु का शरीर पर मसलना (हे २, ७४); 'चच्चिक्को' (षड्); 'कुकुंमचच्चिक्कछुरियंगो' (पउम २८, २८ टी); 'पेच्छइ सुवन्नकलसं सुरचंदण-पंकचच्चिक्कं' (उप ७६८ टी); 'घणलेहिद-पंकचच्चिक्को' (मृच्छ ११०)।

चच्चिय वि [चर्चित] विलिप्त (चेइय ८४५)।

चच्चुप्प सक [अर्पय्] अर्पण करना, देना । चच्चुप्पइ (हे ४, ३९)।

चच्छ सक [तक्ष्] छिलना, काटना । चच्छइ (हे ४, १९४)।

चच्छिअ वि [तष्ट] छिला हुआ (कुमा)।

चज्ज सक [दृश्] देखना, अवलोकन करना । चज्जइ (दे ३, ४; षड्)।

चज्जा स्त्री [चर्या] १ आचरण, वर्तन । २ चलन, गमन । ३ परिभाषा, संकेत (विसे २०४४)।

चज्जिय वि [दृष्ट] अवलोकित, देखा हुआ (महा)।

चटुअ देखो **चट्टुअ** (गा १६२)।

चट्ट सक [दे] चाटना, अवलेह करना; 'न य अलोणियं सिलं कोइ चट्टेइ' (महा)।

चट्ट पुंन [दे] १ भूख, बुभुक्षा; 'जीवंति उदहिपडिआ, चट्टुच्छिन्ना न जीवंति' (सूक्त ७०)। २ पुं. चट्टा, विद्यार्थी । °साला स्त्री [°शाला] चटशाला, चटसार, छोटे बालकों की पाठशाला (बृह १)।

चट्टि वि [चट्टिन्] चाटनेवाला (कप्पू)।

चट्टु, **चटटुअ**, **चट्टुल** पुं [दे] दारु-हस्त, काठ की कलछी, परोसने का पात्र-विशेष (दे ३, १; गा १६२ अ)।

चड सक [आ + रुह्] चढ़ना, ऊपर बैठना, आरूढ़ होना । चडइ (हे ४, २०६)। संकृ. चडिउं, चडिऊण (सुपा ११४; कुमा)।

चड पुं [दे] शिखा, चोटी (दे ३, १)।

चडक्क पुंन [दे] १ चटत्कार, चटका (हे ४, ४०६; भवि)। २ शस्त्र-विशेष (पउम ७, २९)।

चडक्कारि वि [चटत्कारिन्] 'चटत्' शब्द करनेवाला (पवन आदि) (गउड)।

चडग देखो **चडय** (पण्ण १)।

चडगर पुं [दे] १ समूह, यूथ, जत्था (पउम ६०, १५; णाया १, १—पत्र ४६)। २ आडम्बर, आटोप; 'महया चडगरत्तणेणं अत्थकहा हणइ' (दसनि ३)।

चडचड पुं [चडचड] 'चड-चड' आवाज (विपा १, ६)।

चडचडचड अक [चडचडाय्] 'चड-चड' आवाज करना । चडचडचडंति (विपा १, ६)।

चडड पुं [चटट] ध्वनि-विशेष, बिजली के गिरने की आवाज (सुर २, ११०)।

चडण न [आरोहण] चढ़ना, ऊपर बैठना (श्रा १४; प्रासू १०१; उप ७२८ टी; ओघ ३०; सट्ठि १४२; वज्जा ५४)।

चडपड अक [दे] चटपटाना, छटपटाना, क्लेश पाना । वकृ. चडपडंत (मुद्रा ७२)।

चडय पुंस्त्री [चटक] पक्षि-विशेष, गौरैया पक्षी (दे २, १०७)। स्त्री. °या (दे ८, ३६)।

चडवेला स्त्री देखो **चवेडा** (पण्ह १, ३—पत्र ५३)।

चडावण न [आरोहण] चढ़ना (उप १५२)।

चडाविय वि [आरोहित] चढ़ाया हुआ, ऊपर स्थापित; 'रणखंभउरजिणहरे चडाविया कणयमयकलसा' (मुणि १०८०१; सुर १३, ३६; महा)।

चडाविय वि [दे] प्रेषित, भेजा हुआ; 'चाउद्दिसिपि तेणं चडावियं साहणं तआ सोवि' (सुपा ३६५)।

चडिअ वि [आरूढ] चढ़ा हुआ, आरूढ़ (सुपा १३७; १५३; १५६; हे ४, ४४५)।

चडिआर पुं [दे] आटोप, आडम्बर (दे ३, ५)।

चडु पुं [चटु] १ प्रिय वचन, प्रिय वाक्य । २ व्रती का एक आसन । ३ उदर, पेट । ४ पुंन. प्रिय संभाषण, खुशामद (हे १, ६७; प्राप्र)। °आर वि [°कार] खुशामद करने-वाला, खुशामदी (पण्ह १, ३)। °आरअ वि [°कारक] खुशामदी (गा ६०५)।

चडुकारि वि [चटुकारिन्] खुशामदी (पिंड ४१४)।

चडुत्तरिया स्त्री [दे] १ उतरचढ़ । २ वाद-विवाद (मोह ७)।

चडुयारि देखो **चडुकारि** (पिंड ४८६)।

चडुल वि [चटुल] १ चंचल, चपल (से २, ४५; पउम ४२, १६)। २ कंपवाला, हिलता हुआ (से १, ५२)।

चडुलग वि [दे. चटुलक] खण्ड-खण्ड किया हुआ, 'विदुलगचडुलगछिन्ने' (सूअनि ७१)।

चडुला स्त्री [दे] रत्न-तिलक, सोने की मेखला में लटकता हुआ रत्न-निर्मित तिलक (दे ३, ८)।

चडुलातिलय न [दे] ऊपर देखो (दे ३, ८)।

चडुलिया स्त्री [दे] अन्त भाग में जला हुआ घास का पूला, घास की आँटी (णंदि)।

चड्ड सक [मृद्] मर्दन करना, मसलना। चड्डइ (हे ४, १२६)। प्रयो. चड्डावए (सुपा ३३१)।

चड्ड सक [पिष्] पीसना। चड्डइ (हे ४, १८५)।

चड्ड सक [भुज्] भोजन करना, खाना। चड्डइ (हे ४, ११०)।

चड्डु न [दे] तैल-पात्र, जिसमें दीपक किया जाता है; गुजराती में 'चाडुं' (सुपा ६३८; बृह १)।

चड्डण न [भोजन] १ भोजन, खाना। २ खाने की वस्तु, खाद्य-सामग्री (कुमा)।

चड्डावली स्त्री [चड्डावल्ली] इस नाम की एक नगरी, जहाँ श्रीधनेश्वर मुनि ने विक्रम की ग्यारहवीं सदी में 'सुरसुंदरी-चरित्र' नामक प्राकृत-काव्य रचा था (सुर १६, २४९)।

चड्डिअ वि [मृदित] मसला हुआ, जिसका मर्दन किया गया हो वह (कुमा)।

चड्डिअ वि [पिष्ट] पीसा हुआ (कुमा)।

चढ देखो चड = आ + रुह्। संकृ. चढिऊण (सम्मत्त १५९)।

चढण देखो चडण (संबोध २८)।

चण } पुं [चणक] चना, अन्न-विशेष
चणअ } (जं ३; कुमा; गा ५५७; दे १, २१)।

चणइया स्त्री [चणकिका] मसूर, अन्न-विशेष (ठा ५, ३)।

चणग देखो चणअ (सुपा ६३१; सुर ३, १४८)। °**गाम** पुं [°ग्राम] ग्राम-विशेष, गौड़ देश का एक ग्राम (राज)। °**पुर** न [°पुर] नगर-विशेष, राजगृह-नगर का असली नाम (राज)।

चणयग्गाम देखो चणग-गाम (धर्मवि ३८)।

चणोट्ठिया स्त्री [दे] गुंजा। गु० 'चणोठी', देखो कोणेट्ठिया (अनु० वृ० हारि० पत्र ७६)।

चत्त पुंन [दे] तर्कू, तकुआ, सूत बनाने का यन्त्र, तकली (दे ३, १; धर्म २)।

चत्त वि [त्यक्त] छोड़ा हुआ, परित्यक्त (पण्ह २, १; कुमा १, १६)। २ सूत की आँटी (प्रश्नव्या० ८०, १)।

चत्तर देखो चच्चर (पि २९९; नाट)।

चत्ता देखो चत्तालीसा (उवा)।

चत्ता स्त्री [चर्चा] १ शरीर पर सुगन्धी वस्तु का विलेपन। २ विचार, चर्चा (प्राकृ ३८)।

चत्ताल वि [चत्वारिंश] चालीसवाँ (पउम ४०, १७)।

चत्तालीस न [चत्वारिंशत्] १ चालीस, ४०; 'चत्तालीसं विमाणावाससहस्सा पण्णत्ता' (सम ६६; कप्प)। २ वि. चालीस वर्ष की उम्रवाली; 'चत्तालीसस्स विन्नाणं' (तंदु)।

चत्तालीसा स्त्री [चत्वारिंशत्] चालीस, ४०; 'तीसा चत्तालीसा' (पण्ण २)।

चत्थरि पुंस्त्री [दे. चत्तरि] हास, हास्य (दे ३, २)।

चपेटा स्त्री [दे. चपेटा] कराघात, थप्पड़, तमाचा (षड्)।

चप्प सक [आ + क्रम्] आक्रमण करना, दबाना। संकृ. चप्पिवि (भवि)।

चप्प सक [चर्च्] १ अध्ययन करना। २ कहना। ३ भर्त्सना करना। ४ चन्दन आदि से विलेपन करना। चप्पइ (प्राकृ. ७५ संक्षि ३५)।

चप्पडग न [दे] काष्ठ-यन्त्र-विशेष (पण्ह १, ३—पत्र ५३)।

चप्परण न [दे] तिरस्कार, निरास (गु ६)।

चप्पलअ वि [दे] १ असत्य, झूठा (कुमा ८, ७९)। २ बहुमिथ्यावादी, बहुत झूठ बोलने-वाला (षड्)।

चप्पिय वि [आक्रान्त] आक्रान्त, दबाया हुआ (भवि)।

चप्पुडिया } स्त्री [चप्पुटिका] चपटी, चुटकी,
चप्पुडी } अंगुष्ठ के साथ अंगुली की ताली (णाया १, ३—पत्र ९५; दे ८, ४३)।

चप्फल } न [दे] शेखर-विशेष, एक तरह
चप्फलय } का शिरोभूषण। २ वि. असत्य, झूठा, मिथ्याभाषी (दे ३, २०; हे ३, ३८; कुमा ८, २५)।

चमक्क पुं [चमत्कार] विस्मय, आश्चर्य; 'संजणियजणचमक्को' (धम्म ६ टी; उप ७६८ टी)। °**यर** वि [°कर] विस्मय-जनक (सण)।

चमक्क } सक [चमत् + कृ] विस्मित
चमक्कर } करना, आश्चर्यान्वित करना। चमक्केइ, चमक्कंति (विवे ४३; ४८) वकृ. **चमक्करंत** विक्र ६६)।

चमक्कार पुं [चमत्कार] आश्चर्य, विस्मय (सुर १०, ८; वज्जा २४)।

चमक्किअ वि [चमत्कृत] विस्मित, आश्चर्यान्वित (सुपा १२२)।

चमड } सक [भुज्] भोजन करना, खाना।
चमढ } चमडइ (षड्) चमढइ (हे ४, ११०)।

चमढ सक [दे] १ मर्दन करना, मसलना। २ प्रहार करना। ३ कदर्थन करना, पीड़ना। ४ निन्दा करना। ५ आक्रमण करना। ६ उद्विग्न करना, खिन्न करना। कवकृ. **चमढिज्जंत** (ओघ १२८ भा; बृह १)।

चमढण न [भोजन] भोजन, खाना (कुमा)।

चमढण न [दे] १ मर्दन, अवमर्दन (ओघ १८७ भा; स २२)। २ आक्रमण (स ५७६)। ३ कदर्थन, पीड़न। ४ प्रहार (ओघ १९३)। ५ निन्दा, गर्हण (ओघ ७९)। ६ वि. जिसकी कदर्थना की जाय वह (ओघ २३७)।

चमढणा स्त्री [दे] ऊपर देखो (बृह १)।

चमढिअ वि [दे] मर्दित, विनाशित (वव २)।

चमर पुं [चमर] पशु-विशेष, जिसके बालों का चामर या चँवर बनता है; 'वराहरुरुचमरसे-विए रण्णे' (पउम ९४, १०५; पण्ह १, १)। २ पुं. पाँचवें जिनदेव का प्रथम शिष्य (सम १५२)। ३ दक्षिण दिशा के असुरकुमारों का इन्द्र (ठा २, ३)। °**चंच** पुं [°चञ्च] चमरेन्द्र का आवास-पर्वत (भग १३, ६)। °**चंचा** स्त्री [°चञ्चा] चमरेन्द्र की राजधानी, स्वर्ग-पुरी-विशेष (णाया २)। °**पुर** न [°पुर] विद्याधरों का नगर-विशेष (इक)।

चमर पुंन [चामर] चँवर, चामर, बाल-व्यजन (हे १, ६७)। °**धारी**, °**हारी** स्त्री

[°धारिणी] चामर बीजने या डोलानेवाली स्त्री (सुपा ३३९; सुर १०, १५७)।

चमरी स्त्री [चमरी] चमर-पशु की मादा, सुरही गाय (से ७, ४८; स ४४१; औप; महा)।

चमस पुंन [चमस] चमचा, कलछी, दर्वी (औप; महा)।

चमुक्कार पुं [चमत्कार] १ आश्चर्य, विस्मय; 'पेच्छागयसुरकिन्नरचित्तचमुक्कारकारयं' (सुर १३, ६७)। २ बिजली का प्रकाश; 'ताव य विज्जुचमुक्कारणंतरं चंडचडडसंसद्दो' (सुर २, ११०)।

चमू स्त्री [चमू] १ सेना, सैन्य, लश्कर (आवम)। २ सेना-विशेष, जिसमें ७२९ हाथी, ७२९ रथ, २१८७ घोड़े और ३६४५ पैदल हों ऐसा लश्कर (पउम ५६, ६)।

चम्म न [चर्मन्] छाल, त्वक्, चमड़ा, खाल (हे १, ३२; स्वप्न ७०; प्रासू १७१)। °किड वि [°किट] चमड़े से सीआ हुआ (भग १३, ९)। °कोस, °कोसय पुं [कोश, °क] १ चमड़े का बना हुआ थैला २ एक तरह का चमड़े का जूता (ओघ ७२८; आचा २, २, ३; वव ८)। °कोसिया स्त्री [°कोशिका] चमड़े की बनी हुई थैली (सूअ २, २)। °खंडिय वि [°खण्डिक] १ चमड़े का परिधानवाला। २ सब उपकरण चमड़े का ही रखनेवाला (णाया १, १५)। °ग वि [°क] चमड़े का बना हुआ चर्ममय (सूअ २, २)। °पक्खि पुं [°पक्षिन्] चमड़े की पांखवाला पक्षी (ठा ४, ४—पत्र २७१)। °पट्ट पुं [°पट्ट] चमड़े का पट्टा, वध्र (विपा १, ६)। °पाय न [°पात्र] चमड़े का पात्र (आचा २, ६, १)। °यर पुं [°कर] मोची, चमार (स २८६; दे २, ३७)। °रयण न [°रत्न] चक्रवर्ती का रत्न-विशेष, जिससे सुबह में बोये हुए शालि वगैरह उसी दिन पक कर खाने योग्य हो जाते हैं (पव २१२)। °रुक्ख पुं [°वृक्ष] वृक्ष-विशेष (भग ८, ३)।

चम्मट्ठि स्त्री [चर्मयष्टि] चर्म-मय यष्टि, चर्म-दण्ड, चमड़ा लगी हुई छड़ी (कप्पू)।

चम्मट्ठिअ अक [चर्मयष्टीय्] चर्म-यष्टि की तरह आचरण करना। वकृ. **चम्मट्ठिअंत** (कप्पू)।

चम्मट्ठिल पुं [चर्मास्थिल] पक्षि-विशेष (पण्ह १, १)।

चम्मार पुं [चर्मकार] चमार, मोची (विसे २९८८)।

चम्मारय पुं [चर्मकारक] ऊपर देखो (प्राप)।

चम्मिय वि [चर्मित] चर्म से बँधा हुआ, चर्म-वेष्टित (औप)।

चम्मेट्ठ पुं [चर्मेष्ट] प्रहरण-विशेष, चमड़े से वेष्टित पाषाणवाला आयुध (पण्ह १, १)।

चम्मेट्ठग पुंस्त्री [चर्मेष्टक] शस्त्र-विशेष (राय २१)। स्त्री. °गा (अणु १७५)।

चय सक [त्यज्] छोड़ना, त्याग करना। चयइ (प्राप्र; हे ४, ८६)। कर्म. चइज्जइ (उव)। वकृ. चयंत (सुपा ३८८)। संकृ. चइअ, चइउं, चिच्चा, चइऊण, चइत्ता, चइत्ताणं, चइत्तु (कुमा; उत्त १८; महा; उवा; उत्त १)। कृ. चइयव्व (सुपा ११६; ४०५; ५२१)।

चय सक [शक्] सकना, समर्थ होना। चयइ (हे ४, ८६)। वकृ. **चयंत** (सूअ १, ३, ३; से ९, ५०)।

चय अक [च्यु] मरना, एक जन्म से दूसरे जन्म में जाना। चयइ (भवि), चयंति (भग)। वकृ. **चयमाण** (कप्प)।

चय पुं [चय] १ शरीर, देह (विपा १, १; उवा)। २ समूह, राशि, ढेर (विसे २२१९; सुपा ५७१; कुमा)। ३ इकट्ठा होना (अणु)। ४ वृद्धि (आचा)।

चय पुं [चय] ईंटों की रचना-विशेष (पिंड २)।

चय पुं [च्यव] च्यव, जन्मान्तर-गमन (ठा ८; कप्प)।

चयण न [चयन] १ इकट्ठा करना (पव २)। २ ग्रहण, उपादान (ठा २, ४)।

चयण न [त्यजन] त्याग, परित्याग (सट्ठि ३९)।

चयण न [च्यवन] १ मरण, जन्मान्तर-गमन (ठा १—पत्र १९)। २ पतन, गिर जाना। °कप्प पुं [°कल्प] १ पतन-प्रकार, चारित्र वगैरह से गिरने का प्रकार। २ शिथिल साधुओं का विहार (गच्छ १; पंचभा)।

चयण न [च्यवन] च्युति, भ्रंश, क्षय (तंदु ४१)।

चर सक [चर्] १ गमन करना, चलना, जाना। २ भक्षण करना। ३ सेवना। ४ जानना। चरइ (उव; महा)। भूका. चरिंसु (गउड)। भवि. चरिस्सं (पि १७३)। वकृ. **चरंत, चरमाण** (उत्त २; भग; विपा १, १)। संकृ. चरिअ, चरिऊण (नाट—मृच्छ १०; आवम)। हेकृ. **चरिउं, चारए** (ओघ ६५; कस)। कृ. चरियव्व (भग ९, ३३)। प्रयो, चारियव्व (पण्ण १७—पत्र ४९७)।

चर पुं [चर] १ गमन, गति। २ वर्तन (दंस; आवम ३ दूत, जासूस (पाअ; भवि)।

चर पुं [चर] जंगम प्राणी (कुप्र २४)।

°चर वि [°चर] चलनेवाला (आचा)।

चरंती स्त्री [चरन्ती] जिस दिशा में भगवान् जिनदेव वगैरह ज्ञानी पुरुष विचरते हों वह (वव १)।

चरग पुं [चरक] १ देखो चर = चर। २ संन्यासियों का झुण्ड विशेष, यूथबंध घूमने वाले त्रिदण्डियों की एक जाति (भग; गच्छ २)। ३ भिक्षुकों की एक जाति (पण्ण २०)। ४ दंश-मशकादि जन्तु (राज)।

चरचरा स्त्री [चरचरा] 'चर-चर' आवाज (स २५७)।

चरड पुं [चरट] लुटेरे की एक जाति (धम्म १२ टी; सुपा २३२; ३३३)।

चरण पुंन [चरण] १ संयम, चारित्र; 'सम्मत्तनाणचरणा पत्तेयं अट्ठअट्ठभेइल्ला' (संबोध २२)। २ आचरण (सुमनि १२४)।

चरण न [चरण] १ संयम, चारित्र, व्रत, नियम (ठा ३, १; ओघ २; विसे १)। २ चरना, पशुओं का तृणादि-भक्षण (सुर २, ३)। ३ पद्य का चौथा हिस्सा (पिंग)। ४ गमन, विहार (णंदि; सूअ १, १०, २)। ५ सेवन, आदर (जीव २)। ६ पाद, पाँव

(३, ७)। °करण न [°करण] संयम का मूल और उत्तर गुण (सूअ १, १ सम्म १६४)। °करणाणुओग पुं [°करणानुयोग] संयम के मूल और उत्तर गुणों की व्याख्या (निचू १५)। °कुसील पुं [°कुशील] चारित्र को मलिन करनेवाला साधु, शिथिलाचारी साधु (पव २)। °णय [°नय] क्रिया को मुख्य माननेवाला मत (आचा)। °मोह पुंन [°मोह] चारित्र का आवारक कर्म-विशेष (कम्म १)।

चरम वि [चरम] १ अन्तिम, अन्त का, पर्यन्तवर्त्ती (ठा २, ४; भग ८, ३; कम्म ३, १७; ४, १६; १७)। २ अनन्तर भव में मुक्ति पानेवाला। ३ जिसका विद्यमान भव अन्तिम हो वह (ठा २, २)। °काल पुं [°काल] मरणसमय (पंचव ४)। °जलहि पुं [°जलधि] अन्तिम समुद्र, स्वयंभूरमण समुद्र (लहुअ २)।

चरमंत पुं [चरमान्त] सब से अन्तिम, सब से प्रान्त-वर्त्ती (सम ६६)।

चरय देखो **चरग** (औप; णाया १, १५)।

चरि पुंस्त्री [चरि] १ पशुओं को चरने की जगह। २ चारा, पशुओं को खाने की चीज, घास (कुप्र १७)।

चरिगा देखो **चरिया** = चरिका (राज)।

चरित्त न [चरित्र] १ चरित, आचरण। २ व्यवहार (भवि; प्रासू ४०)। ३ स्वभाव, प्रकृति (कुमा)।

चरित्त न [चरित्र] जीवन-कथा, जीवनी, कहानी (सम्मत्त १२०)।

चरित्त न [चारित्र] संयम, विरति, व्रत, नियम (ठा २, ४; ४, ४; भग)। °कप्प पुं [°कल्प] संयमानुष्ठान का प्रतिपादक ग्रन्थ (पंचभा)। °मोह पुंन [°मोह] कर्म-विशेष, संयम का आवारक कर्म (भग)। °मोहणिज्ज न [°मोहनीय] वही पूर्वोक्त अर्थ (ठा २, ४)। °चरित्त न [°चारित्र] आंशिक संयम, श्रावक-धर्म (पडि; भग ८, २)। °यार पुं [°चार] संयम का अनुष्ठान (पडि)। °रिय पुं [°र्य] चारित्र से आर्य, विशुद्ध चारित्रवाला, साधु, मुनि (पण्ण १)।

चरित्ति पुंस्त्री [चारित्रिन्] संयमवाला, साधु, मुनि (उप ६६६; पंचव १)।

चरिम देखो **चरम** (सुर १, १०; ओप; भग; ठा २, ४)।

चरिय पुं [चरक] चर-पुरुष, जासूस, दूत (सुपा ५२८)।

चरिय न [चरित] १ चेष्टित, आचरण (औप; प्रासू ८६)। २ जीवनी, जीवन-चरित (सुपा २)। ३ चरित्र-ग्रन्थ (सुपा ६५८)। ४ सेवित, आश्रित (पण्ह १, ३)।

चरिया स्त्री [चरिका] १ परिव्राजिका, सन्यासिनी (ओघ ५६८)। २ किला और नगर के बीच का मार्ग (सम १३७; पण्ण १,१)।

चरिया स्त्री [चर्या] १ आचरण, अनुष्ठान, 'दुक्करचरिया मुणिवराणं' (पउम १४, १५२)। २ गमन, गति, विहार (सूअ १,१, ४)। ३ गाड़ी (आख्या० पत्र ११ गा. ६८)।

चरीया देखो **चरिया** = चर्या; 'तणफासो चरीया य दंसेक्कारस जोगिसु' (पंच ४,२०)।

चरु पुं [चरु] स्थाली-विशेष, पात्र-विशेष (औप; भवि)।

चरुगिणअ देखो **चारुइणअ** (इक)।

चरल्लेव न [दे] नाम, आख्या (दे ३, ३)।

चल सक [चल्] १ चलना, गमन करना। २ अक. कांपना, हिलना। चलइ (महा; गउड)। वकृ. चलंत, चलमाण (गा ३५६; सुर ३, ४०; भग)। हेकृ. चलिउं (गा ४८४)। प्रयो. संकृ. चलइत्ता (दस ५,१)।

चल वि [चल] १ चंचल, अस्थिर (स ४२०; वज्जा ६६)। २ पुं. रावण का एक सुभट (पउम ५६, ३६)।

चलचल वि [चलचल] १ चंचल, अस्थिर; 'चलचलयकोडिमोडणकराइं नयणाइं तरुणीणं' (वज्जा ६०)। २ पुं. घी में तली जाती हुई चीज का पहला तीन घान (निचू ४)।

चलण पुं [चरण] पाँव, पैर, पाद (औप; से ६, १३)। °मालिया स्त्री [°मालिका] पैर का आभूषण-विशेष (पण्ह २, ५; औप)। °वंदण न [°वन्दन] पैर पर सिर झुका कर प्रणाम, प्रणाम-विशेष (पउम ८, २०६)।

चलण न [चलन] चलना, गति, चाल, प्रथा, रिवाज (से ६, १३)।

चलणा स्त्री [चलना] १ चलन, गति। २ कम्प, हिलन (भग १६, ६)।

चलणाउह पुं [चरणायुध] कुक्कुट, मुर्गा (दे ३, ७)।

चलणाओह पुं [दे चरणायुध] ऊपर देखो (षड्)।

चलणिया स्त्री [चलनिका] नीचे देखो (ओघ ६७६)।

चलणिया } स्त्री [चलनिका, °नी] जैन
चलणी } साध्वियों को पहनने का कटि-वस्त्र (पव ६२)।

चलणी स्त्री [चलनी] १ साध्वियों का एक उपकरण (ओघ ३१५ भा)। २ पैर तक का कीच (जीव ३; भग ७, ६)।

चलवलण न [दे] चटपटाई, चंचलता (पउम १०२, ६)।

चलाचल वि [चलाचल] चंचल, अस्थिर (पउम ११२, ६)।

चलिंदिय वि [चलेन्द्रिय] इन्द्रिय-निग्रह करने में असमर्थ, जिसकी इन्द्रियां काबू में न हो वह (आचा २, ५, १)।

चलिअ न [चलित] १ विकलता, अस्थैर्य, चंचलता (पाअ)। २ वि. चला हुआ, कम्पित (आवम)। ३ प्रवृत्त (पाअ; औप)। ४ विनष्ट (धम्म २)।

चलिर वि [चलितृ] चलनेवाला, अस्थिर, चपल, चंचल; 'चलिरभमराली' (उप ८८६; सुपा ७६; २५७; स ४१)।

चल्ल देखो **चल** = चल्। चल्लइ (हे ४, २३१; षड्)।

चल्लणग न [दे] जघनांशुक, कटि-वस्त्र (षड्)।

चल्लि स्त्री [दे] नाचते समय की एक प्रकार की गति (कप्पू)।

चल्लि स्त्री [दे] मदन-वेदना (संक्षि ४७)।

चल्लिअ देखो **चलिअ** (सुर २, ६१; उप पृ ५०)।

चव सक [कथय्] कहना, बोलना। चवइ (हे ४, २)। कर्म. चविज्जइ (कुमा)। वकृ. चवंत (भवि)।

चव अक [च्यु] मरना, जन्मान्तर में जाना। चवइ (हे ४, २३३)। संकृ. चविऊण (प्राकृ)। कृ. चवियव्व (ठा ३, ३)।

चव पुं [च्यव] मरण, मौत; 'मन्नंता अपुणच्चवं, (उत्त ३, १४)।

चवचव पुं [चवचव] 'चव-चव' आवाज, ध्वनि-विशेष (ओघ २८६ भा)।

चवण न [च्यवन] १ मरण, जन्मान्तर-प्राप्ति (सुर २, १३६; ७, ८; दं ४)। २ पतन, गिर जाना (बृह १)।

चवल वि [चपल] १ चंचल, अस्थिर (सुर १२, १३८; प्रासू १०३)। २ आकुल, व्याकुल (औप)। ३ पुं. रावण का एक सुभट (पउम ५६, ३६)।

चवल पुं [दे] अन्न-विशेष, बोड़ा (श्रा १८)।

चवलय पुं [दे] धान्य-विशेष, गुजराती में 'चोळा' (पव १५४)।

चवला स्त्री [चपला] विद्युत, बिजली (जीव ३)।

चविअ वि [च्युत] मृत, जन्मान्तर-प्राप्त (कुमा २, २६)।

चविअ वि [कथित] उक्त, कहा हुआ (भवि)।

चविआ स्त्री [चविका] वनस्पति-विशेष (पएण १७—पत्र ५३१)।

चविडा, चविला, चवेला } स्त्री [चपेटा] तमाचा, थप्पड़ (हे १, १४६; कुमा)।

चवेडी स्त्री [दे] १ श्लिष्ट कर-संपुट। २ संपुट, समुद्ग, डिब्बा (दे ३, ३)।

चवेण न [दे] वचनीय, लोकापवाद (दे ३, ३)।

चवेला देखो चविडा (प्राकृ)।

चव्व सक [चर्व्] चबाना (संक्षि ३४)।

चव्व (शौ) देखो चच्च = चर्च्। चव्वदि (प्राकृ ९३)।

चव्वक्किअ वि [दे] धवलित, चूने से पोता हुआ; 'चव्वक्किया य चुन्नेण नासिया (सुपा ४५५)।

चव्वण न [चर्वण] चबाना (दे ७, ८२)।

चव्वाइ देखो चव्वागि (राज)।

चव्वाक, चव्वाग } पुं [चार्वाक] नास्तिक, बृहस्पति का शिष्य, लोकायतिक (प्रबो ७८; राज)।

चव्वागि वि [चार्वाकिन्] १ चबानेवाला। २ दुर्व्यवहारी (वव ३)।

चव्विय वि [चर्वित] चबाया हुआ (सुर १३, १२३)।

चस सक [चष्] चखना, आस्वाद लेना। वकृ. चसंद (शौ) (रंभा)। हेकृ. चसिदुं (शौ) (रंभा)।

चसग, चसय } पुं [चषक] १ दारू पीने का प्याला (जं ५; पाअ)। २ पान-पात्र, प्याला (सुर २, ११; पउम ११३, १०)। ३ पक्षि-विशेष (दे ६, १४५)।

चहुंतिया स्त्री [दे] चुटकी, चुटकीभर; 'जोगचुएणचहुंतियामेत्तपक्खेवेण' (काल)।

चहुट्ट अक [दे] चिपकना, चिपटना, लगना; गुजराती में 'चोंटवु'; 'रे मूढ तुह अकज्जे लीलाइ चहुट्टए जहा चित्तं' (संवेग १६)। चहुट्टइ (कुप्र २४६)।

चहुट्ट वि [दे] १ निमग्न, लीन (दे ३, २; वजा ३८); 'मण-भमरो-पुण तीए मुहारविंदे-च्चिय चहुट्टो' (उप ७२८ टी)।

चहुट्ट, चहुट्टिय } वि [दे] चिपका हुआ, लगा हुआ (धर्मवि १४१; उप ७२८ टी; कुप्र २७)।

चहोड पुं [दे] एक मनुष्य-जाति (भवि)।

चाइ वि [त्यागिन्] १ त्याग करनेवाला, छोड़नेवाला। २ दानी, दान देनेवाला, उदार (सुर १, २१७; ४, ११८)। ३ निःसंग, निरीह, संयमी (आचा)।

चाइय वि [त्याजित] छोड़वाया हुआ (धर्मवि ८)।

चाइय वि [शकित] जो समर्थ हुआ हो (पउम ७, १२१; सूअ १, १४); 'सव्वोवाएहि जया घेत्तूण न चाइया सुरिंदेणं। ताहे ते नेरइया' (पउम ११८, २४)।

चाउअंगी स्त्री [चावङ्गी] सुन्दर अंगवाली स्त्री (प्राकृ २६)।

चाउंड पुं [चामुण्ड] राक्षस-वंश का एक राजा, एक लङ्का-पति (पउम ५, २६३)।

चाउकाल न [चतुष्काल] चार वक्त, चार समय (विसे २५७६)।

चाउक्कोण वि [चतुष्कोण] चार कोनावाला, चतुरस्र (जीव ३)।

चाउग्घंट, चाउघंट } वि [चतुर्घण्ट] चार घंटावाला, चार घण्टाओं से युक्त (णाया १, १; भग ६, ३३; निर १)।

चाउज्जाम न [चातुर्याम] चार महाव्रत, साधु-धर्म—अहिंसा, सत्य, अस्तेय और अपरिग्रह ये चार साधु-व्रत (णाया १, ७; ठा ४, १)।

चाउज्जाय न [चातुर्जात] दालचीनी, तमालपत्र, इलायची और नागकेसर (उप पृ १०६; महा)।

चाउत्थिग देखो चाउत्थिय (उत्तनि ३)।

चाउत्थिय पुं [चातुर्थिक] रोग विशेष, चौथे-चौथे दिन पर होनेवाला ज्वर, चौथिया बुखार (जीव ३)।

चाउद्दसिया स्त्री [चतुर्दशिका] तिथि-विशेष, चतुर्दशी, चौदस; 'हीणपुएणचाउद्दसिया' (उवा)।

चाउद्दसी स्त्री [चतुर्दशी] ऊपर देखो (भग; जो ३)।

चाउद्दह (अप) त्रि. ब. [चतुर्दशन्] चौदह, १४ (पिंग)।

चाउद्दिसिं देखो चउ-द्दिसिं (महा; सुपा ३६५)

चाउप्पाय न [चतुष्पाद] चतुर्विध, चार प्रकार का (उत्त २०, २३; सुख २०, २३)।

चाउमास, चाउम्मास } पुंन [चातुर्मास] १ चौमासा, जैसे आषाढ़ से लेकर कार्तिक तक के चार महीने (उप पृ ३६०; पंचा १७)। २ आषाढ़, कार्तिक और फाल्गुन मास की शुक्ल चतुर्दशी; 'पक्खिए चाउमासे' (लहुअ १६)।

चाउम्मासिअ वि [चातुर्मासिक] १ चार मास सम्बन्धी, जैसे आषाढ़ से लेकर कार्तिक तक के चार महीने से सम्बन्ध रखनेवाला (णाया १, ५; सुर १४, २२८)। २ न. आषाढ़, कार्तिक और फाल्गुन मास की शुक्ल चतुर्दशी तिथि, पर्व-विशेष (श्रा ४७; अजि ३८)।

चाउम्मासी स्त्री [चातुर्मासी] चार मास, चौमासा, आषाढ से कार्तिक, कार्तिक से फाल्गुन और फाल्गुन से आषाढ़ तक के चार महीने (पउम ११८, ५८)।

चाउम्मासी स्त्री [चातुर्मासी] देखो चाउम्मासिअ (धर्म २; श्राव)।

चाउरंग देखो चउरंग (पउम २, ७५)।

चाउरंगि देखो चउरंगि (भग; णाया १, १—पत्र ३२)।

चाउरंगिज्ज वि [चतुरङ्गीय] १ चार अंगों से सम्बन्ध रखनेवाला। २ न. 'उत्तराध्ययन' सूत्र का एक अध्ययन (उत्त ४)।

चाउरंत देखो चउरंत (सम १; ठा ३, १; हे १, ४४)।

चाउरंत पुं [चातुरन्त] १ चक्रवर्ती राजा, सम्राट् (पण्ह १, ४) २ न. लग्न-मण्डप, चौरी (स ७८)।

चाउरंत न [चातुरन्त] भरत-क्षेत्र, भारतवर्ष (चेइय ३४०, ३४१)।

चाउरंत न [चतुरन्त] चक्र, पहिया (चेइय ३४४)।

चाउरक्क वि [चातुरक्य] चार बार परिणत। °गोखीर न [°गोक्षीर] चार बार परिणत किया हुआ गो-दूध, जैसे कतिपय गौओं का दूध दूसरी गौओं को पिलाया जाय, फिर उनका अन्य गौओं को, इस तरह चार बार परिणत किया हुआ गो-दुग्ध (जीव ३)।

चाउल वि [दे] चावल का, 'तहेव चाउलं पिट्ठं' (दस ५, २, २२)।

चाउल पुं [दे] चावल, तण्डुल, (दे ३, ८; आचा २, १, ३; ६; ८; उप पृ २३१; ओघ ३४४; सुपा ६३६; रयण ६०; कप्प)।

चाउल्लग न [दे] पुरुष का पुतला—कृत्रिम पुरुष (निचू १)।

चाउवण्ण देखो चाउवन्न (सम्मत्त १६२)।

चाउवन्न } वि [चातुर्वर्ण्य] १ चार वर्ण-
चाउव्वण्ण } वाला, चार प्रकार वाला। २ पुं. साधु, साध्वी, श्रावक और श्राविका का समुदाय (ठा ५, २—पत्र ३२१); 'चाउव्वण्णस्स समणसंघस्स' (पउम २०, १२०)। ३ न. ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र ये चार मनुष्य-जाति (भग १५)।

चाउव्विज्ज देखो चाउव्वेज्ज (ती ७)।

चाउव्वेज्ज न [चातुर्वैद्य] १ चार प्रकार की विद्या—न्याय, व्याकरण, साहित्य और धर्म-शास्त्र। २ पुं. चौबे, ब्राह्मणों का एक अल्ल—उपगोत्र या वर्ग; 'पउरचाउव्वेज्जलोएण' (महा)।

चाउस्साला स्त्री [चतुश्शाला] चारों तरफ के कमराओं से युक्त घर (पव १३३ टी)।

चाएंत देखो चाय = चय।

चाँउंडा स्त्री [चामुण्डा] स्वनाम-ख्यात देवी (हे १, १७४)। °काउअ पुं [°कामुक] महादेव, शिव (कुमा)।

चाग देखो चाय = त्याग (पंचव १)।

चागि देखो चाइ (उप पृ १०५)।

चाड वि [दे] मायावी, कपटी (दे ३, ८)।

चाडु पुंन [चाटु] १ प्रियवाक्य। २ खुशामद (हे १, ६७; प्राप्र)। °यार वि [°कार] खुशामदी (पण्ह १, २)।

चाडुअ न [चाटुक] ऊपर देखो; कुमा)।

चाणक्क पुं [चाणक्य] १ राजा चन्द्रगुप्त का स्वनाम-प्रसिद्ध मन्त्री (मुद्रा १४४)। २ एक मनुष्य-जाति (भवि)।

चाणक्की स्त्री [चाणक्यी] लिपि-विशेष (विसे ४६४ टी)।

चाणिक्क देखो चाणक्क (आक)।

चाणूर पुं [चाणूर] मल्ल-विशेष, जिसको श्रीकृष्ण ने मारा था (पण्ह १, ४; पिंग)।

चामर पुंन [चामर] चँवर, बाल-व्यजन (हे १, ६७)। २ छन्द-विशेष (पिंग)। °गाहि वि [°ग्राहिन्] चमर बीजनेवाला नौकर। स्त्री. °णी (भवि)। °च्छायण न [°च्छायन] स्वाति नक्षत्र का गोत्र (इक)। °ज्झय पुं [°ध्वज] चामर-युक्त पताका (औप)। °धार वि [°धार] चामर बीजनेवाला (पउम ८०, ३८)।

चामरच्छ न [चामरच्छ] गोत्र-विशेष (सुज्ज १०, १६)।

चामरा स्त्री. उपर देखो (औप; वसु; भग ९, ३३)।

चामीअर न [चामीकर] सुवर्ण, सोना (पाअ; सुपा ७७; णाया १, ४)।

चामुंडराय पुं [चामुण्डराज] गुजरात का एक चौलुक्य वंश का राजा (कुप्र ४)।

चामुंडा देखो चाँउंडा (विसे; पि)।

चाय देखो चय = शक्। वकृ. चायंत, चाएंत (सूअ १, ३, १; वव १)।

चाय देखो चाव (सुपा ५३०; से १४, १५; पिंग)।

चाय पुं [त्याग] १ छोड़ना, परित्याग (प्रासू ८; पंचव १)। २ दान (सुर १, ६५)।

चायग } पुं [चातक] पक्षि-विशेष, चातक-
चायय } पक्षी (सण; पाअ, दे ६, ६०)।

चार सक [चारय्] चराना, खिलाना। चारेइ (धर्मवि १४३)।

चार पुं [चार] १ गति, गमन; 'पायचारेण' (महा, उप पृ १२३; रयण १५)। २ भ्रमण, परिभ्रमण (स १६)। ३ चर-पुरुष, जासूस (विपा १, ३; महा; भवि)। ४ कारागार, कैदखाना (भवि)। ५ संचार, संचरण (औप)। ६ अनुष्ठान, आचरण (आचानि ४५; महा)। ७ ज्योतिष-क्षेत्र, आकाश (ठा २, २)।

चार पुं [दे] १ वृक्ष-विशेष, पियाल वृक्ष, चिरौंजी का पेड़ (दे ३, २१; अणु; पण्ण १६)। २ बन्धन-स्थान (दे ३, २१)। ३ इच्छा, अभिलाष (दे ३, २१, भवि; सुण ५११)। ४ न. फल-विशेष, मेवा-विशेष (पण्ण १६)। °वक्कय पुं [°क्रय] बेचने-वाले की इच्छानुसार दाम देकर खरीदना (सुपा ५११)।

चारए देखो चर = चर्।

चारग दे [चारक] देखो चार (औप; णाया १, १; पण्ह १, ३; उप ३५७ टी)। °पाल पुं [°पाल] जेलखाना का अध्यक्ष (विपा १, ६—पत्र ६५)। °पालग पुं [°पालक] कैदखाना का अध्यक्ष; जेलर (उप पृ ३३७)। °भंड न [°भाण्ड] कैदी को शिक्षा करने का उपकरण (विपा १, ६)। °ाहिव पुं [°ाधिप] कैदखाना का अध्यक्ष, जेलर (उप पृ ३३७)।

चारण पुं [दे] ग्रंथि-च्छेदक, पाकेटमार, चोर-विशेष (दे ३, ६)।

चारण पुं [चारण] १ आकाश में गमन करने की शक्ति रखनेवाले जैन मुनियों की एक जाति (औप; सुर ३, १५; अजि १६)। २ मनुष्य-जाति-विशेष, स्तुति करनेवाली जाति भाट (उप ७६८ टी; प्रामा)। ३ एक जैन मुनि-गण (ठा ६)।

चारणिआ स्त्री [चारणिका] गणित-विशेष (श्रोघ २१ टी)।
चारभड पुं [चारभट] शूर पुरुष, लड़वैया, सैनिक (पराह १, २; १, ३; बृह १)।
चारभड पुं [चारभट] लुटेरा (पिंड ५७६)।
चारय देखो **चारग** (सुपा २८७; ल १५)।
चारवाय पुं [दे] ग्रीष्म ऋतु का पवन (दे ३, ६)।
चारहड देखो **चारभड** (धम्म १२ टी, भवि)।
चारहडी स्त्री [चारभटी] शौर्यवृत्ति, सैनिक-वृत्ति (सुपा ४४१; ४४२; हे ४, ३९६)।
चारागार न [चारागार] कैदखाना, जेलखाना (सुर १६, १७)।
चारि स्त्री [चारि] चारा, पशुओं के खाने की चीज, घास आदि (श्रोघ २३८)।
चारि वि [चारिन्] १ प्रवृत्ति करनेवाला। (विसे २४३ टी; उव; आचा)। २ चलने वाला, गमन-शील (औप; कप्पू)।
चारिअ वि [चारित] १ जिसको खिलाया गया हो वह (से २, २७)। २ विज्ञापित, जताया हुआ (पराग १७—पत्र ४६७)।
चारिअ पुं [चारिक] १ चर पुरुष, जासूस (पराह १, २; पउम २६, ६५); 'चोरुत्ति चोरिउत्ति य होइ जओ परदारगामित्ति' (विसे २३७३)। २ पंचायत का मुखिया पुरुष, समुदाय का अगुआ (स ४०६)।
चारित्त देखो **चरित्त** = चारित्र (श्रोघ ६ भा; उप ६७७ टी)।
चारित्ति देखो **चरित्ति** (पुप्फ १५४)।
चारियव्व देखो **चर** = चर्।
चारिया स्त्री [चर्या] १ आचरण, इधर-उधर गमन, जीविका। २ चेष्टा (उत्त १६, ८१; ८२; ८४; ८५)।
चारी स्त्री [चारी] देखो **चारि** = चारि (स ४८७; श्रोघ २३८ टी)।
चारु वि [चारु] १ सुन्दर, शोभन, प्रवर (उवा; औप)। २ पुं. तीसरे जिनदेव का प्रथम शिष्य (सम १५२)। ३ न. प्रहरण-विशेष, शस्त्र-विशेष (जीव १; राय)।
चारुइणग पुं [चारुकिनक] १ देश-विशेष। २ वि. उस देश का निवासी (औप; अंत)। स्त्री. °णिया (औप)।
चारुणय पुं [चारुनक] ऊपर देखो (औप)। स्त्री. °णिया (औप; णाया १, १)।
चारुवच्छि पुं. ब. [चारुवत्सि] देश-विशेष (पउम ६८, ६४)।
चारुसेणी स्त्री [चारुसेनी] छन्द-विशेष (पिंग)।
चाल सक [चालय्] १ चलाना, हिलाना, कँपाना। २ विनाश करना। चालेइ (उव; स ४७४; महा)। कर्म. चालिज्जइ (उव)। वकृ. **चालंत, चालेमाण** (सुपा २२४; जीव ३)। कवकृ. **चालिज्जमाण** (णाया १, १)। हेकृ. **चालित्तए** (उवा)।
चालण न [चालन] १ चलाना, हिलाना (रंभा)। २ विचार (विसे १००७)।
चालण न [चालन] शंका, प्रश्न, पूर्वपक्ष (चेइय २७१)।
चालणा स्त्री [चालना] शंका, पूर्वपक्ष, आक्षेप (अणु; बृह १)।
चालणिया स्त्री [चालनिका] नीचे देखो (उप १३४ टी)।
चालणी स्त्री [चालनी] आखा, छानने का पात्र चलनी या छलनी (आवम)।
चालवास पुं [दे] सिर का भूषण-विशेष (दे ३, ८)।
चालिय वि [चालित] चलाया हुआ, हिलाया हुआ; 'पुप्फवईए चालियाए सियसंकेयपडागाए' (महा)।
चालिर वि [चालयितृ] १ चलानेवाला। २ चलनेवाला; 'खरपवणचाडुचालिरदवग्गिस-रिसेण पेम्मेण' (वज्जा ७०)।
चाली स्त्री [चत्वारिंशत्] चालीस, ४० (उवा)।
चालीस स्त्रीन [चत्वारिंशत्] चालीस, ४० (महा; पिंग) स्त्री. °सा (ति ५)।
चालुक्क पुंस्त्री [चौलुक्य] १ चालुक्य वंश में उत्पन्न। २ पुं. गुजरात का प्रसिद्ध राजा कुमारपाल (कुमा)।
चाव सक [चर्व्] चबाना। कृ. **चावयव्व** (उत्त १६, ३८)।
चाव पुं [चाप] धनुष, कार्मुक (स्वप्न ५५)।
चावल न [चापल] चपलता, चंचलता (अभि २४१)।
चावल्ल न [चापल्य] ऊपर देखो (स ५२६)।
चावाली स्त्री [चावाली] ग्राम-विशेष, इस नाम का एक गाँव (आवम)।
चाविय वि [चर्वित] चबाया हुआ (धर्मवि ४६; १४६)।
चाविय वि [च्यावित] मरवाया हुआ (पराह २, १)।
चावेडी स्त्री [चापेटी] विद्या-विशेष, जिससे दूसरे को तमाचा मारने पर बीमार आदमी का रोग चला जाता है (वव ५)।
चावेयव्व देखो **चाव** = चर्व्।
चावोण्णय न [चापोन्नत] विमान-विशेष, एक देव-विमान (सम ३६)।
चास पुं [चाष] पक्षि-विशेष, स्वर्ण-चातक, पपीहा, लहटोरवा (पराह १, १; पराग १७; णाया १, १; श्रोघ ८४ भा; उर १, १४)।
चास पुं [दे] चास, हल-विदारित भूमि-रेखा, खेती (दे ३, १)।
चाह सक [वाञ्छ्] १ चाहना, वाञ्छना। २ अपेक्षा करना। ३ याचना। चाहइ, चाहसि (भवि; पिंग)।
चाहिणी स्त्री [चाहिनी] हेमाचार्य की माता का नाम (कुप्र २०)।
चाहिय वि [वाञ्छित] १ वाञ्छित, अभि-लषित। २ अपेक्षित। ३ याचित (भवि)।
चाहुआण पुं [चाहुयान] १ एक प्रसिद्ध क्षत्रिय-वंश, चौहान वंश। २ पुंस्त्री. चौहान वंश में उत्पन्न (सुपा ५५६)।
चि देखो **चिण**। कर्म. चिव्वइ, चिम्मइ, चिज्जंति (हे ४, २४३; भग)।
चिअ अ [एव] निश्चय को बतलानेवाला अव्यय; 'अणुबद्धं तं चिअ कामिणीणं' (हे २, १८४; कुमा; गा १६, ४६; दं १)।
चिअ अ [इव] १—२ उपमा और उत्प्रेक्षा का सूचक अव्यय (प्राप्र)।
चिअ वि [चित] १ इकट्ठा किया हुआ (भग)। २ व्याप्त (सुपा २४१)। ३ पुष्ट, मांसल (उप ८७५ टी)।
चिअ न [चित] ईंट आदि का ढेर (अणु १५४)।
चिअ देखो **चित्त** = चित्त प्राकृ २६)।

चिआ स्त्री [त्विष्] कान्ति, तेज, प्रभा (षड्)।

चिआ देखो चियगा (सुपा २४१; महा)।

चिइ स्त्री [चिति] १ उपचय, पुष्टि, वृद्धि (पव २)। २ इकट्ठा करना (उत्त ६)। ३ बुद्धि, मेधा (पाग्र)। ४ भीत वगैरह बनाना। ५ चिता (पण्ह १, १—पत्र ८)। °कम्म न [°कर्मन्] वन्दन, प्रणाम-विशेष (ग्राव ३)।

चिइ देखो चेइअ (उप ५६७; चैत्य १२; पंचा १)।

चिइगा देखो चियगा (जं १)।

चिइच्छ सक [चिकित्स्] १ दवा करना, इलाज करना। २ शंका करना, संशय करना। चिइच्छइ (हे २, २१; ४, २४०)।

चिइच्छअ वि [चिकित्सक] १ दवा करनेवाला, इलाज करनेवाला। २ पुं. वैद्य (मा ३३)।

चिइय देखो चिंतियः 'जेण एस सुचरियतवोवि सुचिइयजिणिदवयणोवि' (महा)।

चिउर पुं [चिकुर] १ केश, बाल (गा १८८)। २ पीत रंग का गन्धद्रव्य-विशेष (पण्ण १७—पत्र ५२८; राय)।

चिंच } सक [मण्डय्] विभूषित करना,
चिंचअ } अलंकृत करना। चिंचइ, चिंचअइ (हे ४, ११५; षड्)।

चिंचइअ वि [मण्डित] शोभित, विभूषित, अलंकृत (पउम १५, १३; सुपा ८८; महा; पाग्र; प्राप; कुमा)।

चिंचइअ वि [दे] चलित, चला हुआ (दे ३, १३)।

चिंचणिआ }
चिंचणिगा } स्त्री [दे] देखो चिंचिणी (कुमा; सुपा १२; ५८३)।
चिंचणी }

चिंचगी स्त्री [दे] घरट्टिका, अन्न पीसने की चक्की (दे ३, १०)।

चिंचा स्त्री [चञ्चा] १ तृण की बनाई हुई चटाई वगैरह। °पुरिस पुं [°पुरुष] तृण का मनुष्य, जो पशु, पक्षी आदि को डराने के लिए खेतों में गाड़ा जाता है (सुपा १२४)।

चिंचा स्त्री [दे. चिञ्चा] इमली का पेड़ (दे ३, १०; पाग्र; विपा १, ६; सुपा १२४; ५८२; ५८३)।

चिंचिअ वि [मण्डित] भूषित, अलंकृत (कुमा)।

चिंचिणिआ }
चिंचिणिचिंचा } स्त्री [दे] इमली का पेड़ (ओघ २६; दे ३, १०; सुपा ५८४; पाग्र)।
चिंचिणी }

चिंचिल्ल सक [मण्डय्] विभूषित करना, अलंकृत करना। चिंचिल्लइ (हे ४, ११५; षड्)।

चिंचिल्लिअ वि [मण्डित] विभूषित, अलंकृत, सँवारा हुआ (पाग्र; कुमा)।

चिंत सक [चिन्तय्] १ चिन्ता करना, विचार करना। २ याद करना। ३ ध्यान करना। ४ फीकिर करना, अफसोस करना। चिंतेइ, चिंतेमि (उव; कुमा)। वकृ. चिंतंत, चिंतेंत, चिंतिंत, चिंतयंत, चिंतयमाण, चिंतेमाण (कुमा; उव; पउम १०, ४; अभि ५७; हे ४,३२२;३१०, सुर ४,२३)। कवकृ. चिंतिज्जंत (गा ६५१)। संकृ. चिंतिउं, चिंतिऊण (महा; गा ३५८)। कृ. चिंतणीय, चिंतियव्व, चिंतेयव्व (उप ७३२; पंचा २; पउम ३१, ७७; सुपा ४४५)।

चिंत वि [चिन्त्य] चिन्तनीय, विचारणीय, विचार-योग्य (उप ६८५)।

चिंतग वि [चिन्तक] चिन्ता करनेवाला, विचारक (उप पृ ३३३; ३३६ टी)।

चिंतण न [चिन्तन] १ विचार, पर्यालोचन (महा)। २ स्मरण, स्मृति (उत्त ३२; महा)।

चिंतणा स्त्री [चिन्तना] ऊपर देखो (उप ६८६ टी)।

चिंतणिया स्त्री [चिन्तनिका] याद करना, चिन्तन करना (ठा ५, ३)।

चिंतय वि [चिन्तक] चिन्ता करनेवाला (स ५६५; निर १, १)।

चिंतव देखो चिंत = चिंतय्। चिंतवइ (कुमा; भवि)।

चिंतविय वि [चिन्तित] जिसकी चिंता की गई हो वह (भवि)।

चिंता स्त्री [चिन्ता] १ विचार, पर्यालोचन (पाग्र; कुमा)। २ अफसोस, शोक, दिलगीरी (सुर २, १६१; सुग्र २. १; प्रासू ६१)। ३ ध्यान (ग्राव ४)। ४ स्मृति, स्मरण (णंदि)। ५ इष्ट-प्राप्ति का संदेह (कुमा)। °उर वि [°तुर] शोक से व्याकुल (सुर ६, ११६)। °दिट्ठ वि [दृष्ट] विचार-पूर्वक देखा हुआ (पाग्र)। °मइअ वि [°मय] चिन्ता-युक्तः 'सग्रणे चिंतामइग्रं काऊण पिग्रं' (गा १३३)। °मणि पुं [°मणि] १ मनोवाञ्छित अर्थ को देनेवाला रत्न-विशेष, दिव्य मणि (महा)। २ वीतशोक नगरी का एक राजा (पउम २०, १४२)। °वर वि [°पर] चिन्ता-मग्न (पउम १०, १३)।

चिंतायग } वि [चिन्तक] चिन्ता करनेवाला
चिंतावग } (ग्रावम)। स्त्री. °गा (सुपा २१)।

चिंतिय वि [चिन्तित] १ विचारित, पर्यालोचित (महा)। २ याद किया हुआ, स्मृत (णाया १, १; षड्)। ३ जिसको चिंता उत्पन्न हुई हो वह (जीव ३; ग्रौप)। ४ न. स्मरण, स्मृति (भग ६, ३३; ग्रौप)।

चिंतिर वि [चिन्तयितृ] चिन्ताशील, चिन्ता करनेवाला (श्रा २७; सण)।

चिंध न [चिह्न] १ चिह्न, लाञ्छन, निशानी (हे २, ५०; प्राप्र; णाया १, १६)। २ ध्वजा, पताका (पाग्र)। °पट्ट पुं [°पट्ट] निशानी रूप वस्त्र-खण्ड (णाया १, १)। °पुरिस पुं [°पुरुष] १ दाढ़ी-मूँछ वगैरह पुरुष की निशानी वाला नपुंसक, हिजड़ा। २ पुरुष का वेष धारण करनेवाली स्त्री वगैरह (ठा ३, १)।

चिंधाल वि [चिह्नवत्] चिह्नयुक्त, निशानीवाला (पउम १०६, ७)।

चिंधाल वि [दे] १ रम्य, सुन्दर, मनोहर। २ मुख्य, प्रधान, प्रवर (दे ३, २२)।

चिंधिय वि [चिह्नित] चिह्न-युक्त (पि २६७)।

चिंफुल्लणी स्त्री [दे] स्त्री का पहनने का वस्त्र-विशेष, लहँगा (दे ३, १३)।

चिकिच्छ देखो चिइच्छ। चिकिच्छामि (स ४८५)। कृ. चिकिच्छिअव्व (अभि १९७)।

चिकुर देखो चिउर (पि ५०६)।

चिक्क वि [दे] १ स्तोक, थोड़ा, अल्प। २ न. क्षुत्, छींक (षड्)।

चिक्कण वि [चिक्कण] चिकना, स्निग्ध (पण्ह १,१; सुपा ११)। २ निबिड, घना; 'जं पावं चिक्कणं तए बद्धं' (सुर १४, २०६)। ३ दुर्भेद्य, दुःख से छूटने योग्य (पण्ह १, १)।

चिक्का स्त्री [दे] १ थोड़ी चीज। २ हलकी मेघ-वृष्टि, सूक्ष्म छींटा (दे ३, २१)।

चिक्कार पुं [चीत्कार] चिल्लाहट, चिंघाड़ (सण)।

चिक्किण देखो **चिक्कण** (कुमा)।

चिक्खअण वि [दे] सहिष्णु, सहन करनेवाला (षड्)।

चिक्खल्ल पुं [दे] कर्दम, पंक, कीच (दे ३, ११; हे ३, १४२; पण्ह १, १)।

चिक्खल्लय न [चिक्खल्लक] काठियावाड़ का एक नगर (ती २)।

चिक्खिल्ल, **चिखल्ल**, **चिखिल्ल** [दे] देखो **चिक्खल्ल** (गा ६७; ३२४; ४४५; ६८४; औप)।

चिगिचिगाय अक [चिकचिकाय्] चकचकाट करना, चमकना। वकृ. **चिगिचिगायंत** (सुर २, ८६)।

चिगिच्छग देखो **चिइच्छअ** (विवे ३०)।

चिगिच्छण न [चिकित्सन] चिकित्सा, इलाज (उप १३५ टी)।

चिगिच्छय देखो **चिइच्छअ** (स २७८; णाया १, ५—पत्र १११)।

चिगिच्छा स्त्री [चिकित्सा] दवा, प्रतीकार, इलाज (स १७)। °**संहिया** स्त्री [°संहिता] चिकित्सा-शास्त्र, वैद्यक-शास्त्र (स १७)।

चिच्च वि [दे] १ चिपटी नासिकावाला, बैठी हुई नाकवाला (दे ३, ६)। २ न. रमण, संभोग, रति (दे ३, १०)।

चिच्च वि [त्याज्य] छोड़ने योग्य, परिहरणीय; 'खरकम्माइं पि चिच्चाइं' (सुपा ४६८)।

चिच्चर वि [दे] चिपटी नासिकावाला (दे ३, ६)।

चिच्चा देखो **चय** = त्यज्।

चिच्चि पुं [चिच्चि] चीत्कार, चिल्लाहट, भयंकर आवाज; 'चिच्चीसर—' (विपा १,२—पत्र २६)।

चिच्चि पुं [दे] हुताशन, अग्नि (दे ३, १०)।

चिट्ठं अ [दे] अत्यन्त, अतिशय (आचा १, ४, २, २)।

चिट्ठ अक [स्था] बैठना, स्थिति करना। चिट्ठइ (हे १, १६)। भूका. चिट्ठिसु (आचा)। वकृ. **चिट्ठंत, चिट्ठमाण** (कुमा; भग)। संकृ. **चिट्ठिउं, चिट्ठिऊण, चिट्ठिण, चिट्ठित्ता, चिट्ठित्ताण** (कप्प; हे ४, १६; राज; पि)। हेकृ. **चिट्ठित्तए** (कप्प)। कृ **चिट्ठणिज्ज, चिट्ठिअव्व** (उप २६४ टी; भग)।

चिट्ठ देखो **चेट्ठ**। वकृ. **चिट्ठमाण** (पंचा २)।

चिट्ठइत्तु वि [स्थातृ] बैठनेवाला, ठहरनेवाला (भग ११,११; दसा ३)।

चिट्ठण न [स्थान] खड़ा रहना (पव २)।

चिट्ठण न [चेष्टन] चेष्टा, प्रयत्न (हि २२)।

चिट्ठणा स्त्री [स्थान] स्थिति, बैठना, अवस्थान (बृह ६)।

चिट्ठा देखो **चेट्ठा** (सुर ४, २४५; प्रासू १२५)।

चिट्ठिय वि [चेष्टित] १ जिसने चेष्टा की हो वह (पण्ह १, ३; णाया १, १)। २ न. चेष्टा, प्रयत्न, (पण्ह २, ४)।

चिट्ठिय वि [स्थित] १ अवस्थित, रहा हुआ। २ न. अवस्थान, स्थिति (चंद २०)।

चिडिग पुं [चिटिक] पक्षि-विशेष (पण्ह १, १)।

चिण सक [चि] १ इकट्ठा करना। २ फूल वगैरह तोड़कर इकट्ठा करना। चिणइ (हे ४, २३८)। भूका. चिणिसु (भग)। भवि. चिणिहिइ (हे ४, २४३)। कर्म. चिणिज्जइ (हे ४, २४२)। संकृ. **चिणिऊण, चिणेऊण** (षड्)।

चिण देखो **चण** (श्रा १८)।

चिण देखो **चित्त** (प्राकृ २६)।

चिणिअ वि [चित] इकट्ठा किया हुआ (सुपा ३२३; कुमा)।

चिणोट्ठी स्त्री [दे] गुंजा, घुंघची, लाल रत्ती, गुजराती में 'चणोठी' (दे ३, १२)।

चिण्ण वि [चीर्ण] १ आचरित, अनुष्ठित (उत्त १३)। २ अंगीकृत, आहत (उत्त ३१)। ३ विहित, कृत (उत्त १३)।

चिण्ह न [चिह्न] निशानी, लांछन (हे २, ५०; गउड)।

चित्त सक [चित्रय्] चित्र बनाना, तसवीर खींचना। चित्तेइ (महा)। कवकृ. **चित्तिज्जंत** (उप पृ ३४१)।

चित्त न [चित्त] १ मन, अन्तःकरण, हृदय (ठा ४, १; प्रासू ६१; १५५)। २ ज्ञान, चेतना (आचा)। ३ बुद्धि, मति (अव ४)। ४ अभिप्राय, आशय (आचा)। ५ उपयोग, ख्याल (अणु)। °**ण्णु** वि [°ज्ञ] दिल का जानकार (उप पृ १७६)। °**निवाइ** वि [°निपातिन्] अभिप्राय के अनुसार बरतनेवाला (आचा)। °**मंत** वि [°वत्] सजीव वस्तु (सम ३६; आचा)।

चित्त देखो **चइत्त** = चैत्र (रंभा; जं २; कप्प)।

चित्त न [चित्र] १ छवि, आलेख्य, तसवीर (सुर १, ८६; स्वप्न १३१)। २ आश्चर्य, विस्मय (उत्त १३)। ३ काष्ठ-विशेष (अनु ५)। ४ वि. विलक्षण, विचित्र (गा ६१२; प्रासू ४२)। ५ अनेक प्रकार का, विविध, नानाविध (ठा १०)। ६ अद्भुत, आश्चर्यजनक (विपा १, ६; कप्प)। ७ कबरा, चितकबरा (णाया १, ८)। ८ पुं. एक लोकपाल (ठा ४, १—पत्र १९७)। ९ पर्वत-विशेष (पण्ह १, ५—पत्र ९४)। १० चित्रक, चीता, श्वापद विशेष (णाया १, १—पत्र ६५)। ११ नक्षत्र-विशेष, चित्रा नक्षत्र; 'हत्थो चित्तो य तहा, दस बुद्धिकराइं नाणस्स' (सम १७)। °**उत्त** पुं [°गुप्त] भरत क्षेत्र के एक भावी जिनदेव (सम १५४)। °**कणगा** स्त्री [°कनका] देवी-विशेष, एक विद्युत्कुमारी देवी (ठा ४, १)। °**कम्म** न [°कर्मन्] आलेख्य, छवि, तसवीर (गा ६१२)। °**कर** देखो °**गर** (अणु)। °**कह** वि [°कथ] नाना प्रकार की कथाएँ कहनेवाला (उत्त ३)। °**कूड** पुं [°कूट] १ सीतानदी के उत्तर किनारे पर स्थित एक वक्षस्कार-पर्वत (जं ४)। २ पर्वत-विशेष (पउम ३३, ६)। ३ न. नगर-विशेष, जो आजकल मेवाड़ में 'चित्तौड़' नाम से प्रसिद्ध है (रयण ६)। ४ शिखर-विशेष (ठा २, ३)। °**क्खरा** स्त्री [°क्षरा] छन्द-विशेष

(अजि २७)। °गर पुं [°कर] चित्रकार, चितेरा (सुर १, १०४; णाया १, ८)। °गुत्ता स्त्री [°गुप्ता] १ देवी-विशेष, सोम-नामक लोकपाल की एक अग्र-महिषी (ठा ४, १)। २ दक्षिण रुचक पर्वत पर बसनेवाली एक दिक्कुमारी, देवी-विशेष (ठा ८)। °पक्ख पुं [°पक्ष] १ वेणु-देव नामक इन्द्र का एक लोकपाल, देव-विशेष (ठा ४, १)। २ क्षुद्र जन्तु-विशेष, चतुरिन्द्रिय कीट-विशेष (जीव १)। °फल, °फलग, °फलय न [°फलक] तसवीरवाला तख्ता (महा; भग १५; पि ५११)। °भित्ति स्त्री [°भित्ति] १ चित्र-वाली भीत। २ स्त्री की तसवीर (दस ८)। °यर देखो °गर (णाया १, ८)। °रस पुं [°रस] भोजन देनेवाली कल्पवृक्षों की एक जाति (सम १७; पउम १०२, १२२)। °लेहा स्त्री [°लेखा] छन्द-विशेष (अजि १३)। °संभूइय न [°संभूतीय] चित्र और संभूत नामक चाण्डाल-विशेष के वृत्तान्त वाला 'उत्तराध्ययनसूत्र' का एक अध्ययन (उत्त १२)। °सभा स्त्री [°सभा] तसवीरवाला गृह (णाया १, ८)। °साला स्त्री [°शाला] चित्र-गृह (हेका ३३२)।

चित्तंग पुं [चित्राङ्ग] पुष्प देनेवाले कल्प-वृक्षों की एक जाति (सम १७)।

चित्तग देखो चित्त=चित्र (उप पृ ३०)।

चित्तजाणुअ देखो चित्त-ण्णु (प्राकृ १८)।

चित्तठिअ वि [दे] परितोषित, खुश किया हुआ (दे ३, १२)।

चित्तण न [चित्रण] चित्र-कर्म (धर्मवि ३४)।

चित्तदाउ पुं [दे] मधु-पटल, मधपुड़ा (दे ३, १२)।

चित्तपत्तय पुं [चित्रपत्रक] चतुरिन्द्रिय जीव की एक जाति (उत्त ३६, १४६)।

चित्तपरिच्छेय वि [दे] लघु, छोटा (भग, ७, ६)।

चित्तय देखो चित्त=चित्र (पाअ)।

चित्तयलया स्त्री [चित्रकलता] वल्ली-विशेष (हम्मीर २८)।

चित्तल वि [दे] १ मण्डित, विभूषित। २ रमणीय, सुन्दर (दे ३, ४)।

चित्तल वि [चित्रल] १ चितला, कबरा, चितकबरा (पाअ)। २ पुं. जंगली पशु-विशेष, हरिण के आकारवाला छिखुरा पशु-विशेष (जीव १, पण्ह १, १)।

चित्तलि पुंस्त्री [चित्रलिन्] साँप की एक जाति (पण्ण १)।

चित्तलिअ वि [चित्रलित, चित्रित] चित्र-युक्त किया हुआ, 'पढम व्विअ दिअहद्धे कुड्डो रेहाहिं चित्तलिओ' (गा २०८)।

चित्तविअअ वि [दे] परितोषित (षड्)।

चित्तवीणा स्त्री [चित्रवीणा] वाद्य-विशेष (राय ४६)।

चित्ता स्त्री [चित्रा] १ नक्षत्र-विशेष (सम २)। २ देवी-विशेष, एक विद्युत्कुमारी देवी (ठा ४, १)। ३ शक्रेन्द्र के एक लोकपाल की स्त्री, देवी-विशेष (ठा ४, १—पत्र २०४)। ४ औषधि-विशेष (सुर १०, २२३; पण्ण १७)।

चित्ताचिल्लडय } पुं [दे] जंगली पशु-विशेष
चित्ताचेल्लरय } (आचा २, १, ५, ३; ४)।

चित्तावडी स्त्री [चित्रपटी] वस्त्र-विशेष, छींट (बूटीदार) आदि कपड़ा; 'उवविट्ठा...चित्ता-वडिमसूरयम्मि विब्भमवई कमलया य' (स ७३८)।

चित्ति पुं [चित्रिन्] चित्रकार, चितेरा (कम्म १, २३)।

चित्तिअ वि [चित्रित] चित्र-युक्त किया हुआ (औप; कप्प; उप ३६१ टी; दे १, ७५)।

चित्तिया स्त्री [चित्रिका] स्त्री-चीता, श्वापद-विशेष की मादा (पण्ण ११)।

चित्ती देखो चेत्ती (सुज्ज १०, ७)।

चित्ती स्त्री [चैत्री] चैत्र मास की पूर्णिमा (इक)।

चिद्दविअ } वि [दे] निर्णाशित, विनाशित
चिद्दाविअ } (दे ३, १३; पाअ; भवि)।

चिन्न देखो चिण्ण (सुपा ४; सण; भवि)।

चिप्प सक [दे] १ कूटना। २ दबाना। कर्म. 'वि (? चि)-प्पिज्जसि जं तस्सिं केणावि गोमह-वसहेण' (दे २, ९६ टी)। संकृ. चिप्पित्ता (बृह २)।

चिप्पग पुंन [दे] कूटी हुई छाल; गुजराती में 'चेपो' (कस २, ३० टि)।

चिप्पड देखो चिविड (धर्मवि २७)।

चिप्पय देखो चिप्पग (कस २, ३० टि)।

चिप्पिअ पुं [दे] नपुंसक-विशेष, जन्म के समय में अंगूठे से मर्दन कर जिसका अंडकोश दबा दिया गया हो वह (पव १०९ टी)।

चिप्पिडय पुं [दे] अन्न-विशेष (दसा ६)।

चिबुअ न [चिबुक] होठ के नीचे का अव-यव, ठोढ़ी (कुमा)।

चिब्भड न [चिर्भिट] खीरा, ककड़ी, फल-विशेष, गुजराती में 'चीभडु' (दे ६, १४८)।

चिब्भडिया स्त्री [चिर्भिटिका] १ वल्ली-विशेष, ककड़ी का गाछ। २ मत्स्य की एक जाति (जीव १)।

चिब्भिड देखो चिब्भड (सुपा ६३०; पाअ)।

चिमिट्ठ } वि [चिपिट] चिपटा, बैठा हुआ,
चिमिढ } दबा हुआ (नाक) (णाया १, ८; पि २०७; २४८)।

चिमिण वि [दे] रोमश, रोमाञ्चित, पुलकित, गद्गद (दे ३, ११; षड्)।

चिय देखो चेइअ=चैत्य; 'सो अन्नया कयाइ चियपरिवाडिं कुणंतओ नयरे' (सम्मत्त १५६)।

चियका } स्त्री [चिता] मुर्दे को फूँकने के
चियगा } लिए चुनी हुई लकड़ियों का ढेर (पण्ह १, ३—पत्र ४५; सुपा ६५७; स ४१६)।

चियत्त देखो चत्त (भग २, ५; १०, २; कप्प, निचू १)।

चियत्त वि [दे] १ अभिमत, सम्मत (ठा ३, ३)। २ प्रीतिकर, राग-जनक (औप)। ३ प्रीति, रुचि। ४ अप्रीति का अभाव (ठा ३, ३—पत्र १४७)।

चियया देखो चियगा (पउम ६२, २३)।

चियाग } देखो चाय=त्याग (ठा ५, १;
चियाय } सम १६)।

चिर न [चिर] १ दीर्घ काल, बहुत काल (स्वप्न ८३; गा १४७)। २ विलम्ब, देरी (गा ३४)। ३ वि. दीर्घ काल तक रहनेवाला; 'हियइच्छियपियलंभा चिरा सया कस्स जायंति' (वज्जा ५२)। °आरअ वि [°कारक] विलम्ब करनेवाला (गा ३४)। °जीवि वि [°जीविन्] दीर्घ काल तक जीनेवाला (पि ५९७)। °जीविअ वि [°जीवित] दीर्घ काल तक जीया हुआ, वृद्ध (वाअ २, ३४)। °ट्ठिइ, °ट्ठिइय, °ट्ठिईय वि [°स्थितिक]

लम्बा आयुष्यवाला, दीर्घ काल तक रहनेवाला (भग; सूत्र १, ५, १); 'एयाइँ फासाइँ फुसंति बालं, निरंतरं तत्थ चिरट्ठिईयं' (सूअ १, ५, २)। °राअ पुं [°रात्र] बहु काल, दीर्घ काल (आचा)।
चिर अक [चिरय्] १ विलम्ब करना। २ आलस करना। चिरअदि (शौ) (पि ४९०)।
चिरं अ [चिरम्] दीर्घ काल तक, अनेक समय तक (स्वप्न २६; जी ४६)। °तण वि [°तन] पुराना, बहुत काल का (महा)।
चिरंचिय वि [चिरचित] चिरकाल से उपचित—इकट्ठा किया हुआ या बढ़ा हुआ (पंच ५, १६७)।
चिरडी स्त्री [दे] वर्ण-माला, अक्षरावली; 'चिरडिं पि अयाणंता लोआ लोएहिं गोरवब्भहिआ' (दे १, ६१)।
चिरड्डिहिल्ल [दे] देखो चिरिड्डिहिल्ल (पाअ)।
चिरमाल सक [प्रति + पालय्] परिपालन करना। चिरमालइ (प्राकृ ७५)।
चिरया स्त्री [दे] कुटी-झोपड़ी (दे ३, ११)।
चिरस्स अ [चिरस्य] बहुत काल तक (उत्तर १७६; कुमा)।
चिराअ देखो चिर = चिरय्। चिरायइ (स १२९)। चिराअसि (मै ६२)। भवि. चिराइस्सं (गा २०)। वकृ. चिराअमाण (नाट—मालती २७)।
चिराइय वि [चिरादिक] पुराना, प्राचीन (णाया १, १; औप)।
चिराईय वि [चिरातीत] पुराना, प्राचीन (विपा १,१)।
चिराउ अ [चिरात्] चिर काल से, लम्बे समय से (कुप्र ३६७)।
चिराणय (अप) वि [चिरन्तन] पुरातन, पुराना, प्राचीन (भवि)।
चिरादण वि [चिरन्तन] ऊपर देखो (बृह ३)।
चिराव अक [चिरय्] १ विलम्ब करना। २ आलस करना। ३ सक. विलम्ब कराना, रोक रखना चिरावइ (भवि)। चिरावेह (काल); 'मा णे चिरावेहि' (पउम ३,१२९)।
चिराविय वि [चिरायित] १ जिसने विलम्ब किया हो वह। २ विलम्बित, रोका गया। ३ न विलम्ब, देरी; 'भणिओ चंदाभाए किं अज्ज चिरावियं सामि!' (पउम १०५, १०१)।
चिरिंचिरा स्त्री [दे] जलधारा, वृष्टि (दे ३, १३)।
चिरिका स्त्री [दे] १ पानी भरने का चर्म-भाजन, मशक। २ अल्प वृष्टि। ३ प्रातः काल, सुबह (दे ३, २१)।
चिरिंचिरा [दे] देखो चिरिंचिरा (दे ३, १३)।
चिरिडी देखो चिरडी (गा १९१ अ)।
चिरिड्डिहिल्ल न [दे] दधि, दही (दे ३,१४)।
चिरिहिट्टी स्त्री [दे] गुञ्जा; घुंगची, लाल रत्ती (दे ३, १२)।
चिलाअ पुं [किरात] १ अनार्य देश-विशेष। २ किरात देश में रहनेवाली म्लेच्छ-जाति, भिल्ल, पुलिंद (हे १,१८३;२५४; पण्ह १,१; औप; कुमा)। ३ धन सार्थवाह (व्यापारी) का एक दास—नौकर (णाया १, १८)।
चिलाइया स्त्री [किरातिका] किरात देश की रहनेवाली स्त्री, किरातिन (णाया १, १)।
चिलाई स्त्री [किराती] ऊपर देखो (इक)। °पुत्त पुं [°पुत्र] एक दासी-पुत्र और जैन-महर्षि (पडि; णाया १, १८)।
चिलाद देखो चिलाअ (प्राकृ १२)।
चिलिचिलिआ स्त्री [दे] धारा, वृष्टि (षड्)।
चिलिचिलिय वि [दे] भीजा या भींगा हुआ, आर्द्रित, गीला (तंदु ३८)।
चिलिचिल्ल, चिलिच्चिल, चिलिच्चील वि [दे] आर्द्र, गीला (पण्ह १, ३—पत्र ४५; दे ३, १२)।
चिलिण [दे] देखो चिलीण; 'छक्कायसंजमम्मि अ चिलिणे सेहन्नहाभावो' (ओघ १६५)।
चिलिमिणी, चिलिमिलिगा, चिलिमिलिया, चिलिमिली स्त्री [दे] यवनिका, परदा, आच्छादन-पट (ओघ भा; सूअ २, २, ४८; कस; ओघ ७८; ८०)।
चिलीण न [दे] अशुचि, मैला, मल-मूत्र; 'सज्जंति चिलीणे मच्छियाओ घणचंदणं मोत्तुं' (उप १०३१ टी)।
चिल्ल पुं [दे] १ बाल, बच्चा, लड़का (दे ३, १०)। २ चेला, शिष्य (आवम)।
चिल्ल पुं [चिल्ल] १ वृक्ष-विशेष (राज)। २ न. पुष्प-विशेष।
'पूयं कुणंति देवा, कंचणकुसुमेसु जिणवरिंदाणं। इह पुण चिल्लदलेसुं, नरेण पूया विरइयव्वा॥' (पउम ६६, १९)।
चिल्ल न [दे] सूर्प, सूप, छाज (प्राकृ २८)।
चिल्लअ न [दे] देदीप्यमान, चमकता; 'मंडणोड्डणप्पगारएहिं केहिं केहिंवि अवंगतिलयपत्तलेहनामएहिं चिल्लएहिं' (अजि २८; औप)।
चिल्लग [दे] देखो चिल्लिय (पण्ह १, ४—पत्र ७१ टी)।
चिल्लड [दे] देखो चिल्लल (दे) (आचा २, ३, ३)।
चिल्लणा स्त्री [चिल्लणा] एक सती स्त्री, राजा श्रेणिक की पत्नी (पडि)।
चिल्लय न [दे] अपचक्षु, खराब आँख (पण्ह १, १ टी—पत्र २५)।
चिल्लल पुं [चिल्वल] १ अनार्य देश-विशेष। २ उस देश का निवासी (इक)।
चिल्लल पुंस्त्री [दे] १ श्वापद पशु-विशेष, चीता (पण्ह १, १—पत्र ७; णाया १,१—पत्र ६५)। स्त्री. °लिया (पण्ण ११)। न. काँदोवाला जलाशय, छोटा तलाव आदि (णाया १, १—पत्र ६३)। ३ देदीप्यमान, चमकता (णाया १, १६—पत्र २११)।
चिल्ला स्त्री [दे] चील, पक्षि-विशेष, शकुनिका (दे ३, ९; ८, ८; पाअ)।
चिल्लिय वि [दे] १ लीन, आसक्त (णाया १, १)। २ देदीप्यमान (णाया १, १; औप; कप्प)।
चिल्लिरि पुं [दे] मशक, मच्छर, क्षुद्र जन्तु-विशेष (दे ३, ११)।
चिल्लूर न [दे] मुसल, एक प्रकार की मोटी लकड़ी जिससे चावल आदि अन्न कूटे जाते हैं (दे ३, ११)।
चिल्हय पुं [दे] चक्र-मार्ग, पहिये की लकीर, गुजराती में 'चीलो' (सुपा २८०)।
चिविट्ट, चिविड वि [चिपिट] चिपटा, बैठा या धँसा हुआ (नाक); 'चिविडनासा' (पि २४८; पउम २७, ३२; गउड)।
चिविडा स्त्री [चिपिटा] गन्ध-द्रव्य-विशेष (दे ३, ७१)।
चिविढ देखो चिविड (सुर १३, १८१)।

चिहुर पुं [चिकुर] केश, बाल (पाग्र; सुपा २८१)।

चीअ } देखो चेइअ (हे १, १५१; सार्ध ५७; ६३)।
ची }

चीअ न [चिता] मुर्दे को फूँकने के लिए चुनी हुई लकड़ियों का ढेर; 'चीए बंधुस्स व अट्ठिआइं रुअई समुच्चिणइ' (गा १०४)।

चीइ देखो चेइअ (सुर ३, ७५)।

चीड वि [दे] काला काँच की मणिवाला (सिरि ६८०)।

चीण वि [चीन] १ छोटा, लघु; 'चीणचिमिढवंकभग्गणासं' (णाया १, ८—पत्र १३३)। २ पुं. म्लेच्छ देश-विशेष, चीन देश (पण्ह १, १; स ४४३)। ३ चीन देश का निवासी, चीनी या चीना (पण्ह १,१)। ४ धान्य-विशेष, व्रीहि का भेद (सण); 'चीणाकूरं छलिया-तक्केण दिन्नं' (महा)। °पट्ट पुं [°पट्ट] चीन देश में होनेवाला वस्त्र-विशेष (पण्ह १, ४)। °पिट्ठ न [°पिष्ट] सिन्दूर-विशेष (राय; पण्ण १७)।

चीणंसु } पुं [चीनांशु, °क] १ कीट-विशेष, जिसके तन्तुओं से वस्त्र बनता है (बृह १)। २ चीन देश का वस्त्र-विशेष; 'चीणंसुसमूसियधयविराइयं' (सुपा ३४; अणु; जं २)।
चीणंसुय }

चीया स्त्री. देखो चीअ = चिता; 'चीयाए पक्खिउं तत्तो उद्दीविओ जलणो' (सुर ६, ८८)।

चीर न [चीर] वस्त्र-खण्ड, कपड़े का टुकड़ा (ओघ ६३ भा; श्रा १२; सुपा ३६१)। °कंडूसगपट्ट पुं [°कण्डूसकपट्ट] जैन साधुओं का एक उपकरण, रजोहरण का बन्धन-विशेष (निचू ५)।

चीरग पुं [चीरक] नीचे देखो (गच्छ २)।

चीरिय पुं [चीरिक] १ रास्ता में पड़े हुए चीथड़ों को पहननेवाला भिक्षुक। २ फटा-टूटा कपड़ा पहननेवाली एक साधु-जाति (णाया १, १५—पत्र १९३)।

चीरिया स्त्री [चीरिका] नीचे देखो (सुर ८, १८८)।

चीरी स्त्री [चीरी] १ वस्त्र-खण्ड, वस्त्र का टुकड़ा; 'तो तेण नियवत्थंचलाउ चीरीउ करेऊण' (सुपा ५८४)। २ क्षुद्र कीट-विशेष, झींगुर (कुमा; दे १, २६)।

चीवट्टी स्त्री [दे] भल्ली, भाला, शस्त्र-विशेष (दे ३, १४)।

चीवर न [चीवर] वस्त्र, संन्यासियों या भिक्षुओं के पहनने का कपड़ा (सुर ८, १८८; ठा ५, २)।

चीहाडी स्त्री [दे] चीत्कार, चिल्लाहट, पुकार, हाथी की गर्जना या चिघाड़ना (सुर १०, १८२)।

चीही स्त्री [दे] मुस्ता का तृण-विशेष (दे ३, १४; ६२)।

चु अक [च्यु] १ मरना, जन्मान्तर में जाना। २ गिरना। भवि. चइस्सामि (कप्प)। संकृ. चइऊण, चइत्ता, चइअ (उत्त ६; ठा ८; भग)। कृ. चइयव्व (ठा ३, ३)।

चुअ अक [श्चुत्] झरना, टपकना। चुअइ (हे २, ७७)।

चुअ सक [त्यज्] त्याग करना, परिहार करना; 'एयमट्ठं मिगे चुए' (सूअ १, १, २, १२)।

चुअ वि [च्युत] १ च्युत, मृत, एक जन्म से दूसरे जन्म में अवतीर्ण (भग; महा; ठा ३, १)। २ विनष्ट; 'चुअकलिकलुसं' (अजि १८)। ३ भ्रष्ट, पतित (णाया १, ३)।

चुइ स्त्री [च्युति] च्यवन, मरण (राज)।

चुंकारपुर न [चुङ्कारपुर] एक नगर (सम्मत्त १४५)।

चुचुअ पुं [दे] शेखर, अवतंस, मस्तक का भूषण (दे ३, २६)।

चुंचुअ पुं [चुञ्चुक] १ म्लेच्छ देश-विशेष। २ उस देश में रहनेवाली मनुष्य जाति (इक)।

चुंचुण पुं [चुञ्चुन] इभ्य (धनी) जाति-विशेष, एक वैश्य-जाति (ठा ६—पत्र ३५८)।

चुंचुणिअ वि [दे] १ चलित, गत। २ च्युत, नष्ट (दे ३, २३)।

चुंचुणिआ स्त्री [दे] गोष्ठी की प्रतिध्वनि। २ रमण, रति, संभोग। ३ इमली का पेड़। ४ द्युत-विशेष, मुष्टि-द्यूत। ५ यूका, खटमल, क्षुद्र कीट-विशेष (दे ३, २३)।

चुंचुमालि वि [दे] १ अलस, आलसी, दीर्घ-सूत्री (दे ३, १८)।

चुंचुलि पुं [दे] १ चुञ्चु चोंच। २ चुलुक, पसर, एक हाथ का संपुटाकार (दे ३, २३)।

चुंचुलिअ वि [दे] १ अवधारित, निश्चित। २ न. तृष्णा, लालच, सस्पृहता (हे ३,२३)।

चुंचुलिपूर पुं [दे] चुलुक चुल्लू, पसर (दे ३, १८)।

चुंछ वि [दे] परिशोषित, सुखाया हुआ (दे ३, १५)।

चुंछिअ वि [दे] सूखा हुआ, परिशोषित; 'चुंछियगल्लं एयं, मा भत्तारं हला कुणसु' (सुपा ३४९)।

चुंट सक [चि] फूल वगैरह को तोड़ कर इकट्ठा करना। वकृ. चुंटंत (सुपा ३३२)।

चुंटिर वि [दे] चुननेवाला (दे ६, ११६ टी)।

चुंढी स्त्री [दे] थोड़ा पानीवाला अखात जला-शय (णाया १, १—पत्र ३३)।

चुंपालय [दे] देखो चुप्पालय;
'ताव य सेज्जासु ठिओ,
चंदगइखेयरो निसासमए।
चुंपालएण पेच्छइ,
निवडंतं रयणपज्जलियं'
(पउम २६, ८०)।

चुंब सक [चुम्ब्] चुम्बन करना। चुंबइ (हे ४, २३९)। वकृ. चुंबंत (गा १७६; ५१९)। कवकृ. चुबिज्जंत (से १, ३२)। संकृ. चुंबिवि (अप) (हे ४, ४३९)। कृ. चुंबिअव्व (गा ४६५)।

चुंबण न [चुम्बन] चुम्बन, चुम्बा चूमा (गा २१३; कप्पू)।

चुंबिअ वि [चुम्बित] १ चुम्बा लिया हुआ, कृत-चुम्बन। २ न. चुम्बन, चुम्बा (दे ६, ९८)।

चुंबिर वि [चुम्बितृ] चुम्बन करनेवाला (भवि)।

चुंभल पुं [दे] शेखर, अवतंस, शिरो-भूषण (दे ३, १६)।

चुक्क अक [भ्रंश्] १ चूकना, भूल करना। २ भ्रष्ट होना, रहित होना, वञ्चित होना। ३ सक. नष्ट करना, खण्डन करना। चुक्कइ (हे ४, १७७; षड्); 'सो सव्वविरइवाई, चुक्कइ देसं च सव्वं च' (विसे २६८४)।

चुक्क वि [भ्रष्ट] १ चूका हुआ, भूला हुआ, विस्मृत; 'चुक्कसंकेआ', 'चुक्कविणअम्मि' (गा ३१८; १६५)। भ्रष्ट, वञ्चित, रहित; 'दंसणमेत्तपसण्णे चुक्का सि सुहाण बहुआणं' (गा ४६५; चउ ३६; सुपा ८७)। ३ अन-वहित, बे-ख्याल (से १, ६)।

चुक्क पुं [दे] मुष्टि, मुट्ठी (दे ३, १४)।

चुक्कार पुं [दे] आवाज, शब्द (से १३, २५)।

चुक्कुड पुं [दे] छाग, बकरा, अज (दे ३, १६)।

चुक्ख [दे] देखो चोक्ख (सूक्त ४६)।

चुचुय } न [चूचुक] स्तन का अग्र भाग, चुच्चुय } थन का वृन्त, चूची (पण्ह १, ४; राय)।

चुचूय पुंन [चुचूक] स्तन का अग्र भाग, स्तनों की गोलाई, चूची (राय ६४)।

चुच्छ वि [तुच्छ] १ अल्प, थोड़ा, हलका। २ हीन, जघन्य, नगण्य (हे १, २०४; षड्)।

चुज्ज न [दे] आश्चर्य (दे ३, १४; सट्ठि ८३)।

चुडण न [दे] जीर्णता, सड़ जाना (ओघ ३४६)।

चुडलिअ न [दे] गुरु-वन्दन का एक दोष, रजोहरण को अज्ञात की तरह खड़ा रखकर वन्दन करना (गुभा २५)।

चुडली [दे] देखो चुडुली (पव २)।

चुडिली देखो चुडुली (तंदु ४६)।

चुडुप्प न [दे] १ खाल उतारना (दे ३, ३)। २ घाव, क्षत (गउड)। ३ चमड़ी, त्वचा (पाअ)।

चुडुप्पा स्त्री [दे] त्वचा, चमड़ी, खाल (दे ३, ३)।

चुडुली स्त्री [दे] उल्का, अलात, जलती हुई लकड़ी, उल्मुक (दे ३, १५; पाअ; सुर १३, १५६; स २४२)।

चुण सक [चि] चुनना, चुगना, पक्षियों का खाना। चुणइ (हे ४, २३८); 'काओ लिंबो-हलि चुणइ' (सूक्त ८६)।

चुणअ पुं [दे] १ चाण्डाल। २ बाल, बच्चा। ३ छन्द, इच्छा। ४ अरुचि, भोजन की अप्रीति। ५ व्यतिकर, सम्बन्ध। ६ वि. अल्प, थोड़ा। ७ मुक्त, त्यक्त। ८ आघ्रात, सूँघा हुआ (दे ३, २२)।

चुणिअ वि [दे] विधारित, धारण किया हुआ (दे ३. १५)।

चुण्ण सक [चूर्णय्] चूरना, टुकड़ा-टुकड़ा करना। संकृ. चुण्णिय (राज)।

चुण्ण पुंन [चूर्ण] १ चूर्ण, चूर, बुकनी, बारीक खण्ड (बृह १; हे १, ८४; आचा)। २ आटा, पिसान (आचा २,२,१)। ३ धूली, रज, रेणु (दे ३, १७)। ४ गन्ध द्रव्य का रज, बुकनी (भग ३, ७)। ५ चूना (हे १, ८४; विपा १, २)। ६ वशीकरणादि के लिए किया जाता द्रव्य-मिलान (णाया १, १४)। °कोसय न [°कोशक] भक्ष्य-विशेष (पण्ह २, ५)।

चुण्ण न [चौर्ण] पद-विशेष, गम्भीरार्थक पद, महार्थक शब्द (दसनि २)।

चुण्णइअ वि [दे] चूर्णाहत, चूरन से आहत; जिस प्रकार चूर्ण फेंका गया हो वह (दे ३, १७; पाअ)।

चुण्णग पुं [चूर्णक] वृक्ष-विशेष (आचा २, १०, २३)।

चुण्णा स्त्री [चूर्णा] छन्द-विशेष, वृत्त-विशेष (पिंग)।

चुण्णाआ स्त्री [दे] कला, विज्ञान (दे ३, १६)।

चुण्णासी स्त्री [दे] दासी, नौकरानी (दे ३, १६)।

चुण्णि स्त्री [चूर्णि] ग्रन्थ की टीका-विशेष (निचू)।

चुण्णिअ वि [चूर्णित] १ चूर-चूर किया हुआ (पाअ)। २ धूली से व्याप्त (दे ३, १७)।

चुण्णिआ स्त्री [चूर्णिका] भेद-विशेष, एक तरह का पृथग्भाव, जैसे पिसान का अवयव अलग-अलग होता है (पण्ण ११)।

चुण्णिय वि [चूर्णिक] गणित-प्रसिद्ध सर्वा-वशिष्ट अंश (सुज्ज १०, २२—पत्र १८५; १२—पत्र २१६)।

चुद्दस देखो चउ-द्दस (सुर ८, ११८)।

चुन्न देखो चुण्ण (कुमा; ठा ३, ४; प्रासू १८; भाव २; पभा ३१)।

चुन्नण न [चूर्णन] चूर-चूर करना (रवा ३)।

चुन्नि देखो चुण्णि (विचार ३५२; चंड)।

चुन्निअ देखो चुण्णिअ (पण्ह २, ४)।

चुन्निआ देखो चुण्णिआ (भास ७)।

चुप्प वि [दे] सस्नेह, स्निग्ध (दे ३, १५)।

चुप्पल पुं [दे] शेखर, अवतंस (दे ३, १६)।

चुप्पलिअ न [दे] नया रँगा हुआ कपड़ा (दे ३, १७)।

चुप्पालय पुं [दे] झरोखा, गवाक्ष, वातायन, जंगला (दे ३, १७)।

चुरिम न [दे] खाद्य-विशेष (पव ४)।

चुलचुल अक [चुलचुलाय्] उत्कण्ठित होना, उत्सुक होना। वकृ. चुलचुलंत (गा ४८१)।

चुलणी स्त्री [चुलनी] १ द्रुपद राजा की स्त्री (णाया १, १६; उप ६४८ टी)। २ ब्रह्मदत्त चक्रवर्त्ती की माता (महा)। °पिय पुं [°पितृ] भगवान् महावीर का एक मुख्य उपासक (उवा)।

चुलसी स्त्री [चतुरशीति] चौरासी; अस्सी और चार, ८४ (महा; जी ४७); 'चुलसीए नागकुमारावाससयसहस्सेसु' (भग)।

चुलसीइ देखो चुलसी (पउम २०, १०२, जं २)।

चुलिआला स्त्री [चुलियाला] छन्द विशेष (पिंग)।

चुलुअ पुंन [चुलुक] चुल्लू, पसर, एक हाथ का संपुटाकार (दे ३, १८; सुपा २१६; प्रासू ५७)।

चुलुक्क देखो चालुक्क (दे १, ८४ टी)।

चुलुचुल अक [स्पन्द्] फड़कना, फरकना, थोड़ा हिलना। चुलुचुलइ (हे ४, १२७)।

चुलुचुलिअ वि [स्पन्दित] १ फरका हुआ, कुछ हिला हुआ। २ न. स्फुरण, स्पन्दन (पाअ)।

चुलुप्प पुं [दे] छाग, अज, बकरा (दे ३, १६)।

चुल्ल पुं [दे] १ शिशु, बालक। २ दास, नौकर (दे ३, २२)। ३ वि. छोटा, लघु (ठा २, ३)। °ताय पुं [°तात] पिता का छोटा भाई, चाचा (पि ३२५)। °पिउ पुं

[°पितृ] चाचा, पिता का छोटा भाई (विपा १,३)। °माउया स्त्री [°मातृ] १ छोटी माँ, माता की छोटी सपत्नी, विमाता, सौतेली माँ (उप २६४ टी; णाया १, १; विपा १, ३)। २ चाची, पिता के छोटे भाई की स्त्री (विपा १, ३—पत्र ४०)। °सगय, °सयय पुं. [°शतक] भगवान् महावीर के दश मुख्य उपासकों में से एक (उवा)। °हिमवंत पुं [हिमवन्] छोटा हिमवान् पर्वत, पर्वत-विशेष (ठा २, ३; सम १२; इक)। °हिमवंतकूड न [°हिमवत्कूट] १ क्षुद्र हिमवान्-पर्वत का शिखर-विशेष। २ पुं. उसका अधिपति देव-विशेष (जं ४)। °हिमवंतगिरिकुमार पुं [°हिमवद्गिरिकुमार] देव-विशेष, जो क्षुद्र हिमवत्कूट का अधिष्ठायक है (जं ४)।

चुल्लग न [दे] संदूक (कुप्र २२७; २२८)।

चुल्लग [दे] देखो **चोल्लक** (आक)।

चुल्लि, चुल्ली स्त्री [चुल्लि, °ल्ली] चूल्हा, जिसमें आग रखकर रसोई की जाती है वह (दे १, ८७; सुर २, १०३)।

चुल्ली स्त्री [दे] शिला, पाषाण-खण्ड (दे ३, १५)।

चुल्लुच्छल अक [दे] छलकना, उछलना; 'चुल्लुच्छलेइ जं होइ ऊणयं, रित्तयं कणकणेइ। भरियाइं ण खुब्भंती सुपुरिसविन्नाणभंडाइं।' (सुअनि ६६ टी)।

चुल्लोडय पुं [दे] बड़ा भाई (दे ३, १७)।

चूअ पुं [दे] स्तन-शिखा, थन का अग्र भाग, चूची (दे ३, १८)।

चूअ पुं [चूत] १ वृक्ष-विशेष, आम्र, आम का गाछ (गउड; भग; सुर ३, ४८)। २ देव-विशेष (जीव ३)। °वडिंसग न [°ावतंसक] सौधर्म विमान-विशेष (राय)। °वडिंसा स्त्री [°ावतंसा] शक्रेन्द्र की एक अग्र-महिषी, इन्द्राणी-विशेष (इक; जीव ३)।

चूआ स्त्री [चूता] शक्रेन्द्र की एक अग्र-महिषी, इन्द्राणी-विशेष (इक; ठा ४, २)।

चूचुअ पुंन [चूचुक] स्तन का अग्र-भाग (प्राकृ ११)।

चूड पुं [दे] चूड़ा, बाहु-भूषण, वलयावली (दे ३, १८; ७, ५२; ५६; पाअ)।

चूडा देखो **चूला** (सुर २, २४२; गउड; णाया १, १; सुपा १०४)।

चूडुल्लअ (अप) देखो **चूड** (हे ४, ३९५)।

चूर सक [चूरय्, चूर्णय्] खण्ड करना, तोड़ना, टुकड़ा-टुकड़ा करना। चूरेमि (धम्म ६ टी)। भवि. चूरइस्सं (पि ५२८)। वकृ. **चूरंत** (सुपा २६१; ५६०)।

चूर (अप) पुंन [चूर्ण] चूर, भुरभुर; 'जिह गिरिसिंगहु पडिअ सिल, अन्नुवि चूरु करेइ' (हे ४, ३३७)।

चूरण देखो **चुन्नण** (कुप्र २०३)।

चूरिअ वि [चूर्ण, चूर्णित] चूर-चूर किया हुआ, टुकड़ा-टुकड़ा किया हुआ (भवि)।

चूरिम पुंन [दे] मिठाई विशेष, चूर्मा लड्डू (पव ४ टी)।

चूल° देखो **चूला**। °**मणि** न [°मणि] विद्याधरों का एक नगर (इक)।

चूलअ [दे] देखो **चूड** (नाट)।

चूला स्त्री [चूडा] १ चोटी, सिर के बीच की केश-शिखा (पाअ)। २ शिखर, टोंच; 'अवि चलइ मेरुचूला' (उप ७२८ टी)। ३ मयूर-शिखा। ४ कुक्कुट-शिखा। ५ शेर की केसरा। ६ कुंत वगैरह का अग्र भाग। ७ विभूषण, अलंकार;
'तिविहा य दव्वचूला, सच्चित्ता मीसगा य अच्चित्ता।
कुक्कुड सीह मोरसिहा, चूलामणि अग्गकुंतादी।
चूला विभूसणंति य, सिहरंति य होंति एगट्ठा'
(निचू १)।
८ अधिक मास। ९ अधिक वर्ष। १० ग्रन्थ का परिशिष्ट (दसचू १)। °**कम्म** न [°कर्मन्] संस्कार-विशेष, मुण्डन (आवम)। °**मणि** पुंस्त्री [°मणि] १ सिर का सर्वोत्तम आभूषण विशेष, मुकुट-रत्न, शिरो-मणि (औप; राय)। २ सर्वोत्तम, सर्व-श्रेष्ठ; 'तिलायचूलामणि नमो ते' (धण १)।

चूलिय पुं [चूलिक] १ अनार्य देश-विशेष। २ उस देश का निवासी (पण्ह १, १)। ३ क्लीन. संख्या विशेष, चूलिकांग को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह (इक; ठा २, ४)। स्त्री. °**या** (राज)।

चूलियंग न [चूलिकाङ्ग] संख्या-विशेष, प्रयुत को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह (ठा २, ४; जीव ३)।

चूलिया देखो **चूला** (सम ६६; सुर ३, १२; णंदि; निचू १; ठा ४, ४)।

चूव (अप) देखो **चूअ** (भवि)।

चूह सक [क्षिप्] फेंकना, डालना, प्रेरणा। चूहइ (षड्)।

चे अ [चेत्] यदि, जो, अगर (उत्त १६); 'एवं च कओ तित्थं, न चेदचेलोत्ति को गाहो?' (विसे २५८६)।

चे देखो **चय** = त्यज्। चेइ, (आचा)। संकृ. **चेच्चा** (कप्प; औप)।

चे, चेअ देखो **चि**। चेइ, चेअइ, चेए, चेअए (षड्)।

चेअ अक [चित्] १ चेतना, सावधान होना, ख्याल रखना। २ सुध आना, स्मरण करना, याद आना। चेयइ (स ५३८)। ३ सक. जानना। ४ अनुभव करना। चेयए (आवम)।

चेअ सक [चेतय्] १ ऊपर देखो। २ देना, अर्पण करना, वितरण करना। ३ करना, बनाना; 'जो अंतरायं चेएइ' (सम ५१)। चेराइ, चेएसि, चेएमि (आचा)। वकृ. **चेते[ए]माण** (ठा ५, २—पत्र ३१४; सम ३९)।

चेअ अ [एव] अवधारण सूचक अव्यय, निश्चय बतानेवाला अव्यय (हे २, १८४)।

चेअ न [चेतस्] १ चेत, चेतना, ज्ञान, चैतन्य (विसे १९९१; भग १६)। २ मन, चित्त, अन्तःकरण (दस ५, १; ठा ६, २)।

चेइ पुं [चेदि] देश-विशेष (इक; सत्त ६७ टी)। °**वइ** पुं [°पति] चेदि देश का राजा (पिंग)।

चेइ°, चेइअ पुंन [चैत्य] १ चिता पर बनाया हुआ स्मारक, स्तूप, कबर या कब्र वगैरह स्मृति चिह्न; 'मडयदाहेसु वा मडयथूभियासु वा मडयचेइएसु वा' (आचा २, २, ३)। २ व्यन्तर का स्थान, व्यन्तरायतन (भग; उवा; राय; निर १, १; विपा १, १; २)। ३ जिन-मन्दिर, जिन-गृह, अर्हन्मन्दिर (ठा ४, २—पत्र ४३०; पंचभा; पंचा १२; महा; द्र ४; २७); 'पडिमं कासी य चेइए रम्मे' (पव ७९)। ४ इष्ट देव की मूर्ति,

अभीष्ट देवता की प्रतिमा; 'कल्लाणं मंगलं चेइयं पज्जुवासामो' (औप; भग)। ५ अर्हं-त्प्रतिमा, जिन-देव की मूर्त्ति (ठा ३, १; उवा; पराह २, ३; आव २; पडि); 'बिइएणं उप्पाएणं नंदीसरवरे दीवे समोसरणं करेइ, तहिं चेइयाइं वंदइ' (भग २०, ६); 'जिण-बिंबे मंगलचेइयंति सयण्णुणो बिंति' (पव ७६)। ६ उद्यान, बगीचा; 'मिहिलाए चेइए वच्छे सीअच्छाए मणोरमे' (उत्त ६.६)। ७ सभा-वृक्ष, सभा-गृह के पास का वृक्ष। ८ चबूतरा-वाला वृक्ष। ६ देवों का चिह्न-भूत वृक्ष। १० वह वृक्ष जहाँ जिनदेव को केवल ज्ञान उत्पन्न होता है (ठा ८; सम १३;१५६)। ११ वृक्ष, पेड़; 'वाएण हीरमाणम्मि चेइयम्मि मणोरमे' (उत्त ६, १०)। १२ यज्ञ स्थान। १३ मनुष्यों का विश्राम-स्थान (षड्; हे २, १०७)। °खंभ पुं [°स्तम्भ] स्तूप, थूभ, (सम ६३; राय; सुज्ज १८)। °घर न [°गृह] जिन-मन्दिर; अर्हन्मन्दिर (पउम २, १२; ६४, २६)। °जत्ता स्त्री [°यात्रा] जिन-प्रतिमा-सम्बन्धी महोत्सव-विशेष (धर्म ३)। °थूभ पुं [°स्तूप] जिन-मन्दिर के समीप का स्तूप (ठा ४, २; ज १)। °दव्व न [°द्रव्य] देव-द्रव्य, जिन-मन्दिर-संबंधी स्थावर या जंगम मिल्कत (वव ६; पञ्चभा; उप ४०७; द्र ४)। °परिवाडी स्त्री [°परि-पाटी] क्रम से जिन मन्दिरों की यात्रा (धर्म २)। °मह पुं [°मह] चैत्य-सम्बन्धी उत्सव (आचा २, १, २)। °रुक्ख पुं [°वृक्ष] १ चबूतरावाला वृक्ष, जिसके नीचे चौतरा बांधा हो ऐसा वृक्ष। २ जिन-देव को जिसके नीचे केवल ज्ञान उत्पन्न होता है वह वृक्ष। ३ देवताओं का चिह्न भूत वृक्ष। ४ देव-सभा के पास का वृक्ष (सम १३, १५६; ठा ८)। °वन्दण न [°वन्दन] जिन-प्रतिमा की मन, वचन और काया से स्तुति (पव १; संघ १; ३)। °वंदणा स्त्री [°वन्दना] वही पूर्वोक्त अर्थ (संघ १)। °वास पुं [°वास] जिन-मन्दिर में यतियों का निवास (दंस)। °हर देखो °घर (जीव १; पउम ६५, ६२; सुपा १३; द्र ६५; उवर १६०)।

चेइअ वि [चेतित] कृत, विहित; 'तत्थ २ अगारीहिं अगाराइं चेइआइं भवंति' (आचा २, १, २, २), 'चेइअं कइमेगट्ठं' (बृह २; कस)।

चेंध देखो चिंध (प्राप्र)।

चेच्चा देखो चे = त्यज्।

चेट्ठ अक [चेष्ट्] प्रयत्न करना, आचरण करना। वकृ. **चेट्ठमाण** (काल)।

चेट्ठ देखो चिट्ठ = स्था (दे १, १७४)।

चेट्ठण न [स्थान] स्थिति, अवस्थान (वव ४)।

चेट्ठण देखो चिट्ठण = चेष्टन (उपपं ११)।

चेट्ठा स्त्री [चेष्टा] प्रयत्न, आचरण (ठा ३, १; सुर २, १०६)।

चेट्ठिय देखो चिट्ठिय = चेष्टित (औप; महा)।

चेड पुं [दे] बाल, कुमार, शिशु (दे ३, १०; णाया १, २; बृह १)।

चेड } **चेडग** } **चेडय** } पुं [चेट, °क] १ दास, नौकर (औप; कप्प)। २ नृप-विशेष, वैशालिका नगरी का एक स्वनाम प्रसिद्ध राजा (आचू १; भग ७, ६; महा)। ३ मैला देवता, देव की एक जघन्य जाति (सुपा २१७)।

चेडिआ स्त्री [चेटिका] दासी, नौकरानी (भग ६, ३३; कप्पू)।

चेडी स्त्री [चेटी] ऊपर देखो (आवम)।

चेडी स्त्री [दे] कुमारी, बाला, लड़की (पाअ)।

चेत्त न [चैत्य] चैत्य-विशेष (षड्)।

चेत्त पुं [चैत्र] १ मास-विशेष, चैत मास (सम २६; हे १, १५२)। २ जैन मुनियों का एक गच्छ (बृह ६)।

चेत्ती स्त्री [चैत्री] १ चैत मास की पूर्णिमा। २ चैत मास की अमावस (सुज १०, ६)।

चेदि देखो चेइ (सण)।

चेदीस पुं [चेदीश] चेदि देश का राजा (सण)।

चेयग वि [चेतक] दाता, देनेवाला (उप ६५७)।

चेयण पुं [चेतन] १ आत्मा, जीव, प्राणी (ठा ४, ४)। २ वि. चेतनावाला, ज्ञानवाला; 'भुवि चेयणं च किमरूवं' (विसे १८४५)।

चेयणा स्त्री [चेतना] ज्ञान, चेत, चैतन्य, सुध, ख्याल (आव ६; सुर ४, २४५)।

चेयण्ण } **चेयन्न** } न [चैतन्य] ऊपर देखो (विसे ४७५; सुपा २०; सुर १४, ८)।

चेयस देखो चेअ = चेतस्; 'ईसादासेण आविट्ठे, कलुसाविलवेयसे। जे अंतरायं चेएइ, महामोहं पकुव्वइ' (सम ५१)।

चेया देखो चेयणा; 'पत्तेयमभावाओ, न रेणु-तेल्लं व समुदए चेया' (विसे १६५२)।

चेल } **चेलय** } न [चेल] वस्त्र, कपड़ा (आचा औप)। °कण्ण न [°कर्ण] व्यजन-विशेष, एक तरह का पंखा (स ५४६)। °गोल न [°गोल] वस्त्र का गेंद कन्दुक (सूअ १, ४; २)। °हर न [°गृह] तम्बू, पट-मण्डप, रावटी (स ५३७)।

चेलय न [दे] तुला-पात्र; 'दिट्ठीतुलाए भुवणं, तुलंति जे चित्तचेलए निहियं' (वज्जा ५६)।

चेलिय देखो चेल; 'रयणकंचणचेलियबहुधन्न-भरभरिया' (पउम ६६, २५; आचा)।

चेलुंप न [दे] मुसल, मूषल (दे ३, ११)।

चेल्ल } **चेल्लअ** } [दे] देखो चिल्ल (दे) (पउम ६७, १३; १६; स ४६६; दसनि १; उप २६८)।

चेल्लग } **चेल्लय** } [दे] देखो चिल्लग (पराह १, ४—पत्र ६८; ती ३३)।

चेव अ [एव, चैव] १ अवधारण सूचक अव्यय, निश्चयदर्शक शब्द; 'जो कुणइ परस्स दुहं पावइ तं चेव सो अणंत-गुणं' (प्रासू २६; महा); 'अवहारणे चेवसद्दो यं' (विसे ३५६५)। २ पाद-पूरक अव्यय (पउम ८, ८८)।

चेव अ [इव] सादृश्य-द्योतक अव्यय, 'पेच्छइ गणहरवसहं सरयरविं चेव तेएणं' (पउम ३, ४; उत्त १६, ३)।

चो देखो चउ (हे १, १७१; कुमा; सम ६०; औप; भग; णाया १, १; १४; विपा १, १; सुर १४, ६७)। °आल स्त्री [°चत्वारिं-शत्] चालीस और चार, ४४ (वसे २३०४)। °वट्ठि स्त्री [°षष्टि] चौसठ, ६४ (कप्प)। °वत्तरि स्त्री [°सप्तति] सत्तर और चार, ७४ (सम ८४)।

चोअ सक [चोदय्] १ प्रेरणा करना। २ कहना। चोएइ (उव; स १५)। कवकृ. **चोइज्जंत, चोइज्जमाण** (सुर २,१०; णाया १, १६)। संकृ. **चोइऊण** (महा)।

चोअअ वि [चोदक] प्रेरक, प्रश्न-कर्ता, पूर्व-पक्षी (अणु)।

चोणअ न [चोदन] प्रेरण, प्रेरणा (भत्त ३६; उत्त २८)।

चोइअ वि [चोदित] प्रेरित (स १५; सुपा १५०; औप; महा)।

चोए सक [चोदय्] १ प्रश्न करना। २ सीखना, शिक्षण देना। चोएइ, चोएह (वव १)।

चोक्क [दे] देखो चुक्क = (दे) (महा)।

चोक्ख वि [दे] चोखा, शुद्ध, शुचि, पवित्र, (णाया १, १; उप १४२ टी; बृह १; भग ६, ३३; राय; औप)।

चोक्खलि वि [दे] चोखाई करनेवाला, शुद्धता वाला (पिंड ६०३)।

चोक्खा स्त्री [चोक्षा] परिव्राजिका-विशेष, इस नाम की एक संन्यासिनी (णाया १,८)।

चोज्ज न [दे] आश्चर्य, विस्मय (दे ३, १४; सुर ३, ४; सुपा १०३, सट्ठि १५६; महा)।

चोज्ज न [चौर्य] चोरी, चोर-कर्म, 'तहेव हिंसं अलियं, चोज्जं अबंभसेवणं' (उत्त ३५, ३; णाया १, १८)।

चोज्ज न [चोद्य] १ प्रश्न, पृच्छा। २ आश्चर्य, अद्भुत। ३ वि. प्रेरणा-योग्य (गा ४०६)।

चोट्टी स्त्री [दे] चोटी, शिखा (दे ३, १)।

चोड्ड न [दे] वृन्त, फल और पत्ती का बन्धन, (विक्र २८)।

चोढ पुं [दे] बिल्व, वृक्ष-विशेष, बेल का पेड़ (दे ३, १६)।

चोण्ग न [दे] १ कलह, झगड़ा (निचू २०)। २ काष्ठानयन आदि जघन्य कर्म (सूअ २, २)।

चोत्त, चोत्तअ पुंन [दे] प्रतोद, प्राजन-दण्ड, चाबुक (दे ३,१६; पाअ)।

चोद [दे] देखो चोय (पण्ह २, ५—पत्र १५०)।

चोदग देखो चोअअ (ओघ ४ भा)।

चोदणा स्त्री [चोदना] प्रेरणा, किसी प्रभावशाली व्यक्ति की ओर से कुछ कहने या करने के लिए होनेवाला संकेत (धर्मसं १२४०)।

चोप्पड सक [म्रक्ष्] स्निग्ध करना, घी तेल वगैरह लगाना। चोप्पडइ (हे ४, १९१)। वकृ. चोप्पडमाण (कुमा)।

चोप्पड न [म्रक्षण] घी, तैल वगैरह स्निग्ध वस्तु; 'गेहव्वयस्स जोग्गं किंचिवि कणचोप्पडाईयं' (सुपा ४३०)।

चोप्पडिय वि [दे] चुपड़ा हुआ (पव ४)।

चोप्पाल पुं [चतुष्पाल] सूर्याभ देव की आयुध-शाला (राय ६३)।

चोप्पाल न [दे] मत्तवारण, वरण्डा (जं २)।

चोप्फुल वि [दे] स्निग्ध, स्नेहवाला, प्रेम-युक्त, प्रेमी (दे ३, १५)।

चोय, चोयग न [दे] त्वचा, छाल (पण्ह २, ५—पत्र १५० टी)। २ आम वगैरह का छिल्का (निचू १५; आचा २, १, १०)। ३ गन्ध द्रव्य-विशेष (अणु; जीव १; राय)।

चोयग देखो चोअअ (णंदि)।

चोयणा स्त्री [चोदना] प्रेरणा (स १५; उप ६४८ टी)।

चोयय पुं [दे] फल-विशेष (अणु १५४)।

चोयालीस स्त्रीन [चतुश्चत्वारिंशत्] चौवालीस, ४४ (चेइय ३६२)।

चोर पुं [चोर] तस्कर, दूसरे का धन चुरानेवाला (हे ३, १३४; पण्ह १, ३)। °कीड पुं [°कीट] विष्ठा में उत्पन्न होता कीट (जी १७)।

चोरंकार पुं [चौर्यंकार] चोर, तस्कर; 'चोरंकारकरं जं थूलमदत्तं तयं वज्जे' (सुपा ३३४)।

चोरग वि [चोरक] १ चुरानेवाला। २ पुंन. वनस्पति-विशेष (पण्ण १—पत्र ३४)।

चोरण न [चोरण] १ चोरी, चुराना (सुर ८, १२२)। २ वि. चोर, चोरी करनेवाला (भवि)।

चोरली स्त्री [दे] श्रावण मास की कृष्ण चतुर्दशी (दे ३, १६)।

चोराग पुं [चोराक] संनिवेश-विशेष, इस नाम का एक छोटा गाँव (आवम)।

चोराव सक [चोरय्] चोरी करना। चोरावेइ (प्राकृ ६०)।

चोरासी, चोरासीइ देखो चउरासी (पि ४३६; ४४६)।

चोरिअ न [चौर्य] चोरी, अपहरण (हे २, १०७; ठा १, १; प्रासू ६५; सुपा ३७६)।

चोरिअ वि [चौरिक] १ चोरी करनेवाला (पव ४१)। २ पुं. चर, जासूस (पण्ह १,१)।

चोरिअ वि [चोरित] चुराया हुआ (विसे ८५७)।

चोरिआ स्त्री [चौर्य, चौरिका] चोरी, अपहरण (गा २०६; षड्; हे १, ३५; सुर ६, १७८)।

चोरिक्क न [चौरिक्य] ऊपर देखो (पण्ह १, ३)।

चोरी स्त्री [चौरी] चोरी, अपहरण (श्रा २७)।

चोल वि [दे] १ वामन, कुब्ज (दे ३, १८)। २ पुं. पुरुष चिह्न, लिङ्ग (पव ६१)। ३ न. गन्ध-द्रव्य-विशेष, मंजिष्ठा (उर ६, ४)। °पट्ट पुं [°पट्ट] जैन मुनि का कटि-वस्त्र (ओघ ३४)। °य पुं [°ज] मजीठ का रंग (उर ६, ४)।

चोल पुं [चोल] देश-विशेष, द्रविड़ और कलिङ्ग के बीच का देश (पिंग; सण)।

चोलअ न [दे] कवच, वर्म (नाट)।

चोलअ, चोलग न [चौल, °क] संस्कार-विशेष, मुण्डन; 'विहिणा चूलाकम्मं बालाणं चोलयं नाम' (आवम; पण्ह १, २)।

चोलुक्क देखो चालुक्क (ती ५)।

चोलोयणग, चोलोवणय, चोलोवणयण न [चूलापनयन] १ चूलोपनयन, संस्कार-विशेष, मुंडन (णाया १, १—पत्र ३८)। २ शिखा-धारण, चूड़ा-धारण (भग ११, ११—पत्र ५४४; औप)।

चोल्लक [दे] देखो चोल्लग (पण्ह २, ४)।

चोल्लक, चोल्लग पुंन [दे] १ भोजन (उप पृ १२; आवम, उत्त ३)। २ वि. क्षुद्रक, छोटा, लघु (उप पृ ३१)।

चोल्लय पुंन [दे] थैला, बोरा, गोन; 'परं मम समक्खं तोलेह चोल्लए'; 'राइणा उक्केल्लावियाइं चोल्लयाइं' (महा)।

चोवत्तरि स्त्री [चतुःसप्तति] सत्तर और चार, ७४ (पंच ५, १८)।

चोवालय पुंन [चतुर्द्वार] चोवारा, ऊपर का शयन-गृह; 'इओ य एगा देवी हत्थिमिठे आसत्ता। णवरं हत्थी चों-(? चो)वालयाओ हत्थेण अवतारेइ' (दस २, १० टी)।

चोव्वड देखो चोप्पड = म्रक्ष्। चोव्वडइ (षड्)।

च्च अ [एव] अवधारण-सूचक अव्यय (हे २ १८४; कुमा; षड्)।

च्चिअ देखो चिअ = एव (हे २, १८४; कुमा)।

च्चेअ } देखो चेव = एव (पि ९२; जी ३२)।
च्चेव }

॥ इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि चयाराइसद्दसंकलणो चउद्दसमो तरंगो समत्तो।

छ

छ पुं [छ] १ तालु-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष (प्राप; प्रामा)। २ आच्छादन, ढकना; 'छ त्ति य दोसाण छायणे होइ' (आवम)।

छ त्रि. ब. [षष्] संख्या-विशेष, छः; 'छ छंडिआओ जिणसासणम्मि' (श्रा ६; जी ३२; भग १, ८)। °उत्तरसय वि [°उत्तर-शततम] एक सौ और छठवाँ (पउम १०६, ४६)। °कम्म न [°कर्मन्] छः प्रकार के कर्म, जो ब्राह्मणों के कर्त्तव्य हैं, यथा—यजन, याजन, अध्ययन, अध्यापन, दान और प्रतिग्रह (निचू १३)। °काय न [°काय] छः प्रकार के जीव, पृथिवी, अग्नि, पानी, वायु, वनस्पति और त्रस जीव (श्रा ७; पंचा १५)। °गुण, °ग्गुण वि [°गुण] छगुना (ठा ६; पि २७०)। °चरण पुं [°चरण] भ्रमर, भौंरा (कुमा)। °जीव-निकाय पुं [°जीवनिकाय] देखो °काय (आचा)। °ण्णउइ, °ण्णवइ [°नवति] संख्या-विशेष, छानबे, ९६ (सम ९८; अजि १०)। °त्तीस स्त्रीन [°त्रिंशत्] संख्या विशेष, छत्तीस, ३६ (कप्प)। °त्तीसइम वि [°त्रिंशत्तम] छत्तीसवाँ (पउम ३६, ४३; पण्ण ३६)। °द्दस त्रि. ब [षोडशन्] षोडश, सोलह। °द्दसहा अ [षोडशधा] सोलह प्रकार का (वव ४)। °द्दिसि न [°दिश्] छः दिशाएँ—पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, ऊर्ध्व और अधोदिशा (भग)। °द्धा अ [°धा] छः प्रकार का (कम्म १, ३८)। °नवइ, °नुवइ °अउइ देखो °ण्णउइ (कम्म ३, ४; १२; सम ७०)। °अउय वि [°णवत] छानबेवाँ, ९६ वाँ (पउम ९६, ५०)। °प्पण्ण, °प्पन्न स्त्रीन [°पञ्चाशत्] छप्पन, ५६ (राज; सम ७३)। °प्पन्न वि [°पञ्चाश] छप्पनवाँ (पउम ५६, ४८)। °ब्भाय पुं [°भाग] छठवाँ हिस्सा (पि २७०)। °ब्भासा स्त्री [°भाषा] प्राकृत, संस्कृत, मागधी, शौरसेनी, पैशाचिका और अपभ्रंश ये छः भाषाएँ (रंभा)। °मासिय, °म्मासिय वि [षाण्मासिक] छः मास में होनेवाला, छः मास सम्बन्धी (सम २१; औप)। °वरिस वि [°वार्षिक] छः वर्ष की उम्रवाला (सार्ध २६)। °वीस देखो °व्वीस (पिंग)। °व्विह वि [°विध] छः प्रकार का (कस; नव ३)। °व्वीस स्त्रीन [°विंशति] छव्वीस, बीस और छः (सम ४५)। °व्वीसइम वि [°विंशतितम] १ छब्बीसवाँ २६ वाँ (पउम २६, १०३)। २ लगातार बारह दिनों का उपवास (णाया १, १)। °सट्ठि स्त्री [°षष्टि] संख्या-विशेष, साठ और छः (कम्म २, १८)। °स्सयरि स्त्री [°सप्तति] छिहत्तर (कम्म २, १७)। °हा देखो °द्धा (कम्म १ ५; ८)।

छइ देखो छवि = छवि (वा १२)।

छइअ वि [स्थगित] आवृत्त, आच्छादित, तिरोहित (हे २, १७; षड्)।

छइल्ल } वि [दे] विदग्ध, चतुर, होशियार (पिंग· दे ३, २४; गा ७२०; वज्जा
छइल्ल } पाअ; कुमा)।

छउअ वि [दे] तनु, कृश, पतला (दे ३, २५)।

छउम पुंन [छद्मन्] १ कपट, शठता, माया (सम १; षड्)। २ छल, बहाना (हे २, ११२; षड्)। ३ आवरण, आच्छादन (सम १; ठा २, १)।

छउम न [छद्मन्] ज्ञानावरणीय आदि चार घाती कर्म (चेइय ३४६)।

छउमत्थ वि [छद्मस्थ] १ असर्वज्ञ, संपूर्ण ज्ञान से वञ्चित। २ राग-सहित, सराग (ठा ४, १; ६; ७)।

छउलूअ देखो छलूअ (राज; विसे २५०८)।

छंकुई स्त्री [दे] कपिकच्छू, वृक्ष-विशेष, केवांच, कवाछ (दे ३, २४)।

छट पुं [दे] छींटा, जल का छींटा, जल-च्छटा। २ वि. शीघ्र, जल्दी करनेवाला (दे ३, ३३)।

छंट सक [सिच्] सींचना। छंटसु (सुपा २९८)।

छंटण न [सेचन] सिंचन, सिंचना (सुपा १३६; कुमा)।

छंटा स्त्री [दे] देखो छंट (पाअ)।

छंटिअ वि [सिक्त] सींचा हुआ (सुपा १३८)।

छंड देखो छड्डु = मुच्। छंडइ (आरा ३२; भवि)।

छंडिअ वि [दे] छन्न, गुप्त (षड्)।

छंडिअ वि [मुक्त] परित्यक्त, छोड़ा हुआ (आरा; भवि)।

छंद सक [छन्द्] १ चाहना, वाञ्छना। २ अनुज्ञा देना, संमति देना। ३ निमन्त्रण देना। कवकृ;

'अंतेउरपुरबलवाहणेहि
वरसिरिघरेहि मुणिवसभा ।
कामेहि बहुविहेहि य
छंदिज्जंतावि नेच्छंति' (उत्र) ।
संकृ. छंदिअ (दस १०) ।

छंद पुंन [छन्द] १ इच्छा, मरजी, अभिलाषा (आचा; गा २०२; स २३६; उव; प्रासू ११) । २ अभिप्राय, आशय (आचा; भग) । ३ वशता, अधीनता (उत्त ४; हे १, ३३) । °चारि वि [°चारिन्] स्वच्छन्दी, स्वैरी (उप ७६८ टी) । °इत्त वि [°वत्] स्वैरी (भवि) । °णुवत्तण न [°नुवर्त्तन] मरजी के अनुसार बरतना (प्रासू १४) । °णुवत्तय वि [°नुवर्त्तक] मरजी का अनुसरण करनेवाला (णाया १, ३) ।

छंद पुंन [छन्दस्] १ स्वच्छन्दता, स्वैरिता (उत्त ४) । २ अभिलाष, इच्छा । ३ आशय, अभिप्राय (सूअ १, २, २; आचा; हे १, ३३) । ४ छन्दः-शास्त्र (सुपा २८७; औप) । ५ वृत्त, छन्द (वज्जा ४) । °ण्णुय वि [°ज्ञ] छन्द का जानकार (गउड) ।

छंदण पुंन [छादन] ढकना, ढक्कन (राय ६६) ।

छंदण न [छन्दन] निमन्त्रण (पिंड ३१०) ।

छंदण न [वन्दन] वन्दन, प्रणाम, नमस्कार (गुभा ४) ।

छंदणा स्त्री [छन्दना] १ निमन्त्रण (पंचा १२) । २ प्रार्थना (बृह १) ।

छंदा स्त्री [छन्दा] दीक्षा का एक भेद, अपने या दूसरे के अभिप्राय-विशेष से लिया हुआ संन्यास (ठा २, २; पंचभा) ।

छंदिअ वि [छन्दित] अनुज्ञात, अनुमत (ओघ ३८०) । २ निमन्त्रित (निचू २) ।

छंदो° देखो छंद = छन्दस् (आचा; अभि १२६) ।

छक्क वि [षट्क] छक्का, छः का समूह; 'अंतररिउछक्काअक्कंता (सुपा ५१६; सम ३५) ।

छग देखो छ = षष् (कम्म ४) ।

छग न [दे] पुरीष, विष्ठा (पराह १, ३—पत्र ५४, ओघ ७२) ।

छग देखो छक्क (पव २७१) ।

छगण न [स्थगन] पिधान, ढकना (वव ४) ।

छगण न [दे] गोमय, गोबर (उप ५६७ टी, पंचा १३; निचू १२) ।

छगणिया स्त्री [दे] गोइंठा, कंडा (अनु ५) ।

छगल पुंस्त्री [छगल] छाग, अज, बकरा (पराह १,१; औप) । स्त्री. °ली (दे २,८४) । °पुर न [°पुर] नगर-विशेष (ठा १०) ।

छग्ग देखो छक्क (दं ११) ।

छग्गुरु पुं [षड्गुरु] १ एक सौ और अस्सी दिनों का उपवास । २ तीन दिनों का उपवास (ठा २, १) ।

छच्छुंदर पुंन [दे] छछुँदर, मूसे या चूहे की एक जाति (सं १६) ।

छज्ज अक [राज्] शोभना, चमकना । छज्जइ (हे ४, १००) ।

छज्जिअ वि [राजित] शोभित, अलंकृत (कुमा) ।

छज्जिआ स्त्री [दे] पुष्प-पात्र, चंगेरी (स ३३४) ।

छट्टा [दे] देखो छंटा (षड्) ।

छट्ठ वि [षष्ठ] १ छठवाँ (सम १०४; हे १, २६५) । २ न. लगातार दो दिनों का उपवास (सुर ४, ५५) । °क्खमण न [°क्षमण, °क्षपण] लगातार दो दिनों का उपवास (अंत ६; उप पृ ३४३) । °क्खमय पुं [°क्षमक, °क्षपक] दो-दो दिनों का बराबर उपवास करनेवाला तपस्वी (उप ६२२) । °भत्त न [°भक्त] लगातार दो दिनों का उपवास (धर्म ३) । °भत्तिय वि [°भक्तिक] लगातार दो दिनों का उपवास करनेवाला (पराह १, १) ।

छट्ठी स्त्री [षष्ठी] १ तिथि-विशेष (सम २६) । २ विभक्ति-विशेष, संबन्ध-विभक्ति (णंदि; हे १, २६५) । ३ जन्म के बाद किया जाता उत्सव-विशेष (सुपा ५७८) ।

छड सक [आ + रुह्] आरूढ़ होना, चढ़ना । छडइ (षड्) ।

छडक्खर पुं [दे] स्कन्द, कार्तिकेय (दे २, २६) ।

छडछडा स्त्री [छटच्छटा] सूर्प (सूप) वगैरह से अन्न को झाड़ते समय होता एक प्रकार का अव्यक्त आवाज (णाया १, ७—पत्र ११६) ।

छडा स्त्री [दे] विद्युत, बिजली (दे ३, २४) ।

छडा स्त्री [छटा] १ समूह, परम्परा (सुर ४, २४३; वा १२) । २ छींटा, पानी की बूँद (पाअ) ।

छडाल वि [छटावत्] छटावाला (पउम ३५, १८) ।

छडिय वि [छटित] सूप आदि से छँटा या फटका हुआ (तंदु २६; राय ६७) ।

छड्ड सक [छर्दय्, मुच्] १ वमन करना । २ छोड़ना, त्याग करना । ३ डालना, गिराना । छड्डइ (हे २, ३६; ४, ९१; महा; उत्र) । कर्म. छड्डिज्जइ (पि २९१) । वकृ. छड्डुंत (भाग) । संकृ. छड्डेउं भूमीए खीरं जह पियइ दुट्ठमज्जारी' (विसे १४७१) । छड्डित्तु (वव २) ।

छड्डण न [छर्दन, मोचन] १ परित्याग, विमोचन (उप १७६; ओघ ८६) । २ वमन, वान्ति (विपा १, ८) ।

छड्डय वि [छर्दक] छोड़नेवाला (कुप्र ३१७) । २ पुं. एक सेठ का नाम (कुप्र ३६६) ।

छड्डवण न [छर्दन, मोचन] १ छुड़वाना, मुक्त करवाना । २ वमन कराना । ३ वि. वमन करानेवाला । ४ छुड़ानेवाला (कुमा) ।

छड्डवय वि [छर्दक, मोचक] त्याग करानेवाला, त्याजक (दे २, ६२) ।

छड्डावण देखो छड्डवण (सुपा ५१७) ।

छड्डाविय वि [छर्दित, मोचित] १ वमन कराया हुआ । २ छुड़वाया हुआ (आवम; बृह १) ।

छड्डि स्त्री [छर्दि] वमन का रोग (षड्; हे २, ३६) ।

छड्डि स्त्री [छर्दिस्] छिद्र, दूषण; 'जो जग्गइ परछड्डिं, सो नियछड्डीए किं सुयइ' (महा) ।

छड्डिय } वि [छर्दित, मुक्त] १ वान्त,
छड्डियल्लिय } वमन किया हुआ । २ त्यक्त, मुक्त (विसे २६०६; दे १, ४६; औप) ।

छण सक [क्षण्] हिंसा करना । छणे (आचा) । प्रयो. छणावेइ (पि ३१८) ।

छण सक [क्षण्] छेदन करना । छणह (सूअ २, १, १७) ।

छण पुं [क्षण] १ उत्सव, मह (हे २, २०) । २ हिंसा (आचा) । °चंद पुं [°चन्द्र] शरद

ऋतु को पूर्णिमा का चन्द्रमा (स ३७१)। °ससि पुं [°शशिन्] वही पूर्वोक्त अर्थ (सुपा ३०६)।

छणण न [क्षणन] हिंसन, हिंसा (आचा)।

छणिंदु पुं [क्षणेन्दु] शरद् ऋतु की पूर्णिमा का चन्द्र (सुपा ३३; ४०४)।

छण्ण वि [छन्न] १ गुप्त, प्रच्छन्न, छिपाया हुआ (बृह १; प्राप)। २ आच्छादित, ढका हुआ (गा ५८०)। ३ न. माया, कपट (सूअ १, २, २)। ४ निर्जन, विजन, रहस्। ५ क्रिवि. गुप्त रीति से, प्रच्छन्न रूप से;

'जं छण्णं आयरियं,
तइया जणणीए जोव्वणमएण।
तं पडिव (? यडि) ज्जइ
इण्हि सुएहिं सीलं चयंतेहिं'
(उप ७२८ टी)।

छण्णालय न [दे. षण्णालक] त्रिकाष्ठिक, तिपाई, संन्यासियों का एक उपकरण (भग; औप; णाया १, ५)।

छत्त न [छत्र] छाता, आतपत्र (णाया १, ५; प्रासू ५२)। °धार पुं [°धार] छाता धारण करनेवाला नौकर (जीव ३)। °पडागा स्त्री [°पताका] १ छत्र-युक्त ध्वज। २ छत्र के ऊपर की पताका (औप)। °पलासय न [°पलाशक] कृतमंगला नगरी का एक चैत्य (भग)। °भंग पुं [°भङ्ग] राज-नाश, नृप-मरण (राज)। °हार देखो °धार (आवम)। °इच्छत्त न [°तिच्छत्र] १ छत्र के ऊपर का छाता (सम १३७)। २ पुं. ज्योतिष-शास्त्र-प्रसिद्ध योग-विशेष (सुज्ज १२)।

छत्त न [छत्र] लगातार तैतीस दिनों का उपवास (संबोध ५८)। पुंन. एक देवविमान (देवेन्द्र १४०)। ३ पुं. ज्योतिष प्रसिद्ध एक योग जिसमें चन्द्र आदि ग्रह छत्र के आकार से रहते हैं (सुज्ज १२—पत्र २३३)। °इल्ल वि [°वत्] छातावाला (सुख २, १३)। °कार वि [कार] छाता बनानेवाला शिल्पी (अणु १४६)। °ग पुंन [°क] वनस्पति-विशेष (सूअ २, ३, १६)।

छत्त पुं [छात्र] विद्यार्थी, अभ्यासी (उप पृ ३३१; १६६ टी)।

छत्तंतिया स्त्री [छत्रान्तिका] परिषद्-विशेष, सभा-विशेष (बृह १)।

छत्तच्छय (अप) पुं [सप्तच्छद] वृक्ष-विशेष, सतौना, छतिवन (सण)।

छत्तधन्न न [दे] घास, तृण (पाअ)।

छत्तवण्ण देखो छत्तिवण्ण (प्राप्र)।

छत्ता स्त्री [छत्रा] नगरी-विशेष (आवम)।

छत्तार पुं [छत्रकार] छाता बनानेवाला कारीगर (पण्ण १)।

छत्ताह पुं [छत्राभ] वृक्ष-विशेष, 'णग्गोहसत्तिवण्णे, साले पियए पियंगुछत्ताहे' (सम १५२)।

छत्ति वि [छत्रिन्] छत्र-युक्त, छातावाला (भास ३३)।

छत्तिवण्ण पुं [सप्तपर्ण] वृक्ष-विशेष, सतौना, छतिवन, (हे १, २६५; कुमा)।

छत्तोय पुं [छत्रौक] वनस्पति-विशेष, वृक्ष-विशेष (पण्ण १—पत्र ३५)।

छत्तोव पुं [छत्रोप] वृक्ष-विशेष (औप; अंत)।

छत्तोह पुं [छत्रौघ] वृक्ष-विशेष (औप; पण्ण १—पत्र ३१; भग)।

छदमत्थ देखो छउमत्थ (द्रव्य ४४)।

छद्दवण देखो छड्डुवण (राज)।

छद्दसम वि [षड्दश] छः या दश (सूअ २, २, २१)।

छद्दी स्त्री [दे] शय्या, बिछौना (दे ३, २४)।

छन्न वि [क्षण] हिंसा-प्रधान, हिंसा-जनक (सूअ १, ६, २६)।

छन्न देखो छण्ण (कप्प; उप ६४८ टी; प्रासू ८२)।

छप्पइगिल्ल वि [षट्पदिकावत्] यूका-युक्त यूकावाला (बृह ३),

छप्पइया स्त्री [षट्पदिका] यूका, जूँ (ओघ ७२४)।

छप्पंती स्त्री [दे] नियम-विशेष, जिसमें पद्य लिखा जाता है (दे ३, २५)।

छप्पण्ण } वि [दे. षट्प्रज्ञक] विदग्ध,
छप्पण्णय } चतुर, चालाक (दे ३, २४; पाअ; वज्जा ५८)।

छप्पत्तिआ स्त्री [दे] १ चपत, थप्पड़, तमाचा। २ चपाती, रोटी, फुलका;

'छप्पत्तिआवि खज्जइ,
निप्पत्ते पुत्ति! एत्थ को देसो?।
निअपुरिसेवि रमिज्जइ,
परपुरिसविवज्जिए गामे'
(गा ८८७)।

छप्पन्न [दे] देखो छप्पण्ण (जय ६)।

छप्पय पुं [षट्पद] १ भ्रमर, भौंरा (हे १, २६५; जीव ३)। २ वि. छः स्थानवाला। ३ छः प्रकार का (विसे २८६१)। ४ न. छन्द-विशेष (पिंग)।

छब्ब } पुंन [दे] पात्र-विशेष (आचा २,
छब्बग } १, ८, १; पिंड ५६१; २७८)।

छब्बय न [दे] वंश-पिटक, घी वगैरह को छानने का उपकरण-विशेष; 'मुइंगाईमक्कोडएहिं संसत्तगं च नाऊणं। गालेज्ज छब्बएणं' (ओघ ५५८)।

छब्भामरी स्त्री [षट्भ्रामरी] एक प्रकार की वीणा (णाया १, १७—पत्र २२६)।

छमच्छम अक [छमच्छमाय्] 'छम-छम' आवाज करना, गरम चीज पर दिया जाता पानी की आवाज। छमच्छमइ (वज्जा ८८)।

छम° देखो छमा। °रुह पुं [°रुह] वृक्ष, पेड़, दरख्त (कुमा)।

छमलय पुं [दे] सप्तच्छद, वृक्ष-विशेष, सतौना, छतिवन (दे ३, २५)।

छमा स्त्री [क्षमा, क्ष्मा] पृथिवी, धरिणी, भूमि (हे २, १८)। °हर पुं [°धर] पर्वत, पहाड़ (षड्)। देखो छम°।

छमी स्त्री [शमी] वृक्ष-विशेष, अग्नि-गर्भ वृक्ष (हे १, २६५)।

छम्म देखो छउम (हे २, ११२; षड्; पउम ४०, ५; सण)।

छम्मुह पुं [षण्मुख] १ स्कन्द, कार्तिकेय (हे १, २६५)। २ भगवान् विमलनाथ का अधिष्ठायक देव (संति ८)।

छय न [छद] १ पर्ण, पत्ती, पत्र, पत्ता (औप)। २ आवरण, आच्छादन (से ६, ४७)।

छय न [क्षत] १ व्रण, घाव (हे २, १७)। २ पीड़ित, व्रणित (सूअ १, २, २)।

छयल्ल [दे] देखो छइल्ल (रंभा)।

छरु पुं [त्सरु] खड्ग-मुष्टि, तलवार का हाथा (पण्ह १, ४)। °प्पवाय न [°प्रवाद] खड्ग-शिक्षा-शास्त्र (जं २)।

छल° देखो छ = षष् (कम्म ६, ६)।

छल सक [छलय्] ठगना, वञ्चना। छलिज्जेज्जा (स २१३)। संकृ. छलिउं, छलिऊण (महा)। कृ. छलिअव्व (श्रा १४)।

छल न [छल] १ कपट, माया (उव)। २ व्याज, बहाना (पाअ; प्रासू ११४)। ३ अर्थ-विघात, वचन-विघात, एक तरह का वचन-युद्ध (सूअ १, १२)। °ायियण न [°ायतन] छल, वचन-विघात (सूअ १, १२)।

छलंस वि [षडस्र] षट्-कोण, छः कोणवाला (ठा ८)।

छलंसिअ वि [षडस्रिक] छः कोणवाला (सूअ २, १, १५)।

छलण न [छलन] प्रक्षेपण, फेंकना (आचानि ३११)।

छलण न [छलन] ठगाई, वञ्चना (सुर ६, १८१)।

छलणा स्त्री [छलना] १ ठगाई, वञ्चना (ओघ ७८५; उप ७७६)। २ छल, माया, कपट (विसे २५४५)।

छलत्थ वि [षडर्थ] छः अर्थवाला (विसे ६०१)।

छलसीअ स्त्रीन [षडशीति] संख्या-विशेष, अस्सी और छः, ८६ (भग)।

छलसीइ स्त्री. ऊपर देखो (सम ६२)।

छलिअ वि [छलित] १ वञ्चित, विप्रतारित, ठगा हुआ (भवि; महा)। २ शृङ्गार-काव्य। ३ चोर का इशारा, तस्कर-संज्ञा (राज)।

छलिअ वि [दे] विदग्ध, चालाक, चतुर (दे ३, २४; पाअ)।

छलिअ न [छलिक] नाट्य-विशेष (मा ४)।

छलिअ वि [स्खलित] स्खलन-प्राप्त (ओघ ७८६)।

छलिया देखो छालिया; 'चीणाकूरं छलियातक्केण दिन्नं' (महा)।

छलुअ, छलुग, छलूअ पुं [षडुलूक] वैशेषिक मत-प्रवर्तक कणाद ऋषि (कप्प; ठा ७; विसे २३०२); 'दव्वाइछप्पयत्थोवएसणाओ छलूउत्ति' (विसे २५०८; २४५५)।

छल्ली स्त्री [दे] त्वचा, वल्कल, छाल (दे ३, २४; जी १३; गा ११५; ठा ४, १; णाया १, १३)।

छल्लुय देखो छलुअ (पि १४८)।

छव देखो छित्र। छवेमि (सुपा ५७३)।

छवडी स्त्री [दे] चर्म, चाम, चमड़ा (दे ३, २५)।

छवि स्त्री [छवि] १ कान्ति, तेज (कुमा; पाअ)। २ अंग, शरीर (पण्ह १, १)। चर्म, चमड़ी (पाअ; जीव ३)। ४ अवयव (पडि)। ५ अंगी, शरीरी (ठा ४, १) ६ अलङ्कार-विशेष (अणु)। °च्छेअ पुं [°च्छेद] अङ्ग का विच्छेद, अवयव कर्त्तन (पडि)। °च्छेयण न [°च्छेदन] अंग-च्छेद (पण्ह १, १)। °त्ताण न [°त्राण] चमड़ी का आच्छादन, कवच, वर्म (उत्त २)।

छविअ वि [स्पृष्ट] छूआ हुआ (श्रा २७)।

छविपव्व न [छविपर्वन्] औदारिक शरीर (उत्त ५, २४)।

छवीइय वि [छविमत्] १ कान्तिवाला। २ घन, निबिड़ (आचा २, ४, २, ३)।

छव्वग [दे] देखो छब्बय (राज)।

छव्विअ वि [दे] पिहित, आच्छादित (गउड)।

छह (अप) देखो छ + षष् (पि ४४१)।

छहत्तर वि [षट्सप्तत] छिहत्तरवाँ, ७६ वाँ (पउम ७६, २७)।

छहत्तरि स्त्री [षट्सप्तति] छिहत्तर, ७६ (पव १६)।

छाअ देखो छाव (प्राकृ १५)।

छाइअ वि [छादित] आच्छादित, ढका हुआ (पउम ११३, ५४; कुमा)।

छाइल्ल वि [छायावत्] छायावाला, कान्ति-युक्त (हे २, १५६; षड्)।

छाइल्ल पुं [दे] १ प्रदीप, दीपक; 'जोइक्खं तह छाइल्लयं च दीवं मुणेज्जाहि' (वव ७; दे ३, ३५)। २ वि. सदृश, समान, तुल्य। ३ ऊन, अधूरा (दे ३, ३५)। ४ सुरूप, सुडौल, रूपवान् (दे ३, ३५; षड्)।

छाई देखो छाया (षड्)।

छाई स्त्री [दे] माता, देवी, देवता (दे ३, २६)।

छाउमत्थ न [छाद्मस्थ्य] छद्मस्थ-अवस्था (सट्ठि ६ टी)।

छाउमत्थिय वि [छाद्मस्थिक] केवलज्ञान उत्पन्न होने के पहले की अवस्था में उत्पन्न, सर्वज्ञता की पूर्वावस्था से संबन्ध रखनेवाला (सम ११; पण्ण ३६)।

छाओवग वि [छायोपग] १ छाया-युक्त, छायावाला (वृक्षादि) २ पुं. सेवनीय पुरुष, माननीय पुरुष (ठा ४, ३)।

छागल वि [छागल] १ अज-संबन्धी (ठा ५, ३)। २ पुं. अज, बकरा। स्त्री. °ली (पि २३१)।

छागलिय पुं [छागलिक] छागों से आजीविका करनेवाला, अजा-पालक (विपा १, ४)।

छाण न [दे] १ धान्य वगैरह का मलना (दे ३, ३४)। २ गोमय, गोबर (दे ३, ३४; सुर १२, १७; णाया १, ७; जीव १)। ३ वस्त्र, कपड़ा (दे ३, ३४; जीव ३)।

छाणण न [दे] छानना, गालन; 'भूमीपेहण-जलछाणणाइं जयणाओ होइ न्हाणाइं' (सट्ठि ४५ टी)।

छाणवइ (अप) देखो छण्णवइ (पिंग)।

छाणी स्त्री [दे] १ धान्य वगैरह का मलन। २ वस्त्र, कपड़ा (दे ३, ३४)। ३ गोमय, गोबर (दे ३, ३४; धर्म २)।

छाणी स्त्री [दे] कंडा, गोबर का इन्धन (पव ३८)।

छाय वि [छात] व्रणाङ्कित, घाववाला (दस ६, २, ७)।

छाय सक [छादय्] आच्छादन करना, ढकना। छायइ (हे ४, २१)। वकृ. छायंत (पउम ७, १४)।

छाय वि [दे. छात] १ बुभुक्षित, भूखा (दे ३, ३३; पाअ; उप ७६८ टी; ओघ २६० भा)। २ कृश, दुर्बल (दे ३, ३३; पाअ)।

छायंसि वि [छायावत्] कान्तिमान्, तेजस्वी (सम १५२)।

छायण न [छादन] आच्छादन, ढकना (पिंग; महा; सं ११)।

छायण न [छादन] १ घर की छत, छाजन (पिंड ३०३)। २ ढक्कन, आवरण। ३ वस्त्र, कपड़ा (सुख ७, १५)।

छायणिया, छायणी स्त्री [दे] डेरा, पड़ाव, छावनी; 'तो तत्थेव ठिओ एसो कुणिता गिहछायणिं' (श्रा १२; महा)।

छाया स्त्री [छाया] १ आतप का अभाव, छाँह (पाअ)। २ कान्ति, प्रभा, दीप्ति (हे १, २४९; औप; पाअ)। ३ शोभा (औप)। ४ प्रतिबिम्ब, परछाईं (प्रासू ११४; उत्त २)। ५ धूप-रहित स्थान, अनातप देश (ठा २, ४)। °गइ स्त्री [°गति] १ छाया के अनुसार गमन। २ छाया के अवलम्बन से गति (पएण १६)। °पास पुं [°पार्श्व] हिमाचल पर स्थित भगवान् पार्श्वनाथ की मूर्त्ति (ती ४५)।

छाया स्त्री [दे] १ कीर्त्ति, यश, ख्याति। २ भ्रमरी, भमरी, भौंरी (दे ३, ३४)।

छायाइत्तय वि [छायावत्] छायावाला, छाया-युक्त। स्त्री. °इत्तिआ (हे २, २०३)।

छायाला स्त्री [षट्चत्वारिंशत्] छियालीस, चालीस और छः, ४६ (भग)।

छायालीस स्त्रीन. ऊपर देखो (सम ६९; कप्प)।

छायालीस वि [षट्चत्वारिंश] छियालीसवाँ, ४६ वाँ (पउम ४६, ९९)।

छार वि [क्षार] १ पिघलनेवाला, झरनेवाला। २ खारा, लवण-रसवाला। ३ पुं. लवण, नोन, नमक। ४ सज्जी, सज्जीखार। ५ गुड़ (हे २, १७; प्राप्र)। ६ भस्म, भूति (विसे १२५६; स ४४; प्रासू १४५; णाया १,२)। ७ मात्सर्य, असहिष्णुता (जीव ३)।

छार पुं [दे] अच्छभल्ल, भालूक (दे ३, २६)।

छारय देखो **छार** (श्रा २७)।

छारय न [दे] १ इक्षु-शल्क, ऊख की छाल (६, ३, ३४)। २ मुकुल, कली (दे३, ३४; पाअ)।

छारिय वि [क्षारिक] क्षार-सम्बन्धी (दस ५, १, ७)।

छाल पुं [छाग] अज, बकरा (हे १, १९१)।

छालिया स्त्री [छागिका] अजा, छागी (सुर ७, ३०; सण)।

छाली स्त्री [छागी] ऊपर देखो (प्रामा)।

छाव पुं [शाव] बालक, बच्चा, शिशु (हे १, २६५; प्राप्र; वव १)।

छावण देखो **छायण** (बृह १)।

छावट्ठि स्त्री [षट्षष्टि] छाछठ, छियासठ, ६६ (सम ७८; विसे २७६१)।

छावत्तरि स्त्री [षट्सप्तति] छिहत्तर, सत्तर और छः ७६ (पउम १०२, ८९; सम ८५)। °म वि [°तम] छिहत्तरवाँ (भग)।

छावलिय वि [षडावलिक] छः आवलिका-परिमित समयवाला (विसे ५३१)।

छासट्ठ वि [षट्षष्ट] छियासठवाँ (पउम ६६, ३७)।

छासी स्त्री [दे] छाछ, तक्र, मट्ठा (दे ३, २६)।

छासीइ स्त्री [षडशीति] छियासी, अस्सी और छः। °म वि [°तम] छियासीवाँ, ८६ वाँ (पउम ८६, ७४)।

छाहत्तरि (अप) देखो **छावत्तरि** (पि २४५)।

छाहत्तरि देखो **छावत्तरि** (पव २३६)।

छाहा, छाहिया, छाही स्त्री [छाया] १ छाँह, आतप का अभाव। २ प्रतिबिम्ब, परछाईं (षड्; प्राप; सुर २, २४७; ६, ६५; हे १, २४९; गा ३४)।

छाही स्त्री [दे] गगन, आकाश। °मणि पुं [°मणि] सूर्य, सूरज (दे ३, २६)।

छिअ देखो **छीअ** (दे ८, ७२; प्रामा)।

छिंछई स्त्री [दे] असती, कुलटा (हे २, १७४; गा; ३०१; ३५०; पाअ; धर्मरत्न-लघुवृत्तिपत्र ३१, १)।

छिंछटरमण न [दे] क्रीड़ा-विशेष, चक्षु-स्थगन की क्रीड़ा (दे ३, ३०)।

छिंछय पुं [दे] १ देह, शरीर। २ जार, उपपति। ३ न. फल-विशेष, शलाटु-फल (दे ३, ३६)।

छिंछोली स्त्री [दे] छोटा जल-प्रवाह (दे ३, २७; पाअ)।

छिंड न [दे] १ चूड़ा, चोटी (दे ३, ३५; पाअ)। २ छत्र, छाता। ३ धूप-यन्त्र (दे ३, ३५)।

छिंडिआ स्त्री [दे] १ बाड़ का छिद्र। २ अपवाद; 'छ छिंडिआओ जिणसासणम्मि' (पव १४८; श्रा ६)।

छिंडी स्त्री [दे] बाड़ का छिद्र (णाया १, २—पत्र ७९)।

छिंद सक [छिद्] छेदना, विच्छेद करना। छिंदइ (प्राप्र; महा)। भवि. छेच्छं (हे ३, १७१)। कर्म. छिज्जइ (महा)। वकृ. छिंदमाण (णाया १, १)। कवकृ. छिज्जंत, छिज्जमाण (श्रा ६; विपा १, २)। संकृ. छिंदिऊण, छिंदित्ता, छिंदित्तु, छिंदिय, छेत्तूण (पि ५८५; भग १४, ८; पि ५०६; ठा ३, २; महा)। कृ. छिंदियव्व (पएह २, १)। हेकृ. छेत्तुं (आचा)।

छिंदण न [छेदन] छेद, खण्डन, कर्तन (ओघ १५४ भा)।

छिंदावण न [छेदन] कटवाना, दूसरे द्वारा छेदन कराना (महानि ७)।

छिंदाविय वि [छेदित] विच्छिन्न कराया गया (स २२९)।

छिंपय पुं [छिम्पक] कपड़ा छापने का काम करनेवाला (दे १, ९८; प्राप्र)।

छिक्क न [दे] क्षुत, छींक (दे ३, ३६; कुमा)।

छिक्क वि [दे. छुप्त] स्पृष्ट, छूआ हुआ (दे ३, ३६, हे २, १३८; से ३, ४६; स ४४४)। °परोइया स्त्री [°प्ररोदिका] वनस्पति-विशेष (विसे १७५४)।

छिक्क वि [छीत्कृत] छीं-छीं आवाज से आहूत; 'पुव्विंपि वीरसुणिआ छिक्काछिक्का पहावए तुरियं' (ओघ १२४ भा)।

छिक्कंत वि [दे] छींक करता हुआ (सुपा ११९)।

छिक्का स्त्री [दे] छिक्का, छींक (स ३२२)।

छिक्कारिअ वि [छीत्कारित] छीं-छीं आवाज से आहूत, अव्यक्त आवाज से बुलाया हुआ (ओघ १२४ भा टी)।

छिक्किय न [दे] छींकना, छींक करना (स ३२४)।

छिक्कोअण वि [दे] असहन, असहिष्णु (दे ३, २९)।

छिक्कोट्टली स्त्री [दे] १ पैर की आवाज। २ पाँव से धान्य का मलना। ३ गोइठा का टुकड़ा, गोबर-खण्ड (दे ३, ३७)।

छिक्कोलिअ वि [दे] तनु, पतला, कृश (दे ३, २५)।

छिक्कोवण [दे] देखो **छिक्कोअण** (ठा ६—पत्र ३७२)।

छिग्ग (शौ) सक [छुप्] छूना। छिग्गदि (प्राकृ ९३)।

छिछोलय पुं [दे] देखो **छिव्वोल** (पाअ)।

छिच्छई देखो **छिंछई** (षड्)।

छिच्छय देखो **छिंछय** (षड्)।

छिच्छिकार पुं [छिच्छिक्कार] निवारण-सूचक या घृणा-सूचक शब्द, छिः, छि (पिंड ४५१)।
छिच्छि अ [दे धिक्धिक्] छि छि, धिक्-धिक्, अनेक धिक्कार (हे २, १७४; षड्)।
छिज्ज देखो छिंद = छिद्। हेकृ. छिज्जिउं (तंदु)।
छिज्ज वि [छेद्य] १ खण्डित किया जा सके। २ छेदने योग्य (सूअ २, ५)। ३ न. छेद, विच्छेद, द्विधाकरण; 'पावंति बंधवहरोहछिज्ज-मरणावसाणाइं' (ओघ ४६ भा; पुप्फ १८६)।
छिज्जंत वि [क्षीयमाण] क्षय पाता, दुर्बल होता; 'छिज्जंतेहि अणुदिणं, पच्चक्खम्मिवि तुमम्मि अंगेहिं' (गा ३४७)।
छिज्जंत } देखो छिंद
छिज्जमाण }
छिड्ड न [छिद्र] १ छिद्र, विवर (पउम २०, १६२; अनु ६; उप पृ १३८)। २ अवकाश, अवसर (पण्ह १, ३)। ३ दूषण, दोष (सुपा ३६०)। °पाणि पुं [°पाणि] एक प्रकार का जैन साधु (आचा २, १, ३)।
छिड्ड पुंन [छिद्र] आकाश, गगन (भग २०. २—पत्र ७७५)।
छिण्ण देखो छिन्न (णाया १, १८; सूअ १, ८)।
छिण्ण पुं [दे] जार, उपपति (दे ३, २७; षड्)।
छिण्णच्छोडण न [दे] शीघ्र, तुरन्त, जल्दी (दे ३, २६)।
छिण्णयड वि [दे] टंक से छिन्न (पाअ)।
छिण्णा स्त्री [दे] असती, कुलटा (दे ३, २७)।
छिण्णाल पुं [दे] जार, यार, उपपति, छिनाला या छिनरा (दे ३, २७; षड्)।
छिण्णालिआ } स्त्री [दे] असती, कुलटा,
छिण्णाली } पुंश्चली, छिनारी, छिनाल, व्यभिचारिणी। (मृच्छ ५५; दे ३, २७)।
छिण्णोब्भवा स्त्री [दे] दूर्वा, दूब (घास), दाभ (दे ३, २६)।
छित्त देखो खित्त = क्षेत्र (औप; उप ८३३ टी; हेका ३०)।
छित्त वि [दे] स्पृष्ट, छूआ हुआ (दे ३, २७; गा १३; सुपा ५०४; पाअ)।

छित्तर [दे] देखो छेत्तर (स ८; २२३; उप पृ ११७; ५३० टी)।
छित्ति स्त्री [छित्ति] छेद, विच्छेद, खण्डन (विसे १४५८; लहुअ ५)।
छित्तु वि [छेतृ] छेदनेवाला (पव १)।
छिद्द देखो छिड्ड (णाया १, २; ठा ५, १; पउम ६४, ६)।
छिद्द पुं [दे] छोटी मछली (दे ३, २६)।
छिद्दिय वि [छिद्रित] छिद्र-युक्त, छिद्रवाला (गउड)।
छिन्न वि [छिन्न] १ खण्डित, त्रुटित, छेद-युक्त (भग; प्रासू १४६)। २ निर्धारित, निश्चित (बृह १)। ३ न. छेद, खण्डन (उत्त १५)। °गंथ वि [°ग्रन्थ] स्नेह-रहित, स्नेह-मुक्त (पण्ह २, ५)। २ पुं. त्यागी, साधु, मुनि, निर्ग्रन्थ (ठा ६)। °च्छेय पुं [°च्छेद] नय-विशेष, प्रत्येक सूत्र को दूसरे सूत्र की अपेक्षा से रहित माननेवाला मत (णंदि)। °द्धाणंतर वि [°ध्वान्तर] मार्ग-विशेष, जहाँ गाँव, नगर वगैरह कुछ भी न हो ऐसा रास्ता (बृह १)। °मडंब वि [°मडम्ब] जिस गाँव या शहर के समीप में दूसरा गाँव वगैरह न हो (निचू १०)। °रुह वि [°रुह] काट कर बोने पर भी पैदा होनेवाली वनस्पति (जीव १०; पण्ण ३६)।
छिन्नाल वि [दे] हल की जात का बेल आदि (उत्त २७, ७)।
छिन्नालिंगा } स्त्री [दे] स्थलचर पक्षि-विशेष
छिण्णालिंगा } (अंग वि. अ० ५८)। देखो छिण्णालिआ।
छिप्प न [क्षिप्र] जल्दी, शीघ्र। °तूर न [°तूर्य] शीघ्र। २ बजाया जाता एक बाजा, तुरही (विपा १, ३; णाया १, १८)।
छिप्प न [दे] १ भिक्षा, भीख (दे ३, ३६; सुपा ११५)। २ पुच्छ, लांगूल (दे ६, ३६; पाअ)।
छिप्पंत देखो छिव = स्पृश्।
छिप्पंती स्त्री [दे] १ व्रत-विशेष। २ उत्सव-विशेष (दे ३, ३७)।
छिप्पंदूर न [दे] १ गोमय-खण्ड, गोबर-खण्ड। २ वि. विषम, कठिन (दे ३, ३८)।

छिप्पाल पुं [दे] सस्यासक्त बैल, खाने में लगा हुआ बैल (दे ३, २८)।
छिप्पालुअ न [दे] पूँछ, लांगूल (दे ३, २६)।
छिप्पिंडी स्त्री [दे] १ व्रत-विशेष। २ उत्सव-विशेष। ३ पिष्ट, पिसान (दे ३, ३७)।
छिप्पिअ वि [दे] क्षरित, झरा हुआ, टपका हुआ (पाअ)।
छिप्पीर न [दे] पलाल, पुआल, तृण (दे ३, २८)।
छिप्पोल्ली स्त्री [दे] अजादि की विष्ठा (निचू १)।
छिब्भ सक [क्षिप्] फेंकना। छिब्भंति (सूअ १, ५, २, १२)।
छिमिछिमिछिम अक [छिमिछिमाय्] 'छिम-छिम' आवाज करना। वकृ. छिमि-छिमिछिमंत (पउम २६, ४८)।
छिरा स्त्री [शिरा] नस, नाड़ी, रग (ठा २, १; हे १, २६६)।
छिरि पुं [दे] भालू की आवाज (पउम ६४, ४५)।
छिल्ल न [दे] १ छिद्र, विवर (दे ३, ३५; षड्)। २ कुटी, कुटिया, छोटा घर। ३ बाड़ का छिद्र (दे ३, ३५)। ४ पलाश का पेड़ (ती ६)।
छिल्लर न [दे] पल्वल, छोटा तलाव (दे ३, २८; सुर ४, २२६)।
छिल्लर वि [दे] असार, छिछरा, खालरा;
छिल्ली स्त्री [दे] शिखा, चोटी (दे ३, २७)।
छिव सक [स्पृश्] स्पर्श करना, छूना। छिवइ (हे ४, १८२)। कर्म. छिप्पइ, छिवि-ज्जइ (हे ४, २५७)। वकृ. छिवंत (गा २६६)। कवकृ. छिप्पंत, छिविज्जमाण (कुमा; गा ४४३; स ६३२; श्रा १२)।
छिवट्ठ [दे] देखो छेवट्ठ (कम्म २, ४)।
छिवण न [स्पर्शन] स्पर्श, छूना (उप १८७ टी; ६७७)।
छिवा स्त्री [दे] श्लक्ष्ण कष, चीकना चाबुक; 'छिवापहारे य' (णाया १, २—पत्र ८६; पण्ह १, ३; विपा १, ६)।
छिवाडिआ } स्त्री [दे] १ वल्लि वगैरह की
छिवाडी } फली, सीम या सेम (जं १)। २ पुस्तक-विशेष, पतले पन्नेवाली ऊँची पुस्तक,

जिसके पन्ने विशेष लम्बे और कम चौड़े हों ऐसी पुस्तक (ठा ४, २; पव ८०)।

छिविअ वि [स्पृष्ट] १ छूआ हुआ (दे ३, २७) २ न. स्पर्श, छूना (से २, ८)।

छिविअ न [दे] ईख का टुकड़ा (दे ३, २७)।

छिवोल्लअ [दे] देखो छिव्वोल्ल (गा ६०५ अ)।

छिव्व वि [दे] कृत्रिम, बनावटी (दे ३, २७)।

छिव्वोल्ल न [दे] १ निन्दार्थक मुख-विकूणन, अरुचि-प्रकाशक मुख-विकार-विशेष। २ विकूणित मुख (दे ३, २८)।

छिह सक [स्पृश्] स्पर्श करना, छूना। छिहइ (हे ४, १८२)।

छिहंड न [शिखण्ड] मयूर की शिखा (णाया १, १—वत्र ५७ टी)।

छिहंडअ पुं [दे] दही का बना हुआ मिष्टान्न, दधिसर; गुजराती में जिसे 'सिखंड' कहते हैं (दे ३, २९)।

छिहंडि पुं [शिखण्डिन्] १ मयूर, मोर। २ वि. मयूरपिच्छ को धारण करनेवाला (णाया १, १—पत्र ५७ टी)।

छिहली स्त्री [दे] शिखा, चोटी (बृह ४)।

छिहा स्त्री [स्पृहा] स्पृहा, अभिलाष (कुमा; हे १, १२८; षड्)।

छिहिंडिभिल्ल न [दे] दधि, दही (दे ३, ३०)।

छिहिअ वि [स्पृष्ट] छूआ हुआ (कुमा)।

छीअ स्त्रीन [क्षुत] छिक्का, छींक (हे १, ११२; २, १७; ओघ ६४३; पडि)। स्त्री. °आ (श्रा २७)।

छीअमाण वि [क्षुवत्] छींक करता (आचा २, २, ३)।

छीण वि [क्षीण] क्षय-प्राप्त, कृश, दुर्बल (हे २, ३; गा ८४)।

छीयंत वि [क्षुवत्] छींक करता (ती ८)।

छीर न [क्षीर] जल, पानी। २ दुग्ध, दूध (हे २, १७; गा ५६७)। °बिराली स्त्री [°बिडाली] वनस्पति-विशेष, भूमि-कूष्माण्ड (पएण १—पत्र ३५)।

छीरल पुं [क्षीरल] हाथ से चलनेवाला एक तरह का जन्तु, साँप की एक जाति (पराह १, १)।

छीवोल्लअ [दे] देखो छिव्वोल्ल (गा ६०३)।

छु सक [क्षुद्] १ पीसना। २ पीलना। कर्म. छुज्जइ (उव)। कवकृ. छुज्जमाण (संथा ६०)।

छुअ देखो छीअ (प्राप्र)।

छुअ देखो छुव। छुअइ (प्राकृ ७६)।

छुई स्त्री [दे] बलाका, बकपंक्ति (दे ३, ३०)।

छुंछुई स्त्री [दे] कपिकच्छु; केवाँच का पेड़ (दे ३, ३४)।

छुंछुमुसय न [दे] रणरणक, उत्सुकता, उत्कण्ठा (दे ३, ३१)।

छुंद वि [आ+क्रम्] आक्रमण करना। छुंदइ (हे ४, १६०; षड्)।

छुंद सक [दे] बहु, प्रभूत (दे ३, ३०)।

छुक्कारण न [धिक्कारण] धिक्कारना, निंदा (बृह २)।

छुच्छ वि [तुच्छ] तुच्छ, क्षुद्र, हलका (हे १, २०४)।

छुच्छुक्कर सक [छुच्छु+कृ] 'छुछु' आवाज करना, श्वानादि को बुलाने को आवाज करना। छुच्छुक्करेति (आचा)।

छुज्जमाण देखो छु।

छुट्ट अक [छुट्] छूटना, बन्धन-मुक्त होना। छुट्टइ (भवि)। छुट्टह (धम्म ६ टी)।

छुट्ट वि [छुटित] छूटा हुआ, बन्धन-मुक्त (सुपा ४०७; सूक्त ८६)।

छुट्ट वि [दे] छोटा, लघु (पाअ)।

छुट्टण न [छोटन] छुटकारा, मुक्ति (श्रा २७)।

छुड्ड वि [दे] १ लिप्त। २ क्षिप्त, फेंका हुआ (भवि)।

छुडु अ [दे] १ यदि, जो (हे ४, ३८५; ४२२)। २ शीघ्र, तुरन्त (हे ४, ४०१)।

छुड्ड वि [क्षुद्र] क्षुद्र, तुच्छ, हलका, लघु (औप)।

छुड्डिया स्त्री [क्षुद्रिका] आभरण-विशेष (पराह २, ५—पत्र १५९ टी)।

छुण्ण वि [क्षुण्ण] १ चूर्णित, चूर-चूर किया हुआ। २ विहत, विनाशित। ३ अभ्यस्त (हे २, १७; प्राप्र)।

छुत्त वि [छुप्त] स्पृष्ट, छूआ हुआ (हे २, १३८; कुमा)।

छुत्ति स्त्री [दे] छूत, अशौच (सूक्त ८९)।

छुद्दहीर पुं [दे] १ शिशु, बच्चा, बालक। २ शशी, चन्द्रमा (दे ३, ३८)।

छुद्दिया देखो छुड्डिया (पराह २, ५—पत्र १४९)।

छुद्र देखो खुद्द (प्राप्र)।

छुद्ध वि [दे] क्षिप्त, प्रेरित (सण)।

छुध वि [क्षुध] भूखा (प्राकृ २२)।

छुन्न पुंन [क्षुण्ण] क्लीब, नपुंसक (पिंड ४२५)।

छुन्न देखो छुण्ण; 'जंतम्मि पावमइणा छुन्ना छन्नेण कम्मेण' (संथा ५९)।

छुप्पंत देखो छुव।

छुब्भ अक [क्षुभ्] क्षुब्ध होना, विचलित होना। छुब्भंति (पि ६६)।

छुब्भत्थ [दे] देखो छोब्भत्थ (दे ३, ३३)।

छुभ देखो छुह। छुभइ, छुभेइ (महा; रयण २०)। संकृ छुभित्ता (पि ६६)।

छुमा देखो छमा (दसचू १)।

छुर सक [छुर्] १ लेप करना, लीपना। २ छेदन करना, छेदना। ३ व्याप्त करना (वा १२; पउम २८, २८)।

छुर पुं [क्षुर] १ छुरा, नपित का अस्त्र। २ पशु का नख, खुर। ३ वृक्ष-विशेष, गोखरू। ४ बाण, शर, तीर (हे २, १७; प्राप्र)। ५ न. तृण-विशेष (पएण १)। °घरय न [°गृहक] नापित के छुरा वगैरह रखने की थैली (निचू १)।

छुरण न [क्षुरण] अवलेपन (कप्पू)।

छुरमड्डि पुं [दे] नापित, हजाम (दे ३, ३१)।

छुरहत्थ पुं [दे. क्षुरहस्त] नापित, हजाम (दे ३, ३१)।

छुरिआ स्त्री [दे] मृत्तिका, मिट्टी (दे ३, ३१)।

छुरिआ, छुरिगा स्त्री [क्षुरिका] छुरी, चाकू (महा; सुपा ३८१; स १४७)।

छुरिय वि [छुरित] १ व्याप्त। २ लिप्त (पउम २८, २८)।

छुरी स्त्री [क्षुरी] छुरी, चाकू (दे २, ४; प्रासू ६५)।

छुल्ल देखो छुड्डु (सुपा १५६)।

छुल्लुच्छुल देखो चुल्लुच्छल। छुल्लुच्छुलेइ (सूअनि ६६ टी)।

छुव सक [छुप्] स्पर्श करना छूना। कर्म. छुप्पइ, छुविज्जइ (हे ४, २४६)। कवकृ. छुप्पंत (उप ३३६; ७२८ टी)।

छुह सक [क्षिप्] फेंकना, डालना। छुहइ (उवः हे ४, १४३)। संकृ. छोढूण, छोढूणं (स ८५; विसे ३०१)।

छुहा स्त्री [सुधा] १ अमृत, पीयूष (हे १, २६५; कुमा)। २ खड़ी, मकान पोतने का श्वेत द्रव्य-विशेष, चूना (दे १, ७८; कुमा)। °अर पुं [°कर] चन्द्र, चन्द्रमा (षड्)।

छुहा स्त्री [क्षुध्] क्षुधा, भूख, बुभुक्षा (हे १, १७; दे २, ४२)।

छुहाइअ वि [क्षुधित] भूखा, बुभुक्षित (पाअ)।

छुहाउल वि [क्षुदाकुल] ऊपर देखो (गा ५८१)।

छुहालु वि [क्षुधालु] ऊपर देखो (उप पृ १६०; १५० टी)।

छुहिअ वि [क्षुधित] ऊपर देखो (उव; उप ७२८ टी; प्रासू १८०)।

छुहिअ वि [दे] लिप्त, पोता हुआ (दे ३, ३०)।

छूढ वि [क्षिप्त] क्षिप्त, प्रेरित (हे २, ६२; १२७; कुमा)।

छूहिअ न [दे] पार्श्व का परिवर्त्तन (षड्)।

छेअ सक [छेदय्] १ छिन्न करना। २ तोड़वाना, छेदवाना। कर्म. छेइज्जंति (पि ५४३)। संकृ. छेएत्ता (महा)।

छेअ पुं [दे] १ अन्त, प्रान्त, पर्यन्त (दे ३, ३८; पाअ; से ७, ४८; कम्म १, ३६)। २ देवर, पति का छोटा भाई (दे ३, ३८)। ३ एक देश, एक भाग (से १, ७)। ४ निर्विभाग अंश (कम्म ४, ८२)।

छेअ वि [छेक] निपुण; चतुर, हुशियार (पाअ; प्रासू १७२; औप; णाया १, १)। °यरिय पुं [°चार्य] शिल्पाचार्य, कलाचार्य (भग ७, ६)।

छेअ वि [दे. छेक] १ विशुद्ध, निर्मल (पंचा ३, ३५; ३८)। २ न. कालोचित हित (धर्मसं ५४३)।

छेअ पुं [छेद] १ नाश, विनाश; 'विज्जाच्छेओ कओ भद्द' (सुर ५, १६४)। २ खण्ड, विभाग (से १, ७)। ३ छेदन, कर्त्तन; 'जीहाछेअं' (गा १५३; से ७, ४८)। ४ छः जैन आगम-ग्रन्थ, वे ये हैं—निशीथसूत्र, महानिशीथसूत्र, दशा-श्रुतस्कन्ध, बृहत्कल्प, व्यवहारसूत्र, पञ्चकल्पसूत्र (विसे २२६५)। ५ छिन्न विभाग, अलग किया हुआ अंश (से ७, ४८)। ६ कमी, न्यूनता (पंचा १६)। ७ प्रायश्चित्त-विशेष (ठा ४, १)। ८ शुद्धि-परीक्षा का एक अंग, धर्म-शुद्धि जानने का एक लक्षण, निर्दोष बाह्य आचरण; 'सो छेएण सुद्धोत्ति' (पंचव ३)। °रिह न [°र्ह] प्रायश्चित्त विशेष (ठा १०)।

छेअअ, छेअग } वि [छेदक] छेदन करनेवाला, काटनेवाला (नाट; विसे ५१३)।

छेअण न [छेदन] १ खण्डन, कर्त्तन, द्विधा करण (सम ३६; प्रासू १४०)। २ कमी न्यूनता, ह्रास (आचा)। ३ शस्त्र, हथियार (सूअ २, ३)। ४ निश्चायक वचन (बृह १)। ५ सूक्ष्म अवयव (बृह १)। ६ जल-जीव-विशेष (सूअ २ ३)।

छेओवट्ठावण न [छेदोपस्थापनीय] जैन संयम-विशेष, बड़ी दीक्षा (नव २६; पंचा ११)।

छेओवट्ठावणिय न [छेदोपस्थापनीय] ऊपर देखो (सक)।

छेंछई [दे] देखो छिंछई (गा ३०१)।

छेंड [दे] देखो छिंड (दे ३, ३५)।

छेंडा स्त्री [दे] १ शिखा, चोटी। २ नव-मालिका, लता-विशेष (दे ३, ३६)।

छेंडी स्त्री [दे] छोटी गली, छोटा रास्ता (दे ३, ३१)।

छेग देखो छेअ = छेक (दे ३, ४७)।

छेज्ज देखो छिज्ज (दसनि २; महा)।

छेज्जा स्त्री [छेद्या] छेदन-क्रिया (सूअ १,४)।

छेण पुं [दे] स्तेन, चोर (षड्)।

छेत्त देखो खेत्त (गा ६; उप ३५७ टी; स १६४; भवि)।

छेत्तर न [दे] सूप वगैरह पुराना गृहोपकरण (दे ३, ३२)।

छेत्तसोवणय न [दे] खेत में जागना (दे ३, ३२)।

छेत्तु वि [छेत्तृ] छेदनेवाला, काटनेवाला (आचा)।

छेद देखो छेअ = छेदय्। कर्म. छेदीअंति (पि ५४३)। संकृ. छेदिऊण, छेदेत्ता (पि ५८६; भग)।

छेद देखो छेअ = छेद (पउम ४४, ६७; औप; वव १)।

छेदअ वि [छेदक] छेदनेवाला (पि २३३)।

छेदण वि [छेदन] छेदन-कर्ता। स्त्री. °णी (स ७६६)।

छेदोवट्ठावणिय देखो छेओवट्ठावणिय (ठा ३, ४)।

छेध पुं [दे] १ स्थासक, चन्दनादि सुगन्धि वस्तु का विलेपन। २ चोर, चोरी करनेवाला (दे ३, ३६)।

छेप्प न [दे. शेप] पुच्छ, लाङ्गूल, पूँछ (गा ६२; विपा १, २; गउड)।

छेभय पुं [दे] चन्दन आदि का विलेपन, स्थासक (दे ३, ३२)।

छेल, छेलग, छेलय } पुंस्त्री [दे] अज, छाग, बकरा (दे ३, ३२; स १५०)। स्त्री. °लिआ, °ली (पि २३१; पण्ह १, १—पत्र १४)।

छेलावण न [दे] १ उत्कृष्ट हर्ष-ध्वनि। २ बाल-क्रीडन। ३ चीत्कार, ध्वनि-विशेष; 'छेलावणमुक्किट्ठाइ बालकीलावणं च सेंटाइ' (आवम)।

छेलिय न [दे] सेण्टित, नाक छींकने का शब्द, अव्यक्त ध्वनि-विशेष (पण्ह १, ३; विसे ५०१)।

छेली स्त्री [दे] थोड़े फूलवाली माला (दे ३, ३१)।

छेवग न [दे] महामारी या मारी वगैरह फैली हुई बीमारी (वव ५; निचू १)।

छेवट्ट, छेवट्ठ } न [दे. सेवार्त्त, छेदवृत्त] १ संहनन-विशेष, शरीर-रचना-विशेष, जिसमें मर्कट-बन्ध, बेठन और खीला न होकर यों ही हड्डियाँ आपस में जुड़ी हों ऐसी

शरीर-रचना (सम ४४; १४६; भग; कम्म १, ३६)। २ कर्म-विशेष, जिसके उदय से पूर्वोक्त संहनन की प्राप्ति होती है वह कर्म (कम्म १, ३६)।

छेवाडी [दे] देखो छिवाडी (पव ८०; निचू १२; जीव ३)।

छेह पुं [दे. क्षेप] प्रेरण, क्षेपण; 'तो वम्र-परिणामोणग्रभुमम्मावलिरुब्भमाणदिट्ठिच्छेहो' (से ४, १७)।

छेहत्तरि (अप) देखो छाहत्तरि (पिंग)।

छोअ पुं [दे] छिलका (सूम्र २, १, १६)।

छोइअ पुं [दे] दास, नौकर (दे ३३)।

छोइआ स्त्री [दे] छिलका, ईख वगैरह की छाल (उप ७६८ टी); 'उच्छुखंडे पत्थिए छोइयं पणामेइ' (महा)।

छोकरी स्त्री [दे] छोकरी, लड़की (कुप्र ५३)।

छोट्टि स्त्री [दे] उच्छिष्टता, जूठाई (पिंड ५८७)।

छोड सक [छोटय्] छोड़ना, बन्धन से मुक्त करना। छोडइ, छोडेइ (भवि; महा)। संकृ. छोडिवि (सुपा २४६)।

छोडय वि [दे] छोटा, लघु (वज्जा १६४)।

छोडाविय वि [छोटित] छुड़वाया हुआ, बन्धन-मुक्त कराया हुआ (स ६२)।

छोडि स्त्री [दे] छोटी, लघ्वी, क्षुद्र (पिंग)।

छोडिअ वि [छोटित] १ छोड़ा हुआ, बन्धन मुक्त किया हुआ; 'वत्थाम्रो छोडिम्रो गंठी' (सुपा ५०४; स ४३१)। २ घट्टित, आहत (पण्ह १, ४—पत्र ७८)।

छोडिअ देखो फोडिअ (औप)।

छोढूण वि [दे] छोड़कर (कुप्र ३१)।

छोढूण } देखो छुह।
छोढूणं }

छोप्प वि [स्पृश्य] स्पर्श-योग्य, छूने लायक (आचा २, १५, ५)।

छोब्भ पुं [दे] पिशुन, खल, दुर्जन (दे ३, ३३)। देखो छोभ।

छोब्भ वि [क्षोभ्य] क्षोभ-योग्य, क्षोभणीय; 'होंति सत्तपरिवज्जिया य छोभा (? ब्भा) सिप्पकलासमयसत्थपरिवज्जिया' (पण्ह १, ३—पत्र ५५)।

छोब्भत्थ वि [दे] अप्रिय, अनिष्ट (दे ३, ३३)।

छोब्भाइत्ती स्त्री [दे] १ अस्पृश्या, छूने के अयोग्या। २ द्वेष्या, अप्रीतिकर स्त्री (दे ३, ३६)।

छोभ [दे] देखो छोब्भ (दे ३, ३३ टि)। २ निस्सहाय, दीन (पण्ह १, ३—पत्र ५५)। ३ न. अभ्याख्यान, कलंक-आरोपण, दोषारोप (बृह १; वव २)। ४ न. वन्दन-विशेष, दो खमासमण-रूप वन्दन (गुभा १)। ५ आघात; 'कोवेण धमधमंतो दंतच्छोभे ये देइ सो तम्मि' (महा)।

छोम देखो छउम (गाया १, ६—पत्र १५७)।

छोयर पुं [दे] छोरा, लड़का, छोकरा (उप पृ २१५)।

छोलिअ देखो छोडिअ = छोटित (पिंग)।

छोल्ल सक [तक्ष्] छीलना, छाल उतारना। छोल्लइ (षड्)। कर्म. छोल्लिज्जंतु (हे ४, ३६५)।

छोल्लण न [तक्षण] छीलना, निस्तुषीकरण, छिलका उतारना (णाया १, ७)।

छोल्लिय वि [तष्ट] छिलका उतारा हुआ, तुष-रहित किया हुआ (उप १७५)।

छोह पुं [दे] १ समूह, यूथ, जत्था। २ विक्षेप (दे ३, ३६)। ३ आघात; 'ताव य सो मायंगो छोहं जा देइ उत्तरिज्जम्मि' (महा)।

छोह पुं [क्षेप] १ क्षेपण, फेंकना; 'नियदिट्ठिच्छोहअमयधाराहिं' (सुपा २६८)।

छोहर [दे] देखो छोयर (सुपा ५५२)।

छोहिय वि [क्षोभित] क्षोभ-प्राप्त, घबड़ाया हुआ, व्याकुल किया गया (उप १३७ टी)।

॥ इस सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि छआराइसद्दसंकलणो
पंचदसमो तरंगो समत्तो ॥

ज

ज पुं [ज] तालु-स्थानीय व्यंजन वर्ण-विशेष (प्रामा; प्राप)।

ज स [यत्] जो, जो कोई (ठा ३, १; जी ८; कुमा; गा १०६)।

°ज वि [°ज] उत्पन्न, 'आसाइयरससेम्रो होइ विसेसेण णेहजो दहणो' (गा ७६६); 'आरं-भज' (आचा)।

जअक्कार पुं [जयकार] जीत, अभ्युदय (प्राकृ ३०)।

जअड अक [त्वर्] त्वरा करना, शीघ्रता करना। जअडइ (हे ४,१७०; षड्)। वकृ. जअडंत (हे ४, १७०)। प्रयो. जअडावंति (कुमा)।

जअल वि [दे] छन्न, आच्छादित, ढका हुआ (षड्)।

जइ पुं [यति] १ साधु, जितेन्द्रिय, संन्यासी (औप; सुपा ४४४)। २ छन्द-शास्त्र में प्रसिद्ध विश्राम-स्थान, कविता का विश्राम-स्थान (धम्म १ टी)।

जइ वि [यति] जितना (वव १)।

जइ अ [यदा] जिस समय, जिस वक्त (प्राप्र)।

जइ अ [यदि] यदि, जो, अगर (सम १५५;

विपा १, १)। °वि अ [°अपि] जो भी (महा)।

जइ अ [यत्र] जहाँ, जिस स्थान में (षड्)।

जइ वि [जयिन्] जीतनेवाला, विजयी (कुमा)।

जइअव्व वि [जेतव्य] जीतने योग्य (प्रवि १२)।

जइआ अ [यदा] जिस समय, जिस वक्त (उवः हे ३, ६५)।

जइच्छा स्त्री [यदृच्छा] १ स्वतन्त्रता। २ स्वेच्छाचार (राज)।

जइण वि [जैन] १ जिन-देव का भक्त, जिन-धर्मी। २ जिन भगवान् का, जिन-देव से संबन्ध रखनेवाला (विसे ३८३; धम्म ६ टी; सुर ८, ६४)। स्त्री. °णी (पंचा ३)।

जइण वि [जयिन्] जीतनेवाला; 'मणपवण-जइणवेगं' (उवा; णाया १, १—पत्र ३१)।

जइण वि [जविन्] वेगवाला, वेग-युक्त, त्वरा-युक्त; 'उवइयउप्पइयचवलजइणसिग्घवे-गाहिं' (औप)।

जइत्त वि [जैत्र] १ जीतनेवाला, विजयी (ठा ६)। २ पुं. नृप-विशेष (रंभा)।

जइत्ता देखो जय = जि।

जइय वि [जयिक] जयावह, विजयी (णाया १, ८—पत्र १३३)।

जइय वि [यष्टृ] याग करनेवाला, 'तुब्भे जइया जन्नाणं' (उत्त २५, ३८)।

जयअव्व देखो जय = यत्।

जइवा अ [यदि वा] अथवा, या (वव १)।

जइस (अप) वि [यादृश] जैसा, जिस तरह का (षड्)।

जउ न [जतु] लाक्षा, लाख, लाह (ठा ४,४; उप पृ २४)।

जउ पुं [यदु] १ स्वनाम-ख्यात एक राजा। २ सुप्रसिद्ध क्षत्रिय वंश (उव)। °णंदण पुं [°नन्दन] १ यदुवंशीय, यदुवंश में उत्पन्न। २ श्रीकृष्ण (उव)।

जउ पुं [यजुष्] वेद-विशेष, यजुर्वेद (अणु)।

जउण पुं [यमुन] स्वनाम-प्रसिद्ध एक राजा (उप ४५७)।

जउण, जँउण°, जँउणा स्त्री [यमुना] भारत की एक प्रसिद्ध नदी, जमुना (ठा १, २; हे १, ४; १७८)।

जउणा देखो जँउणा (वज्जा १२२; प्राकृ ११)।

जओ अ [यतः] १ क्योंकि, कारण कि, चूँकि (श्रा २८)। २ जिससे, जहाँ से (प्रासू ८२, १४८)।

जं अ [यत्] १ क्योंकि, कारण कि। २ वाक्यान्तर का संबन्ध-सूचक अव्यय (हे १,२४; महा, गा ६६)। °किंच अ [°किञ्चित्] १ जो कुछ, जो कोई (पडि; पण्ह १, ३)। २ असंबद्ध, अयुक्त, तुच्छ, नगण्य (पंचव ४)।

जंकयसुकय वि [दे] अल्प सुकृत से ग्राह्य, थोड़े उपकार से अधीन होनेवाला (दे ३, ४५)।

जंगम वि [जंगम] १ चलनेवाला, जो एक स्थान से दूसरे स्थान में जा सकता हो वह (ठा ६; भवि)। २ छन्द-विशेष (पिंग)।

जंगल पुं [जङ्गल] १ देश-विशेष, सपादलक्ष देश (कुमा; सत्त ६७ टी)। २ निर्जल प्रदेश (बृह १)। ३ न. मांस; 'गयकुंभवियारिय-मोत्तिएहि जं जंगलं किणइ' (वज्जा ४२)।

जंगा स्त्री [दे] गोचर-भूमि, पशुओं को चरने की जगह (दे ३, ४०)।

जंगिअ वि [जाङ्गमिक] १ जंगम वस्तु से संबन्ध रखनेवाला, जंगम-संबन्धी। २ न. जंगम जीवों के रोम का बना हुआ कपड़ा (ठा ३, ३; ५, ३; कस)।

जंगुलि स्त्री [जाङ्गुलि] विष उतारने का मन्त्र, विष-विद्या (ती ४५)।

जंगुलिय पुं [जाङ्गुलिक] गारुड़िक, विषमन्त्र का जानकार, विषहरिया (पउम १०५,५७)।

जंगोल स्त्रीन [जाङ्गुल] विष-विघातक तन्त्र, विष-विद्या, आयुर्वेद का एक विभाग जिसमें विष की चिकित्सा का प्रतिपादन है (विपा १, ७—पत्र ७५)। स्त्री. °ली (ठा ८)।

जंघा स्त्री [जङ्घा] जाँघ, जानु के नीचे का भाग (आचा; कप्प)। °चर वि [°चर] पादचारी, पैर से चलनेवाला (अणु)। °चारण पुं [°चारण] एक प्रकार के जैन मुनि, जो अपने तपोबल से आकाश में गमन कर सकते हैं (भग २०, ८; पव ६७)। °संतारिम वि [संतार्य] जाँघ तक पानीवाला जलाशय (आचा २, ३, २)।

जंघाच्छेअ पुं [दे] चत्वर, चौक (दे ३, ४३)।

जंघामय, जंघालुअ वि [दे] जंघाल, द्रुत-गामी, वेग से जानेवाला (दे ३, ४२; षड्)।

जंघाल वि [जङ्घाल] द्रुत-गामी (दे ८, ७८)।

जंत सक [यन्त्र्] १ वश करना, काबू में करना। २ जकड़ना, बाँधना (उप पृ १३१)।

जंत न [यन्त्र] १ कल, युक्ति-पूर्वक शिल्प आदि कर्म करने के लिए पदार्थ-विशेष, तिल-यन्त्र आदि (जीव ३; गा ५५४; पडि; महा; कुमा)। २ वशीकरण, रक्षा वगैरह के लिए किया जाता लेख प्रयोग (पण्ह १, २)। ३ संयमन, नियन्त्रण (राय)। °पत्थर पुं [प्रस्तर] गोफण का पत्थर (पण्ह १, २)। °पिल्लणकम्म न [°पीडनकर्मन्] यन्त्र द्वारा तिल, ईख आदि पीलने या पेरनेका धंधा (पडि)। °पुरिस पुं [°पुरुष] यन्त्र-निर्मित पुरुष, यन्त्र से पुरुष की चेष्टा करनेवाला पुतला (आवम)। °वाडचुल्ली स्त्री [°पाटचुल्ली] इक्षु-रस पकाने का चूल्हा (ठा ८—पत्र ४१७)। °हर न [°गृह] धारा-गृह, पानी का फवारावाला स्थान (कुमा)।

जंत देखो जा = या।

जंतण न [यन्त्रण] १ नियन्त्रण, संयमन, काबू। २ रोकनेवाला, प्रतिरोधक, (से ४, ४६)।

जंतिअ पुं [यान्त्रिक] यन्त्र-कर्म करनेवाला, कल चलानेवाला (गा ५५४)।

जंतिअ वि [यन्त्रित] नियन्त्रित, जकड़ा हुआ (पउम ५३, १४५)।

जंतु पुं [जन्तु] जीव, प्राणी (उत्त ३; सण)।

जंतुग न [जन्तुक] जलाशय में होनेवाला तृण-विशेष (पण्ह २, ३—पत्र १२३)।

जंतुय वि [जान्तुक] जन्तुक नामक तृण का (आचा २, २, ३, १४)।

जंप सक [जल्प्] बोलना, कहना। जंपइ (प्राप्र)। वकृ. जंपंत, जंपमाण (महा; गा १६८; सुर ४, २)। संकृ. जंपिऊण, जंपिऊणं, जंपिय (प्राकृ; महा)। हेकृ. जंपिउं (महा)। कृ. जंपिअव्व (गा २४२)।

जंपण न [जल्पन] उक्ति, कथन, कहना (श्रा १२; गउड)।

जंपण न [दे] १ अकीर्त्ति, अपयश। २ मुख मुँह (दे ३, ५१; भवि)।

जंपय वि [जल्पक] बोलनेवाला, भाषक (पण्ह १, ३)।

जंपाण न [जम्पान] १ वाहन-विशेष, सुखासन, शिविका विशेष (ठा ४, ३; औप; सुपा ३९३; उप ६५६)। २ मृतक-यान, शव-यान (सुपा २१६)।

जंपिच्छय वि [दे] जिसको देखे उसी को चाहनेवाला (दे ३, ४४; पाअ)।

जंपिय वि [जल्पित] कथित, उक्त (प्रासू १३०)।

जंपिय देखो जंप।

जंपिर वि [जल्पितृ] १ जल्पाक, वाचाट (दे २, ६७)। २ बोलनेवाला, भाषक (हे २, १४५; श्रा २७; गा १९२; सुपा ४०२)।

जंपेक्खिरमग्गिर } वि [दे] जिसको देखे
जंपेच्छिरमग्गिर } उसी की याचना करनेवाला (षड्; ३, ४४)।

जंबवई स्त्री [जाम्बवती] श्रीकृष्ण की एक पत्नी (अंत १४; आचू १)।

जंबवंत पुं [जाम्बवत्] एक विद्याधर राजा (कुप्र २५९)।

जंबाल न [दे] १ जंबाल, सैवाल, जलमल, सिवार या सेवार (दे ३, ४२; पाअ)।

जंबाल पुंन [जम्बाल] १ कर्दम, काँदो, पंक (पाअ; ठा ३, ३)। २ जरायु, गर्भ-वेष्टन चर्म (सूअ १, ७)।

जंबीरिय (अप) न [जम्बीर] नीबू या नीबू, फल-विशेष (सण)।

जंबु पुं [जम्बु] १ जम्बुक, सियार; 'उद्धमुहुन्नइयजंबुगणं' (पउम १०५, ५७)। २ एक प्रसिद्ध जैन मुनि, सुधर्म-स्वामी के शिष्य, अन्तिम केवली (कप्प; वसु; विपा १, १)। ३ न. जम्बू वृक्ष का फल, जामुन (श्रा ३६)।

जंबु पुंन [जम्बु] जम्बू वृक्ष का फल, जामुन; 'ते बिंति जंबू भक्खेमो' (संबोध ४७)।

जंबु° देखो जंबू (कप्प; कुमा; इक; पउम ५९, २२; से १३, ८६)।

जंबुअ पुं [दे] १ वेतस वृक्ष, बेंत। २ पश्चिम दिक्पाल (दे ३, ५२)।

जंबुअ } पुं [जम्बुक] १ सियार, गीदड़
जंबुग } (प्रासू १७१; उप ७६८ टी; पउम १०५, ६४)। २ न. जम्बूवृक्ष का फल, जामुन (सुपा २२९)।

जंबुल पुं [दे] १ वानीर वृक्ष, बेंत। २ न. मद्यभाजन, सुरापात्र (दे ३, ४१)।

जंबुल्ल वि [दे] जल्पाक, वाचाट, बकवादी (पाअ)।

जंबुवई देखो जंबवई (अंत; पडि)।

जंबू स्त्री [जम्बू] १ वृक्ष-विशेष, जामुन का पेड़ (णाया १, १; औप)। २ जंबू वृक्ष के आकार का एक रत्नमय शाश्वत पदार्थ, सुदर्शना, जिसके कारण यह द्वीप जंबूद्वीप कहलाता है (जं १)। ३ पुं. एक सुप्रसिद्ध जैन मुनि, सुधर्म-स्वामी का मुख्य शिष्य (जं १)। °दीव पुं [°द्वीप] भूखण्ड विशेष, सब द्वीप और समुद्रों के बीच का द्वीप, जिसमें वह भारत आदि क्षेत्र वर्त्तमान है (जं १; इक)। °दीवग वि [°द्वीपक] जम्बूद्वीप-संबन्धी, जम्बूद्वीप में उत्पन्न (ठा ४, २; ६)। °दीवपण्णत्ति स्त्री [°द्वीपप्रज्ञप्ति] जैन आगम-ग्रन्थ-विशेष, जिसमें जंबूद्वीप का वर्णन है (जं १)। °पीढ, °पेढ न [°पीठ] सुदर्शना-जम्बू का अधिष्ठान-प्रदेश (जं ४; इक)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष (इक)। °मालि पुं [°मालिन्] रावण का एक पुत्र, रावण का एक सुभट (पउम ५९, २२; से १३, ८६)। °मेघपुर न [°मेघपुर] विद्याधर-नगर-विशेष (इक)। °संड पुं [°षण्ड] ग्राम-विशेष (आवम)। °सामि पुं [°स्वामिन्] सुप्रसिद्ध जैन मुनि-विशेष (आवम)।

जंबूअ पुं [जम्बूक] सियार, गीदड़ (ओघ ८४ भा)।

जंबूणय न [जाम्बूनद] १ सुवर्ण, सोना (सम ६५; पउम ५, १२९)। २ पुं. स्वनाम-प्रसिद्ध एक राजा (पउम ४८, ९८)।

जंबूलय पुंन [जम्बूलक] उदक-भाजन-विशेष (उवा)।

जंभ पुं [दे] तुष, भूसा, धान्य वगैरह का छिलका (दे ३, ४०)।

जंभंत देखो जंभा = जृम्भ्।

जंभग वि [जृम्भक] १ जँभाई लेनेवाला। २ पुं. व्यन्तर-देवों की एक जाति (कप्प, सुपा ४०)।

जंभणंभण } वि [दे] स्वच्छन्द-भाषी, जो
जंभणभण } मरजी में आवे वह बोलने-
जंभणय } वाला (षड्; दे ३, ४४)।

जंभणी स्त्री [जृम्भणी] तन्त्र-प्रसिद्ध विद्या-विशेष (सूअ २, २; पउम ७, १४४)।

जंभय देखो जंभग (णाया १, १; अंत; भग १४, ८)।

जंभल पुं [दे] जड़, सुस्त, मन्द (दे ३, ४१)।

जंभा स्त्री [जृम्भा] जँभाई, जृम्भण (विपा १,)।

जंभा स्त्री [जृम्भा] एक देवी का नाम (सिरि २०३)।

जंभा } अक [जृम्भ्] जँभाई लेना।
जंभाअ } जंभाइ, जंभाअइ (हे ४, १५७; २४०; प्राप्र; षड्)। वकृ. जंभंत, जंभाअंत (गा ५४६; से ७, ६५; कप्प)।

जंभाइअ न [जृम्भित] जँभाई, जृम्भा (पडि)।

जंभिय न [जृम्भित] १ जँभाई, जृम्भा। २ पुं. ग्राम-विशेष, जहाँ भगवान् महावीर को केवलज्ञान उत्पन्न हुआ था; यह गाँव पारसनाथ पहाड़ के पास की ऋजुबालिका नदी के किनारे पर था (कप्प)।

जक्ख पुं [यक्ष] १ व्यन्तर देवों की एक जाति (पण्ह १, ४; औप)। २ धनेश, कुबेर, यक्षाधिपति (प्राप्र)। ३ एक विद्याधर-राजा, जो रावण का मौसेरा भाई था (पउम ८, १०२)। ४ द्वीप-विशेष। ५ समुद्र-विशेष (चंद १९)। ६ श्वान, कुत्ता; 'अह आयविराहणया उक्खुल्लिहणे पवयणम्मि' (ओघ १९३ भा)। °कद्दम पुं [°कर्दम] १ केसर, अगर, चन्दन, कपूर और कस्तूरी का समभाग मिश्रण (भवि)। २ द्वीप-विशेष। ३ समुद्र-विशेष (चंद २०)। °ग्गह पुं [°ग्रह] यक्षावेश, यक्षकृत उपद्रव (जीव ३; जं २)। °णायग पुं [°नायक] यक्षों का अधिपति, कुबेर (अणु)। °दित्त न [°दीप्त] देखो नीचे °दित्तय (पव २६)। °दिन्ना स्त्री [°दत्ता] महर्षि स्थूलभद्र की बहिन, एक जैन साध्वी

(पडि)। °भद्द पुं [°भद्र] यक्षद्वीप का अधिपति देव-विशेष (चंद २०)। °मंडलपविभत्ति स्त्री [°मण्डलप्रविभक्ति] एक तरह का नाट्य (राय)। °मह पुं [°मह] यक्ष के लिए किया जाता महोत्सव (आचा २, १, २)। °महाभद्द पुं [°महभद्र] यक्ष द्वीप का अधिपति देव (चंद २०)। °महावर पुं [°महावर] यक्ष समुद्र का अधिष्ठाता देव-विशेष (चंद २०)। °राय पुं [°राज] १ यक्षों का राजा, कुबेर। २ प्रधान यक्ष (सुपा ४६२)। ३ एक विद्याधर राजा (पउम ८, १२४)। °वर पुं [°वर] यक्ष-समुद्र का अधिपति देव-विशेष (चंद २०)। °इट्ठ वि [°विष्ट] यक्ष का आवेशवाला, यक्षाधिष्ठित (ठा ५, १; वव २)। °ादित्तय, °ालित्तय न [°ादिप्तक] १ कभी-कभी किसी दिशा में बिजली के समान जो प्रकाश होता है वह, आकाश में व्यन्तर-कृत अग्नि-दीपन (भग ३, ६; वव ७)। २ आकाश में दीखता अग्नि-युक्त पिशाच (जीव ३)। °विस पुं [°विश] यक्ष-कृत आवेश, यक्ष का मनुष्य-शरीर में प्रवेश (ठा २, १)। °ाहिव पुं [°ाधिप] १ वैश्रमण, कुबेर, यक्ष राज। २ एक विद्याधर राजा (पउम ८, ११३)। °ाहिवइ पुं [°ाधिपति] देखो पूर्वोक्त अर्थ (पाअ; पउम ८, ११६)।

जक्खरत्ति स्त्री [दे. यक्षरात्रि] दीपालिका, दीवाली, कार्तिक वदि अमास का पर्व (दे ३, ४३)।

जक्खा स्त्री [यक्षा] एक प्रसिद्ध जैन साध्वी, जो महर्षि स्थूलभद्र की बहिन थी (पडि)।

जक्खिंद पुं [यक्षेन्द्र] १ यक्षों का स्वामी, यक्षों का राजा (ठा ४, १)। २ भगवान् अरनाथ का शासनाधिष्ठायक देव (पव २६; संति ८)।

जक्खिणी स्त्री [यक्षिणी] १ यक्ष-योनिक स्त्री, देवियों की एक जाति (आवम)। २ भगवान् श्रीनेमिनाथ की प्रथम शिष्या (सम १५२)।

जक्खिणी स्त्री [यक्षिणी] देखो जक्खा (मंगल २३)।

जक्खी स्त्री [याक्षी] लिपि-विशेष (विसे ४६४ टी)।

जक्खुत्तम पुं [यक्षोत्तम] यक्ष-देवों की एक अवान्तर जाति (पएण १)।

जक्खेस पुं [यक्षेश] १ यक्षों का स्वामी। २ भगवान् अभिनन्दन का शासन-यक्ष (संति ७)।

जग न [यकृत्] पेट की दक्षिण-ग्रन्थि (पएह १, १)।

जग पुं [दे] जन्तु, जीव, प्राणी; 'पुट्ठो जगा परिसंखाय भिक्खू' (सूअ १, ७, २०)।

जग पुंन [जगत्] प्राणी, जीव; 'पुढविजीवे हिंसिज्जा जे अ तन्निस्सिया जगे' (दस ५, १, ६८; सूअ १, ७, २०; १, ११, ३३)।

जग न [जगत्] जग, संसार, दुनियाँ (स २४६; सुर २, १३१)। °गुरु पुं [°गुरु] १ जगत् में सर्व-श्रेष्ठ पुरुष। २ जगत् का पूज्य। ३ जिन-देव, तीर्थंकर (सं २१; पंचा ४)। °जीवण वि [°जीवन] १ जगत् को जीलानेवाला। २ पुं. जिन-देव (राज)। °णाह पुं [°नाथ] जगत् का पालक, परमेश्वर, जिन-देव (णंदि)। °पियामह पुं [°पितामह] १ ब्रह्मा, विधाता। २ जिनदेव (णंदि)। °प्पगास वि [°प्रकाश] जगत् का प्रकाश करनेवाला, जगत्प्रकाशक (पउम २२, ४७)। °प्पहाण न [°प्रधान] जगत् में श्रेष्ठ (गउड)।

जगई स्त्री [जगती] १ प्राकार, किला, दुर्ग (सम १३; चैत्य ६१)। २ पृथिवी (उत्त १)।

जगईपव्वय पुं [जगतीपर्वत] पर्वत-विशेष (राय ७५)।

जगजग अक [चकास्] चमकना, दीपना। वकृ. जगजगंत, जगजगेंत (पउम ७७, २३; १४, १३४)।

जगड सक [दे] १ झगड़ना, झगड़ा करना, कलह करना। २ कदर्थन करना, पीड़ना। ३ उठाना, जागृत करना। वकृ. जगडंत (भवि)। कवकृ. जगडिज्जंत (पउम ८२, ६; राज)।

जगडण न [दे] नीचे देखो (उव)।

जगडण वि [दे] १ झगड़ा करानेवाला। २ कदर्थना करानेवाला (धर्मवि ८६; कुप्र ४२६)।

जगडणा स्त्री [दे] १ झगड़ा, कलह। २ कदर्थन, पीड़न; 'सेएा च्चिय वम्महएायगस्स जगजगडणापसत्तस्स' (उप ५३० टी)।

जगडिअ वि [दे] विद्रावित, कदर्थित (दे ३, ४४; सार्ध ६७; उव)।

जगडिअ वि [दे] लड़ाया हुआ (धर्मवि ३१)।

जगर पुं [जगर] संनाह, कवच, वर्म (दे ३, ४१)।

जगल न [दे] १ पङ्कवाली मदिरा, मदिरा का नीचला भाग (दे ३, ४१)। २ ईख की मदिरा का नीचला भाग (दे ३, ४१; पाअ)।

जगार पुं [दे] राब, यवागू (पव ४)।

जगार पुं [जकार] 'ज' अक्षर, 'ज' वर्ण (निचू १)।

जगार पुं [यत्कार] 'यत्' शब्द; 'जगारुद्दिट्ठाणं तगारेण निद्देसो कीरइ' (निचू १)।

जगारी स्त्री [जगारी] अन्न-विशेष, एक प्रकार का क्षुद्र अन्न; 'असणं ओयणसत्तुगमुग्गजगारीइ' (पंचा ५)।

जगुत्तम वि [जगदुत्तम] जगत्-श्रेष्ठ, जगत् में प्रधान (पएह २, ४)।

जग्ग अक [जागृ] १ जागना, नींद से उठना। २ सचेत होना, सावधान होना। जग्गइ, जग्गि (हे ४, ८०; षड्; प्रासू ६८)। वकृ. जग्गंत (सुपा १८५)। प्रयो. जग्गावइ (पि ५५६)।

जग्गण न [जागरण] जागना, निद्रा-त्याग (ओघ १०६)।

जग्गविअ वि [जागरित] जगाया हुआ, नींद से उठाया हुआ (सुपा ३३१)।

जग्गह पुं [यद्ग्रह] जो प्राप्त हो उसे ग्रहण करने की राजाज्ञा, 'रएणा जग्गहो घोसिओ' (आवम)।

जग्गाविअ देखो जग्गविअ (से १०, ५६)।

जग्गाह देखो जग्गह (आक)।

जग्गिअ वि [जागृत] जगा हुआ, त्यक्त-निद्र (गा ३८५; कुमा; सुपा ५६३)।

जग्गिर वि [जागरितृ] १ जागनेवाला। २ सावचेत रहनेवाला (सुपा २१८)।

जघण न [जघन] कमर के नीचे का भाग, ऊरुस्थल (कप्प; औप)।

जच्च पुं [दे] पुरुष, मरद, आदमी (दे ३, ४०)।

जच्च वि [जात्य] १ उत्तम जातवाला, कुलीन, श्रेष्ठ, उत्तम, सुन्दर (गाया १, १; श्रा १२; सुपा ७७; कप्प)। २ स्वाभाविक, अकृत्रिम (तंदु)। ३ सजातीय, विजाति-मिश्रण से रहित, शुद्ध (जीव ३)।

जच्चंजण न [जात्याञ्जन] १ श्रेष्ठ अञ्जन, सुन्दर आँजन (गाया १, १)। २ मर्दित अञ्जन, तैल वगैरह से मर्दित अञ्जन (कप्प)।

जच्चंदण न [दे] १ अगरु, सुगन्धि द्रव्य-विशेष, जो धूप के काम में आता है। २ कुंकुम, केसर (दे ३, ५२)।

जच्चंध वि [जात्यन्ध] जन्म से अन्धा, जन्मांध (सुपा ३६५)।

जच्चण्णिय } वि [जात्यन्वित] सुकुल में
जच्चन्निय } उत्पन्न, श्रेष्ठ जाति का (सूत्र १, १०; बृह ३)।

जच्चास पुं [जात्यश्व, जात्याश्व] उत्तम जाति का घोड़ा (पउम ५४, २६)।

जच्चिय (अप) वि [जातीय] समान जाति का (सण)।

जच्चिर न [यच्चिर] जहाँ तक, जितने समय तक (वव ७)।

जच्छ सक [यम्] १ उपरम करना, विराम करना। २ देना, दान करना। जच्छइ (हे ४, २१५; कुमा)।

जच्छ पुं [यक्ष्मन्] रोग-विशेष, यक्ष्मा, क्षय-रोग (प्राकृ २२)।

जच्छंद वि [दे] स्वच्छन्द, स्वैर (दे ३, ४३, षड्)।

जज देखो जय = यज्। वकृ. जजमाण (नाट—शकु ७२)।

जजु देखो जउ = यजुष् (गाया १, ५; भग)।

जज्ज वि [जय्य] जो जीता जा सके वह, जीतने को शक्य (हे २, २४)।

जज्जर वि [जर्जर] जीर्ण, सच्छिद्र, खोखला, जांजर, झाँझरा या झाँझर (गा १०१; सुर ३, १३६)।

जज्जर सक [जर्जरय्] जीर्ण करना, खोखला करना। कवकृ. जज्जरिज्जंत, जज्जरिज्जमाण (नाट—चैत ३३; सुपा ६४)।

जज्जरिय वि [जर्जरित] जीर्ण किया गया, खोखला किया हुआ, पुराना (ठा ४, ४; सुर ३, १६५; कस)।

जज्जिग पुं [जय्यिक] एक जैन आचार्य का नाम (ती १५)।

जज्जिय } न [यावज्जीव] जीवन-पर्यन्त,
जज्जीव } जिन्दगी भर; 'जज्जीव अहिगरणं' (पिंड ५०६; ५१२)।

जट्ट पुं [जर्त] १ देश-विशेष (भव)। २ उस देश का निवासी (हे २, ३०)।

जट्ठ वि [इष्ट] यजन किया हुआ, याग किया हुआ (स ५५)।

जट्ठ न [इष्ट] यजन, याग, यज्ञ (उत्त १२, ४०; २५, ३०)।

जट्ठि स्त्री [यष्टि] लकड़ी, 'जट्ठिमुट्ठिलउडपहारेहिं' (महा; प्राप्र)।

जड वि [जड] १ अचेतन, जीव-रहित पदार्थ। २ मूर्ख, आलसी, विवेक-शून्य (पाअ; प्रासू ७१)। ३ शिशिर, जाड़े से ठंढा होकर चलने को अशक्त (पाअ)।

जड देखो जढ (षड्)।

जड° } स्त्री [जटा] सटे हुए बाल, मिले हुए
जडा } बाल (हेका २५७; सुपा २५१)। °धर वि [°धर] १ जटा को धारण करनेवाला। २ पुं. जटाधारी तापस, संन्यासी (पउम ३६, ७५)। °धारि पुं [°धारिन्] देखो पूर्वोक्त अर्थ (पउम ३३, १)।

जडहारि देखो जड-धारि (कुप्र २६३)।

जडाउ } पुं [जटायु] स्वनाम-प्रसिद्ध गृध्र
जडाउण } पक्षि-विशेष (पउम ४४, ५५; ४०)।

जडागि पुं [जटाकिन्] ऊपर देखो (पउम ४१, ६५)।

जडाल वि [जटावत्] जटा-युक्त, जटाधारी (हे २, १५६)।

जडासुर पुं [जटासुर] असुर-विशेष (वेणी १७७)।

जडि वि [जटिन्] १ जटावाला, जटायुक्त। २ पुं. जटाधारी तापस (औप; भत्त १००)।

जडिअ वि [जटिक] देखो जडि (कुप्र २६३)।

जडिअ वि [जटित] पिहित, ढका हुआ (सिरि ५१६)।

जडिअ वि [दे. जटित] जड़ित जड़ा हुआ, खचित, संलग्न (दे ३, ४१; महा; पाअ)।

जडिम पुंस्त्री [जडिमन्] जड़ता, जड़पन, जाड्य (सुपा ६)।

जडियाइलग } पुं [दे. जटिकादिलक] ग्रह-
जडियाइलय } विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष (ठा २, ३; चन्द २०)।

जडिल वि [जटिल] १ जटावाला, जटा-युक्त (उवा; कुमा २, ३५)। २ व्याप्त, खचित; 'उल्लसियबहलजालोलिजडिले जलणे पवेसो वा' (सुपा ४६५)। ३ पुं. सिंह, केसरी। ४ जटाधारी तापस (हे १, १९४; भग १५; पव ९४)।

जडिलय पुं [दे. जटिलक] राहु, ग्रह-विशेष (सुज्ज २०)।

जडिलिय } वि [जटिलित] जटिल किया
जडिलिल्ल } हुआ, जटा-युक्त किया हुआ (सुपा १२५; २६६)।

जडिल्ल वि [जटिन्] जटावाला, जटाधारी (चंड)।

जगुल देखो जडिल (भग १५—पत्र ६७०)।

जड्डु वि [दे] अशक्त, असमर्थ (पव १०७)।

जड्डु न [जाड्य] जड़ता, जड़पन (उप ३२० टी; सार्ध १३०)।

जड्डु देखो जड (पव १०७; पंचभा)।

जड्डु पुं [दे] हाथी, हस्ती (ओघ २३८; बृह १)।

जड्डा स्त्री [दे] जाड़ा, शीत (सुर १३, २१५; पिंग)।

जढ वि [त्यक्त] परित्यक्त, मुक्त, वर्जित (हे ४, २५८, ओघ ६०); 'जइवि न सम्मत्तजढो' सत्त ७१ टी)।

जढर } न [जठर] पेट, उदर (हे १, २५४;
जढल } प्राप्र; षड्)।

जण सक [जनय्] उत्पन्न करना, पैदा करना। जणेइ, जणंति (प्रासू १५; १०८; महा)। जणयंति (आचा)। वकृ. जणंत, जणेमाण (सुर १३, २१; द्र ३६; उव)।

जण पुं [जन] १ मनुष्य, मानव, आदमी, लोग, व्यक्ति (औप; आचा; कुमा; प्रासू ६;

६५; स्वप्न १६)। २ देहाती मनुष्य (सूत्र १, १, २)। ३ समुदाय, वर्ग, लोक (कुमा; पंचव ४)। ४ वि. उत्पादक, उत्पन्न करनेवाला: 'जेण सुहज्झप्पजणं' (विसे ६६०)। °जत्ता स्त्री [°यात्रा] जन-समागम, जन-संगति: 'जणजत्तारहियाणं होइ जइत्तं जईण सया' (दंस ४)। °ट्ठाण न [°स्थान] १ दण्डकारण्य. दक्षिण का एक जंगल। २ नगर-विशेष. नासिक (ती २८)। °वइ पुं [°पति] लोगों का मुखिया (औप)। °वय पुं [°व्रज] मनुष्य-समूह (पउम ४, ५)। °वाय पुं, [°वाद] १ जन-श्रुति, किंवदन्ती, उड़ती खबर (सुपा ३००)। २ मनुष्यों की आपस में चर्चा (औप)। ३ लोकापवाद, लोक में निन्दा: 'जणवायभएणं' (अव १)। °स्सुइ स्त्री [°श्रुति] किंवदन्ती। °ववाय पुं [°पवाद] लोक में निन्दा (गा ४८४)।

जणइ स्त्री [जनिका] उत्पादिका, उत्पन्न करनेवाली (कुमा)।

जणइउ } पुं [जनयितृ] १ जनक, पिता
जणइत्तु } (राज)। २ वि. उत्पादक, उत्पन्न करनेवाला (ठा ४, ४)।

जणउत्त पुं [दे] ग्राम का प्रधान पुरुष, गाँव का मुखिया (दे ३, ५२; षड्)। २ विट, भाण्ड, भाँड़, विदुषक (दे ३, ५२)।

जणंगम पुं [जनङ्गम] चाण्डाल, 'रायणो हुंति रंका य बंभणा य जणंगमा' (उप १०३१ टी; पात्र)।

जणग देखो जणय (भग; उप पृ २१६; सुर २, १३७)।

जणण न [जनन] १ जन्म देना, उत्पन्न करना, पैदा करना (सुपा ५६७; सुर ३, ६; द्र ५७)। २ वि. उत्पादक, जनक (उर ६, ६; कुमा; भवि); 'जणमणपसायजणणा' (वसु)।

जणणि } स्त्री [जननि, °नी] १ माता,
जणणी } अम्बा (सुर ३, २५; महा; पात्र)। २ उत्पन्न करनेवाली स्त्री, उत्पादिका (कुमा)।

जणद्दण पुं [जनार्दन] श्रीकृष्ण, विष्णु (उप ६४८ टी; पिंग)।

जणप्पवाद पुं [जनप्रवाद] जन-रव, लोकोक्ति, अफवाह (मोह ४३)।

जणमेअअ पुं [जनमेजय] स्वनाम-प्रसिद्ध नृप-विशेष (चारु १२)।

जणमेजय देखो जणमेअअ (धर्मवि ८१)।

जणय वि [जनक] १ उत्पादक, उत्पन्न करनेवाला; 'दिट्ठिविसं पिसुणाणं सव्वं सव्वस्स भयजणयं' (प्रासू १६)। २ पुं. पिता, बाप (पात्र; सुर ३,२५; प्रासू ७७)। ३ देखो जण = जन (सूत्र १, ६)। ४ मिथिला का एक राजा, राजा जनक, सीता का पिता (पउम २१, ३३)। ५ पुंन. ब. माता-पिता, माँ-बाप; 'जं किंपि कोई साहइ. तज्जणयाइं कुणंति तं सव्वं' (सुपा ३५६; ५६८)। °तणआ स्त्री [°तनया] राजा जनक की पुत्री, राजा रामचन्द्र की पत्नी, सीता, जानकी (से १, ३७)। °दुहिया, °धूआ [°दुहितृ] वही अर्थ (पउम २३, ११; ४८, ४)। °नंदण पुं [°नन्दन] राजा जनक का पुत्र, भामण्डल (पउम ६५, २५)। °नंदणी स्त्री [°नन्दनी] सीता, राम-पत्नी, जानकी (पउम ६४, ४६)। °णंदिणी स्त्री [°नन्दिनी] वही अर्थ (पउम ४५, १८)। °निवतणया स्त्री [°नृपतनया] राजा जनक की पुत्री, सीता (पउम ४८, ६०)। °पुत्ती स्त्री [°पुत्री] वही अर्थ (रयण ७८)। °सुअ पुं [°सुत] जनक राजा का पुत्र, भामण्डल (पउम ६५, २८)। °सुआ स्त्री [°सुता] जानकी, सीता (पउम ३७, ६२; से २, ३८; १०, ३)।

जणयंगया स्त्री [जनकाङ्गजा] जानकी, सीता, राजा रामचन्द्र की पत्नी (पउम ४१, ७८)।

जणवय पुं [जनपद] १ देश, राष्ट्र, जन-स्थान, लोकालय (औप)। २ देश-निवासी जन-समूह, प्रजा (पण्ह १, ३; आचा)।

जणवय वि [जानपद] देश में उत्पन्न, देश का निवासी (आचा)।

जणस्सुइ स्त्री [जनश्रुति] किंवदन्ती, अफवाह, कहावत (धर्मवि ११२)।

जणि (अप) अ [इव] तरह, माफिक, जैसा (हे ४, ४४४; षड्)।

जणिअ वि [जनित] उत्पादित, उत्पन्न किया हुआ (पात्र)।

जणी स्त्री [जनी] स्त्री, नारी, महिला (गाया २—पत्र २५३; पउम १५, ७३)।

जणु देखो जणि (हे ४, ४४४; कुमा; षड्)।

जणुक्कलिआ स्त्री [जनोत्कलिका] मनुष्यों का छोटा समूह (भग)।

जणुम्मि स्त्री [जनोर्मि] तरंग की तरह मनुष्यों की भीड़ (भग)।

जणेमाण देखो जण = जनय्।

जणेर (अप) वि [जनक] १ उत्पादक, पैदा करनेवाला। २ पुं. पिता, बाप (भवि)।

जणेरि (अप) स्त्री [जननी] माता, माँ (भवि)।

जण्ण पुं [यज्ञ] १ यज्ञ, याग, मख, क्रतु (प्राप्र; गा २२७)। २ देव-पूजा। ३ श्राद्ध (जीव ३)। °इ, °जाइ वि [°याजिन्] यज्ञ करनेवाला (औप; निचू १)। °इज्ज वि [°ईय] १ यज्ञ-सम्बन्धी, यज्ञ का। २ न. 'उत्तराध्ययन' सूत्र का एक प्रकरण (उत्त २५)। °ट्ठाण न [°स्थान] १ यज्ञ का स्थान। २ नगर-विशेष, नासिक (ती २०)। °मुह न [°मुख] यज्ञ का उपाय (उत्त २५)। °वाड पुं [°वाट] यज्ञ-स्थान (गा २२७)। °सेट्ठ पुं [°श्रेष्ठ] श्रेष्ठ यज्ञ, उत्तम याग (उत्त १२)।

जण्ण देखो जन्न = जन्य (धर्मसं १००)।

जण्णय देखो जणय (प्राप्र)।

जण्णयत्ता स्त्री [दे. यज्ञयात्रा] बरात, विवाह की यात्रा, वर के साथियों का गमन (उप ६५४)।

जण्णसेणी स्त्री [याज्ञसेनी] द्रौपदी, पाण्डव-पत्नी (वेणी ३७)।

जण्णहर पुं [दे] नर-राक्षस, दुष्ट-मनुष्य (षड्)।

जण्णिय पुं [याज्ञिक] याजक, यज्ञ करानेवाला (श्रावम)।

जण्णोवईय } न [यज्ञोपवीत] यज्ञ-सूत्र,
जण्णोववीय } जनेऊ (उत्त २; श्रावम)।

जण्णोहण पुं [दे] राक्षस, पिशाच (दे ३, ४३)।

जण्ह न [दे] १ छोटी स्थाली। २ वि. कृष्ण, काले रंग का (दे ३, ५१)।

जण्हई स्त्री [जाह्नवी] गंगा नदी, भागीरथी (अच्चु ६)।

जण्हली स्त्री [दे] नीवी, नारा, इजारबन्द (दे ३, ४०)।

जण्हवी स्त्री [जाह्नवी] १ सगर चक्रवर्त्ती की एक पत्नी, भगीरथ की जननी (पउम ५, २०१)। २ गङ्गा-नदी, भागीरथी (पउम ४१, ५१; कुमा)।

जण्हु पुं [जह्नु] भरत-वंशीय एक राजा (प्राप्र; हे २, ७५)। °सुआ स्त्री [°सुता] गङ्गा-नदी, भागीरथी (पाग्र)।

जण्हुआ स्त्री [दे] जानु, घुटना (पाग्र)।

जण्हुकन्ना स्त्री [जह्नुकन्या] गंगा-नदी (कुप्र ६६)।

जत्त देखो जय = यत्। भवि. जत्तिहामि (निर १, १)।

जत्त पुं [यत्न] उद्योग, उद्यम, चेष्टा (उप पृ ५८)।

जत्ता स्त्री [यात्रा] १ देशान्तर-गमन, देशाटन (ठा ४, १; ग्रौप)। २ गमन, गति; 'जत्तत्ति होइ गमणं' (पंचभा; ग्रौप)। ३ देव-पूजा के निमित्त किया जाता उत्सव-विशेष, ग्रष्टाहिका, रथ-यात्रा ग्रादि; 'हुं नायं पारद्धा सिद्धाययणेसु जत्ताग्रो' (सुर ३, ३८)। ४ तीर्थ-गमन, तीर्थ-भ्रमण (धर्म २)। ५ शुभ-प्रवृत्ति (भग १८, १०)।

जत्ता स्त्री [यात्रा] संयम-निर्वाह (उत्त १६, ८)।

जत्ति स्त्री [दे] १ चिन्ता। २ सेवा, शुश्रूषा; 'ग्रजाणणाए तज्जत्ती न कया तम्मि केणवि' (श्रा २८)।

जत्तिअ देखो °यत्तिअ (उवा २० टि)।

जत्तिय वि [यावत्] जितना (प्रासू १५६; ग्रावम)।

जत्तो देखो जओ (हे २, १६०)।

जत्थ ग्र [यत्र] जहाँ, जिसमें (हे २, १६१; प्रासू ७६)।

जदि देखो जइ = यदि (निचू २)।

जदिच्छा देखो जइच्छा (बृह ३; मा १२)।

जदु देखो जउ = यदु (कुमा; ठा ८)।

जद्दर पुंन [दे] वस्त्र-विशेष (सम्मत्त २१८; २१६)।

जधा देखो जहा (ठा २, ३; ३; १)।

जन्न देखो जण्ण (पराह १, २, ४; पउम ११, ४६)।

जन्न वि [जन्य] १ जन-हित, लोक-हितकर (सूग्र २, ६, २)। २ उत्पन्न होने योग्य (धर्मसं २८०)।

जन्नत्ता } स्त्री [दे] बरात, गुजराती में 'जान'
जन्ना } (सुपा ३६६; उप ७६८ टी)।

जन्नसेणी देखो जण्णसेणी (पार्थ ४)।

जन्नु देखो जाणु (पउम ६८, १०)।

जन्नोवइय देखो जण्णोवईय (सुख २, १३)।

जन्नोवईय देखो जण्णोवईय (गाया १, १६—पत्र २१३)।

जन्हवी देखो जण्हवी (ठा ६, ६)।

जप देखो जव = जप् (षड्)।

जपिर वि [जपितृ] जाप करनेवाला (षड्)।

जप्प देखो जंप। जप्पइ (षड्)। जप्पंति (पि २६६)।

जप्प पुं [जल्प] १ उक्ति, कथन। २ छल का उपालम्भ रूप भाषण (राज)।

जप्प वि [याप्य] गमन कराने योग्य। °जाण न [°यान] वाहन-विशेष, शिविका (दे ६, १२२)।

जप्पभिइ } ग्र [यत्प्रभृति] जब से, जहाँ से
जप्पभिइं } लेकर (गाया १, १; कप्प)।

जप्पिअ वि [जल्पित] १ उक्त, कथित (प्राप)। २ न. उक्ति, वचन (ग्रच्चु २)।

जम सक [यमय्] १ काबू में रखना, नियन्त्रण करना। २ जमाना, स्थिर करना। जमेइ (से १०, ७०)। संकृ. जमइत्ता (ग्रौप)।

जम पुं [यम] १ ग्रहिंसादि पाँच महाव्रत, साधु का व्रत (गाया १, ५; ठा २, ३)। २ दक्षिण दिशा का एक लोकपाल, देव-विशेष, जम-देवता, जमराज (पराह १, १; पाग्र; हे १, २४५)। ३ भरणी नक्षत्र का ग्रधिपति देव (सुज्ज १०)। ४ किष्किन्धा नगरी का एक राजा (पउम ७, ४६)। ५ तापस-विशेष (ग्रावम)। ६ मृत्यु, मौत (ग्राव ४; महा)। ७ संयमन, नियन्त्रण (ग्रावम)। °काइय पुं [°कायिक] ग्रसुर-विशेष, परमाधार्मिक देव, जो नारकी के जीवों को दुःख देते हैं (पराह १, १)। °घोस पुं [°घोष] ऐरवत वर्ष के एक भावी जिन-देव (पव ७)। °पुरी स्त्री [°पुरी] जम की नगरी, मौत का स्थान; 'को जमपुरीसमाणे समसाणे एव-मुल्लवइ?' (सुपा ४६२)। °प्पभ पुं [°प्रभ] यमदेव का उत्पात-पर्वत, पर्वत-विशेष (ठा १०)। °भड पुं [°भट] यमराज का सुभट (महा)। °मंदिर न [°मन्दिर] यमराज का घर, मृत्यु-स्थान (महा)। °लय न [°लय] पूर्वोक्त ही ग्रर्थ (पउम ४५, १०)।

जमग पुं [यमक] १ पक्षि-विशेष। देव-विशेष (जीव ३)। ३ पर्वत-विशेष (जीव ३; सम ११४; इक)। ४ द्रह-विशेष, दह, झील (जीव ३; इक)। देखो जमय।

जमगं } ग्र [दे] एक साथ, एक ही
जमगसमगं } समय में, युगपत् (धम्म ११ टी; गाया १, ४; ग्रौप; विपा १, १)।

जमणिया स्त्री [जमनिका] जैन साधु का उपकरण-विशेष (राज)।

जमदग्गि पुं [जमदग्नि] तापस-विशेष, इस नाम का एक संन्यासी, परशुराम का पिता (पि २३७)।

जमदग्गिजडा स्त्री [यमदग्निजटा] गन्ध-द्रव्य-विशेष, सुगन्धवाला (उत्तनि ३)।

जमय देखो जमग ५ न. ग्रलंकार-शास्त्र में प्रसिद्ध ग्रनुप्रास-विशेष। ६ छन्द-विशेष (पिंग)।

जमल न [यमल] १ जोड़ा, युग्म, युगल (गाया १, १; हे २, १७३; से ५, ५६)। २ समान श्रेणि में स्थित, तुल्य पंक्तिवाला (राय)। ३ सहवर्त्ती, सहचारी (भग १५)। ४ समान, तुल्य (राय; ग्रौप)। °ज्जुणभंजग पुं [°र्जुनभञ्जक] श्रीकृष्ण वासुदेव (पराह १, ४)। °पद, °पय न [°पद] १ प्राय-श्चित्त-विशेष (निचू १)। २ ग्राठ ग्रंकों की संख्या (पराण १२)। °पाणि पुं [°पाणि] मुष्टि, मुट्ठी (भग १६, ३)।

जमलिय वि [यमलित] १ युग्म रूप से स्थित (राय)। २ सम-श्रेणि रूप से ग्रवस्थित (गाया १, १, ग्रौप)।

जमलोइय वि [यमलौकिक] १ यमलोक-सम्बन्धी, यमलोक से सम्बन्ध रखनेवाला। २ परमाधार्मिक देव, ग्रसुरों की एक जाति (सूग्र १, १२)।

जमा स्त्री [यामी] दक्षिण दिशा (ठा १०—पत्र ४७८)।

जमालि पुं [जमालि] स्वनाम-ख्यात एक राज-कुमार, जो भगवान् महावीर का जामाता था, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी और पीछे से अपना अलग पन्थ निकाला था (णाया १, ८; ठा ७)।

जमावण न [यमन] १ नियन्त्रण करना। २ विषम वस्तु को सम करना (निचू १)।

जमिअ वि [यमित] नियन्त्रित, संयमित, काबू में किया हुआ (से ११, ४१; सुपा ३)।

जमुणा देखो **जँउणा** (पि १७६; २५१)।

जमू स्त्री [जमू] ईशानेन्द्र की एक अग्र-महिषी का नाम (इक)।

जम्म अक [जन्] उत्पन्न होना। जम्मइ (हे ४, १३६; षड्)। वकृ. **जम्मंत** (कुमा); 'जम्मंतीए सोगो, वड्ढंतीए य वड्ढए चिंता' (सूक्त ८८)।

जम्म सक [जम्] खाना, भक्षण करना। जम्मइ (षड्)।

जम्म पुंन [जन्मन्] जन्म, उत्पत्ति (ठा ६; महा; प्रासू ६०)।

जम्मण न [जन्मन्] जन्म, उत्पत्ति, उत्पाद (हे २, १७४; णाया १, १; सुर १, ६)।

जम्मा स्त्री [याम्या] दक्षिण दिशा (उप पृ ३७५)।

जम्हाअ, **जम्हाह**, **जम्हाड़** } देखो **जंभाअ**। जम्हाअइ, जम्हाहइ, जम्हाहाइ (प्राकृ ६४)।

जय सक [जि] १ जीतना। २ अक. उत्कृष्ट-पन से बरतना। जयइ (महा)। जयंति (स ३९)। संकृ. **जइत्ता** (ठा ६)।

जय सक [यज्] १ पूजा करना। २ याग करना। जयइ (उत्त २५, ४)। वकृ. **जअमाण** (अभि १२५)।

जय अक [यत्] १ यत्न करना, चेष्टा करना। २ ख्याल करना, उपयोग करना। जयइ (उव)। भवि. जइस्सामि (महा)। वकृ. **जयंत, जयमाण** (स २६०; श्रा २६; ओघ १२४; पुप्फ २४१)। कृ. **जइयव्व** (उव; सुर १, ३४)।

जय न [जगत्] जगत्, दुनियाँ, संसार (प्रासू १५५; से ६, १)। °त्तय न [°त्रय] स्वर्ग, मर्त्य और पाताल लोक (सुपा ७६; ६५)। °नाह पुं [°नाथ] परमेश्वर, परमात्मा (पउम ८६, ६५)। °पहु पुं [प्रभु] परमेश्वर (सुपा २८; ८३)। °णंद वि [°नन्द] जगत् को आनन्द देनेवाला (पउम ११७, ६)।

जय वि [यत] १ संयत, जितेन्द्रिय (भास ६५)। २ उपयोग रखनेवाला, ख्याल रखनेवाला (उत्त १; श्राव ४)। ३ न. छठवाँ गुण-स्थानक (कम्म ४, ४८)। ४ ख्याल, उपयोग, सावधानता (णाया १, १—पत्र ३३); 'जयं चरे जयं चिट्ठे' (दस ४)।

जय पुं [जव] वेग, शीघ्र-गमन, दौड़ (पाअ)।

जय पुं [जय] १ जय, जीत, शत्रु का पराभव (औप; कुमा)। २ स्वनाम-प्रसिद्ध एक चक्रवर्त्ती राजा (सम १५२)। °उर न [°पुर] नगर-विशेष (स ६)। °कम्मा स्त्री [°कर्मा] विद्या-विशेष (पउम ७, १३६)। °घोस पुं [°घोष] १ जय-ध्वनि। २ स्वनाम-प्रसिद्ध एक जैन मुनि (उत्त २५)। °चंद पुं [°चन्द्र] १ विक्रम की बारहवीं शताब्दी का कन्नौज का एक अन्तिम राजा। २ पन्नरहवीं शताब्दी का एक जैनाचार्य (रयण ९४)। °जत्ता स्त्री [°यात्रा] शत्रु पर चढ़ाई (सुपा ५४१)। °पडाया स्त्री [°पताका] विजय का झंडा (श्रा १२)। °पुर देखो °उर (वसु)। °मंगला स्त्री [°मङ्गला] एक राज-कुमारी (दंस ३)। °लच्छी स्त्री [°लक्ष्मी] जय-लक्ष्मी, विजयश्री (से ४, ३१; काप्र ७४३)। °वत वि [°वत्] जय-प्राप्त, विजयी (पउम ६६. ४६)। °वल्लह पुं [°वल्लभ] नृप-विशेष (दंस १)। °संध पुं [°सन्ध] पुण्डरीक-नामक राजा का एक मन्त्री (श्राचू ४)। °संधि पुं [°सन्धि] वही पूर्वोक्त अर्थ (श्राव ४)। °सद्द पुं [°शब्द] विजय-सूचक आवाज (औप)। °सिंह पुं [सिंह] १ सिंहल द्वीप का एक राजा (रयण ४४)। २ विक्रम की बारहवीं शताब्दी का गुजरात का एक प्रसिद्ध राजा, जिसका दूसरा नाम 'सिद्ध-राज' था; 'जेण जयसिंहदेवो राया भणिऊण सयलदेसम्मि' (मुणि १०६००)। ३ स्वनाम-ख्यात जैनाचार्य-विशेष (सुपा ६५८); 'सिरि-जयसिंहो सूरी सयंभरीमण्डलम्मि सुप्रसिद्धो' (मुणि १०८७२)। °सिरि स्त्री [°श्री] विजयश्री, जयलक्ष्मी (श्रावम)। °सेण पुं [°सेन] स्वनाम-प्रसिद्ध एक राजा (महा)। °विह वि [°विह] १ जय को वहन करने-वाला, विजयी (पउम ७०, ७; सुपा २३४)। २ विद्याधर-नगर-विशेष (इक)। °विहपुर न [°विहपुर] एक विद्याधर-नगर (इक)। °वास न [°वास] विद्याधरों का एक स्वनाम-ख्यात नगर (इक)।

जय पुं [यत] प्रयत्न, चेष्टा, कोशिश (दस ५, १, ९६)।

जय पुंस्त्री [जया] तिथि-विशेष—तृतीया, अष्टमी और त्रयोदशी तिथि (जं १)।

जय° देखो **जया** = यदा। °प्पभिइ अ [°प्रभृति] जब से, जिस समय से (स ३१६)।

जयंत पुं [जयन्त] १ इन्द्र का पुत्र (पाअ)। २ एक भावी बलदेव (सम १५४)। ३ एक जैन मुनि, जो वज्रसेन मुनि के तृतीय शिष्य थे (कप्प)। ४ इस नाम के देव-विमान में रहनेवाली एक उत्तम देव-जाति (सम ५६)। ५ जंबूद्वीप की जगती के पश्चिम द्वार का एक अधिष्ठाता देव (ठा ४, २)। ६ न. देव-विमान-विशेष (सम ५६)। ७ जम्बूद्वीप की जगती का पश्चिम द्वार (ठा ४, २)। ८ रुचक पर्वत का एक शिखर (ठा ४)।

जयंती स्त्री [जयन्ती] १ पक्ष की नववीं रात (सुज्ज १०, १४)। २ भगवान् अरनाथ की दीक्षा-शिबिका (विचार १२९)।

जयंती स्त्री [जयन्ती] १ वल्ली-विशेष, अरणी, वर्ष गाँठ (पण्ण १)। २ सप्तम बलदेव की माता (सम १५२)। ३ विदेह वर्ष की एक नगरी (ठा २, ३)। ४ अंगारक-नामक ग्रह की एक अग्र-महिषी (ठा ४, १)। ५ जम्बूद्वीप के मेरु से पश्चिम दिशा में स्थित रुचक पर्वत पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८)। ६ भगवान् महावीर की एक उपासिका (भग १२, २)। ७ भगवान् महावीर के आठवें गणधर की माता (आवम)। ८ अंजनक

पर्वत की एक वापी (ती २४)। ९ नवमी तिथि (जं ७)। १० जैन मुनियों की एक शाखा (कप्प)।

जयण न [यजन] १ याग, पूजा। २ अभय-दान (पण्ह २, १)।

जयण न [यतन] १ यत्न, प्रयत्न, चेष्टा, उद्यम; 'जयणघडण-जोग-चरितं' (अनु)। २ यतना, प्राणी की रक्षा (पण्ह २, १)।

जयण वि [जवन] वेगवाला, वेग-युक्त (कप्प)।

जयण न [जयन] १ जीत, विजय (सुद्रा २६८; कप्पू)। २ वि. जीतनेवाला (कप्प)।

जयण न [दे] घोड़े का बख्तर, हय-संनाह (दे ३, ४०)।

जयणा स्त्री [यतना] १ प्रयत्न, चेष्टा, कोशिश (निचू १)। २ प्राणी की रक्षा, हिंसा का परित्याग (दस ४)। ३ उपयोग, किसी जीव को दुःख न हो इस तरह प्रवृत्ति करने का ख्याल (निचू १; सं ६७; औप)।

जयद्दह पुं [जयद्रथ] सिन्धु देश का स्वनाम-प्रसिद्ध एक राजा, जो दुर्योधन का बहनोई था (णाया १, १६)।

जया अ [यदा] जिस समय, जिस वक्त (कप्प; काल)।

जया स्त्री [जया] १ विद्या-विशेष (पउम ७, १४१)। २ चतुर्थ चक्रवर्ती राजा की अग्र-महिषी (सम १५२)। ३ भगवान् वासुपूज्य की स्वनाम ख्यात माता (सम १५१)। ४ तिथि-विशेष—तृतीया, अष्टमी और त्रयोदशी तिथि (सुज्ज १०)। ५ भगवान् पार्श्वनाथ की शासनदेवी (ती ६)। ६ ओषधि-विशेष (राज)।

जयार पुं [जकार] १ 'ज' अक्षर। २ जका-रादि अश्लील शब्द; 'जत्थ जयारमयारं समणी जंपइ गिहत्थपच्चक्खं' (गच्छ ३, ४)।

जयिण देखो जइण = जयिन् (पण्ह १, ४)।

जर अक [जॄ] जीर्ण होना, पुराना होना, बूढ़ा होना। जरइ (हे ४, २३४)। कर्म. जीरइ, जरिज्जइ (हे ४, २५०)। वकृ. जरंत (अच्चु ७६)।

जर पुं [ज्वर] रोग-विशेष, बुखार (कुमा)।

जर पुं [जर] १ रावण का एक सुभट (पउम ५६, ३)। २ वि. जीर्ण, पुराना (दे ३, ५६)।

जर वि [जरत्] जीर्ण, पुराना, वृद्ध, बूढ़ा (कुमा; सुर २, ६६; १०४)। स्त्री. °ई (कुमा; गा ४७२ अ)। °गव पुं [°गव] बूढ़ा बैल (बृह १; अनु ४)। °गवी स्त्री [°गवी] बूढ़ी गाय (गा ४६२)। °ग्गु पुं [°गु] १ बूढ़ा बैल। २ स्त्री. बूढ़ी गाय; 'जिण्णा य जरग्गवो पडिया' (पउम ३३, १६)।

जर° देखो जरा (कुमा; अंत १६; वव ७)।

जरंड वि [दे] वृद्ध, बूढ़ा (दे ३, ४०)।

जरग्ग वि [जरत्क] जीर्ण, पुराना (अनु ५)।

जरठ वि [जरठ] १ कठिन, परुष। २ जीर्ण, पुराना (णाया १, १—पत्र ५)। देखो जरढ।

जरड वि [दे] वृद्ध, बूढ़ा (दे ३, ४०)।

जरढ देखो जरठ (पि १६८; से १०, ३८)। ३ प्रौढ, मजबूत (से १, ४३)।

जरण न [जरण] जीर्णता, आहार का हजम होना, हाजमा (धर्मसं ११३५)।

जरय पुं [जरक] रत्नप्रभा नामक नरक-पृथिवी का एक नरकावास (ठा ६—पत्र ३६५)। °मज्झ पुं [°मध्य] नरकावास-विशेष (ठा ६)। °वित्त पुं [°वर्त] नरकावास-विशेष (ठा ६)। °विसिट्ठ पुं [°विशिष्ट] नरकावास-विशेष (ठा ६)।

जरलद्धिअ, जरलविअ } वि [दे] ग्रामीण, ग्राम्य (दे ३, ४४)।

जरा स्त्री [जरा] बुढ़ापा, वृद्धत्व (आचा, कस; प्रासू १३४)। °कुमार पुं [°कुमार] श्रीकृष्ण का एक भाई (अंत)। °संध पुं [°सन्ध] राजगृह नगर का एक राजा, नववाँ प्रतिवासुदेव, जिसको श्री कृष्ण वासुदेव ने मारा था (सम १५३)। °सिंध पुं [°सिन्ध] वही पूर्वोक्त अर्थ (पण्ह १, ४—पत्र ७२)। °सिंधु पुं [°सिन्धु] वही पूर्वोक्त अर्थ (णाया १, १६ पत्र २०६; पउम ५, १५६)।

जरा स्त्री [जरा] वसुदेव की एक पत्नी (कुप्र ६६)।

जराहिरण (अप) देखो जल-हरण (पिंग)।

जरि वि [ज्वरिन्] बुखारवाला, ज्वर से पीड़ित (सुपा २४३)।

जरि वि [जरिन्] जरा-युक्त, वृद्ध, बूढ़ा (दे ३, ५७, उर ३, १)।

जरिअ वि [ज्वरित] ज्वर-युक्त, बुखारवाला (गा २९६; सुपा २८६)।

जल अक [ज्वल्] १ जलना, दग्ध होना। २ चमकना। जलइ (महा)। वकृ. जलंत (उवा; गा २६४)। हेकृ. जलिउं (महा)। प्रयो., वकृ. जलिंत (महानि ७)।

जल देखो जड (आ १२; आव ४)।

जल न [जाड्य] जड़ता, मन्दता; 'जलधोय-जललेवा' (सार्ध ७३; से १, २४)।

जल पुं [उज्ज्वल] देदीप्यमान, चमकीला (सूअ १, ५, १)।

जल न [जल] वीर्य (वज्जा १०२)। °कंत पुंन [°कान्त] एक देवविमान (देवेन्द्र १४४)। °कारि पुंस्त्री [°कारिन्] चतुरि-न्द्रिय जन्तु-विशेष (उत्त ३६, १४६)। °य वि [°ज] पानी में उत्पन्न (श्रु ६८)। °वारिअ पुं [°वारिक] चतुरिन्द्रिय जन्तु की एक जाति (सुख ३६, १४६)।

जल न [जल] १ पानी, उदक (सूअ १, ५, २; जी २)। २ पुं. जलकान्त-नामक इन्द्र का एक लोकपाल (ठा ४, १)। °कंत पुं [°कान्त] १ मणि-विशेष, रत्न की एक जाति (पण्ण १; कुम्मा १५)। २ इन्द्र-विशेष, उदधिकुमार-नामक देव-जाति का दक्षिण दिशा का इन्द्र (ठा २, ३)। ३ जलकान्त इन्द्र का एक लोकपाल (ठा ४, १)। °करप्फाल पुं [°करास्फाल] हाथ से आहत पानी (पाअ)। °करि पुंस्त्री [°करिन्] पानी का हाथी, जल-जन्तु विशेष (महा)। °कलंब पुं [°कदम्ब] कदम्ब वृक्ष की एक जाति (गउड)। °कीडा, °कीला स्त्री [°क्रीडा] पानी में की जाती क्रीड़ा, जल-केलि (णाया १, २)। °केलि स्त्री [°केलि] जल-क्रीड़ा (कुमा)। °चर देखो °यर (कप्प; हे १, १७७)। °चार पुं [°चार] पानी में चलना (आचा २, ५, १)। °चारण पुं [°चारण] जिसके प्रभाव से पानी में भी भूमि की तरह चला जा सके ऐसी अलौकिक शक्ति रखने-वाला मुनि (गच्छ २)। °चारि पुं [°चारिन्] पानी में रहनेवाला जंतु (जी २०)।

°चारिया स्त्री [°चारिका] क्षुद्र जन्तु-विशेष, चतुरिन्द्रिय जीव की एक जाति (राज)। °जंत न [°यन्त्र] पानी का यन्त्र, पानी का फवारा (कुमा)। °णाह पुं [°नाथ] समुद्र, सागर (उप ७२८ टी)। °णिहि पुं [°निधि] समुद्र, सागर (गउड)। °णीली स्त्री [°नीली] शैवाल (दे ३, ४२)। °तुसार पुं [°तुषार] पानी का विन्दु (पाअ)। °थंभिणी स्त्री [°स्तम्भिनी] विद्या-विशेष (पउम ७, १३९)। °द पुं [°द] मेघ, अभ्र (मुद्रा २६२; पव १८)। °द्दा स्त्री [°र्द्रा] पानी से भींजाया हुआ पंखा (सुपा ४१३)। °निहि देखो °णिहि (प्रासू १२७)। °प्पभ पुं [°प्रभ] १ इन्द्र-विशेष, उदधिकुमार-नामक देव-जाति का उत्तर दिशा का इन्द्र (ठा २, ३)। २ जलकान्त नामक इन्द्र का एक लोकपाल (ठा ४, १)। °य न [°ज] कमल, पद्म (पउम १२, ३७; औप; पराग १)। °य देखो °द (काल; गउड; से १, २४)। °यर पुंस्त्री [°चर] जल में रहने-वाला ग्राहादि जन्तु (जी २०)। स्त्री. °री (जीव २)। °रंकु पुं [°रङ्कु] पक्षि-विशेष, ढेंक पक्षी (गा ५७८; गउड)। °रक्खस पुं [°राक्षस] राक्षस की जाति (पराग १)। °रमण न [°रमण] जल-क्रीड़ा, जल-केलि (णाया १, १३)। °रय पुं [°रय] जलप्रभ-नामक इन्द्र का एक लोकपाल (ठा ४, १)। °रासि पुं [°राशि] समुद्र, सागर (सुपा १९५; उप २६४ टी)। °रुह पुंन [°रुह] पानी में पैदा होनेवाली वनस्पति (पराग १)। °रूव पुं [°रूप] जलकान्त-नामक इन्द्र का एक लोकपाल (भग ३, ८)। °लिल्लिर न [°लिल्लिर] पानी में उत्पन्न होनेवाली वस्तु-विशेष (दंस १)। °वायस पुंस्त्री [°वायस] जलकौआ, पक्षि-विशेष (कुमा)। °वासि वि [°वासिन्] १ पानी में रहनेवाला। २ पुं. तापसों की एक जाति, जो पानी में ही निमग्न रहते हैं (औप)। °वाह पुं [°वाह] १ मेघ, अभ्र (उप पृ ३२; सुपा ८९)। २ जन्तु-विशेष (पउम ८८, ७)। °विच्छुय पुं [°वृश्चिक] पानी का बिच्छू, चतुरिन्द्रिय जन्तु-विशेष (पराग १)। °वीरिय पुं [°वीर्य] १ इक्ष्वाकु वंश का एक स्वनाम-ख्यात राजा (ठा ८)। २ क्षुद्र कीट-विशेष, चतुरिन्द्रिय जन्तु की एक जाति (जीव १)। °सय न [°शय] कमल, पद्म (उप १०३१ टी)। °साला स्त्री [°शाला] प्रपा, पानी पिलाने का स्थान, प्याऊ (श्रा १२)। °सूग न [°शूक] १ शैवाल। २ जलकान्त-नामक इन्द्र का एक लोकपाल (ठा ४, १)। °सेल पुं [°शैल] समुद्र के भीतर का पर्वत (उप ५९७ टी)। °हत्थि पुं [°हस्तिन्] जल-हस्ती, पानी का एक जन्तु (पाअ)। °हर पुं [°धर] १ मेघ, अभ्र (सुर २, १०४; से १, ५९)। २ एक विद्याधर सुभट (पउम १२, ६५)। °हर पुं [°भर] जल-समूह (गउड)। °हर न [°गृह] समुद्र, सागर (से १, ५६)। °हरण न [°हरण] १ पानी की क्यारी (पाअ)। २ छन्द-विशेष (पिंग)। °हि पुं [°धि] १ समुद्र, सागर (महा; सुपा २२३)। २ चार की संख्या (विवे १४४)। °सय पुंन [°शय] सरोवर, तलाव (सुर ३, १)।

जलइय पुं [जलकित] जलकान्त-नामक इन्द्र का एक लोकपाल (ठा ४; १—पत्र १९८)।

जलंजलि पुं [जलाञ्जलि] तर्पण, दोनों हाथों में लिया हुआ जल (सुर ३, ५१; कप्पू)।

जलग पुं [ज्वलक] अग्नि, आग (पिंड)।

जलजलिअ वि [जलजलित] 'जल-जल' शब्द से युक्त (सिरि ६६४)।

जलजलिंत वि [जाज्वल्यमान] देदीप्यमान, चमकता (कप्प)।

जलण पुं [ज्वलन] १ अग्नि, वह्नि (उप ६४८ टी)। २ देवों की एक जाति, अग्नि-कुमार-नामक देव-जाति (पराह १, ४)। ३ वि. जलता हुआ। ४ चमकता, देदीप्यमान; 'एईए जलणजलणोवमाए' (उव ६४८ टी। ५ जलानेवाला (सूअ १, १, ४)। ६ न. अग्नि सुलगाना (पराह १, ३)। ७ जलाना, भस्म करना (गच्छ २)। °जडि पुं [°जटिन्] विद्याधर वंश का एक राजा (पउम ५, ४६)। °मित्त पुं [°मित्र] स्वनाम-ख्यात एक प्राचीन कवि (गउड)।

जलावण न [ज्वालन] जलाना, दग्ध करना (पराह १, १)।

जलिअ वि [ज्वलित] १ जला हुआ, प्रदीप्त (सूअ १, ५, १)। २ उज्ज्वल, कान्ति-युक्त (पराह २, ५)।

जलिर वि [ज्वलितृ] जलता, सुलगता (धर्मवि ३५; कुप्र ३७६)।

जलूगा, जलूया } स्त्री [जलौकस्] १ जन्तु-विशेष, जोंक, जलिका, जल का कीड़ा (पउम १, २४; पराह १, १)। २ पक्षि-विशेष (जीव १)।

जलूसग पुं [दे] रोग-विशेष (उप पृ ३३२)।

जलोयर न [जलोदर] रोग-विशेष, जलन्धर, जठराम (सरा)।

जलोयरि वि [जलोदरिन्] जलन्धर रोग से पीड़ित (राज)।

जलोया देखो जलूया (जी १५)।

जल्ल पुं [दे. जल्ल] १ शरीर का मैल, सूखा पसीना (सम १०; ४०; औप)। २ नट की एक जाति, रस्सी पर खेल करनेवाला नट (पराह २, ४; औप; णाया १, १)। ३ बन्दी, विरुद-पाठक (णाया १, १)। ४ एक म्लेच्छ देश। ५ उस देश में रहनेवाली म्लेच्छ जाति (पराह १, १—पत्र १४)।

जल्लार पुं [जल्लार] १ स्वनाम-प्रसिद्ध एक अनार्य देश। २ जल्लार देश का निवासी (इक)।

जल्लिय न [दे. जल्लक] शरीर का मैल (उत्त २४)।

जल्लोसहि स्त्री [दे. जल्लौषधि] एक तरह की आध्यात्मिक शक्ति, जिसके प्रभाव से शरीर के मैल से रोग का नाश होता है (पराह २, १; विसे ७७९)।

जव सक [यापय्] १ गमन करवाना, भेजना। २ व्यवस्था करना। जवइ (हे ४, ४०)। हेकृ. जवित्तए (सूअ १, ३, २)। कृ जवणिज्ज, जवणीय (णाया १, ५; हे १, २४८)।

जव सक [यापय्] काल-यापन करना, पसार करना। जवेंति (पिंड ६१९)।

जव सक [जप्] जाप करना, बार-बार मन ही मन देवता का नाम स्मरण करना, पुनः पुनः मन्त्रोच्चारण करना। जवइ (रंभा); 'तप्पंति तवमणेगे जवंति मंते तहा सुविज्जाओ

(सुपा २०२)। वकृ. **जवंत** (नाट)। कवकृ. **जविज्जंत** (सुर १३, १८६)।

जव पुं [जप] जाप, पुनः पुनः मन्त्रोच्चारण, बार-बार मन ही मन देवता का नाम-स्मरण (पण्ह २, २; सुपा १२०)।

जव पुं [यव] १ अन्न-विशेष, जव या जौ (णाया १,१; पण्ह १,४)। २ परिमाण-विशेष, आठ यूका की नाप (ठा ८)। °**णाली** स्त्री [°नाली] वह नाली जिसमें जौ बोए जाते हों (आचू १)। °**मज्झ** न [°मध्य] १ तप-विशेष (पउम २२, २४)। २ आठ यूका का एक नाप (पव २५४)। °**मज्झा** स्त्री [°मध्या] व्रत-विशेष, प्रतिमा-विशेष (ठा ४, १)। °**राय** पुं [°राज] नृप-विशेष (बृह १)। °**वंसा** स्त्री [°वंशा] वनस्पति-विशेष (पण्ण १)।

जव पुं [जव] वेग, दौड़, शीघ्र गति (कुमा)।

जव पुंन [यव] एक देवविमान (देवेन्द्र १४०)। °**नालय** पुं [°नालक] कन्या का कंचुक (णंदि ८८ टी)। °**न्न** न [°ान्न] यव-निष्पन्न परमान्न, भोज्य-विशेष, जव की खीर, जाउर (पव २५६)।

जवजव पुं [यवयव] अन्न-विशेष, एक तरह का यव-धान्य (ठा ३, १)।

जवण न [दे] हल की शिखा, हल की चोटी (दे ३, ४१)।

जवण न [जपन] जाप, पुनः पुनः मन्त्र का उच्चारण; 'अहिणा दट्ठुस्स जए को कालो मंत-जवणम्मि' (पउम ८६, ६०; स ६)।

जवण वि [जवन] १ वेग से जानेवाला (उप ७६८ टी)। २ पुं. वेग, शीघ्र गति (आवम)।

जवण पुं [यवन] १ म्लेच्छ देश-विशेष (पउम ९८, ६४)। २ उस देश में रहनेवाली मनुष्य-जाति (पण्ह १, १)। ३ यवन देश का राजा (कुमा)।

जवण न [यापन] निर्वाह, गुजारा, (उत्त ८)।

जवणा स्त्री [यापना] ऊपर देखो (पव २)।

जवणाणिया स्त्री [यवनानिका] लिपि-विशेष (राज)।

जवणालिया स्त्री [यवनालिका] कन्या का कञ्चुक (आवम)।

जवणिआ स्त्री [यवनिका] परदा (दे ४, १; सण; कप्पू)।

जवणिज्ज देखो **जव** = यापय्।

जवणी स्त्री [यवनी] परदा, आच्छादक पट (दे २, २५)। २ संचारिका, दूती (अभि ५७)।

जवणी स्त्री [यावनी] १ यवन की स्त्री। २ यवन की लिपि (सम ३५; विसे ४६४ टी)।

जवणीअ देखो **जव** = यापय्।

जवपचमाण पुं [दे] जात्यश्व का वायु-विशेष, प्राण-वायु (गउड)।

जवय } **जवरय** } पुं [दे] जव का अंकुर (दे ३, ४२)।

जवली स्त्री [दे] जव, वेग; 'गच्छंति गरुय-नेहेण पवरतुरयाहिरूढा जवलीए' (सुपा २७६)।

जववारय [दे] देखो **जवरय** (पंचा ८)।

जवस न [यवस] १ तृण, घास; 'गिट्ठिव्व जवसम्मि' (उप ७२८ टी; उप पृ ८४)। २ गेहूँ वगैरह धान्य (आचा २, ३, २)।

जवा स्त्री [जपा] १ वल्ली-विशेष, जवा-पुष्प का वृक्ष। २ गुड़हल का फूल, अड़हुल का पुष्प (कुमा)।

जवास पुं [यवास] वृक्ष-विशेष, रक्त पुष्प-वाला वृक्ष-विशेष; 'पाउसि जवासो' (श्रा २३; पण्ण १); 'जवासाकुसुमे इ वा' (पण्ण १७)।

जवि } **जविण** } वि [जविन्] १ वेगवाला, वेग-युक्त (सुपा ११२)। २ पुं. अश्व, घोड़ा (राज)।

जविअ वि [जपित] १ जिसका जाप किया गया हो वह (मन्त्र आदि) (सिरि ३६६)। २ न. अध्ययन, प्रकरण आदि ग्रंथांश (सुख २, १३)।

जविय वि [यापित] १ गमित, गुजरा हुआ। २ नाशित (कुमा)।

जस पुं [यशस्] १ कीर्त्ति, इज्जत, सुख्याति (औप; कुमा)। २ संयम, त्याग, विरति (वव १; दस ५, २)। ३ विनय (उत्त ३)। ४ भगवान् अनन्तनाथ का प्रथम शिष्य (सम १५२)। ५ भगवान् पार्श्वनाथ का आठवाँ प्रधान शिष्य (कप्प)। °**कित्ति** स्त्री [°कीर्त्ति] सुख्याति, सुप्रसिद्धि (सूअ १, ६; आचू १)। °**भद्द** पुं [°भद्र] स्वनाम-ख्यात एक जैन आचार्य (कप्प; सार्ध १३)। °**म, मंत** वि [°वत्] १ यशस्वी, इज्जतदार, कीर्त्तिवाला (पण्ह १, ४)। २ पुं. स्वनाम-प्रसिद्ध एक कुलकर पुरुष (सम १५०)। °**वई** स्त्री [°वती] १ द्वितीय चक्रवर्त्ती सगर-राज की माता (सम १५२) २ तृतीया, अष्टमी और त्रयोदशी की रात्रि (चंद १०)। °**वम्म** पुं [°वर्मन्] स्वनाम-ख्यात नृप-विशेष (गउड)। °**वाय** पुं [°वाद] साधुवाद, यशो-गान, प्रशंसा (उप ९८६ टी)। °**विजय** पुं [°विजय] विक्रम की अठारहवीं शताब्दी का एक जैन सुप्रसिद्ध ग्रन्थकार, न्यायाचार्य श्रीमान् यशोविजय उपाध्याय (राज)। °**हर** पुं [°धर] १ भारतवर्ष का भूत कालिक अठारहवाँ जिन-देव (पव ८)। २ भारतवर्ष के एक भावी जिन-देव (पव ४६)। ३ एक राज-कुमार (धम्म)। ४ पक्ष का पाँचवाँ दिन (जं ७)। ५ वि. यश को धारण करनेवाला, यशस्वी (जीव ३)। देखो **जसो°**।

जसंसि पुं [यशस्विन्] भगवान् महावीर के पिता का एक नाम (आचा २, १५, ३; कप्प)।

जसद पुं [जसद] धातु-विशेष, जस्ता (राज)।

जसदेव पुं [यशोदेव] एक प्रसिद्ध जैनाचार्य (पव २७६)।

जसभद्द पुं [यशोभद्र] १ पक्ष का चतुर्थ दिवस (सुज्ज १०, १४)। २ एक राजर्षि, जो वागड देश के रत्नपुर नगर का राजा था और जिसने जैनी दीक्षा ली थी, जो आचार्य हेमचन्द्र के गुरु थे (कुप्र ७; १८)। ३ न. उडुवाटिक गण का एक कुल (कप्प)।

जसवई स्त्री [यशोमती] भगवान् महावीर की दौहित्री का नाम (आचा २ १५, ३)।

जसस्सि वि [यशस्विन्] यशस्वी, कीर्तिमान् (सूअ १, ६, ३, श्रु १४३)।

जसहर पुंन [यशोधर] एक देव-विमान (देवेन्द्र १४१)।

जसा स्त्री [यशा] कपिलमुनि की माता (उत्त ८)।

जसो° देखो जस। °आ स्त्री [°दा] १ नन्द नामक गोप की पत्नी (गा ११२; ६५७)। २ भगवान् महावीर की पत्नी (कप्प)। °कामि वि [°कामिन्] यश चाहनेवाला (दस २)। °कित्तिनाम न [°कीर्त्तिनामन्] कर्म-विशेष, जिसके प्रभाव से सुयश फैलता है (सम ६७)। °धर पुं [°धर] १ धरणेन्द्र के अश्व-सैन्य का अधिपति देव (ठा ५, १)। २ न. ग्रैवेयक देवलोक का प्रस्तर (इक)। °हरा स्त्री [°धरा] १ दक्षिण रुचक पर्वत पर रहनेवाली एक दिशाकुमारी देवी (ठा ८)। २ जम्बू-वृक्ष विशेष, सुदर्शना (जीव ३)। ३ पक्ष की चौथी रात्रि (जो ४)।

जसोधर देखो जस-हर (सुज्ज १०, १४)।

जसोधरा देखो जसो-हरा (सुज्ज १०, १४)।

जसोया स्त्री [यशोदा] भगवान् महावीर की पत्नी का नाम (आचा २, १५, ३)।

जह सक [हा] त्याग देना, छोड़ देना। जहइ (पि ६७)। वकृ. जहंत (वव ३)। कृ. जहणिज्ज (राज)। संकृ. जहित्ता (पि ५८२)।

जह अ [यत्र] जहाँ, जिसमें (हे २, १६१)।

जह अ [यथा] जिस तरह से, जैसे (ठा ३, १; स्वप्न २०)। °कम न [°क्रम] क्रम के अनुसार, अनुक्रम (पंचा ६)। °क्खाय देखो अह-क्खाय (आवम)। °ट्ठिय वि [°स्थित] वास्तविक, सत्य (सुर १, १६२; सुपा ५७)। °त्थ वि [°र्थ] वास्तविक, सत्य (पंचा १५)। °त्थनाम वि [°र्थनामन्] नाम के अनुसार गुणवाला, अन्वर्थ (श्रा १६)। °त्थवाइ वि [°र्थवादिन्] सत्य-वक्ता (सुर १४, १६)। °प्प न [याथात्म्य] वास्तविकता, सत्यता (राज)। °रिह न [°र्ह] उचितता के अनुसार (सुपा १६२)। °वट्टिय वि [°वृत्त] सत्य, यथार्थ (सुपा ५२६)। °विहि पुंस्त्री [°विधि] विधि के अनुसार; 'नहगामिणिपमुहाओ जहविहिणा साहियव्वाओ' (सुर ३, २८)। °संख न [°संख्य] संख्या के क्रम से, क्रमानुसार (नाट)। देखो जहा = यथा।

जहण न [जघन] कमर के नीचे का भाग (गा १९६; णाया १, ६)।

जहणरोह पुं [दे] ऊरु, जंघा, जाँघ (दे ३, ४४)।

जहणा स्त्री [हान] परित्याग (संबोध ५६)।

जहणूसव } न [दे] अर्धोरुक, जघनांशुक,
जहणूसुअ } स्त्री को पहनने का वस्त्र-विशेष (दे ३, ४५; षड्)।

जहण्ण } वि [जघन्य] निकृष्ट, हीन, अधम,
जहन्न } नीच (सम ८; भग; ठा १, १; जी ३८; दं ६)।

जहा = देखो जह = हा। (पि ३५०)। संकृ. जहाइत्ता, जहाय (सूअ १, २, १; पि ५९१)।

जहा देखो जह = यथा (हे १, ६७; कुमा)। °जुत्त वि [°युक्त] यथोचित, योग्य (सुर २, २०१)। °जेट्ठ न [°ज्येष्ठ] ज्येष्ठता के क्रम से (अणु)। °णामय वि [°नामक] जिसका नाम न कहा गया हो, अनिर्दिष्ट-नामा, कोई (जीव ३)। °तच्च न [°तथ्य] सत्य, वास्तविक (आचा)। °तह न [°तथ्य] सत्य, वास्तविक (राज)। °तह न [याथातथ्य] वास्तविकता, सत्यता; 'जाणासि णं भिक्खु जहातहेणं' (सूअ १, ६)। २ 'सूत्रकृताङ्ग' सूत्र का एक अध्ययन (सूअ १, १३)। °पवट्टकरण न [°प्रवृत्तकरण] आत्मा का परिणाम-विशेष (आचा)। °भूय वि [°भूत] सच्चा, वास्तविक (णाया १, १)। °राइणिया स्त्री [°रात्निकता] ज्येष्ठता के क्रम से, बड़प्पन के अनुसार (कस)। °रुह देखो जह-रिह (स ४६३)। °वित्त न [°वृत्त] जैसा हुआ हो वैसा, यथार्थ (स २४)। °सत्ति स्त्रीन [°शक्ति] शक्ति के अनुसार (पंचा ३)।

जहाजाय वि [दे. यथाजात] जड़, मूर्ख, बेवकूफ (दे ३, ४१; पण्ह १, ३)।

जहि } देखो जह = यत्र (हे २, १६१; गा
जहिं } १३१; प्रासू ५६)।

जहियं देखो जहिं (पिंड ५८)।

जहिच्छ न [यथेच्छ] इच्छा के अनुसार (सुपा १६; पिंग)।

जहिच्छिय न [यथेप्सित] इच्छानुकूल, इच्छानुसार (पंचा १)।

जहिच्छिया स्त्री [यदृच्छा] मरजी, स्वेच्छा, स्वच्छन्दता (गा ४५३; विसे ३१६; स ३३२)।

जहिट्ठिल पुं [युधिष्ठिर] पाण्डु-राजा का ज्येष्ठ पुत्र, ज्येष्ठ पाण्डव (हे १, १०७; प्राप्र)।

जहिमा स्त्री [दे] विदग्ध पुरुष की बनाई हुई गाथा (दे ३, ४२)।

जहुट्ठिल देखो जहिट्ठिल (हे १, ६६; १०७)।

जहुत्त न [यथोक्त] कथनानुसार (पडि)।

जहेअ अ [यथैव] जैसे ही (से ६, १६)।

जहेच्छ देखो जहिच्छ (गा ८८२)।

जहोइय न [यथोदित] कथितानुसार (धर्म ३)।

जहोइय } न [यथोचित] योग्यता के अनु-
जहोचिय } सार (से ८, ५; सुपा ४७१)।

जा अक [जन्] उत्पन्न होना। जाअइ (हे ४, १३६)। वकृ. जायंत (कुमा)। संकृ 'एक्के च्चिय निव्विण्णा पुणो-पुणो जाइउं च मरिउं च' (स १३०)।

जा सक [या] १ जाना, गमन करना। २ प्राप्त करना। ३ जानना। जाइ (सुपा ३०१)। जंति (महा)। वकृ. जंत (सुर ३, १४३; १०, ११७)। कवकृ. जाइज्जमाण (पण्ह १, ४)।

जा सक [या] सकना, समर्थ होना; 'किंतु मम एत्थ न जाइ पव्वइउं', 'बहिट्ठियाणं किं जायइ अज्झाइउं' (सुख २, १३)।

जा देखो जाव = यावत् (हे १, २७१; कुमा; सुर १५, १३८)।

जाअ देखो जाव = जाप (हास्य १३२)।

जाअ देखो जा = या। जाअइ (प्राकृ ६६)।

जाअर देखो जागर (मुद्रा १८७)।

जाआ स्त्री [यातृ] देवर-भार्या, देव की पत्नी, देवरानी (प्राकृ ४३)।

जाइ स्त्री [जाति] १ पुष्प-विशेष, मालती (कुमा)। सामान्य नैयायिकों के मत से एक धर्म-विशेष, जो व्यापक हो, जैसे मनुष्य का मनुष्यत्व, गो का गोत्व (विसे १६०१)। ३ जात, कुल, गोत्र, वंश, ज्ञाति (ठा ४, २; सूअ ६, १३; कुमा)। ४ उत्पत्ति, जन्म (उत्त ३; पडि)। ५ क्षत्रिय, ब्राह्मण, वैश्य आदि जाति (उत्त ३)। ६ पुष्प-प्रधान वृक्ष, जाई का पेड़ (पण्ण १)।

७ मद्य-विशेष (विपा १, २)। °आजीव पुं [°आजीव] जाति की समानता बतला कर भिक्षा प्राप्त करनेवाला साधु (ठा ५, १)। °थेर पुं [स्थविर] साठ वर्ष की उम्र का मुनि (ठा ३, २)। °नाम न [°नामन्] कर्म-विशेष (सम ६७)। °प्पसण्णा स्त्री [°प्रसन्ना] जाति के पुष्पों से वासित मदिरा (जीव ३)। °फल न [°फल] १ वृक्ष-विशेष। २ फल-विशेष, जायफल, एक गर्म मसाला (सुर १३, ३३; सण)। °मंत वि [°मत्] उच्च जाति का (आचा २, ४, २)। °मय पुं [°मद] जाति का अभिमान (ठा १०)। °वत्तिया स्त्री [°पत्रिका] १ सुगन्धित फलवाला वृक्ष-विशेष। २ फल-विशेष, एक गर्म मसाला (सण)। °सर पुं [°स्मर] १ पूर्व जन्म की स्मृति। २ वि. पूर्व जन्म का स्मरण करनेवाला, पूर्व-जन्म का ज्ञान-वाला; 'जाइसराइं मन्ने इमाइं नयणाइं सयललोयस्स' (सुर ४, २०८)। °सरण न [°स्मरण] पूर्व जन्म की स्मृति (उत्त १६)। °स्सर देखो °सर (कप्प; विसे १६७१; उप २२० टी)।

जाइ स्त्री [जाति] १ न्याय-शास्त्र-प्रसिद्ध दूषणाभास—असत्य दूसण (धर्मसं २६०; स ७११)। २ माता का वंश (पिंड ४३८)।

जाइ देखो जाया (षड्)।

जाइ स्त्री [दे] १ मदिरा, सुरा, दारू (दे ३, ४५)। २ मदिरा-विशेष (विपा १, २)।

जाइ वि [याजिन्] यज्ञ-कर्ता (दसनि १, १४६))।

जाइ वि [यायिन्] जानेवाला (ठा ४, ३)।

जाइअ वि [याचित] प्रार्थित, मांगा हुआ (विसे २५०४; गा १६५)।

जाइअ देखो जाय = जात (वज्जा १४४)।

जाइच्छि° } वि [यादृच्छिक] १ इच्छा-
जाइच्छिय } नुसार, यथेच्छ (धर्मसं १२)। २ इच्छानुसारी (धर्मसं ६०२)।

जाइच्छिय वि [यादृच्छिक] स्वेच्छा-निर्मित (विसे २५)।

जाइज्जंत देखो जाय = यातय्।

जाइज्जंत } देखो जाय = याच्।
जाइज्जमाण }

जाइणी स्त्री [याकिनी] एक जैन साध्वी, जिसको सुप्रसिद्ध जैन ग्रन्थकार श्री हरिभद्र-सूरि अपनी धर्म-माता समझते थे (उप १०३९)।

जाइयव्वय न [यातव्य] गमन, गति (सुख २, १७)।

जाईअ वि [जातीय] जाति-सम्बन्धी (श्रावक ४०)।

जाउ न [जायु] क्षीरपेया, यवागू, मांड की कांजी, लपसी, खाद्य-विशेष (पिंड ६२५)।

जाउ अ [जातु] कदाचित्, कभी (उवकु ११)।

जाउ अ [जातु] किसी तरह (उप ५४७)। °कण्ण पुं [°कर्ण] पूर्वाभाद्रपदा नक्षत्र का गोत्र (इक)।

जाउ स्त्री [यातृ] १ देवर-पत्नी, देवरानी। २ वि. जानेवाला (संक्षि ४)।

जाउया स्त्री [यातृका] देवर-पत्नी, पति के छोटे भाई की स्त्री, देवरानी (णाया १,१६)।

जाउर पुं [दे] कपित्थवृक्ष, कैथ का फल (दे ३, ४५)।

जाउल पुं [जातुल] वल्ली-विशेष (पण्ण १—पत्र ३२)।

जाउहाण पुं [यातुधान] राक्षस (उप १०३१ टी; पाअ)।

जाग पुं [याग] १ यज्ञ, अध्वर, होम, हवन (पउम १४, ४७; स १७१)। २ देव-पूजा (णाया १, १)।

जागर अक [जागृ] जागना, निद्रा-त्याग करना। जागरइ (षड्)। वकृ. जागरमाण (विसे २७१६)। हेकृ. जागरित्तए, जाग-रेत्तए (कप्प; कस)।

जागर वि [जागर] १ जागनेवाला, जागता (आचा; कप्प; श्रा २५)। २ पुं. जागरण, निद्रा-त्याग (मुद्रा १८७; भग १२, २; सुर १३, ६७)।

जागरइत्तु वि [जागरितृ] जागनेवाला (श्रा २३)।

जागरिअ वि [जागृत] जागा हुआ, निद्रा-रहित, प्रबुद्ध (णाया १, १६; श्रा २५)।

जागरिअ वि [जागरिक] निद्रा-रहित (भग १२, २)।

जागरिया स्त्री [जागरिका, जागर्या] जागरण, निद्रा-त्याग (णाया १, १; औप)।

जागरूअ वि [जागरूक] जागता, जागा हुआ, जागने के स्वभाववाला (धर्मवि १३९)।

जाजावर वि [यायावर] गमनशील, विनश्वर (सम्मत्त १७४)।

जाडी स्त्री [दे] गुल्म, लता-प्रतान (दे ३, ४५)।

जाण सक [ज्ञा] जानना, ज्ञान प्राप्त करना, समझना। जाणइ (हे ४, ७)। वकृ. जाणंत, जाणमाण (कप्प; विपा १, १)। संकृ. जाणिऊण, जाणित्ता, जाणित्तु (पि ५८६; महा; भग)। हेकृ. जाणिउं (पि ५७६)। कृ. जाणियव्व (भग; अंत १२)।

जाण पुंन [यान] १ रथादि वाहन, सवारी (औप; पण्ह २, ५; ठा ४, ३)। २ यान-पात्र, नौका, जहाज; 'नाणं संसारसमुद्दतारणे बंधुरं जाणं' (पुप्फ ३७)। ३ गमन, गति (राज)। °पत्त, °वत्त न [°पात्र] जहाज, नौका (नमि ५; सुर १३,३१)। °साला स्त्री [°शाला] १ तबेला, अस्तबल। २ वाहन बनाने का कारखाना (औप; आचा २,२,२)।

जाण न [ज्ञान] ज्ञान, बोध, समझ (भग; कुमा)।

जाण° वि [जानत्] जानता हुआ, 'जाणं काएण णाउट्टी' (सूअ १, ५, १); 'आसु-पण्णेण जाणया' (आचा)।

जाणई स्त्री [जानकी] सीता, राम-पत्नी (पउम १०६, १८; से ६, ६)।

जाणग वि [ज्ञायक] जानकार, ज्ञानी, जाननेवाला (सूअ १, १, १; महा; सुर १०, ६५)।

जाणगी देखो जाणई (पउम ११७, १८)।

जाणण न [दे] बरात, गुजराती में 'जान'; 'जो तदवत्थाए समुचिओत्ति जाणणणाइओ' (उप ५९७ टी)।

जाणण न [ज्ञान] जानना, जानकारी, समझ, बोध (हे ४, ७; उप पृ २३; सुपा ४१६; सुर १०, ७१; रयण १४; महा)।

जाणणया } स्त्री. ऊपर देखो (उप ५१६;
जाणणा } विसे २१४८; अणु; आचू ३)।

जाणय देखो जाणग (भग; महा)।

जाणय वि [ज्ञापक] जनानेवाला, समझानेवाला (औप)।

जाणया स्त्री [ज्ञान] ज्ञान, समझ, जानकारी; 'एएसिं पयाणं जाणणाए सवणयाए' (भग)।

जाणवय वि [जानपद] १ देश में उत्पन्न, देश-संबन्धी (भग; णाया १, १—पत्र १)।

जाणाव सक [ज्ञापय्] ज्ञान कराना, जनाना। जाणावइ, जाणावेइ (कुमा; महा)। हेकृ. **जाणाविउं, जाणावेउं** (पि ५५१)। कृ. **जाणावेयव्व** (उप पृ २२)।

जाणावण न [ज्ञापन] ज्ञापन, बोधन (पउम ११, ८८; सुपा ६०६)।

जाणावणा } स्त्री [ज्ञापनी] विद्या-विशेष
जाणावणी } (उप पृ ४२; महा)।

जाणाविय वि [ज्ञापित] जनाया, विज्ञापित, मालूम कराया, निवेदित (सुपा ३५६; श्रावम)।

जाणि वि [ज्ञानिन्] ज्ञाता, जानकार (कुमा)।

जाणिअ वि [ज्ञात] जाना हुआ, विदित (सुर ४, २१४; ७, २६)।

जाणु न [जानु] १ घोंटू, घुटना। २ ऊरु और जंघा का मध्य भाग (तंदु; निर १, ३; णाया १, २)।

जाणु } वि [ज्ञायक] जाननेवाला, ज्ञाता,
जाणुअ } जानकार (ठा ३, ४; णाया १, १३)।

जाणे अ [जाने] उत्प्रेक्षा-सूचक अव्यय, मानो (अभि १५०)।

जाम सक [मृज्] मार्जन करना, सफा करना। जामइ (नाट—प्राप्र ८० टी)।

जाम पुं [याम] १ प्रहर, तीन घण्टा का समय (सम ४४; सुर ३, २४२)। २ यम, अहिंसा आदि पाँच व्रत। ३ उम्र-विशेष, आठ से बत्तीस, बत्तीस से साठ और साठ से अधिक वर्ष की उम्र (आचा)। ४ वि. यम-संबन्धी, जमराज का (सुपा ४०५)। **°इल्ल** वि [°वत्] १ प्रहरवाला (हे २, १५६)। २ पुं. प्राहरिक, पहरेदार, यामिक (सुपा ५)। **°दिसा** स्त्री [°दिश्] दक्षिण दिशा (सुपा ४०५)। **°वई** स्त्री [°वती] रात्रि, रात (गउड)।

जाम देखो **जाव** = यावत् (आरा ३३)।

जामाइ देखो **जामाउ** (पिंड ४२४)।

जामग्गहण न [यामग्रहण] प्राहरिकत्व, पहरेदारी (सुख २, ३१)।

जामाउ } पुं [जामातृ, °क] जामाता,
जामाउय } दामाद, लड़की का पति (पउम ८६, ४; हे १, १३१; गा ६८३)।

जामि स्त्री [जामि, यामि] बहिन, भगिनी (राज)।

जामिअ देखो **जामिग** (धर्मवि १३५)।

जामिग पुं [यामिक] प्राहरिक, पहरुआ, पहरू, पहरेदार (उप ८३३)।

जामिणी स्त्री [यामिनी] रात्रि, रात (उप ७२८ टी)।

जामिल्ल देखो **जामिग** (सुपा १४६; २६६)।

जामेअ पुं [यामेय] भानजा, भागिनेय, बहिन का पुत्र (धर्मवि २२)।

जाय सक [याच्] प्रार्थना करना, माँगना। वकृ. **जायंत** (पण्ह १, ३)। कवकृ. **जाइज्जंत** (पउम ५, ६८)।

जाय सक [यातय्] पीड़ना, यन्त्रणा करना। जाएइ (उव)। कवकृ. **जाइज्जंत** (पण्ह १, १)।

जाय देखो **जाग** (णाया १, १)।

जाय वि [जात] १ उत्पन्न, जो पैदा हुआ हो (ठा ६)। २ न. समूह, संघात, (दंस ४)। ३ भेद, प्रकार (ठा १०; निचू १६)। ४ वि. प्रवृत्त (औप)। ५ पुं. लड़का, पुत्र (भग ६, ३३; सुपा २७६)। ६ न. बच्चा, संतान; 'जायं तीए जइ कहवि जायए पुन्नजोगेण' (सुपा ५६८)। ७ जन्म, उत्पत्ति (णाया १, १)। **°कम्म** न [°कर्मन्] १ प्रसूति-कर्म (णाया १; १)। २ संस्कार-विशेष (वसु)। **°तेय** पुं [°तेजस्] अग्नि, वह्नि (सम ५०)। **°निद्दुया** स्त्री [°निद्रुता] मृत-वत्सा स्त्री (विपा १, २)। वि **°मूअ** वि [°मूक] जन्म से मूक (विपा १, १)। **°रूव** न [°रूप] १ सुवर्ण, सोना (औप)। २ रूप्य, चाँदी (उत्त ३५)। ३ सुवर्ण-निर्मित (सम ६५)। **°वेय** पुं [°वेदस्] अग्नि, वह्नि (उत्त १२)।

जाय वि [यात] गत, गया हुआ (सूअ १, ३, १)। २ प्राप्त (सूअ १, १०)। ३ न. गमन, गति (आचा)।

जाय पु. [जात] गीतार्थ, विद्वान् जैन मुनि (पव—गाथा २४)।

जायग वि [याचक] १ माँगनेवाला। २ पुं. भिक्षुक (श्रा २३; सुपा ४१०)।

जायग वि [याजक] यज्ञ करानेवाला (उत्त २५, ६)।

जायण न [याचन] याचना, प्रार्थना (श्रा १४; प्रति ६१)।

जायण न [यातन] कदर्थन, पीड़न (पण्ह १, २)।

जायणया } स्त्री [याचना] याचना, प्रार्थना
जायणा } माँगना (उप पृ ३०२; सम ४०; स २६१)।

जायणा स्त्री [यातना] कदर्थना, पीड़ा (पण्ह १, १)।

जायणी स्त्री [याचनी] प्रार्थना की भाषा (ठा ४, १)।

जायव पुंस्त्री [यादव] यदुवंश में उत्पन्न, यदुवंशीय (णाया १, १६; पउम २०, ५६)।

जाया स्त्री [यात्रा] निर्वाह, गुजारा, वृत्ति। **°माय** वि [°मात्र] जितने से निर्वाह हो सके उतना; 'साहुस्स त्ति धीरा जाया मायं च ओमें च (पिंड ६४३)।

जाया स्त्री [जाया] स्त्री, औरत, (गा ६; सुपा ३८६)।

जाया देखो **जत्ता** (पण्ह २, ४; सूअ १, ७)।

जाया स्त्री [जाता] चमरेन्द्र आदि इन्द्रों की बाह्य परिषत् (भग; ठा ३, २)।

जायाइ पुं [यायाजिन्] यज्ञ-कर्ता, याजक, यज्ञ करानेवाला (उत्त २५, १)।

जार पुं [जार] १ उपपति, यार (हे १, १७७)। २ मणि का लक्षण-विशेष (जीव ३)।

जारिच्छ वि [यादृक्ष] ऊपर देखो (प्रामा)।

जारिस वि [यादृश] जैसा, जिस तरह का (हे १, १४२)।

जारेकण्ण न [जारेकृष्ण] गोत्र-विशेष, जो वाशिष्ठ गोत्र की एक शाखा है (ठा ७)।

जाल सक [ज्वालय्] जलाना, दग्ध करना; 'तो जलियजलणजालावलीसु जालेमि नियदेहं' (महा)। संकृ. **जालेवि** (महा)।

जाल न [जाल] १ समूह, संघात (सुर ४, १३५; स ४४३)। २ माला का समूह, दाम-निकर (राय)। ३ कारीगरीवाले छिद्रों से युक्त गृहांश, गवाक्ष-विशेष, झरोखा (औप; णाया १, १)। ४ मछली वगैरह पकड़ने का जाल, पाश-विशेष (पण्ह १,१)। ४ मछली वगैरह पकड़ने की जाल, पाश-विशेष (पण्ह १,१,४)। ५ पैर का आभूषण-विशेष, कड़ा (औप)। °कडग पुं [°कटक] १ सच्छिद्र गवाक्षों का समूह। २ सच्छिद्र गवाक्ष-समूह से अलंकृत प्रदेश (जीव ३)। °घरग न [°गृहक] सच्छिद्र गवाक्षवाला मकान (राय; णाया १, २)। °पंजर न [°पञ्जर] गवाक्ष (जीव ३)। °हरग देखो °घरग (औप)।

जाल पुं [ज्वाल] ज्वाला, अग्नि-शिखा, आग की लपट (सुर ३, १८८; जी ६)।

जालंतर न [जालान्तर] सच्छिद्र गवाक्ष का मध्यभाग (सम १३७)।

जालंधर पुं [जालन्धर] १ पंजाब का एक स्वनाम-ख्यात शहर (भवि)। २ न. गोत्र-विशेष (कप्प)।

जालंधरायण न [जालन्धरायण] गोत्र-विशेष (आचा २, १५)।

जालग देखो जाल = जाल (पण्ह १, १; ५; औप; णाया १, १)।

जालग पुं [जालक] द्वीन्द्रिय जीव की एक जाति, मकड़ी (उत्त ३६, १३०)।

जालघडिआ स्त्री [दे] चन्द्रशाला, अट्टालिका, अटारी (दे ३, ४६)।

जालय देखो जाल = जाल (गउड)।

जालवणी स्त्री [दे] संवाद, सम्हाल, खबर; गुजराती में 'जाळवण' (सिरि ३८५)।

जाला स्त्री [ज्वाला] १ अग्नि की शिखा (आचा; सुर २, २४६)। २ नवम चक्रवर्त्ती की माता (सम १५२)। ३ भगवान् चन्द्रप्रभ की शासनदेवी (संति ६)।

जाला अ [यदा] जिस समय, जिस काल में; 'ताला जाअंति गुणा, जाला ते सहिअएहिं घेप्पंति' (हे ३, ६५)।

जालाउ पुं [जालायुष्] द्वीन्द्रिय जन्तु-विशेष, मकड़ी (राज)।

जालाव सक [ज्वालय्] जलाना, दाह देना। वकृ. जालावंत (महानि ७)।

जालाविअ वि [ज्वालित] जलाया हुआ (सुपा १८६)।

जालि पुं [जालि] १ राजा श्रेणिक का एक पुत्र, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी (अनु १)। २ श्रीकृष्ण का एक पुत्र, जिसने दीक्षा ले कर शत्रुञ्जय पर्वत पर मुक्ति पाई थी (अंत १४)।

जालिय पुं [जालिक] जाल-जीवि, वागुरिक, बहेलिया, चिड़ीमार (गउड)।

जालिय वि [ज्वालित] जलाया हुआ, सुलगाया हुआ (उव; उप ५६७ टी)।

जालिया स्त्री [जालिका] १ कञ्चुक (पण्ह १, ३—पत्र ४४; गउड)। २ वृन्त (राज)।

जालुग्गाल पुं [जालोद्गाल] मछली पकड़ने का साधन-विशेष (अभि १८३)।

जाव देखो जावइअ (आचा २, २, ३, ३)।

जाव सक [यापय्] १ गमन करना, गुजारना। २ बरतना। ३ शरीर का प्रतिपालन करना। जावइ (आचा)। जावेइ (हे ४, ४०) जावए (सूत्र १, १, ३)।

जाव अ [यावत्] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ परिमाण। २ मर्यादा। ३ अवधारण, निश्चय; 'जावदयं परिमाणे मज्जाया-एवधारणे चेइ' (विसे ३५१६; णाया १, ७)। °ज्जीव स्त्री न [°ज्जीव] जीवन पर्यन्त (आचा)। स्त्री: °वा (विसे ३५१८; औप)। °ज्जीविय वि [°ज्जीविक] यावज्जीव-संबन्धी (स ४४१)। देखो जावं।

जाव पुं [जाप] मन ही मन बार बार देवता का स्मरण, मन्त्र का उच्चारण (सुर ६, १७४; सुपा १७१)।

जावइ पुं [दे] वृक्ष-विशेष (पण्ण १—पत्र ३४)।

जावइअ वि [यावत्] जितना; 'जावइया वयणपहा' (सम्म १४४; भत्त ८४)।

जावई स्त्री [जातिपत्री] १ कन्द-विशेष (उत्त ३६, ९८; सुख ३६, ९८)। २ गुच्छ वनस्पति की एक जाति (पण्ण १—पत्र ३४)।

जावईय पुं [जातिपत्रीक] कन्द-विशेष (उत्त ३६, ९८)।

जावं देखो जाव (पउम ६८, ५०)। °ताव अ [°तावत्] १ गणित-विशेष। २ गुणाकार (ठा १०)।

जावंत देखो जावइअ (भग १, १)।

जावग देखो जावय = यापक (दसनि १)।

जावण न [यापन] १ बिताना, गुजारना। २ दूर करना, हटाना (उप ३२० टी)।

जावणा स्त्री [यापना] ऊपर देखो (उप ७२८ टी)।

जावणिज्ज वि [यापनीय] १ जो बीताया जाय, गुजारने योग्य। २ शक्ति-युक्त; 'जावणिज्जाए णिसीहिआए' (पडि)। °तंत न [°तन्त्र] ग्रन्थ-विशेष (धर्म २)।

जावय वि [यापक] १ बीतानेवाला। २ पुं. तर्क-शास्त्र-प्रसिद्ध काल-क्षेपक हेतु (ठा, ४, ३)।

जावय वि [जापक] जीतनेवाला, 'जिणाणं जावयाणं' (पडि)।

जावय पुं [यावक] अलक्तक, अलता, लाख का रंग (गउड; सुपा ६६)।

जावसिय वि [यावसिक] १ धान्य से गुजारा करनेवाला (बृह १)। २ घास-वाहक (ओघ २३८)।

जाविय वि [यापित] बीताया हुआ (णाया १, १७)।

जास पुं [जाष] पिशाच-विशेष (राज)।

जासुमण, जासुमिण, जासुयण पुं [जपासुमनस्] १ जपा का वृक्ष, पुष्पप्रधान (पण्ण १, णाया १, १)। २ न. जपा का फूल (णाया १, १; कप्प)।

जाहग पुं [जाहक] जन्तु-विशेष, जिसके शरीर में काँटे होते हैं, साही या साहिल (पण्ह १, १; विसे १४५४)।

जाहत्थ न [याथार्थ्य] सत्यपन, वास्तविकता (विसे १२७६)।

जाहासंख देखो जहा-संख; 'जाहासंखमिमीणं नियकज्जं साहुवाओ य' (उप १७६)।

जाहे अ [यदा] जिस समय, जब, (हे ३, ६५; महा; गा ६८)।

जि (अप) देखो एव = एव (हे ४, ४२०; कुमा; वज्जा १४)।

जिअ अक [जीव्] जीना, प्राण-धारण करना। जिअइ, जिअउ (हे १, १०१)। वकृ. जिअंत (गा ६१७)।

जिअ पुं [जीव] आत्मा, प्राणी, चेतन (सुर २, ११३; जी ६; प्रासू ११४, १३०)। °लोअ पुं [°लोक] संसार, दुनियाँ (सुर १२, १४३)।

जिअ न [जित] जीत, जय (प्राकृ ७०)। °गासि वि [°काशिन्] जीत से शोभनेवाला विजेता (सम्मत २१७)। °सत्तु पुं [°शत्रु] अंग-विद्या का जानकार दूसरा रुद्र-पुरुष (विचार ४७३)।

जिअ वि [जित] १ जीता हुआ, पराभूत, अभिभूत (कुमा; सुर ३, ३२)। २ परिचित (विसे १४७२)। °प्प वि [°त्मन्] जितेन्द्रिय, संयमी (सुपा २७६)। °भाणु पुं [°भानु] राक्षस-वंश का एक राजा, एक लंका-पति (पउम ५, २५६)। °सत्तु पुं [°शत्रु] १ भगवान् अजितनाथ का पिता (सम १५०)। २ नृप-विशेष (महा; विपा १, ५)। °सेण पुं [°सेन] १ जैन आचार्य-विशेष। २ नृप-विशेष। ३ एक चक्रवर्त्ती राजा। ४ स्वनामख्यात एक कुलकर (राज)। °ारि पुं [°ारि] भगवान् संभवनाथजी का पिता (सम १५०)।

जिअंती स्त्री [जीवन्ती] वल्ली-विशेष (पराण १)।

जिअव वि [जितवत्] जय-प्राप्त (पराह १, १)।

जिइंदिय } वि [जितेन्द्रिय] इन्द्रियों को
जिएंदिय } वश में रखनेवाला, संयमी (पउम १४, ३६; हे ४, २८७)।

जिंघ सक [घ्रा] सूँघना, गन्ध लेना। कृ. जिंघणिज्ज (कप्प)।

जिंघण न [घ्राण] सूँघना, गन्ध-ग्रहण (स ५७७)।

जिंघणा स्त्री [घ्राण] ऊपर देखो (ओघ ३७६)।

जिंघिअ वि [घ्रात] सूँघा हुआ (पाअ)।

जिंडह पुंन [दे] कन्दुक, गेंद; 'जिंडहगेड्डिआ-इरमण' (पव ३८; धर्म २)।

जिंडुह पुं [दे] कन्दुक, गेंद (पव ३८)।

जिंभ } देखो जंभाय। जिंभ (अभि
जिंभाअ } २४१)। वकृ. जिंभाअंत (से ११, ३०)।

जिंभिया स्त्री [जृम्भा] जम्भाई, जृम्भण, मुख विकाश (सुपा ५८३)।

जिगीसा स्त्री [जिगीषा] जय की इच्छा (कुप्र २७८)।

जिग्घ देखो जिंघ। जिग्घइ (निचू १)।

जिग्घिअ वि [दे] घ्रात, सूँघा हुआ (दे ३, ४६)।

जिच्च } देखो जिण = जि।
जिच्चमाण }

जिट्ठ वि [ज्येष्ठ] १ महान्, वृद्ध, बड़ा (सुपा २३४; कम्म ४, ८३)। २ श्रेष्ठ, उत्तम। ३ पुं. बड़ा भाई; 'जिट्ठं व कणिट्ठं पि हु' (धर्म २)। °भूइ पुं [°भूति] जैन साधु-विशेष (ती १७)। °मूली स्त्री [°मूली] ज्येष्ठ मास की पूर्णिमा (इक)।

जिट्ठ पुं [ज्येष्ठ] मास-विशेष, जेठ (राज)।

जिट्ठा स्त्री [ज्येष्ठा] १ भगवान् महावीर की पुत्री। २ भगवान् महावीर की भगिनी (विसे २३०७)। ३ नक्षत्र-विशेष (जं १)। देखो जेट्ठा।

जिट्ठाणी स्त्री [ज्येष्ठा] बड़े भाई की पत्नी, जिठानी या जेठानी (सुपा ४८७)।

जिट्ठिणी स्त्री [ज्यैष्ठी] जेठ मास की अमावस (सट्ठि ७८ टी)।

जिण सक [जि] जीतना, वश करना। जिणइ (हे ४, २४१; महा)। कर्म. जिणिज्जइ, जिव्वइ (हे ४, २४२)। वकृ. जिणंत, जिणयंत (पि ४७३; पउम १११, १७)। कवकृ. जिव्वमाण (उत्त ७, २२)। संकृ. जिणित्ता, जिणिऊण, जिणेऊण, जेऊण, जेउआण (पि; हे ४, २४१; षड्; कुमा)। हेकृ. जिणिउं, जेउं (सुर १, १३०; रंभा)। कृ. जिच्च, जिणेयव्व, जेयव्व (उत्त ७, २२; पउम १६, १६; सुर १४, ७६)।

जिण पुं [जिन] १ राग आदि अन्तरंग शत्रुओं को जीतनेवाला, अर्हन् देव, तीर्थंकर (सम १; ठा ४, १; सम्म १)। २ बुद्ध देव, बुद्ध भगवान् (दे १, ५)। ३ केवल-ज्ञानी, सर्वज्ञ (पराण १)। ४ चौदह पूर्व ग्रन्थों का जानकार (उत्त ५)। ५ जैन साधु-विशेष, जिनकल्पी मुनि। ६ अवधि-ज्ञान आदि अतीन्द्रिय ज्ञानवाला (पंचा ४; ठा ३, ४)। ७ वि. जीतनेवाला (पंचा ३, २०)। °इंद पुं [°इन्द्र] अर्हन् देव (सुर ४, ८१)। °कप्प पुं [°कल्प] एक प्रकार के जैन मुनियों का आचार, चारित्र-विशेष (ठा ३, ४; बृह १)। °कप्पिय पुं [°कल्पिक] एक प्रकार का जैन मुनि (ओघ ६६६)। °किरिया स्त्री [°क्रिया] जिनदेव का बतलाया हुआ धर्मानुष्ठान (पंचव १)। °घर न [°गृह] जिन-मन्दिर (भग २, ८; णाया १, १६—पत्र २१०)। °चंद पुं [°चन्द्र] १ जिनदेव, अर्हन् देव (कम्म ३, १; अजि २६)। २ स्वनाम-ख्यात जैन आचार्य विशेष (गु १२; सण)। °जत्ता स्त्री [°यात्रा] अर्हन् देव की पूजा के उपलक्ष में किया जाता उत्सव-विशेष, रथ-यात्रा (पंचा ७)। °णाम न [°नामन्] कर्म-विशेष जिसके प्रभाव से जीव तीर्थंकर होता है (राज)। °दत्त पुं [°दत्त] १ स्वनाम-प्रसिद्ध जैनाचार्य-विशेष (गण २६; सार्ध १५०)। २ स्वनाम-ख्यात एक जैन श्रेष्ठी (पउम २०, ११६)। °दव्व न [°द्रव्य] जिन-मन्दिर-सम्बन्धी धनादि वस्तु; 'वड्ढंतो जिणदव्वं तित्थगरत्तं लहइ जीवो' (उप ४१८; दंस १)। °दास पुं [°दास] १ स्वनाम-प्रसिद्ध एक जैन उपासक (आचू ६)। २ स्वनाम-ख्यात एक जैन मुनि और ग्रन्थकार, निशीथ-सूत्र का चूर्णिकार (निचू २०)। °देव पुं [°देव] १ अर्हन् देव (गु ७)। २ स्वनाम-प्रसिद्ध जैनाचार्य (आक)। ३ एक जैन उपासक (आचू ४)। °धम्म पुं [°धर्म] जिनदेव का उपदिष्ट धर्म, जैन धर्म (ठा ५, २; हे १; १८७)। °नाह पुं [°नाथ] जिनदेव, अर्हन् देव (सुपा २३५)। °पडिमा स्त्री [°प्रतिमा] अर्हन् देव की मूर्त्ति (णाया १, १६—पत्र २१०; राय; जीव ३); 'जिणपडिमादंसणेण पडिबुद्धं' (दसचू २)। °पवयण न [°प्रवचन] जैन आगम, जिनदेव-प्रणीत शास्त्र (विसे १३५०)। °पसत्थ वि [°प्रशस्त] तीर्थंकर-भाषित, जिनदेव-कथित (पराह २,

५)। °पहु पुं [°प्रभु] जिन-देव, अर्हन् देव (उप ३२० टी)। °पाडिहेर न [°प्रातिहार्य] जिन-देव की अर्हत्ता-सूचक देव-कृत अशोक वृक्ष आदि आठ बाह्य विभूतियाँ, वे ये हैं—१ अशोक वृक्ष, २ सुर-कृत पुष्प-वृष्टि, ३ दिव्य-ध्वनि, ४ चामर, ५ सिंहासन, ६ भामण्डल, ७ दुन्दुभि-नाद, ८ छत्र (दंस १)। °पालिय पुं [°पालित] चम्पा नगरी का निवासी एक श्रेष्ठि-पुत्र (णाया १, ६)। °बिंब न [°बिम्ब] जिन-मूर्त्ति, जिन-देव की प्रतिमा (पडि; पंचा ७)। °भड पुं [°भट] स्वनाम-प्रसिद्ध एक जैन आचार्य, जो सुप्रसिद्ध जैन ग्रन्थकार श्रीहरिभद्र सूरि के गुरु थे (सार्थ ५८)। °भद्द पुं [°भद्र] स्वनाम-प्रसिद्ध जैन आचार्य और ग्रन्थकार (आव ४)। °भवण न [°भवन] अर्हन् मन्दिर (पंचव ४)। °मय न [°मत] जैन दर्शन (पंचा ४)। °माया स्त्री [°मातृ] जिन-देव की जननी (सम १५१)। °मुद्दा स्त्री [°मुद्रा] जिनदेव जिस तरह से कायोत्सर्ग में रहते हैं उस तरह शरीर का विन्यास, आसन-विशेष (पंचा ३)। °यंद देखो °चंद (सुर १, १०; सुपा ७६)। °रक्खिय पुं [°रक्षित] स्वनाम-ख्यात एक सार्थवाह-पुत्र (णाया १, ६)। °वइ पुं [°पति] जिन-देव, अर्हन्-देव (सुपा ८६)। °वई स्त्री [°वाच्] जिन-देव की वाणी (बृह १)। °वयण न [°वचन] जिन-देव की वाणी (ठा ६)। °वयण न [°वदन] जिनदेव का मुख (औप)। °वर पुं [°वर] अर्हन् देव (पउम ११, ४; अजि १)। °वरिंद पुं [°वरेन्द्र] अर्हन् देव (उप ७७६)। °वल्लह पुं [°वल्लभ] स्वनाम-ख्यात एक जैन आचार्य और प्रसिद्ध स्तोत्र-कार (लहुअ १७)। °वसह पुं [°वृषभ] अर्हन् देव (राज)। °सकहा स्त्री [°सक्थि] जिन-देव की अस्थि (भग १०, ५)। °सासण न [°शासन] जैन दर्शन (उत्त १८; सुअ १, ३, ४)। °हंस पुं [°हंस] एक जैन आचार्य (दं ४७)। °हर देखो °घर (पउम ११, ३; सुपा ३६१; महा)। °हरिस पुं [°हर्ष] एक जैन मुनि (रयण ६४)। °ायण न [°ायतन] जिन-देव का मन्दिर (पंचव ४)।

जिणंद देखो जिणिंद; 'सव्वे जिणंदा सुरविंद-वंदा' (पडि; जी ४८)।

जिणकप्पि पुं [जिनकल्पिन्] जैन मुनि का एक भेद (पंचा १८, ६)।

जिणण न [जयन] जय, जीत (सण)।

जिणपह पुं [जिनप्रभ] एक जैन आचार्य (ती ५)।

जिणिंद पुं [जिनेन्द्र] जिन भगवान्, अर्हन् देव (प्रासू ५२)। °गिह न [°गृह] जिन-मन्दिर (सुर ३, ७२)। °चंद पुं [°चन्द्र] जिन-देव (पउम ६५, ३६)।

जिणिय वि [जित] पराभूत, वशीकृत (सुपा ५२२; रयण २७)।

जिणिसर देखो जिणेसर (सम्मत्त ७६;७७)।

जिणिस्सर देखो जिणेसर (पंचा १६)।

जिणुत्तम पुं [जिनोत्तम] जिन-देव (अजि ४)।

जिणेंद देखो जिणिंद (चेइय ६०)।

जिणेस पुं [जिनेश] जिन भगवान्, अर्हन् देव (सुपा २६०)।

जिणेसर पुं [जिनेश्वर] १ जिन देव, अर्हन् देव (पउम २, २३)। २ विक्रम की ग्यारहवीं शताब्दी के स्वनाम-ख्यात एक प्रसिद्ध जैन आचार्य और ग्रन्थकार (सुर १६, २३६; सार्ध ७६; गु ११)।

जिण्ण वि [जीर्ण] १ पुराना, जर्जर (हे १, १०२; चारु ४६ प्रासू ७६)। २ पचा हुआ; 'जिण्णे भोअणमत्ते' (हे १, १०२)। ३ वृद्ध; बूढ़ा (बृह १)। °सेट्ठि पुं [°श्रेष्ठिन्] १ पुराना सेठ। २ श्रेष्ठि पद से च्युत (आव ४)।

जिण्ण (अप) देखो जिअ = जित (पिंग)।

जिण्णासा स्त्री [जिज्ञासा] जानने की इच्छा (पंचा ३)।

जिण्णिअ } (अप) देखो जिणिय (पिंग)।
जिण्णीअ }

जिण्णोब्भवा स्त्री [दे] दूर्वा, दूब (घास) (दे ३, ४६)।

जिण्हु वि [जिष्णु] १ जित्वर, जीतनेवाला, विजयी (प्रामा)। २ पुं. अर्जुन, मध्यम पांडव (गउड)। ३ विष्णु, श्रीकृष्ण। ४ सूर्य, रवि। ५ इन्द्र, देव-नायक (हे २, ७५)।

जित्त देखो जिअ = जित (महा; सुपा ३६५; ६४३)।

जित्तिअ } वि [यावत्] जितना (हे २,
जित्तिल } १५६; षड्)।

जित्तुल (अप) ऊपर देखो (कुमा)।

जिध (अप) अ [यथा] जैसे, जिस तरह से (हे ४, ४०१)।

जिन्न देखो जिण्ण (सुपा ६)।

जिन्नासिय वि [जिज्ञासित] जानने के लिए इष्ट, जानने के लिए चाहा हुआ (भास ७५)।

जिन्नुद्धार पुं [जीर्णोद्धार] पुराने और टूटे-फूटे मन्दिर आदि को सुधारना (सुपा ३०६)।

जिब्भ पुं [जिह्म] एक नरक-स्थान (देवेन्द्र ६; २६)।

जिब्भा स्त्री [जिह्वा] जीभ, रसना (पण्ह २, ५; उप ९८६ टी)।

जिब्भिंदिय न [जिह्वेन्द्रिय] रसनेन्द्रिय, जीभ (ठा ४, २)।

जिब्भिया स्त्री [जिह्विका] १ जीभ। २ जीभ के आकारवाली चीज (जं ४)।

जिम सक [जिम्, भुज्] जीमना, भोजन करना, खाना। जिमइ (हे ४, ११०; षड्)।

जिम (अप) देखो जिध (षड्; भवि)।

जिमण न [जेमन, भोजन] जीमन, भोजन (श्रा १६; चैत्य ५६)।

जिमण न [जेमन] जिमाना, भोज (धर्मवि ७०)।

जिमिअ वि [जिमित, भुक्त] १ जिसने भोजन किया हुआ हो वह (पउम २०, १२७; पुप्फ ३५; महा)। २ जो खाया गया हो वह, भक्षित (दे ३, ४६)।

जिम्म देखो जिम = जिम्। जिम्मइ (हे ४, २३०)।

जिम्ह पुं [जिह्म] १ मेघ-विशेष, जिसके बरसने से प्रायः एक वर्ष तक जमीन में चिकनापन रहती है (ठा ४, ४—पत्र २७०)। २ वि. कुटिल, कपटी, मायावी (सम ७१)। ३ मन्द, अलस (जं २)। ४ न. माया, कपट (वव ३)।

जिम्ह न [जैम्ह] कुटिलता, वक्रता, माया, कपट (सम ७१)।

जिव देखो जीव; 'मायाइ ग्रहं भणिग्रो कायव्वा बच्छ जिवदया तुमए' (धर्मवि ५)।

जिवँ, जिह } (अप) देखो जिध (कुमा; षड्; हे ४, ३३७)।

जिहा देखो जीहा (षड्)।

जीअ देखो जीव = जीव्। जीग्रइ (गा १२४, हे १, १०१)। वकृ. जीअंत (से ३, १२; गा ८१६)।

जीअ देखो जीव = जीव (गउड)। ५ पानी, जल (से २, ७)।

जीअ देखो जीविअ (हे १, २७१; प्राप्र; सुर २, २३०)।

जीअ न [जीत] १ आचार, रिवाज, प्रथा, रूढ़ि (ग्रौप; राय, सुपा ४३)। २ प्रायश्चित से सम्बन्ध रखनेवाला एक तरह का रिवाज, जैन सूत्रों में उक्त रीति से भिन्न तरह के प्रायश्चितों का परम्परागत आचार (ठा ५, २)। ३ आचार-विशेष का प्रतिपादक ग्रन्थ (ठा ५, २; वव १)। ४ मर्यादा, स्थिति, व्यवस्था (णंदि)। °कप्प पुं [°कल्प] १ परम्परा से आगत आचार। २ परम्परागत आचार का प्रतिपादक ग्रन्थ (पंचा ६; जीत)। °कप्पिय वि [°कल्पिक] जीत कल्पवाला (ठा १०)। °धर वि [°धर] १ आचार-विशेष का जानकार। २ स्वनाम-ख्यात एक जैनाचार्य (णंदि)। °ववहार पुं [°व्यवहार] परम्परा के अनुसार व्यवहार (धर्म २; पंचा १६)।

जीअण देखो जीवण (नाट—चैत २५८)।

जीअव वि [जीवितवत्] जीवितवाला, श्रेष्ठ जीवनवाला (पउम १, १)।

जीआ स्त्री [ज्या] १ धनुष की डोर (कुमा)। २ पृथिवी, भूमि। ३ माता, जननी (हे २, ११५; षड्)।

जीण न [दे. अजिन] जीन, ग्रश्व की पीठ पर बिछाया जाता चर्ममय आसन (पव ८४)।

जीमूअ पुं [जीमूत] १ मेघ, वर्षा (पाग्र; गउड)। २ मेघ-विशेष, जिसके बरसने से जमीन दश वर्ष तक चिकनी रहती है (ठा ४, ४)।

जीर° देखो जर = जृ।

जीरण न [जीर्ण] १ ग्रन्न पाक। २ वि. पुराना, पचा हुआ; 'ग्रजीरणं' (पिंड २७)।

जीरय न [जीरक] जीरा, मसाला-विशेष (सुर १, २२)।

जीरव सक [जीरय्] पचाना। जीरवइ (कुप्र २६६)।

जीव ग्रक [जीव्] १ जीना, प्राण धारण करना। २ सक. आश्रय करना। जीवइ (कुमा)। वकृ. जीवंत, जीवमाण (विपा १,५; उप ७२८ टी)। हेकृ. जीविउं (आचा)। संकृ. जीविअ (नाट)। कृ. जीविअव्व, जीवणिज्ज (सूग्र १, ७)। प्रयो. जीवावेहि (पि ५५२)।

जीव पुंन [जीव] १ आत्मा, चेतन, प्राणी (ठा १, १; जी १; सुपा २३५); 'जीवाइं' (पि ३६७)। २ जीवन, प्राण-धारण; 'जीवोत्ति जीवणं पाणधारणं जीवियंति पज्जाया' (विसे ३५०८; सम १)। ३ पुं. बृहस्पति, सुर-गुरु (सुपा १०८)। ४ बल, पराक्रम (भग २, १)। ५ देखो जीअ = जीव। °काय पुं [°काय] जीव-राशि, जीव-समूह (सूग्र १, ११)। °ग्गाह न [°ग्राह] जिन्दे को पकड़ना (णाया १, २)। °णिकाय पुं [°निकाय] जीव-राशि (ठा ६)। °त्थिकाय पुं [°ास्तिकाय] जीव-समूह, जीव-राशि (भग १३,४; ग्रणु)। °दय वि [°दय] जीवित देनेवाला (सम १)। °दया स्त्री [°दया] प्राणि-दया, दुःखी जीव का दुःख से रक्षण (महानि २)। °देव पुं [°देव] स्वनाम-ख्यात प्रसिद्ध जैन आचार्य और ग्रंथकार (सुपा १)। °पएस पुं [प्रदेशजीव] ग्रन्तिम प्रदेश में ही जीव की स्थिति को माननेवाला एक जैनाभास दार्शनिक (राज)। °पएसिय पुं [°प्रादेशिक] देखो पूर्वोक्त ग्रर्थ (ठा ७)। °लोग, °लोय पुं [°लोक] १ जीव-जाति, प्राणि-लोक, जीव-समूह (महा)। °विजय न [°विचय] जीव के स्वरूप का चिन्तन (राज)। °विभत्ति स्त्री [°विभक्ति] जीव का भेद (उत्त ३६)। °वुड्ढिय न [°वृद्धिक] ग्रनुज्ञा, संमति, ग्रनुमति (णंदि)।

जीव न [जीव] सात दिन का लगातार उपवास (संबोध ५८)। °विसिट्ठ न [°विशिष्ट] वही ग्रर्थ (संबोध ५८)।

जीवंजीव पुं [जीवजीव] १ जीव-बल, आत्म-पराक्रम (भग २, १)। २ चकोर-पक्षी, चकवा (राज)।

जीवंत देखो जीव = जीव्। °मुक्क पुं [°मुक्त] जीवन्मुक्त, जीवन-दशा में ही संसार-बन्धन से मुक्त महात्मा (ग्रच्चु ४७)।

जीवग पुं [जीवक] १ पक्षि-विशेष (उप ५८०)। २ नृप-विशेष (तित्थ)।

जीवजीवग पुं [जीवजीवक] चकोर पक्षी, चकवा (पण्ह १, १—पत्र ८)।

जीवण न [जीवन] १ जीना, जिन्दगी (विसे ३५२१; पउम ८, २५०)। २ जीविका, आजीविका (स २२७; ३१०)। ३ वि. जिलानेवाला (राज)। °वित्ति स्त्री [°वृत्ति] आजीविका (उप २६४ टी)।

जीवमजीव पुं [जीवाजीव] चेतन और जड़ पदार्थ (आवम)।

जीवम्मुत्त देखो जीवंत-मुक्क (उवर १६१)।

जीवयमई स्त्री [दे] मृगों के आकर्षण के साधन-भूत व्याध-मृगी (दे ३, ४६)।

जीवा स्त्री [जीवा] १ धनुष की डोरी (स ३८४)। २ जीवन, जीना (विसे ३५२१)। ३ क्षेत्र का विभाग-विशेष (सम १०४)।

जीवाउ पुं [जीवातु] जिलानेवाला औषध, जीवनौषध (कुमा)।

जीवाविय वि [जीवित] जिलाया हुआ (उप ७६८ टी)।

जीवि वि [जीविन्] जीनेवाला (गा ८४७)।

जीविअ वि [जीवित] १ जो जिन्दा हो। २ न. जीवित, जीवन, जिन्दगी (हे १, २७१; प्राप्र)। °नाह पुं [°नाथ] प्राण-पति (सुपा ३१५)। °रिसिका स्त्री [°रिसिका] वनस्पति-विशेष (पण्ण १—पत्र ३६)।

जीविआ स्त्री [जीविका] १ आजीविका, निर्वाह-साधक वृत्ति (ठा ४, २; स २१८; णाया १, १)।

जीविओसविय वि [जीवितोत्सविक] जीवन में उत्सव के तुल्य, जीवनोत्सव के समान (भग ६, ३३; राय)।

जीविओसासिय वि [जीवितोच्छ्वासिक] जीवन को बढ़ानेवाला (भग ६, ३३)।

जीविगा देखो जीविआ (स २१८)।

जीह अक [लस्ज्] लज्जा करना, शरमाना। जीहइ (हे ४, १०३; षड्)।

जीहा स्त्री [जिह्वा] जीभ, रसना (आचा; स्वप्न ७८)। °ल वि [वत्] लम्बी जीभवाला (पउम ७, १२०; नमि ८; सुर २, ९२)।

जीहाविअ वि [लज्जित] लज्जा-युक्त किया गया, लजाया गया (कुमा)।

जु देखो जुज (कुमा)। कवकृ. जुज्जंत (सम्म १०७; से १२, ८७)।

जु° स्त्री [युध्] लड़ाई, युद्ध; 'जुधि···वातिभए घेप्पइ' (विसे ३०१९)।

जु अ [दे] निश्चय-सूचक अव्यय (सा ४)।

जुअ देखो जुग (से १२, ९०; इक; पराह १, १)। ६ युग्म, जोड़ा, उभय (पिंग; सुर २, १०२; सुपा १९०)।

जुअ वि [युत] युक्त, संलग्न, सहित (दे १, ८१; सुर ४, ६४)।

जुअ देखो जुव (गा २२८; कुमा; सुर २, १७७)।

जुअइ स्त्री [युवति] तरुणी, जवान स्त्री (गउड; कुमा)।

जुअंजुअ (अप) अ [युतयुत] जुदा-जुदा, अलग-अलग, भिन्न-भिन्न (हे ४, ४२२)।

जुअण [दे] देखो जुअल = (दे) (षड्)।

जुअणद्ध पुं [युगनद्ध] ज्योतिष प्रसिद्ध एक योग, जिसमें बैल के कंधे पर रखे हुए युग—जुआ या जुआठ की तरह चन्द्र और सूर्य तथा नक्षत्र अवस्थित होते हैं वह योग (सुज्ज १२—पत्र २३३)।

जुअय न [युतक] जुदा, पृथक् (दे ७, ७३)।

जुअरज्ज न [यौवराज्य] युवराज का भाव या पद, युवरापन (स २६८)।

जुअल न [युगल] १ युग्म, जोड़ा, उभय (पाअ)। २ वे दो पद्य जिनका अर्थ एक दूसरे से सापेक्ष हो (श्रा १४)।

जुअल पुं [दे] युवा, तरुण, जवान (दे ३, ४७)।

जुअलिअ वि [दे] द्विगुणित (दे ३, ४७)।

जुअलिय देखो जुगलिय (णाया १, १)।

जुअली स्त्री [युगली] युग्म, जोड़ा (प्राकृ ३८)।

जुआण देखो जुवाण (गा ५७; २४६)।

जुआरि स्त्री [दे] जुआरि, अन्न-विशेष (सुपा ५४६; सुर १, ७१)।

जुइ स्त्री [द्युति] कान्ति, तेज, प्रकाश, चमक (औप; जीव ३)। °म, °मंत वि [°मत्] तेजस्वी, प्रकाशशाली (स ६४१; पउम १०२, १५६)।

जुइ स्त्री [युति] संयोग, युक्तता (ठा ३, ३)।

जुइ पुं [युगिन्] स्वनाम ख्यात एक जैन मुनि (पउम ३२, ५७)।

जुईम वि [द्युतिमत्] तेजस्वी (सूअ १, ६, ८)।

जुउच्छ सक [जुगुप्स्] घृणा करना, निन्दा करना। जुउच्छइ (हे ४, ४; षड्; से ५, ५)।

जुउच्छिय वि [जुगुप्सित] निन्दित (निचू ४)।

जुंगिय वि [दे] जाति, कर्म या शरीर से हीन, जिसको संन्यास देने का जैन शास्त्रों में निषेध है (पुप्फ १२५)।

जुंगिय वि [दे] १ काटा हुआ (पिंड ४४९)। २ दूषित (सिरि २२३)।

जुंज सक [युज्] जोड़ना, युक्त करना। जुंजइ (हे ४, १०९)। वकृ. जुंजंत (ओघ ३२९)।

जुंजण न [योजन] जोड़ना, युक्त करना, किसी कार्य में लगाना (सम १०६)।

जुंजणया, **जुंजणा** } स्त्री [योजना] १ ऊपर देखो (औप; ठा ७)। २ करण-विशेष—मन, वचन और शरीर का व्यापार; 'मणवयणकायकिरिया पन्नरसविहाउ जुंजणाकरणं' (विसे ३३६०)।

जुंजम [दे] देखो जुंजुमय (उप ३१८)।

जुंजिअ वि [दे] बुभुक्षित, भूखा (णाया १, १—पत्र ६६; ६८ टी)।

जुंजुमय न [दे] हरा तृण-विशेष, एक प्रकार की हरी घास, जिसको पशु चाव से खाते हैं (स ४८७)।

जुंजुरुड वि [दे] परिग्रह-रहित (दे ३, ४७)।

जुग पुं [युग] १ काल-विशेष—सत्य, त्रेता, द्वापर और कलि ये चार युग (कुमा)। २ पाँच वर्ष का काल (ठा २, ४—पत्र ८६; सम ७५)। ३ न. चार हाथ का यूप (औप; पराह १, ४)। ४ शकट का एक अंग, धुर, गाड़ी या हल खींचने के समय जो बैलों के कन्धे पर रक्खे जाते हैं (उप पृ १३६; उत्त २)। ५ चार हाथ का परिमाण (अणु)। ६ देखो जुअ = युग ६। °प्पवर वि [°प्रवर] युग-श्रेष्ठ (भग)। °प्पहाण वि [°प्रधान] १ युग-श्रेष्ठ (रंभा)। २ पुं. युग-श्रेष्ठ जैन आचार्य की एक उपाधि (पव २६४, गुरु १)। °बाहु पुं [बाहु] १ विदेह वर्ष में उत्पन्न स्वनाम-प्रसिद्ध एक जिनदेव (विपा २, १)। २ विदेह वर्ष का एक त्रि-खण्डाधिपति राजा (आचू ४)। ३ मिथिला का एक राजा (तित्थ)। ४ वि. यूप या खंभा की तरह लम्बा हाथवाला, दीर्घ-बाहु (ठा ६)। °मच्छ पुं [°मत्स्य] की एक जाति (विपा १, ८—पत्र ८४ टी)। °संवच्छर पुं [°संवत्सर] वर्ष-विशेष (ठा ५, ३)।

जुगंतर न [युगान्तर] यूप-परिमित भूमि-भाग, चार हाथ जमीन (पराह २, १)। °पलोयणा स्त्री [°प्रलोकना] चलते समय चार हाथ जमीन तक दृष्टि रखना (भग)।

जुगंधर न [युगन्धर] १ गाड़ी का काष्ठ-विशेष, शकट का एक अवयव (जं १)। २ पुं. विदेह वर्ष में उत्पन्न एक जिन-देव (आचू १)। ३ एक जैन मुनि (पउम २०, १८)। ४ एक जैन आचार्य (आवम)।

जुगल न [युगल] युग्म, जोड़ा, उभय (अणु; राय)।

जुगलि वि [युगलिन्] स्त्री-पुरुष के युग्म रूप से उत्पन्न होनेवाला (रयण २२)।

जुगलिय वि [युगलित] १ युग्म-युक्त, द्वन्द्व-सहित (जीव ३)। २ युग्म रूप से स्थित (राज)।

जुगव वि [युगवत्] समय के उपद्रव से वर्जित (अणु; राय)।

जुगव, **जुगवं** } अ [युगपत्] एक ही साथ, एक ही समय में, 'कारणकज्ज-

विभागो दीवपगासाण जुगवजम्मेवि' (विसे ५३६ टी; औप)।

जुगुच्छ देखो जुउच्छ । जुगुच्छइ (हे ४, ४)।

जुगुच्छणया } स्त्री [जुगुप्सा] घृणा,
जुगुच्छा } तिरस्कार (स १६७; प्राप्र)।

जुगुच्छिय वि [जुगुप्सित] घृणित, निन्दित (कुमा)।

जुग्ग न [युग्य] १ वाहन, गाड़ी वगैरह यान (आचा)। २ शिविका, पुरुष-यान (सूअ २, २; जं २)। ३ गोल्ल देश में प्रसिद्ध दो हाथ का लम्बा-चौड़ा यान-विशेष, शिविका-विशेष (णाया १, १; औप) । ४ वि. यान-वाहक अश्व आदि। ५ भार-वाहक (ठा ४, ३)। °यरिया, °रिया स्त्री [°चर्या] वाहन की गति (ठा ४, ३—पत्र २३६)।

जुग्ग वि [योग्य] लायक, उचित (विसे २९६२; सं ३१; प्रासू ५६; कुमा)।

जुग्ग न [युग्म] युगल, द्वन्द्व, उभय (कुमा; प्राप्र; प्राप)।

जुज्ज देखो जुंज। जुज्जइ (हे ४, १०६; षड्)।

जुज्जंत देखो जु।

जुज्झ अक [युध्] लड़ाई करना, लड़ना। जुज्झइ (हे ४, २१७; षड्)। वकृ. जुज्झंत, जुज्झमाण (सुर ६, २२२; २, ५१)। संकृ. जुज्झित्ता (ठा ३, २)। प्रयो. जुज्झावेइ (महा) । वकृ. जुज्झावेंत (महा)। कृ. जुज्झावेयव्व (उप पृ २२५)।

जुज्झ न [युद्ध] लड़ाई, संग्राम, समर (णाया १, ८; कुमा; कप्पू; गा ६८४)। °इजुद्ध न [°तियुद्ध] महायुद्ध, पुरुषों की बहत्तर कलाओं में एक कला (औप)।

जुज्झण न [योधन] युद्ध लड़ाई (सुपा ५२७)।

जुज्झिअ वि [युद्ध] १ लड़ा हुआ, जिसने संग्राम किया हो वह (से १५, ३७)। २ न. युद्ध, लड़ाई, संग्राम (स १२६)।

जुट्ठ वि [जुष्ट] सेवित (प्रामा)।

जुट्ठ न [दे] झूठ, असत्य; 'आ दुट्ठ तुमं जुट्ठं जंपसि' (धर्मवि १३३)।

जुडिअ वि [दे] आपस में जुटा हुआ, लड़ने के लिए एक दूसरे से भीड़ा हुआ; 'सुहडेहिं समं सुहडा जुडिया तह साइणावि साईहिं' (उप ७२८ टी)।

जुण्ण वि [दे] विदग्ध, निपुण, दक्ष (दे ३, ४७)।

जुण्ण वि [जीर्ण] जूना, पुराना (हे १, १०२; गा ५३४)।

जुण्णदुग्ग न [जीर्णदुर्ग] नगर-विशेष, जो आजकल भी 'जूनागढ' नाम से प्रसिद्ध है (ती २)।

जुण्ह देखो जोण्ह = ज्यौत्स्न (सुज १६)।

जुण्हा स्त्री [ज्योत्स्ना] चाँदनी, चन्द्रिका, चन्द्र का प्रकाश (सुपा १२१; सण)।

जुत्त सक [युक्तय्] जोतना। संकृ. जुत्तित्ता (ती १५)।

जुत्त वि [युक्त] १ संगत, उचित, योग्य (णाया १, १६; चंद २०)। २ संयुक्त, जोड़ा हुआ, मिला हुआ, संबद्ध (सूअ १, १, १; आचू)। ३ उद्युक्त, किसी कार्य में लगा हुआ (पव ६४)। ४ सहित, समन्वित (सूअ १, १, ३; आचा)। °संखिज्ज न [°संख्येय] संख्या-विशेष (कम्म ४, ७८)।

जुत्ताणंतय पुंन [युक्तानन्तक] गणना-विशेष (अणु २३४)।

जुत्तासंखेज्जय देखो जुत्तासंखिज्ज (अणु २३४)।

जुत्ति स्त्री [युक्ति] १ योग, योजन, जोड़, संयोग (औप; णाया १, १०)। २ न्याय, उपपत्ति (उप ६५०; प्रासू ६३)। ३ साधन, हेतु (सूअ १, ३, ३)। °ण्ण वि [°ज्ञ] युक्ति का जानकार (औप)। °सार वि [°सार] युक्ति-प्रधान, युक्त, न्याय-संगत, प्रमाण-युक्त (उप ७२८ टी)। °सुवण्ण न [°सुवर्ण] बनावटी सोना (दस १०, ३६)। °सेण पुं [°षेण] ऐरवत वर्ष के अष्टम जिन-देव (सम १५३)।

जुत्तिय वि [यौक्तिक] गाड़ी वगैरह में जो जोता जाय; 'जुत्तियतुरंगमाणं' (सुपा ७७)।

जुद्ध देखो जुज्झ = युद्ध (कुमा)।

जुन्न देखो जुण्ण (सुर १, २४४)।

जुन्हा देखो जुण्हा (सुपा १५७)।

जुप्प देखो जुंज जुप्पइ (हे ४, १०६)। जुप्पसि (कुमा)।

जुम्म न [युग्म] १ युगल, दोनों, उभय (हे २, ६२; कुमा)। २ पुं. सम राशि (ओघ ४०७; ठा ४, ३—पत्र २३७)। °पएसिय वि [°प्रादेशिक] सम-संख्य प्रदेशों से निष्पन्न (भग २५, ४)।

जुम्म न [युग्म] परस्पर सापेक्ष दो पद्य (सिरि ३६१)।

जुम्ह° स [युष्मत्] द्वितीय पुरुष का वाचक सर्वनाम, 'जुम्हदम्हपयरणं' (हे १, २४६)।

जुरुमिल्ल वि [दे] गहन, निबिड, सान्द्र; 'दुहजुरुमिल्लावत्थं' (दे ३, ४७)।

जुव पुं [युवन्] जवान, तरुण (कुमा)। °राअ पुं [°राज] गद्दी का वारिस (उत्तराधिकारी) राजकुमार, भावी राजा (सुर २, १७५; अभि ८२)।

जुवइ स्त्री [युवति] तरुणी, जवान स्त्री (हे १, ४; औप; गउड; प्रासू ६३; कुमा)।

जुवंगव पुं [युवगव] तरुण बैल (आचा २, ४, २)।

जुवरज्ज न [यौवराज्य] १ युवराजपन (उप २११ टी; सुर १६, १२७)। २ राजा के मरने पर जब तक युवराज का राज्याभिषेक न हुआ हो तबतक का राज्य (आचा २, ३, १)। ३ राजा के मरने पर और युवराज के राज्याभिषेक हो जाने पर भी जबतक दूसरे युवराज की नियुक्ति न हुई हो तबतक का राज्य (बृह १)।

जुवल देखो जुगल (स ४७८; पउम ६५, २३)।

जुवलिय देखो जुगलिय (भग; औप)।

जुवाण देखो जुव (पउम ३, १४६; णाया १, १; कुमा)।

जुवाणी देखो जुवई (पउम ८, १८४)।

जुव्वण } देखो जोव्वण (प्रासू ४६,
जुव्वणत्त } ११६); 'पढमं चिय बालत्तं, 'तत्तो कुमरत्तजुव्वणत्ताई' (सुपा २४३)।

जुसिअ वि [जुष्ट] सेवित; 'पाएण देइ लोगो उवगारिसु परिचिएसु व जुसिए वा' (ठा ४, ४)।

जुहिट्ठिर } देखो जहिट्ठिल (पिंग; उप ६४८ टी; णाया १, १६—पत्र २०८; २२६)।
जुहिट्ठिल }
जुहिट्ठिल्ल }

जुहु सक [हु] १ देना, अर्पण करना। २ हवन करना, होम करना। जुहुणामि (ठा ७—पत्र ३८१; पि ५०१)।

जूअ न [द्यूत] जुआ, द्यूत (पाअ)। °कर वि [°कर] जुआरी, जुए का खिलाड़ी (सुपा ५२२)। °कार वि [°कार] वही पूर्वोक्त अर्थ (णाया १, १८)। °कारि वि [°कारिन्] जुआरी (महा)। °केलि स्त्री [°केलि] द्यूत-क्रीड़ा (रयण ४८)। °खलय न [°खलक] जुआ खेलने का स्थान (राज)। °केलि देखो °केलि (रयण ४७)।

जूअ पुं [यूप] १ जुआ, धुर, गाड़ी का अवयव-विशेष जो बैलों के कन्धे पर डाला जाता है, जुअड़ (उत्त पृ १३६)। २ स्तम्भ-विशेष; 'जूअसहस्सं मुसल सहस्सं च उस्सवेह' (कप्प)। ३ यज्ञ-स्तम्भ (जं ३)। ४ एक महापाताल-कलश (पव २७२)।

जूअअ पुं [दे] चातक पक्षी (दे ३, ४७)।

जूअग पुं [यूपक] देखो जूअ = यूप (सम ७१)।

जूअग पुं [यूपक] सन्ध्या की प्रभा और चन्द्र की प्रभा का मिश्रण (ठा १०)।

जूआ स्त्री [यूका] १ जूँ, चीलड़, खटमल, क्षुद्र कीट-विशेष (जी १६)। २ परिमाण-विशेष, आठ लिक्षा का एक नाप (ठा ६; इक)। °सेज्जायर वि [°शय्यातर] यूकाओं को स्थान देनेवाला (भग १५)।

जूआर वि [द्यूतकार] जुआरी, जुए का खेलाड़ी (रंभा; भवि, सुपा ४००)।

जूआरि } वि [द्यूतकारिन्] जुआ खेलने-वाला, जुए का खेलाड़ी (द्र ४३, सुपा ४००; ४८८; स १५०)।
जूआरिअ }

जूझ देखो जुज्झ = युध्। कृ. जूझियव्व (सिरि १०२५)।

जूड पुं [जूट] कुन्तल, केश-कलाप (दे ४, २४; भवि)।

जूय न [यूप] लगातार छः दिनों का उपवास (संबोध ५८)।

जूयय } पुं [यूपक] शुक्ल पक्ष की द्वितीया आदि तीन दिनों में होती चन्द्र की कला और संध्या के प्रकाश का मिश्रण (अणु १२०; पव २६८)।
जूवय }

जूर सक [गर्ह्] निंदा करना। जूरंति (सूअ २, २, ५५)।

जूर अक [क्रुध्] क्रोध करना, गुस्सा करना। जूरइ (हे ४, १३२; षड्)।

जूर अक [खिद्] खेद करना, अफसोस करना। जूरइ (हे ४, १३२; षड्)। जूर (कुमा)। भवि. जूरिहिइ (हे २, १९३)। वकृ. जूरंत (हे २, १९३)।

जूर अक [जूर्] १ झुरना, सूखना। २ सक. वध करना, हिंसा करना (राज)।

जूरण न [जूरण] १ सूखना, झुरना। २ निन्दा, गर्हण (राज)।

जूरव सक [वञ्च्] ठगना, वंचना। जूरवइ (हे ४, ९३)।

जूरवण वि [वञ्चन] ठगनेवाला (कुमा)।

जूरावण न [जूरण] झुराना, शोषण (भग ३, २)।

जूराविअ वि [क्रोधित] क्रुद्ध किया हुआ, कोपित (कुमा)।

जूरिअ वि [खिन्न] खेद-प्राप्त (पाअ)।

जूरुम्मिलय वि [दे] गहन, निबिड, सान्द्र (दे ३, ४७)।

जूल देखो जूर = क्रुध्। जूल (गा ३५४)।

जूव देखो जूअ = द्यूत (णाया १, २—पत्र ७९)।

जूव } देखो जूअ = यूप (इक; ठा ४, २)।
जूवय }

जूस देखो झूस (ठा २, १; कप्प)।

जूस पुंन [यूष] जूस, मूँग वगैरह का क्वाथ, कढी (ओघ १४७; ठा ३, १)।

जूसअ वि [दे] उत्क्षिप्त, फेंका हुआ (षड्)।

जूसणा स्त्री [जोषणा] सेवा (कप्प)।

जूसिय वि [जुष्ट] १ सेवित (ठा २, १)। २ क्षपित, क्षीण (कप्प)।

जूह न [यूथ] समूह, जत्था (ठा १०; गा ५४८)। °वइ पुं [°पति] समूह का अधि-पति, यूथ का नायक (से ६, ६८; णाया १, १; सुपा १३७)। °हिव पुं [°धिप] पूर्वोक्त ही अर्थ (गा ५४८)। °हिवइ पुं [°धिपति] यूथ-नायक (उत्त ११)।

जूह न [यूथ] युग्म, युगल, जोड़ा (आचा २, ११, २)। °काम न [°काम] लगातार चार दिनों का उपवास (संबोध ५८)।

जूहिय वि [यूथिक] यूथ में उत्पन्न (आचा २, २)।

जूहियठाण न [यूथिकस्थान] विवाह-मण्डप वाली जगह (आचा २, ११, २)।

जूहिया स्त्री [यूथिका] लता-विशेष, जूही का पेड़ (पण्ण १; पउम ५३, ७९)।

जूही स्त्री [यूथी] लता-विशेष, माधवी लता (कुमा)।

जे अ. १ पाद-पूर्ति में प्रयुक्त किया जाता अव्यय (हे २, २१७)। २ अवधारण-सूचक अव्यय (उव)।

जेअ वि [जेय] जीतने योग्य (रुक्मि ५०)।

जेअ वि [जेतृ] जीतनेवाला (सूअ १, ३, १, १; १, ३, १, २)।

जेउ वि [जेतृ] जीतनेवाला, विजेता (भग २०, २)।

जेउआण }
जेउं } देखो जिण = जि।
जेऊण }

जेक्कार पुं [जयकार] 'जय-जय' आवाज स्तुति; 'हुंति देवाण जेक्कारो' (गा ३३२)।

जेट्ठ देखो जिट्ठ = ज्येष्ठ (हे २, १७२; महा; उवा)।

जेट्ठ देखो जिट्ठ = ज्यैष्ठ (महा)।

जेट्ठा देखो जिट्ठा (सम ८; आचू ४)। °मूल पुं [°मूल] जेठ मास (औप; णाया १, १३)। °मूली स्त्री [°मूली] जेठ मास की पूर्णिमा (सुज्ज १०)।

जेट्ठामूली स्त्री [ज्येष्ठामूली] १ जेठ मास की पूर्णिमा। २ जेठ मास की अमावस्या (सुज्ज १०, ६)।

जेण देखो जइण = जैन (सम्मत्त ११७)।

जेण अ [येन] लक्षण-सूचक अव्यय, 'भमररुअं जेण कमलवणं' (हे २, १८३; कुमा)।

जेत्त वि [यावत्] जितना। स्त्री. °त्ती (हास्य १३०)।

जेत्त देखो जइत्त (पि ६१)।
जेत्तिअ } वि [यावत्] जितना (हे २,
जेत्तिल } १५७; गा ७१; गउड)।
जेत्तिक (शौ) ऊपर देखो (प्राकृ ६५)।
जेत्तुल } (अप) ऊपर देखो (हे ४, ४३५)।
जेत्तुल्ल }
जेद्दह देखो जेत्तिअ (हे २, १५७; प्राप्र)।
जेम सक [जिम्, भुज्] भोजन करना। जेमइ (हे ४, ११०; षड्)। वकृ. **जेमंत** (पउम १०३, ८५)।
जेम (अप) अ [यथा] जैसे, जिस तरह से (सुपा ३८३; भवि)।
जेमण } न [जेमन] जीमन, भोजन (ओघ
जेमणग } ८८ भौप)।
जेमणय न [दे] दक्षिण अंग, गुजराती में 'जमणु' (दे ३, ४८)।
जेमणी स्त्री [जेमनी] जीमन (संबोध १७)।
जेमावण न [जेमन] भोजन कराना, खिलाना (भग ११, ११)।
जेमाविय वि [जेमित] भोजित, जिसको भोजन कराया गया हो वह (उप १३६ टी)।
जेमिय वि [जेमित] जीमा हुआ, जिसने भोजन किया हो वह (णाया १, १—पत्र ४१ टी)।
जेयव्व देखो जिण = जि।
जेव (शौ) देखो एव = एव (रंभा; कप्पू)।
जेवँ (अप) देखो जिवँ (हे ४, ३९७)।
जेवड (अप) देखो जेत्तिअ (हे ४, ४०७)।
जेव्व (शौ) देखो एव = एव (पि; नाट)।
जेह (अप) वि [यादृश्] जैसा (हे ४, ४०२; षड्)।
जेहिल पुं [जेहिल] स्वनाम ख्यात एक जैन मुनि (कप्प)।
जो } सक [दृश्] देखना। जोइ (सण);
जोअ } 'एसा हु वंकवंकं, जोयइ तुह संमुहं जेण' (सुर ३, १२६)। जोयंति (स ३६१)। कर्म. जोइज्जइ (रयण ३२)। वकृ. **जोअंत** (धम्म ११ टी; महा; सुर १०, २४४)। कवकृ. **जोइज्जंत** (सुपा ५७)।
जोअ अक [द्युत्] प्रकाशित होना, चमकना। जोइ (कुमा)। भूका. जोईसु (भग)। वकृ. °**जोअंत** (कुमा; महा)।
जोअ सक [द्योतय्] प्रकाशित करना। जोयइ (सूअ १, ६, १३); 'तस्सवि य गिहं पुण बालपंडिया जोयए दुहिया' (सुपा ६११)। जोएज्जा (विसे ६१२)।
जोअ सक [योजय्] १ समाप्त करना, खतम करना। २ करना। जोएइ (सुज्ज १०, १२—पत्र १८०; १८१; सुज्ज १२—पत्र २३३)।
जोअ सक [योजय्] जोड़ना, युक्त करना। जोएइ (महा)। वकृ. **जोइयव्व, जोएअव्व जोयणिय, जोयणिज्ज** (उप ५६६; स ५६८; भौप; निचू १)।
जोअ पुं [दे] १ चन्द्र, चन्द्रमा (दे ३, ४८)। २ युगल, युग्म (णाया १, १ टी—पत्र ४३)।
जोअ देखो जोग (अवि २५; स ३६१; कुमा)। °**वडय** न [°वटक] चूर्ण-विशेष, पाचक चूर्ण, हाजमा (स २५२)।
जोअंगण [दे] देखो जोइंगण (भवि)।
जोअग वि [द्योतक] १ प्रकाशनेवाला २ न. व्याकरण-प्रसिद्ध निपात वगैरह पद (विसे १००३)।
जोअड पुं [दे] खद्योत, कीट-विशेष, जुगनू (षड्)।
जोअण न [दे] लोचन, नेत्र, चक्षु, आँख (दे ३, ५०)।
जोअण न [योजन] १ परिमाण-विशेष, चार कोश (भग; इक)। २ संबन्ध, संयोग, जोड़ना (पण्ह १, १)।
जोअण न [यौवन] युवावस्था, तरुणता, जवानी (उप १४२ टी; गा १६७)।
जोअणा स्त्री [योजना] जोड़ना, संयोग करना (उप पृ २२१)।
जोआ स्त्री [द्यो] १ स्वर्ग। २ आकाश (षड्)।
जोआवइत्तु वि [योजयितृ] जोड़नेवाला, संयुक्त करनेवाला (ठा ४, ३)।
जोइ वि [योगिन्] १ युक्त, संयोगवाला। २ चित्त-निरोध करनेवाला, समाधि लगानेवाला। ३ पुं. मुनि, यति, साधु (सुपा २१६; २१७)। ४ रामचन्द्र का स्वनाम-ख्यात एक सुभट (पउम ६७, १०)।
जोइ पुं [ज्योतिस्] १ प्रकाश, तेज (भग; ठा ४, ३)। २ अग्नि, वह्नि; 'सप्पि जहा जहा पडियं जोइमज्झे' (सूअ १, १३)। ३ प्रदीप आदि प्रकाशक वस्तु; 'जहा हि अंधे सह जाइणावि' (सूअ १, १२)। ४ अग्नि का काम करनेवाला कल्पवृक्ष (सम १७)। ५ ग्रह, नक्षत्र आदि प्रकाशक पदार्थ (चंद १)। ६ ज्ञान। ७ ज्ञान-युक्त। ८ प्रसिद्धि-युक्त। ९ सत्कर्म-कारक (ठा ४, ३)। १० स्वर्ग। ११ ग्रह वगैरह का विमान (राज)। १२ ज्योतिष-शास्त्र (निर ३, ३)। °**अंग** पुं [°अङ्ग] अग्नि का काम करनेवाला कल्प-वृक्ष-विशेष (ठा १०)। °**रस** न [°रस] रत्न की एक जाति (णाया १, १)। देखो जोइस = ज्योतिस्।
जोइअ पुं [दे] कीट-विशेष, खद्योत, जुगनू, पटबीजना (दे ३, ५०)।
जोइअ वि [दृष्ट] देखा हुआ, विलोकित (सुर ३, १७३; महा भवि)।
जोइअ वि [योजित] जोड़ा हुआ (स २६४)।
जोइअ देखो जोगिय (राज)।
जोइंगण पुं [दे] कीट-विशेष, इन्द्र-गोप (दे ३, ५०)।
जोइक्क पुंन [ज्योतिष्क] प्रदीप आदि प्रकाशक पदार्थ; 'किं सूरस्स दंसणाहिगमे जाइक्कंतरं गवेसीयदि' (रंभा)।
जोइक्ख पुं [दे. ज्योतिष्क] १ प्रदीप, दीपक (दे ३, ४९; पव ४; वव ७)। २ प्रदीप आदि का प्रकाश (ओघ ६५३)।
जोइणी स्त्री [योगिनी] १ योगिनी, संन्यासिनी। २ एक प्रकार की देवी, ये चौसठ हैं (संति ११)।
जोइर त्रि [दे] स्खलित (दे ३, ४९)।
जोइस न [दे] नक्षत्र (दे ३, ४९)।
जोइस देखो जोइ = ज्योतिस् (चंद १; कप्प; विसे १८७०; जो १; ठा ६)। °**राय** पुं [°राज] १ सूर्य। २ चन्द्र (सुज्ज २०; १८)। °**लय** पुं [°लय] सूर्य आदि देव (उत्त ३६)।

जोइस पुं [ज्यौतिष] १ देवों की एक जाति, सूर्य, चन्द्र, ग्रह आदि (कप्प; औप; दंड २७)। २ न. सूर्य आदि का विमान (ति १२; जो १)। ३ शास्त्र-विशेष, ज्योतिष-शास्त्र (उत्त २)। ४ सूर्य आदि का चक्र। ५ सूर्य आदि का मार्ग, आकाश; 'जे गहा जाइसम्मि चारं चरंति' (पएण ३)।

जोइस पुं [ज्यौतिष] १ सूर्य, चन्द्र आदि देवों की एक जाति (कप्प; पंचा २)। २ वि. ज्योतिष शास्त्र का जानकार, जोतिषी (सुपा १५६)।

जोइसिअ वि [ज्यौतिषिक] १ ज्योतिष शास्त्र का ज्ञाता, दैवज्ञ, जोतिषी (स २२; सुर ४, १००; सुपा २०३)। २ सूर्य, चन्द्र आदि ज्योतिष्क देव (औप; जी २४; पएण २)। °**राय** पुं [°राज] १ सूर्य, रवि। २ चन्द्रमा (पएण २)।

जोइसिंद पुं [ज्योतिरिन्द्र] १ सूर्य, रवि। २ चन्द्र, चन्द्रमा (ठा ६)।

जोइसिण पुं [ज्यौत्स्न] शुक्ल पक्ष (जो ४)।

जोइसिणा स्त्री [ज्योत्स्ना] चन्द्र की प्रभा, चन्द्रिका, चाँदनी (ठा २,४)। °**पक्ख** पुं [°पक्ष] शुक्ल पक्ष (चंद १५)। °**भा** स्त्री [°भा] चन्द्र की एक अग्र-महिषी (भग १०, ५)।

जोइसिणी स्त्री [ज्यौतिषी] देवी-विशेष (पएण १७—पत्र ४९९)।

जोई स्त्री [दे] विद्युत्, बिजली (दे ३, ४९; षड्)।

जोईरस देखो **जोइ-रस** (कप्प; जीव ३)।

जोईस पुं [योगीश] योगीन्द्र, योगि-राज (स १)।

जोईसर पुं [योगीश्वर] ऊपर देखो (सुपा ८३; रयण ६)।

जोउकण्ण न [यौगकर्ण] गोत्र-विशेष (सुज्ज १०, १६ टी)।

जोउकण्णिय न [यौगकर्णिक] गोत्र-विशेष (सुज्ज १०, १६)।

जोकार देखो **जेकार** (गा ३३२ अ)।

जोक्ख वि [दे] मलिन, अपवित्र (दे ३, ४८)।

जोग देखो **जुग्ग**=युग्म; 'सपाउयाजोग समाजुत्तं' (राय ४०)।

जोग पुं [योग] नक्षत्र-समूह का क्रम से चन्द्र और सूर्य के साथ संबंध (सुज्ज १०, १)।

जोग पुं [योग] १ व्यापार, मन, वचन और शरीर की चेष्टा (ठा ४, १; सम १०; स ४७०)। २ चित्तनिरोध, मनः-प्रणिधान, समाधि (पउम ६८, २३; उत्त १)। ३ वश करने के लिए या पागल आदि बनाने के लिए फेंका जाता चूर्ण-विशेष; 'जोगो मइमोह-करो सीसे खित्तो इमाए सुत्ताए' (सुर ८, २०१)। ४ सम्बन्ध, संयोग, मेलन (ठा १०)। ५ ईप्सित वस्तु का लाभ (णाया १, ५)। ६ शब्द का अवयवार्थ-सम्बन्ध (भास २४)। ७ बल, वीर्य, पराक्रम (कम्म ५)। °**क्खेम** न [°क्षेम] ईप्सित वस्तु का लाभ और उसका संरक्षण (णाया १, ५)। °**त्थ** वि [°स्थ] योग-निष्ठ, ध्यान-लीन (पउम ६८, २३)। °**त्थ** पुं [°ार्थ] शब्द के अवयवों का अर्थ, व्युत्पत्ति के अनुसार शब्द का अर्थ (भास २४)। °**दिट्ठि** स्त्री [°दृष्टि] चित्त-निरोध से उत्पन्न होनेवाला ज्ञान-विशेष (राज)। °**धर** वि [°धर] समाधि में कुशल, योगी (पउम ११६, १७)। °**परिव्वाइया** स्त्री [°परिव्राजिका] समाधि-प्रधान व्रतिनी-विशेष (णाया १, ६)। °**पिंड** पुं [°पिण्ड] वशीकरण आदि के प्रयोग से प्राप्त की हुई भिक्षा (पंचा १३; निचू १३)। °**मुद्दा** स्त्री [°मुद्रा] हाथ का विन्यास-विशेष (पंचा ३)। °**व** वि [°वत्] १ शुभ प्रवृत्तिवाला (सूअ १, २, १)। २ योगी, समाधि करनेवाला (उत्त ११)। °**वाहि** वि [°वाहिन्] १ शास्त्र-ज्ञान की आराधना के लिए शास्त्रोक्त तपश्चर्या को करनेवाला। २ समाधि में रहनेवाला (ठा ३, १—पत्र १२०)। °**विहि** पुंस्त्री [°विधि] शास्त्रों की आराधना के लिए शास्त्र-निर्दिष्ट अनुष्ठान, तपश्चर्या-विशेष; 'इय वुत्तो जोगविही', 'एसा जोगविही' (अंग)। °**सत्थ** न [°शास्त्र] चित्त-निरोध का प्रतिपादक शास्त्र (उवर १९०)।

जोग देखो **जोग्ग**; 'इय सो न एत्थ जोगो, जोगो पुण होइ अक्कूरो' (धम्म १२; सुर २, २०५; महा; सुपा २०८)।

जोगि देखो **जोइ**=योगिन् (कुमा)।

जोगिंद पुं [योगीन्द्र] महान् योगी, योगीश्वर (रयण २९)।

जोगिणी देखो **जोइणी** (सुर ३, १८९)।

जोगिय वि [यौगिक] दो पदों के सम्बन्ध से बना हुआ शब्द, जैसे—उप-करोति, अभि-षेणयति (पणह २, २—पत्र ११४)। २ यन्त्र-प्रयोग से बना हुआ (उप पृ ९४)।

जोगीसर देखो **जोईसर** (स २०१)।

जोगेसरी स्त्री [योगेश्वरी] देव-विशेष (सण)।

जोगेसी स्त्री [योगेशी] विद्या-विशेष (पउम ७, १४२)।

जोग्ग वि [योग्य] योग्य, उचित, लायक (ठा ३, १; सुपा २८)। २ प्रभु, समर्थ, शक्तिमान् (निचू २०)।

जोग्गा स्त्री [दे] चाटु, खुशामद, (दे ३, ४८)।

जोग्गा स्त्री [योग्या] १ शास्त्र का अभ्यास (भग ११, ११; जं ३)। २ गर्भ-धारण में समर्थ योनि (तंदु)।

जोज देखो **जोअ**=योजय्। भवि. **जोज-इस्सामि** (कुप्र १३०)। कृ. **जोज्ज** (उत्त २७, ८)।

जोड सक [योजय्] जोड़ना, संयुक्त करना। वकृ. **जोडंत** (सुर ४, १९)। संकृ. **जोडिऊण** (महा)।

जोड पुंन [दे] १ नक्षत्र (दे ३, ४९; पि ६)। २ रोग-विशेष (सण)।

जोड (अप) स्त्री [दे] जोड़ी, युगल; 'एरिस जोड न जुत्त' (कुप्र ४५३)।

जोडिअ पुं [दे] व्याध, बहेलिया, चिड़ीमार (दे ३, ४९)।

जोडिअ वि [योजित] जोड़ा हुआ, संयुक्त किया हुआ (सुपा १४९; ३५१)।

जोण पुं [योन, यवन] म्लेच्छ देश-विशेष (णाया १, १)।

जोणि स्त्री [योनि] १ उत्पत्ति-स्थान (भग; सं ८२; प्रासू ११५)। २ कारण, हेतु, उपाय (ठा ३, ३; पंचा ४)। ३ जीव का उत्पत्ति-स्थान (ठा ७)। ४ स्त्री-चिन्ह, भग (अणु)। °**विहाण** न [°विधान] उत्पत्ति-

शास्त्र (विसे १७७५)। °सूल न [°शूल] योनि का एक रोग (गाया १, १६)।

जोणिय वि [योनिक, यवनिक] अनार्य देश-विशेष से उत्पन्न। स्त्री. °या (इक; औप; णाया १, १—पत्र ३७)।

जोण्णलिआ स्त्री [दे] अन्न-विशेष, जुआरि, जोन्हरी (दे ३, ५०)।

जोण्ह वि [ज्यौत्स्न] १ शुक्ल, श्वेत; 'कालो वा जोण्हो वा केणणुभावेण चंदस्स' (सुज्ज १९)। २ पुं. शुक्ल पक्ष (जो ४)।

जोण्हा स्त्री [ज्योत्स्ना] चन्द्र-प्रकाश (षड्; काप्र १९७)।

जोण्हाल वि [ज्योत्स्नावत्] ज्योत्स्ना वाला, चन्द्रिकायुक्त (हे २, १५९)।

जोत्त देखो जुत्त = युक्त (कुप्र ३८१)।

जोत्त } न [योक्त्र, °क] जोत, रस्सी या
जोत्तय } चमड़े का तस्मा, जिससे बैल या घोड़ा, गाड़ी या हल में जोता जाता है (पण्ह २, ५; गा ६६२)।

जोय देखो जोअ = दृश्। जोयइ (महा; भवि)।

जोव पुं [दे] १ बिन्दु। २ वि. स्तोक, थोड़ा (दे ३, ५२)।

जोवण न [दे] १ यन्त्र. कल; 'आउज्जोवण' (ओघ ६० भा)। २ धान्य का मर्दन, अन्न-मलन (ओघ ६० भा)।

जोवारि स्त्री [दे] अन्न-विशेष, जुआरि (दे ३, ५०)।

जोविय वि [दृष्ट] विलोकित (स १४७)।

जोव्वण न [यौवन] १ तारुण्य, जवानी (प्राप्र; कप्प)। २ मध्य भाग (से २, १)।

जोव्वणणीर } न [दे] वयः-परिणाम, वृद्धत्व,
जोव्वणवेअ } बुढ़ापा; 'जोव्वणणीरं तरुणत्तणे वि विजिएंदियाण पुरिसाण' (दे ३, ५१)।

जोव्वणिया स्त्री [यौवनिका] यौवन, जवानी (राय)।

जोव्वणोवय न [दे] बुढ़ापा, वृद्धत्व, जरा (दे ३, ५१)।

जोस देखो जुस = जुष्। वकृ. जोसंत (राज)। प्रयो., संकृ. जोसियाण (वव ७)।

जोस पुं [झोष] अवसान, अन्त (सूअ १, २, ३, २ टि)।

जोसिअ वि [जुष्ट] सेवित (सूअ १, २, ३)।

जोसिआ स्त्री [योषित्] स्त्री, महिला, नारी (षड्; धर्म २)।

जोसिणी देखो जोण्हा (अभि ३१)।

जोह अक [युध्] लड़ना। जोहइ (भवि)।

जोह पुं [योध] सुभट, योद्धा (औप; कुमा)।
°ट्ठाण न [°स्थान] सुभटों का युद्ध-कालीन शरीर-विन्यास, अंग-रचना-विशेष (ठा ६; निचू २०)।

जोहणा देखो जोण्हा (मै ७१)।

जोहा स्त्री [योधा] भुज-परिसर्प की एक जाति (सूअ २, ३, २५)।

जोहार सक [दे] जुहारना, जोहार करना, प्रणाम करना। कर्म. जोहारिज्जइ (श्राक २५, १३)।

जोहार पुं [दे] जोहार, प्रणाम (पव ३८)।

जोहि वि [योधिन्] लड़नेवाला, सुभट (पव ७१)।

जोहि वि [योधिन्] लड़नेवाला, लड़वैया (औप)।

जोहिया स्त्री [योधिका] जंतु-विशेष, हाथ से चलनेवाली एक प्रकार की सर्प-जाति (जीव २)।

ज्जिअ } (शौ) अ [दे] अवधारण—निश्चय
ज्जेअ } का सूचक अव्यय (प्राकृ ९८)।

°ज्जेव } (शौ)। देखो एव = एव (पि २३;
°ज्जेव्व } ८५)।

ज्झड देखो झड। ज्झडइ (हे ४, १३० टि)।

ज्झडुराविअ वि [दे] निवासित, निवास-प्राप्त (षड्)।

॥ इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि जआराइसद्दसंकलणो सोलहमो तरंगो समत्तो ॥

झ

झ पुं [झ] १ तालु-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष (प्रामा; प्राप)। २ ध्यान (विसे ३१६८)।

झंकार पुं [झङ्कार] नूपुर वगैरह की आवाज (सुर ३, १८; पडि; सण)।

झंकारिअ न [दे] अवचयन, फूल वगैरह का आदान या चुनना (दे ३, ५६)।

झंख सक [दे] स्वीकार करना। झंखहु (अप) (सिरि ८६४)।

झंख अक [सं + तप्] संतप्त होना, संताप करना। झंखइ (हे ४, १४०)।

झंख अक [वि + लप्] विलाप करना, बकवाद करना। झंखइ (हे ४, १४८)। वकृ. झंखंत (कुमा);
'धणनासाओ गहिलीभूओ झंखइ नरेस! एस धुवं। सोमोवि भणइ झंखसि तुमेव बहुलोहगहगहिओ' (श्रा १४)।

झंख सक [उपा + लभ्] उपालंभ देना, उलाहना देना। झंखइ (हे ४, १५६)।

झंख अक [निर् + श्वस्] निःश्वास लेना। झंखइ (हे ४, २०१)।

झंख वि [दे] तुष्ट, संतुष्ट, खुश (दे ३, ५३)।
झंखण न [उपालम्भ] उपालम्भ, उलाहना (कुमा)।
झंखर पुं [दे] शुष्क तरु, सूखा पेड़ (दे ३, ५४)।
झंखरिअ [दे] देखो झंकारिअ (दे ३, ५६)।
झंखावण वि [संतापक] संताप करनेवाला (कुमा)।
झंखिर वि [निःश्वसितृ] निःश्वास लेनेवाला (कुमा ७, ४४)।
झंझ पुं [झंझ] कलह, झगड़ा (सम ५०)। °कर वि [°कर] कलहकारी, फूट करानेवाला (सम ३७)। °पत्त वि [°प्राप्त] क्लेश-प्राप्त (सूअ १, १३)।
झंझण } अक [झंझणाय] 'झन-झन'
झंझणक्क } शब्द करना। झंझणइ (गा ५७५ अ)। झंझणक्कइ (पिंग)।
झंझणा स्त्री [झञ्झना] 'झन-झन' शब्द (गउड)।
झंझा स्त्री [झञ्झा] वाद्य-विशेष, झाँझ, झाल (राय ५० टी)।
झंझा स्त्री [झञ्झा] १ प्रचण्ड वायु-विशेष (गा १७०; सण)। २ कलह, क्लेश, झगड़ा (उव; बृह ३)। ३ माया, कपट। ४ क्रोध, गुस्सा (सूअ १, १३)। ५ तृष्णा, लोभ (सूअ २, २)। ६ व्याकुलता, व्यग्रता (आचा)।
झंझिय वि [झञ्झित] बुभुक्षित, भूखा (णाया १, १)।
झंट सक [भ्रम्] घूमना, फिरना। झंटइ (हे ४, १६१)।
झंट अक [गुञ्ज्] गुञ्जारव करना। वकृ. 'झंटंतभमिरभमरउलमालियं मालियं गहिउं' (सुपा ५२६)।
झंटण न [भ्रमण] पर्यटन, परिभ्रमण (कुमा)।
झंटलिआ स्त्री [दे] चंक्रमण, कुटिल गमन (दे ३, ५५)।
झंटिअ वि [दे] जिस पर प्रहार किया गया हो वह, प्रहृत (दे ३, ५५)।
झंटी स्त्री [दे] छोटा किन्तु ऊँचा केश-कलाप (दे ३, ५३)।

झंडली स्त्री [दे] असती, कुलटा (दे ३,५४)।
झंडुअ पुं [दे] वृक्ष-विशेष, पीलु का पेड़ (दे ३, ५३)।
झंडुली स्त्री [दे] असती, कुलटा। २ क्रीड़ा, खेल (दे ३, ६१)।
झंदिय वि [दे] प्रद्रुत, पलायित, भगाया हुआ (षड्)।
झंप सक [भ्रम्] घूमना, फिरना। झंपइ (हे ४, १६१)।
झंप सक [आ + च्छादय्] झाँपना, आच्छादन करना, ढकना। झंपइ (पिंग)। संकृ. झंपिऊण, झंपिवि (कुमा; भवि)।
झंप सक [आ = क्रामय्] आक्रमण करवाना। झंपइ (प्राकृ ७०)।
झंपण वि [भ्रमण] भ्रमण-कर्ता (कुप्र ४)।
झंपण न [भ्रमण] परिभ्रमण, पर्यटन (कुमा)।
झंपणी स्त्री [दे] पक्ष्म, आँख की बरौनी, आँख के बाल (दे ३, ५४; पाअ)।
झंपा स्त्री [झम्पा] एकदम कूदना, झम्पा-पात (सुपा १६८)।
झंपिअ वि [दे] १ त्रुटित, टूटा हुआ। २ घट्टित, आहत (दे ३, ६१)।
झंपिअ वि [आच्छादित] झपा हुआ, बंद किया हुआ (पिंग); 'पईवओ झंपिओ झत्ति' (महा); 'तओ एवं भणमाणस्स सहत्थेणं झंपिअं मुहकुहरं सुमइस्स णाइलेणं' (महानि ४)।
झकिअ न [दे] वचनीय, लोक-निन्दा (दे ३, ५; भवि)।
झख देखो झंख = वि + लप्। वकृ. झखंत (जय २३)।
झगड पुं [दे] झगड़ा, कलह (सुपा ५४६; ५४७)।
झग्गुली स्त्री [दे] अभिसारिका, प्रिय से मिलने के लिए संकेत स्थान पर जानेवाली स्त्री या न्यायिका (विक्र १०१)।
झज्झर पुं [झर्झर] १ वाद्य-विशेष, झाँझ। २ पटह, ढोल। ३ कलि-युग। ४ नद-विशेष (पि २१४)।
झज्झरिय वि [झर्झरित] वाद्य-विशेष के शब्द से युक्त (ठा १०)।

झज्झरी स्त्री [दे] दूसरे के स्पर्श को रोकने के लिए चांडाल लोग जो लकड़ी अपने पास रखते हैं वह (दे ३, ५४)।
झड अक [शद्] १ झड़ना, पके फल आदि का गिरना, टपकना। २ हीन होना। ३ सक. झपट मारना, गिराना। झडइ (हे ४,१३०)। वकृ. झडंत (कुमा)। कवकृ. 'वासासु सीयवाएहिं झडिज्जंतो' (आव १)। संकृ. 'झडिऊण पल्लविल्ला, पुणोवि जायंति तरुवरा तुरियं। धीराणवि धणरिद्धी, गयावि न हु दुल्लहा एवं' (उप ७२८)।
झडत्ति अ [झटिति] शीघ्र, जल्दी, तुरंत, (उप ७२८ टी; महा)।
झडप्प अ [दे] शीघ्रता, जल्दी (उप पृ ११०; रंभा)।
झडप्प सक [आ + छिद्] झपटना, झपट मारना, छीनना। झडप्पमि (भवि)। संकृ. झडप्पिवि (भवि)।
झडप्पड न [दे] झटपट, झटिति, शीघ्र (हे ४, ३८८)।
झडप्पिअ वि [आच्छिन्न] छीना हुआ (भवि)।
झडि अ [झटिति] शीघ्र, जल्दी, तुरन्त; 'झडि आपल्लवइ पुणो' (गा ६१३)।
झडिअ वि [दे] १ शिथिल, ढीला, सुस्त (गा २३०)। २ श्रान्त, खिन्न, (षड्)। ३ झड़ा हुआ, गिरा हुआ; 'करच्छडाझडियपक्खिउले' (पउम ६६, १५)।
झडित्ति देखो झडत्ति (सुर २, ४)।
झडिल देखो जडिल (हे १, १९४)।
झडी स्त्री [दे] निरन्तर वृष्टि, झड़ी; गुजराती में 'झडी' (दे ३, ५३)।
झण सक [जुगुप्स्] घृणा करना। झणइ (षड्)।
झणज्झण अक [झणझणाय्] 'झन-झन' आवाज करना। वकृ. झणज्झणंत (प्राप)।
झणज्झणिअ वि [झणझणित] 'झन-झन' आवाजवाला (पिंग)।
झणझण देखो झणज्झण। झणझणइ (वज्जा ६६)।
झणझणारव पुं [झणझणारव] 'झन-झन' आवाज (महा)।

झणझणिय देखो झणज्झणिअ (सुपा ५०)।
झणि देखो झुणि (रंभा)।
झत्ति देखो झडत्ति (हे १, ४२; षड्; महा; सुर २, ६)।
झत्थ वि [दे] गत, गया हुआ। २ नष्ट (दे ३, ६१)।
झपिअ वि [दे] पर्यस्त, उत्क्षिप्त (षड्)।
झप्प देखो झण। झप्पइ (षड्)।
झमाल न [दे] इन्द्रजाल, माया-जाल (दे ३, ५३)।
झय पुंस्त्री [ध्वज] ध्वज, पताका (हे २, २७; औप)। स्त्री. °या (औप)।
झर अक [क्षर्] झरना, टपकना, चूना, गिरना। झरइ (हे ४, १७३)। वकृ. झरंत (कुमा; सुर ३, १०)।
झर सक [स्मृ] याद करना। झरइ (हे ४, ७४; षड्)। कृ. झरेयव्व (बृह ५)।
झरंक } पुं [दे] तृण का बनाया हुआ
झरंत } पुरुष, चञ्चा (दे ३, ५५)।
झरग वि [स्मारक] चिन्तन करनेवाला, ध्यान करनेवाला; 'भणगं करगं झरगं पभावगं णाणदंसणगुणाणं' (णंदि)।
झरझर पुं [झरझर] निर्झर या झरना आदि का 'झर-झर' आवाज (सुर ३, १०)।
झरण न [क्षरण] झरना, टपकना, पतन (वव १)।
झरणा स्त्री [क्षरणा] ऊपर देखो (आवम)।
झरय पुं [दे] सुवर्णकार, सोनार (दे ३,५४)।
झरिय वि [क्षरित] टपका हुआ, गिरा हुआ, पतित (उव; ओघ ७६०)।
झरुअ पुं [दे] मशक, मच्छड़ (दे ३, ५४)।
झलक्किअ वि [दग्ध] जला हुआ, भस्मीभूत; 'जयगुरुगुरुविरहानलजालोलिझलक्कियं हिययं' (सुपा ६५७; हे ४, ३९५)।
झलझल अक [ज्वल्] झलकना, चमकना, दीपना। वकृ. झलझलंत (भवि)।
झलझलिआ स्त्री [दे] झोली, कोथली, थैली (दे ३, ५६)।
झलहल देखो झलझल। झहहलइ (सुपा १८६)। वकृ. झलहलंत (श्रा २८)।

झलहलिय वि [दे] क्षुब्ध, विचलित; 'घरहरियधरं झलहलियसायरं चलियसयलकुलसेलं' (कुलक ३३)।
झला स्त्री [दे] मृगतृष्णा, धूप में जल-ज्ञान, व्यर्थ तृष्णा (दे ३, ५३; पाअ)।
झलुंकिअ } वि [दे] दग्ध, जला हुआ (दे
झलुंसिअ } ३, ५६)।
झल्लरी स्त्री [झल्लरी] वलयाकार वाद्य-विशेष, हुडुग बाजा, झाल, झालर (ठा १०; औप; सुर ३, ६६; सुपा ५०; कप्प)।
झल्लरी स्त्री [दे] अजा, बकरी (चंड)।
झल्लोज्झल्लिअ वि [दे] संपूर्ण, परिपूर्ण, भरपूर (भवि)।
झवणा स्त्री [क्षपणा] १ नाश, विनाश (विसे ९६१)। २ अध्ययन, पठन (विसे ९५८)।
झस पुं [झष] १ एक देवविमान (देवेन्द्र १४०)। २ एक नरक-स्थान (देवेन्द्र ११)।
झस पुं [झष] १ मत्स्य, मछली (पण्ह १, १)। २ °चिंधय पुं [°चिह्नक] कामदेव, स्मर (कुमा)।
झस पुं [दे] १ अयश, अपकीर्ति। २ तट, किनारा। ३ वि. तटस्थ, मध्यस्थ। ४ दीर्घ-गंभीर, लम्बा और गंभीर, बहुत गहरा (दे ३, ६०)। ५ टंक से छिन्न (दे ३, ६०; पाअ)।
झसय पुं [झषक] छोटा मत्स्य (दे २,५७)।
झसर पुंन [दे] शस्त्र-विशेष, आयुध-विशेष; 'सरझसरसत्तिसब्बल—' (पउम ८, ६५)।
झसिअ वि [दे] १ पर्यस्त, उत्क्षिप्त। २ आक्रुष्ट, जिसपर आक्रोश किया गया हो वह (दे ३, ६२)।
झसिंध पुं [झषचिह्न] काम, स्मर (कुमा)।
झसुर न [दे] १ ताम्बूल, पान (दे ३, ६१; गउड)। २ अर्थ (दे ३, ६१)।
झा सक [ध्यै] चिन्ता करना, ध्यान करना। झाइ, झाअइ (हे ४, ६)। वकृ. झायंत, झायमाण (प्रारू; महा)। संकृ. झाऊणं (आरा ११२)। हेकृ. झाइत्तए (कस)। कृ. झायव्व, झेय, झाइयव्व, झाएयव्व (कुमा; आरा ७८; आव ४; ति १०; सुर १४, ८४)।

झाइ वि [ध्यायिन्] चिन्तन करनेवाला, ध्यान करनेवाला (आचा)।
झाइअ वि [ध्यात] चिन्तित (सिरि १२५५)।
झाउ वि [ध्यातृ] ध्यान करनेवाला, चिन्तक (आव ४)।
झाड न [दे. झाट] १ लता-गहन, निकुञ्ज, झाड़ी (दे ३, ५७; ७, ८४; पाअ; सुर ७, २४३)। २ वृक्ष, पेड़; 'आग्रल्ली झाडमेअम्मि' (दे १, ६१); 'दिट्ठो य तए पोमाडज्झाडयस्स इमम्मि पएसे विणिग्गओ पायओ' (स १४४)।
झाडण न [झाटन] १ झोष, क्षय, क्षीणता। २ प्रस्फोटन, झाड़ना (राज)।
झाडल न [दे] कर्पास-फल, डोडों, कपास (दे ३, ५७)।
झाडावण स्त्रीन [झाटन] झड़वाना, सफा कराना, मार्जन कराना। स्त्री. °णी (सुपा ३७३)।
झाण वि [ध्यान] ध्यानकर्ता (श्रु १२८)।
झाण पुंन [ध्यान] १ चिन्ता, विचार, उत्कण्ठा-पूर्वक स्मरण, सोच (आव ४; ठा ४, १, हे २, २६)। २ एक ही वस्तु में मन की स्थिरता, लौ लगाना (ठा ४, १)। ३ मन आदि की चेष्टा का निरोध। ४ दृढ़ प्रयत्न से मन वगैरह का व्यापार (विसे ३०७१; ठा ४, १)।
झाणंतरिया स्त्री [ध्यानान्तरिका] १ दो ध्यानों का मध्य भाग, वह समय जिसमें प्रथम ध्यान की समाप्ति हुई हो और दूसरे का आरम्भ जबतक न किया गया हो और अन्य अनेक ध्यान करने के बाकी हो (ठा ६, भग ५, ४)। २ एक ध्यान समाप्त होने पर शेष ध्यानों में किसी एक को प्रथम प्रारंभ करने का विमर्श (बृह १)।
झाणि वि [ध्यानिन्] ध्यान करनेवाला (आरा ८६)।
झाम सक [दह्] जलाना, दाह देना, दग्ध करना। झामेइ (सूअ २, २, ४४)। वकृ. झामंत (सूअ २, २, ४४)।
झाम वि [दे] दग्ध, जला हुआ (आचा २, १, १)। °थंडिल न [°स्थण्डिल] दग्ध भूमि (आचा २, १, १)।

झाम वि [ध्याम] अनुज्ज्वल (पराह १, ३—पत्र ४०)।

झामण न [दे] जलाना, आग लगाना प्रदीपनक (वव २)।

झामर वि [दे] वृद्ध, बूढ़ा (दे ३, ५७)।

झामल न [दे] १ आँख का एक प्रकार का रोग, गुजराती में 'झामरो'। २ वि. झामर रोगवाला (उप ७६८ टी; श्रा १२)।

झामल वि [ध्यामल] श्याम, काला (धर्मसं ८०७)।

झामलिय वि [ध्यामलित] काला किया हुआ (कुप्र ५८)।

झामिअ वि [दे] दग्ध, प्रज्वलित (दे ३, ५६; वव ७; आवम)। २ श्यामलित, काला किया हुआ। ३ कलंकित; 'घणदडढपयंगाएवि जीए जा झामिओ नेय' (सार्ध १६)।

झाय वि [ध्मात] भस्मीकृत, दग्ध, जला हुआ (णंदि)।

झायव्व देखो झा।

झारुआ स्त्री [दे] चीरी, क्षुद्र जन्तु-विशेष (दे ३, ५७)।

झावण न [ध्मापन] देखो झामग (राज)।

झावणा न [ध्मापना] दाह, जलाना, अग्नि-संस्कार (आवम)।

झावणा देखो अज्झावणा (संबोध २४)।

झिंखण न [दे] गुस्सा करना (उप १४३ टी)।

झिंखिअ न [दे] वचनीय, लोकापवाद, लोक-निन्दा (दे ३, ५५)।

झिंगिर } **झिंगिरड** } पुं [दे] क्षुद्र कीट-विशेष, त्रीन्द्रिय जीव की एक जाति, झींगूर या झिल्ली (जीव १)।

झिंझिअ वि [दे] बुभुक्षित, भूखा (बृह ६)।

झिंझिणी } **झिंझिरी** } स्त्री [दे] एक प्रकार का पेड़, लता-विशेष (उप १०३१ टी; आचा २, १, ८; बृह १)।

झिज्जंत } **झिज्जमाण** } वि [क्षीयमाण] जो क्षय को प्राप्त होता हो, कृश होता हुआ (से ५, ५८; ७२८ टी; कुमा)।

झिज्झ अक [क्षि] क्षीण होना। झिज्झइ (प्राकृ ६३)।

झिज्झिरी स्त्री [दे] वल्ली-विशेष (आचा २, १, ८, ३)।

झिण्ण देखो झीण (से १, ३५; कुमा)।

झिमिय } **झिम्मिय** } न [दे] शरीर के अवयवों की जड़ता (आचा)।

झिया देखो झा। झियाइ, झियायइ (उवा; भग; कस; पि ४७६)। वकृ. **झियायमाण** (णाया १, १—पत्र २८; ६०)।

झिरिड न [दे] जीर्ण कूप, पुराना इनारा (दे ३, ५७)।

झिलिअ वि [दे] झीला हुआ, पकड़ी हुई वह वस्तु जो ऊपर से गिरती हो (सुपा १७८)।

झिल्ल अक [स्ना] झीलना, स्नान करना। झिल्लइ (कुमा)।

झिल्लिआ स्त्री [झिल्लिका] कीट-विशेष, त्रीन्द्रिय जीव की एक जाति, झिल्ली (पाअ; पराण १)।

झिल्लिरिआ स्त्री [दे] १ चीही-नामक तृण। २ मशक, मच्छड़ (दे ३, ६२)।

झिल्लिरी स्त्री [दे] मछली पकड़ने की एक तरह की जाल (विपा १, ८—पत्र ८५)।

झिल्ली स्त्री [दे] लहरी, तरंग (गउड)।

झिल्ली स्त्री [झिल्ली] १ वनस्पति-विशेष (पराण १; उप १०३१ टी)। २ कीट-विशेष, झींगूर (गा ४६४)।

झीण वि [क्षीण] दुर्बल, कृश (हे २, ३; पाअ)।

झीण न [दे] १ अंग, शरीर। २ कीट, कीड़ा (दे ३, ६२)।

झीरा स्त्री [दे] लज्जा, शरम (दे ३, ५७)।

झुंख पुं [दे] तुणय-नामक वाद्य (दे ३, ५८)।

झुंझिय वि [दे] १ बुभुक्षित, भूखा (पराह १, ३—पत्र ४६)। २ झुरा हुआ, मुरझा हुआ (भग १६, ४)।

झुंझुमुसय न [दे] मन का दुःख (दे ३, ५८)।

झुंटण न [दे] १ प्रवाह (दे ३, ५८)। २ पशु-विशेष, जो मनुष्य के शरीर की गरमी से जीता है और जिसका रोम कपड़े के लिये बहुमूल्य है (उप ५५१)।

झुंपडा स्त्री [दे] झोपड़ी, तृण-कुटीर, तृण-निर्मित घर (हे ४, ४१६; ४१८)।

झुंबणग न [दे] प्रालम्ब (णाया १, १)।

झुज्झ देखो जुज्झ = युध्। झुज्झइ (पि २१४)। वकृ. झुज्झंत (हे ४, ३७६)।

झुट्ट वि [दे] झूठ, अलीक, असत्य (दे ३, ५८)।

झुण सक [जुगुप्स्] घृणा करना, निन्दा करना। झुणइ (हे ४, ४; सुपा ३१८)।

झुणि पुं [ध्वनि] शब्द, आवाज (हे १, ५२; षड्; कुमा)।

झुणिअ वि [जुगुप्सित] निन्दित, घृणित (कुमा)।

झुत्ती स्त्री [दे] छेद, विच्छेद (दे ३, ५८)।

झुमुझुमुसय न [दे] मन का दुःख (दे ३ ५८)।

झुलुक पुं [दे] अकस्मात् प्रकाश (आत्मानु ६)।

झुल्ल अक [अन्दोल्] झूलना, डोलना, लटकना। वकृ. **झुल्लंत** (सुपा ३१७)।

झुल्लण स्त्रीन [दे] छन्द-विशेष। स्त्री. °णा (पिंग)।

झुल्लुरी स्त्री [दे] गुल्म, लता, गाछ (दे ६, ५८)।

झुस देखो झूस। संकृ. झूसित्ता (पि २०६)।

झुसणा देखो झूसणा (राज)।

झुसिय देखो झूसिय (बृह २)।

झुसिर न [शुषिर] १ रन्ध्र, विवर, पोल, खाली जगह (णाया १, ८; सुपा ६२०)। २ वि. पोला, छूँछा (ठा २, ३; णाया १, २; पराह १, २)।

झूझ देखो जूझ। झूझंति (संबोध १८)।

झूर सक [स्मृ] याद करना, चिन्तन करना। झूरइ (हे ४, ७४)। वकृ. **झूरंत** (कुमा)।

झूर सक [जुगुप्स्] निन्दा करना, घृणा करना;

'निरुवमसोहग्गमइं, दिट्ठूणं तस्स रूवगुणरिद्धिं।
इंदो वि देवराया, झूरइ नियमेण नियरूवं' (रयण ४)।

झूर अक [क्षि] झुरना, क्षीण होना, सूखना। वकृ. **झूरंत, झूरमाण** (सण; उप पृ २७)।

झूर वि [दे] कुटिल, वक्र, टेढ़ा (दे ३, ५६)।

झूरिय वि [स्मृत] चिन्तित, याद किया हुआ (भवि)।

झूस सक [जुष्] १ सेवा करना। २ प्रीति करना। ३ क्षीण करना, खपाना। वकृ.

भूसमाण (आचा)। संकृ. भूसित्ता, भूसित्ताणं, भूसेत्ता (औप; पि ५८३; अंत २७)।

भूसणा स्त्री [जोषणा] सेवा, आराधना (उवा; अंत; औप; णाया १, १)।

भूसरिअ वि [दे] १ अत्यर्थ, अत्यन्त। २ स्वच्छ, निर्मल (दे ३, ६२)।

भूसिय वि [जुष्ट] १ सेवित, आराधित (णाया १, १; औप)। २ क्षपित, क्षिप्त, परित्यक्त (उवा; ठा २, २)।

भेंडुअ पुं [दे] कन्दुक, गेंद (दे ३, ५६)।

भेय देखो भा।

भेर पुं [दे] पुराना घराटा (दे ३, ५६)।

भोटिंग पुं [दे] देव-विशेष (कुप्र ४७२)।

भोट्टी स्त्री [दे] अर्ध-महिषी, भैंस की एक जाति (दे ३, ५६)।

भोंडलिआ स्त्री [दे] रास के समान एक प्रकार की क्रीड़ा (दे ३, ६०)।

भोड सक [शाटय्] पेड़ आदि से पत्र वगैरह को गिराना। भोडइ (पि ३२६)।

भोड न [दे] १ पेड़ आदि से पत्र आदि का गिराना। २ जीर्ण वृक्ष (णाया १, ११—पत्र १७१)।

भोडण न [शाटन] पातन, गिराना (पण्ह १, १—पत्र २३)।

भोडप्प पुं [दे] १ चना, अन्न-विशेष। २ सूखे चने का शाक (दे ३, ५६)।

भोडिअ पुं [दे] व्याध, शिकारी, बहेलिया (दे ३, ६०)।

भोलिआ } स्त्री [दे. भोलिका] भोली, थैली, कोथली (दे ३, ५६; सूअ
भोल्लिआ } २, ४)।

भोस देखो भूस। भोसेइ (आचा)। वकृ. भोसमाण, भोसेमाण (सुपा २६; आचा)। संकृ. 'संलेहणाए सम्मं भोसित्ता नियदेहं तु' (सुर ६, २४६)।

भोस सक [गवेषय्] खोजना, अन्वेषण करना। भोसेहि (बृह ३)।

भोस सक [भोषय्] डालना, प्रक्षेप करना। कृ भोसेयव्व (वव १)।

भोस पुं [भोष] राशि-विशेष, जिसके डालने से समान भागाकार हो वह राशि (वव १)।

भोस पुं [दे] भाड़ना, दूर करना (ठा ५,२)।

भोसग न [दे] गवेषण, मार्गण; 'आभोगणं ति वा मग्गणं ति वा भोसणं ति वा एगट्ठं' (वव २)।

भोसणा देखो भूसणा (सम ११६; भग)।

भोसणा स्त्री [जोषणा] अन्त समय की आराधना, संलेखना (श्रावक ३७८)।

भोसिअ देखो भूसिय (आचा; हे ४, २५८)।

॥ इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि भआराइसद्दसंकलणो
सत्तरहमो तरंगो समत्तो ॥

ट

ट पुं [ट] मूर्द्ध-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष (प्रामा; प्राप)।

टउया स्त्री [दे] आह्वान-शब्द, पुकारने की आवाज; गुजराती में 'टौको' (कुप्र ३०६)।

टंक पुं [टङ्क] चित्र-विशेष, सिक्का पर का चित्र (पंचा ३, ३५)।

टंक पुं [टङ्क] १ तलवार आदि का अग्र भाग (पण्ह १, १—पत्र १८)। २ एक प्रकार का सिक्का (श्रा १२; सुपा ५१३)। ३ एक दिशा में छिन्न पर्वत (णाया १, १—पत्र ६३)। ४ पत्थर काटने का अस्त्र, टाँकी, छेनी (से ५, ३५; उप पृ ३१५)। ५ परिमाण-विशेष, चार मासे की तौल (पिंग)। ६ पक्षि-विशेष (जीव १)।

टंक पुं [दे] १ तलवार, खड्ग। २ खात, खुदा हुआ जलाशय। ३ जङ्घा, जाँघ। ४ भित्ति, भींत। ५ तट, किनारा (दे ४, ४)। ६ खनित्र, कुदाल (दे ४, ४; से ५, ३५)। ७ वि. छिन्न, छेदा हुआ, काटा हुआ (दे ४, ४)।

टंकण पुं [टङ्कन] म्लेच्छ की एक जाति, (विसे १४४४)।

टंकवत्थुल पुं [दे] कन्द-विशेष, एक जाति की तरकारी (श्रा २०)।

टंका स्त्री [दे] १ जंघा, जाँघ (पाअ)। २ स्वनाम-ख्यात एक तीर्थ (ती ४३)।

टंकार पुं [टङ्कार] धनुष का शब्द (भवि)।

टंकार पुं [दे] ओजस्, तेज (गउड)।

टंकिअ वि [दे] प्रसृत, फैला हुआ (दे ४, १)।

टंकिअ वि [टङ्कित] टाँकी से काटा हुआ (दे ४, ५०)।

टंकिया स्त्री [टङ्किका] पत्थर काटने का अस्त्र, टाँकी (सम्मत्त २२७)।

टंबरय वि [दे] भारवाला, गुरु, भारी (दे ४, २)।

टक्क पुं [टक्क] देश-विशेष (हे १, १९५)।

टक्क वि [टक्क] १ टक्क-देशीय। २ पुं. भाट की एक जाति (कुप्र १२)।

टक्कर पुं [दे] ठोकर, अंग से अंग का आघात (सुर १२, ६७; वव १)।

टक्करा स्त्री [दे] टकोर, मुंड-सिर में उंगली का आघात (वव १ टी)।

टक्कारा स्त्री [दे] अरणि-वृक्ष का फूल (दे ४, २)।

टगर पुं [तगर] १ वृक्ष-विशेष, तगर का वृक्ष। २ सुगन्धित काष्ठ-विशेष (हे १, २०५; कुमा)।

टक्क पुं [दे] लकड़ी आदि के आघात की आवाज (कुप्र ३०६)।
टट्टइआ स्त्री [दे] जवनिका, परदा (दे ४, १)।
टप्पर वि [दे] विकराल कर्णवाला, भयंकर कानवाला (दे ४, २; सुपा ५२०; कप्पू)।
टमर पुं [दे] केश-चय, बाल-समूह (दे ४, १)।
टयर देखो टगर (कुमा)।
टलटल अक [टलटलाय्] 'टल-टल' आवाज करना। वकृ. **टलटलंत** (प्रासू १६३)।
टलटलिय वि [टलटलित] 'टल-टल' आवाज वाला (उप ६४८ टी)।
टलवल अक [दे] १ तड़फड़ाना, तड़पना। २ घबराना, हैरान होना। टलवलंति (धर्मवि ३८)। वकृ. **टलवलंत** (सरि ६०८)।
टलिअ वि [दे] टला हुआ, हटा हुआ (सिरि ६८३)।
टसर न [दे] विमोटन, मोड़ना (दे ४, १)।
टसर पुं [त्रसर] टसर, एक प्रकार का सूता (हे १, २०५; कुमा)।
टसरोट्ट न [दे] शेखर, अवतंस (दे ४, १)।
टहरिय वि [दे] ऊँचा किया हुआ, 'टहरियकन्नो जाओ मिगुव्व गीइं कहं सोउं (धर्मवि १४७; सम्मत्त १५८)।
टार पुं [दे] अधम, अश्व, हठी घोड़ा (दे ४, २); 'अइसिक्खिओवि न मुग्रइ, अरणयं टारव्व टारत्तं' (श्रा २७)। २ टट्टू, छोटा घोड़ा (उप १५५)।
टाल न [दे] कोमल फल, गुठली उत्पन्न होने के पहले की अवस्था वाला फल (दस ७)।
टिंट° } [दे] देखो टेंटा (भवि)। **°साला**
टिंटा } स्त्री [°शाला] जुआखाना, जुआ खेलने का अड्डा (सुपा ४६५)।
टिंबरु } पुंन [दे] वृक्ष-विशेष, तेंदू का पेड़
टिंबरुअ } (दे ४, ३; उप १०३१ टी; पाअ)।
टिंबरुणी स्त्री [दे] ऊपर देखो (पि २१८)।
टिक्क न [दे] १ टीका, तिलक। २ सिर का स्तबक, मस्तक पर रक्खा जाता गुच्छा (दे ४, ३)।
टिक्किद (शौ) वि [दे] तिलक विभूषित (कप्पू)।
टिग्घर वि [दे] स्थविर, वृद्ध, बूढ़ा (दे ४, ३)।
टिट्टिभ पुं [टिट्टिभ] १ पक्षि-विशेष, टिटिहरी, टिटिहा। २ जल-जन्तु विशेष (सुर १०, १८५)। स्त्री. **°भी** (विपा १, ३)।
टिट्टियाव सक [दे] बोलने की प्रेरणा करना, 'टि-टि' आवाज करने को सिखलाना। टिट्टियावेइ (णाया १, ३)। कवकृ. **टिट्टियावेज्जमाण** (णाया १, ३—पत्र ६४)।
टिप्पणय न [टिप्पनक] विवरण, छोटी टीका (सुपा ३२४)।
टिप्पी स्त्री [दे] तिलक, टीका (दे ४, ३)।
टिरिटिल्ल सक [भ्रम्] घूमना, फिरना, चलना। टिरिटिल्लइ (हे ४, १६१)। वकृ. **टिरिटिल्लंत** (कुमा)।
टिल्लिक्किय वि [दे] विभूषित (धर्मवि ५१)।
टिविडिक्क सक [मण्डय्] मण्डित करना, विभूषित करना। टिविडिक्कइ (हे ४, ११५; कुमा)। वकृ. **टिविडिक्कंत** (सुपा २८)।
टिविडिक्किअ वि [मण्डित] विभूषित, अलंकृत (पाअ)।
टुंट वि [दे] छिन्न-हस्त, जिसका हाथ कटा हुआ हो वह (दे ४, ३; प्रासू १४२; १४३)।
टुंटुण्ण अक [टुण्टुणाय्] 'टुन टुन' आवाज करना। वकृ. **टुंटुण्णंत** (गा ६८५; काप्र ६६५)।
टुंबय पुं [दे] आघात-विशेष, गुजराती में 'ठुंबो' (सुर १२, ६७)।
टुट्ट अक [त्रुट्] टूटना, कट जाना। टुट्टइ (पिंग)। वकृ. **टुट्टंत** (से ६, ६३)।
टुप्परग न [दे] जैन साधु का एक छोटा पात्र (कुलक ११)।
टूवर पुं [तूवर] १ जिसको दाढ़ी-मूँछ न उगी हो ऐसा चपरासी। २ जिसने दाढ़ी-मूँछ कटवा दी हो ऐसा प्रतिहार (हे १, २०५; कुमा)।
टेंट पुं [दे] १ मध्य-स्थित मणि-विशेष। वि. भीषण (कप्पू)।
टेंटा स्त्री [दे] जुआखाना, जुआ खेलने का अड्डा (दे ४, ३)।
टेंटा स्त्री [दे] १ अक्षि-गोलक। २ छाती का शुष्क व्रण (कप्पू)।
टेंबरुय न [दे] फल-विशेष (आचा २, १, ८, ६)।
टेक्कर न [दे] स्थल, प्रदेश (दे ४, ३)।
टोक्कण } न [दे] दारू नापने का बरतन
टोक्कणखंड } (दे ४, ४)।
टोपिआ स्त्री [दे] टोपी, सिर पर रखने का सिला हुआ एक प्रकार का वस्त्र (सुपा २६३)।
टोप्प पुं [दे] श्रेष्ठि-विशेष (स ४५१)।
टोप्पर पुंन [दे] शिरस्त्राण-विशेष, टोपी (पिंग)।
टोल पुं [दे] १ शलभ, जन्तु-विशेष। २ पिशाच (दे ४, ४; प्रासू १६२)। **°गइ** स्त्री [°गति] गुरु-वन्दन का एक दोष (पव २)। **°गइ** स्त्री [°कृति] प्रशस्त आकारवाला (राज)।
टोल पुं [दे] १ टिड्डी, टिडी (पव २)। २ यूथ (कुप्र ५८)।
टोलंब पुं [दे] मधूक, वृक्ष-विशेष, महुआ का पेड़ (दे ४, ४)।

॥ इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि टयाराइसद्दसंकलणो अट्ठारहमो तरंगो समत्तो ॥

ठ

ठ पुं [ठ] मूर्ध-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष (प्रामा; प्राप)।

ठइअ वि [दे] १ उत्क्षिप्त, ऊपर फेंका हुआ। २ पुं. अवकाश (दे ४, ५)।

ठइअ वि [स्थगित] १ आच्छादित, ढका हुआ। २ बन्द किया हुआ, रुका हुआ (स १७३)।

ठइअ देखो **ठविअ** (पिंग)।

ठंडिल्ल देखो **थंडिल्ल** (उव)।

ठंभ देखो **थंभ** = स्तम्भ्। कर्म. ठंभिज्जइ (हे २, ९)।

ठंभ देखो **थंभ** = स्तम्भ (हे २, ९; षड्)।

ठकुर } **ठक्कुर** } पुं [ठक्कुर] १ ठाकुर, क्षत्रिय, राजपूत (स ५४८; सुपा ४१२; सट्ठि ६८)। २ ग्राम वगैरह का स्वामी, नायक, मुखिया (श्रावम)।

ठक्कार पुं [ठःकार] 'ठः' अक्षर; 'तम्मि चलंते करिमयसित्ताइ महीइ तुरगखुरसेणी। लिहिया रिऊण विजए मंती ठक्कारपंति व्व' (धर्मवि २०)।

ठग } **ठय** } सक [स्थग] बन्द करना, ढकना। ठगेइ, ठएइ (सट्ठि २३ टी; सुख २, १७)।

ठग पुं [ठक] ठग, धूर्त, वञ्चक (दे २, ५८; कुमा)।

ठगिय वि [दे] वञ्चित, ठगा हुआ, विप्रतारित (सुपा १२४)।

ठगिय देखो **ठइय** = स्थगित (उप पृ ३८८)।

ठट्टार पुं [दे] ताम्र, पितलआदि धातु के बर्तन बनाकर जीविका चलानेवाला, ठठेरा (धर्म २)।

ठड्ढ वि [स्तब्ध] हक्काबक्का, कुण्ठित, जड़ (हे २, ३९; वज्जा ६२)।

ठप्प वि [स्थाप्य] स्थापनीय, स्थापन करने योग्य (ओघ ६)।

ठय सक [स्थग्] बन्द करना, रोकना। ठएंति (स १५९)।

ठयण [स्थगन] १ रुकाव, अटकाव। २ वि. रोकनेवाला। स्त्री. °णी (उप ९६९)।

ठयण न [स्थगन] बन्द करना, 'अच्छिठयणं च' (पंचा २, २५)।

ठरिअ वि [दे] १ गौरवित। २ ऊर्ध्व-स्थित (दे ४, ६)।

ठलिय वि [दे] खाली, शून्य, रिक्त किया गया (सुपा २३७)।

ठल्ल वि [दे] निर्धन, धन-रहित, दरिद्र (दे ४, ५)।

ठव सक [स्थापय्] स्थापन करना। ठवइ, ठवेइ (पिंग; कप्प; महा)। ठवे (भग)। वकृ. **ठवंत** (रयण ९३)। संकृ. **ठविउं, ठविऊण, ठवित्ता, ठवित्तु, ठवेत्ता** (पि ५७६; ५८६; ५८२; प्रासू २७; पि ५८२)।

ठवण न [स्थापन] स्थापन, संस्थापन (सुर २, १७७)।

ठवणा स्त्री [स्थापना] १ प्रतिकृति, चित्र, मूर्ति, आकार (ठा २, ४; १०; अणु)। २ स्थापन, न्यास (ठा ४, ३)। ३ सांकेतिक वस्तु, मुख्य वस्तु के अभाव या अनुपस्थिति में जिस किसी चीज में उसका संकेत किया जाय वह वस्तु (विसे २६२७)। ४ जैन साधुओं की भिक्षा का एक दोष, साधु को भिक्षा में देने के लिए रखी हुई वस्तु (ठा ३, ४—पत्र १५९)। ५ अनुज्ञा, संमति (णंदि)। ६ पर्युषणा, आठ दिनों का जैन पर्व-विशेष (निचू १०)। °**कुल** पुंन [°कुल] भिक्षा के लिए प्रतिषिद्ध कुल (निचू ४)। °**णय** पुं [°नय] स्थापन को ही प्रधान माननेवाला मत (राज)। °**पुरिस** पुं [°पुरुष] पुरुष की मूर्ति या चित्र (ठा ३, १; सूअ १, ४, १)। °**यरिय** पुं [°चार्य] जिस वस्तु में आचार्य का संकेत किया जाय वह वस्तु (धर्म २)। °**सच्च** न [°सत्य] स्थापना-विषयक सत्य, जिन भगवान् की मूर्ति को जिन कहना यह स्थापना-सत्य है (ठा १०; पण्ण ११)।

ठवणा स्त्री [स्थापना] वासना (णंदि १७६)।

ठवणी स्त्री [स्थापनी] न्यास, न्यास रूप से रखा हुआ द्रव्य (श्रा १४)। °**मोस** पुं [°मोष] न्यास की चोरी, न्यास का अपलाप; 'दोहेसु मित्तदोहो, ठवणीमोसो असेसमोसेसु' (श्रा १४)।

ठविअ वि [स्थापित] रखा हुआ, संस्थापित (षड्; पि ५६४; ठा ५, २)।

ठविआ स्त्री [दे] प्रतिमा, मूर्ति, प्रतिकृति (दे ४, ५)।

ठविर देखो **थविर** पि १६६)।

ठा अक [स्था] बैठना, स्थिर होना, रहना, गति का रुकाव करना। ठाइ, ठाअइ (हे ४, १६; षड्)। वकृ. **ठायमाण** (उप १३० टी)। संकृ. **ठाइऊण, ठाऊण** (पि ३०९; पंचा १८)। हेकृ. **ठाइत्तए, ठाउं** (कस; श्राव ५)। कृ. **ठाणिज्ज, ठायव्व, ठाएयव्व** (णाया १, १४; सुपा ३०२; सुर ६, ३३)।

ठाइ वि [स्थायिन्] रहनेवाला, स्थिर होनेवाला (औप; कप्प)।

ठाएयव्व देखो **ठा**।

ठाएयव्व देखो **ठाव**।

ठाण पुं [दे] मान, गर्व, अभिमान (दे ४, ५)।

ठाण पुंन [स्थान] १ स्थिति, अवस्थान, गति की निवृत्ति (सूअ १,५,१; बृह १)। २ स्वरूप-प्राप्ति (सम्म १)। ३ निवास, रहना (सूअ १, ११; निचू १)। ४ कारण, निमित्त, हेतु (सूअ १, १, २; ठा २, ४)। ५ पर्यंक आदि आसन (राज)। ६ प्रकार, भेद (ठा १०; आचू ४)। ७ पद, जगह (ठा १०)। ८ गुण, पर्याय, धर्म (ठा ५, ३; श्राव ४)। ९ आश्रय, आधार, वसति, मकान, घर (ठा ४, ३)। १० तृतीय जैन अंग-ग्रन्थ; 'ठाणांग' सूत्र (ठा १)। ११ 'ठाणांग' सूत्र का अध्ययन, परिच्छेद (ठा १;२;३;४;५)। १२ कायोत्सर्ग (औप)। °**भट्ठ** वि [°भ्रष्ट] १ अपनी जगह से च्युत (णाया १, ९)। २ चारित्र से पतित (तंदु)। °**इय** वि [°तिग] कायोत्सर्ग करनेवाला (औप)। °**यय** न [°यत] ऊँचा स्थान (बृह ५)।

ठाण न [स्थान] १ कुंकण (कोंकण) देश का एक नगर (सिरि ६३९)। २ तेरह दिन का लगातार उपवास (संबोध ५८)।

ठाणग न [स्थानक] शरीर की चेष्टा-विशेष (पंचा १८, १५)।

ठाणि वि [स्थानिन्] स्थानवाला, स्थान-युक्त (सूअ १, २; उव)।

ठाणिज्ज देखो ठा।

ठाणिज्ज वि [दे] १ गौरवित, सम्मानित (दे ४, ५)। २ न. गौरव (षड्)।

ठाणुक्कडिय } वि [स्थानोत्कटुक] १ उत्क-
ठाणुक्कुडय } टुक आसनवाला (पण्ह २, १; भग)। २ न. आसन-विशेष (इक)।

ठाणु देखो खाणु। °**खंड** न [°खण्ड] १ स्थाणु का अवयव। २ वि. स्थाणु की तरह ऊँचा और स्थिर रहा हुआ, स्तम्भित शरीर-वाला (णाया १, १—पत्र ६६)।

ठाम } (अप)। देखो ठाण (पिंग; सण)।
ठाय }

ठाय पुं [स्थाय] स्थान, आश्रय (सुख २, १७)।

ठाव सक [स्थापय्] स्थापन करना, रखना। ठावइ, ठावेइ (पि ५५३; कप्प; महा)। वकृ. ठावंत, ठावित (चउ २०; सुपा ८८)। संकृ. ठावइत्ता, ठावेत्ता (कस; महा) कृ. ठाएयव्व (सुपा ५४५)।

ठावण न [स्थापन] स्थापन, धारण (पंचा १३)।

ठावणया } देखो ठवणा (उप ९८६ टी; ठा
ठावणा } १; बृह ५)।

ठावय [स्थापक] स्थापन करनेवाला (णाया १, १८; सुपा २३४)।

ठावर वि [स्थावर] रहनेवाला, स्थायी (अच्चु १३)।

ठाविअ वि [स्थापित] स्थापित, रखा हुआ (ठा ३, १; श्रा १२; महा)।

ठावित्तु वि [स्थापयितृ] ऊपर देखो (ठा ३, १)।

ठिअअ न [दे] ऊर्ध्व, ऊँचा (दे ४, ६)।

ठिइ स्त्री [स्थिति] १ व्यवस्था, क्रम, मर्यादा, नियम; 'जयट्ठिई एसा' (ठा ४, १; उप ७२८ टी)। २ स्थान, अवस्थान (सम २)। ३ अवस्था, दशा (जी ४८)। ४ आयु, उम्र, काल-मर्यादा (भग १४, ५; नव ३१; पण्ण ४; औप)। °**क्खय** पुं [°क्षय] आयु का क्षय, मरण (विपा २, १)। °**पडिया** देखो °**वडिया** (कप्प)। °**बंध** पुं [°बन्ध] कर्म-बन्ध की काल-मर्यादा (कम्म ४, ८२)। °**वडिया** स्त्री [°पतिता] पुत्र-जन्म-सम्बन्धी उत्सव-विशेष (णाया १, १)।

ठिक्क न [दे] पुरुष-चिह्न (दे ४, ५)।

ठिक्करिआ स्त्री [दे] ठिकरी, घड़ा का टुकड़ा (श्रा १४)।

ठिय वि [स्थित] १ अवस्थित (ठा २, ४)। २ व्यवस्थित, नियमित (सूअ १, ६)। ३ खड़ा (भग ६, ३३)। ४ निषण्ण, बैठा हुआ (निचू १; प्राप्र; कुमा)।

ठिर देखो थिर (अच्चु १; गा १३१ अ)।

ठिविअ न [दे] १ ऊर्ध्व, ऊँचा। २ निकट, समीप। ३ हिक्का, हिचकी (दे ४, ६)।

ठिव्व सक [वि + घुट्] मोड़ना। संकृ. ठिव्विऊण (सुपा १६)।

ठीण वि [स्त्यान] १ जमा हुआ (घृत आदि) (कुमा)। २ ध्वनि-कारक, आवाज करने-वाला। ३ न. जमाव। ४ आलस्य। ५ प्रति-ध्वनि (हे १, ७४; २, ३३)।

ठुंठ पुंन [दे] ठूँठा, ठूँठ, स्थाणु (जं १)।

ठुक्क सक [हा] त्याग करना। ठुक्कइ (प्राकृ ६३)।

ठेर पुंस्त्री [स्थविर] वृद्ध, बूढ़ा (गा ८८३ अ, पि १६६);

'पउरजुवाणो गामो, महुमासो
 जोअणं पई ठेरो।
जुण्णसुरा साहीणा, असई
 मा होउ किं मरउ ?'

(गा १९७)। स्त्री. °री (गा ६५४ अ)।

ठोड पुं [दे] १ जोतिषी, दैवज्ञ। २ पुरोहित (सुपा ५५२)।

॥ इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि ठयाराइसद्दसंकलणो
एगूणवीसइमो तरंगो समत्तो ॥

ड

ड पुं [ड] मूर्द्ध-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष (प्रामा; प्राप)।

डओयर न [दकोदर] पेट का रोग-विशेष, जलोदर (निचू १)।

डंक पुं [दे] १ डंक, वृश्चिक (बिच्छू) आदि का काँटा (पण्ह १,१)। २ दंश-स्थान, जहाँ पर वृश्चिक आदि डसा हो; 'जह सव्वसरीरगयं विसं निरुंभित्तु डंकमाणिंति' (सुपा ६०६)।

डंकिय देखो डक्क = दष्ट (वै ८९)।

डंगा स्त्री [दे] डाँग, लाठी, यष्टि (सुपा २३८; ३८८; ५४६)।

डंड देखो दंड (हे १, १२७; प्राप्र)।

डंड न [दे] वस्त्र के सीए हुए टुकड़े (दे ४,७)।

डंडगा स्त्री [दण्डका] दक्षिण देश का एक प्रसिद्ध अरण्य—जंगल (सुख)।

डंडय पुं [दे] रथ्या, महल्ला (दे ४, ८)।

डंडारण्ण न [दण्डारण्य] दक्षिण का एक

प्रसिद्ध जंगल, दण्डकारण्य (पउम ६८, ४२)।

डंडि } स्त्री [दे] सिले हुए वस्त्र-खण्ड (दे ४,
डंडी } ७; पराह १, ३)।

डंबर पुं [दे] घर्म, गरमी, प्रस्वेद (दे ४, ८)।

डंबर पुं [डम्बर] आडम्बर, आटोप (उप १४२ टी; पिंग)।

डंभ देखो **दंभ** (हे १, २१७)।

डंभण न [दम्भन] दागने का शस्त्र-विशेष (विपा १, ६)।

डंभण न [दम्भन] वंचना, ठगाई (पव २)।

डंभणया } स्त्री [दम्भना] १ दागना। २
डंभणा } माया, कपट, दम्भ, वञ्चना (उप पृ ३१५; पराह २, १)।

डंभिअ पुं [दे] जुआरी, जुए का खेलाड़ी (दे ४, ८)।

डंभिअ वि [दाम्भिक] वञ्चक, मायावी, कपटी (कुमा; षड्)।

डंस सक [दंश्] डसना, काटना। डंसइ, डंसए (षड्)।

डंस पुं [दंश] क्षुद्र जन्तु-विशेष, डाँस, मच्छर (जी १८)।

डंस पुं [दंश] १ दन्त-क्षत। २ सर्प आदि का काटा हुआ घाव। ३ दोष। ४ खंडन। ५ दाँत ६ वर्म, कवच। ७ मर्म-स्थान (प्राकृ १५)।

डंसण पुंन [दंशन] वर्म, कवच; 'डंसणो' (प्राकृ १५)।

डक्क वि [दष्ट] डसा हुआ, दाँत से काटा हुआ (हे २, २; गा ५३१)।

डक्क वि [दे] दन्त-गृहीत, दाँत से उपात्त (दे ४, ६)।

डक्क स्त्रीन [डक्क] वाद्य-विशेष (सुपा १६५)।

डक्कुरिज्जंत वकृ [दे] पीडित होता हुआ (सूत्र० चू० गा० ३१५)।

डगण न [दे] यान-विशेष (राज)।

डगमग अक [दे] चलित होना, हिलना, काँपना। डगमगीति (पिंग)।

डगल न [दे] १ फल का टुकड़ा (निचू १५)। २ ईंट, पाषाण वगैरह का टुकड़ा (ओघ ३५६; ७८ भा)।

डग्गल पुं [दे] घर के ऊपर का भूमि-तल, छत (दे ४, ८)।

डज्झ }
डज्झंत } देखो **डह**।
डज्झमाण }

डट्ठ देखो **डक्क** = दष्ट (हे १, २१७)।

डड्ढ वि [दग्ध] प्रज्वलित, जला हुआ (हे १, २१७; गा १४६)।

डड्ढाडी स्त्री [दे] दव-मार्ग, आग का रास्ता (दे ४, ८)।

डप्फ न [दे] सेल, कुन्त, भाला, बरछी, आयुध-विशेष (दे ४, ७)।

डब्भ पुं [दर्भ] डाभ, कुश, तृण-विशेष (हे १, २१७)।

डमडम अक [डमडमाय्] 'डम-डम' आवाज करना, डमरू आदि का आवाज होना। वकृ. **डमडमंत** (सुपा १६३)।

डमडमिय वि [डमडमायित] जिसने 'डम-डम' आवाज किया हो वह (सुपा १५१, ३३८)।

डमर पुंन [डमर] १ राष्ट्र का भीतरी या बाह्य विप्लव, बाहरी या भीतरी उपद्रव (णाया १, १; जं २; पव ४; औप)। २ कलह, लड़ाई, विग्रह (पराह १, २; दे ८, ३२)।

डमरुअ } पुंन [डमरुक] वाद्य-विशेष,
डमरुग } कापालिक योगियों के बजाने का बाजा, डमरू (दे २,८६; पउम ५७,२३; सुपा ३०६; षड्)।

डर अक [त्रस्] डरना, भय-भीत होना। डरइ (हे ४, १९८)।

डर पुं [दर] डर, भय, भीति (हे १, २१७; सण)।

डरिअ वि [त्रस्त] भय-भीत, डरा हुआ (कुमा; सुपा ६५५; सण)।

डल पुं [दे] लोष्ट, मिट्टी का ढेला (दे ४,७)।

डल्ल सक [पा] पीना। डल्लइ (हे ४, १०)।

डल्ल } न [दे] पिटिका, डाला, डाली, बाँस
डल्लग } का बना हुआ फल-फूल रखने का पात्र (दे ४, ७; आवम)।

डल्ला स्त्री [दे] डाला, डाली (कुप्र २०६)।

डाल्लर वि [पातृ] पीनेवाला (कुमा)।

डव सक [आ + रभ्] आरम्भ करना, शुरू करना। डवइ (षड्)।

डवडव अ [दे] ऊँचा मुँह कर के वेग से इधर-उधर गमन (चंड)।

डव्व पुं [दे] वाम हस्त, बायाँ हाथ; गुजराती में 'डावो' (दे ४, ६)।

डस देखो **डंस**। डसइ (हे १, २१८; पि २२२)। हेकृ. **डसिउं** (सुर २, २४३)।

डसण न [दशन] १ दंश, दाँत से काटना (हे १, २१७)। २ दाँत (कुमा)।

डसण वि [दशन] काटनेवाला (सिरि ६२०)।

डसिअ वि [दष्ट] डसा हुआ, काटा हुआ (सुपा ४४६; सुर ६, १८५)।

डह सक [दह्] जलाना, दग्ध करना। डहइ, डहए (हे १, २१८; षड्; महा; उव)। भवि. डहिहिइ (हे ४, २४६)। कवकृ. **डज्झंत, डज्झमाण** (सम १३७; उप पृ ३३; सुपा ८५)। हेकृ. **डहिउं** (पउम ३१, १७)। कृ. **डज्झ** (ठा ३, २; दस १०)।

डहण न [दहन] १ जलाना, भस्म करना (बृह १)। २ पुं. अग्नि, वह्नि, आग (कुमा)। ३ वि. जलानेवाला; 'तस्स सुहासुहडहणो अप्पा जलणो पयासेइ' (आरा ८४)।

डहर पुं [दे] १ शिशु, बालक, बच्चा (दे ४, ८; पाअ; वव ३; दस ६, १; सूअ १, २, १; २, ३, २१; २२; २३)। २ वि. लघु, छोटा, क्षुद्र (ओघ १७८; २६० भा)। °**ग्गाम** पुं [°ग्राम] छोटा गाँव (वव ७)।

डहरक पुं [दे] वृक्ष-विशेष। २ पुष्प-विशेष; 'डहरकफुल्लणुरत्ता भुंजंती तप्फलं मुणसि' (धर्मवि ६७)।

डहरिया स्त्री [दे] जन्म से अठारह वर्ष तक की लड़की (वव ४)।

डहरी स्त्री [दे] अलिञ्जर, मिट्टी का घड़ा (दे ४, ७)।

डाअल न [दे] लोचन, आँख, नेत्र (दे ४,६)।

डाइणी स्त्री [डाकिनी] १ डाकिनी, डायन, चुड़ैल, प्रेतिनी। २ जंतर मंतर जाननेवाली स्त्री (पराह १, ३; सुपा ५०५; स ३०७; महा)।

डाउ पुं [दे] १ फलिहंसक वृक्ष, एक जाति का पेड़। २ गणपति की एक तरह की प्रतिमा (दे ४, १२)।

डाग पुंन [दे] भाजी, पत्राकार तरकारी (भग ७, १०२; दसा १; पव २)।

डाग न [दे] डाल, शाखा (आचा २,१०,२)।

डागिणी देखो **डाइणी** (१, ३, ४)।

डामर वि [डामर] भयंकर, 'डमडमियडमरुया-डोवडामरो' (सुपा १५१)। २ पुं. स्वनाम-ख्यात एक जैन मुनि (पउम २०, २१)।

डामरिय वि [डामरिक] लड़ाई करनेवाला, विग्रह-कारक (पराह १, २)।

डाय न [दे] देखो **डाग** (राज)।

डायाल न [दे] हर्म्य-तल, प्रासाद भूमि, छत (आचा २, २, १)।

डाल स्त्रीन [दे] १ डाल, शाखा, टहनी (सुपा १४०; पंचा १६; हे ४, ४४५)। २ शाखा का एक देश (आचा २, १, १०)। स्त्री. °**ला** (महा; पाअ; वज्जा २६), °**ली** (दे ४, ६; पच्च १०; सण; निचू ५)।

डाव पुं [दे] वाम हस्त, बाँया हाथ, गुजराती में 'डाबो' (दे ४, ६)।

डाह देखो **दाह** (हे १, २१७; गा २२६; ५३५; कुमा)।

डाहर पुं [दे] देश-विशेष (पिंग)।

डाहाल पुं [दे] देश-विशेष (सुपा २६३)।

डाहिण देखो **दाहिण** (गा ७७७; पिंग)।

डिअली स्त्री [दे] स्थूण, खंभा, खूँटी (दे ४, ६)।

डिंडव वि [दे] जल में पतित (षड्)।

डिंडि पुं [दण्डिन्] राजकर्मचारी-विशिष्ट अधिकार-संपन्न (भव० बृ० कथा पत्र-४७०, श्लोक ४)।

डिंडिम न [डिण्डिम] डुगडुगी, डुग्गी, वाद्य-विशेष (सुर ६; १८१)।

डिंडिम न [डिण्डिम] कांसे का पात्र (आचा २, १, ११, ३)।

डिंडिल्लिअ न [दे] १ खलि-खचित वस्त्र, तैल-किट्ट से व्याप्त कपड़ा। २ स्खलित हस्त (दे ४, १०)।

डिंडि स्त्री [दे] सिले हुए वस्त्र-खण्ड (दे ४, ७)। °**बंध** पुं [°बन्ध] गर्भ-संभव (निचू ११)।

डिंडीर पुंन [डिण्डीर] समुद्र का फेन, समुद्र-कफ (उप ७२८ टी; सुपा २२२)।

डिंडुयाण न [डिण्डुयाण] नगर-विशेष (कुप्र १८)।

डिंफिअ वि [दे] जल-पतित, पानी में गिरा हुआ (दे ४, ६)।

डिंब पुंन [डिम्ब] १ भय, डर (से २, १६)। २ विघ्न, अन्तराय (णाया १, १—पत्र ६; औप)। ३ विप्लव, डमर (जं २)।

डिंब पुं [डिम्ब] शत्रु-सैन्य का भय, पर-चक्र का भय (सूअ २, १, १३)।

डिंभ अक [स्रंस्] १ नीचे गिरना। २ ध्वस्त होना, नष्ट होना। डिंभइ (हे ४,१६७; षड्)। वकृ. **डिंभंत** (कुमा ७, ४२)।

डिंभ पुंन [डिम्भ] बालक, बच्चा, शिशु (पाअ; हे १, २०२; महा; सुपा १६); 'अह दुक्खियाइं तह भुक्खियाइंजह चिंतियाइं डिंभाइं' (विवे १११)।

डिंभिया स्त्री [डिम्भिका] छोटी लड़की (णाया १, १८)।

डिक्क अक [गर्ज्] साँड़ का गरजना। डिक्कइ (षड्)।

डिड्डुर पुं [दे] भेक, मण्डूक, मेढ़क, बेंग (दे ४, ६)।

डित्थ पुं [डित्थ] १ काष्ठ का बना हुआ हाथी। २ पुरुष-विशेष, जो श्याम, विद्वान्, सुन्दर, युवा और देखने में प्रिय हो ऐसा पुरुष (भास ७७)।

डिप्प अक [दीप्] दीपना, चमकना। डिप्पइ, डिप्पए (षड्)।

डिप्प अक [वि + गल्] १ गल जाना, सड़ जाना। २ गिर पड़ना। डिप्पइ; डिप्पए (षड्)।

डिमिल न [दे] वाद्य-विशेष (विक्र ८७)।

डिल्ली स्त्री [दे] जल-जन्तु-विशेष (जीव १)।

डिव सक [डिप्] उल्लंघन करना। डिव (वव १)।

डीण वि [दे] अवतीर्ण (दे ४, १०)।

डीणोवय न [दे] उपरि, ऊपर (दे ४, १०)।

डीर न [दे] कन्दल, नवीन अंकुर (दे ४,१०)।

डुंगर पुं [दे] शैल, पर्वत, गुजराती में 'डुंगर' (दे ४, ११; हे ४, ४४५; जं २)।

डुंघ पुं [दे] नारियल का बना हुआ पात्र-विशेष, जो पानी निकालने के काम में आता है (दे ४, ११)।

डुंडुअ पुं [दे] १ पुराना घण्टा (दे ४, ११)। २ बड़ा घण्टा (गा १७२)।

डुंडुक्का स्त्री [दे] वाद्य-विशेष (विक्र ८७)।

डुंडुल्ल अक [भ्रम्] घूमना, फिरना, चक्कर लगाना। डुंडुल्लइ (षड्)।

डुंब पुं [दे] डोम, चाण्डाल, श्वपच (दे ४, ११; २,७३; ७; ७६)। देखो **डोंब** (पव ६)।

डुज्जय न [दे] कपड़े का छोटा गट्ठा, वस्त्र-खण्ड; 'खिविउं वयणम्मि डुज्जयं अहयं, बद्धा रुक्खस्स थुडे' (सुपा ३६६)।

डुल अक [दोलय्] डोलना, काँपना, हिलना। डुलइ (पिंग)।

डुलि पुं [दे] कच्छप, कछुआ (उप पृ १३६)।

डुहुडुहुडुह अक [डुहडुहाय्] 'डुह-डुह' आवाज करना, नदी के वेग का खलखलाना। वकृ. 'डुहुडुहुडुहुडुहंतनइसलिलं' (पउम ६४, ४३)।

डेकुण पुं [दे] मत्कुण, खटमल, क्षुद्र कीट-विशेष (षड्)।

डेड्डुर पुं [दे] दर्दुर, भेक, मण्डूक, मेढ़क, बेंग (षड्)।

डेर वि [दे] केकटाक्ष, नीची-ऊँची आँखवाला (पिंग)।

डेव सक [डिप्] उल्लंघन करना, कूद जाना, अतिक्रमण करना। वकृ. **डेवमाण** (राज)।

डेवण न [डेपन] उल्लंघन, अतिक्रमण (ओघ ३६)।

डोअ पुं [दे] काष्ठ का हाथा, दाल, शाक आदि परोसने का काष्ठ पात्र-विशेष; गुजराती में 'डोयो' (दे ४, ११; महा)।

डोअण न [दे] लोचन, आँख (दे ४, ६)।

डोंगर देखो **डुंगर** (ओघभा २० टी)।

डोंगिली स्त्री [दे] १ ताम्बूल रखने का भाजन विशेष। २ ताम्बूलिनी, पान बेचनेवाले की स्त्री, तमोलिन (दे ४, १२)।

डोंगी स्त्री [दे] १ हस्तबिम्ब, स्थासक। २ पान रखने का भाजन-विशेष (दे ४, १३)।

डोंब पुं [दे] १ म्लेच्छ देश-विशेष। २ एक

म्लेच्छ-जाति; डोम (पण्ह १, १; इक; पव ६)। ३ देखो डुंब (पाअ)।

डोंबिलग } पुं [दे] १ म्लेच्छ देश-विशेष। २ डोंबिलय } एक अनार्य जाति (पण्ह १, १; इक)। ३ डोम, चाण्डाल (स २८६)।

डोकरी स्त्री [दे] बूढ़ी स्त्री (कुप्र ३५३)।

डोड पुं [दे] ब्राह्मण, विप्र (सुख ३, १)।

डोडिणी स्त्री [दे] ब्राह्मणी (अनु० ६६ सूत्र)।

डोडिणी स्त्री [दे] ब्राह्मणी (अणु ४६)।

डोड्डु पुं [दे] एक मनुष्य-जाति, ब्राह्मण; 'दिट्ठो तक्खणजिमिओ निग्गच्छंतो बहिं डोड्डो; तो तस्सुदरं फालिअ' (उप १३६ टी)।

डोर पुं [दे] डोर, गुण, रस्सी (गा २११; वज्जा ६६)।

डोल अक [दोलय्] १ डोलना, हिलना, झूलना। २ संशयित होना, सन्देह करना। वकृ. डोलंत (अच्चु ६०)।

डोल पुं [दे] १ लोचन, आँख, नयन; गुजराती में 'डोलो'; (दे ४, ६)। २ जन्तु-विशेष (बृह १)। ३ फल-विशेष (पंचव २)।

डोल पुं [दे] चतुरिन्द्रिय जीव की एक जाति (उत्त ३६, १४८; सुख ३६, १४८)।

डोला स्त्री [दोला] हिंडोला, झूलना या झूला (हे १, २१७; पाअ)।

डोला स्त्री [दे] डाली, शिविका, पालकी (दे ४, ११)।

डोलाअंत वि [दोलायमान] संशय करनेवाला, डँवाडोल (अच्चु ७)।

डोलाइअ वि [दोलायित] संशयित, डँवाडोल; 'भडस्स डोलाइअं हिअअं' (गा ६६६)।

डोलायमाण देखो डोलाअंत (निचू १०)।

डोलाविय वि [दोलित] कम्पित, हिलाया हुआ (पउम ३१, १२४)।

डोलिअ पुं [दे] कृष्णसार, काला हिरन (दे ४, १२)।

डोलिर वि [दोलावत्] डोलनेवाला, काँपनेवाला; 'दरडोलिरसीसं' (कुमा)।

डोह्णग पुं [दे] पानी में होनेवाला जन्तु-विशेष (सूअ २, ३)।

डोव [दे] देखो डोअ (णंदि; उप पृ २१०)। स्त्री. °वा (पभा २७)।

डोसिणी स्त्री [दे] ज्योत्स्ना, चन्द्र-प्रकाश, चाँदनी (षड्)।

डोहल पुं [दोहद] १ गर्भिणी स्त्री का अभिलाष। मनोरथ, लालसा (हे १, २१७; कुमा)।

॥ इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि डयाराइसद्दसंकलणो
वीसइमो तरंगो समत्तो ॥

ढ

ढ पुं [ढ] व्यञ्जन वर्ण-विशेष, यह मूर्द्धन्य है, क्योंकि इसका उच्चारण मूर्द्धा से होता है (प्रामा; प्राप)।

ढंक पुं [दे] काक, वायस, कौआ (दे ४, १३; जं २; प्राप; सण; भवि; पाअ)। °वत्थुल न [वास्तुल] शाक विशेष, एक तरह की भाजी या तरकारी (धर्म २)।

ढंक पुं [ढङ्क] कुम्भकार-जातीय एक जैन उपासक (विसे २३०७)।

ढंक देखो ढक्क। भवि. ढंकिस्सं (पि २२१)।

ढंकण न [दे. छादन] १ ढकना, पिधान (प्रासू ६०; अणु)।

ढंकण देखो ढिंकुण (राज)।

ढंकणी स्त्री [दे. छादनी] ढकनी, पिधानिका, ढकने का पात्र-विशेष (दे ४, १४)।

ढंकिअ देखो ढक्किअ (सिरि ५२६)।

ढंकुण पुं [दे] मत्कुण, खटमल (दे ४, १४)।

ढंकुण पुं [ढङ्कुण] वाद्य-विशेष (आचा २, १११)।

ढंख देखो ढंक = (दे) (पि २१३; २२३)।

ढंखर पुंन [दे] फल पत्र से रहित डाल, 'ढंखरसेसोवि हु महुअरेण मुक्को ण मालई-विडवो' (गा ७५५; वज्जा ५२)।

ढंखरअ [दे] ढेला। गु० ढेखारा (आख्यानकम० को० नागश्री आख्यानक पत्र—४ पद्य ६१)।

ढंखरी स्त्री [दे] वीणा-विशेष, एक प्रकार की वीणा (दे ४, १४)।

ढंढ पुं [दे] १ पंक, कीच, कर्दम, काँदो (दे ४, १६)। २ वि. निरर्थक, निकम्मा (दे ४, १६; भवि)।

ढंढ पुं [ढण्ढण] एक जैन महर्षि, ढण्ढण ऋषि (सुख २, ३१)।

ढंढ वि [दे] दाम्भिक, कपटी (सम्मत्त ३१)।

ढंढण पुं [ढण्ढन] स्वनाम-ख्यात एक जैन मुनि (विवे ३२; पडि)।

ढंढणी स्त्री [दे] कपिकच्छु, केवाँच, वृक्ष-विशेष (दे ४, १३)।

ढंढर पुं [दे] १ पिशाच। २ ईर्ष्या (दे ४, १६)।

ढंढरिअ पुं [दे] कर्दम, पंक, कादा, काँदो (दे ४, १५)।

ढंढल्ल सक [भ्रम्] घूमना, फिरना, भ्रमण करना। ढंढल्लइ (हे ४, १६१)।

ढंढल्लिअ वि [भ्रान्त] भ्रान्त, घूमा हुआ (कुमा)।

ढंढसिअ पुं [दे] १ ग्राम का यक्ष। २ गाँव का वृक्ष (दे ४, १५)।
ढंढुल्ल देखो **ढंढल्ल**। ढंढुल्लइ (सण)।
ढंढोल सक [गवेषय्] खोजना, अन्वेषण करना। ढंढोलइ (हे ४, १८९)। संकृ. ढंढोलिअ (कुमा)।
ढंढोल्ल देखो **ढुंढुल्ल**। संकृ. ढंढोल्लिवि (सण)।
ढंस अक [वि+वृत्] धसना, धसकर रहना, गिर पड़ना। ढंसइ (हे ४, ११८)। वकृ. **ढंसमाण** (कुमा)।
ढंसय न [दे] अयश, अपकीर्ति (दे ४, १४)।
ढक्क सक [छादय्] १ ढकना, आच्छादन करना, बन्द करना। ढक्कइ (हे ४, २१)। भवि. ढक्किस्सं (गा ३१४)। कर्म. 'ढक्किज्जउ कूवाईं' (सुर १२, १०२)। संकृ. 'तत्थ ढक्किउं दारं', ढक्किऊण, ढक्केऊण (सुपा ६४०; महा; पि २२१)। कृ. ढक्केयव्व (दस २)।
ढक्क पुं [ढक्क] १ देश-विशेष। २ देश-विशेष में रहनेवाली एक जाति (भवि)। ३ भाट की एक जाति (उप पृ ११२)।
ढक्कय न [दे] तिलक (दे ४, १४)।
ढक्करि वि [दे] अद्भुत, आश्चर्य-जनक (हे ४, ४२२)।
ढक्कवत्थुल देखो **ढंक-वत्थुल** (पव ४)।
ढक्का स्त्री [ढक्का] वाद्य-विशेष, डंका, नगाड़ा, डमरू (गा ५२६; कुमा; सुपा २४२)।
ढक्किअ वि [छादित] बन्द किया हुआ, आच्छादित (स ४६६; कुमा)।
ढक्किअ न [दे] बैल की गर्जना (अणु २१२; सुख ६, १)।
ढग्गढग्गा स्त्री [दे] 'ढग-ढग' आवाज, पानी वगैरह पीने की आवाज; 'सोणियं ढग्गढग्गाए घोट्टयंतो' (स २५७)।
ढज्जंत देखो **डज्झंत** (पि २१२; २१९)।
ढड्ढ पुं [दे] भेरी, वाद्य-विशेष (दे ४, १३)।
ढड्ढर पुं [दे] राहु (सुज्ज २०)।
ढड्ढर पुं [दे] १ बड़ी आवाज, महान् ध्वनि (ओघ १५६)। २ न. गुरु-वन्दन का एक दोष, बड़े स्वर से प्रणाम करना (गुभा २५)। ३ वि. वृद्ध, बूढ़ा; 'ढड्ढर-सड्ढाण मग्गेण' (सार्ध ३८)।
ढणिय वि [ध्वनित] शब्दित, ध्वनित (सुर १३, ८४)।
ढमर न [दे] १ पिठर, स्थाली या थाली (दे ४, १७; पाअ)। २ गरम पानी, उष्ण जल (दे ४, १७)।
ढयर पुं [दे] १ पिशाच (दे ४, १६; पाअ)। २ ईर्ष्या, द्वेष (दे ४, १६)।
ढल अक [दे] टपकना, नीचे पड़ना, गिरना। २ झुकना। वकृ **ढलंत** (कुमा); 'ढलंतसेयचामरुप्पीलो' (उप ९८६ टी)।
ढलिय वि [दे] झुका हुआ (उप पृ ११८)।
ढाल सक [दे] १ ढालना, नीचे गिराना। २ झुकाना, चामर वगैरह का वीजना। ढालए (सुपा ४७)।
ढलहलय वि [दे] मृदु, कोमल, मुलायम (वज्जा ११४)।
ढलिय वि [दे] गिरा हुआ, स्खलित (वज्जा १००)।
ढालिअ वि [दे] नीचे गिराया हुआ, 'सीसाओ ढालिओ सूरो' (सुर ३, २२८)।
ढाव पुं [दे] आग्रह, निर्बन्ध (कुमा)।
ढिंक पुं [ढिङ्क] पक्षि-विशेष (पण्ह १, १—पत्र ८)।
ढिंकण } पुं [दे] क्षुद्र जन्तु-विशेष, गौ
ढिंकुण } आदि को लगनेवाला कीट-विशेष (राज; जी १८)।
ढिंकलीआ स्त्री [दे] पात्र-विशेष (सिरि ४२६)।
ढिंग देखो **ढिंक** (राज)।
ढिंढय वि [दे] जल में पतित (दे ४, १५)।
ढिक्क अक [गर्ज्] साँड़ का गरजना। ढिक्कइ (हे ४, ९९)। वकृ. **ढिक्कमाण** (कुमा)।
ढिक्कय न [दे] नित्य, हमेशा, सदा (दे ४, १५)।
ढिक्किय न [गर्जन] साँड़ की गर्जना (महा)।
ढिड्ढिस न [ढिड्ढिस] देव-विमान-विशेष (इक)।
ढिल्ल वि [दे] ढीला, शिथिल (पि १५०)।
ढिल्ली स्त्री [ढिल्ली] भारतवर्ष की प्राचीन और अद्यतन राज-धानी, दिल्ली शहर (पिंग)। °**नाह** पुं [°नाथ] दिल्ली का राजा (कुमा)।
ढुंढुल्ल सक [भ्रम्] घूमना, फिरना, चलना। ढुंढुल्लइ (हे ४, १६१)। ढुंढुल्लन्ति (कुमा)।
ढुंढुल्ल सक [गवेषय्] ढूंढ़ना, खोजना, अन्वेषण करना। ढुंढुल्लइ (हे ४, १८९)।
ढुंढुल्लण न [गवेषण] खोज, अन्वेषण (कुमा)।
ढुंढुल्लिअ वि [गवेषित] अन्वेषित, ढूँढ़ा हुआ (पाअ)।
ढुक्क सक [ढौक्] १ भेंट करना, अर्पण करना। २ उपस्थित करना। ३ अक. लगना, प्रवृत्ति करना। ४ मिलना। वकृ. **ढुक्कंत** (पिंग)। कवकृ. **ढुक्कंत** (उप ९८६ टी; पिंग)।
ढुक्क सक [प्र+विश] ढुकना, घुसना, प्रवेश करना। ढुक्कइ (प्राकृ ७४)।
ढुक्क वि [दे. ढौकित] १ उपस्थित, हाजिर (स २५१)। २ मिलित (पिंग)। ३ प्रवृत्त; 'चिंतिउं ढुक्को' (श्रा २७; सण; भवि)।
ढुक्कलुक्क न [दे] चमड़े से मढ़ा हुआ वाद्य-विशेष (सिरि. ४२६)।
ढुक्किअ वि [ढौकित] ऊपर देखो (पिंग)।
ढुम } सक [भ्रम्] भ्रमण करना, घूमना।
ढुस } ढुमइ; ढुसइ (हे ४, १६१; कुमा)।
ढुरुढुल्ल देखो **ढुंढुल्ल** = भ्रम्। वकृ. **ढुरुढुल्लंत** (वज्जा १२८)।
ढेंक पुं [ढेङ्क] एक जल पक्षी, पक्षि-विशेष (वज्जा ३४)।
ढेंका स्त्री [दे] १ हर्ष, खुशी। २ ढेंकुवा, ढेंकली, कूप-तुला (दे ४, १७)।
ढेंकिय देखो **ढिक्किय** (राज)।
ढेंकी स्त्री [दे] बलाका, बक-पंक्ति (दे ४, १५)।
ढेंकुण पुं [दे] मत्कुण, खटमल (दे ४, १४)।
ढेंढिअ वि [दे] धूपित, धूप दिया हुआ (दे ४, १६)।
ढेणियालग } पुंस्त्री [ढेणिकालक] पक्षि-
ढेणियालय } विशेष (पण्ह १, १)। स्त्री. °**लिया** (अनु ४)।
ढेल्ल वि [दे] निर्धन, दरिद्र (दे ४, १६)।
ढोअ देखो **ढुक्क** = ढौक। ढोएज्जह (महा)।

ढोइय वि [ढौकित] १ भेंट किया हुआ। २ उपस्थित किया हुआ (महा; सुपा १६८; भवि)।

ढोंघर वि [दे] भ्रमण-शील, घुमक्कड़, घूमनेवाला (दे ४, १५)।

ढोयण देखो **ढोवण** (चेइय ५२; कुप्र १६८)।

ढोयणिया स्त्री [ढौकनिका] उपहार, भेंट (धर्मवि ७१)।

ढोल्ल पुं [दे] प्रिय, पति (संक्षि ४७; हे ४, ३३०)।

ढोल्ल पुं [दे] १ ढोल, पटह। २ देश-विशेष, जिसकी राजधानी धौलपुर है (पिंग)।

ढोवण } न [ढौकन, °क] १ भेंट करना,
ढोवणय } अर्पण करना (कुमा)। २ उपहार, भेंट (सुपा २८०)।

ढोविय वि [ढौकित] उपस्थापित, उपस्थित किया हुआ (स ५०८)।

॥ इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि ढयाराइसद्दसंकलणो
एक्कवीसइमो तरंगो समत्तो ॥

ण तथा न

ण पुं [ण, न] व्यञ्जन वर्ण-विशेष, इसका उच्चारण-स्थान मूर्धा है, इससे यह मूर्द्धन्य कहाता है (प्राप, प्रामा)।

ण अ [न] निषेधार्थक अव्यय, नहीं, मत (कुमा; गा २; प्रासू १५६)। °उण, °उणा, °उणाइ, °उणो अ [°पुन:] न तु, नहीं कि (हे १, ६५; षड्)। °संतिपरलोगवाइ वि [शान्तिपरलोकवादिन्] मोक्ष और परलोक नहीं है ऐसा माननेवाला (ठा ८)।

ण स [तत्] वह (हे ३, ७०; कुमा)।

ण स [इदम्] यह, इस (हे ३, ७७; उप ६६०; गा १३१; १६६)।

ण वि [ज्ञ] जानकार, पण्डित, विचक्षण (कुमा २, ८८)।

णअ देखो **णव** = नव (गा १०००; नाट—चैत ४२)। °दीअ पुं [°द्वीप] बंगाल का एक विख्यात नगर, जो न्याय-शास्त्र का केन्द्र गिना जाता है, जिसको आजकल 'नदिया' कहते हैं (नाट—चैत १२६)।

णअंचर देखो **णत्तंचर** (चंड)।

णइ स्त्री [नति] १ नमन, नम्रता। २ अवसान, अन्त (राय ४६)।

णइ अ. १ निश्चय-सूचक अव्यय, 'गईए णइ' (हे २, १८४; षड्)। २ निषेधार्थक अव्यय; 'नइ माया नेय पिया' (सुर २, २०६)।

णइ° देखो **णई** (गउड; हे २, ६७; गा १६७; सुर १३, ३५)।

णइअ वि [नयिक] नय-युक्त, अभिप्राय-विशेष-वाला (सम ४०)।

णइअ देखो **णी** = नी।

णइमासय न [दे] पानी में होनेवाला फल-विशेष (दे ४, २३)।

णइराय न [नैरात्म्य] आत्मा का अभाव। °वाद पुं [°वाद] आत्मा के अस्तित्व को नहीं माननेवाला दर्शन, बौद्ध तथा चार्वाक मत (धर्मसं ११८५)।

णई स्त्री [नदी] नदी, पर्वत आदि से निकला वह स्रोत जो समुद्र या बड़ी नदी में जाकर मिले (हे १, २२६; पाअ)। °कच्छ पुं [°कच्छ] नदी के किनारे पर की झाड़ी (णाया १, १)। °गाम पुं [°ग्राम] नदी के किनारे पर स्थित गाँव (प्राप्र)। °णाह पुं [°नाथ] समुद्र, सागर (उप ७२८ टी)। °वइ पुं [°पति] समुद्र, सागर (पण्ह १, ३)। °संतार पुं [°संतार] नदी उतरना, जहाज आदि से नदी पार जाना (राज)। °सोत्त पुं [°स्रोतस्] नदी का प्रवाह (प्राप्र; हे १, ४)।

णउ (अप) देखो **इव** (कुमा)।

णउअ न [नयुत] 'नयुतांग' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह (ठा २, ४; इक)।

णउअंग न [नयुताङ्ग] 'प्रयुत' को चौरासी से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह (ठा २, ४; इक)।

णउइ स्त्री [नवति] संख्या-विशेष, नब्बे, ६० (सम ६४)।

णउइय वि [नवत] ६० वाँ (पउम ६०, ३१)।

णउल पुं० [नकुल] १ न्योला, नेवला (पण्ह १, १; जी २२)। २ पाँचवाँ पाण्डव (णाया १, १६)।

णउल पुं [नकुल] वाद्य-विशेष (राय ४६)।

णउली स्त्री [नकुली] एक महौषधि (ती ५)।

णउली स्त्री [नकुली] विद्या-विशेष, सर्प-विद्या की प्रतिपक्ष विद्या (राज)।

णं अ [दे] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ प्रश्न। २ उपमा (प्राकृ ७६)।

णं अ. १ वाक्यालंकार में प्रयुक्त किया जाता अव्यय (हे ४, २८३; उवा; पडि)। २ प्रश्न-सूचक अव्यय; ३ स्वीकार-द्योतक अव्यय (राज)।

णं (शौ) देखो **णणु** (हे ४, २८३)।

णं (अप) देखो **इव** (हे ४, ४४४; भवि; सण; पडि)।

णंगअ वि [दे] रुद्ध, रोका हुआ (षड्)।
णंगर पुं [दे] लंगर, जहाज को जल-स्थान में थामने के लिए पानी में जो रस्सी आदि डाली जाती है वह (उप ७२८ टी; सुर १३,१९३; स २०२)।
णंगर } न [लाङ्गल] हल, जिससे खेत जोता **णंगल** } और बोया जाता है (पउम ७२, ७३; पराह १, ४; पात्र)।
णंगल पुंन [दे] चञ्चु, चांच, चोंच; 'जडाउणो रुट्ठो। नहणंगलेसु पहरइ, दसारणं विउल-वच्छयले' (पउम ४४, ४०)।
णंगल पुंन [लाङ्गल] एक देव-विमान (देवेन्द्र १३३)।
णंगलि पुं [लाङ्गलिन्] बलभद्र, हली (कुमा)।
णंगलिय पुं [लाङ्गलिक] हल के आकारवाले शस्त्र-विशेष को धारण करने वाला सुभट (कप्प; औप)।
णंगूल न [लाङ्गूल] पुच्छ, पूँछ (ठा ४, २; हे १, २५६)।
णंगूलि वि [लाङ्गूलिन्] १ लम्बी पूँछवाला २ पुं. वानर, बन्दर (कुमा)।
णंगूलि देखो **णंगोलि** (पव २६२)।
णंगोल देखो **णंगूल** (गाया १, ३; पि १२७)।
णंगोलि } पुं [लाङ्गूलिन्, °क] १ अन्त-**णंगोलिय** } द्वीप-विशेष। २ उसका निवासी मनुष्य (पि १२७; ठा ४, २)।
णंतग न [दे] वस्त्र, कपड़ा (कस; आव ५)।
णंद अक [नन्द्] १ खुश होना, आनन्दित होना। २ समृद्ध होना। णंदइ, णंदए (षड्)। कवकृ. **णंदिज्जमाण** (औप)। कृ. **णंदि-अव्व**, णंदेअव्व (षड्)।
णंद पुं [नन्द] १ स्वनाम-प्रसिद्ध पाटलिपुत्र नगर का एक राजा (मुद्रा १९८; णंदि)। २ भरत-क्षेत्र के भावी प्रथम वासुदेव (सम १५४)। ३ भरत-क्षेत्र में होने वाले नववें तीर्थंकर का पूर्व-भवीय नाम (सम १५४)। ४ स्वनाम-प्रसिद्ध एक जैन मुनि (पउम २०, २०)। ५ स्वनाम-ख्यात एक श्रेष्ठी (सुपा ६३८)। ६ न. देव-विमान विशेष (सम २६)। ७ लोहे का एक प्रकार का वृत्त आसन (गाया १, १—पत्र ४३ टी)। ८ वि. समृद्ध होने वाला (औप)। °**कंत** न [°कान्त] देव-विमान-विशेष (सम २६)। °**कूड** न [°कूट] एक देव-विमान (सम २६)। °**ज्झय** न [°ध्वज] एक देव-विमान (सम २६)। °**प्पभ** न [°प्रभ] देव-विमान-विशेष (सम २६)। °**मई** स्त्री [°मती] एक अन्तकृत् साध्वी (अन्त २५; राज)। °**मित्त** पुं [°मित्र] भरतक्षेत्र में होने वाला द्वितीय वासुदेव (सम १५४)। °**लेस** न [°लेश्य] एक देव-विमान (सम २६)। °**वई** स्त्री [°वती] १ सातवें वासुदेव की माता (पउम २०, १८६)। २ रतिकर पर्वत पर स्थित एक देव-नगरी (दीव)। °**वण्ण** न [°वर्ण] देव-विमान-विशेष (सम २६)। °**सिंग** न [°शृङ्ग] एक देवविमान (सम २६)। °**सिट्ठ** न [°सृष्ट] देव-विमान-विशेष (सम २६)। °**सिरी** स्त्री [°श्री] स्वनाम-ख्यात एक श्रेष्ठि-कन्या (ती ३७)। °**सेणिया** स्त्री [°सेनिका] एक जैन साध्वी (अंत २५)।
णंद पुं [नन्द] गोप-विशेष, श्रीकृष्ण का पालक गोपाल (वज्जा १२२)।
णंद पुंस्त्री [नन्दा] पक्ष की पहली (प्रतिपदा), षष्ठी और एकादशी तिथि (सुज्ज १०, १५)।
णंद न [दे] १ ऊख पीलने या पेरने का कारण्ड। २ कुण्डा, पात्र-विशेष (दे ४,४५)।
णंदग पुं [नन्दक] वासुदेव का खड्ग (पराह १, ४)।
णंदण पुं [नन्दन] १ पुत्र, लड़का (गा ६०२)। २ राम का एक स्वनाम-ख्यात सुभट (पउम ६७, १०)। ३ स्वनाम-ख्यात एक बलदेव (सम ६३)। ४ भरतक्षेत्र का भावी सातवाँ वासुदेव (सम १५४)। ५ स्वनाम-प्रसिद्ध एक श्रेष्ठी (उप ५५०)। ६ श्रेणिक राजा का एक पुत्र (निर १,२)। ७ मेरु पर्वत पर स्थित एक प्रसिद्ध वन (ठा २, ३, इक)। ८ एक चैत्य (भग ३, १)। ९ वृद्धि (पराह १, ४)। १० नगर-विशेष (उप ७२८ टी)। °**कर** वि [°कर] वृद्धि-कारक। °**कूड** न [°कूट] नन्दन वन का शिखर (राज)। °**भद्द** पुं [°भद्र] एक जैन मुनि (कप्प)। °**वण** न [°वन] १ स्वनाम-ख्यात एक वन जो मेरु पर्वत पर स्थित है (सम ६२)। २ उद्यान-विशेष (निर १, ५)।
णंदण पुं [दे] भृत्य, नौकर, दास (दे ४, १९)।
णंदण पुंन [नन्दन] एक देव-विमान (देवेन्द्र १४३)। २ न. संतोष (णंदि ४५)।
णंदणा स्त्री [नन्दना] लड़की, पुत्री (पात्र)।
णंदणी स्त्री [नन्दनी] पुत्री, लड़की (सिरि १४०)।
णंदतणय पुं [नन्दतनय] श्रीकृष्ण (प्राकृ २७)।
णंदमाणग पुं [नन्दमानक] पक्षी की एक जाति (पराह १, १)।
णंदयावत्त } पुंन [नन्दावर्त्त] १ एक देव-**णंदावत्त** } विमान (देवेन्द्र १३३)। २ पुं. चतुरिन्द्रिय जीव की एक जाति (उत्त ३६, १४८)। ३ न. लगातार एक्कीस दिनों का उपवास (संबोध ५८)।
णंदा स्त्री [नन्दा] १ भगवान् ऋषभदेव की एक पत्नी (पउम ३,११६)। २ राजा श्रेणिक की एक पत्नी और अभयकुमार की माता (गाया १,१)। ३ भगवान् श्री शीतलनाथ की माता (सम १५१)। ४ भगवान् महावीर के अचलभ्रातृ नामक गणधर की माता (आवम)। ५ रावण की एक पत्नी (पउम ७४, १०)। ६ पश्चिम रुचक-पर्वत पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८)। ७ ईशानेन्द्र की एक अग्रमहिषी की राजधानी (ठा ४, २)। ८ स्वनाम-ख्यात एक पुष्करिणी (ठा ४, ३)। ९ ज्योतिष-शास्त्र में प्रसिद्ध तिथि-विशेष—प्रतिपदा, षष्ठी और एकादशी तिथि (चंद १०)।
णंदा स्त्री [दे] गो, गैया (दे ४, १८)।
णंदावत्त पुं [नन्दावर्त्त] १ एक प्रकार का स्वस्तिक (सुपा ५२)। २ क्षुद्र जन्तु की एक जाति (जीव १)। ३ न. देव-विमान-विशेष (सम २६)।
णंदि पुंस्त्री [नन्दि] १ बारह प्रकार के वाद्यों का एक ही साथ आवाज (पराह २, ५, णंदि)। २ प्रमोद, हर्ष (ठा ५, २)। ३ मतिज्ञान आदि पाँचों ज्ञान (णंदि)। ४ वाञ्छित अर्थ की प्राप्ति। ५ मंगल (बृह १, अजि ३८)। ६ समृद्धि (अणु)। ७ जैन

आगम ग्रंथ-विशेष (णंदि)। ८ वाञ्छा, अभिलाष, चाह (सम ७१)। ९ गान्धार ग्राम की एक मूर्छना (ठा ७)। १० पुं. स्वनाम ख्यात एक राजकुमार (विपा १, १)। ११ एक जैन मुनि, जो अपने आगामी भव में द्वितीय बलदेव होगा (पउम २०, १९०)। १२ वृक्ष-विशेष (पउम २०, ४२)। °आवत्त देखो °यावत्त (इक)। °उड्ढ पुं [°वृद्ध] एक प्राचीन कवि का नाम (कप्पू)। °कर, °गर वि [°कर] मंगल-कारक (कप्प; णाया १, १)। °गाम पुं [°ग्राम] ग्राम-विशेष (उप ६१७; आचू १)। °घोस पुं [°घोष] १ बारह प्रकार के वाद्यों की आवाज (णंदि)। २ न. देवविमान-विशेष (सम १७)। °चुण्णग न [°चूर्णक] होठ पर लगाने का एक प्रकार का चूर्ण (सूअ १, ४, २)। °तूर न [°तूर्य] एक साथ बजाया जाता बारह तरह का वाद्य (बृह १)। °पुर न [°पुर] सारिडल्य देश का एक नगर (उप १०३१ टी)। °फल पुं [°फल] वृक्ष-विशेष (णाया १, ८; १५)। °भाण न [°भाजन] उपकरण-विशेष (बृह १)। °मित्त पुं [°मित्र] १ देखो णंद-मित्त (राज)। २ एक राजकुमार, जिसने भगवान् मल्लिनाथ के साथ दीक्षा ली थी (णाया १, ८)। °मुइंग पुं [°मृदङ्ग] एक प्रकार का मृदंग, वाद्य-विशेष (राय)। °मुह न [°मुख] पक्षि-विशेष (राज)। °यर देखो °कर (पउम ११८, ११७)। °यावत्त पुं [°आवर्त्त] १ स्वस्तिक-विशेष (औप; पण्ह १, ४)। २ एक लोकपाल देव (ठा ४, १)। ३ क्षुद्र जन्तु-विशेष (पण्ण १)। ४ न. देव-विमान-विशेष (राज)। °राय पुं [°राज] पाण्डवों के सम-कालीन एक राजा (णाया १, १६—पत्र २०८)। °राय पुं [°राग] समृद्धि में हर्ष (भग २, ५)। °रुक्ख पुं [°वृक्ष] वृक्ष-विशेष (पण्ण १)। °वड्ढणा देखो °वद्धणा (इक)। °वद्धण पुं [°वर्धन] १ भगवान् महावीर का ज्येष्ठ भ्राता (कप्प)। २ पक्ष-विशेष (कप्प)। ३ एक राजकुमार (विपा १, ६)। ४ न. नगर-विशेष (सुपा ६८)। °वद्धणा स्त्री [°वर्धना] १ एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८)। २ एक पुष्करिणी (ठा ४, २)। °सेण पुं [°षेण] १ ऐरवत वर्ष में उत्पन्न चतुर्थ जिन-देव (सम १५३)। २ एक जैन कवि (अजि ३८)। ३ एक राज-कुमार (ठा १०)। ४ स्वनाम ख्यात एक जैन मुनि (उव)। ५ देव-विशेष (राज)। °सेणा स्त्री [°षेणा] १ पुष्करिणी-विशेष (जीव ३)। २ एक दिक्कुमारी देवी (दीव)। °सेणिया स्त्री [°षेणिका] राजा श्रेणिक की एक पत्नी (अंत)। °स्सर पुं [°स्वर] १ देखो णंदीसर (राज)। २ बारह प्रकार के वाद्यों का एक ही साथ आवाज (जीव ३)।

णंदिअ न [दे] सिंह की चिल्लाहट, दहाड़ (दे ४, १९)।

णंदिअ वि [नन्दित] १ समृद्ध (औप) २ जैनमुनि-विशेष (कप्प)।

णंदिक्ख पुं [दे] सिंह, मृगेन्द्र (दे ४, १९)।

णंदिघोस पुं [नन्दिघोष] वाद्य विशेष (राय ४६)।

णंदिज्ज न [नन्दीय] जैन मुनियों का एक कुल (कप्प)।

णंदिणी स्त्री [नन्दिनी] पुत्री, लड़की (पउम ४९, २)। °पिउ पुं [°पितृ] भगवान् महावीर का एक स्वनाम-ख्यात गृहस्थ उपासक (उवा)।

णंदिणी स्त्री [दे] गऊ, गैया, गाय (दे ४, १८; पाअ)।

णंदिल पुं [नन्दिल] आर्यमंगु के शिष्य एक जैनमुनि (णंदि ५०)।

णंदिस्सर, णंदीसर पुं [नन्दीश्वर] १ एक द्वीप। २ एक समुद्र (सुज्ज १९)। ३ एक देव-विमान (देवेन्द्र १४४)।

णंदी देखो णंदि (महा; ओघ ३२१ भा; पण्ह १, १; औप; सम १५२; णंदि)।

णंदी स्त्री [दे] गऊ, गाय, गैया (दे ४, १८; पाअ)।

णंदीसर पुं [नन्दीश्वर] स्वनाम प्रसिद्ध एक द्वीप (णाया १, ८; महा)। °वर पुं [°वर] नन्दीश्वर-द्वीप (ठा ४, ३)। °वरोद पुं [°वरोद] समुद्र-विशेष (जीव ३)।

णंदुत्तर पुं [नन्दोत्तर] देव-विशेष, नाग-कुमार के भूतानन्द-नामक इन्द्र के रथ-सैन्य का अधिपति देव (ठा ५, १; इक)। °वडिंसग न [°वतंसक] एक देव-विमान (सम २९)।

णंदुत्तरा स्त्री [नन्दोत्तरा] १ पश्चिम रुचक पर्वत पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८; इक)। २ कृष्णानामक इन्द्राणी की एक राजधानी (जीव ३)। ३ पुष्करिणी-विशेष (ठा ४, २)। ४ राजा श्रेणिक की एक पत्नी (अंत ७)।

णकार पुं [णकार, नकार] 'ण' या 'न' अक्षर (विसे २८९७)।

णक्क पुं [नक्र] १ जलजन्तु-विशेष, ग्राह, नाका (पण्ह १, १; कुमा)। २ रावण का एक स्वनाम ख्यात सुभट (पउम ५६, २८)।

णक्क पुं [दे] १ नाक, नासिका (दे ४, ४६; विपा १, १; औप)। २ वि. मूक, वाचा-वाचा-शक्ति से रहित, गूँगा (दे ४, ४६)। °सिरा स्त्री [°सिरा] नाक का छिद्र (पाअ)।

णक्कंचर पुं [नक्तञ्चर] १ राक्षस। २ चोर। ३ बिड़ाल। ४ वि. रात्रि में चलने-फिरने-वाला (हे १, १७७)।

णक्ख पुं [नख] नख, नाखून (हे २, ९९; प्राप्र)। °अ वि [°ज] नख से उत्पन्न (गा ६७१)। °आउह पुं [°आयुध] सिंह, मृगारि (कुमा)।

णक्खत्त पुंन [नक्षत्र] कृत्तिका, अश्विनी, भरणी आदि ज्योतिष्क-विशेष (पाअ; कप्प; इक; सुज्ज १०)। °दमण पुं [°दमन] राक्षस-वंश का एक राजा, एक लंकेश (पउम ५, २६६)। °मास पुं [°मास] ज्योतिष-शास्त्र में प्रसिद्ध समय-मान-विशेष (वव १)। °मुह न [°मुख] चन्द्र, चाँद (राज)। °संवच्छर पुं [°संवत्सर] ज्योतिष-शास्त्र प्रसिद्ध वर्ष-विशेष (ठा ६)।

णक्खत्त वि [नक्षत्र] १ क्षत्रिय-जाति के अयोग्य कार्य करनेवाला (धर्मवि ३)। २ पुंन. एक देव-विमान (देवेन्द्र १४३)।

णक्खत्त वि [नाक्षत्र] नक्षत्र-सम्बन्धी, नक्षत्र का (जं ७)।

णक्खत्तणेमि पुं [दे- नक्षत्रनेमि] विष्णु, नारायण (दे ४, २२)।

णक्खन्नण न [दे] नख और कण्टक निकालने का शस्त्र-विशेष (बृह १)।

णक्खि वि [नखिन्] सुन्दर नखवाला (बृह १)।

णख देखो णक्ख (कुप्र ५८)।

णग देखो णय = नग (पण्ह १, ४; उप ३५६ टी; सुर ३, ३४)। °**राय** पुं [°राज] मेरु पर्वत (ठा ६)। [°**वर**] पुं [°वर] श्रेष्ठ पर्वत (णाया १, १)। °**वरिंद** पुं [°वरेन्द्र] मेरु-पर्वत (पउम ३, ७६)।

णगर न [नकर, नगर] शहर, पुर (बृह १; कप्प; सुर ३, २०) °**गुत्तिय,** °**गोत्तिय** पुं [°गुप्तिक] नगर-रक्षक, कोटपाल, कोतवाल, दरोगा (णाया १, १८; औप; पण्ह १, २; णाया १, २)। °**घाय** पुं [°घात] शहर में लूट-पाट (णाया १, १८)। °**णिद्धमण** न [°निर्धमन] नगर का पानी जाने का रास्ता, मोरी, खाल (णाया १, २)। °**रक्खिय** पुं [°रक्षिक] देखो °गुत्तिय (निचू ४)। °**वास** पुं [°वास] राजधानी, पाटनगर (जं १—पत्र ७४)।

णगरी देखो णयरी (राज)।

णगाणिआ स्त्री [नगाणिका] छन्द-विशेष (पिंग)।

णगिंद पुं [नगेन्द्र] १ श्रेष्ठ पर्वत (पउम ६७, २७)। २ मेरु पर्वत (सूअ १, ६)।

णगिण वि [नग्न] नंगा, वस्त्र-रहित (आचा; उप पृ ३६३)।

णग्ग देखो णग (तंदु ४५)।

णग्ग वि [नग्न] नंगा, वस्त्र-रहित (प्राप्र; दे ४, २८)। °**इ** पुं [°जित्] गन्धार देश का एक स्वनाम-ख्यात राजा (औप; महा)।

णग्गठ वि [दे] निर्गत, बाहर निकला हुआ (षड्—पृष्ठ १८१)।

णग्गोह पुं [न्यग्रोध] वृक्ष-विशेष, बड़ का पेड़ (पाअ; सुर १, २०५)। °**परिमंडल** न [°परिमण्डल] संस्थान-विशेष, शरीर का आकार-विशेष (ठा ६)।

णघुस पुं [नघुष] स्वनाम-ख्यात एक राजा (पउम २२, ५५)।

णचिरा देखो अइरा = अचिरात् (पि ३६६)।

णच्च अक [नृत्] नाचना, नृत्य करना। णच्चइ (षड्) वकृ. **णच्चंत, णच्चमाण** (सुर २, ७५; ३, ७७)। हेकृ. **णच्चिउं** (गा ३६१) कृ. **णच्चियव्व** (पउम ८०, ३२)। प्रयो. कवकृ. **णच्चाविज्जंत** (स २६)।

णच्च न [ज्ञत्व] जानकारी, पण्डिताई (कुमा)।

णच्च न [नृत्य] नाच, नृत्य (दे ५, ८)।

णच्चग वि [नर्तक] १ नाचनेवाला। पुं. नट, नचवैया (वव ६)।

णच्चण न [नर्तन] नाच, नृत्य (कप्पू)।

णच्चणी स्त्री [नर्तनी] नाचनेवाली स्त्री (कुमा; कप्पू; सुपा १६६)।

णच्चा, णच्चाण } देखो णा = ज्ञा।

णच्चाविअ वि [नर्त्तित] नचाया हुआ (ओघ २६५; ठा ६)।

णच्चासन्न न [नात्यासन्न] अति समीप में नहीं (णाया १, १)।

णच्चिर वि [नर्त्तितृ] नचवैया, नाचनेवाला, नर्तन-शील (गा ४२०; सुपा ५४; कुमा)।

णच्चिर वि [दे] रमण-शील (दे ४, १८)।

णच्चुण्ह वि [नात्युष्ण] जो अति गरम न हो (ठा ५, ३)।

णज्ज सक [ज्ञा] जानना। णज्जइ (प्राप्र)।

णज्ज वि [न्याय्य] न्याय-संगत (प्राकृ. १६)।

णज्जंत, णज्जमाण } देखो णा = ज्ञा।

णज्जर वि [दे] मलिन, मैला (दे ४, १६)।

णज्झर वि [दे] विमल, निर्मल (दे ४, १६)।

णट्ट अक [नट्] १ नाचना। २ सक. हिंसा करना। णट्टइ (हे ४, २३०)।

णट्ट पुं [नट] नर्त्तकों की एक जाति; 'णच्चंति णट्टा पभणंति विप्पा' (रंभा; सण; कप्प)।

णट्ट न [नाट्य] नृत्य, गीत और वाद्य, नट-कर्म (णाया १, ३; सम ८३)। °**पाल** पुं [°पाल] नाट्य-स्वामी, सूत्रधार (आचू १)। °**मालय** पुं [°मालक] देव-विशेष, खण्डप्रपात गुहा का अधिष्ठायक देव (ठा २, ३)। °**रिअ** पुं [°चार्य] सूत्रधार (मा ४)।

णट्ट [नृत्य] नाच, नृत्य (से १, ८; कप्पू)।

णट्टअ न [नाटक] देखो णट्ट = नाट्य (मा ४)।

णट्टअ, णट्टग } वि [नर्त्तक] नाचनेवाला, नचवैया (प्राप्र; णाया १, १; औप)। स्त्री. °ई (प्राप्र; हे २, ३०; कुमा)।

णट्टार पुं [नाट्यकार] नाट्य करनेवाला (सण)।

णट्टावअ वि [नर्त्तक] नचानेवाला (कप्पू)।

णट्टिया स्त्री [नर्त्तिका] नटी, नर्त्तकी, नाचनेवाली स्त्री (महा)।

णट्टुमत्त पुं [नर्त्तुमत्त] स्वनाम-ख्यात एक विद्याधर (महा)।

णट्ठ पुं [नष्ट] एक नरक स्थान (देवेन्द्र २८)। २ न. पलायन (कुप्र ३७)।

णट्ठ वि [नष्ट] १ नष्ट, अपगत, नाश-प्राप्त (सूअ १, ३, ३; प्रासू ८६)। २ पुंन. अहोरात्र का सतरहवाँ मुहूर्त्त (राज)। °**सुइअ** वि [°श्रुतिक] १ जो बधिर—बहरा हुआ हो (णाया १, १—पत्र ६३)। २ शास्त्र के वास्तविक ज्ञान से रहित (राज)।

णट्ठव वि [नष्टवत्] १ नाश-प्राप्त। २ न. अहोरात्र का एक मुहूर्त्त (राज)।

णड अक [गुप्] १ व्याकुल होना। २ सक. खिन्न करना। णडइ, णडंति (हे ४, १५०; कुमा)। कर्म. णडिज्जइ (गा ७७)। कवकृ. **णडिज्जंत** (सुपा ३३८)।

णड देखो णट्ट = नट्। णडइ (प्राकृ ६६)।

णड देखो णल = नड (हे २, १०२)।

णड पुं [नट] १ नर्तकों की एक जाति, नट (हे १, १९५; प्राप्र)। °**खाइया** स्त्री [°खादिता] दीक्षा-विशेष, नट की तरह कृत्रिम साधुपन (ठा ४, ४)।

णडाल न [ललाट] भाल, कपाल (हे १, ४७; २५७; गउड)।

णडालिआ स्त्री [ललाटिका] ललाट-शोभा, कपाल में चन्दन आदि का विलेपन (कुमा)।

णडाविअ वि [गोपित] १ व्याकुल किया हुआ। २ खिन्न किया हुआ (सुपा ३२५)।

णडिअ वि [गुपित] व्याकुल (से १०, ७०; सण)।

णडिअ वि [दे] १ वञ्चित, विप्रतारित (दे ४, १६)। २ खेदित, खिन्न किया हुआ (दे ४, १६; पाअ; णाया १, ६)।

णडी स्त्री [नटी] १ नट की स्त्री (गा ६; ठा ६)। २ लिपि विशेष (विसे ४६४ टी)। ३ नाचनेवाली स्त्री (बृह ३)।

णडुली स्त्री [दे] कच्छप, कछुआ (दे ४,२०)।

णडूल न [नड्डुल] १ नगर विशेष (मोह ८८)। २ पुं. देश-विशेष (ती १५)।

णडूरी स्त्री [दे] भेक, मेढक, बेंग (दे ४,२०)।

णड्डुल न [दे] १ रत, मैथुन। २ दुर्दिन, मेघाच्छन्न दिवस (दे ४, ४७)।

णड्डुली देखो णडुली (दे ४, २०)।

णणंदा स्त्री [ननान्दृ] पति की बहिन, ननद (षड् ; हे ३, ३५)।

णणु अ [ननु] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ अवधारण, निश्चय (प्रासू १६१; निचू १)। २ आशंका। ३ वितर्क। ४ प्रश्न (उव; सण; प्रति ५५)।

णण्ण पुं [दे] १ कूप, कुआँ। २ दुर्जन, खल। ३ बड़ा भाई (दे ४, ४६)।

णत्त न [नक्त] रात्रि, रात (चंद १०)।

णत्त देखो णत्तु; 'अंकनिवेसियनियनियपुत्तपडिपुत्तनत्तपुत्तीयं' (सुपा ६)।

णत्तंचर देखो णक्कंचर (कुमा; पि १७०)।

णत्तण न [नर्तन] नाच, नृत्य (नाट—शकु ८०)।

णत्ति स्त्री [ज्ञप्ति] ज्ञान (धर्मसं ८२८, णंदि ६७ टी)।

णत्तिअ पुं [नप्तृक] १ पौत्र, पुत्र का पुत्र पोता। २ दौहित्र, पुत्री का पुत्र, नाती (हे १, १३७; कुमा)।

णत्तिआ, णत्ती स्त्री [नप्त्री] १ पुत्र की पुत्री, पौत्री (कुमा)। २ पुत्री की पुत्री, नातिन, नतिनी (राज)।

णत्तु, णत्तुअ पुं [नप्तृ, °क] देखो णत्तिअ (निर २, १; हे १, १३७; सुपा १६२; विपा १, ३)।

णत्तुआ देखो णत्तिआ (बृह १; विपा १,३)।

णत्तुइणी स्त्री [नप्तृकिनी] १ पौत्र की स्त्री। २ दौहित्र की स्त्री (विपा १, ३)।

णत्तुई देखो णत्ती (विपा १, ३; कप्प)।

णत्तुणिअ पुं [नप्तृ] १ पौत्र, पोता। २ प्रपौत्र, परपोता (दस ७, १८)।

णत्तुणिआ देखो णत्तिआ (दस ७, १५)।

णत्थ वि [न्यस्त] स्थापित, निहित (णाया १, १, ३; विसे ६१६)।

णत्थण न [दे] नाक में छिद्र करना (सुर १४, ४१)।

णत्था स्त्री [दे] नासा-रज्जु, नाथा या नाथ (दे ४, १७, उवा)।

णत्थि अ [नास्ति] अभाव-सूचक अव्यय (कप्प; उवा; सम्म ३६)।

णत्थिअ वि [नास्तिक] १ परलोक आदि नहीं माननेवाला (प्रारू)। २ पुं. नास्तिक-मत का प्रवर्तक, चार्वाक। °वाय पुं [°वाद] नास्तिक-दर्शन (उप १३२ टी)।

णत्थियवाइ वि [नास्तिकवादिन्] आत्मा आदि के अस्तित्व को नहीं माननेवाला (धर्मवि ४)।

णद सक [नद्] नाद करना, आवाज करना। वकृ. णदंत (सम ५०; नाट—मृच्छ १५५)।

णद पुं [नद] नाद, आवाज, शब्द; 'गद्दहेव्व गवां मज्झे विस्सरं नयई नदं' (सम ५०)।

णदी देखो णई (से ६, ६५; पण्ण ११)।

णद्दिअ वि [दे] दुःखित (दे ४, २०)।

णद्दिअ न [नर्दित] घोष, आवाज, शब्द (राज)।

णद्ध वि [नद्ध] १ परिहित, आच्छादित (गा ५२०; पउम ७,६२; सुपा ३५५)। २ नियन्त्रित, बँधा हुआ (सुपा ३५५)।

णद्ध वि [नद्ध] कवचित, वर्मित (धर्मवि ४)।

णद्ध वि [दे] आरूढ़ (दे ४, १८)।

णद्धंधवय न [दे] १ अघृणा, घृणा या घिन का अभाव। २ निन्दा (दे ४, ४७)।

णपहुत्त वि [अप्रभूत] अपर्याप्त, अपरिपूर्ण, यथेष्टरहित (गउड)।

णपहुप्पंत वि [अप्रभवत्] अपर्याप्त होता (गउड)।

णपुंस, णपुंसग, णपुंसय पुंन [नपुंसक] नपुंसक, क्लीब, नामर्द, षंड (ओघ २१; श्रा १६; ठा ३, १; सम ३७; महा)। °वेय पुं [°वेद] कर्म-विशेष, जिसके उदय से स्त्री और पुरुष दोनों के स्पर्श की वाञ्छा होती है (ठा ६)।

णप्प सक [ज्ञा] जानना। णप्पइ (प्राप्र)।

णभ देखो णह = नभस् (हे १, १८७; कुमा; वसु)।

णभसूरय पुं [नभःशूरक] कृष्ण पुद्गल-विशेष, राहु (सुज्ज २०)।

णम सक [नम्] नमन करना, प्रणाम करना। णमामि (भग)। वकृ. णमंत, णममाण (पि ३६७; आचा)। कवकृ. णमिज्जंत (से ६, ३५)। संकृ. णमिऊण, णमिऊणं, णमेऊण (जो १; पि ५८५; महा)। कृ. णमणिज्ज, णमियव्व (रयण ४६; उप २११ टी; पउम ६६, २१)। संकृ. णमिअ (कम्म ४, १)।

णमंस सक [नमस्य्] नमन करना, नमस्कार करना। णमंसइ (भग)। वकृ. णमंसमाण (णाया १, १; भग)। संकृ. णमंसित्ता (ठा ३, १; भग)। हेकृ. णमंसित्तए (उवा)। कृ. णमंसणिज्ज, णमंसियव्व (औप; सुपा ६३८; पउम ३५, ४६)।

णमंसण न [नमस्यन] नमन, नमस्कार (अजि ५, भग)।

णमंसणया, णमंसणा स्त्री [नमस्यना] प्रणाम, नमस्कार (भग; सुपा ६०)।

णमंसिय वि [नमस्यित] जिसको नमन किया गया हो वह (पण्ह २, ४)।

णमक्कार देखो णमोक्कार (गउड; पि ३०६)।

णमण न [नमन] प्रणति, प्रणाम, नमना (दे ७, १६; रयण ४६)।

णमसिअ न [दे] उपयाचितक, मनौती (दे ४, २२)।

णमि पुं [नमि] १ स्वनाम-ख्यात एकीसवाँ जिन-देव (सम ४३)। २ स्वनाम-प्रसिद्ध राजर्षि (उत्त ३६)। भगवान् ऋषभदेव का एक पौत्र (धण १४)।

णमिअ वि [नत] प्रणत, जिसने नमन किया हो वह; 'पडिवक्खरायाणो तस्स राइणो नमिया' (महा)।

णमिअ वि [नमित] नमाया हुआ (गा ६६०)।

णमिअ देखो णम।

णमिआ स्त्री [नमिता] १ स्वनाम-ख्यात एक स्त्री । २ 'ज्ञाताधर्मकथासूत्र' का एक अध्ययन (णाया २)।

णमिर वि [नम्र] नमन करनेवाला (कुमा; सुपा २७; सण)।

णमुइ पुं [नमुचि] स्वनाम-ख्यात एक मन्त्री (महा)।

णमुदय पुं [नमुदय] आजीविक मत का एक उपासक (भग ७, १०)।

णमेरु पुं [नमेरु] वृक्ष-विशेष (सुर ७, १६; स ६३३)।

णमो अ [नमस्] नमस्कार, नमन (भग; कुमा)।

णमोक्कार पुं [नमस्कार] १ नमन, प्रणाम (हे १, ६२; २, ४)। २ जैन-शास्त्र में प्रसिद्ध एक सूत्र—मन्त्र-विशेष (विसे २८०५)। °सहिय न [°सहित] प्रत्याख्यान-विशेष, व्रत-विशेष (पडि)।

णमोयार देखो **णमोक्कार** (चंड)।

णम्म पुंन [नर्मन्] १ हाँसी, उपहास। २ क्रीड़ा, केलि (हे १, ३२; श्रा १४; दे २, ६४; पाअ)।

णम्मया स्त्री [नर्मदा] १ स्वनाम प्रसिद्ध नदी (सुपा ३८०)। २ स्वनाम-ख्यात एक राज-पत्नी (स ५)।

णय देखो **णद**=नद; 'विस्सरं नयइं नदं' (सम ५०)।

णय पुं [नग] १ पहाड़, पर्वत (उप पृ २५६; सुपा ३४८)। २ वृक्ष, पेड़ (हे १, १७७)। देखो **णग**।

णय अ [नच] नहीं (उप ७६८ टी)।

णय [नत] १ नमा हुआ, झुका हुआ, प्रणत, नम्र (णाया १,१)। २ जिसको नमस्कार किया गया हो वह; 'नीसेसवियडपडिवक्खनयक्कमो विक्कमो राया' (सुपा ५६६)। ३ न. देवविमान-विशेष (सम ३७)। °सच्च पुं [सत्य] श्रीकृष्ण, नारायण (अच्चु ७)।

णय पुं [नय] १ न्याय, नीति (विसे ३३६५; सुपा ३४८; स ५०१)। २ युक्ति (उप ७६८)। ३ प्रकार, रीति; 'जलणा वि घेप्पई पवणा भुयगो य केणइ नएण' (स ४५४)। ४ वस्तु के अनेक धर्मों में किसी एक को मुख्य रूप से स्वीकार कर अन्य धर्मों की उपेक्षा करनेवाला मत, एकांश-ग्राहक बोध (सम्म २१; विसे ६१४; ठा ३, ३)। ५ विधि (विसे ३३६५)। °चंद पुं [°चन्द्र] स्वनाम-ख्यात एक जैन ग्रन्थकार (रंभा)। °त्थि वि [°र्थिन्] न्याय चाहनेवाला (श्रा १४)। °व, °वत वि [°वत्] नीतिवाला, न्याय-परायण (सम ५०; सुपा ५४२)। °विजय पुं [°विजय] विक्रम की सतरहवीं शताब्दी के एक जैन मुनि, जो सुप्रसिद्ध विद्वान् श्री यशोविजयजी के गुरु थे (उवर २०२)।

णयचक्क न [नयचक्र] एक प्राचीन जैन प्रमाण-ग्रन्थ (सम्मत्त ११७)।

णयण न [नयन] १ ले जाना, प्रापण (उप १३४)। २ जानना, ज्ञान। ३ निश्चय (विसे ६१४)। ४ वि. ले जानेवाला; 'वयणाइं सुपहनयणाइं' (सुपा ३७७)। ५ पुंन. आँख, नेत्र, लोचन (हे १, ३३; पाअ)। °जल न [°जल] अश्रु, आँसू (पाअ)।

णयय पुं [दे. नवत] ऊन का बना हुआ आस्तरण-विशेष (णाया १, १—पत्र १३)।

णयर देखो **णगर** (हे १, १७७; सुर ३, २० औप; भग)।

णयरंगणा स्त्री [नगराङ्गना] वेश्या, गणिका (श्रा २७)।

णयरी स्त्री [नगरी] शहर, पुरी (उपा; पउम ३६, १००)।

णर पुं [नर] १ मनुष्य, मानुष, पुरुष (हे १, २२६; सूअ १, १, ३)। २ अर्जुन, मध्यम पाण्डव (कुमा)। °उसभ पुं [°वृषभ] श्रेष्ठ मनुष्य, अंगीकृत कार्य का निर्वाहक पुरुष (औप)। °कंतप्पवाय पुं [°कान्तप्रपात] ह्रद-विशेष (ठा २,३)। °कंता स्त्री [°कान्ता] नदी-विशेष (ठा २, ३; सम २७)। °कंता-कूड न [°कान्ताकूट] रुक्मि पर्वत का एक शिखर (ठा ८)। °दत्ता स्त्री [°दत्ता] १ मुनि-सुव्रत भगवान् की शासनदेवी (राज) २ विद्यादेवी-विशेष (संति ५)। °देव पुं [°देव] चक्रवर्त्ती राजा (ठा ५, १) °नायग पुं [°नायक] राजा, नरपति (उप २११ टी)। °नाह पुं [°नाथ] राजा, भूपाल (सुपा ६; सुर १, ६१)। °पहु पुं [°प्रभु] राजा, नरेश (उप ७२८ टी; सुर २, ८४)। °पौरुसि पुं [°पौरुषिन्] राज-विशेष (उप ७२८ टी)। °लोअ पुं [°लोक] मनुष्य लोक (जी २२; सुपा ४१३)। °वइ पुं [°पति] नरेश, राजा (सुर १, १०४)। °वर पुं [°वर] १ राजा, नरेश (सुर १, १३१; १५, १४)। २ उत्तम पुरुष (उप ७२८ टी)। °वरिंद पुं [°वरेन्द्र] राजा, भूमि-पति (सुपा ५६; सुर २, १७६)। °वरीसर पुं [°वरेश्वर] श्रेष्ठ राजा (उत्त १८)। °वसभ, °वसह पुं [°वृषभ] १ देखो °उसभ (पण्ह १, ४; सम १५३)। २ राजा, नृपति (पउम ३, १४)। ३ पुं. हरिवंश का एक स्वनाम-प्रसिद्ध राजा (पउम २२, ६७)। °वाल पुं [°पाल] राजा, भूपाल (सुपा २७३)। °वाहण पुं [°वाहन] स्वनाम-ख्यात एक राजा (आक १; सण)। °वेय पुं [°वेद] पुरुष वेद, पुरुष को स्त्री के स्पर्श की अभिलाषा (कम्म ४)। °सिंघ, °सिंह, °सीह पुं [°सिंह] १ उत्तम पुरुष, श्रेष्ठ मनुष्य (सम १५३; पउम १००, १६)। २ अर्ध भाग में पुरुष का और अर्ध भाग में सिंह का आकारवाला, श्रीकृष्ण, नारायण (णाया १, १६) °सुंदर पुं [°सुन्दर] स्वनाम-ख्यात एक राजा (धम्म)। °हिव पुं [°धिप] राजा, नरेश (गा ३६४; सुपा २५)।

णरइंदय पुं [नरकेन्द्रक] नरक-स्थान-विशेष (देवेन्द्र १)।

णरकंठ पुं [नरकण्ठ] रत्न की एक जाति (राय ६७)।

णरसिंह पुं [नरसिंह] १ बलदेव, 'तत्तो लोयम्मि बलदेवो नरसिंहो त्ति पसिद्धो' (कुप्र १०३)। २ एक राजकुमार (कुप्र १०६)।

णरग, **णरय** पुं [नरक] नारक जीवों का स्थान (विपा १, १; पउम १४, १६; श्रा ३; प्रासू २६; उव)। °वाल, °वालय पुं [°पाल, °क] परमाधार्मिक देव, जो नरक के जीवों को यातना (पीड़ा) देते हैं (पउम २६, ५१; ८, २३७)।

णराच } पुंन [नाराच] १ लोहमय बाण। **णराअ** } २ संहनन-विशेष, शरीर की रचना का एक प्रकार (हे १, ६७)। ३ छन्द-विशेष (पिंग)।

णरायण पुं [नारायण] श्रीकृष्ण, विष्णु (पिंग)।

णरिंद पुं [नरेन्द्र] १ राजा, नरेश (सम १५३; प्रासू १०७; कप्प)। २ गारुड़िक, सर्प के विष को उतारनेवाला (स २१६)। °कंत न [°कान्त] देव-विमान-विशेष (सम २२) °पह पुं [°पथ] राज-मार्ग, महापथ (पउम ७६, ८)। °वसह पुं [°वृषभ] श्रेष्ठ राजा (उत्त ६)।

णरिंदुत्तरवडिंसग न [नरेन्द्रोत्तरावतंसक] देव-विमान-विशेष (सम २२)।

णरीस पुं [नरेश] राजा, नरपति; 'सो भरहद्धनरीसो होही पुरिसो न संदेहो' (सुर १२, ८०)।

णरीसर पुं [नरेश्वर] राजा, नरपति (अजि ११)।

णरुत्तम पुं [नरोत्तम] श्रीकृष्ण (सिरि ४२)।

णरुत्तम पुं [नरोत्तम] उत्तम पुरुष (पउम ४८, ७५)।

णरेंद देखो णरिंद (पि १५६; पिंग)।

णरेसर देखो णरीसर (उप ७२८ टी; सुपा ५५; ५६१)।

णल न [नड] तृण-विशेष, भीतर से पोला शराकार तृण (हे २, २०२; ठा ८)।

णल न [नल] १ ऊपर देखो (पराण १; उप १०३१ टी; प्रासू ३३)। २ पुं. राजा रामचन्द्र का एक सुभट (से ८,१८)। ३ वैश्रमण का एक स्वनाम-ख्यात पुत्र (अंत ५)। °कुब्बर, °कूवर पुं [°कूबर] १ दुर्लंघपुर का एक स्वनाम-ख्यात राजा (पउम १२, ७२)। २ वैश्रमण का एक पुत्र (आवम)। °गिरि पुं [°गिरि] चण्डप्रद्योत राजा का एक स्वनाम-ख्यात हाथी (महा)।

णलय न [दे] उशीर, खस का तृण (दे ४, १६; पाअ)।

णलाड देखो णडाल (हे २, १२३; कुमा)।

णलाडंतव वि [ललाटन्तप] ललाट को तपानेवाला (कुमा)।

णलिअ न [दे] गृह, घर, मकान (दे ४, २०; षड्)।

णलिण न [नलिन] १ लगातार तेईस दिन का उपवास (संबोध ५८)। २ पुंन. एक देव-विमान (देवेन्द्र १३२)।

णलिण न [नलिन] १ रक्त कमल (राय; चंद १०; पाअ)। २ महाविदेह वर्ष का एक विजय, प्रदेश-विशेष (ठा २, ३)। ३ 'नलिनांग' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह (ठा २, ४; इक)। ४ देव-विमान विशेष (सम ३३; ३५)। ५ रुचक पर्वत का एक शिखर (दीव)। °कूड पुं [°कूट] वक्षस्कार-पर्वत-विशेष (ठा २, ३)। °गुम्म न [°गुल्म] १ देव-विमान-विशेष (सम ३५)। २ नृप-विशेष (ठा ८)। ३ अध्ययन-विशेष (आव ४)। ४ राजा श्रेणिक का एक पुत्र (राज)। °विई स्त्री [°वती] विदेह वर्ष का एक विजय, प्रदेश विशेष (ठा २, ३)।

णलिणंग न [नलिनाङ्ग] संख्या-विशेष, पद्म को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह (ठा २, ४; इक)।

णलिणि° } स्त्री [नलिनी] कमलिनी, पद्मिनी **णलिणी** } (पाअ; णाया १, १)। °गुम्म देखो णलिण-गुम्म (निर २, १; विसे)। °वण न [°वन] उद्यान-विशेष (णाया २)।

णलिणोदग पुं [नलिनोदक] समुद्र-विशेष (दीव)।

णल्लय न [दे] १ वृति विवर, बाड़ का छिद्र। २ प्रयोजन। ३ निमित्त, कारण। ४ वि. कर्दमित, कीचवाला (दे ४, ४६)।

णव देखो णम। णवइ (षड्; हे ४, १५८; २२६)।

णव वि [नव] नया, नूतन, नवीन (गउड; प्रासू ७१)। °वहुया, °वहू स्त्री [°वधू] नवोढ़ा, दुलहिन (हेका ५१; सुर ३, ५२)।

णव त्रि. ब. [नवन्] संख्या-विशेष, नव, ६ (ठा ६)। °इ स्त्री [°ति] संख्या-विशेष नब्बे, ६० (सण)। °ग न [°क] नव का समुदाय (दे ३८)। °जोयणिय वि [°योजनिक] नव योजन का परिमाणवाला (ठा ६)। °णउइ, °नउइ स्त्री [°नवति] संख्या-विशेष, निन्यानबे, ६६ (सम ६६, १००)। °नउय वि [°नवत] ६६ वाँ (पउम ६६, ७५)। °नवइ देखो °णउइ (कम्म २, ३०)। °नवमिया स्त्री [°नवमिका] जैन साधु का व्रत-विशेष (सम ८८)। °म वि [°म] नववाँ (उवा)। °मी स्त्री [°मी] तिथि-विशेष; पक्ष का नववाँ दिवस (सम २६)। °मीपक्ख पुं [°मीपक्ष] आठवाँ दिन, अष्टमी (जं ३)।

णवकार देखो णमोक्कार (सट्ठि १; चैत्य ३०; सण)।

णवकारसी स्त्री [नमस्कारसहित] प्रत्याख्यान-विशेष, व्रत-विशेष (संबोध ५७)।

णवख (अप) वि [नव] अनोखा, नूतन, नया (हे ४, ४२२)। स्त्री °खी (हे ४, ४२०)।

णवणीअ पुंन [नवनीत] नवनू, मक्खन, मसका (कप्प; औप; प्रामा); 'अणलहओव्व नवणीओ' (पउम ११८, २३)।

णवणीइया स्त्री [नवनीतिका] वनस्पति-विशेष (पराण १)।

णवपय न [नवपद] नमस्कार-मन्त्र (सिरि ५७६)।

णवमालिया स्त्री [नवमालिका] पुष्प-प्रधान वनस्पति-विशेष, बसंती नेवारी, नेवार (कप्प)।

णवमिया स्त्री [नवमिका] १ रुचक पर्वत पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८)। २ सत्पुरुष-नामक इन्द्र की एक अग्र-महिषी (ठा ४, १)। ३ शक्रेन्द्र की एक पटरानी (ठा ८)।

णवय देखो णव-ग (पंचा १७, ३०)।

णवय देखो णयय (णाया १, १७)।

णवयार देखो णवकार (पंचा १; पि ३०६)।

णवर सक [कथ्] कहना। कर्म. णवरिजइ (प्राकृ. ७७)।

णवर } अ. १ केवल, सिर्फ फक्त (हे २,१८७; **णवरं** } कुमा; षड् उवा; सुपा ८; जी २७; गा १५)। २ अनन्तर, बाद में (हे २, १८८; प्राप्र)।

णवरंग } पुं [नवरङ्ग, °क] १ नूतन रंग, **णवरंगय** } नया वर्ण (सुर ३, ५२)। २ छन्द-विशेष (पिंग)। ३ कौसुम्भ रंग का वस्त्र (गउड; गा २४१; सुर ३, ५२; पाअ)।

णवरत्ति स्त्री [नवरात्रि] नव दिनों का आश्विन मास का एक पर्व (सट्ठि ७८)।

णवरि अ [दे] शीघ्र, जल्दी, (प्राकृ ८१)।

णवरि } **णवरिअ** } देखो णवर (हे २, १८८; से १, ३६; प्रामा; सुर, २६; षड्; गा १७२)।

णवरिअ न [दे] सहसा, जल्दी, तुरन्त (दे ४, २२; पाअ)।

णवरु देखो णवर (चंड)।

णवलया स्त्री [दे] वह व्रत, जिसमें पति का नाम पूछने पर उसे नहीं बतानेवाली स्त्री पलाश की लता से ताड़ित की जाती है (हे ४, २१)।

णवल्ल देखो णव = नव (हे २, १६५; कुमा; उप ७२८ टी)।

णवसिअ न [दे] उपयाचितक, मनौती (दे ४, २२; पाअ; वज्जा ८६)।

णवा स्त्री [नवा] १ नवोढ़ा, दुलहिन। २ युवति स्त्री (सूअ १, ३, २)। ३ जिसको दीक्षा लिए तीन वर्ष हुए हों ऐसी साध्वी (वव ४)। ४ अ. प्रश्नार्थक अव्यय, अथवा नहीं ? (रयण ६७)।

णवि अ. १ वैपरीत्य-सूचक अव्यय, 'णवि हा वणे' (हे २, १७८; कुमा)। २ निषेधार्थक अव्यय (गउड)।

णविअ देखो णमिअ = नत (हे ३, १५६; भवि)।

णविअ वि [नव्य] नूतन, नया (आचा २, २, ३)।

णवीण वि [नवीन] नूतन, नया (मोह ८३; धर्मवि १३२)।

णवुत्तरसय वि [नवोत्तरशततम] एक सौ नववाँ (पउम १०९, २७)।

णवुल्लडय (अप) देखो णव = नव (कुमा)।

णवोढा स्त्री [नवोढा] नव-विवाहिता स्त्री, दुलहिन (काप्र १६७)।

णवोद्धरण न [दे] उच्छिष्ट, जूठा (दे ४, २३)।

णव्व पुं [दे] आयुक्त, गाँव का मुखिया (दे ४, १७)।

णव्व वि [नव्य] नूतन, नया, नवीन (श्रा २७)।

णव्व° देखो णा = ज्ञा।

णव्वा ल पुं [दे] १ ईश्वर, धनाढ्य, भोगी। २ नियोगी का पुत्र, सूबेदार का लड़का (दे ४, २२)।

णस सक [नि + अस्] स्थापन करना। नसेज्ज (विसे ९४३)। कर्म. नस्सए (विसे ९७०)। संकृ नसिऊण (स ६०८)।

णस अक [नश्] भागना, पलायन करना। णसइ (पिंग)।

णसण न [न्यसन] न्यास, स्थापन (जीव १)।

णसा स्त्री [दे] नस, नाड़ी; 'असुईरसनिज्झरणे हड्डुक्करडम्मि चम्मनसनद्धे' (सुपा ३५५)।

णसिअ वि [नष्ट] नाश-प्राप्त (कुमा)।

णस्स देखो नस = नश्। णस्सइ, णस्सए, (षड्, कुमा)। वकृ. नस्संत, नस्समाण (श्रा १६; सुपा २१५)।

णस्सर वि [नश्वर] विनश्वर, भंगुर, नाश पानेवाला; 'खणनस्सराइं रूवाइं' (सुपा २४३)।

णस्सा स्त्री [नासा] नासिका, घ्राणेन्द्रिय (नाट-मृच्छ ९२)।

णह देखो णक्ख (सम ६०; कुमा)।

णह न [नभस्] १ आकाश, गगन (प्राप्र; हे १, ३२)। २ पुं. श्रावण मास (दे ६, १९)। °**अर** वि [°**चर**] १ आकाश में विचरनेवाला (से १४, ३८)। २ पुं. विद्याधर, आकाश-विहारी मनुष्य (सुर ६, १८६)। °**केउमंडिय** न [°**केतुमण्डित**] विद्याधरों का एक नगर (इक)। °**गमा** स्त्री [°**गमा**] आकाश-गामिनी विद्या (सुर १३, १८६)। °**गामिणी** स्त्री [°**गामिनी**] आकाश-गामिनी विद्या (सुर ३, २८)। °**चर** देखो °अर (उप ५६७ टी)। °**च्छेदणय** न [°**च्छेदनक**] नख उतारने का शस्त्र (आचा २, १, ७, १)। °**तिलय** न [°**तिलक**] १ नगर-विशेष। २ सुभट-विशेष (पउम ५५, १७)। °**वाहण** पुं [°**वाहन**] नृप-विशेष (सुर ६, २६)। °**सिर** न [°**शिरस्**] नख का अग्र भाग (भग ५, ४)। °**सिहा** स्त्री [°**शिखा**] नख का अग्र भाग (कप्प)। °**सेण** पुं [°**सेन**] राजा उग्रसेन का एक पुत्र (राज)। °**हरणी** स्त्री [°**हरणी**] नख उतारने का शस्त्र (बृह ३)।

णहंसि वि [नखवत्] नखवाला (दस ६, ६५)।

णहमुह पुं [दे] घूक, उल्लू (दे ४, २०)।

णहर पुं [नखर] नख, नाखून (सुपा ११; ६०६)।

णहरण पुं [दे] नखी, नखवाला जन्तु, श्वापद (वज्जा १२)।

णहरणी स्त्री [नखहरणी] नहरनी, नख उतारने का शस्त्र (पंचव ३)।

णहराल पुं [नखरिन्] नखवाला श्वापद जंतु (उप ५३० टी)।

णहरी स्त्री [दे] क्षुरिका, छुरी (दे ४, २०)।

णहवल्ली स्त्री [दे] विद्युत्, बिजली (दे ४, २२)।

णहारु न [स्नायु] स्नायु, रग, नस, नाड़ी।

णहि पुं [नखिन्] नख-प्रधान जन्तु, श्वापद जन्तु (अणु)।

णहि वि [नखिन्] ऊपर देखो (अणु १४२)।

णहि अ [नहि] निषेधार्थक अव्यय, नहीं (स्वप्न ४१; पिंग, सण)।

णहु अ [नखलु] ऊपर देखो (नाट—मृच्छ २६१; गाया १, ९)।

णा सक [ज्ञा] जानना, समझना। भवि. णाहिइ (विसे १०१३)। णाहिसि (पि ५३४)। कर्म. णव्वइ, णज्जइ (हे ४, २५२)। कवकृ. णज्जंत, णज्जमाण (से १३, ११; उप १००१ टी)। संकृ. णाउं, णाऊण, णाऊणं, णच्चा, णच्चाणं (महा; पि ५८६; औप; सूअ १, २, ३; पि ५८७)। कृ. णायव्व, णेअ (भग, जी ६; सुर ४, ७०; दं २; हे २, १९३; नव ३१)।

णा अ [न] निषेध-सूचक अव्यय (गउड)।

णाअअ } **णाअक** } देखो णायग (प्राकृ २६)।

णाअक (अप) देखो णायग (पिंग)।

णाइ पुं [ज्ञाति] इक्ष्वाकु वंश में उत्पन्न क्षत्रिय-विशेष। °**पुत्त** पुं [°**पुत्र**] भगवान् श्री महावीर (आचा)। °**सुय** पुं [°**सुत**] भगवान् श्री महावीर (आचा)।

णाइ स्त्री [ज्ञाति] १ नात, समान जाति (पउम १००, ११; औप; उवा)। २ माता-पिता आदि स्वजन, सगा (णाया १, १)। ३ ज्ञान, बोध (आचा; ठा ५, ३)।

णाइ (अप) देखो इव (कुमा)।

णाइ (अप) नीचे देखो (भवि)।

णाइं देखो ण = न (हे २, १९०; उवा)।

णाइणी (अप) स्त्री [नागी] नागिन, सर्पिणी (भवि)।

णाइत्त } पुं [दे] जहाज द्वारा व्यापार करनेवाला सौदागर (उप पृ १०१, उप ५६२)।
णाइत्तग }

णाइय वि [नादित] १ उक्त, कथित, पुकारा हुआ (णाया १, १; औप)। २ न. आवाज, शब्द (णाया १, १)। ३ प्रतिशब्द, प्रतिध्वनि (राय)।

णाइल पुं [नागिल] १ स्वनाम-ख्यात एक जैन मुनि (कप्प)। २ जैन मुनियों का एक वंश (पउम ११८, ११७)। ३ एक श्रेष्ठी (महानि ४)।

णाइला } स्त्री [नागिला] जैन मुनियों की एक शाखा (कप्प)।
णाइली }

णाइल्ल देखो णाइल (विचार ५३४)।

णाइव वि [ज्ञातिमत्] स्वजन-युक्त, नातेदार (उत्त ४)।

णाउ वि [ज्ञातृ] जानकार, जाननेवाला (द्र ६)।

णाउड्ड पुं [दे] १ सद्भाव, सन्निष्ठा। २ अभिप्राय। ३ मनोरथ, वाञ्छा (दे ४, ४७)।

णाउल्ल वि [दे] गोमान्, जिसके पास अनेक गैया हों (दे ४, २३)।

णाउं }
णाऊण } देखो णा = ज्ञा।
णाऊणं }

णाग पुंन [नाक] स्वर्ग, देवलोक (उप ७१२)।

णाग पुं [नाग] १ सर्प, साँप (पउम ८, १७८)। २ भवनपति देवों की एक अवान्तर जाति, नाग-कुमार देव (णंदि)। ३ हस्ती, हाथी (औप)। ४ वृक्ष-विशेष (कप्प)। ५ स्वनाम-ख्यात एक गृहस्थ (अंत ४)। ६ एक प्रसिद्ध वंश। ७ नाग-वंश में उत्पन्न (राज)। ८ एक जैन आचार्य (कप्प)। ९ स्वनाम-ख्यात एक द्वीप। १० एक समुद्र (सुज्ज १९)। ११ वक्षस्कार-पर्वत विशेष (ठा २, ३)। १२ न. ज्योतिष-प्रसिद्ध एक स्थिर करण (विसे ३३५०)। °**कुमार** पुं [°कुमार] भवनपति देवों की एक अवान्तर जाति (सम ६६)। °**केसर** पुं [°केसर] पुष्प-प्रधान वनस्पति-विशेष (राज)। °**ग्गह** पुं [°ग्रह] नाग देवता के आवेश से उत्पन्न ज्वर आदि (जीव ३)। °**जण्ण**, °**जन्न** पुं [°यज्ञ] नाग पूजा, नाग देवता का उत्सव (णाया १, ८)। °**ज्जुण** पुं [°र्जुन] एक स्वनाम-ख्यात जैन आचार्य (णंदि)। °**दंत** पुं [°दन्त] खूँटी (जीव ३)। °**दत्त** पुं [°दत्त] १ एक स्वनाम-ख्यात राज-पुत्र (ठा ३, ४; सुपा ५३५)। २ एक श्रेष्ठि-पुत्र (आक)। °**पइ** पुं [°पति] नाग कुमार देवों का राजा, नागेन्द्र (औप)। °**पुर** न [°पुर] नगर-विशेष (पउम २०, १०)। °**बाण** पुं [°बाण] दिव्य अस्त्र-विशेष (जीव ३)। °**भद्द** पुं [°भद्र] नाग द्वीप का अधिष्ठाता देव (सुज्ज १९)। °**भूय** न [°भूत] जैन मुनियों का एक कुल (कप्प)। °**महाभद्द** पुं [°महाभद्र] नागद्वीप का एक अधिष्ठायक देव (सुज्ज १९)। °**महावर** पुं [°महावर] नाग समुद्र का अधिपति देव (सुज्ज १९; इक)। °**मित्त** पुं [°मित्र] स्वनाम-ख्यात एक जैन मुनि, जो आर्य महागिरि के शिष्य थे (कप्प)। °**राय** पुं [°राज] नागकुमार देवों का स्वामी, इन्द्र-विशेष (पउम ३, १४७)। °**रुक्ख** पुं [°वृक्ष] वृक्ष-विशेष (ठा ८)। °**लया** स्त्री [°लता] वल्ली-विशेष, ताम्बूली लता (पण्ण १)। °**वर** पुं [°वर] १ श्रेष्ठ सर्प। २ उत्तम हाथी (औप)। ३ नाग समुद्र का अधिपति देव (सुज्ज १९)। °**वल्ली** स्त्री [°वल्ली] लता-विशेष (सण)। °**सिरी** स्त्री [°श्री] द्रौपदी के पूर्व जन्म का नाम (उप ६४८ टी)। °**सुहुम** न [°सूक्ष्म] एक जैनेतर शास्त्र (अणु)। °**सेण** पुं [°सेन] एक स्वनाम ख्यात गृहस्थ (आवम)। °**हत्थि** पुं [°हस्तिन्] एक प्राचीन जैन ऋषि (णंदि)।

णागणिय न [नाग्न्य] नग्नता, नंगापन (सूअ १, ७)।

णागदत्ता स्त्री [नागदत्ता] चौदहवें जिनदेव की दीक्षा-शिविका (विचार १२९)।

णागपरियावणिया स्त्री [नागपरियापनिका] एक जैन शास्त्र (णंदि २०२)।

णागर वि [नागर] १ नगर-सम्बन्धी। २ नगर का निवासी, नागरिक (सुर ३, ६६; महा)।

णागरिअ पुं [नागरिक] नगर का रहनेवाला (रंभा)।

णागरिआ स्त्री [नागरिका] नगर में रहनेवाली स्त्री (महा)।

णागरी स्त्री [नागरी] १ नगर में रहनेवाली स्त्री। २ लिपि विशेष, हिन्दी लिपि (विसे ४६४ टी)।

णागिंद पुं [नागेन्द्र] १ नाग देवों का इन्द्र। २ शेषनाग (सुपा ७७; ६३६)।

णागिणी स्त्री [नागी] १ नागिन। २ एक वणिक्-पुत्री (कुप्र ४०८)।

णागिल देखो णाइल (राज)।

णागी स्त्री [नागी] नागिन, सर्पिणी (आव ४)।

णागेंद देखो णागिंद (णाया १, ८)।

णागोद पुं [नागोद] एक समुद्र (सुज्ज १९)।

णाड देखो णट्ट = नाट्य (णाया १, १ टी—पत्र ४३)।

णाडइज्ज वि [नाटकीय] नाटक-सम्बन्धी, नाटक में भाग लेनेवाला पात्र (णाया १, १; कप्प)।

णाडइणी स्त्री [नाटकिनी] १ नर्तकी, नाचनेवाली स्त्री (बृह ३)।

णाडग } न [नाटक] १ नाटक, अभिनय, नाट्य-क्रिया (बृह १; सुपा १,३५९, सार्ध ६५)। २ रंग-शाला में खेलने में उपयुक्त काव्य (हे ४, २७०)।
णाडय }

णाडाल देखो णडाल (गउड)।

णाडि स्त्री [नाडि] १ रज्जु, वरत्रा। २ नाड़ी, नस, सिरा (कुमा)।

णाडी स्त्री [नाडी] ऊपर देखो (हे १, २०२)।

णाडीअ पुं [नाडीक] वनस्पति-विशेष (भग १०, ७)।

णाण न [ज्ञान] ज्ञान, बोध, चैतन्य, बुद्धि (भग ८, २; हे २, ४२; कुमा; प्रासू २८)। °**धर** वि [°धर] ज्ञानी, जानकार, विद्वान् (सुपा ५०८)। °**प्पवाय** न [°प्रवाद]

जैन ग्रन्थांश-विशेष, पाँचवाँ पूर्व (सम २६)। °मायार देखो °यार (पडि)। °व, वंत वि [°वत्] ज्ञानी, विद्वान् (पि ३४८; आचा; अच्चु ४६)। °वि वि [°विद्] ज्ञान-वेत्ता (आचा)। °यार पुं [°चार] ज्ञान-विषयक शास्त्रोक्त विधि (राज)। °वरण न [°वरण] ज्ञान का आच्छादक कर्म (धण ४४)। °वरणिज्ज न [°वरणीय] अनन्तर उक्त अर्थ (सम ६६; औप)।

णाणक } न [दे] सिक्का, मुद्रा (मृच्छ १७; णाणग } राज)।

णाणत न [नानात्व] भेद, विशेष, अन्तर (ओघ ६१८)।

णाणता स्त्री [नानाता] ऊपर देखो (विसे २१६१)।

णाणा अ [नाना] अनेक, जुदा-जुदा (उवा; भग; सुर १, ८६)। °विह वि [°विध] अनेक प्रकार का, विविध (जीव ३; सुर ४, २४५; दं १३)।

णाणि वि [ज्ञानिन्] ज्ञानी, जानकार, विद्वान् (आचा; उव)।

णादिय देखो णाइय (कप्प)।

णाभि पुं [नाभि] १ स्वनाम-ख्यात एक कुलकर पुरुष, भगवान् ऋषभदेव का पिता (सम १५०)। २ पेट का मध्य भाग। ३ गाड़ी का एक अवयव (दस ७)। °नंदण पुं [°नन्दन] भगवान् ऋषभदेव (पउम ४, ६८)।

णाम सक [नमय्] १ नमाना, नीचा करना। २ उपस्थित करना। ३ अर्पण करना। णामेइ (हेका ४६)। वकृ. णामयंत (विसे २६६०)। संकृ. णामित्ता (निचू १)।

णाम पुं [नाम] १ परिणाम, भाव (भग २५, ५)। २ नमन (विसे २१७६)।

णाम अ [नाम] संभावना-सूचक अव्यय (सूअ १, १२, ३)।

णाम अ [नाम] इन अर्थों का सूचक अव्यय—संभावना (से ५, ४)। २ आमन्त्रण, संबोधन (बृह ३; जं १)। ३ प्रसिद्धि, ख्याति (कप्प)। ४ अनुज्ञा, अनुमति (विसे)। ५—६ वाक्यालंकार पाद-पूर्ति में भी इसका प्रयोग होता है (ठा ४, १; राज)।

णाम न [नामन्] नाम, आख्या, अभिधान (विपा १, १; विसे २५)। °कम्म न [°कर्मन्] कर्म-विशेष, विचित्र परिणाम का कारण-भूत कर्म (स ६७)। °धिज्ज, °धेज्ज °धेय न [°धेय] नाम, आख्या (कप्प; सम ७१; पउम ४, ८०)। °पुर न [°पुर] एक विद्याधर-नगर (इक)। °मुद्दा स्त्री [°मुद्रा] नाम से अंकित मुद्रा (पउम ५, ३२)। °सच्च वि [°सत्य] नाम-मात्र से सत्य, नाम-धारी (ठा १०)। °हेअ देखो °धेय (पउम २०, १७६; स्वप्न ४३)।

णामण न [नमन] नमाना, नीचा करना (विसे ३००८)।

णाममंतक्ख पुं [दे] अपराध, गुनाह (गउड)।

णामागोत्त न [नामगोत्र] १ यथार्थ नाम। २ नाम तथा गोत्र (सुज्ज १६)।

णामिय वि [नमित] नमाया हुआ (सार्ध ८०)।

णामिय न [नामिक] वाचक शब्द, पद (विसे १००३)।

णामुक्कसिअ } न [दे] कार्य, काम, काज णामोक्कसिअ } (हे २, १७४; दे ४, २५)।

णाय वि [दे] गर्विष्ठ, अभिमानी (दे ४, २३)।

णाय देखो णाग (काप्र ७७७; कप्पू; औप; गउड; वज्जा १४; सुपा ६३६; पउम २१, ४६)।

णाय पुं [नाद] शब्द, आवाज, ध्वनि (औप; पउम २२, ३८; स २१३)।

णाय पुं [न्याय] १ अक्षपाद—प्रणीत न्याय-शास्त्र (सुख ३, १; धर्मवि ३८)। २ सामयिक आदि षट्-कर्म (अणु ३१)।

णाय पुं [नाद] अनुनासिक वर्ण, अर्धचन्द्राकार अक्षर-विशेष (सिरि १६६)।

णाय वि [न्याय्य] न्याय-युक्त (सूअ १, १३, ६)।

णाय पुं [न्याय] १ न्याय, नीति (औप; स १५६; आचा)। २ उपपत्ति, प्रमाण (पंचा ४; विसे)। °कारि वि [°कारिन्] न्याय-कर्ता (आचू १)। °गर वि [°कर] १ न्याय-कर्ता। पुं. न्यायाधीश (श्रा १४)। °ण्ण वि [°ज्ञ] न्याय का जानकार (उप ३४६)।

णाय पुं [नाक] स्वर्ग, देव-लोक (पाअ)।

णाय पुं [ज्ञात] १ भगवान् महावीर (सूअ १, २, २, ३१)। २ वि. प्रसिद्ध (सूअ १, ६, २१)।

णाय वि [ज्ञात] १ जाना हुआ, विदित (उव; सुर २, ३६)। २ ज्ञाति संबन्धी, सगा, एक बिरादरी का (कप्प; आउ ६)। ३ वंश-विशेष में उत्पन्न (औप)। ४ पुं. वंश-विशेष (ठा ६)। ५ क्षत्रिय-विशेष (सूअ १, ६; कप्प)। ६ न. उदाहरण, दृष्टान्त (उव; सुपा १२८)। °कुमार पुं [°कुमार] ज्ञात-वंशीय राज-पुत्र (णाया १, ८)। °कुल न [°कुल] वंश-विशेष (पण्ह १, ३)। °कुल-चंद पुं [°कुलचन्द्र] भगवान् श्री महावीर (आचा)। °कुलनंदण पुं [°कुलनन्दन] भगवान् श्री महावीर (पण्ह १, १)। °पुत्त पुं [°पुत्र] भगवान् श्री महावीर (आचा)। °मुणि पुं [°मुनि] भगवान् श्री महावीर (पण्ह २, १)। °विहि पुंस्त्री [°विधि] माता या पिता के द्वारा संबन्ध, संबन्धिपन (वव ६)। °संड न [°षण्ड] उद्यान-विशेष, जहाँ भगवान् श्रीमहावीर देव ने दीक्षा ली थी (आचा २, ३, १)। °सुय पुं [°सुत] भगवान् श्रीमहावीर। °सुय न [°श्रुत] 'ज्ञाताधर्मकथा' नामक जैन आगम-ग्रन्थ (णाया २, १)। °धम्मकहा स्त्री [°धर्मकथा] जैन आगम-ग्रंथ-विशेष (सम १)।

णायग पुं [नायक] हार के बीच की मणि, सुमेरु (स ६८६)।

णायग पुं [नायक] नेता, मुखिया, अगुआ (उप ६४८ टी; कप्प; सम १; सुपा २२)।

णायत्त पुं [दे] समुद्र मार्ग से व्यापार करने-वाला वणिक्, 'पवहणवाणिज्जपरा सुहंकरा आसि नाम नायत्ता' (उप ५६७ टी)।

णायर देखो णागर (महा; सुपा १८८)।

णायरिय देखो णागरिय (सुर १४, १३३)। स्त्री. °या (भवि)।

णायरी देखो णागरी (भवि)।

णायव्व देखो णा = ज्ञा।

णार पुं [नार] चतुर्थ नरक-पृथिवी का एक प्रस्तर (इक)।

णारइअ वि [नारकिक] १ नरक पृथिवी में उत्पन्न, नारकी। २ पुं. नरक का जीव (हे १, ७९)।

णारंग पुं [नारङ्ग] १ वृक्ष-विशेष, संतरे का वृक्ष। २ न. फल-विशेष, कमला नीबू, संतरा (पउम ४१, ६; सुपा २३०; ५६३; गउड; कुमा)।

णारग देखो णारय = नारक (विसे १६००)।

णारद देखो णारय (प्रयौ ५१)।

णारदीअ वि [नारदीय] नारद-सम्बन्धी, नारद का (प्रयौ ५१)।

णारय पुं [नारद] १ मुनि-विशेष, नारद ऋषि (सम १५४ उप ६४८ टी)। २ गन्धर्व सैन्य का अधिपति देव-विशेष (ठा ७)।

णारय वि [नारक] १ नरक में उत्पन्न, नरक-संबन्धी, नरक का; 'जायए नारयं दुक्खं' (सुपा १६२)। २ पुं. नरक में उत्पन्न प्राणी, नरक का जीव (भग)।

णारसिंह वि [नारसिंह] नरसिंह-सम्बन्धी (उप ६४८ टी)।

णाराय पुं [नाराच] तौलने की छोटी तराजू, काँटा; 'नाराय निरक्खर लोहवंत दोमुह य तुज्झ किं भणिमो। गुंजाए समं कणयं तोलंतो कह न लज्जे सि?' (वज्जा १५८; १५६)।

णाराय देखो णराअ (हे १, ६७; उवा; सम १४६; अजि १४)। तुला, गु० ताजूडी (पुष्पमाला ४६, ८६)। °वज्ज न [°वज्र] संहनन-विशेष (पउम ३, १०६)।

णारायण पुं [नारायण] १ विष्णु, श्रीकृष्ण (कुमा; स ६२२)। २ अर्ध-चक्रवर्त्ती राजा (पउम ५, १२२; ७३, २०)।

णारायण पुं [नारायण] एक ऋषि (सूअ १, ३, ४, २)।

णारायणी स्त्री [नारायणी] देवी-विशेष, गौरी, दुर्गा (गउड)।

णारि° देखो णारी (कप्प; राज)। °कंता स्त्री [°कान्ता] नदी-विशेष (सम २७; ठा २, ३)।

णारिएर } पुं [नारिकेल] १ नारियल का
णारिएल } पेड़। २ न. नारियल या नरियर का फल (अभि १२७; पि १२८)। देखो णालिअर।

णारिंग न [नारिङ्ग] नारंगी का फल, मीठा नीबू, कमला नीबू (कप्पू)।

णारी स्त्री [नारी] १ स्त्री, औरत, जनाना, महिला (हेका २२८; प्रासू ६२; १५६)। २ नदी-विशेष (इक)। °कंतप्पवाय पुं [°कान्ताप्रपात] द्रह-विशेष (ठा २, ३)। देखो णारि°।

णारुट्ट पुं [दे] कूसार, गर्त्ताकार स्थान (पाअ)।

णारोट्ट पुं [दे] १ बिल, साँप आदि का रहने का स्थान, विवर। २ कूसार, गर्त्ताकार स्थान (दे ४, २३)।

णाल न [नाल] १ कमल-दण्ड (से १, २८)। २ गर्भ का आवरण (उप ६७४)।

णालंदइज्ज वि [नालन्दीय] १ नालन्दा-संबन्धी। न. नालंदा के समीप में प्रतिपादित अध्ययन-विशेष, 'सूत्रकृतांग' सूत्र का सातवाँ अध्ययन (सूअ २, ७)।

णालंदा स्त्री [नालन्दा] राजगृह नगर का एक मुहल्ला (कप्प; सूअ २, ७)।

णालंपिअ न [दे] आक्रन्दित, आक्रन्द-ध्वनि (दे ४, २४)।

णालंबि पुं [दे] कुन्तल, केश कलाप (दे ४, २४)।

णालय न [नालक] द्यूत-विशेष (मोह ८६)।

णाला } स्त्री [नाडि] नाड़ी, नस, सिरा (से १,
णालि } २८; कुमा)।

णालि स्त्री [नालि] परिमाण-विशेष, अंजली (श्रावक ३५)।

णालि वि [दे] स्रस्त, गिरा हुआ (षड्)।

णालिअ वि [दे] मूढ़, मूर्ख, अज्ञान (से ४, ४२२)।

णालिअर देखो णारिएर (दे २, १०; पउम १, २०)। °दीव पुं [°द्वीप] द्वीप-विशेष (कम्म १, १६)।

णालिआ } स्त्री [नालिका] १ नाल, डंडी,
णालिगा } कमल की डंडी (दस ५, २, १८)। २ परिमाण-विशेष, दंड, धनुष (अणु १५७)। ३ अर्ध मुहूर्त का समय; 'दो नालिया मुहुत्तो' (तंदु ३२)। ४ नली; 'जह उ किर नालिगाए धणियं मिदुरूयपोम्हभरियाए' (धर्मसं ६८०)। °खेड्ड न [°खेल] द्यूत-विशेष (जं २ टी—पत्र १३६)।

णालिआ स्त्री [नालिका] १ वल्ली-विशेष (दे २, ३)। २ घटिका, घड़ी, काल नापने का एक तरह का यन्त्र (पाअ; विसे ६२७)। ३ अपने शरीर से चार अंगुल लम्बी लाठी (ओघ ३६)। ४ द्यूत-विशेष, एक तरह का जुआ (औप; भग ६, ७)। °खेड्डा स्त्री [°क्रीडा] एक तरह की द्यूत-क्रीड़ा (औप)।

णालिएर देखो णारिएर (णाया १, ६)।

णालिएरी स्त्री [नारिकेली] नरियर का गाछ (गउड; पि १२६)।

णाली स्त्री [नाली] १ वनस्पति-विशेष, एक लता (पण्ण १)। २ घटिका, घड़ी (जीव ३)।

णाली स्त्री [नाली] १ द्यूत-विशेष (दस ३, ४)। २ तीन हाथ और सोलह अंगुल लंबी लट्ठी या लग्गी (बाँस) (पव ८१)।

णाली स्त्री [नाडी] नाड़ी, नस, सिरा (विपा १, १)।

णालीय वि [नालीय] नाल-संबन्धी (आचा)।

णालीया देखो णालिआ (सूअ १, ६, १८)।

णावइ (अप) देखो इव (हे ४, ४४४; भवि)।

णावण न [दे] दान, वितरण (पण्ह १, ३—पत्र ५३)।

णावा स्त्री [दे] प्रसृति, अंजली, परिमाण-विशेष (पव १०६ टी)।

णावा स्त्री [नौ] नौका, जहाज, नाव (भग; उवा)। °वाणिय पुं [°वाणिज] समुद्र मार्ग से व्यापार करनेवाला वणिक् (णाया १, ८)।

णावापूरय पुं [दे] चुलुक, चुल्लू; 'तिहि णावापूरएहिं आयामइ' (बृह १)।

णाविअ पुं [नापित] नाई, हजाम (हे १, २३०; कुमा; षड्)। °साला स्त्री [°शाला] नाइयों का अड्डा (श्रा १२)।

णाविअ पुं [नाविक] जहाज चलानेवाला, नौका या नाव हाँकनेवाला, मल्लाह, केवट, माँझी (णाया १, ६; सुर १३, ३१)।

णास देखो णस्स। णासइ (षड्; महा)। वकृ. णासंत (सुर १, २०२; २, २५)। कृ. णासियव्व (सुर ७, १२६)।

णास सक [नाशय्] नाश करना। णासइ (हे ४, ३१)। णासइ (महा; उव)।

णास पुं [नाश] नाश, ध्वंस (प्रासू १५३; पाअ)। °यर वि [°कर] नाश-कारक (सुर १२, १६४)।

णास पुं [न्यास] १ स्थापन (गा ६६; उप ३०२)। २ धरोहर या अमानत, रखने योग्य धन आदि (उप ७६८ टी; धर्म २)।

णासग वि [नाशक] नाश करनेवाला (सुर २, ५८)।

णासण न [नाशन] १ पलायन, अपक्रमण भागना (धर्म २)। २ वि. नाश करनेवाला (से ३,२७; गण २२)। स्त्री. °णी (से ३, २७)।

णासण न [न्यासन] स्थापन, रखना, व्यवस्थापन (अणु)।

णासणा स्त्री [नासना] विनाश (विसे ६३६)।

णासव सक [नाशय्] नाश करना। णासवइ (हे ४, ३१)।

णासविय वि [नाशित] नष्ट किया हुआ, भगाया हुआ (उप ३५७ टी; कुमा)।

णासा स्त्री [नासा] नाक, घ्राणेन्द्रिय (गा २२; आचा; कुपा)।

णासि वि [नाशिन्] विनश्वर, नष्ट होनेवाला (विसे १६८१)।

णासिक देखो णासिक्क (णंदि १६५)।

णासिक्क न [नासिक्य] दक्षिण भारत का एक स्वनाम-प्रसिद्ध नगर, जो आजकल भी 'नासिक' नाम से प्रसिद्ध है, जहाँ शूपर्णखा की नाक कटी थी; पंचवटी (उप पृ २१३; १४१ टी)।

णासिगा स्त्री [नासिका] नाक, घ्राणेन्द्रिय (महा)।

णासिय वि [नाशित] नष्ट किया हुआ (महा)।

णासियव्व देखो णास = नश्।

णासिर वि [नशितृ] नष्ट होनेवाला, विनश्वर (कुमा)।

णासीकय वि [न्यासीकृत] धरोहर या अमानत रूप से रखा हुआ (श्रा १४)।

णासेक्क देखो णासिक्क (उप १४१)।

णाह पुं [नाथ] स्वामी, मालिक (कुमा; प्रासू १२; ६६)।

णाहड पुं [नाहट] एक राजा का नाम (ती १५)।

णाहल पुं [लाहल] म्लेच्छ की एक जाति (हे १, २५६; कुमा)।

णाहि देखो णाभि (कुमा; कप्पू)। °रुह पुं [°रुह] ब्रह्मा, चतुर्मुख (अच्चु ३६)।

णाहिं (अप) अ [नहि] नहीं, नाहीं (हे ४, ४१६; कुमा; भवि)।

णाहिणाम न [दे] वितान के बीच की रस्सी (दे ४, २४)।

णाहिय वि [नास्तिक] १ परलोक आदि को नहीं माननेवाला। २ पुं. नास्तिक मत का प्रवर्त्तक। °वाइ, °वादि वि [°वादिन्] नास्तिक मत का अनुयायी (सुर ६, २०; स १६४)। °वाय पुं [°वाद] नास्तिक-दर्शन (गच्छ २)।

णाहिविच्छेअ } पुं [दे] जघन, कटी के
णाहीए-विच्छेअ } नीच का भाग (दे ४; २४)।

णि अ [नि] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ निश्चय (उत्त १)। २ नियतपन, नियम (ठा १०)। ३ आधिक्य, अतिशय (उत्त १; विपा १, ६)। ४ अधोभाग, नीचे (सण)। ५ नित्यपन। ६ संशय। ७ आदर। ८ उपरम, विराम। ९ अन्तर्भाव, समावेश। १० समीपता, निकटता। ११ क्षेप, निन्दा। १२ बन्धन। १३ निषेध। १४ दान। १५ राशि, समूह। १६ मुक्ति, मोक्ष (हे २, २१७; २१८)। १७ अभिमुखता, संमुखता (सूअ १, ६)। १८ अल्पता, लघुता (पण्ह १, ४)।

णि अ [निर्] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ निश्चय (उत्त ६)। २ आधिक्य, अतिशय। (उत्त १)। ३ प्रतिषेध, निषेध (सम १३७; सुपा १६८)। ४ बहिर्भाव। ५ निर्गमन, निष्क्रमण (ठा ३, १; सुपा १३)।

णिअ सक [दृश्] देखना। णिअइ (षड्; हे ४, १८१)। वकृ. णिअंत (कुमा; महा; सुपा २६६)। संकृ. निएउं (भवि)।

णिअ वि [निज] आत्मीय, स्वकीय (गा १५०; कुमा; सुपा ११)।

णिअ वि [नीत] ले जाया गया (से ५, ६; सण)।

णिअ वि [नीच] नीच, जघन्य, निकृष्ट (कम्म ३, ३)।

णिअ देखो णिच (सूअ २, ६, ४५)।

णिअइ स्त्री [निकृति] माया, कपट, छल, धोखा (पण्ह १, २)।

णिअइ स्त्री [नियति] १ नियतपन, भवितव्यता, होनी, भाग्य, नियमितता (सूअ १, १, ३)। २ अवश्यं-भाविता (ठा ४, ४; सूअ १, १, २)। °पव्वय पुं [°पर्वत] पर्वत-विशेष (जीव ३)। °वाइ वि [°वादिन्] 'सब कुछ भवितव्यता के अनुसार ही हुआ करता है, प्रयत्न वगैरह अकिञ्चित्कर हैं' ऐसा माननेवाला, भाग्यवादी या दैववादी (राज)।

णिअंटिअ वि [नियन्त्रित] १ नियमित। २ न. प्रत्याख्यान-विशेष, हृष्ट से या रोगी से अमुक दिन में अमुक तप करने का किया हुआ नियम (पव ४)।

णिअंटिय वि [नियन्त्रित] १ बँधा हुआ, जकड़ा हुआ। २ न. अवश्य-कर्त्तव्य नियम-विशेष (ठा १०)।

णिअंठ वि [निर्ग्रन्थ] १ धन रहित। २ पुं. जैनमुनि, संयत, यति (भग; ठा ३, १; ५, ३)। ३ जिन भगवान् (सूअ १, ६)।

णिअंठ पुं [निर्ग्रन्थ] भगवान् बुद्ध (कुप्र ४४२)।

णिअंठि देखो °णिग्गंथी। °पुत्त पुं [°पुत्र] १ एक विद्याधर-पुत्र, जिसका दूसरा नाम सत्यकि था (ठा १०)। २ एक जैनमुनि, जो भगवान् महावीर का शिष्य था (भग ५, ८)।

णिअंठिय वि [नैर्ग्रन्थिक] १ निर्ग्रन्थ-संबन्धी। २ जिन देव-संबन्धी। स्त्री. °या; 'एसा आणा णियंठिया' (सूअ १, ६)।

णिअंठी देखो णिग्गंथी (ठा ६)।

णिअंत वि [नियत] स्थिर (सूअ १, ८, १२)।

णिअंत वि [निर्यत्] बाहर निकलता (सम्मत्त १५६)।

णिअंतिय वि [नियन्त्रित] संयमित, जकड़ा हुआ, बँधा हुआ (महा; सण)।

णिअंधण न [दे] वस्त्र, कपड़ा (दे ४, २८)।

णिअंब पुं [नितम्ब] १ पर्वत का एक भाग, पर्वत का वर्सात-स्थान (ओघ ४०)। २ स्त्री की कमर का पीछला भाग, कमर के नीचे का भाग, चूतड़ (कुमा; गउड)। ३ मूल भाग (से ८,१०१)। ४ कटी-प्रदेश, कमर (जं ४)।

णिअंबिणी स्त्री [नितम्बिनी] १ सुन्दर नितम्बवाली स्त्री। २ स्त्री, महिला (कप्पू; पाअ; सुपा ५३८)।

णिअंस सक [नि + वस्] पहनना। णियंसइ (महा)। संकृ. णियंसित्ता (जीव ३; पि ७४)। प्रयो. णियंसावेइ (पि ७४)।

णिअंसण न [दे. निवसन] वस्त्र, कपड़ा (दे ४, ३८; गा ३५१; पाअ; गउड; पराह १, ३; सुपा १५१; हेका ३१)।

णअंसणि स्त्री [निवसनी] वस्त्र, कपड़ा (पव ६२)।

णिअक्क सक [दृश्] देखना। णिअक्कइ (प्राप्र)।

णिअक्कल वि [दे] वर्तुल, गोलाकार पदार्थ (दे ४, ३६; पाअ)।

णिअग वि [निजक] आत्मीय, स्वकीय (उवा)।

णिअच्छ सक [दृश्] देखना। णिअच्छइ (हे ४, १८१)। वकृ. णिअच्छंत, णिअच्छमाण (गा २३८; गउड; गा ५००)। संकृ. णिअच्छिऊण, णिअच्छिअ (सुर १, १५७; कुमा)। कृ. णिअच्छियव्व (गउड)।

णिअच्छ सक [नि + यम्] १ नियमन करना, नियन्त्रण करना। २ अवश्य प्राप्त करना। ३ जोड़ना। संकृ. णिअच्छइत्ता (सूअ १, १, १; २)।

णिअच्छ अक [नि + गम्] १ संगत होना, युक्त होना। २ सक. अवश्य प्राप्त करना। नियच्छइ (सूअ १, १, १, १०; १, १, २, १७; १, १, २, १८)।

णिअच्छिअ वि [दृष्ट] देखा हुआ (पाअ)।

णिअट्ट अक [नि + वृत्] निवृत्त होना, पीछे हटना, रुकना। णिअट्टइ (सरण)। वकृ. णियट्टमाण (आचा)।

णिअट्ट सक [निर् + वृत्] बनाना, रचना, निर्माण करना (औप)।

णिअट्ट सक [नि + अर्द्] अनुसरण करना (औप)।

णिअट्ट पुं [निवर्त्त] व्यावर्तन, निवृत्ति; 'अणियट्टगामीणं' (आचा)।

णिअट्ट वि [निवृत्त] व्यावृत्त, पीछे हटा हुआ (धर्म २)।

णिअट्टि वि [निवर्त्तिन्] निवृत्त होनेवाला (धर्मसं ७६४)।

णिअट्टि स्त्री [निवृत्ति] १ निवर्त्तन, पीछे हटना (आचू १)। २ अध्यवसाय-विशेष (सम २६)। ३ मोह-रहित अवस्था (सूअ १, ११)। °बायर न [°बादर] १ गुरण-स्थानक-विशेष (सम २६)। २ पुं. गुरण-स्थानक-विशेष में वर्तमान जीव (आव ४)।

णिअट्टिय वि [निवर्त्तित] व्यावर्तित, पीछे हटाया हुआ (औप)।

णिअट्टिय वि [निर्वर्तित] रचित, निर्मित, बनाया हुआ (औप)।

णिअट्टिय वि [न्यर्दित] अनुगत, अनुसृत (औप)।

णिअड न [निकट] १ निकट, समीप, नजदीक, पास (गा ४०२; पाअ; सुपा ३५२)। २ वि. पास का, समीप का (पाअ)।

णिअडि वि [निकृतिन्] मायावी, कपटी (दस ६, २३)।

णिअडि स्त्री [निकृति] की हुई ठगाई को ढकना—छिपाना (राय ११४)।

णिअडि स्त्री [दे. निकृति] माया, कपट (दे ४, २६; पराह १, २; सम ५१; भग १२, ५; सूअ २, २; णाया १, १८; आव ५)।

णिअडिअ वि [निगडित] नियन्त्रित, जकड़ा हुआ (गा ५५६; उप पृ ५२; सुपा ६३)।

णिअडिअ वि [निकटिक] समीप-वर्त्ती, पार्श्व में स्थित (कप्पू)।

णिअडिल्ल वि [निकृतिमत्] कपटी, मायावी (ठा ४, ४; औप; भग ८, ६)।

णिअड्ढ सक [नि + कृष्] खींचना। संकृ. नियड्ढिऊणं (सम्मत्त २२७)।

णिअण वि [नग्न] नंगा, वस्त्र-रहित (पव २७१)।

णिअत्त वि [निकृत्त] काटा हुआ, छिन्न (भग ६, ३३)।

णिअत्त वि [नित्य] शाश्वत, अविनश्वर; 'सुक्खं जमनियत्तं' (तंदु ३३; सूअ १, १, १, १६)।

णिअत्त देखो णिअट्ट = नि + वृत्। णिअत्तइ (महा; पि २८६)। वकृ. णिअत्तंत, णिअत्तमाण (गा ७६, ५३७; से ५, ६७; नाट)। प्रयो. णिअत्तावेहि (पि २८६)।

णिअत्त देखो णिअट्ट = निवृत्त (पउम २२, ६२; गा ६५८; सुपा ३१७)।

णिअत्तण न [निवर्त्तन] १ भूमि का एक नाप (उवा)। २ निवृत्ति, व्यावर्तन (आव ४)।

णिअत्तणिय वि [निवर्त्तनिक] निवर्त्तन परिमाणवाला (भग ३, १)।

णिअत्ति देखो णिअट्टि (उत्त ३१)।

णिअत्थ वि [दे] १ परिहित, पहना हुआ (दे ४, ३३; आवम; भवि)। २ परिधापित, जिसको वस्त्र आदि पहनाया गया हो वह; 'णियत्था तो गणिआए' (विसे २६०७)।

णिअद सक [नि + गद्] कहना, बोलना। णिअददि (शौ) (नाट—चैत ४५)। वकृ. णिअदंत (नाट)।

णिअद्दिय देखो णिअट्टिय = न्यर्दित (राज)।

णिअद्धण न [दे] परिधान, पहनने का वस्त्र (षड्)।

णिअम सक [नि + यमय्] नियन्त्रित करना, नियम में रखना। संकृ. णिअमेऊण (पि ५८६)।

णिअम सक [नि + यमय्] १ रोकना। २ वचन से कराना। ३ शरीर से कराना। निअमे (आचा २, १३, १)।

णिअम पुं [नियम] १ निश्चय (जी १४)। २ ली हुई प्रतिज्ञा, व्रत; 'परिवाविज्जइ णिअमा णिअमसमत्ती तुमे मज्झ' (उप ७२८ टी)। ३ प्रायोपवेशन, संकल्प-पूर्वक अनशन-मरण के लिए उद्यम (से ५, २)। °सा अ [°सात्] नियम से (औप)। °सो अ [°शस्] निश्चय से (श्रा १४)।

णिअमण न [नियमन] नियन्त्रण, संयमन (विसे १२५८)।

णिअमिय वि [नियमित] नियम में रखा हुआ, नियन्त्रित (से ४, ३७)।

णिअय न [दे] १ रत, मैथुन। २ शयनीय, शय्या। ३ घट, घड़ा, कलश (दे ४, ४८)। ४ वि. शाश्वत, नित्य (दे ४, ४८; पाअ; सूअ १, ८; राय)।

णिअय वि [निजक] निजका, स्वकीय, आत्मीय, अपना (पाअ)।

णिअय वि [नियत] नियम-बद्ध, नियमानुसारी (उवा)।

णिअया स्त्री [नियता] जम्बू-वृक्ष विशेष, जिससे यह जम्बू-द्वीप कहलाता है (इक)।
णिअर पुं [निकर] राशि, समूह, जत्था, ढेर (गा ५६६; पात्र्य (गउड)।
णिअरण न [दे] दण्ड, शिक्षा (स ४१६)।
णिअरिअ वि [दे] राशि रूप से स्थित (दे ४, ३८)।
णिअल न [दे] नूपुर, पैंजनी या पावजेब, स्त्री का पादाभरण-विशेष (दे ४, २८)।
णिअल पुं [निगड] बेड़ी, सांकल (से ३, ८; विपा १, ६)। देखो णिगल।
णिअलाइअ | णिअलाविअ | णिअलिअ वि [निगडित] सांकल से नियन्त्रित, जकड़ा हुआ (गा ४५४; ५००; पात्र्य; गउड, से ५, ४८)।
णिअल्ल पुं [दे. नियल्ल] ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष (ठा २, ३)।
णिअल्ल वि [निज] स्वकीय, आत्मीय (महा)।
णिअस देखो णिअंस। नियसइ (सुपा ६२)।
णिअसण देखो णिअंसण (हेका ५६; काप्र २०१)।
णिअसिय वि [निवसित] परिहित, पहना हुआ (सुपा १५३)।
णिअह देखो णिवह (नाट—मालती १३८)।
णिआ स्त्री [निदा] प्राणि-हिंसा (पिंड १०३)।
णिआ° देखो णिअय = (दे)। °वाइ वि [°वादिन्] नित्यवादी, पदार्थ को नित्य माननेवाला (ठा ८)।
णिआइय देखो णिकाइय (सूअ १, ६)।
णिआग पुं [नियाग] १ नियत योग। २ निश्चित पूजा। ३ मोक्ष, मुक्ति (आचा; सूअ १, १, २)। ४ न. आमन्त्रण देकर जो भिक्षा दी जाय वह (दस ३)।
णिआग देखो णाय = न्याय (आचा)।
णिआण न [निदान] १ आरम्भ, सावद्य व्यापार (सूअ १, १०, १)। २ रोग-कारण, रोग की पहचान (पिंड ४५६)।
णिआण न [निदान] १ कारण, हेतु; 'अहो अप्पं नियाणं महंतो विवाओ' (स ३६०; पात्र्य; णाया १, १३)। २ किसी व्रतानुष्ठान की फल-प्राप्ति का अभिलाष संकल्प-विशेष (श्रा २३; ठा १०)। ३ मूल कारण (आचा)। °कड वि [°कृत्] जिसने अपने शुभानुष्ठान के फल का अभिलाष किया हो वह (सम १५३)। °कारि वि [°कारिन्] वही अनन्तर उक्त अर्थ (ठा ६)।
णिआण न [निपान] कूप या तालाब के पास पशुओं के जल पीने के लिए बनाया हुआ जल-कुण्ड, आहाव, हौदी, चरही; 'पइभवणं पइहट्टं पइमग्गं पइसहं पइनियाणं' (उप ७२८ टी)।
णिआणिआ स्त्री [दे] खराब तृणों का उन्मूलन (दे ४, ३५)।
णिआम देखो णिअम = नियमय्। संकृ. उवसग्गा णिआमित्ता आमोक्खाए परिव्वए' (सूअ १, ३, ३)।
णिआम देखो णिकाम (सूअ १, १०, ८)।
णिआमग } णिआमय } वि [नियामक] नियम-कर्त्ता, नियन्ता (सुपा ३१६)। २ निश्चायक, विनिगमक (विसे ३४७०, स १७०)।
णिआमिअ वि [नियमित] नियम में रखा हुआ, नियन्त्रित (स २६३)।
णिआय पुं [नियाग] प्रशस्त धर्म (सूअ १, १, २, २०)।
णिआर सक [काणेक्षित कृ] कानी नजर से देखना। णिआरइ (हे ४, ६६)।
णिआरिअ वि [काणेक्षितीकृत] १ कानी नजर से देखा हुआ, आधी नजर से देखा हुआ। २ न. आधी नजर से निरीक्षण (कुमा)।
णिआह पुं [निदाघ] १ ग्रीष्म काल, ग्रीष्म ऋतु। २ उष्ण, घर्म, गरमी (गउड)।
णिइअ वि [नैत्यिक] नित्य का, 'निइए पिंडे दिज्जइ' (आचा २, १, १, ६)।
णिइग } णिइय } वि [दे. नित्य, नैत्यिक] नित्य, शाश्वत, अविनश्वर (पराह २, ४—पत्र १४१; सूअ १, १, ४; २, ४; णंदि; आचा, सम १३२)।
णिइव वि [निष्कृप] निर्दय, कठोर (प्राकृ २६)।
णिउअ वि [निवृत] परिवेष्टित, परीक्षित (हे १, १३१)।
णिउअ वि [नियुत] सुसंगत; सुश्लिष्ट (णाया १, १८)।
णिउंचिअ वि [निकुञ्चित] संकुचित, सकुचा हुआ, थोड़ा मुड़ा हुआ (गा ५६३; से ६, १६; पात्र्य; स ३३५)।
णिउंज सक [नि + युज्] जोड़ना, संयुक्त करना, किसी कार्य में लगाना। कर्म. णिउंजीअसि (पि ५४६)। वकृ. णिउंजमाण (सूअ १,१०)। संकृ. निउंजिऊण, निउंजिय (स १०४; महा)। कृ. णिउंजियव्व, णिउत्तव्व (उप पृ १०; कुमा)।
णिउंज पुं [निकुञ्ज] १ गहन, लता आदि से निबिड़ स्थान (कुमा; गा २१७)। २ गह्वर (दे ६, १२३)।
णिउंभ पुं [निकुम्भ] कुम्भकर्ण का एक पुत्र (से १२, ६२)।
णिउंभिला स्त्री [निकुम्भिला] यज्ञ-स्थान (से १५, ३६)।
णिउक्क वि [दे] तूष्णीक, मौन रहनेवाला (दे ४, २७; पात्र्य)।
णिउक्कण पुं [दे] १ वायस, काक, कौआ। २ वि. मूक, वाक्-शक्ति से हीन (दे ४, ५१)।
णिउज्ज न [न्युब्ज] आसन-विशेष (णंदि १२८ टी)।
णिउज्जम वि [निरुद्यम] उद्यम-रहित, आलसी (सूअ २, २)।
णिउड्ड अक [मस्ज्, नि + ब्रुड्] मज्जन करना, डूबना। णिउड्डइ (हे १, १०१)। वकृ. णिउड्डमाण (कुमा)।
णिउड्ड वि [मग्न, निब्रुडित] डूबा हुआ, निमग्न (से १०, १५; १५, ७४)।
णिउण वि [निपुण] १ दक्ष, चतुर, कुशल (पात्र्य; स्वप्न ५३; प्रासू ११; जी ६)। २ सूक्ष्म, जो सूक्ष्म बुद्धि से जाना जा सके (जो २; राय)। ३ क्रिवि. दक्षता से, चतुराई से, कुशलता से (जीव ३)।
णिउण वि [निपुण] १ नियत गुणवाला। २ निश्चित गुण से युक्त (राज)। ३ सुनिश्चित, विनिर्णीत (पंचा ४)।
णिउणिय वि [नैपुणिक] निपुण, दक्ष, चतुर (ठा ६)।
णिउत्त वि [नियुक्त] १ व्यापारित, कार्य में लगाया हुआ (पंचा ८)। २ निबद्ध (विसे ३८८)।

णिउत्त वि [निवृत्त] विरत, उपरत, विमुख, विरक्त (प्राकृ ८)।

णिउत्त वि [निर्वृत्त] निष्पन्न, सिद्ध (उत्तर १०४)।

णिउत्तव्व देखो णिउंज = नि + युज्।

णिउत्ति स्त्री [निवृत्ति] विराम (प्राकृ ८)।

णिउद्ध न [नियुद्ध] बाहु-युद्ध, कुस्ती (उप २९२)।

णिउर पुं [निकुर] वृक्ष-विशेष (णाया १, ९ पत्र १६०)।

णिउर न [नूपुर] स्त्री के पाँव का एक आभरण, पैंजनी, पायल (हे १,१२३; कुमा)।

णिउर वि [दे] १ छिन्न, काटा हुआ। २ जीर्ण, पुराना (षड्)।

णिउरंब न [निकुरम्ब] समूह, जत्था (पाअ; सुर ३, ९१; गा ४९५; सुपा ४५४)।

णिउरुंब न [निकुरुम्ब] समूह, जत्था (स ४३७; गा ४९५ अ; पि १७७)।

णिउल पुं [दे] गाँठ, गठरी; 'एवं बहु भणिऊणं समप्पिओ दविणनिउलोत्ति' (महा)।

णिऊढ वि [निगूढ] गुप्त, प्रच्छन्न, छिपा हुआ (अच्चु ४५)।

णिएअ वि [नियत] नियम-युक्त, 'अणिएअचारी' (सूअ १, ९, ६)।

णिएल्ल देखो णिअल्ल = निज (आवम)।

णिओअ सक [नि + योजय्] किसी कार्य में लगाना। णिओएदि (शौ) (नाट—विक्र ५)।

णिओअ देखो णिओग (से ८, २६; अभि २७; सण; से ३४८)। १० आज्ञा, आदेश (स २१४)।

णिओइअ वि [नियोजित] नियुक्त किया हुआ, किसी कार्य में लगाया हुआ (स ४४२; अभि ९९)।

णिओइअ वि [नैयोगिक] नियोग-सम्बन्धी (प्राकृ ९)।

णिओग पुं [नियोग] मोक्ष, मुक्ति (सूअ १, १, १६, ५)।

णिओग पुं [नियोग] १ नियम, आवश्यक कर्तव्य (विसे १८७६; पंचव ४)। २ सम्बन्ध, नियोजन (बृह १)। ३ अनुयोग, सूत्र की व्याख्या (विसे) ४ व्यापार, कार्य (वव २)। ५ अधिकार-प्रेरण (महा)। ६ राजा, नृप, आज्ञा-विधाता (जीत)। ७ गाँव, ग्राम; ८ क्षेत्र, भूमि (बृह १)। ९ संयम, त्याग (सूअ १, १६)। देखो णिओअ। °पुर न [°पुर] १ राजधानी। २ देश, राष्ट्र। ३ राज्य (जीत)।

णिओगि वि [नियोगिन्] नियोग-विशिष्ट, नियुक्त, आज्ञाप्राप्त, अधिकारी (सुपा ३७१)।

णिओजिय देखो णिओइअ (आवम)।

णिंत } **णिंतूण** } देखो णी = गम्।

णिंद सक [निन्द्] निन्दा करना, बुराई करना, जुगुप्सा करना। णिंदामि (पडि)। वकृ. णिंदंत (श्रा ३९)। कवकृ. णिंदिज्जंत (सुपा ३९३)। संकृ. णिंदित्ता, णिंदिअ (आचा २, ३, १; १; श्रा ४०)। हेकृ. णिंदिउं, णिंदित्तए (महा; ठा २, १)। कृ. णिंदियव्व, णिंदणिज्ज (पण्ह २, १; उप १०३१ टी; णाया १, ३)।

णिंद वि [निन्द्य] निन्दा-योग्य, निन्दनीय (आचू १)।

णिंद (अप) स्त्री [निद्रा] नींद, निद्रा (भवि)।

णिंदण न [निन्दन] निन्दा, घृणा, जुगुप्सा (उप ४४६; ७२८ टी)।

णिंदणया देखो णिंदणा (उत्त २९, १)।

णिंदणा स्त्री [निन्दना] निन्दा, जुगुप्सा (औप; ओघ ७९१; पण्ह २, १)।

णिंदय वि [निन्दक] निन्दा करनेवाला (पउम ९०, २१)।

णिंदा स्त्री [निन्दा] घृणा, जुगुप्सा (आव ४)।

णिंदिअ वि [निन्दित] जिसकी निन्दा की गई हो वह, बुरा (गा २९७; प्रासू १५८)।

णिंदिणी स्त्री [दे] कुत्सित तृणों का उन्मूलन (दे ४, ३५)।

णिंदु स्त्री [निन्दु] मृत-वत्सा स्त्री, जिसके बच्चे जीवित न रहते हों ऐसी स्त्री (अंत ७; श्रा १६)।

णिंब पुं [निम्ब] नीम का पेड़ (हे १, २३०; प्रासू २६)।

णिंबोलिया स्त्री [निम्बगुलिका] नीम का फल (णाया १, १६)।

णिकर पुं [निकर] समूह, जत्था, राशि, ढेर, (कप्पू)।

णिकरण न [निकरण] १ निश्चय, निर्णय। २ निकार, दुःख-उत्पादन (आचा)।

णिकरिय वि [निकरित] सारीकृत, सर्वथा संशोधित (औप)।

णिकस देखो णिहस (अणु २१२)।

णिकाइय वि [निकाचित] १ व्यवस्थापित, नियमित (णंदि)। २ अत्यन्त निबिड़ रूप से हुआ (कर्म) (उव; सुपा ५७६)। न. कर्मों का निबिड़ रूप से बन्धन (ठा ४, २)।

णिकाम सक [नि + कामय्] अभिलाष करना। णिकामएज्जा (सूअ १, १०, ११)। वकृ. णिकामयंत (सूअ १, १०, ११)।

णिकाम न [निकाम] हमेशा परिमाण से ज्यादा खाया जाता भोजन (पिंड ६४५)।

णिकाम न [निकाम] १ निश्चय, निर्णय। २ अत्यन्त, अतिशय (सूअ १, १०)।

णिकाममीण वि [निकाममीण] अत्यन्त प्रार्थी (सूअ १, १०, ८)।

णिकाय सक [नि + काचय्] १ नियमन करना, नियन्त्रण करना। २ निबिड़ रूपसे बाँधना। ३ निमन्त्रण देना। णिकाइंति (भग)। भूका. णिकाइंसु (भग; सूअ २, १)। भवि. णिकाइस्संति (भग)। संकृ. णिकाय (आचा)।

णिकाय पुं [निकाय] १ समूह, जत्था, यूथ, वर्ग, राशि (ओघ ४०७; विसे ९००; दं २८)। २ मोक्ष, मुक्ति (आचा)। ३ आवश्यक, अवश्य करने योग्य अनुष्ठान-विशेष (अणु)। °काय पुं [°काय] जीव-राशि, छओं प्रकार के जीवों का समूह (दस ४)।

णिकाय पुं [निकाच] निमन्त्रण, न्यौता (सम २१)।

णिकाय देखो णिकाइय, जेण खमासहिएणं कएणा कम्माणवि निकायाणं' (सिरि ११९२)।

णिकायण न [निकाचन] निमन्त्रण (पिंड ४७५)।

णिकायणा स्त्री [निकाचना] १ कारण-विशेष, जिससे कर्मों का निबिड़ बन्ध होता है (विसे २५१५ टी; भग)। २ निबिड़ बन्धन। ३ दापन, दिलाना (राज)।

णिकिंत सक [नि + कृत्] काटना, छेदना। णिकिंतइ (पुप्फ ३३७; उव)। णिकिंतए, (उव; काल)।

णिकिंतय वि [निकर्तक] काट डालनेवाला (काल)।

णिकुट्ट सक [नि + कुट्ट्] १ कूटना। २ काटना। णिकुट्टेइ, णिकुट्टेमि (उवा)।

णिकूणिय वि [निकूणित] टेढ़ा किया हुआ, वक्र किया हुआ (दे १, ८८)।

णिकेय पुं [निकेत] गृह, आश्रय, निवास-स्थान (णाया १, १६, उत्त २; आचा)।

णिकेयण न [निकेतन] ऊपर देखो (सुर १३, २१; महा)।

णिकोय पुं [निकोच] संकोच, सिमट (दे ७, १५)।

णिक्क वि [दे] सुनिर्मल, सर्वथा मल-रहित (णाया १, १)।

णिक्क देखो णिक्ख = निष्क (प्राकृ २१)।

णिक्कइअव वि [निष्कैतव] १ कपट-रहित, निर्माय (कुमा)। २ कपट का अभाव, निष्कपटपन (गा ८५)।

णिक्कंकड वि [निष्कङ्कट] १ आवरण-रहित (औप)। २ उपघात-रहित (सम १३७)।

णिक्कंखि वि [निष्काङ्क्षिन्] अभिलाषा-रहित (उत्त १६, ३४)।

णिक्कंखिय न [निष्काङ्क्षित] १ आकांक्षा का अभाव। २ दर्शनान्तर की अनिच्छा (उत्त २; पडि)।

णिक्कंखिय वि [निष्काङ्क्षित, °क] १ आकांक्षा-रहित। २ दर्शनान्तर के पक्षपात से रहित (सूअ २, ७; औप, राय)।

णिक्कंचण वि [निष्काञ्चन] सुवर्ण-रहित, धन-रहित; निःस्व, निर्धन (सुपा १६८)।

णिक्कंटय वि [निष्कण्टक] कण्टक-रहित, बाधारहित, शत्रु-रहित (सुपा २०८)।

णिक्कंड वि [निष्काण्ड] १ काण्ड रहित, स्कन्ध-वर्जित, २ अवसर-रहित (गा ४६८)।

णिक्कंत वि [निष्क्रान्त] १ निर्गत, बाहर निकला हुआ (से १, ५६)। २ जिसने दीक्षा ली हो वह, गृहस्थाश्रम से निर्गत (आचा)।

णिक्कंतार वि [निष्कान्तार] अरण्य से निर्गत, (ठा ३, १)।

णिक्कंति स्त्री [निष्क्रान्ति] निष्क्रमण, बाहर निकलना (प्राकृ २१)।

णिक्कंतु वि [निष्क्रमितृ] बाहर निकलने-वाला (ठा ३, १)।

णिक्कंद सक [नि + कन्द्] उन्मूलन करना। निक्कंदइ (सम्मत्त १७४)।

णिक्कंप वि [निष्कम्प] कम्प-रहित, स्थिर (हे २, ४; अभि २०१)।

णिक्कज्ज वि [दे] अनवस्थित, चंचल (दे ४, ३३; पाअ)।

णिक्कट्ठ वि [निष्कृष्ट] कृश, दुर्बल, क्षीण (ठा ४, ४—पत्र २७१)।

णिक्कड वि [दे] १ कठिन (दे ४, २९)। २ पुं. निश्चय, निर्णय (षड्)।

णिक्कड्ढिय वि [निष्कृष्ट, निष्कर्षित] बाहर खींचा हुआ, बाहर निकाला हुआ (स ६०; २१५)।

णिक्कण वि [निष्कण] धान्य-कण-रहित, अत्यन्त गरीब (विपा १, ३)।

णिक्कम अक [निर् + क्रम्] १ बाहर निकलना। २ दीक्षा लेना, संन्यास लेना। णिक्कमामि (पि ४८१)। वकृ. णिक्कमंत (हेका ३३२; मुद्रा; ८२)।

णिक्कम पुं [निष्क्रम] नीचे देखो (नाट—मुद्रा २२४)।

णिक्कमण न [निष्क्रमण] १ निर्गमन, बाहर निकलना (मुद्रा २२४)। २ दीक्षा, संन्यास (आचा)।

णिक्कम्म वि [निष्कर्मन्] कर्मरहित, मुक्ति-प्राप्त, मुक्त (द्रव्य १४)।

णिक्कम्म वि [निष्कर्मन्] १ कार्य-रहित, निकम्मा (गा १६६)। २ मोक्ष, मुक्ति। ३ संवर; कर्मों का निरोध, (आचा)।

णिक्कय पुं [निष्क्रय] १ बदला, उत्तरणपन (सुपा ३४१; पउम ७; १२६)। २ भृति, वेतन, मजूरी (हे २, ४)।

णिक्करण न [निकरण] १ तिरस्कार। २ परिभव। ३ विनाश (संबोध १६)।

णिक्करुण वि [निष्करुण] करुणा-रहित, दया वर्जित (नाट—मालती ३२)।

णिक्कल वि [निष्कल] कला-रहित (सुपा १)।

णिक्कल वि [दे] पोलापन से रहित (सुपा १, भग १५)।

णिक्कलंक वि [निष्कलङ्क] कलंक-रहित, बेदाग (स ४१८; महा; सुपा २५३)।

णिक्कलुण देखो णिक्करुण (पण्ह १, १)।

णिक्कलुस वि [निष्कलुष] १ निर्दोष, निर्मल। २ निरुपद्रव, उपद्रव-रहित (से १२, ३४)।

णिक्कवड वि [निष्कपट] कपट-रहित (उप पृ १६०)।

णिक्कवय वि [निष्कवच] कवच-रहित, वर्म-वर्जित (ठा ४, २)।

णिक्कस अक [निर् + कस्] बाहर निक-लना। णिक्कसे (सूअ १, १४, ४)।

णिक्कस सक [निर् + कस्] निकासना, बाहर निकालना। कर्म णिक्कसिज्जइ (उत्त १)।

णिक्कसण न [निष्कसन] निर्गमन (राज)।

णिक्कसाय वि [निष्कषाय] १ कषाय-रहित, क्रोधादि वर्जित (आउ)। २ पुं भरत-क्षेत्र के एक भावी तीर्थंकर-देव (सम १५३)।

णिक्का स्त्री [नीका] वाम-नासिका (कुमा)।

णिक्काम वि [निष्काम] अभिलाषा-रहित

णिक्कारण वि [निष्कारण] १ कारण-रहित, अहेतुक (सुर २, ३६)। २ क्रिवि. विना कारण (आव ६)।

णिक्कारण वि [निष्कारण] निरुपद्रव, 'नेस निक्कारणो दहो' (पिंड ५१६)।

णिक्कारणिय वि [निष्कारणिक] कारण-रहित, हेतु-शून्य (ओघ ५)।

णिक्कारिम वि [निष्कारण] विना कारण (आख्यानक० २३ अधिकार, भावादेयाकथा, पद्य ५२५)।

णिक्काल सक [निर् + कासय्] बाहर निकालना। संकृ. निक्कालेउं (सुपा १३)।

णिक्कालिअ देखो णिक्कासिय (ती १५)।

णिक्कास पुं [निष्कास] नीकास, बाहर निका-लना (धर्मवि १४६)।

णिक्कासिय वि [निष्कासित] बाहर निकाला हुआ (राज)।

णिक्किंचण वि [निष्किञ्चन] निर्धन, घर-रहित, निःस्व, गरीब (आवम)।

णिकिट्ठ वि [निकृष्ट] अधम, नीच, हीन, जघन्य; 'अइनिकिट्ठपाविट्ठयावि अहा' (श्रा १४; २७; सुपा ५७१; सट्टि १५८)।

णिक्किण सक [निर् + क्री] निष्क्रय करना, खरीदना। णिक्किणासि (मृच्छ ६१)।

णिक्कित्तिम वि [निष्कृत्रिम] अकृत्रिम, असली, स्वाभाविक (उप ९८६ टी)।

णिक्किय वि [निष्क्रिय] क्रिया-रहित, अक्रिय (पण्ह १, २)।

णिक्किव वि [निष्कृप] कृपा-रहित, निर्दय (पाअ; गा ३०; सुपा ४०९)।

णिक्कीलिय वि [निष्क्रीडित] गमन, गति (पव २७१)।

णिक्कुड पुं [निष्कुट] तापन, तपाना (राज)।

णिक्कूइल्ल स्त्री [दे] जीता हुआ, विनिर्जित (दे १, ४)।

णिक्कोडण न [निष्कोटन] बन्धन-विशेष (पण्ह १, ३—पत्र ५३)।

णिक्कोर सक [निर् + कोरय्] १ दूर करना। २ पात्र वगैरह के मुँह का बन्द करना। ३ पात्र आदि का तक्षण करना। णिक्कोरेइ (बृह १)।

णिक्कोरण न [निष्कोरण] १ पात्र आदि के मुँह का बन्द करना। २ पात्र आदि का तक्षण (बृह १)।

णिक्ख पुं [दे] १ चोर। २ सुवर्ण, काञ्चन (दे २, ४७)।

णिक्ख पुंन [निष्क] दीनार, मोहर, मुद्रा, अशर्फी, रुपया (हे २, ४)।

णिक्खंत देखो **णिक्कंत** (सूअ १, ८, सम १५१; कस)।

णिक्खंध वि [निःस्कन्ध] स्कन्ध-रहित, डाली-रहित (गा ४६८ अ)।

णिक्खणण न [निखनन] गाड़ना (कुप्र १६१)।

णिक्खत्त वि [निःक्षत्र] क्षत्र-रहित, क्षत्रिय-रहित (पि ३१६)।

णिक्खम अक [निर् + क्रम्] १ बाहर निकलना। २ दीक्षा लेना, संन्यास लेना। णिक्खमइ (भग)। णिक्खमंति (कप्प)। भूका. णिक्खमिंसु (कप्प)। भवि. णिक्खमिस्संति (कप्प)। वकृ. णिक्खममाण (णाया १, ५, पउम २२, १७)। संकृ. णिक्खम्म (कप्प)। हेकृ. णिक्खमित्तए (कप्प; कस)।

णिक्खम पुंन [निष्क्रम] १ निर्गमन। २ दीक्षा-ग्रहण (ठा १०; दस १०)।

णिक्खमण न [निष्क्रमण] ऊपर देखो (सुज्ज १३; णाया १, १६; पउम २३, ४)।

णिक्खय वि [निखात] गाड़ा हुआ (कुप्र २५)।

णिक्खय वि [दे. निक्षत] निहत, मारा हुआ (दे ४, ३२; पाअ)।

णिक्खविअ वि [निक्षपित] नष्ट किया हुआ, विनाशित (अच्चु ३१)।

णिक्खसरिअ वि [दे] मुषित, जो लूट लिया गया हो, अपहृत-सार (दे ४, ४१)।

णिक्खाविअ वि [दे] शान्त, उपशम-प्राप्त (षड्)।

णिक्खित्त वि [निक्षिप्त] १ न्यस्त, स्थापित (पाअ; पण्ह १, ३)। २ मुक्त, परित्यक्त (णाया १, १; वव २)। ३ पाक-भाजन में स्थित (पण्ह २, १)। °**चर** वि [°चर] पाक-भाजन में स्थित वस्तु को भिक्षा के लिए खोजनेवाला (पण्ह २, १, औप)।

णिक्खिप्पमाण नीचे देखो।

णिक्खिव सक [नि + क्षिप्] १ स्थापन करना, स्वस्थान में रखना। २ परित्याग करना। णिक्खिवइ (महा)। णिक्खिवंत (निचू १६)। कवकृ. णिक्खिप्पमाण (आचा)। संकृ. णिक्खिवित्ता, णिक्खिविअ, णिक्खिविउं (कस; पि ३१६; नाट—विक्र १०३; वव १)। कृ. णिक्खिविअव्व, णिक्खेत्तव्व (पण्ह १, १; विसे ९१७)।

णिक्खिव सक [नि + क्षिप्] नाम आदि भेदों से वस्तु का निरूपण करना। निक्खिवे (अणु १०)। भवि. निक्खिविस्सामि (अणु १०)।

णिक्खिव पुं [निक्षेप] १ स्थापन। २ न्यास-स्थापन, धरोहर, धन आदि जमा रखना (श्रा १४)।

णिक्खिवण न [निक्षेपण] १ स्थापन। २ डालना (सुपा ६२६; पडि)।

णिक्खुड वि [दे] अकम्प, स्थिर (दे ४, २८)।

णिक्खुड पुंन [निष्कुट] १ कोटर, खोखला, विवर (तंदु २६)। २ पृथिवी-खण्ड (विसे १५३८; पंच २, ३२)। ३ गृहाराम, उपवन, घर के पास का बगीचा (राय २५)।

णिक्खुड पुं [निष्कुट] भूमि-खण्ड (विसे १५३८)।

णिक्खुत्त न [दे] निश्चित, नक्की, चोक्कस, अवश्य; 'पत्ते विणासकाले नासइ बुद्धी नराण निक्खुत्तं' (पउम ५३, १३८); 'वत्ता दाहामि निक्खुत्तं' (पउम १०, ८५)।

णिक्खुरिअ वि [दे] अदृढ़, अस्थिर (दे ४, ४०)।

णिक्खेड पुं [निष्खेट] अधमता, नीचता, दुष्टता (सुपा २७९)।

णिक्खेत्तव्व देखो **णिक्खिव** = नि + क्षिप्।

णिक्खेव पुं [निक्षेप] १ न्यास, स्थापन (अणु)। २ परित्याग, मोचन (आचा २, १, १, १)। ३ धरोहर, धन आदि जमा रखना (पउम ६२, ६)।

णिक्खेवण न [निक्षेपण] १ निक्षेप, स्थापन (पव ६)। २ व्यपस्थापन, नियमन (विसे ९१२)।

णिक्खेवणया, **णिक्खेवणा** } स्त्री [निक्षेपणा] स्थापना, विन्यास (उवा; कप्प)।

णिक्खेवय पुं [निक्षेपक] निगमन, उपसंहार (बृह १)।

णिक्खेविय वि [निक्षिप्त] १ न्यस्त, स्थापित। २ मुक्त, परित्यक्त (सण)।

णिक्खेविय वि [निक्षेपित] ऊपर देखो (भवि)।

णिक्खोभ, **णिक्खोह** } पुं [निःक्षोभ] क्षोभ-रहित, निष्कम्प (सम १०९; चउ ४७)।

णिखय देखो **णिक्खय** (कुप्र २२३)।

णिखव्व न [निखर्व] संख्या-विशेष, सौ खर्व, सौ अरब (राज)।

णिखिल वि [निखिल] सर्व, सकल, सब (अणु; नाट—महावीर ६७)।

णिगंठ देखो **णिअंठ** (विसे १३३२)।

णिगड सक [निगडय्] नियन्त्रित करना, बाँधना। संकृ. निगडिऊण (कुप्र १८७)।

णिगडिय वि [निगडित] नियन्त्रित (हम्मीर ३०)।

णिगढ पुं [दे] घर्म, घाम, गरमी (दे ४, २७)।

णिगण वि [नग्न] नंगा, वस्त्र-रहित (सूअ १, २, १, ६)।

णिगद सक [नि + गद्] १ कहना। २ पढ़ना, अभ्यास करना। वकृ. णिगदमाण (विसे ८५०)।

णिगम पुं [निगम] १ प्रकृष्ट बोध (विसे १२८७)। २ व्यापार-प्रधान स्थान, जहाँ व्यापारी, विशेष संख्या में रहते हों ऐसा शहर आदि (पण्ह १, ३; औप; आचा)। ३ व्यापारि-समूह (सम ५१)।

णिगमण न [निगमन] अनुमान प्रमाण का एक अवयव, उपसंहार (दसनि १)।

णिगमिअ वि [दे] निवासित (षड्)।

णिगर पुं [निकर] समूह, राशि, जत्था (विपा १, ६; उवा)।

णिगरण न [निकरण] कारण, हेतु (भग ७, ७)।

णिगरिय वि [निकरित] सर्वथा शोधित (पण्ह १, ४)।

णिगल देखो णिअल। २ बेड़ी के आकार का सौवर्ण आभूषण-विशेष (औप)।

णिगलिय देखो णिगरिय (जं २)।

णिगाम देखो णिकाम = निकाम (पिंड ६४५)।

णिगाम न [निकाम] अत्यन्त, अतिशय (ठा ५, २; श्रा १६)।

णिगास पुं [निकर्ष] परस्पर संयोजन, मिलाना, जोड़ (भग २५, ७)।

णिगिज्झिय देखो णिगिण्ह।

णिगिट्ठ देखो णिक्किट्ठ (सुपा १८३)।

णिगिण वि [नग्न] नग्न, नंगा (आचा २, २, ३; २, ७, १; पि १३३)।

णिगिणिण न [नाग्न्य] नंगापन, नग्नता (उत्त ५, २१; सुख ५, २१)।

णिगिण्ह सक [नि + ग्रह्] १ निग्रह करना, दण्ड करना, शिक्षा करना। २ रोकना। ३ अक. बैठना, स्थिति करना। संकृ. णिगिज्झिय, णिग्घेत्तुं (ठा ७; कप्प; राज)। कृ. णिगिण्हियव्व (उप पृ २३)।

णिगुंज अक [नि + गुञ्ज्] १ गूँजना, अव्यक्त शब्द करना। २ नीचे नमना। वकृ. णिगुंजमाण (णाया १, ६—पत्र १५७)।

णिगुंज देखो णिउञ्ज = निकुञ्ज (आवम)।

णिगुण वि [निगुण] गुण-रहित (पण्ह १, २)।

णिगुरंब देखो णिउरंब (पण्ह १, ४)।

णिगूढ वि [निगूढ] १ गुप्त, प्रच्छन्न (कप्प)। २ मौनी, मौन रहनेवाला (राज)।

णिगूह सक [नि + गुह्] छिपाना, गोपन करना। णिगूहइ (उव; महा)। णिगूहंति (सट्ठि ३२)। संकृ. णिगूहिऊण (स ३३५)।

णिगूहण न [निगूहन] गोपन, छिपाना (पंचा १५)।

णिगूहिअ वि [निगूहित] छिपाया हुआ, गोपित (सुपा ५१८)।

णिगोअ पुं [निगोद] अनन्त जीवों का एक साधारण शरीर-विशेष (भग; पण्ण १)। °जीव पुं [°जीव] निगोद का जीव (भग २५, ६; कम्म ४, ८५)।

णिग्ग देखो णिग्गम = निर् + गम्। वकृ. णिग्गंत (भवि)।

णिग्गंठिद (शौ) वि [निग्रथित] गुम्फित, ग्रथित (पि ५१२)।

णिग्गंतुं } देखो णिग्गम = निर् + गम्।
णिग्गंतूण }

णिग्गंथ देखो णिअंठ (औप; ओघ ३२८; प्रासू १३६, ठा ५, ३)।

णिग्गंथ वि [नैर्ग्रन्थ] निर्ग्रन्थ-सम्बन्धी (णाया १, १३; उवा)।

णिग्गंथी स्त्री [निर्ग्रन्थी] जैन साध्वी (णाया १, १, १४; उवा; कप्प; औप)।

णिग्गच्छ } अक [निर् + गम्] बाहर
णिग्गम } निकलना। णिग्गच्छइ (उवा; कप्पू)। वकृ. णिग्गच्छंत, णिग्गच्छमाण, णिग्गममाण (सुपा ३३०; णाया १, १; सुपा ३५६)। संकृ. णिग्गच्छित्ता, णिग्गंतूण (कप्प; स १७)। हेकृ. णिग्गंतुं (उप ७२८ टी)।

णिग्गम पुं [निर्गम] १ उत्पत्ति, जन्म (विसे १५३६)। २ बाहर निकलना (से ६, ३६; उप पृ ३३२)। ३ द्वार, दरवाजा (से २, २)। ४ बाहर जाने का रास्ता (से ८, ३३)। ५ प्रस्थान, प्रयाण (बृह १)।

णिग्गमण न [निर्गमन] १ निःसरण, बाहर निकलना (णाया १, २; सुपा ३३२; भग)। २ पलायन, भाग जाना। ३ अपक्रमण (वव १)।

णिग्गमिअ वि [निर्गमित] बाहर निकाला हुआ, निस्सारित (श्रा १६)।

णिग्गमिय वि [निर्गमित] गमाया हुआ, पसार किया हुआ (सम्मत्त १२३)।

णिग्गय वि [निर्गत] निःसृत, बाहर निकला हुआ (विसे १५४०; उवा)। °जस वि [°यशस्] जिसका यश बाहर में फैला हो (णाया १, १८)। °मोअ वि [°मोद] जिसकी सुगन्ध खूब फैली हो (पाअ)।

णिग्गय वि [निर्गज] हाथी-रहित (भवि)।

णिग्गह देखो णिगिण्ह। कृ. णिग्गहियव्व (सुपा ५८०)।

णिग्गह पुं [निग्रह] १ दण्ड, शिक्षा (प्रासू १७०; आव ६)। २ निरोध, अवरोध, रुकावट (भग ७, ६)। ३ वश करना, काबू में रखना, नियमन (प्रासू ४८)। °ट्ठाण न [°स्थान] न्याय-शास्त्र-प्रसिद्ध प्रतिज्ञा-हानि आदि पराजय-स्थान (ठा १; सूअ १, १२)।

णिग्गहण न [निग्रहण] १ निग्रह, शिक्षा, दण्ड (सुर १६, ७)। २ दमन, नियमन, नियन्त्रण (प्रासू १३२)।

णिग्गहिय वि [निगृहीत] १ जिसका निग्रह किया गया हो वह (सं ११५)। २ पराजित पराभूत (आवम)।

णिग्गहीय देखो णिग्गहिय (सुख १, १)।

णिग्गा स्त्री [दे] हरिद्रा, हलदी (दे ४, २५)।

णिग्गाल पुंन [निर्गाल] निचोड़, रस, 'सीस-घड़ीनिग्गालं' (तंदु ४१)।

णिग्गालिय वि [निर्गालित] गलाया हुआ (उप पृ ८४)।

णिग्गाहि वि [निग्राहिन्] निग्रह करनेवाला (उत्त २५, २)।

णिग्गिण्ण वि [दे. निर्गीर्ण] १ निर्गत, बाहर निकला हुआ (दे ४, ३६; पाअ)। २ वान्त, वमन किया हुआ (से ५, २६)।

णग्गिण्ह देखो णिगिण्ह । णिग्गिण्हामि (विसे २४८२) ।
णिग्गिलिय वि [निर्गलित] वान्त, वमन किया हुआ (स ३५८) ।
णिग्गुंडी स्त्री [निर्गुण्डी] औषधि-विशेष, वनस्पति संभालू (पण्ण १) ।
णिग्गुण वि [निर्गुण] गुण-रहित, गुण-हीन (गा २०३; उव; पण्ह १, २; उप ७२८टी) ।
णिग्गुण्ण } न [नैर्गुण्य] गुण-रहितपन, णिग्गुन्न } गुण-हीनता, निर्गुणत्व (वसु; भत्त १४) ।
णिग्गूढ वि [निर्गूढ] स्थिर रूप से स्थापित (सूअ २, ७) ।
णिग्गोह पुं [न्यग्रोध] वृक्ष-विशेष, बरगद, बड़ का पेड़ (पउम २०, ३६; षड्) । °परिमंडल न [°परिमण्डल] शरीर-संस्थान-विशेष, वटाकार शरीर का आकार (सम १४६; ठा ६) ।
णिग्घंट } देखो णिघंटु (कप्प) ।
णिग्घटु }
णिग्घट्ट वि [दे] कुशल, निपुण, चतुर (दे ४, ३४) ।
णिग्घण देखो णिग्घिण (विक्र १०२) ।
णिग्घत्तिअ वि [दे] क्षिप्त, फेंका हुआ (पाअ) ।
णिग्घाइय वि [निर्घातित] १ आघात-प्राप्त, आहत । २ व्यापादित, विनाशित (णाया १, १३) ।
णिग्घाय पुं [निर्घात] राक्षस-वंश का एक राजा (पउम ६, २२४) ।
णिग्घाय पुं [निर्घात] १ आघात, 'रंगिर-तुंगतुरंगमखुरग्गनिग्घायविहुरियं धरणिं' (सुपा ३) । २ बिजली का गिरना (स ३७५; जीव १) । ३ व्यन्तर-कृत गर्जना (ठा १०) । ४ विनाश (सूअ १, १५) ।
णिग्घायण न [निर्घातन] नाश, विनाश, उच्छेदन (पडि; सुपा ५०३) ।
णिग्घिण वि [निर्घृण] निर्दय, करुणा-रहित (गा ४५२; पण्ह १, १; सुर २, ६१) ।
णिग्घेउं देखो णिगिण्ह ।
णिग्घोर वि [दे] निर्दय, दया-हीन (दे ४, ३७) ।
णिग्घोस पुं [निर्घोष] महान् अव्यक्त शब्द (पण्ह १; सम १५३) ।
णिघंटु पुं [निघण्टु] शब्द-कोश, नाम संग्रह (औप; भग) ।
णिघस पुं [निकष] १ कसौटी का पत्थर (अणु) । २ कसौटी पर की जाती सुवर्ण की रेखा (सुपा ३६१) ।
णिचय पुं [निचय] संग्रह, संचय (सूअ १, १०, ६) ।
णिचय पुं [निचय] १ समूह, राशि । २ उपचय, पुष्टि (ओघ ४०७; स ३६६; आचा; महा) ।
णिचिअ वि [निचित] १ व्याप्त, भरपूर (अजि ५) । २ निबिड़, पुष्ट (भग) ।
णिचुल पुं [निचुल] वृक्ष-विशेष, वंजुल वृक्ष (स १११; कुमा) ।
णिच्च वि [नित्य] १ अविनश्वर, शाश्वत (आचा; औप) । २ न. निरन्तर, सर्वदा, हमेशा (महा; प्रासू १४; १०१) । °च्छणिय वि [°क्षणिक] निरन्तर उत्सववाला (णाया १, ४) । °मंडिया स्त्री [°मण्डिता] जम्बू वृक्ष-विशेष (इक) । °वाय पुं [°वाद] पदार्थों को नित्य माननेवाला मत; 'सुहदुक्ख-संपओगो न जुज्जइ निच्चवायपक्खम्मि' (सम १८) । °सो अ [°शस्] सदा, सर्वदा, निरन्तर (महा) । °लोअ, °लोग, °लोव पुं [°लोक] १ एक विद्याधर-राजा (पउम ६, ५२) । २ ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष (ठा २, ३) । ३ न. नगर-विशेष (पउम ६, ५२; इक) । ४ वि. सर्वदा प्रकाशवाला (कप्प) ।
णिच्च देखो णीय = नीच (सम ५५) ।
णिच्चक्खु वि [निश्चक्षुस्] चक्षु-रहित, नेत्र-हीन, अन्धा (पउम ८२, ५१) ।
णिच्चट्ट (अप) वि [गाढ] गाढ़, निबिड (हे ४, ४२२) ।
णिच्चय देखो णिच्छय (प्रयौ २१; पि ३०१) ।
णिच्चर देखो णिव्वर । णिच्चरइ (हे ४, ३ टि) ।
णिच्चल सक [क्षर्] झरना, टपकना, चूना । णिच्चलइ (हे ४, १७३) । प्रयो. णिच्चलावेइ (कुमा) ।
णिच्चल सक [मुच्] दुःख को छोड़ना, दुःख का त्याग करना । णिच्चलइ (हे ४, ६२ टि) । भूका. णिच्चलीअ (कुमा) ।
णिच्चल वि [निश्चल] स्थिर, दृढ़, अचल (हे २, २१; ७७) । °पय न [°पद] मुक्ति, मोक्ष (पंचव ४) ।
णिच्चिंत वि [निश्चिन्त] चिन्ता-रहित, बेफिक्र (विक्र ४३; प्रासू २७; सुपा २२५) ।
णिच्चिट्ठ वि [निश्चेष्ट] चेष्टा-रहित (सुपा १४) ।
णिच्चिद (शौ) देखो णिच्छिअ (पि ३०१) ।
णिच्चुज्जोअ पुं [नित्योद्द्योत] नन्दीश्वर द्वीप के मध्य की दक्षिण दिशा में स्थित एक अंजनगिरि (पव २६६) ।
णिच्चुज्जोअ } वि [नित्योद्द्योत] १ सदा णिच्चुज्जोव } प्रकाशयुक्त । २ पुं. ग्रह-विशेष ज्योतिष्क देव-विशेष (ठा २, ३) । ३ न. एक विद्याधर-नगर (इक) ।
णिच्चुड्ड वि [दे] १ उद्वृत्त, बाहर निकला हुआ (षड्) । २ निर्दय, दया-हीन (पाअ) ।
णिच्चुव्विग्ग वि [नित्योद्विग्न] सदा खिन्न (दस ५, २) ।
णिच्चेट्ठ देखो णिच्चिट्ठ (णाया १, २; सुर ३, १७२) ।
णिच्चेयण वि [निश्चेतन] चेतना-रहित (महा) ।
णिच्चोउया स्त्री [नित्यर्तुका] हमेशा रजस्वला रहनेवाली स्त्री (ठा ५, २) ।
णिच्चोय सक [दे] निचोड़ना । निच्चोयइ (कुप्र २१५) ।
णिच्चोरिक्क न [निश्चौर्य] १ चोरी का अभाव । २ वि. चोरी-रहित (उप १३६ टी) ।
णिच्छइय वि [नैश्चयिक] १ निश्चय-सम्बन्धी । २ पुं. निश्चय नय, द्रव्यार्थिक नय, परिणाम-वाद (विसे) ।
णिच्छउम वि [निश्छद्मन्] १ कपट-रहित, माया-वर्जित (गण ८; सुपा ३५०) । २ क्रिवि. विना कपट (सार्ध ५१) ।
णिच्छक्क वि [दे] १ निर्लज्ज, बेशरम, धृष्ट, ढीठ (बृह १; वव ५) । २ अवसर को नहीं जाननेवाला, असमयज्ञ (राज) ।

णिच्छम्म देखो णिच्छउम (उव; सार्ध १४५)।

णिच्छय सक [निर् + चि] निश्चय करना, निर्णय करना। वकृ. **णिच्छयमाण** (उप ७२८ टी)।

णिच्छय पुं [निश्चय] १ निश्चय, निर्णय (भग; प्रासू १७७)। २ नियम, अविनाभाव (राज)। ३ नय-विशेष, द्रव्यार्थिक नय, वास्तविक पदार्थ को ही माननेवाला मत, परिणाम-वाद (बृह ४; पंचा १३)। °**कहा** स्त्री [°कथा] अपवाद (निचू ५)।

णिच्छल्ल सक [छिद्] छेदना, काटना। णिच्छल्लइ (हे ४, १२४)।

णिच्छल्लिअ वि [छिन्न] काटा हुआ (कुमा; स २५८; गउड)।

णिच्छाय वि [निश्छाय] कान्ति-रहित, शोभा-हीन (पण्ह १, २)।

णिच्छारय वि [निस्सारक] सार-रहित, 'निच्छारयछारयधूलीए' (श्रा २७)।

णिच्छिड्ड वि [निश्छिद्र] छिद्र-रहित (णाया १, ६; उप २११ टी)।

णिच्छिण्ण वि [निच्छिन्न] पृथक्-कृत, अलग किया हुआ, काटा हुआ (विसे २७३)।

णिच्छिद्द देखो णिच्छिड्ड (स ३५०)।

णिच्छिन्न देखो णिच्छिण्ण (पुप्फ ४९३; महा)।

णिच्छिय वि [निश्चित] निश्चित, निर्णीत, असंदिग्ध (णाया १, १; महा)।

णिच्छीर वि [निःक्षीर] क्षीर-रहित, दुग्ध-वर्जित (पण्ण १)।

णिच्छुंड वि [दे] निर्दय, करुणा-रहित (दे ४, ३२)।

णिच्छुट्ट वि [निश्छुटित] निर्मुक्त, छूटा हुआ (सुर ६, ७२)।

णिच्छुभ सक [नि + क्षिप्] १ बाहर निकालना। फेंकरना। णिच्छुभइ (भग)। कर्म. णिच्छुब्भइ (पि ६६)। कवकृ. **णिच्छुब्भमाण** (विपा १,२)। संकृ. **णिच्छुभित्ता, णिच्छुभिउं** (भग; निर १, १)। प्रयो. णिच्छुभावेइ (णाया १, ८)।

णिच्छुभ पुं [निक्षेप] निष्कासन (पिंड ३७५)।

णिच्छुभण न [निक्षेपण] निःसारण, निष्कासन (निचू १)।

णिच्छुभाविय वि [निक्षेपित] निस्सारित, बाहर निकाला हुआ (णाया १, ८)।

णिच्छुह सक [नि + क्षिप्] डालना। निच्छुहइ (सुख ७, ११)।

णिच्छुहणा स्त्री [निक्षेपणा] बाहर निकलने की आज्ञा, निर्भर्त्सना (णाया १, १६ टी—पत्र २००)।

णिच्छूढ वि [निक्षिप्त] १ उद्वृत्त, निर्गत (हे ४, २५८)। २ फेंका हुआ, निक्षिप्त (प्रामा)। ३ निस्सारित, निष्कासित (णाया १, ८—पत्र १४६; १, १६—पत्र १९६)।

णिच्छूढ न [निष्ठ्यूत] थूक, खखार (विसे ५०१)।

णिच्छोड सक [निर् + छोटय्] १ बाहर निकलने के लिए धमकाना। २ निर्भर्त्सन करना। ३ छुड़वाना। णिच्छोडेइ; णिच्छोडेंति (णाया १, १६; १८)। णिच्छोडेज्जा (उवा)। संकृ. **णिश्छोडइत्ता** (भग १५)।

णिच्छोडण न [निश्छोटन] निर्भर्त्सन, बाहर निकालने की धमकी (उव)।

णिच्छोडणा स्त्री [निश्छोटना] ऊपर देखो (णाया १, १६—पत्र १९६)।

णिच्छोडिअ वि [निश्छोटित] सफा किया हुआ (पिंड २७६)।

णिच्छोल सक [निर् + तक्ष्] छीलना, छाल उतारना। निच्छोलेइ (निचू १)। वकृ. **णिच्छोलंत** (निचू १)। संकृ. **निच्छोलिऊण** (महा)।

णिजंतिय वि [नियन्त्रित] नियमित, अंकुशित (सुर ३, ४)।

णिजिण्ण देखो णिज्जिण्ण (ठा ४, १)।

णिजुंज देखो णिउंज = नि + युज्। निजुंजइ (कुप्र ३४८)।

णिजुद्ध देखो णिउद्ध (निचू १२)।

णिजोजण न [नियोजन] नियुक्ति, कार्य में लगाना, भारअर्पण (उप १७९ टी)।

णिजोजिय देखो णिओइय (उप १७९ टी)।

णिज्ज वि [दे] सुप्त, सोया हुआ (दे ४, २५; षड्)।

णिज्जंत देखो णी = नी।

णिज्जण वि [निर्जन] १ विजन, मनुष्य-रहित, सुनसान। २ न. एकान्त स्थान (गउड)।

णिज्जप्प वि [निर्याप्य] १ निर्वाह-कारक। २ निर्बल, बल को नहीं बढ़ानेवाला; 'अरस-विरससीयलुक्खणिज्जप्पपाणभोयणाइं' (पण्ह २, ५)।

णिज्जर सक [निर् + जॄ] १ क्षय करना, नाश करना। २ कर्म-पुद्गलों को आत्मा से अलग करना। णिज्जरेइ, णिज्जरए, णिज्जरेंति (भग, ठा ४, १)। भूका. णिज्जरिंसु, णिज्ज-रेंसु (पि ५७६; भग)। भवि. णिज्जरिस्संति (ठा ४, १)। वकृ. **णिज्जरमाण** (भग १८, ३)। कवकृ. **णिज्जरिज्जमाण** (ठा १०; भग)।

णिज्जरण न [निर्जरण] नीचे देखो (ओप)।

णिज्जरणा स्त्री [निर्जरणा] १ नाश, क्षय। २ कर्म-क्षय, कर्म-नाश। ३ जिससे कर्मों का विनाश हो ऐसा तप (नव १; सुर १४, ६५)।

णिज्जरा स्त्री [निर्जरा] कर्म-क्षय, कर्म-विनाश (आचा; नव २४)।

णिज्जरिय वि [निर्जीर्ण] क्षीण, विनाश-प्राप्त (तंदु)।

णिज्जव वि [निर्याप] निर्वाह करानेवाला (पंचा १५, १४)।

णिज्जवग वि [निर्यापक] १ निर्वाह करने-वाला। २ आराधक, आराधन करनेवाला (ओघ २८ भा)। ३ पुं. जैनमुनि-विशेष, जो शिष्य के भारी प्रायश्चित्त का भी ऐसी तरह से विभाग कर दे कि जिससे वह उसे निबाह सके (ठा ८; भग २५, ७)।

णिज्जवणा स्त्री [निर्यापना] १ निगमन, दर्शित अर्थ का प्रत्युच्चारण (विसे २९३२)। २ हिंसा (पण्ह १, १)।

णिज्जवय देखो णिज्जवग (ओघ २८ भा टी; द्र ४९)।

णिज्जविउ वि [निर्यापयितृ] ऊपर देखो (पव ६४)।

णिज्जा अक [निर् + या] बाहर निकालना। णिज्जायंति (भग)। भवि. णिज्जाइस्सामि (ओप)। वकृ. **णिज्जायमाण** (ठा ५, ३)।

णिज्जाण न [निर्याण] १ बाहर निकलना, निर्गम (ठा ५, ३)। २ आवृत्ति-रहित गमन (औप)। ३ मोक्ष, मुक्ति (आव ४)।

णिज्जाणिय वि [नैर्याणिक] निर्याण-संबन्धी, निर्गम-संबन्धी (भग १३, ६; निचू ८)।

णिज्जामग } पुं [निर्यामक] कर्णधार, **णिज्जामय** } जहाज का नियन्ता (विसे २६५६; णाया १, १७; औप; सुर १३, ४८)।

णिज्जामण न [निर्यापन] बदला चुकाना, 'वेरणिज्जामणं' (वव १)।

णिज्जामय पुं [निर्यामक] १ बीमार की सेवा-शुश्रूषा करनेवाला मुनि (पव ७१)। २ वि. आराधना-कारक (पव-गाथा १७)।

णिज्जामिय वि [निर्यामित] पार पहुँचाया हुआ, तारित (महा)।

णिज्जाय पुं [दे] उपकार (दे ४, ३४)।

णिज्जाय वि [निर्यात] निर्गत, निःसृत (वसु; उप पृ २८६)।

णिज्जायण न [निर्यातन] वैर-शुद्धि, बदला (महा)।

णिज्जायणा स्त्री [निर्यातना] ऊपर देखो (उप ४३१ टी)।

णिज्जावय देखो णिज्जामय (भवि)।

णिज्जास पुं [निर्यास] वृक्षों का रस, गोंद, (सूअ २, १)।

णिज्जिअ वि [निर्जित] जीता हुआ, पराभूत (ओघ १८ भा टी; सुर ६, ३६; औप)।

णिज्जिण सक [निर् + जि] जीतना, पराभव करना। निजिणइ (भवि) संकृ. **निज्जिणिऊण**; (महा)।

णिज्जिणिय देखो णिज्जिअ (सुपा २६)।

णिज्जिण्ण } वि [निर्जीर्ण] नाश-प्राप्त, **णिज्जिन्न** } क्षीण (भग; ठा ४, १)।

णिज्जीव वि [निर्जीव] जीव-रहित, चैतन्य वर्जित (औप; श्रा २०; महा)।

णिज्जुंज [निर् + युज्] उपकार करना (पिंड २६ टी)।

णिज्जुत्त वि [निर्युक्त] १ संबद्ध, संयुक्त (विसू १०८५; ओघ १ भा)। २ खचित, जड़ित (औप)। ३ प्ररूपित, प्रतिपादित (आवम)।

णिज्जुत्ति स्त्री [निर्युक्ति] व्याख्या, विवरण, टीका (विसे ६६५; ओघ २; सम १०७)।

णिज्जुद्ध देखो णिउद्ध (स ४७०)।

णिज्जूढ वि [निर्यूढ] १ निस्सारित, निष्कासित (णाया १, १—पत्र ६४) २ अमनोज्ञ, असुन्दर (ओघ ५४८)। ३ उद्धृत, ग्रन्थान्तर से अवतारित (दसनि १)।

णिज्जूढ वि [निर्यूढ] रहित, 'निट्ठाणं रस-निज्जूढं' (दस ८, २२)।

णिज्जूह सक [निर् + यूह्] १ परित्याग करना। २ रचना, निर्माण करना। कर्म. णिज्जूहिज्जइ (पि २२१)। हेकृ. **णिज्जूहित्तए** (वव २)। कृ. **णिज्जूहियव्व** (कप्प)।

णिज्जूह पुं [दे. निर्यूह] १ नीव्र, छदि, गृहाच्छादन, पाटन (दे ४, २८; स १०६)। २ गवाक्ष, गोख; 'इय जाव चिंतए मंती णिज्जूहट्ठिओ' (धम्म ६ टी; वव १)। ३ द्वार के पास का काष्ठ-विशेष (णाया १, १—पत्र १२; पण्ह १, १)। ४ द्वार, दरवाजा (सुर २, ८३)।

णिज्जूहग वि [निर्यूहक] ग्रन्थान्तर से उद्धृत करनेवाला (दसनि १, १४)।

णिज्जूहण न [निर्यूहण] देखो **णिज्जूहणा** (उत्त ३६, २५१; पव २)।

णिज्जूहणया } स्त्री [निर्यूहणा] १ निस्सा-**णिज्जूहणा** } रण, बाहर निकालना (वव १)। परित्याग (ठा ४, २)। ३ विरचना, निर्माण (विसे ५५१)।

णिज्जूहिअ देखो णिव्वूढ (दसनि १, १५)।

णिज्जूहिअ वि [निर्यूहित] रहित (पव १३४)।

णिज्जोअ पुं [दे] १ प्रकार, राशि। २ पुष्पों का अवकर (दे ४, ३३)।

णिज्जोअ } पुं [नियोग] १ उपकरण, **णिज्जोग** } साधन (राय ४५; ४६; पिंड २६)। २ उपकार (पिंड २६)।

णिज्जोअ } पुं [दे. निर्योग] परिकर, **णिज्जोग** } सामग्री; 'पायणिज्जोगो' (ओघ ६६८; णाया; १, १—पत्र ५४)।

णिज्जोमि पुं [दे] रज्जू, रस्सी (दे ४, ३१)।

णिज्झ अक [स्निह्] स्नेह करना। णिज्झइ (प्राकृ २८)।

णिज्झर अक [क्षि] क्षीण होना। णिज्झरइ (हे ४, २०; षड्)। वकृ. **णिज्झरंत** (कुमा ६, १३)।

णिज्झर वि [दे] जीर्ण, पुराना (दे ४, २६)।

णिज्झर पुं [निर्झर] झरना, पहाड़ से गिरता पानी का प्रवाह (हे १, ६८; २, ६०)।

णिज्झरण न [निर्झरण] ऊपर देखो (पउम ६४, ५२; सुर ६, ६४; सुपा ३५५)।

णिज्झरणी स्त्री [निर्झरणी] नदी, तरंगिणी (कुमा)।

णिज्झा सक [नि+ध्यै] देखना, निरीक्षण करना। णिज्झाइ, णिज्झाअइ (हे ४, ६)। वकृ. णिज्झाअंत, णिज्झाएमाण (मा ४; आचा २, ३, १)। संकृ. **णिज्झाइऊण, णिज्झाइत्ता** (महा; आचा)।

णिज्झा सक [निर् + ध्यै] विशेष चिन्तन करना। संकृ. **णिज्झाइत्ता** (आचा)।

णिज्झाइ वि [निध्यायिन्] देखनेवाला (आचा)।

णिज्झाइत्तु वि [निध्यातृ] देखनेवाला, निरीक्षक (उत्त १६; सम १५)।

णिज्झाइत्तु वि [निर्ध्यातृ] अतिशय चिन्तन करनेवाला (ठा ६)।

णिज्झाइय वि [निध्यात] १ दृष्ट, विलोकित (स ३५२; धण ४५)। २ न. दर्शन, निरीक्षण (महा—पृष्ठ ५८)।

णिज्झाडिय वि [निर्घाटित] विनाशित (उप ६४८ टी)।

णिज्झाय वि [दे] निर्दय, दया-रहित (दे ४, ३७)।

णिज्झाय वि [निध्यात] दृष्ट, विलोकित (सुर ६, १८८; सुपा ४४८)।

णिज्झूर वि [दे] जीर्ण, पुराना (दे ४, २६)।

णिज्झोड सक [छिद्] छेदना, काटना। णिज्झोडइ (हे ४, १२४)।

णिज्झोडण न [छेदन] छेदन, कर्त्तन (कुमा)।

णिज्झोसइत्तु वि [निर्झोषयितृ] क्षय करनेवाला, कर्मों का नाश करनेवाला (आचा)।

णिट्टंक वि [दे] १ टंक-च्छिन्न। २ विषम, असमान (४, ५०)।

णिट्टंकिय वि [निष्टङ्कित] निश्चित, अवधारित (सुपा २६०)।

णिट्टुअ अक [क्षर्] टपकना, चूना। णिट्टुअइ (हे ४, १७३)।

णिट्टुइअ वि [क्षरित] टपका हुआ (पाअ)।

णिटटुह अक [वि + गल्] गल जाना, नष्ट होना। णिट्टुहइ (हे ४, १७५)।

णिट्ठ देखो णिट्ठा = नि + स्था। निट्ठइ (भवि)।

णिट्ठय } सक [नि + स्थापय्] १ समाप्त करना, पूर्ण करना। २ अन्त करना, खतम करना। ३ विशेष रूप से स्थापन करना, स्थिर करना। भूका. णिट्ठवंसु (भग २६. १)। संकृ. णिट्ठविअ (पिंग)। कृ. णिट्ठयणिज्ज (उप ५६७ टी)।
णिट्ठव

णिट्ठवण न [निष्ठापन] १ अन्त करना, समाप्ति। २ वि. नाश-कारक, खतम करनेवाला (सुपा १६१; गउड)। ३ समाप्त करनेवाला (जी ५)।

णिट्ठवय वि [निष्ठापक] समाप्त करनेवाला (आव ६)।

णिट्ठविअ वि [निष्ठापित] १ समाप्त किया हुआ (पंचव २)। २ विनाशित (से ६, १)।

णिट्ठा अक [नि + स्था] खतम होना, समाप्त होना। णिट्ठाइ (विसे ६२७)।

णिट्ठा स्त्री [निष्ठा] १ अन्त, अवसान, समाप्ति (विसे २८३३; सुपा १३)। २ सद्भाव (आचू १)। °भासि वि [°भाषिन्] निष्ठा-पूर्वक बोलनेवाला, निश्चय-पूर्वक भाषण करनेवाला (आचा)।

णिट्ठाण न [निष्ठान] सर्व-गुण-युक्त भोजन (दस ८, २२)।

णिट्ठाण न [निष्ठान] १ दही वगैरह व्यञ्जन (ठा ४, २; पगह २, ५)। २ समाप्ति (निचू १)। °कहा स्त्री [°कथा] भक्त-कथा-विशेष, दही वगैरह व्यञ्जन की बात-चीत (ठा ४, २)।

णिट्ठावण देखो णिट्ठवण (सुपा ३५७)।

णिट्ठिय वि [निष्ठित] १ समाप्त किया हुआ, पूर्ण किया हुआ (उप १०३१ टी; कम्म ४, ७४)। २ नष्ट किया हुआ, विनाशित (सुपा ४४६)। ३ स्थिर (से ५, ७)। ४ निष्पन्न, सिद्ध (आचा २, १, ६)। ५ पुं. मोक्ष, मुक्ति (आचा)। °ट्ठ वि [°र्थ] कृतकृत्य (पगग ३६)। °ट्ठि वि [°र्थिन्] मुमुक्षु, मोक्ष का इच्छुक (आचा)।

णिट्ठिय वि [नैष्ठिक] निष्ठा-युक्त, निष्ठावाला (पगह २, ३)।

णिट्ठीव पुं [निष्ठीव] थूक, मुँह का पानी (रंभा)।

णिट्ठीवण स्त्रीन [निष्ठीवन] थूक, खखार। २ थूकना (सट्टि ७८ टी)। स्त्री °णा (वव १)।

णिट्ठुअ न [निष्ठ्यूत] थूक (कुलक ३०)।

णिट्ठुभय वि [निष्ठीवक] थूकनेवाला (पगह २, १; औप)।

णिट्ठुयण देखो निट्ठीवण (चेइय ६३)।

णिट्ठुर } वि [निष्ठुर] निष्ठुर, परुष, कठिन (प्राप्र; हे १, २५४; पाअ; गउड)।
णिट्ठुल

णिट्ठुवण न [निष्ठीवन] १ थूक, खखार (वव १)। २ वि. थूकनेवाला (ठा ५, १)।

णिट्ठुह अक [नि + स्तम्भ्] निष्टम्भ करना, निश्चेष्ट होना, स्तब्ध होना। णिट्ठुहइ (हे ४, ६७; षड्)।

निट्ठुह अक [नि + ष्ठीव्] थूकना निट्ठुहसी (तंदु ४१)।

णिट्ठुह वि [दे] स्तब्ध, निश्चेष्ट (दे ४, ३३)।

णिट्ठुहण न [दे. निष्ठीवन] थूक, मुँह का पानी, खखार (महा)।

णिट्ठुहावण वि [निष्टम्भक] निश्चेष्ट करनेवाला, स्तब्ध करनेवाला (कुमा)।

णिट्ठुहिअ न [दे] थूक, निष्ठीवन, खखार (दे ४, ४१)।

णिड पुं [दे] पिशाच, राक्षस (दे ४, २५)।

णिडल } न [ललाट] भाल, ललाट (पि २६०; पउम १००, ५७; सुपा २८)।
णिडाल

णिड्ड न [नीड] पक्षि-गृह (पाअ)।

णिड्डहण न [निर्दहन] जला देना (उप ५६३ टी)।

णिड्डुह देखो णिट्ठुअ। णिड्डुहइ (कुमा; षड्)।

णिणाय पुं [निनाद] शब्द, आवाज, ध्वनि (णाया १, १; पउम २, १०३; से ६, ३०)।

णिण्ण वि [निम्न] १ नीचा, अधस्तन (उत्त १२; उव १०३१ टी)। २ क्रिवि. नीचे, अधः (हे २, ४२)।

णिण्णक्खु क्रि [निस्सारयति] बाहर निकालता है, 'ठाणाओ ठाणं साहरति, बहिया वा णिण्णक्खु' (आचा २, २, १)।

णिण्णगा स्त्री [निम्नगा] नदी, स्रोतस्विनी (पगग १; पगह २, ४)।

णिण्णट्ठ वि [निर्नष्ट] नाश-प्राप्त (सुर ६, ६२)।

णिण्णय पुं [निर्णय] १ निश्चय, अवधारण (हे १, ६३)। २ फैसला (सुपा ६६)।

णिण्णया देखो णिण्णगा (पाअ)।

णिण्णार वि [निर्नगर] नगर से निर्गत (भग १५)।

णिण्णाला स्त्री [दे] चञ्चु, चोंच (दे ४, ३६)।

णिण्णास सक [निर् + नाशय्] विनाश करना। वकृ. निन्नासिंत (सुपा ६५४)।

णिण्णास पुं [निर्णाश] विनाश (भवि)।

णिण्णासिय वि [निर्णाशित] विनाशित (सुर ३, २३१; भवि)।

णिण्णिद्द वि [निर्निद्र] निद्रा-रहित (गा ६५६)।

णिण्णिमेस वि [निर्निमेष] १ निमेष-रहित, बिना पलक झपकाये, एक-टक। २ चेष्टा-रहित। ३ अनुपयोगी (ठा ५, २)।

णिण्णी सक [निर् + णी] निश्चय करना। संकृ. णिण्णइउं (धर्मवि. १३६)।

णिण्णीअ वि [निर्णीत] निश्चित, नक्की किया हुआ (श्रा १२)।

णिण्णुण्णअ वि [निम्नोन्नत] ऊँचा-नीचा, विषम (अभि २०६)।

णिण्णेह वि [निःस्नेह] स्नेह-रहित (हे ४, ३६७; सुर ३, २२२; महा)।

णिण्हइया स्त्री [निह्नविका] लिपि-विशेष (सम ३५)।

णिण्हग } पुं [निह्नव] १ सत्य का अपलाप करनेवाला, मिथ्यावादी (ओघ ४० भा; ठा ७; औप) २ अपलाप (सार्ध ४१)।
णिण्हय
णिण्हव

णिण्हव सक [नि + ह्नु] अपलाप करना। णिण्हवइ (विसे २२६६; हे ४, २३६)।

कर्म. णिण्हवीअदि (शौ) (नाट—रत्ना ३६)। वकृ. णिण्हवंत, णिण्हवेमाण (उप २११ टी; सुर ३, २०१)।

णिण्हवग वि [निह्नावक] अपलाप करनेवाला (ओघ ४८ भा)।

णिण्हवण न [निह्नवन] अपलाप (विपा १, २; उव)।

णिण्हवण वि [निह्नवन] अपलाप-कर्त्ता (संबोध ५)।

णिण्हविद देखो णिण्हुविद (नाट—शकु १२६)।

णिण्हुय वि [निह्नुत] अपलपित (सुपा २६८)।

णिण्हुव देखो णिण्हव = नि + ह्नु। कर्म. णिण्हुविज्जंति (पि ३३०)।

णिण्हुविद (शौ) वि [नि + ह्नुत] अपलपित (पि ३३०)।

णितिय देखो णिच्च (आचा; ठा १०)।

णितुडिअ वि [नितुडित] टूटा हुआ, छिन्न (भन्तु ५४)।

णित्त देखो णेत्त (पाअ; सुपा २६१; लहुअ १४)।

णित्तम वि [निस्तमस्] १ अन्धकार-रहित। २ अज्ञान-रहित (अजि ८)।

णित्तल वि [दे] अनिवृत्त (भग १५)।

णित्ति (अप) देखो णाइ (भवि)।

णित्तिंस वि [निस्त्रिंश] निर्दय, करुणा-हीन (सुपा ३१५)।

णित्तिरडि वि [दे] निरन्तर, अव्यवहित (दे ४, ४०)।

णित्तिरडिअ वि [दे] त्रुटित, टूटा हुआ (दे ४, ४१)।

णित्तुप्प वि [दे] स्नेह-रहित, घृत आदि से वर्जित (बृह १)।

णित्तुल वि [निस्तुल] १ निरुपम, असाधारण (उप पृ ५३)। २ क्रिवि. असाधारण रूप से; 'अण्णहा नित्तुलं मरसि' (सुपा ३४५)।

णित्तुस वि [निस्तुष] तुष-रहित, भूसा से रहित, विशुद्ध (पण्ह २, ४; उप १७६ टी)।

णित्तेय वि [निस्तेजस्] तेज-रहित (गाया १, १)।

णित्थणण न [निस्तनन] विजय-सूचक ध्वनि (सुर २, २३३)।

णित्थर सक [निर् + तॄ] पार करना, पार उतरना। णित्थरेइ (सुपा ४४६); 'णित्थरंति खलु कायराविं पायनिज्जामयगुणेण महण्णवं' (स १६३)। कवकृ. णित्थरिज्जंत (राज)। कृ. णित्थरियव्व (णाया १, ३; सुपा १२६)।

णित्थरण न [निस्तरण] पार-गमन, पार-प्राप्ति (ठा ४, ४; उप १३४ टी)।

णित्थरिअ देखो णित्थिण्ण (उप १३४ टी)।

णित्थाण वि [निःस्थान] स्थान-रहित, स्थान-भ्रष्ट (णाया १, १८)।

णित्थाम वि [निःस्थामन्] निर्बल, कमजोर, मन्द (पाअ; गउड; सुपा ४८६)।

णित्थार सक [निर् + तारय्] १ पार उतारना, तारना। २ बचाना, छुटकारा देना। णित्थारसु (काल)।

णित्थार पुं [निस्तार] १ छुटकारा, मुक्ति। २ बचाव, रक्षा। ३ उद्धार (णाया १, ६ टी—पत्र १६६; सुर २, ५१, ७, २०१; सुपा २६६)।

णित्थारग वि [निस्तारक] पार जानेवाला, पार उतरनेवाला (स १८३)।

णित्थारणा स्त्री [निस्तारण] पार-प्रापण, पार पहुँचाना (जं ३)।

णित्थारिय वि [निस्तारित] बचाया हुआ, रक्षित, उद्धृत (भग; सुपा ४४६)।

णित्थिण्ण } वि [निस्तीर्ण] १ उत्तीर्ण, पार-
णित्थिन्न } प्राप्त; 'णित्थिण्णो समुद्दं' (स ३६७)। २ जिसको पार किया हो वह, 'णित्थिन्ना आवया गरुई' (सुर ८, ८६); 'नित्थिण्णभवसमुद्दो' (स १३६)।

णिदंस सक [नि + दर्शय्] १ उदाहरण बतलाना, दृष्टान्त दिखाना। २ दिखाना। णिदंसेइ (पिंग)। वकृ. णिदंसंत (सुपा ८६)।

णिदंसण न [निदर्शन] १ उदाहरण, दृष्टान्त (अभि २०३)। २ दिखाना (ठा १०)।

णिदंसिअ वि [निदर्शित] प्रदर्शित, दिखाया हुआ; 'एवं विचिंतिऊणं निदंसिओ नियकरो मए तीए' (सुर ६, ८२; उप ६६७; सार्ध ४०)।

णिदरिसण देखो णिदंसण (उव; उप ३८४)।

णिदरिसिम वि [निदर्शित] उपदर्शित, बतलाया हुआ (धर्मसं १०००)।

णिदा स्त्री [दे] १ वेदना-विशेष, ज्ञान-युक्त वेदना (भग १६, ५)। २ जानते हुए भी की जाती प्राणि-हिंसा (पिंड)।

णिदाण देखो णिआण (विपा १, १; अंत १५; नाट—वेणी ३३)।

णिदाया देखो णिदा (पण्ण ३५)।

णिदाह पुं [निदाघ] १ घर्म, घाम, उष्ण। २ ग्रीष्म-काल, गरमी का मौसिम। ३ जेठ मास (आव ५)।

णिदाह पुं [निदाघ] तीसरा नरक का एक नरक-स्थान (देवेन्द्र ८)।

णिदाह पुं [निदाह] असाधारण दाह (आव ५)।

णिदेस पुं [निदेश] आज्ञा, हुकुम (कुप्र ४२६)।

णिदेसिअ वि [निदेशित] १ प्रदर्शित। २ उक्त, कथित (पउम ५, १४५)।

णिदोच्च न [दे] १ भय का अभाव। २ स्वास्थ्य, तंदुरुस्ती (पव २६८)।

णिद्दंझाण न [निद्राध्यान] निद्रा में होता ध्यान, दुर्ध्यान-विशेष (आउ)।

णिद्दंद वि [निर्द्वन्द्व] द्वन्द्व-रहित, क्लेश-वर्जित (सुपा ४५५)।

णिद्दंभ वि [निर्दम्भ] दम्भ-रहित, कपट-रहित (सुपा १४७)।

णिद्दडी (अप) देखो णिद्दा = निद्रा (पि ५६६)।

णिद्दड्ढ वि [निर्दग्ध] १ जलाया हुआ, भस्म किया हुआ (सुर १४, २६; अंत १५)। २ पुं. नृप-विशेष (पउम ३२, २२)। ३ रत्नप्रभा-नामक नरक-पृथिवी का एक नरकावास (ठा ६)। °मज्झ पुं [°मध्य] नरकावास-विशेष, एक नरक-प्रदेश (ठा ६)। °वित्त पुं [°वर्त] नरकावास-विशेष (ठा ६)। °विसिट्ठ पुं [°विशिष्ट] नरक-प्रदेश-विशेष (ठा ६)।

णिद्दय वि [निर्दय] दया-हीन, करुणा-रहित, निष्ठुर (पण्ह १, १; गउड)।

णिद्दलण न [निर्दलन] १ मर्दन, विदारण (आचा)। २ वि. मर्दन करनेवाला (वज्जा ४२)।

णिद्दलिअ वि [निर्दलित] मर्दित, विदारित (पात्र; सुर ५, २२२; सार्ध ७६)।

णिद्दह सक [निर् + दह्] जला देना, भस्म करना। निद्दहइ (महा; उप)। णिद्दहेज्जा (पि २२२)।

णिद्दा अक [नि + द्रा] निद्रा लेना, नींद करना। णिद्दाइ (षड्)। वकृ. **णिद्दाअंत** (से १, ५६)।

णिद्दा स्त्री [निद्रा] १ निद्रा, नींद (स्वप्न ५६; कप्पू)। २ निद्रा-विशेष, वह निद्रा जिसमें एकाध आवाज देने पर ही आदमी जाग उठे (कम्म १,११)। °अंत वि [°वत्] निद्रा-युक्त, निद्रित (से १; ५६)। °करी स्त्री [°करी] लता-विशेष (दे ७, ३४)। °णिद्दा स्त्री [°निद्रा] निद्रा-विशेष, वह निद्रा जिसमें बड़ी कठिनाई से आदमी उठाया जा सके (कम्म १, ११; सम १५)। °लु, °लु वि [°वत्] निद्रावाला (संक्षि २०; पि ५९५; प्राप्र)। °वअ वि [°प्रद] निद्रा देनेवाला (से ६, ४३)।

णिद्दाअ वि [निद्रात] जो नींद में हो (से १, ५६)।

णिद्दाअ वि [निर्दाव] अग्नि-रहित (से १, ५६)।

णिद्दाअ वि [निर्दाय] दाय-रहित, पैतृक धन से वर्जित (से १, ५६)।

णिद्दाइअ वि [निद्रित] निद्रा-युक्त (महा)।

णिद्दाणी स्त्री [निद्राणी] विद्यादेवी-विशेष (पउम ७, १४४)।

णिद्दाया देखो **णिद्दा** (पण्ण ३५)।

णिद्दारिअ वि [निर्दारित] खण्डित, विदारित (से ५, ८३; १३, ६५)।

णिद्दाव वि [निर्दाव] १ दावनल-रहित। २ जंगल-रहित (से ६, ४३)।

णिद्दिट्ठ वि [निर्दिष्ट] १ कथित, उक्त (भग)। २ प्रतिपादित, निरूपित (पंचा ३; दंस)।

णिद्दिट्ठु वि [निर्देष्टृ] निर्देश करनेवाला (विसे १५०४; विक्र ६४)।

णिद्दिस सक [निर् + दिश्] १ उच्चारण करना, कथन करना। २ प्रतिपादन करना, निरूपण करना। निद्दिसइ (विसे १५२६)। कर्म. णिद्दिसइ (नाट—मालवि ५३)। हेकृ. **निद्देट्ठुं** (पि ५७६)। कृ. **णिद्दिस्स**, **णिद्देस** (विसे १५२३)।

णिद्दुक्ख वि [निर्दुःख] दुःख-रहित, सुखी (सुपा ५३७)।

णिद्दुर पुं [दे. नेत्तर] देश-विशेष (इक)।

णिद्दूसण वि [निर्दूषण] निर्दोष (धर्मवि २०)।

णिद्देस पुं [निर्देश] १ लिंग या अर्थ-मात्र का कथन (ठा ८—पत्र ४२७)। २ विशेष का अभिधान; 'अविसेसियमुद्देसो विसेसिओ होइ निद्देसो' (विसे; १४९७; १५०३)। ३ निश्चय पूर्वक कथन (विसे १५२६)। ४ प्रतिपादन, निरूपण (उत्त १; णंदि)। ५ आज्ञा, हुकुम (पात्र, दस ६, २)। ६ वि. जिसको देश-निकाले की आज्ञा हुई हो वह (पउम ४, ८२)।

णिद्देसग, **णिद्देसय** } वि [निर्देशक] निर्देश करनेवाला (विसे १५०८; १५००)।

णिद्दोत्थ न [निर्दौःस्थ्य] १ दुःस्थता का अभाव (वव ४)। २ वि. स्वस्थ, दुःस्थता-रहित (वव ७)।

णिद्दोस वि [निर्दोष] दोष-रहित, दूषण-वर्जित, विशुद्ध (गउड; सुर १, ७३)।

णिद्ध न [स्निग्ध] स्नेह, रस-विशेष (ठा १; अणु)। २ वि. स्नेह-युक्त, चिकना (हे २, १०९; उव; षड्)। ३ कान्ति-युक्त, तेजस्वी (बृह ३)।

णिद्धंत वि [निध्मात] अग्नि-संयोग से विशोधित, मल-रहित (पण्ह १, ४; औप)।

णिद्धंधस वि [दे] १ निर्दय, निष्ठुर (दे ४, ३७; ओघ ४४५; पात्र; पुप्फ ४५४; सट्ठि २६; सुपा २४५; श्रा ३६)। २ निर्लज्ज, बेशरम (विवे १२८)।

णिद्धण वि [निर्धन] धन-रहित, अकिंचन (हे २, ९०; गाया १, १८; दे ४, ५; उप ७६ टी; महा)।

णिद्धण्ण वि [निर्धान्य] धान्य-रहित (तंदु)।

णिद्धम वि [दे] अविभिन्न-गृह, एक ही घर में रहनेवाला (दे ४, ३८)।

णिद्धमण न [दे] खाल, मोरी, पानी जाने का रास्ता (दे ४, ३६; उर २, १०; ठा ५, १, आवम; तंदु; उव; णाया १, २)।

णिद्धमण न [निध्मान] १ तिरस्कार, अवहेलना (उप पृ ३४६)। २ पुं. यक्ष-विशेष (आव ४)।

णिद्धमाय वि [दे] अविभिन्न-गृह, एक ही घर में रहनेवाला (दे ४, ३८)।

णिद्धम्म वि [दे] एकमुख-यायी, एक ही तरफ जानेवाला (दे ४, ३५)।

णिद्धम्म वि [निर्धर्मन्] धर्म-रहित, अधर्मी (श्रा २७)।

णिद्धय वि [दे] देखो **णिद्धम** (दे ४, ३८)।

णिद्धाइऊण देखो **णिद्धाव**।

णिद्धाड सक [निर् + धाटय्] बाहर निकाल देना। कर्म. निद्धाडिज्जइ (संबोध १६)।

णिद्धाडण न [निर्धाटन] निस्सारण, निष्कासन, बाहर निकालना (पण्ह १, १)।

णिद्धाडाविय वि [निर्धाटित] अन्य द्वारा बाहर निकलवाया हुआ, अन्य द्वारा निस्सारित (महा)।

णिद्धाडिय वि [निर्धाटित] निस्सारित, निष्कासित (पात्र; भवि)।

णिद्धारण न [निर्धारण] १ गुण या जाति आदि को लेकर समुदाय से एक भाग का पृथक्करण। २ निश्चय, अवधारण (विसे ११६८)।

णिद्धाव सक [निर् + धाव्] दौड़ना। संकृ. णिद्धाइऊण (महा)।

णिद्धाविय वि [निर्धावित] दौड़ा हुआ, धावित (महा)।

णिद्धुण सक [निर् + धू] १ विनाश करना। २ दूर करना। संकृ. निद्धुणे, णिधूय (दस ७, ५७; सूअ १, ७)।

णिद्धुणिय, **णिद्धुय** } वि [निर्धूत] १ विनाशित, नष्ट किया हुआ। २ अपनीत (सुपा ५६६; औप)।

णिद्धूम वि [निर्धूम] १ धूम-रहित (कप्प; पउम ५३, १०)। २ एक तरह का अपलक्षण (वव २)।

णिद्धूय देखो णिद्धुय (जीव ३)।
णिद्धोअ वि [निर्धौत] १ धोया हुआ (गा ६३६; से १४, १६; स १६१)। २ निर्मल, स्वच्छ; 'निद्धोयउदयकंखिर—'(वज्जा १५८)।
णिद्धोभास वि [स्निग्धावभास] चमकीला, स्निग्धपन से चमकता (णाया १,१—पत्र ४)।
णिधण न [निधन] विनाश, मृत्यु, मौत (नाट—मृच्छ २५२)।
णिधत्त वि [निधत्त] निकाचित, निश्चित (ठा ८—पत्र ४३४)।
णिधत्त न [निधत्त] १ कर्मों का एक तरह का अवस्थान, बधे हुए कर्मों का तप्त सूची-समूह की तरह अवस्थान। २ वि. निबिड़ भाव को प्राप्त कर्म-पुद्गल (ठा ४, २)।
णिधत्ति स्त्री [निधत्ति] करण-विशेष, जिससे कर्म-पुद्गल निबिड़ रूप से व्यवस्थापित होता है (पंच ५)।
णिधम्म देखो णिद्धम्म = निर्धर्मन् (ओघ ३७ भा)।
णिधाण देखो णिहाण (नाट—महावीर १२०)।
णिधूय देखो णिद्धुण।
णिन्नाम सक [निर् + नमय्] नमाना, झुकाना। णिन्नामए (सूअ १, १३, १५)।
णिन्नीय देखो णिण्णीअ (धर्मवि ५)।
णिपट्ट न [दे] गाढ़ (प्राकृ ३८)।
णिपडिय वि [निपतित] नीचे गिरा हुआ (सण)।
णिपा सक [नि + पा] पीना। संकृ. निपीय (सम्मत्त २३०)।
णिपाइ वि [निपातिन्] १ नीचे गिरने-वाला। २ सामने गिरनेवाला (सूअ १, ५)।
णिपूर पुं [निपूर] नन्दीवृक्ष (आचा २, १, ८, ३)।
णिप्पअंप देखो णिप्पकंप (से ६, ७८)।
णिप्पएस वि [निष्प्रदेश] १ प्रदेश-रहित। २ पुं. परमाणु (विसे)।
णिप्पंक वि [निष्पङ्क] कर्दम-रहित, पाँक-रहित (सम १३७; भग)।
णिप्पंकिय वि [निष्पङ्किन्] पंक-रहित (भवि)।
णिप्पंख सक [निर् + पक्षय्] पक्ष-रहित करना, पंख तोड़ना। णिप्पंखेंति (विपा १, ८)।
णिप्पंद वि [निष्पन्द] चलन-रहित, स्थिर (से २, ४२)।
णिप्पकंप वि [निष्प्रकम्प] कम्प-रहित, स्थिर (सम १०६; पण्ह २, ४)।
णिप्पक्ख वि [निष्पक्ष] पक्ष-रहित (गउड)।
णिप्पगल वि [निष्प्रगल] टपकनेवाला, झरने-वाला, चूनेवाला (ओघ ३५; ओघ ३४ भा)।
णिप्पच्चवाय वि [निष्प्रत्यवाय] १ प्रत्यवाय-रहित, निर्विघ्न (ओघ २४ टी)। २ निर्दोष, विशुद्ध, पवित्र; 'णिप्पच्चवायचरणा कज्जं साहंति' (सार्ध ११७)।
णिप्पच्छिम वि [निष्पश्चिम] १ अन्तिम, अन्त का (से १२, २१)। २ परिशिष्ट, अवशिष्ट, बाकी का; 'णिप्पच्छिमाइं असई दुक्खालोआइं महुअपुप्फाइं' (गा १०४)।
णिप्पट्ठ वि [दे] अधिक (दे ४, ३१)।
णिप्पट्ठ वि [निःस्पष्ट] अस्पष्ट, अव्यक्त। °पसिणवागरण वि [°प्रश्नव्याकरण] निरुत्तर किया हुआ (भग १५; णाया १, ५; उवा)।
णिप्पट्ठ वि [निःस्पृष्ट] नहीं छूआ हुआ। °पसिणवागरण वि [°प्रश्नव्याकरण] निरुत्तर किया हुआ (भग १५)।
णिप्पडिकम्म वि [निष्प्रतिकर्मन्] संस्कार-रहित, परिष्कार-वर्जित, मलिन (सम ५७; सुपा ४८५)।
णिप्पडियार वि [निष्प्रतिकार] निरुपाय, प्रतिकार-वर्जित (पण्ह २, ४)।
णिप्पणिअ वि [दे] जल-धौत, पानी से धोया हुआ (षड्)।
णिप्पण्ण देखो णिप्फण्ण (गा ८८६)।
णिप्पण्ण वि [निष्प्रज्ञ] बुद्धि-रहित, प्रज्ञा-शून्य (उप १७६ टी)।
णिप्पत्त वि [निष्पत्र] पत्र-रहित (गा ८८७; वव १)।
णिप्पत्ति } देखो णिप्फत्ति (पंचा १८; संक्षि **णिप्पद्दि** } ६)।
णिप्पन्न देखो णिप्पण्ण (कुप्र २०८)।
णिप्पभ वि [निष्प्रभ] निस्तेज, फीका (महा)।
णिप्परिग्गह वि [निष्परिग्रह] परिग्रह-रहित (उत्त १४)।
णिप्पलिवयण वि [निष्प्रतिवचन] निरुत्तर, उत्तर देने में असमर्थ (सम ६०)।
णिप्पसर वि [निष्प्रसर] प्रसर-रहित, जिसका फैलाव न हो (पि ३०५)।
णिप्पह देखो णिप्पभ (से १०, १२; हे २, ५३)।
णिप्पाइय देखो णिप्फाइय (कुप्र १६६)।
णिप्पाण वि [निष्प्राण] प्राण-रहित, निर्जीव (णाया १, २)।
णिप्पाल देखो णेपाल (धर्मवि ६६)।
णिप्पाव पुं [निष्पाप] एक दिन का उपवास (संबोध ५८)।
णिप्पाव देखो णिप्फाव (पि ३०५)।
णिप्पिच्छ वि [दे] १ ऋजु, सरल। २ दृढ़, मजबूत (दे ४, ४६)।
णिप्पिट्ठ वि [निष्पिष्ट] पीसा हुआ (दे ८, २०; सण)।
णिप्पिट्ठ न [निष्पिष्ट] पेषण की समाप्ति (पिंड ६०२)।
णिप्पिवास वि [निष्पिपास] पिपासा-रहित, तृष्णा-वर्जित, निःस्पृह (पण्ह १, १; णाया १, १; सुर १, १३)।
णिप्पिवासा स्त्री [निष्पिपासा] स्पृहा का अभाव (वि १८)।
णिप्पिह वि [निःस्पृह] स्पृहा-रहित, निर्मम (हे २, २३; उप ३२० टी)।
णिप्पीडिअ वि [निष्पीडित] दबाया हुआ (से ५, २५)।
णिप्पीलण न [निष्पीडन] दबाव, दबाना (आचा)।
णिप्पीलिय देखो णिप्पीडिअ। २ निचोड़ा हुआ; 'निप्पीलियाइं पोत्ताइं' (स ३३२)।
णिप्पुंसण न [निष्पुंसन] १ पोंछना, मार्जन। २ अभिमर्दन (हे२, ५३)।
णिप्पुन्न वि [निष्पुण्य] पुण्य-रहित (कुप्र ३१८)।
णिप्पुन्नग वि [निष्पुण्यक] १ पुण्य-रहित। २ पुं. स्वनाम-ख्यात एक कुलपुत्र (सुपा ५४५)।
णिप्पुलाय पुं [निष्पुलाक] आगामी चौबीसी में होनेवाले एक स्वनाम-ख्यात जिन-देव (सम १५३)।

णिप्पुलाय वि [निष्पुलाक] चारित्र-दोष से रहित (दस १०, १६)।

णिप्फंद देखो णिप्पंद (हे २, ५३; गाया १, २; सुर ३, १७२)।

णिप्फंस वि [दे] निस्त्रिंश, निर्दय (षड्)।

णिप्फज्ज अक [निर् + पद्] नीपजना, उपजना, सिद्ध होना। णिप्फज्जइ (स ६१६)। वकृ. **णिप्फज्जमाण** (पण्ह १, ४)।

णिप्फडिअ वि [निस्फटित] १ विशीर्ण। २ जिसका मिजाज ठिकाने पर न हो। ३ अंकुश-रहित (उप १२८ टी)।

णिप्फण्ण वि [निष्पन्न] नीपजा हुआ, बना हुआ, सिद्ध (से २, १२; महा)।

णिप्फत्ति वि [निष्पत्ति] निष्पादन, सिद्धि (उवः उप २८० टी; साधं १०६)।

णिष्फन्न देखो **णिप्फण्ण** (कप्पः गाया १, १६)।

णिप्फरिस वि [दे] निर्दय, दया-हीन (दे ४, ३७)।

णिप्फल वि [निष्फल] फल-रहित, निरर्थक (से १४, २६; गा १३६)।

णिप्फाअ देखो **णिप्फाव** (प्राप्र)।

णिप्फाइऊण देखो **णिप्फाय**।

णिप्फाइय वि [निष्पादित] नीपजाया हुआ, बनाया हुआ, सिद्ध किया हुआ (विसे ७ टी; उप २११ टी; महा)।

णिप्फाय सक [निर् + पादय्] नीपजाना, बनाना, सिद्ध करना। संकृ. **णिप्फाइऊण** (पंचा ७)।

णिप्फायग वि [निष्पादक] नीपजानेवाला, बनानेवाला, सिद्ध करनेवाला (विसे ४८३; ठा ६; उप ८२८)।

णिप्फायण न [निष्पादन] नीपजाना, निर्माण, कृति (श्राव ४)।

णिप्फाव पुं [निष्पाव] धान्य-विशेष, वल्ल (हे २, ५३; पराण १; ठा ५, ३; श्रा १८)।

णिप्फाव पुं [निष्पाव] एक माप, बाँट-विशेष (अणु १५५)।

णिप्फिड अक [नि + स्फिट्] बाहर निकलना। वकृ. **णिप्फिडंत** (स ५७४)।

णिप्फिडिअ वि [निस्फिटित] निर्गत, बाहर निकला हुआ (पउम ६, २२७; ८०, ६०)।

णिप्फुर पुं [निस्फुर] प्रभा, तेज (गउड)।

णिप्फेड पुं [निस्फेट] निर्गमन, बाहर निकलना (उप पृ २५२)।

णिप्फेडय वि [निस्फेटक] बाहर निकालनेवाला (सूत्र २, २, ८५)।

णिप्फेडिय वि [निस्फेटित] १ निस्सारित, निष्कासित (सूत्र २, २)। २ भगाया हुआ, नसाया हुआ (पुप्फ १२५)। ३ अपहृत, छीना हुआ (ठा ३, ४)।

णिप्फेडिया स्त्री [निस्फेटिका] अपहरण, चोरी; 'एसा पढमा सीसनिप्फेडिया' (सुख २, १३; पव १०७)।

णिप्फेस पुं [दे] शब्द-निर्गम, आवाज निकलना (दे ४, २६)।

णिप्फेस पुं [निष्पेष] १ पेषण, पीसना। २ संघर्ष (हे २, ५३)।

णिबंध सक [नि + बन्ध्] १ बाँधना। २ २ करना। निबंधइ (भग)।

णिबंध सक [नि + बन्ध्] उपार्जन करना। णिबंधंति (पंचा ७, २२)।

णिबंध पुंन [निबन्ध] १ संबन्ध, संयोग (विसे ६६८)। २ आग्रह, हठ (महा); 'णिबन्धाणि' (पि ३५८)।

णिबंधण न [निबंधन] कारण, प्रयोजन, निमित्त (पात्र; प्रासू ६६)।

णिबद्ध वि [निबद्ध] १ बँधा हुआ (महा)। २ सयुक्त, संबद्ध (से ६, ४४)।

णिबिड वि [निबिड] सान्द्र, घना, गाढ़ (गउड; कुमा)।

णिबिडिय वि [निबिडित] निबिड़ किया हुआ (गउड)।

णिबुक [दे] देखो **णिब्बुक** (पण्ह १, ३—पत्र ४६)।

णिबुड्ड अक [नि + मस्ज्] निमज्जन करना, डूबना। वकृ. **णिबुड्डिज्जंत, निबुड्डमाण** (अच्चु ६३; उवा)।

णिबुड्ड वि [निमग्न] डूबा हुआ, निमग्न (गा ३७; सुर ३, ५१; ४, ८०)।

णिबुड्डण न [निमज्जन] डूबना, निमज्जन (पउम १०, ४३)।

णिबोल देखो **णिबुड्ड** = नि + मस्ज। वकृ. **णिबोलिज्जमाण** (राज)।

णिबोह पुं [निबोध] १ प्रकृष्ट बोध, उत्तम ज्ञान। २ अनेक प्रकार का बोध (विसे ७१८७)।

णिबोहण न [निबोधन] प्रबोध, समझाना (पउम १०२, ८२)।

णिब्बंध पुं [निर्बन्ध] आग्रह (गा ६७५; महा; सुर ३, ८)।

णिब्बंधण न [निर्बन्धन] निबन्धन, हेतु, कारण; 'सारीरियब्बेओनिब्बंधणं धणं' (काल)।

णिब्बल देखो **णिव्वल** = निर् + पद्। णिब्बलइ (प्राकृ ६४)।

णिब्बल वि [निर्बल] बल-रहित, दुर्बल (आचा)।

णिब्बहिं अ [निर्बहिस्] अत्यन्त बाहर (ठा ६—पत्र ३५२)।

णिब्बाहिर वि [निर्बाह्य] बाहर का, बाहर गया हुआ; 'संजमनिब्बाहिरा जाया' (उवा)।

णिब्बुक वि [दे] १ निर्मूल, मूल-रहित। २ क्रिवि. मूल से; 'णिब्बुकछिण्णाधय—' (पण्ह १, ३—पत्र ४५)।

णिब्बुड्ड देखो **णिबुड्ड** = निमग्न (स ३६०; गउड)।

णिब्भंछण देखो **णिब्भच्छण** (उव ३०३)।

णिब्भंजण न [दे] पक्वान्न के पकाने पर जो शेष घृत रहता है वह (पभा ३३)।

णिब्भंत वि [निर्भ्रान्त] निःसंदेह, संशय-रहित (ति १४)।

णिब्भग्ग न [दे] उद्यान, बगीचा (दे ४, ३४)।

णिब्भग्ग वि [निर्भाग्य] भाग्य-रहित, कमनसीब, अभागा (उप ७२८ टी; सुपा ३८५)।

णिब्भच्छ सक [निर् + भर्त्स्] १ तिरस्कार करना, अपमान करना, अवहेलना करना, आक्रोश-पूर्वक अपमान करना। णिब्भच्छेइ, णिब्भच्छेजा (गाया १, १८; उवा)। संकृ. **णिब्भच्छिअ** (नाट—मालती १७१)।

णिब्भच्छण न [निर्भर्त्सन] तिरस्कार, अपमान, परुष वचन से अवहेलना (पण्ह १, ३; गउड)।

णिब्भच्छणा स्त्री [निर्भर्त्सना] ऊपर देखो (भग १५; गाया १, १६)।

णिब्भच्छिअ वि [निर्भर्त्सित] अपमानित, अवहेलित (गा ८९८; सुपा ४०७)।

णिब्भय वि [निर्भय] भय-रहित, निडर (णाया १, ४; महा)।

णिब्भर सक [निर् + भृ] भरना, पूर्ण करना। कवकृ. **णिब्भरेंत** (से १५, ७४)।

णिब्भर वि [निर्भर] १ पूर्ण, भरपूर (से १०, १७)। २ व्यापक, फैलनेवाला (कुमा)। ३ क्रिवि. पूर्ण रूप से 'मेघो य णिब्भरं वरिसइ' (आवम)।

णिब्भिद सक [निर् + भिद्] तोड़ना, विदारण करना। कवकृ **णिब्भिज्जंत**, **णिब्भिज्जमाण** (से १४, २६; भग १८, २, जीव ३)।

णिब्भिय वि [निर्भीक] भय-रहित, निडर (सुपा १४३; २४६; २७५)।

णिब्भिज्जंत } **णिब्भिज्जमाण** } देखो **णिब्भिद**।

णिब्भिट्ट वि [दे] आक्रान्त (भवि)।

णिब्भिण्ण वि [निर्भिन्न] १ विदारित, तोड़ा हुआ (पाअ)। २ विद्ध (से ५, ३४)।

णिब्भीअ वि [निर्भीक] भय-रहित, निडर (से १३, ७०)।

णिब्भुग्ग वि [दे] भग्न, खण्डित (दे ४, ३२)।

णिब्भुय देखो **णिभुअ** (चेइय ५८६)।

णिब्भेय पुं [निर्भेद] भेदन, विदारण (सुपा ३२७)।

णिब्भेयण न [निर्भेदन] ऊपर देखो (सुर २, ६९)।

णिब्भेरिय वि [निर्भेरित] प्रसारित, फैलाया हुआ (उत्त १२, २९)।

णिभ देखो **णिह** = निभ (उव; जं ३)।

णिभच्छण देखो **णिब्भच्छण** (पिंड २१०)।

णिभंग पुं [निभङ्ग] भञ्जन, खण्डन, त्रोटन (राज)।

णिभाल सक [नि + भालय्] देखना, निरीक्षण करना। णिभालेहि (आवम)। वकृ. **णिभालयंत** (उप पृ ५३)। कवकृ. **णिभालिज्जंत** (उप ९८६ टी)।

णिभालिय वि [निभालित] दृष्ट, निरीक्षित (उप पृ ५८)।

णिभिअ } **णिभुअ** } देखो **णिहुअ** (पण्ह २, ३; गा ८००)।

णिभेल सक [निर् + भेलय्] बाहर करना। कवकृ. **णिभेल्लंत** (पण्ह १, ३—पत्र ४५)।

णिभेलण न [दे] गृह, घर, स्थान (कप्प)।

णिम सक [नि + अम्] स्थापन करना। णिमइ (हे ४, १९९; षड्)। णिमेइ (पि ११८)। वकृ. **णिमेंत** (से १, ४१)।

णिमंत सक [नि + मन्त्रय्] निमन्त्रण देना, न्यौता देना। णिमंतेइ (महा)। वकृ. **णिमंतेमाण** (आचा २, २, ३)। संकृ. **णिमंतिऊण** (महा)।

णिमंतण न [निमन्त्रण] निमन्त्रण, न्यौता, बुलावा (उप पृ ११३)।

णिमंतणा स्त्री [निमन्त्रणा] ऊपर देखो (पंचा १२)।

णिमंतिय वि [निमन्त्रित] जिसको न्यौता दिया गया हो वह (महा)।

णिमग्ग वि [निमग्न] डूबा हुआ (पउम १०९, ४; औप)। °**जला** स्त्री [°जला] नदी-विशेष (जं ३)।

णिमज्ज अक [नि + मस्ज्] डूबना, निमज्जन करना। णिमज्जइ (पि ११८)। वकृ. **णिमज्जंत** (गा ६०६, सुपा ९४)।

णिमज्जग वि [निमज्जक] १ निमज्जन करनेवाला। पुं. वानप्रस्थाश्रमी तापस-विशेष, जो स्नान के लिए थोड़े समय तक जलाशय में निमग्न रहते हैं (औप)।

णिमज्जण न [निमज्जन] डूबना, जल-प्रवेश (सुपा ३५४)।

णिमाणिअ देखो **णिम्माणिअ** = निर्मानित (भवि)।

णिमि सक [नि + युज्] जोड़ना। णिमेइ (प्राकृ ६७)।

णिमिअ वि [न्यस्त] स्थापित, निहित (कुमा; से १, ४२; स ६, ७६०; सण)।

णिमिअ वि [दे] आघ्रात, सूँघा हुआ (षड्)।

णिमिण देखो **णिम्माण** = निर्माण (कम्म १, २५)।

णिमित्त न [निमित्त] १ कारण, हेतु (प्रासू १०४)। २ कारण-विशेष, सहकारि-कारण (सूअ २, २)। ३ शास्त्र-विशेष, भविष्य आदि जानने का एक शास्त्र (ओघ १९; भा ८)। ४ अतीन्द्रिय ज्ञान में कारण-भूत पदार्थ (ठा ८)। ५ जैन साधुओं की भिक्षा का एक दोष (ठा ३, ४)। °**पिंड** पुं [°पिण्ड] भविष्य आदि बतला कर प्राप्त की हुई भिक्षा (आचा २, १, ९)।

णिमित्ति वि [निमित्तिन्] निमित्त-शास्त्र का जानकार (कुप्र ३७८)।

णिमित्तिअ देखो **णेमित्तिअ** (सुपा ४०२)।

णिमिल्ल अक [नि + मील्] आँख मूँदना, आख मींचना। णिमिल्लइ (हे ४, २३२)।

णिमिल्ल वि [निमीलित] जिसने नेत्र बंद किया हो, मुद्रित-नेत्र (से ६,६१; ११, ५०)।

णिमिल्लण देखो **णिमीलण** (राज)।

णिमिस अक [नि + मिष्] आँख मूँदना। निमिसंति (तंदु ५३)।

णिमिस पुं [निमिष] नेत्र-संकोच, अक्षि-मीलन, पलक मारने भर का समय (गा ३८५; सुपा २१९; गउड)।

णिमीलण न [निमीलन] अक्षि-संकोच (गा ३६७; सूअ १, ५, १, १२ टी)।

णिमीलिअ वि [निमीलित] मुद्रित (नेत्र) (गा १३३; से ६, ८९; महा)।

णिमीस न [निमिश्र] एक विद्याधर-नगर (इक)।

णिमे सक [नि + मा] स्थापन करना। णिमेसि (गउड)।

णिमेण न [दे] स्थान, जगह (दे ४, ३७)।

णिमेल स्त्रीन [दे] दन्त-मांस (दे ४, ३०)। स्त्री. °**ला** (दे ४, ३०)।

णिमेस पुं [निमेष] निमीलन, अक्षि संकोच, पलक का गिरना, पलक (श्रा १६; उव)।

णिमेसि देखो **णिमे**।

णिमेसि वि [निमेषिन्] आँख मूँदनेवाला (सुपा ४४)।

णिम्म सक [निर् + मा] बनाना, निर्माण करना। णिम्मइ (षड्)। णिम्मेइ (धम्म १२ टी)। कवकृ. **णिम्माअंत** (नाट—मालती ५४)।

णिम्म पुंस्त्री [नैम] जमीन से ऊँचा निकलता प्रदेश (राय २७)।

णिम्मइअ वि [निर्मित] रचित, कृत (गा ५००; ६०० अ)।

णिम्मंथण न [निर्मथन] १ विनाश। २ वि. विनाशक; 'तह य पयट्टसु सिग्घं एत्थनिम्मंथणं तित्थं' (सुपा ७१)।

णिम्मंस वि [निर्मांस] मांस-रहित, शुष्क (णाया १, १; भग)।

णिम्मंसा स्त्री [दे] देवी-विशेष, चामुण्डा (दे ४, ३५)।

णिम्मंसु वि [दे. निःश्मश्रु] तरुण, जवान, युवा (दे ४, ३२)।

णिम्मक्खिअ देखो **णिम्मच्छिअ** = निर्मक्षिक (नाट)।

णिम्मच्छ सक [नि + म्रक्ष्] विलेपन करना। णिम्मच्छइ (भवि)।

णिम्मच्छण न [निम्रक्षण] विलेपन (भवि)।

णिम्मच्छर वि [निर्मात्सर्य] मात्सर्य-रहित, ईर्ष्या-शून्य (उप पृ ८४)।

णिम्मच्छिय वि [निम्रक्षित] विलिप्त (भवि)।

णिम्मच्छिअ न [निर्मक्षिक] १ मक्षिका का अभाव। २ विजन, निर्जनता (अभि ६८)।

णिम्मज्जाय वि [निर्मर्याद] मर्यादा-रहित, बेहया (दे १, १३३)।

णिम्मज्जिय वि [निर्माजित] उपलिप्त (स ७५)।

णिम्मण वि [निर्मनस्] मन-रहित (द्रव्य १२)।

णिम्मणुय वि [निर्मनुज] मनुष्य-रहित (सण)।

णिम्मद्दग वि [निर्मर्दक] १ निरन्तर मर्दन करनेवाला। २ पुं. चोरों की एक जाति (पण्ह १, ३)।

णिम्मद्दिय वि [निर्मर्दित] जिसका मर्दन किया गया हो (पण्ह १, ३)।

णिम्मम वि [निर्मम] १ ममता-रहित, निःस्पृह (अच्चु ६६; सुपा १४०)। २ पुं. भारत-वर्ष के एक भावी जिनदेव (सम १५४)।

णिम्मय वि [दे] गत, गया हुआ (दे ४, ३४)।

णिम्मल वि [निर्मल] मल-रहित, विशुद्ध (स्वप्न ७०; प्रासू १३१)। २ पुं. ब्रह्म-देव-लोक का एक प्रस्तर (ठा ६)।

णिम्मल्ल न [निर्माल्य] देव का उच्छिष्ट द्रव्य, देवता पर चढ़ाई हुई वस्तु का बचा-खुचा (हे १, ३८; षड्)।

णिम्मव सक [निर् + मा] बनाना, रचना, करना। णिम्मवइ (हे ४, १९; षड्)। कर्म. निम्मविज्जंति (वज्जा १२२)।

णिम्मव सक [निर् + मापय्] बनवाना, कराना (ठा ४, ४; कुमा)।

णिम्मवइत्तु वि [निर्मापयितृ] बनवानेवाला (ठा ४, ४)।

णिम्मवण न [निर्माण] रचना, कृति (उप ६४८ टी; सुपा २३, ६५; ३०५)।

णिम्मवण न [निर्मापण] बनवाना, कराना (कप्पू)।

णिम्मविअ वि [निर्मित] बनाया हुआ, रचित (कुमा; गा १०१; सुर १६, ११)।

णिम्मविअ वि [निर्मापित] बनवाया हुआ (कुमा)।

णिम्मह सक [गम्] १ जाना, गमन करना। २ अक. फैलना। णिम्महइ (हे ४, १६२)। वकृ. णिम्महंत. णिम्महमाण (से ७, ६२; १५, ५३; स १२६)।

णिम्मह पुं [निर्मथ] १ विनाश। २ वि. विनाशक (भवि)।

णिम्महण न [निर्मथन] १ विनाश। २ त्रि. विनाश-कारक (सुपा ७५) स्त्री. °णी (सुर १६, १८४)।

णिम्महिअ वि [गत] गया हुआ (कुमा)।

णिम्महिअ वि [निर्मथित] विनाशित (हेका ५०)।

णिम्मा देखो **णिम्म**। णिम्माइ (प्राकृ ६४)।

णिम्माअंत देखो **णिम्म**।

णिम्माइअ देखो **णिम्माय** (पि ५९१)।

णिम्माण सक [निर् + मा] बनाना, करना, रचना णिम्माणइ (हे ४,१९; षड्; प्राप्र)।

णिम्माण न [निर्माण] १ रचना, बनावट, कृति। २ कर्म-विशेष, शरीर के अंगोपांग के निर्माण में नियामक कर्म-विशेष (सम ६७)।

णिम्माण वि [निर्मान] मान-रहित (से ३, ४५)।

णिम्माणअ वि [निर्मायक] निर्माण-कर्त्ता; बनानेवाला (से ३, ४५)।

णिम्माणिअ वि [निर्मित] रचित, बनाया हुआ (कुमा)।

णिम्माणिअ वि [निर्मानित] अपमानित, तिरस्कृत (भवि)।

णिम्माणुस वि [निर्मानुष] मनुष्य-रहित (सुपा ४४४)। स्त्री. °सी (महा)।

णिम्माय वि [निर्मात] १ रचित, विहित, कृत (उव; पाअ; वज्जा ३४)। २ निपुण, अभ्यस्त, कुशल (औप; कप्प); 'नाहियसत्थेसु निम्माया परिव्वाइया' (सुर १२, ४२)।

णिम्माय न [निर्माय] तप-विशेष, निर्वि-कृतिक तप (संबोध ५८)।

णिम्मालिअ देखो **णिम्मल्ल** (प्राकृ १६)।

णिम्माव सक [निर् + मापय्] बनवाना, करवाना। णिम्मावइ (सण)। कृ. णिम्मा-वित्त (सूअ २, १, २२)।

णिम्माविय वि [निर्मापित] बनवाया हुआ, कारित, कराया हुआ (सुपा २६७)।

णिम्मिअ वि [निर्मित] रचित, बनाया हुआ (ठा ८; प्रासू १२७)। °वाइ वि [°वादिन्] जगत् को ईश्वरादि-कृत माननेवाला (ठा ८)।

णिम्मिस्स वि [निर्मिश्र] १ मिला हुआ, मिश्रित। °वल्ली स्त्री [°वल्ली] अत्यन्त नज-दीक का स्वजन, जैसे माता, पिता, भाई, भगिनी, पुत्र और पुत्री (वव १०)।

णिम्मीस वि [निर्मिश्र] मिश्रण-रहित (देवेन्द्र २९०)।

णिम्मीसुअ वि [दे] श्मश्रु-रहित, दाढ़ी-मूँछ वर्जित (षड्)।

णिम्मुक्क वि [निर्मुक्त] मुक्त किया गया (सुपा १७३)।

णिम्मुक्ख पुं [निर्मोक्ष] मुक्ति, छुटकारा (विसे २४६८)।

णिम्मूल वि [निर्मूल] मूल-रहित, जिसका मूल काटा गया हो वह (सुपा ५३५)।

णिम्मेर वि [निर्मर्याद] मर्यादा-रहित, निर्लज्ज (ठा ३, १; औप; सुपा ६)।

णिम्मोअ पुं [निर्मोक] कञ्चुक, केंचुल, सर्प की त्वचा (हे २, १८२; भत्त ११०; से १, ६०)।

णिम्मोअणी स्त्री [निर्मोचनी] कञ्चुक, निर्मोक (उत्त १४, ३५)।

णिम्मोडण न [निर्मोटन] विनाश (मै ६१)।
णिम्मोल्ल वि [निर्मूल्य] मूल्य-रहित (कुमा)।
णिम्मोह वि [निर्मोह] मोह-रहित (कुमा; श्रा १२)।
णिरइ स्त्री [निर्ऋति] मूल-नक्षत्र का अधिष्ठायक देव (ठा २, ३)।
णिरइयार वि [निरतिचार] अतिचार-रहित, दूषण-वर्जित (सुपा १००)।
णिरइसय वि [निरतिशय] अत्यन्त, सर्वाधिक (काल)।
णिरईआर देखो **णिरइयार** (सुपा १००; रयण १८)।
णिरंकुस वि [निरङ्कुश] अंकुश-रहित, स्वच्छन्दी (कुमा; गा २८)।
णिरंगण वि [निरङ्गण] निर्लेप, लेप-रहित (औप; उव; णाया १, ११—पत्र १७१)।
णिरंगी स्त्री [दे] सिर का अवगुण्ठन, घूँघट (दे ४, ३१; २, २०)।
णिरंजण वि [निरञ्जन] निर्लेप, लेप-रहित (स ५८२; कप्प)।
णिरंतय वि [निरन्तक] अन्त-रहित (उप १०३१ टी)।
णिरंतर वि [निरन्तर] अन्तर-रहित, व्यवधान-रहित (गउड; हे १, १४)।
णिरंतराय वि [निरन्तराय] १ निर्विघ्न, निर्बाध। २ व्यवधान-रहित, सतत; 'धम्मं करेह विमलं च निरन्तरायं' (पउम ४४, ६७)।
णिरंतरिय वि [निरन्तरित] अन्तर-रहित, व्यवधान-रहित (जीव ३)।
णिरंध वि [नीरन्ध्र] छिद्र-रहित (वज्जा ६७)।
णिरंबर वि [निरम्बर] वस्त्र-रहित, नग्न (आवम)।
णिरंभा स्त्री [निरम्भा] एक इन्द्राणी, वैरोचन इन्द्र की एक अग्र-महिषी (ठा ५, १: इक)।
णिरंस वि [निरंश] अंश-रहित, अखण्ड, सम्पूर्ण (विसे)।
णिरंह° वि [निरंहस्] निर्मल, पवित्र; 'मज्जयं व बाहिओ सो निरंहसा तेण जलपवाहेण' (धर्मवि १४६)।

णिरक्क पुं [दे] १ चोर, स्तेन। २ पृष्ठ, पीठ। ३ वि. स्थित (दे ४, ४६)।
णिरक्किय वि [निराकृत] अपाकृत, निरस्त (उत्त ६, ५६)।
णिरक्ख सक [निर् + ईक्ष्] निरीक्षण करना, देखना। णिरक्खइ (हे ४, ४१८); 'तोवि ताव दिट्ठीए णिरक्खिज्जा' (महा)।
णिरक्खर वि [निरक्षर] मूर्ख, ज्ञान-रहित (कप्पू; वज्जा १५८)।
णिरगार वि [निराकार] आकार-रहित; 'निरगारपच्चक्खाणेवि अरहंताईणमुज्झित्ता' (संबोध ३८)।
णिरग्गल वि [निरर्गल] १ रुकावट से रहित (सुपा १६२; ४७१)। २ स्वच्छन्दी, स्वैरी, निरंकुश (पाअ)।
णिरच्चण वि [निरर्चन] अर्चन-रहित (उव)।
णिरट्ठ, **णिरट्ठग** वि [निरर्थ, °क] १ निरर्थक, निष्प्रयोजन, निकम्मा (उत्त २०)। २ न. प्रयोजन का अभाव; 'णिरट्ठगम्मि विरओ, मेहुणाओ सुसंवुडो' (उत्त २, ४२)।
णिरण वि [निर्ऋण] ऋण-रहित, करज से मुक्त (सुपा ५६३; ५६६)।
णिरणास देखो **णिरिणास** = नश्। णिरणासइ (हे ४, १७८)।
णिरणुकंप वि [निरनुकम्प] अनुकम्पा-रहित, निर्दय (णाया १, २; बृह १)।
णिरणुक्कोस वि [निरनुक्रोश] निर्दय, दया-शून्य (णाया १, २; प्रासू ६८)।
णिरणुताव वि [निरनुताप] पश्चात्ताप-रहित (णाया १, २)।
णिरणुतावि वि [निरनुतापिन्] पश्चात्ताप-वर्जित (पव २७४)।
णिरत्थ वि [निरस्त] अपास्त, निराकृत (वव ८)।
णिरत्थ, **णिरत्थग**, **णिरत्थय** वि [निरर्थ, °क] अपार्थक, निकम्मा, निष्प्रयोजन (दे ४, १६; पउम ६५, ४; पण्ह १, २; उव; सं ४१)।
णिरन्नय पुं [निरन्वय] अन्वय-रहित (धर्मसं ४६६)।
णिरप्प अक [स्था] बैठना। णिरप्पइ (हे ४, १६)। भूका. णिरप्पीअ (कुमा)।

णिरप्प पुं [दे] १ पृष्ठ, पीठ। २ वि. उद्वेष्टित (दे ४, ४६)।
णिरप्पण वि [निरात्मीय] अस्वकीय, परकीय (कुप्र ८६)।
णिरभिग्गह वि [निरभिग्रह] अभिग्रह-रहित (आव ६)।
णिरभिराम वि [निरभिराम] असुन्दर, अचारु (पण्ह १, ३)।
णिरभिलप्प वि [निरभिलाप्य] अनिर्वचनीय, वाणी से बतलाने को अशक्य (विसे ४८८)।
णिरभिस्संग वि [निरभिष्वङ्ग] आसक्ति-रहित, निःस्पृह (पंचा २, ६)।
णिरय पुं [निरय] १ नरक, पाप-भोग-स्थान (ठा ४, १; आचा; सुपा १४०)। २ नरक-स्थित जीव, नारक (ठा १०)। °**पाल** पुं [°पाल] देव-विशेष (ठा ४, १)। °**वलिया** स्त्री [°वलिका] १ जैन आगम-ग्रन्थ विशेष (निर १, १)। २ नरक-विशेष (पण्ण २)।
णिरय वि [निरत] आसक्त, तत्पर, तल्लीन (उप ६७६; उव; सुपा २६)।
णिरय वि [नीरजस्] रजो-रहित, निर्मल (भग; गा ८७८)।
णिरव सक [बुभुक्ष्] खाने की इच्छा करना। णिरवइ (षड्)।
णिरव सक [आ + क्षिप्] आक्षेप करना। णिरवइ (षड्)।
णिरवइक्ख वि [निरपेक्ष] अपेक्षा-रहित, निरीह, निःस्पृह (विसे ७ टी)।
णिरवकंख वि [निरवकाङ्क्ष] स्पृहा-रहित, निःस्पृह (औप)।
णिरवकंखि वि [निरवकाङ्क्षिन्] निःस्पृह (णाया १, ६)।
णिरवगाह वि [निरवगाह] अवगाहन-रहित (षड्)।
णिरवग्गह वि [निरवग्रह] निरंकुश, स्वच्छन्दी, स्वैरी (पाअ)।
णिरवच्च वि [निरपत्य] अपत्य-रहित, निःसंतान (भग; सम १५०)।
णिरवज्ज वि [निरवद्य] निर्दोष, विशुद्ध (दस ५, १; सुर ८, १८३)।

णिरवणाम देखो णिरोणाम (उव)।

णिरवयक्ख देखो णिरवइक्ख (णाया १, ६; पउम २, ६३)।

णिरवयव वि [निरवयव] अवयव-रहित, निरंश (विसे)।

णिरवयास वि [निरवकाश] अवकाश-रहित (गउड)।

णिरवराह वि [निरपराध] अपराध रहित, बेगुनाह (महा)।

णिरवराहि वि [निरपराधिन्] ऊपर देखो (आव ६)।

णिरवलंब वि [निरवलम्ब] सहारा रहित, असहाय (पण्ह १, ३)।

णिरवलाव वि [निरपलाप] १ अपलाप-रहित। गुप्त बात को प्रकट नहीं करनेवाला, दूसरे को नहीं कहनेवाला (सम ५७)।

णिरवसंक वि [निरपशङ्क] दुःशंका-वर्जित (भवि)।

णिरवसर वि [निरवसर] अवसर-रहित (गउड)।

णिरवसाण वि [निरवसान] अन्त-रहित (गउड)।

णिरवसेस वि [निरवशेष] सब, सकल (हे १, १४; षड्; से १, ३७)।

णिरवह सक [निर् + वह्] निर्वाह करना, निबाहना। निरवहेज्जा (संबोध ३६)।

णिरवाय वि [निरपाय] १ उपद्रव-रहित, विघ्न-वर्जित। २ निर्दोष, विशुद्ध (श्रा १६; सुपा २७५)।

णिरविक्ख, णिरवेक्ख, णिरवेच्छ देखो णिरवइक्ख (श्रा ६; उव; पि ३४१; से ६, ७५; सूअ १, ६; पंचा ४; निचू २०; नाट—चैत २५७)।

णिरस सक [निर् + अस्] अपास्त करना। णिरसइ (सण)।

णिरसण वि [निरशन] आहार-रहित, उपोषित (उप; सुपा १८१)।

णिरसण न [निरसन] निराकरण, हटा देना, दूर करना, खंडन (चेइय ७२४)।

णिरसि वि [निरसि] खड्ग-रहित (गउड)।

णिरसिअ वि [निरस्त] परास्त, अपास्त (दे ५, ५६)।

णिरस्साय वि [निरास्वाद] स्वाद-रहित (उत्त १६, ३७)।

णिरस्साविं वि [निरास्राविन्] नहीं टपकनेवाला, छिद्र रहित। स्त्री. °णी (उत्त २३, ७१; सुख २३, ७१)।

णिरहंकार वि [निरहंकार] गर्व-रहित (उव)।

णिरहारि वि [निराहारिन्] आहार-रहित, उपोषित; 'हवउ व वक्कलधारी, निरहारी बंभचेरवयधारी' (सुपा २५२)।

णिरहिगरण वि [निरधिकरण] अधिकरण-रहित, हिंसा-रहित, निर्दोष (पंचा १६)।

णिरहिगरणि वि [निरधिकरणिन्] ऊपर देखो (भग १६, १)।

णिरहिलास वि [निरभिलाष] इच्छा-रहित, निरीह (गउड)।

णिरहेउ, णिरहेउग, णिरहेतुग वि [निर्हेतु, °क] निष्कारण, कारणरहित (धर्मसं ४४३; ४१७; ४००)।

णिराइअ वि [निरायत] लम्बा किया हुआ, विस्तारित (से ४, ५२; ७, ३६)।

णिराउस वि [निरायुष्] आयु-रहित (प्राकृ ३१)।

णिराउह वि [निरायुध] आयुध-वर्जित, निःशस्त्र (महा)।

णिराकर, णिरागर सक [निरा + कृ] १ निषेध करना। २ दूर करना, हटाना। ३ विवाद का फैसला करना। निराकरिमो (कुप्र २१५)। संकृ. णिराकिच्च (सूअ १, १, १; १, ३, ३; १, ११)।

णिराकरिअ वि [निराकृत] निषिद्ध (धर्मवि १४६)।

णिरागरण न [निराकरण] निरास, निवारण, निषेध, रोक (पंचा १७, १६)।

णिरागरण न [निराकरण] १ निषेध, प्रतिषेध (पंचा १७)। २ फैसला, निपटारा (स ४०६)।

णिरागरिय वि [निराकृत] हटाया हुआ, दूर किया हुआ (पउम ४६, ५१; ६१, ५६)।

णिरागस वि [निराकर्ष] निर्धन, रंक (निचू २)।

णिरागार वि [निराकार] १ आकृति-रहित २ अपवाद-रहित (धर्म २)।

णिराणंद वि [निरानन्द] आनन्द-रहित, शोकातुर (महा)।

णिराणिउ (अप) अ. निश्चित, नक्की (कुमा)।

णिराणुकंप देखो णिरणुकंप; 'णिक्किवणिराणुकंपो आसुरियं भावणं कुणइ' (ठा; ४,४), 'अह सो णिराणु कंपो (संथा ८४; पउम २६, २५)।

णिराणुवत्ति वि [निरनुवर्तिन्] १ अनुसरण नही करनेवाला। २ सेवा नहीं करनेवाला (उव)।

णिराद वि [दे] नष्ट, विनाश-प्राप्त (दे ४, ३०)।

णिराबाध, णिराबाह वि [निराबाध] आबाधा-रहित, हरकत-रहित (अभि १११; सुपा २५३; ठा १० आव ४)।

णिरामगंध वि [निरामगन्ध] दूषण-रहित, निर्दोष चारित्रवाला (आचा; सूअ १, ६)।

णिरामय वि [निरामय] रोग-रहित, नोरोग (सुपा ५७५)।

णिरामिस वि [निरामिष] आसक्तिहीन, निरीह, निरभिष्वङ्ग; 'आमिसं सव्वमुज्झित्ता विहरिस्सामो णिरामिसा' (उत्त १४, ४६)।

णिराय वि [दे] १ ऋजु, सरल। (दे ४, ५०; पाअ)। १ प्रकट, खुला। ३ पुं. रिपु, शत्रु (दे ४, ५०)। ४ वि. लम्बा किया हुआ (से २, ४०)।

णिराय वि [दे] अत्यन्त, प्रचुर, अधिक (सुख २, ७)।

णिरायंक वि [निरातङ्क] आतङ्क-रहित, नीरोग (औप)।

णिरायरिय देखो णिरागरिय (पउम ६१, ४६)।

णिरायव वि [निरातप] आतप-रहित (गउड)।

णिरायार देखो णिरागार (पउम ६, ११८)।

णिरायास वि [निरायास] परिश्रम-रहित (पण्ह २, ४)।

णिरारंभ वि [निरारम्भ] आरम्भ-वर्जित (सुपा १४०, गउड)।

णिरालंब वि [निरालम्ब] आलम्ब-रहित (गा ६५; आरा ८)।

णिरालंबण वि [निरालम्बन] आलम्बन-रहित (औप; णाया १, ६)।

णिरालंबण वि [निरालम्बन] आशंसा-रहित, संशय-रहित, प्रार्थना-रहित, इच्छारहित, अनुमान-रहित (आचा २, १६, १२)।

णिरालय वि [निरालय] स्थान-रहित, एकत्र स्थिति नहीं करनेवाला (औप)।

णिरालोय वि [निरालोक] प्रकाश-रहित, (निर १, १)।

णिरावकंखि वि [निरवकाङ्क्षिन्] आकांक्षा-रहित, निःस्पृह (सूत्र १, १०)।

णिरावयक्ख वि [निरपेक्ष] अपेक्षा-रहित, निरीह (णाया १, १; ६; भत्त १४८)।

णिरावरण वि [निरावरण] १ प्रतिबन्धक-रहित (औप)। २ नग्न (सुर १४, १७८)।

णिरावराह वि [निरपराध] अपराध-रहित (सुपा ४२३)।

णिराविक्ख } देखो णिरावयक्ख; 'विसएसु
णिरावेक्ख } णिराविक्खा तरंति संसार-कंतारं' (भत्त ४६; पउम ६, ८; १००, ११)।

णिरास वि [निराश] १ आशा-रहित, हताश (पउम ४४, ५६; दे ४, ४८; संक्षि १६)। २ न. आशा का अभाव (पण्ह १, ३)।

णिरास वि [दे] नृशंस, क्रूर (षड्)।

णिरासंस वि [निराशंस] आकांक्षा-रहित, निरीह (सुपा ६२१)।

णिरासय वि [निराश्रय] निराधार (वज्जा १५२)।

णिरासव वि [निराश्रव] आश्रव-रहित, कर्म-बन्धन के कारणों से रहित (पण्ह २, ३)।

णिरासस देखो णिरासंस (आचा २,१६,६)।

णिराह वि [दे] निर्दय, निष्करुण (दे ४, ३७)।

णिरिअ वि [दे] अवशेषित, बाकी रखा हुआ (दे ४, ४८)।

णिरिइ देखो णिरइ (सुज्ज १०, १२)।

णिरिक्क वि [दे] नत, नमा हुआ (दे ४, ३०)।

णिरिंगी [दे] देखो णीरंगी (गउड)।

णिरिंधण वि [निरिन्धन] इन्धन-रहित (भग ७, १)।

णिरिक्ख सक [निर्+ईक्ष्] देखना, अवलोकन करना। णिरिक्खइ, णिरिक्खए (सण; महा)। वकृ. णिरिक्खंत, णिरिक्खमाण (सण; उप २११ टी)। संकृ. णिरिक्खिऊण (सण)। कृ. णिरिक्खणिज्ज (कप्पू)।

णिरिक्खण न [निरीक्षण] अवलोकन (गा १५०)।

णिरिक्खणा स्त्री [निरीक्षणा] अवलोकन, प्रतिलेखना (ओघ ३)।

णिरिक्खिअ वि [निरीक्षित] आलोकित, दृष्ट (कप्पू; पउम ४८, ४८)।

णिरिग्घ सक [नि+ली] १ आश्लेष करना, आलिगन करना। २ अक. छिपना। णिरिग्घइ (हे ४, ५५)।

णिरिग्घिअ वि [निलीन] आश्लिष्ट, आलिगित (कुमा)।

णिरिण वि [निऋॅण] ऋण-मुक्त, उऋण (ठा ३, १; टी—पत्र १२०)।

णिरिणास सक [गम्] गमन करना। णिरिणासइ (हे ४, १६२)।

णिरिणास सक [पिष्] पीसना। णिरिणासइ (हे ४, १८५)।

णिरिणास अक [नश्] पलायन करना। भागना। णिरिणासइ (हे ४, १७८; कुमा)।

णिरिणासिअ वि [गत] गया हुआ, यात (कुमा)।

णिरिणासिअ वि [पिष्ट] पीसा हुआ (कुमा)।

णिरिणिज्ज सक [पिष्] पीसना। णिरिणिज्जइ (हे ४, १८५)।

णिरिणिज्जिअ वि [पिष्ट] पीसा हुआ (कुमा)।

णिरिरित्ति स्त्री [निरिरिति] एक रात्रि का नाम (कप्प)।

णिरीह वि [निरीह] निष्काम, निःस्पृह (कुमा; ४२१)।

णिरु (अप) अ. निश्चित, नक्की (हे ४, ३४४; सुपा ८६; सण; भवि)।

णिरुअ देखो णिरुज (विसे १५८५; सुपा ४४६)।

णिरुकय [निरुईजीकृत] नीरोग किया गया (उप ५६७ टी)।

णिरुंभ सक [नि+रुध्] निरोध करना। णिरुंभइ (औप)। कवकृ. **णिरुंभमाण, णिरुब्भंत** (स ५३१; महा)। संकृ. **णिरुंभइत्ता** (सूत्र १,४,२)। कृ. **णिरुंभियव्व, णिरुद्धव्व** (सुपा ४०४; विसे ३०८१)।

णिरुंभण न [निरोधन] अटकाव, रुकावट (सूत्र १, ५; भवि)।

णिरुक्कंठ वि [निरुत्कण्ठ] उत्कण्ठा-रहित, निरुत्साह (नाट)।

णिरुग्घ देखो णिरिग्घ। णिरुग्घइ (षड्)।

णिरुच्चार वि [निरुच्चार] १ उचार—पुरीषोत्सर्ग के लिए लोगों के निर्गमन से वर्जित (णाया १, ८—पत्र १४६)। २ पाखाना जाने से जो रोका गया हो (पण्ह १, ३)।

णिरुच्छव वि [निरुत्सव] उत्सव-रहित (अभि १८६)।

णिरुच्छाह वि [निरुत्साह] उत्साह-हीन (से १४, ३५)।

णिरुज वि [निरुज] १ रोग-रहित। २ न. रोग का अभाव। °सिख न [°शिख] एक प्रकार की तपश्चर्या (पव २७१)।

णिरुज्जम वि [निरुद्यम] उद्यम-रहित, आलसी (उव; स ३१०, सुपा ३८४)।

णिरुट्ठाइ वि [निरुत्थायिन्] नहीं उठनेवाला (उत्त १; ३०)।

निरुत्त वि [निरुक्त] १ उक्त, कथित (सत्त ७१)। २ न. निश्चित उक्ति (अणु)। ३ व्युत्पत्ति। (विसे २; ६६३)। ४ वेदाङ्ग शास्त्र-विशेष; जिसमें वैदिक शब्दों की व्याख्या है (औप)।

णिरुत्त वि [निरुक्त] १ अनुक्त, अकथित, दृष्टान्त 'किंतु निरुत्तो भावो परस्स नज्जइ कवित्तेणं' (सिरि ८४६)। २ व्युत्पत्ति-युक्त (सिरि ३१)।

णिरुत्त क्रिवि [दे] १ निश्चित, नक्की, चोक्स (दे ४, ३०; पउम ३५, ३२; कुमा; सण; भवि), 'तहवि हु मरइ निरुत्तं पुरिसो संपत्थिए काले' (पउम ११, ६१)। २ वि. निश्चिन्त, चिन्ता-रहित (कुमा)।

णिरुत्तत्त वि [निरुत्तप्त] विशेष ताप-युक्त, संतप्त (उव)।

णिरुत्तम वि [निरुत्तम] अत्यन्त श्रेष्ठ (काल)।

णिरुत्तर वि [निरुत्तर] उत्तर-रहित किया हुआ, परास्त (सुर १२, ६६)।

णिरुत्ति स्त्री [निरुक्ति] व्युत्पत्ति (विसे ६६२)।

णिरुत्तिअ वि [नैरुक्तिक] व्युत्पत्ति के अनुसार जिसका अर्थ किया जाय वह शब्द (अणु)।

णिरुत्तिय न [नैरुक्तिक] निरुक्ति, व्युत्पत्ति; 'नो कत्थवि नाणित्ति निरुत्तियं चेइसद्दस्सं' (संबोध—१२)।

णिरुदर वि [निरुदर] छोटा पेटवाला, अनुदर। स्त्री. °रा (पराह १, ४)।

णिरुद्ध वि [निरुद्ध] १ रोका हुआ (णाया १, १)। २ आवृत, आच्छादित (सूत्र १, २, ३)। ३ पुं. मत्स्य की एक जाति (कप्प)।

णिरुद्ध वि [निरुद्ध] थोड़ा, संक्षिप्त (सूत्र १, १४, २३)।

णिरुद्धव्व } णिरुब्भंत } देखो णिरुंभ।

णिरुलि पुंस्त्री [दे] कुम्भीर—नक्र की आकृति-वाला एक जन्तु (दे ४, २७)।

णिरुवकिट्ठ देखो णिरुवक्किट्ठ (भग)।

णिरुवक्कम वि [निरुपक्रम] १ जो कम न किया जा सके वह (आयुष्य) (सुर २, १३२; सुपा २०४)। २ विघ्नरहित, अबाध, 'निय-निरुवक्कमविक्कमअक्कंतसमग्गरिउचक्को' (सुपा ३६)।

णिरुवक्कय वि [दे] अकृत, नहीं किया हुआ (दे ४, ४१)।

णिरुवक्किट्ठ वि [निरुपक्लिष्ट] क्लेश-वर्जित, दुःखरहित (भग २५, ७)।

णिरुवक्केस वि [निरुपक्लेश] शोक आदि क्लेशों से रहित (ठा ७)।

णिरुवक्ख वि [निरुपाख्य] शब्द से न कहा जा सके वह, अनिर्वचनीय (धर्मसं २४१; १३००)।

णिरुवग वि [निरुपक] प्रतिपादक (सम्मत्त १६०)

णिरुवगारि वि [निरुपकारिन्] उपकार को नहीं माननेवाला, प्रत्युपकार नहीं करनेवाला (आवम)।

णिरुवग्गह वि [निरुपग्रह] उपकार नहीं करनेवाला (ठा ४, ३)।

णिरुवट्ठाणि वि [निरुपस्थानिन्] निरुद्यमी, आलसी (आचा)।

णिरुवद्दव वि [निरुपद्रव] उपद्रव-रहित, आबाधा-वर्जित (औप)।

णिरुवम वि [निरुपम] असमान, असाधारण (औप; महा)।

णिरुवयरिय वि [निरुपचरित] वास्तविक, तथ्य (णाया १, ५)।

णिरुवयार वि [निरुपकार] उपकार-रहित (उव)।

णिरुवलेव वि [निरुपलेप] लेप-वर्जित, अ-लिप्त (कप्प); 'रयणमिव णिरुवलेवा' (पउम १४, ६४)।

णिरुवसग्ग वि [निरुपसर्ग] १ उपसर्ग-रहित, उपद्रव-वर्जित (सुपा २८७)। २ पुं. मोक्ष, मुक्ति (पडि; धर्म २)। ३ न. उपसर्ग का अभाव (वव ३)।

णिरुवहय वि [निरुपहत] १ उपघात-रहित, अक्षत (भग ७, १)। २ रुकावट से शून्य, अप्रतिहत (सुपा २६८)।

णिरुवहि वि [निरुपधि] माया-रहित, निष्कपट (दसनि १)।

णिरुवार सक [ग्रह्] ग्रहण करना। णिरु-वारइ (हे ४, २०६)।

णिरुवारिअ वि [गृहीत] उपात्त, गृहीत (कुमा)।

णिरुवालंभ वि [निरुपालम्भ] उपालम्भ-शून्य (गउड)।

णिरुव्विग्ग वि [निरुद्विग्न] उद्वेग-रहित (णाया १, १—पत्र ६)।

णिरुस्साह वि [निरुत्साह] उत्साह-हीन (सूत्र १, ४, १)।

णिरूव सक [नि + रूपय्] १ विचार कर कहना। २ विवेचन करना। ३ देखना। ४ दिखलाना। ५ तलाश करना। निरूवेइ (महा)। वकृ. णिरूवित, णिरूवमाण (सुर १५, २०५; कुप्र २७५)। संकृ. णिरूविऊण (पंचा ८)। कृ. णिरूवियव्व (पंचा ११)। हेकृ. निरूविउं (कुप्र २०८)।

णिरूवण न [निरूपण] १ विलोकन, निरी-क्षण (उप ३३७)। २ वि. दिखलानेवाला स्त्री. °णी (पउम ११, २२)।

णिरूवणया स्त्री [निरूपणा] निरूपण (उप ६३०)।

णिरूवाविअ वि [निरूपित] गवेषित, जिस की खोज कराई गई हो वह (स ५३६;७४२)।

णिरूविअ वि [निरूपित] १ देखा हुआ (से १३, १३; सुपा ५२३)। २ आलोचना कर कहा हुआ। ३ विवेचित, प्रतिपादित (हे २, ४०)। ४ दिखलाया हुआ। ५ गवेषित (प्राकृ)।

णिरूसुअ वि [निरुत्सुक] उत्कण्ठा-रहित (गउड)।

णिरूह पुं [निरूह] अनुवासना-विशेष, एक तरह का विरेचन (णाया १, १३)।

णिरेय वि [निरेजस्] निष्कम्प, स्थिर (भग २५, ४)।

णिरेयण वि [निरेजन] निश्चल, स्थिर (कप्प; औप)।

णिरोणाम पुं [निरवनाम] नम्रता-रहित, गर्वित, उद्धत (उव)।

णिरोय वि [नीरोग] रोग-रहित (औप; णाया १, १)।

णिरोव पुं [दे] आदेश, आज्ञा, रुक्का (सुपा २२४)।

णिरोवयार वि [निरुपकार] उपकार को नहीं माननेवाला (ओघ ११३ भा)।

णिरोवयारि वि [निरुपकारिन्] ऊपर देखो (उव)।

णिरोविअ देखो णिरूविअ (सुपा ४५६; महा)।

णिरोह पुं [निरोध] रुकावट, रोकना (ठा ४, १; औप; पाअ)।

णिरोहग वि [निरोधक] रोकनेवाला (रंभा)।

णिरोहण न [निरोधन] रुकावट (पराह १, १)।

णिलंक पुं [दे] पतद्ग्रह, पीकदान, ष्ठीवन-पात्र, थूकने का पात्र (दे ४, ३१)।

णिलय पुं [निलय] घर, स्थान, आश्रय (से २, २; गा ४२१; पाअ)।

णिलयण न [निलयन] वसति, स्थान (विसे)।

णिलाड न [ललाट] भाल, कपाल (कुमा)।

णिलिअ देखो णिलीअ। णिलिअइ (षड्)।

णिलिंत नीचे देखो।

णिलिज्ज } णिलीअ } सक [नी + ली] १ आश्लेष करना, भेंटना, गले से लगाना। २ दूर करना। ३ अक. छिप जाना। णिलिज्जइ णिली-अइ (हे ४,५५)। णिलिज्जिज्जा (कप्प)। वकृ.

णिलिंत, **णिलिज्जमाण**, **णिलीअंत**, **णिलीअमाण** (कप्प; सूअ २,२; कुमा; उप ४७४)।

णिलीइर वि [निलेतृ] आश्लेष करनेवाला, भेंटनेवाला (कुमा)।

णिलुक्क देखो णिलीअ। णिलुक्कइ (हे ४, ५५, षड्)। वकृ. **णिलुक्कंत** (कुमा)।

णिलुक्क सक [तुड्] तोड़ना। णिलुक्कइ (हे ४, ११६)।

णिलुक्क वि [दे. निलीन] १ निलीन, खूब छिपा हुआ, प्रच्छन्न, गुप्त, तिरोहित (णाया १, ८; से १५, २; गा ६४; सुर ६, ५, उव; सुपा ६४०)। २ लीन, आसक्त (विवे ६०)।

णिलुक्कण न [निलयन] छिपना (कुप्र २५२)।

णिल्लंक [दे] देखो णिलंक (दे ४, ३१)।

णिल्लंछण न [निर्लाञ्छन] शरीर के किसी अवयव का छेदन (उवा; पडि)।

णिल्लच्छ देखो णेल्लच्छ (पि ६६)।

णिल्लच्छण वि [निर्लक्षण] १ मूर्ख, बेवकूफ (उप ७६७ टी)। २ अपलक्षणवाला, खराब (श्रा १२)।

णिल्लज्ज वि [निर्लज्ज] लज्जा-रहित (हे २, १६७; २००)।

णिल्लज्जिम पुंस्त्री [निर्लज्जिमन्] निर्लज्जपन, बेशरमी (हे १, ३५)। स्त्री. °**मा** (हे १, ३५)।

णिल्लस अक [उत् + लस्] उल्लसना, विकसना। णिल्लसइ (हे ४, २०२)।

णिल्लसिअ वि [उल्लसित] उल्लास-युक्त, विकसित (कुमा)।

णिल्लसिअ वि [दे] निर्गत, निःसृत, निर्यात (दे ४, ३६)।

णिल्लालिअ वि [निर्लालित] निःसारित, बाहर निकाला हुआ (णाया १, १; ८—पत्र १३३; सुर १२, २३५; महा)।

णिल्लिह सक [निर् + लिख्] घिसना। णिल्लिहिज्जा (आचा २, ३, २, ३)।

णिल्लुंछ सक [मुच्] छोड़ना, त्याग करना। णिल्लुंछइ (हे ४, ६१)।

णिल्लुंछिअ वि [मुक्त] त्यक्त, छोड़ा हुआ (कुमा)।

णिल्लुत्त वि [निर्लुप्त] विनाशित (विक्र २५)।

णिल्लूर सक [छिद्] छेदन करना, काटना। णिल्लूरइ (हे ४, १२४)। णिल्लूरह (आरा ६८)।

णिल्लूरण न [छेदन] छेद, विच्छेद (कुमा)।

णिल्लूरिय वि [छिन्न] काटा हुआ, विच्छिन्न; 'आवत्तविद्दुमाहयनिल्लूरियदवियसंखउलं' (पउम ८, २५८)।

णिल्लेव वि [निर्लेप] लेप-रहित (विसे ३०८३)।

णिल्लेवग पुं [निर्लेपक] रजक, धोबी (आचू ४)।

णिल्लेवण न [निर्लेपन] १ मल को दूर करना (वव १)। २ वि. निर्लेप, लेप-रहित (ओघ १६ भा)। °**काल** पुं [°काल] वह काल, जिस समय नरक में एक भी नारक जीव न हो (भग)।

णिल्लेविअ वि [निर्लेपित] १ लेप-रहित किया हुआ। २ बिलकुल खूट गया हुआ (भग)।

णिल्लेहण न [निर्लेखन] उद्वर्त्तन, पोंछना (आचा २, ३; २)।

णिल्लोभ, **णिल्लोह** वि [निर्लोभ] लोभ-रहित, अलुब्ध (सुपा ३६१; श्रा १२; भवि)।

णिव पुं [नृप] राजा, नरेश (कुमा; रयण ४७)। °**तणय** वि [°संबन्धिन्] राजसंबन्धी, राजकीय (सुपा ५३६)।

णिवइ पुं [नृपति] ऊपर देखो (ठा ३, १, पउम ३०, ६)। °**मग्ग** पुं [°मार्ग] राजमार्ग, जाहिर रास्ता (पउम ७६, १६)।

णिवइअ वि [निपतित] १ नीचे गिरा हुआ (णाया १, ७)। २ एक प्रकार का विष (ठा ४, ४)।

णिवइत्तु वि [निपतितृ] नीचे गिरनेवाला (ठा ४, ४)।

णिवच्छण न [दे] अवतारण, उतारना (दे ४, ४०)।

णिवज्ज अक [निर् + पद्] निष्पन्न होना, नीपजना, बनना। णिवज्जइ (पड्)।

णिवज्ज अक [नि + सद्] बैठना। णिवज्जसु (स ५०६)। वकृ. **णिवज्जमाण** (स ५०३)। प्रयो. णिवज्जावेइ (निर १, १)।

णिवज्ज अक [नि + सद्] सोना। णिवज्जइ (उत्त २७, ५)।

णिवट्ट सक [नि + वर्तय्] निवृत्त करना। निवट्टएज्जा (सूअ १, १०, २१)।

णिवट्ट अक [नि + वृत्] १ निवृत्त होना, लौटना, हटना। २ रुकना। वकृ. **णिवट्टंत** (सुपा १६२)।

णिवट्ट वि [निवृत्त] १ निवृत्त, हटा हुआ, प्रवृत्ति-विमुख। २ न. निवृत्ति (हे ४, ३३२)।

णिवट्टण न [निवर्तन] १ निवृत्ति, प्रवृत्ति-निरोध। २ जहाँ रास्ता बन्द होता हो वह स्थान (णाया १, २—पत्र ७६)।

णिवट्टिम वि [निर्वर्तित] पका हुआ, फलित, सिद्ध (आचा २, ४, २, ३)।

णिवड अक [नि + पत्] नीचे पड़ना, नीचे गिरना। णिवडइ (उव; षड्; महा)। वकृ. **णिवडंत**, **णिवडमाण** (गा ३४; सुर ३, १२७)। संकृ. **णिवडिऊण**, **णिवडिअ** (दंस ३; महा)।

णिवडण न [निपतन] अधः-पतन (राज)।

णिवडिअ वि [निपतित] नीचे गिरा हुआ (से १४, ३४; गा २३४; उप पृ २६)।

णिवडिर वि [निपतितृ] नीचे गिरनेवाला (सुपा ४६; सण)।

णिवण्ण वि [निषण्ण] १ बैठा हुआ (महा; संथा ६५; ७३)। २ पुं. कायोत्सर्ग-विशेष, जिसमें धर्म आदि किसी प्रकार का ध्यान न किया जाता हो वह कायोत्सर्ग (आव ५)। °**णिवण्ण** पुं [°निषण्ण] जिसमें आर्त और रौद्र ध्यान किया जाय वह कायोत्सर्ग (आव ५)।

णिवण्णुस्सिय पुं [निषण्णोत्सृत] कायोत्सर्ग-विशेष, जिसमें धर्म ध्यान और शुक्ल ध्यान किया जाता हो वह कायोत्सर्ग (आव ५)।

णिवत्त देखो णिवट्ट = नि + वृत्। वकृ. **णिवत्तमाण** (वव १)। कृ. **णिवत्तणीअ** (नाट—शकु १०८)। प्रयो. णिवत्तावेमि (पि ५५२)।

णिवत्त देखो णिवट्ट = निवृत्त (षड्; कप्प)।

णिवत्तण देखो णिवट्टण (महा; हे २, ३०; कुमा)।

णिवत्तय वि [निवर्त्तक] १ वापस आने-वाला, लौटनेवाला । २ लौटानेवाला, वापस करनेवाला (हे २, ३०; प्राप्र) ।

णिवत्ति स्त्री [निवृत्ति] निवर्त्तन (उव) ।

णिवत्तिअ वि [निवर्त्तित] रोका हुआ, प्रतिषिद्ध (स ३६४) ।

णिवत्तिअ वि [निर्वर्त्तित] निष्पादित, 'निवत्तिया सवपूया' (स ७६३) ।

णिवद्दि देखो णिवत्ति (संक्षि ६) ।

णिवन्न देखो णिवण्ण (स ७६०) ।

णिवय अक [नि + पत्] समाना, अन्तर्भूत होना । निवयंति (पव ८४ टी) ।

णिवय देखो णिवड । णिवइज्जा, णिवएज्जा (कप्प; ठा ३,४)। वकृ णिवयंत, णिवयमाण (उप १४२ टी; सुर ४, ६५; कप्प) ।

णिवय पुं [निपात] नीचे गिरना, अधः-पतन (सुर १३, १६७) ।

णिवरुण पुं [निवरुण] वृक्ष-विशेष (उप १०३१ टी) ।

णिवस अक [नि + वस्] निवास करना, रहना । णिवसइ (महा) । वकृ. णिवसंत (सुपा २२५) । हेकृ. णिवसिउं (सुपा ४६३) ।

णिवसण न [निवसन] वस्त्र, कपड़ा (अभि १३६; महा; सुपा २००) ।

णिवसिय वि [निवसित] जिसने निवास किया हो वह (महा) ।

णिवसिर वि [निवसितृ] निवास करनेवाला (गउड) ।

णिवह सक [गम्] जाना, गमन करना । णिवहइ (हे ४, १६२) ।

णिवह अक [नश्] भागना, पलायन करना । णिवहइ (हे ४, १७८) ।

णिवह सक [पिष्] पीसना । णिवहइ (हे ४, १८५; षड्) ।

णिवह पुंन [निवह] समूह, राशि, जत्था (से २, ४२; सुर ३, ३५; प्रासू १४४); 'अच्छउ ता फलनिवहं' (वज्जा १५२) ।

णिवह पुंन [दे] समृद्धि, वैभव (दे ४,२६) ।

णिवहिअ वि [नष्ट] नाश-प्राप्त (कुमा) ।

णिवहिअ वि [पिष्ट] पीसा हुआ (कुमा) ।

णिवाइ वि [निपातिन्] गिरनेवाला (आचा) ।

णिवाड सक [नि + पातय्] नीचे गिराना । निवाडेइ (स ६६०) । वकृ. निवाडयंत (स ६८६) । संकृ. णिवाडिइत्ता (जीव ३) ।

णिवाडिय वि [निपातित] नीचे गिराया हुआ (महा) ।

णिवाडिर वि [निपातयितृ] नीचे गिरानेवाला (सण) ।

णिवाण न [निपान] कूप या तालाब के पास पशुओं के जल पीने के लिए बनाया हुआ जल-कुण्ड, चरही (स ३१२) । °साला स्त्री [°शाला] पशुओं का पानी पिलाने का स्थान (महा) ।

णिवाय देखो णिवाड । णिवायइ (कुमा) । णिवाएज्जा (पि १३१) ।

णिवाय पुं [दे] स्वेद, पसीना (दे ४, ३४; सुर १२, ८) ।

णिवाय पुं [निपात] १ पतन, अधः-पतन, गिरना (गा २२२; सुपा १०३) । २ संयोग, संबन्ध; 'दिट्ठिणिवाआ ससिमुहीए' (गा १४८; उत्त २; गउड) । ३ च, प्र आदि व्याकरण-प्रसिद्ध अव्यय (पण्ह २, २; सुपा २०३) । ४ विनाश (पिंड) ।

णिवाय वि [निवात] पवन-रहित, स्थिर (पण्ह २, ३; स ४०३; ७४३) ।

णिवायण न [निपातन] १ गिराना, निपातन, ढाहना (पण्ह १, २) । २ व्याकरण-प्रसिद्ध शब्द-सिद्धि, प्रकृति आदि के बिना विभाग किये ही अखण्ड शब्द की निष्पत्ति (विसे २३) ।

णिवार सक [नि + वारय्] निवारण करना, निषेध करना, रोकना । णिवारेइ (उव; महा)। वकृ. णिवारेंत (महा) । कवकृ. णिवारीअंत, णिवारिज्जमाण (नाट—मृच्छ १५४; १३५) । कृ. णिवारियव्व, णिवारेयव्व (सुपा ४८२; महा) ।

णिवारग वि [निवारक] निषेध करनेवाला, रोकनेवाला (सुर १, १२६; सुपा ६३६) ।

णिवारण न [निवारण] १ निषेध, रुकावट (भग ६.३३) । २ शीत आदि को रोकनेवाला, गृह, वस्त्र आदि; 'न मे निवारणं अत्थि, छवित्ताणं न विज्जइ' (उत्त २, ७) । ३ वि. निवारण करनेवाला, रोकनेवाला, 'उवसग्ग-निवारणो एसो' (अजि ३८) ।

णिवारय देखो णिवारग (उप ५३० टी) ।

णिवारि वि [निवारिन्] निवारक, प्रतिषेधक । स्त्री. °रिणी (महा) ।

णिवारिय वि [निवारित] रोका हुआ, निषिद्ध (भग; प्रासू १६६) ।

णिवास पुं [निवास] १ निवसन, रहना । २ वास-स्थान, डेरा (कुमा; महा) ।

णिवासि वि [निवासिन्] निवास करनेवाला, रहनेवाला (महा) ।

णिविअ देखो णिमिअ = न्यस्त (से १२.३०) ।

णिविट्ट देखो णिवट्ट = निवृत्त (सण) ।

णिविट्ठ वि [निविष्ट] १ स्थित, बैठा हुआ (महा) । २ आसक्त, लीन (राज) ।

णिविट्ठि वि [निर्विष्ट] लब्ध, उपात्त, गृहीत (ठा ५,२) । °कप्पट्ठिइ स्त्री [°कल्पस्थिति] जैन साधुओं का एक तरह का आचार (ठा ५, २) ।

णिविड देखो णिबिड (षड्; हे १, २४०) ।

णिविडिअ देखो णिबिडिय (गउड; पि २४०) ।

णिवित्ति स्त्री [निवृत्ति] १ निवर्त्तन, उपरम, प्रवृत्ति का अभाव (विसे २७६८; स १५४) । २ वापस लौटना, प्रत्यावर्त्तन (सुपा ३३२)।

णिविद्ध वि [दे] १ सोकर उठा हुआ । २ निराश, हताश । ३ उद्भट । ४ नृशंस, निर्दय (दे ४, ४८) ।

णिविन्न वि [निर्विज्ञ] विशिष्ट ज्ञान से रहित (तंदु ५५) ।

णिविस अक [नि + विश्] बैठना । वकृ. णिविसंत (श्रा १२) ।

णिविस (अप) देखो णिमिस (भवि) ।

णिविसिर वि [निवेष्टृ] बैठनेवाला (सण) ।

णिवुज्झमाण वि [न्युह्यमान] नीयमान, जो ले जाया जाता हो वह (आचा २, ११, ३) ।

णिवुट्ठ वि [निवृष्ट] बरसा हुआ (आचा २, ४, १, ४) ।

णिवुड्ढ सक [नि + वर्धय्] १ त्याग करना, छोड़ना । २ हानि करना । वकृ. णिवुड्ढेमाण (सुज्ज १, १) । संकृ. णिवुड्ढित्ता (सुज्ज १) ।

णिवुड्ढि स्त्री [निवृद्धि] १ वृद्धि का अभाव (ठा २, ३)। २ दिन की छोटाई (भग)।

णिवुण देखो णिउण (अच्चु ६६)।

णिवुत्त देखो णिवट्ट = निवृत्त (स ५८८)।

णिवुदि स्त्री [निवृति] परिवेष्टन (प्राकृ १२)।

णिवूढ देखो णिव्वूढ (सूअ २, ७, ३८)।

णिवेअ सक [नि + वेदय्] १ सम्मान-पूर्वक ज्ञापन करना, अर्ज करना। २ अर्पण करना। ३ मालूम करना। कर्म. णिवेइज्जइ (निचू १)। संकृ. णिवेइऊण (स ५६६)। हेकृ. णिवेएउं (पंचा १५)। कृ. णिवेयणीअ (स १२०)।

णिवेअग वि [निवेदक] सम्मान-पूर्वक ज्ञापन करनेवाला, प्रार्थी (सुपा २६८)।

णिवेअण } न [निवेदन] १ सम्मान-पूर्वक
णिवेअणय } ज्ञापन, विनय (पंचा १; निचू ११)। २ नैवेद्य, देवता को अर्पित अन्न आदि (पउम ३२, ८३)।

णिवेअणा स्त्री [निवेदना] ऊपर देखो (णाया १,५)। °पिंड पुं [°पिण्ड] देवता को अर्पित अन्न आदि, नैवेद्य (निचू ११)।

णिवेअय देखो णिवेअग (सुपा २२५; स ५१६)।

णिवेइय वि [निवेदित] सम्मान-पूर्वक ज्ञापित (महा; भवि)।

णिवेदइत्तअ वि [निवेदयितृ] निवेदन करनेवाला (अभि १३६)।

णिवेस सक [नि + वेशय्] स्थापना करना, बैठाना। णिवेसइ, णिवेसेइ (सण; कप्प)। संकृ. णिवेसइत्ता, णिवेसिउं णिवेसिऊण, णिवेसित्ता, णिवेसिय (उत्त ३२; महा; सण; कप्प; महा)। कृ. णिवेसियव्व (सुपा ३६४)।

णिवेस पुं [निवेश] १ स्थापन, आधान (ठा ६; उप पृ २३०)। २ प्रवेश (निचू ४)। ३ आवास-स्थान, डेरा (बृह १)।

णिवेस पुं [नृपेश] १ महान् राजा, चक्रवर्त्ती राजा (सुपा ४६३)।

णिवेसण न [निवेशन] १ स्थान, बैठना (आचा)। २ एक ही दरवाजेवाले अनेक गृह (आव ४)।

णिवेसण न [निवेशन] गृह, घर (उत्त १३, १८)।

णिवेसाविय वि [निवेशित] बैठाया हुआ (महा)।

णिव्व न [नीव्र] छदि, पटल-प्रान्त (दे ४, ४८; पाअ)।

णिव्व न [नीव्र] छप्पर के ऊपर का खपरैल (णंदि १५६)।

णिव्व न [दे] १ ककुद, चिह्न। २ व्याज, बहाना (दे ४, ४८)।

णिव्वक्कर वि [दे] परिहास-रहित, सत्य (कुप्र १६७)।

णिव्वक्कल वि [निर्वल्कल] वल्कल-रहित, (पि ६२)।

णिव्वट्ट देखो णिव्वत्त = निर् + वर्त्तय्। संकृ. णिव्वट्टित्ता (ठा २, ४)।

णिव्वट्ट (अप) देखो णिवट्ट (हे ४, ४२२ टि)।

णिव्वट्टग वि [निवर्तक] बनानेवाला, कर्ता (आव ४)।

णिव्वट्टिम देखो णिवट्टिम (दस ७, ३३)।

णिव्वट्टिय वि [निर्वर्तित] निष्पादित, बनाया हुआ (आचा २, ४, २)।

णिव्वड सक [मुच्] दुःख को छोड़ना। णिव्वडइ (षड्)।

णिव्वड अक [भू] १ पृथक् होना, जुदा होना। २ स्पष्ट होना। णिव्वडइ (हे ४, ६२)।

णिव्वड देखो णिव्वल = निर् + पद् (सुपा १२२)।

णिव्वडिअ वि [भूत] १ पृथग्-भूत, जो जुदा हुआ हो (से ६, ८८)। २ स्पष्टीभूत, जो व्यक्त हुआ हो (सुर ७, १०४)।

णिव्वडिअ वि [निष्पन्न] सिद्ध, कृत, निर्वृत्त (पाअ); 'सुकुलुप्पत्ती य गुणन्नुया य सम्मं इमीए णिव्वडिया' (सुपा १२२)।

णिव्वढ वि [दे] नग्न, नंगा (दे ४, २८)।

णिव्वण वि [निर्व्रण] व्रण-रहित, क्षत-वर्जित, बिना घाव का (णाया १,३; औप)।

णिव्वण्ण सक [निर् + वर्णय्] १ श्लाघा करना, प्रशंसा करना। २ देखना। वकृ. णिव्वण्णंत (से ३, ४४; उप १०३१ टी; महा)।

णिव्वत्त सक [निर् + वर्त्तय्] बनाना, करना, सिद्ध करना। णिव्वत्तेइ (महा)। संकृ. णिव्वत्तिऊण, णिव्वत्तेऊण (महा)।

णिव्वत्त सक [निर् + वृत्तय्] गोल बनाना, वर्तुल करना। कवकृ. णिव्वत्तिज्जमाण (भग)।

णिव्वत्त वि [निर्वृत्त] निष्पन्न, रचित, निर्मित (महा; औप)।

णिव्वत्त वि [निर्वर्त्य] बनाने योग्य, साध्य (प्राकृ २०)।

णिव्वत्तण न [निर्वर्त्तन] निष्पत्ति, रचना, बनावट (उप पृ १८३)। °।धिकरणिया, °।हिगरणिया स्त्री [°।धिकरणिकी] शस्त्र बनाने की क्रिया (ठा २, १; भग ३, ३)।

णिव्वत्तणया } स्त्री [निर्वर्त्तना] ऊपर देखो
णिव्वत्तणा } (पण्ण ३४; उत्त ३)।

णिव्वत्तय वि [निर्वर्त्तक] निष्पन्न करनेवाला, बनानेवाला (विसे ११४२; स ५६३; हे २, ३०)।

णिव्वत्ति स्त्री [निर्वृत्ति] निष्पत्ति, विनिर्माण (विसे ३००२)। देखो णिव्वित्ति।

णिव्वत्तिय वि [निर्वर्तित] निष्पादित, बनाया हुआ (स ३३६; सुर १५, २२१; संक्षि १०)।

णिव्वत्तिय वि [निर्वृत्तित] गोलाकार किया हुआ (भग)।

णिव्वमिअ वि [दे] परिभुक्त (दे ४, ३६)।

णिव्वय अक [निर् + वृ] शान्त होना, उपशान्त होना। कृ. णिव्वयणिज्ज (स ३०१)।

णिव्वय वि [निर्वृत] १ उपशान्त, शम-प्राप्त (सूअ १, ४, २)। २ परिणत, परिणाम-प्राप्त (दसनि १)।

णिव्वय वि [निर्व्रत] व्रत-रहित, नियम-रहित (पउम २, ८८; उप २६४ टी)।

णिव्वयण न [निर्वचन] १ निरुक्ति, शब्दार्थ कथन (आवम)। २ उत्तर, जवाब (ठा १०)। ३ वि. निरुक्ति करनेवाला, निर्वाचक; 'जाव दविओवओगो, अपच्छिमविअप्पनिव्वयणो' (सम्म ८)।

णिव्वयणिज्ज देखो णिव्वय = निर् + वृ।

णिव्वर सक [कथय्] दुःख कहना।

णिव्वरइ (हे ४, ३)। भूका. णिव्वरही (कुमा)। कर्म.

'कह तम्मि निव्वरिज्जइ,
दुक्खं कंडुज्जुएण हिअएण।
अद्दाए पडिबिंबं व, जम्मि
दुक्खं न संकमइ (स ३०६)।

णिव्वर सक [छिद्] छेदन करना, काटना। णिव्वरइ (हे ४, १२४)।

णिव्वरण न [कथन] दुःख-निवेदन (गा २५५)।

णिव्वरिअ वि [छिन्न] काटा हुआ, खण्डित (कुमा)।

णिव्वल सक [मुच्] दुःख को छोड़ना। णिव्वलेइ (हे ४, ९२)।

णिव्वल अक [निर्+पद्] निष्पन्न होना, सिद्ध होना, बनना। णिव्वलइ (हे ४, १२८)।

णिव्वल देखो **णिच्चल**=क्षर्। णिव्वलइ (हे ४, १७३ टि)।

णिव्वल देखो **णिव्वड**=भू। वकृ. णिव्वलंत, णिव्वलमाण (से १, ३६; ७, ४३)।

णिव्वलिअ वि [दे] १ जल-धौत, पानी से धोया हुआ। २ प्रविगणित। ३ विघटित, वियुक्त (दे ४, ५१)।

णिव्वव सक [निर्+वापय्] ठंढा करना, बुझाना। णिव्ववेहि (स ४५५)। णिव्ववसु (काल)। वकृ. णिव्ववंत (सुपा २२५)। कृ. णिव्ववियव्व (सुपा २९०)।

णिव्ववण न [निर्वापण] १ बुझाना, शान्त करना। २ वि. शान्त करनेवाला, ताप को बुझानेवाला (सुर ३, २३७)।

णिव्ववित्र वि [निर्वापित] बुझाया हुआ, ठंढा किया हुआ (गा ३१७; सुर २, ७४)।

णिव्वह अक [निर्+वह्] १ निभना, निर्वाह करना, पार पड़ना। २ आजीविका चलाना। णिव्वहइ (स १०५; वज्जा ६)। कर्म. णिव्वुब्हइ (पि ५४१)। वकृ. णिव्वहंत (श्रा १२; कुप्र ३३)। कृ. निव्वहियव्व (कुप्र ३७५)।

णिव्वह सक [उद्+वह्] १ धारण करना। २ ऊपर उठाना। णिव्वहइ (षड्)।

णिव्वहण न [निर्वहण] निर्वाह, अन्त, नाटक की एक संधि (सुपा १७५, कुप्र ३७५)।

णिव्वहण न [दे] विवाह, शादी (दे ४, ३९)।

णिव्वा अक [वि+श्रम्] विश्राम करना। णिव्वाइ (हे ४, १५९)। वकृ. णिव्वाअंत (से ८, ८)।

णिव्वाघाइम वि [निर्व्याघातिम] व्याघात-रहित, स्खलना-रहित (औप)।

णिव्वाघाय वि [निर्व्याघात] १ व्याघात-वर्जित (णाया १, १; भग; कप्प)। २ न. व्याघात का अभाव (पण्ण २)।

णिव्वाघाया स्त्री [निर्व्याघाता] एक विद्या-देवी (पउम ७, १४५)।

णिव्वाण न [निर्वाण] १ मुक्ति, मोक्ष, निर्वृति (विसे १९७५)। २ सुख, चैन, शान्ति, दुःख-निवृत्ति; 'निउणमणो निव्वाणं सुंदरि निस्संसयं कुणइ' (उप ७२८ टी; पउम ४६, १६)। ३ बुझाना, विध्यापन (आव ४)। ४ वि. बुझा हुआ; 'जह दीवो णिव्वाणो' (विसे १९९१; कुप्र ५१)। ५ पुं. ऐरवत वर्ष में होनेवाले एक जिन-देव का नाम (सम १५४)।

णिव्वाण न [निर्वाण] तृप्ति (दस ५, २, ३८)।

णिव्वाण न [दे] दुःख-कथन (दे ४, ३३)।

णिव्वाणि पुं [निर्वाणिन्] भारतवर्ष में अतीत उत्सर्पिणी-काल में संजात एक जिन-देव (पव ७)।

णिव्वाणी स्त्री [निर्वाणी] भगवान् श्री शान्तिनाथ की शासन-देवी (संति १; १०)।

णिव्वाय वि [निर्वाण] बीता हुआ, व्यतीत (से १४, १४)।

णिव्वाय वि [विश्रान्त] १ जिसने विश्राम किया हो वह (कुमा)। २ सुखित, निर्वृत (से १३, २३)।

णिव्वाय वि [निर्वात] वायु-रहित (णाया १, १, औप)।

णिव्वालिय वि [भावित] पृथक् किया हुआ (से १४, ५४)।

णिव्वाव देखो **णिव्वव**। णिव्वावेमि (स ३५२)। संकृ. णिव्वाविऊण (निचू १)।

णिव्वाव पुं [निर्वाप] घी, शाक आदि का परिमाण (निचू १)। °कहा स्त्री [°कथा] एक तरह की भोजन-कथा (ठा ४, २)।

णिव्वावइत्तअ (शौ) वि [निर्वापयितृक] ठंढा करनेवाला (पि ६००)।

णिव्वावण न [निर्वापण] बुझाना, विध्यापन (दस ४)।

णिव्वावणा न [निर्वापणा] बुझाना, ठंढा करना, उपशान्ति (गउड)।

णिव्वावय वि [निर्वापक] आग बुझानेवाला (सूअ १, ७, ५)।

णिव्वाविय वि [निर्वापित] ठंढा किया हुआ (णाया १, १; दस ५, १)।

णिव्वासण न [निर्वासन] देश निकाला (स ५३४; कुप्र ३४३)।

णिव्वासणा स्त्री [निर्वासना] ऊपर देखो (पउम ९९, ४१)।

णिव्वाह पुं [निर्वाह] १ निभाना, पार-प्राप्ति। २ आजीविका, जीवन-सामग्री; 'निव्वाहं किंपि दाउं च' (सुपा ४८८)।

णिव्वाहग वि [निर्वाहक] निर्वाह करने-वाला (रंभा)।

णिव्वाहण न [निर्वाहण] १ निर्वाह, निभाना (सुपा ३९४)। २ निस्सार करना (राज)।

णिव्वाहिअ वि [निर्वाहित] अतिवाहित, बिताया हुआ, गुजारा हुआ (से ६, ४२)।

णिव्वाहिअ वि [निर्व्याधिक] व्याधि-रहित, नीरोग (से ६, ४२)।

णिव्विअप्प देखो **णिव्विगप्प** (सम्म ३३)।

णिव्विआर वि [निर्विकार] विकार-रहित (गा ५०६)।

णिव्विइअ वि [निर्विकृतिक] १ घृत आदि विकृति-जनक पदार्थों से रहित (औप)। २ न. प्रत्याख्यान-विशेष, जिसमें घृत आदि विकृतियों का त्याग किया जाता है (पव ४, पंचा ५)।

णिव्विइगिच्छ वि [निर्विचिकित्स] फल-प्राप्ति में शंका-रहित (कस; धर्म २)।

णिव्विइगिच्छ न [निर्विचिकित्स्य] फल-प्राप्ति में सन्देह का अभाव (उत्त २८)।

णिव्विइगिच्छा स्त्री [निर्विचिकित्सा] फल-प्राप्ति में शंका का अभाव (औप; पडि)।

णिव्विंद सक [निर् + विन्द्] अच्छी तरह विचारना। निव्विंदए (दस ४. १६; १७)।

णिव्विंद सक [निर् +विद्] घृणा करना। णिव्विंदेज्ज (सूअ १, २, ३, १२)।

णिव्विकप्प, णिव्विगप्प वि [निर्विकल्प] १ सन्देह-रहित, निःसंशय (कुमा; गच्छ २)। २ भेद-रहित (सम्म ३३)।

णिव्विगइय देखो णिव्विइय (संबोध ५८)।

णिव्विगप्पग न [निर्विकल्पक] बौद्ध-प्रसिद्ध प्रत्यक्ष ज्ञान-विशेष (धर्मसं ३१३)।

णिव्विगिअ देखो णिव्विइअ (पव २)।

णिव्विग्घ वि [निर्विघ्न] विघ्न-रहित- बाधा-वर्जित (सुपा १८७; सण)।

णिव्विचिंत वि [निर्विचिन्त] चिन्ता-रहित, निश्चिन्त (सुर ७, १२३)।

णिव्विज्ज अक [निर् + विद्] निर्वेद पाना, विरक्त होना। णिव्विज्जेज्जा (उव)।

णिव्विज्ज वि [निर्विद्य] मूर्ख (उत्त ११,२)।

णिव्विट्ठ वि [निर्वृष्ट] उपार्जित, 'नाणिव्विट्ठं लब्भई (पिंड ३७०)।

णिव्विट्ठ वि [दे] उचित, योग्य (दे ४,३४)।

णिव्विट्ठ वि [निर्विष्ट] उपभुक्त, आसेवित, परिपालित (पाअ; अणु)। °काइय न [°कायिक] जैन शास्त्र में प्रतिपादित एक तरह का चारित्र (अणु; इक)।

णिव्विण्ण वि [निर्विण्ण] निर्वेद-प्राप्त, खिन्न (महा)।

णिव्वित्त वि [दे] सो कर उठा हुआ (दे ४, ३२)।

णिव्वित्ति देखो णिव्वत्ति। २ इन्द्रिय का आकार, द्रव्येन्द्रिय-विशेष (विसे २९९४)।

णिव्विद देखो णिव्विंद = निर्+विद् (सूअ १, २, ३, १२)।

णिव्विदुगुंछ वि [निर्विजुगुप्स] घृणा-रहित (धर्म १)।

णिव्विन्न देखो णिव्विण्ण (उव)।

णिव्विभाग वि [निर्विभाग] विभाग-रहित (दंस ५)।

णिव्विय देखो णिव्विइअ (संबोध ५७; कुलक १२)।

णिव्वियण वि [निर्विजन] १ मनुष्य-रहित। २ न. एकान्त स्थल (सुर ६, ४२)।

णिव्विर वि [दे] चिपट, बैठा हुआ; 'अइणिव्विरनासाए' (गा ७२८ टि)।

णिव्विराम वि [निर्विराम] विराम-रहित (उप पृ १८३)।

णिव्विलंब क्रिवि [निर्विलम्ब] विलम्ब-रहित, शीघ्र (सुपा २५५; कुप्र ५२)।

णिव्विवेअ वि [निर्विवेक] विवेक-शून्य (सुपा ३२३; ५००; गउड, सुर ८, १८१)।

णिव्विस सक [निर् + विश्] त्याग करना। निव्विसेज्जा (कस)। वकृ. णिव्विसंत (राज)।

णिव्विस सक [निर् + विश्] उपभोग करना (पिंड ११६ टी)।

णिव्विस वि [निर्विष] विष-रहित (औप)।

णिव्विसंक वि [निर्विशङ्क] शंका-रहित, निर्भय (सुर १२, १६)।

णिव्विसमाण न [निर्विशमान] १ चारित्र-विशेष (ठा ३, ४)। २ वि. उस चारित्र को पालनेवाला (ठा ६)। °कप्पट्ठिइ स्त्री [°कल्पस्थिति] चारित्र-विशेष की मर्यादा (कस)।

णिव्विसय वि [निर्वेशक] उपभोग-कर्ता (पिंड ११६)।

णिव्विसय वि [निर्विषय] १ विषयों की अभिलाषा से रहित (उत्त १४)। २ अनर्थक, निरर्थक (पंचा १२; उप ९२५)। ३ देश से बाहर किया हुआ, जिसको देशनिकाले की सजा हुई हो वह (सुर ६, ३६; सुपा ५६६)।

णिव्विसिट्ठ वि [निर्विशिष्ट] विशेष-रहित, समान, तुल्य (उप ५३० टी)।

णिव्विसी स्त्री [निर्विषी] एक महौषधि (ती ५)।

णिव्विसेस वि [निर्विशेष] १ विशेष-रहित, समान, साधारण (स २३; सम्म ९९; प्रासू ६८)। २ अभिन्न, जो जुदा न हो (से १५, ६५)।

णिव्वी स्त्री [निर्विकृति] तप-विशेष (संबोध ५७)।

णिव्वीय देखो णिव्विइअ (संबोध ५७)।

णिव्वीरा स्त्री [निर्वीरा] पुत्र-रहित विधवा स्त्री (मोह ४६)।

णिव्वुअ वि [निर्वृत] निर्वृति-प्राप्त (स ५६३; कप्प)।

णिव्वुइ स्त्री [निर्वृति] १ निर्वाण, मोक्ष, मुक्ति (कुमा; प्रासू १६४)। २ मन की स्वस्थता, निश्चिन्तता (सुर ४, ८९)। ३ सुख, दुःख-निवृत्ति (आव ४)। ४ जैन साधुओं की एक शाखा (कप्प)। ५ एक राजकन्या (उप ९३६)। °कर वि [°कर] निर्वृतिजनक (पण्ण १)। °जणअ वि [°जनक] निर्वृति का उत्पादक (गा ४२१)।

णिव्वुइकरा स्त्री [निर्वृतिकरा] भगवान् सुमतिनाथ की दीक्षा-शिविका (विचार १२९)।

णिव्वुड देखो णिव्वुअ (कुमा; आचा)।

णिव्वुड वि [निर्वृत] अचित्त किया हुआ (दस ३, ६, ७)।

णिव्वुड्ड देखो णिवुड्ड = नि+मस्ज्। वकृ. णिव्वुड्डमाण (राज)।

णिव्वुड्ढ देखो णिवुड्ढ। वकृ. णिव्वुड्ढेमाण (सुज ६—पत्र ८०)। संकृ. णिव्वुड्ढेत्ता (सुज ६)।

णिव्वुड्ढ वि [निर्व्यूढ] निर्वाहित, निभाया हुआ (गा ३२)।

णिव्वुत्त देखो णिवुत्त (गा १५५)।

णिव्वुत्त देखो णिव्वत्त = निर्वृत्त (पिंग)।

णिव्वुत्ति देखो णिव्वत्ति (गा ८२८)।

णिव्वुद देखो णिव्वुअ (संक्षि ६)।

णिव्वुदि देखो णिव्वुइ (प्राकृ ८)।

णिव्वुब्भ° देखो णिव्वह = निर् + वह्।

णिव्वूढ वि [निर्व्यूढ] १ जिसका निर्वाह किया गया हो वह। २ कृत, वि[illegible]मित (गा २५५; से १, ४६)। ३ जिसने किया हो वह, पार-प्राप्त (विवे ४४) त्यक्त, परिमुक्त (से ५, ६२)। ५ बा[illegible] निकाला हुआ, निस्सारित; 'निव्वूढा य पएसा तत्तो गाढप्पओसमावन्ना' (उप १३१ टी)।

णिव्वूढ वि [दे] १ स्तब्ध (दे ४, ३३)। न. घर का पश्चिम आँगन (दे ४, २९)।

णिव्वूढ वि [निर्व्यूढ] किसी ग्रंथ से उद्धृत कर बनाया हुआ ग्रन्थ (दसनि १, १२)।

णिव्वेअ पुं [निर्वेद] मुक्तिकी इच्छा (सम्मत्त १६६)।

णिव्वेअ पुं [निर्वेद] १ खेद, विरक्ति (कुमा; द्र ६२)। २ संसार की निर्गुणता का अवधारण—निश्चय (ज्ञान) करना (उप ६८६)।

णिव्वेअण न [निर्वेदन] १ खेद, वैराग्य। २ वि. वैराग्यजनक। स्त्री. °णी (ठा ४, २)।

णिव्वेट्ठ सक [निर् + वेष्टय्] १ नाश करना, क्षय करना। २ घेरना। ३ बाँधना। वकृ. णिव्वेट्टंत (विसे २७४५; आचा २, ३, २)।

णिव्वेढ सक [निर् + वेष्टय्] त्याग करना। णिव्वेढेइ (सुज्ज २, १)।

णिव्वेढ सक [निर् + वेष्टय्] मजबूती से वेष्टन करना। णिव्वेढिज, णिव्वेढेज्ज (आचा २, ३, २; पि ३०४)।

णिव्वेढ वि [दे] नग्न, नंगा (दे ४, २८)।

णिव्वेद देखो णिव्वेअ (उत्त २९, २)।

णिव्वेर वि [निर्वैर] वैर-रहित (अच्चु ५९)।

णिव्वेरिस वि [दे] १ निर्दय, निष्करुण। २ अत्यन्त, अधिक (दे ४, ३७)।

णिव्वेल्ल अक [निर् + वेल्ल्] फुरना, सत्य ठहरना, साबित होना। णिव्वेल्लइ (पि १०७)।

णिव्वेल्लिअ वि [निर्वेल्लित] प्रस्फुरित, स्फूर्ति-युक्त (से ११, १६)।

णिव्वेस वि [निर्द्वेष] द्वेष-रहित (से १५, ६५)।

णिव्वेस पुं [निर्वेश] १ लाभ, प्राप्ति (ठा ५, २)। २ व्यवस्था; 'कम्माण कप्पिआणं काही कप्पंतरेसु को णिव्वेसं' (अच्चु १८)।

णिव्वेहणिया स्त्री [निर्वेधनिका] वनस्पति-विशेष (सूअ २, ३, १६)।

णिव्वोढव्व वि [निर्वोढव्य] निर्वाह-योग्य, वहन करने योग्य, निभाने लायक (श्राव ४)।

णिव्वोल सक [क्रु] क्रोध से होठ को मलिन करना। णिव्वोलन (हे ४, ६६)।

णिव्वोलण न [करण] क्रोध से होठ को मलिन करना (कुमा)।

णिस° देखो णिसा (कुमा; पउम १२, ६५)।

णिस सक [नि + अस्] स्थापन करना। णिसेइ (औप)।

णिसंत वि [निशान्त] १ श्रुत, सुना हुआ (णाया १, १; ४; उवा)। २ अत्यन्त ठंढ़ा (श्रावम)। ३ रात्रि का अवसान, प्रभात; 'जहा णिसंते तवणच्चिमाली, पभासई केवलभारहं तु' (दस ६, १, १४)।

णिसंस वि [नृशंस] क्रूर, निर्दय (सुपा ४०६)।

णिसग्ग पुं [निसर्ग] १ स्वभाव, प्रकृति (ठा २, १; कुप्र १४८)। २ निसर्जन, त्याग (विसे)।

णिसग्ग वि [नैसर्ग] स्वभाव से होनेवाला, स्वाभाविक (सुपा ६४८)।

णिसग्ग न [नैसर्ग] जात्यन्ध की तरह स्वभाव से अज्ञता (सूअ २, ३, १६)।

णिसग्गिय वि [नैसर्गिक] स्वाभाविक (सण)।

णिसज्ज पुं देखो णिसज्जा 'निसज्जे वियडणाए' (वव १)।

णिसज्जा स्त्री [निषद्या] १ आसन (दस ६)। २ उपवेशन, बैठना (वव ४)। देखो णिसिज्जा।

णिसट्ठ वि [निसृष्ट] १ निकाला हुआ, त्यक्त १, १६)। २ दत्त, दिया हुआ (णाया १, १—पत्र ७१)।

णिसट्ठ वि [दे] प्रचुर, बहुत (ओघ ८७)।

णिसट्ठ (अप) वि [निषण्ण] बैठा हुआ (सण)।

णिसढ पुं [निषध] १ हरिवर्ष क्षेत्र से उत्तर में स्थित एक पर्वत (ठा २, ३)। २ स्वनाम-ख्यात एक वानर, राम-सैनिक (से ४, १०)। ३ बैल, साँढ़ (सुज ४)। ४ बलदेव का एक पुत्र (निर १,५; कुप्र ३७२)। ५ देश-विशेष। ६ निषध देश का राजा (कुमा)। ७ स्वर-विशेष (हे १, २२६; प्राप्र)। °कूड न [°कूट] निषध पर्वत का एक शिखर (ठा २, ३)। °दह पुं [°द्रह] द्रह-विशेष (जं ४)।

णिसण्ण वि [निषण्ण] १ उपविष्ट, स्थित (गा १०८; ११६; उत्त २०)। २ कायोत्सर्ग का एक भेद (आव ५)।

णिसण्ण वि [निःसंज्ञ] संज्ञा-रहित (से ६, ३८)।

णिसत्त वि [दे] संतृप्त, संताप-युक्त (दे ४, ३०)।

णिसन्न देखो णिसण्ण (उव; णाया १, १)।

णिसम सक [नि + समय्] सुनना। वकृ. णिसमेंत (श्रावम)। कवकृ. णिसम्मंत (गउड) संकृ. णिसमिअ, णिसम्म (नाट. वेणी ६८; उवा; आचा)।

णिसमण न [निशमन] श्रवण, आकर्णन (हे १, २६६; गउड)।

णिसम्म अक [नि+सद्] १ बैठना। २ सोना, शयन करना। णिसम्मउ (से ६, १७)। हेकृ. णिसम्मिउं (से ५, ४२)।

णिसर देखो णिसिर कवकृ. निसरिज्जमाण (भग)।

णिसल्ल देखो णिस्सल्ल (श्रा ४०)।

णिसह देखो णिसढ (इक)।

णिसह देखो णिस्सह (षड्)।

णिसह सक [नि + सह्] सहन करना। णिसहइ (प्राकृ ७२)।

णिसा स्त्री [निशा] अन्धकारवाली नरक-भूमि (सूअ १, ५, १, ५)।

णिसा [निशा] १ रात्रि, रात (कुमा; प्रासू ५५)। २ पीसने का पत्थर, शिलौट, सिलवट (उवा)। °अर पुं [°कर] चन्द्र, चाँद (हे १, ८; षड्)। °अर पुं [°चर] राक्षस (कप्पू; से १२, ६६)। °अरिंद पुं [°चरेन्द्र] राक्षसों का नायक, राक्षस-पति (से ७, ५६)। °नाह पुं [°नाथ] चन्द्रमा (सुपा ४१६)। °लोढ न [°लोष्ट] शिला-पुत्रक, पीसने का पत्थर, लोढ़ा (उवा)। °वइ पुं [°पति] चन्द्र, चाँद, चन्द्रमा (गउड)। देखो णिसि°।

णिसाण सक [नि + शाणय्] शान पर चढ़ाना, पैनाना, तीक्ष्ण करना। संकृ. निसाणिऊण (स १४३)।

णिसाण न [निशाण] शान, एक प्रकार का पत्थर, जिस पर हथियार तेज किया जाता है (गउड; सुपा २८)।

णिसाणिय वि [निशाणित] शान दिया हुआ, पैनाया हुआ, तीक्ष्ण किया हुआ, पैना, धारदार, नुकीला (सुपा ५६)।

णिसाम देखो णिसम। णिसामेइ (महा)। वकृ. णिसामेंत (सुर ३, ७८)। संकृ. णिसामिऊण, णिसामित्ता (महा; २)।

णिसाम वि [निःश्याम] मालिन्य-रहित, निर्मल (से ६, ४७)।

णिसामण देखो **णिसमण** (सुपा २३)।

णिसामिअ वि [दे. निशमित] १ श्रुत, आकर्णित (दे ४, २७; गा २६)। २ उपशमित, दबाया हुआ। ३ सिमटाया हुआ, संकोचितः 'नस्सामिओ फणाभोओ' (स ३५८)।

णिसामिर वि [निशमयितृ] सुननेवाला (गउड)।

णिसाय वि [दे] प्रसुप्त (दे ४, ३५)।

णिसाय वि [निशात] शान दिया हुआ, तीक्ष्ण (पाअ)।

णिसाय पुं [निषाद] १ चाण्डाल, एक प्राचीन जाति (दे ४,३५)। २ स्वर-विशेष (ठा ७)।

णिसायंत वि [निशातान्त] तीक्ष्ण धारवाला (पाअ)।

णिसास सक [निर् + श्वासय्] निःश्वास डालना। वकृ. **णिस्सासएंत** (पउम ६१, ७३)।

णिसास देखो **णीसास** (पिंग)।

णिसि° देखो **णिसा** (हे १, ८; ७२; षड्; सुर १, २७)। °**पालअ** पुं [°पालक] छन्द-विशेष (पिंग)। °**भत** न [°भक्त] रात्रि-भोजन (ओघ ७८७)। °**भुत्त** न [°भुक्त] रात्रि-भोजन (सुपा ४६१)।

णिसिअ देखो **णिसीअ** णिसिअइ (सण; कप्प)। संकृ. **णिसिइत्ता** (कप्प)।

णिसिअ वि [निशित] शान दिया हुआ, तीक्ष्ण (से ५, ४६; महा; हे ४, ३३०)।

णिसिंक सक [नि + सिच्] प्रक्षेप करना, डालना। संकृ. **णिसिंकिय** (आचा)।

णिसिज्जा देखो **णिसज्जा** (कप्प; सम ३५; ठा ५, १)। ३ उपाश्रय, साधुओं का स्थान (पंच ४)।

णिसिज्झमाण देखो **णिसेह** = नि + षिध्।

णिसिट्ठ वि [निसृष्ट] १ बाहर निकाला हुआ (भास १०)। २ दत्त, प्रदत्त (आव)। ३ अनुज्ञात (बृह १)। ४ बनाया हुआ। क्रिवि. 'आमयहराइं ...पउमो निहो निसिट्ठं उवणमेइ' (उप ६८६ टी)।

णिसिद्ध वि [निषिद्ध] प्रतिषिद्ध, निवारित (पंचा १२)।

णिसिय वि [न्यस्त] स्थापित (धर्म ७३)।

णिसियण न [निषदन] उपवेशन (पव)।

णिसिर सक [नि + सृज्] १ बाहर निकालना। २ देना, त्याग करना। ३ करना। णिसिरइ (भास ५; भग); 'णिरवराहाण। निसिरंति जे न दंडं, तेवि हु पाविंति निव्वाणं' (सुर १५, २३४)। कर्म. निसिरिज्जइ, निसिरिज्जए (विसे ३५७)। वकृ. **निसिरंत** (पि २३५)। कवकृ. **निसिरिज्जमाण** (पि २३५)। संकृ. **णिसिरित्ता** (पि २३५)। प्रयो. निसिरावेंति (पि २३५)।

णिसिरण न [निसर्जन] १ निस्सारण (भास २)। २ त्याग (णाया १, १६)।

णिसिरणया } स्त्री [निसर्जना] १ त्याग,
णिसिरणा } दान (आचा २, १, १०)। २ निस्सारण, निष्कासन (भग)।

णिसीअ अक [नि + षद्] बैठना। णिसीअइ (भग)। वकृ. **णिसीअंत, णिसीअमाण** (भग १३, ६; सूअ १, १, २)। संकृ. **णिसीइत्ता** (कप्प)। हेकृ. **णिसीइत्तए** (कस)। कृ. **णिसीइयव्व** (णाया १, १; भग)।

णिसीअण न [निषदन] उपवेशन, बैठना (उप २६४ टी; स १८०)।

णिसीआवण न [निषादन] बैठाना (कस ४, २; टी)।

णिसीढ देखो **णिसीह** = निशीथ (हे १, २१६; कुमा)।

णिसीदण देखो **णिसीअण** (औप)।

णिसीह पुंन [निशीथ] १ मध्य रात्रि (हे १, २१६; कुमा)। २ प्रकाश का अभाव (निचू ३)। ३ न. जैन आगम-ग्रन्थ विशेष (णंदि)।

णिसीह पुं [नृसिंह] उत्तम पुरुष, श्रेष्ठ मनुष्य (कुमा)।

णिसीहिअ वि [नैशीथिक] निज के लिए लाया गया है ऐसा नहीं जाना हुआ भोजनादि पदार्थ (पिंड ३३६)।

णिसीहिआ स्त्री [नैषेधिकी] १ शव-परिष्ठापन-भूमि, श्मशान-भूमि (अणु २०)। २ बैठने की जगह (राय ६३)।

णिसीहिआ स्त्री [निशीथिका] १ स्वाध्याय-भूमि, अध्ययन-स्थान (आचा २, २, २)। २ थोड़े समय के लिए उपात्त स्थान (भग १४, १०)। ३ आचाराङ्ग सूत्र का एक अध्ययन (आचा २, २, २)।

णिसीहिआ स्त्री [नैषेधिकी] १ स्वाध्याय-भूमि (सम ४०)। २ पाप-क्रिया का त्याग (पडि; कुमा)। ३ व्यापारान्तर के निषेध रूप आचार (ठा १०)। देखो **णिसेहिया**।

णिसीहिणी स्त्री [निशीथिनी] रात्रि, रात (उप पृ १२७)। °**नाह** पुं [°नाथ] चन्द्रमा (कुमा)।

णिसुअ वि [दे. निश्रुत] श्रुत, आकर्णित (दे ४, २७; सुर १, १६६; २, २२६; महा, पाअ)।

णिसुंद पुं [निसुन्द] रावण का एक सुभट (पउम ५६, २६)।

णिसुंभ सक [नि + शुम्भ्] मार डालना, व्यापादन करना। कवकृ. **णिसुंभंत, णिसुब्भंत** (से ५, ६६; १४, ३; पि ५३५)।

णिसुंभ पुं [निशुम्भ] १ स्वनाम-ख्यात एक राजा, एक प्रतिवासुदेव (पउम ५, १५६; पव २११)। २ दैत्य-विशेष (पिंग)।

णिसुंभण न [निशुम्भन] १ मर्दन, व्यापादन, विनाश। २ वि. मार डालनेवाला (सूअ १, ५, १)।

णिसुंभा स्त्री [निशुम्भा] स्वनाम-ख्यात एक इन्द्राणी (णाया २; इक)।

णिसुंभिय वि [निशुम्भित] निपातित, व्यापादित (सुपा ४६०)।

णिसुट्ट } वि [दे] ऊपर देखो (हे ४,
णिसुट्टिअ } २५८; से १०, ३६)।

णिसुड देखो **णिसुढ** = नम्। निसुडइ (षड्)।

णिसुड्ढ देखो **णिसुट्ट** (हे ४, २५८ टि)।

णिसुढ अक [नम्] भार से आक्रान्त होकर नीचे नमना, झुकना। णिसुढइ (हे ४,१५८)।

णिसुढ सक [नि + शुम्भ्] मारना, मार कर गिराना। कवकृ. **णिसुढिज्जंत** (से ३, ५६)।

णिसुढिअ वि [नत] भार से नमा हुआ (पाअ)।

णिसुढिअ वि [निशुम्भित] निपातित (से १२, ६१)।

णिसुढिर वि [नम्र] भार से नमा हुआ (कुमा)।

णिसुण सक [नि + श्रु] सुनना, श्रवण करना। निसुणइ, णिसुणेइ, णिसुणेमि (सण; महा; सट्ठि १२८)। वकृ. **निसुणंत, निसुणमाण** सुपा १०६; सुर १२, १७४)। कवकृ. **निसुणिज्जंत** (सुपा ४५; रयण ६४)। संकृ **निसुणिउं, निसुणिऊण, णिसुणिऊणं** (सुपा १४; महा; पि ५८५)।

णिसुद्ध वि [दे] १ पातित, गिराया हुआ (दे ४, ३६; पाअ; से ५, ६८)।

णिसुब्भंत देखो **णिसुंभ** = नि + शुम्भ्।

णिसूग देखो **णिस्सूग** (सुपा ३७०)।

णिसुड देखो **णिसुढ** = नि + शुम्भ्। हेकृ. **निसुडिउं** (सुपा ३६६)।

णिसूढ देखो **णिसह** = नि + सह्। निसूढइ (प्राकृ ७२)।

णिसेग देखो **णिसेय** (पंच ५, ४६)।

णिसेज्जा स्त्री [निषद्या] वस्त्र, कपड़ा (पव १२७ टी)।

णिसेज्जा देखो **णिसज्जा** (उव; पव ६७)।

णिसेज्झ वि [निषेध्य] निषेध-योग्य (धर्मसं ६६३)।

णिसेणि देखो **णिस्सेणि** (सुर १३, १६०)।

णिसेय पुं [निषेक] १ कर्म-पुद्‌गलों की रचना-विशेष (ठा ६)। २ सेचन, सींचना, 'ता संपइ जिणवरविंबदंसणामयनिएण पीणिज्जउ नियदिट्ठि' (सुपा २६६); 'काआवि कुणंति सिरिखंडरसनिसेयं' (सुपा २०)।

णिसेव सक [नि + सेव्] १ सेवा करना, आदर करना। २ आश्रय करना। निसेवइ, निसेवए (महा; उव)। वकृ. **णिसेवमाण** (महा)। कवकृ. **णिसेविज्जंत** (ओघ ५६)। कृ. **निसेवणिज्ज** (सुपा ३७)।

णिसेव सक [नि + सेव्] आचरना। णिसेवए (अज्झ १७६)।

णिसेवग देखो **णिसेवय** (सूअ २, ६, ५)।

णिसेवणा स्त्री [निषेवणा] सेवा, भजना (उत्त ३२, ३)।

णिसेवय वि [निषेवक] १ सेवा करनेवाला, सेवक। २ आश्रय करनेवाला (पुप्फ २५१)।

णिसेवा स्त्री [निषेवा] ऊपर देखो (सम्मत्त १५५; संबोध ३४)।

णिसेवि वि [निषेविन्] ऊपर देखो (स १०)।

णिसेविय वि [निषेवित] १ सेवित, आहत (आवम)। २ आश्रित (उत्त २०)।

णिसेह सक [नि + षिध्] निषेध करना, निवारण करना। निसेहइ (हे ४, १३४)। कवकृ. **निसिज्झमाण** (सुपा ५७२)। हेकृ. **निसेहिउं** (स १६८)। कृ. 'निसेहियव्वा सययंपि माया' (सत ३५)।

णिसेह पुं [निषेध] १ प्रतिषेध, निवारण (उव; प्रासू १८१)। २ अपवाद (ओघ ५५)।

णिसेहण न [निषेधन] निवारण (आवम)।

णिसेहणा स्त्री [निषेधना] निवारण (आव १)।

णिसेहिया देखो **णिसीहिआ** = नैषेधिकी। १ मुक्ति, मोक्ष। २ श्मशान-भूमि। ३ बैठने का स्थान। ४ नितम्ब, द्वार के समीप का भाग (राज)।

णिस्स वि [निःस्व] निर्धन, धन-रहित (पाअ)। °**यर** वि [°कर] १ निर्धन-कारक। २ कर्म को दूर करनेवाला (आचा २, १६, ६)।

णिस्संक पुं [दे] निर्भर (दे ४, ३२)।

णिस्संक वि [निःशङ्क] १ शङ्का-रहित (सूअ २, ७; महा)। २ न. शङ्का का अभाव (पंचा ६)।

णिस्संकिअ वि [निःशङ्कित] १ शङ्का-रहित (ओघ ५६ भा; णाया १, ३)। २ न. शङ्का का अभाव (उत्त २८)।

णिस्संग वि [निःसङ्ग] सङ्ग-रहित (सुपा १४०)।

णिस्संचार वि [निःसंचार] संचार-रहित, गमनागमन-वर्जित (णाया १, ८)।

णिस्संजम वि [निस्संयम] संयम-रहित (पउम २७, ५)।

णिस्संत वि [निःशान्त] प्रशान्त, अतिशय शान्त (राय)।

णिस्संद देखो **णीसंद** (पण्ह १, १; नाट—मालती ५१)।

णिस्संदेह वि [निस्संदेह] संदेह-रहित, निश्चय, निःसंशय (काल)।

णिस्संधि वि [निस्सन्धि] सन्धि-रहित, साँधा से रहित (पण्ह १, १)।

णिस्संस वि [नृशंस] क्रूर, निर्दय (महा)।

णिस्संस वि [निःशंस] श्लाघा-रहित (पण्ह १, १)।

णिस्संसय वि [निःसंशय] १ संशय-रहित। २ क्रिवि. निःसंदेह, निश्चय (अभि १८४; आवम)।

णिस्सक्क सक [नि + ष्वष्क्] कम करना, घटाना। संकृ. **निस्सक्किय** (आचा २, १, ७, २)।

णिस्सण पुं [निःस्वन] शब्द, आवाज (कुप्र २७)।

णिस्सण्ण वि [निःसंज्ञ] संज्ञा-रहित (सूअ १, ५, १)।

णिस्सत्त वि [निःसत्त्व] धैर्य-रहित, सत्त्व-हीन (सुपा ३५६)।

णिस्सन्न देखो **णिसण्ण** (रयण ५)।

णिस्सम्म अक [निर् + श्रम्] बैठना। वकृ. **णिस्सम्मंत** (से ६, ३८)।

णिस्सय पुं [निश्रय] देखो **णिस्सा** (संबोध १६)।

णिस्सर अक [निर् + सृ] बाहर निकलना। णिस्सरइ (कप्प)। वकृ. **णिस्सरंत** (नाट—चैत ३८)।

णिस्सरण वि [निःसरण] निर्गमन, बाहर निकलना (ठा ४, २)।

णिस्सरण वि [निःशरण] शरण-रहित, त्राण-वर्जित (पउम ७३, ३२)।

णिस्सरिअ वि [दे] त्रस्त, खिसका हुआ (दे ४, ४०)।

णिस्सल्ल वि [निःशल्य] शल्य-रहित (उप ३२० टी; द्र ५७)।

णिस्सस अक [निर् + श्वस्] निःश्वास लेना। निस्ससइ, णिस्ससंति (भग)। वकृ. **णिस्ससिज्जमाण** (ठा १०)।

णिस्सह वि [निःसह] मन्द, अशक्त (हे १, १३; ९३; कुमा)।

णिस्सा स्त्री [निश्रा] १ आलम्बन, आश्रय, सहारा (ठा ५, ३)। २ अधीनता (उप १३० टी)। ३ पक्षपात (वव ३)।

णिस्साण न [निश्राण] निश्रा, अवलम्बन (पण्ह १, ३)। °**पय** न [°पद] अपवाद (बृह १)।

णिस्साण पुंन [दे] वाद्य-विशेष, निशान; 'वज्जिरनिस्साणतूररवगज्जो' (धर्मवि ५६)।

णिस्सार सक [निर् + सारय्] बाहर निकालना। निस्सारइ (कुप्र १५४)।

णिस्सार, णिस्सारग वि [निःसार] १ सार-हीन, निरर्थक (अणु; सूत्र १, ७; आचा)। २ जीर्ण, पुराना (आचा)।

णिस्सारय वि [निःसारक] निकालनेवाला (उप २८० टी)।

णिस्सारिय वि [निःसारित] १ निकाला हुआ। २ च्यावित, भ्रष्ट किया हुआ (सूत्र १, १४)।

णिस्सास पुं [निःश्वास] निःश्वास, नीचा श्वास (भग)। २ काल-मान-विशेष (इक)। ३ प्राण-वायु, प्रश्वास (प्राप्र)।

णिस्साहार वि [निःस्वाधार] निराधार, आलम्बन-रहित (सण)।

णिस्सिंग वि [निःशृङ्ग] शृंग-रहित (सुपा ३१३)।

णिस्सिंघिय न [निःशिङ्घित] अव्यक्त शब्द-विशेष (विसे ५०१)।

णिस्सिंच अक [निर् + सिच्] प्रक्षेप करना, डालना, फेंकना। वकृ. **णिस्सिंचमाण** (राज)। संकृ. णिस्सिंचिया (दस ५, १)।

णिस्सिणेह वि [निःस्नेह] स्नेह-रहित (पि १४०)।

णिस्सिय वि [निश्रित] १ आश्रित, अवलम्बित (ठा १०; भास ३८)। २ आसक्त, अनुरक्त, तल्लीन (सूत्र १, १, १; ठा ५, २)। ३ न. राग, आसक्ति (ठा ५, २)।

णिस्सिय वि [निश्रित] १ निश्चय से बद्ध (सूत्र २, ६, २३)। २ पक्षपाती, रागी (वव १)।

णिस्सिय वि [निःसृत] निर्गत, निर्यात (भास ३८)।

णिस्सील वि [निःशील] सदाचार-रहित, दुःशील (पउम २, ८८; ठा ३, २)।

णिस्सूग वि [निःशूक] निर्दय, निष्करुण (श्रा १२)।

णिस्सेज्जा देखो **णिसेज्जा** (पव १२७)।

णिस्सेणि स्त्री [निःश्रेणि] सीढ़ी (पण्ह १, १; पाअ)।

णिस्सेयस न [निःश्रेयस] १ कल्याण, मंगल, क्षेम (ठा ४, ४; णाया १, ८)। २ मुक्ति, मोक्ष, निर्वाण (औप; णंदि)। ३ अभ्युदय, उन्नति (उत्त ८)।

णिस्सेयसिय वि [नैःश्रेयसिक] मुमुक्षु, मोक्षार्थी (भग १५)।

णिस्सेस वि [निःशेष] सर्व, सब, सकल (उप २००)।

णिह वि [निभ] १ समान, तुल्य, सदृश (से १, ५८; गा ११४; दे १, ५१)। २ न. बहाना, व्याज, छल (पाअ)।

णिह वि [निह] १ मायावी, कपटी (सूत्र १, ६)। २ पीड़ित (सूत्र १, २, १)। ३ न. आघात-स्थान (सूत्र १, ५, २)।

णिह त्रि [स्निह] रागी, राग-युक्त (आचा)।

णिहंतव्व देखो **णिहण** = नि + हन्।

णिहंस पुं [निघर्ष] घर्षण (गउड)।

णिहंसण न [निघर्षण] घर्षण, रगड़ (से ५, ४६; गउड)।

णिहट्टु अ. १ जुदा कर, पृथक् करके (आचा)। २ स्थापन कर (णाया १, १६)।

णिहट्ठ वि [निघृष्ट] घिसा हुआ (हे २, १७४)।

णिहण सक [नि + हन्] १ निहत करना, मारना। २ फेंकना। णिहणामि (कुप्र २६२)। णिहणाहि (कप्प)। भूका— णिहणिंसु (आचा)। वकृ. **निहणंत** (सण)। संकृ. **णिहणित्ता** (पि ५८२)। कृ. **णिहंतव्व** (पउम ६, १७)।

णिहण सक [नि + खन्] गाड़ना। 'निहणंति धरां धरणीयलम्मि' (वज्जा ११८)। हेकृ. 'चोरो दव्वं निहणि उम् आरद्धो' (महा)।

णिहण न [दे] कूल, तीर, किनारा (दे ४, २३)।

णिहण त [निधन] १ मरण, विनाश (पाअ; जी ४६)। २ पुं. रावण का एक सुभट (पउम ५६, ३२)।

णिहणण न [निहनन] निहति, मारना (महा; स १६३)।

णिहणिअ वि [निहत] मारा हुआ (सुपा १५८; सण)।

णिहत्त सक [निधत्तय्] कर्म को निबिड़ रूप से बाँधना। भूका. णिहत्तिंसु (भग)। भवि. णिहत्तेस्संति (भग)।

णिहत्त देखो **णिधत्त** (भग)।

णिहत्तण न [निधत्तन] कर्म का निबिड़ बन्धन (भग)।

णिहत्ति देखो **णिधत्ति** (राज)।

णिहम्म सक [नि + हम्म्] जाना, गमन करना। णिहम्मइ (हे ४, १६२)।

णिहय वि [निहत] मारा हुआ (गा ११८; सुर ३, ४६)।

णिहय वि [निखात] गाड़ा हुआ (स ७५६)।

णिहर अक [नि + हृ] पाखाना जाना (प्रामा)।

णिहर अक [आ + क्रन्द्] चिल्लाना। णिहरइ (षड्)।

णिहर अक [निर् + सृ] बाहर निकलना। णिहरइ (षड्)।

णिहरण देखो **णीहरण** (णाया १, २—पत्र ८६)।

णिहव देखो **णिहुव**। णिहवइ (नाट; पि ४१३)।

णिहव वि [दे] सुप्त, सोया हुआ (षड्)।

णिहव पुं [निवह] समूह (षड्)।

णिहस सक [नि + घृष्] घिसना। संकृ. णिहसिऊण (उव)।

णिहस पुं [निकष] १ कषपट्टक, कसौटी का पत्थर (पाअ)। २ कसौटी पर की जाती रेखा (हे १, १८६; २६०; प्राप्र)।

णिहस पुं [निघर्ष] घर्षण, रगड़ (से ६, ३३)।

णिहस पुं [दे] वल्मीक, सर्प आदि का बिल (दे ४, २५)।

णिहसण न [निघर्षण] घर्षण, रगड़ (से ६, १०; गा १२१; गउड; वज्जा ११८)।

णिहसिय वि [निघर्षित] घिसा हुआ (वज्जा १५०)।

णिहा स्त्री [निहा] माया, कपट (सूत्र १, ८)।

णिहा सक [नि + धा] स्थापना करना। निहेउ (स ७३८)। कवकृ. **णिहिप्पंत** (से ८, ६७)। संकृ. **णिहाय** (सूत्र १, ७)।

णिहा सक [नि + हा] त्याग करना। संकृ. णिहाय (सूत्र १, १३)।

णिहा, णिहाआ सक [दृश्] देखना। णिहाइ, णिहाआइ (षड्)।

णिहाण न [निधान] वह स्थान जहाँ पर धन आदि गाड़ा गया हो, खजाना, भण्डार (उवा; गा ३१८; गउड)।

णिहाय पुं [दे] १ स्वेद, पसीना (दे ४, ४९)। २ समूह, जत्था (दे ४, ४९; से ४, ३८; स ४४९; भवि; पाअ; गउड; सुर ३, २३१)।

णिहाय पुं [निघात] आघात, आस्फालन (से १५, ७०; महा)।

णिहाय देखो णिहा = नि + धा, नि + हा।

णिहाय पुं [निह्राद] अव्यक्त शब्द (सुख ४, ६)।

णिहार पुं [निहार] निर्गम (पराह १, ५; ठा ८)।

णिहारिम न [निर्हारिम] जिसके मृतक शरीर को बाहर निकालकर संस्कार किया जाय उसका मरण (भग)। २ वि. दूर जानेवाला, दूर तक फैलनेवाला (पराह २, ५)।

णिहाल देखो णिभाल। णिहालेहि (स १००)। वकृ. **णिहालंत, णिहालयंत** (उप ६४८ टी; ६८६ टी)। संकृ. **णिहालेउं** (गच्छ १)। कृ. **णिहालेयव्व** (उप १००७)।

णिहालण न [निभालन] निरीक्षण, अवलोकन (उप पृ ७२, सुर ११, १२; सुपा २३)।

णिहालिअ वि [निभालित] निरीक्षित (पाअ; स १००)।

णिहि वि [निधि] १ खजाना, भंडार (णाया १, १३)। २ धन आदि से भरा हुआ पात्र। (हे १, ३५; ३, १९; ठा ५, ३); 'अच्छेरंव णिहिं विअ सग्गे रज्जं व अमअपाणं व' (गा १२५)। ३ चक्रवर्त्ती राजा की संपत्ति-विशेष, नैसर्प आदि नव निधि (ठा ९)। °नाह पुं [°नाथ] कुबेर, धनेश (पाअ)।

णिहि पुंस्त्री [निधि] लगातार नव दिन का उपवास (संबोध ५८)।

णिहिअ वि [निहित] स्थापित (हे २, ९९; प्राप्र)।

णिहिण्ण वि [निर्भिन्न] विदारित (अच्चु १९)।

णिहित्त देखो णिहिअ (गा ५६५; काप्र ९०९; प्राप्र)।

णिहिप्पंत देखो णिहा = नि + धा।

णिहिल वि [निखिल] सब, सकल (अच्चु ६; आरा ५५)।

णिहिल्लय देखो णिहिअ (सुख २, ४३)।

णिही स्त्री [दे] वनस्पति-विशेष (राज)।

णिहीण वि [निहीन] न्यून (कुप्र ४५४)।

णिहीण वि [निहीन] तुच्छ, खराब, हलका, क्षुद्र, 'अत्थि निहीणे देहे किं रागनिबंधणं तुज्झ ?' (उप ७२८ टी)।

णिहु स्त्री [स्निहु] औषधि-विशेष (जीव १)।

णिहुअ वि [निभृत] १ गुप्त, प्रच्छन्न, छिपा हुआ (से १३, १५; महा)। २ विनीत, अनुद्धत (से ४, ५६)। ३ मन्द, धीमा (पाअ; महा)। ४ निश्चल, स्थिर (उत्त १६)। ५ असंभ्रान्त, संभ्रमरहित (दस ६)। ६ धृत, धारण किया हुआ। ७ निर्जन, एकान्त। ८ अस्त होने के लिए उपस्थित (हे १, १३१)। ९ उपशान्त (पराह २, ५)।

णिहुअ वि [दे] १ व्यापार-रहित, अनुद्युक्त, निश्चेष्ट (दे ४, ५०; से ४, १; सूअ १, ८; बृह ३)। २ तूष्णीक, मौन (दे ४, ५०; सुर ११, ८४)। ३ न. सुरत, मैथुन (दे ४, ५०; षड्)।

णिहुअण देखो णिहुवण (गा ४८३)।

णिहुआ स्त्री [दे] कामिता, संभोग के लिए प्रार्थित स्त्री (दे ४, २६)।

णिहुण न [दे] व्यापार; धन्धा (दे ४. २६)।

णिहुत्त वि [दे] निमग्न, डूबा हुआ (पउम १०२, १६७)।

णिहुत्थिभगा स्त्री [दे] वनस्पति-विशेष (पराण १—पत्र ३५)।

णिहुव सक [कामय्] संभोग का अभिलाष करना। णिहुवइ (हे ४, ४४)।

णिहुवण न [निधुवन] सुरत, संभोग (कप्पू; काप्र १६४); 'णिहुवणचुंबिअणाहिकुविआ' (मै ४२)।

णिहूअ न [दे] १ सुरत, मैथुन (दे ४, २६)। २ वि. अकिञ्चित्कर (विसे २६१७)। देखो णीहूय।

णिहेलण न [दे] १ गृह, घर, मकान (दे ४, ५१; हे २, १७४; कुमा, उप ७२८ टी; स १८०; पाअ; भवि)। २ जघन, स्त्री के कमर के नीचे का भाग (दे ४, ५१)।

णिहो अ [न्यग्] नीचे (सूअ १, ५, १, ५)।

णिहोड सक [नि + वारय्] निवारण करना, निषेध करना। णिहोडइ (हे ४, २२)। वकृ. **णिहोडंत** (कुमा)।

णिहोड सक [पातय्] १ गिराना। २ नाश करना। णिहोडइ (हे ४, २२)।

णिहोडिय वि [पातित] १ गिराया हुआ (दंस ३)। २ विनाशित (उव ५९७ टी)।

णी सक [गम्] जाना, गमन करना। णीइ (हे ४, १६२; गा ४९ अ) भवि. णीहसि (गा ७४९)। वकृ. **णिंत, णेंत** (से ३, २; गउड; गा ३३४; उप २६४ टी; गा ४२०)। संकृ. **णिंतूण, नीउं** (गउड; विसे २२२)।

णी सक [नी] १ ले जाना। २ जानना। ३ ज्ञान कराना, बतलाना। णेइ, णयइ (हे ४, ३३७; विसे ९१४)। वकृ. **णेंत** (गा ५०; कुमा)। कवकृ. **णिज्जंत, णीअमाण** (गा ६८२ अ; से ६, ८१; सुपा ४७६)। संकृ. **णइअ, णेउं, णेउआण, णेऊण** (नाट—मृच्छ २९४; कुमा; षड्; गा १७२)। हेकृ. **णेउं** (गा ४६७, कुमा)। कृ. **णेअ, णेअव्व** (पउम ११६, १७; गा ३३९)। प्रयो. णेयावइ (सण)।

णीअअ वि [दे] समीचीन, सुन्दर (पिंग)।

णीआरण न [दे] बलि-घटी, बली रखने का छोटा कलश (दे ४, ४३)।

णीइ स्त्री [नीति] १ न्याय, उचित व्यवहार, न्याय्य व्यवहार (उप १८६; महा)। २ नय, वस्तु के एक धर्म को मुख्यतया माननेवाला मत (ठा ७)। °सत्थ न [°शास्त्र] नीति-प्रतिपादक शास्त्र (सुर ६, ९५; सुपा ३४०; महा)।

णीका स्त्री [नीका] कुल्या, नहर, सारणि (कुमा)।

णीखय वि [निःक्षत] निखिल, संपूर्ण; 'नय नीखयवक्खाणं तीरइ काऊण सुत्तस्स' (विचार ८)।

णीचअ न [नीचैस्] १ नीचे, अधः (हे १, १५४)। २ वि. नीचा, अधः-स्थित (कुमा)।

णीछूढ देखो णिच्छूढ (णंदि)।

णीजूह देखो णिज्जूह = दे. निर्यूह (राज)।

णीड देखो णिड्ड (गा १०२; हे १, १०६)।

णीण सक [गम्] जाना, गमन करना। णीणइ (हे ४, १६२)। णीणंति (कुमा)।

णीण सक [नी] १ ले जाना। २ बाहर ले जाना, बाहर निकालना; 'सारभंडाणि णीणेइ, असारं अवउज्झइ' (उत्त १६, २२)। भवि. नीणेहिइ (महा)। वकृ. णीणेमाण। कवकृ. नीणिज्जंत. णीणिज्जमाण (पि ६२; आचा)। संकृ. णीणेऊण. णीणेत्ता (महा; उवा)।

णीणाविय वि [नायित] दूसरे द्वारा ले जाया गया, अन्य द्वारा आनीत (उप १३६ टी)।

णीणिअ वि [गत] गया हुआ (पाअ)।

णीणिअ वि [नीत] १ ले जाया गया (उप ५६७ टी; सुपा २६१)। २ बाहर निकाला हुआ (णाया १, ४); 'उयरप्पविट्ठछुरिआए नीणिओ अंतपब्भारो' (सुपा ३८१))

णीणिआ स्त्री [नीनिका] चतुरिन्द्रिय जन्तु की एक जाति (जीव १)।

णीम पुं [नीप] १ वृक्ष-विशेष, कदंब का पेड़। २ न. फल-विशेष (दस ५, २, २१)।

णीम पुं [नीप] वृक्ष-विशेष, कदम्ब का पेड़ (पराग १; औप; हे १, २३४)।

णीमम वि [निर्मम] ममत्व-रहित (अज्झ १०६)।

णीमी देखो णीवी (कुमा; षड्)।

णीय वि [नीच] १ नीच, अधम, जघन्य (उवा; सुपा १०७)। २ वि. अधस्तन (सुपा ६००)। °गोय न [°गोत्र] १ क्षुद्र गोत्र। २ कर्म-विशेष, जो क्षुद्र जाति में जन्म होने का कारण है (ठा २, ४; आचा)। ३ वि. नीच गोत्र में उत्पन्न (सूअ २, १)।

णीय वि [नीत] ले जाया गया (आचा; उवा; सुपा ६)।

णीय देखो णिच्च = नित्य (उव)।

णीयंगम वि [नीचंगम] नीचे जानेवाला (पुप्फ ४४३)।

णीयंगमा स्त्री [नीचंगमा] नदी, तरंगिणी (भत्त ११६)।

णीर न [नीर] जल, पानी (कुमा; प्रासू ६७)। °निहि पुं [°निधि] समुद्र, सागर (सुपा २०१)। °रुह न [°रुह] कमल (ती ३)। °वाह पुं [°वाह] मेघ, अभ्र (उप पृ ६२)। °हर पुं [°गृह] समुद्र, सागर (उप पृ ११६)। °हि पुं [°धि] समुद्र (उप ६८६ टी)। °ाकर पुं [°ाकर] समुद्र (उप ५३० टी)।

णीरंगी स्त्री [दे. नीरङ्गी] सिर का अवगुण्ठन, शिरोवस्त्र, घूँघट (दे ४, ३१, पाअ)।

णीरंज सक [भञ्ज्] तोड़ना, भाँगना। णीरंजइ (हे ४, १०६)।

णीरंजिअ वि [भग्न] तोड़ा हुआ, छिन्न (कुमा)।

णीरंध वि [नीरन्ध्र] निश्छिद्र (कप्पू)।

णीरण न [दे] घास, चारा; 'विमलो पंजलमग्गं नीरिधणनीरणाइसंजुत्तं' (सुपा ५०१)।

णीरय वि [नीरजस्] १ रजो-रहित, निर्मल, शुद्ध; 'सिद्धिं गच्छइ णीरओ' (गुरु १६; पराग ३६; सम १३७; पउम १०३, १३४; सार्ध ११२)। २ पुं. ब्रह्म-देवलोक का एक प्रस्तट (ठा ६)।

णीरव सक [आ + क्षिप्] आक्षेप करना। णीरवइ (हे ४, १४५)।

णीरव सक [बुभुक्ष्] खाने को चाहना। णीरवइ (हे ४, ५)। भूका. णीरवीअ (कुमा)।

णीरव वि [आक्षेपक] आक्षेप करनेवाला (कुमा)।

णीरस वि [नीरस] रस-रहित, शुष्क (गउड; महा)।

णीरसजल न [नीरसजल] आयंबिल तप (संबोध ५८)।

णीराग } वि [नीराग] राग-रहित, वीतराग
णीराय } (गउड; कुप्र १२५; कुमा)।

णीरेणु वि [नीरेणु] रजो-रहित, धूल-रहित (गउड)।

णीरोग वि [नीरोग] रोग-रहित, तंदुरुस्त (जीव ३)।

णील अक [निर् + सृ] बाहर निकलना। णीलइ (हे ४, ७६)।

णील पुं [नील] १ हरा वर्ण, नीला रंग (ठा १)। २ ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष (ठा २, ३)। ३ रामचन्द्र का एक सुभट, वानर-विशेष (से ४, ५)। ४ छन्द-विशेष (पिंग)। ५ पर्वत-विशेष (ठा २, ३)। ६ न. रत्न की एक जाति, नीलम (णाया १, १)। ७ वि. हरा वर्णवाला (पराग १, राय)। °कंठ पुं [°कण्ठ] १ शक्रेन्द्र का एक सेनापति, शक्रेन्द्र के महिष-सैन्य का अधिपति देव-विशेष (ठा ५, १; इक)। २ मयूर, मोर (पाअ; कुप्र २४७)। ३ महादेव, शिव (कुप्र २४७)। °कणवीर पुं [°करवीर] हरे रंग के फूलोंवाला कनेर का पेड़ (राय)। °गुफा स्त्री [°गुफा] उद्यान-विशेष (आवम)। °मणि पुंस्त्री [°मणि] रत्न-विशेष, नीलम, मरकत (कुमा)। °लेस वि [°लेश्य] नील लेश्यावाला (पराग १७)। °लेसा स्त्री [°लेश्या] अशुभ अध्यवसाय-विशेष (सम ११; ठा १)। °लेस्स देखो °लेस (पराग १७)। °लेस्सा देखो °लेसा (राज)। °वंत पुं [°वत्] १ पर्वत-विशेष (ठा २, ३; सम १२)। २ द्रह-विशेष (ठा ५, २)। ३ न. शिखर-विशेष (ठा २, ३)।

णील वि [नील] कच्चा, आर्द्र (आचा २, ४, २, ३)। °केसी स्त्री [°केशी] तरुणी, युवति (वव ४)।

णीलकंठी स्त्री [दे] वृक्ष-विशेष, बाण-वृक्ष (दे ४, ४२)।

णीला स्त्री [नीला] १ लेश्या-विशेष, एक तरह का आत्मा का अशुभ परिणाम (कम्म ४, १३; भग)। २ नीलवर्णवाली स्त्री (षड्)।

णीलिअ वि [निःसृत] निर्गत, निर्यात (कुमा)।

णीलिअ वि [नीलित] नील वर्ण का (उप पृ ३२)।

णीलिआ देखो णीला (भग)।

णीलिम पुंस्त्री [नीलिमन्] नीलत्व, नीलापन, हरापन (सुपा १३७)।

णीली स्त्री [नीली] १ वनस्पति-विशेष, नील (पराग १; उर ६,५)। २ नील वर्णवाली स्त्री (षड्) ३ आँख का रोग (कुप्र २१३)।

णीलुंछ सक [कृ] १ निष्पतन करना। २ आच्छोटन करना। णीलुंछइ (हे ४, ७१; षड्)। वकृ. णीलुंछंत (कुमा)।

णीलुक्क सक [गम्] जाना, गमन करना। णीलुक्कइ (हे ४, १६२)।

णीलुप्पल न [नीलोत्पल] नील रंग का कमल (हे १, ८४; कुमा)।

णीलुय पुं [दे] अश्व की एक उत्तम जाति (सम्मत्त २१६)।

णीलोभास पुं [नीलावभास] १ ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष (ठा २; ३)। २ वि. नील-च्छाय, जो नीला मालूम देता हो (णाया १, १)।

णीव पुं [नीप] वृक्ष-विशेष, कदम्ब का पेड़ (हे १, २३४; कप्प णाया १, ६)।

णीवार पुं [नीवार] वृक्ष-विशेष, तिन्नी का पेड़ (गउड)।

णीवार पुं [नीवार] व्रीहि-विशेष (सूत्र १, ३, २, १६)।

णीवी स्त्री [नीवी] मूल-धन, पूँजी। २ नारा, इजारबन्द (षड्; कुमा)।

णीसंक देखो **णिस्संक** = निःशंक (गा ३४५; कुमा)।

णीसंक पुं [दे] वृषभ, बैल (षड्)।

णीसंकिअ देखो **णिस्संकिअ** (विसे ५६२; सुर ७, १५५)।

णीसंख वि [निःसंख्य] संख्या-रहित, असंख्य (सुपा ३५५)।

णीसंचार देखो **णिस्संचार** (पउम ३२, १)।

णीसंद पुं [निःष्यन्द] रस-स्रुति, रस का झरन (गउड)।

णीसंदिअ वि [निःष्यन्दित] झरा हुआ, टपका हुआ (पाअ)।

णीसंदिर वि [निःष्यन्दितृ] झरनेवाला, टपकनेवाला (सुपा ५६)।

णीसंपाय वि [दे] जहाँ जनपद परिश्रान्त हुआ हो वह (दे ४, ४२)।

णीसट्ठ वि [निःसृष्ट] १ विमुक्त (पराह १, १ – पत्र १८)। २ प्रदत्त (बृह २)। ३ क्रिवि. अतिशय, अत्यन्त; 'णीसट्ठमचेयणो ण वा झरइ' (उव)।

णीसण पुं [निःस्वन] आवाज, शब्द, ध्वनि (सुर १३, १८२; कुप्र ५६)।

णीसणिआ } स्त्री [दे] निःश्रेणि, सीढ़ी (दे
णीसणी } ४, ४३)।

णीसत्त वि [निःसत्त्व] सत्त्व-हीन, बल-रहित (पउम २१, ७५; कुमा)।

णीसद्द वि [निःशब्द] शब्द-रहित (दे ७, २८; भवि)।

णीसर अक [रम्] क्रीड़ा करना, रमण करना। णीसरइ (हे ४, १६८) कृ. णीसरणिज्ज (कुमा)।

णीसर अक [निर् + सृ] बाहर निकलना। णीसरइ (हे ४, ७९)। वकृ. णीसरंत (ओघ ४५८ टी)।

णीसरण न [निःसरण] फिसलन, रपटन (वव ४)।

णीसरण न [निःसरण] निर्गमन (से ६, १८)।

णीसरिअ वि [निःसृत] निर्गत, निर्यात (सुपा २४७)।

णीसल वि [निःशल] १ निश्चल, स्थिर। २ वक्रता-रहित, उत्तान, सपाट; 'णीसलतड्डिय-चंदायएहिं मंडियचउक्कियादेसं' (सुर ३,७२)।

णीसल्ल वि [निःशल्य] शल्य-रहित (भवि)।

णीसव सक [नि + श्रावय्] निर्जरा करना, क्षय करना। वकृ. **णीसवमाण** (विसे २७४६)।

णीसवग देखो **णीसवय** (आवम)।

णीसवत्त वि [निःसपत्न] शत्रु-रहित, विपक्ष-रहित (मुच्छ ८; पि २७६)।

णीसवय वि [निःश्रावक] निर्जरा करनेवाला (विसे २७४६)।

णीसस अक [निर् + श्वस्] नीसास लेना, श्वास को नीचा करना। णीससइ (षड्)। वकृ. णीससंत, **णीससमाण** (गा ३३; कुप्र ४३; आचा २, २, ३)। संकृ. णीससिअ, णीससिऊण (नाट; महा)।

णीससण न [निःश्वसन] निःश्वास (कुमा)।

णीससिअ न [निःश्वसित] निःश्वास (से १, ३८)।

णीसह वि [निःसह] मन्द, अशक्त (हे १, १३; कुमा)।

णीसह वि [निःशाख] शाखा-रहित (पा २३०)।

णीसा स्त्री [दे] पीसने का पत्थर (दस ५, १)।

णीसा देखो **णिस्सा** (कप्प)।

णीसाइ वि [निःस्वादिन्] स्वाद-रहित (प्रवि १०)।

णीसाण देखो **णिस्साण** = (दे) धर्मवि ८०)।

णीसामण्ण } वि [निःसामान्य] १ असा-
णीसामन्न } धारण (गउड; सुपा ६१; हे २, २१२)। २ गुरु (पाअ)।

णीसार सक [निर् + सारय्] बाहर निकालना। णीसारइ (भवि)। कर्म. नीसारिज्जइ (कुप्र १४०)।

णीसार पुं [दे] मण्डप (दे ४, ४१)।

णीसार वि [निःसार] सार-रहित, फल्गु (से ३, ४८)।

णीसारण न [निःसारण] निष्कासन, बाहर निकालना (सुर १५, २०३)।

णीसारय वि [निःसारक] बाहर निकालने वाला (से ३, ४८)।

णीसारिय वि [निःसारित] निष्कासित (सुर ५, १८८)।

णीसास देखो **णिस्सास** (हे १, ६३; कुमा; प्राप्र)।

णीसास } वि [निःश्वास, °क] निःश्वास
णीसासय } लेनेवाला (विसे २७१५; २७१४)।

णीसाहार देखो **णिस्साहार**; "नीसाहारा य पडइ भूमीए' (सुर ७, २३)।

णीसित्त वि [निष्षिक्त] अत्यन्त सिक्त (षड्)।

णीसीमिअ वि [दे] निर्वासित, देश-बाहर किया हुआ (दे ४, ४२)।

णीसेयस देखो **णिस्सेयस** (जीव ३)।

णीसेणि स्त्री [निःश्रेणि] सीढ़ी (सुर १३, १५७)।

णीसेस देखो **णिस्सेस** (गउड, उव)।

णीहट्टु अ निकाल कर (आचा २, ६, २)।

णीहट्टु अ [नि + सृत्य] बाहर निकल कर (आचा २, १, १०, ४)।

णीहड वि [निर्हृत] १ निर्गत, निर्यात (आचा २; १, १)। २ बाहर निकाला हुआ (बृह १; कस)।

णीहडिया स्त्री [निर्हृतिका] अन्य स्थान में ले जाया जाता द्रव्य (बृह २, सू० १८)। गु० भाणु।

णीहम्म अक [निर् + हम्म्] निकलना। णीहम्मइ (हे ४, १६२)।

णीहम्मिअ वि [निर्हम्मित] निर्गत, निस्सृत (दे ४, ४३)।

णीहर अक [निर् + सृ] १ बाहर निकलना। णीहरइ (हे ४, ७६)। वकृ. नीहरंत (सुपा ४८२)। संकृ. णीहरिअ (निचू ६)। कृ. णीहरियव्व (सुपा ५६०)।

णीहर अक [आ + क्रन्द्] आक्रन्द करना, चिल्लाना। णीहरइ (हे ४, १३१)।

णीहर अक [निर् + ह्रद्] प्रतिध्वनि करना। वकृ. णीहरंत, णीहरिअंत (से ५, ११, २, ३१)।

णीहर सक [निर् + सारय्] बाहर निकालना। हेकृ. णीहरित्तए (भग ५, ४)। कृ. णीहरियव्व (सुपा ४८२)।

णीहर अक [निर् + हृ] पाखाना जाना, पुरीषोत्सर्ग करना। नीहरइ (हे ४, २५६)।

णीहरण न [निस्सरण, निर्हरण] १ निर्गमन, निर्गम, बाहर निकालना (विपा १, ३; णाया १, १४)। २ परित्याग (निचू १)। ३ अपनयन (सूअ २, २)।

णीहरिअ देखो णीहर = निर् + सृ।

णीहरिअ वि [निःसृत] निर्गत, निर्यात (सुर १, १५५, ३, ७५; पाअ)।

णीहरिअ वि [निर्ह्रदित] प्रतिध्वनित (से ११, १२२)।

णीहरिअ न [दे] शब्द, आवाज, ध्वनि (दे ४, ४२)।

णीहरिअंत देखो णीहर = निर् + ह्रद्।

णीहार पुं [नीहार] १ हिम, तुषार (अच्चु ७२; स्वप्न ५२, कुमा)। २ विष्ठा या मूत्र का उत्सर्ग (सम ६०)।

णीहारण न [निस्सारण] निष्कासन (ठा २, ४)।

णीहारि वि [निर्हारिन्] १ निकलनेवाला। २ फैलनेवाला, 'जोयणणीहारिणा सरेण' (आवम; सम ६०)।

णीहारि वि [निर्ह्रादिन्] घोष करनेवाला, गूंजनेवाला (ठा १०; पि ४०५)।

णीहारिम देखो णिहारिम (ठा २, ४; औप; णाया १, १)।

णीहास वि [निर्हास] हास-रहित (उत्त २२, २८)।

णीहूय वि [दे] अकिञ्चित्कर, कुछ भी नहीं कर सकनेवाला; 'पवयणणीहूयाणं' (आवनि ७८७)। देखो णिहुअ।

णु अ [नु] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ व्यंग्य ध्वनि। २ वक्रोक्ति (स ३४६)। ३ वितर्क (सण)। ४ प्रश्न। ५ विकल्प। ६ अनुनय। ७ हेतु, प्रयोजन। ८ अपमान। ९ अनुताप, अनुशय। १० अपदेश, बहाना (गउड; हे २, २१७; २१८)।

णु अ [नु]। १ निन्दासूचक अव्यय (दस २, १)। २ विशेष (सिरि ६५१)।

°**णुअ** वि [ज्ञक] जानकार (गा ४०५)।

णुक्कार पुं [नुक्कार] 'नुक्' ऐसी आवाज (राय)।

णुज्जिय वि [दे] बन्द किया हुआ, मुद्रित; 'कड्डिया णेण छुरिया, णुज्जियं से वयणं, छिन्ना य हत्था' (स ५८६)।

णुत्त वि [नुत्त] १ प्रेरित। २ क्षिप्त, फेंका हुआ (से ३, १५)।

णुम सक [नि + अस्] स्थापन करना। णुमइ (हे ४, १९९)।

णुम सक [छादय्] ढकना, आच्छादन करना। णुमइ (हे ४, २१)।

णुमज्ज अक [नि + सद्] बैठना। णुमज्जइ (षड्)।

णुमज्ज अक [नि + मस्ज्] डूबना। णुमज्जइ (हे १, ९४)।

णुमज्ज अक [शी] सोना, सूतना। णुमज्जइ (प्राकृ ७४)।

णुमज्जण न [निमज्जन] डूबना (राज)।

णुमण्ण वि [निषण्ण] बैठा हुआ, उपविष्ट (षड्; हे १, १७४)।

णुमण्ण } वि [निमग्न] डूबा हुआ, लीन
णुमन्न } (हे १, ९४; १७४)।

णुमिअ वि [न्यस्त] स्थापित (कुमा)।

णुमिअ वि [छादित] ढका हुआ (कुमा)।

णुल्ल देखो णोल्ल। णुल्लइ (पि २४४)।

णुवण्ण वि [दे] सुप्त, सोया हुआ (दे ४, २५)।

णुवण्ण वि [निषण्ण] बैठा हुआ, उपविष्ट (गउड; णाया १, ५; स २४२); 'पासम्मि नुवण्णा' (उप ६४८ टी)।

णुव्व सक [प्र = काशय्] प्रकाशित करना। णुव्वइ (हे ४, ४५)। वकृ. णुव्वंत (कुमा)।

णुसा स्त्री [स्नुषा] पुत्र-वधू, पुत्र की भार्या (प्रयौ १०५)।

णूउर देखो णिउर = नूपुर (षड; हे १, १२३)।

णूण वि [न्यून] कम, ऊन (उप पृ ११९)।

णूण } अ [नूनम्] इन अर्थों का सूचक
णूणं } अव्यय—१ निश्चय, अवधारण। २ तर्क, विचार। ३ हेतु, प्रयोजन। ४ उपमान। ५ प्रश्न (हे १, २९; प्राप्र; कुमा; भग; प्रासू १२; बृह १; श्रा १२)।

णूतण वि [नूतन] नया, नवीन (मन ३०)।

णूपुर देखो णूउर (चारु ११)।

णूम सक [छादय्] १ ढकना, छिपाना। णूमइ (हे ४, २१)। णूमंति (णाया १, १६)। वकृ. णूमंत (गा ८५६)।

णूम न [दे] १ प्रच्छादन, छिपाना। २ असत्य, झूठ (पण्ह १, २)। ३ माया, कपट (सम ७१)। ४ प्रच्छन्न स्थान, गुफा वगैरह (सूअ १, ३, ३; भग १२, ५)। ५ अन्धकार, गाढ़ अन्धकार (राज)।

णूम न [दे] कर्म (सूअ १, ३, ३, २)। °गिह न [°गृह] भूमि-गृह (आचा २, ३, ३, १)।

णूमिअ वि [छादित] ढका हुआ, छिपाया हुआ, (से १, ३२; पाअ; कुमा)।

णूमिअ वि [दे] पोला किया हुआ (उप पृ ३९३)।

णूला स्त्री [दे] शाखा, डाल (दे ४, ४३)।

णे अ. पाद-पूर्ति में प्रयुक्त होता अव्यय (राज)।

णेअ देखो णा = ज्ञा।

णेअ देखो णी = नी।

णेअ वि [नैक] अनेक, बहुत (पउम ९४, ५१)। °विह वि [°विध] अनेक प्रकार का (पउम ११३, ५२)।

णेअ अ [नैव] नहीं ही, कदापि नहीं, कभी नहीं (से ४, ३०; गा १३९; गउड; सुर २, १८६; सण)।

णेअव्व देखो णी = नी।

णेआइअ } वि [नैयायिक, न्याय्य] न्याय
णेआउअ } से अबाधित, न्यायानुगत, न्यायोचित; 'णेआइअस्स मग्गस्स दुट्ठे अवयरई बहुं' (सम ५१; औप; पण्ह २, १)।

णेआउय } वि [नेतृ] १ ले जानेवाला
णेउ } (सूअ १, ८, ११)। २ प्रणेता, रचयिता (सूअ १, ६; ७)।

णेआवण न [नायन] अन्य-द्वारा नयन, पहुँचाना (उप ७४६)।

णेआविअ वि [नायित] अन्य द्वारा ले जाया गया, पहुँचाया हुआ (स ४२; कुप्र २०७)।

णेउ वि [नेतृ] नेता, नायक (पउम १४, ६२; सूअ १, ३, १)।

णेउआण } देखो णी = नी।
णेउं }

णेउड्ढ पुं [दे] सद्भाव, शिष्टता (दे ४, ४४)।

णेउण न [नैपुण] निपुणता, चतुराई (अभि १३२)।

णेउणिअ वि [नैपुणिक] १ निपुण, चतुर (ठा ६)। २ न. अनुप्रवाद-नामक पूर्व-ग्रन्थ की एक वस्तु (विसे २३६०)।

णेउणिअ देखो णेउण्ण (दस ६, २, १३)।

णेउण्ण } न [नैपुण्य] निपुणता, चतुराई
णेउन्न } (दस ६, २; सुपा २६३)।

णेउर न [नूपुर] स्त्री के पाँव का एक आभूषण, पायल (हे १, १२३; गा १८८)।

णेउरिल्ल वि [नूपुरवत्] नूपुरवाला (पि १२६; गउड)।

णेऊण } देखो णी = नी।
णेंत }

णेंत देखो णी = गम्।

णेकंत देखो णिकंत (गा ११)।

णेग देखो णेअ = नैक (कुमा; पण्ह १, ३)।

णेगम पुं [नैगम] १ वस्तु के एक अंश को स्वीकारनेवाला पक्ष-विशेष, नय-विशेष (ठा ७)। २ वणिक्, व्यापारी; 'जिणधम्मभाविएणं, न केवलं धम्मओ धणाओवि। नेगमअडहियसहसो, जेण कओ अप्पणो सरिसो' (श्रा २७)। ३ न. व्यापार का स्थान (आचा २, १, २)।

णेगुण्ण न [नैर्गुण्य] निर्गुणता, निःसारता (भत्त १६३)।

णेचइय पुं [नैचयिक] धान्य आदि का थोकबन्द व्यापारी (वव ४)।

णेच्छइअ वि [नैश्चयिक] निश्चयनय-सम्मत, निरुपचरित, शुद्ध (विसे २८२)।

णेच्छंत वि [नेच्छत्] नहीं चाहता हुआ (हेका ३०६)।

णेच्छिय वि [नैच्छित] इच्छा का अविषय, अनभिलषित (जीव ३)।

णेट्ठिअ वि [नैष्ठिक] पर्यन्त-वर्त्ती (पण्ह २, ३)।

णेड देखो णिड्ड (कुमा; हे १, १०६)।

णेडाली स्त्री [दे] सिर का भूषण-विशेष (दे ४, ४३)।

णेड्ड देखो णिड्ड (हे २, ६६; प्राप्र; षड्)।

णेड्ढरिआ स्त्री [दे] भाद्रपद मास की शुक्ल दशमी का एक उत्सव (दे ४, ४५)।

णेत्त पुंन [नेत्र] नयन, आँख, चक्षु (हे १, ३३; आचा)।

णेत्त पुं [नेत्र] वृक्ष-विशेष (सूअ २,२,१८)।

णेद्दा देखो णिद्दा (पि १६२; नाट)।

णेपाल देखो णेवाल (उप पृ ३६७)।

णेम स [नेम] १ अर्ध, आधा (प्रामा)। २ न. मूल, जड़ (पण्ह १, ३; भग)।

णेम न [दे] कार्य, काज (राज)।

णेम पुंन [दे] कार्य, काम, काज (पिंड ७०)।

णेम देखो णेम्म = दे (पण्ह २, ४ टी—पत्र १३३)।

णेमाल पुं. ब. [नेपाल] एक भारतीय देश, नेपाल (पउम ६८, ६४)।

णेमि पुं [नेमि] १ स्वनाम-ख्यात एक जिनदेव, बाइसवें तीर्थंकर (सम ४३; कप्प)। २ चक्र की धारा (ठा ३, ३; सम ४३)। ३ चक्र परिधि, चक्के का घेरा (जीव ३)। ४ आचार्य हेमचन्द्र के मातुल—मामा का नाम (कुप्र २०)। °चंद पुं [°चन्द्र] एक जैनाचार्य (सार्ध ६२)।

णेमित्त देखो णिमित्त (आवम)।

णेमित्ति वि [निर्मित्तिन्] निमित्त-शास्त्र का जानकार (सुर १, १४४; सुपा १५४)।

णेमित्तिअ } वि [नैमित्तिक] १ निमित्त-
णेमित्तिग } शास्त्र से संबन्ध रखनेवाला (सुर ६, १७७)। २ कारणिक, निमित्त से होनेवाला, कारण से किया जाता, कदाचित्क; 'उववासो णेमित्तिगमो जओ भणिओ' (उप ६८३; उवर १०७)। ३ निमित्त शास्त्र का जानकार (सुर १, २३८)। ४ न. निमित्त शास्त्र (ठा ६)।

णेमी स्त्री [नेमी] चक्र-धारा (दे १, १०६)।

णेम्म वि [दे. निभ] तुल्य, सदृश, समान (पण्ह २, ४—पत्र १३०)।

णेम्म देखो णेम = नेम (पण्ह १, ५—पत्र ६४)।

णेरइअ वि [नैरयिक] १ नरक-संबन्धी, नरक में उत्पन्न (हे १, ७६)। २ पुं. नरक का जीव, नरक में उत्पन्न प्राणी (सम २, विपा १, १०)।

णेरइअ वि [नैर्ऋतिक] नैर्ऋत कोण, दक्षिण-पश्चिम विदिशा (अणु २१५)।

णेरई स्त्री [नैर्ऋती] दक्षिण और पश्चिम के बीच की दिशा (सुपा ६८; ठा १०)।

णेरुत्त न [नैरुक्त] १ व्युत्पत्ति के अनुसार अर्थ का वाचक शब्द (अणु)। २ वि. निरुक्त शास्त्र का जानकार (विसे २४)।

णेरुत्तिय वि [नैरुक्तिक] व्युत्पित्ति-निष्पन्न (विसे ३०३७)।

णेरुत्ती स्त्री [नैरुक्ति] व्युत्पत्ति (विसे २१८२)।

णेल वि [नैल] नील का विकार (भग; औप)।

णेलंछण देखो णिल्लंछण (स ६६६)।

णेलच्छ पुं [दे] नपुंसक, षंड (दे ४, ४४; पाअ; हे २, १७४)। २ वृषभ, बैल (दे ४, ४४)।

णेलय पुं [दे. नेलक] रुपया (पव १११)।

णेलिच्छी स्त्री [दे] कूपतुला, ढेंकवा (दे ४, ४४)।

णेल्लच्छ देखो णेलच्छ (पि ६६)।

णेव देखो णेअ = नैव (उव; पि १७०)।

णेवच्छ देखो णेवत्थ (से १२, ६७; प्रति ६; औप; कुमा; पि २८०)।

णेवच्छण न [दे] अवतारण, नीचे उतारना (दे ४, ४०)।

णेवच्छिय देखो णेवत्थिय (पि २८०)।

णेवत्थ न [नेपथ्य] १ वस्त्र आदि की रचना, वेष की सजावट, नाटक आदि में परदे के भीतर का स्थान जिसमें नट-नटी नाना प्रकार का वेश सजाते हैं; रंगशाला, नाट्यशाला (गाया १, १)। २ वेष (विसे २५८७; सुर ३, ६२; सण; सुपा १५३)।

णेवत्थण न [दे] निरुंछन, उत्तरीय वस्त्र का अञ्चल (कुमा)।

णेवत्थिय वि [नेपथ्यित] जिसने वेष-भूषा की हो वह; 'पुरिसनेवत्थिया' (विपा १, ३)।

णेवाइय वि [नैपातिक] निपात-निष्पन्न नाम, अव्यय आदि (विसे २८४०; भग)।

णेवाल पुं [नेपाल] १ एक भारतीय देश, नेपाल (उप पृ ३६३; कुप्र ४५८)। २ वि. नेपाल-देशीय, नेपाली (पउम ६६; ५५)।

णेविज्ज } न [नैवेद्य] देवता के आगे धरा
णेवेज्ज } हुआ अन्न आदि (सं १२२; श्रा १६)।

णेव्वाण देखो णिव्वाण = निर्वाण (आचा; सुर ६, २०; स ७४४)।

णेव्वुअ देखो णिव्वुअ (उप ७३० टी)।

णेव्वुइ देखो णिव्वुइ (उप ४६८ टी)।

णेसग्गिय देखो णिसग्गिय (सुपा ६)।

णेसज्जि वि [नैषद्यिन्] आसन-विशेष से उपविष्ट (पव ६७; पंचा १८)।

णेसज्जिअ वि [नैषद्यिक] ऊपर देखो (ठा ५, १; औप; पगह २, १; कस)।

णेसत्थि पुं [दे] वणिग् मन्त्री, वणिक् प्रधान (दे ४, ४४)।

णेसत्थिया } स्त्री [नैसृष्टिकी, नैशस्त्रिकी]
णेसत्थी } १ निसर्जन, निक्षेपण। २ निसर्जन से होनेवाला कर्म-बन्ध (ठा २, १; नव १८)।

णेसप्प पुं [नैसर्प] निधि विशेष, चक्रवर्ती राजा का एक देवाधिष्ठित निधान (ठा ६; (उप ६८६ टी)।

णेसर पुं [दे] रवि, सूर्य (४, ४४)।

णेसाय देखो णिसाय = निषाद (राज)।

णेसु पुंन [दे] १ ओष्ठ, ओठ, होंठ। २ पाँव; 'तह निक्खिवंतमंता कूवम्मि निहित्तणेसुजुगं (उप ३२० टी)।

णेह पुं [स्नेह] १ राग, अनुराग, प्रेम (प्राप्र)। २ तैल आदि चिकना रस-पदार्थ। ३ चिकनाई, चिकनाहट (हे २, ७७; ४, ४०६; प्राप्र)।

णेहर देखो णेहुर (पगह १, १)।

णेहल पुं [स्नेहल] छन्द-विशेष (पिंग)।

णेहल वि [स्नेहल] स्नेही, स्नेह युक्त, 'पियराइं नेहलाइं, अगुरत्ताओ गिहिणीओ' (धर्मवि १२५)।

णेहालु वि [स्नेहवत्] स्नेह-युक्त, स्निग्ध (हे २, १५९)।

णेहुर पुं [नेहुर] १ देश-विशेष, एक अनार्य देश। २ उसमें वसनेवाली अनार्य जाति (पगह १, १—पत्र १४)।

णो अ [नो] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ निषेध, प्रतिषेध, अभाव (ठा ६; कस; गउड)। २ मिश्रण, मिश्रता; 'नोसद्दो मिस्सभावम्मि' (विसे ५०)। ३ देश, भाग, अंश, हिस्सा (विसे ८८८)। ४ अवधारण, निश्चय (राज)। °आगम पुं [°आगम] १ आगम का अभाव। २ आगम के साथ मिश्रण। ३ आगम का एक अंश (आवम; विसे ४६; ५०; ५१)। ४ पदार्थ का अपरिज्ञान (णंदि)। °इंदिय न [°इन्द्रिय] मन, अन्तःकरण, चित्त (ठा ६; सम ११; उप ५६७ टी)। °कसाय पुं [°कषाय] कषाय के उद्दीपक हास्य वगैरह नव पदार्थ, वे ये हैं—हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, पुंवेद, स्त्रीवेद और नपुंसकवेद (कम्म १, १७; ठा ६)। °केवलनाण न [°केवलज्ञान] अवधि और मनःपर्यव ज्ञान (ठा २, १)। °गार पुं [°कार] 'नो' शब्द (राज)। °गुण वि [°गुण] अयथार्थ, अवास्तविक (अणु)। °जीव पुं [°जीव] १ जीव और अजीव से भिन्न पदार्थ, अवस्तु। २ अजीव, निर्जीव। ३ जीव का प्रदेश (विसे)। °तह वि [°तथ] जो वैसा ही न हो (ठा ४, २)।

णो अ [दे] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ खेद। २ आमन्त्रण। ३ विचित्रता। ४ वितर्क। ५ प्रकोप (प्राकृ ८०)।

णो° पुं [नृ] पुरुष, नर, 'णोवावाराभावम्मि अण्णहा खम्मि चेव उवलद्धी' (धर्मसं १२५३; १२५६)।

णोक्ख वि [दे] अनोखा, अपूर्व (पिंग)।

णोगोण्ण वि [नोगौण] अयथार्थ (नाम) (अणु १४०)।

णोजुग न [नोयुग] न्यून युग (सुज्ज ११)।

णोडिअ देखो णोल्लिअ (राज)।

णोमल्लिआ स्त्री [नवमल्लिका] सुगन्धि फूल-वाला वृक्ष-विशेष, नेवारी, वासंती (नाट; पि १५४)।

णोमालिआ स्त्री [नवमालिका] ऊपर देखो (हे १, १७०; गा २८१; षड्; कुमा; अभि २६)।

णोमि पुं [दे] रस्सी, रज्जु (दे ४, ३१)।

णोलइआ } स्त्री [दे] चञ्चु, चोंच, चाँच (दे
णोलच्छा } ४, ३६)।

णोल्ल सक [क्षिप्, नुद्] १ फेंकना। प्रेरणा करना। णोल्लइ (हे ४, १४३; षड्)। णोल्लेइ (गा ८७५)। कवकृ. णोल्लिज्जंत (सुर १३, १६६)।

णोल्लिअ वि [नोदित] प्रेरित (से ६, ३२; णाया १, ६; पगह १, ३; स ३४०)।

णोव्व पुं [दे] आयुक्त, सूबा या सूबेदार राज-प्रतिनिधि (दे ४, १७)।

णोहल पुं [लोहल] अव्यक्त शब्द-विशेष (षड् पि २६०; संक्षि ११)।

णोहलिआ स्त्री [नवफलिका] १ ताजी फली, नवोत्पन्न फली (हे १, १७०)। २ नूतन फलवाली (कुमा)। ३ नूतन फल का उद्गम; 'णोहलिअमप्पणो किं ण मग्गसे, मग्गसे, कुरवअस्स' (गा ६)।

णोहा स्त्री [स्नुषा] पुत्र की भार्या, पुत्रवधू, पतोहू, बहू (पि १४८; संक्षि १५)।

°ण्णअ वि [ज्ञक] जानकार (गा २०३)।

°ण्णास देखो णास = न्यास (स्वप्न १३४)।

°ण्णुअ देखो °ण्णअ (गा ४०५)।

ण्हं अ. १-२ वाक्यालंकार और पादपूर्ति में प्रयुक्त किया जाता अव्यय (कप्प; कस)।

ण्हव सक [स्नपय्] नहलाना, स्नान कराना। ण्हवेइ (कुप्र ११७)। कवकृ. ण्हविज्जंत (सुपा ३३)। संकृ. ण्हविऊण (पि २१३)।

ण्हवण न [स्नपन] स्नान कराना, नहलाना (कुमा)।

ण्हविअ वि [स्नपित] जिसको स्नान कराया गया हो वह (सुर २, ५८; भवि)।

ण्हा } अक [स्ना] स्नान करना, नहाना।
ण्हाण } ण्हाइ (हे ४, १४)। ण्हाएइ, ण्हाएंति (पि ३१३)। भवि. ण्हाइस्सं

(पि ३१३)। वकृ. ण्हायमाण (णाया १, १३)। संकृ. ण्हाइत्ता, ण्हाणित्ता (पि ३१३)।
ण्हाण न [स्नान] नहाना, नहान (कप्प; प्राप्र)। °पीढ पुंन [°पीठ] स्नान करने का पट्टा (णाया १, १)।
ण्हाणमल्लिया स्त्री [स्नानमल्लिका] स्नान-योग्य पुष्प-विशेष, मालती-पुष्प (राय ३४)।
ण्हाणिआ स्त्री [स्नानिका] स्नान-क्रिया (पण्ह २, ४—पत्र १३१)।
ण्हाणिय वि [स्नानित] जिसने स्नान किया हो वह (पव ३८)।
ण्हाय वि [स्नात] जिसने स्नान किया हो वह, नहाया हुआ (कप्प; औप)।
ण्हायमाण देखो ण्हा
ण्हारु न [स्नायु] १ अस्थि-बन्धनी सिरा, नस, धमनी (सम १४६; पण्ह १, १; ठा २,१; आचा)। २ अठारह श्रेणी में की एक श्रेणी, कुम्हार, पटेल आदि (लोकप्रकाश ४६४ पत्र, सर्ग ३१)।
ण्हाव देखो ण्हव। ण्हावइ, ण्हादेइ (भवि; पि ३१३)। वकृ. ण्हावअंत (पि ३१३)। संकृ. ण्हाविऊण (महा)।
ण्हाविअ वि [स्नपित] नहलाया हुआ, जिसको स्नान कराया गया हो सह (महा भवि)।
ण्हाविअ पुं [नापित] हजाम, नाई (हे १, २३०; कुमा); 'घेत्तूण ण्हावियं आगएण मुंडाविओ कुमरो' (उप ६ टी)। °पसेवय पुं [°प्रसेवक] नाई की अपने उपकरण रखने की थैली (उत्त २)।
ण्हु अ [दे] निश्चय-सूचक अव्यय (जीवस १८०)।
ण्हुसा स्त्री [स्नुषा] पुत्र-वधू, पुत्र की भार्या, पतोहू (प्रावम; पि ३१३)।
ण्हुहा देखो ण्हुसा (सिरि २५१)।

॥ इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवे णआराइसद्दसंकलणो, अइएसेण णआराइसद्दसंकलणो बाईसइमो तरंगो समत्तो ॥

त

त पुं [त] दन्त-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष (प्राप्र; प्रामा)।
त स [तत्] वह (ठा ३, १; हे १, ७; कप्प; कुमा)।
त° स [त्वत्°] तू। °कय वि [°कृत] तेरा किया हुआ (स ६८०)।
त° देखो तया = त्वच्। °द्दोसि वि [°दोषिन्] १ चर्म-रोगी। २ कुष्ठी (पिंड ४७५)।
तअ देखो तव = तपस् (हास्य १३५)। तइ वि [तति] उतना (वव १)।
तइ (अप) अ [तत्र] वहाँ, उसमें (षड्)।
तइ अ [तदा] उस समय (प्राप्र)।
तइअ वि [तृतीय] तीसरा (हे १, १०१; कुमा)।
तइअ (अप) वि [त्वदीय] तुम्हारा (भवि)।
तइअ अ [तदा] उस समय;
'भणिओ रन्ना मंती,
मइसागर तइय पव्वयंतेण।
ताएण अहं भणिओ,
भगिणी ठाणम्मि दायव्वा'
(सुर १, १२३)।
तइअहा (अप) अ [तदा] उस समय (भवि; सण)।
तइआ अ [तदा] उस समय (हे ३, ६५, गा ६२)।
तइआ स्त्री [तृतीया] तिथि-विशेष, तीज (सम २६)।
तइया स्त्री [तृतीया] तीसरी विभक्ति (चेइय ६८३)।
तइल देखो तेल्ल (उप ६२६)।
तइलोई स्त्री [त्रिलोकी] तीन लोक—स्वर्ग, मर्त्य और पाताल (सुपा ६८)।
तइलोक्क } न [त्रैलोक्य] ऊपर देखो
तइलोय } (पउम ३, १०५; ८, २०२; स ५७१; सुर ३, २०; सुपा २८२; ३५; ४४८)।
तइस (अप) वि [तादृश] वैसा, उस तरह का (हे ४; ४०३, षड्)।
तई स्त्री [त्रयी] तीन का समुदाय (सुपा ५८)।
तईअ देखो तइअ = तृतीय (गा ४११; भग)।
तउ } न [त्रपु] धातु-विशेष, सीसा,
तउअ } रांगा (सम १२५; औप; उप ६८६ टी; महा)। °वट्टिआ स्त्री [°पट्टिका] कान का आभूषण-विशेष (दे ५, २३)।
तउस न [त्रपुष] देखो तउसी (राज)। °मिंजिया स्त्री [°मिञ्जिका] क्षुद्र कीट-विशेष, त्रीन्द्रिय जन्तु की एक जाति (जीव १)।
तउस न [त्रपुष] खीरा, ककड़ी (दे ८,३५)।
तउसी स्त्री [त्रपुषी] कर्कटी-वृक्ष, खीरा का गाछ (गा ५३४)।
तए अ [ततस्] उससे, उस कारण से। २ बाद में (उत्त १; विपा १, १)।
तएयारिस वि [त्वादृश] तुम जैसा, तुम्हारी तरह का (स ५२)।
तओ देखो तए (ठा ३, १, प्रासू ७८)।

तं अ [तत्] इन अर्थों को बतलानेवाला अव्यय—१ कारण, हेतु (भग १५)। २ वाक्य-उपन्यास; 'तं तिअसबंदिमोक्खं' (हे २, १७६; षड्); 'तं मरणमणारंभे वि होइ, लच्छी उण न होइ' (गा ४२)। °जहा अ [°यथा] उदाहरण-प्रदर्शक अव्यय (आचा; अणु)।

तंआ देखो तया=तदा (गउड)।

तंट न [दे] पृष्ठ, पीठ (दे ५, १)।

तंड न [दे] लगाम में लगी हुई लार। २ वि. मस्तक-रहित। ३ स्वर से अधिक (दे ५, १६)।

तंडव (अप) देखो तड्डव। तंडवहु (भवि)।

तंडव अक [ताण्डवय्] नृत्य करना। तंडवेंति (आवम)।

तंडव न [ताण्डव] १ नृत्य, उद्धत नाच (पाअ, जीव ३; सुपा ८६)। २ उद्धताई; 'पासंडितुंडअइचंडतंडवाडंबरेहिं किं मुद्ध' (धम्म ८ टी)।

तंडविय वि [ताण्डवित] नचाया हुआ, नर्तित (गउड)।

तंडविय (अप) देखो तड्डविअ (भवि)।

तंडुल पुं [तण्डुल] चावल (गा ६६१)। देखो तंदुल।

तंत न [तन्त्र] १ देश, राष्ट्र (सुर १६, ४८)। २ शास्त्र, सिद्धान्त (उवर ५)। ३ दर्शन, मत (उप ६२२)। ४ स्वदेश-चिन्ता। ५ विष का औषध विशेष (मुद्रा १०८)। ६ सूत्र, ग्रन्थांश-विशेष; 'सुत्तं भणियं तंतं भणिज्जए तम्मि व जमत्थो' (विसे)। ७ विद्या-विशेष (सुपा ४६६)। °न्नु वि [°ज्ञ] तन्त्र का जानकार (सुपा ५७६)। °वाइ पुं [°वादिन्] विद्या-विशेष से रोग आदि को मिटानेवाला (सुपा ४६६)।

तंत वि [तान्त] खिन्न, क्लान्त (णाया १, ४; विपा १, १)।

तंतडी स्त्री [दे] करम्ब, दही और चावल का बना भोजन-विशेष (दे ५, ४)।

तंतवग / **तंतवय** पुं [तान्त्रवक] चतुरिन्द्रिय जंतु की एक जाति (सुख ३६, १४६; उत्त ३६, १४६)।

तंतिय पुं [तान्त्रिक] वीणा बजानेवाला (अणु)।

तंतिसम न [तन्त्रीसम] तन्त्री-शब्द के तुल्य या उससे मिला हुआ गीत, गेय काव्य का एक भेद (दसनि २, २३)।

तंती स्त्री [तन्त्री] १ वीणा, वाद्य-विशेष (कप्प; औप, सुर १६, ४८)। २ वीणा-विशेष (पराह २, ५)। ३ ताँत, चमड़े की रस्सी (विपा १, ६; सुर ३, १३७)।

तंती स्त्री [दे] चिन्ता; 'कामस्स तत्ततंतिं' (गा २)।

तंतु पुं [तन्तु] सूत, तागा, धागा (पउम १, १३)। °अ, °ग पुं [°क] जलजन्तु-विशेष (पउम १४, १७, कुप्र २०६)। °ज, °य न [°ज] सूती कपड़ा (उत्त २, ३५)। °वाय पुं [°वाय] कपड़ा बुननेवाला, जुलाहा (श्रा २३)। °साला स्त्री [°शाला] कपड़ा बुनने का घर, ताँत-घर (भग १५)।

तंतुक्खोडी स्त्री [दे] तन्तुवाय का एक उपकरण (दे ५, ७)।

तंदुल देखो तंडुल (पउम १२, १३८)। २ मत्स्य-विशेष (जीव १)। °वेयालिय न [°वैचारिक] जैन ग्रन्थ-विशेष (णंदि)।

तंदुलेज्जग पुं [तन्दुलीयक] वनस्पति-विशेष (पराग १)।

तंदूसय देखो तिंदूसय (सुर १३, १६७)।

तंब पुं [स्तम्ब] तृणादि का गुच्छा (हे २, ४५; कुमा)।

तंब न [ताम्र] १ धातु-विशेष, ताँबा (विपा १, ६; हे २, ४५)। २ पुं. वर्ण-विशेष। ३ वि. अरुण वर्णवाला, लाल (पराग १७; औप)। °चूल पुं [°चूड] कुक्कुट, मुर्गा (सुर ३, ६१)। °वण्णी स्त्री [°पर्णी] एक नदी का नाम (कप्पू)। °सिह पुं [°शिख] कुक्कुट, मुर्गा (पाअ)।

तंबकरोड पुंन [दे] ताम्र वर्णवाला द्रव्य-विशेष (पराग १७)।

तंबकिमि पुं [दे] कीट-विशेष, इन्द्रगोप (दे ५, ६; षड्)।

तंबकुसुम पुंन [दे] वृक्ष-विशेष, कुरुबक, कटसरैया (दे ५, ६; षड्)।

तंबक्क न [दे] वाद्य-विशेष; 'अणाहयतंबक्केसु वज्जंतेसु' (ती १५)।

तंबच्छिवाडिया स्त्री [दे] ताम्र वर्ण का द्रव्य-विशेष (पराग १७)।

तंबटकारी स्त्री [दे] शेफालिका, पुष्प-प्रधान लता-विशेष (दे ५, ४)।

तंबरत्ती स्त्री [दे] गेहूँ में कुंकुम की छाया (दे ५, ५)।

तंबा स्त्री [दे] गौ, धेनु, गैया (दे ५, १; गा ४६०; पाअ; वज्जा ३४)।

तंबाय पुं [तामाक] भारतीय ग्राम-विशेष (राज)।

तंबिम पुंस्त्री [ताम्रत्व] अरुणता, ईषद् रक्तता (गउड)।

तंबिय न [ताम्रिक] परिव्राजक का पहनने का एक उपकरण (औप)।

तंबिर वि [दे] ताम्र वर्णवाला (हे २, ५६; गउड; भवि)।

तंबिरा [दे] देखो तंबरत्ती (दे ५, ५)।

तंबुक्क न [दे] वाद्य-विशेष; 'बुक्कतंबुक्कसद्दुक्कडं' (सुपा ५०)।

तंबेरम पुं [स्तम्बेरम] हस्ती, हाथी (उप पृ ११७)।

तंबेही स्त्री [दे] पुष्प-प्रधान वृक्ष-विशेष, शेफालिका (दे ५, ४)।

तंबोल न [ताम्बूल] पान (हे १, १२४; कुमा)।

तंबोलिअ पुं [ताम्बूलिक] १ तमोली, पान बेचनेवाला (श्रा १२)। २ पान में होनेवाला तंबोलिआ नाग।

तंबोली स्त्री [ताम्बूली] पान का गाछ (षड्; जीव ३)।

तंभ देखो थंभ (षड्)।

तंस पुं [त्र्यंश] तीसरा हिस्सा (पंच ५, ३७; ३६; कम्म ५, ३४)।

तंस वि [त्र्यस्र] त्रि-कोण, तीन कोनवाला (हे १, २६; गउड; ठा १; गा १०, प्राप्र; आचा)।

तक्क सक [तर्क्] तर्क करना, अनुमान करना, अटकल करना। तक्केमि (मै १३)। संकृ. तक्कियाणं (आचा)।

तक्क न [तक्र] मट्ठा छाछ (ओघ ८७; सुपा ५८३ उप पृ ११६)।

तक्क पुं [तर्क] १ विमर्श, विचार, अटकल-ज्ञान (श्रा १२; ठा ६)। २ न्याय-शास्त्र (सुपा २८७)।

तक्कणा स्त्री [दे] इच्छा, अभिलाष (दे ५, ४)।

तक्कय वि [तर्कक] तर्क करनेवाला (पण्ह १, ३)।

तक्कर पुं [तस्कर] चोर (हे २, ४; औप)।

तक्कलि स्त्री [दे] कदली-वृक्ष, केले का गाछ (आचा २; १, ८, ६)।

तक्कलि } स्त्री [दे] वलयाकार वृक्ष-विशेष
तक्कली } (पण्ण १)।

तक्का स्त्री [तर्का] देखो त = तर्क (ठा १; सूअ १, १३; आचा)।

तक्काल क्रिवि [तत्काल] उसी समय (कुमा)।

तक्किअ वि [तार्किक] तर्कशास्त्र का जानकार (अच्चु १०१)।

तक्कियाणं देखो **तक्क** = तर्क।

तक्कु पुं [तर्कु] सूत बनाने का यन्त्र, तकुआ, तकला, चरखा (दे ३, १)।

तक्कुय पुं [दे] स्वजन-वर्ग, 'सम्माणिया सामंता, अहिणंदिया नायरया, परिओसिआ तक्कुयजणा त्ति' (स ५२०)।

तक्ख सक [तक्ष्] छिलना, काटना। तक्खइ (षड्; हे ४, १६४)। कर्म. तक्खिज्जइ (कुप्र १७)। वकृ. तक्खमाण (अणु)।

तक्ख पुं [तार्क्ष्य] गरुड़ पक्षी (पाअ)।

तक्ख पुं [तक्षन्] १ लकड़ी काटनेवाला, बढ़ई। २ विश्वकर्मा, शिल्पी-विशेष (हे ३, ५६; षड्)। °सिला स्त्री [°शिला] प्राचीन ऐतिहासिक नगर, जो पहले बाहुबलि की राजधानी थी, यह नगर पंजाब में है (पउम ४, ३८; कुप्र ५३)।

तक्खग पुं [तक्षक] १-२ ऊपर देखो। ३ स्वनाम-प्रसिद्ध सर्प-राज (उप ६२५)।

तक्खण न [तत्क्षण] १ तत्काल, उसी समय (ठा ४, ४)। २ क्रिवि. शीघ्र, तुरन्त (पाअ)।

तक्खय देखो **तक्खग** (स २०६; कुप्र १३६))।

तक्खाण देखो **तक्ख** = तक्षन् (हे ३, ५६; षड्)।

तगर देखो **टगर** (पण्ह २, ५)।

तगरा स्त्री [तगरा] संनिवेश-विशेष (स ४६८)

तगरा स्त्री [तगरा] एक नगरी का नाम (सुख २, ८)।

तग्ग न [दे] सूत्र-कंकण, धागे का कंकण (दे ५, १; गउड)।

तग्गंधिय वि [तद्गन्धिक] उसके समान गंधवाला (प्रासू ३४)।

तच्च वि [तृतीय] तीसरा (सम ८; उवा)।

तच्च न [तत्त्व] सार, परमार्थ (आचा; आरा ११५)। °वाय पुं [°वाद] १ तत्त्व-वाद, परमार्थ-चर्चा। २ दृष्टिवाद, जैन अंग-ग्रंथ-विशेष (ठा १०)।

तच्च न [तथ्य] १ सत्य, सचाई (हे २, २१; उत्त २८)। २ वि. वास्तविक, सत्य (उत्त ३)। °त्थ पुं [°ार्थ] सत्य, हकीकत (पउम ३, १३) °वाय पुं [°वाद] देखो ऊपर °वाय (ठा १०)।

तच्चं अ [त्रिः] तीन बार (भग; सुर २, २६)।

तच्चित्त वि [तच्चित्त] उसी में जिसका मन लगा हो वह, तल्लीन (विपा १, २)।

तच्छ सक [तक्ष्] छिलना, काटना। तच्छइ (हे ४, १९४; षड्)। संकृ. तच्छिय (सूअ १, ४, १)। कवकृ. तच्छिज्जंत (सुर १, २८)।

तच्छ } वि [तष्ट] छिला हुआ, तनूकृत;
तच्छिअ } 'ते भिन्नदेहा फलगं तच्छा' (सूअ १, ५, २, १४; १, ४, १, २१; उत्त १९, ६६)।

तच्छण स्त्रीन [तक्षण] छिलना, कर्तन (पण्ह १, १) स्त्री. णा (णाया १; १३)।

तच्छिड वि [दे] कराल, भयंकर (दे ५, ३)।

तच्छिज्जंत देखो **तच्छ**।

तच्छिल वि [दे] तत्पर (षड्)।

तजा देखो **तया** = त्वच् (दे १, १११)।

तज्ज सक [तर्जय्] तर्जन करना, भर्त्सन करना। तज्जइ (भवि)। तज्जेइ (णाया १, १८) वकृ. **तज्जंत**, **तज्जित तज्जयंत**, **तज्जमाण**, **तज्जेमाण** (भवि, सुर १२, २३३; णाया १, ८; राज; विपा १, १—पत्र ११)। कवकृ. तज्जिज्जंत (उप पृ १३४; उप १४६ टी)।

तज्जण न [तर्जन] भर्त्सन, तिरस्कार (औप; उव; पउम ६५, ५३)।

तज्जणा स्त्री [तर्जना] ऊपर देखो (पण्ह २, १; सुपा १)।

तज्जणी स्त्री [तर्जनी] दूसरी अंगुली, अँगूठे के पासवाली अंगुली, प्रदेशिनी (सुपा १; कुमा)।

तज्जाय वि [तज्जात] समान जातिवाला, तुल्य-जातीय (आव ४)।

तज्जाविअ } वि [तर्जित] तर्जित, भर्त्सित
तज्जिअ } (स १२२; सुपा २६२; भवि)।

तज्जित
तज्जिज्जंत } देखो **तज्ज**।
तज्जेमाण

तट्टवट्ट न [दे] आभरण, आभूषण;

'सणियं सणियं बालत्तणाओ
तणुयाइं तट्टवट्टाइं।
अवहरिवि नियघराओ
हारेइ रहम्मि खिल्लंतो'
(सुपा ३६६)।

तट्टिगा स्त्री [दे. तट्टिका] दिगंबर जैन साधु का एक उपकरण (धर्मसं १०४६; १०४८)।

तट्टी स्त्री [दे] वृति, बाड़ (दे ५, १)।

तट्ठ वि [त्रस्त] १ डरा हुआ, भीत (हे २, १३६; कुमा)। २ न. मुहूर्त-विशेष (सम ५१)।

तट्ठ वि [तष्ट] छिला हुआ (सूअ १, ७)।

तट्ठव न [त्रस्तप] मुहूर्त-विशेष (सम ५१)।

तट्ठि वि [तष्टिन्] तनूकृत, कृशतावाला (सूअ १, ७, ३०)।

तट्ठि } पुं [त्वष्टृ] १ तक्षक, विश्वकर्मा
तट्ठु } (गउड)। २ नक्षत्र-विशेष का अधिष्ठायक देव (ठा २, ३)।

तट्ठु पुं [त्वष्टृ] अहोरात्र का बारहवाँ मुहूर्त (सुज्ज १०, १३)।

तड सक [तन्] १ विस्तार करना। २ करना। तडइ (हे ४, १३७)।

तड पुंन [तट] किनारा, तीर (वाअ; कुमा)। °त्थ वि [°स्थ] १ मध्यस्थ, पक्षपात-हीन। २ समीप स्थित (कुमा; दे ३; ६०)।

तडउडा [दे] देखो **तडवडा** (जीव ३; जं १)।

तडकडिअ वि [दे] अनवस्थित (षड्)।

तडक्कार पुं [तटत्कार] चमकारा, 'तडित-डक्कारो' (सुपा १३३)।

तडतडा अक [तडतडाय्] तड़-तड़ आवाज होना। वकृ. तडतडंत, तडतडेंत, तड-तडयंत (राज; णाया १, ६; सुपा १७६)।

तडतडा स्त्री [तडतडा] तड़-तड़ आवाज (स २५७)।

तडप्फड } **तडफड** } अक [दे] तड़फना, छटपटाना, तड़फड़ाना, व्याकुल होना। तड-प्फडइ (कुमा; हे ४, ३६६; विवे १०२)। तडफडसि (सुर ३,१४८)। वकृ. तडप्फडंत, डतफडंत (उप ७६८ टी; सुर १२, १६४; सुपा १७६; कुप्र २६)।

तडफडिअ वि [दे] १ सब तरफ से चलित, तड़फड़ाया हुआ, व्याकुल (दे ५, ६; स ५८६)।

तडमड वि [दे] क्षुभित, क्षोभ प्राप्त (दे ५, ७)।

तडयड वि [दे] क्रिया-शील, सदाचार-युक्त (सट्ठि १०७)।

तडयडंत देखो तडतडा।

तडवडा स्त्री [दे] वृक्ष-विशेष, आउली का पेड़ (दे ५, ५)।

तडाअ } **तडाग** } न [तडाग] तालाब, सरोवर (गा ११०; पि २३१; २४०)।

तडि स्त्री [तडित्] बिजली (पाअ)। °डंड पुं [°दण्ड] विद्युद्दंड (महा)। °केस पुं [°केश] राक्षस-वंशीय एक राजा, एक लंका-पति (पउम ६, ६६)। °वेअ पुं [°वेग] विद्याधर वंश का एक राजा (पउम ५, १८)।

तडिअ वि [तत] विस्तृत, फैला हुआ (पाअ; णाया १, ८—पत्र १३३)।

तडिआ स्त्री [तडित्] बीजली (प्रामा)।

तडिण वि [दे] विरल, अत्यल्प (से १३, ५०)।

तडिणी स्त्री [तटिनी] नदी, तरंगिणी (सण)।

तडिम न [तडिम] १ भित्ति, भीत। २ कुट्टिम, पाषाण आदि से बँधा हुआ भूमितल (से २, २)। ३ द्वार के ऊपर का भाग (से १२, ६०)।

तडी स्त्री [तटी] तट, किनारा (विपा १, १; अनु ६)।

तड्ड } **तड्डव** } सक [तन्] १ विस्तार करना। २ करना। तड्डइ, तड्डवइ (हे ४, १३७)। भूका—तड्डवीअ (कुमा)।

तड्डविअ } **तड्डिअ** } वि [तत] विस्तीर्ण, फैला हुआ (पाअ; महा; कुमा; सुर ३, ७२)।

तड्डु स्त्री [तर्दु] काठ की करछी (प्राकृ २०)।

तण सक [तन्] १ विस्तार करना। २ करना। तणइ, तणए (षड्)। कर्म. तणि-ज्जए (विसे १३८३)।

तण न [दे] उत्पल, कमल (दे ५, १)।

तण न [तृण] तृण, घास (प्राप्र; उव)। °इल्ल वि [°वत्] तृणवाला (गउड)। °जीवि वि [°जीविन्] घास खाकर जीनेवाला (सुपा ३७०) °राय पुं [°राज] ताल-वृक्ष, ताड़ का पेड़ (गउड)। °विंटय, °वेंटय पुं [°वृन्तक] एक क्षुद्र जंतु-जाति, त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष (राज)।

तणग वि [तृणक] तृण का बना हुआ (आचा २, २, ३, १४)।

तणय पुं [तनय] पुत्र, लड़का (सुपा २४७; ४२४)।

तणय वि [दे] संबन्धी, 'मह तणए' (सुर ३, ८७; हे ४, ३६१)।

तणयमुद्दिआ स्त्री [दे] अंगुलीयक, अंगूठी (दे ५, ६)।

तणया स्त्री [तनया] लड़की, पुत्री (कुमा)।

तणरासि } **तणरासिअ** } वि [दे] प्रसारित फैलाया हुआ (दे ५, ६)।

तणवरंडी स्त्री [दे] उडुप, डोंगी, छोटी नौका (दे ५, ७)।

तणसोल्लि } **तणसोल्लिया** } स्त्री [दे] १ मल्लिका, पुष्प-प्रधान वृक्ष-विशेष (दे ५, ६; णाया १, १६)। २ वि. तृण-शून्य (षड्)।

तणहार } **तणहारय** } पुं [तृणहार] १ त्रीन्द्रिय जन्तु की एक जाति (उत्त ३६, १३८)। २ वि. घास काटकर बेचनेवाला, घसियारा (अणु १४६)।

तणिअ वि [तत] विस्तीर्ण, फैला हुआ (कुमा)।

तणु वि [तनु] १ पतला (जी ७)। २ कृश, दुर्बल (पंचा १६)। ३ अल्प, थोड़ा (दे ३, ५१)। ४ लघु, छोटा (जीव ३)। ५ सूक्ष्म (कप्प)। ६ स्त्री. शरीर, काय (दे २, ५६; जी ८)। °तणुई, तणू स्त्री [°तन्वी] ईषत्प्राग्भारा-नामक पृथ्वी (ठा ८; इक)। °पज्जत्ति स्त्री [°पर्याप्ति] उत्पन्न होते समय जीव द्वारा ग्रहण किये हुए पुद्गलों को शरीर रूप से परिणत करने की शक्ति (कम्म ३, १२)। °ब्भव वि [°उद्भव] १ शरीर से उत्पन्न। २ पुं. लड़का (भवि)। °ब्भवा स्त्री [°उद्भवा] लड़की (भवि)। °भू पुंस्त्री [°भू] १ लड़का। २ लड़की (प्राक)। °य वि [°ज] देखो °ब्भव (उत्त १४)। °रुह पुंन [°रुह] १ केश, बाल (रंभा)। २ पुं. पुत्र, लड़का (भवि)। °वाय पुं [°वात] सूक्ष्म वायु-विशेष (ठा ३, ४)।

तणुअ वि [तनुक] ऊपर देखो (पउम १६, ७; आव ५; भग १५; पाअ)।

तणुअ सक [तनय्] १ पतला करना। २ कृश करना, दुर्बल करना। तणुएइ (गा ६१; काप्र १७४)।

तणुआ } **तणुआअ** } अक [तनुकाय्] दुर्बल होना, कृश होना। तणुआइ, तणुआ-अइ, तणुआअए (गा ३०; २६२, ५६) वकृ. तणुआअंत (गा २६८)।

तणुआअरअ वि [तनुत्वकारक] कृशता उपजानेवाला, दौर्बल्य-जनक (गा ३४८)।

तणुइअ वि [तनूकृत] दुर्बल किया हुआ, कृश किया हुआ (गा १२२; पउम १६, ४)।

तणुई स्त्री [तन्वी] १ पृथ्वी-विशेष, सिद्ध-शिला (सम २२)। २ पतला शरीरवाली, कृशांगी, कोमलांगी स्त्री (षड्)।

तणुईकय वि [तनूकृत] पतला किया हुआ (पाअ)।

तणुग देखो तणुअ (जं २; ३)।

तणुज देखो तणु-य (धर्मवि १२८)।

तणुजम्म पुं [तनुजन्मन्] पुत्र, लड़का (धर्मवि १४८)।

तणुभव देखो तणु-ब्भव (धर्मवि १४२)।

तणुवी } देखो **तणुई** (हे २, ११३;
तणुवीआ } (कुमा)।

तणू स्त्री [तनू] शरीर, काया (गा ७८; पाअ; दं ५)। २ ईषत्प्राग्भारा-नामक पृथिवी (ठा ८)। °अ वि [°ज] १ शरीर से उत्पन्न। २ पुं. लड़का, पुत्र (उप ६८६)। °अतरा स्त्री [°कतरा] ईषत्प्राग्भारा-नामक पृथिवी, जिसपर मुक्त जीव रहते हैं, सिद्ध-शिला (सम २२)। °रुह पुंन [°रुह] केश, रोम, बाल (उप ५६७ टी)।

तणूइय देखो **तणुइअ** (गउड)।

तणेण (अप) अ. लिए, वास्ते (हे ४, ४२५; कुमा)।

तणेसि पुं [दे] तृण-राशि (दे ५,३, षड्)।

तण्णय पुं [तर्णक] वत्स, बछड़ा (पाअ; गा १६; गउड)।

तण्णाय वि [दे] आर्द्र, गीला (दे ५, २; पाअ; गउड; से १, ३१; ११, १२६)।

तण्हा स्त्री [तृष्णा] १ प्यास, पिपासा (पाअ)। २ स्पृहा, वाञ्छा, इच्छा (ठा २, ३; औप)। °लु, °लुअ वि [°वत्] तृष्णा-वाला, प्यासा; 'समरतण्हालू' (पउम ८, ८७; ८, ४७)।

तण्हाइअ वि [तृष्णित] तृषातुर, अति प्यासा (धर्मवि १४१)।

तत देखो **तय** = तत (ठा ४, ४)।

तत्त न [तत्त्व] सत्य स्वरूप, तथ्य, परमार्थ (उप ७२८ टी; पुप्फ ३२०)। °ओ अ [°तस्] वस्तुतः (उप ६८६)। °ण्णु वि [°ज्ञ] तत्त्व का जानकार (पंचा १)।

तत्त पुं [तप्त] १ तीसरी नरक-भूमि का एक नरक-स्थान (देवेन्द्र ८)। २ प्रथम नरक-भूमि का एक नरक-स्थान (देवेन्द्र ४)।

तत्त वि [तप्त] गरम किया हुआ (सम १२५; विपा १, ६; दे १, १०५)। °जला स्त्री [°जला] नदी-विशेष (ठा २, ३)।

तत्त अ [तत्र] वहाँ। °भव, °होंत वि [°भवत्] पूज्य ऐसे आप (पि २६३; अभि ५६)।

तत्तट्ठसुत्त न [तत्त्वार्थसूत्र] एक प्रसिद्ध जैन दर्शन-ग्रन्थ (अज्झ ७७)।

तत्तडिअ न [दे] रँगा हुआ कपड़ा (गच्छ २, ४६)।

तत्ति स्त्री [तृप्ति] तृप्ति, संतोष (कुमा, कप्प २६)। °ल्ल वि [°मत्] तृप्ति-युक्त, तृप्त, संतुष्ट (राज)।

तत्ति स्त्री [दे] १ आदेश, हुकुम (दे ५, २०; सण)। २ तत्परता (दे २०)। ३ चिन्ता, विचार (गा २; ५१; २७३ अ; सुपा २३७; २८०)। ४ वार्ता, बात (गा २; वज्जा २)। ५ कार्य, प्रयोजन (पण्ह १, २; वव १)।

तत्तिय वि [तावत्] उतना (प्रासू १५६)।

तत्तिल } वि [दे] तत्पर (षड्; दे ५, ३;
तत्तिल्ल } गा ५५७; प्रासू ५६)।

तत्तु (अप) देखो **तत्थ** = तत्र (हे ४, ४०४; कुमा)।

तत्तुडिल्ल न [दे] सुरत, संभोग (दे ५, ६)।

तत्तुरिअ वि [दे] रञ्जित (षड्)।

तत्तो देखो **तओ** (कुमा; जी २६)। °मुह वि [°मुख] जिसका मुँह उस तरफ हो वह (सुर २, २३४)।

तत्तोहुत्त न [दे] तदभिमुख, उसके सामने (गउड)।

तत्थ अ [तत्र] वहाँ, उसमें (हे २, १६१)। °भव वि [°भवत्] पूज्य ऐसे आप (पि २६३)। °य वि [°त्य] वहाँ का रहनेवाला (उप ५६७ टी)।

तत्थ वि [त्रस्त] भीत, डरा हुआ (हे २,१६१; कुमा)।

तत्थ देखो **तच्च** = तथ्य (धर्मसं ३०४; णंदि ५३)।

तत्थरि पुं [त्रस्तरि] नय-विशेष; 'तत्थरिनएण ठविआ सोहउ मज्झ थुई' (अज्झ ४)।

तदा देखो **तया** = तदा (गा ६६६)।

तदीय वि [त्वदीय] तुम्हारा (महा)।

तदो देखो **तओ** (हे २, १६०)।

तद्दीअचय न [दे] नृत्य, नाच (दे ५, ८)।

तद्दिअस } न [दे] प्रतिदिन, अनुदिन,
तद्दिअसिअ } हररोज (दे ५, ८; गउड;
तद्दिअह } पाअ)।

तद्दोसि देखो **त-द्दोसि** = त्वग्दोषिन्।

तद्धिय पुं [तद्धित] १ व्याकरण-प्रसिद्ध प्रत्यय-विशेष (पण्ह २, २; विसे १००३)। २ तद्धित प्रत्यय की प्राप्ति का कारण-भूत अर्थ (अणु)।

तधा देखो **तहा** (ठा ३, १; ७)।

तन्नय देखो **तण्णय** (सुर १४, १७४)।

तन्हा देखो **तण्हा** (सुर १, २०३; कुमा)।

तप देखो **तव** = तपस् (चंड)।

तप्प सक [तप्] १ तप करना। २ अक. गरम होना। तप्पइ, तप्पंति (पिंग; प्रासू ५३)।

तप्प सक [तर्पय्] तृप्त करना। वकृ. **तप्पमाण** (सुर १६, १६)। हेकृ. 'न इमो जीवो सक्को तप्पेउं कामभोगेहिं' (आउ ५०)। कृ. **तप्पेयव्व** (सुपा २३२)।

तप्प न [तल्प] शय्या, बिछौना (पाअ)। °अ वि [°ग] शय्या पर जानेवाला, सोनेवाला (पण्ह १, २)।

तप्प पुंन [तप्र] डोंगी, छोटी नौका (पण्ह १, १; विसे ७०६)।

तप्प पुंन [तप्र] नदी में दूर से बहकर आता हुआ काष्ठ समूह (णंदि ८८ टी)।

तप्पक्खिअ वि [तत्पाक्षिक] उस पक्ष का (श्रा १२)।

तप्पज्ज न [तात्पर्य] तात्पर्य, मतलब (राज)।

तप्पण न [तर्पण] १ सक्तु, सतुआ, सत्तू (पण्ह २, ५)। २ स्त्रीन. तृप्ति-करण, प्रीणन (सुपा ११३)। ३ स्निग्ध वस्तु से शरीर की मालिश (णाया १, १३)।

तप्पणग न [दे] जैन साधु का पात्र-विशेष, तरपणी (कुलक १०)।

तप्पणाडुआलिआ स्त्री [दे] सक्तुमिश्रित भोजन (दश वै० चू०, वसुदेवहिंडी, धम्मिलहिंडी)।

तप्पभिइं अ [तत्प्रभृति] तबसे, तबसे लेकर (कप्प; णाया १, १)।

तप्पमाण देखो **तप्प** = तर्पय्।

तप्पर वि [तत्पर] आसक्त (दे ५, २०)।

तप्पुरिस पुं [तत्पुरुष] व्याकरण-प्रसिद्ध समास-विशेष (अणु)।

तप्पेयव्व देखो **तप्प** = तर्पय्।

तब्भत्तिय वि [तद्भाक्तिक] उसका सेवक (भग ५, ७)।

तब्भव पुं [तद्भव] वही जन्म, इस जन्म के समान पर-जन्म। °**मरण** न [°मरण] वह मरण, जिससे इस जन्म के समान ही परलोक में भी जन्म हो, यहाँ मनुष्य होने से आगामी जन्म में भी जिससे मनुष्य हो ऐसा मरण (भग २१, १)।

तब्भारिय पुं [तद्भार्य] दास, नौकर, कर्मचारी, कर्मकर (भग ३, ७)।

तब्भारिय पुं [तद्भारिक] ऊपर देखो (भग ३, ७)।

तब्भूम वि [तद्भौम] उसी भूमि में उत्पन्न (बृह १)।

तब्भत्ति अ [दे] शीघ्र, जल्दी (प्राकृ ८१)।

तम अक [तम्] १ खेद करना। २ सक. इच्छा करना। तमइ (प्राकृ. ६६)।

तम पुं [दे] शोक, अफसोस (दे ५, १)।

तम पुंन [तमस्] १ अन्धकार। २ अज्ञान (हे १, ३२; पि ४०६; औप; धर्म २)। °**तम** पुं [°तम] सातवीं नरक-पृथिवी का जीव (कम्म ५; पंच ५)। °**तमप्पभा** स्त्री [तमःप्रभा] सातवीं नरक-पृथिवी (अणु)। °**तमा** स्त्री [°तमा] सातवीं नरक-पृथिवी (सम ६६, ठा ७)। °**तिमिर** न [°तिमिर] १ अन्धकार (बृह ४)। २ अज्ञान (पडि)। ३ अन्धकार-समूह (बृह ४)। °**प्पभा** स्त्री [°प्रभा] छठवीं नरक-पृथिवी (पएण १)।

तमंग पुं [तमङ्ग] मतवारण, घर का वरण्डा, छज्जा (सुर १३, १५६)।

तमंधयार पुं [तमोन्धकार] प्रबल अन्धकार (पउम १७, १०)।

तमण न [दे] चूल्हा, जिसमें आग रखकर रसोई की जाती है वह (दे ५, २)।

तमणि पुंस्त्री [दे] १ भुज, हाथ। २ भूर्ज, वृक्ष-विशेष की छाल, भोजपत्र (दे २, २०)।

तमय पुं [तमक] १ चौथा नरक का एक नरक-स्थान (देवेन्द्र १०)। २ पाँचवीं नरक-भूमि का एक नरक-स्थान (देवेन्द्र ११)।

तमस न [तमस्] अन्धकार, 'तमसाउ मे दिसा य' (पउम ३६, ८)।

तमस वि [तामस] अन्धकारवाला (दस ५, १, २०)।

तमस देखो **तम** = तमस्; 'अंतरिओ वा तमसे वा न वंदई, वंदई उ दीसंतो' (पव २)।

तमस्सई स्त्री [तमस्वती] घोर अन्धकारवाली रात (बृह १)।

तमा स्त्री [तमा] १ छठवीं नरक-पृथिवी (सम ६६; ठा ७)। २ अधोदिशा (ठा १०)।

तमाड सक [भ्रमय्] घुमाना, फिराना। तमाडइ (हे ४, ३०)। वकृ. **तमाडंत** (कुमा)।

तमाल पुं [तमाल] १ वृक्ष-विशेष (उप १०३१ टी; भत्त ४२)। २ न. तमाल वृक्ष का फूल (से १, ६३)।

तमिस पुं [तमिस्र] पाँचवाँ नरक का एक नरक-स्थान (देवेन्द्र ११)।

तमिस न [तमिस्र] १ अन्धकार (सूअ १, ५, १)। °**गुहा** स्त्री [°गुहा] गुफा-विशेष (इक)।

तमिसंधयार पुं [तमिस्रान्धकार] प्रबल अन्धकार, घोर अंधेरा (सूअ १, ५, १)।

तमिस्स देखो **तमिस** (दे २, २६)।

तमी स्त्री [तमी] रात्रि, रात (गउड)।

तमुक्काय देखो **तमुक्काय** (भग ६, ५—पत्र २, ६८)।

तमुक्काय पुं [तमस्काय] अंधकार-प्रचय (ठा ४, २)।

तमुय वि [तमस्] १ जन्मान्ध, जात्यन्ध। २ अत्यन्त अज्ञानी (सूअ २, २)।

तमोकसिय वि [तमःकाषिक] प्रच्छन्न क्रिया करनेवाला (सूअ २, २)।

तम्म अक [तम्] खेद करना। (गा ४८३)।

तम्म देखो **तम** = तम्। तम्मइ (प्राकृ. ६६)।

तम्मण वि [तन्मनस्] तल्लीन, तच्चित्त (विपा १, २)।

तम्मय वि [तन्मय] १ तल्लीन, तत्पर। २ उसका विकार (पएह १, १)।

तम्मि न [दे] वस्त्र, कपड़ा (गउड)।

तम्मिर वि [तमिन्] खेद करनेवाला (गा ५८६)।

तय वि [तत] विस्तार-युक्त (दे १, ४६; से २, ३१; महा)। २ न. वाद्य-विशेष (ठा २, २)।

तय न [त्रय] तीन का समूह, त्रिक; 'कालत्तए वि न मयं' (चउ ४५; श्रा २८)।

तय° देखो **तया** = तदा। °**प्पभिइ** अ [°प्रभृति] तब से (स ३१६)।

तय° देखो **तया** = त्वच्। °**क्खाय** वि [°खाद] त्वचा को खानेवाला (ठा ४, १)।

तया अ [तदा] उस समय (कुमा)।

तया स्त्री [त्वच्] १ त्वचा, छाल, चमड़ी (सम ३६)। २ दालचीनी (भत्त ४१)। °**मंत** वि [°मत्] त्वचा वाला (णाया १, १)। °**विस** पुं [°विष] सर्प की एक जाति (जीव १)।

तयाणंतर न [तदनन्तर] उसके बाद (औप)।

तयाणि } **तयाणिं** } अ [तदानीम्] उस समय (पि ३५८; हे १, १०१)।

तयाणुग वि [तदनुग] उसका अनुसरण करनेवाला (सूअ १, १, ४)।

तर अक [तॄ] कुशल रहना, नीरोग रहना। तरई (पिंड ४१७)।

तर अक [त्वर्] त्वरा होना, जल्दी होना, तेज होना। तर (विसे २६०१)।

तर अक [शक्] समर्थ होना, सकना। तरइ (हे ४, ८६)। वकृ. **तरंत** (ओघ ३२४)।

तर सक [तॄ] तैरना, तरइ (हे ४, ८६)। कर्म. तरिज्जइ, तीरइ (हे ४, २५०; गा ७१)। वकृ. **तरंत**, **तरमाण** (पाअ; सुपा १८२)। हेकृ. **तरिउं** **तरीउं** (णाया १, १४; हे २, १९८)। कृ. **तरिअव्व** (श्रा १२; सुपा २७६)।

तर न [तरस्] १ वेग। २ बल, पराक्रम। °**मल्लि** वि [°मल्लि] १ वेगवाला। २ बलवाला। °**मल्लिहायण** वि [°मल्लिहायन] तरुण, युवा (औप)।

तरंग पुं [तरङ्ग] १ कल्लोल, वीचि, लहर (पएह १, ३; औप)। °**णंदण** न [°नन्दन] नृप-विशेष (दंस ३)। °**मालि** पुं [°मालिन्] समुद्र, सागर (पाअ)। °**वई** स्त्री [°वती] १ एक नायिका। २ कथा-ग्रंथ-विशेष (दंस ३)।

तरंगलोला स्त्री [तरङ्गलोला] बप्पभट्टिसूरि-कृत एक अद्भुत प्राकृत जैन कथा-ग्रंथ (सम्मत्त १३८)।

तरंगि वि [तरङ्गिन्] तरंग-युक्त (गउड; कप्पू)।

तरंगिअ वि [तरङ्गित] तरंग-युक्त (गउड; से ८, ११; सुपा १५७)।

तरंगिणी स्त्री [तरङ्गिणी] नदी, सरिता (प्रासू ६६; गउड; सुपा ५३८)।

तरंगिणीनाह पुं [तरङ्गिणीनाथ] समुद्र, सागर (वज्जा १५६)।

तरंड, **तरंडय** पुंन [तरण्ड, °क] डोंगी, नौका (सुपा २७२, ५००; सुर ८, १०६; पुप्फ १०५)।

तरग वि [तर, °क] तैरनेवाला, तैराक (ठा ४, ४)।

तरच्छ पुंस्त्री [तरक्ष] श्वापद जन्तु-विशेष, व्याघ्र की एक जाति (पराह १, १, गाया १, १; स २५७)। स्त्री. °च्छी (पि १२३)। °भल्ल पुंस्त्री [°भल्ल] श्वापद जन्तु-विशेष (पउम ४२, १२)।

तरट्ट वि [दे] प्रगल्भ, धृष्ट, समर्थ, चतुर, हाजिरजवाब 'तरट्टो' (प्राकृ ३८)।

तरट्टा, **तरट्टी** स्त्री [दे] प्रगल्भ स्त्री, प्रौढा नायिका, होशियार स्त्री; 'फाणेण दुट्टदि चिरं तरुणी तरट्टी' (कप्पू; काप्र ५६६); 'अट्टेव आगयाओ तरुणतरट्टाओ एयाओ' (सुपा ४२)।

तरण न [तरण] १ तैरना (श्रा १४: स ३५६; सुपा २६२)। २ जहाज, नौका (विसे १०२७)।

तरणि पुं [तरणि] १ सूर्य, रवि (कुमा)। २ जहाज, नौका। ३ घृतकुमारी का पेड़, घीकुँआर का पेड़। ४ अर्क वृक्ष, अकवन वृक्ष (हे १, ३१)।

तरतम वि [तरतम] न्यूनाधिक, 'तरतम-जोगजुत्तेहिं' (कप्प)।

तरमाण देखो **तर** = तॄ।

तरल वि [तरल] चंचल, चपल (गउड; पाअ; कप्पू; प्रासू ६६; सुपा २०४; सुर २, ८६)।

तरल सक [तरलय्] चंचल करना, चलित करना। **तरलेइ** (गउड)। वकृ. **तरलंत** (सुपा ४७०)।

तरलण न [तरलन] तरल करना, हिलाना; 'करणाडीएं कुणंता कुरलतरलणं' (कप्पू)।

तरलाविअ वि [तरलित] चंचल किया हुआ, चलायमान किया हुआ (गउड; भवि)।

तरलि वि [तरलिन्] हिलनेवाला (कप्पू)।

तरलिअ वि [तरलित] चंचल किया हुआ (गा ७८; उप पृ ३३; सार्ध ११५)।

तरवट्ट पुं [दे] वृक्ष-विशेष, चकवड़, पमाड, पवार (दे ५, ५; पाअ)।

तरस न [दे] मांस (दे ५, ४)।

तरसा अ [तरसा] शीघ्र, जल्दी (सुपा ५८२)।

तरा स्त्री [त्वरा] जल्दी, शीघ्रता (पाअ)।

तरिअव्व देखो **तर** = तॄ।

तरिअव्व न [दे] उडुप, एक तरह की छोटी नौका (दे ५, ७)।

तरिउ वि [तरीतृ] तैरनेवाला (विसे १०२७)।

तरिउ देखो **तर** = तॄ।

तरिया स्त्री [दे] दूध आदि का सार, मलाई (प्रभा ३३)।

तरिहि अ [तर्हि] तो, तब (सुर १, १३२; ११, ७१)।

तरी स्त्री [तरी] नौका, डोंगी (सुवा १११; दे ६, ११०; प्रासू १४६)।

तरु पुं [तरु] वृक्ष, पेड़, गाछ (जी १४; प्रासू २६)।

तरुण वि [तरुण] जवान, मध्य वयवाला (पउम ५, १६८)।

तरुणग, **तरुणय** वि [तरुणक] बालक, किशोर (सूअ १, ३, ४)। २ नवीन, नया (भग १५)। स्त्री. °णिगा, °णिया (आचा २, १)।

तरुणरहस पुंन [दे] रोग, बीमारी (ओघ १३६)।

तरुणिम पुंस्त्री [तरुणिमन्] यौवन, जवानी (कप्प)।

तरुणी स्त्री [तरुणी] युवति स्त्री, जवान स्त्री (गउड; स्वप्न ८२; महा)।

तल सक [तल्] तलना, भूजना, तेल आदि में भूनना। तलेज्जा (पि ४६०)। वकृ. **तलंत** (विपा १, ३)। हेकृ. **तलिज्जिउं** (स २५८)।

तल न [दे] १ शय्या, बिछौना (दे ५, १६; षड्)। २ पुं. ग्रामेश, गाँव का मुखिया (दे ५, १६)।

तल पुं [तल] १ वृक्ष-विशेष, ताड़ का पेड़ (गाया १, १ टी—पत्र ४३; पउम ५३, ७६)। २ न. स्वरूप; 'धरणितलंसि' (कप्प), 'कासवितलम्मि' (कुमा)। ३ हथेली (जं १)। ४ तला, भूमिका; 'सत्ततले पासाए' (सुर २, ८१)। ५ अधोभाग, नीचे (णाया १, १)। ६ हाथ, हस्त (कप्प, पराह २, ५)। ७ मध्य खण्ड (ठा ८)। ८ तलवा, पानी के नीचे का भाग या सतह (पराह १,३)। °ताल पुंन [°ताल] १ हस्त-ताल, ताली। २ वाद्य-विशेष (कप्प)। °प्पहार पुं [°प्रहार] तमाचा, चपेटा (दे)। °भंगय न [°भङ्गक] हाथ का आभूषण-विशेष (औप)। °वट्ट न [°पट्ट] बिछौने की चद्दर (वज्जा १०४)। °वट्ट न [°पत्र] ताड़ वृक्ष का पत्ता (वज्जा १०४)।

तल पुंन [तल] १ वाद्य-विशेष (राय ४६)। २ हथेली; 'अयमाउसो करतले' (सूअ २, १, १६)। ताल वृक्ष की पत्ती (सूअ १, ५, १२)। °वर पुं [°वर] राजा ने प्रसन्न होकर जिसको रत्न-जटित सोने का पट्टा दिया हो वह (अणु २२)।

तलअंट सक [भ्रम्] भ्रमण करना, घूमना, फिरना। तलअंटइ (हे ४, १६१)।

तलआगत्ति पुं [दे] कूप, इनारा (दे ५, ८)।

तलओडा स्त्री [दे] वनस्पति-विशेष (पराण १)।

तलण न [तलन] तलना, भर्जन (पराह १, १)।

तलप्प अक [तप्] तपना, गरम होना। तलप्पइ (पिंग)।

तलप्फल पुं [दे] शालि, व्रीहि, धान (दे ५,७)।

तलवत्त पुं [दे] १ कान का आभूषण-विशेष (दे ५, २१; पाअ)। २ वरांग, उत्तमांग (दे ५, २१)।

तलवर पुं [दे. तलवर] नगर-रक्षक, कोतवाल (गाया १, १; सुपा ३; ७३; औप; महा; ठा ६; कप्प; राय; अणु; उवा)।

तलविंट, **तलवेंट**, **तलवोंट** न [तालवृन्त] व्यजन, पंखा (हे १, ६७; प्राप्र)।

तलसारिअ वि [दे] १ गालित। २ मुग्ध, मूर्ख (दे ५, ६)।

तलहट्ट सक [सिच्] सींचना। तलहट्टइ, तलहट्टए (सुपा ३६३)। वकृ. **तलहट्टंत** (सुपा ३६३)।

तलहट्टिया स्त्री [दे] पर्वत का मूल, पहाड़ के नीचे की भूमि; तलहटी, तराई; गुजराती में—'तळेटी' (सम्मत्त १३७)।

तलाई स्त्री [तड़ागिका] छोटा तालाब (कुमा)।

तलाग } न [तड़ाग] तालाब, सरोवर (ग्रौप;
तलाय } हे १, २०३; प्राप्र; गाया १, ८; उव)।

तलार पुं [दे] नगर-रक्षक, कोतवाल (दे ५, ३, सुपा २३३; ३६१; षड्; कुप्र १५५)।

तलारक्ख पुं [दे. तलारक्ष] ऊपर देखो (श्रा १२)।

तलाव देखो **तलाग** (उवा; पि २३१)।

तलिअ वि [तलित] भूना हुआ, तला हुआ (विपा १, २)।

तलिआ } न [दे] उपानह, जूता, (ग्रोघ
तलिगा } ३६; ६८; बृह १)।

तलिण वि [तलिन] १ प्रतल, सूक्ष्म, बारीक (पराह १, ४; ग्रौप; दे ५, ६)। २ तुच्छ, क्षुद्र (से १०, ७)। ३ दुर्बल (पाग्र)।

तलिम पुंन [दे] १ शय्या, बिछौना (दे ५, २०; पाग्र; गाया १, १६—पत्र २०१; २०२; गउड)। २ कुट्टिम, फरस-बन्द जमीन (दे ५, २०; पाग्र)। ३ घर के ऊपर की भूमि। ४ वास-भवन, शय्या-गृह। ५ भ्राष्ट्र, भूनने का भाजन—बरतन (दे ५, २०)।

तलिमा स्त्री [तलिमा] वाद्य-विशेष (विसे ७८ टी, गांदि टी)।

तलुण देखो **तरुण** (गाया १, १६; राय; वा १५)।

तलेर [दे] देखो **तलार** (भवि)।

तल्ल न [दे] १ पल्वल, छोटा तालाब (दे ५, १६)। २ तृण-विशेष, बरू (दे ५, १६; पराह २, ३)। ३ शय्या, बिछौना (दे ५, १६; षड्)।

तल्लक पुं [तल्लक] सुरा-विशेष (राज)।

तल्लड न [दे] शय्या, बिछौना (दे ५, २)।

तल्लिच्छ वि [दे] तत्पर, तल्लीन, (दे ५, ३; सुर १, १३; पाग्र)।

तल्लेस } वि [तल्लेश्य] उसी में जिसका
तल्लेस्स } ग्रध्यवसाय हो, तल्लीन, तदासक्त विपा १, २; राज)।

तल्लोविल्लि स्त्री [दे] तड़फड़ना तड़फना, व्याकुल होना; 'थोडइ जलि जिम मच्छलिया तल्लोविल्लि करंत' (कुप्र ८६)।

तव ग्रक [तप्] १ तपना, गरम होना। २ सक. तपश्चर्या करना। तवइ (हे १, १३१; गा २२४)। भूका. तविसु (भग)। वकृ. **तवमाण** (श्रा २७)।

तव सक [तापय्] गरम करना। तवेइ (भग)।

तव पुंन [तपस्] तपस्या, तपश्चर्या (सम ११; नव २६; प्रासू २८)। °**गच्छ** पुं [°गच्छ] जैन मुनियों की एक शाखा, गण-विशेष (संति १४)। °**गण** पुं [°गण] पूर्वोक्त ही अर्थ (द्र ७०)। °**चरण**, °**वरण** न [°चरण] १ तपश्चर्या, तपः-करण (सूत्र १, ५, १; उप पृ ३६०; ग्रभि १४७)। २ तप का फल, स्वर्ग का भोग (गाया १, ६)। °**चरणि** वि [°चरणिन्] तपस्या करनेवाला (ठा ५, ३)। देखो **तवो**°।

तव देखो **थव** (हे २, ४६; षड्)।

तव देखो **थुण**। तवइ (प्राकृ ६७)।

तवग्ग पुं [तवर्ग] 'त' से लेकर 'न' तक पाँच अक्षर। °**पविभत्ति** न [°प्रविभक्ति] नाट्य-विशेष (राय)।

तवण पुं [तपन] १ सूर्य सूरज (उप १०३१ टी; कुप्र २१५)। २ रावण का एक प्रधान सुभट (से १३, ८५)। ३ न. शिखर-विशेष (दीव)।

तवण पुं [तपन] तीसरी नरक-भूमि का एक नरक-स्थान (देवेन्द्र ८)। °**तणया** स्त्री [°तनया] तापी नदी (हम्मीर १५)।

तवणा स्त्री [तपना] ग्रातापना (सुपा ४१३)।

तवणिज्ज न [तपनीय] सुवर्ण, सोना (पराह १, ४; सुपा ३६)।

तवणिज्ज पुंन [तपनीय] एक देव-विमान (देवेन्द्र १३२)।

तवणी स्त्री [दे] १ भक्ष्य, भक्षण-योग्य कण आदि (दे ५, १; सुपा ५४८; वज्जा ६२)। २ धान्य को खेत से काटकर भक्षण योग्य बनाने की क्रिया (सुपा ५४६)। ३ तवा, पूग्रा आदि पकाने का पात्र (दे २, ५६)।

तवणीग्र देखो **तवणिज्ज** (सुपा ४८)।

तवमाण देखो **तव** = तप।

तवय वि [दे] व्यापृत, किसी कार्य में लगा हुआ (दे ५, २)।

तवय पुं [तपक] तवा, भूनने का भाजन (विपा १, ३; सुपा ११८; पाग्र)।

तवसि देखो **तवस्सि**; 'पयमित्तंपि न कप्पइ इत्तो तवसीए जं गंतुं' (धर्मवि ५३; १६)।

तवस्सि वि [तपस्विन्] १ तपस्या करनेवाला (सम ५१; उप ८३३ टी)। २ पुं. साधु, मुनि, ऋषि (स्वप्न १८)।

तविअ वि [तप्त] तपा हुआ, गरम (हे २, १०५; पाग्र)।

तविअ वि [तापित] १ गरम किया हुआ। २ संतापित; 'एयाए को न तविग्रो, जयम्मि लच्छीए सच्छंदं' (सुपा २०४; महा; पिंग)।

तविअ वि [तपित] तीसरी नरक-भूमि का एक नरक-स्थान (देवेन्द्र ८)।

तविआ स्त्री [तापिका] तवा का हाथा (दे १, १६३)।

तवु देखो **तउ** (पउम ११८, ८)।

तवो देखो **तओ** (रंभा)।

तवो° देखो **तव** = तपस्। °**कम्म** न [°कर्मन्] तपः-करण (सम ११)। °**धण** पुं [°धन] ऋषि, मुनि (प्राकृ)। °**धर** पुं [°धर] तपस्वी, मुनि (पउम २०, १६५; १०३, १०८)। °**वण** न [°वन] ऋषि का ग्राश्रम (उप ७४५; स्वप्न १६)।

तव्वणिय वि [दे] सौगत, बौद्ध, बुद्ध-दर्शन का ग्रनुयायी; 'तव्वणियाण वियं विसयसुह-कुसत्थभावणाघणियं' (विसे १०४१)।

तव्वन्निग वि [दे. तृतीयवर्णिक] तृतीय ग्राश्रम में स्थित (उप पृ २६८)।

तव्विह वि [तद्विध] उसी प्रकार का (भग)।

तस ग्रक [त्रस्] डरना, त्रास पाना। तसइ (हे ४, १६८)। कृ. **तसियव्व** (उप ३३६ टी)।

तस पुं [त्रस] १ स्पर्श-इन्द्रिय से अधिक इन्द्रियवाला जीव, द्वीन्द्रिय आदि प्राणी (जीव

१; जी २)। २ एक स्थान से दूसरे स्थान में जाने-आने की शक्तिवाला प्राणी (निचू १२)। °काइय पुं [°कायिक] जंगम प्राणी, द्वीन्द्रियादि जीव (पण्ह १, १)। °काय पुं [°काय] १ त्रस-समूह (ठा २, १)। २ जंगम प्राणी (आचा)। °णाम, °नाम न [°नामन्] कर्म-विशेष, जिसके प्रभाव से जीव त्रसकाय में उत्पन्न होता है (कम्म १; सम ६७)। °रेणु पुं [°रेणु] परिमाण-विशेष, बत्तीस हजार सात सौ अड़सठ परमाणुओं का एक परिमाण (अणु; पव २५४)। °वाइया स्त्री [°पादिका] त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष (जीव)।

तसण न [त्रसन] १ स्पन्दन, चलन, हिलन (राज)। २ पलायन (सूअ १, ७)।

तसनाडी स्त्री [त्रसनाडी] त्रस जीवों के रहने का प्रदेश, जो ऊपर-नीचे मिलाकर चौदह रज्जू परिमित है (पव १४३)।

तसर देखो टसर (कप्पू)।

तसिअ वि [दे] शुष्क, सूखा (दे ५, २)।

तसिअ वि [तृषित] तृषातुर, पिपासित, प्यासा हुआ (रयण ८४)।

तसिअ वि [त्रस्त] भीत, डरा हुआ (जीव ३; महा)।

तसियव्व देखो तस = त्रस्।

तसेयर वि [त्रसेतर] एकेन्द्रिय जीव, स्थावर प्राणी (सुपा १६८)।

तह अ [तथा] १ उसी तरह (कुमा; प्रासू १६; स्वप्न १०)। २ और, तथा (हे १, ६७)। ३ पाद-पूर्ति में प्रयुक्त किया जाता अव्यय (निचू १)। °कार पुं [°कार] 'तथा' शब्द उच्चारण (उत्त २६)। °णाण वि [°ज्ञान] प्रश्न के उत्तर को जाननेवाला (ठा ६)। २ न. सत्य ज्ञान (ठा १०)। °त्ति अ [इति] स्वीकार-द्योतक अव्यय—वैसा ही (जैसा आप फरमाते हैं) (णाया १, १)। °य अ [°च] १ उक्त अर्थ की दृढ़ता-सूचक अव्यय। २ समुच्चय-सूचक अव्यय (पंचा २)। °वि अ [°पि] तो भी (गउड)। °विह वि [°विध] उस प्रकार का (सुपा ४५६)। देखो तहा।

तह वि [तथ्य] तथ्य, सत्य, सच्चा (सूअ १, १३)।

तह पुं [तथ] आज्ञाकारक, दास, नौकर (ठा ४, २—पत्र २१३)।

तह, तहीय न [तथ्य] १ स्वभाव, स्वरूप (सूअनि १२२)। २ सत्य वचन (सूअ १, १४, २१)।

तहं देखो तह = तथा (औप)।

तहरी स्त्री [दे] पङ्कवाली सुरा (दे ५, २)।

तहल्लिआ स्त्री [दे] गो-वाट, गौओं का बाड़ा, गोशाला (दे ५, ८)।

तहा देखो तह = तथा (कुमा; गउड; आचा; सुर ३, २७)। °गय पुं [°गत] १ मुक्त आत्मा। २ सर्वज्ञ (आचा)। °भूय वि [°भूत] उस प्रकार का (पउम २२, ६५)। °रूव वि [°रूप] उस प्रकार का (भग १५)। °वि वि [°विद्] १ निपुण, चतुर २ पुं. सर्वज्ञ (सूअ १, ४, १)। °हि अ [°हि] वह इस प्रकार (उप ६८६ टी)।

तहि देखो तह = तथा (गा ८७८; उत्त ६)।

तहिं, तहिं अ [तत्र] वहाँ, उसमें (गा २०६; प्राप्र; गा २३४, ऊरु १०५)।

तहिय वि [तथ्य] सत्य, सच्चा, वास्तविक (णाया १, १२)।

तहियं अ [तत्र] वहाँ, उसमें (विसे २७८)।

तहेय, तहेव अ [तथैव] उसी तरह, उसी प्रकार (कुमा; षड्)।

ता अ [तद्] उससे, उस कारण से (हे ४, २७८; गा ४६; ६७; उव)।

ता देखो ताव = तावत् (हे १, २७१; गा १४१; २०१)।

ता अ [तदा] तब, उस समय (रंभा; कुमा; सण)।

ता अ [तर्हि] तो, तब (रंभा; कुमा)।

ता स्त्री [ता] लक्ष्मी (सुर १६, ४८)।

ता° स [तद्] वह। °गंध पुं [°गन्ध] १ उसका गन्ध। २ उसके गन्ध के समान गन्ध (पण्ण १७)। °फास पुं [°स्पर्श] १ उसका स्पर्श। २ वैसा स्पर्श (पण्ण १७)। °रस पुं [°रस] १ वह स्पर्श। २ वैसा स्पर्श (पण्ण १७)। °रूव न [°रूप] १ वह रूप। २ वैसा रूप (पण्ण १७—पत्र ५२२)।

ताअ देखो ताव = ताप (गा ७६७; ८१४; हेका ५०)।

ताअ पुं [तात] १ तात, पिता, बाप (सुर १, १२३; उत्त १४)। २ पुत्र, वत्स (सूअ १, ३, २)।

ताअ सक [त्रै] रक्षण करना। कृ. तायव्व (आ १२)।

ताअप्प न [तादात्म्य] तद्रूपता, अभेद, अभिन्नता (प्राकृ २४)।

ताइ वि [त्यागिन्] त्याग करनेवाला (गा २३०)।

ताइ वि [तायिन्] रक्षक, परिपालक (उत्त ८)।

ताइ वि [तापिन्] ताप-युक्त (सूअ १, १५)।

ताइ वि [त्रायिन्] रक्षक, रक्षण करनेवाला (उत्त २१, २२)।

ताइ वि [तायिन्] उपकारी (सूअ १, २, २, १७)।

ताइ पुं [त्रायिन्] मुनि, साधु (दसनि २, ६)।

ताइअ वि [त्रात] रक्षित (उव)।

ताउं (अप) देखो ताव = तावत् (कुमा)।

ताठा (चूपै) देखो दाढा (हे ४, ३२५)।

ताड सक [ताडय्] १ ताड़न करना, पीटना। २ प्रेरणा करना, आघात करना। ३ गुणाकार करना। ताडइ (हे ४, २७)। भवि. ताडइस्सं (पि २४०)। वकृ. ताडिंत (काल)। कवकृ. ताडिज्जमाण, ताडीअंत, ताडीअमाण (सुपा २६; पि २४०, अभि १५१) हेकृ. ताडिउं (कप्पू)। कृ. ताडिअ (उत्त १६)।

ताड पुं [ताल] ताड़ का पेड़ (स २५६)।

ताडंक पुं [ताडङ्क] कान का आभूषण-विशेष, कुण्डल (दे ६, ६३; कप्पू; कुमा)।

ताडण न [ताडन] १ ताड़न, पीटना (उप ६८६ टी; गा ५४६)। २ प्रेरणा, आघात (से १२, ८३)।

ताडाविय वि [ताडित] पिटवाया गया (सुपा २८८)।

ताडिअ देखो ताड = ताडय्।

ताडिअ वि [ताडित] १ जिसका ताडन किया गया हो वह, पीटा हुआ (पाअ)। २

जिसका गुणाकार किया हो वह; 'इक्कासीई सा करणकारणागुमइताडिश्रा होइ' (श्रा ६)।
ताडिअय न [दे] रोदन, रोना (दे ५, १०)।
ताडिज्जमाण देखो ताड = ताडय्।
ताडी स्त्री [ताडी] वृक्ष-विशेष (गउड)।
ताडीअंत } देखो ताड = ताडय्
ताडीअमाण }
ताण न [त्राण] १ शरण, रक्षण कर्ता (सुपा ५७४)। २ रक्षण (सम ५१)।
ताण पुं [तान] संगीत-प्रसिद्ध स्वर-विशेष, 'ताणा एगूणपरणासं' (अणु)।
ताणव न [तानव] कृशता, दुर्बलता (किरात १५)।
ताणिअ वि [तानित] ताना हुआ (ती १५)।
ताद देखो ताअ = तात (प्राकृ १२)।
तादत्थ न [तादर्थ्य] तदर्थभाव, उसके लिए (श्रावक १२४, १२७)।
तादवत्थ न [तादवस्थ्य] स्वरूप का अपभ्रंश वही अवस्था, अभिन्नरूपता (धर्मसं ४०४; ४०५; ४१६)।
तादिस देखो तारिस (गा ७३८; प्रासू ३४)।
ताम देखो तम्म = तम्। तामइ (गा ८५३)।
ताम (अप) देखो ताव = तावत् (हे ४, ४०६; भवि)।
तामर वि [दे] रम्य, सुन्दर (दे ५, १०; पाअ)।
तामरस न [तामरस] कमल, पद्म (दे ५, १०; पाअ)।
तामरस न [दे] पानी में उत्पन्न होनेवाला पुष्प (दे ५; १०)।
तामलि पुं [तामलि] स्वनाम-ख्यात एक तापस (भग ३, १; श्रा ६)।
तामलित्ति स्त्री [ताम्रलिप्ति] एक प्राचीन नगरी, वंग देश की प्राचीन राजधानी (उप ६८८; भग ३, १; पराग १)।
तामलित्तिया स्त्री [ताम्रलिप्तिका] जैनमुनि-वंश की एक शाखा (कप्प)।
तामस न [तामस] १ अन्धकार। २ अन्धकार-समूह (चेइय ३२३)।
तामस वि [तामस] तमोगुणवाला (पउम ८, ५०; कुप्र ४२८)। °त्थ न [°ास्त्र] कृष्ण वर्ण का अस्त्र-विशेष (पउम ८, ५०)।

तामहि } (अप) देखो ताव = तावत् (षड्; **तामहिं** } भवि; पि २६१; हे ४, ४०६)।
तायण न [त्राण] रक्षण (धर्मवि १२८)।
तायत्तीसग पुं [त्रायस्त्रिंशक] गुरु-स्थानीय देव-जाति (ठा ३, १; कप्प)।
तायत्तीसा स्त्री [त्रयस्त्रिंशत्] १ संख्या-विशेष, तेत्तीस। २ तेत्तीस संख्यावाला, तेत्तीस; 'तायत्तीसा लोगपाला' (ठा; पि ४४७; कप्प)।
तायव्व देखो ताअ = त्रै।
तार पुं [तार] १ चौथी नरक का एक स्थान (देवेन्द्र १०)। २ शुद्ध मोती। ३ प्रणव, ओंकार। ४ मायाबीज, 'ह्रीं' अक्षर। ५ तरण, तैरना (हे १, १७७)।
तार वि [तार] १ निर्मल, स्वच्छ (से ६, ४२)। २ चमकता, देदीप्यमान (पाअ)। ३ अति ऊँचा (से ६, ४)। ४ अति ऊँचा स्वर (राय; मा ४६४)। ५ न. चाँदी (ती २)। ६ पुं. वानर-विशेष (से १, ३४)। °वई स्त्री [°वती] एक राज-कन्या (श्राचू ४)।
तारंग न [तारङ्ग] तरंग-समूह (से ६, ४२)।
तारग वि [तारक] तारनेवाला, पार उतारनेवाला (उप पृ ३२)। २ पुं. नृप-विशेष, द्वितीय प्रतिवासुदेव (पउम ५, १५६)। ३ सूर्य आदि नव ग्रह (ठा ६) देखो तारय।
तारगा स्त्री [तारका] १ नक्षत्र (सूअ २, ६)। २ एक इन्द्राणी, पूर्णभद्र-नामक इन्द्र की एक पटरानी (ठा ४, १)। देखो तारया।
तारण न [तारण] १ पार उतारना (सुपा २५७)। २ वि. तारनेवाला (सुपा ४१७)।
तारत्तर पुं [दे] मुहूर्त (दे ५, १०)।
तारय देखो तारग (सम १; प्रासू १०१)। ४ न. छन्द-विशेष (पिंग)।
तारया देखो तारगा। ३ आँख की तारा (गउड; गा १४८; २५४)।
तारा स्त्री [तारा] १ आँख की पुतली (गा ४११; ४३५)। २ नक्षत्र (ठा ५, १; से १, ३४)। ३ सुग्रीव की स्त्री (से १, ३४)। ४ सुभूम चक्रवर्त्ती की माता (सम १५२)। ५ नदी-विशेष (ठा १०)। ६ बौद्धों की शासन-देवी (कुप्र ४४२)। °उर न [°पुर] तारंगा-स्थान (कुप्र ४४२)। °चंद पुं [°चन्द्र] एक राज-कुमार (धम्म ७२ टी)। °तणय पुं [°तनय] वानर-विशेष, अङ्गद (से १३, ६७)। °पह पुं [°पथ] आकाश, गगन (अणु)। °पहु पुं [°प्रभु] चन्द्रमा (उप ३२० टी)। °मेत्ती स्त्री [°मैत्री] निःस्वार्थ मित्रता (कप्पू)। °यण न [°यन] कनीनिका का चलना, आँख की पुतली का हिलन; 'भग्गं तारायणं नियइ' (सुपा १८७)। °वइ पुं [°पति] चन्द्रमा (गउड)।
तारि वि [तारिन्] तारनेवाला, तारक (सम्मत्त २३०)।
तारिम वि [तारिम] तरणीय, तैरने योग्य (भास ६३)।
तारिय वि [तारित] पार उतारा हुआ (भवि)।
तारिया स्त्री [तारिका] तारा के आकार की एक प्रकार की विभूषा, टिकली, टिकिया; 'विचित्तलंबंततारियाइन्नं' (सुर ३, ७१)।
तारिस वि [तादृश] वैसा, उस तरह का (कप्प; प्राप्र; कुमा)। स्त्री. °सी (प्रासू १२५)।
तारी स्त्री [तारी] तारकजातीय देवी (पव १६, ४)।
तारुअ वि [तारक] तारनेवाला (चेइय ५२१)।
तारुण्ण } न [तारुण्य] तरुणता, यौवन **तारुन्न** } (गउड; कप्पू; कुमा; सुपा ३१६)।
ताल देखो ताड = ताडय्। तालेइ (पि २४०)। वकृ. तालेमाण (विपा १, १)। कवकृ. तालिज्जंत, तालिज्जमाण (पउम ११८, १०; पि २४०)।
ताल सक [तालय्] ताला लगाना, बन्द करना। संकृ. तालेवि (सुपा ४२८)।
ताल पुं [ताल] १ वृक्ष-विशेष (पणह १, ४)। २ वाद्य-विशेष, कंसिका (पणह २, ५)। ३ ताली (दस २)। ४ चपेटा, तमाचा (से ६, ५६)। ५ वाद्य-समूह (राज)। ६ आजीवक मत का एक उपासक (भग ८, ५)। ७ न. ताला, द्वार बन्द करने की कल (उप ३३३)। ८ ताल वृक्ष का फल (दे ६, १०२)। °उड न [°पुट] तत्काल प्राण-नाशक विष-विशेष (णाया १, १४; सुपा १३७; ३१६)। °जंघ पुं [°जङ्घ] १ नृप-विशेष (धर्म १)। २ वि.

ताल की तरह लम्बी जाँघवाला (णाया १, ८)। °ज्झय पुं [°ध्वज] १ बलदेव (आवम)। २ नृप-विशेष (दंस १)। ३ शत्रुञ्जय पहाड़ (ती १)। °पलंब पुं [°प्रलम्ब] गोशालक का एक उपासक (भग ८; ५)। °पिसाय पुं [°पिशाच] दीर्घ-काय राक्षस (पण्ण १)। °पुड देखो °उड (श्रा १२)। °यर पुं [°चर] एक मनुष्य-जाति, चारण (ओघ ७६६)। °विंट, °विंत, °वेंट, °वोंट न [°वृन्त] व्यजन, पंखा (पि ५३, नाट—वेणी १०४; हे १, ६७; प्राप्र)। °संवुड पुं [°संपुट] ताल के पत्रों का संपुट, ताल-पत्र-संचय (सूअ १, ५, १)। °सम वि [°सम] ताल के अनुसार स्वर, स्वर-विशेष (ठा ७)।

तालंक पुं [ताडङ्क] १ कुण्डल, कान का आभूषण-विशेष। २ छन्द-विशेष (पिंग)।

तालंकि पुंस्त्री [तालङ्किन्] छन्द-विशेष। स्त्री. °णी (पिंग)।

तालग न [तालक] ताला, द्वार बन्द करने का यन्त्र (उप ३३९ टी)।

तालण देखो ताडण (औप)।

तालणा स्त्री [ताडना] चपेटा आदि का प्रहार (पण्ह २, १; औप)।

तालप्फली स्त्री [दे] दासी, नौकरानी (दे ५, १)।

तालय देखो तालग (सुपा ४१४; कुप्र २५२)।

तालसम न [तालसम] गेय काव्य का एक भेद (दसनि २, २३)।

तालहल पुं [दे] शालि, व्रीहि (दे ५, ७)।

ताला अ [तदा] उस समय, 'ताला जाअंति गुणा, जाला ते सहिअएहिं घिप्पंति' (हे ३, ६५; काप्र ५२१)।

ताला स्त्री [दे] लाजा, खोई, धान का लावा (दे ५, १०)।

तालाचर पुं [तालचर] ताल (वाद्य) बजाने-वाला (निचू १५)।

तालाचर } पुं [तालाचर] १ प्रेक्षक-विशेष,
तालायर } ताल देनेवाला प्रेक्षक (णाया १, १)। २ नट, नर्तक आदि मनुष्य-जाति (बृह ३)।

तालिअ वि [ताडित] आहत, पीटा हुआ (णाया १, ५)।

तालिअंट सक [भ्रमय्] घुमाना, फिराना। तालिअंटइ (हे ४, ३०)।

तालिअंट न [तालवृन्त] व्यजन, पंखा (स ३०८)।

तालिअंटिर वि [भ्रमयितृ] घुमानेवाला (कुमा)।

तालिज्जंत देखो ताल = ताडय्।

तालिस देखो तारिस (उत्त ५, ३१)।

ताली स्त्री [ताली] १ वृक्ष-विशेष (चारु ६३)। २ छन्द-विशेष (पिंग)। °पत्त न [°पत्र] ताल-वृक्ष के पत्ता का बना हुआ पंखा (चारु ६३)।

तालु } न [तालु, °क] तालु, मुँह के अन्दर
तालुअ } का ऊपरी भाग, तलुआ (सत्त ४९; णाया १, १६)।

तालुग्घाडणी स्त्री [तालोद्घाटनी] विद्या-विशेष, ताला खोलने की विद्या (वसु)।

तालुर पुं [दे] १ फेन, फीण। २ कपित्थ वृक्ष, कैथ का पेड़ (दे ५, २१)। ३ पानी का आवर्त्त (दे ५, २१; गा ३७; पाअ)। ४ पुं. पुष्प का सत्व (विक्र ३२)।

तालेवि देखो ताल = तालय्।

ताव सक [तापय्] १ तपाना, गरम करना। २ संताप करना, दुःख उपजाना। तावेंति (गा ८५०)। कर्म. ताविज्जंति (गा ७)। कृ. तावणिज्ज (भग १५)।

ताव पुं [ताप] १ गरमी, ताप (सुपा ३८६; कप्पू)। २ संताप, दुःख (श्राव ४)। ३ सूर्य, रवि। °दिसा स्त्री [°दिश्] सूर्य-तापित दिशा (राज)।

ताव अ [तावत्] इन अर्थों का सूचक अव्यय। १ तबतक (पउम ६८, ५०)। २ प्रस्तुत अर्थ (आवम)। ३ अवधारण, निश्चय। ४ अवधि, हद। ५ पक्षान्तर। ६ प्रशंसा। ७ वाक्य-भूषा। ८ मान। ९ साकल्य, संपूर्णता। १० तब, उस समय (हे १, ११)।

तावअ वि [तावक] त्वदीय, तुम्हारा (अच्चु ५३)।

तावइअ वि [तावत्] उतना (सम १४४; भग)।

तावं देखो ताव = तावत् (भग)।

तावँ } (अप) देखो ताव = तावत्
तावँहिं } (कुमा)।

तावण पुं [तापन] चौथी नरकभूमि का एक नरकस्थान (देवेन्द्र ८)। २ वि. तपानेवाला (त्रि ९७)।

तावण न [तापन] १ गरम करना, तपाना (निचू १)। २ पुं. इक्ष्वाकु वंश का एक राजा (पउम ५, ५)।

तावणिज्ज देखो ताव = तापय्।

तावत्तीस }
तावत्तीसग } देखो तायत्तीसय (औप,
तावत्तीसय } पि ४४५; ४३८; काल)।

तावत्तीसा देखो तायत्तीसा (पि ४३८)।

तावस पुं [तापस] १ तपस्वी, योगी, संन्यासि-विशेष (औप)। २ एक जैनमुनि (कप्प)। °गेह न [°गेह] तापसों का मठ (पाअ)।

तावसा स्त्री [तापसा] जैन मुनियों की एक शाखा (कप्प)।

तावसी स्त्री [तापसी] तपस्विनी, योगिनी (गउड)।

ताविअ वि [तापित] तपाया हुआ, गरम किया हुआ (गा ५३; विपा १, ३; सुर ३, २२०)।

ताविआ स्त्री [तापिका] तवा, पूआ आदि पकाने का पात्र (दे २, ५९)। २ कड़ाही, छोटा कड़ाह (आवम)।

ताविच्छ पुंन [तापिच्छ] वृक्ष-विशेष, तमाल का पेड़ (कुमा; दे १, ३७; सुपा ५८)।

तावी स्त्री [तापी] नदी-विशेष (पउम ३५, १; गा २३९)।

तास पुं [त्रास] १ भय, डर (उप पृ ३५)। २ उद्वेग, संताप (पण्ह १, १)।

तासण वि [त्रासन] त्रास उपजानेवाला (पण्ह १, १)।

तासि वि [त्रासिन्] १ त्रास-युक्त, त्रस्त। २ त्रास-जनक (ठा ४, २; कप्पू)।

तासिअ वि [त्रासित] जिसको त्रास उप-जाया गया हो वह (भवि)।

ताहे अ [तदा] उस समय, तब (हे ३, ६५)।

ति अ [त्रिः] तीन बार (ओघ ५४२)।

ति देखो तइअ = तृतीय (कम्म २, १६)। °**भाग**, °**भाय**, °**हाअ** पुं [°भाग] तृतीय भाग, तीसरा हिस्सा (कम्म २; णाया १, १६—पत्र २१८; कप्पू)।

ति देखो थी; 'उल्लुलु गायंति भुणि सभत्तिपुत्ता तिओ चच्चरियाउदिति' (रंभा)।

ति त्रि.ब. [त्रि] तीन, दो और एक (नव ४; महा)। °**अणुअ** न [°अणुक] तीन परमाणुओं से बना हुआ द्रव्य; 'अणुअतएहि आरद्धदव्वे तिअणुअं ति निद्देसो' (सम्म १३६)। °**उण** वि [°गुण] १ तीनगुना। २ सत्व रजस् और तमस् गुणवाला (अच्चु ३०)। °**उणिय** वि [°गुणित] तीनगुना (भवि)। °**उत्तरसय** वि [°उत्तरशततम] एक सौ तीसरा, १०३ वाँ (पउम १०३, १७६)। °**उल** वि [°तुल] १ तीन को जीतनेवाला। २ तीन को तौलनेवाला (णाया १, :—पत्र ६४)। °**ओय** न [°ओजस्] विषम राशि-विशेष (ठा ४, ३)। °**कंड**, °**कंडग** वि [°काण्ड, °क] तीन काण्डवाला, तीन भागवाला (कप्पू; सूअ १, ६)। °**कडुअ** न [°कटुक] सोंठ, मरीच और पीपल (अणु)। °**करण** देखो °गरण (राज)। °**काल** न [°काल] भूत, भविष्य और वर्त्तमान काल (भग; सुपा ८८)। °**काल** देखो °काल (सुपा १६६)। °**खंड** वि [°खण्ड] तीन खण्डवाला (उप ६८६ टी)। °**खंडाहिवइ** पुं [°खण्डाधिपति] अर्ध चक्रवर्त्ती राजा, वासुदेव (पउम ६१, २६)। °**गडु**, °**गडुअ** देखो °कडुअ (स २५८; २६३)। °**गरण** न [°करण] मन, वचन और काया (द्र २०)। °**गुण** देखो °उण (अणु)। °**गुत्त** वि [°गुप्त] मनोगुप्ति आदि तीन गुप्तिवाला, संयमी (सं ८)। °**गोण** वि [°कोण] तीन कोनेवाला (राज)। °**चत्ता** स्त्री [°चत्वारिंशत्] तेतालीस (कम्म ४, ५५)। °**जय** न [°जगत्] स्वर्ग, मर्त्य और पाताल लोक (ति १)। °**णयण** पुं [°नयन] महादेव, शिव (से १५, ५८; सुपा १३८; ५६६; गउड)। °**तुल** देखो °उल (णाया १, १ टी—पत्र ६७)। °**त्तिस** (अप) देखो °त्तीस। °**त्तीस** स्त्रीन [त्रयस्त्रिंशत्] १ संख्या-विशेष, ३३। २ तेतीस संख्यावाला, तेतीस (कप्प; जी ३६; सुर १२, १३६; दं २७)। °**दंड** न [°दण्ड] १ हथियार रखने का एक उपकरण (महा)। २ तीन दण्ड (औप)। °**दंडि** पुं [°दण्डिन्] संन्यासी, सांख्य मत का अनुयायी साधु (उप १३६ टी; सुपा ४३६ महा)। °**नवइ** स्त्री [°नवति] १ संख्या विशेष, तिरानबे। २ तिरानबे संख्यावाला (कम्म १, ३१)। °**पंच** त्रि.ब. [°पञ्चन्] पंद्रह (ओघ १४)। °**पंचासइम** वि [°पञ्चाश] त्रिपनवाँ (पउम ५३, १५०)। °**पह** न [°पथ] जहाँ तीन रास्ते एकत्रित होते हों वह स्थान (राज)। °**पायण** न [°पातन] १ शरीर, इन्द्रिय और प्राण इन तीनों का नाश। २ मन, वचन और काया का विनाश (पिंड)। °**पुंड** न [°पुण्ड्र] तिलक-विशेष (स ६)। °**पुर** पुं [°पुर] १ दानव-विशेष। २ न. तीन नगर (राज)। °**पुरा** स्त्री [°पुरा] विद्या-विशेष (सुपा ३६७)। °**भंगी** स्त्री [°भङ्गी] छन्द-विशेष (पिंग)। °**महुर** न [°मधुर] घी, शक्कर और मधु (अणु)। °**मासिआ** स्त्री [त्रैमासिकी] जिसकी अवधि तीन मास की है ऐसी एक प्रतिमा, व्रत-विशेष (सम २१)। °**मुह** वि [°मुख] १ तीन मुखवाला (राज)। २ पुं. भगवान् संभवनाथजी का शासन-देव (संति ७)। °**रत्त** न [°रात्र] तीन रात (स ३४२); 'धम्मपरस्स मुहुत्तोवि दुल्लहो किंपुण तिरत्तं' (कुप्र ११८)। °**रासि** न [°राशि] जीव, अजीव और नोजीव रूप तीन राशियाँ (राज)। °**लोअ** न [°लोकी] स्वर्ग, मर्त्य और पाताल लोक (कुमा; प्रासू ८६; सं १)। °**लोअण** पुं [°लोचन] महादेव, शिव (श्रा २८; पउम ५, १२२; पिंग)। °**लोअपुज्ज** पुं [°लोकपूज्य] धातकीषण्ड के विदेह में उत्पन्न एक जिनदेव (पउम ७५, ३१)। °**लोई** स्त्री [°लोकी] देखो °लोअ (गउड; भत्त १५२)। °**लोग** देखो °लोअ (उप पृ ३)। °**वई** स्त्री [°पदी] १ तीन पदों का समूह। २ भूमि में तीन बार पाँव का न्यास (औप)। ३ गति-विशेष (अंत १६)। °**वग्ग** पुं [°वर्ग] १ धर्म, अर्थ और काम ये तीन पुरुषार्थ (ठा ४, ४—पत्र २८३; स ७०३; उप पृ २०७)। २ लोक, वेद और समय इन तीन का वर्ग। ३ सूत्र, अर्थ और उन दोनों का समूह (आचू १; आवम)। °**वण्ण** पुं [°पर्ण] पलाश वृक्ष (कुमा)। °**वरिस** वि [°वर्ष] तीन वर्ष की अवस्थावाला (वव ३)। °**वलि** स्त्री [°वलि] चमड़ी की तीन रेखाएँ (कप्पू)। °**वलिय** वि [°वलिक] तीन रेखावाला (राय)। °**वली** देखो °वलि (गा २७८; औप)। °**वट्ठु** पुं [°पृष्ठ] भरतक्षेत्र के भावी नवम वासुदेव (सम १५४)। °**वय** न [°पद] तीन पाँववाला (दे ८, १)। °**वहआ** स्त्री [°पथगा] गंगा नदी (से ६, ८; अच्चु ३)। °**वायणा** स्त्री [°पातना] देखो °पायण (पण्ह १, १)। °**विट्ठु**, °**विट्‌ठु** पुं [°पृष्ठ, °विष्णु] भारतक्षेत्र में उत्पन्न प्रथम अर्ध-चक्रवर्त्ती राजा का नाम (सम ८८; पउम ५, १५५)। °**विह** वि [°विध] तीन प्रकार का (उवा; जी २०; नव ३)। °**विहार** पुं [°विहार] राजा कुमारपाल का बनवाया हुआ पाटण का एक जैन मन्दिर (कुप्र १४४)। °**संकु** पुं [°शङ्कु] सूर्यवंशीय एक राजा (अभि ८२)। °**संझ** न [°सन्ध्य] प्रभात, मध्याह्न और सायंकाल का समय (सुर ११, १०६)। °**सट्ठ** वि [°षष्ट] तिरसठवाँ, ६३ वाँ (पउम ६३, ७३)। °**सट्ठि** स्त्री [°षष्टि] तिरसठ, ६३ (भवि)। °**सत्त** त्रि.ब. [°सप्तन्] एक्कीस (श्रा ६)। °**सत्तखुत्तो** अ [°सप्तकृत्वस्] एक्कीस बार (णाया १, ६; सुपा ४४६)। °**समइय** वि [°सामयिक] तीन समय में उत्पन्न होनेवाला, तीन समय की अवधिवाला (ठा ३, ४)। °**सरय** न [°सरक] तीन सरा या लड़ीवाला हार (णाया १, १; औप; महा)। २ वाद्य-विशेष (पउम ६६, ४४)। °**सरा** स्त्री [°सरा] मच्छली पकड़ने का जाल-विशेष (विपा १, ८)। °**सरिय** न [°सरिक] १ तीन सरा या लड़ी वाला हार (कप्प)। २ वाद्य-विशेष (पउम ११३, ११)। ३ वि. वाद्य-विशेष-संबन्धी (पउम १०२, १२३)। °**सीस** पुं [°शीर्ष] देव-विशेष (दीव)। °**सूल** न [°शूल] शस्त्र-विशेष (पउम

१२,३४; स ६६६)। °सूलपाणि पुं [°शूलपाणि] १ महादेव, शिव। २ त्रिशूल का हाथ में रखनेवाला सुभट (पउम ५६, ३५)। °सूलिया स्त्री [°शूलिका] छोटा त्रिशूल (सूत्र १, ५, १)। °हुत्तर वि [°सप्तत] तिहत्तरवाँ, ७३ वाँ (पउम ७३, २६)। °हा अ [°धा] तीन प्रकार से (पि ४५१; अणु)। °हुअण, °हुण, °हुवण न [°भुवन] १ तीन जगत्, स्वर्ग, मर्त्य और पाताल लोक (कुमा; सुर १, ८; प्रासू ४६; अच्चु १६)। २ पुं. राजा कुमारपाल के पिता का नाम (कुप्र १४४)। °हुअणपाल पुं [°भुवनपाल] राजा कुमारपाल का पिता (कुप्र १४४)। °हुअणालंकार पुं [°भुवनालंकार] रावण के पट्टहस्ती का नाम (पउम ८१, १२२)। °हुणविहार पुं [°भुवनविहार] पाटण (गुजरात) में राजा कुमारपाल का बनवाया हुआ एक जैन मन्दिर (कुप्र १४४)। देखो ते°।

°ति देखो इअ = इति (कुमा; कम्म २, १२; २३)।

तिअ (अप) अक [तिम्, स्तिम्] १ आर्द्र होना। २ सक. आर्द्र करना। तिअइ (प्राकृ १२०)।

तिअ न [त्रिक] १ तीन का समुदाय (श्रा १; उप ७२८ टी)। २ वह जगह जहाँ तीन रास्ते मिलते हों (सुर १, ६३)। °संजअ पुं [°संयत] एक राजर्षि (पउम ५, ५१)। देखो तिग।

तिअ वि [त्रिज] तीन से उत्पन्न होनेवाला (राज)।

तिअंकर पुं [त्रिकंकर] स्वनाम-ख्यात एक जैनमुनि (राज)।

तिअग न [त्रिकक] तीन का समुदाय (विसे २६४३)।

तिअडा स्त्री [त्रिजटा] स्वनाम-ख्यात एक राक्षसी (से ११, ८७)।

तिअभंगी स्त्री [त्रिभङ्गी] छन्द-विशेष (पिंग)।

तिअय न [त्रितय] तीन का समूह (विसे १४३२)।

तिअलुक्क, तिअलोय न [त्रैलोक्य] तीन जगत्—स्वर्ग, मर्त्य और पाताल लोक (धर्म ६०; लहुअ ६)।

तिअस पुं [त्रिदश] देव, देवता (कुमा; सुर १, ६)। °गअ पुं [°गज] ऐरावत या ऐरावण हाथी, इन्द्र का हाथी (से ६, ६१)। °नाह पुं [°नाथ] इन्द्र (उप ६८६ टी; सुपा ४४)। °पहु पुं [°प्रभु] इन्द्र, देव-नायक (सुपा ४७; १७६)। °रिसि पुं [°ऋषि] नारद मुनि (कुप्र २७३)। °लोअ पुं [°लोक] स्वर्ग (उप १०१६)। °विलया स्त्री [°वनिता] देवी, स्त्री देवता (सुपा २६७)। °सरि स्त्री [°सरित्] गंगा नदी (कुप्र)। °सेल पुं [°शैल] मेरु पर्वत (सुपा ४८)। °लय पुंन [°लय] स्वर्ग (कुप्र १६; उप ७२८ टी; सुर १, १७२)। °हिव पुं [°धिप] इन्द्र (सुपा ३४)। °हिवइ पुं [°धिपति] इन्द्र (सुपा ७६)।

तिअससूरि पुं [त्रिदशसूरि] बृहस्पति (सम्मत्त १२०)।

तिअसिंद पुं [त्रिदशेन्द्र] इन्द्र, देव-पति (वज्जा १५४)।

तिअसेंद देखो तिअसिंद (चेइय ६१०)।

तिअसीस पुं [त्रिदशेश] इन्द्र, देव-नायक (हे १, १०)।

तिआमा स्त्री [त्रियामा] रात्रि, रात (अच्चु ४६)।

तिइक्ख सक [तितिक्ष्] सहन करना। तिइक्खए (आचा)। वकृ. तिइक्खमाण (आचा)।

तिइक्खा स्त्री [तितिक्षा] क्षमा, सहिष्णुता (आचा)।

तिइज्ज, तिइय वि [तृतीय] तीसरा (पि ४४६; संक्षि २०)।

तिउक्खर न [त्रिपुष्कर] वाद्य-विशेष (अजि ३१)।

तिउट्ट सक [त्रोटय्] १ तोड़ना। २ परित्याग करना। तिउट्टिज्जा (सूत्र १, १, १, १)।

तिउट्ट अक [त्रुट्] १ टूटना। २ मुक्त होना; 'सव्वदुक्खा तिउट्टइ' (सूत्र १, १५, ५)।

तिउट्ट वि [त्रुट्ट, त्रुटित] १ टूटा हुआ। २ अपसृत (आचा)।

तिउड पुं [दे] कलाप, मोर-पिच्छ (पाअ)।

तिउडग पुंन [त्रिपुटक] धान्य विशेष (दसनि ६, ८; पव १५६)।

तिउडय न [दे] १ मालव देश में प्रसिद्ध धान्य-विशेष (श्रा १८)। २ लौंग, लवंग (श्रा पत्र ६६)।

तिउर न [त्रिपुर] एक विद्याधर-नगर (इक)।

तिउर पुं [त्रिपुर] असुर-विशेष (त्रि ६४)। °णाह पुं [°नाथ] वही (त्रि ८७)।

तिउरा स्त्री [त्रिपुरी] नगरी-विशेष, चेदि देश की राजधानी (कुमा)।

तिउल वि [दे] मन, वचन और काया को पीड़ा पहुँचानेवाला, दुःख का हेतु (उत्त २)।

तिऊड देखो तिकूड (से ८, ८३; ११, ६८)।

तिंगिआ स्त्री [दे] कमल-रज (दे ५, १२)।

तिंगिच्छ देखो तिगिच्छ (इक)।

तिंगिच्छायण न [चिकित्सायन] नक्षत्र-गोत्र-विशेष (इक)।

तिंगिच्छि स्त्री [दे] कमल-रज, पद्म का रज, पराग (दे ५,१२; गउड; हे २,१७४; जं ४)।

तिंत वि [तीमित] भींजा हुआ (स ३३२; हे ४, ४३१)।

तिंतिण, तिंतिणिय वि [दे] बड़बड़ करनेवाला, बड़बड़ानेवाला, वाञ्छित लाभ न होने पर खेद से मन में जो आवे सो बोलनेवाला (वव १; ठा ६—पत्र ३७१; कस)।

तिंतिणी स्त्री [तिन्त्रिणी] १ चिंचा, इमली का पेड़ (अभि ७१)।

तिंतिणी स्त्री [दे] बड़बड़ाना (वव ३)।

तिंदुइणी स्त्री [तिन्दुकिनी] वृक्ष-विशेष (कुप्र १०२)।

तिंदुग, तिंदुय पुं [तिन्दुक] १ वृक्ष-विशेष, तेंदू का पेड़ (पाअ; पउम २०, ३७; सम १५२; पण्ण १७)। २ न. फल-विशेष (पण्ण १७)। ३ श्रावस्ती नगरी का एक उद्यान (विसे २३०७)।

तिंदुग, तिंदुय पुं [तिन्दुक] त्रीन्द्रिय जन्तु की एक जाति (उत्त ३६, १३६; सुख ३६, १३६)।

तिंदूस } पुंन [तिन्दूस, °क] १ वृक्ष विशेष
तिंदूसग } (पराग १)। २ कन्दुक, गेंद
तिंदूसय } (गाया १, १८; सुपा ५३)। ३ क्रीड़ा-विशेष (प्रावम)।

तिकल्ल न [त्रैकाल्य] तीनों काल का विषय (पराह २, २)।

तिकूड पुं [त्रिकूट] १ लंका के समीप का एक पहाड़, सुवेल पर्वत (पउम ५, १२७)। २ शीता महानदी के दक्षिण किनारे पर स्थित पर्वत-विशेष (ठा २, ३—पत्र ८०)। °सामिअ पुं [°स्वामिन्] सुवेल पर्वत का स्वामी, रावण (पउम ६५, २१)।

तिक्ख वि [तीक्ष्ण] १ तेज, तीखा, पैना (महा; गा ५०४)। २ सूक्ष्म। ३ चोखा, शुद्ध (कुमा)। ४ परुष, निष्ठुर (भग १६, ३)। ५ वेग-युक्त, क्षिप्र-कारी (जं २)। ६ क्रोधी, गरम प्रकृतिवाला। ७ तीता, कडुवा ८ उत्साही। ९ प्रालस्य-रहित। १० चतुर, दक्ष। ११ न. विष, जहर। १२ लोहा। १३ युद्ध, संग्राम। १४ शस्त्र, हथियार। १५ समुद्र का नोन। १६ यवक्षार। १७ श्वेत-कुष्ठ। १८ ज्योतिष-प्रसिद्ध तीक्ष्ण गण, यथा अश्लेषा, आर्द्रा, ज्येष्ठा और मूल नक्षत्र (हे २, ७५, ८२)।

तिक्ख सक [तीक्ष्णय्] तीक्ष्ण करना, तेज करना। तिक्खेइ (हे ४, ३४४)।

तिक्खण न [तीक्ष्णन] तेज-करण, उत्तेजन (कुमा)।

तिक्खाल सक [तीक्ष्णय्] तीक्ष्ण करना। कर्म. तिक्खालिज्जंति (सुर १२, १०६)।

तिक्खालिअ वि [दे] तीक्ष्ण किया हुआ (दे ५, १३; पाअ)।

तिक्खुत्तो अ [त्रिस्] तीन बार (विपा १, १; कप्प; औप; राय)।

तिग देखो तिअ = त्रिक (जी ३२; सुपा ३१; गाया १, १)। °वस्सि वि [°वशिन्] मन, वचन और शरीर को काबू में रखनेवाला; 'नरस्स तिगवस्सिस्स विसं तालउडं जहा' (सुपा १६७)।

तिगसंपुण्ण न [त्रिकसंपूर्ण] लगातार तीस दिन का उपवास (संबोध ५८)।

तिगिंछ पुं [तिगिञ्छ] द्रह-विशेष (इक)।

तिगिंछायण न [तिगिञ्छायन] गोत्र-विशेष (सुज्ज १०, १६ टी)।

तिगिंछि पुं [तिगिञ्छि] १ पर्वत-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७०; इक; सम; ३३)। २ द्रह-विशेष, निषध पर्वत पर स्थित एक ह्रद (ठा २, ३—पत्र ७२)।

तिगिच्छ सक [चिकित्स्] प्रतीकार करना, इलाज करना, दवा करना। तिगिच्छइ (उत्त १६, ७६; पि २१५; ५५५)।

तिगिच्छ पुं [चिकित्स] वैद्य, हकीम (वव ५)।

तिगिच्छ पुं [तिगिच्छ] १ द्रह-विशेष, निषध पर्वत पर स्थित एक द्रह (इक)। २ न. देवविमान-विशेष (सम ३८)।

तिगिच्छ न [चैकित्स] चिकित्सा-शास्त्र (सिरि ५६)।

तिगिच्छग } वि [चिकित्सक] प्रतीकार
तिगिच्छय } करनेवाला। २ पुं. वैद्य, हकीम (ठा ४, ४; पि २१५; ३२७)।

तिगिच्छण न [चिकित्सन] चिकित्सा (पिंड १८८)।

तिगिच्छय न [चैकित्स्य] चिकित्सा-कर्म (ठा ९—पत्र ४५१)।

तिगिच्छा स्त्री [चिकित्सा] प्रतीकार, इलाज, दवा (ठा ३, ४)। °सत्थ न [°शास्त्र] आयुर्वेद, वैद्यकशास्त्र (राज)।

तिगिच्छायण न [तिगिच्छायन] गोत्र-विशेष (सुज्ज १०, १६)।

तिगिच्छि देखो तिगिंछि (ठा २, ३—पत्र ८०; सम ८४; १०४; पि ३५४)।

तिगिच्छिय पुं [चैकित्सिक] वैद्य, चिकित्सक (पउम ८, १२४)।

तिग्ग वि [तिग्म] तीक्ष्ण, तेज (हे २, ६२)।

तिग्घ वि [त्रिघ्न] तिगुना, तीन-गुना (राज)।

तिचूड पुं [त्रिचूड] विद्याधर वंश का एक राजा (पउम ५, ४५)।

तिजड पुं [त्रिजट] १ विद्याधर वंश के एक राजा का नाम (पउम १०, २०)। २ राक्षस वंश का एक राजा (पउम ५, २६२)।

तिजामा } स्त्री [त्रियामा] रात्रि, रात (कुप्र
तिजामी } २४७; रंभा)।

तिज्ज वि [तार्य] तैरने योग्य (भास ९३)।

तिड्डु पुंस्त्री [दे] अन्न-नाश करनेवाला कीट, टिड्डी (जी १८)। स्त्री. °ड्डी (सुपा ५४६)।

तिड्डुव सक [ताडय्] ताड़न करना। तिड्डुवइ (प्राकृ ७६)।

तिण न [तृण] तृण, घास (सुपा २३३, अभि १७५; स १७६)। °सूय न [°शूक] तृण का अग्र भाग (भग १५)। °हत्थय पुं [°हस्तक] घास का पूला (भग ३, ३)।

तिणिस पुं [तिनिश] वृक्ष-विशेष, बेंत (ठा ४, २; कम्म १, १६; औप)।

तिणिस न [दे] मधु-पाल, मधपुड़ा (दे ५, ११; ३, १२)।

तिणिस वि [तैनिश] तिनिश-वृक्ष-संबंधी, बेंत का (राय ७४)।

तिणीकय वि [तृणीकृत] तृण-तुल्य माना हुआ (कुप्र ५)।

तिण्ण } अक [तिम्] १ आर्द्र होना।
तिण्णाअइ } २ सक. आर्द्र करना। तिण्णाअइ (प्राकृ ७५)।

तिण्ण वि [तीर्ण] १ पार पहुँचा हुआ (औप)। २ शक्त, समर्थ (से ११, २१)।

तिण्ण न [स्तैन्य] चोरी, 'तिलतिण्णतप्परो' (उप ५९७ टी)।

तिण्ण° देखो ति = त्रि। °भंग वि [°भङ्ग] त्रि-खण्ड, तीन खण्डवाला (अभि २२४)। °विह वि [°विध] तीन प्रकार का (नाट—चैत ४३)।

तिण्णिअ पुं [तिन्निक] देखो तित्तिअ = तित्तिक (इक)।

तिण्ह देखो तिक्ख (हे २, ७५; ८२; पि ३१२)।

तिण्हा देखो तण्हा (राज; वज्जा ९०)।

तितउ पुं [तितउ] चालनी या चलनी, आखा, आटा या मैदा छानने का पात्र (प्रामा)।

तितय देखो तिअय (वव १)।

तितिक्ख देखो तिइक्ख। तितिक्खइ, तितिक्खए (कप्प; पि ४५७)। वकृ. तितिक्खमाण (राज)।

तितिक्खण न [तितिक्षण] सहन करना (ठा ६)।

तितिक्खया देखो तितिक्खा (पिंड ६६६)।

तितिक्खा देखो तिइक्खा (सम ५७)।
तित्त वि [तृप्त] तृप्त, संतुष्ट, खुश (विसे २४०६; औप; दे १, १६; सुपा १६३)।
तित्त वि [तिक्त] १ तीता, कडुआ (गाया १६)। २ पुं. तीता रस (ठा १)।
तित्ति देखो तत्ति = दे (सिरि २७; संबोध ६)।
तित्ति स्त्री [तृप्ति] तृप्ति, संतोष (उप ५६७ टी; दे १, ११७; सुपा ३७५; प्रासू १४०)।
तित्ति [दे] तात्पर्य, सार (दे ५, ११; षड्)।
तित्तिअ वि [तावत्] उतना (हे २, १५६)।
तित्तिअ पुं [तित्तिक] १ म्लेच्छ देश-विशेष। २ उस देश में रहनेवाली म्लेच्छ जाति (पण्ह १, १)। देखो तिण्णिअ।
तित्तिर } **तित्तिर** } पुं [तित्तिरि] पक्षि-विशेष, तीतर या तित्तिर (हे १,६०; कुप्र ४२७)।
तित्तिरिअ वि [दे] स्नान से आर्द्र (दे ५, १२)।
तित्तिल वि [तावत्] उतना (षड्)।
तित्तिल्ल पुं [दे] द्वारपाल, प्रतीहार (गा ५५६)।
तित्तुअ वि [दे] गुरु, भारी (दे ५, १२)।
तित्तुल (अप) देखो तित्तिल (हे ४, ४३५)।
तित्थ पुं [त्रिस्थ] साधु, साध्वी, श्रावक और श्राविका का समुदाय, जैनसंघ (विसे १०३५)।
तित्थ पुं [त्र्यर्थ] ऊपर देखो (विसे १३०३)।
तित्थ न [तीर्थ] प्रथम गणधर (णंदि १३० टी)।
तित्थ न [तीर्थ] १ ऊपर देखो (विसे १०३३; ठा १)। २ दर्शन, मत (सम्म ८; विसे १०४०)। ३ यात्रा-स्थान, पवित्र जगह (धर्म २; राय; अभि १२७)। ४ प्रवचन, शासन, जिन-देव प्रणीत द्वादशाङ्गी (धर्म ३)। ५ पुंन. अवतार, घाट, नदी वगैरह में उतरने का रास्ता (विसे १०२६; विक्र ३२, प्रति ८२; प्रासू ६०)। °कर, °गर देखो °यर (सम ६७; कप्प; पउम २०, ८; हे १, १७७)। °जत्ता स्त्री [°यात्रा] तीर्थ-गमन (धर्म २)। °णाह, °नाह पुं [°नाथ] जिन-देव (स ७६१; उप पृ ३५०; सुपा ६५६; सार्ध ४३; सं ३५)। °यर वि [°कर] १ तीर्थ का प्रवर्त्तक। २ पुं. जिन-देव, जिन भगवान् (गाया १,८; हे १,१७७; सं १०१) स्त्री. °री (णंदि)। °यरणाम न [°करनामन्] कर्म-विशेष, जिसके उदय से जीव तीर्थंकर होता है (ठा ६)। °राय पुं [°राज] जिन-देव (उप पृ ४००)। °सिद्ध पुं [°सिद्ध] तीर्थ-प्रवृत्ति होने पर जो मुक्ति प्राप्त करे वह जीव (ठा १,१)। °ाहिनायग पुं [°ाधिनायक] जिनदेव (उप ९८६ टी)। °ाहिव पुं [°ाधिप] संघनायक, जिन-देव (उप १४२ टी)। °ाहिवइ पुं [°ाधिपति] जिनदेव, जिन भगवान् (पाअ)।
तित्थंकर पुं [तीर्थङ्कर] देखो तित्थ-यर (चेइय ६५१)।
तित्थि वि [तीर्थिन्] १ दार्शनिक, दर्शन-शास्त्र का विद्वान्। २ किसी दर्शन का अनुयायी (गु ३)।
तित्थिअ वि [तीर्थिक] ऊपर देखो (प्रबो ७४)।
तित्थीय वि [तीर्थीय] ऊपर देखो (विसे ३११६)।
तित्थेसर पुं [तीर्थेश्वर] जिन-देव, जिन भगवान् (सुपा ५१; ८६; २६०)।
तिदस देखो तिअस (नाट—विक्र २८)।
तिदिव न [त्रिदिव] स्वर्ग, देवलोक (सुपा १४२; कुप्र ३२०)।
तिध (अप) देखो तहा (हे ४, ४०१; कुमा)।
तिन्न देखो तिण्ण (सम १)।
तिन्न वि [दे] स्तीमित, आर्द्र, गीला (गाया १, ६)।
तिपन्न देखो ते-वण्ण (पंच ५, १८)।
तिप्प सक [तिप्] देना। तिप्पइ (पिंड २९७)।
तिप्प अक [तृप्] तृप्त होना। वकृ. तिप्पंत (पिंड ६४७)।
तिप्प सक [तर्पय्] तृप्त करना, हेकृ. 'न इमा जीवो सक्को तिप्पेउं कामभोगेहिं' (पच्च ५५)। कृ. तिप्पियव्व (पउम ११, ७३)।
तिप्प अक [तिप्] १ झरना, चूना। २ अफसोस करना। ३ रोना। ४ सक, सुख-च्युत करना। तिप्पामि, तिप्पंति (सूत्र २, १; २, २, ५५)। वकृ. तिप्पमाण (गाया १, १—पत्र ४७)। प्रयो. वकृ. तिप्पयंत (सम ५१)।
तिप्प पुंन [त्रेप] अपान आदि धोने की क्रिया, शौच (गच्छ २, ३२)।
तिप्प वि [तृप्त] संतुष्ट, खुश (हे १, १२८)।
तिप्पण न [तेपन] पीड़न, हैरानी (सूत्र २, २, ५५)।
तिप्पणया स्त्री [तेपनता] अश्रु-विमोचन, रोदन (ठा ४, १; औप)।
तिप्पाअ न [त्रिपाद्] तप-विशेष, नीवी (संबोध ५८)।
तिम (अप) देखो तहा (हे ४, ४०१; भवि; कम्म १)।
तिमि पुं [तिमि] मत्स्य की एक जाति (पण्ह १, १)।
तिमिंगिल पुं [दे] मत्स्य, मछली, तिमि (मत्स्य) को निगलनेवाला मत्स्य (दे ५,१३)।
तिमिंगिल पुं [तिमिङ्गिल] मत्स्य की एक जाति (दे ५, १३; से ७, ८; पण्ह १, १)। °गिल पुं [°गिल] एक प्रकार का महान् मत्स्य, बड़ी भारी मछली (सूत्र २, ६)।
तिमिंगिलि पुं [तिमिङ्गिलि] मत्स्य की एक जाति (पउम २२, ८३)।
तिमिगिल देखो तिमिंगिल = तिमिङ्गिल (उप ५१७)।
तिमिच्छय } **तिमिच्छाह** } पुं [दे] पथिक, मुसाफिर (दे ५, १३)।
तिमिण न [दे] गीला काष्ठ (दे ५, ११)।
तिमिर न [तिमिर] १ अन्धकार, अँधेरा (पड़ि; कप्प)। २ निकाचित कर्म (धर्म २)। ३ अल्प ज्ञान। ४ अज्ञान (आचू ५)। ५ पुं. वृक्ष-विशेष (स २०६)।
तिमिरिच्छ पुं [दे] वृक्ष-विशेष, करंज का पेड़ (दे ५, १३)।
तिमिरिस पुं [दे] वृक्ष-विशेष (पण्ण १—पत्र ३३)।
तिमिल स्त्रीन [तिमिल] वाद्य-विशेष (पउम ५७, २२)। स्त्री. °ला (राज)।
तिमिस पुं [तिमिष] एक प्रकार का पौधा, पेठा, कुम्हड़ा (कप्पू)।
तिमिसा } **तिमिस्सा** } स्त्री [तिमिस्रा] वैताढ्य पर्वत की एक गुफा (ठा २, ३; पण्ह १, १—पत्र १४)।

तिम्म अक [स्तीम्] भींजना, आर्द्र होना। वकृ. **तिम्ममाण** (पउम ३५, २०)।

तिम्म सक [तिम्] १ आर्द्र करना। २ अक. गीला होना। तिम्मइ (प्राकृ ७४)। संकृ. तिम्मेउं (पिंड ३५०)।

तिम्म देखो तिग्ग (हे २, ६२)।

तिम्मिअ वि [स्तीमित] आर्द्र, गीला, (दे १, ३७)।

तिया स्त्री [स्त्रिका] स्त्री, महिला; 'होही तुय तियवज्झा फुडं जओ णत्थिमे जीयं' (सुख ४, ६)।

तियाल देखो ते-आलीस (कम्म ६, ६०)।

तिरक्कर सक [तिरस्+कृ] तिरस्कार करना, अवधीरणा करना। कृ. **तिरक्करणीअ** (नाट)।

तिरक्कार पुं [तिरस्कार] तिरस्कार, अपमान, अवहेलना (प्रबो ४१; सुपा १४४)।

तिरक्करिणी, **तिरक्खरिणी** स्त्री [तिरस्करिणी] यवनिका, परदा (पि ३०६; अभि १८६)।

तिरच्छ देखो तिरिच्छ (प्राकृ १६; ३८)।

तिरि, **तिरिअं** अ [तिर्यक्] तिरछा, टेढ़ा (प्राकृ ८०; १६)।

तिरिअ वि [तैरश्च] तिर्यंच का, 'तिरिया मणुया य दिव्वगा उवसग्गा तिविहाहियासिया (सूअ १, २, २, १५)।

तिरिअ, **तिरिअंच**, **तिरिक्ख**, **तिरिच्छ** वि [तिर्यञ्च्] १ वक्र, कुटिल, बाँका (चंद २; उप पृ ३६६; सुर १३, १८३)। २ पुं. पशु, पक्षी आदि प्राणी; देव, नारक और मनुष्य से भिन्न योनि में उत्पन्न जन्तु (धण ४४, हे २, १४३; सूअ १, ३, १; उप पृ १८६; प्रासू १७६; महा; आरा ४६; पउम २, ५६; जी २०)। ३ मर्त्यलोक, मध्य लोक (ठा ३, २)। ४ न. मध्य, बीच; (अणु; भग १४, ५); 'तिरियं असंखेजाणं दीवसमुद्दाणं मज्झंमज्झेण जेणेव जंबुद्दीवे दीवे' (कप्प)। °गइ स्त्री [°गति] १ तिर्यग्-योनि (ठा ५, ३)। २ वक्र गति, टेढ़ी चाल, कुटिल गमन (चंद २)। °जंभग पुं [°जृम्भक] देवों की एक जाति (कप्प)। °जोणि स्त्री [°योनि] पशु, पक्षी आदि का उत्पत्ति-स्थान (महा)। °जोणिअ वि [°योनिक] तिर्यग्-योनि में उत्पन्न (सम २; भग; जीव १; ठा ३, १)। °जोणिणी स्त्री [°योनिका] तिर्यग्-योनि में उत्पन्न स्त्री जन्तु, तिर्यक् स्त्री (पण्ण १७—पत्र ५०३)। °दिसा °दिसि स्त्री [°दिश्] पूर्व आदि दिशा (आवम; उवा)। °पव्वय पुं [°पर्वत] बीच में पड़ता पहाड़, मार्गविरोधक पर्वत (भग १४, ५)। °भित्ति स्त्री [°भित्ति] बीच की भीत (आचा)। °लोग पुं [°लोक] मर्त्य लोक, मध्य लोक (ठा ५, ३)। °वसइ स्त्री [°वसति] तिर्यग्-योनि (पण्ह १, १)।

तिरिच्छ वि [तिरश्चीन] १ तिर्यग् गत टेढ़ा गया हुआ (राज)। २ तिर्यग्-संबन्धी (उत्त २१, १६)।

तिरिच्छि देखो तिरिअ (हे २, १४३; षड्)।

तिरिच्छिय देखो तेरिच्छिय (आचा २, १५, ५)।

तिरिच्छी स्त्री [तिरश्ची] तिर्यक्-स्त्री (कुमा)।

तिरिड पुं [दे] एक जाति का पेड़, तिमिर वृक्ष (दे ५, ११)।

तिरिडिअ वि [दे] १ तिमिर-युक्त। २ विचित (दे ५, २१)।

तिरिड्डि पुं [दे] उष्ण वात, गरम पवन (दे ५, १२)।

तिरिञ्चि (मा) देखो तिरिच्छि (हे ४,२९५)।

तिरीड पुंन [किरीट] मुकुट, सिर का आभूषण (पण्ह १, ४, सम १५३)।

तिरीड पुं [तिरीट] वृक्ष-विशेष (बृह २)। °पट्टय न [°पट्टक] वृक्ष-विशेष की छाल का बना हुआ कपड़ा (ठा ५, ३—पत्र ३३८)।

तिरीडि वि [किरीटिन्] मुकुट-युक्त, मुकुट-विभूषित (उत्त ९, ६०)।

तिरोभाव पुं [तिरोभाव] लय, अन्तर्धान (विसे २६६६)।

तिरोवइ वि [दे] वृति से अन्तर्हित, बाड़ से व्यवहित (दे ५, १३)।

तिरोहा सक [तिरस्+धा] अन्तर्हित करना, लोप करना, अदृश्य करना। तिरोहंति (धर्मवि २४)।

तिरोहिअ वि [तिरोहित] लुप्त, अन्तर्हित, अदृश्य, आच्छादित, ढका हुआ (राज)।

तिल पुं [तिल] १ स्वनाम-प्रसिद्ध अन्न-विशेष, तिल (गा ६६५; णाया १, १; प्रासू ३४; १०८)। २ ज्योतिष्क देव-विशेष, ग्रह-विशेष (ठा २, ३)। °कुट्टी स्त्री [°कुट्टी] तिल की बनी हुई एक भोज्य वस्तु, तिलकुट (धर्म २)। °पप्पडिया स्त्री [°पर्पटिका] तिल की बनी हुई एक खाद्य चीज, तिल-पापड़ (पण्ण १)। °पुप्फवण्ण पुं [°पुष्पवर्ण] ज्योतिष्क देव-विशेष, ग्रह-विशेष (ठा २, ३)। °मल्ली स्त्री [°मल्ली] एक खाद्य वस्तु (धर्म २)। °संगलिया स्त्री [°संगलिका] तिल की फली (भग १५)। °सक्कुलिया स्त्री [°शष्कुलिका] तिल की बनी हुई खाद्य वस्तु-विशेष, तिलखुजिया (राज)।

तिलइअ वि [तिलकित] तिलक की तरह आचरित, विभूषित; 'जयजयसद्दतिलइओ मंगलज्झुणी' (धर्मा ६)।

तिलंग पुं [तिलङ्ग] देश-विशेष, एक भारतीय दक्षिण देश, आंध्र प्रांत (कुमा, इक)।

तिलगकरणी स्त्री [तिलककरणी] १ तिलक करने की सलाई। २ गोरोचना; पीले रंग का एक सुगंधित द्रव्य, जो गाय के पित्ताशय से निकलता है (सूअ १, ४, २, १०)।

तिलग, **तिलय** पुं [तिलक] १ वृक्ष-विशेष (सम १५२; औप; कप्प; णाया १, ९; उप ९८६ टी; गा १६)। २ एक प्रतिवासुदेव राजा, भरतक्षेत्र में उत्पन्न पहला प्रतिवासुदेव (सम १५४)। ३ द्वीप-विशेष। ४ समुद्र-विशेष (राज)। ५ न. पुष्प-विशेष (कुमा)। ६ टीका; ललाट में किया जाता चन्दन आदि का चिह्न (कुमा धर्मा ६)। ७ एक विद्याधर-नगर (इक)।

तिलवट्टी स्त्री [तिलपर्पटी] तिल की बनी हुई एक खाद्य वस्तु, तिलपट्टी (पव ४ टी)।

तिलितिलय पुं [दे] जल-जन्तु विशेष (कप्प)।

तिलिम स्त्रीन [दे] वाद्य-विशेष (सुपा २४२; सण)। स्त्री. °मा (सुर ३, ६८)।

तिलुक्क न [त्रैलोक्य] स्वर्ग, मर्त्य और पाताल लोक (दं २३)।

तिलुत्तमा देखो तिलोत्तमा (सम्मत्त १८८)।

तिलेल्ल न [तिलतैल] तिल का तेल (कुमा)।

तिलोक्क देखो तिलुक्क (सुर १, ९२)।

तिलोत्तमा स्त्री [तिलोत्तमा] एक स्वर्गीय अप्सरा (उप ७६८ टीः महा)।
तिलोदग } न [तिलोदक] तिल का धोवन—
तिलोदय } जल (आचा; कप्प)।
तिल्ल न [तैल] तैल, तेल (सूक्त ३५; कुप्र २४०)।
तिल्ल न [तिल्ल] छन्द-विशेष (पिंग)।
तिल्लग वि [तैलक] तेल बेचनेवाला, तेली (बृह १)।
तिल्लहडी स्त्री [दे] गिलहरी, गु० खीसकोली (नंदी टि. पत्र. १३३ मुद्रित) मारवाड़ी में तालोडी, ताली।
तिल्लोदा स्त्री [तैलोदा] नदी-विशेष (निचू १)।
तिवँ (अप) देखो **तहा** (हे ४, ३९७)।
तिवण्णी स्त्री [त्रिवर्णी] एक महौषधि (ती ५)।
तिवाय सक [त्रि+पातय्] मन, वचन और काय से नष्ट करना, जान से मार डालना। तिवायए (सूत्र १, १, १, ३)।
तिविक्कम पुं [त्रिविक्रम] जैनमुनिः 'गहिया नियएहि (? तिपएहि) मही, तिविक्कमो तेण विक्खाओ' (धर्मवि ८६)।
तिविडा स्त्री [दे] सूची, सूई (दे ५, १२)।
तिविडी स्त्री [दे] पुटिका, छोटा पुड़वा (दे ५, १२)।
तिव्व वि [तीव्र] १ प्रबल, प्रचण्ड, उत्कट (भग १५; आचा)। २ रौद्र, भयानक, डरावना (सूत्र १, ५, १)। ३ गाढ़, निबिड़ (पराह १, १)। ४ तिक्त, कड़ुआ (भग ६, ३४)। ५ प्रकृष्ट, उत्तम, प्रकर्ष-युक्त (णाया १, १—पत्र ४)।
तिव्व वि [दे. तीव्र] १ दुःसह, जो कठिनता से सहन हो सके (दे ५, ११; सूत्र १, ३, ३; १, ५, १; २, ६; आचा)। २ अत्यन्त अधिक, अत्यर्थ (दे ५; ११; धर्म २; औप; पराह १, ३; पंचा १५; आव ६; उवा)।
तिसंथ वि [त्रिसंस्थ] तीन बार सुनने से अच्छी तरह याद कर लेने की शक्तिवाला (धर्मसं १२०७)।
तिसला स्त्री [त्रिशला] भगवान् महावीर की माता का नाम (सम १५१)। **°सुअ** पुं [°सुत] भगवान् महावीर (पउम १, ३३)।
तिसा स्त्री [तृषा] प्यास, पिपासा (सुर ६, २०६; पाअ)।
तिसाइय } वि [तृषित] तृषातुर, प्यासा
तिसिय } (महा; उत्त; पराह १, ४; सुर १, १६६)।
तिसिर पुं. ब. [त्रिशिरस्] १ देश-विशेष (पउम ९८, ६५) २ पुं. नृप-विशेष (पउम ६६, ४६)। ३ रावण का एक पुत्र (से १२, ५६)।
तिस्सगुत्त देखो **तीसगुत्त** (राज)।
तिह (अप) देखो **तहा** (कुमा)।
तिहि पुंस्त्री [तिथि] पंचदश चन्द्र-कला से युक्त काल, दिन, तारीख (चंद १०; पि १८०)।
तीअ वि [तृतीय] तीसरा (सम १५०; संक्षि २०)।
तीअ वि [अतीत] १ गुजरा हुआ, बीता हुआ (सुपा ४४६; भग) २ पुं. भूतकाल (ठा ३, ४)।
तीइल पुं [तैतिल] ज्योतिष-प्रसिद्ध करण-विशेष (विसे ३३४८)।
तीमण न [तीमन] कढ़ी, खाद्य-विशेष, झोर (दे २, ३५; सण)।
तीमिअ वि [तीमित] आर्द्र, गीला (कुप्र ३७३)।
तीय वि [त्रैत] तीन (सूत्र, १, २, २, २३)।
तीर अक [शक्] समर्थ होना। तीरइ (हे ४, ८६)।
तीर सक [तीरय्] समाप्त करना, परिपूर्ण करना। तीरइ, तीरेइ (हे ४, ८६, भग)। संकृ. तीरित्ता (कप्प)।
तीर पुंन [तीर] किनारा, तट, पार (स्वप्न ११९, प्रासू ६०; ठा ४, १; कप्प)।
तीरंगम वि [तीरंगम] पार-गामी, पार जाने-वाला (आचा)।
तीरट्ठ पुं [तीरस्थ, तीरार्थ] साधु, मुनि, श्रमण (दसनि २, ६)।
तीरिय वि [तारित] समापित, परिपूर्ण किया हुआ (पव ५)।
तीरिया स्त्री [दे] शर या तीर रखने का थैला, तरकश, तूणीर, बाणधि (?); 'गहियमणेण पासत्थं धणुवरं, संधिओ तीरियासरो' (स २६७)।
तीस न [त्रिंशत्] १ संख्या-विशेष, तीस, ३०। २ तीस-संख्यावाला (महा; भवि)।
तीसआ } स्त्री [त्रिंशत्] ऊपर देखो (संक्षि
तीसइ } २१)। **°वरिस** वि [°वर्ष] तीस वर्ष की उम्र का (पउम २, २८)।
तीसइम वि [त्रिंश] १ तीसवाँ (पउम ३०, ९८)। २ न. लगातार चौदह दिनों का उप-वास (णाया १, १)।
तीसग त्रि [त्रिंशक] तीस वर्ष की उम्रवाला (तंदु १७)।
तीसगुत्त पुं [तिष्यगुप्त] एक प्राचीन आचार्य-विशेष, जिसने अन्तिम प्रदेश में जीव की सत्ता का पन्थ चलाया था (ठा ७)।
तीसभद्द पुं [तिष्यभद्र] एक जैनमुनि (कप्प)।
तीसम त्रि [त्रिंश] तीसवाँ (भवि)।
तीसा स्त्री. देखो **तीस** (हे १, ९२)।
तीसिया स्त्री [त्रिंशिका] तीस वर्ष के उम्र की स्त्री (वव ७)।
तु अ [तु] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ भिन्नता, भेद, विशेषण (श्रा २७; विसे ३०३५)। २ अवधारण, निश्चय (सूत्र १, २, २)। ३ समुच्चय (सूत्र १, १, १)। ४ कारण, हेतु (निचू १)। ५ पाद-पूरक अव्यय (विसे ३०३५; पंचा ४)।
तुअ सक [तुद्] व्यथा करना, पीड़ा करना। तुअइ (षड्)। प्रयो. संकृ. तुयावइत्ता (ठा ३, २)।
तुअर पुं [तुवर] धान्य-विशेष, रहर (जं १)।
तुअर अक [त्वर्] त्वरा होना, शीघ्र होना, जल्दी होना। तुअर (गा ६०६)।
तुंग वि [तुङ्ग] १ ऊँचा, उच्च (गा २५६; औप)। २ पुं. छन्द-विशेष (पिंग)।
तुंगार पुं [तुङ्गार] अग्नि कोण का पवन (आवम)।
तुंगिम पुंस्त्री [तुङ्गिमन्] ऊँचाई, उच्चत्व (सुपा १२४; वज्जा १५०; कप्पू; सण)।
तुंगिय पुं [तुङ्गिक] १ ग्राम-विशेष (आवम)। २ पर्वत-विशेषः 'तुंगे तुंगियसिहरे गंतुं तिव्वं तवं तवइ' (कुप्र १०२)। ३ पुंस्त्री गोत्र-विशेष में उत्पन्नः 'जसभद्दं तुंगियं वंदे' (णंदि)।

तुंगिया स्त्री [तुङ्गिका] नगरी-विशेष (भग)।
तुंगियायण न [तुङ्गिकायन] एक गोत्र का नाम (कप्प)।
तुंगी स्त्री [दे] १ रात्रि, रात (दे ५, १४)। १ आयुध-विशेष; 'असिपरसुकुंततुंगीसंघट्ट—' (काल)।
तुंगीय पुं [तुङ्गीय] पर्वत-विशेष (सुर १, २००)।
तुंड स्त्रीन [तुण्ड] १ मुख, मुँह (गा ४०२)। २ अग्र-भाग (निचू १)। स्त्री. °डी; 'किं कोवि जीवियत्थी कंडुयइ अहिस्स तुंडीए' (सुपा ३२२)।
तुंडीर न [दे] मधुर-बिम्बी-फल (दे ५, १४)।
तुंडूअ पुं [दे] जीर्ण घट, पुराना घड़ा (दे ५, १५)।
तुंतुक्खुडिअ वि [दे] त्वरा-युक्त (दे ५, १६)।
तुंद न [तुन्द] उदर, पेट (दे ५, १४; उप ७२८ टी)।
तुंदिल } वि [तुन्दिल] बड़ा पेटवाला, तोंदैल
तुंदिल्ल } (कप्पू; पि ५६५; उत्त ७)।
तुंब न [तुम्ब] तुम्बी, अलाबू, लौकी (पउम २६, ३४; ओघ ३८; कुप्र १३६)। २ गाड़ी की नाभि; 'न हि तुंबम्मि विणट्ठे अरया साहारया हुंति' (आवम)। ३ 'ज्ञाताधर्मकथा' सूत्र का एक अध्ययन (सम)। °वग न [°वन] संनिवेश-विशेष, एक गाँव का नाम (सार्ध २५)। °वीण वि [°वीण] वीणा-विशेष को बजानेवाला (जीव ३)। °वीणिय वि [°वीणिक] वही पूर्वोक्त अर्थ (ओप; पण्ह २, ४; णाया १, १)।
तुंब न [तुम्ब] पहिए के बीच का गोल अवयव (णंदि ४३)। °वीणा स्त्री [°वीणा] वाद्य-विशेष (राय ४६)।
तुंबरु देखो तुंबुरु (इक)।
तुंबा स्त्री [तुम्बा] लोकपाल देवों की एक अभ्यन्तर परिषद् (ठा ३, २)।
तुंबाग पुंन [तुम्बक] कद्दू, लौकी (दस ५, १ ७०)।
तुंबिणी स्त्री [तुम्बिनी] वल्ली-विशेष (हे ४, ४२७; राज)।

तुंबिल्ली स्त्री [दे] १ मधु-पटल, मधपुड़ा। २ उदूखल, ऊखल (दे ५, २३)।
तुंबी स्त्री [तुम्बी] १ तुम्बी, अलाबू, लौकी, कद्दू (दे ५, १४)। २ जैन साधुओं का एक पात्र, तपरनी (सुपा ६४१)।
तुंबुरु पुं [तुम्बुरु] १ वृक्ष-विशेष, टिंबरू का पेड़ (दे ४, ३)। २ गन्धर्व देवों की एक जाति (पण्ण १; सुपा २६४)। ३ भगवान् सुमतिनाथ का शासनाधिष्ठायक देव (संति ७)। ४ शक्रेन्द्र के गन्धर्व-सैन्य का अधिपति देव-विशेष (ठा ७)।
तुक्खार पुं [दे] एक उत्तम जाति का अश्व या घोड़ा, 'अन्नं च तत्थ पत्ता तुक्खारतुरंगमा बहुविहीया' (सुर ११, ४६; भवि)। देखो तोक्खार।
तुच्छ पुंस्त्री [तुच्छा] रिक्ता तिथि, चतुर्थी, नवमी तथा चतुर्दशी तिथि (सुज्ज १०, १५)।
तुच्छ वि [दे] अवशुष्क, सूखा, नीरस (दे ५, १४)।
तुच्छ वि [तुच्छ] १ हलका, जघन्य, निकृष्ट, हीन (णाया १, ५; प्रासू ६६)। २ अल्प, थोड़ा (भग ६, ३३)। ३ शून्य, रिक्त, खाली (आचा)। ४ असार, निःसार (भग १८, ३)। ५ अपूर्ण (ठा ४, ४)।
तुच्छइअ } वि [दे] रञ्जित, अनुराग-प्राप्त
तुच्छय } (दे ५, १५)।
तुच्छिम पुंस्त्री [तुच्छत्व] तुच्छता (वज्जा १५६)।
तुज्ज न [तूर्य] वाद्य, बाजा (सुज्ज १०)।
तुट्ट अक [त्रुट्, तुड्] १ टूटना, छिन्न होना, खण्डित होना। २ खूटना, घटना, बीतना। तुट्टइ (महा; सण; हे ४, ११६); 'अणवरयं देंतस्सवि तुट्टंति न सायरे रयणाइं' (वज्जा १५६)। वकृ. तुट्टंत (सण)।
तुट्ट वि [त्रुटित] टूटा हुआ, छिन्न, खण्डित (स ७१८; सूक्त १७; दे १, ६२)।
तुट्टण न [त्रोटन] विच्छेद, पृथक्करण (सूअ १, १, १; वज्जा ११६)।
तुट्टिअ वि [त्रुटित, तुडित] छिन्न, खण्डित (कुमा)।

तुट्टिर वि [त्रुटितृ] टूटनेवाला (कुमा; सण)।
तुट्ठ वि [तुष्ट] तोष-प्राप्त, तृप्त, संतुष्ट, खुश (सुर ३, ४१; उवा)।
तुट्ठि स्त्री [तुष्टि] १ खुशी, आनन्द, संतोष (स २००; सुर ३, २५; सुपा २४६; निर १, १)। २ कृपा, मेहरबानी (कुप्र १)।
तुड अक [तुड्] टूटना, अलग होना। तुडइ (हे ४, ११६)।
तुडि स्त्री [त्रुटि] १ न्यूनता, कमी। २ दोष, दूषण (हे ४, ३६०)। ३ संशय, संदेह (सुर ३, १६१)।
तुडिअ न [तुटिक] अन्तःपुर, रनवास; 'तुटिकमन्तःपुरमपदिश्यते' (जीवाभि चू०)।
तुडिअ न [तुटिक] अन्तःपुर, जनानखाना (सुज्ज १८—पत्र २६५)।
तुडिअ वि [त्रुटित] टूटा हुआ, विच्छिन्न (अच्चु ३३; दे १, १५६; सुपा ८५)।
तुडिअ न [दे. त्रुटित] १ वाद्य, वादित्र, बाजा (औप; राय; जं ३; पण्ह २, ५)। २ बाहु-रक्षक, हाथ का आभरण-विशेष (औप; ठा ८; पउम ८२, १०४; राय)। ३ संख्या-विशेष; 'तुडिअंग' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह (इक; ठा २,४)। ४ साँधा, फटे हुए वस्त्र आदि में लगायी जाती पट्टी, पेवन (निचू २)।
तुडिअंग न [दे. त्रुटिताङ्ग] १ संख्या-विशेष, 'पूर्व' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह (इक; ठा २, ४)। २ पुं. वाद्य देनेवाला कल्प-वृक्ष (ठा १०; सम १७, पउम १०२, १२३)।
तुडिआ स्त्री [तुडिता] लोकपाल देवों के अग्र-महिषियों की मध्यम परिषद् (ठा ३, २)।
तुडिआ स्त्री [दे. तुटिका] बाहु-रक्षिका, हाथ का आभरण-विशेष (पण्ह १, ४; णाया १, १, टी—पत्र ४३)।
तुणय पुं [दे] वाद्य-विशेष (दे ५, १६)।
तुण्णाग देखो तुण्णाग (राज)।
तुण्णण न [तुन्नन] फटे हुए वस्त्र का सन्धान (उप पृ ४१३)।
तुण्णाग } पुं [तुन्नवाय] वस्त्र को साँधने-
तुण्णाय } वाला, रफू करनेवाला, शिल्पी (णंदि; उप पृ २१०; महा)।

तुण्णिय वि [तुन्नित] रफू किया हुआ, साँधा हुआ (बृह १)।

तुण्हि अ [तूष्णीम्] मौन, चुप्पी, चुपकी, चुपचाप, चुपकेसे, मौन होकर (भवि)।

तुण्हि पुं [दे] सूकर, सूअर (दे ५, १४)।

तुण्हिं देखो तुण्हि = तूष्णीम् (प्राक ३२)।

तुण्हिअ, तुण्हिक्क वि [तूष्णीक] मौन रहा हुआ, मौन रहनेवाला, चुप रहनेवाला (प्राप्र, गा २५४; सुर ४, १४८)।

तुण्हिक्क वि [दे] मृदु-निश्चल (दे ५, १५)।

तुण्हीअ देखो तुण्हिअ (स्वप्न ४२)।

तुत्त देखो तोत्त (सुपा २३७)।

तुद देखो तुअ। तुदए (षड्)। वकृ. तुदं (विसे १४७०)।

तुद पुं [तोद] प्रतोद, अरदार डंडा, चाबुक (सूअ १, ५, २, ३)।

तुन्नण न [तुन्नन] रफू करना (गच्छ ३, ७)।

तुन्नाय देखो तुण्णाय (णंदि १६४)।

तुन्नार पुं [तुन्नकार] रफू करनेवाला शिल्पी (धर्मवि ७३)।

तुप्प पुं [दे] १ कौतुक। २ विवाह, शादी। ३ सर्षप, सरसों, धान्य-विशेष। ४ कुतुप, घी आदि भरने का चर्म-पात्र (दे ५, २२)। ५ वि. भ्रक्षित, चुपड़ा हुआ, घी आदि से लिप्त (दे ५, २२; कप्प; गा २२; २८६; हे १, २००)। ६ स्निग्ध, स्नेह-युक्त (दे ५, २२; ओघ ३०७ भा)। ७ न. घृत, घी (से १५, ३८; सुपा ६३४; कुमा)।

तुप्प वि [दे] वेष्टित (अणु २६)।

तुप्पइअ, तुप्पलिअ, तुप्पविअ वि [दे] घी से लिप्त (गा ५२० अ)।

तुमंतुम पुं [दे] क्रोध-कृत मनो-विकार विशेष (ठा ८—पत्र ४४१)।

तुमंतुम पुं [दे] १ तूकारवाला वचन, तिरस्कार वचन, तू, तू (सूअ १, ६, २७)। २ वाक्-कलह; 'अप्पतुमंतुमे' (उत्त २६, ३६)। ३ वि. तूकारे से बात कहनेवाला (संबोध १७)।

तुमुल पुं [तुमुल] १ लोम-हर्षण युद्ध, भयानक संग्राम (गउड)। २ न. शोरगुल (पाअ)।

तुम्ह स [युष्मत्] तुम, आप (हे १, २४६)।

तुम्हकेर वि [त्वदीय] तुम्हारा (कुमा)।

तुम्हकेर वि [युष्मदीय] आपका, तुम्हारा (हे १, २४६; २, १४७)।

तुम्हार (अप) ऊपर देखो (भवि)।

तुम्हारिस वि [युष्मादृश] आपके जैसा, तुम्हारे जैसा (हे १, १४२; गउड; महा)।

तुम्हेच्चय वि [यौष्माक] आपका, तुम्हारा (हे २, १४६; कुमा, षड्)।

तुयट्ट अक [त्वग् + वृत्] पार्श्व को घुमाना, करवट फिराना। तुयट्टइ, (कप्प; भग)। तुयट्टेज, तुयट्टेजा (भग; औप)। हेकृ. तुयट्टित्तए (आचा)। कृ. तुयट्टियव्व (णाया १, १; भग, औप)।

तुयट्टण न [त्वग्वर्तन] पार्श्व-परिवर्तन, करवट फिराना (ओघ १५२ भा; औप)।

तुयट्टावण न [त्वग्वर्तन] करवट बदलवाना। (आचा)।

तुयावइत्ता देखो तुअ।

तुर अक [त्वर्] त्वरा होना, जल्दी होना, शीघ्र होना। वकृ. तुरंत, तुरेंत, तुरमाण, तुरेमाण (हे ४, १७२; प्रासू ५८; षड्)।

तुर°, तुरा स्त्री [त्वरा] शीघ्रता, जल्दी (दे ५, १६)। °वंत वि [°वत्] त्वरा-युक्त।

तुरंग पुं [तुरङ्ग] अश्व, घोड़ा (कुमा; प्रासू ११७)। २ रामचन्द्र का एक सुभट (पउम ५६, ३८)।

तुरंगम पुं [तुरङ्गम] अश्व, घोड़ा (पाअ; पिंग)।

तुरंगिआ स्त्री [तुरङ्गिका] घोड़ी (पाअ)।

तुरंत देखो तुर।

तुरक्क पुं [दे· तुरुष्क] १ देश-विशेष, तुर्किस्तान। २ अनार्य जाति-विशेष, तुर्क (ती १४)।

तुरग देखो तुरय (भग ११, ११; राय)। °मुह पुं [°मुख] अनार्य देश-विशेष (सूअ १, ५ टी)। °मेढग पुं [°मेढ्क] अनार्य देश-विशेष (सूअ १, ५, १ टी)।

तुरमणी देखो तुरुमणी (सट्ठि ५७ टी)।

तुरमाण देखो तुर।

तुरय पुं [तुरग] १ अश्व, घोड़ा (पण्ह १, ४)। २ छन्द-विशेष (पिंग)। °देहपिंजरण न [°देहापञ्जरण] अश्व को सिंगारना, सँवारना, शृंगार करना (पाअ)। देखो तुरग।

तुरयमुह देखो तुरग-मुह (पव २७४)।

...त्वरावाला, जल्दबाज (से ४, ३०)।

तुरिअ वि [त्वरित] १ त्वरा-युक्त, उतावला (पाअ; हे ४, १७२; औप; प्राप्र)। २ क्रिवि. शीघ्र, जल्दी (सुपा ४६४; भवि)। °गइ वि [°गति] १ शीघ्र गतिवाला। २ पुं. अमितगति नामक इन्द्र का एक लोकपाल (ठा ४, १)।

तुरिअ वि [तुर्य] चौथा, चतुर्थ (सुर ४, २५०; कम्म ४, ६६; सुपा ४६४)। °निद्दा स्त्री [°निद्रा] मरणदशा (उप पृ १४३)।

तुरिअ न [तूर्य] वाद्य, वादित्र, बाजा; 'तुरियाणं संनिनाएण, दिव्वेणं गगणं फुसे' (उत्त २२, १२)।

तुरिमिणी देखो तुरुमणी (राज)।

तुरी स्त्री [दे] १ पीन, पुष्ट। २ शय्या का उपकरण (दे ५, २२)।

तुरु न [दे] वाद्य-विशेष (विक्र ८७)।

तुरुक्क न [तुरुष्क] सुगन्धि द्रव्य-विशेष, जो धूप करने में काम आता है, लोबान, सिल्हक (सम १३७; णाया १, १; पउम २, ११; औप)।

तुरुक्क पुं [तुरुष्क] १ देश-विशेष, तुर्किस्तान। २ वि. तुर्किस्तान का (स १३)।

तुरुक्की स्त्री [तुरुष्की] लिपि-विशेष (विसे ४६४ टी)।

तुरुमणी स्त्री [दे] नगरी-विशेष (भत्त ६२)।

तुरेंत, तुरेमाण देखो तुर।

तुल सक [तोलय्] १ तौलना। २ उठाना। ३ ठीक-ठीक निश्चय करना। तुलइ, तुलेइ (हे ४, २५; उव; वज्जा १५८)। वकृ. तुलंत (पिंग)। संकृ. तुलेऊण (बृह १)। कृ. तुलेअव्व (से ६, २६)।

तुल° देखो तुला (सुपा ३६)।

तुलंगा देखो तुलग्गा (अच्चु ८०)।

तुलग्ग न [दे] काकतालीय न्याय (दे ५, १५; से ४, २७)।

तुलग्गा स्त्री [दे] यदृच्छा, स्वैरिता, स्वेच्छा, अपनी मंशा (विक्र ३५)।
तुलण न [तुलन] तौलना, तोलन (कप्पू; वज्जा १५७)।
तुलणा स्त्री [तुलना] तौलना, तोलन (उप पृ २७४; स ६६२)।
तुलणा स्त्री [तुलना] तौल, वजन (धर्मवि ६)।
तुलय वि [तोलक] तौलनेवाला (सुपा १६७)।
तुलसिआ स्त्री [तुलसिका] नीचे देखो (कुमा)।
तुलसी स्त्री [दे. तुलसी] लता-विशेष, तुलसी (दे ५, १४; पराग १; ठा ८; पाअ)।
तुला स्त्री [तुला] १ राशि-विशेष (सुपा ३६)। २ तराजू, तौलने का साधन (सुपा ३६०, गा १६१)। ३ उपमा, सादृश्य (सूअ २, २)। °**सम** वि [°सम] राग-द्वेषसे रहित, मध्यस्थ (बृह ६)।
तुला स्त्री [तुला] १०५ या ५०० पल का एक नाप (अणु १५४)।
तुलिअ वि [तुलित] १ उठाया हुआ, ऊँचा किया हुआ (से ६, २०)। २ तौला हुआ (पाअ)। गुना हुआ (राज)।
तुलेअव्व देखो **तुल**।
तुल्ल वि [तुल्य] समान, सरीखा (भग; प्रासू १२; १४६)।
तुवट्ट देखो **तुयट्ट**। तुवट्टे (वव ४)।
तुवट्ट पुं [त्वग्वर्त] शयन, लेटना (वव ४)।
तुवर अक [त्वर्] त्वरा होना, शीघ्र होना, तेज होना। तुवरइ (हे ४, १७०)। वकृ. **तुवरंत** (हे ४,१७०)। प्रयो. वकृ. **तुवराअंत** (नाट—मालती ५०)।
तुवर पुंन [तुवर] १ रस-विशेष, कषाय रस (दे ५, १६)। २ वि. कषाय रसवाला, कसैला (से ८, ५५)।
तुवरा देखो **तुरा** (नाट—महावीर २७)।
तुवरी स्त्री [तुवरी] अन्न-विशेष, अरहर (श्रा १८; गा ३५८)।
तुस पुं [तुष] १ कोद्रव—कोदव या कोदो आदि तुच्छ धान्य (ठा ८)। २ धान्य का छिलका, भूसी (दे २, ३६)।
तुसणीअ वि [तूष्णीक] मौनी (अज्झ १७६)।
तुसली स्त्री [दे] धान्य-विशेष, 'तं तत्थवि तो तुसलिं वावइ सो किणिवि वरबीयं' (सुपा ५४५); 'देवगिहे जंतीए तुज्झ तुसली अणुण्णाया' (सुपा १३ टि)।
तुसार न [तुषार] हिम, बर्फ, पाला (पाअ)। °**कर** पुं [°कर] चन्द्र, चन्द्रमा (सुपा ३३)।
तुसारअर देखो **तुसार-कर** (त्रि १०३)।
तुसिण देखो **तुसणीअ** (संबोध १७)।
तुसिणिय, **तुसिणीय** } वि [तूष्णीक] मौनी, चुप, वचन-रहित (णाया १, १—पत्र २८; ठा ३, ३)।
तुसिणी अ [तूष्णीम्] मौन, चुप्पी; 'तइआ तुसिणीए भुंजए पढमो' (पिंड १२२; ३१३)।
तुसिय पुं [तुषित] लोकान्तिक देवों की एक जाति (णाया १, ८; सम ८५)।
तुसेअजंभ न [दे] दारु, लकड़ी, काष्ठ (दे ५, १६)।
तुसोदग, **तुसोदय** } न [तुषोदक] व्रीहि आदि का धौत-जल—धोवन (राज; कप्प)।
तुस्स देखो **तूस** = तुष्। तुस्सइ (विसे ९३२)।
तुह° स [त्वत्°] तुम। °**तणय** वि [°संबन्धिन्] तुम्हारा, तुमसे संबन्ध रखनेवाला (सुपा ५५३)।
तुहग पुं [तुहग] कन्द की एक जाति (उत्त ३६, ९६)।
तुहार (अप) वि [त्वदीय] तुम्हारा (हे ४, ४३४)।
तुहिण न [तुहिन] हिम, तुषार, बर्फ (पाअ)। °**इरि** पुं [°गिरि] हिमाचल पर्वत (गउड)। °**कर** पुं [°कर] चन्द्रमा (कप्पू)। °**गिरि** देखो °**इरि** (सुपा ६५८)। °**लय** पुं [°लय] हिमालय पर्वत (सुपा ८८)।
तुहिणायल पुं [तुहिनाचल] हिमालय पर्वत (धर्मवि २४)।
तूअ पुं [दे] ईख का काम करनेवाला (दे ५, १६)।
तूण पुंन [तूण] इषुधि, भाथा, तरकस, तूणीर (हे १, १२५; षड्; कुमा)।
तूणइल्ल पुं [तूणावत्] तूणा नामक वाद्य बजानेवाला (पराह २, ४; औप; कप्प)।
तूणय पुं [तूणक] वाद्य-विशेष (अचा २, ११, १)।
तूणा, **तूणि°** } स्त्री [तूणा] १ वाद्य-विशेष (राय; अणु)। २ इषुधि, भाथा (जं ३; पि १२७)।
तूयरी स्त्री [तूवरी] रहर, अरहर (पिंड ६२३)।
तूर देखो **तुरव**। तूरइ (हे ४, १७१; षड्)। वकृ. **तूरंत**, **तूरेंत**, **तूरमाण**, **तूरेमाण** (हे ४, १७१; सुपा २६१; षड)।
तूर पुंन [तूर्य] वाद्य, बाजा, तुरही (हे २,६३; षड्, प्राप्र)। °**वइ** पुं [°पति] नटों का नटों का मुखिया (बृह १)।
तूरंत, **तूरमाण** } देखो **तूर** = तुरव।
तूरविअ वि [त्वरित] जिसको शीघ्रता कराई गई हो वह (से १२, ८३)।
तूरिय पुं [तौर्यिक] वाद्य बजानेवाला, बजनियाँ (स ७०५)।
तूरी स्त्री [दे] एक प्रकार की मिट्टी (जी ४)।
तूरेंत, **तूरेमाण** } देखो **तूर** = तुरव।
तूल न [तूल] रुई, रूआ, बीज-रहित कपास (औप; पाअ; भवि)।
तूलिअ न. नीचे देखो; 'णणु विणासिज्जइ महग्घियं तूलियं गंडुयमाइयं' (महा)।
तूलिआ स्त्री [तूलिका] १ रूई से भरा मोटा बिछौना, गद्दा, तोशक (दे ५, २२)। २ तसवीर—चित्र बनाने की कलम (णाया १,८)।
तूलिणी स्त्री [दे] वृक्ष-विशेष, शाल्मली का पेड़ (दे ५, १७)।
तूलिल्ल वि [तूलिकावत्] तसवीर बनाने की कलमवाला, कूर्चिका-युक्त (गउड)।
तूली स्त्री [तूली] देखो **तूलिआ** (सुर २, ८२; पउम ३५, २४; सुपा २६२)।
तूवर देखो **तुवर** (विपा १, १—पत्र १६)।
तूस अक [तुष्] खुश होना। तूसइ, तूसए (हे ४, २३६; संक्षि ३६; षड्)। कृ. **तूसियव्व** (पराह २, ५)।
तूह देखो **तित्थ** (हे १, १०४; २, ७२; कुमा; दे ५, १६)।

तूहण पुं [दे] पुरुष, आदमी (दे ५, १७)।
ते° देखो ति = त्रि। °आलीस स्त्रीन [°चत्वारिंशत्] १ संख्या-विशेष, चालीस और तीन की संख्या। २ तेआलीस की संख्यावाला (सम ६८)। °आलीसइम वि [°चत्वारिंश] तेआलीसवाँ, ४३वाँ (पउम ४३, ४६)। °आसी स्त्री [°अशीति] १ संख्या-विशेष, अस्सी और तीन। २ तिरासी की संख्यावाला (पि ४४६)। °आसीइम वि [°अशीतितम] तिरासीवाँ (सम ८६; पउम ८३, १४)। °इंदिय पुं [°इन्द्रिय] स्पर्श, जीभ और नाक इन तीन इन्द्रियवाला प्राणी (ठा २, ४; जी १७)। °ओय पुं [°ओजस्] विषम राशि-विशेष (ठा ४, ३)। °णउइ स्त्री [°नवति] तिरानबे, नब्बे और तीन, ६३ (सम ६७)। °णउय वि [°नवत] तिरानबेवाँ, ६३ वाँ (कप्प; पउम ६३, ४०)। °णवइ देखो °णउइ (सुपा ६५४)। °तीस, °त्तीस स्त्रीन [त्रयस्त्रिंशत्] तेतीस, तीस और तीन (भग; सम ५८)। स्त्री. °सा (हे १, १६५; पि ४४७)। °त्तीसइम वि [त्रयस्त्रिंश] तेतीसवाँ (पउम ३३, १४८)। °वट्ठि स्त्री [षष्टि] तिरसठ, साठ और तीन, ६३ (पि २६५)। °वण्ण, °वन्न स्त्रीन [°पञ्चाशत्] त्रेपन, पचास और तीन, ५३ (हे २, १७४; षड्; सम ७२)। °वत्तरि स्त्री [°सप्तति] तिहत्तर (पि २६५)। °वीस स्त्रीन [त्रयोविंशति] तेइस, बीस और तीन, २३ (सम ४२; हे १, १६५)। °वीस, °वीसइम वि [त्रयोविंश] तेईसवाँ (पउम २०, ८२; २३, २६; ठा ६)। °संझ न [°सन्ध्य] प्रातः, मध्याह्न और सायंकाल का समय (पउम ६६, ११)। °सट्ठि स्त्री [°षष्टि] देखो °वट्ठि (सम ७७)। °सीइ स्त्री [°अशीति] तिरासी, अस्सी और तीन (सम ८६; कप्प)। °सीइम वि [°अशीत] तिरासीवाँ (कप्प)।

तेअ सक [तेजय्] तेज करना, पैनाना, धार तेज करना, तीक्ष्ण करना। तेइय (षड्)।

तेअ देखो तइअ = तृतीय (रंभा)।

तेअ पुं [तेजस्] १ कान्ति, दीप्ति, प्रकाश, प्रभा (उवा; भग; कुमा; ठा ८)। २ ताप, अभिताप (कुमा; सूअ १, ५, १)। ३ प्रताप। ४ माहात्म्य, प्रभाव। ५ बल, पराक्रम (कुमा)। °मंत वि [°विन्] तेजवाला, प्रभा-युक्त (पण्ह २, ४)। °वीरिय पुं [°वीर्य] भरत चक्रवर्ती के प्रपौत्र का पौत्र, जिसको आदर्श भवन में केवलज्ञान हुआ था (ठा ८)।

तेअ न [स्तेय] चोरी (भग २, ७)।

तेअ देखो तेअय (भग)।

तेअ पुं [?] टेक, स्तम्भ।

तेअंसि वि [तेजस्विन्] तेजवाला, तेज-युक्त (औप; रयण ४; भग; महा; सम १५२; पउम १०२, १४१)।

तेअग देखो तेअय (जीव)।

तेअण न [तेजन] १ तेज करना, पैनाना। २ उत्तेजन (हे ४, १०४)। ३ वि. उत्तेजित करनेवाला (कुमा)।

तेअय न [तैजस] शरीर-सहचारी सूक्ष्म शरीर-विशेष (ठा २, १; ५, १; भग)।

तेअलि पुं [तेतलिन्] १ मनुष्य जाति-विशेष (जं १; इक)। २ एक मन्त्री के पिता का नाम (णाया १, १४)। °पुत्त पुं [°पुत्र] राजा कनकरथ का एक मन्त्री (णाया १, १४)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष (णाया १, १४)। °सुय पुं [°सुत] देखो °पुत्त (राज)। देखो तेतलि।

तेअव अक [प्र + दीप्] १ दीपना, चमकना। २ जलना। तेअवइ (हे ४, १५२; षड्)।

तेअवाल देखो तेजपाल (हम्मीर २७)।

तेअविय वि [प्रदीप्त] जला हुआ (कुमा)। २ चमका हुआ, उद्दीप्त (पाअ)।

तेअविय वि [तेजित] तेज किया हुआ (दे ८, १३)।

तेअस्सि पुं [तेजस्विन्] इक्ष्वाकु वंश के एक राजा का नाम (पउम ५, ५)।

तेआ स्त्री [तेजा] पक्ष की तेरहवीं रात (सुज्ज १०, १४)।

तेआ स्त्री [तेजस्] त्रयोदशी तिथि (जो ४; जं ७)।

तेआ स्त्री [त्रेता] युग-विशेष, दूसरा युग; 'तेआजुगे य दासरही रामो सीयालक्खण-संजुओवि' (ती २६)।

तेआ° देखो तेअय (सम १४२; पि ६४)।

तेआलि पुं [दे] वृक्ष-विशेष (पण्ण १, १—पत्र ३४)।

तेइच्छ न [चैकित्स्य] चिकित्सा-कर्म, प्रतीकार (दस ३)।

तेइच्छा स्त्री [चिकित्सा] प्रतीकार, इलाज, दवा (आचा; णाया १, १३)।

तेइच्छिय देखो तेगिच्छिय (विपा १, १)।

तेइच्छी स्त्री [चिकित्सा, चैकित्सी] प्रतीकार, इलाज (कप्प)।

तेइज्जग वि [तार्तीयीक] १ तीसरा। २ ज्वर-विशेष, जाड़ा देकर तीसरे-तीसरे दिन पर आनेवाला ज्वर, तिजारा (उत्तनि ३)।

तेइल्ल देखो तेअंसि (सुर ७, २१७; सुपा ३३)।

तेउ पुं [तेजस्] १ आग, अग्नि (भग; दं १३)। २ लेश्या-विशेष, तेजो-लेश्या (भग; कम्म ४, ५०)। ३ अग्निशिख नामक इन्द्र का एक लोकपाल (ठा ४; १)। ४ ताप, अभिताप (सूअ १, १, १)। ५ प्रकाश, उद्योत (सूअ २, १)। °आय देखो °काय (भग)। °कंत पुं [°कान्त] लोकपाल देव-विशेष (ठा ४, १)। °काइय पुं [°कायिक] अग्नि का जीव (ठा ३, १)। °काय पुं [°काय] अग्नि का जीव (पि ३५५)। °क्काइय देखो °काइय (पण्ण १; जीव १)। °प्पभ पुं [°प्रभ] अग्निशिख नामक इन्द्र का एक लोकपाल (ठा ४, १)। °प्फास पुं [°स्पर्श] उष्ण स्पर्श (आचा)। °लेस वि [°लेश्य] तेजो-लेश्यावाला (भग)। °लेसा स्त्री [°लेश्या] तप-विशेष के प्रभाव से होनेवाली शक्ति-विशेष से उत्पन्न होती तेज की ज्वाला (ठा ३, १; सम ११)। °लेस्स देखो °लेस (पण्ण १७)। °लेस्सा देखो °लेसा (ठा ३, ३)। °सिह पुं [°शिख] एक लोकपाल (ठा ४, १)। °सोय न [शौच] भस्म आदि से किया जाता शौच (ठा ५, २)।

तेउ देखो तेअय (पव २३१)।

तेंडुअ न [दे] वृक्ष-विशेष, टींबरू का पेड़ (दे ५, १७)।

तेंदु, तेंदुअ, तेंदुग पुं [तिन्दुक] १ वृक्ष-विशेष, तेंदु का पेड़ (पराण १; ठा ८; पउम ४२, ७)। २ गेंद, कन्दुक (पउम १५, १३)।

तेंदुसय पुं [दे] कन्दुक, गेंद (णाया १, ८)।

तेंबरु पुं [दे] क्षुद्र कीट-विशेष, त्रीन्द्रिय जन्तु की एक जाति (जीव १)।

तेगिच्छ देखो तेइच्छ (सुर १२, २११)।

तेगिच्छग वि [चिकित्सक] १ चिकित्सा करनेवाला। २ पुं. वैद्य, हकीम (उप ५९४)।

तेगिच्छा देखो तेइच्छा (सुर १२, २११)।

तेगिच्छायण देखो तिंगिच्छायण (राज)।

तेगिच्छि देखो तिगिंछि (राज)।

तेगिच्छिय वि [चैकित्सिक] १ चिकित्सा करनेवाला। २ पुं. वैद्य, हकीम। ३ न. चिकित्सा-कर्म, प्रतीकार-करण। °साला स्त्री [°शाला] दवाखाना, चिकित्सालय (णाया १, १३—पत्र १७९)।

तेचत्तालिस देखो ते-आलीस (प्राकृ ३१)।

तेज देखो तेज = तेजय्। तेजई, (प्राकृ ७५)।

तेज पुं [तेज] देश-विशेष (सम्मत्त २१६)।

तेजंसि देखो तेअंसि (पि ७४)।

तेजपाल पुं [तेजपाल] गुजरात के राजा वीरधवल का एक यशस्वी मंत्री (ती २)।

तेजलपुर न [तेजलपुर] गिरनार पर्वत के पास मंत्री तेजपाल का बसाया हुआ एक नगर (ती २)।

तेजस्सि देखो तेअंसि (वव १)।

तेज्ज (अप) देखो चय = त्यज्। तेजइ (पिंग)। संकृ. तेज्जिअ (पिंग)।

तेज्जिअ (अप) वि [त्यक्त] छोड़ा हुआ (पिंग)।

तेड सक [दे] बुलाना। तेडंति (सम्मत्त १६१)।

तेड्डु पुं [दे] १ शलभ, अन्न-नाशक कीट, टिड्डी। २ पिशाच, राक्षस (दे ५, २३)।

तेण अ [तेन] १ लक्षण-सूचक अव्यय, 'भमररुअं तेण कमलवणं' (हे २, १८३; कुमा)। २ उस तरफ (भग)।

तेण, तेणग, तेणय पुं [स्तेन] चोर, तस्कर (ओघ ११; कस; गच्छ ३; ओघ ४०२)। °प्पओग पुं [°प्रयोग] १ चोर को चोरी करने के लिए प्रेरणा करना। २ चोरी के साधनों का दान या विक्रय (धर्म २)।

तेणिअ, तेणिक्क न [स्तैन्य] चोरी, अदत्त वस्तु का ग्रहण (श्रा १४; ओघ ५६९; पण्ह १, ३)।

तेणिस वि [तैनिश] तिनिशवृक्ष-संबन्धी, बेंत का (भग ७, ९)।

तेणी स्त्री [स्तेना] चोर स्त्री (सम्मत्त १६१)।

तेण्ण न [स्तैन्य] चोरी, पर-द्रव्य का अपहरण (निचू १)।

तेण्हाइअ वि [तृष्णित] तृष्णा-युक्त, प्यासा (से १३, ३९)।

तेतलि पुं [तेतलिन्] १ धरणेन्द्र के गन्धर्व-सेना का नायक (इक)। २ देखो तेअलि (णाया १, १४—पत्र १९०)।

तेतिल देखो तीइल (जं ७)।

तेत्तिअ वि [तावत्] उतना (प्राप्र; गउड; गा ७१; कुमा)।

तेत्तिक (शौ) देखो तेत्तिअ (प्राकृ ९५)।

तेत्तिर देखो तित्तिर (जीव १)।

तेत्तिल वि [तावत्] उतना (हे २, १५७; कुमा)।

तेत्तिल न [तैतिल] ज्योतिष-प्रसिद्ध करण-विशेष (सुअनि ११)।

तेत्तुल, तेत्तुल्ल (अप) ऊपर देखो (हे ४, ४०७; कुमा; हे ४, ४३५ टि)।

तेत्थु (अप) देखो तत्थ = तत्र (हे ४, ४०४; कुमा)।

तेद्दह देखो तेत्तिल (हे २, १५७; प्राप्र; षड्; कुमा)।

तेन्न देखो तेण्ण (कस)।

तेम (अप) देखो तह = तथा (पिंग)।

तेमासिअ वि [त्रैमासिक] १ तीन महीने में होनेवाला (भग)। २ तीन मास-संबन्धी (सुर ६, २११; १४, २२८)।

तेम्व देखो तेम (हे ४, ४१८)।

तेर वि [त्रयोदश] तेरहवाँ (कम्म ६, १६)।

तेर (अप) वि [त्वदीय] तेरा, तुम्हारा (प्राकृ १२०)।

तेर, तेरस त्रि. ब. [त्रयोदशन्] तेरह, दस और तीन (श्रा ४४, दं २१; कम्म २, २९; ३३)।

तेरच्छ देखो तिरिच्छ = तिर्यंच् (प्राकृ १९)।

तेरस देखो तेरसम (कम्म ६, १६; पव ४६)।

तेरसम वि [त्रयोदश] तेरहवाँ (सम २५; णाया १, १—पत्र ७२)।

तेरसया स्त्री [दे] जैन मुनिओं की एक शाखा (कप्प)।

तेरसी स्त्री [त्रयोदशी] १ तेरहवाँ। २ तिथि-विशेष, तेरस (सम २९; सुर ३, १०५)।

तेरसुत्तरसय वि [त्रयोदशोत्तरशततम] एक सौ तेरहवाँ, ११३ वाँ (पउम ११३, ७२)।

तेरह देखो तेरस (हे १, १६५; प्राप्र)।

तेरासि पुं [त्रैराशिक] नपुंसक (पिंड ५७३)।

तेरासिअ वि [त्रैराशिक] १ मत-विशेष का अनुयायी, त्रैराशिक मत—जीव, अजीव और नोजीव इन तीन राशियों को मानने वाला (औप; ठा ७)। २ न. मत विशेष (सम ४०; विसे २४५१; ठा ७)।

तेरिच्छ देखो तिरिच्छ = तिर्यंच् (पव ३८)।

तेरिच्छ देखो तिरिच्छ = तिरश्चीन; 'दिव्वं व मणुस्सं वा तेरिच्छं वा सरागहिअएणं' (आप २१)।

तेरिच्छ न [तिर्यक्त्व] तिर्यंचपन, पशु-पक्षिपन (उप १०३१ टी)।

तेरिच्छिअ वि [तैरश्चिक] तिर्यक्-संबन्धी (ओघ २९९; भग)।

तेल न [तैल] १ गोत्र-विशेष, जो माण्डव्य गोत्र की एक शाखा है (ठा ७)। २ तिल का विकार, तेल (संक्षि १७)।

तेलंग पुं. ब. [तैलङ्ग] १ देश-विशेष। २ पुंस्त्री. देश-विशेष का निवासी मनुष्य, तैलंगी (पिंग)।

तेलाडी स्त्री [तैलाटी] कीट-विशेष, गंधोली (दे ७, ८४)।

तेलुक्क, तेलोअ, तेलोक्क न [त्रैलोक्य] तीन जगत—स्वर्ग, मर्त्य और पाताल लोक (प्रासू ९७; प्राप्र; णाया १, ४; पउम ८, ७६; हे १, १४८; २, ९७; षड्; संक्षि १७)। °दंसि वि [°दर्शिन्] सर्वज्ञ, सर्वदर्शी

(ओघ ५६६)। °णाह पुं [°नाथ] तीनों जगत् का स्वामी, परमेश्वर (षड्)। °मंडण न [°मण्डन] १ तीनों जगत् का भूषण। २ पुं. रावण का पट्ट-हस्ती (पउम ८०, ६०)।

तेल्ल न [तैल] तेल, तिल का विकार, स्निग्ध द्रव्य-विशेष (हे २, ६८; अणु पव ४)। °केला स्त्री [°केला] मिट्टी का भाजन-विशेष (राज)। °पल्ल न [°पल्य] तैल रखने का मिट्टी का भाजन-विशेष (दसा १०)। °पाइया स्त्री [°पायिका] क्षुद्र जन्तु-विशेष (आवम)।

तेल्लग न [तैलक] सुरा-विशेष (जीव ३)।

तेल्लिअ पुं [तैलिक] तेल बेचनेवाला (वव ६)।

तेल्लोअ, तेल्लोक्क } देखो तेलुक्क (पि १६६; प्राप्र)।

तेवँ, तेवँइ } (अप) देखो तह = तथा (हे ४, ३९७; कुमा)।

तेवट्ठ वि [त्रिषष्ट] तिरसठ की संख्यावाला, जिसमें तिरसठ अधिक हो ऐसी संख्या; 'तिन्नि तेवट्ठाइं पावादुयसयाइं' (पि २६५)।

तेवड (अप) वि [तावत्] उतना (हे ४, ४०७, कुमा)।

तेवण्णासा स्त्री [त्रिपञ्चाशत्] त्रेपन, ५३ (प्राकृ ३१)।

तेवीसइ स्त्री [त्रतोविंशति] तेईस (प्राकृ ३१)।

तेवुत्तरि देखो ते-वत्तरि (कम्म ५, ४)।

तेह (अप) वि [तादृश] उसके जैसा, वैसा (हे ४, ४०२; षड्)।

तेहिं (अप) अ. वास्ते, लिए (हे ४, ४२५; कुमा)।

तेहिय वि [त्र्याहिक] तीन दिन का (जीवस ११६)।

तेहुत्तरि देखो ते-वत्तरि (अणु १७६)।

तो देखो तओ (आचा; कुमा)।

तो अ [तदा] तब, उस समय (कुमा)।

तोअय पुं [दे] चातक पक्षी (दे ५, १८)।

तोंड देखो तुंड (हे १, ११६; प्राप्र)।

तोंतडि स्त्री [दे] करम्ब, दही-भात की बनी हुई एक खाद्य वस्तु (दे ५, ४)।

तोक्कय वि [दे] बिना ही कारण तत्पर होनेवाला (दे ५, १८)।

तोक्खार देखो तुक्खार; 'खुरखुरखयखोणीयलग्गसंखतोक्खारलक्खजुग्गो' (सुर १२, ६१)।

तोटअ न [त्रोटक] छन्द-विशेष (पिंग)।

तोड सक [तुड्] १ तोड़ना, भेदन करना। २ अक. टूटना। तोडइ (हे ४, ११६)। वकृ. तोडंत (भवि)। संकृ. तोडिउं (भवि), तोडित्ता (ती ७)।

तोड पुं [त्रोड] त्रुटि (उप पृ १८)।

तोडण वि [दे] असहन, असहिष्णु (दे ५, १८)।

तोडण न [तोदन] व्यथा, पीड़ा-करण (राज)।

तोडर न [दे] टोडर, माल्य-विशेष (सिरी १०२३)।

तोडहिआ स्त्री [दे] वाद्य-विशेष (आचा २, ११)।

तोडिअ वि [त्रोटित] तोड़ा हुआ (महा; सण)।

तोड्ड पुं [दे] क्षुद्र कीट-विशेष, चतुरिन्द्रिय जीव की एक जाति (राज)।

तोण पुंन [तूण] शरधि, भाथा, तरकस, तूणीर (पाअ; औप; हे १, १२५; विपा १, ३)।

तोणीर पुंन [तूणीर] शरधि, भाथा (पाअ, हे १, १२४; भवि)।

तोत्त न [तोत्र] प्रतोद, बैल को मारने या हाँकने का बाँस का आयुध-विशेष; पैना, सोंटा, चाबुक (पाअ; दे ३, १६; सुपा २३७; सुर १४, ५१)।

तोत्तडि [दे] देखो तोंतडि (पाअ)।

तोदग वि [तोदक] व्यथा उपजानेवाला, पीड़ा-कारक (उत्त २०)।

तोमर पुंन [दे. तोमर] मधपुडा, मधुमक्खी का घर या छत्ता; 'अह उड्डियाउ तोमर मुहाउ महुमक्खियाउ सव्वत्तो' (धर्मवि १२४)।

तोमर पुं [तोमर] १ बाण-विशेष, एक प्रकार का बाण (पण्ह १, १; सुर २, २८; औप)। २ न. छन्द-विशेष (पिंग)।

तोमरिअ पुं [दे] १ शस्त्र का प्रमार्जन करनेवाला (दे ५, १८)। २ शस्त्र-मार्जन (षड्)।

तोमरिगुंडी स्त्री [दे] वल्ली-विशेष (पाअ)।

तोमरी स्त्री [दे] वल्ली, लता (दे ५, १७)।

तोम्हार (अप) देखो तुम्हार (पि ४३४)।

तोय न [तोय] पानी, जल (पण्ह १, ३; वज्जा १४; दे २, ४७)। °धरा, धारा, स्त्री [°धारा] एक दिक्कुमारी देवी (इक; ठा ८)। °पट्ठ, °पिट्ठ न [°पृष्ठ] पानी का उपरिभाग (पण्ह १, ३; औप)।

तोय पुं [तोद] व्यथा, पीड़ा (ठा ४, ४)।

तोरण न [तोरण] १ द्वार का अवयव-विशेष, बहिर्द्वार (गा २६२)। २ बन्दनवार, फूल या पत्तों की माला (झालर) जो उत्सव में लटकाई जाती है (औप)। °उर न [°पुर] नगर-विशेष (महा)।

तोरविअ वि [दे] उत्तेजित (पाअ; कुप्र १६२)।

तोरामदा स्त्री [दे] नेत्र का रोग-विशेष (महानि ३)।

तोल देखो तुल = तोलय्। तोलइ, तोलेइ (पिंग, महा)। वकृ. तोलंत (वज्जा १५८)। कवकृ. तोलिज्जमाण (सुर १५, ६४)। कृ. तोलियव्व (स १६२)।

तोल पुंन [दे] मगध-देश प्रसिद्ध पल, परिमाण-विशेष (तंदु)।

तोलण पुं [दे] पुरुष, आदमी (दे ५, १७)।

तोलण न [तोलन] तौल करना, तौलना, नाप करना (राज)।

तोलिय वि [तोलित] तौला हुआ (महा)।

तोल्ल न [तौल्य, तौल] तौल, वजन (कुप्र १४६)।

तोवट्ट पुं [दे] १ कान का आभूषण-विशेष। कमल की कर्णिका (दे ५, २३)।

तोस सक [तोषय्] खुशी करना, सन्तुष्ट करना। तोसइ (उव)। कर्म. तोसिज्जइ (गा ५०८)।

तोस पुं [तोष] खुशी, आनन्द, संतोष (पाअ; सुपा २७५)। °यर वि [°कर] संतोष-कारक (काल)।

तोस न [दे] धन, दौलत (दे ५, १७)।

तोसलि पुं [तोसलिन्] १ ग्राम-विशेष। २ देश-विशेष। ३ एक जैन आचार्य (राज)।

°पुत्त [°पुत्र] एक प्रक प्रसिद्ध जैन आचार्य (आवम)।
तोसलिय पुं [तोसलिक] तोसलि-ग्राम का अधीश क्षत्रिय (आवम)।
तोसविअ, तोसिअ वि [तोषित] खुश किया हुआ, संतोषित (हे ३, १५०; पउम ७७, ८८)।
तोहार (अप) देखो तुहार (पिंग; पि ४३४)।
°त्त वि [°त्र] त्राण-कर्ता, राक्षक; 'सकलत्तं संतुट्ठो सकल त्तो सो नरो होइ' (सुपा ३६६)।
°त्तण देखो तण (से १, ६१)।
°त्ति अ [इति] उपालम्भ-सूचक अव्यय (प्राकृ ७८)।
°त्ति देखो इअ = इति (कप्प; स्वप्न १०; सण)।
°त्थ देखो एत्थ (गा १३२)।
°त्थ वि [°स्थ] स्थित, रहा हुआ (आचा)।
°त्थ देखो अत्थ (वाअ १५)।
°त्थअ देखो थय = स्तृत (से १, १)।
°त्थउड देखो थउड (गउड)।
°त्थंब देखो थंब (चारु २०)।
°त्थंभ देखो थंभ (कुमा)।
°त्थंभण देखो थंभण (वा १०)।
°त्थरु देखो थरु (पि ३२७)।
°त्थल देखो थल (काप्र ८७)।
°त्थली देखो थली (पि ३८७)।
°त्थव देखो थव = स्तु। वकृ. °त्थवंत (नाट)।
°त्थवअ देखो थवय (से १, ४०; नाट)।
°त्थाण देखो थाण (नाट)।
°त्थाल देखो थाल (कुमा)।
°त्थिअ देखो थिअ (गा ४२१)।
°त्थिर देखो थिर (कुमा)।
°त्थोअ देखो थोअ (नाट—वेणी २४)।

॥ इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि तयाराइसद्दसंकलणो
तेवीसइमो तरंगो समत्तो ॥

थ

थ पुं [थ] दन्त-स्थानीय व्यञ्जन-विशेष (प्राप; प्रामा)।
थ अ. १-२ वाक्यालंकार और पाद-पूर्ति में प्रयुक्त किया जाता अव्यय; 'किं थ तयं पम्हुट्ठं जं थ तया भो जयंत पवरम्मि' (णाया १, १—पत्र १४८; पंचा ११)।
°थ देखो एत्थ (गा १३१; १३२; सण)।
थइअ वि [स्थगित] आच्छादित, ढका हुआ (से ५, ४३; गा ५७०)।
थइअ°, थइआ स्त्री [स्थगिका] पानदानी, पान रखने का पात्र, पानदान (महा)। °इत्त पुं [°वत्] ताम्बूल-पात्र-वाहक नौकर (कुप्र ७१)। °धर पुं [°धर] ताम्बूल-पात्र का वाहक नौकर (सुपा १०७)। °वाहक पुं [°वाहक] पानदानी का वाहक नौकर (सुपा १०७)। देखो थगिय°।
थइआ स्त्री [दे] थेली, थैली, कोथली या बसनी—कमर में बाँधने की रुपयों की थैली 'संबलथइआसणाहो', 'दंसिया संवलत्थई (? इ) या' (कुप्र १२; ८०)।
थइउं देखो थय = स्थगय्।
थउड न [स्थपुट] १ विषम और उन्नत प्रदेश (दे २, ७८)। २ वि. नीचा-ऊँचा (गउड)।
थउडिअ वि [स्थपुटित] १ विषम और उन्नत प्रदेशवाला। २ नीचा-ऊँचा प्रदेशवाला (गउड)।
थउडु न [दे] भल्लातक, वृक्ष-विशेष, भिलावा (दे ५, २६)।
थंग सक [उद् + नामय्] ऊँचा करना, उन्नत करना। थंगइ (प्राकृ ३५)।
थंडिल न [स्थण्डिल] १ शुद्ध भूमि, जन्तु-रहित प्रदेश (कस; निचू ४)। २ क्रोध, गुस्सा (सूअ १, ६)।
थंडिल्ल पुं [स्थण्डिल] क्रोध, गुस्सा (सूअ १, ६, १३)।
थंडिल्ल न [स्थण्डिल] शुद्ध भूमि (सुपा ५५८; आचा)।
थंडिल्ल न [दे] मण्डल, वृत्त प्रदेश (दे ५, २५)।
थंत देखो था।
थंब वि [दे] विषम, असम (दे ५, २४)।
थंब पुं [स्तम्ब] तृण आदि का गुच्छ (दे ८, ४६; ओघ ७७१; कुप्र २२३)।
थंभ अक [स्तम्भ्] १ रुकना, स्तब्ध होना, स्थिर होना, निश्चल होना। २ सक. क्रिया-निरोध करना, अटकाना, रोकना, निश्चल करना। थंभइ (भवि)। कर्म. थंभिज्जइ (हे २, ९)। संकृ. थंभिउं (कुप्र ३८५)।
थंभ पुं [स्तम्भ] घेरा, 'थंभतित्थत्थंभत्थं एइ रोसप्पसरकलुसिओ नाह संगामसीहो' (हम्मीर २२)। °तित्थ न [°तीर्थ] एक जैन तीर्थ (हम्मीर २२)।
थंभ पुं [स्तम्भ] १ स्तम्भ, थम्भा, खम्भा (हे २, ९; कुमा; प्रासू ३३)। २ अभिमान, गर्व, अहंकार (सूअ १, १३, उत्त ११)। °विज्जा स्त्री [°विद्या] स्तब्ध—बेहोश या निश्चेष्ट करने की विद्या (सुपा ४६३)।
थंभण न [स्तम्भन] १ स्तब्ध-करण, थभाँना (विसे ३००७, सुपा ५६६)। २ स्तब्ध करने का मन्त्र (सुपा ५६६)। ३

गुजरात का एक नगर, जो आजकल 'खंभात' नाम से प्रसिद्ध है (ती ५१)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष, खंभात (सिग्घ १)।
थंभणया स्त्री [स्तम्भना] स्तब्ध-करण (ठा ४, ४)।
थंभणिया स्त्री [स्तम्भनिका] विद्या-विशेष (धर्मवि १२४)।
थंभणी स्त्री [स्तम्भनी] स्तम्भन करनेवाली विद्या-विशेष (णाया १, १६)।
थंभय देखो थंभ = स्तम्भ (कुमा)।
थंभिय वि [स्तम्भित] १ स्तब्ध किया हुआ, थमाया हुआ (कुप्र १४१; कुमा; कप्प; औप)। २ जो स्तब्ध हुआ हो, अवष्टब्ध (स ४६४)।
थक्क अक [स्था] रहना, बैठना, स्थिर होना। थक्कइ (हे ४, १६; पिंग)। भवि. थक्किस्सइ (पि ३०६)।
थक्क अक [फक्क्] नीचे जाना। थक्कइ (हे ४, ८७)।
थक्क अक [श्रम्] थकना, श्रान्त होना। थक्कंति (पिंग)।
थक्क वि [स्थित] रहा हुआ (कुमा; वज्जा ३८; सुपा २३७; आरा ७७; सट्ठि ६)।
थक्क पुं [दे] १ अवसर, प्रस्ताव, समय (दे ५, २४; वव ६; महा; विसे २०६३)। २ वि. थका हुआ, श्रान्त; 'थक्कं सव्वशरीरं हियए सूलं सुदूसहं एइ' (सुर ७, १८५, ४ १६५)।
थक्किअ वि [श्रान्त] थका हुआ (पिंग)।
थक्कव सक [स्थापय्] स्थापन करना, रखना। थक्कवइ (प्राकृ १२०)।
थग देखो थय = स्थगय्। भवि. थगइस्सं (पि २२१)।
थगण न [स्थगन] पिधान, ढकना, संवरण, आवरण, आच्छादन, पर्दा (दे २, ८३; ठा ४, ४)।
थगथग अक [थगथगाय्] धड़कना, काँपना। वकृ. थगथगिंत (महा)।
थगिय वि [स्थगित] पिहित, आच्छादित, आवृत (दस ५, १; आवम)।
थगिय° देखो थइअ°। °ग्गाहि पुं [°ग्राहिन्] ताम्बूल-वाहक नौकर (सुपा ३३६)।
थग्गया स्त्री [दे] चंचु, चोंच (दे ५, २६)।
थग्घ सक [स्ताघ्] जल की गहराई को नापना। कर्म. थग्घिज्जए (पव ८१)।
थग्घ पुं [दे] थाह, तला, पानी के नीचे की भूमि, गहराई का अन्त, सीमा (दे ५,२४)।
थग्घा स्त्री [दे] ऊपर देखो (पाअ)।
थट्ट पुंन [दे] १ ठठ, भीड़, झुण्ड, समूह, यूथ, जत्था; 'दुद्धरतुरंगथट्टा' (सुपा २८८), 'विहडइ लहु दुट्ठानिट्ठदोघट्टथट्टं' (लहुअ ४)। २ ठाठ, ठाट, तड़क-भड़क, सजधज, आडम्बर (भवि)।
थट्टि स्त्री [दे] पशु, जानवर (दे ५, २४)।
थड पुंन [दे] ठठ, यूथ, समूह (भवि)।
थड्ढ वि [स्तब्ध] १ निश्चल। २ अभिमानी गर्विष्ठ (सुपा ४३७; ५८२)।
थड्ढिअ वि [स्तम्भित] १ स्तब्ध किया हुआ। २ स्तब्ध, निश्चल। ३ न. गुरु-वन्दन का एक दोष, अकड़ कर गुरु को किया जाता प्रणाम (गुभा २३)।
थण अक [स्तन्] १ गरजना। २ आक्रन्द करना, चिल्लाना। ३ आक्रोश करना। ४ जोर से नीसास लेना। वकृ. थणंत (गा २६०)।
थण पुं [स्तन] थन, कुच, पयोधर, चूची (आचा; कुमा; काप्र १६१)। °जीवि वि [°जीविन्] स्तन-पान पर निभनेवाला बालक (आ १४)। °वई स्त्री [°वती] बड़े स्तनवाली (गउड)। °विसारि वि [°विसारिन्]। स्तन पर फैलनेवाला (गउड)। °सुत्त न [°सूत्र] उरःसूत्र (दे)। °हर पुं [°भर] स्तन का भार या बोझ (हे १, १८६)।
थणंधय पुं [स्तनन्धय] स्तन-पान करनेवाला बालक, छोटा बच्चा; 'निययं थणं धयंतं थणंधयं हंदि पिच्छंति' (सुर १०, ३७; अच्चु ६३)।
थणण न [स्तनन] १ गर्जन, गरजना (सूअ १, ५, २)। २ आक्रन्द, चिल्लाहट (सूअ १, ५, १)। ३ आक्रोश, अभिशाप (राज)। ४ आवाजवाला नीसास (सूअ १, २, ३)।
थणय पुं [स्तनक] दूसरी नरक-भूमि का एक नरक-स्थान (देवेन्द्र ६)।
थणलोलुअ पुं [स्तनलोलुप] दूसरी नरक-भूमि का एक नरक-स्थान (देवेन्द्र ७)।
थणिअ पुं [स्तनित] एक नरक-स्थान (देवेन्द्र ६, २६)।
थणिय न [स्तनित] १ मेघ का गर्जन (वज्जा १२; दे ५, २७)। २ आक्रन्द, चिल्लाहट (सम १५३)। ३ पुं. भवनपति देवों की एक जाति (औप; पण्ह १, ४)। °कुमार पुं [°कुमार] भवनपति देवों की एक जाति (ठा १, १)।
थणिल्ल सक [चोरय्] चुराना, चोरी करना। थणिल्लइ (प्राकृ ७२)।
थणिल्ल वि [स्तनवत्] स्तनवाला (कप्पू)।
थणुल्लअ पुं [स्तनक] छोटा स्तन (गउड)।
थण्णु देखो थाणु (गा ४२२)।
थत्तिअ न [दे] विश्राम (दे ५, २६)।
थद्ध देखो थड्ढ (सम ५१; गा ३०४, वज्जा १०)।
थन्न न [स्तन्य] स्तन का दूध। °जीवि वि [°जीविन्] छोटा बच्चा (सुपा ६१६)।
थप्प सक [स्थापय्] रखना, थप्पी करना। थप्पइ (सिरि ८६७)।
थप्पण न [स्थापन] न्यास, न्यसन (कुप्र ११७)।
थप्पिअ वि [स्थापित] रक्खा हुआ, न्यस्त (पिंग)।
थब्भ अक [स्तभ्] अहंकार करना। थब्भइ (सूअ १, १३, १०)।
थब्भर पुं [दे] अयोध्या नगरी के समीप का एक ह्रद-दह या झील (ती ११)।
थमिअ वि [दे] विस्मृत (दे ५, २५)।
थय सक [स्थगय्] आच्छादन करना, आवृत करना, ढकना। थएइ, थएसु (पि ३०६; गा ६०५)। भवि. थइस्सं (गा ३१४)। हेकृ. थइउं (गा ३६४)।
थय वि [स्तृत] व्याप्त, भरपूर (से १, १)।
थय पुं [स्तव] स्तुति, स्तवन, गुण-कीर्तन (अजि ३६; सं ४४)।
थयण न [स्तवन] ऊपर देखो; 'थुइथयण-वंदणनमंसणाणि एगट्ठिआणि एयाइं' (आव २)।

थर पुं [दे] दही की तर, दही के ऊपर की मलाई (दे ५, २४)।
थरत्थर } अक [दे] थरथरना, काँपना। थरत्थरइ, थरथरेइ, थरहरइ (सट्टि ६६; पि २०७; सुर ७, ६; गा १६५)। वकृ. **थरथरंत, थरथराअंत, थरथराअमाण, थरथरेंत** (ओघ ४७०; पि ५५८; नाट—मालती ५५; पउम ३१, ४४)।
थरथर
थरहर
थरहरिअ वि [दे] कम्पित (दे ५, २७; भवि; सुर १, ७; सुपा २१; जय १०)।
थरु पुं [दे. त्सरु] खड्ग-मुष्टि, तलवार की मूठ (दे ५, २४)।
थरुगिण पुं [थरुकिन] १ देश-विशेष। २ पुंस्त्री. उस देश का निवासी। स्त्री. °गिणिआ (इक)।
थल न [स्थल] १ भूमि, जगह, सूखी जमीन (कुमा; उप ६८६ टी)। २ ग्रास लेते समय खुले हुए मुँह की फाँक, खुले हुए मुँह की खाली जगह (वव ७)। °**इल्ल** वि [°वत्] स्थल-युक्त (गउड)। °**कुक्कुडियंड** न [°कुक्कुटयण्ड] कवल-प्रक्षेप के लिए खुला हुआ मुख (वव ७)। °**चार** पुं [°चार] जमीन में चलना (आचा)। °**नलिणी** स्त्री [°नलिनी] जमीन में होनेवाला कमल का गाछ (कुमा)। °**य** वि [°ज] जमीन में उत्पन्न होनेवाला (पराग १; पउम १२, ३७)। °**यर** वि [°चर] १ जमीन पर चलनेवाला। २ जमीन पर चलनेवाला पंचेन्द्रिय तिर्यंच प्राणी (जीव ३; जी २०; औप)। स्त्री. °**री** (जीव ३)।
थलय पुं [दे] मंडप, तृणादि-निर्मित गृह (दे ५, २५)।
थलहिगा } स्त्री [दे] मृतक-स्मारक, शव को गाड़कर उस पर किया जाता एक प्रकार का चबूतरा (स ७५६; ७५७)।
थलहिया
थली स्त्री [स्थली] जल-शून्य भू-भाग (कुमा; पात्र)। °**घोडय** पुं [°घोटक] पशु-विशेष (वव ७)।
थली स्त्री [स्थली] ऊँची जमीन (उत्त ३०, १७; सुख ३०, १७)।
थल्लिया स्त्री [दे. स्थालिका] थलिया, छोटा थाल, भोजन करने का बरतन (पउम २०, १६६)।

थव सक [स्तु] स्तुति करना। वकृ. **थवंत** (नाट)।
थव देखो **थय** = स्तव (हे २, ४६; सुपा ४४६)।
थव पुं [दे] पशु, जानवर (दे ५, २४)।
थवइ पुं [स्थपति] वर्धकि, बढ़ई (दे २, २२)।
थवइय वि [स्तबकित] स्तबकवाला, गुच्छ-युक्त (णाया १, १; औप)।
थवइल्ल वि [दे] जाँघ फैलाकर बैठा हुआ (दे ५, २६)।
थवक्क पुं [दे] थोक, समूह, जत्था; 'लब्भइ कुलवहुसुरए थवक्कओ सयलसोक्खाणं' (वज्जा ६६)।
थवण देखो **थयण** (आव २)।
थवणिया स्त्री [स्थापनिका] न्यास, जमा रखी हुई वस्तु; 'कन्नगोभूमालियथवणियअव-हारकूडसक्खिज्जं' (सुपा २७५)।
थवय पुं [स्तबक] फूल आदि का गुच्छ (दे २, १०३; पात्र)।
थविआ स्त्री [दे] प्रसेविका, वीणा के अन्त में लगाया जाता छोटा काष्ठ-विशेष (दे २, २५)।
थविय वि [स्थापित] न्यस्त, निहित (भवि)।
थविय वि [स्तुत] जिसकी स्तुति की गई हो वह, श्लाघित (सुपा ३४३)।
थविर वि [स्थविर] वृद्ध, बूढा (धर्मवि १३४)।
थवी [दे] देखो **थविआ** (दे २, २५)।
थस } वि [दे] विस्तीर्ण (दे ५, २५)।
थसल
थह पुं [दे] निलय, आश्रय, स्थान (दे ५, २५)।
था देखो **ठा**। थाइ (भवि)। भवि. थाहिइ (पि ५२४)। वकृ. **थंत** (पउम १४, १३४; भवि)। संकृ. **थाऊण** (हे ४, १६)।
थाइ वि [स्थायिन्] रहनेवाला। °**णी** स्त्री [°नी] वर्ष-वर्ष पर प्रसव करनेवाली घोड़ी (राज)।
थागत्त न [दे] जहाज के भीतर घुसा हुआ पानी (सिरि ४, २५)।

थाण देखो **ठाण** (हे ४, १६; विसे १८५६; उप पृ ३३२)।
थाणय न [स्थानक] आलवाल, कियारी (दे ५, २७)।
थाणय न [दे] १ चौकी, पहरा; 'भयाणया अडवि त्ति निविट्ठाइं थाणयाइं', 'तओ बहुवो-लियाए रयणीए थाणयनिविट्ठा तुरियतुरिय-मागया सबरपुरिसा' (स ५३७; ५४६)। २ पुं. चौकीदार, चौकी करनेवाला आदमी, पहरेदार; 'पहायसमए य विसंसरिएसुं थाण-एसुं' (स ५३७)।
थाणिज्ज वि [दे] गौरवित, सम्मानित (दे ४, ५)।
थाणीय वि [स्थानीय] स्थानापन्न (स ६६७)।
थाणु पुं [स्थाणु] १ महादेव, शिव (हे २, ७; कुमा; पात्र)। २ ठूठा वृक्ष (गा २३२; पात्र); 'दवदड्ढथाणुसरिसं' (कुप्र १०२)। ३ खीला। ४ स्तम्भ (राज)।
थाणेसर न [स्थानेश्वर] समुद्र के किनारे पर का एक शहर (उप ७२८ टी; स १४८)।
थाम वि [दे] विस्तीर्ण (दे ५, २५)।
थाम न [स्थामन्] १ बल, वीर्य, पराक्रम (हे ४, २६७; ठा ३, १)। २ वि. बल-युक्त (निचू ११)। °**व** वि [°वत्] बलवान् (उत्त २)।
थाम पुंन [स्थामन्] १ बल। २ प्राण; 'था (? था) मो वा परिहायइ गुणणु (? गुण-णणु) प्पेहासु अ असत्तो' (पिंड ६६४)।
थाम न [दे. स्थान] स्थान, जगह (संक्षि ४७; स ४६; ७४३); 'सेवालियभूमितले फिल्लुसमाणा य थामथामम्मि' (सुर २, १०५)।
थार पुं [दे] घन, मेघ (दे ५, २७)।
थारुणय वि [थारुकिन] देश-विशेष में उत्पन्न। स्त्री. °**णिया** (औप)। देखो **थरुगिण**।
थाल पुंन [स्थाल] बड़ी थलिया, भोजन करने का पात्र (दे ६, १२; अंत ५; उप पृ २५७)।
थालइ वि [स्थालकिन्] १ थालवाला। २ पुं. वानप्रस्थ का एक भेद (औप)।
थाला स्त्री [दे] धारा (षड्)।

थाली स्त्री [स्थाली] पाक-पात्र, हाँडी, बटलोही (ठा ३, १; सुपा ४८७)। °पाग वि [°पाक] हाँडी में पकाया हुआ (ठा ३, १)।

थाव सक [स्थापय्] १ स्थिर करना। २ रखना। थावए (उत्त २, ३२)।

थावच्चा स्त्री [स्थापत्या] द्वारका-निवासी एक गृहस्थ स्त्री (णाया १, ५)। °पुत्त पुं [°पुत्र] स्थापत्या का पुत्र, एक जैन मुनि (णाया १, ५; अंत)।

थावण न [स्थापन] न्यास, आधान (स २१३)।

थावय पुं. [स्थापक] समर्थ हेतु, स्वपक्ष-साधक हेतु (ठा ४, ३—पत्र २५४)।

थावर वि [स्थावर] १ स्थिर रहनेवाला। २ पुं. एकेन्द्रिय प्राणी, केवल स्पर्शेन्द्रियवाला—पृथिवी, पानी और वनस्पति आदि का जीव (ठा ३, २; जी २)। ३ एक विशेष-नाम, एक नौकर का नाम (उप २६७ टी)। °काय पुं [°काय] एकेन्द्रिय जीव (ठा २, १)। °णाम, °नाम न [°नामन्] कर्म-विशेष, स्थावरत्व-प्राप्ति का कारण-भूत कर्म (पंच ३; सम ६७)।

थासग [दे] कुदाल (आव० टिप्पण—पत्र ५६, १)।

थासग } पुं [स्थासक] १ दर्पण, आदर्श,
थासय } शीशा (विपा १, २—पत्र २४)। २ दर्पण के आकार का पात्र-विशेष (औप; अनु; णाया १, १ टी)। ३ अश्व का आभरण-विशेष (राज)।

थाह पुं [दे] १ स्थान, जगह। २ वि. अस्ताघ, गंभीर जल-वाला। ३ विस्तीर्ण। ४ दीर्घ, लम्बा (दे ५, ३०)।

थाह पुं [स्ताघ] थाह, तला, गहराई का अन्त, सीमा (पाअ; विसे १३३२; णाया १, ९; १४; से ८, ४०)।

थाहिअ पुं [दे] आलाप, स्वर विशेष (सुपा १६)।

थिअ वि [स्थित] रहा हुआ (स २७०; विसे १०३५; भवि)।

थिइ देखो ठिइ (से २, १८; गउड)।

थिंदिणी स्त्री [दे] छन्द-विशेष; 'थिंदिणिच्छंद-रासेण' (सम्मत्त १४१)।

थिंप अक [तृप्] तृप्त होना, संतुष्ट होना। थिंपइ (प्राप्र)। भवि. थिंपिहिति (प्राप्र ८, २२ टी)। संकृ. थिंपिअ (प्राप्र ८, २२ टी)।

थिग्गल न [दे] १ भित्ति-द्वार, भीत में किया हुआ दरवाजा (दस ५, १, १५)। २ फटे-फुटे वस्त्र में किया जाता संधान, वस्त्र आदि के खंडित भाग में लगाई जाती जोड़ (पण्ह १७; विसे १४३९ टी)।

थिग्गल्ल पुंन [दे] १ छिद्र। २ गिरने के बाद दुरुस्त (ठीक) किया हुआ गृह-भाग (आचा २, १, ६, २)।

थिज्ज देखो थेज्ज = स्थैर्य (संबोध ४९)।

थिण्ण वि [स्त्यान] कठिन, जमा हुआ (हे १, ७४; २, ९९; से २, ३०)। देखो थीण।

थिण्ण वि [दे] १ स्नेह-रहित दयावाला। २ अभिमानी, गर्व-युक्त (दे ४, ३०)।

थिन्न वि [दे] गर्वित, अभिमानी (पाअ)।

थिप्प देखो थिंप। थिप्पइ (हे ४, १३८)।

थिप्प अक [वि + गल्] गल जाना। थिप्पइ (हे ४, १७५)।

थिबुक पुं [स्तिबुक] कन्द-विशेष (सुख ३६, ६९)।

थिम सक [स्तिम्] आर्द्र करना, गीला करना। हेकृ. थिमिउं (राज)।

थिमिअ वि [दे. स्तिमित] स्थिर, निश्चल (दे ५, २७; से २, ४३; ८, ६१; णाया १, १; विपा १, १; पण्ह १, ४; २, ५; औप; सुज्ज १; सूअ १, ३, ४)। २ मन्थर, धीमा (पाअ)।

थिमिअ पुं [स्तिमित] राजा अन्धकवृष्णि के एक पुत्र का नाम (अंत ३)।

थिम्म सक [स्तिम्] १ आर्द्र करना। अक. आर्द्र होना। थिम्मइ (प्राकृ १२०)।

थिर वि [स्थिर] १ निश्चल, निष्कम्प (विपा १, १; सम ११९; णाया १, ८)। २ निष्पन्न, संपन्न (दस ७, ३५)। °णाम, °नाम न [°नामन्] कर्म-विशेष, जिसके उदय से दन्त, हड्डी आदि अवयवों की स्थिरता होती है (कम्म १, ४९; सम ६७)। °वलिया स्त्री [°वलिका] जन्तु-विशेष, सर्प की एक जाति (जीव २)।

थिरणाम वि [दे] चल-चित्त, चंचल-मनस्क (दे ५, २७)।

थिरण्णेस वि [दे] अस्थिर, चंचल (षड्)।

थिरसीस वि [दे] १ निर्भीक, निडर। २ निर्भर। ३ जिसने सिर पर कवच बाँधा हो वह (दे ५, ३१)।

थिरिम पुंस्त्री [स्थैर्य] स्थिरता (सण)।

थिरीकण न [स्थिरीकरण] स्थिर करना, दृढ़ करना, जमाना (श्रा ६; रयण ६९)।

थिल्ल वि [दे] युग्म (चउपन्न० विबुधानंद)।

थिल्लि स्त्री [दे] यान-विशेष—१ दो घोड़े की बग्घी। २ दो खच्चर आदि से वाह्य यान (सूअ २, २; ६२; णाया १, १ टी—पत्र ४३; औप)।

थिविथिव अक [थिवथिवाय्] 'थिव-थिव' आवाज करना। वकृ. थिविथिवंत (विपा १, ७)।

थिवुग } पुं [स्तिबुक] जल-बिन्दु (विसे
थिवुय } ७०४; ७०५; सम १४९)। °संकम पुं [°संक्रम] कर्म-प्रकृतियों का आपस में संक्रमण-विशेष (पंचा ५)।

थीहु पुंस्त्री [दे] कन्द-विशेष (उत्त ३६, ९९)।

थिहु पुं [स्तिभु] वनस्पति-विशेष (राज)।

थी स्त्री [स्त्री] स्त्री, महिला, नारी, औरत (हे २, १३०; कुमा; प्रासू ६५)।

थीण देखो थिण्ण (हे १, ७४; दे १, ६१; कुमा; पाअ)। °गिद्धि स्त्री [°गृद्धि] निकृष्ट निद्रा-विशेष (ठा ९; विसे २३४; उत्त ३३, ५)। °द्धि स्त्री [°र्द्धि] अधम निद्रा-विशेष (सम १५)। °द्धिय वि [°र्द्धिक] स्त्यानर्द्धि निद्रा वाला (विसे २३५)।

थु अ. तिरस्कार-सूचक अव्यय (प्रति ८१)।

थुअ वि [स्तुत] जिसकी स्तुति की गई हो वह, प्रशंसित (दे ८, २७; षण ५०; अजि १८)।

थुअ देखो थुण। थुअइ (प्राकृ ६७)।

थुइ स्त्री [स्तुति] स्तव, गुण-कीर्तन (कुमा; चैत्य १; सुर १०, १०३)।

थुइवाय पुं [स्तुतिवाद] प्रशंसा-वचन (चेइय ७४४)।

थुक्क अक [थूत्+कृ] १ थूकना । २ सक. तिरस्कार करना, थुतकारना, अनादर के साथ निकालना । थुक्केइ (वज्जा ४६) । संकृ. थुक्किऊण (सुपा ३४६) ।

थुक्क न [थूत्कृत] थूक, कफ, खखार (दे ४, ४१) ।

थुक्कार पुं [थूत्कार] तिरस्कार (राय) ।

थुक्कार सक [थूत्कारय्] तिरस्कार करना । कवकृ थुक्कारिज्जमाण (पि ५६३) ।

थुक्किअ वि [दे] उन्नत, ऊँचा (दे ५, २८) ।

थुक्किअ वि [थूत्कृत] थूका हुआ (दे ५,२८; सुपा ३४६) ।

थुड न [दे. स्थुड] वृक्ष का स्कन्ध; 'चीरीउ करेऊण बद्धा ताए थुडेसुं' (सुपा ५८४, ३६६) ।

थुडंकिअय न [दे] रोष-युक्त वचन (पाअ) ।

थुडुंकिअ न [दे] १ अल्प-कुपित मुँह का संकोच, थोड़ा गुस्सा होने से होता मुँह का संकोच । २ मौन, चुपकी (दे ५, ३१) ।

थुड्डहीर न [दे] चामर (दे ५, २८) ।

थुण सक [स्तु] स्तुति करना, गुण-वर्णन करना । थुणइ (हे ४, २४१) । कर्म. थुव्वइ, थुणिज्जइ (हे ४, २४२) । वकृ. थुणंत (भवि) । कवकृ. थुव्वंत, थुव्वमाण (सुपा ८८; सुर ४, ६६; स ७०१) । संकृ. थोऊण (काल) । हेकृ. थोत्तुं (मुणि १०८७५) । कृ. थुव्व, थोअव्व (भवि; चैत्य ३५; से ७१०) ।

थुणण न [स्तवन] गुण-कीर्तन, स्तुति (सुपा ३७) ।

थुणिर वि [स्तोतृ] स्तुति करनेवाला (काल) ।

थुण्ण वि [दे] दृप्त, अभिमानी (दे ५, २७) ।

थुत्त न [स्तोत्र] स्तुति, स्तुति-पाठ (भवि) ।

थुत्थुक्कारिय वि [थुथुत्कारित] थुतकारा हुआ, तिरस्कृत, अपमानित (भवि) ।

थुथूकार पुं [थुथूत्कार] तिरस्कार (प्रयौ ८१) ।

थुरुणुल्लणय न [दे] शय्या, बिछौना (दे ५, २८) ।

थुलम पुं [दे] पट-कुटी, तंबू, वस्त्र-गृह, कपड़-कोट, खेमा (दे ५, २८) ।

थुल्ल वि [दे] परिवर्तित, बदला हुआ (दे ५, २७) ।

थुल्ल वि [स्थूल] मोटा (हे २, ६६; प्रामा) ।

थुल्ल वि [स्थूल] मोटा, तगड़ा । स्त्री. °ल्ली (पिंड ४२६) ।

थुव देखो थुण । थुवइ (प्राकृ ६७) ।

थुवअ वि [स्तावक] स्तुति करनेवाला (हे १, ७५) ।

थुवण न [स्तवन] स्तुति, स्तव (कुप्र ३५१) ।

थुव्व } देखो थुण ।
थुव्वंत }

थू अ. निन्दा-सूचक अव्यय; 'थू निल्लज्जो लोओ' (हे २, २००; कुमा) ।

थूण पुं [दे] अश्व, घोड़ा (दे ५, २६) ।

थूण देखो तेण = स्तेन (हे २, १४७) ।

थूणा स्त्री [स्थूणा] खम्भा, खूँटी (षड्; पराह १५) ।

थूणाग पुं [स्थूणाक] सन्निवेश-विशेष, ग्राम-विशेष (आवम) ।

थूथू अ [दे] घृणा-सूचक अव्यय (चंड) ।

थूभ पुं [स्तूप] थूहा, टीला, ढूह, स्मृति-स्तम्भ (विसे ६६८; सुपा २०६; कुप्र १६५; आचा २, १, २) ।

थूभिया } स्त्री [स्तूपिका] १ छोटा स्तूप (ओघ ४३६; औप) । २ छोटा शिखर (सम १३७) ।
थूभियागा }

थूरी स्त्री [दे] तन्तुवाय का एक उपकरण (दे ५, २८) ।

थूल देखो थुल्ल (पाअ; पउम १४, ११३; उवा) । °भद्द पुं [°भद्र] एक सुप्रसिद्ध जैन महर्षि (हे १, २५५; पडि) ।

थूलघोण पुं [दे] सूकर, वराह (दे ५,२६) ।

थूव } देखो थूभ (दे ७, ४०; सुर १, ५८) ।
थूह }

थूह पुं [दे] १ प्रासाद का शिखर (दे ५, ३२; पाअ) । २ चातक पक्षी । ३ वल्मीक, दीमक (दे ५, ३२) ।

थेअ वि [स्थेय] १ रहने योग्य । २ जो रह सकता हो । ३ पुं. फैसला करनेवाला, न्यायाधीश (हे ४, २६७) ।

थेग पुं [दे] कन्द-विशेष (श्रा २०; जी ६) ।

थेज्ज न [स्थैर्य] स्थिरता (विसे १४) ।

थेज्ज देखो थेअ (वव ३) ।

थेण पुं [स्तेन] चोर, तस्कर (हे १,१४७) ।

थेणिल्लिअ वि [दे] १ हृत, छीना हुआ । २ भीत, डरा हुआ (दे ५, ३२) ।

थेप्प देखो थिप्प । थेप्पइ (पि २०७; संक्षि ३४) ।

थेर वि [स्थविर] १ वृद्ध, बूढ़ा (हे १,१६६ । २, ८६; भग ६, ३३) । २ पुं. जैन साधु (ओघ १७; कप्प) । °कप्प पुं [°कल्प] १ जैन मुनियों का आचार-विशेष, गच्छ में रहनेवाले जैन मुनियों का अनुष्ठान । २ आचार-विशेष का प्रतिपादक ग्रन्थ (ठा ३, ४; ओघ ६७०) । °कप्पिय पुं [°कल्पिक] आचार-विशेष का आश्रय करनेवाला, गच्छ में रहनेवाला जैन मुनि (पव ७०) । °भूमि स्त्री [°भूमि] स्थविर का पद (ठा ३, २) । °ावलि वि [°ावलि] १ जैन मुनियों का समूह । २ क्रम से जैन मुनि-गण के चरित्र का प्रतिपादक ग्रंथ-विशेष (णंदि; कप्प) ।

थेर पुं [दे. स्थविर] ब्रह्मा, विधाता (दे ५, २६; पाअ) ।

थेरासण न [दे. स्थविरासन] पद्म, कमल (दे ५, २६) ।

थेरिअ न [स्थैर्य] स्थिरता (कुमा) ।

थेरिया } स्त्री [स्थविरा] १ वृद्धा, बुढ़िया (पाअ; ओघ २१ टी) । २ जैन साध्वी (कप्प) ।
थेरी }

थेरोसण न [दे. स्थविरासन] अम्बुज, कमल, पद्म (षड्) ।

थेव पुं [दे] बिन्दु (दे ५,२६; पाअ; षड्) ।

थेव देखो थोव (हे २, १२५; पाअ; सुर १, १८१) । °कालिय वि [°कालिक] अल्प काल तक रहनेवाला (सुपा ३७५) ।

थेवरिअ न [दे] जन्म-समय में बजाया जाता वाद्य (दे ५, २६) ।

थोअ देखो थोव (हे २, १२५; गा ४६; गउड; संक्षि १) ।

थोअ पुं [दे] १ रजक, धोबी । २ मूलक, मूला, कन्द-विशेष (दे ५, ३२) ।

थोअव्व } देखो थुण ।
थोऊण }

थोक देखो थोक्क (प्राकृ ३८) ।

थोक्क } देखो थोव (दे २, १२५; जो १) ।
थोग }

थोडेरुय देखो घाडेरुय (उप ७२८ टी)।

थोणा देखो थूणा (हे १, १२५)।

थोत्त न [स्तोत्र] स्तुति, स्तव (हे २, ४५, सुपा २६६)।

थोत्तुं देखो थुण।

थोभ } पुं [स्तोभ, °क] 'च', 'वै' आदि
थोभय } निरर्थक अव्यय का प्रयोग; 'उय-वइकारा हत्ति य अकारणा थोभया हुंति' (बृह १; विसे ६६६ टी)।

थोर देखो थुल्ल (हे १, २५५; २, ६६; पउम २, १६; से १०, ४२)।

थोर वि [दे] क्रम से विस्तीर्ण अथ च गोल (दे ५, ३०; वज्जा ३६)।

थोल पुं [दे] वस्त्र का एक देश (दे ५,३०)।

थोव } वि [स्तोक] १ अल्प, थोड़ा (हे
थोवाग } २, १२५; उव; श्रा २७; श्रोघ २५६; विसे ३०३०)। २ पुं. समय का एक परिमाण (ठा २, ३; भग)।

थोह न [दे] बल, पराक्रम (दे ५, ३०)।

थोहर पुंस्त्री [दे] वनस्पति-विशेष, थूहर का पेड़, सेहुँड़ (सुपा २०३)। स्त्री. °री (उप १०३१ टी; जी १०; धर्म ३)।

॥ इग्र सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि थयाराइसद्दसंकलणो चउव्वीसइमो तरंगो समत्तो ॥

द

द पुं [दे] दन्त स्थानीय व्यञ्जन-वर्ण विशेष (प्राप; प्रामा)।

दअच्छर पुं [दे] ग्राम-स्वामी, गाँव का अधिपति (दे ५, ३६)।

दअरी स्त्री [दे] सुरा, मदिरा, दारू (दे ५, ३४)।

दइ स्त्री [दृति] मशक, चर्म-निर्मित जल-पात्र (ओघ ३८)।

दइअ वि [दे] रक्षित (दे ५, ३५)।

दइअ पुंस्त्री [दृतिका] मशक, चर्म-निर्मित जल-पात्र, चमड़े का बना हुआ वह थैला जिसमें पानी भरकर लाते हैं; 'दइएण वत्थिणा वा' (पिंड ४२)। स्त्री. °आ (अणु १५२, पिंडभा १४)।

दइअ वि [दयित] १ प्रिय, प्रेम-पात्र; 'जाओ वरकामिणीदइओ' (सुर १, १८३)। २ अभीष्ट, वाञ्छित, 'अम्हाण मणोदइयं दंसणमवि दुल्लहं मन्ने' (सुर ३, २३८)। ३ पुं. पति, स्वामी, भर्ता (पात्र; कुमा)। °यम वि [°तम] १ अत्यन्त प्रिय। २ पुं. पति, भर्ता (पउम ७७, ६२)।

दइआ स्त्री [दयिता] स्त्री, प्रिया, पत्नी (कुमा; महा; सुर ४, १२६)।

दइच्च पुं [दैत्य] दानव, असुर (हे १, १५१; कुमा; पाअ)। °गुरु पुं [°गुरु] शुक्र, शुक्राचार्य (पाअ)।

दइन्न न [दैन्य] दीनता, गरीबपन, गरीबी (हे १, १५१)।

दइव पुंन [दैव] दैव, भाग्य, अदृष्ट, प्रारब्ध, पूर्व-कृतकर्म (हे १, १५३; कुमा; महा; पउम २८, ६०); 'अहवा कुविओ दइवो पुरिसं किं हणइ लउडेण' (सुर ८, ३४)। °ज्ज, °ण्णु पुं [°ज्ञ] ज्योतिषी, ज्योतिः-शास्त्र का विद्वान् (हे २, ८३; षड्)। देखो देव = दैव।

दइवय न [दैवत] देव, देवता (पण्ह २, १; हे १, १५१; कुमा)।

दइविग वि [दैविक] देव-संबन्धी, दिव्य, उत्तम (स ५०६)।

दइव्व देखो दइव (हे १, १५३; २, ६६; कुमा; पउम ६३, ४)।

दउत्ति (शौ) अ [द्राग्] शीघ्र, जल्दी (प्राकृ ६५)।

दउदर } न [दकोदर] रोग-विशेष,
दओदर } जलोदर, पानी से पेट का फूलना (णाया १, १३; विपा १, १)।

दओभास पुं [दकावभास] लवण-समुद्र में स्थित वेलंधर-नागराज का एक आवास-पर्वत (इक)।

दंठा देखो दाढा (नाट—मालती ५६)।

दंठि वि [दंष्ट्रिन्] बड़े दाँतवाला, हिंसक जन्तु (नाट—वेणी २४)।

दंड सक [दण्डय्] सजा करना, निग्रह करना। कवकृ. दंडिज्जंत (प्रासू ६६)।

दंड पुं [दण्ड] १ जीव-हिंसा, प्राण-नाश (सम १; णाया १, १; ठा १)। २ अपराधी को अपराध के अनुसार शारीरिक या आर्थिक दण्ड, सजा, निग्रह, दमन (ठा ३, ३; प्रासू ६३; हे १, १२७)। ३ लाठी, यष्टि (उप ५३० टी; प्रासू ७४)। ४ दुःख-जनक, परिताप-जनक (आचा)। ५ मन, वचन और शरीर का अशुभ व्यापार (उत्त १६; दं ४६)। ६ छन्द-विशेष (पिंग)। ७ एक जैन उपासक का नाम (संथा ६१)। ८ पुंन. परिमाण-विशेष, १६२ अंगुल का एक नाप (इक)। ९ आज्ञा (ठा ५, ३)। १० पुंन. सैन्य, लश्कर, फौज (पण्ह १,४; ठा ५,३)। °अल पुं [°कल] छन्द-विशेष (पिंग)। °जुज्झ न [°युद्ध] यष्टि-युद्ध (आचा)। °णायग पुं

[°नायक] १ दण्ड-दाता, अपराधविचार-कर्ता। २ सेनापति, सेनानी, प्रतिनियत सैन्य का नायक (पण्ह १, ४; औप; कप्प; णाया १, १)। °णीइ स्त्री [°नीति] नीति-विशेष, अनुशासन (ठा ६)। °पह पुं [°पथ] मार्ग-विशेष, सीधा मार्ग (सूअ १, १३)। °पासि पुं [°पार्श्विन्, °पाशिन्] १ दण्ड दाता। २ कोतवाल (राज; श्रा २७)। °पुंछणय न [°प्रोञ्छनक] दण्डाकार झाडू (जं ५)। °भी वि [°भी] दण्ड से डरने-वाला, दण्ड-भीरु (आचा)। °लत्तिय वि [°लात] दण्ड लेनेवाला (वव १)। °वइ पुं [°पति] सेनानी, सेनापति (सुपा ३२३)। °वासिग, °वासिय पुं [दाण्डपाशिक] कोतवाल (कुप्र १५५; स २६५; उप १०३१ टी)। °वीरय पुं [°वीर्य] राजा भरत के वंश का एक राजा; जिसको आदर्श-गृह में केवलज्ञान उत्पन्न हुआ था (ठा ८)। °रास पुं [°रास] एक प्रकार का नाच (कप्पू)। ाइय वि [ायत] दण्ड की तरह लम्बा (कस; औप)। °ायइय वि [°ायतिक] पैर को दण्ड की तरह लम्बा फैलानेवाला (औप; कस; ठा ५, १)। °ारक्खिग पुं [°ारक्षिक] दण्डधारी प्रतीहार (निचू ६)। ारण्ण न [ारण्य] दक्षिण भारत का एक प्रसिद्ध जंगल (पउम ४१, १; ७६, ५)। °ासणिय वि [°ासनिक] दण्ड की तरह पैर फैला कर बैठनेवाला (कस)। देखो दंडग, दंडय।

दंड पुं [दण्ड] १ दण्ड-नायक, सेनापति (वव १)। २ उबाल, उफान; 'उसिणोदगं तिदडुक्कलियं फासुयजलंति जइ कप्पं' (पव १३६; पिंड १८; विचार २५७)।

दंडग } पुं [दण्डक] १ कर्ण-कुण्डल नगर
दंडय } का एक राजा (पउम १, १६)। २ दण्डाकार वाक्य-पद्धति, ग्रन्थांश-विशेष (राज)। ३ भवनपति आदि चौबीस दण्डक, पद-विशेष (दं १)। ४ न. दक्षिण भारत का एक प्रसिद्ध जंगल (पउम ३१; २५)। °गिरि पुं [°गिरि] पर्वत-विशेष (पउम ४२, १४)। देखो दंड (उप ८६१; बृह १; सूअ २, २; पउम ४०, १३)।

दंडण न [दण्डन] दण्ड-करण, शिक्षा (सूअ २, २, ८२; ८३)।

दंडपासिग पुं [दाण्डपाशिक] कोतवाल (मोह १२७)।

दंडलइअ वि [दण्डलातिक] दण्ड लेनेवाला, अपराधी (वव १)।

दंडावण न [दण्डन] सजा कराना, निग्रह कराना (श्रा १४)।

दंडाविअ वि [दण्डित] जिसको दण्ड दिलाया गया हो वह (ओघ ५६७ टी)।

दंडि वि [दण्डिन्] १ दण्ड-युक्त। २ पुं. दण्डधारी प्रतीहार, दरवान (कुमा; जं ३)।

दंडि° देखो दंडी (कुप्र ४४)।

दंडिअ पुं [दण्डिक] १ सामन्त राजा (पव २६८)। २ राज कुलानुगत पुरुष (पव ६१)। ३ दाण्डपाशिक, कोतवाल (धर्मसं ५६६)।

दंडिअ वि [दण्डित] जिसको सजा दी गई हो वह, कैदी (सुपा ४६२)।

दंडिअ वि [दण्डिक] १ दण्डवाला। २ पुं. राजा, नृप (वव ४)। ३ दण्ड-दाता, अपराध-विचार-कर्त्ता (वव १)।

दंडिआ स्त्री [दे] लेख पर लगाई जाती राज-मुद्रा, ठप्पा, मोहर (बृह १)।

दंडिक्किअ वि [दे] अपमानित, 'दंडिक्किओ समाणो तमवद्दारेण नीणेइ' (उप ६४८ टी)।

दंडिणी स्त्री [दे. दण्डिनी] रानी, राज-पत्नी (पिंड ५००)।

दंडिम वि [दण्डिम] १ दण्ड से निर्वृत्त। २ न. सजा करके वसूल किया हुआ द्रव्य (णाया १, १—पत्र ३७)।

दंडी स्त्री [दे] १ सूत्र-कनक। २ साँधा हुआ वस्त्र-युग्म (दे ५, ३३)। ३ साँधा हुआ जीर्ण वस्त्र (णाया १, १६—पत्र १६६; पण्ह १, ३—पत्र ५३)।

दंत वि [ददत्] दान कर्त्ता, दाता (पिंड ५६४)।

दंत पुं [दान्त] दो उपवास, बेला (संबोध ५८)।

दंत वि [दान्त] दो उपवास (संबोध ५८)।

दंत पुं [दे] पर्वत का एक देश (दे ५, ३३)।

दंत वि [दान्त] १ जिसका दमन किया गया हो वह, वश में किया हुआ; 'दंतेण चित्तेण चरंति धीरा' (प्रासू १६५)। २ जितेन्द्रिय (णाया १, १४; दस १०)।

दंत पुं [दन्त] दाँत, दशन (कुमा; कप्पू)। °कुडी स्त्री [°कुटी] दंष्ट्रा, दाढ (तंदु)। °च्छअ पुं [°च्छद] ओष्ठ, ओठ, होठ (पाअ)। °धावण न [°धावन] १ दाँत साफ करना, दतवन करना। २ दाँत साफ करने का काष्ठ, दतवन (पण्ह २, ४; निचू ३)। °पक्खालण न [°प्रक्षालन] वही पूर्वोक्त अर्थ (सूअ १, ४, २)। °पाय न [°पात्र] दाँत का बना हुआ पात्र (आचा २, ६, १)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष (वव १)। °पहोयण न [°प्रधावन] देखो °धावण (दस ३)। °माल पुं [°माल] वृक्ष-विशेष (जं २)। °वक्क पुं [°वक्र] दन्तपुर नगर का एक राजा (वव १)। °वलहिया स्त्री [°वलभिका] उद्यान-विशेष (स ७०)। °वाणिज्ज न [°वाणिज्य] हाथी-दाँत वगैरह दाँत का व्यापार (धर्म २)। °ार पुं [°कार] दाँत का काम करनेवाला शिल्पी (पण्ण १)।

दंतकार पुं [दन्तकार] दाँत बनानेवाला शिल्पी (अणु १४६)।

दंतकुंडी स्त्री [दन्तकुण्डी] दाढ, दंष्ट्रा (तंदु ४१)।

दंतवक्क पुं [दान्तवाक्य] चक्रवर्ती राजा (सूअ १, ६, २२)।

दंतवण न [दे. दन्तपवन] १ दन्त-शुद्धि। २ दतवन, दाँत साफ करने का काष्ठ (दे २, १२; ठा ६—पत्र ४६०; उवा; पव ४)।

दंतवणग पुंन [दे. दन्तपवन] दतवन (दस ३, ६)।

दंतसोहण न [दन्तशोधन] दतवन (उत्त १६, २७)।

दंताल पुंस्त्री [दे] शस्त्र-विशेष, घास काटने का हथियार (सुपा ५२६)। स्त्री. °ली (कम्म १, ३६)।

दंति पुं [दन्तिन्] १ हस्ती, हाथी (पाअ)। २ पर्वत-विशेष (पउम १५, ६)।

दंतिअ पुं [दे] शशक, खरगोश, खरहा (दे ५, ३४)।

दंतिंदिअ वि [दान्तेन्द्रिय] जितेन्द्रिय, इन्द्रिय-निग्रही (ओघ ४६ भा)।

दंतिक्क न [दे] चावल का आटा (बृह १)।

दंतिक्कग न [दे] मांस (धर्मसं ६६१)।

दंतिया स्त्री [दन्तिका] एक वृक्ष-विशेष, बड़ी सतावर (पएण १—पत्र ३२)।

दंती स्त्री [दन्ती] स्वनाम-ख्यात वृक्ष (पएण १—पत्र ३६)।

दंतुक्खलिय पुं [दन्तोलूखलिक] तापस-विशेष, जो दाँतों से ही व्रीहि या धान वगैरह को निस्तुष कर खाते है (निर १, ३)।

दंतुर वि [दन्तुर] उन्नत दाँतवाला, जिसके दाँत उभड़-खाबड़ हो। २ ऊँचा-नीचा स्थान; विषम स्थान (दे २, ७७)। ३ आगे आया हुआ, आगे निकल आया हुआ (कप्पू)।

दंतुरिय वि [दन्तुरित] ऊपर देखो, 'विचित्त-पासायपंतिदंतुरियं' (उप १०३१ टी; सुपा २००)।

दंद पुं [द्वन्द्व] १ व्याकरण-प्रसिद्ध उभयपद-प्रधान समास (अणु)। २ न. परस्पर-विरुद्ध शीत-उष्ण, सुख-दुःख आदि युग्म। ३ कलह, क्लेश। ४ युद्ध, संग्राम (सुपा १४७; कुमा)।

दंपइ पुं.ब. [दम्पति] स्त्री-पुरुष युगल—जोड़ा, पति-पत्नी; 'ते दंपईउ तह तह धम्मम्मि समुज्जमा निच्चं' (सिरि २४८)।

दंभ पुं [दम्भ] १ माया, कपट (हे १, १२७)। २ छन्द-विशेष (पिंग)। ३ ठगाई, वञ्चना (पव २)।

दंभग वि [दम्भक] दम्भी, पाखंडी, ठग, धूर्त; 'दंभगो त्ति निब्भच्छिओ' (सुख २, १७)।

दंभोलि पुं [दम्भोलि] वज्र (कुप्र २७०)।

दंस सक [दर्शय्] दिखलाना, बतलाना। दंसइ (हे ४,३२; महा)। वकृ. दंसंत, दंसित, दंसअंत (भग; सुपा ६२; अभि १८४)। कवकृ. दंसिज्जंत (सुर २, १६६)। संकृ. दंसिअ (नाट)। कृ. दंसियव्व (सुपा ४५४)।

दंस सक [दंश्] काटना, दाँत से काटना। दंसइ (नाट—साहित्य ७३)। दंसंतु (आचा)। वकृ. दंसमाण (आचा)।

दंस पुं [दंश] १ डाँस, बड़ा मच्छड़ (भग; आचा)। २ दन्त-क्षत, सर्प या अन्य किसी विषैले कीड़े से काटा हुआ घाव (हे १, २६० टि)।

दंस पुं [दर्श] सम्यक्त्व, तत्त्व-श्रद्धा (आवम)।

दंसग वि [दर्शक] दिखलानेवाला (स ४८१)।

दंसण पुंन [दर्शन] १ अवलोकन, निरीक्षण (पुप्फ १२४; स्वप्न २६)। २ चक्षु, नेत्र, आँख (से १, १७)। ३ सम्यक्त्व, तत्त्व-श्रद्धा (ठा १; ५. ३)। ४ सामान्य ज्ञान; 'जं सामन्नग्गहणं दंसणमेअं' (सम्म ५५)। ५ मत, धर्म। ६ शास्त्र-विशेष (ठा ७; ८; पंचा १२)। **°मोह** न [°मोह] तत्त्व-श्रद्धा का प्रतिबन्धक कर्म-विशेष (कम्म १, १४)। **°मोहणिज्ज** न [°मोहनीय] कर्म-विशेष (ठा २, ४; भग)। **°वरण** न [°वरण] कर्म-विशेष, सामान्य-ज्ञान का आवरक कर्म (ठा ६)। **°वरणिज्ज** न [°वरणीय] पूर्वोक्त ही अर्थ (सम १५)। देखो दरिसण।

दंसण न [दंशन] दाँत से काटना (से १, १७)।

दंसणि वि [दर्शनिन्] १ किसी धर्म का अनुयायी (सुपा ४६६)। २ दार्शनिक, दर्शन-शास्त्र का जानकार (कुप्र २६; कुम्मा २१)। ३ तत्व-श्रद्धालु (अणु)।

दंसणिआ स्त्री [दर्शनिका] दर्शन, अवलोकन; 'चंदसूरदंसणिया' (औप; णाया १, १)।

दंसणिज्ज, **दंसणीअ** } वि [दर्शनीय] देखने योग्य, दर्शन-योग्य (सूअ २, ७; अभि ६८; महा)।

दंसाव सक [दर्शय्] दिखलाना। दंसावेइ (प्राकृ ७१)।

दंसावण न [दर्शन] दिखाना (उप २११ टी)।

दंसाविअ वि [दर्शित] दिखलाया हुआ (सुपा ३८६)।

दंसि वि [दर्शिन्] देखनेवाला (आचा; कुप्र ४१; दं २३)।

दंसिअ वि [दर्शित] दिखलाया हुआ (पाअ)।

दंसिअ, **दंसित**, **दंसिज्जंत**, **दंसियव्व** } देखो दंस = दर्शय्।

दक्क वि [दष्ट] जो दाँत से काटा गया हो वह (षड्)।

दक्ख सक [दृश्] देखना, अवलोकन करना। दक्खामि, दक्खिमो (अभि ११६; विक्र २७)। प्रयो. दक्खावइ (पि ५५४)। कर्म. दीसइ (उव)। कवकृ. दिस्समाण, दीसंत, दीसमाण (आव ५; गा ७३; नाट—चैत ७१)। संकृ. दक्खु, दट्ठु, दट्ठुआण, दट्ठुं, दट्ठूण, दट्ठूणं, दिस्स, दिस्सं, दिस्सा (कप्प; षड्; कुमा; महा; पि ५८५; सूअ १, ३, २, १; पि ३३४)। हेकृ. दट्ठुं (कुमा)। कृ. दट्ठव्व, दिट्ठव्व (महा; उत्तर १०७)।

दक्ख सक [दर्शय्] दिखलाना, 'सोवि हु दक्खइ बहुकोउयमंततंताइं (सुपा २३२)।

दक्ख वि [दक्ष] १ निपुण, चतुर, होशियार (कप्प; सुपा २८६; श्रा २८)। २ पुं. भूतानन्द नामक इन्द्र के पदाति-सैन्य का अधिपति देव (ठा ५, १; इक)। ३ भगवान् मुनिसुव्रत-स्वामी का एक पौत्र (पउम २१, २७)।

दक्ख° देखो दक्खा (पउम ५३, ७९; कुमा)।

दक्खज्ज पुं [दे] गृध्र, गीध, पक्षि-विशेष (दे ५, ३४)।

दक्खण न [दर्शन] १ अवलोकन, निरीक्षण। २ वि. देखनेवाला, निरीक्षक (कुमा)।

दक्खव सक [दर्शय्] दिखलाना, बतलाना। दक्खवइ (हे ४, ३२)।

दक्खविअ वि [दर्शित] दिखलाया हुआ (पाअ; कुमा)।

दक्खा स्त्री [द्राक्षा] १ वल्ली-विशेष, दाख या अंगूर का पेड़। २ फल-विशेष, दाख, अंगूर (कप्पू; सुपा २६७; ५३६)।

दक्खायणी स्त्री [दाक्षायणी] गौरी, शिव-पत्नी (पाअ)।

दक्खिण वि [दक्षिण] १ दक्षिण दिशा में स्थित (सुर ३, १८; गउड)। २ निपुण, चतुर (प्रामा)। ३ हितकर, अनुकूल। ४ अपसव्य, वामेतर, दाहिना (कुमा; औप)। **°पच्छिमा** स्त्री [°पश्चिमा] दक्षिण और पश्चिम के बीच की दिशा, नैर्ऋत कोण (आवम)। **°पुव्वा** स्त्री [°पूर्वा] अग्नि-कोण (चंद १)। देखो दाहिण।

दक्खिणत्त वि [दाक्षिणात्य] दक्षिण दिशा में उत्पन्न (राज)।

दक्खिणा स्त्री [दक्षिणा] १ दक्षिण दिशा (जो १)। २ दक्षिण देश (कप्पू)। ३ धर्म-

कर्म का पारितोषिक, दान, भेंट (कप्पू; सूत्र २, ५)। °कंखि वि [°काङ्क्षिन्] दक्षिणा का अभिलाषी (पउम ३०, ६३)। °यण न [°यन] १ सूर्य का दक्षिण दिशा में गमन। २ कर्क की संक्रान्ति से धन की संक्रान्ति तक के छः मास का काल (जो १)। °वध, °वह पुं [°पथ] दक्षिण देश (कप्पू; १४२ टी)।

दक्खिणापुव्वा देखो दक्खिण-पुव्वा (पव १०६)।

दक्खिणिल्ल वि [दाक्षिणात्य] दक्षिण दिशा में उत्पन्न या स्थित (सम १००; पउम ६, १५६)।

दक्खिणेय वि [दाक्षिणेय] जिसको दक्षिणा दी जाती हो वह (विसे ३२७१)।

दक्खिण्ण } न [दाक्षिण्य] १ मुलाहजा, दक्खिन्न } मुरव्वत; 'दक्खिण्णेण वि एंतो सुहअ सुहावेसि अम्ह हिअआइं' (गा ८५; स्वप्न ६८)। २ उदारता, औदार्य। ३ सरलता, मार्दव (सुर १, ६५; २, ६२; प्रासू ८)। ४ अनुकूलता (दंस २)।

दक्खिय वि [दर्शित] दिखलाया हुआ (भवि)।

दक्खु देखो दक्ख = दृश्।

दक्खु देखो दक्ख = दक्ष (सूत्र १, २, ३)।

दक्खु वि [पश्य, द्रष्टृ] १ देखनेवाला। २ पुं. सर्वज्ञ, जिन-देव (सूत्र १, २, ३)।

दक्खु वि [दृष्ट] १ विलोकित। २ पुं. सर्वज्ञ, जिन-देव (सूत्र १, २, ३)।

दग न [दक] १ पानी, जल (सं ५१; दं ३४; कप्प)। २ पुं. ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष (ठा २, ३)। ३ लवण-समुद्र में स्थित एक आवास पर्वत (सम ६८)। °गब्भ पुं [°गर्भ] अभ्र, बादल (ठा ४, ४)। °तुंड पुं [°तुण्ड] पक्षि-विशेष (पण्ह १, १)। °पंचवन्न पुं [°पञ्चवर्ण] ज्योतिष्क देव-विशेष, एक ग्रह का नाम (ठा २, ३)। °पासाय पुं [°प्रासाद] स्फटिक रत्न का बना हुआ महल (जं १)। °पिप्पली स्त्री [°पिप्पली] वनस्पति-विशेष (पण्ण १)। °भास पुं [°भास] वेलन्धर नागराज का एक आवास-पर्वत (सम ७३)। °मंचग पुं [°मञ्चक] स्फटिक रत्न का मञ्च (जं १)। °मंडव पुं [°मण्डप] १ मण्डप-विशेष, जिसमें पानी टपकता हो (पण्ह २, ५)। २ स्फटिक रत्न का बनाया हुआ मण्डप (जं १)। °मट्टिया, °मट्टी स्त्री [°मृत्तिका] १ पानीवाली मिट्टी (बृह ४; पडि)। २ कला-विशेष (जं २)। °रक्खस पुं [°राक्षस] जल-मानुष के आकार का जंतु-विशेष (सूत्र १, ७)। °रय पुंन [रजस्] उदक-बिन्दु, जल-कणिका (कप्प)। °वण्ण पुं [°वर्ण] ज्योतिष्क ग्रह-विशेष (सुज्ज २०)। °वारग, °वारय पुं [°वारक] पानी का छोटा घड़ा (राय; णाया १, २)। °सीम पुं [°सीमन्] वेलंधर नागराज का एक आवास-पर्वत (राज)।

दग न [दक] स्फटिक रत्न (राय ७५)। °सोयरिअ वि [°शौकरिक] सांख्य मत का अनुयायी (पिंड ३१४)।

दग्घा देखो दा।

दच्छ देखो दक्ख = दृश्। भवि. दच्छं, दच्छसि, दच्छिहिसि (प्राप्र; उत्त २२, ४४; गा ८१६)।

दच्छ देखो दक्ख = दक्ष; 'रोगसमदच्छं ओसहं' (उप ७२८ टी; पण्ह २, ३—पत्र ४५; हे २, १७)।

दच्छ वि [दे] तीक्ष्ण, तेज (दे ५, ३३)।

दज्झंत } देखो दह = दह।
दज्झमाण }

दट्ठ वि [दष्ट] जिसको दाँत से काटा गया हो वह (षड्; महा)।

दट्ठ वि [दृष्ट] देखा हुआ, विलोकित (राज)।

दट्ठंतिय वि [दार्ष्टान्तिक] जिसपर दृष्टान्त दिया गया हो वह अर्थ (उप पृ १४३)।

दट्ठव्व } देखो दक्ख = दृश्।
दट्ठु }

दट्ठु वि [द्रष्टृ] देखनेवाला, प्रेक्षक, दर्शक (विसे १८६५)।

दट्ठुआण }
दट्ठुं }
दट्ठूण } देखो दक्ख = दृश्।
दट्ठूणं }

दडवड पुं [दे] १ घाटी, दर्रा, अवस्कन्द (दे ५,३५; हे ४,४२२; भवि)। २ शीघ्र, जल्दी (चंड)।

दडि स्त्री [दे] वाद्य-विशेष (भवि)।

दड्ढ वि [दग्ध] जला हुआ (हे १, २१७; भग)।

दड्ढालि स्त्री [दे] दव-मार्ग (षड्)।

दढ वि [दृढ] १ मजबूत, बलवान्, पोढ़ (औप; से ८, ६०)। २ निश्चल, स्थिर, निष्कम्प (सूत्र १, ४, १; श्रा २८)। ३ समर्थ, क्षम (सूत्र १, ३, १)। ४ अति-निबिड, प्रगाढ़ (राय)। ५ कठोर, कठिन (पंचा ४)। ६ क्रिवि. अतिशय, अत्यन्त (पंचा १; ७)। °केउ पुं [°केतु] ऐरवत क्षेत्र के एक भावी जिन-देव का नाम (पव ७)। °णेमि देखो °नेमि (राज)। °धणु [°धनुष] १ ऐरवत क्षेत्र के एक भावी कुलकर का नाम (सम १५३)। २ भरत-क्षेत्र के एक भावी कुलकर का नाम (राज)। °धम्म वि [°धर्मन्] १ जो धर्म में निश्चल हो (बृह १)। २ देव-विशेष का नाम (आवम)। °धिईय वि [°धृतिक] अतिशय धैर्यवाला (पउम २६, २२)। °नेमि पुं [°नेमि] राजा समुद्रविजय का एक पुत्र, जिसने भगवान् नेमिनाथ के पास दीक्षा ली थी और सिद्धाचल पर्वत पर मुक्ति पाई थी (अंत १४)। °पइण्ण वि [°प्रतिज्ञ] १ स्थिर-प्रतिज्ञ, सत्य-प्रतिज्ञ। २ पुं. सूर्याभ देव का आगामी जन्म में होनेवाला नाम (राय)। °प्पहारि वि [°प्रहारिन्] १ मजबूत प्रहार करनेवाला। २ पुं. जैनमुनि-विशेष, जो पहले चोरों का नायक था और पीछे से दीक्षा लेकर मुक्त हुआ था (णाया १, १८; महा)। °भूमि स्त्री [°भूमि] एक गाँव का नाम (आवम)। °मूढ वि [°मूढ] नितान्त मूर्ख (दे १, ४)। °रह पुं [°रथ] १ एक कुलकर पुरुष का नाम (सम १५०)। २ भगवान् श्री शितलनाथजी के पिता का नाम (सम १५१)। °रहा स्त्री [°रथा] लोकपाल आदि देवों के अग्र-महिषियों की बाह्य परिषद् (ठा ३, १—पत्र १२७)। °उ पुं [°ायुष्] भगवान् महावीर के समय

में तीर्थंकर-नामकर्म उपार्जन करने वाला एक मनुष्य (ठा ६—पत्र ४५५)। २ भरत-क्षेत्र के एक भावी कुलकर पुरुष का नाम (सम १५४)।

दढगालि स्त्री [दे] वस्त्र-विशेष, धोया हुआ सदश वस्त्र (पव ८४; दसनि १, ४६ टी) देखो दाढगालि।

दढिअ वि [दृढित] दृढ़ किया हुआ (कुमा)।

दणु, दणुअ पुं [दनुज] दैत्य, दानव (हे १, २६७; कुमा; षड्)। °इंद, °एंद पुं [°इन्द्र] १ दानवों का अधिपति (गउड; से १, २)। २ रावण, लंकापति (पउम ६६, १०)। °वइ पुं [°पति] देखो °इंद (पउम १, १; ७२, ६० सुपा ४५)।

दत्त वि [दत्त] १ दिया हुआ, दान किया हुआ, वितीर्ण (हे १, ४६)। २ न्यस्त, स्थापित (जं १)। ३ पुं. स्व-नाम-ख्यात एक श्रेष्ठि-पुत्र (उप ५६२; ७६८ टी)। ४ भरत-वर्ष के एक भावी कुलकर पुरुष (सम १५३)। ५ चतुर्थ बलदेव के पूर्व-जन्म का नाम (सम १५३)। ६ भरत-क्षेत्र में उत्पन्न एक अर्ध-चक्रवर्ती राजा, एक वासुदेव (सम ६३)। ७ भरत-क्षेत्र में अतीत उत्सर्पिणी काल में उत्पन्न एक जिन-देव (पव ७)। ८ एक जैनमुनि (आक)। ९ नृप-विशेष (विपा १, ७)। १० एक जैन आचार्य (कुप्र ६)। ११ न. दान, उत्सर्ग (उत्त १)।

दत्त न [दात्र] दाँती, घास काटने का हँसिया (दे १, १४)।

दत्ति स्त्री [दत्ति] एक बार में जितना दान दिया जाय वह, अविच्छिन्न रूप से जितनी भिक्षा दी जाय वह (ठा ५, १; पंचा १८)।

दत्तिय पुंस्त्री [दत्तिका] ऊपर देखो, 'संखो दत्तियस्स' (वव ६)।

दत्तिय पुं [दत्रिक] वायु-पूर्ण चर्म (राज)।

दत्तिया स्त्री [दात्रिका] १ छोटी दाँती, घास काटने का शस्त्र-विशेष (राज)। २ देनेवाली स्त्री, दान करनेवाली स्त्री (चारु २)।

दत्थर पुं [दे] हस्त-शाटक, कर-शाटक (दे ५, ३४)।

ददंत देखो दा।

दद्दर पुं [दे. दर्दर] कुतुप आदि के मुँह पर बाँधा जाता कपड़ा (पिंड ३४७; ३५६; राय ६८; १००)।

दद्दर वि [दे. दर्दर] १ घना, प्रचुर, अत्यन्त; 'गोसीससरसरत्तचंदणदद्दरदिण्णपंचंगुलितला' (सम १३७)। २ पुं. चपेटा, हस्त-तल का आघात (सम १३७; औप; णाया १, ८)। ३ आघात, प्रहार; 'पायदद्दरएणं कंपयंतेव मेइणितलं' (णाया १, १)। ४ वचनाटोप (पण्ह १, ३—पत्र ४४)। ५ सोपान-वीथी, सीढ़ी (सम १३७)। ६ वाद्य-विशेष (जं २)।

दद्दरिगा देखो दद्दरिया (राय ४६)।

दद्दरिया स्त्री [दे. दर्दरिका] १ प्रहार, आघात (णाया १, १६)। २ वाद्य-विशेष (राय)।

दद्दु पुं [दद्रू] दाद, क्षुद्र कुष्ठ-रोग (भग ७, ६)।

दद्दुर पुं [दर्दुर] प्रहार, आघात (धर्मवि ८५)।

दद्दुर पुं [दर्दुर] १ भेक, मेढ़क, बेंग (सुर १०, १८७; प्रासू ४५)। २ चमड़े से अवनद्ध मुँहवाला कलश (पण्ह २, ५)। ३ देव-विशेष (णाया १, १३)। ४ राहु, ग्रह-विशेष (सुज्ज १६)। ५ पर्वत-विशेष (णाया १, १६)। ६ वाद्य-विशेष (दे ७, ६१; गउड)। ७ न. दर्दुर देव का सिंहासन (णाया १, १३)। °वडिंसय न [°वतंसक] देव-विशेष, सौधर्म देवलोक का एक विमान (णाया १, १३)।

दद्दुरी स्त्री [दर्दुरी] स्त्री-मेढक, भेकी (णाया १, १३)।

दद्दुल वि [दद्रुमत्] दाद-रोगवाला (सिरि ११६)।

दधि देखो दहि (सम ७७; पि ३७६)।

दद्ध देखो दड्ढ (सुर २, ११२; पि २२२)।

दप्प पुं [दर्प] १ अहंकार, अभिमान, गर्व (प्रासू १३२)। २ बल, पराक्रम, जोर (से ४, ३)। ३ धृष्टता, ढिठाई (भग १२, ५)। ४ अरुचि से काम का आसेवन (निचू १)।

दप्पण पुं [दर्पण] १ काच, शीशा, आदर्श (णाया १, १; प्रासू १६१)। २ वि. दर्प-जनक (पण्ह २, ४)।

दप्पणिज्ज वि [दर्पणीय] बल-जनक, पुष्टि-कारक (णाया १, १; पण्ण १७; औप; कप्प)।

दप्पि वि [दर्पिन्] अभिमानी, गर्विष्ठ (कप्पू)।

दप्पिअ वि [दर्पिक] दर्प-जनित (उवर १३१)।

दप्पिअ वि [दर्पित] अभिमानी, गर्वित (सुर ७, २००; पण्ह १, ४)।

दप्पिट्ठ वि [दर्पिष्ठ] अत्यन्त अहंकारी (सुपा २२)।

दप्पुल्ल वि [दर्पवत्] अहंकारवाला (हे २, १५६; षड्)।

दब्भ पुं [दर्भ] तृण-विशेष, डाभ, काश, कुशा (हे १, २१७)। °पुप्फ पुं [°पुष्प] साँप की एक जाति (पण्ह १, १—पत्र ८)।

दब्भायण, दब्भियायण न [दार्भायन, दार्भ्यायन] चित्रा-नक्षत्र का गोत्र (इक; सुज्ज १०)।

दब्भिय न [दार्भिक] गोत्र-विशेष (सुज्ज १०, १६ टी)।

दम सक [दमय्] निग्रह करना, दमन करना, रोकना। दमेइ (स २८६)। कर्म. दम्मइ (उव)। कवकृ. दम्मंत (उव)। संकृ. दमिऊण (कुप्र ३६३)। कृ. दमियव्व, दम्म, दमेयव्व (काल; आचा २, ४, २; उव)।

दम पुं [दम] १ दमन, निग्रह। २ इन्द्रिय-निग्रह, बाह्य वृत्ति का निरोध (पण्ह २, ४; णंदि)। °घोस पुं [°घोष] चेदि देश के एक राजा का नाम (णाया १, १६)। °दंत पुं [°दन्त] १ हस्तिशीर्षक नगर के एक राजा का नाम (उप ६४८ टी)। २ एक जैन मुनि (विसे २७६६)। °धर पुं [°धर] एक जैन मुनि का नाम (पउम २०, १६३)।

दमग देखो दमय (णाया १, १६; सुपा ३८५; वव ३; निचू १५; बृह १; उव)।

दमग वि [दमक] दमन करनेवाला (निचू ६)।

दमण देखो दमणक (राय ३४; १२१)।

दमण न [दमन] १ निग्रह, दान्ति। २ वश में करना, काबू में करना; 'पंचिंदियदमणपरा' (आप ४०)। ३ उपताप, पीड़ा (पण्ह १,

३)। ४ पशुओं को दी जाति शिक्षा (पउम १०३, ७१)।

दमणक, दमणग, दमणय पुंन [दमनक] १ दौना, सुगन्धित पत्रवाली वनस्पति-विशेष (पण्ह २, ५; पण्ण १; गउड)। २ छन्द-विशेष (पिंग)। ३ गन्ध-द्रव्य-विशेष (राज)।

दमदमा अक [दमदमाय्] आडम्बर करना। दमदमाइ, दमदमाअइ (हे ३, १३८)।

दमय वि [दे. द्रमक] दरिद्र, रंक, गरीब (दे ५, ३४; विसे २८४५)।

दमयंती स्त्री [दमयन्ती] राजा नल की पत्नी का नाम (पडि; कुप्र ५४; ५६)।

दमि वि [दमिन्] जितेन्द्रिय (उत्त २२)।

दमिअ वि [दमित] निगृहीत, रोका हुआ (गा ८२३; कुप्र ४८)।

दमिल पुं [द्रविड] १ एक भारतीय देश। २ पुंस्त्री. उसके निवासी मनुष्य, द्राविड़ (कुप्र १७२; इक; औप)। स्त्री. °ली (णाया १, १; इक; औप)।

दमेयव्व, दम्म देखो दम = दमय्।

दम्म पुं [द्रम्म] सोने का सिक्का, सोना-मोहर (उप पृ ३८७; हे ४, ४२२)।

दम्मत देखो दम = दमय्।

दय सक [दय्] १ रक्षण करना। २ कृपा करना। ३ चाहना। ४ देना। दयइ (आचा)। वकृ. दअंत, दअमाण। (से १२, ६४; ३, १२; अभि १२)।

दय न [दे. दक] जल, पानी (दे ५, ३३; बृह १)। °सीम पुं [°सीमन्] लवण-समुद्र में स्थित एक आवास-पर्वत (सम ९८)।

दय न [दे] शोक, अफसोस, दिलगीरी (दे ५, ३३)।

दय देखो दव = दव (से १, ५१; १२, ६५)।

°दय वि [°दय] देनेवाला (कप्प; पडि)।

दया स्त्री [दया] करुणा, अनुकम्पा, कृपा (दस ६, १)। °वर वि [°पर] दयालु (पउम २६, ४०; उप पृ १६१)।

दयाइअ वि [दे] रक्षित (दे ५, ३५)।

दयालु वि [दयालु] दयावाला, करुण (हे १, १७७; १८०; पउम १६, ३१; सुपा ३४०; श्रा १६)।

दयावण, दयावन्न वि [दे] दीन, गरीब, रंक (दे ५, ३५; भवि; पउम ३३, ८६)।

दर सक [दृ] आदर करना। दरइ (षड्)।

दर पुंन [दर] भय, डर (कुमा)। २ अ. ईषत्, थोड़ा, अल्प (हे २, २१५)।

दर पुंन [दर] १ गुफा, कन्दरा। २ गर्त, गड्ढा, गढ़ा या गढ़हा, दरार, 'ते य दरा मिढया ते य' (धर्मवि १४०)।

दर न [दे] अर्द्ध, आधा (दे ५, ३३; भवि; हे २, २१५; बृह ३)।

दरंदर पुं [दे] उल्लास (दे ५, ३७)।

दरमत्ता स्त्री [दे] बलात्कार, जबरदस्ती (दे ५, ३७)।

दरमल सक [मर्दय्] १ चूर्ण करना, विदारना। २ आघात करना। दरमलइ (भवि)। वकृ. दरमलंत (भवि)।

दरमलिय वि [मर्दित] आहत, चूर्णित (भवि)।

दरवलिअ वि [दे] उपभुक्त (कुमा)।

दरवल्ल पुं [दे] ग्राम-स्वामी, गाँव का मुखिया (दे ५, ३६)। °णिहेलण न [दे] शून्य गृह, खाली घर (दे ५, ३७)। °वल्लह पुं [वल्लभ] १ दयित, प्रिय (दे ५, ३७)। २ कातर, डरपोक (षड्)। °विंदर वि [दे] १ दीर्घ, लम्बा। २ विरल (दे ५, ५२)।

दरस (शौ) देखो दरिस। दरसेदि (प्राकृ ६६)।

दरि न [दरी] कन्दरा, गुफा; 'दरीणि वा' (आचा २, १०, २)।

दरि° देखो दरी। °अर पुं [°चर] किंनर (से ६, ४४)।

दरिअ वि [दृप्त] गर्विष्ठ, अभिमानी (हे १, १४४; पाअ)।

दरिअ वि [दीर्ण] १ डरा हुआ, भीत (कुमा; सुपा ६४५)। २ फाड़ा हुआ, विदारित (अंत ७)।

दरिअ (अप) पुं [दरिद्र] छन्द-विशेष (पिंग)।

दरिआ स्त्री [दरिका] कन्दरा, गुफा (नाट—विक्र ८४)।

दरिद्द वि [दरिद्र] १ निर्धन, निःस्व, धन-रहित। २ दीन, गरीब (पाअ; प्रासू २३; कप्पू)।

दरिद्दि, दरिद्दिय वि [दरिद्रिन्, °क] ऊपर देखो; 'अम्हे दरिद्दिणो, कहं विवाहमंगलं रन्नो य पूयं करेमो' (महा; सण; पि २५७)।

दरिद्दिय वि [दरिद्रित] दुःस्थित, जो धन-रहित हुआ हो (महा; पि २५७)।

दरिद्दीहूय वि [दरिद्रीभूत] जो निर्धन हुआ हो (ठा ३, १)।

दरिस सक [दर्शय्] दिखलाना, बतलाना। दरिसइ, दरिसेइ (हे ४, ३२; कुमा; महा)। वकृ. दरिसंत (सुपा २४)। कृ. दरिसणिज्ज, दरिसणीय (औप; पि १३५; सुर १०, ६)।

दरिसण देखो दंसण = दर्शन (हे २, १०५)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष (इक)। °आवरणी स्त्री [°वरणी] विद्या-विशेष (पउम ५६; ४०)।

दरिसणिज्ज न [दर्शनीय] १ आकृति, रूप। २ अवलोकन (तंदु ३६)।

दरिसणिज्ज, दरिसणीय देखो दरिस। २ न. भेंट, उपहार; 'गहिऊण दरिसणीयं संपत्तो राइणो मूलं' (सुर १०, ६)।

दरिसाव देखो दरिस। वकृ. दरिसावंत (उप पृ १८८)।

दरिसाव पुं [दर्शन] दर्शन, साक्षात्कार; 'एसो य महप्पा कइवयघरेसु दरिसावं दाऊण पडिनियत्तइ' (महा); 'पईव इव दाउं खणमेगं दरिसावं पुणोवि अद्दंसणीहोइ' (सुपा ११५)।

दरिसाव पुं [दर्शन] दिखावा (वव १)।

दरिसावण न [दर्शन] १ दर्शन, साक्षात्कार (आव १)। २ वि. दर्शक, दिखलानेवाला (भवि)।

दरिसि वि [दर्शिन्] देखनेवाला (उवा; पि १३५; स ७२७)।

दरिसिअ वि [दर्शित] दिखलाया हुआ (कुमा; उव)।

दरी स्त्री [दरी] गुफा, कन्दरा (णाया १, १; से ६, ४४; उप पृ २६८; स ४१३)।

दरुम्मिल्ल वि [दे] घन, निबिड (दे ५, ३७)।

दल सक [दा] देना, दान करना, अर्पण करना। दलइ (कप्प; कस); 'जं तस्स मोल्लं तमहं दलामि' (उप २११ टी)। वकृ. दलमाण, दलेमाण (कप्प; णाया १, १६;—पत्र २०४; ठा ४, २—पत्र २१६)। संकृ. दलित्ता (कप्प)।

दल अक [दल्] १ विकसना । २ फटना, खण्डित होना, द्विधा होना ; 'अहिसअरकिरणणिउरंबचुंबिअं दलइ कमलवणं' (गा ४६५); 'कुड्यं दलइ' (कुमा) । वकृ. **दलंत** (से १, ५८) ।

दल सक [दलय्] चूर्ण करना, टुकड़े-टुकड़े करना, विदारना । वकृ. 'निम्मूलं दलमाणो सयलंतरसत्तुसिन्नबलं' (सुपा ८५) । कवकृ. **दलिज्जंत** (से ६, ६२) । संकृ. **दलिऊण** (कुमा) ।

दल न [दल] १ सैन्य, लश्कर, फौज (कुमा) । २ पत्र, पत्ता, पंखड़ी या पँखुड़ी; 'तूहवल्लहस्स गोसम्मि आसि अहरो मिलाणकमलदलो' (हेका ५१, गा ९; १८०; २५७, ३६६; ५६२, ५६१; सुपा ६३८) । ३ धन, सम्पत्ति । ४ समूह, समुदाय, गरोह (सुपा ६३८) । ५ खण्ड, भाग, अंश (से ६, ६२) ।

दलण न [दलन] १ पीसना, चूर्णन (सुपा १४; ६११) । २ वि. चूर्ण करनेवाला (सुपा २३४; ४६७; कुप्र १३२; ३८३) ।

दलमाण देखो **दल = दा** ।

दलमाण देखो **दल = दलय्** ।

दलमल देखो **दरमल** । वकृ. **दलमलंत** (भवि) ।

दलय देखो **दल = दा** । दलयइ (औप) । भवि. दलइस्संति (औप) । वकृ. **दलयमाण** (णाया १, १—पत्र ३७, ठा ३, १—पत्र ११७) । संकृ. **दलइत्ता** (औप) ।

दलय सक [दापय्] दिलाना दलयइ (कप्प) ।

दलवट्ट देखो **दरमल** । दलवट्टइ (भवि) ।

दलवट्टिय देखो **दलमलिय** (भवि) ।

दलाव सक [दापय्] दिलाना । दलावेइ (पि ५५२) । वकृ. **दलावेमाण** (ठा ४, २) ।

दलिअ वि [दलित] १ विकसित, खिला हुआ (से १२, १) । २ पीसा हुआ (पाअ) ; 'दलिअनपसालितंडुलधवलमि अंकासु राईसु' (गा ६६१) । ३ विदारित, खण्डित (दे १, १५६; सुर ४, १५२) ।

दलिअ न [दलिक] १ चीज, वस्तु, द्रव्य (ओघ ५५) ; 'जह जोग्गम्मिवि दलिए सव्वम्मि न कीरए पडिमा' (विसे १६३४) । २ परिण्डत (बृह० क० भा० उ० ४) ।

दलिअ वि [दे] १ निकूणिताक्ष, जिसने टेढ़ी नजर की हो वह । २ न. उँगली (दे ५, ५२) । काष्ठ, लकड़ी (दे ५, ५२, पाअ) ।

दलिज्जंत देखो **दल = दलय्** ।

दलिद्द देखो **दरिद्द** (हे १,२५४; गा २३०) ।

दलिद्दा अक [दरिद्रा] दुर्गत होना, दरिद्र होना । दलिद्दाइ (हे १, २५४) । भूका. दलिद्दाईअ (संक्षि ३२) ।

दलिल्ल वि [दलवत्] दल-युक्त, दलवाला (सण) ।

दलेमाण देखो **दल = दा** ।

दव सक [द्रु] १ गति करना । २ छोड़ना । दवए (विसे २८) ।

दव पुं [दव] १ जंगल का अग्नि, वन की आग (दे ५; ३३) । २ वन, जंगल । °**ग्गि** पुं [°**ाग्नि**] जंगल का अग्नि (हे १, १७७; प्राप्र) ।

दव पुं [द्रव] १ परिहास (दे ५, ३३) । २ पानी, जल (पंचव २) । ३ पनीली वस्तु, रसीली चीज (विसे १७०७) । ४ वेग; 'दवदवचारी' (सम ३७) । ५ संयम, विरति (आचा) । °**कर** वि [°**कर**] परिहासकारक (भग ६, ३३) । °**कारी**, °**गारी** स्त्री [°**कारी**] एक प्रकार की दासी, जिसका काम परिहास-जनक बातें कर जी बहलाना होता है (भग ११, ११; णाया १, १ टी. पत्र ४३) ।

दवण न [दवन] यान, वाहन (सूअनि १०८) ।

दवणय देखो **दमणय** (भवि) ।

दवदव, **दवदवस्स** अ [द्रवद्रवम्] शीघ्र, जल्दी; 'दवदवचरा पमत्तजणा' (संबोध १४; उत्त १७,८); 'दवदवस्स न गच्छेज्जा' (दस ५, १, १४); 'जह वणदवो वणं दवदवस्स जलिओ खणेण निद्दहइ' (धर्मवि ८६) ।

दवदवा स्त्री [द्रवद्रवा] वेगवाली गति, 'नाऊण गयं खुहियं नयरजणो धाविओ दवदवाए' (पउम ८, १७३) ।

दवर पुं [दे] १ तन्तु, डोरा, धागा (दे ५, ३५; आवम) । २ रज्जु, रस्सी (णाया १, ८) ।

दवरिया स्त्री [दे] छोटी रस्सी (विसे) ।

दवहुत्त न [दे] ग्रीष्म-मुख, ग्रीष्म काल का प्रारम्भ (दे ५, ३६) ।

दवाव सक [दापय्] दिलाना । दवावेइ (महा) । वकृ. **दवावेमाण** (णाया १,१४) । संकृ. **दवावेऊण** (महा) । हेकृ. **दवावेत्तए** (कस) ।

दवावण न [दापन] दिलाना (निचू २) ।

दवाविअ वि [दापित] दिलाया हुआ (सुपा १३०; स १६३; महा; उप पृ ३८५; ७२८ टी) ।

दविअ पुंन [द्रव्य] १ अन्वयी वस्तु, जीव आदि मौलिक पदार्थ, मूल वस्तु (सम्म ६; विसे २०३१) । २ वस्तु, गुणाधार पदार्थ (ओघ ५, आचा; कप्प) । ३ वि. भव्य, मुक्ति के योग्य (सूअ १, २, १) । ४ भव्य, सुन्दर, शुद्ध (सूअ १, १६) । ५ राग-द्वेष से विरहित, वीतराग (सूअ १, ८) । °**णुओग** पुं [°**ानुयोग**] पदार्थ-विचार, वस्तु की मीमांसा (ठा १०) । देखो **दव्व** ।

दविअ वि [द्रविक] संयम वाला, संयम युक्त, संयमी (आचा) ।

दविअ वि [द्रवित] द्रव-युक्त, पनीली वस्तु (ओघ) ।

दविड देखो **दविल** (सुपा ५८०) ।

दविडी स्त्री [द्राविडी] लिपि-विशेष, तामिल भाषा (विसे ४६४ टी) ।

दविण न [द्रविण] धन, पैसा, संपत्ति (पाअ; कप्प) ।

दविय न [द्रव्य] १ घास का जंगल, वन में घास के लिए सरकार से अवरुद्ध भूमि (आचा २, ३, ३, १) । २ तृण आदि द्रव्य-समुदाय (सूअ २, २, ८) ।

दविल पुं [द्रविड] १ देश-विशेष, दक्षिण देश-विशेष, मद्रास प्रांत । पुंस्त्री. द्रविड़ देश का निवासी मनुष्य, द्राविड़ (पण्ह १, १—पत्र १४) ।

दव्व देखो **दविअ = द्रव्य** (सम्म १२; भग; विसे २८; अणु; उत्त २८) । ६ धन, पैसा, संपत्ति (पाअ; प्रासू १३१) । ७ भूत या भविष्य पदार्थ का कारण (विसे २८; पंचा ६) । ८ गौण, अप्रधान । ९ बाह्य, अतथ्य (पंचा ४; ६) । °**ट्ठिय** पुं [°**ार्थिक**, °**स्थित**, °**ास्तिक**] द्रव्य को ही प्रधान माननेवाला

पक्ष, नय-विशेष; 'दव्वट्ठियस्स सव्वं सया अणुप्पन्नमविणट्ठं' (सम्म ११; विसे ४५७)। °लिंग न [°लिङ्ग] बाह्य वेष (पंचा ४)। °लिंगि वि [°लिङ्गिन्] भेषधारी साधु (गु १०)। °लेस्सा स्त्री [°लेश्या] शरीर आदि पौद्गलिक वस्तु का रंग, रूप (भग)। °वेय पुं [°वेद] पुरुष आदि का बाह्य आकार (राज)। °ायरिय पुं. [°ाचार्य] अप्रधान आचार्य, आचार्य के गुणों से रहित आचार्य (पंचा ६)।

दव्व न [द्रव्य] योग्यता, 'समयम्मि दव्व-सद्दो पायं जं जोग्गयाए रुढो त्ति, णिरूवचरितो' (पंचा ६, १०)।

दव्वहलिया स्त्री [द्रव्यहलिका] वनस्पति-विशेष (पण्ण १—पत्र ३५)।

दव्वि° देखो दव्वी (षड्)।

दव्विंदिअ न [द्रव्येन्द्रिय] स्थूल इन्द्रिय (भग)।

दव्वी स्त्री [दर्वी] १ कर्छी, कलछी, चमची, डोई (पाअ)। २ साँप की फन (दे ५, ३७)। °अर °कर पुं [°कर] साँप, सर्प (दे ५, ३७; पण्ण १)।

दव्वी स्त्री [दे] वनस्पति-विशेष (पण्ण १—पत्र ३४)।

दस त्रि. ब. [दशन्] दस, नौ और एक (हे १, १६२; ठा ३, १—पत्र ११६; सुपा २६७)। °उर न [°पुर] नगर-विशेष (विसे २३०३)। °कंठ पुं [°कण्ठ] रावण, एक लंका-पति (से १५, ६१)। °कंधर पुं [°कन्धर] राजा रावण (गउड)। °कालिय न [°कालिक] एक जैन आगम-ग्रंथ (दसनि १)। °ग न [°क] दश का समूह (दं ३८; नव १२)। °गुण वि [°गुण] दस गुना (ठा १०)। °गुणिअ वि [°गुणित] दस-गुना (भग; श्रा १०)। °ग्गीव पुं [°ग्रीव] रावण (पउम ७३, ८)। °दसमिया स्त्री [°दशमिका] जैन साधु का एक धार्मिक अनुष्ठान, प्रतिमा-विशेष (सम १००)। °दिवसिय वि [°दिवसिक] दस दिन का (णाया १, १—पत्र ३७)। °द्ध पुंन [°ार्ध] पाँच, ५ (सम ६०; णाया १, १)। °धणु पुं [°धनुष्] ऐरवत क्षेत्र के एक भावी कुलकर पुरुष (सम १५३)। °पएसिय वि [°प्रादेशिक] दस अवयव-वाला (ठा १०)। °पुर देखो °उर (महा)। °पुव्वि वि [°पूर्विन्] दस पूर्व-ग्रन्थों का अभ्यासी (ओघ १)। °बल पुं [°बल] भगवान् बुद्ध (पाअ; हे १, २६२)। °म वि [°म] १ दसवाँ (राज)। २ चार दिनों का लगातार उपवास (आचा; णाया १, १; सुर ४, ५५)। °मभत्तिय वि [°मभक्तिक] चार दिनों का लगातार उपवास करनेवाला (पण्ह २, ३)। °मासिअ वि [°माषिक] दस मासे का तौलवाला, दस मासे का परि-माणवाला (कप्पू)। °मी स्त्री [°मी] १ दसवीं। २ तिथि-विशेष (सम २९)। °मुद्दियाणंतग न [°मुद्रिकानन्तक] हाथ की उंगलियों की दस अंगूठियाँ (औप)। °मुह पुं [°मुख] रावण, राक्षस-पति (हे १, २६२; प्राप्र; हेका ३३४)। °मुहसुअ पुं [°मुखसुत] रावण का पुत्र, मेघनाद आदि (से १३, ९०)। °य देखो °ग (ठा १०)। °रत्त न [°रात्र] दस रात (विपा १, ३)। °रह पुं [°रथ] १ रामचन्द्रजी के पिता का नाम (सम १५२; पउम २०, १८३)। २ अतीत उत्सर्पिणी-काल में उत्पन्न एक कुलकर पुरुष (ठा ६—पत्र ४४७)। °रहसुय पुं [°रथसुत] राजा दशरथ का पुत्र—राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न (पउम ५९, ८७)। °वअण पुं [°वदन] राजा रावण (से १०, ५)। °वल देखो °बल (प्राप्र)। °विह वि [°विध] दस प्रकार का (कुमा)। °वेआलिअ न [°वैकालिक] जैन आगम-ग्रन्थ-विशेष (दसनि १; णंदि)। °हा अ [°धा] दस प्रकार से (जी २४)। °ाणण पुं [°ानन] राक्षसेश्वर रावण (से ३, ६३)। °ाहिया स्त्री [°ाहिका] पुत्र-जन्म के उपलक्ष्य में किया जाता दस दिनों का एक उत्सव (कप्प)।

दसग वि [दशक] दस वर्ष की उम्र का (तंदु १७)।

दसण पुं [दशन] १ दाँत, दन्त (भग; कुमा)। २ न. दंश, काटना (पव ३८)। °च्छय पुं [°च्छद] होठ, अधर, ओठ (सुर १२, २३४)।

दसण्ण पुं [दशार्ण] देश-विशेष (उप २११ टी; कुमा)। °कूड न [°कूट] शिखर-विशेष (आवम)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष (ठा १०)। °भद्द पुं [°भद्र] दशार्णपुर का एक विख्यात राजा, जो अद्वितीय आडम्बर से भगवान् महावीर को वन्दन करने गया था और जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी (पडि)। °वइ पुं [°पति] दशार्ण देश का राजा (कुमा)।

दसतीण न [दे] धान्य-विशेष (पण्ण १—पत्र ३४)।

दसन्न देखो दसण्ण (सत्त ६७ टी)।

दसा स्त्री [दशा] १ स्थिति, अवस्था (गा २२७; २८४; प्रासू ११०)। २ सौ वर्ष के प्राणी की दस-दस वर्ष की अवस्था (दसनि १)। ३ सूत या ऊन का छोटा और पतला धागा (ओघ ७२५)। ४ ब. जैन आगम-ग्रन्थ-विशेष (अणु)।

दसार पुं [दशार्ह] १ समुद्रविजय आदि दश यादव (सम १२६; हे २, ८५; अंत २; णाया १, ५—पत्र ९९)। २ वासुदेव, श्रीकृष्ण (णाया १, १६)। ३ बलदेव (आवम)। ४ वासुदेव की संतति (राज)। °णेउ पुं [°नेतृ] श्रीकृष्ण (उव)। °नाह पुं [°नाथ] श्रीकृष्ण (पाअ)। °वइ पुं [°पति] श्रीकृष्ण (कुमा)।

दसिया देखो दसा (सुपा ६४१)।

दसु पुं [दे] शोक, दिलगीरी (दे ५, ३४)।

दसुत्तरसय न [दशोत्तरशत] १ एक सौ दस। २ वि. एक सौ दसवाँ, ११० वाँ (पउम ११०, ४५)।

दसुय पुं [दस्यु] लुटेरा, डाकू, चोर, तस्कर (उत्त १०, १६)।

दसेर पुं [दे] सूत्र-कनक (दे ५, ३३)।

दस्स देखो दंस = दर्शय्। कृ. दस्सणीअ (स्वप्न ६५)।

दस्सण देखो दंसण (मै २१)।

दस्सु पुं [दस्यु] चोर, तस्कर (श्रा २७)।

दह सक [दह्] जलना, भस्म करना। दहइ (महा)। कर्म. दहिज्जइ (हे ४, २५६), दज्झइ (आचा)। वकृ. दहंत (श्रा २८)।

कवक्त. दउभंत, दउभमाण (नाट—मालती ३०; पि २२२)।

दह पुं [द्रह] ह्रद, बड़ा जलाशय, भील, सरोवर (भग; उवा; णाया १, ४—पत्र ९६; सुपा १३७)। °फुलिया स्त्री [°फुल्लिका] वल्ली-विशेष (पण्ण १)। °वई, °विई स्त्री [°वती] नदी-विशेष (ठा २, ३—पत्र ८०; जं ४)।

दह देखो **दस** (हे १, २६२; दं १२; पि २६२; पउम ७८, २५; से १३, ६४; प्राप्र; से १४, १६; ३, ११; १०, ४; पउम ८, ४४; प्राप्र)।

दहण न [दहन] १ दाह, भस्मीकरण। २ पुं. अग्नि, वह्नि (पण्ह १, १; उप पृ २२; सुपा ४७४; श्रा २८)।

दहणी स्त्री [दहनी] विद्या-विशेष (पउम ७ १३८)।

दहबोली स्त्री [दे] स्थाली, थलिया, थरिया (दे ५, ३६)।

दहावण वि [दाहक] जलानेवाला (सण)।

दहि न [दधि] दही, दूध का विकार (ठा ३ १; णाया १, १; प्राप्र)। °घण पुं [°घन] दधि-पिण्ड, अतिशय जमा हुआ दही (पण्ण १७—पत्र ५२६)। °मुह पुं [°मुख] १ द्वीप-विशेष (पउम ५१, १)। २ एक नगर (पउम ५१, २)। ३ पर्वत-विशेष (राज)। °वण्ण, °वन्न पुं [°पर्ण] १ एक राजा, नृप-विशेष (कुप्र ६६)। २ वृक्ष-विशेष (औप; सम १५२; पण्ण १—पत्र ३१)। °वासुया स्त्री [°वासुका] वनस्पति-विशेष (जीव ३)। °वाहण पुं [°वाहन] नृप-विशेष (महा)। ° सर पुं [°सर] खाद्य-द्रव्य-विशेष, मलाई, (दे ३, २६; ५, ३६)।

दहि त्रि [दधि] १ दही, 'जुन्हादहीय महणेण' (धर्मवि ५५); 'अयं तु दही' (सूअ २,१,१६)। २ तेला, लगातार तीन दिन का उपवास (संबोध ५८)।

दहिउप्फ न [दे] नवनीत, नैनूं, मक्खन (दे ५, ३५)।

दहिट्ठ पुं [दे] वृक्ष-विशेष, कपित्थ, कैथ या कैथ का पेड़ (दे ५, ३५)।

दहिण देखो **दाहिण** (नाट—वेणी ६७)।

दहित्थर } **दहित्थार** } पुं [दे] दधिसर, दही पर की मलाई, खाद्य-विशेष (दे ५, ३६)।

दहिमुह पुं [दे] कपि, वानर (दे ५, ४४)।

दहिय पुं [दे] पक्षि-विशेष, 'जं लावयतित्ति-रिदहियमोरं मारंति अहोस वि के वि घोर' (कुप्र ४२७)।

दा सक [दा] देना, उत्सर्ग करना। दाइ, देइ (भवि; हे २, २०६; आचा; महा; कस)। भवि दाहं, दाहामि, दाहिमि (हे ३, १७०; आचा)। कर्म. दिज्जइ (हे ४, ४३८)। वकृ. दिंत, देंत, ददंत, देयमाण (सुर १, २१२; गा २३; ४६४; हे ४, ३७६; बृह १; णाया १, १४—पत्र १८६)। कवकृ. दिज्जंत, दिज्जमाण, दीअमाण (गा १०१; सुर ३, ७६; १०, ५; सम ३६; सुपा ५०२; मा ३३)। संकृ. दच्चा, दाउं, दाऊण (विपा १, १; पि ५८७; कुमा; उव)। हेकृ. दाउं (उवा)। कृ. दायव्व, देय (सुर १, ११०; सुपा २३३; ४४४; ५३२)। हेकृ. देवं (अप) (हे ४, ४४१)।

दा° देखो **दग**। °थालग न [°स्थालक] जल से गीला थाल (भग १५—पत्र ६८०)। °कलस पुं [°कलश] पानी का छोटा घड़ा। °कुंभ [°कुम्भ] जल का घड़ा। °वरग पुं [°वारक] जल का पात्र-विशेष (भग १५—पत्र ६८०)।

दा देखो **ता** = तावत् (से ३, १०)।

दाअ देखो **दाव** = दर्शय्। दाएइ (विसे ८४४)। कर्म. दाइज्जइ (विसे ४६०)। कवकृ. दाइ-ज्जमाण (कप्प)।

दाअ पुं [दे] प्रतिभू, जामिनदार, जमानत करनेवाला (दे ५, ३८)।

दाअ पुं [दाय] दान, उत्सर्ग (णाया १, १—पत्र ३७)।

दाइ वि [दायिन्] दाता, देनेवाला (उप पृ १६२)।

दाइअ वि [दर्शित] दिखलाया हुआ (विसे १०१२)।

दाइअ पुं [दायिक] १ पैतृक संपत्ति का हिस्सेदार (उप पृ ४७; महा)। २ गोत्रिक, समान-गोत्रीय (कप्प)।

दाइज्जमाण देखो **दाअ** = दर्शय्।

दइज्जय न [देयक] पाणिग्रहण के समय वर-वधू को दिया जाता द्रव्य (सिरि ४६६)।

दाउ वि [दातृ] दाता, देनेवाला (महा; सं १; सुपा १६१)।

दाउं देखो **दा** = दा।

दाओयरिय वि [दाकोदरिक] जलोदर रोग-वाला (विपा १, ७)।

दाक्खव (अप) देखो **दक्खव**। दाक्खवइ (प्राकृ ११६)।

दाघ देखो **दाह** (हे १, २६४)।

दाडिम न [दाडिम] फल-विशेष, अनार (महा)।

दाडिमी स्त्री [दाडिमी] अनार का पेड़ (पि २४०)।

दाढगालि देखो **दढगालि** (दसनि १,४६ टी)।

दाढा स्त्री [दंष्ट्रा] बड़ा दाँत, दन्त-विशेष, चौभड़, चहू, दाढ़ (हे २, १३०; गउड)।

दाढि वि [दंष्ट्रिन्] १ दाढ़ावाला। २ पुं, हिंसक पशु (वेणी ४६)। सूअर, वराह; 'किं दाढीभयभीओ नियय गुहं केसरी रियइ' (पउम ७, १८)।

दाढिआ स्त्री [दे] दाढ़ी, मुख के नीचे का भाग, श्मश्रु, ठुड्ढी के नीचे या ठुड्डी पर के बाल (दे २, १०१)।

दाढिआलि } **दाढिगालि** } स्त्री [दंष्ट्रिकावलि] १ दाढ़ा की पंक्ति। २ वस्त्र-विशेष (बृह ३; जीत)।

दाण पुंन [दान] १ दान, उत्सर्ग, त्याग; 'एए हवंति दाणा' (पउम १४, ५४; कप्प; प्रासू ४८; ६७; १७२)। २ हाथी का मद (पाअ, षड्; गउड)। ३ जो दिया जाय वह (गउड)। °विरय पुं [°विरत] एक राजा (सुपा १००)। °साला स्त्री [°शाला] सत्रागार (ती ८)।

दाणंतराय न [दानान्तराय] कर्म-विशेष, जिसके उदय से दान देने की इच्छा नहीं होती है (राय)।

दाणपारमिया स्त्री [दानपारमिता] दान, उत्सर्ग, समर्पण; 'देतस्स हिरन्नादी अब्भासा देहमादियं चेव। अग्गहविणिवित्ती जा सेट्ठा सा दाणपारमिया' (धर्मसं ७३७)।

दाणव पुं [दानव] दैत्य, असुर, दनुज (दे १, १७७; अच्चु ४१; प्रासू ८६)।

दाणविंद पुं [दानवेन्द्र] असुरों का स्वामी (णाया १, ८; पउम ६२, ३६; प्रासू १०७)।

दाणि स्त्री [दे] शुल्क, चुंगी (सुपा ३६०; ५४८)।

दाणि, दाणिं, दाणीं अ [इदानीम्] इस समय, अभी (प्रति ३६; स्वप्न २०; हे १, २६; ४, २७७; अभि ३७; स्वप्न ३३)।

दाथ वि [द्वाःस्थ] १ द्वार पर स्थित। २ पुं. प्रतीहार, द्वारपाल, चपरासी (दे ६, ७२)।

दादलिआ स्त्री [दे] अंगुली, उंगली (दे ५, ३८)।

दापण न [दापन] दिलाना, 'अब्भुट्ठाणं अंजलिकरणं तहेवासणदापणं' (सत्त २६ टी)।

दाम न [दामन्] १ माला, स्रज् (पण्ह १, ४; कुमा)। २ रज्जु, रस्सी (गा १७२; हे १, ३२)। ३ पुं. वेलन्धर नागराज का एक आवास-पर्वत (राज)। °वंत वि [°वत्] मालावाला (कुमा)।

दामट्ठि पुं [दामस्थि] सौधर्म देवलोक के इन्द्र के वृषभ-सैन्य का अधिपति देव (इक)।

दामड्ढि पुं [दामर्द्धि] ऊपर देखो (ठा ५, १—पत्र ३०३)।

दामण न [दामन] बन्धन, पशुओं का रस्सी से नियन्त्रण (पव ३८)।

दामण स्त्रीन [दामनी] पशु को बाँधने की डोरी—रस्सी, पगहा (धर्मवि १४४)। स्त्री. °णी (सुज्ज १०, ८)।

दामणी स्त्री [दामनी] १ पशुओं को बांधने की रस्सी (भग १६, ६)। २ भगवान् कुन्थु-नाथ की मुख्य शिष्या (तित्थ)। ३ स्त्री और पुरुष का रज्जु के आकारवाला एक शुभ लक्षण (पण्ह २, ४ टी—पत्र ८४; पण्ह २, ४—पत्र ६८; ७६; जं २)।

दामणा स्त्री [दे] १ प्रसव, प्रसूति। २ नयन, आंख (दे ५, ५२)।

दामिय वि [दामित] संयमित, नियन्त्रित (सण)।

दामिली स्त्री [द्राविडी] द्रविड़ देश की लिपि में निबद्ध एक मन्त्र-विद्या (सूअ २, २)।

दामी स्त्री [दामी] लिपि-विशेष (सम ३५)।

दामोअर पुं [दामोदर] १ श्रीकृष्ण वासुदेव (ती ४)। २ अतीत उत्सर्पिणी काल में भरत-क्षेत्र में उत्पन्न नववां जिनदेव (पव ७)।

दायग वि [दायक] दाता, देनेवाला (उप ७२८ टी; महा; सुर २, ४४; सुपा ३७८)।

दायण न [दान] देना, 'दायणे अ निकाए अ अब्भुट्ठाणेत्ति आवरे' (सम २१); 'तवो-विहाणं तह दाणदाय (? य) णं' (सत्त २६)।

दायणा स्त्री [दापना] पृष्ट अर्थ की व्याख्या (विसे २६३२)।

दायय देखो दायग, 'अजिअसंतिपायया हुंतु मे सिवसुहाण दायया' (अजि ३४)।

दायव्व देखो दा = दा।

दायाद पुं [दायाद] पैतृक संपत्ति का भागी-दार, पुत्र, सपिंड कुटुम्बी (आचा)।

दायार वि [दायार] याचक, प्रार्थी (कप्प)।

दार सक [दारय्] विदारना, तोड़ना, चूर्ण करना। वकृ. दारंत (कुमा)।

दार पुं [दे] कटी-सूत्र, काँची (दे ५, ३८)।

दार पुंन [दार] कलत्र, स्त्री, महिला (सम ५०; स १३७; सुर ७, २०१; प्रासू ६५); 'दव्वेण अप्पकालं गहिया वेसावि होइ परदारं' (सुपा २८०)।

दार न [द्वार] दरवाजा, निकलने का मार्ग (औप; सुपा ३६७)। °ग्गला स्त्री [°र्गला] दरवाजे का आगल (गा ३२२)। °ट्ठ, °त्थ वि [°स्थ] १ द्वार पर स्थित। २ पुं. दरवान, प्रतीहार (बृह १; दे २, ५२)। °पाल, °वाल पुं [°पाल] दरवान, द्वार-रक्षक (उप ५३० टी; सुर १०, १३६; महा)। °वालय, °वालिय पुं. [°पालक, पालिक] दरवान, प्रतीहार (पउम १७, १६; सुपा ४६६)।

दार, दारग पुं [दारक] शिशु, बालक, बच्चा (उप पृ ३०८; सुर १५, ११६; कप्प)। देखो दारय।

दारइंता स्त्री [दे] पेटी, संदूक (दे ५, ३८)।

दारय वि [दारक] करनेवाला, विध्वंसक (कुप्र १३०)। २ देखो दारग (कप्प)।

दारिअ वि [दारित] विदारित, फाड़ा हुआ (पाअ)।

दारिआ स्त्री [दारिका] लड़की (स्वप्न १५; णाया १, १६; महा)।

दारिआ स्त्री [दे] वेश्या, वारांगना (दे ५, ३८)।

दारिद्द न [दारिद्र्य] १ निर्धनता। २ दीनता (गा ६७१; महा; प्रासू १७३)। ३ आलस्य (प्रामा)।

दारिद्दिय वि [दारिद्रित] दरिद्रता-प्राप्त, दरिद्र (पउम ५५, २५)।

दारु न [दारु] काष्ठ, लकड़ी (सम ३६; कुप्र १०५; स्वप्न ७०)। °ग्गाम पुं [°ग्राम] ग्राम-विशेष (पउम ३०, ६०)। °दंडय पुंन [°दण्डक] काष्ठ दण्ड, साधुओं का एक उपकरण (कस)। °पव्वय पुं [°पर्वत] पर्वत-विशेष (जीव ३)। °पाय न [°पात्र] काष्ठ का बना हुआ भाजन (ठा ३, ३)। °पुत्तय पुं [°पुत्रक] कठपुतला (अच्चु ८२)। °मड पुं [°मड] भरत-क्षेत्र के एक भावी जिन-देव के पूर्व जन्म का नाम (सम १५४)। °संकम पुं [°संक्रम] काष्ठ का बना हुआ पुल, सेतु (आचा)।

दारुअ पुं [दारुक] १ श्रीकृष्ण वासुदेव का एक पुत्र, जिसने भगवान् नेमिनाथ के पास दीक्षा लेकर उत्तम गति प्राप्त की थी (अंत ३)। २ श्रीकृष्ण का एक सारथि (णाया १, १६)। ३ न. काष्ठ, लकड़ी (पउम २६, ६)।

दारुइज्ज वि [दारुकीय] काष्ठ-निर्मित, लकड़ी का बना हुआ। °पव्वय पुं [°पर्वत] काष्ठ का बना हुआ मालूम पड़ता पर्वत (राय ७५)।

दारुण वि [दारुण] १ विषम, भयंकर, भीषण (णाया १, २; पाअ; गउड)। २ क्रोध-युक्त, रौद्र (वव १)। ३ न. कष्ट, दुःख (स ३२२)। ४ दुर्भिक्ष, अकाल (उप १३६ टी)।

दारुणी स्त्री [दारुणी] विद्यादेवी-विशेष (पउम ७, १४०)।

दालण न [दारण] विदारण, खण्डन (पण्ह १, १)।

दालि स्त्री [दे. दालि] १ दाल, दला हुआ चना, अरहर, मूँग आदि अन्न (सुपा ११; सण)। २ राजि, रेखा, लकीर (ओघ ३२३)।

दालिअ न [दे] नेत्र, आँख (दे ५, ३८)।

दालिद्द देखो दारिद्द (हे १, २५४; प्रासू ७०)।

दालिद्दिय देखो दारिद्दिय (सुर १३, ११६; वज्जा १३८)।

दालिम देखो दाडिम (प्राप्र)।

°दालियंब न [दालिकाम्ल] दाल का बना हुआ खाद्य-विशेष (पण्ह २, ५)।

दालिया स्त्री [दालिका] देखो दालि (उवा)।

दाली देखो दालि (ओघ ३२३)।

दाव सक [दर्शय्] दिखलाना, बतलाना। दावइ, दावेइ (हे ४, ३२; गा ३१५)। वकृ. दावंत (गा ६२०)।

दाव सक [दापय्] दिलाना, दान करवाना। दावेइ (कस)। वकृ. दावेंत (पउम ११७, २६; सुपा ६१८)। हेकृ. दावेत्तए (कप्प)।

दाव देखो ताव = तावत् (से ३, २६; स्वप्न १२; अभि ३६)।

दाव पुं [दाव] १ वन, जंगल। २ देव, देवता (से ६, ४३)। ३ जंगल का अग्नि (पाअ)। °ग्गि पुं [°ाग्नि] जंगल की आग (हे १, ६७)। °ाणल, °ानल पुं [°ानल] जंगल की आग (सण; सुपा १६७; पडि)।

दावण न [दामन] छान, पशुओं को पैर में बाँधने की रस्सी (कुप्र ४३६)।

दावण न [दापन] दिलाना (सुपा ४६६)।

दावणया स्त्री [दापना] दिलाना (स ५१; पडि)।

दावद्दव पुं [दावद्रव] वृक्ष-विशेष (णाया १, ११—पत्र १७१)।

दावर पुं [द्वापर] १ युग-विशेष, तीसरा युग। २ न. द्विक, दो; 'नो तियं नो चेव दावरं' (सूअ १, २, २, २३)। °जुम्म पुं [°युग्म] राशि-विशेष (ठा ४, ३—पत्र २३७)।

दावाव सक [दापय्] दिलाना। संकृ. दावावेउं (महा)।

दाविअ वि [दर्शित] दिखलाया हुआ, प्रदर्शित (पाअ, से १, ५३; ५, ८०)।

दाविअ वि [दापित] दिलाया हुआ (सुपा २४१)।

दाविअ वि [द्रावित] १ झराया हुआ, टपकाया हुआ। २ नरम किया हुआ (अच्चु ८८)।

दावेंत देखो दाव = दापय्।

दास पुं [दर्श] दर्शन, अवलोकन (षड्)।

दास पुं [दास] १ नौकर, कर्मकर (हे २, २०६; सुपा १२२; प्रासू १७५; स १८; कप्पू)। २ धीवर, मल्लाह; 'केवट्टो धीवरो दासो' (पाअ)। °चेड, °चेडग पुं [°चेट] १ छोटी उम्र का नौकर। २ नौकर का लड़का (महा; णाया १, २)। °सच्च पुं [°सत्य] श्रीकृष्ण (अच्चु १७)।

दासरहि पुं [दाशरथि] राजा दशरथ का पुत्र, रामचन्द्र (से १, १४)।

दासी स्त्री [दासी] नौकरानी (औप; महा)।

दासीखब्बडिया स्त्री [दासीकर्वटिका] जैन मुनियों की एक शाखा (कप्प)।

दाह पुं [दाह] १ ताप, जलन, गरमी। २ दहन, भस्मीकरण (हे १, २६४; प्रासू १८)। ३ रोग-विशेष (विपा १, १)। °ज्जर पुं [°ज्वर] ज्वर-विशेष (सुपा ३११)। °वक्कंतिय वि [°व्युत्क्रान्तिक] जिसको दाह उत्पन्न हुआ हो वह (णाया १, १—पत्र ६४)।

दाहं देखो दा = दा।

दाहग वि [दाहक] जलानेवाला (उवर ८१)।

दाहण न [दाहन] जलाना, भस्म कराना (पउम १०२, १६१)।

दाहविय वि [दाहित] जलवाया हुआ, आग लगवाया हुआ (हम्मीर २७)।

दाहिण देखो दक्खिण (भग; कस; हे १, ४५; २, ७२; गा ४३३; ८१६)। °दारिय वि [°द्वारिक] दक्षिण दिशा में जिसका द्वार हो वह। २ न. अश्विनी-प्रमुख सात नक्षत्र (ठा ७)। °पच्चत्थिम वि [°पश्चिमीय] दक्षिण और पश्चिम दिशा के बीच का भाग, नैर्ऋत कोण (भग)। °पह पुं [°पथ] १ दक्षिण देश की ओर का रास्ता। २ दक्षिण देश; 'गच्छामि दाहिणपहं' (पउम ३२, १३)। °पुरत्थिम वि [°पूर्वीय] दक्षिण और पूर्व दिशा के बीच का भाग, अग्नि-कोण (भग)। °वत्त वि [°वर्त] दक्षिण में आवर्तवाला (शंख आदि) (ठा ४, २—पत्र २१६)।

दाहिणा देखो दक्खिणा (ठा ६; सुज्ज १०)।

दाहिणिल्ल देखो दक्खिणिल्ल (पउम ७, १७; विपा १, ७)।

दाहिणी स्त्री [दक्षिणा] दक्षिण दिशा (कुमा)।

दि वि. ब. [द्वि] दो, दो की संख्यावाला (हे १, ६४; से ६, ५३)।

दि° देखो दिसा (गा ८६६)। °करि पुं [°करिन्] दिग्-हस्ती (कुमा)। °गइंद पुं [°गजेन्द्र] दिग्-हस्ती (गउड)। °गय पुं [°गज] दिग्-हस्ती (स ११३)। °चक्कसार न [°चक्रसार] विद्याधरों का एक नगर (इक)। °म्मोह पुं [°मोह] दिशा-भ्रम (गा ८८६)। देखो दिसा।

दिअ पुंन [दे] दिवस, दिन (दे ५, ३६); 'राइंदिआइं' (कप्प)।

दिअ पुं [द्विज] १ ब्राह्मण, विप्र (कुमा; पाअ; उप ७६८ टी)। २ दन्त, दाँत। ३ ब्राह्मण आदि तीन वर्ण—ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य। ४ अण्डज, अण्डे से उत्पन्न होनेवाला प्राणी। ५ पक्षी। ६ वृक्ष-विशेष, टिंबरू का पेड़ (हे १, ६४)। °राय पुं [°राज] १ उत्तम द्विज। २ चन्द्रमा (सुपा ४१२; कुप्र १६)।

दिअ पुं [द्विक] काक, कौआ (उप ७६८टी)।

दिअ पुं [द्विप] हस्ती, हाथी (हे २, ७६)।

दिअ न [दिव] स्वर्ग, देवलोक (पिंग)। °लोअ, °लोग पुं [°लोक] स्वर्ग, देवलोक (पउम २२, ४५; सुर ७, १)।

दिअ वि [दित] छिन्न, काटा हुआ (धम्मो १)।

दिअ वि [द्रुत] हत, मार डाला हुआ; 'चंदेण व दियराएण जेण आणंदियं भुवणं' (कुप्र १६)।

दिअंत पुं [दिगन्त] दिशा का प्रान्त भाग (महा)।

दिअंबर वि [दिगम्बर] १ नग्न, नंगा, वस्त्र-रहित। २ पुं. एक जैन संप्रदाय (भवि; उवर १२२; कुप्र ४४३)।

दिअज्झ पुं [दे] सुवर्णकार, सोनार (दे ५, ३६)।

दिअधुत्त पुं [दे] काक, कौआ (दे ५, ४१)।

दिअर पुं [देवर] पति का छोटा भाई (गा ३५; प्राप्र; पाअ; हे १, १४६; सुपा ४८७)।

दिअलिअ वि [दे] मूर्ख, अज्ञानी (दे ५, ३६)।

दिअली स्त्री [दे] स्थूणा, खम्भा, खूँटी (पाअ)।

दिअस पुंन [दिवस] दिन, दिवस (गउड; पि २६४)। °कर पुं [°कर] सूर्य, रवि (से १, ५३)। °नाह पुं [°नाथ] सूर्य, सूरज (पउम १४, ८३)। °यर देखो °कर (पाअ)। देखो दिवस।

दिअसिअ न [दे] १ सदा-भोजन (दे ५, ४०)। २ अनुदिन, प्रतिदिन (दे ५, ४०; पाअ)।

दिअह देखो दिअस (प्राप्र; पाअ)।

दिअहुत्त न [दे] पूर्वाह्ण का भोजन, दुपहर का भोजन (दे ५, ४०)।

दिआ अ [दिवा] दिन, दिवस (पाअ; गा ६६; सम १६; पउम २६, २६)। °णिस न [°निश] दिन-रात, सदा (पिंग)। °राअ न [°रात्र] दिन-रात, सर्वदा (सुपा ३१८)। देखो दिवा।

दिआहम पुं [दे] भास पक्षी (दे ५, ३६)।

दिआइ देखो दुआइ (पाअ)।

दिइ स्त्री [दृति] मशक, चमड़े का जल-पात्र (अनु ५; कुप्र १४६)।

दिउण वि [द्विगुण] दूना, दुगुना (पि २६८)।

दिंत देखो दा = दा।

दिकाण पुं [द्रेष्काण] मेष आदि लग्नों का दसवाँ हिस्सा (राज)।

दिक्ख सक [दीक्ष्] दीक्षा देना, प्रव्रज्या देना, संन्यास देना, शिष्य करना। दिक्खे (उव)। वकृ. दिक्खंत (सुपा ५२६)।

दिक्ख देखो देक्ख। दिक्खइ (पि ६६)।

दिक्खा स्त्री [दीक्षा] १ प्रव्रज्या देना, दीक्षण (ओघ ७ भा)। २ प्रव्रज्या, संन्यास (धर्म २)।

दिक्खिअ वि [दीक्षित] जिसको प्रव्रज्या दी गई हो वह, जो साधु बनाया गया हो वह (उव)।

दिगंछा देखो दिगिंछा (पि ७४)।

दिगबर देखो दिअंबर (इक; आवम)।

दिगिंछा स्त्री [जिघत्सा] बुभुक्षा, भूख (सम ४०; विसे २५६४; उत्त २; आचू)।

दिगिच्छ सक [जिघत्स्] खाने को चाहना। वकृ. दिगिच्छंत (आचा; पि ५५५)।

दिगु पुं [द्विगु] व्याकरण-प्रसिद्ध एक समास (अणु; पि २६८)।

दिग्गु देखो दिगु (अणु १४७)।

दिग्घ देखो दीह (हे २, ६१; प्राप्र; संक्षि १७; स्वप्न ६८; विसे ३४६७)। °णंगूल, लंगूल वि [°लाङ्गूल] १ लम्बी पूँछवाला २ पुं. वानर (षड्)।

दिग्घिआ स्त्री [दीर्घिका] वापी, सीढ़ीवाला कूप-विशेष (स्वप्न ५६; विक्र १३६)।

दिच्छा स्त्री [दित्सा] देने की इच्छा (कुप्र २६६)।

दिज देखो दिअ = द्विज (कुमा)।

दिज्ज वि [देय] १ देने योग्य। २ जो दिया जा सके। ३ पुंन. कर-विशेष (विपा १, १)।

दिज्जंत, **दिज्जमाण** } देखो दा = दा।

दिट्ठ वि [दिष्ट] कथित, प्रतिपादित, कहा हुआ (उप ७६८ टी)।

दिट्ठ वि [दृष्ट] १ देखा हुआ, विलोकित (ठा ४, ४; स्वप्न २८; प्रासू १११)। २ अभिमत (अणु)। ३ ज्ञात, प्रमाण से जाना हुआ (उप ८८२; बृह १)। ४ न. दर्शन, विलोकन (ठा २, १)। °पाढि वि [°पाठिन्] चरक-सुश्रुतादि का जानकार (ओघ ७४)। °लाभिय पुं [°लाभिक] दृष्ट वस्तु को ही ग्रहण करनेवाला जैन साधु (पण्ह २, १)।

दिट्ठ न [दृष्ट] प्रत्यक्ष या अनुमान प्रमाण से जानने योग्य वस्तु (धर्म सं ५१८; ५१६)। °साहम्मव न [साधर्म्यवत्] अनुमान का एक भेद (अणु २१२)।

दिट्ठंत पुं [दृष्टान्त] उदाहरण, निदर्शन (ठा ४, ४; महा)।

दिट्ठंतिअ वि [द्राष्टान्तिक] १ जिस पर उदाहरण दिया गया हो वह (विसे १००५ टी)। २ न. अभिनय-विशेष (ठा ४, ४—पत्र २८५)।

दिट्ठव्व देखो दक्ख = दृश्।

दिट्ठि स्त्री [दृष्टि] १ नेत्र, आँख, नजर (ठा ३, १; प्रासू १६; कुमा)। २ दर्शन, मत (पण्ण १६; ठा ४, १)। ३ दर्शन, अवलोकन, निरीक्षण (अणु)। ४ बुद्धि, मति (सम २५; उत्त २)। ५ विवेक, विचार (सूअ २,२)। °कीव पुं [°क्लीब] नपुंसक-विशेष (निचू ४)। °जुद्ध न [°युद्ध] युद्ध-विशेष, आँख की स्थिरता की लड़ाई (पउम ४, ४४)। °बंध पुं [°बन्ध] नजर बाँधना (उप ७२८ टी)। °म, °मंत वि [°मत्] प्रशस्त दृष्टिवाला, सम्यग्-दर्शी (सूअ १, ४, १; आचा)। °राय पुं [°राग] १ दर्शन-राग, अपने धर्म पर अनुराग (धर्म २)। २ चाक्षुष-स्नेह (अभि ७४)। °ल्ल वि [°मत्] प्रशस्त दृष्टिवाला (पउम २८, २२)। °वाय पुं [°पात] १ नजर डालना (से १०, ५)। २ बारहवाँ जैन अंग-ग्रंथ (ठा १०—पत्र ४६१)। °वाय पुं [°वाद] बारहवाँ जैन अंग-ग्रन्थ (ठा १०; सम १)। °विपरिआसिआ स्त्री [°विपर्यासिका, °सिता] मति भ्रम (सम २५)। °विस पुं [°विष] जिसकी दृष्टि में विष हो ऐसा सर्प (से ४, ५०)। °सूल न [°शूल] नेत्र का रोग-विशेष (णाया १, १३—पत्र १८१)।

दिट्ठि स्त्री [दृष्टि] तारा, मित्रा आदि योग-दृष्टि (सिरि ६२३)।

दिट्ठिआ अ [दिष्ट्या] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ मंगल। २ हर्ष, आनन्द, खुशी। ३ भाग्य से (हे २, १०४; स्वप्न १६; अभि ६५; कुप्र ६५)।

दिट्ठिआ स्त्री [दृष्टिका, °जा] १ क्रिया-विशेष—दर्शन के लिए गमन। २ दर्शन से कर्म का उदय होना (ठा २, १—पत्र ४०)।

दिट्ठीआ स्त्री [दृष्टीया] ऊपर देखो (नव १८)।

दिट्ठीवाओबएसिआ स्त्री [दृष्टिवादोपदेशिकी] संज्ञा-विशेष (दं ३३)।

दिट्ठेल्लय वि [दृष्ट] देखा हुआ, निरीक्षित (आवम)।

दिड्ढ, **दिढ** } देखो दृढ (नाट—मालती १७; से १, १४; स्वप्न २०५; प्रासू ६२)।

दिण पुंन [दिन] दिवस (सुपा ५६; दं २७; जी ३५; प्रासू ६५)। °इंद पुं [°इन्द्र] सूर्य, रवि (सण)। °कय पुं [°कृत्] सूर्य, रवि (राज)। °कर पुं [°कर] सूर्य, सूरज (सुपा ३१२)। °नाह पुं [°नाथ] सूर्य, रवि (महा)। °बंधु पुं [°बन्धु] सूर्य, रवि (पुप्फ ३७)। °मणि पुं [°मणि]

सूर्य, दिवाकर (पाअ; से १, १८; सुपा २३)। °मुह न [°मुख] प्रभात, प्रातःकाल (पाअ)। °यर देखो °कर (गउड; भवि)। °रयणिकरि स्त्री [°रजनिकरी] विद्या-विशेष (पउम १३८)। °वइ पुं [°पति] सूर्य, रवि (पि ३७६)।

दिणिंद पुं [दिनेन्द्र] सूर्य, रवि (सुपा २४०)।

दिणेस पुं [दिनेश] १ सूर्य, सूरज (कप्पू)। २ बारह की संख्या (विवे १४४)।

दिण्ण वि [दत्त] १ दिया हुआ, वितीर्ण (हे १, ४६; प्राप्र; स्वप्न; प्रासू १६४)। २ निवेशित, स्थापित (पराह १, १)। ३ पुं. भगवान् पार्श्वनाथ के प्रथम गण-धर (सम १५२)। ४ भगवान् श्रेयांसनाथ का पूर्वजन्मीय नाम (सम १५१)। ५ भगवान् चन्द्रप्रभ का प्रथम गणधर (सम १५२)। ६ भगवान् नमिनाथ को प्रथम भिक्षा देनेवाला एक गृहस्थ (सम १५१)। देखो दिन्न।

दिण्ण देखो दइन्न (राज)।

दिण्णेल्लय वि [दत्त] दिया हुआ (ओघ २२ भा. टी)।

दित्त वि [दीप्त] १ ज्वलित, प्रकाशित (सम १५३; अजि १४; लहुअ ११)। २ कान्ति-युक्त, भास्वर, तेजस्वी (पउम ६४, ३५; सम १२२)। ३ तीक्ष्णभूत, निशित (सम १५३; लहुअ ११)। ४ उज्ज्वल, चमकीला (णंदि)। ५ पुष्ट, परिवृद्ध (उत्त ३४)। ६ प्रसिद्ध (भग २६, ३)। ७ मारनेवाला (ओघ ३०२)। °चित्त वि [°चित्त] हर्ष के अतिरेक से जिसको चित्त-भ्रम हो गया हो वह (बृह ३)।

दित्त वि [दृप्त] १ गर्वित, गर्व-युक्त (औप)। २ मारनेवाला। ३ हानि-कारक (ओघ ३०२)। °इत्त वि [°चित्त] २ जिसके मन में गर्व हो। २ हर्ष के अतिरेक से जो पागल हो गया हो वह (ठा ५, ३—पत्र ३२७)।

दित्ति स्त्री [दीप्ति] कान्ति, तेज, प्रकाश (पाअ; सुर ३, ३२; १०, ४६; सुपा ३७८)। °म वि [°मत्] कान्ति-युक्त (गच्छ १)।

दित्ति स्त्री [दीप्ति] उद्दीपन (उत्त ३२, १०)। °ल्ल वि [°मत्] प्रकाशवाला (सम्मत्त १५६)।

दिदिक्खा, दिदिच्छा स्त्री [दिदृक्षा] देखने की इच्छा (राज; सुपा २६४)।

दिद्ध वि [दिग्ध] लिप्त (निचू १)।

दिन्न देखो दिण्ण (महा; प्रासू ५७)। ७ श्री गौतम स्वामी के पास पाच सौ तापसों के साथ जैन दीक्षा लेनेवाला एक तापस (उप १४२ टी; कुप्र २६३)। ८ एक जैन आचार्य (कप्प)।

दिन्नय पुं [दत्तक] गोद लिया हुआ पुत्र (ठा १०—पत्र ५१६)।

दिप्प अक [दीप्] १ चमकना। २ तेज होना। ३ जलना। दिप्पइ (हे १, २२३)। वकृ. दिप्पंत, दिप्पमाण (से ४, ८; सुर १४, ५६; महा; पराह १, ४; सुपा २४०); 'दिप्पमाणे तवतेएण' (स ६७५)।

दिप्प अक [तृप्] तृप्त होना, सन्तुष्ट होना। दिप्पइ (षड्)।

दिप्प वि [दीप्र] चमकनेवाला, तेजस्वी (से १, ६१)।

दिप्प (अप) पुं [दीप] १ दीपक। २ छन्द-विशेष (पिंग)।

दिप्पंत पुं [दे] अनर्थ (दे ५, ३६)।

दिप्पंत, दिप्पमाण देखो दिप्प = दीप्।

दिप्पिर देखो दिप्प = दीप्र (कुमा)।

दियाव सक [दा] देना। दियावेइ (पंचा १३, १२)।

दिरय पुं [द्विरद] हस्ती, हाथी (हे १, ९४)।

दिलंदिलिअ [दे] देखो दिल्लिदिलिअ (गा ७४१)।

दिलिदिल अक [दिलदिलाय्] 'दिल् दिल्' आवाज करना। वकृ. दिलिदिलंत (पउम १०२, २१)।

दिलिवेढय पुं [दिलिवेष्टक] एक प्रकार का ग्राह, जल-जन्तु की एक जाति (पराह १, १)।

दिल्लिदिलिअ पुं [दे] बालक, शिशु, लड़का (दे ५, ४०)। स्त्री. °आ; बाला, लड़की (गा ७४१)।

दिव उभ [दिव्] १ क्रीड़ा करना। २ जीतने की इच्छा करना। ३ लेन-देन करना। ४ चाहना, वांछना। ५ आज्ञा करना। दिवइ, दिवए (षड्)।

दिव न [दिव्] स्वर्ग, देवलोक (कुप्र ४३६; भवि)।

दिवड्ढ वि [द्व्यपार्ध] डेढ़, एक और आधा (विसे ६६३; स ५५; सुर १०, २०८; सुपा ५८०; भवि; सम ६६; सुज्ज १;१०, ठा ६)।

दिवस, दिवह देखो दिअस (हे १, २६३; उव; प्रासू १२; सुपा ३०७; वेणी ४७)। °पुहुत्त न [°पृथक्त्व] दो से लेकर नव दिन तक का समय (भग)।

दिवा देखो दिआ (णाया १, ४; प्रासू ६०)। °इत्ति पुं [°कीर्त्ति] चाण्डाल, भंगी (दे ५, ४१)। °कर पुं [°कर] सूर्य, सूरज (उत्त ११)। °कित्ति पुं [°कीर्त्ति] नापित, हजाम (कुप्र २८८)। °गर देखो °कर (णाया १, १; कुप्र ४१५)। °मुह न [°मुख] प्रभात (गउड)। °यर देखो °कर (सुपा ३६; ३१४)। °यरत्थ न [°करास्त्र] प्रकाश-कारक अस्त्र-विशेष (पउम ६१, ४४)।

दिवायर पुं [दिवाकर] १ सिद्धसेन नामक विख्यात जैन कवि और तार्किक। २ पूर्वधर मुनि (सम्मत्त १४१)।

दिवि देखो देव; 'दिविणावि काणपुरिसेणव्व एसा दासी अहं च विप्पवरो एगया दिट्ठीए दिस्सामो' (रंभा)।

दिविअ पुं [द्विविद] वानर-विशेष (से ४, ८; १३, ८२)।

दिविज वि [दिविज] १ स्वर्ग में उत्पन्न। २ पुं. देव, देवता (अजि ७)।

दिविट्ठ देखो दुविट्ठ (राज)।

दिवे (अप) देखो दिवा (हे ४, ४१९; कुमा)।

दिव्व वि [दिव्य] १ स्वर्ग-सम्बन्धी, स्वर्गीय (स २; ठा ३, ३)। २ उत्तम, सुन्दर, मनोहर (पउम ८, २६१; सुर २, २४२; प्रासू १२८)। ३ प्रधान, मुख्य (औप)। ४ देव-सम्बन्धी (ठा ४, ४; सूअ १, २, २)। ५ न. शपथ-विशेष, आरोप की शुद्धि के लिए किया जाता अग्नि-प्रवेश आदि (उप ८०४)। ६ प्राचीन काल में अपुत्रक राजा की मृत्यु हो जाने पर जिस चमत्कार-जनक घटना से राजगद्दी के लिए किसी मनुष्य का निर्वाचन होता था वह हस्ति-गर्जन, अश्व-हेषा आदि अलौकिक प्रमाण (उप १०३१ टी)। °माणुस

न [°मानुष] देव और मनुष्य संबन्धी हकीकतों का जिसमें वर्णन हो ऐसी कथा-वस्तु (स २)।

दिव्व न [दिव्य] १ तेला, तीन दिन का लगातार उपवास (संबोध ५८)। २ वि. देव-सम्बन्धी; 'तिरिया मणुया य दिव्वगा, उवसग्गा तिविहाहियासिया' (सूअ १, २, २, १५)।

दिव्व देखो दइव (सुपा १६१)।

दिव्व देखो देव; 'अमोहं दिव्वदंसणंति' (कुप्र ११२)।

दिव्वाग पुं [दिव्याक] सर्प की एक जाति (पण्ण १)।

दिव्वासा स्त्री [दे] चामुण्डा, देवी-विशेष (दे ५, ३९)।

दिस सक [दिश्] १ कहना। २ प्रतिपादन करना। दिसइ (भवि)। कवकृ. दिस्समाण (राज)।

दिस पुं [दिश] एक देव-विमान (देवेन्द्र १३१)।

दिस वि [दिश्य] दिशा में उत्पन्न (से ९, ५०)।

दिसआ स्त्री [दृषद्] पत्थर, पाषाण (षड्)।

दिसाइ देखो दिसा-दि (सुज्ज ५ टी—पत्र ७८)।

दिसा, दिसि, दिसी° स्त्री [दिश्] १ दिशा, पूर्व आदि दस दिशाएँ (गउड; प्रासू ११३; महा; सुपा २६७; पण्ह १, ४; दं ३१; भग)। २ प्रौढ़ा स्त्री (से १, १९)। °क्क न [°चक्र] दिशाओं का समूह (गा ५३०)। °कुमरी स्त्री [°कुमारी] देवी-विशेष (सुपा ४०)। °कुमार पुं [°कुमार] भवनपति देवों की एक जाति (पण्ण २; औप)। °कुमारी देखो °कुमरी (महा; सुपा ४१)। °गअ पुं [°गज] दिग्-हस्ती (से २, ३; १०, ४६)। °गइंद पुं [°गजेन्द्र] दिग्-हस्ती (पि १३९)। °चक्क देखो °क्क (सुपा ५२३; महा)। °चक्कवाल न [°चक्रवाल] १ दिशाओं का समूह। २ तप-विशेष (निर १, ३)। °चर पुं [°चर] देशाटन करनेवाला भक्त (भग १५)। °जत्ता देखो °यत्ता (उप ७६८ टी)। °जत्तिय देखो °यत्तिय (उवा)। °डाह पुं [°दाह] दिशाओं में होनेवाला एक तरह का प्रकाश, जिसमें नीचे अन्धकार और ऊपर प्रकाश दीखता है; यह भावी उपद्रवों का सूचक है (भग ३, ७)। °णुवाय पुं [°अनुपात] दिशा का अनुसरण (पण्ण ३)। °दंति पुं [°दन्तिन्] दिग्-हस्ती (सुपा ४८)। °दाह देखो °डाह (भग ३,७)। °दि पुं [°आदि] मेरु पर्वत (सुज्ज ५)। °देवया स्त्री [°देवता] दिशा की अधिष्ठात्री देवी (रंभा)। °पोक्खि पुं [°प्रोक्षिन्] एक प्रकार का वानप्रस्थ (औप)। °भाअ पुं [°भाग] दिग्भाग (भग; औप; कप्पू; विपा १, १)। °मत्त न [°मात्र] अत्यल्प, संक्षिप्त (उप ७४९)। °मोह पुं [°मोह] दिशा का भ्रम (निचू १९)। °यत्ता स्त्री [°यात्रा] देशाटन, मुसाफिरी (स १९५)। °यत्तिय वि [°यात्रिक] दिशाओं में फिरनेवाला (उवा)। °लोय पुं [°आलोक] दिशा का प्रकाश (विपा १, ९)। °वह पुं [°पथ] दिशा-रूप मार्ग (पउम २, १००)। °वाल पुं [°पाल] दिक्पाल, दिशा का अधिपति (स ३६६)। °वेरमण न [°विरमण] जैन गृहस्थ को पालने का एक नियम—दिशा में जाने-आने का परिमाण करना (धर्म्म २)। °व्वय न [°व्रत] देखो °वेरमण (औप)। °सोत्थिय पुं [°स्वस्तिक] स्वस्तिक-विशेष (औप)। °सोवत्थिय पुं [°सौवस्तिक] १ स्वस्तिक-विशेष, दक्षिणावर्त्त स्वस्तिक (पण्ह १, ४)। २ न. एक देव-विमान (सम३८)। ३ रुचक पर्वत का एक शिखर (ठा ८)। °हत्थि पुं [°हस्तिन्] दिग्गज, दिशाओं में स्थित ऐरवत आदि आठ हस्ती। °हत्थिकूड पुंन [°हस्तिकूट] दिशा में स्थित हस्ती के आकारवाला शिखर-विशेष, वे आठ हैं—पद्मोत्तर, नीलवन्त, सुहस्ती, अञ्जनगिरि, कुमुद, पलाश, अवतंस और रोचनगिरि (जं ४)।

दिसेभ पुं [दिगिभ] दिग्गज, दिग्-हस्ती (गउड)।

दिस्स वि [दृश्य] देखने योग्य, प्रत्यक्ष ज्ञान का विषय (धर्मसं ४२८)।

दिस्स, दिस्सं, दिस्समाण देखो दक्ख = दृश्।

दिस्समाण देखो दिस।

दिस्सा देखो दक्ख = दृश्।

दिहा अ [द्विधा] दो प्रकार (हे १, ९७)।

दिहि स्त्री [धृति] धैर्य, धीरज (हे २, १३१; कुमा)। °म वि [°मत्] धैर्य-शाली, धीर (कुमा)।

दीअ देखो दीव = दीप (गा १३५; ५४७)।

दीअअ देखो दीवय (गा १३५)।

दीअमाण देखो दा = दा।

दीण वि [दीन] १ रंक, गरीब (प्रासू २३)। २ दुःखित, दुःस्थ (णाया १, १)। ३ हीन, न्यून (ठा ४, २)। ४ शोक-ग्रस्त, शोकातुर (विपा १, २; भग)।

दीणार पुं [दीनार] सोने का एक सिक्का (कप्प; उप पृ ६४; ५९७ टी)।

दीपक, दीपक (अप) पुंन [दीपक] छन्द-विशेष (पिंग)।

दीव देखो दिव = दिव्। वकृ. 'अक्खेहिं कुसुलेहिं दीवयं' (सूअ १, २, २, २३)।

दीव सक [दीपय्] १ दीपाना, शोभाना। २ जलाना। ३ तेज करना। ४ प्रकट करना। ५ निवेदन करना। दीवइ (ओघ ४३४)। दीवेइ (महा)। वकृ. दीवयंत (कप्प)। संकृ. दीवेत्ता (ओघ ४३४; कस)। कृ. दीवणिज्ज (कप्प)।

दीव पुं [दीप] १ प्रदीप, दिया, चिराग, आलोक (चारु १९; णाया १, १)। २ कल्पवृक्ष की एक जाति, प्रदीप का कार्य करनेवाला कल्पवृक्ष (सम १७)। °चंपय न [°चम्पक] दिया का ढकना, दीप-पिधान (भग ८, ६)। °ाली स्त्री [°ाली] १ दीप-पंक्ति। २ दीवाली, पर्व-विशेष, कार्तिक वदी अमावस (दे ३, ४३)। °ावली स्त्री [°ावली] पूर्वोक्त ही अर्थ (ती १९)।

दीव पुं [द्वीप] १ जिसके चारों ओर जल भरा हो ऐसा भूमि-भाग (सम ५१; ठा १०)। २ भवनपति देवों की एक जाति, द्वीपकुमार देव (पण्ह १,४; औप)। ३ व्याघ्र (जीव १)।

°कुमार पुं [°कुमार] एक देव-जाति (भग १६, ११)। °ण्णु वि [°ज्ञ] द्वीप के मार्ग का जानकार (उप ५६५)। °सागरपन्नत्ति स्त्री [°सागरप्रज्ञप्ति] जैन ग्रन्थ-विशेष, जिसमें द्वीपों और समुद्रों का वर्णन है (ठा ३, २—पत्र १२६)।

दीव पुं [द्वीप] सौराष्ट्र का एक नगर, दीव (पव १११)।

दीवअ पुं [दे] कृकलास, गिरगिट (दे ५, ४१)।

दीवअ पुं [दीपक] १ प्रदीप, दिया, चिराग, आलोक (गा २२२; महा)। २ वि. दीपक, प्रकाशक, शोभा-कारक (कुमा)। ३ न. छन्द-विशेष (अजि २६)।

दीवंग पुं [दीपाङ्ग] प्रदीप का काम देनेवाले कल्पवृक्ष की एक जाति (ठा १०)।

दीवग देखो दीवअ = दीपक (श्रा ६; आवम)।

दीवड पुं [दे] जलजन्तु-विशेष, 'फुरंतसिप्पिसंपुडं भमंतभीमदीवडं' (सुर १०, १८८)।

दीवण न [दीपन] प्रकाशन (ओघ ७४)।

दीवणा स्त्री [दीपना] प्रकाश; 'थुओ संतगुणदीवणाहिं' (स ६७५)।

दीवणिज्ज वि [दीपनीय] १ जठराग्नि को बढ़ानेवाला (णाया १, १—पत्र १६)। २ शोभायमान, देदीप्यमान (पण्ण १७)।

दीवय देखो दीव = दिव्।

दीवयंत देखो दीव = दीपय्।

दीवायण पुं [द्वीपायन, द्वैपायन] एक प्राचीन ऋषि, जिसने द्वारका नगरी जलाने का निदान किया था, और जो आगामी उत्सर्पिणी काल में भरत-क्षेत्र में एक तीर्थंकर होगा (अंत १५; सम १५४; कुप्र ६३)।

दीवि } पुं [द्वीपिन्] व्याघ्र की एक जाति,
दीविअ } चीता (गा ७६१; णाया १, १—पत्र ६५; पण्ह १, १)।

दीविअ वि [दीपित] १ जलाया हुआ (पउम २२, १७)। २ प्रकाशित (ओघ)।

दीविअंग पुं [दीपिकाङ्ग] कल्प-वृक्ष की एक जाति जो अन्धकार को दूर करता है (पउम १०२, १२५)।

दीविआ स्त्री [दे] १ उपदेहिका, क्षुद्र कीट-विशेष। २ व्याध की हरिणी, जो दूसरे हरिणों के आकर्षण करने के लिए रखी जाती है (दे ५, ५३)। ३ व्याध-संबन्धी पिंजड़े में रखा हुआ तितिर पक्षी (णाया १, १७—पत्र २३२)।

दीविआ स्त्री [दीपिका] छोटा दिया, लघु प्रदीप (जीव ३)।

दीविच्चग वि [द्वैप्य] द्वीप में उत्पन्न, द्वीप में पैदा हुआ (णाया १, ११—पत्र १७१)।

दीवी (अप) देखो देवी (रंभा)।

दीवी स्त्री [दीपिका] लघु प्रदीप, छोटा दिया; 'दीवि व्व तीइ बुद्धी' (श्रा १६)।

दीवूसव पुं [दीपोत्सव] कार्तिक बदी अमावस, दीवाली, दीपावली (ती १६)।

दीसंत } देखो दक्ख = दृश्।
दीसमाण }

दीह वि [दीर्घ] १ आयत, लम्बा (ठा ४, २; प्राप्र; कुमा)। २ पुं. दो मात्रावाला स्वर-(पिंग)। ३ कोशल देश का एक राजा (उप पृ ५८)। °काय [°काय] अग्निकाय (आचा०अध्य० १—१—४)। °कालिगी स्त्री [°कालिकी] संज्ञा-विशेष, बुद्धि-विशेष, जिससे सुदीर्घ भूतकाल की बातों का स्मरण और सुदीर्घ भविष्य का विचार किया जा सकता है (दं ३२; विसे ५०८)। °कालिय वि [°कालिक] १ दीर्घ काल से उत्पन्न, चिरंतन; 'दीहकालिएणं रोगातंकेणं' (ठा ३, १)। २ दीर्घकाल-सम्बन्धी (आवम)। °जत्ता स्त्री [°यात्रा] १ लम्बी सफर। २ मरण, मौत (स ७२६)। °डक्क वि [°दष्ट] जिसको साँप ने काटा हो वह (निचू १)। °णिद्दा स्त्री [°निद्रा] मरण, मौत (राज)। °दंत पुं [°दन्त] १ भारतवर्ष का एक भावी चक्रवर्त्ती राजा (सम १५४)। २ एक जैनमुनि (अंत)। °दंसि वि [°दर्शिन्] दूरदर्शी, दूरन्देशी (सुर ३, ३; सं ३२)। °दसा स्त्री. ब. [°दशा] जैन ग्रंथ-विशेष (ठा १०)। °दिट्ठि वि [°दृष्टि] १ दूरदर्शी, दूरन्देशी। २ स्त्री. दीर्घ-दर्शिता (धर्म १)। °पट्ठ पुं [°पृष्ठ] १ सर्प, साँप (उप पृ २२)। २ यवराज का एक मन्त्री (बृह १)। °पास पुं [°पार्श्व] ऐरवत क्षेत्र के सोलहवें भावी जिनदेव (पव ७)। °पेहि वि [°प्रेक्षिन्] दूरदर्शी (पउम २६, २२; ३१, १०६)। °बाहु पुं [°बाहु] १ भरत-क्षेत्र में होनेवाला तीसरा वासुदेव (सम १५४)। २ भगवान् चन्द्रप्रभ का पूर्व जन्मीय नाम (सम १५१)। °भद्द पुं [°भद्र] एक जैन मुनि (कप्प)। °मद्ध वि [°ाध्व] लम्बा रास्तावाला (णाया १, १८; ठा २, १; ४, २—पत्र २४०)। °मद्ध वि [°ाद्ध] दीर्घकाल से गम्य (ठा ४,२—पत्र २४०)। °माउ न [°ायुष्] लम्बा आयुष्य (ठा १०)। °रत्त, °राय पुन [°रात्र] १ लम्बी रात। २ बहु रात्रिवाला, चिर-काल (संक्षि १७; राज)। °राय पुं [°राज] एक राजा (महा)। °लोग पुं [°लोक] वनस्पति का जीव (आचा)। °लोगसत्थ न [°लोक-शस्त्र] अग्नि, वह्नि (आचा)। °वेयड्ढ पुं [°वैताढ्य] स्वनाम-ख्यात पर्वत (ठा २, ३—पत्र ६६)। °सुत्त न [°सूत्र] १ बड़ा सूता (निचू ५)। २ आलस्य; 'मा कुणसु दीहसुत्तं परकज्जं सीयलं परिगणंतो' (पउम ३०, ६)। °सेण पुं [°सेन] १ अनुत्तर-देवलोक-गामी मुनि-विशेष (अनु २)। २ इस अवसर्पिणी काल में उत्पन्न ऐरवत क्षेत्र के आठवें जिन-देव (पव ७)। °ाउ, °ाउय वि [°ायुष्, °ायुष्क] लम्बी उम्रवाला, बड़ी आयुवाला, चिरंजीवी (हे १, २०; ठा ३, १; पउम १४, ३०)। °ासण न [°ासन] शय्या (जं १)।

दीह देखो दिअह (कुमा)।

दीहंध वि [दिवसान्ध] दिन को देखने में असमर्थ; 'रत्तिंधा दीहंधा' (प्रासू १७६)।

दीहजीह पुं [दे] शंख (दे ५, ४१)।

दीहपिट्ठ देखो दीह-पट्ठ (सिरि ६०५)।

दीहर देखो दीह = दीर्घ (हे २, १७१; सुर २, २१८; प्रासू ११३)। °च्छ वि [°ाक्ष] लम्बी आँखवाला, बड़े नेत्रवाला (सुपा १४७)।

दीहरिय वि [दीर्घित] लम्बा किया हुआ (गउड)।

दीहिया स्त्री [दीर्घिका] वापी, जलाशय-विशेष (सुर १, ६३; कप्पू)।

दीहीकर सक [दीर्घी + कृ] लम्बा करना। दीहीकरेंति (भग)।

दु देखो तु (दे २, ३४)।

दु देखो दव = द्रु। कर्म = दुयए (विसे २८)।

दु वि. ब. [द्वि] दो, संख्या-विशेषवाला (हे १, ६४; कम्म १; उवा)।

दु पुं [द्रु] १ वृक्ष, पेड़, गाछ (उर ५)। २ सत्ता, सामान्य (विसे २८)।

दु अ [द्विस्] दो बार, दो दफा (सुर १६, ५५)।

दु अ [दुर्] इन अर्थों का सूचक अव्यय— १ अभाव। २ दुष्टता, खराबी। ३ मुश्किल, कठिनाई। ४ निन्दा (हे २, २१७; प्रासू १५८; सुपा १४३; णाया १, १; उवा)।

दुअ न [द्रुत] अभिनय-विशेष (राय ५३)।

दुअ न [द्विक] युग्म, युगल, जोड़ा (से ६२१)।

दुअ वि [द्रुत] १ पीड़ित, हैरान किया हुआ (उप ३२० टी)। १ वेग-युक्त। ३ क्रिवि. शीघ्र, जल्दी (सुर १०,१०१; अणु)। °विलंबिअ न [°विलम्बित] १ छन्द-विशेष। २ अभिनय-विशेष (राय)।

दुअक्खर पुं [दे] षण्ड, नपुंसक (दे ५, ४७)।

दुअक्खर वि [द्व्यक्षर] १ अज्ञान, मूर्ख, अल्पज्ञ (उप १२६ टी)। २ पुंस्त्री. दास, नौकर (पिंड)। स्त्री° °रिया (श्रावम)।

दुअणुअ पुं. [द्व्यणुक] दो परमाणुओं का स्कन्ध (विसे २१६२)।

दुअर वि [दुष्कर] मुश्किल, कठिनाई से जो किया जा सके वह (प्राकृ २६)।

दुअल्ल न [दुकूल] १ वस्त्र, कपड़ा। २ महिन वस्त्र, सूक्ष्मवस्त्र (हे १, ११६; प्राप्र)। देखो दुकूल।

दुआइ पुं [द्विजाति] ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य ये तीन वर्ण (हे १, ६४; २, ७६)।

दुआइक्ख वि [दुराख्येय] दुःख से कहने योग्य (ठा ५, १—पत्र २६६)।

दुआर न [द्वार] दरवाजा, प्रवेश-मार्ग (हे १, ७६)।

दुआराह वि [दुराराध] जिसका आराधन कठिनाई से हो सके वह (पण्ह १, ४)।

दुआरिआ स्त्री [द्वारिका] १ छोटा द्वार। २ गुप्त द्वार, अपद्वार (णाया १, २)।

दुआवत्त न [द्व्यावर्त] दृष्टिवाद का एक सूत्र (सम १४७)।

दुइअ, दुइज्ज, दुईअ वि [द्वितीय] दूसरा (हे १, १०१; २०६; कुमा; कप्पू; रयण ४)।

दुइल्ल (अप) वि [द्विचतुर] दो-चार, दो या चार (प्राकृ १२०)।

दुउंछ, दुउच्छ सक [जुगुप्स्] निन्दा करना, घृणा करना। दुउंछइ, दुउच्छइ (हे ४, ४)।

दुउण वि [द्विगुण] दूना, दुगुना (दे ५, ५५; हे १, ९४)। °अर वि [°तर] दूने से भी विशेष, अत्यन्त (से ११, ४७)।

दुउणिअ वि [द्विगुणित] ऊपर देखो (कुमा)।

दुऊल देखो दुअल्ल (प्राप्र; गा ५६६; षड्)।

दुंदुह, दुंदुभ पुं [दुन्दुभ] १ सर्प की एक जाति (दे ७, ५१)। २ ज्योतिष्क-विशेष, एक महाग्रह (ठा २, ३—पत्र ७८)।

दुंदुभि देखो दुंदुहि (भग ६, ३३)।

दुंदुमिअ न [दे] गले की आवाज (दे ५, ४५; षड्)।

दुंदुमिणी स्त्री [दे] रूपवाली स्त्री (दे ५, ४५)।

दुंदुहि पुंस्त्री [दुन्दुभि] वाद्य-विशेष (कप्प; सुर ३, ६८; गउड; कुप्र ११८)।

दुंबवती स्त्री [दे] सरित्, नदी (दे ५, ४८)।

दुकड देखो दुक्कड (द्र ४७)।

दुकप्प देखो दुक्कप्प (पंचू)।

दुकम्म न [दुष्कर्मन्] पाप, निन्दित काज या काम (श्रा २७; भवि)।

दुकाल पुं [दुष्काल] अकाल, दुर्भिक्ष (सिरि ४१)।

दुकिय देखो दुक्कय (भवि)।

दुकूल पुं [दुकूल] १ वृक्ष-विशेष। २ वि. दुकूल वृक्ष की छाल से बना हुआ वस्त्र आदि (णाया १, १ टी—पत्र ४३)।

दुकंदिर वि [दुष्क्रन्दिन्] अत्यन्त आक्रन्द करनेवाला (भवि)।

दुक्कड न [दुष्कृत] पाप कर्म, निन्द्य आचरण (सम १२५; हे १, २०६; पडि)।

दुक्कडि, दुक्कडिय वि [दुष्कृतिन्, °क] दुष्कृत करनेवाला, पापी (सूअ १, ५, १; पि २१९)।

दुक्कप्प पुं [दुष्कल्प] शिथिल साधु का आचरण, पतित साधु का आचार (पंचभा)।

दुक्कम्म न [दुष्कर्मन्] दुष्ट कर्म, असदाचरण (सुपा २८; १२०; ५००)।

दुक्कय न [दुष्कृत] पाप-कर्म (पण्ह १, १; पि ४९)।

दुक्कर वि [दुष्कर] जो दुःख से किया जा सके, मुश्किल, कष्ट-साध्य (हे ४, ४१४; पंचा १३)। °आरअ वि [°कारक] मुश्किल कार्य को करनेवाला (गा १७६; हे २, १०४)। °करण न [°करण] कठिन कार्य को करना (द्र ५७)। °कारि वि [°कारिन्] देखो °आरअ (उप पृ १६०)।

दुक्कर न [दे] माघ मास में रात्रि के चारों प्रहर में किया जाता स्नान (दे ५, ४२)।

दुक्करकरण न [दुष्करकरण] पाँच दिन का लगातार उपवास (संबोध ५८)।

दुक्कह वि [दे] अरुचिवाला, अरोचकी (सुर १, ३६; जय २७)।

दुक्काल पुं [दुष्काल] अकाल, दुर्भिक्ष (सार्ध ३०)।

दुक्किय देखो दुक्कय (भवि)।

दुक्कुक्कणिआ स्त्री [दे] पीकदान, पीकदानी (दे ५, ४८)।

दुक्कुल न [दुष्कुल] निन्दित कुल (धर्म १)।

दुक्कुह वि [दे] १ असहन, असहिष्णु, चिड़चिड़ा। २ रुचि-रहित (दे ५, ४४)।

दुक्ख पुंन [दुःख] १ असुख, कष्ट, पीड़ा, क्लेश, मन का क्षोभ (हे १, ३३), 'दुक्खा सारीरा माणसा व संसारे' (संथा १०१; आचा; भग; स्वप्न ५१; ५८; प्रासू ६६; १५२; १८२)। २ क्रिवि. कष्ट से, मुश्किल से, कठिनाई से (वसु)। ३ वि. दुःखवाला, दुःखित, दुःखयुक्त (वै ३३)। स्त्री. °क्खा (भग)। °कर वि [°कर] दुःख-जनक (सुपा १६५)। °त्त वि [°र्त्त] दुःख से पीड़ित (सुपा १६१; स ६४२; प्रासू १४४)। °त्तगवेसण न [°र्त्तगवेषण] दुःख से पीड़ित की सेवा, आर्त्त शुश्रूषा (पंचा १६)। °मज्जिय वि [अर्जितदुःख] जिसने दुःख उपार्जन किया हो वह (उत्त ६)। °राह वि [°राध्य] दुःख से आराधन-योग्य (वज्जा

११२)। °वह वि [°वह] दुःख-प्रद (पउम १५, १००)। °सिया स्त्री [°सिका] वेदना, पीड़ा (ठा ३, ४)। देखो दुह = दुःख।

दुक्ख न [दे] जघन, स्त्री के कमर के पीछे का भाग चूतड़ (दे ५, ४२)।

दुक्ख अक [दुःखाय्] १ दुखना, दर्द होना। २ सक. दुःखी करना; 'सिरं में दुक्खेइ' (स ३०४)। दुक्खामि (से ११, १२७)। दुक्खंति (सूअ २, २, ५५)।

दुक्खड देखो दुक्कर (चारु २३)।

दुक्खण न [दुःखन] दुखना, दर्द होना (उप ७५१; सूअ २, २, ५५)।

दुक्खम वि [दुःक्षम] १ असमर्थ। २ अशक्य (उत्त २०, ३१)।

दुक्खर देखो दुक्कर (स्वप्न ६६)।

दुक्खरिय पुं [दुष्करिक] दास, नौकर (निचू १६)।

दुक्खरिया स्त्री [दुष्करिका] १ दासी, नौकरानी (निचू १६)। २ वेश्या, वाराङ्गना (निचू १)।

दुक्खल्लिय (अप) वि [दुःखित] दुःख-युक्त (भवि)।

दुक्खविअ वि [दुःखित] दुःखी किया हुआ (उप ६३४; भवि)।

दुक्खाव सक [दुःखय्] दुःख उपजाना, दुःखी करना। दुक्खावेइ (पि ५५६)। वकृ. दुक्खावेंत (पउम ५८, १८)। कवकृ. दुक्खाविज्जंत (आवम)।

दुक्खावणया स्त्री [दुःखना] दुःखी करना, दर्द उपजाना (भग ३, ३)।

दुक्खि वि [दुःखिन्] दुःखी, दुःख-युक्त (आचा)।

दुक्खिअ वि [दुःखित] दुःख-युक्त, दुखिया (हे २, ७२; प्राप्र; प्रासू ९३; महा; सुर ३, १६१)।

दुक्खुत्तर वि [दुःखोत्तार] जो दुःख से पार किया जाय, जिसको पार करने में कठिनाई हो (पण्ह १, १)।

दुक्खुत्तो अ [द्विस्] दो बार, दो दफा (ठा ५, २—पत्र ३०८)।

दुक्खुर देखो दुखुर (पि ४३६)।

दुक्खुल देखो दुकुल (भवि २१)।

दुक्खोह पुं [दुःखौघ] दुःख-राशि (पउम १०३, १५५; सुपा १६१)।

दुक्खोह वि [दुःक्षोभ] कष्ट-क्षोभ्य, सुस्थिर (सुपा १६१; ६२६)।

दुखंड वि [द्विखण्ड] दो टुकड़ेवाला (उप ९८६ टी; भवि)।

दुखुत्तो देखो दुक्खुत्तो (कस)।

दुखुर पुं [द्विखुर] दो खुरवाला प्राणी, गौ, भैंस आदि (पण्ण १)।

दुग न [द्विक] दो, युग्म, युगल, जोड़ा (नव १०; सुर ३, १७; जी ३३)।

दुगंछ देखो दुगुंछ। वकृ. दुगंछमाण (उत्त ४, १३)। कृ. दुगंछणिज्ज (उत्त १३, १९; पि ७४)।

दुगंछणा स्त्री [जुगुप्सना] घृणा, निन्दा (पउम ९५, ६५)।

दुगंछा स्त्री [जुगुप्सा] घृणा, निन्दा (पाअ; कुप्र ४०७)। देखो दुगुंछा।

दुगंध देखो दुग्गंध (पउम ४१, १७)।

दुगच्छ } सक [जुगुप्स्] घृणा करना,
दुगुंछ } निन्दा करना। दुगच्छइ, दुगुंछइ (षड्; हे ४, ४)। वकृ. दुगुंछंत, दुगुंछमाण (कुमा; पि ७४; २१५)। संकृ. दुगुंछिउं (धर्म २)। कृ. दुगुंछणीय (पउम ४६, ६२)।

दुगसंपुण्ण न [द्विगसंपूर्ण] लगातार बीस दिन का उपवास (संबोध ५८)।

दुगुंछग वि [जुगुप्सक] घृणा करनेवाला (आव ३)।

दुगुंछण न [जुगुप्सन] घृणा, निन्दा (पि ७४)।

दुगुंछणा देखो दुगंछणा (आचा)।

दुगुंछा देखो दुगंछा (भग)। °कम्म न [°कर्मन्] देखो पीछे का अर्थ (ठा १०)। °मोहणीय न [°मोहनीय] कर्म-विशेष, जिसके उदय से जीव को अशुभ वस्तु पर घृणा होती है (कम्म १)।

दुगुंछि वि [जुगुप्सिन्] घृणा करनेवाला, नफरत करनेवाला (उत्त २, ४; ६, ८)।

दुगुंछिय वि [जुगुप्सित] घृणित, निन्दित (ओघ ३०२)।

दुगुंदुग पुं [दौगुन्दुक] एक समृद्धि-शाली देव (सुपा ३२८)।

दुगुच्छ देखो दुगुंछ। दुगुच्छइ (हे ४, ४, षड्)। वकृ. दुगुच्छंत (पउम १०५, ७५)। कृ. दुगुच्छणीय (पउम ८०, २०)।

दुगुण देखो दुउण (ठा २, ४; णाया १, १; दं ६; सुर ३, २१६)।

दुगुण सक [द्विगुणय्] दुगुना करना। दुगुणेइ (कुप्र २८५)।

दुगुणिअ देखो दुउणिअ (कुमा)।

दुगुल्ल } देखो दुअल्ल (हे १, ११९; कुमा;
दुगूल } सुर २, ८०; जं २)।

दुगोत्ता स्त्री [द्विगोत्रा] वल्ली-विशेष (पण्ण १)।

दुग्ग न [दे] १ दुःख, कष्ट (दे ५, ५३; षड्; पण्ह १, ३)। २ कटी, कमर (दे ५, ५३)। ३ रण, संग्राम, युद्ध; 'आढत्तं च णेणिमं दुग्गं' (स ६३६)।

दुग्ग वि [दुर्ग] १ जहाँ दुःख से प्रवेश किया जा सके वह, दुर्गम स्थान (भग ७, ६ विपा १, ३)। २ जो दुःख से जाना जा सके (सूअ १, ५, १)। ३ पुंन. किला, गढ़, कोट (सुपा १४८)। °नायग पुं [°नायक] किले का मालिक (सुपा ४६०)।

दुग्गइ स्त्री [दुर्गति] १ कुगति, नरक आदि कुत्सित योनि (ठा ३, ३; ५, १; उत्त ७, १८; आचा)। २ विपत्ति, दुःख। ३ दुर्दशा, बुरी अवस्था। ४ कंगालियत, दरिद्रता (पण्ह १, १; महा; ठा ३, ४; गच्छ २)।

दुग्गंठि स्त्री [दुर्ग्रन्थि] दुष्टग्रन्थि, गिरह, कठिन गांठ (पि ३३३)।

दुग्गंध पुं [दुर्गन्ध] १ खराब गन्ध। २ वि. खराब गन्धवाला, दुर्गन्धि (ठा ८—पत्र ४१८; सुपा २१; महा)।

दुग्गंधि वि [दुर्गन्धिन्] दुर्गन्धवाला (सुपा ४८७)।

दुग्गम वि [दुर्गम] जो कठिनाई से जाना जा सके वह (धर्मवि ४)।

दुग्गम } वि [दुर्गम] १ जहाँ दुःख से
दुग्गम्म } प्रवेश किया जा सके वह (पउम ४०, १३; ओघ ७५ भा); 'पडिवक्खनरिंद-

दुग्गम्मं' (सुर ६, १३५)। २ न. कठिनाई, मुश्किल (ठा ५, १)।

दुग्गय वि [दुर्गत] १ दरिद्र, धन-हीन (ठा ३, ३; गा १८)। २ दुःखी, विपत्ति-ग्रस्त (पाअ; ठा ४, १—पत्र २०२)।

दुग्गय न [दुर्गत] १ दरिद्रता। २ दुःख; 'दोहंतो जिणदव्वं दोहिच्चं दुग्गयं लहइ' (संबोध ४)।

दुग्गह वि [दुर्ग्रह] जिसका ग्रहण दुःख से हो सके वह (उप पृ ३६०)।

दुग्गा स्त्री [दुर्गा] १ पार्वती, गौरी, शिव-पत्नी (पाअ; सुपा १४८)। २ देवी-विशेष (चंड)। ३ पक्षि-विशेष (श्रा १६)।

दुग्गाई, दुग्गाएवी, दुग्गादेई, दुग्गावी स्त्री [दुर्गादेवी] १ पार्वती; शिव-पत्नी, गौरी। २ देवी-विशेष (षड्; हे १, २७०; कुमा)। °रमण पुं [°रमण] महादेव, शिव (षड्)।

दुग्गास न [दुर्ग्रास] दुर्भिक्ष, अकाल (पिंड-भा ३३)।

दुग्गिज्झ वि [दुर्ग्राह्य, दुर्ग्रह] जिसका ग्रहण दुःख से हो सके वह (सुपा २५५)।

दुग्गूढ वि [दुर्गूढ] अत्यन्त गुप्त, अति प्रच्छन्न (वव ७)।

दुग्गेज्झ देखो दुग्गिज्झ (से १, ३)।

दुग्घट्ट वि [दुर्घट्ट] जिसका आच्छादन दुःख से हो सके वह; 'पारद्धसीउण्हतण्हवेअणदुग्घ-ट्टघट्टिया' (पण्ह १, ३—पत्र ५४)।

दुग्घड वि [दुर्घट] जो दुःख से हो सके वह, कष्ट-साध्य (सुपा ६३; ३६५)।

दुग्घड वि [दुर्घट] असंगत (धर्मवि २७०)।

दुग्घडिअ वि [दुर्घटित] १ दुःख से संयुक्त। २ खराब रीति से बना हुआ; 'दुग्घडिअमंच-अस्स व खणे खणे पाअपडणेण' (गा ६१०)।

दुग्घर न [दुर्गृह] दुष्ट घर (भवि)।

दुग्घास पुं [दुर्ग्रास] दुर्भिक्ष, अकाल (बृह ३)।

दुग्घट्ट, दुग्घोट्ट पुं [दे] हस्ती, हाथी, करी (दे ५, ४४; षड्; भवि)।

दुघण पुं [दुघण] एक प्रकार का मुद्गर, मोंगरी, मुँगरा (पण्ह १, ३—पत्र ४४)।

दुचक्क न [द्विचक्र] गाड़ी, शकट (ओघ ३८३ भा)। °वइ पुं [°पति] गाड़ी का अधिपति या मालिक (ओघ ३८३ भा)।

दुच्चिण्ण देखो दुच्चिण्ण (पि ३४०; औप)।

दुच्च न [दौत्य] दूत-कर्म, समाचार पहुँचाने का कार्य (पाअ)।

दुच्च देखो दोच्च = द्वितीय, द्विस् (कप्प)।

दुच्चंडिअ वि [दे] १ दुर्ललित। २ दुर्विदग्ध, दुःशिक्षित (दे ५, ५५; पाअ)।

दुच्चंबाल वि [दे] १ कलह-निरत, झगड़ाखोर। २ दुश्चरित, दुष्ट आचरणवाला। ३ परुष-भाषी, कड़ा बोलनेवाला (दे ५, ५४)।

दुच्चज्ज, दुच्चय वि [दुस्त्यज] दुःख से त्यागने योग्य (कुमा; उप ७६८ टी)।

दुच्चर, दुच्चरिअ वि [दुश्चर] १ जिसमें दुःख से जाया जाय वह (आचा)। २ दुःख से जो किया जाय वह (उप ६४८ टी; पउम २२, २०)। °लाढ पुं [°लाढ] ऐसा ग्राम या देश जिसमें दुःख से जाया जा सके (आचा)।

दुच्चरिअ न [दुश्चरित] १ खराब आचरण, दुष्ट वर्तन (पउम ३८, १२; उप पृ १११)। २ वि. दुराचारी (दे ५, ४५)।

दुच्चार वि [दुश्चार] दुराचारी (भवि)।

दुच्चारि वि [दुश्चारिन्] दुराचारी, दुष्ट आचरणवाला (स ५०३)। स्त्री. °णी (महा)।

दुच्चिंतिय वि [दुश्चिन्तित] १ दुष्ट चिन्तित (पउम ११८, ९७)। २ न खराब चिन्तन (पडि)।

दुच्चिगिच्छ वि [दुश्चिकित्स] जिसका प्रती-कार मुश्किल से हो वह (स ७६१)।

दुच्चिण्ण न [दुश्चीर्ण] १ दुष्ट आचरण, दुश्चरित। २ दुष्ट कर्म—हिंसा आदि। ३ वि. दुष्ट संचित, एकत्रित की हुई दुष्ट वस्तु (विपा १, १; णाया १, १६)।

दुच्चेट्ठिय न [दुश्चेष्टित] खराब चेष्टा, शारी-रिक दुष्ट आचरण (पडि; सुर ६, २३२)।

दुच्छक्क वि [द्विषट्क] बारह प्रकार का; 'मूलं दारं पइट्ठाणं, आहारो भायणं निही। दुच्छक्कस्सावि धम्मस्स, सम्मत्तं परिकित्तियं' (श्रा ६)।

दुच्छड्ड वि [दुश्छर्द] दुस्त्यज, दुःख से छोड़ने योग्य; 'दुच्छड्डा जीवियासा जं' (धर्मवि १२४)।

दुच्छेज्ज वि [दुश्छेद] जिसका छेदन दुःखसे हो सके वह (पउम ३१,५६)।

दुछक्क देखो दुच्छक्क (धर्म २)।

दुजडि पुं [द्विजटिन्] ज्योतिष्क देव-विशेष, एक महाग्रह (ठा २, ३)।

दुजय देखो दुज्जय (महा)।

दुजीह पुं [द्विजिह्व] १ सर्प, साँप। २ दुर्जन, खल पुरुष (सट्ठि ६३; कुमा)।

दुज्जंत देखो दुज्जिंत (राज)।

दुज्जण पुं [दुर्जन] खल, दुष्ट मनुष्य (प्रासू २०; ४०; कुमा)।

दुज्जय वि [दुर्जय] जो कष्ट से जीता जा सके (उप १०३१ टी; सुर १२, १३८; सुपा २९)।

दुज्जाय न [दे] व्यसन, कष्ट, दुःख, उपद्रव (दे ५, ४४; से १२, ६३; पाअ)।

दुज्जाय वि [दुर्जात] दुःख से निकलने योग्य (से १२, ६३)।

दुज्जाय न [दुर्यात] दुष्ट गमन, कुत्सित गति (आचा)।

दुज्जिंत पुं [दुर्यन्त] एक प्राचीन जैनमुनि (कप्प)।

दुज्जीव न [दुर्जीव] आजीविका का भय (विसे ३४५२)।

दुज्जीह देखो दुजीह (वज्जा १५०)।

दुज्जेअ वि [दुर्जेय] दुःख से जीतने योग्य (सुपा २४८; महा)।

दुज्जोहण पुं [दुर्योधन] धृतराष्ट्र का ज्येष्ठ पुत्र (ठा ४, २)।

दुज्झ वि [दोह्य] दोहने योग्य (दे १, ७)।

दुज्झाण न [दुर्ध्यान] दुष्ट चिन्तन (धर्म २)।

दुज्झाय वि [दुर्ध्यात] जिसके विषय में दुष्ट चिन्तन किया गया हो वह (धर्म २)।

दुज्झोसय वि [दुर्जोष] जिसकी सेवा कष्ट से हो सके ऐसा (आचा)।

दुज्झोसय वि [दुःक्षप] जिसका नाश कष्ट-साध्य हो वह (आचा)।

दुज्झोसिअ वि [दुर्जोषित] दुःख से सेवित (आचा)।

दुज्झोसिअ वि [दुःक्षपित] कष्ट से नाशित (आचा)।

दुट्ठ वि [दुष्ट] दोष-युक्त, दूषित (ओघ १६२; पाअ; कुमा)। °प्प पुं [°ात्मन्] दुष्ट जीव, पापी प्राणी (पउम ६, १३६; ७५, १२)।

दुट्ठ वि [दे. द्विष्ट] द्वेष-युक्त (ओघ ७५७; कस); 'अरत्तदुट्ठस्स' (कुप्र ३७१)।

दुट्ठाण न [दुःस्थान] दुष्ट जगह (भग १६, २)।

दुट्ठु अ [दुष्ठु] खराब, असुन्दर (उप ३२० टी; निर १, १. सुपा ३१८; हे ४, ४०१)।

दुणय देखो दुन्नय (विक्र ३७; आवम)।

दुण्णाम न [दुर्नामन्] १ अपकीर्त्ति, अपयश। २ दुष्ट नाम, खराब आख्या। ३ एक प्रकार का गर्व (भग १२, ५)।

दुण्णिअ वि [दून] पीड़ित, दुःखित (गा ११)।

दुण्णिअ देखो दुन्निय (राज)।

दुण्णिअत्थ न [दे] १ जघन पर स्थित वस्त्र। २ जघन, स्त्री के कमर के नीचे का भाग (दे ५, ५३)।

दुण्णिक्क वि [दे] दुश्चरित, दुराचारी (दे ५, ४५)।

दुण्णिक्कम वि [दुर्निष्क्रम] जहाँ से निकलना कष्ट-साध्य हो वह (राज ७, ६)।

दुण्णिक्खित्त वि [दे] १ दुराचारी। २ कष्ट से जो देखा जा सके (दे ५, ४५)।

दुण्णिक्खेव वि [दुर्निक्षेप] दुःख से स्थापन करने योग्य (गा १५४)।

दुण्णिबोह देखो दुन्निबोह (राज)।

दुण्णिमिअ वि [दुर्नियोजित] दुःख से जोड़ा हुआ (से १२, १६)।

दुण्णिमित्त न [दुर्निमित्त] खराब शकुन, अपशकुन (पउम ७०, ५)।

दुण्णिविट्ठ वि [दुर्निविष्ट] दुराग्रही, हठी, जिद्दी (निचू ११)।

दुण्णिसीहिया स्त्री [दुर्निषद्या] कष्ट-जनक स्वाध्याय-स्थान (पण्ह २, ५)।

दुण्णेय वि [दुर्ज्ञेय] जिसका ज्ञान कष्ट-साध्य हो वह (उवर १२८; उप ३२८)।

दुतितिक्ख वि [दुस्तितिक्ष] दुस्सह, जो दुःख से सहन किया जा सके वह (ठा ५,१)।

दुत्तर वि [दुस्तर] दुस्तरणीय, दुर्लंघ्य (सुपा ४७; ११५; सार्ध ६१)।

दुत्तडी स्त्री [दुस्तटी] १ नदी। २ खराब किनारा वाली नदी (धम्म १२ टी)।

दुत्तव वि [दुस्तप] कष्ट से तपने योग्य; दुःख से करने योग्य (तप) (धर्मा १७)।

दुत्तार वि [दुस्तार] दुःख से पार करने योग्य, दुस्तर (से ३, २५; ६, १०)।

दुत्ति अ [दे] शीघ्र, जल्दी (दे ५, ४१; पाअ)।

दुत्तिइक्ख } **दुत्तितिक्ख** } देखो दुतितिक्ख (आचा; राज)।

दुत्तुंड पुं [दुस्तुण्ड] दुर्मुख, दुर्जन, (सुपा २७८)।

दुत्तोस वि [दुस्तोष] जिसको संतुष्ट करना कठिन हो वह (दस ५)।

दुत्थ न [दे] जघन, स्त्री की कमर के नीचे का भाग (दे ५, ४२)।

दुत्थ वि [दुःस्थ] दुर्गत, दुःस्थित (ठा ३, ३; भवि)।

दुत्थ न [दौःस्थ्य] दुर्गति, दुःस्थता (सुपा २४४); 'नहि विधुरसहावा हुंति दुत्थेवि धीरा' (कुप्रा ५४)।

दुत्थिअ वि [दुःस्थित] १ दुर्गत, विपत्ति-ग्रस्त (रयण ७५; भवि, सण)। २ निर्धन, गरीब (कुप्र १४६)।

दुत्थुरुहुंड पुंस्त्री [दे] झगड़ाखोर, कलह-शील (दे ५, ४७)। स्त्री. °डा (दे ५, ४७)।

दुत्थोअ पुं [दे] दुर्भग, अभागा (दे ५, ४३)।

दुदंत वि [दुर्दान्त] उद्धत, दमन करने को अशक्य, दुर्दम; 'विसयपसत्ता दुदंतइंदिया देहिणो बहवे' (सुर ८, १३८; णाया १, ५; सुपा ३८०; महा)।

दुद्दंस वि [दुर्दर्श] दुरालोक, जो कठिनाई से देखा जा सके (उत्तर १४१)।

दुद्दंसण वि [दुर्दर्शन] जिसका दर्शन दुर्लभ हो वह (गा ३०)।

दुद्दम वि [दुर्दम] १ दुर्जय, दुर्निवार (सुपा २४); 'दुद्दमकद्दमे' (श्रा १२)। २ पुं. राजा अश्वग्रीव का एक दूत (आक)।

दुद्दम पुं [दे] देवर, पति का छोटा भाई (दे ५, ४४)।

दुद्दिट्ठ वि [दुर्दृष्ट] १ बुरी तरह से देखा हुआ। २ वि. दुष्ट दर्शनवाला (पण्ह १, २—पत्र २६)।

दुद्दिण न [दुर्दिन] बादलों से व्याप्त दिवस (ओघ ३६०)।

दुद्देय वि [दुर्देय] दुःख से देने योग्य (उप ६२४)।

दुद्दोलणा स्त्री [दे] गौ, गैया (षड्)।

दुद्दोली स्त्री [दे] वृक्ष-पंक्ति, पेड़ों की कतार (दे ५, ४३; पाअ)।

दुद्ध न [दुग्ध] दूध, क्षीर (विपा १, ७)। °जाइ स्त्री [°जाति] मदिरा-विशेष, जिसका स्वाद दूध के जैसा होता है (जीव ३)। °समुद्द पुं [°समुद्र] क्षीर-समुद्र, जिसका पानी दूध की तरह स्वादिष्ट है (गा ३८८)।

दुद्धंस वि [दुर्ध्वंस] जिसका नाश मुश्किल से हो (सुर १, १२)।

दुद्धगंधिअमुह पुं [दे] बाल, शिशु, छोटा लड़का (दे ५, ४०)।

दुद्धगंधिअमुही स्त्री [दे] छोटी लड़की (पाअ)।

दुद्धट्टी } **दुद्धट्ठी** } स्त्री [दे] १ प्रसूति के बाद तीन दिन तक का गो-दुग्ध (पभा ३२)। २ खट्टी छाछ से मिश्रित दूध (पव ४—गा २२८)।

दुद्धर वि [दुर्धर] १ दुर्वह, जिसका निर्वाह मुश्किल से हो सके वह (पण्ण १—पत्र ४; सुर १२, ५१)। २ गहन, विषम (ठा ६, भवि)। ३ दुर्जय (कुमा)। ४ पुं. रावण का एक सुभट (पउम ५६, ३०)।

दुद्धरिस वि [दुर्धर्ष] १ जिसका सामना कठिनता से हो सके, जीतने को अशक्य (पण्ह २, ५; कप्प)।

दुद्धवलेही स्त्री [दे] चावल का आटा डालकर पकाया जाता दूध (पव ४—गाथा २२८)।

दुद्धसाडी स्त्री [दे] द्राक्षा मिलाकर पकाया जाता दूध (पव ४—गाथा २२८)।

दुद्धिअ न [दे] कद्दू, लौकी; गुजराती में 'दूधी'; (पाअ)।

दुद्धिणिआ } **दुद्धिणी** } स्त्री [दे] १ तैल आदि रखने का भाजन। २ तुम्बी (दे ५, ५४)।

दुद्धोअहि } पुं [दुग्धोदधि] समुद्र-विशेष, दुद्धोदहि } जिसका पानी दूध की तरह स्वादिष्ट है, क्षीरसमुद्र (गा ४७५; उप २११ टी)।

दुद्धोलणी स्त्री [दे] गो-विशेष, जिसको एक बार दोहने पर फिर भी दोहन किया जा सके ऐसी गाय, कामधेनु (दे ५, ४६)।

दुधा देखो दुहा (अभि १६१)।

दुनिमित्त देखो दुण्णिमित्त (श्रा २७)।

दुन्नय पुं [दुर्नय] १ दुष्ट नीति, कुनीति। २ अनेक धर्मवाली वस्तु में किसी एक ही धर्म को मानकर अन्य धर्म का प्रतिवाद करनेवाला पक्ष (सम्म १५)। ३ वि. दुष्ट नीति, अन्याय-कारी (उप ७६८ टी)। °कारि वि °कारिन्] अन्याय करनेवाला (सुपा ३४६)।

दुन्निक्कम देखो दोनिक्कम (भग ७, ६ टी—पत्र ३०७)।

दुन्निग्गह वि [दुर्निग्रह] जिसका निग्रह दुःख से हो सके वह, अनिवार्य (उप पृ १५३)।

दुन्निबोह वि [दुर्निबोध] १ दुःख से जानने योग्य। २ दुर्लभ (सूअ १, १५, २५)।

दुन्निमित्त देखो दुण्णिमित्त (श्रा २७)।

दुन्निय न [दुर्नीत] दुष्ट कर्म, दुष्कृत; 'बंधंति वेदंति य दुन्नियाणि' (सूअ १, ७, ४)।

दुन्नियत्थ वि [दे] विट का भेषवाला, निन्दनीय वेष को धारण करनेवाला, केवल जघन पर ही वस्त्र-पहिना हुआ; 'लोए वि कुसंसग्गीपियं जणं दुन्नियत्थमइवसणं निंदइ' (उव)।

दुन्निरिक्ख वि [दुर्निरीक्ष्य] जो कठिनाई से देखा जा सके वह (कप्प; भवि)।

दुन्निवार वि [दुर्निवार] रोकने के लिए अशक्य, जिसका निवारण मुश्किल से हो सके वह (सुपा १२३; महा)।

दुन्निवारणीअ वि [दुर्निवारणीय, दुर्निवार] ऊपर देखो (स ३४३; ७४१)।

दुन्निसण्ण वि [दुर्निषण्ण] खराब रीति से बैठा हुआ (ठा ५, २—पत्र ३१२)।

दुप देखो दिअ = द्विप (राज)।

दुपएस वि [द्विप्रदेश] १ दो अवयववाला। २ पुं. द्व्यणुक (उत्त १)।

दुपएसिय वि [द्विप्रदेशिक] दो प्रदेशवाला (भग ५, ७)।

दुपक्ख पुं [दुष्पक्ष] दुष्ट पक्ष (सूअ १, ३, ३)।

दुपक्ख न. [द्विपक्ष] १ दो पक्ष (सूअ १, २, ३)। २ वि. दो पक्षवाला (सूअ १, १२, ५)।

दुपडिग्गह न [द्विप्रतिग्रह] दृष्टिवाद का एक सूत्र (सम १५७)।

दुपडोआर वि [द्विपदावतार] दो स्थानों में जिसका समावेश हो सके वह (ठा २, १)।

दुपडोआर वि [द्विप्रत्यवतार] ऊपर देखो (ठा २, १)।

दुप्पमज्जिय देखो दुप्पमज्जिय (सुपा ६२०)।

दुपय वि [द्विपद] १ दो पैरवाला। २ पुं. मनुष्य (णाया १, ८; सुपा ४०६)। ३ न. गाड़ी, शकट (ओघ २०५ भा)।

दुपय पुं [द्रुपद] कांपिल्यपुर का एक राजा (णाया १, १६)।

दुपरिच्चय वि [दुष्परित्यज] दुस्त्यज, दुःख से छोड़ने योग्य (उप ७६८ टी; रयण ३४)।

दुपरिच्चयणीय वि [दुष्परित्यजनीय, दुष्परित्यज] ऊपर देखो (काल)।

दुपस्स देखो दुप्पस्स (ठा ५, १—पत्र २६६)।

दुपुत्त पुं [दुष्पुत्र] कुपुत्र, कपूत (पउम २६, २३)।

दुपेच्छ वि [दुष्प्रेक्ष] दुर्दर्श, अदर्शनीय (भवि)।

दुप्पइ पुं [दुष्पति] दुष्ट स्वामी (भवि)।

दुप्पउत्त वि [दुष्प्रयुक्त] १ दुरुपयोग करनेवाला (ठा २, १—पत्र ३६)। २ जिसका दुरुपयोग किया गया हो वह (भग ३, १)।

दुप्पउलिय } वि [दुष्प्रज्वलित] ठीक-ठीक दुप्पउल्ल } नहीं पका हुआ, अधपका (उवा, पंचा १)।

दुप्पओग पुं [दुष्प्रयोग] दुरुपयोग (दस ४)।

दुप्पओगि वि [दुष्प्रयोगिन्] दुरुपयोग करनेवाला (पण्ह १, १—पत्र ७)।

दुप्पक्क वि [दुष्पक्व] देखो दुप्पउल्ल (सुपा ४७२)।

दुप्पक्खाल वि [दुष्प्रक्षाल] जिसका प्रक्षालन कष्टसाध्य हो वह (सुपा ६०८)।

दुप्पच्चुप्पेक्खिय वि [दुष्प्रत्युत्प्रेक्षित] ठीक-ठीक नहीं देखा हुआ (पव ६)।

दुप्पजीवि वि [दुष्प्रजीविन्] दुःख से जीनेवाला (दसचू १)।

दुप्पडिक्कंत वि [दुष्प्रतिक्रान्त] जिसका प्रायश्चित ठीक-ठीक न किया गया हो वह (विपा १, १)।

दुप्पडिगर वि [दुष्प्रतिकर] जिसका प्रतीकार दुःख से किया जा सके (बृह ३)।

दुप्पडिपूर वि [दुष्प्रतिपूर] पूरने के लिए अशक्य (तंदु)।

दुप्पडियाणंद वि [दुष्प्रत्यानन्द] १ जो किसी तरह संतुष्ट न किया जा सके। २ अति कष्ट से तोषणीय (विपा १, १—पत्र ११; ठा ४, ३)।

दुप्पडियार वि [दुष्प्रतिकार] जिसका प्रतीकार दुःख से हो सके वह (ठा ३, १—पत्र ११७; ११६; स १८४; उव)।

दुप्पडिलेह वि [दुष्प्रतिलेख] जो ठीक-ठीक न देखा जा सके वह (पव ८४)।

दुप्पडिलेहण न [दुष्प्रतिलेखन] ठीक-ठीक नहीं देखना (आव ४)।

दुप्पडिलेहिय वि [दुष्प्रतिलेखित] ठीक से नहीं देखा हुआ (सुपा ६१७)।

दुप्पडिवूह वि [दुष्प्रतिबृंह] १ बढ़ाने को अशक्य। २ पालने को अशक्य (आचा)।

दुप्पडिवूहग वि [दुष्प्रतिबृंहण] ऊपर देखो (आचा)।

दुप्पणिहाण न [दुष्प्रणिधान] दुष्प्रयोग, अशुभ प्रयोग, दुरुपयोग (ठा ३, १; सुपा ५४०)।

दुप्पणिहिय वि [दुष्प्रणिहित] दुष्प्रयुक्त, जिसका दुरुपयोग किया गया हो वह (सुपा ५५८)।

दुप्पणीहाण देखो दुप्पणिहाण; 'कयसामइओवि दुप्पणीहाणं' (सुपा ५५३)।

दुप्पणोल्लिय वि [दुष्प्रणोद्य] दुस्त्यज, छोड़ने को अयोग्य (सूअ १, ३, १)।

दुप्पण्णवणिज्ज वि [दुष्प्रज्ञापनीय] कष्ट से प्रबोधनीय (आचा २, ३, १)।

दुप्पतर वि [दुष्प्रतर] दुस्तर (सूअ १, ५, १)।

दुप्पधंस वि [दुष्प्रधर्ष] दुर्धर्ष, दुर्जय (उत्त ६; पि ३०५)।

दुप्पमज्जण न [दुष्प्रमार्जन] ठीक-ठीक सफा नहीं करना (धर्म ३)।

दुप्पमज्जिय वि [दुष्प्रमार्जित] अच्छी तरह से सफा नहीं किया हुआ (सुपा ६१७)।

दुप्पय देखो **दुपय** = द्विपद (सम ६०)।

दुप्पयार वि [दुष्प्रचार] जिसका प्रचार दुष्ट माना जाता है वह, अन्याय-युक्त (कप्प)।

दुप्परक्कंत वि [दुष्पराक्रान्त] बुरी तरह से आक्रान्त (आचा)।

दुप्परिअल्ल वि [दे] १ अशक्य (दे ५, ५५; पाअ; से ४, २६; ६, १८; गा १२२)। २ द्विगुण, दुगुना। ३ अनभ्यस्त, अभ्यास-रहित (दे ५, ५५)।

दुप्परिइअ वि [दुष्परिचित] अपरिचित (से १३, १३)।

दुप्परिच्चय देखो **दुपरिच्चय** (उत्त ८)।

दुप्परिणाम वि [दुष्परिणाम] जिसका परिणाम खराब हो, दुर्विपाक (भवि)।

दुप्परिमास वि [दुष्परिमर्ष] कष्ट-साध्य स्पर्शवाला (से ६, २४)।

दुप्परियत्तण देखो **दुप्परिवत्तण** (तंदु)।

दुप्परिल्ल वि [दे] दुराकर्ष, 'आलिहिअ दुप्परिल्लंपि णेइ रण्णं धणू वाहो' (गा १२२)।

दुप्परिवत्तण वि [दुष्परिवर्त्तन] १ जिसका परिवर्तन दुःख से हो सके वह। २ न. दुःख से पीछे लौटना (तंदु)।

दुप्पवंच पुं [दुष्प्रपञ्च] दुष्ट प्रपंच (भवि)।

दुप्पवण पुं [दुष्पवन] दुष्ट वायु (भवि)।

दुप्पवेस वि [दुष्प्रवेश] जहाँ कष्ट से प्रवेश हो सके वह (णाया १, १; पउम ४३, १२; स २५३; सुपा ४५५)। °**तर** वि [°तर] प्रवेश करने को अशक्य (पण्ह १, ३—पत्र ४५)।

दुप्पसह पुं [दुष्प्रसह] पंचम आरे के अन्त में होनेवाला एक जैन आचार्य, एक भावी जैन सूरि (उप ८०६)।

दुप्पस्स वि [दुर्दर्श] जो मुश्किल से दिखलाया जा सके वह (ठा ५, १ टी—पत्र २९६)।

दुप्पहंस वि [दुष्प्रध्वंस्य] जिसका नाश कठिनाई से हो सके वह (णाया १, १८—पत्र २३६)।

दुप्पहंस वि [दुष्प्रधृष्य] अजेय, दुर्जय (णाया १, १८)।

दुप्पह वि [दुष्प्रभ] जो दुःख से सूझ सके वह; दुर्गम (मोह ७२)।

दुप्पाय न [दुष्प्राप] तप-विशेष, आयंबिल तप (संबोध ५८)।

दुप्पिउ पुं [दुष्पितृ] दुष्ट पिता (सुपा ३८७; भवि)।

दुप्पिच्छ देखो **दुपेच्छ** (सुर २, ५; सुपा ६२)।

दुप्पिय वि [दुष्प्रिय] अप्रिय। °**ब्भासि** वि [°भाषिन्] अप्रिय-वक्ता (सुपा ३१४)।

दुप्पुत्त देखो **दुपुत्त** (पउम १०५, ७२; भवि; कुप्र ४०५)।

दुप्पूर वि [दुष्पूर] जो कठिनाई से पूरा किया जा सके (स १२३)।

दुप्पेक्ख देखो **दुपेच्छ** (सण)।

दुप्पेक्खणिज्ज वि [दुष्प्रेक्षणीय] कष्ट से दर्शनीय (नाट—वेणी २५)।

दुप्पेच्छ देखो **दुपेच्छ** (महा)।

दुप्पोलिय देखो **दुप्पउलिअ** (श्रा २१)।

दुप्फड वि [दुष्फट्] मुश्किल से फटने योग्य (त्रि ८३)।

दुप्फरिस, **दुप्फास**, **दुफास** वि [दुःस्पर्श] जिसका स्पर्श खराब हो वह (पउम २६, ४६; १०१, ७१; ठा ८; भग)।

दुफास वि [द्विस्पर्श] स्निग्ध और शीत आदि अविरुद्ध दो स्पर्शों से युक्त (भग)।

दुब्बद्ध वि [दुर्बद्ध] खराब रीति से बँधा हुआ (आचा २, ६, ३)।

दुब्बल वि [दुर्बल] निर्बल, बल-हीन (विपा १, ७; सुपा ६०३; प्रासू २३)। °**पच्चवमित्त** पुंन [°प्रत्यवमित्र] दुर्बल को मदद करनेवाला (ठा ६)।

दुब्बलिय वि [दुर्बलिक] दुर्बल, निर्बल (भग १२, २)। °**पूसमित्त** पुं [°पुष्यमित्र] स्वनाम-प्रसिद्ध एक जैन आचार्य (ठा ७; ती ७)।

दुब्बलिय न [दौर्बल्य] श्रम, थाक, थकावट (आचा २, ३, २, ३)।

दुब्बुद्धि वि [दुर्बुद्धि] १ दुष्ट बुद्धिवाला, खराब नियतवाला (उप ७२८; सुपा ४४; ३७६)। २ स्त्री. खराब बुद्धि, दुष्ट नियत (श्रा १४)।

दुब्बोल्ल पुं [दे] उपालम्भ, उलहना या उलाहना (दे ५, ४२)।

दुब्भ वि [दुग्ध] दोहा हुआ। २ न. दोहन (प्राकृ ७७)।

दुब्भ° देखो **दुह** = दुह्।

दुब्भग वि [दुर्भग] १ कमनसीब, अभागा। २ अप्रिय, अनिष्ट (पण्ह १, २; प्रासू १४३)। °**णाम**, °**नाम** न [°नामन्] कर्म-विशेष जिसके उदय से उपकार करनेवाला भी लोगों को अप्रिय होता है (कम्म १; सम ६७)। °**करा** स्त्री [°करा] दुर्भग बनानेवाली विद्या-विशेष (सूअ २, २)।

दुब्भग्ग न [दौर्भाग्य] दुर्भगता, लोक में अप्रियता (पिंड ५०२)।

दुब्भरणि स्त्री [दुर्भरणि] दुःख से निर्वाह, 'होउ अजणणी तेसिं दुब्भरणी पडउ तद्दुदरस्सावि' (सुपा ३७०)।

दुब्भाव पुं [दुर्भाव] १ हेय पदार्थ (पउम ८६, ६६)। २ असद्-भाव, खराब-असर; 'पिसुणेण व जेण कओ दुब्भावो' (सुर ३, १६)।

दुब्भाव पुं [द्विभाव] विभाग, जुदाई (सुर ३, १६)।

दुब्भाव पुं [द्विर्भाव] द्वित्व, दुगुनापन (चेइय ६६०)।

दुब्भासिय न [दुर्भाषित] खराब वचन (पउम ११८, ६७; पडि)।

दुब्भि पुंन [दुरभि] १ खराब गन्ध (सम ४१)। २ वि. अशुभ, खराब, असुन्दर (ठा १)। ३ वि. खराब गन्धवाला, दुर्गन्धि (आचा)। °**गंध** [°गन्ध] पूर्वोक्त ही अर्थ (ठा १; आचा; णाया १, १२)। °**सद्द** पुंन. [°शब्द] खराब शब्द (णाया १, १२)।

दुब्भिक्ख पुंन [दुर्भिक्ष] १ दुष्काल, अकाल, वृष्टि का अभाव (सम ६०; सुपा ३५८); 'आसन्ने रणरंगे, मूढे मंते तहेव दुब्भिक्खे।

जस्स मुहं जोइज्जइ, सो पुरिसो महीयले विरलो' (रयण ३२)।
२ भिक्षा का अभाव (ठा ५, २)। ३ वि. जहाँ पर भिक्षा न मिल सके वह देश आदि (ठा ३, १—पत्र ११८)।

दुब्भिज्ज देखो दुब्भेज्ज (पउम ८०, ६)।

दुब्भूइ स्त्री [दुर्भूति] अशिव, अमंगल (बृह ३)।

दुब्भूय पुंन [दुर्भूत] १ नुकशान करनेवाला जन्तु—टिड्डी वगैरह (भग ३, २)। २ न. अशिव, अमंगल (जीव ३)।

दुब्भूय वि [दुर्भूत] दुराचारी (उत्त १७, १७)।

दुब्भेज्ज वि [दुर्भेद्य] तोड़ने को अशक्य (पि ८४; २८७; नाट—मृच्छ १३३)।

दुब्भेय वि [दुर्भेद] ऊपर देखो (राय)।

दुभग देखो दुब्भग (नव १५)।

दुभव न [द्विभव] वर्तमान और आगामी जन्म, 'दुभवहइसज्जो' (श्रा २७)।

दुभाग पुं [द्विभाग] आधा, अर्ध (भग ७, १)।

दुम सक [धवलय्] १ सफेद करना। २ चूना आदि से पोतना। दुमइ (हे ४, २४)। दुमसु (गा ७४७)। वकृ. दुमंत (कुमा)।

दुम पुं [द्रुम] १ वृक्ष, पेड़, गाछ (कुमा; प्रासू ६; १४६)। २ चमरेन्द्र के पदाति-सैन्य का एक अधिपति (ठा ५, १—पत्र ३०२; इक)। ३ राजा श्रेणिक का एक पुत्र, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा लेकर अनुत्तर देवलोक की गति प्राप्त की थी (अनु २)। ४ न. एक देव-विमान (सम ३५)। °कंत न [°कान्त] एक विद्याधर-नगर (इक)। °पत्त न [°पत्र] १ वृक्ष का पत्ता। २ 'उत्तराध्ययन' सूत्र का एक अध्ययन (उत्त १०)। °पुप्फिया स्त्री [°पुष्पिका] 'दशवैकालिक' सूत्र का पहला अध्ययन (दस १)। °राय पुं [°राज] उत्तम वृक्ष (ठा ४, ४)। °सेण पुं [°सेन] १ राजा श्रेणिक का एक पुत्र, जिसने भगवान महावीर के पास दीक्षा लेकर अनुत्तर देवलोक में गति प्राप्त की थी (अनु २)। २ नववें बलदेव और वासुदेव के पूर्व-जन्म के धर्म-गुरु (सम १५३; पउम २०, १७७)।

दुमंतय पुं [दे] केश-बन्ध, धम्मिल्ल—बँधी चोटी, जूड़ा (दे ५, ४७)।

दुमण न [धवलन] चूना आदि से लेपन, सफेद करना (पण्ह २, ३)।

दुमणी स्त्री [दे] सुधा, मकान आदि पोतने का श्वेत द्रव्य-विशेष, चूना (दे ५, ४४)।

दुमत्त वि [द्विमात्र] दो मात्रावाला स्वर-वर्ण (हे १, ६४)।

दुमासिय वि [द्वैमासिक] दो मास का, दो मास-सम्बन्धी (सण)।

दुमिअ वि [धवलित] चूना आदि से पोता हुआ, सफेद किया हुआ (गा ७४७; सुज्ज २०)।

दुमिल देखो दुम्मिल (पिंग)।

दुमुह पुं [द्विमुख] एक राजर्षि (उत्त ६)।

दुमुह देखो दुम्मुह = दुर्मुख (पि ३४०)।

दुमुहुत्त पुंन [दुर्मुहूर्त] खराब मुहूर्त, दुष्ट समय (सुपा २३७)।

दुमोक्ख वि [दुर्मोक्ष] जो दुःख से छोड़ा जा सके (सूअ १, १२)।

दुम्म देखो दूम = दावय्। दुम्मइ (भवि)। दुम्मेंति, दुम्मेसि (गा १७७; ३४०)। कर्म. दुम्मिज्जइ (गा ३२०)।

दुम्मइ वि [दुर्मति] दुर्बुद्धि, दुष्ट बुद्धिवाला (श्रा २७; सुपा २५१)।

दुम्मइणी स्त्री [दे] झगड़ाखोर स्त्री (दे ५, ४७; षड्)।

दुम्मण वि [दुर्मनस्] १ दुर्मना, खिन्न-मनस्क, उद्विग्न-चित्त, उदास (विपा १, १; सुर ३, १४७)। २ दीन, दीनतायुक्त। ३ द्विष्ट, द्वेष-युक्त (ठा ३, २—पत्र १३०)।

दुम्मण अक [दुर्मनाय्] उद्विग्न होना, उदास होना। वकृ. डुम्मणाअंत, दुम्मणा-यमाण (नाट—महावी ६६, मालती १२८; रयण ७६)।

दुम्मणिअ न [दौर्मनस्य] उदासी, उद्वेग, चिन्ता, बेचैनी (दस ६, ३)।

दुम्मणिअ न [दौर्मनस्य] दुष्ट मनो-भाव, मन का दुष्ट विकार, दुर्जनता (दस ६, ३, ८)।

दुम्मय पुं [द्रुमक] भिखारी, भीखमंगा (दस ७, १४)।

दुम्महिला स्त्री [दुर्महिला] दुष्ट स्त्री (ओघ ४६४ टी)।

दुम्माण पुं [दुर्मान] झूठा अभिमान, निन्दित गर्व (अच्चु ५४)।

दुम्मार पुं [दुर्मार] विषम मार, भयंकर ताड़न; 'दुम्मारेण मओ सोवि' (श्रा १२)।

दुम्मारि स्त्री [दुर्मारि] उत्कट मारी-रोग (संबोध २)।

दुम्मारुय पुं [दुर्मारुत] दुष्ट पवन (भवि)।

दुम्मिअ वि [दून] उपतापित, पीड़ित (गा ७४; २२४; ४३३; भवि; काप्र ३०)।

दुम्मिल स्त्रीन [दुर्मिल] छन्द-विशेष। स्त्री. °ला (पिंग)।

दुम्मुह देखो दुमुह = द्विमुख (महा)।

दुम्मुह पुं [दुर्मुख] बलदेव का धारणी-देवी से उत्पन्न एक पुत्र, जिसने भगवान् नेमिनाथ के पास दीक्षा लेकर मुक्ति पाई थी (अंत ३; पण्ह १, ४)।

दुम्मुह पुं [दे] मर्कट, वानर, बन्दर (दे ५, ४४)।

दुम्मेह वि [दुर्मेधस्] दुर्बुद्धि, दुर्मति (पण्ह १, ३)।

दुम्मोअ वि [दुर्मोक] दुःख से छोड़ाने योग्य (अभि २४४)।

दुयणु देखो दुअणुअ (धर्मसं ६४०)।

दुरइक्कम वि [दुरतिक्रम] दुर्लंघ्य, जिसका उल्लंघन दुःख-साध्य हो वह (आचा)।

दुरइक्कमणिज्ज वि [दुरतिक्रमणीय] ऊपर देखो (णाया १, ५)।

दुरंत वि [दुरन्त] १ जिसका परिणाम—विपाक खराब हो वह, जिसका पर्यन्त दुष्ट हो वह (णाया १, ८; पण्ह १, ४—पत्र ६५; स ७५०, उवा)। २ जिसका विनाश कष्ट-साध्य हो वह (तंदु)।

दुरंदर वि [दे] दुःख से उत्तीर्ण (दे ५, ४६)।

दुरक्ख वि [दरक्ष] जिसकी रक्षा करना कठिन हो वह (सुपा १४३)।

दुरक्खर वि [दुरक्षर] परुष, कठोर, कड़ा (वचन) (भवि)।

दुरग्गह पुं [दुराग्रह] कदाग्रह (कुप्र ३७६)।

दुरज्झवसिय न [दुरध्यवसित] दुष्ट चिन्तन (सुपा ३७७)।

दुरणुचर वि [दुरनुचर] जिसका अनुष्ठान कठिनता से हो सके वह, दुष्कर; 'एसो जईण धम्मो दुरणुचरो मंदसत्ताणं' (सुर १४, ७५; ठा ५, १—पत्र २९६; णाया १, १)।

दुरणुपाल वि [दुरनुपाल] जिसका पालन कष्ट-साध्य हो (उत्त २३)।

दुरप्प पुं [दुरात्मन्] दुष्ट आत्मा, दुर्जन (उव; महा)।

दुरब्भास पुं [दुरभ्यास] खराब आदत (सुपा १९७)।

दुरभि देखो **दुब्भि** (अणु; पउम २६, ५०, १०२, ४४; पण्ह २, ५; आचा)।

दुरभिगम वि [दुरभिगम] १ जहाँ दुःख से गमन हो सके वह, कष्ट-गम्य (ठा ३, ४)। २ दुर्बोध, कष्ट से जो जाना जा सके (राज)।

दुरमच्च पुं [दुरमात्य] दुष्ट मंत्री (कुप्र २९१)।

दुरवगम वि [दुरवगम] दुर्बोध (कुप्र ४८)।

दुरवगम्म देखो **दुरवगम** (चेइय २५६)।

दुरवगाह वि [दुरवगाह] दुष्प्रवेश, जहाँ प्रवेश करना कठिन हो वह (हे १, २६; सम १४५)।

दुरस वि [दूरस] खराब स्वादवाला (भग; णाया १, १२; ठा ८)।

दुरसण पुं [द्विरसन] १ सर्प, साँप। २ दुर्जन, दुष्ट मनुष्य (सुपा ५१७)।

दुरहि देखो **दुरभि** (उप ७२८ टी; तंदु)।

दुरहिगम देखो **दुरभिगम** (सम १४५; विसे ६०९)।

दुरहिगम्म वि [दुरभिगम्य] दुःख से जानने योग्य, दुर्बोध; 'अत्थगई वि अ नयवायगहण-लीणा दुरहिगम्मा' (सम्म १६१)।

दुरहियास वि [दुरध्यास, दुरधिसह] दुस्सह, जो कष्ट से सहन किया जा सके (णाया १, १; आचा; उप १०३१ टी; स ६५७)।

दुराणण पुं [दुरानन] विद्याधर वंश का एक राजा (पउम ५, ४५)।

दुराणुवत्त वि [दुरनुवर्त] जिसका अनुवर्तन कष्ट-साध्य हो वह (वव ३)।

दुराय न [द्विरात्र] दो रात (ठा ५, २; कस)।

दुरायार वि [दुराचार] १ दुराचारी, दुष्ट आचरणवाला (सुर २, १९३; १२, २२९; वेणी १७१)। २ पुं. दुष्ट आचरण (भवि)।

दुरायारि वि [दुराचारिन्] ऊपर देखो (भवि)।

दुराराह वि [दुराराध] जिसका आराधन दुःख से हो सके वह (कप्प)।

दुरारोह वि [दुरारोह] जिस पर दुःख से चढ़ा जा सके वह, दुरध्यास (उत्त २३, गा ४६८)।

दुरालोअ पुं [दे] तिमिर, अन्धकार (दे ५, ४६)।

दुरालोअ वि [दुरालोक] जो दुःख से देखा जा सके, देखने को अशक्य (से ४, ८; कुमा)।

दुरालोयण वि [दुरालोकन] ऊपर देखो, 'दुरालोयणो दुम्मुहो रत्तनेत्तो' (भवि)।

दुरावह वि [दुरावह] दुर्धर, दुर्वह (पउम ९८, ६)।

दुरास वि [दुराश] १ दुष्ट आशावाला। २ खराब इच्छावाला (भवि; संक्षि १९)।

दुरासय वि [दुराशय] दुष्ट आशयवाला (सुपा १३१)।

दुरासय वि [दुराश्रय] दुःख से जिसका आश्रय किया जा सके वह, आश्रय करने को अशक्य (पण्ह १, ३, उत्त १)।

दुरासय वि [दुरासद] १ दुष्प्राप्य, दुर्लभ। २ दुर्जय। ३ दुःसह (दस २, ६; राज)।

दुरिअ न [दुरित] पाप (पाअ; सुपा २४३)।

दुरिअ न [दे] द्रुत, शीघ्र, जल्दी (षड्)।

दुरिआरि स्त्री [दुरितारि] भगवान् संभवनाथ की शासनदेवी (संति ९)।

दुरिक्ख वि [दुरीक्ष] देखने को अशक्य (कुमा)।

दुरिट्ठ न [दुरिष्ट] खराब नक्षत्र (दसनि १, १०५)।

दुरिट्ठ न [दुरिष्ट] खराब यज्न—याग (दसनि १, १०५)।

दुरुक्क वि [दे] थोड़ा पीसा हुआ, ठीक ठीक नहीं पीसा हुआ (आचा २, १, ८)।

दुरुदुल्ल सक [भ्रम्] १ भ्रमण करना, घूमना। २ गँवाई हुई चीज की खोज में घूमना। वकृ. **दुरुदुल्लंत** (सुर १५, २१२)।

दुरुत्त न [दुरुक्त] दुष्टोक्ति, दुष्ट वचन (सार्ध १०१)।

दुरुत्त वि [द्विरुक्त] १ दो बार कहा हुआ, पुनरुक्त। २ दो बार कहने योग्य (रंभा)।

दुरुत्तर वि [दुरुत्तर] १ दुस्तर, दुर्लंघ्य (सूअ १, ३, २)। २ न. दुष्ट उत्तर, अयोग्य जवाब (हे १, १४)।

दुरुत्तर वि [द्वि-उत्तर] दो से अधिक। °सय वि [°शततम] एक सौ दो वाँ, १०२ वाँ (पउम १०२, २०४)।

दुरुत्तार वि [दुरुत्तार] दुःख से पार करने योग्य (सुपा २६७)।

दुरुद्धर वि [दुरुद्धर] जिसका उद्धार कठिनाई से हो वह (सूअ १, २, २)।

दुरुवणीय वि [दुरुपनीत] जिसका उपनय दूषित हो ऐसा (उदाहरण) (दसनि १)।

दुरुवयार वि [दुरुपचार] जिसका उपचार कष्ट-साध्य हो वह (तंदु)।

दुरुव्वा स्त्री [दूर्वा] तृण-विशेष, दूब (स १२४; उप ३१८)।

दुरुह सक [आ + रुह्] आरूढ़ होना, चढ़ना। दुरुहइ (पि ११८; १३९)। वकृ. **दुरुहमाण** (आचा २, ३, १)। संकृ. **दुरुहित्ता, दुरुहित्ताणं, दुरुहेत्ता** (भग; महा; पि ५८३; ४८२)।

दुरूढ वि [आरूढ] अधिरूढ, ऊपर चढ़ा हुआ (णाया १, १; २, १; औप)।

दुरूव वि [दूरूप] १ खराब रूपवाला, कुरूप, कुडौल (ठा ८; श्रा १६)। २ मलमूत्र का कर्दम (सूत्रकृ० चूर्णी गा० ३१७)।

दुरूव वि [दूरूप] अशुचि आदि खराब वस्तु (सूअ १, ५, १, २०)।

दुरूह देखो **दुरुह**। संकृ. **दुरूहित्तु, दुरू-हिया** (सूअ १, ५, २, १५); 'जहा आसा-विणिं नावं जाइअंधो दुरूहिया' (सूअ १, ११, ३०)।

दुरूहण न [आरोहण] अधिरोहण, ऊपर चढ़ बैठना (स ५१)।

दुरेह पुं [द्विरेफ] भ्रमर, भौंरा (पाअ, हे १, ९४)।

दुरोअर न [दुरोदर] जुआ, द्यूत (पाअ)।

दुरोदर देखो **दुरोअर** (कर्पूर २५)।

दुलंघ देखो दुल्लंघ (भवि)।
दुलंभ देखो दुल्लंभ (भवि)।
दुलह वि [दुर्लभ] १ जिसकी प्राप्ति दुःख से हो सके वह (कुमा; गउड; प्रासू १३४)। २ पुं. एक वणिक्-पुत्र (सुपा ६१७)। देखो दुल्लह।
दुलि पुंस्री [दे] कच्छप, कछुआ (दे ५, ४२; उप पृ १३५)।
दुल्ल न [दे] वस्त्र, कपड़ा (दे ५, ४१)।
दुल्लंघ वि [दुर्लङ्घ] जिसका उल्लंघन कठिनाई से हो सके वह, अलंघनीय (पउम १२, ३८; ४१; हेका ३१; सुर २, ७८)।
दुल्लंभ वि [दुर्लभ] दुराप, दुष्प्राप्य (उप पृ १३६; सुपा १६३; सण)।
दुल्लक्ख वि [दुर्लक्ष] १ दुर्विज्ञेय, जो दुःख से जाना जा सके, अलक्ष्य (से ८, ५; स ६६; वज्जा १३६; श्रा २८)। २ जो कठिनाई से देखा जा सके (कप्पू)।
दुल्लग्ग वि [दे] अघटमान, अयुक्त (दे ५, ४३)।
दुल्लग्ग न [दुर्लग्न] दुष्ट लग्न, दुष्ट मुहूर्त (मुद्रा २१५)।
दुल्लब्भ } देखो दुलह, 'किं दुल्लब्भं जणो
दुल्लभ } गुणग्गाही' (गा ६७५; निचू ११)।
दुल्ललिअ वि [दुर्ललित] १ दुष्ट आदतवाला। २ दुष्ट इच्छावाला; 'विलसइ वेसाण गिहे विविहविलासेहिं दुल्ललिओ', 'कीलइ दुल्ललियबालकीलाए' (सुपा ४८५; ३२८)। ३ व्यसनी, आदतवाला;

'धन्ना सा पुन्नुक्करिसनिम्मिया
तिहुयणेवि तुह जणणी।
जीइ पसूओ सि तुमं दीणुद्धरणिक्क-
दुल्ललिओ' (सुपा २१९)।

४ दुर्विदग्ध, दुःशिक्षित (पाअ)। ५ न. दुराशा, दुर्लभ वस्तु की अभिलाषा (महानि ६)।
दुल्लसिआ स्त्री [दे] दासी, नौकरानी (दे ५, ४६)।
दुल्लह वि [दुर्लभ] १ दुराप, जिसकी प्राप्ति कठिनाई से हो वह (स्वप्न ४६; कुमा; जी ५०; प्रासू ११; ४६; ४७)। २ विक्रम की ग्यारहवीं शताब्दी का गुजरात का एक प्रसिद्ध राजा (गु १०)। °राय पुं [°राज] वही अर्थ (सार्ध ६६; कुप्र ४)। °लंभ वि [°लम्भ] जिसकी प्राप्ति दुःख से हो सके वह (पउम ३५, ४७; सुर ४, २२६; वै ६८)।
दुवई स्त्री [द्रुपदी] छन्द-विशेष (स ७१)।
दुवण न [दावन] उपताप, पीड़न (पण्ह १, २)।
दुवण्ण } वि [दुर्वर्ण] खराब रूपवाला (भग;
दुवन्न } ठा ८)।
दुवय पुं [द्रुपद] एक राजा, द्रौपदी का पिता (णाया १, १६; उप ६४८ टी)। °सुया स्त्री [°सुता] पाण्डव-पत्नी, द्रौपदी (उप ६४८ टी)।
दुवयंगया स्त्री [द्रुपदाङ्गजा] राजा द्रुपद की लड़की, द्रौपदी, पाण्डवों की पत्नी (उप ६४८ टी)।
दुवयंगरुहा स्त्री [द्रुपदाङ्गरुहा] ऊपर देखो (उप ६४८ टी)।
दुवयण न [दुर्वचन] खराब वचन, दुष्ट उक्ति (पउम ३५, ११)।
दुवयण न [द्विवचन] दो का बोधक व्याकरण-प्रसिद्ध प्रत्यय, दो संख्या की वाचक विभक्ति (हे १, ९४; ठा ३, ४—पत्र १५८)।
दुवार } देखो दुआर (हे २, ११२; प्रति
दुवाराय } ४१; सुपा ४८७); 'एगदुवाराए' (कस)। °पाल पुं [°पाल] दरवान, प्रतीहार (सुर १, १३४; २, १४८)। °वाहा स्त्री [°बाहा] द्वार-भाग (आचा २, १, ५)।
दुवारि वि [द्वारिन्] १ द्वारवाला। २ पुं. दरवान, प्रतीहार; 'बहुपरिवारो पत्तो रायदुवारी तहिं वरुणो' (सुपा २६५)।
दुवारिअ वि [द्वारिक] दरवाजावाला, 'अवंगुयदुवारिए' (कस)।
दुवारिअ पुं [दौवारिक] दरवान, द्वारपाल (हे १, १६०; संक्षि ६; सुपा २९०)।
दुवालस त्रि.ब. [द्वादशन्] बारह, १२ (कप्प; कुमा)। °मुहित्तअ वि [°मौहूर्तिक] बारह मुहूर्तों का परिमाणवाला (सम २२)। °विह वि [°विध] बारह प्रकार का (सम २१)। °हा अ [°धा] बारह प्रकार (सुर १४, ९१)। °वत्त न [°वर्त] बारह आवर्तवाला वन्दन, प्रणाम-विशेष (सम २१)।
दुवालसंग क्लीन [द्वादशाङ्गी] बारह जैन आगम-ग्रन्थ, 'आचारांग' आदि बारह सूत्र-ग्रन्थ (सम १; हे १, २५४)। स्त्री. °गी (राज)।
दुवालसंगि वि [द्वादशाङ्गिन्] बारह अंग-ग्रन्थों का जानकार (कप्प)।
दुवालसम वि [द्वादश] १ बारहवाँ। २ न. लगातार पाँच दिनों का उपवास (आचा; णाया १,१; ठा ६; सण)। स्त्री. °मी (णाया १, ६)।
दुविट्ठ } पुं [द्विपृष्ठ, द्विविष्टप] १ भरत-
दुविट्ठु } क्षेत्र में इस अवसर्पिणी काल में उत्पन्न द्वितीय अर्ध-चक्री राजा (सम १५८ टी; पउम ५, १५५)। २ भरत-क्षेत्र में उत्पन्न होनेवाला आठवाँ अर्ध-चक्री राजा, एक वासुदेव (सम १५४)।
दुविभज्ज वि [दुर्विभाज्य] जिसका विभाग करना कठिन हो वह—परमाणु (ठा ५,१—पत्र २९६)।
दुविभव्व देखो दुव्विभव्व (ठा ५, १ टी)।
दुवियड्ढ वि [दुर्विदग्ध] दुश्शिक्षित, जानकारी का झूठा अभिमान करनेवाला (उप ८३३ टी)।
दुवियप्प पुं [दुर्विकल्प] दुष्ट वितर्क (भवि)।
दुविलय पुं [दुविलक] एक अनार्य देश, 'दुं (? दु) विलय-लउसबुक्कस—' (पव २७४)।
दुविह वि [द्विविध] दो प्रकार का (हे १; ९४; नव ३)।
दुवीस क्लीन [द्वाविंशति] बाईस, २२ (नव २०; षड्)।
दुव्वण्ण } देखो दुवण्ण (पउम ४१, १७;
दुव्वन्न } पण्ह १, ४)।
दुव्वय न [दुर्व्रत] १ दुष्ट नियम। २ वि. दुष्ट व्रत करनेवाला। ३ व्रत-रहित, नियम-वर्जित (ठा ४, ३; विपा १, १)।
दुव्वयण न [दुर्वचन] दुष्ट उक्ति, खराब वचन (पउम ३३, १०६; विसे ५२०; उव गा २९०)।
दुव्वल देखो दुब्बल (महा)।
दुव्वसण न [दुर्व्यसन] खराब आदत, बुरी आदत (सुपा १८४; ४८९; भवि)।

दुव्वसु वि [दुर्वसु] अभव्य, खराब द्रव्य (आचा)। °मुणि पुं [°मुनि] मुक्ति के लिए अयोग्य साधु (आचा)।

दुव्वह वि [दुर्वह] दुर्धर, जिसका वहन कठिनाई से हो सके वह (स १६१; सुर १, १४)।

दुव्वा देखो **दुरुव्वा** (कुमा; सुर १, १३८)।

दुव्वाइ वि [दुर्वादिन्] अप्रियवक्ता (दस ६, २)।

दुव्वाय पुं [दुर्वाक्] दुर्वचन, दुष्ट उक्ति; 'वयणेणवि दुव्वाओ न य कायव्वो परस्स पीडयरो' (पउम १०३, १४३)।

दुव्वाय पुं [दुर्वात] दुष्ट पवन (णमि ४)।

दुव्वार वि [दुर्वार] दुःख से रोकने योग्य, अवार्य (से १२, ६३; उप ६८६ टी; सुपा १९७; ४७१; अभि ११६)।

दुव्वारिअ देखो **दुवारिअ** = दौवारिक (प्राप्र)।

दुव्वाली स्त्री [दे] वृक्ष-पंक्ति (पाअ)।

दुव्वास पुं [दुर्वासस्] एक ऋषि (अभि ११८)।

दुव्विअड वि [दुर्विवृत] परिधान-वर्जित, नग्न, नंगा (ठा ५, २—पत्र ३१२)।

दुव्विअड्ढ, **दुव्विअद्ध** } वि [दुर्विदग्ध] ज्ञान का झूठा अभिमान करनेवाला, दुरिशक्षित (पाअ; गा ६५)।

दुव्विजाणय वि [दुर्विज्ञेय] दुःख से जानने योग्य, जानने को अशक्य; 'अकुसलपरिणाम-मंदबुद्धिजणदुव्विजाणए' (पण्ह १, १)।

दुव्विढप्प वि [दुरर्ज] दुःख से अर्जन करने योग्य, कठिनाई से कमाने योग्य (कुप्र २३८)।

दुव्विणीअ वि [दुर्विनीत] अविनीत, उद्धत (पउम ६६, ३५; काल)।

दुव्विण्णाय वि [दुर्विज्ञात] असत्य रीति से जाना हुआ (आचा)।

दुव्विभज देखो **दुविभज्ज** (राज)।

दुव्विभव्व वि [दुर्विभाव्य] दुर्लक्ष्य, दुःख से जिसकी आलोचना हो सके वह (ठा ५, १ टी—पत्र २६६)।

दुव्विभाव वि [दुर्विभाव] ऊपर देखो (विसे)।

दुव्विलसिय न [दुर्विलसित] १ स्वच्छन्दी विलास। २ निकृष्ट कार्य्य, जघन्य काम, नीच काम (उप १३६ टी)।

दुव्विसह वि [दुर्विषह] अत्यन्त दुःसह, असह्य (गा १४८; सुर ३, १४४; १४, २१०)।

दुव्विसोज्झ वि [दुर्विशोध्य] शुद्ध करने को अशक्य (पंचा १७)।

दुव्विहिअ न [दुर्विहित] दुष्ट अनुष्ठान (दसचू १, १२)।

दुव्विहिय वि [दुर्विहित] १ खराब रीति से किया हुआ, 'दुव्विहियविलासियं विहिणो' (सुर ४, १५; ११, १४३)। २ असुविहित, अयशस्वी (आव ३)।

दुव्वोज्झ वि [दुर्वाह्य] दुर्वह, दुःख से ढोने योग्य (से ३, ५; ४, ४४; १३, ६३; वज्जा ३८)।

दुव्वोज्झ वि [दे] दुर्घात्य, दुःख से मारने योग्य (से ३, ५)।

दुसंकड न [दुःस्संकट] विषम विपत्ति (भवि)।

दुसंचर देखो **दुस्संचर** (भवि)।

दुसंथ वि [द्विसंस्थ] दो बार सुनने से ही उसे अच्छी तरह याद कर लेने की शक्तिवाला (धर्मसं १२०७)।

दुसन्नप्प वि [दुस्संज्ञाप्य] दुर्बोध्य (ठा ३, ४—पत्र १६५)।

दुसमदुसमा देखो **दुस्समदुस्समा** (भग ६, ७)।

दुसमसुसमा देखो **दुस्समसुसमा** (ठा १)।

दुसमा देखो **दुस्समा** (भग ६, ७; भवि)।

दुसह देखो **दुस्सह** (हे १, ११५; सुर १२, १३७; १३६)।

दुसाह वि [दुस्साध] दुःसाध्य, कष्ट-साध्य (पउम ८६, २२)।

दुसिक्खिअ वि [दुश्शिक्षित] दुर्विदग्ध (पउम २५, २१)।

दुसुमिण देखो **दुस्सुमिण** (पडि)।

दुसुरुल्लय न [दे] गले का आभूषण-विशेष (स ७६)।

दुस्स सक [द्विष्] द्वेष करना। वकृ. **दुस्समाण** (सूअ १, १२, २२)।

दुस्सउण न [दुश्शकुन] अपशकुन (णमि २०)।

दुस्संचर वि [दुस्संचर] जहाँ दुःख से जाया जा सके, दुर्गम (स २३१, संक्षि १७)।

दुस्संचार वि [दुस्संचार] ऊपर देखो (सुर १, ६६)।

दुस्संत पुं [दुष्यन्त] चन्द्रवंशीय एक राजा, शकुन्तला का पति (पि ३२९)।

दुस्संबोह वि [दुस्संबोध] दुर्बोध्य (आचा)।

दुस्सज्झ वि [दुस्साध्य] दुष्कर (सुपा ८; ५९९)।

दुस्सण्णप्प देखो **दुसन्नप्प** (बृह ४)।

दुस्सत्त वि [दुस्सत्त्व] दुरात्मा, दुष्ट जीव (पउम ८७, ६)।

दुस्सन्नप्प देखो **दुसन्नप्प** (कस)।

दुस्समदुस्समा स्त्री [दुष्षमदुष्षमा] काल-विशेष, सर्वाधम काल, अवसर्पिणी काल का छठवाँ और उत्सर्पिणी काल का पहला आरा, इसमें सब पदार्थों के गुणों की सर्वोत्कृष्ट हानि होती है, इसका परिमाण एक्कीस हजार वर्षों का है (ठा १; ६; इक)।

दुस्समदुसुसमा स्त्री [दुष्षमसुषमा] बेयालीस हजार कम एक कोटाकोटि सागरोपम का परिमाणवाला काल-विशेष, अवसर्पिणी काल का चतुर्थ और उत्सर्पिणी काल का तीसरा आरा (कप्प; इक)।

दुस्समा स्त्री [दुष्षमा] १ दुष्ट काल। २ एक्कीस हजार वर्षों के परिमाणवाला काल-विशेष, अवसर्पिणी-काल का पाँचवाँ और उत्सर्पिणी काल का दूसरा आरा (उप ६४८; इक)।

दुस्समाण देखो **दुस्स**।

दुस्सर पुं [दुःस्वर] १ खराब आवाज, कुत्सित कण्ठ। २ कर्म-विशेष, जिसके उदय से स्वर कर्ण-कटु होता है (कम्म १, २७; नव १५)। °णाम, °नाम न [°नामन्] दुःस्वर का कारण-भूत कर्म (पंच; सम ६७)।

दुस्सल वि [दुश्शाल] दुर्विनीत, अविनीत (बृह १)।

दुस्सह वि [दुस्सह] जो दुख से सहन हो सके, असह्य (स्वप्न ७३; हे १, १३; ११५; षड्)।

दुस्सहिय वि [दुस्सोढ़] दुःख से सहन किया हुआ (सूअ १, ३, १)।

दुस्सासण पुं [दुश्शासन] दुर्योधन का एक छोटा भाई, कौरव-विशेष (चारु १२; वेणी १०७)।

दुस्साहड वि [दुस्संहृत] दुःख से एकत्रित किया हुआ, 'दुस्साहडं धणं हिच्चा बहु संचिणिया रयं' (उत्त ७, ८)।

दुस्साहिअ त्रि [दौस्साधिक] दुस्साध्य कार्य को करनेवाला (पि ८४)।

दुस्सिक्ख वि [दुशिशक्ष] दुष्ट शिक्षावाला, दुशिशक्षित, दुर्विदग्ध (उप १४६ टी; कुप्र २८३)।

दुस्सिक्खिअ पि [दुशिशक्षित] ऊपर देखो (गा ६०३)।

दुस्सिज्जा स्त्री [दुश्शय्या] खराब शय्या (दस ८)।

दुस्सिलिट्ठ वि [दुश्श्लिष्ट] कुत्सित श्लेष-वाला (पि १३६)।

दुस्सील वि [दुश्शील] दुष्ट स्वभाववाला। २ व्यभिचारी (पण्ह १, १; सुपा ११०)। स्त्री. °ला (पाअ)।

दुस्सुमिण पुंन [दुस्स्वप्न] दुष्ट स्वप्न, खराब स्वप्न—सपना (पण्ह १, २)।

दुस्सुय न [दुश्श्रुत] १ दुष्ट शास्त्र। २ वि. श्रुति-कटु (पण्ह १, २)।

दुस्सेज्जा देखो दुस्सिज्जा (उव)।

दुह सक [दुह्] दूहना, दूध निकालना। दुहेज्जह (महा)। कर्म. दुहिज्जइ, दुब्भइ (हे ४, २४५)। भवि. दुहिहिइ, दुब्भिहिइ (हे ४, २४५)।

दुह सक [द्रुह्] द्रोह करना, द्वेष करना, वैर करना। दुहइ (विचार ६४७)।

दुह देखो दोह = दोह (राज)।

दुह देखो दुक्ख = दुःख (हे २, ७२; प्रासू २६; २८; १६२)। °अ वि [°द] दुःख देनेवाला, दुःख-जनक (सुपा ४३४)। °ट्ट वि [°र्त] दुःख से पीड़ित (विपा १, १; सुपा ३३८)। °ट्टिय वि [°र्तित] दुःख से पीड़ित (औप)। °ट्ठ पुं [°र्थ] नरक-स्थान (सूअ १, ५, १)। °त्त देखो °ट्ट (उप पृ ७६; ७२८ टी)। °फास पुं [°स्पर्श] दुःख-जनक स्पर्श (णाया १, १२)। °भागि वि [°भागिन्] दुःख में भागीदार (सुपा ४३१)। °मच्चु पुं [°मृत्यु] अपमृत्यु, अकाल मौत (सुर ८, ५३)। °विवाग पुं [°विपाक] दुःख रूप कर्म-फल (विपा १, १)। °सिज्जा, °सेज्जा स्त्री [°शय्या] दुःख-जनक शय्या (ठा ४, ३)। °वह वि [°वह] दुःख-जनक (पउम ८२, ६१; सुर ८, १६२; प्रासू १६६)।

दुह° देखो दुहा (भग ८, ८)।

दुहअ वि [दे] चूर्णित, चूर-चूर किया हुआ (दे ५, ४५)।

दुहअ वि [दुर्हत] खराब रीति से मारा हुआ (आचा)।

दुहअ वि [द्विहत] दो से मारा हुआ (आचा)।

दुहअ देखो दुब्भग (षड्)।

दुहओ अ [द्विधातस्] दोनों तरफ से, उभय प्रकार से (आचा; ठा ५, ३, कस; भग; पुप्फ ४७०; श्रा २७)।

दुहंड वि [द्विखण्ड] दो टुकड़ेवाला; 'किच्चेव बिंबं (? णो) दुहंडं' (रंभा)।

दुहग देखो दुब्भग (कम्म ३, ३)।

दुहट्ट वि [दुर्घट्ट] दुर्निरोध, दुर्वार (णाया १, ८)।

दुहण देखो दुघण (पण्ह १, १—पत्र १८)।

दुहण पुं [द्रुहण] प्रहरण-विशेष, 'चम्मेट्ठ-°घणमोट्ठियमोग्गरवरफलिहजंतपत्थरदुहणतोण-कुवेणी—' (पण्ह १, ३—पत्र ४४)।

दुहण न [दोहन] दोह, दोहना (पण्ह १, २)।

दुहदुहग पुं [दुहदुहक] 'दुह-दुह' आवाज (राय १०१)।

दुहव देखो दूहव (पि ३४०; हे १, ११५ टी)। स्त्री. वी° (पि २३१)।

दुहा अ [द्विधा] दो प्रकार, दो तरफ, उभ-यथा (जी ८; प्रासू १४४)। °इअ वि [°कृत] जिसको दो खण्ड किये गये हों वह (प्राप्र; कुमा)।

दुहाकर सक [द्विधा + कृ] दो खण्ड करना। कर्म. दुहाइज्जइ, दुहाकिज्जइ (प्राप्र; हे १, ९७)। कवकृ. °कज्जमाण, °किज्जमाण (पि ५४७; ४३६)। संकृ. °काउं (महा)।

दुहाव सक [छिद्] छेदना, छेदा करना, खण्डित करना। दुहावइ (हे ४, १२४)।

दुहाव सक [दुःखय्] दुःखी करना, दुभाना, दुखाना (प्रामा)।

दुहावण वि [दुःखन] दुःखी करनेवाला (सण)।

दुहाविअ वि [छिन्न] खण्डित (पाअ; कुमा)।

दुहाविअ वि [दुःखित] दुःखी किया हुआ (गउड)।

दुहि वि [दुःखिन्] दुःखी, व्यथित, पीड़ित (उप ९८६ टी)। स्त्री. °णी (कुमा)।

दुहिअ वि [दुःखित] पीड़ित, दुःखयुक्त (हे २, १६४; कुमा; महा)।

दुहिअ वि [दुग्ध] जिसका दोहन किया गया हो वह (दे १, ७)। °दुज्झ वि [°दोह्य] एक बार दोहने पर फिर भी दोहने योग्य; फिर-फिर दोहने योग्य (दे १, ७; ५, ४६)।

दुहिआ [दुहितृ] लड़की, पुत्री (सुपा १७६; हे ३, ३५)। °दइअ पुं [°दयित] जामाता (सुपा ४५७)।

दुहिण पुं [द्रुहिण] ब्रह्मा, चतुर्मुख; 'अवि दुहिणप्पमुहेहिं आणत्ती तुह अलंघणिज्जपहावा' (अच्चु १६)।

दुहित्त पुं [दौहित्र] लड़की का लड़का, नाती (उप पृ ७४)।

दुहित्तिया स्त्री [दौहित्रिका] लड़की की लड़की, नतिनी (उप पृ ७४)।

दुहित्ती स्त्री [दौहित्री] लड़की की लड़की, नतिनी या नातिन; 'पुत्ती तह दुहित्ती होइ य भज्जा सवक्की य' (श्रु ११७)।

दुहिदिआ (शौ) स्त्री [दुहितृ] लड़की, कन्या (प्राकृ ९५)।

दुहिल वि [द्रुहिल] द्रोही, द्रोह करनेवाला (विसे ९९९ टी)।

दू सक [दू] १ उपताप करना। २ काटना। कर्म. 'दुज्जंतु उच्छू' (पण्ह १, २)।

दूअ पुं [दूत] दूत, संदेश-हारक (पाअ; पउम ५३, ४३; ४६)।

दूआ देखो धूआ (षड्)।

दूइ° देखो दूई। °**पलासय** न [°पलाशक] एक चैत्य (उवा)।

दूइज्ज सक [द्रु] गमन करना, विहरना, जाना। दूइज्जइ (आचा)। वकृ. दूइज्जंत, दूइज्जमाण (औप; णाया १, १; भग; आचा; महा)। हेकृ. दूइज्जित्तए (कस)।

दूइत्त न [दूतीत्व] दूती का कार्य, दूतीपन (पउम ५३, ४५)।

दूई स्त्री [दूती] १ दूत के काम में नियुक्त की हुई स्त्री, समाचार-हारिणी, कुटनी (हे ४, ३६७)। २ जैन साधुओं के लिये भिक्षा का एक दोष (ठा ३, ४—पत्र १६६)। °**पिंड** पुं [°पिण्ड] समाचार पहुँचाने से मिली हुई भिक्षा (आचा २, १, ६)। देखो दूइ°।

दूण वि [दून] हैरान किया हुआ; 'हा पियवयंस दूढो (? णो) मए तुमं' (स ७६३)।

दूण पुं [दे] हस्ती, हाथी (दे ५, ४४; षड्)।

दूण (अप) देखो दुउण (पिंग)।

दूणावेढ वि [दे] १ अशक्य। २ तड़ाग, तलाव, तालाब (दे ५, ५६)।

दूभ अक [दुःखय्] दूभना, दुःखित होना, 'तम्हा पुत्तोवि दूभिज्जा पहसिज्ज व दुज्जणो' (श्रा १२)।

दूभग देखो दुब्भग (णाया १, १६—पत्र १६६)।

दूभग्ग न [दौर्भाग्य] दुष्ट भाग्य, खराब नसीब (उप पृ ३१)।

दूम सक [दु, दावय्] परिताप करना, संताप करना। दूमइ, दूमेइ (सुपा ८; प्राप्र; हे ४, २३)। कर्म. दूमिज्जइ (भवि)। वकृ. दूमेंत (से १०, ६३)। कवकृ. दूमिज्जंत (सुपा २६६)।

दूम देखो दुम=धवलय् (हे ४, २४)।

दूमक } वि [दावक] उपताप-जनक, पीड़ा-
दूमग } जनक (पण्ह १, ३; राज)।

दूमण वि [दावक] उपताप करनेवाला (सूअ १, २, २, २७)।

दूमण न [दवन, दावन] परिताप, पीड़न (पण्ह १, १)।

दूमण न [धवलन] सफेद करना (वव ४)।

दूमण देखो दुम्मण=दुर्मनस् (सूअ १, २, २)।

दूमणाइअ वि [दुर्मनायित] जो उदास हुआ हो, उद्विग्न-मनस्क (नाट—मालती ६६)।

दूमिअ [दून, दावित] संतापित, पीड़ित (सुपा १०; १३३; २३०)।

दूमिअ वि [धवलित] सफेद किया हुआ (हे ४, २४; कप्प)।

दूयाकार न [दे] कला-विशेष (स ६०३)।

दूर न [दूर] १ अनिकट, असमीप; 'रुसेव जस्स कित्ती गया दूरं' (कुमा)। २ अतिशय, अत्यन्त; 'दूरमहरं डसंते' (कुमा)। ३ वि. दूरस्थित, असमीपवर्ती (सूअ १, २, २)। ४ व्यवहित, अन्तरित (गउड)। °**ग** वि [°ग] दूरवर्ती, असमीपस्थ (उप ६४८ टी; कुमा)। °**गइ**, °**गइअ** वि [°गतिक] १ दूर जानेवाला। सौधर्म आदि देवलोक में उत्पन्न होनेवाला (ठा ८)। °**तराग** वि [°तर] अत्यन्त दूर (पण्ण १७)। °**त्थ** वि [°स्थ] दूरस्थित, दूरवर्ती (कुमा)। °**भविय** पुं [°भव्य] दीर्घ काल में मुक्ति को प्राप्त करने की योग्यतावाला जीव (उप ७२८ टी)। °**य** देखो °ग (सूअ १, ५, २)। °**वत्ति** वि [°वर्तिन्] दूर में रहनेवाला (पि ६४)। °**ालइय** वि [°ालयिक] मुक्तिगामी (आचा)। °**ालय** पुं [°ालय] १ दूर-स्थित आश्रय। २ मोक्ष। ३ मुक्ति का मार्ग (आचा)।

दूरंगइअ देखो दूर-गइअ (औप)।

दूरंतरिअ वि [दूरान्तरित] अत्यन्त-व्यवहित (गा ६५८)।

दूरचर वि [दूरचर] दूर रहनेवाला (धम्मो १०)।

दूराय सक [दूराय्] दूरस्थित की तरह मालूम होना, दूरवर्ती मालूम पड़ना। वकृ. दूरायमाण (गउड)।

दूरीकय वि [दूरीकृत] दूर किया हुआ (श्रा २८)।

दूरीहूअ वि [दूरीभूत] जो दूर हुआ हो (सुपा १५८)।

दूरुल्ल वि [दूरवत्] दूरस्थित, दूरवर्ती (आव ४)।

दूलह देखो दुल्लह (संक्षि १७)।

दूस अक [दुष्] दूषित होना, विकृत होना। दूसइ (हे ४, २३५; संक्षि ३६)।

दूस सक [दूषय्] दोषित करना, दूषण—दोष लगाना। दूसइ (भवि), दूसेइ (बृह ४)।

दूस न [दूष्य] १ वस्त्र, कपड़ा (सम १५१; कप्प)। २ तंबू, पट-कुटी (दे ५, २८)। °**गणि** पुं [°गणिन्] एक जैन आचार्य (णंदि)। °**मित्त** पुं [°मित्र] मौर्यवंश के नाश होने पर पाटलिपुत्र में अभिषिक्त एक राजा (राज)। °**हर** न [°गृह] तंबू, पट-कुटी (स २६७)।

दूसअ वि [दूषक] दोष प्रकट करनेवाला (वज्जा ६८)।

दूसग वि [दूषक] दूषित करनेवाला (सुपा २७५; सं १२४)।

दूसग वि [दूषक] दूषण निकालनेवाला, दोष देखनेवाला (धर्मवि ८५)।

दूसण न [दूषण] दूषित करना (अच्चु ७३)।

दूसण न [दूषण] १ दोष, अपराध। २ कलंक, दाग (तंदु)। ३ पुं. रावण की मौसी का लड़का (पउम १६, २५)। ४ वि. दूषित करनेवाला (स ५२८)।

दूसम वि [दुष्षम] १ खराब, दुष्ट। २ पुं. काल-विशेष, पाँचवाँ आरा; 'दूसमे काले' (सट्ठि १५६)। °**दूसमा** देखो दुस्सम-दुस्समा (सम ३६; ठा १; ६)। °**सुसमा** देखो दुस्समसुसमा (ठा २, ३; सम ६४)।

दूसमा देखो दुस्समा (सम ३६; उप ८३३ टी; सं ३४)।

दूसर देखो दुस्सर (राज)।

दूसल वि [दे] दुर्भग, अभागा (दे ५, ४३; षड्)।

दूसह देखो दुस्सह (हे १, १३, ११५)।

दूसहणीअ वि [दुस्सहनीय] दुस्सह, असह्य (पि ५७१)।

दूसासण देखो दुस्सासण (हे १, ४३)।

दूसाहिअ वि [दौस्साधिक] दुसाध जाति में उत्पन्न, अस्पृश्य जाति का (प्राकृ १०)।

दूसि पुं [दूषिन्] नपुंसक का एक भेद; 'दोसुवि वेएसु सज्जए दूसी' (बृह ४)।

दूसिअ वि [दूषित] १ दूषण-युक्त, कलङ्क-युक्त (महा; भवि)। २ पुं. एक प्रकार का नपुंसक (बृह ४)।

दूसिआ स्त्री [दूषिका] आँख का मैल (कुमा)।

दूसुमिण देखो दुस्सुमिण (कुमा)।

दूहअ वि [दुःखक] दुःख-जनक, 'असईएं दूहओ चंदो' (वज्जा ६८)।

दूहट्ट वि [दे] लज्जा से उद्विग्न (दे ५, ४८)।

दूहय देखो दोधअ (सिरि ६६१)।

दूहल वि [दे] दुर्भग, मन्दभाग्य (दे ५, ४३)।

दूहव देखो दुब्भग (हे १, ११५; १९२; कुमा; सुपा ५९७; भवि)।

दूहव सक [दुःखय्] दूभाना, दुःखी करना। दूहवेइ (सिरि १६७)।

दूहविअ वि [दुःखित] दुःखी किया हुआ दूभाया हुआ; 'किं केणवि दूहविया' (कुम्मा १२)।

दूहिअ वि [दुःखित] दुःख-युक्त (हे १, १३; संक्षि १७)।

दे अ. इन अर्थों का सूचक अव्यय। १ संमुख-करण। २ सखी को आमन्त्रण (हे २, १९२)।

दे अ [दे] पाद-पूरक अव्यय (प्राकृ ८१)।

देअ देखो देव (मुद्रा १६१; चंड)।

देअर देखो दिअर (कुमा; काप्र २२४; महा)।

देअराणी स्त्री [देवरपत्नी] देवरानी, पति के छोटे भाई की बहू (दे १, ५१)।

देई देखो देवी (नाट—उत्त १८)।

देउल न [देवकुल] देव-मन्दिर (हे १; १७१; कुमा)। °णाह पुं [°नाथ] मन्दिर का स्वामी (षड्)। °वाडय पुंन [°पाटक] मेवाड़ का एक गाँव; 'देउलवाडयपत्तं तुट्टण-सीलं च अइमहग्घं' (वज्जा ११६)।

देउलिअ वि [दैवकुलिक] देव स्थान का परिपालक (ओघ ४० भा)।

देउलिआ स्त्री [देवकुलिका] छोटा देव-स्थान (उप पृ ३६६; ३२० टी)।

देंत देखो दा = दा।

देक्ख सक [दृश्] देखना; अवलोकन करना। देक्खइ (हे ४, १८१)। वकृ. देक्खंत (अभि १४१)। संकृ. देक्खिअ (अभि १६६)।

देक्खालिअ वि [दर्शित] दिखाया हुआ, बतलाया हुआ (सुर १, १५२)।

देख (अप) देखो देक्ख। देखइ (भवि)।

देट्ठ देखो दिट्ठ = दृष्ट (प्रति ४०)।

देण्ण देखो दइण्ण (गाया १, १—पत्र ३३)।

देपाल पुं [देवपाल] एक मंत्री का नाम (ती २)।

देप्प देखो दिप्प = दीप्। वकृ.—**देप्पमाण** (कुप्र ३४४)।

देय
देयमाण } देखो दा = दा।

देर देखो दार = द्वार (हे १, ७९; २, १७२; दे ६, ११०)।

देव उभ [दिव्] १ जीतने की इच्छा करना। २ पण करना। ३ व्यवहार करना। ४ चाहना। ५ आज्ञा करना। ६ अव्यक्त शब्द करना। ७ हिंसा करना। देवइ (संक्षि ३३)।

देव पुंन [देव] १ अमर, सुर, देवता; 'देवाणि, देवा' (हे १, ३४; जी १९, प्रासू ८६)। २ मेघ। ३ आकाश। ४ राजा, नरपति; 'तहेव मेहं व नहं व माणवं न देव देवत्ति गिरं वएज्जा' (दस ७, ५२; भास ९६)। ५ पुं. परमेश्वर, देवाधिदेव (भग १२, ९; दंस ५; सुपा १३)। ६ साधु, मुनि, ऋषि (भग १२, ९)। ७ द्वीप-विशेष। ८ समुद्र-विशेष (पण्ण १५)। ९ स्वामी, नायक (आचू ५)। १० पूज्य, पूजनीय (पंचा १)। °उत्त वि [°उप्त] देव से बोया हुआ। २ देव-कृत; 'देवउत्ते अयं लोए' (सूअ १, १, ३)। °उत्त वि [°गुप्त] १ देव से रक्षित (सूअ १, १, ३)। २ ऐरवत क्षेत्र के एक भावी जिनदेव (स १५४)। °उत्त पुं [°पुत्र] देव-पुत्र (सूअ १, १, ३)। °उल न [°कुल] देव-गृह, देव-मन्दिर (हे १, २७१; सुपा २०१)। °उलिया स्त्री [°कुलिका] देहरी, छोटा देव-मन्दिर (कुप्र १४४)। °कन्ना स्त्री [°कन्या] देव-पुत्री (णाया १, ८)। °कहकहय पुं [°कहकहक] देवताओं का कोलाहल (जीव ३)। °किब्बिस पुं [°किल्बिष] चाण्डाल-स्थानीय देव-जाति (ठा ४, ४)। °किब्बिसिय पुं [°किल्बिषिक] एक अधम देव-जाति (भग ९, ३३)। °किब्बिसीया स्त्री [°किल्बिषीया] देखो देवकिब्बिसिया (बृह १)। °कुरा स्त्री [°कुरा] क्षेत्र विशेष, वर्ष-विशेष (इक)। °कुरु पुं [°कुरु] वही अर्थ (पण्ह १, ४; सम ७०; इक)। °कुल देखो °उल (पि १६८; कप्प)। °कुलिय पुं [°कुलिक] पुजारी (आवम)। °कुलिया देखो °उलिआ (कुप्र १४४)। °गइ स्त्री [°गति] देवयोनि (ठा ५, ३)। °गणिया स्त्री [°गणिका] देव-वेश्या, अप्सरा (णाया १,१६)। °गिह न [°गृह] देव-मन्दिर (सुपा; १३; ३४८)। °गुत्त पुं [°गुप्त] १ एक परिव्राजक का नाम (औप)। २ एक भावी जिनदेव (तित्थ)। °चंद पुं [°चन्द्र] एक जैन उपासक का नाम (सुपा ६३२)। सुप्रसिद्ध श्री हेमचन्द्राचार्य के गुरु का नाम (कुप्र १९)। °च्चय वि [°ार्चक] १ देव की पूजा करनेवाला। २ पुं. मन्दिर का पुजारी (कुप्र ४४१; ती १५)। °च्छंदग न [°च्छन्दक] जिनदेव का आसन (जीव ३; राय)। °जस पुं [°यशस्] एक जैन मुनि (अंत ३; सुपा ३४२)। °जाण न [°यान] देव का वाहन (पंचा २)। °जिण पुं [°जिन] एक भावी जिनदेव का नाम (पव ७)। °ड्ढि देखो देविड्ढि (ठा ३, ३; राज)। °णाअअ पुं [°नायक] नीचे देखो (अच्चु ३७)। °णाह पुं [°नाथ] १ इन्द्र। २ परमेश्वर, परमात्मा (अच्चु ६७)। °तम न [°तमस्] एक प्रकार का अन्धकार (ठा ४, २)। °त्थुइ, °थुइ स्त्री [°स्तुति] देव का गुणानुवाद (प्राप्र)। °दत्त पुं [°दत्त] व्यक्तिवाचक नाम (उत्त ६; पिंड; पि ५६६)। °दत्ता स्त्री [°दत्ता] व्यक्ति-वाचक नाम (विपा १, १; ठा १०)। °दव्व न [°द्रव्य] देव-संबन्धी द्रव्य (कम्म १, ५६)। °दार न [°द्वार] देव-गृह विशेष का पूर्वीय द्वार, सिद्धायतन का एक द्वार (ठा ४, २)। °दारु पुं [°दारु] वृक्ष-विशेष, देवदार का पेड़ (पउम ५३, ७९)। °दाली स्त्री [°दाली] वनस्पति-विशेष, रोहिणी

(पएण १७—पत्र ५३०)। °दिण्ण, °दिन्न पुं [°दत्त] व्यक्ति-वाचक नाम, एक सार्थवाह-पुत्र (राज; णाया १, २—पत्र ८३)। °दीव पुं [°द्वीप] द्वीप-विशेष (जीव ३)। °दूस न [°दूष्य] देवता का वस्त्र, दिव्य वस्त्र (जीव ३)। °देव पुं [°देव] १ परमेश्वर, परमात्मा, (सुपा ५००)। २ इन्द्र, देवों का स्वामी (ग्राचू ५)। °नट्टिया स्त्री [°नर्तिका] नाचनेवाली देवी, देव-नटी (ग्रजि ३१)। °नयरी स्त्री [°नगरी] ग्रमरावती, स्वर्ग-पुरी (पउम ३२, ३५)। °पडिक्खोभ पुं [°प्रति-क्षोभ] तमस्काय, ग्रन्धकार (भग ६, ५)। °पलिक्खोभ पुं [°परिक्षोभ] कृष्ण-राजि (भग ६, ५)। °पव्वय पुं [°पर्वत] पर्वत-विशेष (ठा २, ३—पत्र ८०)। °प्पसाय पुं [°प्रसाद] राजा कुमारपाल के पितामह का नाम (कुप्र ५)। °फलिह पुं [°परिघ] तमस्काय, ग्रन्धकार (भग ६, ५)। °भद्द पुं [°भद्र] १ देव-द्वीप का ग्रधिष्ठाता देव (जीव ३)। २ एक प्रसिद्ध जैनाचार्य (सार्ध ८३)। °भूमि स्त्री [°भूमि] १ स्वर्ग, देवलोक। २ मरण; मृत्यु; 'ग्रह ग्रन्नया य सिट्ठी थिरदेवो देवभूमिमणुपत्तो' (सुपा ५८२)। °महाभद्द पुं [°महाभद्र] देव-द्वीप का ग्रधिष्ठाता देव (जीव ३)। °महावर पुं [°महावर] देव नामक समुद्र का ग्रधिष्ठायक देव-विशेष (जीव ३; इक)। °रइ पुं [°रति] एक राजा (भत्त १२२)। °रक्ख पुं [°रक्ष] राक्षस-वंशीय एक राज-कुमार (पउम ५, १६६)। °रण्ण न [°रण्य] तमस्काय, ग्रन्धकार (ठा ४, २)। °रमण न [°रमण] १ सौभाञ्जनी नगरी का एक उद्यान (विपा १, ४)। २ रावण का एक उद्यान (पउम ४६, १५)। °राय पुं [°राज] इन्द्र (पउम २, ३८; ४६, ३६)। °रिसि पुं [°ऋषि] नारद मुनि (पउम ११, ६८; ७८, १०)। °लोअ, °लोग पुं [°लोक] १ स्वर्ग (भग; णाया १, ४; सुपा ६१५; श्रा १६)। २ देव-जाति; 'कइविहा णं भंते देवलोगा पएणत्ता ? गोयमा चउव्विहा देवलोगा पएणत्ता, तं जहा—भवणवासी, वाणमंतरा, जोइसिया, वेमाणिया' (भग ५, ६)। °लोगगमण न [°लोकगमन] स्वर्ग में उत्पत्ति; 'पाग्रोवगमणाइं देवलोगगमणाइं कुसुलपच्चायाया पुणो बोहिलाभा' (सम १४२)। °वर पुं [°वर] देव-नामक समुद्र का ग्रधिष्ठायक एक देव (जीव ३)। °वहू स्त्री [°वधू] देवांगना, देवी (ग्रजि ३०)। °सणत्ती स्त्री [°संज्ञप्ति] १ देव-कृत प्रतिबोध। २ देवता के प्रतिबोध से ली हुई दीक्षा (ठा १०—पत्र ४७३)। °सणिवाय पुं [°सन्निपात] १ देव-समागम (ठा ३, १)। २ देव-समूह। ३ देवों की भीड़ (राय)। °सम्म पुं [°शर्मन्] १ इस नाम का एक ब्राह्मण (महा)। २ ऐरवत क्षेत्र में उत्पन्न एक जिनदेव (सम १५३)। °साल न [°शाल] एक नगर का नाम (उप ७६८ टी)। °सुंदरी स्त्री [°सुन्दरी] देवांगना, देवी (ग्रजि २८)। °सुय देखो °स्सुय (पव ७)। °सेण पुं [°सेन] १ शतद्वार नगर का एक राजा, जिसका दूसरा नाम महापद्म था (ठा ६—पत्र ४५६)। २ ऐरवत क्षेत्र के एक जिनदेव (पव ७)। ३ भरत-क्षेत्र के एक भावी जिनदेव के पूर्वभव का नाम (ती १६)। ४ भगवान् नेमिनाथ का एक शिष्य, एक ग्रन्तकृद् मुनि (ग्रंत)। °स्स न [°स्व] देव-द्रव्य, जिन-मन्दिर-संबन्धी धन (पंचा ५)। °स्सुय पुं [°श्रुत] भरत-क्षेत्र के छठवें भावी जिन-देव (सम १५३)। °हर न [°गृह] देव-मन्दिर (उप ४११)। °इदेव पुं [°तिदेव] ग्रर्हन् देव, जिन भगवान् (भग १२, ६)। °णंद पुं [°नन्द] ऐरवत क्षेत्र में ग्रागामी उत्सर्पिणी काल में उत्पन्न होनेवाले चौबीसवें जिनदेव (सम १५४)। °णंदा स्त्री [°नन्दा] १ भगवान् महावीर की प्रथम माता (ग्राचा २, १५, १)। २ पक्ष की पनरहवीं रात्रि का नाम (कप्प)। °णुप्पिय पुं [°नुप्रिय] भद्र, महाशय, महानुभाव, सरल-प्रकृति (ग्रौप; विपा १, १; महा)। °यरिअ पुं [°चार्य] एक सुप्रसिद्ध जैन ग्राचार्य (गु ७)। °रन्न देखो °रण्ण (भग ६, ५)। २ देवों का क्रीड़ा-स्थान (जो ६)। °लय पुंन [°लय] स्वर्ग (उप २६४ टी)। °हिदेव पुं [°धिदेव] परमेश्वर, परमात्मा, जिनदेव (सम ४३; सं ५)। °हिवइ पुं [°धिपति] इन्द्र, देव-नायक (सूग्र १, ६)।

देव पुंन [देव] एक देव-विमान (देवेन्द्र १३३)। °कुरु स्त्री [°कुरु] भगवान् मुनि-सुव्रत स्वामी की दीक्षा-शिविका का नाम (विचार १२६)। °च्छंदय पुंन [°च्छन्दक] कमानदार घूमटवाला दिव्य ग्रासन-स्थान (ग्राचा २, १५, ५)। °तमिस्स पुंन [°तमिस्र] ग्रन्धकार-राशि, तमस्काय (भग ६, ५—पत्र २६८)। °दिन्ना स्त्री [°दत्ता] भगवान् वासुपूज्य की दीक्षा-शिविका (विचार १२६)। °पलिक्खोभ पुं [°परिक्षोभ] कृष्णराजि, कृष्णवर्ण पुद्गलों की रेखा (भग ६, ५—पत्र २७०)। °रमण पुं [°रमण] नन्दीश्वर द्वीप के मध्य में पूर्व-दिशा स्थित एक ग्रंजनगिरि (पव २६६ टी)। °वूह पुं [°व्यूह] तमस्काय (भग ६, ५—पत्र २६८)।

देव देखो दइव (उप ३५६ टी; महा; हे १, १५३ टी)। °न्नु वि [°ज्ञ] जौतिष-शास्त्र का जानकार (सुपा २०१)। °पर वि [°पर] भाग्य पर ही श्रद्धा रखनेवाला (षड्)।

देवइ स्त्री [देवकी] श्रीकृष्ण की माता, ग्रागामी उत्सर्पिणी काल में होनेवाले एक तीर्थंकर-देव का पूर्व भव (पउम २०, १८५; सम १५२; १५४)। देखो देवकी।

देवउप्फ न [दे] पक्व पुष्प, पका हुग्रा फल (दे ५, ४६)।

देवं देखो दा = दा।

देवंग न [दे. दिव्याङ्ग] देवदूष्य वस्त्र (उप ७३८)।

देवंगण न [देवाङ्गण] स्वर्ग, 'दिक्खं गहिउं च देवंगणे रमइ' (सम्मत्त १६०)।

देवंधकार देखो देवंधगार (भग ६, ५—पत्र २६८)।

देवंधगार पुं [देवान्धकार] तिमिर-निचय, ग्रन्धकार का समूह (ठा ४, २)।

देवकिब्बिस पुं [देवकिल्बिष] एक ग्रधम देव जाति (ठा ४, ४—पत्र २७४)।

देवकिब्बिसिया स्त्री [दैवकिल्बिषिकी] भावना-विशेष, जो ग्रधम देव-योनि में उत्पत्ति का कारण है (ठा ४, ४)।

देवकी देखो **देवई** । °**णंदण** पुं [°**नन्दन**] श्रीकृष्ण (वेणी १८३) ।

देवय वि [**दैव्य**] देव-सम्बन्धी (पव १२५) ।

देवय न [**दैवत**] देव, देवता (सुपा १५७) ।

देवय देखो **देव** = देव (महा; गाया १, १८) ।

देवया स्त्री [**देवता**] १ देव, अमर (अभि ११७; अणु) । २ परमेश्वर, परमात्मा (पंचा १) ।

देवर देखो **दिअर** (हे १, १८६; सुपा ४८५) ।

देवराणी देखो **देअराणी** (दे १, ५१) ।

देवसिय वि [**दैवसिक**] दिवस-संबन्धी (ओघ ६२६; ६३६; सुपा ४१६) ।

देवसिआ स्त्री [**देवसिका**] एक पतिव्रता स्त्री, जिसका दूसरा नाम देवसेना था (पुप्फ ६७) ।

देविंद पुं [**देवेन्द्र**] १ देवों का स्वामी, इन्द्र (हे ३, १६२; गाया; १, ८, प्रासू १०७) । २ एक प्रसिद्ध जैनाचार्य और ग्रन्थकार (भाव २१) । °**सूरि** पुं [°**सूरि**] एक प्रसिद्ध जैनाचार्य और ग्रन्थकार (कम्म ३, २४) ।

देविंदय पुं [**देवेन्द्रक**] देवविमान-विशेष (देवेन्द्र १२८) ।

देविड्ढि स्त्री [**देवर्द्धि**] १ देव का वैभव । २ पुं. एक सुप्रसिद्ध जैन आचार्य और ग्रन्थकार (कप्प) ।

देविय वि [**दैविक**] देव-संबन्धी (सुर ४, २३६) ।

देविल पुं [**देविल**] एक प्राचीन ऋषि (सूअ १, ३, ४, ३) ।

देवी स्त्री [**देवी**] १ देव-स्त्री (पंचा २) । २ रानी, राज-पत्नी (विपा १, १; ५) । ३ दुर्गा, पार्वती (कप्पू) । ४ सातवें चक्रवर्त्ती और अठारहवें जिन-देव की माता (सम १५१; १५२) । ५ दशवें चक्रवर्ती की अग्र-महिषी (सम १५२) । ६ एक विद्याधर-कन्या (पउम ६, ४) ।

देवीकय वि [**देवीकृत**] देवी से बनाया हुआ, 'अणिमिसणअणो सअलो जीए देवीकओ लोओ' (गा ५९२) ।

देवुक्कलिआ स्त्री [**देवोत्कलिका**] देवों की ठठ, देवों की भीड़ (ठा ४, ३) ।

देवेसर पुं [**देवेश्वर**] इन्द्र, देवों का राजा (कुमा) ।

देवोद पुं [**देवोद**] समुद्र-विशेष (जीव ३; इक) ।

देवोववाय पुं [**देवोपपात**] भरतक्षेत्र में आगामी उत्सर्पिणी काल में होनेवाले तेईसवें जिन-देव (सम १५४) ।

देव्व देखो **दिव्व** = दिव्य (उप ६८६ टी) ।

देव्व देखो **दइव** (गा १३२; महा; सुर ११, ४; अभि ११७); 'एसो य देव्वो णाम अणाराहणीओ विण्णएण' (स १२८) । °**ज्ज**, °**ण्ण**, °**ण्णु** वि [°**ज्ञ**] जोतिषी, ज्योतिष-शास्त्र को जाननेवाला (षड्; कप्पू) ।

देव्वजाणुअ } **देव्वण्णुअ** } देखो **देव्व-ज्ज** (प्राकृ १८) ।

देस पुं [**देश**] एक सौ हाथ परिमित जमीन, 'हत्थसयं खलु देसो' (पिंड ३४४) । °**देस** पुं [°**देश**] सौ हाथ से कम जमीन (पिंड ३४४) । °**राग** पुं [°**राग**] देश-विशेष (आचा २, ५, १, ७) ।

देस सक [**देशय्**] १ कहना, उपदेश देना । २ बतलाना । वकृ. **देसयंत** (सुपा ४८५; सुर १५, २४८) । संकृ. **देसित्ता** (हे १, ८८) ।

देस पुं [**देश**] १ अंश, भाग (ठा २, २; कप्प) । २ देश, जनपद (ठा ५, ३; कप्प; प्रासू ४२) । ३ अवसर (विसे २०६३) । ४ स्थान, जगह (ठा ३, ३) । °**कहा** स्त्री [°**कथा**] जनपद-वार्ता (ठा ४, २) । °**काल** देखो °**याल** (विसे २०६३) । °**जइ** पुं [°**यति**] श्रावक, उपासक, जैन गृहस्थ (कम्म २ टी; आउ) । °**ण्णु** वि [°**ज्ञ**] देश की स्थिति को जाननेवाला (उप १७६ टी) । °**भासा** स्त्री [°**भाषा**] देश की बोली (बृह ६) । °**भूसण** पुं [°**भूषण**] एक केवलज्ञानी महर्षि (पउम ३६, १२२) । °**याल** पुं [°**काल**] प्रसंग, अवसर, योग्य समय (पउम ११, ६३) । °**राय** वि [°**राज**] देश का राजा (सुपा ३५२) । °**वगासिय** देखो °**विगासिय** (सुपा ५६६) । °**विरइ** स्त्री [°**विरति**] श्रावक धर्म, जैन गृहस्थ का व्रत, अणुव्रत, हिंसा आदि का आंशिक त्याग (पंचा १०) । °**विरय** वि [°**विरत**] श्रावक, उपासक । २ न. पाँचवाँ गुण-स्थानक (पव २२) । °**विराहय** वि [°**विराधक**] व्रत आदि में आंशिक दूषण लगानेवाला (भग ८, ६) । °**विराहि** वि [°**विराधिन्**] वही अर्थ (णाया १, ११—पत्र १७१) । °**विगास** न [°**विकाश**] श्रावक का एक व्रत (सुपा ५६२) । °**विगासिय** न [°**विकाशिक**] वही अर्थ (औप; सुपा ५६६) । °**हिव** पुं [°**धिप**] राजा (पउम ६६, ५३) । °**हिवइ** पुं [°**धिपति**] राजा (बृह ४) ।

देस देखो **वेस** = द्वेष (रयण ३६) ।

देसंतरिअ वि [**देशान्तरिक**] भिन्न देश का, विदेशी (उप १०३१ टी; कुप्र ४१३) ।

देसग देखो **देसय** (द्र २६) ।

देसण न [**देशन**] कथन, उपदेश, प्ररूपण (दं १) । २ वि. उपदेशक, प्ररूपक । स्त्री. °**णी** (दस ७) ।

देसणा स्त्री [**देशना**] उपदेश, प्ररूपण (राज) ।

देसय वि [**देशक**] १ उपदेशक, प्ररूपक (सम १) । २ दिखलानेवाला, बतलानेवाला (सुपा १८६) ।

देसराग वि [**दैशराग**] 'देशराग' देश में बना हुआ, 'देसरागाणि वा' (आचा २, ५, १, ७) ।

देसि वि [**द्वेषिन्**] द्वेष करनेवाला (रयण ३६) ।

देसि } **देसिअ** } वि [**देशिन्**] १ अंशी, आंशिक, भागवाला (विसे २२४७) । २ दिखलानेवाला । ३ उपदेशक (विसे १४२५, भास २८) ।

देसिअ वि [**देश्य, दैशिक**] देश में उत्पन्न, देश-संबन्धी (उप ७६८ टी; अच्चु ६) । °**सद्द** पुं [°**शब्द**] देशीभाषा का शब्द (वजा ६) ।

देसिअ वि [**देशित**] १ कथित, उपदिष्ट । २ उपदर्शित (दं २२; प्रासू ५२; १३३; भवि) ।

देसिअ वि [**देशिक**] बृहत्क्षेत्र-व्यापी, विस्तीर्ण (आचा २, १, ३, ७) ।

देसिअ वि [**देशिक**] १ पथिक, मुसाफिर (पउम २४, १६; उप पृ ११५) । २ उपदेष्टा, गुरु (विसे १४२५) । ३ प्रोषित, प्रवास

में गया हुआ (सुर १०. १६२)। °सहा स्त्री [°सभा] धर्मशाला (उप पृ ११५)।

देसिअ देखो देसिअ; 'पडिक्कमे देसिअं सव्वं' (पडि; श्रा ६)।

देसिअव वि [देशितवत्] जिसने उपदेश दिया हो वह (सूअ १, ६, २४)।

देसिल्ल देखो देसिअ = देश्य (बृह ३)।

देसी स्त्री [देशी] भाषाविशेष, अत्यन्त प्राचीन प्राकृत भाषा का एक भेद (दे १, ४)। °भासा स्त्री [°भाषा] वही अर्थ (णाया १, १; औप)।

देसूण वि [देशोन] कुछ कम, अंश की कमीवाला (सम २, १०३; दं २८)।

देस्स वि [दृश्य] १ देखने योग्य। २ देखने को शक्य (स १६६)।

देह देखो देक्ख। देहई, देहए (उत्त १६; ६; पि ६६)। वकृ. देहमाण (भग ६, ३३)।

देह पुंन [देह] १ शरीर, काय (जी २८; कुप्र १५३ प्रासू ६५)। २ पुं. पिशाच-विशेष (इक; पण्ण १)। °रय न [°रत] मैथुन (वज्जा १०८)।

देहंबलिया स्त्री [देहबलिका] भिक्षा-वृत्ति, भीख की आजीविका (णाया १, १६—पत्र १६६)।

देहणी स्त्री [दे] पंक, कर्दम, कादा, काँदो (दे ५, ४८)।

देहरय (अप) न [देवगृहक] देव-मन्दिर (वज्जा १०८)।

देहली स्त्री [देहली] चौखट, द्वार के नीचे की लकड़ी (गा ५२५; दे १, ६५; कुप्र १८३)।

देहि पुं [देहिन्] आत्मा, जीव (स १६५)।

देहुर (अप) न [देवकुल] देव-स्थान, मन्दिर (भवि)।

दो अ [द्विधा] दो प्रकार से, दो तरह (सुपा २३३; ३१२)।

दो त्रि. ब. [द्वि] दो, उभय, युग्म (हे १; ६४)।

दो पुं [दोस्] हाथ, बाहु (विक्र ११३; रंभा; कप्पू)।

दोअई स्त्री [द्विपदी] छन्द-विशेष (पिंग)।

दोआल पुं [दे] वृषभ, बैल (दे ५, ४६)।

दोइ देखो दो = द्विधा (बृह ३)।

दोंबुर [दे] देखो दोबुर (षड्)।

दोकिरिय वि [द्विक्रिय] एक ही समय में दो क्रियाओं के अनुभव को माननेवाला (ठा ७)।

दोक्कर देखो दुक्कर (भवि)।

दोक्खर पुं [द्वि-अक्षर] षण्ड, नपुंसक (बृह ४)।

दोखंड देखो दुखंड (भवि)।

दोखंडिअ वि [द्विखण्डित] जिसके दो टुकड़े किए गए हों वह (भवि)।

दोगंछि वि [जुगुप्सिन्] घृणा करनेवाला (पि ७४)।

दोगच्च न [दौर्गत्य] १ दुर्गति, दुर्दशा (पंचव ४)। २ दारिद्र्य, निर्धनता (सुपा २३०)।

दोगुंछि देखो दोगंछि (पि २१५)।

दोगुंदय पुंन [दोगुन्दक] एक देव-विमान (देवेन्द्र १४५)।

दोगुंदुय पुं [दौगुन्दक] उत्तम-जातीय देव-विशेष (सुपा ३३)।

दोग्ग न [दे] युग्म, युगल (दे ५, ४६; षड्)।

दोग्गइ देखो दुग्गइ (सुर ८, १११)। °कर वि [°कर] दुर्गति-जनक (पउम ७३, १०)।

दोग्गच्च देखो दोगच्च (गा ७६)।

दोग्घट्ट } पुं [दे] हाथी, हस्ती (पि ४३६;
दोग्घोट्ट } षड्; पाअ; महा; लहुअ ४; स
दोघट्ट } ४६१)।

दोचूड पुं [द्विचूड] विद्याधर वंश के एक राजा का नाम (पउम ५, ४५)।

दोच्च वि [द्वितीय] दूसरा (सम २, ८; विपा १, २)।

दोच्च न [दौत्य] दूतपन, दूत-कर्म (णाया १, ८; गा ८४)।

दोच्चं अ [द्विस्] दो बार, दो वक्त; एवं च निसामित्ता दोच्चं तच्चं समुल्लवंतस्स' (सुर २, २६)।

दोच्चंग न [द्वितीयाङ्ग] १ दूसरा अंग। २ पकाया हुआ शाक (बृह १)। ३ तीमन, कढ़ी (ओघ २६७ भा)।

दोजीह पुं [द्विजिह्व] १ दुर्जन। २ साँप (सुर १, २०)।

दोज्झ वि [दोह्य] दोहने योग्य (आचा २, ४, २)।

दोण पुं [द्रोण] १ धनुर्वेद के एक सुप्रसिद्ध आचार्य, जो पाण्डव और कौरवों के गुरु थे (णाया १. १६; वेणी १०४)। २ एक प्रकार का परिमाण (जो २)। °मुह न [°मुख] नगर, जल और स्थल के मार्गवाला शहर (पण्ह १, ३; कप्प; औप)। °मेह पुं [°मेघ] मेघ-विशेष, जिसकी धारा से बड़ी कलशी भर जाय वह वर्षा (विसे १४५८)। °सुया स्त्री [°सुता] लक्ष्मण की स्त्री का नाम, विशल्या (पउम ६४, ४४)।

दोणअ पुं [दे] १ आयुक्त, गाँव का मुखिया। २ हालिक. हलवाह, हल जोतनेवाला, हरवाहा (दे ५, ५१)।

दोणक्का स्त्री [दे] सरघा, मधुमक्खी (दे ५, ५१)।

दोणी स्त्री [द्रोणी] १ नौका, छोटा जहाज (पण्ह १, १; दे २, ४७; धम्म १२ टी)। २ पानी का बड़ा कुंडा (अणु; कुप्र ४४१)।

दोत्तडी स्त्री [दुस्तटी] दुष्ट नदी, 'एकत्तो सद्दूलो अन्नत्तो दोत्तडी वियडा' (उप ५३० टी; सुपा ४६३)।

दोत्थ न [दौस्थ्य] दुस्स्थता, दुर्दशा, दुर्गति (वव ४; ७)।

दोदाण वि [दुर्दान] दुःख से देने योग्य (संक्षि ४)।

दोदिअ पुं [दे] चर्म-कूप; चमड़े का बना हुआ भाजन-विशेष (दे ५, ४६)।

दोद्धु वि [दोग्धृ] दोहन-कर्ता (दस १, १ टी)।

दोधअ } न [दोधक] छन्द-विशेष
दोधक } (पिंग)।

दोधार पुं [द्विधाकार] द्विधाकरण, दो भाग करना (ठा ५, ३—पत्र ३४६)।

दोनिक्कम वि [दुर्निक्रम] अत्यन्त कष्ट से चलने योग्य (भग ७, ६—पत्र ३०५)।

दोबुर पुं [दे] तुम्बुरु, स्वर्ग-गायक (षड्)।

दोब्बलिय देखो दुब्बलिय (आचा २, ३, २, ३)।

दोब्बल्ल न [दौर्बल्य] दुर्बलता (पि २८७; काप्र ८५)।

दोभाय वि [द्विभाग] दो भागवाला, दो खण्डवाला (उप १४७ टी)।

दोमणंसिय वि [दौर्मनस्यिक] खिन्न, शोक-ग्रस्त (ठा ५, २—पत्र ३१३)।

दोमणस्स न [दौर्मनस्य] वैमनस्य, द्वेष, मन की दुष्टता (सूअ २, २, ८२; ८३)।

दोमासिअ वि [द्वैमासिक] दो मास का (भग; सुर १४, २२८)। स्त्री. °आ (सम २१)।

दोमिय (अप) देखो दूमिअ = दावित (भवि)।

दोमिली स्त्री [दोमिली] लिपि-विशेष (राज)।

दोमुह वि [द्विमुख] १ दो मुँहवाला। २ पुं. नृप-विशेष (महा)। ३ दुर्जन (गा २५३)।

दोर पुं. [दे] १ डोरा, धागा, सूत (पउम ४, ५०; कुप्र २२६; सुर ३, १४१)। २ छोटी रस्सी (ओघ ३३२; ६४ भा)। ३ कटि-सूत्र (दे ५, ३८)।

दोरिया देखो दोरी (सिरि ६३)।

दोरी स्त्री [दे] छोटी रस्सी (श्रा १६)।

दोल अक [दोलय्] १ हिलना। २ झूलना। दोलइ (हे ४, ४८)। दोलंति (कप्पू)।

दोलणय न [दोलनक] झूलन, अन्दोलन (दे ८, ४३)।

दोलया } स्त्री [दोला] झूला, हिंडोला (सुपा
दोला } २८९; कुमा)।

दोलाइय वि [दोलायित] १ हिला हुआ। २ संशयित (हेका ११९)।

दोलायमाण वि [दोलायमान] १ हिलता हुआ। २ संशय करता हुआ (सुपा ११७; गउड)।

दोलिया देखो दोला (सुर ३, ११६)।

दोलिर वि [दोलयितृ] झूलनेवाला (कुमा)।

दोव पुं [दोव] एक अनार्य जाति (राज)।

दोवई स्त्री [द्रौपदी] राजा द्रुपद की कन्या, पाण्डव-पत्नी (णाया १, १६; उप ६४८ टी; पडि)।

दोवयण देखो दुवयण = द्विवचन (हे १, ९४; कुमा)।

दोवार (अप) देखो दुवार (सण)।

दोवारिअ } पुं [दौवारिक] द्वारपाल, दर-
दोवारिय } वान, प्रतीहार (निचू ९; णाया १, १; भग ६, ५; सुपा ४२९)।

दोविह देखो दुविह (उत्त २; नव ३)।

दोवेली स्त्री [दे] सायंकाल का भोजन (दे ५, ५०)।

दोव्वल देखो दोब्बल (से ४, ४२; ८, ८७)।

दोस देखो दूस = दूष्य (औप; उप ७६८ टी)।

दोस पुं [दोष] दूषण, दुर्गुण, ऐब (औप; सुर १, ७३; स्वप्न ६०; प्रासू १३)। °न्नु वि [°ज्ञ] दोष का जानकार, विद्वान् (पि १०५)। °ह वि [°घ्न] दोष-नाशक; 'कुव्वंति पोसहं दोसहं सुद्धं' (सुपा ६२१)।

दोस पुं [दे] १ अर्ध, आधा (दे ५, ५६)। २ कोप, क्रोध, गुस्सा (दे ५, ५६; षड्)। ३ द्वेष, द्रोह (औप; कप्प; ठा १; उत्त ६; सूअ १, १६; पण्ण २३; सुर १, ३३; सण; भवि; कुप्र ३७१)।

दोस पुं [दोस] हाथ, हस्त, बाहु (से २, १)।

दोसणिज्जंत पुं [दे] चन्द्र, चन्द्रमा, चाँद (दे ५, ५१)।

दोसा स्त्री [दोषा] रात्रि, रात (सुर १, २१)।

दोसाकरण न [दे] कोप, क्रोध (दे ५, ५१)।

दोसाणिअ वि [दे] निर्मल किया हुआ (दे ५, ५१)।

दोसायर पुं [दोषाकर] १ चन्द्र, चाँद (उप ७२८ टी; सुपा २७५)। २ दोषों की खान, दुष्ट (सुपा २७५)।

दोसारअण पुं [दे. दोषारत्न] चन्द्र, चाँद (षड्)।

दोसासय पुं [दोषाश्रय] दोष-युक्त, दुष्ट (पउम ११७, ४१)।

दोसि वि [दोषिन्] दोषवाला, दोषी (कुप्र ४३८)।

दोसिअ पुं [दौष्यिक] वस्त्र का व्यापारी (श्रा १२; वज्जा १६२)।

दोसिण [दे] देखो दोसीण (पण्ह २, ५)।

दोसिणा [दे] नीचे देखो (ठा २, ४—पत्र ८६)। °भा स्त्री [°भा] चन्द्र की एक पटरानी (ठा ४, १; इक; णाया २)।

दोसिणी स्त्री [दे. दोषिणी] ज्योत्स्ना, चन्द्र-प्रकाश (दे ५, ५०); 'ससिजुण्हा दोसिणी जत्थ' (कुप्र ४३८)।

दोसियण्ण न [दोषिकान्न] बासी अन्न (राज)।

दोसिल्ल वि [दोषवत्] दोष-युक्त (धम्म ११ टी)।

दोसिल्ल वि [दे] द्वेष-युक्त, द्वेषी (विसे १११०)।

दोसीण न [दे] रात का बासी अन्न (पण्ह २, ५; ओघ १४५)।

दोसील वि [दुश्शील] दुष्ट स्वभाववाला (पव ७३)।

दोसोलह त्रि. ब. [द्विषोडशन्] बत्तीस, ३२ (कप्पू)।

दोह सक [द्रुह्] द्रोह करना। वकृ. दोहंत (संबोध ४)।

दोह पं. [दोह] दोहन (दे २, ६४)।

दोह वि [दोह्य] दोहने योग्य (भास ८९)।

दोह पुं [द्रोह] ईर्ष्या, द्वेष (प्राप्र; भवि)।

दोहग्ग न [दौर्भाग्य] दुष्ट भाग्य, दुरदृष्ट, कमनसीबी (पण्ह १, ४; सुर ३, १७४; गा २१२)।

दोहग्गि वि [दौर्भागिन्] दुष्ट भाग्यवाला, कमनसीब, मन्द-भाग्य (श्रा १६)।

दोहण न [दोहन] दोहना, दूध निकालना (पण्ह १, १)। °वाडण न [°पाटन] दोहन-स्थान (निचू २)।

दोहणहारी स्त्री [दे] १ दोहनेवाली स्त्री (दे १, १०८; ५, ५६)। २ पनिहारी, पानी भरनेवाली स्त्री, पनहारिन (दे ५, ५६)।

दोहणी स्त्री [दे] पंक, कादा, कर्दम (दे ५, ४८)।

दोहय वि [दोहक] दोहनेवाला, (गा ४६२)।

दोहय वि [द्रोहक] द्रोह करनेवाला, ईर्ष्यालु (उप ३५७ टी; भवि)।

दोहल पुं [दोहद] गर्भिणी स्त्री का मनोरथ (हे १, २१७; २२१; कप्प)।

दोहा अ [द्विधा] दो प्रकार (हे १, ९७)।

दोहाइअ वि [द्विधाकृत] जिसका दो खण्ड किया गया हो वह (हे १, ९७ कुमा)।

दोहासल न [दे] कटी-तट, कमर (दे ५, ५०)।

दोहि वि [दोहिन्] झरनेवाला, टपकनेवाला (गा ६३९)।

दोहि वि [द्रोहिन्] द्रोह करनेवाला (भवि)।

दोहिण्ण वि [द्विभिन्न] द्विखराड, जिसका दो टुकड़ा किया गया हो वह (प्राकृ ५१)।

दोहित्त पुं [दौहित्र] लड़की का लड़का, नाती (दे ६, १०६; सुपा ३६४)।

दोहित्ती स्त्री [दौहित्री] लड़की की लड़की, नतिनी (महा)।

दोहूअ पुं [दे] शव, मृतक, मुरदा (दे ५, ४६)।

°**द्दोस** देखो **दोस** = (दे); 'वजियरागद्दोसो (कुप्र ३०)।

द्रवक्क (अप) न [दे. भय] भय, डर, भीति (हे ४, ४२२)।

द्रह पुं [ह्रद] बड़ा जलाशय, सरोवर, झील (हे २, ८०; कुमा)।

द्रेहि (अप) स्त्री [दृष्टि] नजर (हे ४, ४२२)।

द्रोह देखो **दोह** = द्रोह (पि २६८)।

॥ इम सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि दग्राराइसद्दसंकलणो
पंचवीसइमो तरंगो समत्तो ॥

ध

ध पुं [ध] दन्त-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष (प्राप; प्रामा)।

धअ देखो **धव** (गा २०)।

धंख पुं [ध्वाङ्क्ष] काक, कौआ (उप ८२३; पंचा ११)।

धंग पुं [दे] भौंरा, भ्रमर, भमरा (दे ५,५७)।

धंत न [ध्वान्त] अन्धकार, अँधेरा (सुर १, १२; करु ११)।

धंत न [ध्वान्त] अज्ञान (देवेन्द्र १)।

धंत न [दे] अति, अतिशय, अत्यन्त; 'धंतं-पि सुप्रसमिद्धा' (पच्च २६; विसे ३०१६; बृह १)।

धंत वि [ध्मात] १ अग्नि में तपाया हुआ (णाया १, १; औप; पएण १; १७; विसे ३०२६; अजि १४)। २ शब्द-युक्त, शब्दित (पिंड)।

धंधा स्त्री [दे] लज्जा, शरम (दे ५, ५७)।

धंधुक्कय न [धन्धुक्कय] गुजरात का एक नगर, जो आज कल 'धंधूका' नाम से प्रसिद्ध है (सुपा ६५८; कुप्र २०)।

धंधोलिय (अप) वि [भ्रमित] घुमाया हुआ (सण)।

धंस अक [ध्वंस्] नष्ट होना। धंसइ, धंसए (षड्)।

धंस सक [ध्वंसय्] १ नाश करना। २ दूर करना। धंसइ (सूअ १, २, १)। धंसेइ (सम ५०)।

धंसाड सक [मुच्] त्याग करना, छोड़ना। धंसाडइ (हे ४, ९१)।

धंसाडिअ वि [मुक्त] परित्यक्त, छोड़ा हुआ (कुमा)।

धंसाडिअ वि [दे] व्यपगत, नष्ट (दे ५, ५६)।

धगधग अक [धगधगाय्] १ 'धग्-धग्' आवाज करना। २ जलना, अतिशय जलना। वकृ. धगधगंत (णाया १, १; पउम १२, ५१; भवि)।

धगधगाइअ वि [धगधगायित] 'धग्-धग्' आवाजवाला (कप्प)।

धगधग्ग देखो **धगधग**। वकृ **धगधग्गअ-माण** (पि ५५८)।

धग्गीकय वि [दे] जलाया हुआ, अत्यन्त प्रदीपित; 'अग्गी धग्गीकओ व्व पवणेणं' (श्रा १४)।

धज देखो **धय** = ध्वज (कुमा)।

धट्ठ देखो **धिट्ठ** (हे १, १३०; पउम ४६, २६; कुमा १, ८२)।

धट्ठज्जुण } पुं [धृष्टद्युम्न] राजा द्रुपद का **धट्ठज्जुण्ण** } एक पुत्र (हे २, ९४; णाया १, १६; कुमा; षड्; पि २७८)।

धड न [दे] धड़, गले से नीचे का शरीर (सुपा २४१)।

धडहडिय न [दे] गर्जना, गर्जारव (सुपा १७६)।

धण न [धन] १ वित्त, विभव, स्थावर-जंगम सम्पत्ति (उत्त ६; सूअ २, १; प्रासू ५१; ७६; कुमा)। २ गणिम, धरिम, मेय, या परिच्छेद्य द्रव्य—गिनती से और नाप आदि से क्रय-विक्रय योग्य पदार्थ (कप्प)। ३ पुं. कुबेर, धन-पति; 'सुव णो सिट्ठी धणोव्व धणकलिओ' (सुपा ३१०)। ४ स्वनाम-ख्यात एक श्रेष्ठी (उप ५५२)। ५ धन्य सार्थवाह का एक पुत्र (णाया १, १८)। °इत्त, °इल्ल वि [°वत्] धनी, धनवाला (कुप्र २४५; पि ५६५; संक्षि ३०)। °गिरि पुं [°गिरि] एक जैन महर्षि, जो वज्रस्वामी के पिता थे (कप्प; उप १४२ टी)। °गुत्त पुं [°गुप्त] एक जैन मुनि (आवम)। °गोव पुं [°गोप] धन्य सार्थवाह का एक पुत्र (णाया १, १८)। °डूढ पुं [°ाढ्य] एक जैनमुनि (कप्प)। °णंदि पुंस्त्री [°नन्दि] दुगुना देव-द्रव्य, 'देव-

दव्वं दुगुणं धणणंदी भणइ' (दंस १)। °णिहि पुं [°निधि] खजाना, भण्डार (ठा ५, ३)। °त्थि वि [°र्थिन्] धन का अभिलाषी (रयण ३८)। °दत्त पुं [°दत्त] १ एक सार्थवाह। २ तृतीय वासुदेव के पूर्व-जन्म का नाम (सम १५३; णंदि; आवम)। °देव पुं [°देव] १ एक सार्थवाह, मण्डिक-गणधर का पिता (आवम; आचू १)। २ धन्य सार्थवाह का एक पुत्र (णाया १; १८)। °पइ देखो °वइ (विपा २, १)। °पवर पुं [°प्रवर] एक श्रेष्ठी (महा)। °पाल पुं [°पाल] धन्य सार्थवाह का एक पुत्र (णाया १, १८)। देखो °वाल। °प्पभा स्त्री [°प्रभा] कुण्डलधर द्वीप की राजधानी (दीव)। °मंत, °मण वि [°वत्] धनी, धनवान् (पिंग; हे २, १५९; चंड)। °मित्त पुं [°मित्र] एक जैनमुनि (पउम २०, १७१)। °य पुं [°द] १ एक सार्थवाह (सुपा ५०९)। २ एक विद्याधर राजा, जो राजा रावण की मौसी का लड़का था (पउम ८, १२४)। ३ कुबेर (महा)। ४ वि. धन देनेवाला; 'धणओ धणत्थिआणं' (रयण ३८)। °रक्खिय पुं [°रक्षित] धन्य सार्थवाह का एक पुत्र (णाया १, १८)। °वइ पुं [°पति] १ कुबेर (णाया १, ४—पत्र ९९; उप पृ १८०; सुपा ३८)। २ एक राजकुमार (विपा २, ६)। °वई स्त्री [°वती] एक सार्थवाह-पुत्री (दंस १)। °वंत, °वत्त देखो °मंत (हे २, १५९; चंड)। °वह पुं [°वह] १ एक श्रेष्ठी (दंस १)। २ एक राजा (विपा २, २)। °वाल देखो °पाल। २ राजा भोज के समकालिक एक जैन महाकवि (धण ५०)। °संचया स्त्री [°संचया] एक वणिग्-महिला (महा)। °सम्म पुं [°शर्मन्] एक वणिक् (गच्छ २)। °सिरी स्त्री [°श्री] एक वणिग्-महिला (आव ४)। °सेण पुं [°सेन] एक राजा (दंस ४)। °ल वि [°वत्] धनी (प्राप्र)। °विह वि [°विह] १ धन को धारण करनेवाला, धनी। २ पुं. एक श्रेष्ठी (दंस ४)। ३ एक राजा (विपा २, २)।

धणंजय पुं [धनञ्जय] १ अर्जुन, मध्यम पाण्डव (वेणी ११०)। २ वह्नि, अग्नि। ३ सर्प-विशेष। ४ वायु-विशेष, शरीर-व्यापी पवन। ५ वृक्ष-विशेष (हे १, १७७; २, १८५; षड्)। ६ उत्तरा भाद्रपदा नक्षत्र का गोत्र (इक)। ७ पक्ष का नववाँ दिन (जो ४)। ८ श्रेष्ठि-विशेष (आव ४)। ९ एक राजा (आवम)।

धणि पुं [ध्वनि] शब्द, आवाज (विसे १५०)।

धणि स्त्री [घ्राणि] १ तृप्ति, सन्तोष (औप)। २ अतृप्ति उत्पन्न करने की शक्ति; 'भमिधणि-वितएहयाई' (विसे १६५३)।

धणि वि [धनिन्] धनिक, धनवान् (हे २, १५९)।

धणिअ पुं [धनिक] यवन-मत का प्रवर्त्तक पुरुष-विशेष (मोह १०१; १०२)।

धणिअ वि [धनिक] १ पैसादार, धनी (दे १, १४८)। २ पुं. मालिक, स्वामी (श्रा १४)।

धणिअ न [दे] अत्यन्त, गाढ़, अतिशय (दे ५, ५८; औप; भग; महा; कप्प; सुर १, १७५; भत्त ७३; पच्च ८२; जीव ३; उत्त १; वव २; स ६९७)।

धणिअ वि [धन्य] धन्यवाद के योग्य, प्रशंसनीय, स्तुतिपात्र; 'जाण धणियस्स पुरओ निवडंति रणम्मि असिधाया' (पउम ५६, २५; अच्चु ४२)।

धणिआ स्त्री [दे] १ प्रिया, भार्या, पत्नी (दे ५, ५८; गा ५८२; भवि)। २ धन्या, स्तुति-पात्र स्त्री (षड्)।

धणिट्ठा स्त्री [धनिष्ठा] नक्षत्र-विशेष (सम १०; १३; सुर १६, २४९; इक)।

धणी स्त्री [दे] भार्या, पत्नी। २ पर्याप्ति। ३ जो बँधा हुआ होने पर भी भय-रहित हो वह (दे ५, ६२), 'सयमेव मंकणीए धणीए तं कंकणी बद्धा' (कुप्र १८५)।

धणु पुंन [धनुष्] १ धनुष, चाप, कार्मुक (षड्; हे १, २२)। २ चार हाथ का परिमाण (अणु; जी २९)। ३ पुं. परमा-धार्मिक देवों की एक जाति (सम २९)। °कुडिल न [कुटिलधनुष्] वक्र धनुष (राय)। °ग्गह पुं [°ग्रह] वायु-विशेष (बृह ३)। °द्धय पुं [°ध्वज] नृप-विशेष (ठा ८)। °द्धर वि [°धर] धनुर्विद्या में निपुण, धानुष्क (राज; पउम ६, ८७)। °पिट्ठ न [°पृष्ठ] १ धनुष का पृष्ठ-भाग। २ धनुष के पीठ के आकारवाला क्षेत्र (सम ७३)। °पुहत्तिया स्त्री [°पृथक्त्विका] दो कोस, गव्यूति (पण्ण १)। °वेअ, °व्वेअ पुं [°वेद] धनुर्विद्या-बोधक शास्त्र, इषु-शास्त्र (उप ९८६ टी; सुपा २७०; जं २)। °हर देखो °धर (भवि)।

धणु पुंन [धनुस्] ज्योतिष-प्रसिद्ध एक राशि (विचार १०६; संबोध ५४)। °ल्ल वि [°मत्] धनुषवाला (प्राकृ ३५)।

धणुक्क } ऊपर देखो (णंदि; अणु; हे १, धणुह } २२; कुमा)।

धणुही स्त्री [धनुष्] कार्मुक, 'वेसाओ व धणुहीओ गुणबद्धाओवि पयइकुडिलाओ' (कुप्र २७४; स ३८१)।

धणेसर पुं [धनेश्वर] एक प्रसिद्ध जैनमुनि और ग्रन्थकार (सुर १, २४९; १६, २५०)।

धण्ण पुं [धन्य] १ एक जैनमुनि। २ 'अनुत्तरोपपातिकदसा' सूत्र का एक अध्ययन (अनु २)। ३ यक्ष-विशेष (विपा २, २)। ४ वि. कृतार्थ। ५ धन-लाभ के योग्य। ६ स्तुति-पात्र, प्रशंसनीय। ७ भाग्यशाली, भाग्यवान् (णाया १, १; कप्प; औप)।

धण्ण देखो धन्न = धान्य (श्रा १८; ठा ५, ३; वव १)।

धण्णंतरि पुं [धन्वन्तरि] १ राजा कनकरथ का एक स्वनाम-ख्यात वैद्य (विपा १, ८)। २ देव-वैद्य (जय २)।

धण्णाउस वि [दे] १ जिसको आशीर्वाद दिया जाता हो वह। २ पुं. आशीर्वाद (दे ५, ५८)।

धत्त वि [दे] १ निहित, स्थापित (आवम)। २ पुं. वनस्पति-विशेष (जीव १)।

धत्त वि [धात्त] निहित, स्थापित (राज)।

धत्तरट्ठग पुं [धार्तराष्ट्रक] हंस की एक जाति, जिसके मुँह और पाँव काले होते हैं (पण्ह १, १)।

धत्ती स्त्री [धात्री] १ धाई, उपमाता, दाई (स्वप्न १२२)। २ पृथिवी, भूमि। ३ आमलकी-वृक्ष, आँवले का पेड़ (हे २,८१)। देखो **धाई**।

धत्तूर पुं [धत्तूर] १ वृक्ष-विशेष, धतूरा। २ न. धतूरा का पुष्प (सुपा १२४)।

धत्तूरिअ वि [धात्तूरिक] जिसने धतूरा का नशा किया हो वह (सुपा १२४; १७६)।

धत्थ वि [ध्वस्त] ध्वंस-प्राप्त, नष्ट, नाश हुआ (हे २, ७६; सण)।

धन्न देखो **धण्ण** = धन्य (कुमा; प्रासू ५३; ८४; १५५; उवा)।

धन्न न [धान्य] १ धान, अनाज, अन्न (उवा; सुर १, ४६)। २ धान्य-विशेष; 'कुलत्थ तह धन्नय कलाया' (पव १५६)। ३ धनिया (दसनि ६)। °**कीड** पुं [°कीट] नाज में होनेवाला कीट, कीट-विशेष (जी १७)। °**णिहि** पुंस्त्री [°निधि] धान रखने का घर, कोष्ठागार, भंडार (ठा ५,३)। °**पत्थय** पुं [°प्रस्थक] धान का एक नाप (वव १)। °**पिडग** न [°पिटक] नाज का एक नाप (वव १)। °**पुंजिय** न [पुञ्जितधान्य] इकट्ठा किया हुआ अनाज (ठा ४, ४)। °**विक्खित्त** न [विक्षिप्तधान्य] विकीर्ण अनाज (ठा ४,४)। °**विरल्लिअ** न [विरल्लितधान्य] वायु से इकट्ठा किया हुआ अनाज (ठा ४,४)। °**संकड्ढिय** न [°संकर्षितधान्य] खेत से काटकर खले—खलिहान में लाया गया धान्य (ठा ४, ४)। °**गार** न [°गार] कोष्ठागार, धान रखने का गृह (निचू ८)।

धन्ना स्त्री [धान्य] अन्न, अनाज; 'सालिजवाईयाओ धन्नाओ सव्वजाईओ (उप ९८६ टी)।

धन्ना स्त्री [धन्या] एक स्त्री का नाम (उवा)।

धम सक [धमा] १ धमना, धौंकना, आग में तपाना। २ शब्द करना। ३ वायु पूरना। धमइ (महा)। धमेइ (कुप्र १४६)। वकृ. धमंत (निचू १)। कवकृ. **धम्ममाण** (उवा; णाया १, ६)।

धमग वि [ध्मायक] धमनेवाला (औप)।

धमण न [धमन] १ आग में तपाना (आचानि १, १, ७)। २ वायु-पूरण (पण्ह १, १)। ३ वि. भस्त्रा, धमनी, भाथी (राज)।

धमणि, **धमणी** } स्त्री [धमनि, °नी] १ भस्त्रा, धमनी, धौंकनी। २ नाड़ी, सिरा (विपा १, १, उवा; अंत २७)।

धमधम अक [धमधमाय्] 'धम्-धम्' आवाज करना; 'धमधमइ सिरं धणियं जायइ सूलंपि भज्जए दिट्ठी' (सुपा ६०३)। वकृ. **धमधमंत**, **धमधमाअंत**, **धमधमेंत** (सुपा ११४; नाट—मालती ११६; णाया १, ८)।

धमास पुं [धमास] वृक्ष-विशेष (पण्ण १७)।

धमिअ वि [ध्मात] जिसमें वायु भर दिया गया हो वह; 'धमिओ संखो' (कुप्र १४६)।

धमिय वि [ध्मात] आग में तपाया हुआ, 'धमियकणयं फुंकाए हारविदं हुज्ज' (मोह ४७)।

धम्म पुं [धर्म] १ एक देव-विमान (देवेन्द्र १४३)। २ एक दिन का उपवास (संबोध ५८)।

धम्म पुंन [धर्म] १ शुभ कर्म, कुशल-जनक अनुष्ठान, सदाचार (ठा १; सम १; २; आचा; सूअ १; ६, प्रासू ५२; ११४; सं ५७)। २ पुण्य, सुकृत (सुर १, ५४; आव ४)। ३ स्वभाव, प्रकृति (निचू २०)। ४ गुण, पर्याय (ठा २, १)। ५ एक अरूपी पदार्थ, जो जीव को गति-क्रिया में सहायता पहुँचाता है (नव ५)। ६ वर्तमान अवसर्पिणी काल में उत्पन्न पनरहवें जिन-देव (सम ४३; पडि)। ७ एक वणिक् (उप ७२८ टी)। ८ स्थिति, मर्यादा (आचू २)। ९ धनुष, कार्मुक (सुर १, ५४; पाअ)। १० एक जैन मुनि (कप्प)। ११ 'सूत्रकृताङ्ग' सूत्र का एक अध्ययन (सम ४२)। १२ आचार, रीति, व्यवहार (कप्प)। °**उत्त** पुं [°पुत्र] शिष्य (प्राकृ)। °**उर** न [°पुर] नगर-विशेष (दंस १)। °**कंखिअ** वि [°काङ्क्षित] धर्म की चाहवाला (भग)। °**कहा** स्त्री [°कथा] धर्म-सम्बन्धी बात (भग; सम १२०; णाया २)। °**कहि** वि [°कथिन्] धर्म-कथा कहनेवाला, धर्म का उपदेशक (ओघ ११५ भा; श्रा ६)। °**कामय** वि [°कामक] धर्म की चाहवाला (भग)। °**काय** पुं [°काय] धर्म का साधन-भूत शरीर (पंचा १८)। °**क्खाइ** वि [°ख्यायिन्] धर्म-प्रतिपादक (औप)। °**क्खाइ** वि [°ख्याति] धर्म से ख्यातिवाला, धर्मात्मा (औप)। °**गुरु** पुं [°गुरु] धर्म-दर्शक गुरु, धर्माचार्य (द्र १)। °**गुव** वि [गुप्] धर्म-रक्षक (षड्)। °**घोस** पुं [°घोष] कईएक जैन मुनि और आचार्यों का नाम (आचू १; ती ७; आव ४; भग ११, ११)। °**चक्क** न [°चक्र] जिनदेव का धर्म-प्रकाशक चक्र (पव ४०; सुपा ९२)। °**चक्कवट्टि** पुं [°चक्रवर्त्तिन्] जिन-देव (आचू १)। °**चक्कि** पुं [°चक्रिन्] जिन भगवान् (कुम्मा ३०)। °**जणणी** स्त्री [°जननी] धर्म की प्राप्ति करानेवाली स्त्री, धर्म-देशिका (पंचा १९)। °**जस** पुं [°यशस्] जैनमुनि-विशेष का नाम (आव ४)। °**जागरिया** स्त्री [°जागर्या] १ धर्म-चिन्तन के लिए किया जाता जागरण (भग १२, १)। २ जन्म से छठवें दिन में किया जाता एक उत्सव (कप्प)। °**ज्झय** पुं [°ध्वज] १ धर्म-द्योतक ध्वज, इन्द्र-ध्वज (राय)। २ ऐरवत क्षेत्र के पाँचवें भावी जिन-देव (सम १५४)। °**ज्झाण** न [°ध्यान] धर्म-चिन्तन, शुभ ध्यान-विशेष (सम ९)। °**ज्झाणि** वि [°ध्यानिन्] धर्म ध्यान से युक्त (आव ४)। °**ट्ठि** वि [°र्थिन] धर्म का अभिलाषी (सूअ १, २, २)। °**णायग** वि [°नायक] १ धर्म का नेता (सम १; पडि)। °**ण्णु** वि [°ज्ञ] धर्म का ज्ञाता (दंस ४)। °**तित्थयर** पुं [°तीर्थकर] जिनभगवान् (उत्त २३; पडि)। °**त्थ** न [°स्त्र] अस्त्र-विशेष, एक प्रकार का हथियार (पउम ७१, ६३)। °**त्थि** देखो °**ट्ठि** (पंचव ४)। °**त्थिकाय** पुं [°स्तिकाय] गति-क्रिया में सहायता पहुँचाने वाला एक अरूपी पदार्थ (भग)। °**दय** वि [°द्य] धर्म की प्राप्ति करानेवाला, धर्म-देशक (भग)। °**दार** न [°द्वार] धर्म का उपाय (ठा ४, ४)। °**दार** पुं.ब. [°दार] धर्म-पत्नी (कप्पू)। °**दास** पुं [°दास] भगवान् महावीर का एक शिष्य और उपदेशमाला का कर्त्ता (उव)। °**देव** पुं [°देव] एक प्रसिद्ध जैन आचार्य (सार्ध ७८)। °**देसग**, °**देसय** वि [°देशक] धर्म का उपदेश करनेवाला (राज; भग; पडि)। °**धुरा** स्त्री [°धुरा] धर्मरूप

धुरा (णाया १, ८)। °नायग देखो °णायग (भग)। °पडिमा स्त्री [°प्रतिमा] १ धर्म की प्रतिज्ञा। २ धर्म का साधन-भूत शरीर (ठा १)। °पण्णत्ति स्त्री [°प्रज्ञप्ति] धर्म की प्ररूपणा (उवा)। °पदिणी (शौ) स्त्री [°पत्नी] धर्म-पत्नी, स्त्री, भार्या (अभि २२२)। °पिवासय वि [°पिपासक] धर्म के लिए प्यासा (भग)। [°पिवासिय] वि [°पिपासित] धर्म की प्यासवाला (तंदु)। °पुरिस पुं [°पुरुष] धर्म-प्रवर्तक पुरुष (ठा ३, १)। °पलज्जण वि [°प्ररञ्जन] धर्म में आसक्त (णाया, १, १८)। °प्पवाइ वि [°प्रवादिन्] धर्मोपदेशक (आचानि १, ४, २)। °प्पह पुं [°प्रभ] एक जैन आचार्य (रयण ५८)। °प्पावाउय वि [°प्रावादुक] धर्म-प्रवादी, धर्मोपदेशक (आचानि १,१४,१)। °बुद्धि वि [°बुद्धि] धार्मिक, धर्म-मति। २ पुं. एक राजा का नाम (उप ७२८ टी)। °मित्त पुं [°मित्र] भगवान् पद्मप्रभ का पूर्वभवीय नाम (सम १५१)। °य वि [°द] धर्म-दाता, धर्म देशक (सम १)। °रुइ स्त्री [°रुचि] १ धर्म-प्रीति (धर्म २)। २ वि. धर्म में रुचि-वाला (ठा १०)। ३ पुं. एक जैन मुनि (विपा १, १; उप ६४८ टी)। ४ वाराणसी का एक राजा (आवम)। °लाभ पुं [°लाभ] १ धर्म की प्राप्ति। २ जैन साधु द्वारा दिया जाता आशीर्वाद (सुर ८, १०६)। °लाभिअ वि [°लाभित] जिसको 'धर्मलाभ' रूप आशीर्वाद दिया गया हो वह (स ६६)। °लाह देखो °लाभ (स ३६)। °लाहण न. [°लाभन] धर्मलाभ-रूप आशीर्वाद देना; 'कयं धम्मलाहणं' (स ४६६)। °लाहिअ देखो °लाभिअ (स १४८)। °वंत वि [°वत्] धर्मवाला (आचा)। °वय पुं [°व्यय] धर्मार्थ दान, धर्मादा (सुपा ६१७)। °वि, °विउ वि [°वित्] धर्म का जानकार (आचा)। °विज्ज पुं [°वैद्य] धर्माचार्य (पंचव १)। °व्वय देखो °वय (सुपा ६१७)। °सद्धा स्त्री [°श्रद्धा] धर्म-विश्वास (उत्त २९)। °सण्णा देखो °सन्ना (भग ७, ६)। °सत्थ न [°शास्त्र] धर्म प्रतिपादक शास्त्र (दंस ४)। °सन्ना स्त्री [°संज्ञा] १ धर्म-विश्वास। २ धर्म-बुद्धि (पण्ह १, ३)। °सारहि पुं [°सारथि] धर्मरथ का प्रवर्तक, धर्म-देशक (धण २७, पडि)। °साला स्त्री [°शाला] धर्म-स्थान (करु ३३)। °सील वि [°शील] धार्मिक (सूअ २, २)। °सीह पुं [°सिंह] १ भगवान् अभिनन्दन का पूर्व-भवीय नाम (सम १५१)। २ एक जैन मुनि (संथा ६६)। °सेण पुं [°सेन] एक बलदेव का पूर्वभवीय नाम (सम १५३)। °ाइगर वि [°ादिकर] धर्म का प्रथम प्रवर्तक। २ पुं. जिन-देव (धर्म २)। °ाणुट्ठाण न [°ानुष्ठान] धर्म का आचरण (धर्म १)। °ाणुण्ण वि [°ानुज्ञ] धर्म का अनुमोदन करनेवाला (सूअ २, २; णाया १, १८)। °ाणुय वि [°ानुग] धर्म का अनुसरण करने-वाला (औप)। °ायरिय पुं [°ाचार्य] धर्म-दाता गुरु (सम १२०)। °ावाय पुं [°ावाद] १ धर्म-चर्चा। २ बारहवाँ जैन अंग-ग्रन्थ, दृष्टिवाद (ठा १०)। °ाहिगरणिय पुं [°ाधिकरणिक] न्यायाधीश, न्यायकर्त्ता (सुपा ११७)। °ाहिगारि वि [°ाधिकारिन्] धर्म-ग्रहण के योग्य (धर्म १)।

धम्म वि [धर्म्य] धर्म-युक्त, धर्म-संगत; 'जं पुण तुमं कहेसि तमेव धम्मं' (महानि ४, द्र ४१)।

धम्ममण पुं [दे] वृक्ष-विशेष (उप १०३१ टी; पउम ४२, ६)।

धम्ममाण देखो धम।

धम्मय पुं [दे] १ चार अंगुल का हस्त-व्रण। २ चण्डी देवी की नर-बलि (दे ५, ६३)।

धम्मि वि [धर्मिन्] १ धर्म-युक्त, द्रव्य, पदार्थ। २ धार्मिक, धर्म-परायण (सुपा २६; ३३६; ५०६, वज्जा १०६)।

धम्मि वि [धर्म्मिन्] तर्कशास्त्र-प्रसिद्ध पक्ष (धर्मसं ६९)।

धम्मिअ, धम्मिग वि [धार्मिक] १ धर्म-तत्पर, धर्म-परायण (गा १६७; उप ८६२; पण्ह २, ४)। २ धर्म-सम्बन्धी (उप २६४; पंचा ६)। ३ धार्मिक-संबन्धी (ठा ३, ४)।

धम्मिट्ठ वि [धर्मिष्ठ] अतिशय धार्मिक (औप सुपा १४०)।

धम्मिट्ठ वि [धर्मेष्ट] धर्म-प्रिय (औप)।

धम्मिट्ठ वि [धर्मीष्ट] धार्मिक जन को प्रिय (औप)।

धम्मिल्ल, धम्मेल्ल पुंन [धम्मिल्ल] १ संयत केश, बँधा हुआ केश, स्त्रियों के बाँधे हुए बाल की 'पटिया या जूड़ा'; बीच में फूल रखकर ऊपर से मोतियों की या अन्य किसी रत्न की लड़ियों से बँधा हुआ केश-कलाप (प्राप्र; षड्; संक्षि ३)। २ पुं. एक जैन मुनि (आव ६)।

धम्मीसर पुं [धर्मेश्वर] अतीत उत्सर्पिणीकाल में भरतवर्ष में उत्पन्न एक जिन-देव (पव ७)।

धम्मुत्तर वि [धर्मोत्तर] १ गुणी, गुणों से श्रेष्ठ (आचू ५)। २ न. धर्म का प्राधान्य; 'धम्मुत्तरं वड्ढउ' (पडि)।

धम्मोवएसग, धम्मोवएसय वि [धर्मोपदेशक] धर्म का उपदेश देनेवाला (णाया १, १६; सुपा १७२; धर्म २)।

धय सक [धे] पान करना, स्तन-पान करना। वकृ. धयंत (सुर १०, ३७)।

धय पुंस्त्री [ध्वज] ध्वजा, पताका (हे २, २७; णाया १, १६; पण्ह १, ४; गा ३४)। स्त्री. °या (पिंग)। °वड पुं [°पट] ध्वजा का वस्त्र (कुमा)।

धय पुं [दे] नर, पुरुष (दे ५, ५७)।

धयण न [दे] गृह, घर (दे ५, ५७)।

धयरट्ठ पुं [धृतराष्ट्र] हंस पक्षी (पाअ)।

धर सक [धृ] १ धारण करना। २ पकड़ना। धरइ, धरेइ (हे ४, २३४; ३३६)। कर्म. धरिज्जइ (पि ५३७)। वकृ धरंत, धरमाण (सण; भवि; गा ७६१)। कवकृ. धरंत, धरेंत, धरिज्जंत, धरिज्जमाण (से ११, १२७; १४, ८१; राज; पण्ह १, ४; औप)। संकृ. धरिउं (कुप्र ७)। कृ. धरियव्व (सुपा २७२)।

धर सक [धरय्] पृथिवी का पालन करना। वकृ. धरंत (सुर २, १३०)।

धर न [दे] तूल, रूई (दे ५, ५७)।

धर पुं [धर] १ भगवान् पद्मप्रभ का पिता (सम १५०)। २ मथुरा नगरी का एक राजा (णाया १, १६)। ३ पर्वत, पहाड़ (से ८, ६३; पाअ)।

°धर वि [°धर] धारण करनेवाला (कप्प)।

धरग्ग पुं [दे] कपास (दे ५, ५८)।

धरण पुं [धरण] १ नाग-कुमार देवों का दक्षिण-दिशा का इन्द्र (ठा २, ३; औप)। २ यदुवंशीय राजा अन्धक-वृष्णि का एक पुत्र (अंत ३)। ३ श्रेष्ठि-विशेष (उप ७२८ टी; सुपा ५५६)। ४ न. धारण करना (से ३, ३, सार्ध ६; वज्जा ४८)। ५ सोलह तोले का एक परिमाण (जो २)। ६ धरना देना, लंघन-पूर्वक उपवेशन (पव ३८)। ७ तोलने का साधन (जो २)। ८ वि. धारण करनेवाला (कुमा)। °प्पभ पुं [°प्रभ] धरणेन्द का उत्पात-पर्वत (ठा १०)।

धरणा स्त्री [धरणा] देखो धारणा (णंदि)।

धरणि स्त्री [धरणि] १ भूमि, पृथिवी (औप; कुमा)। २ भगवान् अरनाथ की शासन-देवी (संति १०)। ३ भगवान् वासुपूज्य की प्रथम शिष्या (सम १५२; पव ९)। °खील पुं [°कील] मेरु पर्वत (सुज्ज ५)। °चर पुं [°चर] मनुष्य (पउम १०१, ४७)। °धर पुं [°धर] १ पर्वत, पहाड़ (अजि १७)। २ अयोध्या नगरी का एक सूर्य-वंशीय राजा (पउम ५, ५०)। °धरप्पवर पुं [°धरप्रवर] मेरु पर्वत (अजि १५)। °धरवइ पुं [°धर-पति] मेरु पर्वत (अजि १७)। °धरा स्त्री [°धरा] भगवान् विमलनाथ की प्रथम शिष्या (सम १५२)। °यल न [°तल] भूमि-तल, भू-तल (णाया १, २)। °वइ पुं [°पति] भू-पति, राजा (सुपा ३३४)। °वट्ठ न [°पृष्ठ] मही-पीठ, भूमि-तल (महा)। °हर देखो धर (से ६, ३६)।

धरणिंद पुं [धरणेन्द्र] नाग-कुमारों की दक्षिण-दिशा का इन्द्र (पउम ५, ३८)।

धरणिसिंग पुं [धरणिशृङ्ग] मेरु पर्वत (सुज्ज ५)।

धरणी देखो धरणि (प्रासू २३; पि ५३; से २, २४; कुप्र २२)।

धरा स्त्री [धरा] पृथिवी, भूमि (गउड; सुपा २०१)। °धर, °हर पुं [°धर] पर्वत, पहाड़ (से ६, ७६; ३८; स २९९; ७०३; उप ७६८ टी)।

धराधीस पुं [धराधीश] राजा (मोह ४३)।

धराविअ वि [धारित] पकड़ा हुआ (स २०६; सुपा ३२५; संक्षि ३४)। २ स्थापित; 'धराविअं मडयं' (कुप्र १४०)।

धरिअ वि [धृत] १ धारण किया हुआ (गा १०१; सुपा १२२)। २ रोका हुआ (स २०६)।

धरिज्जंत, **धरिज्जमाण** देखो धर = धृ।

धरिणी स्त्री [धरिणी] पृथिवी, भूमि (पाअ)।

धरित्ती स्त्री [धरित्री] पृथिवी, भूमि (श्रु १२७; सम्मत्त २२६)।

धरिम न [धरिम] १ जो तराजू में तौल कर बेचा जाय वह (श्रा १८; णाया १, ८)। २ ऋण, करजा (णाया १, १)। ३ एक तरह की नाप, तौल (जो २)।

धरियव्व देखो धर = धृ।

धरिस अक [धृष्] १ संहत होना, एकत्रित होना। २ प्रगल्भता करना, ढीठाई करना। ३ मिलना, संबद्ध होना। ४ सक. हिंसा करना, मारना। ५ अमर्ष करना, सहन नहीं करना। धरिसइ (राज)।

धरिस सक [धर्षय्] क्षुब्ध करना, विचलित करना। धरिसेइ (उत्त ३२, १२)।

धरिसण न [धर्षण] १ परिभव, अभिभव। २ संहति, समूह। ३ अमर्ष, असहिष्णुता। ४ हिंसा; ५ बन्धन, योजन (निचू १; राज)। ६ प्रगल्भता, धृष्टता, ढीठाई (औप)।

धरेंत देखो धर = धृ।

धव पुं [धव] १ पति, स्वामी (णाया १, १; वव ७)। २ वृक्ष-विशेष (पण्ण १; उप १०३१ टी; औप)।

धवक्क अक [दे] धड़कना, भय से व्याकुल होना, धुकधुकाना। धवक्कइ (सण)।

धवक्किय वि [दे] धड़का हुआ, भयसे व्याकुल बना हुआ (सण)।

धवण न [धावन] धौन, चावल आदि का धावन-जल (सूक्त ८८)।

धवल पुं [दे] स्व-जाति में उत्तम (दे ५, ५७)।

धवल न [धवल] लगातार सोलह दिन का उपवास (संबोध ५८)।

धवल वि [धवल] १ सफेद, श्वेत (पाअ; सुपा २८५)। २ पुं. उत्तम बैल (गा ६३८)। ३ पुंन. छन्द-विशेष (पिंग)। °गिरि पुं [°गिरि] कैलास पर्वत (ती ४६)। °गेह न [°गेह] प्रासाद, महल (कुमा)। °चंद पुं [°चन्द्र] एक जैन मुनि (दं ४७)। °रव पुं [°रव] मंगलगीत (सुपा २९५)। °हर न [°गृह] प्रासाद, महल (श्रा १२; महा)।

धवल सक [धवलय्] सफेद करना। धवलइ (पि ५५७)। कवकृ. धवलिज्जंत (गउड)।

धवलक्क न [धवलार्क] ग्राम-विशेष, जो आजकल 'घोलका' नाम से गुजरात में प्रसिद्ध है (ती ३)।

धवलण न [धवलन] सफेद करना, श्वेती-करण (कुमा)।

धवलसउण पुं [दे] हंस (दे ५, ५९; पाअ)।

धवला स्त्री [धवला] गौ, गैया (गा ६३८)।

धवलाअ अक [धवलाय्] सफेद होना। धवलाअंत (गा ९)।

धवलाइअ वि [धवलायित] १ उत्तम बैल की तरह जिसने कार्य किया हो वह। २ न. उत्तम वृषभ की तरह आचरण (सार्ध ६)।

धवलिम पुंस्त्री [धवलिमन्] सफेदपन, शुक्लता, सफेदी (सुपा ७४)।

धवलिय वि [धवलित] सफेद किया हुआ (भवि)।

धवली स्त्री [धवली] उत्तम गौ, श्रेष्ठ गैया (गउड)।

धव्व पुं [दे] वेग (दे ५, ५७)।

धस अक [धस्] १ धसना। २ नीचे जाना। ३ प्रवेश करना। धसइ, धसउ (पिंग)।

धस पुं [धस्] 'धस्' ऐसा आवाज, गिरने की आवाज; 'धसत्ति महिमंडले पडिओ' (महा; णाया १, १—पत्र ४७)।

धसक्क पुं [दे] हृदय की घबराहट की आवाज, गुजराती में 'धासको'; 'तो जायहिअधसक्का' (श्रा १४; कुप्र ४३५)।

धसक्किअ वि [दे] खूब घबड़ाया हुआ (श्रा १४)।

धसल वि [दे] विस्तीर्ण, फैला हुआ (दे ५, ५८)।

धसिअ वि [धसित] धसा हुआ (हम्मीर १३)।

धा सक [धा] धारण करना। धाइ, धाअइ धाअए (षड्)। कर्म, धीयए (पिंड)।

धा सक [ध्यै] ध्यान करना, चिन्तन करना। धाअंति (संक्षि ७६)।

धा सक [धाव्] १ दौड़ना। २ शुद्ध करना, धोना। धाइ, धाअइ (हे ४, २४०)। भवि. धाहिइ (षड्)।

धाइअ वि [धावित] दौड़ा हुआ (से ८, ६८; भवि)।

धाइअसंड देखो धायइ-संड; (महा)।

धाई देखो धत्ती (हे २, ८१; पव ६७)। ४ धाई का काम करने से प्राप्त की हुई भिक्षा (ठा ३, ४)। ५ छन्द-विशेष (पिंग)। °पिंड पुं [°पिण्ड] धाई का काम कर प्राप्त की हुई भिक्षा (पव ६७)।

धाई देखो धायई; (उप ६४८ टी)।

धाउ पुं [धातु] १ सोना, चाँदी, तांबा, लोहा, राँगा, सीसा और जस्ता ये सात वस्तु (जी ३)। २ गेरु, मनसिल आदि पदार्थ (से ४, ४; पण्ह १, २)। ३ शरीर-धारक वस्तु—कफ, वात, पित्त, रस, रक्त, माँस, मेद, अस्थि, मज्जा और शुक्र (औप; कुप्र १५८)। ४ पृथिवी, जल, तेज और वायु ये चार महाभूत (सूअ १, १, १)। ५ व्याकरण प्रसिद्ध शब्द-योनि, 'भू', 'पच्' आदि (अणु)। ६ स्वभाव, प्रकृति (स २४१)। ७ नाट्य-शास्त्र-प्रसिद्ध आलत्तिका-विशेष (कुमा २, ६९)। °य वि [°ज] १ धातु से उत्पन्न। २ वस्त्र-विशेष (पंचभा)। ३ नाम. शब्द (अणु)। °वाइअ वि [°वादिक] औषधि आदि के योग से ताम्र आदि को सोना वगैरह बनानेवाला, किमियागर (कुप्र ३६७)।

धाउ पुं [धातृ] पणपन्नि नामक व्यन्तर देवों का एक इन्द्र (ठा २, ३)।

धाउसोसण न [धातुशोषण] आयंबिल तप (संबोध ५८)।

धाड अक [निर् + सृ] बाहर निकलना। धाड़इ (हे ४; ७९)।

धाड सक [निर् + सारय्] बाहर निकालना। संकृ. धाडिऊण (कुप्र ८३)। कवकृ. धाडिज्जंत (पउम १७, २८; ३१, ११९)।

धाड सक [ध्राट्] प्रेरणा करना। २ नाश करना। धाडेंति (सूअनि ७०)। कवकृ. धाडीयंत (पण्ह १, ३—पत्र ५४)।

धाडण न [ध्राटन] बाहर निकालना (वव ४)।

धाडण न [ध्राटन] १ प्रेरणा। २ नाश (औप)।

धाडय वि [दे. ध्राटक] डाका डालनेवाला, 'धाडयपुरिसा हया तत्थ' (सिरि ११४६)।

धाडाविअ वि [निस्सारित] बाहर निकाली हुआ, निर्वासित (पउम २२, ८)।

धाडि वि [दे] निरस्त, निराकृत (दे ५, ५९)।

धाडिअ वि [निःसृत] बाहर निकला हुआ (कुमा)।

धाडिअ पुं [दे] आराम, बगीचा (दे ५, ५९)।

धाडिअ वि [निस्सारित] निर्वासित, बाहर निकाला हुआ (पउम १०१, ६०; स २९८; उप ७२८ टी)।

धाडी स्त्री [धाटी] १ डाकुओं का दल (सुर २, ४; प्रासू)। २ हमला, आक्रमण, धावा (कप्पू)।

धाण देखो धण्ण = धन्य (वज्जा ९०)।

धाणा स्त्री [धाना] धनिया, एक प्रकार का मसाला (दे ७, ६९; प्रासू)।

धाणुक्क वि [धानुष्क] धनुर्धर, धनुर्विद्या में निपुण (उप पृ ८६; सुर १३, १६२; वेणी ११४; कुप्र ४५२)।

धाणूरिअ न [दे] फल-भेद (दे ५, ६०)।

धाम पुंन [धामन्] अहंकार, गर्व। २ रस आदि में लम्पटता। ३ वि. गर्व-युक्त। ४ रस आदि में लम्पट (संबोध १६)।

धाम न [धामन्] बल, पराक्रम (आरा ६३; सण)।

धाय वि [ध्रात] १ तृप्त, संतुष्ट (ओघ ७७ भा; सुर २, ६७)। २ न. सुभिक्ष, सुकाल (बृह ५)।

धायइ°, धायई } स्त्री [धातकी] वृक्ष-विशेष, धाय का पेड़ (पण्ण १; पउम ५३, ७९; ठा २, ३; सम १५२)। °खंड पुं [°खण्ड] स्वनाम-ख्यात एक द्वीप (ठा २, ३; अणु)। °संड पुं [°षण्ड] स्वनाम-ख्यात एक द्वीप (जीव ३; ठा ८; इक)।

धार सक [धारय्] १ धारण करना। २ करजा रखना। धारेइ (महा)। वकृ. धारंत, धारअंत, धारेमाण, धारयमाण, धारिंत (सुर ३, १८६; नाट—विक्र १०६; भग; सुपा २५४; २६४)। हेकृ. धारिउं, धारेत्तए, धारित्तए, (पि ५७३; कस; ठा ५, ३)। कृ. धारणिज्ज, धारणीय, धारेयव्व (णाया १, १; भग ७, ९; सुर १४, ७७; सुपा ४८२)।

धार न [धार] १ धारा-संबन्धी जल। २ वि धारण करनेवाला (राज)।

धार वि [दे] लघु, छोटा (दे ५, ५९)।

धारग वि [धारक] धारण करनेवाला (कप्प; उप पृ ७५; सुपा २५४)।

धारण न [धारण] १ धारने की अवस्था। २ ग्रहण। ३ रक्षण, रखना। ४ परिधान करना। ५ अवलम्बन (औप; ठा ३, ३)।

धारणा स्त्री [धारणा] १ मर्यादा, स्थिति (आवम)। २ विषय ग्रहण करनेवाली बुद्धि (ठा ८; दंस ५)। ३ ज्ञात विषय का अविस्मरण (विसे २९१)। ४ अवधारण, निश्चय (आवम)। ५ मन की स्थिरता। ६ घर का एक अवयव, धरनो या धरन (भग ८, २)। °ववहार पुं [°व्यवहार] व्यवहार-विशेष (ठा ५, २)।

धारणा स्त्री [धारणा] मकान का खंभा, धरन (आचा २, २, ३, १ टी; पव १३३)।

धारणिज्ज देखो धार = धारय्।

धारणी स्त्री [धारणी] १ धारण करनेवाली (औप)। २ ग्यारहवें जिनदेव की प्रथम शिष्या (सम १५२)। ३ वसुदेव आदि अनेक राजाओं की रानी का नाम (अंत; आचू १; विपा २, १; णाया १, १)।

धारणीय देखो धार = धारय्।

धारय देखो धारग (ओघ १; भवि)।

धारयमाण देखो धार = धारय्।

धारा स्त्री [दे] रण-मुख, रण-भूमि का अग्रभाग (दे ५, ५६)।

धारा स्त्री [धारा] १ अस्त्र के आगे का भाग, धार (गउड; प्रासू ६२)। २ प्रवाह, णाली (महा)। ३ अश्व की गति-विशेष (कुमा; महा)। ४ जल धारा, पानी की धारा। ५ वर्षा, वृष्टि। ६ द्रव पदार्थों का प्रवाह रूप से पतन (गउड)। ७ एक राज-पत्नी (आवम)। °कयंब पुं [°कदम्ब] कदम्ब की एक जाति, जो वर्षा से फलती-फूलती है (कुमा)। °धर पुं [°धर] मेघ (सुपा २०१)। °वारि न [°वारि] धारा से गिरता जल (भग १३, ६)। °वारिय वि [°वारिक] जहाँ धारा से पानी गिरता हो वह (भग १३, ६)। °हय वि [°हत] वर्षा से सिक्त (कप्प)। °हर देखो °धर (सुर १३, १९५)।

धारा स्त्री [धारा] मालव देश की एक नगरी (मोह ८८)।

धारावास पुं [दे] १ भेक, मेढ़क, बेंग (दे ५, ६३; षड्)। २ मेघ (दे ५, ६३)।

धारि वि [धारिन्] धारण करनेवाला (औप; कप्प)।

धारिंत देखो धार = धारय्।

धारिट्ठ न [धाष्टर्य] धृष्टता, उद्दण्डता, गर्व, साहस (आख्या० म० कोश० अ० २३ भावटीका कथा पद्य ५२६)।

धारिणी देखो धारणी (औप)।

धारित्तए देखो धार = धारय्।

धारिय वि [धारित] धारण किया हुआ (भवि; आचा)।

धारी देखो धत्ती (हे २, ८१)।

धारी देखो धारा (कुमा)।

धारेत्तए } **धारेयव्व** } देखो धार = धारय्।

धाव सक [धाव्] १ दौड़ना। २ शुद्ध करना, धोना। धावइ (हे ४, २२८; २३८)। वकृ. **धावंत, धावमाण** (प्रासू ८४; महा; कप्प)। संकृ. **धाविऊण** (महा)।

धावण न [धावन] १ वेग से गमन, दौड़ना। (सूअ १, ७)। २ प्रक्षालन, धोना, (कुप्र १६४)।

धावणय पुं [धावनक] दौड़ते हुए समाचार पहुँचाने का काम करनेवाला, हरकारा, संदेसिया (सुपा १०५, २६५)।

धावणया स्त्री [धान] स्तन-पान करना (उप; ८३३)।

धावमाण देखो धाव।

धाविअ वि [धावित] दौड़ा हुआ (भवि)।

धाविर वि [धावितृ] दौड़नेवाला (सण; सुपा ५४)।

धावी देखो धाई = धात्री (उप १३९ टी; स ६६; सुर २, ११२; १६, ६८)।

धाहा स्त्री [दे] धाह, पुकार, चिल्लाहट (पउम ५३, ८८; सुपा ३१७, ३४०)।

धाहाविय न [दे] धाह, पुकार, चिल्लाहट (स ३७०; सुपा ३८०; ४९६; महा)।

धाहिय वि [दे] पलायित, भागा हुआ (धम्म ११ टी)।

धि अ [धिक्] धिक्कार, छीः (रंभा)।

धिइ स्त्री [धृति] १ धैर्य, धीरज (सूअ १, ८; षड्)। २ धारण (आवम)। ३ धारणा, ज्ञात विषय का अविस्मरण (विसे)। ४ धरण, अवस्थान (सूअ १, ११)। ५ अहिंसा (पण्ह २, १)। ६ धैर्य की अधिष्ठायिका देवी। ७ देवी की प्रतिमा-विशेष (राज; णाया १, १ टी—पत्र ४३)। ८ तिगिच्छि-द्रह की अधिष्ठायिका देवी (इक; ठा २३)। °कूड न [°कूट] धृति-देवी का अधिष्ठित शिखर-विशेष (जं ४)। °धर पुं [°धर] १ एक अन्तकृद् महर्षि। २ 'अंतगड-दसा' सूत्र का एक अध्ययन (अंत १८)। °म, °मंत वि [°मत्] धीरजवाला (ठा ८; पण्ह २, ४)।

धिइ स्त्री [धृति] तेला, लगातार तीन दिन का उपवास (संबोध ५८)।

धिक्कय वि [धिक्कृत] १ धिक्कारा हुआ (वव १)। २ न. धिक्कार, तिरस्कार (बृह ६)।

धिक्करण न [धिक्करण] तिरस्कार, धिक्कार (णाया १, १६)।

धिक्करिअ वि [धिक्कृत] धिक्कारा हुआ (कुप्र १५७)।

धिक्कार पुं [धिक्कार] १ धिक्कार, तिरस्कार (पण्ह १, ३; द्र २६)। २ युगलिक मनुष्यों के समय की एक दण्ड-नीति (ठा ७—पत्र ३९८)।

धिक्कार सक [धिक् + कारय्] धिक्कारना, तिरस्कार करना। कवकृ. **धिक्कारिज्जमाण** (पि ५६३)।

धिज्ज न [धैर्य] धीरज, धृति (हे २, ६४)।

धिज्ज वि [धेय] धारण करने योग्य (णाया १, १)।

धिज्ज वि [ध्येय] ध्यान-योग्य, चिन्तनीय (णाया १, १)।

धिज्जाइ पुंस्त्री [द्विजाति, धिग्जाति] ब्राह्मण, विप्र। स्त्री. 'तत्थ भद्दा नाम धिज्जाइणी' (आवम)।

धिज्जाइय } **धिज्जाईय** } पुंस्त्री [द्विजातिक, धिग्जातीय] ब्राह्मण, विप्र (महा; उप १२९; आव ३)।

धिज्जीविय न [धिग्जीवित] निन्दनीय जीवन (सूअ २, २)।

धिट्ठ वि [धृष्ट] ढीठ, प्रगल्भ। २ निर्लज्ज, बेशरम (हे १, १३०; सुर २, ९; गा ६२७; श्रा १४)।

धिट्ठज्जुण्ण देखो धट्ठज्जुण्ण (पि २७८)।

धिट्ठिम पुंस्त्री [धृष्टत्व] धृष्टता, ढीठाई (सुपा १२०)।

धिद्धी } **धिधी** } अ [धिक् धिक्] छीः छीः (उव; व ६१; रंभा)।

धिप्प अक [दीप्] दीपना, चमकना। धिप्पइ (हे १, २२३)।

धिप्पिर वि [दीप्र] देदीप्यमान, चमकीला (कुमा)।

धिय अ [धिक्] धिक्कार, छीः; 'बेइ गिरं धिय मुंडिय' (उप ६३४)।

धिरत्थु अ [धिगस्तु] धिक्कार हो (णाया १, १६; महा; प्राकृ)।

धिसण पुं [धिषण] बृहस्पति, सुर-गुरु (पाअ)।

धिसि अ [धिक्] धिक्कार, छीः (सुपा ३९५; सण)।

धी देखो धीआ; 'जं मंगलं कुंभनिवस्स धीए मल्लीइ राईसरवंदि आए' (मंगल १२, २०)।

धी स्त्री [धी] बुद्धि, मति (पाम्र; णाया १, १६; कुप्र ११६; २४७; प्रासू २०)। °**धण** वि [°धन] १ बुद्धिमान, विद्वान्। २ पुं. एक मन्त्री का नाम (उप ७२८ टी)। °**म**, °**मंत** वि [°मत्] बुद्धिशाली, विद्वान् (उप ७२८ टी; कप्प; राज)।

धी अ [धिक्] धिक्कार, छी: (उव; वै ५५)।

धीआ स्त्री [दुहितृ] लड़की, पुत्री (मृच्छ १०६; पि ३९२; महा; भवि; पच्च ४२)।

धीइ देखो धिइ; 'तुच्छा गारवकलिया चलिदिया दुब्बला य धीईए' (पव ६२ टी)।

धीउल्लिआ स्त्री [दे] पुतली (स ७३७)।

धीमल न [धिङ्मल] निन्दनीय मैल (तंदु ३८)।

धीर अक [धीरय्] १ धीरज धरना। २ सक. धीरज देना, आश्वासन देना। धीरेंत (गउड)।

धीर वि [धीर] १ धैर्यवाला, सुस्थिर, अचञ्चल (से ४, ३०; गा ३६७; ठा ४, २)। २ बुद्धिमान्, पण्डित, विद्वान् (उप ७६८ टी; धर्म २)। ३ विवेकी, शिष्ट (सूअ १, ७)। ४ सहिष्णु (सूअ १, ३, ४)। ५ पुं. परमेश्वर, परमात्मा, जिन-देव। ६ गणधर-देव (आचा; आव ४)।

धीर न [धैर्य] धीरज, धीरता (हे २, ६४; कुमा)।

धीरव सक [धीरय्] सान्त्वना देना, दिलासा देना। कर्म. धीरविज्जंति (कुप्र २७३)।

धीरवण न [धीरण] धीरज देना, सान्त्वना (वव १)।

धीरविय वि [धीरित] जिसको सान्त्वना दी गई हो वह, आश्वासित (स ६०४)।

धीराअ अक [धीराय्] धीर होना, धीरज धरना। वकृ. धीराअंत (से १२, ७०)।

धीराविअ देखो धीरविय (पि ५५६)।

धीरिअ देखो धीर = धैर्य (हे २, १०७)।

धीरिअ देखो धीरविय (भवि)।

धीरिम पुंस्त्री [धीरत्व] धैर्य, धीरज (उप पृ ६२; सुपा १०६; भवि; कुप्र १५०)।

धीवर पुं [धीवर] १ मछलीमार, मछुआ, मल्लाह, जालजीवी (कुमा; कुप्र २४७)। २ वि. उत्तम बुद्धिवाला (उप ७२८टी; कुप्र २४७)।

धुअ देखो धुव = धाव्। धुअइ (गा १३०)।

धुअ सक [धु] १ कँपाना। २ फेंकना। ३ त्याग करना। वकृ. धुअमाण (से १४, ६६)।

धुअ वि [धुव = ध्रुव] (भवि)। छन्द-विशेष (पिंग)।

धुअ वि [धूत] १ कम्पित। २ न. कम्प (प्राकृ ७०)।

धुअ वि [धुत] १ कम्पित (गा ७८; दे १, १७३)। २ त्यक्त (औप)। ३ उच्छलित (से ४, ४)। ४ न. कर्म (सूअ २, २)। ५ मोक्ष, मुक्ति (सूअ १, ७)। ६ त्याग, संग-त्याग, संयम (सूअ १, २, २; आचा)। °**वाय** पुं [°वाद] कर्म-नाश का उपदेश (आचा)।

धुअगाय पुं [दे] भ्रमर, भौंरा, भमरा (दे ५, ५७; पाअ)।

धुअण देखो धुवण (पव १०१)।

धुअराय पुं [दे] ऊपर देखो (षड्)।

धुंधुमार पुं [धुन्धुमार] नृप-विशेष (कुप्र २६३)।

धुंधुमारा स्त्री [दे] इन्द्राणी, शची (दे ५, ६०)।

धुक्क अक [क्षुध्] भूख लगना। धुक्कइ (प्राकृ ६३)।

धुक्काधुक्क अक [कम्प्] काँपना, 'धुक्-धुक्' होना। धुक्काधुक्कइ (गा ५८३)।

धुक्कुद्धुअ } वि [दे] उल्लसित, उल्लास-
धुक्कुद्धुगिअ } युक्त (दे ५, ६०)।

धुक्कुधुअ देखो धुक्काधुक्क। वकृ. धुक्कुधुअंत (भवि)।

धुक्कोडिअ न [दे] संशय, संदेह (वज्जा ६०)।

धुगुधुग अक [धुगधुगाय्] 'धुग् धुग्' आवाज करना। वकृ. धुगुधुगंत (पराह १, ३—पत्र ४५)।

धुट्ठुअ देखो धुद्धुअ। धुट्ठुअइ (हे ४; ३९५)।

धुण सक [धू] १ कँपाना, हिलाना। २ दूर करना, हटाना। ३ नाश करना। धुणइ, धुणाइ (हे ४,५९; आचा; पि १२०)। कर्म. धुव्वइ, धुणिज्जइ (हे ४, २४२)। वकृ. धुणंत (सुपा १८५)। संकृ. धुणिऊण, धुणिया, धुणेऊण (षड्; दस ६, ३)। हेकृ. धुणित्तए (सूअ १, २, २)। कृ. धुणेज्ज (आचू १)।

धुणण न [धूनन] १ अपनयन। २ परित्याग, छोड़ना (राज)।

धुणणा स्त्री [धूनना] कम्पन, हिलना (ओघ १६५ भा)।

धुणा देखो धुणणा (उत्त २६, २७)।

धुणाव सक [धूनय्] कँपाना, हिलाना। धुणावइ (वज्जा ६)।

धुणाविअ वि [धूनित] कँपाया हुआ (उप ७६८ टी)।

धुणि देखो झुणि (षड्)।

धुणिऊण } देखो धुण।
धुणित्तए }

धुणिय वि [धूत] कम्पित, हिलाया हुआ; 'मत्थयं धुणियं' (सुपा ३२०; २०१)।

धुणिया } देखो धुण।
धुणेज्ज }

धुण्ण वि [धाव्य] १ दूर करने योग्य। २ न. पाप। ३ कर्म (दस ६, १; दसा ६)।

धुत्त वि [धूर्त्त] १ ठग, वञ्चक; प्रतारक (प्रासू ४०; श्रा १२)। २ जुआ खेलनेवाला। ३ पुं. धतूरे का पेड़। ४ लोहे की काट—मैल। ५ लवण-विशेष, एक प्रकार का नोन (हे २, ३०)।

धुत्त वि [दे] १ विस्तीर्ण (दे ५, ५८)। २ आक्रान्त (षड्)।

धुत्त } सक [धूर्त्तय्] ठगना। धुत्तारसि
धुत्तार } (सुपा ११४)। वकृ. धुत्तयंत (श्रा १२)।

धुत्तारिअ वि [धूर्त्तित] ठगा हुआ, वञ्चित (उप ७२८ टी)।

धुत्ति स्त्री [धूर्त्ति] जरा, बुढ़ापा (राज)।

धुत्तिअ वि [धूर्त्तित] वञ्चित, प्रतारित (सुपा ३२४; श्रा १२)।

धुत्तिम पुंस्त्री [धूर्त्तत्व] धूर्त्तता, धूर्त्तपन, ठगाई (हे १, ३५; कुमा; श्रा १२)।

धुत्ती स्त्री [धूर्त्ता] धूर्त्त स्त्री (वज्जा १०६)।

धुत्तीरय न [धत्तूरक] धतूरे का पुष्प (वज्जा १०६)।

धुदुधुअ (अप) अक [शब्दाय्] आवाज करना। धुदुधुअइ (हे ४, ३९५)।

धुप्प देखो धिप्प। धुप्पइ (प्राकृ ७०)।

धुम्म पुं [धूम्र] १ धूम, धुआँ। २ वर्ण-विशेष, कपोत-वर्ण। ३ वि. कपोत वर्ण-वाला। °क्ख पुं [°ाक्ष] एक राक्षस (से १२, ६०)।

धुर न. देखो धुरा (उप पृ ६३)।

धुर पुं [धुर] १ ज्योतिष्क ग्रह-विशेष (ठा २, ३)। २ कर्जदार, ऋणी; 'जस्स कल-सम्मि वहियाखंडाइं तस्स धुरधणं लब्भं, पुणरवि देउं धुराणं' (सुपा ४२६)।

धुरंधर वि [धुरन्धर] १ भार को वहन करने में समर्थ, किसी कार्य को पार पहुँचाने में शक्तिमान्, भार-वाहक (से ३, ३६)। २ नेता, मुखिया, अगुआ (सण; उत्तर २०)। ३ पुं. गाड़ी, हल आदि खींचनेवाला बैल (दे ८, ४४)।

धुरा स्त्री [धुर्] १ गाड़ी वगैरह का अग्र भाग, धुरी (उव)। २ भार, बोझा। ३ चिंता (हे १, १६)। °धार वि [°धार] धुरा को वहन करनेवाला, धुरन्धर (पउम ७, १७१)।

धुरी स्त्री [धुरी] अक्ष, धुरा, गाड़ी का जूआ (अणु)।

धुरीण वि [धुरीण] धुरन्धर, मुखिया, अगुआ (धर्मवि १३६; सम्मत्त ११८)।

धुव सक [धाव्] धोना, शुद्ध करना। धुवइ, धुवंति (हे ४, २३८; गा ४३३; पिंड २८)। वकृ. धुवंत (से ८, १०२)। कवकृ. धुव्वंत, धुव्वमाण (गा ५६३; से ६, ४५; वज्जा २४; पि ५३८)।

धुव सक [धू] कँपाना, हिलाना। धुवइ (हे ४, ५९; षड्)। कर्म. धुव्वइ (कुमा)। कवकृ. धुव्वंत (कुमा)।

धुव वि [ध्रुव] १ निश्चल, स्थिर (जीव ३)। २ नित्य, शाश्वत, सर्वदा-स्थायी (ठा ५, ३; सूअ २, ४)। ३ अवश्यभावी (सूअ २, १)। ४ निश्चित, नियत (आचा)। ५ पुं. अश्व के शरीर का आवर्त्त (कुमा)। ६ मोक्ष, मुक्ति। ७ संयम, इन्द्रियादि-निग्रह (सूअ १, २, १)। ८ संसार (अणु)। ९ न. मुक्ति का कारण, मोक्ष-मार्ग (आचा)। १० कर्म (अणु)। ११ अत्यन्त, अतिशय; 'धुवमोगिणहइ' (ठा ६)। °कम्मिय पुं [°कर्मिक] लोहार आदि शिल्पी (वव १)। °चारि वि [°चारिन्] मुमुक्षु, मुक्ति का अभिलाषी (आचा)। °णिग्गह पुं [°निग्रह] आवश्यक, अवश्य करने योग्य अनुष्ठान-विशेष (अणु)। °मग्ग पुं [°मार्ग] मुक्ति-मार्ग, मोक्ष-मार्ग (सूअ १, ४, १)। °राहु पुं [°राहु] राहु-विशेष (सम २९)। °वण्ण पुं [°वर्ण] १ संयम। २ मोक्ष, मुक्ति। ३ शाश्वत यश (आचा)। देखो धुअ = ध्रुव।

धुवण न [धावन] १ प्रक्षालन (ओघ ७२; ३४७; स २७२)। २ वि. कँपानेवाला, हिलानेवाला। स्त्री. °णी (कुमा)।

धुवण पुंन [धूपन] १ धूप देना। धूम-पान (दस ३, ९)।

धुविया स्त्री [ध्रुविता] कर्म-विशेष, ध्रुव-बन्धिनी कर्म-प्रकृति (पंच ५, ६६)।

धुव्व देखो धुव = धाव्। धुव्वइ (संक्षि ३६)।

धुव्वंत देखो धव = धू।

धुव्वंत, **धुव्वमाण** } देखो धुव = धाव्।

धुहअ वि [दे] पुरस्कृत, आगे किया हुआ (षड्)।

धूअ वि [धूत] देखो धुअ = धुत (आचा; दस ३, १३; पि ३१२; ३९२; सूअ १, ४, २)।

धूअ देखो धूव = धूप (सुपा ६५७)।

धूअ न [धूत] पहले बँधा हुआ कर्म, पूर्व-कर्म (सूअ २, २, ६५)।

धूआ स्त्री [दुहितृ] लड़की, पुत्री (हे २; १२६; प्रासू ६४)।

धूण पुं [दे] गज, हाथी (दे ५, ६०)।

धूणिय वि [धूनित] कम्पित (कुप्र ६८)।

धूम पुं [धूम] १ हींग आदि बघार (पिंड २५०)। २ क्रोध, गुस्सा। ३ वि. क्रोधी (संबोध १६)।

धूम पुं [धूम] १ धूम, धुआँ, अग्नि-चिह्न (गउड)। २ द्वेष, अप्रीति (पण्ह २, १)। °इंगाल पुं ब. [°ाङ्गार] द्वेष और राग (ओघ २८८ भा)। °केउ पुं [°केतु] १ ज्योतिष्क ग्रह-विशेष (ठा २, ३; पण्ह १, ५; औप)। २ वह्नि, अग्नि, आग (उत्त २२)। ३ अशुभ उत्पात का सूचक तारा-पुञ्ज (गउड)। °चारण पुं [°चारण] धूम के अवलम्बन से आकाश में गमन करने की शक्तिवाला मुनि-विशेष (गच्छ २)। °जोणि पुं [°योनि] बादल, मेघ (पाअ)। °ज्झय देखो °द्धय (राज)। °दोस पुं [°दोष] भिक्षा का एक दोष, द्वेष से भोजन करना (आचा २, १, ३)। °द्धय पुं [°ध्वज] वह्नि, अग्नि (पाअ; उप १०३१टी)। °प्पभा, °प्पहा स्त्री [°प्रभा] पाचवीं नरक-पृथिवी (ठा ७; प्राह)। °ल वि [°ल] धुआँ वाला (उप २६४टी)। °वडल पुंन [°पटल] धूम-समूह (हे २, १६८)। °वण्ण वि [°वर्ण] पाण्डुर वर्णवाला (णाया १, १७)। °सिहा स्त्री [°शिखा] धुएँ का अग्रभाग (ठा ४, २)।

धूमंग पुं [दे] भ्रमर, भौंरा, भमरा (दे ५,५७)।

धूमण न [धूमन] धूम-पान (सूअ २, १)।

धूमद्दार न [दे] गवाक्ष, वातायन, झरोखा (दे ५)।

धूमद्धय पुं [दे] १ तड़ाग, तलाव, तालाब २ महिष, भैंसा (दे ५, ६३)।

धूमद्धयमहिसी स्त्री. ब. [दे] कृत्तिका नक्षत्र (दे ५ ६२)।

धूमपलियाम वि [दे] गर्त्त में डालकर आग लगाने पर भी जो कच्चा रह जाय वह (निचू १५)।

धूममहिसी स्त्री [दे] नीहार, कुहरा, कुहासा (दे ५. ६१; पाअ)।

धूमरी स्त्री [दे] १ नीहार, कुहासा (दे ५, ६१)। २ तुहिन, हिम (षड)।

धूमसिहा, **धूमा** } स्त्री [दे] नीहार, कुहासा (दे ५, ६१; ठा १०)।

धूमा देखो धूमाअ। धूमाइ (प्राकृ ७१)।

धूमाअ अक [धूमाय्] १ धुआँ करना। २ जलाना। ३ धूम की तरह आचरना।

धूमाअंति (से ८,१६; गउड)। वकृ. **धूमायंत** (गउड; से १, ८)।

धूमाभा स्त्री [धूमाभा] पाँचवीं नरक-पृथिवी (पउम ७५, ४७)।

धूमिअ वि [धूमित] १ धूमयुक्त (पिंड)। २ छौंका हुआ (शाक आदि) (दे ६; ८८)।

धूमिआ स्त्री [दे] नीहार, कुहासा (दे ५, ६१; पाअ; ठा १०; भग ३, ७; अणु)।

धूयरा देखो धूआ (सूअ १, ४, १, १३)।

धूरिअ वि [दे] दीर्घ, लम्बा (दे ५, ६२)।

धूरिअवट्ट पुं [दे] अश्व, घोड़ा (दे ५, ६१)।

धूलडिआ (अप) देखो धूलि (हे ४, ४३२)।

धूलि, धूली स्त्री [धूलि, °ली] धूल, रज, रेणु (गउड; प्रासू २८; ८४)। °कंब, °कलंब पुं [°कदम्ब] ग्रीष्म ऋतु में विकसनेवाला कदम्ब-वृक्ष (कुमा)। °जंघ वि [°जङ्घ] जिसके पाँव में धूल लगी हो वह (वव १०)। °धूसर वि [°धूसर] धूल से लिप्त (गा ७७४; ८२६)। °धोउ वि [°धोत] धूल को साफ करनेवाला (सुपा ३३६)। °पंथ पुं [°पथ] धूलि-बहुल मार्ग (ओघ २४ टी)। °वरिस पुं [°वर्ष] धूल की वर्षा (आवम)। °हर न [°गृह] वर्षा ऋतु में लड़के लोग जो धूल का घर बनाते हैं वह (उप ५९७ टी)।

धूलिहड्डी स्त्री [दे] पर्व-विशेष, होली; 'धूलिहडीरायत्तणसरिसा सव्वेसिं हसणिज्जा' (कुलक ५)।

धूलीवट्ट पुं [दे] अश्व, घोड़ा (दे ५, ६१)।

धूव सक [धूपय्] धूप करना। धूवेज्ज (आचा २, १३)। वकृ. **धूवेंत** (पि ३९७)।

धूव पुं [धूप] १ सुगन्धि द्रव्य से उत्पन्न धूम। २ सुगन्धि द्रव्य-विशेष, जो देव-पूजा आदि में जलाया जाता है (णाया १, १; सुर ३, ६५)। °घडी स्त्री [°घटी] धूप-पात्र, धूप से भरी हुई कलशी (जं १)। °जंत न [°यन्त्र] धूप-पात्र (दे ३, ३५)।

धूवण न [धूपन] १ धूप देना। २ धूम-पान, रोग की निवृत्ति के लिए किया जाता धूम का पान; 'धूवणे त्ति वमणे य व त्थीकम्मविरेयणे' (दस ३, ९)। °वट्टि स्त्री [°वर्त्ति] धूप की बनी हुई वर्त्तिका, अगरबत्ती (कप्पू)।

धूविअ वि [धूपित] १ तापित, गरम किया हुआ। २ हींग आदि से छौंका हुआ (चारु ६)। ३ धूप दिया हुआ (औप; गच्छ १)।

धूसर पुं [धूसर] १ हलका पीला रंग, ईषत् पाण्डु वर्ण। २ वि. धूसर रंगवाला, ईषत् पाण्डु वर्णवाला (प्रासू ८४; गा ७७४; से ६, ८२)।

धूसरिअ वि [धूसरित] धूसर वर्णवाला (पाअ; भवि)।

धे सक [धा] धारण करना। धेइ (संक्षि ३३); 'धेहि धीरत्तं' (कुप्र १००)।

धेअ, धेज्ज वि [ध्येय] ध्यान-योग्य (अजि १४; णाया १, १)।

धेउल्लिया देखो धीउल्लिया (सुख ३, १)।

धेज्ज वि [धेय] धारण करने योग्य (णाया १, १)।

धेज्ज न [धैर्य] धीरज, धीरता (पण्ह २, २)।

धेणु स्त्री [धेनु] १ नव-प्रसूता गौ। २ सवत्सा गौ। ३ दुधार गाय (हे ३, २९; चंड)।

धेर देखो धीर = धैर्य (विक्र १७)।

धेवय पुं [धैवत] स्वर-विशेष; 'धेवयस्सरसंपण्णा भवंति कलहप्पिया' (ठा ७—पत्र ३९३)।

धोअ सक [धाव्] धोना, शुद्ध करना, पखारना। धोएज्जा (आचा)। वकृ. **धोयंत** (सुपा ८५)।

धोअ वि [धौत] धोया हुआ, प्रक्षालित (से १, २५; ७, २०; गा ३६९)।

धोअग वि [धावक] १ धोनेवाला। २ पुं. धोबी (उप पृ ३३३)।

धोअण वि [धावन] धोना, प्रक्षालन (श्रा २०; रयण १८; ओघ ३४७)।

धोइअ देखो धोअ = धौत (गा १८)।

धोज्ज वि [धुर्य] १ धुरीण, भार-वाहक। २ अगुआ, नेता, धुरन्धर (वव १)।

धोरण न [दे] गति-चातुर्य (औप)।

धोरणि, धोरणी स्त्री [धोरणि, °णी] पंक्ति, कतार (सुपा ४९; भवि; षड्)।

धोरिय देखो धोज्ज (सुपा २८२)।

धोरुगिणी स्त्री [धोरुकिनिका] देश-विशेष में उत्पन्न स्त्री (णाया १, १—पत्र ३७)।

धोरेय वि [धौरेय] देखो धोज्ज (सुपा ६५०)।

धोव देखो धोअ = धाव्। धोवइ (स १५७; पि ७८)। धोवेज्जा (आचा)। वकृ. **धोवंत** (भवि)। कवकृ. **धोव्वंत, धोव्वमाण** (पउम १०, ४४; णाया १, ८)। कृ. **धोवणिय** (णाया १, १६)।

धोवण देखो धोअण (पिंड २३)।

धोवय देखो धोवग (दे ८, ३९)।

ध्रुवु (अप) अ [ध्रुवम्] अटल, स्थिर (हे ४, ४१८)।

॥ इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि धआराइसद्दसंकलणो
छव्वीसइमो तरंगो समत्तो ॥

न देखो ण

१ प्राकृत भाषा में नकरादि सब शब्द णकारादि होते हैं, अर्थात् आदि के नकार के स्थान में नित्य या विकल्प से 'ण' होनेका व्याकरणों का सामान्य नियम है (प्राप्र २, ४२; दे ५, ६३ टी; हे १, २२९; षड् १, ३, ५३), और प्राकृत-साहित्य-ग्रन्थों में दोनों तरह के प्रयोग पाए जाते हैं। इससे ऐसे सब सब शब्द णकार के प्रकरण में आ जाने से यहाँ पर पुनरावृत्ति कर व्यर्थ में पुस्तक का कलेवर बढ़ाना उचित नहीं समझा गया है। पाठकगण णकार के प्रकरण में आदि के 'ण' के स्थान में सर्वत्र 'न' समझ लें। यही कारण है कि नकारादि शब्दों के भी प्रमाण णकारादि शब्दों में ही दिए गए हैं।

प

प पुं [प] १ ओष्ठ-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष (प्राप)। २ पाप-त्याग; 'पत्ति य पाववज्जणे' (आवम)।

प अ [प्र] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ प्रकर्ष; 'पओस' (से २, ११)। २ प्रारम्भ; 'पणमिअ', 'पकरेइ' (जं १; भग १, १)। ३ उत्पत्ति। ४ ख्याति, प्रसिद्धि। ५ व्यवहार। ६ चारों ओर से (निचू १; हे २, २१७)। ७ प्रस्रवण, मूत्र (विसे ७८१)। ८ फिर-फिर (निचू ३; १७)। ९ गुजरा हुआ, विनष्ट; 'पासुअ' (ठा ४, २—पत्र २१३ टी)।

प° वि [प्राच्] पूर्व तरफ स्थित (भवि)।

पअंगम पुं [प्लवङ्गम] छन्द-विशेष (पिंग)।

पअंच पुं [प्रजङ्घ] राक्षस-विशेष (से १२, ८३)।

पअब्भ देखो **पगब्भ** = प्रगल्भ (प्राकृ ७८)।

पइ अ [प्रति] १ अपेक्षा-सूचक (दसनि ३, १)। २ लक्ष्य, तरफ, ओर; 'भरुयच्छं पइ चलियं (सम्मत्त १४१; धर्मवि ५९)।

पइ पुं [पति] १ धव, भर्ता, परवरिश करनेवाला (पाअ; गा १५९; कप्प)। २ मालिक। ३ रक्षक; 'भूवई', 'तिअसगणवई', 'नरवइ' (सुपा ३६; अजि १७; १९)। ४ श्रेष्ठ, उत्तम; 'धरणिधरवई' (अजि १७)। °घर न [°गृह] ससुराल (षड्)। °वया, °व्वया स्त्री [°व्रता] पति-सेवा-परायण स्त्री, कुलवती स्त्री, सती (गा ४१७; सुर ६, ६७)। °हर देखो °घर (हे १, ४)।

पइ देखो **पडि** (ठा २, १; काल; उवर २१)।

पइअ वि [दे] १ भर्त्सित, तिरस्कृत। २ न. पहिया, रथ-चक्र (दे ६, ६४)।

पइइ देखो **पगइ** = प्रकृति (से २, ४५)।

पइउं देखो **पय** = पच्।

पइउवचरण न [प्रत्युपचरण] प्रत्युपचार, प्रति-सेवा (रंभा)।

पइऊल देखो **पडिकूल** (नाट—विक्र ४५)।

पइंवया देखो **पइ-वया** (णाया १, १६—पत्र २०४)।

पइक (अप) देखो **पाइक्क** (पिंग)।

पइकिदि देखो **पडिकिदि** (नाट—शकु ११६)।

पइक्क देखो **पाइक्क** (पिंग; पि १९४)।

पइगिइ देखो **पडिकिदि** (स ६२५)।

पइच्छन्न पुं [प्रतिच्छन्न] भूत-विशेष (राज)।

पइज्ज (अप) वि [पतित] गिरा हुआ (पिंग)।

पइज्ज (अप) वि [प्राप्त] मिला हुआ, लब्ध (पिंग)।

पइज्जा देखो **पइण्णा** (भवि; सण)।

पइट्ठ वि [दे] १ जिसने रस को जाना हो वह। २ विरल। ३ पुं. मार्ग, रास्ता (दे ६, ६६)।

पइट्ठ देखो **पगिट्ठ** (सट्ठि ५ टी)।

पइट्ठ वि [दे] प्रेषित, भेजा हुआ; 'जह अद्द-कुमर मिच्छो अभयपइट्ठं जिणस्स पडिबिंब' (संबोध ३)।

पइट्ठ पुं [प्रतिष्ठ] भगवान् सुपार्श्वनाथ के पिता का नाम (सम १५०)।

पइट्ठ वि [प्रविष्ट] जिसने प्रवेश किया हो वह (स ४२६)।

पइट्ठव सक [प्रति-स्थापय्] मूर्ति आदि की विधि-पूर्वक स्थापना करना। पइट्ठवेज्जा (पंचा ७, ४३)।

पइट्ठवण देखो **पइट्ठावण** (राज)।

पइट्ठा स्त्री [प्रतिष्ठा] १ आदर, सम्मान। २ कीर्त्ति, यश। ३ व्यवस्था (हे १, २०६)। ४ स्थापना, संस्थापन (णंदि)। ५ अवस्थान, स्थिति (पंचा ८)। ६ मूर्त्ति में ईश्वर के गुणों का आरोपण; 'जिणबिंबाण पइट्ठं कइया वि हु आइसंतस्स' (सुर १६, १३)। ७ आश्रय, आधार (औप)।

पइट्ठा स्त्री [प्रतिष्ठा] १ धारणा, वासना (णंदि १७६)। २ समाधान, शंका निरास-पूर्वक स्वपक्ष-स्थापन (चेइय ५३५)।

पइट्ठाण पुं [प्रतिष्ठान] मूल प्रदेश (राय २७)।

पइट्ठाण न [प्रतिष्ठान] १ स्थिति, अवस्थान; 'काऊण पइट्ठाणं रमणिज्जे एत्थ अच्छामो' (पउम ४२, २७; ठा ६)। २ आधार, आश्रय (भग)। ३ महल आदि की नींव (पव १४८)। ४ नगर-विशेष (आक २१)।

पइट्ठाण न [दे] नगर, शहर (दे ६, २६)।

पइट्ठावक, पइट्ठावग देखो पइट्ठावय (णाया १, १६ राज)।

पइट्ठावण न [प्रतिष्ठापन] १ संस्थापन (पंचा ७)। २ व्यवस्थापन (पंचा ७)।

पइट्ठावय वि [प्रतिष्ठापक] प्रतिष्ठा करनेवाला (औप; पि २२०)।

पइट्ठाविय वि [प्रतिष्ठापित] संस्थापित (स ६२; ७०५)।

पइट्ठिअ वि [प्रतिष्ठित] प्रतिबद्ध, रुका हुआ (आचा २, १६, १२)।

पइट्ठिय वि [प्रतिष्ठित] १ स्थित, अवस्थित (उवा)। २ आश्रित; 'रयणायरतीरपइट्ठियाण पुरिसाण जं च दालिद्दं' (प्रासू ७०)। ३ व्यवस्थित (आचा २, १, ७)। ४ गौरवान्वित (हे १, ३८)।

पइणियय वि [प्रतिनियत] नियम-संगत, नियमित (धर्मवि २६६)।

पइण्ण वि [दे] विपुल, विस्तृत (दे ६, ७)।

पइण्ण वि [प्रतीर्ण] प्रकर्ष से तीर्ण (आचा)।

पइण्ण, पइण्णग वि [प्रकीर्ण, °क] १ विक्षिप्त फेंका हुआ; 'रत्थापइण्णणअणु-प्पला तुमं सा पडिच्छए एंतं' (गा १४०)। २ अनेक प्रकार से मिश्रित (पंचू)। ३ बिखरा हुआ (ठा ६)। ४ विस्तारित (बृह १)। ५ न. ग्रंथ-विशेष, तीर्थंकर-देव के सामान्य शिष्य द्वारा बनाया हुआ ग्रंथ (णंदि)। °कहा स्त्री [°कथा] उत्सर्ग, सामान्य नियम; 'उस्सग्गो पइण्णकहा भण्णइ अववादो नियच्छकहा भण्णइ' (निचू ५)। °तव पुं [°तपस्] तपश्चर्या-विशेष (पंचा १६)।

पइण्णा स्त्री [प्रतिज्ञा] १ प्रण, शपथ (नाट—मालती १०६)। २ नियम (औप; पंचा १८)। ३ तर्कशास्त्र प्रसिद्ध अनुमान-प्रमाण का एक अवयव, साध्य वचन का निर्देश (दसनि १)।

पइण्णाद (शौ) वि [प्रतिज्ञात] जिसकी प्रतिज्ञा की गई हो वह (मा १५)।

पइण्णि वि [प्रतिज्ञावत्] प्रतिज्ञावाला, 'बंधमोक्खपइण्णिणो' (उत्त ६, १०; सुख, १०)।

पइत्त देखो पउत्त = प्रवृत्त (भवि)।

पइत्त वि [प्रदीप्त] जला हुआ, प्रज्वलित (से १५, ७३)।

पइत्त देखो पवित्त = पवित्र (सुपा ७४)।

पइदि (शौ) देखो पगइ (नाट—शकु ६१)।

पइदिण न [प्रतिदिन] हर रोज (काल)।

पइद्धिय वि [प्रदिग्ध] विलिप्त (सूअ १, ५, १)।

पइदियह न [प्रतिदिवस] प्रतिदिन, हर रोज (सुर १, ५०)।

पइनियय वि [प्रतिनियत] मुकर्रर किया हुआ, नियुक्त किया हुआ (आवम)।

पइन्न देखो पइण्ण = प्रतीर्ण (पण्ह २, १ टी—पत्र १०५)।

पइन्न, पइन्नग देखो पइण्ण (उव; भवि; श्रा ६)।

पइन्नय देखो पइन्नग (चेइय १६)।

पइन्ना देखो पइण्णा (सुर १, १)।

पइप्प देखो पलिप्प। वकृ. पइप्पमाण (गा ४१६)।

पइप्पईय न [प्रतिप्रतीक] प्रत्यंग, हर अंग (रंभा)।

पइभय वि [प्रतिभय] प्रत्येक प्राणी को भय उपजानेवाला (णाया १, २; पण्ह १, १; औप)।

पइभा स्त्री [प्रतिभा] बुद्धि-विशेष, प्रत्युत्पन्न-मति (पुप्फ ३३१)।

पइभाणाण न [प्रतिभाज्ञान] प्रतिभा से उत्पन्न होता ज्ञान, प्रातिभ प्रत्यक्ष (धर्मसं १२०६)।

पइमुह वि [प्रतिमुख] संमुख (उप ७४४)।

पइर सक [वप्] बोना, वपन करना। पइरिंति (आचा २, १०, २)। भूका. पइरिंसु (आचा २, १०, २)। भवि. पइरिस्संति (आचा २, १०, २)। कर्म. पइरिज्जंति (स ७१३)।

पइरिक्क वि [दे. प्रतिरिक्त] १ शून्य, रहित (दे ६, ७१; से २, १५)। २ विशाल, विस्तीर्ण (दे ६, ७१)। ३ तुच्छ, हलका (से १, ५८)। ४ प्रचुर, विपुल (ओघ २४६—पत्र १०३)। ५ नितान्त, अत्यन्त 'पइरिक्कसुहाए मणाणुकूलाए विहारभूमीए' (कप्प)। ६ न. एकान्त स्थान, विजन स्थान, निर्जन जगह (दे ६, ७१; स २३५; ७५५; गा ८८; उप २६३)।

पइल (अप) देखो पढम (पि ४४६)।

पइलाइया स्त्री [प्रतिलादिका] हाथ के बल चलनेवाली सर्प की एक जाति (राज)।

पइल्ल पुं [दे. पदिक] १ ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष (ठा २, ३)। २ रोग-विशेष, श्लीपद (पण्ह २, ५)।

पइव पुं [प्रतिव] एक यादव का नाम (राज)।

पइवरिस न [प्रतिवर्ष] हरएक वर्ष (पि २२०)।

पइवाइ वि [प्रतिवादिन्] प्रतिवादी, प्रतिपक्षी (विसे २४८८)।

पइविसिट्ठ वि [प्रतिविशिष्ट] विशेष-युक्त, विशिष्ट (उवा)।

पइविसेस पुं [प्रतिविशेष] विशेष, भेद, भिन्नता (विसे ५२)।

पइस देखो पविस। पइसइ (भवि)। पइसंति (दे १, ६४ टि)। कर्म. पइसिज्जइ (भवि)। वकृ. पइसंत (भवि)। कृ. पइसियव्व (स २३४)।

पइसमय न [प्रतिसमय] हर समय, प्रतिक्षण (पि २२०)।

पइसर देखो पविस। पइसरइ (भवि)।

पइसार सक [प्र + वेशय्] प्रवेश कराना। पइसारइ (भवि)।

पइसारिय वि [प्रवेशित] जिसका प्रवेश कराया गया हो वह, 'पइसारिओ य नयरिं' (महा; भवि)।

पइहंत पुं [दे] जयन्त, इन्द्र का एक पुत्र (दे ६, १९)।

पइहा सक [प्रति + हा] त्याग करना। संकृ. पइहिऊण (उव)।

पई° देखो पइ = पति (षड्; हे १, ४; सुर १, १७६)।

पईअ वि [प्रतीत] १ विज्ञात। २ विश्वस्त। ३ प्रसिद्ध, विख्यात (विसे ७०९)।

पईअ न [प्रतीक] अंग, अवयव (रंभा)।

पईइ स्त्री [प्रतीति] १ विश्वास। २ प्रसिद्धि (राज)।

पईव देखो पलीव। पईवेइ (कस)।

पईव पुं [प्रदीप] दीपक, दिया (पाअ; जी १)।

पईव वि [प्रतीप] १ प्रतिकूल (हे १, २०६)। २ पुं. शत्रु, दुश्मन (उप ६४८ टी; हे १, २३१)।

पईस (अप) देखो पइस। पईसइ (भवि)।

पउ (अप) वि [पतित] गिरा हुआ (पिंग)।

पउअ देखो पागय = प्राकृत (प्राकृ ५)।

पाउअ पुं [दे] दिन, दिवस (दे ६, ५)।

पउअ न [प्रयुत] संख्या-विशेष, 'प्रयुताङ्ग' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह (इक; ठा २, ४)।

पउअंग न [प्रयुताङ्ग] संख्या-विशेष, 'अयुत' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह (ठा २, ४)।

पउंज सक [प्र + युज्] १ जोड़ना, युक्त करना। २ उच्चारण करना। ३ प्रवृत्त करना। ४ प्रेरणा करना। ५ व्यवहार करना। ६ करना। पउंजइ (महा; भवि; पि ५०७)। पउंजंति (कप्प)। वकृ. पउंजंत, पउंजमाण (औप; पउम ३५, ३९)। कवकृ. पउज्जमाण (प्रयौ २३)। कृ. पउंजिअव्व, पउज्ज (पराह २, ३; उप ७२८ टी; विसे ३३८४), पउइव्व (अप) (कुमा)।

पउंजग वि [प्रयोजक] प्रेरक, प्रेरणा करनेवाला (पंचव १)।

पउंजग वि [प्रयोजन] प्रयोग करनेवाला (पउम १४, १०)। देखो पओअण।

पउंजणया } स्त्री [प्रयोजना] प्रयोग (ओघ
पउंजणा } ११४); 'दुक्खं कीरइ कव्वं कव्वम्मि कए पउंजणा दुक्खं' (वज्जा २)।

पउंजिअ वि [प्रयुक्त] जिसका प्रयोग किया गया हो वह (सुपा १४०; ४४७)।

पउंजित्तु वि [प्रयोक्तृ] प्रवृत्ति करनेवाला (ठा ५, १)।

पउंजित्तु वि [प्रयोजयितृ] प्रवृत्ति करनेवाला (ठा ५, १)।

पउज्ज
पउज्जमाण } देखो पउंज।

पउट्ट अ [परिवृत्य] मार कर। °परिहार पुं [°परिहार] मर कर फिर उसी शरीर में उत्पन्न होकर उस शरीर का परिभोग करना, 'एवं खलु गोसाला ! वणस्सइ-काइयाओ पउट्ट-परिहारं परिहरंति' (भग १५—पत्र ६६७)।

पउट्ट वि [परिवर्त] १ परिवर्त, मर कर फिर उसी शरीर में उत्पन्न होना। २ परिवर्त-वाद; 'एस णं गोयमा ! गोसालस्स मंखलि-पुत्तस्स पउट्टे' (भग १५—पत्र ६६७)।

पउट्ठ वि [प्रवृष्ट] बरसा हुआ (हे १, १३१)।

पउट्ठ पुं [प्रकोष्ठ] हाथ का पहुँचा, कलाई और केहुनी के बीच का भाग (पराह १, ४—पत्र ७८; कप्प; कुमा)।

पउट्ठ वि [प्रजुष्ट] १ विशेष सेवित। २ न. अति उच्छिष्ट (चंड)।

पउट्ठ वि [प्रद्विष्ट] द्वेष-युक्त; 'तो सो पउट्ठ-चित्तो' (सुपा ४७५)।

पउढ न [दे] १ गृह, घर। २ पुं. घर का पश्चिम प्रदेश (दे ६, ४)।

पउण अक [प्रगुणय्] तन्दुरुस्त होना, नीरोग होना; 'अन्नस्स चिगिच्छाए पउणइ अन्नो न लोगम्मि' (धर्मसं ११८४)।

पउण पुं [दे] १ व्रण-प्ररोह। २ नियम-विशेष (दे ६, ६५)।

पउण वि [प्रगुण] १ पटु, निर्दोष; 'कह सच्चरणविहाणं जायइ पउणिंदियाणंपि' (सुपा ४७२; महा)। २ तैयार, तय्यार (दंस ३)।

पउणाड पुं [प्रपुनाट] वृक्ष-विशेष, पमाड का पेड़, चकवड़ (दे ५, ५ टि)।

पउत्त अक [प्र + वृत्] प्रवृत्ति करना। कृ. पउत्तिदव्व (शौ) (नाट—शकु ८७)।

पउत्त वि [प्रयुक्त] जिसका प्रयोग किया गया हो वह (महा; भवि)। २ न. प्रयोग (णाया १, १)।

पउत्त पुं [पौत्र] लड़के का लड़का, पोता (प्राकृ १०; श्रु ११७)।

पउत्त न [प्रतोत्र] प्रतोद, प्राजन, चाबुक, पैना (दसा १०)।

पउत्त वि [प्रवृत्त] जिसने प्रवृत्ति की हो वह (उवा)।

पउत्ति स्त्री [प्रवृत्ति] १ प्रवर्तन (भग १५)। २ समाचार, वृत्तान्त (पाअ; सुर २, ४८; ३, ८४)। ३ कार्य, काज, काम। °वाउय वि [°व्यापृत] कार्य में लगा हुआ (औप)।

पउत्ति स्त्री [प्रयुक्ति] बात, हकीकत (उप पृ २२८; राज)।

पउत्तिदव्व देखो पउत्त = प्र + वृत्।

पउत्तु [प्रयोक्तृ] १ प्रयोग-कर्ता। २ प्रेरणा कर्ता। ३ कर्ता, निर्माता। स्त्री °त्ती (तंदु ४५)।

पउत्थ न [दे] १ गृह, घर (दे ६, ६६)। २ वि. प्रोषित, प्रवास में गया हुआ; 'एहिइ सोवि पउत्थो अहं अ कुप्पेज्ज सोवि अणुणेज्ज' (गा १७; ६६७; हेका ३०, पउम १७, ३; वज्जा ७६; विवे १३२; उव; दे ६, ६६; भवि)। °वइया स्त्री [°पतिका] जिसका पति देशान्तर गया हो वह स्त्री (ओघ ४१३; सुपा ५०८)।

पउद्दव्व देखो पउंज।

पउप्पय देखो पओप्पय (भग ११, ११ टी)।

पउप्पय देखो पओप्पय = प्रपौत्रिक (भग ११, ११ टी)।

पउम न [पद्म] १ सूर्य-विकासी कमल (हे २, ११३; पराह १, ३; कप्प; औप; प्रासू ११३)। २ देव-विमान-विशेष (सम ३३; ३५)। ३ संख्या-विशेष; 'पद्मांग' को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह

(ठा २, ४; इक)। ४ गन्ध-द्रव्य-विशेष (औप; जीव ३)। ५ सुधर्मा सभा का एक सिंहासन (णाया २)। ६ दिन का नववाँ मुहूर्त्त (जो २)। ७ दक्षिण-रुचक-पर्वत का एक शिखर (ठा ८)। ८ पुं. राजा रामचन्द्र, सीता-पति (पउम १, ५; २५, ८)। ९ आठवाँ बलदेव, श्रीकृष्ण के बड़े भाई। १० इस अवसर्पिणीकाल में उत्पन्न नववाँ चक्रवर्ती राजा, राजा पद्मोत्तर का पुत्र (पउम ५, १५३; १५४)। ११ एक राजा का नाम (उप ६४८ टी)। १२ माल्यव नामक पर्वत का अधिष्ठाता देव (ठा २, ३)। १३ भरतक्षेत्र में आगामी उत्सर्पिणी में उत्पन्न होनेवाला आठवाँ चक्रवर्त्ती राजा (सम १५४)। १४ भरत क्षेत्र का भावी आठवाँ बलदेव (सम १५४)। १५ चक्रवर्त्ती राजा का निधि, जो रोग-नाशक सुन्दर वस्त्रों की पूर्ति करता है (उप ९८६ टी)। १६ राजा श्रेणिक का एक पौत्र (निर २, १)। १७ एक जैन मुनि का नाम (कप्प)। १८ एक ह्रद (कप्प)। १९ पद्म-वृक्ष का अधिष्ठाता देव (ठा २, ३)। २० महापद्म नामक जिनदेव के पास दीक्षा लेनेवाला एक राजा, एक भावी राजर्षि (ठा ८)। °गुम्म न [°गुल्म] १ आठवें देव-लोक में स्थित एक देव-विमान का नाम (सम ३५)। २ प्रथम देवलोक में स्थित एक देव-विमान का नाम (महा)। ३ पुं. राजा श्रेणिक का एक पौत्र (निर २, १)। ४ एक भावी राजर्षि, महापद्म नामक जिनदेव के पास दीक्षा लेनेवाला एक राजा (ठा ८)। °चरिय न [°चरित] १ राजा रामचन्द्र की जीवनी—चरित्र। २ प्राकृत भाषा का एक प्राचीन ग्रंथ, जैन रामायण (पउम ११८, १२१)। °णाभ पुं [°नाभ] १ वासुदेव, विष्णु (पउम ४०, १) २ आगामी उत्सर्पिणी-काल में भरतक्षेत्र में होनेवाला प्रथम जिन-देव का नाम (पव ४६)। ३ कपिल-वासुदेव के एक माण्डलिक राजा का नाम (णाया १, १६—पत्र २१३)। °दल न [°दल] कमल-पत्र (प्राप्र)। °द्दह पुं [°द्रह] विविध प्रकार के कमलों से परिपूर्ण एक महान् ह्रद का नाम (सम १०४; कप्प; पउम १०२, ३०)। °द्धय पुं [°ध्वज] एक भावी राजर्षि, जो महापद्म नामक जिनदेव के पास दीक्षा लेगा (ठा ८)। °नाह देखो °णाभ (उप ६४८ टी)। °पुर न [°पुर] एक दक्षिणात्य नगर, जो आजकल 'नासिक' नाम से प्रसिद्ध है (राज)। °प्पभ पुं [°प्रभ] इस अव-सर्पिणी काल में उत्पन्न षष्ठ जिन-देव का नाम (कप्प)। °प्पभा स्त्री [°प्रभा] एक पुष्क-रिणी का नाम (इक)। °प्पह देखो °प्पभ (ठा ५, १; सम ४३; पडि)। °भद्द पुं [°भद्र] राजा श्रेणिक का एक पौत्र (निर २, १)। °मालि पुं [°मालिन्] विद्याधर-वंश के एक राजा का नाम (पउम ५, ४२)। °मुह देखो पउमाणण (षड्)। °रह पुं [°रथ] १ विद्याधर-वंश का एक राजा (पउम ५, ४३)। २ मथुरा नगरी के राजा जयसेन का पुत्र (महा)। °राय पुं [°राग] रक्त-वर्ण मणि-विशेष (१३९; १६६)। °राय पुं [°राज] धातकीखण्ड की अपर-कंका नगरी का एक राजा, जिसने द्रौपदी का अपहरण किया था (ठा १०)। °रुक्ख पुं [°वृक्ष] १ उत्तर-कुरुक्षेत्र में स्थित एक वृक्ष (ठा २, ३)। २ वृक्ष-सदृश बड़ा कमल (जीव ३)। °लया स्त्री [°लता] १ कमलिनी, पद्मिनी (जीव ३; भग; कप्प)। २ कमल के आकारवाली वल्ली (णाया १, १)। °वडिंसय, °वडेंसय न [°ावतंसक] पद्मावती-देवी का सौधर्म नामक देवलोक में स्थित एक विमान (राज; णाया २—पत्र २५३)। °वरवेइया स्त्री [°वरवेदिका] १ कमलों की श्रेष्ठ वेदिका (भग) ३ जम्बू द्वीप की जगती के ऊपर रही हुई देवों की एक भोग-भूमि (जीव ३)। °वूह पुं [°व्यूह] सैन्य की पद्माकार रचना (पण्ह १, ३)। °सर पुं [°सरस्] कमलों से युक्त सरोवर (णाया १, १; कप्प; महा)। °सिरी स्त्री [°श्री] १ अष्टम चक्र-वर्त्ती सुभूमराज की पटरानी (सम १५२)। २ एक स्त्री का नाम (कुमा)। °सेण पुं [°सेन] १ राजा श्रेणिक के एक पौत्र का नाम, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी (निर १, २)। २ नागकुमार-जातीय एक देव का नाम (दीव)। °सेहर पुं [°शेखर] पृथ्वीपुर नगर के एक राजा का नाम (धम्म ७)। °ागर पुं [°ाकर] १ कमलों का समूह। २ सरोवर (उप १३३ टी)। °ासण न [°ासन] पद्माकार आसन (जं १)।

पउमग पुंन [पद्मक] केसर (दस ६, ६४)।

पउमप्पह पुं [पद्मप्रभ] विक्रम की तेरहवीं शताब्दी का एक जैन आचार्य (विपा ३)।

पउमा स्त्री [पद्मा] १ लक्ष्मी। २ देवी-विशेष। ३ लौंग, लवँग। ४ पुष्प-विशेष, कुसुम्भ-पुष्प (प्राकृ २८)।

पउमा स्त्री [पद्मा] १ बीसवें तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रतस्वामी की माता का नाम (सम १५१)। २ सौधर्म देवलोक के इन्द्र की एक पटरानी का नाम (ठा ८—पत्र ४२६; पउम १०२, १५९)। ३ भीम नामक राक्षसेन्द्र की एक पटरानी (ठा ४, १—पत्र २०४)। ४ एक विद्याधर कन्या का नाम (पउम ६, २४)। ५ रावण की एक पत्नी (पउम ७४, १०)। ६ लक्ष्मी (राज)। ७ वनस्पति-विशेष (पण्ण १—पत्र ३६)। ८ चौदहवें तीर्थंकर श्रीअनन्तनाथ की मुख्य शिष्या का नाम (पव ९)। ९ सुदर्शना-जम्बू की उत्तर दिशा में स्थित एक पुष्करिणी (इक)। १० दूसरे बलदेव और वासुदेव की माता का नाम। ११ लेश्या-विशेष (राज)।

पउमाड पुं [दे] वृक्ष विशेष, पमाड़ का पेड़ चकवड़ (दे ५, ५)।

पउमाणण पुं [पद्मानन] एक राजा का नाम (उप १०३१ टी)।

पउमाभ पुं [पद्माभ] षष्ठ तीर्थंकर का नाम (पउम १, २)।

पउमार [दे] देखो पउमाड (दे ५, ५ टि)।

पउमावई स्त्री [पद्मावती] १ जम्बूद्वीप के सुमेरु पर्वत के पूर्व तरफ के रुचक पर्वत पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी-देवी (ठा ८)। २ भगवान् पार्श्वनाथ की शासन-देवी, जो नाग-राज धरणेन्द्र की पटरानी है (संति १०)। ३ श्रीकृष्ण की एक पत्नी का नाम (अंत १५)। ४ भीम-नामक राक्षसेन्द्र की एक पटरानी (भग १०, ५)। ५ शक्रेन्द्र की एक

पटरानी (णाया २—पत्र २५३)। ६ चम्पेश्वर राजा दधिवाहन की एक स्त्री का नाम (आव ४)। ७ राजा कूणिक की एक पत्नी (भग ७, ६)। ८ अयोध्या के राजा हरिसिंह की एक पत्नी (धम्म ८)। ६ तेतलिपुर के राजा कनककेतु की पत्नी (दंस १)। १० कौशाम्बी नगरी के राजा शतानीक के पुत्र उदयन की पत्नी (विपा १, ५)। ११ शैलकपुर के राजा शैलक की पत्नी (णाया १, ५)। १२ राजा कूणिक के पुत्र कालकुमार की भार्या का नाम। १३ राजा महाबल की भार्या का नाम (निर १, १; ५; पि १३६)। १४ बीसवें तीर्थंकर श्रीमुनिसुव्रतस्वामी की माता का नाम (पव ११)। १५ पुण्डरीकिणी नगरी के राजा महापद्म की पटरानी (आचू १)। १६ रम्यनामक विजय की राजधानी (जं ४)।

पउमावत्ती (अप) स्त्री [पद्मावती] छन्द-विशेष (पिंग)।

पउमिणी स्त्री [पद्मिनी] १ कमलिनी, कमल-लता (कप्प; सुपा १५५)। २ एक श्रेष्ठी की स्त्री का नाम (उप ७१८ टी)।

पउमुत्तर पुं [पद्मोत्तर] १ नववें चक्रवर्ती श्रीमहापद्मराज के पिता का नाम (सम १५२)। २ मन्दर पर्वत के भद्रशाल वन का एक दिग्हस्ती पर्वत (इक)।

पउमुत्तरा स्त्री [पद्मोत्तरा] एक प्रकार की शक्कर, खाँड, चीनी (णाया १, १७—पत्र पण्ण २२६; १७)।

पउर वि [प्रचुर] प्रभूत, बहुत (हे १, १८०; कुमा, सुर ४, ७४)।

पउर वि [पौर] १ पुर-संबन्धी, नगर से संबन्ध रखनेवाला। २ नगर में रहनेवाला (हे १, १६२)।

पउरव पुं [पौरव] पुरुनामक चन्द्र-वंशीय नृप का पुत्र (संक्षि ६)।

पउराण (अप) देखो पुराण (भवि)।

पउरिस वि [पौरुषेय] पुरुष-कृत, पुरुष का बनाया हुआ; 'वेदस्स तह यापउरिसभावो' (धर्मसं ८६२)।

पउरिस, पउरुस पुंन [पौरुष] पुरुषत्व, पुरुषार्थ, वीरता, मरदानी (हे १, १११; १६२); 'पउरुसा' (प्राप्र); 'पउरुसं' (संक्षि ६)।

पउल सक [पच्] पकाना। पउलइ (हे ४, ९०; दे ६, २६)।

पउलण न [पचन] पकाना, पाक (पण्ह १, १)।

पउलिअ वि [पक्व] पका हुआ (पाअ)।

पउलिअ वि [प्रज्वलित] दग्ध, जला हुआ (उवा)।

पउल्ल देखो पउल। पउल्लइ (षड्; हे ४, ९० टि)।

पउल्ल वि [पक्व] पका हुआ (पंचा १)।

पउल्लग न [पचनक] रसोई का पात्र (दशवै० वृ० हारि० पत्र ६७, २)।

पउविय वि [प्रकुपित] विशेष कुपित, क्रुद्ध (महा)।

पउस सक [प्र + द्विष्] द्वेष करना। पउसेज्जा (ओघ २५ भा)।

पउसय वि [दे] देश-विशेष में उत्पन्न। स्त्री. °सिया (औप)।

पउस्स देखो पउस। पउस्ससि (कुप्र ३७७)। वकृ. पउस्संत, पउस्समाण (राज; अंत २२)। संकृ. पउस्सिऊण (स ५१३)।

पउहण (अप) देखो पवहण (भवि)।

पऊढ न [दे] गृह, घर (दे ६, ४)।

पए अ [प्रगे] पहले, पूर्व; 'तित्थगरवयणकरणे आयरिआणं कयं पए होइ' (ओघ ४७ भा); 'जइ पुण वियालपत्ता पए व पत्ता उवस्सयं न लभे' (ओघ १६८)।

पएणियार पुं [प्रैणीचार] व्याध की एक जाति, जो हरिणों को पकड़ने के लिए हरिणी-समूह को चराते एवं पालते हैं (पण्ह १, १—पत्र १४)।

पएर पुं [दे] १ वृति-विवर, बाड़ का छिद्र। २ मार्ग, रास्ता। ३ कंठदीनार नामक भूषण-विशेष। ४ गले का छिद्र। ५ दीननाद, आर्त्त-स्वर। ६ वि. दुरशील, दुराचारी (दे ६, ६७)।

पएस पुं [दे] प्रातिवेश्मिक, पड़ोसी (दे ६, ३)।

पएस पुं [प्रदेश] १ जिसका विभाग न हो सके ऐसा सूक्ष्म अवयव (ठा १, १)। २ कर्म-दल का संचय (नव ३१)। ३ स्थान, जगह (कुमा ६, ५६)। ४ देश का एक भाग, प्रान्त (कुमा ६)। ५ परिमाण-विशेष, निरंश-अवयव-परिमित माप। ६ छोटा भाग। ७ परमाणु। ८ द्व्यणुक। ६ त्र्यणुक, तीन परमाणुओं का समूह (राज)। °कम्म न [°कर्मन्] कर्म-विशेष, प्रदेश-रूप कर्म (भग)। °ग्ग न [°ाग्र] कर्मों के दलिकों का परिमाण (भग)। °घण वि [°घन] निबिड प्रदेश (औप)। °णाम न [°नामन्] कर्म-विशेष (ठा ६)। °णाम पुं [°नाम] कर्म-द्रव्यों का परिणाम (ठा ६)। °बंध पुं [°बन्ध] कर्म-दलों का आत्म-प्रदेशों के साथ संबन्धन (सम ६)। °संकम पुं [°संक्रम] कर्म-द्रव्यों को भिन्न स्वभाव वाले कर्मों के रूप में परिणत करना (ठा ४, २)।

पएसण न [प्रदेशन] उपदेश, 'पएसणयं णाम उवएसो' (आचू १)।

पएसय वि [प्रदेशक] उपदेशक, प्रदर्शक; 'सिद्धिपहपएसए वंदे' (विसे १०२५)।

पएसि पुं [प्रदेशिन्] स्वनाम-ख्यात एक राजा, जो श्री पार्श्वनाथ भगवान् के केशि-नामक गणधर से प्रबुद्ध हुआ था (राय; कुप्र १४५; श्रा ६)।

पएसिणी स्त्री [दे] पड़ोस में रहनेवाली स्त्री, पड़ोसिनी (दे ६, ३ टी)।

पएसिणी स्त्री [प्रदेशिनी] अंगुष्ठ के पास की उंगली, तर्जनी (ओघ ३६०)।

पएसिय देखो पदेसिय (राज)।

पओअ पुं [पयोद] मेघ (दस ७, ५२)।

पओअ देखो पओग (हे १, २४५; अभि ६; सण; पि ८५)।

पओअण न [प्रयोजन] १ हेतु, निमित्त, कारण (सुज्ज १, १२)। २ कार्य, काम। ३ मतलब (महा; उत्त २३; स्वप्न ४८)।

पओइद (शौ) वि [प्रयोजित] जिसका प्रयोग कराया गया हो वह (नाट—विक्र १०३)।

पओग पुं [प्रयोग] प्रयोजन (सुअ २,७,२)।

पओग पुं [प्रयोग] १ शब्द-योजना (भास ६३)। २ जीव का व्यापार, चेतन का प्रयत्न; 'उप्पाओ दुविगप्पो पओगजणिओ य विस्ससो चेव' (सम २५; ठा ३, १; सम्म १२६; स ५२४)। ३ प्रेरणा (श्रा १४)। ४ उपाय (श्राचू १)। ५ जीव के प्रयत्न में कारण-भूत मन आदि (ठा ३, ३)। ६ वाद-विवाद, शास्त्रार्थ (दसा ४)। °**कम्म** न [°कर्मन्] मन आदि की चेष्टा से आत्म-प्रदेशों के साथ बँधनेवाला कर्म (राज)। °**करण** न [°करण] जीव के व्यापार द्वारा होनेवाला किसी वस्तु का निर्माण; 'होइ उ एगो जीवव्वावारो तेण जं विणिम्माणं पओगकरणं तयं बहुहा' (विसे)। °**किरिया** स्त्री [°क्रिया] मन आदि की चेष्टा (ठा ३, ३)। °**फड्डुय** न [°स्पर्धक] मन आदि के व्यापार-स्थान की वृद्धि-द्वारा कर्म-परमाणुओं में बढ़नेवाला रस (कम्मप २३)। °**बंध** पुं [°बन्ध] जीव-प्रयत्न द्वारा होनेवाला बन्धन (भग १८, ३)। °**मइ** स्त्री [°मति] वाद-विषयक-परिज्ञान (दसा ४)। °**संपया** स्त्री [°संपत्] आचार्य का वाद-विषक सामर्थ्य (ठा ८)। °**सा** अ [प्रयोगेण] जीव-प्रयत्न से (पि ३६४)।

पओज देखो **पउंज**=प्र+युज्। पओजए (पव ६४)।

पओजग वि [प्रयोजक] विनिश्चायक, निर्णायक, गमक (धर्मसं १२२३)।

पओट्ठ देखो **पउट्ठ**=प्रकोष्ठ (प्राप्र; औप; पि ८४)।

पओत्त न [प्रतोत्र] प्रतोद, प्राजन-यष्टि, पैना। °**धर** पुं [°धर] बैलगाड़ी हाँकनेवाला, बहल-वान या गाड़ीवान (णाया १, १)।

पओद पुं [प्रतोद] ऊपर देखो (औप)।

पओप्पय पुं [प्रपौत्रक] १ प्रपौत्र, पौत्र का पुत्र। २ प्रशिष्य का शिष्य; 'तेण कालेणं तेणं समएणं विमलस्स अरहओ पओप्पए धम्मधासे नामं अणगारे' (भग ११, ११—पत्र ५४८)।

पओप्पिय पुं [दे. प्रपौत्रिक] १ वंश-परम्परा। २ शिष्य-संतति, शिष्य-संतान (भग ११, ११—पत्र ५४८ टी)।

पओरासि पुं [पयोराशि] समुद्र (सम्मत्त १७४)।

पओल पुं [पटोल] पटोल, परवर, परोरा (पराग १)।

पओली स्त्री [प्रतोली] १ नगर के भीतर का रास्ता (अरगु)। २ नगर का दरवाजा; 'गोउरं पओली य' (पाअ; सुपा २६१; श्रा १२; उप पृ ८५; भवि)।

पओवट्ठाव देखो **पज्जवत्थाव**। पओवट्ठाविहि (पि २८४)।

पओवाह पुं [पयोवाह] मेघ, बादल (पउम ८, ४६; से १, २४; सुर २, ८५)।

पओस सक [प्र+द्विष्] द्वेष करना, बैर करना। पओसइ (सुख १, १४)।

पओस पुं [दे. प्रद्वेष] प्रद्वेष, प्रकृष्ट द्वेष (ठा १०; अंत; राय; आव ४; सुर १५, ५८; पुप्फ ४६५, कम्म १; महानि ४, कुप्र १०; स ६६६)।

पओस पुंन [प्रदोष] १ सन्ध्याकाल, दिन और रात्रि का सन्धि-काल (से १, ३४; कुमा)। २ वि. प्रभूत दोषों से युक्त (से २, ११)।

पओहण (अप) देखो **पवहण** (भवि)।

पओहर पुं [पयोधर] १ स्तन, थन (पाअ; से १, २४, गउड; सुर २, ८५)। २ मेघ, बादल (वज्जा १००)। ३ छन्द-विशेष (पिंग)।

पंक पुंन [पङ्क] १ कर्दम, कीचड़, कादा, कादो, कीच; 'धम्ममितंपि नो लग्गं पंकंव गयणंगणे' (श्रा २८; हे १, ३०; ४; ३५७, प्रासू २५); 'सुसइ व पंकं' (वज्जा १३४)। २ पाप (सूअ २, २)। ३ असंयम, इन्द्रिय वगैरह का अनिग्रह (निचू १)। °**आवलिआ** स्त्री [°ावलिका] छन्द-विशेष (पिंग)। °**प्पभा** स्त्री [°प्रभा] चौथी नरक-भूमि (ठा ७; इक)। °**बहुल** वि [°बहुल] १ कर्दम-प्रचुर (सम ६०)। २ पाप-प्रचुर (सूअ २, २)। ३ पुंन. रत्नप्रभा नामक नरक-भूमि का प्रथम काण्ड (जीव ३)। °**य** न [°ज] कमल, पद्म (हे ३, २६; गउड; कुमा)। °**वई** स्त्री [°वती] नदी-विशेष (ठा २, ३—पत्र ८०)।

पंकज देखो **पंक-य** (सम्मत्त ११८)।

पंका स्त्री [पङ्का] चौथी नरक-भूमि (इक; कम्म ३, ५)।

पंकाभा स्त्री [पङ्काभा] चौथी नरक-पृथिवी (उत्त ३६, १५८)।

पंकावई स्त्री [पङ्कावती] पुष्कल नामक विजय के पश्चिम तरफ की एक नदी (इक; जं ४)।

पंकिय वि [पङ्कित] पंक-युक्त, कीचवाला (भग ६, ३; भवि)।

पंकिल वि [पङ्किल] कर्दमवाला (श्रा २८; गा ७६६; कप्पू; कुप्र १८७)।

पंकेरुह न [पङ्केरुह] कमल, पद्म (कप्पू; कुप्र १४१)।

पंख पुंस्त्री [पक्ष] १ पंख, पाँखि, पाँख, पक्ष (पि ७४; राय; पउम ११; ११८; श्रा १४)। २ पनरह दिन, पखवाड़ा (राज)। °**ासण** न [°ासन] आसन-विशेष (राय)।

पंखि पुंस्त्री [पक्षिन्] पंखी, चिड़िया, पक्षी (श्रा १४)। स्त्री. °**णी** (पि ७४)।

पंखुडिआ } स्त्री [दे] पंख, पत्र (कुप्र २६;
पंखुडी } दे ६, ८)।

पंग सक [ग्रह्] ग्रहण करना। पंगइ (हे ४, ४०६)।

पंगण न [प्राङ्गण] आँगन (कुप्र २५०)।

पंगु वि [पङ्गु] पाद-विकल, खञ्ज, लंगड़ा, लूला, खोड़ा (पाअ; पि ३८०; पिंग)।

पंगुर सक [प्रा+वृ] ढकना, आच्छादन करना। पंगुरइ (भवि)। संकृ. **पंगुरिवि** (भवि)।

पंगुरण न [प्रावरण] वस्त्र, कपड़ा (हे १, १७५; कुमा; गा ७८२)।

पंगुल वि [पङ्गुल] देखो **पंगु** (विपा १, १; सं ७५; पाअ)।

पंच त्रि. ब. [पञ्चन्] पाँच, ५ (हे ३, १२३, कप्प; कुमा)। °**उल** न [°कुल] पंचायत (स २२२)। °**उलिय** पुं [°कुलिक] पंचायत में बैठ कर विचार करनेवाला (स २२२)। °**कत्तिय** पुं [कृत्तिक] भगवान् कुन्थुनाथ, जिनके पाँचों कल्याणक कृत्तिका नक्षत्र में हुए थे (ठा ५, १)। °**कप्प** पुं [°कल्प] श्रीभद्रबाहुस्वामि-कृत प्राचीन ग्रन्थ का नाम (पंचभा)। °**कल्लाणय** न [कल्याणक] १ तीर्थंकर का च्यवन, जन्म, दीक्षा,

केवलज्ञान और निर्वाण। २ काम्पिल्यपुर, जहाँ तेरहवें जिन-देव श्रीविमलनाथ के पाँचों कल्याणक हुए थे (ती २४)। ३ तप-विशेष (जीत)। °कोट्ठग वि [°कोष्ठक] १ पाँच कोष्ठों से युक्त। २ पुं. पुरुष (तंदु)। °गव्व न [°गव्य] गाय के ये पाँच पदार्थ—दूध, दही, घृत, गोमय और मूत्र, पंचगव्य (कप्पू)। °गाह न [°गाथ] गाथाछन्द वाले पाँच पद्य (कस)। °गुण वि [°गुण] पाँचगुना (ठा ५,३)। °चित्त पुं [°चित्र] षष्ठ जिन-देव श्रीपद्मप्रभ, जिनके पाँचों कल्याणक चित्रा नक्षत्र में हुए थे (ठा ५, १; कप्प)। °जाम न [°याम] १ अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और त्याग ये पाँच महाव्रत। २ वि. जिसमें इन पाँच महाव्रतों का निरूपण हो वह (ठा ६)। °णउइ स्त्री [°नवति] पंचानवे, ९५ (काल)। °णउय वि [°नवत] ९५ वाँ (काल)। °तालीस (अप) स्त्रीन [°चत्वारिंशत्] पैंतालीस, ४५ (पिंग; पि ४४५)। °तित्थी स्त्री [°तीर्थी] पाँच तीर्थों का समुदाय (धर्म २)। °तीसइम वि [°त्रिंशत्तम] पैंतीसवाँ, ३५ वाँ (पण्ण ३५)। °दस त्रि. ब. [दशन्] पनरह, १५ (कप्पू)। °दसम वि [दशम] पनरहवाँ; १५ वाँ (णाया १, १)। °दसी स्त्री [°दशी] १ पनरहवीं, १५ वीं (विसे ५७९)। २ पूर्णिमा। ३ अमावास्या (सुज्ज १०)। °दसुत्तरसय वि [°दशोत्तरशत-तम] एक सौ पनरहवाँ, ११५ वाँ (पउम ११५, २४)। °नउइ देखो °णउइ (पि ४४७); °नाणि वि [°ज्ञानिन्] मति, श्रुत, अवधि, मनःपर्यव और केवल इन पाँचों ज्ञानों से युक्त, सर्वज्ञ (सम्म ६६)। °पव्वी स्त्री [°पर्वी] मास की दो अष्टमी, दो चतुर्दशी और शुक्ल पंचमी ये पाँच तिथियाँ (रयण २६)। °पुव्वासाढ पुं [°पूर्वाषाढ] दसवें जिनदेव श्रीशीतलनाथ, जिनके पाँचों कल्याणक पूर्वाषाढा नक्षत्र में हुए थे (ठा ५, १)। °पूस पुं [°पुष्य] पनरहवें जिनदेव श्रीधर्म-नाथ (ठा ५, १)। °बाण पुं [°बाण] कामदेव (सुर ४, २४६; कुमा)। °भूय न न [°भूत] पृथिवी, जल, अग्नि, वायु और आकाश ये पाँच पदार्थ (सूअ १, १, १)। °भूयवाइ वि [°भूतवादिन्] आत्मा आदि पदार्थों को न मान कर केवल पाँच भूतों को ही माननेवाला, नास्तिक (सूअ १, १, १)। °महव्वइय वि [°महाव्रतिक] पाँच महा-व्रतोंवाला (सूअ २, ७)। °महव्वय न [°महाव्रत] हिंसा, असत्य, चोरी, मैथुन, और परिग्रह का सर्वथा परित्याग (पण्ह २, ५)। °महाभूय न [°महाभूत] पृथिवी, जल, अग्नि, वायु और आकाश ये पाँच पदार्थ (विसे)। °मुट्ठिय वि [°मुष्टिक] पाँच मुष्टियों का. पाँच मुष्टियों से पूर्ण किया जाता (लोच) (णाया १, १; कप्प, महा)। °मुह पुं [°मुख] सिंह, पंचानन (उप १०३१ टी)। °यसी देखो °दसी (पउम ६६, १४)। °रत्त, °राय पुं [°रात्र] पाँच रात (मा ४३; पण्ह २, ५—पत्र १४९)। °रासिय न [°राशिक] गणित-विशेष (ठा ४, ३)। °रूविय वि [°रूपिक] पाँच प्रकार के वर्णवाला (ठा ४, ४)। °वत्थुग न [°वस्तुक] आचार्य हरि-भद्रसूरि-रचित ग्रन्थ-विशेष (पंचव १, १)। °वरिस वि [°वर्ष] पाँच वर्ष की अवस्था-वाला (सुर २, ७३)। °विह वि [°विध] पाँच प्रकार का (अणु)। °वीसइम वि [°विंशतितम] पचीसवाँ (पउम २५, २६)। °संगह पुं [°संग्रह] आचार्य श्रीहरिभद्रसूरि-कृत एक जैन ग्रन्थ (पंच १)। °संवच्छरिय वि [°सांवत्सरिक] पाँच वर्ष परिमाण-वाला, पाँच वर्ष की आयुवाला (सम ७५)। °सट्ठ वि [°षष्ट] पैंसठवाँ, ६५ वाँ (पउम ६५, ५१)। °सट्ठि स्त्री [षष्टि] पैंसठ, ६५ (कप्प)। °समिय वि [°समित] पाँच समितियों का पालन करनेवाला (सं ८)। °सर पुं [°शर] कामदेव (पाअ; सुर २, ९३; सुपा ६०, रंभा)। °सीस पुं [°शीर्ष] देव-विशेष (दीव)। °सुण्ण न [°शून्य] पाँच प्राणिवध-स्थान (सूअ १, १, ४)। °सुत्तग न [°सूत्रक] आचार्य-श्रीहरिभद्रसूरि-निर्मित एक जैन ग्रन्थ (पसु १)। °सेल, °सेलग, °सेलय पुं [°शैल, °क] लवणोदधि में स्थित और पाँच पर्वतों से विभूषित एक छोटा द्वीप (महा; बृह ४)। °सोगंधिअ वि [°सौगन्धिक] इलायची, लवंग, कपूर, कंकोल और जातीफल—जायफल इन पाँच सुगन्धित वस्तुओं से संस्कृत; 'नन्नत्थ पञ्चसोगंधिएणं तंबोलेणं, अवसेसमुह-वासविहिं पच्चक्खामि' (उवा)। °हत्तर वि [°सप्तत] पचहत्तरवाँ, ७५ वाँ (पउम ७५, ८६)। °हत्तरि स्त्री [°सप्तति] १ संख्या विशेष, ७५। २ जिनकी संख्या पचहत्तर हो वे (पि २६४; कप्प)। °हत्थुत्तर पुं [°हस्तोत्तर] भगवान् महावीर, जिनके पाँचों कल्याणक उत्तराफाल्गुनी-नक्षत्र में हुए थे (कप्प)। °उह पुं [°युध] कामदेव (सण)। °णउइ स्त्री [°नवति] १ संख्या-विशेष, पंचानवे, ९५। २ जिनकी संख्या पंचानबे हो वे (सम ९७; पउम २०, १०३; पि ४४०)। °णउय वि [°नवत] पंचानवाँ, ९५ वाँ (पउम ९५, ९६)। °णण पुं [°नन] सिंह, गजेन्द्र (सुपा १७६; भवि)। °णुव्वइय वि [°णुव्रतिक] हिंसा, असत्य, चोरी, मैथुन और परिग्रह का आंशिक त्यागवाला (उवा; औप, णाया १; १२)। °याम देखो °जाम (बृह ६)। °स स्त्रीन [°शत्] १ संख्या-विशेष, पचास, ५०। २ जिनकी संख्या पचीस हो वे; 'पंचासं अज्जियासाहस्सीओ' (सम ७०)। °सग न [°शक] आचार्य श्रीहरिभद्रसूरि-कृत एक जैन ग्रन्थ (पंचा)। °सीइ स्त्री [°शीति] १ संख्या-विशेष, अस्सी और पाँच, ८५। २ जिनकी संख्या पचासी हो वे (सम ९२; पि ४४६)। °सीइम वि [°शीतितम] पचासीवाँ, ८५ वाँ (पउम ८५, ३१; कप्प; पि ४४९)।

पंचअण्ण देखो पंचजण्ण (गउड)।

पंचंग न [पञ्चाङ्ग] १ दो हाथ, दो जानु और मस्तक ये पाँच शरीरावयव। २ वि. पूर्वोक्त पाँच अंगवाला (प्रणाम आदि); 'पंचंगं करिय ताहे पणिवायं' (सुर ४, ६८)।

पंचंगुलि पुं [दे] एरण्ड-वृक्ष, रेंडी का गाछ (दे ६, १७)।

पंचंगुलि पुं [पञ्चाङ्गुलि] हस्त, हाथ (णाया १, १; कप्प)।

पंचंगुलिआ स्त्री [पञ्चाङ्गुलिका] वल्ली-विशेष (पराग १—पत्र ३३)।

पंचग वि [पञ्चक] पाँच (रुपया आदि) की कीमत का (दसनि ३, १३)।

पंचग न [पञ्चक] पाँच का समूह (ग्राचा)।

पंचजण्ण पुं [पाञ्चजन्य] श्रीकृष्ण का शंख (काप्र ८९२; गा ६७४)।

पंचत्त, पंचत्तण न [पञ्चत्व] १ पाँचपन, पञ्च-रूपता (सुर १, ५)। २ मरण, मौत (सुर १, ५; सण; उप पृ १२४)।

पंचपुंड वि [पञ्चपुण्ड्र] पाँच स्थानों में पुण्ड्र-चिह्न (सफेदी) वाला (पिंड भा ४३)।

पंचपुल पुंन [दे] मत्स्य-बन्धन विशेष, मछली पकड़ने का जाल-विशेष (विपा १, ८—पत्र ८५ टी)।

पंचम वि [पञ्चम] १ पाँचवाँ (उवा)। २ पुं. स्वर-विशेष (ठा ७)। °**धारा** स्त्री [°धारा] अश्व की एक तरह की गति (महा)।

पंचमहब्भूइअ वि [पाञ्चमहाभूतिक] पाँच महाभूतों को माननेवाला, सांख्यमत का अनुयायी (सूअ २, १, २०)।

पंचमासिअ वि [पाञ्चमासिक] १ पाँच मास की उम्र का। २ पाँच मास में पूर्ण होनेवाला (अभिग्रह आदि)। स्त्री. °**आ** (सम २१)।

पंचमिय वि [पाञ्चमिक] पाँचवाँ, पंचम (ओघ ६१)।

पंचमी स्त्री [पञ्चमी] १ पाँचवीं (ग्रामा)। २ तिथि-विशेष, पंचमी तिथि (सम २९; श्रा २८)। ३ व्याकरण-प्रसिद्ध अपादान विभक्ति (अणु)।

पंचयन्न देखो पञ्चजण्ण (णाया १, १६; सुपा २६४)।

पंचलोइया स्त्री [पञ्चलौकिका] भुजपरिसर्प-विशेष, हाथ से चलनेवाले सर्प-जातीय प्राणी [illegible]क जाति (जीव २)।

[illegible] [पञ्चवटी] पाँच वट-वृक्षवाला [illegible] श्रीरामचन्द्रजी ने अपने [illegible] था, इस स्थान [illegible] नगर के पास गोदावरी नदी के किनारे मानते हैं, जब कि आधुनिक गवेषक लोग बस्तर रजवाड़े के दक्षिणी छोर पर, गोदावरी के किनारे, इसका होना सिद्ध करते है (उत्तर ८१)।

पंचवयण पुं [पञ्चवदन] सिंह, मृगराज (सम्मत्त १९८)।

पंचामय न [पञ्चामृत] ये पाँच वस्तु—दही; दूध, घी, मधु तथा शक्कर (सिरि २१८)।

पंचाल पुं [पाञ्चाल] कामशास्त्र-प्रणेता एक ऋषि (सम्मत्त १३७)।

पञ्चाल पुं. ब. [पञ्चाल, पाञ्चाल] १ देश-विशेष, पञ्जाब देश (णाया १, ८; महा; पराग १)। २ पुं. पञ्जाब देश का राजा (भवि)। ३ छन्द-विशेष (पिंग)।

पंचालिआ स्त्री [पञ्चालिका] पुतली, काष्ठादि-निर्मित छोटी प्रतिमा (कप्पू)।

पंचालिआ स्त्री [पाञ्चालिका] १ द्रुपद-राज की कन्या, द्रौपदी (वेणी १५८)। २ गान का एक भेद (कप्पू)।

पंचावण्ण, पंचावन्न स्त्रीन [दे. पञ्चपञ्चाशत्] १ संख्या-विशेष, पचपन, ५५। २ जिनकी संख्या पचपन हो वे (हे २, १७४; दे २, २७; दे २, २७ टि)।

पंचावन्न वि [दे. पञ्चपञ्चाश] पचपनवाँ (पउम ५५, ६१)।

पंचिंदिय, पंचिंद्रिय वि [पञ्चेन्द्रिय] १ वह जीव जिसको त्वचा, जीभ, नाक, आँख और कान ये पाँचो इन्द्रियाँ हों (पराग १; कप्प; जीव १; भवि)। २ न. त्वचा आदि पाँच इन्द्रियाँ (धर्म ३)।

पंचिया स्त्री [पञ्चिका] १ पाँच की संख्या-वाला। २ पाँच दिन का (वव १)।

पंचुंबर स्त्रीन [पञ्चोदुम्बर] वट, पीपल, उदुम्बर, प्लक्ष और काकोदुम्बरी का फल (भवि)। स्त्री. °**री** (श्रा २०)।

पंचुत्तरसय वि [पञ्चोत्तरशततम] एक सौ पाँचवाँ, १०५ वाँ (पउम १०५, ११५)।

पंचेडिय वि [दे] विनाशित, 'जेण लोयस्स लोहत्तणं फेडियं दुट्ठकंदप्पदप्पं च पंचेडियं' (भवि)।

पंचेसु पुं [पञ्चेषु] कामदेव, कंदर्प (कप्पू; रंभा)।

पंछि पुं [पक्षिन्] पंछी, पक्षी, पखेरू, चिड़िया (उप १०३१ टी)।

पंजर पुंन [पञ्जर] १ आचार्य, उपाध्याय, प्रवर्तक आदि मुनि-गण। २ उन्मार्ग-गमन-निषेध, सन्मार्ग-प्रवर्तन। ३ स्वच्छन्दता-प्रति-षेध (वव १)।

पंजर न [पञ्जर] पिंजरा, पिंजड़ा (गउड, कप्पू; अच्चु २)।

पंजरिअ पुं [दे] जहाज का कर्मचारी-विशेष (सिरि ४२७)।

पंजरिय वि [पञ्जरित] पिंजरे में बंद किया हुआ (गउड)।

पंजल वि [प्राञ्जल] सरल, सीधा, ऋजु (सुपा ३६४; वज्जा ३०)।

पंजलि पुंस्त्री [प्राञ्जलि] प्रणाम करने के लिए जोड़ा हुआ कर-संपुट, हस्त-न्यास-विशेष, संयुक्त कर-द्वय (उवा)। °**उड** पुं [°पुट] अञ्जलि-पुट, संयुक्त कर-द्वय (सम १५१, औप)। °**उड**, °**कड** वि [कृतप्राञ्जलि] जिसने प्रणाम के लिए हाथ जोड़ा हो वह (भग; औप)।

पंजिअ न [दे] यथेच्छ दान, मुँह-माँगा दान; 'रायकुलेषु भमंतो पंजिअदाणं पणिएहिइ' (सिरि ११८)।

पंड वि [पाण्ड्य] देश-विशेष में उत्पन्न। स्त्री. °**डी**; 'पंडीणं गंडवालीपुलअणचवला' (कप्पू)।

पंड, पंडग, पंडय पुं [पण्ड, °क] १ नपुंसक, क्लीब (ओघ ४६७; सम १५; पाअ)। २ न. मेरु पर्वत का एक बन (ठा २, ३; इक)।

पंडय देखो पंडव (हे १, ७०)।

पंडर पुं [पाण्डर] १ क्षीरवर नामक द्वीप का अधिष्ठाता देव (राज)। २ श्वेत वर्ण, सफेद रंग। ३ वि. श्वेतवर्णवाला, सफेद (कप्प)। °**भिक्खु** पुं [°भिक्षु] श्वेताम्बर जैन संप्रदाय का मुनि (स ५५२)।

पंडर देखो पंडुर (स्वप्न ७१)।

पंडरंग पुं [दे] रुद्र, महादेव, शिव (दे ६, २३)।

पंडरंगु पुं [दे] ग्रामेश, गाँव का अधिपति (षड्)।

पंडरिय देखो पंडुरिअ (भवि)।

पंडव पुं [पाण्डव] राजा पाण्डु का पुत्र—१ युधिष्ठिर, २ भीम, ३ अर्जुन, ४ सहदेव और ५ नकुल (णाया १, १६; उप ६४८ टी)।

पंडव पुं [दे] अश्व-रक्षक (?); 'सिट्ठि सुहडेहिं तासियपंडववयणेहिं नरवरो रुट्ठो' (सम्मत्त २१६)।

पंडविअ वि [दे] जलार्द्र, पानी से भींजा हुआ (दे ६, २०)।

पंडिअ वि [पण्डित] १ विद्वान्, शास्त्रों के मर्म को जाननेवाला, बुद्धिमान्, तत्वज्ञ; 'कामज्झया णामं गणिया होत्था बावत्तरी-कलापंडिया' (विपा १, २; प्रासू ७४; १२६)। २ संयत, साधु (सूअ १, ८, ६)। °मरण न [°मरण] साधु का मरण, शुभ मरण-विशेष (भग; पच्च ४६)। °माण वि [°म्मन्य] विद्याभिमानी, निज को पण्डित माननेवाला, दुर्विदग्ध, अधपका, मूर्ख, अनाड़ी (ओघ २७ भा)। °माणि वि [°मानिन्] देखो पूर्वोक्त अर्थ (पउम १०५, २१; उप १३४ टी)। °वीरिअ न [°वीर्य] संयत का आत्म-बल (भग)।

पंडिअमाणि वि [पाण्डित्यमानिन्] पंडिताई का अभिमान रखनेवाला, विद्वत्ता का घमंड रखनेवाला (चेइय १६)।

पंडिच्च } न [पाण्डित्य] पण्डिताई,
पंडित्त } विद्वत्ता, वैदुष्य (उव; सुर १२, ६८; सुपा २६; रंभा; सं ५७)।

पंडी देखो पंड = पाण्ड्य।

पंडीअ (अप) देखो पंडिअ (पिंग)।

पंडु पुं [पाण्डु] १ नृप-विशेष, पाण्डवों का पिता (उप ६४८ टी; सुपा २७०)। २ रोग-विशेष, पाण्डु-रोग (जं १)। ३ वर्ण-विशेष, शुक्ल और पीत वर्ण। ४ श्वेत वर्ण। ५ वि. शुक्ल और पीतवर्णवाला (कप्पू; गउड)। ६ सफेद, श्वेत; 'सेअं सिअं वलक्खं अवदायं पंडुं धवलं च' (पाअ; गउड)। ७ शिला-विशेष, पाण्डुकम्बला नामक शिला (जं ४; इक)। कंबलसिला स्त्री [°कम्बलशिला] मेरु पर्वत के पाण्डक वन के दक्षिण छोर पर स्थित एक शिला, जिस पर जिन-देवों का जन्माभिषेक किया जाता है (जं ४)। °कंबला स्त्री [°कम्बला] वही पूर्वोक्त अर्थ (ठा २, ३)। °तणय पुं [°तनय] पाण्डु-राज का पुत्र, पाण्डव (गउड ४८५)। °भद्द पुं [°भद्र] एक जैन मुनि, जो आर्य संभूति-विजय के शिष्य थे (कप्प)। °मट्टिया, °मत्तिया स्त्री [°मृत्तिका] एक प्रकार की सफेद मिट्टी (जीव १; पण्ण १—पत्र २५)। °महुरा स्त्री [°मथुरा] स्वनाम-ख्यात एक नगरी, पाण्डवों द्वारा बनाई हुई भारतवर्ष के दक्षिण तरफ की एक नगरी का नाम (णाया १, १६—पत्र २२५; अंत)। °राय पुं [°राज] राजा पाण्डु, पाण्डवों का पिता (णाया १, १६)। °सुय पुं [°सुत] पाण्डव (उप ६४८ टी)। °सेण पुं [°सेन] पाण्डवों का द्रौपदी से उत्पन्न एक पुत्र (णाया १, १६; उप ६४८ टी)।

पंडुइय वि [पाण्डुकित] १ श्वेत रंग का किया हुआ (णाया १, १—पत्र २८)।

पंडुग } पुं [पाण्डक] १ चक्रवर्ती का धान्यों
पंडुय } की पूर्ति करनेवाला एक निधि (राज; ठा २, १—पत्र ४४; उप ९८६ टी)। २ सर्प की एक जाति (आचू १)। ३ न. मेरु पर्वत पर स्थित एक वन, पाण्डक-वन (सम ६६)।

पंडुर पुं [पाण्डुर] १ श्वेत वर्ण, सफेद रंग। २ पीत-मिश्रित श्वेत वर्ण। ३ वि. सफेद वर्ण-वाला। ४ श्वेत-मिश्रित पीत वर्णवाला (कप्प; उव; से ८, ४६)। °ज्जा स्त्री [°ार्या] एक जैन साध्वी का नाम (आवम)। °त्थिय [°ास्थिक] एक गाँव का नाम (आचू १)।

पंडुरंग पुं [पाण्डुराङ्ग] संन्यासी की एक जाति, भस्म लगानेवाला संन्यासी (अणु २४)।

पंडरग } पुं [पाण्डुरक] १ शिव-भक्त
पंडुरय } संन्यासियों की एक जाति (णाया १, १५—पत्र १९३)। २ देखो पंडुर; 'केसा पंडुरया हवंति ते' (उत्त ३)।

पंडुरिअ } वि [पाण्डुरित] पाण्डुर वर्ण-
पंडुलइय } वाला बना हुआ (गा ३८८; विपा १, २—पत्र २७)।

पंत वि [प्रान्त] १ अन्तवर्ती, अन्तिम (भग ९; ३३)। २ अशोभन, असुन्दर (आचा; ओघ १७ भा)। ३ इन्द्रियों के अननुकूल, इन्द्रिय-प्रतिकूल (पण्ह २, ५)। ४ अभद्र, असभ्य, अशिष्ट (ओघ ३६ टी)। ५ अपसद, नीच, दुष्ट (णाया १, ८)। ६ दरिद्र, निर्धन (ओघ ९१)। ७ जीर्ण, फटा-टूटा; 'पंत-वत्थ—' (बृह २)। ८ व्यापन्न, विनष्ट; 'णिप्फावचणगमाई अंतं; पंतं च होइ वावन्नं' (बृह १; आचा)। ९ नीरस, सूखा (उत्त ८)। १० भुक्तावशिष्ट, खा लेने पर बचा हुआ। ११ पर्युषित, बासी (णाया १, ५—पत्र १११)। °कुल न [°कुल] नीच कुल, जघन्य जाति। (ठा ८)। °चर वि [°चर] नीरस आहार की खोज करनेवाला तपस्वी (पण्ह २, १)। °जीवि वि [°जीविन्] नीरस आहार से शरीर-निर्वाह करनेवाला (ठा ५, १)। °ाहार वि [°ाहार] रूखा-सूखा आहार करनेवाला (ठा ५, १)।

पंताव सक [दे] ताड़न करना, मारना। पंतावे (पिंड ३२५)।

पंति स्त्री [पङ्क्ति] १ पंक्ति, श्रेणी, कतार (हे १, २५; कुमा; कप्प)। २ सेना-विशेष, जिसमें एक हाथी, एक रथ, तीन घोड़े और पाँच पदाती हों ऐसी सेना (पउम ५६, ४)।

पंति स्त्री [दे] वेणी, केश-रचना (दे ६, २)।

पंतिय स्त्रीन [पङ्क्ति] पंक्ति, श्रेणी; 'सराणि वा सरपंतियाणि वा सरसरपंतियाणि वा' (आचा २, ३, ३, २)। स्त्री. 'पंतियाओ' (अणु)।

पंथ पुं [पन्थ, पथिन्] मार्ग, रास्ता; 'पंथं किर देसित्ता' (हे १, ८८), 'पंथम्मि पह-परिब्भट्ठं' (सुपा ५५०; हेका ५४; प्रासू १७३)।

पंथ पुं [पान्थ] पथिक, मुसाफिर (हे १, ३०; अच्चु ७४)। °कुट्टण न [°कुट्टन] मार-पीटकर मुसाफिरों को लूटना (णाया १, १८)। °कोट्ट पुं [°कुट्ट] वही अर्थ (विपा १, १—पत्र ११)। °कोट्टि स्त्री [°कुट्टि] वही अर्थ; 'से चोरसेणावई गामघायं वा जाव पंथकोट्टिं वा काउं वच्चति' (णाया १, १८)।

पंथग पुं [पान्थक] एक जैन मुनि (णाया १, ५; धम्म ९ टी)।

पंथाण देखो पंथ = पन्थ, पथिन्; 'पंथझाणे पंथाणंझाणे' (आउ ११)।

पंथिअ पुं [पन्थिक, पथिक] मुसाफिर, पान्थ; 'पंथिअ ण एत्थ संथर' (काप्र १५८; महा; कुमा; णाया १, ८; वज्जा ६०; १५८)।

पंथुच्छुहणी स्त्री [दे] श्वशुर-गृह से पहली बार आनीत स्त्री (दे ६, ३५)।

पंपुअ वि [दे] दीर्घ, लम्बा (दे ६, १२)।

पंफुल्ल वि [प्रफुल्ल] विकसित (पिंग)।

पंफुलिअ वि [दे] गवेषित, जिसकी खोज की गई हो वह (दे ६, १७)।

पंस सक [पांसय्] मलिन करना। पंसेई (विसे ३०५२)।

पंसण वि [पांसन] कलंकित करनेवाला, दूषण लगानेवाला (हे १, ७०; सुपा ३४५)।

पंसु पुं [पांसु, पांशु] धूली, रज, रेणु (हे २६; पाअ; आचा)। °कीलिय, °क्कीलिय वि [°क्रीडित] जिसके साथ बचपन में पांशु-क्रीड़ा की गई हो वह, बचपन का दोस्त (महा; सण)। °पिसाय पुंस्त्री [°पिशाच] जो रेणु-लिप्त होने के कारण पिशाच के तुल्य मालूम पड़ता हो वह (उत्त १२)। °मूलिय पुं [°मूलिक] विद्याधर, मनुष्य-विशेष (राज)।

पंसु पुं [पर्शु] कुठार, फरसा (हे १, २६)।

पंसु देखो पसु (षड्)।

पंसुखार पुं [पांशुक्षार] एक तरह का नोन, ऊषर लवण (दस ३, ८)।

पंसुल पुं [दे] १ कोकिल, कोयल। २ जार, उपपति (दे ६, ६६)। ३ वि. रुद्ध, रोका हुआ (षड्)।

पंसुल पुं [पांसुल] १ पुंश्चल, परस्त्री-लम्पट (गा ५१०; ५६६)। २ वि. धूलि-युक्त (गउड)।

पंसुला स्त्री [पांसुला] कुलटा, व्यभिचारिणी स्त्री (कुमा)।

पंसुलिअ वि [पांसुलित] धूलि-युक्त किया हुआ; 'पंसुलिअकरेण' (गउड)।

पंसुलिआ स्त्री [दे. पांशुलिका] पार्श्व की हड्डी (पव २५३)।

पंसुली स्त्री [पांसुली] कुलटा, व्यभिचारिणी स्त्री (पाअ; सुर १५, २; हे २, १७९)।

पकंथ देखो पगंथ (आचा १, ६, २)।

पकंथग पुं [प्रकन्थक] अश्व-विशेष, एक प्रकार का घोड़ा (ठा ४, ३—पत्र २४८)।

पकंप पुं [प्रकम्प] कम्प, काँपना (आव ४)।

पकंपण न [प्रकम्पन] ऊपर देखो (सुपा ६५१)।

पकंपिअ वि [प्रकम्पित] प्रकम्प-युक्त, काँपा हुआ (आव २)।

पकंपिर वि [प्रकम्पितृ] काँपनेवाला (उप पृ १३२)। स्त्री. °री (रंभा)।

पकड वि [प्रकृत] १ प्रस्तुत, प्रक्रान्त, उपस्थित, असली, सच्चा (भग ७, १०—पत्र ३२४; १८, ७—पत्र ३५०)। २ कृत, निर्मित (भग १८, ७)।

पकड देखो पगड = प्रकट (भग ७, १०)।

पकड्ढ देखो पगडढ। कवकृ. पकड्ढिज्जमाण (औप)।

पकड्ढ वि [प्रकृष्ट] १ प्रकर्ष-युक्त। २ खींचा हुआ (औप)।

पकड्ढण न [प्रकर्षण] आकर्षण, खींचाव (निचू २०)।

पकत्थ सक [प्र + कत्थ्] श्लाघा करना, प्रशंसा करना। पकत्थइ (सूअ १, ४, १, १९; पि ५४३)।

पकप्प अक [प्र + क्लृप्] १ काम में आना, उपयोग में आना। २ काटना, छेदना। कृ. पकप्प (ठा ५, १—पत्र ३००)। देखो पगप्प = प्र + क्लृप्।

पकप्प सक [प्र + कल्पय्] १ करना, बनाना। २ संकल्प करना; 'वासं वयं वित्ति पकप्पयामो' (सूअ २, ६, ५२)।

पकप्प पुं [प्रकल्प] १ उत्कृष्ट आचार, उत्तम आचरण (ठा ४, ३)। २ अपवाद, बाधक नियम (उप ६७७ टी; निचू १)। ३ अध्ययन-विशेष; 'आचारांग' सूत्र का एक अध्ययन। ४ व्यवस्थापन: 'अट्ठावीसविहे आयारपकप्पे' (सम २८)। ५ कल्पना। ६ प्ररूपणा। ७ विच्छेद, प्रकृष्ट छेदन (निचू १)। ८ जैन साधुओं का एक प्रकार का आचार, स्थविर-कल्प (पंचभा)। ९ एक महाग्रह, ज्योतिष देव-विशेष (सुज्ज २०)। °गंथ पुं [°ग्रन्थ] एक प्राचीन जैन ग्रन्थ, 'निशीथ' सूत्र (जीव १)। °जइ पुं [°यति] 'निशीथ' अध्ययन का जानकार साधु; 'धम्मो जिणपन्नत्तो पकप्पजइणा कहेयव्वो' (धर्म १)। °धर वि [°धर] 'निशीथ' अध्ययन का जानकार (निचू २०)। देखो पगप्प = प्रकल्प।

पकप्पणा स्त्री [प्रकल्पना] प्ररूपणा, व्याख्या; 'परूवण त्ति वा पकप्पण त्ति वा एगट्ठा' (निचू १)।

पकप्पणा स्त्री [प्रकल्पना] कल्पना (चेइय १४१; अज्झ १४२)।

पकप्पधारि वि [प्रकल्पधारिन्] 'निशीथ' सूत्र का जानकार (वव १)।

पकप्पि वि [प्रकल्पिन्] ऊपर देखो (वव १)।

पकप्पिअ वि [प्रकल्पित] काटा हुआ, 'एसा परजुत्तिलया एएण पकंपि (? कप्पि)। आ ग्रोआ' (अज्झ १०२)।

पकप्पिअ वि [प्रकल्पित] १ संकल्पित (द्र २)। २ निर्मित (महा)। ३ न. पूर्वोपार्जित द्रव्य; 'ण णो अत्थि पकप्पियं' (सूअ १, ३, ३, ४)। देखो पगप्पिअ।

पकय वि [प्रकृत] प्रवृत्त, कार्य में लगा हुआ (उप ६२०)।

पकर सक [प्र + कृ] १ करने का प्रारम्भ करना। २ प्रकर्ष से करना। ३ करना। पकरेइ, पकरंति, पकरेंति (भग; पि ५०६)। वकृ. पकरेमाण (भग)। संकृ. पकरित्ता (भग)।

पकर देखो पयर = प्रकर (नाट—वेणी ७२)।

पकरणया स्त्री [प्रकरणता] करण, कृति (भग)।

पकहिअ वि [प्रकथित] जिसने कहने का प्रारम्भ किया हो वह (उप १०३१ टी; वसु)।

पकाम न [प्रकाम] १ अत्यर्थ, अत्यन्त (णाया १, १; महा; नाट—शकु २७)। २ पुं. प्रकृष्ट अभिलाष (भग ७, ७)।

पकाव (अप) सक [पच्] पकाना। पकावउ (पिंग; पि ४५४)।

पकास देखो पयास = प्रकाश (पिंग)।

पकिट्ठ देखो पगिट्ठ (राज)।

पकिण्ण वि [प्रकीर्ण] १ उप्त, बोया हुआ। २ दत्त, दिया हुआ; 'जहिं पकिण्णा (? ण्णा) विरुहंति पुण्णा' (उत्त १२, १३)। देखो पइण्ण = प्रकीर्ण।

पकित्तिअ वि [प्रकीर्त्तित] वर्णित, कथित (श्रु १०८)।

पकिदि देखो पगइ = प्रकृति (प्राकृ १२)।

पकिदि (शौ) देखो पइइ = प्रकृति (स्वप्न ६०; अभि ६५)।

पकिन्न देखो पकिण्ण (उत्त १२, १३)।

पकिरण न [प्रकिरण] देने के लिए फेंकना (वव १)।

पकुण देखो पकर = प्र + कृ। पकुणइ (कम्म १, ६०)।

पकुप्प अक [प्र + कुप्] क्रोध करना, गुस्सा करना। पकुप्पंति (महानि ४)।

पकुप्पित (चूपै) वि [प्रकुपित] क्रुद्ध, कुपित, गुस्साया हुआ (हे ४, ३२६)।

पकुविअ ऊपर देखो (महानि ४)।

पकुव्व सक [प्र + कृ, प्र + कुर्व्] १ करने का प्रारम्भ करना। २ प्रकर्ष से करना। ३ करना। पकुव्वइ (पि ५०८)। वकृ. पकुव्वमाण (सुर १६, २४; पि ५०८)।

पकुव्वि वि [प्रकारिन्, प्रकुर्विन्] १ करनेवाला, कर्ता। २ पुं. प्रायश्चित्त देकर शुद्धि कराने में समर्थ गुरु (द्र ४६; ठा ८, पुप्फ ३५६)।

पकूविअ वि [प्रकूजित] ऊँचे स्वर से चिल्लाया हुआ (उप पृ ३३२)।

पकोट्ठ देखो पओट्ठ (राज)।

पकोव पुं [प्रकोप] गुस्सा, क्रोध (श्रा १४)।

पक्क वि [पक्व] पका हुआ (हे १, ४७; २, ७९; पाअ)।

पक्क वि [दे] १ दृप्त, गर्वित। २ समर्थ, पक्का, पहुँचा हुआ (दे ६, ६४; पाअ)।

पक्कंत वि [प्रक्रान्त] प्रस्तुत, प्रकृत (कुमा २७)।

पक्कग्गाह पुं [दे] १ मकर, मगरमच्छ (दे ६, २३)। २ पानी में बसनेवाला सिंहाकार जल-जन्तु (से ५, ५७)।

पक्कण वि [दे] १ असहन, असहिष्णु। २ समर्थ, शक्त (दे ६, ६९)। ३ पुं. चाण्डाल (सं ६३)। ४ एक अनार्य देश। ५ पुंस्त्री. अनार्य देश-विशेष में रहनेवाली एक मनुष्य-जाति (औप; राज)। स्त्री. °णी (णाया १,१; औप; इक)। ६ पुं. एक नीच जाति का घर, शबर-गृह (पंरा ५२)। °उल न [°कुल] १ चाण्डाल का घर (बृह ३)। २ एक गर्हित कुल; 'पक्कणउले वसंतो सउणी इयरोवि गरहिओ होइ' (आव ३)।

पक्कणि वि [दे] १ अतिशय शोभमान, खूब शोभता हुआ। २ भग्न, भाँगा हुआ। ३ प्रियवद, प्रियभाषी (दे ६, ६५)।

पक्कणिय पुंस्त्री [दे] एक अनार्य देश में रहनेवाली मनुष्य-जाति (पराह १, १—पत्र १४; इक)।

पक्कन्न न [पक्वान्न] केवल घी में बनी हुई वस्तु, मिठाई आदि (सुपा ३८७)।

पक्कम सक [प्र + क्रम्] प्रकर्ष से समर्थ होना। पक्कमइ (भग १५—पत्र ६७८)।

पक्कम सक [प्र + क्रम्] १ प्रकर्ष से जाना, चला जाना, गमन करना। २ अक. प्रयत्न होना। प्रवृत्ति होना। पक्कमई (उत्त ३, १३)। पक्कमंति (उत्त २७, १४; दस ३, १३); 'अणुसासणमेव पक्कमे' (सूअ १, २, १, ११)।

पक्कम पुं [प्रक्रम] प्रस्ताव, प्रसंग (सुपा ३७४)।

पक्कमणी स्त्री [प्रक्रमणी] विद्या-विशेष (सूअ २, २, २७)।

पक्कल वि [दे] १ समर्थ, शक्त (हे २, १७४; पाअ; सुर ११, १०४; वज्जा ३४)। २ दर्प-युक्त, गर्वित (सुर ११, १०४; गा ११८)। ३ प्रौढ; 'चत्तारि पक्कलबइल्ला' (गा ८१२; पि ४३९)।

पक्कस देखो बक्कस (आचा)।

पक्कसावअ पुं [दे] १ शरभ। २ व्याघ्र (दे ६, ७५)।

पक्काइय वि [पक्वीकृत] पकाया हुआ, 'पक्काइयमाउलिंगसारिच्छा' (वज्जा ६२)।

पक्किर सक [प्र + कृ] फेंकना। वकृ. 'छारं च धूलिं च कयवरं च उवरिं पक्किरमाणा' (णाया १, २)।

पक्कीलिय वि [प्रक्रीडित] जिसने क्रीड़ा का प्रारम्भ किया हो वह (णाया १, १; कप्प)।

पक्केल्लय वि [पक्व] पका हुआ (उवा)।

पक्ख पुं [पक्ष] वेदिका का एक भाग (राय ८२)।

पक्ख पुं [पक्ष] १ पाख, पखवारा, आधा महीना, पन्द्रह दिन-रात (ठा २, ४—पत्र ८६; कुमा)। २ शुक्ल और कृष्ण पक्ष, उजेला और अँधेरा पाख (जीव २; हे २, १०६)। ३ पार्श्व, पंजर, कन्धा के नीचे का भाग। ४ पक्षियों का अवयव-विशेष, पंख, पर, पतत्र (कुमा)। ५ तर्कशास्त्र-प्रसिद्ध अनुमान-प्रमाण का एक अवयव, साध्यवाली वस्तु (विसे २८२४)। ६ तरफ, ओर। ७ जत्था, दल, टोली। ८ मित्र, सखा। ९ शरीर का आधा भाग। १० तरफदार। ११ तीर का पंख (हे २, १४७)। १२ तरफदारी (वव १)। °ग वि [°ग] पक्ष-गामी, पक्ष-पर्यन्त स्थायी (कम्म १, १८)। °पिंड पुंन [°पिण्ड] आसन-विशेष—१ जानु और जाँघ पर वस्त्र बाँध कर बैठना। २ दोनों हाथों से शरीर का बन्धन कर बैठना (उत्त १, १९)। °य पुं [°क] पंखा, ताल-वृन्त (कप्प)। °वंत वि [°वत्] तरफदारीवाला (वव १)। °वाइल्ल वि [°पातिन्] पक्षपात करनेवाला, तरफदारी करनेवाला (उप ७२८ टी; धम्म १ टी)। °वाद पुं [°पात] तरफदारी (उप ६७०; स्वप्न ४५)। °वादि (शौ) देखो °वाइल्ल (नाट—विक्र २; मालती ६५)। °वाय देखो °वाद (सुपा २०६; २६३)। °वाय पुं [°वाद] पक्ष-सम्बन्धी विवाद (उप पृ ३१२)। °वाह पुं [°वाह] वेदिका का एक देश-विशेष (जं १)। °विडिअ वि [°पतित] पक्षपाती (हे ४, ४०१)। °वाइया स्त्री [°वापिका] होम-विशेष (स ७५७)।

पक्खंत न [पक्षान्त] अन्यतर इन्द्रिय-जात, 'अन्नयरं इंदियजायं पक्खंतं भएणइ' (निचू ६)।

पक्खंतर न [पक्षान्तर] अन्य पक्ष, भिन्न पक्ष, दूसरा पक्ष (नाट—महावी २५)।

पक्खंद सक [प्र + स्कन्द्] १ आक्रमण करना। २ दौड़कर गिरना। ३ अध्यवसाय करना; 'पक्खंदे जलियं जोइं धूमकेउं दुरासयं' (राज), 'अगणिं व पक्खंद पयंगसेणा' (उत्त १२, २७)।

पक्खंदण न [प्रस्कन्दन] १ आक्रमण। २ अध्यवसाय। ३ दौड़कर गिरना (पिंड ११)।

पक्खंदोलग पुं [पक्ष्यन्दोलक] पक्षी का हिंडोला, झूला (राय ७५)।

पक्खज्जमाण वि [प्रखाद्यमान] जो खाया जाता हो वह (सूअ १, ५, २)।

पक्खडिअ वि [दे] प्रस्फुरित, विजृम्भित, समुत्पन्न; 'पक्खडिए सिहिपडिबिंबिरे विरहे' (दे ६, २०)।

पक्खर सक [सं + नाहय्] संनद्ध करना, अश्व को कवच से सज्जित करना। पक्खरेह (सुपा २८८)। संकृ पक्खरिअ (पिंग)।

पक्खर पुं [प्रक्षर] क्षरण, टपकना (कप्पूर २६)।

पक्खर पुं [दे] जहाज की रक्षा का एक उपकरण, सामग्री (सिरि ३८७)।

पक्खर न [दे] पाखर, अश्व-संनाह, घोड़े का कवच (कुप्र ४४६; पिंग)।

पक्खरा स्त्री [दे] पाखर, अश्व-संनाह (दे ६, १०); 'ओसारिअपक्खरे (विपा १, २)।

पक्खरिअ वि [संनद्ध] कवचित, संनद्ध, कवच से सज्जित (अश्व) (सुपा ५०२; कुप्र १२०; भवि)।

पक्खल अक [प्र + स्खल्] गिरना, पड़ना, स्खलित होना। पक्खलइ (कस)। वकृ. पक्खलंत, पक्खलमाण (दस ५, १; पि ३०६; नाट—मृच्छ १७; बृह ६)।

पक्खाउज्ज न [पक्षातोद्य] पखाउज, पखावज, एक प्रकार का बाजा, मृदंग (कप्पू)।

पक्खाय वि [प्रख्यात] प्रसिद्ध, विश्रुत (प्राकृ)।

पक्खारिण पुं [प्रक्षारिण] १ अनार्य-देश विशेष। २ पुंस्त्री. उस देश का निवासी मनुष्य। स्त्री. °णी (राय)।

पक्खाल सक [प्र + क्षालय्] पखारना, शुद्ध करना, धोना। कवकृ. पक्खालिज्जमाण (णाया १, ५)। संकृ पक्खालिअ, पक्खालिऊण (नाट—चैत ४०; महा)।

पक्खालण न [प्रक्षालन] पखारना, धोना (स ५२; औप)।

पक्खालिअ वि [प्रक्षालित] पखारा हुआ, धोया हुआ (औप; भवि)।

पक्खासण न [पक्ष्यासन] आसन-विशेष, जिसके नीचे अनेक प्रकार के पक्षियों का चित्र हो ऐसा आसन (जीव ३)।

पक्खि पुंस्त्री [पक्षिन्] पाखी, पक्षी (ठा ४, ४; आचा; सुपा ५६२)। स्त्री. °णी (श्रा १४)। °बिराल पुंस्त्री [°बिराल] पक्षि-विशेष (भग १३, ६)। स्त्री. °ली (जीव १)। °राय पुं [°राज] गरुड़ (सुपा २१०)। नीचे देखो।

पक्खिअ पुंस्त्री [पक्षिक] १ ऊपर देखो (श्रा २८)। २ त्रि. पक्षपाती, तरफदारी करनेवाला; 'तप्पक्खिओ पुणो अएणो' (श्रा १२)।

पक्खिअ वि [पाक्षिक] स्वजन, ज्ञाति का (पव २६८)।

पक्खिअ वि [पाक्षिक] १ पाख में होनेवाला। २ पक्ष से सम्बन्ध रखनेवाला, अर्ध-मास-सम्बन्धी (कप्प; धर्म २)। ३ न. पर्व-विशेष, चतुर्दशी (लहुअ १६; द्र ४५)। °ापक्खिअ पुं [°ापक्षिक] नपुंसक-विशेष, जिसको एक पाख में तीव्र विषयाभिलाष होता हो और एक पक्ष में अल्प, ऐसा नपुंसक (पुप्फ १२७)।

पक्खिकायण न [पाक्षिकायन] गोत्र-विशेष, जो कौशिक गोत्र की एक शाखा है (ठा ७)।

पक्खिण देखो पक्खि; 'जह पक्खिणाण गरुडो' (पउम १४, १०४)।

पक्खिणी देखो पक्खि।

पक्खित्त वि [प्रक्षिप्त] फेंका हुआ (महा; पि १८२)।

पक्खिनाह पुं [पक्षिनाथ] गरुड पक्षी (धर्मवि ८४)।

पक्खिप्प, **पक्खिप्पमाण** } देखो पक्खिव।

पक्खिव सक [प्र + क्षिप्] १ फेंकना, फेंक देना। २ छोड़ना, त्यागना। ३ डालना। पक्खिवइ (महा; कप्प)। पक्खिवइ (महा; कप्प)। पक्खिवह, पक्खिवेज्जा (आचा २, ३, २, ३)। कवकृ. पक्खिप्पमाण (णाया १, ८—पत्र १२६; १४७)। संकृ. पक्खिवऊण, पक्खिप्प (महा; सूअ १, ५, १; पि ३१६)। कृ. पक्खिवेयव्व (उप ६४८ टी)। प्रयो. वकृ. पक्खिवावेमाण (णाया १, १२)।

पक्खीण वि [प्रक्षीण] अत्यन्त क्षीण; 'अहं पक्खीणविभवो' (महा)।

पक्खुडिअ वि [प्रखण्डित] खण्डित, असंपूर्ण (सुपा ११६)।

पक्खुब्भ अक [प्र + क्षुभ्] १ क्षोभ पाना। २ वृद्ध होना, बढ़ना। वकृ. पक्खुब्भंत (से २, २४)।

पक्खुब्भंत देखो पक्खोभ।

पक्खुभिय वि [प्रक्षुभित] क्षोभ प्राप्त, प्रक्षुब्ध (औप)।

पक्खेव पुं [प्रक्षेप] शास्त्र में पीछे से किसी के द्वारा डाला या मिलाया हुआ वाक्य (धर्मसं १०११)। °ाहार पुं [°ाहार] कवलाहार (सुमनि १७१)।

पक्खेव, **पक्खेवग** } पुं [प्रक्षेप, °क] १ क्षेपण, फेंकना; 'अहिया सीयलपक्खेवे' (उवा)। २ पूर्ति करनेवाला द्रव्य, पूर्ति के लिए पीछे से डाली जाती वस्तु; 'अपक्खेवगस्स पक्खेवं दलयइ' (णाया १, १५—पत्र १९१)।

पक्खेवण न [प्रक्षेपण] क्षेपण, प्रक्षेप (औप)।

पक्खेवय देखो पक्खेवग (बृह १)।

पक्खोड सक [वि + कोशय्] १ खोलना। २ फैलाना। पक्खोडइ (हे ४, ४२)। संकृ. पक्खोडिऊण (सुपा ३३८)।

पक्खोड सक [शद्] १ कंपाना। २ झाड़ कर गिराना। पक्खोडइ (हे ४, १३०)। संकृ. पक्खोडिय (उप ५८४)।

पक्खोड सक [प्र + छादय्] ढकना, आच्छादन करना। संकृ. पक्खोडिय (उप ५८४)।

पक्खोड सक [प्र + स्फोटय] १ खूब झाड़ना। २ बारम्बार झाड़ना। पक्खोडिज्जा; वकृ. पक्खोडंत (दस ४,१)। प्रयो. पक्खोडाविज्जा (दस ४, १)।

पक्खोड पुं [प्रस्फोट] प्रमार्जन, प्रतिलेखन की क्रिया-विशेष (पव २)।

पक्खोडण न [शदन] धूनन, कँपाना (कुमा)।

पक्खोडिअ वि [शदित] निर्झाटित, झाड़ कर गिराया हुआ (दे ६, २७; पाग्र)।

पक्खोडिय देखो पक्खोड = शद्, प्र + छादय्।

पक्खोभ सक [प्र + क्षोभय्] क्षुब्ध करना, क्षोभ उत्पन्न कर हिला देना। कवकृ. पक्खुब्भंत (से २, २४)।

पक्खोलण न [शदन] १ स्खलित होनेवाला। २ वि. रुष्ट होनेवाला (राज)।

पखम (पै) देखो = पक्ष्मन्; 'पखमलग्गमएं' (प्राकृ. १२४)।

पखोड देखो पक्खोड = प्रस्फोट (पव २)।

पखल वि [प्रखर] प्रचण्ड, तीव्र, तेज (प्राप्र)।

पगइ स्त्री [प्रकृति] १ प्रकृति, स्वभाव (भग; कम्म १, २; सुर १४, ६६, सुपा ११०)। २ प्रकृत अर्थ, प्रस्तुत अर्थ; 'पडिसेहदुगं पगई गमेइ' (विसे २५०२)। ३ प्राकृत लोक, साधारण जन-समूह; 'विन्नमुद्धारे बहुदव्वं पगईणं' (सुपा ५६७)। ४ कुम्भकार आदि अठारह मनुष्य-जातियाँ; अट्ठारसपगइब्भंतराण को सो न जो एइ' (श्राक १२)। ५ कर्मों का भेद (सम ६)। ६ सत्व, रज और तम की साम्यावस्था। ७ बलदेव के एक पुत्र का नाम (राज)। °बंध पुं [°बन्ध] कर्म-पुद्गलों में भिन्न-शक्तियों का पैदा होना (कम्म १, २)। देखो पगडि।

पगंठ पुं [प्रकण्ठ] १ पीठ-विशेष। २ अन्त का अवनत प्रदेश (जीव ३)।

पगंथ सक [प्र + कथय्] निन्दा करना; 'अलियं पगं(कं)थे अदुवा पगं(कं)थे' (आचा)।

पगड वि [प्रकट] व्यक्त, खुला, स्पष्ट, प्रत्यक्ष, (पि २१६)।

पगड वि [प्रकृत] प्रविहित, विनिर्मित (उत्त १३)।

पगड पुं [प्रगर्त्त] बड़ा गड्ढा या गड़हा (आचा २, १०, २)।

पगडण न [प्रकटन] प्रकाश करना, खुला करना (णंदि)।

पगडि स्त्री [प्रकृति] १ भेद; प्रकार (भग)। २—देखो पगइ (सम ५६; सुर १४, ६८)।

पगडीकय वि [प्रकटीकृत] व्यक्त किया हुआ, स्पष्ट किया हुआ (सुपा १८१)।

पगड्ढ सक [प्र + कृष्] खींचना। कवकृ. पगड्ढिज्जमाण (विपा १, १)।

पगप्प देखो प्रकप्प = प्र + कल्पय्। संकृ. पगप्पएत्ता (सूम २, ६, ३७)।

पगप्प देखो पकप्प = प्र + क्लृप् (सूम १, ८, ५)।

पगप्प वि. [प्रकल्प] १ उत्पन्न होनेवाला, प्रादुर्भूत होनेवाला; 'बहुगुणप्पगप्पाइं कुज्जा अत्तसमाहिए' (सूम १, ३, ३, १६)। देखो पकप्प = प्रकल्प (आचा)।

पगप्पिअ वि [प्रकल्पित] प्ररूपित, कथित; 'ण उ एयाहिं दिट्ठीहिं पुव्वमासि पगप्पियं' (सूम १, ३, ३, १६)। देखो प्रकप्पिअ।

पगप्पित्तु वि [प्रकल्पयितृ, प्रकर्तयितृ] काटनेवाला, कतरनेवाला; 'हंता छेत्ता पगब्भि-(?प्पि)त्ता आयसायाणुगामिणो' (सूम १, ८, ५)।

पगब्भ अक [प्र + गल्भ्] १ धृष्टता करना, धृष्ट होना। २ समर्थ होना। पगब्भइ, पगब्भई (आचा, सूम १, २, २, २१; १, २, ३, १०; उत्त ५, ७)।

पगब्भ वि [प्रगल्भ] धृष्ट, ढीठ (पउम ३३, ६६)। २ समर्थ (उप २६४ टी)।

पगब्भ न [प्रागल्भ्य] धृष्टता, ढीठाई; 'पगब्भि पाणे बहुणंतिवाती' (सूम १, ७, ८)।

पगब्भणा स्त्री [प्रगल्भना] प्रगल्भता, धृष्टता (सूम १, १०, १७)।

पगब्भा स्त्री [प्रगल्भा] भगवान् पार्श्वनाथ की एक शिष्या (आवम)।

पगब्भिअ वि [प्रगल्भित] धृष्टता-युक्त (सूम १, १, १, १३; १, २, ३, ४)।

पगब्भित्तु वि [प्रगल्भितृ] काटनेवाला, 'हंता छेत्ता पगब्भित्ता' (सूम १, ८, ५)।

पगय न [प्रकृत] १ प्रस्ताव, प्रसंग (सूम्रनि ४७)। २ पुं. गाँव का अधिकारी (पव २६८)।

पगय वि [प्रगत] संगत (श्रावक १८६)।

पगय वि [प्रकृत] प्रस्तुत, अधिकृत (विसे ८३३; उप ४७६)।

पगय वि [प्रगत] १ प्राप्त (राज)। २ जिसने गमन करने का प्रारम्भ किया हो वह; 'मुणिणोवि जहाभिमयं पगया पगएण कज्जेण' (सुपा २३५)। ३ न. प्रस्ताव, अधिकार (सूम १, ११; १५)।

पगय न [दे] पग, पाँव, पैर; 'एत्थंतरम्मि लग्गो चंडमारुओ। तेण भग्गो तुरयपगयमग्गो' (महा)।

पगर पुं [प्रकर] समूह, राशि (सुपा ६५५)।

पगरण न [प्रकरण] १ अधिकार, प्रस्ताव। २ ग्रंथ-खण्ड-विशेष, ग्रंथांश-विशेष (विसे १११५)। ३ किसी एक विषय को लेकर बनाया हुआ छोटा ग्रन्थ (उव)।

पगरिअ वि [प्रगलित] गलित्कुष्ठ, कुष्ठ-विशेष की बीमारीवाला (पिंड ५७२)।

पगरिस पुं [प्रकर्ष] १ उत्कर्ष, श्रेष्ठता (सुपा १०६)। २ आधिक्य, अतिशय (सुर ४, १६६)।

पगरिसण न [प्रकर्षण] ऊपर देखो (यति १६)।

पगल अक [प्र + गल्] झरना, टपकना। वकृ. पगलंत (विपा १, ७; महा)।

पगहिय वि [प्रगृहीत] ग्रहण किया हुआ, उपात्त (सुर ३, १६७)।

पगाइय वि [प्रगीत] जिसने गाने का प्रारंभ किया हो वह; 'पगाइयाइं मंगलमंतेउराइं' (स ७३६)।

पगाढ वि [प्रगाढ] अत्यन्त गाढ़ (विपा १, १; सुपा ५३०)।

पगाम देखो पकाम (आचा; श्रा १४; सुर ३, ८७; कुप्र ३१५)।

पगामसो अ [प्रकामम्] अत्यन्त, अतिशय; 'पगामसो भुच्चा' (उत्त १७, ३)।

पगार पुं [प्रकार] १ भेद (आचू १)। २ रीति; 'एएण पगारेण सव्वं, दव्वं दवाविओ' (महा)। ३ आदि, वगैरह, प्रभृति (सूअ १, १३)।

पगास देखो **पयास**=प्र+काशय्। वकृ. **पगासेंत** (महा)।

पगास पुं [प्रकाश] १ प्रभा, दीप्ति, चमक (णाया १, १); 'एगं महं नीलुप्पलगवलगुलियअयसिकुसुमप्पगासं असि सुरधारं गहाय' (उवा)। २ प्रसिद्धि, ख्याति (सूअ १, ६)। ३ आविर्भाव, प्रादुर्भाव। ४ उद्द्योत, आतप (राज)। ५ क्रोध, गुस्सा; 'छन्नं च पसंस णो करे न य उक्कोस पगास माहणे' (सूअ १, २, २६)। ६ वि. प्रकट, व्यक्त (निचू १)।

पगासग देखो **पगासय** (राज)।

पगासण देखो **पयासण** (औप)।

पगासणया स्त्री [प्रकाशनता] प्रकाश, आलोक (ओघ ५५०)।

पगासणा स्त्री [प्रकाशना] प्रकटीकरण (उत्त ३२, २)।

पगासय वि [प्रकाशक] प्रकाश करनेवाला (विसे ११५५)।

पगासिय वि [प्रकाशित] उद्द्योतित, दीप्त; 'से सूरियस्स अब्भुग्गमेणं मग्गं वियाणाइ पगासियंसि' (सूअ १, १४, १२)।

पगिइ देखो **पगइ** (संबोध ३६)।

पगिज्झ अक [प्र+गृध्] आसक्ति का प्रारम्भ होना। पगिज्झिज्जा (उत्त ८, १६; सुख ८, १६)।

पगिज्झिय देखो **पगिण्ह** (कस; औप; पि ५६१)।

पगिट्ठ वि [प्रकृष्ट] १ प्रधान, मुख्य (सुपा ७७)। २ उत्तम, श्रेष्ठ (कुप्र २०; सुपा २२६)।

पगिण्ह सक [प्र+ग्रह्] १ ग्रहण करना। २ उठाना। ३ धारण करना। ४ करना। संकृ. **पगिण्हित्ता, पगिण्हित्ताणं, पगिज्झिय** (पि ५८२; ५८३; औप; आचा २, ३, ४, १; कस)।

पगीअ वि [प्रगीत] १ गाया हुआ (पउम ३७, ४८)। २ जिसकी गीत गाई गई हो वह (उप २११ टी)।

पगीय वि [प्रगीत] जिसने गाने का प्रारम्भ किया हो वह (राय ४६)।

पगुण देखो **पउण** (सूअ १, १, २)।

पगुणीकर सक [प्रगुणी+कृ] प्रगुण करना, तय्यार करना, सज्ज करना। कवकृ. **पगुणीकीरंत** (सुर १३, ३१)।

पगे अ [प्रगे] सुबह, प्रभात काल (सुर ७, ७८; कुप्र १५५)।

पग्ग सक [ग्रह्] ग्रहण करना। पग्गइ (षड्)।

पग्गल वि [दे] पागल, उन्मत्त (प्राकृ. १०३)।

पग्गह पुं [प्रग्रह] खाने के लिए उठाया हुआ भोजन-पान (सूअ २, २, ७३)।

पग्गह पुं [प्रग्रह] १ उपधि, उपकरण (ओघ ६६६)। २ लगाम (से ६, २७; १२, ६६)। ३ पशुओं को नाक में लगाई जाती डोरी, नाक की रस्सी, नाथ। ४ पशुओं को बाँधने की डोरी, रस्सी, पगहा (णाया १ ३; उवा)। ५ नायक, मुखिया (ठा १)। ६ ग्रहण, उपादान। ७ योजन, जोड़ना; 'अंजलिपग्गहेणं' (भग)।

पग्गहिअ वि [प्रगृहीत] १ अभ्युपगत, सम्यक् स्वीकृत (अनु ३)। २ प्रकर्ष से गृहीत (भग; औप)। ३ उठाया हुआ (धर्म ३; ठा ६)।

पग्गहिय वि [प्रग्रहिक] ऊपर देखो (उवा)।

पग्गिम, **पग्गिम्व** } (अप) अ [प्रायस्] प्रायः बहुधा (षड्; हे ४, ४१४; कुमा)।

पग्गेज्झ पुं [दे] निकर, समूह (दे ६, १५)।

पघंस सक [प्र+घृष्] फिर-फिर घिसना। पघंसेज्ज (निचू १७)। प्रयो. वकृ **पघंसावंत** (निचू १७)।

पघंसण न [प्रघर्षण] पुनः पुनः घर्षण, 'एक्कं दिणं आघंसणं, दिणे दिणे पघंसणं' (निचू ३)।

पघोल अक [प्र+घूर्णय्] मिलना, संगत होना। वकृ. 'कंठपघोलंतपंचमुग्गारो' (कुप्र २२६)।

पघोस पुं [प्रघोष] उच्चैः शब्द-प्रकाश, उद्घोषणा (भवि)।

पघोसिय वि [प्रघोषित] घोषित किया हुआ, उच्च स्वर से प्रकाशित किया हुआ (भवि)।

पच सक [पच्] पकाना। पचइ, पचए, पचंति; पचसि, पचसे, पचह, पचत्थ; पचामि, पचामो, पचामु, पचाम, पचिमो, पचिमु (संक्षि ३०; पि ४३६, ४५५)। कवकृ. **पच्चमाण**; 'नरए नेरइयाणं अहोनिसिं पच्चमाणाणं' (सुर १४, ४६; सुपा ३२८)।

पच (अप) देखो **पंच**। °आलीस, °तालीस स्त्रीन [°चत्वारिंशत्] १ संख्या-विशेष, पैतालीस, ४५। २ पैतालीस संख्या जिनकी हो वे (पि २७३; ४४५; पिंग)।

पचंकमणग न [प्रचङ्क्रमण, °क] पाँव से चलना (औप)।

पचंकमावण न [प्रचङ्क्रमण] पाँव से संचारण, पाँव से चलाना (औप १०५ टि)।

पचंड देखो **पयंड** (वव ८)।

पचलिय देखो **पयलिय**=प्रचलित (औप)।

पचार सक [प्र+चारय्] चलाना। पचारेइ (सिरि ४३५)।

पचार पुं [प्रचार] विस्तार, फैलाव (मोह २०)। देखो **पयार**=प्रचार।

पचाल सक [प्र+चालय्] अतिशय चलाना, खूब चलाना। वकृ. **पचालेमाण** (भग १७, १)।

पचिय वि [प्रचित] समृद्ध (स्वप्न ६६)।

पचीस (अप) स्त्रीन [पञ्चविंशति] १ पचीस, संख्या-विशेष, बीस और पाँच, २५। २ जिनकी संख्या पचीस हो वे (पिंग; पि २७३)।

पचुन्निय वि [प्रचूर्णित] चूर-चूर किया हुआ (सुर २, ८७)।

पचेलिम वि [पचेलिम] पक्व, पका हुआ; 'सहमहुरपचेलिमफलेहिं' (सुपा ८३)।

पचोइअ वि [प्रचोदित] प्रेरित (सूअ १, २, ३)।

पच्चइग देखो **पच्चइय**=प्रत्ययिक (सुख २, १७)।

पच्चइय वि [प्रत्ययिक] १ विश्वासी, विश्वास-वाला (णाया १, १२)। २ ज्ञानवाला, प्रत्ययवाला। ३ न. श्रुत-ज्ञान, आगम-ज्ञान (विसे २१३९)।

पच्चइय वि [प्रत्ययित] विश्वासवाला, विश्वस्त (महा; सुर १६, १६६)।

पच्चइय वि [प्रात्ययिक] प्रत्यय से उत्पन्न, प्रतीति से संजात (ठा ३, ३—पत्र १५१)।

पच्चंग न [प्रत्यङ्ग] हर एक अवयव (गुण १५; कप्पू)।

पच्चंगिरा स्त्री [प्रत्यङ्गिरा] विद्यादेवी-विशेष, 'ईसिवियसंतवयणा पभणइ पच्चंगिरा अहं विज्जा' (सुपा ३०६)।

पच्चंत पुं [प्रत्यन्त] १ अनार्यदेश (प्रयौ १६)। २ वि. समीपस्थ देश, संनिकृष्ट प्रान्त भाग (सुर २, २००)।

पच्चंतिग देखो **पच्चंतिय** = प्रत्यन्तिक (आचा २, ३, १, ५)।

पच्चंतिय वि [प्रत्यन्तिक] समीप-देश में स्थित (उप २११ टी)।

पच्चंतिय वि [प्रात्यन्तिक] प्रत्यन्त देश से आया हुआ (धम्म ६ टी)।

पच्चक्ख न [प्रत्यक्ष] १ इन्द्रिय आदि की सहायता के बिना ही उत्पन्न होनेवाला ज्ञान (विसे ८६)। २ इन्द्रियों से उत्पन्न होनेवाला ज्ञान (ठा ४, ३)। ३ वि. प्रत्यक्ष ज्ञान का विषय; 'पच्चक्खाओ अणंगो एगो तरुणो महाभागो' (सुर ३, १७१)।

पच्चक्ख } सक [प्रत्या + ख्या] त्याग
पच्चक्खा } करना, त्याग करने का नियम करना। पच्चक्खाइ (भग)। वकृ. **पच्चक्खमाण, पच्चक्खाएमाण** (पि ५६१; उवा)। संकृ. **पच्चक्खाइत्ता** (पि ५८२)। कृ. **पच्चक्खेय** (आव ६)।

पच्चक्खाण न [प्रत्याख्यान] १ परित्याग करने की प्रतिज्ञा (भग; उवा)। २ जैन ग्रन्थांश-विशेष, नववाँ पूर्व-ग्रन्थ (सम २६)। ३ सर्व सावद्य—निंद्य कर्मों से निवृत्ति (कम्म १, १७)। °वरण पुं [°वरण] कषाय-विशेष, सावद्य-विरति का प्रतिबन्धक क्रोध-आदि (कम्म १, १७)।

पच्चक्खाणि वि [प्रत्याख्यानिन्] त्याग की प्रतिज्ञा करनेवाला (भग ६, ४)।

पच्चक्खाणी स्त्री [प्रत्याख्यानी] भाषा-विशेष, प्रतिषेधवचन (भग १०, ३)।

पच्चक्खाय वि [प्रत्याख्यात] त्यक्त, छोड़ दिया हुआ (णाया १, १; भग; कप्प)।

पच्चक्खायय वि [प्रत्याख्यायक] त्याग करनेवाला, 'भत्तपच्चक्खायए' (भग १४, ७)।

पच्चक्खाव सक [प्रत्या + ख्यापय्] त्याग कराना किसी विषय का त्याग करने की प्रतिज्ञा कराना। वकृ. **पच्चक्खाविंत** (आव ६)।

पच्चक्खि वि [प्रत्यक्षिन्] प्रत्यक्ष ज्ञानवाला (वव १)।

पच्चक्खिय देखो **पच्चक्खाय** (सुपा ६२४)।

पच्चक्खीकर सक [प्रत्यक्षी + कृ] प्रत्यक्ष करना, साक्षात् करना। भवि. **पच्चक्खीकरिस्सं** (अभि १८८)।

पच्चक्खीकिद (शौ) वि [प्रत्यक्षीकृत] प्रत्यक्ष किया हुआ, साक्षात् जाना हुआ (पि ४६)।

पच्चक्खीभू अक [प्रत्यक्षी + भू] प्रत्यक्ष होना, साक्षात् होना। संकृ. **पच्चक्खीभूय** (आवम)।

पच्चक्खेय देखो **पच्चक्खा**।

पच्चग्ग वि [प्रत्यग्र] १ प्रधान, मुख्य (स २४)। २ श्रेष्ठ, सुन्दर (उप ९८६ टी; सुर १०, १५२)। ३ नवीन, नया (पाअ)।

पच्चच्छिम देखो **पच्चत्थिम** (राज; ठा २, ३—पत्र ७६)।

पच्चच्छिमा देखो **पच्चत्थिमा** (राज)।

पच्चच्छिमिल्ल वि [पाश्चात्य] पश्चिम दिशा में उत्पन्न, पश्चिम दिशा-सम्बन्धी (सम ६६; पि ३६५)।

पच्चच्छिमुत्तरा देखो **पच्चत्थिमुत्तरा** (राज)।

पच्चड अक [क्षर्] झरना, टपकना। पच्चडइ (हे ४, १७३)। वकृ. **पच्चडमाण** (कुमा)।

पच्चड्ड सक [गम्] जाना, गमन करना। पच्चड्डइ (हे ४, १६२)।

पच्चड्डिअ वि [क्षरित] झरा हुआ, टपका हुआ (हे २, १७४)।

पच्चड्डिया स्त्री [दे. प्रत्यड्डिका] मल्लों का एक प्रकार का करण (विसे ३३५७)।

पच्चणीय वि [प्रत्यनीक] विरोधी, प्रतिपक्षी, दुश्मन (उप १४९ टी; सुपा ३०७)।

पच्चणुभव सक [प्रत्यनु + भू] अनुभव करना। वकृ. **पच्चणुभवमाण** (णाया १, २)।

पच्चणुहो देखो **पच्चणुभव**। पच्चणुहोइ (उत्त १३, २३)।

पच्चत्त वि [प्रत्यक्त] जिसका त्याग करने का प्रारम्भ किया गया हो वह (उप ८२८)।

पच्चत्तर न [दे] चाटु, खुशामद (दे ६, २१)।

पच्चत्थरण न [प्रत्यास्तरण] बिछौना (पि २८५)। देखो **पल्हत्थरण**।

पच्चत्थि वि [प्रत्यर्थिन्] प्रतिपक्षी, विरोधी, दुश्मन (उप १०३१ टी; पाअ; कुप्र १४१)।

पच्चत्थिम वि [पाश्चात्य, पश्चिम] १ पश्चिम दिशा तरफ का, पश्चिम का। २ न. पश्चिम दिशा; 'पुरत्थिमेणं लवणसमुद्दे जोयणसाहस्सियं खेत्तं जाणइ, पासइ; एवं दक्खिणेणं, पच्चत्थिमेणं' (उवा; भग; आचा; ठा २, ३)।

पच्चत्थिमा स्त्री [पश्चिमा] पश्चिम दिशा (ठा १०—पत्र ४७८; आचा)।

पच्चत्थिमिल्ल वि [पाश्चात्य] पश्चिम दिशा का (विपा १, ७; पि ५९५; ६०२)।

पच्चत्थिमुत्तरा स्त्री [पश्चिमोत्तरा] पश्चिमोत्तर दिशा, वायव्य कोण (ठा १०—पत्र ४७८)।

पच्चत्थुय वि [प्रत्यास्तृत] आच्छादित, ढका हुआ (पउम ९४; ९६; जीव ३)। २ बिछाया हुआ (उप ६४८ टी)।

पच्चद्ध न [पश्चार्ध] पिछला आधा, उत्तरार्ध (गउड)।

पच्चद्धचक्कवट्टि पुं [प्रत्यर्धचक्रवर्तिन्] वासुदेव का प्रतिपक्षी राजा, प्रतिवासुदेव (ती ३)।

पच्चप्पण न [प्रत्यर्पण] वापस देना, लौटा देना (विसे ३०५७)।

पच्चप्पिण सक [प्रति + अर्पय्] १ वापस देना, लौटाना। २ सौंपे हुए कार्य को करके निवेदन करना। पच्चप्पिणइ (कप्प)। कर्म. **पच्चप्पिणिज्जइ** (पि ५५७)। वकृ. **पच्चप्पिणमाण** (ठा ५, २—पत्र ३११)। संकृ. **पच्चप्पिणित्ता** (पि ५५७)।

पच्चवलोक वि [दे] आसक्त-चित्त, तल्लीन-मनस्क (दे ६, ३४)।

पच्चब्भास पुं [प्रत्याभास] निगमन, प्रत्युच्चारण (विसे २६३२)।

पच्चभिआण देखो **पच्चभिजाण**। पच्चभि-आणादि (शौ) (पि १७०; ५१०)।

पच्चभिआणिद (शौ) देखो **पच्चभिजाणिअ** (पि ५६५)।

पच्चभिजाण सक [प्रत्यभि + ज्ञा] पहि-चानना, पहिचान लेना। पच्चभिजाणइ (महा)। वकृ. पच्चभिजाणमाण (णाया १, १६)। संकृ. पच्चभिजाणिऊण (महा)।

पच्चभिजाणिअ वि [प्रत्यभिज्ञात] पहि-चाना हुआ (स ३६०)।

पच्चभिणाण न [प्रत्यभिज्ञान] पहिचान (स २१२; नाट—शकु ८४)।

पच्चभिन्नाय देखो **पच्चभिजाणिअ** (स १००; सुर ६, ७६; महा)।

पच्चमाण देखो **पच = पच्**।

पच्चय पुं [प्रत्यय] १ प्रतीति, ज्ञान, बोध (उव; ठा १; विसे २१४०)। २ निर्णय, निश्चय (विसे २१३२)। ३ हेतु, कारण (ठा २, ४)। ४ शपथ, विश्वास उत्पन्न करने के लिए किया या कराया जाता तप्त-माष आदि का चर्वण वगैरह (विसे २१३१)। ५ ज्ञान का कारण। ६ ज्ञान का विषय, ज्ञेय पदार्थ (राज)। ७ प्रत्यय-जनक, प्रतीति का उत्पादक (विसे २१३१; आवम)। ८ विश्वास, श्रद्धा। ९ शब्द, आवाज। १० छिद्र, विवर। ११ आधार, आश्रय। १२ व्याकरण-प्रसिद्ध प्रकृति में लगता शब्द-विशेष (हे २, १३)।

पच्चल वि [दे] १ पक्का, समर्थ, पहुँचा हुआ (दे ६, ६९; सुपा ३४; सुर १, १४; कुप्र ६६; पाअ)। २ असहन, असहिष्णु (दे ६, ६९)।

पच्चलिउ } (अप) अ [प्रत्युत] वैपरीत्य,
पच्चल्लिउ } वरुन, वरन् (हे ४, ४२०)।

पच्चवणद (शौ) वि [प्रत्यवनत] नमा हुआ, 'एस मं कोवि पच्चवणदसिरोहरं उच्छुं विअ तिएण (?) भंगं करेदि' (अभि २२४)।

पच्चवत्थय वि [प्रत्यवस्तृत] १ बिछाया हुआ। २ आच्छादित (आवम)।

पच्चवत्थाण न [प्रत्यवस्थान] १ शङ्का-परिहार, समाधान (विसे १००७)। २ प्रतिवचन, खण्डन (बृह १)।

पच्चवर न [दे] मुसल, एक प्रकार की मोटी लकड़ी जिससे चावल आदि अन्न कूटे जाते हैं (दे ६, १५)।

पच्चवाय पुं [प्रत्यवाय] १ बाधा, विघ्न, व्याघात (णाया १, ६; महा; स २०६)। २ दोष, दूषण (पउम ६५, १२; अच्चु ७०; ओघ २४)। ३ पाप; 'बहुपच्चवायभरिओ गिहवासो' (सुपा १६२)। ४ दुःख, पीड़ा (कुप्र ५५२)।

पच्चवाय पुं [प्रत्यवाय] १ उपघात-हेतु, नाश का कारण (उत्त १०, ३)। २ अनर्थ (पंचा ७, ३६)।

पच्चवेक्खिद (शौ) वि [प्रत्यवेक्षित] निरीक्षित (नाट—शकु १३०)।

पच्चह न [प्रत्यह] हररोज, प्रतिदिन (अभि ६०)।

पच्चहिजाण } देखो **पच्चभिजाण**। पच्च-
पच्चहियाण } हिजाणेदि (पि ५१०)। पच्च-हियाणइ (स ४२)। संकृ. **पच्चहियाणिऊण** (स ४४०)।

पच्चा स्त्री [दे] तृण-विशेष, बल्वज (ठा ५, ३)। °**पिच्चियय** न [दे] बल्वज तृण की कूटी हुई छाल का बना हुआ रजोहरण—जैन साधु का एक उपकरण (ठा ५, ३—पत्र ३३८)।

पच्चा देखो **पच्छा** (प्रयौ ३६; नाट—रत्ना ७)।

पच्चाअच्छ सक [प्रत्या + गम्] पीछे लौटना, वापस आना। पच्चाअच्छइ (षड्)।

पच्चाअद (शौ) देखो **पच्चागय** (प्रयौ २५)।

पच्चाइक्ख देखो **पच्चक्ख = प्रत्या + ख्या**। पच्चाइक्खामि (आचा २, १५, ५, १)। भवि. पच्चाइक्खिस्सामि (पि ५२६)। वकृ. **पच्चाइक्खमाण** (पि ४९२)।

पच्चाउट्टणया स्त्री [प्रत्यावर्त्तनता] अवाय—संशय रहित निश्चयात्मक ज्ञान-विशेष, निश्च-यात्मक मति-ज्ञान (णंदि १७६)।

पच्चाएस पुंन [प्रत्यादेश] दृष्टान्त, निदर्शन, उदाहरण; 'पच्चाएसोव्व धम्मनिरयाणं' (स ३५; उव; कुप्र ५०); 'पच्चाएसं दिट्ठंतं' (पाअ)। देखो **पच्चादेस**।

पच्चागय वि [प्रत्यागत] १ वापस आया हुआ (गा ६३३; दे १, ३१; महा)। २ न. प्रत्यागमन (ठा ६—पत्र ३६५)।

पच्चाचक्ख सक [प्रत्या + चक्ष्] परित्याग करना। हेकृ. **पच्चाचक्खिदुं** (शौ) (पि ४९९; ५७४)।

पच्चाणयण न [प्रत्यानयन] वापस ले आना (मुद्रा २७०)।

पच्चाणि° } सक [प्रत्या + णी] वापस ले
पच्चाणी } आना। कवकृ. **पच्चाणिज्जंत** (से ११, १३५)।

पच्चाणीद (शौ) वि [प्रत्यानीत] वापस लाया हुआ (पि ८१; नाट—विक्र १०)।

पच्चाथरण न [प्रत्यास्तरण] सामने होकर लड़ना (राज)।

पच्चादिट्ठ वि [प्रत्यादिष्ट] निरस्त, निराकृत (पि १४५; मृच्छ ९)।

पच्चादेस पुं [प्रत्यादेश] निराकरण (अभि ७२; १७८; नाट—विक्र ३)। देखो **पच्चाएस**।

पच्चापड अक [प्रत्या + पत्] वापस आना, लौटकर आ पड़ना। वकृ. 'अग्गपडि-हयपुणरविपच्चापडंतचंचलमिरिइकवयं (औप)।

पच्चामित्त पुंन [प्रत्यमित्र] अमित्र, दुश्मन (णाया १, २—पत्र ८७; औप)।

पच्चाय सक [प्रति + आयय्] १ प्रतीति कराना। २ विश्वास कराना। पच्चाअइ (गा ७१२)। पच्चाएमो (स ३२४)।

पच्चाय° देखो **पच्चाया**।

पच्चायण न [प्रत्यायन] ज्ञान कराना, प्रतीति-जनन (विसे २१३९)।

पच्चायय वि [प्रत्यायक] १ निर्णय-जनक। २ विश्वास-जनक (विक्र ११३)।

पच्चाया अक [प्रत्या + जन्] उत्पन्न होना, जन्म लेना। पच्चायंति (औप)। भवि. पच्चायाहिइ (औप; पि ५२७)।

पच्चाया अक [प्रत्या + या] ऊपर देखो। पच्चायंति (पि ५२७)।

पच्चायाइ स्त्री [प्रत्याजाति, प्रत्यायाति] उत्पत्ति, जन्म-ग्रहण (ठा ३, ३—पत्र १४४)।

पच्चायाय वि [प्रत्यायात] उत्पन्न (भग)।

पच्चार सक [उपा + लम्भ्] उपालम्भ देना, उलाहना देना। पच्चारइ, पच्चारंति (हे ४, १५६; कुमा)।

पच्चारण न [उपालम्भन] प्रतिभेद (पाम)।

पच्चारिअ वि [प्रचारित] चलाया हुआ (सिरि ४३६)।

पच्चारिय वि [उपालब्ध] जिसको उलाहना दिया गया हो वह (भवि)।

पच्चालिय वि [दे. प्रत्यार्दित] आर्द्र किया हुआ, गीला किया हुआ; 'पच्चालिया य से अहिययरं बाहसलिलेण दिट्ठी' (स ३०८)।

पच्चालीढ न [प्रत्यालीढ] वाम पाद को पीछे हटा कर और दक्षिण पाँव को आगे रखकर खड़े रहनेवाले धानुष्क की स्थिति धनुषधारियों का पैंतरा (वव १)।

पच्चावड पुं [प्रत्यावर्त्त] आवर्त्त के सामने का आवर्त्त, पानी का भँवर (राय ३०)।

पच्चावरण्ह पुं [प्रत्यापराह्ण] मध्याह्न के बाद समय, तीसरा पहर (विपा १, ३ टि; पि ३३०)।

पच्चासण्ण वि [प्रत्यासन्न] समीप में स्थित, संनिकट, बहुत पास (विसे २६३१)।

पच्चासत्ति स्त्री [प्रत्यासत्ति] समीपता, सामीप्य (मुद्रा १६१)।

पच्चासन्न देखो **पच्चासण्ण**; 'निच्चं पच्चासन्नो परिसक्कइ सव्वओ मच्चू' (उप ६ टी)।

पच्चासा स्त्री [प्रत्याशा] १ आकांक्षा, वाञ्छा, अभिलाषा। २ निराशा के बाद की आशा (स ३६८)। ३ लोभ, लालच (उप पृ ७६)।

पच्चासि वि [प्रत्याशिन्] वान्त या वमन किया हुआ वस्तु का भक्षण करनेवाला (आचा)।

पच्चाह सक [प्रति + ब्रू] उत्तर देना। पच्चाह (पिंड ३७८)।

पच्चाहर सक [प्रत्या + हृ] उपदेश देना। वकृ. 'पच्चाहरओ वि णं हियगमणीओ जोयणनीहारी सरो' (सम ६०)।

पच्चाहुत्त क्रिवि [पश्चान्मुख] पीछे, पीछे की तरफ; 'जाव न सत्तट्ठ पए पच्चाहुत्तं नियत्तो सि' (धर्मवि ५४)।

पच्चिम देखो **पच्छिम** (पिंग; पि ३०१)।

पच्चुअ (दे) देखो **पच्चुहिअ** (दे ६, २५)।

पच्चुअआर देखो **पच्चुवयार** (नाट ३६; नाट—मृच्छ ५७)।

पच्चुग्गच्छणया स्त्री [प्रत्युद्गमनता] अभिमुख गमन, (भग १४, ३)।

पच्चुच्चार पुं [प्रत्युच्चार] अनुवाद, अनुभाषण (स १८४)।

पच्चुच्छुहणी स्त्री [दे] नूतन सुरा, ताजा दारू (दे २, ३५)।

पच्चुज्जीविअ वि [प्रत्युज्जीवित] पुनर्जीवित (गा ६३१; कुप्र ११)।

पच्चुट्ठिअ वि [प्रत्युत्थित] जो सामने खड़ा हुआ हो वह (सुर १, १३४)।

पच्चुण्णम अक [प्रत्युद् + नम्] थोड़ा ऊँचा होना। पच्चुण्णमइ (कप्प)। संकृ. पच्चुण्णमित्ता (कप्प; औप)।

पच्चुत्त वि [प्रत्युप्त] फिर से बोया हुआ (दे ७, ७७; गा ११८)।

पच्चुत्तर सक [प्रत्यव + तृ] नीचे आना। पच्चुत्तरइ (पि ४४७)। संकृ. पच्चुत्तरित्ता (राज)।

पच्चुत्तर न [प्रत्युत्तर] जवाब, उत्तर (श्रा १२; सुपा २१; १०४)।

पच्चुत्थ वि [दे] प्रत्युप्त, फिर से बोया हुआ (दे ६, १३)।

पच्चुत्थय, **पच्चुत्थुय** वि [प्रत्यवस्तृत] आच्छादित (णाया १, १—पत्र १३, २०; कप्प)।

पच्चुद्धरिअ वि [दे] संमुखागत, सामने आया हुआ (दे ६, २४)।

पच्चुद्धार पुं [दे] संमुख आगमन (दे ६, २४)।

पच्चुप्पण्ण, **पच्चुप्पन्न** वि [प्रत्युत्पन्न] वर्त्तमान काल-संबन्धी (पि ५१६; भग; णाया १, ८; सम्म १०३)। °नय पुं [°नय] वर्त्तमान वस्तु को ही सत्य माननेवाला पक्ष, निश्चय नय (विसे ३१६१)।

पच्चुप्पन्न पुं [प्रत्युत्पन्न] वर्त्तमान काल (सूअ १, २, ३, १०)।

पच्चुप्फलिअ वि [प्रत्युत्फलित] वापस आया हुआ (से १४, ८१)।

पच्चुब्भड वि [प्रत्युद्भट] अतिशय प्रबल (संबोध ५३)।

पच्चुरस न [प्रत्युरस] हृदय के सामने (राज)।

पच्चुल्लं अ [दे. प्रत्युत] प्रत्युत; उलटा; 'न तुमं रुट्ठो, पच्चुल्लं ममं पूएसि' (वव १)।

पच्चुवकार देखो **पच्चुवयार** (नाट—मृच्छ २५५)।

पच्चुवगच्छ सक [प्रत्युप + गम्] सामने जाना। पच्चुवगच्छइ (भग)।

पच्चुवगार, **पच्चुवयार** पुं [प्रत्युपकार] उपकार के बदले उपकार (ठा ४, ४; पउम ४६, ३६; स ४४०; प्राकृ)।

पच्चुवयारि वि [प्रत्युपकारिन्] प्रत्युपकार करनेवाला (सुपा ५६५)।

पच्चुवेक्ख सक [प्रत्युप + ईक्ष्] निरीक्षण करना। पच्चुवेक्खेइ (औप)। संकृ. पच्चुवेक्खित्ता (औप)।

पच्चुवेक्खिय वि [प्रत्युपेक्षित] अवलोकित, निरीक्षित (स ४४१)।

पच्चुहिअ वि [दे] प्रस्नुत, प्रक्षरित, अच्छी तरह चूने या टपकनेवाला (दे ६, २५)।

पच्चूढ न [दे] थाल, थार, भोजन करने का पात्र, बड़ी थाली (दे ६, १२)।

पच्चूस [दे] देखो **पच्चूह** = (दे); 'किडएहिं पयत्तेणवि छाइज्जइ कह णु पच्चूसो?' (सुर ३, १३४)।

पच्चूस, **पच्चूह** पुं [प्रत्यूष] प्रभात काल (हे २, १४; णाया १, १; गा ६०४)।

पच्चूह पुंन [प्रत्यूह] विघ्न, अन्तराय (पाम; कुप्र ५२)।

पच्चूह पुं [दे] सूर्य, रवि (दे ६, ५; गा ६०४; पाम)।

पच्चेअ न [प्रत्येक] प्रत्येक, हर एक (षड्)।

पच्चेड न [दे] मुसल (दे ६, १५)।

पच्चेल्लिउ (अप) देखो **पच्चल्लिउ** (भवि)।

पच्चोगिल सक [प्रत्यव + गिल्] आस्वादन करना, रस या स्वाद लेना। वकृ. पच्चोगिलमाण (कस ५, १०)।

पच्चोणामिणी स्त्री [प्रत्यवनामिनी] विद्या-विशेष, जिसके प्रभाव से वृक्ष आदि फल देने के लिए स्वयं नीचे नमते हैं (उप पृ १५५)।

पच्चोणियत्त वि [प्रत्यवनिवृत्त] ऊँचा उछल कर नीचे गिरा हुआ (पराह १, ३—पत्र ४५)।

पच्चोणिवय अक [प्रत्यवनि + पत्] उछल कर नीचे गिरना। वकृ. **पच्चोणिवयंत** (औप)।

पच्चोणी [दे] देखो पच्चोवणी (स २३५; ३०२; सुपा ६१; २२४; २७६)।

पच्चोयड न [दे] १ तट के समीप का ऊँचा प्रदेश (जीव ३)। २ वि. आच्छादित (राय)।

पच्चोयर सक [प्रत्यव + तॄ] नीचे उतरना। पच्चोयरइ (आचा २, १५, २८)। संकृ. **पच्चोयरित्ता** (आचा २, १५, २८)।

पच्चोरुभ } सक [प्रत्यव + रुह्] नीचे
पच्चोरुह } उतरना। पच्चोरुभइ (णाया १, १)। पच्चोरुहइ (कप्प)। संकृ. **पच्चोरुहित्ता** (कप्प)।

पच्चोवणिअ वि [दे] संमुख आया हुआ (दे ६, २४)।

पच्चोवणी स्त्री [दे] संमुख आगमन (दे ६, २४)।

पच्चोसक्क अक [प्रत्यव + ष्वष्क्] १ नीचे उतरना। २ पीछे हटना। पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्कंति (उवा; पि ३०२; भग)। संकृ. **पच्चोसक्कित्ता** (उवा; भग)।

पच्छ सक [प्र + अर्थय्] प्रार्थना करना। कवकृ. **पच्छिज्जमाण** (कप्प, औप)।

पच्छ वि [पथ्य] १ रोगी का हितकारी आहार (हे २, २१; प्राप्र; कुमा; स ७२४; सुपा ५७६)। २ हितकारक, हितकारी; 'पच्छा वाया' (णाया १, ११—पत्र १७१)।

पच्छ न [पश्चात्] १ चरम, शेष (चंद १)। २ पीछे, पृष्ठ भाग। ३ पश्चिम दिशा; 'पुव्वेण सणं पच्छेण वंजुला दाहिणेण वडविडवो' (वज्जा ६६)। °**ओ** अ [°तस्] पीछे, पीठ की ओर; 'हत्थी वेगेण पच्छओ लग्गो' (महा); 'वहइ व महीअलभरिओ णोल्लेइ व पच्छओ धरेइ व पुरओ' (से १०, ३०); 'तो चेडयाओ तक्खणमाणावेऊण पच्छओ बाहुं बद्धं दंसइ' (सुपा २२१)। °**कम्म** न [°कर्मन्] १ अनन्तर का कर्म, बाद की क्रिया। २ यतियों की भिक्षा का एक दोष, दातृ-कर्तृक दान देने के बाद की पात्र को साफ करने आदि क्रिया (ओघ ५१६)। °**त्ताअ** पुं [°ताप] अनुताप (वज्जा १४२)। °**द्ध** न [°अर्ध] पीछला आधा, उत्तरार्ध (गउड; महा)। °**वत्थुक** न [°वास्तुक] पिछला घर, घर का पिछला हिस्सा (पराह २, ४—पत्र १३१)। °**याव** पुं [°ताप] पश्चात्ताप, अनुताप (आवम)। देखो **पच्छा** = पश्चात्।

पच्छइ } (अप) अ [पश्चात्] ऊपर देखो
पच्छए } (हे ४, ४२०; षड्; भवि)। °**ताव** पुं [°ताप] अनुताप, अनुशय (कुमा)।

पच्छंद सक [गम्] जाना, गमन करना। पच्छंदइ (हे ४, १६२)।

पच्छंदि वि [गन्तृ] गमन करनेवाला (कुमा)।

पच्छंभाग पुं [पश्चाद्भाग] १ दिवस का पिछला भाग (राज)। २ पुंन. नक्षत्र-विशेष, चन्द्र पृष्ठ देकर जिसका भोग करता है वह नक्षत्र (ठा ६)।

पच्छण स्त्रीन [प्रतक्षण] त्वक् का बारीक विदारण, चाकू आदि से पतली छाल निकालना; 'तच्छणेहि य पच्छणेहि य' (विपा १, १); 'तच्छणाहि य पच्छणाहि य' (णाया १, १३)।

पच्छण्ण वि [प्रच्छन्न] गुप्त, अप्रकट, (गा १८३)। °**पइ** पुं [°पति] जार, उपपति, यार (सूअ १, ४, १)।

पच्छद देखो **पच्छय** (औप)।

पच्छदण न [प्रच्छदन] आस्तरण, चादर—शय्या के ऊपर का आच्छादन-वस्त्र; 'सुप्पच्छदणाए सय्याए णिद्दं ण लभामि' (स्वप्न ६०)।

पच्छन्न देखो **पच्छण्ण** (उवा; सुर २, १८४)।

पच्छय पुं [प्रच्छद] वस्त्र-विशेष, दुपट्टा, पिछौरी (णाया १, १६)।

पच्छयण देखो **पत्थयण** (···)।

पच्छयण देखो **पत्थयण** (मोह ८०)।

पच्छलिउ (अप) देखो **पच्चलिउ** (षड्)।

पच्छा अ [पश्चात्] १ अनन्तर, बाद, पीछे (सुर २, २४४; पाअ; प्रासू ५७); 'पच्छा तस्स विवागे रुअंति कलुणं महादुक्खा' (प्रासू १२६)। २ परलोक, परजन्म; 'पच्छा कडुअविवागा' (राज)। ३ पिछला भाग, पृष्ठ। ४ चरम, शेष (हे २, २१)। ५ पश्चिम दिशा (णाया १, ११)। °**उत्त** वि [°आयुक्त] जिसका आयोजन पीछे से किया गया हो वह (कप्प)। °**कड** पुं [°कृत] साधुपन को छोड़कर फिर गृहस्थ बना हुआ (द्र ५०; बृह १)। °**कम्म** देखो °**पच्छ-कम्म** (पि ११२)। °**णिवाइ** देखो °**निवाइ** (राज)। °**णुताव** पुं [°अनुताप] पश्चात्ताप, अनुताप; 'पच्छाणुतावेण सुभज्झवसाणेण' (आवम)। °**णुपुव्वी** स्त्री [°आनुपूर्वी] उलटा क्रम (अणु; कम्म ४, ४३)। °**ताव** पुं [°ताप] अनुताप (भाव ४)। °**ताविय** वि [°तापिक] पश्चात्तापवाला (पराह २, ३)। °**निवाइ** वि [°निपातिन्] १ पीछे से गिर जानेवाला। २ चारित्र ग्रहण कर बाद में उससे च्युत होनेवाला (आचा)। °**भाग** पुं [°भाग] पिछला हिस्सा (णाया १, १)। °**मुह** वि [°मुख] परांमुख, जिसने मुँह पीछे की तरफ फेर लिया हो वह (श्रा १२)। °**यव**, °**याव** देखो °**ताव** (पउम ६५, ६६; सुर १५, १४५; सुपा १२१, महा)। °**यावि** वि [°तापिन्] पश्चात्ताप करनेवाला (उप ७२८ टी)। °**वाय** पुं [°वात] पश्चिम दिशा का पवन। २ पीछे का पवन (णाया १, ११)। °**संखडि** स्त्री [दे. संस्कृति] १ पिछला संस्कार। २ मरण के उपलक्ष्य में ज्ञाति—कुटंबी वगैरह प्रभृत मनुष्यों के लिए पकायी जाती रसोई (आचा २, १, ३, २)। °**संथव** पुं [°संस्तव] १ पिछला संबन्ध, स्त्री, पुत्री वगैरह का संबन्ध। २ जैन मुनियों के लिए भिक्षा का एक दोष, श्वशुर आदि पक्ष में अच्छी भिक्षा मिलने की लालच से पहले भिक्षार्थ जाना (ठा ३, ४)। °**संथुय** वि [°संस्तुत] पिछले संबन्ध से परिचित (आचा २, १, ४, ५)। °**हुत्त** वि [दे] पीछे की तरफ का; 'थलमत्थयम्मि पच्छाहुत्ताइं पयाइं तीए दट्ठूण' (सुपा २८१)।

पच्छा स्त्री [पथ्या] हर्रे, हरीतकी (हे २, २१)।

पच्छाअ सक [प्र + छदय्] १ ढकना। २ छिपाना। वकृ. **पच्छाअंत** (से ६, ४६; ११, ६)। कृ. **पच्छाइज्ज** (वसु)।

पच्छाअ वि [प्रच्छाय] प्रचुर छायावाला (अभि ३६)।

पच्छाइअ वि [प्रच्छादित] १ ढका हुआ, आच्छादित। २ छिपाया हुआ (पाअ; भवि)।

पच्छाइज्ज देखो **पच्छाअ** = प्र + छादय्।

पच्छाग पुं [प्रच्छादक] पात्र बाँधने का कपड़ा (ओघ २६५ भा)।

पच्छाडिद (शौ) वि [प्रक्षालित] धोया हुआ (नाट—मृच्छ २५५)।

पच्छाणिअ [दे] देखो **पच्चोवणिअ** (षड्)।

पच्छाणुताविअ वि [पश्चादनुतापिक] पश्चात्ताप-युक्त, पछतावा करनेवाला (राय १४१)।

पच्छादो (शौ) देखो **पच्छा** = पश्चात् (पि ६६)।

पच्छायण न [पथ्यदन] पाथेय, रास्ते में खाने का भोजन; 'वहूणं करियं पच्छायणस्स भारियं' (महा)।

पच्छायण न [प्रच्छादन] १ आच्छादन, ढकना। २ वि. आच्छादन करनेवाला। °**या** स्त्री [°ता] आच्छादन; 'परगुणपच्छायणया' (उव)।

पच्छाल देखो **पक्खाल**। पच्छलेइ (काल)।

पच्छि स्त्री [दे] पिटिका, पिटारी, वेत्रादि-रचित भाजन-विशेष (दे ६, १)। °**पिडय** न [°पिटक] 'पच्छी' रूप पिटारी (भग ७, ८ टी—पत्र ३१३)।

पच्छि (अप) देखो **पच्छइ** (हे ४, ३८८)।

पच्छिज्जमाण देखो **पच्छ** = प्र + अर्थय्।

पच्छित्त न [प्रायश्चित्त] १ पाप की शुद्धि करनेवाला कर्म, पाप का क्षय करनेवाला कर्म (उव; सुपा ३६६; द्र ५२)। २ मन को शुद्ध करनेवाला कर्म (पंचा १६, ३)।

पच्छित्ति वि [प्रायश्चित्तिन्] प्रायश्चित्त का भागी, दोषी (उप ३७६)।

पच्छिम न [पश्चिम] १ पश्चिम दिशा (उपा ७४ टि)। २ वि. पश्चिम दिशा का, पाश्चात्य (महा, हे २, २१; प्राप्र)। ३ पिछला, बाद का; 'दियसस्स पच्छिमे भाए' (कप्प)। ४ अन्तिम, चरम; 'पुरिमपच्छिमगाणं तित्थ-गराणं' (सम ४४)। °**द्ध** न [°ार्ध] उत्तरार्ध, उत्तरी आधा हिस्सा (महा; ठा २, ३—पत्र ८१)। °**सेल** पुं [°शैल] अस्ताचल पर्वत (गउड)।

पच्छिमा स्त्री [पश्चिमा] पश्चिम दिशा (कुमा; महा)।

पच्छिमिल्ल वि [पाश्चात्य] पीछे से उत्पन्न, पीछे का (विसे १७६५)।

पच्छियापिडय देखो **पच्छि-पिडय** (राय १४०)।

पच्छिल (अप) देखो **पच्छिम** (भवि)।

पच्छिल्ल, **पच्छिल्लय** } वि [पश्चिम, पाश्चात्य] १ पश्चिम दिशा का। २ पिछला, पृष्ठवर्ती (पि ५६५, ५६५ टि ४)।

पच्छुत्ताव पुं [पश्चादुत्ताप] पछतावा, पश्चात्ताप (सम्मत्त १६०; धर्मवि ३५, १२२; १३०)।

पच्छुत्ताविअ (अप) वि [पश्चात्तापित] जिसको पश्चात्ताप हुआ हो वह (भवि)।

पच्छेकम्म देखो **पच्छ-कम्म** (हे १, ७६)।

पच्छेणय न [दे] पाथेय, रास्ते में निर्वाह करने की भोजन-सामग्री, कलेवा (दे ६,२४)।

पच्छोववण्णग, **पच्छोववन्नक** } वि [पश्चादुपपन्न] पीछे से उत्पन्न (भग)।

पजंप सक [प्र + जल्प्] बोलना, कहना। पजंपइ (पि २६६)।

पजंपावण न [प्रजल्पन] बोलाना, कथन कराना (औप; पि २६६)।

पजंपिअ वि [प्रजल्पित] कथित, उक्त, कहा हुआ (गा ६४६)।

पजणग वि [प्रजनन] उत्पादक, उत्पन्न करनेवाला (राय ११४)।

पजणण न [प्रजनन] लिंग, पुरुष-चिह्न (विसे २५७६ टी; ओघ ७२२)।

पजल अक [प्र + ज्वल्] १ विशेष जलना, अतिशय दग्ध होना। २ चमकना। वकृ. **पजलंत** (भवि)।

पजलिर वि [प्रज्वलितृ] अत्यन्त जलनेवाला, 'सियज्झाणानलपजलिरकम्मकंतारवूमलइउव्व' (सुपा १)।

पजह सक [प्र + हा] त्याग करना। पजहामि (पि ५००)। कृ. **पजहियव्व** (आचा)।

पजाला स्त्री [प्रज्वाला] अग्नि-शिखा, आग की लौ या लपट (कुप्र ११७)।

पजीवण न [प्रजीवन] आजीविका, जीवनो-पाय, रोजी (पिंड ४७८)।

पजुत्त देखो **पउत्त** = प्रयुक्त (चंड)।

पजूहिअ वि [प्रयूथिक] यूथ या समूह को दिया हुआ, याचक-गण को अर्पित (आचा २, १, ४, २)।

पजेमण न [प्रजेमन] भोजन-ग्रहण, भोजन लेना (राय १४६)।

पज्ज सक [पायय्] पिलाना, पान कराना। पज्जेइ (विपा १, ६)। कवकृ. 'तएहाइया ते तउ तंब तत्तं पज्जिज्जमाणाट्टतरं रसंति' (सूअ १, ५, १, २५)। कृ. **पज्जेयव्व** (भत्त ४०)।

पज्ज न [पद्य] छन्दो-बद्ध वाक्य (ठा ४, ४—पत्र २८७)।

पज्ज न [पाद्य] पाद-प्रक्षालन जल; 'अग्घं च पज्जं च गहाय' (णाया १, १६—पत्र २०६)।

पज्ज देखो **पज्जत्त** (दं ३३; कम्म ३, ७)।

पज्जंत पुं [पर्यन्त] अन्त, सीमा, प्रान्त भाग (हे १, ५८; २, ६५; सुर ४, ३१६)।

पज्जग न [दे] पान, पीना (दे ६, ११)।

पज्जण न [पायन] पिलाना, पान कराना (भग १४, ७)।

पज्जण्ण देखो **पज्जणण** (सूअनि ५७)।

पज्जणुओग, **पज्जणुजोग** } पुं [पर्यनुयोग] प्रश्न (धर्मसं १७६; २६२)।

पज्जण्ण पुं [पर्जन्य] मेघ, बादल (भग १४, २; नाट. मृच्छ १७५)। देखो **पज्जन्न**।

पज्जतर वि [दे] दलित, विदारित (षड्)।

पज्जत वि [पर्याप्त] १ 'पर्याप्ति' से युक्त, 'पर्याप्ति' वाला (ठा २, १; पण्ह १, १; कम्म १, ४६)। २ समर्थ, शक्तिमान्। ३ लब्ध, प्राप्त। ४ काफी, यथेष्ट, उतना जितने से काम चल जाय। ५ न. तृप्ति। ६ सामर्थ्य। ७ निवारण। ८ योग्यता (हे २, २४; प्राप्र)। ६ कर्म-विशेष, जिसके उदय से जीव अपनी अपनी 'पर्याप्तियों' से युक्त होता है वह कर्म (कम्म १, २६)। °**णाम**, °**नाम** न

[°नामन्] अनन्तर उक्त कर्म-विशेष (राज; सम १७)।

पज्जत्त न [पर्याप्त] लगातार चौतीस दिन का उपवास (संबोध ५८)।

पज्जत्तर [दे] देखो पज्जतर (षड्—पत्र २१०)।

पज्जत्ति स्त्री [पर्याप्ति] १ शक्ति, सामर्थ्य (सूअ १, १, ४)। २ जीव की वह शक्ति, जिसके द्वारा पुद्गलों को ग्रहण करने तथा उनको आहार, शरीर आदि के रूप में बदल देने का काम होता है, जीव की पुद्गलों को ग्रहण करने तथा परिणमाने या पचाने की शक्ति (भग; कम्म १, ४६; नव ४; दं ४)। ३ प्राप्ति, पूर्ण प्राप्ति (दे ५, ६२)। ४ तृप्ति; 'पियदंसणधणजीवियाण को लहइ पज्जत्ति ?' (उप ७६८ टी)।

पज्जत्ति स्त्री [पर्याप्ति] १ पूर्ति, पूर्णता (धर्मवि ३८)। २ अन्त, अवसान (सुख २, ८)।

पज्जन्न पुं [पर्जन्य] मेघ-विशेष, जिसके एक बार बरसने से भूमि में एक हजार वर्ष तक चिकनाहट रहती है; 'पज्जु-(?ज) न्ने णं महामेहे एगे णं वासेणं दस वाससयाइं भावेति' (ठा ४, ४—पत्र २७०)।

पज्जय पुं [दे. प्रार्यक] प्रपितामह, पितामह का पिता, परदादा (भग ६,३; दस ७; सुर १, १७४; २२०)।

पज्जय पुं [पर्यय] १ श्रुत-ज्ञान का एक भेद, उत्पत्ति के प्रथम समय में सूक्ष्म-निगोद के लब्धि-अपर्याप्त जीव को जो कुश्रुत का अंश होता है उससे दूसरे समय में ज्ञान का जितना अंश बढ़ता है वह श्रुतज्ञान (कम्म १, ७)। २—देखो पज्जाय (सम्म १०३; णंदि; विसे ४७८; ४८८; ४६०; ४६१)। °समास पुं [°समास] श्रुतज्ञान का एक भेद, अनन्तर उक्त पर्यय-श्रुत का समुदाय (कम्म १, ७)।

पज्जयण न [पर्ययन] निश्चय, अवधारण (विसे ८३)।

पज्जर सक [कथय्] कहना, बोलना। पज्जरइ, पज्जर (हे ४, २; दे ६, २६, कुमा)।

पज्जरय पुं [प्रजरक] रत्नप्रभा-नामक नरक-पृथिवी का एक नरकावास (ठा ६—पत्र ३६५)। °मज्झ पुं [°मध्य] एक नरकावास (ठा ६—पत्र ३६७ टी)। °वट्ट पुं [°वर्त्त] नरकावास-विशेष (ठा ६)। °सिट्ठ पुं [°विशिष्ट] एक नरकावास, नरक-स्थान-विशेष (ठा ६)।

पज्जल देखो पजल। पज्जलेइ (महा)। वकृ. पज्जलंत (कप्प)।

पज्जलण वि [प्रज्वलन] जलानेवाला (ठा ४, १)।

पज्जलिअ पुं [प्रज्वलित] तीसरी नरक-भूमि का एक नरक-स्थान (देवेन्द्र ८)।

पज्जलिय वि [प्रज्वलित] १ जलाया हुआ, दग्ध (महा)। २ खूब चमकनेवाला, देदीप्यमान (गच्छ २)।

पज्जलिर वि [प्रज्वलितृ] १ जलनेवाला। २ खूब चमकनेवाला (सुपा ६३८; सण)।

पज्जलीढ वि [प्रर्यवलीढ] भक्षित (विचार ३२६)।

पज्जव पुं [पर्यव] १ परिच्छेद, निर्णय (विसे ८३; आवम)। २ देखो पज्जाय (आचा; भग; विसे २७५२, सम्म ३२)। °कसिण न [°कृत्स्न] चतुर्दश पूर्व-ग्रंथ तक का ज्ञान, श्रुतज्ञान-विशेष (पंचभा)। °जाय वि [°जात] १ भिन्न अवस्था को प्राप्त (पण्ह २, ५)। २ ज्ञान आदि गुणोंवाला (ठा १)। ३ न. विषयोपभोग का अनुष्ठान (आचा)। °जाय वि [°यात] ज्ञान-प्राप्त (ठा १)। °ट्ठिय पुं [स्थित, °र्थिक, °स्तिक] नय-विशेष, द्रव्य को छोड़कर केवल पर्यायों को ही मुख्य माननेवाला पक्ष (सम्म ६)। °णय, °नय पुं [°नय] वही अनन्तर उक्त अर्थ (राज; विसे ७५); उप्पज्जंति वयंति अ भावा नियमेण पज्जवनयस्स' (सम्म ११)।

पज्जवण न [पर्यवन] परिच्छेद, निश्चय (विसे ८३)।

पज्जवत्थाव सक [पर्यव + स्थापय्] १ अच्छी अवस्था में रखना। २ विरोध करना। ३ प्रतिपक्ष के साथ वाद करना। पज्जवत्थावेदु (शौ), (मा ३६)। पज्जवत्थावेहि (पि ५५१)।

पज्जवसाण न [पर्यवसान] अन्त, अवसान (भग)।

पज्जवसिअ न [पर्यवसित] अवसान, अन्त; 'अपज्जवसिए लोए' (आचा)।

पज्जा देखो पण्णा (हे २, ८३)।

पज्जा स्त्री [पद्या] मार्ग, रास्ता; 'भेअं च पडुच्च समा भावाणं पन्नवणपज्जा' (सम्म १५७; दे ६, १; कुप्र १७६)।

पज्जा स्त्री [दे] निःश्रेणि, सीढ़ी (दे ६, १)।

पज्जा स्त्री [पर्याय] अधिकार, प्रबन्ध-भेद (दे ६, १; पाअ)।

पज्जा देखो पया; 'अगणिज्जंति नासे विज्जा दंडिज्जंती नासे पज्जा' प्रासू ६६)।

पज्जाअर पुं [प्रजागर] जागरण, निद्रा का अभाव (अभि ६६)।

पज्जाउल वि [पर्याकुल] विशेष आकुल, व्याकुल (स ७२; ६७३; हे ४, २६६)।

पज्जाभाय सक [पर्या + भाजय्] भाग करना। संकृ. पज्जाभाइत्ता (राज)।

पज्जाय पुं [पर्याय] १ समान अर्थ का वाचक शब्द (विसे २५)। २ पूर्ण प्राप्ति (विसे ८३)। ३ पदार्थ-धर्म, वस्तु-गुण। ४ पदार्थ का सूक्ष्म या स्थूल रूपान्तर (विसे ३२१; ४७६; ४८०; ४८१; ४८२; ४८३; ठा १, १०)। ५ क्रम, परिपाटी (णाया १, १)। ६ प्रकार, भेद (आवम)। ७ अवसर। ८ निर्माण (हे २, २४)। देखो पज्जय तथा पज्जव।

पज्जाय पुं [पर्याय] तात्पर्य, भावार्थ, रहस्य (सूअनि १३६)।

पज्जाल सक [प्र + ज्वालय्] जलाना, सुलगाना। पज्जालइ (भवि)। संकृ. पज्जालिअ, पज्जालिऊण (दस ५, १; महा)।

पज्जालण न [प्रज्वालन] सुलगाना (उप ५६७ टी)।

पज्जालिअ वि [प्रज्वालित] जलाया हुआ, सुलगाया हुआ (सुपा १५१; प्रासू १८)।

पज्जिआ स्त्री [दे. प्रार्यिका] १ माता की मातामही, परनानी। २ पिता की मातामही, परदादी (दस ७; हे ३, ४१)।

पज्जिज्जमाण देखो पज्ज = पायय्।

पज्जुट्ठ वि [पर्युष्ट] फड़फड़ाया हुआ (?); 'भिउडी ण कआ, कडुअं णालविअं अहरअं ण पज्जुट्ठं' (गा ६२१)।

पज्जुच्छुअ वि [पर्युत्सुक] अति उत्सुक (नाट)।

पज्जुणसर न [दे] ऊख के तुल्य एक प्रकार का तृण (दे ६, ३२)।

पज्जुण्ण पुं [प्रद्युम्न] १ श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम (अंत)। २ कामदेव (कुमा)। ३ वैष्णव शास्त्र में प्रतिपादित चतुर्व्यूह रूप विष्णु का एक अंश (हे २, ४२)। ४ एक जैनमुनि (निचू १)। देखो पज्जुन्न।

पज्जुत्त वि [प्रयुक्त] जटित, खचित; 'माणिक्क-पज्जुत्तकणयकडयसणाहेहिं' (स ३१२), 'दिव्व-खग्गचामरपज्जुत्तकुडंतरालाइं' (स ५६; भवि)। देखो पउत्त।

पज्जुदास पुं [पर्युदास] निषेध, प्रतिषेध (विसे १८३)।

पज्जुन्न देखो पज्जुण्ण (णाया १, ५; अंत १४; कुप्र १८; सुपा ३२)। ५ वि. धनी, श्रीमन्त, प्रभूत धनवाला; 'पज्जुन्नओवि पडिपुन्नसयलंगो' (सुपा ३२)।

पज्जुवट्ठा सक [पर्युप + स्था] उपस्थित होना। हेकृ. **पज्जुवट्ठादुं** (शौ) (नाट—वेणी २५)।

पज्जुवट्ठिय वि [पर्युपस्थित] उपस्थित, मौजूद, हाजिर, तत्पर (उत्त १८, ४५)।

पज्जुवास सक [पर्युप + आस्] सेवा करना, भक्ति करना। पज्जुवासइ, पज्जु-वासंति (उव; भग)। वकृ. **पज्जुवासमाण** (णाया १, १; २)। कवकृ. **पज्जुवासिज्ज-माण** (सुपा ३७८)। संकृ. **पज्जुवासित्ता** (भग)। कृ. **पज्जुवासणिज्ज** (णाया १, १; औप)।

पज्जुवासण न [पर्युपासन] सेवा, भक्ति, उपासना (भग; स ११६; उप ३५७ टी; अभि ३८)।

पज्जुवासणया, **पज्जुवासणा** स्त्री [पर्युपासना] ऊपर देखो (ठा ३, ३; भग; णाया १, १३; औप)।

पज्जुवासय वि [पर्युपासक] सेवा करनेवाला (काल)।

पज्जुसण, **पज्जुसवण**, **पज्जुस्सवण**, **पज्जूसण** न. देखो पज्जुसणा (धर्मवि २१; विचार ५३१)।

पज्जुसणा स्त्री [पर्युषणा] देखो पज्जोसवणा; 'परिवसणा पज्जुसणा पज्जोसवणा य वास-वासो य' (निचू १०)।

पज्जुस्सुअ, **पज्जूसुअ** वि [पर्युत्सुक] अति उत्सुक, विशेष उत्कण्ठित (अभि १०६; पि ३२७ ए)।

पज्जोअ पुं [प्रद्योत] १ प्रकाश, उद्द्योत। २ उज्जयिनी नगरी का एक राजा (उव)। °गर वि [°कर] प्रकाश-कर्ता (सम १; (कप्प; औप)।

पज्जोइय वि [प्रद्योतित] प्रकाशित (उप ७२८ टी)।

पज्जोय सक [प्र + द्योतय्] प्रकाशित करना। वकृ. पज्जोयंत (चेइय ३२४)।

पज्जोयण पुं [प्रद्योतन] एक जैन आचार्य (राज)।

पज्जोसव अक [परि + वस्] १ वास करना, रहना। २ जैनागम-प्रोक्त पर्युषणा-पर्व मनाना। पज्जोसवेइ, पज्जोसविंति, पज्जोसवेंति (कप्प)। वकृ. **पज्जोसवंत**, **पज्जोसवेमाण** (निचू १०; कप्प)। हेकृ. **पज्जोसवित्तए**, **पज्जोसवेत्तए** (कप्प; कस)।

पज्जोसवण न. देखो पज्जोसवणा (पंचा १७, ६)।

पज्जोसवणा स्त्री [पर्युषणा] १ एक ही स्थान में वर्षा-काल व्यतीत करना (ठा १०; कप्प)। २ वर्षा-काल (निचू १०)। ३ पर्व-विशेष, भाद्रपद के आठ दिनों का एक प्रसिद्ध जैन पर्व; 'काराविओ अमारिं पज्जोसवणाईसु तिहीसु' (मुणि १०९००; सुर १६, १६१)। °कप्प पुं [°कल्प] पर्युषणा में करने योग्य शास्त्र-विहित आचार, वर्षाकल्प (ठा ५, २)।

पज्जोसवणा स्त्री [पर्योसवना, पर्युपशमना] ऊपर देखो (ठा १०—पत्र ५०६)।

पज्जोसविय वि [पर्युषित] स्थित, रहा हुआ (कप्प)।

पज्झंझ अक [प्र + झञ्झ्] शब्द करना, आवाज करना। वकृ. **पज्झंझमाण** (राज)।

पज्झट्टिआ स्त्री [पज्झट्टिका] छन्द-विशेष (पिंग)।

पज्झर अक [क्षर्, प्र + क्षर्] झरना, टपकना। पज्झरइ (हे ४, १७३)।

पज्झर पुं [प्रक्षर] प्रवाह-विशेष (पउम २)।

पज्झरण न [प्रक्षरण] टपकना (वज्जा १०८)।

पज्झरिअ वि [प्रक्षरित] टपका हुआ (पाअ; कुमा; महा; संक्षि १५)।

पज्झल देखो पज्झर = क्षर्। पज्झलइ (पिंग)।

पज्झलिआ देखो पज्झट्टिआ (पिंग)।

पज्झाय न [प्रध्यात] अतिशय चिन्तन (अणु १३९)।

पज्झाय वि [प्रध्यात] चिन्तित, सोचा हुआ (अणु)।

पज्झुत्त वि [दे] खचित, जड़ित, जड़ा हुआ (पाअ)। देखो पज्जुत्त

पझुंझ देखो पज्झुंझ। वकृ. पझुंझमाण (राय ८३)।

पटउडी स्त्री [पटकुटी] तंबू, वस्त्र-गृह, कपड़-कोट (सुर १३, ९)।

पटल देखो पडल = पटल (कुमा)।

पटह देखो पडह (प्रति १०)।

पटिमा (पै. चूपै) देखो पडिमा (षड्; पि १९१)।

पटोला स्त्री [पटोला] वल्ली-विशेष, कोशतकी, क्षारवल्ली (सिरि ९९६)।

पट्ट सक [पा] पीना, पान करना। पट्टइ (हे ४, १०)। भूका. पट्टीअ (कुमा)।

पट्ट पुं [पट्ट] १ पहनने का कपड़ा, 'पट्टो वि होइ इक्को देहपमाणेण सो य भइयव्वो' (बृह ३; ओघ ३४)। २ रथ्या, मुहल्ला; 'तेणवि मालियपट्टे गंतूण करे कया माला' (सुपा ३७३)। ३ पाषाण आदि का तख्ता, फलक; 'मणिसिलापट्टअसणाहो माहवीमंडवो' (अभि २००); 'पिअंगुसिलापट्टए उवविट्ठा' (स्वप्न ५२); 'पट्टसंठियपसत्थवित्थिण्णपिहुलसोणीओ' (जीव ३)। ४ ललाट पर से बँधी जाती एक प्रकार की पगड़ी; 'तप्पभिइं पट्टबद्धा रायाणो जाया पुव्वं मउडबद्धा आसी' (महा)। ५

पट्टा, चकनामा, किसी प्रकार का अधिकार-पत्र (कुप्र ११; जं ३)। ६ रेशम। ७ पाट, सन (गा ५२०; कप्पू)। ८ रेशमी कपड़ा। ९ सन का कपड़ा (कप्प; औप)। १० सिंहासन, गद्दी, पाट (कुप्र २८; सुपा २८५)। ११ कलाबत्तू (राज)। १३ पट्टी, फोड़ा आदि पर बांधा जाता लम्बा वस्त्रांश, पाटा; 'चउरंगुलपमाणपट्टबंधेण सिरिवच्छालंकियं छाइयं वच्छत्थलं' (महा; विपा १, १)। १३ शाक-विशेष (सुज्ज २०)। °इल्ल पुं [°वत्] पटेल, गाँव का मुखिया (जं ३)। °उडी स्त्री [°कुटी] तंबू, वस्त्र-गृह (सुर १३, १५७)। °करि पुं [°करिन्] प्रधान हस्ती (सुपा ३७३)। °कार पुं [°कार] तन्तुवाय, वस्त्र बुननेवाला, जुलाहा (पएण १)। °वासिआ स्त्री [°वासिता] एक शिरो-भूषण (दे ४, ४३)। °साला स्त्री [°शाला] उपाश्रय, जैन मुनि के रहने का स्थान (सुपा २८५)। °सुत्त न [°सूत्र] रेशमी सूता (आवम)। °हत्थि पुं [°हस्तिन्] प्रधान हाथी (सुपा ३७२)।

पट्टइल, पट्टइल्ल } पुं [दे] पटेल, गाँव का मुखिया (सुपा २७३; ३६१)।

पट्टंसुअ न [पट्टांशुक] १ रेशमी वस्त्र। २ सन का वस्त्र (गा ५२०; कप्पू)।

पट्टग देखो पट्ट (कस)।

पट्टण न [पत्तन] नगर, शहर (भग; औप; प्राप्र; कुमा)।

पट्टदेवी स्त्री [पट्टदेवी] पटरानी (सिरि १२१२)।

पट्टय देखो पट्ट (उवा; णाया १, १६)।

पट्टसुत्त न [पट्टसूत्र] रेशमी वस्त्र (धर्मवि ७२)।

पट्टाढा स्त्री [दे] पट्टा, घोड़े की पेटी, कसन; 'छोडिया पट्टाढा, ऊसारियं पल्लाणं' (महा; सुख १८, ३७)।

पट्टिय वि [पट्टिक] पट्टे पर दिया जाता गाँव वगैरह, 'पुव्विं पट्टियगामम्मि तुट्टदव्वत्थं पट्टइलो नरवालो पुव्विं जो आसि गुत्तीए खित्तो' (सुपा २७३)।

पट्टिया स्त्री [पट्टिका] १ छोटा तख्ता, पाटी; 'चित्तपट्टिया' (सुर १, ८८)। २ देखो पट्टी; 'सरासणपट्टिआ' (राज—जं ३)।

पट्टिस पुं [दे. पट्टिश] प्रहरण-विशेष, एक प्रकार का हथियार (पएह १, १; पउम ८, ४५)।

पट्टी स्त्री [पट्टी] १ धनुर्यष्टि। २ हस्तपट्टिका, हाथ पर की पट्टी; 'उप्पीडियसरासणपट्टिए' (विपा १, १—पत्र २४)।

पट्टुअ पुंन देखो पट्टुया; 'पट्टुएहिं' (सुख ६, १)।

पट्टुया स्त्री [दे] पाद-प्रहार, लात; गुजराती में 'पाटू'; 'सिरिवच्छो गोगोणं तहाहओ पट्टुयाए हिययम्मि' (सुपा २३७)। देखो पड्डुआ।

पट्टुहिअ न [दे] कलुषित जल, गंदा जल; "पट्टुहियं जाण कलुसजलं' (पाअ)।

पट्ठ वि [प्रष्ठ] १ अग्रगामी, अग्रसर, अगुआ (णाया १, १—पत्र १६)। २ कुशल, निपुण। ३ प्रधान, मुखिया (औप; राज)।

पट्ठ वि [स्पृष्ट] जिसका स्पर्श किया गया हो वह (औप)।

पट्ठ न [पृष्ठ] १ पीठ, शरीर के पीछे का भाग (णाया १, ६; कुमा)। २ तल, ऊपर का भाग; 'तलिमं पट्ठं च तलं' (पाअ)। °चर वि [°चर] अनुयायी, अनुगामी (कुमा)।

पट्ठ वि [पृष्ट] १ जिसको पूछा गया हो वह। २ न. प्रश्न, सवाल, 'छव्विहे पट्ठे पएणत्ते' (ठा ६—पत्र ३७५)।

पट्ठव सक [प्र + स्थापय्] १ प्रस्थान कराना, भेजना। २ प्रवृत्ति कराना। ३ प्रारम्भ करना। ४ प्रकर्ष से स्थापना करना। ५ प्रायश्चित्त देना। पट्ठवइ (हे ४, ३७)। भूका. पट्ठवइंसु (कप्प)। कृ. पट्ठवियव्व (कस; सुपा ६२७)।

पट्ठवग देखो पट्ठवय (कम्म ६, ६६ टी)।

पट्ठवण न [प्रस्थापन] १ प्रकृष्ट स्थापन। २ प्रारम्भ; 'इमं पुण पट्ठवणं पडुच्च' (अणु)।

पट्ठवणा स्त्री [प्रस्थापना] १ प्रकृष्ट स्थापना। २ प्रायश्चित्तप्रदान; 'दुविहा पट्ठवणा खलु' (वव १)।

पट्ठवय वि [प्रस्थापक] १ प्रवर्त्तक, प्रवृत्ति करानेवाला (णाया १, १—पत्र ६३)। २ प्रारम्भ करनेवाला (विसे ६२७)।

पट्ठविअ वि [प्रस्थापित] भेजा हुआ (पाअ; कुमा)। २ प्रवर्त्तित (निचू २०)। ३ स्थिर किया हुआ (भग १२, ४)। ४ प्रकर्ष से स्थापित, व्यवस्थापित (पएण २१)।

पट्ठविइया, पट्ठविया } स्त्री [प्रस्थापिता] प्रायश्चित-विशेष, अनेक प्रायश्चित्तों में जिसका पहले प्रारम्भ किया जाय वह (ठा ५, २; निचू २०)।

पट्ठाअ देखो पट्ठाव। वकृ. पट्ठाअंत (गा ४४०)।

पट्ठाण न [प्रस्थान] प्रयाण (सुपा १४२)।

पट्ठाव देखो पट्ठव। पट्ठावइ (हे ४, ३७)। पट्ठावेइ (पि ५५३)।

पट्ठाविअ देखो पट्ठविअ (हे ४, १६; कुमा; पि ३०६)।

पट्ठि स्त्री देखो पट्ठ = पृष्ठ (गउड; सण)। °मंस न [°मांस] पीठ का मांस (पएह १, २)।

पट्ठिअ वि [प्रस्थित] जिसने प्रस्थान किया हो वह, प्रयात (दे ४, १६; ओघ ८१ भा; सुपा ७८)।

पट्ठिअ वि [दे] अलंकृत, विभूषित (षड्)।

पट्ठिउकाम वि [प्रस्थातुकाम] प्रयाण का इच्छुक (श्रा १४)।

पट्ठिसंग न [दे] ककुद, बैल के कंधे पर का कूबड़, डिल्ला (दे ६, २३)।

पट्ठी देखो पट्ठि (महा; काल)।

पट्ठीवंस पुं [पृष्ठवंश] घर के मूल दो खंभों पर तिरछा रखा जाता बड़ा खम्भा (पव १३३)।

पठ देखो पढ। पठदि (शौ) (नाट—मृच्छ १४०)। पठंति (पिंग)। कर्म. पठाविअइ (पि ३०६; ५५१)।

पठग देखो पाढग (कप्प)।

पड अक [पत्] पड़ना, गिरना। पडइ (उव; पि २१८; २४४)। वकृ. पडंत, पडमाण (गा २६४; महा; भवि; बृह ६)। संकृ. पडिअ (नाट—शकु ६७)। कृ. पडणीअ (काल)।

पड पुं [पट] वस्त्र, कपड़ा (औप; उव; स्वप्न ८५; स ३२६; गा १८) °कार देखो °गार (राज)। °कुडी स्त्री [°कुटी] तंबू, वस्त्र-गृह (दे ६, ६; ती ३)। °गार पुं [°कार]

तन्तुवाय, कपड़ा बुननेवाला (पण्ह १, २—पत्र २८)। °बुद्धि वि [°बुद्धि] प्रभूत सूत्रार्थों को ग्रहण करने में समर्थ बुद्धिवाला (औप)। °मंडव पुं [°मण्डप] तंबू, वस्त्र-मण्डप (आक)। °मा वि [°वत्] पटवाला, वस्त्रवाला (षड्)। °वास पुं [°वास] वस्त्र में डाला जाता कुंकुम-चूर्ण आदि सुगन्धित पदार्थ (गउड; स ७३०)। °साडय पुं [°शाटक] १ वस्त्र, कपड़ा। २ धोती, पहनने का लम्बा वस्त्र (भग ६, ३३)। ३ धोती और दुपट्टा (णाया १, १—पत्र ५३)।

पडंचा स्त्री [दे. प्रत्यञ्चा] ज्या, धनुष का चिल्ला या डोरी (दे ६, १४; पाअ)।

पडंसुअ देखो **पडिंसुद** (पि ११५)।

पडंसुआ स्त्री [प्रतिश्रुत्] १ प्रतिशब्द, प्रतिध्वनि (हे १, ८८)। २ प्रतिज्ञा (कुमा)।

पडंसुआ स्त्री [दे] ज्या, धनुष का चिल्ला (दे ६, १४)।

पडंसुत्त देखो **पडिंसुद** (प्राकृ ३२)।

पडच्चर पुं [दे] साला जैसा विदूषक आदि (दे ६, २५)।

पडच्चर पुं [पटच्चर] चोर, तस्कर (नाट—मृच्छ १३८)।

पडज्झमाण देखो **पडह** = प्र + दह्।

पडण न [पतन] पात, गिरना (णाया १, १; प्रासू १०१)।

पडणीअ वि [प्रत्यनीक] विरोधी, प्रतिपक्षी, वैरी (स ४६६)।

पडणीअ देखो **पड** = पत्।

पडपुत्तिया स्त्री [पटपुत्रिका] छोटा वस्त्र, रुमाल (संबोध ५)।

पडम देखो **पढम** (पि १०४; नाट—शकु ६८)।

पडल न [पटल] १ समूह, संघात, वृन्द (कुमा)। २ जैन साधुओं का एक उपकरण, भिक्षा के समय पात्र पर ढका जाता वस्त्र-खण्ड (पण्ह २, ५—पत्र १४८)।

पडल न [दे] नीव्र, नरिया, मिट्टी का बना हुआ एक प्रकार का खपड़ा जिससे मकान छाए जाते हैं (दे ६, ५; पाअ)।

पडलग } स्त्रीन [दे. पटलक] गठरी, गाँठ; **पडलय** } गुजराती में 'पोटलुं,' 'पोटली'; 'पुप्फपडलगहत्थाओ' (णाया १, ८)। स्त्री. °लिगा, °लिया (स २१३; सुपा ६)।

पडवा स्त्री [दे] पट-कुटी, पट-मण्डप, वस्त्र-गृह, तंबू (दे ६, ६)।

पडह सक [प्र + दह्] जलाना, दग्ध करना। कवकृ. **पडज्झमाण** (पण्ह १, २)।

पडह पुं [पटह] वाद्य-विशेष, नगाड़ा, ढोल (औप; णंदि; महा)।

पडहत्थ वि [दे] पूर्ण भरा हुआ (स १८०)।

पडहिय पुं [पाटहिक] ढोल बजानेवाला, ढोली, ढोलकिया (पउम ४८, ८६)।

पडहिया स्त्री [पटहिका] छोटा ढोल (सुर ३, ११५)।

पडाअ देखो **पलाय** = परा + अय्। कृ. **पडाइअव्व** (से १४, १२)।

पडाइअ वि [पलायित] जिसने पलायन किया हो वह, भागा हुआ (से १५, १५)।

पडाइअव्व देखो **पडाअ**।

पडाइया स्त्री [पताकिका] छोटी पताका, अन्तर-पताका (कुप्र १४५)।

पडाग पुं [पटाक, पताक] पताका, ध्वजा (कप्प; औप)।

पडागा } स्त्री [पताका] ध्वजा, ध्वज (महा; **पडाया** } पाअ; हे १, २०६; प्राप्र; गउड)। °इपडाग पुं [°तिपताक] १ मत्स्य की एक जाति (विपा १, ८—पत्र ८३)। २ पताका के ऊपर की पताका (औप)। °हरण न [°हरण] विजय-प्राप्ति (संथा)।

पडागार न [ ] नौका में लगने-वाला वस्त्र (दशवै० चू० १ प्रारम्भ और अग० १११)।

पडायाण देखो **पल्लाण** (हे १, २५२)।

पडायाणिय वि [पर्याणित] जिस पर पर्याण बाँधा गया हो वह (कुमा २, ६३)।

पडाली स्त्री [दे] १ पंक्ति, श्रेणी (दे ६, ६)। २ घर के ऊपर की चटाई आदि की कच्ची छत (वव ७)।

पडास देखो **पलास** (नाट—मृच्छ २४३)।

पडि वि [पटिन्] वस्त्रवाला (अणु १४४)।

पडि अ [प्रति] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ प्रकर्ष (वव १)। २ सम्पूर्णता (चेइय ७८२)।

पडि अ [प्रति] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ विरोध, 'पडिवक्ख', 'पडिवासुदेव' (गउड; पउम २०, २०२)। २ विशेष, विशिष्टता; 'पडिमंजरिवडिंसय' (औप)। ३ वीप्सा, व्याप्ति; 'पडिदुवार', 'पडिपेल्लण' (पण्ह १,३; से ६, ३२)। ४ वापस, पीछे; 'पडिगय' (विपा १, १; भग; सुर १, १४६)। ५ आभिमुख्य, संमुखता; 'पडिविरइ,' 'पडिबद्ध' (पण्ह २, २; गउड)। ६ प्रतिदान, बदला; 'पडिदेइ' (विसे ३२४१)। ७ फिर से; 'पडिपडिय', 'पडिववियं' (सार्ध ६४; दे ६, १३)। ८ प्रतिनिधित्व; 'पडिच्छंद' (उप ७२८ टी)। ९ प्रतिषेध, निषेध; 'पडियाइक्खिय' (भग; सम ५६)। १० प्रतिकूलता, विपरीतता; 'पडिवंथ' (से २, ४६)। ११ स्वभाव; 'पडिवाइ' (ठा २,१)। १२ सामीप्य, निकटता; 'पडिवेसिअ' (सुपा ५५२)। १३ आधिक्य, अतिशय; 'पडियाणंद' (औप)। १४, सादृश्य, तुल्यता; 'पडिइंद' (पउम १०५, १११)। १५ लघुता, छोटाई; 'पडिदुवार' (कप्प; पण्ण २)। १६ प्रशस्तता, श्लाघा; 'पडिरूव' (जीव ३)। १७ सांप्रतिकता, वर्त्तमानता (ठा ३, ४—पत्र १५८)। १८ निरर्थक भी इसका प्रयोग होता है, 'पडिइंद' (पउम १०५, ६); 'पडिउच्चारेयव्व' (भग)।

पडि देखो **परि** (से ४, ५०; ५, १६; ६६; अंत ७)।

पडिअ वि [दे] विघटित, वियुक्त (दे ६, १२)।

पडिअ वि [पतित] १ गिरा हुआ (गा ११; प्रासू ५; १०१)। २ जिसने चलने को प्रारम्भ किया हो वह; 'आगयमग्गेण य पडिओ' (वसु)।

पडिअ देखो **पड** = पत्।

पडिअंकिअ वि [प्रत्यङ्कित] १ विभूषित। २ उपलिप्त; 'बहुघणघुसिणपंकि पडियंकिओ' (भवि)।

पडिअंतअ पुं [दे] कर्मकर, नौकर (दे ६, ३२)।

पडिअग्ग सक [अनु + व्रज्] अनुसरण करना, पीछे जाना। पडिअग्गइ (हे ४, १०७; षड्)।

पडिअग्ग सक [प्रति + जागृ] १ सम्हालना। २ सेवा करना, भक्ति करना। ३ शुश्रूषा करना; 'वच्छ ! पडियग्गेहि मणिमोत्तियाइयं सारदव्वं' (स २८८), पडियग्गह (स ५४८)।

पडिअग्गिअ वि [दे] १ परिभुक्त, जिसका परिभोग किया गया हो वह। २ जिसको बधाई दी गई हो वह। ३ पालित, रक्षित (दे ६, ७४)।

पडिअग्गिअ वि [अनुव्रजित] अनुसृत (दे ६, ७४)।

पडिअग्गिअ वि [प्रतिजागृत] भक्ति से आहृत (स २१)।

पडिअग्गिर वि [अनुव्रजिन्] अनुसरण करने की आदत वाला (कुमा)।

पडिअज्झअ पुं [दे] उपाध्याय, विद्या-दाता गुरु (दे ६, ३१)।

पडिअट्टलिअ वि [दे] घृष्ट, घिसा हुआ (से ६, ३१)।

पडिअत्त देखो परि + वत्त = परि + वृत्। संकृ. पडिअत्तिअ (नाट)।

पडिअत्तण न [परिवर्त्तन] फेरफार, हेरफेर (से ५, ६६)।

पडिअमित्त पुं [प्रत्यमित्र] मित्र-शत्रु, मित्र होकर पीछे से जो शत्रु हुआ हो वह (राज)।

पडिअम्मिअ वि [प्रतिकर्मित] मण्डित, विभूषित (दे ६, ३५)।

पडिअर सक [प्रति + चर्] १ बीमार की सेवा करना। २ आदर करना। ३ निरीक्षण करना। ४ परिहार करना। संकृ. पडियरिऊण (निचू १)।

पडिअर सक [प्रति + कृ] १ बदला चुकाना। २ इलाज करना। ३ स्वीकार करना। हेकृ. पडिकाउं (गा ३२०)। संकृ. 'तहत्ति पडिकाऊण ठाविओ एसो' (कुप्र ४०)।

पडिअर पुं [दे] चुल्ली-मूल, चुल्हे का मूल भाग (दे ६, १७)।

पडिअर पुं [परिकर] परिवार, 'पडियरि (? र)त्थो पुरिसो व्व नियत्तो तेहिं चेव पएहिं नलो' (कुप्र ५७)।

पडिअरग वि [प्रतिचारक] सेवा-शुश्रूषा करनेवाला (निचू १; वव १)।

पडिअरण न [प्रतिचरण] सेवा, शुश्रूषा (ओघ ३६ भा; श्रा १; सुपा २६)।

पडिअरणा स्त्री [प्रतिचरणा] १ बीमार की सेवा-शुश्रूषा (ओघ ८३)। २ भक्ति, आदर, सत्कार (उप १३६ टी)। ३ आलोचना, निरीक्षण (ओघ ८३)। ४ प्रतिक्रमण, पाप-कर्म से निवृत्ति। ५ सत्-कार्य में प्रवृत्ति (आव ४)।

पडिअलि वि [दे] त्वरित, वेग-युक्त (दे ६, २८)।

पडिआइय सक [प्रत्या + पा] फिर से पान करना। पडिआइयइ (दस १०, १)।

पडिआइय सक [प्रत्या + दा] फिर से ग्रहण करना। पडिआइयइ (दस १०, १)।

पडिआगय वि [प्रत्यागत] १ वापस आया हुआ, लौटा हुआ (पउम १६, २६)। २ न. प्रत्यागमन, वापस आना (आचू १)।

पडिआयण न [प्रत्यापन] फिर से पान, 'वंतस्स य पडिआयणं' (दसचू १, १)।

पडिआयण न [प्रत्यादान] फिर से ग्रहण (दसचू १, १)।

पडिआर पुं [प्रतिकार] १ चिकित्सा, उपाय, इलाज (आव ४; कुमा)। २ बदला, शोध (आचा)। ३ पूर्वाचरित कर्म का अनुभव (सूअ १, ३, १, ६)।

पडिआर पुं [प्रत्याकार] तलवार की म्यान (दे २, ५; स २१५); 'न एक्कम्मि पडियारे दोन्नि करवालाइं मायंति' (महा)।

पडिआर पुं [प्रतिचार] सेवा-सुश्रूषा (णाया १, १३—पत्र १७६)।

पडिआरय वि [प्रतिचारक] सेवा-शुश्रूषा करनेवाला (णाया १, १३ टी—पत्र १८१)। स्त्री. °रिया (णाया १, १—पत्र २८)।

पडिआरि वि [प्रतिचारिन्] ऊपर देखो (वव १)।

पडिइ सक [प्रति + इ] पीछे लौटना, वापस आना। वकृ. पडिइंत (उप ५६७ टी)। हेकृ. पडिएत्तए (कस)।

पडिइ स्त्री [पतिति] पतन, पात (वव ५)।

पडिइंद पुं [प्रतीन्द्र] १ इन्द्र, देव-राज (पउम १०५, ६)। २ इन्द्र का सामानिक-देव, इन्द्र के तुल्य वैभववाला देव (पउम १०५, १११)। ३ वानर-वंश के एक राजा का नाम (पउम ६, १५२)।

पडिइंधण न [प्रतीन्धन] अस्त्र-विशेष, इन्ध-नास्त्र का प्रतिपक्षी अस्त्र (पउम ७१, ६४)।

पडिइक्क देखो पडिक्क (आचा)।

पडिउंचण न [दे] अपकार का बदला (पउम ११, ३८; ४४, १६)।

पडिउंबण न [परिचुम्बन] संगम, संयोग (से २, २७)।

पडिउच्चार सक [प्रत्युत् + चारय्] उच्चारण करना, बोलना (भग; उवा)।

पडिउज्जम अक [प्रत्युद् + यम्] सम्पूर्ण प्रयत्न करना। पडिउज्जमंति (चेइय ७८२)।

पडिउट्ठिअ वि [प्रत्युत्थित] जो फिर से खड़ा हुआ हो वह (से १५, ८०; पउम ६१, ४०)।

पडिउण्ण देखो परिपुण्ण (से ५, १६)।

पडिउत्तर न [प्रत्युत्तर] जवाब, उत्तर (सुर २, १५८; भवि)।

पडिउत्तरण न [प्रत्युत्तरण] पार जाना, पार उतरना (निचू १)।

पडिउत्ति स्त्री [दे] खबर, समाचार; 'अम्मा-पिअरस्स कुसलपडिउत्ती ससिणेहं परिपुट्ठा' (महा)।

पडिउत्थ वि [पर्युषित] संपूर्ण रूप से अवस्थित (से ४, ५०)।

पडिउद्ध वि [प्रतिबुद्ध] १ जागृत, जगा हुआ (से १२, २२)। २ प्रकाश-युक्त; 'जल-णिहिविहपडिउद्धं आअरणाअड्ढिअं विअंभइ व धणु' (से ५, २७)।

पडिउवयार पुं [प्रत्युपकार] उपकार का बदला, प्रतिफल (पउम ४८, ७२; सुपा ११५)।

पडिउस्सस अक [प्रत्युत् + श्वस्] पुनर्जीवित होना, फिर से जीना। वकृ. पडिउस्स-संत (से ६, १२)।

पडिऊल देखो पडिकूल (अच्चु ८०; से ३, ३५)।

पडिएत्तए देखो पडिइ।

पडिएल्लिअ वि [दे] कृतार्थ, कृत-कृत्य (दे ६, ३२)।

पडिओसह न [प्रत्यौषध] एक औषध का प्रतिपक्षी औषध (सम्मत्त १४२)।

पडिंसुआ देखो **पडंसुआ** = प्रतिश्रुत् (औप)।

पडिंसुद वि [प्रतिश्रुत] अंगीकृत, स्वीकृत (प्राप्र; पि ११५)।

पडिकंटय वि [प्रतिकण्टक] प्रतिस्पर्धी (राय)।

पडिकंत देखो **पडिक्कंत** (उप २२० टी)।

पडिकत्तु वि [प्रतिकर्तृ] इलाज करनेवाला (ठा ४, ४)।

पडिकप्प सक [प्रति + क्लृप्] १ सजाना, सजावट करना; 'खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! कूणियस्स रण्णो भिंभिसारपुत्तस्स आभिसेक्कं हत्थिरयणं पडिकप्पेहि' (औप), पडिकप्पेइ (औप)।

पडिकप्पिअ वि [प्रतिक्लृप्त] सजाया हुआ (विपा १, २—पत्र २३; महा; औप)।

पडिकम देखो **पडिक्कम**। कृ. 'पडिकमणं पडिकमओ पडिकमिअव्वं च आणुपुव्वीए' (आनि ४)।

पडिकमय न देखो **पडिक्कमय** (आनि ४)।

पडिकम्म न [प्रतिकर्मन्, परिकर्मन्] देखो परिकम्म (औप; सण)।

पडिकय वि [प्रतिकृत] १ जिसका बदला चुकाया गया हो वह। २ न. प्रतिकार, बदला (ठा ४, ४)

पडिकाउं, **पडिकाऊण** } देखो **पडिअर** = प्रति + कृ।

पडिकामणा देखो **पडिक्कामणा** (ओघभा ३९ टी)।

पडिकाय पुं [प्रतिकाय] प्रतिबिम्ब, प्रतिमा (चेइय ७५)।

पडिकिदि स्त्री [प्रतिकृति] १ प्रतिकार, इलाज। २ बदला (दे ६, १९)। ३ प्रतिबिम्ब, मूर्ति (अभि १९९)।

पडिकिय न [प्रतिकृत] ऊपर देखो (चेइय ७५)।

पडिकिरिया स्त्री [प्रतिक्रिया] प्रतीकार, बदला; 'कयपडिकिरिया' (औप)।

पडिकुट्ठ, **पडिकुट्ठिल्लग** } वि [प्रतिकुष्ट] १ निषिद्ध, प्रतिषिद्ध (ओघ ४०३; पच ८; सुपा २०७); 'पडिकुट्ठिल्लगदिवसे वज्जेज्जा अट्ठमिं च नवमिं च' (वव १)। २ प्रतिकूल (स २७०); 'अन्नोन्नं पडिकुट्ठा दोन्निवि एए असव्वाया' (सम्म १५३)।

पडिकुट्ठेल्लग देखो **पडिकुट्ठिल्लग** (वव १)।

पडिकूड देखो **पडिकूल** = प्रतिकूल (सुर ११, २०१)।

पडिकूल सक [प्रतिकूलय्] प्रतिकूल आचरण करना। वकृ. 'पडिकूलंतस्स मज्झ जिणवयणं' (सुपा २०७; २०६)। कृ. पडिकूलेयव्व (कुप्र २४२)।

पडिकूल वि [प्रतिकूल] १ विपरीत, उलटा (उत्त १२)। २ अनिष्ट, अनभिमत (आचा)। ३ विरोधी, विपक्ष (हे २, ९७)।

पडिकूलणा स्त्री [प्रतिकूलना] १ प्रतिकूल आचरण। २ प्रतिकूलता, विरोध (धर्मवि ५८)।

पडिकूलिय वि [प्रतिकूलित] प्रतिकूल किया हुआ (राज)।

पडिकूवग पुं [प्रतिकूपक] कूप के समीप का छोटा कूप (स १००)।

पडिकेसव पुं [प्रतिकेशव] वासुदेव का प्रतिपक्षी राजा, प्रतिवासुदेव (पउम २०, २०४)।

पडिकोस सक [प्रति + क्रुश्] आक्रोश करना, कोसना, शाप या गाली देना। पडिकोसह (सूअ २, ७, ९)।

पडिकोह पुं [प्रतिक्रोध] गुस्सा (दस ६, ५८)।

पडिक्क न [प्रत्येक] प्रत्येक, हरएक (आचा)।

पडिक्कंत वि [प्रतिक्रान्त] पीछे हटा हुआ, निवृत्त (उवा; पण्ह २, १; श्रा ४३; सं १०९)।

पडिक्कम अक [प्रति+क्रम्] निवृत्त होना, पीछे हटना। पडिक्कमइ (उव; महा)। पडिक्कमे (श्रा ३; ५; पच १२)। हेकृ. **पडिक्कमिउं**, **पडिक्कमित्तए** (धर्म २; कस; ठा २, १)। संकृ. **पडिक्कमित्ता** (आचा २, १५)। कृ. **पडिक्कंतव्व**, **पडिक्कमियव्व** (आवम; ओघ ८००)।

पडिक्कम पुं [प्रतिक्रम] देखो पडिक्कमण; 'गिहिपडिक्कमाइयाराणं' (पव—गाथा २)।

पडिक्कमण न [प्रतिक्रमण] १ निवृत्ति, व्यावर्तन। २ प्रमाद-वश शुभ योग से गिरकर अशुभ योग को प्राप्त करने के बाद फिर से शुभ योग को प्राप्त करना। ३ अशुभ व्यापार से निवृत्त होकर उत्तरोत्तर शुद्ध योग में वर्तन (पण्ह २,१; औप; चउ ५; पडि)। ४ मिथ्या-दुष्कृत-प्रदान, किए हुए पाप का पश्चात्ताप (ठा १०)। ५ जैन साधु और गृहस्थों का सुबह और शाम को करने का एक आवश्यक अनुष्ठान (श्रा ४८)।

पडिक्कमय वि [प्रतिक्रामक] प्रतिक्रमण करनेवाला, 'जीवो उ पडिक्कमओ असुहाणं पावकम्मजोगाणं' (आनि ४)।

पडिक्कमिउं देखो **पडिक्कम**। °**काम** वि [°काम] प्रतिक्रमण करने की इच्छावाला (णाया १, ५)।

पडिक्कय पुं [दे] प्रतिक्रिया, प्रतीकार (दे ६, १९)।

पडिक्कामणा स्त्री [प्रतिक्रमणा] देखो **पडिक्कमण** (ओघ ३९ भा)।

पडिक्कूल देखो **पडिकूल** (हे २,९७, षड्)।

पडिक्ख सक [प्रति + ईक्ष्] १ प्रतीक्षा करना, बाट देखना, बाट जोहना। २ अक. स्थिति करना। पडिक्खइ (षड्; महा)। वकृ. पडिक्खंत (पउम ५, ७२)।

पडिक्खअ वि [प्रतीक्षक] प्रतीक्षा करनेवाला, बाट जोहनेवाला (गा ५५७ अ)।

पडिक्खंभ पुं [प्रतिस्तम्भ] अर्गला, अरगला, आगल, अगरी, ब्योंड़ा (से ६, ३३)।

पडिक्खण न [प्रतीक्षण] प्रतीक्षा, बाट, राह (दे १, ३४; कुमा)।

पडिक्खर वि [दे] १ क्रूर, निर्दय (दे ६, २५)। २ प्रतिकूल (षड्)।

पडिक्खल अक [प्रति + स्खल्] १ हटना। २ गिरना। ३ रुकना। ४ सक. रोकना। वकृ. पडिक्खलंत (भवि)।

पडिक्खलण न [प्रतिस्खलन] १ पतन। २ अवरोध (आवम)।

पडिक्खलिअ वि [प्रतिस्खलित] १ परावृत्त, पीछे हटा हुआ (से १, ७)। २ रुका हुआ (से १, ७; भवि)। देखो **पडिखलिअ**।

पडिक्खाविअ वि [प्रतीक्षित] १ स्थापित। २ कृत; 'विरमालिग्र संसारे जेण पडिक्खाविग्रा समयसत्था' (कुमा)।

पडिक्खिअ वि [प्रतीक्षित] जिसकी प्रतीक्षा की गई हो वह (दे ८, १३)।

पडिक्खित्त वि [परिक्षिप्त] विस्तारित (ग्रंत ७)।

पडिखंध न [दे] १ जल-वहन, जल भरने का दृति ग्रादि पात्र। २ जलवाह, मेघ, बादल (दे ६, २८)।

पडिखंधी स्त्री [दे] ऊपर देखो (दे ६,२८)।

पडिखद्ध वि [दे] हत, मारा हुग्रा (?); 'किमेइणा सुणहपाएण पडिखद्धेण' (महा)।

पडिखल देखो **पडिक्खल** (भवि)। कर्म. पडिखलियइ (कुप्र २०५)।

पडिखलण देखो **पडिक्खलण** (धर्मवि ५६)।

पडिखलिअ वि [प्रतिस्खलित] १ रुका हुग्रा (भवि)। २ रोका हुग्रा; 'सहसा तत्तो पडिखलिग्रो ग्रंगरक्खेण' (सुपा ५२७)। देखो **पडिक्खलिअ**।

पडिखिज्ज ग्रक [परि+खिद्] खिन्न होना, क्लान्त होना। पडिखिजदि (शौ) (नाट—मालती ३१)।

पडिगमण न [प्रतिगमन] व्यावर्तन, पीछे लौटना (वव १०)।

पडिगय पुं [प्रतिगज] प्रतिपक्षी हाथी (गउड)।

पडिगय पुं [प्रतिगत] पीछे लौटा हुग्रा, वापस गया हुग्रा (विपा १, १; भग ग्रौप; महा; सुर १, १४६)।

पडिगह देखो **पडिग्गह** (दे ४, ३१)।

पडिगाह सक [प्रति+ग्रह्] ग्रहण करना, स्वीकार करना। पडिगाहइ (भवि)। पडिगाह, पडिगाहेहि (कप्प)। संकृ. **पडिगाहिया, पडिगाहित्ता, पडिगाहेत्ता** (कप्प; ग्राचा २, १, ३, ३)। हेकृ. **पडिगाहित्तए** (कप्प)।

पडिगाहग वि [प्रतिग्राहक] ग्रहण करने वाला (णाया १, १—पत्र ५३; उप पृ २६३)।

पडिगाहिय वि [प्रतिगृहित] लिया हुग्रा, उपात्त (सुपा १४३)।

पडिग्गह पुं [पतद्ग्रह, प्रतिग्रह] १ पात्र, भाजन (पण्ह २, ५; ग्रौप; ग्रोघ ३६; २५१; दे ५, ४८; कप्प)। २ कर्म प्रकृति-विशेष, वह प्रकृति जिसमें दूसरी प्रकृति का कर्म-दल परिणत होता है (कम्मप)। °धारि वि [°धारिन्] पात्र रखनेवाला (कप्प)।

पडिग्गहिअ वि [प्रतिग्रहिन्, पतद्ग्रहिन्] पात्रवाला; 'समणे भगवं महावीरे संवच्छरं साहियं मासं जाव चीवरधारी होत्था, तेण परं ग्रचेलए पाणिपडिग्गहिए' (कप्प)।

पडिग्गहिद (शौ) वि [प्रतिगृहित, परिगृहीत] स्वीकृत (नाट—मृच्छ ११०; रत्ना १२)।

पडिग्गाह देखो **पडिगाह**। पडिग्गाहेइ (उवा)। संकृ. **पडिग्गाहेत्ता** (उवा)। हेकृ. **पडिग्गाहेत्तए** (कस; ग्रौप)।

पडिग्गाह सक [प्रति+ग्राहय्] ग्रहण कराना। कृ. **पडिग्गाहिदव्व** (शौ) (नाट)।

पडिग्गाहय वि [प्रतिग्राहक] प्रत्यादाता, वापस लेनेवाला (दे ७, ५६)।

पडिग्घाय पुं [प्रतिघात] १ निरोध, ग्रटकाव (दस ६, ५८)। २ विनाश (धर्मवि ५४)।

पडिघाय पुं [प्रतिघात] १ नाश, विनाश। २ निराकरण, निरसन; 'दुक्खपडिघायहेउं' (ग्राचा; सुर ७, २३४)।

पडिघायग वि [प्रतिघातक] प्रतिघात करनेवाला (उप २६४ टी)।

पडिघोलिर वि [प्रतिघूर्णितृ] डोलनेवाला, हिलनेवाला (से ६, ५१)।

पडिचंद पुं [प्रतिचन्द्र] द्वितीय चन्द्र, जो उत्पात ग्रादि का सूचक है (ग्रणु)।

पडिचक्क न [प्रतिचक्र] ग्रनुरूप चक्र—समुदाय (राज)। देखो **पडियक्क** = प्रतिचक्र।

पडिचर देखो **पडिअर** = प्रति = चर्। संकृ. **पडिचरिय** (दस ६, ३)। कृ. 'संजमो पडिचरियव्वो' (ग्राव ४)।

पडिचर सक [प्रति+चर्] परिभ्रमण करना। पडिचरइ (सुज्ज १, ३)।

पडिचरग पुं [प्रतिचरक] जासूस, चर पुरुष (बृह १)।

पडिचरणा देखो **पडिअरणा** (राज)।

पडिचार पुं [प्रतिचार] कला-विशेष—१ ग्रह ग्रादि की गति का परिज्ञान। २ रोगी की सेवा-शुश्रूषा का ज्ञान (जं २; ग्रौप; स ६०३)।

पडिचारय पुंस्त्री [प्रतिचारक] नौकर, कर्मकर। स्त्री. °रिया (सुपा ३०४)।

पडिचोइज्जमाण देखो **परिचोय**।

पडिचोइय वि [प्रतिचोदित] १ प्रेरित (उप पृ ३६४)। २ प्रतिभणित, जिसको उत्तर दिया गया हो वह (पउम ४४, ४१)।

पडिचोएत्तु वि [प्रतिचोदयितृ] प्रेरक (ठा ३, ३)।

पडिचोय सक [प्रति+चोदय्] प्रेरणा करना। पडिचोएंति (भग १५)। कवकृ. **पडिचोइज्जमाण** (भग १५—पत्र ६७६)।

पडिचोयणा स्त्री [प्रतिचोदना] प्रेरणा (ठा ३, ३; भग १५—पत्र ६७६)।

पडिचोयणा स्त्री [प्रतिचोदना] निर्भर्त्सना, निष्ठुरता से प्रेरणा (विचार २३८)।

पडिच्चारग देखो **पडिचारय** (उप ६८६ टी)।

पडिच्छ देखो **पडिक्ख**। वकृ. **पडिच्छंत**; 'ग्रहिसेयदिणं पडिच्छमाणो चिट्ठइ' (उवा; स १२५; महा)। कृ. **पडिच्छियव्व** (महा)।

पडिच्छ सक [प्रति+इष्] ग्रहण करना। पडिच्छइ, पडिच्छंति (कप्प; सुपा ३६)। वकृ. **पडिच्छमाण, पडिच्छेमाण** (ग्रौप; कप्प; णाया १, १)। संकृ. **पडिच्छइत्ता, पडिच्छिअ, पडिच्छिउं, पडिच्छिऊण** (कप्प; ग्रभि १८५; सुपा ८७; निचू २०)। हेकृ. **पडिच्छिउं** (सुपा ७२)। कृ. **पडिच्छियव्व** (सुपा १२५; सुर ४, १८१)। प्रयो. कर्म. **पडिच्छावीअदि** (शौ) (पि ५५२; नाट)। वकृ. **पडिच्छावेमाण** (कप्प)।

पडिच्छंद पुंन [प्रतिच्छन्द] १ मूर्ति, प्रतिबिम्ब (उप ७२८ टी; स १११; ६०६)। २ तुल्य, समान (से ८, ४६)। °किय वि [°कृत] समान किया हुग्रा (कुमा)।

पडिच्छंद पुं [दे] मुख, मुँह (दे ६, २४)।
पडिच्छग वि [प्रत्येषक] ग्रहण करनेवाला (निचू ११)।
पडिच्छण न [प्रतीक्षण] प्रतीक्षा, बाट, राह (उप ३७८)।
पडिच्छण न [प्रत्येषण] १ ग्रहण, आदान, लेना। २ उत्सारण, विनिवारण; 'कुलिसपडिच्छणजोग्गा पच्छा कडया महिहराण' (गउड)।
पडिच्छणा [प्रत्येषणा] ग्रहण, आदान (निचू १६)।
पडिच्छण्ण, पडिच्छन्न वि [प्रतिच्छन्न] आच्छादित, ढका हुआ (णाया १, १—पत्र १३; कप्प)।
पडिच्छय पुं [दे] समय, काल (दे ६, १६)।
पडिच्छय देखो **पडिच्छग** (औप)।
पडिच्छयण न [प्रतिच्छदन] देखो पडिच्छायण (राज)।
पडिच्छा स्त्री [प्रतीच्छा] ग्रहण, अंगीकार (द्र ३३, सण)।
पडिच्छायण न [प्रतिच्छादन] आच्छादन-वस्त्र, प्रच्छादन-पट; 'हिरिपडिच्छायणं च नो संचाएमि अहियासित्तए' (आचा; णाया १, १—पत्र १५ टी)।
पडिच्छायण न [प्रतिच्छादन] आच्छादन, आवरण (सुज्ज २०)।
पडिच्छाया स्त्री [प्रतिच्छाया] प्रतिबिम्ब, परछाँई (उप ५९३ टी)।
पडिच्छावेमाण देखो **पडिच्छ** = प्रति + इष्।
पडिच्छिअ वि [प्रतीष्ट, प्रतीप्सित] १ गृहीत, स्वीकृत (स ७, ५४; उवा; औप; सुपा ८४)। २ विशेष रूप से वाञ्छित (भग)।
पडिच्छिअ देखो **पडिच्छ** = प्रति + इष्।
पडिच्छिआ स्त्री [दे] १ प्रतिहारी। २ चिर-काल से ब्यायी हुई भैंस (दे ६, २१)।
पडिच्छिउं, पडिच्छिऊण, पडिच्छियव्व देखो **पडिच्छ** = प्रति + इष्।
पडिच्छिर त्रि [प्रतीक्षितृ] प्रतीक्षा करने-वाला, बाट देखनेवाला (वज्जा ३६)।
पडिच्छिय वि [प्रातीच्छिक] अपने दीक्षा-गुरु की आज्ञा लेकर दूसरे गच्छ के आचार्य के पास उनकी अनुमति से शास्त्र पढ़नेवाला मुनि (णंदि ५४)।
पडिच्छिर वि [दे] सदृश, समान (हे २, १७४)।
पडिछंद देखो **पडिच्छंद**; 'घडियं नियपडिछंदं' (उप ७२८ टी)।
पडिछा स्त्री [प्रतीक्षा] प्रतीक्षण, बाट (ओघ १७५)।
पडिछाया देखो **पडिच्छाया** (चेइय ७५)।
पडिजंप सक [प्रति + जल्प्] उत्तर देना। पडिजंपइ (भवि)।
पडिजग्ग देखो **पडिजागर** = प्रति + जागृ। पडिजग्गइ (बृह ३)।
पडिजग्गय वि [प्रतिजागरक] सेवा-शुश्रूषा करनेवाला (उप ७६८ टी)।
पडिजग्गिय वि [प्रतिजागृत] जिसकी सेवा-शुश्रूषा की गई हो वह (सुर ११, २४)।
पडिजागर सक [प्रति + जागृ] १ सेवा-शुश्रूषा करना, निर्वाह करना, निभाना। २ गवेषणा करना। पडिजागरंति (कप्प)। वकृ. **पडिजागरमाण** (विपा १, १; उवा; महा)।
पडिजागर पुं [प्रतिजागर] १ सेवा-शुश्रूषा। २ चिकित्सा; 'भणिओ सिट्ठी आएसु विज्जं पडिजागरट्ठाए' (सुपा ५७६)।
पडिजागरण न [प्रतिजागरण] ऊपर देखो (वव ६)।
पडिजागरिय देखो **पडिजग्गिय** (दे १, ४१)।
पडिजायणा स्त्री [प्रतियातना] प्रतिबिम्ब, प्रतिमा, परछाँई (चेइय ७५)।
पडिजुवइ स्त्री [प्रतियुवति] १ स्व-समान अन्य युवति। २ सपत्नी (कुप्र ४)।
पडिजोग पुं [प्रतियोग] कार्मण आदि योग का प्रतिघातक योग, चूर्ण-विशेष (सुर ८, २०४)।
पडिट्ठ वि [पटिष्ठ] अत्यन्त निपुण, बहुत चतुर (सुर १, १३५; १३, ९६)।
पडिट्ठविअ वि [परिस्थापित] संस्थापित (से ५, ५२)।
पडिट्ठविअ वि [प्रतिष्ठापित] जिसकी प्रतिष्ठा की गई हो वह (अच्चु ६४)।
पडिट्ठा देखो **पइट्ठा** (नाट—मालती ७०)।
पडिट्ठाव सक [प्रति + स्थापय्] प्रतिष्ठित करना। पडिट्ठावेहि (पि २२०; ५५१)।
पडिट्ठावअ देखो **पइट्ठावय** (नाट—वेणी ११२)।
पडिट्ठाविद (शौ) देखो **पइट्ठाविय** (अभि १८७)।
पडिट्ठिअ देखो **पइट्ठिय** (षड्; पि २२०)।
पडिठाण न [प्रतिस्थान] हर जगह (धर्मवि ४)।
पडिण देखो **पडीण** (पि ८२; ९९)।
पडिणव वि [प्रतिनव] नया, नूतन; 'तुरअ-पडिणवखुरघाद णिरंतरखंडिदं' (विक्र २६)।
पडिणिअंसण न [दे] रात में पहनने का वस्त्र (दे ६, ३६)।
पडिणिअत्त अक [प्रतिनि + वृत्] पीछे लौटना, पीछे वापस जाना। पडिणियत्तई (औप)। वकृ. **पडिणिअत्तंत, पडिणिअत्त-माण** (से १३, ७५; नाट—मालती २९)। संकृ. **पडिणियत्तित्ता** (औप)।
पडिणिअत्त, पडिणिउत्त वि [प्रतिनिवृत्त] पीछे लौटा हुआ (गा ६८ अ; विपा १,५; उवा; से १, २६; अभि १२४)।
पडिणिकास वि [प्रतिनिकाश] समान, तुल्य (राय ६७)।
पडिणिक्खम अक [प्रतिनिर् + क्रम्] बाहर निकलना। पडिणिक्खमइ (उवा)। संकृ. **पडिणिक्खमित्ता** (उवा)।
पडिणिग्गच्छ अक [प्रतिनिर् + गम्] बाहर निकलना। पडिणिग्गच्छइ (उवा)। संकृ. **पडिणिग्गच्छित्ता** (उवा)।
पडिणिज्जाय सक [प्रतिनिर् + यापय्] अर्पण करना। पडिणिज्जाएमि (णाया १, ७—पत्र ११८)।
पडिणिभ वि [प्रतिनिभ] १ सदृश, तुल्य, बराबर। २ हेतु-विशेष, वादी की प्रतिज्ञा का खंडन करने के लिए प्रतिवादी की तरफ से प्रयुक्त समान हेतु—युक्ति (ठा ४, ३)।
पडिणिवत्त देखो **पडिणिअत्त** = प्रतिनि + वृत्। वकृ. **पडिणिवत्तमाण** (नाट. रत्ना ५४)।
पडिणिवुत्त देखो **पडिणिअत्त** = प्रतिनिवृत्त (काल)।
पडिणिविट्ठ वि [प्रतिनिविष्ट] द्विष्ट, द्वेष-युक्त (पण्ह १, १—पत्र ७)।

पडिणिवुत्त देखो **पडिणिअत्त** = प्रतिनि + वृत्। वकृ. पडिणिवुत्तमाण (वेणी २३)।

पडिणिवुत्त देखो **पडिणिअत्त** = प्रतिनिवृत्त (अभि ११८)।

पडिणिवेस देखो **पडिनिवेस** (राज)।

पडिणिव्वत्त देखो **पडिणिअत्त** = प्रतिनि + वृत्। वकृ. पडिणिव्वत्तंत (हेका ३३२)।

पडिणिसंत वि [प्रतिनिश्रान्त] १ विश्रान्त। २ निलीन (णाया १, ४—पत्र ६७)।

पडिणीय न [प्रत्यनीक] १ प्रतिसैन्य, प्रतिपक्ष की सेना (भग ८, ८)। २ वि. प्रतिकूल, विपक्षी, विपरीत आचरण करनेवाला (भग ८, ८; णाया १, २; सम्म १६३; ओप; ओघ ६३; द्र ३३)।

पडिण्णत्त वि [प्रतिज्ञप्त] उक्त, कथित; 'जस्स णं भिक्खुस्स अयं पगप्पे; अहं च खलु पडिण्ण (न्न) त्तो अपडिण्ण (न्न) त्तेहिं' (आचा १, ८, ५, ४)।

पडिण्णा देखो **पइण्णा** (स्वप्न २०७; सूअ १, २, २, २०)।

पडिण्णाद देखो **पइण्णाद** (पि २७६; ५६५, नाट—मालवि १२)।

पडितंत वि [प्रतितन्त्र] स्व-शास्त्र ही में प्रसिद्ध अर्थ, 'जो खलु सतंतसिद्धो न य परतंतेसु सो उ पडितंतो' (बृह १)।

पडितणु स्त्री [प्रतितनु] प्रतिमा, प्रतिबिम्ब (चेइय ७५)।

पडितप्प सक [प्रतितर्पय्] भोजनादि से तृप्त करना। पडितप्पह (ओघ ५३५)।

पडितप्प अक [प्रति + तप्] १ चिन्ता करना। २ खबर रखना। पडितप्पई (उत्त १७, ५)।

पडितप्पिय वि [प्रतितर्पित] भोजन आदि से तृप्त किया हुआ (वव १)।

पडितुट्ठ देखो **परितुट्ठ** (नाट—मृच्छ ८१)।

पडितुल्ल वि [प्रतितुल्य] समान, सदृश (पउम ५, १४६)।

पडित्त देखो **पलित्त** = प्रदीप्त (से १, ५; ५, ८७)।

पडित्ताण देखो **परित्ताण** (नाट—शकु १४)।

पडित्थिर वि [दे] समान, सदृश (दे ६, २०)।

पडित्थिर वि [परिस्थिर] स्थिर, 'गुप्पंतपडित्थिरे' (से २, ४)।

पडिथद्ध वि [प्रतिस्तब्ध] गर्वित (उत्त १२, ५)।

पडिदंड पुं [प्रतिदण्ड] मुख्य दण्ड के समान दूसरा दण्ड, 'सपडिदंडेणं धरिज्जमाणेणं आयवत्तेणं विरायंते (ओप)।

पडिदंस सक [प्रति + दर्शय्] दिखलाना। पडिदंसेइ (भग; उवा)। संकृ. **पडिदंसेत्ता** (उवा)।

पडिदा सक [प्रति + दा] पीछे देना, दान का बदला देना। पडिदेइ (विसे ३२४१)। कृ. पडिदायव्व (कस)।

पडिदाण न [प्रतिदान] दान के बदले में दान; 'दाणपडिदाणउचियं' (उप ५६७ टी)।

पडिदासिया स्त्री [प्रतिदासिका] दासी (दस ३, १ टी)।

पडिदिसा, **पडिदिसि** } स्त्री [प्रतिदिश्] विदिशा, विदिक् (राज; पि ४१३)।

पडिदुगंछि वि [प्रतिजुगुप्सिन्] १ निन्दा करनेवाला। २ परिहार करनेवाला; 'सीओदगपडिदुगंछिणो' (सूअ १, २, २ २०)।

पडिदुवार न [प्रतिद्वार] १ हर एक द्वार (पण्ह १, ३)। २ छोटा द्वार (कप्प; पण्ण २)।

पडिधि देखो **परिहि**; 'सूरियपडिधीतो बहित्ता' (सुज्ज ६)।

पडिनमुक्कार पुं [प्रतिनमस्कार] नमस्कार के बदले में नमस्कार—प्रणाम (रंभा)।

पडिनिक्खंत वि [प्रतिनिष्क्रान्त] बाहर निकला हुआ (णाया १, १३)।

पडिनिक्खम देखो **पडिणिक्खम**। पडिनिक्खमइ (कप्प)। संकृ. **पडिनिक्खमित्ता**; (कप्प; भग)।

पडिनिग्गच्छ देखो **पडिणिग्गच्छ**। पडिनिग्गच्छइ (उवा)। पडिनिग्गच्छंति (भग)। संकृ. पडिनिग्गच्छत्ता (उवा; पि ५८२)।

पडिनिभ देखो **पडिणिभ** (दसनि १)।

पडिनियत्त देखो **पडिणिअत्त** = प्रतिनि+वृत्। पडिनियत्तइ (महा)। हेकृ. **पडिनियत्तए** (कप्प)।

पडिनियत्त देखो **पडिणिअत्त** = प्रतिनिवृत्त (णाया १, १४; महा)।

पडिनियत्ति स्त्री [प्रतिनिवृत्ति] वापस लौटना प्रत्यावर्तन (मोह ६३)।

पडिनिवेस पुं [प्रतिनिवेश] १ आग्रह, कदाग्रह, दुराग्रह, अनुचित हठ (पच्च ६)। २ गाढ़ अनुशय, पश्चात्ताप (विसे २२६६)।

पडिनिसिद्ध वि [प्रतिनिषिद्ध] निवारित, हटाया हुआ (उप पृ ३३३)।

पडिन्नत्त देखो **पडिण्णत्त** (आचा १, ८, ५, ४)।

पडिन्नव सक [प्रति + ज्ञपय्] कहना। संकृ. **पडिन्नवित्ता** (कप्प)।

पडिन्नव सक [प्रति + ज्ञापय्] १ प्रतिज्ञा कराना। २ नियम दिलाना। पडिन्नविज्जा, पडिन्नवेज्जा (दसचू २, ८)।

पडिन्ना देखो **पडिण्णा** (आचा)।

पडिपंथ पुं [प्रतिपथ] १ उलटा मार्ग, विपरीत मार्ग। २ प्रतिकूलता (सूअ १, ३, १, ६)।

पडिपंथि वि [प्रतिपन्थिन्] प्रतिकूल, विरोधी; 'अप्पेगे पडिभासंति पडिपंथियमागता' (सूअ १, ३, १, ६)।

पडिपक्ख देखो **पडिवक्ख** (ओघ १३)।

पडिपडिय वि [प्रतिपतित] फिर से गिरा हुआ, 'सत्थो सिवत्थिणो चालियावि पडिपडिया भवारण्णे' (सार्ध ६४)।

पडिपत्ति, **पडिपद्दि** } देखो **पडिवत्ति** (नाट—चैत ३४; संक्षि ६)।

पडिपह पुं [प्रतिपथ] १ उन्मार्ग, विपरीत रास्ता (स १४७; पि ३६६ ए)। २ न. अभिमुख, संमुख (सूअ २, २, ३१ टी)।

पडिपहिअ वि [प्रातिपथिक] संमुख आनेवाला (सूअ २, २, २८)।

पडिपाअ सक [प्रति + पादय्] प्रतिपादन करना, कथन करना। कृ. **पडिपाअणीअ** (नाट—शकु ६५)।

पडिपाय पुं [प्रतिपाद] मुख्य पाद को सहायता पहुँचानेवाला पाद (राय)।

पडिपाहुड न [प्रतिप्राभृत] बदले की भेंट (सुपा १४५)।

पडिपिंडिअ वि [दे] प्रवृद्ध, बढ़ा हुआ (दे ६, ३४)।

पडिपिल्ल सक [प्रति + क्षिप्, प्रतिप्र + ईरय्] प्रेरणा करना। पडिपिल्लइ (भवि)।

पडिपिल्लण न [प्रतिप्रेरण] १ प्रेरणा (सुर १५; १४१)। २ ढक्कन, पिधान। ३ वि. प्रेरणा करनेवाला; 'दीवसिहापडिपिल्लणमल्ले मिल्लंति नीसासे' (कुप्र १३१)।

पडिपिहा देखो पडिपेहा। संकृ. पडिपिहित्ता (पि ५८२)।

पडिपीलण न [प्रतिपीडन] विशेष पीडन, अधिक दबाव (गउड)।

पडिपुच्छ सक [प्रति + प्रच्छ्] १ पृच्छा करना, पूछना। २ फिर से पूछना। ३ प्रश्न का जवाब देना। पडिपुच्छइ (उव)। वकृ. पडिपुच्छमाण (कप्प)। कृ. पडिपुच्छणिज्ज, पडिपुच्छणीय (उवा; णाया १, १; राय)।

पडिपुच्छण न [प्रतिप्रच्छन] नीचे देखो (भग; उवा)।

पडिपुच्छणया, **पडिपुच्छणा** स्त्री [प्रतिप्रच्छना] १ पूछना, पृच्छा। २ फिर से पृच्छा (उत्त २६, २०; औप)। ३ उत्तर, प्रश्न का जवाब (बृह ४; उप पृ ३६८)।

पडिपुच्छणिज्ज, **पडिपुच्छणीय** देखो पडिपुच्छ।

पडिपुच्छा स्त्री [प्रतिपृच्छा] देखो पडिपुच्छणा (पंचा २; वव २; बृह १)।

पडिपुच्छिअ वि [प्रतिपृष्ट] जिससे प्रश्न किया गया हो वह (गा २८६)।

पडिपुज्जिय वि [प्रतिपूजित] पूजित, अर्चित; 'वंदणवरकणगकलससुविणिम्मियपडिपुंजि (? पुज्जि, पूइ) यसरसपउमसोहंतदारभाए' (णाया १, १—पत्र १२)।

पडिपुण्ण देखो पडिपुन्न (उवा; पि २१८)।

पडिपुत्त पुं. [प्रतिपुत्र] प्रपुत्र, पुत्र का पुत्र, पोता; 'अंकनिवेसियनियनियपुत्तयपडिपुत्तनत्तपुत्तीयं' (सुपा ६)। देखो पडिपोत्तय।

पडिपुन्न वि [प्रतिपूर्ण] परिपूर्ण, संपूर्ण (णाया १, १; सुर ३, १८; ११४)।

पडिपूइय देखो पडिपुज्जिय (राज)।

पडिपूयग, **पडिपूयय** वि [प्रतिपूजक] पूजा करनेवाला (राज; सम ५१)।

पडिपूयय वि [प्रतिपूजक] प्रत्युपकार-कर्ता (उत्त १७, ५)।

पडिपूरिय वि [प्रतिपूरित] पूर्ण किया हुआ (पउम १००, ५०; ११५, ७)।

पडिपेल्लण देखो पडिपिल्लण (गउड; से ६, ३२)।

पडिपेल्लण न [परिप्रेरण] देखो पडिपिल्लण (से २, २४)।

पडिपेल्लिय वि [प्रतिप्रेरित] प्रेरित, जिसको, प्रेरणा की गई हो वह (सुर १५, १८०; महा)।

पडिपेहा सक [प्रतिपि + धा] ढकना, आच्छादन करना। संकृ. पडिपेहित्ता (सूअ २, २, ५१)।

पडिपोत्तय पुं [प्रतिपुत्रक] नप्ता, कन्या का पुत्र, लड़की का लड़का, नाती (सुपा १६२)। देखो पडिपुत्तय।

पडिप्पह देखो पडिपह (उप ७२८ टी)।

पडिप्फद्धि वि [प्रतिस्पर्धिन्] स्पर्धा करनेवाला (हे १, ४४; २, ५३; प्राप्र; संक्षि १६)।

पडिप्फलणा स्त्री [प्रतिफलना] १ स्खलना। २ संक्रमण; 'पडिसद्दपडिप्फलणावज्जिरनीसेससुरघंटं' (सुपा ८७)।

पडिप्फलिअ, **पडिफलिअ** वि [प्रतिफलित] १ प्रतिबिम्बित, संक्रान्त (से १५, ३१; दे १, २७)। २ स्खलित (पाअ)।

पडिबंध सक [प्रति + बन्ध्] रोकना, अटकाना। पडिबंधइ (पि ५१३)। कृ. पडिबंधेयव्व (वसु)।

पडिबंध सक [प्रति + बन्ध्] १ वेष्टन करना। २ सेकना। पडिबंधइ, पडिबंधंति (सूअ १, ३, २, १०)।

पडिबंध पुं [प्रतिबन्ध] व्याप्ति, नियम (धर्मसं १११)।

पडिबंध पुं [प्रतिबन्ध] १ रुकावट (उवा; कप्प)। २ विघ्न, अन्तराय (उप ८८७)। ३ अत्यादर, बहुमान (उप ७७६; उवर १४६)। ४ स्नेह, प्रीति, राग (ठा ६; पंचा १७)। ५ आसक्ति, अभिष्वंग (णाया १, ५; कप्प)। ६ वेष्टन (सूअ १, ३, २)।

पडिबंधअ, **पडिबंधग** वि [प्रतिबन्धक] प्रतिबन्ध करनेवाला, रोकनेवाला (अभि २५३; उप ६४५)।

पडिबंधण न [प्रतिबन्धन] प्रतिबन्ध, रुकावट (पि २१८)।

पडिबंधेयव्व देखो पडिबंध = प्रति + बन्ध्।

पडिबद्ध वि [प्रतिबद्ध] १ रोका हुआ, संरुद्ध; 'वायुरिव अप्पडिबद्धे' (कप्प; पण्ह १, ३)। २ उपजनित, उत्पादित (गउड १८२)। ३ संसक्त, संबद्ध, संलग्न, 'सरिआए तरंगियपंकवडलपडिबद्धवालुयामसिणा··· ··· पुलिणवित्थारा' (गउड; कुप्र ११५; उवा)। ४ सामने बँधा हुआ; 'पडिबद्धं नअर तुमे नरिंदचक्कं पयाववियडंपि' (गउड)। ५ व्यवस्थित (पंचा १३)। ६ वेष्टित (गउड)। ७ समीप में स्थित; 'तं चेव य सागरियं जस्स अदूरे स पडिबद्धो' (बृह १)।

पडिबद्ध वि [प्रतिबद्ध] नियत, व्याप्त (पंचा ७, २)।

पडिबाह सक [प्रति + बाध्] रोकना। हेकृ. पडिबाहिदुं (शौ) (नाट—महावी ६६)।

पडिबाहिर वि [प्रतिबाह्य] अनधिकारी, अयोग्य (सम ५०)।

पडिबिंब न [प्रतिबिम्ब] १ परछाँही, प्रतिच्छाया (सुपा २६६)। २ प्रतिमा, प्रतिमूर्त्ति (पाअ, प्रामा)।

पडिबिंबिअ वि [प्रतिबिम्बित] जिसका प्रतिबिम्ब पड़ा हो वह (कुमा)।

पडिबुज्झ अक [प्रति + बुध्] १ बोध पाना। २ जागृत होना। पडिबुज्झइ (उवा)। वकृ. पडिबुज्झंत, पडिबुज्झमाण (कप्प)।

पडिबुज्झणया, **पडिबुज्झणा** स्त्री [प्रतिबोधना] १ बोध, समझ। २ जागृति (स १५६; औप)।

पडिबुद्ध वि [प्रतिबुद्ध] १ बोध-प्राप्त (प्रासू १३५; उव)। २ जागृत (णाया १, १)। ३ न. प्रतिबोध (आचा)। ४ पुं. एक राजा का नाम (णाया १, ८)।

पडिबूहणया स्त्री [प्रतिबृंहणा] उपचय, पुष्टि (सूअ २, २, ८)।

पडिबोध देखो पडिबोह = प्रतिबोध (नाट—मालती ५६)।

पडबोधिअ देखो **पडिबोहिय** (अभि ५६)।

पडिबोह सक [प्रति+बोधय्] १ जगाना। २ बोध देना, समझाना, ज्ञान प्राप्त कराना। पडिबोहेइ (कप्प; महा)। कवकृ. पडिबोहिज्जंत (अभि ५६)। संकृ. पडिबोहिअ (नाट—मालती १३६)। हेकृ. पडिबोहिउं (महा)। कृ. **पडिबोहियव्व** (स ७०७)।

पडिबोह पुं [प्रतिबोध] १ बोध, समझ। २ जागृति, जागरण (गउड; पि १७१)।

पडिबोहग त्रि [प्रतिबोधक] १ बोध देनेवाला। २ जगानेवाला (विसे २४७ टी।

पडिबोहण न [प्रतिबोधन] देखो पडिबोह = प्रतिबोध (काल; स ७०८)।

पडिबोहि वि [प्रतिबोधिन्] प्रतिबोध प्राप्त करनेवाला (आचा २, ३, १, ८)।

पडिबोहिय वि [प्रतिबोधित] जिसको प्रतिबोध किया गया हो वह (णाया १, १; काल)।

पडिभंग पुं [प्रतिभंग] भंग, विनाश (से ५, १६)।

पडिभंज अक [प्रति+भञ्ज्] भाँगना, टूटना। हेकृ. **पडिभंजिउं** (वव ४)।

पडिभंड न [प्रतिभाण्ड] एक वस्तु को बेचकर उसके बदले में खरीदी जाती चीज (स २०५; सुर ६, १५८)।

पडिभंस सक [प्रति+भ्रंशय्] भ्रष्ट करना, च्युत करना; 'पंथाओ य पडिभंसइ' (स ३६३)।

पडिभग्ग वि [प्रतिभग्न] भागा हुआ, पलायित (ओघ ५३३)।

पडिभड पुं [प्रतिभट] प्रतिपक्षी योद्धा (से १३, ७२; आरा ५६; भवि)।

पडिभण सक [प्रति+भण्] उत्तर देना, जवाब देना। पडिभणइ (महा; उवा; सुपा २१५), पडिभणामि (महानि ४)।

पडिभणिअ वि [प्रतिभणित] प्रत्युत्तरित, जिसका उत्तर दिया गया हो वह (महा; सुपा ६०)।

पडिभणिय वि [प्रतिभणित] १ निराकृत (धर्मसं ६५०)। २ न. प्रत्युत्तर, निराकरण (धर्मसं ६१)।

पडिभम सक [प्रति, परि+भ्रम्] घूमना, पर्यटन करना। संकृ. 'कत्थइ कडुआविय गयह पंति पडिभमिय सुहडसीसइँ दलंति' (भवि)।

पडिभमिय वि [प्रतिभ्रान्त, परिभ्रान्त] घूमा हुआ (भवि)।

पडिभय न [प्रतिभय] भय, डर (पउम ७३, १२)।

पडिभा अक [प्रतिभा] मालूम होना। पडिभादि (शौ) (नाट—रत्ना ३)।

पडिभाग पुं [प्रतिभाग] १ अंश, भाग (भग २५, ७)। २ प्रतिबिम्ब (राज)।

पडिभास अक [प्रति+भास्] मालूम होना। पडिभासदि (शौ) (नाट—मृच्छ १४१)।

पडिभास सक [प्रति+भाष्] १ उत्तर देना। २ बोलना, कहना; 'अप्पेगे पडिभासंति' (सूअ १, ३, १, ६)।

पडिभिण्ण वि [प्रतिभिन्न] संबद्ध, संलग्न (से ४, ५)।

पडिभिन्न वि [प्रतिभिन्न] भेद-प्राप्त (पव—गाथा १६; चेइय ६४२)।

पडिभुअंग पुं [प्रतिभुजङ्ग] प्रतिपक्षी भुजंग—वेश्या-लंपट (कप्पूर २७)।

पडिभू पुं [प्रतिभू] जामिनदार, जमानत करनेवाला, मनौतिया (नाट—चैत ७५)।

पडिभेअ पुं [दे. प्रतिभेद] उपालम्भ, निंदा; 'पडिभेओ पच्चारणं' (पाअ)।

पडिभोइ वि [प्रतिभोगिन्] परिभोग करनेवाला, 'अकालपडिभोईणि' (आचा २, ३, १, ८; पि ४०५)।

पडिम वि [प्रतिम] समान, तुल्य (मोह ३५)।

पडिम° देखो **पडिमा**। °**ट्ठाइ** वि [°स्थायिन्] १ कायोत्सर्ग में रहनेवाला। २ नियम-विशेष में स्थित (पण्ह २, १—पत्र १००; ठा ५, १—पत्र २६६)।

पडिमंत सक [प्रति+मन्त्रय्] उत्तर देना। पडिमंतेइ (उत्त १८, ६)।

पडिमल्ल पुं [प्रतिमल्ल] प्रतिपक्षी मल्ल (भवि)।

पडिमा स्त्री [प्रतिमा] १ मूर्त्ति, प्रतिबिम्ब; 'जिणपडिमादंसणेण पडिबुद्धं' (दसनि १; पाअ; गा १; ११४)। २ कायोत्सर्ग। ३ जैन-शास्त्रोक्त नियम-विशेष (पणण २, १; सम १६; ठा २, ३; ५, १)। °**गिह** न [°गृह] मन्दिर (निचू १२)। देखो **पडिम°**।

पडिमाण न [प्रतिमान] जिससे सुवर्ण आदि का तौल किया जाता है वह रत्ती, मासा आदि परिमाण (अणु)।

पडिमाण न [प्रतिमान] प्रतिमा, प्रतिबिम्ब (चेइय ७५)।

पडिमि, पडिमिण सक [प्रति+मा] १ तौल करना, माप करना। २ गिनती करना। कर्म. पडिमिणिज्जइ (अणु)। कवकृ. पडिमिज्जमाण (राज)।

पडिमुंच सक [प्रति+मुच्] छोड़ना। हेकृ. **पडिमुंचिउं** (से १४, २)।

पडिमुंडणा स्त्री [प्रतिमुण्डना] निषेध, निवारण (बृह १)।

पडिमुक्क वि [प्रतिमुक्त] छोड़ा हुआ (से ३, १२)।

पडिमोअणा स्त्री [प्रतिमोचना] छुटकारा (से १, ४६)।

पडिमोक्खण न [प्रतिमोचन] छुटकारा (स ४१)।

पडिमोयग वि [प्रतिमोचक] छुटकारा करनेवाला (राज)।

पडिमोयण देखो **पडिमोक्खण** (औप)।

पडियक्क देखो **पडिक्क** (आचा)।

पडियक्क न [प्रतिचक्र] युद्धकला-विशेष, 'तेण पुत्तो विव निप्फाइत्तो ईसत्थे पडियक्के जन्तुमुक्के य अन्नासुवि कलासु' (महा)।

पडियग्गण न [प्रतिजागरण] सम्हाल, खबर (धर्मसं १०१३)।

पडियच्च देखो **पत्तिअ** = **प्रति + इ**।

पडियरण न [प्रतिकरण] प्रतीकार, इलाज (पिंड ३६६)।

पडियरिअ वि [प्रतिचरित] सेवित, सेवा किया हुआ (मोह १०५)।

पडिया स्त्री [प्रतिज्ञा] १ उद्देश्य, 'पिंडवायपडियाए' (कस; आचा)। २ अभिप्राय (ठा ५, २—पत्र ३१४)।

पडिया स्त्री [पटिका] वस्त्र-विशेष,
'सुपमाणा य सुसुत्ता,
बहुरूवा तह य कोमला सिसिरे।

कत्तो पुण्णेहि विणा,
वेसा पडियव्व संपडइ,
(वज्जा ११६)।

पडियाइक्ख सक [प्रत्या + ख्या] त्याग करना। पडियाइक्खे (पि १६६)।

पडियाइक्खिय वि [प्रत्याख्यात] त्यक्त, परित्यक्त, छोड़ा हुआ; (ठा २, १; भग; उवा कस; विपा १, १; औप)।

पडियाणय न [दे. पर्याणक] पर्याण के नीचे दिया जाता चर्म आदि का एक उपकरण (णाया १, १७—पत्र २३०)।

पडियाणंद पुं [प्रत्यानन्द] विशेष आनन्द, प्रभूत आह्लाद, बहुत आनंद (औप)।

पडियाणय न [दे. पटतानक, पर्याणक] पर्याण के नीचे रखा जाता वस्त्र आदि का एक घुड़सवारी का उपकरण (णाया १, १७—पत्र २३२ टी)।

पडियारणा स्त्री [प्रतिवारणा] निषेध (पंचा १७, ३४)।

पडियासूर अक [दे] चिढ़ना, गुस्सा होना। कृ. 'पडियासूरेयव्वं न कयाइवि पाण-चाएवि' (आक २५, १४)।

पडिर वि [पतितृ] गिरनेवाला (कुमा)।

पडिरअ देखो **पडिरव** (गा ५५ अ; से ७, १६)।

पडिरंजिअ वि [दे] भग्न, टूटा हुआ (दे ६, ३२)।

पडिरक्खिय वि [प्रतिरक्षित] जिसकी रक्षा की गई हो वह (भवि)।

पडिरव पुं [प्रतिरव] प्रतिध्वनि, प्रतिशब्द (गउड; गा ५५; सुर १, २४४)।

पडिराय पुं [प्रतिराग] लाली, रक्तपन; 'उव्वहइ दइयगहियाहरोट्ठझिज्जंतरोसपडिरायं। पाणोसरंतमइरं व फलिहचसयं इमा वयणं' (गउड)।

पडिरिग्गअ [दे] देखो **पडिरंजिअ** (षड्)।

पडिरु अक [प्रति + रु] प्रतिध्वनि करना, प्रतिशब्द करना। वकृ. **पडिरुअंत** (से १२, ६; पि ४७३)।

पडिरुंध, **पडिरुंभ** सक [प्रति + रुध्] १ रोकना, अटकाना। २ व्याप्त करना। पडिरुंभइ (से ८, ३६)। वकृ. **पडिरुंधंत** (से ११, ५)।

पडिरुद्ध वि [प्रतिरुद्ध] रोका हुआ, अटकाया हुआ (सुपा ८५; वज्जा ५०)।

पडिरूअ, **पडिरूव** वि [प्रतिरूप] १ रम्य, सुन्दर, चारु, मनोहर; (सम १३७; उवा; औप)। २ रूपवान्, प्रशस्त रूपवाला, श्रेष्ठ आकृतिवाला (औप)। ३ असाधारण रूपवाला। ४ नूतन रूपवाला (जीव ३)। ५ योग्य, उचित (स ८७; भग १५; दस ६, १)। ६ सदृश, समान (णाया १, १—पत्र ६१)। ७ समान रूपवाला, सदृश आकारवाला (उत्त २६, ४२)। ८ न. प्रतिबिम्ब, प्रतिमूर्त्ति; 'कइयावि चित्तफलए कइया वि पडम्मि तस्स पडिरूवं लिहिऊण' (सुर ११, २३८; राय)। ९ समान रूप, समान आकृति; 'तुम्हपडिरूव-धारि पासइ विज्जाहरसुदाढं' (सुपा २६८)। १० पुं. इन्द्र-विशेष, भूत-निकाय का उत्तर दिशा का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५)। ११ विनय का एक भेद (वव १)।

पडिरूवंसि वि [प्रतिरूपिन्] रमणीय, सुन्दर (आचा २, ४, २, १)।

पडिरूवग पुंन [प्रतिरूपक] प्रतिबिम्ब, प्रतिमा; 'तिदिसिं पडिरूवगा य देवकया' (आव; बृह)।

पडिरूवणया स्त्री [प्रतिरूपणता] १ समानता, सदृशता या सादृश्य। २ समान वेष-धारण (उत्त २६, १)।

पडिरूवा स्त्री [प्रतिरूपा] एक कुलकर पुरुष की पत्नी का नाम (सम १५०)।

पडिरोव पुं [प्रतिरोप] पुनरारोपण (कुप्र ५५)।

पडिरोह पुं [प्रतिरोध] रुकावट (गउड; गा ७२४)।

पडिरोहि वि [प्रतिरोधिन्] रोकनेवाला (गउड)।

पडिलंभ सक [प्रति + लभ्] प्राप्त करना। संकृ. **पडिलंभिय** (सूअ १, १३)।

पडिलंभ पुं [प्रतिलम्भ] प्राप्ति, लाभ (सूअ २, ५)।

पडिलग्ग वि [प्रतिलग्न] लगा हुआ, सम्बद्ध (से ६, ८६)।

पडिलग्गल न [दे] वल्मीक, कीट-विशेष-कृत मृत्तिका-स्तूप (दे ६, ३३)।

पडिलभ सक [प्रति + लभ्] प्राप्त करना। पडिलभेज्ज (उत्त १, ७)। संकृ. **पडिलब्भ** (सूअ १, १३, २)।

पडिलाभ, **पडिलाह** सक [प्रति + लाभय्, लम्भय्] साधु आदि को दान देना। पडि-लाहेज्जह (काल)। वकृ. **पडिलाभेमाण** (णाया १, ५; भग; उवा)। संकृ. **पडिला-भित्ता** (भग ८, ५)।

पडिलाहण न [प्रतिलाभन] दान देना (रंभा)।

पडिलिहिअ वि [प्रतिलिखित] लिखा हुआ, 'सम्मं मंत दुवारि पडिलिहिअं' (ति १४)।

पडिलीण वि [प्रतिलीन] अत्यन्त लीन (धर्मवि ५३)।

पडिलेह सक [प्रति + लेखय्] १ निरीक्षण करना, देखना। २ विचार करना। पडिलेहेइ (उव; कस; भग); 'एतेसु जाणे पडिलेह सायं, एतेण काएण य आयदंडे' (सूअ १, ७, २)। संकृ. 'भूएहिं जाणं पडिलेह सायं' (सूअ १, ७, १६); **पडिलेहित्ता** (भग)। हेकृ. **पडि-लेहित्तए**, **पडिलेहेत्तए** (कप्प)। कृ. **पडि-लेहियव्व** (ओघ ४; कप्प)।

पडिलेह पुं [प्रतिलेख] देखो **पडिलेहा** (चेइय, २६६)।

पडिलेहग देखो **पडिलेहय** (राज)।

पडिलेहण न [प्रतिलेखन] निरीक्षण (ओघ ३ भा; अंत)।

पडिलेहणया देखो **पडिलेहणा** (उत्त २६, १)।

पडिलेहणा स्त्री [प्रतिलेखना] निरीक्षण, निरूपण (भग)।

पडिलेहणी स्त्री [प्रतिलेखनी] साधु का एक उपकरण, 'पुंजणी' (पव ६१)।

पडिलेहय वि [प्रतिलेखक] निरीक्षक, देखनेवाला (ओघ ४)।

पडिलेहा स्त्री [प्रतिलेखा] निरीक्षण, अव-लोकन (ओघ ३; ठा ५, ३; कप्प)।

पडिलेहि वि [प्रतिलेखिन्] निरीक्षक (सूअ १, ३, ३, ५)।

पडिलेहिय वि [प्रतिलेखित] निरोक्षित, देखा हुआ (उवा)।

पडिलेहियव्व देखो **पडिलेह** ।

पडिलोम वि [प्रतिलोम] प्रतिकूल (भग)। २ विपरीत, उलटा (आचा २, २, २) । ३ न. पश्चादानुपूर्वी, उलटा क्रम; 'वत्थं दुहाणुलोमेण तह य पडिलोमओ भवे वत्थं' (सुर १६, ४८; निचू १) । ४ उदाहरण का एक दोष (दसनि १) । ५ अपवाद (राज) ।

पडिलोमइत्ता अ [प्रतिलोमयित्वा] वाद-विशेष, वादसभा के सदस्य या प्रतिवादी को प्रतिकूल बनाकर किया जाता वाद—शास्त्रार्थ (ठा ६)।

पडिल्ली स्त्री [दे] १ वृति, बाड़। २ यवनिका, परदा (दे ६, ६५)।

पडिव देखो **पलीव**=प्र+दीपय् । पडिवेइ (से ५, ६७)।

पडिवइर न [प्रतिवैर] वैर का बदला (भवि)।

पडिवई देखो **पडिवया** (पव २७१)।

पडिवंचण न [प्रतिवञ्चन] बदला, 'वेर-पडिवंचणट्ठ' (पउम २६, ७३)।

पडिवंथ देखो **पडिपंथ** (से २, ४६)।

पडिवंध देखो **पडिबंध** (भवि)।

पडिवंस पुं [प्रतिवंश] छोटा बाँस (राय)।

पडिवक्क सक [प्रति+वच्] प्रत्युत्तर देना, जवाब देना। पडिवक्कइ (भवि)।

पडिवक्ख पुं [प्रतिपक्ष] १ रिपु, दुश्मन; विरोधी (पाअ; गा १५२; सुर १, ५६; २, १२६; से ३, १५) । २ छन्द-विशेष (पिंग)। ३ विपर्यय, वैपरीत्य (सण)।

पडिवक्खिअ वि [प्रतिपक्षिक] विरुद्ध पक्ष-वाला, विरोधो (सण)।

पडिवच्च सक [प्रति+व्रज्] वापस जाना। पडिवच्चइ (पि ५६०)।

पडिवच्छ देखो **पडिवक्ख**; 'अह णवरमस्स दोसो पडिवच्छेहिपि पडिवण्णो' (गा ६७६)।

पडिवज्ज सक [प्रति+पद्] स्वीकार करना, अंगीकार करना। पडिवज्जइ, पडिवज्जए (उवः महाः प्रासू १४१)। भवि. पडिवज्जिस्सामि, पडिवज्जिस्सामो (पि ५२७; औप)। वकृ. **पडिवज्जमाण** (पि ५६२)। संकृ. **पडिवज्जिऊण, पडिवज्जित्ताणं,** **पडिवज्जिय** (पि ५८६; ५८३; महा; रंभा)। हेकृ. **पडिवज्जिउं, पडिवज्जित्तए, पडिवत्तुं** (पंचा १८; ठा २, १, कस; रंभा)। कृ. **पडिवज्जियव्व, पडिवज्जेयव्व** (उत्त ३२; उप ६८४; १००१)।

पडिवज्जण न [प्रतिपदन] स्वीकार, अंगीकार (कुप्र १४७)।

पडिवज्जण न [प्रतिपादन] अंगीकारण, स्वीकार करवाना (कुप्र १४७; ३८६)।

पडिवज्जणया स्त्री [प्रतिपदना] स्वीकार (णंदि २३२)।

पडिवज्जणया स्त्री [प्रतिपादना] प्रतिपादन (णंदि २३२)।

पडिवज्जय वि [प्रतिपादक] स्वीकार करनेवाला; 'एस ताव कसणधवलपडिवज्जओ त्ति' (स ५०५)।

पडिवज्जावण न [प्रतिपादन] स्वीकारण, स्वीकार कराना (कुप्र ६६)।

पडिवज्जाविय वि [प्रतिपादित] स्वीकार कराया हुआ (महा)।

पडिवज्जिय वि [प्रतिपन्न] स्वीकृत (भवि)।

पडिवट्टअ न [प्रतिपट्टक] एक प्रकार का रेशमी कपड़ा (कप्पू)।

पडिवड्ढावअ वि [प्रतिवर्धापक] १ बधाई देने पर उसे स्वीकार कर धन्यवाद देनेवाला। २ बधाई के बदले में बधाई देनेवाला। स्त्री. °विआ (कप्पू)।

पडिवण्ण वि [प्रतिपन्न] १ प्राप्त; (भग)। २ स्वीकृत, अंगीकृत (षड्)। ३ आश्रित (औप; ठा ७)। ४ जिसने स्वीकार किया हो वह (ठा ४, १)।

पडिवत्त पुं [परिवर्त्त] परिवर्त्तन (नाट. मृच्छ ३१८)।

पडिवत्तण देखो **पडिअत्तण** (नाट)।

पडिवत्ति स्त्री [प्रतिपत्ति] १ परिच्छित्ति। २ प्रकृति, प्रकार (विसे ५७८)। ३ प्रवृत्ति, खबर (पउम ४७, ३०; ३१)। ४ ज्ञान (सुर १४, ७४)। ५ आदर, गौरव (महा)। ६ स्वीकार, अंगीकार (णंदि)। ७ लाभ, प्राप्ति; 'धम्मपडिवत्तिहेउत्तणेण' (महा)। ८ मतान्तर। ९ अभिग्रह-विशेष (सम १०६)। १० भक्ति, सेवा (कुमा; महा)। ११ परिपाटी, क्रम (आव ४)। १२ श्रुत-विशेष, गति, इन्द्रिय आदि द्वारों में से किसी एक द्वार के जरिये समस्त संसार के जीवों को जानना (कम्म २, ७)। °**समास** पुं [°समास] श्रुत-ज्ञान विशेष—गति आदि दो चार द्वारों के जरिये जीवों का ज्ञान (कम्म १, ७)।

पडिवत्तुं देखो **पडिवज्ज** ।

पडिवद्दि देखो **पडिवत्ति** (प्राप्र)।

पडिवद्धावअ देखो **पडिवड्ढावअ** । स्त्री. °विआ (रंभा)।

पडिवन्न देखो **पडिवण्ण**; 'पडिवन्नपालणे सुपुरिसाण जं होइ तं होउ' (प्रासू ३; णाया १, ५; उवा; सुर ४, ५७; स ६५६; हे २, २०६; पाअ)।

पडिवन्निय (अप) देखो **पडिवण्ण** (भवि)।

पडिवय अक [प्रति+पत्] ऊँचे जाकर गिरना। वकृ. **पडिवयमाण** (आचा)।

पडिवय सक [प्रति+वच्] उत्तर देना। भवि. पडिवक्खामि (सूअ १, ११, ६)।

पडिवयण न [प्रतिवचन] १ प्रत्युत्तर, जवाब (गा ४१६; सुर २, १२३; भवि)। २ आदेश, आज्ञा; 'देहि मे पडिवयणं' (आवम)। ३ पुं. हरिवंश के एक राजा का नाम (पउम २२, ९७)।

पडिवया स्त्री [प्रतिपत्] पडवा, पक्ष की पहली तिथि (हे १, ४४; २०६; षड्)।

पडिववियं वि [प्रत्युप्त] फिर से बोया हुआ (दे ६, १३)।

पडिवस अक [प्रति+वस्] निवास करना। वकृ. **पडिवसंत** (पि ३९७; नाट—मृच्छ ३२१)।

पडिवसभ पुं [प्रतिवृषभ] मूल स्थान से दो कोस की दूरी पर स्थित गाँव (पव ७०)।

पडिवह सक [प्रति+वह्] वहन करना, ढोना। कवकृ. **पडिवुज्झमाण** (कप्प)।

पडिवह देखो **पडिपह** (से ३, २४; ८, ३३; पउम ७३, २४)।

पडिवह पुं [प्रतिवध, परिवध] वध, हत्या (पउम ७३, २४)।

पडिवा देखो **पडिवया** (सुज्ज १०, १४)।

पडिवाइ वि [प्रतिवादिन्] प्रतिवाद करनेवाला, वादी का विपक्षी (भवि ५१, ३)।

पडिवाइ वि [प्रतिपादिन्] प्रतिपादन करनेवाला (भवि ५१, ३)।

पडिवाइ वि [प्रतिपातिन्] १ विनश्वर, नष्ट होने के स्वभाववाला (ठा २, १; ओघ ५३२; उप पृ ३५८)। २ अवधिज्ञान का एक भेद, फूंक से दीपक के प्रकाश के समान एकाएक नष्ट होनेवाला अवधिज्ञान (ठा ६; कम्म १, ८)।

पडिवाइअ वि [प्रतिपातित] १ फिर से गिराया हुआ। २ नष्ट किया हुआ (भवि)।

पडिवाइअ वि [प्रतिपादित] जिसका प्रतिपादन किया हो वह, निरूपित (अच्चु ५; स ४६; ५४३)।

पडिवाइअ वि [प्रतिवाचित] १ लिखने के बाद पढ़ा हुआ। २ फिर से बाँचा हुआ (कुप्र १६७)।

पडिवाइऊण } देखो **पडिवाय**=प्रति+
पडिवाइयव्व } वाचय्।

पडिवाइय देखो **पडिवाइ**=प्रतिपातिन् (णंदि ८१)।

पडिवाडि देखो **परिवाडि** (गा ५३०)।

पडिवाद (शौ) सक [प्रति+पादय्] प्रतिपादन करना, निरूपण करना। पडिवादेदि (नाट—रत्ना ५७)। कृ. **पडिवादणिज्ज** (अभि ११७)।

पडिवादय वि [प्रतिपादक] प्रतिपादन करनेवाला। स्त्री. °दिआ (नाट—चैत ३४)।

पडिवाय सक [प्रति+वाचय्] १ लिखने के बाद उसे पढ़ लेना। २ फिर से पढ़ लेना। संकृ. **पडिवाइऊण** (कुप्र १६७)। कृ. **पडिवाइयव्व** (कुप्र १६७)।

पडिवाय सक [प्रति+पादय्] प्रतिपादन करना, निरूपण करना। पडिवाययंति (सूअ १, १४, २६)।

पडिवाय पुं [प्रतिपात] १ पुनः-पतन, फिर से गिरना (नव ३६)। २ नाश, ध्वंस (विसे ५७७)।

पडिवाय पुं [प्रतिवाद] विरोध (भवि)।

पडिवाय पुं [प्रतिवात] प्रतिकूल पवन (आवम)।

पडिवायण न [प्रतिपादन] निरूपण (कुप्र ११६)।

पडिवारय देखो **परिवार**; 'पडिवारयपरियरिओ' (महा)।

पडिवाल सक [प्रति+पालय्] १ प्रतीक्षा करना, बाट जोहना। २ रक्षण करना। पडिवालेइ (हे ४, २५९)। पडिवालेदु (शौ), (स्वप्न १००)। पडिवालह (अभि १८५)। वकृ. **पडिवालअंत, पडिवालेमाण** (नाट—रत्ना ४८; णाया १, ३)।

पडिवालण न [प्रतिपालन] १ रक्षण। २ प्रतीक्षा, बाट (नाट—महा ११८; उप ६९६)।

पडिवालिअ वि [प्रतिपालित] १ रक्षित। २ प्रतीक्षित, जिसकी बाट देखी गई हो वह (महा)।

पडिवास पुं [प्रतिवास] औषध आदि को विशेष उत्कट बनानेवाला चूर्ण आदि (उर ८, ५; सुपा ६७)।

पडिवासर न [प्रतिवासर] प्रतिदिन, हर रोज (गउड)।

पडिवासुदेव पुं [प्रतिवासुदेव] वासुदेव का प्रतिपक्षी राजा (पउम २०, २०२)।

पडिविक्किण सक [प्रतिवि+क्री] बेचना। पडिविक्किणइ (श्राक ३३; पि ५११)।

पडिविज्जा स्त्री [प्रतिविद्या] प्रतिपक्षी विद्या, विरोधी विद्या (पिंड ४६७)।

पडिवित्थर पुं [प्रतिविस्तर] परिकर, विस्तार (सूअ २, २, ६२ टी; राज)।

पडिविद्धंसण न [प्रतिविध्वंसन] विनाश, ध्वंस (राज)।

पडिविप्पिय न [प्रतिविप्रिय] अपकार का बदला, बदले के रूप में किया जाता अनिष्ट (महा)।

पडिविरइ स्त्री [प्रतिविरति] निवृत्ति (पण्ह २, ३)।

पडिविरय वि [प्रतिविरत] निवृत्त (सम ५१; सूअ २, २, ७५; औप; उव)।

पडिविसज्ज सक [प्रतिवि+सर्जय्] विसर्जन करना, बिदा करना। पडिविसज्जेइ (कप्प; औप)। भवि. पडिविसज्जेहिति (औप)।

पडिविसज्जिय वि [प्रतिविसर्जित] बिदा किया हुआ, विसर्जित (णाया १, १—पत्र ३०)।

पडिविहाण न [प्रतिविधान] प्रतीकार (स ५६७)।

पडिवुज्झमाण देखो **पडिवह**=प्रति+वह्।

पडिवुत्त वि [प्रत्युक्त] १ जिसका उत्तर दिया गया हो वह (अनु ३; उप ७२८ टी)। २ न. प्रत्युत्तर (उप ७२८ टी)।

पडिवुद (शौ) वि [परिवृत्त] परिकरित (अभि ५७; नाट—मृच्छ २०५)।

पडिवूह पुं [प्रतिव्यूह] व्यूह का प्रतिपक्षी व्यूह, सैन्य-रचना-विशेष (औप)।

पडिवूहण वि [प्रतिबृंहण] १ बढ़नेवाला (आचा १, २, ५, ५)। २ न. वृद्धि, पुष्टि (आचा १, २, ५, ४)।

पडिवेस पुं [दे] विक्षेप, फेंकना (दे ६, २१)।

पडिवेसिअ वि [प्रातिवेश्मिक] पड़ोसी, पड़ोस में रहनेवाला (दे ६, ३, सुपा ५५२)।

पडिवोह देखो **पडिबोह** (सण)।

पडिसंका स्त्री [प्रतिशङ्का] भय, शंका (पउम ६७, १५)।

पडिसंखा सक [प्रतिसं+ख्या] व्यवहार करना, व्यपदेश करना। पडिसंखाए (आचा)।

पडिसंखिव सक [प्रतिसं+क्षिप्] संक्षेप करना। संकृ. **पडिसंखिविय** (भग १४, ७)।

पडिसंखेव सक [प्रतिसं+क्षेपय्] सकेलना, समेटना। वकृ. **पडिसंखेवेमाण** (राय ४२)।

पडिसंचिक्ख सक [प्रतिसम्+ईक्ष्] चिन्तन करना। पडिसंचिक्खे (उत्त २, ३१)।

पडिसंजल सक [प्रतिसं+ज्वालय्] उद्दीपित करना। पडिसंजलेज्जासि (आचा)।

पडिसंत वि [परिशान्त] शान्त, उपशान्त (से ६, ६१)।

पडिसंत वि [प्रतिश्रान्त] विश्रान्त (बृह १)।

पडिसंत वि [दे] १ प्रतिकूल। २ अस्तमित, अस्त-प्राप्त (दे ६, १६)।

पडिसंध } सक [प्रतिसं+धा] १ फिर
पडिसंधया } से साँधना। २ उत्तर देना।

३ अनुकूल करना। पडिसंधए (उत्त २७, १)। पडिसंधयाइ (सूअ २, ६, ३)। संकृ. पडिसंधाय (सूअ २, २, २६)।

पडिसंध } पडिसंधा } सक [प्रतिसं + धा] १ आदर करना। २ स्वीकार करना। पडिसंघए (पच्च ७)। संकृ. पडिसंधाय (सूअ २, २, ३१; ३२; ३३; ३४, ३५)।

पडिसंमुह न [प्रतिसंमुख] संमुख, सामने; 'गओ पडिसंमुहं पज्जोयस्स' (महा)।

पडिसंलाव पुं [प्रतिसंलाप] प्रत्युत्तर, जवाब (से १, २६; ११, ३४)।

पडिसंलीण वि [प्रतिसंलीन] १ सम्यक् लीन, अच्छी तरह लीन। २ निरोध करनेवाला (ठा ४, २; औप)। °पडिमा स्त्री [°प्रतिमा] क्रोध आदि के निरोध करने की प्रतिज्ञा (औप)।

पडिसंविक्ख सक [प्रतिसंवि + ईक्ष्] विचार करना। पडिसंविक्खे (उत्त २, ३१)।

पडिसंवेद } पडिसंवेय } सक [प्रतिसं + वेदय्] अनुभव करना। पडिसंवेदेइ, पडिसंवेयंति (भग; पि ४६०)।

पडिसंसाहणया स्त्री [प्रतिसंसाधना] अनुव्रजन, अनुगमन (औप; भग १४; ३; २५, ७)।

पडिसंहर सक [प्रतिसं + हृ] १ निवृत्त करना। २ निरोध करना। पडिसंहरेज्जा (सूअ १, ७, २०)।

पडिसक्क देखो **परिसक्क**। पडिसक्कइ (भवि)।

पडिसडण न [प्रतिशदन, परिशदन] १ सड़ जाना। २ विनाश; 'निरन्तरपडिसडणसीलाणि आउदलाणि' (काल)।

पडिसडिय वि [परिशटित] जो सड़ गया हो, जो विशेष जीर्ण हुआ हो वह (पिंड ५१७)।

पडिसत्तु पुं [प्रतिशत्रु] प्रतिपक्षी, दुश्मन, वैरी (सम १५३; पउम ५, १५६)।

पडिसत्थ पुं [प्रतिसार्थ] प्रतिकूल यूथ (निचू ११)।

पडिसद्द पुं [प्रतिशब्द] १ प्रतिध्वनि (पउम १६, ५३; भवि)। २ उत्तर, प्रत्युत्तर, जवाब (पउम ६, ३५)।

पडिसद्दिय वि [प्रतिशब्दित] प्रतिध्वनियुक्त (सम्मत्त २१८)।

पडिसम अक [प्रति + शम्] विरत होना। पडिसमइ (से ६, ४४)।

पडिसमाहर सक [प्रतिसमा + हृ] पीछे खींच लेना; 'दिट्ठिं पडिसमाहरे' (दस ८, ५५)।

पडिसय पुं [प्रतिश्रय] उपाश्रय, साधु का निवास-स्थान (दस २, १, टी)।

पडिसर पुं [प्रतिसर] १ सैन्य का पश्चाद्भाग (प्राप्र)। २ हस्त-सूत्र, वह धागा जो विवाह से पहले वर-वधू के हाथ में रक्षार्थ बाँधते हैं; कंकण (धर्म २)।

पडिसरण न [प्रतिसरण] कंकण (पंचा ८, १५)।

पडिसरीर न [प्रतिशरीर] प्रतिमूर्ति, 'पट्ठविओ पडिसरीरं व' (धर्मवि ३)।

पडिसलागा स्त्री [प्रतिशलाका] पल्य-विशेष (कम्म ४, ७३)।

पडिसव सक [प्रति + शप्] शाप के बदले में शाप देना, 'अहमाहओ त्ति न य पडिहणंति सत्तावि न य पडिसवंति' (उव)।

पडिसव सक [प्रति + श्रु] १ प्रतिज्ञा करना। २ स्वीकार करना। ३ आदर करना। कृ. पडिसवणीय (सण)।

पडिसवत्त वि [प्रतिसपत्न] विरोधी शत्रु (दसनि ६, १८)।

पडिसा अक [शम्] शान्त होना। पडिसाइ (हे ४, १६७)।

पडिसा अक [नश्] भागना, पलायन होना। पडिसाइ, पडिसंति (हे ४, १७८; कुमा)।

पडिसाइल्ल वि [दे] जिसका गला बैठ गया हो, घर्घर कण्ठवाला (दे ६, १७)।

पडिसाड सक [प्रति + शादय्, परिशाटय्] १ सड़ाना। २ पलटाना। ३ नाश करना। पडिसाडेंति (आचा २, १५, १८)। संकृ. पडिसाडित्ता (आचा २, १५, १८)।

पडिसाडणा स्त्री [परिशाटना] च्युत करना, भ्रष्ट करना (वव १)।

पडिसाम अक [शम्] शान्त होना। पडिसामइ (हे ४, १६७; षड्)।

पडिसाय वि [शान्त] शान्त, शम-प्राप्त (कुमा)।

पडिसाय पुं [दे] घर्घर कण्ठ, बैठा हुआ गला (दे ६, १७)।

पडिसार सक [प्रतिस्मारय्] याद दिलाना। पडिसारेउ (भग १५)।

पडिसार सक [प्रति + सारय्] सजाना, सजावट करना। पडिसारेदि (शौ), कर्म. पडिसारीअदि (शौ) (कप्पू)।

पडिसार सक [प्रति+ सारय्] खिसकाना, हटाना, अन्य स्थान में ले जाना। पडिसारेइ (से १०, ७०)।

पडिसार पुं [दे] १ पटुता। २ वि. निपुण, पटु, चतुर (दे ६, १६)।

पडिसार पुं [प्रतिसार] १ सजावट। २ अपसरण। ३ विनाश। ४ पराङ्मुखता (हे १, २०६; दे ६, ७६)।

पडिसार पुं [प्रतिसार] अपसारण (हे १, २०६)।

पडिसारण न [प्रतिस्मारण] याद दिलाना (वव १)।

पडिसारणा स्त्री [प्रतिस्मारणा] संस्मारण (भग १५)।

पडिसारिअ वि [दे] स्मृत, याद किया हुआ (दे ६, ३३)।

पडिसारिअ वि [प्रतिसारित] १ दूर किया हुआ, अपसारित (से ११, १)। २ विनाशित (से १४, ५८)। ३ पराङ्मुख (से १३, ३२)।

पडिसारी स्त्री [दे] जवनिका, परदा (दे ६, २२)।

पडिसाह सक [प्रति + कथय्] उत्तर देना। पडिसाहिज्जा (सूअ १, ११, ४)।

पडिसाहर सक [प्रतिसं + हृ] निवृत्त करना। पडिसाहरेज्जा (सूअ २, २, ८५)।

पडिसाहर सक [प्रतिसं + हृ] १ सकेलना, समेटना। २ वापस ले लेना। ३ ऊँचे ले जाना। पडिसाहरइ (औप; णाया १, १—पत्र ३३)। संकृ. पडिसाहरित्ता, पडिसाहरिय (णाया १, १; भग १४, ७)।

पडिसाहरण न [प्रतिसंहरण] १ समेट, संकोच। २ विनाश; 'सीयतेयलेस्सापडिसाहरणट्ठयाए' (भग १५—पत्र ६६६)।

पडिसिद्ध वि [दे] १ भीत, डरा हुआ। २ भग्न, त्रुटित (दे ६, ७१)।

पडिसिद्ध वि [प्रतिषिद्ध] निषिद्ध, निवारित (पाअ; उव, ओघ १ टी; सण)।

पडिसिद्धि स्त्री [दे] प्रतिस्पर्धा (षड्)।

पडिसिद्धि स्त्री [प्रतिसिद्धि] १ अनुरूप सिद्धि। २ प्रतिकूल सिद्धि (हे १, ४४; षड्)।

पडिसिद्धि देखो **पडिप्फद्धि** (संक्षि १६)।

पडिसिलोग पुं [प्रतिश्लोक] श्लोक के उत्तर में कहा गया श्लोक (सम्मत्त १४६)।

पडिसिविणअ पुं [प्रतिस्वप्नक] एक स्वप्न का विरोधी स्वप्न, स्वप्न का प्रतिकूल स्वप्न (कप्प)।

पडिसीसअ } न [प्रतिशीर्षक] १ शिरो-
पडिसीसक } वेष्टन, पगड़ी (कप्पू)। २ सिर के प्रतिरूप सिर, पिसान (आटा) आदि का बनाया हुआ सिर (पराह १, २—पत्र ३०)।

पडिसुइ पुं [प्रतिश्रुति] १ ऐरवत वर्ष के एक भावी कुलकर (सम १५३)। २ भरतक्षेत्र में उत्पन्न एक कुलकर पुरुष का नाम (पउम ३, ५०)।

पडिसुण सक [प्रति + श्रु] १ प्रतिज्ञा करना। २ स्वीकार करना। पडिसुणइ, पडिसुणेइ (औप; कप्प; उवा)। वकृ. **पडिसुणमाण** (वव १; पि ५०३)। संकृ. **पडिसुणित्ता, पडिसुणेत्ता** (भाव ४; कप्प)। हेकृ. **पडिसुणेत्तए** (पि ५७८)।

पडिसुणण न [प्रतिश्रवण] अंगीकार (उप ४६३)।

पडिसुणण स्त्री न [प्रतिश्रवण] १ सुनाना, सुनकर उसका जवाब देना, प्रत्युत्तर (पव २)। स्त्री. °णा (पव २)। २ श्रवण (पंचा १२, १५)।

पडिसुणणा स्त्री [प्रतिश्रवण] १ अंगीकार, स्वीकार। २ मुनि-भिक्षा का एक दोष, आधाकर्म-दोषवाली भिक्षा लाने पर उसका स्वीकार और अनुमोदन (धर्म ३)।

पडिसुण्ण वि [प्रतिशून्य] खाली, रिक्त, शून्य; 'नय निलया निच्चपडिसुरणा' (ठा १ टी—पत्र २६)।

पडिसुत्ति वि [दे] प्रतिकूल (दे ६, १८)।

पडिसुद्ध वि [परिशुद्ध] अत्यन्त शुद्ध (चेइय ८०७)।

पडिसुय त्रि [प्रतिश्रुत] १ स्वीकृत, अंगीकृत (उप पृ १८४)। २ न. अंगीकार, स्वीकार (उत्त २६)। देखो **पडिस्सुय**।

पडिसुया देखो पडंसुआ = प्रतिश्रुत् (पराह १, १—पत्र १८)।

पडिसुया स्त्री [प्रतिश्रुता] प्रव्रज्या-विशेष, एक प्रकार की दीक्षा (ठा १० टी—पत्र ४७४)।

पडिसुहड पुं [प्रतिसुभट] प्रतिपक्षी योद्धा (काल)।

पडिसूयग पुं [प्रतिसूचक] गुप्तचरों की एक श्रेणी, नगर-द्वार पर रहनेवाला जासूस (वव १)।

पडिसूर वि [दे] प्रतिकूल (दे ६, १६, भवि)।

पडिसूर पुं [प्रतिसूर्य] सूर्य के सामने देखा जाता उत्पातादि-सूचक द्वितीय सूर्य (अणु १२०)।

पडिसूर पुं [प्रतिसूर्य] इन्द्र-धनुष (राज)।

पडिसेज्जा स्त्री [प्रतिशय्या] शय्या-विशेष, उत्तर-शय्या (भग ११, ११; पि १०१)।

पडिसेग पुं [प्रतिषेक] नख के नीचे का भाग (राय ६४)।

पडिसेव सक [प्रति + सेव्] १ प्रतिकूल सेवा करना, निषिद्ध वस्तु की सेवा करना। २ सहन करना। ३ सेवा करना। पडिसेवइ, पडिसेवए, पडिसेवंति (कस, वव ३, उव)। वकृ. **पडिसेवंत, पडिसेवमाण** (पंचू ५; सम ३६; पि १७); 'पडिसेवमाणो फरुसाइं अचले भगवं रीइत्था' (आचा)। कृ. **पडिसेवियव्व** (वव १)।

पडिसेवग देखो **पडिसेवय** (निचू १)।

पडिसेवण न [प्रतिषेवण] निषिद्ध वस्तु का सेवन (कस)।

पडिसेवणा स्त्री [प्रतिषेवणा] ऊपर देखो (भग २५, ७; उव; ओघ २)।

पडिसेवय वि [प्रतिषेवक] प्रतिकूल सेवा करनेवाला, निषिद्ध वस्तु का सेवन करनेवाला (भग २५, ७)।

पडिसेवा स्त्री [प्रतिषेवा] १ निषिद्ध वस्तु का आसेवन (उप ८०१)। २ सेवा (कुप्र ५२)।

पडिसेवि वि [प्रतिषेविन्] शास्त्र-प्रतिषिद्ध वस्तु का सेवन करनेवाला (उव; पउम ५; २८)।

पडिसेविअ वि [प्रतिषेवित] जिस निषिद्ध वस्तु का आसेवन किया गया हो वह (कप्प; औप)।

पडिसेवेत्तु वि [प्रतिषेवितृ] प्रतिषिद्ध वस्तु की सेवा करनेवाला (ठा ७)।

पडिसेह सक [प्रति + सिध्] निषेध करना, निवारण करना। कृ. **पडिसेहेअव्व** (भग)।

पडिसेह पुं [प्रतिषेध] निषेध, निवारण, रोक (ओघ ६ भा; पंचा ६)।

पडिसेहग त्रि [प्रतिषेधक] निषेध-कर्ता (धर्मसं ४०; ६१२)।

पडिसेहण न [प्रतिषेधन] ऊपर देखो (विसे २७५१; श्रा २७)।

पडिसेहिय वि [प्रतिषेधित] जिसका प्रतिषेध किया गया हो वह, निवारित (विपा १, ३)।

पडिसेहेअव्व देखो **पडिसेह** = प्रति + सिध्।

पडिसोअ } पुं [प्रतिस्रोतस्] प्रतिकूल
पडिसोत्त } प्रवाह, उलटा प्रवाह (ठा ४, ४; हे, २, ६८; उप २५२; पि ६१)।

पडिसोत्त वि [दे] प्रतिकूल (षड्)।

पडिस्संत देखो **परिस्संत** (नाट—मृच्छ १८८)।

पडिस्संति स्त्री [परिश्रान्ति] परिश्रम (नाट—मृच्छ ३२१)।

पडिस्सय पुं [प्रतिश्रय] जैन साधुओं को रहने का स्थान, उपाश्रय (ओघ ८७ भा; उप ५७१; स ६८७)।

पडिस्सर देखो **पडिसर** (पंचा ८, ४६)।

पडिस्साव सक [प्रति + श्रावय्] १ प्रतिज्ञा कराना। २ स्वीकार कराना। वकृ. **पडिस्सावअन्त** (नाट—वेणी १८)।

पडिस्साविं वि [प्रतिस्राविन्] झरनेवाला, टपकनेवाला (राज)।

पडिस्सुण सक [प्रति + श्रु] १ सुनना। २ अंगीकार करना। पडिस्सुणंति (सूअ २, ६, ३०)। पडिस्सुणेज्जा (सूअ १, १४, ६)। पडिस्सुणे (उत्त १, २१)।

पडिस्सुय वि [प्रतिश्रुत] १ प्रतिज्ञात। २ स्वीकृत (महा; ठा १०)। देखो **पडिसुय**।

पडिस्सुया देखो **पडंसुआ** (णाया १, ५)।

पडिस्सुया देखो **पडिसुया** = प्रतिश्रुता (ठा १०—पत्र ४७३)।

पडिहच्छ वि [दे] पूर्ण (सण)। देखो **पडिहत्थ**।

पडिहट्टु अ [प्रतिहृत्य] अर्पण करके (कस; बृह ३)।

पडिहड पुं [प्रतिभट] प्रतिपक्षी योद्धा (से ३, ५३)।

पडिहण सक [प्रति + हन्] प्रतिघात करना, प्रतिहिंसा करना। पडिहणंति (उव)।

पडिहणण न [प्रतिहनन] १ प्रतिघात। २ वि. प्रतिघातक (कुप्र ३७)।

पडिहणणा स्त्री [प्रतिहनन] प्रतिघात (ओघ ११०)।

पडिहणिअ देखो **पडिहय** (सुपा २३)।

पडिहणिय देखो **पडिभणिय** (धर्मसं ७०८)।

पडिहत्थ वि [दे] १ पूर्ण, भरा हुआ (दे ६, २८; पाअ; कुप्र ३४; वज्जा १२६; उप पृ १८१; सुर ४, २३६; सुपा ४८८); 'पडिहत्थबिंबगहवइअणे ता वज्ज उज्जाणं' (वाअ १५)। २ प्रतिक्रिया, प्रतिकार, बदला। ३ वचन, वाणी (दे ६, १६)। ४ अतिप्रभूत (जीव ३)। ५ अपूर्व, अद्वितीय (षड्)।

पडिहत्थ सक [दे] प्रत्युपकार करना, उपकार का बदला चुकाना। पडिहत्थेइ (से १२, ६६)।

पडिहत्थ वि [प्रतिहस्त] तिरस्कृत (चंड)।

पडिहत्था स्त्री [दे] वृद्धि (दे ६, १७)।

पडिहम्म देखो **पडिहण**। पडिहम्मेज्जा (पि ५४०)। भवि. पडिहम्मिहिइ (पि ५४६)।

पडिहय वि [प्रतिहत] प्रतिघात-प्राप्त (ओप; कुमा; महा; सण)।

पडिहर सक [प्रति + हृ] फिर से पूर्ण करना। पडिहरइ (हे ४, २५६)।

पडिहा अक [प्रति + भा] मालूम होना, लगना। पडिहाइ (वज्जा १६२; पि ४८७)।

पडिहा स्त्री [प्रतिभा] बुद्धि-विशेष, नूतन-नूतन उल्लेख करने में समर्थ बुद्धि (कुमा)।

पडिहा देखो **पडिहाय** = प्रतिघात; 'पंचविहा पडिहा पन्नत्ता, तं जहा, गतिपडिहा' (ठा ५, १—पत्र ३०३)।

पडिहाण देखो **पणिहाण**; 'मणदुप्पडिहाणे' (उवा)।

पडिहाण न [प्रतिभान] प्रतिभा, बुद्धि-विशेष। °व वि [°वत्] प्रतिभावाला (सूअ १, १३; १४)।

पडिहाअ देखो **पडिहा** = प्रति + भा। पडिहाअइ (स ४६१; स ७५६)।

पडिहाय पुं [प्रतिघात] १ प्रतिहनन, घात का बदला। २ निरोध, अटकाव, रोक (पउम ६, ५३)।

पडिहार पुं [प्रतिहार] इन्द्र-नियुक्त देव (पव ३६)।

पडिहार पुंस्त्री [प्रतिहार] द्वारपाल, दरवान (हे १, २०६; णाया १, ५; स्वप्न २२८; अभि ७७)। स्त्री. °री (बृह १)।

पडिहारिय देखो **पाडिहारिय** (कस; आचा २, २, ३, १७; १८)।

पडिहारिय वि [प्रतिहारित] अवरुद्ध, रोका हुआ (स ५४६)।

पडिहास अक [प्रति + भास्] मालूम होना, लगना। पडिहासेदि (शौ) (नाट)।

पडिहास पुं [प्रतिभास] प्रतिभास, प्रतिभान (हे १, २०६, षड्)।

पडिहासिय वि [प्रतिभासित] जिसका प्रतिभास हुआ हो वह (उप ९८६ टी)।

पडिहुअ, **पडिहू** पुं [प्रतिभू] जामीन, जामीन-दार, मनौतिया (पाअ; दे ५, ३८)।

पडिहू अक [परि + भू] पराभव करना, हराना। कवकृ. **पडिहूअमाण** (अभि ३६)।

पडी स्त्री [पटी] वस्त्र, कपड़ा (गउड; सुर ३, ४१)।

पडीआर पुं [प्रतीकार] देखो **पडिआर** = प्रतिकार (वेणी १७७; कुप्र ६१)।

पडीकर सक [प्रति + कृ] प्रतिकार करना। पडीकरेमि (मै ६६)।

पडीकार देखो **पडिआर** (पण्ह १, १)।

पडीछ देखो **पडिच्छ** = प्रति = इष्। पडीछंति (पि २७५)।

पडीण वि [प्रतीचीन] पश्चिम दिशा से संबन्ध रखनेवाला (आचा; औप, ठा ५, ३)। °**वाय** पुं [°वात] पश्चिम का वायु (ठा ७)।

पडीणा स्त्री [प्रतीची] पश्चिम दिशा (ठा ६—पत्र ३५६; सूअ २, २, ५८)।

पडीर पुं [दे] चोर-समूह, चोरों का यूथ (दे ६, ८)।

पडीव वि [प्रतीप] प्रतिकूल, प्रतिपक्षी, विरोधी (भवि)।

पडु वि [पटु] निपुण, चतुर, कुशल (औप; कुमा; सुर २, १४५)।

पडु (अप) देखो **पडिअ** = पतित (पिंग)।

पडुआलिअ वि [दे] १ निपुण बनाया हुआ। २ ताड़ित, पिटा हुआ। ३ धारित (दे ६, ७३)।

पडुक्खेव पुं [प्रत्युत्क्षेप] १ वाद्य-ध्वनि। २ उत्थापन, उठान (अणु १३१)।

पडुक्खेव पुं [प्रत्युत्क्षेप, प्रतिक्षेप] १ वाद्य-ध्वनि। क्षेपण, फेंकना; 'समतालपडुक्खेवं' (ठा ७—पत्र ३९४)।

पडुच्च अ [प्रतीत्य] १ आश्रय करके (आचा; सूअ १, ७; सम ३६; नव ३६)। २ अपेक्षा करके (भग)। ३ अधिकार करके; 'पडुच्च त्ति वा पप्प त्ति वा अहिकिच्च त्ति वा एगट्ठा' (आचू १; अणु)। °**करण** न [°करण] किसी की अपेक्षा से जो कुछ करना, आपेक्षिक कृति (बृह १)। °**भाव** पुं [°भाव] सप्रतियोगिक पदार्थ, आपेक्षिक वस्तु (भास २८)। °**वयण** न [°वचन] आपेक्षिक वचन (सम्म १००)। °**सच्चा** स्त्री [°सत्या] सत्य भाषा का एक भेद, अपेक्षा-कृत सत्य वचन (पण्ण ११)।

पडुच्चा ऊपर देखो; 'जे हिंसंति आयसुहं पडुच्चा' (सूअ १, ५, १, ४)।

पडुजुवइ स्त्री [दे] युवति, तरुणी (दे ६, ३१)।

पडुत्तिया स्त्री [प्रत्युक्ति] प्रत्युत्तर, जवाब (भवि)।

पडुप्पण्ण, **पडुप्पन्न** पुं [प्रत्युत्पन्न] १ वर्तमान काल (ठा ३, ४)। २ वि. वार्त्तमानिक, वर्तमान काल में विद्यमान (ठा १०; भग ८, ५; सम १३२; उवा)। ३ प्राप्त, लब्ध (ठा ४, २); 'न पडुप्पन्नो य से जहोचिओ आहारो' (स २६१)। ४ उत्पन्न,

जात (ठा ४, २); 'होंति य पडुप्पन्नविणास-णम्मि गंधव्विया उदाहरणं' (दसनि १)।
पडुल्ल न [दे] १ लघु पिठर, छोटी थाली। २ वि. चिरप्रसूत (दे ६, ६८)।
पडुवइअ वि [दे] तीक्ष्ण, तेज (दे ६, १४)।
पडुवत्ती स्त्री [दे] जवनिका, परदा (दे ६, २२)।
पडुह देखो पड्डुह। पडुहइ (हे ४, १५४ टि)।
पडोअ वि [दे] बाल, लघु, छोटा (दे ६,६)।
पडोच्छन्न वि [प्रत्यवच्छन्न] आच्छादित, आवृत; 'अट्ठविहकम्मतमपडलपडोच्छन्ने' (उवा)।
पडोयार सक [प्रत्युप + चारय्] प्रतिकूल उपचार करना। पडोयारेंति, पडोयारेह (भग १५—पत्र ६७६)। पडोयारेउ (भग १५—पत्र ६७१)। पडोयारे (पि १५५)। कवकृ. पडोय (? या) रिज्जमाण, पडोयारेज्ज-माण (पि १६३; भग १५—पत्र ६७६)।
पडोयार पुं [दे] उपकरण (पिंड २८)।
पडोयार पुं [प्रत्युपचार] प्रतिकूल उपचार (भग १५—पत्र ६७१; ६७६)।
पडोयार पुं [प्रत्यवतार] १ अवतरण। २ आविर्भाव; 'भरहस्स वासस्स केरिसए आगार-भावपडोयारे होत्था' (भग ६, ७—पत्र २७६; ७, ६—पत्र ३०५; औप)।
पडोयार पुं [पदावतार] किसी वस्तु का पदों में विचार के लिए अवतरण (ठा ४, १—पत्र १८८)।
पडोयार पुं [प्रत्युपकार] उपकार का उपकार (राज)।
पडोयार पुं [दे] १ सामग्री। २ परिकर, 'पायस्स पडोयारं' (ओघ ३५२)।
पडोल पुंस्त्री [पटोल] लता-विशेष, परवल का गाछ (पण्ण १—पत्र ३२)।
पडोहर न [दे] घर का पीछला आँगन (दे ६, ३२; गा ३१३; काप्र २२४)।
पड्डु वि [दे] धवल, सफेद (दे ६, १)।
पड्डुंस पुं [दे] गिरि-गुहा, पहाड़ की गुफा (दे ६, २)।
पड्डुच्छी स्त्री [दे] भैंस, 'पड्डुच्छिखीर' (ओघ ८७)।
पड्डुत्थी स्त्री [दे] १ बहुत दूधवाली। २ दोहनेवाली (दे ६, ७०)।

पड्डुय पुं [दे] भैंसा, पाड़ा, गुजराती में 'पाडो'; 'सो चेव इमो वसभो पड्डुयपरिहट्टणं सहइ' (महा)।
पड्डुला स्त्री [दे] चरण-घात, पाद-प्रहार (दे ६, ८)।
पड्डुस वि [दे] सुसंयमित, अच्छी तरह से संयमित (दे ६, ६)।
पड्डाविअ वि [दे] समापित, समाप्त कराया हुआ (षड्)।
पड्डिया स्त्री [दे] १ छोटी भैंस, पाड़ी। २ छोटी गौ, बछिया (विपा १,२—पत्र २६)। ३ प्रथमप्रसूता गौ। ४ नव-प्रसूता महिषी (वव ३)। पड्डी स्त्री [दे] प्रथम-प्रसूता (दे (६, १)।
पड्डुआ स्त्री [दे] चरण-घात, पाद-प्रहार (दे ६, ८)।
पड्डुह अक [क्षुभ्] क्षुब्ध होना। पड्डु-हइ (हे ४, १५४; कुमा)।
पढ सक [पठ्] १ पढ़ना, अभ्यास करना। २ बोलना, कहना। पढइ (हे १, १६६; २३१)। कर्म. पढीअइ, पढिज्जइ (हे ३, १६०)। वकृ. पढंत (सुर १०, १०३)। कवकृ. पढिज्जंत, पढिज्जमाण (सुपा २६७; उप ५३० टी)। संकृ. पढित्ता (हे ४, २७१; षड्), पढिअ, पढिऊण (शौ) (हे ४, २७१), पढि (अप) (पिंग)। हेकृ. पढिउं (गा २; कुमा)। कृ. पढियव्व, पढेयव्व (पंसू १; वज्जा ६)। प्रयो. पढावइ (कुप्र १८२)।
पढ पुं [पढ] भारतीय देश-विशेष (इक)।
पढग वि [पाठक] पढ़नेवाला (कप्प)।
पढण न [पठन] पाठ, अभ्यास (विसे १३८४; कप्पू)।
पढम वि [प्रथम] १ पहला, आद्य (हे १, ५५; कप्प; उवा; भग; कुमा; प्रासू ४८; ६८)। २ नूतन, नया (दे)। ३ प्रधान, मुख्य (कप्प)। °करण न [°करण] आत्मा का परिणाम-विशेष (पंचा ३)। °कसाय पुं [°कषाय] कषाय-विशेष, अनन्तानुबन्धी कषाय (कम्मप)। °ट्ठाणि, °ठाणि वि [°स्थानिन्] अव्युत्पन्न-बुद्धि, अनिष्णात (पंचा १६)। °पाउस पुं [°प्रावृष्] आषाढ़ मास (निचू १०)। °समोसरण न [°समवसरण] वर्षा-काल; 'बिइयसमोसरणं उदुबद्धं तं पडुच्च वासावासोग्गहो पढमसमो-सरणं भण्णइ' (निचू १)। °सरय पुं [°शरत्] मार्गशीर्ष मास (भग १५)। °सुरा स्त्री [°सुरा] नया दारू, शराब (दे)।
पढमा स्त्री [प्रथमा] १ प्रतिपदा तिथि, पड़वा (सम २६)। २ व्याकरण-प्रसिद्ध पहली विभक्ति; 'णिद्देसे पढमा होइ' (अणु)।
पढमालिआ स्त्री [दे. प्रथमालिका] प्रथम भोजन (ओघ ४७ भा; धर्म ३)।
पढमिल्ल, पढमिल्लुअ, पढमिल्लुग, पढमुल्लअ, पढमेल्लुय वि [प्रथम] पहला, आद्य (भग; श्रा २८; सुपा ५७; पि ४४६; ५६५; विसे १२२६; (णाया १, ६—पत्र १४४, बृह १; पउम ६२, ११; धण १६; सण)।
पढाइद [शौ] नीचे देखो (नाट—चैत ८६)।
पढाव सक [पाठय्] पढ़ाना। पढावेइ (प्राकृ ६०)। संकृ. पढाविऊण, पढावेऊण (प्राकृ ६१)। हेकृ. पढाविउं, पढावेउं (प्राकृ ६१)। कृ. पढावणिज्ज, पढाविअव्व (प्राकृ ६१)।
पढावअ वि [पाठक] अध्यापक (प्राकृ ६०)।
पढावण न [पाठन] पढ़ाना (कुप्र ६०)।
पढाविअ वि [पाठित] पढ़ाया हुआ (सुपा ४५३; कुप्र ६१)।
पढाविअवंत वि [पाठितवत्] जिसने पढ़ाया हो वह (प्राकृ ६१)।
पढाविउ, पढाविर वि [पाठयितृ] अध्यापक (प्राकृ ६०)।
पढि, पढिअ देखो पढ = पठ्।
पढिअ वि [पठित] पढ़ा हुआ (कुमा; प्रासू १०८)।
पढिज्जंत, पढिज्जमाण देखो पढ = पठ्।
पढिर वि [पठितृ] पढ़नेवाला (सण)।
पढुक्क वि [प्रढौकित] भेंट के लिए उपस्था-पित (भवि)।
पढुम देखो पढम (हे १, ५५; नाट—विक्र २६)।
पढेयव्व देखो पढ = पठ्।
पढे देखो पढाव। पढेइ (प्राकृ ६०)।

पण देखो पंच (सुपा १; नव १०; कम्म २,६;२६; ३१)। °णउइ स्त्री [°नवति] पंचानबे, नब्बे और पाँच (पि ४४६)। °तीस स्त्रीन [°त्रिंशत्] पैंतीस, तीस और पाँच (औप; कम्म ४, ५३; पि २७३; ४४५)। °नुवइ देखो °णउइ (सुपा ६७)। °रस त्रि. ब. [°दशन्] पनरह (सण)। °वन्निय वि [°वर्णिक] पाँच रंग का (सुपा ४०२)। °वीस स्त्रीन [°विंशति] पचीस, बीस और पाँच (सम ४४; नव १३; कम्म २)। °वीसइ स्त्री [विंशति] वही अर्थ (पि ४४५)। °सट्ठि स्त्री [°षष्टि] पैंसठ, साठ और पाच (सम ७८; पि २७३)। °सय न [°शत] पाँच सौ (दं ६)। °सीइ स्त्री [°शीति] पचासी, अस्सी और पाँच (कम्म २)। °सुन्न न [°सून] पाँच हिंसा-स्थान (राज)।

पण पुं [पण] १ शर्त, होड़; 'लक्खपणेण जुज्झावेंतस्स' (महा)। २ प्रतिज्ञा (आक)। ३ धन। ४ विक्रेय वस्तु, क्रयाणक; 'तत्थ विढप्पिअ पणगणं' (तो ३)

पण पुं [प्रण] पन, प्रतिज्ञा (नाट—मालती १२४)।

पण } न [पञ्चक] १ पाँच का समूह (पंच
पणग } ३, १६)। २ तप-विशेष, नीवी तप (संबोध ५७)।

पणअत्तिअ वि [दे] प्रकटित, व्यक्त किया हुआ (दे ६, ३०)।

पणअन्न देखो पणपन्न (हे २, १७४ टि; राज)।

पणइ स्त्री [प्रणति] प्रणाम, नमस्कार (पउम ६६, ६६; सुर १२, १३३; कुमा)।

पणइ वि [प्रणयिन्] १ प्रणयवाला, स्नेही, प्रेमी। २ पुं. पति, स्वामी (पाअ; गउड ८३७)। ३ याचक, अर्थी, प्रार्थी (गउड २४६; २५१; सुर १, १०८)। ४ भृत्य, दास; 'बप्पइराओत्ति पणइलवो' (गउड ७९७)।

पणइणी स्त्री [प्रणयिनी] पत्नी, भार्या, प्रिया, जोरू (सुपा २१६)।

पणइय वि [प्रणयिक, प्रणयिन्] देखो पणइ = प्रणयिन् (सण)।

पणंगणा स्त्री [पणाङ्गना] वेश्या, वारांगना (उप १०३१ टी; सुपा ४६०; कुप्र ५)।

पणग न [पञ्चक] पाँच का समूह (सुर ६, ११२; सुपा ६३६; जी ६; दं ३१; कम्म २, ११)।

पणग पुं [दे. पनक] १ शैवाल, सेवार या सिवार, तृण-विशेष जो जल में उत्पन्न होता है (बृह ४; दस ८; पएण १ णंदि)। २ काई, वर्षा-काल में भूमि, काष्ठ आदि में उत्पन्न होनेवाला एक प्रकार का जल-मैल (आचा; पडि; ठा ८—पत्र ४२६; कप्प)। ३ कर्दम-विशेष, सूक्ष्म पंक (बृह ६; भग ७, ६)। देखो पणय (दे)। °मट्टिया, °मत्तिया स्त्री [°मृत्तिका] नदी आदि के पूर के खतम होने पर रह जाती कोमल चिकनी मिट्टी (जीव १; पएण १—पत्र २५)।

पणच्च अक [प्र + नृत्] नाचना, नृत्य करना। वकृ. पणच्चमाण (णाया १, ८—पत्र १३३; सुपा ४७२)। स्त्री. °णी (सुपा २४२)।

पणच्चण न [प्रनर्तन] नृत्य, नाच (सुपा १५४)।

पणच्चिअ वि [प्रनृत्तित] नाचा हुआ, जिसका नाच हुआ हो वह (णाया १, १—पत्र २५)।

पणच्चिअ वि [प्रनृत्त] नाचा हुआ, 'अन्नया रायपुरओ पणच्चिया देवदत्ता' (महा; कुप्र १०)।

पणच्चिअ वि [प्रनर्त्तित] नचाया हुआ (भवि)।

पणट्ठ वि [प्रनष्ट] प्रकर्ष से नाश को प्राप्त (सूअ १, १, २; से ७, ८; सुर २, २४७; ३, ६६; भवि; उव)।

पणद्ध वि [प्रणद्ध] परिगत (औप)।

पणपण्ण देखो पणपन्न (कप्प १४७ टि)।

पणपण्णइम देखो पणपन्नइम (कप्प १७४ टि; पि २७३)।

पणपन्न स्त्रीन [दे. पञ्चपञ्चाशत्] पचपन, पचास और पाँच (हे २, १७४; कप्प; सम ७२; कम्म ४, ५४; ५५; ति ५)।

पणपन्नइम वि [दे. पञ्चपञ्चाश] पचपनवाँ, ५५ वाँ (कप्प)।

पणपन्निय देखो पणवन्निय (इक)।

पणपन्निय पुं [पंचप्रज्ञप्तिक] व्यन्तर देवों की एक जाति (पव १६४)।

पणम सक [प्र + नम्] प्रणाम करना, नमन करना। पणमइ, पणमए (स ३४४; भग)। वकृ. पणमंत (सण)। कवकृ. पणमिज्जंत (सुपा ८८)। संकृ. पणमिअ, पणमिऊण, पणमिऊणं, पणमित्ता, पणमित्तु (अभि ११८; प्राकृ; पि ५९०; भग; काल)।

पणमण न [प्रणमन] प्रणाम, नमस्कार (उव; सुपा २७; ५६१)।

पणमिअ देखो पणम।

पणमिअ वि [प्रणत] १ नमा हुआ (भग; औप)। २ जिसने नमने का प्रारम्भ किया हो वह (णाया १, १—पत्र ५)। ३ जिसको नमन किया गया हो वह; 'पणमिओ भणेण राया' (स ७३०)।

पणमिअ वि [प्रणमित] नमाया हुआ (भवि)।

पणमिर वि [प्रणम्र] प्रणाम करनेवाला, नमनेवाला (कुमा; कुप्र ३५०; सण)।

पणय सक [प्र + णी] १ स्नेह करना, प्रेम करना। २ प्रार्थना करना। वकृ. पणअंत (से २, ६)।

पणय वि [प्रणत] १ जिसको प्रणाम किया गया हो वह, 'नरनाहपणयपयकमलं' (सुपा २४०)। २ जिसने नमस्कार किया हो वह; 'पणयपडिवक्खं' (सुर १, ११२; सुपा ३६१)। ३ प्राप्त (सूअ १, ४, १)। ४ निम्न, नीचा (जीव ३; राय)।

पणय पुं [प्रणय] १ स्नेह, प्रेम (णाया १, ६; महा; गा २७)। २ प्रार्थना (गउड)। °वंत वि [°वत्] स्नेहवाला, प्रेमी (उप १३१)।

पणय पुं [दे] पंक, कर्दम (दे ६, ७)।

पणय पुं [दे. पनक] १ शैवाल, सेवार, तृण-विशेष। २ काई, जल-मैल (ओघ ३४६)। ३ सूक्ष्म कर्दम (पण्ह १, ४)।

पणयाल वि [दे. पञ्चचत्वारिंश] पैंतालीसवाँ, ४५ वाँ (पउम ४५, ४६)।

पणयाल } स्त्रीन [दे. पञ्चचत्वारिंशत्]
पणयालीस } पैंतालीस, चालीस और पाँच, ४५ (सम ६६; कम्म २, २७; ति ३; भग; सम ६८; औप; पि ४४५)।

पणव देखो **पणम**। पणवइ (भवि)। पणवह (हे २, १६५)। वकृ. **पणवंत** (भवि)।

पणव पुं [प्रणव] ओंकार, 'ओं' अक्षर (सिरि १६६)।

पणव पुं [पणव] पटह, ढोल, वाद्य-विशेष (औप; कप्प; अंत)।

पणवणिय देखो **पणवन्निय** (औप)।

पणवण्ण } देखो **पणपन्न** (पि २६५; २७३;
पणवन्न } भग; हे २, १७४ टि)।

पणवन्निय पुं [पणपन्निक] व्यन्तर देवों की एक जाति (पण्ह १, ४)।

पणविय देखो **पणमिय**=प्रणत (भवि)।

पणवीसी स्त्री [पञ्चविंशतिका] पचीस का समूह (संबोध २५)।

पणस पुं [पनस] वृक्ष-विशेष, कटहल या कटहर (पि २०८; नाट—मृच्छ २१८)।

पणसुंदरी स्त्री [पणसुन्दरी] वेश्या (धर्मवि १२७)।

पणाम सक [अर्पय्] अर्पण करना, देने के लिए उपस्थित करना। पणामइ (हे ४, ३९), 'वंदिमो य पणयाण कल्लाणाइं पणामइ' (सुपा ३६३)।

पणाम सक [प्र+नमय्] नमाना। पणामेइ (महा)।

पणाम सक [उप+नी] उपस्थित करना। पणामेइ (प्राकृ ७१)।

पणाम पुं [प्रणाम] नमस्कार, नमन (दे ७, ६; भवि)।

पणामणिआ स्त्री [दे] स्त्रीविषयक प्रणय (दे ६, ३०)।

पणामय वि [अर्पक] देनेवाला (सूत्र १, २, २)।

पणामय वि [प्रणामक] १ नमानेवाला। २ शब्द आदि विषय (सूअ १, २, २; २७)।

पणामिअ वि [अर्पित] समर्पित, देने के लिए धरा हुआ (पाअ; कुमा); 'अपणामियंपि गहिअं कुसुमसरेण महुमासलच्छीए मुहं' (हेका ५०)।

पणामिअ वि [प्रणामित] नमाया हुआ (से ४, ३१; गा २२)।

पणामिअ वि [प्रणमित] नत, नमा हुआ; 'पणामिया सायरं' (स ३१६)।

पणायक } वि [प्रणायक] ले जानेवाला,
पणायग } 'निव्वाणगमणसग्गप्पणायकाइं' (पण्ह २, १; पण्ह २, १ टी; वव १)।

पणाल पुं [प्रणाल] मोरी, पानी आदि जाने का रास्ता (से १३, ५४; उर १, ५; ६)।

पणालिआ स्त्री [प्रणालिका] १ परम्परा (सूअ १, १३)। २ पानी जाने का रास्ता (कुमा)।

पणाली स्त्री [प्रणाली] मोरी, पानी जाने का रास्ता (गउड)।

पणाली स्त्री [प्रनाली] शरीर-प्रमाण लम्बी लाठी (पण्ह १, ३—पत्र ५४)।

पणास सक [प्र+नाशय्] विनाश करना। पणासेइ, पणासए (महा)।

पणास पुं [प्रणाश] विनाश, उच्छेदन (आवम)।

पणासण वि [प्रणाशन] विनाश करनेवाला; 'सव्वपावप्पणासणो' (पडि; कप्प)। स्त्री. °णी (श्रा ४६)।

पणासिय वि [प्रणाशित] जिसका विनाश किया गया हो वह (कप्प; भवि)।

पणिअ वि [दे] प्रकट, व्यक्त (दे ६, ७)।

पणिअ वि [प्रणीत] रचित (सूअनि ११२)।

पणिअ न [पणित] १ बेचने योग्य वस्तु (दे १, ७४; ६, ७; णाया १, १)। २ व्यवहार, लेन-देन, क्रय-विक्रय (भग १५; णाया १, ३—पत्र ६५)। ३ शर्त, होड़, एक तरह का जुआ (मास ६२)। °भूमि, °भूमी स्त्री [°भूमि, °भूमी] १ अनार्य देश-विशेष, जहाँ भगवान् महावीर ने एक चौमासा बिताया था (राज; कप्प)। २ विक्रेय वस्तु रखने का स्थान (भग १५)। °साला स्त्री [°शाला] हाट, दूकान (बृह २, निचू १६)।

पणिअ न [पण्य] विक्रेय वस्तु (सुपा २७५; औप; आचा)। °गिह, °घर न [°गृह] दूकान, हाट (निचू १२; आचा २, २, २)। °साला स्त्री [°शाला] °हाट, दूकान (आचा)। °वण पुं [°पण] दूकान, हाट (आचा)।

पणिअ वि [प्रणीत] सुन्दर, मनोहर। °भूमि स्त्री [°भूमि] मनोज्ञ भूमि (भग १५)।

पणिअट्ठ वि [पणितार्थ] चोर (दस ७, ३७)।

पणिअसाला स्त्री [पण्यशाला] बखार, अन्न या माल रखने का घिरा हुआ स्थान, गोदाम (आचा २, २, २, १०)।

पणिआ स्त्री [दे] करोटिका, सिरकी हड्डी, खोपड़ी (दे ६, ३)।

पणिंदि } वि [पञ्चेन्द्रिय] त्वक्, जीभ,
पणिंदिय } नाक, आँख और कान इन पाँचों इन्द्रियोंवाला प्राणी (कम्म २; ४, १०; १८; १९)।

पणिद्ध वि [प्रस्निग्ध] विशेष स्निग्ध (अणु २१५)।

पणिधाण देखो **पडिहाण** (अभि १८६; नाट.—विक्र ७२)।

पणिधि पुंस्त्री [प्रणिधि] माया, छल; 'पुणो पुणो पणिधि(? धी)ए हरित्ता उवहसे जणं' (सम ५०)। देखो **पणिहि**।

पणियत्थ वि [प्रणिवसित] पहना हुआ (औप)।

पणिल्लिअ वि [दे] हत, मारा हुआ (षड्)।

पणिवइअ वि [प्रणिपतित] नत, नमा हुआ; 'पणिवइयवच्छला णं देवाणुप्पिया! उत्तमपुरिसा' (णाया १, १६—पत्र २१६; स ११; उप ७६८ टी)।

पणिवइअ वि [प्रणिपतित] जिसको नमस्कार किया गया हो वह; 'नरपहूहिं पणिवइओ... वीरो' (धर्मवि ३७)।

पणिवय सक [प्रणि+पत्] नमन करना, वन्दन करना। पणिवयामि (कप्प; सार्ध ६१)।

पणिवाय पुं [प्रणिपात] वन्दन, नमस्कार (सुर ४, ६८; सुपा २८; २२२; महा)।

पणिहा सक [प्रणि+धा] १ एकाग्र चिन्तन करना, ध्यान करना। २ अपेक्षा करना। ३ अभिलाषा करना। ४ चेष्टा करना, प्रयत्न करना। संकृ. **पणिहाय** (णाया १, १०; भग १५)।

पणिहाण न [प्रणिधान] १ एकाग्र ध्यान, मनो-नियोग, अवधान (उत्त १६, १४; स ८७; प्रामा)। २ प्रयोग, व्यापार, चेष्टा; 'तिविहे पणिहाणे पण्णत्ते; तं जहा—मणपणिहाणे, वयपणिहाणे, कायपणिहाणे' (ठा ३, १, ४, १; भग १८; उवा)। ३ अभिलाष, कामना;

'संकाथाणाणि सव्वाणि वज्जेज्जा पणिहाणवं' (उत्त १६, १४)।

पणिहाय देखो **पणिहा**।

पणिहि पुंस्त्री [प्रणिधि] १ एकाग्रता, अवधान (पण्ह २, ५)। २ कामना, अभिलाष (स ८७)। ३ पुं. चरपुरुष, दूत (पण्ह १, ३; पाअ; सुर ३, ४; सुपा ४६२)। ४ चेष्टा, व्यापार (दसनि १)। ५ माया, कपट (आव ४)। ६ व्यवस्थापन (राज)।

पणिहि पुंस्त्री [प्रणिधि] बड़ा निधि (दस ८, १)।

पणिहिय वि [प्रणिहित] १ प्रयुक्त, व्यापृत (दसनि ८)। २ व्यवस्थित (आव ४)।

पणीअ वि [प्रणीत] १ निर्मित, कृत, रचित; 'वइसेसियं पणीयं' (विसे २५०७; सुर १२, ६२; सुपा २८; १६७)। २ स्निग्ध, घृत आदि स्नेह की प्रचुरतावाला; 'विभूसा इत्थीसंसग्गी पणीयरसभोयणं' (दस ८, ५७; उत्त १६, ७; ओघ १५० भा; औप; बृह ५)। ३ निरूपित, प्ररूपित, आख्यात (अणु; आव ३)। ४ मनोज्ञ, सुन्दर (भग ५, ४)। ५ सम्यग् आचरित (सूअ १, ११)।

पणीहाण देखो **पणिहाण** (आत्म ८; हित १५)।

पणुल्ल देखो **पणोल्ल**। वकृ. **पणुल्लेमाण** (पि २२४)।

पणुल्लिअ देखो **पणोल्लिअ** (पाअ; सुपा २४; प्रासू १६६)।

पणुवीस स्त्रीन [पञ्चविंशति] संख्या-विशेष, पचीस, बीस और पाँच। २ जिनकी संख्या पचीस हों वे (स १०६; पि १०४; २७३)।

पणुवीसइम वि [पञ्चविंशतितम] पचीसवाँ, २५ वाँ (विसे ३१२०)।

पणोल्ल सक [प्र + णुद्] १ प्रेरणा करना। २ फेंकना। ३ नाश करना। पणोल्लइ (प्राप्र); 'पावाइं कम्माइं पणोल्लयामो' (उत्त १२, ४०)। कवकृ. **पणोल्लिज्जमाण** (णाया १, १; पण्ह १, ३)। संकृ. **पणोल्ल** (सूअ १, ८)।

पणोल्लण न [प्रणोदन] प्रेरणा (ठा ८; उप पृ ३४१)।

पणोल्लय वि [प्रणोदक] प्रेरक (आचा)।

पणोल्लि वि [प्रणोदिन्] १ प्रेरणा करनेवाला। २ पुं. प्राजन दण्ड, बैल इत्यादि हाँकने की लकड़ी (पण्ह १, ३—पत्र ५४)।

पणोल्लिअ वि [प्रणोदित] प्रेरित (औप; पि २४४)।

पण्ण वि [प्रज्ञ] जानकार, दक्ष, निपुण (उत्त १, ८; सूअ १, ६)।

पण्ण वि [प्राज्ञ] १ प्रज्ञावाला, बुद्धिमान्, दक्ष (हे १. ५६; उप ६२३)। २ वि. प्राज्ञ-सम्बन्धी (सूअ २, १)।

पण्ण न [पर्ण] पत्र पत्ता, पत्तो (कुमा)।

पण्ण देखो **पणिअ** = पण्य (नाट)।

पण्ण स्त्रीन [दे] पचास, ५०। स्त्री. °**ण्णा** (षड्)।

पण्ण देखो **पंच**, **पण** (पि २७३; ४४०; ४४५)। °**रस** त्रि. ब. [°दशन्] पनरह, १५ (सम २६; उवा)। °**रसम** वि [°दश] पनरहवाँ (उवा)। °**रसी** स्त्री [°दशी] १ पनरहवीं। २ तिथि-विशेष (पि २७३; कप्प)। °**रह** देखो °**रस** (प्राप्र)। °**रह** वि [°दश] पनरहवाँ, १५ वाँ (प्राप्र)। देखो **पन्न** = पंच।

पण्ण वि [पार्ण] पर्ण सम्बन्धी, पत्ते का, पत्ती से संबन्ध रखनेवाला (राज)।

पण्ण° देखो **पण्णा°**। °**व** वि [°वन्] प्रज्ञावाला (उप ६१२ टी)।

पण्णई [पन्नगा] भगवान् धर्मनाथ की शासनदेवी (पव २७)।

पण्णग पुं [पन्नग] सर्प, साँप (उप ७२८ टी)। °**असन** पुं [°शन] गरुड पक्षी (पिंग)। देखो **पन्नय**।

पण्णग वि [दे. पन्नक] दुर्गन्धी। °**तिल** पुं [°तिल] दुर्गन्धी तिल (राज)।

पण्णट्ठि स्त्री [पञ्चषष्टि] पैंसठ, साठ और पाँच, ६५ (कप्प)।

पण्णत्त वि [प्रज्ञप्त] निरूपित, उपदिष्ट, कथित (औप; उवा; ठा ३, १; ४, १; २; विपा १, १; प्रासू १२१)। २ प्रणीत, रचित (आवम; चंद २०; भग ११, ११; औप)।

पण्णत्ति स्त्री [प्रज्ञप्ति] १ विद्यादेवी-विशेष (जं १)। २ जैन आगम ग्रंथ-विशेष, सूर्यप्रज्ञप्ति आदि उपांग-ग्रंथ (ठा ३, १; ४, १)। ३ विद्या-विशेष (आचू १)। ४ प्ररूपण, प्रतिपादन (उवा; वव ३)। °**खेवणी** स्त्री [°क्षेपणी] कथा का एक भेद (ठा ४, २)। °**पक्खेवणी** स्त्री [°प्रक्षेपणी] कथा का एक भेद (राज)।

पण्णपण्णिय पुं [पण्णपर्णि] व्यन्तर देवों की एक जाति (इक)।

पण्णय देखो **पण्णग** (से ४, ४)।

पण्णव सक [प्र + ज्ञापय्] प्ररूपण करना, उपदेश करना, प्रतिपादन करना। पण्णवेइ, पण्णवेंति (उवा; भग)। वकृ. **पण्णवयंत** **पण्णवेमाण** (भग; पि ५५१)। कृ. **पण्णवणिज्ज** (द्र ७)।

पण्णवग वि [प्रज्ञापक] प्ररूपक, प्रतिपादक (विसे ५४६)।

पण्णवण न [प्रज्ञापन] १ प्ररूपण, प्रतिपादन। २ शास्त्र, सिद्धान्त (विसे ८६४)।

पण्णवण वि [प्रज्ञापन] ज्ञापक, निरूपक (संबोध ५)।

पण्णवणा स्त्री [प्रज्ञापना] १ प्ररूपणा, प्रतिपादन (णाया १, ६; उवा)। २ एक जैन आगम ग्रंथ, 'प्रज्ञापना' सूत्र (भग)।

पण्णवणिज्ज देखो **पण्णव**।

पण्णवणी स्त्री [प्रज्ञापनी] भाषा-विशेष, अर्थ-बोधक भाषा (भग १०, ३)।

पण्णवण्ण स्त्रीन [दे. पञ्चपञ्चाशत्] पचपन, पचास और पाँच (दे ६, २७; षड्)।

पण्णवय देखो **पण्णवग** (विसे ५४७)।

पण्णवयंत देखो **पण्णव**।

पण्णविय वि [प्रज्ञापित] प्रतिपादित, प्ररूपित (अणु; उत्त २६)।

पण्णवेत्तु वि [प्रज्ञापयितृ] प्रतिपादक, प्ररूपण करनेवाला (ठा ७)।

पण्णवेमाण देखो **पण्णव**।

पण्णा सक [प्र + ज्ञा] १ प्रकर्ष से जानना। २ अच्छी तरह जानना। कर्म. पण्णायंति (भग)।

पण्णा देखो **पण्ण** (दे)।

पण्णा स्त्री [प्रज्ञा] मनुष्य की दस अवस्थाओं में पाँचवीं अवस्था (तंदु १६)।

पण्णा स्त्री [प्रज्ञा] १ बुद्धि, मति (उप १५४; ७२८ टी; निचू १)। २ ज्ञान (सूअ १,

१२)। °परिसह, °परीसह पुं [°परिषह, °परीषह] १ बुद्धि का गर्व न करना। २ बुद्धि के अभाव में खेद न करना (भग ८, ८; पव ८६)। °मय पुं [°मद] बुद्धि का अभिमान (सूत्र १, १३)। °वंत वि [°वत्] ज्ञानवान् (राज)।

पण्णाग वि [प्रज्ञ] विद्वान् (पंचा १७, २७)।

पण्णाड देखो पन्नाड पएणाडइ (दे ६, २६)।

पण्णाण न [प्रज्ञान] १ प्रकृष्ट ज्ञान। २ सम्यग् ज्ञान (सम ५१)। ३ आगम, शास्त्र (आचा)। °व वि [°वत्] १ ज्ञानवान्। २ शास्त्रज्ञ (आचा)।

पण्णाराह (अप) त्रि. ब. [पञ्चदशन्] पनरह (पिंग)।

पण्णावीसा स्त्री [पञ्चविंशति] पचीस, बीस और पांच, २५ (षड्)।

पण्णास स्त्रीन [दे. पञ्चाशत्] पचास, ५० (दे ६, २७; षड्; पि २७३; ४४५; कुमा)। देखो पन्नास।

पण्णासग त्रि [पञ्चाशक] पचास वर्ष की उम्र का (तंदु १७)।

पण्णुवीस देखो पणुवीस (स १४६)।

पण्ह पुंस्त्री [प्रश्न] प्रश्न, पृच्छा (हे १, ३५; कुमा)। स्त्री. °ण्हा (हे १, ३५)। (हे १; ३५)। °वाहण न [°वाहन] जैन मुनि-गण का एक कुल (ती ३८)। °वागरण न [°व्याकरण] ग्यारहवाँ जैन अंग-ग्रन्थ (पएह २, ५; ठा १०; विपा १, १; सम १)। देखो पसिण।

पण्हअ अक [प्र + स्नु] झरना, टपकना; 'एक्को पएहग्रइ थणो' (गा ४०६; ४६२ अ)।

पण्हअ, पण्हव पुं [दे. प्रस्नव] १ स्तन–धारा, स्तन से दूध का झरना (दे ६, ३; पि २३१; राज; अंत ७; षड्। २ झरन, टपकना; 'दिट्ठिपएहव' (पिंड ४८७)।

पण्हव पुं [पह्लव] १ अनार्य देश-विशेष। २ वि. उस देश का निवासी (पएह १, १—पत्र १४)।

पण्हवण न [प्रस्नवन] क्षरण, झरना (विपा १, २)।

पण्हविअ देखो पण्हुअ (दे ६, २५)।

पण्हा देखो पण्ह।

पण्हि पुंस्त्री [पार्ष्णि] फीली का अधोभाग, गुल्फ की नीचला हिस्सा, एड़ी (पएह १, ३; दे ७, ६२)।

पण्हिया स्त्री [प्रश्निका] एड़ी, गुल्फ का अधोभाग; 'मेलित्तु पएिहयाओ चरणे वित्था-रिऊण बाहिरओ' (चेइय ४८६)।

पण्हुअ वि [प्रस्नुत] १ क्षरित, झरा हुआ। २ जिसने झरने का प्रारम्भ किया हो वह; 'पएहुयपयोहराओ' (पउम ७६, २०; हे २, ७५)।

पण्हुइर वि [प्रस्नोतृ] झरनेवाला, 'हत्थप्फंसेण जरग्गवीवि पएहग्रइ दोहग्रगुणेण। अवलोअणपएहुइरिं पुत्तअ पुएणेहि पाविहिसि' (गा ४६२)।

पण्होत्तर न [प्रश्नोत्तर] सवाल-जवाब (सुर १६, ४१; कप्पू)।

पतणु देखो पयणु (राज)।

पतार सक [प्र + तारय्] ठगना। संकृ. पतारिअ (अभि १७१)।

पतारग वि [प्रतारक] वञ्चक, ठग (धर्मसं १४७)।

पतिण्ण, पतिन्न वि [प्रतीर्ण] पार पहुँचा हुआ, निस्तीर्ण (राज; पएह २, १—पत्र ६६)।

पतुण्ण, पतुन्न न [प्रतुन्न] वल्कल का बना हुआ वस्त्र (आचा २, ५, १, ७)।

पतेरस, पतेलस वि [प्रत्रयोदश] प्रकृष्ट तेरहवाँ। °वास न [°वर्ष] १ प्रकृष्ट तेरहवाँ वर्ष। २ प्रकृत तेरहवाँ वर्ष। ३ प्रस्थित तेरहवाँ वर्ष (आचा)।

पत्त वि [प्राप्त] मिला हुआ, पाया हुआ (कप्प; सुर ४, ७०; सुपा ३५७; जी ४४; दं ४६; प्रासू ३१; १६२; १८२; गा २४१)। °काल, °याल न [°काल] १ चैत्य-विशेष (राज)। २ वि. अवसरोचित (स ४६०)।

पत्त न [पत्र] १ पत्ती, पत्ता, दल, पर्ण (कप्प; सुर १, ७२; जी १०; प्रासू ६२)। २ पक्ष पंख, पाँख (णाया १, १—पत्र २४)। ३ जिसपर लिखा जाता है वह, कागज, पन्ना (स ६२; सुर १, ७२; से २, १७३)। °च्छेज्ज न [°च्छेद्य] कला-विशेष (औप; स ६५)। °मंत वि [°वत्] पत्रवाला (णाया १, १)। °रह पुं [°रथ] पक्षी (पाअ)। °लेहा स्त्री [°लेखा] चन्दनादि से पत्र के आकृतिवाली रचना-विशेष, भूषा का एक प्रकार (अजि २८)। °वल्ली स्त्री [°वल्ली] १ पत्रवाली लता। २ मुँह पर चन्दन आदि से की जाती पत्र-श्रेणी-तुल्य रचना (कुप्र ३६५)। °विंट न [°वृन्त] पत्र का बन्धन (पि ५३)। °विंटिय वि [°वृन्तक, °वृन्तीय] त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष, पत्र वृन्त में उत्पन्न होता एक प्रकार का त्रीन्द्रिय जन्तु (पएण १—पत्र ४५)। °विच्छुय पुं [°वृश्चिक] जीव-विशेष, एक तरह का वृश्चिक, चतुरिन्द्रिय जीवों की एक जाति (जीव १)। °वेंट देखो °विंट (पि ५३)। °सगडिआ स्त्री [°शकटिका] पत्तों से भरी हुई गाड़ी (भग)। °समिद्ध वि [°समृद्ध] प्रभूत पत्तेवाला (पाअ)। °हार पुं [°हार] त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष (पएण १—पत्र ४५; उत्त ३६, १३८)। °हार पुं [°हार] पत्ती पर निर्वाह करनेवाला वानप्रस्थ (औप)।

पत्त न [पात्र] १ भाजन (कुमा; प्रासू ३६)। २ आधार, आश्रय, स्थान (कुमा)। ३ दान देने योग्य गुणी लोक (उप ६४८ टी; महा)। ४ लगातार बत्तीस उपवास (संबोध ५८)। °बंध पुं [°बन्ध] पात्रों को बाँधने का कपड़ा (ओघ ६६८)। देखो पाय = पात्र।

पत्त वि [प्रात्त] प्रसारित (कप्प)।

पत्तइअ वि [प्रत्ययित] विश्वस्त (भग)।

पत्तइअ वि [पत्रकित] १ अल्प पत्रवाला। २ कुत्सित पत्रवाला (णाया १, ७—पत्र ११६)।

पत्तउर पुं [दे] वनस्पति-विशेष, एक प्रकार का गाछ (पएण १—पत्र ३१)।

पत्तच्छेज्ज न [पत्रच्छेद्य] बाण से पत्ती बेधने की कला (जं २ टी पत्र १३७)। २ नक्काशी का काम, खोदने का काम (आचा २, १२, १)।

पत्तट्ठ वि [दे प्राप्तार्थ] १ बहु-शिक्षित, विद्वान्, अति कुशल (दे ६, ६८; सुर १,

८१; सुपा १२६, भग १४, १; पाअ)। २ समर्थ (जीवस २८५)।

पत्तट्ठ वि [दे] सुन्दर, मनोहर (दे ६, ६८)।

पत्तण देखो पट्टण (राज)।

पत्तण न [दे. पत्त्रण] १ इषु-फलक, बाण का फलक। २ पुंख, बाण का मूल भाग (दे ६, ६४; गा १०००)।

पत्तणा स्त्री [दे. पत्त्रणा] १—२ ऊपर देखो (गउड; से १५, ७३)। ३ पुंख में की जाती रचना-विशेष (से ७, ५२)।

पत्तणा स्त्री [प्रापणा] प्राप्ति (पंचू ४)।

पत्तपसाइआ स्त्री [दे] पत्तियों की एक की पगड़ी, जिसे भील लोग पहनते हैं (दे ६, २)।

पत्तपिसालस न [दे] ऊपर देखो (दे ६, २)।

पत्तय न [पत्रक] एक प्रकार का गेय (ठा ४, ४)।

पत्तय देखो पत्त (महा)।

पत्तरक न [दे. प्रतरक] आभूषण-विशेष (पण्ह २, ५—पत्र १४६)।

पत्तल वि [दे] १ तीक्ष्ण, तेज (दे ६, १४), 'नयणाइं समाणियपत्तलाइं
परपुरिसजीवहरणाइं।
असियसियाइं व मुद्धे खग्गा
इव कं न मारंति ?'
(वज्जा ६०)। २ पतला, कृश (दे ६, १४; वज्जा ४६)।

पत्तल वि [पत्रल] १ पत्र-समृद्ध, बहुत पत्तीवाला (पाअ; से १, ६२; गा ५३२; ६३५; दे ६, १४)। २ पक्ष्मवाला (औप; जं २)।

पत्तल न [पत्र] पत्ती, पर्ण (हे २, १७३; प्रामा; सण; हे ४, ३८७)।

पत्तलण न [पत्रलन] पत्र-समृद्ध होना, पत्र-बहुल होना; 'वाउलिआपरिसोसणकुडंगपत्तलणसुलहसंकेअ' (गा ६२६)।

पत्तली स्त्री [दे] कर-विशेष, एक प्रकार का राज-देय; 'गिण्हह तद्देसपत्तलिं झत्ति' (सुपा ४६३)।

पत्तहारय वि [पत्रहारक] पत्तों को बेचने का काम करनेवाला (अणु १४६)।

पत्ताण सक [दे] पताना, मिटाना; 'पुच्छउ अन्नु कोवि जो जाणइ सो तुम्हह विवाउ पत्ताणइ' (भवि), पत्ताणहि (भवि)।

पत्तामोड पुंन [आमोटपत्र] तोड़ा हुआ पत्र, 'दब्भे य कुसे य पत्तामोडं च गेण्हइ' (अंत ११)।

पत्ति स्त्री [प्राप्ति] लाभ (दे १, ४२; उप २२६; चेइय ८६४)।

पत्ति पुं [पत्ति] १ सेना-विशेष, जिसमें एक रथ, एक हाथी, तीन घोड़े और पाँच पैदल हों। २ पैदल चलनेवाली सेना (उप ७२८ टी)।

पत्ति, **पत्तिअ** सक [प्रति + इ] १ जानना। २ विश्वास करना। ३ आश्रय करना। पत्तिअइ, पत्तियंति, पत्तिअसि, पत्तिआमि (से १३, ४४; पि ४८७; से ११, ६०; भग)। पत्तिएज्जा, पत्तिअ, पत्तिहि, पत्तिसु (राय; गा २१६; ६६६; पि ४८७)। वकृ. **पत्तिअंत**, **पत्तियमाण** (गा २१६, ६७८; आचा २, २, २, १०)। संकृ. **पडियच्च**, **पत्तियाइत्ता** (सूअ १, ६, २७; उत्त २६; १)।

पत्तिअ वि [पत्रित] संजात-पत्र, जिसमें पत्र उत्पन्न हुए हो वह (णाया १, ७; ११—पत्र १७१)।

पत्तिअ वि [प्रतीति, प्रत्ययित] प्रतीतिवाला, विश्वस्त (ठा ६—पत्र ३५५; कप्प; कस)।

पत्तिअ न [प्रीतिक] प्रीति, स्नेह (ठा ४, ३; ठा ६—पत्र ३५५)।

पत्तिअ पुंन [प्रत्यय] प्रत्यय, विश्वास (ठा ४, ३—पत्र २३५; धर्म २)।

पत्तिअ न [पत्रिक] मरकत-पत्र (कप्प)।

पत्तिआ स्त्री [पत्रिका] पत्र, पर्ण, पत्ती (कुमा)।

पत्तिआअ देखो पत्तिअ = प्रति + इ। पत्तिआअइ (प्राकृ ७५), पत्तिआअंति (पि ४८७)।

पत्तिआव सक [प्रति + आयय्] विश्वास कराना, प्रतीति कराना। पत्तिआवेइ (भास २३)।

पत्तिग देखो पत्तिअ = प्रीतिक (पंचा ७, १०)।

पत्तिज्ज देखो पत्तिअ = प्रति + इ। पत्तिज्जसि, पत्तिज्जामि (पि ४८७)।

पत्तिज्जाव देखो पत्तिआव। पत्तिज्जावइ (सुपा ३०२)। पत्तिज्जावेमि (धर्मवि १३४)।

पत्तिसमिद्ध वि [दे] तीक्ष्ण (दे ६, १४)।

पत्ती स्त्री [दे] पत्तों की बनी हुई एक तरह की पगड़ी जिसे भील लोग सिर पर पहनते हैं (दे ६, २)।

पत्ती स्त्री [पत्नी] स्त्री, भार्या (उप पृ १६३; आप ६६; महा; पाअ)।

पत्ती स्त्री [पात्री] भाजन, पात्र (उप ६२२; महा; धर्मवि १२६)।

पत्तुं देखो पाव = प्र + आप्।

पत्तुवगद (शौ) वि [प्रत्युपगत] १ सामने गया हुआ। २ वापस गया हुआ (नाट.—विक्र २३)।

पत्तेअ, **पत्तेग** न [प्रत्येक] १ हरएक, एक एक (हे २, १०; कुमा; निचू १; पि ३४६)। २ एक की तरफ, एक के सामने; 'पत्तेयं पत्तेयं वणसंडपरिक्खित्ताओ' (जीव ३)। ३ न. कर्म-विशेष, जिसके उदय से एक जीव का एक अलग शरीर होता है; 'पत्तेयतणू 'पत्तेउदएणं'(कम्म १,५०)। ४ पृथक् पृथक्, अलग अलग (कम्म १, ५०)। ५ पुं. वह जीव जिसका शरीर अलग हो, एक स्वतन्त्र शरीरवाला जीव; 'साहारणपत्तेआ वणस्सइजीवा दुहा सुए भणिया' (जी ८)। °**णाम** न [°नामन्] देखो ऊपर का तीसरा अर्थ (राज)। °**निगोयय** पुं [°निगोदक] जीव-विशेष (कम्म ४, ८२)। °**बुद्ध** पुं [°बुद्ध] अनित्यतादि भावना के कारणभूत किसी एक वस्तु से परमार्थ का ज्ञान जिसको उत्पन्न हुआ हो ऐसा जैन मुनि (महा; नव ४३)। °**बुद्धसिद्ध** पुं [°बुद्धसिद्ध] प्रत्येकबुद्ध होकर मुक्ति को प्राप्त जीव (धर्म २)। °**रस** वि [°रस] विभिन्न रसवाला (ठा ४, ४)। °**सरीर** वि [°शरीर] १ विभिन्न शरीरवाला; 'पत्तेयसरीराणं तह होंति सरीरसंघाया' (पंच ३)। २ न. कर्म-विशेष, जिसके उदय से एक जीव का एक विभिन्न शरीर

होता है (पराह १, १)। °सरीरनाम न [°शरीरनामन्] वही पूर्वोक्त अर्थ (सम ६७)।

पत्तेय वि [प्रत्येक] बाह्य कारण (एंदि १३०, १३१ टी)।

पत्थ सक [प्र + अर्थय्] १ प्रार्थना करना। २ अभिलाषा करना। ३ अटकाना, रोकना। पत्थेइ, पत्थेंति (उव; औप)। कर्म. पत्थिज्जसि (महा)। वकृ. पत्थंत, पत्थिंत, पत्थेअमाण (नाट—मालवि २५; सुपा २१३; प्रासू १२०); 'कामे पत्थेमाणा अकामा जंति दुग्गइं' (उप ३५७ टी)। कवकृ. पत्थिज्जंत, पत्थिज्जमाण (गा ४००; सुर १, २०; से ३, ३३; कप्प)। कृ. पत्थ, पत्थणिज्ज, पत्थेयव्व (सुपा ३७०; सुर १, ११६; सुपा १४८; पराह २, ४)।

पत्थ पुं [पार्थ] १ अर्जुन, मध्यम पाराडव (स ६१२; वेणी १२६; कुमा)। २ पाञ्चाल देश के एक राजा का नाम (पउम ३७, ८)। ३ भद्दिलपुर नगर का एक राजा (सुपा ६२६)।

पत्थ पुं [प्रार्थ] १ प्रार्थन, प्रार्थना (राय)। २ दो दिनों का उपवास (संबोध ५८)।

पत्थ देखो पच्छ = पथ्य (गा ८१४; पउम १७, ६४; राज)।

पत्थ देखो पत्थ = प्र + अर्थय्।

पत्थ पुं [प्रस्थ] १ कुडव का एक परिमाण (बृह ३; जीवस ८८; तंदु २६)। २ सेतिका, एक कुडव का परिमाण (उप पृ ६६); 'पत्थगा उ जे पुरा आसी हीणमाणा उ तेधुणा' (वव १)।

पत्थंत देखो पत्थ = प्र + अर्थय्।

पत्थंत देखो पत्था।

पत्थग देखो पत्थय (राज)।

पत्थड पुं [प्रस्तर] १ रचना-विशेषवाला समूह (ठा ३, ४—पत्र १७६)। २ भवनों के बीच का अन्तराल भाग (पराण २, सम २५)।

पत्थड वि [प्रस्तृत] १ बिछाया हुआ। २ फैला हुआ (भग ६, ८)।

पत्थण न [प्रार्थन] प्रार्थना (महा; भवि)।

पत्थणया } स्त्री [प्रार्थना] १ अभिलाषा,
पत्थणा } वाञ्छा (आव ४)। २ याचना, माँग। ३ विज्ञप्ति, निवेदन (भग १२, ५; सुर १, २; सुपा २६६; प्रासू २१)।

पत्थय देखो पत्थ = पथ्य (एाया १, १)।

पत्थय वि [प्रार्थक] अभिलाषा करनेवाला (सूअ १, २, २, १६; स २५३)।

पत्थय देखो पत्थ = प्रस्थ (उप १७६ टी; औप)।

पत्थयण न [पथ्यदन] शम्बल, पाथेय, मार्ग में खाने का खुराक, कलेवा (एाया १, १५; स १३०; उर ८, ७; सुपा ६२४)।

पत्थर सक [प्र + स्तृ] १ बिछाना। २ फैलाना। संकृ. पत्थरेत्ता (कस; ठा ६)।

पत्थर पुं [प्रस्तर] पत्थर, पाषाण (औप; उव; पउम १७, ३६; सिरि ३३२); 'पत्थरेणाहओ कीवो पत्थरं डक्कुमिच्छई। मिगारिओ सरं पप्प सरुप्पत्तिं विमग्गई' (सुर ६, २०७)।

पत्थर न [दे] पाद-ताडन, लात (षड्)।

पत्थर देखो पत्थार (प्राप्र; संक्षि २)।

पत्थरण न [प्रस्तरण] बिछौना, 'खट्टापत्थरणयं तहा एगं' (धर्मवि १४७)।

पत्थरभल्लिअ न [दे] कोलाहल करना (दे ६, ३६)।

पत्थरा स्त्री [दे] चरण-घात, लात (दे ६, ८)।

पत्थरिअ पुं [दे] पल्लव, कोपल (दे ६,२०)।

पत्थरिअ वि [प्रस्तृत] बिछाया हुआ, 'पत्थरिअं अत्थुअं' (पाअ)।

पत्थव देखो पत्थाव (हे १, ६८; कुमा; पउम ५, २१६)।

पत्था अक [प्र + स्था] प्रस्थान करना, प्रवास करना। वकृ. पत्थंत (से ३, ५७)।

पत्थाण न [प्रस्थान] प्रयाण, गमन (अभि ८१; अजि ६)।

पत्थार पुं [प्रस्तार] १ विस्तार (उवर ६६)। २ तृणवन। ३ पल्लवादि-निर्मित शय्या। ४ पिंगल-प्रसिद्ध प्रक्रिया-विशेष (प्राप्र)। ५ प्रायश्चित्त की रचना-विशेष (ठा ६—पत्र ३७१; कस)। ६ विनाश (पिंड ५०१; ५११)।

पत्थारी स्त्री [दे] १ निकर, समूह (दे ६, ६६)। २ शय्या, बिछौना, गुजराती में 'पथारी' (दे ६, ६६; पाअ; सुपा ३२०)।

पत्थाव सक [प्र + स्तावय्] प्रारंभ करना। वकृ. पत्थावअंत (हास्य १२२)।

पत्थाव पुं [प्रस्ताव] १ अवसर। २ प्रसंग, प्रकरण (हे १, ६८; कुमा)।

पत्थिअ वि [प्रस्थित] १ जिसने प्रयाण किया हो वह (से २, १६; सुर ४, १६८)। २ न. प्रस्थान, गति, चाल (अजि ६)।

पत्थिअ वि [प्रार्थित] १ जिसके पास प्रार्थना की गई हो वह। २ जिस चीज की प्रार्थना की गई हो वह (भग; सुर ६, १८; १६, ६; उव)।

पत्थिअ वि [दे] शीघ्र, जल्दी करनेवाला (दे ६, १०)।

पत्थिअ वि [प्रार्थिक] प्रार्थी, प्रार्थना करनेवाला (उव)।

पत्थिअ वि [प्रास्थित] विशेष आस्थावाला, प्रकृष्ट श्रद्धावाला (उव)।

पत्थिअ° } स्त्री [दे] बाँस का बना हुआ
पत्थिआ } भाजन-विशेष (ओघ ४७६)। °पिडग, °पिडय न [°पिटक] बाँस का बना हुआ भाजन-विशेष (विपा १, ३)।

पत्थिद देखो पत्थिअ = प्रस्थित, प्रार्थित (प्राकृ २५)।

पत्थिव पुं [पार्थिव] १ राजा, नरेश (एाया १, १६; पाअ)। २ वि. पृथिवी का विकार (राजा)।

पत्थी स्त्री [दे. पात्री] पात्र, भाजन; 'अंध-करबोरपत्थि व माउआ मह पई विलुंपंति' (गा २४० अ)।

पत्थोण न [दे] १ स्थूल वस्त्र, मोटा कपड़ा। २ वि. स्थूल, मोटा (दे ६, ११)।

पत्थुय वि [प्रस्तुत] १ प्रकरण-प्राप्त, प्राकरणिक (सुर ३, १६६; महा)। २ प्राप्त, लब्ध (सूअ १, ४, १, १७)।

पत्थुर देखो पत्थर = प्र + स्तृ। संकृ. पत्थुरेत्ता (कस)।

पत्थेअमाण }
पत्थेंत }
पत्थेमाण } देखो पत्थ = प्र + अर्थय्।
पत्थेयव्व }

पत्थोउ वि [प्रस्तोतृ] १ प्रस्ताव करनेवाला। २ प्रवर्त्तक। स्त्री. °त्थोई (पण्ह १, ३—पत्र ४२)।

पथम (पै) देखो पढम (पि १९०)।

पद देखो पय=पद (भग; स्वप्न १५; हे ४, २७०; पण्ह २, १; नाट—शकु ८१)।

पदअ सक [गम्] जाना, गमन करना। पदअइ (हे ४, १६२)। पदअंति (कुमा)।

पदंसिअ वि [प्रदर्शित] दिखलाया हुआ, बतलाया हुआ (श्रा ३०)।

पदक्खिण वि [प्रदक्षिण] १ जिसने दक्षिण की तरफ से लेकर मण्डलाकार भ्रमण किया हो वह। २ न. दक्षिणावर्त्त भ्रमण; 'पदक्खिणीकरअंतो भट्टारं' (प्रयौ ३५)। देखो **पदाहिण**।

पदक्खिण सक [प्रदक्षिणय्] प्रदक्षिणा करना, दक्षिण से लेकर मण्डलाकार भ्रमण करना। हेकृ. **पदक्खिणेउं** (पउम ४८, १११)।

पदक्खिणा स्त्री [प्रदक्षिणा] दक्षिण की ओर से मण्डलाकार भ्रमण (नाट—चैत ३८)।

पदण न [पदन] प्रत्यायन, प्रतीति कराना (उप ८८३)।

पदण (शौ) न [पतन] गिरना (नाट—मालती ३७)।

पदम (शौ) देखो पउम (नाट—मृच्छ १३९)।

पदय देखो पयय=पदग, पदक, पतग, पतंग (इक)।

पदरिसिय देखो पदंसिअ (भवि)।

पदहण न [प्रदहन] संताप, गरमी (कुमा)।

पदाइ वि [प्रदायिन्] देनेवाला (नाट—विक्र ८)।

पदाण न [प्रदान] दान, वितरण (औप; अभि ४५)।

पदादि (शौ) पुं [पदाति] पैदल चलनेवाला सैनिक (प्रयौ १७; नाट—वेणी ६६)।

पदायग वि [प्रदायक] देनेवाला (विसे ३२००)।

पदाव देखो पयाव (गा ३२६)।

पदाहिण वि [प्रदक्षिण] प्रकृष्ट दक्षिण, प्रकर्ष से दक्षिण दिशा में स्थित (जीव ३)। देखो पदक्खिण।

पदिकिदि (शौ) देखो पडिकिदि (मा १०; नाट—विक्र २१)।

पदित्त देखो पलित्त (राज)।

पदिस° स्त्री [प्रदिश्] विदिशा, ईशान आदि कोण; 'तसंति पाणा पदिसो दिसासु य' (आचा)।

पदिस्सा देखो पदेक्ख।

पदीव सक [प्र+दीपय्] १ जलाना। २ प्रकाश करना। पदीवेसि (पि २४४)। वकृ. पदीवेंत (पउम १०२, १०)।

पदीव देखो पईव=प्रदीप (नाट—मृच्छ ३०)।

पदीविआ स्त्री [प्रदीपिका] छोटा दिया (नाट—मृच्छ ५१)।

पदुग्ग पुंन [प्रदुर्ग] कोट, किला (आचा, २, १०, २)।

पदुट्ठ वि [प्रद्विष्ट, प्रदुष्ट] विशेष द्वेष को प्राप्त (उत्त ३२; बृह ३)।

पदुब्भेइय न [पदोद्भेदक] पद-विभाग और शब्दार्थ मात्र का पारायण (राज)।

पदूमिय वि [प्रदावित, प्रदून] अत्यन्त पीड़ित (बृह ३)।

पदूस सक [प्र+द्विष्] द्वेष करना। पदूसंति (पंचा २, ३५)।

पदूसणया स्त्री [प्रद्वेषणा, प्रदूषणा] द्वेष, मात्सर्य (उप ४८९)।

पदेक्ख सक [प्र+दृश्] प्रकर्ष से देखना। पदेक्खइ (भवि)। संकृ. 'पदिस्सा य दिस्सा वयमाणा' (भग १८, ८; पि ३३४)।

पदेस देखो पएस=प्रदेश (भग)।

पदेस पुं [प्रद्वेष] द्वेष (धर्मसं ९७)।

पदेसिअ वि [प्रदेशित] प्ररूपित, प्रतिपादित (आचा)।

पदोस देखो पओस=दे, प्रद्वेष (अंत १३; निचू १)।

पदोस देखो पओस=प्रदोष (राज)।

पद्द न [दे] १ ग्राम-स्थान (दे ६, १)। २ छोटा गाँव (पाअ)।

पद्द न [पद्य] श्लोक, वृत्त, काव्य (प्राकृ २१)।

पद्देस देखो पदेस=प्रद्वेष (सूअ १, १६, ३)।

पद्धइ स्त्री [पद्धति] १ मार्ग, रास्ता (सुपा १८६)। २ पंक्ति, श्रेणी (ठा २, ४)। ३ परिपाटी, क्रम (आवम)। ४ प्रक्रिया, प्रकरण (वज्जा २)।

पद्धंस पुं [प्रध्वंस] ध्वंस, नाश। °**ाभाव** पुं [°ाभाव] अभाव-विशेष, वस्तु के नाश होने पर उसका जो अभाव होता है वह (विसे १८३७)।

पद्धर वि [दे] ऋजु, सरल, सीधा (दे ६, १०)। २ शीघ्र; गुजराती में 'पाधरुं'; 'पद्धरपएहिं सुद्दे पचारेइ' (सिरि ४३५)।

पद्धल वि [दे] दोनों पार्श्वों में अप्रवृत्त (षड्)।

पद्धार वि [दे] जिसका पूँछ कट गया हो वह, पूँछ-कटा (दे ६, १३)।

पधाइय देखो पधाविय (भवि)।

पधाण देखो पहाण (नाट—मृच्छ २०५)।

पधार देखो पहार=प्र+धारय्। भूका. पधारेत्थ (औप; णाया १, २—पत्र ८८)।

पधाव सक [प्र+धाव्] दौड़ना, अधिक वेग से जाना। संकृ. **पधाविअ** (नाट)।

पधावण न [प्रधावन] १ दौड़, वेग से गमन। २ कार्य की शीघ्र सिद्धि (श्रा १)। ३ प्रक्षालन (धर्मसं १०७८)।

पधाविअ वि [प्रधावित] १ दौड़ा हुआ (महा; पण्ह १, ४)। २ गति-रहित (राज)।

पधाविर वि [प्रधावितृ] दौड़नेवाला (श्रा २८)।

पधूवण न [प्रधूपन] १ धूप देना। २ एक प्रकार का आलेपन द्रव्य (कस)।

पधूविय वि [प्रधूपित] जिसको धूप दिया गया हो वह (राज)।

पधोअ सक [प्र+धाव्] धोना। संकृ. **पधोइत्ता** (आचा २, १, ६, ३)।

पधोअ वि [प्रधौत] धोया हुआ (औप)।

पधोव सक [प्र+धाव्] धोना। पधोवेंति (पि ४८२)।

पन देखो **पंच** । °**र**, °**रस** त्रि. ब. [°**दशन्**] पनरह, दस और पाँच, १५ (कम्म १; ४, ५२, ६८; जी २५) ।
पनय (पै. चूपै) देखो **पणय** = प्रणय (हे ४, ३२६) ।
पन्न देखो **पण्ण** = पर्ण (सुपा ३३६; कुप्र ४०८) ।
पन्न देखो **पण्ण** = दे (भग; कम्म ४, ५४) ।
पन्न देखो **पण्ण** = प्रज्ञ (आचा; कुप्र ४०८) ।
पन्न वि [**प्राज्ञ**] १ पंडित, जानकार, विद्वान् (ठा ७; उप १५१; धर्मसं ४५२) । २ वि. प्रज्ञ-संबन्धी (सूअ २, १, ५६) ।
पन्न देखो **पंच** । °**र**, °**रस** त्रि. ब. [°**दशन्**] पनरह, १५ (दं २२; सम २६; भग; सण) । °**रस**, °**रसम** वि [°**दश**] पनरहवाँ, १५ वाँ (सुर १५, २५०; पउम १५, १००) । °**रसी** स्त्री [°**दशी**] १ पनरहवीं । २ पनरहवीं तिथि (कप्प) ।
पन्न देखो **पणिअ** = पण्य (उप १०३१ टी) ।
पन्नंगणा स्त्री [**पण्याङ्गना**] वेश्या, वाराङ्गना (उप १०३१ टी) ।
पन्नग देखो **पण्णग** = पन्नग (विपा १, ७; सुर २, २३८) ।
पन्नट्ठि देखो **पण्णट्ठि** (कप्प) ।
पन्नत्त देखो **पण्णत्त** (णाया १, १; भग; सम १) ।
पन्नत्तरि स्त्री [**पञ्चसप्तति**] पचहत्तर, ७५ (सम ८५; ति ३) ।
पन्नत्ति देखो **पण्णत्ति** (सुपा १५३; संति ५; महा) । ५ प्रकृष्ट ज्ञान । जिससे प्ररूपण किया जाय वह (तंदु ५४) । ७ पाँचवाँ अंग-ग्रन्थ, भगवतीसूत्र (श्रावक ३३३) ।
पन्नत्तु वि [**प्रज्ञापयितृ**] आख्याता, प्रतिपादक (पि ३९०) ।
पन्नपत्तिया स्त्री [**प्रज्ञप्रत्यया**] देखो **पुन्नपत्तिया** (कप्प) ।
पन्नपन्नइम देखो **पणपन्नइम** (पि ४४९) ।
पन्नय देखो **पण्णग** (पाअ) । °**रिउ** पुं [°**रिपु**] गरुड़ पक्षी (पाअ) ।
पन्नया स्त्री [**पन्नगा**] भगवान् धर्मनाथजी की शासन-देवी (संति १०) ।
पन्नव देखो **पण्णव** । पन्नवेइ (उव) । कर्म. पन्नविज्जइ (उव) । वकृ. **पन्नवयंत** (सम्म १३४) । संकृ. **पन्नवेऊणं** (पि ५८५) ।
पन्नवग वि [**प्रज्ञापक**] प्रतिपादक, प्ररूपक (कम्म ५, ८५ टी) ।
पन्नवण देखो **पण्णवण** (सुपा २९९) ।
पन्नवणा देखो **पण्णवणा** (भग; पण्ण १; ठा ३, ४) ।
पन्नवय देखो **पण्णवग** (सम्म १६) ।
पन्नवयंत देखो **पन्नव** ।
पन्ना देखो **पण्णा** = प्रज्ञा (आचा; ठा ४, १; १०) ।
पन्ना देखो **पण्णा** = दे (पव ५०) ।
पन्नाड सक [**मृद्**] मर्दन करना । पन्नाडइ (हे ४, १२६) ।
पन्नाडिअ वि [**मृदित**] जिनका मर्दन किया गया हो वह (पाअ; कुमा) ।
पन्नाण देखो **पण्णाण** (आचा; पि ६०१) ।
पन्नारस (अप) त्रि. ब. [**पञ्चदशन्**] पनरह, १५ (भवि) ।
पन्नास देखो **पण्णास** (सम ७०; कुमा) । स्त्री. °**सा** (कप्प) । °**इम** वि [°**तम**] पचासवाँ, ५० वाँ; (पउम ५०, २३) ।
पन्ह देखो **पण्ह** (कप्प) ।
पन्हु (अप) देखो **पण्हुअ** = दे. प्रस्नव (भवि) ।
पपंच देखो **पवंच** (सुपा २३५) ।
पपलीण वि [**प्रपलायित**] भागा हुआ (पि ३४६; ३६७; नाट—मृच्छ ५८) ।
पपिआमह पुं [**प्रपितामह**] १ ब्रह्मा, विधाता (राज) । २ पितामह का पिता, परदादा (धर्मसं १४९) ।
पपुत्त पुं [**प्रपुत्र**] पौत्र, पुत्र का पुत्र, पोता (सुपा ४०७) ।
पपुत्त } **पपोत्त** } पुं [**प्रपौत्र**] पौत्र का पुत्र; पोते का पुत्र, परपोता (विसे ८६२; राज) ।
पप्प सक [**प्र + आप्**] प्राप्त करना । पप्पोइ, पप्पोति (पि ५०४; उत्त १४, १४) । पप्पोदि (शौ) (पि ५०४) । संकृ. **पप्प** (पण्ण १७; ओघ ५५; विसे ५५१) । कृ. **पप्प** (विसे २६८७) ।
पप्पग न [**दे. पर्पक**] वनस्पति-विशेष (सूअ २, २, ६) ।
पप्पड } **पप्पडग** } पुंस्त्री [**पर्पट**] १ पापड़, मूँग या उर्द की बहुत पतली एक प्रकार की रोटी (पव ३७; भवि) । २ पापड़ के आकारवाला शुष्क मृत्खण्ड (निचू १) । °**पायय** पुं [°**पाचक**] नरकावास-विशेष (देवेन्द्र ३०) । °**मोदय** पुं [°**मोदक**] एक प्रकार की मिष्ट वस्तु (पण्ण १७—पत्र ५३३) ।
पप्पडिया स्त्री [**पर्पटिका**] तिल आदि की बनी हुई एक प्रकार की खाद्य वस्तु (पण्ण १; पिंड ५५०) ।
पप्पल देखो **पप्पड** (नाट—विक्र २१) ।
पप्पीअ पुं [**दे**] चातक पक्षी, पपीहा या पपीहरा (दे ६, १२) ।
पप्पुअ वि [**प्रप्लुत**] १ जलार्द्र, पानी से भीजा हुआ (पण्ह १, १; णाया १, ८) । २ व्याप्त; 'घयपप्पुयवंजणाइं च' (पव ४ टी) । ३ न. कूदना, लाँघना (गउड १२८) ।
पप्पोइ } **पप्पोति** } देखो **पप्प** ।
पप्फंदण न [**प्रस्पन्दन**] प्रचलन, फरकना (राज) ।
पप्फाड पुं [**दे**] अग्नि-विशेष (दे ६, ६) ।
पप्फिडिअ वि [**दे**] प्रतिफलित (दे ६, २२) ।
पप्फुअ वि [**दे**] १ दीर्घ, लम्बा । २ उड्डीयमान, उड़ता (दे ६, ६४) ।
पप्फुट्ट अक [**प्र + स्फुट्**] १ खिलना । २ फूटना । पप्फुट्टइ (प्राकृ ७४) ।
पप्फुडिअ पुं [**प्रस्फुटित**] नरकावास-विशेष (देवेन्द्र २९) ।
पप्फुय देखो **पप्पुअ**; 'बाहपप्फुयच्छो' (सुख २, २९) ।
पप्फुर अक [**प्र + स्फुर्**] १ फरकना, हिलना । २ काँपना । पप्फुरइ (से १५, ७७; गा ६४७) ।
पप्फुरिअ वि [**प्रस्फुरित**] फरका हुआ (दे ६, १९) ।
पप्फुल्ल अक [**प्र + फुल्ल्**] विकसना । वकृ. **पप्फुल्लंत** (रंभा) ।
पप्फुल्ल वि [**प्रफुल्ल**] विकसित, खिला हुआ (णाया १, १३; उप पृ ११४; पउम ३, ६६; सुर २, ७६; षड्; गा ६३६; ९७०);

'इय भणिएण णग्रंगी पप्फुल्लविलोअणा जाआ' (काप्र १६१)।

पप्फुल्लिअ वि [प्रफुल्लित] ऊपर देखो (सम्मत्त १८६; भवि)।

पप्फुल्लिआ स्त्री [प्रफुल्लिका] देखो उप्फुल्लिआ (गा १६६ अ)।

पप्फुसिय न [प्रस्पृष्ट] उत्तम स्पर्श (राय १८)।

पप्फोड देखो पप्फुट्ट। पप्फोडइ, फप्फोडए (धात्वा १४३)।

पप्फोड सक [प्र + स्फोटय्] १ झाड़ना, झाड़कर गिराना। २ आस्फालन करना। ३ प्रक्षेपण करना। पप्फोडइ (गा ४३३)। पप्फोडे (उत्त २६, २४) वकृ. पप्फोडंत, पप्फोडयंत, पप्फोडेमाण (गा १४५, पि ४६१; ठा ६)। संकृ. 'पप्फोडेऊण सेसयं कम्मं' (आउ ६७)।

पप्फोडण न [प्रस्फोटन] १ झाड़ना, प्रकृष्ट धूनन (ओघ भा १६३)। २ आस्फोटन, आस्फालन (पण्ह २, ५—पत्र १४८; पिंड २६३))

पप्फोडणा स्त्री [प्रस्फोटना] ऊपर देखो (ओघ २६६; उत्त २६, २६)।

पप्फोडिअ वि [दे. प्रस्फोटित] निर्झाटित, झाड़ कर गिराया हुआ (दे ६, २७, पाअ); 'पप्फोडिअमोहजालस्स' (पडि)। २ फोड़ा हुआ, तोड़ा हुआ; 'पप्फोडिअसउणिअंडगं व ते हुंति निस्सारा' (संबोध १७)।

पप्फोडेमाण देखो पप्फोड = प्र + स्फोटय्।

पफुल्ल देखो पप्फुल्ल (षड्)।

पफुल्लिअ देखो पप्फुल्लिअ (हे ४, ३९६; पिंग)।

पबंध सक [प्र + बन्ध्] प्रबन्ध रूप से कहना, विस्तार से कहना। पबंधिज्जा (दस ५, २, ८)।

पबंध पुं [प्रबन्ध] १ सन्दर्भ, ग्रन्थ, परस्पर अन्वित वाक्य-समूह (रंभा ८)। २ अविच्छेद, निरन्तरता (उत्त ११, ७)।

पबंधण न [प्रबन्धन] प्रबन्ध, सन्दर्भ, अन्वित वाक्य-समूह की रचना; 'कहाए य पबंधणे' (सम २१)।

पबल वि [प्रबल] बलिष्ठ, प्रचण्ड, प्रखर (कुमा)।

पबाहा स्त्री [प्रबाधा] प्रकृष्ट बाधा, विशेष पीड़ा (णाया १, ४)।

पबुद्ध वि [प्रबुद्ध] १ प्रवीण, निपुण (से १२, ३४)। २ जागा हुआ (सुर ५,२२६)। ३ जिसने अच्छी तरह जानकारी प्राप्त की हो वह (आचा)।

पबोध सक [प्र + बोधय्] १ जागृत करना। २ ज्ञान कराना। कर्म. पबोधीआमि (पि ५४३)।

पबोधण न [प्रबोधन] प्रकृष्ट बोधन (राज)।

पबोह देखो पबोध। कृ. पबोहणीय (पउम ७०, २८)।

पबोह पुं [प्रबोध] १ जागरण। २ ज्ञान, समझ (चारु ५४; पि १६०)।

पबोहण देखो पबोधण (राज)।

पबोहय वि [प्रबोधक] प्रबोध-कर्ता (विसे १७३)।

पबोहिअ वि [प्रबोधित] १ जगाया हुआ। २ जिसको ज्ञान न कराया गया हो वह (सुपा ३१३)।

पब्बल देखो पबल (से ४, २५; ६, ३३)।

पब्बाल देखो पव्वाल = छादय्। पब्बालइ (हे ४, २१)।

पब्बाल देखो पव्वाल = प्लावय्। पब्बालइ (हे ४, ४१)।

पब्बुद्ध देखो पबुद्ध (पि १६६)।

पब्भ वि [प्रह्व] नम्र (औप; प्राकृ २४)।

पब्भट्ठ, पब्भसिअ } वि [प्रभ्रष्ट] १ परिभ्रष्ट, प्रस्खलित, चूका हुआ (पण्ह १, ३; अभि ११६; गा ३१८; सुर ३, १२३; गा ३३; ६५)। २ विस्मृत (से १४, ४२)। ३ पुं. नरकावास-विशेष (देवेन्द्र २८)।

पब्भार पुं [दे. प्राग्भार] १ संघात, समूह; जत्था (दे ६, ६६; से ४, २०; सुर १, २२३; कप्पू; गउड; कुलक २१)।

पब्भार पुं [दे] गिरि-गुफा, पर्वत-कन्दरा (दे ६; ६६); 'पब्भारकंदरगया साहंती अप्पणो अट्ठं' (पच ८१)।

पब्भार पुं [प्राग्भार] १ प्रकृष्ट भार, 'कुमरे संकमियरज्जपब्भारो' (धम्म ८ टी)। २ ऊपर का भाग (से ४, २०)। ३ थोड़ा नमा हुआ पर्वत का भाग (णाया १, १—पत्र ६३, भग ५,७)। ४ एक देश, एक भाग (से १,५८)। ५ उत्कर्ष, परभाग (गउड)। ६ पुंन. पर्वत के ऊपर का भाग (णंदि)। ७ वि. थोड़ा नमा हुआ, ईषदवनत (अंत ११; ठा १०)।

पब्भारा स्त्री [प्राग्भारा] दशा-विशेष, पुरुष की सत्तर से अस्सी वर्ष तक की अवस्था (ठा १०—पत्र ५१६; तंदु १६)।

पब्भूअ वि [प्रभूत] उत्पन्न, 'मंडुक्कीए गब्भे, पब्भूओ दद्दुरत्तेण' (धर्मवि ३५)।

पब्भोअ पुं [दे. प्रभोग] भोग, विलास (दे ६, १०)।

पभ पुं [प्रभ] १ हरिकान्त नामक इन्द्र का एक लोकपाल (ठा ४, १; इक)। २ द्वीप-विशेष और समुद्र-विशेष का अधिपति देव (राज)।

°पभ वि [प्रभ] सदृश, तुल्य (कप्प; उवा)।

°पभइ देखो °पभिइ; 'चंडाणं चंडरुद्दपभईणं' (अज्झ १४१)।

पभंकर पुं [प्रभङ्कर] १ ग्रह विशेष, ज्योतिष-देव-विशेष (ठा २, ३)। २ पुंन. देव-विमान (सम ८; १४; पव २६७)।

पभंकर वि [प्रभाकर] प्रकाशक, 'सव्वलोय-पभंकरो' (उत्त २३, ७६)।

पभंकरा स्त्री [प्रभङ्करा] १ विदेह-वर्ष की एक नगरी का नाम (ठा २, ३)। २ चन्द्र की एक अग्रमहिषी का नाम (ठा ४, १)। ३ सूर्य की एक अग्रमहिषी का नाम (भग १०, ५)।

पभंकरावई स्त्री [प्रभङ्करावती] विदेह वर्ष की एक नगरी (आचू १)।

पभंगुर वि [प्रभङ्गुर] अति विनश्वर (आचा)।

पभंजण पुं [प्रभञ्जन] १ वायुकुमार-निकाय के उत्तर दिशा का इन्द्र (ठा २, ३; ४, १; सम ६९)। २ लवण-समुद्र के एक पाताल-कलश का अधिष्ठायक देव (ठा ४, २)। ३ वायु, पवन (से १४, ६९)। ४ मानुषोत्तर पर्वत के एक शिखर का अधिपति देव (राज)। °तणअ पुं [°तनय] हनूमान् (से १४,६९)।

पभंसण न [प्रभ्रंशन] स्खलना (धर्मसं १०७६)।

पभकंत पुं [प्रभकान्त] १—२ विद्युत्कुमार देवों के हरिकान्त और हरिस्सह नामक दोनों इन्द्रों के लोकपालों के नाम (ठा ४, १—पत्र १६७; इक)।

पभण सक [प्र + भण्] कहना, बोलना। पभणइ (महा; सण)।

पभणिय वि [प्रभणित] उक्त, कथित (सण)।

पभम सक [प्र + भ्रम्] भ्रमण करना, भटकना। पभमेसि (श्रु १५३)।

पभव अक [प्र + भू] १ समर्थ होना, पहुँचना। २ होना, उत्पन्न होना। पभवइ (पि ४७५)। वकृ. **पभवंत** (सुपा ८६; नाट—विक्र ४५)।

पभव पुं [प्रभव] १ उत्पत्ति, जन्म, प्रसूति, प्रसव (ठा ६; वसु)। २ प्रथम उत्पत्ति का कारण (णंदि)। ३ एक जैनमुनि, जम्बु-स्वामी का शिष्य (कप्प; वसु; णंदि)।

पभवा स्त्री [प्रभवा] तृतीय वासुदेव की पटरानी (पउम २०, १८६)।

पभविय वि [प्रभूत] जो समर्थ हुआ हो, 'सा विज्जा सिट्ठसुए उदग्गपुन्नम्मि पभविया नेव' (धर्मवि १२३)।

पभा स्त्री [प्रभा] १ कान्ति, तेज (महा; धर्मसं १३३३)। २ प्रभाव; 'निच्चुज्जोया रम्मा, सयंपभा ते विरायंति' (देवेन्द्र ३२०)।

पभाइअ } पुंन [प्रभात] १ प्रातःकाल, सुबह
पभाय } (पउम ७०, ५६; सुर ३, ६६; महा; स २४४)। २ वि. प्रकाशित; रयणीए पभायाए' (उप ६४८ टी)। °**तणय** वि [°संबन्धिन्] प्राभातिक, प्रभात-सम्बन्धी, सुबह का (सुर ३, २४८)।

पभार पुं [प्रभार] प्रकृष्ट भार (सम १५३)।

पभाव देखो **पहाव** = प्र + भावय्। पभावेइ, पभावंति (उव; पव १४८)। वकृ. **पभाविंत** (सुपा ३७६)।

पभाव देखो **पहाव**—प्रभाव (स्वप्न ६८)।

पभावई स्त्री [प्रभावती] १ उन्नीसवें जिन-देव की माता का नाम (सम १५१)। २ रावण की एक पत्नी का नाम (पउम ७४, ११)। ३ उदायन राजर्षि की पटरानी और चेड़ा नरेश की पुत्री का नाम (पडि)। ४ बलदेव के पुत्र निषध की भार्या (भ्राचू १)। ५ राजा बल की पत्नी (भग ११, ११)।

पभावग वि [प्रभावक] प्रभाव बढ़ानेवाला, शोभा की वृद्धि करनेवाला (श्रा ६; द्र २३)। २ उन्नति-कारक। ३ गौरव जनक (कुप्र १६८)।

पभावण न [प्रभावन] नीचे देखो (श्रु ९)।

पभावणा स्त्री [प्रभावना] १ माहात्म्य, गौरव। २ प्रसिद्धि, प्रख्याति (गाया १, १६—पत्र १२२; श्रा ६; महा)।

पभावय वि [प्रभावक] गौरव बढ़ानेवाला (संबोध ३१)।

पभावाल पुं [प्रभावाल] वृक्ष-विशेष (राज)।

पभाविंत देखो **पभाव** = प्र + भावय्।

पभास सक [प्र + भाष्] बोलना, भाषण करना। पभासंति (विसे ४६६ टी)। वकृ. **पभासंत, पभासयंत, पभासमाण** (उप पृ २३; पउम ५५, १८; ८६, १०)।

पभास अक [प्र + भास्] प्रकाशित होना। पभासिंति (सुज्ज १६)। भूका—पभासिसु (भग; सुज्ज १६)। भवि. पभासिस्संति (सुज्ज १६)। वकृ. **पभासमाण** (कप्प)।

पभास सक [प्र + भासय्] प्रकाशित करना। प्रभासेइ (भग)। पभासंति (सुज्ज ३—पत्र ६४)। वकृ. **पभासयंत, पभासेमाण** (पउम १०८, ३३; रयण ७५; कप्प; उवा; ओप; भग)।

पभास पुं [प्रभास] १ भगवान् महावीर के एक गणधर का नाम (सम १६; कप्प)। २ एक विकटापाती पर्वत का अधिष्ठाता देव (ठा २, ३—पत्र ६६)। ३ एक जैन मुनि का नाम (धर्म ३)। ४ एक चित्रकार का नाम (धम्म ३१ टी)। ५ न. तीर्थ-विशेष (जं ३, महा)। ६ देव-विमान-विशेष (सम १३, ४१)। °**तित्थ** न [°तीर्थ] तीर्थ-विशेष, भारतवर्ष की पश्चिम दिशा में स्थित एक तीर्थ (इक)।

पभासा स्त्री [प्रभासा] अहिंसा, दया (पण्ह २, १)।

पभासिय वि [प्रभाषित] उक्त, कथित (सूत्र १, १, १, १६)।

पभासेमाण देखो **पभास** = प्र + भासय्।

पभिइ देखो **पभिइं** (द्र ५५)।

°**पभिइ** वि.ब. [°प्रभृति] इत्यादि, वगैरह (भग; उवा; महा)।

पभिइं } अ [प्रभृति] प्रारम्भ कर, (वहां
पभिई } से) शुरू कर, लेकर; 'बालभावाओ
पभीइ } पभिइं' (सुर ४, १६७; कप्प;
पभीइं } महा; स ७३६; २७५ टि)।

पभीय वि [प्रभीत] अति भीत, अत्यन्त डरा हुआ (उत ५, ११)।

पभु पुं [प्रभु] १ इक्ष्वाकु वंश के एक राजा का नाम (पउम ५, ७)। २ स्वामी, मालिक (पउम ६३, २६; बृह २)। ३ राजा, नृप; 'पभू राया अणुप्पभू जुवराया' (निचू २)। ४ वि. समर्थ, शक्तिमान् (श्रा २७; भग १५, उवा, ठा ४, ४)। ५ योग्य, लायक; 'पभुत्ति वा जोग्गोत्ति वा एगट्ठा' (निचू २०)।

पभुंज सक [प्र + भुज्] भोग करना। पभुंजेदि (शौ) (द्रव्य ६)।

पभुति (पै) देखो **पभिइं** (कुमा)।

पभुत्त वि [प्रभुक्त] १ जिसने खाने का प्रारम्भ किया हो वह (सुर १०, ५८)। २ जिसने भोजन किया हो वह (स १०४)।

पभूइ } देखो **पभिइं** (पउम ६, ७६; स
पभूइं } २७५)।

पभूय वि [प्रभूत] प्रचुर, बहुत (भग; पउम ५, ५; गाया १, १; सुर ३, ८१; महा)।

पभोय (अप) देखो **उवभोग**; 'भोय-पभोयमाणु जं किजइ' (भवि)।

पमइल वि [प्रमलिन] अति मलिन (गाया १, १)।

पमक्खण न [प्रम्रक्षण] १ अभ्यञ्जन, विलेपन। २ विवाह के समय किया जाता एक तरह का उबटन (स ७४)।

पमक्खिअ वि [प्रम्रक्षित] १ विलिप्त। २ विवाह के समय जिसको उबटन किया गया हो वह (वसु; सम ७५)।

पमज्ज सक [प्र + मृज्, मार्ज्] मार्जन करना, साफ-सुथरा करना, झाड़ू आदि से धूलि वगैरह को दूर करना। पमज्जइ (उव;

उवा)। पमज्जिया (आचा)। वकृ. **पमज्जेमाण** (ठा ७)। संकृ. **पमज्जित्ता** (भग; उवा)। हेकृ. **पमज्जित्तु** (पि ५७७)।

पमज्जण न [प्रमार्जन] मार्जन, भूमि-शुद्धि (अंत)।

पमज्जणिया, **पमज्जणी** स्त्री [प्रमार्जनी] झाड़ू, भूमि साफ करने का उपकरण (णाया १, ७; धर्म ३)।

पमज्जय वि [प्रमार्जक] प्रमार्जन करनेवाला (दे ५, १८)।

पमज्जिअ वि [प्रमृष्ट, प्रमार्जित] साफ किया हुआ (उवा; महा)।

पमत्त वि [प्रमत्त] १ प्रमाद-युक्त, असावधान, प्रमादी, बेदरकार (उवा; अभि १८५; प्रासू ६८)। २ न. छठवाँ गुण-स्थानक (कम्म ४, ४७; ५६)। ३ प्रमाद (कम्म २)। °**जोग** पुं [°योग] प्रमाद-युक्त चेष्टा (भग)। °**संजय** पुं [°संयत] प्रमादी साधु, प्रमाद-युक्त मुनि (भग ३, ३)।

पमद देखो **पमय** (स्वप्न ५१; कप्पू)।

पमदा देखो **पमया** (नाट—शकु २)।

पमद्द सक [प्र + मृद्] १ मर्दन करना। २ विनाश करना। ३ कम करना। ४ चूर्ण करना। ५ रुई की पूणी—पूनी बनाना। वकृ. **पमद्दमाण** (पिंड ५७४)।

पमद्द पुं [प्रमर्द] १ ज्योतिष शास्त्र में प्रसिद्ध एक योग (सम १३; सुज्ज १०, ११)। २ संघर्ष, संमर्द (राज)। ३ वि. मर्दन करनेवाला। ४ विनाशक; 'सारं मरणाइ सव्वं पच्चक्खाणं खु भवदुहपमद्दं' (संबोध ३७)।

पमद्दण न [प्रमर्दन] १ चूरना, चूर्ण करना (राय)। २ नाश करना। ३ कम करना (सम १२२)। ४ रुई की पूणी करना (पिंड ६०३)। ५ वि. विनाश करनेवाला (पंचा १४, ४२)।

पमद्दय वि [प्रमर्दक] प्रमर्दन-कर्त्ता (दसनि १०, ३०)।

पमद्दि वि [प्रमर्दिन्] प्रमर्दन करनेवाला (औप; पि २६१)।

पमय पुं [प्रमद] १ आनन्द, हर्ष (काल; श्रा २७)। २ न. धतूरे का फल। °**च्छी** स्त्री [°ाक्षी] स्त्री, महिला (सुपा २३०)। °**वण** न [°वन] राजा का अन्तःपुर-स्थित वह वन या बागीचा जहाँ राजा रानियों के साथ क्रीड़ा करे (से ११, ३७; णाया १, ८; १३)।

पमया स्त्री [प्रमदा] उत्तम स्त्री, श्रेष्ठ महिला (उव; बृह ४)।

पमह पुं [प्रमथ] शिव का अनुचर (पाअ)। °**णाह** पुं [°नाथ] महादेव (समु १५०)। °**हिव** पुं [°धिप] शिव, महादेव (गा ४४८)।

पमा सक [प्र + मा] सत्य-सत्य ज्ञान करना। कर्म. पमीयए (विसे ९४६)।

पमा स्त्री [प्रमा] १ प्रमाण, परिमाण; 'पीअ-लधाउविणिम्मिअविहुत्थिसमप्पहुलिंगआहरणं' (कुमा)। २ प्रमाण, न्याय; 'अतिप्पसंगो पमासिद्धो' (धर्मसं ६८१)।

पमा° देखो **पमाय** = प्रमाद (वव १)।

पमाइ वि [प्रमादिन्] प्रमादी, बेदरकार (सुपा ५४३; उव; आचा)।

पमाइअव्व देखो **पमाय** = प्र + मद्।

पमाइल्ल देखो **पमाइ**; 'धम्मपमाइल्ले' (उप ७२८ टी)।

पमाण सक [प्र + मानय्] विशेष रीति से मानना, आदर करना। कृ. **पमाणणिज्ज** (श्रा २७)।

पमाण न [प्रमाण] १ यथार्थ ज्ञान; सत्य ज्ञान। २ जिससे वस्तु का सत्य-सत्य ज्ञान हो वह, सत्य ज्ञान का साधन (अणु)। ३ जिससे नाप किया जाय वह; 'अणुप्पमाणंपि' (श्रा २७; भग; अणु)। ४ नाप, माप, परिमाण (विचार ५४४; ठा ५, ३; जीवस ९४; भग; विपा १, २)। ५ संख्या (अणु; जी २६)। ६ प्रमाण-शास्त्र, न्याय-शास्त्र, तर्क-शास्त्र; 'लक्खणसाहित्तपमाणजोइसाईणि सा पढइ' (सुपा १०३)। ७ पुंन. सत्य रूप से जिसका स्वीकार किया जाय वह। ८ माननीय, आदरणीय। ९ सच्चा, सही, ठीक-ठीक, यथार्थ; 'कमागओ जो य जेसिं किल धम्मो सो य पमाणो तेसिं' (सुपा ११०; श्रा १४); 'सुचिरंपि अच्छमाणो नलथंभो

पिच्छ इच्छुवाडम्मि।

कीस न जायइ महुरो जइ

सेसग्गी पमाणं ते' (प्रासू ३३)।

°**वाय** पुं [°वाद] न्याय-शास्त्र, तर्क-शास्त्र (सम्मत्त ११७)। °**संवच्छर** पुं [°संवत्सर] वर्ष-विशेष (सुज्ज १०, २०)।

पमाण सक [प्रमाणय्] प्रमाण रूप से स्वीकार करना। पमाण, पमाणह (पिंग)। वकृ. **पमाणंत** (उवर १८९)। कृ. **पमाणियव्व** (सिरि ९१)।

पमाणिअ वि [प्रमाणित] प्रमाण रूप से स्वीकृत (सुपा ११०; श्रा १२)।

पमाणिआ, **पमाणी** स्त्री [प्रमाणिका, प्रमाणी] छन्द-विशेष (पिंग)।

पमाणीकर सक [प्रमाणी + कृ] प्रमाण करना, सत्य रूप से स्वीकार करना। कर्म. पमाणीकरीअदि (शौ) (पि ३२४)। संकृ. **पमाणीकिअ** (नाट—मालवि ४०)।

पमाद देखो **पमाय** = प्र + मद्। कृ. **पमादेयव्व** (णाया १, १—पत्र ६०)।

पमाद देखो **पमाय** = प्रमाद (भग; औप; स्वप्न १०६)।

पमाय अक [प्र + मद्] प्रमाद करना, बेदरकारी करना। पमायइ, पमायए (उव; पि ४६०)। वकृ. **पमायंत** (सुपा १०)। कृ. **पमाइअव्व** (भग)।

पमाय पुं [प्रमाद] १ कर्तव्य कार्य में अप्रवृत्ति और अकर्तव्य कार्य में प्रवृत्ति रूप असावधानता, बेदरकारी (आचा; उत ४, ३२; महा; प्रासू ३८; १३४)। २ दुःख, कष्ट; 'समग्गलोयाण वि जा तिमायासमा समुप्पाइयपुप्पमाया' (सत्त ३५)।

पमार पुं [प्रमार] १ मरण का प्रारम्भ (भग १५)। २ बुरी तरह मारना (ठा ५, १)।

पमारणा स्त्री [प्रमारणा] बुरी तरह मारना (वव ३)।

पमिय वि [प्रमित] परिमित, नापा हुआ; 'अंगुलमूलासंखिअभागप्पमिया उ होंति सेढीओ' (पंच २, २०)।

पमिलाण वि [प्रम्लान] अतिशय मुरझाया हुआ (ठा ३, १; धर्मवि ५५)।

पमिलाय अक [प्र + म्लै] मुरझाना, 'पराण-पन्नाय परेणं जोणी पमिलायए महिलियाणं' (तंदु ४)।

पमिल्ल अक [प्र + मील्] विशेष संकोच करना, सकुचना। पमिल्लइ (हे ४, २३२; प्राप्र)।

पमीय° देखो पमा = प्र + मा।

पमील देखो पमिल्ल। पमीलइ (हे ४, २३२)।

पमुइअ वि [प्रमुदित] हर्ष-प्राप्त, हर्षित (औप, जीव ३)।

पमुंच सक [प्र + मुच्] छोड़ना, परित्याग करना। पमुंचंति (उव)। कर्म. पमुच्चइ (पि ५४२)। भवि. पमोक्खसि (आचा)। वकृ. पमुंचमाण (राज)।

पमुक्क वि [प्रमुक्त] परित्यक्त (हे २, ९७; षड्)।

°पमुक्ख देखो °पमुह (सुपा १०; गु ११; जी १०)।

पमुच्छिय पुं [प्रमूर्च्छित] नरकावास-विशेष (देवेन्द्र २७)।

पमुत्त देखो पमुक्क (पि ५६६)।

पमुदिय देखो पमुइअ (सुर ३, २०)।

पमुद्ध वि [प्रमुग्ध] अत्यन्त मुग्ध (नाट—मालती ४४)।

पमुह वि [प्रमुख] १ तल्लीन दृष्टिवाला, 'एगप्पमुहे' (आचा)। २ पुं. ग्रह-विशेष, ज्योतिष्क देव-विशेष (ठा २, ३)। ३ न. प्रकृष्ट आरम्भ, आदि, आपात; 'किंपागफल-सरिच्छो भोगा पमुहे हवंति गुणमहुरा' (पउम १०८, ३१; पाअ)।

°पमुह वि. ब. [°प्रमुख] १ वगैरह, आदि। २ प्रधान, श्रेष्ठ, मुख्य (औप; प्रासू १६६)।

पमुहर वि [प्रमुखर] वाचाल, बकवादी (उत्त १७, ११)।

पमेइल वि [प्रमेदस्विन्] जिसके शरीर में चर्बी बहुत हो वह, 'थूले पमेइले वज्झे पाइमेत्ति य नो वए' (दस ७, २२)।

पमेय वि [प्रमेय] प्रमाण-विषय, सत्य-पदार्थ (धर्मसं ११९०)।

पमेह पुं [प्रमेह] रोग-विशेष, मेह रोग, मूत्र-दोष, बहुमूत्रता (निचू १)।

पमोअ पुं [प्रमोद] १ आनन्द, खुशी, हर्ष (सुर १, ७८; महा; णंदि)। २ राक्षस-वंश के एक राजा का नाम, एक लंका-पति (पउम ५, २६३)।

पमोक्ख° देखो पमुंच।

पमोक्ख पुंन [प्रमोक्ष] १ मुक्ति, निर्वाण (सूअ १, १०, १२)। २ प्रत्युत्तर, जवाब; 'नो संचाएइ...... किंचिवि पमोक्खमक्खाइउं' (भग)।

पमोक्खण न [प्रमोचन] परित्याग, 'कंठा-कंठियं अवयासिय बाहपमोक्खणं करेइ' (णाया १, २—पत्र ८८)।

पमोयणा स्त्री [प्रमोदना] प्रमोदन, प्रमोद, आह्लाद, आनंद (चेइय ४११)।

पम्मलाअ अक [प्र + म्लै] अधिक म्लान होना। पम्मलाअदि (शौ); (पि १३६; नाट—मालती ५३)।

पम्माअ, पम्माइअ वि [प्रम्लान] १ विशेष म्लान, अत्यन्त मुरझाया हुआ; 'पम्माअ-सिरीसाइं व। जह से जायाइं अंगाइं' (गा ५६; गा ५६ टि)। २ शुष्क; 'वसहा य जायथामा, गामा पम्मायविक्खल्ला' (धर्मवि ५३)।

पम्माण वि [प्रम्लान] १ निस्तेज, मुरझाया हुआ। २ न. फीकापन, मुरझाना; 'पम्हा (? म्मा) णहरणलिंगो' (अणु १३९)।

पम्मि पुं [दे] पाणि, हाथ, कर (षड्)।

पम्मुक्क देखो पमुक्क (हे २, ९७; षड्; कुमा)।

पम्मुह वि [प्राङ्मुख] पूर्व की ओर जिसका मुँह हो वह (भवि; वज्जा १६४)।

पम्ह पुंन [पक्ष्मन्] १ अक्षि-लोम, बरवनी, आँख के बाल (पाअ)। २ पद्म आदि का केसर, किंजल्क (उवा; भग; विपा १, १)। ३ सूत्र आदि का अत्यल्प भाग। ४ पंख, पाँख (हे २, ७४; प्राप्र)। ५ केश का अग्र-भाग (से ६, २०)। ६ अग्र-भाग; 'णअणाहु-आसणवइत्तपत्तणपम्हं' (से १५, ७३)। ७ महाविदेह वर्ष का एक विजय—प्रदेश (ठा २, ३; इक)। ८ न. एक देव-विमान (सम १५)। °कंत न [°कान्त] एक देव-विमान का नाम (सम १५)। °कूड पुं [°कूट] १ पर्वत-विशेष (राज)। २ न. ब्रह्मलोक नामक देवलोक का एक देव-विमान (सम १५)। ३ पर्वत-विशेष का एक शिखर (ठा २, ३; ६)। °ज्झय न [°ध्वज] देव-विमान-विशेष (सम १५)। °प्पभ न [°प्रभ] ब्रह्मलोक का एक देवविमान (सम १५)। °लेस, °लेस्स न [°लेश्य] ब्रह्मलोक-स्थित एक देव-विमान (सम १५; राज)। °वण्ण न [°वर्ण] वही पूर्वोक्त अर्थ (सम १५)। °सिंग न [°शृङ्ग] वही अर्थ (सम १५)। °सिट्ठ न [°सृष्ट] वही पूर्वोक्त अर्थ (सम १५)। °वत्त न [°वर्त्त] वही अर्थ (सम १५)।

पम्ह देखो पउम (पण्ह १, ४—पत्र ६७; ७८; जीव ३)। °गंध वि [°गन्ध] १ कमल की गन्ध। २ वि. कमल के समान गन्धवाला (भग ६, ७)। °लेस वि [°लेश्य] पद्म नामक लेश्यावाला (भग)। °लेसा स्त्री [°लेश्या] लेश्या-विशेष, पाँचवीं लेश्या, आत्मा का शुभतर परिणाम-विशेष (ठा ३, १; सम ११)। °लेस्स देखो °लेस (पण्ण १७—पत्र ५११)।

पम्हअ सक [प्र + स्मृ] भूल जाना, विस्मरण होना। पम्हअइ (प्राकृ ६१)।

पम्हगावई स्त्री [पद्मकावती] महाविदेह वर्ष का एक विजय, प्रदेश-विशेष (ठा २, ३; इक)।

पम्हट्ठ वि [प्रस्मृत] १ विस्मृत (से ४, ४२)। २ जिसको विस्मरण हुआ हो वह; 'किं पम्हट्ठ म्हि अहं तुह चलणप्पणामविहं-आपडिउणं' (से ६, १२)।

पम्हट्ठ वि [दे] १ प्रभ्रष्ट, विलुप्त (से ४, ४२)। २ फेंका हुआ, प्रक्षिप्त; 'पम्हट्ठं वा परिट्ठविअं ति वा एगट्ठं' (वव १)।

पम्हय वि [पक्ष्मज] १ पक्ष्म से उत्पन्न। २ न. एक प्रकार का सूता (पंचभा)।

पम्हर पुं [दे] अपमृत्यु, अकाल-मरण (दे ६, ३)।

पम्हल वि [पक्ष्मल] पक्ष्म-युक्त, सुंदर अक्षि-लोमवाला (हे २, ७४; कुमा; षड्; औप; गउड; सुर ३, १३६; पाअ)।

पम्हल पुं [दे] किंजल्क, पद्म आदि का केसर (दे ६, १३; षड्)।

पम्हलिय वि [दे. पक्ष्मलित] धवलित, सफेद किया हुआ; 'लायण्णजोण्हापवाहपम्ह-लियचउद्दिसाभोओ' (स ३६)।

पम्हस सक [वि + स्मृ] विस्मरण करना, भूल जाना। पम्हसइ (षड्); पम्हसिज्जासु (गा ३४८)।

पम्हसाविय वि [विस्मारित] भुलाया हुआ, विस्मृत कराया हुआ (सुख २, ५)।

पम्हा स्त्री [पद्मा] १ लेश्या-विशेष, पद्म-लेश्या; आत्मा का शुभतर परिणाम-विशेष (कम्म ३, २२; श्रा २६)। २ विजय-क्षेत्र विशेष (राज)।

पम्हार पुं [दे] अपमृत्यु, बेमौत मरण (दे ६, ३)।

पम्हावई स्त्री [पक्ष्मावती] १ विजय-विशेष की एक नगरी (ठा २, ३; इक)। २ पर्वत-विशेष (ठा २, ३—पत्र ८०)।

पम्हुट्ठ वि [दे] १ नष्ट, नाश-प्राप्त (हे ४; २५८)। २ विस्मृत; 'पम्हुट्ठं विम्हरिअं' (पाअ), 'किं थ तयं पम्हुट्ठं' (णाया १, ८—पत्र १४८; विचार २३८)।

पम्हुत्तरवडिंसग न [पक्ष्मोत्तरावतंसक] ब्रह्मलोक में स्थित एक देव-विमान (सम १५)।

पम्हुस सक [वि + स्मृ] भूलना, विस्मरण करना। पम्हुसइ (हे ४, ७५)।

पम्हुस सक [प्र + मृश्] स्पर्श करना। पम्हुसइ, पम्हुस (हे ४, १८४; कुमा ७, २६)।

पम्हुस सक [प्र + मुष्] चोराना, चोरी करना। पम्हुसइ; पम्हुसेइ; पम्हुसंति (हे ४, १८४; सुपा १३७; कुमा ७, २६)।

पम्हुसण न [विस्मरण] विस्मृति (पंचा १५, ११)।

पम्हुसिअ वि [विस्मृत] जिसका विस्मरण हुआ हो वह (कुमा; उप ७६८ टी)।

पम्हुह सक [स्मृ] स्मरण करना, याद करना। पम्हुहइ (हे ४, ७४)।

पम्हुहण वि [स्मर्तृ] स्मरण करनेवाला (कुमा)।

पय सक [पच्] पकाना, पाक करना। पयइ (हे ४, ६०)। वकृ. **पयंत** (कप्प)। संकृ. **पइउं** (कुप्र २६६)।

पय सक [पद्] १ जाना। २ जानना। ३ विचारना। पयइ (विसे ४०८)।

पय पुंन [पयस्] १ क्षीर, दूध; 'पओ' (हे १, ३२; ओघ १२; पाअ)। २ पानी, जल (सुपा १३६; पाअ)। °**हर** देखो **पओहर** (पिंग)।

पय पुं [प्रज] प्राणी, जन्तु (आचा)।

पय पुंन [पद] १ विभक्ति के साथ का शब्द, 'पयमत्थवायगं जोयगं च तं नामियाईं पंचविहं' (विसे १००३; प्रासू १३८; श्रा २३)। २ शब्द-समूह, वाक्य; 'उवएसपया इहं समक्खाया' (उप १०३८; श्रा २३)। ३ पैर, पाँव, चरण; 'जाणं च तजणातजणीइ लग्गो ठवेमि मंदपए, कव्वपहे बालो इव', 'जाव न सत्तट्ठ पए पच्चाहुत्तं नियत्तो सि' (सुपा १; धर्मवि ५४; सुर ३, १०७; श्रा २३)। ४ पाद-चिन्ह, पदाङ्क (सुर २, २३२; सुपा ३५४; श्रा २३; प्रासू ५०)। ५ पद्य का चौथा हिस्सा (अणु)। ६ निमित्त, कारण (आचा)। ७ स्थान; 'अवमाणपयं हि सेव त्ति' (सुर २, १६७; श्रा २३)। ८ पदवी, अधिकार; 'जुवरायपए किं नवि अहिसिचइ देव मे पुत्तो ?' (सुर २, १७५; महा)। ९ त्राण, शरण। १० प्रदेश। ११ व्यवसाय (श्रा २३)। १२ कूट, जाल-विशेष (सूअ १, १, २, ८)। °**खेम** न [°क्षेम] शिव, कल्याण; 'कुव्वइ अ सो पयखेममप्पणो' (दस ६, ४, ६)। °**त्थ** पुं [°स्थ] पदाति, पैदल, प्यादा; 'तुरएण सह तुरंगो पाइक्को सह पयत्थेण' (पउम ६, १८२)। °**पास** पुं [°पाश] वागुरा, जाल आदि बन्धन (सूअ १, १, २, ८, ९)। °**रक्ख** पुं [°रक्ष] पदाति, प्यादा (भवि; हे ४, ४१८)। °**विग्गह** पुं [°विग्रह] पदविच्छेद (विसे १००६)। °**विभाग** पुं [°विभाग] उत्सर्ग और अपवाद का यथा-स्थान निवेश, सामाचारी-विशेष (आव १)। °**वीढ** देखो **पाय-वीढ** (पव ४०; सुपा ६५६)। °**समास** पुं [°समास] पदों का समुदाय (कम्म १, ७)। °**णुसारि** वि [°ानुसारिन्] एक पद से अनेक अनुक्त पदों का भी अनुसंधान करने की शक्तिवाला (औप, बृह १)। °**णुसारिणी** स्त्री [°ानुसारिणी] बुद्धि-विशेष, एक पद के श्रवण से दूसरे अश्रुत पदों का स्वयं पता लगानेवाली बुद्धि (पण्ण २१)।

पय (अप) देखो **पत्त** = प्राप्त (पिंग)।

पय° देखो **पया** = प्रजा। °**पाल** वि [°पाल] १ प्रजा का पालक। २ पुं. नृप-विशेष (सिरि ४५)।

°**पय** वि [°प्रद] देनेवाला, 'पीइप्पयं' (रंभा)।

पयइ स्त्री [प्रकृति] संधि का अभाव (अणु ११२)।

पयइ देखो **पगइ** (गा ३१७; गउड; महा; नव ३१, भत्त ११४; कप्पू; कुप्र ३४६)।

पयइंद पुं [पतगेन्द्र, पदकेन्द्र] वानव्यन्तर-जातीय देवों का इन्द्र (ठा २, ३)।

पयई देखो **पयवी** (गउड)।

पयंग पुं [पतङ्ग] १ सूर्य, रवि (पाअ); 'तो हरिसपुलइयंगो चक्को इव दिट्ठउग्गयपयंगो' (उत्त ७२८ टी)। २ रंग-विशेष, रञ्जन-द्रव्य-विशेष (उर ६, ४, सिरि १०५७)। ३ शलभ, फतिंगा, उड़नेवाला छोटा कीट (णाया १, १७; पाअ)। ४—५ देखो **पयय** = पतग, पदक, पदग (पण्ह १, ४—पत्र ६८; राज)। °**वीहिया** स्त्री [°वीथिका] १ शलभ का उड़ना। २ भिक्षा के लिए पतंग की तरह चलना, बीच में दो चार घरों को छोड़ते हुए भिक्षा लेना (उत्त ३०, १९)। °**वीही** स्त्री [°वीथी] वही पूर्वोक्त अर्थ (उत्त ३०, १९)।

पयंचुल पुंन [प्रपञ्चुल] मत्स्यबन्धन-विशेष, मछली पकड़ने का एक प्रकार का जाल (विपा १, ८—पत्र ८५)।

पयंड वि [प्रचण्ड] १ अत्युग्र, तीव्र; प्रखर। २ भयानक, भयंकर (पण्ह १, १; ३; ४; उव)।

पयंड वि [प्रकाण्ड] अत्युग्र, उत्कट (पण्ह १, ४)।

पयंत देखो **पय** = पच्।

पयंप अक [प्र + कम्प्] अतिशय काँपना। वकृ. **पयंपमाण** (स ५९९)।

पयंप सक [प्र + जल्प्] १ कहना, बोलना। २ बकवाद करना। पयंपए (महा)। संकृ. **पयंपिऊण**, **पयंपिऊणं** (महा; पि ५८५)। कृ. **पयंपिअव्व** (गा ४५०; सुपा ५५२)।

पयंपण न [प्रजल्पन] कथन, उक्ति (उप पृ २१७)।

पयंपिय वि [प्रकम्पित] अति काँपा हुआ (स ३७७)।

पयंपिय वि [प्रजल्पित] १ कथित, उक्त। २ न. कथन, उक्ति। ३ बकवाद, व्यर्थ जल्पन (विपा १, ७)।

पयंपिर वि [प्रजल्पितृ] १ बोलनेवाला। २ वाचाट, बकवादी (सुर १६, ५८; सुपा ४१५; श्रा २७)।

पयंस सक [प्र + दर्शय्] दिखलाना। पयंसेंति (विसे ६३२)।

पयंसण न [प्रदर्शन] दिखलाना (स ६१३)।

पयंसिअ वि [प्रदर्शित] दिखलाया हुआ (सुर १, १०१; १२, ३२)।

पयक्क देखो **पाइक्क** (…………)।

पयक्ख सक [प्रत्या + ख्या] प्रत्याख्यान करना, प्रतिज्ञा करना। पयक्खेइ (विचार ७५५)।

पयक्खिण देखो **पदक्खिण** = प्रदक्षिण (णाया १, १६)।

पयक्खिण देखो **पदक्खिण** = प्रदक्षिणय्। संकृ. पयक्खिणिऊण (सुर ८, १०५)।

पयक्खिणा देखो **पदक्खिणा** (उप १४२ टी; सुर १४, ३०)।

पयग देखो **पयय** = पतग, पदक, पदग (राज; पव १९४)।

पयच्छ सक [प्र + यम्] देना, अर्पण करना। पयच्छइ (महा)। संकृ. पयच्छिऊण (राज)।

पयच्छण न [प्रदान] १ दान, अर्पण (सुर २, १५१)। २ वि. देनेवाला (सण)।

पयट्ट अक [प्र + वृत्] प्रवृत्ति करना। पयट्टइ (हे २, ३०; ४, ३४७; महा)। कृ. पयट्टिअव्व (सुपा १२६)। प्रयो. पयट्टावेह (स २२) संकृ. पयट्टाविउं (स ७१५)।

पयट्ट वि [प्रवृत्त] १ जिसने प्रवृत्ति की हो वह (हे २, २९; महा)। २ चलित; 'पयट्टयं चलियं' (पाअ)।

पयट्टय वि [प्रवर्त्तक] प्रवृत्ति करनेवाला (पराह १, १)।

पयट्टावअ वि [प्रवर्त्तक] प्रवृत्ति करानेवाला (कप्पू)।

पयट्टाविअ वि [प्रवर्त्तित] प्रवृत्त किया हुआ, किसी कार्य में लगाया हुआ (महा)।

पयट्टिअ वि [दे. प्रवर्त्तित] ऊपर देखो (दे ६, २६)।

पयट्टिअ वि [प्रवृत्त] प्रवृत्ति-युक्त (उत्त ४, २; सुख ४, २)।

पयट्ठाण देखो **पइट्ठाण** (काल; पि २२०)।

पयड सक [प्र + कटय्] प्रकट करना, व्यक्त करना। पयडइ, पयडेइ (सण, महा)। वकृ. पयडंत (सुपा १; गा ४०६; भवि)। हेकृ. पयडित्तु (पि ५७७)। प्रयो. पयडावइ (भवि)।

पयड वि [प्रकट] १ व्यक्त, खुला (कुमा; महा)। २ विख्यात, विश्रुत, प्रसिद्ध; 'विक्खाओ विस्सुओ पयडो' (पाअ)।

पयडण न [प्रकटन] १ व्यक्त करना, खुला करना (सण)। २ वि. प्रकट करनेवाला; 'जे तुज्झ गुणा बहुनेहपयडणा' (धर्मवि ६६)।

पयडावण न [प्रकटन] प्रकट कराना (भवि)।

पयडाविय वि [प्रकटित] प्रकट कराया हुआ (काल; भवि)।

पयडि देखो **पगइ** (पराण २३; पि २१९)।

पयडि स्त्री [दे] मार्ग, रास्ता; 'जे पुण सम्मद्दिट्ठी तेसिं मणो चडणपयडीए' (सट्ठि १४२)।

पयडिय वि [प्रकटित] प्रकट किया हुआ (सुर ३, ४८; श्रा २)।

पयडिय वि [प्रपतित] गिरा हुआ (णाया १, ८—पत्र १३३)।

पयडीकय वि [प्रकटीकृत] प्रकट किया हुआ (महा)।

पयडीकर सक [प्रकटी + कृ] प्रकट करना। प्रयो. पयडीकरावेमि (महा)।

पयडीभूअ } **पयडीहूअ** } वि [प्रकटीभूत] जो प्रकट हुआ हो (सुर ६, १८४; श्रा १६; महा; सण)।

पयड्ढणी स्त्री [दे] १ प्रतिहारी। २ आकृष्टि, आकर्षण। ३ महिषी (दे ६, ७२)।

पयण देखो **पवण** (गा ७७७)।

पयण देखो **पउण** (विसे १८५६)।

पयण } **पयणग** } न [पचन, °क] १ पाक, पकाना (औप; कुमा)। २ पात्र-विशेष, पकाने का पात्र (सूअनि ८०; जीव ३)। °साला स्त्री [°शाला] एक-स्थान (बृह २)।

पयणु } **पयणुअ** } वि [प्रतनु] १ कृश, पतला। २ सूक्ष्म, बारीक। अल्प, थोड़ा (स २४६; सुर ८, १६५; भग ३, ४; जं २; पउम ३०, ६६; से ११, ५६; गा ६८२; गउड)।

पयण्णय देखो **पइण्णग** (तंदु १)।

पयत्त अक [प्र + यत्] प्रयत्न करना। पअत्तध (शौ) (पि ४७१)।

पयत्त देखो **पयट्ट** = प्र + वृत (काल)।

पयत्त पुं [प्रयत्न] चेष्टा, उद्यम, उद्योग (सुपा; उव; सुर १, ६; २, १८२; ४, ८१)।

पयत्त वि [प्रदत्त, प्रत्त] १ दिया हुआ (भग)। २ अनुज्ञात, संमत (अनु ३)।

पयत्त देखो **पयट्ट** = प्रवृत्त (सुर २, १५६; ३, २४८; से ३, २४; ८, ३; गा ४३६)।

पयत्ताविअ वि [प्रवर्त्तित] प्रवृत्त किया हुआ (काल)।

पयत्थ पुं [पदार्थ] १ शब्द का प्रतिपाद्य, पद का अर्थ (विसे १००३, चेइअ २७१)। २ तत्व (सम १०६; सुपा २०५)। ३ वस्तु, चीज (पाअ)।

पयन्न देखो **पइण्ण** = प्रकीर्ण (भवि)।

पयन्ना देखो **पइण्णा** (उप १४२ टी)।

पयप्पण न [प्रकल्पन] कल्पना, विचार (धर्मसं ३०७)।

पयय देखो **पायय** = प्राकृत (हे १, ६७; गउड)।

पयय वि [प्रयत] प्रयत्न-शील, सतत प्रयत्न करनेवाला (औप; पउम ३; ६५; सुर १, ४; उव); 'इच्छिज्ज न इच्छिज्ज व तहवि पयओ निमंतए साहू' (पुप्फ ४२६; पडि)।

पयय पुं [पतग, पदक, पदग] १ वान-व्यन्तर देवों की एक जाति (ठा २, ३; पराण १; इक)। २ पतग देवों का दक्षिण दिशा का इन्द्र (ठा २, ३)। °वइ पुं [°पति] पतग देवों का उत्तर दिशा का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५)।

पयय न [दे] अनिश, निरन्तर (दे ६, ६)।

पयर सक [स्मृ] स्मरण करना। पयरेइ (हे ४, ७४)। वकृ. **पयरंत** (कुमा)।

पयर अक [प्र+चर्] प्रचार होना; 'रन्ना सूयारा भणिया जं लोए पयरइ तं सव्वं सव्वे रंधह' (श्रावक ७३ टी)।

पयर अक [प्र+चर्] १ फैलना। २ व्यापृत होना, काम में लगना। पयरइ (णंदि ५१)।

पयर पुं [प्रकर] समूह, सार्थ, जत्था; 'पयरो पिवीलियाणं भीमंपि भुवंगमं डसइ' (स ४२१; पाग्र; कप्प)।

पयर पुं [प्रदर] १ योनि का रोग-विशेष। २ विदारण, भंग। ३ शर, बाण (दे ६, १४)।

पयर देखो **पइर**=वप्; 'कोडुंबिग्रो य खित्ते धन्नं पयरेइ' (सुपा ३६०)।

पयर = देखो **पयार**=प्रकार (हे १, ६८; षड्)।

पयर देखो **पयार**=प्रचार (हे १, ६८)।

पयर पुंन [प्रतर] १ पत्रक, पत्रा, पतरा; 'कणगपयरलंवमाणमुत्तासमुज्जलं.......... वरविमाणपुंडरीयं' (कप्प; जीव ३; आचू १)। २ वृत्त पत्राकार आभूषण-विशेष, एक प्रकार का गहना (औप; णाया १, १)। ३ गणित-विशेष, सूची से गुणी हुई सूची (कम्म ५, ६७; जीवस ६२; १०२)। ४ भेद-विशेष, बाँस आदि की तरह पदार्थ का पृथग्भाव (भास ७)। °तव पुंन [°तपस्] तप-विशेष; °वट्ट न [°वृत्त] संस्थान-विशेष (राज)।

पयर न [प्रतर] गणित-विशेष, श्रेणी से गुनी हुई श्रेणी (अणु १७३)।

पयरण न [प्रकरण] १ प्रस्ताव, प्रसंग। २ एकार्थ-प्रतिपादक ग्रंथ। ३ एकार्थ-प्रतिपादक ग्रंथांश; 'जुम्हदम्हपयरणं' (हे १, २४६)।

पयरण न [प्रतरण] प्रथम दातव्य भिक्षा (राज)।

पयरिस देखो **पयंस**। वकृ. **पयरिसंत** (पउम ६, ६४)।

पयरिस देखो **पगरिस** (महा)।

पयल अक [प्र+चल्] १ चलना। २ स्खलित होना। पयलेज्ज (आचा २, २, ३, ३)। वकृ. **पयलेमाण** (आचा २, २, ३, ३)।

पयल देखो **पयड**=प्र+कटय्। पअल (पिंग)। संकृ. **पअलि** (अप) (पिंग)।

पयल देखो **पयड** = प्रकट (पिंग)।

पयल (अप) सक [प्र+चालय्] १ चलाना। २ गिराना। पअल (पिंग)।

पयल वि [प्रचल] चलायमान, चलनेवाला (पउम १००, ६)।

पयल पुं [दे] नीड़, पक्षि-गृह (दे ६, ७)।

पयल°, **पयला** स्त्री [दे. प्रचला] १ निद्रा, नींद (दे ६, ६)। २ निद्रा-विशेष, बैठे-बैठे और खड़े खड़े जो नींद आती है वह। ३ जिसके उदय से बैठे-बैठे और खड़े-खड़े नींद आती है वह कर्म (सम १५; कम्म १, ११)। °**पयला** स्त्री [दे. प्रचला] १ कर्म-विशेष, जिसके उदय से चलते-चलते निद्रा आती है वह कर्म। २ चलते-चलते आने-वाली नींद (कम्म १, ११; ठा ६; निचू ११)।

पयला अक [प्रचलाय्] निद्रा लेना, नींद करना। पयलाइ (पाग्र)। हेकृ. **पयलाइत्तए** (कस)।

पयलाइअ न [प्रचलायित] १ नींद, निद्रा। २ घूर्णन, नींद के कारण बैठे-बैठे सिर का डोलना (से १२, ४२)।

पयलाइया स्त्री [दे] हाथ से चलनेवाले जन्तु की एक जाति (सूअ २, ३, २५)।

पयलाय देखो **पयला**=प्रचलाय्। पयलायइ (जीव ३)। वकृ. **पयलायंत** (राज)।

पयलाय पुं [दे] १ हर, महादेव (दे ६, ७२)। २ सर्प, साँप (दे ६, ७२; षड्)।

पयलायण न [प्रचलायन] देखो **पयलाइअ** (बृह ३)।

पयलायभत्त पुं [दे] मयूर, मोर (दे ६, ३६)।

पयलिअ देखो **पयडिअ** (पिंग; पि २३८)।

पयलिय वि [प्रचलित] १ स्खलित, गिरा हुआ (राय; आउ)। २ हिला हुआ (पउम ६८, ७३; णाया १, ८; कप्प; औप)।

पयलिय वि [प्रदलित] भांगा हुआ, तोड़ा हुआ (कप्प)।

पयले सक [प्र=चालय्] चलायमान करना, अस्थिर करना। पयलेंति (दसचू १, १७)।

पयल्ल अक [प्र+सृ] पसरना, फैलना। पयल्लइ (हे ४, ७७; प्राकृ ७६)।

पयल्ल अक [कृ] १ शिथिलता करना, ढीला होना। २ लटकना। पयल्लइ (हे ४, ७०)।

पयल्ल वि [प्रसृत] फैला हुआ (पाग्र)।

पयल्ल पुं [प्रकल्य] महाग्रह-विशेष (सुज्ज २०)।

पयल्लिर वि [प्रसृमर] फैलनेवाला (कुमा)।

पयल्लिर वि [शैथिल्यकृत्] शिथिल होने-वाला, ढीला होनेवाला (कुमा ६, ४३)।

पयल्लिर वि [लम्बनकृत्] लटकनेवाला (कुमा ६ ४३)।

पयव सक [प्र+तप्, तापय्] तपाना, गरम करना। पअवेज्ज (से ४, २८)। वकृ. **पअविज्जंत** (से २, २४)।

पयव सक [पा] पीना, पान करना। कवकृ. 'धीरग्गं सहमुहल घणपअविज्जंतअं' (से २, २४)।

पयवई स्त्री [दे] सेना, लश्कर (दे ६, १६)।

पयवि स्त्री [पदवि] देखो **पयवी** (चेइय ८७२)।

पयविअ वि [प्रतप्त, प्रतापित] गरम किया हुआ, तपाया हुआ (गा १८५; से २, २५)।

पयवी स्त्री [पदवी] १ मार्ग, रास्ता (पाग्र; गा १०७; सुपा ३७८)। २ बिरुद, पदवी (उप पृ ३८६)।

पयह सक [प्र+हा] त्याग करना, छोड़ना। पयहे, पयहिज, पयहेज्ज (सूअ १, १०, १५; १, २, २, ११; १, २, ३, ६; उत्त ४, १२; स १३६)। संकृ. **पयहिय** (पउम ६३, १६; गच्छ १, २४)। कृ. **पयहियव्व** (स ७१४)।

पयहिण देखो **पदक्खिण** = प्रदक्षिण (भवि)।

पया सक [प्र+जनय्] प्रसव करना, जन्म देना। पयामि (विपा १, ७)। पयाएज्जासि (विपा १, ७)। भवि. पयाहिति, पयाहिंति, पयाहिसि (कप्प; पि ७६; कप्प)।

पया सक [प्र+या] प्रयाण करना, प्रस्थान करना। पयाइ (उत्त १३, २४)।

पया स्त्री [दे] चुल्ली, चुल्हा (राज)।

पया स्त्री. ब. [प्रजा] १ वशवर्त्ती मनुष्य, रैयत; 'जह य पयाण नरिंदो' (उव; विपा

१, १)। २ लोक, जन-समूह; (सिरि ४२; पंचा ७, ३७)। ३ जंतु-समूह; 'निव्विरण-चारी अरए पयासु' (आचा; सूअ १, ५, २, ६)। ४ संतान वाली स्त्री; 'निव्विद नंदि अरए पयासु अमोहदंसी' (आचा; सूअ १, १०, १५)। ५ संतान, संतति (सिरि ४२)। °णंद पुं [°नन्द] एक कुलकर पुरुष का नाम (पउम ३, ५३)। °नाह पुं [°नाथ] राजा, नरेश (सुपा ५७५)। °पाल पुं [°पाल] एक जैन मुनि जो पाँचवें बलदेव के पूर्वजन्म में गुरू थे (पउम २०, १९२)। °वइ पुं [°पति] १ ब्रह्मा, विधाता (पाअ; सुपा ३०५)। २ प्रथम वासुदेव के पिता का नाम (पउम २०, १८२; सम १५२)। ३ नक्षत्र-देव-विशेष, रोहिणी-नक्षत्र का अधिष्ठायक देव (ठा २, ३—पत्र ७७; सुज्ज १०, १२)। ४ दक्ष, कश्यप आदि ऋषि। ५ राजा, नरेश। ६ सूर्य, रवि। ७ वह्नि, अग्नि। ८ त्वष्टा। ९ पिता, जनक। १० कीट-विशेष। ११ जामाता (हे १, १७७; १८०)। १२ अहो-रात्र का उन्नीसवाँ मुहूर्त्त (सुज्ज १०, १३)।

पयाइ पुं [पदाति] प्यादा, पाँव से (पैदल) चलनेवाला सैनिक (हे २, १३८; षड्; कुमा; महा)।

पयाग पुंन [प्रयाग] तीर्थ-विशेष, जहाँ गंगा और यमुना का संगम है (पउम ८२, ८१; हे १, १७७)।

पयाण न [प्रदान] दान, वितरण (उवा; उप ५९७ टी; सुर ४, २१०; सुपा ४६२)।

पयाण न [प्रतान] विस्तार (भग १६, ६)।

पयाण न [प्रयाण] प्रस्थान, गमन (णाया १, ३; पण्ह २, १; पउम ५४, २८; महा)।

पयाम देखो **पकाम** (स ६५६)।

पयाम न [दे] अनुपूर्व, क्रमानुसार (दे ६, ९; पाअ)।

पयाय देखो **पयाग** (कुमा)।

पयाय वि [प्रयात] जिसने प्रयाण किया हो वह (उप २११ टी; महा, औप)।

पयाय वि [प्रजात] उत्पन्न, संजात; 'पयाय-साला विडिमा' (दस ७, ३१)।

पयाय वि [प्रजात, प्रजनित] प्रसूत, जिसने जन्म दिया हो वह; 'दारगं पयाया' (विपा १, १; २; कप्प; णाया १, १—पत्र ३३); 'पयाया पुत्तं' (वसु)।

पयाय देखो **पयाव** = प्रताप (गा ३२६; से ४, ३०)।

पयार सक [प्र + चारय्] प्रचार करना। पयारइ (सण)। संकृ. पयारिवि (अप) (सण)।

पयार सक [प्र + तारय्] प्रतारण करना, ठगना। पयारइ, पयारसि (सण)।

पयार पुं [प्रकार] १ भेद, किस्म। २ ढंग, रीति, तरह (हे १, ६८; कुमा)।

पयार पुं [प्राकार] किला, दुर्ग (पउम ३०, ४९)।

पयार पुं [प्रचार] १ संचार, संचरण (सुपा २४)। २ प्रसार, फैलाव (हे १, ६८)।

पयार पुं [प्रचार] १ प्रकर्ष-प्राप्ति (दसनि १, ४१)। २ आचरण, आचार (दसनि १, १३५)।

पयारण न [प्रतारण] वञ्चना, ठगाई (सुर १२, ६१)।

पयारिअ वि [प्रतारित] ठगा हुआ, वञ्चित (पाअ; सुर ४, १५५)।

पयाल पुं [पाताल] भगवान् अनन्तनाथजी का शासन-यक्ष; 'छम्मुह पयाल किन्नर' (संति ८)।

पयाव सक [प्र + तापय्] तपाना, गरम करना। वकृ. पयावेमाण (पि ५५२)। हेकृ. पयावित्तए (कप्प)।

पयाव पुं [प्रताप] १ तेज, प्रखरता (कुमा; सण)। २ प्रकृष्ट ताप, प्रखर ऊष्मा (पव ४)।

पयावण न [पाचन] पकवाना, पाक कराना (पण्ह १, १; श्रा ८)।

पयावण न [प्रतापन] १ गरम करना, तपाना (ओघ १८० भा; पिंड ३४; आचा)। २ अग्नि (कुप्र ३८९)।

पयावि वि [प्रतापिन्] १ प्रताप-शाली। २ पुं. इक्ष्वाकु वंश के एक राजा का नाम (पउम ५, ५)।

पयास सक [प्र + काशय्] १ व्यक्त करना। २ चमकाना। ३ प्रसिद्ध करना। पयासेइ (हे ४, ४५)। वकृ. पयासंत, पयासेंत, पयासअंत (सण; गा ४०३; उप ८३३ टी; पि ३९७)। कृ. पयासणिज्ज, पयासियव्व (उप ५९७ टी; उप पृ ५५)।

पयास देखो **पगास** = प्रकाश (पाअ; कुमा)।

पयास पुं [प्रयास] प्रयत्न, उद्यम (चेइय २६०)।

पयास (अप) नीचे देखो (भवि)।

पयासग वि [प्रकाशक] प्रकाश करनेवाला (सं ७८)।

पयासण न [प्रकाशन] १ प्रकाश-करण (आचा; सुपा ४१६)। २ वि. प्रकाशक, प्रकाश करनेवाला; 'परमत्थपयासणं वीरं' (पुप्फ १)।

पयासय देखो **पयासग** (विसे ११३०; सं १; पव ८९)।

पयासि वि [प्रकाशिन्] प्रकाश करनेवाला (सण; हम्मीर १४)।

पयासिय देखो **पगासिय** (भवि)।

पयासिर वि [प्रकाशितृ] प्रकाश करनेवाला (भवि)।

पयासे देखो **पयास** = प्र + काशय्।

पयाहिण देखो **पदक्खिण** = प्रदक्षिण (उवा, औप; भवि; पि ६५)।

पयाहिण देखो **पदक्खिण** = प्रदक्षिणय्। पयाहिणइ (भवि)। पयाहिणंति (कुप्र २९३)।

पयाहिणा देखो **पदक्खिणा** (सुपा ४७)।

पय्यवत्थाण (शौ) न [पर्यवस्थान] प्रकृति में अवस्थान (अभि ४८)।

पर सक [भ्रम्] भ्रमण करना, घूमना। परइ (हे ४, १६१; कुमा)।

पर देखो **प** = प्र (तंदु ४)।

पर वि [पर] १ अन्य, भिन्न, इतर (गा ३८४; महा; प्रासू ८; १५८)। २ तत्पर, तल्लीन; 'कोऊहलपरा' (महा; कुमा)। ३ श्रेष्ठ, उत्तम, प्रधान (आचा; रयण १५)। ४ प्रकर्ष-प्राप्त, प्रकृष्ट (आचा; श्रा २३)। ५ उत्तरवर्त्ती, बाद का; 'परलोग—' (महा)। ६ दूरवर्त्ती (सूअ १, ८; निचू १)। ७ अनात्मीय, अस्वीय (उत्त १; निचू २)। ८ पुं. शत्रु, दुश्मन, रिपु (सुर १२, ९२; कुमा; प्रासू ६)। ९ न. केवल, फक्त (कुमा; भवि)। °उट्ठ वि [°पुष्ट] अन्य से पालित। २ पुं. कोकिल पक्षी (हे १, १७९)। °उत्थिय वि

[°तीर्थिक] भिन्न दर्शनवाला (भग)। °एस पुं [°देश] विदेश, भिन्न, अन्य देश (भवि)। °ओ अ [°तस्] १ बाद में, परली—दूसरी तरफ; 'अडवीए परओ' (महा)। २ भिन्न में, इतर में (कुमा)। ३ इतर से, अन्य से (सूअ १, १२)। °गणिच्चय वि [°गणीय] भिन्न गण से संबन्ध रखनेवाला। स्त्री· °च्चिया (निचू ८)। °गरिहंझाण न [°गर्हाध्यान] इतर की निन्दा का विचार (आउ)। °घाय पुं [°घात] १ दूसरे को आघात पहुँचाना। २ पुंन. कर्म-विशेष, जिसके उदय से जीव अन्य बलवानों की भी दृष्टि में अजेय समझा जाता है वह कर्म; 'परघाउदया पाणी परेसि बलीणंपि होइ दुद्धरिसो' (कम्म १, ४४)। °चित्तण्णु वि [°चित्तज्ञ] अन्य के मन के भाव को जाननेवाला (उप १७६ टी)। °च्छंद, °छंद पुं [°च्छन्द] १ पर का अभिप्राय, अन्य का आशय (ठा ४, ४; भग २५, ७)। २ पराधीन, परतन्त्र (राज; पाअ)। °जाणुअ वि [°ज्ञ] १ पर को जाननेवाला। २ प्रकृष्ट जानकार (प्राकृ १८)। °ट्ठ पुं [°र्थ] परोपकार (राज)। °ट्ठा स्त्री [°र्थे] दूसरे के लिए; 'कडं परट्ठाए' (आचा)। °णिंदंझाण न [°निन्दाध्यान] अन्य की निन्दा का चिन्तन (आउ)। °ण्णुअ देखो °जाणुअ (प्राकृ १८)। °तंत वि [°तन्त्र] पराधीन, परायत्त (सुपा २३३)। °तिथिअ देखो °उत्थिय (भग; सम्म ८५)। °तीर न [°तीर] सामनेवाला किनारा (पाअ)। °त्त न [°त्व] १ भिन्नत्व, पार्थक्य। २ वैशेषिक दर्शन में प्रसिद्ध गुण-विशेष (विसे २४६१)। °त्त अ [°त्र] १ जन्मान्तर में, परलोक में (सुपा ५०८)। २ न. जन्मान्तर; 'ते इहअंपि परत्ते नरयगइं जंति नियमेण' (सुपा ५२१), 'इह लोए च्चिय दीसइ सग्गो नरओ य किं परत्तेण' (वज्जा १३८)। °त्थ अ [°त्र] जन्मान्तर में, 'इहं परत्थावि य जं विरुद्धं न किज्जए तंपि सया निसिद्धं' (सत्त ३७; सुर १४, ३३; उव)। °त्थ देखो °ट्ठ (सुर ४, ७३)। °त्थी स्त्री [°स्त्री] परकीय स्त्री (प्रासू १५५)। °दार पुंन [°दार] परकीय स्त्री (पडि); 'जो वज्जइ परदारं सो सेवइ नो कयाइ परदारं' (सुपा ३६६), 'दव्वेण अप्पकालं गहिया वेसावि होइ परदारं' (सुपा ३८०)। °दारि वि [°दारिन्] परस्त्री-लम्पट; 'ता एस वसुमईए कएण परदारियाए आयाओ' (सुर ६, १७६)। °पक्ख वि [°पक्ष] वैधर्मिक, भिन्न धर्म का अनुयायी (द्र १७)। °परिवाइय वि [°परिवादिक] इतर के दोषों को बोलनेवाला, पर-निन्दक (औप)। °परिवाय पुं [°परिवाद] १ पर के गुण-दोषों का विप्रकीर्ण वचन (औप, कप्प)। २ पर-निन्दा, इतर के दोषों का परिकीर्त्तन (ठा १; ४, ४)। ३ अन्य के सद्गुणों का अपलाप (पंचू)। °परिवाय पुं [°परिपात] अन्य का पातन, दोषोंद्घाटन-द्वारा दूसरे को गिराना (भग १२, ५)। °पुट्ठ देखो °उट्ठ (पण्ण १७; स ४१६)। °भव पुं [°भव] आगामी जन्म (औप; पण्ह १, १)। °भविअ वि [°भविक] आगामी जन्म से संबन्ध रखनेवाला (भग; ठा ६)। °भाग पुं [°भाग] १ श्रेष्ठ अंश। २ अन्य का हिस्सा। ३ अत्यन्त उत्कर्ष (उप पृ ६७)। °महेला स्त्री [°महेला] १ उत्तम स्त्री। २ परकीय स्त्री (सुपा ४७०)। °यत्त देखो °यत्त, 'परयत्तो परछंदो' (पाअ)। °लोअ, °लोग पुं [°लोक] १ इतर जन, स्वजन से भिन्न (उप ६८६ टी)। २ जन्मान्तर (पण्ह १, २; विसे १६५१; महा; प्रासू ७५; सण)। °वस वि [°वश] पराधीन, परतन्त्र (कुमा; सुपा २३७)। °वाइ पुं [°वादिन्] इतर दार्शनिक (औप)। °वाय पुं [°वाद] १ इतर दर्शन, भिन्न मत (औप)। २ श्रेष्ठ वादी (श्रा २३)। °वाय पुं [°वाच्] १ सज्जन, सुजन। २ वि. श्रेष्ठ वाणीवाला (श्रा २३)। °वाय वि [°वाज] १ श्रेष्ठ गतिवाला। २ पुं. श्रेष्ठ अश्व (श्रा २३)। °वाय वि [°वाय] जानकार, ज्ञानी (श्रा २३)। °वाय वि [°पाक] १ सुन्दर रसोई बनानेवाला। २ पुं. रसोइया (श्रा २३)। °वाय पुं [°पात] १ जुआड़ी, जुए का खेलाड़ी। २ अशुभ समय (श्रा २३)। °वाय पुं [°व्याद] ब्राह्मण, विप्र (श्रा २३)। °वाय पुं [°वाय] धनी जुलाहा, धनाढ्य तन्तुवाय (श्रा २३)। °वाय वि [°व्रात] १ प्रकृष्ट समूहवाला। २ न. सुभिक्ष समय का धान्य (श्रा २३)। °वाय पुं [°वात] ग्रीष्म समय का जलधि-तट (श्रा २३)। °वाय पुं [°व्याच] धूर्त्त, ठग (श्रा २३)। °वाय वि [°पाय] अनीतिवाला (श्रा २३)। °वाय वि [°वाक] वेदज्ञ, वेदवित् (श्रा २३)। °वाय वि [°पातृ] १ दयालु, कारुणिक। २ खूब पान करनेवाला। ३ खूब सूखनेवाला। ४ पुं. पावृट् काल का यवास वृक्ष। ५ मद्य-व्यसनी (श्रा २३)। °वाय वि [°बाद] सुस्थिर (श्रा २३)। °वाय वि [°व्यातृ] १ श्रेष्ठ आच्छादक। २ पुं. वस्त्र, कपड़ा (श्रा २३)। °वाय वि [°वातृ] १ प्रकृष्ट वहन करनेवाला। २ पुं. श्रेष्ठ तन्तु-वाय, उत्तम जुलाहा। ३ महान् पवन (श्रा २३)। °वाय वि [°व्यागस्] १ अति बड़ा अपराधी, गुरुतर अपराधी (श्रा २३)। °वाय वि [°व्याप] प्रकृष्ट विस्तारवाला (श्रा २३)। °वाय वि [°बाक] १ जहाँ पर प्रकृष्ट बक-समूह हो वह स्थान। २ न. मत्स्य-परिपूर्ण सरोवर (श्रा २३)। °वाय वि [°व्याय] १ श्रेष्ठ वायुवाला। २ जहाँ पर पक्षियों का विशेष आगमन होता हो वह। ३ पुं. अनुकूल पवन से चलता जहाज। ४ सुन्दर घर। ५ वनोद्देश, वन-प्रदेश (श्रा २३)। °वाय वि [°बाय] १ जहाँ पानी का प्रकृष्ट आगमन हो वह। २ न. जलधि-मुख, समुद्र का मुँह। ३ पुं. महासमुद्र, महा-सागर (श्रा १३)। °वाय वि [°व्याज] अन्य के पास-विशेष गमन करनेवाला। २ प्रार्थना-परायण (श्रा २३)। °वाय वि [°पाय] १ अत्यन्त हीन-भाग्य। २ नित्य-दरिद्र (श्रा २३)। °वाय वि [°वाप] १ प्रकृष्ट वपनवाला। २ पुं. कृषक (श्रा २३)। °वाय वि [°पाप] १ महापापी। २ हत्या करनेवाला (श्रा २३)। °वाय पुं [°पाक] १ कुम्भकार, कुम्हार। २ मुक्त जीव। ३ पहली तीन नरक-भूमि (श्रा २३)। °वाय वि [°पाग] वृक्ष-रहित, वृक्ष-वर्जित (श्रा २३)। °वाय वि [°वाज्] शत्रु-नाशक (श्रा २३)। °वाय पुं [°पाद] महान् वृक्ष,

बड़ा पेड़ (श्रा २३)। °वाय वि [°पात्] प्रकृष्ट पैरवाला (श्रा २३)। °वाय वि [°वाच] फलित शालि (श्रा २३)। °वाय वि [°वाप] १ विशेष भाव से शत्रु की चिन्ता करनेवाला। २ पुं. मन्त्री, अमात्य। ३ सुभट, योद्धा (श्रा २३)। °वाय वि [°पात] आपात-सुन्दर, जो प्रारम्भ में ही सुन्दर हो वह (श्रा २३)। °वाय वि [°व्राय] श्रेष्ठ विवाहवाला (श्रा २३)। °वाय वि [°पाय] श्रेष्ठ रक्षावाला, जिसकी रक्षा का उत्तम प्रबन्ध हो वह। २ अत्यन्त प्यासा। ३ पुं. राजा, नरेश (श्रा २३)। °वाय वि [°व्यात] १ इतर के पास विशेष वमन करनेवाला। २ पुं. भिक्षुक, याचक (श्रा २३)। °वाय वि [°पायस्] १ दूसरे की रक्षा के लिए हथियार रखनेवाला। २ पुं. सुभट, योद्धा (श्रा २३)। °वाया स्त्री [°व्याजा] वेश्या, वारांगना (श्रा २३)। °वाया स्त्री [°व्यागस्] असती, कुलटा (श्रा २३)। °वाया स्त्री [°व्यापा] अन्तिम समुद्र की स्थिति (श्रा २३)। °वाया स्त्री [°पाता] धूर्त-मैत्री (श्रा २३)। °वाया स्त्री [°व्राया] नृप-कन्या (श्रा २३)। °वाया स्त्री [°पागा] मरु-भूमि (श्रा २३)। °वाया स्त्री [°वाच्] कश्मीर-भूमि (श्रा २३)। °वाया स्त्री [°वाज्] नृप-स्थिति (श्रा २३)। °वाया स्त्री [°पात्] शतपदी, जन्तु-विशेष (श्रा २३)। °वाया स्त्री [°व्यावा] भेरी, वाद्य-विशेष (श्रा २३)। °विएस पुं [°विदेश] परदेश, विदेश (पउम ३२, ३६)। °व्वस देखो °वस (षड्; गा २६५; भवि)। °संतिग वि [°सत्क] पर-संबन्धी, परकीय (पण्ह १ ३)। °समय पुं [°समय] इतर दर्शन का सिद्धान्त; 'जावइया नयवाया तावइया चेव परसमया' (सम्म १४४)। °हुअ वि [°भृत] १ दूसरे से पुष्ट, अन्य से पालित (प्राप्र)। २ पुंस्त्री. कोयल, पिक पक्षी (कप्प)। स्त्री. °आ (सुर ३, ५४; पाअ)। °घाय देखो °घाय (प्रासू १०४; सम ६७)। °धीण देखो °हीण (धर्मवि १३६)। °यत्त वि [°यत्त] पराधीन, परतन्त्र (पउम ६४, ३४; उप पृ १८२; महा)। °हीण वि [°धीन] परतन्त्र, परायत्त (नाट—मालवि २०)।

पर° देखो **परा** = प्र (श्रा २३; पउम ६१, ८)।

परं अ [परम्] १ परन्तु, किन्तु; 'जं तुमं आणवेसित्ति, परं तुह दूरे नयरं' (महा)। २ उपरान्त; 'नो से कप्पइ एत्तो बाहिं; तेण परं, जत्थ नाणदंसणचरित्ताइं उस्सप्पंति त्ति बेमि' (कस १,५१; २,४—७; ४,१२—२६)। ३ केवल, फक्त; 'एस मह संतावो, परं माणससरमज्जणेण जइ अवगच्छइत्ति' (महा)।

परं अ [परुत्] आगामी वर्ष, 'अज्जं कल्लं परं परारिं' (वै २), 'अज्जं परं परारिं पुरिसा चिंतंति अत्थसंपत्तिं' (प्रासू ११०)।

परंग सक [परि + अङ्ग्] चलना, गति करना। कवकृ. **परंगिज्जमाण** (औप)।

परंगमण न [पर्यङ्गन] पाँव से चलना, चंक्रमण (औप)।

परंगामण न [पर्यङ्गन] चलाना, चंक्रमण कराना (भग ११, ११—पत्र ५४४)।

परंतम वि [परतम] अन्य को हैरान करनेवाला (ठा ४, २—पत्र २१६)।

परंतम वि [परतमस्] १ अन्य पर क्रोध करनेवाला। २ अन्य-विषयक अज्ञान रखनेवाला (ठा ४, २—पत्र २१६)।

परंतु अ [परन्तु] किन्तु (सुपा ४६६)।

परंदम वि [परन्दम] १ अन्य को पीड़ा पहुँचाने वाला (उत्त ७, ६)। २ अन्य को शान्त करनेवाला। ३ अश्व आदि को सिखानेवाला (ठा ४, २—पत्र २१३)।

परंपर, **परंपरग**, **परंपरय** } वि [परम्पर] १ भिन्न-भिन्न (णंदि)। २ व्यवहित; 'परंपर-सिद्ध—' (पण्ण १; ठा २, १; १०)। ३ पुंन. परम्परा, अविच्छिन्न धारा (उप ७३३), 'पुरिसपरंपरएण तेहिं इट्ठगा आणिया', 'एस दव्वपरंपरगो' (आव १), 'परंपरेणं' (कप्प; धर्मसं ५३१; १३०६)।

परंपरा स्त्री [परम्परा] १ अनुक्रम, परिपाटी (भग; औप; पाअ)। २ अविच्छिन्न धारा, प्रवाह (णाया १, १)। ३ निरन्तरता, अ-व्यवधान (भग ६, १)। ४ व्यवधान, अन्तर; 'अणंतरोववण्णगा चेव परंपरोववण्णगा चेव' (ठा २, २; भग १३, १)।

परंभरि वि [परम्भरि] दूसरे का पेट भरनेवाला (ठा ४, ३—पत्र २४७)।

परंमुह वि [पराङ्मुख] मुँह-फिरा, विमुख (पि २६७)।

परकीअ, **परकेर**, **परक्क** } वि [परकीय] अन्य-सम्बन्धी, इतर से सम्बन्ध रखनेवाला (विसे ४१; सुपा ३४६; अभि १५१; षड्; स्वप्न ४०; स २०७; षड्), 'न सेवियव्वा पमया परक्का' (गोय १३)।

परक्क न [दे] छोटा प्रवाह (दे ६, ८)।

परक्कंत वि [पराक्रान्त] १ जिसने पराक्रम किया हो वह। २ अन्य से आक्रान्त; 'गामाणुगामं दूइज्जमाणस्स दुज्जायं दुप्परक्कंतं भवइ' (आचा)। ३ न. पराक्रम, बल। ४ उद्यम, प्रयत्न। ५ अनुष्ठान; 'जे अबुद्धा महाभागा वीरा असम्मत्तदंसिणो, असुद्धं तेसि परक्कंतं' (सूअ १, ८, २२)।

परक्कम अक [परा + क्रम्] पराक्रम करना। परक्कमे, परक्कमेज्जा, परक्कमेज्जासि (आचा)। वकृ. **परक्कमंत**, **परक्कममाण** (आचा)। कृ. **परक्कमियव्व**, **परक्कम्म** (णाया १, १; सूअ १, १, १)।

परक्कम सक [परा + क्रम्] १ जाना। २ आसेवन करना। ३ अक. प्रवृत्ति करना। परक्कमे (दस ५, १, ६)। परक्कमिज्जा (दस ८, ४१)। संकृ. **परक्कम्म** (दस ८, ३२)।

परक्कम पुं [पराक्रम] गर्त आदि से भिन्न मार्ग (दस ५, १, ४)।

परक्कम पुंन [पराक्रम] १ वीर्य, बल, शक्ति, सामर्थ्य (विसे १०४६; ठा ३, १; कुमा), 'तस्स परक्कमं गीयमाणं न तए सुयं' (सम्मत्त १७६)। २ उत्साह। ३ चेष्टा, प्रयत्न (आचू १; प्रासू ६३; आचा)। ४ शत्रु का नाश करने की शक्ति (जं ३)। ५ पर-आक्रमण, पर-पराजय (ठा ४, १; आवम)। ६ गमन, गति (सूअ २, १, ६)। ७ मार्ग (दश० अ० चू० सू० ८६)।

परक्कमि वि [पराक्रमिन्] पराक्रम-संपन्न (धर्मवि १६; १२०)।

परग न [दे· परक] १ तृण-विशेष, जिससे फूल गूँथे जाते हैं (ग्राचा २, २, ३, २०; सूत्र २, २, ७)। २ धान्य-विशेष (सूत्र २, २, ११)।

परग वि [पारग] परग तृण का बना हुआ (ग्राचा २, १, ११, ३; २, २, ३, १४)।

परगासय वि [प्रकाशक] प्रकाश करनेवाला (तंदु ४६)।

परग्घ वि [पराघ] महर्घ, महँगा, बहुमूल्य (दस ७, ४३)।

परज्ज (अप) सक [परा + जि] पराजय करना, हराना। परज्जइ (भवि)।

परज्जिय (अप) वि [पराजित] पराजय-प्राप्त, हराया हुआ (भवि)।

परज्झ वि [दे] १ पर-वश, पराधीन, परतन्त्र; 'जेसंखया तुच्छपरप्पवाई ते पेज्ज-दोसाणुगया परज्झा' (उत्त ४, १३ बृह ४)। २ पुंन. परतन्त्रता, पराधीनता (ठा १०—पत्र ५०५; भग ७, ८—पत्र ३१४)।

परट्ट देखो परिअट्ट = परिवर्त (जीवस २५२; पव १६२; कम्म ५, ५६)।

परडा स्त्री [दे] सर्प-विशेष (दे ६, ५), 'उच्चारं कुणमाणो अपाणदेसम्मि गरुय-परडाए, दट्ठो पीडाए मग्रो' (सुपा ६२०)।

परदारिअ पुं [पारदारिक] परस्त्री-लम्पट (पउम १०५, १०७)।

परद्ध वि [दे] १ पीड़ित, दुःखित (दे ६, ७०; पाग्र; सुर ७, ४; १६, १४४; उप पृ २२०; महा)। २ पतित। ३ भीरु, डरपोक (दे ६, ७०)। ४ व्याप्त; 'जोइ परद्धा जीवा न दोसगुणदंसिणो होंति' (धम्मो १४)।

परप्पर देखो परोप्पर (पि ३११; नाट—मालती १६८)।

परब्भवमाण देखो पराभव = परा + भू।

परभत्त वि [दे] भीरु, डरपोक (षड्)।

परभाअ पुं [दे] सुरत, मैथुन (दे ६, २७)।

परम वि [परम] १ उत्कृष्ट, सर्वाधिक (सूत्र १, ६; जी ३७)। २ उत्तम, सर्वोत्तम, श्रेष्ठ (पंचव ४; धर्म ३; कुमा)। ३ अत्यर्थ, अत्यन्त (पराह १, ३; भग; ग्रौप)। ४ प्रधान, मुख्य (ग्राचा; दस ६, ३)। ५ पुं. मोक्ष, मुक्ति। ६ संयम, चारित्र (ग्राचा; सूत्र १, ६)। ७ न. सुख (दस ४)। ८ लगातार पाँच दिनों का उपवास (संबोध ५८)। °ट्ठ पुं [°र्थ] १ सत्य पदार्थ, वास्तविक चीज; 'अयं परमट्ठे सेसे अणट्ठे' (भग; धर्म १)। २ मोक्ष, मुक्ति (उत्त १८; पराह १, ३)। ३ संयम, चारित्र (सूत्र १, ६)। ४ पुंन. देखो नीचे °त्थ = र्थं; 'पर-मट्ठनिट्ठिग्रट्ठा' (पडि, धर्म २)। °ण्ण देखो °न्न (सम १५१)। °त्थ पुंन [°र्थ] १ तत्त्व, सत्य, 'तत्तं परमत्थं' (पाग्र), 'परम-त्थदो' (अभि ६१)। २—४ देखो °ट्ठ (सुपा २४; ११०; सण; प्रासू १६४; महा)। °त्थ न [°स्त्र] सर्वोत्तम हथियार, अमोघ अस्त्र (से १, १)। °दंसि वि [°दर्शिन्] १ मोक्ष देखनेवाला। २ मोक्ष-मार्ग का जानकार (ग्राचा)। °न्न न [°न्न] १ खीर, दुग्ध-प्रधान मिष्ट भोजन (सुपा ३६०)। २ एक दिन का उपवास (संबोध ५८)। °पय न [°पद] मोक्ष, निर्वाण, मुक्ति (पाग्र; भवि; अजि ४०; पंचा १४)। °प्प पुं [°त्मन्] सर्वोत्तम ग्रात्मा, परमेश्वर (कुमा; सुपा ८३; रयण ४३)। °प्पय देखो °पय (सुपा १२७)। °प्पय देखो °प्प (भवि)। °प्पया स्त्री [°त्मता] मुक्ति, मोक्ष; 'सेलेसिं ग्रारुहिउं अरिकेसरिसूरी परमप्पयं पत्तो' (सुपा १२७)। °बोधिसत्त पुं [°बोधिसत्त्व] परमार्हत, अर्हन् देव का परम भक्त (मोह ३)। °संखिज्ज न [°संख्येय] संख्या-विशेष (कम्म ४, ७१)। °सोमणस्सिय वि [°सौमनस्यित] सर्वोत्तम मनवाला, संतुष्ट मनवाला (ग्रौप; कप्प)। °सोमणस्सिय वि [°सौमनस्यिक] वही अर्थ (ग्रौप; कप्प)। °हेला स्त्री [°हेला] उत्कृष्ट तिरस्कार (सुपा ४७०)। °उ न [°युस्] १ लम्बा ग्रायुष्य, बड़ी उमर (पउम १०, ७)। २ जीवित काल, उमर (विपा १,१)। °णु पुं [°णु] सर्व-सूक्ष्म वस्तु (भग; गउड)। °हम्मिय [°धार्मिक] असुर-विशेष, नारक जीवों को दुःख देनेवाले देवों की एक जाति (सम २८)। °होहिअ वि [°धोवधिक] अवधिज्ञान-विशेषवाला, ज्ञानि-विशेष (भग)।

परमाहम्मिय वि [परमधार्मिक] सुख का अभिलाषी (दस ४, १)।

परमिट्ठि पुं [परमेष्ठिन्] १ ब्रह्मा, चतुरानन (पाग्र; सम्मत्त ७८)। २ अर्हन्, सिद्ध, ग्राचार्य, उपाध्याय और मुनि (सुपा ६५; ग्राप ६८; गण ६; निसा २०)।

परमुक्क वि [परामुक्त] परित्यक्त (पउम ७१, २६)।

परमुवगारि, **परमुवयारि** वि [परमोपकारिन्] बड़ा उपकार करनेवाला (सुर २, ४२; २, ३७)।

परमुह देखो परम्मुह (से २, १६)।

परमेट्ठि देखो परमिट्ठि (कुमा; भवि; चेइय ४६६)।

परमेसर पुं [परमेश्वर] सर्वैश्वर्य-संपन्न, परमात्मा (सम्मत्त १४४; भवि)।

परम्मुह वि [पराङ्मुख] विमुख, मुँह-फिरा, उदासीन (गाया १, २; काप्र ७२३; गा ६८८)।

परय न [परक] ग्राधिक्य, अतिशय (उत्त ३४, १४)।

परलोइअ वि [पारलौकिक] जन्मान्तर-संबन्धी (ग्राचा; सम ११६; पराह १, ५)।

परवाय वि [प्रवाज] १ प्रकृष्ट शब्द से प्रेरणा करनेवाला। २ पुं. सारथि, रथ हाँकनेवाला (श्रा २३)।

परवाय वि [प्रारवाय] १ श्रेष्ठ गाना गाने-वाला। २ पुं. उत्तम गवैया (श्रा २३)।

परवाय पुं [प्रपाज] नाज (अन्न) भरने का कोठा, वह घर जहाँ नाज संगृहीत किया जाता है, कोठार, बखार (श्रा २३)।

परवाया स्त्री [प्रवाप] गिरि-नदी, पहाड़ी नदी (श्रा २३)।

परस (अप) देखो फास = स्पर्श (पिंग; भवि)। °मणि पुं [°मणि] रत्न-विशेष, जिसके स्पर्श से लोहा सुवर्ण होता है (पिंग)।

परसण्ण (अप) देखो पसण्ण (पिंग)।

परसु पुं [परशु] अस्त्र-विशेष, परश्वध, कुठार, कुल्हाड़ी (भग ६, ३३; प्रासू ६; ६२; काल)। °राम पुं [°राम] जमदग्नि ऋषि का पुत्र, जिसने इक्कीस बार निःक्षत्रिय पृथिवी की थी (कुमा; पि २०८)।

परसुहत्त पुं [दे] वृक्ष, पेड़, दरख्त (दे ६, २९)।

परस्सर पुंस्त्री [दे.पराशर] गेंडा, पशु-विशेष (पराण १; राज)। स्त्री. °री (पराण ११)।

परहुत्त वि [पराभूत] पराजित, हराया गया (पउम ६१, ८)।

परा अ [परा] इन अर्थों का सूचक अव्यय— १ आभिमुख्य, संमुखता। २ त्याग। ३ धर्षण। ४ प्राधान्य, मुख्यता। ५ विक्रम। ६ गति, गमन। ७ भङ्ग। ८ अनादर। ९ तिरस्कार। १० प्रत्यावर्तन (हे २, २१७)। ११ भृश, अत्यन्त (ठा ३, २; श्रा २३)।

परा स्त्री [दे. परा] तृण-विशेष (पराह २, ३—पत्र १२३)।

पराइ सक [परा+जि] हराना, पराजय करना। संकृ. **पराइत्ता** (सूअनि १९९)।

पराइअ वि [पराजित] पराभव-प्राप्त (पउम २, ८९; औप; स ६३४; सुर ६, २५; १३, १७१; उत्त ३२, १२)।

पराइअ (अप) वि [परागत] गया हुआ (भवि)।

पराइण देखो **पराजिण**। पराइणइ (पि ४७३; भग)।

पराई स्त्री [परकीया] इतर से संबन्ध रखनेवाली, वह नायिका जो परपुरुष से प्रेम करे (हे ४, ३५०; ३६७)। देखो **पराय** = परकीय।

पराकम देखो **परक्कम** (सूअ २, १, ६)।

पराकय वि [पराकृत] निराकृत, निरस्त (अज्झ ३०)।

पराकर सक [परा+कृ] निराकरण करना। पराकरोदि (शौ) (नाट—चैत ३५)।

पराजय पुं [पराजय] परिभव, अभिभव, हार (राज)।

पराजय } सक [परा+जि] पराजय
पराजिण } करना, हराना। भूका. पराजयित्था (पि ५१७)। भवि. पराजिणिस्सइ (पि ५२१)। संकृ. **पराजिणित्ता** (ठा ४, २)। हेकृ. **पराजिणित्तए** (भग ७, ९)।

पराजिणिअ } देखो **पराइअ** = पराजित
पराजिय } (उप पृ ५२; महा)।

पराण देखो **पाण** = प्राण (नाट—चैत ५४; पि १३२)।

पराणग वि [परकीय] अन्य का, दूसरे का; 'जत्थ हिरएणसुवरएणं हत्थेण पराणगंपि नो छिप्पे' (गच्छ २, ५०)।

पराणिय वि [पराणीत] पहुँचा हुआ (भवि)।

पराणी सक [परा+णी] पहुँचाना। पराणए (भवि)। पराणेमि (स २३४); 'जइ भणसि ता निमेसमित्तेण तुमं तायमंदिरं पराणेमि' (कुप्र ६०)।

परानयण न [पराणयन] पहुँचाना; 'नियमभगिणीपरानयणे का लज्जा, अवि य ऊसवो एस' (उप ७२८ टी)।

पराभव सक [परा+भू] हराना। कवकृ. **पराभविज्जंत, परब्भवमाण** (उप ३२० टी; णाया १, २; १८)।

पराभव पुं [पराभव] पराजय, हार (विपा १, १)।

पराभविअ वि [पराभूत] अभिभूत, हराया हुआ (धर्मवि ६८)।

परामट्ठ देखो **परामुट्ठ** (पउम ९८, ७३)।

परामरिस सक [परा+मृश्] १ विचार करना, विवेचन करना। २ स्पर्श करना। परामरिसइ (भवि)। वकृ. **परामरिसंत** (भवि)। संकृ. **परामरिसिअ** (नाट—मृच्छ ८७)।

परामरिस पुं [परामर्श] १ विवेचन, विचार (प्रामा)। २ युक्ति, उपपत्ति। ३ स्पर्श। ४ न्याय- शास्त्रोक्त व्याप्ति-विशिष्ट रूप से पक्ष का ज्ञान (हे २, १०५)।

परामिट्ठ } वि [परामृष्ट] १ विचारित,
परामुट्ठ } विवेचित। २ स्पृष्ट, छुआ हुआ (नाट—मृच्छ ३३; हे १ १३१; स १००; कुप्र ५१)।

परामुस सक [परा+मृश] १ स्पर्श करना, छूना। २ विचार करना, विवेचन करना। ३ आच्छादित करना। ४ पोंछना। ५ लोप करना। परामुसइ (कस)। कर्म. 'सूरो परामुसिज्जइ णाभिजुहुक्खित्तधूलिहिं' (उवर १२३)। वकृ. 'नियउत्तरिज्जेण नयणाइं **परामुसंतेण** भणियं' (कुप्र ६६)। कवकृ. **परामुसिज्जमाण** (स ३४९)।

परामुसिय देखो **परामुट्ठ** (महा; पाअ)।

पराय अक [प्र+राज्] विशेष शोभना। वकृ. **परायंत** (कप्प)।

पराय पुं [पराग] १ धूली, रज; 'रेणू पंसू रओ पराओ य' (पाअ)। २ पुष्प-रज (कुमा; गउड)।

पराय } वि [परकीय] पर-संबन्धी, इतर
परायग } से संबन्ध रखनेवाला; 'नो अप्पणा पराया गुरुणो कइयावि हुंति सुद्धाणं' (सट्ठि १०५; हे ४, ३७६; भग ८; ५)।

परायण वि [परायण] तत्पर (कम्म १, ६१)।

परारिं अ [परारि] आगामी तीसरा वर्ष (प्रासू ११०; वै २)।

पराल देखो **पलाल** (प्रासू १३८)।

पराव (अप) सक [प्र+आप्] प्राप्त करना। परावहिं (हे ४, ४४२)।

परावत्त अक [परा+वृत्] १ बदलना; पलटना। २ पीछे लौटना। परावत्तइ (उवर ८८)। वकृ. **परावत्तमाण** (राज)।

परावत्त सक [परा+वर्तय्] १ फिराना। २ आवृत्ति करना। परावत्तंति (पव ७१), परावत्तेसि (मोह ४७)। संकृ. 'तो सागरेण भणियं अरे **परावत्तिऊण** नियघरहं' (कुप्र ३७८)।

परावत्त पुं [परावर्त] परिवर्तन, हेरफेर, हेराफेरी (स ६२; उप पृ. २७; महा)।

परावत्ति वि [परावर्तिन्] परिवर्तन करनेवाला; 'वेसपरावत्तिणी गुलिया' (महा)।

परावत्ति स्त्री [परावृत्ति] परिवर्तन, हेराफेरी (उप १०३१ टी)।

परावत्तिय वि [परावर्तित] परिवर्तित, बदला हुआ (महा)।

परासर पुं [पराशर] १ पशु-विशेष (राज)। २ ऋषि-विशेष (औप; गा ८९२)।

परासु वि [परासु] प्राण-रहित, मृत (श्रा १४; धर्मसं ६७)।

पराहव देखो **पराभव** = पराभव (गुण ६)।

पराहुत्त वि [दे. पराङ्मुख] विमुख, मुँह-फिरा (ग २४५; से १०, ६४; उप पृ ३८८; ओघ ५१४; वज्जा २६), 'महविणयपराहुत्तो' (पउम ३३, ७४; सुख २, १७)।

पराहुत्त } वि [पराभूत] अभिभूत, हराया
पराहूअ } हुआ (उप ६४८ टी; पाअ)।

परि अ [परि] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ सर्वतोभाव, समंतात्, चारों ओर (गा २२; सूअ १, ६)। २ परिपाटी, क्रम (पिंग)। ३ पुनः पुनः; फिर फिर (पराह १, १; श्रावक २८४)। ४ सामीप्य, समीपता; (गउड ७७६)। ५ विनिमय, बदला; 'परियाण' = परिदान (भवि)। ६ अतिशय, विशेष (स ७३४)। ७ संपूर्णता; 'परिट्ठिअ' (पव ६६)। ८ बाहरपन (श्रावक २८४)। ९ ऊपर (हे २, २११; सुपा २६६)। १० शेष, बाकी। ११ पूजा। १२ व्यापकता। १३ उपरम, निवृत्ति। १४ शोक। १५ किसी प्रकार की प्राप्ति। १६ आख्यान। १७ संतोष-भाषण। १८ भूषण, अलंकरण। १९ आलिंगन। २० नियम। २१ वर्जन, प्रतिषेध (हे २, २१७, भवि; गउड)। २२ निरर्थक भी इसका प्रयोग होता है (गउड १०; सण)।

परि देखो **पडि** = प्रति (ठा ५, १—पत्र ३०२; पएण १६—पत्र ७७४; ७८१)।

परि स्त्री [दे] गीति, गीत (कुमा)।

परि सक [क्षिप्] फेंकना। परिइ (षड्)।

परिअंज सक [परि + भञ्ज्] भाँगना, तोड़ना। परिअंजइ (धात्वा १४३)।

परिअंत सक [श्लिष्] १ आलिंगन करना। २ संसर्ग करना। परिअंतइ (हे ४, १९०)।

परिअंत देखो **पज्जंत** (पराह १, ३; पउम ६५, १६; सूअ २, १, १५)।

परिअंतणा स्त्री [परियन्त्रणा] अतिशय यन्त्रणा (नाट—मालती २८)।

परिअंतिअ वि [श्लिष्ट] आलिंगित (कुमा)।

परिअंभिअ वि [परिजृम्भित] विकसित (से २, २०)।

परिअट्ट अक [परि + वृत्] पलटना, बदलना। वकृ. 'दिट्ठो अपरिअट्टंतीए सहयारच्छायाए एसो' (कुप्र ४५; महा), **परियट्टमाण** (महा)।

परिअट्ट सक [परि + वर्तय्] १ पलटाना, बदलाना। २ आवृत्ति करना, पठित पाठ को याद करना। ३ फिराना, घुमाना। परियट्टइ, परियट्टेइ (भवि; उव)। हेकृ. 'परियट्टिउमाढत्तो नलिणीगुम्मं ति अज्भयणं' (कुप्र १७३)।

परिअट्ट सक [परि + अट्] परिभ्रमण करना, घूमना। परिअट्टइ (हे ४, २३०)। संकृ. **परियट्टिवि** (अप) (भवि)।

परिअट्ट पुं [दे] रजक, धोबी (दे ६, १५)।

परिअट्ट पुं [परिवर्त] १ पलटाव, बदला। २ समय का परिणाम-विशेष, अनन्त उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी काल (विपा १,१; सुर १६, १४५; पव १६२)।

परिअट्टग वि [परिवर्तक] परिवर्तन करनेवाला (निचू १०)।

परिअट्टण न [परिवर्तन] १ पलटाव, बदला करना (पिंड ३२४; वै ६७)। २ द्विगुण, त्रिगुण आदि उपकरण (आचा १, २, १, १)।

परिअट्टणा स्त्री [परिवर्तना] १ फिर फिर होना (पराह १, १)। २ आवृत्ति, पठित पाठ का आवर्तन (आचा २, १, ४, २; उत्त २९, १; ३०, ३४; औप; ठा ५, ३)। ३ द्विगुण आदि उपकरण (पि २८९)। ४ बदला करना (पिंड ३२५)।

परिअट्टय वि [पर्यटक] परिभ्रमण करनेवाला; 'मेरुगिरिसययपरियट्टयं' (कप्प ३९)।

परिअट्टलिअ वि [दे] परिच्छिन्न (दे ६, ३६)।

परिअट्टविअ वि [दे] परिच्छिन्न (षड्)।

परिअट्टिय वि [परिवर्तित] बदलाया हुआ (ठा ३, ४; पिंड ३२३; पंचा १३, १२)। देखो **परिअत्तिअ**।

परिअड सक [परि + अट्] परिभ्रमण करना। परिअडंति (श्रावक १३३)। वकृ. **परियडंत** (सुर २, २)।

परिअडण न [पर्यटन] परिभ्रमण (स ११४)।

परिअडि स्त्री [दे] १ वृति, बाड़। २ वि. मूर्ख, बेवकूफ (दे ६, ७३)।

परिअडिअ वि [पर्यटित] परिभ्रान्त, भटका हुआ (सिक्खा १७)।

परिअड्डिअ वि [दे] प्रकटित, व्यक्त किया हुआ (षड्)।

परिअड्ढ अक [परि + वृध्] बढ़ना, 'परिअड्ढइ लायरणं' (हे ८, २२०)।

परिअड्ढ सक [परि + वर्धय्] बढ़ाना (हे ४; २२०)।

परिअड्ढि स्त्री [परिवृद्धि] विशेष वृद्धि (प्राकृ २१)।

परिअड्ढिअ वि [परिवर्धिन्, °क] बढ़ानेवाला, 'समणगणवंदपरियड्ढिए' (औप)।

परिअड्ढिअ वि [पर्याढ्यक] परिपूर्ण (औप)।

परिअड्ढिअ वि [परिकर्षिन्, °क] खींचनेवाला, आकर्षक (औप)।

परिअड्ढिअ वि [परिकृष्ट] खींचा हुआ, आकृष्ट; 'जस्स समरेसु रेहइ हयगयमयमिलियपरिमलुग्गारा। दढपरियड्ढियजयसिरिकेसकलावो व्व खग्गलया' (सुपा ३१)।

परिअण पुं [परिजन] १ परिवार, कुटुम्ब, पुत्र-कलत्र आदि पालनीय वर्ग। २ अनुचर, अनुगामी (गा २८३; गउड; पि ३५०)।

परिअत्त देखो **परिअंत** = श्लिष्। परिअत्तइ (हे ४, १९० टी)।

परिअत्त देखो **परिअट्ट** = परि + वृत्। परियत्तइ (भवि); 'नडुव्व परिअत्तए जीवो' (वै ६०), परियत्तए (उवा)। वकृ. **परियत्तमाण** (महा)।

परिअत्त देखो **परिअट्ट** = परि + वर्तय्। संकृ. **परियत्तेउ** (तंदु ३८)।

परिअत्त देखो **परिअट्ट** = परिवर्त (औप)।

परिअत्त वि [दे] प्रसृत, फैला हुआ; 'सव्वासणरिउसंभवहो करपरिअत्ता तावँ' (हे ४, ३९५)।

परिअत्त वि [परिवृत्त] पलटा हुआ (भवि)।

परिअत्तण देखो **परिअट्टण** (गउड), 'चाइयणकरपरंपरपरियत्तणखेयवसपरिस्संता। अत्था किविणघरत्था सुत्थावत्था सुयंति व्व' (सुपा ६३३)।

परिअत्तणा देखो **परिअट्टणा** (राज)।

परिअत्तमाण देखो **परिअत्त**।

परिअत्तमाणी स्त्री [परिवर्तमाना] कर्मप्रकृति-विशेष, वह कर्म-प्रकृति जो अन्य प्रकृति

के बन्ध या उदय को रोक कर स्वयं बन्ध या उदय को प्राप्त होती है (पंच ३, १४; ३, ४३; कम्म ५, १ टी)।

परिअत्ता स्त्री [परिवर्ता] ऊपर देखो (कम्म ५, १)।

परिअत्तिअ वि [परिवर्तित] १ मोड़ा हुआ; 'वालिअयं परिअत्तिअं' (पाअ)। २ देखो परिअट्टिय (भवि)।

परिअर सक [परि + चर्] सेवा करना। वकृ. परिअरंत (नाट—शकु १५८)।

परिअर वि [दे] लीन, निमग्न (दे ६, २४)।

परिअर पुं [परिकर] १ कटि-कन्धन; 'सन्नद्धबद्धपरियरभडेहि' (भवि)। २ परिवार; 'किरणकिलामियपरियरभुयंगविसजलणधूमतिमिरेहिं' (गउड; चेइय ६४)।

परिअर पुं [परिचर] सेवक, भृत्य; 'अणुणिज्जंतं रक्खापरिअरधुअधवलचामरणिहेण' (गउड)।

परिअरण न [परिचरण] सेवा (संबोध ३६)।

परिअरणा स्त्री [परिचरणा] सेवा (सम्मत्त २१५)।

परिअरिय वि [परिकरित, परिवृत] १ परिवार-युक्त; 'हयगयरहजोहसुहडपरियरिओ' (महा; भवि; सण)। २ परिवेष्टित; 'तओ तं समायण्णिऊण सुहसुहं ताण गेयं समंतओ परियरिया सव्वलोगेणं' (महा; सिरि १२८२)।

परिअल सक [गम्] जाना, गमन करना। परिअलइ (हे ४, १६२)।

परिअल } पुंस्त्री [दे] थाल, थलिया, भोजन-
परिअलि } पात्र (भवि; दे ६, १२)।

परिअलिअ वि [गत] गया हुआ (कुमा)।

परिअल्ल देखो परिअल। परिअल्लइ (हे ४, १६२)। संकृ. परिअल्लिऊण (कुमा)।

परिआरअ वि [परिचारक] सेवक, भृत्य (चारु ५३)। स्त्री. °रिआ (अभि १६६)।

परिआल सक [वेष्टय्] वेष्टन करना, लपेटना। परिआलेइ (हे ४, ५१)।

परिआल वि [दे] परिवृत, परिवेष्टित; 'सो जयइ जामइल्लायमाणमुहलालिवलयपरिआलं।
लच्छिनिवेसंतेउरवइं व
जो वहइ वणमालं' (गउड)।

परिआल देखो परिवार (णाया १, ८; ठा ४, २; औप)।

परिआलिअ वि [वेष्टित] लपेटा हुआ, बेढ़ा हुआ (कुमा; पाअ)।

परिआव देखो परिताव (दस ६, २, १४)।

परिआविअ सक [पर्या + पा] पीना। परिआविएज्जा (सूअ २, १, ४६)।

परिआसमंत (अप) अ [पर्यासमन्तात्] चारों ओर से (भवि)।

परिइ सक [परि + इ] पर्यटन करना। परिंयंति (उत्त २७, १३)।

परिइण्ण वि [परिकीर्ण] व्याप्त (सम्मत्त १५६)।

परिइद (शौ) वि [परिचित] परिचय-विशिष्ट, ज्ञात, पहचाना हुआ (अभि २४५)।

परिउंब सक [परि + चुम्ब्] चुम्बन करना। परिउंबइ (भवि)।

परिउंबण न [परिचुम्बन] सर्वतः चुम्बन (गा २२; हास्य १३४)।

परिउंबणा स्त्री [परिचुम्बना] ऊपर देखो; 'गंडपरिउंबणापुलइअंग ण पुणो चिराइस्सं' (गा २०)।

परिउज्झिय वि [पर्युज्झित] सर्वथा त्यक्त (सण)।

परिउट्ठ वि [परितुष्ट] विशेष तुष्ट (स ७३४)।

परिउत्थ वि [दे] प्रोषित, प्रवास में गया हुआ (दे ६, १३)।

परिउसिअ वि [पर्युषित] बासी, ठण्ढा, भाफ निकला हुआ (भोजन) (दे १, ३७)।

परिऊढ वि [दे. परिगूढ] क्षाम, कृश, पतला; 'उप्फुल्लिआइ खेल्लउ मा
णं वारेहि होउ परिऊढा।
मा जहणभारगरुई पुरिसाअंती
किलिम्मिहिइ' (गा १६६)।

परिऊरण न [परिपूरण] परिपूर्ति (नाट—शकु ८)।

परिएस देखो परिवेस = परि + विष्। कवकृ. परिएसिज्जमाण (आचा २, १, २, १)।

परिएस देखो परिवेस = परिवेश (स ३१२)।

परिओस सक [परि + तोषय्] संतुष्ट करना, खुशी करना। परिओसइ (भवि; सण)।

परिओस पुं [परितोष] आनन्द, संतोष, खुशी (से ११, ३; गा ६८; २०६; स ६; सुपा ३७०)।

परिओस पुं [दे. परिद्वेष] विशेष द्वेष (भवि)।

परिओसिय वि [परितोषित] संतुष्ट किया हुआ (से १३, २५; भवि)।

परिंत देखो परी = परि + इ।

परिकंख सक [परि + काङ्क्ष्] १ विशेष अभिलाषा करना। २ प्रतीक्षा करना। परिकंखए (उत्त ७, २)।

परिकंद पुं [परिक्रन्द] आक्रन्द, चिल्लाहट (हम्मीर ३०)।

परिकंपि वि [परिकम्पिन्] अतिशय कँपानेवाला (गउड)।

परिकंपिर वि [परिकम्पितृ] विशेष काँपनेवाला (सण)।

परिकच्छिय वि [परिकक्षित] परिगृहीत (राय)।

परिकट्टलिअ वि [दे] एकत्र पिण्डीकृत (पिंड २३६)।

परिकड्ढ सक [परि + कृष्] १ पार्श्व भाग में खींचना। २ प्रारम्भ करना। वकृ. परिकड्ढेमाण (राज)। संकृ. परिकड्ढिऊण (पंचव २)।

परिकढिण वि [परिकठिन] अत्यन्त कठिन (गउड)।

परिकप्प सक [परि + कल्पय्] १ निष्पादन करना। २ कल्पना करना। परिकप्पयंति (सूअ १, ७, १३)। संकृ परिकप्पिऊण (चेइय १४)।

परिकप्पिय वि [परिकल्पित] छिन्न, काटा हुआ (पण्ह १, ३)। देखो परिगप्पिय।

परिकब्बुर वि [परिकर्बुर] विशेष कबरा—चितकबरा (गउड)।

परिकम्म } न [परिकर्मन्] १ गुण-विशेष
परिकम्मण } का आधान, संस्कार-करण; 'परिकम्मं किरियाए वत्थूणं गुणविसेस-

परिणामो' (विसे ६२३; सुर १३, १२४), 'तेवि पयट्टा काउं सरीरपरिकम्मणं एवं' (कुप्र २७१; कप्प; उव)। २ संस्कार का कारण-भूत शास्त्र (णंदि)। ३ गणित-विशेष। ४ संख्यान-विशेष, एक तरह की गणना (ठा १०—पत्र ४९६)। ५ निष्पादन (पव १३३)।

परिकम्मणा स्त्री. ऊपर देखो; 'खेत्तमरूवं निच्चं न तस्स परिकम्मणा नय विणासो' (विसे ६२४; सम्म ५४; संबोध ५३; उपपं ३४)।

परिकम्मिय वि [परिकर्मित] परिकर्म-विशिष्ट, संस्कारित (कप्प)।

परिकर देखो **परिअर**=परिकर (पिंग)।

परिकलण न [परिकलन] उपभोग; 'भमर-परिकलणखमकमलभूसियसरो' (सुपा ३)।

परिकलिअ वि [परिकलित] १ युक्त, सहित (सिरि ३८१)। २ व्याप्त (सम्मत्त २१५)। ३ प्राप्त; 'अंजलिपरिकलियजलं व गलइ इह जोयं' (धर्मवि २५)।

परिकवलणा स्त्री [परिकवलना] भक्षण; 'हरियपरिकवलणापुट्ठगोसंकुला' (सुपा ३)।

परिकविल वि [परिकपिल] सर्वतोभाव से कपिल वर्णवाला (गउड)।

परिकविस वि [परिकपिश] अतिशय कपिश रँगवाला (गउड)।

परिकसण न [परिक ्ण] खींचाव (गउड)।

परिकह सक [परि+कथय्] प्ररूपण करना, कहना। परिकहेइ (उवा), परिकहंतु (कम्म ६, ७५)। कर्म. परिकहिज्जइ (पि ५४३)। हेकृ. परिकहेउं (औप)।

परिकहण न [परिकथन] आख्यान, प्ररूपण (सुपा २)।

परिकहणा स्त्री [परिकथना] ऊपर देखो (आवम)।

परिकहा स्त्री [परिकथा] १ बातचीत। २ वर्णन (पिंड १२६)।

परिकहिय वि [परिकथित] प्ररूपित, आख्यात (महा)।

परिकिण्ण देखो **परिकिन्न**; 'चेडियाचक्कवाल-परिकिण्णा' (उवा)।

परिकित्तिअ वि [परिकीर्त्तित] व्यावर्णित, श्लाघित (श्रु ११०)।

परिकिन्न वि [परिकीर्ण] १ परिवृत, वेष्टित, 'नियपरियणपरिकिन्नो' (धर्मवि ५४)। २ व्याप्त (सुर १, ५६)।

परिकिलंत वि [परिक्लान्त] विशेष खिन्न (उप २६४ टी)।

परिकिलेस सक [परि+क्लेशय्] दुःखी करना, हैरान करना। परिकिलेसंति (भग)। संकृ. परिकिलेसित्ता (भग)।

परिकिलेस पुं [परिक्लेश] दुःख, बाधा, हैरानी (सूअ २, २, ५५; औप; स ६७५; धर्मसं १००४)।

परिकीलिर वि [परिक्रीडितृ] अतिशय क्रीड़ा करनेवाला (सण)।

परिकुंठिय वि [परिकुण्ठित] जड़ीभूत (विसे १८३)।

परिकुडिल वि [परिकुटिल] विशेष वक्र (सुर १, १)।

परिकुद्ध वि [परिक्रुद्ध] अत्यन्त कुपित (धर्मवि १२४)।

परिकुविय वि [परिकुपित] अतिशय क्रुद्ध (णाया १, ८; उव; सण)।

परिकोमल वि [परिकोमल] सर्वथा कोमल (गउड)।

परिकंत वि [पराक्रान्त] पराक्रम-युक्त (सूअ १, ३, ४, १५)।

परिक्कम सक [परि+क्रम्] १ पाँव से चलना। २ समीप में जाना। ३ पराभव करना। ४ अक. पराक्रम करना। परिक्कमदि (रुक्मि ४६)। परिक्कमसि (रुक्मि ५५)। परिक्कमेध (शौ) (पि ४८१)। वकृ. **परिक्कमंत** (नाट)। कृ. **परिक्कमियव्व** (णाया १, ५—पत्र १०३)। संकृ. **परिक्कम्म** (सूअ १, ४, १, २)।

परिक्कम देखो **परिकम**=पराक्रम (णाया १, १; सण; उत्त १८, २४)।

परिक्कहिअ देखो **परिकहिय** (सुपा २०८)।

परिक्काम देखो **परिक्कम**=परि+क्रम्। परिक्कामदि (पि ४८१; त्रि ८७)।

परिक्ख सक [परि+ईक्ष्] परखना, परीक्षा करना। परिक्खइ, परिक्खए, परिक्खंति, परिक्खउ (भवि; महा; वज्जा १५८; स ४५७)। वकृ. **परिक्खंत**; **परिक्खमाण** (ओघ ८० भा; श्रा १४)। संकृ. **परिक्खिय** (उव)। कृ. **परिक्खियव्व** (काल)।

परिक्खअ वि [परीक्षक] परीक्षा करनेवाला (सुपा ४२७; श्रा १४)।

परिक्खअ वि [परिक्षत] आहत, जिसको घाव हुआ हो वह (से ८, ७३)।

परिक्खअ पुं [परिक्षय] १ क्रमशः हानि; 'बहुलपक्खचंदस्स जोण्हापरिक्खओ विअ' (चारु ८)। २ क्षय, नाश (गउड)।

परिक्खण न [परीक्षण] परीक्षा (स ४६६; कप्पू; सुपा ४४६; णाया १, ७ भवि)।

परिक्खणा स्त्री [परीक्षणा] परीक्षा (पउम ६१, ३३)।

परिक्खमाण देखो **परिक्ख**।

परिक्खल अक [परि+स्खल्] स्खलित होना। वकृ. **परिक्खलंत** (से ४, १७)।

परिक्खलिअ वि [परिस्खलित] स्खलना-प्राप्त (पि ३०६)।

परिक्खा स्त्री [परीक्षा] परख, जाँच (नाट—मालवि २२)।

परिक्खाइअअ वि [दे] परिक्षीण (षड्)।

परिक्खाम वि [परिक्षाम] अतिशय कृश (उत्तर ७२; नाट—रत्ना ३)।

परिक्खि वि [परिक्षिन्] परखनेवाला, परीक्षक (श्रा १४)।

परिक्खित्त वि [परिक्षिप्त] १ वेष्टित, घेरा हुआ (औप; पाअ; से १, ५२; वसु)। २ सर्वथा क्षिप्त (आवम)। ३ चारों ओर से व्याप्त (राय)।

परिक्खिय वि [परीक्षित] जिसकी परीक्षा की गई हो वह (प्रासू १५)।

परिक्खिव सक [परि+क्षिप्] १ वेष्टन करना। २ तिरस्कार करना। ३ व्याप्त करना। ४ फेंकना; 'एवं खु जरामरणं परिक्खिवइ वग्गुरा व मयजूहं' (तंदु ३३; जीवस १८६)। कर्म. परिक्खिवीआमो (पि ३१६)।

परिक्खिविय वि [परिक्षित] फेंका हुआ (हम्मीर ३२)।

परिक्खेव वि [परिक्षेप] घेरा, परिधि (भग; सम ५६; कस; औप)।

परिक्खेवि वि [परिक्षेपिन्] तिरस्कार करनेवाला (उत्त ११, ८)।

परिखंअ पुं [दे] काहार, कहार, जलादि-वाहक, नोकर (दे २, २७)।

परिखज्ज सक [परि + खर्ज्] खुजाना, खुजलाना। कवकृ 'परिखज्जमाणमत्थयदेसो' (उप ६८६ टि)।

परिखण न [परीक्षण] परीक्षा-करण, परीक्षा लेने, परखने या जाँच करने का काम (पव ३८)।

परिखविय वि [परिक्षपित] परिक्षीण; 'गुरुग्रट्टज्झाणपरिखवियसरीरो' (महा)।

परिखाम वि [परिक्षाम] अति दुर्बल, विशेष कृश (गा १९६)।

परिखित्त देखो **परिक्खित्त** (सण)।

परिखिव देखो **परिक्खिव**। परिखिवइ (भवि); 'राया तं परिखिवई दोहग्गवईण मज्झम्मि' (सम्मत्त २१७; चेइय ६५५)।

परिखिविय देखो **परिखित्त** (सण)।

परिखुहिय वि [परिक्षुब्ध] अतिशय क्षोभ को प्राप्त (भवि)।

परिखेइय वि [परिखेदित] विशेष खिन्न किया हुआ (सण)।

परिखेद (शौ) पुं [परिखेद] विशेष खेद (स्वप्न १०, ८०)।

परिखेय सक [परि + खेदय्] अतिशय खिन्न करना। परिखेवइ (सण)। संकृ. **परिखेइवि** (अप) (सण)।

परिखेविय (अप) देखो **परिखिविय** (सण)।

परिगंतु देखो **परिगम**।

परिगण सक [परि + गणय्] १ गणना करना। २ चिन्तन करना, विचार करना। वकृ—'एस थक्का मम गमणस्स त्ति परि-गणंतेण विरणविग्रो राया' (महा)।

परिगप्पण न [परिकल्पन] कल्पना (धर्मसं ६८१)।

परिगप्पणा स्त्री [परिकल्पना] ऊपर देखो (धर्मसं ३०५)।

परिगप्पिय वि [परिकल्पित] जिसकी कल्पना की गई हो वह (स ११३; धर्मसं ६६६)। देखो **परिकप्पिय**।

परिगम सक [परि + गम्] १ जाना, गमन करना। २ चारों ओर से वेष्टन करना। ३ व्याप्त करना। संकृ. **परिगंतु** (सण)।

परिगमण न [परिगमन] १ गुण, पर्याय; 'परिगमणं पज्जाग्रो अणेगकरणंगुणोत्ति एगत्था' (सम्म १०६)। २ समन्ताद् गमन (निचू ३)।

परिगमिर वि [परिगन्तृ] जानेवाला (सण)।

परिगय वि [परिगत] १ परिवेष्टित; 'मणु-स्सवग्गुरापरिगए' (उवा; गा ६६), 'बहुपरि-यणपरिगया' (सम्मत्त २१७)। २ व्याप्त; 'विसपरिगयाहिं दाढाहिं' (उवा)।

परिगर पुं [परिकर] परिवार; 'सेसाण तु हरियव्वं परिगरविहवकालमादीणि णाउं' (धर्मसं ६२६)।

परिगरिय वि [परिकरित] देखो **परिअरिअ** (सुपा १२७)।

परिगल अक [परि + गल्] १ गल जाना, क्षीण होना। २ झरना, टपकना। परिगलइ (काल)। वकृ. **परिगलंत** (पउम ११२, १५; तंदु ४४)।

परिगलिय वि [परिगलित] गला हुआ, परिक्षीण (कुप्र ७; महा; सुपा ८७; ३६२)।

परिगलिर वि [परिगलितृ] गल जानेवाला, क्षीण होनेवाला (सण)।

परिगह देखो **परिगेण्ह**। संकृ. **परिगहिअ** (मा ४८)।

परिगह देखो **परिग्गह** (कुमा)।

परिगहिय देखो **परिग्गहिय** (बृह १)।

परिगा सक [परि + गै] गान करना। कवकृ. **परिगिज्जमाण** (णाया १, १)।

परिगालण न [परिगालन] गालन, छानन (पएह १, १)।

परिगिज्जमाण देखो **परिगा**।

परिगिज्झ } **परिगिज्झिय** } देखो **परिगेण्ह**।

परिगिण्ह देखो **परिगेण्ह**। परिगिण्हइ (आचू १)। वकृ. **परिगिण्हंत**, **परिगिण्हमाण** (सूत्र २, १, ४४; ठा ७—पत्र ३८३)।

परिगिला अक [परि + ग्लै] ग्लान होना। वकृ. **परिगिलायमाण** (आचा)।

परिगुण सक [परि + गुणय्] परिगणन करना, गिनती करना। परिगुणह (अप) (पिंग)।

परिगुणण न [परिगुणन] स्वाध्याय (ओघ ६२)।

परिगुव अक [परि + गुप्] १ व्याकुल होना। २ सक. सतत भ्रमण करना। वकृ. **परिगुवंत** (राज)।

परिगुव सक [परि + गु] शब्द करना। वकृ. **परिगुवंत** (राज)।

परिगुव्व अक [परि + गुप्] १ व्याकुल होना। २ सक. सतत भ्रमण करना। वकृ. **परिगुव्वंत** (ठा १०—पत्र ५००)।

परिगू सक [परि + गू] शब्द करना। कवकृ. **परिगुव्वंत** (ठा १०—पत्र ५००)।

परिगेण्ह } **परिग्गह** } सक [परि + ग्रह्] ग्रहण करना, स्वीकार करना (प्रामा)। वकृ. **परिग्गहमाण** (आचा १, ८, ३, १)। संकृ. **परिगिज्झिय**, **परिघेत्तूण** (राज; पि ५८६)। हेकृ. **परिघेत्तुं** (पि ५७६)। कृ. **परिगिज्झ**, **परिघेतव्व**, **परिघेत्तव्व** (उत्त १, ४३; सुपा ३३; सूत्र २, १, ४८, पि ५७०)।

परिग्गय देखो **परिगय** (दस ६, २, ८)।

परिग्गह पुं [परिग्रह] १ ग्रहण, स्वीकार। २ धन आदि का संग्रह (पएह १, ५; औप)। ३ ममत्व, मूर्च्छा (ठा १)। ४ ममत्व-पूर्वक जिसका संग्रह किया जाय वह (आचा, ठा ३, १; धर्म २)। °**वेरमण** न [°विरमण] परिग्रह से निवृत्ति (ठा १, पएह २, ५)। °**वत** वि [°वत्] परिग्रह-युक्त (आचा; पि ३६६)।

परिग्गहि वि [परिग्रहिन्] परिग्रह-युक्त (सूत्र १, ६)।

परिग्गहिय वि [परिगृहीत] स्वीकृत (उवा; औप)।

परिग्गहिया स्त्री [पारिग्रहिकी] परिग्रह-सम्बन्धी क्रिया (ठा २, १; नव १७)।

परिघग्घर वि [परिघर्घर] बैठी हुई (आवाज); 'हरिणो जयइ चिरं विहयसद्दपरि-घग्घरा वाणी' (गउड)।

परिघट्ट सक [परि + घट्ट्] आघात करना। कवकृ. परिघट्टिज्जंत (महा)।

परिघट्टण न [परिघट्टन] आघात (वज्जा ३८)।

परिघट्टण न [परिघटन] निर्माण, रचना (निचू १)।

परिघट्टिय वि [परिघट्टित] आहत, ताडित (जीव ३)।

परिघट्ठ वि [परिघृष्ट] १ जिसका घर्षण किया गया हो वह, घिसा हुआ; 'मंदरयडपरिघट्ठ' (हे २, १७४)।

परिघाय देखो **परीघाय** (राज)।

परिघास सक [परि + घासय्] जिमाना, भोजन कराना। हेकृ. **परिघासेउं** (आचा)।

परिघासिय वि [परिघर्षित] परिघर्ष-युक्त, 'रयसा वा परिघासियपुव्वे भवति' (आचा २, १, ३, ५)।

परिघुम्मिर वि [परिघूर्णितृ] शनैः शनैः काँपता हिलता, डोलता (पउम ८, २८३; गा १४८)।

परिघेतव्व, **परिघेत्तव्व**, **परिघेत्तुं**, **परिघेत्तूण** } देखो परिगेण्ह।

परिघोल सक [परि + घूर्ण्] १ डोलना। २ परिभ्रमण करना। वकृ. **परिघोलंत**, **परिघोलेमाण** (से १, ३३; औप, णाया १, ४—पत्र ९७)।

परिघोलण न [दे. परिघोलन] विचार (ठा ४, ४—पत्र २८३)।

परिघोलिर वि [परिघूर्णितृ] डोलनेवाला (गउड)।

परिचअ देखो **परियय**=परिचय (नाट—शकु ७७)।

परिचअ देखो **परिच्चअ**। संकृ. **परिचइऊण**, **परिचइय** (महा)।

परिचंचल वि [परिचञ्चल] अतिशय चपल (वे १४)।

परिचत्त देखो **परिच्चत्त** (महा; औप)।

परिचरणा स्त्री [परिचरणा] सेवा, भक्ति (सुपा १५९)।

परिचल सक [परि + चल्] विशेष चलना। परिचलइ (पिंग)।

परिचलिअ वि [परिचलित] विशेष चला हुआ (दे ५, ९)।

परिचारअ वि [परिचारक] सेवा करनेवाला, सेवक (नाट—मालवि ६)। स्त्री. °**रिआ** (नाट)।

परिचारणा स्त्री [परिचारणा] मैथुन-प्रवृत्ति (ठा ५, १)।

परिचिंत सक [परि + चिन्तय्] चिन्तन करना, विचार करना। परिचिंतइ, परिचिंतेइ (सण; उव)। कर्म. परिचिंतियइ (अप) (सण)। वकृ. **परिचिंतंत**, **परिचिंतयंत** (सण; पउम ६६, ४)।

परिचिंतिय वि [परिचिन्तित] जिसका चिन्तन किया गया हो वह (सण)।

परिचिंतिर वि [परिचिन्तयितृ] चिन्तन करनेवाला (सण)।

परिचिट्ठ अक [परि + स्था] रहना, स्थिति करना। परिचिट्ठइ (सण)।

परिचिय वि [परिचित] ज्ञात, जाना हुआ, चिह्ना हुआ, पहिचाना हुआ (औप)।

परिचुंब देखो **परिउंब**। **परिचुंबिज्जमाण** (औप)। संकृ. **परिचुंबिअ** (अभि १५०)।

परिचुंबण देखो **परिउंबण** (पउम १६, ७९)।

परिचुंबिय वि [परिचुम्बित] जिसका चुम्बन किया गया हो वह, 'परिचुंबियनहग्गं' (उप ५९७ टी)।

परिच्चअ सक [परि + त्यज्] परित्याग करना, छोड़ देना। परिच्चयइ, परिच्चअह (महा; अभि १७७)। वकृ. **परिच्चअंत** (अभि १३७)। संकृ. **परिच्चइअ**, **परिच्चज्ज**, **परिच्चइऊण** (पि ५९०; उत्त ३५, २; राज)। हेकृ. **परिच्चइत्तए**, **परिच्चत्तुं** (उवा; नाट)।

परिच्चत्त वि [परित्यक्त] जिसका परित्याग किया गया हो वह (से ८, २०; सुर २, १२०; सुपा ४१८; नाट—शकु १३२)।

परिच्चयण न [परित्यजन] परित्याग (स ३३)।

परिच्चाइ वि [परित्यागिन्] परित्याग करनेवाला (औप; अभि १४०)।

परिच्चाग, **परिच्चाय** } पुं [परित्याग] त्याग, मोचन (पंचा ११, १४; उप ७९२; औप, भग)।

परिच्चाय वि [परित्याज्य] त्याग करने लायक, 'अण्णेवि असुहजोगा सोहियपाणे परिच्चाया' (संबोध ५४)।

परिच्चिअ वि [दे] उत्क्षिप्त, ऊपर फेंका हुआ (षड्)।

परिच्चिअ देखो **परिचिय** (उप १४२ टी)।

परिच्छ देखो **परिक्ख**, 'मणवयणकायगुत्तो सज्जो मरणं परिच्छिज्जा' (पच ६८; पिंड ३०), परिच्छंति (पिंड ३१)।

परिच्छग वि [परीक्षक] परीक्षा-कर्त्ता (धर्मसं ५१६)।

परिच्छण्ण, **परिच्छन्न** } वि [परिच्छन्न] १ आच्छादित, ढका हुआ (महा)। २ परिच्छद-युक्त, परिवार-सहित (वव ४)।

परिच्छय वि [परीक्षक] परीक्षा करनेवाला (सम्म १५६)।

परिच्छा स्त्री [परीक्षा] परख, जाँच, आजमाइश (ओघ ३१ भा; विसे ८४८; उप पृ १०८)।

परिच्छिअ देखो **परिक्खिय** (श्रा १६)।

परिच्छिंद सक [परि + छिद्] १ निश्चय करना, निर्णय करना। २ काटना, काट डालना। परिच्छिंदइ (धर्मसं ३७१)। संकृ. '**परिच्छिंदिय** बाहिरगं च सायं निकम्मदंसी इह मच्चिएहिं' (आचा—टि; पि ५०६; ५९१)।

परिच्छिण्ण वि [परिच्छिन्न] १ काटा हुआ, 'नय सुहतण्हा परिच्छिण्णा' (पच ६५)। २ निर्णीत, निश्चित (आव ४)।

परिच्छित्ति स्त्री [परिच्छित्ति] १ परिच्छेद, निर्णय। २ परीक्षा, जाँच (उप ८९५)।

परिच्छिन्न देखो **परिच्छिण्ण** (स ५६६; सम्मत्त १४२)।

परिच्छूढ वि [दे. परिक्षिप्त] १ उत्क्षिप्त; फेंका हुआ (दे ६, २५; नमि ९)। २ परित्यक्त (से १३, १७)।

परिच्छेअ पुं [परिच्छेद] निर्णय, निश्चय (विसे २२४४, स ६६७)।

परिच्छेअ वि [दे. परिच्छेक] लघु, छोटा (औप)।

परिच्छेअग वि [परिच्छेदक] निश्चय करनेवाला (उप ८५३ टी)।

परिच्छेज्ज वि [परिच्छेद्य] वह वस्तु जिसका क्रय-विक्रय परिच्छेद पर निर्भर रहता है—रत्न, वस्त्र आदि द्रव्य (श्रा १८)।

परिच्छेद देखो परिच्छेअ = परिच्छेद (धर्मसं १२३१)।

परिच्छेदग देखो परिच्छेअग (धर्मसं ५०)।

परिच्छोय वि [परिस्तोक] थोड़ा, अल्प (औप)।

परिछेज्ज देखो परिच्छेज्ज (श्रा १८)।

परिजंपिय वि [परिजल्पित] उक्त, कथित (सुपा ३६४)।

परिजज्जर वि [परिजर्जर] अतिजीर्ण (उप २६४ टी; ६८६ टी)।

परिजडिल वि [परिजटिल] अतिशय जटिल (गउड)।

परिजण देखो परिअण (उवा)।

परिजव सक [परि + विच्] पृथक् करना, अलग करना। संकृ. **परिजविय** (सूअ २, २, ४०)।

परिजव सक [परि + जप्] १ जाप करना। २ बहुत बोलना, बकवाद करना। संकृ. 'स भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे णो परेहिं सद्धिं **परिजविया** २ गामाणुगामं दूइज्जेज्जा' (आचा २, ३, २, ८)।

परिजवण न [परिजपन] जाप, जपन, मन्त्र आदिका पुनः पुनः उच्चारण (विसे ११४०; सुर १२, २०१)।

परिजाइय वि [परियाचित] माँगा हुआ (धर्मसं १०४५)।

परिजाण सक [परि + ज्ञा] अच्छी तरह जानना। परिजाणइ (उवा)। वकृ. **परिजाणमाण** (कुमा)। कवकृ. **परिजाणिज्जमाण** (णाया १, १; कुमा)। संकृ. **परिजाणिया** (सूअ १, १, १, १; १, ६, ६; १, ६, १०)। कृ. **परिजाणियव्व** (आचा; पि ५७०)।

परिजिअ वि [परिजित] सर्वथा जीत, जिसपर पूरा काबू किया गया हो वह (विसे ८५१)।

परिजुण्ण वि [परिजीर्ण] १ फटा-टूटा, अत्यन्त जीर्ण (आचा)। २ दुर्बल (उत्त २, १२)। ३ दरिद्र, निर्धन; 'परिजुण्णो उ दरिद्दो' (वव ४)।

परिजुण्णा देखो **परिजुन्ना** (ठा १०—पत्र ४७४ टी)।

परिजुत्त वि [परियुक्त] सहित (संबोध १)।

परिजुन्न देखो **परिजुण्ण** (उप २६४ टी)।

परिजुन्ना स्त्री [परिजीर्णा, परिद्यूना] प्रव्रज्या, विशेष, दरिद्रता के कारण ली हुई दीक्षा (ठा १०—पत्र ४७३)।

परिजुसिय देखो **परिझुसिय** (ठा ४, १—पत्र १८७; औप)।

परिजुसिय न [पर्युषित] रात्रि-परिवसन, रात का बासी रहना, बासी (ठा ४, २—पत्र २१६)। देखो **परिउसिअ**।

परिजूर अक [परि + जॄ] सर्वथा जीर्ण होना; 'परिजूरइ ते सरीरयं' (उत्त १०, २६)।

परिजूरिय वि [परिजीर्ण] अतिजीर्ण (अणु)।

परिज्जय पुं [दे] कृष्ण पुद्गल-विशेष (सुज्ज २०)।

परिज्जुन्न देखो **परिजूरिय** (दस ६, २, ८)।

परिज्झामिय वि [परिध्यामित] श्याम (काला) किया हुआ (निचू १)।

परिज्झुसिय, **परिझुसिय**, **परिझूसिय** वि [परिजुष्ट] १ सेवित। २ प्रीत; 'परिज्झुसियकामभोगसंपओगसंपउत्ते' (भग २५, ७—पत्र ६२३; ६२५ टी। ३ परीक्षण, ठा ४, १—पत्र १८८ टी; पि २०६)।

परिट्ठव सक [परि + स्थापय्] १ परित्याग करना। २ संस्थापन करना। परिट्ठवेइ; परिट्ठवेज्जा (आचा २, १, ६, ५; उवा)। संकृ. **परिट्ठवेऊण, परिट्ठवेत्ता** (बृह ४; कस)। हेकृ. **परिट्ठवेत्तए** (कस)। वकृ. **परिट्ठवंत** (निचू २)। कृ. **परिट्ठप्प, परिट्ठवेयव्व** (उत्त १४, ६; कस)।

परिट्ठवण न [प्रतिष्ठापन] प्रतिष्ठा कराना (चेइय ७७६)।

परिट्ठवण न [परिष्ठापन] परित्याग (उव; पव १५२)।

परिट्ठवणा स्त्री [परिष्ठापना] ऊपर देखो, 'अविहिपरिट्ठवणाए काउस्सग्गो य गुरुसमीवम्मि' (बृह ४)।

परिट्ठवणा स्त्री [प्रतिष्ठापना] प्रतिष्ठा कराना, 'वेयावच्चं जिणगिहरक्खणपरिट्ठवणाइजिणकिच्चं' (चेइय ७७६)।

परिट्ठविय स्त्री [प्रतिष्ठापित] संस्थापित (भवि)।

परिट्ठा देखो **पइट्ठा** (हे १, ३८)।

परिट्ठाइ वि [परिष्ठापिन्] परित्यागी (नाट—साहि १६२)।

परिट्ठाण न [परिस्थान] परित्याग (नाट)।

परिट्ठाव देखो **परिट्ठव** हेकृ. **परिट्ठावित्तए** (कप्प; पि ५७८)।

परिट्ठावअ वि [परिस्थापक] परित्याग करनेवाला (नाट)।

परिट्ठिअ वि [परिस्थित] संपूर्ण रूप से स्थित (पव ६६)।

परिट्ठिअ देखो **पइट्ठिय** (हे १, ३८; २, २११; षड्; महा; सुर ३, १३)।

परिठव देखो **परिट्ठव**। परिठवहु (अप) (पिंग)।

परिठवण देखो **परिट्ठवण** = परिष्ठापन (पव—गाथा २४)।

परिण देखो **परिणी**, 'परिणइ बहुयाउ खयरकन्नाओ' (धर्मवि ८२)। वकृ. **परिणंत** (भवि)। संकृ. **परिणिऊण** (महा; कुप्र ७६; १२७)।

परिणइ स्त्री [परिणति] परिणाम; (गा ५६८; धर्मसं ६२३)।

परिणंत देखो **परिण**।

परिणंतु वि [परिणन्तृ] परिणाम को प्राप्त होनेवाला, परिणत होनेवाला (विसे ३५३४)।

परिणंद सक [परि + नन्द्] वर्णन करना, श्लाघा करना; 'ताणं **परिणंदंता** (? ति)' (तंदु ४०)।

परिणद्ध वि [परिणद्ध] १ परिगत, वेष्टित; 'उंदुरमालापरिणद्धसुकयचिंधे' (उवा, णाया १, ८—पत्र १३३)। २ न. वेष्टन (णाया १, ८)।

परिणम सक [परि + णम्] १ प्राप्त करना। २ अक. रूपान्तर को प्राप्त होना। ३ पूर्ण होना, पूरा होना; 'किण्हलेसं तु परिणमे' (उत्त ३४, २२), 'परिणमइ अप्पमाओ' (स ६८४; भग १२, ५)। वकृ. **परिणमंत**,

परिणममाण (ठा ७; णाया १, १—पत्र ३१)।

परिणमण न [परिणमन] परिणाम (धर्मसं ४७२; उप ८६८)।

परिणमिअ } वि [परिणत] १ परिपक्व
परिणय } (पाअ)। २ वृद्धि-प्राप्त; 'तह परिणमिओ धम्मो जह तं खोभेंति न सुरावि' (धर्मवि ८)। ३ अवस्थान्तर को प्राप्त (ठा २, १—पत्र ५३; पिंड २६५)। °वय वि [°वयस्] १ वृद्ध; बूढ़ा (णाया १, १—पत्र ४८)।

परिणयण न [परिणयन] विवाह (उप १०१४; सुपा २७१)।

परिणयणा स्त्री. ऊपर देखो (धर्मवि १२६)।

परिणव देखो **परिणम**। परिणवइ (आरा ३१; महा)।

परिणाइ पुं [परिज्ञाति] परिचय, 'कह तुज्झ तेण समयं परिणाई तक्खणेण उप्पन्नो' (पउम ५३, २५)।

परिणाम सक [परि + णमय्] परिणत करना। परिणामेइ (ठा २, २)। कवकृ. **परिणामिज्जमाण, परिणामेज्जमाण** (भग; ठा १०)। हेकृ. **परिणामित्तए** (भग ३, ४)।

परिणाम पुं [परिणाम] १ अवस्थान्तर-प्राप्ति, रूपान्तरलाभ (धर्मसं ४७२)। २ दीर्घ काल के अनुभव से उत्पन्न होनेवाला आत्म-धर्म विशेष (ठा ४, ४—पत्र २८३)। ३ स्वभाव, धर्म (ठा ६)। ४ अध्यवसाय, मनो-भाव (निचू २०)। ५ वि. परिणत करनेवाला; 'दिट्ठंता परिणामे' (वव १०; बृह १)।

परिणामणया } स्त्री [परिणामना] परिण-
परिणामणा } माना, रूपान्तरकरण (पण्ण ३४—पत्र ७७४; विसे २२७८)।

परिणामय वि [परिणामक] परिणत करनेवाला (बृह १)।

परिणामि वि [परिणामिन्] परिणत होनेवाला (दे १, १; श्रावक १८३)। °कारण न [°कारण] कार्य-रूप में परिणत होनेवाला कारण, उपादान कारण (उवर २७)।

परिणामिअ वि [पारिणामिक] १ परिणाम-जन्य, परिणाम से उत्पन्न। २ परिणाम-संबन्धी। ३ पुं. परिणाम। ४ भाव-विशेष; 'सव्वदव्वपरिणइरूवो परिणामिओ सव्वो' (विसे २१७६; ३४९५)।

परिणामिअ वि [परिणमित] परिणत किया हुआ (पिंड ६१२; भग)।

परिणामिआ स्त्री [पारिणामिकी] बुद्धि-विशेष, दीर्घ काल के अनुभव से उत्पन्न होनेवाली बुद्धि (ठा ४, ४)।

परिणाय वि [परिज्ञात] जाना हुआ, परिचित (पउम ११, २७)।

परिणाव सक [परि + णायय्] विवाह कराना। परिणावसु (कुप्र ११६)। कृ. **परिणावियव्व, परिणावेयव्व** (कुप्र ३३०; १५४)।

परिणावण न [परिणायन] विवाह कराना (सुपा ३९८)।

परिणाविअ वि [परिणावित] जिसका विवाह कराया गया हो वह (सुपा १९५; धर्मवि १३६; कुप्र १४)।

परिणाह पुं [परिणाह] १ लम्बाई, विस्तार (पाअ; से ११, १२)। २ परिधि (स ३१२; ठा २, २)।

परिणिऊण देखो **परिण**।

परिणिंत देखो **परिणी**=परि + गम्।

परिणिज्जंत देखो **परिणी** = परि + णी।

परिणिज्जरा स्त्री [परिनिर्जरा] विनाश, क्षय (पउम ३१, ६)।

परिणिज्जिय वि [परिनिर्जित] पराभूत, पराजय-प्राप्त (पउम ५२, २१)।

परिणिट्ठा स्त्री [परिनिष्ठा] संपूर्णता, समाप्ति (उवर १२५)।

परिणिट्ठाण न [परिनिष्ठान] अवसान, अन्त (विसे ६२६)।

परिणिट्ठिअ वि [परिनिष्ठित] १ पूर्ण किया हुआ, समाप्त किया हुआ (रयण २५)। २ पार-प्राप्त (णाया १, ८; भास ९८; पंचा १२, १४)। ३ परिज्ञात (वव १०)।

परिणिट्ठिया स्त्री [परिनिष्ठिता] १ कृषि-विशेष, जिसमें दो या तीन बार तृण-शोधन किया गया हो वह कृषि; अर्थात् दो या तीन बार की सोहनी (निराई) की हुई खेत। २ दीक्षा-विशेष, जिसमें बारंबार अतिचारों की आलोचना की जाती हो वह दीक्षा (राज)।

परिणिय वि [परिणीत] जिसका विवाह हुआ हो वह (सण; भवि)।

परिणिव्वव सक [परिनिर् + वापय्] सर्व प्रकार से अतिशय परिणत करना। संकृ. **परिणिव्वविय** (कस)।

परिणिव्वा अक [परिनिर् + वा] १ शान्त होना। २ मुक्ति पाना, मोक्ष को प्राप्त करना। परिणिव्वायंति (भग)। भूका. परिणिव्वाइंसु (पि ५१६)। भाव. परिणिव्वाहिति (भग)।

परिणिव्वाण न [परिनिर्वाण] मुक्ति, मोक्ष (आचा; कप्प)।

परिणिव्वुइ स्त्री [परिनिर्वृति] ऊपर देखो (राज)।

परिणिव्वुय देखो **परिनिव्वुअ** (औप)।

परिणी सक [परि + णी] १ विवाह करना। २ ले जाना। कवकृ. **परिणिज्जंत, परिणीयमाण** (कुप्र १२७; आचा)।

परिणी अक [परि + गम्] बाहर निकलना। वकृ. **परिणिंत** (स ६६१)।

परिणीअ वि [परिणीत] जिसका विवाह किया गया हो वह (महा; प्रासू ६३; सण)।

परिणील वि [परिनील] सर्वथा हरा रंग का (गउड)।

परिणे देखो **परिणी**। परिणेइ (महा; पि ४७४)। हेकृ. **परिणेउं** (कुप्र ५०)। कृ. **परिणेयव्व** (सुपा ४५५; कुप्र १३८)।

परिणेविय (अप) वि [परिणायित] जिसका विवाह कराया गया हो वह (सण)।

परिणेव्वुय देखो **परिनिव्वुअ** (उत्त १८, ३५)।

परिण्ण वि [परिज्ञ] ज्ञाता, जानकार (आचा १, ५, ६, ४)।

परिण्ण° देखो **परिण्णा°** (आचा १, २, ६, ५)।

परिण्णा सक [परि + ज्ञा] जानना। संकृ. **परिण्णाय** (आचा; भग)। हेकृ. **परिण्णादुं** (शौ) (अभि १८६)।

परिण्णा स्त्री [परिज्ञा] १ ज्ञान, जानकारी (आचा; वसु; पंचा ६, २५)। २ विवेक (आचा)। ३ पर्यालोचन, विचार (सूअ १,

१, १)। ४ ज्ञान-पूर्वक प्रत्याख्यान (ठा ५, २)।

परिण्णाण वि [परिज्ञान] ज्ञान, जानकारी (धर्मसं १२५३; उप पृ २७४)।

परिण्णाय देखो **परिण्णा** = परि + ज्ञा।

परिण्णाय वि [परिज्ञात] विदित, जाना हुआ (सम १६; आचा)।

परिण्णि वि [परिज्ञिन्] परिज्ञा-युक्त, 'गीय-जुओ उ परिण्णी तह जिणइ परीसहाणीयं' (वव १)।

परितंत वि [परितान्त] सर्वथा खिन्न, निर्विण्ण (णाया १, ४—पत्र ६७; विपा १, १; उव)।

परितंबिर वि [परिताम्र] विशेष ताम्र—अरुण वर्णवाला (गउड)।

परितज्ज सक [परि + तर्जय्] तिरस्कार करना। वकृ. **परितज्जयंत** (पउम ४८, १०)।

परितडुविय वि [परितत] खूब फैलाया हुआ (सण)।

परितणु वि [परितनु] अत्यन्त पतला (सुपा ५८)।

परितप्प अक [परि + तप्] १ संतप्त होना, गरम होना। २ पश्चात्ताप करना। ३ दुःखी होना। परितप्पइ (महा; उव); परितप्पंति (सूअ २, २, ५५), 'ता लोहभारवाहगनरुव्व परितप्पसे पच्छा' (धर्मवि ६)। संकृ. **परितप्पिऊण** (महा)।

परितप्प सक [परि + तापय्] परिताप उपजाना। परितप्पंति (सूअ २, २, ५५)।

परितप्पण न [परितपन] परितप्त होना (सूअ २, २, ५५)।

परितप्पण न [परितापन] परिताप उपजाना (सूअ २, २, ५५)।

परितलिअ वि [परितलित] तला हुआ (ओघ ८८)।

परितविय वि [परितप्त] परिताप युक्त (सण)।

परिताण न [परित्राण] १ रक्षण। २ वागुरादि बन्धन (सूअ १, १, २, ६)।

परिताव देखो **परितप्प** = परि + तापय्। कृ. **परितावेयव्व** (पि ५७०)।

परिताव पुं [परिताप] १ संताप, दाह। २ पश्चात्ताप। ३ दुःख, पीड़ा (महा; औप)। °**यर** वि [°कर] दुःखोत्पादक (पउम ११०, ६)।

परितावण देखो **परितप्पण** = परितापन (औप)।

परिताविअ वि [परितापित] १ संतापित (औप)। २ तला हुआ (ओघ १४०)।

परितास पुं [परित्रास] अकस्मात् होनेवाला भय (णाया १, १—पत्र ३३)।

परितुट्टिर वि [परित्रुटितृ] टूटनेवाला (सण)।

परितुट्ठ वि [परितुष्ट] तोष-प्राप्त, संतुष्ट (उव; चेइय ७०१)।

परितुलिय वि [परितुलित] तौला हुआ (सण)।

परितेज्जि देखो **परित्तज**।

परितोल सक [परि + तोलय्] उठाना। वकृ. 'जुगवं परितोलंता खग्गं समरंगणम्मि तो दोवि' (सुपा ५७२)।

परितोस सक [परि + तोषय्] संतुष्ट करना। भवि. परितोसइस्सं (कर्पूर ३२)।

परितोस पुं [परितोष] आनन्द, खुशी (नाट—मालवि २३)।

परितोसिय वि [परितोषित] संतुष्ट किया हुआ (सण)।

परित्त वि [परीत] १ व्याप्त (सिरि १८३)। २ प्रभ्रष्ट (सूअ २, ६, १८)। ३ संख्येय, जिसकी गिनती हो सके ऐसा (सम १०६)। ४ परिमित, नियत परिमाणवाला (उप ४१७)। ५ लघु, छोटा। ६ तुच्छ, हलका (उप २७०; ६६४)। ७ एक से लेकर असंख्येय जीवों का आश्रय, एक से लेकर असंख्येय जीववाला (ओघ ४१)। ८ एक जीववाला (पएण १)। °**करण** न [°करण] लघूकरण (उप २७०)। °**जीव** पुं [°जीव] एक शरीर में एकाकी रहनेवाला जीव (पएण १)। °**णंत** न [°नन्त] संख्या-विशेष (कम्म ४, ७१; ८३)। °**संसारिअ** वि [°संसारिक] परिमित संसारवाला (उप ४१७)। °**संख** न [°संख्यात] संख्या-विशेष (कम्म ४, ७१; ७८)।

परित्तज देखो **परिच्चय**। संकृ. **परित्तजिअ** (स्वप्न ५१), **परितेज्जि** (अप)। (पिंग)।

परित्ता, परित्ताअ सक [परि + त्रै] रक्षण करना। परित्ताइ, परित्ताअसु, परित्ताहि, परित्तायह (प्राकृ ७०; पि ४७६; हे ४, २६८)।

परित्ताइ वि [परित्रायिन्] रक्षण-कर्ता (सुपा ४०५)।

परित्ताण न [परित्राण] रक्षण (से १४, ३५; सुपा ७१; आत्मानु ८; सण)।

परित्ताणंतय पुंन [परीतानन्तक] संख्या-विशेष (अणु २३४)।

परित्तास देखो **परितास** (कप्प)।

परित्तासंखेज्जय पुंन [परीतासंख्येयक] संख्या-विशेष (अणु २३४)।

परित्तीकय वि [परीतीकृत] संक्षिप्त किया हुआ, लघूकृत (णाया १, १—पत्र ६६)।

परित्तीकर सक [परीती + कृ] लघु करना, छोटा करना। परित्तीकरेंति (भग)।

परित्थोम न [परिस्तोम] १ मस्तक। २ वि. वक्र; 'चित्तपरित्थोमपच्छदं' (औप)।

परिथंभिअ वि [परिस्तम्भित] स्तब्ध किया हुआ (सुपा ४७५)।

परिथु सक [परि + स्तु] स्तुति करना। कवकृ. **परिथुव्वंत** (सुपा ६०७)।

परिथूर, परिथूल वि [परिस्थूर] विशेष स्थूल, खूब मोटा (धर्मसं ८३८; चेइय ८५४; श्रा ११)।

परिदा सक [परि + दा] देना। कर्म. **परिदिज्जसु** (अप), (पिंग)।

परिदाह पुं [परिदाह] संताप (उत्त २, ८; भग)।

परिदिण्ण वि [परित्त] दिया हुआ (अभि १२५)।

परिदिद्ध वि [परिदिग्ध] उपलिप्त (सुख २, ३७)।

परिदिन्न देखो **परिदिण्ण** (सुपा २२)।

परिदेव अक [परि + देव्] विलाप करना। **परिदेवइ** (उत्त २, १३)। वकृ. **परिदेवंत** (पउम २६, ६२; ४५, ३६)।

परिदेवण न [परिदेवन] विलाप, 'तस्स कंदणसोयणपरिदेवणताडणाइं लिंगाइं' (संबोध ४६; संबे ८)।

परिदेवणया स्त्री [परिदेवना] ऊपर देखो (ठा ४, १—पत्र १८८)।

परिदेवि वि [परिदेविन्] विलाप करनेवाला (नाट—शकु १०१)।

परिदेविअ न [परिदेवित] विलाप (पाअ; से ११, ६६; सुर २, २४१)।

परिदो अ [परितस्] चारों ओर से (गा ४५४ अ)।

परिधम्म पुं [परिधर्म] छन्द-विशेष (पिंग)।

परिधवलिय वि [परिधवलित] खूब सफेद किया हुआ (सण)।

परिधाम पुंन [परिधामन्] स्थान (सुपा ४६३)।

परिधाविअ वि [परिधावित] दौड़ा हुआ (हम्मीर ३२)।

परिधाविर वि [परिधावितृ] दौड़नेवाला (सण)।

परिधूणिय वि [परिधूनित] अत्यन्त कँपाया हुआ (सम्मत्त १३६)।

परिधूसर वि [परिधूसर] धूसर वर्णवाला (वज्जा १२८; गउड)।

परिनट्ठ वि [परिनष्ट] विनष्ट (महा)।

परिनिक्खम देखो पडिनिक्खम। परिनिक्खमेइ (कप्प)।

परिनिट्ठिय देखो परिणिट्ठिअ (कप्प; रंभा ३०)।

परिनिय सक [परि + दृश्] देखना, अवलोकन करना। वकृ. **परिनियंत** (सुपा ५२२)।

परिनिविट्ठ वि [परिनिविष्ट] ऊपर बैठा हुआ (सुपा २६६)।

परिनिविड वि [परिनिबिड] विशेष निबिड या घना (महा)।

परिनिव्वा देखो परिणिव्वा। परिनिव्वाइ (भग), परिनिव्वाइंति (कप्प)। भवि. परिनिव्वाइस्संति (भग)।

परिनिव्वाण देखो परिणिव्वाण (णाया १, ८; ठा १, १; भग; कप्प; पव १३८ टी)।

परिनिव्वुअ, **परिनिव्वुड** वि [परिनिवृत] १ मुक्त, मोक्ष को प्राप्त (ठा १, १; पउम २०, ८४; कप्प)। २ शान्त, ठंढा (सूअ १, ३, ३, २१)। ३ स्वस्थ (सुपा १८३)।

परिन्न देखो परिण्ण (आचा)।

परिन्न° देखो परिण्ण° (आचा)।

परिन्ना देखो परिण्णा (उप ५२५)।

परिन्नाण देखो परिण्णाण (आचा)।

परिन्नाय देखो परिण्णाय = परिज्ञात (सुपा २६२)।

परिन्नाय वि [प्रतिज्ञात] जिसकी प्रतिज्ञा की गई हो वह) (पिंड २८१)।

परिपंडुर, **परिपंडुल** वि [परिपाण्डुर] विशेष पाण्डुर—धूसर वर्ण वाला (सुपा २५६; कप्पू; गउड; से १०, ३३)।

परिपंथग वि [प्रतिपथक] दुश्मन, विरोधी, प्रतिकूल (स १०५)।

परिपंथिअ, **परिपंथिग** वि [परिपन्थिक] ऊपर देखो (स ७४६; उप ६३६)।

परिपक्क वि [परिपक्व] पका हुआ (पव ४; भवि)।

परिपडिअ (अप) वि [परिपतित] गिरा हुआ (पिंग)।

परिपाग पुं [परिपाक] विपाक, फल; 'पुव्वभवविहिअसुचरिअपरिपागो एस उदयसंपत्तो' (रयण ५२; आचा)।

परिपाडल वि [परिपाटल] सामान्य लाल रंगवाला, गुलाबी रंग का (गउड)।

परिपाडिअ वि [परिपाटित] फाड़ा हुआ, विदारित (दे ७, ६१)।

परिपाल सक [परि + पालय्] रक्षण करना। परिपालइ (भवि)। कृ. **परिपालणीअ** (स्वप्न २६)। संकृ. **परिपालिउं** (सुपा ३४२)।

परिपालण न [परिपालन] रक्षण (कुप्र २२६; सुपा ३०८)।

परिपालिय वि [परिपालित] रक्षित (भवि)।

परिपासय [दे] देखो **परिवास** (दे) (पाअ)।

परिपिअ सक [परि + पा] पीना, पान करना। कवकृ. **परिपिज्जंत** (नाट—चैत ४०)।

परिपिंजर वि [परिपिञ्जर] विशेष पीत-रक्त वर्णवाला (गउड)।

परिपिंडिय वि [परिपिण्डित] १ एकत्र समुदित, इकट्ठा किया हुआ (पिंड ४६७)। २ न. गुरु-वन्दन का एक दोष (धर्म २)।

परिपिक्क देखो परिपक्क (पि १०१)।

परिपिज्जंत देखो परिपिअ।

परिपिट्टण न [परिपिट्टन] पीटना, ताड़न (वव १)।

परिपिरिया स्त्री [दे] वाद्य-विशेष (भग ५, ४—पत्र २१६)।

परिपिल्ल सक [परिप्र + ईरय्] प्रेरणा। परिपिल्लइ (सुपा ६४)।

परिपिहा सक [परिपि + धा] ढकना, आच्छादन करना। संकृ. **परिपिहित्ता, परिपिहेत्ता** (कप्प; पि ५८२)।

परिपीडिय वि [परिपीडित] जिसको पीड़ा पहुँचाई गई हो वह (भवि)।

परिपील सक [परि + पीडय्] १ पीड़ना। २ पीलना, दबाना। परिपीलेज्जा (पि २४०)। संकृ. **परिपीलइत्ता, परिपीलिय, परिपीलियाण** (भग; राज; आचा २, १, ८, १)।

परिपीलिअ देखो परिपीडिअ (राज)।

परिपुंगल वि [दे] श्रेष्ठ, उत्तम (?); 'जंपइ भविसयत्तु परिपुंगलु होसइ रिद्धिविद्धिसुहमंगलु' (भवि)।

परिपुच्छ सक [परि + प्रच्छ्] प्रश्न करना। परिपुच्छइ (भवि)।

परिपुच्छण न [परिप्रच्छन] प्रश्न, पृच्छा (भवि)।

परिपुच्छिअ, **परिपुट्ठ** वि [परिपृष्ट] पूछा हुआ, जिज्ञासित (गा ६२३; भवि; सुपा ३८७)।

परिपुण्ण, **परिपुन्न** वि [परिपूर्ण] संपूर्ण (भग; भवि)।

परिपुस सक [परि + स्पृश्] संस्पर्श करना। परिपुसइ (से ४, ५)।

परिपूज सक [परि + पूजय्] पूजना। परिपूजउ (अप) (पिंग)।

परिपूणग पुं [दे. परिपूर्णक] पक्षि-विशेष का नीड, सुघरी नामक पक्षी का घोंसला (विसे १४५४; १४६५)।

परिपूणग पुं [दे. परिपूर्णक] घी-दूध गालने का कपड़ा, छानना (णंदि ५४)।

परिपूय वि [परिपूत] छाना हुआ (कप्प; तंदु ३२)।

परिपूर सक [परि + पूरय्] पूर्ण करना, भरपूर करना। वकृ. **परिपूरंत** (पि ५३७)। संकृ. **परिपूरिअ** (नाट—मालवि १५)।

परिपूरिय वि [परिपूरित] भरपूर, व्याप्त (सुर २, ११)।

परिपेच्छ सक [परिप्र + ईक्ष्] देखना। वकृ. **परिपेच्छंत** (अच्चु ६३)।

परिपेरंत पुं [परिपर्यन्त] प्रान्त भाग (णाया १, ४; १३; सुर १५, २०२)।

परिपेरिय वि [परिप्रेरित] जिसको प्रेरणा की गई हो वह (सुपा १८६)।

परिपेलव वि [परिपेलव] १ सुकर, सहज, सहल, आसान (से ३, १३)। २ अदृढ़। ३ निःसार। ४ वराक, दीन (राज)।

परिपेल्लिअ देखो **परिपेरिय** (गा ५७७)।

परिपेस सक [परिप्र + इष्] भेजना। परिपेसइ (भवि)।

परिपेसण न [परिप्रेषण] भेजना (भवि)।

परिपेसल वि [परिपेशल] सुन्दर, मनोहर (सुपा १०६)।

परिपेसिय वि [परिप्रेषित] भेजा हुआ (भवि)।

परिपोस सक [परि + पोषय्] पुष्ट करना। कवकृ. **परिपोसिज्जंत** (राज)।

परिप्पमाण न [परिप्रमाण] परिमाण (भवि)।

परिप्पव सक [परि + प्लु] तैरना, गोता लगाना। वकृ. **परिप्पवंत** (से २, २८; १०, १३; पाअ)।

परिप्पुय वि [परिप्लुत] आप्लुत, व्याप्त (राज)।

परिप्पुया स्त्री [परिप्लुता] दीक्षा-विशेष (राज)।

परिप्फंद पुं [परिस्पन्द] १ रचना-विशेष, 'जयइ वायापरिप्फंदो' (गउड)। २ समन्तात् चलन (चारु ४५)। ३ चेष्टा, प्रयत्न; 'थोया रंभेवि विहिम्मि आयसग्गे व्व खंडणमुवेंति। स-परिप्फंदेणं चिय णीआ भमिदारुसयलं व' (गउड)।

परिप्फुड वि [परिस्फुट] अत्यन्त स्पष्ट (से ११, ६०; सुर ४, २१४; भवि)।

परिप्फुड पुं [परिस्फोट] १ प्रस्फोटन, भेदन। २ वि. फोड़नेवाला, विभेदक; 'तमपडल-परिप्फुडं चेव तेअसा पज्जलंतरूवं' (कप्प)।

परिप्फुर अक [परि + स्फुर्] चलना। परिप्फुरदि (शौ) (नाट—उत्तर २८)।

परिप्फुरण न [परिस्फुरण] हिलन, चलन (सण)।

परिप्फुरिअ वि [परिस्फुरित] स्फूर्ति-युक्त, 'वयणु परिप्फुरिउ' (भवि)।

परिफंस पुं [परिस्पर्श] स्पर्श, छूना (पि ७४; ३११)।

परिफंसण न [परिस्पर्शन] ऊपर देखो (उप ६८६ टी)।

परिफग्गु वि [परिफल्गु] निस्सार, असार (धर्मसं ६५३)।

परिफासिय वि [परिस्पृष्ट] व्याप्त (दस ५, १, ७२)।

परिफुड देखो **परिप्फुड** = परिस्फुट (पउम ३, ८; प्रासू ११६)।

परिफुडिय वि [परिस्फुटित] फूटा हुआ, भग्न (पउम ६८, १०)।

परिफुर देखो **परिप्फुर**। परिप्फुरइ (सण)। वकृ. **परिफुरंत** (सण)।

परिफुरिअ देखो **परिप्फुरिय** (सण)।

परिफुल्लिअ वि [परिफुल्लित] फूला हुआ, कुसुमित (पिंग)।

परिफुस सक [परि + स्पृश्] स्पर्श करना, छूना। वकृ. **परिफुसंत** (धर्मवि १२६; १३६)।

परिफुसिय वि [परिप्रोञ्छित] पोंछा हुआ (उप पृ ६४)।

परिफोसिय वि [परिस्पृष्ट] छूआ हुआ, 'उदगपरिफोसियाए दब्भोवरिपच्चत्थुयाए भिसियाए णिसीयति' (णाया १, १६; उप ६४८ टी)।

परिबूहण न [परिबृंहण] वृद्धि, उपचय (सूअ २, २, ६)।

परिब्भंत वि [दे] १ निषिद्ध, निवारित। २ भीरु, डरपोक (दे ६, ७२)।

परिब्भंसिद (शौ) नीचे देखो (मा ५०)।

परिब्भट्ठ वि [परिभ्रष्ट] पतित, स्खलित (णाया १, १३; सुपा ५०६; अभि १४४)।

परिब्भम सक [परि + भ्रम्] पर्यटन करना, भटकना। परिब्भमइ (प्राकृ ७६; भवि; उव)। वकृ. **परिब्भमंत** (सुर २, ८७; ३, ४; ४, ७१; भवि)।

परिब्भमण न [परिभ्रमण] पर्यटन (महा)।

परिब्भमिअ वि [परिभ्रान्त] भटका हुआ (वे ६३; सण; भवि)।

परिब्भीअ वि [परिभीत] भय-प्राप्त (पउम ५३, ३६)।

परिब्भूअ वि [परिभूत] पराभव-प्राप्त (सुपा २५८)।

परिभग्ग वि [परिभग्न] भांगा हुआ (आत्मानु १४)।

परिभट्ठ देखो **परिब्भट्ठ** (महा; पि ८५)।

परिभणिर वि [परि + भणितृ] कहनेवाला (सण)।

परिभम देखो **परिब्भम**। परिभमइ (महा)। वकृ. **परिभमंत, परिभममाण** (महा; सण; भवि; संवेग १४)। संकृ. **परिभमिऊणं** (पि ५८५)। हेकृ. **परिभमिउं** (महा)।

परिभमिअ देखो **परिब्भमिअ** (भवि)।

परिभमिर वि [परिभ्रमितृ] पर्यटन करनेवाला (सुपा २६६)।

परिभव सक [परि + भू] पराजय करना, तिरस्कारना। परिभवइ (उव)। कर्म. परिभविज्जामि (मोह १०८)। कृ. **परिभवणिज्ज** (णाया १, ३)।

परिभव पुं [परिभव] पराभव, तिरस्कार (औप; स्वप्न १०; प्रासू १७३)।

परिभवंत पुं [परिभवत्] पार्श्वस्थ साधु, शिथिलाचारी मुनि (वव १)।

परिभवण न [परिभवन] ऊपर देखो (राज)।

परिभवणा स्त्री [परिभवन] ऊपर देखो (औप)।

परिभविअ वि [परिभूत] अभिभूत (धर्मवि ३६)।

परिभाअ सक [परि + भाजय्] बाँटना, विभाग करना। परिभाएइ (कप्प)। वकृ. **परिभाइंत, परिभायंत, परिभाएमाण** (आचा २, ११, १८; णाया १, ७—पत्र ११७; १, १; कप्प)। कवकृ. **परिभाइज्ज-**

माण (राज)। संकृ. परिभाइत्ता, परिभायइत्ता (कप्प; औप)। हेकृ. परिभाएउं (पि ५७३)।

परिभाइय वि [परिभाजित] विभक्त किया हुआ (आचा २, २, ३, २)।

परिभायंत देखो परिभाअ।

परिभायण न [परिभाजन] बँटवा देना (पिंड १६३)।

परिभाव सक [परि + भावय्] १ पर्यालोचन करना। २ उन्नत करना। परिभावइ (महा)। संकृ. परिभाविऊण (महा)। कृ. परिभावणीय (राज)।

परिभावइत्तु वि [परिभावयितृ] प्रभावक, उन्नति-कर्ता (ठा ४, ४—पत्र २६५)।

परिभावि वि [परिभाविन्] परिभव करनेवाला (अभि ७१)।

परिभास सक [परि + भाष्] १ प्रतिपादन करना, कहना। २ निन्दा करना। परिभासइ, परिभासंति, परिभासेइ, परिभासए (उत्त १८, २०; सूअ १, ३, ३, ८; २, ७, ३६; विसे १४४३)। वकृ. परिभासमाण (पउम ५३, ६७)।

परिभासा स्त्री [परिभाषा] १ संकेत (संबोध ५८; भास १६)। २ तिरस्कार। ३ चूर्णि, टीका-विशेष (राज)।

परिभासि वि [परिभाषिन्] परिभव-कर्ता, 'राइणियपरिभासी' (सम ३७)।

परिभासिय वि [परिभाषित] प्रतिपादित (सूअनि ८८; भास २१)।

परिभिंद सक [परि + भिद्] भेदन करना। कवकृ. परिभिज्जमाण (उप पृ ६७)।

परिभीय वि [परिभीत] डरा हुआ (उव)।

परिभुंज सक [परि + भुज्] १ खाना, भोजन करना। सेवन करना, सेवना। ३ बारबार उपभोग में लेना। कर्म. परिभुंजिज्जइ परिभुज्जइ (पि ५४६; गच्छ २, ५१)। वकृ. परिभुंजंत, परिभुंजमाण (निचू १; णाया १, १; कप्प)। कवकृ. परिभुज्जमाण (औप; उप पृ ६७; णाया १, १—पत्र ३७)। हेकृ. परिभोत्तु (दस ५, १)। कृ. परिभोग, परिभोत्तव्व (पिंड ३४; कस)।

परिभुंजण न [परिभोजन] परिभोग (उप १३४ टी)।

परिभुंजणया स्त्री [परिभोजना] ऊपर देखो (सम ४४)।

परिभुत्त वि [परिभुक्त] जिसका परिभोग किया गया हो वह (सुपा ३००)।

परिभुत्त, **परिभुय** वि [परिवृत] वेष्टित, परिकरित, लपेटा हुआ, घेरा हुआ (आचा २, ११, ३; २, ११, १६)।

परिभूअ वि [परिभूत] अभिभूत, तिरस्कृत (सूअ २, ७, २; सुर १६, १२६; चेइय ७१४; महा)।

परिभोअ देखो परिभोग (अभि १११)।

परिभोइ वि [परिभोगिन्] परिभोग करनेवाला (पि ४०५; नाट—शकु ३५)।

परिभोग पुं [परिभोग] १ बारबार भोग (ठा ५, ३ टी; आव ६)। २ जिसका बारबार भोग किया जाय वह वस्त्र आदि (औप)। ३ जिसका एक ही बार भोग किया जाय—जो एक ही बार काम में लाया जाया वह—आहार, पान आदि (उवा)। ४ बाह्य वस्तुओं का भोग (आव ६)। ५ आसेवन (पण्ह १, ३)।

परिभोग, **परिभोत्तव्व**, **परिभोत्तु** देखो परिभुंज।

परिमइल सक [परि + मृज्] मार्जन करना (संक्षि ३५)।

परिमउअ वि [परिमृदुक] १ विशेष कोमल। २ अत्यन्त सुकर, सरल (धर्मसं ७६१; ७६२)। स्त्री. °उई (विसे ११६६)।

परिमउलिअ वि [परिमुकुलित] चारों ओर से संकुचित (सण)।

परिमंडण न [परिमण्डन] अलंकरण, विभूषा (उत्त १६, ६)।

परिमंडल वि [परिमण्डल] वृत्त, गोलाकार (सूअ २, १, १५; उत्त ३६, २२; स ३१२; पाअ; औप; पण्ण १; ठा १, १)।

परिमंडिय वि [परिमण्डित] विभूषित, सुशोभित (कप्प; औप; सुर ३, १२)।

परिमंथर वि [परिमन्थर] मन्द, धीमा (गउड; स ७१६)।

परिमंथिअ वि [परिमथित] अत्यन्त आलोडित (सम्मत्त २२६)।

परिमंद वि [परिमन्द] मन्द, अशक्त (सुर ४, २४०)।

परिमग्ग सक [परि + मार्गय्] १ अन्वेषण करना, खोजना। २ माँगना, प्रार्थना करना। वकृ. परिमग्गमाण (नाट—विक्र ३०)। संकृ. परिमग्गेउं (महा)।

परिमग्गि वि [परिमार्गिन्] खोज करनेवाला (गा २६१)।

परिमज्जिर वि [परिमज्जितृ] डूबनेवाला (सुपा ६)।

परिमट्ठ वि [परिमृष्ट] १ घिसा हुआ (से ६, २; ८, ४३)। २ आस्फालित; 'परिमट्ठमेरुसिहरो' (से ४, ३७)। ३ मार्जित, शोधित (कप्प)।

परिमद्द सक [परि + मर्दय्] मर्दन करना। वकृ. परिमद्दयंत (सुर १२, १७२)।

परिमद्दण न [परिमर्दन] मर्दन, मालिश (कप्प; औप)।

परिमद्दा स्त्री [परिमर्दा] संबाधन, दबाना, पैचप्पी—पैर दबाना आदि (निचू ३)।

परिमन्न सक [परि + मन्] आदर करना। परिमन्नइ (भवि)।

परिमल सक [परि + मल्, मृद्] १ घिसना। २ मर्दन करना; 'जो मरणयालि परिमलइ हत्थु' (कुप्र ४५२),

'णलिणीसु भमसि परिमलसि
सत्तलं मालइंपि णो मुअसि।
तरलत्तणं तुह अहो महुअर
जइ पाडला हरइ॥'
(गा ६१६)।

परिमल पुं [परिमल] १ कुंकुम-चन्दनादि का मर्दन (से १, ६४)। २ सुगन्ध (कुमा; पाअ)।

परिमलण न [परिमलन] १ परिमर्दन। २ विचार (गा ४२८; गउड)।

परिमलिअ वि [परिमलित, परिमृदित] जिसका मर्दन किया गया हो वह (गा ६३७; से ७, ६२; महा; वज्जा ११८)।

परिमहिय वि [परिमहित] पूजित (पउम १, १)।

परिमा (अप) देखो पडिमा (भवि)।
परिमाइ स्त्री [परिमाति] परिमाण, 'जिण-सासणि छज्जीवदयाइ व पंडियमरणि सुगइ-परिमाइ व' (भवि)।
परिमाण न [परिमाण] मान, माप, नाप (औप, स्वप्न ४२; प्रासू ८७)।
परिमास पुं [परिमर्श] स्पर्श (णाया १, ६; गउड; से ६, ४८; ६, ७६)।
परिमास पुं [दे] नौका का काष्ठ-विशेष (णाया १, ६—पत्र १५७)।
परिमासि वि [परिमर्शिन्] स्पर्श करनेवाला (पि ६२)।
परिमिज्ज नीचे देखो।
परिमिण सक [परि + मा] नापना, तौलना। वकृ. परिमिणंत (सुपा ७७)। कृ. परिमिज्ज, परिमेय (पच ५६; पउम ४६, २२)।
परिमिअ वि [परिमित] परिमाण-युक्त (कप्प; ठा ५, १; औप; पण्ह २, १)।
परिमिअ वि [परिवृत] परिकरित, वेष्टित (पउम १०१, भवि)।
परिमिला अक [परि + म्लै] म्लान होना। परिमिलादि (शौ) (पि १३६; ४७६)।
परिमिलाण वि [परिम्लान] म्लान, विच्छाय, निस्तेज (महा)।
परिमिल्लिर वि [परिमोक्तृ] परित्याग करने-वाला (सण)।
परिमुअ सक [परि + मुच्] परित्याग करना। परिमुअइ (सण)।
परिमुक्क वि [परिमुक्त] परित्यक्त (सुपा २५२; महा; सण)।
परिमुट्ठ वि [परिमृष्ट] स्पृष्ट (मा ४४)।
परिमुण सक [परि + ज्ञा] जानना। परि-मुणसि (वज्जा १०४)।
परिमुणिअ वि [परिज्ञात] जाना हुआ (पउम १६, ६१; सण)।
परिमुस सक [परि + मुष्] चोरी करना। वकृ. परिमुसंत (श्रा २७)। संकृ. परिमु-सिऊण (कर्पूर २६)।
परिमुस सक [परि + मृश्] स्पर्श करना, छूना। परिमुसइ (भवि)।
परिमुसण न [परिमोषण] १ चोरी। २ वञ्चना, ठगाई (गा २६)।

परिमुसिअ वि [परिमृष्ट] स्पृष्ट (महानि ४; भवि)।
परिमूसण देखो परिमुसण (गा २६)।
परिमेय देखो परिमिण।
परिमोक्कल वि [दे. परिमुक्त] स्वैर, स्वच्छन्दी (भवि)।
परिमोक्ख पुं [परिमोक्ष] १ मोक्ष, मुक्ति (आचा)। २ परित्याग (सूअ १, १२, १०)।
परिमोय सक [परि + मोचय्] छोड़ाना, छुटकारा कराना। परिमोयह (सूअ २, १, ३६)।
परिमोयण न [परिमोचन] मोक्ष, छुटकारा (सुर ४, २५०; औप)।
परिमोस पुं [परिमोष] चोरी (महा)।
परियंच सक [परि + अञ्च्] १ पास में जाना। २ स्पर्श करना। ३ विभूषित करना। संकृ. परिअंचिवि (अप) (भवि)।
परियंच सक [परि + अर्च्] पूजना। संकृ. परिअंचिवि (अप) (भवि)।
परियंचण न [पर्यञ्चन] स्पर्श करना (सुख ३, १)। देखो पलियंचण।
परियंचिअ वि [पर्यञ्चित] विभूषित, 'पव-रारामगामपरियंचिउ' (भवि)।
परियंचिअ वि [पर्यचित] पूजित (भवि)।
परियंद सक [परि + वन्द्] वन्दन करना, स्तुति करना। कवकृ. परियंदिज्जमाण (औप)।
परियंदण न [परिवन्दन] वन्दन, स्तुति (आचा)।
परियच्छ सक [दृश्] १ देखना। २ जानना। परियच्छइ (भवि; उव), परियच्छंति (उव)।
परियच्छिय देखो परिकच्छिय (राज)।
परियच्छी स्त्री [परिकक्षी] परदा (धर्मरत्न वृ० गा० ३१ पत्र २५, २)।
परियत्थि स्त्री [पर्यस्ति] देखो पल्हत्थिया, 'जत्तो वायइ पवणो परियत्थी दिज्जए तत्तो' (चेइय १३०)।
परियप्प सक [परि + कल्पय्] कल्पना करना, चिन्तन करना। वकृ. परियप्पमाण (आचा १, २, १, २)।

परियप्पण न [परिकल्पन] कल्पना (धर्मसं १२०८)।
परियय पुं [परिचय] जान-पहचान, विशेष रूप से ज्ञान (गउड; से १५, ६६; अभि १३१)।
परियय वि [परिगत] अन्वित, युक्त (स २२)।
परियाइ सक [पर्या + दा] १ समन्ताद् ग्रहण करना। २ विभाग से ग्रहण करना। परियाइयह (सूअ २, १, ३७)। संकृ. परियाइत्ता (ठा ७)।
परियाइअ वि [पर्यात्त] संपूर्ण रूप से गृहीत (ठा २, ३—पत्र ६३)।
परियाइअ देखो परियाईय (ठा २, ३—पत्र ६३)।
परियाइणया स्त्री [पर्यादान] समन्ताद् ग्रहण (पण्ण ३४—पत्र ७७४)।
परियाइत्त वि [पर्याप्त] काफी (राज)।
परियाईय वि [पर्यायातीत] पर्याय को अतिक्रान्त (राज)।
परियाग देखो पज्जाय (औप; उवा; महा; कप्प)।
परियागय वि [पर्यागत] १ पर्याय से आगत (उत्त ५, २१; सुज्ज ५, २१; णाया १, ३)। २ सर्वथा निष्पन्न (णाया १, ७—पत्र ११६)।
परियाग सक [परि + ज्ञा] जानना। परियाणइ, परियाणाइ (पि १७०; उवा)।
परियाण न [परित्राण] रक्षण (सूअ १, १, २, ६; ७)।
परियाण न [परिदान] १ विनिमय, बदला, लेनदेन। २ समन्ताद् दान (भवि)।
परियाण न [परियान] १ गमन (ठा १०)। २ वाहन, यान (ठा ८)। ३ अवतरण (ठा ३, ३)।
परियाणण न [परिज्ञान] जानकारी (स १३)।
परियाणिअ वि [परित्राणित] परित्राण-युक्त (सूअ १, १, २, ७)।
परियाणिअ वि [परिज्ञात] जाना हुआ, विदित (पउम ८८, ३३; रत्न १८; भवि)।

परियाणिअ पुंन [परियानिक] १ यान, वाहन । २ विमान-विशेष (ठा ८)।

परियादि देखो परियाइ। परियादियति (कप्प)। संकृ. **परियादित्ता** (कप्प)।

परियाय देखो पज्जाय (ठा ४, ४; सुपा १६; विसे २७६१; औप; आचा; उवा)। ६ अभिप्राय, मत; 'सएहिं परियाएहिं लोयं बूया कडेति य' (सूअ १, १, ३, ६)। १० प्रव्रज्या, दीक्षा (ठा ३, २—पत्र १२६)। ११ ब्रह्मचर्य (आव ४)। १२ जिन-देव के केवल-ज्ञान की उत्पत्ति का समय (णाया १, ८)। °थेर पुं [°स्थविर] दीक्षा की अपेक्षा से वृद्ध (ठा ३, २)।

परियायंतकरभूमि स्त्री [पर्यायान्तकृद्-भूमि] जिन-देव के केवल ज्ञान की उत्पत्ति के समय से लेकर तदनन्तर सर्व प्रथम मुक्ति पानेवाले के बीच के समय का अन्तर (णाया १, ८—पत्र १५४)।

परियार सक [परि+चारय्] १ सेवा-शुश्रूषा करना । २ संभोग करना, विषय-सेवन करना। परियारेइ (ठा ३, १; भग)। वकृ. **परियारेमाण** (राज)। कवकृ. **परियारिज्जमाण** (ठा १०)।

परियार पुं [परिचार] मैथुन, विषय-सेवन (पराण ३४—पत्र ७८०; ठा ३, १)।

परियारग वि [परिचारक] १ विषय-सेवन करनेवाला (पराण २; ठा २, ४)। २ सेवा-शुश्रूषा करनेवाला (विपा १, १)।

परियारण न [परिचारण] १ सेवा-शुश्रूषा (सुज्ज १८—पत्र २६५)। २ काम-भोग (पराण ३४)।

परियारणया, **परियारणा** स्त्री [परिचारणा] ऊपर देखो (पराण ३४; ठा ५, १)। °सद्द पुं [°शब्द] विषय-सेवन के समय का स्त्री का शब्द (निचू १)।

परियाल देखो **परिवार** (राय ५४)।

परियालोयण न [पर्यालोचन] विचार, चिन्तन (सुपा ५००)।

परियाव देखो **परिताव** = परिताप (आचा; ओघ १५४)।

परियावज्ज अक [पर्या+पद्] १ पीडित होना। २ रूपान्तर में परिणत होना। ३ सक. सेवना। परियावज्जइ, परियावज्जंति (कप्प; आचा)।

परियावज्जण न [पर्यापादन] रूपान्तर-प्राप्ति (पिंड २८०)।

परियावज्जणा स्त्री [पर्यापादन] आसेवन (ठा ३, ४—पत्र १७४)।

परियावण देखो **परितावण** (सूअ २, २, ६२)।

परियावणा स्त्री [परितापना] परिताप, संताप (औप)।

परियावणिया स्त्री [परियापनिका] कालान्तर तक अवस्थान, स्थिति (णाया १, १४—पत्र १८६)।

परियावण्ण, **परियावन्न** वि [पर्यापन्न] स्थित, अव-स्थित (आचा २,१,११,७; ८; भग ३४, २; कस)।

परियावन्न वि [पर्यापन्न] लब्ध, प्राप्त (आचा २, १, ६, ६)।

परियावस सक [पर्या+वासय्] आवास कराना। परियावसे (उत्त १८, ५४; सुख १८, ५४)।

परियावसह पुं [पर्यावसथ] मठ, संन्यासी का स्थान (आचा २, १, ८, २)।

परियाविय वि [परितापित] पीड़ित (पडि)।

परियासिय वि [परिवासित] बासी रखा हुआ (कस)।

परिरंज सक [भञ्ज्] भाँगना, तोड़ना। परिरंजइ (प्राकृ ७४)।

परिरंभ सक [परि+रभ्] आलिंगन करना। परिरंभस्सु (शौ) (पि ४६७)। संकृ. **परिरंभिउं** (कुप्र २४२)।

परिरंभण न [परिरम्भन] आलिङ्गन (पाअ; गा ८३५; सुपा २; ३६६)।

परिरक्ख सक [परि+रक्ष्] परिपालन करना। परिरक्खइ (भवि)। कृ. **परिक्खणीअ** (सिक्खा ३१)।

परिक्खण न [परिरक्षण] परिपालन (गा ६०१; भवि)।

परिरक्खा स्त्री [परिरक्षा] ऊपर देखो (पउम ५६, ५३; धर्मवि ५३; गउड)।

परिरक्खिय वि [परिरक्षित] परिपालित (भवि)।

परिरद्ध वि [परिरब्ध] आलिङ्गित (गा ३६८)।

परिरय पुं [परिरय] १ परिधि, परिक्षेप (उत्त ३६, ५६; पउम ८६, ६१; पत्र १५८; औप)। २ पर्याय, समानार्थक शब्द; 'एगपरिरय त्ति वा एगपज्जाय त्ति वा एगणामभेद त्ति वा एगट्ठा' (आचू १)। ३ परिभ्रमण, फिर कर जाना; 'अहवा थेरो, तस्स य अंतरा डु डोंगरा वा, जे समत्था ते उज्जुएण वच्चंति, जो असमत्थो सो परिरएणं—भमाडेण वच्चइ' (ओघभा २० टी)।

परिराय अक [परि+राज्] विराजना, शोभना। वकृ. **परिरायमाण** (कप्प)।

परिरिंख सक [परि+रिङ्ख्] चलना, फरकना, हिलना। वकृ. **परिरिंखमाण** (उप ५३० टी)।

परिरुंभ सक [परि+रुध्] रोकना, अटकाना। कर्म. परिरुज्झइ (गउड ४३४)। संकृ. **परिरुंभिऊण** (उवकु १)।

परिलंघि वि [परिलङ्घिन्] लंघन करनेवाला (गउड)।

परिलंबि वि [परिलम्बिन्] लटकनेवाला (गउड)।

परिलंभिअ वि [परिलम्भित] प्राप्त कराया हुआ, 'सो गयवरो मुणीणं (मुणीहिं) वयाणि परिलंभिओ पसन्नप्पा' (पउम ८४, १)।

परिलग्ग वि [परिलग्न] लगा हुआ, व्यापृत (उप ३५६ टी)।

परिलिअ वि [दे] लीन, तन्मय (दे ६, २४)।

परिली अक [परि+ली] लीन होना। वकृ. **परिलिंत**, **परिलेंत**, **परिलीयमाण** (णाया १, १—पत्र ५; औप; से ६, ४८; पराह १, ३; राय)।

परिली स्त्री [दे] आतोद्य-विशेष, एक तरह का बाजा (राज)।

परिलीण वि [परिलीन] निलीन (पाअ)।

परिलुंप सक [परि+लुप्] लुप्त करना, अदृष्ट करना। कवकृ. परिलुप्पमाण (महा)।

परिलेंत देखो **परिली** = परि+ली।

परिलोयण न [परिलोचन, परिलोकन] अवलोकन, निरीक्षण। २ वि. देखनेवाला; 'जुगंतरपरिलोयणाए दिट्ठीए' (उवा)।

परिल्ल देखो **पर** = पर (से ६, १७)।
परिल्लवास वि [दे] अज्ञात-गति (दे ६, ३३)।
परिल्ली देखो **परिली** = दे (राय ४६)।
परिल्ली देखो **परिली**। वकृ. **परिल्लिंत, परिल्लेंत** (ग्रौप)।
परिल्हस अक [परि + स्रंस्] गिर पड़ना, सरक जाना। परिल्हसइ (हे ४, १६७)।
परिवइत्तु वि [परिव्रजितृ] गमन करने में समर्थ (ठा ४, ४—पत्र २७१)।
परिवंकड (अप) वि [परिवक्र] सर्वथा टेढ़ा (भवि)।
परिवंच सक [परिवञ्चय्] ठगना। संकृ. **परिवंचिऊण** (सम्मत्त ११८)।
परिवंचिअ वि [परिवञ्चित] जो ठगा गया हो (दे ४, १८)।
परिवंथि वि [परिपन्थिन्] विरोधी, दुश्मन (पि ४०५; नाट—विक्र ७)।
परिवंदण न [परिवन्दन] स्तुति, प्रशंसा (आचा)।
परिवंदिय वि [परिवन्दित] स्तुत, पूजित (पउम १, ६)।
परिवक्खिय देखो **परिवच्छिय** (ग्रौप)।
परिवग्ग पुं [परिवर्ग] परिजन-वर्ग (पउम २३, २४)।
परिवच्छ न [दे] अवधारण, निश्चय; 'सामण्णत्थ परिवच्छे' (कल्पगा० २१४२)।
परिवच्छिय देखो **परिकच्छिय**; 'उज्जलनेवत्थहव्वपरिवच्छियं' (णाया १, १६ टी—पत्र २२१; ग्रौप)। देखो **परिवत्थिय**।
परिवज्ज सक [प्रति + पद्] स्वीकार करना। परिवज्जइ (भवि)।
परिवज्ज सक [परि + वर्जय्] परिहार करना, परित्याग करना। परिवज्जइ (भवि)। संकृ. **परिवज्जिय, परिवज्जियाण** (आचा, पि ५९२)।
परिवज्जण न [परिवर्जन] परित्याग (धर्मसं ११२०)।
परिवज्जणा स्त्री [परिवर्जना] ऊपर देखो (उव)।
परिवज्जिय वि [परिवर्जित] परित्यक्त (उवा; भग; भवि)।

परिवट्ट देखो **परिवत्त** = परि + वर्तय्। परिवट्टइ (भवि)। संकृ. **परिवट्टिवि** (अप) (भवि)।
परिवट्टण न [परिवर्तन] आवर्तन, आवृत्ति; 'आगमपरिवट्टणं' (संबोध ३६)।
परिवट्टि देखो **परिवत्ति** (मा ५२)।
परिवट्टिय देखो **परिवत्तिय** (भवि)।
परिवट्टुल वि [परिवर्तुल] गोलाकार (स ६८)।
परिवड अक [परि + पत्] पड़ना। वकृ. **परिवडंत, परिवडमाण** (पंच ५, ६२; ६७; उप पृ ३)।
परिवडिअ वि [परिपतित] गिरा हुआ (सुपा ३६०; वसु; यति २३; हम्मीर ३०; पंचा ३, २४)।
परिवड्ढ अक [परि + वृध्] बढ़ना। परिवड्ढइ (महा; भवि)। भवि. परिवड्ढिस्सइ (ग्रौप)। कृ. **परिवड्ढंत, परिवड्ढमाण, परिवड्ढेमाण** (गा ३४६; णाया १, १३; महा; णाया १, १०)।
परिवड्ढण न [परिवर्धन] परिवृद्धि, बढ़ाव (गउड; धर्मसं ८७५)।
परिवड्ढि स्त्री [परिवृद्धि] ऊपर देखो (से ५, २)।
परिवड्ढिअ देखो **परिअड्ढिअ** = परिवर्धिन् (ग्रौप १६ टि)।
परिवड्ढिअ वि [परिवर्धित] बढाया हुआ (गा १४२; ४३१)।
परिवड्ढेमाण देखो **परिवड्ढ**।
परिवण्ण सक [परि + वर्णय्] वर्णन करना। कृ. **परिवण्णेअव्व** (भग)।
परिवण्णिअ वि [परिवर्णित] जिसका वर्णन किया गया हो वह (आत्म ७)।
परिवत्त देखो **परिअट्ट** = परि + वृत्। परित्तई (उत्त ३३, १)। परिवत्तसु (गा ८०७)। वकृ. परिवत्तंत (गा २८३)।
परिवत्त देखो **परिअट्ट** = परि + वर्तय्। वकृ. **परिवत्तंत, परिवत्तयंत** (स ६; सूत्र १, ५, १, १५)। संकृ. **परिवत्तिऊण** (काल)।
परिवत्त देखो **परिअट्ट** = परिवर्त; 'विहियरूवपरिवत्तो' (कुप्र १३४)। २ संचरण, भ्रमण (राज)।

परिवत्त देखो **परिअत्त** = परिवृत्त (काल)।
परिवत्तण देखो **पडिअत्तण** (पि २८६; नाट—विक्र ८३)।
परिवत्तर (अप) वि [परिपक्त्रिम] पकाया गया, गरम किया गया; 'अंगु मलेवि सुगंधामोएं निमज्जिउ परिवत्तरतोएं' (भवि)।
परिवत्ति वि [परिवर्तिन्] बदलानेवाला, 'रूवपरिवत्तिणी विज्जा' (कुप्र १२६; महा)।
परिवत्तिय देखो **परिअट्टिय** (सुपा २९२)।
परिवत्थ न [परिवस्त्र] वस्त्र, कपड़ा (भवि)।
परिवत्थिय वि [परिवस्त्रित] आच्छादित, 'उज्जलनेवच्छहत्थ (?व्व) परिवत्थियं' (ग्रौप)। देखो **परिवच्छिय**।
परिवद्ध देखो **परिवड्ढ**। वकृ. **परिवद्धमाण** (राज)।
परिवन्न देखो **पडिवन्न** (उप १३९ टी)।
परिवय अक [परि + वत्] तिर्यक् गिरना। परिवयंति (राय १०१)।
परिवय सक [परि + वद्] निन्दा करना। परिवएज्जा, परिवयंति (आचा)। वकृ. **परिवयंत** (पण्ह १, ३)।
परिवरिअ वि [परिवृत] परिकरित, वेष्टित (सुपा १२५)।
परिवलइअ वि [परिवलयित] वेष्टित (सुख १०, १)।
परिवस अक [परि + वस्] बसना, रहना। परिवसइ, परिवसंति (भग; महा; पि ४१७)।
परिवसण न [परिवसन] आवास (राज)।
परिवसणा स्त्री [परिवसना] पर्युषणा-पर्व (निचू १०)।
परिवसिअ वि [पर्युषित] रहा हुआ, वास किया हुआ (सण)।
परिवह सक [परि + वह्] वहन करना, ढोना। २ अक चालू रहना। परिवहइ (कप्प)। परिवहंति (गउड)। वकृ. **परिवहंत** (पिंड ३५६)।
परिवहण न [परिवहन] ढोना (राज)।
परिवा अक [परि + वा] सूखना। परिवायइ (गउड)।
परिवाइ वि [परिवादिन्] निन्दा करनेवाला (उव)।

परिवाइय वि [परियाचित] पढ़ा हुआ (पउम ३७, १५)।

परिवाई स्त्री [परिवाद] कलंक-वार्ता, 'दइयस्स ताव वत्ता जणपरिवाई लहुं पत्ता' (पउम ६५, ४१)।

परिवाड सक [घटय्] १ घटाना, संगत करना। २ रचना, निर्माण करना। परिवाडेइ (हे ४, ५०)।

परिवाडल देखो **पारिपाडल** (गउड)।

परिवाडि स्त्री [परिपाटि] १ पद्धति, रीति (विसे १०८५)। २ पंक्ति, श्रेणि (उत्त १, ३२)। ३ क्रम, परंपरा (संबो ६)। ४ सूत्रार्थ-वाचना, अध्यापन; 'थिरपरिवाडी गहियवक्को' (धर्मवि ३६); 'एगत्थोहि वत्ति न करे परिवाडिदाणमवि तासिं' (कुलक ११)।

परिवाडिअ वि [घटित] रचित (कुमा)।

परिवाडी देखो **परिवाडि**; 'परिवाडीआगयं हवइ रज्जं' (पउम ३१, १०६; पाअ)।

परिवाद पुं [परिवाद] निन्दा, दोष-कीर्तन (धर्मसं ९५४)।

परिवादिणी स्त्री [परिवादिनी] वीणा-विशेष (राज)।

परिवाय देखो **परिवाद** (कप्प; औप; पउम ६५, ६०; णाया १, १; स ३२; आत्महि १५)।

परिवायग } पुं [परिव्राजक] संन्यासी, **परिवायय** } बावा, (सण; सुर १५, ५)।

परिवायणी स्त्री [परिवादनी] सात तांतवाली वीणा (राय ४६)।

परिवार सक [परि+वारय्] १ वेष्टन करना। २ कुटुम्ब करना। वकृ. **परिवारयंत** (उत्त १३, १४)। संकृ. **परिवारिया** (सूअ १, ३, २, २)।

परिवार पुं [परिवार] गृह-लोक, घर के मनुष्य (औप; महा; कुमा)। २ न. म्यान (पाअ)।

परिवारण न [परिवारण] १ निराकरण (पण्ह १, १—पत्र १६)। २ आच्छादन, ढकना (दे १, ८६)।

परिवारिअ वि [दे] घटित, रचित (दे ६, ३०)।

परिवारिअ वि [परिवारित] १ परिवार-संपन्न। २ वेष्टित; 'जहा से उडुवई चंदे नक्खत्तपरिवारिए' (उत्त ११, २५; काल)।

परिवाल देखो **परिआल**। परिवालइ (दे ६, ३५ टी)।

परिवाल सक [परि+पालय्] पालन करना। परिवालइ, परिवालेइ (भवि; महा)। वकृ. **परिवालयंत** (सुर १, १७१)। संकृ. **परिवालिय** (राज)।

परिवाल देखो **परिवार** = परिवार (णाया १, ८—पत्र १३१)।

परिवाविय वि [परिवापित] उखाड़ कर फिर से बोया हुआ (ठा ४, ४)।

परिवाविया स्त्री [परिवापिता] दीक्षा-विशेष फिर से महाव्रतों का आरोपण (ठा ४, ४)।

परिवास पुं [दे] खेत में सोनेवाला पुरुष (दे ६, २६)।

परिवास न [परिवासस्] वस्त्र, कपड़ा; 'जंघोरुयगुज्झंतरपासइँ सुनियत्थइँ मि झीण-परिवासइँ' (भवि)।

परिवासि वि [परिवासिन्] बसनेवाला (सुपा ४२)।

परिवासिय वि [परिवासित] सुवासित, सुगन्ध-युक्त; 'मयपरिमलपरिवासियदूरे' (भवि)।

परिवाह सक [परि+वाहय्] १ वहन कराना। २ अश्वादि खेलाना, अश्वादि-क्रीड़ा करना; 'विवरीयसिक्खतुरयं परिवाहइ वाहियालीए' (महा)।

परिवाह पुं [परिवाह] जल का उछाल, बहाव;

'भरिउच्चरंतपसरिअपिअसंभरणपिसुणो वराईए।
परिवाहो विअ दुक्खस्स वहइ णअणट्ठिओ बाहो' (गा ३७७)।

परिवाह पुं [दे] दुर्विनय, अविनय (दे ६, २३)।

परिवाहण न [परिवाहन] अश्वादि-खेलन; 'आसपरिवाहणनिमित्तं गएण' (स ८१; महा)।

परिविआल सक [परि+विश्] वेष्टन करना। परिविआलइ (प्राकृ ७५; धात्वा १४४)।

परिविचिट्ठ अक [परिवि+स्था] १ उत्पन्न होना। २ रहना। परिविचिट्ठइ (आचा १, ४, २, २; पि ४८३)।

परिविच्छय वि [परिविक्षत] सर्वथा छिन्न-हत (सूअ १, ३, १, २)।

परिविट्ठ वि [परिविष्ट] परोसा हुआ (स १८६; सुपा ६२३)।

परिवित्तस अक [परिवि+त्रस्] डरना। परिवित्तसंति; परिवित्तसेज्जा (आचा १, ६, ५, ५)।

परिवित्ति स्त्री [परिवृत्ति] परिवर्तन (सुपा ५८७)।

परिविद्ध वि [परिविद्ध] जो बिंधा गया हो वह (सुपा २७०)।

परिविद्धंस सक [परिवि+ध्वंसय्] १ विनाश करना। २ परिताप उपजाना। संकृ **परिविद्धंसित्ता** (भग)।

परिविद्धत्थ वि [परिविध्वस्त] १ विनष्ट। २ परितापित (सूअ २, ३, १)।

परिविप्फुरिय वि [परिविस्फुरित] स्फूर्ति-युक्त (सण)।

परिवियलिय वि [परिविगलित] चुआ हुआ, टपका हुआ (सण)।

परिवियलिर वि [परिविगलितृ] झरनेवाला, चूनेवाला (सण)।

परिविरल वि [परिविरल] विशेष विरल (गउड; गा ३२६)।

परिविलसिर वि [परिविलसितृ] विलासी (सण)।

परिविस सक [परि+विश्] वेष्टन करना। परिविसइ (प्राकृ ७५)।

परिविस सक [परि+विष्] परोसना, खिलाना। सकृ. **परिविस्स** (उत्त १४, ९)।

परिवियास पुं [परिविषाद] समन्तात् खेद (धर्मवि १२६)।

परिविहुरिय वि [परिविधुरित] अति पीड़ित, 'मणिसंजुयदेविकरपरिविहुरिओ गयं मोत्तु' (सुर १५, १५)।

परिवीअ सक [परि+वीजय्] पँखा करना, हवा करना। परिवीएमि (स ६७)।

परिवीइअ वि [परिवीजित] जिसको हवा की गई हो वह (उप २११ टी)।

परिवीढ न [परिपीठ] आसन-विशेष (भवि)।

परिवील सक [परि-पीडय्] दबाना। संक्र. **परिवीलियाण** (आचा २, १, ८, १)।

परिवुड वि [परिवृत] परिकरित, वेष्टित (णाया १, १४; धर्मवि २४; औप; महा)।

परिवुत्थ वि [पर्युषित] १ रहा हुआ। २ न. वास, निवास (गउड ५४०)। देखो **परिवुसिअ**।

परिवुद देखो **परिवुड** (प्राकृ १२)।

परिवुदि स्त्री [परिवृति] वेष्टन (प्राकृ १२)।

परिवुसिअ वि [पर्युषित] स्थित, रहा हुआ; 'जे भिक्खू अचेले परिवुसिए' (आचा १, ८, ७, १; १, ६, २, २)। देखो **परिवुत्थ**।

परिवुसिअ वि [पर्युषित] गत, गुजरा हुआ (आचा २, ३, १, ३)।

परिवूढ वि [परिवृढ] समर्थ (उत्त ७, २)।

परिवूढ वि [परिवृद्ध] स्थूल (भास ८६; उत्त ७, ६)।

परिवूढ वि [परिवृद्ध] १ बलवान्, बलिष्ठ (दस ७, २३)। २ मांसल, पुष्ट (आचा २, ४, २, ३)।

परिवूढ वि [परिव्यूढ] वहन किया हुआ, ढोया हुआ; 'न चइस्सामि अहं पुण चिरपरिवूढं इमं लोहं' (धर्मवि ७)।

परिवूहण देखो **परिबूहण** (राज)।

परिवेढ सक [परि+वेष्ट्] बेढ़ना, लपेटना। परिवेढइ (भवि)। संकृ **परिवेढिय** (निचू १)।

परिवेढ पुं [परिवेष्ट] वेष्टन, घेरा; 'जा जग्गइ तो पिच्छइ सेवापरसुहडपरिवेढं' (सिरि ६३८)।

परिवेढाविय वि [परिवेष्टित] वेष्टित कराया हुआ (पि ३०४)।

परिवेढिय वि [परिवेष्टित] बेढ़ा हुआ, घेरा हुआ, लपेटा हुआ (उप ७६८ टी; धण २०; पि ३०४)।

परिवेय अक [परि+वेप्] काँपना, 'कायरघरिणि परिवेयइ' (भवि)।

परिवेल्लिर वि [परिवेल्लितृ] कम्पन-शील (गउड)।

परिवेव अक [परि+वेप्] काँपना। वकृ. **परिवेवमाण** (आचा)।

परिवेस सक [परि+विष्] परोसना। परिवेसइ (सुपा ३८६)। कर्म. परिवेसिज्जइ (णाया १, ८)। वकृ. **परिवेसंत, परिवेसयंत** (पिंड १२०; सुपा ११; णाया १, ७)।

परिवेस पुं [परिवेश, °ष] १ वेष्टन, (गउड)। २ मंडल, मेघादि से सूर्य-चन्द्र का वेष्टनाकार मंडल; 'परिवेसो अंबरे फरुसवण्णो' (पउम ६६, ४७; स ३१२ टी; गउड)।

परिवेसण न [परिवेषण] परोसना (स १८७; पिंड ११६)।

परिवेसणा स्त्री [परिवेषणा] ऊपर देखो (पिंड ४४५)।

परिवेसि [परिवेशिन्] समीप में रहनेवाला (गउड)।

परिव्वअ सक [परि+व्रज्] १ समंताद् गमन करना। २ दीक्षा लेना। परिव्वए; परिव्वएज्जासि (सूअ १, १, ४, ३; पि ४६०)।

परिव्वअ वि [परिवृत] परिवेष्टित, 'तारापरिव्वओ विव सरयपुण्णिमाचंदो' (वसु)।

परिव्वअ वि [परिव्यय] विशेष व्यय (नाट—मृच्छ ७)।

परिव्वय पुं [परिव्यय] खर्चा, खर्च करने का धन (दस ३, १ टी)।

परिव्वह सक [परि+वह्] वहन करना, धारण करना। परिव्वहइ (संबोध २२)।

परिव्वाइया स्त्री [परिव्राजिका] संन्यासिनी (णाया १, ८; महा)।

परिव्वाज (शौ) पुं [परि+व्राज्] संन्यासी (चारु ४३)।

परिव्वाजअ (शौ) पुं [परिव्राजक] संन्यासी (पि २८७; नाट—मृच्छ ८५)।

परिव्वाजिआ (शौ) देखो **परिव्वाइया** (मा २०)।

परिव्वाय देखो **परिव्वाज** (सूअनि ११२; औप)।

परिव्वायग, परिव्वायय पुं [पारिव्राजक] संन्यासी, साधु (भग)।

परिव्वायय वि [पारिव्राजक] परिव्राजकसम्बन्धी (कप्प)।

परिस देखो **फरिस** = स्पर्श (गउड; चारु ४२)।

परिसंक अक [परि+शङ्क्] भय करना, डरना। वकृ. **परिसंकमाण** (सूअ १, १०, २०)।

परिसंकिय वि [परिशङ्कित] भीत (पण्ह १, ३)।

परिसंखा सक [परिसं+ख्या] १ अच्छी तरह जानना। २ गिनती करना। संकृ. **परिसंखाय** (दस ७, १)।

परिसंखा स्त्री [परिसंख्या] संख्या, गिनती (पउम २, ४६; जीवस ४०; पव—गाथा १३; तंदु ४; सण)।

परिसंग पुं [परिषङ्ग] संग, सोहबत (हम्मीर १६)।

परिसंग पुं [परिष्वङ्ग] आलिङ्गन (पउम २१, ५२)।

परिसंगय वि [परिसंगत] युक्त, सहित (धर्मवि १३)।

परिसंठव सक [परिसं+स्थापय्] संस्थापन करना। परिसंठवहु (अप) (पिंग)। वकृ. **परिसंठवित** (उपपं ४३)।

परिसंठविय वि [परिसंस्थापित] संस्थापित (तंदु ३८)।

परिसंठिय वि [परिसंस्थित] स्थित, रहा हुआ (महा)।

परिसंत वि [परिश्रान्त] थका हुआ (महा)।

परिसंथविय वि [परिसंस्थापित] आश्वासित (स ५६६)।

परिसक्क सक [परि+ष्वष्क्] चलना, गमन करना, इधर-उधर घूमना। परिसक्कइ (उप ६ टी; कुप्र १७५)। वकृ. **परिसक्कंत, परिसक्कमाण** (काप्र ६१७; स ४१; १३६)। संकृ. **परिसक्किऊण** (सुपा ३१३)। कृ. **परिसक्कियव्व** (स १६२)।

परिसक्कण न [परिष्वष्कण] परिभ्रमण (से ५, ५५; १३, ५६; सुपा २०१)।

परिसक्किअ वि [परिष्वष्कित] १ गत (भवि)। २ न. परिक्रमण, परिभ्रमण (गा ६०६)।

परिसक्किर वि [परिष्वष्कितृ] गमन करनेवाला (णाया १, १; पि ५९६)।

परिसज्जिअ (अप) वि [परिष्वक्त] आलिंगित (सण)।

परिसड अक [परि + शट्] उपयुक्त होना। परिसडइ (आचा २, १, ६, ६)।

परिसडिय वि [परिशटित] सड़ा हुआ, विनष्ट (गाया १, २; औप)।

परिसण्ह वि [परिश्लक्ष्ण] सूक्ष्म, छोटा (से १, १,)।

परिसन्न वि [परिषण्ण] जो हैरान हुआ हो, पीडित (पउम १७, ३०)।

परिसप्प सक [परि + सृप्] चलना। परिसप्पेइ (नाट—विक्र ६१)।

परिसप्पि वि [परिसर्पिन्] १ चलनेवाला (कप्पू)। २ पुंस्त्री. हाथ और पैर से चलनेवाला जन्तु—नकुल, सर्प आदि प्राणि-गण। स्त्री. °णी (जीव २)।

परिसम देखो परिस्सम (महा)।

परिसमत्त वि [परिसमाप्त] सम्पूर्ण, जो पूरा हुआ हो वह (से १५, ६५; सुर १५, २५०)।

परिसमत्ति स्त्री [परिसमाप्ति] समाप्ति' पूर्णता (उप ३५७; स ५२)।

परिसमापिय वि [परिसमापित] जो समाप्त किया गया हो, पूरा किया हुआ (विसे ३६०२)।

परिसमाव सक [परिसम् + आप्] पूर्ण करना। संकृ. परिसमाविअ (अभि ११६)।

परिसर पुं [परिसर] नगर आदि के समीप का स्थान (औप; सुपा १३०; मोह ७६)।

परिसल्लिय वि [परिशल्यित] शल्य-युक्त (सण)।

परिसव सक [परि + स्रु] झरना, टपकना। वकृ. परिसवंत (तंदु ३६; ४१)।

परिसह पुं [परिषह] देखो परीसह (भग)।

परिसा स्त्री [परिषद्] १ सभा, पर्षद् (पाअ; औप; उवा; विपा १, १)। २ परिवार (ठा ३, २—पत्र १२७)।

परिसाइ देखो परिस्साइ (राज)।

परिसाइयाण देखो परिसाव।

परिसाड सक [परि + शाटय्] १ त्याग करना। २ अलग करना। परिसाडेइ (कप्प; भग)। संकृ. परिसाडइत्ता (भग)।

परिसाड सक [परि + शाटय्] १ इधर-उधर फेंकना। २ भरना। ३ रखना; 'परिसाडिज्ज भोअणं' (दस ५, १, २८)। परिसाडिति; भूका. परिसाडिसु; भवि. परिसाडिस्संति (आचा २, १०, २)।

परिसाडणा स्त्री [परिशाटना] वपन, बोना (वव १)।

परिसाडणा स्त्री [परिशाटना] पृथक्करण (सूअनि ७; २०)।

परिसाडि वि [परिशाटिन्] परिशाटन-युक्त (ओघ ३१)।

परिसाडि वि [परिशाटि] परिशाटन, पृथक्करण (पिंड ५५२)।

परिसाडिय स्त्री [परिशातित] गिराया हुआ (दस ५, १, ९६)।

परिसाम अक [शम्] शान्त होना। परिसामइ (हे ४, १६७)।

परिसाम वि [परिश्याम] नीचे देखो (गउड)।

परिसामल वि [परिश्यामल] कृष्ण, काला (गउड)।

परिसामिअ वि [शान्त] शान्त, शम-युक्त (कुमा)।

परिसामिअ वि [परिश्यामित] कृष्ण किया हुआ (गाया १, १)।

परिसाव सक [परि + स्रावय्] १ निचोड़ना। २ गालना। संकृ. परिसावियाण (आचा २, १, ८, १)।

परिसावि देखो परिस्सावि (बृह १)।

परिसाहिय वि [परिकथित] प्रतिपादित, उक्त (सण)।

परिसिंच सक [परि + सिच्] सींचना। परिसिंचिज्जा (उत्त २, ९)। वकृ. परिसिंचमाण (गाया १, १)। कवकृ. परिसिच्चमाण (कप्प; पि ५४२)।

परिसिट्ठ वि [परिशिष्ट] अवशिष्ट, बाकी बचा हुआ (आचा १, २, ३, ५)।

परिसिढिल वि [परिशिथिल] विशेष शिथिल, ढीला (गउड)।

परिसित्त वि [परिषिक्त] १ सींचा हुआ (गा १८५; सण)। २ न. परिषेक, सेचन (पण्ह १, १)।

परिसिल्ल वि [पर्षद्वत्] परिषद् वाला (बृह ३)।

परिसील सक [परि + शीलय्] अभ्यास करना, आदत डालना। संकृ. परिसीलिवि (अप) (सण)।

परिसीलण न [परिशीलन] अभ्यास, आदत (रंभा; सण)।

परिसीलिय वि [परिशीलित] अभ्यस्त (सण)।

परिसीसग देखो पडिसीसअ (राज)।

परिसुक्क वि [परिशुष्क] खूब सूखा हुआ (विपा १, २; गउड)।

परिसुण्ण वि [परिशून्य] खाली, रिक्त, सुन्न (से ११, ८७)।

परिसुत्त वि [परिसुप्त] सर्वथा सोया हुआ (नाट—उत्तर २३)।

परिसुद्ध वि [परिशुद्ध] निर्मल, निर्दोष (उव; गउड)।

परिसुद्धि स्त्री [परिशुद्धि] विशुद्धि, निर्मलता (गउड; द्र ६५)।

परिसुन्न देखो परिसुण्ण (विसे २८५०; सण)।

परिसुस (अप) सक [परि + शोषय्] सुखाना। संकृ. परिसुसिवि (अप) (सण)।

परिसूअणा स्त्री [परिसूचना] सूचना (सुपा ३०)।

परिसेय पुं [परिषेक] सेचन (ओघ ३४७)।

परिसेस पुं [परिशेष] १ बाकी बचा हुआ, अवशिष्ट (से १०, २३; पउम ३५, ४०; गा ८८; कम्म ६, ६०)। २ अनुमान-प्रमाण का एक भेद, पारिशेषानुमान (धर्मसं ९८; ९९)।

परिसेसिअ वि [परिशेषित] १ बाकी बचा हुआ (भग)। २ परिच्छिन्न, निर्णीत;

'डज्झसि डज्झसु कड्ढसि
कड्ढसु अह फुडसि हिअअ ता फुडसु।
तहवि परिसेसिओ च्चिअ
सो हु मए गलिअसब्भावो' (गा ४०१)।

परिसेह पुं [परिषेध] प्रतिषेध, निवारण; 'पावट्ठाणाण जो उ परिसेहो, झाणज्झयणाईणं जो य विही, एस धम्मकसो' (काल)।

परिसोण वि [परिशोण] लाल रँग का (गउड)।

परिसोसण न [परिशोषण] सुखाना (गा ६२८)।

परिसोसिअ वि [परिशोषित] सुखाया हुआ (सण)।

परिसोह सक [परि + शोधय्] शुद्ध करना। कवकृ. **परिसोहिज्जंत** (सण)।

परिस्सअ सक [परि + स्वञ्ज्] आलिंगन करना। परिस्सअदि (शौ) (पि ३१५)। संकृ. परिस्सइअ (पि ३१५; नाट—शकु ७२)।

परिस्संत देखो **परिसंत** (णाया १, १; स्वप्न ४०; अभि २१०)।

परिस्सज (शौ) देखो **परिस्सअ**। परिस्सजह (उत्तर १७६)। वकृ. **परिस्सजंत** (अभि १३३)। संकृ. **परिस्सजिअ** (अभि १२५)।

परिस्सम पुं [परिश्रम] मेहनत (धर्मसं ७८८, स्वप्न १०; अभि ३६)।

परिस्सम्म अक [परि + श्रम्] १ मेहनत करना। २ विश्राम लेना। परिस्सम्मइ (विसे ११६७; धर्मसं ७८९)।

परिस्सव सक [परि + स्रु] चूना, झरना, टपकना। वकृ. **परिस्सवमाण** (विपा १, १)।

परिस्सव पुं [परिस्रव] आस्रव, कर्म-बन्ध का कारण (आचा)।

परिस्सह देखो **परीसह** (आचा)।

परिस्साइ देखो **परिस्सावि** = परिस्राविन् (ठा ४, ४—पत्र २७९)।

परिस्साव देखो **परिसाव**। संकृ. **परिस्सावियाण** (पि ५९२)।

परिस्सावि वि [परिस्राविन्] १ कर्म-बन्ध करनेवाला (भग २५, ६)। २ चूनेवाला, टपकनेवाला। ३ गुह्य बात को प्रकट कर देनेवाला (गच्छ १, २२; पंचा १५, १४)।

परिस्सावि वि [परिश्राविन्] सुनानेवाला (द्रव्य ४९)।

परिह सक [पार + धा] पहिरना, पहनना। परिहइ (धर्मवि १५०; भवि); 'सव्वंगीणेवि परिहए जंबू रयणमयालंकारे' (धर्मवि १४९)।

परिह पुं [दे] रोष, गुस्सा (दे ६. ७)।

परिह पुं [परिघ] अर्गला, आगल (अणु)।

परिहच्छ वि [दे] १ पटु, दक्ष, निपुण (दे ६, ७६; भवि)। २ पुं. मन्यु, रोष, गुस्सा (दे ६, ७१)। देखो **परिहत्थ**।

परिहच्छ देखो **पडिहच्छ** (औप)।

परिहट्ट सक [मृद्, परि + घट्टय्] मर्दन करना, चूर करना, कचरना, कुचलना। परिहट्टइ (हे ४, १२६; नाट—साहित्य ११६)।

परिहट्ट सक [वि + लुल्] १ मारना, मार कर गिरा देना। २ सामना करना। ३ लूट लेना। ४ अक. जमीन पर लोटना। परिहट्टइ (प्राकृ ७३)।

परिहट्टण न [परिघट्टन] १ अभिघात, आघात (से १०, ४१)। २ घर्षण, घिसना (से ८, ४३)।

परिहट्टि स्त्री [दे] आकृष्टि, आकर्षण, खींचाव (दे ६, २१)।

परिहट्टिअ वि [मृदित] जिसका मर्दन किया गया हो वह, 'परिहट्टिओ माणो' (कुमा; पाअ)।

परिहण न [दे. परिधान] वस्त्र, कपड़ा (दे ६, २१; पाअ; हे ४, ३४१; सुर १, २५; भवि)।

परिहत्थ पुं [दे] १ जलजन्तु-विशेष; 'परिहत्थमच्छपुंछच्छडअच्छोडणपोच्छलंतसलिलोहं' (सुर १३, ४१) 'पोक्खरिणी······परिहत्थभमंतमच्छछप्पयअणेगसउणगणमिहुणवियरियसद्दुन्नइयमहुरसरनाइया पासाईया' (णाया १, १३—पत्र १७९)। २ वि. दक्ष, निपुण; 'अन्ने रणपरिहत्था सूरा' (पउम ६१, १; पण्ह १, ३—पत्र ५५; पाअ, आव ४)। ३ परिपूर्ण (औप; कप्प)। देखो **परिहच्छ**, **पडिहत्थ**।

परिहर सक [परि + धृ] धारण करना। संकृ. **परिहरिअ** (उत्त १२, ६)।

परिहर सक [परि + हृ] १ त्याग करना, छोड़ना। २ करना। ३ परिभोग करना, आसेवन करना। परिहरइ (हे ४, २५९; उव; महा)। परिहरंति (भग १५—पत्र ६६७)। वकृ. **परिहरंत**, **परिहरमाण** (गा १६९; राज)। संकृ. **परिहरिअ** (पिंग)। हेकृ. परिहरित्तए, परिहरिउं (ठा ५, ३; काप्र ४०८)। कृ. **परिहरणीअ**, **परिहरिअव्व** (पि ५७१; गा २२७; ओघ ५९; सुर १४, ८३; सुपा ३९६; ५८८; पण्ह २, ५)।

परिहरण न [परिधरण] धारण करना (वव १)।

परिहरण न [परिहरण] १ परित्याग, वर्जन (महा)। २ आसेवन, परिभोग (ठा १०)।

परिहरणा स्त्री [परिहरणा] ऊपर देखो (पिंड १६७); 'परिहरणा होइ परिभोगो' (ठा ५, ३ टी—पत्र ३३८)।

परिहरिअ वि [परिहृत] परित्यक्त, वर्जित (महा; सण; भवि)।

परिहरिअ देखो **परिहर** = परि + धृ, हृ।

परिहरिअ वि [परिधृत] धारण किया हुआ, 'परिहरिअकणअकुंडलगंडत्थलमणहरेसु सवणेसु। अणुअ ! समअवसेणं परिहिज्जइ तालवेंटजुअं ॥' (गा ३९८ अ)।

परिहलाविअ पुं [दे] जल-निर्गम, मोरी, पनाला (दे ६, २९)।

परिहव सक [परि + भू] पराभव करना। वकृ. **परिहवंत** (वव १)। कृ. **परिहवियव्व** (उप १०३६)।

परिहव पुं [परिभव] पराभव, तिरस्कार (से १३, ४६; गा ३६६; हे ३, १८०)।

परिहवण न [परिभवन] ऊपर देखो (स ५७२)।

परिहविय वि [परिभूत] पराजित, तिरस्कृत (उप पृ १८०)।

परिहस सक [परि + हस्] उपहास करना, हँसी करना। परिहसइ (नाट)। कर्म. परिहसीअदि (शौ) (नाट—शकु २)।

परिहस्स वि [परिह्रस्व] अत्यन्त लघु (स ८)।

परिहा अक [परि + हा] हीन होना, कम होना। परिहाइ, परिहायइ (उव; सुख २, ३०)। भवि. परिहाइस्सदि (शौ) (अभि ६)। कवकृ. **परिहायंत**; **परिहायमाण** (सुर १०, ६; १२, १४; णाया १, १३; औप; ठा ३, ३), **परिहीअमाण** (पि ५४५)।

परिहा सक [परि + धा] पहिरना। भवि. परिहिस्सामि (आचा १, ६, ३, १)। संकृ.

परिहिऊण, परिहित्ता (कुप्र ७२; सूत्र १, ४, १, २५)। कृ. परिहियव्व (स ३१५)।

परिहा स्त्री [परिखा] खाई (उर ४, २; पाग्र)।

परिहाइअ वि [दे] परिक्षीण (षड्)।

परिहाइवि देखो **परिहाव** = परि + धापय्।

परिहाण न [परिधान] १ वस्त्र, कपड़ा, (कुप्र ५६; सुपा ५५)। २ वि. पहिरनेवाला, पहननेवाला; 'महिविलया सलिलवत्थपरिहाणी' (पउम ११, ११६)।

परिहाणि स्त्री [परिहाणि] ह्रास, नुकसान, क्षति (सम ६७; उप ३२६; जी ३३; प्रासू ३६)।

परिहाय वि [दे] क्षीण, दुर्बल (दे ६, २५; पाग्र)।

परिहायंत, **परिहायमाण** } देखो **परिहा** = परि + हा।

परिहार पुं [परिहार] करण, कृति (वव १)।

परिहार पुं [परिहार] १ परित्याग, वर्जन (गउड)। २ परिभोग, ग्रासेवन; 'एवं खलु गोसाला! वणस्सइकाइयाओ पउट्टपरिहारं परिहरंति' (भग १५)। ३ परिहार-विशुद्धि नामक संयम-विशेष (कम्म ४, १२; २१)। ४ विषय (वव १)। ५ तप-विशेष (ठा ५, २; वव १)। °विसुद्धिअ, °विसुद्धीअ न [°विशुद्धिक] चारित्र-विशेष, संयम-विशेष (ठा ५, २; नव २६)।

परिहारि वि [परिहारिन्] परिहार करनेवाला (बृह ४)।

परिहारिअ वि [पारिहारिक] ग्राचारवान् मुनि, उद्युक्त विहारी जैन साधु (ग्राचा २, १, १, ४)।

परिहारिणी स्त्री [दे] देर से व्याई हुई भैंस (दे ६, ३१)।

परिहारिय वि [पारिहारिक] १ परित्याग के योग्य (बृह २)। २ परिहार नामक तप का पालक (पव ६६)।

परिहाल पुं [दे] जल-निर्गम, मोरी (दे ६, २६)।

परिहाव सक [परि + धापय्] पहिराना। संकृ. परिहाइवि (ग्रप) (भवि)।

परिहाव सक [परि + हापय्] ह्रास करना, कम करना, हीन करना। वकृ. **परिहावेमाण** (णाया १, १—पत्र २८)।

परिहाविअ वि [परिहापित] हीन किया हुग्रा (वव ४)।

परिहाविअ वि [परिधापित] पहिराया हुग्रा (महा; सुर १०, १७; स ५२६; कुप्र ६)।

परिहास पुं [परिहास] उपहास, हँसी (गा ७७१; पाग्र)।

परिहासणा स्त्री [परिभाषणा] उपालम्भ (ग्राव १)।

परिहि पुंस्त्री [परिधि] १ परिवेष, 'ससिबिंबं व परिहिणा रुद्धं सिन्नेण तस्स रायगिहं' (पव २५५)। २ परिणाह, विस्तार (राज)।

परिहिअ वि [परिहित] पहिरा हुग्रा (उवा; भग, कप्प; ग्रौप; पाग्र; सुर २, ८०)।

परिहिऊण देखो **परिहा** = परि + धा।

परिहिंड सक [परि + हिण्ड्] परिभ्रमण करना। परिहिंडए (ठा ४, १ टी—पत्र १६२)। वकृ. **परिहिंडंत, परिहिंडमाण** (पउम ८, १६८; ६०, ५; १५५; ग्रौप)।

परिहिंडिय वि [परिहिण्डित] परिभ्रान्त, भटका हुग्रा (पउम ६, १३१)।

परिहित्ता, **परिहियव्व** } देखो **परिहा** = + धा।

परिहीअमाण देखो **परिहा** = परि + हा।

परिहीण वि [परिहीन] १ कम, न्यून (ग्रौप)। २ क्षीण, विनष्ट (सुज्ज १)। ३ रहित, वर्जित (उव)। ४ न. ह्रास, ग्रपचय (राय)।

परिहुत्त वि [परिभुक्त] जिसका भोग किया गया हो वह (से १, ६४; दे ४, ३६)।

परिहूअ वि [परिभूत] पराजित, ग्रभिभूत (गा १३४; पउम ३, ६, से २८)।

परिहेरग न [दे. परिहार्यक] ग्राभूषण-विशेष (ग्रौप)।

परिहो सक [परि + भू] पराभव करना। परिहोइ (भवि)।

परिहोअ देखो **परिभोग** (गउड)।

परिहल्लस (ग्रप) ग्रक [परि + ह्रस्] कम होना। परिह्लसइ (पिंग)।

परी सक [परि + इ] जाना, गमन करना। परिंति (पि ४९३)। वकृ. **परिंत** (पि ४९३)।

परी सक [क्षिप्] फेंकना। परीइ (हे ४, १४३)। परीसि (कुमा)।

परी सक [भ्रम्] भ्रमण करना, घूमना। परीइ (हे ४, १६१)। परेंति (पण्ह १, ३—पत्र ४६)।

परीघाय पुं [परिघात] निर्घात, विनाश (पव ६४)।

परीणम देखो **परिणम** = परि + णम्; 'संसग्गग्रो पण्णवणागुणाग्रो लोगुत्तरत्तेण परीणमंति' (उपपं ३५)।

परीभोग देखो **परिभोग** (सुपा ४६७; श्रावक २८४; पंचा ८, ६)।

परीमाण देखो **परिमाण** (जीवस १२३; १३२, पव १५६)।

परीय देखो **परित्त** (राज)।

परीयल्ल पुं [दे. परिवर्त] वेष्टन, 'तिपरीयल्लमणिस्सट्टं रयहरणं धारए एगं' (ग्रोघ ७०६)।

परीरंभ पुं [परीरम्भ] ग्रालिंगन (कुमा)।

परीवज्ज वि [परिवर्ज्य] वर्जनीय (कम्म ६, ६ टी)।

परीवाय देखो **परिवाय** = परिवाद (पउम १०१, ३; पव २३७)।

परीवार देखो **परिवार** = परिवार (कुमा; चेइय ४८)।

परीसण न [परिवेषण] परोसना (दे २, १४)।

परीसम देखो **परिस्सम** (भवि)।

परीसह पुं [परीषह] भूत ग्रादि से होनेवाली पीड़ा (ग्राचा; ग्रौप; उव)।

परुइय वि [प्ररुदित] जो रोने लगा हो वह (स ७५५)।

परुक्ख देखो **परोक्ख** (विसे १४०३ टी; सुपा १३३; श्रा १; कुप्र २५)।

परुण्ण, **परुन्न** } देखो **परुइय** (से १, ३५; १०, ६४; गा ३५४, ८३८; महा; स २०४)।

परुप्पर देखो **परोप्पर** (कुप्र ५)।

परुब्भासिद (शौ) वि [प्रोद्भासित] प्रकाशित (प्रयौ २०)।

परुस वि [परुष] कठोर (गा १४४)।

परूढ वि [प्ररूढ] १ उत्पन्न (धर्मवि १२१)। २ बढ़ा हुग्रा (ग्रौप; पि ४०२)।

परूव सक [प्र + रूपय्] प्रतिपादन करना। परूवेइ, परूवेंति (औप; कप्प; भग)। संकृ. **परूवइत्ता** (ठा ३, १)।

परूवग वि [प्ररूपक] प्रतिपादक (उव; कुप्र १८१)।

परूवण न [प्ररूपण] प्रतिपादन (अणु)।

परूवणा स्त्री [प्ररूपणा] ऊपर देखो (आचू १)।

परूविअ वि [प्ररूपित] १ प्रतिपादित, निरूपित (पण्ह २, १)। २ प्रकाशित; 'उत्तमकंचणरयणपरूविअभासुरभूसणभासुरि - अंगा' (अजि २३)।

परेअ पुं [दे] पिशाच (दे ६, १२; पाअ; षड्)।

परेण अ [परेण] बाद, अनन्तर (महा)।

परेयम्मण देखो परिकम्मण (कप्प)।

परेवय न [दे] पाद-पतन (दे ६, १६)।

परेव्व वि [परेद्युस्तन] परसों का, परसों होनेवाला (पिंड २४१)।

परो° अ [पर] उत्कृष्ट, 'परोसंतेहिं तच्चेहिं' (उवा)।

परोइय देखो परुइय (उप ७६८ टी)।

परोक्ख न [परोक्ष] १ प्रत्यक्ष-भिन्न प्रमाण, 'पच्चक्खपरोक्खाइं दुन्नेव जओ पमाणाइं' (सुर १२, ६०; णंदि)। २ वि. परोक्ष-प्रमाण का विषय, अप्रत्यक्ष (सुपा ६४७; हे ४, ४१८)। ३ न. पीछे, आँखों की ओट में; 'मम परोक्खे किं तए अणुभूयं ?' (महा)।

परोट्ट देखो पलोट्ट = पर्यस्त (षड्)।

परोप्पर, **परोप्फर** वि [परस्पर] आपस में (हे १, ६२; कुमा; कप्पू; षड्)।

परोवआर पुं [परोपकार] दूसरे की भलाई (नाट—मृच्छ १९८)।

परोवयारि वि [परोपकारिन्] दूसरे की भलाई करनेवाला (पउम ५०, १)।

परोवर देखो परोप्पर (प्राकृ २६; ३०)।

परोविय देखो परुइय (उप ७२८ टी; स ४८०)।

परोह अक [प्र + रुह्] १ उत्पन्न होना। २ बढ़ना। परोहदि (शौ) (नाट)।

परोह पुं [प्ररोह] १ उत्पत्ति (कुमा)। २ वृद्धि। ३ अंकुर, बीजोद्भेद (हे १, ४४); 'पुन्नलयाए परोहे रेहइ आवालपंतिव्व' (धर्मवि १६८)।

परोहड न [दे] घर का पिछला आँगन, घर के पीछे का भाग (ओघ ४१७; पाअ; गा ६८५ अ; वज्जा १०६; १०८)।

पल अक [पल्] १ जीना। २ खाना। पलइ (षड्)। देखो बल = बल्।

पल (अप) अक [पत्] पड़ना, गिरना। पलइ (पिंग)। वकृ. पलंत (पिंग)।

पल (अप) सक [प्र + कटय्] प्रकट करना। पल (पिंग)।

पल अक [परा + अय्] भागना;

'चोराण कामुयाण य
पामरपहियाण कुक्कुडो रडइ।
रे पलह रमह वाहयह,
वहह तणुइज्जए रयणी' (वज्जा १३४)।

पल न [दे] स्वेद, पसीना (दे ६, १)।

पल न [पल] १ एक बहुत छोटी तौल, चार तोला (ठा ३, १; सुपा ४३७; वज्जा ९८; कुप्र ४१६)। २ मांस (कुप्र १८६)।

पलंघ सक [प्र + लङ्घ्] अतिक्रमण करना। पलंघेज्जा (औप)।

पलंघण न [प्रलङ्घन] उल्लंघन (औप)।

पलंड पुं [पलगण्ड] राज, चूना पोतने का काम करनेवाला कारीगर; 'पलगंडे पलंडो' (प्राकृ ३०)।

पलंडु पुं [पलाण्डु] प्याज (उत्त ३६, ९८)।

पलंब अक [प्र + लम्ब्] लटकना। पलंबए (पि ४५७)। वकृ. **पलंबमाण** (औप; महा)।

पलंब वि [प्रलम्ब] १ लटकनेवाला, लटकता (पण्ह १, ४; राय)। २ लम्बा, दीर्घ (से १२, ५६; कुमा)। ३ पुं. ग्रह-विशेष, एक महाग्रह (ठा २, ३)। ४ मुहूर्त्त-विशेष, अहोरात्र का आठवाँ मुहूर्त्त (सम ५१)। ५ पुंन. आभरण-विशेष (औप)। ६ एक तरह का धान का कोठा (बृह २)। ७ मूल (कस; बृह १)। ८ रुचक पर्वत का एक शिखर (ठा ८—पत्र ४३६)। ९ पुंन. फल (बृह १; ठा ४, १—पत्र १८५) १० देव-विमान-विशेष (सम ३८)।

पलंबिअ वि [प्रलम्बित] लटका हुआ (कप्प; भवि; स्वप्न १०)।

पलंबिर वि [प्रलम्बितृ] लटकनेवाला, लटकता (सुपा ११; सुर १, २४८)।

पलक्क वि [दे] लम्पट, 'इय विसयपलक्कओ' (कुप्र ४२७; नाट)।

पलक्ख पुं [प्लक्ष] बड़ का पेड़ (कुमा; पि १३२)।

पलग न [पलक] फल-विशेष (आचा २, १, ८, ६)।

पलज्जण वि [प्ररञ्जन] रागी, अनुराग वाला; 'अधम्मपलज्जण —' (णाया १, १८; औप)।

पलट्ट अक [परि + अस्] १ पलटना, बदलना। २ सक. पलटाना, बदलाना। पलट्टइ (पिंग); 'कोहाइकारणेवि हु नो वयणसिरि पलट्टंति' (संबोध १८)। संकृ. पलट्टि (अप) (पिंग)। देखो पल्लट्ट।

पलत्त वि [प्रलपित] १ कथित, उक्त, प्रलाप-युक्त (सुपा ११४; से ११, ७९)। २ न. प्रलाप, कथन (औप)।

पलय पुं [प्रलय] १ युगान्त, कल्पान्त-काल। २ जगत् का अपने कारण में लय (से २, २; पउम ७२,३१)। ३ विनाश; 'जायवजाइ-पलए' (ती ३)। ४ चेष्टा-क्षय। ५ छिपना (हे १, १८७)। °क्क पुं [°र्क] प्रलय-काल का सूर्य (पउम ७२,३१)। °घण पुं [°घन] प्रलय का मेघ (सण)। °ानल पुं [°ानल] प्रलय काल की आग (सण)।

पलल न [पलल] १ तिल-चूर्ण, तिल-क्षोद (पण्ह २, ५; पिंड १९५)। २ मांस (कुप्र १८७)।

पललिअ न [प्रललित] १ प्रक्रीडित (णाया १, १—पत्र ६२)। २ अंग-विन्यास (पण्ह २, ४)।

पलव सक [प्र + लप्] प्रलाप करना, बक-वाद करना। पलवदि (शौ) (नाट—वेणी १७)। वकृ. **पलवंत**, **पलवमाण** (काल; सुर २, १२५; सुपा २५०; ६४१)।

पलवण न [प्लवन] उछलना, उच्छलन; 'संपाइमवाउवहो पलवण आऊवघाओ य' (ओघ ३४८)।

पलविअ } वि [प्रलपित] १ अनर्थक कहा
पलवित } हुआ। २ न. अनर्थक भाषण (चंड; पण्ह १, २)।

पलविर वि [प्रलपितृ] बकवादी (दे ७, ५६)।

पलस न [दे] १ कार्पास-फल। २ स्वेद, पसीना (दे ६, ७०)।

पलस (अप) न [पलाश] पत्र, पत्ती (भवि)।

पलसु स्त्री [दे] सेवा, पूजा, भक्ति (दे ६, ३)।

पलहि पुंस्त्री [दे] कपास (दे ६, ४; पाअ; वज्जा १८६; हे २, १७४)।

पलहिअ वि [दे] १ विषम, असम। २ पुंन. आवृत जमीन का वास्तु (दे ६, १५)।

पलहिअअ वि [दे. उपलहृदय] मूर्ख, पाषाण-हृदय (षड्)।

पलहुअ वि [प्रलघुक] १ स्वल्प, थोड़ा। २ छोटा (से ११, ३३; गउड)।

पला देखो **पलाय**=परा+अय्; 'जं जं भणामि अहयं सयलंपि बहि पलाइ तं तुज्झ' (आत्मानु २३), पलासि, पलामि (पि ५६७)।

पलाअंत } देखो पलाय=परा+अय्।
पलाइअ }

पलाइअ } वि [पलायित] १ भागा हुआ,
पलाण } नष्ट; 'पलाइए हलिए' (गा ३६०); 'रिउणो सिन्नं जह पलाणं' (धर्मवि ५६; ५१; पउम ५३, ८४; ओघ ४६७; उप १३६ टी; सुपा २२; ५०३; ती १५; सण; महा)। २ न. पलायन (दस ४, ३)।

पलाण न [पलायन] भागना (सुपा ४६४)।

पलाणिअ वि [पलायनित] जिसने पलायन किया हो वह, भागा हुआ; 'तेणवि आगच्छंतो विन्नाओ तो पलाणिओ दूरं' (सुपा ४६४)।

पलात वि [प्रलात] गृहीत (चंड)।

पलाय अक [परा+अय्] भाग जाना, नासना। पलायइ, पलाअसि (महा; पि ५६७)। भवि. पलाइस्सं (पि ५६७)। वकृ. **पलाअंत, पलायमाण** (गा २६१; णाया १८; आक १८; उप पृ २६)। संकृ. **पलाइअ** (नाट; पि ५६७)। हेकृ. **पलाइउं** (आक १६; सुपा ४६४)। कृ. **पलाइअव्व** (पि ५६७)।

पलाय पुं [दे] चोर, तस्कर (दे ६, ८)।

पलाय देखो **पलाइअ**=पलायित (णाया १, ३; स १३१; उप पृ २५७; धण ४८)।

पलायण न [पलायन] भागना (ओघ २६; सुर २, १४)।

पलायणया स्त्री. ऊपर देखो (चेइय ४४६)।

पलायमाण देखो **पलाय**=परा+अय्।

पलाल वि [प्रलाल] प्रकृत लालावाला (अणु १४१)।

पलाल न [पलाल] तृण-विशेष, पुआल (पण्ह २, ३; पाअ; आचा)। °**पीढय** न [°पीठक] पलाल का आसन (निचू १२)।

पलालग वि [पलालक] पलाल—पुआल का बना हुआ (आचा २, २, ३, १४)।

पलाव सक [नाशय्] भगाना, नष्ट करना। पलावइ (हे ४, ३१)।

पलाव पुं [प्लाव] पानी की बाढ़ (तंदु ५० टी)।

पलाव पुं [प्रलाप] अनर्थक भाषण, बकवाद (महा)।

पलावण न [नाशन] नष्ट करना, भगाना (कुमा)।

पलावि वि [प्रलापिन्] बकवादी, 'असंबद्ध-पलाविणी एसा' (कुप्र २२२; संबोध ४७; अभि ४६)।

पलाविअ वि [प्लावित] डुबाया हुआ, भिगाया हुआ (सुर १३, २०४; कुप्र ६०; ६७, सण)।

पलाविअ वि [प्रलापित] अनर्थक घोषित करवाया हुआ; 'मंछुडु कि दुच्चरिउ पलाविउ सज्जणजणहो नाउं लज्जाविउ' (भवि)।

पलाविर वि [प्रलपितृ] बकवाद करनेवाला; 'अहह असंबद्धपलाविरस्स बडुयस्स पेच्छ मह पुरओ' (सुपा २०१), 'दिव्वनाणीव जंपेइ, एसो एवं पलाविरो' (सुपा २७७)।

पलास पुं [पलाश] १ वृक्ष-विशेष, किंशुक का वृक्ष, ढाक (वज्जा १५२; गा ३११)। २ राक्षस (वज्जा १३०; गा ३११)। ३ पुंन. पत्र, पत्ता (पाअ; वज्जा १५२)। ४ भद्रशाल वन का एक दिग्हस्ती कूट (ठा ८—पत्र ४३६; इक)।

पलासि स्त्री [दे] भल्ली, छोटा भाला, शस्त्र-विशेष (दे ६, १४)।

पलासिया स्त्री [दे. पलाशिका] त्वक्काष्ठिका, छाल की बनी हुई लकड़ी (सूअ १, ४, २, ७)।

पलाह देखो **पलास** (संक्षि १६; पि २६२)।

पलि देखो **परि** (सूअ १, ६, ११; २, ७, ३६; उत्त २६, ३४; पि २५७)।

पलिअ न [पलित] १ वृद्ध अवस्था के कारण बालों का पकना, केशों की श्वेतता। २ बदन की झुर्रियां (हे १, २१२)। ३ कर्म, कर्म-पुद्गल, 'जे केइ सत्ता पलियं चयंति' (आचा १, ४, ३, १)। ४ घृणित अनुष्ठान; 'से आकुट्ठे वा हए वा लुंचिए वा पलियं पकंथे' (आचा १, ६, २, २)। ५ कर्म, काम (आचा १, ६, २, २)। ६ ताप। ७ पंक, कादा। ८ वि. शिथिल। ६ वृद्ध, बूढ़ा (हे १, २१२)। १० पका हुआ, पक्व (धर्म २; निचू १५)। ११ जरा-ग्रस्त; 'न हि दिज्जइ आहरणं पलियत्तयकण्णहत्थस्स' (राज)। °**ट्ठाण, °ठाण** न [°स्थान] कर्म-स्थान, कारखाना (आचा १, ६, २, २)।

पलिअ न [पल] चार कर्ष या तीन सौ बीस गुञ्जा की नाप (तंदु २६)।

पलिअ देखो **पल्ल**=पल्य (पव १५८; भग; जी २६; नव ६; दं २७)।

पलिअ (अप) देखो **पडिअ** (पिंग)।

पलिअंक पुं [पर्यङ्क] पलंग, खाट (हे २, ६८; सम ३५; औप)। °**आसण** न [°आसन] आसन-विशेष (सुपा ६५५)।

पलिअंका स्त्री [पर्यङ्का] पद्मासन, आसन-विशेष (ठा ५, १—पत्र ३००)।

पलिउंच सक [परि+कुञ्च्] १ अपलाप करना। २ ठगना। ३ छिपाना, गोपन करना। पलिउंचंति, पलिउंचयंति (उत्त २७, १३; सूअ १, १३, ४)। संकृ. **पलिउंचिय** (आचा २, १, ११, १)। वकृ. **पलिउंचमाण** (आचा १, ७, ४, १; २, ५, २, १)।

पलिउंचण न [परिकुञ्चन] माया, कपट (सूअ १, ६, ११)।

पलिउंचणा स्त्री [परिकुञ्चना] १ सच्ची बात को छिपाना। २ माया (ठा ४, १

टी—पत्र २००)। ३ प्रायश्चित्त-विशेष (ठा ४, १)।

पलिउंचि वि [परिकुञ्चिन्] मायावी, कपटी (वव १)।

पलिउंचिय वि [परिकुञ्चित] १ वञ्चित। २ न. माया, कुटिलता (वव १)। ३ गुरु-वन्दन का एक दोष, पूरा वन्दन न करके ही गुरु के साथ बातें करने लग जाना (पव २)।

पलिउंजिय देखो परिउञ्जिय (भग)।

पलिउच्छन्न देखो पलिओच्छन्न (आचा १, ५, १, ३)।

पलिउच्छूढ देखो पलिओच्छूढ (औप—पृ ३० टि)।

पलिउञ्जिय वि [परियोगिक] परिज्ञानी, जानकार (भग २, ५)।

पलिऊल देखो पडिऊल (नाट—विक्र १८)।

पलिओच्छन्न वि [पलितावच्छन्न] कर्मा-वष्टब्ध, कुकर्मी (आचा; १, ५, १, ३)।

पलिओच्छिन्न वि [पर्यवच्छिन्न] ऊपर देखो (आचा; पि २५७)।

पलिओच्छूढ वि [पर्यवक्षिप्त] प्रसारित (औप)।

पलिओवम पुंन [पल्योपम] समय-मान-विशेष, काल का एक दीर्घ परिमाण (ठा २, ४; भग; महा)।

पलिंचा (शौ) देखो पडिण्णा (पि २७६)।

पलिकुंचणया देखो पलिउंचणा (सम ७१)।

पलिक्खीण वि [परिक्षीण] क्षय-प्राप्त (सूअ २, ७, ११; औप)।

पलिगोव पुं [परिगोप] १ पङ्क, कादा, काँदो। २ आसक्ति (सूअ १, २, २, ११)।

पलिच्छण्ण } वि [परिच्छन्न] १ समन्ताद्
पलिच्छन्न } व्याप्त (णाया १, २—पत्र ७८; १, ४)। २ निरुद्ध, रोका हुआ; 'णेत्तेहिं पलिच्छन्नेहिं' (आचा १, ४, ४, २)।

पलिच्छाअ सक [परि + छादय्] ढकना, आच्छादन करना। पलिच्छाएइ (आचा २, १, १०, ६)।

पलिच्छिंद सक [परि + छिद्] छेदन करना, काटना। संक्र. पलिच्छिंदिय, पलि-च्छिंदियाणं (आचा १, ४, ४, ३; १, ३, २, १)।

पलिच्छिन्न वि [परिच्छिन्न] विच्छिन्न, काटा हुआ (सूअ १, १६, ५; उप ५८५; सुर ६, २०६)।

पलित्त वि [प्रदीप्त] ज्वलित (कुप्र ११६; सं ७७; भग)।

पलिपाग देखो परिपाग (सूअ २, ३, २१; आचा)।

पलिप्प अक [प्र + दीप्] जलना। पलिप्पइ (षड्; प्राकृ १२)। वकृ. पलिप्पमाण (पि २४४)।

पलिबाहर } वि [परिबाह्य] हमेशा बाहर
पलिबाहिर } होनेवाला (आचा)।

पलिभाग पुं [परिभाग, प्रतिभाग] १ निर्विभागी अंश (कम्म ४, ८२)। २ प्रति-नियत अंश (जीवस १५४)। ३ सादृश्य, समानता (राज)।

पलिभिंद सक [परि + भिद्] १ जानना। २ बोलना। ३ भेदन करना, तोड़ना। संकृ. पलिभिंदियाणं (सूअ १, ४, २, २)।

पलिभेय पुं [परिभेद] चूरना (निचू ५)।

पलिमंथ सक [परि + मन्थ्] बाँधना। पलिमंथए (उत्त ६, २२)।

पलिमंथ पुं [परिमन्थ] १ विनाश (सूअ २, ७, २६; विसे १४५७)। २ स्वाध्याय-व्याघात (उत्त २६, ३४; धर्मसं १०१७)। ३ विघ्न, बाधा (सूअ १, २, २, ११ टी)। ४ मुधा व्यापार, व्यर्थ क्रिया (श्रावक १०६; ११२)।

पलिमंथग पुं [परिमन्थक] १ धान्य-विशेष, काला चना (सूअ २, २, ६३)। २ गोल चना। ३ विलंब (राज)।

पलिमंथु वि [परिमन्थु] सर्वथा घातक (ठा ६—पत्र ३७१; कस)।

पलिमद्द देखो परिमद्द। परिमद्देज्जा (पि २५७)।

पलिमद्द वि [परिमर्द] मालिश करनेवाला (निचू ६)।

पलिमोक्ख देखो परिमोक्ख (आचा)।

पलियंचण न [पर्यञ्चन] परिभ्रमण (सुर ७, २४३)। देखो परियंचण।

पलियंत पुं [पर्यन्त] १ अन्त भाग (सूअ १, ३, १, १५)। २ वि. अवसानवाला, अन्त-वाला; 'पलियंतं मणुयाण जीवियं' (सूअ १, २, १, १०)।

पलियंत न [पल्यान्तर्] पल्योपम के भीतर (सूअ १, २, १, १०)।

पलियस्स न [परिपार्श्व] समीप, पास, निकट (भग ६, ५—पत्र २६८)।

पलिल देखो पलिअ = पलित (हे १, २१२)।

पलिव देखो पलीव। पलिवेइ (पि २४४)।

पलिवग देखो पलीवग (राज)।

पलिविअ वि [प्रदीपित] जलाया हुआ (षड्; हे १, १०१)।

पलिविद्धंस अक [परिवि + ध्वंस्] नष्ट होना। पलिविद्धंसिज्जा (अणु १८०)।

पलिसय } सक [परि + स्वञ्ज्] आलिंगन
पलिस्सय } करना, स्पर्श करना, छूना। पलिस्सएज्जा (बृह ४)। वकृ. पलिसयमाणे गुरुणा दो लहुगा आणमाईणि' (बृह ४)। हेकृ. पलिस्सइउं (बृह ४)।

पलिह देखो परिह = परिघ (राज)।

पलिहअ वि [दे] मूर्ख, बेवकूफ (दे ६, २०)।

पलिहइ स्त्री [दे] क्षेत्र, खेत; 'नियपलिहईइ दोहिवि किसिकम्मं काउमाढत्तं' (सुर १५, २०१)।

पलिहस्स न [दे] ऊर्ध्व दारु, काष्ठ-विशेष (दे ६, १६)।

पलिहाय पुं [दे] ऊपर देखो (दे ६, १६)।

पली सक [परि + इ] पर्यटन करना, भ्रमण करना। पलेइ (सूअ १, १३, ६), पलिंति (सूअ १, १, ४, ६)।

पली अक [प्र + ली] लीन होना, आसक्ति करना। पलिंति (सूअ १, २, २, २२)। वकृ. पलेमाण (आचा १, ४, १, ३)।

पलीण वि [प्रलीन] १ अति लीन (भग २५, ७)। २ संबद्ध (सूअ १, १, ४, २)। ३ प्रलय-प्राप्त, नष्ट (सुर ४, १५४)। ४ छिपा हुआ, निलीन (सुर ६, २८)।

पलीमंथ देखो पलिमंथ (सूअ १, ६, १२)।

पलीव अक [प्र + दीप्] जलना। पलीवइ (हे ४, १५२; षड्)।

पलीव सक [प्र + दीपय्] जलाना, सुलगाना। पलीवइ, पलीवेइ (महा; हे १, २२१)। संकृ. पलीविऊण, पलीविअ (कुप्र १६०; गा ३३)।

पलीव पुं [प्रदीप] दीपक, दीआ (प्राकृ १२; षड्)।

पलीवग वि [प्रदीपक] आग लगानेवाला (पण्ह १, १)।

पलीवण न [प्रदीपन] आग लगाना (श्रा २८; कुप्र २६)।

पलीवणया स्त्री. ऊपर देखो (निचू १६)।

पलीविअ देखो **पलीव** = प्र + दीपय्।

पलीविअ वि [प्रदीप्त] प्रज्वलित (पाअ)।

पलीविअ वि [प्रदीपित] जलाया हुआ (उव)।

पलुंपण न [प्रलोपन] प्रलोप (औप)।

पलुट्ट वि [प्रलुठित] लेटा हुआ (दे १, ११६)।

पलुट्ट देखो **पलोट्ट** = पर्यस्त (हे ४, ४२२)।

पलुट्टिअ देखो **पलोट्टिअ** = पर्यस्त (कुमा ४, ७५)।

पलुट्ठ वि [प्लुष्ट] दग्ध, जला हुआ (सुर ६, २०६; सुपा ४)।

पलेमाण देखो **पली** = प्र + ली।

पलेव पुं [प्रलेप] एक जाति का पत्थर, पाषाण-विशेष (जी ३)।

पलोअ सक [प्र + लोक्, लोकय्] देखना, निरीक्षण करना। पलोयइ, पलोअए, पलोएइ (सण; महा)। कर्म. पलोइज्जइ (कप्प)। वकृ. **पलोअंत, पलोअअंत, पलोएंत, पलोएमाण, पलोयमाण** (रयण १४; नाट—मालती ३२; महा; पि २६३; सुपा ४४; ३५१)।

पलोअण न [प्रलोकन] अवलोकन (से १४, ३५; गा ३२२)।

पलोअणा स्त्री [प्रलोकना] निरीक्षण (ओघ ३)।

पलोइ वि [प्रलोकिन्] प्रेक्षक (औप)।

पलोइअ वि [प्रलोकित] देखा हुआ (गा ११८; महा)।

पलोइर वि [प्रलोकितृ] प्रेक्षक (गा १८०; भवि)।

पलोएंत, **पलोएमाण** } देखो **पलोअ**।

पलोघर [दे] देखो **परोहड** (गा ३१३ अ)।

पलोट्ट सक [प्रत्या + गम्] लौटना, वापस आना। पलोट्टइ (हे ४, १६६)।

पलोट्ट सक [परि + अस्] १ फेंकना। २ मार गिराना। ३ अक. पलटना, विपरीत होना। ४ प्रवृत्ति करना। ५ गिरना। पलोट्टइ, पलोट्टेइ (हे ४, २००; भग; कुमा)। वकृ. **पलोट्टंत** (वज्जा ६६; गा २२२)।

पलोट्ट अक [प्र + लुठ्] जमीन पर लोटना। वकृ. **पलोट्टंत** (से ५, ५८)।

पलोट्ट वि [पर्यस्त] १ क्षिप्त, फेंका हुआ। २ हत। ३ विक्षिप्त (हे ४, २५८)। ४ पतित, गिरा हुआ (गा १७०)। ५ प्रवृत्त; 'रेहंता वणभागा तओ पलोट्टा जवा जलाणोघा' (कुमा)।

पलोट्टजीह वि [दे] रहस्य-भेदी, बात को प्रकट करनेवाला (दे ५, ३५)।

पलोट्टण न [प्रलोठन] ढुलकाना, लुढ़काना, गिराना (उप पृ ११०)।

पलोट्टिअ देखो **पलोट्ट** = पर्यस्त (कुमा)।

पलोभ सक [प्र + लोभय्] लुभाना, लालच देना। पलोभेदि (शौ) (नाट—मृच्छ ३१३)।

पलोभविअ वि [प्रलोभित] लुभाया हुआ (धर्मवि ११२)।

पलोभि वि [प्रलोभिन्] विशेष लोभी (धर्मवि ७)।

पलोभिअ देखो **पलोभविअ** (सुपा ३४३)।

पलोव (अप) देखो **पलोअ**। पलोवइ (भवि)।

पलोहर [दे] देखो **परोहड** (गा ६८५ अ)।

पलोहिद (शौ) देखो **पलोभिअ** (नाट)।

पल्ल पुंन [पल्य] १ गोल आकार का एक धान्य रखने का पात्र (पव १५८; ठा ३, १)। २ काल-परिमाण विशेष, पल्योपम (पउम २०, ६७; दं २७)। ३ संस्थान-विशेष, पल्यंक संस्थान; 'पल्लासंठाणसंठिया' (सम ७७)।

पल्ल पुं [पल्ल] धान्य भरने का बड़ा कोठा, 'बहवे पल्ला सालीणं पडिपुण्णा चिट्ठंति' (णाया १, ७—पत्र ११५)।

पल्लंक देखो **पलिअंक** (हे २, ६८; षड्)।

पल्लंक पुं [पल्यङ्क] शाक-विशेष, कन्द विशेष (श्रा २०; जी ६; पव ४; संबोध ४४)।

पल्लंघण न [प्रलङ्घन] १ अतिक्रमण (ठा ७)। २ गमन, गति (उत्त २४, ४)।

पल्लग देखो **पल्ल** = पल्य (विसे ७०६)।

पल्लट्ट देखो **पलट्ट** = परि + अस्। पल्लट्टइ (हे ४, २००; भवि)। संकृ. **पल्लट्टिउं** (पंचा १३, १२)।

पल्लट्ट पुं [दे] पर्वत-विशेष (पण्ह १, ४)।

पल्लट्ट पुं [दे. परिवर्त] काल-विशेष, अनन्त काल चक्रों का समय (धण ४७)।

पल्लट्ट, **पल्लत्थ** } देखो **पलोट्ट** = पर्यस्त (हे २, ४७; ६८)।

पल्लत्थि स्त्री [पर्यस्ति] आसन-विशेष, पलथी; 'पायपसारणं पल्लत्थिबंधणं बिंबपट्ठिदाणं च। उच्चासणसेवणया जिणपुरओ भन्नइ अवन्ना ॥' (चेइय ६०)। देखो **पल्हत्थिया**।

पल्लल न [पल्वल] छोटा तलाव (प्राकृ १७; णाया १, १; सुपा ६४६; स ४२०)।

पल्लव पुं [पल्लव] १ किसलय, अंकुर (पाअ; औप)। २ पत्र, पत्ता (से २६)। ३ देश-विशेष (भवि)। ४ विस्तार (कप्पू)।

पल्लव देखो **पज्जव** (सम ११३)।

पल्लवाय न [दे] क्षेत्र, खेत (दे ६, २६)।

पल्लविअ वि [दे] लाक्षा-रक्त (दे ६, १६; पाअ)।

पल्लविअ वि [पल्लवित] १ पल्लवाकार (दे ६, १६)। २ अंकुरित, प्रादुर्भूत, उत्पन्न (दे १, १)। ३ पल्लव-युक्त (रंभा)।

पल्लविल्ल वि [पल्लववत्] पल्लव-युक्त (सुपा ५; धण २४)।

पल्लविल्ल देखो **पल्लव** (हे २, १६४)।

पल्लस्स देखो **पलोट्ट** = परि + अस्। पल्लस्सइ (प्राकृ ७२)।

पल्लाण न [पर्याण] अश्व आदि का साज, 'किं करिणो पल्लाणं उव्वोढुं रासभो तरइ' (प्रवि १७; प्राप्र)।

पल्लाण सक [पर्याणय्] अश्व आदि को सजाना। पल्लाणेह (स २२)।

पल्लाणिअ वि [पर्याणित] पर्याण-युक्त (कुमा)।

पल्लि स्त्री [पल्लि] १ छोटा गाँव। २ चोरों के निवास का गहन स्थान (उप ७२८ टी)।

°नाह पुं [°नाथ] पल्ली का स्वामी (सुपा ३५१; सुर २, ३३)। °वइ पुं [°पति] वही अर्थ (सुर १, १६१; सुपा ३५१)।

पल्लिअ वि [दे] १ आक्रान्त (निचू २)। २ ग्रस्त (निचू १)। ३ प्रेरित; 'पल्लट्टा पल्लिआरहट्टव्व' (धरा ४७)।

पल्लित्त वि [दे] पर्यस्त (षड्)।

पल्ली देखो पल्लि (गउड; पंचा १०; ३६; सुर २, २०४)।

पल्लीण वि [प्रलीन] विशेष लीन; 'गुत्तिदिए अल्लीणे पल्लीणे चिट्ठइ' (भग २५, ७; कप्प)।

पल्लोट्टजीह [दे] देखो पल्लोट्टजीह (षड्)।

पल्हत्थ देखो पलोट्ट + परि + अस्। पल्हत्थइ (हे ४, २००)। वकृ. पल्हत्थंत (से १०, १०; २, ५)। कवकृ. पल्हत्थंत (से ८, ८३; ११, ६६)।

पल्हत्थ सक [वि + रेचय्] बाहर निकालना। पल्हत्थइ (हे ४, २६)।

पल्हत्थ देखो पलोट्ट = पर्यस्त; 'करतलपल्हत्थमुहे' (सुअ २, २, १६; हे ४, २५८)।

पल्हत्थण न [पर्यसन] फेंक देना, प्रक्षेपण; 'अन्नदा भुवणपल्हत्थणपवणो समुट्ठिवो दुट्ठपवणो (मोह ६२)।

पल्हत्थरण देखो पच्चत्थरण (से ११, १०८)।

पल्हत्थाविअ वि [विरेचित] बाहर निकलवाया हुआ (कुमा)।

पल्हत्थिअ देखो पलोट्ट = पर्यस्त (से ७, २०; गाया १, ४६—पत्र २१६; सुपा ७६)।

पल्हत्थिया स्त्री [पर्यस्तिका] आसन-विशेष—१ दोनों जानु खड़ा कर पीठ के साथ चादर लपेटकर बैठना (पव ३८)। २ जंघा पर वस्त्र लपेटकर बैठना। ३ जंघा पर पाँव रखकर बैठना (उत्त १, १६)। °पट्ट पुं [°पट्ट] योग-पट्ट (राज)।

पल्हय } पल्हव } पुं [पह्लव] १ अनार्य देश-विशेष (कस; कुप्र ६७)। २ पुंस्त्री. पह्लव देश का निवासी (भग ३, २—पत्र १७०; अंत)। स्त्री. °वी, °विया (पि ३३०; औप; गाया १, १—पत्र ३७; इक)।

पल्हवि पुंस्त्री [दे. पह्लवि] हाथी की पीठ पर बिछाया जाता एक तरह का कपड़ा, 'पल्हवि हत्थत्थरणं' (पव ८४)।

पल्हविया } पल्हवी } देखो पल्हव।

पल्हाय सक [प्र = ह्लाद्] आनन्दित करना, खुशी करना। पल्हायइ (संबोध १२)। वकृ. पल्हायंत (उव; सुर ३, १२१)। कृ. देखो पल्हायणिज्ज।

पल्हाय पुं [प्रह्लाद] १ आनन्द, खुशी (कुमा)। २ हिरण्यकशिपु नामक दैत्य का पुत्र (हे २, ७६)। ३ आठवाँ प्रतिवासुदेव राजा (पउम ५, १५६)। ४ एक विद्याधर नरेश (पउम १५, ५)।

पल्हायण न [प्रह्लादन] १ चित्त-प्रसन्नता, खुशी (उत्त २६, १७)। २ वि. आनन्ददायक (सुपा ५०७)। ३ पुं. रावण का एक सुभट (पउम ५६, ३६)।

पल्हायणिज्ज वि [प्रह्लादनीय] आनन्दजनक (णाया १, १—पत्र १३)।

पल्हीय पुं. ब. [प्रह्लीक] देश-विशेष (पउम ६८, ६६)।

पव सक [पा] पीना। कृ. 'अरसमेहा···अप्पवणिज्जो दगा···वासं वासिहिति' (भग ७, ६—पत्र ३०५)।

पव अक [प्लु] १ फरकना। २ सक. उछल कर जाना। ३ तैरना। पवेज्ज (सूअ १, १, २, ८)। वकृ. पवंत, पवमाण (से ५, ३७; आचा २, ३, २, ४)। हेकृ. पविउं (सूअ १, १, ४, २)।

पव पुं [प्लव] १ पूर (कुमा)। २ उच्छलन, कूदना। ३ तरण, तैरना। ४ भेक, मेढ़क। ५ वानर, बन्दर। ६ चाण्डाल, डोम। ७ जल-काक। ८ पाकुड़ का पेड़। ९ कारण्डव पक्षी। १० शब्द, आवाज। ११ रिपु, दुश्मन। १२ मेष, मेंढा। १३ जल-कुक्कुट। १४ जल, पानी। १५ जलचर पक्षी। १६ नौका, नाव (हे २, १०६)।

पवा स्त्रीन [प्रपा] पानीयशाला, प्याऊ; 'सहाणि वा पवाणि वा' (आचा २, २, २, १०)।

पवंग पुं [प्लवङ्ग] १ वानर (से २, ४६; ४, ४७)। २ वानर-वंशीय मनुष्य। °नाह पुं [°नाथ] वानर-वंशीय राजा, वाली (पउम ६, २६)। °वइ पुं [°पति] वानरराज (पि ३७६)।

पवंगम पुं [प्लवंगम] १ वानर (पात्र; से ६, १६)। २ छन्द-विशेष (पिंग)।

पवंच पुं [प्रपञ्च] १ विस्तार (उप ५३० टी; औप)। २ संसार (सूअ १, ७; उव)। ३ प्रतारण, ठगाई (उव)।

पवंचण न [प्रपञ्चन] विप्रतारण, वञ्चना, ठगाई (पण्ह १, १—पत्र १४)।

पवंचा स्त्री [प्रपञ्चा] मनुष्य की दश दशाओं में सातवीं दशा—६० से ७० वर्ष की अवस्था (ठा १०; तंदु १६)।

पवंचिअ वि [प्रपञ्चित] विस्तारित (श्रा १४; कुप्र ११८)।

पवंछ सक [प्र + वाञ्छ्] वाञ्छना, अभिलाषा करना। वकृ. पवंछमाण (उप पृ १८०)।

पवंत देखो पव = प्लु।

पवंपुल पुंन [दे] मच्छी पकड़ने का जाल-विशेष (विपा १, ८—पत्र ८५)।

पवक वि [प्लवक] १ उछल-कूद करनेवाला। २ तैरनेवाला (पण्ह १, १ टी—पत्र २)। ३ पुं. पक्षी। ४ देवजाति-विशेष, सुपर्णकुमार नामक देव-जाति (पण्ह २, ४—पत्र १३०)।

पवक्खमाण देखो पवय = प्र + वच्।

पवग देखो पवक (पण्ह २, ४; कप्प; औप)।

पवज्ज सक [प्र + पद्] स्वीकार करना। पवज्जइ, पवज्जिज्जा (भवि; हित २०)। भवि. पवज्जिहिसि (गा ६६१)। वकृ. पवज्जंत (श्रा २७)। संकृ. पवज्जिय (मोह १०)। कृ. पवज्जियव्व (पंचा १६)।

पवज्जण न [प्रपदन] स्वीकार, अंगीकार (स २७१; पंचा १४, ८; श्रावक १११)।

पवज्जा देखो पव्वज्जा (महानि ४)।

पवज्जिय वि [प्रपन्न] स्वीकृत, अंगीकृत (धर्मवि ५३; कुप्र २६५; सुपा ४०७)।

पवज्जिय वि [प्रवादित] जो बजने लगा हो (स ७५६)।

पवज्जिय देखो पवज्ज।

पवट्ट अक [प्र + वृत्] प्रवृत्ति करना। पवट्टइ (महा)।

पवट्ट वि [प्रवृत्त] जिसने प्रवृत्ति की हो वह (षड्; हे २, २९ टि)।

पवट्टय वि [प्रवर्त्तक] प्रवृत्ति करानेवाला (राज)।

पवट्टि स्त्री [प्रवृत्ति] प्रवर्त्तन (हम्मीर १५)।

पवट्टिअ वि [प्रवर्त्तित] प्रवृत्त किया हुआ (भवि; दे)।

पवट्ठ देखो पउट्ठ = प्रकोष्ठ (हे १, १५६)।

पवड अक [प्र + पत्] पड़ना, गिरना। पवडइ, पवडिज्ज, पवडेज्ज (भग; कप्प; आचा २, २, ३, ३)। वकृ. **पवडंत, पवडेमाण** (णाया १, १; सिरि ६८९; आचा २, २, ३, ३)।

पवडण न [प्रपतन] अधःपात (बृह ६)।

पवडणया, पवडणा स्त्री [प्रपतना] ऊपर देखो (ठा ४, ४—पत्र २८०; राज)।

पवडेमाण देखो पवड।

पवड्ढ अक [दे] पोढ़ना, सोना; 'जाव राया पवड्ढइ ताव कहेहि किंचि अक्खाणयं' (सुख ९, १)।

पवड्ढ अक [प्र + वृध्] बढ़ना। पवड्ढइ (उव)। वकृ. **पवड्ढमाण** (कप्प; सुर १, १८१; श्रु १२४)।

पवड्ढ वि [प्रवृद्ध] बढ़ा हुआ (अज्झ ७०)।

पवड्ढण न [प्रवर्धन] १ बढ़ाव, प्रवृद्धि (संबोध ११)। २ वि. बढ़ानेवाला; 'संसारस्स पवड्ढणं' (सूअ १, १, २, २४)।

पवड्ढिय वि [प्रवर्धित] बढ़ाया हुआ (भवि)।

पवण वि [प्रवण] १ तत्पर (कुप्र १३४)। २ तंदुरुस्त, स्वस्थ, सुस्थ; 'पडियरिओ तह, पवणो पुव्वं व जहा स संजाओ' (उप ५९७ टी; कुप्र ४१८)।

पवण न [प्लवन] १ उछल कर गमन (जीव ३)। २ तरण; 'तरिउकामस्स पवहणं (? वण) किच्चं' (णाया १, १४—पत्र १९१)। °किच्च पुं [°कृत्य] नौका, नाव, डोंगी (णाया १, १४)।

पवण पुं [पवन] १ पवन, वायु (पाअ; प्रासू १०२)। २ देव-जाति विशेष, भवनपति देवों की एक अवान्तर जाति, पवनकुमार (औप; पण्ह १, ४)। ३ हनूमान् का पिता (से १, ४८)। °गइ पुं [°गति] हनूमान का पिता (पउम १५, ३७), वानरद्वीप के राजा मन्दर का पुत्र (पउम ६, ६८)। °चंड पुं [°चण्ड] व्यक्ति-वाचक नाम (महा)। °तणअ पुं [°तनय] हनूमान् (से १, ४८)। °नंदण पुं [°नन्दन] हनूमान् (पउम १९, २७; सम्मत्त १२३)। °पुत्त पुं [°पुत्र] हनूमान् (पउम ५२, २८)। °वेग पुं [°वेग] १ हनूमान का पिता (पउम १५, ६५)। २ एक जैन मुनि (पउम २०, १९०)। °सुअ पुं [°सुत] हनूमान् (पउम ४९, १३; से ४, १३; ७, ४६)। °णंद पुं [°नन्द] हनूमान् (पउम ५२, १)।

पवणंजअ पुं [पवनञ्जय] १ हनूमान् का पिता (पउम १५, ६)। २ एक श्रेष्ठि-पुत्र (कुप्र ३७७)।

पवणिय वि [प्रवणित] सुस्थ किया हुआ, तंदुरस्त किया हुआ (उप ७६८ टी)।

पवण्ण देखो पवन्न (सण)।

पवत्त देखो पवट्ट = प्र + वृत्। पवत्तइ, पवत्तए (पव २४७; उव)।

पवत्त सक [प्र + वर्त्तय्] प्रवृत्त करना। पवत्तेइ, पवत्तेहि (वव १; कप्प)।

पवत्त देखो पवट्ट = प्रवृत्त (पउम ३२, ७०; स ३७९; रंभा)।

पवत्तग वि [प्रवर्त्तक] प्रवृत्ति करानेवाला (उप ३३९ टी; धर्मवि १३२)।

पवत्तण न [प्रवर्त्तन] १ प्रवृत्ति (हे २, ३०; उत्त ३१, २)। २ वि. प्रवृत्ति करानेवाला (उत्त ३१, ३; पण्ह १, ५)।

पवत्तय वि [प्रवर्त्तक] १ प्रवृत्ति करनेवाला (हे २, ३०)। वि. प्रवृत्त करानेवाला; 'तित्थवरप्पवत्तयं' (अजि १८; गच्छ १, १०)।

पवत्ति स्त्री [प्रवृत्ति] प्रवर्त्तन। °वाउय वि [°व्यापृत] प्रवृत्ति में लगा हुआ (औप)।

पवत्ति वि [प्रवर्त्तिन्] प्रवृत्ति करानेवाला (ठा ३, ३; कस; कप्प)।

पवत्तिणी स्त्री [प्रवर्त्तिनी] साध्वियों की अध्यक्षा, मुख्य जैन साध्वी (सुर १, ४१; महा)।

पवत्तिय देखो पवट्टिअ (काल)।

पवत्तिया स्त्री [दे] संन्यासी का एक उपकरण (कुप्र ३७२)।

पवद देखो पवय = प्र + वद्। वकृ. **पवदमाण** (आचा)।

पवदि स्त्री [प्रवृति] ढकना, आच्छादन (संक्षि ९)।

पवद्ध देखो पवड्ढ = प्र + वृध्। वकृ. **पवद्धमाण** (चेइय ६१९)।

पवद्ध पुं [दे] घन, हथौड़ा (दे ६, ११)।

पवद्धिय देखो पवड्ढिय (महा)।

पवन्न वि [प्रपन्न] १ स्वीकृत, अंगीकृत (चेइय ११२; प्रासू २१)। २ प्राप्त; 'गुरुयणगुरुविणयपवन्नमाणसो' (महा)।

पवमाण देखो पव = प्लु।

पवमाण पुं [पवमान] पवन, वायु (कुप्र ४४४; सुपा ८६)।

पवय सक [प्र + वद्] १ बकवाद करना। २ वाद-विवाद करना। वकृ. **पवयमाण** (आचा १, ५, १, ३)।

पवय सक [प्र + वच्] बोलना, कहना। भवि. कवकृ. **पवक्खमाण** (धर्मसं ९१)। कर्म. पवुच्चइ, पवुचई, पवुचति (कप्प; पि ५४४; भग)।

पवय देखो पवक = प्लवक (उप पृ २१०)।

पवय पुं [प्लवग] वानर, कपि (पउम ६५, ५०; हे ४; २२०; पाअ; से २, ३७; १५, १७)। °वइ पुं [°पति] वानरों का राजा सुग्रीव (से २, ३९)। °ाहिव पुं [°ाधिप] वही पूर्वोक्त अर्थ (से २, ४०; १२, ७०)।

पवयण पुं [प्राजन] कोड़ा, चाबुक (दे २, ६७)।

पवयण न [प्रवचन] १ जिनदेव-प्रणीत सिद्धान्त, जैन शास्त्र (भग २०, ८, प्रासू १८१)। २ जैन संघ; 'गुणसमुदाओ संघो पवयण तित्थं ति होइ एगट्ठा' (पंचा ८, ३९; विसे ११२२; उप ४२३ टी; औप)। ३ आगम-ज्ञान (विसे ११२२)। °माया स्त्री [°माता] पाँच समिति और तीन गुप्ति रूप धर्म (सम १३)।

पवर वि [प्रवर] श्रेष्ठ, उत्तम (उवा; सुपा ३१९; ३४१; प्रासू १२९; १५४)।

पवरंग न [दे. प्रवराङ्ग] सिर, मस्तक (दे ६, २८)।

पवरपुंडरीय पुंन [प्रवरपुण्डरीक] एक देव-विमान (आचा २, १५, २)।

पवरा स्त्री [प्रवरा] भगवान् वासुपूज्य की शासनदेवी (पव २७)।

पवरिस सक [प्र+वृष्] बरसना, वृष्टि करना। पवरिसइ (भवि)।

पवल देखो पबल (कप्पू; कुप्र २४७)।

पवस अक [प्र+वस्] प्रयाण करना, विदेश जाना। वकृ. **पवसंत** (से १, २४; गा ६४)।

पवसण न [प्रवसन] प्रवास, विदेश यात्रा, मुसाफिरी (स १६६; उप १०३१ टी)।

पवसिअ वि [प्रोषित] प्रवास में गया हुआ (गा ४५; ८४०; सुर ५,२११; सुपा ४७३)।

पवह अक [प्र+वह्] १ बहना। २ सक. टपकना, झरना। पवहइ (भवि; पिंग)। वकृ. पवहंत (सुर २, ७५)। संकृ. पवहित्ता (सम ८४)।

पवह सक [प्र+हन्] मार डालना। वकृ. 'पिच्छउ पवहंतं मज्झ करयलं कलियकरवालं' (सुपा ५७२)।

पवह वि [प्रवह] १ बहनेवाला। २ टपकनेवाला, चूनेवाला; 'अट्ठ णालीओ अब्भंतरप्पवहाओ' (विपा १, १—पत्र १६)।

पवह पुं [प्रवाह] १ स्रोत, बहाव, जल-धारा (गा ३६६, ५४१; कुमा)। २ प्रवृत्ति। ३ व्यवहार। ४ उत्तम अश्व (हे १, ६८)। ५ प्रभाव (राज)।

पवहण पुंन [प्रवहण] १ नौका, जहाज (णाया १, ३; पि ३५७)। २ गाड़ी आदि वाहन; 'जुग्गगया गिल्लिगया थिल्लिगया पवहणगया' (औप; वसु; चारु ७०)।

पवहाइअ वि [दे] प्रवृत्त (दे ६, ३४)।

पवहाविय वि [प्रवाहित] बहाया हुआ (भवि)।

पवा स्त्री [प्रपा] जलदान-स्थान, पानी-शाला, प्याऊ (औप, पण्ह १, ३; महा)।

पवाइ वि [प्रवादिन्] १ वाद करनेवाला, वादी। २ दार्शनिक (सूअ १, १, १; चउ ४७)।

पवाइअ वि [प्रवात] बहा हुआ (वायु); 'पवाइया कलंबवाया' (स ६८६; पउम ५७, २७; णाया १, ८; स ३६)।

पवाइअ वि [प्रवादित] बजाया हुआ (कप्प; औप)।

पवाण (अप) देखो **पमाण** = प्रमाण (कुमा; पि २५१, भवि)।

पवाड सक [प्र+पातय्] गिराना। वकृ. **पवाडेमाण** (भग १७, १—पत्र ७२०)।

पवादि देखो पवाइ (धर्मसं १३३)।

पवाय अक [प्र+वा] १ सुख पाना। २ बहना (हवा का)। ३ सक. गमन करना। ४ हिंसा करना। पवाअइ (प्राकृ ७६)। वकृ. **पवायंत** (आचा)।

पवाय पुं [प्रवाद] १ किंवदन्ती, जनश्रुति (सुपा ३००; उप पृ २६)। २ परंपरा-प्राप्त उपदेश। ३ मत, दर्शन; 'पवाएण पवायं जाणेज्जा' (आचा)।

पवाय पुं [प्रपात] १ गर्त्त, गड्ढा (णाया १, १४—पत्र १६१; दे १, २२)। २ ऊँचे स्थान से गिरता जल-समूह (सम ८४)। ३ तट-रहित निराधार पर्वत-स्थान। ४ रात में पड़नेवाली धाड़, धारा (राज)। ५ पतन (ठा २, ३)। °द्दह पुं [°द्रह] वह कुण्ड, जहाँ पर्वत पर से नदी गिरती हो (ठा २, ३—पत्र ७३)।

पवाय पुं [प्रवात] १ प्रकृष्ट पवन (पण्ह २, ३)। २ वि. बहा हुआ (पवन) (संक्षि ७)। ३ पवन-रहित (बृह १)।

पवायग वि [प्रवाचक] पाठक, अध्यापक (विसे १०६२)।

पवायण न [प्रवाचन] प्रपठन, अध्ययन (सम्मत्त ११७)।

पवायणा स्त्री [प्रवाचना] ऊपर देखो (विसे २८३५)।

पवायय देखो पवायग (विसे १०६२)।

पवाल पुंन [प्रवाल] १ नवांकुर, किसलय (पाअ ३४१; णाया १, १; सुपा १२६)। २ मूँगा, विद्रुम (पाअ; कप्प)। °मंत, °वंत वि [°वत्] प्रवालवाला (णाया १, १; औप)।

पवालिअ वि [प्रपालित] जो पालने लगा हो वह (उप ७२८ टी)।

पवास पुं [प्रवास] विदेश-गमन, परदेश-यात्रा (सुपा ६५७; हेका ३७; सिरि ३५६)।

पवासि, **पवासु** वि [प्रवासिन्] मुसाफिर (गा ६८; षड्; पि ११८; हे ४; ३९५)।

पवाह सक [प्र+वाहय्] बहाना, चलाना। पवाहइ (भवि)। भवि. पवाहिहिति (विसे २४६ टी)।

पवाह देखो पवह = प्रवाह (हे १. ६८; ८२; कुमा; णाया १, १४)।

पवाह पुं [प्रबाध] प्रकृष्ट पीड़ा (विपा १, ६—पत्र ६०)।

पवाहण न [प्रवाहन] १ जल, पानी (प्राक्रम)। २ बहाना, बहन कराना (चेइय ५२३)।

पवि पुं [पवि] वज्र, इन्द्र का अस्त्र-विशेष (उप २११ टी; सुपा ४६७; कुमा; धर्मवि ८०)।

पविअंभिअ वि [प्रविजृम्भित] प्रोल्लसित, समुत्पन्न (गा ५३६ अ)।

पविआ स्त्री [दे] पक्षी का पान-पात्र (दे ६, ४; ८, ३२; पाअ)।

पविइण्ण वि [प्रवितीर्ण] दिया हुआ (औप)।

पविइण्ण, **पविइन्न** वि [प्रविकीर्ण] १ व्याप्त (औप; णाया १, १ टी—पत्र ३)। २ विक्षिप्त, निरस्त (णाया १, १)।

पविकत्थ सक [प्रवि+कत्थ्] आत्म-श्लाघा करना। पविकत्थई (सम ५१)।

पविकसिय वि [प्रविकसित] प्रकर्ष से विकसित (राज)।

पविकिर सक [प्रवि+कॄ] फेंकना। वकृ. **पविकिरमाण** (ठा ८)।

पविक्खिअ वि [प्रवीक्षित] निरीक्षित, अवलोकित (स ७४६)।

पविक्खिर देखो **पविकिर**; 'नाविअजणेण य भंडं पविक्खिरंते समुद्दम्मि' (सुर १३, २०६)।

पविग्घ वि [दे] विस्मृत (षड्)।

पविचरिय वि [प्रविचरित] गमन-द्वारा सर्वत्र व्याप्त (राय)।

पविज्जल वि [प्रविज्वल] १ प्रज्वलित (सूत्र १, ५, २, ५)। २ रुधिरादि से पिच्छिल—व्याप्त (सूत्र १, ५, २, १६; २१)।

पविट्ठ वि [प्रविष्ट] घुसा हुआ (उवा; सुर ३, १३६)।

पविणी सक [प्रवि + णी] दूर करना। पविणेति (भग)।

पवित्त पुं [पवित्र] १ दर्भ, कुशा, तृण-विशेष (दे ६,१४)। २ वि. निर्दोष, निष्कलङ्क, शुद्ध, स्वच्छ (कुमा; भग; उत्तर ४५)।

पवित्त देखो पवट्ट = प्रवृत्त (से ६, ५७)।

पवित्त सक [पवित्रय्] पवित्र करना। वकृ. पवित्तयंत (सुपा ८५)। कृ. **पवित्तियव्व** (सुपा ५८४)।

पवित्तय न [पवित्रक] अंगूठी, अंगुलीयक (णाया १, ५; औप)।

पवित्ताविय वि [प्रवर्त्तित] प्रवृत्त किया हुआ (भवि)।

पवित्ति देखो पवत्ति = प्रवृत्ति (सुपा २; ओघ ६३; औप)।

पवित्तिणी देखो पवत्तिणी (कस)।

पवित्थर अक [प्रवि + स्तृ] फैलाना। वकृ. **पवित्थरमाण** (पव २५५)।

पवित्थर पुं [प्रविस्तर] विस्तार (उवा; सूत्र २, २, ६२)।

पवित्थरिअ वि [प्रविस्तृत] विस्तीर्ण (स ७५२)।

पवित्थरिल्ल वि [प्रविस्तरिन्] विस्तारवाला (राज—पण्ह १, ५)। देखो **पविरल्लिय**।

पवित्थारि वि [प्रविस्तारिन्] फैलनेवाला (गउड)।

पविद्ध देखो पव्विद्ध (पव २)।

पविद्धंस अक [प्रवि + ध्वंस्] १ विनाशाभिमुख होना। २ विनष्ट होना; 'तेण पर जोणी पविद्धंसइ, तेण परं जोणी विद्धंसइ' (ठा ३, १—पत्र १२३)।

पविद्धत्थ वि [प्रविध्वस्त] विनष्ट (जीव ३)।

पविभत्ति स्त्री [प्रविभक्ति] पृथक्-पृथक् विभाग (उत्त २, १)।

पविभाग पुं [प्रविभाग] ऊपर देखो (विसे १६४२)।

पविमुक्क वि [प्रविमुक्त] परित्यक्त (सुर ३, १३६)।

पविमोयण न [प्रविमोचन] परित्याग (औप)।

पविय वि [प्राप्त] प्राप्त, 'भुवि उवहासं पविया दुक्खाणं हुंति ते णिलया' (आरा ४४)।

पवियंभिर वि [प्रविजृम्भितृ] १ उल्लसित होनेवाला। २ उत्पन्न होनेवाला (सण)।

पवियक्किय न [प्रवितर्कित] विकल्प, वितर्क (उत्त २३, १४)।

पवियक्खण वि [प्रविचक्षण] विशेष प्रवीण (उत्त ६, ६३)।

पवियार पुं [प्रवीचार] १ काया और वचन की चेष्टा-विशेष (उप ६०२)। २ काम-क्रीडा, मैथुन (देवेन्द्र ३४७; पव २६६)।

पवियारण न [प्रविचारण] संचार, 'वाउपवियारणट्ठा छब्भायं ऊणयं कुज्जा' (पिंड ६५०)।

पवियारणा स्त्री [प्रविचारणा] काम-क्रीडा, मैथुन (देवेन्द्र ३४७)।

पवियास सक [प्रवि + काशय्] फाड़ना, खोलना; 'पवियासइ नियवयणं' (धर्मवि १२४)।

पवियासिय वि [प्रविकासित] विकसित किया हुआ, 'पवियासियकमलवणं खणं निहालेइ दिणनाहं' (सुपा ३४)।

पविरइअ वि [दे] त्वरित, शीघ्रता-युक्त (दे ६, २८)।

पविरंज सक [भञ्ज्] भाँगना, तोड़ना। पविरंजइ (हे ४, १०६)।

पविरंजव वि [दे] स्निग्ध, स्नेह-युक्त (षड्)।

पविरंजिअ वि [भग्न] भांगा हुआ (कुमा; दे ६, ७४)।

पविरंजिअ वि [दे] १ स्निग्ध, स्नेह-युक्त। २ कृत-निषेध, निवारित (दे ६, ७४)।

पविरल वि [प्रविरल] १ अनिबिड। २ विच्छिन्न (गउड)। ३ अत्यन्त थोड़ा, बहुत ही कम; 'परकज्जकरणरसिया दीसंति महीए पविरलनरिंदा' (सुपा २४०)।

पविरल्लिय वि [दे] विस्तारवाला (पण्ह १, ५—पत्र ६१)। देखो पवित्थरिल्ल।

पविरिक्क वि [प्रविरिक्त] एकदम शून्य, बिलकुल खाली (गउड ६८५)।

पविरेल्लिय [दे] देखो पविरल्लिय (पण्ह १, ५ टी—पत्र ६२)।

पविलुंप सक [प्रवि + लुप्] बिलकुल नष्ट करना। कवकृ. **पविलुप्पमाण** (महा)।

पविलुत्त वि [प्रविलुप्त] बिलकुल नष्ट (उप ५६७ टी)।

पविलुप्पमाण देखो पविलुंप।

पविस सक [प्र + विश्] प्रवेश करना, घुसना। पविसइ (उव; महा)। भवि. पविसिस्सामि, पविसिहिइ (पि ५२६)। वकृ. **पविसंत, पविसमाण** (पउम ७६, १६; सुपा ४४८; विपा १, ५; कप्प)। संकृ. **पविसित्ता, पविसित्तु, पविसिअ, पविसिऊण** (कप्प; महा; अभि ११६; काल)। हेकृ. **पविसित्तए, पवेट्ठुं** (कस; कप्प; पि ३०३)। कृ. **पविसिअव्व** (ओघ ६१; सुपा ३८१)।

पविसण न [प्रवेशन] प्रवेश, पैठ (पिंड ३१७)।

पविसु सक [प्रवि + सू] उत्पन्न करना। संकृ. **पविसुइत्ता** (सूत्र २, २, ६५)।

पविस्स देखो पविस। पविस्सइ (महा)। वकृ. **पविस्समाण** (भवि)।

पविहर सक [प्रवि + हृ] विहार करना, विचरना। पविहरंति (उव)।

पविहस अक [प्रवि + हस्] हसना, हास्य करना। वकृ. **पविहसंत** (पउम ५६, १७)।

पवीइय वि [प्रवीजित] हवा के लिए चलाया हुआ (औप)।

पवीण वि [प्रवीण] निपुण, दक्ष (उप ६८६ टी)।

पवीणी देखो पविणी। पवीणेइ (औप)।

पवील सक [प्र + पीडय्] पीड़ना, दमन करना। पवीलए (आचा १, ४, ४, १)।

पवुच्च° देखो पवय = प्र + वच्।

पवुट्ठ वि [प्रवृष्ट] १ खूब बरसा हुआ, जिसने प्रभूत वृष्टि की हो वह (आचा २, ४, १, १३)। २ न. प्रभूत वृष्टि, वर्षण; 'काले पवुट्ठ' विअ अहिणंदिदं देवस्स सासणं' (अभि २२०)।

पवुड्ढ वि [प्रवृद्ध] बढ़ा हुआ, विशेष वृद्ध (दे १, ६)।

पवुड्ढि स्त्री [प्रवृद्धि] बढ़ाव (पंच ५, ३३)।

पवुत्त वि [प्रोक्त] १ जो कहने लगा हो, जिसने बोलना आरम्भ किया हो वह (पउम २७, १६; ६४, २१)। २ उक्त, कथित (धर्मवि ८२)।

पवुत्थ [दे] देखो पउत्थ; 'खुड्डुयं पुत्तं घेत्तुं गामे पवुत्था' (आक २३; २५)।

पवुद वि [प्रवृत] प्रकर्ष से आच्छादित (प्राकृ १२)।

पवूढ वि [प्रव्यूढ] १ धारण किया हुआ (स ५११)। २ निर्गत (राज)।

पवेइय वि [प्रवेदित] १ निवेदित, प्रतिपादित; 'तमेव सच्चं नीसंकं जं जिणेहिं पवेइयं' (उप ३७४ टी; भग)। २ विज्ञात, विदित (राज)। ३ भेंट किया हुआ (उत्त १३, १३; सुख १३, १३)।

पवेइय वि [प्रवेपित] कम्पित (पउम ५, ७८)।

पवेज्ज सक [प्र + वेदय्] १ विदित करना। २ भेंट करना। ३ अनुभव करना। पवेजए (सूअ १, ८, २४)।

पवेढिय वि [प्रवेष्टित] घिरा हुआ, बेढ़ा हुआ (सुर १२, १०४)।

पवेय देखो **पवेज्ज**। पवेयंति (आचा १, ६, २, १२)। हेकृ. **पवेइत्तए** (कस)।

पवेयण न [प्रवेदन] १ प्ररूपण, प्रतिपादन। २ ज्ञान, निर्णय। ३ अनुभावन (राज)।

पवेविय वि [प्रवेपित] प्रकम्पित (णाया १, १—पत्र ४७; उत्त २२, ३६)।

पवेविर वि [प्रवेपितृ] काँपनेवाला (पउम ८७, ६४)।

पवेस सक [प्र + वेशय्] घुसाना। पवेसेइ (महा)। पवेसआमि (पि ४६०)।

पवेस पुं [प्रवेश] भीत की स्थूलता (ठा ४, २—पत्र २२५)।

पवेस पुं [प्रवेश] १ पैठ, घुसना (कुमा; गउड; प्रासू २२)। २ नाटक का एक हिस्सा (कप्पू)।

पवेस पुं [प्रद्वेष] अधिक द्वेष (भवि)।

पवेसण, **पवेसणग**, **पवेसणय** पुंन [प्रवेशन, °क] १ प्रवेश, पैठ (पण्ह १, १; प्रासू ३८; द्रव्य ३२)। २ विजातीय जन्मान्तर में उत्पत्ति, विजातीय योनि में प्रवेश (भग ६, ३२)।

पवेसि वि [प्रवेशिन्] प्रवेश करनेवाला (औप)।

पवेसिय वि [प्रवेशित] घुसाया हुआ (सण)।

पवोत्त पुं [प्रपौत्र] पौत्र का पुत्र (आक ८)।

पव्व पुंन [पर्वन्] १ ग्रन्थि, गाँठ (ओघ ४८६; जी १२; सुपा ५०७)। २ उत्सव, त्यौहार (सुपा ५०७; श्रा २८)। ३ पूर्णिमा और अमावास्या तिथि। ४ पूर्णिमा और अमावास्यावाला पक्ष (ठा ६—पत्र ३७०; सुज्ज १०)। ५ अष्टमी, चतुर्दशी, पूर्णिमा और अमावास्या का दिन;

'अट्ठमी चउद्दसी पुरिणमा य
तहमावसा हवइ पव्वं।
मासम्मि पव्वछक्कं तिन्नि य
पव्वाइं पक्खम्मि' (धर्म २)।

६ मेखला, गिरिमेखला। ७ दंष्ट्रा-पर्वत (सूअ १, ६, १२)। ८ संख्या-विशेष (इक)। °बीय पुं [°बीज] इक्षु-आदि वृक्ष, जिसका पर्व—ग्रन्थि—ही उत्पत्ति का कारण होता है (राज)। °राहु पुं [°राहु] राहु-विशेष, जो पूर्णिमा और अमावास्या में क्रमशः चन्द्र और सूर्य का ग्रहण करता है (सुज्ज १६)।

पव्वइ न [पर्वतिन्] १ गोत्र-विशेष, काश्यप गोत्र की एक शाखा। २ पुंस्त्री. उस गोत्र में उत्पन्न (राज)। देखो **पव्वपेच्छइ**।

पव्वइ° देखो **पव्वई** (गा ४५५)।

पव्वइअ वि [प्रव्रजित] १ दीक्षित, संन्यस्त (औप; दसनि २—गाथा १६४)। २ गत, प्राप्त; 'अगाराओ अणगारियं पव्वइया' (औप, सम; कप्प)। ३ न. दीक्षा, संन्यास (वव १)।

पव्वइंद पुं [पर्वतेन्द्र] मेरु पर्वत (सुज्ज ५ टी)।

पव्वइग देखो **पव्वइअ** (उप पृ ३३५)। स्त्री. °गा (उप पृ ५४)।

पव्वइसेल्ल न [दे] बाल-मय कंडक—तावीज (दे ६, ३१)।

पव्वई स्त्री [पार्वती] गौरी, शिव-पत्नी (पाअ)।

पव्वंग पुंन [पर्वाङ्ग] संख्या-विशेष (इक)।

पव्वक, **पव्वग** पुंन [पर्वक] १ वाद्य-विशेष (पण्ह २, ५—पत्र १४६)। २ ईख जैसी ग्रन्थिवाली वनस्पति (पण्ण १)। ३ तृण-विशेष (निचू १)।

पव्वग वि [पार्वक] पर्व—ग्रन्थि—गाँठ का बना हुआ (आचा २, २, ३, २०)।

पव्वज्ज पुं [दे] १ नख। २ शर, बाण। ३ बाल-मृग (दे ६, ६६)।

पव्वज्जा स्त्री [प्रव्रज्या] १ गमन, गति। २ दीक्षा, संन्यास (ठा ३, २; ४, ४; प्रासू १६७)।

पव्वणी स्त्री [पर्वणी] कार्तिकी आदि पर्व-तिथि (णाया १, १—पत्र ५३)।

पव्वपेच्छइ न [पर्वप्रेक्षकिन्] देखो पव्वइ (ठा ७—पत्र ३६०)।

पव्वय सक [प्र + व्रज्] १ जाना, गति करना। २ दीक्षा लेना, संन्यास लेना। पव्वयइ (महा)। भवि. पव्वइस्सामो, पव्वइहिति (औप)। वकृ. **पव्वयंत**, **पव्वयमाण** (सुर १, १२३; ठा ३, १)। हेकृ. पव्वइत्तए, पव्वइउं (औप; भग; सुपा २०६)।

पव्वय देखो **पव्वग** (पण्ण १—पत्र ३३)।

पव्वय देखो **पव्वइअ**; 'अगारमावसंतावि अरण्णा वावि पव्वया' (सूअ १, १, १, १६)।

पव्वय, **पव्वयय** पुंन [पर्वत, °क] १ गिरि, पहाड़ (ठा ३, ४; प्रासू १५४; उवा), 'पव्वयाणि वणाणि य' (दस ७, २६, ३०)। २ पुं. द्वितीय वासुदेव का पूर्व-भवीय नाम (सम १५३; पउम २०, १७१)। ३ एक ब्राह्मण-पुत्र का नाम (पउम ११, ६)। ४ एक राजा (भवि)। ५ एक राज-कुमार (उप ६३७)। °राय पुं [°राज] मेरु पर्वत (सुज्ज ५)। °विदुग्ग पुंन [°विदुर्ग] पर्वतीय देश, पहाड़वाला प्रदेश (भग)।

पव्वयगिह न [पर्वतगृह] पर्वत की गुफा (आचा २, ३, ३, १)।

पव्वह सक [प्र + व्यथ्] पीड़ना, दुःख देना। **पव्वहेआ** (सूअ १, १, ४, ६)।

कवकृ. पव्वहिज्जमाण (णाया १, १६—पत्र १६६)।

पव्वहणा स्त्री [प्रव्यथना] व्यथा, पीड़ा (औप)।

पव्वहिय वि [प्रव्यथित] अति दुःखित (आचा १, २, ६, १)।

पव्वा स्त्री [पर्वा] लोकपालों की एक बाह्य परिषद् (ठा ३, २—पत्र १२७)।

पव्वाअंत देखो पव्वाय = म्लै।

पव्वाइअ वि [प्रव्राजित] १ जिसको दीक्षा दी गई हो वह (सुपा ५६६)। २ न. दीक्षा देना (राज)।

पव्वाइअ वि [म्लान] विच्छाय, शुष्क (कुमा ६, १२)।

पव्वाइआ स्त्री [प्रव्राजिका] परिव्राजिका, संन्यासिनी (महा)।

पव्वाडिअ देखो पव्वालिअ = प्लावित (से ५, ४१)।

पव्वाण वि [म्लान] शुष्क, सूखा (ओघ ४८८)।

पव्वाय देखो पवाय = प्र + वा। पव्वाअइ (प्राकृ ७६)।

पव्वाय सक [प्र + व्राजय्] दीक्षित करना (सुपा ५६६)।

पव्वाय अक [म्लै] सूखना। पव्वायइ (हे ४, १८)। वकृ. पव्वाअंत (से ७, ६७)।

पव्वाय वि [म्लान, प्रवाण] शुष्क, सूखा हुआ (पाअ; ओघ ३६३; स २०३; से ४८; ६, ६३; पिंड ४४)।

पव्वाय पुं [प्रवात] प्रकृष्ट पवन (गा ६२३)।

पव्वाल सक [छादय्] ढकना, आच्छादन करना। पव्वालइ (हे ४, २१)।

पव्वाल सक [प्लावय्] खूब भिजाना, तराबोर करना। पव्वालइ (हे ४, ४१)।

पव्वालण न [प्लावन] तराबोर करना (से ६, १५)।

पव्वालिअ वि [प्लावित] जल-व्याप्त, सराबोर किया हुआ (पाअ; कुमा; से ६, १०)।

पव्वालिअ वि [छादित] ढका हुआ (कुमा)।

पव्वाव सक [प्र + व्राजय्] दीक्षित करना, संन्यास देना। पव्वावेइ (भग)। संकृ. पव्वावेऊण (पंचव २)। हेकृ. पव्वावित्तए, पव्वावेत्तए, पव्वावेउं (ठा २, १; कस; पंचभा)।

पव्वावण न [प्रव्राजन] दीक्षा देना (उव; ओघ ४४२ टी)।

पव्वावण न [दे] प्रयोजन (पिंड ५१)।

पव्वावणा स्त्री [प्रव्राजना] दीक्षा देना (ओघ ४४३; पव २५; सूअनि १२७)।

पव्वाविय वि [प्रव्राजित] दीक्षित, साधु बनाया हुआ (णाया १, १—पत्र ६०)।

पव्वाह सक [प्र + वाहय्] बहाना, प्रवाह में डालना। वकृ. पव्वाहमाण (भग ५, ४)।

पव्विद्ध वि [दे] प्रेरित (दे ६, ११)।

पव्विद्ध वि [प्रवृद्ध] महान्, बड़ा (से १४, ५१)।

पव्विद्ध न [प्रविद्ध] गुरु-वन्दन का एक दोष, वन्दन को समाप्त किये बिना ही भागना (पव २)।

पव्वीसग न [दे. पव्वीसग] वाद्य-विशेष (पण्ह १, ४—पत्र ६८)।

पसइ स्त्री [प्रसृति] १ नाप-विशेष, दो प्रसृति—पसर का एक परिमाण (तंदु २६)। २ पूर्ण अञ्जलि, दो हस्त-तल—अँजुरी मिला कर भरी हुई चीज (कुप्र ३७४)।

पसंग पुंन [प्रसङ्ग] १ परिचय, उपलक्ष (स ३०५)। २ संगति, संबन्ध; 'लोए पलीवणं पिव पलालपूलप्पसंगेण' (ठा ४, ४; कुप्र २६);

'वरं दिट्ठिविसो सप्पो वरं हालाहलं विसं।
हीणायारागीयत्थवयणपसंगं खु णो भद्दं'

(संबोध ३६)। ३ आपत्ति, अनिष्ट-प्राप्ति (स १७४)। ४ मैथुन, काम-क्रीडा (पण्ह १, ४)। ५ आसक्ति। ६ प्रस्ताव, अधिकार (गउड; भवि; पंचा ६, २६)।

पसंगि वि [प्रसङ्गिन्] प्रसंग करनेवाला, आसक्त; 'जूयप्पसंगी' (महा; णाया १, २)।

पसंज अक [प्र + सञ्ज्] १ आसक्ति करना। २ आपत्ति होना, अनिष्ट-प्राप्ति होना। पसज्जइ (उव); 'अणिच्चे जीवलोगम्मि किं हिंसाए पसज्जसि' (उत्त १८, ११; १२)। पसज्जेज्जा (विसे २६६)।

पसंडि न [दे] कनक, सुवर्ण (दे ६, १०)।

पसंत वि [प्रशान्त] १ प्रकृष्ट शान्त, शम-प्राप्त (कप्प; स ४०३; कुप्र)। २ साहित्य-शास्त्र-प्रसिद्ध रस-विशेष, शान्त रस (अणु)।

पसंति स्त्री [प्रशान्ति] नाश, विनाश; 'सव्व-दुक्खप्पसंतीणं' (अजि ३)।

पसंधण न [प्रसन्धान] सतत प्रवर्त्तन (पिंड ४६०)।

पसंस सक [प्रशंस्] श्लाघा करना। पसंसइ (महा; भवि)। वकृ. **पसंसंत, पसंसमाण** (पउम २८, १५; २२, ६८)। कवकृ. **पसंसिज्जमाण** (वसु)। संकृ. **पसंसिऊण** (महा)। कृ. **पसंसणिज्ज, पसस्स, पसंसियव्व** (सुपा ४७; ६४५; सुर १, २१६; पउम ७५, ८), देखो **पसंस**।

पसंस वि [प्रशस्य] १ प्रशंसा-योग्य। २ पुं. लोभ (सूअ १, २, २, २६)।

पसंसण न [प्रशंसन] प्रशंसा, श्लाघा (उप १४२ टी; सुपा २०६; उप पं १७)।

पसंसय वि [प्रशंसक] प्रशंसा करनेवाला (श्रा ६; भवि)।

पसंसा स्त्री [प्रशंसा] श्लाघा, स्तुति, वर्णन (प्रासू १६७; कुमा)।

पसंसिअ वि [प्रशंसित] श्लाघित (उत्त १४, ३८)।

पसज्ज° देखो **पसंज**।

पसज्झ, पसज्झं अ [प्रसह्य] १ खुले तौर से, प्रकट रीति से (सूअ १, २, २, १६)। २ हठात्, बलात्कार से (स ३१)।

पसज्झचेय न [प्रसह्यचेतस्] धर्म-निरपेक्ष चित्त, कदाग्रही मन (दसचू १, १४)।

पसढ वि [प्रसह्य] अनेक दिन रखकर खुला किया हुआ (दस ५, १, ७२)।

पसढ वि [प्रशठ] अत्यन्त शठ (सूअ २, ४, ३)।

पसढं देखो **पसज्झ** (दस ५, १, ७२)।

पसढिल वि [प्रशिथिल] विशेष ढीला (हे १, ८६)।

पसण्ण वि [प्रसन्न] १ खुश, स्वस्थ (से ५, ४१; गा ८६५)। २ स्वच्छ, निर्मल (औप; ओघ ३४५)। °चंद पुं [°चन्द्र] भगवान् महावीर के समय का एक राजर्षि (उव; पडि)।

पसण्णा स्त्री [प्रसन्ना] मदिरा, दारू (गाया १, १६; विपा १, २)।

पसत्त वि [प्रसक्त] १ चिपका हुआ (गउड ५१)। २ आसक्त (गउड ५३१; उव)। ३ आपत्ति-ग्रस्त, अनिष्ट-प्राप्ति के दोष से युक्त (विसे १८५६)।

पसत्ति स्त्री [प्रसक्ति] १ आसक्ति, अभिष्वङ्ग (उप १३१)। २ आपत्ति-दोष (अज्भ ११६)।

पसत्थ वि [प्रशस्त] १ प्रशंसनीय, श्लाघनीय। २ श्रेष्ठ, अच्छा (हे २, ४५; कुमा)।

पसत्थि स्त्री [प्रशस्ति] वंशोत्कीर्तन, वंश-वर्णन (गउड; सम्मत्त ८३)।

पसत्थु पुं [प्रशास्तृ] १ लेखाचार्य, गणित का अध्यापक (ठा ३, १)। २ धर्म-शास्त्र का पाठक (ठा ३, १; ओप)। ३ मन्त्री, अमात्य (सूअ २, १, १३)।

पसन्न देखो **पसण्ण** (महा; भवि; सुपा ६१४)।

पसन्ना देखो **पसण्णा** (पाअ; पउम १०२, १२२; सुख २, २९)।

पसप्प पुं [प्रसर्प] विस्तार, फैलाव (द्रव्य १०)।

पसप्पग वि [प्रसर्पक] १ प्रकर्ष से जाने-वाला, मुसाफिरी करनेवाला। २ विस्तार को प्राप्त करनेवाला (ठा ४, ४—पत्र २६४)।

पसम अक [प्र + शम्] अच्छी तरह शान्त होना। पसमंति (आक १६)।

पसम पुं [प्रशम] १ प्रशान्ति, शान्ति (कुमा)। २ लगातार दो उपवास (संबोध ५८)।

पसम पुं [प्रश्रम] विशेष मेहनत—खेद (आव ४)।

पसमण न [प्रशमन] १ प्रकृष्ट शमन (पिंड ६६३; सुर १, २४६)। २ वि. प्रशान्त करने-वाला (स ६६५)। स्त्री. °णी (कुमा)।

पसमाविअ वि [प्रशमित] प्रशान्त किया हुआ (स ६२)।

पसमिक्ख सक [प्रसम् + ईक्ष्] प्रकर्ष से देखना। संकृ. **पसमिक्ख** (उत्त १४, ११)।

पसमिण वि [प्रशमिन्] प्रशान्त करनेवाला, नाश करनेवाला; 'पावंति, पावपसमिण पास-जिण तुह प्पभावेण' (णमि १७)।

पसम्म देखो **पसम** = प्र + शम्। पसम्मइ (गउड)। वकृ. **पसम्मंत** (से १०, २२; गउड)।

पसय पुं [दे] १ मृग-विशेष (दे ६, ४; पण्ह १, १; भवि; सण; महा)। २ मृग-शिशु (विपा १, ४)।

पसय वि [प्रसृत] फैला हुआ, 'पसयच्छि !' (वज्जा ११२; १४४)। देखो **पसिअ** = प्रसृत।

पसर अक [प्र + सृ] फैलना। पसरइ (पि ४७७; भवि)। वकृ. **पसरंत** (सुर १, ८९; भवि)।

पसर पुं [प्रसर] विस्तार, फैलाव (हे ४, १५७; कुमा)।

पसरण न [प्रसरण] ऊपर देखो (कप्पू)।

पसरिअ वि [प्रसृत] फैला हुआ, विस्तृत (औप; गा ४; भवि; णाया १, १)।

पसरेह पुं [दे] किंजल्क (दे ६, १३)।

पसल्लिअ वि [दे] प्रेरित (षड्)।

पसव सक [प्र + सू] जन्म देना, उत्पन्न करना। पसवइ (हे ४, २३३)। पसवंति (उव)। वकृ. **पसवमाण** (सुपा ४३४)।

पसव (अप) सक [प्र + विश्] प्रवेश करना। पसवइ (प्राकृ ११९)।

पसव पुं [प्रसव] १ जन्म, उत्पत्ति (कुमा)। २ न. पुष्प, फूल; 'कुसुमं पसवं पसूअं च' (पाअ), 'पुप्फाणि अ कुसुमाणि अ फुल्लाणि तहेव होंति पसवाणि' (दसनि १, ३६)।

पसव [दे] देखो **पसय**। 'पसवा हवंति एए' (पउम ११, ७७)। °**नाह** पुं [°नाथ] मृग-राज, सिंह (स ६५७)। °**राय** पुं [°राज] सिंह (स ६५७)।

पसवडक्क न [दे] विलोकन (दे ६, ३०)।

पसवण न [प्रसवन] प्रसूति, जन्म-दान (भग; उप ७४४; सुर ६, २४८)।

पसवि वि [प्रसविन्] जन्म देनेवाला (नाट—शकु ७४)।

पसविय वि [प्रसूत] जो जन्म देने लगा हो, जिसने जन्म दिया हो वह; 'सयमेव पसविया हं महाकिलेसेण नरनाह' (सुर १०, २३०; सुपा ३९)। देखो **पसूअ** = प्रसूत।

पसविर वि [प्रसवितृ] जन्म देनेवाला (नाट)।

पसस्स देखो **पसंस**।

पसस्स वि [प्रशस्य] प्रभूत शस्यवाला (सुपा ६४५)।

पसाइअ वि [प्रसादित] १ प्रसन्न किया हुआ (स ३८६; ५७६)। २ प्रसन्न होने के कारण दिया हुआ, 'अंगविलग्गमसेसं पसाइयं कडयवत्थाइं' (सुर १, १६३)।

पसाइआ स्त्री [दे] भिल्ल के सिर पर का पर्ण-पुट, भिल्लों की पगड़ी (दे ६, २)।

पसाइयव्व देखो **पसाय** = प्र + सादय्।

पसाम वि [प्रशाम] शान्त होनेवाला (षड्)।

पसाय सक [प्र + सादय्] प्रसन्न करना, खुश करना। पसाअंति, पसाएसि (गा ९१; सिक्खा ६१)। वकृ. **पसाअमाण** (गा ७४५)। हेकृ. **पसाइउं**, **पसाएउं** (महा; गा ५२४)। कृ. **पसाइयव्व** (सुपा ३६५)।

पसाय पुं [प्रसाद] १ प्रसत्ति, प्रसन्नता, खुशी; 'जणमणपसायजणणो' (वसु)। २ कृपा, मेहरबानी (कुमा)। ३ प्रणय (गा ७१)।

पसायण न [प्रसादन] प्रसन्न करना, 'देव-पसायणपहाणमणो' (कुप्र ५; सुपा ७, महा)।

पसार सक [प्र + सारय्] पसारना, फैलाना। पसारेइ (महा)। वकृ. **पसारेमाण** (णाया १, १; आचा)। संकृ. **पसारिअ** (नाट—मृच्छ २५५)।

पसार पुं [प्रसार] विस्तार, फैलाव (कप्पू)।

पसारण न [प्रसारण] ऊपर देखो (सुपा ५८३)।

पसारिअ वि [प्रसारित] १ फैलाया हुआ (सण; नाट—वेणी २३)। २ न. प्रसारण (सम्मत्त १३३; दस ४, ३)।

पसास सक [प्र + शासय्] १ शासन करना, हुकूमत करना। २ शिक्षा देना। ३ पालन करना। वकृ. 'रज्जं **पसासेमाणे** विहरइ' (णाया १, १ टी—पत्र ६; १ १४—पत्र १८९; औप; महा)।

पसाह सक [प्र + साधय्] १ वश में करना। २ सिद्ध करना। पसाहेइ (नाट; भवि)। वकृ. **पसाहेमाण** (औप)।

पसाहग वि [प्रसाधक] साधक, सिद्ध करनेवाला (धर्मसं २६)। °**तम** वि [°तम] १ उत्कृष्ट साधक। २ न. व्याकरण-प्रसिद्ध कारक-विशेष; करण-कारक (विसे २११२)। देखो **पसाहय**।

पसाहण न [प्रसाधन] १ सिद्ध करना, साधना; 'विज्जापसाहणुज्जयविज्जाहर-संनिरुद्धएगंतो' (सुर ३, १२)। २ उत्कृष्ट साधन; 'सव्वुत्तमं माणुसत्तं दुल्लहं भवसमुद्दे पसाहणं नेव्वाणस्स न निउंजेंति धम्मे' (स ७४४)। ३ अलंकार, भूषण (णाया १, ३; से ३, ४४)। ४ भूषण आदि की सजावट; भूसणपसाहणाडंबरेहिं' (वज्जा ११४; सुपा ६६)।

पसाहय देखो **पसाहग** (काल)। २ सजाने-वाला (भग ११, ११)।

पसाहा स्त्री [प्रशाखा] शाखा की शाखा, छोटी शाखा (णाया १, १; औप महा)।

पसाहाविय वि [प्रसाधित] विभूषित कराया गया, सजाया हुआ (भवि)।

पसाहि वि [प्रसाधिन्] सिद्ध करनेवाला, 'अब्भुदयपसाहिणी' (संबोध ८; ५४)।

पसाहिअ वि [प्रसाधित] अलंकृत किया हुआ, सजाया हुआ (से ४, ६१; पात्र)।

पसाहिल्ल वि [प्रशाखिन्] प्रशाखा-युक्त (सुर ८, १०८)।

पसिअ अक [प्र + सद्] प्रसन्न होना। पसिअ (गा ३८४; ४६६; हे १, १०१)। पसियइ (सण)। संकृ. **पसिऊण, पसिऊणं** (सण; सुपा ७)।

पसिअ वि [प्रसृत] फैला हुआ, विस्तीर्ण; 'पसिअच्छि !' (गा ६२०; ६२३)।

पसिअ न [दे] पूग-फल, सुपारी (दे ६, ६)।

पसिंच सक [प्र + सिच्] सेचन करना। वकृ. **पसिंचमाण** (सुर १२, १७२)।

पसिंडि (दे) देखो **पसंडि** (पात्र)।

पसिक्खअ वि [प्रशिक्षक] सीखनेवाला (गा ६२६ अ)।

पसिज्जण न [प्रसदन] प्रसन्न होना, 'अत्थ-क्खलणं खणपसिज्जणं अलिअवअणणिब्बंधो' (गा ६७५)।

पसिढिल देखो **पसढिल** (हे १, ८९; गा १३३; गउड)।

पसिण पुंन [प्रश्न] १ पृच्छा, प्रश्न (सुपा ११, ४५३)। २ दर्पण आदि में देवता का आह्वान, मन्त्रविद्या-विशेष (सम १२३; बृह १)। °**विज्जा** स्त्री [°विद्या] मन्त्रविद्या-विशेष (ठा १०)। °**ापसिण** न [°प्रश्न] मन्त्रविद्या के बल से स्वप्न आदि में देवता के आह्वान द्वारा जाना हुआ शुभाशुभ फल का कथन (पव २; बृह १)।

पसिणिय वि [प्रश्नित] पूछा हुआ (सुपा १६; ६२५)।

पसिद्ध वि [प्रसिद्ध] १ विख्यात, विश्रुत (महा)। २ प्रकर्ष से मुक्ति को प्राप्त, मुक्त (सिरि ५६५)।

पसिद्धि स्त्री [प्रसिद्धि] १ ख्याति (हे १, ४४)। २ शंका का समाधान, आक्षेप का परिहार (अणु; चेइय ४६)।

पसिस्स देखो **पसीस** (विसे १४)।

पसीअ देखो **पसिअ** = प्र + सद्। पसीयइ, पसीयउ (कुप्र १)। संकृ. **पसीऊण** (सण)।

पसीस पुं [प्रशिष्य] शिष्य का शिष्य (पउम ४, ८६)।

पसु पुं [पशु] १ जन्तु-विशेष, सींग पूँछवाला प्राणी, चतुष्पाद प्राणि-मात्र (कुमा; औप)। २ अज, बकरा (अणु)। °**भूय** वि [°भूत] पशु-तुल्य (सूअ १, ४, २)। °**मेह** पुं [°मेध] जिसमें पशु का भोग दिया जाता हो वह यज्ञ (पउम ११, १२)। °**वइ** पुं [°पति] महादेव, शिव (गा १; सुपा ३१)।

पसुत्त वि [प्रसुप्त] सोया हुआ (हे १, ४४; प्राप्र; णाया १, १६)।

पसुत्ति स्त्री [प्रसुप्ति] कुष्ठ रोग विशेष, नखादि-विदारण होने पर भी अचेतनता (राज)। देखो **पसूइ**।

पसुव (अप) देखो **पसु** (भवि)।

पसुहत्त पुं [दे] वृक्ष, पेड़ (दे ६, २६)।

पसू सक [प्र + सू] जन्म देना, प्रसव करना। वकृ. **पसूअमाण** (गा १२३)। संकृ. **पसूइत्ता** (राज)।

पसू वि [प्रसू] प्रसव-कर्ता, जन्म-दाता (मोह २६)।

पसूअ न [दे] पुष्प, फूल (दे ६, ६; पात्र; भवि)।

पसूअ वि [प्रसूत] १ उत्पन्न, जो पैदा हुआ हो (णाया १, ७; उव; प्रासू १५६)। २ देखो **पसविय** (महा)।

पसूअण न [प्रसवन] जन्म-दान (सुपा ४०३)।

पसूइ स्त्री [प्रसूति] १ प्रसव, जन्म, उत्पत्ति (पउम २१, ३४; प्रासू १२८)। २ एक प्रकार का कुष्ठ रोग, नखादि से विदारण करने पर भी दुःख का असंवेदन, चमड़ी का मर जाना (पिंड ६००)। °**रोग** पुं [°रोग] रोग-विशेष (सम्मत्त ५८)।

पसूइय पुं [प्रसूतिक] वातरोग-विशेष (सिरि ११७)।

पसूण न [प्रसून] फूल, पुष्प (कुमा; सण)।

पसेअ पुं [प्रस्वेद] पसीना (दे ६, १)।

पसेढि स्त्री [प्रश्रेणि] अवान्तर श्रेणि—पंक्ति (पि ६६; राय)।

पसेण पुं [प्रसेन] भगवान् पार्श्वनाथ के प्रथम श्रावक का नाम (विचार ३७८)।

पसेणइ पुं [प्रसेनजित्] १ कुलकर-पुरुष-विशेष (पउम ३, ५५; सम १५०)। २ यदुवंश के राजा अन्धकवृष्णि का एक पुत्र (अंत ३)।

पसेणि स्त्री [प्रश्रेणि] अवान्तर जाति, 'अट्ठारससेणिप्पसेणीओ सद्दावेइ' (णाया १, १—पत्र ३७)।

पसेयग देखो **पसेवय** (राज)।

पसेव सक [प्र + सेव्] विशेष सेवा करना। वकृ. **पसेवमाण** (श्रु ५५)।

पसेवय पुं [प्रसेवक] कोथला, थैला; 'एहावि-यपसेवओव्व उरंसि लंबंति दोवि तस्स थणया' (उवा)।

पसेविआ स्त्री [प्रसेविका] थैली, कोथली (दे ५, २५)।

पस्स सक [दृश्] देखना। पस्सइ (षड्; प्राकृ ७१)। वकृ. **पस्समाण** (आचा; औप; वसु; विपा १, १)। कृ. **पस्स** (ठा ४, ३)।

पस्स (शौ) देखो **पास** = पार्श्व (अभि १८६; अवि २६; स्वप्न ३६)।

पस्स देखो **पस्स** = दृश्।

पस्सओहर वि [पश्यतोहर] देखते हुए चोरी करनेवाला, सुनार, उचक्का; 'नणु एसो पस्सओहरो तेणो' (उप ७२८ टी)।

पस्सि वि [दर्शिन्] देखनेवाला (पएण ३०)।

पस्सेय देखो **पसेअ** (सुख २, ८)।

पह वि [प्रह्व] १ नम्र। २ विनीत। ३ आसक्त (प्राकृ २४)।

पह पुं [पथिन्] मार्ग, रास्ता (हे १, ८८; पाअ; कुमा; श्रा २८; विसे १०५२; कप्प; औप)। **°देसय** वि [°देशक] मार्ग-दर्शक (पउम ६८, १७)।

पहएल्ल पुं [दे] अपूप, पूआ, खाद्य-विशेष (दे ६, १८)।

पहंकर देखो **पभंकर** (उत्त २३; ७६; सुख २३, ७८; इक)।

पहंकरा देखो **पभंकरा** (इक)।

पहंजण पुं [प्रभञ्जन] १ वायु, पवन (पाअ)। २ देव-जाति-विशेष, भवनपति देवों की एक अवान्तर जाति (सुपा ४०)। ३ एक राजा (भवि)।

पहकर [दे] देखो **पहयर** (णाया १, १; कप्प; औप; उप पृ ४७; विपा १, १; राय; भग ६, ३३)।

पहट्ठ वि [दे] १ दृप्त, उद्धत (दे ६, ६; षड्)। २ अचिरतर दृष्ट, थोड़े ही समय के पूर्व देखा हुआ (षड्)।

पहट्ठ वि [प्रहृष्ट] आनन्दित, हर्ष-प्राप्त (औप; भग)।

पहण सक [प्र + हन्] मार डालना। पहणइ, पहणे (महा; उत्त १८, ४६)। कर्म. पहणिज्जइ (महा)। वकृ. **पहणंत** (पउम १०५, ६५)। कवकृ. **पहम्मंत**, **पहम्ममाण** (पि ५४०; सुर २, १४)। हेकृ. पहणिउं, **पहणेउं** (कुप्र २५; महा)।

पहण न [दे] कुल, वंश (दे ६, ५)।

पहणि स्त्री [दे] संमुखागत का निरोध, सामने आए हुए का अटकाव (दे ६, ५)।

पहणिय देखो **पहय** = प्रहत (सुपा ४)।

पहत्थ पुं [प्रहस्त] रावण का मामा (से १२, ५५)।

पहद वि [दे] सदा दृष्ट (दे ६, १०)।

पहम्म सक [प्र + हम्म्] प्रकर्ष से गति करना। पहम्मइ (हे ४, १६२)।

पहम्म न [दे] १ सुर-खात, देव-कुण्ड (दे ६, ११)। २ खात-जल, कुण्ड। ३ विवर, छिद्र (से ६, ४३)।

पहम्मंत, **पहम्ममाण** } देखो **पहण** = प्र + हन्।

पहय वि [प्रहत] १ घृष्ट, घिसा हुआ (से १, ५८; बृह १)। २ मार डाला गया, निहत (महा)।

पहय वि [प्रहृत] जिस पर प्रहार किया गया हो वह; 'पहया अहिमंतियजलेण' (महा)।

पहयर पुं [दे] निकर, समूह, यूथ (दे ६, १५; जय १३; पाअ)।

पहर सक [प्र + हृ] प्रहार करना। पहरइ (उव)। वकृ. **पहरंत** (महा)। संकृ. **पहरिऊण** (महा)। हेकृ. **पहरिउं** (महा)।

पहर पुं [प्रहार] १ मार, प्रहार (हे १, ६८; षड्; प्राप्र; संक्षि २)। २ जहाँ पर प्रहार किया हो वह स्थान (से २, ४)।

पहर पुं [प्रहर] तीन घंटे का समय (गा २८; ३१; पाअ)।

पहरण न [प्रहरण] १ अस्त्र, आयुध (आचा; औप; विपा १, १; गउड)। २ प्रहार-क्रिया (से ३, ३८)।

पहराइया देखो **पहाराइया** (पएण १—पत्र ६४)।

पहराय पुं [प्रभराज] भरतक्षेत्र का छठवाँ प्रतिवासुदेव (सम १५४)।

पहरिअ वि [प्रहृत] १ प्रहार करने के लिए उद्यत (सुर ६, १२६)। २ जिस पर प्रहार किया गया हो वह (भवि)।

पहरिस पुं [प्रहर्ष] आनन्द, खुशी; 'आमोओ पहरिसो तोसो' (पाअ; सुर ३, ४०)।

पहलादिद (शौ) वि [प्रह्लादित] आनन्दित (स्वप्न १०६)।

पहल्ल अक [घूर्ण्] घूमना, काँपना, डोलना, हिलना। पहल्लइ (हे ४, ११७; षड्)। वकृ. **पहल्लंत** (सुर १, ६६)।

पहल्लिर वि [प्रघूर्णितृ] घूमनेवाला, डोलता (कुमा; सुपा २०४)।

पहव अक [प्र + भू] १ उत्पन्न होना। २ समर्थ होना। पहवइ (पंचा १०, १०; स ७०; संक्षि ३६)। भवि. पहविस्सं (पि ५२१)। वकृ. पहवंत (नाट—मालवि ७१)।

पहव पुं [प्रभव] उत्पत्ति-स्थान (अभि ४१)।

पहव देखो **पहाव** = प्रभाव (स ६३७)।

पहव देखो **पह** = प्रह्व (विसे ३००८)।

पहव पुं [प्रभव] एक जैन महर्षि (कुमा)।

पहविय वि [प्रभूत] जो समर्थ हुआ हो, 'मणिकुंडलाणुभावा सत्थं नो पहवियं नरिंदस्स' (सुपा ६१५)।

पहस अक [प्र + हस्] १ हसना। २ उपहास करना। पहसइ (भवि; सण)। वकृ. **पहसंत** (सण)।

पहसण न [प्रहसन] १ उपहास, परिहास। २ नाटक का एक भेद, हास्य-रस प्रधान नाटक, रूपक-विशेष; 'पहसणप्पायं कामसत्थ-वयणं' (स ७१३; १७७; हास्य ११६)।

पहसिय वि [प्रहसित] १ जो हसने लगा हो (भग)। २ जिसका उपहास किया हो वह (भवि)। ३ न. हास्य (बृह १)। ४ पुं. पवनञ्जय का एक विद्याधर-मित्र (पउम १५, ५६)।

पहा सक [प्र + हा] १ त्याग करना। २ अक. कम होना, क्षीण होना; 'पहेज्ज लोहं' (उत्त ४, १२; पि ५६६)। वकृ. **पहिज्जमाण**, **पहेज्जमाण** (भग; राज)। संकृ. **पहाय**, **पहिऊण** (आचा १, ६, १, १; वव ३)।

पहा स्त्री [प्रथा] १ रीति, व्यवहार। २ ख्याति, प्रसिद्धि (षड्)।

पहा स्त्री [प्रभा] कान्ति, तेज, आलोक, दीप्ति (औप; पाअ; सुर २, २३५; कुमा; चेइय ५१४)। °मंडल देखो भामंडल (पउम ३०, ३२)। °यर पुं [°कर] १ सूर्य, रवि। २ रामचन्द्र के भाई भरत से साथ दीक्षा लेनेवाला एक राजर्षि (पउम ८५, ५)। **°वई स्त्री**

[°वती] आठवें वासुदेव की पटरानी (पउम २०, १८७)।

पहाड सक [प्र+आटय्] इधर उधर भमाना, घुमाना। पहाडेंति (सूअनि ७० टी)।

पहाण वि [प्रधान] १ नायक, मुखिया, मुख्य; 'अवगन्नइ सव्वेवि हु पुरप्पहाणेवि' (सुपा ३०८), 'तत्थत्थि वणिप्पहाणो सेट्ठी वेसमणनामओ' (सुपा ६१७)। २ उत्तम, प्रशस्त, श्रेष्ठ, शोभन (सुर १, ४८; महा; कुमा; पंचा ६, १२)। ३ स्त्रीन. प्रकृति—सत्त्व, रज और तमोगुण की साम्यावस्था; 'ईसरेण कडे लोए पहाणाइ तहावरे' (सूअ १, १, ३, ६)। ४ पुं. सचिव, मन्त्री (भवि)।

पहाण पुं [पाषाण] पत्थर (चउप्पन्न०)।

पहाण न [प्रहाण] अपगम, विनाश (धर्मसं ८७५)।

पहाणि स्त्री [प्रहाणि] ऊपर देखो (उत्त ३, ७; उप ९८६ टी)।

पहाम सक [प्र+भ्रमय्] फिराना, घुमाना। कवकृ. **पहामिज्जंत** (से ७, ६६)।

पहाय देखो **पहा**=प्र+हा।

पहाय न [प्रभात] १ प्रातःकाल, सबेरा (गउड; सुपा ३६; ६०२)। २ वि. प्रभा-युक्त (से ६, ४४)।

पहाय देखो **पहाव**=प्रभाव (हे ४, ३४१; हास्य १३२; भवि)।

पहाया देखो **बाहाया** (अनु)।

पहार सक [प्र+धारय्] १ चिन्तन करना, विचार करना। २ निश्चय करना। भूका. पहारेत्थ, पहारेत्था, पहारिंसु (सूअ २, ७, ३६; औप; पि ५१७; सूअ २, १, २०)। वकृ. **पहारेमाण** (सूअ २, ४, ४)।

पहार देखो **पहर**=प्रहार (पाअ; हे १, ६८)।

पहाराइया स्त्री [प्रहारातिगा] लिपि-विशेष (सम ३५)।

पहारि वि [प्रहारिन्] प्रहार करनेवाला (सुपा २१५; प्रासू ६८)।

पहारिय वि [प्रहारित] जिस पर प्रहार किया गया हो वह (स ५९८)।

पहारिय वि [प्रधारित] विकल्पित, चिन्तित (राज)।

पहारेत्तु वि [प्रधारयितृ] चिन्तन करनेवाला, 'अहाकम्मे अणवज्जेत्ति मणं पहारेत्ता भवति' (भग ५, ६)।

पहाव सक [प्र+भावय्] प्रभाव-युक्त करना, गौरवित करना। पहावइ (सण)। संकृ. **पहाविऊण** (सण)।

पहाव (अप) अक [प्र+भू] समर्थ होना। पहावइ (भवि)।

पहाव पुं [प्रभाव] १ शक्ति, सामर्थ्य; 'तुमं च तेतलिपुत्तस्स पहावेण' (णाया १, १४; अभि ३८)। २ कोष और दण्ड का तेज। ३ माहात्म्य; 'तायपहावओ चेव मे अविग्धं भविस्सइ त्ति' (स २९०, गउड)।

पहावणा देखो **पभावणा** (कुप्र २८४)।

पहाविअ वि [प्रधावित] दौड़ा हुआ (स ५८४; गा ५३५; गउड)।

पहाविर वि [प्रधावितृ] दौड़नेवाला (वजा ९२; गा २०२)।

पहास सक [प्र+भाष्] बोलना। पहासई (सुख ४; ६); 'नाऊण चुन्नियं तं पहिट्ठहियया पहासई पावा' (महा)।

पहास अक [प्र+भास्] चमकना, प्रकाशना। वकृ. **पहासंत** (सार्ध ५९)।

पहास पुं [प्रहास] अट्टहास आदि विशेष हास्य (दस १०, ११)।

पहासा स्त्री [प्रहासा] देवी-विशेष (महा)।

पहिअ वि [पान्थ, पथिक] मुसाफिर (हे २, १५२; कुमा; षड्; उव; गउड)। °**साला** स्त्री [°शाला] मुसाफिरखाना, धर्मशाला (धर्मवि ७०; महा)।

पहिअ वि [प्रथित] १ विस्तृत। २ प्रसिद्ध, विख्यात (औप)। ३ राक्षस-वंश का एक राजा एक लंका-पति (पउम ५; २६२)।

पहिअ वि [प्रहित] भेजा हुआ, प्रेषित (उप पृ ४५; ७६८ टी; धम्म ९ टी)।

पहिअ वि [दे] मथित, विलोडित (दे ६, ६)।

पहिऊण देखो **पहा**=प्र+हा।

पहिंसय वि [प्रहिंसक] हिंसा करनेवाला (ओघ ७५३)।

पहिज्जमाण देखो **पहा**=प्र+हा।

पहिट्ठ देखो **पहट्ठ**=प्रहृष्ट (औप; सुर ३, २४८; सुपा ९३; ४३७)।

पहिर सक [परि+धा] पहिरना, पहनना। पहिरइ, पहिरंति (भवि; धर्मवि ७)। कर्म. पहिरिज्जइ (संबोध १४)। वकृ. **पहिरंत** (सिरि ६८)। संकृ. **पहिरिउं** (धम्मवि १५)। प्रयो., संकृ. **पहिरावेऊण, पहिराविऊण** (सिरि ४५९; ७७०)।

पहिरावण न [परिधापन] १ पहिराना। २ पहिरावन, भेंट में—इनाम में दिया जाता वस्त्रादि; गुजराती में—'पहिरामणी' (श्रा २८)।

पहिराविय वि [परिधापित] पहिराया हुआ (महा; भवि)।

पहिरिय वि [परिहित] पहिरा हुआ, पहना हुआ (सम्मत्त २१८)।

पहिल वि [दे] पहला, प्रथम (संक्षि ४७; भवि; पि ४४९)। स्त्री. °**ली** (पि ४४९)।

पहिल्ल अक [दे] पहल करना, आगे करना। पहिल्लइ (पिंग)। संकृ. **पहिल्लिअ** (पिंग)।

पहिल्लिर वि [प्रघूर्णितृ] खूब हिलनेवाला, अत्यन्त हिलता (सम्मत्त १८७)।

पहिवी देखो **पुहवी**=पृथिवी (नाट)।

पहीण वि [प्रहीण] १ परिक्षीण (पिंड ६३१; भग)। २ भ्रष्ट, स्खलित (सूअ २, १, ६)।

पहु पुं [प्रभु] १ परमेश्वर, परमात्मा (कुमा)। २ एक राज-पुत्र, जयपुर के विन्ध्यराज का एक पुत्र (वसु)। ३ स्वामी, मालिक (सुर ४, १५९)। ४ वि. समर्थ, शक्तिमान; 'दाणं दरिद्दस्स पहुस्स खंती' (प्रासू ४८)। ५ अधि-पति, मुखिया, नायक (हे ३, ३८)।

°**पहुइ** देखो °**पभिइ** (कप्पू)।

पहुई देखो **पुहवी** (षड्)।

पहुंक पुं [पृथुक] खाद्य पदार्थ विशेष, चिउड़ा (दे ६, ४४)।

पहुच्च अक [प्र+भू] पहुँचना। पहुच्चइ (हे ४, ३९०)। वकृ. **पहुच्चमाण** (ओघ ५०५)।

पहुट्ट देखो **पप्फुट्ट**। पहुट्टइ (कप्पू)।

पहुडि देखो **पभिइ** (हे १, १३१; ती १०; षड्)।

पहुण पुं [प्राघुण] अतिथि, मेहमान (उप ९०२)।

पहुणाइय न [प्राघुण्य] आतिथ्य, अतिथि-सत्कार; 'ण्हाणभोयणवत्थाहरणदाणाइप्पहुणाडि (? इ)यं संपाडेइ' (रंभा)।

पहुत्त वि [प्रभूत] १ पर्याप्त, काफी; 'पज्जत्तं च पहुत्तं' (पाअ; गउड; गा २७७)। २ समर्थ (से २, ६)। ३ पहुँचा हुआ (ती १५)।

पहुदि देखो **पभिइ** (संक्षि ४; प्राकृ १२)।

पहुप्प, पहुव अक [प्र + भू] १ समर्थ होना, सकना। २ पहुँचना। पहुप्पइ (हे ४,६३; प्राकृ ६२); 'एयाओ बालियाओ नियनियगेहेसु जह पहुप्पंति तह कुणह' (सुपा २५०)। पहुप्पामो (काल), पहुप्पिरे (हे ३, १४२)। वकृ. 'किं सहइ कोवि कस्सवि पाअपहारं पहुप्पंतो', **पहुप्पमाण** (गा ७; ओघ ५०५; किरात १६)। कवकृ. **पहुव्वंत** (से १४, २५; वव १०)। हेकृ. **पहुविउं** (महा)।

पहुवी स्त्री [पृथिवी] भूमि, धरती (नाट—मालती ७२)। °**पहु** पुं [°प्रभु] राजा (हम्मीर १७)। °**वइ** पुं [°पति] वही अर्थ (हम्मीर १६)।

पहुव्वंत देखो **पहुव**।

पहूअ वि [प्रभूत] १ बहुत, प्रचुर (स ४५६)। २ उद्गत। ३ भूत। ४ उन्नत (प्राकृ ६२)।

पहेज्जमाण देखो **पहा** = प्र + हा।

पहेण न [दे] वधू को ले जाने पर पिता के घर दी जाती जमीन (आचा २, १, ४, १)।

पहेण, पहेणग, पहेणय न [दे] १ भोजनोपायन, खाद्य वस्तु की भेंट (आचा; सूअ २, १, ५६; गा ३२८;६०३; पिंड ३३५; पाअ; दे ६, ७३)। २ उत्सव (दे ६, ७३)।

पहेरक न [प्रहेरक] आभरण-विशेष (पएह २, ५—पत्र १४९)।

पहेलिया स्त्री [प्रहेलिका] गूढ़ आशयवाली कविता (सुपा १५५; औप)।

पहोअ सक [प्र + धाव्] प्रक्षालन करना, धोना। पहोएज्ज (आचा २, २, १, ११)।

पहोइ वि [प्रधाविन्] धोनेवाला (दस ४, २६)।

पहोइअ वि [दे] १ प्रवर्तित। २ प्रभुत्व (दे ६, २६)।

पहोड सक [वि + लुल्] हिलोरना, अन्दोलना। पहोडइ (धात्वा १४४)।

पहोयण क्लीन [प्रधावन] प्रक्षालन; 'दंतपहोयणं य' (दस ३, ३)।

पहोलिर वि [प्रघूर्णितृ] हिलनेवाला, डोलता (गा ७८; ६६६; से ३, ४९; पाअ)।

पहोव देखो **पधोव**। पहोवाहि (आचा २, १, ६, ३)।

पा सक [पा] पीना, पान करना। भवि. पाहिसि, पाहामि; पाहामो (कप्प; पि ३१५; कम्म)। कर्म. पिज्जइ (उत्त), पीअंति (पि ५३९)। कवकृ. **पिज्जंत** (गउड; कुप्र १२०)। **पीयमाण** (स ३८२), **पेंत** (अप) (सण)। संकृ. **पाऊण, पाऊणं** (नाट—मुद्रा ३६; गउड; कुप्र ६२)। हेकृ. **पाउं, पायए** (आचा)। कृ. **पायव्व, पिज्ज** (सुपा ४३८; पएह १, २; कुमा २, ६), **पेअ, पेयव्व** (कुमा; रयण ६०), **पेज्ज** (एाया १, १; १७; उवा)।

पा सक [पा] रक्षण करना। पाइ, पाअइ (विसे ३०२५; हे ४, २४०), पाउ (पिंग)।

पा सक [घ्रा] सूँघना, गन्ध लेना। पाइ, पाअइ (प्राप्र ८, २०)।

पाइ वि [पातिन्] गिरनेवाला (पंचा ५, २०)।

पाइ वि [पायिन्] पीनेवाला (गा ५६७; हि ६)।

पाइअ न [दे] वदन-विस्तार, मुँह का फैलाव (दे ६, ३९)।

पाइअ देखो **पागय** = प्रकृत (दे १, ४; प्राकृ. ८; प्रासू १; वज्जा ८; पाअ; पि ५३); 'अह पाइआओ भासाओ' (कुमा १, १)।

पाइअ वि [पायित] पिलाया हुआ, पान कराया हुआ (कुप्र ७६; सुपा १३०; स ४५४)।

पाइंत देखो **पाय** = पायय्।

पाइक्क पुं [पदाति] प्यादा, पैर से चलनेवाला सैनिक (हे २, १३८; कुमा)।

पाइडि स्त्री [प्रावृति] प्रावरण, वस्त्र (गा २३८)।

पाइण देखो **पाईण** (पि २१५ टि)।

पाइत्ता (अप) स्त्री [पवित्रा] छन्द-विशेष (पिंग)।

पाइद [शौ] वि [पाचित] पकवाया हुआ (नाट—चैत १२६)।

पाइन्न देखो **पाईण** (णंदि ४९)।

पइभ न [प्रातिभ] प्रतिभा; बुद्धि-विशेष (कुप्र १५५)।

पाइम वि [पाक्य] १ पकाने योग्य। २ काल-प्राप्त; मृत (दस ७, २२)।

पाइम वि [पात्य] गिराने योग्य (आचा २, ४, २, ७)।

पाई स्त्री [पात्री] १ भाजन-विशेष (णाया १, १ टी)। २ छोटा पात्र (सूअ २, २, ७०)।

पाईण वि [प्राचीन] १ पूर्वदिशा-संबन्धी, 'ववहार-पाइणाई (? ईणाइ)' (पिंड ३६; कप्प; सम १०४)। २ न. गोत्र-विशेष। ३ पुंस्त्री. उस गोत्र में उत्पन्न; 'थेरे अज्जभद्दबाहू पाईणसगोत्ते (कप्प)।

पाईणा स्त्री [प्राचीना] पूर्व दिशा (सूअ २, २, ५८; ठा ६—पत्र ३५६)।

पाउ देखो **पाउं** = प्रादुस् (सूअ २, ६, ११; उवा)।

पाउ पुं [पायु] गुदा, गाँड़ (ठा ६—पत्र ४५०; सण)।

पाउ पुंस्त्री [दे] १ भक्त, भात, भोजन। २ इक्षु, ऊख (दे ६, ७५)।

पाउअ न [दे] १ हिम, अवश्याय (दे ६, ३८)। २ भक्त। ३ इक्षु (दे ६, ७५)।

पाउअ देखो **पाउड** = प्रावृत (गा ५२०; स ३५०; औप; सुर ६, ८; पाअ; हे १, १३१)।

पाउअ देखो **पागय** (गा २; ६६८; प्राप्र; कप्पू; पिंग)।

पाउआ स्त्री [पादुका] १ खड़ाऊँ, काष्ठ का जूता (भग; सुख २ २९; पिंड ५७२)। २ जूता, पगरखी (सुपा २५४; औप)।

पाउं देखो **पा** = पा।

पाउं अ [प्रादुस्] प्रकट, व्यक्त; 'संति असंति करिस्सामि पाउं' (सूअ १, १, ३, १)।

पाउंछण } न [प्रादप्रोञ्छन, °क] जैन
पाउंछणग } मुनि का एक उपकरण, रजोहरण (पव ११२ टी; ओघ ६३०; पंचा १७; १२)।

पाउकर सक [प्रादुस् + कृ] प्रकट करना। भवि. पाउकरिस्सामि (उत्त ११, १)।

पाउकर वि [प्रादुष्कर] प्रादुर्भावक (सूअ १, १५, २५)।

पाउकरण न [प्रादुष्करण] १ प्रादुर्भाव। २ वि. जो प्रकाशित किया जाय वह। ३ जैन मुनि के लिए एक भिक्षा-दोष, प्रकाश कर दी हुई भिक्षा; 'पकिरणपाउकरणपामिच्चं' (पण्ह २, ५—पत्र १४८)।

पाउकाम वि [पातुकाम] पीने की इच्छा वाला; 'तं जो णं णवियाए माउयाए दुद्धं पाउकामे से णं निग्गच्छउ' (णाया १, १८)।

पाउक्क वि [दे] मार्गीकृत, मार्गित (दे ६, ४१)।

पाउक्करण देखो पाउकरण (राज)।

पाउक्खालय न [दे पायुक्षालक] १ पाखाना, टट्टी, मलोत्सर्ग-स्थान; 'ठाइ चेव एसो पाउक्खालयम्मि रयणीए' (स २०५; भत्त ११२)। २ मलोत्सर्ग-क्रिया; 'रयणीए पाउक्खालयनिमित्तमुट्ठिओ' (स २०५)।

पाउग्ग वि [दे] सभ्य, सभासद (दे ६, ४१; सण)।

पाउग्ग वि [प्रायोग्य] उचित, लायक (सुर १५, २३३)।

पाउग्गह पुं [पतद्ग्रह] पात्र (आचानि २८८)।

पाउग्गिअ वि [दे] १ जुआ खेलानेवाला। २ सोढ, सहन किया हुआ (दे ६, ४१; पाअ)।

पाउड देखो पागय (प्राकृ १२; मुद्रा १२०)।

पाउड वि [प्रावृत] १ आच्छादित, ढका हुआ (सूअ १, २, २, २२)। २ वस्त्र, कपड़ा (ठा ५, १)।

पाउण सक [प्रा + वृ] आच्छादित करना, पहिरना। पाउणइ (पिंड ३१)। संकृ. 'पडं पाउणिऊण रत्ति णिग्गओ' (महा)।

पाउण सक [प्र + आप्] प्राप्त करना। पाउणइ (भग)। पाउणंति (औप; सूअ १, ११, २१)। पाउणेज्जा (आचा २,३,१,११) भवि. पाउणिस्सामि, पाउणिहिइ (पि ५३१; उवा)। संकृ. पाउणित्ता (औप; णाया १, १; विपा २,१; कप्प; उवा)। हेकृ. पाउणित्तए (आचा २, ३, २, ११)।

पाउण (अप) देखो पावण = पावन (पिंग)।

पाउत्त देखो पउत्त = प्रयुक्त (औप)।

पाउप्पभाय वि [प्रादुष्प्रभात] प्रभा-युक्त, प्रकाश-युक्त; 'कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए' (णाया १, १; भग)।

पाउब्भव अक [प्रादुस् + भू] प्रकट होना। पाउब्भवइ (पव ४०)। भूका. पाउब्भवित्था (उवा)। वकृ. पाउब्भवंत, पाउब्भवमाण (सुपा ६; कुप्र २६; णाया १, ५)। संकृ. पाउब्भवित्ताणं (उवा; औप)। हेकृ पाउब्भवित्तए (पि ५७८)।

पाउब्भव वि [पापोद्भव] पाप से उत्पन्न (उप ७६८ टी)।

पाउब्भवणा स्त्री [प्रादुर्भवन] प्रादुर्भाव (भग ३, १)।

पाउब्भुय (अप) नीचे देखो (सण)।

पाउब्भूय वि [प्रादुर्भूत] १ उत्पन्न, संजात। २ प्रकटित (औप; भग; उवा; विपा १, १)।

पाउरण न [प्रावरण] वस्त्र, कपड़ा (सूअनि ८६; हे १, १७५; पंचा ५, १०; पव ४, पड्)।

पाउरण न [दे] कवच, वर्म (षड्)।

पाउरणी स्त्री [दे] कवच, वर्म (दे ६, ४३)।

पाउरिअ देखो पाउड = प्रावृत (कुप्र ४५२)।

पाउल वि [पापकुल] हलके कुल का, जघन्य कुल में उत्पन्न; 'दवावियं पाउलाण दविण-जायं' (स ६२६), 'कलसद्दपउरपाउलमंगल-संगीयपवरपेक्खणयं' (सुर १०, ५)।

पाउल्ल न. देखो पाउआ, 'पाउल्लाइं संकमट्ठाए' (सूअ १, ४, २, १५)।

पाउव न [पादोद] पाद-प्रक्षालन-जल, 'पाउवदाइं च ण्हाणुवदाइं च' (णाया १, ७—पत्र ११७)।

पाउस पुं [प्रावृष्] वर्षा ऋतु (हे १, १९; प्राप्र; महा)। °कीड पुं [°कीट] वर्षा ऋतु में उत्पन्न होनेवाला कीट-विशेष (दे)। °गम पुं [°गम] वर्षा-प्रारम्भ (पाअ)।

पाउसिअ वि [प्रावृषिक] वर्षा-सम्बन्धी (राज)।

पाउसिअ वि [प्रोषित, प्रवासिन्] प्रवास में गया हुआ,
'तह मेहागमसंसियआगमणाणं पईण मुद्धाओ।
मग्गमवलोयमाणीउ नियइ पाउसियदइयाओ।'
(सुपा ७०)।

पाउसिआ स्त्री [प्राद्वेषिकी] द्वेष—मत्सर से होनेवाला कर्म-बन्ध (सम १०; ठा २, १; भग; नव १७)।

पाउहारी स्त्री [दे. पाकहारी] भक्त को लानेवाली, भात-पानी ले आनेवाली (गा ६६४ अ)।

पाए अ [दे] प्रभृति, (वहां से) शुरू करके (ओघ १६६; बृह १)।

पाए सक [पायय्] पिलाना। पाएइ (हे ३, १४९)। पाएज्जाह (महा)। वकृ. पाइंत, पाययंत (सुर १३, १३४; १२, १७१)। संकृ. पाएत्ता (आक ३०)।

पाए सक [पादय्] गति कराना। पाएइ (हे ३, १४९)।

पाए सक [पाचय्] पकवाना। पाएइ (हे ३, १४९)। कर्म. पाइज्जइ (श्रावक २००)।

पाएण } अ [प्रायेण] बहुत करके, प्रायः
पाएणं } (विसे ११९९; काल; कप्प; प्रासू ४३)।

पाओ अ [प्रायस्] ऊपर देखो (श्रा २७)।

पाओ अ [प्रातस्] प्रातःकाल, प्रभात (सुज्ज १, ९; कप्प)।

पाओकरण देखो पाउकरण (पिंड २९८)।

पाओग देखो पाउग्ग (सूअनि ६५)।

पाओगिय वि [प्रायोगिक] प्रयत्न-जनित, अस्वाभाविक (चेइय ३५३)।

पाओग्ग देखो पाउग्ग (भास १०; धर्मसं ११८०)।

पाओपगम न [पादपोपगम] देखो पाओ-वगमण (वव १०)।

पाओयर पुं [प्रादुष्कार] देखो पाउकरण (ठा ३, ४; पंचा १३, ५)।

पाअवगमण न [पादपोपगमन] अनशन-विशेष, मरण विशेष (सम ३३; औप; कप्प; भग)।

पाओवगय वि [पादपोपगत] अनशन-विशेष से मृत (औप; कप्प; अंत)।

पाओस पुं [दे. प्रद्वेष] मत्सर, द्वेष (ठा ४, ४—पत्र २८०)।

पाओसिय देखो **पादोसिय** (ओघ ६६२)।

पाओसिया देखो **पाउसिआ** (धर्म ३)।

पांडविअ वि [दे] जलार्द्र, पानी से गीला (दे ६, २०)।

पांडु देखो **पंडु** (पव २४७)। °**सुअ** पुं [°सुत] अभिनय का एक भेद (ठा ४, ४—पत्र २८५)।

पाक देखो **पाग** (कप्प)।

पाकम्म न [प्राकाम्य] योग की आठ सिद्धियों में एक सिद्धि, 'पाकम्मगुणेण मुणी भुवि व्व नीरे जलि व्व भुवि चरइ' (कुप्र २७७)।

पाकार पुं [प्राकार] किला, दुर्ग (उप पृ ८४)।

पाकिद (शौ) देखो **पागय** (प्रयौ २४; नाट—वेणी ३८; पि ५३; ८२)।

पाखंड देखो **पासंड** (पि २६५)।

पाग पुं [पाक] १ पचन-क्रिया (औप; उवा; सुपा ३७४)। २ दैत्य-विशेष (गउड)। ३ विपाक, परिणाम (धर्मसं ६६५)। ४ बलवान् दुश्मन (आवम)। °**सासण** पुं [°शासन] इन्द्र, देव-पति (हे ४, २६५; गउड; पि २०२)। °**सासणी** स्त्री [°शासनी] इन्द्रजाल-विद्या (सूअ २, २, २७)।

पागइअ वि [प्राकृतिक] १ स्वाभाविक। २ पुं. साधारण मनुष्य, प्राकृत लोक (पव ६१)।

पागड सक [प्र + कटय्] प्रकट करना, खुला करना, व्यक्त करना। वकृ. **पागडेमाण** (ठा ३, ४—पत्र १७१)।

पागड वि [प्रकट] व्यक्त, खुला (उत्त ३६, ४२; औप; उव)।

पागडण न [प्रकटन] १ प्रकट करना। २ वि. प्रकट करनेवाला (धर्मसं ८२६)।

पागडिअ वि [प्रकटित] व्यक्त किया हुआ (उव; औप)।

पागड्ढि } वि [प्राकर्षिन्, °क] १ अग्र-
पागड्ढिक } गामी; 'पागट्टी (? ड्ढी) पट्ठवए जूहवई' (गाया १, १)। २ प्रवर्त्तक, प्रवृत्ति करानेवाला (पण्ह १, ३—पत्र ४५)।

पागब्भ न [प्रागल्भ्य] धृष्टता, ढिठाई (सूअ १, ५, १, ५)।

पागब्भि } वि [प्रागल्भिन्, °क] धृष्टता-
पागब्भिय } वाला, धृष्ट, ढीठ (सूअ १, ५, १, ५; २, १, १८)।

पागय वि [प्राकृत] १ स्वाभाविक, स्वभाव-सिद्ध। २ आर्यावर्त्त की प्राचीन लोक-भाषा; 'सक्कया पागया चेव' (ठा ७—पत्र ३९३; विसे १४६६ टी; रयण ६४; सुपा १)। ३ पुं. साधारण बुद्धिवाला मनुष्य, सामान्य लोग; 'जेसि णामागोत्तं न पागता पण्णवेहिंति' (सुज्ज १६), 'किंतु महामइगम्मो दुरवगम्मो पागयजणस्स' (चेइय २५६, सुर २, १३०)। °**भासा** स्त्री [°भाषा] प्राकृत भाषा (श्रा २३)। °**वागरण** न [°व्याकरण] प्राकृत भाषा का व्याकरण (विसे ३४५५)।

पागार पुं [प्राकार] किला, दुर्ग (उव; सुर ३, ११४)।

पाजावच्च पुं [प्राजापत्य] १ वनस्पति का अधिष्ठाता देव। २ वनस्पति (ठा ५, १—पत्र २६२)।

पाटप (चूपै) देखो **वाडव** (षड्)।

पाठीण देखो **पाढीण** (पण्ह १, १—पत्र ७)।

पाड देखो **फाड** = पाटय्; 'असिपत्तधणूहि पाडंति' (सूअनि ७६)।

पाड सक [पातय्] गिराना। पाडेइ (उव)। संकृ. **पाडिअ, पाडिऊण** (काप्र १६६; कुप्र ४६)। कवकृ. **पाडिज्जंत** (उप ३२० टी)।

पाड देखो **पाडय** = पाटक; 'तो सो दिट्ठट्ठाणे सय गओ वेसपाडम्मि' (सुपा ५३०)।

पाडच्चर वि [दे] आसक्त चित्तवाला (दे ६, ३४)।

पाडच्चर पुं [पाटच्चर] चोर, तस्कर (पाअ; दे ६, ३४)।

पाडण न [पाटन] विदारण (आव ६)।

पाडण न [पातन] १ गिराना, पाड़ना (सूअनि ७२)। २ परिभ्रमण, इधर-उधर घुमना; 'लहुजढरपिढरपडियारपाडणत्ताण कयकीलो' (कुमा २, ३७)।

पाडणा स्त्री [पातना] ऊपर देखो (विपा १, १—पत्र १६)।

पाडय पुं [पाटक] मुहल्ला, रथ्या; 'चंडाल-पाडए गंतु' (धर्मवि १३८; विपा १, ८; महा)।

पाडय वि [पातक] गिरानेवाला। स्त्री. °**डिआ** (मृच्छ २४५)।

पाडल पुं [पाटल] १ वर्ण-विशेष, श्वेत और रक्त वर्ण, गुलाबी रंग। २ वि. श्वेत-रक्त वर्णवाला (पाअ)। ३ न. पाटलिका-पुष्प, गुलाब का फूल (गा ४६६; सुर ३, ५२; कुमा)। ४ पाटला वृक्ष का पुष्प, पाढल का फूल (गा ३०)।

पाडल पुं [दे] १ हंस, पक्षि-विशेष। २ वृषभ बैल। कमल (दे ६, ७६)।

पाडलसउण पुं [दे] हंस, पक्षि-विशेष (दे ६, ४६)।

पाडला स्त्री [पाटला] वृक्ष-विशेष, पाढल का पेड़, पाडरि (गा ४५६; सुर ३, ५२; सम १५२), 'चंपा य पाडलरुक्खो जया य वसु-पुज्जपत्थिवो होइ' (पउम २०, ३८)।

पाडलि स्त्री [पाटलि] ऊपर देखो (गा ४६८)। °**उत्त**, °**पुत्त** न [°पुत्र] नगर-विशेष, पटना, जो आजकल बिहार प्रदेश का प्रधान नगर है (हे २, १५०; महा; पि २६२; चारु ३६)। °**पुत्त** वि [°पुत्र] पाटलिपुत्र-संबन्धी, पटना का (पत्र १११)। °**संड** न [°षण्ड] नगर-विशेष (विपा १, ७; सुपा ८३)। देखो **पाडली**।

पाडलिय वि [पाटलित] श्वेत-रक्त वर्णवाला किया हुआ (गउड)।

पाडली देखो **पाडल** (उप पृ ३६०)। °**पुर** न [°पुर] पटना नगर (धर्मवि ८०)। °**वुत्त** न [°पुत्र] पटना नगर (षड्)।

पाडव न [पाटव] पटुता, निपुणता (धम्म १० टी)।

पाडवण न [दे] पाद-पतन, पैर पर गिरना, प्रणाम-विशेष (दे ६, १८)।

पाडहिग } वि [पाटहिक] ढोल बजानेवाला,
पाडहिय } ढोलिया, ढोलकिया (स २१६)।
पाडहुक वि [दे] प्रतिभू, मनौतिया, जामिनदार (षड्)।
पाडिअ वि [पाटित] फाड़ा हुआ, विदारित (स ६६६)।
पाडिअ वि [पातित] गिराया हुआ (पाअ; प्रासू २; भवि)।
पाडिअग्ग पुं [दे] विश्राम (दे ६, ४४)।
पाडिअम्म पुं [दे] पिता के घर से वधू को पति के घर ले जानेवाला (दे ६, ४३)।
पाडिआ देखो पाडय = पातक।
पाडिएक्क } न [प्रत्येक] हर एक (हे २,
पाडिक्क } २१०; कप्प; पाअ; णाया १, १६; २, १; सुज्ज्ञनि १२१ टी; कुमा), 'एगे जीवे पाडिक्कएणं सरीरएणं' (ठा १—पत्र १६)।
पाडिंतिय न [प्रात्यन्तिक] अभिनय-विशेष (राय ५४)।
पाडिचरण न [प्रतिचरण] सेवा, उपासना (उप पृ ३४६)।
पाडिच्छय वि [प्रतीच्छक] ग्रहण करनेवाला (सुख २, १३)।
पाडिज्जंत देखो **पाड** = पातय्।
पाडिपह न [प्रतिपथ] अभिमुख, सामने (सूअ २, २, ३१)।
पाडिपहिअ देखो पडिपहिअ (सूअ २, २, ३१)।
पाडिपिद्धि स्त्री [दे] प्रतिस्पर्धा (षड्)।
पाडिप्पवग पुं [पारिप्लवक] पक्षि-विशेष (पउम १४, १८)।
पाडिप्फद्धि वि [प्रतिस्पर्धिन्] स्पर्धा करनेवाला (हे १, ४४; २०६)।
पाडियंतिय न [प्रात्यन्तिक] अभिनय-विशेष (राज)।
पाडियक्क देखो **पाडिएक्क** (औप)।
पाडिवय वि [प्रातिपद] १ प्रतिपत्-संबन्धी, पडवा तिथि का; 'जह चंदो पाडिवओ पडिपुन्नो सुक्कपक्खम्मि' (उवर ६०)। २ पुं. एक भावी जैन आचार्य (विचार ५०६)।
पाडिवया स्त्री [प्रतिपत्] तिथि-विशेष, पक्ष की पहली तिथि, पडवा (सम २६; णाया १, १०; हे १, १५; ४४)।

पाडिवेसिय वि [प्रातिवेश्मिक] पड़ोसी स्त्री. °या (सुपा ३६४)।
पाडिसार पुं [दे] १ पटुता, निपुणता। २ वि. पटु, निपुण (दे ६, १६)।
पाडिसिद्धि देखो पडिसिद्धि = प्रतिसिद्धि (हे १, ४४; प्राप्र)।
पाडिसिद्धि स्त्री [दे] १ स्पर्धा (दे ६, ७७; कप्पू; कुप्र ४६)। २ समुदाचार। ३ वि. सदृश, तुल्य (दे ६, ७७)।
पाडिसिरा स्त्री [दे] खलीन-युक्ता (दे ६,४२)।
पाडिस्सुइय न [प्रातिश्रुतिक] अभिनय का एक भेद (राज)।
पाडिहच्छी } स्त्री [दे] शिरो-माल्य, मस्तक-
पाडिहत्थी } स्थित पुष्पमाला (दे ६, ४२; राज)।
पाडिहारिय वि [प्रातिहारिक] वापस देने योग्य वस्तु (विसे ३०५७; औप; उवा)।
पाडिहेर न [प्रातिहार्य] १ देवता-कृत प्रतीहार-कर्म, देवकृत पूजा-विशेष (औप; पव ३६), 'इय सामइए भावा इहइंपि नागदत्त-नरनाहो। जाओ सपाडिहेरो' (सुपा ५४४)। २ देव-सान्निध्य (भत्त ६६); 'बहूणं सुरेहिं कयं पाडिहेरं' (श्रु ६४; महा)।
पाडी स्त्री [दे] भैंस की बछिया, पाड़ी या पड़िया गुजराती में 'पाडी' (गा ६५)।
पाडुंकी स्त्री [दे] व्रणी—जखमवाले की पालकी (दे ६, ३६)।
पाडुंगोरि वि [दे] १ विगुण, गुण-रहित। २ मद्य में आसक्त। ३ स्त्री. मजबूत वेष्टन-वाली बाड़; 'पाडुंगोरी च वृतिर्दीर्घं यस्या विवेष्टनं परितः' (दे ६, ७८)।
पाडुक्क पुं [दे] समालम्भन, चन्दन आदि का शरीर में उपलेप। २ वि. पटु, निपुण (दे ६, ७६)।
पाडुच्चिय वि [प्रातीतिक] किसी के आश्रय से होनेवाला, आपेक्षिक। स्त्री. °या (ठा २, १; नव १८)।
पाडुच्ची स्त्री [दे] तुरग-मण्डन, घोड़े का सिंगार (दे ६, ३६; पाअ)।
पाडुहुअ वि [दे] प्रतिभू, मनौतिया, जामिनदार (दे ६, ४२)।
पाडेक्क देखो **पाडिक्क** (सम्म ५५)।

पाडोस पुं [दे] पड़ोस, प्रातिवेश्मिकता (श्रा २७)।
पाडोसिअ वि [दे] पड़ोसी, पड़ोसिया (सिरि ३१२; श्रा २७; सुपा ५५२)।
पाढ सक [पाठय्] पढ़ाना, अध्ययन कराना। पाढइ, पाढेइ (प्राकृ ६०; प्राप्र)। कर्म. पाढिज्जइ (प्राप्र)। संकृ. **पाढिऊण, पाढेऊण** (प्राकृ ६१)। हेकृ. **पाढिउं, पाढेउं** (प्राकृ ६१)। कृ. **पाढणिज्ज, पाढिअव्व, पाढेअव्व** (प्राकृ ६१)।
पाढ पुं [पाठ] १ अध्ययन, पठन (ओघभा ७१; विसे १३८४; सम्मत्त १४०)। २ शास्त्र, आगम। ३ शास्त्र का उल्लेख; 'पाढो त्ति वा सत्थं ति वा एगट्ठा' (आचू १)। ४ अध्यापन, शिक्षा (उप पृ ३०८; विसे १३८४)।
पाढ देखो **पाडय** = पाटक (श्रा ६३ टी)।
पाढंतर न [पाठान्तर] भिन्न पाठ (श्रावक ३११)।
पाढग वि [पाठक] १ उच्चारण करनेवाला, 'पढियं मंगलपाढगेहिं' (कुप्र ३२)। २ अभ्यासी, अध्ययन करनेवाला। ३ अध्यापन करनेवाला, अध्यापक; 'वत्थुपाढगा', 'सुमिण-पाढगाणं', 'लक्खणसुमिणपाढगाणं' (धर्मवि ३३; णाया १, १; कप्प)।
पाढण न [पाठन] अध्यापन (उप पृ १२८; प्राकृ ६१; सम्मत्त १४२)।
पाढणया स्त्री [पाठना] ऊपर देखो (पंचभा ४)।
पाढय देखो **पाढग** (कप्प; स ७; णाया १, १—पत्र २०; महा)।
पाढव वि [पार्थिव] पृथिवी का विकार, पृथिवी का; 'पाढवं सरीरं हिच्चा' (उत्त ३, १३)।
पाढा स्त्री [पाठा] वनस्पति-विशेष, पाढ, पाठ का गाछ (पण्ण १७)।
पाढाव सक [पाठय्] पढ़ाना, अध्यापन करना। पाढावेइ (प्राप्र)। संकृ. **पाढाविऊण, पाढावेऊण** (प्राकृ ६१)। हेकृ. **पाढाविउं, पाढावेउं** (प्राकृ ६१)। कृ. **पाढावणिज्ज, पाढाविअव्व** (प्राकृ ६१)।
पाढावअ वि [पाठक] अध्यापक (प्राकृ ६०)।
पाढावण न [पाठन] अध्यापन (प्राकृ ६१)।

पाढाविअ वि [पाठित] अध्यापित (प्राकृ ६१)।

पाढाविअवंत वि [पाठितवत्] जिसने पढ़ाया हो वह (प्राकृ ६१)।

पाढाविउ } वि [पाठयितृ] पढ़ानेवाला
पाढाविर } (प्राकृ ६१; ६०)।

पाढिअ वि [पाठित] पढ़ाया हुआ, अध्यापित (प्राप्र)।

पाढिअवंत देखो पाढाविअवंत (प्राकृ ६१)।

पाढिआ स्त्री [पाठिका] पढ़नेवाली स्त्री (कप्पू)।

पाढिउ } वि [पाठयितृ] अध्यापक, पढ़ाने-
पाढिर } वाला (प्राकृ ६१)।

पाढीण पुं [पाठीन] मत्स्य-विशेष, 'पोठिया' मछली, मत्स्य की एक जाति (गा ४१४; विक्र ३२)।

पाढोआमास पुं [पृथगामर्श] बारहवें अंग-ग्रंथ का एक भाग (णंदि २३५)।

पाण सक [प्र + आनय्] जिलाना। वकृ. पाणअंत (नाट—मालती ५)।

पाण पुंस्त्री [दे] श्वपच, चण्डाल (दे ६, ३८; उप पृ १५४; महा; पाअ; ठा ४, ४; वव १)। स्त्री. °णी (सुख ६, १; महा)। °उडी स्त्री [°कुटी] चाण्डाल की झोंपड़ी (गा २२७)। °विलया स्त्री [°वनिता] चाण्डाली (उप ७६८ टी)। °डंबर पुं [°डम्बर] यक्ष-विशेष (वव ७)। °हिवइ पुं [°धिपति] चाण्डाल-नायक (महा)।

पाण न [पान] १ पीना, पीने की क्रिया (सुर ३, १०)। २ पीने की चीज, पानी आदि (सुज्ज २० टी; पडि; महा; आचा)। ३ पुं. गुच्छ-विशेष; 'सणपाणकासमद्दगअग्घाडगसामसिंदुवारे य' (पण्ण १)। °पत्त न [°पात्र] पीने का भोजन, प्याला (दे) °गार न [°गार] मद्य-गृह (णाया १, २; महा)। °हार पुं [°हार] एकाशन तप (संबोध ५८)।

पाण पुंन [प्राण] १ जीवन के आधार-भूत ये दश पदार्थ—पाँच इन्द्रियाँ, मन, वचन और शरीर का बल, उच्छ्वास तथा निःश्वास (जी २६; पण्ण १; महा; ठा १; ६)। २ समय-परिमाण विशेष, उच्छ्वास-निःश्वास-परिमित काल (इक; अणु)। ३ जन्तु, प्राणी, जीव; 'पाणाणि चेवं विणिहंति मंदा' (सूअ १, ७, १६; ठा ६; आचा; कप्प)। ४ जीवित, जीवन (सुपा २६३; ५,३; कप्पू)। °इत्त वि [°वत्] प्राणवाला, प्राणी (पि ६००)। °क्खय पुं [°त्यय] प्राण-नाश (सुपा २६८; ६१६) °च्चाय पुं [°त्याग] मरण, मौत (सुर ४, १७०)। °जाइय वि [°जातिक] प्राणी, जीव, जन्तु (आचा १, ६, १, १)। °नाह पुं [°नाथ] प्राणनाथ, पति, स्वामी (रंभा)। °प्पिया स्त्री [°प्रिया] स्त्री, पत्नी (सुर १, १०८)। °वह पु [°वध] हिंसा (पण्ह १, १)। °वित्ति स्त्री [°वृत्ति] जीवन-निर्वाह (महा)। °सम पुं [°सम] पति, स्वामी (पाअ)। °सुहुम न [°सूक्ष्म] सूक्ष्म जन्तु (कप्प)। °हिय वि [°हृत्] प्राण-नाशक (रंभा)। °इंत वि [°वत्] प्राणवाला, प्राणी (प्राप्र)। °इवाइया स्त्री [°तिपातिकी] क्रिया-विशेष, हिंसा से होनेवाला कर्म-बन्ध (नव १७)। °इवाय पुं [°तिपात] हिंसा (उवा)। °उ पुंन [°युस्] ग्रन्थांश-विशेष, बारहवाँ पूर्व (सम २५; २६)। °पाण, °पाणु पुंन [°पान] उच्छ्वास और निःश्वास (धर्मसं १०८; ६८)। °याम पुं [°याम] योगाङ्ग-विशेष—रेचक, कुम्भक और पूरक नामक प्राणों को दमने का उपाय (गउड)।

पाणंतकर वि [प्राणान्तकर] प्राण-नाशक (सुपा ६१४)।

पाणंतिय वि [प्राणान्तिक] प्राण-नाशवाला, 'पाणंतियावई पहु!' (सुपा ४५२)।

पाणग पुंन [पानक] १ पेय-द्रव्य-विशेष (पंचभा १; सुज्ज २० टी; कप्प)। २ वि. पान करनेवाला (?); 'ण पाणगो जं ततो अण्णो' (धर्मसं ८२; ७८)।

पाणद्धि स्त्री [दे] रथ्या, मुहल्ला (दे ६, ३६)।

पाणम अक [प्र + अण्] निःश्वास लेना, नीचे सांसना। पाणमंति (सम २; भग)।

पाणय न [पानक] देखो पाण = पान (विसे २५७८)।

पाणय पुं [प्राणत] स्वर्ग-विशेष, दसवाँ देव-लोक (सम ३७; भग; कप्प)। २ विमानेन्द्रक, देवविमान-विशेष (देवेन्द्र १३५)। ३ प्राणत स्वर्ग का इन्द्र (ठा ४, ४)। ४ प्राणत देव-लोक में रहनेवाला देव (अणु)।

पाणहा स्त्री [उपानह्] जूता, 'पाणहाओ य छत्तं च णालीयं बालवीयणं' (सूअ १, ६, १८)।

पाणाअअ पुं [दे] श्वपच, चाण्डाल (दे ६, ३८)।

पाणाम पुं [प्राण] निःश्वास (भग)।

पाणामा स्त्री [प्राणामी] दीक्षा-विशेष (भग ३, १)।

पाणाली स्त्री [दे] दो हाथों का प्रहार (दे ६, ४०)।

पाणि पुं [प्राणिन्] जीव, आत्मा, चेतन (आचा; प्रासू १३६; १४४)।

पाणि पुं [पाणि] हस्त, हाथ (कुमा; स्वप्न ५३; ६०)। °गहण देखो °ग्गहण (भवि)। °ग्गह पुं [°ग्रह] विवाह (सुपा ३७३; धर्मवि १२३)। °ग्गहण न [°ग्रहण] विवाह, शादी (विपा १, ६; स्वप्न ६३; भवि)।

पाणिअ न [पानीय] पानी, जल (हे १, १०१; प्राप्र; पण्ह १, ३; कुमा)। °धारिया स्त्री [°धरिका] पनिहारी; 'जियसत्तुस्स रण्णो पाणियघ(? ध)रियं सद्दावेइ' (णाया १, १२—पत्र १७५)। °हारी स्त्री [°हारी] पनिहारी (दे ६, ५६; भवि)। देखो पाणीअ।

पाणिणि पुं [पाणिनि] एक प्रसिद्ध व्याकरण-कार ऋषि (हे २, १४७)।

पाणिणीअ वि [पाणिनीय] पाणिनि-संबन्धी, पाणिनि का (हे २, १४७)।

पाणी देखो पाण = (दे)।

पाणी स्त्री [पानी] वल्ली-विशेष, 'पाणी सामावल्ली गुंजावल्ली य वत्थाणी' (पण्ण १—पत्र ३३)।

पणीअ देखो पाणिअ (हे १, १०१; प्रासू १०५)। °धरी स्त्री [°धरी] पनिहारी (णाया १, १ टी—पत्र ४३)।

पाणु पुंन [प्राण] १ प्राण वायु। २ श्वासोच्छ्वास (कम्म ५, ४०; औप, कप्प)। ३ समय-परिमाण-विशेष, 'एगे ऊसासनीसासे एस पाणुत्ति वुच्चइ। सत्त पाणूणि से थोवे' (तंदु ३२)।

पात } देखो **पाय**=पात्र (सूत्र १, ४, २;
पाद } पण्ह २, ५—पत्र १४८)। °**बंधण** न [°बन्धन] पात्र बाँधने का वस्त्र-खण्ड, जैन-मुनि का एक उपकरण (पण्ह २, ५)।

पाद देखो **पाय**=पाद (विपा १, ३)। °**सम** वि [°सम] गेय-विशेष (ठा ७—पत्र ३६४)। °**ोट्ठपय** न [°ौष्ठपद] दृष्टिवाद नामक बारहवें जैन आगम-ग्रन्थ का एक प्रतिपाद्य विषय (सम १२८)।

पादु° देखो **पाउ**=प्रादुस्। पादुरेसए (पि ३४१)। पादुरकासि (सूत्र १, २, २, ७)।

पादो देखो **पाओ**=प्रातस् (सुज १, ६)।

पादोसिय वि [प्रादोषिक] प्रदोष-काल का, प्रदोष-संबन्धी (ओघ ६५८)।

पादव देखो **पायव** (गा ५३७ अ)।

पाधन्न देखो **पाहन्न** (धर्मसं ७८६)।

पाधार सक [स्वा + गम्, पाद + धारय्] पधारना, 'पाधारह निम्रगेहे' (श्रा १६)।

पाबद्ध वि [प्राबद्ध] विशेष बँधा हुआ, पाशित (निचू १६)।

पाभाइय } वि [प्राभातिक] प्रभात-
पाभातिय } संबन्धी (ओघभा ३११; अनु ६; धर्मवि ५८)।

पाम सक [प्र + आप्] प्राप्त करना, गुजराती में 'पामवु'।
'कारावेइ पडिमं जिणाण जिअरोगदोसमोहाणं।
सो अन्नभवे पामइ भवमलणं धम्मवररयणं॥'
(रयण १२)। कर्म. पामिज्जइ (सम्मत्त १४२)।

पामण्ण न [प्रामाण्य] प्रमाणता, प्रमाणपन (धर्मसं ७५)।

पामद्दा स्त्री [दे] दोनों पैर से धान्य-मर्दन (दे ६, ४०)।

पामन्न देखो **पामण्ण** (विसे १४६६; चेइय १२४)।

पामर पुं [पामर] कृषीबल, कर्षक, खेती का काम करनेवाला गृहस्थ; 'पामरगहवइसेआण-कासया दोणया हलिश्रा' (पाअ; वज्जा १३४; गउड; दे ६, ४१; सुर १६, ५३)। २ हलकी जाति का मनुष्य (कप्पू; गा २३८)। ३ मूर्ख, बेवकूफ, अज्ञानी (गा १६४); 'को नाम पामरं मुत्तुं वच्चइ दुद्दमकद्दमे' (श्रा १२)।

पामा स्त्री [पामा] रोग-विशेष, खुजली, खाज (सुपा २२७)।

पामाड पुं [पद्माट] पमाड़, पमार, पवाड, चकवड़, वृक्ष-विशेष (पाअ)।

पामिच्च सक [दे] उधार लेना। पामिच्चेज (आचा २, २, २, ३)।

पामिच्च न [दे. अपमित्य] १ धार लेना, वापस देने का वादा कर ग्रहण करना। २ वि. जो उधार लिया जाय वह (पिंड ६२; ३१६; आचा; ठा ३, ४; ६; औप; पण्ह २, ५; पव १२५; पंचा १३, ५; सुपा ६४३)।

पामिच्चिय वि [दे] उधार लिया हुआ (आचा १, १०, १)।

पामुक्क वि [प्रमुक्त] परित्यक्त (पाअ; स ६५७)।

पामूल न [पादमूल] पैर का मूल भाग, पाँव का अग्र भाग (पउम ३, ६; सुर ८, १६६; पिंड ३२८)। देखो **पायमूल**=पादमूल।

पामोक्ख देखो **पमुह**=प्रमुख (णाया १, ५; ८; महा)।

पामोक्ख पुं [प्रमोक्ष] मुक्ति, छुटकारा (उप ६४८ टी)।

पाय पुं [दे] १ रथ-चक्र, रथ का पहिया (दे ६, ३७)। २ फणी, साँप (षड्)।

पाय पुं [पाक] १ पाचन-क्रिया। २ रसोई (प्राकृ १६; उप ७२८ टी)।

पाय वि [पाक्य] पाक-योग्य (दस ७, २२)।

पाय देखो **पाव** (चंड)।

पाय पुं [पात] १ पतन (पंचा २, २५; से १, १६)। २ संबन्ध; 'पुणो पुणो तरलदिट्ठि-पाएहिं' (सुर ३, १३८)।

पाय पुं [पाय] पान, पीने की क्रिया (श्रा २३)।

पाय पुं [पाद] १ गमन, गति (श्रा २३)। २ पैर, चरण, पाँव; 'चलणा कमा य पाया' (पाअ; णाया १, १)। ३ पद्य का चौथा हिस्सा (हे ३, १३४; पिंग)। ४ किरण; 'अंसू रस्सी पाया' (पाअ; अजि २८)। ५ सानु, पर्वत का कटक (पाअ)। ६ एकाशन तप (संबोध ५८)। ७ छः अंगुलों का एक नाप (इक)। °**कंचणिया** स्त्री [°काञ्चनिका] पैर प्रक्षालन का एक सुवर्ण-पात्र (राज)। °**कंबल** पुंन [°कम्बल] पैर पोंछने का वस्त्र-खण्ड (उत्त १७; ७)। °**कुक्कुड** पुं [°कुक्कुट] कुक्कुट-विशेष (णाया १, १७ टी—पत्र २३०)। °**घाय** पुं [°घात] चरण-प्रहार (पिंग)। °**चार** पुं [°चार] पैर से गमन (णाया १, १)। °**चारि** वि [°चारिन्] पैर से यातायात करनेवाला, पाद-विहारी (पउम ६१, १६)। °**जाल**, °**जालग** न [°जाल,°क] पैर का आभूषण-विशेष (औप; अजि ३१; पण्ह २, ५)। °**त्ताण** न [°त्राण] जूता, पगरखी (दे १, ३३)। °**पलंब** पुं [°प्रलम्ब] पैर तक लटकनेवाला एक आभूषण (णाया १, १—पत्र ५३)। °**पीढ** देखो °**वीढ** (णाया १, १; महा)। °**पुंछण** न [°प्रोञ्छन] रजोहरण, जैन साधु का एक उपकरण (आचा; ओघ ५११; ७०६; भग; उवा)। °**प्पडण** न [°पतन] पैर पर गिरना, प्रणाम-विशेष (पउम ६३, १८)। °**मूल** न [°मूल] १ देखो **पामूल** (कस)। २ मनुष्यों की एक साधारण जाति, नर्तकों की एक जाति; 'समागयाइं पायमूलाइं', 'पुलइज्जमाणो पायमूलेहि पत्तो रहसमीवे', 'पणच्चियाइं पायमूलाइं', 'सद्दावियाइं पायमूलाइं', 'पण-च्चंतेहि पायमूलेहिं' (स ७२१; ७२२, ७३४)। °**लेहणिआ** स्त्री [°लेखनिका] पैर पोंछने का जैन साधु का एक काष्ठमय उपकरण (ओघ ३६)। °**वंदय** वि [°वन्दक] पैर पर गिरकर प्रणाम करनेवाला (णाया १, १३)। °**वडण** न [°पतन] पैर पर गिरना, प्रणाम-विशेष (हे १, २७०; कुमा; सुर २, १०६)। °**वडिया** स्त्री [°वृत्ति] पाद-पतन, पैर छूना, प्रणाम-विशेष; 'पायवडियाए खेमकुसलं पुच्छंति' (णाया १, २; सुपा २५)। °**विहार** पुं [°विहार] पैर से गति (भग)। °**वीढ** न [°पीठ] पैर रखने का आसन (हे १, २७०; कुमा; सुपा ६८)। °**सीसग** न [°शीर्षक] पैर के ऊपर का भाग (राय)। °**ाउलअ** न [°ाकुलक] छन्द-विशेष (पिंग)।

पाय देखो **पत्त**=पात्र (आचा; औप; ओघभा ३६; १७४)। °**केसरिआ** स्त्री [°केसरिका] जैन साधुओं का एक उपकरण, पात्र-प्रमार्जन का कपड़ा (ओघ ६६८; विसे २५५२ टी)।

°ट्ठवण, °ठवण न [°स्थापन] जैन मुनियों का एक उपकरण, पात्र रखने का वस्त्र-खण्ड (विसे २५५२ टी; ओघ ६६८)। °णिज्जोग, °निज्जोग पुं [°निर्योग] जैन साधु का यह उपकरण-समूह—पात्र, पात्रबन्ध, पात्रस्थापन, पात्रकेशरिका, पटल, रजस्त्राण और गुच्छक (पिंड २६; बृह ३; विसे २५५२ टी)। °पडिमा स्त्री [°प्रतिमा] पात्र-संबन्धी अभिग्रह—प्रतिज्ञा-विशेष (ठा ४, ३)। देखो पाद = पात्र।

पाय (अप) देखो पत्त = प्राप्त (पिंग)।

पाय° अ [प्रायस्] प्रायः, बहुत करके; 'पायप्पाणं वणेइ त्ति' (पिंड ४४३)।

°पाय पुं. ब. [°पाद] पूज्य, 'संथुआ अजिअ-संतिपायया' (अजि ३४)।

पायए देखो पा = पा।

पायं देखो पाय° (स ७६१; सुपा २८; ५६६; श्रावक ७३)।

पायं अ [प्रातस्] प्रभात (सूअ १, ७, १४)।

पायंगुट्ठ पुं [पादाङ्गुष्ठ] पैर का अंगूठा (णाया १, ८)।

पायंजलि पुं [पातञ्जल] पतञ्जलिकृत शास्त्र, पातञ्जल योग-सूत्र (णंदि १९४)।

पायंत न [पादान्त] गीत का एक भेद, पाद-वृद्धगीत (राय ५४)।

पायंदुय पुं [पादान्दुक] पैर बाँधने का काष्ठमय उपकरण (विपा १, ६—पत्र ६६)।

पायक देखो पायय = पातक (वव १)।

पायक्क देखो पाइक्क (सम्मत्त १७६)।

पायक्खिणण न [प्रादक्षिण्य] प्रदक्षिणा (पउम ३२, ६२)।

पायग न [पातक] पाप (श्रावक २४८)।

पायच्छित्त पुंन [प्रायश्चित्त] पाप-नाशन कर्म, पाप-क्षय करनेवाला कर्म; 'पारंचिओ नाम पायच्छित्तो संवुत्तो' (सम्मत्त १४४; उवा; औप; नव २६)।

पायड देखो पागड = प्र + कटय्। पायडइ (भवि)। वकृ. पायडंत (सुपा २५६)। कवकृ. पायडिज्जंत (गा ६८५)। हेकृ. पायडिउं (कुप्र १)।

पायड न [दे] अंगण, आँगन (दे ६, ४०)।

पायड देखो पागड = प्रकट (हे १, ४४; प्राप्र; ओघ ७३; जी २२, प्रासू ६४)।

पायड देखो पागड = प्राकृत; 'अहंपि दाव दिअसे णअरं परिब्भमिअ अलद्धभोआ पाअ-डगणिआ विअ रत्ति पस्सदो सइदुं आअच्छामि' (अवि २६)।

पायड वि [प्रावृत] आच्छादित (विसे २५७६ टी)।

पायडिअ वि [प्रकटित] व्यक्त किया हुआ (कुप्र ४; से १, ५३; गा १६६; २६०; गउड; स ४६८)।

पायडिल्ल वि [प्रकट] खुला (वज्जा १०८)।

पायण न [पायन] पिलाना, पान कराना (णाया १, ७)।

पायत्त न [पादात] पदाति-समूह, प्यादों का लश्कर (उत्त १८, २; औप; कप्प)। °णिय न [°नीक] पदाति सैन्य (पि ८०)।

पायपुंछण न [पादपुञ्छन] पात्र-विशेष, शराव, सकोरा।

पायप्पहण पुं [दे] कुक्कुट, मुर्गा (दे ६, ४५)।

पायय न [पातक] पाप (अच्चु ४३)।

पायय देखो पाव = पाप (प्राप्र)।

पायय देखो पागय (हे १, ६७)।

पायय देखो पायव (से ६, ७)।

पायय देखो पावय = पावक (अभि १२५)।

पावय देखो पाय = पाद (कप्प)।

पायरास पुं [प्रातराश] प्रातःकाल का भोजन, जलपान, जलखवा (आचा; णाया १, ८)।

पायल न [दे] चक्षु, आँख (दे ६, ३८)।

पायव पुं [पादप] वृक्ष, पेड़ (पाअ)।

पायव्व देखो पा = पा।

पायस पुंन [पायस] दूध का मिष्टान्न, खीर; 'पायसो खीरी' (पाअ; सुपा ४३८)।

पायसो अ [प्रायशस्] प्रायः, बहुत कर (उप ४४६; पंचा ३, २७)।

पायार पुं [प्राकार] किला, कोट, दुर्ग (पाअ; हे १, २६८; कुमा)।

पायाल न [पाताल] रसा-तल, अधो भुवन (हे १, १८०; पाअ)। °कलश पुं [°कलश] समुद्र के मध्य में स्थित कलशाकार वस्तु (अणु)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष (पउम ४५, ३६)। °मंदिर न [°मन्दिर] पाताल-स्थित गृह (महा)। °हर न [°गृह] वही अर्थ (महा)।

पायाल न [पादद्दल] पादात्य सैन्य, पैदल सैनिक (चउप्पन्न० पत्र० १८५)।

पायालकारपुर न [पातालल‌ङ्कापुर] पाताल-लंका, रावण की राजधानी; 'पायालंकारपुरं सिग्घं पत्ता भउव्विग्गा' (पउम ६, २०१)।

पायावच्च न [प्राजापत्य] अहोरात्र का चौद-हवाँ मुहूर्त्त (सम ५१)।

पायाविय वि [पायित] पिलाया हुआ (पउम ११, ४१)।

पायाहिण न [प्रादक्षिण्य] १ वेष्टन (पव ६१)। २ दक्षिण की ओर; 'पायाहिणेण तिहि पंतिआहिं झाएह लद्धिपए' (सिरि १६६)।

पायाहिणा देखो पयाहिणा; 'पायाहिणं करितो' (उत्त ६, ५६, सुख ६, ५६)।

पार अक [शक्] सकना, करने में समर्थ होना। पारइ, पारेइ (हे ४, ८६; पाअ)। वकृ. पारंत (कुमा)।

पार सक [पारय्] पार पहुँचना, पूर्ण करना। पारेइ (हे ४, ८६; पाअ) हेकृ. पारित्तए (भग १२, १)।

पार पुंन [पार] १ तट, किनारा (आचा)। २ पर्ला, किनारा; 'परतीरं पारं' (पाअ), 'किह म्ह होही भवजलहिपारं' (निसा ५)। ३ परलोक, आगामी जन्म। ४ मनुष्य-लोक-भिन्न नरक आदि (सूअ १, ६, २८)। ५ मोक्ष, मुक्ति, निर्वाण; 'पारं पुणणुत्तरं बुहा बिंति' (बृह ४)। °ग वि [°ग] पार जाने-वाला (औप; सुपा २५४)। °गय वि [°गत] १ पार-प्राप्त (भग; औप)। २ पुं. जिन-देव, भगवान् अर्हन् (उप १३२ टी)। °गामि वि [°गामिन्] पर पहुँचनेवाला (आचा; कप्प; औप)। °पाणग न [°पानक] पेय द्रव्य-विशेष (णाया १, १७)। °विउ वि [°विद्] पार को जाननेवाला (सूअ २, १, ६०)। °भोय वि [°भोग] पार-प्रापक (कप्प)।

पार देखो **पायार** (हे १, २६८; कुमा)।

पारंक न [दे] मदिरा नापने का पात्र (दे ६, ४१)।

पारंगम वि [पारगम] १ पार जानेवाला। २ पार-गमन (आचा)।

पारंगय वि [पारंगत] पार-प्राप्त (कुप्र २१)।

पारंचि वि [पाराञ्चि] सर्वोत्कृष्ट—दशम प्रायश्चित्त करनेवाला, 'पारंचीणं दोण्हवि' (बृह ४)।

पारंचिय न [पाराञ्चिक] १ सर्वोत्कृष्ट प्रायश्चित्त, तप-विशेष से अतिचारों की पार-प्राप्ति (ठा ३, ४—पत्र १६२; औप)। २ वि. सर्वोत्कृष्ट प्रायश्चित्त करनेवाला (ठा ३, ४)।

पारंचिय [पाराञ्चित] ऊपर देखो (कस; बृह ४)।

पारंपज्ज न [पारम्पर्य] परम्परा (रंभा १५)।

पारंपर पुं [दे] राक्षस (दे ६, ४४)।

पारंपर } न [पारम्पर्य] परम्परा (पउम **पारंपरिय** } २१, ८०; आरा १६; धर्मसं १११८; १३१७); 'आयरियपारंपर्ये (? रिए) ण आगयं' (सूअनि १२७—पृष्ठ ४८७)।

पारंपरिय वि [पारम्परिक] परंपरा से चला आता (उप ७२८ टी)।

पारंभ सक [प्रा + रभ्] १ आरम्भ करना, शुरू करना। २ हिंसा करना, मारना। ३ पीड़ा करना। पारंभेमि (कुप्र ७०)। कवकृ. 'तण्हाए पारब्भमाणा' (औप)।

पारंभ पुं [प्रारम्भ] शुरू, उपक्रम (विसे १०२०; पव १६३)।

पारंभिय वि [प्रारब्ध] आरब्ध, उपक्रान्त (धर्मवि १४४; सुर २, ७७, १२, १५६; सुपा ५५)।

पारकेर } वि [परकीय] पर का, अन्यदीय **पारक्क** } (हे १, ४४; २ १४८; कुमा)।

पारक्किअ देखो **पारक्क** (माल १६२)।

पारब्भमाण देखो **पारंभ**=प्रा + रभ्।

पारण } न [पारण,°क] व्रत के दूसरे दिन **पारणग** } का भोजन, तप की समाप्ति के अनन्तर **पारणय** } का भोजन (सण; उवा; महा)।

पारणा स्त्री [पारणा] ऊपर देखो। °**इत्त** वि [°वत्] पारणवाला (पंचा १२, ३५)।

पारतंत न [पारतन्त्र्य] परतन्त्रता, पराधीनता (उप २५२; पंचा ६, ४१; ११, ७)।

पारत्त अ [परत्र] परलोक में, आगामी जन्म में; 'पारत्त बिइज्जओ धम्मो' (पउम ५, १६३)।

पारत्त वि [पारत्र, पारत्रिक] पारलौकिक, आगामी जन्म से संबन्ध रखनेवाला; 'इत्तो पारत्तहियं ता कीरउ देव! वंकचूलिस्स' (धर्मवि ६०; ओघ ६२; स २४६)।

पारत्ति स्त्री [दे] कुसुम-विशेष (गउड; कुमा)।

पारत्तिय वि [पारत्रिक] देखो **पारत्त**= पारत्र (स ७०७)।

पारदारिय वि [पारदारिक] परस्त्री-लम्पट (णाया १, १८—पत्र २३६)।

पारद्ध वि [प्रारब्ध] १ जिसका प्रारम्भ किया गया हो वह; 'पारद्धा य विवाहनिमित्तं सयला सामग्गी' (महा)। २ जो प्रारम्भ करने लगा हो वह; 'तओ अवरण्हसमए पारद्धो नच्चिउं' (महा)।

पारद्ध न [दे] पूर्व-कृत कर्म का परिणाम, प्रारब्ध। २ वि. आखेटक, शिकारी। ३ पीड़ित (दे ६, ७७)।

पारद्धि स्त्री [पापर्द्धि] शिकार, मृगया (हे १, २३५; कुमा; उप पृ २५७; सुपा २१६)।

पारद्धिअ वि [पापर्द्धिक] शिकारी, शिकार करनेवाला, गुजराती में 'पारधी'; 'मयणमहा-पारद्धियनिसायबाणावलीविद्धा' (सुपा ७१; मोह ७६)।

पारमिया स्त्री [पारमिता] बौद्ध-शास्त्र-परिभाषित प्राणातिपात-विरमणादि शिक्षा-व्रत, अहिंसा आदि व्रत (धर्मसं ९८८)।

पारम्म न [पारम्य] परमता, उत्कृष्टता (अज्झ ११४)।

पारय वि [पारग] समर्थ (आचा २, ३, २, ३)।

पारय पुं [पारद] धातु-विशेष, पारा, रस-धातु। °**मद्दण** न [°मर्दन] आयुर्वेद-विहित रीति से पारा का मारण, रसायन-विशेष; 'अंग-कढिणयाहेउं च सेवंति पारयमद्दणं' (स २८६)। २ वि. पार-प्रापक (श्रु १०६)।

पारय न [दे] सुरा-भाण्ड, दारू रखने का पात्र (दे ६, ३८)।

पारय देखो **पार-ग** (कप्प; भग; अंत)।

पारय पुं [प्रावारक] १ पट, वस्त्र। २ वि. आच्छादक (हे १, २७१; कुमा)।

पारलोइअ वि [पारलौकिक] परलोक-संबन्धी, आगामी जन्म से संबन्ध रखनेवाला (पण्ह १, ३; ४; सूअ २, ७, २३; कुप्र ३८१; सुपा ४६१)।

पारवस्स न [पारवश्य] परवशता, पराधीनता (रयण ८१)।

पारस पुं [पारस] १ अनार्य देश-विशेष, फारस देश, ईरान (इक)। २ मणि-विशेष, जिसके स्पर्श से लोहा सुवर्ण हो जाता है (संबोध ५३)। ३ पारस देश में रहनेवाली मनुष्य-जाति (पण्ह १,१)। °**उल** न [°कुल] १ ईरान देश; 'भरिऊण भंडस्स वहणाइं पत्तो पारसउलं', 'इओ य सो अयलो पारसउले विढविय बहुयं दव्वं' (महा)। २ वि. पारस देश का, ईरान का निवासी; 'मागहयपारसउला कालिंगा सीहला य तहा' (पउम ६६, ५५)। °**कूल** न [°कूल] ईरान का किनारा, ईरान देश की सीमा (आवम)।

पारसिय वि [पारसिक] फारस देश का, 'सहसा पारसियसुओ समागओ रायपयमूले', 'पारसियकीरमिहुणं' (सुपा २६७; ३६०)।

पारसी स्त्री [पारसी] १ पारस देश की स्त्री (औप; णाया १, १—पत्र ३७; इक)। २ लिपि-विशेष, फारसी लिपि (विसे ४६४ टी)।

पारसीअ वि [पारसीक] फारस देश का निवासी (गउड)।

पाराई स्त्री [दे] लोह-कुशी-विशेष, लोहे की दंडाकार छोटी वस्तु; 'चडवेलावज्झपट्टपाराइ (? ई)छिवकसलयवरत्तनेत्तप्पहारसयतालियं-गमंगा' (पण्ह २, ३)।

पाराय देखो **पारावय** (प्राप्र)।

पारायण न [पारायण] १ पार-प्राप्ति (विसे ५६५)। २ पुराण-पाठ-विशेष; 'अधीउं (? य)समत्तपरायणो साखापारओ जाओ' (सुख २, १३)।

पारावय देखो **पारेवय** (पाअ; प्राप्र; गा ६४; कप्प ५६ टि)।

पारावर पुं [दे] गवाक्ष, वातायन (दे ६, ४३)।

पारावार पुं [पारावार] समुद्र, सागर (पात्र; कुप्र ३७०)।

पाराविअ वि [पारित] जिसको पारण कराया गया हो वह (कुप्र २१२)।

पारासर पुं [पाराशर] १ ऋषि-विशेष (सूत्र १, ३, ४, ३)। २ न. गोत्र-विशेष, जो वशिष्ठ गोत्र की एक शाखा है। ३ वि. उस गोत्र में उत्पन्न (ठा ७—पत्र ३९०)। ४ पुं. भिक्षुक। ५ कर्म-त्यागी संन्यासी; 'अंतेवि पारासरा अत्थि' (सुख २, ३१)।

पारिओसिय वि [पारितोषिक] तुष्टि-जनक दान, प्रसन्नता-सूचक दान, पुरस्कार (सम्मत्त १२२; स १९३; सुर १६, १८२; विचार १७५)।

पारिच्छा देखो **परिच्छा**; 'वयपरिणामे चिंता गिहं समप्पेमि तासि पारिच्छा' (उप १७३; उप पृ २७५)।

पारिच्छेज्ज देखो **परिच्छेज्ज** (णाया १, ८—पत्र १३२)।

पारिजाय देखो **पारिय**=पारिजात (कुमा)।

पारिट्ठावणिया स्त्री [पारिष्ठापनिकी] समिति-विशेष, मल आदि के उत्सर्ग में सम्यक् प्रवृत्ति (सम १०; औप; कप्प)।

पारिडि स्त्री [प्रावृति] प्रावरण, वस्त्र, कपड़ा; 'विक्किणइ माहमासम्मि पामरो पारिडिं बइल्लेण' (गा २३८)।

पारिणामिअ देखो **परिणामिअ** = पारिणामिक (अणु; कम्म ४, ६६)।

पारिणामिआ, **पारिणामिगी** } देखो **परिणामिआ** (आव १; णाया १, १—पत्र ११)।

पारितावणिया स्त्री [पारितापनिकी] दूसरे को परिताप—दुःख उपजाने से होनेवाला कर्म-बन्ध (सम १०)।

पारितावणी स्त्री [पारितापनी] ऊपर देखो (नव १७)।

पारितोसिअ देखो **पारिओसिय** (नाट; सुपा २७; प्रामा)।

पारित्त देखो **पारत्त** = परत्र; 'पारित्त बिइज्जओ धम्मो' (तंदु ५६)।

पारिप्पव पुं [पारिप्लव] पक्षि-विशेष (पण्ह १, १—पत्र ८)।

पारिभद्द पुं [पारिभद्र] वृक्ष-विशेष, फरहद का पेड़ (कप्पू)।

पारिय वि [पारित] पूर्ण किया हुआ (रयण १६)।

पारिय पुं [पारिजात] १ देव-वृक्ष-विशेष, कल्प-तरु-विशेष। २ फरहद का पेड़; 'कप्पूर-पारियाण य अहिअयरो मालईगंधो' (कुमा ५, १३)। ३ न. पुष्प-विशेष, फरहद का फूल जो रक्त वर्ण का और अत्यन्त शोभायमान होता है; 'सुहिए ण विढप्पइ पारियच्छि सुंडीरहं खंडइ वसइ लच्छि' (भवि)।

पारियत्त पुं [पारियात्र] देश-विशेष, 'परिब्भमंतो पत्तो पारियत्तविसयं' (कुप्र ३६६)।

पारियल्ल न [दे. परिवर्त] पहिए के पृष्ठ भाग की बाह्य परिधि (णंदि ४३)।

पारियाय देखो **पारिय**=पारिजात (सुपा ७६; से ६, ५८; महा; स ७५६)।

पारियावणिया देखो **पारितावणिया** (ठा २, १—पत्र ३६)।

पारियावणिया देखो **पारियावणिया** (स ५५१)।

पारियासिय वि [पारिवासित] बासी रखा हुआ (कस)।

पारिव्वज्ज न [पारिव्राज्य] संन्यासिपन, संन्यास (पउम ८२, २४)।

पारिव्वाई स्त्री [पारिव्राजी, परिव्राजिका] संन्यासिनी (उप पृ २७६)।

पारिव्वाय वि [पारिव्राज] संन्यासि-संबन्धी (राज)।

पारिसज्ज वि [पारिषद्य] सभ्य, सभासद (धर्मवि ६)।

पारिसाडणिया स्त्री [पारिशाटनिकी] परिशाटन—परित्याग से होनेवाला कर्म-बन्ध (आव ४)।

पारिहच्छी स्त्री [दे] माला (दे ६, ४२)।

पारिहट्टी स्त्री [दे] १ प्रतिहारी। २ आकृष्टि, आकर्षण। ३ चिर-प्रसूता महिषी, बहुत देर से ब्यायी हुई भैंस (दे ६, ७२)।

पारिहत्थिय वि [पारिहस्तिक] स्वभाव से निपुण (ठा ६—पत्र ४५१)।

पारिहारिय वि [पारिहारिक] तपस्वी-विशेष, परिहार नामक व्रत करनेवाला (कस)।

पारिहासय न [पारिहासक] कुल-विशेष, जैन मुनियों के एक कुल का नाम (कप्प)।

पारी स्त्री [दे] दोहन-भाण्ड, जिसमें दोहन किया जाता है वह पात्र-विशेष (दे ६, ३७; गउड ५७७)।

पारीण वि [पारीण] पार-प्राप्त, 'धीवर-सत्थाण पारीणो' (धर्मवि १३; सिरि ४८९; सम्मत्त ७५)।

पारुअग्ग पुं [दे] विश्राम (दे ६, ४४)।

पारुअल्ल पुं [दे] पृथुक, चिउड़ा (दे ६, ४४)।

पारुसिय देखो **फारुसिय** (आचा १, ६, ४, १ टि)।

पारुहल्ल वि [दे] मालीकृत, श्रेणी रूप से स्थापित; 'पालीबंधं च पारुहल्लोम्मिं' (दे ६, ४५)।

पारेवई स्त्री [पारापती] कबूतरी, कबूतर की मादा (विपा १, ३)।

पारेवय पुं [पारापत] १ पक्षि-विशेष, कबूतर (हे १, ८०; कुमा; सुपा ३२८)। २ वृक्ष-विशेष। ३ न. फल-विशेष (पण्ण १७)।

पारोक्ख वि [पारोक्ष] परोक्ष-विषयक, परोक्ष-संबन्धी (धर्मसं ५०२)।

पारोह देखो **परोह** (हे १, ४४; गा ५७५; गउड)।

पारोहि वि [प्ररोहिन्] प्ररोहवाला, अंकुर-वाला (गउड)।

पाल सक [पालय्] पालन करना, रक्षण करना। पालेइ (भग; महा)। वकृ. **पालयंत, पालंत, पालिंत, पालेमाण** (सुर २, ७१; सं ४६; महा; औप; कप्प)। संकृ. **पालइत्ता, पालित्ता, पालेऊण** (कप्प; महा); **पालेवि** (अप) (हे ४, ४४१)। कृ. **पालियव्व, पालेयव्व** (सुपा ४३५; ३७६; महा)।

पाल देखो **पार**=पारय्। संकृ. **पालइत्ता** (कप्प)।

पाल पुं [दे] १ कलवार, शराब बेचनेवाला। २ वि. जीर्ण, फटा-टूटा (दे ६, ७५)।

पाल पुंन [पाल] आभूषण-विशेष, 'मुरविं वा पालं वा तिसरयं वा कडिसुत्तगं वा' (औप)। २ वि. पालक, पालन-कर्ता; 'जो सयलसिंधु-सायरहो पालु' (भवि)। स्त्री. °**ला** (वव ४)।

पालंक न [पालङ्क्य] तरकारी-विशेष, पालक का शाक (बृह १)।

पालंगा स्त्री [पालङ्क्या] ऊपर देखो (उवा)।

पालंत देखो पाल = पालय्।

पालंब पुं [प्रालम्ब] १ अवलम्बन, सहारा; 'पावइ तडविडविपालंबं' (सुपा ६३५)। २ गले का आभूषण-विशेष (औप; कप्प)। ३ दीर्घ, लम्बा (औप; राय)। ४ पुंन. ध्वजा के नीचे लटकता वस्त्राञ्चल; 'ओऊलं पालंबं' (पाअ)।

पालक्का स्त्री [पालक्या] देखो पालंगा; 'वत्थुलपोरगमज्जारपोइवल्ली य पालक्का' (पण्ण १—पत्र ३४)।

पालग देखो पालय (कप्प; औप; विसे २८५६; संति १; सुर ११, १०८)।

पालण न [पालन] १ रक्षण (महा; प्रासू ३)। २ वि. रक्षण-कर्ता; 'धम्मस्स पालणी चेव' (संबोध १६; सं ६७)।

पालद्दुद्द पुं [दे] वृक्ष-विशेष (उप १०३१ टी)।

पालप्प पुं [दे] १ प्रतिसार। २ वि. विप्लुत (दे ६, ७६)।

पालय वि [पालक] रक्षक, रक्षण-कर्ता (सुपा २७६; सार्ध १०)। २ पुं. सौधर्मेन्द्र का एक आभियौगिक देव (ठा ८)। ३ श्रीकृष्ण का एक पुत्र (पव २)। ४ भगवान् महावीर के निर्वाण के दिन अभिषिक्त अवंती (उज्जैन) का एक राजा (विचार ४९२)। ५ देव-विमान-विशेष (सम २)।

पालास पुं [पालाश] पलाश-सम्बन्धी। २ न. पलाश वृक्ष का फल, किंशुक-फल (गउड)।

पालि स्त्री [पालि] १ तालाव आदि का बन्ध (सुर १३, ३२; अंत १२; महा)। २ प्रान्त भाग (गा ६४६)। देखो पाली = पाली।

पालि स्त्री [दे] १ धान्य मापने की नाप। २ पल्योपम, समय का सुदीर्घ परिमाण-विशेष (उत्त १८, २८; सुख १८, २८)।

पालिआ स्त्री [दे] खड्ग-मुष्टि, तलवार की मूठ (पाअ)।

पालिआ देखो पाली = पाली; उज्जाणपालियाहिं कविउत्तीहिं व बहुरसड्ढाहिं' (धर्मवि १३)।

पालित्त पुं [पादलिप्त] एक प्रसिद्ध जैनाचार्य (पिंड ४९८; कुप्र १७८)।

पालित्ताण न [पादलिप्तीय] सौराष्ट्र देश का एक प्राचीन नगर, जो आजकल भी 'पालिताणा' नाम से प्रसिद्ध है (कुप्र १७६)।

पालिप्तिआ स्त्री [दे] १ राजधानी। २ मूल-नीवी। ३ भण्डार, निधि। ४ भंगी, प्रकार (कप्पू)।

पालिय वि [पालित] रक्षित (ठा १०; महा)।

पालियाय देखो पारिय = पारिजात (राय ३०)।

पाली स्त्री [पाली] पंक्ति, श्रेणि (गउड)। देखो पालि।

पाली स्त्री [दे] दिशा (दे ६, ३७)।

पालीबंध पुं [दे] तालाव, सरोवर (दे ६, ४५)।

पालीहम्म न [दे] वृति, बाड़ (दे ६, ४५)।

पालेव पुं [पादलेप] पैर में किया हुआ लेप (पिंड ५०३)।

पाव सक [प्र + आप्] प्राप्त करना। पावइ (हे ४, २३६)। भवि. पाविहिसि (पि ५३१)। कर्म. पाविज्जइ (उव)। वकृ. पावंत, पावेंत (पिंग; पउम १४, ३७)। कवकृ. पावियंत, पावेज्जमाण (पण्ह १. १; अंत २०)। संकृ. पाविऊण (पि ५८६)। हेकृ. पत्तुं, पावेउं (हास्य ११६; महा)। कृ. पावणिज्ज, पाविअव्व (सुर ६, १४२; स ६८६)।

पाव देखो पव्वाल = प्लावय्। पावेइ (हे ४, ४१)।

पाव पुंन [पाप] १ अशुभ कर्म-पुद्गल, कुकर्म (आचा; कुमा; ठा १; प्रासू २५); 'जम्मंतरकए पावे पाणी मुहुत्तेण निद्दहे' (गच्छ १, ६)। २ पापी, अधर्मी, कुकर्मी (पण्ह १, १; कुमा ७, ६)। °कम्म न [°कर्मन्] अशुभ कर्म (आचा)। °कम्मि वि [°कर्मिन्] कुकर्म करनेवाला (ठा ७)। °दंड पुं [°दण्ड] नरकावास-विशेष (देवेन्द्र २६)। °पगइ स्त्री [°प्रकृति] अशुभ कर्म-प्रकृति (राज)। °यारि वि [°कारिन्] दुराचारी (पउम ६३, ४३; महा)। °समण पुं [°श्रमण] दुष्ट साधु (उत्त १७, ३; ४)। °सुमिण पुंन [°स्वप्न] दुष्ट स्वप्न (कप्प)। °सुय न [°श्रुत] दुष्ट शास्त्र (ठा ६)।

पाव पुं [दे] सर्प, साँप (दे ६, ३८)।

पाव (अप) देखो पत्त = प्राप्त (पिंग)।

पावंस वि [पापीयस्] पापी, कुकर्मी (ठा ४, ४—पत्र २६५)।

पावक्खालय न [दे. पापक्षालक] देखो पाउक्खालय (स ७४१)।

पावग वि [पावक] १ पवित्र करनेवाला (राज)। पुं. अग्नि, वह्नि (सुपा १४२)।

पावग वि [प्रापक] पहुँचानेवाला (सुपा ५००)।

पावग देखो पाव = पाप (आचा; धर्मसं ५४३)।

पावज्जा (अप) देखो पव्वज्जा (भवि)।

पावडण देखो पाय-वडण = पाद-पतन (प्राप्र; कुमा)।

पावड्ढि देखो पारद्धि (सिरि ११०८; ११११०)।

पावण वि [पावन] पवित्र करनेवाला (अच्चु ४७; समु १५०)।

पावण न [प्लावन] १ पानी का प्रवाह। २ सराबोर करना (पिंड २४)।

पावण न [प्रापण] १ प्राप्ति, लाभ (सुर ४, १११; उपपं ७)। २ योग की एक सिद्धि; 'पावणसत्तीए छिवइ मेरुसिरमंगुलीए मुणी' (कुप्र २७७)।

पावद्धि देखो पारद्धि (धर्मवि १४८)।

पावय देखो पाव = पाप (प्रासू ७५)।

पावय वि [प्रावृत] आच्छादित, ढका हुआ (सूअ २, ७; ३)।

पावय पुंन [दे] वाद्य-विशेष, गुजराती में 'पावो' (पउम ५७, २३)।

पावय देखो पावग = पावक (उप ७२८ टी; कुप्र २८३; सुपा ४; पाअ)।

पावयण देखो पवयण (हे १, ४४; उवा; णाया १, १३)।

पावयणि वि [प्रवचनिन्] सिद्धान्त का जानकार, सैद्धान्तिक (चेइय १२८)।

पावयणिय वि [प्रावचनिक] ऊपर देखो (सम ६०)।

पावरअ देखो पावारय (स्वप्न १०४)।

पावरण पुं [प्रावरण] एक म्लेच्छ जाति (मृच्छ १५२)।

पावरण न [प्रावरण] वस्त्र, कपड़ा (हे १, १७५)।

पावरिय वि [प्रावृत] आच्छादित (कुप्र ३८)।

पावस देखो पाउस (कुप्र ११७)।

पावा स्त्री [पापा] नगरी-विशेष, जो आजकल भी बिहार के पास पावापुरी के नाम से प्रसिद्ध है (कप्प; ती ३; पंचा १६, १७; पव ३४; विचार ४६)।

पावाइ वि [प्रवादिन्] वाचाट, दार्शनिक (सूअ २, ६, ११)।

पावाइअ वि [प्राव्राजिक] संन्यासी (रयण २२)।

पावाइअ वि [प्रावादिक] देखो **पावाइ** (आचा)।

पावाइअ } वि [प्रावादुक] वाचाट, दार्शनिक (सूअ १, १, ३, १३; २, २, ८०; पि २६५)।
पावादुय }

पावार पुं [प्रावार] १ रूँआवाला कपड़ा। २ मोटा कम्बल (पव ८४)।

पावारय देखो **पारय** = प्रावारक (हे १ २७१; कुमा)।

पावालिआ स्त्री [प्रपापालिका] प्रपा या प्याऊ पर नियुक्त स्त्री (गा १६१)।

पावासु } वि [प्रवासिन्, °क] प्रवास करनेवाला (पि १०५; हे १, ९५; कुमा)।
पावासुअ }

पाविअ वि [प्राप्त] लब्ध, मिला हुआ (सुर ३, १६; स ६८६)।

पाविअ वि [प्रापित] प्राप्त करवाया हुआ (सण; नाट—मृच्छ २७)।

पाविअ वि [प्लावित] सराबोर किया हुआ, खूब भिजाया हुआ (कुमा)।

पाविट्ठ वि [पापिष्ठ] अत्यन्त पापी (उव ७२८ टी; सुर १, २१३; २, २०५; सुपा १६६; श्रा १४)।

पावीढ देखो **पाय-वीढ** (पउम ३, १; हे १, २७०; कुमा)।

पावीयंस देखो **पावंस** (पि ४०६; ४१४)।

पावुअ वि [प्रावृत] आच्छादित (संक्षि ४)।

पावेज्जमाण देखो **पाव** = प्र + आप।

पावेस वि [प्रावेश्य] प्रवेशोचित, प्रवेश के लायक (औप)।

पावेस पुं [प्रावेश] वस्त्र के दोनों तरफ लटकता रुंछा (णाया १, १)।

पास सक [दृश्] १ देखना। २ जानना। पासइ, पासेइ (कप्प)। पासिमं = 'पश्य' (आचा १, ३, ३, ५)। कर्म. पासिज्जइ (पि ७०)। वकृ. **पासंत, पासमाण** (स ७५; कप्प)। संकृ. **पासिउं, पासित्ता, पासित्ताणं, पासिया** (पि ४६५; कप्प; पि ५८३; महा)। हेकृ. **पासित्तए, पासिउं** (पि ५७८; ५७७)। कृ. **पासियव्व** (कप्प)।

पास पुं [पार्श्व] १ वर्तमान अवसर्पिणी-काल के तेईसवें जिन-देव (सम १३; ४३)। २ भगवान् पार्श्वनाथ का अधिष्ठायक यक्ष (संति ८)। ३ न. कन्धा के नीचे का भाग, पाँजर (णाया १, १६)। ४ समीप, निकट (सुर ४, १७६)। °**ावच्चिज्ज** वि [°ापत्यीय] भगवान् पार्श्वनाथ की परम्परा में संजात (भग)।

पास पुं [पाश] फाँसा, बन्धन-रज्जू (सुर ४, ३३७; औप; कुमा)।

पास न [दे] १ आँख। २ दाँत। ३ कुन्त, प्रास। ४ वि. विशोभ, कुडौल, शोभा-हीन (दे ६, ७५)। ५ पुंन. अन्य वस्तु का अल्प-मिश्रण; 'निच्चुण्णो तंबोलो पासेण विणा न होइ जह रंगो' (भाव २)।

°**पास** वि [°पाश] अपसद, निकृष्ट, जघन्य, कुत्सित; 'एस पासंडियपासो किं करिस्सइ' (सम्मत्त १०२)।

पासंगिअ वि [प्रासङ्गिक] प्रसंग-संबन्धी, आनुषंगिक (कुम्मा २७)।

पासंड न [पासण्ड] १ पाखण्ड, असत्य धर्म, धर्म का ढोंग (ठा १०; णाया १, ८; उवा; आव ६)। २ व्रत (अणु)।

पासंडि } वि [पासण्डिन्, °क] १ पाखंडी, लोक में पूजा पाने के लिए धर्म का ढोंग रचनेवाला (महानि ४; कुप्र २७६; सुपा ९९; १०६; १९२)। २ पुं. व्रती, साधु, मुनि; 'पव्वइए अणगारे पासंडे (? डी) चरग तावसे भिक्खू। परिवाइए य समणे' (दसनि २—गाथा १६४)।
पासंडिय }

पासंदण न [प्रस्यन्दन] झरन, टपकना (कुम्मा १)।

पासग वि [दर्शक] देखनेवाला (आचा)।

पासग पुं [पाशक] १ फाँसा, बन्धन-रज्जु (उप पृ १३; सुर ४, २५०)। २ पासा, जुआ खेलने का उपकरण-विशेष (जं ३)।

पासग न [प्राशक] कला-विशेष (औप)।

पासण न [दर्शन] अवलोकन, निरीक्षण (पिंड ४७५; उप ९७७; ओघ ५४; सुपा ३७)।

पासणया स्त्री. ऊपर देखो (ओघ ६३; उप १४८; णाया १, १)।

पासणिअ वि [दे] साक्षी (दे ६, ४१)।

पासणिअ वि [प्राश्निक] प्रश्न-कर्ता (सूअ १, २, २, २८; आचा)।

पासत्थ वि [पार्श्वस्थ] १ पार्श्व में स्थित, निकट-स्थित (पउम ९८, १८; स २६७; सूअ १, १, २, ५)। २ शिथिलाचारी साधु (उप ८३३ टी; णाहा १, ५; ६,—पत्र २०६; साधं ८८)।

पासत्थ वि [पाशस्थ] पाश में फँसा हुआ, पाशित (सूअ १, १, २, ५)।

पासल्ल न [दे] १ द्वार (दे ६, ७६)। २ वि. तिर्यक्, वक्र (दे ६, ७६; से ६; ६२; गउड)।

पासल्ल देखो **पास** = पार्श्व (से ६, ३८, गउड)।

पासल्ल अक [तिर्यञ्च्, पार्श्वाय्] १ वक्र होना। २ पार्श्व घुमाना; 'पासल्लंति महिहरा' (से ६, ४५)। वकृ. **पासल्लंत** (से ६, ४१)।

पासल्लइअ देखो **पासल्लिअ** (से ६, ७७)।

पासल्लि वि [पार्श्विन्] पार्श्व-शयित, 'उत्ताण-गपासल्ली नेसज्जी वावि ठाण ठाइत्ता' (पव ६७; पंचा १८, १५)।

पासल्लिअ वि [पार्श्वित, तिर्यक्त] १ पार्श्व में किया हुआ। २ टेढ़ा किया हुआ (गउड; पि ५९५)।

पासवण न [प्रस्रवण] मूत्र, पेशाब (सम १०; कस; कप्प; उवा; सुपा ६२०)।

पासाईय देखो **पासादीय** (सम १३७; उवा)।

पासाकुसुम न [पाशाकुसुम] पुष्प-विशेष, 'छप्पअ गम्मसु सिसिरं पासाकुसुमेहिं ताव, मा मरसु' (गा ८१६)।

पासाण पुं [पाषाण] पत्थर (हे १, २६२; कुमा)।
पासाणिअ वि [दे] साक्षी (दे ६, ४१)।
पासाद देखो पासाय (औप; स्वप्न ५६)।
पासादिय वि [प्रसादित] १ प्रसन्न किया हुआ। २ न. प्रसन्न करना (णाया १, ६—पत्र १६५)।
पासादीय वि [प्रासादीय] प्रसन्नता-जनक (उवा; औप)।
पासादीय वि [प्रासादित] महलवाला, प्रासाद-युक्त (सूअ २, ७, १ टी)।
पासाय पुंन [प्रासाद] महल, हर्म्य (पाअ; पउम ८०, ४)। °वडिंसय पुं [°ावतंसक] श्रेष्ठ महल (भग; औप)।
पासायवडेंसग पुं [प्रासादावतंसक] श्रेष्ठतम महल, प्रासाद-विशेष (राय ६६)।
पासासा स्त्री [दे] भल्ली, छोटा भाला (दे ६, १४)।
पासाव } पुं [दे] गवाक्ष, वातायन, झरोखा
पासावय } (षड्; दे ६, ४३)।
पासि वि [पार्श्विन्] पार्श्वस्थ, शिथिलाचारी साधु; 'पासिसारिच्छो' (संबोध ३५)।
पासिद्धि देखो पसिद्धि (हे १, ४४)।
पासिम वि [दृश्य] दर्शनीय, ज्ञेय (आचा)।
पासिमं देखो पास = दृश्।
पासिय वि [पाशिक] फांसे में फँसानेवाला (पण्ह १, २)।
पासिय वि [स्पृष्ट] छुआ हुआ (आचा—पासिम)।
पासिय वि [पाशित] पाश-युक्त (राज)।
पासिया स्त्री [पाशिका] छोटा पाश (महा)।
पासिया देखो पास = दृश्।
पासिल्ल वि [पार्श्विक] १ पास में रहनेवाला। २ पार्श्वशायी (पव ५४; तंदु १३; भग)।
पासी स्त्री [दे] चूड़ा, चोटी (दे ६, ३७)।
पासु देखो पंसु (हे १, २६; ७०)।
पासुत्त देखो पसुत्त (गा ३२४; सुर २, ८२; ६, १६८; हे १, ४४; कुप्र २५०)।
पासेइय वि [प्रस्वेदित] प्रस्वेद-युक्त, पसीना-वाला (भवि)।
पासेल्लिय वि [पार्श्ववत्] पार्श्व-शायी, बगल में सोनेवाला (राज)।

पासोअल्ल देखो पासल्ल = तिर्यञ्च्। वकृ. पासोअल्लंत (से ६, ४७)।
पाह (अप) सक [प्र + अर्थय्] प्रार्थना करना। पाहसि (पि ३५६)।
पाहंड देखो पासंड (पि २६५)।
पाहण देखो पाहाण; 'महंतं पाहणं तयं' (श्रा १२); 'चउकोणा समतीरा पाहणबद्धा य निम्मविया' (धर्मवि ३३; महा; भवि)।
पाहणा देखो पाणहा; 'तेगिच्छं पाहणा पाए' (दस ३, ४)।
पाहण्ण } न [प्राधान्य] प्रधानता, प्रधानपन
पाहन्न } (प्रासू ३२; ओघ ७७२)।
पाहर सक [प्रा + हृ] प्रकर्ष से लाना, ले आना। पाहराहि (सूअ, ४, २, ६)।
पाहरिय वि [प्राहरिक] पहरेदार (स ५२५; सुपा ३१२; ४५५)।
पाहाउय देखो पाभाइय (सुपा ३५; ५५६)।
पाहाण पुं [पाषाण] पत्थर (हे १, २६२; महा)।
पाहिज्ज देखो पाहेज्ज (पाअ)।
पाहुड न [प्राभृत] १ उपहार, पाहुर, भेंट (हे १,१३१; २०६; विपा १, ३; कर्पूर २७, कप्पू; महा; कुमा)। २ जैन ग्रन्थांश-विशेष, परिच्छेद, अध्ययन (सुज्ज १; २; ३)। ३ प्राभृत का ज्ञान (कम्म १, ७)। °पाहुड न [°प्राभृत] १ ग्रन्थांश-विशेष, प्राभृत का भी एक अंश (सुज्ज १, १; २)। २ प्राभृत-प्राभृत का ज्ञान (कम्म १, ७)। °पाहुडसमास पुंन [°प्राभृतसमास] अनेक प्राभृत-प्राभृतों का ज्ञान (कम्म १, ७)। °समास पुंन [°समास] अनेक प्राभृतों का ज्ञान (कम्म १, ७)।
पाहुड न [प्राभृत] १ क्लेश, कलह (कस; बृह १)। २ दृष्टिवाद के पूर्वों का अध्याय-विशेष (अणु २३४)। ३ सावद्य कर्म, पाप-क्रिया (आचा २, २, ३, १; वव १)। °छेय पुं [°च्छेद] बारहवें अंग-ग्रन्थ के पूर्वों का प्रकरण-विशेष (वव १)। °पाहुडिआ स्त्री [°प्राभृतिका] दृष्टिवाद का प्रकरण-विशेष (अणु २३४)।
पाहुडिआ स्त्री [प्राभृतिका] १ दृष्टिवाद का छोटा अध्याय (अणु २३४)। २ अर्चनिका, विलेपन आदि (वव ४)।

पाहुडिआ स्त्री [प्राभृतिका] १ भेंट, उपहार (पव ६७)। २ जैन मुनि की भिक्षा का एक दोष, विवक्षित समय से पहले—मन में संकल्पित भिक्षा, उपहार रूप से दी जाती भिक्षा (पंचा १३, ५; पव ६७; ठा ३, ४—पत्र १५६)।
पाहुण वि [दे] विक्रेय, बेचने की वस्तु (दे ६, ४०)।
पाहुण } पुं [प्राघुण, °क] अतिथि, पाहुना,
पाहुणग } मेहमान (ओघभा ५३; सुर ३,८५;
पाहुणय } महा; सुपा १३; कुप्र ४२; औप; काल)।
पाहुणिअ पुं [प्राघुणिक] अतिथि, पहुना, मेहमान (काप्र २२४)।
पाहुणिअ पुं [प्राघुनिक] ग्रह-विशेष, ग्रहा-धिष्ठायक देव-विशेष (ठा २, ३)।
पाहुणिज्ज वि [प्राहवनीय] प्रकृष्ट संप्रदान, जिसको दान दिया जाय वह (णाया १, १ टी—पत्र ४)।
पाहुण्ण } न [प्राघुण्य, °क] आतिथ्य,
पाहुण्णग } अतिथि का सत्कार, पहुनाई;
पाहुण्णय } 'कयं मंजरीए पाहुण(? ण्ण)ं' (कुप्र ४२; उप १०३१ टी)।
पाहेअ न [पाथेय] रास्ते में व्यय करने की सामग्री, मुसाफिरी में खाने का भोजन (उत्त १६, १८; महा; अभि ७६; स ६८; सुपा ४२४)।
पाहेज्ज न [दे. पाथेय] ऊपर देखो (दे ६, २४)।
पाहेणग (दे) देखो पहेणग (पिंड २८८)।
पि देखो अवि (हे २, २१८; स्वप्न ३७; कुमा; भवि)।
पिअ सक [पा] पीना। पिअइ (हे ४, १०; ४१६; गा १६१)। भूका. अपिइत्थ (आचा)। वकृ. पिअंत, पियमाण (गा १३ अ; २४६; से २, ५; विपा १, १)। संकृ. पिच्चा, पेच्चा, पिएऊण (कप्प; उत्त १७, ३; धर्मवि २५), पिएविणु (अप) (सण)। प्रयो. पियावए (दस १०, २)।
पिअ पुं [प्रिय] १ पति, कान्त, स्वामी (कुमा)। २ वि. इष्ट, प्रीति-जनक (कुमा)। °अम पुं [°तम] पति, कान्त (गा १६;

कुमा)। °अमा स्त्री [°तमा] पत्नी, भार्या (कुमा)। °अर वि [°कर] प्रीति-जनक (नाट—पिंग)। °कारिणी स्त्री [°कारिणी] भगवान् महावीर की माता का नाम, त्रिशला देवी (कप्प)। °गंथ पुं [°ग्रन्थ] एक प्राचीन जैन मुनि, आचार्य सुस्थित और सुप्रतिबद्ध का एक शिष्य (कप्प)। °जाअ वि [°जाय] जिसको पत्नी प्रिय हो वह (गा ५१८)। °जाआ स्त्री [°जाया] प्रेम-पात्र पत्नी (गा १६६)। °दंसण वि [°दर्शन] १ जिसका दर्शन प्रिय—प्रीतिकर हो वह (णाया १, १—पत्र १६; औप)। २ पुं. देव-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७६)। °दंसणा स्त्री [°दर्शना] भगवान् महावीर की पुत्री का नाम (आवम)। °धम्म वि [°धर्मन्] १ धर्म की श्रद्धावाला (णाया १, ८)। २ पुं. श्री रामचन्द्र के साथ जैन दीक्षा लेनेवाला एक राजा (पउम ८५, ५)। °भाउग पुं [°भ्रातृ] पति का भाई (उप ६४८ टी)। °भासि वि [°भाषिन्] प्रिय-वक्ता (महा ५८)। °मित्त पुं [°मित्र] १ एक जैन मुनि, जो अपने पीछले भव में पाँचवाँ वासुदेव हुआ था (पउम २०, १७१)। °मेलय वि [°मेलक] १ प्रिय का मेल—संयोग करानेवाला। २ न. एक तीर्थ (स ५५१)। °उय वि [°ायुष्क] जीवित-प्रिय (आचा)। °यग वि [°ायत, °ात्मक] आत्म-प्रिय (आचा)।

पिअ देखो पीअ; 'पीआपीअं पिआपिअं' (प्राप्र; सण; भवि)।

पिअ° देखो पिउ (प्रासू ७६; १०८)। °हर न [°गृह] पिता का घर, पीहर, नैहर, मैका (पउम १७, ७)।

पिअआ देखो पिआ (श्रा १६)।

पिअइउ (अप) वि [प्रीणयितृ] प्रीति उप-जानेवाला, खुश करनेवाला (भवि)।

पिअउल्लिय (अप) देखो पिआ (भवि)।

पिअंकर वि [प्रियंकर] १ अभीष्ट-कर्ता, इष्ट-जनक (उत्त ११, १४)। २ पुं. एक चक्रवर्त्ती राजा (उप ६७२)। ३ रामचन्द्र के पुत्र लव का पूर्व जन्म का नाम (पउम १०४, २६)।

पिअंगु पुं [प्रियङ्गु] १ वृक्ष-विशेष, प्रियंगु, ककूंदनी का पेड़ (पाअ; औप; सम १५२)। २ कंगु, मालकाँगनी का पेड़; 'पियंगुणो कंगू' (पाअ)। ३ स्त्री. एक स्त्री का नाम (विवा १, १०)। °लइया स्त्री [°लतिका] एक स्त्री का नाम (महा)।

पिअंवय वि [प्रियंवद] मधुर-भाषी (सुर १, ६५; ४, ११८; महा)।

पिअंवाइ वि [प्रियवादिन्] ऊपर देखो (उत्त ११, १४; सुख ११, १४)।

पिअण न [दे] दुग्ध, दूध (दे ६, ४८)।

पिअण न [पान] पीना, 'तुहयन्नपियणनिरयं' (धर्मवि १२५; सुख ३, १; उप १३६ टी; स २६३; सुपा २४५; चेइय ५७०)।

पिअणा स्त्री [पृतना] सेना-विशेष, जिसमें २४३ हाथी, २४३ रथ, ७२६ घोड़े और १२१५ प्यादें हो वह लश्कर (पउम ५६, ६)।

पिअमा स्त्री [दे] प्रियंगु वृक्ष (दे ६, ४६; पाअ)।

पिअमाहवी स्त्री [दे] कोकिला, पिकी (दे ६, ५१; पाअ)।

पिअय पुं [प्रियक] वृक्ष-विशेष, विजयसार का पेड़ (औप)।

पिअर पुंन [पितृ] १ माता-पिता, माँ-बाप; 'सुणंतु निण्णयमिमं पियरा', 'पियराइं रुयं-ताइं' (धर्मवि १२२)। २ पुं. पिता, बाप (प्राप्र)।

पिअरंज सक [भञ्ज्] भाँगना, तोड़ना। पिअरंजइ (प्राकृ. ७४)।

पिअल (अप) देखो पिअ = प्रिय (पिंग)।

पिआ स्त्री [प्रिया] पत्नी, कान्ता, भार्या (कुमा; हेका ६६)।

पिआमह पुं [पितामह] १ ब्रह्मा, चतुरानन (से १,१७; पाअ; उप ५६७ टी; स २३१)। २ पिता का पिता, दादा (उव)। °तणअ पुं [°तनय] जाम्बवान्, वानर-विशेष (से ४, ३७)। °त्थ न [°ास्त्र] अस्त्र-विशेष, ब्रह्मास्त्र (से १५, ३७)।

पिआमही स्त्री [पितामही] पिता की माता, दादी (सुपा ४७२)।

पिआर (अप)। वि [प्रियतर] प्यारा (कुप्र ३२; भवि)।

पिआरी (अप) स्त्री [प्रियतरा] प्यारी, प्रिया, पत्नी (पिंग)।

पिआल पुं [प्रियाल] वृक्ष-विशेष, पियाल, चिरौंजी का पेड़ (कुमा, पाअ; दे ३, २१; पण्ण १)।

पिआलु पुं [प्रियालु] वृक्ष-विशेष, खिन्नी, खिरनी का गाछ (उर २, १३)।

पियासा देखो पिवासा (गा ८१४)।

पिइ देखो पीइ; 'तेणं पिइए सिट्ठं' (पउम ११, १४)।

पिइ पुं [पितृ] १ पिता, बाप (उप ७२८ टी)। २ मघा-नक्षत्र का अधिष्ठायक देव (सुज्ज १०, १२; वि ३६१)। °मेह पुं [°मेध] यज्ञ-विशेष, जिसमें बाप का होम किया जाय वह यज्ञ (पउम ११, ४२)। °वण न [°वन] श्मशान (सुपा ३५६)। °हर न [°गृह] पिता का घर, पीहर (पउम १८, ७; सुर ६, २३६)। देखो पिउ।

पिइज्ज पुं [पितृव्य] चाचा, बाप का भाई; 'सुपासो वीरजिणपिइज्जो (? ज्ज)' (विचार ४७८)।

पिइय वि [पैतृक] पिता का, पितृ-संबन्धी (भग)।

पिउ, पिउअ } पुं [पितृ] १ बाप, पिता (सुर १, १७६; औप; उव; हे १, १३१)। २ पुंन. माँ बाप, माता-पिता; 'अन्नया मह पिऊणि गामं पत्ताइं' (धर्मवि १४७ सुपा ३२६)। °कम्म पुं [°क्रम] पितृ-वंश, पितृ-कुल (कुमा)। °कुल न [°कुल] पिता का वंश (षड्)। °घर न [°गृह] पिता का घर, पीहर (सुपा ६०१)। °च्छा, °च्छी स्त्री [°ष्वसृ] पिता की बहिन, फूआ, बूआ, फूफू (गा ११०; हे २, १४२; पाअ; णाया १; १६), 'कोंति पिउत्थि (? च्छि) सक्कारेइ' (णाया १, १६—पत्र २१६)। °पिंड पुं [°पिण्ड] मृतक-भोजन, श्राद्ध में दिया जाता भोजन (आचा २, १, २)। °भगिणी स्त्री [°भगिनी] फूफी, पिता की बहिन (सुर ३, ८२)। °वइ पुं [°पति] यम, यमराज (हे १, १३४)। °वण न [°वन] श्मशान (पउम १०५, ५१; पाअ; हे १, १३४)। °सिआ स्त्री [°ष्वसृ] फूफी (हे

२, १४२; कुमा) °सेणकण्हा स्त्री [°सेनकृष्णा] राजा श्रेणिक की एक पत्नी (अंत २५)। °सिरिआ देखो °सिआ (विपा १, ३—पत्र ४१)। °हर देखो °घर (सुर १०, १६; भवि)।

पिउअ देखो पिइअ (राज)।

पिउआ स्त्री [दे. पितृष्वसृ] फूफी, पिता की बहिन (षड्)।

पिउआ } स्त्री [दे] सखी, वयस्या (षड् १७५; पिउच्छा } २१०)।

पिउली स्त्री [दे] १ कर्पास, कपास। २ तूललतिका, रूई की पूनी (दे ६, ७८)।

पिउल्ल देखो पिउ (हे २, १६४)।

पिंकार पुं [अपिकार] १ 'अपि' शब्द। २ अपि शब्द की व्याख्या (ठा १०—पत्र ४६५)।

पिंखा स्त्री [प्रेङ्खा] हिंडोला, डोला (पाअ)।

पिंखोल सक [प्रेङ्खोलय्] झूलना। वकृ. पिंखोलमाण (राज)।

पिंग देखो पंग = ग्रह् (कुमा ७, ४६)।

पिंग पुं [पिङ्ग] १ कपिश वर्ण, पीत वर्ण। २ वि. पीला, पीत रँग का (पाअ; कुमा; गमि १४)। ३ पुंस्त्री. कपिंजल पक्षी। स्त्री. °गा (सूअ १, ३, ४, १२)।

पिंगंग पुं [दे] मर्कट, बन्दर (दे ६, ४८)।

पिंगल पुं [पिङ्गल] १ नील-पीत वर्ण। २ वि. नील-मिश्रत पीत-वर्णवाला (कुमा; ठा ४, २; औप)। ३ पुं. ग्रह-विशेष (ठा २, ३)। ४ एक यक्ष (सिरि ६६६)। ५ चक्रवर्त्ती का एक निधि, आभूषणों की पूर्ति करनेवाला एक निधान (ठा ६; उप ६८६ टी)। ६ कृष्ण पुद्गल-विशेष (सुज्ज २०)। ७ प्राकृत-पिंगल का कर्त्ता एक कवि (पिंग)। ८ एक जैन उपासक (भग)। ६ न. प्राकृत का एक छन्द-ग्रंथ (पिंग)। °कुमार पुं [°कुमार] एक राजकुमार, जिसने भगवान् सुपार्श्वनाथ के समीप दीक्षा ली थी (सुपा ६६)। °क्ख वि [°ाक्ष] १ नीली-पीली आँखवाला (ठा ४, २—पत्र २०८)। २ पुं. पक्षि-विशेष (पराह १, १; औप)।

पिंगलायण न [पिङ्गलायन] १ गोत्र-विशेष, जो कौत्स गोत्र की एक शाखा है। २ पुंस्त्री. उस गोत्र में उत्पन्न (ठा ७)।

पिंगलिअ वि [पिङ्गलित] नीला-पीला किया हुआ (से ४, १८; गउड; सुपा ८०)।

पिंगलिअ वि [पैङ्गलिक] पिंगल-संबन्धी (पिंग)।

पिंगा देखो पिंग।

पिंगायण न [पिङ्गायन] मघा-नक्षत्र का गोत्र (इक)।

पिंगिअ वि [गृहीत] ग्रहण किया हुआ (कुमा)।

पिंगिम पुंस्त्री [पिङ्गिमन्] पिंगता, पीलापन (गउड)।

पिंगीकय वि [पिङ्गीकृत] पीला किया हुआ, 'घणथणघुसिणिक्कुप्पंकपिंगीकय व्व' (लहुअ ७)।

पिंगुल पुं [पिङ्गुल] पक्षि-विशेष (पराह १, १—पत्र ८)।

पिंचु पुंस्त्री [दे] पक्व करीर, पक्का करील (दे ६, ४६)।

पिंछ } देखो पिच्छ (आचा; गउड, सुपा पिंछड } ६४१)।

पिंछी स्त्री [पिच्छी] साधु का एक उपकरण, 'नवि लेइ जिणा पिंछीं (?छिं)' (विचार १२८)।

पिंछोली स्त्री [दे] मुँह के पवन से बजाया जाता तृण-मय वाद्य-विशेष (दे ६, ४७)।

पिंज सक [पिञ्ज्] पीजना, रूई का धुनना। वकृ. पिंजंत (पिंड ५७४; ओघ ४६८)।

पिंजण न [पिञ्जन] पीजना (पिंड ६०३; दे ७, ६३)।

पिंजर पुं [पिञ्जर] १ पीत-रक्त वर्ण, रक्तपीत मिश्रित रँग। २ वि. रक्त-पीत वर्णवाला (गउड; कुप्र ३०७)।

पिंजर सक [पिञ्जरय्] रक्त-मिश्रित पीत-वर्ण-युक्त करना। वकृ. पिंजरयंत (पउम ६२, ६)।

पिंजरण न [पिञ्जरण] रक्त-मिश्रित पीत-वर्णवाला करना (सण)।

पिंजरिअ वि [पिञ्जरित] पिञ्जर वर्णवाला किया हुआ (हम्मीर १२, गउड; सुपा ५२४)।

पिंजरुड पुं [दे] पक्षि-विशेष, भारुण्ड पक्षी, जिसके दो मुँह होते हैं (दे ६, ५०)।

पिंजिअ वि [पिञ्जित] पीजा हुआ (दे ७, ६४)।

पिंजिअ वि [दे] विधुत (दे ६, ४६)।

पिंड सक [पिण्डय्] १ एकत्रित करना, संश्लिष्ट करना। २ अक. एकत्रित होना, मिलना। पिंडेइ, पिंडयए (उव; पिंड ६६)। संकृ. पिण्डिऊण (कुमा)।

पिंड पुं [पिण्ड] १ कठिन द्रव्यों का संश्लेष (पिण्डभा २)। २ समूह, संघात (ओघ ४०७; विसे ६००)। ३ गुड़ वगैरह की बनी हुई गोल वस्तु, वर्तुलाकार पदार्थ (पराह २, ५)। ४ भिक्षा में मिलता आहार, भिक्षा (उव; ठा ७)। ५ देह का एक देश। ६ देह, शरीर। ७ घर का एक देश। ८ अन्न का गोला जो पितरों के उद्देश से दिया जाता है। ९ गन्ध-द्रव्य विशेष, सिह्लक। १० जपा-पुष्प। ११ कवल, ग्रास। १२ गज-कुम्भ। १३ मदनक वृक्ष, दमनक का पेड़। १४ न. आजीविका। १५ लोहा। १६ श्राद्ध, पितरों को दिया जाता दान। १७ वि. संहत। १८ घन, निबिड़ (हे १, ८५)। °कप्पिअ वि [°कल्पिक] सर्वथा निर्दोष भिक्षा लेनेवाला (वव ३)। °गुला स्त्री [°गुला] गुड़-विशेष, इक्षुरस का विकार-विशेष, शक्कर बनने के पहले की अवस्था-विशेष (पिंड २८३)। °घर न [°गृह] कर्दम से बना हुआ घर (वव ४)। °त्थ पुं [°स्थ] जिन भगवान् की अवस्था-विशेष; 'न पिंडत्थपयत्थावत्थंतरभावणा सम्मं' (संबोध २)। °त्थ पुं [°ार्थ] समुदायार्थ (राज)। °दाण न [°दान] पिण्ड देने की क्रिया, श्राद्ध (धर्मवि २६)। °पयडि स्त्री [°प्रकृति] अवान्तर भेदवाली प्रकृति (कम्म १, २५)। °वद्धण न [°वर्धन] आहार-वृद्धि, कवल-वृद्धि, अन्न-प्राशन (अंत)। °वद्धावण न [°वर्धन] आहार बढ़ाना (औप) °वाय पुं [°पात] भिक्षा-लाभ, आहार-प्राप्ति (ठा ५, १, कस)। °वास पुं [°वास] सुहृज्जन (भवि)। °विसुद्धि, °विसोहि स्त्री [°विशुद्धि] भिक्षा की निर्दोषता (अंत; ओघभा ३)।

पिंडग पुं [पिण्डक] ऊपर देखो (कस)।

पिंडण न [पिण्डन] १ द्रव्यों का एकत्र संश्लेष (पिंडभा २)। २ ज्ञानावरणीयादि कर्म (पिंड ६६)।

पिंडणा स्त्री [पिण्डना] १ समूह (श्रोघ ४०७)। २ द्रव्यों का परस्पर संयोजन (पिंड २)।

पिंडय देखो पिंड (श्रोघभा ३३)।

पिंडरय न [दे] दाडिम, अनार (दे ६, ४८)।

पिंडलइय वि [दे] पिण्डीकृत, पिण्डाकार किया हुआ (दे ६, ५४; पाअ)।

पिंडलग न [दे] पटलक, पुष्प का भाजन (ठा ७)।

पिंडवाइअ वि [पिण्डपातिक, पैण्डपातिक] भक्त-लाभवाला, जिसको भिक्षा में आहार की प्राप्ति हो वह (ठा ५, १; कस; औप; प्राकृ ६)।

पिंडार पुं [पिण्डार] गोप, ग्वाला (गा ७३१)।

पिंडालु पुं [पिण्डालु] कन्द-विशेष (श्रा २०)।

पिंडि° देखो पिंडी (भग; णाया १, १ टी—पत्र ५)।

पिंडिम वि [पिण्डिम] १ पिण्ड से बना हुआ, बहल (पण्ह २, ५—पत्र १५०)। २ पुद्गल-समूहरूप, संघाताकार (णाया १, १ टी—पत्र ५; औप)।

पिंडिय वि [पिण्डित] १ एकत्रित, इकट्ठा किया हुआ (सुअनि १४०; पंचा १४, ७; महा)। २ गुणित (औप)।

पिंडिया स्त्री [पिण्डिका] १ पिण्डी, पिंडली, जानू के नीचे का मांसल अवयव (महा)। २ वर्तुलाकार वस्तु (औप)। देखो पिंडी।

पिंडी स्त्री [पिण्डी] १ लुम्बी, गुच्छा (औप; भग; णाया १, १; उप पृ ३६)। २ घर का आधार-भूत काष्ठ-विशेष, पीढ़ा; 'विघडियपिंडीबंधसधिपरिलंबिवालणिम्मोआ' (गउड)। ३ वर्तुलाकार वस्तु, गोला; 'पिन्नागपिंडी' (सूअ २, ६, २६)। ४ खर्जूर-विशेष (नाट—शकु ३५)। देखो पिंडिया।

पिंडी स्त्री [दे] मञ्जरी (दे ६, ४७)।

पिंडीर न [दे. पिण्डीर] दाड़िम, अनार (दे ६; ४८)।

पिंडेसणा स्त्री [पिण्डैषणा] भिक्षा ग्रहण करने की रीति (ठा ७)।

पिंडेसिय वि [पिण्डैषिक] भिक्षा की खोज करनेवाला (भग ६, ३३)।

पिंडोलग, पिंडोलगय, पिंडोलय वि [पिण्डावलगक] भिक्षा से निर्वाह करनेवाला, भिक्षा का प्रार्थी, भिक्षु (आचा; उत्त ५, २२; सुख ५, २२; सूअ १, ३, १, १०)।

पिंध (अप) सक [पि + धा] ढकना। पिंधउ (पिंग)। संकृ. पिंधउ (पिंग)।

पिंधण (अप) न [पिधान] ढकना (पिंग)।

पिंसुली स्त्री [दे] मुँह से पवन भरकर बजाया जाता एक प्रकार का तृण-वाद्य (दे ६, ४७)।

पिक पुंस्त्री [पिक] कोकिल पक्षी (पिंग)। स्त्री. °की (दे ६, ५१)।

पिक्क देखो पक्क = पक्व (हे १, ४७; पाअ; गा ५६५)।

पिक्ख सक [प्र + ईक्ष्] देखना। पिक्खइ (भवि)। वकृ. पिक्खंत (भवि)। कृ. पिक्खेयव्व (सुर ११, १३३)।

पिक्खग वि [प्रेक्षक] निरीक्षक, द्रष्टा (ती १०; धर्मवि १५)।

पिक्खण न [प्रेक्षण] निरीक्षण (राज)।

पिक्खिय वि [प्रेक्षित] दृष्ट (पि ३९०)।

पिग देखो पिक (कुमा)।

पिचु पुं [पिचु] कार्पास, रुई (दे ६, ७८)। °लया स्त्री [°लता] पूनी, रूई की पूनी (दे ६, ५६)।

पिचुमंद पुं [पिचुमन्द] निम्ब वृक्ष, नीम का पेड़ (मोह १०३)।

पिच्च, पिच्चा अ [प्रेत्य] पर-लोक, आगामी जन्म (श्रा १४; सुपा ५०६; सूअ १, १, १, ११)। देखो पेच्च।

पिच्चा देखो पिअ = पा।

पिच्चिय वि [दे. पिच्चित] कूटी हुई छाल (ठा ५, ३—पत्र ३३८)।

पिच्छ सक [दृश्, प्र + ईक्ष्] देखना। पिच्छइ, पिच्छंति, पिच्छ (कप्प; प्रासू १६०; ३३)। वकृ. पिच्छंत, पिच्छमाण (सुपा ३४६; भवि)। कवकृ. पिच्छिज्जमाण (सुपा ६२)। संकृ. पिच्छिउं, पिच्छिऊण (प्रासू ६१; भवि)। कृ. पिच्छणिज्ज (कप्प; सुर १३, २२३; रयण ११)।

पिच्छ न [पिच्छ] १ पक्ष का अवयव, पंख का हिस्सा (उवा; पाअ)। २ मयूर-पिच्छ, शिखण्ड (णाया १, ३)। ३ पक्ष, पाँख (उप ७६८ टी; गउड)। ४ पूँछ, लांगूल (गउड)।

पिच्छण न [प्रेक्षण] १ दर्शन, अवलोकन (श्रा १४; सुपा ५५)।

पिच्छण, पिच्छणय न [प्रेक्षण, °क] तमाशा, खेल, नाटक, 'पारद्धं पिच्छणं तहिं ताव' (सुपा ४८५), 'तो जवणियछिड्डेहिं पिच्छइ अंतेउरंपि पिच्छणयं' (सुपा २००)।

पिच्छल वि [पिच्छल] १ स्निग्ध, स्नेह-युक्त। २ मसृण (सण)।

पिच्छा स्त्री [प्रेक्षा] निरीक्षण। °भूमि स्त्री [°भूमि] रंग-मण्डप, रंगमंच (पाअ)।

पिच्छि वि [पिच्छिन्] पिच्छवाला (औप)।

पिच्छिर वि [प्रेक्षितृ] प्रेक्षक, द्रष्टा, देखनेवाला (सुपा ७८; कुमा)।

पिच्छिल वि [पिच्छिल] १ स्नेह-युक्त, स्निग्ध। २ मसृण, चिकना (गउड; हास्य १४०; दे ६, ४६)।

पिच्छिली स्त्री [दे] लज्जा, शरम (दे ६ ४७)।

पिच्छी स्त्री [दे] चूड़ा, चोटी (दे ६, ३७)।

पिच्छी स्त्री [पिच्छिका] पीछी (गा ५७२)।

पिच्छी स्त्री [पृथ्वी] १ पृथ्वी, धरित्री, धरती (कुमा)। २ बड़ी इलायची। ३ पुनर्नवा। ४ कृष्ण जीरक। ५ हिंगुपत्री (हे १, १२८)।

पिच्छोला स्त्री [दे] बीन बजाने की कंबिका (सूत्र कृ० चू० पत्र १४६)।

पिज्ज सक [पा] पीना। पिज्जइ (हे ४, १०)। कृ. पिज्जणिज्ज (कुमा)।

पिज्ज पुंन [प्रेमन्] प्रेम, अनुराग (सूअ १, १६, २; कप्प)।

पिज्ज, पिज्जंत देखो पा = पा।

पिज्जा स्त्री [पेया] यवागू (पिंड ६२४)।

पिज्जाविअ वि [पायित] जिसको पान कराया गया हो वह (सुख २, १७)।

पिट्ट सक [पीडय्] पीड़ा करना। पिट्टंति (सूअ २, २, ५५)।

पिट्ट अक [भ्रंश्] नीचे गिरना। पिट्टइ (षड्)।

पिट्ट सक [पिट्टय्] पीटना, ताड़न करना। पिट्टइ, पिट्टेइ (आचा; पिंग; गा १७१; सिरि ६५५)। वकृ. पिट्टंत (पिंग)।

पिट्ट न [दे] पेट, उदर (पंचा ३, १६; धर्मवि ६६; चेइय २३८; करु २६; सुपा ५६३; सं २१)।

पिट्टण न [पिट्टन] ताड़न, आघात (सूअ २, २, ६२; पिंड ३४; पण्ह १, १; ओघ ५६६; उप ५०६)।

पिट्टण न [पीडन] पीड़ा, क्लेश (सूअ २, २, ५५)।

पिट्टणा स्त्री [पिट्टना] ताड़न (ओघ ३५७)।

पिट्टावणया स्त्री [पिट्टना] ताड़न कराना (भग ३, ३—पत्र १८२)।

पिट्टिय वि [पिट्टित] पीटा हुआ, ताडित (सुख २, १५)।

पिट्ठ न [पिष्ट] तण्डुल आदि का आटा, चूर्ण (णाया १, १; ३; दे १, ७८; गा ३८८)।

पिट्ठ न [पृष्ठ] पीठ, शरीर के पीछे का हिस्सा (औप; उव)। °ओ अ [°तस्] पीछे से, पृष्ठ भाग से (उवा; विपा १, १; औप)। °करंडग न [°करण्डक] पृष्ठ-वंश, पीठ की बड़ी हड्डी (तंदु ३५)। °चर वि [°चर] पृष्ठ-गामी, अनुयायी (कुमा)। देखो पिट्ठि।

पिट्ठ वि [स्पृष्ट] १ छुआ हुआ। २ न. स्पर्श (पव १५७)।

पिट्ठ वि [पृष्ट] १ पूछा हुआ। २ न. प्रश्न, पृच्छा; 'जंपसि विणअं ण जंपसे पिट्ठं' (गा ६४३)।

पिट्ठंत न [दे. पृष्ठान्त] गुदा, गाँड (दे ६, ४६)।

पिट्ठखउरा स्त्री [दे] पङ्क-सुरा, कलुष मदिरा (दे ६, ५०)।

पिट्ठखउरिआ स्त्री [दे] मदिरा, दारू (पाअ)।

पिट्ठव्व वि [प्रष्टव्य] पूछने योग्य, 'नियकरणीदोवि किंकरी किं पिट्ठि (?ट्ठ) व्वा' (रंभा)।

पिट्ठायय पुंन [पिष्टातक] केसर आदि गन्ध-द्रव्य (गउड; स ७३४)।

पिट्ठि स्त्री [पृष्ठ] पीठ, शरीर के पीछे का भाग (हे १, १२६; णाया १, ६; रंभा; कुमा; षड्)। °ग वि [°ग] पीछे चलनेवाला (श्रा १२)। °चम्पा स्त्री [°चम्पा] चम्पा नगरी के पास की एक नगरी (कप्प)। °मंस न [°मांस] परोक्ष में अन्य के दोष का कीर्तन; 'पिट्ठिमंसं न खाइज्जा' (दस ८, ४७)। °मंसिय वि [°मांसिक] परोक्ष में दोष बोलनेवाला, पीछे निन्दा करनेवाला (सम ३७)। °माइया स्त्री [°मातृका] एक अनुत्तर-गामिनी स्त्री; 'चंदिमा पिट्ठिमाइया' (अनु २)। देखो पिट्ठ = पृष्ठ।

पिट्ठी स्त्री [पैष्टी] आटा की बनी हुई मदिरा (बृह २)।

पिड पुं [पिट] १ वंश-पत्र आदि का बना हुआ पात्र-विशेष। २ कब्जा, अधीनता; 'जा ताव तेणं भणियं रे रे रे बाल मह पिडे पडिओ' (सुपा १७६)।

पिडग देखो पिडय = पिटक (औप; उवा; सुज्ज १६)।

पिडच्छा स्त्री [दे] सखी (दे ६, ४६)।

पिडय न [पिटक] १ वंशमय पात्र-विशेष, 'भोयणंपि (? पि) डयं करेति' (णाया १, १—पत्र ८६)। २ दो चन्द्र और दो सूर्यो का समूह (सुज्ज १६)।

पिडय वि [दे] आविग्न (षड्)।

पिडव सक [अर्ज्] पैदा करना, उपार्जन करना। पिडवइ (षड्)।

पिडिआ स्त्री [पिटिका] १ वंश-मय भाजन-विशेष (दे ४, ७; ६, ९)। २ छोटी मंजूषा पेटी, पिटारी (उप ५८७; ५९७ टी)।

पिड्ड सक [पीडय्] पीड़ना। पिड्डइ (आचा; (पि २७६)।

पिड्ड अक [भ्रंश्] नीचे गिरना। पिड्डइ (षड्)।

पिड्डुइअ वि [दे] प्रशान्त (षड्)।

पिढं अ [पृथक्] अलग, जुदा (षड्)।

पिढर पुंन [पिठर] १ भाजन-विशेष, स्थाली (पाअ; आचा; कुमा)। २ गृह-विशेष। ३ मुस्ता, मोथा। ४ मन्थान-दण्ड, मथनिया (हे १; २०१; षड्)।

पिणद्ध सक [पि + नह्, पिनि + धा] १ ढकना। २ पहिनना। ३ पहिराना। ४ बाँधना। पिणद्धइ, पिणद्धेइ (पि ५५६)। हेकृ. पिणद्धुं, पिणद्धित्तए (अभि १८५; राज)।

पिणद्ध वि [पिनद्ध] १ पहना हुआ (पाअ; औप; गा ३२८)। २ बद्ध, यन्त्रित (राय)। ३ पहनाया हुआ; 'निगमउडोवि पिणद्धो तस्स सिरे रयणचिचइओ' (सुपा १२५)।

पिणद्धाविद (शौ) वि [पिनिधापित] पहनाया हुआ (नाट—शकु ६८)।

पिणाइ पुं [पिनाकिन्] महादेव, शिव (पाअ; गउड)।

पिणाई स्त्री [दे] आज्ञा, आदेश (दे ६, ४८)।

पिणाग पुंन [पिनाक] १ शिव-धनुष। २ महादेव का शूलास्त्र (धर्मवि ३१)।

पिणागि देखो पिणाइ (धर्मवि ३१)।

पिणाय देखो पिणाग (गउड)।

पिणाय पुं [दे] बलात्कार (दे ६, ४६)।

पिणिद्ध वि [पिनद्ध, पिनिहित] देखो पिणद्ध = पिनद्ध; (पण्ह २, ४—पत्र १३०; कप्प; औप)।

पिणिधा सक [पिनि + धा] देखो पिणद्ध = पि + नह्। हेकृ. पिणिधत्तए (औप; पि ५७८)।

पिण्णाग देखो पिन्नाग (राज)।

पिण्णिया स्त्री [दे. पिण्यिका] गन्ध-द्रव्य-विशेष, ध्यामक, गन्ध-तृण (उत्तनि ३)।

पिण्ही स्त्री [दे] क्षामा, कृश स्त्री (दे ६, ४६)।

पित्त पुंन [पित्त] शरीर-स्थित धातु-विशेष, तिक्त धातु (भग; उव)। °ज्जर पुं [°ज्वर] पित्त से होता बुखार (णाया १, १)। °मुच्छा स्त्री [°मूर्च्छा] पित्त की प्रबलता से होनेवाली बेहोशी (पडि)।

पित्तल न [पित्तल] धातु-विशेष, पीतल (कुप्र १४४)।

पित्तिज्ज, पित्तिय पुं [पितृव्य] चाचा, पिता का भाई (कप्प; सम्मत्त १७२; सिरि २६३, धर्मवि १२७; स ४६५, सुपा ३३४)।

पित्तिय वि [पैत्तिक] पित्त का, पित्त-संबन्धी (तंदु १६; णाया १, १; औप)।

पिधं अ [पृथक्] अलग, जुदा (हे १, १८८; कुमा)।

पिधाण देखो पिहाण (नाट—विक्र १०३)।

पिन्नाग, पिन्नाय पुं [पिण्याक] खली, तिल आदि का तेल निकाल लेने पर जो उसका

भाग बचता है वह (सूत्र २, ६, २६; २, १, १६; २, ६, २८)।

पिपीलिअ पुं [पिपीलक] कीट-विशेष, चीऊँटा (कप्प)।

पिपीलिआ } स्त्री [पिपीलिका] चींटी,
पिपीलिका } चीऊँटी (पराह १, ६; जी १६; गाया १, १६)।

पिप्पड सक [दे] बड़बड़ाना, जो मन में आवे सो बकना। पिप्पडइ (दे ६, ५० टी)।

पिप्पडा स्त्री [दे] ऊर्णा-पिपीलिका (दे ६, ४८)।

पिप्पडिअ वि [दे] १ जो बड़बड़ाया हो। २ न. बड़बड़ाना, निरर्थक उल्लाप, बकवाद (दे ६, ५०)।

पिप्पय पुं [दे] १ मशक (दे ६, ७८)। २ पिशाच, भूत (पाअ)। ३ वि. उन्मत्त (दे ६, ७८)।

पिप्पर पुं [दे] १ हंस। २ वृषभ (दे ६, ७९)।

पिप्परी स्त्री [पिप्पली] पीपर का गाछ (पराग १)।

पिप्पल पुंन [पिप्पल] १ पीपल वृक्ष, अश्वत्थ (उप १०३१ टी; पाअ; हि १०)। २ छुरा, क्षुरक (विपा १, ६—पत्र ६६; ओघ ३५९)।

पिप्पलग वि [पैप्पलक] पीपल के पान का बना हुआ (आचा २, २, ३, १४)।

पिप्पलि } स्त्री [पिप्पलि, °ली] ओषधि-
पिप्पली } विशेष, पीपर; 'महुपिप्पलिसुंठाई अणेगहा साइमं होइ' (पंचा ५, ३०; परारा १७)।

पिप्पिडिअ देखो पिप्पडिअ (षड्)।

पिप्पिया स्त्री [दे] दाँत का मैल (गांदि)।

पिब देखो पिअ = पा। पिबामो (पि ४८३)। संकृ. पिबित्ता (आचा)।

पिब्व न [दे] जल, पानी (दे ६, ४६)।

पिम्म पुं [प्रेमन्] प्रेम, प्रीति, अनुराग (पाअ; सुर २, १७२; रंभा)।

पियाल पुं [प्रियाल] १ वृक्ष-विशेष, खिरनी का पेड़। २ न. फल-विशेष, खिरनी, खिन्नी (दस ५, २, २४)।

पियास (अप) स्त्री [पिपासा] प्यास (भवि)।

पिरिडी स्त्री [दे] शकुनिका, चिड़िया (दे ६, ४७)।

परिपिरिया देखो परिपिरिया (राज)।

पिरिली स्त्री [पिरिली] १ गुच्छ-विशेष, वनस्पति-विशेष (पराग १)। २ वाद्य-विशेष (राज)।

पिल देखो पील। कर्म. पिलिज्जइ (नाट)।

पिलंखु } पुं [प्लक्ष] १ वृक्ष-विशेष,
पिलक्खु } पिलखन, पाकड़ का पेड़ (सम १५२; ओघ २६; पि ७४)। २ एक तरह का पीपल वृक्ष; 'पिलक्खू पिप्पलभेदो' (निचू ३)।

पिलण न [दे] पिच्छिल देश, चिकनी जगह (दे ६, ४६)।

पिला देखो पीला (पि २२६)।

पिलाग न [पिटक] फोड़ा, फुनसी (सूत्र १, ३, ४, १०)।

पिलिंखु देखो पिलंखु (विचार १४८)।

पिलिहा स्त्री [प्लीहा] अंग-विशेष, पिलही, तिल्ली (तंदु ३६)।

पिलुअ न [दे] क्षुत, छींक (षड्)।

पिलुंक } देखो पिलंखु (पि ७४; पराग
पिलुक्ख } १—पत्र ३१)।

पिलुंखु देखो पिलंखु (आचा २, १, ८, ३)।

पिलुट्ठ वि [प्लुष्ट] दग्ध (हे २, १०६)।

पिलोस पुं [प्लोष] दाह, दहन (हे २, १०६)।

पिल्ल देखो पेल्ल = क्षिप्। पिल्लइ (भवि)।

पिल्ल सक [प्र + ईरय्] १ प्रेरणा करना। २ प्रवृत्त करना। पिल्लेइ (वव १)।

पिल्लग न [दे] पक्षी का बच्चा।

पिल्लण न [प्रेरण] प्रेरणा (जं ३)।

पिल्लणा स्त्री [प्रेरणा] प्रेरणा (कप्प)।

पिल्लि स्त्री [दे] यान-विशेष (दसा ६)।

पिल्लिअ वि [क्षिप्त] फेंका हुआ (पाअ; भवि; कुमा)।

पिल्लिअ वि [प्रेरित] जिसको प्रेरणा की गई हो वह (सुपा ३६१)।

पिल्लिरी स्त्री [दे] १ तृण-विशेष, गराडुत् तृण। २ चीरी, कीट-विशेष। ३ घर्म, पसीना (दे ६, ७९)।

पिल्लुग (दे) देखो पिलुअ (वव २)।

पिल्ह न [दे] छोटे पक्षी के तुल्य (दे ६, ४६)।

पिव देखो इव (हे २, १८२; कुमा; महा)।

पिव सक [पा] पीना। पिवइ (पिंग)। भूका. अपिवित्था (आचा)। कर्म. पिवीअंति (पि ५३९)। संकृ. पिविअ, पिविइत्ता, पिवित्ता (नाट; ठा ३, २; महा)। हेकृ. पिविउं, पिवित्तए (आक ४२; औप)।

पिवण देखो पिअण = (दे) (भवि)।

पिवासय वि [पिपासक] पीने की इच्छा-वाला (भग—अत्थ°)।

पिवासा स्त्री [पिपासा] प्यास, पीने की इच्छा (भग; पाअ)।

पिवासिय वि [पिपासित] तृषित (उवा; वै....)।

पिवीलिआ देखो पिपीलिआ (उवा; स ४२०, भा ४९)।

पिव्व देखो पिब्व (षड्)।

पिस सक [पिष्] पीसना। पिसइ (षड्)।

पिसंग पुं [पिशङ्ग] १ पिंगल वर्ण, भठियारा रँग। २ वि. पिंगल वर्णवाला (पाअ; कुप्र १०५; ३०६)।

पिसंडि [दे] देखो पसंडि (सुपा ६०७; कुप्र ६२; १४५)।

पिसल्ल पुं [पिशाच] पिशाच, व्यन्तर-योनिक देवों की एक जाति (हे १, १९३; कुमा; पाअ; उप २६४ टी; ७६८ टी)।

पिसाजि वि [पिशाचिन्] भूताविष्ट (हे १, १७७; कुमा; षड्; चंड)।

पिसाय देखो पिसल्ल (हे १, १९३, पराह १, ४; महा; इक)।

पिसिअ न [पिशित] मांस (पाअ; महा)।

पिसुअ पुंस्त्री [पिशुक] क्षुद्र कीट-विशेष। स्त्री. °या (राज)।

पिसुण सक [कथय्] कहना। पिसुणइ, पिसुणेइ, पिसुणंति, पिसुणेंति, पिसुणसु (हे ४, २; गा ६८५; सुर ६, १९३; गा ५५६; कुमा)।

पिसुण पुं [पिशुन] खल, दुर्जन, पर-निन्दक, चुगलखोर (सुर ३, १६, प्रासू १८; गा ३७७; पाअ)।

पिसुणिअ वि [कथित] १ कहा हुआ । २ सूचित (सुपा २३; पाअ; कुप्र २७८) ।
पिसुमय (पै) पुं [विस्मय] आश्चर्य (प्राकृ १२४) ।
पिह सक [स्पृह्] इच्छा करना, चाहना । पिहाइ (भग ३, २—पत्र १७३) । संकृ. **पिहाइत्ता** (भग ३, २) ।
पिह वि [पृथक्] भिन्न, जुदा; 'पिहप्पिहाणं' (विसे ८४८) ।
पिहं अ [पृथक्] अलग (हे १, १३७; षड्) ।
पिहंड पुं [दे] १ वाद्य-विशेष । २ वि. विवर्ण (दे ६, ७६) ।
पिहड देखो **पिढर** (हे १, २०१; कुमा, उवा) ।
पिहण न [पिधान] १ ढक्कन, पिहान (सुर १६, १६५) । २ ढकना, आच्छादन (पंचा १, ३२; संबोध ४६; सुपा १२१) ।
पिहणया स्त्री [पिधान] आच्छादन, ढकना (स ५१) ।
पिहय देखो **पिह** = पृथक् (कुमा) ।
पिहा सक [पि + धा] १ ढकना । २ बंद करना । पिहाइ (भग ३,२) । संकृ. **पिहाइत्ता**, **पिहिऊण** (भग ३, २; महा) ।
पिहाण देखो **पिहण** (ठा ४, ४; रत्न २५; कप्प) ।
पिहाणिआ स्त्री [पिधानिका] ढकनी (पाअ) ।
पिहाणी स्त्री [पिधानी] ऊपर देखो (दे) ।
पिहिअ वि [पिहित] १ ढका हुआ । २ बंद किया हुआ (पाअ; कस; ठा २, ४—पत्र ८६; सुपा ६३०) । °**ासव** वि [°ास्रव] १ जिसने आस्रव को रोका हो (दस ४) । २ पुं. एक जैन मुनि का नाम (पउम २०, १८) ।
पिहिण देखो **पिहण**, 'आणवणे पेसवणे पिहिणे ववएस मच्छरे चेव' (श्रा ३०; पडि) ।
पिहिमि (अप) स्त्री [पृथिवी] भूमि, धरती । °**पाल** पुं [°पाल] राजा (भवि) ।
पिहीकय वि [पृथक्कृत] अलग किया हुआ (पिंड ३६१) ।
पिहु वि [पृथु] १ विस्तीर्ण (कुमा) । २ पुं. एक राजा का नाम (पउम ६८, ३४) । °**रोम** पुं [°रोम] मीन, मत्स्य (दे ६, ५० टी) ।
पिहु देखो **पिह** = पृथक् (सुर १३, ३६; सण) ।
पिहु° देखो **पिहुय**; 'पिहुखज्ज त्ति नो वए' (दस ७, ३४) ।
पिहुंड न [पिहुण्ड] नगर-विशेष (उत्त २१, २) ।
पिहुण [दे] देखो **पेहुण** (आचा २, १, ७, ६) । °**हत्थ** पुं [°हस्त] मयूर-पिच्छ का किया हुआ पँखा (आचा २, १, ७, ६) ।
पिहुत्त देखो **पुहुत्त** (तंदु ४) ।
पिहुय पुंन [पृथुक] खाद्य-विशेष, चिउड़ा (आचा २, १, १, ३; ४) ।
पिहुल वि [पृथुल] विस्तीर्ण (पण्ह १, ४; औप; दे ६, १४३; कुमा) ।
पिहुल न [दे] मुँह के वायु से बजाया जाता तृण-वाद्य (दे ६, ४७) ।
पिहे देखो **पिहा** । पिहेइ, पिहें (उत्त २६, ११; सूअ १, २, २, १३) । संकृ. **पिहेऊण** (पि ५८६) ।
पिहो अ [पृथक्] अलग, भिन्न (विसे १०) ।
पिहोअर वि [दे] तनु, कृश, दुर्बल (दे ६, ५०) ।
पी सक [पी] पान करना । वकृ. 'तम्मुहस-संकंतपीऊसपूरं पीयमाणी' (रयण ५१) ।
पीअ पुं [पीत] १ पीत वर्ण, पीला रँग । २ वि. पीत वर्णवाला, पीला (हे २, १७३; कुमा; प्राप्र) । ३ जिसका पान किया गया हो वह (से १, ४०; दे ६, १४४) । ४ जिसने पान किया हो वह (प्राप्र) ।
पीअ वि [प्रीत] प्रीति-युक्त, संतुष्ट (औप) ।
पीअर (अप) नीचे देखो (पिंग) ।
पीअल देखो **पीअ** = पीत (हे २, १७३; प्राप्र) ।
पीअसी स्त्री [प्रेयसी] प्रेम-पात्र स्त्री (कुमा) ।
पीइ पुं [दे] अश्व, घोड़ा (दे ६, ५१) ।
पीइ, **पीई°** स्त्री [प्रीति] १ प्रेम, अनुराग (कप्प; महा) । २ रावण की एक पत्नी का नाम (पउम ७४, ११) । °**कर** पुंन [°कर] एक विमानावास, आठवाँ ग्रैवेयक-विमान (देवेन्द्र १३७; पव १६४) । °**गम** न [°गम] महाशुक्र देवेन्द्र का एक यान-विमान (इक; औप) । °**दाण** न [°दान] हर्ष होने के कारण दिया जाता दान, पारितोषिक (औप; सुर ४, ६१) । °**धम्मिय** न [°धार्मिक] जैन मुनियों का एक कुल (कप्प) । °**मण** वि [°मनस्] १ प्रीति-युक्त चित्तवाला (भग) । २ पुं. महाशुक्र देवलोक का एक यान-विमान (ठा ८—पत्र ४३७) । °**वद्धण** पुं [°वर्धन] कार्तिक मास का लोकोत्तर नाम (सुज्ज १०, १६; कप्प) ।
पीईय पुं [दे] वृक्ष-विशेष, गुल्म का एक भेद; 'पीईयपाणकणइरकुज्जय तह सिन्दुवारे य' (पण्ण १) ।
पीऊस न [पीयूष] अमृत, सुधा (पाअ) ।
पीड सक [पीडय्] १ हैरान करना । २ दबाना । पीडइ, पीडंतु (पिंग; हे ४, ३८५) । कर्म. पीडिज्जइ (पिंग) । कवकृ. **पीडिज्जंत**, **पीडिज्जमाण** (से ११, १०२; गा ५४१; सण) ।
पीड° देखो **पीडा** । °**यर** वि [°कर] पीड़ा-कारक (पउम १०३, १४३) ।
पीडरइ स्त्री [दे] चोर की स्त्री (दे ६, ५१) ।
पीडा स्त्री [पीडा] पीडन, हैरानी, वेदना (पाअ) । °**कर** वि [°कर] पीड़ा-कारक; 'अलिअं न भासियव्वं अत्थि हु सच्चंपि जं न वत्तव्वं । सच्चंपि तं न सच्चं जं परपीडाकरं वयणं' (श्रा १२; प्रासू १५०) ।
पीडिअ वि [पीडित] १ पीड़ा से जो दुःखी हो वह, अभिभूत, पराजित, व्याकुल, दुःखित । २ दबाया गया (हे १, २०३, महा; पाअ) ।
पीढ पुंन [पीठ] १ आसन, पीढ़ा; 'पीढं विट्ठरं आसणं' (पाअ; रयण ६३) । २ आसन-विशेष, व्रती का आसन (चंड; हे १, १०६; उवा; औप) । ३ तल; 'चत्तूण नेडपीढं' (कुमा) । ४ पुं. एक जैन महर्षि (सट्ठि ८१ टी) । °**बंध** पुं [°बन्ध] ग्रंथ की अवतरणिका, भूमिका; 'नय पीढबन्ध-रहियं कहिज्जमाणंपि देइ भावत्थं' (पउम ३; १६) । °**मद्द**, °**मद्दअ** पुंस्त्री [°मर्दक] काम-पुरुषार्थ में सहायक नायक का समीपवर्त्ती पुरुष, राजा आदि का वयस्य-विशेष (णाया १, १—पत्र १६; कप्प) । स्त्री. °**मद्दिआ** (मा १६) । °**सप्पि** वि [°सर्पिन्] पंगु-विशेष (आचा) ।

पीढ न [दे] १ ईख पेरने का यन्त्र (दे ६, ५१)। २ समूह, यूथ; 'उट्ठियं वणगइंदपीढं, पणट्ठा दिसो दिसो (?सिं) कप्पडिया' (स २३३)। ३ पीठ, शरीर के पीछे का भाग; 'हत्थिपीढसमारूढो' (त्रि ६६)।

पीढग } न [पीठक] देखो पीढ = पीठ
पीढय } (कस; गच्छ १, १०; दस ७, २८)।

पीढरखंड न [पीठरखण्ड] नर्मदा-तीर पर स्थित एक प्राचीन जैन तीर्थ (पउम ७७, ६४)।

पीढाणिय न [पीठानीक] अश्व-सेना (ठा ५, १—पत्र ३०२)।

पीढिआ स्त्री [पीठिका] आसन-विशेष, मञ्च; 'आसंदी पीढिआ' (पाअ)। देखो पेढिया।

पीढी स्त्री [दे. पीठिका] काष्ठ-विशेष, घर का एक आधार-काष्ठ; गुजराती में 'पीढिउं'; 'तत्तो नियत्तिऊणं सत्तट्ठ पयाइं जाव पहरेइ। ता उवरिपीढिखलणे खग्गेण खडक्कियं तत्थ' (धर्मवि ५६)।

पीण सक [पीनय्] पुष्ट करना। पीणंति (राय १०१)।

पीण सक [प्रीणय्] खुश करना। कृ. देखो पीणणिज्ज।

पीण वि [दे] चतुरस्र, चतुष्कोण (दे ६, ५१)।

पीण वि [पीन] पुष्ट, मांसल, उपचित (हे २, १५४; पाअ; कुमा)।

पीणण न [प्रीणन] खुश करना (धर्मवि १४८)।

पीणणिज्ज वि [प्रीणनीय] प्रीति-जनक (औप; कप्प; पण्ण १७)।

पीणाइय वि [दे. पैनायिक] गर्व से निर्वृत्त, गर्व से किया हुआ; 'पीणाइयविरसरडियसद्दणं फोडयंते व अंबरतलं' (णाया १, १—पत्र ६३)।

पीणाया स्त्री [दे. पीनाया] गर्व, अहंकार (णाया १, १)।

पीणिअ वि [प्रीणित] १ तोषित (सण)। २ उपचित, परिवृद्ध (दस ७, २३)। ३ पुं. ज्योतिष-प्रसिद्ध योग-विशेष, जो पहले सूर्य या चन्द्र का किसी ग्रह या नक्षत्र के साथ होकर बाद में दूसरे सूर्य आदि के साथ उपचय को प्राप्त हुआ हो वह योग (सुज्ज १२)।

पीणिम पुंस्त्री [पीनता] पुष्टता, मांसलता (हे २, १५४)।

पीयमाण देखो पा = पा।

पीयमाण देखो पी = पी।

पीरिपीरिया स्त्री [दे] वाद्य-विशेष (राय ४५)।

पील सक [पीडय्] १ पीलना, पेरना, दबाना। २ पीड़ा करना, हैरान करना। पीलइ, पीलेइ (धात्वा १४५; पि २४०)। कवकृ. पीलिज्जत (श्रा ६)।

पीलण न [पीलन] दबाव, पीलन, पेरना; 'माणंसिणीए माणो पीलणभीअ व्व हिअआहि' (काप्र १६६), 'जंतपीलणकम्मं' (उवा)।

पीला देखो पीडा (उप ४३६; सुपा ३५८)।

पीलावय वि [पीडक] १ पेरनेवाला। २ पुं. तेली, यंत्र से तेल निकालनेवाला (वज्जा ११०)।

पीलिअ वि [पीडित] पीला या पेरा हुआ (औप; ठा ५, ३; उव)।

पीलिम वि [पीडावत्] दाबवाला, दाबने से बना हुआ (वस्त्र आदि की आकृति) (दसनि २, १७)।

पीलु पुं [पीलु] १ वृक्ष-विशेष, पीलु का पेड़ (पण्ण १; वज्जा ४६)। २ हाथी (पाअ; स ७३५)। ३ न. दूध; 'एगट्ठं बहुनामं दुद्ध पओ पीलु खीरं च' (पिंड १३१)।

पीलुअ पुं [दे. पीलुक] शावक, बच्चा; 'तडसंठिअणीडेक्कंतपीलुआरक्खणेक्कदिण्णम-णा' (गा १०२)।

पीलुट्ठ वि [दे. प्लुष्ट] देखो पिलुट्ठ (दे ६, ५१)।

पीवर वि [पीवर] उपचित, पुष्ट (णाया १, १; पाअ; सुपा २६१)। °गब्भा स्त्री [°गर्भा] जो निकट भविष्य में ही प्रसव करनेवाली हो वह स्त्री (ओघभा ८३)।

पीवल देखो पीअ = पीत (हे १, २१३; २, १७३; कुमा)।

पीस सक [पिष्] पीसना। पीसइ (पि ७६)। वकृ. पीसंत (पिंड ५७४; णाया १, ७)। संकृ. पीसिऊण (कुप्र ४५)।

पीसण न [पेषण] १ पीसना, दलना (पण्ह १, १; उप पृ १४०; रयण १८)। २ वि. पीसनेवाला (सूअ १, २, १; १२)।

पीसय वि [पेषक] पीसनेवाला (सुपा ६३)।

पीह सक [स्पृह्, प्र + ईह्] अभिलाषा करना, चाहना। पीहंति, पीहेज्जा (औप; ठा ३, ३—पत्र १४४)।

पीहग पुं [पीठक] नवजात शिशु को पीलाइ जाती एक वस्तु (उप ३११)।

°पु स्त्री [पुर्] शरीर (विसे २०६५)।

पुअ न [प्लुत] १ तिर्यग् गति। २ झाँपना, झम्प-गति; 'जुज्झामो पु (? पु) यघाएहिं' (विसे १४३६ टी)। °जुद्ध न [°युद्ध] अधम युद्ध का एक प्रकार (विसे १४७७)।

पुअंड पुं [दे] तरुण, युवा (दे ६, ५३; पाअ)।

पुआइ वि. [दे] १ तरुण, युवा (दे ६, ८०)। २ उन्मत्त (दे ६, ८०; षड्)। ३ पुं. पिशाच (दे ६, ८०, पाअ; षड्)।

पुआइणी स्त्री [दे] १ पिशाच-गृहीत स्त्री, भूताविष्ट महिला। २ उन्मत्त स्त्री। ३ कुलटा, व्यभिचारिणी (दे ६, ५४)।

पुआव सक [प्लावय्] ले जाना। संकृ. पुयावइत्ता (ठा ३, २)।

पुं° पुं [पुंस्] पुरुष, मर्द (पि ४१२; धम्म १२ टी)। देखो पुंगव, पुंनाग, पुंवउ आदि।

पुंख पुं [पुङ्ख] १ बाण का अग्र भाग; 'तस्स य सरस्स पुंखं विद्धइ अन्नेण तिक्खबाणेण' (धर्मवि ६७; उप पृ ३६५)। २ न. देव-विमान-विशेष (सम २२)।

पुंखणग न [दे. प्रोङ्खणक] चुमाना, विवाह की एक रीति, गुजराती में 'पोंखणुं' (सुपा ६५)।

पुंखिअ वि [पुङ्खित] पुंख-युक्त किया हुआ, 'धणुहे तिक्खो सरो पुंखिओ' (कप्पू)।

पुंगल पुं [दे] श्रेष्ठ, उत्तम (भवि)।

पुंगव वि [पुङ्गव] श्रेष्ठ, उत्तम (सुपा ५; ८०; श्रु ४१; गउड)।

पुंछ सक [प्र + उञ्छ्] पोंछना, सफा करना। पुंछइ (प्राकृ ६७; हे ४, १०५)। कृ. पुंछणीअ (पि १८२)।

पुंछ पुंन [पुच्छ] पूँछ, लांगूल (प्राकृ १२; हे १, २६)।

पुंछण न [प्रोञ्छन] १ मार्जन (कप्प; उवा; सुपा २६०)। २ रजोहरण, जैन मुनि का एक उपकरण (बृह १)।

पुंछणी स्त्री [प्रोञ्छनी] पोंछने का एक छोटा तृणमय उपकरण (राय)।

पुंछिअ वि [प्रोञ्छित] पोंछा हुआ, मृष्ट (पाअ; कुमा; भवि)।

पुंज सक [पुञ्ज्, पुञ्जय्] १ इकट्ठा करना। २ फैलाना, विस्तार करना। पुंजइ (हे ४, १०२; भवि)। कर्म. पुंजिज्जइ (कप्पू)। कवकृ. **पुंजइज्जमाण** (से १२, ८६)।

पुंज पुंन [पुञ्ज] ढेर, राशि (कप्प; कस; कुमा); 'खारिक्कपुंजयाइं ठावइं' (सिरि ११६६)।

पुंजइअ वि [पुञ्जित] १ एकत्रित (से ६, ६३; पउम ८, २६१)। २ व्याप्त, भरपूर (पउम ८, २६१)।

पुंजइज्जमाण देखो **पुंज** = पुञ्ज्।

पुंजक, **पुंजय** वि [पुञ्जक] १ राशि रूप से स्थित, 'न उणं पुंजकपुंजका' (पिंड ८२)। २ देखो **पुंज** = पुञ्ज।

पुंजय पुंन [दे] कतवार, गुजराती में 'पूंजो'; 'काओवि तहिं पुंजयपुंछण-
छउमेण निययपावरयं।
अवणितीओ इव
सारविंति जिणमंदिरंगणयं'
(सुपा २६०)।

पुंजाय वि [दे] पिण्डाकार किया हुआ, 'पुंजायं पिंडलइयं' (पाअ)।

पुंजाविय वि [पुञ्जित] एकत्रित कराया हुआ (काल)।

पुंजिअ वि [पुञ्जित] एकत्रित (से ५, ७२; कुमा; कप्पू)।

पुंड पुं [पुण्ड्र] १ देश-विशेष, विन्ध्याचल के समीप का भू-भाग (स २२५; भग १५)। २ इक्षु-विशेष (पउम ४२, ११; गा ७४०)। ३ वि. पुण्ड्र-देशीय (पउम ६६, ५५)। ४ धवल, श्वेत, सफेद (णाया १, १७ टी—पत्र २३१)। ५ पुंन. तिलक (स ६; पिंडभा ४३; कुप्र २६४)। ६ देव-विमान-विशेष (सम २२)। °**वद्धण** न [°वर्धन] नगर-विशेष (स २२५)। देखो **पोंड**।

पुंडइअ वि [दे] पिण्डीकृत, पिण्डाकार किया हुआ (दे ६, ५४)।

पुंडरिक देखो **पुंडरीअ** (सूअ २, १, १)।

पुंडरिकि वि [पुण्डरीकिन्] पुण्डरीकवाला (सूअ २, १, १)।

पुंडरिगिणी स्त्री [पुण्डरीकिणी] पुष्कलावती विजय की एक नगरी (णाया १, १६; इक; कुप्र २६५)।

पुंडरिय देखो **पुंडरीअ** = पुण्डरीक, पौण्डरीक (उव; काल; पि ३५४)।

पुंडरीअ पुं [पुण्डरीक] १ ग्यारह रुद्र पुरुषों में सातवाँ रुद्र (विचार ४७३)। २ एक राजा, महापद्म राजा का एक पुत्र (कुप्र २६५; णाया १, १६)। ३ व्याघ्र, शार्दूल (पाअ)। ४ पुंन. तप-विशेष (पव २७१)। ५ श्वेत पद्म, सफेद कमल (सूअनि १४५)। ६ कमल, पद्म; 'अंबुरुहं सयवत्तं सरोरुहं पुंडरीअमरविंदं' (पाअ; सम १; कप्प)। ६ देव-विमान विशेष (सम ३५)। ७ वि. श्वेत, सफेद (संग १३२)। °**गुम्म** न [°गुल्म] देव-विमान-विशेष (सम ३५)। °**दह**, °**द्दह** पुं [°द्रह] शिखरी पर्वत पर का एक महा-ह्रद (ठा २, ३; सम १०४)।

पुंडरीअ वि [पौण्डरीक] १ श्वेत पद्म का, श्वेत-पद्म-संबन्धी (सूअनि १४५)। २ प्रधान, मुख्य। ३ कान्त, श्रेष्ठ, उत्तम (सूअनि १४७; १४८)। ४ न. सूत्रकृतांग सूत्र के द्वितीय श्रुतस्कन्ध का पहला अध्ययन (सूअनि १५७)। देखो **पोंडरीग**।

पुंडरीया स्त्री [पुण्डरीका] देखो **पोंडरी** (राज)।

पुंडे अ [दे] जाओ (दे ६, ५२)।

पुंढ देखो **पुंड** (उप ७६५)।

पुंढ पुं [दे] गर्त, गड्हा, गढा (दे ६, ५२)।

पुंनाग पुं [पुन्नाग] १ वृक्ष-विशेष, पुष्प-प्रधान एक वृक्ष-जाति, पुन्नाग, पुलाक, सुलतान चम्पक, पाटल का गाछ (उप पृ १८; ७६८ टी; सम्मत्त १७५)। २ श्रेष्ठ पुरुष, उत्तम मर्द (धम्म १२ टी; सम्मत्त १७५)। देखो **पुन्नाम**।

पुंपुअ पुं [दे] संगम (दे ६, ५२)।

पुंभ पुंन [दे] नीरस, दाड़िम का छिलका (?); 'मग्गइ अलत्तयं जा निपीलियं पुंभमप्पए ताव' (धर्मवि ६७); ['अलत्तए मग्गिए नीरसं पणामेइ' (महा ५६)]।

पुंवउ पुंन [पुंवचस्] व्याकरणोक्त संस्कार-युक्त शब्द-विशेष, पुंलिंग शब्द (पण्ण ११—पत्र ३६३)।

पुंवेय पुं [पुंवेद] १ पुरुष को स्त्री-स्पर्श का अभिलाष। २ उसका कारण-भूत कर्म (पि ४१२)।

पुंस सक [पुंस्, मृज्] मार्जन करना, पोंछना। पुंसइ (हे ४, १०५)।

पुंस° देखो **पुं°**। **कोइल**, °**कोइलग** पुं [°कोकिल] मरदाना कोयल, पिक (ठा १०—पत्र ५६६; पि ४१२)।

पुंसण न [पुंसन] मार्जन (कुमा)।

पुंसद्द पुं [पुंशब्द] 'पुरुष' ऐसा नाम (कुमा)।

पुंसली स्त्री [पुंश्चली] कुलटा, व्यभिचारिणी स्त्री (वज्जा ६८; धर्मवि १३७)।

पुंसिअ वि [पुंसित] पोंछा हुआ (दे १, ६६)।

पुक्क, **पुक्कर** सक [पूत् + कृ] पुकारना, डाँकना, आह्वान करना। पुक्करेइ (धम्म ११ टी)। वकृ. **पुक्कंत**, **पुक्करंत** (पण्ह १, ३—पत्र ४५; श्रा १२)। देखो **पोक्क**।

पुक्करिय वि [पूत्कृत] पुकारा हुआ (सुपा ३८१)।

पुक्कल देखो **पुक्खल** (पण्ह २, ५—पत्र १५१)।

पुक्का स्त्री. देखो **पुक्कार** = पूत्कार (पाअ; सुपा ५१७)।

पुक्कार देखो **पुक्कर**। पुक्कारेंति (राय)। वकृ. **पुक्कारंत**, **पुक्कारिंत**, **पुक्कारेमाण** (सुपा ४१५; ३८१; २४८; णाया १, १८)।

पुक्कार पुं [पूत्कार] पुकार, डाँक, आह्वान (सुपा ५१७; महा; सण)।

पुक्खर देखो **पोक्खर** = पुष्कर (कप्प; महा; पि १२५)। °**कण्णिया** स्त्री [°कर्णिका]

पद्म का बीज-कोश, कमल का मध्य भाग (औप)। °क्ख पुं [°क्ष] १ विष्णु, श्रीकृष्ण। २ कश्मीर के एक राजा का नाम (मुद्रा २४२)। °गय न [°गत] वाद्य-विशेष का ज्ञान, कला-विशेष (औप)। °द्ध न [°ार्ध] पुष्करवर नामक द्वीप का आधा हिस्सा (सुज्ज १९)। °वर पुं [°वर] द्वीप-विशेष (ठा २, ३; पडि)। °संवट्टग देखो पुक्खल-संवट्टय (राज)। °वत्त देखो पुक्खलावट्टय (राज)।

पुक्खरिणी देखो पोक्खरिणी (सूअ २, १, २, ३; औप; पाअ)।

पुक्खरोअ } पुं [पुष्करोद] समुद्र-विशेष
पुक्खरोद } (इक; ठा ३, १; ७; सुज्ज १९)।

पुक्खल पुं [पुष्कर] एक विजय, प्रान्त-विशेष, जिसकी मुख्य नगरी का नाम ओषधि है (इक)। २ पद्म, कमल; 'भिसभिसमुणाल-पुक्खलत्ताए' (सूअ २, ३, १८)। ३ पद्म-केसर (आचा २, १, ८—सूत्र ४७)। °विभंग न [°विभङ्ग] पद्म-कन्द (आचा २, १, ८—सूत्र ४७)। °संवट्ट, °संवट्टय पुं [°संवर्त, °क] मेघ-विशेष, जिसके बरसने से दस हजार वर्ष तक पृथिवी वासित रहती है (उर २, ९; ठा ४, ४—पत्र २७०)। देखो पुक्खर।

पुक्खल पुं [पुष्कल] १ एक विजय, प्रदेश-विशेष (ठा २, ३—पत्र ८०)। २ अनार्य देश-विशेष। ३ पुंस्त्री. उस देश में उत्पन्न, उसमें रहनेवाला; 'सिंघलीहिं पुलिंदिहिं पुक्खलीहिं (?)' (भग ९, ३३—पत्र ४५७), ['सिहलीहिं पुलिंदीहिं पक्कणीहिं (?)' (भग ९, ३३ टी—पत्र ४६०)]। ४ वि. अत्यन्त, प्रभूत (कुप्र ४१०)। ५ संपूर्ण, परिपूर्ण (सूअ २, १, १)।

पुक्खलच्छिभग } पुंन [दे] जलरुह-विशेष,
पुच्छलच्छिभय } जल में होनेवाली वनस्पति-विशेष (सूअ २, ३, १८; १९)। देखो पोक्खलच्छिलय।

पुक्खलावई स्त्री [पुष्करावती, पुष्कलावती] महाविदह वर्ष का विजय—प्रान्त-विशेष (ठा २, ३; इक; महा)। °कूड पुंन [°कूट] एक-शैल पर्वत का एक शिखर (इक)।

पुक्खलावट्टय पुं [पुष्करावर्तक, पुष्कलावर्तक] मेघ-विशेष; 'पुक्खल (?ला) वट्टए णं महामेहे एगेणं वासेणं दस वाससहस्साइं भावेति' (ठा ४, ४)।

पुक्खलावत्त पुं [पुष्करावर्त, पुष्कलावर्त] महाविदेह वर्ष का एक विजय—प्रान्त (जं ४)। °कूड पुं [°कूट] एकशैल पर्वत का एक शिखर (इक)।

पुगारिया स्त्री [दे] वस्त्रादि खादक जंतु-विशेष (सूत्र० चू० गा० २८२)।

पुग्ग पुंन [दे] वाद्य-विशेष, 'सो पुरम्मि पुग्गाइं वाएइ' (कुप्र ४०३)।

पुग्गल पुं [पुद्गल] १ वृक्ष-विशेष। २ न. फल-विशेष। ३ मांस (दस ५, १, ७३)।

पुग्गल देखो पोग्गल (सिक्खा १५, नव ४२; पि १२५)। °परट्ट, °परावत्त पुं [°परावर्त] देखो पोग्गल-परिअट्ट (कम्म ५, ८६; वै. ५०; सिक्खा ८)।

पुच्चड देखो पोच्चड; 'सेयमलपुव्व (? च्च) डम्मी' (तंदु ४०)।

पुच्छ सक [प्रच्छ्] पूछना, प्रश्न करना। पुच्छइ (हे ४, ९७)। भूका. पुच्छिंसु, पुच्छीअ, पुच्छे (पि ५१६; कुमा; भग)। कर्म. पुच्छिज्जइ (भवि)। वकृ. पुच्छंत (गा ४७; ३५७; कुमा)। कवकृ. पुच्छिज्जंत (गा ३४७; सुर ३, १५१)। संकृ. पुच्छित्ता (भग)। हेकृ. पुच्छिउं, पुच्छित्तए (पि ५७३; भग)। कृ. पुच्छणिज्ज, पुच्छणीअ, पुच्छियव्व, पुच्छेयव्व (श्रा १४, पि ५७१; उप ८६४; कप्प)।

पुच्छ देखो पुंछ = प्र + उञ्छ्। पुच्छइ (षड्)।

पुच्छ देखो पुंछ = पुच्छ (कप्प)।

पुच्छअ } वि [प्रच्छक] पूछनेवाला,
पुच्छग } प्रश्न-कर्ता (ओघभा २८; सुर १०, ६५)। स्त्री °च्छिआ (अभि १२५)।

पुच्छण न [प्रच्छन, प्रश्न] पृच्छा (सुपानि १९३; धर्मवि ८; श्रावक ९३ टी)।

पुच्छणया } स्त्री [प्रच्छना] ऊपर देखो
पुच्छणा } (उप ४९६, औप)।

पुच्छणी स्त्री [प्रच्छनी] प्रश्न की भाषा (ठा ४, १—पत्र १८२)।

पुच्छल (अप) देखो पुट्ठ = पृष्ट (पिंग)।

पुच्छा स्त्री [पृच्छा] प्रश्न (उवा; सुर ३, ३५)।

पुच्छिअ वि [पृष्ट] पूछा हुआ (औप; कुमा; भग; कप्प; सुर २, १६८)।

पुच्छिर वि [प्रष्टृ] प्रश्न-कर्ता (गा ५९८)।

पुछल देखो पुच्छल (पिंग)।

पुज्ज सक [पूजय्] पूजना, आदर करना। पुज्जइ (कुप्र ४२३; भवि)। कर्म. पुज्जिज्जइ (भवि)। वकृ. पुज्जंत (कुप्र १२१)। कवकृ. पुज्जिज्जंत (भवि)। संकृ. पुज्जिउं, पुज्जिऊण (कुप्र १०२, भवि)। कृ. पुज्जिअव्व (ती ७)। प्रयो. पुज्जावइ (भवि)।

पुज्ज देखो पूज = पूजय्।

पुज्जंत देखो पुज्ज = पूजय्।

पुज्जंत देखो पूर = पूरय्।

पुज्जण न [पूजन] पूजा, अर्चा (कुप्र १२१)।

पुज्जमाण देखो पूर = पूरय्।

पुज्जा स्त्री [पूजा] पूजा, अर्चा (उप पृ २४२)।

पुज्जिय वि [पूजित] सेवित, अर्चित (भवि)।

पुट्ट सक [प्र + उञ्छ्] पोंछना। पुट्टइ (प्राकृ ६७)।

पुट्ट न [दे] पेट, उदर (श्रा २८; मोह ४१; पव १३५; सम्मत्त २२६; सिरि २४२; सण)।

पुट्टल } पुंन [दे] गट्ठर, गाँठ; गुजराती
पुट्टलय } में 'पोटलु'; 'संबलपुट्टलयं च गहियं' (सम्मत्त ६१)।

पुट्टलिया स्त्री [दे] छोटी गठरी, पोटली, मोटरी (सुपा ४३; ३४४)।

पुट्टिल पुं [पोट्टिल] १ भगवान् महावीर का एक शिष्य, जो भविष्य में तीर्थंकर होनेवाला है (विचार ४७८)। २ एक अनुत्तर-देवलोक-गामी जैन महर्षि (अनु २)।

पुट्ठ वि [स्पृष्ट] १ छुआ हुआ (भग; औप; हे १, १३१)। २ न. स्पर्श (ठा २, १, नव १८)।

पुट्ठ वि [पृष्ट] १ पूछा हुआ (औप; सण; हे २, ३४)। २ न. प्रश्न (ठा २, १)। °लाभिय वि [°लाभिक] अभिग्रह-विशेष-वाला (मुनि) (औप; पण्ह २, १)। °सेणियापरिकम्म पुंन [°श्रेणिकापरिकर्मन्] दृष्टिवाद का एक प्रतिपाद्य विषय (सम १२८)।

पुट्ठ वि [पुष्ट] उपचित (गाया १, ३; स ४१६)।

पुट्ठ देखो पिट्ठ = पृष्ठ (प्राप्र; संक्षि १६)।

पुट्ठव वि [स्पृष्टवत्] जिसने स्पर्श किया हो वह (आचा १, ७, ८, ८)।

पुट्ठवई देखो पोट्ठवई (सुज्ज १०, ६)।

पुट्ठवया स्त्री [प्रोष्ठपदा] नक्षत्र-विशेष (सुज्ज १०, ५)।

पुट्ठि स्त्री [पुष्टि] पोषण, उपचय (विसे २२१; चेइय ८)। २ अहिंसा, दया (पण्ह २, १—पत्र ६६)। °म वि [°मत्] १ पुष्टिवाला। २ पुं. भगवान् महावीर का एक शिष्य (अनु)।

पुट्ठि देखो पिट्ठि = पृष्ठ; 'पाअपडिअस्स पइणो पुट्ठिं पुत्ते समारुहंतम्मि' (गा ११; ३३, ८७; प्राप्र; संक्षि १६)।

पुट्ठि स्त्री [पृष्टि] पृच्छा, प्रश्न। °य वि [°ज] प्रश्न-जनित (ठा २, १—पत्र ४०)।

पुट्ठि स्त्री [स्पृष्टि] स्पर्श। °य वि [°ज] स्पर्श-जनित (ठा २, १)।

पुट्ठिया स्त्री [पृष्टिका] प्रश्न से होनेवाली क्रिया—कर्मबन्ध (ठा २, १)।

पुट्ठिया स्त्री [स्पृष्टिका] स्पर्श से होनेवाली क्रिया—कर्मबन्ध (ठा २, १)।

पुट्ठिल देखो पोट्टिल (अनु २)।

पुट्ठीया स्त्री [स्पृष्टीया] देखो पुट्ठिया = स्पृष्टिका (नव १८)।

पुट्ठीया स्त्री [पृष्टीया] पृच्छा से होनेवाली क्रिया—कर्मबन्ध (नव १८)।

पुड पुं [पुट] १ परिमाण-विशेष। २ पुट-परिमित वस्तु (राय ३४)।

पुड पुंन [पुट] १ मिथः संबन्ध, परस्पर जोड़ान, मिलाव, मिलान; 'अंजलिपुड—', 'ताहे करयलपुडेण नीओ सो' (औप; महा)। २ खाल, ढोल आदि का चमड़ा; 'डुरुम्भपुड-संठाणसंठिया' (उवा ६४ टी; गउड ११६७; कुमा)। ३ संबद्ध दलद्वय, मिला हुआ दो दल; 'सिप्पपुडसंठिया' (उवा; गउड ५७६)। ४ ओषधि पकाने का पात्र-विशेष (णाया १, १३)। ५ पत्रादि-रचित पात्र, दोना (रंभा)। ६ आच्छादन, ढक्कन (उवा; गउड)। ७ कमल, पद्म; 'पुडइणी' (विक्र २३)। °भेयण न [°भेदन] नगर, शहर (कस)। °वाय पुं [°पाक] १ पुट-पात्रों से ओषधि का पाक-विशेष। २ पाक-निष्पन्न औषध-विशेष; 'पुढ (? ड) वाएहिं' (णाया १, १३—पत्र १८१)।

पुड (शौ) देखो पुत्त = पुत्र (पि २६२; प्राप्र)।

पुडइअ वि [दे] पिण्डीकृत, एकत्रित (दे ६, ५४)।

पुडइणी स्त्री [दे. पुटकिनी] नलिनी, कमलिनी (दे ६, ५५; विक्र २३)।

पुडग पुंन [पुटक] देखो पुट = पुट (उवा)।

पुडपुडी स्त्री [दे] मुँह से सीटी बजाना, एक प्रकार की अव्यक्त आवाज (पव ३८)।

पुडम देखो पुढम (प्रति ७१; पि १०४)।

पुडय देखो पुडग (उवा; सुपा ६५६)।

पुडिंग न [दे] मुँह, वदन। २ बिन्दु (दे ६, ८०)।

पुडिया स्त्री [पुटिका] पुड़ी, पुड़िया (दे ५, १२)।

पुडु (शौ) देखो पुत्त = पुत्र (प्राप्र)।

पुढं देखो पिहं (षड्)।

पुढम वि [प्रथम] पहला (हे १, ५५; कुमा; स्वप्न २३१)।

पुढवि° देखो पुढवी (आचानि १, १, २; भग १६, ३; पि ६७)। °काइय, °क्काइय वि [°कायिक] पृथिवी शरीरवाला (जीव), (पण्ण १; भग १६, ३; ठा १; आचानि १, १, २)। °काय देखो पुढवी-काय (आचानि १, १, २)।

पुढवी स्त्री [पृथिवी] १ पृथिवी, धरती, भूमि (हे १, ८८; १३१; ठा ३, ४)। २ काठिन्यादि गुणवाला पदार्थ, द्रव्य-विशेष—मृत्तिका पाषाण, धातु आदि (पण्ण १)। ३ पृथिवीकाय का जीव (जी २)। ४ ईशानेन्द्र के एक लोकपाल की अग्र-महिषी (ठा ४, १—पत्र २०४)। ५ एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८—पत्र ४३६)। ६ भगवान् सुपार्श्वनाथ की माता का नाम (राज)। °काइय देखो पुढवि-काइय (राज)। °काय वि [°काय] पृथिवी शरीरवाला (जीव), (आचानि १, १, २)। °वइ पुं [°पति] राजा (ठा ७)। °सत्थ न [°शस्त्र] १ पृथिवी रूप शस्त्र। २ पृथिवी का शस्त्र, हल, कुद्दाल आदि (आचा)। देखो पुहई, पुहवी।

पुढीभूय वि [पृथग्भूत] जो अलग हुआ हो (सुपा २३६)।

पुढुम वि [प्रथम] पहला, आद्य (हे १, ५५; कुमा)।

पुढो अ [पृथग्] अलग, भिन्न (सुपा ३६२; रयण ३०; श्रावक ४०; आचा)। °छंद वि [°छन्द] विभिन्न अभिप्रायवाला (आचा; पि ७८)। °जण पुं [°जन] प्राकृत मनुष्य, साधारण लोक (सूअ १, ३, १, ६)। °जिय पुं [°जीव] विभिन्न प्राणी (सूअ १, १, २, ३)। °विमाय, °वेमाय वि [°विमात्र] अनेक प्रकार का, बहुविध (राज; ठा ४, ४—पत्र २८०)।

पुढोजग वि [दे. पृथग्जक] पृथग्भूत, भिन्न व्यस्थित; 'जमिणं जगती पुढोजगा' (सूअ १, २, १, ४)।

पुढोवम वि [पृथिव्युपम] पृथिवी की तरह सब सहन करनेवाला (सूअ १, ६, २६)।

पुढोसिय वि [पृथिवीश्रित] पृथिवी के आश्रय में रहा हुआ (सूअ १, १२, १३; आचा)।

पुण सक [पू] १ पवित्र करना। २ धान्य आदि को तुषरहित करना, साफ करना। पुणइ (हे ४, २४१)। पुणंति (णाया १, ७)। कर्म. पुणिज्जइ, पुव्वइ (हे ४, २४२)।

पुण अ [पुनर्] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ भेद, विशेष (विसे ८११)। २ अवधारण, निश्चय। ३ अधिकार, प्रस्ताव। ४ द्वितीय बार, बारान्तर। ५ पक्षान्तर। ६ समुच्चय (पण्ह २, ३; गउड; कुमा; औप; जी ३७; प्रासू ६, ५२; १६८; स्वप्न ७२; पिंग)। ७ पादपूर्ति में भी इसका प्रयोग होता है (निचू १)। °करण न [°करण] फिर से बनाना। २ वि. जिसकी फिर से बनावट की जाय वह; 'भिन्नं संखं न होइ पुणकरणं' (उव)। °ण्णव वि [°नव] फिर से नया बना हुआ, ताजा (उप ७६८ टी; कप्पू)। °पुण अ [°पुनर्] फिर-फिर, बारंबार। °पुणकरण न [°पुनःकरण] फिर फिर बनाना, बारंबार निर्माण (दे १,

३२)। °ब्भव पुं [°भव] फिर से उत्पत्ति, फिर से जन्म-ग्रहण (चेइय ३५७; औप)। °ब्भू स्त्री [°भू] फिर से विवाहित स्त्री, जिसका पुनर्लग्न हुआ हो वह महिला; 'अत्थि पुणब्भूकप्पो त्ति विवाहिया पच्छन्नं' (कुप्र २०८; २०९)। °रवि, °रावि अ [°अपि] फिर भी (उवा; उत्त १०, १९; १९)। °राविति स्त्री [°आवृत्ति] पुनः आवर्त्तन (पडि)। °रुत्त वि [°उक्त] फिर से कहा हुआ। २ न. पुनरुक्ति (चेइय ५३८)। °वि अ [°अपि] फिर भी (संक्षि १९; प्राकृ ८७)। °व्वसु पुं [°वसु] १ नक्षत्र-विशेष (सम १०; ६९)। २ आठवें वासुदेव के पूर्व जन्म का नाम (सम १५३; पउम २०, १७२)।

पुण (अप) देखो पुण्ण = पुण्य। °मंत वि [°मत्] पुण्यशाली (पिंग)।

पुणअ सक [दृश्] देखना। पुणअइ (धात्वा १४५)।

पुणइ पुं [दे] श्वपच, चाण्डाल (दे ६, ३८)।

पुणण वि [पवन] पवित्र करनेवाला। स्त्री. °णी (कुमा)।

पुणरुत्त } अ. कृत-करण, बारंबार, फिर-फिर;
पुणरुत्तं } 'अइ सुप्पइ पंसुलि णीसहेहिं अंगेहिं पुणरुत्तं' (हे १, १७९; कुमा), 'ण वि तह छेअरआइँवि हरंति पुणरुत्तराअरसिआइं' (गा २७४)।

पुणा } अ. देखो पुण = पुनर् (पि ३४३;
पुणाइ } हे १, ६५; कुमा; पउम ६, ९७;
पुणाइं } उवा)।

पुणु (अप) देखो पुण = पुनर् (कुमा; पि ३४२)।

पुणो देखो पुण = पुनर् (औप; कुमा; प्राकृ ८७)।

पुणोत्त देखो पुण-रुत्त, पुणरुत्त (प्राकृ ३०)।

पुणोल्ल सक [प्र + नोदय्] १ प्रेरणा करना। २ अत्यन्त दूर करना। पुणोल्लयामो (उत्त १२, ४०)।

पुण्ण पुंन [पुण्य] १ शुभ कर्म, सुकृत (औप; महा; प्रासू ७५; पाअ)। २ दो उपवास, बेला; 'भद्दं पुण्णं (? ण्णं) मुही (? हि)यं छट्ठमत्तस्स एगट्ठा' (संबोध ५८)। ३ वि. पवित्र, 'थाणुपियाजलपुण्णं' (कुमा)। °कलसा स्त्री [°कलशा] लाट देश के एक गाँव का नाम (राज)। °घण पुं [°घन] विद्याधरों का एक स्वनाम-ख्यात राजा (पउम ५, ६५)। °मंत, °मंत्त वि [°वत्] पुण्यवाला, भाग्यवान् (हे २, १५९; चंड)। देखो पुन्न = पुण्य।

पुण्ण वि [पूर्ण] १ संपूर्ण, भरपूर, पुरा (औप; भग; उवा)। २ पुं. द्वीपकुमार देवों का दाक्षिणात्य इन्द्र (इक)। ३ इक्षुवर समुद्र का अधिष्ठायक देव (राज)। ४ तिथि-विशेष, पक्ष की पाँचवीं, दसवीं और पनरहवीं तिथि (सुज्ज १०, १५)। ५ पुंन. शिखर-विशेष (इक)। °कलस पुं [°कलश] संपूर्ण घट (जं १)। °घोस पुं [°घोष] ऐरवत वर्ष का एक भावी जिन-देव (सम १५४)। °चंद पुं [°चन्द्र] १ संपूर्ण चन्द्रमा। २ विद्याधर वंश के एक राजा का नाम (पउम ५, ४४)। °प्पभ पुं [°प्रभ] इक्षुवर द्वीप का अधिपति देव (राज)। °भद्द पुं [°भद्र] १ स्वनाम-ख्यात एक गृह-पति, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा लेकर मुक्ति पाई थी (अंत)। २ यक्ष-निकाय का एक इन्द्र (४, १)। ३ पुंन. अनेक कूट-शिखरों का नाम (इक)। ४ यक्ष का चैत्य-विशेष (औप; विपा १, १; उवा)। °मासी स्त्री [°मासी] पूर्णिमा तिथि (दे)। °सेण पुं [°सेन] राजा श्रेणिक का पुत्र, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी (अनु)। देखो पुन्न = पूर्ण।

पुण्णमासिणी स्त्री [पौर्णमासी] तिथि-विशेष, पूर्णिमा (औप; भग)।

पुण्णवत्त न [दे] आनन्द से हृत वस्त्र (दे ६, ५३; पाअ)।

पुण्णा स्त्री [पूर्णा] १ तिथि-विशेष, पक्ष की ५, १० और १५ वीं तिथि (संबोध ५४; सुज्ज १०, १५)। २ पूर्णभद्र और मणिभद्र इन्द्र की एक महादेवी—अग्र-महिषी (इक; णाया २); 'पुण्णभद्दस्स णं जक्खिदस्स जक्खरन्नो चत्तारि अग्गमहिसीओ पण्णत्ताओ तं जहा—पुत्ता(? ण्णा) बहुपुत्तिआ उत्तमा तारगा, एवं माणिभद्दस्सवि' (ठा ४, १—पत्र २०४)।

पुण्णाग } देखो पुन्नाग (पउम ४३, ३९; से
पुण्णाम } ६, ५९; हे १, १९०; पि २३१)।

पुण्णाली स्त्री [दे] असती, कुलटा, पुंश्चली (दे ६, ५३; षड्)।

पुण्णाह पुंन [पुण्याह] १ पुण्य दिन, शुभ दिवस (गा १६५; गउड)। २ वाद्य-विशेष; 'पुण्णाहतूरेण' (स ४०१; ७३४)।

पुण्णिमसी स्त्री [पूर्णमासी] पूर्णिमा (संबोध ३६)।

पुण्णिमा स्त्री [पूर्णिमा] तिथि-विशेष, पूर्ण-मासी (काप्र १६४)। °यंद पुं [°चन्द्र] पूर्णिमा का चन्द्र (महा; हेका ४८)।

पुण्णिमासिणी देखो पुण्णमासिणी (सम ६६; श्रा २८; सुज्ज १०, ६)।

पुत्त पुं [पुत्र] लड़का (ठा १०; कुमा; सुपा ६६; ३३४; प्रासू २७; ७७; णाया १, २)। °वई स्त्री [°वती] लड़कावाली स्त्री (सुपा २८१)।

पुत्तंजीवय पुं [पुत्रंजीवक] वृक्ष-विशेष, पुतजीया, जियापोता का पेड़; 'पुत्तंजीवअरिट्ठे' (पण्ण १—पत्र ३१)। २ न. जियापोता का बीज; 'पुत्तंजीवयमालालंकिएणं' (स ३३७)।

पुत्तय पुं [पुत्रक] देखो पुत्त (महा)।

पुत्तरे पुंस्त्री [दे] योनि, उत्पत्ति-स्थान; 'पुत्तरे योनौ' (संक्षि ४७)।

पुत्तलय पुं [पुत्रक] पूतला (सिरि ८६१; ६२; ६४)।

पुत्तलिया } स्त्री [पुत्रिका] शालभञ्जिका, पूतली
पुत्तली } (पाअ; कुम्मा ६; प्रवि १३; सुपा २६९; सिरि ८१५)।

पुत्तह देखो पुत्त (प्राकृ ३५)।

पुत्ताणुपुत्तिय वि [पौत्रानुपुत्रिक] पुत्र-पौत्रादि के योग्य, 'पुत्ताणुपुत्तियं वित्ति कप्पेति' (णाया १, १—पत्र ३७)।

पुत्तिआ स्त्री [पुत्रिका] १ पुत्री, लड़की (अभि १७८)। २ पूतली (दे ६, ९२, कुमा)।

पुत्तिल्ल देखो पुत्त (प्राकृ ३५)।

पुत्ती स्त्री [पुत्री] लड़की (कप्पू)।

पुत्ती स्त्री [पोती] १ वस्त्र-खण्ड, मुख-वस्त्रिका (पव ६०; संबोध ५४)। २ साड़ी, कटी-वस्त्र (धर्मवि १७)। देखो **पोत्ती**।

पुत्तुल्ल पुं [पुत्र] पुत्र, लड़का (प्राकृ ३५)।

पुत्थ वि [दे] मृदु, कोमल (दे ६, ५२)।

पुत्थ } पुंन [पुस्त, °क] १ लेप्यादि कर्म
पुत्थय } (श्रा १)। २ पुस्तक, पोथी, किताब; 'पुत्थए लिहावेइ' (कुप्र २४८), 'अवहरिओ पुत्थओ सहसा' (सम्मत्त ११८)। देखो **पोत्थ**।

पुथवी देखो **पुढवी** (चंड)।

पुथुणी } (पै) देखो **पुढवी** (प्राकृ १२४;
पुथुवी } पि १६०)। °**नाथ** (पै) पुं [°नाथ] राजा (प्राकृ १२४)।

पुध देखो **पिहं** = पृथक् (ठा १०)।

पुधं देखो **पिधं** (हे १, १८८)।

पुधम } (पै) देखो **पुढम, पुढुम** (पि
पुधुम } १०४; हे ४, ३१६)।

पुन्न देखो **पुण्ण** = पुन्य; 'कह मह इत्तियापुन्ना जं सो दीसिज्ज पच्चक्खं' (सुर १२, ११८; उप ७६८ टी; कुमा)। °**कंखिअ** वि [°काङ्क्षित, °काङ्क्षिन्] पुण्य की चाहवाला (भग)। °**कलस** पुं [°कलश] एक राजा का नाम (उव ७६८ टी)। °**जसा** स्त्री [°यशस्] एक स्त्री का नाम (उप ७२८ टी)। °**पत्तिया** स्त्री [°प्रत्यया] एक जैन मुनि-शाखा (कप्प)। °**पिवासय** वि [°पिपासक] पुण्य का प्यासा, पुण्य की चाहवाला (भग)। °**भागि** वि [°भागिन्] पुण्य का भागी, पुण्य-शाली (सुपा ६४१)। °**सम्म** पुं [°शर्मन्] एक ब्राह्मण का नाम (उप ७२८ टी)। °**सार** पुं [°सार] एक स्वनाम-ख्यात श्रेष्ठी (उप ७२८ टी)।

पुन्न देखो **पुण्ण** = पूर्ण (सुर २, ६७; उप ७६८ टी; ठा २, ३; अनु २)। °**तल्ल** पुं [°तल] एक जैन मुनि-गच्छ (कुप्र ६)। °**पाय** वि [°प्राय] करीब-करीब संपूर्ण, कुछ कम पूर्ण (उप ७२८ टी)। °**भद्द** पुं [°भद्र] १ यक्ष-विशेष (सिरि ६६६)। २ यक्ष-निकाय एक इन्द्र (ठा २, ३)। ३ एक अन्तकृद् मुनि (अंत १८)। ४ एक जैन मुनि, आर्य श्री संभूतविजय का एक शिष्य (कप्प)।

पुन्नयण पुं [पुण्यजन] यक्ष, एक देव-जाति (पाअ)।

पुन्नाग } देखो **पुंनाग** (कप्प; कुमा; पउम
पुन्नाम } २१, ४६; पाअ)। ३ न. पुन्नाग का
पुन्नाय } फूल (कुमा; हे १, १६०)।

पुन्नालिया } [दे] देखो **पुण्णाली** (सुपा
पुन्नाली } ५६६; ५६७)।

पुन्निमा देखो **पुण्णिमा** (रंभा)।

पुप्पुअ वि [दे] पीन, पुष्ट, उपचित (दे ६, ५२)।

पुप्फ न [पुष्प] १ फूल, कुसुम (णाया १,१; कप्प; सुर ३,६५; कुमा)। २ विमानावास, देवविमान-विशेष (देवेन्द्र १३५; सम ३८)। ३ स्त्री का रज। ४ विकास। ५ आँख का एक रोग। ६ कुबेर का विमान (हे १, २३६; २, ५३; ६०, १५४)। °**गिरि** पुं [°गिरि] एक पर्वत का नाम (पउम ७६, १०)। °**कंत** न [°कान्त] एक देव-विमान; 'पुप्फकंतं' (सम ३८)। °**करंडय** पुं [°करण्डक] हस्तिशीर्ष नगर का एक उद्यान, 'पुप्फकरंडए उज्जाणे' (विपा २, १)। °**केउ** पुं [°केतु] १ ऐरवत क्षेत्र का सातवाँ भावी तीर्थंकर—जिनदेव (सम १५४)। २ ग्रह-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष (ठा २, ३)। °**ग** न [°क] १ मूल भाग; 'भाणस्स पुप्फगंतो इमेहिं कज्जेहिं पडिलेहे' (ओघ २८६)। २ पुष्प, फूल (कप्प)। ३ देखो नीचे °**य** (औप)। °**चूला** स्त्री [°चूला] १ भगवान् पार्श्वनाथ की मुख्य शिष्या का नाम (सम १५२; कप्प)। २ एक महासती, अन्निकाचार्य की सुयोग्य शिष्या (पडि)। ३ सुबाहुकुमार की मुख्य पत्नी का नाम (विपा २, १)। °**चूलिया** स्त्री [°चूलिका] एक जैन ग्रन्थ (निर १, ४)। °**च्चणिया** स्त्री [°ार्चनिका] पुष्पों से पूजा (णाया १, २)। °**च्चिणिया** स्त्री [°चायिनी] फूल बिननेवाली स्त्री (पाअ)। °**छज्जिया** स्त्री [°छादिका] पुष्प-पात्र-विशेष (राज)। °**ज्झय** न [°ध्वज] एक देव-विमान (सम ३८)। °**णंदि** पुं [°नन्दिन्] एक राजा का नाम (ठा १०)। °**णालिया** देखो °**नालिया** (तंदु)। °**दंत** पुं [°दन्त] १ नववाँ जिनदेव, श्री सुविधिनाथ (सम ६२; ठा २, ४)। २ ईशानेन्द्र के हस्ति-सैन्य का अधिपति देव (ठा ५, १; इक)। ३ देव-विशेष (सिरि ६६७)। °**दंती** स्त्री [°दन्ती] दमयन्ती की माता का नाम, एक रानी (कुप्र ४८)। °**नालिया** स्त्री [°नालिका] पुष्प का बेंट—डंठल (तंदु ४)। °**निज्जास** पुं [°निर्यास] पुष्प-रस (जीव ३)। °**पुर** न [°पुर] पाटलिपुत्र, पटना शहर (राज)। °**पूरय** पुं [°पूरक] पुष्प की रचना-विशेष (णाया १, १६)। °**प्पभ** न [°प्रभ] एक देव-विमान (सम ३८)। °**बलि** पुं [°बलि] उपचार, पुष्प-पूजा (पाअ)। °**बाण** पुं [°बाण] कामदेव (रंभा)। °**भद्द** क्लीन [°भद्र] नगर-विशेष, पटना शहर (राज)। °**मंत** वि [°वत्] पुष्पवाला (णाया १, १)। °**माल** न [°माल] वैताढ्य की उत्तर श्रेणि का एक नगर (इक)। °**माला** स्त्री [°माल] ऊर्ध्व लोक में रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८—पत्र ४३७)। °**य** पुं [°क] १ फेन, डिण्डीर (पाअ)। २ न. ईशानेन्द्र का एक पारियानिक विमान, देव-विमान-विशेष (ठा ८; इक; पउम ७६, २८; औप)। ३ पुष्प, फूल (कप्प)। ४ ललाट का एक पुष्पाकार आभूषण (जं २)। देखो ऊपर °**ग**। °**लाई**, °**लावी** स्त्री [°लावी] फूल बिननेवाली स्त्री (पाअ; दे १, ६)। °**लेस** न [°लेश्य] एक देव-विमान (सम ३८)। °**वई** स्त्री [°वती] १ ऋतुमती स्त्री (दे ६, ६४; गा ४८०)। २ सत्पुरुष नामक किंपुरुषेन्द्र की एक अग्र-महिषी (ठा ४, १; णाया २)। ३ बीसवें जिनदेव की प्रवर्तिनी—प्रमुख साध्वी का नाम (सम १५२; पव ६)। ४ चैत्य-विशेष (भग)। °**वण्ण** न [°वर्ण] एक देव-विमान (सम ३८)। °**सिंग** न [°श्रृङ्ग] एक देव-विमान (सम ३८)। °**सिद्ध** न [°सिद्ध] देव-विमान-विशेष (सम ३८)। °**सुय** पुं [°शुक] व्यक्ति-वाचक नाम (उव)। °**वत्त** न [°वर्त्त] एक देव-विमान (सम ३८)।

पुप्फस न [दे] फेफसा, शरीर का एक भीतरी अंग (पउम १०५, ५५)।

पुप्फा स्त्री [दे] फूफी, पिता की बहिन (दे ६, ५२)।

पुप्फिअ वि [पुष्पित] कुसुमित, संजात-पुष्प (धर्मवि १४८; कुमा; णाया १, ११; सुपा ५८)।

पुप्फिआ स्त्री [दे] देखो पुप्फा (पाअ)।

पुप्फिआ स्त्री [पुष्पिता] एक जैन आगम-ग्रंथ (निर १, ३)।

पुप्फिम पुंस्त्री [पुष्पत्व] पुष्पपन (हे २, १५४)।

पुप्फी [दे] देखो पुप्फा (षड्)।

पुप्फुआ स्त्री [दे] करीष (गोयठा) का अग्नि, 'सूइज्जइ हेमंतम्मि दुग्गओ पुप्फुआसुअंधेण' (गा ३२९)।

पुप्फुत्तर न [पुष्पोत्तर] एक विमान (कप्प)। °वडिंसग न [°ावतंसक] एक देव-विमान (सम ३८)।

पुप्फुत्तरा } स्त्री [पुष्पोत्तरा] शक्कर की
पुप्फोत्तरा } एक जाति (णाया १, १७—पत्र २२९; पण्ण १७—पत्र ५३३)।

पुप्फोदय न [पुष्पोदक] पुष्प-रस से मिश्रित जल (णाया १, १—पत्र १९)।

पुप्फोवय } वि [पुष्पोपग] पुष्प प्राप्त
पुप्फोवा° } करनेवाला, फूलनेवाला (वृक्ष) (ठा ३, १—पत्र ११३)।

पुम पुं [पुंस्] १ पुरुष, नर; 'थीअपुमाणं विसुज्झंता' (पंच ५, ७२), 'पुमत्तमागम्म कुमार दोवि' (उत्त १४, ३; ठा ८; औप)। २ पुरुष-वेद (कम्म ५, ६०)। °आणमणी स्त्री [°आज्ञापनी] पुरुष को आज्ञा देनेवाली भाषा, भाषा-विशेष (पण्ण ११)। °पन्नावणी स्त्री [प्रज्ञापनी] भाषा-विशेष; पुरुष के लक्षणों का प्रतिपादन करनेवाली भाषा (पण्ण ११—पत्र ३६४)। °वयण न [°वचन] पुंलिंग शब्द का उच्चारण (पण्ण ११—पत्र ३७०)।

पुम्म (अप) सक [दृश्] देखना। पुम्मइ (प्राकृ ११९)।

पुयली स्त्री [दे] पुत-प्रदेश, कमर के नीचे का भाग; 'पुयलिं पप्फोडेमाणे' (भग १५—पत्र ६७९)।

पुयावइत्ता देखो पुआव।

पुर (अप) देखो पूर = पूरय्। पुरह (पिंग)।

पुर न [पुर] १ नगर, शहर (कुमा; कुप्र ४३८)। २ शरीर, देह (कुप्र ४३८)। °चंद पुं [°चन्द्र] विद्याधर वंश का एक राजा (पउम ५, ४४)। °भेयण वि [°भेदन] नगर का भेदन करनेवाला। स्त्री—°णी (उत्त २०, १८)। °वइ पुं [°पति] नगर का अधिपति (भवि)। °वर न [°वर] श्रेष्ठ नगर, (उवा; पण्ह १, ४)। °वरी स्त्री [°वरा] श्रेष्ठ नगरी (णाया १, ६; उवा; सुर २, १५२)। °वाल पुं [°पाल] नगर-रक्षक, राजा (भवि)।

पुर देखो पुरं; 'पुरकम्मम्मि य पुच्छा' (बृह १)।

पुरएअ } देखो पुरदेव (भवि)।
पुरएव }

पुरओ अ [पुरतस्] १ अग्रतः, आगे (सम १५१; ठा ४, २; गा ३५०; कुमा; औप)। २ पहले, पूर्व में; 'पुरओ कयं जं तु तं पुरेकम्मं' (ओघ ४८६)।

पुरं अ [पुरस्] १ पहले, पूर्व में। २ समक्ष; 'तए णं से दरिद्दे समुक्किट्ठे समाणे पच्छा पुरं च णं विउलभोगसमितिसमन्नागते यावि विहरिज्जा' (ठा २, १—पत्र ११७)। ३ अग्रे, आगे। °गम वि [°गम] अग्र-गामी, पुरोवर्त्ती (सूअ १, ३, ३, ६)। देखो पुरे, पुरो।

पुरंजय पुं [पुरञ्जय] एक विद्याधर राजा। °पुर न [°पुर] एक विद्याधर-नगर (इक)।

पुरंदर पुं [पुरन्दर] १ इन्द्र, देवराज। २ गन्ध-द्रव्य-विशेष (हे १, १७७)। ३ वृक्ष-विशेष, चव्य जा पेड़; 'पुरंदरकुसुमदाम-सुविणेण सूइया जाया' (उप ६८६ टी)। ४ एक राजर्षि (पउम २१, ८०)। ५ मन्दर-कुञ्ज नगर का एक विद्याधर राजा (पउम ६, १७०)। °जसा स्त्री [°यशस्] एक राज-कन्या का नाम (उप ९७३)। °दिसि स्त्री [°दिश्] पूर्व दिशा (उप १४२ टी)।

पुरंधि } स्त्री [पुरन्ध्री] १ बहु कुटुम्बवाली
पुरंधी } स्त्री। २ पति और पुत्रवाली स्त्री (कुमा; कुप्र १०७; सुपा २६; पाअ)। ३ अनेक काल पहले व्याही हुई स्त्री (कप्पू)।

पुरकड देखो पुरक्खड (सूअ २, २, १८)।

पुरक्कार पुं [पुरस्कार] १ आगे करना, अग्रतः स्थापन (आचा)। २ सम्मान, आदर (सम ४०)।

पुरक्खड वि [पुरस्कृत] १ आगे किया हुआ (श्रा ६)। २ पुरोवर्त्ती, आगामी; 'गहण-समयपुरक्खडे पोग्गले उदीरेंति' (भग १, १)।

पुरच्छा देखो पुरत्था (राज)।

पुरच्छिम देखो पुरत्थिम (ठा २, ३—पत्र ६७; सुज्ज २०—पत्र २८७; पि ५९५)। °दाहिणा स्त्री [°दक्षिणा] पूर्व-दक्षिण दिशा, अग्निकोण (ठा १०—पत्र ४७८)।

पुरच्छिमा देखो पुरत्थिमा (ठा १०—पत्र ४७८)।

पुरच्छिमिल्ल देखो पुरत्थिमिल्ल (सम ६६)।

पुरत्थ वि [पुरःस्थ] आगे रहा हुआ, अग्र-वर्त्ती, पुरस्सर, 'पुरत्थं होइ सहायं रणे समं तेण' (उप १०३१ टी), 'जेण गहिएणणत्था इत्थ परत्थावि हु पुरत्था' (श्रा १४)।

पुरत्थ } अ [पुरस्तात्] १ पहले, काल
पुरत्थओ } या देश की अपेक्षा से आगे; 'तप्पुर-
पुरत्था } पुरत्थभाए' (सुपा ३९०), 'मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य' (उत्त ३२, ३१), 'आदीणियं दुक्कडियं पुरत्था' (सूअ १, ५, १, २)। २ पूर्वदिशा; 'पुरत्थाभिमुहे' (कप्प; औप; भग; णाया १, १—पत्र १९)।

पुरत्थिम वि [पौरस्त्य, पूर्व] १ पूर्व की तरफ का; 'उत्तर-पुरत्थिमे दिसीभाए' (कप्प; औप)। २ न. पूर्व दिशा; 'पुरतो पुरत्थिमेणं' (णाया १, १—पत्र ५४; उवा)।

पुरत्थिमा स्त्री [पूर्वा] पूर्व दिशा; 'पुरत्थिमाओ वा दिसाओ आगओ' (आचा; सुज्ज १५८ टि)।

पुरत्थिमिल्ल वि [पौरस्त्य] पूर्व दिशा का, पूर्व दिशा में स्थित (विपा १, ७, पि ५९५)।

पुरदेव पुं [पुरादेव] भगवान् आदिनाथ, 'पुरदेवजिणस्स निव्वाणं' (पउम ४, ८७)।

पुरव देखो पुव्व (गउड; हे ४, २७०; ३२३)।

पुरस्सर वि [पुरस्सर] अग्रगामी (कप्पू)।

पुरा स्त्री [पुर्] नगरी, शहर (हे १, १६)।

पुरा देखो पुरिल्ला = पुरा (सूअ १, १, २, २४; विपा १, १)। °इय, °कय वि [°कृत] पूर्व काल में किया हुआ (भवि; कुप्र ३१९)। °भव पुं [°भव] पूर्व जन्म (कुप्र ४०६)।

पुराअण वि [पुरातन] पुराना, प्राचीन। स्त्री. °णी (नाट—चैत १३१)।

पुराकर सक [पुरा + कृ] आगे करना। पुराकरंति (सूअ १, ५, २, ५)।

पुराण वि [पुराण] १ पुराना, पुरातन (गउड; उत्त ८, १२)। २ न. व्यासादि-मुनि-प्रणीत ग्रन्थ-विशेष, पुरातन इतिहास के द्वारा जिसमें धर्म-तत्त्व निरूपित किया जाता हो वह शास्त्र (धर्मवि ३८; भवि)। °पुरिस पुं [°पुरुष] श्रीकृष्ण (वज्जा १२२)।

पुरिकोबेर पुं. ब. [पुरीकौबेर] देश-विशेष (पउम ६८, ६७)।

पुरित्थिमा देखो पुरत्थिमा (सूअ २, १, ६)।

पुरिम देखो पुव्व = पूर्व (हे २, १३५; प्राकृ २८; भग; कुमा); 'पंचवओ खलु धम्मो पुरिमस्स य पच्छिमस्स य जिणस्स' (पव ७४; पंचा १७, १)। °ड्ढ पुंन [°ार्ध] १ पूर्वार्ध। २ प्रत्याख्यान-विशेष (पंचा ५; पडि)। ३ तप-विशेष, निर्विकृतिक तप (संबोध ५७)। °ड्ढिय वि [°ार्धिक] 'पुरिमड्ढ' प्रत्याख्यान करनेवाला (पण्ह २, १; ठा ५, १)।

पुरिम वि [पौरस्त्य] अग्र-भव, अग्रेतन, आगे का; 'इय पुव्वुत्तचउक्के झाणेसु पढमदुगि खु मिच्छत्तं। पुरिमदुगे सम्मत्तं' (संबोध ५२)।

पुरिम पुं [दे] प्रस्फोटन, प्रतिलेखन की क्रिया-विशेष, 'छ प्पुरिमा नव खोडा' (ओघ २६५)।

पुरिमताल न [पुरिमताल] नगर-विशेष (विपा १, ३; औप)।

पुरिमिल्ल वि [पूर्वीय] पहले का, पुरातन, प्राचीन; 'आसि नरा पुरिमिल्ला, ता किं अम्हेवि तह होमो' (चेइय ११५)।

पुरिल पुं [दे] दैत्य, दानव (षड्)।

पुरिल्ल वि [पुरातन] पुरा-भव, पहले का, पूर्ववर्ती (विसे १३२६; हे २, १६३)।

पुरिल्ल वि [पौरस्त्य] पुरो-भव, पुरो-वर्त्ती, अग्र-गामी (से १३, २; हे २, १६३; प्राप्र; षड्)।

पुरिल्ल वि [पौर] पुर-भव, नागरिक (प्राकृ ३५; हे २, १६३)।

पुरिल्ल वि [दे] प्रवर, श्रेष्ठ (दे ६, ५३)।

पुरिल्ल देखो पुरिल्ला = पुरा, पुरस्; 'पुरिल्लो' (हे २, १६४ टि; षड्)।

पुरिल्लदेव पुं [दे] असुर, दानव (दे ६, ५५)।

पुरिल्लपहाणा स्त्री [दे] साँप की दाढ (दे ६, ५६)।

पुरिल्ला अ [पुरा] १ निरन्तर क्रिया-करण, विच्छेद-रहित क्रिया करना। २ प्राचीन, पुराना। ३ पुराने समय में। ४ भावी। ५ निकट, सन्निहित। ६ इतिहास, पुरावृत्त (हे २, १६४)।

पुरिल्ला अ [पुरस] आगे, अग्रतः (हे २, १६४)।

पुरिस पुंन [पुरुष] १ पुमान्, नर, मर्द (हे १, १२४; भग; कुमा; प्रासू १२६); 'इत्थीणि वा पुरिसाणि वा' (आचा २, ११, १८)। २ जीव, जीवात्मा (विसे २०६०; सूअ २, १, २६)। ३ ईश्वर (सूअ २, १, २६)। ४ शङ्कु, छाया नापने का काष्ठादि-निर्मित कीलक। ५ पुरुष-शरीर (णंदि)। °कार, °क्कार, °गार पुं [°कार] १ पौरुष, पुरुषपन, पुरुष-चेष्टा, पुरुष-प्रयत्न (प्रासू ४३; उवा; सुर २, ३५; उवर ४७)। २ पुरुषत्व का अभिमान (औप)। °जाय पुं [°जात] १ पुरुष। २ पुरुष-जातीय (सूअ २, १, ६; ७; ठा ३, १; २; ४, १)। °जुग न [°युग] क्रम-स्थित पुरुष (सम ६८)। °जेट्ठ पुं [°ज्येष्ठ] प्रशस्त पुरुष (पंचा १७, १०)। °त्त, °त्तण न [°त्व] पौरुष, पुरुषपन; 'नहि नियजुवइसलहिया पुरिसा पुरिसत्तणमुविंति' (सुर २, २४; महा; सुपा ८४)। °त्थ पुं [°ार्थ] धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष रूप पुरुष-प्रयोजन; 'सयलपुरिसत्थकारणमइदुलहो माणुसो भवो एसो' (धर्मवि ८२; कुमा; सुपा १२६)। °पुंडरीअ पुं [°पुण्डरीक] इस अवसर्पिणी काल में उत्पन्न षष्ठ वासुदेव (पव २१०)। °प्पणीय वि [°प्रणीत] १ ईश्वर-निर्मित। २ जीव-रचित (सूअ २, १, २६)। °मेह पुं [°मेध] यज्ञ-विशेष, जिसमें पुरुष का होम किया जाय वह यज्ञ (राज)। °यार देखो °कार (गउड; सुर २, १६; सुपा २७१)। °लक्खण न [°लक्षण] कला-विशेष, पुरुष के शुभाशुभ चिह्न पहचानने की एक सामुद्रिक कला (जं २)। °लिंग, न [°लिङ्ग] पुरुष-चिह्न। °लिंगसिद्ध पुं [°लिङ्गसिद्ध] पुरुष-शरीर से जो मुक्त हुआ हो वह (णंदि)। °वयण न [°वचन] पुंलिंग शब्द (आचा। २, ४, १, ३)। °वर पुं [°वर] श्रेष्ठ पुरुष (औप)। °वरगंधहत्थि पुं [°वरगन्धहस्तिन्] १ पुरुषों में श्रेष्ठ गन्धहस्ती के तुल्य। २ जिन-देव (भग; पडि)। °वरपुंडरीय पुं [°वरपुण्डरीक] १ पुरुषों में श्रेष्ठ पद्म के समान। २ जिन-देव, अर्हन् (भग; पडि)। °विजय पुं [°विचय, °विजय] ज्ञान-विशेष (सूअ २, २, २७)। °वेय पुं [°वेद] १ कर्म-विशेष, जिसके उदय से पुरुष को स्त्री-संभोग की इच्छा होती है वह कर्म। २ पुरुष को स्त्री-भोग की अभि-लाषा (पण्ण २३; सम १५०)। °सिंह, °सीह पुं [°सिंह] १ पुरुषों में सिंह के समान, श्रेष्ठ पुरुष। २ पुं. जिनदेव, जिन भगवान् (भग; पडि)। ३ भगवान् धर्मनाथ के प्रथम श्रावक का नाम (विचार ३७८)। ४ इस अवसर्पिणी काल में उत्पन्न पाँचवाँ वासुदेव (सम १०५; पउम ५, १५५; पव २१०)। °सेण पुं [°सेन] १ भगवान् नेमिनाथ के पास दीक्षा लेकर मोक्ष जानेवाला एक अन्तकृद् महर्षि, जो वासुदेव के अन्यतम पुत्र थे (अंत १४)। २ भगवान् महावीर के पास दीक्षा लेकर अनुत्तर विमान में उत्पन्न होनेवाले एक मुनि, जो राजा श्रेणिक के पुत्र थे (अनु १)। °ादाणिअ, °ादाणीय पुं [°ादानीय] उपादेय पुरुष, आप्त पुरुष (सम १३; कप्प)।

पुरिसकारिआ स्त्री [पुरुषकारिका, °ता] पुरुषार्थ, प्रयत्न (दस, ५, २, ६)।

पुरिसाअ अक [पुरुषाय्] विपरीत मैथुन करना। वकृ. पुरिसाअंत (गा १९६; ३९१)।

पुरिसाइअ न [पुरुषायित] विपरीत मैथुन (दे १, ४२)।

पुरिसाइर वि [पुरुषायितृ] विपरीत रत करनेवाला, 'दरपुरिसाइरि विसमिरि सुजाण पुरिसाण जं दुक्खं' (गा ५२; ४४६)।

पुरिसुत्तम, पुरिसोत्तम पुं [पुरुषोत्तम] १ उत्तम पुरुष, श्रेष्ठ पुमान्। २ जिन-

देव, अर्हन् (सम १; भग; पडि)। ३ चौथा त्रिखण्डाधिपति, चतुर्थ वासुदेव (सम ७०; पउम ५, १५५)। ४ भगवान् अनन्तनाथ का प्रथम श्रावक (विचार १७८)। ५ श्रीकृष्ण (सम्मत्त २२६)।

पुरी स्त्री [पुरी] नगरी, शहर (कुमा)। °**नाह** पुं [°नाथ] नगरी का अधिपति, राजा (उप ७२८ टी)।

पुरीस पुंन [पुरीष] विष्ठा (णाया १, ८; उप १३६ टी; ३२० टी; पाम्र); 'मुत्तपुरीसे य पिक्खंति' (धर्मवि १६)।

पुरु पुं [पुरु] १ स्व-नाम-ख्यात एक राजा (अभि १७६)। २ वि. प्रचुर, प्रभूत। स्त्री. °**ई** (प्राकृ २८)।

पुरुपुरिआ स्त्री [दे] उत्कण्ठा, उत्सुकता (दे ६, ५)।

पुरुमिल्ल देखो **पुरिमिल्ल** (गउड)।

पुरुव } देखो **पुव्व**=पूर्व; 'ण ईरिसो **पुरुव्व** } दिट्ठपुरुव्वो' (स्वप्न ५५), 'अमंद-आणंदगु'दलपुरुव्वं' (सुपा २२, नाट—मृच्छ १२१; पि १२५)।

पुरुस (शौ) देखो **पुरिस** (प्राकृ ८३; स्वप्न २६; अवि ८५; प्रयौ ६६)।

पुरुसोत्तम (शौ) देखो **पुरिसोत्तम** (पि १२४)।

पुरुहूअ पुं [दे] घूक, उल्लू (दे ६, ५५)।

पुरुहूअ पुं [पुरुहूत] इन्द्र, देव-राज (गउड)।

पुरूरव पुं [पुरूरवस्] एक चंद्र-वंशीय राजा (पि ४०८; ४०६)।

पुरे देखो **पुरं**; 'जस्स नत्थि पुरे पच्छा मज्झे तस्स कुओ सिया' (आचा)। °**कड** वि [°कृत] आगे किया हुआ, पूर्व में किया हुआ (औप; सूअ १, ५, २, १; उत्त १०, ३)। °**कम्म** न [°कर्मन्] पहले करने का काम; पूर्व में की जाती क्रिया; 'पुरओ कयं जं तु तं पुरेकम्मं' (ओघ ४८६; हे १, ५७)। °**कार** पुं [°कार] सम्मान, आदर (उत्त २६, ७; सुख २६, ७)। °**क्खड** देखो °**कड** (पण्ण ३६—पत्र ७६६; पण्ह १, १)। °**वाय** पुं [°वात] १ सस्नेह वायु। २ पूर्व दिशा का पवन (णाया १, ११—पत्र १७१)। °**संखडि** स्त्री [दे. संस्कृति] पहले ही किया जाता जिमनवार —भोजनोत्सव; (आचा २, १, २, ६; २, १ ४, १)। °**संथुय** वि [°संस्तुत] १ पूर्व-परिचित। २ स्व-पक्ष का सगा (आचा २, १, ४, ५)।

पुरेस पुं [पुरेश] नगर-स्वामी (भवि)।

पुरो देखो **पुरं** (मोह ४६, कुमा)। °**अ**, °**ग** वि [°ग] अग्रगामी, अग्रेसर (प्रति ४०; विसे २५४८)। °**गम** वि [°गम] वही अर्थ (उप पृ ३५१)। °**भाइ** वि [°भागिन्] दोष को छोड़ कर गुण-मात्र को ग्रहण करने वाला (नाट—विक्र ६७)।

पुरोकर सक [पुरस् + कृ] १ आगे करना। २ स्वीकार करना। ३ सम्मान करना। संकृ. **पुरोकरिअ, पुरोकाउं** (मा १६; सूअ १, १, ३, १५)।

पुरोत्तमपुर न [पुरोत्तमपुर] एक विद्याधर-नगर का नाम (इक)।

पुरोवग पुं [पुरोपक] वृक्ष-विशेष (औप)।

पुरोह पुं [पुरोधस्] पुरोहित (उप ७२८ टी; धर्मवि १४६)।

पुरोहड वि [दे] १ विषम, असम। २ पच्छोकड (?) (दे ६, १५)। ३ पुंन. आवृत भूमि का वास्तु (दे ६, १५)। ४ अग्रद्वार, दरवाजा का अग्रभाग (ओघ ६२२)। ५ बाडा, वाटक; 'संभासमए पत्ते मज्झ बलद्दा पुरोहडस्संतो। मह दिट्ठीए दंसिवि ठाएयव्वा' (सुपा ५४५; बृह २)।

पुरोहिअ पुं [पुरोहित] पुरोधा, याजक, होम आदि से शान्ति-कर्म करनेवाला ब्राह्मण (कुमा; काल)।

पुल पुं [दे. पुल] छोटा फोड़ा, फुनसी; 'ते पुला भिज्जंति' (ठा १०—पत्र ५२१)।

पुल वि [पुल] समुच्छ्रित, उन्नत; 'पुलनिप्पुलाए' (दस १०, १६)।

पुल अक [पुल्] उन्नत होना (दस १०, १६)।

पुल } सक [दृश्] देखना। पुलइ, पुलअइ **पुलअ** } (प्राकृ ७१; हे ४, १८१; प्राप्र ८, ६६)। पुलएइ (गउड १०६३), पुलएमि (गा ५३१)। वकृ. **पुलंत, पुलअंत, पुलएंत** (कप्पू; नाट—मालवि ६; पउम ३, ७७; ८, १६०, सुर ११, १२०, १२, २०४; ७, २१२)। संकृ. **पुलइअ** (स ६८६)।

पुलअ पुं [पुलक] १ रोमाञ्च (कुमा)। २ रत्न-विशेष, मणि की एक जाति (पण्ण १; उत्त ३६, ७७; कप्प)। ३ जलचर जन्तु-विशेष, ग्राह का एक भेद, 'सीमागारपुलु(? ल)-यसुंसुमार—' (पण्ह १, १—पत्र ७)। °**कंड** पुंन [°काण्ड] रत्नप्रभा नरक-पृथिवी का एक काण्ड (ठा १०)।

पुलअण वि [दर्शन] देखनेवाला, प्रेक्षक (कुमा)।

पुलअण न [पुलकन] पुलकित होना (कप्पू)।

पुलआअ अक [उत् + लस्] उल्लसित होना, उल्लास पाना। पुलआअइ (हे ४, २०२)। वकृ. **पुलआअमाण** (कुमा)।

पुलइअ वि [दृष्ट] देखा हुआ (गा ११८; सुर १४, ११; पाम्र)।

पुलइअ वि [पुलकित] रोमाञ्चित (पाम्र; कुमा ४, १६; कप्प; महा; गा २०)।

पुलइज्ज अक [पुलकाय्] रोमाञ्चित होना। वकृ. **पुलइज्जंत** (सण)।

पुलइल्ल वि [पुलकिन्] रोमाञ्च-युक्त, रोमाञ्चित (वज्जा १६४)।

पुलएंत देखो **पुलअ**=दृश्।

पुलंधअ पुं [दे] भ्रमर, भौंरा (षड्)।

पुलंपुल न [दे] अनवरत, निरन्तर (पण्ह १, ३—पत्र ४५; औप)।

पुलक } देखो **पुलअ**=पुलक (पि २०३ टि; **पुलग** } णाया १, १; सम १०४; कप्प)।

पुलय पुंन [पुलक] कीट-विशेष (आचा २, १३, १)।

पुलाग } पुंन [पुलाक] १ असार अन्न, 'अन्न-**पुलाय** } मसारं भन्नइ पुलायसद्देण' (संबोध २८; पव ६३); 'निस्सारए होइ जहा पुलाए' (सूअ १, ७, २६)। २ चना आदि शुष्क अन्न (उत्त ८, १२, सुख ८, १२)। ३ लहसुन आदि दुर्गन्ध द्रव्य। ४ दुष्ट रसवाला द्रव्य; 'तिविहं होइ पुलागं धण्णे गंधे यरस-पुलाए य' (बृह ५)। ५ पुं. अपने संयम को निस्सार बनानेवाला मुनि, शिथिलाचारी साधुओं का एक भेद (ठा ३, २; ५, ३; संबोध २८; पव ६३)।

पुलासिअ पुं [दे] अग्नि-कण (दे ६, ५५)।

पुलिंद पुं [पुलिन्द] १ अनार्य देश-विशेष (इक)। २ पुंस्त्री. उस देश में रहनेवाला मनुष्य (पणह १, १; औ; ब... उव)। स्त्री. °दी (णाया १, १; औ.)।

पुलिण न [पुलिन] तट, किनारा; 'पोइएणो नइपुलिणाओ' (पउम १०, ५४)। २ लगातार बाईस दिनों का उपवास (संबोध ५८)।

पुलिय न [पुलित] गति-विशेष (औप)।

पुलुट्ठ वि [प्लुष्ट] दग्ध (पाअ)।

पुलोअ सक [दृश्, प्र + लोक्] देखना। पुलोएइ (हे ४, १८१; सुर १, ८६)। वकृ. पुलअंत, पुलोएंत (पि १०४; सुर ३, ११८)।

पुलोअण न [दर्शन, प्रलोकन] विलोकन (दे ६, ३०; गा ३२२)।

पुलोइअ वि [दृष्ट, प्रलोकित] १ देखा हुआ (सुर ३, १६४)। २ न. अवलोकन (से ७, ५६)।

पुलोएंत देखो **पुलोअ**।

पुलोम पुं [पुलोमन्] दैत्य-विशेष। °तणया स्त्री [°तनया] शची, इन्द्राणी (पाअ)।

पुलोमी स्त्री [पौलोमी] इन्द्राणी (प्राकृ १०; हे १, १६०)।

पुलोव देखो **पुलोअ**। पुलोवेदि (शौ) (पि १०४)।

पुलोस पुं [प्लोष] दाह, दहन (गउड)।

पुल्ल [दे] देखो पोल्ल (सुख ६, १)।

पुल्लि पुंस्त्री [दे] १ व्याघ्र, शेर (दे ६, ७६; पाअ)। २ सिंह, पञ्चानन, मृगेन्द्र (दे ६, ७६)। स्त्री. 'को पियइ पयं च पुल्लीए' (सुपा ३१२)।

पुव } सक [प्लु] गति करना, चलना।
पुव्व } पुवति (पि ४७३), पुव्वंति (भग १५—पत्र ६७०; टी—पत्र ६७३)।

पुव्व° देखो **पुण** = पू।

पुव्व वि [पूर्व] १ दिशा, देश और काल की अपेक्षा से पहले का, आद्य, प्रथम (ठा ४, ४; जी १; प्रासू १२२)। २ समस्त, सकल। ३ ज्येष्ठ भ्राता (हे २, १३५; षड्)। ४ पुंन. काल-मान-विशेष, चौरासी लाख को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो उतने वर्ष (ठा २, ४; सम ७४; जी ३७; इक)। ५ जैन ग्रन्थांश-विशेष, बारहवें अंग-ग्रन्थ का एक विशाल विभाग, अध्ययन, परिच्छेद; 'चोद्दसपुव्वी' (विपा १, १)। ६ द्वन्द्व, वधू-वर आदि युग्म; 'पुव्वट्ठाणाणि' (आचा २, ११, १३)। ७ पूर्व-ग्रन्थ का ज्ञान (कम्म १, ७)। ८ कारण, हेतु (णंदि)। °कालिय वि [°कालिक] पूर्व काल का, पूर्व काल से संबन्ध रखनेवाला (पणह १, २—पत्र २)। °गय न [°गत] जैन शास्त्रांश-विशेष, बारहवें अंग का विभाग-विशेष (ठा १०—पत्र ४९१)। °ण्ह पुं [°ह्ण] १ दिन का पूर्व भाग, सुबह से दो पहर तक का समय (हे १, ६७)। २ तप-विशेष, 'पुरिमड्ढ' तप (संबोध ५८)। °तव पुंन [°तपस्] वीतराग अवस्था के पहले का—सराग अवस्था का तप (भग)। °दारिअ वि [°द्वारिक] पूर्व दिशा में गमन करने में कल्याण-कारी (नक्षत्र) (सम १२)। °द्ध पुंन [°ार्ध] पहला आधा (नाट)। °धर वि [°धर] पूर्व-ग्रन्थ का ज्ञान-वाला (पणह २, १)। °पय न [°पद] उत्सर्ग-स्थान (निचू १)। °पुट्ठवया स्त्री [°प्रोष्टपदा] नक्षत्र-विशेष (सुज्ज १०, ५)। °पुरिस पुं [°पुरुष] पूर्वज, पुरखा (सुर २, १६४)। °प्पओग पुं [°प्रयोग] पहले की क्रिया, पूर्व काल का प्रयत्न (भग ८, ६)। °फग्गुणी स्त्री [°फाल्गुनी] नक्षत्र-विशेष (राज)। °भद्दवया स्त्री [°भाद्रपदा] नक्षत्र-विशेष (राज)। °भव पुं [°भव] गत जन्म, अतीत जन्म (णाया १, १)। °भविय वि [°भविक] पूर्वजन्म संबंधी (भवि)। °य पुं [°ज] पूर्व पुरुष, पुरखा (सुपा २३२)। °रत्त पुं [°रात्र] रात्रि का पूर्व भाग (भग; महा)। °व न [°वत्] अनुमान प्रमाण का एक भेद (अणु)। °विदेह पुं [°विदेह] महाविदेह वर्ष का पूर्वीय हिस्सा (ठा २, ३; इक)। °समास पुंन [°समास] एक से ज्यादा पूर्व-शास्त्रों का ज्ञान (कम्म १, ७)। °सुय न [°श्रुत] पूर्व का ज्ञान (राज)। °सूरि पुं [°सूरि] पूर्वाचार्य, प्राचीन आचार्य (जीव १)। °हर देखो °धर (पउम ११८, १२१)। °णुपुव्वी स्त्री [°ानुपूर्वी] क्रम, परिपाटी (भग; विपा १, १; औप; महा)। °ण्ह देखो °ण्ह (हे १, ६७; षड्)। °फग्गुणी देखो °फग्गुणी (सम ७; इक)। °भद्दवया देखो °भद्दवया (सम ७)। °साढा स्त्री [°षाढा] नक्षत्र-विशेष (सम ६)।

पुव्वंग पुंन [पूर्वाङ्ग] १ समय-परिमाण-विशेष, चौरासी लाख वर्ष (ठा २, ४; इक)। २ पक्ष के पहले दिन का नाम, प्रतिपत् (सुज्ज १०, १४)।

पुव्वंग वि [दे] मुण्डित (षड्)।

पुव्वा स्त्री [पूर्वा] पूर्व दिशा (कुमा)।

पुव्वाड वि [दे] पीन, मांसल, पुष्ट (दे ६, ५२)।

पुव्वामेव अ [पूर्वमेव] पहले ही (कस)।

पुव्वावईणय न [पूर्वावकीर्णक] नगर-विशेष (इक)।

पुव्वि वि [पूर्विन्] पूर्व-शास्त्र का जानकार (विपा १, १; राज)।

पुव्वि } क्रिवि [पूर्वम्] पहिले, पूर्व में
पुव्विं } (सण; उवा; सुर १, १६४; ४, १११; औप)। °संथव पुं [°संस्तव] पूर्व में की जाती श्लाघा, जैन मुनि की भिक्षा का एक दोष, भिक्षा-प्राप्ति के पहले दायक की स्तुति करना (ठा ३, ४)।

पुव्विम पुंस्त्री [पूर्वत्व] पहिलापन, प्रथमता (षड्)।

पुव्विल्ल वि [पूर्व, पूर्वीय] पहले का, पूर्व का; 'पुव्विल्लसमं करणं' (चेइय ८८६); 'पुव्विल्लए किंचिवि दुट्ठकम्मे' (निसा ४; सुपा ३४६; सण)।

पुव्वुत्त वि [पूर्वोक्त] पहले कहा हुआ, पूर्व में उक्त (सुर २, २४८)।

पुव्वुत्तरा स्त्री [पूर्वोत्तरा] ईशान कोण (राज)।

पुस सक [प्र + उञ्छ्, मृज्] साफ करना, शुद्ध करना, पोंछना। पुसइ (प्राकृ ६६; हे ४, १०५; गा ४३३)। कवकृ. पुसिज्जंत (गा २०६)।

पुस देखो **पुस्स** (प्राकृ २६; प्राप्र)।

पुस पुं [पौष] मास-विशेष, पौष मास; 'पुसो' (प्राकृ १०)।

पुसिअ वि [प्रोञ्छित, मृष्ट] पोंछा हुआ (गउड; से १०, ४२; गा ५४)।

पुसिअ पुं [पृषत] मृग-विशेष (गा ६२६)।

पुस्स पुं [पुष्य] १ नक्षत्र-विशेष, कृत्तिका से आठवाँ नक्षत्र (प्राकृ २६; प्राप्र; सम ८; १७; ठा २, ३)। २ रेवती नक्षत्र का अधिपति देव (सुज्ज १०, १२)। ३ ऋषि-विशेष (राज)। °माणअ, °माणव पुं [°मानव] मागध, स्तुति-पाठक, भाट-चारण आदि (णाया १, ८—पत्र १३३; टी—पत्र १३६)। देखो पूस = पुष्य।

पुस्सदेवय न [पुष्यदैवत] जैनेतर शास्त्र-विशेष (णंदि १५४)।

पुस्सायण न [पुष्यायण] गोत्र-विशेष (सुज्ज १०, १६)।

पुह } देखो पिह = पृथक् (हे १, १८८)।
पुहं } °ब्भूय वि [°भूत] अलग, जो जुदा हुआ हो (अज्झ ६०)।

पुहइ° } स्त्री [पृथिवी] १ तृतीय वासुदेव की
पुहई } माता का नाम (पउम २०, १८४)। २ एक नगरी का नाम (पउम २०, १८८)। ३ भगवान् सुपार्श्वनाथ की माता का नाम (सुपा ३६)। ४—देखो पुढवी, पुहवी (कुमा; हे १, ८८; १३१)। °धर पुं [°धर] राजा (पउम; ८५, ४)। °नाह पुं [°नाथ] राजा (सुपा १२२)। °पहु पुं [°प्रभु] राजा (उप ७२८ टी)। °पाल पुं [°पाल] राजा (सुर १, २४३)। °राय पुं [°राज] विक्रम की बारहवीं शताब्दी का शाकम्भरी देश का एक राजा; 'पुहईराएण सयंभरीनरिंदेण' (मुणि १०६०१)। °वइ पुं [°पति] राजा (सुपा २०१; २४८; ५१६)। °वाल देखो °पाल (उप ६४८ टी)।

पुहईसर पुं [पृथिवीश्वर] राजा (सुपा १०७; २४१)।

पुहत्त न [पृथक्त्व] १ भेद, पार्थक्य (अणु)। २ विस्तार (राज)। ३ बहुत्व (भग १, २; ठा १०)। ४ वि. भिन्न, अलग; 'अत्थपुहत्तस्स' (विसे १०६६)। °वियक्क न [°वितर्क] शुक्ल ध्यान का एक भेद (संबोध ५१)। देखो पुहुत्त, पोहत्त।

पुहत्तिय देखो पोहत्तिय (भग)।

पुहय देखो पिह = पृथक्; 'पुहय देवीणं' (कुमा)।

पुहवि° } देखो पुढवी, पुहई (पि ३८६; आ
पुहवी } १४; प्राप्र; प्रासू ५; ११३; सम १५१; स १५२)। ६ भगवान् श्रेयांसनाथ की दीक्षा-शिविका (विचार १२६)। १० एक छन्द का नाम (पिंग)। °चंद पुं [°चन्द्र] एक राजा (यति ५०)। °पाल पुं [°पाल] १ एक राजकुमार (उप ६८६ टी)। २ देखो पुहई-पाल (सिरि ४५)। °पुर न [°पुर] एक नगर का नाम (उप ८४४)।

पुहवीस पुं [पृथिवीश] राजा (हे १, ६)।

पुहु वि [पृथु] विशाल, विस्तीर्ण। स्त्री. °ई (प्राकृ २८)।

पुहुत्त न [पृथक्त्व] १ दो से नव तक की संख्या (सम ४४; जी ३०; भग)। २—देखो पुहत्त (ठा १०—पत्र ४७१; ४६५)।

पुहुवी देखो पुहु-ई (हे २, ११३)।

पू° देखो पुं°। °सुअ पुं [°शुक] तोता, मर्द पिक-पक्षि (गा ५६३ अ)।

पूअ सक [पूजय्] पूजा करना। पूएइ (महा)। कर्म. पूइज्जसि (गउड)। वकृ. पूयंत (सुपा २२४)। कवकृ. पूइज्जंत (पउम ३२, ६)। कृ. पूअणीअ, पूएअव्व, पूअणिज्ज (नाट—मृच्छ १६५; उवर १६६; औप; णाया १, १ टी; पंचा २, ८; उप ३२० टी)। संकृ. पूइऊण (महा)।

पूअ न [दे] दधि, दही (दे ६, ५६)।

पूअ पुं [पूग] १ वृक्ष-विशेष, सुपारी का गाछ (गउड)। २ न. फल-विशेष, सुपारी (स ३४५)। देखो पूग। °प्फली, °फली स्त्री [°फली] सुपारी का पेड़ (पउम ५३, ७६; पएण १)।

पूअ न [पूर्त] तालाब, कुआँ आदि खुदवाना, अन्न-दान करना, देव-मन्दिर बनाना आदि जन-समूह के हित का कार्य; 'गरहियाणि इट्ठपूयाणि' (स ७१३)।

पूअ वि [पूत] १ पवित्र, शुद्ध (णाया १, ५; औप)। २ न. लगातार छः दिनों का उपवास (संबोध ५८)। ३ वि. सूप आदि से साफ—तुष-रहित किया हुआ (णाया १, ७—पत्र ११६)।

पूअ न [पूय] पीब, दुर्गन्ध रक्त, व्रण से निकला हुआ गन्दा सफेद बिगड़ा हुआ खून (पण्ह १, १; णाया १, ८)।

पूअण न [पूजन] पूजा, सेवा (कुमा; औप; सुपा ५८४; महा)।

पूअणा स्त्री [पूजना] १ ऊपर देखो (पण्ह २, १; से ७६३; संबोध ६)। २ काम-विभूषा (सूअ १, ३, ४, १७)।

पूअणा } स्त्री [पूतना] १ दुष्ट व्यन्तरी, डाइन,
पूअणी } डाकिनी (सूअ १, ३, ४, १३; पिंडभा ४१; सुपा २६; पण्ह १, ४)। २ गाडर, भेड़ी, मेषी (सूअ १, ३, ४, १३)।

पूअय वि [पूजक] पूजा करनेवाला (सुर १३, १४३)।

पूअर देखो पोर = पूतर (आ १४; जी १५)।

पूअल पुं [पूप] अपूप, पूआ, खाद्य-विशेष (दे ६, १८)।

पूअलिया स्त्री [पूपिका] ऊपर देखो (पव ४)।

पूआ स्त्री [दे] पिशाच-गृहीता, भूताविष्ट स्त्री (दे ६, ५४)।

पूआ स्त्री [पूजा] पूजन, अर्चा, सेवा (कुमा)। °भत्त न [°भक्त] पूज्य के लिए निष्पादित भोजन (बृह २)। °मह पुं [°मह] पूजोत्सव (कुप्र ८५)। °रह पुं [°रथ] राक्षस-वंश में उत्पन्न एक राजा का नाम, एक लंका-पति (पउम ५, २५६)। °रिह, °रुह वि [°र्ह] पूजा-योग्य (सुपा ४६१; अभि ११८)।

पूआहिज्ज वि [पूजाहार्य] पूजित-पूजक (ठा ५, ३ टी—पत्र ३४२)।

पूइ वि [पूति] १ दुर्गन्धी, दुर्गन्धवाला (पउम ४४, ५५; उप ७२८ टी; तंदु ४१) २। अपवित्र (पंचा १३, ५)। ३ स्त्री. दुर्गन्ध। ४ अपवित्रता (तंदु ३८)। ५ भिक्षा का एक दोष, पूति-कर्म (पिंड २६८)। ६ रोग-विशेष, एक नासिका-रोग, नासा-कोथ (विसे २०८)। ७ पूय, पीब; 'गलंतपूइनिवहं' (महा), 'पूइ-वसरुहिरपुन्नं' (सुर १४, ४६), 'जहा सुणी

पूइकएणी' (उत्त १, ४)। ८ वृक्ष-विशेष, एकास्थिक वृक्ष की एक जातिः 'पूई य निंबकरए' (पण्ण १—पत्र ३१)। °कम्म पुंन [°कर्मन्] मुनि-भिक्षा का एक दोष, पवित्र वस्तु में अपवित्र वस्तु को मिलाकर दी जाती भिक्षा का ग्रहण (ठा ३, ४ टी; औप; पंचा १३, ५)। °म वि [°मन्] १ दुर्गन्धी। २ अपवित्र (तंदु ३८)।

पूइ वि [पूति] कुथित, सड़ा हुआ (आचा २, १, ८, ४)। °पिन्नाग पुंन [°पिण्याक] सर्षप-खल, सरसों की खली (दस ५, २, २२)।

पूइअ वि [पूयित] ऊपर देखो (राय १८)।

पूइआलुग न [दे. पूत्यालुक] जल में होनेवाली वनस्पति-विशेष (आचा २, १, ८—सूत्र ४७)।

पूइज्जंत देखो पूअ = पूजय्।

पूइम वि [पूज्य] पूजा योग्य, सम्माननीय; 'जया य पूइमो होइ पच्छा होइ अपूइमो' (दसचू १, ४)।

पूइय वि [पूजित] अर्चित, सेवित (औप; उव)।

पूइय वि [पूतिक] १ अपवित्र, अशुद्ध, दूषित (पण्ह २, ५, उप पृ २१०)। २ दुर्गन्धी, दुष्ट गन्धवाला (णाया १, ८; तंदु ४१)। ३ पूति नामक भिक्षा-दोष से युक्त (पिंड २६८)।

पूइय देखो पोइय = (दे); 'बलो गओ पूइयावणं (सुख २, २६; उव)।

पूएअव्व देखो पूअ = पूजय्।

पूंडरिअ न [दे] कार्य, काम, काज, प्रयोजन (दे ६, ५७)।

पूग पुं [पूग] १ समूह, संघात (मोह २८)। २ देखो पूअ = पूग (स ७०; ७१)।

पूगी स्त्री [पूगी] सुपारी का पेड़। °फल न [°फल] सुपारी, कसेली (रयण ५५)।

पूज देखो पूअ = पूजय्। कर्म. पुज्जए (उव)। वकृ. पूजयंत (विसे २८८८)। कृ. पूज्ज, पूज (पउम ११, ६७; सुपा १८०; सुर १, १७; उवर १६६; उव; उप ५६८)।

पूजग देखो पूअय (पंचा ४, ४४)।

पूजण देखो पूअण (पंचा ६, ३८)।

पूजा देखो पूआ = पूजा (उप १०१६)।

पूजिय देखो पूइय = पूजित (औप)।

पूण पुं [दे] हस्ती, हाथी (दे ६, ५६)।

पूणिआ } **पूणी** } स्त्री [दे] पूणी, पूनी, रुई की पहल (दे ६, ७८; ६, ५६)।

पूप देखो पूअल (पिंड ५५७)।

पूयइ पुं [पूपकिन्] हलवाई (णंदि १६४)।

पूयंत देखो पूअ = पजय्।

पूयली स्त्री [दे] रोटी (आचा २, १, ८, ६)।

पूयावणा स्त्री [पूजना] पूजा कराना (संबोध १५)।

पूर सक [पूरय्] पूर्ति करना, भरना। पूरइ, पूरए (हे ४, १६६, औप; भग; महा; पि ४६२)। वकृ. पूरंत, पूरयंत (कुमा, कप्प; औप)। कवकृ. पुज्जंत, पुज्जमाण, पूरिज्जंत, पूरंत, पूरमाण (उप पृ १५४; सुपा ६८; उप १३६ टी; भवि; गा ११६; से ११, ६३; ६, ६७)। संकृ पूरित्ता (भग), पूरि (अप), (पिंग)। हेकृ. पूरिइत्तए (पि ५७८)। कृ. पूरिअव्व (से ११, ४४)।

पूर पुं [पूर] १ जल-समूह, जल-प्रवाह, जलधारा (कुमा)। २ खाद्य-विशेष; 'कप्पूरपूरसहिए तंबोले' (सुर २, ६०)। ३ वि. पूरा, पूर्ण; 'पूराणि य से समं पणइमणोरहेहिं अज्जेव सत्त राइंदियाइं, भविस्सइ य सुए सामिणी विज्जासिद्धी' (स ३६३)।

पूरइत्तअ (शौ) वि [पूरयितृ] पूर्ण करनेवाला (मा ४३)।

पूरंतिया स्त्री [पूरयन्तिका] राजा की एक परिषत्—परिवार (राज)।

पूरग वि [पूरक] पूर्ति करनेवाला (कप्प; औप; रयण ७७)।

पूरण न [पूरण] शूर्प, सूप, सिरकी का बना एक पात्र जिससे अन्न पछोरा जाता है (दे ६, ५६)।

पूरण न [पूरण] १ पूर्ति, 'समस्सापूरणं' (सिरि ८६८)। २ पालन (आचू ५)। ३ पुं. यदुवंश के राजा अन्धकवृष्णि का एक पुत्र (अंत ३)। ४ एक गृह-पति का नाम (उवा)। ५ वि. पूर्ति करनेवाला (राज)।

पूरमाण देखो पूर = पूरय्।

पूरय देखो पूरग; 'बत्तीसं किर कवला आहारो कुच्छिपूरओ भणिओ' (पिंड ६४२)।

पूरयंत } **पूरिअव्व** } देखो पूर = पूरय्।

पूरिगा स्त्री [पूरिका] मोटा कपड़ा (राज)।

पूरिम वि [पूरिम] पूरने से—भरने से होनेवाला (णाया १, १३, पण्ह २, ५; औप)।

पूरिमा स्त्री [पूरिमा] गान्धार ग्राम की एक मूर्च्छना (ठा ७—पत्र ३६३)।

पूरिय वि [पूरित] भरा हुआ (गउड; सण; भवि)।

पूरी स्त्री [पूरी] तन्तुवाय का एक उपकरण (दे ६ ५६)।

पूरेंत देखो पूर = पूरय्।

पूरोट्टी स्त्री [दे] अवकर, कतवार, कूड़ा (दे ६, ५७)।

पूल पुंन [पूल] पूला, घास की अँटिया (उप ३२० टी; कुप्र २१५)।

पूव } **पूवल** } देखो पूअल (कस; दे ६, ११७; निचू १)।

पूवलिआ } **पूविगा** } देखो पूअलिया (बृह १; निचू १६)।

पूस अक [पुष्] पुष्ट होना। पूसइ (हे ४, २३६; प्राकृ ६८)।

पूस देखो पुस्स = पुष्य (णाया १, ८; हे १, ४३)। °गिरि पुं [°गिरि] एक जैन मुनि (कप्प)। °फली स्त्री [°फली] वल्ली-विशेष (पण्ण १)। °माण, °माणग पुं [°माण, °मानव] मागध, मङ्गल-पाठक; '—वद्धमाणपूसमाणघंटियगणेहिं' (कप्प; औप)। °माणग पुं [°मानक] ज्योतिर्देवता-विशेष, ग्रहाधिष्ठायक देव-विशेष (ठा २, ३)। °माणय देखो °माण (औप)। °मित्त पुं [°मित्र] १ स्वनाम-प्रसिद्ध जैन मुनि-त्रय—१ घृतपुष्यमित्र, २ वस्त्रपुष्यमित्र, ३ दुर्बलिकापुष्यमित्र, जो आर्य रक्षितसूरि के शिष्य थे (विसे २५१०; २२८६)। २ एक राजा (विचार ४९३)। °मित्तिय न [°मित्रीय] एक जैन मुनि-कुल (कप्प)।

पूस पुं [दे] १ राजा सातवाहन (दे ६, ८०)। २ शुक, तोता (दे ६, ८०; गा २६३; वज्जा १३४; पाअ)।

पूस पुं [पूषन्] १ सूर्य, रवि (हे ३, ५६)। २ मणि-विशेष (पउम ६, ३६)।

पूसा स्त्री [पुष्या] व्यक्ति-वाचक नाम, कुण्ड-कौलिक श्रावक की पत्नी (उवा)।

पूसाण देखो **पूस** = पूषन् (हे ३, ५६)।

°**पूह** पुं [अपोह] विचार, मीमांसा; 'ईहापूह-मग्गणगवेसणं करेमाणस्स' (औप; पि १४२; २८६)। देखो **अपोह** = अपोह।

पृथुम (पै) देखो पढम; 'पृथुमसिनेहो' (प्राकृ १२४)।

पेअ पुं [प्रेत] १ व्यन्तर-भेद, एक देव-जाति (सुपा ४६१; ४६२; जय २६)। २ मृतक (पउम ५, ६०)। °**कम्म** न [°कर्मन्] अन्त्येष्टि क्रिया, मृत का दाहादि कार्य (पउम २३, २४)। °**करणिज्ज** न [°करणीय] अन्त्येष्टि क्रिया (पउम ७५, १)। °**काइय** वि [°कायिक] प्रेत-योनि में उत्पन्न, व्यन्तर-विशेष (भग ३, ७)। °**देवयकाइय** वि [°देवताकायिक] प्रेत-देवता का, प्रेत-सम्बन्धी (भग ३, ७)। °**नाह** पुं [°नाथ] यमराज, जम (स ३१६)। °**भूमि**, °**भूमी** स्त्री [°भूमि, °मी] श्मशान (सुपा २६५)। °**लोय** पुं [°लोक] श्मशान (पउम ८६, ४३)। °**वइ** पुं [°पति] यम (उप ७२८ टी)। °**वण** न [°वन] श्मशान (पाअ; सुर १६, २०४; वज्जा २; सुपा ५१२)। °**ाहिव** पुं [°ाधिप] यम, जमराज (पाअ)।

पेअ वि [प्रेयस] अतिशय प्रिय। स्त्री. °**सी** (सम्मत्त १७५)।

पेअ
पेअव्व } देखो पा = पा।

पेआ स्त्री [पेया] यवागू, पीने की वस्तु-विशेष (हे १, २४८)।

पेआल न [दे] १ प्रमाण (दे ६, ५७; विसे १६६ टी; णंदि; उव)। २ विचार (विसे १३६१)। ३ सार, रहस्य (ठा ४, ४ टी—पत्र २८३; उप पृ २०७। ४ प्रधान, मुख्य (उवा)।

पेआलणा स्त्री [दे] प्रमाण-करण, 'पज्जव-पेयालणा पिंडो' (पिंड ६५)।

पेआलुय वि [दे] विचारित (विसे १४८२)।

पेइअ वि [पैतृक] १ पिता से आया हुआ, पितृ-क्रम-प्राप्त; 'पेइओ धम्मो' (पउम ८२, ३३; सिरि ३४८; स ५६६)। २ न. स्त्री के पिता का घर, पीहर, नैहर, मैका; 'ता जा कुले कलंकं नो पयडइ ताव पेइए एयं पेसेमि', 'विमलेण तओ भणियं गच्छ पिए पेइयमियाणिं' (सुपा ६००)।

पेईहर न [पितृगृह, पैतृकगृह] पीहर, स्त्री के पिता का घर; 'इय चिंतिऊण सिग्घं धणसिरिपेईहरम्मि संचलिओ' (सुपा ६०३)।

पेऊस न [पीयूष] अमृत, सुधा (हे १, १०५; गा ६५; कप्पू)। °**ासण** पुं [°ाशन] देव, सुर (कुमा)।

पेंखिअ वि [प्रेङ्खित] कम्पित (कप्पू)।

पेंखोल अक [प्रेङ्खोलय्] झूलना, हिलना। वकृ. **पेंखोलमाण** (णाया १, १—पत्र ३१)।

पेंड देखो **पिंड** = पिण्ड (हे १, ८५; प्राकृ ५; प्राप्र; कुमा)।

पेंड न [दे] १ खण्ड, टुकड़ा। २ वलय (दे ६, ८)।

पेंडधव पुं [दे] खड्ग, तलवार (दे ६, ५६)।

पेंडबाल वि [दे] देखो **पेंडलिअ** (दे ६, ५४)।

पेंडय पुं [दे] १ तरुण, युवा। २ षण्ढ, नपुंसक (दे ६, ५३)।

पेंडल पुं [दे] रस (दे ६, ५८)।

पेंडलिअ वि [दे] पिण्डीकृत, पिण्डाकार किया हुआ (दे ६, ५४)।

पेंडव सक [प्र + स्थापय्] १ रखना, स्थापन करना। २ प्रस्थान कराना। पेंडवइ (हे ४, ३७)।

पेंडविर वि [प्रस्थापयितृ] प्रस्थापन करने-वाला (कुमा)।

पेंडार पुं [दे] १ गोप, गो-पाल, ग्वाला। २ महिषी-पाल (दे ६, ५८)।

पेंडोली स्त्री [दे] क्रीड़ा (दे ६, ५६)।

पेंढा स्त्री [दे] कलुष सुरा, पंकवाली मदिरा (दे ६, ५०)।

पेंत देखो पा = पा।

पेक्ख सक [प्र + ईक्ष्] देखना, अवलोकन करना। पेक्खइ, पेक्खए (सण; पिंग)। वकृ. **पेक्खंत** (पि ३६७)। कवकृ. **पेक्खिज्जंत** (से १५, ६३)। संकृ. **पेक्खिअ**, **पेक्खिऊण** (अभि ४२; काप्र १५८)। कृ. **पेक्खणिज्ज** (नाट—वेणी ७३)।

पेक्खअ
पेक्खग } वि [प्रेक्षक] देखनेवाला, निरीक्षक, द्रष्टा (सुर ७, ८०; स ३७६; महा)।

पेक्खण न [प्रेक्षण] निरीक्षण, अवलोकन (सुपा १६६; अभि ५३)।

पेक्खणग
पेक्खणय } न [प्रेक्षणक] खेल, तमाशा, नाटक (सुर ७, १८२; कुप्र ३०)।

पेक्खणा स्त्री [प्रेक्षणा] निरीक्षण, अवलोकन (ओघ ३)।

पेक्खा स्त्री [प्रेक्षा] ऊपर देखो (पउम ७२, २६)। देखो **पेच्छा**।

पेक्खिय देखो **पेच्छिअ** (राज)।

पेखिल (अप) वि [प्रेक्षित] दृष्ट (रंभा)।

पेच्च
पेच्चा } अ [प्रेत्य] परलोक, आगामी जन्म (भग; औप); 'संबोही खलु पेच्च दुल्लहा' (वै ७३)। °**भव** पुं [°भव] आगामी जन्म, परलोक (औप)। °**भविअ** वि [°भाविक] जन्मांतर-संबन्धी (पण्ह २, २)।

पेच्चा देखो **पिअ** = पा।

पेच्छ सक [दृश्, प्र + ईक्ष्] देखना। पेच्छइ, पेच्छए (हे ४, १८१, उव; महा; पि ४५७)। भवि. पेच्छिहिसि (पि ५२५)। वकृ. **पेच्छंत** (गा ३७३; महा)। संकृ. **पेच्छिऊण** (पि ५८५)। हेकृ **पेच्छिउं**, **पेच्छित्तए** (उप ७२८ टी; औप)। कृ. **पेच्छणिज्ज**, **पेच्छिअव्व** (गा ६६; औप; पण्ह १, ४; से ३, ३३)।

पेच्छ वि [प्रेक्ष] द्रष्टा, दर्शक; 'अपरमत्थपेच्छो' (स ७१५)।

पेच्छग देखो **पेक्खग** (भास ४७; धर्मसं ७४३)।

पेच्छण देखो **पेक्खण** (सुपा ३७)।

पेच्छणग
पेच्छणय } देखो **पेक्खणग** (पंचा ६, ११; महा)।

पेच्छय वि [प्रेक्षक] द्रष्टा, निरीक्षक (पउम ८६, ७१; स ३६१; गा ४६८)।

पेच्छय वि [दे] जो देखे उसी को चाहनेवाला, दृष्ट-मात्र का अभिलाषी (दे ६, ५८)।

पेच्छा स्त्री [प्रेक्षा] प्रेक्षणक, तमाशा, खेल, नाटक; 'पेच्छाछणो सिरणविलोअणाण जहा सुचोक्खोवि न किंचिदेव' (उपपं ३७; सुर १३, ३७; औप)। देखो पेक्खा। °घर न [°गृह] देखो °हर (ठा ४, २)। °मंडव पुं [°मण्डप] नाट्य-गृह, खेल आदि में प्रेक्षकों के बैठने का स्थान (पव २६६)। °हर न [°गृह] नाटक-गृह, खेल-तमाशा का स्थान (पउम ८०, ५)।

पेच्छि वि [प्रेक्षिन्] प्रेक्षक, द्रष्टा (चेइय १०६; गा २१४)।

पेच्छिअ वि [प्रेक्षित] १ निरीक्षित, अवलोकित (कुमा)। २ न. निरीक्षण, अवलोकन (सुर १२, १८३; गा २२५)।

पेच्छिर वि [प्रेक्षितृ] निरीक्षक, द्रष्टा (गा १७४; ३७१)।

पेज्ज देखो पा = पा।

पेज्ज पुंन [प्रेमन्] प्रेम अनुराग (सूअ २, ५, २२; आचा; भग; ठा १; चेइय ६३४)। °दंसि वि [°दर्शिन्] अनुरागी (आचा)।

पेज्ज वि [प्रेयस्] अत्यन्त प्रिय (औप)।

पेज्ज वि [प्रेज्य] पूज्य, पूजनीय (राज)।

पेज्ज देखो पेर = प्र + ईरय्।

पेज्जल न [दे] प्रमाण (दे ६, ५७)।

पेज्जलिअ वि [दे] संघटित (षड्)।

पेज्जा देखो पेआ (ओघ १४६; हे १, २४८)।

पेज्जाल वि [दे] विपुल, विशाल (दे ६, ७)।

पेट, पेट्ट न [दे] पेट, उदर (पिंग; पव १)।

पेट्ठ देखो पिट्ठ = पिष्ट (संक्षि ३; प्राकृ ५; प्राप्र)।

पेड देखो पेडय; 'नडपेडनिहा' (संबोध १८)।

पेडइअ पुं [दे] धान्य आदि बेचनेवाला वणिक् (दे ६, ५६)।

पेडक, पेडय न [पेटक] समूह, यूथ; 'नडपेडकसंनिहा जाण' (संबोध १५; सुपा ५४६; सिरि १६३; महा)।

पेडा स्त्री [पेटा] १ मञ्जूषा, पेटी (दे ५, ३८; महा)। २ पेटाकार चतुष्कोण गृह-पंक्ति में भिक्षार्थ-भ्रमण (उत्त ३०, १६)।

पेडाल पुं [दे. पेटाल] बड़ी मञ्जूषा, बड़ी पेटी (सुपा ११०)।

पेडावइ पुं [पेटकपति] यूथ का नायक (सुपा ५४६)।

पेडिआ स्त्री [पेटिका] मञ्जूषा (सुपा २४०)।

पेड्डु स्त्री पुं [दे] महिष, भैंसा (दे ६, ८०)।

पेड्डा स्त्री [दे] १ भित्ति, भींत। २ द्वार, दरवाजा। ३ महिषी, भैंस (दे ६, ८०)।

पेढ देखो पीढ = पीठ (हे १, १०६; कुमा); 'काऊण पेढं ठविया तत्थ एसा पडिमा' (कुप्र ११७)।

पेढाल वि [दे] १ विपुल (दे ६, ७; गउड)। २ वर्तुल, गोलाकार (दे ६, ७; गउड; पाअ)।

पेढाल वि [पीठवत्] पीठ-युक्त (गउड)।

पेढाल पुं [पेढाल] १ भारत वर्ष का आठवाँ भावी जिनदेव, 'पेढालं अट्ठमयं आणंदजियं नमंसामि' (पव ४६)। २ ग्यारह रुद्र पुरुषों में दसवाँ (विचार ४७३)। ३ एक ग्राम, जहाँ भगवान् महावीर का विचरण हुआ था; 'पेढालग्गाममागओ भयवं' (आवम)। ४ न. एक उद्यान; 'तओ सामी दढभूमिं गओ, तीसे बाहिं पेढालं नाम उज्जाणं' (आव १)। °पुत्त पुं [°पुत्र] १ भारतवर्ष का आठवाँ भावी जिन-देव; 'उदए पेढालपुत्ते य' (सम १५३)। २ भगवान् पार्श्वनाथ के संतान में उत्पन्न एक जैन मुनि; 'अहे णं उदए पेढालपुत्ते भगवं पासावच्चिज्जे नियंठे मेयज्जे गोत्तेणं' (सूअ २, ७, ५; ८; ६)। ३ भगवान् महावीर के पास दीक्षा लेकर अनुत्तर विमान में उत्पन्न एक जैन मुनि (अनु २)।

पेढिया देखो पीढिआ; 'चत्तारि मणिपीढियाओ' (ठा ४, २—पत्र २३०)। २ ग्रन्थ की भूमिका, प्रस्तावना (वसु)।

पेढी देखो पीढी (जीव ३)।

पेणी स्त्री [प्रैणी] हरिणी का एक भेद (पण्ह १, ४—पत्र ६८)।

पेदंड वि [दे] लुप्त-दण्डक, जुए में जो हार गया हो वह, जिसका दाव चला गया हो वह (मृच्छ ४६)।

पेम पुंन [प्रेमन्] प्रेम, अनुराग, प्रीति, स्नेह (उवा; औप; सं ५; सुपा २०४; रयण ४२)।

पेमालुअ वि [प्रेमिन्] प्रेमी, अनुरागी (उप ६८६ टी)।

पेम्म देखो पेम (हे २, ६८; ३, २५; कुमा; गा १२६; प्रासू ११६)।

पेम्मा स्त्री [प्रेमा] छन्द-विशेष (पिंग)।

पेया स्त्री [पेया] वाद्य-विशेष, बड़ी काहला (राय ४५)।

पेर सक [प्र + ईरय्] १ पठाना, भेजना, प्रेषण करना। २ धक्का लगाना, आघात करना। ३ आदेश करना। ४ किसी कार्य में जोड़ना—लगाना। ५ पूर्वपक्ष करना, प्रश्न करना, सिद्धान्त का विरोध करना। ६ गिराना। पेरइ (धर्मसं ५६०; भवि)। वकृ. **पेरंत** (कुप्र ७०; पिंग)। कवकृ. **पेरिज्जंत** (सुपा २५१; महा)। कृ. **पेज्ज** (राज)।

पेरंत देखो पज्जंत (हे १, ५८; ६३; प्राप्र; औप; गउड)। °चक्कवाल न [°चक्रवाल] बाह्य परिधि, बाहर का घेराव (पण्ह १, ३)। °वच्च न [°वर्चस्] मण्डप, तृणादि-निर्मित गृह (राज)।

पेरग वि [प्रेरक] प्रेरणा करनेवाला, पूर्वपक्षी (धर्मसं ५८७)।

पेरण न [दे] १ ऊर्ध्व स्थान (दे ६, ५६)। २ खेल, तमाशा (स ७२३; ७२५)।

पेरण न [प्रेरण] प्रेरणा (कुप्र ७०)।

पेरणा स्त्री [प्रेरणा] ऊपर देखो (सम्मत्त १५७)।

पेरिअ वि [प्रेरित] जिसको प्रेरणा की गई हो वह (दे ८, १२; भवि)।

पेरिज्ज न [दे] साहाय्य, सहायता, मदद (दे ६, ५८)।

पेरिज्जंत देखो पेर = प्र + ईरय्।

पेरुल्लि वि [दे] पिण्डीकृत, पिण्डाकार किया (दे ६, ५४)।

पेलव वि [पेलव] १ कोमल, सुकुमार, मृदु (पाअ; से २, २७; अभि २६; औप)। २ पतला, कृश। ३ सूक्ष्म, लघु (णाया १, १—पत्र २५; हे १, २३८)।

पेलु स्त्री [पेलु] पूणी, रुई की पहल; 'कंतामि ताव पेलु' (पिंडभा ३५)। °करण न [°करण] पूणी—पूनी बनाने का उपकरण, शलाका आदि (विसे ३३०५)।

पेल्ल सक [क्षिप्] फेंकना। पेल्लइ (हे ४, १४३)। कर्म. पेल्लिज्जइ (उव)। वकृ. **पेल्लंत** (कुमा)। संकृ. **पेल्लिऊण** (महा)।

पेल्ल देखो पेर = प्र + ईरय्। पेल्लेइ (प्राकृ ६०)। कवकृ. **पेल्लिज्जंत** (से ६, २५)। संकृ. **पेल्लि** (अप), **पेल्लिअ** (पिंग)। कृ. **पेल्लेयव्व** (ओघभा १८ टी)।

पेल्ल सक [पीडय्] पीलना, दबाना, पीड़ना। पेल्लेसि, पेल्लिसि (स ५७४ टि)।

पेल्ल सक [पूरय्] पूरना, भरना। कवकृ. **पेल्लिज्जंत** (से ६, २५)।

पेल्ल } **पेल्लग** } पुंन [दे] बच्चा, शिशु, बालक (उप २१६); 'बीयम्मि पेल्लगाइं' (उप २२० टी)।

पेल्लग देखो पेरग (निचू १६)।

पेल्लण देखो पेरण (पण्ह १, ३; गउड)।

पेल्लण न [क्षेपण] फेंकना (धर्म २)।

पेल्लय पुं [दे] देखो पेल्ल = (दे) (विपा १, २—पत्र ३६); 'सपेल्लियं सियालिं' (सुख २, ३३)।

पेल्लय देखो पेरग (बृह १)।

पेल्लय पुं [पेल्लक] भगवान् महावीर के पास दीक्षा लेकर अनुत्तर विमान में उत्पन्न एक जैन मुनि (अनु २)।

पेल्लव } **पेल्लाव** } देखो पेर। पेल्लवइ, पेल्लावइ (प्राकृ ६०)।

पेल्लिअ वि [दे. पीडित] पीड़ित (दे ६, ५७); 'बलियदाइयपेल्लिओ' (महा)।

पेल्लिअ देखो पेरिअ (गा २२१; विपा १, १)।

पेल्लेयव्व देखो पेल्ल = प्र + ईरय्।

पेव्वे अ. आमन्त्रण-सूचक अव्यय (षड्)।

पेस सक [प्र + एषय्] भेजना, पठाना। पेसइ, पेसेइ (भवि; महा)। वकृ. **पेसअंत** (पि ४९०; रंभा)। संकृ. **पेसिअ, पेसिउं** (मा ४०; महा)। कृ. **पेसइयव्व, पेसिअव्व; पेसेयव्व** (सुपा ३००; २७८; ६३०; उप १३६ टी)।

पेस देखो पीस। वकृ. **पेसयंत** (राज)।

पेस पुंस्त्री [प्रेष्य] १ कर्मकर, नौकर, दास, चाकर (सम १९; सूअ १, २, २, ३; उवा)। २ वि. भेजने योग्य (हे २, ९२)।

पेस पुं [दे. पेश] १ सिन्ध देश में होनेवाली एक पशु-जाति (आचा २, ५, १, ८)।

पेस वि [दे. पैश] पेश नामक जानवर के चमड़े का बना हुआ (वस्त्र) (आचा २, ५, १, ८)।

पेसण न [दे] कार्य, काज, प्रयोजन (दे ६, ५७; भवि; णाया १, ७—पत्र ११७; पउम १०३, २९)।

पेसण न [प्रेषण] १ पठाना, भेजना। २ नियोजन, व्यापारण (कुमा; गउड)। ३ आज्ञा, आदेश (से ३, ५४)।

पेसणआरी } **पेसणआली** } स्त्री [दे] दूती, दूत-कर्म करने-वाली स्त्री (दे ६, ५९; षड्)।

पेसणा स्त्री [पेषण] पीसना, पेषण; 'सिलाए जवगोहूमपेसणाए हेऊए' (उप ५९७ टी)।

पेसल वि [पेशल] १ सुन्दर, मनोज्ञ (आचा; गउड)। २ मधुर, मञ्जु (पाअ)। ३ कोमल (गउड)।

पेसल } **पेसलेस** } न [दे] सिन्ध देश के पेश नामक पशु के चर्म के सूक्ष्म पक्ष्म से निष्पन्न वस्त्र, 'पेसाणि वा पेसलाणि वा' (२ आचा २, ५, १—सूत्र १४५), 'पेसाणि वा पेसलेसाणि वा' (३ आचा २, ५, १, ८; (राज)।

पेसव सक [प्र + एषय्] भेजवाना। कृ. **पेसवेयव्व** (उप १३६ टी)।

पेसवण न [प्रेषण] भेजवाना, दूसरे के द्वारा प्रेषण (उवा; पडि)।

पेसविअ वि [प्रेषित] भेजवाया हुआ, प्रस्था-पित (पाअ; उप पृ ५८)।

पेसाय वि [पैशाच] पिशाच-संबन्धी (बृह २)।

पेसि स्त्री [पेशि] देखो **पेसी** (सुपा ४८७)।

पेसिअ वि [प्रेषित] १ भेजा हुआ, प्रहित (गा ११२; भवि; काल)। २ प्रेषण (पउम ९, ३५)।

पेसिआ स्त्री [पेशिका] खण्ड, टुकड़ा; 'अंब-पेसिया ति वा अंबाडगपेसिया ति वा' (अनु ६; आचा २, ७, २, ७; ८; ९)।

पेसिआर पुं [प्रेषितकार] नौकर, भृत्य, कर्मकर (पउम ६, ३५)।

पेसिदवंत (शौ) वि [प्रेषितवत्] जिसने भेजा हो वह (पि ५६९)।

पेसी स्त्री [पेशी] मांस-खण्ड, मांस-पिण्ड (तंदु ७)। देखो **पेसिआ**।

पेसुण्ण } **पेसुन्न** } न [पैशुन्य] परोक्ष में दोष-कीर्तन, चुगली (औप; सूअ १, १३, २; णाया १, १; भग; सुपा ४२१)।

पेसेयव्व देखो पेस = प्र + एषय्।

पेस्सिदवंत देखो पेसिदवंत (पि ५६९)।

पेह सक [प्र + ईक्ष्] १ देखना, निरीक्षण करना, ध्यान-पूर्वक देखना। २ चिन्तन करना। पेहइ, पेहए (पि ८७; उव), पेहंति (कुप्र १९२)। भवि. पेहिस्सामि (पि ५३०)। वकृ. **पेहंत, पेहमाण** (उपपृ १५४; चेइय २२०; पि ३२३)। संकृ. **पेहाए, पेहिया** (कस; पि ३२३)।

पेह सक [प्र + ईह्] १ इच्छा करना, चाहना। २ प्रार्थना करना। पेहेइ (दस ६, ४, २)।

पेहण न [प्रेक्षण] निरीक्षण (पंचा ४, ११)।

पेहा स्त्री [प्रेक्षण] १ निरीक्षण (उव; सम ३२)। २ कायोत्सर्ग का एक दोष, कायोत्सर्ग में बन्दर की तरह ओष्ठ-पुट को हिलाते रहना (पव ५)। ३ पर्यालोचन, चिन्तन (आव ४)। ४ बुद्धि, मति (उत्त १, २७)।

पेहाविय वि [प्रेक्षित] दर्शित, दिखलाया हुआ (उप पृ ३८८)।

पेहि वि [प्रेक्षिन्] निरीक्षक (आचा; उव)। स्त्री. °णी (पि ३२३)।

पेहिय वि [प्रेक्षित] निरीक्षित (महा)।

पेहुण न [दे] १ पिच्छ, पँख (दे ६, ५८; पाअ; गा १७३; ७६५; वज्जा ४४; भत्त १४१; गउड)। २ मयूर-पिच्छ, मयूर-पंख, शिखण्ड (पण्ह १, १; २, ५; जं १; णाया १, ३) देखो पिहुण।

पोअ सक [प्र + वे] पिरोना, गूँथना। पोअंति (गच्छ ३, १८; सुअनि ७४)। वकृ. **पोयमाण** (स ५१२)। संकृ. **पोइऊण** (धर्मवि ६७)।

पोअ वि [प्रोत] पिराया हुआ (दे १, ७६)।

पोअ पुं [पोत] १ जहाज, प्रवहण, नौका (पाअ; सुपा ८८; ३६९)। २ बालक, शिशु, बच्चा (दे ६, ८१; पाअ; सुपा ३६९)। ३ न. वस्त्र, कपड़ा (ठा ३, १—पत्र ११४)

पोअ पुं [दे] १ धव वृक्ष, धाय, धौं का पेड़। २ छोटा साँप (दे ६, ८१)।

पोअइआ स्त्री [दे] निद्राकारी लता, लता-विशेष (दे ६, ६३; पाअ)।

पोअंड वि [दे] १ भय-रहित, निडर। २ षण्ढ, नामर्द (दे ६, ६१)।

पोअंत पुं [दे] शपथ, सौगन (दे ६, ६२)।

पोअण न [प्रवयन, प्रोतन] पिरोना, गुम्फन, गूँथना (आवम)।

पोअणपुर न [पोतनपुर] नगर-विशेष (सुपा ५०६; भवि)।

पोअणा स्त्री [प्रवयना, प्रोतना] पिरोना (उप ३५६)।

पोअय वि [पोतज] पोत से उत्पन्न होनेवाला प्राणी—हस्ती आदि (ठा ३, १)।

पोअय पुं [पोतक] देखो पोअ = पोत (उवा; औप)।

पोअलय पुं [दे] १ आश्विन मास का एक उत्सव; जिसमें पत्नी के हाथ से लेकर पति अपूप को खाता है। २ एक प्रकार का अपूप—खाद्य-विशेष, पूआ। ३ बाल वसन्त (दे ६, ८१)।

पोआई स्त्री [पोताकी] १ शकुनि को उत्पन्न करनेवाली विद्या-विशेष २ शकुनिका, पक्षि-विशेष (विसे २४५३)।

पोआउय वि [पोतायुज, पोतज] देखो पोअय (पउम १०२, ६७)।

पोआय पुं [दे] ग्राम-प्रधान, गाँव का मुखिया (दे ६, ६०)।

पोआल पुं [दे] वृषभ, बलीवर्द (दे ६, ६२)।

पोआल [दे. पोतक] बच्चा; शिशु, बालक (ओघ ४४७)।

पोइय पुं [दे] १ हलवाई, मिठाई बेचनेवाला। २ खद्योत (दे ६, ६३)। ३ निमग्न, डूबा हुआ (ओघ १३६)। ४ स्पन्दित (बृह १)।

पोइअ वि [प्रोत] पिरोया हुआ (दे ७, ४४; उप पृ १०६; पाअ)।

पोइअल्लय देखो पोइअ = प्रोत (ओघ ५३६ टी)।

पोइआ, पोई स्त्री [दे] निद्राकारी लता, वल्ली-विशेष (दे ६, ६३; पएण १—पत्र ३४)।

पोउआ स्त्री [दे] करीष—सूखा गोबर (गोइँठा) का अग्नि (दे ६, ६१)।

पोंग पुं [दे] पाक, पकना (स १८०)।

पोंगिल्ल वि [दे] पका हुआ, परिपक्व, परि-पाक-युक्त; कच्छी भाषा में 'पोंगेल';

'अन्नेवि सइंमहियलनिसीय-
गुप्पन्नकिणियपोंगिल्ला।
मलिणजरकप्पडोच्छइय-
विग्गहा कहवि हिंडंति ॥'
(स १८०)।

पोंड न [दे] फूल, पुष्प; 'एगं सालियपोंडं बद्धो आमेलगो होइ' (उत्तनि ३)।

पोंड देखो पुंड। °वद्धण न [°वर्धन] नगर-विशेष (महा)। °वद्धणिया स्त्री [°वर्धनिका] जैन मुनि-गण की एक शाखा (कप्प)।

पोंड, पोंडय पुं [दे] यूथ का अधिपति (दे ६, ६०)। २ फल (पएह १, ४—पत्र ७८)। ३ अविकसित अवस्थावाला कमल (विसे १४२५)। ४ कपास का सूता; 'दव्वं तु पोंडयादी भावे सुत्तमिह सूयगं नाणं' (सूअनि ३)।

पोंडरिगिणी देखो पुंडरिगिणी (ठा २, ३)।

पोंडरिय देखो पुंडरीअ = पुण्डरीक (स ४३६)।

पोंडरी स्त्री [पौण्ड्री, पुण्डरीका] जम्बूद्वीप के मेरु के उत्तर रुचक पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८)।

पोंडरीअ देखो पुंडरीअ = पुण्डरीक (औप, णाया १, ५; १६; सम ३३; देवेन्द्र ३१८; सूअनि १४६)।

पोंडरीअ, पोंडरीग न [पौण्डरीक] १ गणित-विशेष, रज्जु-गणित (सूअनि १५४)। २ देखो पुंडरीअ = पौण्डरीक (सूअ २, १, १; सूअनि १४६; १५१)।

पोक्क सक [व्या + हृ, पत् + कृ] पुकारना, आह्वान करना। पोक्कइ (हे ४, ७६)।

पोक्क वि [दे] आगे स्थूल और उन्नत तथा बीच में निम्न (नासिका); 'पोक्कनासे' (उत्त १२, ६)।

पोक्कण पुं [पोक्कण] १ अनार्य देश-विशेष। २ उस देश में बसनेवाली म्लेच्छ जाति (पएह १, १)।

पोक्कण न [व्याहरण, पूत्करण] १ पुकार, आह्वान। २ वि. पुकारनेवाला (कुमा)।

पोक्कर देखो पुक्कर। पोक्करंति (महा)। वकृ. पोक्करंत (सुपा ३८०)।

पोक्करिय वि [पूत्कृत] १ पुकारा हुआ (सुर ६, १६४)। २ न. पुकार (दंस ३)।

पोक्कार देखो पुक्कार = पूत्कार (उप पृ १८५)।

पोक्किअ देखो पोक्करिय (उप १०३१ टी)।

पोक्खर न [पुष्कर] १ जल, पानी। २ पद्म, कमल। ३ पद्म-कोष। ४ एक तीर्थ, अजमेर-नगर के पास का एक जलाशय—तीर्थ। ५ हाथी की सूँढ़ का अग्र भाग। ६ वाद्य-भाण्ड। ७ आपण, दूकान। ८ असि-कोष, तलवार की म्यान। ६ मुख, मुँह। १० कुष्ठ रोग की ओषधि। ११ द्वीप-विशेष। १२ युद्ध, लड़ाई। १३ शर, बाण। १४ आकाश; 'पोक्खरं' (हे १, ११६; २, ४; संक्षि ४)। १५ पुं. नाग-विशेष। १६ रोग-विशेष। १७ सारस पक्षी। १८ एक राजा का नाम। १६ पर्वत-विशेष। २० वरुण-पुत्र; 'पोक्खरो' (प्राप्र)। देखो पुक्खर।

पोक्खर वि [पौष्कर] १ पुष्कर-सम्बन्धी। २ पद्माकार रचनावाला; 'पोक्खरं पवहणं' (चारु ७०)।

पोक्खरिणी स्त्री [पुष्करिणी] १ जलाशय-विशेष, वर्तुल वापी (णाया १, १—पत्र ६३)। २ पद्मिनी, कमलिनी, पद्म-लता; 'जलेण वा पोक्खरिणीपलासं' (उत्त ३२, ६०)। ३ वापी (कुमा)। ४ पद्म-समूह। ५ पुष्कर-मूल (हे २, ४)। ६ चौकोना जला-शय, पोखरी, वापी (पएह १, १; हे २, ४)।

पोक्खल देखो पुक्खल (पएण १—पत्र ३५; आचा २, १, ८, ११)।

पोक्खलच्छिल्लय, पोक्खलच्छिल्लय देखो पुक्खलच्छिभय (पएण १—पत्र ३५; राज)।

पोक्खलि पुंन [पुष्कलिन्] एक जैन उपा-सक, जिसका दूसरा नाम शतक था (राज)।

पोग्गर, पोग्गल पुंन [पुद्गल] १ रूपादि-विशिष्ट द्रव्य, मूर्त द्रव्य, रूपवाला पदार्थ; 'पोग्गला' (भग ८, १; ठा २, ४; ४, ४;

५, ३; ८), 'पोग्गलाइं' (सुज्ज ६; पंच ३, ४६)। २ न. मांस (पव २६८; हे १, ११६)। °त्थिआय पुं [°ास्तिकाय] पुद्गल-स्कन्ध, पुद्गल-राशि (भग; ठा ५, ३)। °परट्ट, °परियट्ट पुं [°परिवर्त] १ समस्त पुद्गल-द्रव्यों के साथ एक-एक परमाणु का संयोग-वियोग। २ समय का उत्कृष्टतम परिमाण-विशेष, अनन्त कालचक्र-परिमित समय (कम्म ५, ८६; भग १२, ४; ठा ३, ४)।

पोग्गलि वि [पुद्गलिन्] पुद्गलवाला, पुद्गल-युक्त (भग ८, १०—पत्र ४२३)।

पोग्गलिय वि [पौद्गलिक] पुद्गल-मय, पुद्गल-संबन्धी, पुद्गल का (पिंडभा ३२४)।

पोच्च वि [दे] सुकुमार, कोमल; गुजराती में 'पोचुं' (दे ६, ६०)।

पोच्चड वि [दे] १ असार, निस्सार (णाया १, ३—पत्र ६४)। २ अतिनिबिड (पएह १, १—पत्र १४)। ३ मलिन (निचू ११)।

पोच्छल अक [प्रोत् + शल्] उछलना, ऊँचा जाना। वकृ. पोच्छलंत (सुर १३, ४१)।

पोच्छाहण न [प्रोत्साहन] उत्तेजन (वेणी १०५)।

पोच्छाहिअ वि [प्रोत्साहित] विशेष उत्साहित किया हुआ, उत्तेजित (सुर १३, २६)।

पोट्ट पुं [पुत्र] लड़का, 'एक्केण चारभड-पोट्टेण' (वव १, टी)।

पोट्ट न [दे] पेट, उदर, मराठी में 'पोट' (दे ६, ६०; णाया १, १—पत्र ६१; ओघभा ७६; गा ८३; १७१; २८५; स ११६; ७३८; उवा; सुख २, १५; सुपा ५४३; प्राकृ ३७; पव १३५; जं २)। °साल पुं [°शाल] एक परिव्राजक का नाम (विसे २४५२; ५५)। °सारणी स्त्री [°सारणी] अतीसार रोग (आव ४)।

पोट्ट } न [दे] पोटला, गट्ठर, गठरी;
पोट्टल } 'कामिणिणियंबबिंबं कंदप्पविलासराय-हाणित्ति। न मुणइ अमेज्झपोट्टं' (सुपा ३५५; दे २, २४; स १००)।

पोट्टलिगा स्त्री [दे] पोटली, गठरी (सुख २, १७)।

पोट्टलिय वि [दे] पोटली उठानेवाला, गठरी-वाहक (निचू १६)।

पोट्टलिया [दे] देखो पोट्टलिगा (उप पृ ३८७; सुर १२, ११; सुख २, १७)।

पोट्टि स्त्री [दे] उदर-पेशी (गच्छ २००)।

पोट्टिल पुं [पोट्टिल] १ भारतवर्ष का भावी नववाँ तीर्थंकर—जिन-देव (सम १५३)। २ भारतवर्ष के चौथे भावी जिन-देव का पूर्वभवीय नाम (सम १५४)। ३ भगवान् महावीर का व्युत्क्रम से छठवें भव का नाम (सम १०५)। ४ एक जैन मुनि, जिसने भगवान् महावीर के समय में तीर्थंकर-नाम-कर्म बँधा था (ठा ६)। ५ एक जैन मुनि (पउम २०, २१)। ६ देव-विशेष (णाया १, १४)। ७ देखो पोट्टिल (राज)।

पोट्टिला स्त्री [पोट्टिला] व्यक्ति-वाचक नाम, एक स्त्री का नाम (णाया १, १४)।

पोट्टिस पुं [पोट्टिस] एक कवि का नाम (कप्पू)।

पोट्ठवई स्त्री [प्रौष्ठपदी] १ भाद्रपद मास की पूर्णिमा। २ भादों की अमावस्या (सुज्ज १०, ६)।

पोट्ठिल पुं [पुष्ठिल] भगवान् महावीर के पास दीक्षा लेकर अनुत्तर-विमान में उत्पन्न एक जैन मुनि (अनु)।

पोडइल न [दे] तृण-विशेष (पएण १—पत्र ३३)।

पोढ वि [प्रौढ] १ समर्थ (पाअ)। २ निपुण, चतुर। ३ प्रगल्भ। ४ प्रवृद्ध, यौवन के बाद की अवस्थावाला (उप पृ ८६; सुपा २२४; रंभा; नाट—मालती १३६)। °वाय पुं [°वाद] प्रतिज्ञा-पूर्वक प्रत्याख्यान (गा ५२२)।

पोढा स्त्री [प्रौढा] १ तीस से पचपन वर्ष तक की स्त्री (कुप्र १८५)। २ नायिका का एक भेद, शृङ्गार रस में काम-कला आदि अच्छी तरह जाननेवाली (प्राकृ १०)।

पोढिम पुंस्त्री [प्रौढमन्] प्रौढता, प्रौढपन (मोह २)।

पोढी स्त्री [प्रौढी] ऊपर देखो (कुप्र ४०७)।

पोणिअ वि [दे] पूर्ण (दे ६, २८)।

पोणिआ स्त्री [दे] सूते से भरा हुआ तकुवा (दे ६, ६१)।

पोत देखो पोअ = पोत (औप; बृह १; णाया १, ८)।

पोतणया देखो पोअणा (उप पृ ४१२)।

पोत्त पुं [पौत्र] पुत्र का पुत्र, पोता (दे २, ७२; श्रा १४)।

पोत्त न [पोत्र] प्रवहण, नौका; 'वेलाउलम्मि ओयारियाणि सव्वाणि तेण पोत्ताणि' (उप ५९७ टी)।

पोत्त } न [पोत] १ वस्त्र, कपड़ा (श्रा
पोत्तग } १२; ओघ १६८; कप्पू; स ३३२)। २ धोती, कटी-वस्त्र (गच्छ ३, १८; कस; वव ८४; श्रावक ६३ टी; महा)। ३ वस्त्र-खण्ड (पिंड ३०८)।

पोत्तय पुं [दे] फोता, वृषण, अण्डकोश (दे ६, ६२)।

पोत्तिअ न [पौतिक] वस्त्र, सूती कपड़ा (ठा ५, ३—पत्र ३३८; कस २, २६ टि)।

पोत्तिअ वि [पोतिक] १ वस्त्र-धारी। २ पुं. वानप्रस्थों का एक भेद (औप)।

पोत्तिआ स्त्री [पौत्रिका] पुत्र की लड़की (रंभा)।

पोत्तिआ स्त्री [दे] चतुरिन्द्रिय जन्तु की एक जाति (उत्त ३६, १४७)।

पोत्तिआ } स्त्री [पोतिका, पोती] १ धोती,
पोत्ती } पहनने का वस्त्र, साड़ी (विसे २६०१)। २ छोटा वस्त्र, वस्त्र-खण्ड; 'चउ-प्फालयाए पोत्तीए मुहं बंधेत्ता' (णाया १, १—पत्र ५३; पिंडभा ६), 'मुहपोत्तियाए' (विपा १, १)।

पोत्ती स्त्री [दे] काच, शीशा (दे ६, ६०)।

पोत्तुल्लया देखो पोत्तिआ (णाया १, १८—पत्र २३५)।

पोत्थ } पुंन [पुस्त, °क] १ वस्त्र, कपड़ा
पोत्थग } (णाया १, १३—पत्र १७६)। २-
पोत्थय } ३ देखो पुत्थ; 'पोत्थकम्मजक्खा विव निच्चिट्ठा' (वसु; श्रा १२; सुपा २८६; विसे १४२५, बृह ३; प्राप्र; औप)।

पोत्था स्त्री [प्रोस्था] प्रोत्थान, मूलोत्पत्ति (उत्त २०, १६)।

पोत्थार पुं [पुस्तककार] पोथी लिखनेवाला, पोथी बनाने का काम करनेवाला शिल्पी, दफ्तरी, जिल्दसाज (जीव ३)।

पोत्थिया स्त्री [पुस्तिका] पोथी, पुस्तक; 'सरस्सइ व्व पोत्थियावलग्गहत्था' (काल)।

पोप्पय पुंन [दे] हस्त-परिमर्षण, हाथ फिराना (उप पृ ३५३)।

पोप्फल न [पूगफल] सुपारी (हे १, १७०; कुमा)।

पोप्फली स्त्री [पूगफली] सुपारी का पेड़ (हे १, १७०; कुमा)।

पोम देखो पउम; 'जहा पोमं जले जायं' (उत्त २५, २७; सुत्त २५, २७; पउम ५३, ७९)।

पोमर न [दे] कुसुम्भ-रक्त वस्त्र (दे ६, ६३)।

पोमाड पुं [दे. पद्माट] पमाड, पमार, चकवड़ का पेड़ (स १४४)। देखो पउमाड।

पोमावई स्त्री [पद्मावती] छन्द-विशेष (पिंग)।

पोमिणी देखो पउमिणी (सुपा ६४६; सम्मत्त १७१)।

पोम्म देखो पउम (हे १, ६१; १, २, ११२; गा ७५; कुमा; प्राकृ २८; कप्पू; पि १६६)।

पोम्मा देखो पउमा (प्राकृ २८; गा ४७१; पि १६६)।

पोम्ह देखो पम्ह = पक्ष्मन्; 'जह उ किर णालिगाए घणियं मिदुरूयपोम्हभरियाए' (धर्मसं ९८०)।

पोर पुं [पूतर] जल में होनेवाला क्षुद्र जन्तु (हे १, १७०; कुमा)।

पोर वि [पौर] पुर में—नगर में उत्पन्न, नागरिक (प्राकृ ३५)।

पोर देखो पुर = पुरस्। °कव्व न [°काव्य] शीघ्रकवित्व (राज)।

पोर पुंन [दे. पर्वन्] ग्रंथि, गाँठ (ठा ४, १; अनु)। °बीय वि [°बीज] पर्व-बीज से उगनेवाली वनस्पति, इक्षु आदि (ठा ४, १)।

पोरग पुंन [पर्वक] वनस्पति का एक भेद, पर्ववाली वनस्पति (पण्ण १—पत्र ३३)।

पोरच्छ पुं [दे] दुर्जन, खल (दे ६, ६२ पाअ)।

पोरच्छिम देखो पुरच्छिम (सुपा ४१)।

पोरत्थ वि [दे] मत्सरी, ईर्ष्यालु, द्वेषी (षड्)।

पोरय न [दे] क्षेत्र (दे ६, २६)।

पोरव पुं [पौरव] राजा पुरु की संतान (अभि ९५)।

पोरवाड पुं [पौरवाट] एक जैन श्रावक-कुल (ती २)।

पोराण देखो पुराण (पण्ण २८; औप; भग; हे ४, २८७; उव; गा ३४०)।

पोराण वि [पौराण] १ पुराण-सम्बन्धी (राय)। २ पुराण शास्त्र का ज्ञाता (राज)।

पोराणिय वि [पौराणिक] पुराण-शास्त्र-संबन्धी (स ३४४)।

पोरिस न [पौरुष] १ पुरुषत्व, पुरुषार्थ (प्रासू १७)। २ पराक्रम (कुमा)।

पोरिस वि [पौरुषेय] पुरुष-जन्य, पुरुष-प्रणीत (धर्मसं ८९२ टी)।

पोरिसिमंडल न [पौरुषीमण्डल] एक जैन शास्त्र (णंदि २०२)।

पोरिसिय देखो पोरिसीय; 'अत्थाहमतारमपोरिसियंसि उदगंसि अप्पाणं मुयति' (णाया १, १४—पत्र १९०)।

पोरिसी स्त्री [पौरुषी] १ पुरुष-शरीर-प्रमाण छाया। २ जो समय में पुरुष-परिमाण छाया हो वह काल, प्रहर (उवा; विपा २, १; आचा; कप्प, पव ४)। ३ प्रथम प्रहर तक भोजन आदि का त्याग, प्रत्याख्यान-विशेष, तप-विशेष (पव ४; संबोध ५७)।

पोरिसीय वि [पौरुषिक] पुरुष-प्रमाण, पुरुष-परिमित; 'कुंभी महंताहियपोरिसीया' (सूअ १, ५, १, २४)।

पोरुस पुं [पुरुष] अत्यन्त वृद्ध पुरुष (सूअ १, ७, १०)।

पोरुस देखो पोरिस (स २०४; उप ७२८ टी; महा)।

पोरेकच्च, **पोरेगच्च** न [पौरस्कृत्य] पुरस्कार, कला-विशेष (औप; राय; औप १०७ टि)।

पोरेवच्च न [पौरोवृत्य] पुरोवर्त्तित्व, अग्रेसरता (औप; सम ८६; विपा १, १; कप्प)।

पोलंड सक [प्रोत + लङ्घ्] विशेष उल्लंघन करना। पोलंडेइ (णाया १, १—पत्र ६१)।

पोलच्चा स्त्री [दे] खेटित भूमि, कृष्ट जमीन (दे ६, ६३)।

पोलास न [पोलास] १ नगर-विशेष, पोलासपुर (उवा)। २ उद्यान-विशेष (राज)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष (उवा; अंत)।

पोलासाढ न [पोलाषाढ] श्वेतविका नगरी का एक चैत्य (विसे २३५७)।

पोलिअ पुं [दे] सौनिक, कसाई (दे ६, ६२)।

पोलिआ स्त्री [दे. पौलिका] खाद्य-विशेष, पूरी (?); 'सुणओ इव पोलियासत्तो' (उप ७२८ टी; राज)।

पोली देखो पओली; 'बद्धेसु पोलिदारेसु, गवेसंतो अ धुत्तयं' (श्रा १२; उप पृ ८४; धर्मवि ७७)।

पोल्ल वि [दे] पोला, शुषिर, खाली, रिक्त; 'पोल्लो व्व मुट्ठी जह से असारे' (उत्त २०, ४२; णाया १, १—पत्र ६३; पव ८१), 'वंका कीडक्खइया चित्तलया पोल्लया य दड्ढा य' (महा)।

पोल्लड वि [दे] ऊपर देखो, 'वंका कीडक्खइया चित्तलया पोल्लडा य दड्ढा य' (ओघ ७३५; विचार ३३६)।

पोल्लर न [दे] तप-विशेष, निर्विकृतिक तप (संबोध ५८)।

पोस अक [पुष्] पुष्ट होना। पोसइ (धात्वा १४५; भवि)।

पोस सक [पोषय्] १ पुष्ट करना। २ पालन करना। पोसेइ (पंचा १०, १४); 'मायरं पियरं पोस' (सूअ १, ३, २, ४), पोसाहि (सूअ १, २, १, १९)। कवकृ. पोसिज्जंत (गा १३५)।

पोस वि [पोष] १ पोषक, पुष्टि-कारक; 'अभिक्खणं पोसवत्थं परिहिंति' (सूअ १, ४, १, ३)। २ पुं. पोषण, पुष्टि (संबोध ३९)।

पोस पुं [पोस] १ अपान-देश, गुदा (पण्ह १, ४—पत्र ७८; ओघ ५५६; औप)। २ योनि (निचू ६)। ३ लिंग, उपस्थ; 'णवसोतपरिस्सवा बोंदी पण्णत्ता, तं जहा; दो सोत्ता, दो णेत्ता, दो घाणा, मुहं, पोसे, पाऊ' (ठा ९—पत्र ४५०)।

पोस पुं [पौष] पौष मास (सम ३५)।

पोसग वि [पोषक] १ पुष्टि-कारक। २ पालन-कर्ता (पण्ह १, २)।

पोसण न [पोषण] १ पुष्टि (पराह १, २)। २ पालन। ३ वि. पोषण-कर्ता, 'लोग परं पि जहासिपोसरणे' (सूअ १, २, १, १६)।
पोसण न [पोसन] अपान, गुदा (जं ३)।
पोसणया स्त्री [पोषणा] १ पोषण, पुष्टि। २ भरण, पालन (उवा)।
पोसय देखो **पोस** = पोस; 'पोसए त्ति' (ठा ६ टी—पत्र ४५०; बृह ४)।
पोसय देखो **पोसग** (राज)।
पोसह पुं [पोषध, पौषध] १ अष्टमी, चतुर्दशी आदि पर्वतिथि में करने योग्य जैन श्रावक का व्रत-विशेष, आहार-आदि के त्याग-पूर्वक किया जाता अनुष्ठान-विशेष (सम १६; उवा; औप; महा; सुपा ६१६; ६२०)। २ पर्व-दिवस—अष्टमी, चतुर्दशी आदि पर्व-तिथि; 'पोसहसद्दो रूढीए एत्थ पव्वाणुवायओ भणिओ' (सुपा ६१६)। °**पडिमा** स्त्री [°प्रतिमा] जैन श्रावक को करने योग्य अनुष्ठान-विशेष, व्रत-विशेष (पंचा १०, ३)। °**वय** न [°व्रत] वही पूर्वोक्त अर्थ (पडि)। °**साला** स्त्री [°शाला] पौषध-व्रत करने का स्थान (णाया १, १—पत्र ३१; अंत; महा)। °**ोववास** पुं [°ोपवास] पर्वदिन में उप-वास-पूर्वक किया जाता जैन श्रावक का अनु-ष्ठान-विशेष, जैन श्रावक का ग्यारहवाँ व्रत (औप; सुपा ६१६)।
पोसहिय वि [पौषधिक] जिसने पोषध-व्रत किया हो वह, पौषध करनेवाला (णाया १, १—पत्र ३०; सुपा ६१६; धर्मवि २७)।
पोसिअ वि [दे] दुःस्थ, दरिद्र, दुःखी (दे ६, ६१)।
पोसिअ वि [पुष्ट] पोषण-युक्त (भवि)।
पोसिअ वि [पोषित] १ पुष्ट किया हुआ। २ पालित (उत्त २७, १४)।
पोसिद (शौ) वि [प्रोषित] प्रवास—विदेश में गया हुआ। °**भत्तुआ** स्त्री [°भर्तृका] जिसका पति प्रवास—परदेश में गया हो वह स्त्री (स्वप्न १३४)।
पोसी स्त्री [पौषी] १ पौष मास की पूर्णिमा। २ पौष मास की अमावस (सुज्ज १०, ६; इक)।
पोह पुं [दे] बैल आदि की विष्ठा का ढेर, कच्छी भाषा में 'पोह' (पिंड २४५)।
पोह पुं [प्रोथ] अश्व के मुख का प्रान्त भाग (गउड)।
पोहण पुं [दे] छोटी मछली (दे ६, ६२)।
पोहत्त न [पृथुत्व] चौड़ाई (भग)।
पोहत्त देखो **पुहत्त** (पि ७८)।
पोहत्तिय वि [पार्थक्त्विक] पृथक्त्व-संबन्धी (पराण २२—पत्र ६३६; ६४०; २३—पत्र ६६४)।
पोहल देखो **पोप्फल** (षड्)।
°**प्प** देखो **प** = प्र; 'विप्पोसहिपत्ताणं' (संति २; गउड)।
°**प्पआस** देखो **पयास** = प्रयास (अभि ११७)।
°**प्पउत्त** देखो **पउत्त** = प्रवृत्त (मा ३)।
°**प्पअअ** देखो **पअय** (अभि १७६)।
°**प्पडव** (मा) अक [प्र + तप्] गरम होना। प्पडवदि (पि २१६)।
°**प्पडिआर** देखो **पडिआर** = प्रतिकार (मा ४३)।
°**प्पडिहा** देखो **पडिहा** = प्रतिभा (कुमा)।
°**प्पणइ** देखो **पणइ** = प्रणयिन् (कुमा)।
°**प्पणाम** देखो **पणाम** = प्रणाम (हे ३, १०५)।
°**प्पणास** देखो **पणास** = प्रणाश (सुपा ६५७)।
°**प्पण्णा** देखो **पण्णा** = प्रज्ञा (कुमा)।
°**प्पत्थाण** देखो **पत्थाण** (अभि ८१)।
°**प्पदेस** देखो **पदेस** (नाट—विक्र ४)।
°**प्पफुरिद** (शौ) देखो **पप्फुरिअ** (नाट—मालती ५४)।
°**प्पबंध** देखो **पबंध** (रंभा)।
°**प्पभिदि** देखो °**पभिइ** (रंभा)।
°**प्पभूद** (शौ) देखो **पभूय** (नाट—वेणी ३६)।
°**प्पमत्त** देखो **पमत्त** (अभि १८५)।
°**प्पमाण** देखो **पमाण** (पि ३६६ ए)।
°**प्पमुक्क** देखो **पमुक्क** (नाट—उत्तर ५६)।
°**प्पमुह** देखो **पमुह** (गउड)।
°**प्पयर** देखो **पयर** (कुमा)।
°**प्पयाव** देखो **पयाव** (कुमा)।
°**प्पयास** देखो **पयास**=प्रकाश (सुपा ६५७)।
°**प्पलावि** देखो **पलावि** (अभि ४६)।
°**प्पवत्तण** देखो **पवत्तण**; 'अजिअजिण सुह-प्पवत्तणं' (अजि ४)।
°**प्पवह** देखो **पवह** (कुमा)।
°**प्पवेस** देखो **पवेस** (रंभा)।
°**प्पवेसि** देखो **पवेसि** (अभि १७५)।
°**प्पसर** देखो **पसर** = प्र + सृ। वकृ. °**प्पसरंत** (रंभा)।
°**प्पसर** देखो **पसर** = प्रसर।
°**प्पसव** देखो **पसव** = (नाट—मालवि ३७)।
°**प्पसाय** देखो **पसाय** = प्रसाद (रंभा)।
°**प्पसुत्त** देखो **पसुत्त** (रंभा)।
°**प्पसूद** (शौ) देखो **पसूअ** = प्रसूत (अभि १४०)।
°**प्पहर** देखो **पहर** = प्रहार (से २, ४; पि २६७ ए)।
°**प्पहा** देखो **पहा** (कुमा)।
°**प्पहाण** देखो **पहाण** (रंभा)।
°**प्पहाय** देखो **पहाय** = प्रभाव; 'प्पहाउ' (रंभा)।
°**प्पहार** देखो **पहार** (रंभा)।
°**प्पहाव** देखो **पहाव** (अभि ११६)।
°**प्पहु** देखो **पहु** (रंभा)।
°**प्पारंभ** देखो **पारंभ** (रंभा)।
°**प्पिअ** देखो **पिअ** = प्रिय (अभि ११८; मा १८)।
°**प्पिआ** देखो **पिआ** (कुमा)।
°**प्पिव** देखो **इव** (प्राकृ २६)।
°**प्पेम** देखो **पेम** (पि ४०४)।
°**प्पेम्म** देखो **पेम्म** (कुमा)।
°**प्पोढ** देखो **पोढ** (रंभा)।
°**प्फंस** देखो **फंस** = स्पर्श (काप्र ७४३; गा ४६२; ५५६)।
°**प्फणा** देखो **फणा** (सुपा ५३५)।
°**प्फद्धा** देखो **फद्धा** (कुमा)।
°**प्फल** देखो **फल** (पि २००)।
°**प्फाल** सक [स्फालय्] १ आघात करना। २ पछाड़ना। प्फालउ (पिंग)।

°प्फालण न [स्फालन] आघात (गउड; गा ५४६)।

°प्फुड देखो फुड (कुमा; रंभा)।

°प्फोडण देखो फोडण (गा ३८१)।

प्रस्स (अप) देखो पस्स = दृश्। प्रस्सदि (हे ४, ३९३)।

प्राइम्व, प्राइव, प्राउ (अप) देखो पाय = प्रायस् (हे ४, ४१४; कुमा)।

प्रिय (अप) देखो पिअ = प्रिय (हे ४, ३९८; कुमा)।

प्रेंक्किअ न [दे] वृष रटित, बैल की चिल्लाहट (षड्)।

प्रेयंड वि [दे] धूर्त्त, ठग (दे १, ४)।

॥ इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि पआराइसद्दसंकलणो
सत्तावीसइमो तरंगो परिसमत्तो॥

फ

फ पुं [फ] ओष्ठ-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष (प्राप्र)।

फंद अक [स्पन्द्] थोड़ा हिलना, फरकना। फंदइ, फंदंति (हे ४, १२७; उत्त १४, ४५)। वकृ. फंदंत, फंदमाण (सूअ १, ४, १, ६; ठा ७—पत्र ३८३; कप्प)।

फंद पुं [स्पन्द] किञ्चित् चलन (षड्; सण)।

फंदण न [स्पन्दन] ऊपर देखो (विसे १८४७; हे २, ५३; प्राप्र)।

फंदणा स्त्री [स्पन्दना] ऊपर देखो (सूअनि ८ टी)।

फंदिअ वि [स्पन्दित] १ कुछ हिला हुआ, फरका हुआ (पाअ)। २ हिलाया हुआ, ईषत् चालित (जीव ३)।

फंफ (अप) अक [उद् + गम्] उछलना। फंफाइ (पिंग १८४, ५)।

फंफसय पुं [दे] लता-भेद, वल्ली-विशेष (दे ६, ८३)।

फंफाइ (अप) वि [कम्पायित, कम्पित] कँपाया हुआ, कम्प-प्राप्त (पिंग)।

फंस अक [विसम् + वद्] असत्य प्रमाणित होना, प्रमाण-विरुद्ध होना, अप्रमाण साबित होना। फंसइ (हे ४, १२९)। प्रयो., भूका. फंसाविही (कुमा)।

फंस सक [स्पृश्] छूना। फंसइ, फंसेइ (हे ४, १८२; प्राकृ २७)। कर्म. फंसिज्जइ (कुमा)।

फंस पुं [स्पर्श] स्पर्श, छूना (पाअ; प्राप्र; प्राकृ २७; गा २६६)।

फंसण न [स्पर्शन] छूना, स्पर्श करना (उप ३३० टी; धर्मवि ४३, मोह २६)।

फंसण वि [पांसन] अपसद, अधम; 'कुल-फंसणो' (सुख २, ६; स १६८; भवि)।

फंसण वि [दे] १ युक्त, संयत। २ मलिन, मैला (दे ६, ८७)।

फंसुल वि [दे] मुक्त, त्यक्त (दे ६, ८२)।

फंसुली स्त्री [दे] नवमालिका, पुष्प-प्रधान वृक्ष-विशेष (दे ६, ८२)।

फक्किया स्त्री [फक्किका] ग्रन्थ का विषम स्थान, कठिन स्थान (सुर १६, २४७)।

फग्गु वि [फल्गु] १ असार, निरर्थक, तुच्छ (सुर ८, ३; संबोध १६; गा ३६६ अ)। २ स्त्री. भगवान् अजितनाथ की प्रथम शिष्या (सम १५२)। °मित्त पुं [°मित्र] स्वनाम-ख्यात एक जैन मुनि (कप्प)। °रक्खिय पुं [°रक्षित] एक जैन मुनि (आव १)। °सिरी स्त्री [°श्री] इस अवसर्पिणी काल के पंचम आरे में होनेवाली अन्तिम जैन साध्वी (विचार ५३४)।

फग्गु पुं [दे. फल्गु] वसन्त का उत्सव, फगुआ (दे ६, ८२)।

फग्गुण पुं [फाल्गुन] १ मास-विशेष, फागुन का महिना (पाअ; कप्प)। २ अर्जुन, मध्यम पाण्डुपुत्र (वज्जा १३०)।

फग्गुणी स्त्री [फाल्गुनी] १ फागुन मास की पूर्णिमा (इक; सुज्ज १०, ६)। २ फागुन मास की अमावस्या (सुज्ज १०, ६)। ३ एक गृह-पति की स्त्री (उवा)।

फग्गुणी स्त्री [फल्गुनी] नक्षत्र-विशेष (ठा २, ३)।

फट्ट अक [स्फट्] फटना, टूटना। फट्टइ (भवि)।

फड सक [स्फट्] १ खोदना। २ शोधना। वकृ. 'गतं फडमाणीओ' (सुपा ६१३)। हेकृ. फडिउं (सुपा ६१३)।

फड न [दे] साँप का सर्व शरीर (दे ६, ८६)।

फड पुंन [दे. फट] साँप की फणा (दे ६, ८६; कुप्र ४७२)।

फडही [दे] देखो फलही (गा ५५० अ)।

फडा स्त्री [फटा] साँप की फन, सर्प-फणा (णाया १, ६; पउम ५२, ५; पाअ; औप)। °ल वि [°वत्] फनवाला (हे २, १५९; चंड)।

फडिअ वि [स्फटित] खोदा हुआ, 'तो थोवे-सघरेहिं नरेहिं फडिया भडत्ति सा गत्ता' (सुपा ६१३)।

फडिअ } देखो फलिह = स्फटिक (नाट— फडिग } रत्ना ८३); 'फडिगपाहाणनिभा' (निचू ७)।

फडिल्ल देखो फडा-ल (चंड)।

फडिह पुं [परिघ] १ अर्गला, आगल (से १३, ३८)। २ कुठार (से ५, ५४)।

फडिहा देखो फलिहा = परिखा (से १२, ७५)।

फड्ड } पुंन [दे. स्पर्ध, °क] १ अंश, फड्डग } भाग, निस्सा, गुजराती में 'फाडिउं'; फड्ड } 'कम्मियकड्डमिस्सा चुल्ली उक्खा य फड्डुग } फड्डगजुया उ' (पिंड २५३)। २ संपूर्ण गण के अधिष्ठाता के वशवर्त्ती गण का एक लघुतर हिस्सा, समुदाय का एक अति छोटा विभाग जो संपूर्ण समुदाय के अध्यक्ष के अधीन हो; 'गच्छागच्छिं गुम्मागुम्मि फड्डाफड्डि' (औप; बृह १)। ३ द्वार आदि का छोटा छिद्र, विवर। ४ अवधिज्ञान का निर्गम-स्थान; 'फड्डा य असंखेज्जा', 'फड्डा य आणुगामी' (विसे ७३८; ७३९)। ५ समुदाय; 'तत्थ पव्वइयगा फड्डगेहिं एंति' (आवम; आचू १)। ६ समुदाय-विशेष, वर्गणा-समुदाय; 'नेहप्पच्चय-फड्डगमेगं अविभागवग्गणा णंता' (कम्मप २८; ४४; पंच ३, २८; ५, १८३, १८४; जीवस ७६); 'तं इगिफड्डुं संते', 'तासिं खलु फड्डुगाइं तु' (पंच ५, १७६; १७१)। °वइ पुं [°पति] गण के अवान्तर विभाग का नायक (बृह १)।

फण पुं [फण] फन, साँप की फणा (से ६, ५५; पाअ; गा २४०; सुपा १; प्रासू ५१)।

फणग पुं [दे. फनक] कंघा, केश सवाँरने का उपकरण (उत्त २२, ३०)।

फणज्जुय पुं [दे] वनस्पति-विशेष, 'तुलसी कण्ह-ओराले फणज्जुए अज्जए य भूयणए' (पण्ण १—पत्र ३४)।

फणस पुं [पनस] कटहर का पेड़ (पण्ण १; हे १, २३२; प्राप्र)।

फणा स्त्री [फणा] फन (सुर २, २३६)।

फणि पुं [फणिन्] १ साँप, सर्प, नाग (उप ३५७ टी; पाअ; सुपा ५५६; महा; कुमा)। २ दो कला या एक गुरु अक्षर की संज्ञा (पिंग)। ३ प्राकृत-पिंगल का कर्ता, पिंगला-चार्य (पिंग)। °चिंध पुं [°चिह्न] भगवान् पार्श्वनाथ (कुमा)। °पहु पुं [°प्रभु] १ नागकुमार देवों का एक स्वामी, धरणेन्द्र (ती ३)। २ शेष नाग (धर्मवि ५७)। °राय पुं [°राज] १ शेष नाग (कुप्र २७२)। २ पिंगल-कर्ता (पिंग)। °लआ स्त्री [°लता] नागलता, वल्ली-विशेष, (कप्पू)। °वइ पुं [°पति] १ इन्द्र-विशेष, धरणेन्द्र (सुपा ३१)। २ नाग-राज (मोह २९)। ३ पिंगलकार (पिंग)। °सेहर पुं [°शेखर] प्राकृत-पिंगल का कर्ता (पिंग)।

फणिंद पुं [फणीन्द्र] १ नाग-राज, शेष नाग (प्रासू ११३)। २ पिंगलकार (पिंग)।

फणिल्ल सक [चोरय्] चोरी करना। फणिल्लइ (धात्वा १४६)।

फणिह पुं [दे. फणिह] कंघा, केश सवाँरने का उपकरण (सूअ १, ४, २, ११)।

फणीसर पुं [फणीश्वर] देखो फणि-वइ (पिंग)।

फणुज्जय देखो फणज्जुय (राज)।

फद्ध पुं [स्पर्ध] स्पर्धा, हिर्स (कुमा)।

फद्धा स्त्री [स्पर्धा] ऊपर देखो (दे ८, १३; कुमा ३, १८)।

फद्धि वि [स्पर्धिन्] स्पर्धा करनेवाला (प्राकृ २३)।

फर } पुं [दे. फल, °क] १ काष्ठ आदि फरअ } का तख्ता। २ ढाल। (दे १,७६;६, ८२; कप्पू; सुर २, ३१)। देखो फल, फलग।

फरअ पुंन [दे. स्फरक] अस्त्र-विशेष, 'फरएहिं छाइऊणं तेवि हु गिण्हंति जीवंतं' (धर्मवि ८०)।

फरक्किद वि [दे] फरका हुआ, हिला हुआ, कम्पित (कप्पू)।

फरस देखो फरिस = स्पर्श (रंभा; नाट)।

फरसु पुं [परशु] कुठार, कुल्हाड़ा, फरसा (भवि; पि २०४)। °राम पुं [°राम] ब्राह्मण-विशेष, जमदग्नि ऋषि का पुत्र (भत्त १५३)।

फरहर अक [फरफराय्] फरफर आवाज करना। वकृ. फरहरंत (भवि)।

फरिह देखो फलिह = स्फटिक (इक)।

फरिस सक [स्पृश्] छूना। फरिसइ (षड्); फरिसइ (प्राकृ २७)। कर्म. फरि-सिज्जइ (कुमा)। कवकृ. फरिसिज्जंत (धर्मवि १३६)।

फरिस } पुंन [स्पर्श, °क] स्पर्श, छूना फरिसग } (आचा; पण्ह १, १; गा १३२; प्राप्र; पाअ; कप्प); 'न य कीरइ तणुफरिसं' (गच्छ २, ४४)।

फरिसण न [स्पर्शन] इन्द्रिय-विशेष, त्वगि-न्द्रिय (कुप्र २२४)।

फरिसिय वि [स्पृष्ट] छुआ हुआ (कुप्र १६; ४२)।

फरिहा देखो फलिहा = परिखा (णाया १, १२)।

फरुस वि [परुष] १ कर्कश, कठिन (उवा; पाअ; हे १, २३२; प्राप्र)। २ न. कुवचन, निष्ठुर वाक्य, 'ण यावि किंची फरुसं वदेज्जा' (सूअ १, १४, ७; २१)।

फरुस } पुं [दे. परुष, °क] कुम्भकार, फरुसग } कुम्हार, कोहाँर, कुंभार; 'पोग्गलमो-यगफरुसगदंते' (बृह ४)। °साला स्त्री [°शाला] कुंभकार-गृह (बृह ३)।

फरुसिया स्त्री [परुषता, पारुष्य] कर्कशता, निष्ठुरता (आचा)।

फल अक [फल्] फलना, फलान्वित होना। फलइ (गा १७; ८६४), फलंति (सिरि १२८२)। वकृ. फलंत (से ७, ५९)।

फल पुंन [फल] १ वृक्षादि का शस्य (आचा; कप्प; कुमा; ठा ६; जी १०)। २ लाभ; 'पुच्छइ ते सुमिणाणं एएसिं किमिह मह फलो होइ' (उप ९८६ टी)। ३ कार्य; 'हेउफलभा-वओ होंति' (पंचव १; धर्म १)। ४ इष्टानिष्ट-कृत कर्म का शुभ या अशुभ फल—परिणाम (सम ७२; हे ४, ३३५)। ५ उद्देश्य। ६ प्रयोजन। ७ त्रिफला। ८ जायफल। ९ बाण का अग्र भाग। १० फाल। ११ दान। १२ मुष्क, अण्डकोष। १३ ढाल। १४ कक्कोल, गन्ध-द्रव्य-विशेष (हे १, २३)। १५ अग्र भाग; 'अदु वा मुट्ठिणा अदु

कुंताइफलेणं' (आचा १, ६, ३, १०)। °मंत, °व वि [°वत्] फलवाला (गाया १, ४; पंचा ४)। °वड्ढिय, वद्धिय न [°वर्द्धिक] १ नगर-विशेष, फलोधि-नामक मरुदेशीय नगर। २ वहाँ का एक जैन मन्दिर (ती ५२)।

फलअ } पुंन [फलक] १ काष्ठ आदि का
फलग } तख्ता (आचा; गा ६५६; तंदु २६; सुर १०, १६१; औप)। २ जुए का एक उपकरण (औप; धण ३२)। ३ ढाल; 'भरिएहिं फलएहिं' (विपा १, ३; कुमा; सार्ध १०१)। ४ देखो फल (आचा)। °सज्जा स्त्री [°शय्या] काष्ठ का तख्ता जिसपर सोया जाय (भग)।

फलण न [फलन] फलना (सुपा ६)।

फलह } पुंन [फलह, °क] फलक, काठ
फलहग } आदि का तख्ता; 'असंसंजए भिक्खु-पडियाए पीढं वा फलहगं वा णिस्सेणिं वा उदूहलं वा आहट्टु उस्सविय दुरुहेज्जा' (आचा २, १, ६, १), 'भूमिसेज्जा फलह-सेज्जा' (औप), 'घरफलहे' (दे १, ८; पि २०६), 'पेक्खइ मन्दिराइँ फलहद्धुग्घाडिय-जालगवक्खाइं', 'अह फलहंतरेण दरिसिय-गुज्भंतरदेसइं' (भवि);

'पिहुपत्तासयमयलं गुणनियरनिबद्धफलहसंघायं।
संजमियसयलजोगं बोहित्थं मुणिवरसरिच्छं'
(सुर १३, ३६)।

फलहिआ } स्त्री [फलहिका, फलही] काठ
फलही } आदि का तख्ता; 'सूरिए अत्थमिए फलहिअं घडेउमाढवइ', 'इत्थ पहाणफलहो चिट्ठइ' (ती ११), 'कलावईए रूवं सिग्घं आलिहसु चित्तफलहीए' (सुर १, १५१)।

फलही स्त्री [दे] १ कर्पास, कपास (दे ६, ८२; गा १६५, ३५६)। २ कपास की लता; 'दरफुडिअवेंटभारोणआइ हसिअं व फलहीए' (गा ३६०)।

फलाव सक [फलाय्] फलवान् बनाना, सफल करना; 'तत्तोवि अ धण्णतमा निअय-फलेणं फलावंति' (रत्न २६)।

फलावह वि [फलावह] फलप्रद, फल को धारण करनेवाला (पउम १४, ४४)।

फलासव पुं [फलासव] मद्य-विशेष (पण्ण १७)।

फलि पुं [दे] १ लिंग, चिह्न। २ वृषभ, बैल (दे ६, ८६)।

फलिअ वि [फलित] १ विकसित, 'फुडिअं फलिअं च दलिअमुद्दरिअं' (पाअ)। २ फल-युक्त, जिसको फल हुआ हो वह (गाया १, ११)।

फलिअ न [दे] वायन, बायन, भोजन आदि का बाँटा जाता उपहार (ठा ३, ३—पत्र १४७)।

फलिआरी स्त्री [दे] दूर्वा, कुश तृण (दे ६, ८३)।

फलिणी स्त्री [फलिनी] प्रियंगु-वृक्ष (दे १, ३२; ६, ४६; पाअ, कुमा; गा ६६३)।

फलिह पुं [परिघ] १ अर्गला, आगल; 'अग्गला फलिहो' (पाअ; औप), 'ऊसिय-फलिहा' (भग २, ५—पत्र १३४)। २ अस्त्र-विशेष, लोहे का मुद्गर आदि अस्त्र। ३ गृह, घर। ४ काच-घट। ५ ज्योतिष-शास्त्र-प्रसिद्ध एक योग (हे १, २३२; प्राप्र)।

फलिह पुं [स्फटिक] १ मणि-विशेष, स्फटिक मणि (जी ३; हे १, १६७; कप्पू)। २ एक विमानावास, देव-विमान-विशेष (देवेन्द्र १३२; इक)। ३ रत्नप्रभा पृथिवी का एक स्फटिक-मय काण्ड (ठा १०)। ४ गन्धमादन पर्वत का एक कूट (इक)। ५ कुण्डल पर्वत का एक कूट। ६ रुचक पर्वत का एक शिखर (राज)। °गिरि पुं [°गिरि] कैलास पर्वत (पाअ)।

फलिह पुं [फलिह] फलक, काठ आदि का तख्ता; 'अवेसिणो फलिहा' (पाअ), 'नाणो-वगरणभूयाणं कवलियाफलिहपुत्थियाईणं' (आप ८)।

फलिह पुंन [स्फटिक] आकाश (भग २०, २)।

फलिह न [दे] कपास का टेंटा, टेंट या ढेढ़ी (अणु ३५ टी)।

फलिहंस पुं [फलिहंसक] वृक्ष-विशेष (दे ४, १२)।

फलिहा स्त्री [परिखा] खाई, किले या नगर के चारों ओर की नहर (औप; हे १, २३२; कुमा)।

फलिहि देखो परिहि (प्राकृ १५)।

फलिही देखो फलही=दे (अणु ३५ टी)।

फली स्त्री [फली] काठ आदि की छोटी तख्ती; 'तत्तो चंदणफलीउ वणियहट्टम्मि विक्किउं कहवि (सुपा ३८५)।

फलोवय } वि [फलोपग] फल-प्राप्त, फल-
फलोवा° } सहित (ठा ३, १ पत्र—११३)।

फल्ल वि [फल्य] सूते का वस्त्र, सूती कपड़ा (बृह १)।

फव्वीह सक [लभ्] यथेष्ट लाभ प्राप्त करना, गुजराती में 'फाववु''। फव्वीहामो (बृह १)। फव्व (दश० अगस्त्य० सू० ३०३)।

फसल वि [दे] १ सार, चितकबरा; 'फसलं सबलं सारं किम्मीरं चित्तलं च बोगिल्लं' (पाअ; दे ६, ८७)। २ स्थासक (दे ६, ८७)।

फसलाणिअ } वि [दे] कृत-विभूष, जिसने
फसलिअ } विभूषा की हो वह, शृङ्गारित (दे ६, ८३); 'फसलियाणि कुंकुमराएण' (स ३६०)।

फसुल वि [दे] मुक्त (दे ६, ८२)।

फाइ स्त्री [स्फाति] वृद्धि (ओघ ४७)।

फाईकय वि [स्फीतीकृत] १ फैलाया हुआ। २ प्रसिद्ध किया हुआ; 'वइसेसियं पणीयं फाईकयमण्णमण्णेहिं' (विसे २५०७)।

फागुण देखो फग्गुण (पि ६२)।

फाड सक [पाटय्, स्फाटय्] फाड़ना। फाडेइ (हे १, १६८; २३२)। वकृ. फाडंत (कुमा)।

फाडिय वि [फाटित, स्फाटित] विदारित (भवि)।

फाणिअ पुंन [फाणित] १ गुड़; 'फाणिओ गुडो भण्णति' (निचू ४)। २ गुड़ का विकार-विशेष, आर्द्र गुड़, पानी से द्रावित गुड़ (औप; कस; पिंड २३६; ६२५; पव ४)। ३ क्वाथ (पण्ण १७—पत्र ५३०)।

फाय वि [स्फीत] १ वृद्ध। २ विस्तीर्ण। ३ ख्यात (विसे २५०७)।

फार वि [स्फार] १ प्रचुर, बहुत; 'फारफल-भारभज्जिरसाहासयसंकुलो महासाही' (धर्मवि ५५)। २ विशाल, विपुल। ३ विस्तृत,

फैला हुआ (सुर २, २३६; काप्र १७०; सुपा १६४; कुप्र ५१)।

फारक वि [दे. स्फारक] स्फरकास्त्र को धारण करनेवाला, 'तं नासंतं दट्ठुं फारक्का नमुइवयणओ ढुक्का' (धर्मवि ८०)।

फारुसिय न [पारुष्य] परुषता, कठोरता, कर्कशता; 'फारुसियं समाइयंति' (आचा)।

फाल देखो °प्फाल।

फाल देखो फाड। फालेइ (हे १, १९८; २३२)। कवकृ. फालिज्जंत, फालिज्जमाण (गा १५३; सम्मत्त १७४)। संकृ. फालेऊण (गा ४८९)।

फाल पुंन [फाल] १ लोहमय कुश, एक प्रकार की लोहे की लम्बी कील (उवा)। २ फाल से की जाती एक प्रकार की दिव्य-परीक्षा, शपथ-विशेष (सुपा १८९)। ३ फलांग, लाँफ; 'दीवि व्व विहलफालो' (कुप्र १२)।

फालण न [पाटन, स्फाटन] विदारण, "खोणी किं न सहेदि सीरमुहओ तं तारिसं फालणं" (रंभा; सम १२५)।

फालण देखो °प्फालण।

फाला स्त्री [फाला] फलाङ्ग, लाँफ (कुप्र २७८; कुलक ३२)।

फालि स्त्री [दे. फालि] १ फली, छीमी, फलियाँ २ शाखा "सिंबलिफालिव्व अग्गिणा दड्ढो" (संथा ८५)। ३ फाँक, टुकड़ा "—नागवल्लीदलपूगीफलफालिपमुह—" (रयण ५५)।

फालिअ वि [पाटित, स्फाटित] विदारित (कुमा; पएह १, १—पत्र; पउम ८२, ३१; औप)।

फालिअ न [दे. फालिक] देश-विशेष में होता वस्त्र-विशेष, "अमिलाणि वा गजलाणि वा फालियाणि वा कायहाणि वा (आचा २, ५, १, ७)।

फालिअ, फालिग, फालिह पुं [स्फाटिक] १ रत्न-विशेष (कप्प)। २ वि. स्फटिक-रत्न का (पि २२६; उप ९८६; सुपा ८८)।

फालिहद्द पुं [पारिभद्र] १ फरहद का पेड़। २ देवदारु का पेड़। ३ निम्ब का पेड़ (१; २३२)।

फास सक [स्पृश्, स्पर्शय्] १ स्पर्श करना, छूना। २ पालन करना। फासइ, फासेइ (हे ४, १८२; भग)। कर्म. फासिज्जइ (कुमा)। वकृ. फासंत, फासयंत (पंचा १०, ३५ पएह २, ३—पत्र १२३)। कवकृ. फासाइज्जमाण (भग—अ°)। संकृ. फासइत्ता, फासित्ता (उत्त २९, १; सुख २९, १; कप्प; भग)।

फास पुंन [स्पर्श] १ स्पर्श, छूना (भग; प्रासू १०४)। २ ग्रह-विशेष, ज्योतिष्क देव-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७८)। ३ दुःख-विशेष, "एयाइं फासाइं फुसंति बालं" (सूअ १, ५, २, २२)। ४ शब्द आदि विषय (उत्त ४, ११)। ५ स्पर्श इन्द्रिय, त्वचा (भग)। ६ रोग। ७ ग्रहण। ८ युद्ध, लड़ाई। ९ गुप्त चर, जासूस। १० वायु, पवन। ११ दान। १२ 'क' से लेकर 'म' तक के अक्षर। १३ वि. स्पर्श करनेवाला (हे २, ९२)। °कीव पुं [°क्लीब] क्लीब का एक भेद (निचू ४)। °णाम, °नाम न [°नामन्] कर्म-विशेष, कर्कश आदि स्पर्श का कारणभूत कर्म (राज; सम ६७)। °मंत वि [°मत्] स्पर्शवाला (ठा ५, ३; भग)। °मय वि [°मय] स्पर्श-मय, स्पर्श से निर्वृत्त; 'फासामयाओ सोक्खाओ' (ठा १०)।

फासग वि [स्पर्शक] स्पर्श करनेवाला (अज्झ १०४)।

फासण न [स्पर्शन] १ स्पर्श-क्रिया (श्रा १६)। २ स्पर्शेन्द्रिय, त्वचा (पव ६७)।

फासणया, फासणा स्त्री [स्पर्शना] १ स्पर्श-क्रिया (ठा ६; स १५६; जीवस १८१)। २ प्राप्ति (राज)।

फासिअ वि [स्पृष्ट] १ छुआ हुआ (नव ४१; विसे २७८३)। २ प्राप्त; 'उचिए काले विहिणा पत्तं जं फासियं तयं भणियं' (पव ४)।

फासिअ वि [स्पर्शिक] स्पर्श करनेवाला (विसे १००१)।

फासिअ वि [स्पर्शित] १ स्पर्श-युक्त, स्पृष्ट। २ प्राप्त (पव ४—गाथा २१२)।

फासिंदिय न [स्पर्शेन्द्रिय] त्वगिन्द्रिय (भग; णाया १, १७)।

फासु, फासुअ, फासुग वि [प्रासु, °क] अचेतन, जीव-रहित, निर्जीव, अचित्त वस्तु (भग; पंचा १०, ६; औप; उवा; णाया १, ५; पउम ८२, ५)।

फिक्कर अक [फित् + कृ] प्रेत—पिशाच का चिल्लाना; 'तह फिक्करंति पेया' (सुपा ४९२)।

फिक्कि पुंस्त्री [दे] हर्ष, खुशी (दे ६, ८३)।

फिज न [दे. स्फिच्] नितम्ब, चूतर, जंघा का उपरि-भाग (सुख ८, १३)।

फिट्ट अक [भ्रंश्] १ नीचे गिरना। २ टूटना, भाँगना। ३ ध्वस्त होना। ४ पलायन करना, भागना। फिट्टइ (हे ४, १७७; प्राकृ ७६; गा १८३; चेइय ५८७), फिट्टई (उत्त २०, ३०), फिट्टंति (सिरि १२९३)। भवि. फिट्टिहिइ, फिट्टिहिसि (कुप्र १६५; गा ७६८)।

फिट्ट वि [भ्रष्ट] विनष्ट; 'पाणिएण तएह विअ न फिट्टा' (गा ९३; भवि)।

फिट्टा स्त्री [दे] १ मार्ग, रास्ता; 'ता फिट्टाए मिलियं कुट्टियनरपेडियं एगं' (सिरि २९९)। २ प्रणाम-विशेष, मार्ग में किया जाता प्रणाम (गुभा १)। °मित्त पुंन [°मित्र] मार्ग में मिलने पर प्रणाम करने तक की अवधिवाली मित्रतावाला (सुपा १८९)।

फिड देखो फिट्ट। फिडइ (हे ४, १७७)।

फिडिअ वि [भ्रष्ट, स्फिटित] १ भ्रंश-प्राप्त, नष्ट, च्युत (ओघ ७, १११; ११२; से ४, ५४; ६४)। २ अतिक्रान्त, उल्लंघित (ओघभा १७४; औप)।

फिड्डु वि [दे] वामन (दे ६, ८४)।

फिप्प वि [दे] कृत्रिम, बनावटी (दे ६, ८३)।

फिप्फिस न [दे] अन्त्र—आँत स्थित मांस-विशेष, फेफड़ा (सूअनि ७२; पएह १, १)।

फिर सक [गम्] फिरना, चलना। वकृ. फिरंत (धर्मवि ८१)।

फिरक्क पुंन [दे] खाली गाड़ी, भार ढोने-वाली खाली गाड़ी; 'समचित्ता दुवि वसहा सगडं कड्ढंति उवलभरियंपि। अदुवि विभि-न्नचित्ता फिरक्कजुत्तावि तम्मंति' (सुपा ४२४)।

फिरिय वि [गत] गया हुआ,
'गोधणवालणहेउं पुरिसा इह
केवि अग्गओ फिरिया।
जं सुम्मइ आसन्नो
सुन्नेपि हु एस संखरवो'
(धर्मवि १३६)।

फिलिअ देखो **फिडिअ** (से ८, ६८)।

फिल्लुस अक [दे] फिसलना, खिसकना, गिरना। वकृ. 'सेवालियभूमितले फिल्लुस-माणा य थामथामम्मि' (सुर २, १०५)। देखो **फेल्लुस**।

फीअ देखो **फाय** (सूअ २, ७, १)।

फीणिया स्त्री [दे] एक जात की मीठाई, गुजराती में 'फेणी'; (सम्मत्त ५७)।

फुंका स्त्री [दे] फूँक, मुँह से हवा निकालना (मोह ६७)।

फुंकार पुं [फुङ्कार] फुफकार, कुपित सर्प आदि की आवाज (सुर २, २३७)।

फुंटा स्त्री [दे] केश-बन्ध (दे ६, ८४)।

फुंद देखो **फंद** = स्पन्द। फुंदइ (से १५, ७७)।

फुंफमा, फुंफुआ, फुंफुगा स्त्री [दे] करीषाग्नि, वनकण्डे की आग (पाअ; दे ६, ८४; तंदु ४५; जीव २; बृह १; कम्म १, २२)।

फुंफुमा स्त्री [दे] १ करीषाग्नि, 'अहवा डज्झउ निहुयं निद्धूमं फुंफुम व्व चिरमेसो' (उप ७२८ टी)। २ कचवर-वह्नि, कूड़ा-करकट की आग (सुख १, ८)।

फुंफुल, फुंफुल्ल सक [दे] १ उत्पाटन करना। २ कहना। फुंफुल्लइ (हे ४, १७४)।

फुंस सक [मृज्, प्र + उञ्छ्] पोंछना; साफ करना। फुंसदि (प्राकृ ९३)।

फुंसण देखो **फासण** (उप पृ ३४)।

फुक्क अक [फूत् + कृ] १ फुफकारना, फूँ फूँ आवाज करना। २ सक. मुँह से हवा निकालना, फूँकना। फुक्कइ (पिंग)। वकृ. **फुक्कंत** (गा १७६), **फुक्किज्जंत** (अ) (हे ४, ४२२)।

फुक्का स्त्री [दे] १ मिथ्या (दे ६, ८३)। २ फूँक (कुप्र १५०)।

फुक्कार पुं [फूत्कार] फुफकार, फूँ फूँ की आवाज (कुप्र ५८; सण)।

फुक्किय वि [फूत्कृत] फुफकारा हुआ (आव ४)।

फुक्की स्त्री [दे] रजकी, धोबिन (दे ६, ८४)।

फुग्ग स्त्रीन [दे. स्फिच्] शरीर का अवयव-विशेष, कटि-प्रोथ (सूअनि ७६)।

फुग्गफुग्ग वि [दे] विकीर्ण रोमवाला, परस्पर असंबद्ध—बिखरे हुए केशवाला; 'तस्स भुमगाओ फुग्गफुग्गाओ' (उवा)।

फुट, फुट्ट अक [स्फुट्, भ्रंश्] १ विकसना, खीलना। २ प्रकट होना। ३ फूटना, फटना, टूटना। ४ नष्ट होना। फुटइ, फुट्टई, फुट्टेइ, फुट्टउ (संक्षि ३६; प्राकृ ६६; हे ४, १७७; २३१; उव; भवि; पिंग; गा २२८)। भवि. 'फुट्टिस्सइ बोहित्थं महिलाजणकहियमंतं वा' (धर्मवि १३), फुट्टिहिइ (पि ५२६)। वकृ. **फुट्टंत, फुट्टमाण** (पण्ह १, ३; गा २०४; सुर ४, १५१; णाया १, १—पत्र ३६)।

फुट्ट वि [स्फुटित, भ्रष्ट] १ फूटा हुआ, टूटा हुआ, विदीर्ण (उप ७२८ टी; सम्मत्त १४५; सुर २, ६०; ३, २४३; १३, २१०)। २ भ्रष्ट, पतित (कुमा)। ३ विनष्ट; 'फुट्टहडा-हडसीसं' (णाया १, १६; विपा १, १)।

फुट्टण न [स्फुटन] १ फूटना, टूटना (कुप्र ४१७)। २ वि. फूटनेवाला, विदीर्ण होनेवाला (हे ४, ४२२)।

फुट्टिअ वि [स्फुटित] विदारित, 'फुट्टिअमोहो' (कुमा ७, ६४)।

फुट्टिर वि [स्फुटितृ] फूटनेवाला (सण)।

फुट्ठ देखो **पुट्ठ** = स्पृष्ट (पि ३११)।

फुड देखो **फुट्ट** = स्फुट्, भ्रंश्। फुडइ (हे ४, १७७; २३१; प्राकृ ६६); 'फुडंति सव्वंग-संधीओ' (उप ७२८ टी)। वकृ. **फुडमाण** (सुर ३, २४३)।

फुड देखो **पुट्ठ** = स्पृष्ट (पण्ण ३६; ठा ७—पत्र ३८३; जीवस २००; भग)।

फुड वि [स्फुट] स्पष्ट, व्यक्त, साफ, विशद (पाअ; हे ४, २५८; उवा)।

फुडण न [स्फुटन] टूटना, खण्डित होना (पण्ह १, १—पत्र २३)।

फुडा स्त्री [स्फुटा] अतिकाय-नामक महोरगेन्द्र की एक पटरानी, इन्द्राणी-विशेष (ठा ४, १; इक)।

फुडा स्त्री [फटा] साँप की फन, 'उक्कडफु-डकुडिलजडिलकक्कसवियडफुडाडोवकरणदच्छं' (उवा)।

फुडिअ वि [स्फुटित] १ विकसित, खिला हुआ (पाअ; गा ३६०)। २ फूटा हुआ, विदीर्ण (स ३८१)। ३ विकृत (पण्ह १, २—पत्र ४०)।

फुडिअ (अप) देखो **फुरिअ** (भवि)।

फुडिआ स्त्री [स्फोटिका] छोटा फोड़ा, फुनसी (सुपा १३८)।

फुडु देखो **फुट्ट**। फुडुइ (षड्)।

फुन्न वि [दे. स्पृष्ट] छूआ हुआ (पव १५८ टी; कम्म ५, ८५ टी)।

फुप्फुस न [दे] उदरवर्ती अन्त्र-विशेष, फेफड़ा (सूअनि ७३; पउम २६, ५४)।

फुम सक [भ्रम्] भ्रमण करना। फुमइ (हे ४, १६१)। प्रयो. फुमावइ (कुमा)।

फुम सक [दे. फूत् + कृ] फूँक मारना, मुँह से हवा करना। फुमेज्जा (दस ४, १०)। वकृ. **फुमंत** (दस ४, १०)। प्रयो. फुमावेज्जा (दस ४, १०)।

फुर अक [स्फुर्] १ फरकना, हिलना। २ तड़फड़ना। ३ विकसना, खीलना। ४ प्रकाशित होना, प्रकट होना; 'फुरइ अ सीताइ तक्खणं वामच्छं' (से १५, ७६; पिंग)। वकृ. **फुरंत, फुरमाण** (गा १६२; सुर २, २२१; महा; पिंग; से ६, २५; १२, २६)। संकृ. **फुरित्ता** (ठा ७)।

फुर सक [अप + हृ] अपहरण करना, छीनना। प्रयो. फुरावेंति (वव ३)।

फुर पुं [स्फुर] शस्त्र-विशेष; 'फुरफलगावरण-गहिय—' (पण्ह १, ३—पत्र ४६)।

फुर (अप) देखो **फुड** = स्फुट (पिंग)।

फुरण न [स्फुरण] १ फरकना, कुछ हिलना, ईषत् कम्पन; 'जं पुण अच्छिप्फुरणं मह होही भारिया तेण' (सुर १३, १२७)। २ स्फूर्ति (सुपा ६; वज्जा ३४; सम्मत्त १६१)।

फुरफुर अक [पोस्फुराय्] खूब काँपना, थरथराना, तड़फड़ाना। फुरफुरेज्ज (महानि १)। वकृ. फुरफुरंत, फुरफुरेंत (सुर १४, २३३; स ६६६; २५६)।

फुरिअ वि [स्फुरित] १ कम्पित, हिला हुआ, फरका हुआ, चलित (दे ६, ८४; सुर ५, २२६; गा १३७)। २ दीप्त (दे ६, ८४)।

फुरिअ वि [दे] निन्दित (दे ६, ८४)।

फुरुफुर देखो फुरफुर। वकृ. फुरुफुरंत, फुरुफुरेंत (पण्ह १, ३; पिंड ५६०; सुर ७, २३१; णाया १, ८—पत्र १३३)।

फुल देखो फुड = स्फुट्। फुलइ (नाट)। फुले (अप) (पिंग)।

फुल (अप) देखो फुर = स्फुर्। फुला (पिंग)।

फुल (अप) देखो फुड = स्फुट (पिंग)।

फुल (अप) देखो फुल्ल = फुल्ल (पिंग)।

फुलिअ देखो फुडिअ = स्फुटित (से ५, ३०)।

फुलिअ (अप) देखो फुल्लिअ (पिंग)।

फुलिंग पुं [स्फुलिङ्ग] अग्नि-कण (णाया १, १; दे ६, १३५; महा)।

फुल्ल अक [फुल्ल्] फूलना, पुष्प-युक्त होना, विकसना। फुल्लइ, फुल्लए, फुल्लेइ (रंभा; सम्मत्त १४०), फुल्लंति (हे २, २६)। भवि. फुल्लिहिसि (गा ८०२)।

फुल्ल देखो कम = क्रम्। फुल्लइ (धात्वा १४६)।

फुल्ल न [फुल्ल] १ फूल, पुष्प (कुमा; धर्मवि २०; सम्मत्त १४३; दसनि १)। २ फूला हुआ, पुष्पित (भग; णाया १, १—पत्र १८; कुमा)। °मालिया स्त्री [°मालिका] फूल बेचनेवाली, मालाकार की स्त्री, मालिन (सुर ३, ७४)। °वल्लि स्त्री [°वल्लि] पुष्प-प्रधान लता (णाया १, १)।

फुल्लंधय पुं [फुल्लन्धय, पुष्पन्धय] भ्रमर, भँवरा (उप ९८६ टी)।

फुल्लंधुअ पुं [दे] भ्रमर, भौंरा (दे, ६, ८५; पाअ; कुमा)।

फुल्लग न [फुल्लक] पुष्प की आकृतिवाला ललाट का आभूषण (औप)।

फुल्लण न [फुल्लन] विकास (वज्जा १५२)।

फुल्लया स्त्री [फुल्ला, पुष्पा] वल्ली-विशेष, पुष्पाह्वा, शतपुष्पा, सोया का गाछ; 'दहफुल्लय-कोगलिमा (? मो)गली य तह अक्कबोंदीया' (पण्ह १—पत्र ३३)।

फुल्लवड न [दे] पुष्प-विशेष, मदिरा-वासक फूल (कुप्र ४५३)।

फुल्लविय } वि [फुल्लित] फुलाया हुआ
फुल्लाविय } (सम्मत्त १४०; विक्र २३)।

फुल्लिअ वि [फुल्लित] पुष्पित, विकसित (अंत १२; स ३०३; सम्मत्त १४०; २२७)।

फुल्लिम पुंस्त्री [फुल्लता] विकास, फूलन;
'अच्छउ ता फलकाले फुल्लिमसमए वि कालिमा वयणे।
इय कलिउं व पलासो चत्तो पत्तेहिँ किविणो व्व'
(सुर ३, ४४)।

फुल्लिर वि [फुल्लितृ] फूलनेवाला, प्रफुल्ल; 'हिययएणं दणचंदणफुल्लिरफुल्लेहिँ' (सम्मत्त २१४)।

फुस सक [भ्रम्] भ्रमण करना। फुसइ (हे ४, १६१)।

फुस सक [मृज्] मार्जन करना, पोंछना, साफ करना। फुसइ (हे ४, १०५; भवि)। कर्म. फुसिज्जइ, फुसिज्जउ (कुमा; सुपा १२४)। वकृ. फुसंत, फुसमाण (भवि; कुप्र २८५)। संकृ. फुसिऊण (महा)।

फुस सक [स्पृश्] स्पर्श करना, छूना। फुसइ (भग; औप; उत्त २, ६), फुसंति (विसे २०२३), फुसंतु (भग)। वकृ. फुसंत, फुसमाण (ओघ ३८६; भग)। संकृ. फुसिअ, फुसित्ता, फुसित्ताणं (पंच २, ३८; भग; औप; पि ५८३)। कृ. फुस्स (ठा ३, २)।

फुसण न [स्पर्शन] स्पर्श-क्रिया (भग; सुपा ५)।

फुसणा स्त्री [स्पर्शना] ऊपर देखो (विसे ४३२; नव ३२)।

फुसिअ देखो फुस = स्पृश्।

फुसिअ वि [स्पृष्ट] छुआ हुआ (जीवस १९६)।

फुसिअ वि [मृष्ट] पोंछा हुआ (उप पृ ३४५; सुपा २११; कुप्र २३१)।

फुसिअ पुंन [पृषत] १ बिन्दु, बुन्द, बूँद (आचा; कप्प)। २ बिन्दु-पात (सम ६०)।

फुसिअ वि [भ्रमित] घुमाया हुआ (कुमा ७, ४)।

फुसिआ स्त्री [दे] वल्ली विशेष, 'सेसविदुगोत्तफुसिया' (पण्ण १—पत्र ३३)।

फुस्स देखो फुस = स्पृश्।

फूअ पुं [दे] लोहकार, लोहार (दे ६, ८५)।

फूम देखो फुम। वकृ. फूमंत (राज)।

फूमिअ वि [फूत्कृत] फूँका हुआ (उप पृ १४१)।

फूल देखो फुल्ल = फुल्ल; 'फलफूलछल्लिकट्ठा मूलगपत्ताणि बीयाणि' (जी १३)।

फेक्कार पुं [फेत्कार] १ शृगाल की आवाज (सुर ६, २०४)। २ आवाज, चिल्लाहट (कप्पू)।

फेक्कारिय न [फेत्कारित] ऊपर देखो (स ३७०)।

फेड सक [स्फेटय्] १ विनाश करना। २ दूर हटाना। ३ परित्याग करना। ४ उद्घाटन करना। फेडइ, फेडेइ; फेडंति (उव; हे ४, ३५८; संबोध ५४; स ४१४)। कर्म. फेडिज्जइ (भवि)।

फेडण न [स्फेटन] १ विनाश। २ अपनयन (पव १३५)।

फेडणया स्त्री [स्फेटना] ऊपर देखो (पिंड ३८७)।

फेडावणिय न [दे] विवाह-समय की एक रीति, वधू को प्रथम बार लज्जा-परिहार के वक्त दिया जाता उपहार (स ७८)।

फेडिअ वि [स्फेटित] १ नष्ट किया हुआ, विनाशित (पउम ३६, २२)। २ त्याजित (सिरि ६५५)। ३ अपनीत (ओघभा ४२)। ४ उद्घाटित (स ७८)।

फेण पुं [फेण, फेन] फेण, भाग, जल-मल, पानी आदि के ऊपर का बुद्बुदाकार पदार्थ (पाअ; णाया १, १—पत्र ६२; कप्प)। °मालिणी स्त्री [°मालिनी] नदी-विशेष (ठा २, ३; इक)।

फेणबंध } पुं [दे] वरुण (दे ६, ८५)।
फेणवड }

फेणाय अक [फेणाय्, फेनाय्] फेण—फेन का वमन करना, भाग निकालना। वकृ. फेणायमाण (प्रयौ ७४)।

फेप्फस } न [दे] देखो फिप्फिस, **फेफस** } फुप्फुस (राज; तंदु ३६)।

फेरण न [दे] फेरना, घुमाना; 'गुंफणफेरण-सुंकारएहिं' (सुर २, ८)।

फेल सक [क्षिप्] १ फेंकना। २ दूर करना। फेलदि (शौ) (नाट)। संकृ. **फेलिअ** (नाट)।

फेला स्त्री [दे] झूंठन-झंठन, जूठन, भोजन से बचा-खुचा, उच्छिष्ट;

'तस्स य अणुकंपाए देवी
दासी य तम्मि कूवम्मि।
निच्चं खिवंति फेलं तीए
सो जियइ सुणउव्व।'
'दुग्गंधकूववासो गब्भो,
जणणीइ चावियरसेहिं।
जं गब्भपोसणं पुण तं फेलाहारसंकासं।'
(धर्मवि १४६)।

फेलाया स्त्री [दे] मातुलानी, मामी (दे ६, ८५)।

फेल्ल पुं [दे] दरिद्र, निर्धन (दे ६, ८५)।

फेल्लुस सक [दे] फिसलना, खिसकना, खिसककर गिरना। फेल्लुसइ (दे ६, ८६)। संकृ. **फेल्लुसिऊण** (दे ६, ८६; स ३५५)।

फेल्लुसण न [दे] १ फिसलन, पतन। २ पिच्छिल जमीन, वह जगह जहाँ पाँव फिसल पड़े (दे ६, ८६)।

फेल्हसण देखो **फेल्लुसण** (वव ४ टी)।

फेस पुं [दे] १ त्रास, डर। २ सद्भाव (दे ६, ८७)।

फोअ पुं [दे] उद्गम (दे ६, ८६)।

फोइअय वि [दे] १ मुक्त। २ विस्तारित (दे ६, ८७)।

फोंफा स्त्री [दे] डराने की आवाज, भयोत्पादक शब्द (दे ६, ८६)।

फोड सक [स्फोटय्] १ फोड़ना, विदारण करना। २ राई आदि से शाक आदि को बघारना। फोडेज (कुप्र ६७)। वकृ. **फोडंत, फोडेमाण** (सुपा २०१; ५६३; औप)।

फोड पुं [स्फोट] १ फोड़ा, व्रण-विशेष (ठा १०—पत्र ५२०)। २ वर्ण-विशेष, शब्द-भेद (राज)। ३ वि. भक्षक; 'बहुफोडो' (ओघभा १६१)।

फोडअ (शौ) पुं [स्फोटक] ऊपर देखो (प्राकृ ८६)।

फोडण न [स्फोटन] १ विदारण (पव ६ टी; गउड)। २ राई आदि से शाक आदि को बघारना (पिंड २५०)। ३ राई आदि संस्कारक पदार्थ (पिंड २५५)। ४ वि. फोड़नेवाला, विदारण करनेवाला; 'कायर-जणहिययफोडणं' (णाया १, ८); 'अम्हं मअणसराहअहिअअव्वणफाडणं गीअं' (गा ३८१)।

फोडय देखो **फोडअ** (पउम ६३, २६)।

फोडाव सक [स्फोटय्] १ फोड़वाना। तोड़वाना। २ खुलवाना। संकृ. **फोडाविऊण** (स ४६०)।

फोडाविअ वि [स्फोटित] १ तोड़वाया हुआ। २ खुलवाया हुआ; 'फोडाविया संपुडा' (स ४६०)।

फोडि स्त्री [स्फोटि] विदारण, भेदन; 'भाडी-फोडीसु वजए कम्मं' (पडि)। °**कम्म** न [°**कर्मन्**] १ जमीन आदि का विदारण करने का काम, हल आदि से भूमि-दारण, कूप, तड़ाग आदि खोदने का काम। २ उक्त काम कर आजीविका चलाना (पडि)।

फोडिअ वि [स्फोटित] १ फोड़ा हुआ, विदारित (णाया १, ७; स ४७२)। २ राई आदि से बघारा हुआ (वव १)।

फोडिअय वि [दे. स्फोटित, °क] राई से बघारा हुआ शाकादि (दे ६, ८८)।

फोडिअय न [दे] रात के समय जंगल में सिंहादि से रक्षा का एक प्रकार (दे ६, ८८)।

फोडिया स्त्री [स्फोटिका] छोटा फोड़ा (उप ७६८ टी)।

फोडी स्त्री [स्फोटी, स्फौटी] देखो **फोडि** (उवा; पव ६; पडि)।

फोप्फस न [दे] शरीर का अवयव-विशेष, 'कालिज्जयअंतपित्तजरहिययफोप्फसफेफसपि-लिहोदर—' (तंदु ३६)।

फोफल न [दे] गन्ध-द्रव्य विशेष, एक प्रकार की औषधि, 'महुरविरेयणमेसो कायव्वो फोफलाइदव्वेहिं' (भत्त ४२)।

फोफस देखो **फोप्फस** (पण्ह १, १—पत्र ८)।

फोरण न [स्फोरण] निरन्तर प्रवर्त्तन, 'विसयम्मि अपत्तेवि हु णियसत्तिप्फोरणेण फलसिद्धी' (उवर ७४)।

फोरविअ वि [स्फोरित] निरन्तर प्रवृत्त किया हुआ, 'तेहिंपि नियनियसत्ती फोरवीया' (सम्मत्त २२७; हम्मीर १४)।

फोस देखो **फुस** = स्पृश्; 'सव्वं फोसंति जगं' (जीवस १६६)।

फोस पुं [दे] उद्गम (दे ६, ८६)।

फोस पुं [दे. पोस] अपान-देश, गुदा (तंदु २०)।

फोसणा स्त्री [स्पर्शना] स्पर्श-क्रिया (जीवस १६६)।

॥ इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवे फआराइसद्दसंकलणो
अट्ठावीसइमो तरंगो समत्तो ॥

ब

ब पुं [ब] ओष्ठ-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष (प्राप)।

बअर (शौ) न [बदर] १ फल-विशेष, बेर। २ कपास का बीज (प्राकृ ८३)।

बइट्ठ (अप) वि [उपविष्ट] बैठा हुआ (हे ४, ४४४; भवि)।

बइल्ल पुं [दे] बैल, बरध, वृषभ (दे ६, ९१; गा २३८; प्राकृ ३८; हे २, १७४; धर्मवि ३; श्रावक २५८ टी; श्रु १५३; प्रासू ५५; कुप्र २७९; ती १५; वै ६; कप्पू)।

बइस (अप) अक [उप + विश्] बैठना; गुजराती में 'बेसवु''। बइसइ (भवि)।

बइसणय (अप) न [उपवेशनक] आसन (ती ७)।

बइसार (अप) सक [उप + वेशय्] बैठाना। बइसारइ (भवि)।

बइस्स देखो **वइस्स** (पि ३००)।

बईस (अप) देखो **बइस**। बईसइ (भवि)।

बईस (अप) न [उपवेश] बैठ, बैठन, बैठना; 'तोवि गोट्ठडा कराविआ मुद्धए उट्ठ-बईस' (हे ४, ४२३)।

बउणी स्त्री [दे] कार्पासी, कर्पास-वल्ली (दे ३, ५७)।

बउल पुं [बकुल] १ वृक्ष-विशेष, मौलसरी का पेड़ (सम १५२; पाअ; णाया १, ९)। २ बकुल का पुष्प (से १, ५६)। °**सिरी** स्त्री [°श्री] १ बकुल का पेड़। २ बकुल का पुष्प (श्रा १२)।

बउस पुं [बकुश] १ अनार्य देश-विशेष। २ पुंस्त्री. उस देश का निवासी (पराह १, १—पत्र १४)। स्त्री: °**सी** (णाया १, १—पत्र ३७)। ३ वि. शबल, चितकबरा। ४ मलिन चरित्रवाला, शरीर के उपकरण और विभूषा आदि से संयम को मलिन करनेवाला (ठा ३, २; ५, ३; सुख ६, १), स्त्री. 'तए णं सा सूमालिया अज्जा सरीरबउसा जाया यावि होत्था' (णाया १, १६)। ४ पुंन. मलिन संयम, शिथिल चारित्र-विशेष (सुख ६, १)।

बउहारी स्त्री [दे] बुहारी, संमार्जनी, झाड़ू (दे ६, ९७)।

बंग पुं [वङ्ग] १ भगवान् आदिनाथ के एक पुत्र का नाम (ती १४)। २ देश-विशेष, बंगाल देश (उप ७६५; ती १४)। ३ बंग देश का राजा (पिंग)।

बंगल (अप) पुं [वङ्ग] बंग देश का राजा (पिंग)।

बंगाल पुं [बङ्गाल] बंगाल देश. 'बंगालदेस-वइणो तेणं तुह ससुरयस्स दिन्ना हं' (सुपा ३७७)।

बंभ देखो **वंभ** (पि २६९)।

बंडि पुं [दे] देखो **बंदि** = बन्दिन् (षड्)।

बंद न [दे] कैदी, कारा-बद्ध मनुष्य; 'बंदंपि किंपि' (स ४२१), 'बंदाइं गिन्हइ कयावि', छलेण गिन्हंति बंदाइं', 'बंदाणं मोयावणकए' (धर्मवि ३२); 'एगत्थबंदपग्गहियपहियकीरंत-करुणरुन्नसरा' (धर्मवि ५२)। °**ग्गाह** पुं [°ग्रह] कैदी रूप से पकड़ना; 'परदोहघट्ट-वाडणबंदग्गहखत्तखणणपमुहाइं' (कुप्र ११३)।

बंदण न [दे] कैदी (नंदीटिप्प० वैनयि की बुद्धि में १३ वाँ कथानक)।

बंदि स्त्री [बन्दि] देखो **बंदी** (हे १, १४२; २, १७६)।

बंदि, **बंदिण** पुं [बन्दिन्] स्तुति-पाठक, मंगल-पाठक, मागध; 'मंगलपाढयमागह-चारणवेआलिआ बंदी' (पाअ; उप ७२८ टी; धर्मवि ३०), 'उद्दामसद्दबंदिणवंद्रसमुग्घुट्ठ-नामाइं' (स ५७६)।

बंदिर न [दे] समुद्र-वाणिज्य-प्रधान नगर, बंदर (सिरि ४३३)।

बंदी स्त्री [बन्दी] १ हठ-हृत स्त्री, बाँदी (दे २, ८४; गउड १०५; ८४३)। २ कैद किया हुआ मनुष्य (गउड ४२९; गा ११८)।

बंदीकय वि [बन्दीकृत] कैद किया हुआ, बाँध कर आनीत (गउड)।

बंदुरा स्त्री [बन्दुरा] अश्व-शाला, 'गच्छ निरूवेहि बंदुराओ, भूसेहि तुरए' (स ७२५)।

बंध सक [बन्ध्] १ बाँधना, नियन्त्रण करना। २ कर्मों का जीव-प्रदेशों के साथ संयोग करना। बंधइ (भग; महा; उव; हे १, १८७)। भूका. बंधिसु (पि ५१६)। कर्म. बंधिज्जइ, बज्झइ (हे ४, २४७), भवि. बंधिहिइ, बज्झिहिइ (हे ४, २४७)। वकृ. बंधंत बंधमाण (कम्म २, ८; पराण २२)। संकृ. बंधइत्ता, बांधउं, बंधिऊण, बंधिऊणं, बंधित्ता, बंधित्तु (भग; पि ५१३; ५८५; ५८२)। हेकृ. बंधेउं (हे १, १८१)। कृ. बंधियव्व (पंच १, ३)। कवकृ. बज्झंत, बज्झमाण (सुपा १९८; कम्म १, ३५; औप)।

बंध पुं [दे] भृत्य, नौकर (दे ६, ८८)।

बंध पुं [बन्ध] १ कर्म-पुद्गलों का जीव-प्रदेशों के साथ दूध-पानी की तरह मिलना, जीव-कर्म-संयोग (आचा; कम्म १, १५; ३२)। २ बन्धन, नियन्त्रण, संयमन (आ १०; प्रासू १५३)। ३ छन्द-विशेष (पिंग)। °**सामि** वि [°स्वामिन्] कर्म-बन्ध करने-वाला (कम्म ३, १; २४)।

बंधई स्त्री [बन्धकी] पुंश्चली, असती स्त्री (नाट—मालती १०६)।

बंधग वि [बन्धक] १ बाँधनेवाला। २ कर्म-बन्ध करनेवाला, आत्म-प्रदेश के साथ कर्म-पुद्गलों का संयोग करनेवाला (पंच ५, ८४; श्रावक ३०६; ३०७; पंचा १६, ४०, कम्म ६, ९)।

बंधण न [बन्धन] १ बाँधने का—संश्लेष का साधन, जिससे बाँधा जाय वह स्निग्ध-तादि गुण (भग ८, ९—पत्र ३९४)। २ जो बाँधा जाय वह। ३ कर्म, कर्म-पुद्गल। ४ कर्म-बन्ध का कारण (सूअ १, १, १, १)। ५ संयमन, नियन्त्रण (प्रासू ३)। ६ नियन्त्रण का साधन, रज्जु आदि (उव)। ७ कर्म-विशेष, जिस कर्म के उदय से पूर्व-गृहीत कर्म-पुद्गलों के साथ गृह्यमाण कर्म-पुद्गलों का आपस में सम्बन्ध हो वह कर्म (कम्म १, २४; ३१; ३५; ३६; ३७)।

बंधणया स्त्री [बन्धन] बन्धन (भग)।

बंधणी स्त्री [बन्धनी] विद्या-विशेष (पउम ७, १४१)।

बंधय देखो बंधग (णंदि ४२)।

बंधव पुं [बान्धव] १ भाई, भ्राता। २ मित्र वयस्य, दोस्त। ३ नातेदार, संबंधी, नतैत। ४ माता। ५ पिता। ६ माता-पिता का सम्बन्धी मामा, चाचा आदि (हे १, ३०; प्रासू ७६; उत्त १८, १४)।

बंधाव (अशो) सक [बन्धय्] बँधाना, बँधवाना। बंधापयति (पि ७)।

बंधाविअ वि [बन्धित] बँधाया हुआ (सुपा ३२५)।

बंधिअ देखो बद्ध (सूअ १, २, १, १८; धर्मवि २३)।

बंधु पुं [बन्धु] १ भाई, भ्राता। २ माता। ३ पिता। ४ मित्र, दोस्त। ५ स्वजन, नातेदार, नतैत (कुमा; महा; प्रासू १०८; सुपा १६८; २४१)। ६ छन्द-विशेष (पिंग)। °जीव पुं [°जीव] वृक्ष-विशेष, दुपहरिया का पेड़ (स्वप्न ६९; कुमा)। °जीवग पुं [°जीवक] वही अर्थ (णाया १, १; कप्प; भग)। °दत्त पुं [°दत्त] १ एक श्रेष्ठी का नाम (महा)। २ एक जैन मुनि का नाम (राज)। °मई, °वई स्त्री [°मती] १ भगवान् मल्लिनाथ की मुख्य साध्वी का नाम (णाया १, ८; पव ९; सम १५२)। २ स्वनाम-ख्यात स्त्री-विशेष (महा; राज)। °सिरी स्त्री [°श्री] श्रीदाम राजा की पत्नी (विपा १, ६)।

बंधुर वि [बन्धुर] १ सुन्दर, रम्य (पाअ)। २ नम्र, अवनत (गउड २०५)।

बंधुरिय वि [बन्धुरित] १ पिंडीकृत (गउड ३८३)। २ नम्रीभूत, नमा हुआ (गउड ५५६)। ३ मुकुटित, मुकुटयुक्त। ४ विभूषित (गउड ५३३)।

बंधुल पुं [बन्धुल] वेश्या-पुत्र, असती-पुत्र (मृच्छ २००)।

बंधूग पुं [बन्धूक] वृक्ष-विशेष, दुपहरिया का पेड़ (स ३१२)।

बंधोल्ल पुं [दे] मेलक, मेल, संगति (दे ६, ८९; षड्)।

बंभ पुं [ब्रह्मन्] १ ब्रह्मा, विधाता (उप १०३१ टी; दे ६, २२; कुप्र २०३)। २ भगवान् शान्तिनाथ का शासनाधिष्ठायक यक्ष (संति ७)। ३ अप्काय का अधिष्ठायक देव (ठा ५, १—पत्र२९२)। ४ पाँचवें देवलोक का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५)। ५ बारहवें चक्रवर्ती का पिता (सम १५२)। ६ द्वितीय बलदेव और वासुदेव का पिता (सम १५२; ठा ९—पत्र ४४७)। ७ ज्योतिष-शास्त्र प्रसिद्ध एक योग (पउम १७, १०)। ८ ब्राह्मण, विप्र (कुलक ३१)। ९ चक्रवर्ती राजा का एक देव-कृत प्रासाद (उत्त १३, १३)। १० दिन का नववाँ मुहूर्त (सम ५१)। ११ छन्द-विशेष (पिंग)। १२ ईषत्प्राग्भारा पृथिवी (सम २२)। १३ एक जैन मुनि का नाम (कप्प)। १४ पुंन. एक विमानावास, देव-विमान-विशेष (देवेन्द्र १३१; १३४; सम १९)। १५ मोक्ष, अपवर्ग (सूअ २, ६, २०)। १६ ब्रह्मचर्य (सम १८; ओघभा २)। १७ सत्य अनुष्ठान (सूअ २, ५, १)। १८ निर्विकल्प सुख (आचा १, ३, १, २)। १९ योगशास्त्र-प्रसिद्ध दशम द्वार (कुमा)। °कंत न [°कान्त] एक देव-विमान (सम १९)। °कूड पुं [°कूट] १ महाविदेह वर्ष का एक वक्षस्कार पर्वत (जं ४)। २ न. एक देव-विमान (सम १९)। °चरण न [°चरण] ब्रह्मचर्य (कुप्र १६१)। °चारि वि [°चारिन्] १ ब्रह्मचर्य पालन करनेवाला (णाया १, १; उवा। २ पुं. भगवान् पार्श्वनाथ का एक गणधर—प्रमुख मुनि (ठा ८—पत्र ४२९)। °चेर, °च्चेर न [°चर्य] १ मैथुन-विरति (आचा; पण्ह २, ४; हे २, ७४; कुमा; भग; सं ११; उप पृ ३४३)। २ जिनेन्द्र-शासन, जिन-प्रवचन (सूअ २, ५, १)। °ज्झय न [°ध्वज] एक देव-विमान (सम १९)। °दत्त पुं [°दत्त] भारतवर्ष में उत्पन्न बारहवाँ चक्रवर्ती राजा (ठा २, ४; सम १५२; उव)। °दीव पुं [°द्वीप] द्वीप-विशेष (राज)। °दीविया स्त्री [°द्वापिका] जैन-मुनि गण की एक शाखा (कप्प)। °प्पभ न [°प्रभ] एक देव-विमान (सम १९)। °भूइ पुं [°भूति] एक राजा, द्वितीय वासुदेव का पिता (पउम २०, १८२)। °यारि देखो °चारि (णाया १, १; सम १३; कप्प; सुपा २७१; महा; राज)। स्त्री. °णी (णाया १, १४)। °रुइ पुं [°रुचि] स्वनाम-प्रसिद्ध एक ब्राह्मण, नारद का पिता (पउम ११, ५२)। °लेस न [°लेश्य] एक देव-विमान (सम १९)। °लोअ, °लोग पुं [°लोक] एक स्वर्ग, पाँचवाँ देवलोक (भग; अनु; सम १३)। °लोगवडिंसय न [°लोकावतंसक] एक देव-विमान (सम १७)। °व °वंत वि [°वत्] ब्रह्मचर्यवाला (आचा)। °वडिंसय पुं [°वतंसक] सिद्ध-शिला, ईषत्प्राग्भारा पृथिवी (सम २२)। °वण्ण न [°वर्ण] एक देव-विमान (सम १९)। °वय न [°व्रत] ब्रह्मचर्य (णाया १, १)। °वि वि [°वित्] ब्रह्म का जानकार (आचा)। °व्वय देखो °वय (सं ५६; प्रासू १५६)। °संति पुं [°शान्ति] भगवान् महावीर का शासन-यक्ष (गण ११; ती १५)। °सिंग न [°शृङ्ग] एक देव-विमान (सम १९)। °सिट्ठ न [°सृष्ट] एक देव-विमान (सम १९)। °सुत्त न [°सूत्र] उपवीत, यज्ञोपवीत (मोह ३०; सुख २, १३)। °हिअ पुं [°हित] एक विमानावास, देव-विमान-विशेष (देवेन्द्र १३४)। °वित्त न [°वर्त] एक देव-विमान (सम १९)। देखो बंभाण, बम्ह।

बंभंड न [ब्रह्माण्ड] जगत्, संसार (गउड; कुप्र ४; सुपा ३६८; ५९३)।

बंभण पुं [ब्राह्मण] ब्राह्मण, विप्र (स २६०; सुर २, १३०, सुपा १६८; हे ४, २८०; महा)।

बंभणिआ स्त्री [ब्राह्मणिका] पञ्चेन्द्रिय जन्तु-विशेष (पुप्फ २६७)।

बंभणिआ } **बंभणी** } स्त्री [दे. ब्राह्मणिका] कीट-विशेष (दे ६, ९०; पाअ; दे ८, ६३; ७५)।

बंभण्ण } **बंभण्णय** } स्त्री [ब्रह्मण्य, ब्राह्मण्य, °क] ब्राह्मण का हित। २ ब्राह्मण-संबन्धी। ३ न. ब्राह्मण-समूह। ४ ब्राह्मण-

धर्म; 'बंभएणकज्जेसु सज्जो' (सम्मत्त १४०; कप्प; औप; पि २५०)।

बंभद्दीविग वि [ब्रह्मद्वीपिक] ब्रह्मदीपिका-शाखा में उत्पन्न (णंदि ५१)।

बंभद्दीविगा स्त्री [ब्रह्मद्वीपिका] एक जैन-मुनि-शाखा (णंदि ५१)।

बंभलिज्ज न [ब्रह्मलीय] एक जैन मुनि-कुल (कप्प)।

बंभहर न [दे] कमल, पद्म (दे ६, ९१)।

बंभाण देखो बंभ (पउम ५, १२२)। °गच्छ पुं [°गच्छ] एक जैन-मुनि गच्छ (ती २८)।

बंभि° } स्त्री [ब्राह्मी] १ भगवान् ऋषभदेव
बंभी } की एक पुत्री (कप्प; पउम ५, १२०; ठा ५, २; सम ६०)। २ लिपि-विशेष (सम ३५; भग)। ३ कल्प-विशेष (सुपा ३२४)। ४ सरस्वती देवी (सिरि ७६४)।

बंभुत्तर पुं [ब्रह्मोत्तर] एक विमानावास, देव-विमान-विशेष (देवेन्द्र १३४)। °वडिंसक न [°ावतंसक] एक देव-विमान (सम १६)।

बंहि पुं [बर्हिन्] मयूर, मोर (उत्तर २६)।

बंहिण (अप) ऊपर देखो (पि ४०६)।

बक देखो बय (पण्ह १, १—पत्र ८)।

बक्कर न [दे. बर्कर] परिहास (दे ६, ८६; कुप्र १६७; कप्पू)।

बक्कस न [दे] अन्न-विशेष, 'बक्कसं' मुद्गमाषा-दिनषिकानिष्पन्नमन्नं' (सुख ८, १२; उत्त ८, १२)।

बग देखो बय (दे २, ६; कुप्र ६६)।

बगदादि पुं [बगदादि] देश-विशेष, बगदाद देश; 'बगदादिविसयवसुहाहिवस्स खलीपना-मवेयस्स' (हम्मीर ३४)।

बगी स्त्री [बकी] बगुली, बगुले की मादा (विपा १, ३; मोह ३७)।

बग्गड पुं [दे] देश-विशेष (ती १५)।

बज्झ वि [बाह्य] बाहर का, बहिरङ्ग (पण्ह १, ३; प्रासू १७२)। °ओ अ [°तस्] बाह्य से, बहिरंग से; 'किं ते जुज्झेण बज्झओ' (आचा)।

बज्झ न [बन्ध] बन्धन, बाँधने का वागुरा आदि साधन, 'अह तं पवेज बज्झं, अहे बज्झस्स वा वए' (सूअ १, १, २, ८)।

बज्झ वि [बद्ध] १ बन्धनाकार व्यवस्थित, 'अह तं पवेज्ज बज्झं' (सूअ १, १, २, ८)। २ बँधा हुआ (प्रति १५)।

बज्झंत } देखो बन्ध = बन्ध्।
बज्झमाण }

बठर पुं [बठर] मूर्ख छात्र (कुप्र १६)।

बड (अप) वि [दे] बड़ा, महान् (पिंग)। देखो वड्ड।

बडबड अक [वि + लप्] विलाप करना, बड़बड़ाना। बडबडइ (षड्)।

बडहिला स्त्री [दे] धुरा के मूल में दी जाती कील, कीलक-विशेष (सट्टि ११६)।

बडिस देखो बलिस (हे १, २०२)।

बडु } पुं [बटु, °क] लड़का, छोकड़ा (उप
बडुअ } ७१३; सुपा २००)।

बड्डुवास [दे] देखो वड्डुवास (दे ७, ४७)।

बत्तीस } (अप) देखो बत्तीस (पिंग)।
बत्तिस }

बत्तीस स्त्रीन [द्वात्रिंशत्] १ संख्या-विशेष, बत्तीस, ३२। २ जिनकी संख्या बत्तीस हों वे; 'बत्तीसं जोगसंगहा पन्नत्ता' (सम ५७; औप; उव; पिंग)। स्त्री° °सा (सम ५७)।

बत्तीसइ° स्त्री. ऊपर देखो (सम ५७)। बद्धय न [°बद्धक] १ बत्तीस प्रकार रचनाओं से युक्त। २ बत्तीस पात्रों से निबद्ध (नाटक); 'बत्तीसइबद्धएहिं नाडएहिं' (णाया १, १—पत्र ३६; विपा २, १ टी—पत्र १०४)। °विह वि [°विध] बत्तीस प्रकार का (सम ५७)।

बत्तीसइम वि [द्वात्रिंशत्तम] १ बत्तीसवाँ, ३२ वाँ (पउम ३२, ६७; पण्ण ३२)। २ न. पनरह दिनों का लगातार उपवास (णाया १, १)।

बत्तीसा देखो बत्तीस।

बत्तीसिया स्त्री [द्वात्रिंशिका] १ बत्तीस पद्यों का निबन्ध—ग्रन्थ (सम्मत्त १४४)। २ एक प्रकार का नाप (अणु)।

बद्ध वि [बद्ध] १ बँधा हुआ, नियन्त्रित; 'बद्धं संदाणिअं निअलिअं च' (पाअ)। २ संश्लिष्ट, संयुक्त (भग; पाअ)। ३ निबद्ध, रचित (आवम)। °फल, °फल पुं [°फल] १ करञ्ज का पेड़ (हे २, ६७)। २ वि. फल-युक्त, फल-संपन्न (णाया १, ७—पत्र ११६)।

बद्धग पुं [बद्धक] तूण-वाद्य विशेष (राय ४६)।

बद्धय पुं [दे] कान का एक आभूषण (दे ६, ८६)।

बद्धेल्लग } देखो बद्ध (अणु; महा)।
बद्धेल्लय }

बप्प पुं [दे] १ सुभट, योद्धा (दे ६, ८८)। २ बाप, पिता (दे ६, ८८; उव ७, १८; स ५८१; उप ३२० टी; सुर १, २२१; कुप्र ४३; जय; भवि; पिंग)।

बप्पहट्टि पुं [बप्पभट्टि] एक सुविख्यात जैन आचार्य (विचार ५३३; ती ७)।

बप्पीह पुं [दे] पपीहा, चातक पक्षी (दे ६, ९०; स ६८६; पाअ; हे ४, ३८३)।

बप्पुड वि [दे] बेचारा, दीन, अनुकम्पनीय गुजराती में 'बापडु' (हे ४, ३८७; पिंग)।

बप्फ पुंन [बाष्प] १ भाफ, ऊष्मा; 'बप्फो' (हे २, ७०; षड्), 'बप्फं' (प्राकृ २३; विसे १५३५)। २ नेत्र-जल, अश्रु; 'बप्फं बाहो य नयणजलं' (पाअ), 'बप्फपज्जाउललोअणाहिं' (स ५६१; स्वप्न ८५)।

बाप्फाउल वि [दे. बाष्पाकुल] अतिशय उष्ण (दे ६, ९२)।

बब्बर पुं [बर्बर] १ अनार्य देश-विशेष (पउम ६८, ६५)। २ वि. बर्बर देश का निवासी (पण्ह १, १; पउम; ६६, ५५)। °कूल न [°कूल] बर्बर देश का किनारा (सिरि ४३०)।

बब्बरी स्त्री [दे] केश-रचना (दे ६, ९०)।

बब्बरी स्त्री [बर्बरी] बर्बर देश की स्त्री (णाया १, १; औप; इक)।

बब्बूल पुं [बब्बूल] वृक्ष-विशेष, बबूल का पेड़ (उप ८३३ टी; महा)।

बब्भ पुं [दे] वध्र°, चर्म, चमड़े की रज्जु; 'बब्भो बद्धे' (दे ६, ८८); 'वज्झो बद्धो = (? बब्भो वद्धो)' (पाअ)।

बब्भागम वि [बह्वागम] बहु-श्रुत, शास्त्रों का अच्छा जानकार (कस)।

बब्भासा स्त्री [दे] नदी-भेद, वह नदी जिसके पूर से भावित पानी में धान्य आदि बोया जाता हो (राज)।

बब्भिआयण न [बाभ्रव्यायन] गोत्र-विशेष (इक)।

बमाल पुं [दे] कलकल, कोलाहल (दे ६, ९०)।

बम्ह पुं [ब्रह्मन्] १ ज्योतिष्क देव-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७७)। २ देखो **बंभ** (हे २, ७४; कुमा; गा ८१६; अच्चु १३; वज्जा २६; सम्मत्त ७७; हे १, ५९; २, ६३; ३, ५६)। °**चरिअ** देखो **बंभ-चेर** (हे २, ६३; १०७)। °**तरु** पुं [°तरु] पलाश का पेड़ (कुमा)। °**धमणी** स्त्री [°धमनी] ब्रह्मनाड़ी (अच्चु ८४)।

बम्हण्ण (शौ) देखो **बंभण्ण** (प्राकृ ८७)।

बम्हण देखो **बंभण** (अच्चु १७; प्रयौ ३७)।

बम्हणय देखो **बंभणय** (भग)।

बम्हहर [दे] देखो **बंभहर** (षड्)।

बम्हाल पुं [दे] अपस्मार, वायु-रोग-विशेष, मृगी रोग (षड्)।

बय पुं [बक] १ पक्षि-विशेष, बगुला। २ कुबेर। ३ महादेव। ४ पुष्प-वृक्ष विशेष, मल्लिका का गाछ (श्रा २३)। ५ राक्षस-विशेष (श्रा २३)। ६ असुर-विशेष, बकासुर (वेणी १७७)।

बयाला देखो **बा-याला** (पव १९)।

बरठ पुं [दे] धान्य-विशेष (पव १५४ टी)।

बरह न [बर्ह] १ मयूर-पिच्छ (स ५००)। २ पत्र। ३ परिवार (प्राकृ २८)। देखो **बरिह**।

बरहि, **बरहिण** पुं [बर्हिन्] मयूर, मोर (पात्र; प्राकृ २८; पउम; २८, १२०; णाया १, १; पण्ह १, १; औप)।

बरिह देखो **बरह** (हे २, १०४)। °**हर** पुं [°धर] मयूर (षड्; प्राकृ २८)।

बरिहि, **बरिहिण** देखो **बरहि** (कप्पू; हे ४, ४२२)।

बरुअ न [दे] तृण-विशेष, इक्षु-सदृश तृण (दे ५, ९९; ६, ९१; पात्र)।

बरुड पुं [दे] शिल्पी-विशेष, चटाई बनानेवाला शिल्पी (अणु १४९)।

बल अक [ज्वल्] जलना, गुजराती में 'बळवु'। बलंति (हे ४, ४१६)।

बल अक [बल्] १ जीना। २ सक. खाना। बलइ (हे ४, २५९)।

बल सक [ग्रह्] ग्रहण करना। बलइ (षड्)। देखो **वल**=ग्रह्।

बल पुं [बल] १ बलदेव, हलधर, वासुदेव का बड़ा भाई (पउम २०, ८४; पाअ)। २ छन्द-विशेष (पिंग)। ३ एक क्षत्रिय परिव्राजक (औप)। ४ न. सामर्थ्य, पराक्रम (जी ४२; स्वप्न ४२; प्रासू ६३)। ५ शारीरिक पराक्रम; 'बलवीरियाणं जओ भेओ' (अज्झ ६५)। ६ सैन्य, सेना (उत्त ९, ४; कुमा)। ७ खाद्य-विशेष; 'आसाढाहिं बलेहिं भोज्जा कज्जं साधेंति' (सुज्ज १०, १७)। ८ अष्टम तप, लगातार तीन दिनों का उपवास (संबोध ५८)। ९ पर्वत-विशेष का एक कूट—शिखर (ठा ९)। °**च्छिउ** वि [°च्छित्] १ बल का नाशक। २ न. जहर, विष (से २, ११)। °**ण्णु** देखो °**न्न** (राज)। °**देव** पुं [°देव] हली, वासुदेव का बड़ा भाई, राम (सम ७१; औप)। °**न्न** वि [°ज्ञ] बल को जाननेवाला (आचा)। °**भद्द** पुं [°भद्र] १ भरतक्षेत्र का भावी सातवाँ वासुदेव (सम १५४)। २ राजा भरत का एक प्रपौत्र (पउम ५, ३)। ३ एक विमानावास, देवविमान-विशेष (देवेन्द्र १३३)। देखो °**हद्द**। °**भाणु** पुं [°भानु] राजा बलमित्र का भागिनेय (काल)। °**महणा** स्त्री [°मथनी] विद्या-विशेष (पउम ७, १४२)। °**मित्त** पुं [°मित्र] इस नाम का एक राजा (विचार ४९४; काल)। °**व** वि [°वत्] १ बलवान्, बलिष्ठ (विसे ७९८)। २ प्रभूत सैन्यवाला (औप)। ३ पुं. अहोरात्र का आठवाँ मुहूर्त (सुज्ज १०, १३)। °**वइ** पुं [°पति] सेनापति, सेनाध्यक्ष (महा)। °**वंत**, °**वग** देखो °**व** (णाया १, १, औप; णाया १, ५)। °**वत्त** न [°वत्त्व] बलिष्ठता (ओघभा ६)। °**वाउय** वि [°व्यापृत] सैन्य में लगाया हुआ (औप)। °**हद्द** पुं [°भद्र] १ बलदेव। २ छन्द-विशेष (पिंग)। देखो °**भद्द**।

बलकार, **बलक्कार** पुं [बलात्कार] जबरदस्ती (पउम ४६, २९; दे ६, ४९; अभि २१७; स्वप्न ७९)।

बलक्कारिद (शौ) वि [बलात्कारित] जिस पर बलात्कार किया गया हो वह (नाट—मालती १२३)।

बलद्द पुं [दे] बलध, बैल (सुपा ५४५, नाट—मृच्छ ९०)।

बलमड्डा स्त्री [दे] बलात्कार, जबरदस्ती (दे ६, ९२)।

बलमोडि देखो **बलामोडि**; 'मग्गिअलद्धे बल-मोडिचुंबिए अप्पणेण उवणीदे' (गा ८२७)।

बलमोडिअ देखो **बलामोडिअ**; 'केसेसु बल-मोडिअ तेण समरम्मि जअस्सिरी गहिआ' (गा ९७७)।

बलय पुं [दे] बलध, बैल (पउम ८०, १३)।

बलया देखो **बलाया** (हे १, ६७)।

बलवट्टि स्त्री [दे] १ सखी। २ व्यायाम को सहन करनेवाली स्त्री (दे ६, ९१)।

बलहद्दुया स्त्री [दे] चने की रोटी (वज्जा ११४)।

बला अ. स्त्री [बलात्] जबरदस्ती, बलात्कार (से १०, ७८; ओघभा २०); 'बलाए' (उप १०३१ टी)।

बला स्त्री [बला] १ मनुष्य की दश दशाओं में चौथी अवस्था, तीस से चालीस वर्ष तक की अवस्था (तंदु १६)। २ दृष्टि-विशेष, योग की एक दृष्टि। ३ भगवान् कुन्थुनाथ की शासन-देवी, अच्युता (राज)।

बलाका देखो **बलाया** (पण्ह १, १—पत्र ८)।

बलाणय न [दे] १ उद्यान आदि में मनुष्य को बैठने के लिए बनाया जाता स्थान—बेंच आदि (धर्मवि ३३; सिरि ५८९)। २ द्वार, दरवाजा; 'पविसंतो चेव बलाणयम्मि कुज्जा निसीहिया तिन्नि' (चेइय १८८)।

बलामोडि स्त्री [दे. बलामोटि] बलात्कार (दे ६, ९२)।

बलामोडिअ अ [दे. बलादामोट्य] बला-त्कार से, जबरदस्ती से; 'केसेसु बलामोडिअ तेण अ समरम्मि जयसिरी गहिआ' (काप्र १६७; उत्तर १०३; पि २३८)।

बलामोलि देखो बलामोडि (से १०, ६४)।

बलाया स्त्री [बलाका] बक-विशेष, बिसकण्ठिका, बगुले की एक जाति (हे १, ६७; उप १०३१ टी)।

बलाहग पुं [बलाहक] मेघ, जीमूत; 'गलियजलबलाहगपंडुरं' (वसु)।

बलाहगा देखो बलाहया (ठा ८)।

बलाहय देखो बलाहग (णाया १, ५; कप्प; पाअ)।

बलाहया स्त्री [बलाहका] १ बक-विशेष, बलाका (उप २६४)। २ देवी-विशेष, अनेक दिक्कुमारी देवियों का नाम (इक—पत्र २३१; २३४)।

बलि पुं [बलि] १ असुरकुमारों का उत्तर दिशा का इन्द्र (ठा २, ३; १०; इक)। २ स्वनाम-प्रसिद्ध एक राजा (गा ४०६)। ३ सातवाँ प्रतिवासुदेव (पउम ५, १५६)। ४ एक दानव, दैत्य-विशेष (कुमा)। ५ पुंस्त्री. उपहार, भेंट (पिंड १६५; दे १, ६६)। ६ पूजोपहार, देवता को धरा जाता नैवेद्य; 'सुरहिविलेवणवरकुसुमदामबलिदीवणेहिं च' (पव १ टी), 'वंदणपूयणबलिढोयणेसु' (चेइय ५२; पव १३३; सुर ३, ७८; कुप्र १७४)। ७ भूत आदि को दिया जाता भोग, बलिदान; 'भूअबलिव्व' (वै ४६)। ८ पूजा, अर्चा, सपर्या। ९ राज-ग्राह्य भाग। १० चामर का दण्ड। ११ उपप्लव (हे १, ३५)। १२ छन्द-विशेष (पिंग)। °उट्ठ पुं [°पुष्ट] काक, कौआ (पाअ)। °कम्म न [°कर्मन्] १ पूजन, पूजा की क्रिया। २ देवता को उपहार—नैवेद्य धरने की क्रिया (भग; सूअ २, २, ५५; णाया १, १; ८; कप्प; औप)। °चंचा स्त्री [°चञ्चा] बलीन्द्र की राजधानी (णाया २; इक)। °मुह पुं [°मुख] बन्दर, कपि (पाअ)। °यम्म देखो °कम्म (पउम ३७, ४६)।

बलि वि [बलिन्] १ बलवान्, बलिष्ठ (सुपा ४५१; कुप्र २७७)। २ पुं. रामचन्द्र का एक सुभट (पउम ५६, ३८)।

बलिअ वि [दे] १ पीन, मांसल, स्थूल, मोटा (दे ६, ८८; उप १४२ टी; बृह ३)। २ क्रिवि. गाढ़, बाढ़, अतिशय, अत्यर्थ; 'गाढं बाढं बलिअं धणिअं दढमइसएण अच्चत्थं' (पाअ; णाया १, १—पत्र ६४; भग ६, ३३)।

बलिअ वि [बलिन्, बलिक] १ बलवान्, सबल, पराक्रमी; 'कत्थवि जीवो बलिओ कत्थवि कम्माइं हुंति बलियाइं' (प्रासू १२३), 'एस अम्ह ताओ बलियदाइयपेल्लिओ इमं विसमं पल्लिं समस्सिओ' (महा, पउम ४८, ११७; सुपा २७५; औप)। २ प्राणवाला (ठा ४, ३—पत्र २४६)।

बलिअ वि [बलित] जिसको बल उत्पन्न हुआ हो, सबल (कुप्र २७७)। २ पुं. छन्द-विशेष (पिंग)।

बलिअंक पुं [बलिताङ्क] छन्द-विशेष (पिंग)।

बलिआ स्त्री [दे. बलिका] सूर्प, सूप, अन्न को तुषादि-रहित करने का एक उपकरण (आवम)।

बलिट्ठ वि [बलिष्ठ] बलवान्, सबल (प्रासू १५४)।

बलिद्द पुं [दे. बलीवर्द] बलध, वृषभ; 'दो सारबलिद्दावि हु' (सुपा २३८)।

बलिमड्डा स्त्री [दे] बलात्कार; 'अन्नह बलिमड्डाए गहिउमणो सोम ! एकलियं' (उप ७२८ टी)।

बलिवद्द देखो बलीवद्द (पउम ३३, ११६)।

बलिस न [वडिश] मछली पकड़ने का काँटा (हे १, २०२)।

बलिस्सह पुं [बलिस्सह] स्वनाम-ख्यात एक जैन मुनि, आर्य महागिरि का एक शिष्य (कप्प)।

बलीअ वि [बलीयस्] अधिक बलवाला, बलिष्ठ (अभि १०१)।

बलीवद्द पुं [बलीवर्द] बैल, वृषभ (विपा १, २)।

बलुल्लड (अप) देखो बल=बल (हे ४, ४३०)।

बले अ. इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ निश्चय, निर्णय। २ निर्धारण (हे २, १८५; कुमा)।

बल्ल न [बाल्य] बालत्व, बालकपन, शिशुता (कुमा ३, ३५)। देखो बाल = बाल्य।

बव सक [ब्रू] बोलना, कहना। बवइ, बवए (षड्)। देखो बुव, बू।

बव न [बव] ज्योतिष-शास्त्र-प्रसिद्ध एक करण (विसे ३३४८; सुज्ञनि ११; सुपा १०८)।

बव्वाड पुं [दे] दक्षिण हस्त (दे ६, ८६)।

बहड वि [बृहत्] बड़ा, महान्। °इच्च न [°आदित्य] नगर-विशेष (ती ३५)।

बहत्तरी देखो बाहत्तरि (पव २०)।

बहप्पइ } **बहप्फइ** } देखो बहस्सइ (हे १, १३८; २, ६६; १३७; षड्, कुमा; सम्मत्त १३७)।

बहरिय देखो बहिरिय; 'तालरवबहरियदियंतरं' (महा)।

बहल न [दे] पंक, कर्दम, कादा (दे ६, ८६)। सुरा स्त्री [°सुरा] पंकवाली मदिरा (दे ५, २)।

बहल वि [बहल] १ निबिड, सान्द्र, निरंतर, गाढ (गउड; हे २, १७७)। २ स्थूल, मोटा (ठा ४, २; गउड)। ३ पुष्कल, अत्यन्त (कप्पू)।

बहलिम पुंस्त्री [बहलता] १ स्थूलता, मोटाई। २ सातत्य, निरंतरता (वज्जा ५२; गा ७५५)।

बहली स्त्री [बहली] १ देश-विशेष, भारतवर्ष का एक उत्तरीय देश; 'तक्खसिलाइ पुरीए बहलीविसयावयंसभूयाए' (कुप्र २१२)। २ बहली देश की स्त्री (णाया १, १—पत्र ३७, औप; इक)।

बहलीय वि [बहलीक] देश-विशेष में—बहली देश में रहनेवाला (पण्ह १, १—पत्र १४)।

बहव देखो बहु; 'काले समइक्कंते अइबहवे' (पउम ४१, ३६), 'सोहग्गकप्पतरुवरपमुहतवे सा कुणइ बहवे' (सम्मत्त २१७), 'जायंति बहववेरग्गपल्लवुल्लासिणो झत्ति' (हि ५)।

बहस्सइ पुं [बृहस्पति] १ ज्योतिष्क देव-विशेष, एक महाग्रह (ठा २, ३—पत्र ७७; सुज्ज २०—पत्र २९४)। २ सुराचार्य, देवगुरु (कुमा)। ३ पुष्य नक्षत्र का अधिष्ठाता देव (सुज्ज १०, १२)। ४ राजनीति-प्रणेता एक ऋषि। ५ नास्तिक मत का प्रवर्तक एक विद्वान् (हे २, १३७)। ६ एक ब्राह्मण, पुरोहित-पुत्र। ७ विपाकसूत्र का एक अध्ययन

(विपा १, १)। °दत्त पुं [°दत्त] देखो अंत के दो अर्थ (विपा १, ५)।

बहि अ [बहिस्] बाहर; 'अबहिलेसे परिव्वए' (आचा), 'गामबहिम्मि य तं ठाविऊण गामंतरे पविट्ठो सो' (उप ६ टी)। °हुत्त वि [°दे] बहिर्मुख (गउड)।

बहिअ वि [दे] मथित, विलोडित (षड्)।

बहिं देखो बहि (आचा; उव)।

बहिणिआ, बहिणी स्त्री [भगिनी] बहिन (अभि १३७; कप्पू; पाअ; पउम ६, ६; हे २, १२६; कुमा)। २ सखी, वयस्या (संक्षि ४७)। °तणअ पुं [°तनय] भगिनी-पुत्र (दे)। °वइ पुं [°पति] बहनोई (दे)। देखो भइणी।

बहित्ता अ [बहिस्तात्] बाहर (सुज्ज ६)।

बहिद्धा अ [दे] १ बाहर। २ मैथुन, स्त्री-संभोग (हे २, १७४; ठा ४, १—पत्र २०१)।

बहिद्धा अ [बहिर्धा] बाहर की तरफ (दस २, ४)।

बहिया अ [बहिस्, बहिस्तात्] बाहर (विपा १, १; आचा; उवा; औप)।

बहिर वि [बाह्य] बहिर्भूत, बाहर का (प्राकृ ३८)।

बहिर वि [बधिर] बहरा, जो सुन न सकता हो वह (विपा १, १; हे १, १८७; प्रासू १४३)।

बहिरिय वि [बधिरित] बधिर किया हुआ (सुर २, ७५)।

बहु वि [बहु] १ प्रचुर, प्रभूत, अनेक, अनल्प (ठा ३, १; भग; प्रासू ४१; कुमा; श्रा २७)। स्त्री. °हुई (षड्; प्राकृ २८)। २ क्रिवि. अत्यन्त, अतिशय (कुमा ५, ६६; काल)। °उदग पुं [°उदक] वानप्रस्थ का एक भेद (औप)। °चूड पुं [°चूड] विद्याधर वंश का एक राजा (पउम ५, ४६)। °जंपिर वि [°जल्पितृ] वाचाट, बकवादी (पाअ)। °जण पुं [°जन] अनेक लोग (भग)। २ न. आलोचना का एक प्रकार (ठा १०)। °णड देखो °नड (राज)। °णाय न [°नाद] नगर-विशेष (पउम ५५, ५३)। °देसिअ वि [°देश्य] कुछ ज्यादा, थोड़ा बहुत (आचा २, ५, १, २२)। °नड पुं [°नट] नट की तरह अनेक भेष को धारण करने-वाला (आचा)। °पडिपुण्ण, °पडिपुन्न वि [°परिपूर्ण] पूरा पूरा (ठा ६; भग)। °पढिय वि [°पठित] अति शिक्षित, अतिशय शिक्षित (णाया १, १४)। °पलावि वि [°प्रलापिन्] बकवादी (उप पृ ३३६)। °पुत्तिअ न [°पुत्रिक] बहु-पुत्रिका देवी का सिंहासन (निर १, ३)। °पुत्तिआ स्त्री [°पुत्रिका] १ पूर्णभद्र नामक यक्षेन्द्र की एक अग्र-महिषी (ठा ४, १; णाया २)। २ सौधर्म देवलोक की एक देवी (निर १, ३)। °प्पएस वि [°प्रदेश] प्रचुर प्रदेश—कर्म-दल वाला (भग)। °फोड वि [°स्फोट] बहु-भक्षक (ओघभा १६१)। °भंगिय न [°भङ्गिक] दृष्टिवाद का सूत्र-विशेष (सम १२८)। °मय वि [°मत] १ अत्यन्त अभीष्ट (जीव १)। २ अनुमोदित, संमत, अनुमत (काप्र १७६; सुर ४, १८८)। °माइ वि [°मायिन्] अति कपटी (आचा)। °माण पुं [°मान] अति-शय आदर (आवम; पि ६००; नाट—विक्र ५)। °माय वि [°माय] अति कपटी (आचा)। °मुल्ल, °मोल्ल वि [°मूल्य] मूल्यवान्, कीमती (राज; षड्)। °रय वि [°रत] १ अत्यन्त आसक्त (आचा)। २ जमालि का अनुयायी। ३ न. जमालि का चलाया हुआ एक मत—क्रिया की निष्पत्ति अनेक समयों में ही माननेवाला मत (ठा १०; औप)। °रय न [°रजस्] खाद्य-विशेष, चिउड़ा की तरह का एक प्रकार का खाद्य (आचा २, १, १, ३)। °रव वि [°रव] १ प्रभूत यशवाला, यशस्वी (सम ५१)। २ न. एक विद्याधर-नगर (इक)। °रूवा स्त्री [°रूपा] सुरूप नामक भूतेन्द्र की एक अग्र-महिषी (ठा ४, १; णाया २)। °लेव पुं [°लेप] चावल आदि के चिकने माँड का लेप (पडि)। °वयण न [°वचन] बहुत्व-बोधक प्रत्यय (आचा २, ४, १, ३)। °विह वि [°विध] अनेक प्रकार का, नानाविध (कुमा; उव)। °विहिय वि [°विध, °विधिक] विविध, अनेक तरह का (सुज्ज नि ६४)। °संपत्त वि [°संप्राप्त] कुछ कम संप्राप्त (भग)। °सच्च पुं [°सत्य] अहोरात्र का दशवाँ मुहूर्त (सुज्ज १०; १३)। °सो अ [°शस्] अनेक बार (उव; श्रा २७; प्रासू ४२; १५६; स्वप्न ५६)। °स्सुय वि [°श्रुत] शास्त्रज्ञ, शास्त्रों का अच्छा जानकार, पण्डित (भग; सम ५१; ठा ६—पत्र ३५२; सुपा ५६४)। °हा अ [°धा] अनेकधा (उव; भवि)।

बहुअ, बहुअय वि [बहु, °क] ऊपर देखो (हे २, १६४; कुमा; श्रा २७)।

बहुआरिआ, बहुआरी स्त्री [दे] बुहारी, झाड़ू (दे ६, १७ टी)।

बहुई देखो बहु = ई।

बहुखज्ज वि [बहुखाद्य] १ बहु-भक्ष्य, खूब खाने योग्य। २ पृथुक-चिउड़ा बनाने योग्य (आचा २, ४, २, ३)।

बहुग देखो बहुअ (आचा ७)।

बहुजाण पुं [दे] १ चोर, तस्कर। २ धूर्त, ठग। ३ जार, उपपति (षड्)।

बहुण पुं [दे] १ चोर, तस्कर। २ धूर्त (दे ६, ६७)।

बहुणाय वि [बाहुनाद] बहुनाद-नगर का (पउम ५५, ५३)।

बहुत्त वि [प्रभूत] बहुत, प्रचुर (हे १, २३३)।

बहुमुह पुं [दे. बहुमुख] दुर्जन, खल (दे ६, ६२)।

बहुराणा स्त्री [दे] खड्ग-धारा, तलवार की धार (दे ६, ६१)।

बहुरावा स्त्री [दे] शिवा, शृगाली (दे ६, ६१)।

बहुरिया स्त्री [दे] बुहारी, झाड़ू (बृह १)।

बहुल वि [बहुल] १ प्रचुर, प्रभूत, अनेक (कुमा; श्रा २८)। २ बहुविध, अनेक प्रकार का (आवम)। ३ व्याप्त (सुपा ६३०)। ४ पुं. कृष्ण पक्ष (पाअ)। ५ स्वनाम-ख्यात एक ब्राह्मण (भग १५)।

बहुल पुं [बहुल] आचार्य महागिरि के शिष्य एक प्राचीन जैन मुनि (णंदि ४६)।

बहुला स्त्री [बहुला] १ गौ, गैया (पात्र)। २ इस नाम की एक स्त्री (उवा)। **°वण** न [°वन] मथुरा नगरी का एक प्राचीन वन (ती ७)।

बहुलि पुं [बहुलिन्] स्वनाम-ख्यात एक राज-पुत्र (उप ६३७)।

बहुली स्त्री [दे] माया, कपट, दम्भ (सुपा ६३०)।

बहुल्लिआ स्त्री [दे] बड़े भाई की स्त्री (षड्)।

बहुल्ली स्त्री [दे] क्रीड़ोचित शालभञ्जिका, खेलने की पुतली (षड्)।

बहुवी देखो बहुई (हे २, ११३)।

बहुव्वीहि पुं [बहुव्रीहि] व्याकरण-प्रसिद्ध एक समास (अणु १४७)।

बहूअ वि [प्रभूत] बहुत, प्रचुर (गउड)।

बहेडय पुं [बिभीतक] १ बहेड़ा का पेड़ (हे १, ८८; १०५; २०६)। २ न. बहेड़ा का फल (कुमा)।

बा° वि. ब. [द्वा°, द्वि] दो, दो की संख्या-वाला। **°इस** (अप) देखो °वीस (पिंग)। **°ईस** देखो °वीस (पिंग)। **°णउइ** स्त्री [°नवति] बानबे, ९२ (सम ९६; कम्म ६, २९)। **°णउय** वि [°नवत] ९२ वाँ (पउम ९२, २९)। **°णुवइ** देखो °णउइ (रयण ९२)। **°याल, °यालीस** स्त्रीन [°चत्वारिंशत्] बयालीस, चालीस और दो, ४२ (उव; नव २; भग; सम ६६; कप्प; औप), स्त्री. **°याला, °यालीसा** (कम्म ६, ६; कप्प)। **°यालीसइम** वि [°चत्वारिंशत्तम] बयालीसवाँ, ४२ वाँ (पउम ४२, ३७)। **°र, °रस** त्रि. ब. [°दशन्] बारह, १२; 'बारभिक्खुपडिमधरो' (संबोध २२; कम्म ४, ५; १५; नव २०; दं ७; कप्प; जी २८; उवा)। **°रस** वि [°दश] बारहवाँ, १२ वाँ (सुख २, १७)। **°रसंग** स्त्रीन [°दशाङ्ग] बारह जैन अंग-ग्रंथ (पि ४११), स्त्री. **°गी** (राज)। **°रसम** वि [°दश] बारहवाँ (सूत्र २, २, २१; पव ४६; महा)। **°रसमासिय** वि [°दशमासिक] बारह मास का, बारह-मास-संबन्धी (कुप्र १४१)। **°रसय** न [°दशक] बारह का समूह (ओघभा १५)। **°रसवरिसिय** वि [°दशवार्षिक] बारह बर्ष का (मोह १०२; कुप्र ६०)। **°रसविह** वि [°दशविध] बारह प्रकार का (नव ३०)। **°रसाह** न [°दशाह, °दशाख्य] १ बारहवाँ दिन। २ जन्म के बारहवें दिन किया जाता उत्सव, बरही (णाया १, १; कप्प; औप; सुर ३,२५)। **°रसी** स्त्री [°दशी] बारहवीं तिथि, द्वादशी (सम २९; पउम ११७, ३२; ती ७)। **°रसुत्तरसय** वि [°दशोत्तरशत] एक सौ बारहवाँ (पउम ११२, २३)। **°रह** देखो °रस = दशन् (हे १, २१९)। **°वट्ठि** स्त्री [°षष्टि] बासठ, ६२ (सम ७५; पंच ५, १८; सुर १३, २३८; देवेन्द्र १३७)। **°वण** (अप)। देखो **°वन्न** (पिंग)। **°वण्ण** देखो °वन्न (कुमा)। **°वत्तर** वि [°सप्तत] बहत्तरवाँ, ७२ वाँ (पउम ७२, ३८)। **°वत्तरि** स्त्री [°सप्तति] बहत्तर, ७२ (सम ८३; भग; औप; प्रासू १२९)। **°वन्न** स्त्रीन [°पञ्चाशत्] बावन, पचास और दो, ५२ (सम ७१; महा); 'बावन्नं होंति जिणभवणा' (सुख ९, १)। **°वन्न** वि [°पञ्चाश] बावनवाँ (पउम ५२, ३०)। **°वीस** स्त्रीन [°विंशति] बाईस, २२ (भग; जी ३४), स्त्री. **°सा** (पि ४४७)। **°वीस** वि [°विंश] बाईसवाँ, २२ वाँ (पउम २०, ८२; पत्र ४६)। **°वीसइ** देखो वीस = विंशति (भग; पव १८६)। **°वीसइम** वि [°विंशतितम] १ बाईसवाँ, २२ वाँ (पउम २२, ११०; अंत २६)। २ लगातार दस दिन का उपवास (णाया १, १—पत्र ७२)। **°वीसविह** वि [°विंशतिविध] बाईस प्रकार का (सम ४०)। **°सट्ठ** वि [°षष्ट] बासठवाँ, ६२ वाँ (पउम ६२, ३७)। **°सट्ठि** स्त्री [°षष्टि] बासठ, ६२ (सम ७५, पिंग)। **°सी, °सीइ** स्त्री [°अशीति] बयासी, ८२ (नव २; सम ८९; कप्प; कम्म ५, १७)। **°सीइम** वि [°अशीतितम] बयासीवाँ, ८२ वाँ (पउम ८२, १२२)। **°हत्तर** (अप) देखो °हत्तरि (सण)। **°हत्तरि** स्त्री [°सप्तति] बहत्तर, ७२ (कप्प; कुमा; सुपा ३१९)।

बाअ पुं [दे] बाल, शिशु (षड्)।

बाइया स्त्री [दे] माँ, माता; गुजराती में 'बाई' (कुप्र ८७)।

बाउल्लया, बाउल्लिआ, बाउल्ली स्त्री [दे] पञ्चालिका, पुतली; 'आलिहियभित्तिबाउल्लयं व न हु मुंजिउं तरइ' (वज्जा ११८; कप्पू; दे ६, ९२)।

बाउस देखो बउस (पिंड २४; ओघ ३४८)।

बाउसिय वि [बाकुशिक] 'बकुश' चारित्र-वाला (सुख ६, १)।

बाउसिया स्त्री [बकुशिका] 'बकुश' चारित्र-वाली (णाया १, १६—पत्र २०६)।

बाढ क्रिवि [बाढ] १ अतिशय, अत्यन्त, घना (उप ३२०; पात्र; महा)। **°क्कार** पुं [°कार] स्वीकार-सूचक उक्ति (निसे ५९५)।

बाण पुं [दे] १ पनस वृक्ष, कटहर का पेड़। २ वि. सुभग (दे ६, ९७)।

बाण पुंस्त्री [बाण] १ वृक्ष-विशेष, कटसरैया का गाछ (पण्ण १७—पत्र ५२६; कुमा)। २ पुं. शर, बाण (कुमा; गउड)। ३ पाँच की संख्या (सुर १६, २४९)। **°वत्त** न [°पात्र] तूणीर, शरधि (से १, १८)।

बाध देखो बाह = बाध्। कवकृ. **बाधीअमाण** (पि ५६३)।

बाधा स्त्री [बाधा] विरोध (धर्मसं ११७)।

बाधिय वि [बाधित] विरोधवाला, प्रमाण-विरुद्ध (धर्मसं २५९)।

बाह्मण देखो बम्हण (हे १, ६७; षड्)।

बाय न [बाक] बक-समूह (श्रा २३)।

बायर वि [बादर] १ स्थूल, मोटा, असूक्ष्म (पण्ह १, १; पव १६२; दे ४४)। २ नववाँ गुण-स्थानक (कम्म २, ३; ५; ७)। **°नाम** न [°नामन्] कर्म-विशेष, स्थूलता-हेतु कर्म (सम ६७)।

बार न [द्वार] दरवाजा (हे १, ७९)।

बारगा स्त्री [द्वारका] स्वनाम-प्रसिद्ध नगरी, जो आजकल भी काठियावाड़ में 'द्वारका' के ही नाम से प्रसिद्ध है (उत्त २२, २२; २७)।

बारवई स्त्री [द्वारवती] १ ऊपर देखो (सम १५१; णाया १, ५; उप ६४८ टी)। २ भगवान् नेमिनाथ की दीक्षा शिविका (विचार १२९)।

बाल पुं [बाल] १ बाल, केश (उप ८३४)। २ बालक, शिशु (कुमा; प्रासू ११६)। ३ वि. मूर्ख, अज्ञानी (पाअ)। ४ नया, नूतन (कप्पू)। ५ पुं. स्वनाम-ख्यात एक विद्याधर राजा (पउम १०, २१)। ६ वि. असंयत, संयम-रहित (ठा ४, ३)। °**कइ** पुं [°कवि] तरुण कवि, नया कवि (कप्पू)। °**क्क** पुं [°र्क] उदित होता सूर्य (कुमा)। °**ग्गाह** पुं [°ग्राह] बालक की सार-सम्हाल करनेवाला नौकर (सुर १, १६२)। °**ग्गाहि** पुं [°ग्राहिन्] वही पूर्वोक्त अर्थ (णाया १, २—पत्र ८४)। °**घाय** वि [°घात] बाल-हत्या करनेवाला (णाया १, २; १८)। °**तव** पुंन [°तपस्] १ अज्ञानी की तपश्चर्या (भग; औप)। २ वि. अज्ञान-पूर्वक तप करनेवाला (कम्म १, ५६)। °**तवस्सि** वि [°तपस्विन्] अज्ञान-पूर्वक तप करनेवाला, मूर्ख तपस्वी (पि ४०५)। °**पंडिअ** वि [°पण्डित] आंशिक त्याग करनेवाला, कुछ अंशों में त्यागी और कुछ में अत्यागी (भग)। °**बुद्धि** वि [°बुद्धि] अनभिज्ञ (धरण ५०)। °**मरण** न [°मरण] अविरत दशा का मरण, असंयमी की मौत (भग; सुपा ३५७)। °**वियण**, °**वीयण** पुंस्त्री [°व्यजन] चामर, चँवर (णाया १, ३), स्त्री. 'उवणहाओ बालवीअणी' (ठा ५, १—पत्र ३०३)। °**हार** पुं [°धार] बालक का सार-सम्हाल करनेवाला नौकर (सुपा ४५८)।

बाल देखो बल। °**ण्ण**, °**न्न** वि [°ज्ञ] बल को जाननेवाला (आचा १, २, ५, ५; कप्पा)।

बाल्ल न [बाल्य] बालत्व, बचपन, लड़कपन, लपन, मूर्खता (उत्त ७, ३०)। देखो बल्ल।

बालअ देखो बाल = बाल (गा १२६)।

बालअ पुं [दे] वणिक्-पुत्र (दे ६, ९२)।

बालग्गपोइआ स्त्री [दे] १ जल-मन्दिर, तलाव आदि में बनवाया जाता छोटा प्रासाद। २ वलभी, अट्टालिका (उत्त ९, २४)।

बाला स्त्री [बाला] १ कुमारी, लड़की (कुमा)। २ मनुष्य की दस अवस्थाओं में पहली दशा, दस वर्ष तक की अवस्था (तंदु १६)। ३ छन्द-विशेष (पिंग)।

बालालुंबी स्त्री [दे] तिरस्कार, अवहेलना (सुपा १४)।

बालि वि [बालिन्] बाल-प्रधान, सुन्दर केश-वाला (अणु; बृह १)।

बालिआ स्त्री [बालिका] बाला, कुमारी, लड़की (प्रासू ५१; महा)।

बालिआ स्त्री [बालता] १ बालकपन, शिशुता (भग)। २ मूर्खता, बेवकूफी, 'बिइया मंदस्सा बालिया' (आचा)।

बालिस वि [बालिश] मूर्ख, बेवकूफ (पाअ; धरण २३)।

बाह सक [बाध्] १ विरोध करना। २ रोकना। ३ पीड़ा करना। ४ विनाश करना। बाहइ, बाहए (पंचा ५, १५; हे १, १८७; उव), बाहंति (कुप्र ९८)। कवकृ. **बाहिज्जंत**, **बाहीअमाण** (पउम १८, १९; सुपा ६४५; अभि २४४) कृ. **बाहणिज्ज** (कप्पू)।

बाह पुं [बाष्प] अश्रु, आँसू (हे २, ७०; पाअ; कुमा)।

बाह पुं [बाध] विरोध (भास ३४)।

बाह देखो बाढ (प्रयौ ३७)।

बाह पुं [बाहु] हाथ, भुजा (संक्षि २)।

बाहग वि [बाधक] १ रोकनेवाला (पंचा १, ४९)। २ विरोधी; 'अब्भुवगयबाहगा नियमा' (श्रावक १६२)।

बाहड पुं [बाहड, वाग्भट] राजा कुमारपाल का स्वनाम-प्रसिद्ध मन्त्री (कुप्र ६)।

बाहण न [बाधन] १ बाधा, विरोध (धर्मसं १२७६)। २ विराधन (पंचा १६, ५)।

बाहणा स्त्री [बाधना] ऊपर देखो (धर्मसं १११)।

बाहर देखो बाहिर (आचा)।

बाहल पुं [बाहल] देश-विशेष (आवम)।

बाहल्ल न [बाहल्य] स्थूलता, मोटाई (सम ३५; ठा ८—पत्र ४४०; औप)।

बाहा स्त्री [बाधा] १ हरकत, हरज। २ विरोध (सुपा १२६)। ३ पीड़ा, परस्पर संश्लेष से होनेवाली पीड़ा (जं १; भग १४, ८)।

बाहा स्त्री [बाहु] हाथ, भुजा (हे १, ३६; कुमा; महा; उवा; औप)।

बाहा स्त्री [दे. बाहा] नरकावास-श्रेणी (देवेन्द्र ७७)।

बाहि, **बाहिं** अ [बहिस्] बाहर (सुज्ज १९—पत्र २७१; महा; आचा; कुमा; हे २, १४०; पि ४८१)।

बाहिज्ज न [बाधिर्य] बधिरता, बहरापन (विसे २०८)।

बाहिर अ [बहिस्] बाहर (हे २, १४०; पाअ; आचा; उव)। °**ओ** अ [°तस्] बाहर से (कप्प)।

बाहिर वि [बाह्य] बाहर का (आचा; ठा २, १—पत्र ५५; भग २, ८ टी)। °**उड्ढि** पुं [°ऊर्ध्विन्] कायोत्सर्ग का एक दोष, दोनों पार्ष्णि मिलाकर और पैर को फैलाकर किया जाता कायोत्सर्ग (चेइय ४८६)।

बाहिरंग वि [बहिरङ्ग] बाहर का, बाह्य (सूअ २, १, ४२)।

बाहिरिय वि [बाहिरिक, बाह्य] बाहर का, बाहर से संबन्ध रखनेवाला (सम ८३; णाया १, १; पिंड ६३६; औप; कप्प)।

बाहिरिया स्त्री [बाहिरिका] किले के बाहर की गृह-पंक्ति, नगर के बाहर का मुहल्ला (सूअ २, ७, १; स ६६)।

बाहिरिल्ल वि [बाह्य] बाहर का (भग; पि ५६५)।

बाहु पुंस्त्री [बाहु] १ हाथ, भुजा (हे १, ३६; आचा; कुमा)। २ पुं. भगवान् ऋषभदेव का पुत्र, बाहुबलि (कुप्र ३१०)। °**बलि** पुं [°बलि] १ भगवान् आदिनाथ का एक पुत्र, तक्षशिला का एक राजा (सम ६०; पउम ४, ५२; उव)। २ बाहुबलि के प्रपौत्र का पुत्र (पउम ५, ११)। °**मूल** न [°मूल] कक्षा, बगल (कप्पू)।

बाहुअ पुं [बाहुक] स्वनाम-ख्यात एक ऋषि (सूअ १, ३, ४, २)।

बाहुडअ वि [दे] लज्जित, शर्मिंदा (सुपा ४७४)।

बाहुया स्त्री [बाहुका] त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष (राज)।

बाहुलग देखो बाहु (तंदु ३९)।

बाहुलेय पुं [बाहुलेय] गो-वत्स, बैल, वृषभ (आवम)।

बाहुलेर पुं [बाहुलेय] काली गाय का बछड़ा (श्रणु २१७)।

बाहुल्ल न [बाहुल्य] बहुलता, प्रचुरता (पिंड ५६; भग; सुपा २७; उप ६०७)।

बाहुल्ल वि [बाष्पवत्] अश्रुवाला (कुमा; सुपा ४६०)।

बि वि. ब. [द्वि] दो, २; 'बिन्नि' (हे ४, ४१८; नव ४; टा २, २; कम्म ४, २; १०; सुख १, १४)। °जडि पुं [°जटिन्] एक महाग्रह, ज्योतिष्क देव-विशेष (सुज्ज २०)। °दल न [°दल] चना आदि वह धान्य जिसके दो टुकड़े बराबर के होते हैं; 'जह विदल सूलीणं' (वि ३)। °याल देखो बा-याल (कम्म ६, २८)। °यालसय पुंन [°चत्वारिंशच्छत] एक सौ बेआलीस, १४२ (कम्म २, २६)। °विह वि [°विध] दो प्रकार का (पिंग)। °सट्ठि स्त्री [°षष्टि] बासठ, ६२ (सुज्ज १०, ६ टी)। °सत्तरि, °सयरि स्त्री [सप्तति] बहत्तर, ७२ (पव १६; जीवस २०६; कम्म ३, ५)।

बि° } वि [द्वितीय] दूसरा (कम्म ३, १६;
बिअ } पिंग)। °कसाय पुं [°कषाय] अप्रत्याख्यानावरण नामक कषाय (कम्म ४, ५६)।

बिअ न [द्विक] दो का समुदाय, युग्म, युगल (भग; कम्म १, ३३; प्रासू १६)।

बिआया स्त्री [दे] कीट-विशेष, संलग्न रहनेवाला कीट-द्वय (दे ६, ६३)।

बिइअ देखो बिइज्ज (हे १, ५; पव १६४)।

बिइआ देखो बीआ (राज)।

बिइज्ज वि [द्वितीय] १ दूसरा (हे १, २४८; प्रासू ५६)। २ सहाय, मदद करनेवाला (पाश्र; सुर ३, १४);

'जे दुहियम्मि न दुहिया,
आवइपत्ते बिइज्जया नेव।
पहुणो न ते उ भिच्चा,
धुत्ता परमत्थओ णेया'
(सुर ७, १४५)।

बिउण वि [द्विगुण] दुगुना (हे १, ६४; २, ७६; गा २८६)। °ारय वि [°कारक] दुगुना करनेवाला (भवि)।

बिउण सक [द्विगुणय्] दुगुना करना। बिउणेइ (पि ५५६)।

बिंट न [वृन्त] फलादि का बन्धन; 'बंधणं बिंटं' (पाश्र)। °सुरा स्त्री [°सुरा] मदिरा, दारू; 'बिंटसुरा पिट्ठखउरिया मइरा' (पाश्र)।

बिंत देखो बू = ब्रू।

बिंदिय वि [द्वीन्द्रिय] जिसको त्वचा और जीभ ये दो ही इन्द्रियाँ हों वह (श्रौप)।

बिंदु पुंन [बिन्दु] १ अल्प अंश। २ बिन्दी, शून्य, अनुस्वार। ३ दोनों भ्रू का मध्य भाग। ४ रेखागणित का एक चिन्ह; 'बिंदुणो, बिंदूइ' (हे १, ३४; कप्प, उप १०२२; स्वप्न ३६; कस; कुमा)। °कला स्त्री [°कला] अनुस्वार, बिन्दी (सिरि १६६)। °सार न [°सार] १ चौदहवाँ पूर्व, जैन ग्रन्थांश-विशेष (सम २६; विसे ११२६)। २ पुं. मौर्य वंश का एक राजा, राजा चन्द्रगुप्त का पुत्र (विसे ८६२)।

बिंदुइअ वि [बिन्दुकित] बिन्दु-युक्त, बिन्दु-विलिप्त (पाश्र; गउड)।

बिंदुइज्जंत वि [बिन्दूयमान] बिन्दुओं से व्याप्त होता (से ११, १२५)।

बिंद्रावण न [वृन्दावन] मथुरा के पास का एक वैष्णव-तीर्थ (प्राकृ १७)।

बिंब सक [बिम्ब्] प्रतिबिम्बित करना। कर्म. बिंबिज्जइ (सूक्त ४६)।

बिंब न [बिम्ब] १ प्रतिमा, मूर्त्ति (कुमा)। २ छन्द-विशेष (पिंग)। ३ न. बिम्बीफल, कुन्दरुन का फल (णाया १, ८—पत्र १२६ पाश्र; कुमा; दे २, ३६)। ४ प्रतिबिम्ब, प्रतिच्छाया। ५ अर्थ-शून्य आकार, 'अण्णं जणं पस्सति बिंबभूयं' (सूअ १, १३, ८)। ६ सूर्य तथा चन्द्र का मण्डल (गउड; कप्पू)।

बिंबवय न [दे] फल-विशेष, भिलावाँ; 'बिंबवयं भल्लायं' (पाश्र)।

बिंबिसार देखो भिंभिसार (अंत)।

बिंबी स्त्री [बिम्बी] लता-विशेष, कुन्दरुन का गाछ (कुमा)। °फल न [°फल] कुन्दरुन का फल (सुपा २६३)।

बिंबोवणय न [दे] १ क्षोभ। २ विकार। ३ ओसीसा, उच्छीर्षक (दे ६, ६८)।

बिंह सक [बृंह्] पोषण करना। कृ. देखो बिंहणिज्ज।

बिंहणिज्ज वि [बृंहणीय] पुष्टि-जनक (ठा ६—पत्र ३७५; णाया १, १—पत्र १६)।

बिंहिअ वि [बृंहित] पुष्ट, उपचित (हे १, १२८)।

बिग्गाइआ } स्त्री [दे] कीट-विशेष, संलग्न
बिग्गाई } रहता कीट-युग्म, गुजराती में 'बगाई' (दे ६, ६३)।

बिज्ज देखो बीज; 'बिज्जं पिव वड्ढिया बहवे' (पउम ११, ६६)।

बिज्जउर न [बीजपूर] फल-विशेष, एक तरह का नीबू; 'बिज्जउरचिब्भिडेहिं कुणइ पिहाणाइं सव्वत्थ' (सुपा ६३०)।

बिज्जय (अप) देखो बिइज्ज (भवि)।

बिट्ट पुं [दे] बेटा, लड़का, पुत्र (चंड)।

बिट्टी स्त्री [दे] बेटी, पुत्री, लड़की (चंड; हे ४, ३३०)।

बिट्ठ वि [दे. विष्ट] बैठा हुआ, उपविष्ट (ओघ ४७१)।

बिडाल पुं [बिडाल] मार्जार, बिलाव, बिलार, बिल्ला (पि २४१)।

बिडालिआ } स्त्री [बिडालिका, °ली]
बिडाली } बिल्ली, मार्जारी, बिलारी, बिलैया (सम्मत्त १२२; पि २४१)। देखो बिरालिआ।

बिडिस देखो बडिस (उप १४२ टी)।

बिदिय देखो बिइअ (उप २७६)।

बिन्ना स्त्री [वेन्ना] भारत की एक नदी (पिंड ५०३)।

बिब्बोअ पुं [विव्वोक] १ स्त्री की शृंगार-चेष्टा-विशेष, इष्ट अर्थ की प्राप्ति होने पर गर्व से उत्पन्न अनादर-क्रिया (पण्ह २, ४—पत्र १३१; णाया १, ८—पत्र १४२; भत्त १०६)। २ न. उपधान, तकिया, ओसीसा; 'सयणीअं तूलिअं सबिब्बोअं' (गच्छ ३, ८)।

बिब्बोअ पुं [विव्वोक] काम-विकार (अणु १३६)।

बिब्बोइअ न [विव्वोकित] स्त्री की शृंगार-चेष्टा का एक भेद (पण्ह २, ४—पत्र १३१)।

बिब्बोयण न [दे] उपधान, तकिया, ओसीसा (णाया १, १—पत्र १३)।

बिभेलय देखो बहेडय (पण्ण १—पत्र ३१) ।

बिराड पुं [बिडाल] १ पिंगल-प्रसिद्ध मध्य-लघुक पाँच मात्रावाला अक्षर-समूह । २ छंद-विशेष (पिंग) ।

बिराल देखो बिडाल (सुर १, १८) ।

बिरालिआ } देखो बिडालिआ (सम्मत्त
बिराली } १२३; पाअ) । २ भुजपरिसर्प-विशेष, हाथ से चलनेवाला एक प्रकार का प्राणी (सूअ २, ३, २५) ।

बिरालिया स्त्री [बिरालिका] स्थल-कन्द-विशेष (आचा २, १, ८, ३) ।

बिरुद न [विरुद] इलकाब, पदवी (सम्मत्त १४१) ।

बिल न [बिल] १ रन्ध्र, विवर, साँप आदि जन्तुओं के रहने का स्थान (विपा १, ७; गउड) । २ कूप, कुआँ (राय) । °कोलीकारक वि [दे. °कोलीकारक] दूसरे को व्यामुग्ध करने के लिए विस्वर वचन बोलनेवाला (पण्ह १, ३—पत्र ४४) । °पंतिया स्त्री [°पङ्क्तिका] खान की पद्धति (पण्ह २, ५—पत्र १५०) ।

बिलाड } देखो बिडाल (भग; पि २४१) ।
बिलाल }

बिलालिआ देखो बिरालिआ (पि २४१) ।

बिल्ल पुं [बिल्व] १ वृक्ष-विशेष, बेल का पेड़ (पण्ण १; उप १०३१ टी) । २ न. बेल का फल (पाअ) ।

बिल्लल पुं [बिल्वल] १ अनार्य देश-विशेष । २ उस देश में रहनेवाली मनुष्य-जाति (पण्ह १, १—पत्र १४) । देखो चिल्लल = चिल्वल ।

बिस न [बिस] कमल आदि के नाल का तन्तु, मृणाल (णाया १, १३; कुमा; पाअ) । °कंठी स्त्री [°कण्ठी] बलाका, बक पक्षी की एक जाति (दे ६, ९३) । देखो **भिस** = बिस ।

बिसि देखो बिसी (दे १, ८३) ।

बिसिणी स्त्री [बिसिनी] कमलिनी, कमल का गाछ (पि २०९) ।

बिसी स्त्री [बृषी] ऋषि का आसन (दे १, ८३; पि [illegible]) ।

बिह अक [भी] डरना । बिहेइ (प्राकृ ६४; पि ५०१) ।

बिह वि [बृहत्] बड़ा महान् । °ण्णर पुं [°नल] छन्द-विशेष (पिंग) ।

बिहप्पइ }
बिहप्फइ } देखो बहस्सइ (हे २, १३७; १, १३८; २, ६९; षड्; कुमा) ।
बिहस्सइ }

बिहिअ देखो बिंहिअ (प्राकृ ८) ।

बिहेलग देखो बिभेलय (दस ५, २, २४) ।

बीअ देखो बिइअ (हे १, ५; २, ७९; सुर १, ३८; सुपा ४८५) ।

बीअ न [बीज] १ बीज; बीया; 'लाउअबीअं इक्कं नासइ भारं गुडस्स जह सहसा' (प्रासू १५१; आचा; जी १३; औप) । २ मूल कारण; 'सारीरमाणसाणेयदुक्खबीयभूयकम्म-वणदहणसहं' (महा) । ३ वीर्य, शरीरान्तर्गत सप्त धातुओं में से मुख्य धातु, शुक्र (सुपा ३९०; वव ९) । ४ 'ह्रीं' अक्षर (सिरि १९६) । °बुद्धि वि [°बुद्धि] मूल अर्थ को जानने से शेष अर्थों का निज बुद्धि से स्वयं जाननेवाला (औप) । °मंत वि [°वत्] बीजवाला (णाया १, १) । °रुइ स्त्री [°रुचि] एक ही पद से अनेक पद और अर्थों का अनुसंधान द्वारा फैलनेवाली रुचि । २ वि. उक्त रुचिवाला (पण्ण १) । °रुह वि [°रुह] बीज से उत्पन्न होनेवाली वनस्पति (पण्ण १) । °वाय पुं [°वाप] क्षुद्र जन्तु-विशेष (राज) । °सुहुम न [सूक्ष्म] छिलके का अग्र भाग (कप्प) ।

बीअऊरय न [बीजपूरक] फल-विशेष, एक तरह का नीबू (मा ३६) ।

बीअजमण न [दे] बीज मलने का खल—खलिहान (दे ६, ९२) ।

बीअण पुं [दे] नीचे देखो (दे ६, ९३ टी) ।

बीअय पुंन [दे. बीजक] वृक्ष-विशेष, असन वृक्ष, विजयसार का गाछ (दे ६, ९३; पाअ) ।

बीअवावय पुं [बीजवापक] विकलेन्द्रिय जन्तु की एक जाति (अणु १४१) ।

बीआ स्त्री [द्वितीया] १ तिथि-विशेष, दूज (सम २९; श्रा २९, रयण २; णाया १, १०; सुपा १७१) । २ द्वितीय विभक्ति (चेइय ५०९) ।

बीज देखो बीअ = बीज (कुमा; पण्ह २, १—पत्र ९९) ।

बीडग न [वीटक] बीड़ा; पान का बीड़ा, सज्जित ताम्बूल (सुपा ३३९) ।

बीडि } स्त्री [बीटि, °टी] ऊपर देखो;
बीडी } 'बिल्लदलबीडीओ कीसेवि मुहम्मि पक्खिवइ' (धर्मवि १४०) ।

बीभच्छ पुं [बीभत्स] साहित्य प्रसिद्ध एक रस (अणु १३५) ।

बीभच्छ } वि [बीभत्स] १ घृणोत्पादक,
बीभत्थ } घृणा-जनक । २ भयंकर, भय-जनक (उवा; तंदु ३८; णाया १, २; संबोध ४४) । ३ पुं. रावण का एक सुभट (पउम ५९, २) ।

बीयत्तिय वि [दे. बीजयितृ] बीज बोनेवाला, वपन करनेवाला । २ पुं. पिता; 'बीयं बीयत्ति-यस्सेव' (सुपा ३९०; ३९१) ।

बीलय पुं [दे] ताडंक, कर्णभूषण-विशेष; कान का एक गहना (दे ६, ९३) ।

बीह अक [भी] डरना । बीहइ, बीहेइ (हे ४, ५३; महा; पि २१३) । वकृ. बीहंत (ओघभा १९; उप ७६८ टी; कुमा) । कृ. बीहियव्व (स ६८२) ।

बीहच्छ देखो बीभच्छ (पि ३२७) ।

बीहण }
बीहणग } वि [भीषण, °क] भय-जनक, भयंकर (पि २१३; पण्ह १, १; पउम ३५, ५४) ।
बीहणय }

बीहविय वि [भीषित] डराया हुआ (सम्मत्त ११८) ।

बीहिअ वि [भीत] १ डरा हुआ (हे ४, ५३) । २ न. भय, डर; 'न य बीहिअं ममावि हु' (श्रा १४) ।

बीहिर वि [भेतृ] डरनेवाला (कुमा ६, ३५) ।

बुआव सक [वाचय्] बुलवाना । संकृ. बुआवइत्ता (ठा ३, २—पत्र १२८) ।

बुइअ वि [उक्त] कथित (सूअ १, २, २, २४; १, १४, २५; पण्ह २, २) ।

बुंदि पुंस्त्री [दे] १ चुम्बन । २ सूकर, सूअर (दे ६, ९८) ।

बुंदि स्त्री [दे] शरीर, देह; 'इह बुंदि चइत्ताणं तत्थ गंतूण सिज्झइ' (ठा १ टी—पत्र २४; सुज्ज २०; तंदु १३; सुपा ६५६; धम्म ९ टी; पाअ) । देखो बोंदि ।

बुंदिणी स्त्री [दे] कुमारी-समूह (दे ६, ९४) ।

बुंदीर पुं [दे] १ महिष, भैंसा। २ वि. महान्, बड़ा (दे ६, ६८)।

बुंध न [बुध्न] १ वृक्ष का मूल। २ कोई भी मूल, मूलमात्र (हे १, २६; षड्)।

बुंबा स्त्री [दे] चिल्लाहट, पुकार (सुपा ५६५)।

बुंबु पुं [दे] ऊपर देखो (कप्प ३१)।

बुंबुअ न [दे] वृन्द, यूथ, समूह (दे ६, ६४)।

बुक्क वि [दे] विस्मृत (वव १)।

बुक्क अक [गर्ज्, बुक्क्] गर्जन करना, गरजना। बुक्कइ (हे ४, ६८)।

बुक्क अक [भष्, बुक्क्] श्वान—कुत्ता का भूँकना। बुक्कइ (षड्)।

बुक्क पुंन [दे] १ तुष, छिलका (सुख १८, ३७)। २ वाद्य-विशेष; 'बुक्कतंबुक्कसंबुक्कसंद्दुकडं' (सुपा ५०)।

बुक्कण पुं [दे] काक, कौआ (दे ६, ६४; पाअ)।

बुक्कस देखो **बोक्कस** (राज)।

बुक्का स्त्री [दे] १ मुष्टि (दे ६, ६४; पाअ)। २ व्रीहिमुष्टि (दे ६, ६४)। ३ वाद्य-विशेष; 'ढक्काडक्कहुडुक्काबुक्कासंबुक्ककरडिपभिईणं आउजाणं' (सुपा १६५)।

बुक्का स्त्री [गर्जना] गर्जन, गर्जारव (पउम ६, १०८; गउड)।

बुक्कार पुं [दे. बूत्कार] गर्जन, गर्जना (पउम ७, १०५; गउड)।

बुक्कास पुं [दे] तन्तुवाय, जुलाहा (आचा २, १, २, २)।

बुक्कासार वि [दे] भीरु, डरपोक (दे ६, ६५)।

बुक्किअ वि [गर्जित] जिसने गर्जना की हो वह; 'अह बुक्किआ तुह भडा' (कुमा)।

बुज्झ सक [बुध्] १ जानना, ज्ञान करना, समझना। २ जागना। बुज्झइ (उव)। भूका. बुज्झिंसु (भग)। भवि. बुज्झिहिइ (औप)। वकृ. बुज्झंत, बुज्झमाण (पिंग; आचा)। संकृ. बुज्झा (हे २, १५)। कृ. बुद्ध, बोद्धव्व, बोधव्व (पिंग; कुमा; नव २३; भग; जी २१)।

बुज्झविय, **बुज्झाविअ** वि [बोधित] १ जिसको ज्ञान कराया गया हो वह। २ जगाया गया (कुप्र ६४; सुपा ४२५; प्राकृ ६८)।

बुज्झिअ वि [बुद्ध] ज्ञात, विदित (पाअ)।

बुज्झिर वि [बोद्धृ] १ जाननेवाला। २ जागनेवाला (प्राकृ ६८)।

बुडबुड अक [बुडबुडय्] बुडबुड आवाज करना; 'सुरा जहा बुडबुडेइ अन्नत्तं' (चेइय ४६२)।

बुड्ड अक [ब्रुड्, मस्ज्] डूबना। बुड्डइ (हे ४, १०१; उव; कुमा; भवि)। भवि. बुड्डीसु (अप) (हे ४, ४२३)। वकृ. बुड्डंत, बुड्डमाण (कुमा; उप १०३१ टी)। प्रयो, वकृ. बुड्डावंत (संबोध १५)।

बुड्ड वि [ब्रुडित, मग्न] डूबा हुआ, निमग्न (धम्म १२ टी; गा ३७; रंभा २३, सुर १०, १८६; भवि); 'घयबुड्डमंडगाई' (पव ४ टी)।

बुड्डण न [ब्रुडन] डूबना (संवे २; कप्पू)।

बुड्डिर पुं [दे] महिष, भैंसा (षड्)।

बुड्ढ वि [वृद्ध] बूढ़ा (पिंग)। स्त्री. °ड्ढा, °ड्ढी (काप्र १६७; सिरि १७३)।

बुण्ण वि [दे] १ भीत, डरा हुआ। २ उद्विग्न (दे ७, ६४ टी)।

बुत्ती स्त्री [दे] ऋतुमती स्त्री (दे ६, ६४)।

बुद्ध वि [बुद्ध] १ विद्वान्, पण्डित, ज्ञात-तत्व (सम १; उप ६१२ टी, श्रा १२; कुप्र ४०; श्रु १)। २ जागा हुआ, जागृत (सुर ६, २४३)। ३ भूत, भविष्य और वर्तमान का जानकार (चेइय ७१३)। ४ विज्ञात, विदित (ठा ३, ४)। ५ पुं. जिन-देव, अर्हन्, तीर्थंकर (सम ६०)। ६ बुद्धदेव, भगवान् बुद्ध (पाअ; दे ७, ५१; उर ३, ७; कुप्र ४४०; धर्मसं ६७२)। ७ आचार्य, सूरि (उत्त १, १७)। °पुत्त पुं [°पुत्र] आचार्य शिष्य (उत्त १, ७)। °बोहिय वि [°बोधित] आचार्य-बोधित (नव ४३)। °माणि वि [°मानिन्] निज को पण्डित माननेवाला (सूअ १, ११, २५)। °लय पुंन [°ालय] बुद्ध-मन्दिर (कुप्र ४४२)।

बुद्ध वि [बौद्ध] १ बुद्ध-भक्त। २ बुद्ध-संबन्धी, बुद्ध का (ती ७; सम्मत्त ११६)।

बुद्ध देखो **बुज्झ**।

बुद्ध देखो **बुंध** (सुज्ज २०)।

बुद्धंत पुंन [बुध्नान्त] अधो-भाग, नीचे का हिस्सा; 'ता राहू णं देवे चंदं वा सूरं वा गेण्हमाणे बुद्धंतेणं गिण्हित्ता बुद्धंतेणं मुयइ' (सुज्ज २०)।

बुद्धि स्त्री [बुद्धि] १ मति, मेधा, मनीषा, प्रज्ञा (ठा ४, ४; जी ६; कुमा; कप्प; प्रासू ४७)। २ देव-प्रतिमा-विशेष (णाया १, १ टी—पत्र ४३)। ३ महापुण्डरीक ह्रद की अधिष्ठात्री देवी (ठा २, ३—पत्र ७२; इक)। ४ छन्द-विशेष (पिंग)। ५ तीर्थंकरी। ६ साध्वी (राज)। ७ अहिंसा, दया (पण्ह २, १)। ८ पुं. इस नाम का एक मन्त्री (उप ८४४)। °कूड न [°कूट] पर्वत-विशेष का शिखर (राज)। °बोहिय वि [°बोधित] १ तीर्थंकरी—स्त्री-तीर्थंकर से प्रतिबोधित। २ सामान्य साध्वी से बोधित (राज)। °मंत वि [°मत्] बुद्धिवाला (उप ३३६; सुपा ३७२; महा)। °ल पुं [°ल] १ एक स्वनाम-प्रसिद्ध श्रेष्ठी (महा)। २ देखो °ल्ल (राज)। °ल्ल वि [°ल] बुद्ध्, मूर्ख, दूसरे की बुद्धि पर जीनेवाला; 'तस्स पंडियमाण(? णि)स्स बुद्धिल्लस्स दुरप्पणो' (ओघभा २६ टी; २७)। °वंत देखो °मंत (भवि)। °सागर, °सायर पुं [°सागर] विक्रम की ग्यारहवीं शताब्दी का एक सुप्रसिद्ध जैनाचार्य और ग्रन्थकार (सुर १६, २४५; सार्ध ६६; सम्मत्त ७६)। °सिद्ध पुं [°सिद्ध] बुद्धि में सिद्धहस्त, संपूर्ण बुद्धिवाला (आवम)। °सुंदरी स्त्री [°सुन्दरी] एक मन्त्री-कन्या (उप ७२८ टी)।

बुध देखो **बुद्ध** (पण्ह १, ५; सुज्ज २०)।

बुब्बुअ अक [बुबूय्] 'बु' 'बु' आवाज करना, छाग—बकरा का बोलना। बुब्बयइ (कुप्र २४)। वकृ. बुब्बुयंत (कुप्र २४)।

बुब्बुअ पुं [बुद्बुद] बुलबुला, पानी का बुलका (दे ६, ६५; औप; पिंड १६; णाया १, १; वे ४५; प्रासू ६६; दं १३)।

बुभुक्खा स्त्री [बुभुक्षा] भूख, खाने की इच्छा (अभि २०७)।

बुय वि [ब्रुव] बोलनेवाला (सूअ १ ७, १०)।

बुयाण देखो **बुव**।

बुल वि [दे] बोड, भदन्त, धर्मिष्ठ (पिंग १६८)।

बुलंबुला स्त्री [दे] बुलबुला, बुद्बुद (दे ६, ६५)।

बुलबुल पुं [दे] ऊपर देखो (षड्)।

बुल्ल देखो **बोल्ल**। बुल्लइ (कुप्र २६; श्रा १४); बुल्लंति (प्रासू ४)। प्रयो. बुल्लावेइ, बुलावेमि, बुल्लावए (कुप्र १२७; सिरि ४४०)।

बुव सक [ब्रू] बोलना। बुवइ (षड्; कुमा)। वकृ. बुवंत, बुयाण, बुवाण (उत्त २३, २१; सूग्र १, ७, १०; उत्त २३, ३१)। देखो **बू**।

बुस न [बुस] १ भूसा, यव ग्रादि का कडंगर, नाज का छिलका (ठा ८—पत्र ४१७)। २ तुच्छ धान्य, फल-रहित धान्य (गउड)।

बुसि स्त्री [बृषि, °सि] मुनि का ग्रासन। °म, °मंत वि [°मत्] संयमी, व्रती, मुनि (सूग्र २, ६, १४; ग्राचा)।

बुसिआ स्त्री [बुसिका] यव ग्रादि का कडंगर, भूसा (दे २, १०३)।

बुह पुं [बुध] १ ग्रह-विशेष, एक ज्योतिष्क देव (सुर ३, ५३; धर्मवि २४)। २ वि. पण्डित, विद्वान् (ठा ४, ४; सुर ३, ५३; धर्मवि २४; कुमा; पाग्र)।

बुहप्पइ, **बुहप्फइ**, **बुहस्सइ** } देखो **बहस्सइ** (हे २, ५३; १३७; षड्; कुमा)।

बुहुक्ख सक [बुभुक्ष्] खाने की इच्छा करना। बुहुक्खइ (हे ४, ५; षड्)।

बुहुक्खा देखो **बुभुक्खा** (राज)।

बुहुक्खिअ वि [बुभुक्षित] भूखा (कुमा)।

बू सक [ब्रू] बोलना, कहना। बूम, बूया, बूहि (उत्त २५, २६; सूग्र १, १, ३, ६; १,१,१,२)। बिंति, बेंति, बेमि, बुग्रा (कम्म ३, १२; महा; कप्प)। भूका. ग्रब्बवी (उत्त २३, २१; २२; २५; ३१; ठा ३, २)। वकृ. बिंत, बेंत (उप ७२८ टी; सुपा ३६०; विसे ११६)। संकृ. बूइत्ता (ठा ३, २) देखो **बव**, **बुव**।

बूर पुं [बूर] वनस्पति-विशेष (णाया १, १—पत्र ६; उत्त ३४, १६; कप्प; ग्रौप)। °णालिया, °नालिआ स्त्री [°नालिका] बूर से भरी हुई नली (राज; भग)।

बूल वि [दे] मूक, वाचा-शक्ति से रहित (पिंग १६८ टी)।

बूह सक [बृंह्] पुष्ट करना। बूहए (सूग्र २, ५, ३२)।

बे देखो **बि** (वज्जा १०; हे ३, ११६; १२०; पिंग)। °आसी (ग्रप) स्त्री [°अशीति] बयासी, ८२ (पिंग)। °इंदिय वि [°इन्द्रिय] त्वचा ग्रौर जीभ ये दो ही इन्द्रियवाला प्राणी (ठा १; भग; स ८३; जी १५)। °हिय [द्व्याह्निक] दो दिन का (जीवस ११६)।

बेंट देखो **बिंट** (महा)।

बेंत देखो **बू**।

बेंदि देखो **बे-इंदिय** (पंच ५, ५६)।

बेट्ठ देखो **बिट्ठ** (ग्रोघभा १७४)।

बेड, **बेडय** } पुं [दे] नौका, जहाज (दे ६, ६५, सुर १३, ५०)।

बेडा, **बेडिया**, **बेडी** } स्त्री [दे] नौका, जहाज (उप ७२८ टी; सिरि ३८२; ४०७; श्रा १२; धम्म १२ टी); 'पाणीहि जलं दारइ ग्ररित्तदंडेहि बेडिव्व' (धर्मवि १३२)।

बेड्डा स्त्री [दे] श्मश्रु, दाढ़ी-मूँछ के बाल (दे ६, ६५)।

बेदोणिय वि [द्वैद्रोणिक] दो द्रोण का, द्रोण-द्वय-परिमित; 'कप्पइ मे बेदोणियाए कंसपाईए हिरण्णभरियाए संववहरित्तए' (उवा)।

बेभेल पुं [बेभेल] विन्ध्याचल के नीचे का एक संनिवेश (भाग ३, २—पत्र १७१)।

बेमासिय वि [द्वैमासिक] दो मास का, दो महीने का संबन्ध रखनेवाला (पउम २२, २८)।

बेलि स्त्री [दे] स्थूणा, खूँटा (दे ६, ६५; पाग्र)।

बेल्ल देखो **बिल्ल** (प्राकृ ५)।

बेल्लग पुं [दे] बैल, बलीवर्द (ग्रावम)।

बेस ग्रक [विश्, स्था] बैठना, 'ग्रंतंतं भोक्खामि त्ति बेसए भुंजए य तह चेव' (ग्रोघ ५७१)।

बेसक्खिज्ज न [दे] द्वेष्यत्व, रिपुता, दुश्मनाई (दे ७, ७६ टी)।

बेसण न [दे] वचनीय, लोकापवाद, लोक-निन्दा (दे ७, ७५ टी)।

बेहिम वि [दे. द्वैधिक] दो टुकड़े करने योग्य, खण्डनीय (दस ७, ३२)।

बोंगिल्ल वि [दे] १ भूषित, ग्रलंकृत। २ पुं. ग्राटोप, ग्राडम्बर (दे ६, ६६)।

बोंटण न [दे] चूचुक, स्तन का ग्रग्र भाग (दे ६, ६६)।

बोंड न [दे] १ चूचुक, स्तन-वृन्त (दे ६, ६६)। २ फल-विशेष, कपास का फल (ग्रौप; तंदु २०)। °य न [°ज] सूती वस्त्र, सूती कपड़ा (सूग्र २, २, ७३; ग्रौप)।

बोंद न [दे] मुख, मुँह (दे ६, ६६)।

बोंदि स्त्री [दे] १ रूप। २ मुख, मुँह (दे ६, ६६)। ३ शरीर, देह (दे ६, ६६; पण्ह १, १; कप्प; ग्रौप; उत्त ३५, २०; स ७१२; विसे ३१६१; पव ५५; पंचा १०, ४)।

बोंदिया स्त्री [दे] शाखा (सूग्र २, २, ४६)।

बोकड, **बोक्कड** } पुं [दे] छाग, बकरा; गुजराती में 'बोकडो' (ती २; दे ६, ६६)। स्त्री. °डी (दे ६, ६६ टी)।

बोक्कस पुं [बोक्कस] १ ग्रनार्य देश-विशेष (पव २७४)। २ वर्णसंकर जाति-विशेष, निषाद से ग्रंबष्ठी की कुक्षि में उत्पन्न (सुख ३, ४)।

बोक्कसालिय पुं [दे] तन्तुवाय, 'कोट्टागकुलाणि वा गामरक्खकुलाणि वा बोक्कसालियकुलाणि वा' (ग्राचा २, १, २, ३)।

बोक्कार देखो **बुक्कार** (सुर १०, २२१)।

बोक्किय न [बूत्कृत] गर्जन, गर्जना (पउम ५६, ५४)।

बोगिल्ल वि [दे] चितकबरा, 'फसलं सबलं सारं किम्मीरं चित्तलं च बोगिल्लं' (पाग्र)।

बोट्ट सक [दे] उच्छिष्ट करना, जूठा करना। गुजराती में 'बोटवुं'; 'रयणीए रयणिचरा चरंति बोट्टंति ग्रन्नमाईयं' (सुपा ४६१)।

बोड वि [दे] १ धार्मिक, धर्मिष्ठ। २ तरुण, युवा (दे ६, ६६)। ३ मुण्डित-मस्तक; 'एमेव ग्रडइ बोडो', गुजराती में 'बोडो' (पिंड २१७)।

बोडघेर न [दे] गुल्म-विशेष (पाअ)।

बोडिय पुं [बोटि] १ दिगम्बर जैन संप्रदाय। २ वि. दिगम्बर जैन संप्रदाय का अनुयायी; 'बोडियसिवभूईओ बोडियलिंगस्स होइ उप्पत्ती' (विसे १०४१; २५५२)।

बोडिअ वि [दे] मुण्डित-मस्तक (?); 'बोडिअमसिए धुवं मरणं' (ओघभा ८३ टी)।

बोडुर न [दे] श्मश्रु, दाढ़ी-मूँछ (दे ६, ९५)।

बोड्डिआ स्त्री [दे] कपर्दिका, कौड़ी; 'केसरि न लहइ बोड्डिअवि गय लक्खेंति घेप्पंति' (हे ४, ३३५)।

बोदर वि [दे] पृथु, विशाल (दे ६, ९६)।

बोंदि देखो **बोंदि** (औप)।

बोद्दह [दे] देखो **बोद्रह** (पाअ)।

बोद्ध वि [बौद्ध] बुद्ध-भक्त (संबोध ३४)।

बोद्धव्व देखो **बुज्झ**।

बोद्रह वि [दे] तरुण, जवान (दे ७, ८०)।

बोधण न [बोधन] बोध, शिक्षा, उपदेश (सम ११६)।

बोधव्व देखो **बुज्झ**।

बोधि देखो **बोहि** (ठा २, १—पत्र ४६)। °**सत्त** पुं [°सत्त्व] सम्यग् दर्शन को प्राप्त प्राणी, अर्हन् देव का भक्त जीव (मोह ३)।

बोधिअ वि [बोधित] ज्ञापित, अवगमित (धर्मसं ५०९)।

बोब्बड वि [दे] मूक (दश० अगस्त्य चू० पत्र० २४३)।

बोर न [बदर] फल-विशेष, बेर (गा २००; हे १७०; षड्; कुमा)।

बोरी स्त्री [बदरी] बेर का गाछ (प्राकृ ४; हे १, १७०; कुमा; हेका २५९)।

बोल सक [ब्रोडय्] डुबाना, 'तंबोलो तं बोलइ जिणवसहिट्ठिएण जेण खद्धो' (सार्ध ११४); 'बुड्डुतं बोलए अन्नं' (सूक्त ६६), बोलेइ, बोलए (संबोध १३), 'केसिं च बंधित्तु गले सिलाओ उदगंसि बोलंति महालयंसि' (सूअ १, ५, १०), बोलेमि (सिरि १३८)। 'गुरुनामेणं लोए बोलेइ बहुं' (उवर १५२)।

बोल अक [व्यति+क्रम्] १ पसार होना, गुजरना। २ सक. उल्लंघन करना; 'दूई ण एइ, चंदोवि उग्गओ, जामिणीवि बोलेइ' (गा ८५४), 'पुणो तं बंधेण न बोलइ कयाइ' (श्रावक ३३)। बोलए (चंड)। देखो **वोल** = गम्।

बोल पुं [दे] १ कलकल, कोलाहल (दे ६, ९०; भग; भवि; कप्पू; उप उप ५०९), 'हासबोलबहुला' (औप)। २ समूह; 'कमढासुरेण रइयम्मि भीसणे पलयतुल्लजलबोले' (भाव १; कुलक ३४)।

बोलग पुंन [दे. ब्रोड] १ मज्जन, डूबना। २ कर्षण, खींचाव; 'उच्चूलं बोलगं पज्जेति' (विपा १, ६—पत्र ६८)।

बोलिअ वि [ब्रोडित] डुबाया हुआ (वज्जा ९८)।

बोलिंदी स्त्री [दे] लिपि-विशेष, ब्राह्मी लिपि का एक भेद; 'माहेसरीलिवी दामिलिवी बोलिंदिलीवी' (सम ३५)।

बोल्ल सक [कथय्] बोलना, कहना। बोल्लइ (हे ४, २ प्राकृ ११९; सुर ८, १९७; भवि)। कर्म. बोल्लिअइ (अप) (कुमा)। कृ. बोल्लेव्वय (अप) (कुमा)। प्रयो. बोल्लावइ (कुमा)।

बोल्लअ पुं [कथन] बोल, वचन (गा ६०३)।

बोल्लणअ वि [कथयितृ] बोलने का स्वभाववाला (हे ४, ४४३)।

बोल्ला स्त्री [कथा] वार्त्ता, बात; 'नीयबोल्लाए' (उप १०१५)।

बोल्लाविय वि [कथित] बुलवाया हुआ (स ४९१; ६९९)।

बोल्लिअ वि [कथित] १ उक्त। २ न. उक्ति (भवि; हे ४, ३८३)।

बोव्व न [दे] क्षेत्र, खेत (दे ९६)।

बोह सक [बोधय्] १ समझाना, ज्ञान कराना। २ जगाना। बोहेइ (उव)। कर्म. बोहिज्जइ (उव)। वकृ. **बोहिंत**, **बोहेंत** (सुर १५, २४६; महा)। कवकृ. **बोहिज्जंत** (सुर २, १४५; ८, १६५)। हेकृ. **बोहेउं** (अज्झ १७९)।

बोह पुं [बोध] १ ज्ञान, समझ (जी १)। २ जागरण (कुमा)।

बोहग देखो **बोहय** (दं १)।

बोहण देखो **बोधण** (उप २०६; सुर १, ३७; उवर १)।

बोहय वि [बोधक] बोध देनेवाला, ज्ञानदाता (सम १; णाया १, १; भग; कप्प)।

बोहहर पुं [दे] मागध, स्तुति-पाठक (दे ६, ९७)।

बोहारी स्त्री [दे] बुहारी, संमार्जनी, झाड़ू. (दे ६, ९७)।

बोहि स्त्री [बोधि] १ शुद्ध धर्म का लाभ, सद्धर्म की प्राप्ति; 'दुल्लहा बोही' (उत्त ३६, २५८), 'बोही जिणेहि भणिया भवंतरे सुद्धधम्मसंपत्ती' (चेइय ३३२; संबोध १४; सम ११९; उप ४८१ टी)। २ अहिंसा, अनुकम्पा, दया (पण्ह २, १)। देखो **बोधि**।

बोहिअ वि [बोधित] १ ज्ञापित, समझाया हुआ (भग)। २ विकासित, विबोधित; 'रविकिरणतरुणबोहियसहस्सपत्त—' (कप्प)।

बोहिअ पुं [बोधिक] मनुष्य चुरानेवाला चोर (निचू १; चेइय ४४६)।

बोहिंत देखो **बोह** = बोधय्।

बोहिग देखो **बोहिअ** = बोधिक (राज)।

बोहित्थ पुंन [दे] प्रवहण, जहाज, यानपात्र, नौका (दे ६, ९६; स २०६; चेइय २६४; कुप्र २२२; सिरि ३८३; सम्मत्त १५७; सुपा ९४; भवि)।

बोहित्थिय वि [दे] प्रवहण-स्थित (वज्जा १५८)।

°**ब्भंस** देखो **भंस** (सुपा ५०९)।

°**ब्भमर** देखो **भमर** (नाट—मुद्रा ३९)।

°**ब्भास** देखो **अब्भास**; 'किंतु अइदूहवा सा दिट्ठिब्भामेवि कुणइ न हु कोइ' (सुपा ५९७)।

°**ब्भि** वि [भित्] भेदन करनेवाला, नाशकर्ता; 'सगडब्भि' (आचा १, ३, ४, १)।

ब्रो (अप) देखो **बू**। **ब्रोहि** (प्राकृ १२१)।

॥ इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि बआराइसद्दसंकलणो
एगूणतीसइमो तरंगो समत्तो॥

भ

भ पुं [भ] १ ओष्ठ-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष (प्राप; प्रामा)। २ पिंगल-प्रसिद्ध आदि-गुरु और दो ह्रस्व अक्षरों की संज्ञा, भगण (पिंग)। ३ न. नक्षत्र (सुर १६, ४३)। °आर पुं [°कार] १ 'भ' अक्षर। २ भगण (पिंग)। °गण पुं [°गण] भगण (पिंग)।

भइ देखो भव = भू।

भइ स्त्री [भृति] वेतन, तनखाह (णाया १, ८—पत्र १५०; विपा १, ४; उवा)। देखो भुइ।

भइअ वि [भक्त] १ विभक्त (श्रावक १८५; सम ७६)। २ खण्डित; 'अंगुलसखासंखप्पएसभइयं पुढो पयरं' (पंच २, १२; औप)। ३ विकल्पित (वव ६)।

भइअ न [भक्त] भागाकार (वव १)।

भइअ, भइअव्व } देखो भय = भज्।

भइअ, भइग } वि [भृतिक] कर्मकर, नौकर, चाकर (राय २१)।

भइणि°, भइणिआ, भइणी } स्त्री [भगिनी] बहिन, स्वसा (सुपा १५; स्वप्न १५; १७; विपा १, ४; प्रासू ७८; कुल २३५; कुमा)। °वइ पुं [°पति] बहनोई (सुपा १५; ५३२)। °सुअ पुं [°सुत] भागिनेय, भानजा (सुपा १७)। देखो बहिणी।

भइरव वि [भैरव] १ भयंकर, भीषण, भय-जनक (पाअ; सुपा १८२)। २ पुं. नाट्यादि-प्रसिद्ध एक रस, भयानक रस। ३ महादेव, शिव। ४ महादेव का एक अवतार। ५ राग-विशेष, भैरव राग। ६ नद-विशेष (हे १, १५१; प्राप्र)। देखो भेरव।

भइरवी स्त्री [भैरवी] शिव-पत्नी, पार्वती (गउड)।

भइरहि पुं [भगीरथि] सगर चक्रवर्ती का एक पुत्र, भगीरथ (पउम ५, १७५)।

भइल वि [दे] भया, जात (रंभा ११)।

भउम्हा (शौ) देखो भमुहा (पि २५१)।

भउहा (अप) देखो भमुहा (पिंग)।

भएयव्व देखो भय = भज्।

भंकार पुं [भङ्कार] भनकार, अव्यक्त आवाज विशेष (उप पृ ८६)।

भंकारि वि [भङ्कारिन्] भनकार करनेवाला (सण)।

भंग पुं [भङ्ग] १ भाँगना, खण्ड, खण्डन (ओघ ७८८; प्रासू १७०; जी १२; कुमा)। २ प्रकार, भेद, विकल्प (भग; कम्म ३, ५)। ३ विनाश (कुमा; प्रासू २१)। ४ रचना-विशेष; 'तरंगरंगंतभंग—' (कप्प)। ५ पराजय। ६ पलायन (पिंग)। °रय न [°रत] मैथुन-विशेष (वज्जा १०८)।

भंग पुं [भृङ्ग] आर्य देश-विशेष, जिसकी राजधानी प्राचीन काल में पावापुरी थी (इक)।

भंग (अप) देखो भग्ग = भग्न (पिंग)।

भंगरय पुं [भृङ्गरज, भृङ्गारक] १ पौधा विशेष, भृङ्गराज, भँगरा, भंगरैया। २ न. भँगरा का फूल (वज्जा १०८; सुपा ३२४)।

भंगा स्त्री [भङ्गा] १ वनस्पति-विशेष, पाट, कुष्टा; 'कप्पइ णिग्गंथाण वा णिग्गंथीण वा पंच वत्थाइं धारित्तए वा परिहरेत्तए वा, तं जहा—जंगिए भंगिए साणए पोत्तिए तिरीड-पट्टए णामं पंचमए' (ठा ५, ३—पत्र ३३८)। २ वाद्य-विशेष; '—पडहहुड्डुक्कुड्डुक्काभेरीभंगापहुदिभूरिवज्जभंडतुमुल—' (विक्र ८७)।

भंगि स्त्री [भङ्गि] १ प्रकार, भेद (हे ४, ३३६; ४११)। २ व्याज, छल, बहाना; 'सहिभंगिभणिअसब्भाविआवराहाए' (गा ६१३)। ३ विच्छित्ति, विच्छेद (राज)। ४ पुंस्त्री. देश विशेष; 'पावा भंगी य' (पव २७५; विचार ४६)।

भंगिअ न [भङ्गिक, भाङ्गिक] १ भंगा-मय, एक तरह का वस्त्र, पाट का बना हुआ कपड़ा (ठा ३, ३; ५, ३—पत्र १३८; कस)। २ शास्त्र-विशेष; 'जोगंतिगस्सवि भंगियसुत्तं किरिया जओ भणिया' (चेइय २४५)।

भंगिल्ल वि [भङ्गवत्] प्रकारवाला, भेद-पतित; 'पढमभंगिल्ला' (संबोध ३२)।

भंगी स्त्री [भङ्गी] देखो भंगि (हे ४, ३३६; गा ६१३; विचार ४६)।

भंगी स्त्री [भृङ्गी] वनस्पति-विशेष;—१ भांग, विजया। २ अतिविषा, अतिस का गाछ (पण्ण १—पत्र ३६; पण्ण १७—पत्र ५३१)।

भंगुर वि [भङ्गुर] १ स्वयं भाँगनेवाला, विनश्वर, विनाश-शील; 'तडिदंडाडंबरभंगुराइं हो विसयसोक्खाइं' (उव ६ टी; पण्ह १, ४; सुर १०, १८; स ११४; धर्मसं ११७१; विवे ११४)। २ कुटिल, वक्र; 'कुडिलं वंकं भंगुरं' (पाअ)।

भंछा देखो भत्था (राज)।

भंज सक [भञ्ज्] १ भाँगना, तोड़ना। २ पलायन कराना, भगाना। ३ पराजय करना। ४ विनाश करना। भंजइ, भंजए (हे ४, १०६; षड्; पि ५०६)। भवि. भंजिस्सइ (पि ५३२)। कर्म. भज्जइ (भग; महा)। वकृ. भंजंत (गा १६७; सुपा ५६०)। कवकृ. भज्जंत, भज्जमाण (से ६, ४४; सुर १०, २१७; स ६३)। संकृ. भंजिअ, भंजिउ, भंजिऊण, भंजिऊणं, भंजेऊण (नाट; पि ५७६; महा; पि ५८५; महा), भज्जिउ (अप) (हे ४, ३६५)। हेकृ. भंजित्तए (णाया १, ८), भंजणहं (अप) (हे ४, ४४१ टि)।

भंजअ, भंजग } वि [भञ्जक] भाँगनेवाला, भंग करनेवाला (गा ५५२; पण्ह १, ४)। २ पुं. वृक्ष, पेड़; 'भंजगा इव संनिवेसं नो चयंति' (आचा)।

भंजण न [भञ्जन] १ भंग, खण्डन (पव ३८; सुर १०, ६१)। २ विनाश (सुपा ३७६; पण्ह १, १)। ३ वि. भंजन करने-वाला, तोड़नेवाला, विनाशक; 'भवभंजण' (सिरि ५४६), 'रिउसंगभंजणेण' (कुमा)। स्त्री. °णी (गा ७४५)।

भंजणा स्त्री [भञ्जना] ऊपर देखो, 'विणओ-वयारम-(?र मा-) णस्स भंजणा पूयणा गुरुजणस्स' (विसे ३४६६; निचू १)।

भंजाविअ, **भंजिअ** वि [भञ्जित] १ भँगाया हुआ, तुड़वाया हुआ; (स ५४०)। २ भगाया हुआ (पिंग)। ३ आक्रान्त (तंदु ३८)।

भंजिअ देखो भग्ग = भग्न (कुमा ६, ७०; पिंग; भवि)।

भंड सक [भाण्डय्] भँडारा करना, संग्रह करना, इकट्ठा करना। भंडेइ (सुख २, ४५)।

भंड सक [भण्ड्] भाँड़ना, भर्त्सना करना, गाली देना। भंडइ (सण)। वकृ. भंडंत (गा ३७९)। संकृ. भंडिउं (वव १)।

भंड पुं [भण्ड] १ विट, भड़ुआ (पव ३८)। २ भाँड़, बहुरूपिया, मुख आदि के विकार से हँसाने का काम करनेवाला, निर्लज्ज (आव ६)।

भंड न [दे] १ वृन्ताक, बैंगन, भंटा (दे ६, १००)। २ पुं. मागध, स्तुति-पाठक। ३ सखा, मित्र। ४ दौहित्र, पुत्री का पुत्र (दे ६, १०९)। ५ पुंन. मण्डन, आभूषण, गहना (दे ६, १०९; भग; औप)। ६ वि. छिन्न, मूर्धा, सिर-कटा (दे ६, १०९)। ७ न. क्षुर, छुरा। ८ छुरे से मुण्डन (राज)।

भंड, **भंडग** पुंन [भाण्ड] १ बरतन, बासन, पात्र; 'दुग्गइदुहभंडे घडइ अक्खंडे' (संवेग १४; दे ३, २१; श्रा २७; सुपा १९९)। २ क्रयाणक, पण्य, बेचने की वस्तु (णाया १, १—पत्र ६०; औप; पण्ह १, १; उवा; कुमा)। ३ गृह, स्थान (जीव ३)। ४ वस्त्र-पात्र आदि घर का उपकरण (ठा ३, १; कप्प; ओघ ६६६; णाया १, ५)।

भंडण न [दे. भण्डन] १ कलह, वाक्-कलह, गाली-प्रदान (दे ६, १०१; उव; महा; णाया १, १६—पत्र २१३; ओघ २१४; गा ६९९; उप ३३९; तंदु ५०)। २ क्रोध, गुस्सा (सम ७१)।

भंडणा स्त्री [भण्डना] भाँड़ना, गाली-प्रदान (उप ३३९)।

भंडय देखो भंड = भण्ड (हे ४, ४२२)।

भंडय देखो भंडग; 'पायसघयदहियाणं भरिऊणं भंडए गरुए' (महा ८०, २४; उत्त २६, ८)।

भंडवेआलिअ वि [भाण्डवैचारिक] करियाना बेचनेवाला (अणु १४९)।

भंडा स्त्री [दे] सम्बोधन-सूचक शब्द (संक्षि ४७)।

भंडाआर, **भंडागार** पुं [भाण्डागार] भंडार, कोठा या कोठार, बखार (मुद्रा १४१; स १७२; सुपा २२१; २६)।

भंडागारि, **भंडागारिअ** पुंस्त्री [भाण्डागारिन्, °क] भंडारी, भंडार का अध्यक्ष (णाया १, ८; कुप्र १०८)। स्त्री. °रिणी (णाया १, ८)।

भंडार देखो भंडागार (महा)।

भंडार पुं [भाण्डकार] बर्तन बनानेवाला शिल्पी (राज)।

भंडारि, **भंडारिअ** देखो भंडागारि (स २०७; सुर ४, ६०)।

भंडिअ पुं [भाण्डिक] भंडारी, भंडार का अध्यक्ष (सुख २, ४५)।

भंडिआ स्त्री [भाण्डिका] स्थाली, थलिया (ठा ८—पत्र ४१७)।

भंडिआ, **भंडी** स्त्री [दे] १ गंत्री, गाड़ी (बृह ३; दे ६, १०९; आवम; निचू ३; वव ६)। २ शिरीष वृक्ष। ३ अटवी, जंगल। ४ असती, कुलटा (दे ६, १०९)।

भंडीर पुं [भण्डीर] वृक्ष-विशेष, शिरीष वृक्ष (कुमा)। °**वडिंसय**, °**वडेंसय** न [°ावतंसक] मथुरा नगरी का एक उद्यान; 'महुराए णयरीए भंडि (? डीर)वडेंसए उज्जाणे' (राज; णाया २—पत्र २५३)। °**वण** न [°वन] १ मथुरा का एक वन (ती ७)। २ मथुरा का एक चैत्य (आवम)।

भंडु न [दे] मुण्डन (दे ६, १००)।

भंडुल्ल देखो भंड = भाण्ड (भवि)।

भंत वि [भ्रान्त] १ घुमा हुआ; 'भंतो जसो मेईणी (ए)' (पउम ३०, ९८)। २ भ्रान्ति-युक्त, भ्रमवाला, भूला हुआ (दे १, २१)। ३ अपेत, अनवस्थित (विसे ३४४८)। ४ पुं. प्रथम नरक का तीसरा नरकेन्द्रक—नरकावास-विशेष (देवेन्द्र ३)।

भंत वि [भगवत्] भगवान्, ऐश्वर्य-शाली (ठा ३, १; भग, विसे ३४४८—३४५६)।

भंत वि [भदन्त] १ कल्याण-कारक। २ सुख-कारक। ३ पूज्य (विसे ३४३९; कप्प; विपा १, १; कस; विसे ३४७४)।

भंत वि [भजत्] सेवा करता (विसे ३४४६)।

भंत वि [भात्, भ्राजत्] चमकता, प्रकाशता (विसे ३४४७)।

भंत वि [भवान्त] भव का—संसार का अन्त करनेवाला, मुक्ति का कारण (विसे ३४४९)।

भंत वि [भयान्त] भय-नाशक (विसे ३४४९)।

भंति स्त्री [भ्रान्ति] भ्रम, मिथ्या ज्ञान (धर्मसं ७२१; ७२३; सुपा ३१२; भवि)।

भंति (अप) स्त्री [भक्ति] भक्ति, प्रकार (पिंग)।

भंभल वि [दे] १ अप्रिय, अनिष्ट (दे ६, ११०)। २ मूर्ख, अज्ञान, पागल, बेवकूफ (दे ६, ११०; सुर ८, १९३)।

भंभसार पुं [भम्भसार] भगवान् महावीर के समकालीन और उनके परम भक्त एक मगधाधिपति, ये श्रेणिक और बिम्बसार के नाम से भी प्रसिद्ध थे (णाया १, १३; औप)। देखो **भिंभसार**, **भिंभिसार**।

भंभा स्त्री [दे. भम्भा] १ वाद्य-विशेष, भेरी (दे ६ १००; णाया १, १७; विसे ७८ टी; सुर ३, ६९; सम्मत्त १०६; राय; भग ७, ९)। २ 'भाँ' 'भाँ' की आवाज (भग ७,९—पत्र ३०५)।

भंभी स्त्री [दे] १ असती, कुलटा (दे ६, ९९)। २ नीति-विशेष (राज)।

भंस अक [भ्रंश्] १ नीचे गिरना। २ नष्ट होना। ३ स्खलित होना। भंसइ (हे ४, १७७)।

भंस पुं [भ्रंश] १ स्खलना। २ विनाश (सुपा ११३; सुर ४, २३०), 'संपाडइ संपयाभंसं' (कुप्र ४१)।

भंसग वि [भ्रंशक] विनाशक (वव १)।

भंसण न [भ्रंशन] ऊपर देखो; 'को णु उवाओ जिणधम्म-भंसणे होज्ज एईए' (सुपा ११३; सुर ४, १५)।

भंसणा स्त्री [भ्रंशना] ऊपर देखो (पण्ह २, ४ श्रावक ६५)।

भक्ख सक [भक्षय्] भक्षण करना, खाना। भक्खेइ (महा)। कर्म. भक्खिज्जइ (कुमा)। वकृ. भक्खंत (सं १०२)। हेकृ. भक्खिउं (महा)। कृ. **भक्ख**, **भक्खेय**, **भक्खणिज्ज**

(पउम ८४, ४; सुपा ३७०; णाया १, १०; सुर १४, ३४; श्रा २७)।

भक्ख पुं [भक्ष] भक्षण, भोजन; 'भो कीर खीरसक्करदक्खाभक्खं करहि ताव' (सुपा २६७)।

भक्ख देखो भक्ष = भक्षय्।

भक्ख पुंन [भक्ष्य] खण्ड-खाद्य, चीनी का बना हुआ खाद्य द्रव्य, मिठाई (सुज्ज २० टी)।

भक्खग वि [भक्षक] भक्षण करनेवाला (कुप्र २६)।

भक्खण न [भक्षण] १ भोजन (पराण २८)। २ वि. खानेवाला, 'सव्वभक्खणो' (श्रा २८)।

भक्खणया स्त्री [भक्षणा] भक्षण, भोजन (उवा)।

भक्खर पुं [भास्कर] १ सूर्य, रवि (उत्त २३, ७८; लहुअ १०)। २ अग्नि, वह्नि। ३ अर्क वृक्ष (चंड)।

भक्खराभ न [भास्कराभ] १ गोत्र-विशेष, जो गौतम गोत्र की शाखा है। २ पुंस्त्री. उस गोत्र में उत्पन्न (ठा ७—पत्र ३९०)।

भक्खावण न [भक्षण] खिलाना (उप १५० टी)।

भक्खि वि [भक्षिन्] खानेवाला (औप)।

भक्खिय वि [भक्षित] खाया हुआ (भवि)।

भक्खेय देखो भक्ख = भक्षय्।

भग पुंन [भग] १ ऐश्वर्य। २ रूप। ३ श्री। ४ यश, कीर्त्ति। ५ धर्म। ६ प्रयत्न; 'इस्सरियरूवसिरिजसधम्मपयत्ता मया भगाभिक्खा' (विसे १०४८; चेइय २८८)। ७ सूर्य, रवि। ८ माहात्म्य। ९ वैराग्य। १० मुक्ति, मोक्ष। ११ वीर्य। १२ इच्छा (कप्प— टी)। १३ ज्ञान (प्रामा)। १४ पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र (अणु)। १५ स्त्री. योनि, उत्पत्ति-स्थान (पराह १, ४—पत्र ६८; सुज्ज १०, ८)। १६ देव-विशेष, पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र का अधिष्ठाता देव, ज्योतिष्क देव-विशेष (ठा २, ३; सुज्ज १०, १२)। १७ गुदा और अण्ड-कोश के बीच का स्थान (बृह ३)। °दत्त पुं [°दत्त] नृप-विशेष (हे ४, २९९)। °व देखो °वंत (भग, महा)। °वई स्त्री [°वती] १ ऐश्वर्यादि-सम्पन्ना, पूज्या (पडि)। २ भगवती-सूत्र, पाँचवाँ जैन अंग-ग्रन्थ (पंच ५, १२५)। °वंत वि [°वत्] ऐश्वर्यादि-गुण-सम्पन्न। २ पुं. परमेश्वर, परमात्मा (कप्प; विसे १०४८; प्रामा)।

भगंदर पुं [भगन्दर] रोग-विशेष—गुदा के भीतरी भाग में होनेवाला एक प्रकार का फोड़ा (णाया १, १३; विपा १, १)।

भगंदरि वि [भगन्दरिन्] भगन्दर रोगवाला (श्रा १६; संबोध ४३)।

भगंदरिअ वि [भगन्दरिक] ऊपर देखो (विपा १, ७)।

भगंदल देखो भगंदर (राज)।

भगिणी देखो बहिणी (णाया १, ८; कप्प; कुप्र २३६; महा)।

भगिरहि } पुं [भगीरथि] सगर चक्रवर्ती
भगीरहि } का एक पुत्र, भगीरथ (पउम ५, १७६; २१५)।

भग्ग वि [भग्न] १ खण्डित, भाँगा हुआ (सुर २, १०२; दं ४६; उवा)। २ पराजित। ३ पलायित, भागा हुआ; 'जइ भग्गा पारक्कडा' (हे ४, ३७९; ३५४; महा, वव २)। °इ पुं [°जित्] क्षत्रिय परिव्राजक-विशेष (औप)।

भग्ग वि [दे] लिप्त, पोता हुआ (दे ६, ९९)।

भग्ग न [भाग्य] नसीब, दैव (सुर १३, १०५)।

भग्गव पुं [भार्गव] १ ग्रह-विशेष, शुक्र ग्रह (पउम १७, १०८)। २ ऋषि-विशेष (समु १८१)।

भग्गवेस न [भार्गवेश] गोत्र-विशेष (सुज्ज १०, १६ टी; इक)।

भग्गिअ (अप)। देखो भग्ग = भग्न (पिंग)।

भच्च पुं [दे] भागिनेय, भानजा (षड्)।

भच्छिअ वि [भर्त्सित] तिरस्कृत (दे १, ८०; कुमा ३, ८६)।

भज देखो भय = भज्। वकृ. भजंत, भजेंत, भजमाण, भजेमाण (षड्)।

भज्ज सक [भ्रस्ज्] पकाना, भुनना। भज्जंति, भज्जेंति (सूअनि ८१; विपा १, ३)। वकृ. भज्जंत, भज्जेंत (पिंड ५७४; विपा १, ३)।

भज्ज देखो भंज (आचा २, १, १, २)।

भज्ज देखो भय = भज्।

भज्जंत देखो भंज।

भज्जण } न [भ्रज्जन] १ भुनन, भुनना
भज्जणय } (पराह १, १; अनु ५)। २ भुनने का पात्र (सूअनि ८१; विपा १, ३)।

भज्जमाण देखो भंज।

भज्जा स्त्री [भार्या] पत्नी, स्त्री (कुमा; प्रासू ११६)।

भज्जि स्त्री [भर्जिका] देखो भज्जिआ।

भज्जिअ देखो भग्ग = भग्न; 'तरुणियं वा छिवाडि अभिक्कंतभज्जियं पेहाए' (आचा २, १, १, २)।

भज्जिअ वि [भृष्ट, भर्जित] भुना हुआ, पकाया हुआ (गा ५५७; आचा २, १, १, ३; विपा १, २, उवा)।

भज्जिआ स्त्री [भर्जिका] १ भाजी, शाक-भेद, पत्राकार तरकारी (पव २५९)। २ पथ्यदन, मार्ग-भोजन (कल्पभाष्य गा० ३६१८)।

भज्जिम वि [भ्रज्जिम] भुनने योग्य (आचा २, ४, २, १५)।

भज्जिर वि [भङ्क्तृ] भाँगनेवाला, 'फारफल-भारभज्जिरसाहासयसंकुलो महासाही' (धर्मवि ५५; सण)।

भज्जेंत देखो भज्ज = भ्रस्ज्।

भट्ट पुं [भट्ट] १ मनुष्य-जाति-विशेष, स्तुति-पाठक की एक जाति, भाट; 'जयजयसद्दक-रंतसुभट्ट'' (सिरि १५५; सुपा २७१; उप पृ १२०)। २ वेदाभिज्ञ पण्डित, ब्राह्मण, विप्र (उप १०३१ टी)। ३ स्वामित्व, मालिकपन, मालकियत (प्रति ७)।

भट्टारग } पुं [भट्टारक] १ पूज्य, पूजनीय
भट्टारय } (आव ३; महा)। २ नाटक की भाषा में राजा (प्राकृ ९५)।

भट्टि देखो भत्तु = भर्तृ (ठा ३, १; सम ८६; कप्प; स १४४; प्रति ३; स्वप्न १५)।

भट्टिअ पुं [दे] विष्णु, श्रीकृष्ण (हे २, १७४; दे ६, १००)।

भट्टिणी स्त्री [भर्त्री] स्वामिनी, मालिकिन (स १३४)।

भट्टिणी स्त्री [भट्टिनी] नाटक की भाषा में वह रानी जिसका अभिषेक न किया गया हो (प्रति ७)।

भट्टु (शौ) देखो भट्टारय (प्राकृ ९५)।

भट्ठ वि [भ्रष्ट] १ नीचे गिरा हुआ। २ च्युत, स्खलित (महा; द्र ४३)। ३ नष्ट (सुर ४, २१५; णाया १, ९)।

भट्ठ पुंन [भ्राष्ट्र] भर्जन-पात्र, भुनने का बर्तन (दे ५, २०); 'भट्ठट्ठियचणगो विव सयणीए कीस तडफडसि' (सुर ३, १४८)।

भट्ठि } स्त्री [दे] धूलि-रहित मार्ग (ओघ
भट्ठी } २३; २४ टी; भग ७, ६ टी—पत्र ३०७)।

भड पुं [भट] १ योद्धा, लड़ाका (कुमा)। शूर, वीर (से ३, ९; णाया १, १)। ३ म्लेच्छों की एक जाति। ४ वर्ण-संकर जाति-विशेष, एक नीच मनुष्य-जाति। ५ राक्षस (हे १, १९५)। °खइआ स्त्री [°खादिता] दीक्षा-विशेष (ठा ४, ४)।

भडक्क पुंस्त्री [दे] आडम्बर, तड़क-भड़क, टीम-टाम, ठाठमाठ (सट्ठि ४४ टी)। स्त्री. °क्का (उव)।

भडग पुं [भटक] १ अनार्य देश-विशेष। २ उस देश में रहनेवाली एक म्लेच्छ-जाति (पण्ह १, १—पत्र १४; इक)। देखो भड।

भडारय (अप) देखो भट्टारय (भवि)।

भडित्त न [भटित्र] शूल-पक्व मांसादि, कबाब (स २६२; कुप्र ४३२)।

भडिल वि [दे] संबोधन-सूचक शब्द (संक्षि ४७)।

भण सक [भण्] कहना, बोलना, प्रतिपादन करना। भणइ, भणेइ (हे ४, २३९; कुमा)। कर्म. भण्णइ, भण्णए, भणिज्जई (पि ५४८, षड्; पिंग)। भूका. भणीअ (कुमा)। भवि. भणिहि, भणिस्सं (कुमा)। वकृ. भणत, भणमाण, भणेमाण (कुमा; महा; सुर १०, ११४)। कवकृ. भण्णंत, भणिज्जंत, भणिज्जमाण, भणीअंत, भण्णमाण (कुमा; पि ५४८; गा १४५)। संकृ. भणिअ, भणिउं, भणिऊण (कुमा; पि ३४९)। हेकृ. भणिउ°, भणिउं (पउम ९४, १३; पि ५७६)। कृ. भणिअव्व, भणेयव्व (अजि ३८; सुपा ६०८)। कवकृ. भन्नंत, भन्नमाण (सुर २, १९१; उप पृ २३; उप १०३१ टी)।

भणग वि [भण, °क] प्रतिपादन करनेवाला (णंदि)।

भणण न [भणन] कथन, उक्ति (उप ५५३; सुपा २८३; संबोध ३)।

भणाविअ वि [भाणित] कहलाया हुआ (सुपा ३५८)।

भणिअ वि [भणित] कथित (भग)।

भणिइ स्त्री [भणिति] उक्ति, वचन (सुर ९, १४५; सुपा २१४; धर्मवि ५८)।

भणिर वि [भणितृ] कहनेवाला, वक्ता (गा २९७; कुमा; सुर ११, २४४; श्रा १६)। स्त्री. °री (कुमा)।

भणेमाण देखो भण।

भण्ण सक [भण्] कहना, बोलना। भण्णइ (धात्वा १४७)।

भण्णमाण देखो भण = भण्।

भत्त पुंन [भक्त] १ आहार, भोजन। २ अन्न, नाज (विपा १, १; ठा २, ४; महा)। ३ ओदन, भात (प्रामा)। ४ लगातार सात दिनों का उपवास (संबोध ५८)। ५ वि. भक्ति-युक्त, भक्तिमान्; 'सा सुलसा बालप्पभिति चेव हरिणेगमेसीभत्तया यावि होत्था' (अंत ७; उप पृ ६६; महा; पिंग)। °कहा स्त्री [°कथा] आहार-कथा, भोजन-संबन्धी वार्त्ता (ठा ४, ४)। °च्छंद, °छंद पु [°च्छन्द] रोग-विशेष, भोजन की अरुचि; 'कच्छू जरो खासो सासो भत्तच्छंदो अक्खिदुक्खं' (महा; महा—टि)। °पच्चक्खाण न [°प्रत्याख्यान] आहार-त्याग-रूप अनशन, अनशन का एक भेद, मरण का एक प्रकार (ठा २, ४—पत्र ९४; औप ३०, २)। °परिण्णा; °परिन्ना स्त्री [°परिज्ञा] १ वही पूर्वोक्त अर्थ (भत्त १६९, १०; पव १५७)। २ ग्रंथ-विशेष (भत्त १)। °पाणय न [°पानक] आहार-पानी, खान-पान (विपा १, १)। °वेला स्त्री [°वेला] भोजन-समय (विपा १, १)।

भत्त वि [भूत] उत्पन्न, संजात (हे ४, ६०)।

भत्ति देखो भत्तु (पिंग)।

भत्ति स्त्री [भक्ति] १ सेवा, विनय, आदर (णाया १, ८—पत्र १२२; उव; औप; प्रासू २९)। २ रचना (विसे १६३१; औप; सुपा ५२)। ३ एकाग्र-वृत्ति-विशेष (आव २)। ४ कल्पना, उपचार (धर्मसं ७४२)। ५ प्रकार, भेद (ठा ९)। ६ विच्छित्ति-विशेष (औप)। ७ अनुराग (धर्म १)। ८ विभाग। ९ अवयव। १० श्रद्धा (हे २, १५९)। °मंत, °वंत वि [°मत्] भक्तिवाला, भक्त (पउम ९२, २८; उव; सुपा १९०, हे २, १५९; भवि)।

भत्तिज्ज पुं [भ्रातृव्य] भतीजा, भाई का पुत्र (सिरि ७१६; धर्मवि १२७)।

भत्ती नीचे देखो।

भत्तु पुं [भर्तृ] १ स्वामी, पति, भतार (णाया १, १६—पत्र २०७); 'णववहू उवरतभत्तुया' (णाया १, ९; पाअ; स्वप्न ५६)। २ अधिपति, अध्यक्ष। ३ राजा, नरेश। ४ वि. पोषक, पोषण करनेवाला। ५ धारण करनेवाला (हे ३, ४४; ४५)। स्त्री—भत्ती (पिंग)।

भत्तोस न [भक्तोष] १ भुना हुआ अन्न (पंचा ५, २९; प्रभा १५)। २ सुखादिका, खाद्य-विशेष (पव ३८)।

भत्थ पुंस्त्री [दे] भाथा, तूणीर, तरकस; 'अह आरोवियचावो पिट्ठे दढबन्धभत्थओ अभओ' (धर्मवि १४६)।

भत्था स्त्री [भस्त्रा] चमड़े की धौंकनी, भाथी (उप ३२० टी; धर्मवि १३०)।

भत्थिअ वि [भर्त्सित] तिरस्कृत (सम्मत्त १८९)।

भत्थी स्त्री [भस्त्री] भाथी, चमड़े की धौंकनी; 'भत्थि व्व अनिलपुन्ना वियसियमुदरं' (कुप्र २९६)।

भद सक [भद्] १ सुख करना। २ कल्याण करना (विसे ३४३९)। वकृ. भदंत; नीचे देखो।

भदंत वि [भदन्त] १ कल्याण-कारक। २ सुख-कारक। ३ पूज्य, पूजनीय (विसे ३४३९; ३४७४)।

भद्द न [दे] आमलक, आँवला-फल-विशेष (दे ६, १००)।

भद्द } न [भद्र] १ मंगल, कल्याण; 'भद्दं
भद्दअ } मिच्छादंसणसमूहमइअस्स अमयसारस्स जिणवयणस्स भगवओ' (सम्मत्त

१६७; प्रासू १६)। २ सुवर्ण, सोना। ३ मुस्तक, मोथा, नागरमोथा (हे २, ८०)। ४ दो उपवास (संबोध ५८)। ५ देव-विमान विशेष (सम ३२)। ६ शरासन, मूठ (णाया १, १ टी—पत्र ४३)। ७ भद्रासन, ग्रासन-विशेष (पाग्रम)। ८ वि. साधु, सरल, भला, सज्जन। ९ उत्तम, श्रेष्ठ (भग; प्रासू १६; सुर ३, ४)। १० सुख-जनक, कल्याण-कारक (णाया १, १)। ११ पुं. हाथी की एक उत्तम जाति (ठा ४, २—पत्र २०८; महा)। १२ भारतवर्ष का तीसरा भावी बलदेव (सम १५४)। १३ अंगविद्या का जानकार द्वितीय रुद्र पुरुष (विचार ४७३)। १४ तिथि-विशेष—द्वितीया, सप्तमी और द्वादशी तिथि (सुज्ज १०, १५)। १५ छन्द-विशेष (पिंग)। १६ स्वनाम-ख्यात एक जैन आचार्य (महानि ६; कप्प)। १७ व्यक्ति-वाचक नामक (निर १, ३; आव १; धम्म)। १८ भारतवर्ष का चौबीसवाँ भावी जिनदेव (पव ७)। °गुत्त पुं [°गुप्त] स्वनाम-प्रसिद्ध एक जैनाचार्य (णंदि; सार्ध २३)। °गुत्तिय न [°गुप्तिक] एक जैन मुनि-कुल (कप्प)। °जस पुं [°यशस्] १ भगवान् पार्श्वनाथ का एक गणधर (ठा ८—पत्र ४२९)। २ एक जैन मुनि (कप्प)। °जसिय न [°यशस्क] एक जैन मुनि-कुल (कप्प)। °णंदि पुं [°नन्दिन्] स्वनाम-ख्यात एक राज-कुमार (विपा २, २)। °बाहु पुं [°बाहु] स्वनाम-प्रसिद्ध प्राचीन जैनाचार्य और ग्रन्थकार (कप्प, णंदि)। °मुत्था स्त्री [°मुस्ता] वनस्पति-विशेष, भद्रमोथा (पण्ण १)। °वया स्त्री [°पदा] नक्षत्र-विशेष (सुर १०, २२४)। °साल न [°शाल] मेरु पर्वत का एक वन (ठा २, ३, इक)। °सेण पुं [°सेन] १ धरणेन्द्र के पदाति-सैन्य का अधिपति देव (ठा ५, १; इक)। २ एक श्रेष्ठी का नाम (आव ४)। °स्स न [°श्व] नगर-विशेष (इक)। °ासण न [°ासन] आसन-विशेष, सिंहासन (णाया १, १; पण्ह १, ४; पाग्र; ग्रौप)।

भद्दारु न [भद्रदारु] देवदारु, देवदार की लकड़ी (उत्तनि ३)।

भद्दव° } पुं [भाद्रपद] मास-विशेष, भादों
भद्दवय } का महीना (वज्जा ८२; सुर ३, १३८)।

भद्दसिरी स्त्री [दे] श्रीखण्ड, चन्दन (दे ६, १०२)।

भद्दा स्त्री [भद्रा] १ रावण की एक पत्नी (पउम ७४, ९)। २ प्रथम बलदेव की माता (सम १५२)। ३ तीसरे चक्रवर्ती की जननी (सम १५२)। ४ द्वितीय चक्रवर्ती की स्त्री (सम १५२)। ५ मेरु के पूर्व रुचक पर्वत पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८)। ६ एक प्रतिमा, व्रत-विशेष (ठा २, ३—पत्र ६४)। ७ राजा श्रेणिक की एक पत्नी (अंत २५)। ८ तिथि-विशेष—द्वितीया, सप्तमी और द्वादशी तिथि (संबोध ५४)। ९ छन्द-विशेष (पिंग)। १० कामदेव श्रावक की भार्या का नाम। ११ चुलनीपिता नामक उपासक की माता का नाम (उवा)। १२ एक सार्थवाहक स्त्री का नाम (विपा १, ४)। १३ गोशालक की माता का नाम (भग १५)। १४ अहिंसा, दया (पण्ह २, १)। १५ एक वापी (दीव)। १६ एक नगरी (आचू १)। १७ अनेक स्त्रियों का नाम (णाया १, ८; १६, आवम)।

भद्दाकरि वि [दे] प्रलम्ब, अति लम्बा (दे ६, १०२)।

भद्दिआ स्त्री [भद्रिका, भद्रा] १ शोभना, सुन्दर (स्त्री) (ओघभा १७)। २ नगरी-विशेष (कप्प)।

भद्दिज्जिया स्त्री [भद्रीया, भद्रीयिका] एक जैन मुनि-शाखा (कप्प)।

भद्दिलपुर न [भद्दिलपुर] भारतवर्ष का एक प्राचीन नगर (अंत ४; कुप्र ८४; इक)।

भद्दुत्तरवडिंसग न [भद्रोत्तरावतंसक] एक देव-विमान (सम ३२)।

भद्दुत्तर° } स्त्री [भद्रोत्तरा] प्रतिमा-
भद्दोत्तर° } विशेष, प्रतिज्ञा का एक भेद,
भद्दोत्तरा } एक तरह का व्रत (ग्रौप; अंत ३०; पव २७१)।

भद्र देखो **भद्द** (हे २, ८०, प्राकृ १७)।

भन्नंत } देखो भण=भण्।
भन्नमाण }

भप्प देखो **भस्स** = भस्मन् (हे २,५१; कुमा)।

भम सक [भ्रम्] भ्रमण करना, घूमना। भमइ (हे ४, १६१; प्राकृ ६९)। वकृ. **भमंत, भममाण** (गा २०२; ३८७; कप्प; ग्रौप)। संकृ. **भमिआ, भमिऊण** (षड्, गा ७४६)। कृ. **भमिअव्व** (सुपा ४३८)।

भम पुं [भ्रम] १ भ्रमण (कुप्र ४)। २ भ्रान्ति, मोह, मिथ्या-ज्ञान (से ३, ४८; कुमा)।

भमग न [भ्रमक] लगातार एकतीस दिनों का उपवास (संबोध ५८)।

भमड देखो **भम**=भ्रम्; 'भवम्मि भमडइ एगुच्चिय' (विवे १०८; हे ४, १६१)।

भमडिअ वि [भ्रान्त] १ घूमा हुआ, फिरा हुआ (स ४७३)। २ भ्रान्ति-युक्त (कुमा)। देखो **भमिअ**।

भमण न [भ्रमण] घूमना, चकराना। (दे ४६; कप्प)।

भममुह पुं [दे] आवर्त्त (दे, १०१)।

भमया स्त्री [भ्रू] भौंह, नेत्र के ऊपर की केश-पंक्ति (हे २, १६७; कुमा)।

भमर पुं [भ्रमर] १ मधुकर, भौंरा (हे १, २४४; कुमा; जी १८; प्रासू ११३)। २ पुं. छन्द-विशेष (पिंग)। ३ विट, रंडीबाज (कप्पू)। °रुअ पुं [°रुच] अनार्य देश-विशेष (पव २७४)। °ावलि स्त्री [°ावलि] १ छन्द-विशेष (पिंग)। २ भ्रमर-पंक्ति (राय)।

भमरटेंटा स्त्री [दे] १ भ्रमर की तरह अक्षि-गोलकवाली। २ भ्रमर की तरह अस्थिर आचरणवाली। ३ शुष्क व्रण के दागवाली (कप्पू)।

भमरिया स्त्री [भ्रमरिका] जन्तु-विशेष, बर्रे (जी १८)। देखो **भमलिया**।

भमरी स्त्री [भ्रमरी] स्त्री-भ्रमर, भौंरी (दे)। नीचे देखो।

भमलिया } स्त्री [भ्रमरीका, °री] १ पित्त
भमली } के प्रकोप से होनेवाला रोग-विशेष, चक्कर; 'भमली पित्तुदयाओ भमंतमहिदंसणं' (चेइय ४३५; पडि)। २ वाद्य-विशेष (राय)।

भमस पुं [दे] तृण-विशेष, ईख की तरह का एक प्रकार का घास (दे ६, १०१)।

भमाइअ वि [भ्रमित] घुमाया हुआ, फिराया हुआ (से ३, ६१)।

भमाड सक [भ्रमय्] घुमाना, फिराना। भमाडेइ (हे ४, ३०), भमाडेसु (सुपा ११४)। वकृ. भमाडेंत (पउम १०६, ११)।

भमाड देखो भम = भ्रम्। भमाडइ (हे ४, १६१; भवि)।

भमाड पुं [भ्रम] भ्रमण, घूमना, चक्कर (ओघभा २६ टी; ८३ टी)।

भमाडण न [भ्रमण] घुमाना (उप पृ २७८)।

भमाडिअ देखो भमडिअ (कुमा)।

भमाडिअ वि [भ्रमित] घुमाया हुआ, फिराया हुआ (पउम १६, २५)।

भमाव देखो भमाड = भ्रमय्। भमावइ, भमावेइ (पि ५५३; हे ४, ३०)।

भमास [दे] देखो भमस (दे ६, १०१; पाअ)।

भमि स्त्री [भ्रमि] १ आवर्त्त, पानी का चक्राकार भ्रमण (अच्चु ६३)। २ चित्त-भ्रम करने की शक्ति (विसे १६५३)। ३ रोग-विशेष, चक्कर, 'भमिपरिभमियसरीरो' (हम्मीर २८)।

भमिअ देखो भमडिअ (जी ४८; भवि)। ३ न. भ्रमण; 'भमिअभमणिक्कंतदेहलीदेसं' (गा ५२५)।

भमिअ देखो भमाइअ (पाअ)।

भमिअव्व } **भमिआ** } देखो भम = भ्रम्।

भमिर वि [भ्रमितृ] भ्रमण करनेवाला (हे २, १४५; सुर १, ५५; ३, १८)।

भमुह न [भ्रू] नीचे देखो; 'दीहाइं भमुहाइं' (आचा २, १३, १७)।

भमुहा स्त्री [भ्रू] भौं, आँख के ऊपर की रोम-राजी (पउम ३७, ५०; औप; आचा; पाअ)।

भम्म } **भम्मड** } देखो भम = भ्रम्। भम्मइ (प्राकृ ६६), भम्मसु (गा ४१५; ४४७)। भम्मडइ (हे ४, १६१)। भम्मडेइ (कुमा)।

भम्मर (अप) देखो भमर (पिंग)।

भय देखो भद। वकृ. देखो भयंत = भदंत।

भय अक [भज्] १ सेवा करना। २ विकल्प से करना। ३ विभाग करना। ४ ग्रहण करना। भयइ, भअइ (सम्म १२४; कुमा), भए, भएज्जा (बृह १), भयंति (विसे १६६०); 'तम्हा भय जीव वेरग्गं' (श्रु ६१)। वकृ. **भयंत, भयमाण** (विसे ३४४६; सूअ १, २, २, १७)। कवकृ. 'सव्वत्तुभद्दमाणसुहेहिं' (कप्प)। संकृ. **भइत्ता** (ठा ६)। कृ. **भइअ, भइअव्व, भएयव्व, भज्ज, भयणिज्ज** (विसे ६१८; २०४६; उत्त ३६, २३, २४; २५; कम्म ५, ११; विसे ६१५; उप ६०४; विसे ३२०२; ७४८; १८१; जीवम १४५; पंच ५, ८; विसे ६१६; जीवस १४७)।

भय न [भय] डर, त्रास, भीति (आचा; णाया १, १; गा १०२; कुमा; प्रासू १६; १७३)। °**अर** वि [°कर] भय-जनक (से ५, ४४; ११, ७५)। °**जणणी** स्त्री [°जननी] १ त्रास उत्पन्न करनेवाली (बृह १)। २ विद्या-विशेष (पउम ७, १४१)। °**वाह** पुं [°वाह] राक्षस-वंश का एक राजा, एक लंका-पति (पउम ५, २६३)।

भय देखो भव (उव; कुमा; सण; सुपा ४२०; गउड)।

भय देखो भग (औप; पिंग)।

भयंकर वि [भयंकर] १ भय-जनक, भीषण (हे ४, ३३१, सण; भवि)। २ प्राणि-वध, हिंसा (पण्ह १, १)।

भयंत देखो भय = भज्।

भयंत देखो भंत = भगवत् (सूअ १, १६, ६)।

भयंत देखो भदंत (ओघ ४८; उत्त २०, ११; औप)।

भयंत देखो भंत = भयान्त (विसे ३४४६; ३४५३; ३३५४)।

भयंत देखो भंत = भवान्त (विसे ३४५४; औप)।

भयंत वि [भयत्र] भय से रक्षा करनेवाला (औप; सूअ १, १६, ६)।

भयंतु वि [भयत्रातृ] भय से रक्षा करनेवाला 'धम्ममाइक्खणे भयंतारो' (सूअ १, ४, १, २५)।

भयंतु वि [भक्तृ] सेवक, सेवा करनेवाला (औप)।

भयक } **भयग** } पुं [भृतक] १ नौकर, कर्मकर (ठा ४, १; २)। २ त्रि. पोषित (पण्ह १, २; णाया १, २)।

भयण न [भजन] १ सेवा (राज)। २ विभाग (सम्म ११३)। ३ पुं. लोभ (सूअ १, ६, ११)।

भयण देखो भवण (नाट—चैत ४०)।

भयणा स्त्री [भजना] १ सेवा (निचू १)। २ विकल्प (भग; सम्म १२४; दं ३१; उव)।

भयप्पइ } **भयप्फइ** } देखो बहस्सइ (हे २, १३७; षड्)।

भयवग्गाम पुं [दे] मोढेरक, गुजरात का एक गाँव (दे ६, १०२)।

भयाणय वि [भयानक] भयंकर, भय-जनक (स १२१)।

भयालि पुं [भयालि] भारतवर्ष के भावी अठारहवें जिनदेव का पूर्व-भवीय नाम (सम १५४)। देखो सयालि।

भयालु वि [भीरु] भीरु, डरपोक (दे ६, १०७; नाट)।

भयावण (अप) देखो भयाणय (भवि)।

भयावह वि [भयावह] भय-जनक, भय-कारक (सूअ १, १३, २१)।

भर सक [भृ] १ भरना। २ धारण करना। ३ पोषण करना। भरइ (भवि; पिंग), भरसु (कम्म ४, ७६)। वकृ. **भरंत** (भवि)। कवकृ. **भरंत, भरेंत, भरिज्जंत** (से १, ५८; ४, ८; १, ३७)। संकृ. **भरेऊणं** (आक ६)। कृ **भरणिज्ज, भरणीअ, भत्तव्व, भरेअव्व** (प्राप्र; नाट राज; से ६, ३)।

भर सक [स्मृ] स्मरण करना, याद करना। भरइ (हे ४, ७४; प्राप्र)। वकृ. **भरंत** (गा ३८१; भवि)। संकृ. **भरिअ, भरिऊणं** (कुमा)। प्रयो, वकृ. **भरावंत** (कुमा)।

भर पुंन [भर] १ समूह, प्रकर, निकर; जइअव्वं तह एगागिणावि भीमारिदुट्ठभरं'

(प्रवि १२; सुपा ७; पाग्र)। २ भार, बोझ (से ३, ५; प्रासू २६; सा ६)। ३ गुरुतर कार्य; 'भरणित्थरणसमत्था' (विसे १६६ टी; ठा ४, ४ टी—पत्र २८३। ४ प्रचुरता, ग्रतिशय। ५ कर—राजदेय भाग की प्रचुरता, कर की गुरुता; 'करेहि य भरेहि य' (विपा १, १)। ६ पूर्णता, सम्पूर्णता; 'इय चिंताए निद्दं ग्रलहंतो निसिभरम्मि नरनाहो' (कुप्र ६)। ७ मध्य भाग। ८ जमावट; 'भरमुवगए कोलापमोए; (स ५३०)।

भरअ देखो भरह (षड्)।

भरड पुं [भरट] व्रती-विशेष, एक प्रकार का बाबा; 'सिवभवणाहिगारिणा भरडएण' (सम्मत्त १४५)।

भरण न [स्मरण] स्मृति (गा २२२; ३७७)।

भरण न [भरण] १ भरना, पूरना (गउड)। २ पोषण (गा ५२७)। ३ शिल्प-विशेष, वस्त्र में बेल-बूटा ग्रादि ग्राकार की रचना; 'सीवणं तुन्नणं भरणं' (गच्छ ३, ७)।

भरणी स्त्री [भरणी] नक्षत्र-विशेष (सम ८; इक)।

भरध (शौ) देखो भरह (प्राकृ ८५)।

भरह पुं [भरत] १ भगवान् ग्रादिनाथ का ज्येष्ठ पुत्र ग्रौर प्रथम चक्रवर्ती राजा (सम ६०; कुमा; सुर २, १३३)। २ राजा रामचन्द्र का छोटा भाई (पउम २५, १४)। ३ नाट्य-शास्त्र का कर्त्ता एक मुनि (सिरि ५६)। ४ वर्ष-विशेष, भारत वर्ष; 'इहेव जंबुद्दीवे दीवे सत्त वासा पन्नत्ता, तं जहा—भरहे हेमवए हरिवासे महाविदेहे रम्मए एरण्णवए एरवए' (सम १२; जं १; पडि)। ५ भारतवर्ष का प्रथम भावी चक्रवर्ती (सम १५४)। ६ शबर। ७ तन्तुवाय। ८ नृप-विशेष, राजा दुष्यन्त का पुत्र। ९ भरत के वंशज राजा। १० नट (हे १, ११४; षड्)। ११ देव-विशेष (जं ३)। १२ कूट-विशेष, पर्वत-विशेष का शिखर (जं ४; ठा २, ३; ९)। °खित्त न [°क्षेत्र] भारतवर्ष (सण)। °वास न [°वर्ष] भारतवर्ष, ग्रार्यावर्त्त (पण्ह १, ४)। °सत्थ न [°शास्त्र] भरतमुनि-प्रणीत नाट्यशास्त्र (सिरि ५६)। °ाहिव पुं [°ाधिप] १ संपूर्ण भारतवर्ष का राजा, चक्रवर्ती। २ भरत चक्रवर्ती (सण)। °ाहिवइ पुं [°ाधिपति] वही ग्रर्थ (सण)।

भरहेसर पुं [भरतेश्वर] १ संपूर्ण भारतवर्ष का राजा, चक्रवर्ती। २ चक्रवर्ती भरत (कुमा २, १७; पडि)।

भरिअ वि [भृत, भरित] भरा हुग्रा, पूर्ण, व्याप्त (विपा १, ३; ग्रौप; धर्मवि १४४; काप्र १७४; हेका २७२; प्रासू १०)।

भरिअ वि [स्मृत] याद किया हुग्रा, 'भरिग्रं लुढिग्रं सुमरिग्रं' (पाग्र; कुमा; भवि)।

भरिडिलट्ट वि [दे. भृतोल्लुठित] भर कर खाली किया हुग्रा (दे ७, ८१; पाग्र)।

भरिम वि [भरिम] भर कर बनाया हुग्रा (ग्रणु)।

भरिया (ग्रप) देखो भारिया (कुमा)।

भरिली स्त्री [भरिली] चतुरिन्द्रिय जन्तु-विशेष (राज)।

भरु पुं [भरु] १ एक ग्रनार्य देश। २ एक ग्रनार्य मनुष्य-जाति (इक)।

भरुअच्छ पुं [भृगुकच्छ] गुजरात का एक प्रसिद्ध शहर जो ग्राजकल 'भड़ौच' के नाम से प्रसिद्ध है (काल; मुनि १०८९६; पडि)।

भरोच्छय न [दे] ताल का फल (दे ६, १०२)।

भल देखो भर = स्मृ। भलइ (हे ४, ७४)। प्रयो., वकृ. भलावंत (कुमा)।

भल सक [भल्] सम्हालना। भलिज्जासु (सुपा ५४६)। भवि. भलिस्सामि (काल)। कृ. भलेयव्व (ग्रोघ ३८६ टी)। प्रयो, संकृ. भलाविऊण (सिरि ३१२; ५६६)।

भलंत वि [दे] स्खलित होता, गिरता (दे ६, १०१)।

भलाविअ वि [भालित] सौंपा हुग्रा, सम्हालने के लिये दिया हुग्रा (श्रा १६)।

भलि पुंस्त्री [दे] कदाग्रह, हठ; 'ग्रसुलहमेच्छणए जाहं भलि ते नवि दूर गणंति' (हे ४, ३५३; चंड)।

भल्ल पुं [भल्ल] १ भालू, रीछ (पण्ह १, १)। २ पुंन. ग्रस्त्र-विशेष, भाला, बरछी (गा ५०४; ५८५; ५६४)।

भल्ल, भल्लय वि [भद्र] भला, उत्तम, श्रेष्ठ, ग्रच्छा (कुमा; हे ४, ३५१; भवि)। °त्तण, °प्पण न [°त्व] भलमनसी, भलाई (कुमा)।

भल्लय [भल्लक] देखो भल्ल = भल्ल (उप पृ ३०; सण ग्रावम)।

भल्लअय, भल्लातक, भल्लाय पुं [भल्लात, °क] १ वृक्ष-विशेष, भिलावा का पेड़ (पण्ण १; दे १, २३)। २ न. भिलावा का फल (दे १, २३; ५, २६; पाग्र)।

भल्लि स्त्री [भल्लि] देखो भल्ली (कुमा)।

भल्लिम पुंस्त्री [भद्रत्व] भलाई, भद्रता (सुपा १२३; कुप्र १०८)।

भल्ली स्त्री [भल्ली] भाला, बरछी; ग्रस्त्र-विशेष (सुर २, २८; कुप्र २७४; सुपा ५३०)।

भल्लु पुंस्त्री [दे] भालू, रीछ (दे ६, ६६)।

भल्लुंकी स्त्री [दे] शिवा, शृगाली (दे ६, १०१; सण); 'भल्लुंकी रुट्टिया विकट्टंती' (संथा ६६)।

भल्लोड पुंन [दे] बाण का पुंख, शर का ग्रग्र भाग, गुजराती में 'भालोडु'; 'कन्नायड्ढिग्रयवणुहपट्ठदीसंतभल्लोडा' (सुर २, ७)।

भव ग्रक [भू] १ होना। २ सक. प्राप्त करना। भवइ, भवए (कप्प; महा), भए (भग; ठा ३, १)। भूका. भविंसु (भग)। भवि. भविस्सइ, भविस्सं (कप्प; भग; पि ५२१)। वकृ. भवंत (गउड ५८८), 'भूयभाविभा (?भ)वमाण भाविहो' (कुप्र ४३७)। संकृ. भविअ, भवित्ता, भवित्ताणं (ग्रभि ५७; कप्प; भग; पि ५८३), भइ (ग्रप), (पिंग)। कृ. भवियव्व (णाया १, १; सुर ४, २०७; उव; भग, सुपा १६४)। देखो भव्व।

भव पुं [भव] १ संसार (ठा ३, १; उवा; भग; विपा २, १; कुमा; जी ४१)। २ संसार का कारण (सम्म १)। ३ जन्म, उत्पत्ति (ठा ४, ३)। ४ नरकादि योनि, जन्म-स्थान (ग्राचा; ठा २, ३; ४, ३)। ५ महा-देव, शिव (पाग्र)। ६ वि. होनेवाला, भावी (ठा १)। ७ उत्पन्न; 'कणयपुरं नामेणं तत्थ भवो हं महाभाग !' (सुपा ५८४)। ८ न. देव-विमान-विशेष (सम २)। °जिण

वि [°जिन] रागादि को जीतनेवाला; 'सासणं जिणाणं भवजिणाणं' (सम्म १)। °ट्ठिइ स्त्री [°स्थिति] १ देव आदि योनि में उत्पत्ति की काल-मर्यादा (ठा २, ३)। २ संसार में अवस्थान (पंचा १)। °त्थ वि [°स्थ] संसार में स्थित (ठा २, १)। °त्थकेवलि वि [°स्थकेवलिन्] जीवन्मुक्त (सम्म ८९)। °धारणिज्ज न [°धारणीय] जीवन-पर्यन्त संसार में धारण करने योग्य शरीर (भग; इक)। °पच्चइय वि [°प्रत्ययिक] १ नरकादि-योनि-हेतुक। २ न. अवधिज्ञान का एक भेद (ठा २, १; सम १४५)। °भूइ पुं [°भूति] संस्कृत का एक प्रसिद्ध कवि (गउड)। °सिद्धिय, °सिद्धीय वि [°सिद्धिक] उसी जन्म में या बाद के किसी जन्म में मुक्त होनेवाला, मुक्ति-गामी (सम २; पराण १८; भग; विसे १२३०; जीवस ७५; श्रावक ७३; ठा १; विसे १२२६)। °ाभिणंदि, °ाभिनंदि, °ाहिनंदि वि [°ाभिनन्दिन्] संसार को पसंद करनेवाला, संसार को अच्छा माननेवाला (राज; संबोध ८; ५३)। °ोवग्गाहि न [°ोपग्राहिन्] कर्म-विशेष (धर्मसं १२९१)।

भव देखो भव्व (कम्म ४, ६)।

भव, भवंत पुं [भवत्] तुम, आप (कुमा; हे २, १७४)।

भवंत देखो भव = भू।

भवँ (अप) भम = भ्रम्। भवँइ (सण)। वकृ. भवँत (भवि)। संकृ. भविँतु (सण)।

भवँण (अप) देखो भमण (भवि)।

भमण न [भवन] १ उत्पत्ति, जन्म (धर्मसं १७२)। २ गृह, मकान, वसति (पात्र; कुमा)। ३ असुरकुमार आदि देवों का विमान (पराण २)। ४ सत्ता (विसे ६९)। °वइ पुं [°पति] एक देव-जाति (भग)। °वासि पुं [°वासिन्] वही पूर्वोक्त अर्थ (ठा १०, औप)। °वासिणी स्त्री [°वासिनी] देवी विशेष (पराण १७; महा ६८, १२)। °ाहिव पुं [°ाधिप] एक देव-जाति (सुपा ६२०)।

भवमाण देखो भव = भू।

भवर देखो भमर (चंड)।

भवाणी स्त्री [भवानी] शिव-पत्नी, पार्वती (पाम; समु १५७)। °कंत पुं [°कान्त] महादेव (पिंग)।

भवारिस वि [भवादृश] तुम्हारे जैसा, आपके तुल्य (हे १, १४२; चंड; सुपा २७३)।

भवि पुं [भविन्] भव्य जीव, मुक्ति-गामी प्राणी (भवि)।

भविअ देखो भव = भू।

भविअ वि [भव्य] १ सुन्दर (कुमा)। २ श्रेष्ठ, उत्तम (संबोध १)। ३ मुक्ति-योग्य, मुक्ति-गामी (पराण १; उव)। ४ भावी, होनेवाला (हे २, १०७; षड्)। देखो भव्व = भव्य।

भविअ वि [भविक] १ मुक्ति-योग्य, मुक्ति-गामी। २ संसारी, संसार में रहनेवाला (सुर ४, ८०)।

°भविअ वि [°भविक] भव-संबन्धी (सण)।

भवित्ती स्त्री [भवित्री] होनेवाली (पिंग)।

भवियव्व देखो भव = भू।

भवियव्वया स्त्री [भवितव्यता] नियति, अवश्यंभावी, होनी (महा)।

भविल वि [भविल] निष्ठुर (दश० अगस्त्य चू० पत्र० १६८, सूत्र० ३२६)।

भविस (अप) देखो भवीस। °त्त, °यत्त पुं [°दत्त] एक कथा-नायक (भवि)।

भविस्स पुं [भविष्य] १ भविष्य काल, आगामी समय (पउम ३५, ५६; पि ५६०)। २ वि. भविष्य काल में होनेवाला, भावी (गाया १, १६—पत्र २१४; पउम ३५, ५६; सुर १, १३५; कप्पू)।

भवीस (अप) ऊपर देखो (भवि)।

भव्व वि [भव्य] १ सुन्दर, 'सव्वं भव्वं करिस्सामि' (सुपा ३३९)। २ उचित, योग्य (विसे २८; ४४)। ३ श्रेष्ठ, उत्तम (वज्जा १८)। ४ होता, वर्तमान; 'एयं भूयं वा भव्वं वा भविस्सं वा' (गाया १, १६—पत्र २१४; कप्प; विसे १३४२)। ५ भावी, होनेवाला (विसे ५८; पंच २, ८)। ६ मुक्ति-योग्य, मुक्ति-गामी (विसे १८२२; ३; ४; ५; दं १)। °सिद्धीय देखो भव-सिद्धीय; 'पज्जत्तापज्जत्ता सुहुमा किंचहिया भव्वसिद्धीया' (पंच २, ७८)।

भव्व पुं [दे] भागिनेय, भानजा (दे ६, १००)।

भस सक [भष्] भूँकना, श्वान का बोलना। भसइ (हे ४, १८६; षड्—पत्र २२२), भसंति (सिरि ६२२)।

भसग पुं [भसक] एक राज-कुमार, श्रीकृष्ण के बड़े भाई जरत्कुमार का एक पौत्र (उव)।

भसण देखो भिसण। भसणेमि (पि ५५६)।

भसण न [भषण] १ कुत्ते का शब्द (श्रा २७)। २ पुं. श्वान, कुत्ता (पात्र; सिरि ६२२)।

भसणअ (अप) वि [भषितृ] भूँकनेवाला, 'सुणउ भसणउ' (हे ४, ४४३)।

भसम पुं [भस्मन्] १ ग्रह-विशेष, 'भसमग्गहपीडियं इमं तित्थं' (सट्ठि ४२ टी)। २ राख, भभूत; 'भसमुद्धूलियगत्तो' (महा; सम्मत ७६)। देखो भास = भस्मन्।

भसल देखो भमर (हे, १, २४४; २५४; कुमा; सुपा ४; पिंग)।

भसुआ स्त्री [दे] शिवा, शृगाली, सियारिन (दे ६, १०१; पात्र)।

भसुम देखो भसम (प्राकृ ३७)।

भसेल्ल पुंन [दे] धान्य आदि का तीक्ष्ण अग्र भाग, 'सालिभसेल्लसरिसा से केसा' (उवा)।

भसोल न [दे. भसोल] एक नाट्य-विधि (राज)।

भस्थ (मा) देखो भट्ट (षड्)।

भस्थालय (मा) देखो भट्टारय (षड्)।

भस्स देखो भंस = भ्रंश्। भस्सइ (प्राकृ ७६)। वकृ. भस्संत (काल)।

भस्स पुं [भस्मन्] १ ग्रह-विशेष। २ राख (हे २, ५१)।

भस्सिअ वि [भस्मित] जलाकर राख किया हुआ, भस्म किया हुआ (कुमा)।

भा अक [भा] चमकना, दीपना, प्रकाशना; 'भा भाजो वा दित्तीए' (विसे ३४४७)। भाइ (कप्पू), भासि (गउड)। वकृ. देखो भंत = भात्।

भा स्त्री [भा] दीप्ति, प्रभा, कान्ति, तेज (कुमा)। °मंडल पुं [°मण्डल] राजा जनक

का पुत्र (पउम २६, ८७)। °वलय न [°वलय] जिन-देव का एक महाप्रातिहार्य, पीठ के पीछे रखा जाता दीप्ति-मंडल (संबोध २; सिरि १७७)।

भा } अक [भी] डरना, भय करना। भाइ,
भाअ } भाग्रइ, भाग्रामि (हे ४, ५३; षड्; महा; स्वप्न ८०), भादि (शौ) (प्राकृ ९३), भायइ (सण)। भवि. भाइस्सदि, भाइस्सं (शौ) (पि ५३०)। वकृ. भायंत (कुमा)। कृ. भाइयव्व (पराह २, २; स ५६२; (सुपा ४१)।

भाअ देखो भा = भा। भाग्रदि (शौ) (प्राकृ ९३)।

भाअ सक [भायय्] डराना। भाग्रइ, भाएइ (प्राकृ ६४), भाएसि (कपूँर २४)। वकृ. भायमाण (सुपा २४८)।

भाअ देखो भाव = भावय्। कृ. भाएअव्व (नव २५)।

भाअ पुं [भाग] १ योग्य स्थान। २ एक देश (से १३, ६)। ३ अंश, विभाग, हिस्सा (पाग्र; सुपा ४०७; पव—गाथा ३०; उवा)। ४ भाग्य, नसीब (सार्धं ८०)। °धेअ, °हेअ पुंन [°धेय] १ भाग्य, नसीब (से ११, ८५; स्वप्न ५१; हम्मीर १४; अभि १९७)। २ कर, राज-देय। ३ दायाद, भागीदार; 'भाग्रहेग्रो, भाग्रहेग्रं' (प्राकृ ८८; नाट—चैत ६०)। देखो भाग।

भाअ पुं [दे] ज्येष्ठ भगिनी का पति (दे ६, १०२)।

भाअ देखो भाव (भवि)।

भाआव देखो भाअ = भायय्। भाग्रावेइ (प्राकृ ६४)।

भाइ देखो भागि; 'सारिव्व बंधवहमरणभाइणो जिण ण हुंति तइ दिट्ठे' (धण ३२; उप ९८६ टी)।

भाइ } पुं [भ्रातृ] भाई, बन्धु (उप ५१६;
भाइअ } महा; श्रावम)। °बीया स्त्री [°द्वितीया] पर्व-विशेष, भैयादूज, कार्तिक शुक्ल द्वितीया तिथि (ती १६)। °सुअ पुं [°सुत] भतीजा (सुपा ४७०)। देखो भाउ।

भाइअ वि [भाजित] १ विभक्त किया हुआ, बाँटा हुआ (पिंड २०८)। २ खण्डित (पंच २, १०)।

भाइअ वि [भीत] १ डरा हुआ। २ न. डर, भय (हे ४, ५३)।

भाइणिज्ज } पुंस्त्री [भागिनेय] भगिनी-पुत्र,
भाइणेअ } बहिन का लड़का, भानजा (धम्म
भाइणेज्ज } १२ टी; नाट—रत्ना ८५; स २७०; णाया १, ८—पत्र १३२, पउम ६६, ३६; कुप्र ४४०; महा)। स्त्री. °ज्जी (पउम १७, ११२)।

भाइयव्व देखो भा = भी।

भाइर वि [भीरु] डरपोक (दे ६, १०४)।

भाइल्ल पुं [दे] हालिक, कर्षक, कृषीवल, किसान (दे ६, १०४)।

भाइल्ल वि [भागिन्, °क] भागीदार, साझीदार, अंश-ग्राही (सूम्र २, २, ६३; पराह १, २; ठा ३, १—पत्र ११३; णाया १, १४)। देखो भागि।

भाइहंड न [दे. भ्रातृभाण्ड] भाई, बहिन आदि स्वजन; गुजराती में 'भाँवड' (कुप्र १५६)।

भाईरही स्त्री [भागीरथी] गंगा नदी (गउड; हे ४, ३४७; नाट—विक्र २८)।

भाउ } पुं [भ्रातृ] भाई, बन्धु (महा;
भाउअ } सुर ३, ८८; पि ५५, हे १, १३१ उव)। °जाया, °ज्जाइया स्त्री [°जाया] भौजाई, भाई की स्त्री (दे ६, १०३; सुपा २६४)।

भाउअ देखो भाअ = (दे) (दे ६, १०२ टी)।

भाउअ न [दे] आषाढ़ मास में मनाया जाता गौरी—पार्वती का एक उत्सव (दे ६, १०३)।

भाउग देखो भाउ (उप १४६ टी; महा)।

भाउज्जा स्त्री [दे] भौजाई, भाई की पत्नी (दे ६, १०३)।

भाउराअण पुं [भागुरायण] व्यक्ति-वाचक नाम (मुद्रा २२३)।

भाएअव्व देखो भाअ = भावय्।

भाग पुं [भाग] १ अंश, हिस्सा (कुमा; जी २७; दे १, १६७)। २ अचिन्त्य शक्ति, प्रभाव, माहात्म्य; 'भागोचिंता सत्ती स महाभागो महप्पभावो त्ति' (विसे १०५८)। ३ पूजा, भजन (सूम्र १, ८, २२)। ४ भाग्य, नसीब; 'धन्ना कयपुन्ना हं महंतभागोदम्रोवि मह अत्थि' (सिरि ८२३)। ५ प्रकार, भंगी (राज)। ६ अवकाश (सुज्ज १०, ३—पत्र १०४)। °धेअ, °धेज्ज °हेअ देखो भाअ-हेअ (पउम ६, ५७; २८, ८६; स १२; सुर १४, ६; पाग्र)। देखो भाअ = भाग।

भागवय वि [भागवत] १ भगवान् से संबन्ध रखनेवाला। २ भगवान् का भक्त (धर्मसं ३१२)। ३ न. ग्रंथ-विशेष (णंदि)।

भागि वि [भागिन्] १ भजनेवाला, सेवन करनेवाला; 'भारस्स भागी' (उव), 'किं पुण मरणंपि न मे संजायं मंदभग्गभागिस्स' (सुपा ५४७)। २ भागीदार, साझीदार, अंश-ग्राही (प्रामा)।

भागिणेज्ज } देखो भाइणेज्ज (महा; कुप्र
भागिणेय } ३७१)।

भागीरही देखो भाईरही (पाग्र)।

भाज अक [भ्राज्] चमकना। वकृ. भाजंत, भंत (विसे ३४४७)।

भाड पुंन [दे] भाड़, वह बड़ा चूल्हा जहाँ अन्न भुना जाता है, भट्ठी; 'जाया भाडसमाणा मग्गा उत्तत्तवालुया अहियं' (धर्मवि १०४; सण)।

भाडय न [भाटक] भाड़ा, किराया (सुर ६, १५७)।

भाडिय वि [भाटकित] भाड़े पर लिया हुआ, 'बोहित्थं भाडियं वियडं' (सुर १३, ३५)।

भाडिया } स्त्री [भाटिका, °टी] भाड़ा,
भाडी } शुल्क, किराया; 'एक्काए देइ भाडिं अन्नाहि समं रमेइ रयणीए', 'विलासिणीए दाऊण इच्छियं भाडिं' (सुपा ३८२; ३८३; उवा)। °कम्म न [°कर्मन्] बैल, गाड़ी आदि भाड़े पर देने का काम—धन्धा; 'भाडियकम्मं' (स ५०; श्रा २२; पडि)।

भाण देखो भण = भण्। संकृ. भाणिऊण, भाणिऊणं (पिंड ६१५; उव)। कृ. भाणियव्व (ठा ४, २; सम ८४; भग; उवा; कप्प; औप)।

भाण देखो भायण (ओघ ६६५; हे १, २६७; कुमा)।

भाणिअ वि [भाणित] १ पढ़ाया हुआ, पाठित; 'नाणासत्थाइं भाणिम्रा' (रयण

६८)। २ कहलाया हुआ; 'मयणसिरिनामाए रन्नो भज्जाए भाणिओ मंती' (सुपा ५८७)।

भाणु पुं [भानु] १ सूर्य, रवि (पउम ४६, ३९; पुप्फ १६४; सिरि ३२)। २ किरण (प्रामा)। ३ भगवान् धर्मनाथ का पिता, एक राजा (सम १५१)। ४ स्त्री. एक इन्द्राणी, शक्र की एक अग्र-महिषी (पउम १०२, १५९)। °कण्ण पुं [°कर्ण] रावण का एक अनुज (पउम ७, ९७)। °मई स्त्री [°मती] रावण की एक पत्नी (पउम ७४, १०)। °मालिणी [°मालिनी] विद्या-विशेष (पउम ७, १३६)। °मित्त न [°मित्र] उज्जयिनी के राजा बलमित्र का छोटा भाई (काल; विचार ४९४)। °वेग पुं [°वेग] एक विद्याधर का नाम (महा; सण)। °सिरी स्त्री [°श्री] राजा बलमित्र की बहिन (काल)।

भाम देखो **भमाड** = भ्रमय्। भामेइ (हे ४, ३०)। कवकृ. **भामिज्जंत** (गा ४५७)। कृ. **भामेयव्व** (ती ७)।

भामण न [भ्रामण] घुमाना, फिराना (सम्मत्त १७४)।

भामर न [भ्रामर] १ मधु-विशेष, भ्रमरी का बनाया हुआ मधु (पव ४)। २ पुं. दोधक छन्द का एक भेद (पिंग)।

भामरी स्त्री [भ्रामरी] १ वीणा-विशेष (णाया १, १७—पत्र २२९)। २ प्रदक्षिणा (कप्पू; भवि)।

भामिअ वि [भ्रमित] १ घुमाया हुआ (से २, ३२)। २ भ्रान्त किया हुआ, भ्रान्त-चित्त किया हुआ; 'धत्तूरभामिओ इव' (मन २७; धर्मवि २३)।

भामिणी स्त्री [भागिनी] भाग्यवाली (हे १, १९०; कुमा)।

भामिणी स्त्री [भामिनी] १ कोप-शीला स्त्री। २ स्त्री, महिला (श्रा १२; सुर १, ७६; सुपा ४७५; सम्मत्त १९३)।

भाय देखो **भाउ** (कुमा)।

भायंत देखो **भा** = भी।

भायण पुंन [भाजन] १ पात्र। २ आधार। ३ योग्य; 'भायणा, भायणाइं' (हे १, ३३; २६७), 'ति च्चिय धन्ना ते पुन्नभायणा, ताण जीवियं सहलं' (सुपा ५६७; कुमा)।

भायण न [भाजन] आकाश, गगन (भग २०, २—पत्र ७७६)।

भायणंग पुं [भाजनाङ्ग] कल्पवृक्ष की एक जाति, पात्र देनेवाला कल्पवृक्ष (पउम १०२, १२०)।

भायणिज्ज देखो **भाइणिज्ज** (धर्मवि १२; काल)।

भायमाण देखो **भाअ** = भायय्।

भायर देखो **भाउ** (कुमा)।

भायल पुं [दे] जात्य अश्व, उत्तम जाति का घोड़ा (दे ६, १०४; पाअ)।

भार पुं [भार] १ बोझा, गुरुत्व (कुमा)। २ भारवाली वस्तु, बोझवाली चीज (श्रा ४०)। ३ काम संपादन करने का अधिकार; 'भारक्खमेत्ति पुत्ते जो नियभारं ठवित्तु नियपुत्तें, न य साहेइ सकज्जं' (प्रासू २७)। ४ परिमाण-विशेष; 'लाउअबीअं इक्कं नासइ भारं गुडस्स जह सहसा' (प्रासू १५१)। ५ परिग्रह, धन-धान्य आदि का संग्रह (पण्ह १, ५)। °ग्गसो अ [°अग्रशस्] भार भार के परिमाण से; 'दसद्धवन्नमल्लं कुम्भग्गसो य भारग्गसो य' (णाया १, ८—पत्र १२५)। °वह वि [°वह] बोझा ढोनेवाला (श्रा ४०)। °विह वि [°विह] वही अर्थ (पउम ९७, २९)।

भारई स्त्री [भारती] भाषा, वाणी, वाक्य, वचन (पाअ)। देखो **भारही**।

भारदाय / **भारद्दाय** न [भारद्वाज] १ गोत्र-विशेष, जो गोतम गोत्र की एक शाखा है (कप्प; सुज्ज १०, १६)। २ पुं. भारद्वाज गोत्र में उत्पन्न; 'जे गोयमा ते गग्गा ते भारद्दा (? द्दाया); ते अंगिरसा' (ठा ७—पत्र ३९०)। पक्षि-विशेष (ओघभा ८४)। ४ मुनि-विशेष (पि २३६; २९८; ३६३)।

भारय देखो **भार** (सुपा १४, ३८५)।

भारह न [भारत] १ भारतवर्ष, भरत-क्षेत्र (उवा); 'जहा निसंते तवणच्चिमाली पभासई केवलभारहं तु' (दस ९, १, १४)। २ पाण्डव कौरवों का युद्ध, महाभारत (पउम १०५, १६)। ३ ग्रंथ-विशेष, जिसमें पाण्डव-कौरव युद्ध का वर्णन है, व्यास-मुनि-प्रणीत महाभारत (कुमा; उर ३, ८)। ४ भरत मुनि-प्रणीत नाट्य-शास्त्र (अणु)। ५ वि. भारतवर्ष-सम्बन्धी, भारतवर्ष का (ठा २, ३—पत्र ६९), 'तत्थ खलु इमे दुवे सूरिया पन्नत्ता, तं जहा—भारहे चेव सूरिए, एरवए चेव सूरिए' (सुज्ज १, ३)। °खेत्त न [°क्षेत्र] भारतवर्ष (ठा २, ३ टी—पत्र ७१)।

भारहिय वि [भारतीय] भारत-संबन्धी, 'जा भारहियकहा इव भीमज्जुणनउलसउणि-सोहिल्ला' (सुपा २६०)।

भारही स्त्री [भारती] १ सरस्वती देवी (पि २०७)। २ देखो **भारई** (स ३१९)।

भारिअ वि [भारिक] भारी, भारवाला, गुरु (दे ४, २; णाया १, ६ पत्र—११४)।

भारिअ वि [भारित] १ भारवाला, भारी (उप पृ १३४)। २ जिस पर भार लादा गया हो वह, भार-युक्त किया गया (सुख २, २५)।

भारिआ देखो **भज्जा** (हे २, १०७; उवा; णाया २)।

भारिल्ल वि [भारवत्] भारी, बोझवाला (धर्मवि १३७)।

भारुंड पुं [भारुण्ड] दो मुँह और एक शरीर वाला पक्षी, पक्षि-विशेष (कप्प; औप; महा; दे ६, १०८)।

भाल न [भाल] ललाट (पाअ; कुमा)।

भलुंकी [दे] देखो **भल्लुंकी** (भत्त १६०)।

भाल्ल पुंन [दे] मदन-वेदना, काम-पीड़ा (संक्षि ४७)।

भाव सक [भावय्] १ वासित करना, गुणा-धान करना। २ चिन्तन करना। भावेइ (विवे ९८), भाविंति (पिंड १२६), 'भावेज्ज भावणं' (हि १९), भावेसु (महा)। कर्म. भाविज्जइ (प्रासू ३७)। वकृ. **भावेंत, भावमाण, भावेमाण** (सुर ८, १८५; सुपा २९५; उवा)। संकृ. **भावेत्ता, भाविऊण** (उवा; महा)। कृ. **भावणिज्ज, भावियव्व, भावेयव्व** (कप्पू; काल; सुर १४, ८४)।

भाव अक [भास्] १ दिखाना, लगना, मालूम होना। २ पसन्द होना, उचित मालूम होना;

'सो चेव देवलोगो देवसहस्सोवसोहिओ रम्मो।
तुह विरहियाइ इण्हिं भावइ नरओवमो मज्झ।'
(सुर ७, १६)।
'तं चिय इमं विमाणं रम्मं
मणिकणगरयणविच्छुरियं।
तुमए मुक्कं भावइ
घडियालयसच्छहं नाह।'
(सुर ७, १७)।
'एम्वहिं राहपओहरहं जं भावइ तं होउ'
(हे ४. ४२०)।

भाव पुं [भाव] १ पदार्थ, वस्तु; 'भावो वत्थु पयत्थो' (पाअ; विसे ७०; १६६२)। २ अभिप्राय, आशय (आचा; पंचा १, ६; प्रासू ४२)। ३ चित्त-विकार, मानस विकृति; 'हावभावपललियविक्खेवविलाससालिणीहिं' (पण्ह २, ४—पत्र १३२)। ४ जन्म, उत्पत्ति; पिंडो कज्जं पइसमयभावाउ' (विसे ७१)। ५ पर्याय, धर्म, वस्तु का परिणाम, द्रव्य की पूर्वापर अवस्था (पण्ह १, ३; उत्त ३०, २३; विसे ६६; कम्म ४, ६; ७०)। ६ धात्वर्थ-युक्त पदार्थ विवक्षित क्रिया का अनुभव करनेवाली वस्तु, पारमार्थिक पदार्थ (विसे ४६)। ७ परमार्थ, वास्तविक सत्य (विसे ४६)। ८ स्वभाव, स्वरूप (अणु; णंदि)। ९ भवन, सत्ता (विसे ६०; गउड ६७८)। १० ज्ञान, उपयोग (आचू १; विसे ५०)। ११ चेष्टा (णाया १, ८)। १२ क्रिया, धात्वर्थ (अणु)। १३ विधि, कर्तव्योपदेश; 'भावाभावमणंता' (भग ४१—पत्र ६७६)। १४ मन का परिणाम (पंचा २, ३३; उव; कुमा ७, ५५)। १५ अन्तरंग बहुमान, प्रेम, राग (उव; कुमा ७, ८३; ८५)। १६ भावना, चिन्तन (गउड १२०४; संबोध २४)। १७ नाटक की भाषा में विविध पदार्थों का चिन्तक पण्डित (अभि १८२)। १८ आत्मा (भग १७, ३)। १९ अवस्था, दशा (कप्पू)। °केउ पुं [°केतु] ज्योतिष्क देव-विशेष, महाग्रह-विशेष (ठा २, ३)। °त्थ पुं [°र्थ] तात्पर्य, रहस्य (स ६)। °न्न °न्नुय वि [°ज्ञ] अभिप्राय को जाननेवाला (आचा; महा)। °पाण पुं [°प्राण] ज्ञान आदि आत्मा का अन्तरंग गुण (पण्ण १)। °संजय पुं [°संयत] सच्चा, साधु (उप ७३२)। °साहु पुं [°साधु] वही अर्थ (भग)। °सव पुं [°स्रव] वह आत्म-परिणाम, जिससे कर्म का आगमन हो; 'आसवदि जेण कम्मं परिणामेणप्पणो स विण्णेओ भावासवो' (द्रव्य २९)।

भाव पुं [भाव] महान् वादी, समर्थ विद्वान (दस १, १ टी)।

भावअ वि [भावक] होनेवाला (प्राकृ ७०)। देखो भावग।

भावइआ स्त्री [दे] धार्मिक-गृहिणी (दे ६, १०४)।

भावग वि [भावक] वासक पदार्थ, गुणाधायक वस्तु (आचू ३)। देखो भावअ।

भावड पुं [भावक] स्वनाम-ख्यात एक जैन गृहस्थ (ती २)।

भावण पुं [भावन] १ स्वनाम-ख्यात एक वणिक् (पउम ५, ८२)। २ नीचे देखो (संबोध २४; वि ६)।

भावणा स्त्री [भावना] १ वासना, गुणाधान, संस्कार-करण (औप)। २ अनुप्रेक्षा, चिन्तन। ३ पर्यालोचन (ओघभा ३; उव; प्रासू ३७)।

भावि वि [भाविन्] भविष्य में होनेवाला (कुमा; सण)।

भाविअ वि [दे] गृहीत, उपात्त (दे ६, १०३)।

भाविअ न [भाविक] एक देव-विमान (सम ३३)।

भाविअ वि [भावित] १ वासित (पण्ह २, ५; उत्त १४, ५२; भग; प्रासू ३७)। २ भाव-युक्त; 'जिणपवयणतिव्वभावियमइस्स' (उव)। ३ शुद्ध, निर्दोष (बृह १)। °प्प वि [°त्मन्] १ वासित अन्तःकरणवाला (औप; णाया १, १)। २ पुं. मुहूर्त-विशेष, अहोरात्र का तेरहवाँ या अठारहवाँ मुहूर्त (सुज्ज १०, १३; सम ५१)। °प्पा स्त्री [°त्मा] भगवान् धर्मनाथ की मुख्य शिष्या (सम १५२)।

भाविंदिअ न [भावेन्द्रिय] उपयोग, ज्ञान (भग)।

भाविर वि [भाविन्, भवितृ] भविष्य में होनेवाला, अवश्यंभावी; 'अम्हं भाविरदोहरपवासदुहिया मिलाएइ' (सुपा ६), 'एत्थंतरम्मि भाविरनियपिउगुरुविरहग्गिदूमियमणेण' (सुपा ७५)।

भाविल्ल वि [भाववत्] भाव-युक्त, पणवीसं भावणाइं भाविल्लो पंचमहव्वयाइणं' (संबोध २४)।

भाविस्स देखो भविस्स; 'भाविस्सभूयपभवंतभावआलोयलोयणं विमलं' (सुपा ८६)।

भावुक वि [दे] वयस्य, मित्र (संक्षि ४७)।

भावुग, **भावुय** वि [भावुक] अन्य के संसर्ग की जिस पर असर हो सकती हो वह वस्तु (ओघ ७७३; संबोध ५४)।

भास सक [भाष्] कहना, बोलना। भासइ, भासंति (भग; उव)। भवि. भासिस्सामि (भग)। वकृ. **भासंत, भासमाण** (औप; भग; विपा १, १)। कवकृ. **भासिज्जमाण** (भग; सम ६०)। संकृ. **भासित्ता** (भग)। कृ. **भासिअव्व** (भग; महा)।

भास अक [भास्] १ शोभना। २ लगना, मालूम होना। ३ प्रकाशना, चमकना। भासइ (हे ४, २०३), भासए, भासंति, भाससि (मोह २६; भत्त ११०; सुर ७, १६२)। वकृ. **भासंत** (अच्चु ५४)।

भास सक [भीषय्] डराना। भासइ (धात्वा १४७)।

भास पुं [भास] १ पक्षि-विशेष (पण्ह १, १; दे २, ६२)। २ दीप्ति, प्रकाश; 'नावरिज्जइ कयावि। उक्कोसावरणम्मिवि जलयच्छन्नक्कभासो व्व' (विसे ४६८; भवि)।

भास पुं [भस्मन्] १ ग्रह-विशेष, ज्योतिष्क देव-विशेष (ठा २, ३; विचार ५०७)। २ भस्म, राख (णाया १, १; पण्ह २, ५)। °रासि पुं [°राशि] ग्रह-विशेष (ठा २, ३; कप्प)।

भास न [भाष्य] व्याख्या-विशेष, पद्य-बद्ध टीका (चैत्य १; उप ३५७ टी; विचार ३५२; सम्यक्त्वो ११)।

भास° देखो भासा (कुमा)। °ण्णु वि [°ज्ञ] भाषा के गुण-दोष का जानकार (धर्मसं ६२५)। °व त्रि [°वत्] वही अर्थ (सूअ १, १३, १३)।

भासग वि [भाषक] बोलनेवाला, वक्ता, प्रतिपादक (विसे ४१०; पंचा १८, ६; ठा २, २—पत्र ५६)।

भासण न [भासन] चमक, दीप्ति, प्रकाश; 'वरमल्लिभासणाणं' (औप)।

भासण न [भाषण] कथन, प्रतिपादन (महा)।

भासणया } स्त्री [भाषणा] ऊपर देखो (उप **भासणा** } ५१६; विसे १४७; उव)।

भासय देखो **भासग** (विसे ३७४; पराण १८)।

भासय वि [भासक] प्रकाशक (विसे ११०४)।

भासल वि [दे] दीप्त, प्रज्वलित (दे ६, १०३)।

भासा स्त्री [भाषा] १ बोली, 'अट्ठारसदेसी-भासाविसारए' (औप १०६; कुमा)। २ वाक्य, वाणी, गिरा, वचन (पाअ)। °**जडु** वि [°जड] बोलने की शक्ति से रहित, मूक (आव ४)। °**पज्जत्ति** स्त्री [°पर्याप्ति] पुद्गलों को भाषा के रूप में परिणत करने की शक्ति (भग ६, ४)। °**विजय** पुं [°विचय] १ भाषा का निर्णय। २ दृष्टिवाद, बारहवाँ जैन अंग-ग्रन्थ (ठा १०—पत्र ४६१)। °**विजय** पुं [°विजय] दृष्टिवाद (ठा १०)। °**समिअ** वि [°समित] वाणी का संयम-वाला (भग)। °**समिइ** स्त्री [°समिति] वाणी का संयम (सम १०)। देखो **भास°**।

भासा स्त्री [भास] प्रकाश, आलोक, दीप्ति (पाअ)।

भासि वि [भाषिन्] भाषक, वक्ता (धर्मवि ५२; भवि)।

भासिअ वि [भाषित] १ उक्त, कथित, प्रतिपादित (भग; आचा; सण; भवि)। २ न. भाषण, उक्ति (आवम)।

भासिअ वि [भाषिन्, °क] वक्ता, बोलने-वाला (भवि)।

भासिअ वि [दे] दत्त, अर्पित (दे ६, १०४)।

भासिअ वि [भासित] प्रकाशवाला, प्रकाश-युक्त (निचू १३)।

भासिर वि [भाषितृ] वक्ता (सुपा ५३८; सण)।

भासिर वि [भास्वर] दीप्त, देदीप्यमान (कुमा)।

भासिल्ल वि [भाषावत्] भाषा-युक्त, वाणी-युक्त (उत्त २७, ११)।

भासीकय वि [भस्मीकृत] जलाकर राख किया हुआ (उप ९८६ टी)।

भासुंड अक [दे] बाहर निकलना। भासुंडइ (दे ६, १०३ टी)।

भासुंडि स्त्री [दे] निःसरण, निर्गमन (दे ६, १०३)।

भासुर वि [भासुर] १ भास्वर, दीप्तिमान्, चमकता (सुर ६, १८४; सुपा ३३; २७२; कुप्र ६०; धर्मसं १३२६ टी)। २ घोर, भीषण, भयंकर; 'घोरा दारुणभासुरभइरव-लक्खभीमभीसणया' (पाअ)। ३ एक देव-विमान (सम १२)। ४ छन्द-विशेष (अजि ३०)।

भासुरिअ वि [भासुरित] देदीप्यमान किया हुआ, 'भासुरभूसणभासुरिअंगा' (अजि २३)।

भि देखो °**भिभ** (आचा)।

भिअप्पइ
भिअप्फइ } देखो **बहस्सइ** (पि २१२; षड्)।
भिअस्सइ

भिइ देखो **भइ** = भृति (राज)।

भिउ पुं [भृगु] १ स्वनाम-ख्यात ऋषि-विशेष। २ पर्वत-सानु। ३ शुक्र-ग्रह। ४ महादेव, शिव। ५ जमदग्नि। ६ ऊँचा प्रदेश। ७ भृगु का वंशज। ८ रेखा, राजि (हे १, १२८; षड्)। °**कच्छ** न [°कच्छ] नगर-विशेष, भड़ौच (राज)।

भिउड न [दे] अंग-विशेष, शरीर का अवयव-विशेष (?); 'मुत्तूण तुरगभिउडे खग्गं पिट्ठम्मि उत्तरीयं च'; 'तो तस्सेव य खग्गं भिउडाओ गिण्हिऊण चाणक्को' (धर्मवि ४१)।

भिउडि स्त्री [भृकुटि] १ भौं-भंग, भौं का विकार (विपा १, ३; ४)। २ पुं. भगवान् नमिनाथ का शासन-देव (संति ८)।

भिउडिय वि [भृकुटित] जिसने भौं चढ़ाई हो वह (णाया १, ८)।

भिउडी देखो **भिउडि** (कुमा)।

भिउर वि [भिदुर] विनश्वर (आचा)।

भिउव्व पुं [भार्गव] भृगु मुनि का वंशज, परिव्राजक-विशेष (औप)।

भिंग वि [दे] कृष्ण, काला (दे ६, १०४)। २ नील, हरा। ३ स्वीकृत (षड्)।

भिंग पुं [भृङ्ग] १ भ्रमर, मधुकर (पउम ३३, १४८; पाअ)। २ पक्षि-विशेष (पराण १७—पत्र ५२६)। ३ कीट-विशेष। ४ विदलित अंगार, कोयला (णाया १, १—पत्र २५; औप)। ५ कल्पवृक्ष की एक जाति (सम १६)। ६ छन्द-विशेष (पिंग)। ७ जार, उपपति। ८ भँगरा का पेड़। ९ पात्र-विशेष, भारी (हे १, १२८)। °**णिभा** स्त्री [°निभा] एक पुष्करिणी (इक)। °**प्पभा** स्त्री [°प्रभा] पुष्करिणी-विशेष (जं ४)।

भिंगा स्त्री [भृङ्गा] एक पुष्करिणी, वापी-विशेष (इक)।

भिंगार
भिंगारक } पुं [भृङ्गार, °क] १ भाजन-विशेष, भारी (पराह १, ४;
भिंगारग औप)। २ पक्षि-विशेष; 'भिंगा-ररवंतभेरवरवे' (णाया १, १—पत्र ६५); 'भिंगारकदीणकंदियरवेसु' (णाया १, १—पत्र ६३; पराह १ १; औप)। ३ स्वर्ण-मय जल-पात्र (हे १, १२८; जं २)।

भिंगारी स्त्री [दे. भृङ्गारी] १ कीट-विशेष, चिरी, झिल्ली (दे ६, १०५; पाअ; उत्त ३६, १४८)। २ मशक, डाँस (दे ६, १०५)।

भिंजा स्त्री [दे] अभ्यंग, मालिश (सूअ १, ४, २, ८)।

भिंटिया स्त्री [दे. वृन्ताकी] भंटा का गाछ (उप १०३१ टी)।

भिंडिमाल } पुं [भिन्दिपाल] शस्त्र-विशेष **भिंडिवाल** } (पराह १, १; औप; पउम ८, १२०; स ३८४; कुमा; हे २, ३८; प्राप्र)।

भिंद सक [भिद्] १ भेदना, तोड़ना। २ विभाग करना। भिंदइ, भिंदए (महा; षड्)। भवि. भेच्छं, भिंदिस्संति (हे ३, १७१; कुमा; पि ५३२)। कर्म. भिज्जइ (आचा; पि ५४६)। वकृ. **भिंदंत**, **भिंदमाण** (ग १३६, पि ५०६)। कवकृ. **भिज्जंत**, **भिज्जमाण** (से ५, ६५; ठा २, ३, आ ६; भग; उवा; णाया १, ६; विसे ३११)। संकृ. **भित्तूण**,

भित्तूणं, भिंदिअ भिंदिऊण, भेत्तुआण, भेत्तण (रंभा; उत्त ६, २२; नाट—विक्र १७, पि ५८६; हे २, १४६; महा)। हेकृ. भिंदित्तए, भित्तुं, भेत्तुं (पि ५७८; कप्प; पि ५७४)। कृ. भिंदियव्व (पण्ह २, १), भेअव्व (से १०, २६)।

भिंदण न [भेदन] खण्डन, विच्छेद (सुर १६, ५६)।

भिंदणया स्त्री [भेदना] ऊपर देखो (सुर १, ७२)।

भिंदिवाल (शौ) देखो **भिंडिवाल** (प्राकृ ८७)।

भिंभल देखो **भिब्भल** (सुपा ८३; ३६५, पि २०६)।

भिंभलिय वि [विह्वलित] विह्वल किया हुआ, 'ता गजइ मायंगो विब्भवणे य (? म) यपवाहभिंभलिओ' (धर्मवि ८०)।

भिंभसार पुं [भिम्भसार] देखो **भंभसार** (औप)।

भिंभा स्त्री [भिम्भा] देखो **भंभा** (राज)।

भिंभिसार पुं [भिम्भिसार] देखो **भंभसार** (ठा ६—पत्र ४५८; पि २०६)।

भिंभी स्त्री [भिम्भी] वाद्य-विशेष, ढक्का (ठा ६ टी—पत्र ४६१)।

भिक्ख सक [भिक्ष्] भीख माँगना, याचना करना। भिक्खइ (संबोध ३१)। वकृ. **भिक्खमाण** (उत्त १४, २६)।

भिक्ख न [भैक्ष] १ भिक्षा, भीख। २ भिक्षा-समूह (ओघभा २१६; २१७); 'न कज्जं मम भिक्खेण' (उत्त २५, ४०)। °**जीविअ** वि [°जीविक] भीख से निर्वाह करनेवाला, भिखमंगा (प्राकृ ६; पि ८४)।

भिक्ख° देखो **भिक्खा** (पि ६७, कुप्र १८३; धर्मवि ३८)।

भिक्खण न [भिक्षण] भीख माँगना, याचना (धर्मसं १०००)।

भिक्खा स्त्री [भिक्षा] भीख, याचना (उव; सुपा २७७; पिंग)। °**यर** वि [°चर] भिक्षुक (कप्प)। °**यरिया** स्त्री [°चर्या] भिक्षा के लिये पर्यटन (आचा; औप; ओघभा ७४; उवा)। °**लाभिय** पुं [°लाभिक] भिक्षुक-विशेष (औप)।

भिक्खाग } वि [भिक्षाक] भिक्षा माँगने-
भिक्खाय } वाला, भिक्षा से शरीर-निर्वाह करनेवाला (ठा ४, १—पत्र १८५; आचा २, १, ११, १; उत्त ५, २८; कप्प)।

भिक्खु पुंस्त्री [भिक्षु] १ भीख से निर्वाह करनेवाला, साधु, मुनि, संन्यासी, ऋषि (आचा; सम २१; कुमा; सुपा ३४६; प्रासू १६६), 'भिक्खणसीलो य तओ भिक्खु त्ति निदरिसिओ समए' (धर्मसं १०००)। २ बौद्ध संन्यासी; 'कम्मं चयं न गच्छइ चउव्विहं भिक्खुसमयम्मि' (सूअनि ३१)। स्त्री. °**णी** (आचा २, ५, १, १; गच्छ ३, ३१; कुप्र १८८)। °**पडिमा** स्त्री [°प्रतिमा] साधु का अभिग्रह-विशेष, मुनि का व्रत-विशेष (भग; औप)। °**पडिआ** स्त्री [°प्रतिज्ञा] साधु का उद्देश, साधु के निमित्त, 'से भिक्खू वा भिक्खुणी वा से जं पुण वत्थं जाणेज्जा असंजए भिक्खु-पडियाए कीयं वा धोयं वा रत्तं वा' (आचा २, ५, १, ४)।

भिक्खुंड देखो **भिच्छुंड** (राज)।

भिक्खोंड देखो **भिच्छुंड** (अणु २४)।

भिखारि (अप) वि [भिक्षाकारिन्] भिखारी, भीख माँगनेवाला (पिंग)।

भिगु देखो **भिउ** (पउम ४, ८६; ओघ ३७४)।

भिगुडि देखो **भिउडि** (पि १२४)।

भिच्च पुं [भृत्य] १ दास, सेवक, नौकर (पाअ; सुर २, ६२, सुपा ३०७)। २ वि. अच्छी तरह पोषण करनेवाला (विपा १, ७—पत्र ७५)। ३ वि. भरणीय, पोषणीय (पण्ह १, २—पत्र ४०)। °**भाव** पुं [°भाव] नौकरी (सुर ४, १५६)।

भिच्छ° देखो **भिक्ख°** (पि ६७)।

भिच्छा देखो **भिक्खा** (गा १६२)।

भिच्छुंड वि [दे. भिक्षोण्ड] १ भिखारी, भिक्षा से निर्वाह करनेवाला। २ पुं. बौद्ध साधु (णाया १, १५—पत्र १९३)।

भिज्ज न [भेद्य] कर-विशेष, दण्ड-विशेष (विपा १, १—पत्र ११)।

भिज्जा देखो **भिज्झा** (ठा २, ३—पत्र ७१; सम ७१)।

भिज्जिय देखो **भिज्झिय** (भग)।

भिज्झा स्त्री [अभिध्या] गृद्धि, लोभ (कस)।

भिज्झिय वि [अभिध्यित] लोभ का विषय, सुन्दर (भग ६, ३—पत्र २५३)।

भिट्ट सक [दे] भेंटना। कर्म. 'बहुविहभिट्ट-णएहिं भिट्टिज्जइ लद्धमाणेहिं' (सिरि ६०१)।

भिट्टण न [दे] भेंट, उपहार; गुजराती में 'भेटणुं' (सिरि ७५६; ६०१)।

भिट्टा स्त्री [दे] ऊपर देखो (सिरि ३६२)।

भिड सक [दे] भिड़ना—१ मिलना, सटना, सट जाना। २ लड़ना, मुठभेड़ करना। भिडइ (भवि), भिडंति (सिरि ४५०)। वकृ. **भिडंत** (उप ३२० टी; भवि)।

भिडण न [दे] लड़ाई, मुठभेड़; 'सोंडीरसुहड-भिडणिक्कलंपडं' (सुपा ५६६)।

भिडिय वि [दे] जिसने मुठभेड़ की हो वह, लड़ा हुआ (महा; भवि)।

भिणासि पुं [दे] पक्षि-विशेष (पण्ह १, १ पत्र ८)।

भिण्ण देखो **भिन्न** (गउड; नाट—चैत ३४)। °**मरट्ठ** (अप) पुं [°महाराष्ट्र] छन्द का एक भेद (पिंग)।

भित्त देखो **भिच्च** (संक्षि ५)।

भित्तग } न [दे. भित्तक] १ खण्ड,
भित्तय } टुकड़ा। २ आधा हिस्सा (आचा २, ७, २, ८; ६; ७)।

भित्तर न [दे] १ द्वार, दरवाजा (दे ६, १०५)। २ भीतर, अंदर (पिंग)।

भित्ति स्त्री [भित्ति] भीत (गउड; कुमा)। °**संध** न [°सन्ध] भीत—दीवार का संधान, 'जाएवि भित्तिसंधे खणियं खत्तं सुत्तिक्ख-सत्थेणं' (महा)।

भित्तिरूव वि [दे] टंक से छिन्न (दे ६, १०५)।

भित्तिल न [भित्तिल] एक देव-विमान (सम ३८)।

भित्तु वि [भेत्तृ] भेदन करनेवाला (पव २)।

भित्तुं } देखो **भिंद**।
भित्तूण }

भिद देखो **भिंद**। भिदंति (आचा २, १, ६, ६)। भवि. **भिदिस्संति** (आचा २, १, ६,

६)। भवि. भिदिस्संति (आचा २, १, ६ ६; पि ५३२)।

भिन्न वि [भिन्न] १ विदारित, खण्डित (णाया १, ८; उव; भग, पाअ; महा)। २ प्रस्फुटित, स्फोटित (ठा ४, ४; पण्ह २, १)। ३ अन्य विसदृश, विलक्षण (ठा १०)। ४ परित्यक्त, उज्झित; 'जीवजढं भावओ भिन्नं' (बृह १; आव ४)। ५ ऊन, कम, न्यून (भग)। °कहा स्त्री [°कथा] मैथुन-संबद्ध बात, रहस्यालाप (ओघ ६६)। °पडवाइय वि [°पिण्डपातिक] स्फोटित अन्न आदि लेने की प्रतिज्ञावाला (पण्ह २, १—पत्र १००)। °मास पुं [°मास] पचीस दिन का महीना (जीत)। °मुहुत्त न [°मुहूर्त्त] अन्तर्मुहूर्त्त, न्यून मुहूर्त्त (भग)।

भिप्फ पुं [भीष्म] १ स्वनाम-ख्यात एक कुरुवंशीय क्षत्रिय, गांगेय, भीष्म पितामह। २ साहित्य-प्रसिद्ध रस-विशेष, भयानक रस। ३ वि. भय-जनक, भयंकर (हे २, ५४; प्राकृ ६५; कुमा)।

भिब्भल वि [विह्वल] व्याकुल (हे २, ५८; ९०; प्राकृ २४; कुमा; वज्जा १५६)।

भिब्भलण न [विह्वलन] व्याकुल बनाना (कुमा)।

भिब्भिस अक [भास्+यङ्=बाभास्य] अत्यन्त दीपना। वकृ. भिब्भिसमाण, भिब्भिसमीण (णाया १, १—पत्र ३८; राय; पि ५५६)।

भिमोर पुं [दे. हिमोर] हिम का मध्य भाग (?) (हे २, १७४)।

भियग देखो भयग (सण)।

भिलंग पुं [दे] अक्षण। देखो भिलिंज (सूत्र कृतांग सूत्र २८५ चूर्णी)।

भिलगा देखो भिलुगा (दस ६, ६२)।

भिलिंग सक [दे] अभ्यंग करना, मालिश करना। भिलिंगेज्ज (आचा २, १३, २; ४; ५; निचू १७)। वकृ. भिलिंगंत (निचू १७)। प्रयो. भिलिंगावेज्ज (निचू १७) वकृ. भिलिंगावंत (निचू १७)।

भिलिंग } पुं [दे] धान्य-विशेष, मसूर
भिलिंगु } (कप्प; पंचा १०, ७३)।

भिलिंज पुं [दे] अभ्यंग, आपाद-मस्तक-तैल-मर्दन (सूअ १, ४, २, ८ टी)।

भिलुंग पुं [दे. भिलुङ्क] हिंसक पक्षी (राय १२४)।

भिलुगा स्त्री [दे] फटी हुई जमीन, भूमि की रेखा—फाट (आचा २, १, ५, ५)।

भिल्ल पुं [भिल्ल] १ अनार्य देश-विशेष (पव २७४)। २ एक अनार्य जाति (सुर २, ४; ६, ३४; महा)।

भिल्लमाल पुं [भिल्लमाल] स्वनाम ख्यात एक प्रसिद्ध क्षत्रिय-वंश (विवे ११४)।

भिल्लायई स्त्री [भल्लातकी] भिलावाँ का पेड़ (उप १०३१ टी)।

भिल्लिअ वि [भिलित] खण्डित, तोड़ा हुआ; 'पंचमहव्वयतुंगो पायारो भिल्लिओ जेणं' (उव)।

भिस देखो भास=भास्। भिसइ (हे ४, २०३; षड्)। वकृ. भिसंत, भिसमाण, भिसमीण (पउम ३, १२७; ७५, ३७; णाया १, १; औप; कुमा; णाया १, १; पि ५६२)।

भिस सक [प्लुष्] जलाना (प्राकृ ६५; धात्वा १४७)।

भिस सक [भायय्] डराना। भिसइ, भिसेइ (प्राकृ ६४)।

भिस न [भृश] १ अत्यन्त, अतिशय, अतिशयित; 'गलंतभिसभिन्नदेहे य' (पिंड ५८३, उप ३२० टी; सत्त ६१; भवि)।

भिस देखो बिस (प्राकृ १५; पण्ण १; सूअ २, ३, १८)। °कंदय पुं [°कन्दक] एक प्रकार की खाने की मिष्ट वस्तु (पण्ण १७—पत्र ५३३)। °मुणाली स्त्री [°मृणाली] कमलिनी (पण्ण १)।

भिसअ पुं [भिषज्] १ वैद्य, चिकित्सक (हे १, १८; कुमा)। २ भगवान् मल्लिनाथ का प्रथम गणधर (पव ८)।

भिसंत देखो भिस=भास्।

भिसंत न [दे] अनर्थ (दे ६, १०५)।

भिसग देखो भिसअ (णाया १, १—पत्र १५४)।

भिसण सक [दे] फेंकना, डालना। भिसणेमि (गा ३१२)।

भिसमाण देखो भिस=भास्।

भिसरा स्त्री [दे] मत्स्य पकड़ने का जाल-विशेष (विपा १, ८—पत्र ८५)।

भिसाव सक [भायय्] डराना। भिसावेइ (प्राकृ ६४)।

भिसिआ } स्त्री [दे. बृषिका] आसन-विशेष,
भिसिगा } ऋषि का आसन (दे ६, १०५; भग; कुप्र ३७२; णाया १, ८; उप ६४८ टी; औप; सूअ २, २, ४८)।

भिसिण देखो भिसण भिसिणेमि (गा ३१२ अ)।

भिसिणी स्त्री [बिसिनी] कमलिनी, पद्मिनी (हे १, २३८; कुमा; गा ३०८; काप्र ३१; महा; पाअ)।

भिसी स्त्री [बृषी] देखो भिसिआ (पाअ)।

भिसोल न [दे] नृत्य-विशेष (ठा ४, ४—पत्र २८५)।

भिह } अक [भी] डरना। भिहइ (षड्)।
भी } कृ. भेअव्व (सुपा ५८४)।

भी स्त्री [भी] १ भय, 'नो दंडभी डंडं समारभेज्जासि' (आचा)। २ वि. डरनेवाला, भीरु (आचा)।

भीअ वि [भीत] डरा हुआ (हे २, १९३; ४, ५३, पाअ; कुमा, उवा)। °भीय वि [°भीत] अत्यन्त डरा हुआ (सुर ३, १६५)।

भीइ स्त्री [भीति] डर, भय (सुर २, २३७; सिरि ८३६; प्रासू २४)।

भीइअ वि [भीत] डरा हुआ (उप ६४०)।

भीइर वि [भेतृ] डरनेवाला, 'ता मरणभीइरं विसज्जेह मं, पव्वईस्सं' (वसु)।

भीड [दे] देखो भिड। संकृ. भीडिवि (अप) (भवि)।

भीडिअ [दे] देखो भिडिय (सुपा २६२)।

भीतर [दे] देखो भित्तर (कुमा)।

भीम वि [भीम] १ भयंकर, भीषण (पाअ; उव; पण्ह १, १; जी ४४, प्रासू १४४)। २ पुं. एक पाण्डव, भीमसेन (गा ४४३)। ३ राक्षस-निकाय का दक्षिण दिशा का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५)। ४ भारतवर्ष का भावी सातवाँ प्रतिवासुदेव; 'अपराइए य भीमे महाभीमे य सुग्गीवे' (सम १५४)। ५ राक्षस-वंश का एक राजा, एक लंकापति

(पउम ५, २६३)। ६ सगर चक्रवर्ती का एक पुत्र (पउम ५, १७५)। ७ दमयंती का पिता (कुप्र ४८)। ८ एक कुल-पुत्र (कुप्र १२२)। ९ गुजरात का चालुक्य-वंशीय एक राजा—भीमदेव (कुप्र ४)। १० हस्तिनापुर नगर का एक कूटग्राह—राज-पुरुष (विपा १, २)। °एव पुं [°देव] गुजरात का एक चालुक्य राजा (कुप्र ५)। °कुमार पुं [°कुमार] एक राज-पुत्र (धम्म)। °प्पभ पुं [°प्रभ] राक्षस-वंश का एक राजा, एक लंका-पति (पउम ५, २५९)। °रह पुं [°रथ] एक राजा, दमयंती का पिता (कुप्र ४८)। °सेण पुं [°सेन] १ एक पाण्डव, भीम (णाया १, १६)। २ एक कुलकर पुरुष (सम १५०)। °वलि पुं [°ावलि] अंग-विद्या का जानकार पहला रुद्र पुरुष (विचार ४७३)। °ासुर न [°ासुर] शास्त्र-विशेष (अणु)।

भीमासुरक्क न [भीमासुरोक्त. °रीय] एक जैनेतर प्राचीन शास्त्र (अणु ३६)।

भीरु } वि [भीरु, °क] डरपोक (चेइय **भीरुअ** } ६९; गउड; उत्त २७, १०; अभि ८२)।

भीस सक [भीषय्] डराना। भीसइ (धात्वा १४७), भीसेइ (प्राकृ ६४)।

भीसण वि [भीषण] भयंकर, भय-जनक (जी ४९; सण; पात्र)।

भीसग देखो भेसग (राज)।

भीसाव देखो भीस। भीसावेइ (धात्वा १४७)।

भीसिद (शौ) वि [भीषित] भय-भीत किया हुआ, डराया हुआ (नाट—माल ५९)।

भीह अक [भी] डरना। भीहइ (प्राकृ ६४)।

भुअ देखो भुंज। भुअइ, भुअए (षड्)।

भुअ न [दे] भूर्ज-पत्र, वृक्ष-विशेष की छाल (दे ६, १०६)। °रुक्ख पुं [°वृक्ष] वृक्ष-विशेष; भूर्जपत्र का पेड़ (पण्ण १—पत्र ३४)। °वत्त न [°पत्र] भोजपत्र (गउड ६४१)।

भुअ पुंस्त्री [भुज] १ हाथ, कर (कुमा)। २ गणित-प्रसिद्ध रेखा-विशेष (हे १, ४)। स्त्री. °आ (हे १, ४; पिंग; गउड; से १, ३)। °परिसप्प पुंस्त्री [°परिसर्प] हाथ से चलनेवाला प्राणी, हाथ से चलनेवाली सर्प-जाति (जी २१; पण्ण १; जीव २)। स्त्री. °प्पिणी (जीव २)। °मूल न [°मूल] कक्षा, काँख (पात्र)। °मोयग पुं [°मोचक] रत्न की एक जाति (भग; औप; उत्त ३६, ७६; तंदु २०)। °सप्प पुं [°सर्प] देखो °परिसप्प (पव १५०)। °ाल वि [°वत्] बलवान् हाथवाला (सिरि ७६९)।

भुअअ देखो भुअग (गउड; पिंग; से ७, ३६; पात्र)।

भुअइंद पुं [भुजगेन्द्र] १ श्रेष्ठ सर्प (गउड)। २ शेषनाग, वासुकि (अच्चु २७)। °वुरेस पुं [°पुरेश] श्रीकृष्ण (अच्चु २७)।

भुअईसर } पुं [भुजगेश्वर] ऊपर देखो **भुअएसर** } (पण्ह १, ४—पत्र ७८; अच्चु ३९)। °णअरणाह पुं [°नगरनाथ] श्री-कृष्ण (अच्चु ३९)।

भुअंग पुं [भुजंग] १ सर्प, साँप (से ५, ६०; गा ६४०; गउड; सुर २, २४५; उव; महा; पात्र)। २ विट, रंडीबाज, वेश्या-गामी (कुमा; वज्जा ११६)। ३ जार, उपपति (कप्पू)। ४ द्यूतकार, जुआड़ी (उप पृ २५२)। ५ चोर, तस्कर; 'देव सलोत्तओ चेव मायापओयकुसलो वाणिययवेसधारी गहिओ महाभुअंगो' (स ४३०)। ६ बदमाश, ठग; 'तावसवेसधारिणो गहियनलियापओग-खग्गा विसेणकुमारसंतिया चत्तारि महाभुयंग त्ति' (स ५२४)। °किंत्ति स्त्री [°कृत्ति] कंचुक (गा ६४०)। °पआत (अप) देखो °प्पजाय (पिंग)। °प्पजाय न [°प्रयात] १ सर्प-गति। २ छन्द-विशेष (भवि)। °राअ पुं [°राज] शेषनाग (त्रि ८२)। °वइ पुं [°पति] शेषनाग (गउड)। °ापआअ (अप) देखो °प्पजाय (पिंग)।

भुअंगम पुं [भुजंगम] १ सर्प, साँप (गउड १७८; पिंग)। २ स्वनाम-ख्यात एक चोर (महा)।

भुअंगिणी } स्त्री [भुजङ्गी] १ विद्या-विशेष **भुअंगी** } (पउम ७, १४०)। २ नागिन (सुपा १८१; भत्त ११७)।

भुअग पुं [भुजग] १ सर्प, साँप (सुर २, २३६; महा; जी ३१)। २ एक देव-जाति, नाग-कुमार देव (पण्ह १, ४)। ३ वानव्यंतर देवों की एक जाति, महोरग (इक)। ४ रंडीबाज; 'मं कुट्टणिव्व भुयगं तुमं पयारेसि अलियवयणेहिं' (कुप्र ३०९)। ५ वि. भोगी, विलासी (णाया १, १ टी—पत्र ४; औप)। °परिरिंगिअ न [परिरिङ्गित] छन्द-विशेष (अजि १६)। °वई स्त्री [°वती] एक इन्द्राणी, अतिकाय नामक महोरगेन्द्र की एक अग्र-महिषी (इक; ठा ४, १; णाया २)। °वर पुं [°वर] द्वीप-विशेष (राज)।

भुअग वि [भोजक] पूजक, सेवा-कारक (णाया १, १ टी—पत्र ४; औप; अंत)।

भुअगा स्त्री [भुजगा] एक इन्द्राणी, अतिकाय नामक इन्द्र की एक अग्र-महिषी (ठा ४, १, णाया २; इक)।

भुअगीसर देखो भुअईसर (तंदु २०)।

भुअण देखो भुवण (चंड; हास्य; १२२; पिंग; गउड)।

भुअप्पइ }
भुअप्फइ } देखो बहस्सइ (पि २१२; षड्)।
भुअस्सइ }

भुआ देखो भुअ = भुज।

भुइ स्त्री [भृति] १ भरण। २ पोषण। ३ वेतन। ४ मूल्य (हे १, १३१; षड्)।

भुउडि देखो भिउडि (पि १२४)।

भुंगल न [दे] वाद्य-विशेष (सिरि ४१२)।

भुंज सक [भुज्] १ भोजन करना। २ पालन करना। ३ भोग करना। ४ अनुभव करना। भुंजइ (हे ४,११०; कस; उवा)। भुंजेजा (कप्प); 'निअभुअं भुंजमु सुहेणं' (सिरि १०४४)। भूका. भुंजित्था (पि ५१७)। भवि. भुंजिही, भोक्खसि, भोक्खामि, भोक्खसे, भोच्छं (पि ५३२; कप्प; हे ३, १७१)। कर्म. भुज्जइ, भुंजिज्जइ (हे ४, २४९)। वकृ. भुंजंत, भुंजमाण, भुंजेमाण, भुंजाण (आचा; कुमा; विपा १, २; सम ३९; कप्प; पि ५०७; धर्मवि १२७)। कवकृ. भुज्जंत (सुपा ३७५)। संकृ. भुंजिअ, भुंजिआ, भुंजिऊण, भुंजिऊणं, भुंजित्ता, भुंजित्तु, भोच्चा, भोत्तुं, भोत्तूण (पि ५९१; सूअ १, ३, ४, २; सण; पि ५८५;

उत्त ६, ३; पि ५०७; हे २, १५; कुमा; प्राकृ ३४)। हेकृ. भुंजित्तए, भोत्तुं, भोत्तए (पि ५७८; हे ४, २१२; आचा), भुंजण (अप) (कुमा)। कृ. भुज्ज, भुंजियव्व, भुंजेयव्व, भोत्तव्व, भुत्तव्व, भोज्ज, भोग्ग (तंदु ३३; धर्मवि ४१; उप १३६ टी; श्रा १६; सुपा ४६५; पिंडभा ४५; सम्मत्त २१६; गाया १, १; पउम ६४, ६४; हे ४, २१२; सुपा ४६५; पउम ६८, २२; दे ७, २१; प्रोघ २१४; उप पृ ७५; सुपा १६३; भवि)।

भुंजग वि [भोजक] भोजन करनेवाला (पिंड १२३)।

भुंजण देखो भुंज = भुज्।

भुंजण न [भोजन] भोजन (पिंड ५२१)।

भुंजणा स्त्री. ऊपर देखो (पव १०१)।

भुंजय देखो भुंजग (सण)।

भुंजाव सक [भोजय्] १ भोजन कराना। २ पालन कराना। ३ भोग कराना। भुंजावेइ (महा)। कवकृ. भुंजाविज्जंत (पउम २, ५)। संकृ. भुंजाविऊण, भुंजावित्ता (पि ५८२)। हेकृ. भुंजावेउं (पंचा १०, ४८ टी)।

भुंजावय वि [भोजक] भोजन करानेवाला (स २५१)।

भुंजाविअ वि [भोजित] जिसको भोजन कराया गया हो वह (धर्मवि ३८; कुप्र १६८)।

भुंजिअ देखो भुंज = भुज्।

भुंजिअ देखो भुत्त (भवि)।

भुंजिर वि [भोक्तृ] भोजन करनेवाला (सुपा ११)।

भुंड पुंस्त्री [दे] सूकर, वराह; गुजराती में 'भुंड' (दे ६, १०६)। स्त्री. °डी, °डिणी (दे ६, १०६ टी; भवि)।

भुंडीर [दे] ऊपर देखो (दे ६, १०६)।

भुंभल न [दे] मद्य-पात्र (कम्म १, ५२)।

भुंहडि (अप) देखो भूमि (हे ४, ३९५)।

भुक्क अक [बुक्क्] भूँकना, श्वान का बोलना। भुक्कइ (गा ६६४ अ)।

भुक्कण पुं [दे] १ श्वान, कुत्ता। २ मद्य आदि का मान (दे ६, ११०)।

भुक्किअ न [बुक्कित] श्वान का शब्द (पाअ; पि २०६)।

भुक्किर वि [बुक्कितृ] भूँकनेवाला (कुमा)।

भुक्खा स्त्री [दे. बुभुक्षा] भूख, क्षुधा (दे ६, १०६; गाया १, १—पत्र २८; महा; उप ३७६; आरा ६६; सम्मत्त १५७)। °लु वि [°वत्] भूखा (धर्मवि ६६)।

भुक्खिअ वि [दे. बुभुक्षित] भूखा, क्षुधातुर (पाअ; कुप्र १२६; सुपा ५०१; उप ७२८ टी; स ५८३; वै २९)।

भुगुभुग अक [भुगभुगाय्] 'भुग' 'भुग' आवाज करना। वकृ. भुगुभुगंत (पउम १०५, ५६)।

भुग्ग वि [भुग्न] १ मोड़ा हुआ, वक्र, कुटिल (गाया १, ८—पत्र १३३; उवा)। वि. भग्न, टूटा हुआ (गाया १, ८)। ३ दग्ध, जला हुआ; 'किं मज्झ जीविएणं एवंविहपराभवग्गिभुग्गाए' (उप ७६८ टी)। ४ भूना हुआ; 'चणउव्व भुग्गु' (कुप्र ४३२)।

भुज (अप) देखो भुंज। भुजइ (सण)।

भुजंग देखो भुअंग (भवि)।

भुजग देखो भुअग = भुजग (धर्मवि १२४)।

भुज्ज देखो भुंज भुज्जइ (षड्)।

भुज्ज पुं [भूर्ज] १ वृक्ष-विशेष। २ न. वृक्ष-विशेष की छाल (कप्पू; उप पृ १२७; सुपा २७०)। °पत्त, °वत्त न [°पत्र] वही अर्थ (प्रावम; नाट. विक्र ३३)।

भुज्ज देखो भुंज।

भुज्ज वि [भूयस्] प्रभूत, अनल्प (औप; पि ४१४)।

भुज्जिय वि [दे. भुग्न] १ भूना हुआ धान्य। २ पुं. धाना, भूना हुआ यव (पण्ह २ ५—पत्र १४८)।

भुज्जो अक [भूयस्] फिर, पुनः (उवा; सुपा २७२)।

भुण्ण पुं [भ्रूण] १ स्त्री का गर्भ। २ बालक, शिशु (संक्षि १७)।

भुत्त वि [भुक्त] १ भक्षित (गाया १, १; उवा; प्रासू ३८)। २ जिसने भोजन किया हो वह; 'ते भायरो न भुत्ता' (सुख १, १५; कुप्र १२)। ३ सेवित। ४ अनुभूत; 'अम्म ताय मए भोगा भुत्ता विसफलोवमा' (उत्त १९, ११; गाया १, १)। ५ न. भक्षण, भोजन; 'हासभुत्तासियाणि य' (उत्त १६, १२)। ६ विष-विशेष (ठा ६)। °भोगि वि [°भोगिन्] जिसने भोगों का सेवन किया हो वह (गाया १, १)।

भुत्तवंत वि [भुक्तवत्] जिसने भोजन किया हो वह (पि ३६७)।

भुत्तव्व देखो भुंज।

भुत्ति स्त्री [भुक्ति] १ भोजन (अच्चु १७; अज्झ ८२)। २ भोग (सुपा १०८)। ३ आजीविका के लिए दिया जाता गाँव, क्षेत्र आदि गिरास; 'उज्जेणी नाम पुरी दिन्ना तस्स य कुमारभुत्तीए' (उप २११ टी; कुप्र १६९)। °वाल पुं [°पाल] गिरासदार (धर्मवि १५४)।

भुत्तु वि [भोक्तृ] भोगनेवाला (श्रा ६, संबोध ३५)।

भुत्तूण पुं [दे] भृत्य, नौकर (दे ६, १०६)।

भुत्थल्ल पुं [दे] बिल्ली को फेंका जाता भोजन (कप्पू)।

भुम देखो भम = भ्रम्। भुमइ (हे ४, १६१; सण)। संकृ. भुमिवि (अप) (सण)।

भुम°, भुमगा, भुमया, भुमा स्त्री [भ्रू] भौं, आँख के ऊपर की रोम राजि (भग; उवा; हे २, १६७; औप; कुमा; पाअ; पव ७३)।

भुमिअ देखो भमिअ = भ्रान्त; 'भुमिअधणू' (कुमा)।

भुम्मि (अप) देखो भूमि (पिंग)।

भुरुंडिआ स्त्री [दे] शिवा, शृगाली, सियारिन (दे ६, १०१)।

भुरुंडिय, भुरुकुंडिअ, भुरुहुंडिअ वि [दे] उद्धूलित, धूलि-लिप्त; 'धूलिभुरुंडियपुत्तेहिं परिगया चिंतए तत्तो' (सुपा २२९; दे ६, १०६), 'भूइभुर (? रु) कुंडियंगो' (कुप्र २६३; सूत्र कु० चूर्णी गा० २८२)।

भुल्ल अक [भ्रंश्] १ च्युत होना। २ गिरना। ३ भूलना; 'भुल्लंति ते मणा मग्गा हा पमाओ दुरंतओ' (प्रात्म १६; हे ४, १७७)।

भुल्ल वि [भ्रष्ट] भूला हुआ, 'कामंधओ किं पममेसि भुल्लो' (श्रु १५३; सुपा १२४; ५१६; कप्पू)।

भुल्लविअ वि [भ्रंशित] भ्रष्ट किया हुआ (कुमा)।

भुल्लिर वि [भ्रंशिन्] भूलनेवाला, 'मयण-अभुल्लिरदुल्ललियभल्लिमुमहल्लतिक्खभल्लीहिं' (सुपा १२३)।

भुल्लुंकी [दे] देखो भल्लुंकी (पाअ)।

भुव देखो हुव=भू। भुवइ (पि ४७५)। भुवदि (शौ) (धात्वा १४७)। भूका. भुवि (भग)।

भुव देखो भुअ=भुज (भवि)।

भुवइंद देखो भुअइंद (से ५, ७१)।

भुवण न [भुवन] १ जगत्, लोक (जी १; सुपा २१; कुमा २, १५)। २ जीव, प्राणी; 'भुवणाभयदाणललिअस्स' (कुमा)। ३ आकाश (प्रासू १००)। °क्खोहणी स्त्री [°क्षोभनी] विद्या-विशेष (सुपा १७४)। °गुरु पुं [°गुरु] जगत् का गुरु (सुपा ७५)। °नाह पुं [°नाथ] जगत् का त्राता (उप पृ ३५७)। °पाल पुं [°पाल] विक्रम की बारहवीं शताब्दी का गोपगिरि का एक राजा (मुणि १०८६६)। °बंधु पुं [°बन्धु] १ जगत् का बन्धु। २ जिनदेव (उप २११ टी)। °सोह पुं [°शोभ] सातवें बलदेव के दीक्षक एक जैन मुनि (पउम २०, २०५)। °लंकार पुं [°लंकार] रावण का एक पट्ट-हस्ती (पउम ८२, १११)।

भुवणा स्त्री [भुवना] विद्या-विशेष (पउम ७, १४०)।

भुहका (मा) देखो भुक्खा (प्राकृ १०१)।

भुस देखो बुस; 'तुसरासी इवा भुसरासी इवा' (भग १५)।

भुसुंढि स्त्री [दे. भुशुण्डि] शस्त्र-विशेष (सण)।

भू देखो भुव=भू। भोमि (पि ४७६)। संकृ भोत्ता, भोदूण (शौ) (हे ४, २७१)।

भू स्त्री [भ्रू] भौं, आँख के ऊपर की रोम-राजि; 'रत्ता भूसन्नाए' (सुपा ५७६; श्रा १४; सुपा २२६; कुमा)।

भू स्त्री [भू] १ पृथिवी, धरती (कुमा; कुप्र ११६; जीवस २७६; सिरि १०४४)। २ पृथ्वीकाय, पार्थिव शरीरवाला जीव (कम्म ४, १०; १६; ३६)। °आर पुं [°दार] शूकर, सूअर (किरात ९)। °कंत पुं [°कान्त] राजा, नर-पति (श्रा २८)। °गोल पुं [°गोल] गोलाकार भूमण्डल (कप्पू)। °चंद पुं [°चन्द्र] पृथिवी का चन्द्र, भूमि-चन्द्र (कप्पू)। °चर वि [°चर] भूमि पर चलने फिरनेवाला मनुष्य आदि (उप ९८६ टी)। °च्छत्त पुंन [°च्छत्र] वनस्पति-विशेष (दे १, ६४)। °तणग देखो °यणय (राज)। °धण पुं [°धन] राजा (श्रा २८)। °धर पुं [°धर] १ राजा, नरपति (धर्मवि ३)। २ पर्वत, पहाड़ (धर्मवि ३; कुप्र २६४)। °नाह पुं [°नाथ] राजा (उप ९८६ टी; धर्मवि १०७)। °मह पुं [°मह] अहोरात्र का सत्ताईसवाँ मुहूर्त्त (सम ५१)। °यणय पुंन [°तृणक] वनस्पति-विशेष (पराण १—पत्र ३४)। °रुह पुं [°रुह] वृक्ष, पेड़ (गउड; पुप्फ ३६२; धर्मवि १३८)। °व पुं [°प] राजा (उप ७२८ टी; ती ३; श्रु ६६, काल)। °वइ पुं [°पति] राजा (सुपा ३६; पिंग)। °वाल पुं [°पाल] १ राजा (गउड; सुपा ५६०)। २ व्यक्ति-वाचक नाम (भवि)। °वित्त पुं [°वित्त] राजा (श्रा २८)। °वीढ न [°पीठ] भूतल, भूमि-तल (सुपा ५६३)। °हर देखो °धर (सण)।

भू° } पुं [भूयस्] कर्म-बन्ध का एक
भूअ } प्रकार (कम्म ५, २२; २३)। °गार पुं [°कार] वही अर्थ (कम्म ५, २२)। देखो भूओगार।

भूअ पुं [दे] यन्त्रवाह, यन्त्र-वाहक पुरुष (दे ६, १०७)।

भूअ वि [भूत] १ वृत्त, संजात, बना हुआ। २ अतीत, गुजरा हुआ (षड्; पिंग)। ३ प्राप्त, लब्ध (णाया १, १—पत्र ७४)। ४ समान, सदृश, तुल्य; 'तसभूएहिं' (सूअ २, ७, ७; ८ टी)। ५ वास्तविक, यथार्थ, सत्य; 'भूअत्थेहिं चिअ गुणेहिं' (गउड), 'भूयत्थसत्थ-गंथी' (सम्मत्त १३६)। ६ विद्यमान; 'एवं जइ स इत्थो संतो भूओ तदन्नहाभूओ' (विसे २२५१)। ७ उपमा, औपम्य। ८ तादर्थ्य, तदर्थ-भाव; 'ओवम्मे तादत्थे व हुज्ज एसित्थ भूयसद्दो त्ति' (श्रावक १२४)। ९ न. प्रकृत्यर्थ; 'उम्मत्तगभूए' (ठा ५, १)। १० पुं. एक देव-जाति (पराह १, ४; इक; णाया १, १—पत्र ३९)। ११ पिशाच (पाअ; दे ४, २५)। १२ समुद्र-विशेष (देवेन्द्र २५५)। १३ द्वीप-विशेष (सुज्ज १९)। १४ पुंन. जन्तु, प्राणी; 'पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं', 'भूयाणि वा जीवाणि वा' (आचा १, ६, ५, ४; १, ७, २, १; २, १,१,११; पि ३६७); 'हरियाणि भूआणि विलंबगाणि' (सूअ १, ७, ८; उवर १५६)। १५ पृथिवी आदि पाँच द्रव्य, महाभूत (स १६५), 'किं मन्ने पंच भूया' (विसे १६८९)। १६ वृक्ष, पेड़, वनस्पति (आचा १, १, ६, २)। °इंद पुं [°इन्द्र] भूत-देवों का इन्द्र (पि १६०)। °ग्गह पुं [°ग्रह] भूत का आवेश (जीव ३)। °ग्गाम पुं [°ग्राम] जीव-समूह (सम २६)। °त्थ वि [°ार्थ] यथार्थ, वास्तविक (गउड; पउम २८, १४)। °दिण्णा देखो °दिन्ना (पडि)। °दिन्न पुं [°दिन्न] १ एक जैन आचार्य (णंदि)। २ एक चाण्डाल-नायक (महा)। °दिन्ना स्त्री [°दिन्ना] १ एक अन्त-कृत् स्त्री (अंत)। २ एक जैन साध्वी, महर्षि स्थूलभद्र की भगिनी (कप्प)। °मंडलपविभत्ति न [°मण्डलप्रविभक्ति] नाट्य-विधि का एक भेद (राज)। °लिवि स्त्री [°लिपि] लिपि-विशेष (सम ३५)। °वडिंसा स्त्री [°ावतंसा] १ एक इन्द्राणी (जीव ३)। २ एक राजधानी (दीव)। °वाइ, °वाइय, °वादिय पुं [°वादिन्, °वादिक] १ एक देव-जाति (इक; पराह १, ४; औप)। २ वि. भूत-ग्रह का उपचार करनेवाला, मन्त्र-तन्त्रादि का जानकार (सुख १, १४)। °वाय पुं [°वाद] १ यथार्थवाद। २ दृष्टिवाद, बारहवाँ जैन अंग-ग्रन्थ (ठा १०—पत्र ४९१)। °विज्जा, °वेज्जा स्त्री [°विद्या] आयुर्वेद का एक भेद, भूत-निग्रह-विद्या (विपा १, ७—पत्र ७५ टी)। °णंद पुं [°नन्द] १ नागकुमार देवों का दक्षिण दिशा का इन्द्र-

(इक; ठा २, ३—पत्र ८४)। २ राजा कूणिक का पट्ट-हस्ती (भग १७, १)। °णंदप्पह पुं [°नन्दप्रभ] भूतानन्द इन्द्र का एक उत्पात-पर्वत (राज)। °वाय देखो °वाय (विसे ५५१; पव ६२ टी)।

भूअण्ण पुं [दे] जोती हुई खल-भूमि में किया जाता यज्ञ (दे ६, १०७)।

भूआ स्त्री [भूता] १ एक जैन साध्वी, महर्षि स्थूलभद्र की एक भगिनी (कप्प; पडि)। २ इन्द्राणी की एक राजधानी (जीव ३)।

भूइ स्त्री [भूति] १ संपत्ति, धन, दौलत; 'ता परदेसं गंतुं विढवित्ता भूरिभूइपब्भारं' (सुर १, २२३; सुपा १४८)। २ भस्म, राख; 'जारमसाणसमुब्भवभूइसुहप्फंससिज्जिरंगीए' (गा ४०८; स ६; गउड)। ३ महादेव के अंग की भस्म; 'भूइभूसियं हरसरीरं व' (सुपा १४८; ३६३)। ४ वृद्धि (सूअ १, ६, ६)। ५ जीव-रक्षा (उत्त १२, ३३)। °कम्म पुंन [°कर्मन्] शरीर आदि की रक्षा के लिए किया जाता भस्मलेपन-सूत्रबंधनादि (पव ७३ टी; बृह १)। °पण्ण, °पन्न वि [°प्रज्ञ] १ जीव-रक्षा की बुद्धिवाला (उत्त १२, ३३)। २ ज्ञान की वृद्धिवाला, अनन्तज्ञानी (सूअ १, ६, ६)। देखो °भूई।

भूइंद पुं [भूतेन्द्र] भूतों का इन्द्र (पि १६०)।

भूइट्ठ वि [भूयिष्ठ] अति प्रभूत, अत्यन्त (विसे २०३६; विक्र १४१)।

भूइट्ठा स्त्री [भूतेष्टा] चतुर्दशी तिथि (प्राक)।

भूई° देखो भूइ (पव २—११२)। °कम्मिय वि [°कर्मिक] भूति-कर्म करनेवाला (औप)।

भूओ अ [भूयस्] १ फिर से, पुनः (पउम ६८, २८; पंच २, १८)। २ बारंबार, फिर फिर; 'भूओ य अहिलसंतं' (उप ६५१)। °गार पुं [°कार] कर्म-बन्ध का एक प्रकार, थोड़ी कर्म-प्रकृति के बन्ध के बाद होनेवाला अधिक-प्रकृति-बन्ध (पंच ५, १२)।

भूओद पुं [भूतोद] समुद्र-विशेष (सुज्ज १६)।

भूओवघाइय वि [भूतोपघातिन् °क] जीवों की हिंसा करनेवाला (सम ३७; औप)।

भूंहडी (अप) देखो भूमि (हे ४, ३६५ टि)।

भूण देखो भुण्ण (संक्षि १७; सम्मत्त ८६)।

भूज देखो भुज्ज = भूर्ज (प्राकृ २६)।

भूप देखो भू-व (वव १)।

भूमआ देखो भुमया (प्राप्र)।

भूमणया स्त्री [दे] स्थगन, आच्छादन (वव १)।

भूमि स्त्री [भूमि] १ पृथिवी, धरती (पउम ६६, ४८; गउड)। २ क्षेत्र (कुमा)। ३ स्थल, जमीन, जगह, स्थान (पाअ; उवा; कुमा)। ४ काल, समय (कप्प)। ५ माल, मंजिला, तला; 'सत्तभूमियं पासायभवणं' (महा)। °कंप पुं [°कम्प] भू-कम्प (पउम ६६, ४८)। °गिह, °घर न [°गृह] नीचे का घर, भुँइघरा, तहखाना (श्रा १६, महा)। °गोयरिय वि [°गोचरिक] स्थलचर, मनुष्य आदि (पउम ५६, ५२)। स्त्री. °री (पउम ७०, १२)। °च्छत्त न [°च्छत्र] वनस्पति-विशेष (दे)। °तल न [°तल] धरा-पृष्ठ, भूतल (सुर २, १०५)। °देव पुं [°देव] ब्राह्मण (मोह १०७)। °फोड पुं [°स्फोट] वनस्पति-विशेष (जी ६)। °फोडी स्त्री [°स्फोटी] एक प्रकार का जहरीला जन्तु; 'पासवणं कुणमाणो दट्ठो गुज्झम्मि भूमिफोडीए' (सुपा ६२०)। °भाग पुं [°भाग] भूमि-प्रदेश (महा)। °रुह पुंन [°रुह] भूमिस्फोट, वनस्पति-विशेष (श्रा २०; पव ४)। °वइ पुं [°पति] राजा (उप पृ १८८)। °वाल पुं [°पाल] राजा (गउड)। °सुअ पुं [°सुत] मंगल-ग्रह (मृच्छ १४६)। °हर देखो °घर (महा)। देखो भूमी।

भूमिआ स्त्री [भूमिका] १ तला, मंजिल, माल (महा)। २ नाटक में पात्र का वेशान्तर-ग्रहण (कप्पू)।

भूमिंद पुं [भूमीन्द्र] राजा, नरपति (सम्मत्त २१७)।

भूमिपिसाय पुं [दे. भूमिपिशाच] ताल वृक्ष, ताड़ का पेड़ (दे ६, १०७)।

भूमी देखो भूमि (से १२, ८८; कप्पू; पिंड ४४८, पउम ६४, १०)। °तुडयकूड न [°तुडगकूट] एक विद्याधर-नगर (इक)। °भुयंग पुं [°भुजङ्ग] राजा (मोह ८८)।

भूमीस पुं [भूमीश] राजा (श्रा १२)।

भूमीसर पुं [भूमीश्वर] राजा (सुपा ५०७)।

भूयिट्ठ देखो भूइट्ठ (हास्य १२३)।

भूरि वि [भूरि] १ प्रचुर, अत्यन्त, प्रभूत (गउड; कुमा; सुर १, २४८; २, ११४)। २ न. स्वर्ण, सोना। ३ धन, दौलत (सार्ध ८४)। °स्सव पुं [°श्रवस्] एक चन्द्र-वंशीय राजा, भूरिश्रवा (नाट—वेणी ३७)।

भूस सक [भूषय्] १ सजावट करना। २ शोभाना, अलंकृत करना। भूसेमि (कुमा)। वकृ. भूसयंत (रंभा)। कृ. भूस (रंभा)।

भूसण न [भूषण] १ अलंकार, गहना (पाअ; कुमा)। २ सजावट। ३ शोभा-करण (पण्ह २, ४; सण)।

भूसा स्त्री [भूषा] ऊपर देखो (दे ३, ८; कुमा)।

भूसिअ वि [भूषित] मण्डित, अलंकृत (गा ५२०; कुमा; काल)।

भूहरी स्त्री [दे] तिलक-विशेष (सिरि १०२२)।

भे अ [भोस्] आमन्त्रण-सूचक अव्यय (औप)।

भेअ पुंन [भेद] १ प्रकार, 'पुढविभेआइ इच्चाई' (जी ४, ५)। २ विशेष, पार्थक्य (ठा २, १, गउड; कप्पू)। ३ एक राजनीति, फूट; 'दाणमाणोवयारेहि सामभेआइएहि य' (प्रासू ६७), 'सामदंडभेयवप्पयाणणीइसुप्पउत्तणयविहिन्नू' (णाया १, १—पत्र ११)। ४ घाव, आघात; 'वड्ढंति वम्महविइण्णसरप्पसारा ताणं पआसइ ललुं चिअ चित्तभेओ' (कप्पू)। ५ मण्डल का अवान्तराल, बीच का भाग;

'पडिवत्तीओ उदए तह अत्थमणेसु य।
भेयवा(? घा)ओ कण्णकला
मुहुत्ताण गतीति य॥'
(सुज्ज १, १)।

६ विच्छेद, पृथक्करण, विदारण (औप; अणु)। °कर त्रि [°कर] विच्छेद-कर्ता (औप)। °घाय पुं [°घात] मंडल के बीच में गमन (सुज्ज १, १)। °समावन्न वि [°समापन्न] भेद-प्राप्त (भग)।

भेअग वि [भेदक] भेद-कारक (औप; भग)।

भेअण न [भेदन] १ विदारण, विच्छेदन; 'कुंतस्स सत्तपायालभेयणे नूण सामत्थं' (चेइय ७४६; प्रासू १४०)। २ भेद, फूट करना (पव १०६)। ३ विनाश; 'कुलसयण-मित्तभेयणकारिकाओ' (तंदु ४६)।

भेअय देखो **भेअग** (भग)।

भेअव्व देखो **भिंद**।

भेअव्व देखो **भी** = भी।

भेइल्ल वि [भेदवत्] भेद वाला, 'सम्मत्त-नाणचरणा पत्तेयं अट्ठअट्ठभेइल्ला' (संबोध २२; पंच ४, १)।

भेउर देखो **भिउर** (आचा; ठा २, ३)।

भेंडी स्त्री [भिण्डा, °ण्डी] गुल्म-विशेष, एक जाति की वनस्पति (पगह १—पत्र ३२)।

भेंभल देखो **भिंभल** (से ६, ३७)।

भेंभलिद (शौ) देखो **भिंभलिअ** (पि २०६)।

भेक देखो **भेग** (दे १, १४७)।

भेक्खस पुं [दे] राक्षस-रिपु, राक्षस का प्रतिपक्षी (कुप्र ११२)।

भेग पुं [भेक] मेंढक (दे ४, ६; धर्मसं ५५७)।

भेच्छ° देखो **भिंद**।

भेज्ज देखो **भिज्ज** (विपा १, १ टी—पत्र १२)।

भेज्ज, **भेज्जलय**, **भेज्जल्ल** वि [दे] भीरु, डरपोक (दे ६, १०७; षड्)।

भेड वि [दे. भेर] भीरु, कातर (हे १, २५१; दे ६, १०७; कुमा २, ६२)।

भेडअ देखो **भेलय** (मृच्छ १८०)।

भेत्तु वि [भेत्तृ] भेदन-कर्ता (आचा)।

भेत्तुआण, **भेत्तुं**, **भेत्तूण** देखो **भिंद**।

भेद देखो **भिंद**। संकृ. **भेदिअ** (मृच्छ १४३)।

भेद देखो **भेअ** (भग)।

भेदअ देखो **भेअय** (वेणी ११२)।

भेदणया देखो **भेअण** (उप पृ ३२१)।

भेदिअ देखो **भेद** = भिद।

भेदिअ वि [भेदित] भिन्न किया हुआ (भग)।

भेरंड पुं [भेरण्ड] देश-विशेष (राज)।

भेरव न [भैरव] १ भय, डर (कप्प)। २ पुं. राक्षस आदि भयंकर प्राणी (सूअ १, २, २, १४; १६)। ३ देखो **भइरव** (पउम ६, १८३; चेइय १००; औप; महा; पि ६१)। °**णंद** पुं [°नन्द] एक योगी का नाम (कप्पू)।

भेरि, **भेरी** स्त्री [भेरि; °री] वाद्य-विशेष, ढक्का (कप्प; पिंग; औप; सण)।

भेरुंड पुं [भेरुण्ड] भारुंड पक्षी, दो मुँह और एक शरीरवाला पक्षि-विशेष (दे ६, ५०)।

भेरुंड पुं [दे] १ चित्रक, चीता, श्वापद पशु-विशेष (दे ६, १०८)। २ निर्विष सर्प; 'सविसो हम्मइ सप्पो भेरुंडो तत्थ मुच्चइ' (प्रासू १६)।

भेरुताल पुं [भेरुताल] वृक्ष-विशेष (राज)।

भेल सक [भेलय्] मिश्रण करना, मिलाना। गुजराती में 'भेळववु'। संकृ. **भेलइत्ता** (पि २०६)।

भेलय पुं [दे. भेलक] बेड़ा, उडुप, नौका (दे ६, ११०)।

भेलविय वि [भेलित] मिश्रित, युक्त; 'सो भयभेलवियदिट्ठी जलं ति मन्नमाणो' (वसु)।

भेली स्त्री [दे] १ आज्ञा, हुकुम। २ बेड़ा, नौका। ३ चेटी, दासी (दे ६, ११०)।

भेस सक [भेषय्] डराना। भेसइ, भेसेइ (धात्वा १४८; प्राकृ ६४)। कर्म. भेसिज्जए (धर्मवि ३)। वकृ. **भेसंत**, **भेसयंत** (पउम ५३, ८६; श्रा १२)। कवकृ. **भेसिज्जंत** (पउम ४६, ५४)। संकृ. **भेसेऊण** (काल; पि ५८६)। हेकृ. **भेसेउं** (कुप्र १११)।

भेसग पुं [भीष्मक] रुक्मिणी का पिता, कौण्डिन्य-नगर का एक राजा (णाया १, १६; उप ६४८ टी)।

भेसज न [भैषज] औषध (पउम १४, ५४; ५६)।

भेसज्ज न [भैषज्य] औषध, दवाई (उवा; औप; रंभा)।

भेसण देखो **भीसण** (भग ७, ६—पत्र ३०७)।

भेसण न [भीषण] डराना, वित्रासन (ओघ २०१)।

भेसणा स्त्री [भीषणा] ऊपर देखो (पगह २, १—पत्र १००)।

भेसयंत देखो **भेस**।

भेसाव देखो **भेस**। भेसावइ (धात्वा १४८)।

भेसाविय, **भेसिअ** वि [भीषित] डराया हुआ (पउम ४६, ५३; से ७, ४५; सुर २, ११०; श्रावक ६३ टी)।

भो देखो **भुंज**। संकृ. **भोऊण**, **भोत्तूण** (धात्वा १४८; संक्षि ३७)। हेकृ. **भोउ** (धात्वा १४८; संक्षि ३७)। कृ. **भोत्तव्व** (संक्षि ३७), **भोअव्व** (धात्वा १४८)।

भो अ [भोस्] आमन्त्रण-द्योतक अव्यय (प्राकृ ७६; उवा; औप; जी ५०)।

भो° स [भवत्] तुम, आप। स्त्री. **भोई** (उत्त १४, ३३; स ११६)।

भोअ सक [भोजय्] खिलाना, भोजन कराना। भोयइ, भोयए (सम्मत्त १२५; सूअ २, ६, २६)। संकृ. **भोइत्ता** (उत्त ६, ३८)।

भोअ पुं [दे. भोग] भाड़ा, किराया (दे ६, १०८)।

भोअ देखो **भोग** (स ६५८; पाअ; सुपा ४०४; रंभा ३२)।

भोअ पुं [भोज] उज्जयिनी नगरी का एक सुप्रसिद्ध राजा (रंभा)। °**राय** पुं [°राज] वही अर्थ (सम्मत्त ७५)।

भोअ वि [भौत] भस्म से उपलिप्त (धर्मसं ४१)।

भोअग वि [भोजक] १ खानेवाला (पिंड ११७)। २ पालन-कर्ता (बृह १)।

भोअडा स्त्री [दे] कच्छ, लंगोट; 'णेवत्थं भोवडादीयं' (निचू १)।

भोअण न [भोजन] १ भक्षण, खाना। २ भात आदि खाद्य वस्तु (आचा; ठा ६; उवा; प्रासू १८०; स्वप्न ६२; सण)। ३ लगातार सतरह दिनों का उपवास (संबोध ५८)। ४ उपभोग; 'विरूवरूवाइं कामभोगाइं समारंभंति भोयणाए' (सूअ २, १, १७)। °**रुक्ख** पुं [°वृक्ष] भोजन देनेवाली एक कल्पवृक्ष-जाति (पउम १०२, ११६)।

भोअल (अप) पुं [दे. भोल] छन्द-विशेष (पिंग)।

भोइ वि [भोजिन्] भोजन करनेवाला (आचा; पिंड १२०; उव)।

भोइ देखो भोगि (सुपा ४०४; संबोध ५०; पिंग; रंभा)।

भोइ, **भोइअ** } पुं [दे. भोगिन्, °क] १ ग्रामाध्यक्ष, ग्राम का मुखिया, गाँव का नायक (वव ७; दे ६, १०८; उत्त १५, ६; बृह १; ओघभा ४३; पिंड ४३६; सुख १, ३, पव २६८; भवि; सुपा १६५; गा ५५६)। २ महेश (षड्)।

भोइअ वि [भोगिक] १ भोग-युक्त, भोगासक्त, विलासी (उत्त १५, ६; गा ५५६)। २ भोग-वंश में उत्पन्न (उत्त १५, ६)।

भोइअ वि [भोजित] जिसको भोजन कराया गया हो वह (सुर १, २१४)।

भोइणी स्त्री [दे. भोगिनी] ग्रामाध्यक्ष की पत्नी (पिंड ४३६; गा ६०३; ७३७; ७७६; निचू १०)।

भोइया, **भोई** } स्त्री [भोग्या] १ भार्या, पत्नी, स्त्री (बृह १; पिंड ३६८)। २ वेश्या (वव ७)।

भोई देखो भो° = भवत्।

भोंड देखो भुंड (गा ४०२)।

भोक्ख° देखो भुंज।

भोग पुंन [भोग] १ स्पर्श, रस आदि विषय, उपभोग्य पदार्थ; 'रूवी भंते भोगा अरूवी' (भग ७, ७—पत्र ३१०), 'भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरइ' (विपा १, २)। २ विषय-सेवा (भग ६, ३३; औप), 'भुंजंता बहुविहाइं भोगाइं' (संथा २७)। ३ मदन-व्यापार, काम-चेष्टा; 'कामभोगे यं खलु मए अप्पाहट्टु' (सूअ २, १, १२)। ४ विषयेच्छा, विषयाभिलाष (आचा)। ५ विषय-सुख; 'चइत्तु भोगाइं असासयाइं' (उत्त १३, २०); 'तुच्छा य कामभोगा' (प्रासू ६६); 'अहिभोगे विय भोगे निहणंव धणं मलंव कमलंपि मन्नंता' (सुपा ८३)। ६ भोजन, आहार (पंचा ५, ४; उप २०७)। ७ गुरु-स्थानीय जाति-विशेष, एक क्षत्रिय-कुल (कप्प; सम १५१; ठा ३, १—पत्र ११३; ११४)। ८ अमात्य आदि गुरु-स्थानीय लोक, गुरु-वंश में उत्पन्न (औप)। ९ शरीर, देह (तंदु २०)। १० सर्प की फरण (सुपा)। ११ सर्प का शरीर (दे ६, ८६)। °करा देखो भोगंकरा (इक)। °कुल न [°कुल] पूज्य-स्थानीय कुल-विशेष (पि ३६७)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष (आवम)। °पुरिस पुं [°पुरुष] भोग-तत्पर पुरुष (ठा ३, १—पत्र ११३; ११४)। °भागि वि [°भागिन्] भोग-शाली (पउम ५६, ८८)। °भूम वि [°भूम] भोग-भूमि में उत्पन्न (पउम १०२, १६६)। °भूमि स्त्री [°भूमि] देवकुरु आदि अकर्म-भूमि (इक)। °भोग पुंन [°भोग] भोगार्ह शब्दादि-विषय, मनोज्ञ शब्दादि (भग ७, ७; विपा १, ६)। °मालिणी स्त्री [°मालिनी] अधोलोक में रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८; इक)। °राय पुं [°राज] भोग-कुल का राजा (दस २, ८)। °वइया स्त्री [°वतिका] लिपि-विशेष (पराग १—पत्र ६२); 'भोगवयता (?इया)' (सम ३५)। °वई स्त्री [°वती] १ अधोलोक में रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८; इक)। २ पक्ष की दूसरी, सातवीं और बारहवीं रात्रि-तिथि (सुज १०, १५)। °विस पुं [°विष] सर्प की एक जाति (पराग १—पत्र ५०)।

भोगंकरा स्त्री [भोगंकरा] अधोलोक में रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८)।

भोगा स्त्री [भोगा] देवी-विशेष (इक)।

भोगि पुं [भोगिन्] १ सर्प, साँप (सुपा ३६६; कुप्र २६८)। २ पुंन. शरीर, देह (भग २, ५; ७, ७)। ३ वि. भोग-युक्त, भोगासक्त, विलासी (सुपा ३६६; कुप्र २६८)।

भोग्ग, **भोच्चा**, **भोच्छं°**, **भोज्ज** } देखो भुंज।

भोट्टंत पुं [भोटान्त] १ देश-विशेष, नेपाल के समीप का एक भारतीय देश, भोटान। २ भोटान का रहनेवाला (पिंग)।

भोण देखो भोअण (षड्)।

भोत्त देखो भुत्त (षड्; सुख २, ६; सुपा ४६५)।

भोत्तए, **भोत्तव्व** } देखो भुंज।

भोत्ता देखो भू = भुव = भू।

भोत्तु वि [भोक्तृ] भोगनेवाला (विसे १५६६; दे २, ४८)।

भोत्तुं, **भोत्तूण** } देखो भुंज।

भोत्तूण देखो भुत्तूण (दे ६, १०६)।

भोदूण देखो भू = भुव = भू।

भोम वि [भौम] १ भूमि-सम्बन्धी (सूअ १, ६, १२)। २ भूमि में उत्पन्न (ओघ २८; जी ५)। ३ भूमि का विकार (ठा ८)। ४ पुं. मंगल-ग्रह (पाअ)। ५ पुं. नगराकार विशिष्ट स्थान। ६ नगर (सम्म १५, ७८)। ७ निमित्त-शास्त्र-विशेष, भूमि-कम्पादि से शुभाशुभ फल बतलानेवाला शास्त्र (सम ४९)। ८ अहोरात्र का सत्ताईसवाँ मुहूर्त्त; 'अरणवं च भोग (? म)रिसहे' (सुज्ज १०, १३)। °ालिय न [°ालीक] भूमि-सम्बन्धी मृषावाद (पराह १, २)।

भोमिज्ज देखो भोमेज्ज (सम २; उत्त ३३६; २०३)।

भोमिर देखो भमिर; 'लब्भइ गाइअगंते संसारे सुभोमिरो जीवो' (संबोध ३२)।

भोमेज्ज, **भोमेयग** } वि [भौमेय] १ भूमि का विकार, पार्थिव (सम १००; सुपा ४८)। २ पुं. एक देव-जाति, भवनपति नामक देव-जाति (सम २)।

भोरुड पुं [दे] भारुंड पक्षी (दे ६, १०८)।

भोल सक [दे] ठगना (सुपा ५२२)।

भोल वि [दे] भद्र, सरल चित्तवाला; गुजराती में 'भोळु'। स्त्री. °ली, °लिया (महानि ६; सुपा ५१४)।

भोलग पुं [भोलक] यक्ष-विशेष, 'भोलगनामा जक्खो अभिवंछियसिद्धिदा अत्थि' (धर्मसं १४१)।

भोलव सक [दे] ठगना, गुजराती में 'भोळववुं'। संकृ. भोलविउं (सुपा २६४)।

भोलवण न [दे] वञ्चन, प्रतारण (सम्मत्त २२६)।

भोलविय, **भोलिअ** } वि [दे] वञ्चित, ठगा हुआ (कुप्र ४३५; सुपा ५२२)।

भोल्लय न [दे] पाथेय-विशेष, प्रबन्ध-प्रवृत्त पाथेय (दे ६, १०८)।

भोवाल (अप) देखो भू-वाल (भवि)।

भोहा (अप) देखो भू = भ्रू (पिंग)।

भ्रंत्रि (अप) देखो भंति = भ्रान्ति (हे ४, ३६०)।

॥ इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि भआराइसद्दसंकलणो तीसइमो तरंगो समत्तो ॥

म

म पुं [म] ओष्ठ-स्थानीय व्यञ्जन-वर्ण विशेष (प्राप)।

म अ [मा] मत, नहीं (हे ४, ४१८; कुमा; पि ६४; ११४; भवि)।

मआ स्त्री [मृगया] शिकार (अभि ५५)।

मइ स्त्री [मृति] मौत, मरण (सुर २, १४३)।

मइ स्त्री [मति] १ बुद्धि, मेधा, मनीषा; 'मेहा मई मणीसा' (पाअ; सुर २, ६५; कुमा; प्रासू ७१)। २ ज्ञान-विशेष, इन्द्रिय और मन से उत्पन्न होनेवाला ज्ञान (ठा ४, ४; णंदि; कम्म ३, १८; ४, ११; १४; विसे ६७)। °अन्नाण न [°अज्ञान] विपरीत मति-ज्ञान, मिथ्यादर्शन-युक्त मति-ज्ञान (भग विसे ११४; कम्म ४, ४१)। °णाण, °ण्णाण, °नाण न [°ज्ञान] ज्ञान-विशेष (विसे १०७; ११४; ११७; कम्म १, ४)। °नाणावरण न [°ज्ञानावरण] मति-ज्ञान का आवरक कर्म (विसे १०४)। °नाणि वि [°ज्ञानिन्] मति-ज्ञानवाला (भग)। °पत्तिया स्त्री [°पात्रिका] एक जैन मुनि-शाखा (कप्प)। °ब्भंस पुं [°भ्रंश] बुद्धि-विनाश (भग; सुपा १३४)। °म, °मंत, °वंत वि [°मत्] बुद्धिमान् (ओघ ६३०; आचा; भवि)।

मइ° देखो मई = मृगी (कुप्र ४४)।

मइअ वि [मत्त] मद-युक्त, उन्मत्त (से ७, ६६; गा ४६८; ७०६; ७६१)।

मइअ देखो मा = मा।

मइअ वि [दे. मतिक] १ भर्त्सित, तिरस्कृत (दे ६, ११४)। २ न. बोये हुए बीजों के आच्छादन के काम में लगती एक काष्ठ-मय वस्तु, खेती का एक औजार; 'नंगले मइयं सिया' (दस ७, २८; पण्ह १, १—पत्र ८)।

°मइअ वि [°मय] व्याकरण-प्रसिद्ध एक तद्धित-प्रत्यय, निवृत्त, बना हुआ; 'धम्ममइएहि अइसुंदरेहि' (उव), 'जिणपडिमं गोसीसचंद-णमइयं' (महा)।

मइआ स्त्री [मृगया] शिकार (सिरि १११५)।

मइंद पुं [मैन्द] राम का एक सैनिक, वानर-विशेष (से ४, ७; १३, ८३)।

मइंद पुं [मृगेन्द्र] १ सिंह, पंचानन (प्राकृ ३०; सुर १६, २४२; गउड)। २ छन्द का एक भेद (पिंग)।

मइज्ज देखो मईअ = मदीय (षड्)।

मइत्तो अ [मत्] मुझसे (प्राप्र)।

मइमोहणी स्त्री [दे. मतिमोहनी] सुरा, मदिरा, दारू (दे ६, ११३; षड्)।

मइरा स्त्री [मदिरा] ऊपर देखो (पाअ; से २, ११; गा २७०; दे ६, ११३)।

मइरेय न [मैरेय] ऊपर देखो (पाअ)।

मइल वि [मलिन] मैला, मल-युक्त, अस्वच्छ (हे २, ३८; पाअ; गा ३४; प्रासू २५; भवि)।

मइल पुं [दे] कलकल, कोलाहल (दे ६, १४२)।

मइल वि [दे. मलिन] गत-तेजस्क, तेज-रहित, फीका (दे ६, १४२; से ३, ४७)।

मइल सक [मलिनय्] मैला करना, मलिन बनाना। मइलइ, मइलेइ, मइलिंति, मइलेंति (भवि, उव; पि ५५६)। कर्म. मइलिज्जइ (भवि; पि ५५६)। वकृ. मइलंत (पउम २, १००)। कृ. मइलियव्व (स ३६६)।

मइल अक [दे. मलिनाय्] तेज-रहित होना, फीका लगना। वकृ. मइलंत (से ३, ४७; १०, २७)।

मइलण न [मलिनना] मलिन करना (गउड)।

मइलणा स्त्री [मलिनना] १ ऊपर देखो (ओघ ७८८)। २ मालिन्य, मलिनता। ३ कलंक; 'लहइ कुलं मइलणं जेण' (सुर ६, १२०), 'इमाए मइलणाए अमुगम्मि नयरुज्जा-णासन्ने नग्गोहपायवे उब्बंधणेण अत्ताणयं परिच्चइउं ववसिओ चक्कदेवो' (स ६४)।

मइलपुत्ती स्त्री [दे] पुष्पवती, रजस्वला स्त्री (षड्)।

मइलिअ वि [मलिनित] मलिन किया हुआ (श्रावक ६५; पि ५५६; भवि)।

मइल्ल वि [मृत] मरा हुआ। स्त्री. °ल्लिया, 'एवं खलु सामी! पउमावती देवी मइल्लियं दारियं पयाया। तए णं कणगरहे राया तीसे मइल्लियाए दारियाए नीहरणं करेंति, बहूणि लोइयाइं मयकिच्चाइं' (णाया १, १४—पत्र १८६)।

मइहर पुं [दे] ग्राम-प्रधान, गाँव का मुखिया (दे ६, १२१)। देखो मयहर।

मई स्त्री [दे] मदिरा, दारू (दे ६, ११३)।

मई स्त्री [मृगी] हरिणी, हरिण की मादा, हिरनी (गा २८७; से ६, ८०; दे ३, ४६; कुप्र १०)।

मई° देखो मइ = मति। °म, °व वि [°मत्] बुद्धिवाला (पि ७३; ३६६; उप १४२ टी)।

मईअ वि [मदीय] मेरा, अपना (षड्; कुमा; स ४७७; महा)।

मउ पुं [दे] पर्वत, पहाड़ (दे ६, ११३)।

मउ, **मउअ** वि [°मृदु, °क] कोमल, सुकुमार (हे १, १२७; षड्; सम ४१; सुर ३, ३७; कुमा)। स्त्री. °उई (प्राकृ २८; गउड)।

मउअ वि [दे] दीन, गरीब (दे ६, ११४)।

मउइअ वि [मृदुकित] जो कोमल बना हो (गउड)।

मउई देखो मउ = मृदु।

मउंद पुं [मुकुन्द] १ विष्णु, श्रीकृष्ण (राय)। २ वाद्य-विशेष; 'दुंदुहिमउंदमद्दल-तिलिमापमुहेण तूरसद्देण' (सुर ३, ६८), 'महामउंदसंठाणसंठिए' (भग)।

मउक्क देखो माउक्क = मृदुत्व (षड्)।

मउड पुंन [मुकुट] शिरो-भूषण, किरीट, सिरपेंच (पव ३८; हे १, १०७; प्राप्र; कुमा; पाअ; औप)।

मउड, **मउडि** पुं [दे] धम्मिल्ल, कबरी, जूट, जूड़ा (पाअ; दे ६, ११७)।

मउण देखो मोण (हे १, १६२; चंड)।

मउर पुंन [मुकुर] १ बाल-पुष्प, फूल की कली, बौर (कुमा)। २ दर्पण, आईना, शीशा। ३ कुलाल-दण्ड। ४ बकुल का पेड़। ५ मल्लिका-वृक्ष। ६ कोली-वृक्ष। ७ ग्रंथि-पर्ण-वृक्ष, चोरक (हे १, १०७; प्राकृ ७)।

मउर, **मउरंद** पुं [दे] वृक्ष-विशेष, अपामार्ग, ओंगा, लटजीरा, चिरचिरा (दे ६, ११८)।

मउल देखो मउड = मुकुट (से ४, ५१)।

मउल पुंन [मुकुल] थोड़ी विकसित कली, कलिका, बौर (रंभा २६)। २ देह, शरीर। ३ आत्मा; 'मउलं, मउलो' (हे १, १०७; प्राप्र)।

मउल अक [मुकुलय्] सकुचना, संकुचित होना; 'मउलेंति णअणाइं' (गा ५)। वकृ. **मउलंत**, **मउलिंत** (से ११, ६२; पि ४६१)।

मउलण न [मुकुलन] संकोच; 'जं चेअ मउलणं लोअणाणं' (हे २, १८४; विसे ११०६; गउड)।

मउलाअ अक [मुकुलय्] १ सकुचना। २ सक. संकुचित करना। वकृ. **मउलाअंत** (नाट—मालती ५४; पि १२३)।

मउलाइय वि [मुकुलित] सकुचाया हुआ, संकोचित (वज्जा १२६)।

मउलाव देखो मउलाअ। कर्म. मउलाविज्जंति (पि १२३)। वकृ. **मउलावेंत** (पउम १५, ८३)।

मउलावअ वि [मुकुलायक] संकुचित करने-वाला; 'हरिसविसेसो वियसावओ य मउलावओ य अच्छीण' (गउड)।

मउलाविय देखो मउलाइय (उप पृ ३२१; सुपा २००; भवि)।

मउलि पुंस्त्री [दे] हृदय-रस का उच्छलन (दे ६, ११५)।

मउलि पुं [मुकुलिन्] सर्प-विशेष (पण्ह १, १—पत्र ८; पण्ण १—पत्र ५०)।

मउलि पुंस्त्री [मौलि] १ किरीट, मुकुट, शिरो-भूषण (पाअ)। २ मस्तक, सिर (कुप्र ३८६; कुमा; अजि २२; अच्चु ३४)। ३ शिरो-वेष्टन विशेष, एक तरह की पगड़ी (पव ३८)। ४ चूड़ा, चोटी। ५ संयत केश। ६ पुं. अशोक वृक्ष। ७ स्त्री. भूमि, पृथिवी (हे १, १६२; प्राकृ १०)।

मउलिअ वि [मुकुलित] १ संकुचित (सुर ३, ४५; गा ३२३; से १, ६५)। २ मुकुला-कार किया हुआ (औप)। ३ एकत्र स्थित (कुमा)। ४ मुकुल-युक्त; कलिका-सहित (राय)।

मउवी देखो मउई (हे २, ११३; कुमा)।

मऊर पुंस्त्री [मयूर] पक्षि-विशेष, मोर (प्राप्र; हे १, १७१; णाया १, ३)। स्त्री. °री (विपा १, ३)। °**माल** न [°माल] एक नगर (पउम २७, ६)।

मऊरा स्त्री [मयूरा] एक रानी, महापद्म चक्रवर्ती की माता (पउम २०, १४३)।

मऊह पुं [मयूख] १ किरण, रश्मि (पाअ)। २ कान्ति, तेज। ३ शिखा। ४ शोभा (हे १, १७१; प्राप्र)। ५ राक्षस वंश के एक राजा का नाम, एक लंका-पति (पउम ५, २६५)।

मए सक [मदय्] मद-युक्त करना, उन्मत्त बनाना। वकृ. **मएंत** (से २, १७)।

मएज्जारिस वि [मादृश] मेरे जैसा, मेरे तुल्य; 'मएज्जारिसाणं पुरिसाहमाणं इमं चेवोचियं' (स ३३)।

मं (अप) देखो म = मा (षड्; हे ४, ४१८; कुमा)। °**कार** पुं [°कार] 'मा' अव्यय (ठा १०—पत्र ४९५)।

मंकड देखो मक्कड (आचा)।

मंकण पुं [मत्कुण] खटमल, क्षुद्र कीट-विशेष; गुजराती में 'मांकण' (जी १६)।

मंकण पुंस्त्री [दे. मर्कट] बन्दर, वानर। स्त्री. °णी; 'सयमेव मंकणीए धणीए तं कंकणी बद्धा' (कुप्र १८५)।

मंकाइ पुं [मङ्काति] एक अन्तकृद् महर्षि (अंत १८)।

मंकार पुं [मकार] 'म' अक्षर (ठा १०—पत्र ४९५)।

मंकिअ न [मङ्कित] कूद कर जाना (दे ८, १५)।

मंकुण देखो मंकण = मत्कुण (दे; भवि)। °**हत्थि** पुं [°हस्तिन्] गण्डीपद प्राणि-विशेष (पण्ण १—पत्र ४६)।

मंकुस [दे] देखो मंगुस (गा ७८१)।

मंख देखो मक्ख = म्रक्ष्। वकृ. **मंखंत** (राज)।

मंख पुं [दे] अण्ड, वृषण (दे ६, ११२)।

मंख पुं [मङ्ख] एक भिक्षुक-जाति जो चित्र-पट दिखाकर जीवन-निर्वाह करता है (णाया १, १ टी; औप; पण्ह २, ४; पिंड ३०६; कप्प)। °**फलय** न [°फलक] १ मंख का तख्ता। २ निर्वाह-हेतुक चैत्य (पंचा ६, ४५ टी)।

मंखण न [म्रक्षण] १ मक्खन; 'मंखणं व सुकुमालकरचरणा' (उप ६४८ टी)। २ अभ्यंग, मालिश (सुर १२, ८)।

मंखलि पुं [मङ्खलि] एक मंख-भिक्षु, गोशालक का पिता। °पुत्त पुं [°पुत्र] गोशालक, आजीवक मत का प्रवर्तक एक भिक्षु जो पहले भगवान् महावीर का शिष्य था (ठा १०; उवा)।

मंग सक [मङ्ग्] १ जाना। २ साधना। ३ जानना। कर्म. मंगिज्जए (विसे २२)।

मंग पुं [मङ्ग] १ धर्म (विसे २२)। २ रंजन-द्रव्य-विशेष, रंग के काम में आता एक द्रव्य (सिरि १०५७)।

मंगइय देखो मगइय (निर १. १)।

मंगरिया स्त्री [दे] वाद्य-विशेष (राय)।

मंगल पुं [मङ्गल] १ ग्रह-विशेष, अंगारक ग्रह (इक)। २ न. कल्याण, शुभ, क्षेम, श्रेय (कुमा)। ३ विवाह सूत्र-बन्धन (स्वप्न ४६)। ४ विघ्न-क्षय (ठा ३, १)। ५ विघ्न-क्षय के लिए किया जाता इष्टदेव-नमस्कार आदि शुभ कार्य। ६ विघ्न-क्षय का कारण, दुरित-नाश का निमित्त (विसे १२; १३; २२; २३; २४; औप; कुमा)। ७ प्रशंसावाक्य, खुशामद (सूअ १, ७, २५)। ८ इष्टार्थ-सिद्धि, वाञ्छित-प्राप्ति (कप्प)। ९ तप-विशेष, आयंबिल (संबोध ५८)। १० लगातार आठ दिनों का उपवास (संबोध ५८)। ११ वि. इष्टार्थ-साधक, मंगल-कारक (श्राव ४)। °ज्झय पुं [°ध्वज] मांगलिक ध्वज (भग)। °तूर न [°तूर्य] मंगल-वाद्य (महा)। °दीव पुं [°दीप] मांगलिक दीप, देव-मन्दिर में आरती के बाद किया जाता दीपक (धर्मवि १२३; पंचा ८, २३)। °पाढय पुं [°पाठक] मागध, चारण (पाअ)। °पाढिया स्त्री [°पाठिका] वीणा-विशेष, देवता के आगे सुबह और सन्ध्या में बजाई जाती वीणा (राज)।

मंगल वि [दे] १ सदृश, समान (दे ६, ११८)। २ न. अग्नि, आग। ३ डोरा बुनने का एक साधन। ४ बन्दनमाला (विसे २७)।

मंगलग पुंन [मङ्गलक] स्वस्तिक आदि आठ मांगलिक पदार्थ (सुपा ७७)।

मंगलसज्झ न [दे] वह खेत जिसमें बीज बोना बाकी हो (दे ६, १२६)।

मंगला स्त्री [मङ्गला] भगवान् श्रीसुमतिनाथ की माता का नाम (सम १५१)।

मंगलालया स्त्री [मङ्गलालया] एक नगरी का नाम (आचू १)।

मंगलावइ पुं [मङ्गलापातिन्] सौमनस-पर्वत का एक कूट (इक; जं ४)।

मंगलावई स्त्री [मङ्गलावती] महाविदेह वर्ष का एक विजय, प्रान्त-विशेष (ठा २, ३; इक)।

मंगलावत्त पुं [मङ्गलावर्त] १ महाविदेह वर्ष का एक विजय, प्रान्त-विशेष (ठा २, ३; इअ)। २ देव-विशेष (जं ४)। ३ न. एक देव-विमान (सम १७)। ४ पर्वत-विशेष का एक शिखर (इक)।

मंगलिअ } **मंगलीअ** } वि [माङ्गलिक] १ मंगल-जनक; 'सअलजीवलोअमंगलिअ-जम्मलाहस्स' (उत्तर ६०; अच्चु ३६; सुपा ७८)। २ प्रशंसा-वाक्य बोलनेवाला; 'सुहमंगलीए' (सूअ १, ७, २५)।

मंगल्ल वि [मङ्गल्य, माङ्गल्य] मंगल-कारी, मंगल-जनक, मांगलिक; 'पढमाणो जिणगुण-गणनिबद्धमंगल्लवित्ताइं' (चेइय १६०; गाया १, १; सम १२२; कप्प; औप; सुर १, २३८; १५, १७३; सुपा ५५)।

मंगी स्त्री [मङ्गी] षड्ज ग्राम की एक मूर्च्छना (ठा ७—पत्र ३६३)।

मंगु पुं [मङ्गु] एक सुप्रसिद्ध जैन आचार्य, आर्यमंगु (णंदि; ती ७; आत्म २३)।

मंगुल न [दे] १ अनिष्ट (दे ६, १४५; सुपा ३३८; सूक्त ८०)। २ पाप (दे ६, १४५; वज्जा ८; गउड; सूक्त ८०)। ३ पुं. चोर, तस्कर (दे ६, १४५)। ४ वि. असुन्दर, खराब (पाअ, ठा ४, ४—पत्र २७१; स ७१३; दंस ३)। स्त्री. °ली; 'मंगुली णं समणस्स भगवओ महावीरस्स धम्मपण्णत्ती' (उवा)।

मंगुस पुं [दे] नकुल, न्यौला, भुजपरिसर्प-विशेष (दे ६, ११८; सूअ २, ३, २५)।

मंच पुं [दे] बन्ध (दे ६, १११)।

मंच पुं [मञ्च] १ मचान, उच्चासन (कप्प; गउड)। २ गणितशास्त्र प्रसिद्ध दश योगों में तीसरा योग, जिसमें चन्द्रादि मंचाकार से रहते हैं (सुज्ज १२—पत्र २३३)। °इमंच पुं [°तिमञ्च] १ मचान के ऊपर का मञ्च, ऊपर ऊपर रखा हुआ मंच (औप)। २ गणित-प्रसिद्ध एक योग जिसमें चन्द्र, सूर्य आदि नक्षत्र एक दूसरे के ऊपर रक्खे हुए मंचों के आकार से अपस्थित होते हैं (सुज्ज १२)।

मंची स्त्री [मञ्चा] खटिया, खाट; 'ता आरुह मंचीए' (सुर १०, १६८; १६६)।

मंछुडु (अप) अ [मङ्क्षु] शीघ्र, जल्दी (भवि)।

मंजर पुं [मार्जार] मंजार, बिल्ला, बिलाव (हे २, १३२; कुमा)। देखो मज्जर, मज्जार।

मंजरि स्त्री [मञ्जरि] देखो मंजरी (औप)।

मंजरिअ वि [मञ्जरित] मञ्जरी-युक्त; 'मंजरिओ चूयनिकरो' (स ७१६)।

मंजरिआ } **मंजरी** } स्त्री [मञ्जरिका, °री] नवोत्पन्न सुकुमार पल्लवाकार लता, बौर (कुमा, गउड)। °गुंडी स्त्री [°गुण्डी] वल्ली-विशेष; 'तोमरिगुंडी य मंजरीगुंडी' (पाअ)।

मंजार देखो मंजर (हे १, २६)।

मंजिआ स्त्री [दे] तुलसी (दे ६, ११६)।

मंजिट्ठ वि [माञ्जिष्ठ] मजीठ रंगवाला, लाल। स्त्री. °ट्ठी (कप्पू)।

मंजिट्ठा स्त्री [मञ्जिष्ठा] मजीठ, रंग-विशेष (कप्पू; हे ४, ४३८)।

मंजीर न [मञ्जीर] १ नूपुर; 'हंसयं नेउरं च मंजीरं' (पाअ, स ७०४; सुपा ६६)। २ छन्द-विशेष (पिंग)।

मंजीर न [दे] शृङ्खलक, साँकल, जंजीर, सिकड़ (दे ६, ११६)।

मंजु वि [मञ्जु] १ सुन्दर, मनोहर (पाअ)। २ कोमल, सुकुमार (औप; कप्प)। ३ प्रिय, इष्ट (राय; जं १)।

मंजुआ स्त्री [दे] तुलसी (दे ६, ११६; पाअ)।

मंजुल वि [मञ्जुल] १ सुन्दर, रमणीय, मधुर (सम १५२, कप्प; विपा १, ७; पाअ; पिंग)। २ कोमल (गाया १; १)।

मंजुसा } **मंजूसा** } स्त्री [मञ्जूषा] १ विदेह वर्ष की एक नगरी (ठा २, ३—पत्र ८०; इक)। २ पिटारी, छोटी संदूक (सुपा ३२१; कप्पू)।

मंठ वि [दे] १ शठ, लुचा, बदमाश। २ पुं. बन्ध (दे ६, १११)।

मंड सक [मण्ड्] भूषित करना, सजाना। मंडइ (षड्), मंडंति (पि ५५७)।

मंड सक [दे] १ आगे धरना। २ प्रारम्भ करना, गुजराती में 'मांडवु'; 'जो मंडइ रण-भरधुरहो खंधु' (भवि)।

मंड पुंन [मण्ड] रस; 'तयाणंतरं च णं घयविहिपरिमाणं करेइ, नन्नत्थ सारइएणं गोघयमंडेणं' (उवा)।

मंडअ देखो मंडव = मण्डप (नाट—शकु ६८)।

मंडअ } पुं [मण्डक] खाद्य-विशेष, मांडा, मंडग } एक प्रकार की रोटी (उप पृ ११५, पव ४ टी; कुप्र ४३; धर्मवि ११६)।

मंडग वि [मण्डक] विभूषक, शोभा बढ़ानेवाला; 'ससि च·········जोइसमुहमंडगं'। (कप्प)।

मंडण न [मण्डन] १ भूषण, भूषा (गउड; प्रासू १३२)। २ वि. विभूषक, शोभा बढ़ानेवाला (गउड; कुमा)। स्त्री. °णी (प्रासू ६४)। °धाई स्त्री [°धात्री] आभूषण पहनानेवाली दासी (णाया १, १—पत्र ३७)।

मंडल पुं [दे. मण्डल] श्वान, कुत्ता (दे ६, ११४; पाअ; स ३६८; कुप्र २८०; सम्मत्त १६०)।

मंडल न [मण्डल] १ समूह, यूथ (कुमा; गउड; सम्मत्त १६०)। २ देश (उप १४२ टी; कुप्र ४६; २८०)। ३ गोल, वृत्ताकार पदार्थ (कुमा; गउड)। ४ गोल आकार से वेष्टन (ठा ३, ४—पत्र १६६; गउड)। ५ चन्द्र-सूर्य आदि का चार-क्षेत्र (सम ६६; गउड)। ६ संसार, जगत् (उत्त ३१, ३; ४; ५; ६)। ७ एक प्रकार का कुष्ठ रोग। ८ एक प्रकार की वृत्ताकार दाद—दद्रु (पिंड ६००)। ९ बिम्ब; 'डज्झइ ससिमंडलकलस-दिएणकंठग्गहं मयणो' (गउड)। १० सुभटों का स्थान-विशेष (राज)। ११ मण्डलाकार परिभ्रमण (सुज्ज १, ७; स ३४६)। १२ इंगित क्षेत्र (ठा ७—पत्र ३६८)। १३ पुं. नरकावास-विशेष (देवेन्द्र २६)। °व वि [°वत्] मण्डल में परिभ्रमण करनेवाला (सुज्ज १, ७)। °हिव पुं [°धिप] मण्डलाधीश (भवि)। °हिवइ पुं [°धिपति] वही अर्थ (भवि)।

मंडल पुंन [मण्डल] योद्धा का युद्ध समय का आसन (वव १)। °पवेस पुं [°प्रवेश] एक प्राचीन जैन शास्त्र (णंदि २०२)।

मंडलग्ग पुंन [मण्डलाग्र] तलवार, खड्ग (हे ३, ३४; भवि)।

मंडलय पुं [मण्डलक] एक माप, बारह कर्म-माषकों का एक बाट (अणु १५५)।

मंडलि पुं [मण्डलिन्] १ मण्डलाकार चलता वायु, चक्र-वात, बवंडर (जी ७)। २ माण्डलिक राजा; 'तेवीसं तित्थंकरा पुव्वभवे मंडलिरायाणो हात्था' (सम ४२)। ३ सर्प की एक जाति (पण्ह १—पत्र ५१)। ४ न. गोत्र-विशेष, जो कौत्स गोत्र की एक शाखा है। ५ पुंस्त्री. उस गोत्र में उत्पन्न (ठा ७—पत्र ३६०)। °पुरी स्त्री [°पुरी] नगर-विशेष, गुजरात का एक नगर, जो आजकल भी 'मांडल' नाम से प्रसिद्ध है (सुपा ६५६)।

मंडलिअ वि [मण्डलित] मण्डलाकार बना हुआ; 'मंडलियचंडकोदंडमुक्ककंडोलिखंडिय-सिरेहिं' (सुपा ४; वज्जा ६२; गउड)।

मंडलिअ वि [मण्डलिक, माण्डलिक] १ मण्डलाकारवाला। २ पुं. मंडल रूप से स्थित पर्वत-विशेष (ठा ३, ४—पत्र १६६; पण्ह २, ४)। ३ मण्डलाधीश, सामान्य राजा (णाया १, १; पण्ह १, ४; कुमा; कुप्र १२०; महा)।

मंडली स्त्री [मण्डली] १ पंक्ति, श्रेणी, समूह (से ५, ७६; गच्छ २, ५६)। २ अश्व की एक प्रकार की गति (से १३, ६६; महा)। ३ वृत्ताकार मंडल—समूह (संबोध १७; उव)।

मंडलीअ देखो मंडलिअ = मण्डलिक; 'तह तलवरसेणाहिवकोसाहिवमंडलीयसामंते' (सुपा ७३; ठा ३, १—पत्र १२६)।

मंडव पुं [मण्डप] १ विश्राम-स्थान। २ वल्ली आदि से वेष्टित स्थान (जीव ३; स्वप्न ३६; महा; कुमा)। ३ स्नान आदि करने का गृह; 'ण्हाणमंडवंसि', 'भोयणमंडवंसि' (कप्प; औप)।

मंडव न [माण्डव्य] १ गोत्र-विशेष। २ पुंस्त्री. उस गोत्र में उत्पन्न (ठा ७—पत्र ३६०)।

मंडविआ स्त्री [मण्डपिका] छोटा मण्डप (कुमा)।

मंडव्वायण न [माण्डव्यायन] गोत्र-विशेष (सुज १०, १६; इक)।

मंडावण न [मण्डन] सजाना, विभूषित कराना। °धाई स्त्री [°धात्री] सजानेवाली दासी (आचा २, १५, ११)।

मंडावय वि [मण्डक] सजानेवाला (निचू ६)।

मंडि° } वि [मण्डित] १ भूषित (कप्प; मंडिअ } कुमा)। २ पुं. भगवान् महावीर के षष्ठ गणधर का नाम (सम १६; विसे १८०२)। ३ एक चोर का नाम (धर्मवि ७२; ७३)। °कुच्छि पुंन [°कुक्षि] चैत्य-विशेष (उत २०, २)। °पुत्त पुं [°पुत्र] भगवान् महावीर का छठवाँ गणधर (कप्प)।

मंडिअ वि [दे] रचित, बनाया हुआ। २ बिछाया हुआ;

'संसारे हयविहिणा महिलारूवेण मंडिए पासे।
बज्झंति जाणमाणा अयाणमाणावि बज्झंति॥'
(रयण ८)।

३ आगे धरा हुआ; 'मइ मंडिउ रणभरधुरहो खंधु' (भवि)। ४ आरब्ध; 'रणु मंडिउ कच्छाहिवेण ताम' (भवि; सण)।

मंडिल्ल पुं [दे] अपूप, पूआ, पक्वान्न-विशेष (दे ६, ११७)।

मंडी स्त्री [दे] १ पिधानिका, ढकनी (दे ६, १११; पाअ)। २ अन्न का अग्र रस, माँड़। ३ माँड़ी, कलप, लेई (आव ४)। °पाहुडिया स्त्री [°प्राभृतिका] एक भिक्षा-दोष, अन्न के माँड़ अथवा माँड़ी को दूसरे पात्र में रखकर दी जाती भिक्षा का ग्रहण (आव ४)।

मंडुक } देखो मंडूअ (श्रा २८; पण्ह १, १; मंडुक्क } हे २, ६८; षड्; पाअ)।

मंडुक्कलिया } स्त्री [मण्डूकिका, °की] १ स्त्री मंडुक्किया } मेंढक, भेकी, दादुरी (उप १४७ मंडुक्की } टी; १३७ टी)। २ शाक-विशेष, वनस्पति-विशेष (उवा; पण्ण १—पत्र ३४)।

मंडुग, मंडूअ, मंडूक, मंडूर पुं [मण्डूक] १ मेंढक, दादुर; 'मंडुगगइसरिसो खलु अहिगारो होइ सुत्तस्स' (वव ७; कुमा)। २ वृक्ष-विशेष, श्योनाक, सोनापाठा। ३ बन्ध विशेष (संक्षि १७); 'मंडूरो' (प्राप्र)। ४ छन्द-विशेष (पिंग)। °प्पुअ न [°प्लुत] भेक की चाल। २ पुं. ज्योषि-प्रसिद्ध योग-विशेष, भेक की गति की तरह होनेवाला योग (सुज्ज १२—पत्र २३३)।

मंडोवर न [मण्डोवर] नगर-विशेष (ती १५)।

मंत सक [मन्त्रय्] १ गुप्त परामर्श करना, मसलहत करना। २ आमंत्रण करना। मंतइ (महा; भवि)। भवि. मंतही (अप) (पिंग)। वकृ. **मंतंत, मंतयंत** (सुपा ५३५; ३०७; अभि १२०)। संकृ. **मंतिअ, मंतिऊण, मंतेऊण** (अभि १२४; महा)।

मंत पुंन [मन्त्र] १ गुप्त बात, गुप्त आलोचना; 'न कहिज्जइ एसिमेरिसं मंतं' (सिरि ६२५); 'फुट्टिस्सइ बोहित्थं महिलाजणकहियमंतं व' (धर्मवि १३; कुमा)। २ जप्य, जाप करने योग्य प्रणवादिक अक्षर-पद्धति (णाया १, १४; ठा ३, ४ टी—पत्र १५६; कुमा; प्रासू १४)। °जंभग पुं [°जृम्भक] एक देव-जाति (भग १४, ८ टी—पत्र ६५४)। °देवया स्त्री [°देवता] मन्त्राधिष्ठायक देव (श्रा १)। °न्नु वि [°ज्ञ] मन्त्र का जानकार (सुपा ६०३)। °वाइ वि [°वादिन्] मान्त्रिक, मन्त्र को ही श्रेष्ठ माननेवाला (सुपा ५९७)। °सिद्ध वि [°सिद्ध] १ सब मन्त्र जिसके स्वाधीन हों वह। २ बहु-मन्त्र। ३ प्रधान मन्त्रवाला; 'साहोणसव्वमंतो बहुमंतो वा पहाणमंतो वा, नेओ स मंतसिद्धो' (आवम)।

मंत वि [मान्त्र] मन्त्र-सम्बन्धी, मान्त्रिक। स्त्री 'मंती ठक्कारपंतिव्व' (धर्मवि २०)।

मंत देखो **मा = मा**।

मंतक्ख न [दे] १ लज्जा, शरम। २ दुःख (दे ६, १४१)। ३ अपराध; 'न लेइ गरुयंपि णाम-मंतक्खं' (गउड)।

मंतण न [मन्त्रण] १ गुप्त आलोचना, गुप्त मसलहत (पउम ५, ९६; ८२, ४९)। २ मसलहत, परामर्श, सलाह; 'मंतणत्थं हक्कारिओ अणेण जिणदत्तसेट्ठी' (कुप्र ११९)। ३ जाप; 'पुणो पुणो मंतमंतणं सुहयं (चेइय ७९३)।

मंतर देखो **वंतर** (कप्प)।

मंता अ [मत्वा] जानकार (सूअ १, १०, ६; आचा १, १, ५, १; १, ३, १, ३; पि ५८२)।

मंति पुं [मन्त्रिन्] १ मन्त्री, अमात्य, दीवान (कप्प; औप; पाअ)। २ वि मन्त्रों का जानकार (गु १२)।

मंति पुं [दे] विवाह-गणक, जोशी, ज्योतिर्वित् (दे ६, १११)।

मंतिअ वि [मन्त्रित] गुप्त रीति से आलोचित (महा)।

मंतिअ देखो **मंत = मन्त्रय्**।

मंतिअ वि [मान्त्रिक] मन्त्र का ज्ञाता; 'मंतेण मंतियस्स व वाणीए ताडिओ तुज्झ' (धर्मवि ६; मन ११)।

मंतिण देखो **मंति = मन्त्रिन्**; निगृहिओ मंतिणेहि कुसलेहिं' (पउम २१, ९०; ६५, ८; भवि)।

मंतु वि [मन्तृ] १ ज्ञाता, जानकार। २ पुं. जीव, प्राणी (विसे ३५२५)।

मंतु देखो **मण्णु** (हे २, ४४; षड्; निचू २)। °म वि [°मत्] क्रोधवाला, कोप-युक्त। स्त्री. °मई (कुमा)।

मंतु पुंन [°मन्तु] अपराध; 'मंतुं विलियं विप्पियं' (पाअ)।

मंतुआ स्त्री [दे] लज्जा, शरम (दे ६, ११६; भवि)।

मंतेल्लि स्त्री [दे] सारिका, मैना (दे ६, ११९)।

मंथ सक [मन्थ्] १ विलोडन करना। २ मारना, हिंसा करना। ३ अक. क्लेश पाना। मंथइ (हे ४, १२१; प्राकृ. ३३; षड्)। कवकृ. **मंथिज्जंत, मंथिज्जमाण, मच्छंत** (पउम ११३, ३३; सुपा २५१; १९५; पएह १, ३—पत्र ५३)। संकृ. **मंथित्तु** (सम्मत्त २२६)।

मंथ पुं [मन्थ] १ दही विलोने—महने का दण्ड, मथनी (पिसे ३८४)। २ केवलि-समुद्घात के समय मन्थाकार किया जाता जीव-प्रदेश-समूह (ठा ६; औप)।

मंथ (अप) देखो **मत्थ = मस्त** (पिंग)।

मंथण न [मन्थन] १ विलोडन, विलोने की क्रिया; 'खीरोअमंथणुच्छलिअदुद्धसित्तो व्व महुमहणो' (गा ११७)। २ घर्षण; 'मंथणजोए अग्गो' (संबोध १)। ३ पुंन. मथनी, दही आदि मथने की लकड़ी (प्राकृ १४)।

मंथणिआ स्त्री [मन्थनिका] १ मंथनी, महानी, दही मथने की छोटी लकड़ी (राज)। २ मथानी, दधि-कलशी, दही महने की हँड़िया (दे २, ९५)।

मंथणी स्त्री [मन्थनी] ऊपर देखो (दे २, ५५)।

मंथर वि [मन्थर] १ मन्द, धीमा (से १, ३८; गउड; पाअ; सुपा १)। २ विलम्ब से होनेवाला (पंचा ६, २२)। ३ पुं. मन्थन-दण्ड; 'वीसाममंथरायमाणसेलवोच्छिएणदूरवडणाओ' (गउड)।

मंथर वि [दे. मन्थर] १ कुटिल, वक्र, टेढ़ा (दे ६, १४५; भवि)। २ क्लीन. कुसुम्भ, वृक्ष-विशेष, कुसुम का पेड़ (दे ६, १४५)। स्त्री. °रा; 'मंथरा कुसुंभो' (पाअ)।

मंथर वि [दे] बहु, प्रचुर, प्रभूत (दे ६, १४५; भवि)।

मंथरिय वि [मन्थरित] मन्थर किया हुआ (गउड)।

मंथाण पुं [मन्थान] १ विलोडन-दण्ड; 'तत्तो विसुद्धपरिणाममेरुमंथाणमहियभवजलही' (धर्मवि १०७; दे ६, १४१; वज्जा ४; पाअ; सम्मु १५०)। २ छन्द-विशेष (पिंग)।

मंथिअ वि [मथित] विलोडित (दे २, ८८; पाअ)।

मंथु पुंन [दे] १ बदरादि-चूर्ण (पएह २, ५; उत्त ८, १२; सुख ८, १२; दस ५, १, ९८; ५, २, २४; आचा)। २ चूर्ण, चूर, बुकनी (आचा २, १, ८, ८)। ३ दूध का विकार-विशेष, मट्ठा और माखन के बीच की अवस्था वाला पदार्थ (पिंड २८२)।

मंद पु [मन्द] १ ग्रह-विशेष, शनिश्चर (सुर १०, २२४)। २ हाथी की एक जाति (ठा ४, २—पत्र २०८)। ३ वि. अलस, धीमा, मृदु (पाअ; प्रासू १३२)। ४ अल्प, थोड़ा (प्रासू ७१)। ५ मूर्ख, जड़, अज्ञानी (सूअ १, ४, १, ३१; पाअ)। ६ नीच, खल, 'मुहमेव अहीणं तह य मंदस्स' (प्रासू १६)। ७ रोग ग्रस्त, रोगी (उत्त ८,७)। °उण्णिया स्त्री [°पुण्यका] देवी-विशेष (पंचा १६, २४)। °भग्ग वि [°भाग्य] कमनसीब (सुपा ३७६; महा)। °भाअ वि [°भाग, °भाग्य] वही अर्थ (स्वप्न २२; कुमा)। °भाइ वि [°भागिन्] वही अर्थ (स ७५६; सुपा २२१)। °भाग देखो °भाअ (सुर १०, ३८)।

मंद न [मान्द्य] १ बीमारी, रोग; 'न य मंदेणं मरई कोइ तिरिओ अहव मणुओ वा' (सुपा २२६)। २ मूर्खता, बेवकूफी; 'बालस्स मंदयं बीयं' (सूअ १, ४, १, २९)।

मंदक्ख न [मन्दाक्ष] लज्जा, शरम (राज)।

मंदग, मंदय न [मन्दक] गेय-विशेष; एक प्रकार का गान (राज; ठा ४, ४—पत्र २८५)।

मंदर पुं [मन्दर] १ पर्वत-विशेष, मेरु पर्वत (सुज्ज ५; सम १२; हे २, १७४; कप्प; सुपा ४७)। २ भगवान् विमलनाथ का प्रथम गणधर (सम १५२)। ३ वानरद्वीप का एक राजा, मरुयकुमार का पुत्र (पउम ६, ६७)। ४ छन्द का एक भेद (पिंग)। ५ मन्दर-पर्वत का अधिष्ठायक देव (जं ४)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष, (इक)।

मंदा स्त्री [मन्दा] १ मन्द-स्त्री (वज्जा १०६)। २ मनुष्य की दश अवस्थाओं में तीसरी अवस्था २१ से ३० वर्ष तक की दशा (तंदु १६)।

मंदाइणी स्त्री [मन्दाकिनी] १ गंगा नदी, भागीरथी (पउम १०, ५०; पाअ)। २ रामचन्द्र के पुत्र लव की स्त्री का नाम (पउम १०६, १२)।

मंदाय क्रिवि [मन्द] शनैः, धीमे से; 'मंदायं मंदायं पव्वइयाए' (जीव ३)।

मंदाय न [मन्दाय] गेय-विशेष (जं १)।

मंदार पुं [मन्दार] १ कल्पवृक्ष-विशेष (सुपा १)। २ पारिभद्र वृक्ष। ३ न. मन्दार वृक्ष का फूल; 'मंदारदामरमणिज्जभूयं' (कप्प; गउड)। ४ परिभद्र वृक्ष का फूल (वज्जा १०६)।

मंदिअ वि [मान्दिक] मन्दता वाला, मन्द; 'बाले य मंदिए मूढे' (उत्त ८, ५)।

मंदिर न [मन्दिर] १ गृह, घर (गउड; भवि)। २ नगर-विशेष (इक; आचू १)।

मंदिर वि [मान्दिर] मन्दिर-नगर का; 'सीहपुरा सोहा वि य गीयपुरा मंदिरा य बहुणाया' (पउम ५५, ५३)।

मंदीर न [दे] १ शृंखल, साँकल। २ मन्थान-दण्ड (दे ६, १४१)।

मंदुय पुं [दे. मन्दुक] जलजन्तु-विशेष (पण्ह १, १—पत्र ७)।

मंदुरा स्त्री [मन्दुरा] अश्व-शाला (सुपा ६७)।

मंदोदरी, मंदोयरी स्त्री [मन्दोदरी] १ रावण-पत्नी (से १३, ६७)। २ एक वणिक्-पत्नी (उप ५९७ टी)।

मंदोशण (मा)। वि [मन्दोष्ण] अल्प गरम (प्राकृ १०२)।

मंधाउ पुं [मान्धातृ] हरिवंश का एक राजा (पउम २२, ९७)।

मंधादण पुं [मन्धादन] मेष, गाडर; 'जहा मंधादए (? णे) नाम थिमिअं भुंजती दगं' (सूअ १, ३, ४, ११)।

मधाय पुं [दे] आढ्य, श्रीमंत (दे ६, ११९)।

मंभीस (अप)। सक [मा+भी] डरने का निषेध करना, अभय देना। संकृ. मंभीसिवि (भवि)।

मंभीसिय देखो माभीसिअ (भवि)।

मंस पुंन [मांस] मांस, गोश्त, पिशित; 'अयमाउसो मंसे अयं अट्ठी' (सूअ २, १, १६; आचा; ओघभा २४६; कुमा; हे १, २९)। °इत्त वि [°वत्] मांस-लोलुप (सुख १, १५)। °खल न [°खल] मांस सुखाने का स्थान (आचा २, १, ४, १)। °चक्खु पुंन [°चक्षुस्] १ मांस-मय चक्षु। २ वि. मांस-मय चक्षुवाला, ज्ञान-चक्षु-रहित; 'अदिस्से मंसचक्खुणा' (सम ६०)। °ासण वि [°ाशन] मांस-भक्षक (कुमा)। °ासि, °ासिण वि [°ाशिन्] वही अर्थ (पउम १०५, ४४; महा)। 'मंसासिणस्स' (पउम २६, ३७)।

मंस न [मांस] फल का गर्भ, फल का गुद्दा (आचा २, १, १०, ५; ६)।

मंसल वि [मांसल] पीन, पुष्ट, उपचित (पाअ; हे १, २९; पण्ह १, ४)।

मंसी स्त्री [मांसी] गन्ध-द्रव्य-विशेष जटामांसी (पण्ह २, ५—पत्र १५०)।

मंसु पुंन [श्मश्रु] दाढ़ी-मूँछ—पुरुष के मुख पर का बाल (सम ६०; औप; कुमा), 'मंसू' (हे १, २६, प्राप्र), 'मंसूइं' (उवा)।

मंसु देखो मंस; 'मंसूणि छिन्नपुव्वाइं' (आचा)।

मंसुडग न [दे, मांसोन्दुक] मांस-खण्ड (पिंड ५८६)।

मंसुल्ल वि [मांसवत्] मांसवाला (हे २, १५९)।

मक्कंडेअ पुं [मार्कण्डेय] ऋषि-विशेष (अभि २४३)।

मक्कड पुं [मर्कट] १ वानर, बनरा, बन्दर (गा १७१; उप पृ १८८; सुपा ६०६; दे २, ७२; कुप्र ६०; कुमा)। २ मकड़ा, जाल बनानेवाला कीड़ा (आचा; कस; गा ६३; दे ६, ११९)। ३ छन्द का एक भेद (पिंग)। °बंध पुं [°बन्ध] बन्ध-विशेष, नाराच-बन्ध (कम्म १, ३९)। °संताण पुं [°संतान] मकड़ा का जाल (पडि)।

मक्कडबंध न [दे] शृंखलाकार ग्रीवा-भूषण (दे ६, १२७)।

मक्कडी स्त्री [मर्कटी] वानरी बनरी (कुप्र ३०३)।

मक्कल (अप) देखो मक्कड (पिंग)।

मक्कार पुं [माकार] १ 'मा' वर्ण। २ 'मा' के प्रयोगवाली दण्डनीति, निषेध-सूचक एक प्राचीन दण्ड-नीति (ठा ७—पत्र ३९८)।

मक्कुण देखो मंकुण (पव २६२; दे १, ६६)।

मक्कोड पुं [दे] १ यन्त्र-गुम्फनार्थ राशि, जन्तर गठने के लिए बनाई जाती राशि (दे ६, १४२)। २ पुंस्त्री. कीट-विशेष; चींटा, गुजराती में 'मकोडो', 'मंकोडो' (निचू १; आवम; जी १६)। स्त्री. °डा (दे ६,१४२)।

मक्ख सक [म्रक्ष्] १ चुपड़ना, स्नेहान्वित करना। २ घी, तेल आदि स्निग्ध द्रव्य से मालिश करना। मक्खइ (षड्), मक्खंति (उप १४७ टी), मक्खिज्ज, मक्खेज्ज; (आचा २, १३, २; ३)। हेकृ. **मक्खेत्तए** (कस)। कृ. **मक्खियव्व** (ओघ ३८५ टी)।

मक्खण न [म्रक्षण] १ मक्खन, नवनीत (स २५८; पभा २२)। २ मालिश, अभ्यंग (निचू ३)।

मक्खर पुं [मस्कर] १ गति। २ ज्ञान। ३ वंश बाँस। ४ छिद्रवाला बाँस (संक्षि १५; पि ३०६)।

मक्खिअ वि [म्रक्षित] चुपड़ा हुआ (पाअ; दे ८, ६२; ओघ ३८५ टी)।

मक्खिअ न [माक्षिक] मक्षिका-संचित मधु (राज)।

मक्खिआ स्त्री [मक्षिका] मक्खी (दे ६, १२३)।

मगइअ वि [दे] हस्त-पाशित, हाथ में बाँधा हुआ (विपा १, ३—पत्र ४८; ४९)।

मगण पुं [मगण] छन्दःशास्त्र-प्रसिद्ध तीन गुरु अक्षरों की संज्ञा (पिंग)।

मगदंतिआ स्त्री [दे] १ मालती का फूल। २ मोगरा का फूल; 'कुमुअं वा मगदंतिअं' (दस ५, २, १४; १६)।

मगदंतिआ स्त्री [दे. मगदन्तिका] १ मेंदी या मेहँदी का गाछ। २ मेंदी की पत्ती (दस ५, २, १४; १६)।

मगर पुं [मकर] १ मगर-मच्छ, जलजन्तु-विशेष (पगह १, २; औप; उव; सुर १३, ४२; गाया १, ४)। २ राहु (सुज्ज २०)। देखो मयर।

मगरिया स्त्री [मकरिका] वाद्य-विशेष (राय ४६)।

मगसिर स्त्रीन [मृगशिरस्] नक्षत्र विशेष 'कत्तिय रोहिणी मगसिर अद्दा य' (ठा २, ३—पत्र ७७)। स्त्री. °रा; 'दो मगसिराओ' (ठा २, ३—पत्र ७७)।

मगह देखो मागह। °तित्थ न [°तीर्थ] तीर्थ-विशेष (इक)।

मगह } पुं. ब. [मगध] देश-विशेष (कुमा)।
मगहग } °वरच्छ [°वराक्ष] आभरण-विशेष (औप पृ ४८ टि)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष (महा)। देखो मगह।

मगा अ [दे] पश्चात्, पीछे, मराठी में 'मग' (दे १, ४, टी)।

मगुंद देखो मउंद = मुकुन्द (उत्तनि ३)।

मग्ग सक [मार्गय्] १ माँगना। २ खोजना। मग्गइ, मग्गंति (उव; षड्; हे १, ३४)। वकृ. **मग्गंत, मग्गमाण** (गा २०२; उप ६४८ टी; महा; सुपा ३०८)। संकृ. **मग्गेविणु** (अप) (भवि)। हेकृ. **मग्गिउं** (महा)। कृ. **मग्गिअव्व मग्गेयव्व** (से १४, २७; सुपा ५१८)।

मग्ग सक [मृग्] गमन करना, चलना। मग्गइ (हे ४, २३०)।

मग्ग पुं [मार्ग] १ रास्ता, पथ (ओघ ३४; कुमा; प्रासू ५०; ११७; भग)। २ अन्वेषण, खोज (विसे १३८१)। °ओ अ [°तस्] रास्ते से (हे १, ३७)। °ण्णु वि [°ज्ञ] मार्ग का जानकार (उप ६४४)। °त्थ वि [°स्थ] १ मार्ग में स्थित। २ सोलह से ज्यादा वर्ष की उम्रवाला (सूअ २, १, ६)। °दय वि [°दय] मार्ग-दर्शक (भग; पडि)। °विउ वि [°वित्] मार्ग का जानकार (ओघ ८०२)। °ह वि [°घ्न] मार्ग-नाशक (श्रु ७४)। °णुसारि वि [°नुसारिन्] मार्ग का अनुयायी (धर्म २)।

मग्ग पुं [मार्ग] १ आकाश (भग २०, २—पत्र ७७५)। २ आवश्यक-कर्म, सामयिक आदि षट्-कर्म (अणु ३१)।

मग्ग } पुं [दे] पश्चात्, पीछे (दे ६,
मग्गअ } १११; से १, ५१; सुर २, ५६; पाअ; भग)।

मग्गअ वि [मार्गक] माँगनेवाला (पउम ६६, ७३)।

मग्गण पुं [मार्गण] १ याचक (सुपा २४)। २ बाण, शर (पाअ)। ३ न. अन्वेषण, खोज (विसे १३८१)। ४ मार्गणा, विचारणा, पर्यालोचन (औप; विसे १८०)।

मग्गण° } स्त्री [मार्गणा] १ अन्वेषण,
मग्गणया } खोज (उप पृ २७६; उप ६६२;
मग्गणा } ओघ ३)। २ अन्वय-धर्म के पर्यालोचन द्वारा अन्वेषण, विचारणा, पर्यालोचना (कम्म ४, १; २३; जीवस २)।

मग्गणया स्त्री [मार्गणा] ईहा-ज्ञान, ऊहापोह (णंदि १७५)।

मग्गण्णिर वि [दे] अनुगमन करने की आदतवाला (दे ६, १२४)।

मग्गसिर पुं [मार्गशिर] मास-विशेष, मगसिर मास, अगहन (कप्प; हे ४, ३५७)।

मग्गसिरी स्त्री [मार्गशिरी] १ मगसिर मास की पूर्णिमा। २ मगसिर की अमावस (सुज्ज १०, ६)।

मग्गिअ वि [मार्गित] १ अन्वेषित, गवेषित (से ६, ३६)। २ माँगा हुआ, याचित (महा)।

मग्गिर त्रि [मार्गयितृ] खोज करनेवाला (सुपा ५८)।

मग्गिल्ल वि [दे] पाश्चात्य, पीछे का (विसे १३२६)।

मग्गु पुं [मद्गु] पक्षि-विशेष, जल-काक (सूअ १, ७, १५; हे २, ७७)।

मघ पुं [मघ] मेघ (भग ३, २; पगण २)।

मघमघ अक [प्र + सृ] फैलना, गन्ध का पसरना; गुजराती में 'मघमघवु', मराठी में 'मघमघणें'। वकृ. **मघमघंत, मघमघित, मघमघेंत** (सम १३७; कप्प; औप)।

मघव पुं [मघवन्] १ इन्द्र, देव-राज (कप्प; कुमा ७, ६४)। २ तृतीय चक्रवर्ती राजा (सम १५२; पउम २०, १११)।

मघवा स्त्री [मघवा] छठवीं नरक-भूमि, 'मघव त्ति माघवत्ति य पुढवीणं नामधेयाइं' (जीवस १२)।

मघा स्त्री [मघा] १ ऊपर देखो (ठा ७—पत्र ३८८; इक)। २ देखो महा = मघा (राज)।

मघोण पुं [दे. मघवन्] देखो मघव (षड्; पि ४०३)।

मच्च अक [मद्] गर्व करना। मच्चइ (षड्; हे ४, २२५)।

मच्च (अप) देखो मंच; 'मंकुणमच्चइ सुत्त बराई' (भवि)।

मच्च न [दे] मल, मैल (दे ६, १११)।

मच्च } पुं [मर्त्य] मनुष्य, मानुष (स
मच्चिअ } २०८; रंभा; पाअ; सूअ १, ८, २; आचा)। °लोअ पुं [°लोक] मनुष्य-

लोक (कुप्र ४११)। °लोईय वि [°लोकीय] मनुष्य-लोक से सम्बन्ध रखनेवाला (सुपा ५१६)।

मच्चिअ वि [दे] मल-युक्त (दे ६, १११ टी)।

मच्चिर वि [मदितृ] गर्व करनेवाला (कुमा)।

मच्चु पुं [मृत्यु] १ मौत, मरण (आचा; सुर २, १३८; प्रासू १०६; महा)। २ यम, यमराज (षड्)। ३ रावण का एक सैनिक (पउम ५६, ३१)।

मच्छ पुं [मत्स्य] १ मछली (णाया १, १; पात्र; जी २०; प्रासू ५०)। २ राहु (सुज्ज २०)। ३ देश-विशेष (इक; सनि)। ४ छन्द का एक भेद (पिंग)। °खल न [°खल] मत्स्यों को सुखाने का स्थान (आचा २, १, ४, १)। °बंध पुं [°बन्ध] मच्छीमार, धीवर (पण्ह १, १; महा)।

मच्छ पुंन [मत्स्य] मत्स्य के आकार की एक वनस्पति (आचा २, १, १०, ५; ६)।

मच्छंडिआ स्त्री [मत्स्यण्डिका] खण्डशर्करा, एक प्रकार की शक्कर (पण्ह २, ४; णाया १, १७; पण्ण १७; पिंड २८३; मा ४३)।

मच्छंडी स्त्री [मत्स्यण्डी] शक्कर (अणु १४७)।

मच्छंत देखो मंथ=मन्थ्।

मच्छंध देखो मच्छ-बंध (विपा १, ८—पत्र ८२)।

मच्छर पुं [मत्सर] १ ईर्ष्या, द्वेष, डाह, पर-संपत्ति की असहिष्णुता (उव)। २ कोप, क्रोध। ३ वि. ईर्ष्यालु, द्वेषी। ४ क्रोधी। कृपण (हे २, २१)।

मच्छर न [मात्सर्य] ईर्ष्या, द्वेष (से ३, १६)।

मच्छरि वि [मत्सरिन्] मत्सरवाला (पण्ह २, ३; उवा; पात्र)। स्त्री. °णी (गा ८४; महा)।

मच्छरिअ वि [मत्सरित, मत्सरिक] ऊपर देखो (पउम ८, ४६; पंचा १, ३२; भवि)।

मच्छल देखो मच्छर=मत्सर (हे २, २१; षड्)।

मच्छिअ देखो मक्खिअ=माक्षिक (पव ४—गाथा २२०)।

मच्छिअ वि [मात्स्यिक] मच्छीमार (श्रा १२; अभि १८७; विपा १, ६; पिंड ६३१)।

मच्छिका (मा) देखो माउ=मातृ (प्राकृ १०२)।

मच्छिगा देखो मच्छिआ (पि ३२०)।

मच्छिया } स्त्री [मक्षिका] मक्खी (णाया मच्छी } १, १६; जी १८; उत्त ३६, ६०; प्राप्र; सुपा २८१)।

मज्ज सक [मद्] अभिमान करना। मज्जइ, मज्जई, मज्जेज्ज (उव; सूअ १, २, २, १; धर्मसं ७८)।

मज्ज अक [मस्ज्] १ स्नान करना। २ डूबना। मज्जइ (हे ४, १०१), मज्जामा (महा ५७, ७; धर्मसं ८६४)। वकृ. मज्जमाण (गा २४६; णाया १, १)। संकृ. मज्जिऊण (महा)। प्रयो., संकृ. मज्जावित्ता (ठा ३, १—पत्र ११७)।

मज्ज सक [मृज्] साफ करना, मार्जन करना। मज्जइ (षड् प्राकृ ६६; हे ४, १०५)।

मज्ज न [मद्य] दारू, मदिरा (औप; उवा; हे २, २४; भवि)। °इत्त वि [°वत्] मदिरा-लोलुप (सुख १, १५)। °व वि [°प] मद्य-पान करनेवाला (पात्र)। °वीअ वि [°पीत] जिसने मद्य-पान किया हो वह (विपा १, ६—पत्र ६७)।

मज्जग वि [माद्यक] मद्य-सम्बन्धी; 'अन्नं वा मज्जगं रसं' (दस ५, २, ३६)।

मज्जण न [मज्जन] १ स्नान। २ डूबना (सुर ३, ७६; कप्पू; गउड; कुमा)। °घर न [°गृह] स्नान-गृह (णाया १, १—पत्र १६)। °धाई स्त्री [°धात्री] स्नान करानेवाली दासी (णाया १, १—पत्र ३७)। °पाली स्त्री [°पाली] वही अर्थ (कप्प)।

मज्जण न [मार्जन] १ साफ करना, शुद्धि (कप्प)। २ वि. मार्जन करनेवाला (कुमा)। °घर न [°गृह] शुद्धि-गृह (कप्प; औप)।

मज्जर देखो मंजर (प्राकृ ५)। स्त्री. °री; 'को जुन्नमज्जरिं कंजिएण पवियारिउं तरइ' (सुर ३, १३३)।

मज्जविअ वि [मज्जित] १ स्नपित। २ स्नात; 'एत्थ सरे रे पंथिअ गयवइवहुयाउ मज्जविया' (वज्जा ६०)।

मज्जा स्त्री [दे. मर्या] मर्यादा (दे ६, ११३; भवि)।

मज्जा स्त्री [मज्जा] धातु-विशेष, चर्बी, हड्डी के भीतर का गूदा (सण)।

मज्जाइल्ल वि [मर्यादिन्] मर्यादावाला (निचू ४)।

मज्जाया स्त्री [मर्यादा] १ न्याय्य-पथ-स्थिति, व्यवस्था; 'रयणायरस्स मज्जाया' (प्रासू ६८; श्रावम)। २ सीमा, हद, अवधि। ३ कूल, किनारा (हे २, २४)।

मज्जार पुंस्त्री [मार्जार] १ बिल्ला, बिलाव (कुमा; भवि)। २ वनस्पति-विशेष; 'वत्थुल-पोरगमज्जारपोइवल्ली य पालक्का' (पण्ण १—पत्र ३४)। स्त्री. °रिआ, °री (कप्पू; पात्र)।

मज्जार पुं [मार्जार] वायु-विशेष (भग १५—पत्र ६८६)।

मज्जाविअ वि [मज्जित] स्नपित (महा)।

मज्जिअ वि [दे] १ अवलोकित, निरीक्षित। २ पीत (दे ६, १४४)।

मज्जिअ वि [मज्जित] स्नात; (पिंड ४२३; महा; पात्र)।

मज्जिअ वि [मार्जित] साफ किया हुआ (पउम २०, १२७; कप्प; औप)।

मज्जिआ स्त्री [मार्जिता] रसाला, भक्ष्य-विशेष—दही, शक्कर आदि का बना हुआ और सुगन्ध से वासित एक प्रकार का खाद्य, श्रीखण्ड (पात्र, दे ७, २; पव २५६)।

मज्जिर वि [मज्जितृ] मज्जन करने की आदत-वाला (गा ४७३; सण)।

मज्जोक्क वि [दे] अभिनव, नूतन (दे ६, ११८)।

मज्झ न [मध्य] १ अन्तराल, मझार, बीच (पात्र; कुमा; दं ३६; प्रासू ५०; १६७)। २ शरीर का अवयव-विशेष (कप्पू)। ३ संख्या-विशेष, अन्त्य और परार्ध्य के बीच की संख्या (हे २, ६०; प्राप्र)। ४ वि. मध्यवर्ती, बीच का (प्रासू १२५)। °एस पुं [°देश] देश-विशेष, गंगा और यमुना के बीच का प्रदेश, मध्य प्रान्त (गउड)। °गय वि [°गत] १ बीच का, मध्य में स्थित (आचा; कप्प)। २ पुं. अवधिज्ञान का एक भेद (णंदि)।

°गेवेज्जय न [°ग्रैवेयक] देवलोक-विशेष (इक)। °ट्ठिअ वि [°स्थित] तटस्थ, मध्यस्थ (रयण ४८)। °ण्ण, °ण्ह पुं [°ाह्न] दिन का मध्य भाग, दोपहर (प्राप्र; प्राकृ १८, कुमा; अभि ५५; हे २, ८४; महा)। २ न. तप-विशेष, पूर्वार्ध तप (संबोध ५८)। °ण्हतरु पुं [°ाह्नतरु] वृक्ष-विशेष, मध्याह्न समय में अत्यन्त फूलनेवाले लाल रँग के फूलवाला वृक्ष (कुमा)। °त्थ वि [°स्थ] तटस्थ (उव; उप ६४८ टी; सुर १६, ६५)। २ बीच में रहा हुआ (सुपा २५७)। °देस देखो °एस (सुर ३, १६)। °न्न देखो °ण्ण (हे २, ८४; सण)। °म वि [°म] मध्य का, मझला, बीच का (भग; नाट—विक्र ५)। °रत्त पुं [°रात्र] निशीथ (उप १३९; ७२८ टी)। °रयणि स्त्री [°रजनि] मध्य रात्रि (स ६३६)। °लोग पुं [°लोक] मेरु पर्वत (राज)। °वत्ति वि [°वर्तिन्] अन्तर्गत (मोह ६४)। °विलिअ वि [°विलित] १ बीच में मुड़ा हुआ। २ चित्त में कुटिल (वज्जा १२)।

मज्झअ पुं [दे] नापित, नाई, हजाम (दे ६, ११५)।

मज्झआर न [दे] मझार, मध्य, अन्तराल (दे ६, १२१; विक्र २८; उव; गा ३; विसे २६६१; सुर १, ४५; सुपा ४६; १०३; खा १); 'असोगवणिआइ मज्झयारम्मि' (भाव ७)।

मज्झंतिअ न [दे] मध्यन्दिन, मध्याह्न (दे ६, १२४)।

मज्झंदिण न [मध्यन्दिन] मध्याह्न (दे ६, १२४)।

मज्झंमज्झ न [मध्यमध्य] ठीक बीच (भग; विपा १, १; सुर १, २४४)।

मज्झगार देखो मज्झआर (राज)।

मज्झण्हिय वि [माध्याह्निक] मध्याह्न-संबन्धी (धर्मवि १०५)।

मज्झत्थ न [माध्यस्थ्य] तटस्थता, मध्यस्थता (उप ६१५; संबोध ४५)।

मज्झिम वि [मध्यम] १ मध्य-वर्ती बीच का (हे १, ४८; सम ४३; उवा; कप्प; औप; कुमा)। २ पुं. स्वर-विशेष (ठा ७—पत्र ३९३)। °रत्त पुं [°रात्र] निशीथ, मध्य-रात्रि (उप ७२८ टी)।

मज्झिमगंड न [दे] उदर, पेट (दे ६, १२५)।

मज्झिमा स्त्री [मध्यमा] १ बीच की उंगली (ओघ ३९०)। २ एक जैन मुनि-शाखा (कप्प)।

मज्झिमिल्ल वि [मध्यम] मध्य-वर्ती, बीच का (अणु)।

मज्झिमिआ देखो मज्झिमा (कप्प)।

मज्झिल्ल वि [माध्यिक, मध्यम] मझला, बीच का (पव ३६; देवेन्द्र २३८)।

मट्ट वि [दे] शृङ्ग-रहित (दे ६, ११२)।

मट्टिआ स्त्री [मृत्तिका] मट्टी, मिट्टी, माटी (णाया १, १; औप; कुमा; महा)।

मट्टी स्त्री [मृत्, मृत्तिका] ऊपर देखो (जी ४; पडि, दे)।

मट्टुहिअ न [दे] १ परिणीत स्त्री का कोप। २ वि. कलुष। ३ अशुचि, मैला (दे ६, १४६)।

मट्ठ वि [दे] अलस, आलसी, मन्द, जड़ (दे ६, ११२; पाअ)।

मट्ठ वि [मृष्ट] १ मार्जित, शुद्ध (सूअ १, ६, १२; औप)। २ मसृण, चिकना (सम १३७; दे ८, ७)। ३ घिसा हुआ (औप; हे २, १७४)। ४ न. मिरच, मरिच (हे १, १२८)।

मड वि [दे. मृत] १ मरा हुआ, निर्जीव (दे ६, १४१); 'मडोव्व अप्पाणं' (वजा १४८), 'मडे' (मा) (प्राकृ १०३)। °ाइ वि [°ादिन्] निर्जीव वस्तु को खानेवाला (भग)। °ासय पुं [°ाश्रय] श्मशान (निचू ३)।

मड पुं [दे] कंठ, गला (दे ६, १४१)।

मडंब पुंन [दे. मडम्ब] ग्राम-विशेष, जिसके चारों ओर एक योजन तक कोई गाँव न हो ऐसा गाँव (णाया १, १; भग; कप्प; औप; पण्ह १, ३; भवि)।

मडक्क पुं [दे] १ गर्व, अभिमान; 'न किउ वयणु संचलिय मडक्कइ' (भवि)। २ मटका, कलश, घड़ा; मराठी में 'मडकें' (भवि)।

मडक्किया स्त्री [दे] छोटा मटका, कलशी (कुप्र ११९)।

मडप्प, मडप्पर, मडप्फर पुं [दे] गर्व, अभिमान, अहंकार; 'अज्जवि कंदप्पमडप्पखंडणे वहइ पंडिच्चं' (सुपा २६; कुप्र २२१; २८४; षड्; दे ६, १२०; पाअ; सुपा ६; प्रासू ८५; कुप्र २५५; सम्मत्त १८९; धम्म ८ टी; भवि; सण)।

मडभ वि [मडभ] कुब्ज, वामन (राज)।

मडमड, मडमडमड अक [मडमडाय] १ मड मड आवाज करना। २ सक. मड मड आवाज हो उस तरह मारना। मडमडमडंति (पउम २६, ५३)। भवि. मडमडइश्शं, मडमडाइश्शं (मा); (पि ५२८; चारु ३५)।

मडमडाइअ वि [मडमडायित] 'मड' 'मड' आवाज हो उस तरह मारा हुआ (उत्तर १०३)।

मडय न [मृतक] मुड़दा, मुर्दा, शव (पाअ; हे १, २०६; सुपा २१९)। °गिह न [°गृह] कब्र (निचू ३)। °चेइअ न [°चैत्य] मृतक के दाह होने पर या गाड़ने पर बनाया गया चैत्य—स्मारक-मन्दिर (आचा २, १०, १९)। °डाह पुं [°दाह] चिता, जहाँ पर शव फूँके जाते हों (आचा २, १०, १९)। °थूभिया स्त्री [°स्तूपिका] मृतक के स्थान पर बनाया गया छोटा स्तूप (आचा २, १०, १९)।

मडय पुं [दे] आराम, बगीचा (दे ६, ११५)।

मडवोज्झा स्त्री [दे] शिबिका, पालकी (दे ६, १२२)।

मडह वि [दे] १ लघु, छोटा (दे ६, ११७; पाअ; सण)। २ स्वल्प, थोड़ा (गा १०५; स ८; गउड; वज्जा ४२)।

मडहर पुं [दे] गर्व, अभिमान (दे ६, १२०)।

मडहिय वि [दे] अल्पीकृत, न्यून किया हुआ (गउड)।

मडहुल्ल वि [दे] लघु, छोटा; 'मडहुल्लियाए किं तुह इमीए किं वा दलेहिं तलिणेहिं' (वज्जा ४८)।

मडिआ स्त्री [दे] समाहत स्त्री, आहत महिला (दे ६, ११४)।

मडुवइअ वि [दे] १ हत, विध्वस्त। २ तीक्ष्ण (दे ६, १४६)।

मड्ड सक [मृद्] मर्दन करना। मड्डइ (हे ४, १२६; प्राकृ ६८)।

मड्डुय पुं [दे· मड्डुक] वाद्य-विशेष (राय ४६)।

मड्डा स्त्री [दे] १ बलात्कार, हठ, जबरदस्ती (दे ६, १४०, पाअ; सुर ३, १३६; सुख २, १५)। २ आज्ञा, हुकुम (दे ६, १४०, सुपा २७९)।

मड्डिअ वि [मर्दित] जिसका मर्दन किया गया हो वह (हे २, ३६; षड्; पि २९१)।

मड्डुअ देखो मद्दुअ (राज)।

मढ देखो मड्ड। मढइ (हे ४, १२६)।

मढ पुंन [मठ] संन्यासियों का आश्रय, व्रतियों का निवासस्थान; 'मढो' (हे १, १९९; सुपा २३४; वज्जा ३४; भवि); 'मढं' (प्राप्र)।

मढिअ देखो मड्डिअ (कुमा)।

मढिअ वि [दे] १ खचित; गुजराती में 'मढेलु', 'एयाउ ओसहीओ तिधाउमढियाउ धारिज्जा' (सिरि ३७०)। २ परिवेष्टित (दे २, ७५; पाअ)।

मढी स्त्री [मठिका] छोटा मठ (सुपा ११३)।

मण सक [मन्] १ मानना। २ जानना। ३ चिन्तन करना। मणइ, मणसि (षड्; कुमा)। कवकृ. **मणिज्जमाण** (भग १३, ७; विसे ८१३)।

मण पुंन [मनस्] मन, अन्तःकरण, चित्त (भग १३, ७; विसे ३५२५; स्वप्न ४५; दं २२; कुमा, प्रासू ४४; ४८; १२१)। °**अगुत्ति** स्त्री [°अगुप्ति] मन का असंयम (पि १५६)। °**करण** न [°करण] चिन्तन, पर्यालोचन (श्रावक ३३७)। °**गुत्त** वि [°गुप्त] मन को संयम में रखनेवाला (भग)। °**गुत्ति** स्त्री [°गुप्ति] मन का संयम (उत्त २४, २)। °**जाणुअ** वि [°ज्ञ] १ मन को जाननेवाला, मन का जानकार। २ सुन्दर, मनोहर (प्राकृ १८)। °**जीविअ** वि [°जीविक] मन को आत्मा माननेवाला (पण्ह १, २—पत्र २८)। °**जोअ** पुं [°योग] मन की चेष्टा, मनो-व्यापार (भग)। °**ज्ज**, °**ण्णु**, °**ण्णुअ** देखो °**जाणुअ** (प्राकृ १८; षड्)। °**थंभणी** स्त्री [°स्तम्भनी] विद्या-विशेष, मन को स्तब्ध करनेवाली दिव्य शक्ति (पउम ७, १३७)। °**नाण** न [°ज्ञान] मन का साक्षात्कार करनेवाला ज्ञान, मनः-पर्यव ज्ञान (कम्म ३, १८; ४, ११; १७; २१)। °**नाणि** वि [°ज्ञानिन्] मनः-पर्यव नामक ज्ञानवाला (कम्म ४, ४०)। °**पज्जत्ति** स्त्री [°पर्याप्ति] पुद्गलों को मन के रूप में परिणत करने की शक्ति (भग ६, ४)। °**पज्जव** पुं [°पर्यव] ज्ञान-विशेष, दूसरे के मन की अवस्था को जाननेवाला ज्ञान (भग; औप; विसे ८३)। °**पज्जवि** वि [°पर्यविन्] मनःपर्यव ज्ञानवाला (पव २१)। °**पसिण-विज्जा** स्त्री [°प्रश्नविद्या] मन के प्रश्नों का उत्तर देनेवाली विद्या (सम १२३)। °**बलिअ** वि [°बलिन्, °क] मनो-बलवाला, दृढ़ मनवाला (पण्ह २, १; औप)। °**मोहण** वि [°मोहन] मन को मुग्ध करनेवाला, चित्ताकर्षक (गा १२८)। °**योगि** वि [°योगिन्] मन की चेष्टावाला (भग)। °**वग्गणा** स्त्री [°वर्गणा] मन के रूप में परिणत होनेवाला पुद्गल-समूह (राज)। °**वज्ज** न [°वज्र] एक विद्याधर-नगर (इक)। °**समिइ** स्त्री [°समिति] मन का संयम (ठा ८—पत्र ४२२)। °**समिय** वि [°समित] मन को संयम में रखनेवाला (भग)। °**हंस** पुं [°हंस] छन्द-विशेष (पिंग)। °**हर** वि [°हर] मनोहर, सुन्दर, चित्ताकर्षक (हे १, १५६; औप; कुमा)। °**हरण** पुंन [°हरण] पिंगल-प्रसिद्ध एक मात्रा-पद्धति (पिंग)। °**ाभिराम**, °**ाभिरा-मेल्ल** वि [°अभिराम] मनोहर (सम १४९; औप, उप पृ ३२२; उप २२० टी)। °**ाम** वि [°आप] सुन्दर, मनोहर (सम १४९; विपा १, १; औप; कप्प)। देखो **मणो°**।

मणं देखो मणयं (प्राकृ ३८)।

मणंसि वि [मनस्विन्] प्रशस्त मनवाला (हे १, २६)। स्त्री. °**णी** (हे १, २६)।

मणंसिल° } स्त्री [मनःशिला] लाल वर्ण
मणंसिला } की एक उपधातु, मनशिल, मैनशिल (कुमा; हे १, २६)।

मणग पुं [मनक] एक जैन बाल-मुनि, महर्षि शय्यंभवसूरि का पुत्र और शिष्य (कप्प; धर्मवि ३८)। देखो **मणय**।

मणगुलिया स्त्री [दे] पीठिका (राय)।

मणण न [मनन] १ ज्ञान, जानना। २ समझना (विसे ३५२५)। ३ चिन्तन (श्रावक ३३७)।

मणय पुं [मनक] द्वितीय नरक-भूमि का तीसरा नरकेन्द्रक—नरकावास-विशेष (देवेन्द्र ६)। देखो **मणग**।

मणयं अ [मनाग्] अल्प, थोड़ा (हे २, १६९, पाअ; षड्)।

मणस देखो मण = मनस्; 'पसन्नमणसो करिस्सामि' (पउम ६, ५६), 'लाभो चेव तवस्सिस्स होइ अद्दीणमणसस्स' (ओघ ५३७)।

मणसिल° } देखो **मणंसिला** (कुमा; हे १,
मणसिला } २६; जी ३; स्वप्न ६४)।

मणसीकय वि [मनसिकृत] चिन्तित (पण्ण ३४—पत्र ७८२; सुपा २४७)।

मणसीकर सक [मनसि + कृ] चिन्तन करना, मन में रखना। मणसीकरे (उत्त २, २५)।

मणस्सि देखो **मणंसि** (धर्मवि १४६)।

मणा देखो **मणयं** (हे २, १६९; कुमा)।

मणाउ } (अप) ऊपर देखो (कुमा; भवि; पि
मणाउं } ११४; हे ४, ४१८; ४२६)।

मणागं ऊपर देखो (उप १३२; महा)।

मणाल देखो मुणाल (राज)।

मणालिया स्त्री [मृणालिका] पद्म-कन्द का मूल (तंदु २०)। देखो **मुणालिआ**।

मणासिला देखो **मणंसिला** (हे १, २६; पि ६४)।

मणि पुंस्त्री [मणि] पत्थर-विशेष, मुक्ता आदि रत्न (कप्प; औप; कुमा; जी ३; प्रासू ४)। °**अंग** पुं [°अङ्ग] कल्प-वृक्ष की एक जाति जो आभूषण देती है (सम १७)। °**आर** पुं [°कार] जौहरी, रत्नों के गहनों का व्यापारी (दे ७, ७७; मुद्रा ७९; णाया १, १३; धर्मवि ३६)। °**कंचण** न [°काञ्चन] रुक्मि-पर्वत का एक शिखर (ठा २, ३—पत्र ७०)। °**कूड** न [°कूट] रुचक पर्वत का एक शिखर (दीव)। °**क्खइअ** वि [°खचित] रत्न-जटित (पि १९६)। °**चइया** स्त्री [°चयिता] नगरी-

विशेष (विपा २, ६)। °चूड पुं [°चूड] एक विद्या-धर नृप (महा)। °जाल न [°जाल] भूषण-विशेष, मणि-माला (औप)। °तोरण न [°तोरण] नगर-विशेष (महा)। °प देखो °व (से ६, ४३)। °पेढिया स्त्री [°पीठिका] मणि-मय पीठिका (महा)। °प्पभ पुं [°प्रभ] एक विद्याधर (महा)। °भद्द पुं [°भद्र] एक जैन मुनि (कप्प)। °भूमि स्त्री [°भूमि] मणि खचित जमीन (स्वप्न ५४)। °मइय, °मय वि [°मय] मणि-मय, रत्न निर्वृत्त (सुपा ६२; महा)। °रह पुं [°रथ] एक राजा का नाम (महा)। °व पुं [°प] १ यक्ष। २ सर्प, नाग (से २, २३)। ३ समुद्र (से ६, ५०)। °वई स्त्री [°मती] नगरी-विशेष (विपा २, ६—पत्र ११४ टि)। °वंध पुं [°बन्ध] हाथ और प्रकोष्ठ के बीच का अवयव (सण)। °वालय पुं [°पालक, °वालक] समुद्र (से २, २३)। °सलागा स्त्री [°शलाका] मद्य-विशेष (राज)। °हियय पुं [°हृदय] देव-विशेष (दीव)।

मणिअ न [मणित] संभोग-समय का स्त्री का अव्यक्त शब्द (गा ३६२; रंभा)।

मणिअं देखो मणयं (षड्; हे २, १६६; कुमा)।

मणिअड (अप) पुं [मणि] माला का सुमेर (हे ४, ४१४)।

मणिच्छिअ वि [मनईप्सित] मनोऽभीष्ट (सुपा ३८४)।

मणिज्जमाण देखो मण = मन्।

मणिट्ठ वि [मनइष्ट] मन को प्रिय (भवि)।

मणिणायहर न [दे. मणिनागगृह] समुद्र, सागर (दे ६, १२८)।

मणिरइआ स्त्री [दे] कटीसूत्र (दे ६, १२६)।

मणीसा स्त्री [मनीषा] बुद्धि, मेधा, प्रज्ञा (पात्र)।

मणीसि वि [मनीषिन्] बुद्धिमान्, पण्डित (कप्पू)।

मणीसिद वि [मनीषित] वाञ्छित (नाट—मृच्छ ५७)।

मणु पुं [मनु] १ स्मृति-कर्ता मुनि-विशेष (विसे १५०८; उप १५० टी)। २ प्रजापति-विशेष; 'चोद्दहमणुजोग्गुणग्रो' (कुमा; राज)। ३ मनुज, मनुष्य; 'देवत्ताओ मणुत्तं' (पउम २१, ६३; कम्म १, १६; २ १६)। ४ न. एक देव-विमान (सम २)।

मणुअ पुं [मनुज] १ मनुष्य, मानव (उवा; भग; हे १,८; पात्र; कुमा; स ८२; प्रासू ४५)। २ भगवान् श्रेयांसनाथ का शासन-यक्ष (संति ७)। ३ वि. मनुष्य-सम्बन्धी; 'तिरिया मणुया य दिव्वगा उवसग्गा तिविहाहिया-सिया' (सूत्र १, २, २, १५)।

मणुइंद पुं [मनुजेन्द्र] राजा, नरपति (पउम ८५, २२; सुर १, ३२)।

मणुई स्त्री [मनुजी] मनुष्य-स्त्री, नारी, महिला (णंदि १२६ टी)।

मणुएसर पुं [मनुजेश्वर] ऊपर देखो (सुपा २०४)।

मणुज्ज, मणुण्ण वि [मनोज्ञ] सुन्दर, मनोहर (पात्र; उप १४२ टी; सम १४६; भग)।

मणुस, मणुस्स पुंस्त्री [मनुष्य] १ मानव, मर्त्य (आचा; पि ३००; आचा; ठा ४, २; भग; श्रा २८; सुपा २०३; जी १६; प्रासू २८)। स्त्री. °स्सी (भग; पराण १८; पत्र २४१)। °खेत्त न [°क्षेत्र] मनुष्य-लोक (जीव ३)। °सेणियापरिकम्म पुं [°श्रेणिकापरिकर्मन्] दृष्टिवाद का एक सूत्र (सम १२८)।

मणुस्स वि [मानुष्य] मनुष्य-सम्बन्धी, 'दिव्वं व मणुस्सं वा तेरिच्छं वा सरागहियएणं' (आप २१)।

मणुस्सिंद पुं [मनुष्येन्द्र] राजा, नर-पति (उत्त १८, ३७; उप पृ १४२)।

मणूस देखो मणुस्स (हे १, ४३; औप; उवर १२२; पि ६३)।

मणे अ [मन्ये] विमर्श-सूचक अव्यय (हे २, २०७; षड्; प्राकृ २६; गा १११; कुमा)।

मणो° देखो मण = मनस्। °गम न [°गम] देवविमान-विशेष, 'पालगपुप्फगसोमणससिरि-वच्छनंदियावत्तकामगमपीतिगममणोगमविमल-सव्वओभद्दसरिसनामधेज्जेहिं विमाणेहिं ओ-इण्णा' (आप)। °ज्ज वि [°ज्ञ] १ सुन्दर, मनोहर (हे २, ८३; उप २६४ टी)। २ पुं. गुल्म-विशेष; 'सरियए णोमालियकोरिंटय-वत्थुजीवगमणोज्जे' (पराण १—पत्र ३२)। °ण्ण, °न्न वि [°ज्ञ] सुन्दर, मनोहर (हे २, ८३; पि २७६)। °भव पुं [°भव] कामदेव, कन्दर्प (सुपा ६८; पिंग)। °भिरमणिज्ज वि [°भिरमणीय] सुन्दर, चित्ताकर्षक (पउम ८, १४३)। °भू पुं [°भू] कामदेव, कन्दर्प (कप्पू)। °मय वि [°मय] मानसिक; 'सारीरमणोमयाणि दुक्खाणि' (पराह १, ३—पत्र ५५)। °माणसिय वि [°मानसिक] मन में ही रहनेवाला—वचन से अप्रकटित—मानसिक दुःख आदि (णाया १, १,—पत्र २६)। °रम वि [°रम] १ सुन्दर, रमणीय (पात्र)। २ पुं. एक विमानेन्द्रक, देवविमान-विशेष (देवेन्द्र १३६)। ३ मेरु पर्वत (सुज्ज ५)। ४ राक्षस-वंश का एक राजा, एक लंका-पति (पउम ५, २६५)। ५ किन्नर-देवों की एक जाति। रुचक द्वीप का अधिष्ठायक देव (राज)। ७ तृतीय ग्रैवेयक-विमान (पव १६४)। ८ आठवें देवलोक के इन्द्र का पारियानिक विमान (इक)। ६ एक देव-विमान (सम १७)। १० मिथिला का एक चैत्य (उत्त ६, ८; ६)। ११ उपवन-विशेष (उप ६८६ टी)। °रमा स्त्री [°रमा] चतुर्थ वासु-देव की पटरानी का नाम (पउम २०, १८६)। २ भगवान् सुपार्श्वनाथ की दीक्षा-शिविका (सुपा ७५; विचार १२६)। ३ शक्र की अञ्जुका नामक इन्द्राणी की एक राजधानी (इक)। °रह पुं [°रथ] १ मन का अभिलाष (औप; कुमा; हे ४, ४१४)। २ पक्ष का तृतीय दिवस (सुज्ज १०, १४—पत्र १४७)। °हंस पुं [°हंस] छन्द-विशेष (पिंग)। °हर पुं [°हर] १ पक्ष का तृतीय दिवस (सुज्ज १०, १४)। २ छन्द-विशेष (पिंग)। ३ वि. रमणीय, सुन्दर (हे १, १५६; षड्; स्वप्न ५२; कुमा)। °हरा स्त्री [°हरा] भगवान् पद्मप्रभ की दीक्षा-शिविका (विचार १२६)। °हव देखो °भव (स ८१; कप्पू)। °हिराम वि [°भिराम] सुन्दर (भवि)।

मणोसिला देखो मणंसिला (हे १, २६; कुमा)।

मण्ण देखो मण = मन्। मण्णइ (पि ४८८)।

कर्म. मरिगज्जइ (कुप्र १०६)। वकृ. मण्णमाण (नाट. चैत १३३)।

मण्णण न [मानन] मानना, आदर (उप १५४)।

मण्णा देखो मन्ना (राज)।

मण्णिय देखो मन्निय (राज)।

मण्णु देखो मन्नु (गा ११; ५०८; दे ६, ७१; वेणी १७)।

मण्णे देखो मणे (कप्प)।

मत्त वि [मत्त] १ मद-युक्त, मतवाला (उवा; प्रासू ६४; ६८; भवि)। २ न. मद्य, दारू (ठा ७)। ३ मद, नशा (पव १७१)। °जला स्त्री [°जला] नदी-विशेष (ठा २, ३; इक)।

मत्त देखो मेत्त = मात्र, 'वयणमत्तमिट्ठाणं' (रंभा)।

मत्त न [अमत्र, मात्र] पात्र, भाजन (आचा २, १, ६, ३; ओघ २५१)। देखो मत्तय।

मत्त (अप) देखो मच्च = मर्त्य (भवि)।

मत्तंगय पुं [मत्ताङ्क, °द] कल्पवृक्ष की एक जाति, मद्य देनेवाला कल्पतरु (सम १७; पव १७१)।

मत्तंड पुं [मार्तण्ड] सूर्य, रवि (सम्मत्त १४५, सिरि १००८)।

मत्तग न [दे] पेशाब, मूत्र (कुलक ६)।

मत्तग, मत्तय पुंन [अमत्र, मात्रक] १ पात्र, भाजन। २ छोटा पात्र; बिइज्जओ मत्तओ होइ' (बृह ३; कप्प)।

मत्तय देखो मत्तग = दे (कुलक १३)।

मत्तड्डी स्त्री [दे] बलात्कार (दे ६, ११३)।

मत्तवारण पुंन [मत्तवारण] बरंडा, बरामदा, दालान (दे ६, १२३; सुर ३, १००; भवि)।

मत्तवाल पुं [दे] मतवाला, मदोन्मत्त (दे ६, १२२, षड्; सुख २, १७; सुपा ४८६)।

मत्ता स्त्री [मात्रा] १ परिमाण (पिंड ६५१)। २ अंश, भाग, हिस्सा (स ४८३)। ३ समय का सूक्ष्म नाप। ४ सूक्ष्म उच्चारण-कालवाला वर्णावयव (पिंग)। ५ अल्प, लेश, लव (पाअ)।

मत्ता अ [मत्वा] जानकर (सूअ १, २, २, ३२)।

मत्तालंब पुं [दे. मत्तालम्ब] बरंडा, बरामदा (दे ६, १२३; सुर १, ५७)।

मत्तिया स्त्री [मृत्तिका] मिट्टी (पएण १—पत्र २५)। °वई स्त्री [°वती] नारी-विशेष, दशार्णदेश की राजधानी (पव २७५)।

मत्थ, मत्थग, मत्थय पुंन [मस्त, °क] माथा, सिर (से १, १; स ३८५; औप)। °त्थ वि [°स्थ] सिर में स्थित (गउड)। °मणि पुं [°मणि] शिरोमणि, प्रधान, मुख्य (उप ६४८ टी)।

मत्थय पुंन [मस्तक] गर्भ, फल आदि का मध्यभाग—अन्तःसार (आचा २, १, ८, ६)।

मत्थयधोय वि [दे. धौतमस्तक] दासत्व से मुक्त, गुलामी से मुक्त किया हुआ (णाया १, १—पत्र ३७)।

मत्थुलुंग, मत्थुलुय न [मस्तुलुङ्ग] १ मस्तक-स्नेह, सिर में से निकलता एक प्रकार का चिकना पदार्थ (पण्ह १, १; तंदु १०)। २ मेद का फिप्फिस आदि (ठा ३, ४—पत्र १७०; भग; तंदु १०)।

मथिय देखो महिअ = मथित (पण्ह २, ४—पत्र १३०)।

मद देखो मय = मद (कुमा; प्रयौ १६, पि २०२)।

मद (मा) देखो मय = मृत (प्राकृ १०३)।

मदण देखो मयण (स्वप्न ६३; नाट—मृच्छ २३१)।

मदणसला(गा) देखो मयणसलागा (पएण १—पत्र ५४)।

मदणा देखो मयणा = मदना (णाया २—पत्र २५१)।

मदणिज्ज वि [मदनीय] कामोद्दीपक, मदन-वर्धक (णाया १, १—पत्र १६; औप)।

मदि देखो मइ = मति (मा ३२; कुमा; पि १६२)।

मदीअ देखो मईअ (स २३२)।

मदुवी देखो मउई (चंड)।

मदोली स्त्री [दे] दूती, दूत कर्म करनेवाली स्त्री (षड्)।

मद्द सक [मृद्] १ चूर्ण करना। मालिश करना, मसलना, मलना। मद्दाहि (कप्प)। कर्म. मद्दीअदि (नाट—मृच्छ १३५)। हेकृ. मद्दिउं (पि ५८५)।

मद्दण न [मर्दन] १ अंग-चप्पी, मालिश (सुपा २४)। २ हिंसा करना; 'तसथावरभूय-मद्दणं विविहं' (उव)। ३ वि. मर्दन करने-वाला (ती ३)।

मद्दल पुं [मर्दल] वाद्य-विशेष, मुरज, मृदंग (दे ६, ११६; सुर ३, ६८; सिरि १५७)।

मद्दलिअ वि [मार्दलिक] मृदंग बजानेवाला (सुपा २६४; ५५३)।

मद्दव न [मार्दव] मृदुता, नम्रता, विनय, अहंकार-निग्रह (औप; कप्प)।

मद्दवि वि [मार्दविन्] नम्र, विनीत; 'अज्ज-वियं मद्दवियं लाघवियं' (सूअ २, १, ५७; आचा)।

मद्दविअ वि [मार्दविक, °त] ऊपर देखो (बृह ४; वव १)।

मद्दिअ देखो मड्डिअ (पाअ)।

मद्दी स्त्री [माद्री] १ राजा शिशुपाल की मा का नाम (सूअ १, ३, १, १ टी)। २ राजा पाण्डु की एक स्त्री का नाम (वेणी १७१)।

मद्दुअ पुं [मद्दुक] भगवान् महावीर का राजगृह-निवासी एक उपासक (भग १८, ७—पत्र ७५०)।

मद्दुग पुं [मद्गु, °क] पक्षि-विशेष, जल-वायस (भग ७, ६—पत्र ३०८)। देखो मग्गु।

मद्दुग देखो मुदुग (राज)।

मधु देखो महु (षड्; रंभा; पिंग)।

मधुघाद पुं [मधुघात] एक म्लेच्छ-जाति (मृच्छ १५२)।

मधुर देखो महुर (निचू १, प्राकृ ८५)।

मधुसित्थ देखो महुसित्थ (ठा ४, ४—पत्र २७१)।

मधूला स्त्री [दे. मधूला] पाद-गण्ड (राज)।

मन अ [दे] निषेधार्थक अव्यय, मत, नहीं (कुमा)।

मनुस्स देखो मणुस्स (चंड; भग)।

मन्न देखो मण्ण मन्नइ, मन्नसि (आचा; महा), मन्नंते, मन्नेसि (रंभा)। कर्म, मन्निज्जउ (महा)। वकृ. मन्नंत, मन्नमाण (सुर १४, १७१; आचा; महा; सुपा ३०७; सुर ३, १७४)।

मन्न देखो **माण** = मानय्। कृ. **मन्न, मन्नाय मन्नणिज्ज, मन्नियव्व, मन्निय** (उप १०३६; धर्मवि ७६; भवि; सुर १०; ३८; सुपा ३६८; ठा १ टी—पत्र २१; सं ३५)।

मन्ना स्त्री [मनन] १ मति, बुद्धि (ठा १—पत्र १६)। २ आलोचन, चिन्तन (सूअ २ १, ४१; ठा १)।

मन्ना स्त्री [मान्या] अभ्युपगम, स्वीकार (ठा १—पत्र १६)।

मन्नाय देखो **मन्न** = मानय्।

मन्नाविय वि [मानित] मनाया हुआ (सुपा १५६)।

मन्निय वि [मत] माना हुआ (सुपा ६०५; कुमा)।

मन्नु पुं [मन्यु] १ क्रोध, गुस्सा (सुपा ६०४)। २ दैन्य, दीनता; 'सोयसमुब्भूयगरुय-मन्नुवसा' (सुर ११, १४४)। ३ अहंकार। ४ शोक, अफसोस। ५ क्रतु, यज्ञ (हे २, २५; ४४)।

मन्नुइय वि [मन्यवित] मन्यु-युक्त, कुपित (सुख ४, १)।

मन्नुसिय वि [दे] उद्विग्न (स ५६६)।

मन्ने देखो **मण्णे** (हे १, १७१; रंभा)।

मप्प न [दे] माप, बाँट; 'तेण य सह वरुणेणं आणेवि य तस्स हट्टमप्पाणि' (सुपा ३६२)।

मब्भीसडी } (अप) स्त्री [मा भैषीः] अभय-
मब्भीसा } वचन (हे ४, ४२२)।

ममकार पुं [ममकार] ममत्व, मोह, प्रेम, स्नेह (गच्छ २, ४२)।

ममच्चय वि [मदीय] मेरा (सुख २, १५)।

ममत्त न [ममत्व] ममता, मोह, स्नेह (सुपा २६)।

ममया स्त्री [ममता] ऊपर देखो (पंचा १५, ३२)।

ममा सक [ममाय्] ममता करना। ममाइ, ममायए (सूअ २, १, ४२, उव)। वकृ. **ममायमाण, ममायमीण** (आचा; सूअ २, ६, २१)।

ममाइ वि [ममत्विन्] ममतावाला (सूअ १, १, १, ४)।

ममाइय वि [ममायित] जिसपर ममता की गई हो वह (आचा)।

ममाय वि [दे] ग्रहण करना। ममायंति (दस ६, ४६)।

ममाय वि [ममाय] ममत्व करनेवाला (निचू १३)।

ममि वि [मामक] मेरा, मदीय; 'ममं वा ममि वा' (सूअ २, २, ६)।

ममूर सक [चूर्णय्] चूरना। ममूरइ (धात्वा १४८)।

मम्म पुंन [मर्मन्] १ जीवन-स्थान। २ सन्धि-स्थान (गा ४४६; उप ६६१; हे १, ३२)। ३ मरण का कारण-भूत वचन आदि (णाया १, ८)। ४ गुप्त बात (प्रासू ११; सुपा ३०७)। ५ रहस्य, तात्पर्य (श्रु २८)। °**य** वि [°ग] मर्म-वाचक (शब्द) (उत्त १, २५; सुख १, २५)।

मम्मक्क पुं [दे] गर्व, अहंकार (षड्)।

मम्मक्का स्त्री [दे] १ उत्कण्ठा। २ गर्व (दे ६, १४३)।

मम्मण न [मन्मन] १ अव्यक्त वचन (हे २, ६१; दे ६, १४१; विपा १, ७; वा २६)। २ वि. अव्यक्त वचन बोलनेवाला (श्रा १२)।

मम्मण पुं [दे] १ मदन, कन्दर्प। २ रोष, गुस्सा (दे ६, १४१)।

मम्मणिआ स्त्री [दे] नील मक्षिका (दे ६, १२३)।

मम्मर पुं [मर्मर] शुष्क पत्तों की आवाज (गा ३६५)।

मम्मह पुं [मन्मथ] कामदेव, कन्दर्प (गा ४३०; अभि ६५)।

मम्मी स्त्री [दे] मामी, मातुल-पत्नी (दे ६, ११२)।

मय न [मत] मनन, ज्ञान (सूअ २, १, ५०)। २ अभिप्राय, आशय (ओघनि १६०; सूअनि १२०)। ३ समय, दर्शन, धर्म; 'समओ मयं' (पाअ; सम्मत्त २२८)। ४ वि. माना हुआ (कम्म ४, ४६)। ५ इष्ट, अभीष्ट (सुपा ३७१)। °**न्नु** वि [°ज्ञ] दार्शनिक (सुपा ५८२)।

मय पुं [मय] १ उष्ट्र, ऊँट (सुख ६, १)। २ अश्वतर, खच्चर; 'मयमहिससरहकेसरि—' (पउम ६, ५६)। ३ एक विद्याधर-नरेश (पउम ८, १)। °**हर** पुं [°धर] ऊँटवाला (सुख ६, १)।

मय वि [मृत] मरा हुआ, जीव-रहित (णाया १, १; उव; सुर २, १८; प्रासू १७; प्राप्र)। °**किच्च** न [°कृत्य] मरण के उपलक्ष में किया जाता श्राद्ध आदि कर्म (विपा १, २)।

मय पुंन [मद] १ गर्व, अभिमान; 'एयाइं मयाइं विगिंच धीरा' (सूअ १, १३, १६; सम १३; उप ७२८ टी; कुमा; कम्म २, २६)। २ हाथी के गण्ड-स्थल से झरता प्रवाही पदार्थ (णाया १, १—पत्र ६५; कुमा)। ३ आमोद, हर्ष। ४ कस्तूरी। ५ मत्तता, नशा। ६ नद, बड़ी नदी। ७ वीर्य, शुक्र (प्राप्र)। °**करि** पुं [°करिन्] मदवाला हाथी (महा)। °**गल** वि [°कल] १ मद से उत्कट, नशे में चूर; 'मअगलकुंजरगमणी' (पिंग)। २ पुं. हाथी (सुपा ६०; हे १, १८२; पाअ; दे ६, १२५)। ३ छन्द-विशेष (पिंग)। °**णासणी** स्त्री [°नाशनी] विद्या-विशेष (पउम ७, १४०)। °**धम्म** पुं [°धर्म] विद्याधर-वंश के एक राजा का नाम (पउम ५, ४३)। °**मंजरी** स्त्री [°मञ्जरी] एक स्त्री का नाम (महा)। °**वारण** पुं [°वारण] मदवाला हाथी; 'मयवारणो उ मत्तो निवाडियालाणवरखंभो' (महा)।

मय पुं [मृग] १ हरिण (कुमा; उप ७२८ टी)। २ पशु, जानवर। ३ हाथी की एक जाति। ४ नक्षत्र-विशेष। ५ कस्तूरी। ६ मकर राशि। ७ अन्वेषण। ८ याचन, माँग। ९ यज्ञ-विशेष (हे १, १२६)। °**च्छी** स्त्री [°ाक्षी] हरिण के नेत्रों के समान नेत्र-वाली (सुर ४, १६; सुपा ३५५; कुमा)। °**णाह** पुं [°नाथ] सिंह (स १११)। °**णाहि** पुंस्त्री [°नाभि] कस्तूरी (पाअ; सुपा २००; गउड)। °**तण्हा** स्त्री [°तृष्णा] धूप में जल-भ्रान्ति (दे; से ६, ३५)। °**तण्हिआ** स्त्री [°तृष्णिका] वही अर्थ (पि ३७५)। °**तिण्हा** देखो °**तण्हा** (पि ५४)। °**तिण्हिआ** देखो °**तण्हिआ** (पि ५४)। °**धुत्त** पुं [°धूर्त्त] शृगाल, सियार (दे ६, १२५)। °**नाभि** देखो °**णाहि** (कुमा)। °**राय** पुं [°राज]

सिंह, केसरी (पउम २, १७; उप पृ ३०)। °लंछण पुं [°लाञ्छन] चन्द्रमा (पाअ; कुमा; सुर १३, ५३)। °लोअणा स्त्री [°रोचना] गोरोचन, गोरोचना, पीत-वर्ण द्रव्य-विशेष (अभि १२७)। °रि पुं [°रि] सिंह (पाअ)। °रिदमण पुं [°रिंदमन] राक्षस-वंश का एक राजा, एक लंका-पति (पउम ५, २६२)। °हिव पुं [°धिप] सिंह, केसरी (पाअ; स ६)। देखो मिअ, मिग = मृग।

मयंक } देखो मिअंक (हे १, १७७; १८०;
मयंग } कुमा; षड्; गा ३६६; रंभा)।

मयंग देखो मायंग = मातंग; 'कूबर वरुणो भिउडी गोमेहो वामण मयंगो' (पव २६)।

मयंग पुं [मृदङ्ग] वाद्य-विशेष (प्राकृ ८)।

मयंगय पुं [मतङ्गज] हाथी, हस्ती (पउम ८०, ६६; उप पृ २६०)।

मयंगा स्त्री [मृतगङ्गा] जहाँ पर गंगा का प्रवाह रुक गया हो वह स्थान (णाया १, ४—पत्र ६६)।

मयंतर न [मतान्तर] भिन्न मत, अन्य मत (भग)।

मयंद देखो मइंद = मृगेन्द्र (सुपा ६२)।

मयंध वि [मदान्ध] मद के कारण अन्धा बना हुआ, मदोन्मत्त (सुर २, ६६)।

मयग वि [मृतक] १ मरा हुआ। २ न. मुर्दा (णाया १, ११; कुप्र २६; औप)। °किच्च न [°कृत्य] श्राद्ध आदि कर्म (णाया १, २)।

मयड पुं [दे] आराम, बगीचा (दे ६, ११५)।

मयण पुं [मदन] १ कन्दर्प, कामदेव (पाअ; धण २५; कुमा; रंभा)। २ लक्ष्मण का एक पुत्र (पउम ९१, २०)। ३ एक वणिक्-पुत्र (सुपा ६१७)। ४ छन्द का एक भेद (पिंग)। ५ वि. मद-कारक, मादक; 'मयणा दरनिव्वलिया निव्वलिया जह कोद्दवा तिविहा' (विसे १२२०)। ६ न. मीन, मोम; 'मयणो मयणं विअ विलीणो' (धण २५; पाअ; सुर २, २४६)। °घरिणी स्त्री [°गृहिणी] काम-प्रिया, रति (कुप्र १०६)। °तालंक पुं [°तालङ्क] छन्द-विशेष (पिंग)। °तेरसी स्त्री [°त्रयोदशी] चैत्र मास की शुक्ल त्रयोदशी तिथि (कुप्र ३७८)। °दुम पुं [°द्रुम] वृक्ष-विशेष (से ७, ६६)। °फल न [°फल] फल-विशेष, मैनफल; 'तम्रो तेणुप्पलं मयणफलेण भावियं मणुस्सहत्थे दिन्नं, एयं वररुइस्स देज्जाहि' (सुख २, १७)। °मंजरी स्त्री [°मञ्जरी] १ राजा चण्डप्रद्योत की एक स्त्री का नाम। २ एक श्रेष्ठि-कन्या (महा)। °रेहा स्त्री [°रेखा] एक युवराज की पत्नी (महा)। °वेय पुं [°वेग] पुरुष-विशेष का नाम (भवि)। °सुंदरी स्त्री [°सुन्दरी] राजा श्रीपाल की एक पत्नी (सिरि ५३)। °हरा स्त्री [°गृह] छन्द विशेष (पिंग)। °हल देखो °फल; 'मयणहलगंधओ ता उव्वमिया चंदहासपुरा' (धर्मवि ६४)।

मयणंकुस पुं [मदनाङ्कुश] श्रीरामचन्द्र का एक पुत्र, कुश (पउम ९७, ९)।

मयणसलागा } स्त्री [दे. मदनशलाका]
मयणसलाया } मैना, सारिका (जीव १ टी—पत्र ४१, दे ६, ११६)।

मयणसाला स्त्री [दे. मदनशाला] सारिका-विशेष (पण्ह १, १—पत्र ८)।

मयणा स्त्री [दे. मदना] मैना, सारिका (उप १२६ टी, श्राव १)।

मयणा स्त्री [मदना] १ वैरोचन बलीन्द्र की एक पटरानी (ठा ५, १—पत्र ३०२)। २ शक्र के लोकपाल की एक स्त्री (ठा ४, १—पत्र २०४)।

मयणाय पुं [मैनाक] १ द्वीप-विशेष। २ पर्वत-विशेष (भवि)।

मयणिज्ज देखो मदणिज्ज (कप्प; पण्ण १७)।

मयणिवास पुं [दे] कन्दर्प, कामदेव (दे ६, १२६)।

मयर पुं [मकर] १ जलजन्तु-विशेष, मगर-मच्छ (औप; सुर १३, ४६)। २ राशि-विशेष, मकर राशि (सुर १३, ४६; विचार १०६)। ३ रावण का एक सुभट (पउम ५६; २६)। ४ छन्द-विशेष (पिंग)। °केउ पुं [°केतु] कामदेव, कन्दर्प (कप्पू)। °द्धय पुं [°ध्वज] वही (पाअ; कुमा; रंभा)। °लंछण पुं [°लाञ्छन] वही (कप्पू; पि ५४)। °हर पुंन [°गृह] वही (पाअ; से १, १८; ४, ४८; वज्जा १५४; भवि)।

मयरंद पुं [दे. मकरन्द] पुष्प-रज, पुष्प-पराग (दे ६, १२३; पाअ; कुमा ३, ५४)।

मयरंद पुं [मकरन्द] पुष्प-रस, पुष्प-मधु (दे ६, १२३; सुर ३, १०; प्रासू ११३; कुमा)।

मयल देखो मइल = मलिन (सुपा २६२)।

मयलणा देखो मइलणा (सुपा १२४; २०६)।

मयलवुत्ती [दे] देखो मइलपुत्ती (दे ६, १२५)।

मयलिअ देखो मलिणिअ (उप ७२८ टी)।

मयल्लिगा स्त्री [मतल्लिका] प्रधान, श्रेष्ठ, 'कूडक्खरविओ(?उ)मयल्लिगाणं' (रंभा १७)।

मयह देखो मगह। °सामिय पुं [°स्वामिन्] मगध देश का राजा (पउम ६१, ११)। °पुर न [°पुर] राज-गृह नगर (वसु)। °हिवइ पुं [°धिपति] मगध देश का राजा (पउम २०, ४७)।

मयहर पुं [दे] १ ग्राम-प्रधान, ग्राम-प्रवर, गाँव का मुखिया (पव २६८; महा; पउम ६३; १६)। २ वि. वडील, मुखिया, नायक; 'सयलहत्थारोहपहाणमयहरेण' (स २८०; महानि ४; पउम ६३, १७)। स्त्री. °रिगा, °रिया, °री (उप १०३१ टी; सुर १, ४१; महा; सुपा ७६; १२६)।

मयाई स्त्री [दे] शिरो-माला (दे ६, ११५)।

मयार पुं [मकार] १ 'म' अक्षर। २ मकारादि अश्लील—अवाच्य शब्द; 'जत्थ जयार-मयारं समणी जंपइ गिहत्थपच्चक्खं' (गच्छ ३, ४)।

मयाल (अप) देखो मराल (पिंग)।

मयालि पुं [मयालि] जैन महर्षि-विशेष—१ एक अन्तकृद् मुनि (अंत १४)। २ एक अनुत्तर-गामी मुनि (अनु १)।

मयाली स्त्री [दे] लता-विशेष, निद्राकरी लता (दे ६, ११६; पाअ)।

मर अक [मृ] मरना। मरइ, मरए (हे ४, २३४; भग; उव; महा; षड्), मरं (हे ३, १४१)। मरिज्जइ, मरिज्जउ (भवि; पि ४७७)। भूका. मरही, मरीअ (आचा; पि ४६६)। भवि. मरिस्ससि (पि ५२२)। वकृ. मरंत,

मरमाण (गा ३७५; प्रासू ६४; सुपा ४०५; भग; सुपा ६५१; प्रासू ८३)। संकृ. **मरिऊण** (पि ५८६)। हेकृ. **मरिउं, मरेउं** (संक्षि ३४)। कृ. **मरियव्व** (अंत २४, सुपा २१५, ५०१, प्रासू १०६), **मरिएव्वउं** (अप) (हे ४, ४३८)।

मर पुं [दे] १ मशक। २ उल्लू, घूक (दे ६, १४०)।

मरअद } पुंन [मरकत] नील वर्णवाला
मरगय } रत्न-विशेष, पन्ना (संक्षि ६; हे १, १८२; औप; षड्; गा ७५; काप्र ३१); 'परिकम्मिओवि बहुसो काओ किं मरगओ होइ' (कुप्र ४०३)।

मरजीवय पुं [दे. मरजीवक] समुद्र के भीतर उतर कर जो वस्तु निकालने का काम करता है वह (सिरि ३८५)।

मरट्ट पुं [दे] गर्व, अहंकार (दे ६, १२०; सुर ४, १५४; प्रासू ८५; ती ३; भवि; सण; हे ४, ४२२; सिरि ६६२); 'अखिलमइ (?र)ट्टकंदप्पमद्दणे लद्धजयपडायस्स' (धर्मवि ६७)।

मरट्टा स्त्री [दे] उत्कर्ष,

'एईइ अहरहरिआरुणिममरट्टाइं
(?इ) लज्जमाणाइं।
बिंबफलाइं उब्बंधणं व
वल्लीसु विरयंति ॥'
(कुप्र २६६)।

मरड्ड (अप) देखो **मरहट्ट** (पिंग)।

मरढ देखो **मरहट्ट**। स्त्री. °**ढी** (कप्पू)।

मरण पुंन [मरण] मौत, मृत्यु (आचा; भग; पाअ; जी ४३; प्रासू १०७; ११८); 'सेसा मरणा सव्वे तब्भवमरणेण णायव्वा' (पव १५७)।

मरल सक **मराल** = मराल, हंस (प्राकृ ५)।

मरह सक [मृष्] क्षमा करना; 'खमंतु मरहंतु णं देवाणुप्पिया' (णाया १, ८—पत्र १३५)।

मरहट्ठ पुंन [महाराष्ट्र] १ बड़ा देश। २ देश-विशेष, महाराष्ट्र, मराठा; 'मरहट्ठो मरहट्ठं' (हे १, ६६; प्राकृ ६; कुमा)। ३ सुराष्ट्र (कुमा ३, ६०)। ४ पुं. महाराष्ट्र देश का निवासी, मराठा (पण्ह १, १—पत्र १४; पिंग)। ५ छन्द-विशेष (पिंग)।

मरहट्ठी स्त्री [महाराष्ट्री] १ महाराष्ट्र की रहनेवाली स्त्री। २ प्राकृत भाषा का एक भेद (पि ३५४)।

मराल वि [दे] अलस, मन्द, आलसी (दे ६, ११२; पाअ)।

मराल पुं [मराल] १ हंस पक्षी (पाअ)। २ छन्द-विशेष (पिंग)।

मराली स्त्री [दे] १ सारसी, सारस पक्षी की मादा। २ दूती। ३ सखी (दे ६, १४२)।

मरिअ वि [मृत] मरा हुआ (सम्मत्त १३६)।

मरिअ वि [दे] १ त्रुटित, टूटा हुआ। २ विस्तीर्ण (षड्)।

मरिअ देखो **मिरिअ** (प्रयौ १०५; भास ८ टी)।

मरिइ देखो **मरीइ**; 'अह उप्पन्ने नाणे जिणस्स, मरिई तओ य निक्खंतो' (पउम ८२, २४)।

मरिस सक [मृष्] सहन करना, क्षमा करना। मरिसइ, मरिसेइ, मरिसेउ (हे ४, २३५; महा; स ६७०)। कृ. **मरिसियव्व** (स ६७०)।

मरिसावणा स्त्री [मर्षणा] क्षमा (स ६७१)।

मरीइ पुं [मरीचि] १ भगवान् ऋषभदेव का एक पौत्र और भरत चक्रवर्त्ती का पुत्र, जो भगवान् महावीर का जीव था (पउम ११, ६४)। २ पुंस्त्री. किरण (पण्ह १, ४—पत्र ७२; धर्मसं ७२३)।

मरीइया स्त्री [मरीचिका] १ किरण-समूह। २ मृग-तृष्णा, किरण में जल भ्रान्ति (राज)।

मरीचि देखो **मरीइ** (औप; सुज १, ६)।

मरीचिया देखो **मरीइया** (औप)।

मरु पुं [मरुत्] १ पवन, वायु। २ देव, देवता। ३ सुगन्धी वृक्ष-विशेष, मरुआ, मरवा (षड्)। ४ हनूमान का पिता (पउम ५३, ७६)। °**णंदण** पुं [°नन्दन] हनूमान् (पउम ५३, ७६)। °**स्सुय** पुं [°सुत] वही (पउम १०१, १)। देखो **मरुअ** = मरुत्।

मरु } पुं [मरु, °क] १ निर्जल देश
मरुअ } (णाया १, १६—पत्र २०२; औप)। २ देश-विशेष, मारवाड़ (ती ५; महा; इक; पण्ह १, ४—पत्र ६८)। ३ पर्वत, ऊँचा पहाड़ (निचू ११)। ४ वृक्ष-विशेष, मरुआ, मरुवा (पण्ह २, ५—पत्र १५०)। ५ ब्राह्मण, विप्र (सुख २, २७)। ६ एक नृप-वंश। ७ मरु-वंशीय राजा; 'तस्स य पुट्टीए नंदो पण्णपन्नसयं च होइ वासाणं। मरुयाणं अट्ठसयं' (विचार ४६३)। ८ मरु देश का निवासी (पण्ह १, १)। **कंतार** न [°कान्तार] निर्जल जंगल (अच्चु ८५)। °**त्थली** स्त्री [°स्थली] मरु-भूमि (महा)। °**भू** स्त्री [°भू] वही (श्रा २३)। °**य** वि [°ज] मरु देश में उत्पन्न (पण्ह १, ४—पत्र ६८)।

मरुअ देखो **मरु** = मरुत् (पण्ह १, ४—पत्र ६८)। २ एक देव-जाति (ठा २, २)। °**कुमार** पुं [°कुमार] वानरद्वीप के एक राजा का नाम (पउम ६, ६७)। °**वसभ** पुं [°वृषभ] इन्द्र (पण्ह १, ४—पत्र ६८)।

मरुअअ } पुं [मरुबक] वृक्ष-विशेष, मरुआ,
मरुअग } मरुवा (गउड; पणण १—पत्र ३४)।

मरुआ स्त्री [मरुता] राजा श्रेणिक की एक पत्नी (अंत)।

मरुइणी स्त्री [मरुकिणी] ब्राह्मण-स्त्री, ब्राह्मणी (विसे ६२८)।

मरुंड देखो **मुरुंड** (अंत; औप; णाया १, १—पत्र ३७)।

मरुकुंद पुं [दे. मरुकुन्द] मरुआ, मरुवे का गाछ (भवि)।

मरुग देखो **मरुअ** = मरुक (पण्ह १, १—पत्र १४; इक)।

मरुदेव पुं [मरुदेव] १ ऐरवत क्षेत्र में उत्पन्न एक जिनदेव (सम १५३)। २ एक कुलकर पुरुष का नाम (सम १५०; पउम ३, ५५)।

मरुदेवा } स्त्री [मरुदेवा, °वी] १ भगवान्
मरुदेवी } ऋषभदेव की माता का नाम (उव; सम १५०; १५१)। २ राजा श्रेणिक की एक पत्नी, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा लेकर मुक्ति पाई थी (अंत)।

मरुद्देवा स्त्री [मरुद्देवा] भगवान् महावीर के पास दीक्षा लेकर मुक्ति पानेवाली राजा श्रेणिक की एक पत्नी (अंत २५)।

मरुल पुं [दे] भूत-पिशाच (दे ६, ११४)।

मरुवय देखो **मरुअअ** (गा ६७७; कुमा; विक्र २९)।

मरुस देखो **मरिस**। मरुसिज्ज (भवि)।

मल सक [मल्] धारण करना (भग ६, ३३ टी—पत्र ४८०)।

मल देखो **मद्द**। मलइ, मलेइ (हे ४, १२६; प्राकृ ६८; भवि), मलेमि (से ३,६३), मलेंति (सुर १, ६७)। कर्म. मलिज्जइ (पंचा १६, १०)। वकृ. **मलेंत** (से ४, ४२)। कवकृ. **मलिज्जंत** (से ३, १३)। संकृ. **मलिऊण, मणिऊणं** (कुमा; पि ५८५)। कृ. **मलेव्व** (वै ६६; निसा ३)।

मल पुं [दे] स्वेद, पसीना (दे ६, १११)।

मल पुंन [मल] १ मैल (कुमा; प्रासू २५)। २ पाप (कुमा)। ३ बँधा हुआ कर्म (चेइय ६२२)।

मलपिअ वि [दे] गर्वी, अहंकारी (दे ६, १२१)।

मलण न [मर्दन, मलन] मर्दन, मलना (सम १२५; गउड; दे ३, ३४; सुपा ४४०; पंचा १६, १०)।

मलय पुं [दे. मलक] आस्तरण-विशेष (णाया १, १—पत्र १३; १, १७—पत्र २२९)।

मलय पुं [दे. मलय] १ पहाड़ का एक भाग (दे ६, १४४)। २ उद्यान, बगीचा (दे ६, १४४; पाअ)।

मलय पुं [मलय] १ दक्षिण देश में स्थित एक पर्वत (सुपा ४५६; कुमा; षड्)। २ मलय-पर्वत के निकट-वर्ती देश-विशेष (पव २७५; पिंग)। ३ छन्द-विशेष (पिंग)। ४ देवविमान-विशेष (देवेन्द्र १४३)। ५ न. श्रीखण्ड, चन्दन (जीव ३)। ६ पुंस्त्री. मलय देश का निवासी (पण्ह १, १)। °**केउ** पुं [°केतु] एक राजा का नाम (सुपा ६०७)। °**गिरि** पुं [°गिरि] एक सुप्रसिद्ध जैन आचार्य और ग्रन्थकार (इक; राज)। °**चंद** पुं [°चन्द्र] एक जैन उपासक का नाम (सुपा ६४५)। °**द्दि** पुं [°ाद्रि] पर्वत-विशेष (सुपा ४७७)। °**भव** वि [°भव] १ मलय देश में उत्पन्न। २ न. चन्दन (गउड)। °**मई** स्त्री [°मती] राजा मलयकेतु की स्त्री (सुपा ६०७)। °**य** [°ज] देखो °**भव** (राज)। °**रुह** पुं [°रुह] चन्दन का पेड़ (सुर १, २८)। २ न. चन्दन-काष्ठ (पाअ)। °**ाचल** पुं [°ाचल] मलय पर्वत (सुपा ४५९)। °**ाणिल** पुं [°ानिल] मलयाचल से बहता शीतल पवन (कुमा)। °**ायल** देखो °**ाचल** (रंभा)।

मलय वि [मालय] १ मलय देश में उत्पन्न (अणु)। २ न. चन्दन (भवि)।

मलवट्टी स्त्री [दे] तरुणी, युवति (दे ६, १२४)।

मलहर पुं [दे] तुमुल-ध्वनि (दे ६, १२०)।

मलि वि [मलिन्] मलवाला, मल-युक्त (भवि)।

मलिअ वि [मृदित] जिसका मर्दन किया गया हो वह (गा ११०; कुमा; हे ३, १३५; औप; णाया १, १)।

मलिअ न [दे] १ लघु क्षेत्र। २ कुण्ड (दे ६, १४४)।

मलिअ वि [मलित] मल-युक्त, मलिन; 'मलमलियदेहवत्था' (सुपा १६६; गउड)।

मलिज्जंत देखो **मल** = मृद्।

मलिण वि [मलिन] मैला, मल-युक्त (कुमा; सुपा ६०१)।

मलिणिय वि [मलिनित] मलिन किया हुआ (उव)।

मलीमस वि [मलीमस] मलिन, मैला (पाअ)।

मलेव्व देखो **मल** = मृद्।

मलेच्छ देखो **मिलिच्छ** पि ८४; नाट—चैत १८)।

मल्ल सक [मल्ल्] देखो **मल** = मल् (भग ६, ३३ टी)।

मल्ल पुं [मल्ल] १ पहलवान, कुश्ती लड़नेवाला, बाहु-योद्धा (औप; कप्प; पण्ह २, ४; कुमा)। २ पात्र; 'दीवसिहापडिपिल्लण-मल्ले मिल्लंति नीसासे' (कुप्र १३१)। ३ भीत का अवष्टम्भन-स्तम्भ। ४ छप्पर का आधार-भूत काष्ठ (भग ८, ६—पत्र ३७६)। °**जुद्ध** न [°युद्ध] कुश्ती (कप्पू; हे ४, ३८२)। °**दिन्न** पुंन [°दत्त] एक राजकुमार (णाया १, ८)। °**वाइ** पुं [°वादिन्] एक सुविख्यात प्राचीन जैन आचार्य और ग्रंथकार (सम्मत्त १२०)।

मल्ल न [माल्य] १ पुष्प, फूल (ठा ४, ४)। २ फूल की गुँथी हुई माला (पाअ; औप)। ३ मस्तक-स्थित पुष्पमाला (हे २, ७९)। ४ एक देव-विमान (सम ३९)। ५ बलि; 'मल्लं ति बलीए णामं' (आव० चूर्णि० भा० १ पत्र ३३२)।

मल्लइ पुं [मल्लकि, °किन्] नृप-विशेष (भग; औप; पि ८६)।

मल्लग } न [दे. मल्लक] १ पात्र-विशेष, **मल्लय** } शराव (विसे २४७ टी; पिंड २१०; तंदु ४४; महा; कुलक १४; णाया १, ६; दे ६, १४५; प्रयौ ६७)। २ चषक, पानपात्र (दे ६, १४५)।

मल्लय न [दे] अपूप-भेद, एक तरह का पूआ। २ वि. कुसुम्भ से रक्त (दे ६, १४५)।

मल्लाणी स्त्री [दे] मातुलानी, मामी (दे ६, ११२; पाअ; प्राकृ ३८)।

मल्लि वि [मल्लिन्] धारण-कर्ता (भग ६, ३३ टी)।

मल्लि वि [माल्यिन्] माल्य-युक्त, मालावाला (औप)।

मल्लि स्त्री [मल्लि] १ उन्नीसवें जिन-देव का नाम (सम ४३; णाया १, ८; मंगल १२; पडि)। २ वृक्ष-विशेष, मोतिया का गाछ (दे २, १८)। °**णाह**, °**नाह** पुं [°नाथ] उन्नीसवें जिन-देव (महा; कुप्र ६३)।

मल्लि स्त्री [मल्लि] पुष्प-विशेष (भग ६, ३३ टी)।

मल्लिअज्जुग पुं [मल्लिकार्जुन] एक राजा का नाम (कुमा)।

मल्लिआ स्त्री [मल्लिका] १ पुष्प-वृक्ष-विशेष (णाया १, ९; कुप्र ४९)। २ पुष्प-विशेष (कुमा)। ३ छन्द-विशेष (पिंग)।

मल्लिहाण न [माल्याधान] १ पुष्प-बन्धन-स्थान। २ केश-कलाप (भग ६, ३३ टी—पत्र ४८०)।

मल्ली देखो **मल्लि** (णाया १, ८; पउम २० ३५; विचार १४८; कुमा)।

मल्ह अक [दे] मौज मानना, लीला करना। वकृ. **मल्हंत** (दे ६, ११६ टी; भवि)।

मल्हण न [दे] लीला, मौज (दे ६, ११६)।

मव सक [मापय्] मापना, माप करना, नापना। मवंति (सिरि ४२५)। कर्म. 'आउयाइं मविज्जंति' (कम्म ५, ८५ टी)। कवकृ. **मविज्जमाण** (विसे १४००)।

मविय वि [मापित] मापा हुआ (तंदु ३१)।

मश्चली (मा) स्त्री [मत्स्य] मछली (पि २३३)।

मस } पुं [मश, °क] १ शरीर पर का **मसअ** } तिलाकार काला दाग, तिल (पव २५७)। २ मच्छड़, क्षुद्र जन्तु-विशेष (गा ५६०; चारु १०; वज्जा ४६)।

मसक्कसार न [मसक्कसार] इन्द्रों का एक स्वयं आभाव्य विमान (देवेन्द्र २६३)।

मसग देखो **मसअ** (भग; औप; पउम ३३, १०८; जी १८)।

मसण वि [मसृण] १ स्निग्ध, चिकना। २ सुकुमाल, कोमल, अकर्कश। ३ मन्द, धीमा (हे १, १३०; कुमा)।

मसरक्क सक [दे] सकुचना, समेटना। संकृ. 'दसवि करंगुलीउ **मसरक्किवि** (अप)' (भवि)।

मसाण न [श्मशान] मसान, मरघट (गा ४०८; प्राप्र; कुमा)।

मसार पुं [दे. मसार] मसृणता-संपादक पाषाण-विशेष, कसौटी का पत्थर (णाया १, १—पत्र ६; औप)।

मसारगल्ल पुं [मसारगल्ल] एक रत्न-जाति (णाया १, १—पत्र ३१; कप्प; उत्त ३६, ७६; इक)।

मसि स्त्री [मसि] १ काजल, कज्जल (कप्पू)। २ स्याही, सियाही (सुर २, ५)।

मसिंहार पुं [मसिंहार] क्षत्रिय-परिव्राजक विशेष (औप)।

मसिण देखो **मसण** (हे १, १३०; कुमा; औप; से १, ४५; ५, ६४)।

मसिण वि [दे] रम्य, सुन्दर (दे ६, ११८)।

मसिणिअ वि [मसृणित] १ मृष्ट, शुद्ध किया हुआ, मार्जित; 'रोसिणिअं मसिणिअं' (पाअ)। २ स्निग्ध किया हुआ (से ६, ६)। ३ विलुलित, विमर्दित (से १, ५५)।

मसी देखो **मसि** (उवा)।

मसूर } पुंन [मसूर, °क] १ धान्य-विशेष, **मसूरग** } मसूरि (ठा ४, ३; सम १४६; पिंड **मसूरय** } ६२३)। २ उच्छीर्षक, ओसीसा (सुर २, ८३, कप्प)। ३ वस्त्र या चर्म का वृत्ताकार आसन (पव ८४)।

मस्सु देखो **मंसु** (संक्षि १२; पि ३१२)।

मस्सूरग देखो **मसूरग**; 'मस्सूरए य थिबुगे' (जीवस ५२)।

मह सक [काङ्क्ष्] चाहना, वाञ्छना। महइ (हे ४, १९२; कुमा; सण)।

मह सक [मथ्] १ मथना, विलोड़न करना। २ मारना। महेज्जा (उवा)।

मह सक [मह्] पूजना। महइ (कुमा), महेइ (सिरि ५६६)। संकृ. **महिअ** (कुमा)। कृ. **महणिज्ज** (उप पृ १२६)।

मह पुंन [मह] उत्सव (विपा १, १—पत्र ५; रंभा; पाअ; सण)।

मह पुं [मख] यज्ञ (चंड; गउड)।

मह वि [महत्] १ बड़ा, वृद्ध। २ विपुल, विस्तीर्ण। ३ उत्तम, श्रेष्ठ; 'एगं महं सत्तुस्सेहं' (णाया १, १—पत्र १३; काल, जी ७; हे १, ५)। स्त्री. °ई (उव; महा)। °एवी स्त्री [°देवी] पटरानी (भवि)। °कंतजस पुं [°कान्तयशस्] राक्षस वंश का एक राजा, एक लंका-पति (पउम ५, २६५)। °कमलंग न [°कमलाङ्ग] संख्या-विशेष, ८४ लाख कमल की संख्या (जो २)। °कव्व न [°काव्य] सर्ग-बद्ध उत्तम काव्य-ग्रंथ (भवि)। °काल देखो **महा-काल** (देवेन्द्र २४)। °गइ पुं [°गति] राक्षस वंश का एक राजा, एक लंकेश (पउम ५, २६५)। °ग्गह देखो **महा-गह** (सम ६३)। °ग्घ वि [°अर्घ] महा-मूल्य, कीमती (सुर ३, १०३; सुपा ३७)। °ग्घविअ वि [°अर्घित] १ महँगा, दुर्लभ (से १४, ३७)। २ विभूषित; 'विमलंगोवंगगुणमहग्घविया' (सुपा १, ६०)। ३ सम्मानित; 'अच्चियवंदियपूइय-सक्कारियपणमिओ महग्घविओ' (उव)। °ग्घिम (अप) वि [°अर्घित] बहु-मूल्य, महँगा (भवि)। °चंद पुं [°चन्द्र] १ राजकुमार-विशेष (विपा २, ५; ६)। २ एक राजा (विपा १, ४)। °च्च वि [°अर्च] १ बड़ा ऐश्वर्यवाला। २ बड़ी पूजा—सत्कार-वाला (ठा ३, १—पत्र ११७; भग)। °च्च वि [°अर्च्य] अति पूज्य (ठा ३, १; भग)। °च्छरिय न [°आश्चर्य] बड़ा आश्चर्य (सुर १०, ११८)। °जक्ख पुं [°यक्ष] भगवान् अजितनाथ का शासना-धिष्ठायक देव (पव २६; संति ७)। °जाला स्त्री [°ज्वाला] विद्यादेवी-विशेष (संति ६)। °ज्जुइय वि [°द्युतिक] महान् तेजवाला (भग; औप)। °ड्ढि स्त्री [°ऋद्धि] महान् वैभव (राय)। °ड्ढिय, °ड्ढीअ वि [°ऋद्धिक] विपुल वैभववाला (भग; ओघभा १०)। °ण्णव पुं [°अर्णव] महा-सागर (सुपा ४१७; हे १, २६९)। °ण्णवा स्त्री [°अर्णवा] १ बड़ी नदी। २ समुद्र-गामिनी (कस ४, २७ टि; बृह ४)। °तुडियंग न [°त्रुटिताङ्ग] ८४ लाख त्रुटित की संख्या (जो २)। °त्तण न [°त्व] बड़ाई, महत्ता (श्रा २७)। °त्तर वि [°तर] १ बहुत बड़ा (स्वप्न २८)। २ मुखिया, नायक, प्रधान (कप्प; औप; विपा १, ८)। ३ अन्तःपुर का रक्षक (औप)। स्त्री. °रिया, °री (ठा ४, १—पत्र १९८; इक)। °त्थ वि [°अर्थ] महान् अर्थवाला (णाया १, ८; श्रा २७)। °त्थ न [°अस्त्र] अस्त्र-विशेष, बड़ा हथियार (पउम ७१, ६७)। °त्थिम पुंस्त्री [°र्थत्व] महार्थता (भवि)। °दलिल्ल वि [°दलिल] बड़ा दलवाला (प्रासू १२३)। °दह पुं [°द्रह] बड़ा ह्रद (णाया १, १—पत्र ६४; गा १८६ अ)। °द्दि स्त्री [°अद्रि] १ बड़ी याचना। २ परिग्रह (पण्ह १, ५—पत्र ९२)। °द्दुम पुं [°द्रुम] १ महान् वृक्ष (हे ४, ४४५)। २ वैरोचन इन्द्र के एक पदाति-सैन्य का अधिपति (ठा ५, १—पत्र ३०२)। °द्धि वि [°ऋद्धि] बड़ी ऋद्धिवाला (कुमा)। °धूम पुं [°धूम] बड़ा धुआँ (महा)। °ण्णव देखो °ण्णव (श्रा २८)। °पाण न [°प्राण] ध्यान-विशेष (सिरि १३३०)। °पुंडरीअ पुं [°पुण्डरीक] ग्रह-विशेष

(हे २, १२०)। °प्प पुं [°आत्मन्] महान् आत्मा, महा-पुरुष (पउम ११८, १२१)। °प्फल वि [°फल] महान् फलवाला (सुपा ६२१)। °बाहु पुं [°बाहु] राक्षस वंश का एक राजा, एक लंका-पति (पउम ५, २६५)। °बोह पुं [°अबोध] महा-सागर,

'इय वुत्तंतं सोउं रयणा
निव्वासिया तहा सुगया।
महबोहे जंतूणं जह
पुणरवि नागया तत्थ'
(सम्मत्त १२०)।

°ब्बल पुं [°बल] १ एक राज-कुमार (विपा २, ७; भग ११, ११; अंत)। २ वि. विपुल बलवाला (भग; औप)। देखो महा-बल। °ब्भय वि [°भय] महाभय-जनक (पण्ह १, १)। °ब्भूय न [°भूत] पृथिवी आदि पाँच द्रव्य (सूअ २, १, २२)। °मरुय पुं [°मरुत] एक महर्षि, अन्तकृद् मुनि-विशेष (अंत २५)। °मास पुं [°अश्व] महान् अश्व (औप)। °यर देखो °त्तर (णाया १, १—पत्र ३७)। °रव पुं [°रव] राक्षस वंश का एक राजा, एक लंका-पति (पउम ५, २६६)। °रिसि पुं [°ऋषि] महर्षि, महा-मुनि (उव; रयण ३७)। °रिह वि [°अर्ह] बड़े के योग्य, बहु-मूल्य, कीमती (विपा १, ३; औप; पि १४०)। °वाय पुं [°वात] महान् पवन (ओघ ३८७)। °व्वइय वि [°व्रतिक] महाव्रतवाला (सुपा ४७४)। °व्वय पुंन [°व्रत] महान् व्रत; 'महव्वया पंच हुंति इमे' (पउम ११, २३), 'सेसा महव्वया ते उत्तरगुणसंजुयावि न हु सम्मं' (सिक्खा ४८; भग; उव)। °व्वय पुं [°व्यय] विपुल खर्च (उप पृ १०८)। °सलाग स्त्री [°शलाका] पल्य-विशेष, एक प्रकार की नाप (जीवस १३६)। °सिव पुं [°शिव] एक राजा, षष्ठ बलदेव और वासुदेव का पिता (सम १५२)। °सुक्क देखो महा-सुक्क (देवेन्द्र १३५)। °सेण पुं [°सेन] १ आठवें जिनदेव का पिता (सम १५०)। २ एक राजा (महा)। ३ एक यादव (उप ६४८ टी)। ४ न. वन-विशेष (विसे १४८४)। देखो महा-सेण। देखो महा°।

महअर पुं [दे] गह्वर-पति, निकुञ्ज का मालिक (दे ६, १२३)।

महइ° अ [महाति] १ अति बड़ा। २ अत्यन्त विपुल। °जड वि [°जट] अति बड़ी जटा-वाला (पउम ५८, १२)। °महाइंदइ पुं [°महेन्द्रजित्] इक्ष्वाकु-वंश के एक राजा का नाम (पउम ५, ६)। °महापुरिस पुं [°महापुरुष] १ सर्वोत्तम पुरुष, सर्व-श्रेष्ठ पुरुष। २ जिनदेव, जिन भगवान् (पउम १, १८)। °महालय वि [°महत्] अत्यन्त बड़ा; 'महइमहालयंसि संसारंसि' (उवा; सम ७२)। स्त्री. °लिया (भग; उवा)।

महई देखो **मह** = महत्।

महंग पुं [दे] उष्ट्र, ऊँट (दे ६, ११७)।

महंत देखो **मह** = महत् (आचा; औप; कुमा)।

महत्त न [माहत्य] १ महत्त्व। २ महत्त्ववाला (ठा ३, १—पत्र ११७)।

महण न [दे] पिता का घर (दे ६, ११४)।

महण न [मथन] १ विलोडन (से १, ४६; वज्जा ८)। २ घर्षण (कुप्र १४८)। ३ वि. मारनेवाला; 'दरितनागदप्पमहणा' (पण्ह १, ४)। ४ विनाश करनेवाला; 'नाणं च चरणं च भवमहणं' (संबोध ३५; सुर ७, २२५)। स्त्री. °णी (श्रा ४६)।

महण पुं [महन] राक्षस वंश का एक राजा, एक लंका-पति (पउम ५, २६२)।

महणिज्ज देखो **मह** = मह्।

महति° देखो **महइ°** (ठा ३, ४; णाया १, १; औप)।

महती स्त्री [महती] वीणा-विशेष, सौ ताँत-वाली वीणा (राय ४६)।

महत्थार न [दे] १ भाण्ड, भाजन। २ भोजन (दे ६, १२५)।

महप्पुर पुं [दे] माहात्म्य, प्रभाव; 'तुह मुहचंदपहाए फरिसाए महप्पुरो एसो' (रंभा ४३)।

महमह देखो **मघमघ**। महमहइ (हे ४, ७८; षड्; गा ४६७), महमहेइ (उव)। वकृ. **महमहंत** (काप्र ६१७)। संकृ. महमहिअ (कुमा)।

महमहिअ वि [प्रसृत] १ फैला हुआ (हे १, १४६; वज्जा १५०)। २ सुरभित (रंभा)।

महम्मह देखो **महमह**; 'जिअलोअसिरी महम्म-हइ' (गा ६०४)।

महया° देखो **महा°**; 'महयाहिमवंतमहंतमलय-मंदरमहिंदसारे' (णाया १, १ टी—पत्र ६, औप; विपा १, १; भग)।

महर वि [दे] असमर्थ, अशक्त (दे ६, ११३)।

महलयपक्ख देखो **महालवक्ख** (षड्—पृष्ठ १७६)।

महल्ल वि [दे. महत्] १ वृद्ध, बड़ा (दे ६, १४३; उवा; गउड; सुर १, ५४; पंचा ५, १६; संबोध ४७; ओघ १३६; प्रासू १४६; जय १२; सुपा ११७)। २ पृथुल, विशाल, विस्तीर्ण (दे ६, १४३; प्रवि १०; स ६६२; भवि)। स्त्री. °ल्लिया (औप; सुपा ११६; ५८७)।

महल्ल वि [दे] १ मुखर, वाचाट, बकवादी (दे ६, १४३; षड्)। २ पुं. जलधि, समुद्र (दे ६, १४३)। ३ समूह, निवह (दे ६, १४३; सुर १, ५४)।

महल्लिर देखो **महल्ल**; 'हरिनहकढिणमहल्लिर-पयनहरपरंपराए विकरालो' (सुपा ११)।

महव देखो **मघव** (कुमा; भवि)।

महा स्त्री [मघा] नक्षत्र-विशेष (सम १२; सुज्ज १०, ५; इक)।

महा° देखो **मह** = महत् (उवा)। °अडड न [°अटट] संख्या-विशेष, ८४ लाख महाअट-टांग की संख्या (जो २)। °अडडंग न [°अटटाङ्ग] संख्या-विशेष, ८४ लाख अटट (जो २)। °आल देखो °काल (नाट—चैत ८२)। °ऊह न [°ऊह] संख्या-विशेष, ८४ लाख महाऊहांग की संख्या (जो २)। °कइ पुं [°कवि] श्रेष्ठ कवि, समर्थ कवि (गउड; चेइय ८४३; रंभा)। °कंदिय पुं [°क्रन्दित] व्यन्तर देवों की एक जाति (पण्ह १, ४; औप; इक)। °कच्छ पुं [°कच्छ] १ महाविदेह वर्ष का एक विजय-क्षेत्र—प्रान्त (ठा २, ३; इक)। २ देव-विशेष (जं ४)। °कच्छा स्त्री [°कच्छा] अतिकाय नामक इन्द्र की एक अग्र-महिषी (ठा ४, १—पत्र २०४, णाया २; इक)। °कण्ह पुं [°कृष्ण] राजा श्रेणिक का एक

पुत्र (निर १, १)। °कण्हा स्त्री [°कृष्णा] राजा श्रेणिक की एक पत्नी (अंत २५)। °कप्प पुं [°कल्प] १ जैन ग्रन्थ-विशेष (णंदि)। २ काल का एक परिमाण (भग १५)। °कमल न [°कमल] संख्या-विशेष, चौरासी लाख महाकमलांग की संख्या (जो २)। °कव्व देखो °मह-कव्व (सम्मत्त १४६)। °काय पुं [°काय] १ महोरग देवों का उत्तर दिशा का इन्द्र (ठा २, ३; इक)। २ वि. महान् शरीरवाला (उवा)। °काल पुं [°काल] १ महाग्रह-विशेष, एक ग्रह-देवता (सुज्ज २०; ठा २, ३)। २ दक्षिण लवण-समुद्र के पाताल-कलश का अधिष्ठायक देव (ठा ४, २—पत्र २२६)। ३ एक इन्द्र, पिशाच-निकाय का उत्तर दिशा का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५)। ४ परमाधार्मिक देवों की एक जाति (सम २८)। ५ वायु-कुमार देवों का एक लोकपाल (ठा ४, १—पत्र १६८)। ६ वेलम्ब इन्द्र का एक लोकपाल (ठा ४, १—पत्र १६८)। ७ नव निधियों में एक निधि, जो धातुओं की पूर्ति करता है (उप ६८६ टी; ठा ६—पत्र ४४६)। ८ सातवीं नरक-भूमि का एक नरकावास (ठा ५, ३—पत्र ३४१; सम ५८)। ६ पिशाच देवों की एक जाति (राज)। १० उज्जयिनी नगरी का एक प्राचीन जैन मन्दिर (कुप्र १७४)। ११ शिव, महादेव (आव ६)। १२ उज्जयिनी का एक श्मशान (अंत)। १३ राजा श्रेणिक का एक पुत्र (निर १, १)। १४ न. एक देव-विमान (सम ३५)। °काली स्त्री [°काली] १ एक विद्या-देवी (संति ५)। २ भगवान् सुमतिनाथ की शासन-देवी (संति ६)। ३ राजा श्रेणिक की एक पत्नी (अंत २५)। °किण्हा स्त्री [°कृष्णा] एक महा-नदी (ठा ५; ३—पत्र ३५१)। °कुमुद, °कुमुय न [°कुमुद] १ एक देव-विमान (सम ३३)। २ संख्या-विशेष, चौरासी लाख महाकुमुदांग की संख्या (जो २)। °कुमुयअंग न [°कुमुदाङ्ग] संख्या, कुमुद को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह (जो २)। °कुम्म पुं [°कूर्म] कूर्मावतार (गउड)। °कुल न [°कुल] १ श्रेष्ठ कुल (निचू ८)। २ वि. प्रशस्त कुल में उत्पन्न; 'निक्खंता जे महाकुला' (सूअ १, ८, २४)। °गंगा स्त्री [°गङ्गा] परिमाण-विशेष (भग १५)। °गह पुं [°ग्रह] १ सूर्य आदि ज्योतिष्क (सार्ध ८७)। °गह वि [°आग्रह] आग्रही, हठी (सार्ध ८७)। °गिरि पुं [°गिरि] १ एक जैन महर्षि (उव; कप्प)। २ बड़ा पर्वत (गउड)। °गोव पुं [°गोप] १ महान् रक्षक। २ जिन भगवान् (उवा; विसे २६५६)। °घोस पुं [°घोष] १ ऐरवत क्षेत्र के एक भावी जिनदेव (सम १५४)। २ एक इन्द्र, स्तनित कुमार देवों का उत्तर दिशा का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५)। ३ एक कुलकर पुरुष (सम १५०)। ४ परमाधार्मिक देवों की एक जाति (सम २६)। ५ न. देवविमान-विशेष (सम १२; १७)। °चंद पुं [°चन्द्र] ऐरवत वर्ष के एक भावी तीर्थंकर (सम १५४)। °जणिअ पुं [°जनिक] श्रेष्ठी, सार्थवाह आदि नगर के गण्य-मान्य लोग (कुमा)। °जलहि पुं [°जलधि] महा-सागर (सुपा ४७४)। °जस पुं [°यशस्] १ भरत चक्रवर्ती का एक पौत्र (ठा ८—पत्र ४२६)। २ ऐरवत क्षेत्र के चतुर्थ भावी तीर्थंकर-देव (सम १५४)। ३ वि. महान् यशस्वी (उत्त १२, २३)। °जाइ स्त्री [°जाति] गुल्म-विशेष (पण्ण १)। °जाण न [°यान] १ बड़ा यान—वाहन। २ चारित्र, संयम (आचा)। ३ एक विद्याधर-नगर का नाम (इक)। ४ पुं. मोक्ष, मुक्ति (आचा)। °जुद्ध न [°युद्ध] बड़ी लड़ाई (जीव ३)। °जुम्म पुंन [°युग्म] महान् राशि (भग ३५)। °ण देखो °यण; 'गामदुआरब्भासे अगडसमीवे महाणमज्झे वा' (ओघ ६६)। °णई स्त्री [°नदी] बड़ी नदी (गउड; पउम ४०, १३)। °णंदियावत्त पुं [°नन्द्यावर्त] १ घोष नामक इन्द्र का एक लोकपाल (ठा ४, १—पत्र १६८)। २ न. एक देवविमान (सम ३२)। °णगर देखो °नगर (राज)। °णलिण देखो °नलिण (राज)। °णील न [°नील] १ रत्न-विशेष। २ वि. अति नील वर्णवाला (जीव ३; औप)। °णीला देखो °नीला (राज)। °णुभाअ, °णुभाग वि [°अनुभाग] महानुभाव, महाशय (नाट—मालती ३६; गच्छ १, ४; भग; सिरि १६)। °णुभाव वि [°अनुभाव] वही अर्थ (सुर २, ३५; द्र ६६)। °तमपहा स्त्री [°तमःप्रभा] सप्तम नरक-पृथिवी (पव १७२)। °तमा स्त्री [°तमा] वही (चेइय ७५६)। °तीरा स्त्री [°तीरा] नदी-विशेष (ठा ५, ३—पत्र ३५१)। °तुडिय न [°त्रुटित] महात्रुटितांग को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह, संख्या-विशेष (जो २)। °दामड्ढि पुं [°दामास्थि] ईशानेन्द्र के वृषभ-सैन्य का अधिपति (इक)। °दामड्ढि पुं [°दामर्द्धि] वही अर्थ (ठा ५, १—पत्र ३०३)। °दुम देखो मह-द्दुम (इक)। २ न. एक देव-विमान (सम ३५)। °दुमसेण पुं [°द्रुमसेन] राजा श्रेणिक का एक पुत्र जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी (अनु २)। °देव पुं [°देव] १ श्रेष्ठ देव, जिन-देव (पउम १०६, १२)। २ शिव, गौरी-पति (पउम १०६, १२; सम्मत्त ७६)। °देवी स्त्री [°देवी] पटरानी (कप्पू)। °धण पुं [°धन] एक वणिक् (पउम ५५, ३८)। °धणु पुं [°धनुष्] बलदेव का एक पुत्र (निर १, ५)। °नई स्त्री [°नदी] बड़ी नदी (सम २७; कस)। °नंदिआवत्त देखो °णंदियावत्त (इक)। °नगर न [°नगर] बड़ा शहर (पण्ह २, ४)। °नय पुं [°नद] ब्रह्मपुत्रा आदि बड़ी नदी (आवम)। °नलिण न [°नलिन] १ संख्या-विशेष, महानलिनांग को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह (जो २)। २ एक देव-विमान (सम ३३)। °नलिणंग न [°नलिनाङ्ग] संख्या-विशेष, नलिन को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह (जो २)। °निज्जामय पुं [°निर्यामक] श्रेष्ठ कर्णधार (उवा)। °निद्दा स्त्री [°निद्रा] मृत्यु, मरण (पउम ६, १६८)। °निनाद, °निनाय वि [°निनाद] प्रख्यात, प्रसिद्ध (ओघ ८६; ८६ टी)। °निसीह न [°निशीथ] एक जैन आगम-ग्रन्थ (गच्छ ३, २६)। °नीला स्त्री [°नीला] एक महानदी

(ठा ५, ३—पत्र ३५१)। °पउम पुं [°पद्म] १ भरतक्षेत्र का भावी प्रथम तीर्थंकर (सम १५३)। २ पुंडरीकिणी नगरी का एक राजा और पीछे से राजर्षि (णाया १, १६—पत्र २४३)। ३ भारतवर्ष में उत्पन्न नववाँ चक्रवर्त्ती राजा (सम १५२; पउम २०, १४३)। ४ भरतक्षेत्र का भावी नववाँ चक्रवर्त्ती राजा (सम १५४)। ५ एक राजा (ठा ६)। ६ एक निधि (ठा ९—पत्र ४४९)। ७ एक द्रह (सम १०४; ठा २, ३—पत्र ७२)। ८ राजा श्रेणिक का एक पौत्र (निर १. १)। ९ देव-विशेष (दीव)। १० वृक्ष-विशेष (ठा २, ३)। ११ न. संख्या-विशेष; महापद्मांग को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह (जो २)। १२ एक देव-विमान (सम ३३)। °पउमअंग न [°पद्माङ्ग] संख्या-विशेष, पद्म को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह (जो २)। °पउमा स्त्री [°पद्मा] राजा श्रेणिक की एक पुत्र-वधू (निर १, १)। °पंडिय वि [°पण्डित] श्रेष्ठ विद्वान् (रंभा)। °पट्टण न [°पत्तन] बड़ा शहर (उवा)। °पण्ण, °पन्न वि [°प्रज्ञ] श्रेष्ठ बुद्धिवाला (उप ७७३; पि २७६)। °पभ न [°प्रभ] एक देव-विमान (सम १३)। °पभा स्त्री [°प्रभा] एक राज्ञी (उप १०३१ टी)। °पम्ह पुं [°पक्ष्म] महाविदेह वर्ष का एक विजय—प्रान्त (ठा २, ३)। °परिण्णा, °परिन्ना स्त्री [°परिज्ञा] आचारांग सूत्र के प्रथम श्रुतस्कन्ध का सातवाँ अध्ययन (राज; आक)। °पसु पुं [°पशु] मनुष्य (गउड)। °पह पुं [°पथ] बड़ा रास्ता, राज-मार्ग (भग; पण्ह १, ३; औप)। °पाण न [°प्राण] ब्रह्मलोक-स्थित एक देव-विमान (उत्त १८, २८)। °पायाल पुं [°पाताल] बड़ा पाताल-कलश (ठा ४, २—पत्र २२६; सम ७१)। °पालि स्त्री [°पालि] १ बड़ा पल्य। २ सागरोपम-परिमित भव-स्थिति—आयु,

'अहमासि महापाणे
जुइमं वरिससओवमे।
जा सा पालिमहापाली दिव्वा
वरिससओवमा'
(उत्त १८, २८)।

°पिउ पुं [°पितृ] पिता का बड़ा भाई (विपा १, ३—पत्र ४०)। °पीढ पुं [°पीठ] एक जैन महर्षि (सट्ठि ८१ टी)। °पुंख न [°पुङ्ख] एक देव-विमान (सम २२)। °पुंड न [°पुण्ड्र] एक देव-विमान (सम २२)। °पुंडरीय न [°पुण्डरीक] १ विशाल श्वेत कमल (राय)। २ पुं. ग्रह-विशेष (सम १०४)। ३ देव-विशेष। ४ देखो °पुंडरीअ (राज)। °पुर न [°पुर] १ एक विद्याधर-नगर (इक)। २ नगर-विशेष (विपा २, ७)। °पुरा स्त्री [°पुरी] महापक्ष्म-विजय की राजधानी (ठा २, ३—पत्र ८०)। °पुरिस पुं [°पुरुष] १ श्रेष्ठ पुरुष (पण्ह २, ४)। २ किंपुरुष-निकाय का उत्तर दिशा का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५)। °पुरी देखो °पुरा (इक)। °पोंडरीअ न [°पुण्डरीक] एक देव-विमान (स ३३)। देखो °पुंडरीय (ठा २, ३—पत्र ७२)। °फल देखो मह-प्फल (उवा)। °फलिह न [°स्फटिक] शिखरी पर्वत का एक उत्तर-दिशा-स्थित कूट (राज)। °बल वि [°बल] १ महान् बलवाला (भग)। २ पुं. ऐरवत क्षेत्र का एक भावी तीर्थंकर (सम १५४)। ३ चक्रवर्त्ती भरत के वंश में उत्पन्न एक राजा (पउम ५, ४; ठा ८—पत्र ४२९)। ४ सोमवंशीय एक नर-पति (पउम ५, १०)। ५ पाँचवें बलदेव का पूर्वजन्मीय नाम (पउम २०, १९०)। ६ भारतवर्ष का भावी छठवाँ वासुदेव (सम १५४)। °बाहु पुं [°बाहु] १ भारत-वर्ष का भावी चतुर्थ वासुदेव (सम १५४)। २ रावण का एक सुभट (पउम ५६, ३०)। अपर विदेह-वर्ष में उत्पन्न एक वासुदेव (आव ४)। °भद्द न [°भद्र] तप-विशेष (पव २७१)। °भद्दपडिमा स्त्री [°भद्रप्रतिमा] नीचे देखो (औप)। °भद्दा स्त्री [°भद्रा] व्रत-विशेष, कायोत्सर्ग-ध्यान का एक व्रत (ठा २, ३—पत्र ६४)। °भय देखो मह-ब्भय (आचा)। °भाअ, °भाग वि [°भाग] महानुभाव, महाशय (अभि १७४; महा; सुपा १९८; उप पृ ३)। °भीम पुं [°भीम] १ राक्षसों का उत्तर दिशा का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५)। २ भारतवर्ष का भावी आठवाँ प्रतिवासुदेव (सम १५४)। ३ वि. बड़ा भयानक (दंस ४)। °भीमसेण पुं [°भीमसेन] एक कुलकर पुरुष का नाम (सम १५०)। °भुअ पुं [°भुज] देव-विशेष (दीव)। °भुअंग पुं [°भुजङ्ग] शेष नाग (से ७, ५६)। °भोया स्त्री [°भोगा] एक महा-नदी (ठा ५, ३—पत्र ३५१)। °मउंद पुंन [°मुकुन्द] वाद्य-विशेष (भग)। °मंति पुं [°मन्त्रिन्] १ सर्वोच्च अमात्य, प्रधान मन्त्री (औप; सुपा २२३; णाया १, १)। २ हस्ति-सैन्य का अध्यक्ष (णाया १, १—पत्र १९)। °मंस न [°मांस] मनुष्य का मांस (कप्पू)। °मच्च पुं [°अमात्य] प्रधान मन्त्री (कुमा)। °मत्त पुं [°मात्र] हस्तिपक, हाथी का महावत;

'तत्तो नरसिंहनिवस्स कुंजरा
सिंहभयविहुरहियया।
अवगणियमहामत्ता मत्तावि
पलाइया झत्ति'
(कुप्र ३९४)।

°मरुया स्त्री [°मरुता] राजा श्रेणिक की एक पत्नी (अंत)। °मह पुं [°मह] महोत्सव (आव ४)। °महंत वि [°महत्] अति बड़ा (सुपा ५६४; स ६९३)। °माई (अप) स्त्री [°माया] छन्द-विशेष (पिंग)। °माउया स्त्री [°मातृका] माता की बड़ी बहन (विपा १, ३—पत्र ४०)। °माढर पुं [°माठर] ईशानेन्द्र के रथ-सैन्य का अधिपति (ठा ५, १—पत्र ३०३; इक)। °माणसिआ स्त्री [°मानसिका] एक विद्या-देवी (संति ६)। °माहण पुं [°ब्राह्मण] श्रेष्ठ ब्राह्मण (उवा)। °मुणि पुं [°मुनि] श्रेष्ठ साधु (कुमा)। °मेह पुं [°मेघ] बड़ा मेघ (णाया १, १—पत्र ४; ठा ४, ४)। °मेह वि [°मेध] बुद्धिमान् (उप १४२ टी)। °मोक्ख वि [°मूर्ख] बड़ा बेवकूफ (उप १०३१ टी)। °यण पुं [°जन] श्रेष्ठ लोग (सुपा २९१)। °यस देखो °जस (औप; कप्प)। °रक्खस पुं [°राक्षस] लंका नगरी का एक राजा जो धनवाहन का पुत्र था (पउम ५, १३९)। °रह पुं [°रथ] १ बड़ा रथ (पण्ह २, ४—पत्र १३०)। २ वि. बड़ा रथवाला। ३ बड़ा योद्धा, दस

हजार योद्धाओं के साथ अकेला जूझनेवाला (सूअ १, ३, १, १; गउड)। °रहि वि [°रथिन्] देखो पूर्व का २रा और ३रा अर्थ (उप ७२८ टी)। °राय पुं [°राज] १ बड़ा राजा, राजाधिराज (उप ७६८ टी; रंभा; महा)। २ सामानिक देव, इन्द्र-समान ऋद्धिवाला देव (सुर १५, ६)। ३ लोकपाल देव (सम ८६)। °रिट्ठ पुं [°रिष्ठ] बलि नामक इन्द्र का एक सेनापति (इक)। °रिसि पुं [°ऋषि] बड़ा मुनि, श्रेष्ठ साधु (उव)। °रिह, °रुह देखो मह-रिह (पि १४०; अभि १८७)। °रोरु पुं [°रोरु] अप्रतिष्ठान नरकेन्द्रक की उत्तर दिशा में स्थित एक नरकावास (देवेन्द्र २४)। °रोरुअ पुं [°रोरुक, °रौरव] सातवीं नरक-भूमि का एक नरकावास —नरक-स्थान (सम ५८, ठा ५, ३—पत्र ३४१; इक)। °रोहिणी स्त्री [°रोहिणी] एक महा-विद्या (राज)। °लंजर पुं [°अलञ्जर] बड़ा जल-कुम्भ (ठा ४, २—पत्र २२६)। °लच्छी स्त्री [°लक्ष्मी] १ एक श्रेष्ठि-भार्या (उप ७२८ टी)। २ छन्द-विशेष (पिंग)। ३ श्रेष्ठ लक्ष्मी। ४ लक्ष्मी-विशेष (नाट)। °लयंग न [°लताङ्ग] संख्या-विशेष, लता नामक संख्या को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह (इक; जो २)। °लया स्त्री [°लता] संख्या-विशेष, महालतांग को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह (जो २)। °लोहिअक्ख पुं [°लोहिताक्ष] बलीन्द्र के महिष-सैन्य का अधिपति (ठा ५, १—पत्र ३०२; इक)। °वक्क न [°वाक्य] परस्पर-संबद्ध अर्थ वाले वाक्यों का समुदाय (उप ८५६)। °वच्छ पुं [°वत्स] विजय-विशेष, विदेह वर्ष का एक प्रान्त (ठा २, ३; इक)। °वच्छा स्त्री [°वत्सा] वही (इक)। °वण न [°वन] मथुरा के निकट का एक वन (ती ७)। °वण पुंन [°आपण] बड़ी दूकान (भवि)। °वप्प पुं [°वप्र] विजयक्षेत्र-विशेष (ठा २, ३—पत्र ८०; इक)। °वय देखो मह-व्वय (सुपा ६५०)। °वराह पुं [°वराह] १ विष्णु का एक अवतार (गउड)। २ बड़ा सूअर (सूअ १, ७, २५)। °वह देखो °पह (से १, ५८)। °वाउ पुं [°वायु] ईशानेन्द्र के अश्व-सैन्य का अधिपति (ठा ५, १—पत्र ३०३; इक)। °वाड पुं [°वाट] बड़ा बाड़ा, महान् गोष्ठ; 'निव्वाणमहावाडं' (उवा)। °विगइ स्त्री [°विकृति] अति विकार-जनक ये वस्तु—मधु, मांस, मद्य और माखन (ठा ४, १—पत्र २०४; अंत)। °विजय वि [°विजय] बड़ा विजयवाला; 'महाविजयपुप्फुत्तरपवरपुंडरीयाओ महाविमाणाओ' (कप्प)। °विदेह पुं [°विदेह] वर्ष-विशेष, क्षेत्र-विशेष (सम १२; उवा; औप; अंत)। °विमाण न [°विमान] श्रेष्ठ देव-गृह (उवा)। °विल न [°बिल] कन्दरा आदि बड़ा विवर (कुमा)। °वीर पुं [°वीर] १ वर्तमान समय के अन्तिम तीर्थंकर (सम १; उवा; विपा १, १)। २ वि. महान् पराक्रमी (किरात १६)। °वीरिअ पुं [°वीर्य] इक्ष्वाकु वंश के एक राजा का नाम (पउम ५, ५)। °वीहि, °वीही स्त्री [°वीथि, °थी] बड़ा बाजार (पउम ६६, ३४)। २ श्रेष्ठ मार्ग (आचा)। °वेग पुं [°वेग] एक देव-जाति, भूतों की एक प्रकार की जाति (राज; इक)। °वेजयंती स्त्री [°वैजयन्ती] बड़ी पताका, विजय-पताका, (कप्पू)। °सई स्त्री [°सती] उत्तम पतिव्रता स्त्री (उप ७२८ टी, पडि)। °सउणि स्त्री [°शकुनि] एक विद्याधर-स्त्री (पण्ह १, ४—पत्र ७२)। °सड्ढि वि [°श्रद्धिन्] बड़ी श्रद्धावाला (आचा; पि ३३३)। °सत्त वि [°सत्त्व] पराक्रमी (द्र ११; महा)। °समुद्द पुं [°समुद्र] महासागर (उवा)। सयग, °सयय पुं [°शतक] भगवान् महावीर का एक उपासक (उवा)। °सामाण न [°सामान] एक देव-विमान (सम ३३)। °साल पुं [°शाल] एक युवराज (पडि)। °सिलाकंटय पुं [°शिलाकण्टक] राजा कूणिक और चेटकराज की लड़ाई (भग ७, ६—पत्र ३१५)। °सीह पुं [°सिंह] एक राजा, षष्ठ बलदेव और वासुदेव का पिता (ठा ६—पत्र ४४७)। °सीहणिक्कीलिय, °सीहनिक्कीलिय न [°सिंहनिष्क्रीडित] तप-विशेष (राज; पव २७१—गाथा १५२२)। °सीहसेण पुं [°सिंहसेन] भगवान् महावीर के पास दीक्षा लेकर अनुत्तर देवलोक में उत्पन्न राजा श्रेणिक का एक पुत्र (अनु २)। °सुक्क पुं [°शुक्र] १ एक देवलोक, सातवाँ देवलोक (सम ३३; विपा २, १)। २ सातवें देवलोक का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५)। ३ न. एक देव-विमान (सम ३३)। °सुमिण पुं [°स्वप्न] उत्तम फल का एक सूचक स्वप्न (णाया १, १—पत्र १३; पि ४४७)। °सुर पुं [°असुर] १ बड़ा दानव। २ दानवों का राजा हिरण्यकशिपु (से १, २; गउड)। °सुव्वय, °सुव्वया स्त्री [°सुव्रता] भगवान् नेमिनाथ की मुख्य श्राविका (कप्प; आवम)। °सूला स्त्री [°शूला] फाँसी (श्रा २७)। °सेअ पुं [°श्वेत] एक इन्द्र, कूष्माण्ड नामक वान-व्यन्तर देवों का उत्तर दिशा का इन्द्र (इक; ठा २, ३—पत्र ८५)। °सेण पुं [°सेन] १ ऐरवत क्षेत्र के एक भावी जिन-देव (सम १५४)। २ राजा श्रेणिक का एक पुत्र जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी (अनु २)। ३ एक राजा (विपा १, ६—पत्र ८८)। ४ एक यादव (णाया १, ५)। ५ न. एक वन (विसे २०८६)। देखो मह-सेण। °सेणकण्ह पुं [°सेनकृष्ण] राजा श्रेणिक का एक पुत्र (पि ५२)। °सेणकण्हा स्त्री [°सेनकृष्णा] राजा श्रेणिक की एक पत्नी (अंत २५)। °सेल पुं [°शैल] १ बड़ा पर्वत (णाया १, १)। २ न. नगर-विशेष (पउम ५५, ५३)। °सोआम, °सोदाम पुं [°सौदाम] वैरोचन बलीन्द्र के अश्व-सैन्य का अधिपति (ठा ५, १; इक)। °हरि पुं [°हरि] एक नर-पति, दसवें चक्रवर्त्ती का पिता (सम १५२)। °हिमव, °हिमवंत पुं [°हिमवत्] १ पर्वत-विशेष (पउम १०२, १०५; ठा २, ३; महा)। २ देव-विशेष (जं ४)।

महाअत्त वि [दे] आढ्य, श्रीमन्त (दे ६, ११६)।

महाइय पुं [दे] महात्मा (भवि)।

महाणड पुं [दे. महानट] रुद्र, महादेव (दे ६, ४, १२१)।

महाणस न [महानस] रसोई-घर, पाक-स्थान (णाया १, ८; गा १३; उप २५६ टी)।

महाणसि वि [महानसिन्] रसोई बनानेवाला, रसोइया। स्त्री. °णी (णाया १, ७—पत्र ११७)।

महाणसिय वि [महानसिक] ऊपर देखो (विपा १, ८)।

महाबिल न [दे. महाबिल] व्योम, आकाश (दे ६, १२१)।

महामंति पुं [महामन्त्रिन्] महावत, हस्तिपक (राय १२१ टी)।

महारिय (अप) वि [मदीय] मेरा (जय ३०)।

महाल पुं [दे] जार, उपपति (दे ६, ११६)।

महालक्ख वि [दे] तरुण, जवान (दे ६, १२१)।

महालय देखो मह = महत् (णाया १,८; उवा; औप), 'मा कासि कम्माइं महालयाइं' (उत्त १३, २६)। स्त्री. °लिया (औप)।

महालय पुंन [महालय] १ उत्सवों का स्थान (सम ७२)। २ बड़ा आलय। ३ वि. बृहत्काय, बड़ा शरीरवाला (सूअ २, ५, ६)।

महालवक्ख पुं [दे. महालयपक्ष] श्राद्ध-पक्ष, आश्विन (गुजराती भाद्रपद) मास का कृष्ण पक्ष (दे ६, १२७)।

महावल्ली स्त्री [दे] नलिनी, कमलिनी (दे ६, १२२)।

महाविजय पुं [महाविजय] एक देवविमान (आचा २, १५, २)।

महासउण पुं [दे] उल्लू, घूक-पक्षी (दे ६, १२७)।

महासद्दा स्त्री [दे] शिवा, शृगाली (दे ६, १२०; पाअ)।

महासेल वि [माहाशैल] महाशैल नगर से संबन्ध रखनेवाला, महाशैल का (पउम ५५, ५३)।

महि° देखो मही (कुमा)। °**अल** न [°तल] भू-पीठ, भूमि-पृष्ठ (कुमा; गउड; प्रासू ४५)। °**गोयर** पुं [°गोचर] मनुष्य (भवि; सण)। °**पट्ठ** न [°पृष्ठ] भूमि-तल (षड्)। °**पाल** पुं [°पाल] राजा (उव)। °**मंडल** न [मण्डल] भू-मण्डल (भवि; हे ४, ३७२)। °**रमण** पुं [°रमण] राजा (श्रा २७)। °**वइ** पुं [°पति] राजा (णाया १, १ टी; औप)। °**वट्ठ** देखो °पट्ठ (हे १, १२९; कुमा)। °**वल्लह** पुं [°वल्लभ] राजा (गु १०)। °**वाल** पुं [°पाल] १ राजा, नरपति (हे १, २२९)। २ व्यक्ति वाचक नाम (भवि)। °**वेढ** पुं [°वेष्ट, °पीठ] मही-तल, भू-तल (से १, ४; ४९)। °**सामि** पुं [°स्वामिन्] राजा (कुमा)। °**हर** पुं [°धर] १ पर्वत (पाअ; से ३, ३८; ४, १७; कुप्र ११७)। २ राजा (कुप्र ११७)।

महिअ वि [मथित] विलोडित (से २, १८; पाअ)।

महिअ वि [महित] १ पूजित, सत्कृत (से १२, ४७; उवा; औप)। २ न. एक देवविमान (सम ४१)। ३ पूजा, सत्कार (णाया १, १)।

महिअ वि [महीयस्] बड़ा, गुरु; 'राअनिओओ महिओ को णाम गआगअमिह करेइ' (मुद्रा १८७)।

महिअद्दुअ न [दे] घी का किट्ट, घृत-मल (राज)।

महिआ स्त्री [महिका] १ सूक्ष्म वर्षा, सूक्ष्म जल-तुषार (पण्ण १; जी ५)। २ धूमिका, धुंध, कुहरा (ओघ ३०; पाअ)। ३ मेघ-समूह; 'घणनिवहो कालिआ महिआ' (पाअ)। देखो मिहिआ।

महिंद पुं [महेन्द्र] १ बड़ा इन्द्र, देवाधीश (औप; कप्प; णाया १, १ टी—पत्र ६)। २ पर्वत-विशेष (से ६, ५९)। ३ अति महान्, खूब बड़ा (ठा ४, २—पत्र २३०)। ४ एक राजा (पउम ५०, २३)। ५ ऐरवत वर्ष का भावी १५ वाँ तीर्थंकर (पव ७)। ६ पुंन. एक देव-विमान (सम २२; देवेन्द्र १४१)। °**कंत** न [°कान्त] एक देव-विमान (सम २७)। °**केउ** पुं [°केतु] हनूमान के मातामह का नाम (पउम ५०, १९)। °**ज्झय** पुं [°ध्वज] १ बड़ा ध्वज। २ इन्द्र के ध्वज के समान ध्वज, बड़ा इन्द्र-ध्वज (ठा ४, ४—पत्र २३०)। ३ न. एक देव-विमान (सम २२)। °**दुहिया** स्त्री [°दुहिता] अञ्जनासुन्दरी, हनूमान की माता (पउम ५०, २३)। °**विक्कम** पुं [°विक्रम] इक्ष्वाकु वंश का एक राजा (पउम ५, ६)। °**सीह** पुं [°सिंह] १ कुरु देश का एक राजा (उप ७२८ टी)। २ सनत्कुमार चक्रवर्ती का एक मित्र (महा)।

महिंद वि [माहेन्द्र] १ महेन्द्र-सम्बन्धी। २ उत्पात-विशेष (अणु २१५)।

महिंदुत्तरवडिंसय न [महेन्द्रोत्तरावतंसक] एक देव-विमान (सम २७)।

महिगा देखो महिआ (जीवस ३१)।

महिच्छ वि [महेच्छ] महत्वाकांक्षी (सूअ २, २, ६१)।

महिच्छा स्त्री [महेच्छा] महत्वाकांक्षा, अपरिमित वाञ्छा (पण्ह १, ५)।

महिट्ठ वि [दे] मट्ठा से संसृष्ट, तक्र-संस्कारित (विपा १, ८—पत्र ८३)।

महिड्ढि, **महिड्ढिय**, **महिड्ढीय** वि [महर्द्धि, °क] बड़ी ऋद्धिवाला, महान् वैभववाला (श्रा २७; भग; ओघभा ६; औप; पि ७३)।

महिम पुंस्त्री [महिमन्] १ महत्त्व, माहात्म्य, गौरव (हे १, ३५; कुमा; गउड; भवि)। २ योगी का एक प्रकार का ऐश्वर्य (हे १, ३५)।

महिला देखो मिहिला (महा; राज)।

महिला स्त्री [महिला] स्त्री, नारी (कुमा; हे ३, ४१; पाअ)। °**थूभ** पुं [°स्तूप] कूप आदि का किनारा (विसे २०६४)।

महिलिया स्त्री [महिलिका, महिला] ऊपर देखो (णाया १, २; पउम १४, १४५; प्रासू २४)।

महिलिया स्त्री [मिथिलिका, मिथिला] देखो मिहिला (कप्प)।

महिस पुं [महिष] भैंसा (गउड; औप; गा ५४८)। °**ासुर** पुं [°ासुर] एक दानव (स ४२७)।

महिसंद पुं [दे] वृक्ष-विशेष, शिग्रु का पेड़ (दे ६, १२०)।

महिसिअ वि [माहिषिक] भैंसवाला, भैंस चरानेवाला (अणु १४४)।

महिसिक्क न [दे] महिषी-समूह (दे ६, १२४)।

महिसी स्त्री [महिषी] १ राज-पत्नी (ठा ४, १)। २ भैंस (पाअ; पउम; २६, ४१)।

महिस्सर पुं [महेश्वर] एक इन्द्र, भूतवादि-देवों का उत्तर दिशा का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५)। देखो **महेसर**।

मही स्त्री [मही] १ पृथिवी, भूमि, धरती (कुमा; पाग्र)। २ एक नदी (ठा ५, २—पत्र ३०८)। ३ छन्द-विशेष (पिंग)। °**नाह** पुं [°नाथ] राजा (उप पृ ६१)। °**पहु** पुं [°प्रभु] राजा (उप ७२८ टी)। °**पाल** पुं [°पाल] वही अर्थ (उप १५ टी, उव)। °**रुह** पुं [°रुह] वृक्ष, पेड़ (पाग्र; सुर ३, ११०; १६, २४८)। °**वइ** पुं [°पति] राजा (श्रा २८; उप १४९ टी; सुपा ३८)। °**वीढ** न [°पीठ] भूमि-तल (सुर २, ७४)। °**स** पुं [°श] राजा (श्रा १४)। °**सक्क** पुं [°शक्र] वही अर्थ (श्रा १४)। देखो **महि°**।

महु पुं [मधु] १ एक दैत्य (से १, १; अच्चु ४०)। २ वसन्त ऋतु; 'सुरही महू वसंतो' (पाग्र; कुमा)। ३ चैत्र मास (सुर ३, ४०; १६, १०७; पिंग)। ४ पाँचवाँ प्रति-वासुदेव राजा (पउम ५, १५६)। ५ एक राजा (श्रु ६१)। ६ मथुरा का एक राज-कुमार (पउम १२, २)। ७ चक्रवर्ती का एक देव-कृत महल (उत्त १३, १३)। ८ मधूक का पेड़, महुआ का गाछ (कुमा)। ९ अशोक-वृक्ष (चंड)। १० न. मद्य, दारू (से २, २७)। ११ क्षौद्र, शहद (कुमा; पव ४; ठा ४, १)। १२ पुष्प-रस। १३ मधुर-रस। १४ जल, पानी (प्राप्र; हे ३, २५)। १५ छन्द-विशेष (पिंग)। १६ मधुर, मिष्ट वस्तु (पराह २, १)। °**अर** पुंस्त्री [°कर] भ्रमर, भौंरा (पाग्र; स्वप्न ७३; औप; कप्प; पिंग)। स्त्री. °**रिआ**, °**री** (अभि १६०; नाट—मृच्छ ५७)। °**अरवित्ति** स्त्री [°करवृत्ति] माधुकरी, भिक्षा-वृत्ति (सुपा ८३)। °**अरीगीय** न [°करीगीत] नाट्य-विधि-विशेष (महा)। °**आसव** वि [°आश्रव] लब्धि-विशेषवाला, जिसके प्रभाव से वचन मधुर लगे ऐसी लब्धिवाला (पराह २, १—पत्र १००)। °**गुलिया** स्त्री [°गुटिका] शहद की गोली (ठा ४, २)। °**पडल** न [°पटल] मधुपुडा (दे ३, १२)। °**भार** पुं [°भार] छन्द-विशेष (पिंग)। °**मक्खिया**, °**मच्छिआ** स्त्री [°मक्षिका] शहद की मक्खी; 'अह उड्डियाउ तोमरमुहाउ महुक्खि (?मक्खि)याउ सव्वत्तो' (धर्मवि १२४; गा ६३४)। °**मय** वि [°मय] मधु से भरा हुआ (से १, ३०)। °**मह** पुं [°मथ] विष्णु, वासुदेव, उपेन्द्र (पाग्र; से १, १७)। २ भ्रमर (से १, १७)। °**मह** पुं [°मह] वसन्त का उत्सव (से १, १७)। °**महण** पुं [°मथन] १ विष्णु (से १,१; वज्जा २४; गा ११७; हे ४,३८४; पि १४३; पिंग)। २ समुद्र, सागर। ३ सेतु, पुल (से १, १)। °**मास** पुं [°मास] चैत मास (भवि)। °**मित्त** पुंन [°मित्र] कामदेव (सुपा ५२६)। °**मेहण** न [°मेहन] रोग-विशेष, मधु-प्रमेह (आचा १, ६, १, २)। °**मेहणि** वि [°मेहनिन्] मधु-प्रमेह रोगवाला (आचा)। °**मेहि** पुं [°मेहिन्] वही अर्थ (आचा)। °**राय** पुं [°राज] एक राजा (रयण ७४)। °**लट्ठि** स्त्री [°यष्टि] १ ओषधि-विशेष, यष्टिमधु, मुलेठी, जेठी मधु। २ इक्षु, ईख (हे १,२४७)। °**वक्क** पुं [°पर्क] १ दधियुक्त मधु, दही और शहद। २ षोडशोप-चार पूजा का छठवाँ उपचार (उत्तर १०३)। °**वार** पुं [°वार] मद्य, दारू (पाग्र)। °**सिंगी** स्त्री [°शृङ्गी] वनस्पति-विशेष (पराण १—पत्र ३५)। °**सूयण** पुं [°सूदन] विष्णु (गउड; सुपा ७)।

महुअ पुं [मधूक] १ वृक्ष-विशेष, महुआ का गाछ (गा १०३)। २ न. महुआ का फल (प्राप्र; हे १, २२२)।

महुअ पुं [दे] १ पक्षि-विशेष, श्रीवद पक्षी। २ मागध, स्तुति-पाठक (दे ६, १४४)।

महुण सक [मथ्] १ विलोडन करना। २ विनाश करना। वकृ. 'विमुक्कट्टहासा जलियजलरापिंगलकेसा महुणित-जालाकराल-पिसाया मुक्का' (महा)।

महुत्त (अप) देखो **मुहुत्त** (भवि)।

महुप्पल न [महोत्पल] कमल, पद्म; 'महुप्पलं पंकयं नलिणं' (पाग्र)।

महुमुह पुं [दे. मधुमुख] पिशुन, दुर्जन, खल (दे ६, १२२)।

महुर पुं [महुर] १ अनार्य देश-विशेष। २ उस देश में रहनेवाली अनार्य मनुष्य-जाति (पराह १, १—पत्र १४)।

महुर वि [मधुर] १ मीठा, मिष्ट (कुमा; प्रासू ३३; गउड; गा ४०१)। २ कोमल (भग ६, ३१; औप)। °**भासि** वि [°भाषिन्] प्रिय-भाषी (पउम ६, १३३)।

महुरा स्त्री [मथुरा] भारत की एक प्रसिद्ध नगरी, मथुरा (ठा १०; सम १५३; पराह १, ३; हे २, १५०; कुमा; वज्जा १२२)। °**मंगु** पुं [°मङ्गु] एक प्रसिद्ध जैनाचार्य (सिक्खा ६२)। °**हिव** पुं [°धिप] मथुरा का राजा (कुमा)।

महुरालिअ वि [दे] परिचित (दे ६, १२५)।

महुरिम पुंस्त्री [मधुरिमन्] मधुरता, माधुर्य (सुपा २६४; कुप्र ५०)।

महुरेस पुं [मथुरेश] मथुरा का राजा (कुमा)।

महुला स्त्री [दे] रोग-विशेष, पाद-गराड (निचू २)।

महुसित्थ न [मधुसिक्थ] १ मदन, मोम (उप पृ २०६)। २ पंक-विशेष, स्त्री के पैर में लगा हुआ अलता तक लगनेवाला कादा (ओघभा ३३)। ३ कला-विशेष (स ६०२)।

महुस्सव देखो **महूसव** (राज)।

महूअ देखो **महुअ**=मधूक (कुमा; हे १, १२२)।

महूसव पुं [महोत्सव] बड़ा उत्सव (सुर ३, १०८; नाट—मृच्छ ५४)।

महेंद देखो **महिंद** (से ६, २२)।

महेड्डु पुं [दे] पंक, कादा (दे ६, ११६)।

महेब्भ पुं [महेभ्य] बड़ा शेठ (श्रा १६)।

महेभ पुं [महेभ] बड़ा हाथी (कुमा)।

महेला स्त्री [महेला] स्त्री, नारी (हे १, १४६; कुमा)।

महेस पुं [महेश] नीचे देखो (त्रि ६४; भवि)।

महेसर पुं [महेश्वर] १ महादेव, शिव (पउम ३५, ६४; धर्मवि १२८)। २ जिनदेव, अर्हन् (पउम १०६, १२)। ३ श्रीमन्त, आढ्य (सिरि ४२)। ४ भूतवादि देवों के उत्तर दिशा का इन्द्र (इक)। °**दत्त** पुं [°दत्त] एक पुरोहित (विपा १, ५)।

महेसि देखो मह-रिसि (सम १२३; पण्ह १, १; उप ३५७; ७२८ टी; अभि ११८)।

महोअर पुं [महोदर] १ रावण का एक भाई (से १२, ५४)। २ वि. बहु-भक्षी (निचू १)।

महोअहि पुं [महोदधि] महासागर (से ५, २, महा)। °रव पुं [°रव] वानर-वंश का एक राजा (पउम ६, ६३)।

महोच्छव देखो महूसव (सुर ६, ११०)।

महोदहि देखो महोअहि (पण्ह २, ४; उप ७२८ टी)।

महोरग पुं [महोरग] १ व्यन्तर देवों की एक जाति (पण्ह १, ४—पत्र ६८; इक)। २ बड़ा साँप। ३ महा-काय सर्प की एक जाति (पण्ह १, १—पत्र ८)। °त्थ न [°स्त्र] अस्त्र-विशेष (महा)।

महोरगकंठ पुं [महोरगकण्ठ] रत्न-विशेष (राय ६७)।

महोसव देखो महूसव (नाट—रत्ना २४)।

महोसहि स्त्री [महौषधि] श्रेष्ठ औषधि (गउड)।

मा अ [मा] मत, नहीं (चेइय ६८४; प्रासू २१)।

मा स्त्री [मा] १ लक्ष्मी, दौलत (से ३, १५; सुर १६, ५२)। २ शोभा (से ३, १५)।

मा, माअ अक [मा] १ समाना, अटना। २ सक. माप करना। ३ निश्चय करना, जानना। माइ, माअइ, माइजा, माएजा (पव ४०; कुमा; प्राकृ ६६; संवेग १८; औप)। वकृ. मंत, माअंत (कुमा; ४, ३०, से २, ६; गा २७८)। कवकृ. मिज्जंत, मिज्जमाण (से ७, ६६; सम ७६; जीवस १४४)। कृ. माअव्व; 'वाया सहस्स-मइया', माइअ (से ६, ३; महा; कप्प)। देखो मेअ = मेय।

माअडि पुं [मातलि] इन्द्र का सारथि (से १५, ५१)।

माअरा देखो माइ = मातृ (कुमा; हे ३, ४६)।

माअलि देखो माअडि (से १५, ४६)।

माअलिआ स्त्री [दे] मातृष्वसा, माता की बहन (दे ६, १३१)।

माअही स्त्री [मागधी] काव्य की एक रीति (कप्पू)। देखो मागहिआ।

माआरा, माइ स्त्री [मातृ] १ माँ, जननी (षड्; ठा ४, ३; कुमा; सुपा ३७७)। २ देवता, देवी (हे १, १३५; ३, ४६; सुख ३, ६)। ३ स्त्री, नारी। ४ माया (पंचा १७, ४८)। ५ भूमि। ६ विभूति। ७ लक्ष्मी। ८ रेवती। ९ आखुकर्णी। १० जटामांसी। ११ इन्द्र-वारुणी, इन्द्रायण (षड्; हे १, १३५; ३, ४६)। °घर न [°गृह] देवी-मन्दिर (सुख ३, ६)। °ट्ठाण, °ठाण न [°स्थान] १ माया-स्थान (पंचा १७, ४८; सम ३६)। २ माया, कपट-दोष (पंचा १७, ४८; उवर ८४)। °मेह पुं [°मेध] यज्ञ-विशेष, जिसमें माता का वध किया जाय वह यज्ञ (पउम ११, ४२)। °हर देखो °घर (हे १, १३५)। देखो माउ, माया = मातृ।

माइ वि [मायिन्] माया-युक्त, मायावी (भग; कम्म ४, ४०)।

माइ अ [मा] मत, नहीं (प्राकृ ७८)।

माइ, माइअ वि [दे] १ रोमश, रोमवाला, प्रभूत बालों से युक्त (दे ६, १२८; णाया १, १८—पत्र २३७)। २ मयूरित, पुष्प-विशेषवाला (औप; भग; णाया १, १ टी—पत्र ५; अंत)।

माइअ वि [मात] समाया हुआ, अटा हुआ (सुख ६, १)।

माइअ वि [मायिक] मायावी (दे ६, १४७; णाया १, १४)।

माइअ वि [मात्रिक] मात्रा-युक्त, परिमित (तंदु २०; पन्ह १, ४ पत्र ६८)।

माइअ देखो मा = मा।

माई देखो माइ = मा (हे २, १६१; कुमा)।

माइंगण न [दे] वृन्ताक, भंटा (उप ५६३)।

माइंद [दे] देखो मायंद (प्राप्र, स ४१६)।

माइंद पुं [मृगेन्द्र] सिंह, केसरी; 'एक्कसर-पहरदारियमाइंदगइंदजुज्झमाभिडिए' (वज्जा ४२)।

माइंदजाल, माइंदयाल न [मायेन्द्रजाल] माया-कर्म, बनावटी प्रपंच (सुर २, २२६; स ६६०)।

माइंदा स्त्री [दे] आमलकी, आमला का गाछ (दे ६, १२६)।

माइण्हिआ स्त्री [मृगतृष्णिका] धूप में जल की भ्रान्ति (उप २२० टी; मोह २३)।

माइलि वि [दे] मृदु, कोमल (दे ६, १२६)।

माइल्ल देखो माइ = मायिन् (सूअ १, ४, १, १८, आचा; भग, ओघ ४१३; पउम ३१, ५१; औप; ठा ४, ४)।

माइवाह, माईवाह पुंस्त्री [दे. मातृवाह] द्वीन्द्रिय जन्तु-विशेष, क्षुद्र कीट-विशेष (उत्त ३६, १२६, जी १५; पुष्फ २६५)। स्त्री. °हा (सुख १८, ३५; जी १५)।

माउ देखो माइ = मातृ (भग; सुर १, १७६, औप; प्रामा कुमा; षड्; हे १, १३४; १३५)। °ग्गाम पुं [°ग्राम] स्त्री-वर्ग (बृह १)। °च्छा देखो °सिआ (हे २, १४२; गा ६४८)। °पिउ पुं [°पितृ] माँ-बाप (सुर १, १७६)। °म्महो स्त्री [°मही] माँ की माँ, नानी (रंभा २०)। °सिआ, °सी, °स्सिआ स्त्री [°ष्वसृ] माँ की बहन, मौसी (हे २, १४२; कुमा; विपा १, ३; सुर ११, २१६; पि १४८; विपा १, ३—पत्र ४१)।

माउ, माउअ वि [मातृ, °क] १ प्रमाता, प्रमाण-कर्ता, सत्य ज्ञानवाला। २ परिमाण-कर्ता, नापनेवाला। ३ पुं. जीव। ४ आकाश; 'माऊ', 'माउओ' (षड्; हे १, १३१; प्राप्र; प्राकृ ८; हे १, १३४)।

माउअ वि [मातृक] माता-संबन्धी (हे १, १३१; प्राप्र; प्राकृ ८; राज)।

माउअ पुंन [मातृक, °का] १ अकार आदि छयालीस अक्षर; 'बंभीए णं लिवीए छायालीसं माउयक्खरा' (सम ६६; आव ५)। २ स्वर। ३ करण (हे १, १३१; प्राप्र; प्राकृ ८)। नीचे देखो।

माउआ स्त्री [मातृका] १ माता, माँ (णाया १, ६—पत्र १५८)। २ ऊपर देखो (सम ६६)। °पय पुंन [°पद] शास्त्रों के सार-भूत शब्द—उत्पाद, व्यय और ध्रौव्य (सम ६६)।

माउआ स्त्री [दे. मातृका] दुर्गा, पार्वती, उमा (दे ६, १४७)।

माउआ स्त्री [दे] १ सखी, सहेली (दे ६, १४७; पाअ; णाया १, ६—पत्र १५८)। २ ऊपर के होठ पर के बाल, मूँछ; 'रत्तगंड-

मंसुयाहिं माउयाहिं उवसोहियाइं' (णाया १, ६—पत्र १५८)।

माउआपय न [मातृकापद] मूलाक्षर, 'अ' से 'ह' तक के अक्षर (दसनि १, ८)।

माउक्क वि [मृदु, °क] कोमल, कुमार (हे १, १२७; २, ६६; कुमा)।

माउक्क न [मृदुत्व] कोमलता (हे १, १२७; २, २; कुमा)।

माउच्छा स्त्री [दे. मातृष्वसृ] देखो माउ-च्छा (षड्)।

माउच्छा स्त्री [दे] सखी, सहेली (षड्)।

माउच्छ वि [दे] मृदु, कोमल (दे ६, १२६)।

माउत्त } देखो माउक्क = मृदुत्व (कुमा; हे
माउत्तण } २; २; षड्)।

माउल पुं [मातुल] माँ का भाई, मामा (सुर ३, ८१; रंभा; महा)।

माउलिअ देखो मउलिअ (से ११, ६१)।

माउलिंग देखो माहुलिंग (राज)।

माउलिंगा } स्त्री [मातुलिङ्गा, °ङ्गी] बोजौरे
माउलिंगी } का गाछ (पराण १—पत्र ३२; पउम ४२, ६)।

माउलुंग देखो माहुलिंग (हे १, २१४; अनु)।

मागंदिअ पुं [माकन्दिक] माकन्दिकपुत्र नामक एक जैन मुनि (भग १८—१ टी)। °**पुत्त** पुं [°पुत्र] वही अर्थ (भग १८, ३)।

मागसीसी स्त्री [मार्गशीर्षी] १ अगहन मास की पूर्णिमा। २ अगहन की अमावास्या (इक)।

मागह } वि [मागध °क] १ मगध-
मागहय } देशीय, मगध देश में उत्पन्न, मगध देश का, मगध-संबन्धी (ओघ ७१३; विसे १४६६; पव ६१; णाया १, ८; पउम ६६, ५५)। २ पुं. स्तुति-पाठक, बन्दी, चारण (पाअ; औप)। °**भासा** स्त्री [°भाषा] देखो मागहिआ का पहला अर्थ (राज)।

मागहिआ स्त्री [मागधिका] १ मगध देश की भाषा, प्राकृत भाषा का एक भेद। २ कला-विशेष (औप)। ३ छन्द-विशेष (सुख २, ४५; अजि ४)।

माघवई स्त्री [माघवती] सातवीं नरक-भूमि (पव १४३; इक; ठा ७—पत्र ३८८)।

माघवा } [माघवा, °वी] ऊपर देखो; 'मघव
माघवी } त्ति माघव त्ति य पुढवीणं नामधेयाइं' (जीवस १२; इक)।

माज्जार देखो मज्जार (संक्षि २)।

माडंबिअ पुं [माडम्बिक] १ 'मडंब' का अधिपति (णाया १, १; औप; कप्प)। २ प्रत्यन्त—सीमा-प्रान्त का राजा (पराह १, ५—पत्र ६४)।

माडंबिय वि [माडम्बिक] चित्र-मंडप का अध्यक्ष (राय १४१)।

माडिअ न [दे] गृह, घर (दे ६, १२८)।

माढर पुं [माठर] १ सौधर्मेन्द्र के रथ-सैन्य का अधिपति (ठा ५, १—पत्र ३०३, इक)। २ न. गोत्र-विशेष (कप्प)। ३ शास्त्र-विशेष (णंदि)।

माढर पुंस्त्री [माठर] माठर-गोत्र में उत्पन्न (णंदि ४६)।

माढरी स्त्री [माठरी] वनस्पति-विशेष (पराण १—पत्र ३६)।

माढिअ वि [माठित] सन्नाह-युक्त, वर्मित (कुमा)।

माढी स्त्री [माठी] कवच, वर्म, बख्तर (दे ६, १२८ टी; पराह १, ३—पत्र ४४; पाअ; से १२, ६२)।

माण सक [मानय्] १ सम्मान करना, आदर करना। २ अनुभव करना। माणइ, माणेइ, माणंति, माणेमि (हे १, २२८; महा; कुमा; सिरि ६६)। वकृ. **माणंत, माणेमाण** (सुर २, १८२; णाया १, १—पत्र ३३)। कवकृ. **माणिज्जंत** (गा ३२०)। हेकृ. **माणिउं, माणेउं** (महा; कुमा)। कृ. **माणणिज्ज, माणणीअ माणेयव्व** (उवा; सुर १२, १६५; अभि १०७; उप १०३१ टी); 'जया य माणिमो होइ पच्छा होइ अ-माणिमो' (दसचू १, ५)।

माण पुंन [मान] १ गर्व, अहंकार, अभिमान; 'अड्ढढीकयमारिणसिमाणो' (कुमा), 'पुव्वं विबुहसमक्खं गुरुणो एयस्स खंडियं माणं' (सम्मत्त ११६)। २ माप, परिमाण। ३ नापने का साधन, बाट—बटखरा आदि (अणु; कप्प; जी ३०; श्रा १४)। ४ प्रमाण, सबूत (विसे ६४६; धर्मसं ५२५)। ५ आदर, सत्कार (णाया १,१; कप्प)। ६ पुं. एक श्रेष्ठि-पुत्र (सुपा ५४५)। °**इंत**, °**इत्त**, °**इल्ल** वि [°वत्] मान-वाला (षड्; हे २,१५६; हेका ७३; पि ५६५) स्त्री. °**त्ता**, °**त्ती** (कुमा; गउड)। °**तुंग** पुं [°तुङ्ग] एक प्राचीन जैन कवि (नमि २१)। °**वई** स्त्री [°वती] १ मानवाली स्त्री (से १०, ६६)। २ रावण की एक पत्नी (पउम ७४, ११)। °**संघ** न [°संघ] एक विद्याधर-नगर (इक)। °**वाइ** वि [°वादिन्] अहंकारी (आचा)।

माण वि [मान] मान-संबन्धी, मान का; 'कोहाए माणाए मायाए' (पडि)।

माण न [दे] परिमाण-विशेष, दस शेर का नाप; गुजराती में 'माणु' (उप १५४)।

माणंसि वि [दे] १ मायावी, कपटी (दे ६, १४०; षड्)। २ स्त्री. चन्द्र-वधू (दे ६, १४७)।

माणंसि देखो मणंसि (काप्र १६६; संक्षि १७; षड्)।

माणण न [मानन] १ आदर, सत्कार (आचा)। २ मानना (रयण ८४)। ३ अनुभव। ४ सुख का अनुभव; 'सुहसमाणणे' (अजि ३१)।

माणणा स्त्री [मानना] ऊपर देखो (पराह २, १; रयण ८४)।

माणय देखो माण = (दे) (सुपा ३५८)।

माणव पुं [मानव] १ मनुष्य, मर्त्य (पाअ; सुपा २४३)। २ भगवान् महावीर का एक गण (ठा ६—पत्र ४५१; कप्प)।

माणवग } पुं [मानवक] १ एक निधि,
माणवय } अस्त्र-शस्त्रों की पूर्त्ति करनेवाला निधि (उप ६८६ टी; ठा ६—पत्र ४४६; इक)। २ ज्योतिष्क ग्रह-विशेष, एक महाग्रह (ठा २, ३; सुज २०)। ३ सौधर्म देवलोक का एक चैत्य-स्तम्भ (सम ६३)।

माणवी स्त्री [मानवी] एक विद्या-देवी (संति ६)।

माणस न [मानस] १ सरोवर-विशेष (पराह १, ४; औप; महा, कुमा)। २ मन, अन्तः-करण (पाअ; कुमा)। ३ वि. मन-संबन्धी,

मन का (सुर ४, ७५)। ४ पुं. भूतानन्द के गन्धर्व-सैन्य का नायक (इक)।

माणसिअ वि [मानसिक] मन-संबन्धी, मन का (श्रा २४; औप)।

माणसिआ स्त्री [मानसिका] एक विद्या-देवी (संति ६)।

माणि वि [मानिन्] १ मान-युक्त, मानवाला (उव; कुप्र २७६; कम्म ४, ४०)। स्त्री. °णिणी (कुमा)। २ पुं. रावण का एक सुभट (पउम ५६ २)। ३ पर्वत-विशेष। ४ कूट-विशेष (राज; इक)।

माणिअ वि [दे. मानित] अनुभूत (दे ६, १३०; पाअ)।

माणिअ वि [मानित] सत्कृत (गउड)।

माणिक्क न [माणिक्य] रत्न-विशेष, माणिक (सुपा २१७; वज्जा २०; कप्पू)।

माणिग देखो माणि (पउम ७३, २७)।

माणिभद्द पुं [माणिभद्र] १ यक्ष-निकाय के उत्तर दिशा का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५; इक)। २ यक्षदेवों की एक जाति (सिरि ६६६; इक)। ३ देव-विशेष। ४ शिखर-विशेष (राज; इक)। ५ एक देव-विमान (राज)।

माणिम देखो माण = मानय्।

माणी स्त्री [मानिका] २५६ पलों का एक माप (अणु १५२)।

माणुस पुंन [मानुष] १ मनुष्य, मानव, मर्त्य (सूअ १, ११, ३; पण्ह १, १; उव; सुर ३, ५६; प्राप्र; कुमा); 'जं पुण हियियाणंदं जणेइ तं माणुसं विरलं' (कुप्र ६), 'मयाणि माइपिइपमुहमाणुसाणि सव्वाणि' (कुप्र २६)। २ वि. मनुष्य-संबन्धी; 'तिविहं कहावत्थुं ति पुव्वायारियपवाओ, तं जहा, दिव्वं दिव्वमाणुसं माणुसं च' (स २)।

माणुसी स्त्री [मानुषी] १ स्त्री-मनुष्य, मानवी (पव २४१; कुप्र १६०)। २ मनुष्य से संबन्ध रखनेवाली; 'माणुसी भासा' (कुप्र ६७)।

माणुसुत्तर } पुं [मानुषोत्तर] १ पर्वत-
माणुसोत्तर } विशेष, मनुष्यलोक का सीमा-कारक पर्वत (राज; ठा ३, ४; जीव ३)। २ न. एक देव-विमान (सम २)।

माणुस्स देखो माणुस (आचा; औप; धर्मवि १३; उपपं २; विसे ३००७); 'माणुस्सं लोगं' (ठा ३, ३—पत्र १४२), 'माणुस्सगाइं भोगभोगाइं' (कप्प)।

माणुस्स } न [मानुष्य, °क] मनुष्यत्व,
माणुस्सय } मानुसपन, मनुष्यता (सुपा १६६; स १३१ प्रासू ४७; पउम ३१, ८१)।

माणुस्सी देखो माणुसी (पव २४०)।

माणूस देखो माणुस (सुर २, १७२; ठा ३, ३—पत्र १४२)।

माणेसर पुं [माणेश्वर] माणिभद्र यक्ष (भवि)।

माणोरामा (अप) स्त्री [मनोरमा] छन्द-विशेष (पिंग)।

मातंग देखो मायंग (औप)।

मातंजण देखो मायंजण (ठा २, ३—पत्र ८०)।

मातुलिंग देखो माहुलिंग (आचा २, १, ८, १)।

मादलिआ स्त्री [दे] माता, जननी (दे ६, १३१)।

मादु देखो माउ = स्त्री (प्राकृ ८)।

माधवी देखो माहवी = माधवी (हास्य १३३)।

माभाइ पुंस्त्री [दे] अभय-प्रदान, अभय-दान, अभय (दे ६, १२६; षड्)।

माभीसिअ न [दे] ऊपर देखो (दे ६, १२६)।

माम अ. कोमल आमन्त्रण का सूचक अव्यय (पउम ३८, ३६)।

माम } पुं [दे] मामा, माँ का भाई (सुपा
मामग } १६; १६५)।

मामग } वि [मामक] १ मदीय, मेरा
मामय } (आचा; अच्चु ७३)। २ ममतावाला (सूअ १, २, २, २८)।

मामय देखो मामग = (दे) (पउम ६८, ५५; स ७३१)।

मामा स्त्री [दे] मामी, मामा की बहू (दे ६, ११२)।

मामाय वि [मामाक] 'मा' 'मा' बोलनेवाला, निवारक (ओघ ४३५)।

मामास पुं [मामाष] १ अनार्य देश-विशेष। २ अनार्य देश में रहनेवाली मनुष्य-जाति (इक)।

मामि अ. सखी के आमन्त्रण में प्रयुक्त किया जाता अव्यय (हे २, १६५; कुमा)।

मामिया } स्त्री [दे] मामा की बहू (विपा
मामी } १, ३—पत्र ४१; दे ६, ११२; गा २०४; प्राकृ ३८)।

माय वि [मात] समाया हुआ (कम्म ५, ८५ टी; पुप्फ १७२; महा)।

माय वि [मायावत्] कपटवाला, 'कोहाए माणाए मायाए लोभाए' (पडि)।

माय देखो मेत = मात्र; 'लोमुक्खणणमायमवि' (सूअ २, १, ४८)।

माय° देखो माया = माया (आचा)।

माय° देखो मत्ता = मात्रा। °न्न वि [°ज्ञ] परिमाण का जानकार (सूअ २, १, ५७)।

मायइ स्त्री [दे] वृक्ष-विशेष (पउम ५३, ७६)।

मायंग पुं [मातङ्ग] १ भगवान् सुपार्श्वनाथ का शासनयक्ष। २ भगवान् महावीर का शासन-यक्ष (संति ७, ८)। ३ हस्ती, हाथी (पाअ; सुर १, ११)। ४ चाण्डाल, डोम (पाअ)।

मायंगी स्त्री [मातङ्गी] १ चाण्डालिन (निचू १)। २ विद्या-विशेष (आचू १)।

मायंजण पुं [मातञ्जन] पर्वत-विशेष (इक)।

मायंड पुं [मार्तण्ड] सूर्य, रवि (सुपा २४२; कुप्र ८७)।

मायंद पुं [दे. माकन्द] आम्र, आम का पेड़ (हे २, १७४; प्राप्र; दे ६, १२८; कुप्र ७१; १०६)।

मायंदिअ देखो मागंदिअ (भग १८, १)।

मायंदी स्त्री [माकन्दी] नगरी-विशेष (स ६; कुप्र १०६)।

मायंदी स्त्री [दे] श्वेताम्बर साध्वी (दे ६, १२६)।

मायण्हिया स्त्री [मृगतृष्णिका] किरण में जल की भ्रान्ति, मरु-मरीचिका;

'जह मुद्धमओ मायण्हियाए
तिसिओ करेइ जल-बुद्धिं।
तह निव्विवेयपुरिसो
कुणइ अधम्मेवि धम्ममइं'
(सुपा ५००)।

मायहिय (अप) देखो **मागहिया** (भवि)।

माया देखो **माइ** = मातृ; 'मायाइ अहं भणिओ' (धर्मवि ५; पाअ; विपा १,६; षड्)। °**पिइ**, °**पिति** पुंन [°पितृ] माँ-बाप (पि ३६१; स १८४)। °**मह** पुं [°मह] माँ का बाप (सुर ११, ४६; सुपा ३८४)। °**वित्त** देखो °**पिइ**; 'दुहियाण होइ सरणं मायावित्तं महिलियाणं' (पउम १७, २१); 'तेणेव देवेण तहिं मायावित्ताइं रोवमाणाइं' (सुर ६, २३५; १, २३६; धर्मवि २१, महा)।

माया देखो **मत्ता** = मात्रा; 'नो अइमायाए पाणभोयणं आहारेत्ता (उत्त १६, ८; औप; उवः कस)।

माया स्त्री [माया] १ कपट, छल, शाठ्य, धोखा (भग; कुमाः ठा ३, ४; पाअ; प्रासू १७५)। २ इन्द्रजाल (दे ३, ५३; उप ८२३)। ३ मन्त्राक्षर-विशेष; 'ह्रीँ' अक्षर (सिरि १६७)। ४ छन्द-विशेष (पिंग)। °**णर** पुं [°नर] पुरुष-वेश-धारी स्त्री-आदि (धर्मसं १२७८)। °**बीय** न [°बीज] 'ह्रीँ' अक्षर (सिरि ४०१)। °**मोस** पुंन [°मृषा] कपट-पूर्वक असत्य वचन (णाया १, १; पण्ह १, २; भग; औप)। °**वत्तिअ**, °**वत्तीय** वि [°प्रत्ययिक] कपट से होनेवाला, छल-मूलक (भग; ठा २, १: नव १७)। °**वि** वि [°विन्] मायायुक्त (पउम ८८, ११)। स्त्री. °**विणी** (सुपा ६२७)।

मायि वि [मायिन्] माया-युक्त, मायावी (उवा; पि ४०५)।

मार सक [मारय्] १ ताड़न करना। २ हिंसा करना। मारइ, मारेइ (आचा; कुमा; भग)। भवि. मारेहिसि (पि ५२८)। कर्म. मारिज्जइ (उव)। वकृ. **मारंत**, **मारेंत** (भत्त ६२; पउम १०५, ७६)। कवकृ. **मारिज्जंत** (सुपा १५७)। संकृ. **मारेत्ता** (महा), **मारि** (अप) (हे ४, ४३९)। हेकृ. **मारेउं** (महा)। कृ. **मारियव्व**, **मारेयव्व** (पउम ११, ४२), **मारणिज्ज** (उप ३५७ टी)।

मार पुं [मार] १ ताड़न (सुपा २२६)। २ मरण, मौत (आचा; सूअ २, २, १७; उप पृ ३०८)। ३ यम, जम (सूअ १, १, ३, ७)। ४ कामदेव, कंदर्प (उप ७६८ टी)। ५ चौथा नरक का एक नरकावास (ठा ४, ४—पत्र २६५; देवेन्द्र १०)। ६ वि. मारनेवाला (णाया १, १६—पत्र २०२)। °**वहू** स्त्री [°वधू] रति (सुपा ३०४)।

मार पुं [मार] मणि का एक लक्षण (राय ३०)।

मारग वि [मारक] मारनेवाला। स्त्री. °**रिगा** (कुप्र २३५)।

मारण न [मारण] १ ताड़न। २ हिंसा (भग; स १२१)।

मारणअ (अप) वि [मारयितृ] मारनेवाला (हे ४, ४४३)।

मारणंतिअ वि [मारणान्तिक] मरण के अन्त समय का (सम ११; ११६; औप; उवा; कप्प)।

मारणया } स्त्री [मारणा] मारना (भग;
मारणा } पण्ह १, १; विपा १, १)।

मारय देखो **मारग** (उवः संबोध ४३)।

मारा स्त्री [मारा] प्राणि-वध का स्थान, सूना (णाया १, १६—पत्र २०२)।

मारि स्त्री [मारि] १ रोग-विशेष, मृत्यु-दायक रोग (स २४२)। २ मारण (आवम)। ३ मौत, मृत्यु (उप ३२६)।

मारि देखो **मार** = मारय्।

मारि वि [मारिन्] मारनेवाला (महा)।

मारिज्ज पुं [मारीच] रावण का एक सुभट (पउम ५९, ७)। देखो **मारीअ**।

मारिज्जि देखो **मारिइ** (पउम ८२, २६)।

मारिय वि [मारित] मारा हुआ (महा)।

मारिलग्गा स्त्री [दे] कुत्सित स्त्री (दे ६, १३१)।

मारिव पुंन [दे] गौरव, 'गौरवे मारिवे' (संक्षि ४७)।

मारिस वि [मादृश] मेरे जैसा (कुमा)।

मारी स्त्री [मारी] देखो **मारि** (स २४२)।

मारिअ पुं [मारीच] ऋषि-विशेष (अभि २४६)। देखो **मारिज्ज**।

मारीइ } पुं [मारीचि] एक विद्याधर
मारीजि } सामन्त राजा (पउम ८, १३२)। २ रावण का एक सुभट (पउम ५६, २७)।

मारुअ पुं [मारुत] १ पवन, वायु (पाअ; सुपा २०४; सुर ३, ४०; १३, १६४; अप १४; महा)। २ हनूमान का पिता (से २, ४४)। °**तणय** पुं [°तनय] हनूमान (से ४४; हे ३, ८७)। °**त्थ** न [°अस्त्र] अस्त्र-विशेष, वातास्त्र (पउम ५६, ६१)।

मारुअ वि [मारुक] मरु देश का, मरु-संबन्धी; 'णो अमयवल्लरी मारुयम्मि कत्थइ थले होइ' (उप ९८६ टी)।

मारुइ पुं [मारुति] हनूमान (से १, ३७)।

माल अक [माल्] १ शोभना। २ वेष्टित होना। कृ 'अच्चिसहस्समालणीयं' (णाया १, १—पत्र ३८)।

माल पुं [दे] १ आराम, बगीचा (दे ६, १४६)। २ मञ्च, आसन-विशेष (दे ६, १४६; णाया १, १—पत्र ६३; पंचा १३, १४)। ३ वि. मञ्जु (दे ६, १४६)।

माल पुं [दे. माल] १ देश-विशेष (पउम ९८, ६५)। २ घर का उपरि-भाग, तला, मंजिल; गुजराती में 'माळो' (णाया १, ६—पत्र ५७; चेइय ४८१; पंचा १३, १४; ठा ३, ४—पत्र १५६)। ३ वनस्पति-विशेष (जं १)।

माल° देखो **माला**। °**गार** वि [°कार] माली (उप पृ १६६)।

मालइ° } स्त्री [मालती] १ लता-विशेष।
मालई } २ पुष्प-विशेष (पउम ५३, ७९; पाअ; कुमा)। ३ छन्द-विशेष (पिंग)।

मालंकार पुं [मालङ्कार] वैरोचन बलीन्द्र के हस्ति-सैन्य का अधिपति (ठा ५, १—पत्र ३०२; इक)।

मालणीय देखो **माल** = माल्।

मालय देखो **माल** = दे. माल (ठा ३, १—पत्र १२३)।

मालव पुं [मालव] १ भारतीय देश-विशेष (इक; उप १४२ टी)। २ मालव देश का निवासी मनुष्य (पण्ह १, १—पत्र १४)।

मालव पुं [मालव] म्लेच्छ-विशेष, आदमी को उठा ले जानेवाली एक चोर जाति (वव ४)।

मालवंत पुं [माल्यवत्] १ पर्वत-विशेष (ठा २, ३—पत्र ६९; ८०; सम १०२)। २ एक रामकुमार (पउम ६, २२०)। °परियाग, °परियाय पुं [°पर्याय] पर्वत-विशेष (ठा २, ३—पत्र ८०; ६९)।

मालविणी स्त्री [मालविनी] लिपि-विशेष (विसे ४६४ टी)।

माला स्त्री [माला] १ फूल आदि का हार, 'मल्लं माला दामं' (पाअ; स्वप्न ७२; सुपा ३१६; प्रासू ३०; कुमा)। २ पंक्ति, श्रेणी (पाअ)। ३ समूह; 'जलमालकद्दमालं' (सूअनि १६१)। ४ छन्द-विशेष (पिंग)। °इल्ल वि [°वत्] माला वाला (प्राप्र)। °कारि वि [°कारिन्] माली, पुष्प-व्यवसायी। स्त्री. °णी (सुपा ५१०)। °गार वि [°कार] वही अर्थ (उप १४२; टी; अंत १८, सुपा ५६२; उप पृ १५९)। °धर पुं [°धर] प्रतिमा के ऊपर के भाग की रचना-विशेष (चेइय ९३)। °यार, °र देखो °कार (अंत १८; उप पृ १५७; गा ५९६)। स्त्री. °री (कुमा; गा ५९७)। °हरा स्त्री [°धरा] छन्द-विशेष (पिंग)।

माला स्त्री [दे] ज्योत्स्ना, चन्द्रिका (दे ६, १२८)।

मालाकुंकुम न [दे] प्रधान कुंकुम (दे ६, १३२)।

मालि पुंस्त्री [मालि] वृक्ष-विशेष (सम १५२)।

मालि पुं [मालिन्] १ पाताल-लंका का एक राजा (पउम ६, २२०)। २ देश-विशेष (इक)। ३ वि. माली, पुष्प-व्यवसायी (कुमा)। ४ शोभनेवाला (कुमा)।

मालिअ पुं [मालिक] ऊपर देखो (दे २, ८; 'पण्ह १, २; सुपा २७३; उप पृ १५७)।

मालिअ वि [मालित] शोभित, विभूषित; 'परलोए पुण्ण कल्लाणमालिआमालिआ कमेणेव' (सा २३; पाअ; उप २६४ टी)।

मालिआ स्त्री [मालिका, माला] देखो माला = माला (सा २३; स्वप्न ५३; औप; उवा)।

मालिज्ज न [मालीय] एक जैन मुनि-कुल (कप्प)।

मालिणी स्त्री [मालिनी] १ माली की स्त्री (कुमा)। २ शोभनेवाली (औप)। ३ छन्द-विशेष (पिंग)। ४ मालावाली (गउड)।

मालिण्ण, मालिन्न न [मालिन्य] मलिनता (उप पृ २२; सुपा ३५२; ५८६)।

मालुग, मालुय पुं [मालुक] १ त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष (सुख ३६, २८)। २ वृक्ष-विशेष (पण्ण १—पत्र ३१; णाया १, २—पत्र ७८)।

मालुया स्त्री [मालुका] १ वल्ली, लता (सूअ १, ३, २, १०)। २ वल्ली-विशेष (पण्ण १—पत्र ३३)।

मालुहाणी स्त्री [मालुधानी] लता-विशेष (गउड)।

मालूर पुं [दे. मालर] कपित्थ, कैथ का गाछ (दे ६, १३०)।

मालूर पुं [मालूर] १ बिल्व वृक्ष, बेल का गाछ (दे ३, १९; गा ५७९; गउड, कुमा)। २ न. बेल का फल (पाअ; गउड)।

माह्व, माम्वह पुं [मातुल] मामा (पुष्पमाला ३२ श्लो० ८ भवभावना)।

माविअ वि [मापित] मापा हुआ (से ६, ६०; दे ८, ४८)।

मास देखो मंस = मांस (हे १, २९; ७०; कुमा; उप ७२८ टी)।

मास पुं [मास] १ महिना, तीस दिन का समय (ठा २, ४; उप ७६८ टी; जी ३५)। २ समय, काल; 'कालमासे कालं किच्चा' (विपा १, १; २; कुप्र ३५), 'पसवमासे' (कुप्र ४०४)। ३ पर्व—वनस्पति-विशेष; 'वीरुणा- (? णी) तह इक्कडे य मासे य' (पण्ण १—पत्र ३३)। °उस देखो °तुस (राज)। °कप्प पुं [°कल्प] एक स्थान में महिना तक रहने का आचार (बृह ६)। °खमण न [°क्षपण] लगातार एक मास का उपवास (णाया १, १; विपा २, १; भग)। °गुरु न [°गुरु] तप-विशेष, एकाशन तप (संबोध ५७)। °तुस पुं [°तुष] एक जैन मुनि (विवे ५१)। °पुरी स्त्री [°पुरी] १ नगरी-विशेष, भृंगी देश की राजधानी (इक)। २ 'वर्त' देश की राजधानी; 'पावा भंगी य, मासपुरी वट्टा' (पव २७५)। °पूरिया स्त्री [°पूरिका] एक जैन मुनि-शाखा (कप्प)। °लहु न [°लघु] तप-विशेष, 'पुरिमड्ढ' तप (संबोध ५७)।

मास पुं [माष] १ अनार्य देश-विशेष। २ देश-विशेष में रहनेवाली मनुष्य-जाति (पण्ह १, १—पत्र १४)। ३ धान्य-विशेष, उड़द (दे १, ९८)। ४ परिमाण विशेष, मासा (वज्जा १००)। °पण्णी स्त्री [°पर्णी] वनस्पति विशेष (पण्ण १—पत्र ३६)।

मासल देखो मंसल (हे १, २९; कुमा)।

मासलिय वि [मांसलित] पुष्ट किया हुआ (गउड; सुपा ४७४)।

मासाहस पुं [मासाहस] पक्षि-विशेष, 'मासाहससउणिसमो किं वा चिट्ठामि घंघलिओ' (संवे ६; उव; उर ३, ३)।

मासिअ पुं [दे] पिशुन, खल, दुर्जन (दे ६, १२२)।

मासिअ वि [मासिक] मास-सम्बन्धी (उवा; औप)।

मासिआ स्त्री [मातृष्वसृ] माँ की बहिन (धर्मवि २२)।

मासु देखो मंसु = श्मश्रु (हे २, ८६)।

मासुरी स्त्री [दे] श्मश्रु, दाढ़ी-मूँछ (दे ६, १३०; पाअ)।

माह पुं [माघ] १ मास-विशेष, माघ का महिना (पाअ; हे ४, ३५७)। २ संस्कृत का एक प्रसिद्ध कवि। ३ एक संस्कृत काव्य-ग्रंथ, शिशुपाल-वध काव्य (हे १, १८७)।

माह न [दे] कुन्द का फूल (दे ६, १२८)।

माहण पुंस्त्री [माहन, ब्राह्मण] हिंसा से निवृत्त, अहिंसक—१ मुनि, साधु, ऋषि। २ श्रावक, जैन उपासक। ३ ब्राह्मण (आचा; सूअ २, २, ४८; ५४; भग १, ७; २, ५; प्रासू ८०; महा)। स्त्री. °णी (कप्प)। °कुंड न [°कुण्ड] मगध देश का एक ग्राम (आचू १)।

माहप्प पुंन [माहात्म्य] १ महत्त्व, गौरव। २ महिमा, प्रभाव (हे १, ३३; गउड; कुमा; सुर ३, ५३; प्रासू १७)।

माहप्पया स्त्री. ऊपर देखो (उप ७६८ टी)।

माहय पुं [दे] चतुरिन्द्रिय कीट-विशेष (उत्त ३६, १४९)।

माहव पुं [माधव] १ श्रीकृष्ण, नारायण (गा ४४३; वज्जा १३०)। २ वसन्त ऋतु। ३ वैशाख मास (गा ७७७; रुक्मि ५३)। °पणइणी स्त्री [°प्रणयिनी] लक्ष्मी (स ५२३)।

माहविआ स्त्री [माधविका] नीचे देखो (पाअ)।

माहवी स्त्री [माधवी] १ लता-विशेष (गा ३२२; अभि १९९; स्वप्न ३९)। २ एक राज-पत्नी (पउम ६, १२६; २०, १८४)।

माहारयण न [दे] १ वस्त्र, कपड़ा। २ वस्त्र-विशेष (दे ६, १३२)।

माहिंद पुं [माहेन्द्र] १ एक देव-लोक (सम ८)। २ एक इन्द्र, माहेन्द्र देवलोक का स्वामी (ठा २, ३—पत्र ८५)। ३ ज्वर-विशेष; 'माहिंदजरो जाओ' (सुपा ६०६)। ४ दिन का एक मुहूर्त्त (सम ५१)। ५ वि. महेन्द्र-सम्बन्धी (पउम ५५, १६)।

माहिंदफल न [माहेन्द्रफल] इन्द्रयव, कौरैया का बीज (उत्तनि ३)।

माहिल पुं [दे] महिषी-पाल, भैंस चरानेवाला (दे ६, १३०)।

माहिवाय पुं [दे] १ शिशिर पवन (दे ६, १३१)। २ माघ का पवन (षड्)।

माहिसी देखो **महिसी** (कप्प)।

माही स्त्री [माघी] १ माघ मास की पूर्णिमा। २ माघ की अमावस्या (सुज्ज १०, ६)।

माहुर वि [माथुर] मथुरा का (भत्त १४५)।

माहुर न [दे] शाक, तरकारी (दे ६, १३०)।

माहुर, माहुरय वि [माधुर, °क] १ मधुर रस-वाला। २ आम्ल रस से भिन्न रसवाला (उवा)।

माहुरिअ न [माधुर्य] मधुरता (प्राकृ १९)।

माहुलिंग पुं [मातुलिङ्ग] १ बीजपूर वृक्ष; बीजौरानीबू का पेड़ (हे १, २४४; चंड)। २ न. बीजौरे का फल (षड्; कुमा)।

माहेसर वि [माहेश्वर] १ महेश्वर-भक्त (सिरि ४८)। २ न. नगर-विशेष (पउम १०, ३४)।

माहेसरी स्त्री [माहेश्वरी] १ लिपि-विशेष (सम ३५)। २ नगरी-विशेष (राज)।

मि (अप) देखो **अवि**—अपि (भवि)।

मि° स्त्री [मृत्] मिट्टी, मट्टी; 'जह मिल्ले-वावगमादलाबुणोवस्समेव गइभावो' (विसे ३१४२)। °पिंड पुं [°पिण्ड] मिट्टी का पिंडा (अभि २००)। °म्मय वि [°मय] मिट्टी का बना हुआ (उप २४२; पिंड ३३४; सुपा २७०)।

मिअ देखो **मय**=मृग; 'सवणिंदियदोसेणं मिओ मओ वाहबाणेण' (सुर ८, १४२; उत्त १, ५; पण्ह १, १; सम ६०; रंभा; ठा ४, २; पि ५४)। °चक्क न [°चक्र] विद्या-विशेष, ग्राम-प्रवेश आदि में मृगों के दर्शन आदि से शुभाशुभ फल जानने की विद्या (सूअ २, २, २७)। °णअणी, °नयणा स्त्री [°नयना] देखो **मय-च्छी** (नाट; सुर ६; १५३)। °मय पुं [°मद] कस्तूरी (रंभा ३५)। °रिउ पुं [°रिपु] सिंह (सुपा ५७१)। °वाहण पुं [°वाहन] भरतक्षेत्र के एक भावी तीर्थंकर (सम १५३)।

मिअ पुं [मृग] हरिण के आकार का पशु-विशेष, जो हरिण से छोटा और जिसका पुच्छ लम्बा होता है। °लोमिअ वि [°लोमिक] उसके बालों से बना हुआ (अणु ३५)।

मिअ देखो **मित्त**=मित्र (प्राप्र)।

मिअ वि [दे] अलंकृत, विभूषित (षड्)।

मिअ वि [मित] मानोपेत, परिमित (उत्त १६, ८; सम १५२; कप्प)। २ थोड़ा, अल्प; 'मिअं तुच्छं' (पाअ)। °वाइ वि [°वादिन्] आत्मा आदि पदार्थों को परिमित माननेवाला (ठा ८—पत्र ४२७)।

मिअ देखो **मिव**=इव (गा २०६ अ; नाट)।

मिअ° देखो **मिआ**। °ग्गाम पुं [°ग्राम] ग्राम-विशेष (विपा १, १)।

मिअआ स्त्री [मृगया] शिकार (नाट—शकु २७)।

मिअंक पुं [मृगाङ्क] १ चन्द्र, चाँद (हे १, १३०; प्राप्र; कुमा; काप्र १९४)। २ चन्द्र का विमान (सुज्ज २०)। ३ इक्ष्वाकु वंश का एक राजा (पउम ५, ७)। °मणि पुं [°मणि] चन्द्रकान्त मणि (कप्पू)।

मिअंग देखो **मयंग**=मृदंग (कप्पू)।

मिअसिर देखो **मगसिर** (पि ५४)।

मिआ स्त्री [मृगा] १ राजा विजय की पत्नी (विपा १, १)। २ राजा बलभद्र की पत्नी (उत्त १९, १)। °उत्त, °पुत्त पुं [°पुत्र] १ राजा विजय का एक पुत्र (विपा १, १; कर्म १५)। २ राजा बलभद्र का एक पुत्र, जिसका दूसरा नाम बलश्री था (उत्त १९, २)। °वई स्त्री [°वती] १ प्रथम वासुदेव की माता का नाम (सम १५२)। २ राजा शतानीक की पटरानी का नाम (विपा १, ५)।

मिइ स्त्री [मिति] १ मान, परिमाण। २ हद, अवधि; 'किं दुक्करमुदायाणं न मिईं जमुवायसत्तीए' (धर्मवि १४३)।

मिइ देखो **मिउ**=मृत् (धर्मसं ५५८)।

मिइंग देखो **मयंग**=मृदंग (हे १, १३७; कुमा)।

मिइंद देखो **मइंद**=मृगेन्द्र (अभि २४२)।

मिउ स्त्री [मृद्] मिट्टी, मट्टी; 'मिउदंडचक्क-चीवरसामग्गीवसा कुलालुव्व' (सम्मत्त २२४), 'मिउपिंडो दव्वघडो सुसावगो तह य दव्वसाहु त्ति' (उप २५५ टी)।

मिउ वि [मृदु] कोमल, सुकुमार (औप; कुमा; सण)।

मिउ वि [मृदु] मनोज्ञ, सुन्दर; 'मिउमद्दव-संपन्ने' (णंदि ५२)।

मिंचण न [दे] मीचना, निमीलन (दे ३, ३०)।

मिंज°, मिंजा, मिंजिय स्त्री [मज्जा] १ शरीर-स्थित धातु-विशेष, हाड़ के बीच का अवयव-विशेष (पण्ह १, १—पत्र ८; महा; उवा; औप)। २ मध्यवर्त्ती अवयव; 'पेहुण-मिंजिया इवा' (पण्ण १७—पत्र ५२९)।

मिंठ, मिंठिल पुं [दे] हस्तिपक, हाथी का महावत (उप १२८ टी; कुप्र ३६८; महा; भत्त ७६; धर्मवि ८१; १३५; मन १०; उप १३०)। देखो **मेंठ**।

मिंढ, मिंढय पुंस्त्री [मेढ्र] १ मेंढा, भेड़, मेष, गाडर (विसे ३०४ टी; उप पृ २०५; कुप्र १९२), 'ते य दरा मिंढया ते य' (धर्मवि

१४०)। स्त्री. °ढिया (पाअ)। २ न. पुरुष-लिंग, पुरुष-चिह्न (राज)। °मुह पुं [°मुख] १ अनार्य देश-विशेष (पव २७४)। २ न. नगर-विशेष (राज)। देखो मेंढ।

मिंढिय पुं [मेण्ढिक] ग्राम-विशेष (कर्म १)।

मिग देखो मय=मृग (विपा १, ७; सुर २, २२७; सुपा १६८; उव), 'सीहो मिगाणं सलिलाण गंगा' (सूअ १, ६, २१)। °गंध पुं [°गन्ध] युगलिक मनुष्य की एक जाति (इक)। °नाह पुं [°नाथ] सिंह (सुपा ६३२)। °वइ पुं [°पति] सिंह (पगह १, १; सुपा ६३६)। °वालुंकी स्त्री [°वालुङ्की] वनस्पति-विशेष (पगण १७—पत्र ५३०)। °ारि पुं [°ारि] सिंह (उव; सुर ६, २७०)। °ाहिव पुं [°ाधिप] सिंह (पगह २, ५)।

मिगया स्त्री [मृगया] शिकार (सुपा २१४; कुप्र २३; मोह ६२)।

मिगव्व न [मृगव्य] ऊपर देखो (उत्त १८, १)।

मिगसिर देखो मगसिर (सम ८; इक; पि ४३६)।

मिगावई देखो मिआ-वई (पउम २०, १८४ २२, ५५; उव; अंत; कुप्र १८३; पडि)।

मिगी स्त्री [मृगी] १ हरिणी (महा)। २ विद्या-विशेष (राज)। °पद न [°पद] स्त्री का गुह्य स्थान, योनि (राज)।

मिच्चु देखो मच्चु (षड्; कुमा)।

मिच्छ (अप) देखो इच्छ=इष्; 'न उ देइ कप्पु मिच्छइ न न दंडु' (भवि)।

मिच्छ पुं [म्लेच्छ] यवन, अनार्य मनुष्य (पउम २७, १८; ३४, ४१; ती १५; संबोध १६)। °पहु पुं [°प्रभु] म्लेच्छों का राजा (रंभा)। °पिय न [°प्रिय] पलाण्डु, प्याज, लशुन; 'मिच्छप्पियं तु भुत्तं जा गंधो ता न हिंडंति' (बृह ५)। °ाहिव पुं [°ाधिप] यवनों का राजा (पउम १२, १४)।

मिच्छ न [मिथ्य] १ असत्य वचन, झूठ। २ वि. असत्य, झूठा; 'मिच्छं ते एवमाहंसु' (भग), 'तं तहा, नेव मिच्छं' (पउम २३, २६)। ३ मिथ्यादृष्टि, सत्य पर विश्वास नहीं रखनेवाला, तत्त्व का अश्रद्धालु; 'मिच्छो हियाहियविभागनाणसण्णासमन्निओ कोई' (विसे ५१९)।

मिच्छ° देखो मिच्छा (कम्म ३, २; ४)। °कार पुं [°कार] मिथ्या-करण (आवम)। °त्त न [°त्व] सत्य तत्त्व पर अश्रद्धा, सत्य धर्म का अविश्वास (ठा ३, ३; आचा ६; भग; औप; उप ५३१; कुमा)। °त्ति वि [°त्विन्] सत्य धर्म पर विश्वास नहीं करनेवाला, परमार्थ का अश्रद्धालु (दं १८)। °दिट्ठि, °दिट्ठीय, °दिट्ठि, °दिट्ठिय वि [°दृष्टि, °क] सत्य धर्म पर श्रद्धा नहीं रखनेवाला, जिन-धर्म से भिन्न धर्म को माननेवाला (सम २६; कुमा; ठा २, २; औप; ठा १)।

मिच्छा अ [मिथ्या] १ असत्य, झूठा (पाअ)। २ कर्म-विशेष, मिथ्यात्व-मोहनीय कर्म (कम्म २, ४; १४)। ३ गुण-स्थानक विशेष, प्रथम गुण-स्थानक (कम्म २, २; ३; १३)। °दंसण न [°दर्शन] १ सत्य तत्त्व पर अश्रद्धा (सम ८; भग; औप)। २ असत्य धर्म (कुमा)। °नाण न [°ज्ञान] असत्य ज्ञान, विपरीत ज्ञान, अज्ञान (भग)। °सुअ न [°श्रुत] असत्य शास्त्र, मिथ्यादृष्टि-प्रणीत शास्त्र (णंदि)।

मिज्ज अक [मृ] मरना। मिज्जंति (सूअ १, ७, ९)। वकृ. मिज्जमाण (भग)।

मिज्जंत } मिज्जमाण } देखो मा=मा।

मिज्झ वि [मेध्य] शुचि, पवित्र (उप ७२८ टी)।

मिट सक [दे] मिटाना, लोप करना। मिटिज्जसु (पिंग)। प्रयो. मिटावइ (पिंग)।

मिट्ठ वि [मिष्ट, मृष्ट] मीठा, मधुर; 'मुहमिट्ठा मणदुट्ठा वेसा सिट्ठाण कहमिट्ठा' (धर्मवि ६५; कप्पू; सुर १२, १७; हे १, १२८; रंभा)।

मिण सक [मा, मी] १ परिमाण करना, नापना, तोलना। २ जानना, निश्चय करना। मिणइ (विसे २१८६), मिणसु (पव २५४)।

मिणण न [मान] मान, माप, परिमाण (उप पृ ६७)।

मिणाय न [दे] बलात्कार, जबरदस्ती (दे ६, ११३)।

मिणाल देखो मुणाल (प्राकृ ८; रंभा)।

मित्त पुं [मित्र] १ सूर्य, रवि (सुपा ६४५; सुख ४, ६; पाअ; वज्जा १४४)। २ नक्षत्रदेव-विशेष, अनुराधा नक्षत्र का अधिष्ठायक देव (ठा २, ३—पत्र ७७; सुज्ज १०, १२)। ३ अहोरात्र का तीसरा मुहूर्त्त (सम ५१; सुज्ज १०, १३)। ४ एक राजा का नाम (विपा १, २)। ५ पुंन. दोस्त, वयस्य सखा; 'मित्तो सही वयंसो' (पाअ), 'पहाणमित्ता' (स ७०७), 'तिविहो मित्तो हवइ' (स ७१५; सुपा ६४५; प्रासू ७६)। °केसी स्त्री [°केशी] रुचक पर्वत पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी; 'अलंबुसा मित (?त्त) केसी' (ठा ८—पत्र ४३७; इक)। °गा स्त्री [°गा] वैरोचन बलीन्द्र की एक अग्र-महिषी, एक इन्द्राणी (ठा ४, १—पत्र २०४)। °णंदि पुं [°नन्दिन्] एक राजा का नाम (विपा २, १०)। °दाम पुं [°दाम] एक कुलकर पुरुष का नाम (सम १५०)। °देवा स्त्री स्त्री [°देवा] अनुराधा नक्षत्र (राज)। °व वि [°वत्] मित्रवाला (उत्त ३, १८)। °सेण पुं [°सेन] एक पुरोहित-पुत्र (सुपा ५०७)।

मित्त देखो मेत्त=मात्र (कप्प; जी ३१; प्रासू १४५)।

मित्तल पुं [दे] कन्दर्प, काम (दे ६, १२६; सुर १३, ११८)।

मित्ति स्त्री [मति] १ मान, परिमाण। २ सापेक्षता;

'उस्सग्गववायाणं मित्तीए अह ण भोयणं दुट्ठं।
उस्सग्गववायाणं मित्तीइ तहेव उवगरणं'
(अज्झ ३७)।

मित्तिआ स्त्री [मृत्तिका] मिट्टी, मट्टी (अभि २४३)। °वई स्त्री [°वती] दशार्ण देश की प्राचीन राजधानी (विचार ४८)।

मित्तिज्ज अक [मित्रीय्] मित्र को चाहना। वकृ. मित्तिज्जमाण (उत्त ११, ७)।

मित्तिय न [मैत्रेय] १ गोत्र-विशेष, जो वत्स गोत्र की एक शाखा है। २ पुंस्त्री. उस गोत्र में उत्पन्न (ठा ७—पत्र ३९०)।

मित्तिवय पुं [दे] ज्येष्ठ, पति का बड़ा भाई (दे ६, १३२)।
मित्ती स्त्री [मैत्री] मित्रता, दोस्ती (सूत्र २, ७, ३६; श्रा १४; प्रासू ८)।
मिथुण देखो **मिहुण** (पउम ६६, ३१)।
मिदु देखो **मिउ** (अभि १८३; नाट—रत्ना ८०)।
मिरिअ पुंन [मिरिच] १ मरिच का गाछ। २ मिरच, मिर्चा (पण्ण १७—पत्र ५३१; हे १, ४६; ठा ३, १ टी; पव २५६)।
मिरिआ स्त्री [दे] कुटी, झोंपड़ी (दे ६, १३२)।
मिरिइ, मिरी, मिरीइ, मिरीय पुंस्त्री [मरीचि] किरण, प्रभा, तेज; 'चंदलमिरिइकवयं' (औप), 'सप्पहा समिरि (?री) या' (औप), 'निक्कंकडच्छाया समिरीया' (औप; ठा ४, १—पत्र २२६), 'विज्जुघणमिरीइसूर-दिप्पंततेय—' (औप), 'सूरमिरीयकवयं विणिम्मुयंतेहिं' (पण्ह १, ४—पत्र ७२)।
मिल अक [मिल्] मिलना। मिलइ (हे ४, ३३२; रंभा; महा)। कर्म. मिलिज्जइ (हे ४, ४३४)। वकृ. **मिलंत** (से १०, १६)।
मिलक्खु पुंन. देखो **मिच्छ** = म्लेच्छ (ओघ ४४०; धर्मसं ५०८; ती १५; उत्त १०, १६), 'मिलक्खूणि' (पि ३८१)।
मिलण न [मिलन] मेल, मिलना, एकत्रित होना; 'लोगमिलणम्मि' (उप ५७८; सुपा २५०)।
मिलणा स्त्री. ऊपर देखो (उप १२८ टी; उप ७०६)।
मिला, मिलाअ अक [म्लै] म्लान होना, निस्तेज होना। मिलाइ, मिलाअइ (दे २, १०६; ४, १८; २४०; षड्)। वकृ. **मिला-अंत, मिलाअमाण** (पि १३६; ठा ३, ३; णाया १, ११)।
मिलाअ, मिलाण वि [म्लान] निस्तेज, विच्छाय (णाया १, १—पत्र ३७; स ४२५; हे २, १०६; कुमा; महा)।
मिलाण न [दे] पर्याण (?) '—थासगमिला-णचमरोगंडपरिमंडियकडीणं' (औप)।
मिलाणि स्त्री [म्लानि] विच्छायता (उप १४२ टी)।

मिलिअ वि [मिलित] मिला हुआ (गा ४४३; कुमा)।
मिलिअ वि [मेलित] मिलाया हुआ (कुमा)।
मिलिच्छ देखो **मिच्छ** = म्लेच्छ (हे १, ८४; हम्मीर ३४)।
मिलिट्ठ वि [म्लिष्ट] १ अस्पष्ट वाक्यवाला। २ म्लान। ३ न. अस्पष्ट वाक्य (प्राकृ २७)।
मिलिमिलिमिल अक [दे] चमकना। वकृ. **मिलिमिलिमिलंत** (पण्ह १, ३—पत्र ४४)।
मिलीण देखो **मिलिअ** (ओघभा २२ टी)।
मिल्ल सक [मुच्] छोड़ना, त्यागना। मिल्लइ (भवि)। वकृ. **मिल्लंत** (सुपा ३१७)। कृ. **मिल्लेव** (अप) (कुमा)। प्रयो., कवकृ. **मिल्लाविज्जंत** (कुप्र १६२)।
मिल्लाविअ वि [मोचित] छुड़ाया हुआ (सुपा ३८८; हम्मीर १८; कुप्र ४०१)।
मिल्लिअ (अप) देखो **मिलिअ** (पिंग)।
मिल्लिर वि [मोक्तृ] छोड़नेवाला (कुमा)।
मिल्ह देखो **मिल्ल**। मिल्हइ (आत्मानु २२), मिल्हंति (कुप्र १७)। भवि. मिल्हिस्सं (कुप्र १०)। कृ. **मिल्हियव्व** (सिरि ३५७)।
मिल्हिय वि [मुक्त] छोड़ा हुआ (श्रा २७)।
मिव देखो **इव** (हे २, १८२; प्राप्र; कुमा)।
मिस सक [मिस्] शब्द करना। वकृ. **मिसंत** (तंदु ४४)।
मिस न [मिष] बहाना, छल, व्याज (चेइय ८३१; सिक्खा २६; रंभा; कुमा)।
मिसमिस अक [दे] १ अत्यन्त चमकना। २ खूब जलना। वकृ. **मिसमिसंत** (णाया १, १—पत्र १६; तंदु २६; उप ६४८ टी)।
मिसल (अप) सक [मिश्रय्] मिश्रण करना, मिलाना। मराठी में 'मिसलणें'। मिसलइ (भवि)।
मिसल (अप) देखो **मीस, मीसालिअ** (भवि)।
मिसिमिस देखो **मिसमिस** वकृ. **मिसि-मिसंत, मिसिमिसिंत, मिसिमिसिमाण, मिसिमिसीयमाण, मिसिमिसेंत मिसि-मिसेमाण** (औप, कप्प; पि ५५८; उवा; पि ५५८; णाया १, १—पत्र ६४)।

मिसिमिसिय वि [दे] उद्दीप्त, उत्तेजित (सुर ३, ५०)।
मिस्स सक [मिश्रय्] मिश्रण करना, मिलाना। मिस्सइ (हे ४, २८)।
मिस्स देखो **मीस** = मिश्र (भग)।
°मिस्स पुं [°मिश्र] पूज्य, पूजनीय; 'वसिट्ठ-मिस्सेसु' (उत्तर १०३)।
मिस्साकूर पुंन [मिश्राकूर] खाद्य-विशेष, 'अगुराहाहिं मिस्साकूरं भोच्चा कज्जं साधेंति' (सुज्ज १०, १७)।
मिह अक [मिध्] स्नेह करना। मिहसि (सुर ४, २१)।
मिह देखो **मिस** = मिष; 'निग्गओ अलियगा-मंतरगमणमिहेण' (महा)।
मिह देखो **मिहो** (आचा)।
मिहिआ स्त्री [दे] मेघ-समूह (दे ६, १३२)। देखो **महिआ**।
मिहिआ स्त्री [मेघिका] अल्प मेघ (से ४, १७)। देखो **महिआ**।
मिहिर पुं [मिहिर] सूर्य, रवि (उप पृ ३५०; सुपा ४१६; धर्म ५),

'सायरनिसायराणं मेहसिहंडीण मिहिरनलिणीणं।
दूरेवि वसंताणं पडिवन्नं नन्नहा होइ'
(उप ७२८ टी)।

मिहिला स्त्री [मिथिला] नगरी-विशेष (ठा १०; पउम २०, ४५; णाया १, ८—पत्र १२४; इक)।
मिहु, मिहुं देखो **मिहो** (उप ६४७; आचा)।
मिहुण न [मिथुन] १ स्त्री-पुरुष का युग्म, दंपती (हे १, १८७; पाअ; कुमा)। २ ज्योतिष-प्रसिद्ध एक राशि (विचार १०६)।
मिहो अ [मिथस्] परस्पर, आपस में (उप ६७६; स ५३६; पि ३४७)।
मीअ न [दे] समकाल, उसी समय (दे ६, १३३)।
मीण पुं [मीन] १ मत्स्य, मछली (पाअ; गउड; ओघ ११६; सुर ३; ५३; १३, ४६)। २ ज्योतिष-प्रसिद्ध राशि-विशेष (सुर ३, ५३; विचार १०६; संबोध ५४)।

मीत देखो मित्त = मित्र (संक्षि १७)।
मीमंस सक [मीमांस्] विचार करना। कृ. 'अ-मीमंसा गुरू' (स ७३०)।
मीमंसा स्त्री [मीमांसा] जैमिनीय दर्शन, पूर्वमीमांसा (सुख ३, १; धर्मवि ३८)।
मीमंसिय वि [मीमांसित] विचारित (उप ६८६ टी)।
मीरा स्त्री [दे] दीर्घ चुल्ली, बड़ा चूल्हा (सूअनि ७६)।
मील अक [मील्] मीचाना, बन्द होना, सकुचाना। मीलइ (हे ४, २३२; षड्)।
मील देखो मिल (वि ११)।
मीलच्छीकार पुं [मीलच्छीकार] १ यवन देश-विशेष, 'मीलच्छीकारदेसोवरि चलिदो खप्परखाणराया' (हम्मीर ३५)। २ एक यवन राजा (हम्मीर ३५)।
मीलण न [मीलन] संकोच (कुमा)।
मीलण देखो मिलण; 'खणजणमणमीलणोवमा विसया' (वि ११; राज)।
मीलिअ देखो मिलिअ = मिलित (पिंग)।
मीस सक [मिश्रय्] मिलाना, मिश्रण करना। कर्म. मीसिज्जइ (पि ६४)।
मीस वि [मिश्र] १ संयुक्त, मिला हुआ, मिश्रित (हे १, ४३; २, १७०; कुमा; कम्म २, १३, १५; ४, १३; १७; २४; भग; औप; दं २२)। २ न. लगातार तीन दिनों का उपवास (संबोध ५८)।
मीसालिअ वि [मिश्र] संयुक्त, मिला हुआ (हे २, १७०; कुमा)।
मीसिय वि [मिश्रित] ऊपर देखो (कुमा; कप्प; भवि)।
मुअ सक [मोदय्] खुश करना। कवकृ. मुइज्जंत (से ७, ३७)।
मुअ सक [मुच्] छोड़ना। मुअइ (हे ४, ९१), मुअंति (गा ३१६)। वकृ. मुअंत, मुयमाण (गा ६४१; से ३, ३६; पि ४८५)। संकृ. मुइत्ता (भग)।
मुअ वि [मृत] मरा हुआ (से ३, १२; गा १४२; वज्जा १५८; प्रासू ५७; पउम १८; १६; उप ६४८ टी)। °वहण न [°वहन] शव-यान, ठठरी, अरथी (दे २, २०)।
मुअ वि [स्मृत] याद किया हुआ (सूअ २, ७, ३८; आचा)।
मुअंक देखो मिअंक (प्राकृ ८)।
मुअंग देखो मिअंग (षड्; सम्मत्त २१८)।
मुअंगी स्त्री [दे] कीटिका, चींटी (दे ६, १३४)।
मुअग्ग पुं [दे] 'आत्मा बाह्य और अभ्यन्तर पुद्गलों से बना हुआ है' ऐसा मिथ्या ज्ञान (ठा ७ टी—पत्र ३८३)।
मुअण न [मोचन] छुटकारा, छोड़ना (सम्मत्त ७८; विसे ३३१६; उप ५२०)।
मुअल (अप) देखो मुअ = मृत (पिंग)।
मुआ स्त्री [मृत्] मिट्टी (संक्षि ४)।
मुआ स्त्री [मुद्] हर्ष, खुशी, आनन्द; 'सुरयरसाओवि मुयं अहियं उवजणइ तस्स सा एसा' (रंभा)।
मुआइणी स्त्री [दे] डुम्बी, डोमिन, चाण्डालिन (दे ६, १३५)।
मुआविअ वि [मोचित] छुड़वाया हुआ (स ४४६)।
मुइ वि [मोचिन्] छोड़नेवाला (विसे ३४०२)।
मुइअ वि [मुदित] १ हर्षित, मोद-प्राप्त (सुर ७, २२३; प्रासू १०५; उव; औप)। २ पुं. रावण का एक सुभट; (पउम ५६, ३२)।
मुइअ वि [दे] योनि-शुद्ध, निर्दोष मातावाला; 'मुइओ जो होई जोणिसुद्धो' (औप—टी)।
मुइअंगा देखो मुअंगी; 'उवलिप्पंते काया मुइअंगाई नवरि छट्टे' (पिंड ३५१)।
मुइंग देखो मिअंग (हे १, ४६; १३७; प्राप्र; उवा; कप्प; सुपा ३६२; पात्र)। °पुक्खर पुंन [°पुष्कर] मृदंग का ऊपरवाला भाग (भग)।
मुइंगलिया } **मुइंगा** } स्त्री [दे] कीटिका, चींटी (उप १३४ टी; संथा ८६; विसे १२०८; पिंड ३५१ टी)।
मुइंगि वि [मृदङ्गिन्] मृदंग बजानेवाला (कुमा)।
मुइंद देखो मइंद = मृगेन्द्र (प्राकृ ८)।
मुइज्जंत देखो मुअ = मोदय्।
मुइर वि [मोक्तृ] छोड़नेवाला (सण)।
मुउ देखो मिउ (काल)।
मुउउंद पुं [मुचुकुन्द] १ नृप-विशेष (अच्चु ६६)। २ पुष्पवृक्ष-विशेष (कप्पू)।
मुउंद पुं [मुकुन्द] विष्णु, नारायण (नाट—चैत १२६)।
मुउर देखो मउर = मुकुर (षड्)।
मुउल देखो मउल = मुकुल (षड्; मुद्रा ८४)।
मुंगायण न [मृङ्गायण] गोत्र-विशेष, विशाखा नक्षत्र का गोत्र (इक)।
मुंच देखो मुअ = मुच्। मुंचइ, मुंचए (षड्; कुमा)। भूका. मुंची (भत्त ७६)। भवि. मोच्छं, मोच्छिहि, मुंचिहिइ (हे ३, १७१; पि ५२६)। कर्म. मुच्चइ; मुचए, मुच्चंति (आचा; हे ४, २०६; महा; भग)। भवि. मुच्चिहिति (भग)। वकृ. मुंचंत (कुमा)। कवकृ. मुच्चंत (पि ५४२)। संकृ. मोत्तुं, मोत्तुआण, मोत्तूण (कुमा; षड्; प्राकृ ३४)। हेकृ. मोत्तं (कुमा), मुंचणहिं (अप) (कुमा)। कृ. मोत्तव्व, मुत्तव्व (हे ४, २१२; गा ६७२; सुपा ५८६)।
मुंज पुंन [मुञ्ज] मूँज, तृण-विशेष, जिसकी रस्सी बनाई जाती है (सूअ २, १, १६; गच्छ २, ३६; उप ६४८ टी)। °मेहला स्त्री [°मेखला] मूँज का कटिसूत्र (णाया १; १६—पत्र २१३)।
मुंजइ न [मौञ्जकिन्] १ गोत्र-विशेष। २ पुंस्त्री, गोत्र में उत्पन्न (ठा ७—पत्र ३६०)।
मुंजकार पुं [मुञ्जकार] मूँज की रस्सी बनानेवाला शिल्पी (अणु १४६)।
मुंजायण पुं [मौञ्जायन] ऋषि-विशेष (हे १, १६०; प्राप्र)।
मुंजि पुं [मौञ्जिन्] ऊपर देखो (प्राकृ १०)।
मुंट वि [दे] हीन शरीरवाला,
'जे बंभचेरभट्ठा पाए पाडंति बंभयारीणं।
ते हुंति टुंटमुंटा बोहीवि सुदुल्लहा तेसिं'
(संबोध १४)।
मुंड सक [मुण्डय्] १ मूँडना, बाल उखाड़ना। २ दीक्षा देना, संन्यास देना। मुंडइ (भवि), मुंडेह (सूअ २, २, ६३)। प्रयो., वकृ. मुंडावेंत (पंचा १०, ४८ टी)। हेकृ. मुंडावेउं, मुंडावित्तए, मुंडावेत्तए (पंचा १०, ४८; ठा २, १; कस)।

मुंड पुंन [मुण्ड] १ मस्तक, सिर (हे ४, ४४६; पिंग) । २ वि. मुण्डित, दीक्षित, प्रव्रजित (कप्प; उप पृ २१४)। °परसु पुं [°परशु] नंगा कुल्हाड़ा, तीक्ष्ण कुठार (पण्ह १, ३—पत्र ५४)।

मुंडण न [मुण्डन] केशों का अपनयन (पंचा २, २; स २७१; सुर १२, ४५)।

मुंडा स्त्री [दे] मृगी, हरिणी (दे ६, १३३)।

मुंडाविअ वि [मुण्डित] मूँड़ाया हुआ (भग; महा; णाया १, १)।

मुंडि वि [मुण्डिन्] मुण्डन करनेवाला (उव; औप; भत्त १००)।

मुंडिअ वि [मुण्डित] मुण्डन-युक्त (भग; उप ६३४; महा)।

मुंडी स्त्री [दे] नोरङ्गी, शिरो-वस्त्र, घूँघट (दे ६, १३३)।

मुंढ } पुं [मूर्धन्] मूर्धा, मस्तक, सिर
मुंढाण } (हे १, २६; २, ४१; षड्)। देखो मुद्ध = मूर्धन्।

मुकलाव सक [दे] भेजवाना, गुजराती में 'मोकलाववुं'। संकृ. मुकलाविऊण (सिरि ४७४)।

मुकुर पुं [मुकुर] दर्पण, आईना (दे १, १४)।

मुक्क (अप) सक [मुच्] छोड़ना; गुजराती में 'मूकवु'। मुक्कइ (प्राकृ ११९)। संकृ. मुक्किअ (नाट—चैत ७६)।

मुक्क वि [मूक] वाक्-शक्ति से रहित, गूँगा (हे २, ९९; सुपा ५५२; षड्)।

मुक्क देखो मुक्कल (विसे ५५०)।

मुक्क वि [मुक्त] १ छोड़ा हुआ, त्यक्त (उवा; सुपा ४७५; महा; पात्र)। २ मुक्ति-प्राप्त, मोक्ष-प्राप्त (हे २, २)। ३ लगतार पाँच दिन का उपवास (संबोध ५८)। देखो मुत्त = मुक्त।

मुक्कय न [दे] दुलहिन के अतिरिक्त अन्य निमन्त्रित कन्याओं का विवाह (दे १, १३५)।

मुक्कल वि [दे] १ उचित, योग्य (दे ६, १४७)। २ स्वैर, स्वतन्त्र, बन्धन-मुक्त (दे ६, १४७; सुर १, २३३; विवे १८; गउड; सिरि ३५३; पात्र; सुपा १९८)।

मुक्कलिअ वि [दे] बन्धन-मुक्त किया हुआ, अनियन्त्रित (दे १, १५६ टी)।

मुक्कुंडी स्त्री [दे] जूट (दे ६, ११७)।

मुक्कुरुड पुं [दे] राशि, ढेर (दे ६, १३६)।

मुक्केल्ल देखो मुक्क = मुक्त (अणु १६८)।

मुक्ख पुं [मोक्ष] १ मुक्ति, निर्वाण (सुर १४, ६५; हे २, ८९; सार्ध ८६)। २ छुटकारा; 'रिणमुक्खं' (रयण ६५; धर्मवि २१)।

मुक्ख वि [मूर्ख] अज्ञानी, बेवकूफ (हे २, ११२; कुमा; गा ८२; सुपा २३१)।

मुक्ख वि [मुख्य] प्रधान, नायक (हास्य १२५)।

मुक्ख पुंन [मुष्क] १ अण्डकोष। २ वृक्ष-विशेष। ३ चोर, तस्कर। ४ वि. मांसल पुष्ट (प्राप्र)।

मुक्खण देखो मोक्खग (सिक्खा ४५)।

मुक्खणी स्त्री [मोक्षणी] स्तम्भन से छुटकारा करनेवाली विद्या-विशेष (धर्मवि १२४)।

मुख देखो मुह = मुख (प्रासू ६; राज)।

मुख पुं [मुख] १ एक म्लेच्छ-जाति (मृच्छ १५२)। २ गाड़ी के ऊपर का ढक्कन (अणु १५१)।

मुग देखो मुग्ग; 'एगमुगभरुव्वहणे असमत्थो किं गिरिं वहइ' (सुपा ४६१)।

मुगुंद देखो मउंद = मुकुन्द (आचा २, १, २, ४; विसे ७८ टी)।

मुगुंस पुंस्त्री [दे] हाथ से चलनेवाले जन्तु की एक जाति, भुजपरिसर्प-जातीय एक प्राणी (पण्ह १, १—पत्र ८)। स्त्री. °सा (उवा)। देखो मंगुस, मुग्गस।

मुग्ग पुं [मुद्ग] १ धान्य-विशेष, मूँग (उवा)। २ रोग-विशेष (ति १२)। ३ पक्षि-विशेष, जल-काक (प्राप्र)। °पण्णी स्त्री [°पर्णी] वनस्पति-विशेष (पण्ण १—पत्र ३६)। °सेल पुं [°शैल] पर्वत-विशेष, कभी नहीं भींगनेवाला एक पर्वत (उप ७२८ टी)।

मुग्गड पुं [दे] मोगल, म्लेच्छ-जाति विशेष (हे ४, ४०९)। देखो मोग्गड।

मुग्गर न [मुद्गर] १ पुष्प-विशेष (वज्जा १०६)। २ देखो मोग्गर (प्राप्र; आप ३६; कप्प)।

मुग्गरय न [दे. मुग्धारत] मुग्धा के साथ रमण (वज्जा १०६)।

मुग्गल देखो मुग्गड (ती १५)।

मुग्गस पुं [दे] नकुल, न्यौला (दे ६, ११८)।

मुग्गाह अक [प्र + सृ] फैलना। मुग्गाहइ (?) (धात्वा १४८)।

मुग्गिल } पुं [दे] पर्वत-विशेष (ती ७; भत्त
मुग्गिल्ल } १६१)।

मुग्गुसु देखो मुग्गस (दे ६, ११८)।

मुग्घड देखो मुग्गड (हे ४, ४०९)।

मुग्घुरुड देखो मुक्कुरुड (दे ६, १३६)।

मुचकुंद } देखो मुउंद (सुर २, ७६;
मुचुकुंद } कुमा)।

मुच्छ अक [मूर्च्छ्] १ मूर्छित होना। २ आसक्त होना। ३ बढ़ना। मुच्छइ, मुच्छए (कस; सूअ १, १, ४, २)। वकृ. मुच्छंत, मुच्छमाण (गा ५४६; आचा)।

मुच्छणा स्त्री [मूर्च्छना] गान का एक अंग (ठा ७—पत्र ३९५)।

मुच्छा स्त्री [मूर्च्छा] १ मोह (ठा २, ४; प्रासू १७९)। २ अचेतनावस्था, बेहोशी (उव; पडि)। ३ गृद्धि, आसक्ति (सम ७१)। ४ मूर्च्छना, गीत का एक अंग (ठा ७—पत्र ३९३)।

मुच्छाविअ वि [मूर्छित] मूर्छा-युक्त किया हुआ (से १२, ३८)।

मुच्छिअ वि [मूर्छित] १ मूर्च्छा-युक्त (प्रासू ५७; उवा)। २ पुं. नरकावास-विशेष (देवेन्द्र २७)।

मुच्छिज्जंत वि [मूर्च्छायमान] मूर्च्छा को प्राप्त होता (से १३, ४३)।

मुच्छिम पुं [मूर्च्छिम] मत्स्य-विशेष, 'वायाए कम्मुणा मणरहिआणं न दारुणं कम्मं। जोअणसहस्समाणो मुच्छिममच्छो उआहरणं' (मन ३)।

मुच्छिर वि [मूर्च्छितृ] १ बढ़नेवाला। २ बेहोशीवाला (कुमा)।

मुज्झ अक [मुह्] १ मोह करना। २ घबड़ाना। मुज्झइ (आचा; उव; महा)। भवि. मुज्झिहिति (औप)। कृ. मुज्झियव्व (पण्ह २, ५—पत्र १४९; उव)।

मुट्टिम पुंस्त्री [दे] गर्व, अहंकार, गुजराती में 'मोटाई'; 'कयमुट्टिमंगीकारो' (हम्मीर ३५)। देखो मोट्टिम।

मुट्ठ वि [मुष्ट, मुषित] जिसकी चोरी हुई हो वह (पिंड ४६६; सुर २, ११२; सुपा ३६१; महा)।

मुट्ठि पुंस्त्री [मुष्टि] मुट्ठी, मूठी, घूँसा, मुक्का; 'मुट्ठिणा', 'मुट्ठीअ' (पि३७६; ३८५; पाअ; रंभा; भवि)। °जुज्झ न [°युद्ध] मुष्टि से की जाती लड़ाई, मुकामुकी (आचा)। °पुत्थय न [°पुस्तक] १ चार अंगुल लम्बा वृत्ताकार पुस्तक। २ चार अंगुल लम्बा चतुष्कोण पुस्तक (पव ८०)।

मुट्ठिअ पुं [मौष्टिक] १ अनार्य देश-विशेष। २ एक अनार्य मनुष्य-जाति (पण्ह १, १—पत्र १४)। ३ मुट्ठी से लड़नेवाला मल्ल (पण्ह २, ५—पत्र १४६)। ४ वि. मुष्टि-सम्बन्धी (कप्प)।

मुट्ठिअ पुं [मुष्टिक] १ मल्ल-विशेष, जिसको बलदेव ने मारा था (पण्ह १, ४—पत्र ७२; पिंग)। २ अनार्य देश-विशेष। ३ एक अनार्य मनुष्य जाति (इक)।

मुट्ठिका स्त्री [दे] हिक्का, हिचकी (दे ६, १३४)।

मुड्ढ देखो मुंढ (कुमा)।

मुड्ढ वि [मुग्ध, मूढ] मूर्ख, बेवकूफ (हम्मीर ५१)।

मुण सक [ज्ञा, मुण्] जानना। मुणइ, मुणंति, मुणिमो (हे ४, ७; कुमा)। कर्म. मुणिज्जइ (हे ४, २५२), मुणिज्जामि (हास्य १३८)। वकृ. **मुणंत, मुणित** (महा; पउम ४८, ६)। कवकृ. **मुणिज्जमाण** (से २, ३६)। संकृ. **मुणिय, मुणिउं, मुणिऊण, मुणेऊणं** (औप; महा)। कृ. **मुणिअव्व, मुणेअव्व** (कुमा; से ४, २४; नव ४२; कप्प; उव; जी ३२)।

मुणण न [ज्ञान मुणन] ज्ञान, जानकारी (कुप्र १८४; संबोध २५; धर्मवि १२५; सण)।

मुणमुण सक [मुणमुणाय्] अव्यक्त शब्द करना, बड़बड़ाना। वकृ. **मुणमुणंत, मुणमुणित** (महा)।

मुणाल पुंन [मृणाल] १ पद्मकन्द के ऊपर की बेल—लता (आचा २, १, ८, ११)। २ बिस, पद्मनाल। ३ पद्म आदि के नाल का तन्तु—सूत्र (पाअ; णाया १, १३; औप)। ४ वीरण का मूल। ५ पद्म, कमल; 'मुणालो', 'मुणालं' (प्राप्र; हे १, १३१)।

मुणालि पुं [मृणालिन्] १ पद्म-समूह। २ पद्म-युक्त प्रदेश, कमलवाला स्थान; 'मुणाली बाणाली' (सुपा ४१३)।

मुणालिआ, **मुणाली** स्त्री [मृणालिका, °ली] १ बिस-तन्तु, कमल-नाल का सूता (नाट—रत्ना २६)। २ बिस का अंकुर (गउड)। ३ कमलिनी (राज)। देखो मणालिया।

मुणि पुं [मुनि] १ राग-द्वेष-रहित मनुष्य, संत, साधु, ऋषि, यति (आचा; पाअ; कुमा; गउड)। २ अगस्त्य ऋषि; 'जलहिजलं व मुणिणा' (सुपा ४८६)। ३ सात की संख्या। ४ छन्द-विशेष (पिंग)। °चंद पुं [°चन्द्र] १ एक प्रसिद्ध जैन आचार्य और ग्रंथकार, जो वादी देवसूरि के गुरु थे (धम्मो २५)। २ एक राज-पुत्र (महा)। °नाह पुं [°नाथ] साधुओं का नायक (सुपा १६०; २५०)। °पुंगव पुं [°पुङ्गव] श्रेष्ठ मुनि (सुपा ६७; श्रु ४१)। °राय पुं [°राज] मुनि-नायक (सुपा १६०)। °वइ पुं [°पति] वही अर्थ (सुपा १८१, २०६)। °वर पुं [°वर] श्रेष्ठ मुनि (सुर ४, ५६, सुपा २४४)। °वेजयंत पुं [°वैजयन्त] मुनि-प्रधान, श्रेष्ठ मुनि (सूअ १, ६, २०)। °सीह पुं [°सिंह] श्रेष्ठ मुनि (पि ४३६)। °सुव्वय पुं [°सुव्रत] १ वर्तमान काल में उत्पन्न भारतवर्ष के बीसवें तीर्थंकर (सम ४३)। २ भारतवर्ष के एक भावी तीर्थंकर (सम १५३)।

मुणि पुं [दे. मुनि] वृक्ष-विशेष, अगस्ति-द्रुम (दे ६, १३३; कुमा)।

मुणिअ वि [ज्ञात, मुणित] जाना हुआ (हे २, १६६; पाअ; कुमा; अवि १६; पण्ह १, २; उप १४३ टी)।

मुणिअ वि [दे. मुणिक] ग्रह-गृहीत, भूता-विष्ट, पागल (भग १५—पत्र ६६५)।

मुणिंद पुं [मुनीन्द्र] श्रेष्ठ मुनि (हे १, ८४; भग)।

मुणिर वि [ज्ञातृ, मुणितृ] जाननेवाला (सण)।

मुणीश पुं [मुनीश] मुनि-नायक (उप १४१ टी; भवि)।

मुणीसर पुं [मुनीश्वर] ऊपर देखो (सुपा ३६६)।

मुणीसिम (अप) पुंन [मनुष्यत्व] १ मनुष्यपन। २ पुरुषार्थ (हे ४, ३३०)।

मुत्त सक [मूत्रय्] मूतना, पेशाब करना। मुत्तंति (कुप्र ६२)।

मुत्त न [मूत्र] प्रस्रवण, पेशाब (सुपा ६१६)।

मुत्त देखो **मुक्क** = मुक्त (सम १; से २, ३०; जी २)। °ालय पुंस्त्री [°ालय] मुक्त जीवों का स्थान, ईषत्प्राग्भारा नामक पृथिवी (इक)। स्त्री. °या (ठा ८,—पत्र ४४०; सम २२)।

मुत्त वि [मूर्त] १ मूर्तिवाला, रूपवाला, आकारवाला (चैत्य ६१)। २ कठिन। ३ मूढ़। ४ मूर्च्छा-युक्त (हे २, ३०)। ५ पुं. उपवास, एक दिन का उपवास (संबोध ५८)। ६ एक प्राण का नाम (कप्प)।

मुत्त° देखो **मुत्ता** (औप; पि ६७, चैत्य १४)।

मुत्तव्व देखो **मुंच**।

मुत्ता स्त्री [मुक्ता] मोती, मौक्तिक (कुमा)। °जाल न [°जाल] मुक्ता-समूह, मोतियों की माला (औप; पि ६७)। °दाम न [°दामन्] मोतियों की माला (ठा ४, २)। °वलि, °वली स्त्री [°वलि, °ली] १ मोती की माला, मोती का हार (सम ४४; पाअ)। २ तप-विशेष (अंत ३१)। ३ द्वीप-विशेष। ४ समुद्र-विशेष (राज)। °सुत्ति स्त्री [°शुक्ति] १ मोती की सीप। २ मुद्रा-विशेष (चेइय २४०; पंचा ३, २१)। °हल न [°फल] मोती (हे १, २३६; कुमा; प्रासू २)। °हल्लि वि [°फलवत्] मोतीवाला (कप्पू)।

मुत्ति स्त्री [मूर्त्ति] १ रूप, आकार; 'मुत्ति-विमुत्तेसु' (पिंड ५६; विसे ३१८२)। २ प्रतिबिम्ब, प्रतिमूर्त्ति, प्रतिमा; 'चउमुहमुत्ति-

चउक्कं' (संबोध २)। ३ शरीर, देह (सुर १, ३; पाम्र)। ४ काठिन्य, कठिनत्व (हे २, ३०; प्राप्र)। °मंत वि [°मत्] मूर्तिवाला, मूर्त, रूपी (धर्मवि ६; सुपा ३८६; श्रु ६७)।

मुत्ति स्त्री [मुक्ति] १ मोक्ष, निर्वाण (आचा; पाअ; प्रासू १५५)। २ निर्लोभता, संतोष (श्रा ३१)। ३ मुक्त जीवों का स्थान, ईषत्प्राग्भारा पृथिवी (ठा ८—पत्र ४४०)। ४ निस्संगता (आचा)।

मुत्ति वि [मूत्रिन्] बहु-मूत्र रोगवाला; 'उयरिं च पास मुत्तिं च सूणियं च गिलासिणं' (आचा)।

मुत्ति वि [मौक्तिन्, मौक्तिक] मोती पिरोने या गूँथने वाला (उप पृ २१०)।

मुत्तिअ न [मौक्तिक] मुक्ता, मोती (से ५, ४६; कुप्र ३; कुमा, सुपा २४; २४६; प्रासू ३६; १७१)। देखो मोत्तिअ।

मुत्तोली स्त्री [दे] १ मूत्राशय (तंदु ४१)। २ वह छोटा कोठा जो ऊपर नीचे संकीर्ण और मध्य में विशाल हो (राज)।

मुत्थ त्रि [मुस्त] मोथा, नागरमोथा (गउड)। स्त्री. °त्था (संबोध ४४; कुमा)।

मुदग्ग देखो मुअग्ग (ठा ७—पत्र ३८२)।

मुदा स्त्री [मुद्] हर्ष, खुशी। °गर वि [°कर] हर्षजनक (सूअ १, ६, ६)।

मुदुग पुं [दे] ग्राह-विशेष, जल-जन्तु की एक जाति (जीव १ टी—पत्र ३६)।

मुद्द सक [मुद्रय्] १ मोहर लगाना। २ बन्द करना। ३ अंकन करना। मुद्देह (धम्म ११ टी)।

मुद्दंग पुं [दे] १ उत्सव। २ सम्मान (?) (स ४६३; ४६४)।

मुद्दग } पुं [मुद्रिका] अँगूठी (उवा); 'लद्धो
मुद्दय } भद्द! तुमे किं अह अंगुलिमुद्दओ एसो' (पउम ५३, २४)।

मुद्दा स्त्री [मुद्रा] १ मोहर, छाप (सुपा ३२१; वज्जा १५६)। १ अँगूठी (उवा)। ३ अंग-विन्यास-विशेष (चैत्य १४)।

मुद्दिअ वि [मुद्रित] १ जिस पर मोहर लगाई गई हो वह। २ बंद किया हुआ (गाया १, २—पत्र ८६; ठा ३, १—पत्र १२३, कप्पू; सुपा १४४; कुप्र ३१)।

मुद्दिअ° } स्त्री [मुद्रिका] अँगूठी (पराह १,
मुद्दिआ } ४; कप्प; औप; तंदु २६)। °बंध पुं [°बन्ध] ग्रन्थि-बन्ध, बन्ध-विशेष (ओघ ४०२; ४०५)।

मुद्दिआ स्त्री [मृद्वीका] १ द्राक्षा की लता (पराण १—पत्र ३३)। २ द्राक्षा, दाख (ठा ४, ३—पत्र २३६; उत्त ३४, १५; पव १५५)।

मुद्दी स्त्री [दे] चुम्बन (दे ६, १३३)।

मुद्दुय देखो मुदुग (पराण १—पत्र ४८)।

मुद्ध देखो मुंढ (औप; कप्प; ओघभा १६; कुमा)। °न्न वि [°न्य] १ मस्तक में उत्पन्न। २ मस्तक-स्थ, अग्रेसर। ३ मूर्धस्थानीय रकार आदि वर्ण (कुमा)। °य पुं [°ज] केश, बाल (पराह १, ३—पत्र ५४)। °सूल न [°शूल] मस्तक-पीड़ा, रोग-विशेष (गाया १, १३)।

मुद्ध वि [मुग्ध] १ मूढ, मोह-युक्त। २ सुन्दर, मनोहर, मोह-जनक (हे २, ७७; प्राप्र; कुमा; विपा १, ७—पत्र ७७)।

मुद्धा स्त्री [मुग्धा] मुग्धा स्त्री, नायिका का एक भेद, काम-चेष्टा-रहित अंकुरित यौवना (कुमा)।

मुद्धा (अप) देखो मुहा (कुमा)।

मुद्धाण देखो मुंढ (उवा; कप्प; पि ४०२)।

मुब्भ पुं [दे] घर के ऊपर का तिर्यक् काष्ठ, गुजराती में 'मोभ' (दे ६, १३३)। देखो मोब्भ।

मुमुक्खु वि [मुमुक्षु] मुक्त होने की चाह-वाला (सम्मत्त १४०)।

मुम्मुइ } वि [मूकमूक] १ अत्यन्त मूक।
मुम्मुय } २ अव्यक्तभाषी (सूअ १, १२, ५; राज)।

मुम्मुर सक [चूर्णय्] चूरना, चूर्ण करना। मुम्मुरइ (प्राकृ ७५)।

मुम्मुर पुं [दे] करीष, गोइंठा (दे ६, १४७)।

मुम्मुर पुं [दे. मुर्मुर] १ करीषाग्नि, गोइंठा की आग (दे ६, १४७; जी ६)। २ तुषाग्नि (सुर ३, १८७)। ३ भस्म-च्छन्न अग्नि, भस्म-मिश्रित अग्नि-करण (उप ६४८ टी; जी ६; जीव १)।

मुम्मुही स्त्री [मुन्मुखी] मनुष्य की दश दशाओं में नववीं दशा—८० से ६० वर्ष तक की अवस्था (ठा १०—पत्र ५१६; तंदु १६)।

मुर अक [लड्] १ विलास करना। २ सक. उत्पीड़न करना। ३ जीभ चलाना। ४ उपक्षेप करना। ५ व्याप्त करना। ६ बोलना। ७ फेंकना। मुरइ (प्राकृ ७३)।

मुर अक [स्फुट्] खीलना। मुरइ (हे ४, ११४; षड्)।

मुर पुं [मुर] दैत्य-विशेष। °रिउ पुं [°रिपु] श्रीकृष्ण (ती ३)। °वेरिय पुं [°वैरिन्] वही अर्थ (कुमा)। °ारि पुं [°ारि] वही अर्थ (वज्जा १५४)।

मुरई स्त्री [दे] असती, कुलटा (दे ६, १३५)।

मुरज } पुं [मुरज] मृदंग, वाद्य-विशेष (कप्प;
मुरय } पाअ; गा २५३, सुपा ३६३; अंत; धर्मवि ११२; कुप्र २८८; औप; उप पृ २३६)। देखो मुरव।

मुरल पुं.ब. [मुरल] एक भारतीय दक्षिण देश, केरल देश; 'दिअर ण दिट्ठा तुए मुरला' (गा ८७६)।

मुरव देखो मुरय (औप, उप पृ २३६)। २ अंग-विशेष, गल-घरिटका (औप)।

मुरवि स्त्री [दे. मुरजिन्] आभरण-विशेष (औप)।

मुरिअ वि [स्फुटित] खीला हुआ (कुमा)।

मुरिअ वि [दे] १ त्रुटित, टूटा हुआ (दे ६, १३५)। २ मुड़ा हुआ, वक्र बना हुआ (सुपा ५४७)।

मुरिअ पुं [मौर्य] १ प्रसिद्ध क्षत्रिय-वंश (उप २११ टी)। २ मौर्य वंश में उत्पन्न; 'रायगिहे मू(? मु)रियबलभद्दे' (विसे २३५७)।

मुरुंड पुं [मुरुण्ड] १ अनार्य देश-विशेष (इक; पव २७४)। २ पादलिप्तसूरि के समय का एक राजा (पिंड ४६४; ४६८)। ३ पुंस्त्री. मुरुण्ड देश का निवासी मनुष्य (पराह १, १—पत्र १४)। स्त्री. °डी (इक)।

मुरुक्कि स्त्री [दे] पक्वान्न-विशेष (सण)।

मुरुक्ख देखो मुक्ख = मूर्ख (हे २, ११२; कुमा, सुपा ६११; प्राकृ ६७)।

मुरुमुंड पुं [दे] जूट, केशों की लट (दे ६, ११७)।

मुरुमुरिअ न [दे] रणरणक, उत्सुकता (दे ६, १३६; पाअ)।

मुरुह देखो मुरुक्ख (षड्)।

मुलासिअ पुं [दे] स्फुलिंग, अग्नि-कण (दे ६, १३५)।

मुल्ल (अप) देखो मुंच। मुल्लइ (प्राकृ ११९)।

मुल्ल, मुल्लिअ } पुंन [मूल्य] कीमत; 'को मुल्लो' (वज्जा १५२; औप; पाअ; कुमा; प्रयौ ७७)।

मुव (अप) देखो मुअ = मुच्। मुवइ (भवि)।

मुव्वह देखो उव्वह = उद् + वह्। मुव्वहइ (हे २, १४७)।

मुस सक [मुष्] चोरी करना। मुसइ (हे ४, २३९; सार्ध ९२)। भवि. मुसिस्सइ (धर्मवि ४)। कर्म. मुसिज्जामो (पि ४५५)। वकृ. मुसंत (महा)। कवकृ. मुसिज्जंत, मुसिज्जमाण (सुपा ४५०; कुप्र २४७)। संकृ. मुसिऊण (स ६९३)।

मुसंढि देखो मुसुंढि (सम १३७; पण्ह १, १—पत्र ८; उत्त ३६, १००; पण्ण १—पत्र ३५)।

मुसण न [मोषण] चोरी (सार्ध ९०; धर्मवि ५६)।

मुसल पुंन [मुसल] १ मूसल या मूसर, एक प्रकार की मोटी लकड़ी जिससे चावल आदि अन्न कूटे जाते हैं (औप; उवा; षड्; हे १,११३)। २ मान-विशेष (सम ९८)। °धर पुं [°धर] बलदेव (कुमा)। °उह पुं [°युध] बलदेव (पाअ)।

मुसल वि [दे] मांसल, पुष्ट (षड्)।

मुसलि पुं [मुसलिन्] बलदेव (दे १, ११८; सण)।

मुसली देखो मोसली (ओघभा १६१)।

मुसह न [दे] मन की आकुलता (दे ६, १३४)।

मुसा अ. स्त्री [मृषा] मिथ्या, अनृत, झूठ, असत्य भाषण (उवा; षड्; हे १, १३६; कस); 'अयाणंता मुसं वए' (सूअ १, १, ३, ८; उव)। °वाद देखो °वाय (सूअ १, ३, ४, ८)। °वादि वि [°वादिन्] झूठ बोलनेवाला (पण्ह १, २; आचा २, ४, १, ८)। °वाय पुं [°वाद] झूठ बोलना, असत्य भाषण (सम १०; भग; कस)।

मुसाविअ वि [मोषित] चुरवाया हुआ, चोरी कराया हुआ (ओघ २६० टी)।

मुसिय वि [मुषित] चुराया हुआ (सुपा २२०)।

मुसुंढि पुंस्त्री [दे] १ प्रहरण-विशेष, शस्त्र-विशेष (औप)। २ वनस्पति-विशेष (उत्त ३६, १००, सुख ३६, १००)।

मुसुमूर सक [भञ्ज्] भांगना, तोड़ना। मुसुमूरइ (हे ४, १०६)। हेकृ. 'तेसिं च केसमवि मुसुमु[? सुमू]रिउमसमत्थो' (सम्मत्त १२३)।

मुसुमूरण न [भञ्जन] तोड़ना, खण्डन (सम्मत्त १८७)।

मुसुमूराविअ वि [भञ्जित] भँगाया हुआ (सम्मत्त ३०)।

मुसुमूरिअ वि [भग्न] भाँगा हुआ (पाअ; कुमा; सण)।

मुह देखो मुज्झ; 'इय मा मुहसु मणेणं' (जीवा १०)। संकृ. मुहिअ (पिंग)। कवकृ मुहिज्जंत (से ११; १००)।

मुह न [मुख] १ मुँह, वदन (पाअ; हे ३, १३४; कुमा; प्रासू १९)। २ अग्र भाग (सुज्ज ४)। ३ उपाय (उत्त २५, १६; सुख २५, १६)। ४ द्वार, दरवाजा। ५ आरम्भ। ६ नाटक आदि का सन्धि-विशेष। ७ नाटक आदि का शब्द-विशेष। ८ आद्य, प्रथम। ९ प्रधान, मुख्य। १० शब्द, आवाज। ११ नाटक। १२ वेद-शास्त्र (प्राप्र; हे १, १८७)। १३ प्रवेश (निचू ११)। १४ पुं. वृक्ष-विशेष, बड़हल का गाछ (सुज्ज १०, ८)। °णंतग, °णंतय न [°नन्तक] मुख-वस्त्रिका (ओघभा १५८; पव २)। °तूरय न [°तूर्य] मुह से बजाया जाता वाद्य (भग)। °धोवणिया स्त्री [°धावनिका] मुँह धोने की सामग्री, दतवन आदि; 'मुहधोवणियं खिप्पं उवणमेहिं' (उप ६४८ टी)। °पत्ती स्त्री [°पत्री] मुख-वस्त्रिका (उवा; ओघ ६६९; द्र ५८)। °पुत्तिया, °पोत्तिया, °पोत्ती स्त्री [°पोतिका] मुख-वस्त्रिका, बोलते समय मुँह के आगे रखने का वस्त्र-खण्ड (संबोध ५; विपा १, १; पव १२७)। °फुल्ल न [°फुल्ल] १ बड़हल का फूल। २ चित्रा-नक्षत्र का संस्थान (सुज्ज १०, ८)। °भंडग न [°भाण्डक] मुखाभरण (औप)। °मंगलिय, °मंगलीअ वि [°माङ्गलिक] मुँह से पर-प्रशंसा करनेवाला, खुशामदी (कप्प; औप; सूअ १, ७, २५)। °मक्कडा, °मक्कडिया स्त्री [°मर्कटा, °टिका] गला पकड़ कर मुँह को मोड़ना, मुख-वक्रीकरण (सुर १२, ६७; णाया १, ८—पत्र १४४)। °वंत वि [°वत्] मुँहवाला (भवि)। °वड पुं [°पट] मुँह के आगे रखने का वस्त्र (से २, २२; १३, ५९)। °वडण न [°पतन] मुँह से गिरना (दे ६, १३६)। °वण्ण पुं [°वर्ण] प्रशंसा, खुशामद (निचू ११)। °वास पुं [°वास] भोजन के अनन्तर खाया जाता पान, चूर्ण आदि मुँह को सुगन्धी बनानेवाला पदार्थ (उवा ४२; उर ८, ५)। °वीणिया स्त्री [°वीणिका] मुँह से विकृत शब्द करना, मुँह से वाद्य का शब्द करना (निचू ५)। मुहड देखो मुहल। °ासय न [°ाशय] एक नगर (ती १५)।

मुहत्थडी स्त्री [दे] मुँह से गिरना (दे ६, १३६)।

मुहर देखो मुहल = मुखर (सुपा २२८)।

मुहरिय वि [मुखरित] वाचाल बना हुआ, आवाज करता (सुर ३, ५४)।

मुहरोमराइ स्त्री [दे] भ्रू, भौं (दे ६, १३६; षड्; १७३)।

मुहल न [दे] मुख, मुँह (दे ६,१३४; षड्)।

मुहल वि [मुखर] १ वाचाट, बकवादी (गा ५७८; सुर ३, १८; सुपा ४)। २ पुं. काक, कौआ। ३ शंख (हे १, २५४; प्राप्र)। °रव पुं [°रव] तुमुल, कोलाहल (पाअ)।

मुहा अ. स्त्री [मुधा] व्यर्थ, निरर्थक (पाअ; सुर ३, १; धर्मसं ११३२; श्रा २८; प्रासू ९); 'मुहाइ हारिति अप्पाणं' (संबोध ४६)। °जीवि वि [°जीविन्] भिक्षा पर निर्वाह करनेवाला (उत्त २५, २८)।

मुहिअ न [दे] मुफत, बिना मूल्य; मुफत में करना (दे ६, १३४)।

मुहिआ स्त्री [दे. मुधिका] ऊपर देखो (दे ६, १३४; कुमा; पाअ); 'ते सव्वेवि हु कुमरस्स

तस्स मुहिआइ सेवगा जाया' (सिरि ४५७); 'जिणसासणंपि कहमवि लद्धु हारेसि मुहियाए' (सुपा १२४); 'मुह (? हि) याइ गिण्हह लक्खं' (कुप्र २३७)।

मुहु } अ [मुहुस्] बार बार (प्रासू २६;
मुहुं } हे ४, ४४४; पि १८१)।

मुहुत्त } पुंन [मुहूर्त्त] दो घड़ी का काल,
मुहुत्ताग } अड़तालीस मिनिट का समय (ठा २, ४; हे २, ३०; औप; भग; कप्प; प्रासू १०५; इक; स्वप्न ६५; आचा; ओघ ५२१)।

मुहुमुह देखो महुमुह (पाअ)।

मुहुल देखो मुहल = मुखर (पाअ)।

मुहुल्ल देखो मुह = मुख (हे २, १६४; षड्; भवि)।

मूअ देखो मुक्क = मूक (हे २, ६६; आचा; गउड; विपा १, १)।

मूअ देखो मुअ = मृत; 'लज्जाइ कह ण मूओ सेवंतो गामवाहलियं' (वज्जा ५४)।

मूअल } वि [दे. मूक] मूक, वाक्-शक्ति
मूअल्ल } से हीन (दे ६; १३७; सुर ११, १५४)।

मूअल्लइअ } वि [दे. मूकायित] मूक बना
मूअल्लिअ } हुआ (से ५, ४१; गउड; पि ५९५)।

मूइंगलिया } देखो मुइंगलिया (उप १३४
मूइंगा } टी; ओघ ५५८)।

मूइल्लअ } वि [मृत] मरा हुआ;
मूयल्लिअ }

'एरिहं वारेइ जणो तइआ
मूइल्लओ, कहिं व गओ।
जाहे विसं व जाअं
सव्वंगपहोलिरं पेम्मं'
(गा ६६६ अ)।

मूड } पुं [दे] अन्न का एक दीर्घ परिमाण;
मूढ } 'इगमूडलक्खसमहियमवि धन्नं अत्थि तायगिहे' (सुपा ४२७); 'तो तेहि ताडिओ सो गाढं कणमूढउव्व लउडेहिं' (धर्मवि १४०)।

मूढ वि [मूढ] मूर्ख, मुग्ध (प्राप्र; कस; पउम १, २८; महा; प्रासू २६)। °नइय न [°नयिक] श्रुत-विशेष, शास्त्र-विशेष (आवम)। °विसूइया स्त्री [°विसूचिका] रोग-विशेष (सुपा १३)।

मूण न [मौन] चुप्पी (स ४७७; पण्ह २, ४—पत्र १३१)।

मूयग पुं [दे. मूयक] मेवाड़ देश में प्रसिद्ध एक प्रकार का तृण (पण्ह २, ३—पत्र १२३)।

मूर सक [भञ्ज्] भाँगना, तोड़ना। मूरइ (हे ४, १०६)। भूका. मूरीअ (कुमा)।

मूरग वि [भञ्जक] भाँगनेवाला, चूरनेवाला (पण्ह १, ४—पत्र ७२)।

मूल न [मूल] १ जड़ (ठा ६; गउड; कुमा; गा २३२)। २ निबन्धन, कारण (पण्ह १, ३—पत्र ४२)। ३ आदि, आरम्भ (पण्ह २, ४)। ४ आद्य कारण (आचानि १, २, १—गाथा १७३; १७४)। ५ समीप, पास, निकट (ओघ ३८४; सुर १०, ६)। ६ नक्षत्र-विशेष (सुर १०, २२३)। ७ व्रतों का पुनः स्थापन (औप; पंचा १६, २१)। ८ पिप्पली-मूल (आचानि १, २, १)। ६ वशीकरण आदि के लिए किया जाता ओषधि-प्रयोग, 'अमंतमूलं वसीकरणं' (प्रासू १४)। १० आद्य, प्रथम, पहला। ११ मुख्य (संबोध ३; आवम; सुपा ३६४)। १२ मूलधन, पुंजी (उत्त ७, १४; १५)। १३ चरण, पैर। १४ सूरण, कन्द-विशेष, ओल। १५ टीका आदि से व्याख्येय ग्रन्थ (संक्षि २१)। १६ प्रायश्चित-विशेष (विसे १२४६)। १७ पुंन. कन्द-विशेष, मूली (अनु ६; श्रा २०)। °च्छेज्ज वि [°छेद्य] मूल नामक प्रायश्चित्त से नाश-योग्य (विसे १२४६)। °दत्ता स्त्री [°दत्ता] कृष्ण-पुत्र शाम्ब की एक पत्नी (अंत १५)। °देव पुं [°देव] व्यक्ति-वाचक नाम; (महा; सुपा ५२६)। °देवी स्त्री [°देवी] लिपि-विशेष (विसे ४६४ टी)। °नायग पुं [°नायक] मन्दिर की अनेक प्रतिमाओं में मुख्य प्रतिमा (संबोध ३)। °प्पाडि वि [°उत्पाटिन्] मूल को उखाड़नेवाला (संक्षि २१)। °बिंब न [°बिम्ब] मुख्य प्रतिमा (संबोध ३)। °राय पुं [°राज] गुजरात का चौलुक्य-वंशीय एक प्रसिद्ध राजा (कुप्र ४)। °वंत वि [°वत्] मूलवाला (औप; णाया १, १)। °सिरि स्त्री [°श्री] शाम्ब-कुमार की एक पत्नी (अंत १५)।

मूलग } न [मूलक] १ कन्द-विशेष, मूली,
मूलय } मुरई (पण्ण १; जी १३)। २ शाक-विशेष (पव १५४; कुमा)।

मूलगत्तिआ स्त्री [मूलगर्तिका] मूले—मूली की पतली फाँक (दस ५, २, २३)।

मूलवेलि स्त्री [दे. मूलवेलि] घर के छप्पर का आधार-भूत-स्तम्भ-विशेष (आचा २, २, ३, १ टी; पव १३३)।

मूलिगा स्त्री [मूलिका] ओषधि-विशेष (उप ६०३)।

मूलिय न [मौलिक] मूलधन, पुंजी (उत्त ७, १६; २१)।

मूलिल्ल वि [मूल, मौलिक] प्रधान, मुख्य; 'मूलिल्लवाहणे' (सिरि ४२३)।

मूलिल्ल वि [मूलवत्] मूलधनवाला, पुंजी-वाला; 'अत्थि य देवदत्ताए गाढाणुरत्तो मूलिल्लो मित्तसेणो अयलनामा सत्थवाहपुत्तो' (महा)।

मूली स्त्री [मूली] ओषधि-विशेष, वशीकरण आदि के कार्य में लगती ओषधि (महा)।

मूस देखो मुस = मुष्। मूसइ (संक्षि ३६)।

मूसग } पुं [मूषक, मूषिक] मूसा, चूहा
मूसय } (उवः सुर १, १८; हे १, ८८; षड्; कुमा)।

मूसरि वि [दे] भग्न, भाँगा हुआ (दे ६, १३७)।

मूसल वि [दे] उपचित (दे ६, १३७)।

मूसल देखो मुसल = मुसल (हे १, ११३; कुमा)।

मूसा देखो मुसा (हे १, १३६)।

मूसा स्त्री [मूषा] मूस, धातु गालने—गलाने का पात्र (कप्प; आरा १००; सुर १३, १८०)।

मूसा स्त्री [दे] लघु द्वार, छोटा दरवाजा (दे ६, १३७)।

मूसाअ न [दे] ऊपर देखो (दे ६, १३७)।

मूसिय देखो मूसय (आचा)। °ारि पुं [°अरि] मार्जार, बिल्ला (आचा)।

मे अ [मे] १ मेरा। २ मुझसे (स्वप्न १५; ठा १)।

मेअ पुं [मेद] १ अनार्य देश-विशेष (इक)। २ एक अनार्य मनुष्य-जाति (पण्ह १, १—पत्र १४)। ३ पुंस्त्री. चाण्डाल (सम्मत्त १७२)। स्त्री. मेई (सम्मत्त १७२)।

मेअ वि [मेय] १ जानने योग्य, प्रमेय, पदार्थ, वस्तु (उत्त १८; २३)। २ नापने योग्य (षड्)। °न्न वि [°ज्ञ] पदार्थ-ज्ञाता (उत्त १८, २३; सुख १८, २३)।

मेअ पुंन [मेदस्] शरीर-स्थित धातु-विशेष, चर्बी (तंदु ३८; णाया १, १२—पत्र १७३; गउड)।

मेअज्ज न [दे] धान्य, अन्न (दे ६, १३८)।

मेअज्ज पुं [मेदार्य] मेदार्य गोत्र में उत्पन्न (सूअ २, ७, ५)।

मेअज्ज पुं [मेतार्य] १ भगवान् महावीर का दसवाँ गणधर (सम १९)। २ एक जैन महर्षि (उव; सुपा ४०६; विवे ४३)।

मेअय वि [मेचक] काला, कृष्ण-वर्ण (गउड ३३६)।

मेअर वि [दे] असहन, असहिष्णु (दे ६, १३८)।

मेअल पुं [मेकल] पर्वत-विशेष। °कन्ना स्त्री [°कन्या] नर्मदा नदी (पाअ)।

मेअवाडय पुंन [मेदपाटक] एक भारतीय देश, मेवाड़; 'णाव दाहविअं सअलंपि मेअ-वाडयं हम्मीरवीरेहिं' (हम्मीर २७)।

मेइणि°, **मेइणी** स्त्री [मेदिनी] १ पृथिवी, धरती (सुपा ३२; कुमा; प्रासू ५२)। २ चाण्डालिन (सुपा १६; सम्मत्त १७२)। °नाह पुं [°नाथ] राजा (उप पृ १८६; सुपा १०८)। °पइ पुं [°पति] १ राजा। २ चाण्डाल; 'जो विबुहपणयचरणोवि गोत्तभेई न, मेइणिपईवि न हु मायंगो' (सुपा ३२)। °सामि पुं [°स्वामिन्] राजा (उप ७२८ टी)।

मेइणीसर पुं [मेदनीश्वर] राजा (उप ७२८ टी)।

मेंठ पुं [दे] हस्तिपक, महावत (दे ६, १३८)। देखो **मिंठ**।

मेंठी स्त्री [दे] मेंढी, मेषी गड़रिया (दे ६, १३८)।

मेंढ पुंस्त्री [मेढ्र] मेंढा, मेष, भेड़, गाड़र (ठा ४; २)। स्त्री. °ढी (दे ६, १३८)। °मुह पुं [°मुख] १ एक अन्तर्द्वीप। २ अन्तर्द्वीप-विशेष में रहनेवाली मनुष्य-जाति (ठा ४, २—पत्र २२६; इक)। °विसाणा स्त्री [°विषाणा] वनस्पति-विशेष, मेढाशिंगी (ठा ४, १—पत्र १८५)। देखो **मिंढ**।

मेखला देखो **मेहला** (राज)।

मेज्ज न [मेय] मान, तौल, बाट, बटखरा, जिससे मापा जाय वह (अणु १५४)।

मेघ देखो **मेह** (कुमा; सुपा २०१)। °मालिणी स्त्री [°मालिनी] नन्दन वन के शिखर पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८—पत्र ४३७)। °वई स्त्री [°वती] एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८—पत्र ४३७)। °वाहण पुं [°वाहन] एक विद्याधर राज-कुमार (पउम ५, ६५)।

मेघंकरा स्त्री [मेघङ्करा] एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८—पत्र ४३७)।

मेच्छ देखो **मिच्छ**=म्लेच्छ (ओघ २४; औप; उप ७२८ टी; मुद्रा २६७)।

मेज्ज देखो **मेअ**=मेय (षड्; णाय १, ८—पत्र १३२; श्रा १८)।

मेज्झ देखो **मिज्झ** (महा ४, ११; ४०, २४)।

मेट देखो **मिट**। प्रयो. मेटाव (पिंग)।

मेडंभ पुं [दे] मृग-तन्तु (दे ६, १३९)।

मेडय पुं [दे] मजला, तला, गुजराती में 'मेडो'; 'तस्स य सयणट्ठाणं संचारिमकट्ठमेड-यस्सुवरिं' (सुपा ३५१)।

मेड्ढ देखो **मेंढ** (उप पृ २२४)।

मेढ पुं [दे] वणिक्-सहाय, वणिक् को मदद करनेवाला (दे ६, १३८)।

मेढक पुं [दे] काष्ठ-विशेष, काष्ठ का छोटा डंडा (पराह १, १—पत्र ८)।

मेढि पुं [मेथि] पशुबन्धन-काष्ठ; खले के बीच का काष्ठ, जहाँ पशु को बाँध कर धान्य-मर्दन किया जाता है (हे १, २१५; गच्छ १, ८; णाया १, १—पत्र ११)। २ आधार, स्तम्भ; 'सयस्स वि य णं कुडुंबस्स मेढी पमाणं आहारे आलंबणं चक्खू मेढीभूए' (उवा), 'सुत्तत्थविऊ लक्खणजुत्तो गच्छस्स मेढिभूओ अ' (श्रा १; कुप्र २६९; संबोध २४)। °भूअ वि [°भूत] १ आधार-सदृश, आधार-भूत (भग)। २ नाभि-भूत, मध्य में स्थित (कुमा)।

मेणआ, **मेणक्का** स्त्री [मेनका] १ हिमालय की पत्नी। २ स्वर्ग की एक वेश्या (अभि ४२; नाट—विक्र ४७; पिंग)।

मेत्त न [मात्र] १ साकल्य, संपूर्णता। २ अवधारण; 'भोअणमेत्तं' (हे १, ८१)।

मेत्तल [दे] देखो **मित्तल** (सुर १२, १५२)।

मेत्ती स्त्री [मैत्री] मित्रता, दोस्ती (से १, ६; गा २७२; स ७१६; उव)।

मेधुणिया देखो **मेहुणिआ** (निचू १)।

मेर (अप) वि [मदीय] मेरा (प्राकृ १२०; भवि)।

मेरग पुं [मेरक, मैरेयक] १ तृतीय प्रति-वासुदेव राजा (पउम ५, १५६)। २ पुंन. मद्य-विशेष (उवा; विपा १, २—पत्र २७)। ३ वनस्पति का त्वचा-रहित टुकड़ा; 'उच्छु-मेरगं' (आचा २, १, ८, १०)।

मेरा स्त्री [दे. मिरा] मर्यादा (दे ६, ११३; पाअ; कुप्र ३३५; अज्झ ६७; सण; हे १, ८७; कुमा; औप)।

मेरा स्त्री [मेरा] १ तृण-विशेष, मुञ्ज की सलाई (पण्ह २, ३—पत्र १२३)। २ दशवें चक्रवर्त्ती की माता (सम १५२)।

मेरु पुं [मेरु] १ पर्वत-विशेष (उव; प्रासू १५४)। २ छन्द-विशेष (पिंग)।

मेरु पुं [मेरु] पर्वत, कोई भी पहाड़ (आचा २, १०, २)।

मेल सक [मेलय्] १ मिलाना। २ इकट्ठा करना। मेलइ, मेलंति (भवि; पि ४८६)। संकृ. मेलित्ता, मेलिय (पि ४८६; महा)।

मेल पुं [मेल] मेल, मिलाप, संगम, संयोग, मिलन (सूअनि १५; दे ६, ५२; सार्ध १०६), 'दिट्ठो पियमेलगो मए सुविणो' (कुप्र २१०)।

मेलण न [मेलन] ऊपर देखो (प्रासू ३५)।

मेलय पुं [मेलक] १ संबन्ध, संयोग (कुमा)। २ मेला, जन-समूह का एकत्रित होना (दे ७, ८९; त्रि ८९)।

मेलव सक [मेलय्, मिश्रय्] मिलाना, मिश्रण करना। मेलवइ (हे ४, २८)। भवि. मेलवेहिसि (पि ५२२)। संकृ. मेलवि (अप) (हे ४, ४२९)।

मेलाइयव्व नीचे देखो।

मेलाय अक [मिल्] एकत्रित होना; 'पडिनिक्खमित्ता एगयओ मेलायंति' (भग)। संकृ. **मेलाइत्ता** (भग)। कृ. **मेलाइयव्व** (ओघभा २२ टी)।

मेलाव देखो **मेलव**। मेलावइ (भवि)।

मेलाव पुंन [मेल] १ मिलाप, संगम, मिलन (सुपा ४६६); 'निच्चं चिय मेलावं सुमग्गनिरयाण अइदुलहं' (सट्ठि १४३)।

मेलावग देखो **मेलय** (आत्महि १६)।

मेलावड (अप) देखो **मेलय**; 'मणवल्लहमेलावडउ पुन्नहि लब्भइ एहु' (सिरि ७३)।

मेलावय देखो **मेलावग** (सुपा ३६१; भवि)।

मेलाविअ वि [मेलित] मिलाया हुआ, इकट्ठा किया हुआ (से १०, २८)।

मेलिअ वि [मिलित] मिला हुआ (ठा ३, १ टी—पत्र ११६; महा; उव);

'एवं सुलीलवंतो असीलवंतेहिं मेलिओ संतो।
पावेइ गुणपरिहाणी मेलणदोसाणुसंगेणं'
(प्रासू ३५)।

मेली स्त्री [दे] संहति, जन-समूह का एकत्रित होना, मेला (दे ६, १३८)।

मेलीण देखो **मिलीण** (पउम २, ६); 'अएणोएणकडक्खंतरपेसिअमेलीणदिट्ठिपसराइं' (गा ६६६; ७०२ अ)।

मेल्ल देखो **मिल्ल**। मेल्लइ (हे ४, ९१), मेल्लेमि (कुप्र १६)। वकृ. **मेल्लंत** (महा)। संकृ. **मेल्लंव, मेल्लेप्पिणु** (अप) (हे ४, ३५३; पि ५८८)। कृ. **मेल्लियव्व** (उप ५५५)।

मेल्लण न [मोचन] छोड़ना, परित्याग (प्रासू १०२)।

मेल्लाविय वि [मोचित] छुड़वाया हुआ (सुर ८, ६८; महा)।

मेव देखो **एव** (पि ३३६)।

मेवाड } देखो **मेअवाडय** (ती १५; मोह
मेवाढ } ८८)।

मेस पुं [मेष] १ मेंढा, भेड़, गाड़र (सुर ३, ५३)। २ राशि-विशेष (विचार १०६; सुर ३, ५३)।

मेह पुं [मेघ] १ अभ्र, जलधर (औप)। २ कालागुरु, सुगंधी धूप-द्रव्य-विशेष (से ६, ४६)। ३ भगवान् सुमतिनाथ का पिता (सम १५०)। ४ एक जैन महर्षि (अंत १८)। ५ राजा श्रेणिक का एक पुत्र (णाया १, १—पत्र ३७)। ६ एक देव-विमान (देवेन्द्र १३२)। ७ छन्द-विशेष (पिंग)। ८ एक वणिक्-पुत्र (सुपा ६१७)। ९ एक जैनमुनि (कप्प)। १० देव-विशेष (राज)। ११ मुस्तक, ओषधि-विशेष, मोथा। १२ एक राक्षस। १३ राग-विशेष (प्राप्र; हे १, १८७)। १४ एक विद्याधर-नगर (इक)। °**कुमार** पुं [°कुमार] राजा श्रेणिक का एक पुत्र (णाया १, १; उव)। °**ज्झाण** पुं [°ध्यान] राक्षस-वंश का एक राजा, एक लंकापति (पउम ५, २६६)। °**णाअ** पुं [°नाद] रावण का एक पुत्र (से १३, ९८)। °**पुर** न [°पुर] वैताढ्य पर्वत के दक्षिण श्रेणी का एक नगर (पउम ६, २)। °**मुह** पुं [°मुख] १ देव-विशेष (राज)। २ एक अन्तर्द्वीप। ३ अन्तर्द्वीप-विशेष का निवासी मनुष्य (ठा ४, २—पत्र २२६; इक)। °**रव** न [°रव] विन्ध्य-स्थली का एक जैन तीर्थ (पउम ७७, ६१)। °**वाहण** पुं [°वाहन] १ राक्षस-वंश का आदि पुरुष, जो लंका का राजा था (पउम ५, २५१)। २ रावण का एक पुत्र (पउम ८, ६४)। °**सीह** पुं [°सिंह] विद्याधर-वंश का एक राजा (पउम ५, ४३)। देखो **मेघ**।

मेह पुं [मेह] १ सेचन (सूअ १, ४, २, १२)। २ रोग-विशेष, प्रमेह (श्रा २०; सुख १, १५)।

मेहंकरा देखो **मेघंकरा** (इक)।

मेहच्छीर न [दे] जल, पानी (दे ६, १३९)।

मेहण न [मेहन] १ झरन, टपकना। २ प्रस्रवण, मूत्र; 'महुमेहणं' (आचा १, ६, १, २)। ३ पुरुष-लिंग (राज)।

मेहणि वि [मेहनिन्] झरनेवाला (आचा)।

मेहर पुं [दे] ग्राम-प्रवर, गाँव का मुखिया (दे ६, १२१; सुर १५, १९८)।

मेहरि पुंस्त्री [दे] काष्ठ-कीट, घुन (जी १५)।

मेहरिया } स्त्री [दे] गानेवाली स्त्री (सुपा
मेहरी } ३९४)।

मेहलय पुं ब. [मेखलक] देश-विशेष (पउम ९८, ६६)।

मेहला स्त्री [मेखला] काञ्ची, करधनी (पाअ; पण्ह १, ४; औप; गा ४६३)।

मेहलिज्जिया स्त्री [मेखलिया] एक जैन मुनि-शाखा (कप्प)।

मेहा स्त्री [मेघा] एक इंद्राणी, चमरेन्द्र की एक अग्र-महिषी (ठा ५, १—पत्र ३०२; इक)।

मेहा स्त्री [मेधा] बुद्धि, मनीषा, प्रज्ञा (सम १२५; से १, १६; हास्य १२५)। °**अर** वि [°कर] १ बुद्धि-वर्धक। २ पुं. छन्द-विशेष (पिंग)।

मेहा स्त्री [मेधा] अवग्रह-ज्ञान (णंदि १७४)।

मेहावई देखो **मेघ-वई** (इक)।

मेहावण्ण न [मेघावर्ण] एक विद्याधर-नगर (इक)।

मेहावि वि [मेधाविन्] बुद्धिमान्, प्राज्ञ (ठा ५, ३; णाया १, १; आचा; कप्प; औप; उप १४२ टी; कुप्र १४०; धर्मवि ९८)। स्त्री. °**णी** (नाट—शकु ११६)।

मेहि देखो **मेढि** (से ६, ४२)।

मेहि वि [मेहिन्] प्रस्रवण करनेवाला, 'महुमेहिणं' (आचा)।

मेहिय न [मेधिक] एक जैन मुनि-कुल (कप्प)।

मेहिल पुं [मेधिल] भगवान् पार्श्वनाथ के वंश का एक जैन मुनि (भग)।

मेहुण } न [मैथुन] रति-क्रिया, संभोग
मेहुणय } (सम १०; पण्ह १, ४; उवा; औप; प्रासू १७६; महा)।

मेहुणय पुं [दे] फूफा का लड़का (दे ६, १४८)।

मेहुणिअ पुं [दे] मामा का लड़का (बृह ४)।

मेहुणिआ स्त्री [दे] १ साली, भार्या की बहिन (दे ६, १४८)। २ मामा की लड़की (दे ६, १४८; बृह ४)।

मेहुन्न देखो **मेहुण**; 'हिंसालियचोरिक्के मेहुन्नपरिग्गहे य निसिभत्ते' (श्रोघ ७८७)।

मैरेअ न [मैरेय] मद्य-विशेष (माल १७७)।

मो अ. इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ अवधारण, निश्चय (सूअनि ८६; श्रावक १२५)। २ पाद-पूर्ति (पउम १०२, ८९; धर्मसं ६४५; श्रावक ६०)।

मोअ सक [मुच्] छोड़ना, त्यागना। मोअइ (प्राकृ ७०; ११६)। वकृ. **मोअंत** (से ८, ६१)।

मोअ सक [मोचय्] छुड़वाना, त्याग कराना। मोअअदि (शौ) (नाट—मालवि ४१)। कवकृ. मोइज्जंत (गा ६७२)।

मोअ पुं [मोद] हर्ष, खुशी (रयण १५; महा; भवि)।

मोअ वि [दे] १ अधिगत। २ पुं. चिर्भट आदि का बीजकोश (दे ६, १४८)। ३ मूत्र, पेशाब (सूअ १, ४, २, १२; पिंड ४६८; कस; पभा १५)। °**पडिमा** स्त्री [°प्रतिमा] प्रस्रवण-विषयक नियम-विशेष (ठा ४, २—पत्र ६४; औप; वव ६)।

मोअइ पुं [मोचकि] वृक्ष-विशेष; 'सल्लइ-मोयइमालुयबउलपलासे करंजे य' (पण्ण १—पत्र ३१)।

मोअग वि [मोचक] मुक्त करनेवाला (सम १; पडि; सुपा २३४)।

मोअग पुं [मोदक] लड्डू, मिष्टान्न-विशेष (अंत ६; सुपा ४०६)। देखो **मोदअ**।

मोअण न [मोचन] नीचे देखो (स ५७५; गउड)।

मोअणा स्त्री [मोचना] १ परित्याग (श्रावक ११५)। २ मुक्ति, छुटकारा (सूअ १, १४, १८)। ३ छुड़वाना, मुक्त कराना (उप ५१०)।

मोअय देखो **मोअग** (भग; पउम ११५, ६; सुपा ४०६; नाट—विक २१)।

मोआ स्त्री [मोचा] कदली वृक्ष, केला का गाछ (राज)।

मोआव सक [मोचय्] छुड़वाना। मोआवेमि, मोआवेहि (नाट—शकु २५; मृच्छ ३१६)। भवि. मोआवइस्ससि (पि ५२८)। कर्म. मोयाविज्जइ (कुप्र २६१)। वकृ. **मोयावंत** (सुपा १८६)।

मोआवण न [मोचन] छुटकारा कराना (सिरि ६१८; स ४७)।

मोआविअ, **मोइअ** वि [मोचित] छुड़वाया हुआ (पि ५५२; नाट—मृच्छ ८६; सुर १०, ६; सुपा ४७७; महा; सुर २, ३६; ६, ७८; सुपा २३२; भवि)।

मोइल पुं [दे] मत्स्य-विशेष (नाट)।

मोंड देखो **मुंड** = मुण्ड (हे १, ११६; २०२)।

मोक पुं [मोक] सर्प-कंचुक, साँप का केंचुल।

मोकल्ल सक [दे] भेजना; गुजराती में 'मोकलवु', मराठी में 'मोकलणें'। मोकल्लइ (भवि)।

मोक्क देखो **मुक्क** = मुक्त (षड्)।

मोक्कणिआ, **मोक्कणी** स्त्री [दे] कृष्ण कर्णिका, कमल का काला मध्य भाग (दे ६, १४०)।

मोक्कल देखो **मोकल्ल**; 'नियपियरं भणसु तुमं मोक्कलइ जेण सिग्घंपि' (सुपा ६१२)।

मोक्कल देखो **मुक्कल** (सुपा ५८०; हे ४; ३६६)।

मोक्कलिय वि [दे] १ प्रेषित, भेजा हुआ (सुपा ५२१)। २ विसृष्ट (सुपा १४०)।

मोक्ख देखो **मुक्ख** = मोक्ष (औप; कुमा; हे २, १७६; उप २६४ टी; भग; वसु)।

मोक्ख देखो **मुक्ख** = मूर्ख (उप ५५५)।

मोक्ख न [दे] वनस्पति-विशेष (सूअ २, २, ७)।

मोक्खण न [मोक्षण] मुक्ति, छुटकारा (स ४१८, सुर २, १७)।

मोग्गड पुं [दे] व्यन्तर-विशेष (सुपा ४०८)। देखो **मुग्गड**।

मोग्गर पुं [दे] मुकुल, कलिका, बौर (दे ६, १३६)।

मोग्गर पुं [मुद्गर] मुगरा, मोगरी। २ कमरख का पेड़ (हे १, ११६; २, ७७)। ३ पुष्पवृक्ष-विशेष, मोगरा का गाछ (पण्ण १—पत्र ३२)। ४ देखो **मुग्गर**। °**पाणि** पुं [°पाणि] एक जैन महर्षि (अंत १८)।

मोग्गरिअ वि [दे] संकुचित, मुकुलित (दे ६, १३६ टी)।

मोग्गलायण, **मोग्गल्लायण** न [मौद्गलायन, °ल्या°] १ गोत्र-विशेष (इक; ठा ७; सुज्ज १०, १६)। २ पुंस्त्री. उस गोत्र में उत्पन्न (ठा ७—पत्र ३६०)।

मोग्गाह देखो **मुग्गाह**। मोग्गाहइ (?) (धात्वा १४६)।

मोघ देखो **मोह** = मोघ; 'मोघमणोरहा' (पण्ह १, ३—पत्र ५५)।

मोच देखो **मोअ** = मोचय्। संकृ. **मोचिअ** (अभि ४७)।

मोच न [दे] अर्धजंघी, एक प्रकार का जूता (दे ६, १३६)।

मोच देखो **मोअ** = (दे) (सूअ १, ४, २, १२)।

मोचग देखो **मोअग** = मोचक (वसु)।

मोट्टाय अक [रम्] क्रीड़ा करना। मोट्टायइ (हे ४, १६८)।

मोट्टाइअ न [रत] रति-क्रीड़ा, रत, मैथुन (कुमा)।

मोट्टाइअ न [मोट्टायित] चेष्टा-विशेष, प्रिय-कथा आदि में भावना से उत्पन्न चेष्टा (कुमा)।

मोट्टिम न [दे] बलात्कार (पि २३७)। देखो **मुट्टिम**।

मोड सक [मोटय्] १ मोड़ना, टेढ़ा करना। २ भाँगना। मोडसि (सुर ७, ६)। वकृ. **मोडंत**, **मोडिंत**, **मोडयंत** (भवि; महा; स २५७)। कवकृ. **मोडिज्जमाण** (उप पृ ३४)। संकृ. **मोडेउं** (सुपा १३८)।

मोड पुं [दे] जूट, लट (दे ६, ११७)।

मोडग वि [मोटक] मोड़नेवाला (पण्ह १, ४—पत्र ७२)।

मोडण न [मोटन] मोड़न, मोड़ना (वज्जा ३८)।

मोडणा स्त्री [मोटना] ऊपर देखो (पण्ह १, ३—पत्र ५३)।

मोडिअ वि [मोटित] १ भग्न, भाँगा हुआ (गा ५४६; णाया १, ६—पत्र १५७; पण्ह १, ३—पत्र ५३)। २ आम्रेडित, मोड़ा हुआ (विपा १, ६—पत्र ६८; स ३३५)।

मोढ पुं [मोढ] एक वणिक्-कुल (कुप्र २०)।

मोढेरय न [मोढेरक] नगर-विशेष (दे ६, १०२; ती ७)।

मोण न [मौन] मुनिपन, वाणी का संयम, चुप्पी (औप; सुपा २३७; महा)। °**चर** वि [°चर] मौन व्रतवाला, वाणी का संयम-वाला, वाचंयम (ठा ५, १—पत्र २६६;

पण्ह २, १—पत्र १००)। °पय न [°पद] संयम, चारित्र (सूत्र १, १३, ६)।

मोणावणा स्त्री [दे] प्रथम प्रसूति के समय पिता की ओर से किया जाता उत्सव-पूर्वक निमन्त्रण (उप ७६८ टी)।

मोणि वि [मौनिन्] मौनवाला (उव; सुपा १४; संबोध २१)।

मोत्त देखो मुत्त = मुक्त (धर्मसं ७५)।

मोत्तव्व देखो मुंच।

मोत्ता देखो मुत्ता (से ७, २५; संक्षि ४; प्राकृ ६; षड् ८०)।

मोत्ति देखो मुत्ति = मुक्ति (पण्ह १, ५—पत्र ६४)।

मोत्तिअ देखो मुत्तिअ (गा ३१०; स्वप्न ६३; औप; सुपा २३१; महा; गउड)। °दाम न [°दाम] छन्द-विशेष (पिंग)।

मोत्तुआण, **मोत्तुं**, **मोत्तूण** } देखो मुंच = मुच्।

मोत्थ देखो मुत्थ (जी ६; संक्षि ४; पि १२५; प्रामा)।

मोदअ देखो मोअग = मोदक (स्वप्न ६०)। २ न. छन्द-विशेष (पिंग)।

मोब्भ [दे] देखो मुब्भ (दे ८, ४)।

मोर पुं [दे] श्वपच, चाण्डाल (दे ६, १४०)।

मोर पुं [मोर] १ पक्षि-विशेष, मयूर (हे १, १७१; कुमा)। २ छन्द-विशेष (पिंग)। °बंध पुं [°बन्ध] एक प्रकार का बन्धन (सुपा ३४५)। °सिहा स्त्री [°शिखा] एक महौषधि (ती ५)।

मोरउल्ला, **मोरकुल्ला** } अ. मुधा, व्यर्थ (हे २, २१४; कुमा; चउप्पन्न० पत्र—७७, सुमतिजिन-चरित्र)।

मोरंड पुं [दे] तिल आदि का मोदक, खाद्य-विशेष (राज)।

मोरग वि [मायूरक] मयूर के पिच्छों से निष्पन्न (आचा २, २, ३, १८)।

मोरत्तय पुं [दे] श्वपच, चाण्डाल (दे ६, १४०)।

मोरिय पुं [मौर्य] १ एक क्षत्रिय-वंश। २ मौर्य वंश में उत्पन्न (पि १३४)। °पुत्त पुं [°पुत्र] भगवान् महावीर का एक गणधर—प्रधान शिष्य (सम १६)।

मोरी स्त्री [मोरी] १ मयूर पक्षी की मादा, मोरनी (पि १६६; नाट—मृच्छ १८)। २ विद्या-विशेष (सुपा ४०१)।

मोलग पुं [दे· मौलक] बाँधने के लिए गाड़ा हुआ खूँटा (उव)।

मोलि देखो मउलि (काल; सम १६)।

मोल्ल देखो मुल्ल (हे १, १२४; उव; उप पृ १०४; णाया १, १—पत्र ६०; भग)।

मोस पुं [मोष] १ चोरी। २ चोरी का माल; 'राया जंपइ मोसं एसि अप्पसु' (सुपा २२१; महा)।

मोस पुंन [मृषा] झूठ, असत्य भाषण; 'चउव्विहे मोसे पण्णत्ते', 'दसविं मोसे पण्णत्ते' (ठा ४, १; १०; औप; कप्प)।

मोसग वि [मोषक] चोरी करनेवाला (कुप्र ४७)।

मोसलि, **मोसली** } स्त्री [दे· मुशली, मौशली] वस्त्रादि-निरीक्षण का एक दोष, वस्त्र आदि की प्रतिलेखना करते समय मुसल की तरह ऊँचे या नीचे भीत आदि का स्पर्श करना, प्रतिलेखना का एक दोष; 'वज्जेयव्वा य मोसली तइया' (उत्त २६, २६; २५; ओघ २६५, २६६)।

मोसा देखो मुसा (उवा; हे १, १३६)।

मोह सक [मोहय्] १ भ्रम में डालना। २ मुग्ध करना। मोहइ (भवि)। वकृ. मोहंत, मोहेंत (पउम ४, ८६; ११, ६६)। कृ. देखो मोहणिज्ज।

मोह देखो मऊह (हे १, १७१; कुमा; कुप्र ४३७)।

मोह वि [मोघ] १ निष्फल, निरर्थक (से १०, ७०; गा ४८२), 'मोहाइ पत्थणाए सो पुण सोएइ अप्पाणं' (अज्झ १७५; आत्म १)। क्रिवि. 'मोहं कओ पयासो' (चेइय ७५०)। २ असत्य, मिथ्या; 'मिच्छा मोहं विहलं अलिअं असच्चं असब्भूअं' (पाअ)।

मोह पुं [मोह] १ मूढता, अज्ञता, अज्ञान (आचा; कुमा; पण्ण १, १)। २ विपरीत ज्ञान (कुमा २, ५३)। ३ चित्त की व्याकुलता (कुमा ५, ५)। ४ राग, प्रेम। ५ काम-क्रीड़ा; 'मोहाउरा मणुस्सा तह कामदुहं सुहं बिति' (प्रासू २८; पण्ह १, ४)। ६ मूर्छा, बेहोशी (स्वप्न ३१; स ६६६)। ७ कर्म-विशेष, मोहनीय कर्म (कम्म ४, ६०; ६६)। ८ छन्द-विशेष (पिंग)।

मोहण न [मोहन] १ मुग्ध करना। २ मन्त्र आदि से वश करना (सुपा ५६६)। ३ मूर्छा, बेहोशी (निसा ६)। ४ वशीकरण, मुग्ध करनेवाला मन्त्रादि-कर्म (सुपा ५६६)। ५ काम का एक बाण। ६ प्रेम, अनुराग (कप्पू)। ७ मैथुन, रति-क्रिया (स ७६०; णाया १, ८; जीव ३)। ८ वि. व्याकुल बनानेवाला (स ५५७; ७४४)। ९ मोहक, मुग्ध करनेवाला; 'मोहणं पसूणंपि' (धर्मवि ६५; सुर ३; २६; कर्पूर २५)।

मोहणिज्ज वि [मोहनीय] १ मोह-जनक। २ न. कर्म-विशेष, मोह का कारण-भूत कर्म (सम ६६; भग; अंत; औप)।

मोहणी स्त्री [मोहनी] एक महौषधि (ती ५)।

मोहर न [मौखर्य] वाचाटता, बकवाद (पण्ह २, ५—पत्र १४८; पुप्फ १८०)।

मोहर वि [मौखर] वाचाट, बकवादी (ठा १०—पत्र ५१६)।

मोहरिअ वि [मौखरिक] ऊपर देखो (ठा ६—पत्र ३७१; औप; सुपा ५२०)।

मोहरिअ न [मौखर्य] वाचालता, बकवाद (उवा; सुपा ५१४)।

मोहि वि [मोहिन्] मुग्ध करनेवाला (भवि)।

मोहिणी स्त्री [मोहिनी] छन्द-विशेष (पिंग)।

मोहिय वि [मोहित] १ मुग्ध किया हुआ (पण्ह १, ४; द्र १४)। २ न. निधुवन, मैथुन, रति-क्रीड़ा (णाया १; ६—पत्र १६५)।

मोहुत्तिय वि [मौहूर्त्तिक] ज्योतिष-शास्त्र का जानकार (कुप्र ५)।

मौलिअ देखो मोरिय; 'णिवेदेह दाव णंदकुल-

णगकुलिसस्स मौलिअकुलपड्ढावकस्स अज-चाणकस्स' (मुद्रा ३०६)।

म्मि अ. पाद-पूर्त्ति में प्रयुक्त किया जाता अव्यय (पिंग)।

म्मिव देखो इव (प्राकृ २६)।

म्हस देखो भंस = भ्रंश्। म्हसइ (प्राकृ ७६)।

॥ इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि मयाराइसद्दसंकलणो
एगतीसइमो तरंगो समत्तो ॥

य

य पुं [य] तालु-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष, अन्तस्थ यकार (प्राप्र; प्रामा)।

य अ [च] १ हेतु-सूचक अव्यय (धर्मसं ३८५)। २ देखो च = अ (ठा ३, १; ८; पउम ६, ८४; १५, २; श्रा १२; आचा; रंभा; कम्म २, ३३; ४, ६; १०; देवेन्द्र ११; प्रासू २७)।

°य देखो °ज (आचा)।

°य वि [°द] देनेवाला (औप; राय; जीव ३)।

यउणा देखो जँउणा (संक्षि ७)।

°यंच सक [अञ्च्] १ गमन करना। २ पूजा करना। संकृ. °यंचिय (ठा ५, १—पत्र ३००)।

°यंत वि [यत] प्रयत्नशील, उद्योगी; 'अ-यंते' (सूअ २, २, ६३)।

°यंद देखो चंद (सुपा २२६)।

°यक्क देखो चक्क; 'दिसा-यक्कं' (पउम ६, ७१)।

°यड देखो तड = तट (गउड)।

°यण देखो जण = जन (सुर १, १२१)।

यणइण (अप) देखो जणइण; 'तो वि ण देउ यणद्दणउ गोअरीहोइ मणस्सु' (पि १४ टि)।

°यण्ण देखो कण्ण = कर्ण (पउम ६६, २८)।

°यत्तिअ वि [यात्रिक] यात्रा करनेवाला, भ्रमण करनेवाला; 'सगडसएहिं दिसायत्तिएहिं' (उवा; बृह १)।

यदावि अ [यद्यपि] अभ्युपगम-सूचक अव्यय, स्वीकार-द्योतक निपात (पंचा १४, ३६)।

यन्नोवइय देखो जण्णोवईय (उप ६४८ टी)।

यम देखो जम = यम; 'दो असा दो यमा' (ठा २, ३—पत्र ७७)।

°यर देखो कर = कर (गउड)।

°यल देखो तल = तल (उवा)।

या देखो जा = या; 'सुरनारगा य सम्मद्दिट्ठी जं यंति सुरमणुएसु' (विसे ४३११; कुमा ८, ८)।

याण सक [ज्ञा] जानना। याणइ, याणाइ, याणेइ, याणंति, याणामो, याणिमो (पि ५१०; उवा; भग; धर्मवि १७; वै ६३; प्रासू १०२)।

याण देखो जाण = यान (सम २)।

°याल देखो काल (पउम ६, २४३)।

याव (अप) देखो जाव = यावत् (कुमा)।

°यावदट्ठ वि [यावदर्थ] यथेष्ट, जितने की आवश्यकता हो उतना (दस ५, २, २)।

°युत्त देखो जुत्त = युक्त; 'एयम् अयुत्तं जम्हा' (अज्झ १६७; रंभा)।

येव } (पै. मा) देखो एव (पि ६०; येव्व } ९५)।

यिचिश (मा) } देखो चिट्ठ = स्था। यिचि-यिचिश्त (पै) } शदि (शाकारी भाषा) (प्राकृ १०५)। यिचिश्तदि (पै) (प्राकृ १२६)।

य्येव (शौ) देखो एव (हे ४, २८०)।

य्येव्व देखो येव (पि ९५)।

॥ इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि यआराइसद्दसंकलणो
बत्तीसइमो तरंगो समत्तो ॥

र

र पुं [र] मूर्ध-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष (सिरि १६६; पिंग)। °गण पुं [°गण] छन्दःशास्त्र-प्रसिद्ध मध्य-लघु अक्षरवाले तीन स्वरों का समुदाय (पिंग)।

र अ. पाद-पूरक अव्यय (हे २, २१७; कुमा)।

र अ [दे] निश्चय-सूचक अव्यय (दसनि १, १५२)।

रइ स्त्री [रति] १ काम-क्रीड़ा, सुरत, मैथुन (से १, ३२; कुमा)। २ कामदेव की स्त्री (कुमा)। ३ प्रीति, प्रेम, अनुराग (कुमा; सुपा ५११)। ४ कर्म-विशेष (कम्म २, १०)। ५ भगवान् पद्मप्रभ की मुख्य शिष्या (पव ८)। ६ पुं. भूतानन्द नामक इन्द्र का एक सेनापति (इक)। °अर, °कर वि [°कर] १ रति-जनक (गा ३२६)। २ पुं. पर्वत-विशेष (पगह १, ५; ठा १०; महा)। °कीला स्त्री [°क्रीडा] काम-क्रीडा (महा)। °केलि स्त्री [°केलि] वही अर्थ (काप्र २०१)। °घर न [°गृह] सुरत-मन्दिर, विलास-गृह (पि ३६६ ए)। °णाह, °नाह पुं [°नाथ] कामदेव (कुमा; सुर ६, ३१)। °पहु पुं [°प्रभु] वही अर्थ (कुमा)। °प्पभा स्त्री [°प्रभा] किन्नर नामक इन्द्र की एक अग्र-महिषी (इक; ठा ४, १—पत्र २०४)। °प्पिय पुं [°प्रिय] १ कामदेव (सुपा ७५)। २ एक इन्द्र। ३ किन्नर देवों की एक जाति (राज)। °प्पिया स्त्री [°प्रिया] वानव्यन्तरों के इन्द्र-विशेष की एक अग्र-महिषी (णाया २—पत्र २५२)। °भवण न [°भवन] कामक्रीडा-गृह (महा)। °मंत वि [°मत्] १ राग-जनक। २ पुं. कामदेव, कन्दर्प (तंदु ४६)। °मंदिर न [°मन्दिर] शयन-गृह (पाअ)। °रमण पुं [°रमण] कामदेव (सुपा ४; २८६; कप्पू)। °लंभ पुं [°लम्भ] १ सुरत की प्राप्ति। २ कामदेव (से ११, ८)। °वइ पुं [°पति] कामदेव (कुमा; सुपा २६२)। °वढ्ढि स्त्री [°वृद्धि] विद्या-विशेष (पउम ७, १४४)। °सुंदरी स्त्री [°सुन्दरी] एक राज-कन्या (उप ७२८ टी)। °सुहव पुं [°सुभग] कामदेव (कुमा)। °सेणा स्त्री [°सेना] किन्नरेन्द्र की एक अग्र-महिषी (इक; ठा ४, १—पत्र २०४)। °हर न [°गृह] शयन-गृह, सुरतमन्दिर (उप ६४८ टी, महा)।

रइ पुं [रवि] सूर्य, सूरज (गा ३४; से १, १४; ३२; कप्पू)।

रइअ वि [रचित] बनाया हुआ, निर्मित (सुर ४, २४४; कुमा; औप; कप्प)।

रइअ वि [रचित] महल आदि की पीठ-भित्ति (अणु १५४)।

रइआव सक [रचय्] बनवाना। संकृ. रइआविअ (ती ३)।

रइगेल्ल वि [दे] अभिलषित (दे ७, ३)।

रइगेल्ली स्त्री [दे] रति-तृष्णा (दे ७, ३)।

रइज्जंत देखो रय = रचय्।

रइलक्ख न [दे] जघन, नितम्ब (दे ७, १३; षड्)।

रइलक्ख न [दे. रतिलक्ष] रति-संयोग, मैथुन (दे ७, १३)।

रइल्लिय वि [रजस्वल] रज से युक्त, रजवाला (पि ५६५)।

रइवाडिया देखो राय-वाडिआ; 'सामिय रइवाडियासमओ' (सिरि १०६)।

रईसर पुं [रतीश्वर] कामदेव, कन्दर्प (कुमा)।

रउताणिया स्त्री [दे] रोग-विशेष, पामा, खुजली (सिरि ३०६)।

रउद्द देखो रोद्द = रौद्र; 'रउद्दखुद्देहिं अखोह-णिज्जो' (यति ४२; भवि)।

रउरव वि [रौरव] भयंकर, घोर। °काल पुं [°काल] माता के उदर में पसार किया जाता समय-विशेष; 'नवमासहिं नियकुक्खहिं धरियउ पुणु रउरवकालहो नीसरियउ' (भवि)।

रउस्सल वि [रजस्वल] रजो-युक्त, धूलि-युक्त (भग ७, ७—पत्र ३०५)।

रओ° देखो रय = रजस् (पिंड ६ टी; सण)।

रंक वि [रङ्क] गरीब, दीन (पिंग)।

रंखोल अक [दोलय्] १ झूलना। २ हिलना, चलना, काँपना। रंखोलइ (हे ४, ४८; वज्जा ६४)।

रंखोलिय वि [दोलित] कम्पित (गउड)।

रंखोलिर वि [दोलितृ] झूलनेवाला (गउड; कुमा; पाअ)।

रंग अक [रङ्ग्] इधर-उधर चलना। वकृ. रंगंत (कप्प; पउम १०, ३१; पगह १, ३—पत्र ५५)।

रंग सक [रङ्गय्] रँगना। कर्म. रंगिज्जइ (संबोध १७)। वकृ. 'रायगिहं वरनयरं वर-नय-रंगत-मंदिरं अत्थि' (कुम्मा १८)।

रंग वि [राङ्ग] रँगा हुआ, रंग कर बनाया हुआ (दसनि २, १७)।

रंग न [दे] राँग, राँगा, धातु-विशेष, सीसा (दे ७, १; से २, २६)।

रंग पुं [रङ्ग] १ राग, प्रेम (सिरि ५१५)। २ नाट्यशाला, प्रेक्षा-भूमि (पाअ; सुपा १, कुमा)। ३ युद्ध-मण्डप, जय-भूमि (धर्मसं ७८३)। ४ संग्राम, लड़ाई (पिंग)। ५ रक्त वर्ण, लाली (से २, २६)। ६ वर्ण, रँग (भवि)। ७ रँगना, रंजन, रंग चढाना (गउड)। °अ वि [°द] कुतूहल-जनक (से ६, ४२)। °वलि स्त्री [°आवलि] रंगोली (चउप्पन्न० पत्र ३२६ गा ७१४)।

रंगण न [रङ्गन] १ राग, रँगना। २ पुं. जीव, आत्मा (भग २०, २—पत्र ७७६)।

रंगिर वि [रङ्गितृ] चलनेवाला (सुपा ३)।

रंगिल्ल वि [रङ्गवत्] रँगवाला (उर ६, २)।

रंज सक [रञ्जय्] १ रँग लगाना। २ खुशी करना। रंजए, रंजेइ (वज्जा १३६; हे ४, ४६)। कर्म. रंजिज्जइ (महा)। वकृ. रंजंत (संबे ३)। संकृ. रंजिऊण (पि ५८६)। कृ. रंजियव्व (आत्महि ६)।

रंजग वि [रञ्जक] रञ्जन करनेवाला (रंभा)।

रंजण न [रञ्जन] १ रँगना (विसे २६६१)। २ खुशी करना; 'परचित्तरंजणे' (उप ६८६

टीः संवे ५)। ३ पुं. छन्द-विशेष (पिंग)। ४ वि. खुशी करनेवाला, रागजनक (कुमा)।

रंजण पुं [दे] १ घड़ा, कुम्भ (दे ७, ३)। २ कुण्डा, पात्र-विशेष (दे ७, ३; पाम्र)।

रंजविय } वि [रञ्जित] राग-युक्त किया
रंजिअ } हुआ (सण; से ६; ४८; गउड; महा; हेका २७२)।

रंडा स्त्री [रण्डा] राँड़, विधवा (उप पृ ३१३; वज्जा ४४; कप्पू; पिंग)।

रंढुअ न [दे] रज्जु, रस्सी; गुजराती में 'राढवु' (दे ७, ३)।

रंध सक [रध्, राधय्] राँधना, पकाना। 'रंधो राधयतेः स्मृतः' रंधइ (प्राकृ ७०), रंधेहि (स २४६)। वकृ. **रंधंत** (णाया १, ७—पत्र ११७)। संकृ. **रंधिऊण** (कुप्र २०५)।

रंध न [रन्ध्र] छिद्र, विवर (गा ६५२; रंभा; भवि)।

रंधण न [रन्धन, राधन] राँधना; पचन, पाक (गा १४; पव ३८; सूअनि १२१ टीं; सुपा १२; ४०१)। °**घर** न [°गृह] पाक-गृह (रयण ३१)।

रंधण न [रन्धन] पाक-गृह, रसोईघर (आचा २, १०, १४)।

रंप सक [तक्ष्] छिलना, पतला करना। रंपइ (हे ४, १९४; प्राकृ ६५; षड्)।

रंपण न [तक्षण] तनू-करण, पतला करना (कुमा)।

रंफ देखो **रंप**। रंफइ, रंफए (हे ४, १९४; षड्)।

रंफण देखो **रंपण** (कुमा)।

रंभ सक [गम्] जाना, गति करना। रंभइ (हे ४, १६२), रंभंति (कुमा)।

रंभ देखो **रंफ**। रंभइ (धात्वा १४९)।

रंभ सक [आ + रभ्] आरम्भ करना। रंभइ (षड्)।

रंभ पुं [दे] अन्दोलन-फलक, हिंडोले का तख्ता (दे ७, १)।

रंभा स्त्री [रम्भा] १ कदली, केला का गाछ (सुपा २५४; ६०५; कुप्र ११७; पाम्र)। २ देवांगना-विशेष, एक अप्सरा (सुपा २५४; रयण ५)। ३ वैरोचन नामक बलीन्द्र की एक अग्र-महिषी (ठा ५, १—पत्र ३०२; णाया २—पत्र २५१)। ४ रावण की एक पत्नी (पउम ७४, ८)।

रक्ख सक [रक्ष्] रक्षण करना, पालन करना। रक्खइ (उव; महा)। भूका. रक्खीअ (कुमा)। वकृ. **रक्खंत** (गा ३८; औप; मा ३७)। कवकृ. **रक्खीअमाण** (नाट—मालती २८)। कृ. **रक्ख, रक्खणिज्ज, रक्खियव्व, रक्खेयव्व** (से ३, ५; सार्ध १००; गउड; सुपा २४०)।

रक्ख पुंन [रक्षस] राक्षस (पाम्र; कुप्र ११३; सुपा १३०, सट्ठि ६ टी; संबोध ४४)।

रक्ख वि [रक्ष] १ रक्षक, रक्षा करनेवाला (उप पृ ३६८; कप्प)। २ पुं. एक जैन मुनि (कप्प)।

रक्ख देखो **रक्ख** = रक्ष्।

रक्खअ } वि [रक्षक] रक्षण-कर्ता (नाट—
रक्खग } मालवि ५३; रंभा; कुप्र २३३; सार्ध ९९)।

रक्खण न [रक्षण] रक्षा, पालन (सुर १३, १६७; गउड; प्रासू २३)।

रक्खणा स्त्री [रक्षणा] ऊपर देखो (उप ८५०; स ६९)।

रक्खणिया स्त्री [दे] रखी हुई स्त्री, रखेलिन, रखनी, रखात (सुपा ३८३)।

रक्खवाल वि [दे] रखवाला, रक्षा करनेवाला (महा)।

रक्खस पुं [राक्षस] १ देवों की एक जाति (पण्ह १, ४—पत्र ६८)। २ विद्याधर-मनुष्यों का एक वंश (पउम ५, २५२)। ३ वंश-विशेष में उत्पन्न मनुष्य, एक विद्याधरजाति; 'तेणं चिय खयराणं रक्खसनामं कयं लोए' (पउम ५, २५७)। ४ निशाचर, क्रव्याद (से १५, १७; नाट—मृच्छ १३२)। ५ अहोरात्र की तीसवाँ मुहूर्त्त (सम ५१; सुज्ज १०, १३)। °**उरी** स्त्री [°पुरी] लंका नगरी (से १२, ८४)। °**णअरी** स्त्री [°नगरी] वही अर्थ (से १२, ७८)। °**णाह** पुं [°नाथ] राक्षसों का राजा (से ८, १०४)। °**त्थ** न [°अस्त्र] अस्त्र-विशेष (पउम ७१, ६३)। °**दीव** पुं [°द्वीप] सिंहल द्वीप (पउम ५, १२६)। °**नाह** देखो °**णाह** (पउम ६, ३६)। °**वइ** पुं [°पति] राक्षसों का मुखिया (पउम ५, १२३; से ११, १)। °**ाहिव** पुं [°ाधिप] वही अर्थ (से १५, ८७; ९१)।

रक्खसिंद पुं [राक्षसेन्द्र] राक्षसों का राजा (पउम १२, ४)।

रक्खसी स्त्री [राक्षसी] १ राक्षस की स्त्री (नाट—मृच्छ २३८)। २ लिपि-विशेष (विसे ४६४ टी)।

रक्खसेंद देखो **रक्खसिंद** (से १२, ७७)।

रक्खा स्त्री [रक्षा] १ रक्षण, पालन (श्रा १०; सुपा १०३; ११३)। २ राख, भस्म; 'सो चंदणं रक्खकए दहिज्जा' (सत्त २८; सुपा ६५७)।

रक्खिअ वि [रक्षित] १ पालित (गउड; गा ३३३)। २ पुं. एक प्रसिद्ध जैन महर्षि (कप्प; विसे २२८८)।

रक्खिआ देखो **रक्खसी** (रंभा १७)।

रक्खी स्त्री [रक्षी] भगवान् अरनाथ की मुख्य साध्वी (सम १५२; पव ८)।

रक्खोवग वि [रक्षोपग] रक्षण में तत्पर (राय ११३)।

रगिल्ल [दे] देखो **रइगेल्ल** (षड्)।

रग्ग देखो **रत्त** = रक्त (हे २, १०; ८९; षड्)।

रग्गय न [दे] कुसुम्भ-वस्त्र (दे ७, ३; पाम्र; गउड)।

रघुस पुं [रघुष] हरिवंश का एक राजा (पउम २२, ९९)।

रच्च अक [दे. रञ्ज्] राचना, आसक्त होना, अनुराग करना। रच्चइ, रच्चंति, रच्चेह (कुमा; वज्जा ११२)। कर्म. 'रत्ते रच्चिज्जए जम्हा' (कुप्र १३२)। वकृ. **रच्चंत** (भवि)। प्रयो. रच्चावंति (वज्जा ११२)।

रच्चण न [दे. रञ्जन] १ अनुराग। २ वि. अनुराग करनेवाला, राचनेवाला (कुमा)।

रच्चिर वि [दे. रञ्जित्] राचनेवाला (कुमा)।

रच्छा देखो **रक्खा** (रंभा १६)।

रच्छा स्त्री [रथ्या] मुहल्ला (गा ११६; औप; कस)।

रच्छामय पु [दे. रथ्यामृग] श्वान, कुत्ता (दे ७, ४)।

रज देखो **रय** = रजस् (कुमा)।

रजक } पुंस्त्री [रजक] धोबी, कपड़ा धोने
रजग } का धन्धा करनेवाला (श्रा १२; दे ५, ३२)। स्त्री. °**की** (दे १, ११४)।

रजय देखो **रयय** = रजत (इक)।

रज्ज अक [रञ्ज्] १ अनुराग करना, आसक्त होना। २ रँगाना, रँग-युक्त होना। रज्जइ (आचा; उव), रज्जह (गाया १, ८—पत्र १४८)। भवि. रज्जिहिति (औप)। वकृ. **रज्जंत, रज्जमाण** (से १०, २०; गाया १, १७; उत्त २६, ३)। कृ. **रज्जियव्व** (पराह २, ५—पत्र १४६)।

रज्ज न [राज्य] १ राज, राजा का अधिकृत देश। २ शासन, हुकूमत (गाया १, ८; कुमा; दं ४७; भग, प्रासू)। °**पालिया** स्त्री [°पालिका] एक जैन मुनि-शाखा (कप्प)। °**वइ** पुं [°पति] राजा (कप्प)। °**सिरी** स्त्री [°श्री] राज्य-लक्ष्मी (महा)। °**ाहिसेय** पुं [°ाभिषेक] राजगद्दी पर बैठाने का उत्सव (पउम ७७, ३६)।

रज्जव पुंन. नीचे देखो; 'खररज्जवेसु बद्धा' (पउम ३६, ११६)।

रज्जु स्त्री [रज्जु] १ रस्सी (पाग्र; उवा)। २ एक प्रकार की नाप; 'चउदसरज्जू लोगो' (पव १४३)।

रज्जु वि [दे] लेखक, लिखने का काम करनेवाला (कप्प)। °**सभा** स्त्री [°सभा] १ लेखक-गृह। २ शुल्क-गृह, चूँगी-घर; 'हत्थिपालस्स रन्नो रज्जुसभाए' (कप्प)।

रज्झिअ देखो **रहिअ** = रहित; 'अरज्झिया-भिताबा तहवी तविति' (सूत्र १,५,१,१७)।

रट्ठ न [राष्ट्र] देश, जनपद (सुपा ३०७; महा)। °**उड, °कूड** पुं [°कूट] राज-नियुक्त प्रतिनिधि, सूबेदार (विपा १, १ टी—पत्र ११; विपा १, १—पत्र ११)।

रट्ठिअ वि [राष्ट्रिय] १ देश-सम्बन्धी। २ पुं. नाटक की भाषा में राजा का साला (अभि १६४)।

रट्ठिअ पुं [राष्ट्रिक] देश की चिन्ता के लिए नियुक्त राज-प्रतिनिधि, सूबेदार (पराह १, ५—पत्र ६४)।

रड अक [रट्] १ रोना। २ चिल्लाना। रडइ (भवि)। वकृ. **रडंत** (हे ४, ४४५; भवि)।

रडण न [रटन] चिल्लाहट, चीख (पिंड २२५)।

रडिय न [रटित] १ रुदन, रोना (पराह २, ५)। २ आवाज करना, शब्द-करण; 'परहुय-वहूय रडियं कुहूकुहूमहुरसद्देण' (रंभा)। ३ चिल्लाना, चीख (गाया १,१—पत्र ६३)। ४ वि. कलहायित, झगड़ालू, झगड़ाखोर, 'कलहाइअं रडिअं' (पाग्र)।

रडरडिय न [रटरटित] शब्द-विशेष, वाद्य-विशेष की आवाज (सुपा ५०)।

रड्डु वि [दे] खिसक कर गिरा हुआ, गुजराती में 'रडेलु' (कुप्र ४५६)।

रड्डा स्त्री [रड्डा] छन्द-विशेष (पिंग)।

रण पुंन [रण] १ संग्राम, लड़ाई (कुमा; पाग्र)। २ पुं. शब्द, आवाज (पाग्र)। °**खंभउर** न [°स्तम्भपुर] अजमेर के समीप का एक प्राचीन नगर; 'रणखंभउरजिणहरे चडाविया कणयमयकलसा' (मुणि १०६०१)।

रणक्कार पुं [रणत्कार] शब्द-विशेष (गउड)।

रणझण अक [रणझणाय्] 'रन् झन्' आवाज करना। रणझणइ (वज्जा १२८)। वकृ. **रणझणंत** (भवि)।

रणझणिर वि [रणझणायितृ] 'रन् झन्' आवाज करनेवाला (सुपा ६४१; धर्मवि ८८)।

रणरण अक [रणरणाय्] 'रन् रन्' आवाज करना। वकृ. **रणरणंत** (पिंग)।

रणरण } पुं [दे. रणरणक] १ निःश्वास,
रणरणय } नीसास; 'अइउण्हा रणरणया दुप्पेच्छा दूसहा दुरालोया' (वज्जा ७८)। २ उद्वेग, पीड़ा, अधृति; 'गरुयपियसंगमासा-भंससमुच्छलियरणरणाइन्नं' (सुर ४, २३०; पाग्र)। ३ उत्कण्ठा, औत्सुक्य (दे १, १३६; गउड; रुक्मि ४८; संवे २)।

रणरणाय देखो **रणरण** = रणरणाय्। वकृ. **रणरणायंत** (पउम ६४, ३६)।

रणिअ न [रणित] शब्द, आवाज (सुर १, २४८)।

रणिर वि [रणितृ] आवाज करनेवाला (सुपा ३२७; गउड)।

रण्ण न [अरण्य] जंगल, अटवी (हे १, ६६; प्राप्र; औप)।

रत्त पुं [रक्त] १ लाल वर्ण, लाल रंग। २ कुसुंभ। ३ वृक्ष-विशेष, हिज्जल का पेड़ (हे २, १०)। ४ न. कुंकुम। ५ ताम्र, ताँबा। ६ सिंदूर। ७ हिंगुल। ८ खून, रुधिर। ९ राग (प्राप्र)। १० वि. रँगा हुआ (हेका २७२)। ११ लाल रँगवाला (पाग्र)। १२ अनुराग-युक्त (ओघ ७५७; प्रासू १५५; १६०)। °**कंबला** स्त्री [°कम्बला] मेरु पर्वत के पराडक वन में स्थित एक शिला, जिसपर जिनदेवों का अभिषेक किया जाता है (ठा २, ३—पत्र ८०)। °**कूड** न [°कूट] शिखर-विशेष (राज)। °**कोरिंटय** पुं [°कुरण्टक] वृक्ष-विशेष (पउम ५३, ७६)। °**क्ख, °च्छ** वि [°क्ष] १ लाल आँखवाला (राज; सुर २, ६)। स्त्री. °**च्छी** (ओघभा २२ टी)। २ पुं. महिष, भैंसा (दे ७, १३)। °**ट्ठ** पुं [°र्थ] विद्याधर वंश का एक राजा (पउम ५, ४४)। °**धाउ** पुं [°धातु] कुण्डल पर्वत का एक शिखर (दीव)। °**पड** पुं [°पट] परिव्राजक, संन्यासी (गाया १, १५—पत्र १६३)। °**प्पवाय** पुं [°प्रपात] द्रह-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७३)। °**प्पह** पुं [°प्रभ] कुण्डल-पर्वत का एक शिखर (दीव)। °**रयण** न [°रत्न] रत्न की एक जाति; पद्म-राग मणि (औप)। °**वई** स्त्री [°वती] एक नदी (सम २७; ४३; इक)। °**वड** देखो °**पड** (सुख ८, १३)। °**सुभद्दा** स्त्री [°सुभद्रा] श्रीकृष्ण की एक भगिनी (पराह १, ४—पत्र ८५)। °**ासोग, °ासोय** पुं [°ाशोक] लाल अशोक का पेड़ (गाया १, १; महा)।

°**रत्त** पुं [°रात्र] रात, निशा (जी ३४)।

रत्तग देखो **रत्त** = रक्त (महा)।

रत्तंदण न [रक्तचन्दन] लाल चन्दन (सुपा १८१)।

रत्तक्खर न [दे] सीधु, मद्य-विशेष (दे ७, ४)।
रत्तच्छ पुं [दे] १ हंस। २ व्याघ्र (७, १३)।
रत्तडि (अप) देखो रत्ति = रात्रि (पि ५९९)।
रत्तय न [दे. रक्तक] बन्धूक वृक्ष का फूल (दे ७, ३)।
रत्ता स्त्री [रक्ता] एक नदी (सम २७; ४३, इक)। °वइप्पवाय पुं [°वतीप्रपात] द्रह-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७३)।
रत्ति स्त्री [दे] आज्ञा, हुकुम (दे ७, १)।
रत्ति स्त्री [रात्रि] रात, निशा (हे २, ७९; कुमा; प्रासू ६०)। °अंधय वि [°अन्धक] रात को नहीं देख सकनेवाला (गा ६६७; हेका २६)। °अर वि [°चर] १ रात में विहरनेवाला। २ पुं. राक्षस (षड्)। °दिवह न [°दिवस] रात-दिन, अहर्निश (पि ८८)। देखो राइ = रात्रि।
रत्तिचर देखो रत्ति = अर (धर्मवि ७२)।
रत्तिदिअह न [रात्रिदिवस] रात-दिन, अहर्निश, निरन्तर (अच्चु ७८)।
रत्तिदिय } न [रात्रिन्दिव] ऊपर देखो
रत्तिंदिव } (पउम ८, १६४; ७५, ८५)।
रत्तिंध वि [रात्र्यन्ध] जो रात में न देख सकता हो वह (प्रासू १७५)।
रत्तीअ पुं [दे] नापित, हजाम (दे ७, २; पाअ)।
रत्तुप्पल न [रक्तोत्पल] लाल कमल (पण्ह १, ४)।
रत्तोआ स्त्री [रक्तोदा] एक नदी (इक)।
रत्तोप्पल देखो रत्तुप्पल (नाट—मृच्छ १४५)।
रत्था देखो रच्छा (गा ४०; अंत १२; सुर १, ६६)।
रद्ध वि [रद्ध, राद्ध] राँधा हुआ, पक्व (पिंड १६५; सुपा ६३६)।
रद्धि वि [दे] प्रधान, श्रेष्ठ (दे ७, २)।
रन्न वि रण्ण (सुपा ४०१; कुमा)।
रप्प सक [आ + क्रम्] आक्रमण करना। रप्पइ (प्राकृ ७३)।
रप्फ पुं [दे] वल्मीक, गुजराती में 'राफडो' (दे ७, १; पाअ)। २ रोग-विशेष; 'करि कंपु पायमूलिसु रप्फय' (सण)।
रप्फडिआ स्त्री [दे] गोधा, गोह (दे ७, ४)।
रब्बा वि [दे] राब, यवागू (श्रा १४; उर २, १२; धर्मवि ४२)।
रभस देखो रहस = रभस (गा ८७२; ८९४; ९३४)।
रम अक [रम्] १ क्रीड़ा करना। २ संभोग करना। रमइ, रमए, रमंते, रमिज्ज, रमेज्जा (कुमा)। भवि. रमिस्सदि, रमिहिइ (कुमा)। कर्म. रमिज्जइ (कुमा)। वकृ. रमंत, रममाण (गा ४४; कुमा)। संकृ. रमिअ, रमिउं, रमिऊण, रंतूण (हे २, १४६; ३, १३६; महा; पि ३१२), रमेप्पि, रम्मेप्पिणु, रमेवि (अप) (पि ५८८)। हेकृ. रमिउं (उप पृ ३८)। कृ. रमिअव्व (गा ४६१), देखो रमणिज्ज, रमणीअ, रम्म। प्रयो. रमावेंति (पि ५५२)।
रमण न [रमण] १ क्रीडा, क्रीडन। २ सुरत, संभोग, रति-क्रीड़ा (पव ३८; कुमा; उप पृ १८७)। ३ स्मर-कूपिका, योनि (कुमा)। ४ पुं. जघन, नितम्ब (पाअ)। ५ पति, वर, स्वामी (पउम ५१, १६; पिंग)। ६ छन्द-विशेष (पिंग)।
रमणिज्ज वि [रमणीय] १ सुन्दर; मनोहर, रम्य (प्राप्र; पाअ; अभि २००)। २ न. एक देव-विमान (सम १७)। ३ पुं. नन्दीश्वर द्वीप के मध्य में उत्तर दिशा की ओर स्थित एक अञ्जन-गिरि (पव २६९ टी)। ४ एक विजय, प्रान्त-विशेष (ठा २, ३—पत्र ८०)।
रमणी स्त्री [रमणी] १ नारी, स्त्री (पाअ; उप पृ १८७; प्रासू १५५; १८०)। २ एक पुष्करिणी (इक)।
रमणीअ वि [रमणीय] रम्य, मनोरम (प्राप्र; स्वप्न ४०; गउड; सुपा २५५; भवि)।
रमा स्त्री [रमा] लक्ष्मी; श्री (कुम्मा ३)।
रमिअ देखो रम।
रमिअ वि [रत] १ क्रीडित, जिसने क्रीडा की हो वह (कुमा ४, ५०)। २ न. रमण, क्रीडा (णाया १, ९—पत्र १६५; कुमा; सुपा ३७६; प्रासू ६५)।
रमिअ वि [रमित] रमाया हुआ (कुमा ३, ८९)।
रमिर वि [रन्तृ] रमण करनेवाला (कुमा)।
रम्म वि [रम्य] १ मनोरम, रमणीय, सुन्दर (पाअ; से ६, ४७; सुर १, ६६; प्रासू ७१)। २ पुं. विजय-विशेष, एक प्रान्त (ठा २, ३—पत्र ८०)। ३ चम्पक का गाछ (से ६, ४७)। ४ न. एक देव-विमान (सम १७)।
रम्मग } पुं [रम्यक] १ एक विजय, प्रान्त-
रम्मय } विशेष (ठा २, ३—पत्र ८०)। २ एक युगलिक-क्षेत्र, जंबू-द्वीप का वर्ष-विशेष (सम १२; ठा २, ३—पत्र ६७; इक)। ३ न. एक देव-विमान (सम १७)। ४ पर्वत-विशेष का एक कूट (जं ४)।
रम्ह देखो रंफ। रम्हइ (प्राकृ ६५)।
रय सक [रञ्ज्] रँगना, 'नो धोएजा, नो रएज्जा, नो धोयरत्ताइं वत्थाइं धारेज्जा' (आचा)।
रय सक [रचय्] बनाना, निर्माण करना। रयइ, रएइ (हे ४,९४; षड्; महा)। कवकृ. रइज्जंत (से ८, ८७)।
रय पुंन [रजस्] १ रेणु, धूल (औप; पाअ; कुप्र २१)। २ पराग, पुष्प-रज (से ३, ४८)। ३ सांख्य-दर्शन में उक्त प्रकृति का एक गुण (कुप्र २१)। ४ बध्यमान कर्म (कुमा ७, ५८; चेइय ६२२; उव)। °त्ताण न [°त्राण] जैन मुनि का एक उपकरण (ओघ ६६८; पण्ह २, ५—पत्र १४८)। °स्सला स्त्री [°स्वला] ऋतुमती स्त्री (दे १, १२५)। °हर पुंन [°हर] जैन मुनि का एक उपकरण (संबोध १५)। °हरण न [°हरण] वही अर्थ (णाया १, १; कस)।
रय वि [रत] १ अनुरक्त, आसक्त (औप; उव; सुर १, १२; सुपा ३०६; प्रासू १६६)। २ स्थित (से ६, ४२)। ३ न. रति-कर्म, मैथुन (सम १५; उव; गा १५५; स १८०; वज्जा १००; सुपा ४०३)।
रय पुं [रय] वेग (कुमा; से २, ७; सण)।
रय देखो रव (पउम ११४, १७)।
रयग देखो रयय = रजक (श्रा १२; सुपा ५८८)।
रयण न [रजन] रँगना; रँग-युक्त करना (सूअ १, ९, १२)।

रयण वि [रचन] करनेवाला, निर्माता; 'चेडीसचितारयणु' (सण)।

रयण पुं [रदन] दाँत, दशन (उप ६८६ टी; पाअ; काप्र १७२; नाट. रत्ना १३)।

रयण पुंन [रत्न] १ माणिक्य आदि बहुमूल्य पत्थर, मणि; 'दुवे रयणा समुप्पन्ना' (निर १, १; उप ५६३; णाया १, १; सुपा १४७; जी ३; कुमा; हे २, १०१)। २ श्रेष्ठ, स्वजाति में उत्तम (सण २६; कुमा ३, ४७); 'तहवि हु चंद-सरिच्छा विरला रयणायरे रयणा' (वज्जा १५६)। ३ छन्द-विशेष (पिंग)। ४ द्वीप-विशेष (णाया १, ६; पउम ५५, १७)। ५ पर्वत-विशेष का एक कूट (ठा ४, २; ८)। ६ पुं. ब. रत्न-द्वीप का निवासी (पउम ५५, १७)। °उर न [°पुर] नगर-विशेष (सण)। °चित्त पुं [°चित्र] विद्याधर वंश का एक राजा (पउम ५, १५)। °दीव पुं [°द्वीप] द्वीप-विशेष (णाया १, ६—पत्र १६५)। °निहि पुं [°निधि] समुद्र, सागर (सुपा ७, १२६)। °पुढवी स्त्री [°पृथिवी] पहली नरक-भूमि, रत्नप्रभा नामक नरक-पृथिवी (स १३२)। °पुर देखो °उर (कुप्र ६; महा; सण)। °प्पभा, °प्पहा स्त्री [°प्रभा] १ पहली नरक-भूमि (ठा ७—पत्र ३८८; औप; भग)। २ भीम नामक राक्षसेन्द्र की एक पटरानी (ठा ४, १—पत्र २०४)। ३ रत्न का तेज (स १३३)। °मय वि [°मय] रत्नों का बना हुआ (महा)। °माला स्त्री [°माला] छन्द-विशेष (अजि २४)। °मालि पुं [°मालिन्] विद्याधर-वंश में उत्पन्न नमि-राज का एक पुत्र (पउम ५, १४)। °मुस वि [°मुष्] रत्नों को चुरानेवाला (षड्)। °रह पुं [°रथ] विद्याधर वंश का एक राजा (पउम ५, १४)। °रासि पुं [°राशि] समुद्र (प्राकृ)। °वइ पुं [°पति] रत्नों का मालिक, धनी, श्रीमंत (सुपा २६६)। °वई स्त्री [°वती] एक रानी (रयण ३)। °वज्ज पुं [°वज्र] विद्याधर-वंशीय एक राजा (पउम ५, १४)। °वह वि [°वह] रत्न-धारक (गउड १०७१)। °संचय न [°संचय] १ रुचक पर्वत का कूट (इक)। २ एक नगर (इक; सुर ३, २०)। °संचया स्त्री [°संचया] १ मंगलावती नामक विजय की राजधानी (ठा २, ३—पत्र ८०)। २ ईशानेन्द्र की वसुन्धरा-नामक इन्द्राणी की एक राजधानी (इक)। °समया स्त्री [°समया] मंगलावती नामक विजय की एक राजधानी (इक)। °सार पुं [°सार] १ एक राजा (राज)। २ एक शेठ का नाम (उप ७२८ टी)। °सिंह पुं [°सिंह] एक जैन आचार्य, संवेगचूलिकाकुलक कर्त्ता (संवे १२)। °सिंह पुं [°शिख] एक राजा (उप १०३१ टी)। °सेहर पुं [°शेखर] १ एक राजा (रयण ३)। २ विक्रम की पनरहवीं शताब्दी में विद्यमान एक जैन आचार्य और ग्रंथकार (सिरि १३४०)। °ाअर, °ागर पुं [°ाकर] १ रत्न की खान (षड्)। २ समुद्र (पाअ; सुपा ३७; प्रासू ६७; णाया १, १७—पत्र २२८)। °ाभा स्त्री [°ाभा] देखो °प्पभा (उत्त ३६, १५७)। °ामय देखो °मय (महा; औप)। °ायरसुअ पुं [°ाकरसुत] १ चन्द्रमा। २ एक वणिक्-पुत्र (श्रा १६)। °ावलि, °ावली स्त्री [°ावलि, °ावली] १ रत्नों का हार (सम्म २२)। २ तप-विशेष (अंत २५)। ३ ग्रन्थ-विशेष (दे ८, ७७)। ४ एक विद्याधर-राजकन्या (पउम ६, ५२)। °ावह न [°ावह] नगर-विशेष (महा)। °ासव पुं [°ास्रव] रावण का पिता (पउम ७, ५६; ७१)। °ासवसुअ पुं [°ास्रवसुत] रावण (पउम ८, २२१)। °ाहिय वि [°ाधिक] ज्येष्ठ, अवस्था में बड़ा (राज)।

रयणप्पभिय वि [रात्नप्रभिक] रत्नप्रभा-संबन्धी (पंच २, ६६)।

रयणा स्त्री [रचना] निर्माण, कृति (उत्त १५, १८; चेइय ८६६; सुपा ३०४; रंभा)।

रयणा स्त्री [रत्ना] रत्नप्रभा नामक नरक-भूमि (पव १७५)।

रयणि पुंस्त्री [रत्नि] एक हाथ की नाप, बद्ध-मुष्टि हाथ का परिमाण (कस; पव ५८; १७६)।

रयणि स्त्री [रजनि] देखो रयणी = रजनी (णाया १, २—पत्र ७६; कप्प)। °अर पुं [°चर] १ राक्षस (से १०, ६६; पाअ)। °अर, °कर पुं [°कर] चन्द्रमा (हे १, ८ टि; कप्प)। °णाह, °नाह पुं [°नाथ] चन्द्रमा (पाअ; सुपा ३३)। °भत्त न [°भक्त] रात्रि में खाना (सुपा ४६५)। °रमण पुं [°रमण] चन्द्रमा (सण)। °वल्लह पुं [°वल्लभ] चन्द्रमा (कप्पू)। °विराम पुं [°विराम] प्रातःकाल, सुबह (पाअ)।

रयणिंद पुं [रजनीन्द्र] चन्द्रमा (सण)।

रयणिद्धय न [दे] कुमुद, कमल (दे ७, ४; षड्)।

रयणी स्त्री [रत्नी] देखो रयणि = रत्नि (ठा १; सम १२; जीवस १७७; जी ३३; औप)।

रयणी स्त्री [रजनी] १ रात्रि, रात (पाअ; प्रासू १३६; कुमा)। २ ईशानेन्द्र के लोकपाल की एक पटरानी (ठा ४, १—पत्र २०४)। ३ चमरेन्द्र की एक अग्र-महिषी (ठा ५, १—पत्र ३०२)। ४ मध्यम ग्राम की एक मूर्च्छना (ठा ७—पत्र ३६३)। ५ षड्ज ग्राम की एक मूर्च्छना; 'मंगी कोरव्वीया हरी य रयणी(? यणी) सारकंता य' (ठा ७—पत्र ३६३)। °भोअण न [°भोजन] रात में खाना (श्रा २०)। °सार न [°सार] सुरत, मैथुन (से ३, ४८)। देखो रयणि = रजनि (हे १, ८)।

रयणी स्त्री [रजनी] औषधि-विशेष—१ पिंडदारु। २ हरिद्रा, हलदी (उत्तनि ३)।

रयणुच्चय, **रयणोच्चय** पुं [रत्नोच्चय] १ मेरु-पर्वत (सुज ५ टी—पत्र ७७; इक)। २ कूट-विशेष (इक)।

रयणोच्चया स्त्री [रत्नोच्चया] वसुगुप्ता नामक इन्द्राणी की एक राजधानी (इक)।

रयत, **रयद**, **रयय** न [रजत] १ रूप्य, चाँदी (णाया १, १—पत्र ६६; प्राकृ १२; प्राप्र; पाअ; उवा; औप)। २ एक देव-विमान (देवेन्द्र १३१)। ३ हाथी का दाँत। ४ हार, माला। ५ सुवर्ण, सोना। ६ रुधिर, खून। ७ शैल, पर्वत। ८ धवल वर्ण। ९ शिखर-विशेष। १० वि. सफेद वर्णवाला, श्वेत (प्राकृ १२; प्राप्र; हे १, १७७; १८०; २०६)। °गिरि पुं [°गिरि] पर्वत-विशेष (णाया १, १; औप)। °वत्त न [°पात्र]

चाँदी का बरतन (गउड)। °मय वि [°मय] चाँदी का बना हुआ (गाया १, १—पत्र ५४; पि ७०)।

रयय पुं [रजक] धोबी (स २८६; पाअ)।

रयवली स्त्री [दे] शिशुत्व, बाल्य (दे ७, ३)।

रयवाडी देखो **राय-वाडिआ** (सिरि ७५८)।

रयाव सक [रचय्] बनवाना, निर्माण कराना। रयावेइ, रयाविति, रयावेह (कप्प)। संकृ. **रयावेत्ता** (कप्प)।

रयाविय वि [रचित] बनवाया हुआ (स ४३५)।

रल्ला स्त्री [दे] प्रियंगु, मालकाँगनी (दे ७, १)।

रल्लि पुंस्त्री [दे] लम्बा मधुर शब्द (माल ६०)।

रव सक [रु] १ कहना, बोलना। २ वध करना। ३ गति करना। ४ अक. रोना। ५ शब्द करना; 'सुद्धं रवति परिसाए' (सूअ १, ४, १, १८), रवइ (हे ४, २३३; संक्षि ३३)। वकृ. **रवंत, रवेंत** (णाया १, १—पत्र ६५; पिंग; औप)।

रव सक [रावय्] बुलवाना, आह्वान करना। वकृ. **रवेंत** (औप)।

रव सक [दे] आर्द्र करना। भवि—रवेहिइ (णंदि)।

रव पुं [रव] १ शब्द, आवाज (कप्प; महा; सण; भवि)। २ वि. मधुर शब्दवाला; 'रवं अलसं कलमंजुलं' (पाअ)।

रव (अप) देखो **रय** = रजस् (भवि)।

रवँण } (अप) देखो **रमण** (भवि)।
रवण }

रवण न [रवण] आवाज करना, 'पच्चासन्ने य करेणुया सया रवणसीला आसी' (महा)।

रवण्ण } (अप) देखो **रम्म** = रम्य (हे ४,
रवन्न } ४२२; भवि)।

रवय पुं [दे] मन्थान-दण्ड, विलोने की लकड़ी, गुजराती में 'रवैयो' (दे ७, ३)।

रवरव अक [रोरूय्] १ खूब आवाज करना। २ बारंबार आवाज करना। वकृ. **रवरवंत** (औप)।

रवि वि [रविन्] आवाज करनेवाला (से २, २६)।

रवि न [रवि] १ सूर्य, सूरज (से २, २६; गउड; सण)। २ राक्षस-वंश का एक राजा (पउम ५, २६२)। ३ अर्क वृक्ष, आक का पेड़ (हे १, १७२)। °तेअ पुं [°तेजस्] १ इक्ष्वाकु वंश का एक राजा (पउम ५, ४)। २ राक्षस वंश का एक राजा, एक लंकेश (पउम ५, २६५)। °तेया स्त्री [°तेजा] एक विद्या (पउम ७, १४१)। °नंदण पुं [°नन्दन] शनि-ग्रह (श्रा १२)। °प्पभ पुं [°प्रभ] वानरद्वीप का एक राजा (पउम ६, ६८)। °भत्ता स्त्री [°भक्ता] एक महौषधि (ती ५)। °भास पुं [°भास] खड्ग-विशेष, सूर्यहास खड्ग (पउम ५५, २६)। °वार पुं [°वार] दिन-विशेष, रविवार (कुप्र ४११)। °सुअ पुं [°सुत] १ शनिश्चर ग्रह (से ८, २८; सुपा ३६)। २ रामचन्द्र का एक सेनापति, सुग्रीव (से १५, ५६)। °हास पुं [°हास] सूर्यहास खड्ग (पउम ५३, २७)।

रविगय न [रविगत] जिसपर सूर्य हो वह नक्षत्र (वव १)।

रविय वि [दे] आर्द्र किया हुआ, भिजाया हुआ (विसे १४५६)।

रव्वारिअ पुं [दे] दूत, संदेश-हारक, 'जेण अवज्झो रव्वारिओ त्ति' (सुपा ४२८)।

रस सक [रस्] चिल्लाना, आवाज करना। रसइ (गा ४३६)। वकृ. **रसंत** (सुर २, ७४; सुपा २७३)।

रस पुंन [रस] १ जिह्वा का विषय—मधुर, तिक्त आदि; 'एगे रसे', 'एवं गंधाइं रसाइं फासाइं' (ठा १०—पत्र ४७१; प्रासू १७४)। २ स्वभाव, प्रकृति (से ४, ३२)। ३ साहित्य-शास्त्र-प्रसिद्ध शृंगार आदि नव रस (उत्त १४, ३२; धर्मवि १३; सिरि ३६)। ४ जल, पानी (से २, २७; धर्मवि १३)। ५ सुख (उत्त १४, ३१)। ६ आसक्ति, दिलचस्पी (सत्त ५३; गउड)। ७ अनुराग, प्रेम (पाअ)। ८ मद्य आदि द्रव पदार्थ (पण्ह १, १; कुमा)। ९ पारद, पारा (निचू १३)। १० भुक्त अन्न का प्रथम परिणाम, शरीरस्थ धातु-विशेष (गउड)। ११ कर्म-विशेष (कम्म २, ३१)। १२ छन्दःशास्त्र-प्रसिद्ध प्रस्तार-विशेष (पिंग)। १३ माधुर्य आदि रसवाला पदार्थ (सम ११; नव २८)। °नाम न [°नामन्] कर्म-विशेष (सम ६७)। °न्नु वि [°ज्ञ] रस का जानकार (सुपा २६१)। °भेइ वि [°भेदिन्] रसवाली चीजों का भेल-सेल करनेवाला (पउम ७५, ५२)। °मंत वि [°वत्] रस-युक्त (भग, ठा ५, ३—पत्र ३३३)। °वई स्त्री [°वती] रसोई (सुपा ११)। °ल, °लु वि [°वत्] रसवाला (हे २, १५६; सुख ३, १)। °वण पुं [°पण] मद्य की दूकान (पव ११२)।

रस पुंन [रस] निष्यन्द, निचोड़, सार (दसनि ३, १६)।

रसण न [रसन] जिह्वा, जीभ (पण्ह १, १—पत्र २३; आचा)।

रसणा स्त्री [रसना] १ मेखला, कांची (पाअ; गउड; से १, १८)। २ जिह्वा, जीभ (पाअ)। °ल वि [°वत्] रसनावाला (सुपा ५५६)।

रसद्द न [दे] चुल्ली-मूल, चूल्हे का मूल भाग (दे ७, २)।

रसा स्त्री [रसा] पृथिवी, धरती (हे १, १७७; १८०; कुमा)।

रसाउ पुं [दे. रसायुष्] भ्रमर, भौंरा (दे ७, २; पाअ)।

रसाय पुं [दे] ऊपर देखो (दे ७, २)।

रसायण न [रसायन] वैद्यक-प्रसिद्ध औषध-विशेष (विपा १, ७; प्रासू १६२; भवि)।

रसाल पुं [रसाल] आम्र-वृक्ष, आम का गाछ (सम्मत्त १७३)।

रसाला स्त्री [दे. रसाला] मार्जिता, पेय-विशेष (दे ७, २; पाअ)।

रसालु पुं [दे. रसालु] मज्जिका, राज-योग्य पाक-विशेष—दो पल घी, एक पल मधु, आधा आढक दही, बीस मिरचा तथा दस पल चीनी या गुड़ से बनता पाक (ठा ३, १—पत्र ११८; सुज २० टी; पव २५६)।

रसि देखो **रस्सि** (प्राकृ २६)।

रसिअ वि [रसिक] १ रसज्ञ, रसिया, शौकीन (से १, ६)। २ रस-युक्त, रसवाला (सुपा २६; २१७; पउम ३१, ४६)।

रसिअ वि [रसित] १ रस-युक्त, रसवाला (पव २)। २ न. शब्द, आवाज (गउड; पराह १, १)।

रसिआ स्त्री [दे. रसिका] १ पूय, पीब, व्रण से निकलता गंदा सफेद खून, गुजराती में 'रसी' (श्रा १२; विपा १, ७; पराह १, १)। २ छन्द-विशेष (पिंग)।

रसिंद पुं [रसेन्द्र] पारद, पारा (जी ३; श्रु १५८)।

रसिग देखो **रसिअ** = रसिक (पंचा २, ३४)।

रसिर वि [रसितृ] आवाज करनेवाला (सरा)।

रसोइ (अप) देखो **रस-वई** (भवि)।

रस्सि पुंस्त्री [रश्मि] १ किरण, 'भरहं समासियाओ आइच्चं चेव रस्सीओ' (पउम ८०, ६४; पाअ; प्राप्र)। २ रस्सी, रज्जु (प्रासू ११७)।

रह अक [दे] रहना। रहइ, रहए, रहेइ (पिंग; महा; सिरि ८६३), रहसु, रहह (सिरि ३५५; ३५३)।

रह सक [रह्] त्यागना, छोड़ना (कप्पू; पिंग)।

रह पुं [रभस] उत्साह, 'पुणो पुणो ते स-रहं दुहेंति' (सूअ १, ५, १, १८)। देखो **रहस** = रभस।

रह पुंन [रहस्] १ एकान्त, निर्जन; 'तत्थ रहो त्ति आगच्छ' (कुप्र ८२), 'लहु मे रहं देसु' (सुपा १७४; वज्जा १५२)। २ प्रच्छन्न, गोप्य (ठा ३, ४)।

रह पुंन [रथ] १ यान-विशेष, स्यन्दन; 'धम्मस्स निव्वाणपहे रहाणि' (सत्त १८, पाअ; कुमा)। २ पुं. एक जैन महर्षि (कप्प)। °**कार** पुं [°कार] रथ-निर्माता, वर्धकि, बढ़ई (सुपा ४४४; कुप्र १०४; उव)। °**चरिया** स्त्री [°चर्या] रथ को हाँकना; 'ईसत्थसत्थरहचरियाकुसलो' (महा)। °**जत्ता** स्त्री [°यात्रा] उत्सव-विशेष (सुपा ५४१; सुर १६, १६; सिरि ११७५)। °**णेउर** न [°नूपुर] नगर-विशेष (पउम २८, ७; इक)। °**णेउरचक्कवाल** न [°नूपुर-चक्रवाल] वैताढ्य पर्वत पर स्थित एक नगर (पउम ५, ६४; इक)। °**नेमि** पुं [°नेमि] भगवान् नेमिनाथ का भाई (उत्त २२, ३६)। °**नेमिज्ज** न [°नेमीय] उत्तराध्ययन सूत्र का बाइसवाँ अध्ययन (उत्त २२)। °**मुसल** पुं [°मुसल] भारतवर्ष की एक प्राचीन लड़ाई, राजा कोणिक और राजा चेटक का संग्राम (भग ७, ६)। °**यार** देखो °**कार** (पाअ)। °**रेणु** पुं [°रेणु] एक नाप, आठ त्रसरेणु का एक परिमाण (इक)। °**वीरउर**, °**वीरपुर** न [°वीरपुर] एक नगर (राज; विसे २५५०)।

रहइं अ [रभसा] वेग से (स ७६२)।

रहंग पुंस्त्री [रथाङ्ग] १ चक्रवाक पक्षी, चकवा (पाअ; सुर ३, २४७, कुमा)। स्त्री. °**गी** (सुपा ४६८; सुर १०, १८५, कुमा)। २ न. चक्र, पहिया (पाअ)।

रहट्ट देखो **अरहट्ट** (गा ४६०; पि १४२)।

रहण न [दे] रहना, स्थिति, निवास (धर्मवि २१; रयण ६)।

रहण न [रहन] १ त्याग। २ विरति, विराम; 'रसरहणं' (पिंग)।

रहमाण पुं [दे] १ यवन मत का एक तत्त्व-वेत्ता (मोह १००)। २ खुदा, अल्ला, परमेश्वर (ती १५)।

रहस पुं [रभस] १ औत्सुक्य, उत्कण्ठा (कुमा)। २ वेग। ३ हर्ष। ४ पूर्वापर का अविचार (संक्षि ७; गउड)।

रहस देखो **रहस्स** = रहस्य; 'रहसाभक्खाणे' (उवा, संबोध ४२; सुपा ४५४)।

रहसा अ [रभसा] वेग से (गउड)।

रहस्स वि [रहस्य] १ गुह्य, गोपनीय (पाअ; सुपा ३१८)। २ एकान्त में उत्पन्न, एकान्त का (हे २, २०४)। ३ न. तत्त्व, तात्पर्य, भावार्थ (ओघ ७६०; रंभा १६)। ४ अपवाद-स्थान (बृह ६)।

रहस्स वि [ह्रस्व] १ लघु, छोटा (विपा १, ८—पत्र ८३)। २ एक मात्रावाला स्वर (उत्त २६, ७२)।

रहस्स न [ह्रास्व] १ लाघव, छोटाई। °**मंत** वि [°वत्] लघु, छोटा (सूअ २, १, १३)।

रहस्सिय वि [राहसिक] प्रच्छन्न, गुप्त (विपा १, १—पत्र ५)।

रहाविअ वि [दे] स्थापित, रखवाया हुआ (हम्मीर १३)।

रहि वि [रथिन्] १ रथ से लड़नेवाला योद्धा (उप ७२८ टी)। २ रथ को हाँकनेवाला (कुप्र २८७; ४६०; धर्मवि १११)।

रहिअ वि [रथिक] उपर देखो, 'रहिएहिं महारहिणो' (उप ७२८ टी; पराह २, ४—पत्र १३०; धर्मवि २०)।

रहिअ वि [रहित] परित्यक्त, वर्जित, शून्य (उवा, दं ३२)।

रहिअ वि [रहित] एकाकी, अकेला (वव १)।

रहिअ वि [दे] रहा हुआ, स्थित (धर्मवि २२)।

रहु पुं [रघु] १ सूर्य वंश का एक स्वनाम-ख्यात राजा (उत्तर ५०)। २ पुं. ब. रघु-वंश में उत्पन्न क्षत्रिय (से ४, १६)। ३ पुं. श्रीरामचन्द्र; 'ताहे कयंतसरिसो देइ रहु रिवुबले दिट्ठी' (पउम ११३, २१)। ४ कालिदास-प्रणीत एक संस्कृत काव्य-ग्रन्थ (गउड)। °**आर** पुं [°कार] रघुवंश नामक संस्कृत काव्य-ग्रन्थ का कर्त्ता, कवि कालिदास (गउड)। °**णाह** पुं [°नाथ] १ श्रीरामचन्द्र (से १४, १६; पउम ११३, ५५)। २ लक्ष्मण (से १४, ६२)। °**तणय** पुं [°तनय] वही अर्थ (से २, १; १४, २६)। °**तिलय** पुं [°तिलक] श्रीरामचन्द्र (सुपा २०४)। °**त्तम** पुं [°उत्तम] वही अर्थ (पउम १०२, १७६)। °**पुंगव** पुं [°पुङ्गव] वही (से ३, ५; हे २, १८८; ३, ७०)। °**सुअ** पुं [°सुत] वही (से ५, १६)।

रहो° देखो **रह** = रहस् (कप्प; औप)। °**कम्म** न [°कर्मन्] एकान्त-व्यापार (ठा ६—पत्र ४६०)।

रा सक [रा] देना, दान करना। राइ (धात्वा १४६)।

रा अक [रै] शब्द करना, आवाज करना। राइ (प्राकृ ६६)।

रा अक [ली] श्लेष करना, चिपकना। राइ (षड्)।

राअला स्त्री [दे] प्रियंगु, मालकाँगनी (दे ७, १)।

राइ देखो रत्ति (हे २, ८८; काप्र १८६; महा; षड्)। २ चमरेन्द्र की एक अग्र-महिषी (ठा ५, १—पत्र ३०२)। ३ ईशानेन्द्र के सोम लोकपाल की एक पटरानी (ठा ४, १—पत्र २०४)। °भत्त न [°भक्त] रात्रि-भोजन, रात में खाना (सुपा ४८५)। °भोअण न [°भोजन] वही अर्थ (सम ३६; कस)। देखो राई = रात्रि।

राइ स्त्री [राजि] पंक्ति, श्रेणी (पाअ; औप)। २ रेखा, लकीर (कम्म १, १६; सुपा १६७)। ३ राई, राज-सर्षप, एक प्रकार का मसाला (दे ६, ८८)।

राइ वि [रागिन्] राग-युक्त, रागवाला (दसा ६)। स्त्री. °णी (महा)।

राइ वि [राजिन्] शोभनेवाला (निचू १६)।

राइ° देखो राय = राजन् (हे २, १४८; ३, ५२; ५३; कुमा)।

राइअ वि [राजित] शोभित (से १, ५६; कुमा, ६, ६३)।

राइअ वि [रात्रिक] रात्रि-सम्बन्धी (उत्त २६, ४६; औप; पडि)।

राइआ स्त्री [राजिका] राई का गाछ, 'गोलाणईअ कच्छे चक्खंतो राइआइ पत्ताइं' (गा १७१ अ)। देखो राइगा।

राइंद पुं [राजेन्द्र] बड़ा राजा (कुमा)।

राइंदिअ पुं [रात्रिन्दिव] रात-दिन, अहोरात्र (भग; आचा; कप्प; पव ७८; सम २१)।

राइक्क वि [राजकीय] राज-सम्बन्धी (हे २, १४८; कुमा)।

राइगा स्त्री [राजिका] राई, राज-सरसों (कुप्र ४५)।

राइणिअ वि [रात्निक] १ चारित्रवाला, संयमी (पंचा १२, ६)। २ पर्याय से ज्येष्ठ, साधुत्व-प्राप्ति की अवस्था से बड़ा (सम ३७; ५८; कप्प)।

राइणिअ वि [राजकल्प] राजा के समान वैभववाला, श्रीमन्त (सूअ १, २, ३, ३)।

राइण्ण } पुं [राजन्य] राजवंशीय, क्षत्रिय
राइन्न } (सम १५१; कप्प; औप; भग)।

राइलेऊण संकृ. चीरकर (नंदीटिप्पनक अंथिम पादलिप्तकथा वैनयिकी बुद्धि विषयक)।

राइल्ल वि [रागिन्] राग-युक्त (देवेन्द्र २७८)।

राई स्त्री [राजी] देखो राइ = राजि (गउड; सुपा ३४; प्रासू ६२; पव २५६)।

राई स्त्री [रात्रि] देखो राइ = रात्रि (पाअ; णाया २—पत्र १५०; औप; सुपा ४६१; कस)। °दिवस न [°दिवस] रात्रिदिवस, अहर्निश (सुपा १२७)।

राईमई स्त्री [राजीमती] राजा उग्रसेन की पुत्री और भगवान् नेमिनाथ की पत्नी (पडि)।

राईव न [राजीव] कमल, पद्म (पाअ; हे १, १८०)।

राईसर पुं [राजेश्वर] १ राजाओं के मालिक, महाराज। २ युवराज (औप; उवा; कप्प)।

राउत्त पुं [राजपुत्र] राजपूत, क्षत्रिय (प्राकृ ३०)।

राउल पुं [राजकुल] १ राजाओं का यूथ, राज-समूह (कुमा; हे १, २६७; प्राप्र)। २ राजा का वंश (षड्)। ३ राज-गृह, दरबार; 'एं ईदिसस्स राउलस्स दूरेण पणामो कीरदि, जत्थ बंभणावि एवं विडंबिज्जंति' (मोह ११)। देखो राओल।

राउलिय वि [राजकुलिक] राजकुल-सम्बन्धी (सुख २, [illegible])।

राउल्ल देखो राइक्क (प्राकृ ३५)।

राएसि पुं [राजर्षि] १ श्रेष्ठ राजा। २ ऋषि-तुल्य राजा, संयतात्मा भूपति (अभि ३६; विक्र ६८; मोह ३)।

राओ अ [रात्रौ] रात में (णाया १, १—पत्र ६१; सुपा ४६७; कप्प)।

राओल देखो राउल;

'तो किंपि धणं सयणेहिं
विलसियं किंपि वाणिपुत्तेहिं।
किंपि गयं राओले एस
अपुत्तत्ति भणिऊण॥'
(धर्मवि १४०)।

राग देखो राय = राग (कप्प; सुपा २४१)।

रागि देखो राइ = रागिन् (पउम ११७, ४१)।

राघव देखो राहव। °घरिणी स्त्री [°गृहिणी] सीता, जानकी (पउम ४६, ५७)।

राच } [चूपै. पै] देखो राय = राजन् (हे
राचि° } ४, ३२५; ३०४; प्राप्र)।

राज देखो राय = राजन् (हे ४, २६७; पि १६८)।

राजस वि [राजस] रजो-गुण-प्रधान, 'राज-सचित्तस्स पुरस्स' (कुप्र ४२८)।

राडि स्त्री [राटि] बूम, चिल्लाहट (सुख २, १५)।

राडि स्त्री [दे. राटि] संग्राम, लड़ाई (दे ७, ४)।

राढा स्त्री [राढा] १ विभूषा (धर्मसं १०१८; कप्पू)। २ भव्यता (वज्जा १८)। ३ बंगाल का एक प्रान्त। ४ बंगाल देश का एक नगरी (कप्पू)। °इत्त वि [°वत्] भव्य आत्मा; 'गंजणरहिओ धम्मो राढाइत्ताण संपडइ' (वज्जा १८)। °मणि पुं [°मणि] काच-मणि (उत्त २०, ४२)।

राण सक [वि + नम्] विशेष नमना। राणइ (?) (धात्वा १४६)।

राण पुं [राजन्] राणा, राजा (चंड; सिरि ११४)।

राणय पुं [राजक] १ राणा, राजा (ती १५; सिरि १२३; १२५)। २ छोटा राजा (सिरि ६८६; १०४०)।

राणिआ } स्त्री [राज्ञिका, °ज्ञी] रानी, राज-
राणी } पत्नी (कुमा ३; श्रावक ६३ टी; सिरि १२५; २६७)।

राम सक [रमय्] रमण कराना। कृ. रामेयव्व (भत्त ८५)।

राम पुं [राम] १ श्री रामचन्द्र, राजा दशरथ का बड़ा पुत्र (गा ३५; उप पृ ३७५; कुमा)। २ परशुराम (कुमा १, ३१)। ३ क्षत्रिय परिव्राजक-विशेष (औप)। ४ बलदेव, बलभद्र, वासुदेव का बड़ा भाई (पाअ)। ५ वि. रमने-वाला (उप पृ ३७५)। °कण्ह पुं [°कृष्ण] राजा श्रेणिक का एक पुत्र (राज)। °कण्हा स्त्री [°कृष्णा] राजा श्रेणिक की एक पत्नी (अंत २५)। °गिरि पुं [°गिरि] पर्वत-विशेष (पउम ४०, १६)। °गुत्त पुं [°गुप्त] एक राजर्षि (सूअ १, ३, ४, २)। °देव पुं [°देव] श्रीरामचन्द्र (पउम ४५, २६)। °पुत्त पुं [°पुत्र] एक जैन मुनि (अनु २)। °पुरी स्त्री [°पुरी] अयोध्या नगरी (ती ११)। °रक्खिआ स्त्री [रक्षिता]

ईशानेन्द्र की एक पटरानी (ठा ८—पत्र ४२६; इक)।

रामणिज्जअ न [रामणीयक] रमणीयता, सौन्दर्य (विक्र २८)।

रामा स्त्री [रामा] १ स्त्री, महिला, नारी (तंदु ५०; कुमा; पाम; वज्जा १०६; उप ३५७ टी)। २ नववें जिनदेव की माता (सम १५१)। ३ ईशानेन्द्र की एक पटरानी (ठा ८—पत्र ४२६; इक)। ४ छन्द-विशेष (पिंग)।

रामायण न [रामायण] १ वाल्मीकि-कृत एक संस्कृत काव्यग्रन्थ (पउम २, ११६; महा)। २ रामचन्द्र तथा रावण की लड़ाई (पउम १०५, १६)।

रामिअ वि [रमित] रमण कराया हुआ (गा ५६; पउम ८०, १६)।

रामेसर पुं [रामेश्वर] दक्षिण भारत का एक हिन्दू-तीर्थ (सम्मत्त ८४)।

राय अक [राज्] चमकना, शोभना। रायइ (हे ४, १००)। वकृ. **राय°, रायमाण** (कप्प)।

राय देखो **रा** = रै। राग्रइ (प्राकृ ६६)।

राय पुं [राग] १ प्रेम, प्रीति (प्रासू १८०)। २ मत्सर, द्वेष; 'न पेमराइल्ला' (देवेन्द्र २७८)। ३ रँगना, रंजन। ४ वर्णन। ५ अनुराग। ६ राजा, नरपति। ७ चन्द्र, चाँद। ८ लाल वर्ण। ९ लाल रँगवाली वस्तु। १० वसन्त आदि स्वर (हे १, ६८)।

राय पुं [राजन्] १ राजा, नर-पति, नरेश (आचा; उवा; श्रा २७; सुपा १०३)। २ चन्द्र, चन्द्रमा (श्रा २७, हम्मीर ३; धर्मवि ३)। ३ एक महाग्रह (सुज्ज २०)। ४ इन्द्र। ५ क्षत्रिय। ६ यक्ष। ७ शुचि, पवित्र। ८ श्रेष्ठ, उत्तम (हे ३, ४९; ५०)। ९ इच्छा, अभिलाषा (से १, ६)। १० छन्द-विशेष (पिंग)। °इअ वि [°कीय] राज-संबन्धी (प्राकृ ३५)। °उत्त पुं [°पुत्र] राज-पूत, राजकुमार (सुर ३; १६५)। °उल देखो **राउल** (हे १, २६७; कुमा; षड्; प्राप्र; अभि १८४)। °कीअ देखो °ईअ (नाट—शकु १०४)। °कुल देखो °उल (महा)। °केर, °क्क वि [°कीय] राज-संबन्धी (हे २, १४८; कुमा; षड्)। °गिह न [°गृह] मगध देश की प्राचीन राजधानी, जो आजकल 'राजगीर' नाम से प्रसिद्ध है (ठा १०—पत्र ४७७; उवा; अंत)। °गिहि स्त्री [°गृही] वही अर्थ (ती ३)। °चंपय पुं [°चम्पक] वृक्ष-विशेष, उत्तम चम्पक-वृक्ष (श्रा १२)। °धम्म पुं [°धर्म] राजा का कर्तव्य (नाट—उत्तर ४१)। °धाणी स्त्री [°धानी] राज-नगर, राजा का मुख्य नगर, जहां राजा रहता हो (नाट—चैत १३२)। °पत्ती स्त्री [°पत्नी] रानी (सुर १३, ५; सुपा ३७५)। °पसेणीय वि [°प्रश्नीय] एक जैन आगम-ग्रन्थ (राय)। °पह पुं [°पथ] राज-मार्ग (महा; नाट—चैत १३०)। °पिंड पुं [°पिण्ड] राजा के घर की भिक्षा—आहार (सम ३९)। °पुत्त देखो °उत्त (गउड)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष (पउम १०८)। °पुरिस पुं [°पुरुष] राजा का आदमी, राज-कर्मचारी (पउम २८, ४)। °मग्ग पुं [°मार्ग] राजपथ, सड़क (औप; महा)। °मास पुं [°माष] धान्य-विशेष, बरबटी (श्रा १८, संबोध ४३)। °राय पुं [°राज] राजाओं का राजा, राजेश्वर (सुपा १०७)। °रिसि देखो **राएसि** (णाया १, ५—पत्र १११; उप ७२८ टी; कुमा; सण)। °रुक्ख पुं [°वृक्ष] वृक्ष-विशेष (औप)। °लच्छी स्त्री [°लक्ष्मी] राज-वैभव (अभि १३१; महा)। °ललिय पुं [°ललित] आठवें बलदेव के पूर्व जन्म का नाम (सम १५३)। °वट्टय न [°वार्तक] राज-संबंधी वार्ता-समूह (हे २, ३०)। °वल्ली स्त्री [°वल्ली] लता-विशेष (पण्ण १—पत्र ३६)। °वाडिआ, °वाडी स्त्री [°पाटिका, °पाटी] चतुरंग सैन्य-श्रम-करण, राजा की चतुर्विध सेना के साथ सवारी (कुमा; कुप्र ११६; १२०; सुपा २२२)। °सद्दूल पुं [°शार्दूल] चक्रवर्त्ती राजा, श्रेष्ठ राजा (सम १५२)। °सिट्ठि पुं [°श्रेष्ठिन्] नगर-सेठ (भवि)। °सिरी स्त्री [°श्री] राज-लक्ष्मी (से १, १३)। °सुअ पुं [°सुत] राजकुमार (कप्पू; उप ७२८ टी)। °सुअ पुं [°शुक] उत्तम तोता (उप ७२८ टी)। °सुअ पुं [°सूय] यज्ञ-विशेष; 'पिइमेहमाइमेहे रायसुए आसमेहपसुमेहे' (पउम ११, ४२)। °सेण पुं [°सेन] छन्द-विशेष (पिंग)। °सेहर पुं [°शेखर] १ महादेव, शिव। २ एक राजा (सुपा ५२६)। ३ एक कवि, कर्पूरमंजरी का कर्त्ता (कप्पू)। °हंस पुंस्त्री [°हंस] १ उत्तम हंस पक्षी। २ श्रेष्ठ राजा (सुर १२, ३४; गा ६२४; गउड; सुपा १३६; रंभा; भवि)। स्त्री. °सी (सुपा ३३४, नाट—रत्ना २३)। °हर न [°गृह] राजा का महल (पउम ८२, ८६; हे २, १४४)। °हाणी देखो °धाणी (सम ८०, पउम २०, ८)। °हिराय, °ाहिराय पुं [°अधिराज] राजाओं का राजा, चक्रवर्त्ती राजा (काल; सुपा १०५)। °ाहिव पुं [°ाधिप] वही अर्थ (सुपा १०५)।

राय देखो **राव** = राव (से ६, ७२)।

राय पुं [दे] चटक, गौरैया पक्षी (दे ७, ४)।

राय पुं [रात्र] रात्रि, रात (आचा)।

राय° देखो **राय** = राज्।

रायंछुअ } पुंन [दे] १ वेतस या बेंत का
रायंबु } पेड़ (पाअ; दे ७, १४)। २ पुं. शरभ (दे ७, १४)।

रायंस पुं [राजांस] राज-यक्ष्मा, क्षय का व्याधि (आचा)।

रायंसि वि [राजांसिन्] राजयक्ष्मावाला, क्षय का रोगी (आचा)।

रायगद्द स्त्री [दे] जलौका, जोंक (दे ७, ५)।

रायग्गल पुं [राजार्गल] ज्योतिष्क ग्रह-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७८)।

रायणिअ देखो **राइणिअ** = रात्निक (उव, ओघभा २२३)।

रायणी स्त्री [राजादनी] खिन्नी, खिरनी का पेड़ (पउम ५३, ७९)।

रायण्ण देखो **राइण्ण** (ठा ३, १—पत्र ११४; उप ३५६ टी)।

रायनीइ स्त्री [राजनीति] राजा की शासन करने की रीति (राय ११७)।

रायमइया स्त्री [राजीमतिका] देखो **राई-मई** (कुप्र १)।

रायस देखो **राजस** (स ३; से ३, १५)।

रायाण देखो राय = राजन्; (हे ३, ५६; षड्)।

राल, रालग, रालय पुंन [राल, °क] धान्य-विशेष, एक प्रकार की कंगु (सूअ २, २, ११; ठा ७—पत्र ४०५; पिंड १६२; वज्जा ३४)।

राला स्त्री [दे] प्रियंगु, मालकाँगनी (दे ७, १)।

राव सक [दे] आर्द्र करना। भवि. रावेहिति (विसे २४६ टी)।

राव देखो रंज = रञ्जय्। रावेइ (हे ४, ४६)। हेकृ. राविउं (कुमा)।

राव सक [रावय्] पुकारना, आह्वान करना। वकृ. रावेंत (ओप)।

राव पुं [राव] १ रोला, कलकल (पाअ)। २ पुकार, आवाज (सुपा ३४८; कुमा)।

रावण पुं [रावण] १ एक स्वनाम-प्रसिद्ध लंका-पति (पि ३६०)। २ गुल्म-विशेष (पण्ण १—पत्र १२)।

राविअ वि [रञ्जित] रँगा हुआ (दे ७, ५)।

राविअ वि [दे] आस्वादित (दे ७, ५)।

रास, रासग पुं [रास, °क] एक प्रकार का नृत्य, जिसमें एक दूसरे का हाथ पकड़कर नाचते-नाचते और गान करते-करते मंडलाकार फिरना होता है (दे २, ३८; पाअ; वज्जा १२२; सम्मत्त १४१; धर्मवि ८१)।

रासभ देखो रासह (सुर २, १०२)।

रासय देखो रासग (सुर १, ४६; सुपा ५०; ४३३)।

रासह पुंस्त्री [रासभ] गर्दभ, गदहा (पाअ; प्राप्र; रंभा)। स्त्री. °ही (काल)।

रासाणंदिअय न [रासानन्दितक] छन्द-विशेष (अजि १२)।

रासालुद्धय पुं [रासालुब्धक] छन्द-विशेष (अजि १०)।

रासि देखो रस्सि (संक्षि १७)।

रासि पुंस्त्री [राशि] १ समूह, ढग, ढेर (ओघ ४०७; औप; सुर २, ५; कुमा)। २ ज्योतिष्क-प्रसिद्ध मेष आदि बारह राशि (विचार १०६)। ३ गणित-विशेष (ठा ४, ३)।

राह पुं [राध] १ वैशाख मास। २ वसन्त ऋतु (से १, १३)। ३ एक जैन आचार्य (उप २८५; सुख २, १५)।

राह पुं [दे] १ दयित, प्रिय। २ वि. निरन्तर। ३ शोभित। ४ सनाथ। ५ पलित, सफेद केशवाला (दे ७, १३)। ६ रुचिर, सुन्दर (पाअ)।

राहअ, राहव पुं [राघव] १ रघुवंश में उत्पन्न (उत्तर २०)। २ श्रीरामचन्द्र (से १२, २२; १, १३, ४७)।

राहा स्त्री [राधा] १ वृन्दावन की एक प्रधान गोपी, श्रीकृष्ण की पत्नी (वज्जा १२२; पिंग)। २ राधावेध में रखी जाती पुतली (उप पृ १३०)। ३ शक्ति-विशेष। ४ कर्ण का पालन करनेवाली माता (प्राकृ ४२)। °मंडव पुं [°मण्डप] जहाँ पर राधावेध किया जाय वह स्थान (सुपा २६६)। °वेह पुं [°वेध] एक तरह की वेध-क्रिया, जिसमें चक्राकार घूमती पुतली की वाम चक्षु बींधी जाती है (उप ६३५; सुपा २५५)।

राहिआ, राही स्त्री [राधिका] ऊपर देखो (गा ८६; हे ४, ४४२; प्राकृ ४२)।

राहु पुं [राहु] १ ग्रह-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७८; पाअ)। २ कृष्ण पुद्गल-विशेष (सुज्ज २०)। ३ विक्रम की पहली शताब्दी के एक जैन आचार्य (पउम ११८, ११७)।

राहुहय न [राहुहत] जिसमें सूर्य और चन्द्र का ग्रहण हो वह नक्षत्र (वव १)।

राहेअ पुं [राधेय] राधा-पुत्र, कर्ण (गउड)।

रि अ [रे] संभाषण-सूचक अव्यय (तंदु ५०; ५२ टी)।

रि सक [ऋ] गमन करना। कर्म. अज्जए (विसे १३६६)।

रिअ सक [री] गमन करना। रियइ, रियंति, रिए (सूअ २, २, २०; सुपा ४४५; उत्त २४, ४)। वकृ. रियंत (पउम २८, ४)।

रिअ सक [प्र + विश्] प्रवेश करना, पैठना। रिअइ (हे ४, १८३; कुमा)।

रिअ न [ऋत] १ गमन, 'पुरओ रियं सोहमाणे' (भग)। २ सत्य (भग ८, ७)।

रिअ वि [दे] लून, काटा हुआ (षड्)।

रिउ देखो उउ (हे १, १४१; कुमा; पव १४१)।

रिउ वि [ऋजु] १ सरल, सीधा (सुपा ३४६)। २ न. विशेष पदार्थ, सामान्य-भिन्न वस्तु (पव २७०)। °सुत्त पुं [°सूत्र] नय-विशेष (विसे २२३१; २६०८)। देखो उज्जु।

रिउ पुं [रिपु] शत्रु, वैरी, दुश्मन (सुर २, ६६; कुमा)। °महण पुं [°मथन] राक्षस-वंश का एक राजा (पउम ५, २६३)।

रिउ स्त्री [ऋच्] वेद का नियत अक्षर-पादवाला अंश। °व्वेय पुं [°वेद] एक वेद-ग्रंथ (णाया १, ५; कप्प)।

रिंखण न [रिङ्खण] सर्पण, गति, चाल (पउम २५, १२)।

रिंखि वि [रिङ्खिन्] चलनेवाला, 'गिद्धाव-रिंखि हद्दन्नए (?गिद्धु व्व रिंखी हदन्नए)' (पिंड ४७१)।

रिंग देखो रिग। रिंगइ, रिंगए (हे ४, २५६ टि; षड्; पिंग)। वकृ. रिंगत (हास्य १४६)।

रिंगण न [रिङ्गण] चलना, सर्पण (पव २)।

रिंगणी स्त्री [दे] वल्ली-विशेष, कण्टकारिका, गुजराती में 'रिंगणी' (दे २, ४; उर २, ८)।

रिंगिअ न [दे] भ्रमण (दे ७, ६)।

रिंगिअ न [रिङ्गित] १ रेंगना, कच्छप की तरह हाथ के बल चलना। २ गुरु-वन्दन का एक दोष (गुभा २४)।

रिंगिसिया स्त्री [दे] वाद्य-विशेष (राज)।

रिंछ (अप) देखो रिच्छ = ऋक्ष (भवि)।

रिंछोली स्त्री [दे] पंक्ति, श्रेणी (दे ७, ७; सुर ३, ३१; विसे १४३६ टी; पाअ; चेइय ४४; सम्मत्त १८८; धर्मवि ३७; भवि)।

रिंडी स्त्री [दे] कन्थाप्राया, कन्था की तरह का फटा-टूटा आच्छादन-वस्त्र (दे ७, ५)।

रिक्क वि [दे] स्तोक, थोड़ा (दे ७, ६)।

रिक्क देखो रित्त = रिक्त (आचा; पाअ; पउम ८, ११८; सुपा ४२२; चउ ३६)।

रिक्किअ वि [दे] शटित, सड़ा हुआ (दे ७, ७)।

रिक्ख अक [रिङ्ख्] चलना। वकृ. 'गिरिव्व अच्छिन्नपक्खो अंतरिक्खे रिक्खंतो लक्खिज्जइ' (कुप्र ६७)।

रिक्ख वि [दे] १ वृद्ध, बूढ़ा। २ पुं. वयः-परिणाम, वृद्धता (दे ७, ६)।

रिक्ख पुं [ऋक्ष] १ भालू, श्वापद प्राणि-विशेष (हे २, १९)। २ न. नक्षत्र (पाअ; सुर ३, २६; ८, ११६)। °**पह** पुं [°पथ] आकाश (सुर ११, १७१)। °**राय** पुं [°राज] वानर-वंश का एक राजा (पउम ८, २३४)।

रिक्खण न [दे] १ उपलम्भ, अधिगम। २ कथन (दे ७, १४)।

रिक्खा देखो **रेहा** = रेखा (ओघ १७६)।

रिग } अक [रिङ्ग्] १ रेंगना, धीरे-धीरे
रिग्ग } और जमीन से रगड़ खाते हुए चलना। २ प्रवेश करना। रिगइ, रिग्गइ (हे ४, २५९; टि)।

रिग्ग पुं [दे] प्रवेश (दे ७, ५)।

रिच स्त्रीन. देखो **रिउ** = ऋच् (पि ५६; ३१८)। स्त्री. °**चा** (नाट—रत्ना ३८)।

रिच्छ वि [दे] वृद्ध, बूढ़ा (दे ७, ६)।

रिच्छ देखो **रिक्ख** = ऋक्ष (हे १, १४०; २, १९; पाअ)। °**ाहिव** पुं [°ाधिप] जाम्बवान्, राम का एक सेनापति (से ४, १८; ४५)।

रिच्छभल्ल पुं [दे] भालू, रीछ (दे ७, ७)।

रिजु देखो **रिउ** = ऋच् (भग)।

रिजु देखो **रिउ** = ऋजु (विसे ७८४)।

रिज्ज देखो **रिअ** = री। रिज्जइ (आचा)।

रिज्जु देखो **रिउ** = ऋजु (हे १, १४१; संक्षि १७; कुमा)।

रिज्झ अक [ऋध्] १ बढ़ना। २ रीझना, खुशी होना। रिज्झइ (भवि)।

रिट्ठ पुं [दे. अरिष्ट] १ अरिष्ट, दुरित (षड्; पि १४२)। २ दैत्य-विशेष (षड्; से १, ३)। ३ काक, कौआ (दे ७, ६; णाया १, १—पत्र ६३; षड्; पाअ)। °**नेमि** पुं [°नेमि] बाईसवें जिनदेव (पि १४२)।

रिट्ठ पुं [रिष्ट] १ देव-विशेष, रिष्ट नामक विमान का निवासी देव (णाया १, ८—पत्र १५१। २ वेलम्ब और प्रभञ्जन नामक इन्द्रों के लोकपाल (ठा ४, १—पत्र १९८)। ३ एक दृप्त साँढ, जिसको श्रीकृष्ण ने मारा था (पण्ह १, ४—पत्र ७२)। ४ पक्षि-विशेष (पउम ७, १७)। ५ न. रत्न-विशेष (चेइय ६१५; औप; णाया १, १ टी)। ६ एक देव-विमान (सम ३५)। ७ पुंन. फल-विशेष, रीठा (उत्त ३४, ४; सुख ३४, ४)। °**पुरी** स्त्री [°पुरी] कच्छावती-विजय की राजधानी (ठा २, ३—पत्र ८०; इक)। °**मणि** पुं [°मणि] श्याम रत्न-विशेष (सिरि ११६०)।

रिट्ठा स्त्री [रिष्टा] १ महाकच्छ विजय की राजधानी (ठा २, ३—पत्र ८०; इक)। २ पाँचवीं नरक-भूमि (ठा ७—पत्र ३८८)। ३ मदिरा, दारू (राज)।

रिट्ठाभ न [रिष्टाभ] १ एक देव-विमान (सम १४)। २ लोकान्तिक देवों का एक विमान (पव २६७)।

रिट्ठि स्त्री [रिष्टि] १ खड्ग, तलवार (दे ७, ६)। २ अशुभ। ३ पुं. रन्ध्र, विवर (संक्षि ३)।

रिड सक [मण्डय्] विभूषित करना। रिडइ (षड्)।

रिण न [ऋण] १ करजा या कर्ज, उधार लिया हुआ धन (गा ११३; कुमा; प्रासू ७७)। २ जल, पानी। ३ दुर्ग, किला। ४ दुर्ग भूमि। ५ आवश्यक कार्य, फरज। ६ कर्म (हे १, १४१; प्राप्र)। देखो **अण** = ऋण।

रिणिअ वि [ऋणित] करजदार, अधमर्ण (कुप्र ४३६)।

रिते अ [ऋते] सिवाय, बिना (पिंड ३७०)।

रित्त वि [रिक्त] १ खाली, शून्य (से ७, ११; गा ४९०; धर्मवि ६; ओघभा १६६)। २ न. विरेक, अभाव (उत्त २८, ३३)।

रित्तुडिअ वि [दे] शातित, झड़वाया हुआ (दे ७, ८)।

रित्थ न [रिक्थ] धन, द्रव्य (उप ५२०; पाअ; स ६०; सुख ४, ६; महा)।

रिद्ध वि [ऋद्ध] ऋद्धि-संपन्न (णाया १, १; उवा; औप)।

रिद्ध वि [दे] पक, पक्का (दे ७, ६)।

रिद्धि पुंस्त्री [दे] समूह, राशि (दे ७, ६)।

रिद्धि स्त्री [ऋद्धि] १ संपत्ति, समृद्धि, वैभव (पाअ; विपा २, १; कुमा; सुर २, ११८; प्रासू १२; ६२)। २ वृद्धि। ३ देव-विशेष। ४ ओषधि-विशेष (हे १, १२८; २, ४१; पंचा ८)। ५ छन्द-विशेष (पिंग)। °**म**, °**ल्ल** वि [°मत्] समृद्ध, ऋद्धि-सम्पन्न (ओघ ६८४; पउम ५, ५६; सुर २, ६८; सुपा २२३)। °**सुंदरी** स्त्री [°सुन्दरी] एक वणिक्-कन्या (उप ७२८ टी)।

रिपु देखो **रिवु** (कप्प)।

रिप्प न [दे] पृष्ठ, पीठ (दे ७, ५)।

रिभिय न [रिभित] १ एक प्रकार का नाट्य (ठा ४, ४—पत्र २८५)। २ स्वर का घोलन। ३ वि. स्वर-घोलना से युक्त (राज; णाया १, १—पत्र १३)।

रिमिण वि [दे] रोने की आदतवाला (दे ७, ७; षड्)।

रिरंसा स्त्री [रिरंसा] रमण की चाह, मैथुनेच्छा (अज्झ ७९)।

रिरिअ वि [दे] लीन (दे ७, ७)।

रिल्ल अक [दे] शोभना। वकृ. रिल्लंत (भवि)।

रिवु देखो **रिउ** = रिपु (पउम १२, ४१; ४४, ५०; स १३८; उप पृ ३२१)।

रिसभ } पुं [ऋषभ] १ स्वर-विशेष (ठा
रिसह } ७—पत्र ३९३)। २ अहोरात्र का अठाइसवाँ मुहूर्त्त (सम ५१; सुज्ज १०, १३)। ३ संहत अस्थि-द्वय के ऊपर का वलयाकार वेष्टन-पट्ट; 'रिसहो य होइ पट्टो' (जीवस ४९)। देखो **उसभ** (औप; हे १, १४१; सम १४९; कम्म २, १९; सुपा २६०)।

°**रिसह** पुं [°ऋषभ] श्रेष्ठ, उत्तम (कुमा)।

रिसि पुं [ऋषि] मुनि, संत, साधु (औप; कुमा; सुपा ३१; अवि १०१; उप ७६८ टी)। °**घाय** पुं [°घात] मुनि-हत्या (उप ४६६)।

रिह सक [प्र + विश्] प्रवेश करना, पैठना। रिहइ (षड्)।

री } अक [री] जाना, चलना। रीयइ,
रीअ } रीयए, रीयंते, रीइज्जा (आचा; सूअ १, २, २, ५; उत्त २४, ७)। भूका. रीइत्था (आचा)। वकृ. रीयंत, रीयमाण (आचा)।

रीइ स्त्री [रीति] प्रकार, ढंग, पद्धति; 'तं जणं विडंबंति निच्चं नवनवरीईइ' (धर्मवि ३२; कप्पू)।

रीड सक [मण्डय्] अलंकृत करना। रीडइ (हे ४, ११५)।

रीडण न [मण्डन] अलंकरण (कुमा)।

रीढ स्त्रीन [दे] अवगणन, अनादर (दे ७, ८)। स्त्री. °ढा (पाअ; धम्म ११ टी; पंचा २, ८; बृह १)।

रीण वि [रीण] १ क्षरित, स्नुत। २ पीडित (भत्त २)।

रीर अक [राज्] शोभना, चमकना, दीपना। रीरइ (हे ४, १००)।

रीरिअ वि [राजित] शोभित (कुमा)।

रीरी स्त्री [रीरी] धातु-विशेष, पीतल (कुप्र ११; सुपा १४२)।

रु स्त्री [रुज्] रोग, बीमारी; 'अरु (? रू) उवसग्गो' (तंदु ४६)।

रुअ अक [रुद्] रोना। रुअइ (षड्; संक्षि ३६; प्राकृ ६८; महा)। भवि. रोच्छं (हे ३, १७१)। वकृ. रुअ°, रुअंत, रुयमाण (गा २१६; ३७६; ४००; सुर २, ६६; ११२; ४, १२६)। संकृ. रोत्तूण (कुमा; प्राकृ ३४)। हेकृ. रोत्तुं (प्राकृ ३४)। कृ. रोत्तव्व (हे ४, २१२; से ११, ९२)। प्रयो. रुयावेइ (महा), रुआवंति (पुप्फ ४४७)।

रुअ न [रुत] शब्द, आवाज (से १, २८; गाया १, १३; पव ७३ टी)।

रुअ देखो रूअ = रूप (इक)।

रुअ देखो रूअ = (दे) (औप)।

रुअंती स्त्री [रुदती] वल्ली-विशेष (संबोध ४७)।

रुअंस देखो रूअंस (इक)।

रुअग पुं [रुचक] १ कान्ति, प्रभा (पराह १, ४—पत्र ७८; औप)। २ पर्वत-विशेष; 'नगुत्तमो होइ पव्वओ रुयगो' (दीव)। ३ द्वीप-विशेष (दीव)। ४ एक समुद्र (सुज्ज १९)। ५ एक विमानावास—देव-विमान (देवेन्द्र १३२)। ६ न. इन्द्रों का एक आभाव्य विमान (देवेन्द्र २६३)। ७ रत्न-विशेष (उत्त ३६, ७६, सुख ३६, ७६)। ८ रुचक पर्वत का पाँचवाँ कूट (दीव)। ९ निषध पर्वत का आठवाँ कूट (इक)। °प्पभ न [°प्रभ] महाहिमवंत पर्वत का एक कूट (ठा २, ३)। °वर पुं [°वर] १ द्वीप-विशेष (सुज्ज १९)। २ पर्वत-विशेष (पराह २, ४—पत्र १३०)। ३ समुद्र-विशेष। ४ रुचकवर समुद्र का एक अधिष्ठाता देव (जीव ३—पत्र ३६७)। °वरभद्द पुं [°वरभद्र] रुचकवर द्वीप का अधिष्ठायक एक देव (जीव ३—पत्र ३६६)। °वरमहाभद्द पुं [°वर-महाभद्र] वही अर्थ (जीव ३)। °वरमहावर पुं [°वरमहावर] रुचकवर समुद्र का एक अधिष्ठाता देव (जीव ३)। °वरावभास पुं [°वरावभास] १ द्वीप-विशेष। २ समुद्र-विशेष (जीव ३)। °वरावभासभद्द पुं [°वरावभासभद्र] रुचकवरावभास द्वीप का एक अधिष्ठाता देव (जीव ३)। °वरावभास-महाभद्द पुं [°वरावभासमहाभद्र] वही अर्थ (जीव ३)। °वरावभासमहावर पुं [°वरावभासमहावर] रुचकवरावभास नामक समुद्र का एक अधिष्ठाता देव (जीव ३)। °वरावभासवर पुं [°वरावभासवर] वही अर्थ (जीव ३—पत्र ३६७)। °वरोद पुं [°वरोद] समुद्र-विशेष (सुज्ज १९)। °वरोभास देखो °वरावभास (सुज्ज १९)। °वई स्त्री [°वती] एक इन्द्राणी (गाया २—पत्र २५२)। °ोद पुं [°ोद] समुद्र-विशेष (जीव ३—पत्र ३६६)।

रुअगिंद पुं [रुचकेन्द्र] पर्वत-विशेष (सम ३३)।

रुअगुत्तम न [रुचकोत्तम] कूट-विशेष (इक)।

रुअण न [रोदन] रुदन, रोना (संबोध ४)।

रुअय देखो रुअग (सम ९२)।

रुअरुइआ स्त्री [दे] उत्कण्ठा (दे ७, ८)।

रुआ स्त्री [रुज्] रोग, बीमारी (उव, धर्मसं ५६८)।

रुआविअ वि [रोदित] रुलाया हुआ (गा ३८६)।

रुइ स्त्री [रुचि] १ कान्ति, प्रभा, तेज (सुर ७, ४; कुमा)। २ अनुराग, प्रेम (जो ५१)। ३ आसक्ति (प्रासू १६६)। ४ स्पृहा, अभिलाष। ५ शोभा। ६ बुभुक्षा, खाने की इच्छा। ७ गोरोचना (षड्)।

रुइअ वि [रुचित] १ अभीष्ट, पसंद (सुर ७, २४३; महा)। २ पुंन. विमानावास-विशेष, एक देव-विमान (देवेन्द्र १३२)।

रुइअ देखो रुण्ण = रुदित (स १२०)।

रुइर वि [रुचिर] १ सुन्दर, मनोरम (पाअ)। २ दीप्र, कान्ति-युक्त (तंदु २०)। ३ पुंन. एक विमानेन्द्रक, देवविमान-विशेष (देवेन्द्र १३१)।

रुइर वि [रोदितृ] रोनेवाला। स्त्री. °री (पि ५९६, गा २१६ अ)।

रुइल वि [°रुचिर, °ल] १ शोभन, सुन्दर (औप; गाया १, १ टी; तंदु २०)। २ दीप्त, चमकता हुआ (पराह १, ४—पत्र ७८; सूअ २, १, ३)। ३ पुंन. एक देव-विमान (सम ३८)।

रुइल्ल न [रुचिर, रुचिमत्] एक देव-विमान (सम १५)। °कंत न [°कान्त] एक देव-विमान (सम १५)। °कूड न [°कूट] एक देव-विमान (सम १५)। °ज्झय न [°ध्वज] देवविमान-विशेष (सम १५)। °प्पभ न [°प्रभ] एक देवविमान (सम १५)। °लेस न [°लेश्य] एक देवविमान (सम १५)। °वण्ण न [°वर्ण] देवविमान-विशेष (सम १५)। °सिंग न [°शृङ्ग] एक देवविमान (सम १५)। °सिट्ठ न [°सृष्ट] एक देवविमान (सम १५)। °वित्त न [°वर्त्त] एक देवविमान (सम १५)।

रुइल्लुत्तरवडिंसग न [रुचिरोत्तरावतंक] एक देवविमान (सम १५)।

रुंच सक [रुञ्च्] रुई से उसके बीज को अलग करने की क्रिया करना। वकृ. रुंचंत (पिंड ५७४)।

रुंचण न [रुञ्चन] रुई से कपास को अलग करने की क्रिया (पिंड ५८८)।

रुंचणी स्त्री [दे] घरट्टी, दलने का पत्थर-यन्त्र (दे ७, ८)।

रुंज अक [रु] आवाज करना। रुंजइ (हे ४, ५७; षड्)।

रुंजग पुं [दे. रुञ्जक] वृक्ष, पेड़, गाछ; 'कुहा महीरुहा वच्छा रोवगा रुंजगाई अ' (दसनि १)।

रुंजिय न [रवण] शब्द, आवाज, गर्जना (स ४२०)।

रुंट देखो रुंज। रुंटइ (हे ४, ५७; षड्)। वकृ. **रुंटंत** (स ६२; पउम १०५, ५५; गउड)।

रुंटणया स्त्री [दे] अवज्ञा, अनादर (पिंड २१०)।

रुंटणिया स्त्री [दे रवणिका] रोदन-क्रिया (णाया १, १६—पत्र २०२)।

रुंटिअ न [रुत] गुञ्जारव, आवाज; 'रुंटिअं अलिविरुअं' (पाअ; कुमा)।

रुंड पुंन [रुण्ड] बिना सिर का धड़, कबन्ध; 'पडिया य मुंडरुंडा' (कुप्र १३५; गउड; भवि; सण)।

रुंढ पुं [दे] आक्षिक, कितव, जूआड़ी (दे ७, ८)।

रुंढिअ वि [दे] सफल (दे ७, ८)।

रुंद वि [दे] १ विपुल, प्रचुर (दे ७, १४; गा ४०२; सुपा २६३; वजा १२८; १६२)। २ विशाल, विस्तीर्ण (विसे ७१०; स ७०२; पव ६१; औप)। ३ स्थूल, मोटा, पीन (पाअ)। ४ मुखर, वाचाल (दे ७, १४)।

रुंदी स्त्री [दे] विस्तीर्णता, लम्बाई (वजा १६४)।

रुंध सक [रुध्] रोकना, अटकाना। रुंधइ (हे ४, १३३; २१८)। कर्म. रुंधिज्जइ, रुब्भइ, रुब्भए (हे ४, २४५; कुमा)। वकृ. **रुंधंत** (कुमा)। कवकृ. **रुब्भंत, रुब्भमाण, रुज्झंत** (पउम ७३, २६; से ४, १७; भवि)। कृ. **रुंधिअव्व** (अभि ५०)।

रुंधिअ वि [रुद्ध] रोका हुआ (कुमा)।

रुंप पुंन [दे] १ त्वचा, सूक्ष्म छाल (गा ११६; १२०; वजा ४२)। २ उल्लिखन (वजा ४२)।

रुंपण न [रोपण] रोपाना, वपन कराना, वापन (पिंड १६२)।

रुंफ देखो रुंप (पि २०८)।

रुंभ देखो रुंध। रुंभइ (हे ४, २१८; प्राप्र)। वकृ. **रुंभंत** (पि ५३५)। कृ. **रुंभिअव्व** (से ६, ३)।

रुंभण न [रोधन] रोक, अटकाव, अवरोध (पण्ह १, १; कुप्र ३७७; गा ६६०)।

रुंभय वि [रोधक] रोकनेवाला (स ३८१)।

रुंभाविअ वि [रोधित] रुकवाया हुआ, बँद किया हुआ (आ २७)।

रुंभिअ वि [रुद्ध] रोका हुआ (हेका ६६; सुपा १२७)।

रुक्क न [दे] बैल आदि की तरह शब्द करना (अणु २६)।

रुक्किणी देखो रुप्पिणी (पि २७७)।

रुक्ख पुंन [वृक्ष] पेड़, गाछ, पादप (णाया १, १; हे २, १२७; प्राप्र; उव; कुमा; जी २७; प्रति ६; प्रासू १६८); 'रुक्खाइं, रुक्खाणि' (पि ३५८)। २ संयम, विरति (सूअ १, ४, १, २५)। °**मूल** न [°मूल] पेड़ की जड़ (कस)। °**मूलिय** पुं [°मूलिक] वृक्ष के मूल में रहनेवाला वानप्रस्थ (औप)। °**सत्थ** न [°शास्त्र] वनस्पति-शास्त्र (स ३११)। °**उवेद** पुं [°ायुर्वेद] वही अर्थ (विसे १७७५)।

रुक्खल्ल ऊपर देखो (षड्)।

रुक्खिम पुंस्त्री [वृक्षत्व] वृक्षपन (षड्)।

रुग्ग वि [रुग्ण] भग्न, भाँगा हुआ (पाअ; गउड; ५६१)।

रुच } सक [दे] पीसना। रुचंति, रुच्चंति;
रुच्च } भूका. रुचिसु, रुच्चिसु; भवि. रुचिस्संति, रुच्चिस्संति (आचा २, १, ६, ५)।

रुचिर देखो रुइर (दे १, १४६)।

रुच्च अक [रुच्] रुचना, पसन्द पड़ना। रुच्चइ, रुच्चए (वजा १०६; महा; सिरि १०६; भवि। वकृ. **रुच्चंत, रुच्चमाण** (भवि; उप १४३ टी)।

रुच्च सक [दे] व्रीहि आदि को यन्त्र में निस्तुष करना। वकृ. **रुच्चंत** (णाया १, ७—पत्र ११७)।

रुच्चि देखो रुइ = रुचि (कप्पू)।

रुच्छ देखो रुक्ख (संक्षि १५)।

रुच्मि देखो रुप्पि (हे २, ५२; कुमा)।

रुज्ज न [रोदन] रुदन, रोना; 'दीहुण्हा णीसासा, रणरणओ, रुज्जगग्गिरं गेअं' (गा ८४३)।

रुज्झ देखो रुंध। रुज्झइ (हे ४, २१८)।

रुज्झ° देखो रुह = रुह्।

रुज्झंत देखो रुंध।

रुज्झिअ वि [रुद्ध] रोका हुआ (कुमा)।

रुट्टिया स्त्री [दे] रोटी (सट्ठि ३६)।

रुट्ठ वि [रुष्ट] रोष-युक्त (उवा; सुर २, १२१)। २ पुं. नरकावास-विशेष (देवेन्द्र २८)।

रुणरुण न [दे] करुण क्रन्दन (भवि)।

रुणरुण अक [दे] करुण क्रन्दन करना। रुणरुणइ (वज्जा ५०; भवि)। वकृ. **रुणरुणंत** (भवि)।

रुणुरुण देखो रुणरुण (पउम १०५, ५८)।

रुणुरुणिय वि [दे] करुण क्रन्दनवाला (पउम १०५, ५८)।

रुण्ण न [रुदित] रोदन, रोना (हे १, २०६; प्राप्र; गा १८)।

रुते देखो रिते (वव ४)।

रुत्थिणी देखो रुप्पिणी (षड्)।

रुदिअ देखो रुण्ण (नाट—मालती १०६)।

रुद्द पुं [रुद्र] १ महादेव, शिव (सम्मत्त १४५; हेका ५६)। २ शिव-मूर्ति-विशेष (णाया १, १—पत्र ३६)। ३ जिन देव, जिन भगवान् (पउम १०६, १२)। ४ परमाधार्मिक देवों की एक जाति (सम २८)। ५ नृप-विशेष, एक वासुदेव का पिता (पउम २०, १८२; सम १५२)। ६ ज्योतिष्क देव-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७७; सुज्ज १०, १२)। ७ अंग-विद्या का जानकार पुरुष (विचार ४८४)। ८ वि. भयंकर, भय-जनक (सम्मत्त १४५)। देखो रोद्द = रुद्र।

रुद्द देखो रोद्द = रौद्र (सम ६)।

रुद्दक्ख पुं [रुद्राक्ष] वृक्ष-विशेष (पउम ५३, ७६)।

रुद्दाणी स्त्री [रुद्राणी] शिव-पत्नी, दुर्गा (समु १५४)।

रुद्ध वि [रुद्ध] रोका हुआ (कुमा)।

रुद्र देखो रुद्द (हे २, ८०)।

रुन्न देखो रुण्ण (सुर २, १२६)।

रुप्प सक [रोपय्] रोपना, बोना; 'सहयारभरियदेसे रूप्पसि धत्तूरयं तुमं वच्छे' (धर्मवि ६७)।

रुप्प न [रुक्म] १ काञ्चन, सोना। २ लोहा। ३ धत्तूरा। ४ नागकेसर (प्राप्र)। ५ चाँदी, रजत (जं ४)।

रुप्प न [रूप्य] चाँदी, रजत (औप; सुर ३, ६; कप्पू)। °कूड पुं [°कूट] रुक्मि पर्वत का एक कूट (राज)। °कूलप्पवाय पुं [°कूलप्रपात] द्रह-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७३)। °कूला स्त्री [°कूला] १ एक महानदी (ठा २, ३—पत्र ७२; ८०; सम २७; इक)। २ एक देवी। ३ रुक्मि पर्वत का एक कूट (जं ४)। °मय वि [°मय] चाँदी का बना हुआ (णाया १, १—पत्र ५२; कुमा)। °भास पुं [°भास] एक ज्योतिष्क महा-ग्रह (ठा २, ३—पत्र ७८)।

रुप्प वि [रौप्य] रूपा का, चाँदी का (णाया १, १—पत्र २४; उर ८, ४)।

रुप्पय देखो रुप्प = रूप्य; 'रुप्पयं रययं' (पाअ; महा)।

रुप्पि पुं [रुक्मिन्] १ कौण्डिन्य नगर का एक राजा, रुक्मिणी का भाई (णाया १, १६—पत्र २०६; कुमा; रुक्मि ४२)। २ कुणाल देश का एक राजा (णाया १, ८—पत्र १४०)। ३ एक वर्षधर-पर्वत (ठा २, ३—पत्र ६६; सम १२; ७२)। ४ एक ज्योतिष्क महा-ग्रह (ठा २, ३—पत्र ७८)। ५ देव-विशेष (जं ४)। ६ रुक्मि पर्वत का एक कूट (जं ४)। ७ वि. सुवर्णवाला। ८ चाँदी वाला (हे २, ५२; ८९)। °कूड पुंन [°कूट] रुक्मि पर्वत का एक कूट (ठा २, ३; सम ६३)।

रुप्पिणी स्त्री [रुक्मिणी] १ द्वितीय वासुदेव की एक पटरानी (पउम २०, १८६)। २ श्रीकृष्ण वासुदेव की एक अग्र-महिषी (पउम २०, १८७; पडि)। ३ एक श्रेष्ठि-पत्नी (सुपा ३३४)।

रुप्पोभास पुं [रूप्यावभास] १ एक महाग्रह (सुज्ज २०)। २ वि. रजत की तरह चमकता (जं ४)।

रुब्भंत } देखो रुंध।
रुब्भमाण }

रुम्मिणी देखो रुप्पिणी (षड्)।

रुम्ह सक [म्लापय्] म्लान करना, मलिन करना। 'प-रुम्हाइ जसं' (से ३, ४)।

रुरु पुं [रुरु] १ मृग-विशेष (पउम ६, ५६; पण्ह १, १—पत्र ७)। २ वनस्पति-विशेष (पण्ण १—पत्र ३५)। ३ एक अनार्य देश। ४ एक अनार्य मनुष्य-जाति (पण्ह १, १—पत्र १४)।

रुरुअ अक [रोरूय्] १ खूब आवाज करना। २ बारंबार चिल्लाना। वकृ. रुरुवेंत (स २१३)।

रुल अक [लुठ्] लेटना। वकृ. रुलंत, रुलिंत (पण्ह १, ३—पत्र ४५, 'पडियगय-घडतुरयं रुलंतवरसुहडघडसयाइन्नं' (धर्मवि ८०)।

रुलुघुल अक [दे] नीचे साँस लेना, निःश्वास डालना। वकृ. रुलुघुलंत (भवि)।

रुव देखो रुअ = रुद्। रुवइ (हे ४, २२६; प्राकृ ६८; संक्षि ३६; भवि; महा), रुवामि (कुप्र ६६)। कर्म. रुव्वइ, रुविज्जइ (हे ४, २४९)।

रुवण न [रोदन] रोना (उप ३३५)।

रुवणा स्त्री. ऊपर देखो (ओघभा ३०)।

रुवणा स्त्री [रोवणा] आरोपणा, प्रायश्चित्त का एक भेद (वव १)।

रुविल देखो रुइल (औप)।

रुव्व देखो रुअ = रुद्। रुव्वइ (संक्षि ३६; प्राकृ ६८)।

रुसा स्त्री [रोष] रोष, गुस्सा (कुमा)।

रुसिय देखो रूसिअ (पउम ५५, १५)।

रुह अक [रुह्] १ उत्पन्न होना। २ सक. घाव को सुखाना। रुहइ (नाट)। कर्म. 'जेण विदारियट्ठीवि खग्गाइपहारो इमीए पक्खालणोयएणंपि पणट्ठवेयणं तक्खणा चेव रुज्झइ त्ति' (स ४१३)।

रुह वि [रुह] उत्पन्न होनेवाला (आचा)।

रुहण न [रोधन] निवारण (वव १)।

रुहरुह अक [दे] मन्द मन्द बहना, 'वामंगि सुत्ति रुहरुहइ वाउ' (भवि)।

रुहुरुहय पुं [दे] उत्कण्ठा (भवि)।

रूअ न [दे. रूत] रुई, तूल (दे ७, ९; कप्प; पव ८४; देवेन्द्र ३३२; धर्मसं ९८०; भग; संबोध ३१)।

रूअ पुं [रूप] १-२ पूर्णभद्र और विशिष्ट नामक इन्द्र का एक लोकपाल (ठा ४, १—पत्र १९७)। ३ आकृति, आकार (गा १३२)। ४ वि. सदृश, तुल्य (दे ६; ४६)। °कंत पुं [°कान्त] १-२ पूर्णभद्र और विशिष्ट नामक इन्द्र का एक लोकपाल (ठा ४, १)। °कंता स्त्री [°कान्ता] १ भूतानन्द नामक इन्द्र की एक अग्र-महिषी (णाया २—पत्र २५२)। २ एक दिक्कुमारी-महत्तरिका (राज)। °प्पभ पुं [°प्रभ] पूर्णभद्र और विशिष्ट नामक एक लोकपाल (ठा ४, १—पत्र १९७; १९८)। °प्पभा स्त्री [°प्रभा] १ भूतानन्द इन्द्र की एक अग्र-महिषी (णाया २—पत्र २५२)। २ एक दिक्कुमारी देवी (ठा ६—पत्र ३६१)। देखो रूव = रूप (गउड)।

रूअंस पुं [रूपांश] १-२ पूर्णभद्र और विशिष्ट इन्द्र का एक लोकपाल (ठा ४, १—पत्र १९७; १९८)।

रूअंसा स्त्री [रूपांशा] १ भूतानन्द इन्द्र की एक अग्र-महिषी (णाया २—पत्र २५२)। २ एक दिक्कुमारी देवी (ठा६—पत्र ३६१)।

रूअग } पुंन [रूपक] १ रुपया (हे ४,
रूअय } ४२२)। २ पुं. एक गृहस्थ (णाया २—पत्र २५२)। ३ रूपा देवी का सिंहासन (णाया २—पत्र २५२)। °वडिंसय न [°वतंसक] रूपा देवी का भवन (णाया २)। °सिरी स्त्री [°श्री] एक गृहस्थ स्त्री (णाया २)। °वई स्त्री [°वती] भूतानन्द नामक इन्द्र की एक अग्र-महिषी (णाया २)। देखो रूवय = रूपक।

रूअरूइआ [दे] देखो रुअरुइआ (षड्)।

रूआ स्त्री [रूपा] १ भूतानन्द इन्द्र की एक अग्र-महिषी (णाया २—पत्र २५२)। २ एक दिक्कुमारी देवी (ठा ४, १—पत्र १९८)।

रूआमाला स्त्री [रूपमाला] छन्द-विशेष (पिंग)।

रूआर वि [रूपकार] मूर्त्ति बनानेवाला, 'मोत्तुमजोग्गं जोग्गे दलिए रूवं करेइ रूआरो' (विसे १११०)।

रूआवई स्त्री [रूपवती] एक दिक्कुमारी देवी (ठा ४, १—पत्र १९८)।

रूढ त्रि [रूढ] १ परंपरागत, रूढि-सिद्ध। २ प्रसिद्ध; 'रूढक्कमेण सव्वे नराहिवा तत्थ उवविट्ठा' (उप ६४८ टी)। ३ प्रगुण, तंदुरुस्त (पाअ)।

रूढ वि [रूढ] उगा हुआ, उत्पन्न (दस ७, ३५)।

रूढि स्त्री [रूढि] परम्परा से चली आती प्रसिद्धि, 'पोसहसद्दोरूढीए एत्थ पव्वाणुवायओ भणिओ' (सुपा ६१८; कप्पू)।

रूप पुं [रूप] पशु, जानवर (मृच्छ २००)। रूअ = रूप (ठा ६—पत्र ३६१)।

रूपि पुं [रूपिन्] सौनिक, कसाई (मृच्छ २००)।

रूरुइय न [दे] उत्सुकता, रणरणक (पात्र)।

रूव पुंन [रूप] १ आकृति, आकार (णाया १, १; पाअ)। २ सौन्दर्य, सुन्दरता (कुमा; ठा ४, २; प्रासू ४७; ७१)। ३ वर्ण, शुक्ल आदि रँग (औप; ठा १; २, ३)। ४ मूर्त्ति (विसे १११०)। ५ स्वभाव (ठा ६)। ६ शब्द, नाम। ७ श्लोक। ८ नाटक आदि दृश्य काव्य (हे १, १४२)। ९ एक की संख्या, एक (कम्म ४, ७७; ७८; ७९; ८०; ८१)। १०-११ रूपवाला, वर्णवाला (हे १, १४२)। १२—देखो रूअ, रूप = रूप। °**कंता** देखो रूअ-कंता (ठा ६—पत्र ३६१; इक)। °**जक्ख** पुं [°यक्ष] धर्मपाठक (व्यव० भा० गा० ६१४)। °**धार** वि [°धार] रूप-धारी; 'जलयरमज्झगएणं अणेगमच्छाइरूवधारेणं' (खा ६)। °**प्पभा** देखो रूअ-प्पभा (इक)। °**मंत** देखो °वंत (पउम १२, ५७; ६१, २६)। °**वई** स्त्री [°वती] १ भूतानन्द नामक इन्द्र की एक अग्र-महिषी (ठा ६—पत्र ३६१)। २ सुरूप नामक भूतेन्द्र की एक अग्र-महिषी (ठा ४, १—पत्र २०४)। ३ एक दिक्कुमारी महत्तरिका (ठा ६)। °**वंत**, °**स्सि** वि [°वत्] रूपवाला, सुरूप (श्रा १०; उवा; उप पृ ३३२; सुपा ४७४; उव)।

रूवग पुंन [रूपक] १ रुपया (उप पृ २८०; धम्म ८ टी; कुप्र ४१४) २ साहित्य-प्रसिद्ध एक अलंकार (सुर १, २६; विसे ९९९ टी)। देखो रूअग = रूपक।

रूवमिणी स्त्री [दे] रूपवती स्त्री (दे ७, ६)।

रूवय देखो रूवग (कुप्र १२३; ४१३; भास ३४)।

रूवसिणी देखो रूवमिणी (षड्)।

रूवा देखो रूआ (इक)।

रूवि वि [रूपिन्] रूपवाला (आचा; भग; स ८३)।

रूवि पुंस्त्री [दे] गुच्छ-विशेष, अर्क-वृक्ष, आक का पेड़ (पणण १—पत्र ३२; दे ७, ६)।

रूस अक [रुष्] गुस्सा करना। रूसइ, रूसए (उव; कुमा; हे ४, २३६; प्राकृ ६८; षड्)। कर्म. रूसिज्जइ (हे ४, ४१८)। हेकृ. रूसिउं, रूसेउं (हे ३, १४१; पि ५७३)। कृ. रूसिअव्व, रूसेयव्व (गा ४६६; पण्ह २, ५—पत्र १५०; सुर १६, ६४)। प्रयो., संकृ. रूसविअ (कुमा)।

रूसण न [रोषण] १ रोष, गुस्सा (गा ६७५; हे ४, ४१८)। २ वि. गुस्साखोर, रोष करनेवाला (सुख १, १४; संबोध ४८)।

रूसिअ वि [रुष्ट] रोष-युक्त (सुख १, १३; १६)।

रे अ [रे] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ परिहास। २ अधिक्षेप (संक्षि ४७)। ३ संभाषण (हे २, २०१; कुमा)। ४ आक्षेप (संक्षि ३८)। ५ तिरस्कार (पव ३८)।

रेअ पुं [रेतस्] वीर्य, शुक्र (राज)।

रेअव सक [मुच्] छोड़ना, त्यागना। रेअवइ (हे ४, ९१)।

रेअविअ वि [मुक्त] छोड़ा हुआ, त्यक्त (कुमा; दे ७, ११)।

रेअविअ वि [दे. रेचित] क्षणीकृत, शून्य किया हुआ, खाली किया हुआ (दे ७, ११; पाअ; से ११, २)।

रेआ स्त्री [रै] १ धन। २ सुवर्ण, सोना (षड्)।

रेइअ वि [रेचित] रिक्त किया हुआ (से ७, ३१)।

रेंकिअ वि [दे] १ आक्षिप्त। २ लीन। ३ व्रीडित, लज्जित (दे ७, १४)।

रेकार पुं [रेकार] 'रे' शब्द, 'रे' की आवाज (पव ३८)।

रेट्ठि देखो रिट्ठि (संक्षि ३)।

रेणा स्त्री [रेणा] महर्षि स्थूलभद्र की एक भगिनी, एक जैन साध्वी (कप्प; पडि)।

रेणि पुंस्त्री [दे] पङ्क, कर्दम (दे ७, ६)।

रेणु पुंस्त्री [रेणु] १ रज, धूली (कुमा)। २ पराग (स्वप्न ७६)।

रेणुया स्त्री [रेणुका] ओषधि-विशेष (पणण १—पत्र ३६)।

रेभ पुं [रेफ] १ 'र' अक्षर, रकार (कुमा)। २ वि. दुष्ट। ३ अधम, नीच। ४ क्रूर, निर्दय। ५ कृपण, गरीब (हे १, २३६; षड्)।

रेरिज्ज अक [राराज्य्] अतिशय शोभना। वकृ. रेरिज्जमाण (णाया १, २—पत्र ७८; १, ११—पत्र १७१)।

रेल्ल सक [प्लावय्] सराबोर करना। वकृ. रेल्लंत (कुमा)।

रेल्लि स्त्री [दे] रेल, स्रोत, प्रवाह (राज)।

रेवइनक्खत्त पुं [रेवतीनक्षत्र] आर्य नागहस्ती के शिष्य एक जैन मुनि (णंदि ५१)।

रेवइय पुं [रैवतिक] स्वर-विशेष, रैवत स्वर (अणु १२८)।

रेवइय न [रैवतिक] एक उद्यान का नाम (कप्प)।

रेवइआ स्त्री [रेवतिका] भूत-ग्रह विशेष (सुख २, १६)।

रेवई स्त्री [रेवती] १ बलदेव की स्त्री (कुमा)। २ एक श्राविका का नाम (ठा ६—पत्र ४५५; सम १५४)। ३ एक नक्षत्र (सम ५७)।

रेवई स्त्री [दे. रेवती] मातृका, देवी (दे ७, १०)।

रेवंत पुं [रेवन्त] सूर्य का एक पुत्र, देव-विशेष; 'रेवंततणुभवा इव अस्सकिसोरा सुलक्खणिणो' (धर्मवि १४२; सुपा ५६)।

रेवज्जिअ वि [दे] उपालब्ध (दे ७, १०)।

रेवण पुं [रेवण] व्यक्ति-वाचक नाम, एक साधारण काव्य-ग्रंथ का कर्त्ता (धर्मवि १४२)।

रेवय न [दे] प्रणाम, नमस्कार (दे ७, ६)।

रेवय पुं [रैवत] गिरनार पर्वत (णाया १, ५—पत्र ६६; अंत; कुप्र १८)।

रेवय पुं [रैवत] स्वर-विशेष (अणु १२७)।

रेवलिआ स्त्री [दे] वालुकावर्त्त, धूल का आवर्त (दे ७, १०)।

रेवा स्त्री [रेवा] नदी-विशेष, नर्मदा (गा ५७८; पाअ; कुमा; प्रासू ६७)।

रेसणिआ } स्त्री [दे] १ करोटिका, एक
रेसणी } प्रकार का कांस्य-भाजन (पात्र; दे ७, १५)। २ अक्षि-निकोच (दे ७, १५)।

रेसम्मि देखो रेसम्मि, 'जो उण सद्धा-रहिओ दाणं देइ जसकित्तिरेसम्मि' (स १५७)।

रेसि (अप) देखो रेसिं (हे ४, ४२५; सण)।

रेसिअ वि [दे] छिन्न, काटा हुआ (दे ७, ६)।

रेसिं (अप) नीचे देखो (हे ४, ४२५)।

रेसिम्मि अ. निमित्त, लिए, वास्ते; 'दंसण-नाणचरित्ताण एस रेसिम्मि सुपसत्थो' (पंचा १६, ४०)।

रेह अक [राज्] दीपना, शोभना, चमकना। रेहइ, रेहए (हे ४, १००; वाप्वा १५०; महा)। वकृ. रेहंत (कप्प)।

रेहा स्त्री [रेखा] १ चिह्न-विशेष, लकीर (ओघ ४८६; गउड; सुपा ४१; वज्जा ६४)। २ पंक्ति, श्रेणि (कप्पू)। ३ छन्द-विशेष (पिंग)।

रेहा स्त्री [राजना] शोभा, दीप्ति (कप्पू)।

रेहिअ न [दे] छिन्न पुच्छ, कटी हुई पूँछ (दे ७, १०)।

रेहिअ वि [राजित] शोभित (सुर १०, १८६)।

रेहिर वि [रेखावत्] रेखावाला (हे २, १५६)।

रेहिर } वि [राजितृ] शोभनेवाला (सुर
रेहिल्ल } १, ५०; सुपा ५६), 'नयरे नयरेहिल्ले' (उप ७२८ टी)।

रेहिल्ल देखो रेहिर=रेखावत् (उप ७२८ टी)।

रोअ देखो रुअ=रुद्। रोअइ (संक्षि ३६; प्राकृ ३८)। वकृ. रोअंत, रोयमाण (गा ५४६; उप पृ १२८; सुर २, २२६)। हेकृ. रोउं (संक्षि ३७)। कृ रोअत्तअ, रोइअव्व (से ३, ४८; गा ३४८; हेका ३३)।

रोअ देखो रुच्च=रुच्। रोयइ, रोयए (भग; उव), 'रोएइ जं पहूणं तं चेव कुणंति सेवगा निच्चं' (रंभा)। वकृ. रोयंत (श्रा ६)।

रोअ सक [रोचय्] १ रुचि करना। २ पसन्द करना, चाहना। रोयइ, रोएमि, रोएहि (उत्त १८, ३३; भग)। संकृ. रोयइत्ता (उत्त २६, १)।

रोअ सक [रोचय्] निर्णय करना। रोअए (दस ५, १, ७७)।

रोअ पुं [रोच] रुचि,
'दुक्कररोया विउसा बाला
भणियेवि नेव बुज्झंति।
तो मज्झिमबुद्धीणं हियत्थमेसो
पयासो मे' (चेइय २६०)।

रोअ पुं [रोग] आमय, बीमारी (पात्र)।

रोअग वि [रोचक] १ रुचि-जनक। २ न. सम्यक्त्व का एक भेद (संबोध ३५; सुपा ५५१)।

रोअण न [रोदन] रोना, रुदन (दे ५, १०; कुप्र २३५; २८६)।

रोअण पुं [रोचन] १ एक दिग्हस्ति-कूट (इक)। २ न. गोरोचन (गउड)।

रोअणा स्त्री [रोचना] गोरोचन (से ११, ४५; गउड)।

रोअणिआ स्त्री [दे] डाकिनी, डाइन (दे ७, १२; पात्र)।

रोअत्तअ देखो रोअ=रुद।

रोआविअ वि [रोदित] रुलाया हुआ (गा ३५७; सुपा ३१७)।

रोइ वि [रोगिन्] रोगवाला, बीमार (गउड)।

रोइ देखो रुइ=रुचि; 'अवि सुंदरेवि दिण्णे दुक्कररोई कलहमाई' (पिंड ३२१)।

रोइअ वि [रोचित] १ पसंद आया हुआ (भग)। २ चिकीर्षित (ठा ६—पत्र ३५५)।

रोइर वि [रोदितृ] रोनेवाला (गा ३८६; षड्)।

रोंकण वि [दे] रंक, गरीब (दे ७, ११)।

रोंच सक [पिष्] पीसना। रोंचइ, (हे ४, १८५)।

रोक्कअ वि [दे] प्रोक्षित, अति सिक्त (षड्)

रोक्कणि } वि [दे] १ शृंगी, शृंगवाला।
रोक्कणिअ } २ नृशंस, निर्दय (दे ७, १६)।

रोग पुं [रोग] १ बीमारी, व्याधि (उवा; पण्ह १, ४)। २ एक ब्राह्मण-जातीय श्रावक (उप ५३६)।

रोगि वि [रोगिन्] बीमार (सुपा ५७६)।

रोगिअ वि [रोगिक, °त] ऊपर देखो (सुख १, १४)।

रोगिणिआ स्त्री [रोगिणिका] रोग के कारण ली जाती दीक्षा (ठा १०—पत्र ४७३)।

रोगिल्ल देखो रोगि (प्रामा)।

रोघस वि [दे] रंक, गरीब (दे ७, ११)।

रोच्च देखो रोंच। रोच्चइ (षड्)।

रोज्झ पुं [दे] ऋश्य, पशु-विशेष; गुजराती में 'रोझ' (दे ७, १२; विपा १, ४; पात्र)।

रोट्ट पुंन [दे] १ तंदुल-पिष्ट, चावल आदि का आटा, पिसान, गुजराती में 'लोट' (दे ७, ११; ओघ ३६३; ३७४; पिंड ४४; बृह १)।

रोट्टग पुं [दे] रोटी, रोट (महा)।

रोड सक [दे] १ रोकना, अटकाना। २ अनादर करना। ३ हैरान करना। रोडिसि (स ५७५)। कवकृ. रोडिज्जंत (उप पृ १३३)।

रोड न [दे] घर का मान, गृह-प्रमाण (दे ७, ११)।

रोडी स्त्री [दे] १ इच्छा, अभिलाषा। २ व्रणी की शिबिका (दे ७, १५)।

रोत्तव्व देखो रुअ=रुद्।

रोद्द पुं [रौद्र] १ अहोरात्र का पहला मुहूर्त (सम ५१)। २ एक नृपति, तृतीय बलदेव और वासुदेव का पिता (ठा ६—पत्र ४४७)। ३ अलंकार-शास्त्र-प्रसिद्ध नव रसों में एक रस (अणु)। ४ वि. दारुण, भयंकर, भीषण (ठा ४, ४; महा)। ५ न. ध्यान-विशेष, हिंसा आदि क्रूर कर्म का चिन्तन (औप)।

रोद्द पुं [रुद्र] अहोरात्र का पहला मुहूर्त (सुज्ज १०, १३)। देखो रुद्द=रुद्र।

रोद्ध वि [दे] १ कूणिताक्ष। २ न. मल (दे ७, १५)।

रोम पुंन [रोमन्] लोम, बाल, रोंआ (औप; पात्र; गउड)। °कूव पुं [°कूप] लोम का छिद्र (णाया १, १—पत्र १३; सुर २, १०१)।

रोम न [रोम] खान में होता लवण (दस ३, ८)।

रोमंच पुं [रोमाञ्च] रोंओं का खड़ा होना, भय या हर्ष से रोंओं का उठ जाना, पुलक (कुमा; काल; भवि; सण)।

रोमंचइअ } वि [रोमाञ्चित] पुलकित,
रोमंचिअ } जिसके रोम खड़े हुए हों वह (पउम ३, १०४; १०२, २०३; पात्र; भवि)।

रोमंथ पुं [रोमन्थ] पगुराना, चबाई हुई वस्तु का पुनः चबाना, पागुर (से ६, ८७; पाअ; सण)।

रोमंथ } अक [रोमन्थय्] चबाई हुई
रोमंथाअ } चीज का फिर से चबाना, पगुराना, जुगाली करना। रोमंथइ (हे ४,४३)। वकृ. **रोमंथाअमाण** (चारु ७)।

रोमग } पुं [रोमक] १ अनार्य देश-विशेष,
रोमय } रोम देश (पव २७४)। २ रोम देश में रहनेवाली मनुष्य-जाति (पण्ह १, १—पत्र १४)।

रोमय पुं [रोमज] पक्षि-विशेष, रोम की पाँखवाला पक्षी (जी २२)।

रोमराइ स्त्री [दे] जघन, नितम्ब (दे ७, १२)।

रोमलयासय न [दे] पेट, उदर (दे ७, १२)।

रोमस वि [रोमश] रोम-युक्त, रोमवाला (दे ३, ११; पाअ)।

रोमूसल न [दे] जघन, नितम्ब (दे ७, १२)।

रोर पुं [रोर] चौथी नरक-भूमि का एक नरकावास (ठा ४, ४—पत्र २६५)।

रोर वि [दे] रंक, गरीब, निर्धन (दे ७, ११; पाअ; सुर २, १०५; सुपा २६६)।

रोरु पुं [रोरु] सातवीं नरक-पृथिवी का एक नरकावास (देवेन्द्र २४; इक)।

रोरुअ पुं [रोरुक, रौरव] १ रत्नप्रभा नरक-पृथिवी का दूसरा नरकेन्द्रक—नरकावास-विशेष (देवेन्द्र ३)। २ रत्नप्रभा का तेरहवाँ नरकेन्द्रक (देवेन्द्र ५)। ३ सातवीं नरकपृथिवी का एक नरकावास—नरक-स्थान (ठा ५, ३—पत्र ३४१; सम ५८; इक)। ४ चौथी नरक-भूमि का एक नरकावास (ठा ४, ४—पत्र २६५)।

रोल पुं [दे] १ कलह, झगड़ा (दे ७, १५)। २ रव, कोलाहल, कलकल आवाज (दे ७, १५; पाअ; कुमा; सुपा ५७६; चेइय १८४; मोह ५)।

रोलंब पुं [दे. रोलम्ब] भ्रमर, मधुकर (दे ७, २; कुप्र ५८)।

रोला स्त्री [रोला] छन्द-विशेष (पिंग)।

रोव देखो रुअ=रुद्। रोवइ (हे ४, २२६; संक्षि ३६; प्राकृ ६८; षड्; महा; सुर १०, १७१; भवि)। वकृ. **रोवंत, रोवमाण** (पउम १७, ३७; सुर २, १२४; ६, २३५; पउम ११०, ३५)। संकृ. **रोविऊण** (पि ५८६)। हेकृ. **रोविउं** (स १००)।

रोव पुं [दे. रोप] पौधा, गुजराती में 'रोपो' (सम्मत्त १४४)।

रोवण न [रोदन] रोना (सुर ६, ७६)।

रोवण न [रोपण] वपन, बीज बोना (वव १)।

रोवाविअ देखो रोआविअ (वज्जा ६२)।

रोविअ वि [रोपित] १ बोया हुआ। २ स्थापित (से १३, ३०)।

रोविंदय न [दे] गेय-विशेष, एक प्रकार का गान (ठा ४, ४—पत्र २८५)।

रोविर देखो रोइर (दे ७, ७; कुमा; हे २, १४५)।

रोविर वि [रोपयितृ] बोनेवाला (हे २, १४५)।

रोस देखो रूस। रोसइ (?) (धात्वा १५०)।

रोस पुं [रोष] गुस्सा, क्रोध (हे २, १९०; १९१)। °**इत्त**, °**इंत** वि [°वत्] रोष- (संक्षि २०; प्राप्र)।

रोसण वि [रोषण] रोष करनेवाला, गुस्साखोर (उप १४७ टी; सुख १, १३)।

रोसविअ वि [रोषित] कोपित, कुपित किया हुआ (पउम ११०, १३)।

रोसाण सक [मृज्] मार्जन करना, शुद्ध करना। रोसाणइ (हे १, १०५; प्राकृ ६६; षड्)।

रोसाणिअ वि [मृष्ट] शुद्ध किया हुआ, मार्जित (पाअ; कुमा; पिंग)।

रोसिअ देखो रोसविअ (पउम ६६, ११; भवि)।

रोह अक [रुह्] उत्पन्न होना। रोहंति (गउड)।

रोह देखो रुंध। संकृ. **रोहिऊण, रोहेउं** (काल; बृह ३)।

रोह पुं [रोध] १ घेरा, नगर आदि का सैन्य से वेष्टन (णाया १, ८—पत्र १४६; उप पृ ८४; कुप्र १५८)। २ रुकावट, रोक, अटकाव (कुप्र १; द्रव्य ४६)। ३ कैद (पुप्फ १८६)।

रोह पुं [रोधस्] तट, किनारा (पाअ)।

रोह पुं [रोह] १ एक जैन मुनि (भग)। २ प्ररोह, व्रण आदि का सूख जाना (दे ६, ६५)। ३ वि. रोहक, रोहण-कर्ता (भवि)।

रोह पुं [दे] १ प्रमाण। २ नमन। ३ मार्गण (दे ७, १६)।

रोहग वि [रोधक] घेरा डालनेवाला, अटकाव करनेवाला; 'रोहगसंजुत्तीए रोहिओ कुमारेण' (स ६३५); 'रोहगसंजुत्ती उण कीरउ' (सुर १२, १०१)।

रोहग देखो रोह=रोध (स ६३५; सुर १२, १०१)।

रोहग पुं [रोहक] एक नट-कुमार (उप पृ २१५)।

रोहगुत्त पुं [रोहगुप्त] १ एक जैन मुनि (कप्प)। २ त्रैराशिक मत का प्रवर्तक एक आचार्य (विसे २४५२)।

रोहण न [रोधन] १ अटकाव (आरा ७२)। २ वि. रोकनेवाला (द्रव्य ३४)।

रोहण न [रोहण] १ चढ़ना, आरोहण (सुपा ४३८; कुप्र ३६६)। २ उत्पत्ति (विसे १७५३)। ३ पुं. पर्वत-विशेष (सुपा ३२; कुप्र, ६)। ४ एक दिग्हस्ति-कूट (इक)।

रोहिअ [दे] देखो रोज्झ (दे ७, १२; पाअ; पण्ह १, १—पत्र ७)।

रोहिअ वि [रोधित] घेरा हुआ, 'रोहियं पाडलिपुरं तेण' (धर्मवि ४२; कुप्र ३६६; स ६३५)।

रोहिअ वि [रोहित] १ सुखाया हुआ (घाव) (उप पृ ७६)। २ पुं. द्वीप-विशेष (जं ४)। ३ पुं. मत्स्य-विशेष (स २५७)। ४ न. तृण-विशेष (पण्ण १—पत्र ३३)। ५ कूट-विशेष (ठा २, ३; ८)।

रोहिअंस पुं [रोहितांश] एक द्वीप (जं ४)।

रोहिअंस° } स्त्री [रोहितांशा] एक नदी
रोहिअंसा } (सम २७; इक)। °**पवाय** पुं [°प्रपात] द्रह-विशेष (ठा २, ३; जं ४)।

रोहिअप्पवाय पुं [रोहिताप्रपात] द्रह-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७२)।

रोहिआ स्त्री [रोहित्, रोहिता] एक नदी (सम २७; इक; ठा २, ३—पत्र ७२; ८०)।

रोहिंसा स्त्री [रोहिदंशा] एक नदी (इक)।

रोहिणिअ पुं [रौहिणेय] एक प्रसिद्ध चोर का नाम (श्रा २७)।

रोहिणी स्त्री [रोहिणी] १ नक्षत्र-विशेष (सम १०)। २ चन्द्र की पत्नी (श्रा १६)। ३ ओषधि-विशेष (उत्त ३४, १०; सुर १०, २२३)। ४ भविष्य में भारतवर्ष में तीर्थंकर होनेवाली एक श्राविका (सम १५४)। ५ नववें बलदेव की माता का नाम (सम १५२)। ६ एक विद्या देवी (संति ५)। ७ शक्रेन्द्र की एक पटरानी (ठा ८—पत्र ४२६)। ८ सत्पुरुष नामक किंपुरुषेन्द्र की एक अग्र-महिषी (ठा ४, १—पत्र २०४)। ६ शक्रेन्द्र के एक लोकपाल की पटरानी (ठा ४, १—पत्र २०४)। १० तप-विशेष (पव २७१, पंचा १६ २३)। ११ गो, गैया (पाअ)। °रमण पुं [°रमण] चन्द्रमा (पाअ)। रोहीडग न [रोहीतक] नगर-विशेष (संथा ६८)।

॥ इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि रआराइसद्दसंकलणो
तेत्तीसइमो तरंगो समत्तो ॥

ल

ल पुं [ल] मूर्ध-स्थानीय अन्तस्थ व्यञ्जन वर्ण-विशेष (प्राप्र)।

लइ अ. ले, अच्छा, ठीक (भवि)।

लइ देखो लय = ला।

लइअ वि [दे. लगित] १ परिहित, पहना हुआ। २ अंग में पिनद्ध (दे ७, १८; पिंड ५६१; भवि)।

लइअल्ल पुं [दे] वृषभ, बैल (दे ७, १९)।

लइआ स्त्री [लतिका, लता] देखो लया (नाट—रत्ना ७; गउड; उप ७६८ टी)।

लइणा } स्त्री [दे] लता, वल्ली (षड्; दे
लइणी } ७, १८)।

लउअ पुं [लकुच] वृक्ष-विशेष, बड़हल का गाछ (औप; पि ३६८)।

लउड } पुं [लकुट] लकड़ी, लाठी, डंडा, लउर,
लउल } यष्टि (दे ७, १६; सुर २, ८; औप)।

लउस } पुं [लकुश] १ अनार्य देश-विशेष
लउसय } (पव २७४; इक)। २ पुंस्त्री. लकुश देश का निवासी मनुष्य। स्त्री. °सिया (णाया १, १—पत्र ३७; औप; इक)।

लंका स्त्री [लङ्का] नगरी-विशेष, सिंहलद्वीप की राजधानी (से ३, ६२; पउम ४६, १६; कप्पू)। °लय वि [°लय] लंका-निवासी (वज्जा १३०)। °सुंदरी स्त्री [°सुन्दरी] हनूमान की एक पत्नी (पउम ५२, २१)। °सोग पुं [°शोक] राक्षस वंश का एक राजा (पउम ५, २६५)। °हिव पुं [°धिप] लंका का राजा (उप पृ ३७५)। °हिवइ पुं [°धिपति] वही अर्थ (पउम ४६, १७)।

लंका स्त्री [दे] शाखा (वज्जा १३०)।

लंख } पुंस्त्री [लङ्ख] बड़े बाँस के ऊपर खेल
लंखग } करनेवाली एक नट-जाति (णाया १, १—पत्र २, पण्ह २, ५—पत्र १३२; औप; कप्प)। स्त्री. °खिगा (उप १०१४)।

लंगल न [लाङ्गल] हल, 'खित्तेसु वहंति लंगलाए सया' (धर्मवि २४; हे १, २५६; षड् ८०)।

लंगलि पुं [लाङ्गलिन्] बलभद्र, बलदेव (कुमा)।

लंगलि° } स्त्री [लाङ्गली] वल्ली-विशेष,
लंगली } शारदी लता (कुमा)।

लंगिम पुंस्त्री [दे] १ जवानी, यौवन। २ ताजापन, नवीनता; 'पिसुणइ तणुलट्ठी लंगिमं चंगिमं च' (कप्पू)।

लंगूल न [लाङ्गूल] पुच्छ, पूँछ (हे १, २५६; पाअ; कप्प; कुमा)।

लंगूलि वि [लाङ्गूलिन्] पुच्छवाला, पशु (कुमा)।

लंगोल देखो लंगूल (सुज्ज १०, ८)।

लंघ सक [लङ्घ्, लङ्घय्] १ लाँघना, अतिक्रमण करना। २ भोजन नहीं करना। लंघइ, लंघेइ (महा; भवि)। कर्म. लंघिज्जइ (कुमा)। वकृ. लंघंत, लंघयंत (सुपा २७१; पउम ६७, २१)। संकृ. लंघित्ता, लंघिऊण (महा)। हेकृ. लंघेउं (पि ५७३)। कृ. लंघणिज्ज (से २, ४४), लंघ (कुमा १, १७)।

लंघण न [लङ्घन] १ अतिक्रमण (सुर ५, १६२)। २ अ-भोजन (उप १३५ टी)।

लंघि वि [लङ्घिन्] लंघन करनेवाला (कप्पू)।

लंघिअ वि [लङ्घित] जिसका लंघन किया गया हो वह (गउड)।

लंच पुं [दे] कुक्कुट, मुर्गा (दे ७, १७)।

लंचा स्त्री [लञ्चा] घूस, रिश्वत, उत्कोच (पाअ; पण्ह १, ३—पत्र ५३; दे १, ६२; ७, १७; सुपा ३०८)।

लंचिल्ल वि [लाञ्चिक] घूसखोर, रिश्वत ले कर काम करनेवाला (वव १)।

लंछ सक [लञ्छ्] १ भाँगना, तोड़ना। २ कलंकित करना। कर्म. लंछिज्जइ (दसनि ८, १४)।

लंछ पुं [लञ्छ] चोरों की एक जाति (विपा १, १—पत्र ११)।

लंछण न [लाञ्छन] १ चिह्न, निशानी (पाअ)। २ नाम। ३ अंकन, चिह्न करना (हे १, २५; ३०)।

लंछणा स्त्री [लाञ्छना] चिह्न करना (उप ५२२)।

लंछिअ वि [लाञ्छित] चिह्नित, कृत-चिह्न (पव १५४; णाया १, २—पत्र ८६; ठा ३, १; कस; कप्पू)।

लंडुअ वि [दे. लण्डित] उत्क्षिप्त, 'चंडप्पवादलंडुओ विअ वरंडो पव्वदादो दूरं आरोविअ पाडिदो म्हि' (चारु ३)।

लंतक } पुं [लान्तक] १ एक देवलोक, **लंतग** } छठवाँ देवलोक (भग; औप; अंत; **लंतय** } इक)। २ एक देवविमान (सम २७; देवेन्द्र १३४)। ३ षष्ठ देवलोक के निवासी देव। ४ षष्ठ देवलोक का इन्द्र (राज; ठा २, ३—पत्र ८५)।

लंद पुंन [लन्द] काल, समय (कप्प; पव ७०)।

लंदय पुंन [दे] कलिन्दक, गो आदि का खादन-पात्र (पव २)।

लंपड वि [लम्पट] लोलुप, लालची, लुब्ध (पाअ; सुपा १०७; ५६६; सुर ३, १०)।

लंपाग पुं [लम्पाक] देश-विशेष (पउम ९८, ५६)।

लंपिक्ख पुं [दे] चोर, तस्कर (दे ७, १६)।

लंब सक [लम्ब्] १ सहारा लेना, आलम्बन करना। २ अक. लटकना। लंबेइ (महा)। वकृ. लंबंत, लंबमाण (औप; सुर ३,७१;४, २४२; कप्प; वसु)। संकृ. लंबिऊण (महा)।

लंब वि [लम्ब] लम्बा, दीर्घ; 'उट्टा उट्टस्स चेव लंबा' (उवा; णाया १, ८—पत्र १३३)।

लंब पुं [दे] गोवाट, गो-बाड़ा (दे ७, २६)।

लंबअ न [लम्बक] ललन्तिका, नाभि-पर्यन्त लटकती माला आदि (स्वप्न ६३)।

लंबणा स्त्री [लम्बना] रज्जु, रस्सी (स १०१)।

लंबा स्त्री [दे] १ वल्लरी, लता (षड्)। २ केश, बाल (षड्; दे ७, २६)।

लंबाली स्त्री [दे] पुष्प-विशेष (दे ७, १९)।

लंबि वि [लम्बिन्] लटकता (गउड)।

लंबिअ } वि [लम्बित] १ लटकता हुआ **लंबिअय** } (गा ५३२; सुर ३, ७०)। २ पुं वानप्रस्थ का एक भेद (औप)।

लंबिर वि [लम्बितृ] लटकनेवाला (कुमा; गउड)।

लंबुअ वि [लम्बुक] १ लम्बी लकड़ी के अन्त भाग में बँधा हुआ मिट्टी का ढेला। २ भींत में लगा हुआ ईंटों का समूह (मृच्छ ६)।

लंबुत्तर पुंन [लम्बोत्तर] कायोत्सर्ग का एक दोष, चोलपट्ट को नाभि-मंडल से ऊपर रखकर और जानु को चोलपट्ट से नीचे रख कर कायोत्सर्ग करना (चेइय ४८४)।

लंबूस पुंन [दे. लम्बूष] कन्दुक के आकार का एक आभरण, 'छत्तं चमर-पडाया दप्पणलंबूसया वियाणं च' (पउम ३२, ७६; ६६, १२)।

लंबोदर } वि [लम्बोदर] १ बड़ा पेटवाला **लंबोयर** } (सुख १, १४; उवा)। २ पुं. गणपति, गणेश (श्रा १२; कुप्र ६७)।

लंभ सक [लभ्] प्राप्त करना, 'अजेवाहं न लंभामि अवि लाभो सुए सिया' (उत्त २, ३१)। भवि. लंभिस्सं (पि ५२५)। कर्म. लंभीअदि, लंभीआमो (शौ) (पि ५४१)। संकृ. लंभिअ, लंभित्ता (मा १६; नाट—चैत ६१; ठा ३, २)।

लंभ सक [लम्भय्] प्राप्त करना। संकृ. लंभिअ (नाट—चैत ४४)। कृ लंभइदव्व (शौ), लंभणिज्ज, लंभणीअ (मा ५१; नाट—मालती ३६, चैत १२५)।

लंभ पुं [लाभ] प्राप्ति (पउम १००, ४३; से ११, ३१; गउड; सिरि ८२२; सुपा ३६४)। देखो लाह = लाभ।

लंभण पुं [लम्भन] मत्स्य की एक जाति (विपा १, ८ टी—पत्र ८४)।

लंभिअ देखो लंभ = लभ्, लम्भय्।

लंभिअ वि [लब्ध] प्राप्त (नाट—चैत १२५)।

लंभिअ वि [लम्भित] प्राप्त कराया हुआ, प्रापित (सूअ २, ७, ३७; स ३१०; अच्चु ७१)।

लक्कुड न [दे. लकुट] लकड़ी, यष्टि, छड़ी, लाठी (दे ७, १६, पाअ)।

लक्ख सक [लक्षय्] १ जानना। २ पहचानना। ३ देखना। लक्खइ (महा)। कर्म. लक्खिज्जए, लक्खीयसि (विसे २१४६; महा; काल)। कवकृ. लक्खिज्जंत (से ११, ४५)। कृ. लक्खणीअ (नाट—शकु २४), देखो लक्ख = लक्ष्य।

लक्ख पुंन [दे] काय, शरीर, देह (दे ७, १७)।

लक्ख पुंन [लक्ष] संख्या-विशेष, लाख, सौ हजार (जी ४५; सुपा १०३; २४८; कुमा; प्रासू ६६)। °पाग पुं [°पाक] लाख रुपयों के व्यय से बनता एक तरह का पाक (ठा ६)।

लक्ख वि [लक्ष्य] १ पहचानने योग्य; 'चिरलक्खणो' (पउम ८२, ८४)। २ जिससे जाना जाय वह, लक्षण, प्रकाशक; 'भुअदप्पवीअलक्खं चावं' (से ५, १७)। ३ वेध्य, निशाना; 'लक्खविंधण—' (धर्मवि ५२; दे २, २६; कुमा)।

लक्ख° देखो लक्खा (पडि)।

लक्खग वि [लक्षक] पहचाननेवाला (पउम ८२, ८४; कुप्र ३००)।

लक्खण पुंन [लक्षण] १ इतर से भेद का बोधक चिह्न। २ वस्तु-स्वरूप (ठा ३, ३; ४, १; जी ११; विसे २१४६; २१४७; २१४८)। ३ चिह्न; 'लक्खणपुण्णं' (कुमा)। ४ व्याकरण-शास्त्र; 'लक्खणसाहित्तपमाणजोइसाईणि सा पढइ' (सुपा १४१; ६५७)। ५ व्याकरण आदि का सूत्र। ६ प्रतिपाद्य, विषय (हे २, ३)। ७ पुं. लक्ष्मण। ८ सारस पक्षी; 'लक्खणो' (प्राकृ २२)। °संवच्छर पुं [°संवत्सर] वर्ष-विशेष (सुज १०, २०)।

लक्खण पुं [लक्ष्मण] श्रीराम का छोटा भाई (से १, ४८)। देखो लखमण।

लक्खण न [लक्षण] कारण, हेतु (दसनि १, १४)।

लक्खणा स्त्री [लक्षणा] १ शब्द-वृत्ति विशेष, शब्द की एक शक्ति, जिससे मुख्य अर्थ के बाध होने पर भिन्न अर्थ की प्रतीति होती है (दे १, ३)। २ एक महौषधि (ती ५)।

लक्खणा स्त्री [लक्ष्मणा] १ आठवें जिनदेव की माता (सम १५१)। २ उसी जन्म में मुक्ति

पानेवाली श्रीकृष्ण की एक पत्नी (अंत १५)। ३ एक अमात्य की स्त्री (उप ७२८ टी)।

लक्खणिय वि [लाक्षणिक, लाक्षण्य] १ लक्षणों का जानकार। २ लक्षण-युक्त (सुपा १३६)।

लक्खमण } पुं [लक्ष्मण] विक्रम की बार-
लखमण } हवीं शताब्दी का एक जैन मुनि और ग्रंथकार (सुपा ६५८)।

लक्खा स्त्री [लाक्षा] लाख, लाह, जतु, चपड़ा (णाया १, १—पत्र २४; पण्ह २, ५)। °रुणिय वि [°रुणित] लाख से रँगा हुआ (पाअ)।

लक्खिअ वि [लक्षित] १ जाना हुआ। २ पहचाना हुआ। ३ देखा हुआ (गउड; नाट—रत्ना १४)।

लग न [दे] निकट, पास (पिंग)।

लगंड न [लगण्ड] वक्र काष्ठ (पंचा १८, १६; स ५६६)। °साइ वि [°शायिन्] वक्र काष्ठ की तरह सोनेवाला (पण्ह २, १—पत्र १००; औप; कस; पंचा १८, १६; ठा ५, १—पत्र २६६)। °सण न [°सन] आसन-विशेष (सुपा ८५)।

लगुड देखो लउड (कुप्र ३८६)।

लग्ग सक [लग्] लगना, संग करना, संबंध करना। लग्गइ (हे ४, २३०; ४२०; ४२२; प्राकृ ६८; प्राप्र; उव)। भवि. लग्गिस्सं, लग्गिहिइ (पि ५२७)। लग्गंत, लग्गमाण (चेइय ११२; उप ६६६; गा १०५)। संकृ. लग्गूण (कुप्र ६६), लग्गिवि (अप) (हे ४, ३३६)। कृ. लग्गिअव्व (सुर १०, ११२)।

लग्ग न [दे] १ चिह्न। २ वि. अघटमान, असम्बद्ध (दे ७, १७)।

लग्ग न [लग्न] १ मेष आदि राशि का उदय (सुर २, १७०; मोह १०१)। २ वि. संसक्त, संबद्ध (पाअ; कुमा; सुर २, ५६)। ३ पुं. स्तुति-पाठक (हे २, ६८)।

लग्गण न [लगन] संग, संबन्ध; 'वडपाय-वसाहालग्गणेण' (सुर १५, १४; उप १३४; ५३८)।

लग्गणय पुं [लग्नक] प्रतिभू, जमानत करनेवाला, जामीन (पाअ)।

लग्गूण देखो लग्ग = लग्।

लघिम पुंस्त्री [लघिमन्] १ लघुता, लाघव। २ योग की एक सिद्धि, जिसके प्रभाव से मनुष्य छोटा बन सकता है; 'लंघिज्ज लघिमगुणओ अनिलस्सवि लाघवं साहू' (कुप्र २७७)। ३ विद्या-विशेष (पउम ७, १३६)।

लचय न [दे] तृण-विशेष, गण्डुत् तृण (दे ७, १७)।

लच्छ देखो लक्ख = लक्ष्य (नाट)।

लच्छ° देखो लभ।

लच्छण देखो लक्खण = लक्षण (सुपा ६४; प्राकृ २२; नाट—चैत ५५)।

लच्छि° } स्त्री [लक्ष्मी] १ संपत्ति, वैभव। २
लच्छी } धन, द्रव्य। ३ कान्ति। ४ औषध-विशेष। ५ फलिनी वृक्ष। ६ स्थल-पद्मिनी। ७ हरिद्रा। ८ मुक्ता, मोती। ९ शटी नामक औषधि (कुमा; प्राकृ ३०; हे २, १७)। १० शोभा (से २, ११)। ११ विष्णु-पत्नी (पाअ; से २, ११)। १२ रावण की एक पत्नी (पउम ७४, १०)। १३ षष्ठ वासुदेव की माता (पउम २०, १८४)। १४ पुंडरीक द्रह की अधिष्ठात्री देवी (ठा २, ३—पत्र ७२)। १५ देव-प्रतिमा विशेष (णाया १, १ टी—पत्र ४३)। १६ छन्द-विशेष (पिंग)। १७ एक वणिक्-पत्नी (७२८ टी)। १८ शिखरी पर्वत का एक कूट (इक)। °निलय पुं [°निलय] वासुदेव (पउम ३७, ३७)। °मई स्त्री [°मती] १ छटवें वासुदेव की माता (सम १५२)। २ ग्यारहवें चक्रवर्ती का स्त्री-रत्न (सम १५२)। °मंदिर न [°मन्दिर] नगर-विशेष (सुपा ६३२)। °वइ पुं [°पति] लक्ष्मी का स्वामी, श्रीकृष्ण (प्राकृ ३०)। °वई स्त्री [°वती] दक्षिण रुचक पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८—पत्र ४३६; इक)। °हर पुं [°धर] १ वासुदेव (पउम ३८, ३४)। २ छन्द-विशेष (पिंग)। ३ न. नगर-विशेष (इक)।

लजुक (अशो) देखो रज्जु = (दे) (कप्प—रज्जु)।

लज्ज अक [लस्ज्] शरमाना। लज्जइ (उव; महा)। कर्म. लज्जिज्जइ (हे ४, ४१६)। वकृ. लज्जंत, लज्जमाण (उप पृ ५५; महा; आचा)। कृ. लज्जणिज्ज (से ११, २६, णाया १, ८—पत्र १४३)।

लज्जण } न [लज्जन] १ शरम, लाज
लज्जणय } (सा ८; राज)। २ वि. लज्जा-कारक; 'किं एत्तो लज्जणयं······जं पहरिज्जइ दीणे पलायमाणे पमत्ते वा' (सुपा २१५; भवि)।

लज्जा स्त्री [लज्जा] १ लाज, शरम (औप; कुमा; प्रासू ६६; गा ६१०)। २ छन्द-विशेष (पिंग)। ३ संयम (भग २, ५; औप)।

लज्जापइत्तअ (शौ) वि [लज्जयितृ] लजानेवाला; 'जुवइवेसलज्जापइत्तअं' (मा ४२)।

लज्जालु वि [लज्जालु] लज्जावान्, शरमिंदा (उप १७६ टी)।

लज्जालु } स्त्री [लज्जालु] १ लता-विशेष,
लज्जालुआ } लाजवंती, लजवनी, छुईमुई
लज्जालुइणी } (षड्; हे २, १५६; १७४)। २ लज्जावाली स्त्री (षड्; हे २, १५९, १७४; सुर २, १५६; गा १२७, प्राकृ ३५)।

लज्जालुइणी स्त्री [दे] कलह-कारिणी स्त्री (षड्)।

लज्जालुइर } वि [लज्जालु] लज्जाशील,
लज्जालुर } शरमिंदा। स्त्री. °री (गा ४८२; ६१२ अ)।

लज्जाव सक [लज्जय्] शरमिंदा बनाना, लजवाना। लज्जावेदि (शौ) नाट—मृच्छ ११०)। कृ. लज्जावणिज्ज (स ३६८; भवि)।

लज्जावण वि [लज्जन] शरमिन्दा करनेवाला (पण्ह १, ३—पत्र ५४)।

लज्जाविय वि [लज्जित] लजवाया हुआ (पण्ह १, ३—पत्र ५४)।

लज्जिअ वि [लज्जित] १ लज्जा-युक्त (पाअ)। २ न. लज्जा, शरम; 'न लज्जिअं अप्पणोवि पलिआणं' (श्रा १४)।

लज्जिर वि [लज्जितृ] लज्जा-शील (हे २, १४५; गा १५०; कुमा; वज्जा ८; भवि)। स्त्री. °री (पि ५९६)।

लज्जु स्त्री [रज्जु] १ रस्सी, लजुरी, लेजुरी या लेजुर। २ वि. रस्सी की तरह सरल, सीधा; 'चाई लज्जू धन्ने तवस्सी' (पण्ह २, ५—पत्र १४९; भग)।

लज्जु वि [लज्जावत्] लज्जावाला; 'एसणा-समिश्रो लज्जू गामे अनियश्रो चरे' (उत्त ६, १७)।

लज्जु देखो रिज्जु = ऋजु (भग)।

लज्झ° देखो लभ।

लट्ट } न [दे] १ खसखस आदि का तेल
लट्टय } (पभा ३१)। २ कुसुम्भ; 'लट्टयवसणा' (दे ७, १७)।

लट्टा स्त्री [दे. लट्टा] धान्य-विशेष, कुसुम्भ धान्य (पव १५४)।

लट्टा स्त्री [लट्वा] १ वृक्ष-विशेष (कुमा)। २ कुसुम्भ (बृह १)। ३ गौरैया, पक्षि-विशेष। ४ भ्रमर, भौंरा। ५ वाद्य-विशेष (दे २, ५५)।

लट्ठ वि [दे] १ अन्यासक्त (दे ७, २६)। २ मनोहर, सुन्दर, रम्य (दे ७, २६; पाअ; णाया १, १; पण्ह १, ४; सुर १, २६; कुप्र ११; श्रु ६; पुप्फ ३४; सार्ध २१; धण ५; सुपा १५६)। ३ प्रियंवद, प्रिय-भाषी (दे ७, २६)। ४ प्रधान, मुख्य; 'खमियव्वो अवराहो ममावि पाविट्ठलट्ठस्स' (उप ७२८ टी)। °**दंत** पुं [°दन्त] १ जैन मुनि (अनु १)। २ द्वीप-विशेष, एक अन्तर्द्वीप। ३ द्वीप-विशेष में रहनेवाला मनुष्य (ठा ४, २—पत्र २२६; इक)।

लट्ठुरी स्त्री [दे] सुन्दर, रमणीय (कुप्र २१०)।

लट्ठि स्त्री [यष्टि] लाठी, छड़ी (औप; कुमा)।

लट्ठिअ न [दे] खाद्य-विशेष; 'जेट्ठाहि लट्ठिएणं भोचा कज्जं साहिति' (सुज्ज १०, १७)।

लडह वि [दे] १ रम्य, सुन्दर (७, १७; सुपा ६; सिरि ४७; ८७५; गउड; औप; कप्प; कुमा; हेका २६५; सण; भवि)। २ सुकुमार, कोमल (काप्र ७६५; भवि)। ३ विदग्ध, चतुर (दे ७, १७)। ४ प्रधान, मुख्य (कुमा)।

लडहक्खमिअ वि [दे] विघटित, वियुक्त (दे ७, २०)।

लडहा स्त्री [दे] विलासवती स्त्री (षड्)।

लडाल देखो णडाल (प्राकृ ३७; पि २६०)।

लड्डिय न [दे] लाड़, छोह, प्यार (भवि)।

लड्डुअ } पुं [लड्डुक] लड्डू, मोदक
लड्डुग } (गा ६४१; प्रयौ ८३; कुप्र २०६; भवि; पउम ८४, ४; पिंड ३७७)।

लड्डुयार वि [लड्डुककार] लड्डू बनानेवाला, हलवाई (कुप्र २०६)।

लढ सक [स्मृ] स्मरण करना, याद करना। लढइ (हे ४, ७४)। वकृ. **लढंत** (कुमा)।

लढिअ वि [स्मृत] याद किया हुआ (पाअ)।

लण्ह वि [श्लक्ष्ण] १ चिकना, मसृण (सम १३७; ठा ४, २; औप; कप्पू)। २ अल्प, थोड़ा। ३ न. लोहा, धातु-विशेष (हे २, ७७; प्राकृ १८)।

लत्त वि [लप्त, लपित] उक्त, कथित (सुपा २३४)।

लत्ता } स्त्री [दे] १ लात, पार्ष्णि-प्रहार
लत्तिआ } (सुपा २३८; ठा २, ३—पत्र ६३)। २ आतोद्य-विशेष (ठा २, ३; आचा २, ११, ३)।

लदण } (मा) देखो **रयण** = रत्न (अभि
लदन } १८४; प्राकृ १०२)।

लद्द सक [दे] भार भरना, बोझ डालना, लादना, गुजराती में 'लादवु'। हेकृ. **लद्देउं** (सुपा २७५)।

लद्दण न [दे] भार-क्षेप लादना (स ५३७)।

लद्दी स्त्री [दे] हाथी आदि की विष्ठा, गुजराती में 'लीद' (सुपा १३७)।

लद्ध वि [लब्ध] प्राप्त (भग; उवा; औप; हे ३, २३)।

लद्धि स्त्री [लब्धि] १ क्षयोपशम, ज्ञान आदि के आवारक कर्मों का विनाश और उपशान्ति (विसे २६६७)। २ सामर्थ्य-विशेष, योग आदि से प्राप्त होती विशिष्ट शक्ति (पव २७०; संबोध २८)। ३ अहिंसा (पण्ह २, १—पत्र ६६)। ४ प्राप्ति, लाभ (भग ८, २)। ५ इन्द्रिय और मन से होनेवाला विज्ञान, श्रुत ज्ञान का उपयोग (विसे ४६६)। ६ योग्यता (अणु)। °**पुलाअ** पुं [°पुलाक] लब्धि-विशेष-संपन्न मुनि; 'संघाइयाण कज्जे चुरिणज्जा चक्कवट्टिमवि जीए। तीए लद्धीइ जुओ लद्धिपुलाओ' (संबोध २८)।

लद्धिअ वि [लब्ध] प्राप्त (वै ६६)।

लद्धिल्ल वि [लब्धिमत्] लब्धि-युक्त (पंच १, ७)।

लद्धुं } देखो लभ।
लद्धूण }

लप्पसिया स्त्री [दे] लपसी, एक प्रकार का पक्वान्न (पव ४)।

लब्भ नीचे देखो।

लभ सक [लभ्] प्राप्त करना। लभइ, लभए (आचा; कस; विसे १२१५)। भवि. लच्छिसि, लभिस्सं, लभिस्सामि (उव; महा; पि ५२५)। कर्म. लज्झइ, लब्भइ (महा ६०, १६; हे १, १८७; ४, २४६; कुमा)। संकृ. **लभिय, लद्धुं, लद्धूण** (पंच ५, १६४; आचा; काल)। हेकृ. **लद्धुं** (काल)। कृ. **लब्भ** (पण्ह २, १; विसे २८३७; सुपा ११; २३३; स १७५; सण)।

लय सक [ला] ग्रहण करना। लएइ, लयंति (उव)। कर्म—लइज्जइ, लिज्जइ (भवि; सिरि ६६३)। वकृ. **लयंत** (वज्जा २८; महा; सिरि ३७५)। संकृ. **लइ, लएवि, लएविणु** (अप) (पिंग; भवि)। देखो **ले** = ला।

लय न [दे] नव-दम्पति का आपस में नाम लेने का उत्सव (दे ७, १६)।

लय देखो **लव** = लव (गउड; से ५, १४)।

लय पुं [लय] १ श्लेष। २ मन की साम्यावस्था (कुमा)। ३ लीनता, तल्लीनता। ४ तिरोभाव (विसे २६६६)। ५ संगीत का एक अंग, स्वर-विशेष (स ७०४; हास्य १२३)।

लय° देखो **लया**। °**हरय** न [°गृहक] लता-गृह (सुपा ३८१)।

लय पुं [लय] तन्त्री का स्वन—ध्वनि-विशेष। °**सम** न [°सम] गेय काव्य का एक भेद (दसनि २, २३)।

लयंग न [लताङ्ग] संख्या-विशेष, चौरासी लाख पूर्व; 'पुव्वाण सयसहस्सं चुलसीइगुणं लयंगमिह होइ' (जो २)।

लयण वि [दे] १ तनु, कृश, क्षाम (दे ७, २७; पाअ)। २ मृदु, कोमल। ३ न वल्ली, लता (दे ७, २७)।

लयण न [लयन] १ तिरोभाव, छिपना (विसे २८१७; दे ७, २४) २ अवस्थान (सुर ३, २०६)। ३ देखो **लेण** (राज)।

लयणी स्त्री [दे] लता, वल्ली (पाअ; षड्)।

लया स्त्री [लता] १ वल्ली, वल्लरी (पराग १; गा २८; काप्र ७२३; कुमा; कप्प)। २ प्रकार, भेद; 'संघाडो त्ति वा लय त्ति वा पगारो त्ति वा एगट्ठा' (बृह १)। ३ तप-विशेष (पव २७१)। ४ संख्या-विशेष, चौरासी लाख लतांग-परिमित संख्या (जो २)। ५ कम्बा, छड़ी, यष्टि; 'कसप्पहारे य लयप्पहारे य छिवापहारे य' (णाया १. २—पत्र ८६; विपा १, ६—पत्र ६६)। °**जुद्ध** न [°युद्ध] लड़ने की एक कला, एक तरह का युद्ध (औप)।

लयापुरिस पुं [दे] वह स्थान, जहाँ पद्म-हस्त स्त्री का चित्रण किया जाय; 'पउमकरा जत्थ वहू लिहिज्जए सो लयापुरिसो' (दे ७, २०)।

लल अक [ल्ल, लड्] १ विलास करना, मौज करना। २ झूलना। ललइ, ललेइ (प्राकृ ७३; सण; महा; सुपा ४०३)। वकृ. ललंत, ललमाण (गा ४४६; सुर २, २३७; भवि; औप; सुपा १८१; १८७)।

ललणा स्त्री [ललना] स्त्री, महिला, नारी (तंदु ५०; सुपा ४३७)।

ललाड देखो णडाल (औप; पि २६०)।

ललाम न [ललामन्] प्रधान, नायक (अभि ६५)।

ललिअ न [ललित] १ विलास, मौज, लीला (पाअ; पव १६६; औप)। २ अंग-विन्यास-विशेष (पराह १, ४)। ३ प्रसन्नता, प्रसाद (विपा १, २ टी—पत्र २२)। ४ वि. क्रीडा-प्रधान, मौजी (णाया १, १६—पत्र २०५)। ५ शोभा-युक्त, सुन्दर, मनोहर (णाया १, १; औप; राय)। ६ मंजु, मधुर (पाअ)। ७ ईप्सित, अभिलषित (णाया १, ६)। °**मित्त** पुं [°मित्र] सातवें वासुदेव का पूर्वजन्मीय नाम (सम १५३; पउम २०, १७१)। °**वित्थरा** स्त्री [°विस्तरा] आचार्य श्रीहरिभद्रसूरि का बनाया हुआ एक जैन ग्रन्थ (चेइय २५६)।

ललिअंग पुं [ललिताङ्ग] एक राज-कुमार (उप ६८६ टी)।

ललिअय न [ललितक] छन्द-विशेष (अजि १८)।

ललिआ स्त्री [ललिता] एक पुरोहित-स्त्री (उप ७२८ टी)।

लल्ल वि [दे] १ सस्पृह, स्पृहावाला। २ न्यून, अधूरा (दे ७, २६)।

लल्ल वि [लल्ल] अव्यक्त आवाजवाला (पराह १, २)।

लल्लक पुं [लल्लक] छठवीं नरक-पृथिवी का एक नरक-स्थान (देवेन्द्र १२)।

लल्लक्क वि [दे] १ भीम, भयंकर (दे ७, १८; पाअ; सुर १६, १४८); 'लल्लक्कनरयविअणाओ' (भत्त ११०)। २ पुं. ललकार, लड़ाई आदि के लिए आह्वान (उप ७६८ टी)।

लल्लि स्त्री [दे] खुशामद (धर्मवि ३८; जय १६)।

लल्लिरी स्त्री [दे] मछली पकड़ने का जाल-विशेष (विपा १, ८—पत्र ८५)।

लव सक [लू] काटना। संकृ. लविऊण। हेकृ. लविउं। कृ. लविअव्व (प्राकृ ६६)।

लव सक [लप्] बोलना, कहना। लवइ (कुमा; संबोध १८; सण), लवे (भास ६६)। वकृ. लवंत, लवमाण (सुपा २६७; सुर ३, ६१)।

लव सक [प्र+वर्तय्] प्रवृत्ति कराना; 'णो विज्जू लवंति' (सुज्ज २०)।

लव वि [लप] वाचाट, बकवादी (सूअ २, ६, १५)।

लव पुं [लव] १ समय का एक सूक्ष्म परि-माण, सात स्तोक, मुहूर्त्त का सतरहवाँ अंश (ठा २, ४—पत्र ८६; सम ८५)। २ लेश, अल्प, थोड़ा (पाअ; प्रासू ६६; ११८; सण)। ३ न. कर्म (सूअ १, २, २, २०; २, ६, ६)। °**सत्तम** पुं [°सप्तम] अनुत्तरविमान निवासी देव, सर्वोत्तम देव-जाति (पराह २, ४; उव; सूअ १, ६, २४)।

लवअ पुं [दे. लवक] गोंद, लासा, चेप, निर्यास; 'लवओ गुंदो' (पाअ)।

लवइअ वि [दे. लवकित] नूतन दल से युक्त, अंकुरित, पल्लवित (औप; भग; णाया १, १ टी—पत्र ५)।

लवंग पुंन [लवङ्ग] १ वृक्ष-विशेष, लौंग का पेड़ (पराग १—पत्र ३४; कुप्र २४६)। २ वृक्ष-विशेष का फूल, लौंग (णाया १, १—पत्र १२; पराह २, ५)।

लवण न [लवन] छेदन, काटना (विसे ३२०६)।

लवण न [लवण] १ लोन, लून, नोन, नमक (कुमा)। २ पुं. रस-विशेष, क्षार रस (अणु)। ३ समुद्र-विशेष (सम ६७; णाया १,६; पउम ६६, १८)। ४ सीता का एक पुत्र, लव (पउम ६७, १६)। ५ मधुराज का एक पुत्र (पउम ८६, ४७)। °**जल** पुं [°जल] लवण समुद्र (पउम ५७, २७)। °**ोय** पुं [°ोद] लवण समुद्र (पउम ६४,१३)। देखो लोण।

लवणिम पुंस्त्री [लवणिमन्] लावण्य (कुमा)।

लवल न [लवल] पुष्प-विशेष (कुमा)।

लवली स्त्री [लवली] लता-विशेष (सुपा ३८; कुप्र २४६)।

लवव वि [दे] सुप्त, सोया हुआ (षड्)।

लविअ वि [लपित] उक्त, कथित (सूअ १, ६, ३५; कुमा; सुपा २६७)।

लवित्त न [लवित्र] दात्र, दाँती, हँसुआ या हँसिया, घास काटने का एक औजार (दे १, ८२)।

लविर वि [लपितृ] बोलनेवाला (सण)। स्त्री. °रा (कुमा)।

लस अक [लस्] १ श्लेष करना। २ चमकना। ३ क्रीडा करना। लसइ (प्राकृ ७२)। वकृ. लसंत (सण)।

लसइ पुं [दे] काम, कन्दर्प (दे ७, १८)।

लसक न [दे] तरु-क्षीर, पेड़ का दूध (दे ७, १८)।

लसण देखो लसुण (सूअ १, ७, १३)।

लसिर वि [लसितृ] १ श्लिष्ट होनेवाला। २ चमकनेवाला, दीप्र (से ८, ४४)।

लसुअ न [दे] तैल, तेल (दे ७, १८)।

लसुण न [लशुन] लहसुन, कन्द-विशेष (श्रा २०)।

लह देखो लभ। लहइ, लहेइ, लहए (महा; पि ४५७)। भवि. लहिस्सामो (महा)। कर्म. लहिज्जइ (हे ४, २४६)। वकृ. लहंत (प्रारू)। संकृ. लहिउं, लहिऊण (कुप्र १; महा) लहेप्पि, लहेप्पिणु, लहेवि (अप; पि ५८८)। कृ. लहणिज्ज, लहिअव्व (श्रा १४; सुर ६, ५३; सुपा ४२७)।

लहग पुं [दे] बासी अन्न में पैदा होनेवाला द्वीन्द्रिय कीट-विशेष (जी १५)।

लहण न [लभन] १ लाभ, प्राप्ति। २ ग्रहण, स्वीकार (श्रा १४)।

लहर पुं [लहर] एक वणिक्-पुत्र (सुपा ६१७)।

लहरि, **लहरी** स्त्री [लहरि, °री] तरंग, कल्लोल (सण; प्रासू ६६; कुमा)।

लहाविअ वि [लम्भित] प्रापित, प्राप्त कराया हुआ (कुप्र २३२)।

लहिअ देखो लद्ध (कप्प; पिंग)।

लहिम देखो लघिम (षड्)।

लहु, **लहुअ** वि [लघु] १ छोटा, जघन्य (कुमा; सुपा ३६०; कम्म ४, ७२; महा)। २ हलका (से ७, ४४; पाअ)। ३ तुच्छ, निःसार (पण्ह १, २—पत्र २८; पण्ह २, २—पत्र ११६)। ४ श्लाघनीय, प्रशंसनीय (से १२, ५३)। ५ थोड़ा, अल्प (सुपा ३५४)। ६ मनोहर सुन्दर (हे २, १२२)। स्त्री. °ई, °वी (षड्; प्राक २८; गउड; हे २, ११३)। ७ न. कृष्णागुरु, सुगन्धि धूप-द्रव्य विशेष। ८ वीरण-मूल (हे २, १२२)। ९ शीघ्र, जल्दी (द्र ४६; पण्ह २, २—पत्र ११६)। १० स्पर्श-विशेष (अणु)। ११ लघुस्पर्श नामक एक कर्मभेद (कम्म १, ४१)। १२ पुं. एक मात्रावाला अक्षर (हे ३, १३४)। °कम्म वि [°कर्मन्] जिसके अल्प ही कर्म अवशिष्ट रहे हों, शीघ्र मुक्ति-गामी (सुपा ३५४)। °करण न [°करण] दक्षता, चातुरी (णाया १, ३—पत्र ९२; उवा)। °परक्कम पुं [°पराक्रम] ईशानेन्द्र का एक पदाति-सेनापति (ठा ५, १—पत्र ३०३; इक)। °संखिज्ज न [°संख्येय] संख्या-विशेष, जघन्य संख्यात (कम्म ४, ७२)।

लहुअ सक [लघय्, लघु + कृ] लघु करना, छोटा करना। लहुअंति, लहुएसि (श्रा २०; गा ३४५)। वकृ. लहुअंत (से १५, २७)।

लहुअवड पुं [दे] न्यग्रोध वृक्ष, बरगद का पेड़ (दे ७, २०)।

लहुआइअ, **लहुइअ** वि [लघूकृत] लघु किया हुआ (से ६, ४; १२, ५४, स २०७; गउड)।

लहुई देखो लहु।

लहुग देखो लहु (कप्प; द्र ५८)।

लहुवी देखो लहु।

लाइअ वि [लागित] लगाया हुआ (से २, २६; वज्जा ५०)।

लाइअ वि [दे] १ गृहीत, स्वीकृत (दे ७, २७)। २ घृष्ट (से २, २६)। ३ न. भूषा, मण्डन (दे ७, २७)। ४ भूमि को गोबर आदि से लीपना (सम १३७; कप्प, औप; णाया १, १ टी—पत्र ३)। ५ चर्मार्ध, आधा चमड़ा (दे ७, २७)।

लाइअव्व देखो लाय = लावय्।

लाइज्जंत देखो लाय = लागय्।

लाइम वि [लव्य] काटने योग्य (दस ७, ३४)।

लाइम वि [दे] १ लाजा के योग्य, खोई के योग्य। २ रोपण के योग्य, बोने लायक (आचा २, ४, २, १५)।

लाइल्ल पुं [दे] वृषभ, बैल (दे ७, १९)।

लाउ देखो अलाउ (हे १, ६६; भग; कस; औप)।

लाउल्लोइय न [दे] गोमय आदि से भूमि का लेपन और खड़ी आदि से भीत आदि का पोतना (राय ३५)।

लाऊ देखो अलाऊ (हे १, ६६; कुमा)।

लाख (अप) देखो लक्ख = लक्ष (पिंग)।

लाग पुं [दे] चुंगी, एक प्रकार का सरकारी कर; लगान, गुजराती में 'लागो' (सिरि ४३३, ४३४)।

लाघव न [लाघव] लघुता, छोटाई, लघुपन (भग; कप्प; सुपा १०३; कुप्र २७७; किरात १९)।

लाघवि वि [लाघविन्] लघुता-युक्त, लाघव-वाला (उत्त २९, ४२; आचा)।

लाघविअ न [लाघविक] लघुता, छोटापन, लाघव (ठा ५, ३—पत्र ३४२; विसे ७ टी; सूअ २, १, ५७; भग)।

लाज देखो लाय = लाज (दे ५, १०)।

लाड पुं [लाट] देश-विशेष (सुपा ६५८; कुप्र २५४; सत्त ६७ टी; भवि; सण; इक)।

लाडी स्त्री [लाटी] लिपि-विशेष (विसे ४६४ टी)।

लाढ पुं [लाढ] देश-विशेष, एक आर्य देश (आचा; पव २७५; विचार ४९)।

लाढ वि [दे] १ निर्दोष आहार से आत्मा का निर्वाह करनेवाला, संयमी, आत्म-निग्रही (सूअ १, १०, ३; सुख २, १८)। २ प्रधान, मुख्य (उत्त १५, २)। ३ पुं. एक जैन आचार्य (राज)।

लाढ वि [दे] श्रेष्ठ, उत्तम (आचा २, ३, १, ५)।

लाण न [लान] ग्रहण, आदान (से ७, ६०)।

लावू देखो लाऊ (षड्)।

लाभ पुं [लाभ] १ नफा, फायदा (उव; सुख ८, १३)। २ प्राप्ति (ठा ३, ४)। ३ सूद, ब्याज (उप ९५७)।

लाभंतराइय न [लाभान्तरायिक] लाभ का प्रतिबन्धक कर्म (धर्मसं ९४८)।

लाभिय, **लाभिल्ल** वि [लाभिक] लाभ-युक्त, लाभ-वाला (औप; कर्म १७)।

लाम वि [दे] रम्य, सुन्दर (औप)।

लामंजय न [दे] तृण-विशेष, उशीर तृण, खस—गाँडर घास की जड़ (पाअ)।

लामा स्त्री [दे] डाकिनी, डाइन (दे ७, २१)।

लाय सक [लागय्] लगाना, जोड़ना। लाएसि (विसे ४२३)। वकृ. लायंत (भवि)। कवकृ. लाइज्जंत (से १३, १३)। संकृ. लाइवि (अप) (हे ४, ३३१; ३७८)।

लाय सक [लावय्] १ कटवाना। २ काटना, छेदना। कृ. लाइअव्व (से १५, ७५)।

लाय देखो लाइअ = (दे); 'लाउल्लोइय' (औप)।

लाय वि [लात] १ आत्त, स्वीकृत, गृहीत। २ न्यस्त, स्थापित (औप)। ३ न. लग्न का एक दोष, 'लायाइदोसमुक्कं नरवर अइसोहणं लग्गं' (सुपा १०८)।

लाय पुंस्त्री [लाज] १ आर्द्र तण्डुल। २ ब. भ्रष्ट धान्य, भुँजा हुआ नाज, खोई (कप्पू)।

लायण न [लागन] लगवाना (गा ४५८)।

लायण्ण न [लावण्य] १ शरीर-सौन्दर्य-विशेष, शरीरकान्ति (पाअ; कुमा; सण; पि १८६)। २ लवणत्व, क्षारत्व (हे १, १७७; १८०)।

लाल सक [लालय्] स्नेह-पूर्वक पालन करना। लालंति (तंदु ५०)। कवकृ. लालिज्जंत (सुर २, ७३; सुपा २४)।

लालंप अक [वि + लप्] विलाप करना, विकल होकर रोना। लालंपइ (प्राकृ ७३)।

लालंपिअ न [दे] १ प्रवाल। २ खलीन। ३ आक्रन्दित (दे ७, २७)।

लालंभ देखो लालंप। लालंभइ (प्राकृ ७३)।

लालण न [लालन] स्नेह-पूर्वक पालन (पउम २६, ८८)।

लालप्प देखो लालंप। लालप्पइ (प्राकृ ७३)।

लालप्प सक [लालप्य्] १ खूब बकना। २ बारबार बोलना। ३ गर्हित बोलना। लालप्पइ (सूअ १, १०, १६)। वकृ. लालप्पमाण (उत्त १४, १०; आचा)।

लालप्पण न [लालपन] गर्हित जल्पन (पराह १, ३—पत्र ४३)।

लालब्भ } देखो लालंप। लालब्भइ, लालम्हइ
लालम्ह } (प्राकृ ७३; धात्वा १५०)।

लालय न [लालक] लाला, लार (दे ५, १९)।

लालस वि [दे] १ मृदु, कोमल। २ स्त्रीन. इच्छा (दे ७, २१)।

लालस वि [लालस] लम्पट, लोलुप (पाअ; हे ४, ४०१)।

लाला स्त्री [लाला] लार, मुँह से गिरता जल-लव (औप; गा ५५१; कुमा; सुपा २२६)।

लालिअ देखो ललिअ; 'कुसुमिअहरिअंदरा-कणयदंडपरिरंभलालिअंगीओ' (गउड)।

लालिअ वि [लालित] स्नेह-पूर्वक पालित (भवि)।

लालिच (अप) पुं [नालिच] वृक्ष-विशेष (पिंग)।

लालिल्ल वि [लालावत्] लारवाला (सुपा ५३१)।

लाव सक [लापय्] बुलवाना, कहलाना। लावएज्जा (सूअ १, ७, २४)।

लाव देखो लावग (उप ५०७)।

लावंज न [दे] सुगन्धी तृण-विशेष, उशीर, खस (दे ७, २१)।

लावक } पुं [लावक] १ पक्षि-विशेष (विपा
लावग } १, ७—पत्र ७५; पराह १, १—पत्र ८)। २ वि. काटनेवाला (विसे ३२०६)।

लावणिअ वि [लावणिक] लवण से संस्कृत (विपा १, २—पत्र २७)।

लावण्ण } देखो लायण्ण (औप; रंभा; काल;
लावन्न } अभि ६२; भवि)।

लावय देखो लावग (उवा)।

लाविय (अप) वि [लात] लाया हुआ (भवि)।

लाविया स्त्री [दे] उपलोभन (सूअ १, २, १, १८)।

लाविर वि [लवितृ] काटनेवाला (गा ३५५)।

लास सक [लासय्] नाचना। लासंति (राय १०१)।

लास न [लास्य] १ भरतशास्त्र-प्रसिद्ध गेयपद आदि (कुमा)। २ नृत्य, नाच (पाअ)। ३ स्त्री का नाच। ४ वाद्य, नृत्य और गीत का समुदाय (हे २, ९२)।

लासक } पुं [लासक] १ रास गानेवाला।
लासग } २ जय शब्द बोलनेवाला, भाराड (णाया १, १ टी—पत्र २; औप; पराह २, ४—पत्र १३२; कप्प)।

लासय पुं [लासक, ह्लासक] १ अनार्य देश-विशेष। २ पुंस्त्री. अनार्य देश-विशेष का रहनेवाला। स्त्री. °सिया (औप; णाया १, १—पत्र ३७; इक; अंत)। देखो ल्हासिय।

लासयविहय पुं [दे. लासकविहग] मयूर, मोर (दे ७, २१)।

लाह सक [श्लाघ्] प्रशंसा करना। लाहइ (हे १, १८७)।

लाह देखो लाभ (उव; हे ४, ३९०; श्रा १२; णाया १, ९)।

लाहण न [दे] भोज्य-भेद, खाद्य वस्तु की भेंट (दे ७, २१; ६, ७३; सट्ठि ७८ टी; रंभा १३)।

लाहल देखो णाहल (से १, २५; कुमा)।

लाहव देखो लाघव (किरात १७)।

लाहवि देखो लाघवि (भवि)।

लाहविय देखो लाघविअ (राज)।

लिअ सक [लिप्] लेपन करना, लीपना। लिअइ (प्राकृ ७१)।

लिअ वि [लिप्त] १ लीपा हुआ (गा ५२८)। २ न. लेप (प्राकृ ७७)।

लिआर पुं [लृकार] 'लृ' वर्ण (प्राकृ ६)।

लिंक पुं [दे] बाल, लड़का (दे ७, २२)।

लिंकिअ वि [दे] १ आक्षिप्त। २ लीन (दे ७, २८)।

लिंखय देखो लंख (सुपा ३५९)।

लिंग सक [लिङ्ग्] १ जानना। २ गति करना। ३ आलिंगन करना। कर्म. लिंगिज्जइ (संबोध ५१)।

लिंग न [लिङ्ग] १ चिह्न, निशानी (प्रासू २४; गउड)। २ दार्शनिकों का वेष-धारण, साधु का अपने धर्म के अनुसार वेष (कुमा; विसे १५८५ टि; ठा ५, १—पत्र ३०३)। ३ अनुमान प्रमाण का साधक हेतु (विसे १५५०)। ४ पुंश्चिह्न, पुरुष का असाधारण चिह्न (गउड)। ५ शब्द का धर्म-विशेष, पुंलिंग आदि (कुमा, राज)। °द्धय पुं [°ध्वज] वेषधारी साधु (उप ४८६)। °जीव पुं [°जीव] वही अर्थ (ठा ५, १)।

लिंगि वि [लिङ्गिन्] १ साध्य, हेतु से जानी जाती वस्तु (विसे १५५०)। २ किसी धर्म के वेष को धारण करनेवाला, साधु, संन्यासी (पउम २२,३; सुर २,१३०)। स्त्री. °णी (पुप्फ ४५४)।

लिंगिय वि [लैङ्गिक] १ अनुमान प्रमाण (विसे ९५)। २ किसी धर्म के वेष को धारण करनेवाला साधु, संन्यासी (मोह १०१)।

लिंछ न [दे] १ चुल्ली-स्थान, चुल्हा का आश्रय। २ अग्नि-विशेष (ठा ८ टी—पत्र ४१९)। देखो लिच्छ।

लिंड न [दे] १ हाथी आदि की विष्ठा; गुजराती में 'लीद' (णाया १, १—पत्र ६३; उप २६४ टी; ती २)। २ शैवल-रहित पुराना पानी (पराह २, ५—पत्र १५१)।

लिंडिया स्त्री [दे] अज—बकरा आदि की विष्ठा, लेंडी, गुजराती में 'लिंडी' (उप पृ २३७)।

लिंत देखो ले = ला।

लिंप सक [लिप्] लीपना, लेप करना। लिंपइ (हे ४, १४९; प्राकृ ७१)। कर्म. लिप्पइ (आचा)। वकृ. लिंपेमाण (णाया १, ६)। कवकृ. लिप्पंत, लिप्पमाण (ओघभा १९५; रयण २९)।

लिंपण न [लेपन] लेप, लीपना (पिंड २४६; सुपा ६१६)।

लिंपाविय वि [लेपित] लेप कराया हुआ (कुप्र १४०)।

लिंपिय वि [लिप्त] लीपा हुआ (कुमा)।

लिंब पुं [निम्ब] वृक्ष-विशेष, नीम का पेड़, मराठी में 'लिंब' (हे १, २३०; कुमा; स ३५)।

लिंब वि [दे] १ कोमल। २ नम्र (राय ३५)।

लिंब पुं [दे· लिम्ब] आस्तरण-विशेष (णाया १, १—पत्र १३)।

लिंबड (अप) देखो लिंब = निम्ब; गुजराती में 'लिंबडो' (हे ४, ३८७; पि २४७)।

लिंबोहली स्त्री [दे] निम्ब-फल (सूक्त ८६)।

लिकार देखो लिआर (पि ५६)।

लिक्क अक [नि + ली] छिपना। लिक्कइ (हे ४, ५५; षड्)। वकृ. लिक्कंत (कुमा)।

लिक्ख न [लेख्य] लेखा, हिसाब; 'लिक्खं गणिऊण चिंतए सिट्ठी' (सिरि ४१८; सुपा ४२५)। देखो लेक्ख।

लिक्ख त्रीन [दे] छोटा स्रोत (दे ७, २१)। स्त्री. °क्खा (दे ७ २१)।

लिक्खा स्त्री [लिक्षा] १ लघु यूका, छोटा जूँ, लीख—सर के बालों में होता कीड़ा (दे ८, ६६; सं ६७)। २ परिमाण-विशेष (इक)।

लिखाप (अशो) सक [लेखय्] लिखवाना। भवि. लिखापयिस्सं (पि ७)।

लिखापित (अशो) वि [लेखित] लिखवाया हुआ (पि ७)।

लिच्छ सक [लिप्स्] प्राप्त करने को चाहना। लिच्छइ (हे २, २१)।

लिच्छ देखो लिंछ (ठा ८—पत्र ४३७)।

लिच्छवि देखो लेच्छइ = लेच्छकि (अंत)।

लिच्छा स्त्री [लिप्सा] लाभ की इच्छा (उप ६३०; प्राकृ २३)।

लिच्छु वि [लिप्सु] लाभ की चाहवाला (सुख ६, १; कुमा)।

लिज्जिअ (अप) वि [लात] गृहीत (पिंग)।

लिट्टिअ न [दे] १ चाटु, खुशामद (दे ७, २२)। २ वि. लम्पट, लोलुप (सुपा ५६३)।

लिट्टु देखो लेट्टु (वसु)।

लित्त वि [लिप्त] १ लेप-युक्त, लिपा हुआ (हे १, ६; कुमा; भवि)। २ संवेष्टित (सूअ १, ३, ३, १३)।

लित्ति पुंस्त्री [दे] खड्ग आदि का दोष (दे ७, २२)।

लिप्प देखो लित्त (गा ५१६; गउड)।

लिप्प देखो लेप्प (कुप्र ३८४)।

लिप्पंत } देखो लिंप।
लिप्पमाण }

लिप्पासण न [लिप्यासन] मसी-भाजन, दोत, दोआत, दावात (राय ६६)।

लिब्भंत देखो लिह = लिह्।

लिल्लिर वि [दे] १ हरा, आर्द्र। २ हरा रँगवाला; 'अइलिल्लिरपट्टबंधणमिसेण चोरसु पट्टबंधं व जो फुडं तत्थ उव्वहइ' (धर्मवि ७३)।

लिवि } स्त्री [लिपि, °पी] अक्षर-लेखन-प्रक्रिया
लिवी } (सम ३५; भग)।

लिस अक [स्वप्] सोना, सूतना, शयन करना। लिसइ (हे ४, १४६)।

लिस सक [श्लिष्] आलिंगन करना। भवि. लिसिस्सामो (सूअ २, ७, १०)।

लिसय वि [दे] तनूकृत, क्षीण (दे ७, २२)।

लिस्स देखो लिस = श्लिष्। लिस्संति (सूअ १, ४, १, २)।

लिह सक [लिख्] १ लिखना। २ रेखा करना। लिहइ (हे १, १८७; प्राकृ ७०)। कर्म. लिक्खइ (उव)। प्रयो. लिहावेइ, लिहावंति (कुप्र ३४८; सिरि १२७८)।

लिह सक [लिह्] चाटना। लिहइ (कुमा; प्राकृ ७०)। कर्म. लिहिज्जइ, लिब्भइ (हे ४, २४५)। वकृ. लिहंत (भत्त १४२)। कवकृ. लिब्भंत (से ६, ४१)। कृ. लेज्झ (णाया १, १७—पत्र २३२)।

लिहण न [लेहन] चाटन (उर १, ८; षड्; रंभा १६)।

लिहण न [लेखन] १ लिखना, लेख (कुप्र ३६८)। २ रेखा-करण (तंदु ५०)। ३ लिखवाना; 'पवयणलिहणं सहस्से लक्खे जिणभवणकारवणं' (संबोध ३६)।

लिहा स्त्री [लेखा] देखो रेहा = रेखा; 'इक्क च्चिय मह भइणी मयणा धन्नाण धु (? धु)रि लहइ लिहं' (सिरि ६७७)।

लिहावण न [लेखन] लिखवाना (उप ७२४)।

लिहाविय वि [लेखित] लिखवाया हुआ (स ६०)।

लिहिअ वि [लिखित] १ लिखा हुआ (प्रासू ५८)। २ उल्लिखित (उवा)। ३ रेखा किया हुआ, चित्रित (कुमा)।

लिहुणअ (अप) वि [लात] लिया हुआ, गृहीत (पिंग)।

लीढ वि [लीढ] १ चाटा हुआ (सुपा ६५१)। २ स्पृष्ट; 'नरिंदसिरि (? सिर) कुसुमलीढपायवीढं' (कुप्र ५)। ३ युक्त (पव १२५)।

लीण वि [लीन] लय-युक्त (कुमा)।

लील पुं [दे] यज्ञ (दे ७, २३)।

लीला स्त्री [लीला] १ विलास, मौज। २ क्रीड़ा (कुमा; पाअ; प्रासू ६१)। ३ छन्द-विशेष (पिंग)। °वई स्त्री [°वती] १ विलास-वती स्त्री (प्रासू ६१)। २ छन्द-विशेष (पिंग)। °वह वि [°वह] लीला-वाहक (गउड)।

लीलाइअ न [लीलायित] १ क्रीड़ा, केलि (कप्पू)। २ प्रभाव; 'धम्मस्स लीलाइयं' (उप १०३१ टी)।

लीलाय सक [लीलाय्] लीला करना। वकृ. लीलायंत (णाया १, १—पत्र १३; कप्प)। कृ. लीलाइयव्व (गउड)।

लीव पुं [दे] बाल, बालक (दे ७, २२, सुर १५, २१८)।

लीहा देखो लिहा (णाया १, ८—पत्र १४५; कुमा; भवि; सुपा १०६; १२४)।

लुअ सक [लू] छेदना, काटना। लुएज्जा (पि ४७३)।

लुअ देखो लुंप। लुअइ (प्राकृ ७१)।

लुअ वि [लून] काटा हुआ, छिन्न (हे ४, २५८; गा ८; गा ८; से ३, ४२; दे ७, २३; सुर १३, १७५; सुपा ५२४)।

लुअ वि [लुप्त] १ जिसका लोप किया गया हो वह। २ न. लोप (प्राकृ ७७)।

लुअंत वि [लूनवत्] जिसने छेदन किया हो वह (धात्वा १५१)।

लुंक वि [दे] सुप्त, सोया हुआ (दे ७, २३)।

लुंकणी स्त्री [दे] लुकना, छिपना (दे ७, २४)।

लुंख पुं [दे] नियम (दे ७, २३)।

लुंखाय पुं [दे] निर्णय (दे ७, २३)।

लुंखिअ वि [दे] कलुष, मलिन (से १५, ४२)।

लुंच सक [लुञ्च] १ बाल उखाड़ना। २ अपनयन करना, दूर करना। लुंचइ (भवि)। भूका. लुंचिसु (आचा)।

लुंचिअ वि [लुञ्चित] केश-रहित किया हुआ, मुण्डित (कुप्र २६२; सुपा ६४१)।

लुंछ सक [मृज्, प्र + उञ्छ्] मार्जन करना, पोंछना। लुंछइ (हे ४, १०५; प्राकृ ६७; धात्वा १५१)। वकृ. लुंछंत (कुमा)।

लुंट सक [लुण्ट्] लूटना। लुंटंति (सुपा ३५२)। वकृ. लुंटंत (धर्मवि ११३)। कवकृ. लुंटिज्जंत (सुर २, १४)।

लुंटण न [लुण्टन] लूट (सुर २, ४६; कुमा)।

लुंटाक वि [लुण्टाक] लूटनेवाला, लुटेरा (धर्मवि १२३)।

लुंठग वि [लुण्ठक] खल, दुर्जन; 'चडवंद-वेढिआ उवहसिज्जमाणा लुंठगलोएण, अणु-कंपिज्जंती धम्मिअजणेण' (सुख २, ६)।

लुंठिअ वि [लुण्ठित] बलाद् गृहीत, जबर-दस्ती से लिया हुआ (पिंग)।

लुंप सक [लुप्] १ लोप करना, विनाश करना। २ उत्पीड़न करना। लुंपइ, लुंपहा (प्राकृ ७१; सूअ १, ३, ४, ७)। कर्म. लुप्पइ (अचा), लुप्पए (सूअ १, २, १, १३)। कवकृ. लुपंत, लुप्पमाण (पि (पि ५४२; उत्त)। संकृ. लुंपित्ता (पि ५८२)।

लुंपइत्तु वि [लोपयितृ] लोप करनेवाला (आचा; सूअ २, २, ६)।

लुंपणा स्त्री [लोपना] विनाश (पण्ह १, १—पत्र ६)।

लुंपित्तु वि [लोप्तृ] लोप करनेवाला (आचा)।

लुंबी स्त्री [दे. लुम्बी] १ स्तबक, फलों का गुच्छा (दे ७, २८; कुमा; गा ३२२; कुप्र ४६०)। २ लता, वल्ली (दे ७, २८)।

लुक्क अक [नि + ली] लुकना, छिपना। लुक्कइ (हे ४, ५५; षड्)। वकृ. लुक्कंत (कुमा; वज्जा ५६)।

लुक्क अक [तुड्] टूटना। लुक्कइ (हे ४, ११६)।

लुक्क वि [दे] सुप्त, सोया हुआ (षड्)।

लुक्क वि [निलीन] लुका हुआ, छिपा हुआ (गा ४६; ५५८; पिंग)।

लुक्क वि [रुग्ण] १ भग्न (कुमा)। २ बीमार, रोगी (हे २, २)।

लुक्क वि [लुञ्चित] मुण्डित, केश-रहित (कप्प; पिंड २१७)।

लुक्कमाण देखो लोअ = लोक्।

लुक्किअ वि [तुडित] टूटा हुआ, खण्डित (कुमा)।

लुक्किअ वि [निलीन] लुका हुआ, छिपा हुआ (पिंग)।

लुक्ख पुं [रुक्ष] १ स्पर्श विशेष, लूखा स्पर्श (ठा १, सम ४१) २ वि. रुक्ष स्पर्शवाला, स्नेह रहित, लूखा, रूखा (णाया १, १—पत्र ७३; कप्प; औप)। देखो लूह = रूक्ष।

लुग्ग वि [दे. रुग्ण] १ भग्न, भांगा हुआ (दे ७, २३; हे २, २; ४, २५८)। २ रोगी, बीमार (हे २, २; ४, २५८ षड्)।

लुच्छ देखो लुंछ = मृज्। लुच्छइ (षड्)।

लुट्ट सक [लुण्ट्] लूटना। लुट्टइ (षड्)।

लुट्ट देखो लोट्ट = स्वप्। लुट्टइ (कुमा ६, १००)।

लुट्ट वि [लुण्टित] लूटा गया (धर्मवि ७)।

लुट्ठ पुं [लोष्ट] रोड़ा, ढेला, ईंट आदि का टुकड़ा (दे ७, २६)।

लुड्ड देखो लुद्ध (प्राकृ २१)।

लुढ अक [लुठ्] लुढ़कना, लेटना। वकृ. लुढमाण (स २५४)।

लुढिअ वि [लुठित] लेटा हुआ (सुपा ५०३; स ३६६)।

लुण देखो लुअ = लू। लुणइ (हे ४, २४१)। कर्म. लुणिज्जइ, लुव्वइ (प्राप्र; हे ४, २४२)। संकृ. लुणिऊण, लुणेऊण (प्राकृ ६६; षड्), लुणेप्पि (अप) (पि ५८८)।

लुणिअ वि [लून] काटा हुआ (धर्मवि १२६; सिरि ४०४)।

लुत्त वि [लुप्त] लोप-प्राप्त; 'करेइ लुत्तो इकारो त्थ' (चेइय ६७७)।

लुत्त न [लोप्त्र] चोरी का माल (श्रावक ६३ टी)।

लुद्ध पुं [लुब्ध] १ व्याध (पण्ह १, २; निचू ४)। २ वि. लोलुप, लम्पट (पाअ; विपा १, ७—पत्र ७७; प्रासू ७६)। ३ न. लोभ (बृह ३)।

लुद्ध न [लोध्र] गन्ध-द्रव्य-विशेष; 'सिणाणं अदुवा कक्कं लुद्धं पउमगाणि अ' (दस ६, ६४)। देखो लोद्ध = लोध्र।

लुद्ध पुंन [लोध्र] क्षार-विशेष (आचा २, १३, १)।

लुप्पंत
लुप्पमाण } देखो लुंप।

लुब्भ
लुभ } अक [लुभ्] १ लोभ करना। २ आसक्ति करना। लुब्भइ, लुब्भसि (हे ४, १५३; कुमा), लुभइ (षड्)। कृ. लुभियव्व (पण्ह २, ५—पत्र १४६)।

लुभ देखो लुह = मृज्। लुभइ (संक्षि ३५)।

लुरणी स्त्री [दे] वाद्य-विशेष (दे ७, २४)।

लुल देखो लुढ। लुलइ (पिंग)। वकृ. लुलंत, लुलमाण (सुपा ११७; सुर १०, २३१)।

लुलिअ वि [लुठित] लेटा हुआ (सुर ४, ६८)।

लुलिअ वि [लुलित] घूर्णित, चलित (उवा; कुमा; काप्र ८६३)।

लुव देखो लुअ = लू। लुवइ (धात्वा १५१)।

लुव्व° देखो लुण।

लुह सक [मृज्] मार्जन करना, पोंछना। लुहइ (हे ४, १०५; षड्; प्राकृ ६६; भवि)।

लुहण न [मार्जन] शुद्धि (कुमा)।

लूअ देखो लुअ = लून (षड्)।

लूआ स्त्री [दे] मृग-तृष्णा, सूर्य-किरण में जल की भ्रान्ति (दे ७, २४)।

लूआ स्त्री [लूता] १ वातिक रोग-विशेष (पंचा १८, २७; सुपा १४७; लहुअ १५)। २ जाल बनानेवाला कृमि, मकड़ी (ओघ ३२३; दे)।

लूड [लुण्ट्] लूटना, चोरी करना। लूडइ, लूडेइ, लूडेह (धर्मवि ८०; संवेग २६; कुप्र ५६)। हेकृ. लूडेउं (सुपा ३०७; धर्मवि १२४)। प्रयो., वकृ. लूडावंत (सुपा ३५२)।

लूड वि [लुण्ट] लूटनेवाला। स्त्री. °डी; 'सो नत्थि एत्थ गामे जो एयं महमहंतलायएणं। तरुणाण हिययलूडि परिसक्कंतिं निवारेइ ॥' (हेका २६०; काप्र ६१७)।

लूढण न [लुण्टन] लूट, चोरी (स ४४१)।

लूडिअ वि [लुण्टित] लूटा हुआ (स ५३६; पउम ३०, ६२; सुपा ३०७)।

लूण देखो लूअ = लून (दे ७, २३; सुपा ५२२; कुमा)।

लूण न [लवण] १ लून, नून, नोन, नमक (जी ४)। २ पुं. वनस्पति-विशेष (श्रा २०; धर्म २)। देखो लवण।

लूण न [लवण] लावण्य, सुन्दरता, शरीर-कान्ति (सुपा २६३)।

लूर सक [छिद्] काटना। लूरइ (हे ४, १२४)।

लूरिअ वि [छिन्न] काटा हुआ (कुमा ६, ८३)।

लूस सक [लूषय्] १ वध करना, मार डालना। २ पीड़ना, कदर्थन करना, हैरान करना। ३ दूषित करना। ४ चोरी करना। ५ विनाश करना। ६ अनादर करना। ७ तोड़ना। ८ छोटे को बड़ा और बड़े को छोटा करना। लूसंति, लूसयति, लूसएज्जा (सूअ १, ३, १, १४; १, ७, २१; १, १४, १६; १, १४, २५)। भूका. लूसिंसु (आचा)। संकृ. लूसिउं (श्रा १२)।

लूसअ } वि [लूषक] १ हिंसक, हिंसा करने-
लूसग } वाला। २ विनाशक (सूअ २, १, ५०; १, २, ३ ६)। ३ प्रकृति-क्रूर, निर्दय। ४ भक्षक (सूअ १, ३, १, ८)। ५ दूषित करनेवाला (सूअ १, १४, २६)। ६ विराधक, आज्ञा नहीं माननेवाला (सूअ १, २, २, ६, आचा)। ७ हेतु-विशेष (ठा ४, ३—पत्र २५४)।

लूसण वि [लूषण] ऊपर देखो (आचा; औप)।

लूसय वि [लषक] १ परिताप-कर्ता (आचा २, १, ६, ४)। २ चोर, तस्कर (वव ४)।

लूसिअ वि [लूषित] १ लुण्टित, लुटा गया (श्रा १२)। २ उपद्रुत, पीड़ित (सम्मत्त १७५)। ३ विनाशित (संबोध १०)। ४ हिंसित (आचा)।

लूह सक [मृज्, रूक्षय्] पोंछना। लूहेइ, लूहेंति (राय; णाया १, १—पत्र ५३)। संकृ. लूहित्ता (पि २५७)।

लूह पुं [रूक्ष] मुनि, साधु, श्रमण (दसनि २, ६)।

लूह वि [रूक्ष] १ लूखा, रूखा, स्नेह-रहित आचा; पिंड २६; उत्त)। २ पुं. संयम, विरति, चारित्र (सुअ, १, ३, १, ३)। ३ न. तप-विशेष, निर्विकृतिक तप (संबोध ५८)। देखो लुक्ख।

लूहिय वि [रूक्षित] पोंछा हुआ (णाया १, १—पत्र १६; कप्प; औप)।

ले सक [ला] लेना, ग्रहण करना। लेइ (हे ४. २३८; कुमा)। वकृ. लिंत (सुपा २५२; पिंग)। संकृ. लेवि (अप) (हे ४, ४४०)। हेकृ. लेविणु (अप) (हे ४, ४४१)।

लेक्ख न [लेख्य] १ व्यवहार, व्यापार (सुपा ४२४)। २ लेखा, हिसाब (कुप्र २३८)।

लेक्खा देखो लिहा (गउड)।

लेख देखो लेह = लेख (सम ३५)।

लेखापित देखो लिखापित (पि ७)।

लेच्छइ पुं [लेच्छकि] १ क्षत्रिय-विशेष। २ एक प्रसिद्ध राज-वंश (सूअ १, १३, १०; भग, कप्प; औप; अंत)।

लेच्छइ पुं [लिप्सुक, लेच्छकि] १ वणिक्, वैश्य। २ एक वणिग्-जाति (सूअ २, १, १३)।

लेच्छारिय वि [दे] खरण्टित, लिप्त (पिंड २१०)।

लेज्झ देखो लिह = लिह्।

लेट्ठु पुंन [लेष्टु] रोड़ा, ईंट, पत्थर आदि का टुकड़ा (विसे २४६६; औप; उव, कप्प; महा)।

लेडु } पुंन [दे. लेष्टु] ऊपर देखो (पाअ,
लेडुअ } दे ७, २४)।

लेडुक्क पुं [दे] १ रोड़ा, लोष्ट। २ वि. लम्पट (दे ७, २६)।

लेढिअ न [दे] स्मरण, स्मृति (दे ७, २५)।

लेडुक्क पुं [दे] रोड़ा, लोष्ट (दे ७, २४; पाअ)।

लेण न [लयन] १ गिरि-वर्ती पाषाण-गृह (णाया १, २—पत्र ७६)। २ बिल, जन्तु-गृह (कप्प)। °विहि पुंस्त्री [°विधि] कला-विशेष (औप)। देखो लयण = लयन।

लेप्प न [लेप्य] भित्ति, भीत (धर्मसं २६; कुप्र ३००)।

लेप्पकार पुं. [लेप्यकार] शिल्पी-विशेष, राज, राजगीर (अणु १४६)।

लेप्पा स्त्री [लेप्या] लेपन-क्रिया (उत्त १६, ६५)।

लेलु देखो लेडु (आचा; सूअ २, २, १८; पिंड ३४६)।

लेव पुं [लेप] १ लेपन (सम ३६; पउम २, २८)। २ नाभि-प्रमाण जल (ओघभा ३४)। ३ पुं. भगवान् महावीर के समय का नालंदा-निवासी एक गृहस्थ (सूअ २, ७, २)। °कड, °ड वि [°कृत] लेप-मिश्रित (ओघ ५६५; पत्र ४ टी—पत्र ४६; पडि)।

लेवण न [लेपन] लेप-करण (पव १३३)।

लेवाड वि [लेपकृत्] लेप कारक (वव १)।

लेस पुं [लेश] १ अल्प, स्तोक, लव, थोड़ा (पाअ; दे ७, २८)। २ संक्षेप (दं १)।

लेस वि [दे] १ लिखित। २ आश्वस्त। ३ निःशब्द, शब्द-रहित। ४ पुं. निद्रा (दे ७, २८)।

लेस पुं [श्लेष] संश्लेष, संबन्ध, मिलान (राय)।

लेसण न [श्लेषण] ऊपर देखो (विसे ३००७)।

लेसणया } स्त्री [श्लेषणा] ऊपर देखो (औप;
लेसणा } ठा ४, ४—पत्र २८०; राज)।

लेसणी स्त्री [श्लेषणी] विद्या-विशेष (सूअ २, २, २७; णाया १, १६—पत्र २१३)।

लेसा स्त्री [लेश्या] १ तेज, दीप्ति। २ मंडल, बिम्ब; 'चंदस्स लेसं आवरेत्ताणं चिट्ठइ' (सम २६)। ३ किरण (सुज १६)। ४ देह-सौन्दर्य (राज)। ५ आत्मा का परिणाम-विशेष, कृष्णादि द्रव्यों के सांनिध्य से उत्पन्न होनेवाला आत्मा का शुभ या अशुभ परिणाम। ६ आत्मा के शुभ या अशुभ परिणाम की उत्पत्ति

में निमित्त-भूत कृष्णादि द्रव्य (भग; उवा; औप; पव १५२; जीवस ७४; संबोध ४८; पएग १७; कम्म ४, १; ३१)।
लेसा स्त्री [लेश्या] ज्वाला (राय ५६; ५७)।
लेसिय वि [श्लेषित] श्लेष-युक्त (स ७६२)।
लेसुरुडयतरु पुं [दे] लसोड़ा; गु० गूंदा (चउप्पन्न० पत्र २४३)।
लेस्सा देखो लेसा (भग)।
लेह देखो लिह = लिख्। लेहइ (प्राकृ ७०)।
लेह देखो लिह = लिह्। लेहइ (प्राकृ ७०)।
लेह (अप) देखो लह = लभ्। लेहइ (पिंग)।
लेह पुं [लेह] अवलेह, चाटन (पउम २, २८)।
लेह पुं [लेख] १ लिखना, लेखन, अक्षर-विन्यास (गा २४४; उवा)। २ पत्र, चिट्ठी (कप्पू)। ३ देव, देवता। ४ लिपि। ५ वि. लेख्य, जो लिखा जाय (हे २, १८९)। ६ लेखक, लिखनेवाला; 'अज्जवि लेहत्तणे तएहा' (वज्जा १००)। °वाह वि [°वाह] चिट्ठी ले जानेवाला, पत्र-वाहक (पउम ३१, १; सुपा ५११)। °वाहग, °वाहय वि [°वाहक] वही अर्थ (सुपा ३३१; ३३२)। °साला स्त्री [°शाला] पाठशाला (उप ७२८ टी)। °ारिय पुं [°ाचार्य] उपाध्याय, शिक्षक (महा)।
लेहड वि [दे] लम्पट, लुब्ध (दे ७, २५; उव)।
लेहण न [लेहन] चाटन, आस्वादन (पउम ३, १०७)।
लेहणी स्त्री [लेखनी] कलम, लेखनी (पउम २६, ५; गा २४४)।
लेहल देखो लहड (गा ४६१)।
लेहा देखो लिहा (औप; कप्प; कप्पू; कुप्र ३६६; स्वप्न ५२)।
लेहिय वि [लेखित] लिखवाया हुआ (ती ७)।
लेहुड पुं [दे] लोष्ठ, रोड़ा, ढेला (दे ७, २४)।
लोअ देखो रोअ = रोचय्। संकृ. लोएग्रा (कस)।
लोअ सक [लोक्, लोकय्] देखना। वकृ. लोअअंत (नाट)। कवकृ. लुक्कमाण (उप १४२ टी)। संकृ. लोइउं (कुप्र ३)।

लोअ पुं [लोक] १ धर्मास्तिकाय आदि द्रव्यों का आधार-भूत आकाश-क्षेत्र, जगत्, संसार, भुवन। २ जीव, अजीव आदि द्रव्य। ३ समय, आवलिका आदि काल। ४ गुण, पर्याय, धर्म। ५ जन, मनुष्य आदि प्राणि-वर्ग (ठा १—पत्र १३; टी—पत्र १४; भग; हे १, १८०; कुमा; जी १४; प्रासू ५२; ७१; उत्त; सुर १, ८६)। ६ आलोक, प्रकाश (वज्जा १०६)। °ग्ग न [°ाग्र] १ ईषत्प्राग्भारा नामक पृथिवी, मुक्त-स्थान (णाया १, ५—पत्र १०५; इक)। २ मुक्ति, मोक्ष, निर्वाण (पात्र)। °ग्गथूभिआ स्त्री [°ाग्रस्तूपिका] मुक्त-स्थान, ईषत्प्राग्भारा पृथिवी (इक)। °ग्गपडिवुज्झणा स्त्री [°ाग्रप्रतिबोधना] वही अर्थ (इक)। °णाभि पुं [°नाभि] मेरु पर्वत (सुज्ज ५)। °प्पवाय पुं [°प्रवाद] जन-श्रुति, कहावत (सुर २, ४७)। °मज्झ पुं [°मध्य] मेरु पर्वत (सुज्ज ५)। °वाय पुं [°वाद] जन-श्रुति, लोकोक्ति (स २६०; मा ४८)। °ागास पुं [°ाकाश] लोक-क्षेत्र, आलोक-भिन्न आकाश (भग)। °ाहाणय न [°ाभाणक] कहावत, लोकोक्ति (भवि)। देखो लोग।
लोअ पुं [लोच] लुञ्चन, नोंचना केशों का उत्पाटन, उखाड़ना (सुपा ६४१; कुप्र १७३; णाया १, १—पत्र ६०; औप, उव)।
लोअ पुं [लोप] अदर्शन, विध्वंस (चेइय ६९१)।
लोअंतिय पुं [लोकान्तिक] एक देव-जाति (कप्प)।
लोअग न [दे. लोचक] गुण-रहित अन्न, खराब नाज (कस)।
लोअडी (अप) स्त्री [लोमपटी] कम्बल (हे ४, ४२३)।
लोअण पुंन [लोचन] आँख, चक्षु, नेत्र (हे १, ३३; २, १८४; कुमा; पात्र; सुर २, २२२)। °वत्त न [°पत्र] अक्षि-लोम, बरवनी, पक्ष्म (से ६, ६८)।
लोअणिल्ल वि [लोचनवत्] आँखवाला (सुपा २००)।
लोआणी स्त्री [दे] वनस्पति-विशेष (पएण १—पत्र ३६)।

लोइअ वि [लोकित] निरीक्षित, दृष्ट (गा २७१; स ७१३)।
लोइअ वि [लौकिक] लोक-संबन्धी, सांसारिक (आचा; विपा १, २—पत्र ३०; णाया १, ६—पत्र १६६)।
लोउत्तर वि [लोकोत्तर] लोक-प्रधान, लोक-श्रेष्ठ, असाधारण; 'लोउत्तरं चरिअं' (श्रा १६; विसे ८७०)। देखो लोगुत्तर।
लोउत्तरिय वि [लोकोत्तरिक] ऊपर देखो (श्रा १)।
लोंक वि [दे] सुप्त, सोया हुआ (दे ७, २३)।
लोग पुं [लोक] मान-विशेष, श्रेणी से गुणित प्रतर (अणु १७३)। °ायत देखो °ायय (अणु ३६)।
लोग देखो लोअ = लोक (ठा ३, २; ३, ३—पत्र १४२; कप्प; कुमा; सुर १, ७६; हे १, १७७; प्रासू २५; ४७)। ७ न. एक देव-विमान (सम २५)। °कंत न [°कान्त] एक देव-विमान (सम २५)। °कूड न [°कूट] एक देव-विमान (सम २५)। °ग्गचूलिआ स्त्री [°ाग्रचूलिका] मुक्त-स्थान, सिद्धि-शिला (सम २२)। °जत्ता स्त्री [°यात्रा] लोक-व्यवहार, रोजी (णाया १, २—पत्र ८८)। °ट्ठिइ स्त्री [°स्थिति] लोक-व्यवस्था (ठा ३, ३)। °दव्व न [°द्रव्य] जीव, अजीव आदि पदार्थ-समूह (भग)। °नाभि पुं [°नाभि] मेरु पर्वत (सुज्ज ५ टी—पत्र ७७)। °नाह पुं [°नाथ] जगत् का स्वामी, परमेश्वर (सम १; भग)। °परिपूरणा स्त्री [°परिपूरणा] ईषत्प्राग्भारा पृथिवी, मुक्त-स्थान (सम २२)। °पाल पुं [°पाल] इन्द्रों के दिक्पाल, देव-विशेष (ठा ३, १; औप)। °प्पभ पुं [°प्रभ] एक देव-विमान (सम २५)। °बिंदुसार पुंन [°बिन्दुसार] चौदहवाँ पूर्व-ग्रन्थ (सम ४४)। °मज्झावसिअ पुंन [°मध्यावसित] अभिनय-विशेष (ठा ४, ४—पत्र २८५)। °मज्झावसाणिअ पुंन [°मध्यावसानिक] वही अर्थ (राय)। °रूव न [°रूप] एक देव-विमान (सम २५)। °लेस न [°लेश्य] एक देव-विमान (सम २५)। °वण्ण न [°वर्ण] एक देव-विमान (सम २५)।

°वाल देखो °पाल (कुप्र १३५)। °वीर पुं [°वीर] भगवान् महावीर (उव)। °सिंग न [°श्रृङ्ग] एक देव-विमान (सम २५)। °सिट्ठ न [°सृष्ट] एक देव-विमान (सम २५)। °हिअ न [°हित] एक देव-विमान (सम २५)। °यय न [°यत] नास्तिक-प्रणीत शास्त्र, चार्वाक-दर्शन (णंदि)। °लोग पुंन [°लोक] परिपूर्ण आकाश-क्षेत्र, संपूर्ण जगत् (उव; पि २०२)। °वत्त न [°वर्त्त] एक देव-विमान (सम २५)। °हाण न [°ख्यान] लोकोक्ति, जन-श्रुति (उप ५३० टी)। लोगंतिय देखो लोअंतिय (पि ४६३)।

लोगिग देखो लोइअ = लौकिक (धर्मसं १२४८)।

लोगुत्तर देखो लोउत्तर। °वडिंसय न [°वतंसक] एक देव-विमान (सम २५)।

लोगुत्तर पुं [लोकोत्तर] मुनि, साधु। २ जिन-शासन, जैन सिद्धान्त (अणु २६)।

लोगुत्तरिअ वि [लोकोत्तरिक] १ साधु का। २ जिन शासन का (अणु २६)।

लोगुत्तरिय देखो लोउत्तरिय (ओघ ७६५)।

लोट्ट अक [स्वप्] लोटना, सोना। लोट्टइ (हे ४, १४६)। वकृ. लोट्टय° (पाअ)।

लोट्ट अक [लुठ्] १ लेटना। २ प्रवृत्त होना। लोट्टइ, लोट्टंती (प्राकृ ७२; सूअ १, १५, १४)। वकृ. लोट्टंत (सुपा ४६६)।

लोट्ट } पुं [दे] १ कच्चा चावल (निचू
लोट्टय } ४)। २ पुंस्त्री. हाथी का छोटा बच्चा (णाया १, १—पत्र ६३), स्त्री. °ट्टिया (णाया १, १)।

लोट्टिअ वि [दे] उपविष्ट (दे ७, २५)।

लोट्ठ वि [दे] स्मृत (षड्)।

लोट्ठु पुं [लोष्ट] रोड़ा, ढेला (दे ७, २४)।

लोडाविअ वि [लोटित] घुमाया हुआ (गा ७६६)।

लोढ सक [दे] कपास निकालना, लोढ़ना; गुजराती में 'लोढवुं'। वकृ. लोढयंत (राज)।

लोढ पुं [दे] १ लोढ़ा, शिलापुत्रक, पीसने का पत्थर (दस ५, १, ४५; उवा)। २ ओषधि-विशेष, पद्मिनीकन्द (पव ४; श्रा २०; संबोध ४४)। ३ वि. स्मृत। ४ शयित (दे ७,७२६)।

लोढय पुं [दे. लोठक] कपास के बीज निकालने का यन्त्र (गउड)।

लोढिअ वि [लोठित] लेटवाया हुआ, सुलाया हुआ (पउम ६१, ६७)।

लोण न [लवण] १ लून, नमक। २ लावण्य, शरीर-कान्ति (गा ३१६; कुमा)। ३ पुं. वृक्ष-विशेष (पउम ४२, ७; श्रा २०; पव ४)। ४—देखो लवण (हे १, १७१; प्राप्र; गउड; औप)।

लोणिय वि [लावणिक] लवण-युक्त, लवण-सम्बन्धी (ओघ ७७६)।

लोण्ण न [लावण्य] शरीर-कान्ति (प्राकृ ५)।

लोत्त न [लोप्त्र] चोरी का माल (स १७३)।

लोद्ध पुं [लोध्र] वृक्ष-विशेष (णाया १, १—पत्र ६५; पण्ण १; सूअ १, ४, २, ७; औप; कुमा)। देखो लुद्ध = लोध्र।

लोद्ध देखो लुद्ध = लुब्ध (पाअ; सुर ३, ४७, १०, २२३; प्राप्र)।

लोप्प देखो लुंप; 'जो एगं वायं लोप्पइ सो तिन्निवि लोप्पयंतो किं केणावि धरिउं पारीयइ' (स ४६२)।

लोभ सक [लोभय्] लुभाना, लालच देना। कवकृ. लोभिज्जंत (सुपा ६१)।

लोभ पुं [लोभ] लालच, तृष्णा (आचा; कप्प; औप; उव; ठा ३, ४)। २ वि. लोभ-युक्त (पडि)।

लोभणय वि [लोभनक] लोभी, लालची (आचा २, १५, ५)।

लोभि } व [लोभिन्] लोभवाला (कम्म
लोभिल्ल } ४, ४०; पउम ४, ४६)।

लोम पुंन [लोम] रोम, रोंआँ, रूंगटा (उवा)। °पक्खि पुं [°पक्षिन्] रोम के पंखवाला पक्षी (ठा ४, ४—पत्र २७१)। °स वि [°श] लोम-युक्त (गउड)। °हत्थ पुं [°हस्त] पींछी, रोमों का बना हुआ भाड़ू (विपा १, ७—पत्र ७८; औप; णाया १, २)। °हरिस पुं [°हर्ष] १ नरकावास-विशेष (देवेन्द्र २७)। २ रोमाञ्च, रोमों का खड़ा होना (उत्त ५, ३१)। °हार पुं [°हार] मार कर धन लूटनेवाला चोर (उत्त ६, २८)। °हार पुं [°हार] रूंगटों से लिया जाता आहार, त्वचा से ली जाती खुराक (भग; सूअनि १७१)।

लोमंथिअ पुं. [दे] नट (नंदि टिप्पण वैनयिक बुद्धिगत १३ वाँ कथानक)।

लोमसी स्त्री [दे] १ ककड़ी, खीरा (उप पृ २५२)। २ वल्ली-विशेष, ककड़ी का गाछ (वव १)।

लोय न [दे] सुन्दर भोजन, मिष्टान्न (आचा २, १, ४, ३)।

लोर पुंन [दे] १ नेत्र, आँख। २ अश्रु, आँसू (पिंग)।

लोल अक [लुठ्] १ लेटना। २ सक. विलोडन करना। लोलइ (पिंड ४२२; पिंग), 'लोलेइ रक्खसबलं' (पउम ७१, ४०)। वकृ. लोलंत; लोलमाण (कप्प; पिंग; पउम ५३, ७६)।

लोल सक [लोठय्] लेटाना। लोलेइ, लोलेमि (उवा)।

लोल वि [लोल] १ लम्पट, लुब्ध, आसक्त (णाया १, १ टी—पत्र ५; औप; पाअ; कप्प; सुपा ३६५)। २ पुं. रत्न-प्रभा नरक का एक नरकावास (ठा ६—पत्र ३६५; देवेन्द्र ३०)। ३ शर्कराप्रभा नामक द्वितीय नरक-पृथिवी का नववाँ नरकेन्द्रक—नरक-स्थान (देवेन्द्र ७)। °मज्झ पुं [°मध्य] नरकावास-विशेष (ठा ६ टी—पत्र ३६७)। °सिट्ठ पुं [°शिष्ट] नरकावास-विशेष (ठा ६ टी)। °वत्त पुं [°वर्त्त] नरकावास-विशेष (ठा ६ टी; देवेन्द्र ७)।

लोलंठिअ न [दे] चाटु, खुशामद (दे ७, २२)।

लोलण न [लोठन] १ लेटना, घोलन (सूअ १, ५, १, १७)। २ लेटवाना (उप ५६०)।

लोलपच्छ पुं [लोलपाक्ष] नरक-स्थान-विशेष (देवेन्द्र ३०)।

लोलिक्क न [लौल्य] लम्पटता, लोलुपता (पण्ह १, ३—पत्र ४३)।

लोलिम पुंस्त्री [लोलत्व] ऊपर देखो (कुमा)।

लोलुअ वि [लोलुप] १ लम्पट, लुब्ध (पउम १, ३०; २६, ४७; पाअ; सुर १४, ३३)। २ पुं. रत्नप्रभा नरक का एक नरकावास

(ठा ६—पत्र ३६५)। °च्चुअ पुं [°च्युत] रत्नप्रभा-नरक का एक नरक-स्थान (उवा)।

लोलुंचाविअ वि [दे] रचित-तृष्ण, जिसने तृष्णा की हो वह (दे ७, २५)।

लोलुव देखो लोलुअ (सूअ २, ६, ४४)।

लोव सक [लोपय्] लोप करना, विध्वंस करना। लोवेइ (महा)।

लोव पुंन [लोप] विध्वंस, विनाश, अदर्शन; 'कम-लोवकारया' (कुप्र ४), 'आ दुट्ठे जासु बहि लोवं व तुमं अदंसणा होसु' (धर्मवि १३३)।

लोह देखो लोभ = लोभ (कुमा; प्रासू १७६)।

लोह पुंन [लोह] १ धातु-विशेष, लोहा (विपा १, ६—पत्र ६६; पाअ; कुमा)। २ धातु, कोई भी धातु; 'जह लोहाण सुवन्नं तणाण धन्नं धणाण रयणाइं' (सुपा ६३६)। °कार पुं [°कार] लोहार (कुप्र १८८)। °जंघ पुं [°जङ्घ] १ भारत में उत्पन्न द्वितीय प्रतिवासुदेव राजा (सम १५४)। २ राजा चण्डप्रद्योत का एक दूत (महा)। °जंघवण न [°जङ्घवन] मथुरा के समीप का एक वन (ती ७)।

लोह वि [लौह] लोहे का, लोह-निर्मित (से १४, २०)।

लोहंगिणी स्त्री [लोहाङ्गिनी] छन्द-विशेष (पिंग)।

लोहल पुं [लोहल] शब्द-विशेष, अव्यक्त शब्द (षड्)।

लोहार पुं [लोहकार] लोहार, लोहे का काम करनेवाला शिल्पी (दे ८, ७१; ठा ८—पत्र ४१७)।

लोहि°, लोहिअ° देखो लोही; 'कुंभीसु य पयणेसु य लोहियसु य कंदुलोहिकुंभीसु' (सूअनि ८०; ७६)।

लोहिअ पुं [लोहित] १ लाल रँग, रक्त-वर्ण। २ वि. रक्त वर्णवाला, लाल (से २, ४; उवा)। ३ न. रुधिर, खून (पउम ५, ७६)। ४ गोत्र-विशेष, जो कौशिक गोत्र की एक शाखा है (ठा ७—पत्र ३९०)।

लोहिअंक पुं [लोहित्यक, लोहिताङ्क] अठासी महाग्रहों में तीसरा महाग्रह (सुज्ज २०)।

लोहिअक्ख पुं [लोहिताक्ष] १ एक महाग्रह (ठा २, ३—पत्र ७७)। २ चमरेन्द्र के महिष-सैन्य का अधिपति (ठा ५, १—पत्र ३०२; इक)। ३ रत्न की एक जाति (णाया १, १—पत्र ३१; कप्प; उत्त ३६, ७६)। ४ एक देव-विमान (देवेन्द्र १३२; १४४)। ५ रत्नप्रभा पृथिवी का एक काण्ड (सम १०४)। ६ एक पर्वत-कूट (इक)।

लोहिआ, लोहिआअ अक [लोहिताय्] लाल होना। लोहिआइ, लोहिआअइ (हे ३, १३८; कुमा)।

लोहिआमुह पुं [लोहितामुख] रत्नप्रभा का एक नरकावास (स ८८)।

लोहिच्च पुं [लोहित्य] आचार्य भूतदिन्न के शिष्य एक जैन मुनि (णंदि ५३)।

लोहिच्च, लोहिच्चायण न [लौहित्यायन] गोत्र-विशेष (सुज्ज १०, १६ टी; इक; सुज्ज १०, १६)।

लोहिणी, लोहिणीहू स्त्री [दे] वनस्पति-विशेष, कन्द-विशेष (पण्ण १—पत्र ३५), 'लोहिणीहू य थीहु य' (उत्त ३६, ९९; सुख ३६, ९९)।

लोहिल्ल वि [दे. लोभिन्] लम्पट, लुब्ध (दे ७, २५; पउम ८, १०७; गा ४४४)।

लोही स्त्री [लोही] लोहे का बना हुआ भाजन-विशेष, कराह (उप ८३३; चारु १)।

ल्हस देखो लस = लस्। ल्हसइ (प्राकृ ७२)।

ल्हस अक [स्रंस्] खिसकना, सरकना, गिर पड़ना। ल्हसइ (हे ४, १९७; षड्)। वकृ. ल्हसंत (वज्जा ९०)।

ल्हसण न [स्रंसन] खिसकना, पतन (सुपा ५५)।

ल्हसाव सक [स्रंसय्] खिसकाना। संकृ. ल्हसाविअ (सुपा ३०८)।

ल्हसाविअ वि [स्रंसित] खिसकाया हुआ (कुमा)।

ल्हसिअ वि [स्रस्त] खिसक कर गिरा हुआ (कुप्र १८७; वज्जा ८४)।

ल्हसिअ वि [दे] हर्षित (चंड)।

ल्हसुण देखो लसुण (पण्ण १—पत्र ४०; पि २१०)।

ल्हादि स्त्री [ह्लादि] आह्लाद, प्रमोद, खुशी (राज)।

ल्हाय पुं [ह्लाद] ऊपर देखो (धर्मसं २१६)।

ल्हासिय पुं [ल्हासिक] एक अनार्य मनुष्य-जाति (पण्ह १, १—पत्र १४)।

ल्हिक्क अक [नि + ली] छिपना। ल्हिक्कइ (हे ४, ५५; षड् २०१)। वकृ. ल्हिक्कंत (कुमा)।

ल्हिक्क वि [दे] १ नष्ट (हे ४, २५८)। २ गत (षड्)।

॥ इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि लआराइसद्दसंकलणो
चउत्तीसइमो तरंगो समत्तो ॥

व

व पुं [व] १ अन्तस्थ व्यञ्जन वर्ण-विशेष, जिसका उच्चारणस्थान दन्त और ओष्ठ हैं (प्राप; प्रामा)। २ पुंन. वरुण (से १, १; २, ११)।

व अ [व] देखो इव (से २, ११; गा १८; ६३; ६४; ७६; कुमा; हे २, १८२; प्रासू २)।

व देखो वा = अ (हे १, ६७; गा ४२; १६४; कुमा; प्राकृ २६; भवि)।

व° देखो वाया = वाच्। °क्खेवअ वि [°क्षेपक] वचन का निरसन—खण्डन (गा १४२ अ)। °प्पइराअ पुं [°पतिराज] एक प्राचीन कवि, 'गउडवहो' काव्य का कर्त्ता (गउड)।

वअणीआ स्त्री [दे] १ उन्मत्त स्त्री। २ दुःशील स्त्री (षड्)।

वअल अक [प्र + सृ] पसरना, फैलना। वअलइ (षड्)।

वआड देखो वायाड = वाचाट (संक्षि २)।

वइ अ [वै] इन अर्थों का सूचक अव्यय— १ अवधारण, निश्चय (विसे १८००)। २ अनुनय। ३ संबोधन। ४ पादपूर्त्ति (चंड)।

वइ अ [दे] बदि, कृष्ण पक्ष; 'फग्गुणवइ-छट्ठीए' (सुपा ८६)।

वइ वि [व्रतिन्] व्रतवाला, संयमी (उव; सुपा ४३९)। स्त्री. °णी (उप ५७१)।

वइ स्त्री [वाच्] वाणी, वचन (सम २५; कप्प; उप ६०४; श्रा ३१; सुपा १८४; कम्म ४, २४; २७; २८)। °गुत्त वि [°गुप्त] वाणी का संयमवाला (आचा; उप ६०४)। °गुत्ति स्त्री [°गुप्ति] वाणी का संयम (आचा)। °जोअ, °जोग पुं [°योग] वचन-व्यापार (भग; पण्ह १ २)। °जोगि वि [°योगिन्] वचन-व्यापारवाला (भग)। °मंत वि [°मत्] वचनवाला (आचा २, १, ६, १)। °मेत्त न [°मात्र] निरर्थक वचन (धर्मसं २८४; २८५; ८४४)। देखो वई।

वइ स्त्री [वृति] बाड़, काँटे आदि से बनाई जाती स्थानपरिधि, घेरा; 'धन्नाणं रक्खट्ठा कीरंति वईओ' (श्रा १०; गउड; गा ६६; उप ६४८; पउम १०३, १११; वज्जा ८६), 'उच्छू वोलंति वइं' (धर्मवि ५३; संबोध ४२)।

°वइ देखो पइ = पति (गा ६६; से ४, ३४; कप्प; कुमा)।

वइ° देखो वय = वद्।

वइ° देखो वय = व्रज्।

वइअ वि [दे] १ पीत, जिसका पान किया गया हो वह (दे ७, ३४)। २ आच्छादित, ढका हुआ; 'पच्छाइअनूमिआइं वइआइं' (पाअ)।

वइअ वि [व्ययित] जिसका व्यय किया गया हो वह, 'किमिह दव्वेण वइएणं बहुएणं' (सुपा ५७८; ७३; ४१०)।

वइअब्भ पुं [वैदर्भ] १ विदर्भ देश का राजा। २ वि. विदर्भ देश में उत्पन्न (षड्)।

वइअर पुं [व्यतिकर] प्रसङ्ग, प्रस्ताव (सुर ४, १३६; महा)।

वइअव्व देखो वय = व्रज्।

वइआ स्त्री [व्रजिका] छोटा गोकुल (पिंड ३०६; सुख २, ५; ओघ ८४)।

वइआलिअ वि [वैतालिक] मंगल-स्तुति आदि से राजा को जगानेवाला मागध आदि (हे १, १५२)।

वइआलीअ पुंन [वैतालीय] छन्द-विशेष (हे (हे १, १५१)।

वइएस वि [वैदेश] विदेश-संबन्धी, परदेशी (पउम ३३, २४; हे १, १५१; प्राकृ ६)।

वइएह पुं [वैदेह] १ वणिक्, वैश्य। २ शूद्र पुरुष और वैश्य स्त्री से उत्पन्न जाति-विशेष। ३ राजा जनक। ४ वि. देह-रहित से संबन्ध रखनेवाला। ५ मिथिला देश का (हे १, १५१; प्राकृ ६)।

वइंगण न [दे] बैंगन, वृन्ताक, भंटा (दे ६, १००)।

वइकच्छ पुं [वैकक्ष] उत्तरासंग (औप)।

वइकल्लिअ न [वैकल्य] विकलता (पाअ)।

वइकुंठ पुं [वैकुण्ठ] १ उपेन्द्र, विष्णु (पाअ)। २ लोक-विशेष, विष्णु का धाम (उप १०३१ टी)।

वइक्कंत वि [व्यतिक्रान्त] व्यतीत, गुजरा हुआ (पउम २, ७४; उवा; पडि)।

वइक्कम पुं [व्यतिक्रम] विशेष उल्लंघन, व्रत-दोष-विशेष (ठा ३, ४—पत्र १५६; पव ६, टी; पउम ३१, ६१)।

वइगरणिय पुं [वैकरणिक] राज-कर्मचारि-विशेष (सुपा ५४८)।

वइगा देखो वइआ (सुख २, ५; बृह ३)।

वइगुण्ण न [वैगुण्य] १ वैकल्य, अपरि-पूर्णता, असंपन्नता (धर्मसं ८८४)। २ विप-रीतपन, विपर्यय (राज)।

वइचित्त न [वैचित्र्य] विचित्रता (विसे ३१११; धर्मसं ६५)।

वइजवण वि [वैजवन] गोत्र-विशेष में उत्पन्न (हे १, १५१)।

वइणी देखो वइ = व्रतिन्।

वइतुलिय वि [वैतुलिक] तुल्यता-रहित (निचू ११)।

वइत्तए } देखो वय = वद्।
वइत्ता }

वइत्ता देखो वय = वच्।

वइत्तु वि [वदितृ] बोलनेवाला, 'मुसं वइत्ता भवति' (ठा ७—पत्र ३८६)।

वइदब्भ देखो वइअब्भ (हे १, १५१)।

वइदिस पुं [वैदिश] १ अवन्ती देश, मालव देश; 'वइदिस उज्जेणीए जियपडिमा एलगच्छं च' (उप २०२)। २ वि. विदिशा-संबन्धी (बृह ६)।

वइदेस देखो वइएस (प्राप्र)।

वइदेसिअ वि [वैदेशिक] विदेशीय, परदेशी (संक्षि ५; कुप्र ३८०; सिरि ३६३; पि ६१)।

वइदेह देखो वइएह (प्राप्र)।

वइदेही स्त्री [वैदेही] १ राजा जनक की स्त्री, सीता की माता (पउम २६, ७५)। २ जनकात्मजा, सीता। ३ हरिद्रा, हल्दी। ४ पिप्पली, पीपल। वणिक्-स्त्री (संक्षि ५)।

वइधम्म न [वैधर्म्य] विरुद्धधर्मता, विपरीतपन (विसे ३२२८)।

वइमिस्स वि [व्यतिमिश्र] संमिलित (प्राचा २, १, ३, २)।

वइर देखो **वेर** = वैर (हे १, १५२)।

वइर पुंन [वज्र] १ रत्न-विशेष, हीरक, हीरा (सम ६३; औप; कप्प; भग; कुमा)। २ इन्द्र का अस्त्र (षड्)। ३ एक देव-विमान (देवेन्द्र १३३; सम २५)। ४ विद्युत्, बिजली (कुमा)। ५ पुं. एक सुप्रसिद्ध जैन महर्षि (कप्प; हे १, ६; कुमा)। ६ कोकिलाक्ष वृक्ष। ७ श्वेत कुशा। ८ श्रीकृष्ण का एक प्रपौत्र। ९ न. बालक, शिशु। १० धात्री। ११ काँजी। १२ वज्रपुष्प। १३ एक प्रकार का लोहा। १४ अभ्र-विशेष। १५ ज्योतिष-प्रसिद्ध एक योग (हे २, १०५)। १६ कीलिका, छोटी कील (सम १४९)। °कंड न [°काण्ड] रत्नप्रभा पृथिवी का एक वज्ररत्न-मय काण्ड (राज)। °कंत न [°कान्त] एक देव-विमान (सम २५)। °कूड न [°कूट] १ एक देव-विमान (सम २५)। २ देवी-विशेष का आवासभूत एक शिखर (राज)। °जंघ पुं [°जङ्घ] १ भरत-क्षेत्र में उत्पन्न तृतीय प्रतिवासुदेव (सम १५४)। २ पुष्कलावती विजय के लोहार्गल नगर का एक राजा (आव)। °प्पभ न [°प्रभ] एक देव-विमान (सम २५)। °मज्झा स्त्री [°मध्या] प्रतिमा-विशेष, एक प्रकार का व्रत (ठा ४, १—पत्र १९५)। °रूव न [°रूप] एक देव-विमान (सम २५)। °लेस न [°लेश्य] एक देव-विमान (सम २५)। °वण्ण न [°वर्ण] देवविमान-विशेष (सम २५)। °सिंग न [°शृङ्ग] एक देव-विमान का नाम (सम २५)। °सिंह पुं [°सिंह] एक राजा (काल; पि ४००)। °सिट्ठ न [°सृष्ट] एक देव-विमान (सम २५)। °सीह देखो **सिंह** (काल)। °सेण पुं [°सेन] एक प्राचीन जैन महर्षि, जो वज्रस्वामी के शिष्य थे (कप्प)। °सेणा स्त्री [°सेना] १ एक इन्द्राणी, दाक्षिणात्य वानव्यन्तरेन्द्र की एक अग्र-महिषी (णाया २—पत्र २५२)। २ एक दिक्कुमारी देवी (इक)। °हर पुं [°धर] इन्द्र (षड्)। °मय वि [°मय] वज्र रत्नों का बना हुआ (सम ६३; औप; पि ७०; १३५), स्त्री. °मई, °मती (जीव ३; पि २०३ टि ४)। °वित्त न [°वित्त] एक देव-विमान (सम २५)। °सभनाराय न [ऋषभनाराच] संहनन-विशेष (सम १४९; भग)। देखो **वज्ज** = वज्र।

वइरा स्त्री [वज्रा] एक जैन मुनि-शाखा (कप्प)।

वइराग न [वैराग्य] विरक्ति, उदासीनता (पउम २६, २०)।

वइराड पुं [वैराट] १ एक आर्य देश। २ न. प्राचीन भारतीय नगर-विशेष, जो मत्स्य देश की राजधानी थी; 'वइराड मच्छ वरणा अच्छा' (पव २७५)।

वइराय देखो **वइराग** (भवि)।

वइरि } वि [वैरिन्] दुश्मन, रिपु (सुर
वइरिअ } १, ७; काल; प्रासू १७४)।

वइरिक्क न [दे] विजन, एकान्त स्थान; देखो **पइरिक्क**; 'अहिअं सुएणाइ निरंजणाइ वइरिक्कसुएणपुसिआइ' (गा ८७०)।

वइरित्त वि [व्यतिरिक्त] भिन्न, अलग (सुर १२, ४४; चेइय ५६४)।

वइरी स्त्री [वज्री] एक जैन मुनि-शाखा (कप्प)।

वइरुट्टा स्त्री [वैरोट्या] १ एक विद्या-देवी (संति ६)। २ भगवान् मल्लिनाथजी की शासन-देवी (संति १०)।

वइरुत्तरवडिंसग न [वज्रोत्तरावतंसक] एक देव-विमान (सम २५)।

वइरेअ } पुं [व्यतिरेक] १ अभाव (धर्मसं
वइरेग } ११२)। २ साध्य के अभाव में हेतु का नितान्त अभाव (धर्मसं ३९२; उप ४१३; विसे २९०; २२०४)।

वइरोअण पुं [वैरोचन] १ अग्नि, वह्नि (सूअ १, ६, ६)। २ बलि नामक इन्द्र (देवेन्द्र ३०७)। ३ उत्तर दिशा में रहनेवाले असुर-निकाय के देव (भग ३, १; सम ७४)। ४ पुंन. एक लोकान्तिक देव-विमान (पव २६७; सम १४)।

वइरोअण पुं [दे] बुद्ध देव (दे ७, ५१)।

वइरोड पुं [दे] जार, उपपति (दे ७, ४२)।

वइवलय पुं [दे] साँप की एक जाति, दुन्दुभ सर्प (दे ७, ५१)।

वइवाय पुं [व्यतीपात] ज्योतिष-प्रसिद्ध एक योग (राज)।

वइवेला स्त्री [दे] सीमा (दे ७, ३१)।

वइस देखो **वइस्स** = वैश्य; 'वाणिज्जकरिसणाइगोरक्खणपालणेसु उज्जुत्ता। ते होंति वइसनामा वावारपरायणा धीरा' (पउम ३, ११६)।

वइसइअ वि [वैषयिक] विषय से उत्पन्न, विषय-संबन्धी (संक्षि ५)।

वइसंपायण पुं [वैशम्पायन] एक ऋषि, जो व्यास का शिष्य था (हे १, १५१; प्राप्र)।

वइसम्म पुंन [वैषम्य] विषमता, 'वइसम्मो' (संक्षि ५; पि ६१)।

वइसवण पुं [वैश्रवण] कुबेर (हे १, १५२; भवि)।

वइसस न [वैशस] रोमाञ्चकारी पाप-कृत्य (उप ५७५)।

वइसानर देखो **वइस्साणर** (धम्म १२ टी)।

वइसाल देखो [वैशाल] विशाला में उत्पन्न (हे १, १५१)।

वइसाह पुं [वैशाख] १ मास-विशेष (सुर ४, १०१; भवि)। २ मन्थन-दण्ड। ३ पुंन. योद्धा का स्थान-विशेष (हे १, १५१; प्राप्र)।

वइसाही देखो **वेसाही** (राज)।

वइसिअ वि [वैशिक] वेष से जीविका उपार्जन करनेवाला (हे १, १५२; प्राप्र)।

वइसिट्ठ न [वैशिष्ट्य] विशिष्टता, भेद (धर्मसं ६९)।

वइसेसिअ न [वैशेषिक] १ दर्शन-विशेष, कणाद-दर्शन (विसे २५०७)। २ विशेष; 'जोएज्ज भावओ वा वइसेसियलक्खणं चउहा' (विसे २१७८)।

वइस्स पुंस्त्री [वैश्य] वर्ण-विशेष, वणिक्, महाजन (विपा १, ५)।

वइस्स वि [द्वेष्य] अप्रीतिकर (उत्त ३२, १०३)।

वइस्सदेव पुं [वैश्वदेव] वैश्वानर, अग्नि (निर ३, १)।

वइस्साणर पुं [वैश्वानर] १ वह्नि, अग्नि। २ चित्रक वृक्ष। ३ सामवेद का अवयव-विशेष (हे १, १५१)।

वई देखो वइ = वाच् (आचा)। °**मय** वि [°मय] वचनात्मक (दस ६, ३, ६)।

वईअ वि [व्यतीत] अतीत, गुजरा हुआ। °**सोग** पुं [°शोक] एक जैन मुनि (पउम २०, २०)।

वईवय सक [व्यति + व्रज्] जाना, गमन करना। वकृ. 'कोल्लायस्स संनिवेसस्स अदूर-सामंतेणं वईवयमाणे बहुजणसद्दं निसामेइ' (उवा)।

वईवाय देखो वइवाय (राज)।

वउ पुंस्त्री [दे] लावण्य, शरीर-कान्ति; 'वऊ अ लायण्णे' (दे ७, ३०)।

वउ न [वपुष्] शरीर, देह (राज)।

वउलिअ वि [दे] शूल-प्रोत (दे ७, ४४)।

वएमाण देखो वय = वद्।

वओ° देखो वय = वचस् (आचा)। °**मय** न [°मय] वाङ्मय, शास्त्र (विसे ५५१)।

वओ° देखो वय = वयस् (पउम ४८, ११५)।

वओवउप्फ } पुंन [दे] विषुवत्, समान
वओवत्थ } रात और दिनवाला काल (दे ७, ५०)।

वं° देखो वाया = वाच्। °**नियम** पुं [°नियम] वाणी की मर्यादा (उप ७२८ टी)।

वंक वि [वङ्क, वक्र] १ बांका, टेढ़ा, कुटिल (कुमा; सुपा १७२; पि ७४)। २ नदी का बाँक (हे १, २६; प्राप्र)।

वंक पुं [दे] कलंक, दाग (दे ७, ३०)।

°**वंक** देखो पंक (से ६, २६; गउड)।

वंकचूल पुं [वङ्कचूल] एक प्रसिद्ध राज-कुमार (धर्मवि ५२; पडि)।

वंकचूलि पुं [वङ्कचूलि] ऊपर देखो; 'तओ गया वंकचूलिणो गेहे' (धर्मवि ५३; ५६; ६०)।

वंकण न [वङ्कन, वक्रण] वक्रीकरण, कुटिल बनाना (ठा २, १—पत्र ४०)।

वंकिअ वि [वक्रित] बांका किया हुआ (से ६, ५६)।

°**वंकिअ** वि [पङ्कित] पंक-युक्त (से ६, ५६)।

वंकिम पुंस्त्री [वक्रिमन्] वक्रता, कुटिलता (पि ७४; हे ४, ३४४; ४०१)।

वंकुड } देखो वंक = वंक; 'विविहविसविड-
वंकुण } विनिग्गयवंकुडतिक्खग्गकंटइए। एयारिसम्मि य वणे' (स २५६; हे ४, ४१८; भवि; पि ७४)।

वंकुभ (शौ) ऊपर देखो (प्राकृ ६७)।

वंग न [दे] वृन्ताक, भंटा (दे ७, २६)।

वंग वि [व्यङ्ग] विकृत अंग, 'ववगय-वलीपलियवंगदुव्वन्नवाधिदोहग्गसोयमुक्काओ' (पण्ह १, ४—पत्र ७६)।

वंगच्छ पुं [दे] प्रमथ, शिव का अनुचर-विशेष (दे ७, ३६)।

वंगण न [व्यङ्गन] क्षत (राज)।

वंगिय वि [व्यङ्गित] विकृत शरीरवाला (राज)।

वंगेवडु पुं [दे] सूकर, सूअर (दे ७, ४२)।

वंच सक [वञ्च्] ठगना। वंचइ (हे ४, ९३; षड; महा)। कर्म. वंचिज्जइ (भवि)। संकृ. वंचिऊण (महा)। कृ. वंचणीअ (प्राप्र)। प्रयो., वकृ. 'तो सो वंचाविंतो कुमरपहारं वएइ पुरबाहिं' (सुपा ५७२)।

वंच (अप) देखो वच्च = व्रज्। वंचइ (प्राकृ ११६)। संकृ. वंचिवि (भवि)।

वंच सक [उद् + नमय्] ऊँचा उठाना। वंचइ (?) (धात्वा १५१)।

वंच वि [वञ्च] ठगनेवाला, धूर्त; 'कुडिलत्तणं च वंकत्तणं च वंचत्तणं असच्चं च' (वज्जा ११६; हे ४, ४१२)।

वंचअ } वि [वञ्चक] ऊपर देखो (नाट—
वंचग } मालवि; श्रा २८)।

वंचण न [वञ्चन] १ प्रतारण, ठगई (सम्मत्त २१७)। २ वि. ठगनेवाला, ठग (संबोध ४१)। °**चण** वि [°चण] ठगने में चतुर (सम्मत्त २१७)।

वंचणा स्त्री [वञ्चना] प्रतारणा (उव; कप्पू)।

वंचिअ वि [वञ्चित] १ प्रतारित (पाअ)। २ रहित, वर्जित (गउड)।

वंछा स्त्री [वाञ्छा] इच्छा, चाह (सुपा ४०४)।

वंज सक [वि + अञ्ज्] व्यक्त करना, प्रकट करना। कर्म. वंजिज्जइ (विसे १६४; ४६३; धर्मसं ५३)।

वंज देखो वंच = उद् + नमय्। वंजइ (?) (धात्वा १५१)।

वंज देखो वंद = वन्द्।

वंजग देखो वंजय (राज)।

वंजण न [व्यञ्जन] १ वर्ण, अक्षर; 'अणक्खरं होज्ज वंजणक्खरओ' (विसे १७०), 'तो नत्थि अत्थभेओ वंजणरयणा परं भिन्ना' (चेइय ८६६)। २ स्वर-भिन्न अक्षर, क से ह तक वर्ण (विसे ४६१; ४६२)। ३ शब्द, पद; 'सो पुण समासओ चिअ वंजणनिअओ य अत्थनिअओ अ' (सम्म ३०; सुअनि ६; पडि; विसे १७०)। ४ तरकारी, कढ़ी आदि रस-व्यञ्जक वस्तु (सुपा ६२३; ओघ ३५६)। ५ शुक्र, वीर्य (विसे २२८)। ६ शरीर का मसा आदि चिह्न (पव २५७; औप)। ७ मसा आदि शरीर-चिह्नों के फल का उपदेशक शास्त्र (सम ४६)। ८ कक्षा आदि के बाल (राज)। ९ प्रकाशन, व्यक्तीकरण (विसे ४६१)। १० श्रोत्रादि इन्द्रिय। ११ शब्द आदि द्रव्य। १२ द्रव्य और इंद्रिय का संबन्ध (णंदि, विसे २५०)। °**वग्गह**, °**ोग्गह** पुं [°ावग्रह] ज्ञान-विशेष, चक्षु और मन को छोड़ कर अन्य इन्द्रियों से होनेवाला ज्ञान-विशेष (कम्म १, ४; ठा २, १)।

वंजय वि [व्यञ्जक] व्यक्त करनेवाला (भास २९)।

वंजर पुं [मार्जार] बिल्ला, बिलार (हे २, १३२; कुमा)।

वंजर न [दे] नीवी, कटी-वस्त्र (दे ७, ४१)।

वंजिअ वि [व्यञ्जित] व्यक्त किया हुआ, प्रकटित (कुमा १, १८; २, ६६)।

वंजुल पुं [वञ्जुल] १ अशोक वृक्ष (गा ४२२; स १११)। २ वेतस वृक्ष (पाअ); 'वंजुलसंगेण विसं व पन्नगो मुयइ सो पावं' (धम्म ११ टी; वज्जा ६६; उप ७२८ टी)। ३ पक्षि-विशेष (पण्ह १, १—पत्र ८)।

वंजुलि वि [वञ्जुलिन्] वेतस वृक्षवाला । स्त्री. °णी (गउड) ।

वंझ वि [वन्ध्य] शून्य, वर्जित (कुमा) ।

वंझा स्त्री [वन्ध्या] बाँझ स्त्री, अपुत्रवती स्त्री (पउम २६, ८३; सुपा ३२४) ।

वंट न [वृन्त] फल या पत्तों का बन्धन (पिंड ४५) ।

वंटग पुं [वण्टक] बाँट, विभाग (निचू १६) ।

वंठ पुं [दे] १ अकृत-विवाह, अविवाहित, गुजराती में 'वांढो' (दे ७, ८३; ओघ २१८)। २ खण्ड, टुकड़ा । ३ गण्ड (दे ७, ८३) । ४ भृत्य, दास (दे ७, ८३; सुर २, ११८; रयण ८३; सिरि १११५) । ५ वि. निःस्नेह, स्नेह-रहित (दे ७, ८३) । ६ धूर्त, ठग (श्रा १२) ।

वंठ वि [वण्ठ] खर्व, वामन, नाटा, बौना (हे ४, ४४७) ।

वंठण (अप) न [वण्टन] बाँटना, विभाजन (पिंग) ।

वंडइअ वि [दे] पीडित (षड्) ।

°वंडु देखो पंडु (गा २९५) ।

वंडुअ न [दे] राज्य (दे ७, ३६) ।

°वंडुर देखो पंडुर (गा ३७४) ।

वंढ पुं [दे] बन्ध (दे ७, २९) ।

वंत वि [वान्त] पतित, गिरा हुआ (दस ३, १ टी) ।

वंत पुं [वान्त] १ जिसका वमन किया गया हो वह (उव) । २ पुंन. वमन; 'वंते इ वा पित्ते इ वा' (भग) ।

वंतर पुं [व्यन्तर] एक देव-जाति (दं २७; महा) ।

वंतरिअ पुं [व्यन्तरिक] ऊपर देखो (भग) ।

वंतरिणी स्त्री [व्यन्तरी] व्यन्तर-जातीय देवी (सुपा ६१३) ।

वंता देखो वम ।

°वंति देखो पन्ति (गा २७८; ४६३) ।

°वंथ देखो पन्थ (से १, १६; ३, ४२; १३, २०; पि ४०३) ।

वंद सक [वन्द्] १ प्रणाम करना । २ स्तवन करना । वंदइ (उव; महा; कप्प) । वकृ. वन्दमाण (ओघ १८; सं १०; अभि १७२) । कवकृ. वन्दिज्जमाण (उप ९८६ टी; प्रासू १६५) । संकृ. वन्दिअ, वन्दिओ, वन्दिऊण, वन्दित्ता, वन्दित्तु, वंदेवि (कम्म १, १; चंड; कप्प; षड्; हे ३, १४६; चंड) । हेकृ. वंदित्तए (उवा) । कृ. वंज, वंद, वंदणिज्ज, वंदणीअ, वंदिम (राज; अजि १४; द्रव्य १; णाया १, १; प्रासू १६२; नाट—मृच्छ १३०; दसचू १) ।

वंद न [वृन्द] समूह, यूथ (पउम १, १; औप; प्राप्र) ।

वंदअ, वंदग वि [वन्दक] वन्दन करनेवाला (पउम ६, ५८; १०१, ७३; महा; औप; सुख १, ३) ।

वंदण न [वन्दन] १ प्रणमन, प्रणाम । २ स्तवन, स्तुति (कप्प; सुर ४, ६२; उव) । °कलस पुं [°कलश] मांगलिक घट (औप) । °घड पुं [°घट] वही अर्थ (औप) । °माला, °मालिआ स्त्री [°माला] घर के द्वार पर मंगल के लिए बँधी जाती पत्र-माला (सुपा ५४; सुर १०, ४; गा २६२)। °वडिआ, °वत्तिआ स्त्री [°प्रत्यय] वन्दन-हेतु (सुपा ४३२, पडि) ।

वंदणा स्त्री [वन्दना] १ प्रणाम । २ स्तवन (पंचा ३, २; पण्ह २, १—पत्र १००; अंत) ।

वंदणिया स्त्री [दे] मोरी, नाला, पनाला; 'अत्थि कंबलो, गणियाए नेमि । मुक्को । तओ तोसे दिन्नो । तीए चं (? वं) दणियाए छूढो' (सुख २, १७) ।

वंदर देखो वंद = वृन्द (प्राप्र) ।

वंदाप (अशो) देखो वंदाव । वंदापयति (पि ७) ।

वंदारय पुं [वृन्दारक] १ देव, देवता (पाअ; कुमा) । २ वि. मनोहर (कुमा) । ३ मुख्य, प्रधान (हे १, १३२) ।

वंदारु वि [वन्दारु] वन्दन करनेवाला (चेइय ६२१, लहुअ) ।

वंदाव सक [वन्दय्] वन्दन करवाना । वंदावइ (उव) ।

वंदावणग न [वन्दन] वन्दन, प्रणाम (श्रावक ३७४) ।

वंदिअ देखो वंद = वन्द् ।

वंदिअ वि [वन्दित] जिसको वन्दन किया गया हो वह (कप्प; उव) ।

वंदिम देखो वंद = वन्द् ।

वंदुरा स्त्री [मन्दुरा] वाजिशाला, घुड़साल, अस्तबल ।

वंद्र न [वन्द्र] समूह, यूथ (हे १, ५३; २, ७९; पउम ११, १२०; स ६९९) ।

वंध पुं [वन्ध्य] एक महाग्रह, ज्योतिष्क देव-विशेष (सुज्ज २०) ।

वंफ सक [काङ्क्ष्] चाहना, अभिलाष करना । वंफइ, वंफए, वंफंति (हे ४, १९२; कुमा) ।

वंफ अक [वल्] लौटना । वंफइ (हे ४, १७६; षड्) ।

वंफि वि [वलिन्] १ लौटनेवाला । २ नीचे गिरनेवाला (कुमा) ।

वंफिअ वि [काङ्क्षित] अभिलषित (कुमा) ।

वंफिअ वि [दे] भुक्त, खाया हुआ (दे ७, ३५; पाअ) ।

वंस पुं [दे] कलंक, दाग (दे ७, ३०) ।

वंस पुं [वंश] १ बाँस, वेणु (पण्ह २, ५—पत्र १४९; पाअ) । २ वाद्य-विशेष; 'वाइओ वंसो' (कुमा २, ७०; राय) । ३ कुल; 'बुलुगवंसदीवओ' (कुमा २, ६१) । ४ सन्तान, संतति । ५ पृष्ठावयव, पीठ का भाग । ६ वर्ग । ७ इक्षु, ऊख । ८ वृक्ष-विशेष, सालवृक्ष (हे १, २६०) । °इरि पुं [°गिरि] पर्वत-विशेष (पउम ३९, ४) । °करिल्ल, °गरिल्ल पुंन [°करील] वंशांकुर, बाँस का कोमल नवावयव (श्रा २०; पव ४) । °जाली, °याली स्त्री [°जाली] बाँसों का गहन घटा (सुर १२, २००; उप पृ ३६) । °रोअणा स्त्री [°रोचना] वंशलोचन (कप्पू) ।

वंसकवेल्लुय पुंन [दे. वंशकवेल्लुक] छत के नीचे दोनों तरफ तिरछा रखा जाता बाँस (जीव ३; राय) ।

वंसग देखो वंसय (राज) ।

वंसप्फाल वि [दे] १ प्रकट, व्यक्त । २ ऋजु, सरल (दे ७, ४८) ।

वंसय वि [व्यंसक] १ धूर्त, ठग । २ पुं. दुष्ट हेतु-विशेष (ठा ४, ३—पत्र २५४) ।

वंसा स्त्री [वंशा] द्वितीय नरक-पृथिवी (ठा ७—पत्र ३८८; इक)।
वंसि° देखो **वंसी** = वंश (कम्म १, २०)।
वंसिअ वि [वांशिक] वंश-वाद्य बजानेवाला (हे १, ७०; कुमा)।
वंसिअ वि [व्यंसित] छलित, प्रतारित (राज)।
वंसी स्त्री [वांशी] १ सुरा-विशेष (बृह २)। २ बाँस की जाली (ठा ३, १—पत्र १२१)। **°कलंका** स्त्री [°कलङ्का] बाँस की जाली की बनी हुई बाड़ (विपा १, ३—पत्र ३८)। **°पत्तिया** स्त्री [°पत्रिका] योनि-विशेष, वंशजाली के पत्र के आकार की योनि (ठा ३, १)।
वंसी स्त्री [वंशी] वाद्य-विशेष, मुरली (बृह २)। **°णहिया** स्त्री [°नखिका] वनस्पति-विशेष (पराग १—पत्र ३८)। **°मुह** पुं [°मुख] द्वीन्द्रिय जीव-विशेष (जीव १ टी—पत्र ३१)।
वंसी स्त्री [वंश] बाँस। **°मूल** न [°मूल] बाँस की जड़ (कस)।
वंसी स्त्री [दे] मस्तक पर स्थित माला (दे ७, ३०)।
वक्क न [वाक्य] पद-समुदाय, शब्द-समूह (उव; उप ८३३; ८५६)।
वक्क न [वल्क] त्वचा, छाल (उप ८३६; औप)। **°बंध** पुं [°बन्ध] वल्क-बन्धन (विपा १, ८)।
वक्क देखो **वंक** = वंक (गाया १, ८—पत्र १३३; स ६११; धर्मसं ३४८; ३४६)।
वक्क न [वक्त्र] मुख, मुँह (पउम १११, १७; गा १६४)।
वक्क न [दे] पिष्ट, पिसान, आटा (षड्)।
वक्कंत पुंन [वक्रान्त] प्रथम नरक-भूमि का दसवाँ नरकेन्द्रक—नरकावास-विशेष (देवेन्द्र ५)।
वक्कंत वि [अवक्रान्त] उत्पन्न (कप्प; पि १४२)।
वक्कंति स्त्री [अवक्रान्ति] उत्पत्ति (कप्प; सम २; भग)।
वक्कड न [दे] १ दुर्दिन। २ निरन्तर वृष्टि (दे ७, ३५)।
वक्कडबंध न [दे] कर्णाभरण, कान का आभूषण (दे ७, ५१)।
वक्कम अक [अव + क्रम्] उत्पन्न होना। वक्कमइ (भग; कप्प)। भूका. वक्कमिंसु (कप्प)। भवि. वक्कमिस्संति (कप्प)। वकृ. **वक्कममाण** (भग; णाया १, १—पत्र २०)।
वक्कर (अप) देखो **वक्क** = वंक (भवि)।
वक्कल न [वल्कल] वृक्ष की छाल (प्राप्र; सुपा २५२; हे ४, ३४१; ४११; प्रति ५)। **°चीरि** पुं [°चीरिन्] एक महर्षि, जो राजा प्रसन्नचन्द्र के छोटे भाई थे (कुप्र २८६)।
वक्कलि } **वक्कलिग** } वि [वल्कलिन्] वृक्ष की छाल पहननेवाला (तापस), (कुमा; भत्त १००; संबोध २१; पउम ३६, ८४)।
वक्कल्लय वि [दे] पुरस्कृत, आगे किया हुआ (दे ७, ४६)।
वक्कस न [दे] १ पुराना धान का चावल। २ पुरातन सक्तु-पिण्ड। ३ बहुत दिनों का बासी गोरस। ४ गेहूँ का माँड (आचा १, ६, ४, १३)।
वक्किद (शौ) देखो **वंकिअ** (पि ७४)।
वक्ख देखो **वच्छ** = वृक्ष (चंड; उप ८८५)।
वक्ख देखो **वच्छ** = वक्षस् (संक्षि १५; प्राकृ २२; नाट—मृच्छ १३३)।
°वक्ख देखो **पक्ख** (गा ४४२; से ३, ४२; ४, २३; स ६५१)।
वक्खमाण देखो **वय** = व्।
वक्खल वि [दे] आच्छादित, ढका हुआ (षड्)।
वक्खा सक [व्या + ख्या] १ विवरण करना। २ कहना। कृ. **वक्खेय** (विसे १३७०)।
वक्खा स्त्री [व्याख्या] विवरण, विशद रूप से अर्थ प्ररूपण (विसे ६६४)।
वक्खाण न [व्याख्यान] १ ऊपर देखो (चेइय २७१; विसे ६६५)। २ कथन (हे २, ६०)।
वक्खाण सक [व्याख्यानय्] १ विवरण करना। २ कहना। वक्खाणइ (भवि)। भवि. वक्खाणइस्सं (शौ) (पि २७६)। कर्म. वक्खाणिज्जइ (विसे ६८४)। वकृ. **वक्खाणयंत** (उवर ६८; रयण २१)। संकृ. **वक्खाणेउं** (विसे ११)। कृ. **वक्खाणेअव्व** (राज)।
वक्खाणि वि [व्याख्यानिन्] व्याख्यान-कर्ता (धर्मसं १२६१)।
वक्खाणिय वि [व्याख्यानित] व्याख्यात (विसे १०८७)।
वक्खाणीअ (अप) ऊपर देखो (पिंग ५०६)।
वक्खाय वि [व्याख्यात] १ विवृत, वर्णित (स १३२; चेइय ७७१)। २ पुं. मोक्ष, मुक्ति (आचा १, ५, ६, ८)।
वक्खार पुं [दे] बखार, अन्न आदि रखने का मकान, गोदाम (उप १०३१ टी)।
वक्खार पुं [वक्षार, वक्षस्कार] १ पर्वत-विशेष, गज-दन्त के आकार का पर्वत (सम १०१; इक)। २ भू-भाग, भू-प्रदेश (पउम २, ५४; ५५; ५६; ५८)।
वक्खारय न [दे] १ रति-गृह। २ अन्तःपुर (दे ७, ४५)।
वक्खाव सक [व्या + ख्यापय्] व्याख्यान कराना। वक्खावइ (प्राकृ ६१)।
वक्खित्त वि [व्याक्षिप्त] १ व्यग्र, व्याकुल (ओघ १३; कुप्र २७)। २ किसी कार्य में व्यापृत (पव २)।
वक्खेय देखो **वक्खा** = व्या + ख्या।
वक्खेव पुं [व्याक्षेप] १ व्यग्रता, व्याकुलता (उवा; उप १३६ टी; १४०)। २ कार्य-बाहुल्य (सुख ३, १)।
वक्खेव पुं [अवक्षेप] प्रतिषेध, खण्डन (गा २४२ अ)।
वक्खो° देखो **वच्छ** = वक्षस्। **°रुह** पुं [°रुह] स्तन, थन (सुपा ३८६)।
वक्रु (शौ) देखो **वंक** = वङ्क (प्राकृ ८७)।
वखाण (अप) देखो **वक्खाण** = व्याख्यानय्। बखाण (पिंग)।
वखाणिअ (अप) देखो **वक्खाणिय** (पिंग)।
वगडा स्त्री [दे] बाड़, परिक्षेप (कस; वव ६)।
वग्ग सक [वल्ग्] १ जाना, गति करना। २ कूदना। ३ बहु-भाषण करना। ४ अभिमान-सूचक शब्द करना, खूँखारना। वग्गइ (भवि; सण; पि २६६), वग्गंति (सुपा २८८)। कर्म. वग्गीअदि (शौ) (किरात १७)। वकृ. **वग्गंत** (स ३८३; सुपा ४६३; भवि)। संकृ. **वग्गित्ता** (पि २६६)।

वग्ग पुं [वर्ग] १ सजातीय समूह (णंदि; सुर ३, ४; कुमा)। २ गणित-विशेष, दो समान संख्या का परस्पर गुणन (ठा १०—पत्र ४९६)। ३ ग्रन्थ-परिच्छेद, अध्ययन, सर्ग (हे १, १७७; २, ७९)। °मूल न [°मूल] गणित-विशेष, वह अंक जिसका वर्ग किया गया हो, जैसे ४ का वर्ग करने से १६ होता है, १६ का वर्गमूल ४ होता है (जीवस १५७)। °वग्ग पुं [°वर्ग] गणित-विशेष, वर्ग से वर्ग का गुणन, जैसे २ का वर्ग ४, ४का वर्ग १६, यह २ का वर्गवर्ग कहलाता है (ठा १०)।

वग्ग सक [वर्गय्] वर्ग करना, किसी अंक को समान अंक से गुणना। वग्गसु (कम्म ४, ८४)।

वग्ग वि [व्यग्र] व्याकुल (उत्त १५, ४; रयण ८०)।

वग्ग देखो **वक्क** = वल्क (विसे १५४)।

वग्ग देखो **वक्क** = वाक्य, 'मुद्धा भणंति अहलं बहु वग्गजालं' (रंभा)।

वग्ग वि [वाल्क] वृक्ष-त्वचा—छाल का बना हुआ (णाया १, १ टी—पत्र ४३)।

वग्गंसिअ न [दे] युद्ध, लड़ाई (दे ७, ४६)।

वग्गचूलिआ स्त्री [वर्गचूलिका] एक प्राचीन जैन ग्रन्थ (णंदि २०२)।

वग्गण न [वल्गन] कूदना (औप; कुप्र १०७; कप्प; णाया १, १—पत्र १९; प्राप)।

वग्गण न [वल्गन] बकवाद (रंभा)।

वग्गणा स्त्री [वर्गणा] सजातीय समूह (ठा १—पत्र २७)।

वग्गय न [दे] वार्ता, बात (दे ७, ३८)।

वग्गा स्त्री [वल्गा] लगाम (उप ७६८ टी)।

वग्गावग्गि अ. वर्ग रूप से (औप)।

वग्गि वि [वाग्मिन्] १ प्रशस्त वाक्य बोलनेवाला। २ पुं. बृहस्पति (प्राप्र; पि २७७)।

वग्गिअ वि [वर्गित] वर्ग किया हुआ (कम्म ४, ८०)।

वग्गिअ न [वल्गित] १ बहु भाषण, बकवाद (सम्मत्त २२७)। २ बड़ाई की आवाज (मोह ८७)। ३ गति, चाल (सण)।

वग्गिर वि [वल्गितृ] १ खूँखार आवाज करनेवाला। २ गति-विशेषवाला (सुर ११, १७१)।

वग्गु देखो **वाया** = वाच्; 'वग्गूहिं' (औप; कप्प; सम ५०; कुम्मा १६)।

वग्गु देखो **वग्ग** = वर्ग; 'वग्गूहिं' (औप)।

वग्गु वि [वल्गु] १ सुन्दर, शोभन (सूअ १, ४, २, ४)। २ कल, मधुर (पाअ)। ३ पुं. विजय-क्षेत्र-विशेष, प्रान्त-विशेष (ठा २, ३—पत्र ८०)। ४ पुंन. एक देव-विमान, वैश्रमण लोकपाल का विमान (देवेन्द्र १३१; २७०)।

वग्गुरा न [वागुरा] १ मृग-बन्धन, पशु फँसाने का जाल, फन्दा (पण्ह १, १, विपा १, २—पत्र ३५)। २ समूह, समुदाय; 'मणुस्सवग्गुरापरिक्खित्ते' (उवा, प्राप)।

वग्गुरिय वि [वागुरिक] १ मृग-जाल से जीविका निर्वाह करनेवाला, व्याध, पारधि (ओघ ७६६)। २ पुं. नर्त्तक-विशेष (राज)।

वग्गुलि पुंस्त्री [वल्गुलि] १ पक्षि-विशेष (पण्ह १, १—पत्र ८)। २ रोग-विशेष (ओघभा २७७, श्रावक ९३ टी)।

वग्गोज्ज वि [दे] प्रचुर, प्रभूत (दे ७, ३८)।

वग्गोअ पुं [दे] नकुल, न्यौला (दे ७, ४०)।

वग्गोरमय वि [दे] रूक्ष, लूखा (दे ७, ५२)।

वग्गोल सक [रोमन्थय्] पगुराना, चबी हुई वस्तु का पुनः चबाना; गुजराती में 'वागोळवुं'। वग्गोलइ (हे ४, ४३)।

वग्गोलिर वि [रोमन्थयितृ] पगुरानेवाला (कुमा)।

वग्घ वि [वैयाघ्र] व्याघ्र-चर्म का बना हुआ (आचा २, ५, १, ५)।

वग्घ पुं [व्याघ्र] १ बाघ, शेर (पाअ; स्वप्न ७०; सुपा ४६३)। २ रक्त एरण्ड का पेड़। ३ करञ्ज वृक्ष (हे २, ९०)। °मुह पुं [°मुख] १ एक अन्तर्द्वीप। २ उसमें रहनेवाली मनुष्य-जाति (ठा ४, २—पत्र २२६; इक)।

वग्घाअ पुं [दे] १ साहाय्य, मदद। २ वि. विकसित, खिला हुआ (दे ७, ८६)।

वग्घाडी स्त्री [दे] उपहास के लिये की जाती एक प्रकार की आवाज; 'अप्पेगइया वग्घाडीओ करेंति' (णाया १, ८—पत्र १४४)।

वग्घारिअ वि [व्याघारित] १ बधारा हुआ, छौंका हुआ (नाट—मृच्छ २२१)। २ व्याप्त; 'सीतोदयवियडवग्घारियपाणिणा' (सम ३९)। ३ पिघला हुआ (दश० वै० वृ० चू० अ० ३ नि० गा० १६७)।

वग्घारिअ वि [दे] प्रलम्बित; 'पडिबद्धसरीरवग्घारियसोणिसुत्तगमल्लदामकलावे' (सूअ २, २, ५५); 'वग्घारियपाणी' (णाया १, ८—पत्र १५४; कप्प; औप; महा)।

वग्घावच्च न [व्याघ्रापत्य] एक गोत्र, जो वाशिष्ठ गोत्र की एक शाखा है (ठा ७—पत्र ३९०; सुज्ज १०, १६; कप्प; इक)।

वग्घी स्त्री [व्याघ्री] १ बाघ की मादा (कुमा)। २ एक विद्या (विसे २४५४)।

वघाय देखो **वाघाय**; 'आउस्स कालाइचरं वघाए, लद्धाणुमाणे य परस्स अट्ठे' (सूअ १, १३, २०)।

वचा स्त्री [वचा] १ पृथिवी, धरती (से २, ११)। २ ओषधि-विशेष, बच (मृच्छ १७०)। देखो **वया** = वचा।

वच्च सक [व्रज्] जाना, गमन करना। वच्चइ (हे ४, २२५; महा)। भवि. वच्चिहिसि (महा)। वकृ. वच्चंत, वच्चमाण (सुर २, ७२; महा; सा १६)।

वच्च सक [काङ्क्ष्] चाहना, अभिलाष करना। वच्चइ, वच्चउ (हे ४, १९२; कुमा)।

वच्च देखो **वय** = वच्।

वच्च पुंन [वर्चस्] १ पुरीष, विष्ठा (पाअ; ओघ १९७; सुपा १७६; तंदु १४)। २ कूड़ा-करकट; 'भोगो तंबोलाइ कुणंतो जिणगिहे कुणइ वच्चं' (संबोध ४)। ३ चौथा नरक का चौथा नरकेन्द्रक—नरकस्थान-विशेष (देवेन्द्र १०)। ४ तेज, प्रभाव (णाया १, १—पत्र ६)। °घर, °हर न [°गृह] पाखाना, टट्टी (सूअ १, ४, २, १३; स ७४१)।

वच्च देखो **वय** = वचस् (णाया १, १—पत्र ६)।

वच्चंसि वि [वचस्विन्] प्रशस्त वचनवाला (णाया १, १—पत्र ६)।

वच्चंसि वि [वर्चस्विन्] तेजस्वी (णाया १, १; सम १५२; औप; पि ७४)।

वच्चय पु [व्यत्यय] विपर्यास, उलट-पुलट (उपप्र २६६; पव १०४)। देखो **वत्तअ**।

वच्चरा (अप) देखो वच्चा (भवि)।

वच्चा देखो वग = वच्।

वच्चामेलिय देखो विच्चामेलिय (विसे १४८१)।

वच्चास पुं [व्यत्यास] विपर्यास, विपर्यय (ओघ २७१; कम्म ५, ८६)।

वच्चासिय वि [व्यत्यासित] उलटा किया हुआ (विसे ८५३)।

वच्चीसग पुं [वच्चीसक] वाद्य-विशेष (अनु)।

वच्चो° देखो वच्च = वर्चस् (सुर ६, २८)।

वच्छ न [दे] पार्श्व, समीप (दे ७, ३०)।

वच्छ पुंन [वक्षस्] छाती, सीना (हे २ १७; संक्षि १५; प्राप्र; गा १५१; कुमा)। °त्थल न [°स्थल] उरः-स्थल, छाती (कुमा, महा)। °सुत्त न [°सूत्र] आभूषण-विशेष, वक्षःस्थल में पहनने की सँकली—सिकड़ी या सिकरी (भग ६, ३३ टी—पत्र ४७७)।

वच्छ पुं [वृक्ष] पेड़, शाखी, द्रुम (प्राप्र; कुमा; हे २, १७; पाअ)।

वच्छ पुं [वत्स] १ बछड़ा (सुर २, ६५; पाअ)। २ शिशु, बच्चा। ३ वत्सर, वर्ष। ४ वक्षःस्थल, छाती (प्राप्र)। ५ ज्योतिषशास्त्र-प्रसिद्ध एक चक्र (गण १६)। ६ देश-विशेष (तो १०)। ७ विजय-क्षेत्र-विशेष (ठा २, ३—पत्र ८०)। ८ न. गोत्र-विशेष। ९ वि. उस गोत्र में उत्पन्न (ठा ७—पत्र ३६०; कप्प)। °दर पुंस्त्री [°तर] क्षुद्र वत्स। २ दमनीय बछड़ा आदि। स्त्री. °री (प्राकृ २३)। °मित्ता स्त्री [°मित्रा] १ अधोलोक में रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८—पत्र ४३७; इक)। २ ऊर्ध्वलोक में रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (इक; राज)। °यर देखो °दर (दे २, ६; ७, ३७)। °राय पुं [°राज] एक राजा (ती १०)। °वाल पुंस्त्री [°पाल] गोप, ग्वाला (पाअ)। स्त्री °ली (श्रावम)।

वच्छ वि [वात्स्य] वात्स्य गोत्र का (णंदि ४८)।

वच्छगावई स्त्री [वत्सकावती] एक विजय-क्षेत्र (ठा २, ३—पत्र ८०; इक)।

वच्छर पुंन [वत्सर] साल, वर्ष (प्राप्र; सिरि ६३५)।

वच्छल वि [वत्सल] स्नेही, स्नेह-युक्त (गा ३; कुमा; सुर ६, १३७)।

वच्छल्ल न [वात्सल्य] स्नेह, अनुराग, प्रेम (कुमा; पडि)।

वच्छा स्त्री [वत्सा] १ विजय-क्षेत्र विशेष। २ एक नगरी (इक)। ३ लड़की (कप्पू)।

वच्छाण पुं [उक्षन्] बैल, बलीवर्द; 'उक्खा वसहा य वच्छाणा' (पाअ)।

वच्छावई स्त्री [वत्सावती] विजय-क्षेत्र विशेष (जं ४)।

वच्छि° देखो वय = वच्।

वच्छिउड पुं [दे] गर्भाशय (दे ७, ४४ टी)।

वच्छिम पुंस्त्री [वृक्षत्व] वृक्षपन (षड्)।

वच्छिमय पुं [दे] गर्भ शय्या (दे ७, ४४)।

वच्छीउत्त पुं [दे] नापित, हजाम (दे ७, ४७; पाअ; स ७५)।

वच्छीव पुं [दे] गोप, ग्वाला (दे ७, ४१; पाअ)।

वच्छुद्धलिअ वि [दे] प्रत्युद्धत (षड्)।

वच्छोम न [वक्षोम] नगर-विशेष, कुन्तल देश की प्राचीन राजधानी (कप्पू)।

वच्छोमी स्त्री [दे] काव्य की एक रीति (कप्पू)।

वज्ज अक [त्रस्] डरना। वज्जइ, वज्जए (हे ४, १९८; प्राकृ ७५; धात्वा १५१)।

वज्ज देखो **वच्च** = व्रज्। वज्जइ (नाट—मृच्छ १९३), वजसि (पि ४८८)।

वज्ज सक [वर्जय्] त्याग करना। कवकृ. वज्जिज्जंत (पंचा १०, २७)। संकृ. वज्जिय, वज्जेवि, बज्जिऊण, वज्जित्ता (महा; काल; पंचा १२, ६)। कृ. वज्ज, वज्जणिज्ज, वज्जेयव्व (पिंड ५६२; भग; पराह २, ४; सुपा ४८५; महा; पराह १, ४; सुपा ११०; उप १०३७)।

वज्ज अक [वद्] बजना, वाद्य आदि की आवाज होना। वज्जइ (हे ४, ४०६; सुपा ३३४)। वकृ. **वज्जंत, वज्जमाण** (सुर ३, ११५; सुपा ६५६)।

वज्ज न [वाद्य] बाजा, वादित्र (दे ३, ५८; गा ४२०)।

वज्ज वि [वर्य] १ श्रेष्ठ, उत्तम (सुर १०, २)। २ प्रधान, मुख्य (हे २, २४)।

वज्ज वि [वर्ज] १ रहित, वर्जित; 'जिणवज्ज-देवयाणं न नमइ जो तस्स तणुसुद्धी' (श्रा ६), 'सहजनिग्गोगजवजा पायं न घडंति आगारी' (चेइय ४७१), 'लोयववहारवज्जा तुब्भे परमत्थमूढा य' (धर्मवि ८४५; विसे २८४७; श्रावक ३०७; सुर १४, ७८)। २ न. छोड़कर, बिना, सिवाय (श्रा ६; दं १७; कम्म ४, ३४; ५३)। ३ पुं. हिंसा, प्राणि-वध (पराह १, १—पत्र ६)।

वज्ज देखो अवज्ज (सूअ १, ४, २, १९; बृह १)।

वज्ज देखो वइर = वज्र (कुमा; सुर ४, १५२; गु ५; हे १, १७७; २, १०५; षड्; कम्म १, ३९; जीवस; ४६; सम २५)। १७ पुं. विद्याधर-वंश का एक राजा (पउम ५, १६; १७; ८, १३३)। १८ हिंसा, प्राणि-वध (पराह १, १—पत्र ६)। १९ कन्द-विशेष (पराण १—पत्र ३६; उत्त, ३६, ९९)। २० न. कर्म-विशेष, बँधाता हुआ कर्म (सूअ २, २, ६५, ठा ४, १—पत्र १९७)। २१ पाप (सूअ १, ४, २, १९)। °कंठ पुं [°कण्ठ] वानर-द्वीप का एक राजा (पउम ६, ६०)। °कंत न [°कान्त] एक देव-विमान (सम २५)। °कंद पुं [°कन्द] एक प्रकार का कन्द, वनस्पति-विशेष (श्रा २०)। °कूड न [°कूट] एक देव-विमान (सम २५)। °क्ख पुं [°क्ष] एक विद्याधर वंशीय राजा (पउम ८, १३२)। °चूड पुं [°चूड] विद्याधर-वंश का एक राजा (पउम ५, ४६)। °जंघ पुं [°जङ्घ] विद्याधर-वंशीय एक नरेश (पउम ५, १५)। °णाभ पुं [°नाभ] भगवान अभिनन्दन-स्वामी के प्रथम गणधर (सम १५२)। देखो °नाभ। °दत्त पुं [°दत्त] १ विद्याधर-वंश का एक राजा (पउम ५, १५)। २ एक जैन मुनि (पउम २०, १८)। °द्धय पुं [°ध्वज] एक विद्याधर-

वंशीय राजा (पउम ५, १५)। °**घर** देखो °हर (पउम १०२, १५६; विचार १००)। °**नागरी** स्त्री [°नागरी] एक जैन मुनि-शाखा (कप्प)। °**नाभ** पुं [°नाभ] एक जैन मुनि (पउम २०, १६)। देखो °णाभ। °**पाणि** पुं [°पाणि] १ इन्द्र (उत्त ११, २३; देवेन्द्र २८३; उप २११ टी)। २ एक विद्याधर-नरपति (पउम ५, १७)। °**प्पभ** न [°प्रभ] एक देव-विमान (सम २५)। °**बाहु** पुं [°बाहु] एक विद्याधर-वंशीय राजा (पउम ५, १६)। °**भूमि** स्त्री [°भूमि] लाट देश का एक प्रदेश (आचा १, ९, ३, २)। °**म** (अप) देखो मय (हे ४, ३९५)। °**मज्झ** पुं [°मध्य] १ राक्षस-वंश का एक राजा, एक लंकेश (पउम ५, २६३)। २ रावणाधीन एक सामन्त राजा (पउम ८, १३२)। °**मज्झा** स्त्री [°मध्या] एक प्रतिमा, व्रत-विशेष (औप २४)। °**मय** वि [°मय] वज्र का बना हुआ (पउम ६२, १०)। स्त्री. °**मई** (नाट—उत्तर ४५)। °**रिसहनाराय** न [°ऋषभनाराच] संहनन-विशेष, शरीर का एक तरह का सर्वोत्तम बन्ध (कम्म १, ३८)। °**रूव** न [°रूप] एक देव-विमान (सम २५)। °**लेस** न [°लेश्य] एक देव-विमान (सम २५)। °**वँ** (अप) देखो °म (हे ४, ३९५)। °**वण्ण** न [°वर्ण] एक देव-विमान (सम २५)। °**वेग** पुं [°वेग] एक विद्याधर का नाम (महा)। °**सिंखला** स्त्री [°शृङ्खला] एक विद्या-देवी (संति ५)। °**सिंग** न [°शृङ्ग] एक देव-विमान (सम २५)। °**सिट्ठ** न [°सृष्ट] एक देव-विमान (सम २५)। °**सुंदर** पुं [°सुन्दर] विद्याधर-वंश में उत्पन्न एक राजा (पउम ५, १७)। °**सुजण्हु** पुं [°सुजह्नु] विद्याधर-वंश का एक राजा (पउम ५, १७)। °**सेण** पुं [°सेन] १ एक जैन मुनि, जो भगवान् ऋषभदेव के पूर्व जन्म में गुरु थे (पउम २०, १७)। २ विक्रम की चौदहवीं शताब्दी के एक जैन आचार्य (सिरि १३४९)। °**हर** पुं [°धर] १ इन्द्र, देवराज (से १५, ४८; उव)। २ वि. वज्र को धारण करने-वाला (सुपा ३३४)। °**उह** पुं [°ायुध] १ इन्द्र (पउम ३, १३७; ५१, १८)। २ विद्याधर-वंश का एक राजा (पउम ५, १६)। °**भ** पुं [°भ] एक विद्याधर-वंशीय राजा (पउम ५, १६)। °**वत्त** न [°वर्त्त] एक देव-विमान (सम २५)। °**स** पुं [°श] एक विद्याधर-राजा (पउम ५, १७)।

वज्जंक पुं [वज्राङ्क] विद्याधर-वंश का एक राजा (पउम ५, १६)।

वज्जंकुसी स्त्री [वज्राङ्कुशी] एक विद्या-देवी (संति ५)।

वज्जंत देखो वज्ज = वद्।

वज्जंधर पुं [वज्रन्धर] विद्याधर-वंश का एक राजा (पउम ५, १६)।

वज्जघट्टिता स्त्री [दे] मन्द-भाग्य स्त्री (संक्षि ४७)।

वज्जण न [वर्जन] परित्याग, परिहार (सुर ४, ८२; स २७१; सुपा २४५; श्रु ६)।

वज्जणअ (अप) वि [वदितृ] बजनेवाला, 'पडहु वज्जणउ' (हे ४, ४४३)।

वज्जणया, वज्जणा स्त्री [वर्जना] परित्याग (सम ४४; उत्त १९, ३०; उव)।

वज्जमाण देखो वज्ज = वद्।

वज्जय वि [वर्जक] त्यागनेवाला (उवा)।

वज्जर सक [कथय्] कहना, बोलना। वज्जरइ, वज्जरेइ (हे ४, २; षड्; महा)। वकृ. वज्जरंत (हे ४, २; चेइय १४६)। संकृ. वज्जरिऊण (हे ४, २)। कृ. वज्जरि-अव्व (हे ४, २)।

वज्जर देखो वंजर = मार्जार (चंड)।

वज्जर पुं [वर्जर] १ देश-विशेष। २ वि. देश-विशेष में उत्पन्न; 'परिवाहिया य तेणं बहवे वल्हीयतुरुक्कवज्जराइया आसा' (स १३)।

वज्जरण न [कथन] उक्ति, वचन (हे ४, २)।

वज्जरा स्त्री [दे] तरंगिणी, नदी (दे ७, ३७)।

वज्जरिअ वि [कथित] कहा हुआ, उक्त (हे ४, २; सुर १, ३२; भवि)।

वज्जा स्त्री [दे] अधिकार, प्रस्ताव (दे ७, ३२; वज्जा २)।

वज्जाव (अप) सक [वाचय्] बचवाना, पढ़ाना। वज्जावइ (प्राकृ १२०)।

वज्जाव सक [वादय्] बजाना। वज्जावइ (भवि)।

वज्जाविय वि [वादित] बजाया हुआ (भवि)।

वज्जि पुं [वज्रिन्] इन्द्र (संबोध ८)।

वज्जिअ वि [दे] अवलोकित, दृष्ट (दे ७, ३९; महा)।

वज्जिअ वि [वादित] बजाया हुआ (सिरि ५२५)।

वज्जिअ वि [वर्जित] रहित (उवा; औप; महा; प्रासू ७६)।

वज्जियाव पुं [दे] शेलडी (व्यव० भाष्य०)।

वज्जियावग पुं [दे] इक्षु, ऊख (वव १)।

वज्जिर वि [वदितृ] बजनेवाला (सुर ११, १७२; सुपा ४५; ८७; सिरि १५५; सण), 'गहिख(?रव)जिराउज्जगज्जिजज्जरियबंभंडभंडो-यरो' (कुप्र २२४)।

वज्जुत्तरवडिंसग न [वज्रोत्तरावतंसक] एक देव-विमान (सम २५)।

वज्जोयरी स्त्री [वज्रोदरी] विद्या-विशेष (पउम ७, १३८)।

वज्झ वि [वध्य] वध के योग्य (सुपा २४८; गा २९; ४६६; दे ८, ४९)। °**नेवत्थिय** वि [°नेपथ्यिक] मृत्यु-दंड-प्राप्त को पहनाया जाता वेष वाला (पण्ह १, ३—पत्र ५४)। °**माला** स्त्री [°माला] वध्य को पहनाई जाती माला, कनेर के फूलों की माला (भत्त १२०)।

वज्झ वि [वाह्य] १ वहन करने योग्य (प्राप्र; उप १५० टी)। २ न. अश्व आदि यान (स ६०३)। °**खेड्ड** न [°खेल] कला-विशेष, यान की सवारी का इल्म (स ६०३)।

वज्झा स्त्री [हत्या] वध, घात (सुख ४, ६; महा)।

वज्झायण न [वध्यायन] गोत्र-विशेष (सुज्ज १०, १६)।

वञ्ञ (अप) देखो वच्च = व्रज्। वञइ, वञदि (षड्)।

वट्ट सक [वृत्] १ वर्त्तना, होना। २ आच-रण करना। वट्टइ, वट्टए, वट्टंति (सुर ३, ३६; उव; कप्प)। वकृ. **वट्टंत, वट्टमाण** (गा ४१०; कम्म ३, २०; चेइय ७१३; भवि; उवा; पडि; कप्प; पि ३५०)। हेकृ. **वट्टिउं** (चेइय ३६८)। कृ. **वट्टियव्व** (उव)।

वट्ट सक [वर्त्तय्] १ बरतना। २ पिंड रूप से बाँधना। ३ परोसना। ४ ढकना, आच्छादन करना। वट्टंति (पिंड २३६)। कवकृ. वट्टिज्जमाण (औप)।

वट्ट वि [वृत्त] १ वर्तुल, गोलाकार (सम ६३; औप; उवा)। २ अतीत, गुजरा हुआ। ३ मृत। ४ संजात, उत्पन्न। ५ अधीत। ६ दृढ। ७ पुं. कूर्म, कछुआ (हे २, २९)। ८ न. वर्तन, वृत्ति, प्रवृत्ति (सूअ १, ४, २, ३)। °क्खुर. °खुर पुं [°खुर] श्रेष्ठ अश्व (ओघ ४३८; राज)। °खेड, खेड्ड स्त्रीन [खेल] कला-विशेष (णाया १, १—पत्र ३८; स ६०३; अंत ३१ टि); देखो वत्थ-खेड्ड। देखो वत्त, वित्त = वृत्त। °वेयड्ढ पुं [°वैताढ्य] पर्वत-विशेष (ठा १०)।

वट्ट पुंन [वर्त्मन्] बाट, मार्ग, रास्ता; 'पडिसोएण पवट्टा चत्ता अणुसोअगामिणी वट्टा' (सार्ध ११८; सुर १०,४; सुपा ३३०), 'वट्ट' (प्राकृ २०)। °वाडण न [°पातन] मुसाफिरों को रास्ते में लुटना; 'परदोहवट्टवाडण-बंदग्गहखत्तखणणपमुहाइं' (कुप्र ११३),' सो वट्टपाडणेहिं बंदग्गहणेहिं खत्तखणणेहिं' (धर्मवि १२३)।

वट्ट पुंन [दे] १ प्याला, गुजराती में 'वाटको'; 'पढमघुंटम्मि खलिया जीहा, हत्थाउ निवडियं वट्टं' (सुपा ४९६)। २ पुं. हानि, नुकसान, गुजराती में 'वट्टो'; 'अन्नह उवक्खएणवि मूला वट्टो इहं होहि' (सुपा ४४५)। ३ लोट्टक, शिला-पुत्रक, लोढ़ा; 'वट्टावरएणं' (भग १६, ३—पत्र ७६६)। ४ खाद्य-विशेष, गाढ़ी कढ़ी (पण्ह २, ५—पत्र १४८)।

वट्ट पुं [वर्त] देश-विशेष (सत्त ६७ टी)।

°**वट्ट** पुं [पट्ट] प्रवाह (कुमा)। देखो पट्ट (से ५, १४; भवि; गउड)।

वट्टंत देखो वट्ट = वृत।

वट्टक, **वट्टग** } देखो वट्टय = वर्तक (पण्ह १, १—पत्र ८; विपा १, ७—पत्र ७५; सूअ २, २, १०; २६; ४३)।

वट्टण देखो वत्तण (रंभा)।

वट्टणा देखो वत्तणा (राज)।

वट्टमग न [वर्त्मक] मार्ग, रास्ता (आचा; औप)।

वट्टमाण देखो वट्ट = वृत।

वट्टमाण न [दे] १ अंग, शरीर। २ गन्ध-द्रव्य का एक तरह का अधिवास (दे ७, ८६)।

वट्टय देखो वट्ट = दे (पउम १०२, १२०)।

वट्टय पुं [वर्तक] १ पक्षि-विशेष, बटेर (सूअ १, २, १, २; उवा)। २ बालकों को खेलने का एक तरह का कपड़े का बना हुआ गोल खिलौना (अनु ५; णाया १, १८—पत्र २३५)।

°**वट्टय** देखो पट्ट (गउड)।

वट्टा स्त्री [दे. वर्त्मन्] देखो वट्ट = वर्त्मन् (दे ७, ३१)।

वट्टा स्त्री [वार्त्ता] बात, कथा (कुमा)।

वट्टाव सक [वर्तय्] बरताना, काम में लगाना। वट्टावेइ (उव)।

वट्टावण न [वर्तन] बरताना, कार्य लगाना (उव)।

वट्टावय वि [वर्तक] बरतानेवाला, प्रवर्त्तक (उव; णाया १, १४—पत्र १८९)।

वट्टावय वि [वर्तक] प्रतिजागरक, शुश्रूषाकर्त्ता (वव १)।

वट्टि स्त्री [वर्ति] १ बत्ती, दीपक में जलनेवाली बाती। २ सलाई, आँख में सुरमा लगाने की सली या सलाई। ३ शरीर पर किया जाता एक तरह का लेप। ४ लेख, लिखना। ५ कलम, पीछी (हे २, ३०)। देखो वत्ति, वित्ति।

वट्टिअ वि [वर्तित] १ परिवर्तित (दे ५, २७)। २ बलित (पव २१६ टी)। ३ वर्तुल, गोल (पण्ह १, ४—पत्र ७८; तंदु २०)। ४ प्रवर्तित (भवि)।

वट्टिआ स्त्री [वर्तिका] देखो वट्टि (अभि २१७; नाट—रत्ना २१; स २३९)।

वट्टिम वि [दे] अतिरिक्त (दे ७, ३४)।

वट्टिय वि [दे] चूर्ण किया हुआ, पिसा हुआ; गुजराती में 'वाटेलुं'; 'पक्खित्तं साहिणवट्टियं लोणं' (स २६४)।

वट्टिव न [दे] पर-कार्य (दे ७, ४०)।

वट्टी स्त्री [वर्त्ती] देखो वट्टि (हे २, ३०)।

°**वट्टी** स्त्री [पट्टी] पट्टा; 'ताव य कडिवट्टीओ पडिया रयणावली झत्ति' (सुपा ३४४; १५४)।

वट्टु न [दे] पात्र-विशेष (बृह १)। °कर पुं [°कर] यक्ष-विशेष (राज)। °करी स्त्री [°करी] विद्या-विशेष (राज)।

वट्टुल वि [वर्तुल] १ गोल, वृत्ताकार (पाअ)। २ पुंन. पलाण्डु—प्याज के समान एक तरह का कन्द-मूल (हे २, ३०; प्राकृ)।

°**वट्ठ** देखो पट्ठ = पृष्ठ (गउड; गा १५०; हे १, ८४; १२९)।

°**वट्ठि** देखो सट्ठि; 'बा-वट्ठी' (सम ७५; पंच ५, १८; पि २६५; ४४६)।

वड पुं [दे] १ द्वार का एक देश, दरवाजे का एक भाग। २ क्षेत्र (दे ७, ८२)। ३ मत्स्य की एक जाति (पण्ण १—पत्र ४७)। ४ विभाग (निचू २)। देखो वड्डु; 'वडसफर-पवहणाणं' (सिरि ३८२)।

वड पुं [वट] १ वृक्ष-विशेष, बरगद, बड़ का पेड़ (पण्ण १—पत्र ३१; गा ६४; कप्पू)। २ न. वस्त्र-विशेष; 'वडजुगपट्टजुगाइं' (णाया १, १ टी—पत्र ४३)। °नयर न [°नगर] नगर-विशेष (पउम १०५, ८८)। °वद्द न [°पद्र] १ गुजरात का एक नगर, जो आज कल 'बडौदा' नाम से प्रसिद्ध है (उप ५१६)। २ एक गोकुल (उप ५९७ टी)। °सावित्ती स्त्री [°सावित्री] एक देवी (कप्पू)।

वड देखो पड = पत्। वकृ. 'उग्गहिम्मि उण वडंता' (से ७, ७)।

°**वड** देखो पड = पट; 'पवणाहयवडचंचलाओ लच्छीओ तह य मणुयाणं' (सुर ४, ७६; से १०, १६; सुर १, ६१; ३, ६७; गा ३२९)।

वडग न [वटक] खाद्य-विशेष, बड़ा (पिंड ६३७)।

वडग देखो वड = वट (अंत)।

°**वडण** देखो पडण (गा ५६७; गउड; महा)।

वडप्प न [दे] १ लता-गहन। २ निरन्तर वृष्टि (दे ७, ८४)।

वडभ वि [वडभ] १ वामन, ह्रस्व (ओघभा ८२)। २ जिसका पृष्ठ-भाग बाहर निकल आया हो वह (आचा)। ३ नाभि के ऊपर का भाग जिसका टेढ़ा हो वह (पण्ह १, १—पत्र २३)। ४ पीछे का या आगे का

अंग जिसका बाहर निकल आया हो वह (पव ११०)। ५ जिसका पेट बड़ा होकर आगे निकल आया हो वह। स्त्री. °भी (णाया १, १—पत्र ३७; औप; पि ३८७)।

वडय देखो वडग = वटक (सुपा ४८५)।

°वडल देखो पडल (गउड)।

वडवग्गि पुं [वडवाग्नि] वडवानल, समुद्र के भीतर की आग (गा ४०३)।

वडवड अक [वि + लप्] विलाप करना। वडवडइ (हे ४, १४८), वडवडंति (कुमा)।

वडवा स्त्री [वडवा] घोड़ी (पाअ; धर्मवि १४५)। °णल, नल पुं [°नल] समुद्र के भीतर की आग, वडवाग्नि (पि २४०; श्रा १६)। °मुह न [°मुख] १ वही अर्थ (से १, ८)। २ एक महा-पाताल (इक)। °हुआस पुं [°हुताश] वडवानल (समु १५४)।

वडह देखो वडभ (आचा १, २, ३, २)।

वडह पुं [दे] पक्षि-विशेष (दे ७, ३३)।

°वडह देखो पडह (से १२, ४७)।

वडही देखो वलही (गउड)।

°वडाआ देखो पडाया (गा १२०)।

°वडालि स्त्री [दे] पंक्ति, श्रेणि (दे ७, ३६)।

°वडाहा देखो पडाया; धवलधयवडाहो' (महा)।

°वडिअ देखो पडिअ (से ५, १०; कुप्र १८१; उवा)।

वडिअ वि [गृहीत] ग्रहण किया हुआ (सुर १, १६६)।

वडिंस पुं [वतंस] १ मेरु पर्वत (सुज्ज ५ टी—पत्र ७८)। २ भूषण, 'रायकुलवडिंसगा वि मुणिवसभा' (उव, कप्प)। ३ एक दिग्हस्ति-कूट (इक)। ४ प्रधान, मुख्य। ५ श्रेष्ठ, उत्तम (कप्प; महा)। ६ कर्णपूर, कान का आभूषण (णाया १, १—पत्र ३१)। देखो वडेंस, अवयंस।

वडिणाय पुं [दे] घर्घर कण्ठ, बैठा हुआ गला (षड्)।

वडिया स्त्री [वृत्तिता] वर्तन, 'भयवंतदंसण-वडियाए' (स ६८३; आचा २, ७, १)।

°वडिया देखो पडिया = प्रतिज्ञा (आचा २, ७, १)।

वडिसर न [दे] चूल्ली-मूल, चूल्हे का मूल (दे ७, ४८)।

वडिवस्सअ वि [वरिवस्यक] पूजक, पूजा करनेवाला (चारु १)।

वडिसाअ वि [दे] स्रुत, टपका हुआ (षड्)।

वडी स्त्री [दे] बड़ी, एक प्रकार का खाद्य (पव ३८)।

वडुमग }
वडूमग } देखो वट्टमग (औप; आचा)।

वडेंस पुं [वतंस] शेखर, मुकुट (भग; णाया १, १ टी—पत्र ५)। देखो वडिंस।

वडेंसा स्त्री [वतंसा] किंनर नामक किंनरेन्द्र की एक अग्रमहिषी (ठा ४, १—पत्र २०४; णाया २—पत्र २५२)।

वडेंसिया स्त्री [वतंसिका] अवतंस की तरह करना, मुकुटस्थानापन्न करना; 'अट्ठारसवं-जणाउलं भोयणं भोयावेत्ता जावज्जीवं पिट्ठिव-डेंसियाए परिवहेज्जा' (ठा ३, १—पत्र ११७)।

वड्ड वि [दे] बड़ा, महान् (दे ७, २९; तंदु ५५; सुपा १२४; णाया २—पत्र २४८; सम्मत्त १७३; भवि; हे ४, ३६६; ३६७; ३७१)। °अत्थरग पुं [°आस्तरक] ऊँट की पीठ पर रखा जाता आसन (पव ८४ टी)। °त्तण न [°त्व] बड़प्पन, महत्ता (हे ४, ३८४; कप्पू)। °प्पण (अप) न [°त्व] वही (हे ४, ३६६; ४३७; पि ३००)। °यर वि [°तर] विशेष बड़ा (हे २, १७४)।

वड्डवास पुं [दे] मेघ, अभ्र (दे ७, ४७; कुमा)।

वड्डहुल्लि पुं [दे] मालाकार, माली (दे ७, ४२)।

वड्डार (अप) देखो वड्ड-यर (भवि)।

वड्डिम वि [दे] स्रुत, टपका हुआ (षड्)।

वड्डिल [दे] देखो वड्ड;

'नयणाण पडउ वज्जं अहवा
वज्जस्स वड्डिलं किंपि।
अमुणियजणेवि दिट्ठे अणुबंधं
जाणि कुव्वंति'
(सुर ४, २०; वज्जा ६२)।

वड्डकुअर देखो वड्ड-यर (षड्)।

वड्ढ अक [वृध्] बढ़ना। वड्ढइ (हे ४, २२०; महा; काल)। भूका. वड्डित्था (कप्प)। वकृ. वड्ढंत, वड्ढमाण (सुर १, ११६; महा; गा ११३)। हेकृ. वड्ढिउं (महा)।

वड्ढ सक [वर्धय] १ बढ़ाना, विस्तारना। २ बधाई देना। वड्ढंति (उव)। वकृ. वड्ढअंत (नाट—मृच्छ १८)। कर्म. वड्ढिज्जंति (सिरि ४५४)। देखो वद्ध = वर्धय्।

वड्ढइ पुं [वर्धकि] बढ़ई, सुतार (सम २७; उप पृ १५३; पाअ; धर्मसं ४८६; दे ७, ४४)।

वड्ढइअ पुं [दे] चर्मकार, मोची (दे ७, ४४)।

वड्ढण न [वर्धन] १ वृद्धि, बढ़ाव (कप्पू)। २ वि. वृद्धि-जनक (महा; सुर १३, १३६)।

वड्ढणमिर वि [दे] पीन, पुष्ट (दे ७, ५१)।

वड्ढणसाल वि [दे] जिसकी पूँछ कट गई हो वह (दे ७, ४६)।

वड्ढमाण देखो वड्ढ = वृध्।

वड्ढमाण }
वड्ढमाणय } न [वर्धमान, °क] १ गुजरात का एक नगर, जो आजकल 'वढवाण' के नाम से प्रसिद्ध है; 'सिरिवड्ढमाणनयरं पत्ता गुज्जरधरावलयं' (सम्मत्त ७५)। २ अवधिज्ञान का एक भेद, उत्तरोत्तर बढ़ता जाता एक प्रकार का परोक्ष रूपी द्रव्यों का ज्ञान (ठा ६—पत्र ३७०; कम्म १, ८)। ३ पुं. भगवान् महावीर (भवि)। देखो वद्धमाण।

वड्ढय देखो वट्ट = दे; 'पाणभरियं वड्ढयं पियावयणसमप्पियं पीयमाणं पि तीए सुट्ठुयरं भरियमंसुएहिं' (स ३८२)।

वड्ढव सक [वर्धय्, वर्धापय्] १ बढ़ाना, वृद्धि करना। २ बधाई देना, अभ्युदय का निवेदन करना। वड्ढवइ (प्राकृ ६०)।

वड्ढवअ वि [वर्धक] १ बढ़ानेवाला २ बधाई देनेवाला (प्राकृ ६१)।

वड्ढवण न [दे] वस्त्र का आहरण (दे ७, ८७)।

वड्ढवण न [दे. वर्धापन] बधाई, अभ्युदय-निवेदन (दे ७, ८७)।

वड्ढविअ वि [वर्धित, वर्धापित] जिसको बधाई दी गई हो वह (दे ६, ७४)।

वड्ढार (अप) सक [वर्धय्] बढ़ाना, गुजराती में 'वधारवु''। वड्ढारइ (भवि)।

वड्ढाव देखो **वड्ढव**। वड्ढावेमि (प्राकृ ६१; पि ५५२)।

वड्ढावअ देखो **वड्ढवअ** (प्राकृ ६१; कप्पू; उवा)।

वड्ढाविअ वि [दे] समापित, समाप्त किया हुआ (दे ७, ४५)।

वड्ढि वि [वर्धिन्] बढ़नेवाला (से १, १)।

वड्ढि स्त्री [वृद्धि] बढ़ती, बढ़ाव (उवा; देवेन्द्र ३६७; जीवस २७४)।

वड्ढिअ वि [वृद्ध] बढा हुआ (कुमा ७, ५८; गा ४१०; महा)।

वड्ढिअ वि [वधित] १ बढ़ाया हुआ; 'महिवीढे नइवड्ढियनीरो उयहिव्व वित्थरइ' (सिरि ६२७)। २ खण्डित किया हुआ, काटा हुआ (से १, १)।

वड्ढिआ स्त्री [दे] कूपतुला, ढेंकुवा (दे ७, ३६)।

वड्ढिम पुंस्त्री [वृद्धिमन्] वृद्धि, बढ़ाव; 'पत्ता दिएं वड्ढिमा' (प्राकृ ३३; कप्पू)।

वढ देखो **वड** = वट (हे २, १७४; पि २०७)।

वढ वि [दे] मूक, वाक्-शक्ति से रहित (संक्षि ३६)।

वढर } पुं [बठर] १ मूर्ख छात्र। २
वढल } ब्राह्मण पुरुष और वैश्य स्त्री से उत्पन्न संतान, अम्बष्ठ। ३ वि. शठ, धूर्त। ४ मन्द, अलस (हे १, २५४; षड्)।

वण सक [वन्] मांगना, याचना करना। वणेइ (पिंड ४४३)।

वण पुं [दे] १ अधिकार। २ श्वपच, चाँडाल (दे ७, ८२)।

वण पुंन [व्रण] घाव, प्रहार, क्षत; 'जस्सेअ वणो तस्सेअ वेअणा (काप्र ८७१; गा ३८१; ४२७; पाअ)। °वट्ट पुं [°पट्ट] घाव पर बाँधी जाती पट्टी (गा ४५८)।

वण न [वन] १ अरण्य, जंगल (भग; पाअ; उवा; कुमा; प्रासू ६२; १४५)। २ पानी, जल (पाअ; वज्जा ८८)। ३ निवास। ४ आलय (हे ३, ८८; प्राप्र)। ५ वनस्पति (कम्म ४, १०; १६; ३६; दं १३)। ६ उद्यान, बगीचा (उप ६८६ टी)। ७ पुं. देवों की एक जाति, वानव्यंतर देव (भग; कम्म ३, १०)। ८ वृक्ष-विशेष (राय)। °कम्म पुंन [°कर्मन्] जंगल को काटने या बेचने का काम (भग ८, ५—पत्र ३७०; पडि)। °कम्मंत न [°कर्मान्त] वनस्पति का कारखाना (आचा २, २, २, १०)। °गय पुं [°गज] जंगली हाथी (से ३, ६३)। °ग्गि पुं [°ग्नि] दावानल (पाअ)। °चर वि [°चर] वन में रहनेवाला, जंगली (पण्ह १, १—पत्र १३)। स्त्री. °री (रयण ६०); देखो °यर। °च्छिंद वि [°च्छिद्] जंगल काटनेवाला (कुप्र १०४)। °त्थली स्त्री [°स्थली] अरण्य-भूमि (से ३, ६३)। °दव पुं [°दव] दवानल (एाया १, १—पत्र ६५)। °पव्वय पुंन [°पर्वत] वनस्पति से व्याप्त पर्वत; 'वणाणि वा वणपव्वयाणि वा' (आचा २, ३, ३, २)। °बिराल पुं [°बिडाल] जंगली बिल्ला (सण)। °माल न [°माल] एक देव-विमान (सम ४१)। °माला स्त्री [°माला] १ पैर तक लटकनेवाली माला (औप; अच्चु ३६)। २ एक राज-पत्नी (पउम ११, १४)। ३ रावण की एक पत्नी (पउम ३६, ३२)। °य वि [°ज] वन में उत्पन्न, जंगली (वज्जा १२८)। °यर वि [°चर] १ वन में रहनेवाला, बनैला (एाया १, १—पत्र ६२; गउड)। २ पुंस्त्री. व्यन्तर देव (विसे ७०७; पव १६०)। स्त्री. °री (उप पृ ३३०)। °राइ स्त्री [°राजि] तरु-पंक्ति, वृक्ष-समूह (चंड; सुर ३, ४२; अभि ५५)। °राज, °राय पुं [°राज] १ विक्रम की आठवीं शताब्दी का गुजरात का एक प्रसिद्ध राजा (मोह १०८)। २ सिंह, केसरी (चंड)। °लइया, °लया स्त्री [°लता] १ एक स्त्री का नाम (महा)। २ वह वृक्ष जिसको एक ही शाखा हो (कप्प; राय)। °वाल वि [°पाल] उद्यान-पालक, माली (उप ६८६ टी)। °वास पुं [°वास] अरण्य में रहना (पि ३५१)। °वासी स्त्री [°वासी] नगरी-विशेष (राज)। °विदुग्ग न [°विदुर्ग] नानाविध वृक्षों का समूह (सूअ २, २, ८; भग)। °विरोहि पुं [°विरोहिन्] आषाढ मास (सुज्ज १०, १६)। °संड पुंन [°षण्ड] अनेकविध वृक्षों की घटा—समूह (ठा २, ४; भग; एाया १, २; औप)। °हत्थि पुं [°हस्तिन्] जंगल का हाथी (से ८, ३६)। °ालि, °ोलि स्त्री [°ालि] वन-पंक्ति (गा ५७६; हे २, १७७)।

वणइ स्त्री [दे] वन-राजि, वृक्ष-पंक्ति (दे ७, ३८; षड्)।

वणण न [वनन] बछड़े को उसकी माता से भिन्न दूसरी गाय से लगाना (पण्ह १, २—पत्र २६)।

वणण न [दे. व्यान] बुनना। °साला स्त्री [°शाला] बुनने का कारखाना (दस १, १ टी)।

वणद्धि स्त्री [दे] गो-वृन्द, गो-समूह (दे ७, ३८)।

वणनत्तडिअ वि [दे] पुरस्कृत, आगे किया हुआ (षड्)।

वणपक्कसावअ पुं [दे] शरभ, श्वापद-विशेष (दे ७, ५२)।

वणप्फइ पुं [वनस्पति] १ वृक्ष-विशेष, फूल के बिना ही जिसमें फल लगता हो वह वृक्ष (हे २, ६६; कुमा)। २ लता, गुल्म, वृक्ष आदि कोई भी गाछ, पेड़ मात्र (भग)। ३ न. फल (कुमा ३, २६)। °काइअ वि [°कायिक] वनस्पति का जीव (भग)।

वणय पुं [वनक] दूसरी नरक-पृथिवी का एक नरक-स्थान (देवेन्द्र ६)।

वणरसि (अप) देखो **वाणारसी** (पिंग; पि ३५४)।

वणव पुं [दे] दावानल (दे ७, ३७)।

वणसवाई स्त्री [दे] कोकिला, कोयल (दे ७, ५२; पाअ)।

वणस्सइ देखो **वणप्फइ** (हे २, ६६; जी २; उवा; पण्ण १)।

वणाय वि [दे] व्याध से व्याप्त (दे ७, ३५)।

वणार पुं [दे] दमनीय बछड़ा (दे ७, ३७)।

वणि वि [व्रणिन्] घाववाला, जिसको घाव हुआ हो वह (दे ६, ३६; पंचा १६, ११)।

वणि } पुं [वणिज्] बनिया, व्यापारी,
वणिअ } वैश्य (औप; उप ७२८ टी; सुर

१४, ६६; सुपा २७६; सुर १, ११३; प्रासू ८०; कुमा; महा)।

वणिअ वि [व्रणित] व्रण-युक्त, घाववाला (गा ४५८; ६४६; पउम; ७५, १३)।

वणिअ पुं [वनीपक] भिक्षुक, भिखारी; 'वणि जायणि त्ति वणिश्रो पायप्पाणं वणेइत्ति' (पिंड ४४३)।

वणिअ न [वणिज] ज्योतिष-प्रसिद्ध एक करण (विसे ३३४८; सुज्ज ११)।

वणिआ स्त्री [वनिका] वाटिका, बगीचा; 'असोयवणिआइ मज्झयारम्मि' (भाव ७; उवा)।

वणिआ स्त्री [वनिता] स्त्री, महिला, नारी (गा १७; कुमा; तंदु ५०; सम्मत्त १७५)।

वणिज देखो **वणिअ** = वणिज् (चारु ३४)।

वणिज, **वणिज्ज** } न [वाणिज्य] व्यापार, बैपार; 'एत्तियकालं हट्टे जइ तं चिट्ठेसि वणिजकई' (सुपा ५१०; २५२), 'उज्जेणी-आगओ वणिज्जेणं' (पउम ३३, ६६; स ४४३; सुर १, ६०; कुप्र ३६५, सुपा ३८४; प्रासू ८०; भवि; श्रा १२)। °**रय** वि [°कारक] व्यापारी (सुपा ३४३, उप पृ १०४)।

वणिम, **वणीमग** } देखो वणीमय (दस ५, १, ५१)। २ दरिद्र, निर्धन (दस ५, २, १०)।

वणी स्त्री [वनी] १ भीख से प्राप्त धन (ठा ५, ३—पत्र ३४१)। २ फली-विशेष, जिससे कपास निकलता है (राज)।

वणीमग, **वणीमय** } पुं [वनीपक] याचक, भिक्षुक, भिखारी (ठा ५, ३; सुपा १६८, सण; ओघ ४३६)।

वणे अ. इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ निश्चय (हे २, २०६; कुमा)। २ विकल्प। ३ अनुकम्पनीय। ४ संभावना (हे २, २०६)।

वणेचर देखो वण-यर (रयण ५६)।

वण्ण सक [वर्णय्] १ वर्णन करना। २ प्रशंसा करना। ३ रँगना। वण्णआमो (पि ४६०)। कर्म. वरिणज्जइ (सिरि १२८८), वरिणअइ (अप) (हे ४, ३४५)। वकृ. वण्णंत (गा ३५०)। हेकृ. **वण्णिउं** (पि ५७३)। कृ. **वण्णणिज्ज**, **वण्णेअव्व** (हे ३, १७६; भग)।

वण्ण पुं [वर्ण] १ प्रशंसा, श्लाघा (उप ६०७)। २ यश, कीर्त्ति (ओघ ६०)। ३ शुक्ल आदि रँग (भग; ठा ४, ४; उवा)। ४ अकार आदि अक्षर। ५ ब्राह्मण, वैश्य आदि जाति। ६ गुण। ७ अंगराग। ८ सुवर्ण, सोना। ६ विलेपन की वस्तु। १० व्रत-विशेष। ११ वर्णन। ११ विलेपन-क्रिया। १३ गीत का क्रम। १४ चित्र (हे १, १७७; प्राप्र)। १५ कर्म-विशेष, शुक्ल आदि वर्ण का कारण-भूत कर्म (कम्म १, २४)। १६ संयम। १७ मोक्ष, मुक्ति (आचा)। १८ न. कुंकुम (हे १, १४२)। °**णाम**, °**नाम** पुंन [°नामन्] कर्म-विशेष (राज; सम ६७)। °**मंत** वि [°वत्] प्रशस्त वर्णवाला (भग)। °**वाइ** वि [°वादिन्] श्लाघा-कर्त्ता, प्रशंसक (वव १)। °**वाय** पुं [°वाद] प्रशंसा, श्लाघा (पंचा ६, २३)। °**ावास** पुं [°ावास] वर्णन-प्रकरण, वर्णन-पद्धति (जीव ३; उवा)। °**ावास** पुं [°व्यास] वर्णन-विस्तार (भग; उवा)।

वण्ण पुं [वर्ण] पंचम आदि स्वर। °**सम** न [°सम] गेय काव्य का एक भेद (दसनि २, २३)।

वण्ण वि [दे] १ अच्छ, स्वच्छ। २ रक्त। (दे ७, ८३)।

°**वण्ण** देखो पण्ण (गा ६०१; गउड)।

वण्णग देखो **वण्णय** (उवा; ग्रौप)।

वण्णण न [वर्णन] १ श्लाघा, प्रशंसा (कप्पू)। २ विवेचन, विवरण, निरूपण (रयण ४)।

वण्णणा स्त्री [वर्णना] ऊपर देखो (दे १, २१; सार्धं ४५)।

वण्णय पुंन [दे. वर्णक] १ चन्दन, श्रीखण्ड (दे ७, ३७; पंचा ८, २३)। २ पिष्टातक-चूर्ण, अंगराग (दे ७, ३७; स्वप्न ६१)।

वण्णय पुं [वर्णक] वर्णन-ग्रन्थ, वर्णन-प्रकरण (विपा १, १, उवा; ग्रौप)।

वण्णिअ वि [वर्णित] जिसका वर्णन किया गया हो वह (महा)।

वण्णिआ देखो वन्निआ (गा ६२०)।

वण्हि पुं [वृष्णि] १ एक राजा, जो अन्धक-वृष्णि नाम से प्रसिद्ध था; 'वण्हि पिया धारिणी माया' (अंत ३)। २ एक अन्तकृद् महर्षि; 'अक्खोभ पसेणई वण्ही' (अंत)। ३ अन्धकवृष्णि-वंश में उत्पन्न, यादव (णंदि)। °**दसा** स्त्री. ब. [°दशा] एक जैन आगम-ग्रन्थ (निर ५)। °**पुंगव** पुं [°पुंगव] यादव-श्रेष्ठ (उत्त २२, १३; णाया १, १६—पत्र २११)।

वण्हि पुं [वह्नि] १ अग्नि, आग (पाग्र; महा)। २ लोकान्तिक देवों की एक जाति (णाया १, ८—पत्र १५१)। ३ चित्रक वृक्ष। ४ भिलावाँ का पेड़। ५ नीबू का गाछ (हे २, ७५)।

वत देखो वय = व्रत (चंड)।

वति देखो वइ = व्रतिन् (उप ३८१)।

वति देखो वइ = वृति (चंड)।

वतु पुं [दे] निवह, समूह (दे ७, ३२)।

वत्त देखो वट्ट = वृत्। वत्तइ (भवि), वत्तदि (शौ) (स्वप्न ६०)।

वत्त देखो वट्ट = वर्तय्। वत्तइ (भवि)। **वत्तेज्ज** (आचा २, १५, ४२)। **वत्तेज्जासि**, **वत्तेहामि** (उवा; पि ५२८)।

वत्त न [वार्त्त] आरोग्य (उत्त १८, ३८)।

वत्त वि [व्याप्त] फैला हुआ, भरपूर (कप्प; विसे ३०३६)।

वत्त देखो वट्ट = वृत्त (स ३०८; महा; सुर १, १७८; ३, ७६, ग्रौप; हे १, १४५)।

वत्त वि [व्यक्त] प्रकट, खुला (धर्मसं ५५५)।

वत्त न [वक्त्र] मुख, मुँह (हे १, १८; भवि)।

°**वत्त** देखो पत्त = पत्र (गा ६०४; हेका ५०; गउड)।

°**वत्त** देखो पत्त = पात्र (गउड; गा ३००)।

वत्त° देखो वत्ता (भवि)। °**यार** वि [°कार] वार्त्ता कहनेवाला (भवि)।

वत्तअ पुं [व्यत्यय] १ विपर्यय, विपर्यास। २ व्यतिक्रम, उल्लंघन (प्राकृ २१)।

वत्तए देखो वय = वच्।

वत्तडिआ, **वत्तडी** } (अप) देखो वत्ता (कुमा; हे ४, ४३२; सण)।

वत्तण न [वर्त्तन] १ जीविका, निर्वाह; 'किं न तुमं मच्छएहिं कुडुंबवत्तणं करेसि' (कुप्र

२८)। २ आवृत्ति, परावर्तन (पंचा १२, ४३)। ३ स्थिति। ४ स्थापन। ५ वर्तन, होना। ६ वि. वृत्तिवाला। ७ रहनेवाला (संक्षि १०)।

वत्तणा स्त्री [वर्त्तना] ऊपर देखो; 'वत्तणा-लक्खणो कालो' (उत्त २६, १०; आवम)।

वत्तणी स्त्री [वर्त्तनी] मार्ग, रास्ता (पण्ह १, ३—पत्र ५४; विसे १२०७; सूअनि ६१ टी; सुपा ५१८)।

वत्तद्ध वि [दे] १ सुन्दर। २ बहु-शिक्षित (दे ७, ८५)।

वत्तमाण पुं [वर्त्तमान] १ काल-विशेष, चलता काल (प्राप्र; संक्षि १०)। २ वि. वर्त्तमान-कालीन, विद्यमान। ३ पुं विद्य-मानता (धर्मसं ५७३)।

°**वत्तरि** देखो **सत्तरि** (सम ८३; प्रासू १२६; पि ४४६)।

वत्तव्व देखो **वय** = वच्।

वत्ता स्त्री [दे] सूत्र-वलनक, सूत्र-वेष्टन-यन्त्र (पण्ह १, ४—पत्र ७८; तंदु २०)। देखो **चत्ता** = (दे)।

वत्ता स्त्री [वार्त्ता] १ बात, कथा (से ६, २८; सुपा ३८७; प्रासू १; कुमा)। २ वृत्तान्त, हकीकत (पाअ)। ३ वृत्ति। ४ दुर्गा। ५ कृषि-कर्म, खेती। ६ जनश्रुति, किंवदन्ती। ७ गन्ध का अनुभव। ८ काल-कर्तृक भूत-नाश (हे २. ३०)। °**लाव** पुं [°लाप] बातचीत (सिरि २८२)।

वत्तार वि [दे] गर्वित, गर्व-युक्त (दे ७, ४१)।

वत्ति स्त्री [दे] सीमा (दे ७, ३१)।

वत्ति देखो **वट्टि** (गा २३२; ६५८; विसे १३९८)।

वत्ति वि [वर्त्तिन्] वर्तनेवाला (महा)।

वत्ति स्त्री [वृत्ति] प्रवृत्ति (सूअ २, ४, २)। देखो **वित्ति**।

वत्ति स्त्री [व्यक्ति] अमुक एक वस्तु, एकाकी वस्तु। °**पइट्ठा** स्त्री [°प्रतिष्ठा] प्रतिष्ठा-विशेष, जिस समय में जो तीर्थंकर विद्यमान हो उसके बिम्ब की विधि-पूर्वक स्थापना (चेइय ३५)।

वत्तिअ वि [वार्त्तिक] कथाकार, 'वत्तिओ' (हे २, ३०)। २ पुंन. टीका की टीका (सम ४६; विसे १४२२)। ३ ग्रंथ की टीका—व्याख्या (विसे १३८५)।

वत्तिअ वि [वर्त्तित] १ वृत्त—गोल किया हुआ (णाया १, ७)। २ आच्छादित (पडि)।

°**वत्तिअ** देखो **पच्चय** = प्रत्यय (औप)।

वत्तिआ देखो **वट्टिआ** (प्राप्र)।

वत्तिणी स्त्री [वर्त्तिनी] मार्ग, रास्ता (पाअ; स ४; सुर १२, १३९)।

°**वत्ती** देखो **पत्ती** = पत्नी (गा ७९; १०६; १७३)।

वत्तुं देखो **वय** = वच्।

वत्तुकाम त्रि [वक्तुकाम] बोलने की चाह-वाला (स ३१८; अभि ४४; स्वप्न १०; नाट—विक्र ४०)।

वत्तुल देखो **वट्टुल** (राज)।

वत्थ पुंन [वस्त्र] कपड़ा (आचा २, १४, २२; उवा; पण्ह १, १; उप पृ ३३३; सुपा ७२; ४६१; कुमा; सुर ३, ७०)। °**खेड्ड** न [°खेल] कला विशेष (जं २ टी—पत्र १३७)। °**धोव** वि [°धाव] वस्त्र धोनेवाला (सूअ १, ४, २, १७)। °**पूस** पुं [°पुष्य] एक जैन मुनि (कुलक २२)। °**पूसमित्त** पुं [°पुष्यमित्र] एक जैन मुनि (ती ७)। °**विज्जा** स्त्री [विद्या] विद्या-विशेष, जिसके प्रभाव से वस्त्र स्पर्श कराने से ही बीमार अच्छा हो जाय (वव ५)। °**सोहग** वि [°शोधक] वस्त्र धोनेवाला (स ४१)।

वत्थ वि [व्यस्त] पृथग्, भिन्न, जुदा (सुर १६, ५५)।

वत्थउड पुं [दे वस्त्रपुट] तंबू, कपड़-कोट, वस्त्र-गृह (दे ७, ४५)।

वत्थए देखो **वस** = वस्।

वत्थंग पुं [वस्त्राङ्ग] कल्पवृक्ष की एक जाति, जो वस्त्र देने का काम करता है (पउम १०२, १२१)।

°**वत्थर** देखो **पत्थर** = प्रस्तर (गा ५५१)।

वत्थलिज्ज न [वस्त्रलिय] दो जैन मुनि-कुलों के नाम (कप्प)।

वत्थव्व वि [वास्तव्य] रहनेवाला, निवासी (पिंड ४२७; सुर ३, ६१; सुपा ३६५; महा)।

वत्थाणी स्त्री [दे] वल्ली-विशेष (पण्ण १—पत्र ३३)।

वत्थाणीअ पुंन [दे] खाद्य-विशेष, 'हत्थेण वत्थाणीएण भोच्चा कज्जं साधेंति' (सुज्ज १०, १७)।

वत्थि पुं [वस्ति] २ दृति, मसक (भग १, ६; १८, १०; णाया १, १८), 'वत्थिव्व वायपुण्णो अत्तुक्करिसेण जहा तहा लवइ' (संबोध १८)। २ अपान, गुदा; 'वत्थी अवाणं' (पाअ; पण्ह १, ३—पत्र ५३)। ३ छाते में शलाका—सली—सलाई बैठने का स्थान, छत्र का एक अवयव (औप)। °**कम्म** न [°कर्मन्] १ सिर आदि में चर्म-वेष्टन द्वारा किया जाता तैल आदि का पूरण। २ मल साफ करने के लिए गुदा में बत्ती आदि का किया जाता प्रक्षेप (विपा १, १—पत्र १४; णाया १, १३)। °**पुडग** पुंन [°पुटक] पेट का भीतरी प्रदेश (निर १, १)।

वत्थिय पुं [वास्त्रिक] वस्त्र बनानेवाला शिल्पी (अणु)।

वत्थी स्त्री [दे] उटज, तापसों की पर्ण-कुटी (दे ७, ३१)।

वत्थु न [वस्तु] १ पदार्थ, चीज (पाअ; उवा; सम्म ८; सुपा ४०१; प्रासू ३०; १६१; ठा ४, १ टी—पत्र १८८)। २ पुंन. पूर्व-ग्रन्थों का अध्ययन—प्रकरण, परिच्छेद (सम २५; णंदि; अणु; कम्म १, ७)। °**पाल**, °**वाल** पुं [°पाल] राजा वीरधवल का एक सुप्रसिद्ध जैन मंत्री (ती २; हम्मीर १२)।

वत्थु न [वास्तु] १ गृह, घर; 'खेत्तवत्थुविहि-परिमाणं करेइ' (उवा)। २ गृहादि-निर्माण-शास्त्र (णाया १, १३)। ३ शाक-विशेष (उवा)। °**पाढग** वि [°पाठक] वास्तु-शास्त्र का अभ्यासी (णाया १, १३; धर्मवि ३३)। °**विज्जा** स्त्री [°विद्या] गृह-निर्माण-कला (औप; जं २)।

वत्थुल पुं [वस्तुल] गुच्छ और हरित वनस्पति-विशेष, शाक-विशेष (पण्ण १—पत्र ३२; ३४, पव २५९)।

वत्थूल पुं [वस्तूल] ऊपर देखो; 'वत्थु (?त्थू) ला थेगपल्लंका' (जी ९)।

वद् देखो वय = वद् । वदसि, वदह (उवा; भग; कप्प) । भूका. वदासी (भग) । हेकृ. वदित्तए (कप्प) ।

वद् देखो वय = व्रत (प्राकृ १२; नाट—विक्र ५६) ।

वदिंसा देखो वडेंसा (इक) ।

वदिकलिअ वि [दे] वलित, लौटा हुआ (दे ७, ५०) ।

वदूमग देखो वडुमग (आचा) ।

वद्दल न [दे. वार्दल] १ बद्दल, बादल, मेघ-घटा, दुर्दिन (दे ७, ३५; हे ४, ४०१; सुपा ६५५; राय; आवम; ठा ३, ३—पत्र १४१)। २ पुं. छठवीं नरक का दूसरा नरकेन्द्रक—नरक-स्थान (देवेन्द्र १२) ।

वद्दलिया स्त्री [दे. वार्दलिका] बदली, छोटा बद्दल, दुर्दिन (भग ६, ३३—पत्र ४६७; औप) ।

वद्ध देखो वड्ढ = वर्धय् । कर्म. वद्धसि (सुपा ६०) ।

वद्ध पुंन [वर्ध्र] चर्म-रज्जु; 'वज्जो बद्धो (? बज्भो वद्धो)' (पाअ; दे ६, ८८; पव ८३; सम्मत्त १७४) ।

वद्ध देखो विद्ध = वृद्ध (प्राप्र; प्राकृ ७) ।

वद्धण न [वर्धन] १ वृद्धि, बढ़ती (णाया १, १; कप्प) । २ वि. बढ़ानेवाला (उप ६७३; महा) ।

वद्धणिआ, वद्धणी स्त्री [वर्धनिका, °नी] संमार्जनी, झाड़ू (दे ८, १७; ७, ४१ टी)।

वद्धमाण पुं [वर्धमान] १ भगवान् महावीर (आचा २, १५, १०; सम ४३; अंत; कप्प; पडि) । २ एक प्रसिद्ध जैनाचार्य (सार्ध ६३; विचार ७६; ती १५; गु ८) । ३ स्कन्धा-रोपित पुरुष, कन्धे पर चढ़ाया हुआ पुरुष (अंत; औप) । ४ एक शाश्वत जिन-देव । ५ एक शाश्वती जिन-प्रतिमा (पव ५६) । ६ न. गृह-विशेष (उत्त ६, २४) । ७ राजा रामचन्द्र का एक प्रेक्षा-गृह—नाट्य-शाला (पउम ८०, ५) । देखो वड्ढमाण ।

वद्धमाणग, वद्धमाणय पुं [वर्धमानक] १ अठासी महाग्रहों में एक महाग्रह, ज्योतिष्क देव-विशेष (ठा २, ३—७८) । २ एक देव-विमान (देवेन्द्र १४०) । ३ न. पात्र-विशेष, शराव (णाया १, १—पत्र ५४; पउम १०२, १२०) । ४ पुं. पुरुष पर आरूढ़ पुरुष, पुरुष के कन्धे पर चढ़ा हुआ पुरुष । ५ स्वस्तिक-पञ्चक । ६ प्रासाद-विशेष, एक तरह का महल (णाया १, १—पत्र ५४; टी—पत्र ५७) । ७ न. एक गाँव का नाम, अस्थिक ग्राम; 'अट्ठियगामस्स पढमं वद्धमाणयं ति नामं होत्था' (आवम) । ८ वि. कृता-भिमान, अभिमानी, गर्वित (औप) ।

वद्धय वि [दे] प्रधान, मुख्य (दे ७, ३६) ।

वद्धार सक [वर्धय्] बढ़ाना, गुजराती में 'वधारवु' । वकृ. वद्धारत (सट्ठि १२; संबोध ४; द्र ८) ।

वद्धारिय वि [वर्धित] बढ़ाया हुआ (भवि) ।

वद्धाव सक [वर्धय्, वर्धापय्] बधाई देना । वद्धावेइ, वद्धावेंति (कप्प) । कर्म. वद्धावीअसि (रंभा) । वकृ. वद्धावित (सुपा २२०) । संकृ. वद्धावित्ता (कप्प) ।

वद्धावण न [वर्धन, वर्धापन] बधाई, अभ्युदय-निवेदन (भवि; सुर ३, २४; महा; सुपा १२२; १३४) ।

वद्धावणिया स्त्री [वर्धनिका, वर्धापनिका] ऊपर देखो (सिरि १३१६) ।

वद्धावय वि [वर्धक, वर्धापक] बधाई देने-वाला (सुर १५, ७६; स ५७०; सुपा ३६१) ।

वद्धाविअ वि [वर्धित, वर्धापित] जिसको बधाई दी गई हो वह (सुपा १२२; १६५) ।

वद्धिअ पुं [दे] १ षण्ढ, नपुंसक (दे ७, ३७) । २ नपुंसक-विशेष, छोटी उम्र में ही छेद दे कर जिसका अण्डकोष गलाया गया हो वह, बधिया (पव १०६ टी) ।

वद्धिअ देखो वड्ढिअ = वृद्ध (भवि) ।

वद्धी स्त्री [दे] अवश्य-कृत्य, आवश्यक कर्तव्य (दे ७, ३०) ।

वद्धीसक, वद्धीसग पुंन [दे. वद्धीसक] वाद्य-विशेष, एक प्रकार का बाजा (पण्ह २, ५—पत्र १४६; अनु ६) ।

वध देखो वह = वध (कुमा) ।

वधय देखो वहय (भग) ।

वधू देखो वहू (औप) ।

वन्न देखो वण्ण = वर्णय् । वन्नेहि (कुमा; उव) । हेकृ. वन्निउं (कुमा) । कृ. वन्नणिज्ज (सुर २, ६७; रयण ५४) ।

वन्न देखो वण्ण = वर्ण (भग; उव; सुपा १०३; सत्त ५६; कम्म ४, ४०; ठा ५, ३) ।

वन्नग देखो वण्णय (कप्प; श्रा २३) ।

वन्नण देखो वण्णण (उप ७६८ टी; सिरि ७२७) ।

वन्नणा देखो वण्णणा (रंभा) ।

वन्नय देखो वण्णय (पिंड ३०८; कप्प) ।

वन्निअ देखो वण्णिअ (भग) ।

वन्निआ स्त्री [वर्णिका] १ वानगी, नमूना; 'सग्गस्स वन्निया मिव नयरं इह अत्थि पाडली-पुत्तं' (धर्मवि ६४) । २ लाल रँग की मिट्टी (जी ३) ।

वन्हि देखो वण्हि = वृष्णि (उत्त २२, १३) ।

वन्हि देखो वण्हि = वह्नि (चंड) ।

वपु देखो वउ = वपुस् (वव १) ।

वप्प सक [त्वच् ?] ढकना, आच्छादन करना । वप्पइ (धात्वा १५१) ।

वप्प पुं [वप्र] १ विजयक्षेत्र-विशेष, जंबूद्वीप का एक प्रान्त, जिसकी राजधानी विजया है (ठा २, ३—पत्र ८०; जं ४) । २ पुंन. किला, दुर्ग, कोट (ती ८) । ३ केदार, खेत; 'केआरो वप्पिणं वप्पो' (पाअ; आचा २, १, ५, २; दे ७, ८३ टी) । ४ तट, किनारा; 'रोहो वप्पो य तडो' (पाअ) । ५ उन्नत भू-भाग, ऊँची-जमीन; 'वप्पाणि वा फलिहाणि वा पागाराणि वा' (आचा २, १; ५, २) ।

वप्प वि [दे] १ तनु, कृश । २ बलवान्, बलिष्ठ । ३ भूत-गृहीत, भूताविष्ट (दे ७, ८३) ।

वप्पइराय देखो व-प्पइराय ।

वप्पगा देखो वप्पा (राज) ।

वप्पगावई स्त्री [वप्रकावती] जंबूद्वीप का एक विजय-क्षेत्र, जिसकी राजधानी का नाम अपराजिता है (ठा २, ३—पत्र ८०; इक) ।

वप्पा स्त्री [वप्र] उन्नत भू-भाग, टेकड़ा, ऊँची जमीन (भग १५—पत्र ६६६) ।

वप्पा स्त्री [वप्रा] १ भगवान् नमिनाथजी की माता का नाम (सम १५१) । २ दशवें

चक्रवर्ती राजा हरिषेण की माता का नाम (पउम ८, १४४; सम १५२)।

वप्पिअ पुं [दे] १ केदार, खेत (षड्)। २ नपुंसक-विशेष (पुप्फ १२६)। ३ वि. रक्त, राग-युक्त (षड्)।

वप्पिण पुंन [दे] १ केदार, खेत (दे ७, ८५; औप; णाया १, १ टी—पत्र २; पात्र; पउम २, १२; पण्ह १, १; २, ५)। २ वि. उषित, जिसने वास किया हो वह (दे ७, ८५)।

वप्पिण पुंन [दे] १ केदारवाला देश। २ तटवाला देश (भग ५, ७—पत्र २३८)।

वप्पी देखो **वप्पा** = वप्र (भग १५—पत्र ६६६)।

वप्पीअ पुं [दे] चातक पक्षी (दे ७, ३३)।

वप्पीडिअ न [दे] क्षेत्र, खेत (दे ७, ४८)।

वप्पीह पुं [दे] स्तूप, मिट्टी आदि का कूट (दे ७, ४०)।

वप्पु देखो **वउ** = वपुस् (भग १५—पत्र ६६६)।

वप्पे अ [दे] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ उपहास-युक्त उल्लापन। २ विस्मय, आश्चर्य (संक्षि ४७)।

वप्फाउल देखो **बप्फाउल** (दे ६, ९२ टी)।

वफर न [दे] शस्त्र-विशेष (सुर १३, १५६)।

वब्भ° देखो **वह** = वह्।

वब्भ पुं [वभ्र] पशु-विशेष (स ४३७)।

वब्भय न [दे] कमलोदर, कमल का मध्य भाग (दे ७, ३८)।

वभिचरिअ वि [व्यभिचरित] व्यभिचार दोष से दूषित (श्रा १४)।

वभिचार देखो **वहिचार** (स ७११)।

वभिचारि वि [व्यभिचारिन्] १ न्याय-शास्त्रोक्त दोष-विशेष से दूषित, ऐकान्तिक (धर्मसं १२२७; पंचा २, ३७)। २ परस्त्री-लम्पट (वव ६; ७)।

वभियार देखो **वहिचार** (उवर ७९)।

वम सक [वम्] उलटी करना, कै करना। वकृ. **वमंत, वममाण** (गउड; विपा १,७)। संकृ. **वंता** (आचा; सूअ १, ६, २६)। कृ. **वम्म** (उर १, ७)।

वमग वि [वामक] उलटी करनेवाला (चेइय १०३)।

वमण न [वमन] उलटी, वान्ति, कै (आचा; णाया १, १३)।

वमाल सक [पुञ्जय्] १ इकट्ठा करना। २ विस्तारना। **वमालइ** (हे ४, १०२; षड्)।

वमाल पुं [दे] कलकल, कोलाहल (दे ६, ९०; पात्र; स ४३५; ५२०; भवि)।

वमाल पुं [पुञ्ज] राशि, ढग (सण)।

वमालण न [पुञ्जन] १ इकट्ठा करना। २ विस्तार। ३ वि. इकट्ठा करनेवाला। ४ विस्तारनेवाला (कुमा)।

वम्म पुंन [वर्मन्] कवच, संनाह, बख्तर (प्राप्र; कुमा)।

वम्म देखो **वम**।

वम्मथ, **वम्मह** पुं [मन्मथ] कामदेव, कंदर्प (चंड; प्राप्र; हे १, २४२; २, ६१; पात्र)।

वम्मा देखो **वामा** (कप्प; पउम २०, ४६; सुख २३, १; पत्र ११)।

वम्मिअ वि [वर्मित] कवचित, संनाह-युक्त (विपा १, २—पत्र २३)।

वम्मिअ, **वम्मीअ** पुं [वल्मीक] कीट-विशेष-कृत मिट्टी का स्तूप, ढूह या भीटा, दीमकों के रहने की बाँबी (सूअ २, १, २६; हे १, १०१; षड्; पात्र; स १२३; सुपा ३१७)।

वम्मीइ पुं [वाल्मीकि] एक प्रसिद्ध ऋषि, रामायण-कर्ता मुनि (उत्तर १०३)।

वम्मीसर पुं [दे] काम, कन्दर्प (दे ७, ४२)।

वम्ह न [दे] वल्मीक (दे ७, ३१)।

वम्ह पुं [ब्रह्मन्] १ वृक्ष-विशेष, पलाश का पेड़; 'नग्गोहवम्हा तरू' (पउम ५३, ७९)। २ देखो **बंभ** (प्राप्र)।

वम्हल न [दे] केसर, किंजल्क (दे ७, ३३; हे २, १७४)।

वम्हाण देखो **बंभण** (कुमा)।

वय सक [वच्] बोलना, कहना। **वअइ, वअए** (षड्)। भवि. **वच्छिहिइ, वच्छिइ, वच्छिहिति, वच्छिति, वोच्छिइ, वोच्छिहिइ, वोच्छिति, वोच्छिहिति, वोच्छं** (संक्षि ३२; षड्; हे ३, १७१; कुमा)। कर्म. **वुच्चइ** (कुमा)। कर्म. भवि. वकृ. **वक्खमाण** (विसे १०५३)। संकृ. **वइत्ता, वच्चा, वोत्तूण** (ठा ३, १—पत्र १०८; सूअ २, १, ६; हे ४, २११; कुमा)। हेकृ. **वत्तए, वत्तुं, वोत्तुं** (आचा; अभि १७२; हे ४, २११; कुमा)। कृ. **वच्च, वत्तव्व, वोत्तव्व** (विसे २; उप १३६ टी; ६४८ टी; ७६८ टी; पिंड ८७; धर्मसं ९२२; सुर ४, ६७; सुपा १५०; औप; उवा; हे ४,२११)। देखो **वयणिज्ज**।

वय सक [वद्] बोलना, कहना। **वयइ, वयसि** (कस; कप्प), **वइज्जा, वएज्जा** (कप्प)। भूका. **वयासि, वयासी** (औप; कप्प; भग; महा)। वकृ. **वयंत, वयमाण, वएमाण** (कप्प; काल; ठा ४, ४—पत्र २७४; सम्म ९९; ठा ७)। संकृ. **वइत्ता** (आचा)। हेकृ. **वइत्तए** (कप्प)।

वय सक [व्रज्] जाना, गमन करना। **वयइ** (सुर १, २४८)। **वयउ** (महा), **वइज्ज** (गच्छ २, ६१)। कृ. **वयंत** (सुर ३, ३७; सुपा ४३२)। कृ. **वइयव्व** (राजा)।

वय पुं [वृक] पशु-विशेष, भेड़िया (पउम ११८, ७)।

वय पुं [दे] गृध्र पक्षी (दे ७, २९; पात्र)।

वय पुं [वज] १ संस्कार-करण। २ गमन (श्रा २३)।

वय पुं [व्रज] १ देश-विशेष (गा ११२)। २ गोकुल, दस हजार गौओं का समूह (णाया १, १ टी—पत्र ४३; श्रा २३)। ३ मार्ग, रास्ता। ४ संस्कार-करण। ५ गमन, गति (श्रा २३)। ६ समूह, यूथ (श्रा २३; स २९७; सुपा २८८; ती ३)।

वय पुं [व्यय] १ खर्च (स ५०३)। २ हानि, नुकसान (उत्त; प्रासू १८१)। देखो **विअ** = व्यय।

वय न [वचस्] वचन, उक्ति (सूअ १, १, २, २३; १, २, २, १३; सुपा १६४; भास ६१; दं २२)। °**समिअ** वि [°समित] वचन का संयमी (भग)।

वय पुं [वद] कथन, उक्ति (श्रा २३)।

वय पुंन [व्रत] नियम, धार्मिक प्रतिज्ञा (भग; पंचा १०, ८; कुमा; उप २११ टी; ओघभा

२; प्रासू १५४)। °मंत वि [°वत्] व्रती (ग्राचा २, १, ६, १)।

वय पुंन [वयस्] १ उम्र, ग्रायु (ठा ३, ३; ४, ४; गा २३२; उप पृ १८; कुमा; प्रासू ४८; श्रा १४)। २ पक्षी (गउड; उप पृ १८)। °त्थ वि [°स्थ] तरुण, युवा (सुख १, १६)। °परिणाम पुं [°परिणाम] वृद्धता, बुढ़ापा (से ४, २३; पाग्र)।

°वय पुं [पच] पचन, पाक (श्रा २३)।

°वय देखो पय = पद (स ३४५; श्रा २३; गउड कप्पू; से १, २४)।

°वय देखो पय = पयस् (कुमा)।

वयंग न [दे] फल-विशेष (सिरि ११६८)।

वयंतरिअ वि [वृत्यन्तरित] बाड़ से तिरोहित (दे २, ६३)।

वयंस पुं [वयस्य] समान उमरवाला मित्र (ठा ३, १—पत्र ११४; हे १, २६; महा)।

वयंसि देखो वअंसि = वचस्विन् (राज)।

वयंसी स्त्री [वयस्या] सखी, सहेली (कप्पू)।

वयड पुं [दे] वाटिका, बगीचा (दे ७, ३५)।

वयण न [दे] १ मन्दिर, गृह। २ शय्या, बिछौना (दे ७, ८५)।

वयण पुंन [वदन] १ मुख, मुँह; 'वग्रणो, वग्रणं' (प्राकृ ३३; पि ३५८; सुर २, २४३; ३, ४४; प्रासू ६२)। २ न. कथन, उक्ति (विसे २७६४)।

वयण पुंन [वचन] १ उक्ति, कथन; 'वयणा, वयणाइं' (हे १, ३३; पव २; सुर ३, ६४; प्रासू १४; १३४; १५०; कुमा)। २ एकत्व ग्रादि संख्या का बोधक व्याकरण-शास्त्रोक्त प्रत्यय (पण्ह २, २ टी—पत्र ११८)।

वयणिज्ज वि [वचनीय] १ वाच्य, कथनीय, ग्रभिधेय; 'वत्थु दव्वट्ठिग्रस्स वयणिज्जं' (सम्म ८; सूग्र २, १, ६०)। २ निन्दनीय (सुपा ३००)। ३ उपालम्भनीय, उलहना देने योग्य (कुप्र ३)। ४ न. वचन, शब्द (से ४, १३; सम्म ५३; काप्र ८६६)। ५ लोकापवाद, निन्दा (स ५३२)।

वयर वि [दे] चूर्णित (दे ७, ३४)।

वयर देखो वइर = वज्र (कप्प; उव; ग्रोघभा ८; सार्ध ३५; भग; ग्रौप)।

°वयर देखो पयर = प्रकर (से १, २२)।

वयराड देखो वइराड (सत्त ६७ टी)।

वयल वि [दे] १ विकसता, खिलता (दे ७, ८४)। २ पुं. कलकल, कोलाहल (दे ७, ८४; पाग्र)।

वयली स्त्री [दे] लता-विशेष, निद्राकरी लता (दे ७, ३४; पाग्र)।

°वयस देखो वय = वयस्; 'सवयसं' (ग्राचा १, ८, २, २)।

वयस्स देखो वयंस (स ३१४; मोह ४७; ग्रभि ५५; स्वप्न ७६)।

वया स्त्री [वपा] १ विवर, छिद्र। २ मेद, चरबी (श्रा २३)।

वया स्त्री [वचा] १ ग्रोषधि-विशेष। २ मैना, सारिका (श्रा २३)। देखो वचा।

वया स्त्री [व्रजा] १ मार्ग-विशेष, ऊख को खींचने के लिए रज्जुबद्ध घट ग्रादि डालने का मार्ग। २ प्रेरण-दण्ड (श्रा २३)।

वर सक [वृ] १ सगाई करना, संबन्ध करना। २ ग्राच्छादन करना, ढकना। ३ याचना करना। ४ सेवा करना। वरइ (हे ४, २३४; सुज्ज १६; प्राप्र; षड्), 'वरं वरेहि' (कुप्र ८०), 'वरं वरसु इच्छिग्रं' (श्रा १२)। भवि. वरिस्सइ (सिरि ८१६)। कृ. वरणीअ (पउम २८, १०४)।

वर सक [वरय्] १ प्राप्त करने की इच्छा करना। २ संसृष्ट करना। वरइ, वरयति (भवि; सुज्ज ७); 'के सूरियं वरयते' (सुज्ज १, १)। वकृ. वरिंत (सुज्ज ७)।

वर पुं [वर] १ पति, स्वामी, दुलहा (स ७८; स्वप्न ४१; गा ४०४; ४७६; भवि)। २ वरदान, देव ग्रादि का प्रसाद (कुमा; श्रा १२; २७; कुप्र ८०; भवि)। ३ वि. श्रेष्ठ, उत्तम (कप्प; महा; कुमा; प्रासू ५२; १७५)। ४ ग्रभीष्ट (श्रा १२; कुप्र ८०)। ५ न. कुछ ग्रभीष्ट, ग्रच्छा; 'वरं मे ग्रप्पा दंतो' (उत्त १, १६; प्रासू २२; ३८; १०६)। °दत्त पुं [°दत्त] १ भगवान् नेमिनाथजी का प्रथम शिष्य (सम १५२; कप्प)। २ एक राजकुमार (विपा २, १; १०)। °दाम न [दामन्] एक तीर्थ (ठा ३, १—पत्र १२२; इक; सण)। °धणु पुं [°धनुष्] एक मन्त्रिकुमार, ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती का बालमित्र (महा)। °पुरिस पुं [°पुरुष] वासुदेव (पण्ण १७—पत्र ५२६; राय; ग्रावम; जीव ३)। °माल पुं [°माल] एक देवविमान (देवेन्द्र १३३)। °माला स्त्री [°माला] वर को पहनायी जाती माला, वरत्व-सूचक माला (कुप्र ४०७)। °रुइ पुं [°रुचि] राजा नन्द के समय का एक विद्वान् ब्राह्मण (कुप्र ४४७)। °वरिया स्त्री [°वरिका] ग्रभीष्ट वस्तु माँगने के लिए की जाती घोषणा, ईप्सित वस्तु के दान देने की घोषणा (णाया १, ८—पत्र १५१; ग्रावम; स ४०१; सुर १६, १८; सुपा ७२)। °सरक न [°सरक] खाद्य-विशेष (पण्ह २, ५—पत्र १४८)। °सिट्ठ पुंन [°शिष्ट] यम लोकपाल का एक विमान (भग ३, ७—पत्र १६७; देवेन्द्र २७०)।

वर देखो वार। °विलया स्त्री [°वनिता] वेश्या (कुमा)। °वर देखो पर; 'जीवाणमभयदाणं जो देइ दयावरो नरो निच्चं' (कुप्र १८२)।

वरइअ वि [दे] धान्य-विशेष (दे ७, ४६)।

वरइत्त पुं [दे. वरयितृ] ग्रभिनव वर, दुलहा (दे ७, ४४; षड्; भवि)।

वरई देखो वरय = वराक।

वरउप्फ वि [दे] मृत (दे ७, ४७)।

वरं देखो परं = परम्; 'ग्रदो वरं विरुद्धमम्हाण इत्थ ग्रवत्थाणं' (मोह ६२; स्वप्न २०६)।

वरंड पुं [वरण्ड] १ दीर्घ काष्ठ; लम्बी लकड़ी। २ भित्ति, भीत (मृच्छ ६)।

वरंड पुं [दे] १ तृण-पुञ्ज, तृण-संचय (चारु ३)। २ प्राकार, किला (दे ७, ८६; षड्)। ३ कपोतपाली, गाल पर लगाई जाती कस्तूरी ग्रादि की छटा (दे ७, ८६)। ४ समूह (गा ६३०)।

वरंडिया स्त्री [दे] छोटा बरंडा, बरामदा, दालान (सुपा २०३)।

वरक्ख न [वराख्य] गन्ध-द्रव्य विशेष, सिल्हक (से ६, ४४)।

वरक्ख पुं [वराक्ष] १ योगी। २ यक्ष। ३ वि. श्रेष्ठ इन्द्रियवाला (से ६, ४४)।

वरक्खा स्त्री [वराख्या] त्रिफला (से ६, ४४)।

वरग न [वरक] महामूल्य पात्र, कीमती भाजन (आचा २, १, ११, ३)।

वरट्ट पुं [दे] धान्य-विशेष (पव १५४)।

वरडा } स्त्री [दे. वरटा] १ तैलाटी, कीट-
वरडी } विशेष, गंधोली। २ दंश-भ्रमर, जन्तु-विशेष (मृच्छ १२; दे ७, ८४)।

वरण पु [वरण] १ सगाई, विवाह-संबन्ध (सुपा ३५४; सुर १,१२६; ४,१०)। २ तट, किनारा (गउड)। ३ पूल, सेतु (ओघ ३०)। ४ प्राकार, किला (गा २४५)। ५ स्वीकार, ग्रहण (राज)। देखो वीर-वरण। ६ पुं. देश-विशेष, एक आर्य देश; 'वइराड वच्छ वरणा अच्छा' (सूअनि ६६ टी; इक), देखो वरुण।

वरणय न [वरणक] तृण-विशेष (गउड)।

वरणसि (अप) देखो वाराणसी (पि ३५४)।

वरणा स्त्री [वरणा] १ काशी की एक नदी, वरुणा (राज)। २ अच्छ देश की प्राचीन राजधानी (सूअनि ६६ टी)। देखो वरुणा।

वरणीअ देखो वर = वृ।

वरत्त वि [दे] १ पीत। २ पतित। ३ पेटित, संहत (षड्)।

वरत्ता स्त्री [वरत्रा] रज्जु, रस्सी (पाअ; विपा १, ६; सुपा ५६२)।

वरय पुं [वरक] सगाई करनेवाला, विवाह का प्रार्थक पुरुष (सुर ६, ११५)।

वरय पुं [दे] शालि-विशेष, एक तरह का धान्य (दे ७, ३६)।

वराअ वि [वराक] दीन, गरीब, बेचारा, रंक (पाअ; सुर २, १३; ६, १६५; सुपा ६३; गा ५३३)। स्त्री. °रई (संक्षि २; पि ८०)।

वरला स्त्री [वरला] हंसी, हंसपक्षी की मादा (पाअ)।

वरसि देखो वरिसि (मोह ३०)।

वरहाड अक [निर् + सृ] बाहर निकलना। वरहाडइ (हे ४, ७९)।

वरहाडिअ वि [निःसृत] बाहर निकला हुआ, निर्गत (कुमा)।

वराग देखो वराय (रंभा)।

वराड } पुं [वराट, °क] १ दक्षिण का
वराडग } एक देश, जो आजकल भी 'बरार'
वराडय } नाम से प्रसिद्ध है (कुप्र २५५; सुख १८, ३५; राज)। २ कपर्दक, कौड़ा—बड़ी कौड़ी (उत्त ३६, १३०; ओघ ३३४; श्रा १)। ३ न. कौड़ियों का जूआ जिसे बालक खेलते हैं (मोह ८६)।

वराडिया स्त्री [वराटिका] कपर्दिका, कौड़ी (सुपा २०३)।

वराय देखो वरय = वराक (गा ६१; ६६; १४१; महा)। स्त्री. °राइआ, °राई (गा ४६२; पि ३५०)।

वरावड पुं. ब. [वरावट] देश-विशेष (पउम ९८, ६४)।

वराह पुं [वराह] १ शूकर, सूअर (पाअ)। २ भगवान् सुविधिनाथ का प्रथम शिष्य (सम १५२)।

वराही स्त्री [वराही] विद्या-विशेष (विसे २४५३)।

वरि अ [वरम्] अच्छा, ठीक;

'वरि मरणं मा विरहो,
विरहो अइदूसहो म्ह पडिहाइ।
वरि एक्कं चिय मरणं,
जेण समप्पंति दुक्खाइं॥'
(सुर ४, १८२; भवि)।

वरिअ देखो वज्ज = वर्य (हे २, १०७; षड्)।

वरिअ वि [वृत] १ स्वीकृत (से १२, ८८)। २ सेवित (भवि)। ३ जिसकी सगाई की गई हो वह (वसु; महा)। ४ न. सगाई करना; 'सुवरियं ति' (उप ६४८ टी)।

वरिट्ठ पुं [वरिष्ठ] १ भरत-क्षेत्र का भावी बारहवाँ चक्रवर्ती राजा (सम १५४)। २ अति-श्रेष्ठ (औप, कप्प; उप पृ ३८४; सुपा ४०३; भवि)।

वरिल्ल न [दे] वस्त्र-विशेष (कप्पू)।

वरिस सक [वृष्] बरसना, वृष्टि करना। वरिसइ (हे ४, २३५; प्राप्र)। वकृ. **वरिसंत, वरिसमाण** (सुपा ६२४; ६२३)। हेकृ. **वरिसिउं** (पि १३५)।

वरिस पुंन [वर्ष] १ वृष्टि, वर्षा (कुमा; कप्पू; भवि)। २ संवत्सर, साल (कुमा; सुपा ४५२; नव ६; दं २७; कप्पू; कम्म १, १८)। ३ जंबूद्वीप का अंश-विशेष, भारत आदि क्षेत्र। ५ मेघ (हे २, १०५)। °अ वि [°ज] वर्षा में उत्पन्न (षड्)। °कण्ह न [°कृष्ण] १ एक गोत्र। २ पुंस्त्री. उस गोत्र में उत्पन्न (ठा ७—पत्र ३९०)। °धर पुं [°धर] अन्तःपुर-रक्षक षण्ड-विशेष (णाया १, १—पत्र ३७; कप्पू; औप ५५ टि)। °वर पुं [°वर] वही अनन्तरोक्त अर्थ (औप)। देखो वास = वर्ष।

वरिसविअ वि [वर्षित] बरसाया हुआ (सुपा २२३)।

वरिसा स्त्री [वर्षा] १ वृष्टि, पानी का बरसना (हे २, १०५)। २ वर्षा-काल, श्रावण और भादो का महीना (प्रयौ ७४)। °काल पुं [°काल] वर्षा ऋतु, प्रावृट् (कुप्र ७५)। °रत्त पुं [°रात्र] वही अर्थ (ठा ६; णाया १, १—पत्र ६३)। °ल देखो °काल (पव ८५; महा)। देखो वासा।

वरिसि वि [वर्षिन्] बरसनेवाला (वेणी १११)।

वरिसिणी स्त्री [वर्षिणी] विद्या-विशेष (पउम ७, १४२)।

वरिसोलक पुं [दे. वर्षोलक] पक्वान्न-विशेष, एक प्रकार का खाद्य (पव ४ टी)।

°वरिहरिअ देखो परिहरिअ (से ७, ३८)।

वरु } पुंन [दे] देखो बरुअ; 'चंपयतरुणो
वरुअ } वरुणो फुल्लंति सुरहिजलसित्ता (? त्ता)' (संबोध ४७)।

वरुंट पुं [वरुण्ट] एक शिल्पि-जाति (राज)।

वरुड पुं [वरुड] एक अन्त्यज-जाति (दे २, ८४)।

वरुण पुं [वरुण] १ चमर आदि इन्द्रों का पश्चिम दिशा का लोकपाल (ठा ४, १—पत्र १९७; १९८; इक)। २ बलि-आदि इन्द्रों का उत्तर दिशा का लोकपाल (ठा ४, १)। ३ लोकान्तिक देवों की एक जाति (णाया १; ८—पत्र १५१)। ४ भगवान् मुनिसुव्रत का शासनाधिष्ठायक यक्ष (संति ८)। ५ शतभिषक् नक्षत्र का अधिष्ठाता देव (सुज्ज १०, १२)। ६ एक देव-विमान (देवेन्द्र १३१)। ७ वृक्ष की एक जाति (पव ४)। ८ महोरात्र का पनरहवाँ मुहूर्त (सुज्ज १०, १३; सम ५१)। ९ एक विद्याधरनरपति (पउम ६, ४४; १६, १२)। १० एक श्रेष्ठि-पुत्र (सुपा ५५६)। ११ छन्द-विशेष (पिंग)। १२ वरुणवर द्वीप का एक अधिष्ठाता देव (जीव

३—पत्र ३४८)। १३ पुं. ब. एक आर्य-देश (पव २७५)। °काइय पुं [°कायिक] वरुण लोकपाल के भृत्य-स्थानीय देवों की एक जाति (भग ३, ७—पत्र १९९)। °देवकाइय पुं [°देवकायिक] वही अर्थ (भग ३, ७)। °प्पभ पुं [°प्रभ] १ वरुणवर द्वीप का एक अधिष्ठायक देव (जीव ३—पत्र ३४८)। २ वरुण लोकपाल का उत्पात-पर्वत (ठा १०—पत्र ४८२)। °प्पभा स्त्री [°प्रभा] वरुणप्रभ पर्वत की दक्षिण दिशा में स्थित वरुण लोकपाल की एक राजधानी (दीव)। °वर पुं [°वर] एक द्वीप का नाम (जीव ३—पत्र ३४८; सुज्ज १९)।

वरुणा स्त्री [वरुणा] १ अच्छ देश की प्राचीन राजधानी (पव २७५)। २ वरुणप्रभ पर्वत की पूर्व दिशा में स्थित वरुण नामक लोक-पाल की एक राजधानी (दीव)। ३ एक राज-पत्नी (पउम ७, ४४)।

वरुणी स्त्री [वरुणी] विद्या-विशेष (पउम ७, १४०)।

वरुणोअ, वरुणोद पुं [वरुणोद] एक समुद्र (ठा पत्र ४०५; इक; सुज्ज १९)।

वरुल पुं. ब. [वरुल] देश-विशेष (पउम ९८, ६४)।

वरूहिणी स्त्री [वरूथिनी] सेना, सैन्य (पाअ)।

वरेइत्थ न [दे] फल (दे ७, ४७)।

वल अक [वल्] १ लौटना, वापस आना। २ मुड़ना, टेढ़ा होना; गुजराती में 'वळवुं'। ३ उत्पन्न होना। ४ सक. ढकना। ५ जाना, गमन करना। ६ साधना। वलइ (हे ४, १७६; षड्; गा ४४६; धात्वा १५२)। भवि. वलिस्सं (गहा)। वकृ. वलंत, वलय, वलाय, वलमाण (हे ४, ४२२; गा २५; से ५, ४७; ५, ४२; औप; ठा २, ४; पव १५७)। कवकृ. वलिज्जंत (से ४, २६)। संकृ. वलिऊण (काल)। हेकृ. वलिउं (गा ४८४; पि ५७६)। कृ. वलियव्व (महा; सुपा ६०१)।

वल सक [आ + रोपय्] ऊपर चढ़ाना। वलइ (दे ४, ४७; दे ७, ८६)।

वल सक [ग्रह्] ग्रहण करना। वलइ (हे ४, २०९; दे ७, ८६)। वलणिज्ज (कुमा)।

वल पुं [वल] रस्सी आदि को मजबूत करने के लिए दिया जाता बल (उत्त २६, २५)।

वलअंगी स्त्री [दे] वृतिवाली, बाड़वाली (दे ७, ४३)।

वलइय वि [वलयित] १ वलय—कंगन की तरह गोलाकार किया हुआ, वलय की तरह मुड़ा हुआ (पउम २८, १२४; कप्पू)। २ वेष्टित (कप्पू)।

वलंगणिआ स्त्री [दे] बाड़वाली (दे ७, ४३)।

वलक्किअ वि [दे] उत्संगित, उत्संग-स्थित (षड् १८३)।

वलक्ख वि [वलक्ष] श्वेत, सफेद (पाअ)।

वलक्ख न [वलाक्ष] आभूषण-विशेष, एक तरह का गले में पहनने का गहना (औप)।

वलग्ग सक [आ + रुह्] आरोहण करना, चढ़ना। गुजराती में 'वळगवुं'। वलग्गइ (हे ४, २०६; षड्; भवि)।

वलग्ग वि [आरूढ] जिसने आरोहण किया हो वह, चढ़ा हुआ (पाअ)।

वलग्गंगणी स्त्री [दे] वृति, बाड (दे ७, ४३)।

वलग्गिअ देखो वलग्ग = आरूढ (कुमा)।

वलण न [वलन] १ मोड़ना, वक्र करना (दे १, ४२)। २ प्रत्यावर्तन, पीछे लौटना (से ८, ९; गउड)। ३ बाँक, वक्रता (हे ४, ४२२)।

वलण (शौ. मा) देखो वरण (प्राकृ ८५; हे २९३)।

वलणा स्त्री [वलना] देखो वलण = वलन (गउड)।

वलत्थ वि [दे] पर्यस्त (भवि)।

वलमय न [दे] शीघ्र, जल्दी; 'वच्च वलमयं तत्थ' (दे ७, ४८)।

वलय पुंन [वलय] १ कंकण, कड़ा (औप; गा १३३; कप्पू; हे ४, ३५२)। २ पृथिवी-वेष्टन, घनवात आदि (ठा २, ४—पत्र ८६)। ३ वेष्टन, बेठन। ४ वर्तुल, गोलाकार (गउड; कप्पू; ठा ५, १)। ५ नदी आदि के बाँक से वेष्टित भू-भाग (सूअ २, २, ८; भग)। ६ माया, प्रपंच (सूअ १, १२, २२; सम ७१)। ७ असत्य वचन, मृषा झूठ (पण्ह १, २—पत्र २६)। ८ वलयकार वृक्ष, नारि-केल, नारियल आदि (पण्ण १; उत्त ३६, ९६; सुख ३६, ९६)। °आर, °रअ पुं [°कार, °कारक] कंकण बनानेवाला शिल्पी (दे ७, ५४)।

वलय वि [वलक] मोड़नेवाला; 'छगलग-गल-वलया' (पिंड ३१४)।

वलय न [दे] १ क्षेत्र, खेत। २ गृह, घर (दे ७, ८४)।

वलय देखो वल = वल्। °मयग वि [°मृतक] १ संयम से भ्रष्ट होकर जिसका मरण हुआ हो वह। २ भूख आदि से तड़फता हुआ जो मरा हो वह (औप)। °मरण न [°मरण] संयम से च्युत होनेवाले का मरण (भग २, १)।

वलयणी स्त्री [दे] वृति, बाड़ (दे ७, ४३)।

वलयबाहा, वलयबाहु स्त्री [दे] १ दीर्घ काष्ठ, जिसपर ध्वजा आदि बाँधा जाता है वह लम्बा काष्ठ; 'संसारियासु वलयबाहासु ऊसिएसु सिएसु झयग्गेसु' (णाया १, ८—पत्र १३३)। २ हाथ का एक आभूषण, चूड़ा, कड़ा (दे ७, ५२; पाअ)।

वलया देखो वडवा। °णल पुं [°नल] वड-वाग्नि (हे १, १७७; षड्)। °मुह न [°मुख] १ बडवानल (हे १, २०२; प्राकृ; पि २४०)। २ पुं. एक बड़ा पाताल-कलश (ठा ४, २—पत्र २२६; टी—पत्र २२८; सम ७१)।

वलया स्त्री [दे] वेला, समुद्र-कूल। °मुह न [°मुख] वेला का अग्र भाग;

'ति बलागमुहुम्मुक्को, तिक्खुत्तो वलयामुहे।
ति सत्तक्खुत्तो जालेणं, सइ छिन्नोदए दहे॥
एयारिसं ममं सत्तं, सढं घट्टियघट्टणं।
इच्छसि गलेण घेत्तुं, अहो ते अहिरीयया॥'
(पिंड ६३२; ६३३)।

वलयाइअ वि [वलयायित] जो वलय की तरह गोल हुआ हो वह (कुमा)।

वलवट्टि [दे] देखो बलवट्टि (दे ६, ९१)।

वलवा देखो वडवा; 'गोमहिसिवलवपुण्णो' (पउम २, २; दे ७, ४१; इक; पि २४०)।

वलवाडी स्त्री [दे] वृति, बाड़ (दे ७, ४३)।

वलविअ न [दे] शीघ्र, जल्दी (दे ७, ४८)।

वलहि स्त्री [दे] कर्पास, कपास (दे ७, ३२)।

वलहि, वलही स्त्री [वलभि, °भी] १ गृह-चूडा, छज्जा, बरामदा। २ महल का अग्रस्थ भाग (प्राप्र)। ३ काठियावाड़ का एक प्राचीन नगर, जिसको आजकल 'वळा' कहते हैं (ती १५; सम्मत्त ११६)।

वलाअ देखो पलाय = परा + अय्। वकृ. 'दीसइ वि वलाअंतो' (से ६; ८६)।

वलाअ देखो पलाव = प्रलाप (से ६, ४६)।

°वलाअ देखो वल = वल्। °**मरण** देखो वलय-मरण; 'संजमजोग-विसन्ना मरंति जे तं वलायमरणं तु' (पव १५७; ठा २, ४—पत्र ९३)।

वलि स्त्री [वलि] १ पेट का अवयव-विशेष; 'उयरवलिमंसेहिं' (निर १, १)। २ त्रिवलि, नाभि के ऊपर पेट की तीन रेखाएँ (गा ४२५; भवि)। ३ जरा आदि से होती शिथिल चमड़ी (णाया १, १—पत्र ६६)।

वलिअ वि [दे] भुक्त, भक्षित (दे ७, ३५)।

वलिअ वि [वलित] १ मुड़ा हुआ (गा ६; २७०; औप)। २ जिसको बल चढ़ाया गया हो वह (रस्सि आदि) (उत्त २६, २५)।

वलिअ देखो विलिअ = व्यलीक (प्राप्र)।

वलिआ स्त्री [दे] ज्या, धनुष की डोरी (दे ७, ३४)।

°वलिच्छन्न देखो परिच्छन्न (औप)।

वलिज्जंत देखो वल = वल्।

°वलित्त देखो पलित्त (उप ७२८ टी)।

वलिमोडय पुं [वलिमोटक] वनस्पति में ग्रन्थि का चक्राकार वेष्टन (पराण १—पत्र ४०)।

वलिर वि [वलितृ] लौटनेवाला (सुपा ५६)।

वली स्त्री [वली] देखो वलि (निर १, १)।

वलुण देखो वरुण (हे १, २५४)।

वले अ. संबोधन-सूचक अव्यय (प्राकृ ८०)। २-३ देखो बले (षड्)।

वल्ल देखो वल = वल्। वल्लइ (धात्वा १५२)।

वल्ल अक [वल्ल्] चलना, हिलना (कुप्र ८४)।

वल्ल पुं [दे] शिशु, बालक (दे ७, ३१)।

वल्ल पुं [दे. वल्ल] अन्न-विशेष, निष्पाव, गुजराती में 'वाल' (सुपा १३; ६३१; सम्मत्त ११८; सण)।

वल्लई स्त्री [वल्लवी] गोपी (दे ७, ३६ टी)।

वल्लई स्त्री [दे] गो, गैया (दे ७, ३६)।

वल्लई, वल्लकी स्त्री [वल्लकी] वीणा (पाअ; दे ७, ३६ टी; णाया १, १७—पत्र २२६)।

वल्लट्ट वि [दे] पुनरुक्त, फिर से कहा हुआ (षड्)।

वल्लभ देखो वल्लह (गा ६०४)।

वल्लर न [दे. वल्लर] १ वन, गहन (दे ७, ८६; पाअ; उत्त १६, ८१)। २ क्षेत्र, खेत (दे ७, ८६; पराह १, १—पत्र १४)। ३ अरण्य-क्षेत्र (पाअ)। ४ वालुका-युक्त क्षेत्र (गा ८१२)।

वल्लर न [दे] १ अरण्य अटवी। २ निर्जल देश। ३ पुं. महिष, भैंसा; ४ समीर, पवन। ५ वि. युवा, तरुण (दे ७, ८६)। ६ वेष्टन-शील। ७ वेष्टित नामक आलिंगन-विशेष करने की आदत वाला। स्त्री. °री (गा ५३४)।

वल्लरी स्त्री [वल्लरी] वल्ली, लता (पाअ; गउड; सुपा ५२६)।

वल्लरी स्त्री [दे] केश, बाल (दे ७, ३२)।

वल्लव पुंस्त्री [वल्लव] गोप, अहीर, ग्वाला (पाअ)। स्त्री. °वी (गा ८६)।

वल्लवाय न [दे] क्षेत्र, खेत (दे ६, २६)।

वल्लविअ वि [दे] लाक्षा से रँगा हुआ (षड्)।

वल्लह पुं [वल्लभ] १ दयित, पति, भर्त्ता, बालम (गउड; कप्पू; गा १२३; हे ४, ३८३)। २ वि. प्रिय, स्नेह-पात्र; 'अहं जाया वल्लहा अईव पिउणो' (महा; गा ४२; ६७; कुमा पउम १५, ७३; रयण ७६)। °**राय** पुं [°राज] १ गुजरात का एक चौलुक्य-वंशीय राजा (कुप्र ४)। २ दक्षिण के कुन्तल देश का एक राजा (कप्पू)।

वल्लहा स्त्री [वल्लभा] दयिता, पत्नी (गा ७२)।

वल्लादय न [दे] आच्छादन, ढकने का वस्त्र (दे ७, ४५)।

वल्लाय पुं [दे] १ श्येन पक्षी। २ नकुल, न्यौला (दे ७, ८४)।

वल्लि स्त्री [वल्लि] लता, बेल (कुमा)।

वल्लिर वि [वल्लितृ] हिलनेवाला; 'न विरायइ वल्लिरपल्लवा वि वल्लिव्व फलहीणा' (कुप्र ८४)।

वल्ली स्त्री [वल्ली] लता, बेल (कुमा; पि ३८७)।

वल्ली स्त्री [दे] केश, बाल (दे ७, ३२)।

वल्हीअ पुं [वाह्लीक] १ देश-विशेष (स १३; नाट)। २ वि. वाह्लीक देश में उत्पन्न, वाह्लीक देश का (स १३)।

वव सक [वप्] बोना; 'जे सत्तखित्तेसु ववंति वित्तं' (सत्त ७२)। वकृ. **ववंत** (आत्महि ७)। कवकृ. **वविज्जंत** (गा ३५८)।

वव सक [वप्] देना। ववइ (वव १)। कर्म. उप्पइ (कुप्र ४१)।

ववइस सक [व्यप + दिश्] १ कहना, प्रतिपादन करना। २ व्यवहार करना। ववइसंति (धर्मसं ४५२; सुअनि १४१)।

अन्ने अकालमरणस्सभावओ
वहनिवित्तिमो मोहा।
वंभासुअपिसियासण-
निवित्तितुल्लं ववइसंति ॥'
(श्रावक १६२)।

ववएस पुं [व्यपदेश] १ कथन, प्रतिपादन। २ व्यवहार (से ३, २६)। ३ कपट, बहाना, छल (महा)।

ववगम पुं [व्यपगम] नाश (आवम)।

ववगय वि [व्यपगत] १ दूर किया हुआ (सुपा ४१)। २ मृत (पराह २, ५—पत्र १४८)। ३ नाश-प्राप्त, नष्ट; 'ववगयविग्घा सिग्घं पत्ता हिअइच्छिअं ठाणं' (रामि ११; औप; कप्प)।

ववट्ठंभ पुं [व्यवष्टम्भ] अवलम्बन, सहारा (से ४, ४६)।

ववट्ठावण देखो ववत्थावण (राज)।

ववट्ठिअ वि [व्यवस्थित] व्यवस्था-प्राप्त (से १२, ५२)।

ववण न [वपन] बोना (वव १; श्रु ६)।

ववण स्त्रीन [दे] कार्पास, तूला, रूई; 'पलही ववणं तूलो रूवो' (पाअ)। स्त्री. °णी (दे ६, ८२; ७, ३२)।

ववत्थंभ पुं [दे] बल, पराक्रम (दे ७, ४६)।

ववत्था स्त्री [व्यवस्था] १ मर्यादा, स्थिति (स १३; कुप्र ११४)। २ प्रक्रिया, रीति। ३ इंतजाम, प्रबन्ध (सुपा ४१)। ४ निर्णय (स १३)। °पत्तय न [°पत्रक] दस्तावेज (स ४१०)।

ववत्थावण न [व्यवस्थापन] व्यवस्था करना; 'जीववववत्थावणादिणा' (धर्मसं ५२०)।

ववत्थावणा न [व्यवस्थापना] ऊपर देखो (धर्मसं ५२०)।

ववत्थिअ वि [व्यवस्थित] व्यवस्था-युक्त (स ४६; ७२७; सुर ७, २०५; सण)।

ववत्थिअ वि [व्यवस्थित] जिसने व्यवस्था की हो वह (दसनि ४, ३५)।

ववदेस देखो ववएस (उवा; स्वप्न १३२)।

ववदेसि वि [व्यपदेशिन्] व्यपदेश करने-वाला (नाट—शकु ६६)।

ववधाण न [व्यवधान] अन्तर, दो पदार्थों के बीच का अन्तर (अभि २२२)।

ववरोव सक [व्यप + रोपय्] विनाश करना, मार डालना। ववरोवेसि, ववरोवेज्जसि, ववरोवेज्जा (उवा)। कर्म. ववरोविज्जसि (उवा)। संकृ. **ववरोवित्ता** (उवा)।

ववरोवण न [व्यपरोपण] विनाश, हिंसा (सण)।

ववरोविअ वि [व्यपरोपित] विनाशित, मार डाला गया; 'जीविआओ ववरोविआ' (पडि)।

ववस सक [व्यव + सो] १ करना। २ करने की इच्छा करना। ववसइ (राय १०८)।

ववस सक [व्यय + सो] १ प्रयत्न करना, चेष्टा करना। २ निर्णय करना। ववसइ (स २०२)। वकृ. **ववसंत, ववसमाण** (सुपा २३८; स ५६२)। संकृ. **ववसिऊण** (सुपा ३३६)। कवकृ. **ववसिज्जमाण** (पउम ५७, ३६)। हेकृ. **ववसिदुं** (शौ) (नाट—शकु ७१)।

ववसाय पुं [व्यवसाय] १ निर्णय, निश्चय। २ अनुष्ठान (ठा ३, ३—पत्र १५१; णंदि)। ३ उद्यम, प्रयत्न (से ३, १४; सुपा ३५२; स ६८३; हे ४, ३८५; ४२२; कुप्र २६)। ४ व्यापार, कार्य, काम (औप; राय)।

ववसायसभा स्त्री [व्यवसायसभा] कार्य करने का स्थान, कार्यालय (राय १०४)।

ववसिअ न [दे] बलात्कार (दे ७, ४२)।

ववसिअ, ववस्सिअ } वि [व्यवसित] १ उद्यत, उद्यम-युक्त; 'सेणिओ नाम राया पयासुहे सुहं ववसिओ' (वसु; उत्त २२, ३०; उव)। २ त्यक्त; 'अवि जीवियं ववसियं न चेव गुरुपरिभवो सहिओ' (उव)। ३ निश्चयवाला। ४ पराक्रमी (ठा ४, १—पत्र १७६)। ५ न. व्यवसाय, कर्म (णाया १, १—पत्र ५०)। ६ चेष्टित (स ७५६)। ७ उद्यम, प्रयत्न (से ३, २२)।

ववहर सक [व्यव + हृ] १ व्यापार करना। २ अक. वर्तना, आचरण करना। ववहरई, ववहरए (उत्त १७, १८; स १०८; विसे २२१२)। वकृ. **ववहरंत, ववहरमाण** (उत्त २१, २; ३; भग ८, ८; सुपा १५; ४४६)। हेकृ. **ववहरिउं** (स १०५)। कृ. **ववहरणिज्ज, ववहरियव्व** (उप २११ टी; वव १; सुपा ५८५)।

ववहरग वि [व्यवहारक] व्यापार करने-वाला, व्यापारी (कुप्र २२४)।

ववहरण न [व्यवहरण] व्यवहार (णाया १, ८—१३५; स ५८५; उप ५३० टी; सुपा ४६७; विसे २२१२)।

ववहरय देखो ववहरग (सुपा ५७८)।

ववहरियव्व देखो ववहर।

ववहार पुं [व्यवहार] १ वर्तन, आचरण (वव १; भग ८, ८; विसे २२१२; ठा ५, २; पव १२६)। २ व्यापार, धन्धा, रोजगार (सुपा ३३४)। ३ नय-विशेष, वस्तु-परीक्षा का एक दृष्टिकोण (विसे २२१२; ठा ७—पत्र ३६०)। ४ मुमुक्षु की प्रवृत्ति-निवृत्ति का कारण-भूत ज्ञान-विशेष (भग ८, ८—पत्र ३८३; वव १; पव १२६; द्र ४६)। ५ जैन आगम-ग्रंथ-विशेष (वव १)। ६ दोष के नाशार्थ किया जाता प्रायश्चित्त; 'आयारे ववहारे पन्नत्ती चेव दिट्ठिवाए य' (दसनि ३)। ७ विवाद, मामला, मुकद्दमा; 'ववहार-वियारणं कुणइ' (पउम १०५, १००; स ४६०; चेइय ५६०; उप ५६७ टी)। ८ विवाद-निर्णय, फैसला, चुकादा (उप पृ २८३)। ९ व्यवस्था (सूअ २, ५, ३)। १० काम काज (विसे २२१२; २२१४)। ११ जीवराशि-विशेष (सक्खा ६)। °व वि [°वत्] व्यवहार-युक्त (द्र ४६)। °रासिय वि [°राशिक] जीवराशि-विशेष में स्थित (सिक्खा ६)।

ववहार पुं [व्यवहार] १ पूर्व-ग्रंथ। २ जीतकल्प सूत्र। ३ कल्पसूत्र। ४ मार्ग, रास्ता। ५ आचरण। ६ ईप्सितव्य (वव १)।

ववहारि पुं [व्यवहारिन्] १ ऐरवत क्षेत्र में उत्पन्न एक जिन-देव (सम १५३)। २ वि. व्यापारी, वणिक् (मोह ६४; श्रा १४; सुपा ३३४)। ३ व्यवहार-क्रिया-प्रवर्तक (वव १)।

ववहारिअ वि [व्यावहारिक] व्यवहार-सम्बन्धी (ओघ २८१; अणु)।

ववहिअ वि [व्यवहित] व्यवधान-युक्त (अणु; आवम)।

ववहिअ वि [दे] मत्त, उन्मत्त (दे ७, ४१)।

ववाँल देखो वमाल (सण)।

वविअ वि [उप्त] बोया हुआ (उप ७२८ टी; प्रासू ६)।

वविज्जंत देखो वव।

ववेअ वि [व्यपेत] व्यपगत (सूअ २, १, ४७)।

ववेक्खा स्त्री [व्यपेक्षा] विशेष अपेक्षा, परवाह (धर्मसं ११६७)।

वव्वय पुं [वल्वज] तृण-विशेष; 'मूययवक्क (? व्व) यपुप्फफल—' (पण्ह २, ३—पत्र १२३; कस २, ३०)।

वव्वर वि [वर्बर] १ पामर। २ [illegible] (कुमा)।

वव्वा° देखो वव्वय (कस २, ३०)।

वव्वाड पुं [दे] अर्थ, धन (दे ७, ३६)।

वव्वीस देखो वव्वीसग, वव्वीसक (पउम ११३, ११)।

वशधि (मा) देखो वसहि = वसति (प्राकृ १०१)।

वश्च (म) देखो वच्छ = वृक्ष (प्राकृ १०१)।

वस अक [वस्] १ वास करना, रहना। २ सक. बाँधना। वसइ (कप्प; महा)। भूका. वसीय (उत्त १३, १८)। वकृ. **वसंत, वसमाण** (सुर २, २१६; ६, १२०; कुप्र १४; कप्प)। संकृ. **वसित्ता, वसित्ताणं** (आचा; कप्प; पि ५८३)। हेकृ. **वत्थए वसिउं** (कप्प; पि ५७८; राज)। कृ. **वसियव्व** (ठा ३, ३, सुर १४, ८७; सुपा ४३८)।

वस वि [वश] १ आयत्त, अधीन (आचा; से २, ११)। २ पुंन. अधीनता, परतन्त्रता (कुमा; कम्म १, ४४)। ३ प्रभुत्व, स्वामित्व। ४ आज्ञा (कुमा)। ५ बल, सामर्थ्य (गाया १, १७; औप)। °**अ, °ग** वि [°ग] वशीभूत, पराधीन (पउम ३०, २०; अच्चु ६१; सुर २, २३१; कुमा; सुपा २५७)। °**ट्ट** वि [°र्त] पराधीनता से पीड़ित, इन्द्रिय आदि की परवशता के कारण दुःखित (आचा; विपा १, १—पत्र ८; औप)। °**ट्टमरण** न [°र्तमरण] इन्द्रियादि-परवश की मौत (ठा २, ४—पत्र ६३; भग)। °**वत्ति** वि [वर्तिन्] वशीभूत, अधीन (उप १३६ टी; सुपा २३८)। °**इत्त** वि [°ायत्त] अधीन, परतंत्र (धर्मवि ३१)। °**णुग** वि [°ानुग] वही अर्थ (पउम १४, ११)।

वस पुं [वृष] १ धर्म (चेइय ५४१)। २ बैल, वृषभ (स ६५४; कम्म १, ४३)। देखो विस = वृष।

वसइ स्त्री [वसति] १ स्थान, आश्रय (कुमा)। २ रात्रि, रात (दे ७, ४१)। ३ गृह, घर (गा १६६)। ४ वास, निवास (हे १, २१४)।

वसंत देखो वस = वस्।

वसंत पुं [वसन्त] १ ऋतु-विशेष, चैत्र और वैशाख मास का समय (गाया १, १—पत्र ६४; पाअ; सुर ३, ३६; कुमा; कप्पू; प्रासू ३४; ६२)। २ चैत्र मास (सुज्ज १०, १६)। °**उर** न [°पुर] नगर-विशेष (महा)। °**तिलअ** पुं [°तिलक] १ हरिवंश में उत्पन्न एक राजा (पउम २२, ६८)। २ न. एक उद्यान, जहाँ भगवान् ऋषभदेव ने दीक्षा ली थी (पउम ३, १३४)। °**तिलआ** स्त्री [°तिलका] छन्द-विशेष (पिंग)।

वसंवय वि [वशंवद] निज को अधीन कहनेवाला (धर्मवि ६)।

वसण न [वसन] १ वस्त्र, कपड़ा (पाअ; सुपा २४४; चेइय ४८२; धर्मवि ६)। २ निवास, रहना (कुप्र ४८)।

वसण पुं [वृषण] अण्ड-कोष, पोता (सम १२५; भग; पराह १, ३; विपा १, २; औप; कुप्र ३६५)।

वसण न [व्यसन] १ कष्ट, विपत्ति, दुःख (पाअ; सुर ३, १६२; महा; प्रासू २३)। २ राजादि-कृत उपद्रव (गाया १. २)। ३ खराब आदत—द्यूत, मद्य-पान आदि खोटी आदत (बृह १)।

वसणि वि [व्यसनिन्] खोटी आदतवाला (सुपा ४८८)।

वसभ पुं [वृषभ] १ ज्योतिष-प्रसिद्ध राशि-विशेष, वृष राशि (पउम १७, १०८)। २ भगवान् ऋषभदेव (चेइय ५४१)। ३ एक जैन मुनि, जो चतुर्थ बलदेव के पूर्व जन्म में गुरु थे (पउम २०, १६२)। ४ गीतार्थ मुनि, ज्ञानी साधु (बृह १; ३)। ५ बैल, बलीवर्द (उव)। ६ उत्तम, श्रेष्ठ; 'मुणिवसभा' (उव)। °**करण** न [°करण] वह स्थान जहाँ बैल बाँधे जाते हों (आचा २, १०, १४)। °**क्खेत्त** न [°क्षेत्र] स्थान-विशेष, जहाँ पर वर्षा-काल में आचार्य आदि रहते हों वह स्थान (वव १०; निचू १७)। °**गाम** पुं [°ग्राम] ग्राम-विशेष, कुत्सित देश में नगर-तुल्य गाँव; 'अत्थि हु वसभग्गामा कुदेसनगरोवमा सुहविहारा' (वव १०)। °**णुजाय** पुं [°ानुजात] ज्योतिशास्त्र-प्रसिद्ध दश योगों में प्रथम योग, जिसमें चन्द्र, सूर्य और नक्षत्र बैल के आकार से स्थित होते हैं (सुज्ज १२—पत्र २३३)। देखो उसभ, रिसभ, वसह।

वसभुद्ध पुं [दे] काक, कौआ (दे ७, ४६)।

वसम देखो वसिम (महा)।

वसमाण देखो वस = वस्।

वसल वि [दे] दीर्घ, लम्बा (दे ७, ३३)।

वसह पुं [वृषभ] वैयावृत्य करनेवाला मुनि (ओघ १४०)। २ लक्ष्मण का एक पुत्र (पउम ६,२०)। ३ बैल, साँढ़, साँड़ (पाअ)। ४ कान का छिद्र। ५ औषध-विशेष (प्राप्र)। °**इंध** पु [°चिह्न] शंकर, महादेव (गउड)। °**केउ** पुं [°केतु] इक्ष्वाकु-वंश का एक राजा (पउम ५, ७)। °**वाहण** पुं [°वाहन] १ ईशान देवलोक का इन्द्र (जं २—पत्र १५७)। २ महादेव, शंकर (वज्जा ६०)। °**वीही** स्त्री [°वीथी] शुक्र ग्रह का एक क्षेत्रभाग (ठा ६—पत्र ४६८)।

वसहि देखो वसइ (हे १, २१४; कुमा; गा ५८२; पि ३८७)।

वसा स्त्री [वसा] १ शरीरस्थ धातु-विशेष; 'मेयवसामंस—' (पराह १, १—पत्र १४; गाया १, १२)। २ मेद, चरबी (आचा)।

°**वसारअ** वि [प्रसारक] फैलानेवाला (से ६, ४०)।

°**वसारअ** देखो पसाहय (से ६, ४०)।

°**वसाहा** स्त्री [प्रसाधा] अलंकार, आभूषण (से १, १६)।

वसि देखो वसइ; 'जत्थ न नज्जइ पहि पहि अडविवसिठाणयविसेसो' (सुर १, ५२)।

वसिअ वि [उषित] १ रहा हुआ, जिसने वास किया हो वह (पाअ; स २६५; सुपा ४२१; भत्त ११२; वै ७)। २ बासी, पर्युषित; 'अवणेइ रयणिवसियं निम्मल्लं लोमहत्थेण' (संबोध ६)।

वसिट्ठ पुं [वशिष्ठ] १ भगवान् पार्श्वनाथ का एक गणधर (ठा ८—पत्र ४२६; सम १३)। २ एक ऋषि (नाट—उत्तर ८२)।

वसिट्ठ पुं [वशिष्ठ] द्वीपकुमार देवों का उत्तर दिशा का इन्द्र (इक)।

वसित्त न [वशित्व] योग की एक सिद्धि, योग-जन्य एक ऐश्वर्य; 'साहुवसित्तगुणेणं पसमं कूराविं जंतुणो जंति' (कुप्र २७७)।

वसिम न [दे. वसिम] वसतिवाला स्थान (सुर १,५२; सुपा १६४; कुप्र २२४; महा)।

वसियव्व देखो **वस** = वस् ।

वसिर वि [वसितृ] वास करनेवाला, रहनेवाला (सुपा ६४७; सम्मत्त २१७) ।

वसीकय वि [वशीकृत] वश में किया हुआ, अधीन किया हुआ (सुपा ५६०; महा) ।

वसीकरण न [वशीकरण] वश में करने के लिए किया जाता मन्त्र आदि का प्रयोग (णाया १, १४; प्रासू १४; महा) ।

वसीयरणी स्त्री [वशीकरणी] वशीकरण-विद्या (सुर १३, ८१) ।

वसीहूअ वि [वशीभूत] जो अधीन हुआ हो वह (उप ६८६ टी) ।

वसु न [वसु] १ धन, द्रव्य (आचा; सूअ १, १३, १८; कुमा) । २ संयम, चारित्र (आचा; सूअ १, १३, १८) । ३ पुं. जिनदेव । ४ वीतराग, राग-रहित । ५ संयत, संयमी, साधु (आचा १, ६, २, १) । ६ आठ की संख्या (विवे १४४; पिंग) । ७ धनिष्ठा नक्षत्र का अधिपति देव (ठा २, ३; सुज्ज १०, १२) । ८ एक राजा का नाम (पउम ११, २१; भत्त १०१) । ९ एक चतुर्दश-पूर्वी जैन महर्षि (विसे २३३४) । १० एक छन्द का नाम (पिंग) । ११ स्त्री. ईशानेन्द्र की एक पटरानी (इक) । १२ न. लोकान्तिक देवों का एक विमान (इक) । १३ सुवर्ण, सोना (कप्प ६८; भग १५; उत्त १२, ३६) । **°गुत्ता** स्त्री [°गुप्ता] ईशानेन्द्र की एक पटरानी (ठा ८—पत्र ४२६; इक; णाया २—पत्र २५३) । **°देव** पुं [°देव] नववें वासुदेव श्रीकृष्ण और बलदेव का पिता (ठा ६; सम १५२; अंत; उव) । **°नंदय** पुं [°नन्दक] एक तरह की उत्तम तलवार (सुर २, २२; भवि) । **°पुज्ज** पुं [°पूज्य] एक राजा, भगवान् वासुपूज्य का पिता (सम १५१) । **°बल** पुं [°बल] इक्ष्वाकु-वंश में उत्पन्न एक राजा (पउम ५, ४) । **°भाग** पुं [°भाग] एक व्यक्ति-वाचक नाम (महा) । **°भागा** स्त्री [°भागा] ईशानेन्द्र की एक पटरानी (इक) । **°भूइ** पुं [°भूति] एक जैन मुनि का नाम (पउम २०, १७६; आवम) । **°म, °मंत** वि [°मत्] १ द्रव्यवान्, धनी, श्रीमंत (सूअ १, १३, ८; १, १५, ११; आचा) । २ संयमी, साधु (सूअ १, १३, ८; आचा) । **°मित्ता** स्त्री [°मित्रा] १ ईशानेन्द्र की एक अग्र-महिषी (ठा ८—पत्र ४२६; णाया २; इक) । **°सद्द** पुं [°शब्द] छन्द-विशेष (पिंग) । **°हारा** स्त्री [°धारा] १ आकाश से देव-कृत सुवर्ण-वृष्टि (भग १५; कप्प ६८; उत्त १२, ३६; विपा १, १०) । २ एक श्रेष्ठिनी (उप ७२८ टी) ।

वसुआ } अक [उद् + वा] शुष्क होना,
वसुआअ } सूखना । वसुआइ, वसुआअइ (हे ४, ११; ३, १४५; प्राकृ ७४) । वकृ. **वसुअंत** (कुमा) । प्रयो., कवकृ. **वसुआइज्जमाण** (गउड) ।

वसुआअ वि [उद्वात] शुष्क (पाअ; से १, २०; गउड; प्राकृ ७७) ।

वसुआइअ वि [उद्वापित] शुष्क किया गया, सुखाया गया (से ६; २५) ।

वसुआइज्जमाण देखो **वसुआ** ।

वसुंधर पुं [वसुन्धर] एक जैन मुनि (पउम २०, १६१) ।

वसुंधरा स्त्री [वसुन्धरा] १ पृथिवी, धरती (पाअ; धर्मवि ४१; प्रासू १४२) । २ ईशानेन्द्र की एक अग्र-महिषी (ठा ८—पत्र ४२६; णाया २; इक) । ३ चमरेन्द्र के सोम आदि चारों लोकपालों की एक पटरानी का नाम (ठा ४, १—पत्र २०४; इक) । ४ एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८—पत्र ४३६; इक) । ५ नववें चक्रवर्त्ती राजा की पटरानी (सम १५२) । ६ रावण की एक पत्नी (पउम ७४, १०) । ७ एक श्रेष्ठि-पत्नी (उप ७२८ टी) । **°वइ** पुं [°पति] राजा, भूपति (सुपा २८८) ।

वसुधा (शौ) देखो **वसुहा** (स्वप्न ६८) ।

वसुपुज्ज देखो **वासुपुज्ज**; 'वसुपुज्जमल्ली नेमी पासो वीरो कुमारपव्वइया' (विचार ११५; पंचा १६, १३; १७), 'वसुपुज्जजिणो जगुत्तमो जाओ' (पव ३५) ।

वसुमइ } स्त्री [वसुमती] १ पृथिवी, धरती
वसुमई } (उप ७६८ टी; पाअ; सुपा २६०; ४७१) । २ भीम नामक राक्षसेन्द्र की एक अग्र-महिषी, एक इन्द्राणी (ठा ४, १—पत्र २०४; णाया २—पत्र २५२; इक) । **°णाह, °नाह** पुं [°नाथ] राजा (उप ७६८ टी; पउम ७४, २६) । **°भवण** न [°भवन] भूमि-गृह, भोंयरा (सुख ४, ६) । **°वइ** पुं [°पति] राजा (पउम ६६, २) ।

वसुल पुंस्त्री [दे. वृषल] १ निष्ठुरता-बोधक आमन्त्रण-शब्द; 'होलि त्ति वा गोलि त्ति वा वसुलि त्ति वा' (आचा २, ४, २, ३), 'तहेव होले गोलि त्ति साणे वा वसुलि त्ति य' (दस ७, १४) । २ गौरव और कुत्सा-बोधक आमन्त्रण-शब्द, 'होल वसुल गोल णाह दइय पिय रमण' (णाया १, ६—पत्र १६५) । स्त्री. **°ली** (दस ७, १६; आचा २, ४, २, ३) ।

वसुहा स्त्री [वसुधा] पृथिवी, धरती (पाअ; कुमा) । **°हिव** पुं [°धिप] राजा (सुपा ८७) ।

वसू स्त्री [वसू] ईशानेन्द्र की एक पटरानी (ठा ८—पत्र ४२६; इक; णाया २—पत्र २५३) ।

वसेरी स्त्री [दे] गवेषणा, खोज (सुपा ४७३) ।

वस्स (शौ) देखो **वरिस** । वस्सदि (नाट—मृच्छ १५५) ।

वस्स वि [वश्य] अधीन, आयत्त (विसे ८७५) ।

वस्सोक न [दे] एक प्रकार की क्रीडा, 'अन्नया य वस्सोक्केण रमंति राय (?या) णं राणियाउ पोत्तेण वाहिंति' (श्रावक ९३ टी) ।

वह सक [वह्] १ पहुँचाना । २ धारण करना । ३ ले जाना, ढोना । ४ अक. चलना; 'परिमलबहलो वहइ पवणो' (कुमा; उव; महा), 'गंगा वहइ पाडलं' (सुख २, ४५), वहसि (हे २, १६४) । कर्म. वहिज्जइ, वब्भइ, वुब्भइ (कुमा; धात्वा १५३; पि ५४१; हे ४, २४५) वकृ. **वहंत, वहमाण** (महा; सुर ३, ११; औप) । कवकृ. **वुज्झमाण** (उत्त २३, ६५; ६८) । हेकृ. **वहिउं, वहित्तए, वोढुं** (धात्वा १५२; कस; ठा ५) । कृ. **वहिअव्व, वोढव्व** (धात्वा १५२; प्रवि ३) ।

वह सक [वध्, हन्] मार डालना। वहेइ, वहंति (उत्त १८, ३; ५; स ७२८; संबोध ४१)। कर्म. वहिज्जंति (कुप्र २५)। वकृ. वहंत, वहमाण (पउम २६, ७७; सुपा ६५१; श्रावक १३६)। कवकृ. वहिज्जंत, वज्झमाण (पउम ४६, २०; आचा)। संकृ. वहिऊण (महा)।

वह सक [व्यथ्] १ पीड़ा करना। २ प्रहार करना। कृ. वहेयव्व (पण्ह २, १—पत्र १००)।

वह (अप) देखो **वरिस** = वृष्। वहदि (प्राकृ १२१)।

वह पुंस्त्री [वध] घात, हत्या (उवा; कुमा; हे ३ १३३; प्रासू १३६; १५३)। स्त्री. °**हा** (सुख १, ३; स २७)। °**कारी** स्त्री [°करी] विद्या-विशेष (पउम ७, १३७)।

वह पुं [दे] १ कन्धे पर का व्रण। २ व्रण, घाव (दे ७, ३१)।

वह पुं [वह] १ वृष-स्कन्ध, बैल का कन्धा (विपा १, २—पत्र २७)। २ परीवाह, पानी का प्रवाह (दे १, ५५)।

वह पुं [व्यथ] लकुट आदि का प्रहार (सूत्र १, ५, २, १४; उत्त १, १६)।

°**वह** देखो **पह** = पथिन् (से १, ६१; ३, १४; कुमा)।

वहइअ वि [दे] पर्याप्त (षड् १७७)।

वहग वि [वधक] घातक, हिंसक, मार डालनेवाला (उवा; स २१३; सुपा ५६४; उप पृ ७०; श्रावक २१२; श्रा २३)।

वहग वि [व्यथक] ताड़ना करनेवाला (जं २)।

वहड पुं [दे] दमनीय बछड़ा (दे ७, ३७)।

वहढोल पुं [दे] वात्या, वात-समूह (दे ७, ४२)।

वहण न [वधन] वध, घात, हत्या; 'अजओ छज्जीवकायवहणम्मि' (सुपा ५२२; धर्मवि १७; मोह १०१; महा; श्रावक १४४; २३७; उप पृ ३५७; सुपा १८४; पउम ४३, ४६)।

वहण न [वहन] १ ढोना (धर्मवि ७२)। २ पोत, जहाज, यानपात्र (पाअ; उप ५६६; कुम्मा १५)। ३ शकट आदि वाहन (उत्त २७, २; सुपा १८२)। ४ वि. वहन करनेवाला (से ३, ६; ती ३)।

वहण (शौ) देखो **पगय** = प्रकृत (प्राकृ ६७)।

वहण (अप) देखो **वसण** = वसन (भवि)।

वहणया स्त्री [वहना] निर्वाह (णाया १, २—पत्र ६०)।

वहणा स्त्री [वधना] वध, घात, हिंसा (पण्ह १, १—पत्र ५)।

वहण्णु पुं [व्यधज्ञ] एक नरक-स्थान, 'उव्वेयणए विज्जलविमुहे तह विच्छवी वि (?व) हण्णू य' (देवेन्द्र २८)।

वहय देखो **वहग** = वधक (सूअ २, ४, ४; पउम २६, ४७; श्रावक २०८; सण)।

वहलीअ देखो **बहलीय** (इक)।

वहा देखो **वह** = वध।

वहाव सक [वाहय्] वहन कराना। कर्म. वहाविज्जइ (श्रावक २५८ टी)।

वहाविअ वि [वधित] मरवाया हुआ (खा २४)।

°**वहाविअ** देखो **पहाविअ** (से ६, १)।

वहिअ वि [व्यथित] पीड़ित (पंचा ५, ४४)।

वहिअ वि [ऊढ] वहन किया हुआ (धात्वा १५२)।

वहिअ वि [वधित] जिसका वध किया गया हो वह (श्रावक १७०; पउम ५, १६५; विपा १, ५; उव; खा २३; २४)।

वहिअ वि [दे] अवलोकित, निरीक्षित; 'तेलोक्कवहियमहियपूइए' (उवा)।

वहिइअ देखो **वहइअ** (षड्)।

वहिचर अक [व्यभि + चर्] १ पर-पुरुष या पर-स्त्री से संभोग करना। २ सक. नियम-भंग करना। वकृ. वहिचरंत (स ७११)।

वहिचार पुं [व्यभिचार] १ पर-स्त्री या पर-पुरुष से संभोग (स ७११)। २ न्यायशास्त्र-प्रसिद्ध एक हेतु-दोष (धर्मसं ६३)।

वहिज्जंत देखो **वह** = वध्।

वहिया स्त्री [दे] बही, हिसाब लिखने की किताब (सम्मत्त १४२; सुपा ३८५; ३८६; ३८७; ३६१)।

वहियाली देखो **वाहियाली**; 'गुरुउज्जाणतडट्ठियवहियालिं नेइ तं निवई' (धर्मवि ४)।

वहिलग पुं [दे. वहिलक] ऊँट, बैल आदि पशु (राज)।

वहिल्ल वि [दे] शीघ्र, शीघ्रता-युक्त; गुजराती में 'वहेलो' (हे ४, ४२२; कुमा; वज्जा १२८)।

वहु पुंस्त्री [दे] चिविडा, गन्ध-द्रव्य-विशेष (दे ७, ३१)।

वहु° देखो **वहू** (हे १, ४; षड्; प्राप्र)।

वहुघारिणी स्त्री [दे] नवोढा, दुलहिन (दे ७, ५०)।

वहुण्णी स्त्री [दे] ज्येष्ठ-भार्या, पति के बड़े भाई की बहू (दे ७, ४१)।

वहुमास पुं [दे] रमण-विशेष, क्रीड़ा-विशेष, जिसमें खेलता हुआ पति नवोढा के घर से बाहर नहीं निकलता है (दे ७, ४६)।

वहुरा स्त्री [दे] शिवा, सियारिन (दे ७, ४०)।

वहुलिआ (अप) स्त्री [वधूटिका] अल्प वय वाली स्त्री, बहुरिया (पिंग)।

वहुव्वा स्त्री [दे] छोटी सास (दे ७, ४०)।

वहुहाडिणी स्त्री [दे] एक स्त्री के रहते हुए व्याही जाती दूसरी स्त्री (दे ७, ५०; षड्)।

वहू स्त्री [वधू] बहू, भार्या, नारी (स्वप्न ४२; पाअ; हे १, ४)।

वहोल पुं [दे] छोटा जल-प्रवाह, गुजराती में 'वहेलो' (दे ७, ३६)।

वहोलिया स्त्री [दे] देखो **वहोल** (चउप्पन्न० पत्र २१४)।

वा सक [वा] गति करना, चलना। वइ (से ६, ५२; गा ५४३; कुमा)।

वा अक [वै, म्लै] सूखना। वाइ (से ६, ५२; हे ४, १८)।

वा सक [व्ये] बुनना। कृ. वाइम; 'गंथिम-पूरिमवेढिमवाइमसंघाइमं छेज्जं' (दसनि २)।

वा अ [वा] इन अर्थों का सूचक अव्यय— १ विकल्प, अथवा, या (आचा; कुमा)। २ समुच्चय, और, तथा (उत्त ८, १२; सुख ८, १२)। ३ अपि भी (कुमा; कप्प; सुख ५, २२)। ४ अवधारण, निश्चय (ठा ८)। ५ सादृश्य, समानता (विसे १८६४)। ६

उपमा; 'कप्पद्दुमं तणेणेव काणकवड्डेण कामधेणुं' वा' (हि १७; सुम १, ४, २, १५; सुख २, ६; वव १)। ७ पाद-पूर्त्ति (उत्त २८, २८)।

वाअड पुं [दे] शुक, तोता (षड्)।

वाअड देखो **वावड** = व्यापृत; 'रइवाअडा तुअंतं पिअंपि पुत्तं सवइ माआ' (गा ४००)।

वाइ वि [वादिन्] १ बोलनेवाला, वक्ता (आचा; भग; उवा; ठा ४, ४)। २ वाद-कर्त्ता, शास्त्रार्थ में पूर्वपक्ष का प्रतिपादन करनेवाला (सम १०२; विसे १७२१; कुप्र ४४०; चेइय १२८, सम्मत्त १४१; श्रा ६)। ३ दार्शनिक, तीर्थिक, इतर धर्म का अनुयायी (ठा ४, ४)।

वाइ वि [वाचिन्] वाचक, अभिधायक, कहने-वाला (विसे ८७४)।

वाइ देखो **वाजि** (राज)।

वाइअ वि [वाचिक] वचन-संबन्धी (औप; धा २४ पडि)।

वाइअ वि [वाचित] १ पाठित, पढ़ाया हुआ (उत्त २७, १४; विसे २३५८)। २ पढ़ा हुआ; 'नामम्मि वाइए तत्थ' (सुपा २७०), 'अलाहि किं वाइएण लेहेण' (हि २, १८६)।

वाइअ वि [वातिक] १ वात से उत्पन्न, वायु-जन्य (रोग आदि) (भग; णाया १, १—पत्र ५०; तंदु १६)। २ वायु से फूला हुआ, वात-रोगवाला (विसे २५७६ टी; पव ६१)। ३ उत्कर्षवाला; 'सपरक्कमराउलवा-इएण सीसे पलीविए नियए' (उव), 'चिंतइ सूरी एसो नियमसो वाइउव्व दुट्ठमणो' (धर्मवि ७६)। ४ पुं. नपुंसक का एक भेद (पुप्फ १२७; धर्म ३)।

वाइअ वि [वादित] १ बजाया हुआ (गा ५५७; कुमा २, ८; ६६; ७०)। २ वन्दित, अभिवादित; 'चलणेसु निवडिऊणं वाइआ बंभणा' (स २६०)।

वाइअ न [वाद्य] १ बाजा, वादित्र (कप्प)। २ बाजा बजाने की कला (सम ८३; औप)।

वाइअ वि [वात] बहा हुआ, चला हुआ; 'मुचकुंदकुडयसंदियरयगब्भिणवाइयसमीरो' (सुर २, ७६)।

वाइंगण न [दे] बैंगन, वृन्ताक, भंटा (उप ५६७ टी; दे ७; २६)।

वाइंगणी } स्त्री [दे] बैंगन का गाछ,
वाइंगिणी } वृन्ताकी (राज; पणग १७—पत्र ५२७)।

वाइगा [दे] देखो **बाइया** (उप १०३१ टी)।

वाइज्जंत देखो **वाए** = वाचय्।

वाइज्जंत देखो **वाए** = वादय्।

वाइत्त न [वादित्र] वाद्य, बाजा (कुप्र ११०; भवि)।

वाइद्ध वि [व्याविद्ध] विपर्यय से उपन्यस्त, उलट-पुलट रखा हुआ (विसे ८५३)।

वाइद्ध वि [व्यादिग्ध] १ उपदिग्ध, उपलिप्त। २ वक्र, टेढ़ा (भग १६, ४—पत्र ७०४)।

वाइम देखो **वा** = व्ये।

वाइयव्व देखो **वाय** = वादय्।

वाईकरण देखो **वाजीकरण** (राज)।

वाउ पुं [वायु] १ पवन, वात (कुमा)। २ वायु-शरीरवाला जीव (अणु; जी २; दं १३)। ३ मुहूर्त्त-विशेष (सम ५१)। ४ सौधर्मेन्द्र के अश्व-सैन्य का अधिपति देव (ठा ५, १—पत्र ३०२)। ५ नक्षत्र-देव-विशेष, स्वाति-नक्षत्र का अधिपति देवता (ठा २, ३—पत्र ७७; सुज्ज १०, १२ टी)। °आय पुं [°काय] १ प्रचण्ड पवन (ठा ३, ३—पत्र १४१)। २ वायु शरीरवाला जीव (भग)। °काइय पुं [°कायिक] वायु शरीरवाला जीव (ठा ३, १—पत्र १२३, पि ३५५)। °काय देखो °आय (जी ७; पि ३५५)। °कुमार पुं [°कुमार] १ एक देव-जाति, भवनपति देवों की एक अवान्तर जाति (भग)। २ हनूमान का पिता (पउम १६, २)। °क्कलिया स्त्री [°उत्कलिका] वायु-विशेष, नीचे बहनेवाला वायु (पण्ण १—पत्र २६)। °क्काइय देखो °काइय (भग)। °क्काय देखो °आय (राज)। °त्तरवडिंसग पुंन [°उत्त-रावतंसक] एक देव-विमान (सम १०)। °पवेस पुं [°प्रवेश] गवाक्ष, झरोखा, वातायन (ओघभा ५८)। °प्पइट्ठाण वि [°प्रतिष्ठान] वायु के आधार से रहनेवाला (भग)। °भूइ पुं [°भूति] भगवान् महावीर का एक गणधर—मुख्य शिष्य (कप्प)।

वाउ पुं [दे] इक्षु, ऊख (दे ७, ५३)।

°**वाउड** वि [प्रावृत] १ आच्छादित, ढका हुआ (भग २, १; पव ६१)। न. कपड़ा, वस्त्र (ठा ५, ६—पत्र २६६)।

वाउत्त पुं [दे] १ विट। २ जार, उपपति (दे ७, ८८)।

वाउप्पइया स्त्री [दे. वातोत्पतिका] भुज-परिसर्प की एक जाति, हाथ से चलनेवाले जन्तु की एक जाति; 'णउलसरडजाहगमुगुंस-खाडहिलवाउप्पि (?प्पइ) यघीरोलियसिरीसि-वगणे य' (पण्ह १, १—पत्र ८)।

वाउब्भाम पुं [वातोद्भ्राम] अनवस्थित पवन, 'वाउब्भा (?ब्भा) मे वाउक्कलिया' (पण्ण १—पत्र २६)।

वाउय वि [व्यापृत] किसी कार्य में लगा हुआ (णाया १, ८—पत्र १४६; औप)।

वाउरा स्त्री [वागुरा] मृग-बन्धन, पशु फँसाने का जाल, फन्दा (पउम ३३, ६७; हेका ३१; गा ६५७)। देखो **वग्गुरा**।

वाउरिय वि [वागुरिक] जाल में फँसाने का काम करनेवाला, व्याध (पण्ह १, १; विपा १, ५—पत्र ६४)।

वाउल वि [व्याकुल] १ घबड़ाया हुआ (उव; उप पृ २२०; करु ३४; हे २, ६६)। २ पुं. क्षोभ (पण्ह १, ३—पत्र ४४)। °हूअ वि [°भूत] व्याकुल बना हुआ (उप २२० टी)।

वाउल वि [वातूल] १ वात-रोगी, उन्मत्त। २ पुं. वातसमूह (हे १, १२१, प्राकृ ३०)।

वाउलग्ग न [दे] सेवा, भक्ति; 'निच्चं चिय वाउलग्गं कुणंति' (राज)।

वाउलण न [व्यापरण] व्यावृत-क्रिया, व्यापार (वव १)।

वाउलणा स्त्री [व्याकुलना] व्याकुल करना (वव ४)।

वाउलिअ वि [व्याकुलित] १ व्याकुल बना हुआ (सण)। २ विलोलित, क्षोभ-प्राप्त (पण्ह १, ३—पत्र ४५)।

वाउलिआ स्त्री [दे] छोटी खाई (गा ६२६)।

वाउल्ल देखो **वाउल** = व्याकुल (हे २, ६६; षड्)।

वाउल्ल वि [दे. वातूल] वाचाट, प्रलाप-शील, बकवादी (दे ७, ५६; पात्र; षड्)।

वाउल्लअ पुंन [दे] पूतला, गुजराती में 'बावलु'; 'आलिहिअभित्तिवाउल्लग्रो व्व ण परम्मुहं ठाइ' (गा २१७), 'आलिहियभित्तिवाउल्लयं व न परम्मुहं ठाइ' (वज्जा १४)।

वाउल्लआ, **वाउल्ली** स्त्री [दे] देखो बाउल्लया, बाउल्ली; 'आलिहिअभित्तिवाउल्लिग्र व्व ण संमुहं ठाइ' (गा २१७ अ; दे ६, ६२)।

वाऊल देखो वाउल = वातूल; 'अभिवायण-वाऊलो हसिज्जए नयरलोएण' (धर्मवि १११; प्राकृ ३०)।

वाऊल देखो वाउल = व्याकुल (प्राकृ ३०)।

वाऊलिअ वि [वातूलित] १ वातूल बना हुआ। २ नास्तिक (रुक्मि १, ६६)।

वाए सक [वादय्] बजाना। वाएइ (महा)। वकृ. वाएंत (महा)। कवकृ. वाइज्जंत (कुप्र १६)। हेकृ. वाइउं (महा)।

वाए सक [वाचय्] १ पढ़ाना। २ पढ़ना। वाएइ, वाएंति (भग; कप्प)। कवकृ. वाइज्जंत (सुपा ३३८; कुप्र १६)।

वाएरिअ वि [वातेरित] पवन-प्रेरित, हवा से हिलाया या कँपाया हुआ (गा १७६)।

वाएसरी स्त्री [वागीश्वरी] सरस्वती देवी; 'वाएसरी पुत्थयवग्गहत्था' (पडि; सम्मत्त २१५)।

वाओलि, **वाओली** स्त्री [वातालि, °ली] पवन-समूह; 'किं अयलो चालिज्जइ पयंडवाउ (? श्रो) लिसएहिंवि' (धर्मवि २७; गउड; णाया १, १—पत्र ६३)।

वाक, **वाग** देखो वक = वल्क (औप; विसे १७; विपा १, ६—पत्र ६६)।

वागड पुं [वागड] गुजरात का एक प्रान्त, जो आधकल भी 'वागड' नाम से ही प्रसिद्ध है (कुप्र ६)।

वागडिअ त्रि [व्याकृत] प्रकट किया हुआ (वव १)।

वागर सक [व्या + कृ] प्रतिपादन करना, कहना। वागरेइ, वागरेज्जा (कप्प; पि ५०६)। वकृ. वागरमाण, वागरेमाण (सुर ७, ४१; सुपा ५११; औप)। संकृ. वागरित्ता (सम ७२)। हेकृ. वागरिउं, वागरित्तए (कुप्र २३८; उवा)।

वागरण न [व्याकरण] १ कथन, प्रतिपादन, उपदेश (विसे ५५०; कुप्र २; पण्ह १, १ टी)। २ निर्वचन, उत्तर (औप; उवा; कप्प)। ३ शब्दशास्त्र (धर्मवि ३८; मोह २)।

वागरणि वि [व्याकरणिन्] प्रतिपादन करनेवाला (सम्म २)।

वागरणी स्त्री [व्याकरणी] भाषा का एक भेद, प्रश्न के उत्तर की भाषा, उत्तर रूप वचन (ठा ४, १—पत्र १८३)।

वागरिय वि [व्याकृत] उक्त, कथित (उवा; अंत ६; उप १४२ टी; पव ७३ टी)। देखो वायड = व्याकृत।

वागल न [वल्कल] वृक्ष की छाल (णाया १, १६—पत्र २१३)।

वागल वि [वाल्कल] वृक्ष की त्वचा—छाल से बना हुआ; 'वागलवत्थनियत्थे' (भग ११, ६—पत्र ५१६)।

वागली स्त्री [दे] वल्ली-विशेष (पण्ण १—पत्र ३३)।

वागिल्ल वि [वाग्मिन्] बहु-भाषी, वाचाल (वव ७)।

वागुर पुं [वागुरा] मृग-बन्धन, जाल, फन्दा; 'रे रे रएह वागुरे' (मोह ७६)।

वागुरि, **वागुरिय** वि [वागुरिन्, °रिक] देखो वाउरिय; गुजराती में 'वाघरी'; 'सकयपसयरोहिए य साहिंति वागुरा (?री) णं' (पण्ह १, २—पत्र २६; सूअ २, २, ३६; विपा १, ८—पत्र ८३)।

वाघाइअ वि [व्याघातिक] व्याघात से उत्पन्न (जं ७—पत्र ५३१)।

वाघाइम वि [व्याघातिम] व्याघात से होने-वाला (सुज्ज १८—पत्र २६५)। २ न. मरण-विशेष—सिंह, दावानल आदि से होने वाली मौत (औप)।

वाघाय पुं [व्याघात] १ स्खलना (सुज्ज १८)। २ विनाश (उत्र ६७६)। ३ प्रतिबन्ध, रुकावट (भग; ओघभा १८)। ४ सिंह, दावानल आदि से अभिभव (औप)।

वाघारिय वि [व्याघारित] प्रलम्ब, लम्बा (पंचा १८, १८; पव ६७)।

वाघुण्णिय वि [व्याघूर्णित] दोलायमान, डोलता (णाया १, १—पत्र ३१)।

वाघेल पुं [दे] एक क्षत्रिय-वंश (ती २६)।

वाच देखो वाय = वाचय्। कवकृ. वाचीअमाण (नाट—मालवि ६१)। संकृ. वाचिऊण (हम्मीर १७)।

वाचय देखो वायग = वाचक (द्रव्य ४६)।

वाचिय देखो वाइअ = वाचित (स ६२१)।

वाज देखो वाय = व्याज (कुप्र २०१)।

वाजि पुं [वाजिन्] अश्व, घोड़ा (विपा १, ७)।

वाजीकरण न [वाजीकरण] १ वीर्य-वर्धक औषध-विशेष। २ उसका प्रतिपादक शास्त्र; आयुर्वेद का एक अंग (विपा १, ७—पत्र ७५)।

वाड पुं [वाट] १ बाड, कंटक आदि से की जाती गृहादि की परिधि (उत्त २२, १४; माल १६५)। २ बाड़ा, बाडवाली जगह; वृतिवाला स्थान; 'निव्वाणमहावाडं साहत्थिं संपावेइ' (उवा; गा २२७; दे ७, ५३ टि; गउड); 'अंते सो साहूणं गोवाडनिरोहणं करेऊण' (विचार ५०६)। ३ वृति आदि से परिवेष्टित गृह-समूह, रथ्या, मुहल्ला (उत्त ३०, १८); 'अहो गणिआवाडस्स सस्सिरीअआ' (चारु ७६)।

वाडंतरा स्त्री [दे] कुटीर, झोंपड़ा या झोंपड़ी (दे ७, ५८)।

वाडग देखो वाड (पिंड ३३४; विपा १, ४—पत्र ५५; उप पृ २८६)।

°वाडण देखो पाडण; 'परदोहवट्टवाडणबंदग्गहखत्तखणणपमुहाइं' (कुप्र ११३)।

वाडव पुं [वाडव] वड़वानल, समुद्र-स्थित अग्नि (सण)।

वाडहाणग पुंन [वाटधानक] १ एक छोटा गाँव। २ त्रि. उस गाँव का निवासी; 'ताहे तेण वाडहाणगा हरिएसा धिज्जाइया कया' (सुख ६, १; महा)।

वाडि° देखो वाडी = वाटी (गा ८; णाया १, ७—पत्र ११६)।

वाडिआ स्त्री [वाटिका] बगीचा, उद्यान, 'सणवाडिआ' (गा ६; चारु ५६; दे ७, ३५; रंभा)।

वाडिम पुं [दे] पशु-विशेष, गण्डक, गेंड़ा (दे ७, ५७)।

वाडिल्ल पुं [दे] कृमि, कीट (दे ७, ५६)।

वाडी स्त्री [दे] वृति, बाड़; 'घरवारे कारिया कंटएहिं वाडी' (कुप्र २६; दे ७, ४३; ५८; षड्)।

वाडी स्त्री [वाटी] बगीचा, उद्यान (धर्मसं ४१)।

वाढि } पुं [दे] वणिक्-सहाय, वैश्य-मित्र
वाढिअ } (दे ७, ५३)।

वाण सक [वि + नम्] विशेष नमना—नत होना। वाणइ (?) (धात्वा १५२)।

वाण वि [वान] वन में उत्पन्न, वन-संबन्धी (औप; सम १०३)। °पत्थ, °प्पत्थ पुं [°प्रस्थ] वन में रहनेवाला तापस, तृतीय आश्रम में स्थित पुरुष (औप; उव ३७७)। °मंत, °मंतर, °वंतर पुंस्त्री [°व्यन्तर] देवों की एक जाति (भग; ठा २, २; सुर १, १३७; औप; जी २४; महा; पि २५१)। स्त्री. °री (पण्ण १७—पत्र ४९९; जीव २)। °वासिआ स्त्री [°वासिका] छन्द-विशेष (अजि ३३)।

°वाण देखो पाण = पान। °वत्त न [°पात्र] पीने का प्याला (से १, १८)।

वाणय पुं [दे] वलयकार, कंकण बनानेवाला शिल्पी (दे ७, ५४)।

वाणर पुंन [वानर] १ बन्दर, कपि, मर्कट (पण्ह १, १; पाअ)। २ विद्याधर मनुष्यों का एक वंश। ३ वानर-वंश में उत्पन्न मनुष्य (पउम ६, १)। °उरी स्त्री [°पुरी] किष्किन्धा नामक एक भारतीय प्राचीन नगरी (से १४, ५०)। °केउ पुं [°केतु] वानर-वंश का कोई भी राजा (पउम ८, २३५)। °दीव पुं [°द्वीप] एक द्वीप (पउम ६, ३४)। °द्धय पुं [°ध्वज] हनूमान (पउम ५३, ४३)। °वइ पुं [°पति] सुग्रीव, रामचन्द्र का एक सेनापति (से २, ४१; ३, ५२)। देखो वानर।

वाणरिंद पुं [वानरेन्द्र] वानर-वंशीय पुरुषों का राजा, वाली (पउम ६, ४०)।

वाणवाल पुं [दे] इन्द्र, पुरन्दर (दे ७, ६०)।

वाणहा देखो पाणहा, वाहणा = उपानह् (पि १४१)।

वाणा देखो वायणा = वाचना। °यरिअ पुं [°चार्य] अध्यापन करनेवाला साधु, शिक्षक, 'एसो च्चिय ता कीरउ वाणायरिओ, तओ गुरू भणइ' (उप ७४२ टी)।

वाणारसी स्त्री [वाराणसी] भारतवर्ष की एक प्राचीन नगरी, जो आज कल 'बनारस' नाम से प्रसिद्ध है (हे २, ११६; णाया १, ४; उवा; इक; उव; धर्मवि ५; पि ३८५)।

वाणि देखो वणि = वणिज् (भवि)। °उत्त, °पुत्त पुं [°पुत्र] वैश्य-कुमार, बनिया का लड़का (कुप्र ३६; ८८; २२१; ४०४; सिरि ३८४; धर्मवि १०४)।

वाणि स्त्री [वाणि] देखो वाणी (संति ४)।

वाणिअ पुं [वाणिज] १ बनिया, व्यापारी, वैश्य (श्रा १२; सुर १, २४८; १३, २६; नाट—मृच्छ ५५; वसु; सिरि ४०)। २ एक गाँव का नाम (उवा; अंत; विपा १, २)।

वाणिअ (अप) देखो वाणिज्ज (सण)।

°वाणिअ देखो पाणिअ = पानीय (गा ६८२; सिरि ४०; सुपा २२६)।

वाणिअय पुं [वाणिजक] बनिया, वैश्य, व्यापारी (पाअ; काप्र ८६३; गा ९५१; उव; सुपा २२६; २७५; प्रासू १८१)।

वाणिज्ज न [वाणिज्य] १ व्यापार, बैपार (सुपा ३४३; पडि)। २ एक जैन मुनि-कुल का नाम (कप्प)।

वाणिज्जा स्त्री [वणिज्या] व्यापार; 'अहिच्छत्तं नगरं वाणिज्जाए गमित्तए' (णाया १, १५)।

वाणिज्जिय वि [वाणिजिक] वाणिज्य-कर्ता, व्यापारी (भवि)।

वाणी स्त्री [वाणी] १ वचन, वाक्य (पाअ)। २ वाग्देवता, सरस्वती देवी (कुमा; संति ४)। ३ छन्द-विशेष (पिंग)।

°वाणीअ देखो पाणीअ (काप्र ९२५)।

वाणीर पुं [दे] जम्बू वृक्ष, जामुन का पेड़ (दे ७, ५६)।

वाणीर पुं [वानीर] वेतस-वृक्ष, बेंत का पेड़ (पाअ; गा ५९९)।

वाणुंजुअ पुं [दे] वणिक्, वैश्य; 'एसो हला नवल्लो दीसइ वाणुंजुओ कोवि' (उप ७२८ टी)।

वात देखो वाय = वात (ठा २, ४—पत्र ८६)।

वातिक } देखो वाइअ = वातिक (पण्ह १,
वातिय } ३—पत्र ५४; ओघ ७२२)।

वाद देखो वाय = वाद (राज)।

वादि देखो वाइ = वादिन् (उवा)।

वानर देखो वाणर (विपा १, २—पत्र ३६; विसे ८६३; सुपा ६१८), 'पुव्वभववानराणि व ताइं विलसंति सिच्छाए' (धर्मवि १३१)।

वापंफ देखो वावंफ। वापंफइ (षड्)।

वापिद (शौ) देखो वावड = व्यापृत (नाट—वेणी ६७)।

वाबाहा स्त्री [व्याबाधा] विशेष पीड़ा (णाया १, ४; चेइय ३५५)।

वाम सक [वमय्] वमन कराना, कै कराना। वामेइ, वामेज्ज (भग; पिंड ६४६)। संकृ. वामेत्ता (भग; उवा)।

वाम वि [दे] १ मृत (दे ७, ४७)। २ आक्रान्त (षड्)।

वाम वि [वाम] १ सव्य, बाँया (ठा ४, २—पत्र २१६; कुमा; सुर ४, ५; गउड)। २ प्रतिकूल, अननुकूल (पाअ; पण्ह १, २—पत्र २८; गउड ८८८; ९६४; कुमा)। ३ सुन्दर, मनोहर; 'वामलोअणा' (पाअ)। ४ न. सव्य पक्ष; 'वामत्थो' (पउम ५५, ३१)। ५ बाँया शरीर (गा ३०३)। °लोअणा स्त्री [°लोचना] सुंदर नेत्रवाली स्त्री, रमणी (पाअ)। °लोकवादि, °लोगवादि पुं [°लोकवादिन्] दार्शनिक-विशेष, जगत् को असद् माननेवाले मत का प्रतिपादक दार्शनिक (पण्ह १, २—पत्र २८)। °वट्ट वि [°वर्त] प्रतिकूल आचरण करनेवाला (बृह १)। °वित्त वि [°वर्त] वही अर्थ (ठा ४, २—पत्र २१६)।

वाम पुं [व्याम] परिमाण-विशेष, नीचे फैलाए हुए दोनों हाथों के बीच का अन्तराल (पव २१२; औप)।

वामण पुंन [वामन] १ संस्थान-विशेष, शरीर का एक तरह का आकार, जिसमें

हाथ, पैर आदि अवयव छोटे हों और छाती, पेट आदि पूर्ण या उन्नत हों वह शरीर (ठा ६—पत्र ३५७; सम १४६; कम्म १, ४०)। २ वि. उक्त आकार के शरीरवाला, ह्रस्व, खर्व (पव ११०; से २, ६; पाअ)। स्त्री. °णी (औप; णाया १, १—पत्र ३७)। ३ पुं. श्रीकृष्ण का एक अवतार (से २, ६)। ४ देव-विशेष, एक यक्ष-देवता (सिरि ६६७)। ५ न. कर्म-विशेष, जिसके उदय से वामन शरीर की प्राप्ति हो वह कर्म (कम्म १, ४०)। °थली स्त्री [°स्थली] देश-विशेष (ती १५)।

वामणिअ वि [दे] नष्ट वस्तु—पलायित को फिर से ग्रहण करनेवाला (दे ७, ५६)।

वामणिआ स्त्री [दे] दीर्घ काष्ठ की बाड (दे ७, ५८)।

वामद्दण न [व्यामर्दन] एक तरह का व्यायाम, हाथ आदि अंगों का एक दूसरे से मोड़ना (णाया १, १—पत्र १६; कप्प; औप)।

वामरि पुं [दे] सिंह, मृगेन्द्र (दे ७, ५४)।

वामलूर पुं [वामलूर] वल्मीक, दीमक (पाअ, गउड)।

वामा स्त्री [वामा] भगवान् पार्श्वनाथजी की माता का नाम (सम १५१)।

वामिस्स देखो वामीस (पउम ६३, ३६)।

वामी स्त्री [दे] स्त्री, महिला (दे ७, ५३)।

वामीस वि [व्यामिश्र] मिश्रित, युक्त, सहित (पउम ७२, ४, तंदु ४४)।

वामीसिय वि [व्यामिश्रित] ऊपर देखो (भवि)।

वामुत्तय वि [व्यामुक्तक] १ परिहित, पहना हुआ। २ प्रलम्बित, लटका हुआ (औप)।

वामूढ वि [व्यामूढ] विमूढ, भ्रान्त (सुर ६, १२६; १२, १४३; सुपा ७०)।

वामोह पुं [व्यामोह] मूढ़ता, भ्रान्ति (उप पृ ३२६; सुपा ६५; भवि)।

वामोहण वि [व्यामोहन] भ्रान्ति-जनक (भवि)।

वाय सक [वाचय्] १ पढ़ना। २ पढ़ाना। वाएइ, वाएसि (कुप्र १६६); 'सावक्का सुयजणणी पासत्था गहिय वायए लेहं' (धर्मवि ४७), 'सुत्तं वाए उवज्झाओ' (संबोध २५)। वकृ. वायंत (सुपा २२३)। संकृ. वाइऊण (कुप्र १६६)। कृ. वायणिज्ज (ठा ३, ४)।

वाय सक [वा] बहना, गति करना, चलना। वायंति (भग ५, २)। वकृ. वायंत (पिंड ८२; सुर ३, ४०; सुपा ४५०; दस ५, १, ८)।

वाय अक [वै, म्लै] सूखना। वाअइ (संक्षि ३६; प्राप्र)। वकृ. वायंत (गउड ११६५)।

वाय सक [वादय्] बजाना। वकृ. वायंत, वायमाण (सुपा २६३; ४३२)। कृ. वाइयव्व (स ३१४)।

वाय वि [वान] शुष्क, सूखा, म्लान (गउड; से ५, ५७; पाअ; प्राप्र; कुमा)।

वाय पुं [दे] १ वनस्पति-विशेष (सूअ २, ३, १६)। २ न. गन्ध (दे ७, ५३)।

वाय पुं [व्रात] समूह, संघ (श्रा २३; भवि)।

वाय वि [व्यातृ] संवरण करनेवाला (श्रा २३)।

वाय वि [व्यागस्] प्रकृष्ट अपराधी (श्रा २३)।

वाय पुं [वातृ] १ पवन, वायु। २ कपड़ा बुननेवाला, जुलाहा (श्रा २३)।

वाय वि [व्याप] प्रकृष्ट विस्तारवाला (श्रा २३)।

वाय पुं [वाक] ऋग्वेद आदि वाक्य (श्रा २३)।

वाय पुं [व्याय] १ गति, चाल। २ पवन, वायु। ३ पक्षी का आगमन। ४ विशिष्ट लाभ (श्रा २३)।

वाय पुं [व्याच] वंचन, ठगाई (श्रा २३)।

वाय पुं [वाज] १ पक्ष, पँख। २ मुनि, ऋषि। ३ शब्द, आवाज। ४ वेग। ५ न. घृत, घी। ६ पानी, जल। ७ यज्ञ का धान्य (श्रा २३)।

वाय न [वाच] शुक-समूह (श्रा २३)।

वाय वि [वाज्] १ फेंकनेवाला। २ नाशक (श्रा २३)।

वाय पुं [व्याज] १ कपट, माया। २ बहाना, छल। ३ विशिष्ट गति (श्रा २३)।

वाय देखो **वाग** = वल्क (विपा १, ६—पत्र ६६)।

वाय पुं [व्राय] विवाह, शादी (श्रा २३)।

वाय पुं [व्यात] विशिष्ट गमन (श्रा २३)।

वाय पुं [वाप] १ वपन, बोना। २ क्षेत्र, खेत (श्रा २३)।

वाय पुं [वाय] १ गमन, गति। २ सूँघना। ३ जानना, ज्ञान। ४ इच्छा। ५ खाना, भक्षण। ६ परिणयन, विवाह (श्रा २३)।

वाय वि [व्याद] विशेष ग्रहण करनेवाला (श्रा २३)।

वाय वि [वाच्] वक्ता, बोलनेवाला (श्रा २३)।

वाय पुं [वात] १ पवन, वायु (भग; णाया १, ११; जी ७; कुमा)। २ उत्कर्ष (उव ५५ टि)। ३ पुंन. एक देव-विमान (सम १०)। °कंत पुंन [°कान्त] एक देव-विमान (सम १०)। °कम्म न [°कर्मन्] अपान वायु का सरना, पादना, पाद, पर्दन (ओघ ६२२ टी)। °कूड पुंन [°कूट] एक देव-विमान (सम १०)। °खंध पुं [°स्कन्ध] घनवात आदि वायु (ठा २, ४—पत्र ८६)। °ज्झय पुंन [°ध्वज] एक देव-विमान (सम १०)। °णिसग्ग पुं [°निसर्ग] अपान वायु का सरना, पर्दन (पडि)। °पलिक्खोभ पुं [परिक्षोभ] कृष्णराजि, काले पुद्गलों की रेखा (भग ६, ५—पत्र २७१)। °प्पभ पुंन [°प्रभ] देव-विमान विशेष (सम १०)। °फलिह पुं [°परिघ] कृष्णराजि (भग ६, ५)। °रुह पुं [°रुह] वनस्पति-विशेष (पएण १—पत्र ३६)। °लेस्स पुंन [°लेश्य] एक देव-विमान (सम १०)। °वण्ण पुंन [°वर्ण] एक देव-विमान (सम १०)। °सिंग पुंन [°शृङ्ग] एक देव-विमान (सम १०)। °सिट्ठ पुंन [°सृष्ट] एक देव-विमान (सम १०)। °ावत्त पुंन [°ावर्त] एक देव-विमान (सम १०)।

वाय पुं [वाद] १ तत्त्व-विचार, शास्त्रार्थ (ओघभा १७; धर्मवि ८०; प्रासू ६३)। २ उक्ति, वचन (औप)। ३ नाम, आख्या;

'वल्लहवाएण अलं मम' (गा १२३)। ४ बजाना; 'मद्दलवायचउप्फललोयं' (सिरि १५७)। ५ स्थैर्य, स्थिरता (श्रा २३)। **°त्थ** पुं [°र्थ] तत्त्व-चर्चा; 'तेहि समं कुणइ वायत्थं' (पउम ४१, ५०)। **°त्थि** वि [°र्थिन्] शास्त्रार्थ की चाहवाला (पउम १०५, २६)।

°वाय पुं [पाक] १ रसोई। २ बालक। ३ दैत्य, दानव (श्रा २३)। देखो **पाग**।

°वाय पुं [°पात] १ पतन (स ६५७; कुमा)। २ गमन। ३ उत्पतन, कूदन (से १, ५५)। ४ पक्षी। ५ न. पक्षि-समूह (श्रा २३)।

°वाय वि [पातृ] १ रक्षा करनेवाला। २ पीनेवाला। ३ सूखनेवाला (श्रा २३)।

°वाय देखो **°बाय** (श्रा २३)।

°वाय पुं [°पाद] १ पर्यन्त। २ पर्वत। ३ पूजा। ४ मूल। ५ किरण। ६ पैर। ७ चौथा भाग (श्रा २३)। देखो **पाय** = पाद।

°वाय देखो **पाव** = पाप (श्रा २३)।

°वाय पुं [पाय] १ रक्षा, रक्षण। २ वि. पीनेवाला (श्रा २३)।

°वाय देखो **अवाय** = अपाय; 'बहुवायम्मि वि देहे विसुज्झमाणस्स वर मरणं' (उव)।

वायउत्त पुं [दे] १ विट, भँडुआ। २ जार, उपपति (दे ७, ८८)।

वायंगण न [दे] बैंगन, वृन्ताक, भंटा (श्रा २०; संबोध ४४; पव ४)।

वायंतिय वि [वागन्तिक] वचन-मात्र में नियमित (राज)।

वायग पुं [वाचक] १ अभिधायक, अभिधा-वृत्ति से अर्थ का प्रकाशक शब्द (सम्मत्त १४३)। २ उपाध्याय, सूत्र-पाठक मुनि (गण ५; संबोध २५; सार्ध १४७)। ३ पूर्व-ग्रन्थों का जानकार मुनि (पण्ण १—पत्र ४; सम्मत्त १४१; पंचा ६, ४५)। ४ एक प्राचीन जैन महर्षि और ग्रन्थकार, तत्त्वार्थ सूत्र का कर्ता श्री उमास्वातिजी (पंचा ६, ४५)। ५ वि. कथक, कहनेवाला। ६ पढ़ानेवाला (गण ५)।

वायग वि [वादक] बजानेवाला (कुमा ६; महा)।

वायग पुं [वायक] तन्तुवाय, जुलाहा (दे ६, ५६)।

वायगवंस पुं [वाचकवंश] एक जैन मुनि-वंश (णंदि ५०)।

वायड पुं [दे] एक श्रेष्ठि-वंश (कुप्र १४३)।

वायड वि [व्याकृत] स्पष्ट, प्रकट अर्थवाला (दसनि ७)। देखो **वागरिय**।

वायडघड पुं [दे] वाद्य-विशेष, दर्दुर नामक बाजा (दे ७, ६१)।

वायडाग पुं [दे] सर्प की एक जाति (पण्ण १—पत्र ५१)।

वायण न [वाचन] देखो **वायणा** (नाट—रत्ना १०)।

वायण न [वादन] १ बजाना (सुपा १६; २६३; कुप्र ४१; महा; कप्पू)। २ वि. बजानेवाला (दे ७, ६१ टी)।

वायण न [दे] भोज्योपायन, खाद्य पदार्थ का बाँटा जाता उपहार, बायन (दे ७, ५७; पाअ)।

वायणया, वायणा स्त्री [वाचना] १ पठन, गुरु-समीपे अध्ययन (उप २६, १)। २ अध्यापन, पढ़ाना (सम १०६; उव)। ३ व्याख्यान (पव ६४)। ४ सूत्र-पाठ (कप्प)।

वायणिअ वि [वाचनिक] वचन-संबन्धी (नाट—विक्र ३५)।

वायय देखो **वायग** = वायक (दे ५, २८)।

वायरण देखो **वागरण** (हे १, २६८; कुमा; भवि; षड्)।

वायव वि [वायव] वायु रोगवाला, वात-रोगी (विपा १, १—पत्र ५)।

°वायव देखो **पायव** (से ७, ६७)।

वायव्व वि [वायव्य] वायव्य कोण का (अणु २१५)।

वायव्व पुं [वायव्य] १ वायुदेवता-संबन्धी; 'वारुणवायव्वाइं पट्ठवियाइं कमेण सत्थाइं' (सुर ८, ४५; महा)। २ न. गौ के खुर से उड़ी हुई धूलि—रज; 'वायव्वएहाणएहाया' (कुमा)।

वायव्वा स्त्री [वायव्या] पश्चिम और उत्तर के बीच की दिशा, वायव्य कोण (ठा १०—पत्र ४७८; सुपा ६८; २६०)।

वायस पुं [वायस] १ काक, कौआ (उवा; प्रासू १६६; हे ४, ३५२)। २ कायोत्सर्ग का एक दोष, कायोत्सर्ग में कौए की तरह दृष्टि को इधर-उधर घुमाना (पव ५)। **°परिमंडल** न [°परिमण्डल] विद्या-विशेष, कौए के स्वर और स्थान आदि से शुभाशुभ फल बतलानेवाली विद्या (सूअ २, २, २७)।

वाया स्त्री [वाच्] १ वाचन, वाणी (पाअ; प्रासू ६; पडि; स ४६२; से १, ३७; गा ३२; ४००)। २ वाणी की अधिष्ठायिका देवी, सरस्वती (श्रा २३)। ३ व्याकरण-शास्त्र (गउड ८०२)। देखो **वइ** = वाच्।

वायाड पुं [दे. वाचाट] शुक, तोता (दे ७, ५६)।

वायाड वि [वाचाट] वाचाल, बकवादी (सुपा ३६०; चेइय ११७; संक्षि २)।

वायाम पुं [व्यायाम] कसरत, शारीरिक श्रम (ठा १—पत्र १६; णाया १, १—पत्र १६; कप्प; औप; स्वप्न ३६)।

वायाम सक [व्यायामय्] कसरत करना, शारीरिक श्रम करना। वकृ. 'सुट्ठु वि वायामेंतो कायं न करेइ किंचि गुणं' (उव)।

वायायण पुंन [वातायन] १ गवाक्ष, झरोखा (पउम ३६, ६१; स २४१; पाअ; महा)। २ पुं. राम का एक सैनिक (पउम ६७, १०)।

वायार पुं [दे] शिशिर-वात, गुजराती में 'वायरो' (दे ७, ५६)।

वायाल वि [वाचाल] मुखर, बकवादी (श्रा १२; पाअ; सुपा ११३)।

°वायाल देखो **पायाल** (से ५, ३७)।

वायाविअ वि [वादित] बजवाया हुआ (स ५२७; कुप्र १३६)।

वायु देखो **वाउ** = वायु (सुज १०, १२; कुमा; सम १६)।

वार सक [वारय्] रोकना, निषेध करना। वारेइ (उव; महा)। वकृ. **वारंत** (सुपा १८३)। कवकृ. **वारिज्जंत** (काप्र १६१; महा)। हेकृ. **वारेउं** (सूअ १, ३, २, ७)। कृ. **वारियव्व, वारेयव्व** (सुपा ५५२; २७२)।

वार पुं [दे. वार] चषक, पान-पात्र (दे ७, ५४)।

वार पुं [वार] १ समूह, यूथ (सुपा २१४; सुर १४, २४; सार्ध ४६; कुमा; सम्मत्त १७५)। २ अवसर, वेला, दफा (उप ६२८; सुपा ३६०; भवि)। ३ सूर्य आदि ग्रह से अधिकृत दिन, जैसे रविवार, सोमवार आदि (गा २६१)। ४ चौथा नरक का एक नरक-स्थान (ठा ६—पत्र ३६५)। ५ बारी, परिपाटी (उप ६४८ टी)। ६ कुम्भ, घड़ा (दस ५, १, ४५)। ७ वृक्ष-विशेष। ८ न. फल-विशेष (पण्ण १७—पत्र ५३१)। °जुवइ स्त्री [°युवति] वारांगना, वेश्या (कुमा)। °जोव्वणा स्त्री [°यौवना] वही अर्थ (प्राकृ १४)। °तरुणी स्त्री [°तरुणी] वही (सण)। °वहू स्त्री [°वधू] वही अर्थ (कुप्र ४४३)। °विलया स्त्री [°वनिता] वही पूर्वोक्त अर्थ (कुमा; सुपा ७८; २००)। °विलासिणी स्त्री [°विलासिनी] वही (कुमा; सुपा २००)। °सुंदरी स्त्री [°सुन्दरी] वही अर्थ (सुपा ७६)।

वार न [°द्वार] दरवाजा (प्राकृ २६; कुमा; गा ८८०)। °वई स्त्री [°वती] द्वारका नगरी (कुप्र ६३)। °वाल पुं [°पाल] दरवान, प्रतीहार (कुमा)।

वारंत देखो वार = वारय्।

वारंवार न [वारंवार] फिर फिर (से ६, ३२; गा २६४)।

वारग पुं [वारक] १ बारी, क्रम (उप ६४८ टी)। २ छोटा घड़ा, लघु कलश (पिंड २७८)। ३ वि. निवारक, निषेधक (कुप्र २६; धर्मवि १३२)।

वारडिय न [दे] रक्त वस्त्र, लाल कपड़ा (गच्छ २, ४६)।

वारड्ड वि [दे] अभिपीडित (षड्)।

वारण न [वारण] १ निषेध, रोक, अटकाव, निवारण (कुमा; ओघ ४४८)। २ छत्र, छाता; 'वारणयचामरेहिं नज्जंति फुडं महा-सुहडा' (सिरि १०२३)। ३ वि. रोकनेवाला, निवारक (कुप्र ३१२)। ४ पुं. हाथी (पाअ; कुमा; कुप्र ३१२)। ५ छन्द का एक भेद (पिंग)।

वारण देखो वागरण (हे १, २६८; कुमा; षड्)।

वारणा स्त्री [वारणा] निवारण, अटकाव (बृह १)।

वारत्त पुं [वारत्त] १ एक अन्तकृद् मुनि (अंत १८)। २ एक ऋषि (उव)। ३ एक अमात्य। ४ न. एक नगर (धम्म ६ टी)।

वारबाण पुं [वारबाण] कञ्चुक, चोली (पाअ)।

वारय देखो वारग (रंभा, णाया १, १६—पत्र १९६; उप पृ ३४२; उवा; अंत)।

वारसिआ स्त्री [दे] मल्लिका, पुष्प-विशेष (दे ७, ६०)।

वारसिय देखो वारिसिय; 'वारसियमहादाणं' (सुपा ७१)।

वारा स्त्री [वारा] १ देरी, विलम्ब; 'अम्मो किमज्ज कज्जं जं लग्गा एत्तिया वारा' (सुपा ४५६)। २ वेला, दफा; 'तो पुणरवि निज्झायइ वाराओ दुन्नि तिन्नि वा जाव' (सट्ठि ६ टी), 'कहं महई वाराणिग्गयस्स' (विबुधानन्द)।

वाराणसी देखो वाणारसी (अन्त; पि ३५४)।

वाराविय वि [वारित] जिसका निवारण कराया गया हो वह (कुप्र १४०)।

वाराह पुं [वाराह] १ पाँचवें बलदेव का पूर्वभवीय नाम (सम १५३)। २ वि. शूकर के सदृश (उवा)।

वाराही स्त्री [वाराही] १ विद्या-विशेष (पउम ७, १४१)। २ वराहमिहिर का बनाया हुआ एक ज्योतिष-ग्रन्थ, वराह-संहिता (सम्मत्त १२१)।

वारि न [वारि] १ पानी, जल (पाअ; कुमा; सण)। २ स्त्री. हाथी को फँसाने का स्थान; 'वारी करिधरणट्ठाणं' (पाअ; स १७७; ६७८)। °भद्दग पुं [°भद्रक] भिक्षुक की एक जाति. शैवलाशी भिक्षुक (सूअनि ६०)। °मय वि [°मय] पानी का बना हुआ। स्त्री. °ई (हे १, ४; पि ७०)। °मुअ पुं [°मुच्] मेघ, जलधर (षड्)। °य पुं [°द] पानी देनेवाला भृत्य (स ७४१)। °रासि पुं [°राशि] समुद्र, सागर (सम्मत्त १६०)। °वाह पुं [°वाह] मेघ, अभ्र (उप २६४ टी)। °सेण पुं [°षेण] १ एक अन्तकृद् महर्षि, जो राजा वसुदेव के पुत्र थे और जिन्होंने भगवान् अरिष्टनेमि के पास दीक्षा ली थी (अन्त १४)। २ एक अनुत्तर-गामी मुनि, जो राजा श्रेणिक के पुत्र थे (अनु १)। ३ ऐरवत वर्ष में उत्पन्न चौबीसवें जिनदेव (सम १५३)। ४ एक शाश्वती जिन-प्रतिमा (पव ५६; महा)। °सेणा स्त्री [°षेणा] १ एक शाश्वती जिन-प्रतिमा (ठा ४, २—पत्र २३०)। २ अधोलोक में रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८—पत्र ४३७; इक २३१ टि)। ३ एक महानदी (ठा ५, ३—पत्र ३५१; इक)। ४ ऊर्ध्वलोक में रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (इक २३२)। °हर पुं [°धर] मेघ (गउड)।

वारिअ पुं [दे] हजाम, नापित (दे ७, ४७)।

वारिअ वि [वारित] १ निवारित, प्रतिषिद्ध (पाअ; से २, २३)। २ वेष्टित (से २, २३)।

वारिआ स्त्री [द्वारिका] छोटा दरवाजा, बारी (ती २),

'वप्पस्स चा(?वा)रियाए परिखित्तो
खाइयामज्झे।'
'जो जलपूरियविट्ठाकूवाओ
चा(? वा)रियाइ निक्कासो।
सो उवचियगब्भाओ जोणीए निग्गमो इत्थ।'
(धर्मवि १४६)।

वारिज्ज पुंन [दे] विवाह, शादी (दे ७, ५५; पाअ; उप पृ ८०)।

वारिसा देखो वरिसा (विक्र १०१)।

वारिसिय वि [वार्षिक] १ वर्ष-संबन्धी (राज)। २ वर्षा-संबन्धी; 'चिट्ठइ चउरो मासा वारिसिया विबुहपरिमहिओ' (पउम ८२, ६५)।

वारी स्त्री [द्वारिका] बारी, छोटा दरवाजा (ती २)।

वारी स्त्री [वारी] देखो 'वारि' का दूसरा अर्थ; 'बद्धो वारीबंधे फासेण गओ निहणं' (सुर ८, १३६; ओघ ४४६ टी)।

वारी° न [वारि] जल, पानी (हे १, ४; पि ७०)।

वारुअ न [दे] १ शीघ्र, जल्दी। २ वि. शीघ्रता-युक्त; 'ण वारुआ अम्हे' (दे ७, ४८)।

वारुण न [वारुण] १ जल, पानी; 'निम्मल-वारुणमंडलमंडिअससिचारपाणुपवेसे' (सिरि ३६१)। २ वि. वरुण-संबन्धी (पउम १२, १२७; सुर ८, ४५; महा)। °त्थ न [°स्त्र] वरुणाधिष्ठित अस्त्र (महा)। °पुर न [पुर] नगर-विशेष (इक)।

वारुणी स्त्री [वारुणी] १ मदिरा, सुरा, दारू (पात्र; से २, १७; सुर ३, ५५; पण्ह २, ५—पत्र १५०)। २ लता-विशेष, इन्द्र-वारुणी, इन्द्रायन (कुमा)। ३ पश्चिम दिशा (ठा १०—पत्र ४७८; सुपा २५५)। ४ भगवान् सुविधिनाथ की प्रथम शिष्या का नाम (सम १५२; पव ६)। ५ एक दिक्कु-मारी देवी (इक)। ६ कायोत्सर्ग का एक दोष—१ निष्पन्न होती मदिरा की तरह कायोत्सर्ग में 'बुड-बुड' आवाज करना। २ कायोत्सर्ग में मतवाला की तरह डोलते रहना (पव ५)।

वारुया, **वारूया** स्त्री [दे] हस्तिनी, हथिनी (स ७३५; ६४)।

वारेज्ज देखो **वारिज्ज** (स ७३४)।

वारेयव्व देखो **वार** = वारय्।

वाल सक [वालय्] १ मोड़ना। २ वापस लौटाना। वालइ, वालेइ (हे ४, ३३०; भवि; सिरि ४४२)। कवकृ. **वालिज्जंत** (सुर ३, १३६)। संकृ. **वालेऊण** (महा)।

वाल पुं [व्याल] १ सर्प, साँप (गउड; णाया १, १ टी—पत्र ६; औप)। २ दुष्ट हाथी (सुर १०, २१६; चेइय ५८)। ३ हिंसक, पशु, श्वापद (णाया १, १ टी—पत्र ६; औप)। देखो **विआल** = व्याल।

वाल न [वाल] १ एक गोत्र, जो कश्यप-गोत्र की एक शाखा है। २ पुंस्त्री. उस गोत्र में उत्पन्न (ठा ७—पत्र ३९०)।

वाल देखो **बाल** = बाल (औप; पात्र)। °य वि [°ज] केशों से बना हुआ (पउम १०२, १२१)। °वीयणी स्त्री [°वीजनी] १ चामर 'पंच रायककुहाइं; तं जहा—खग्गं छत्तं उप्फेसं वाहणाओ वालवीयणिं' (औप)। २ छोटा व्यजन—पंखा; 'सेयचामरवाल-वीयणीहिं वीइज्जमाणी' (णाया १, १—पत्र ३२; सूअ १, ६, १८)। °हि पुं [°धि] वही अर्थ (पात्र; सुपा २८१)।

°**वाल** देखो **पाल** = पाल (काल; भवि; कुमा १, ६६)।

वालंफोस न [दे] कनक, सोना (दे ७, ६०)।

वालग न [वालक] पात्र-विशेष, गौ आदि के बालों का बना हुआ पात्र (आचा २, १, ८, १)।

वालगपोतिया, **वालग्गपोइया** स्त्री [दे] देखो बालग्ग-पोइआ (सुज्ज ४—पत्र ७०; उत्त ६, २४; सुख ६, २४)।

वालण न [वालन] लौटाना (सुर १, २४६)।

वालप्प न [दे] पुच्छ, दुम, पूँछ (दे ७, ५७)।

वालय पुं [वालक] गन्ध-द्रव्य-विशेष (पात्र)।

वालवास पुं [दे] मस्तक का आभूषण (दे ५६)।

वालवि पुं [व्यालपिन्] मदारी, साँपों को पकड़ने आदि का व्यवसाय करनेवाला, सँपेरा (पण्ह १, २—पत्र २६)।

वालहिल्ल पुं [वालखिल्य] ऋतु से उत्पन्न पुलस्त्य कन्या के साठ हजार पुत्र, जो अंगुष्ठ-पर्व के देह-मानवाले थे (गउड)। देखो **वालिखिल्ल**।

वाला पुंस्त्री [वाला] कंगू, अन्न-विशेष; 'संपण्णं वालावल्लरअं' (गा ८१२)।

वालि पुं [वालि] एक विद्याधर-राजा, कपिराज (पउम ६, ६; से १, १३)। °तणअ पुं [°तनय] राजा वालि का पुत्र, अंगद (से १३, ८३)। °सुअ पुं [°सुत] वही अर्थ (से ४, १२; १३, ६२)।

वालि वि [वालिन्] वक्र, टेढ़ा (से १, १३)।

वालि वि [वालिन्] १ केशवाला। २ पुं. कपिराज (अणु १४२)।

वालिअ वि [वालित] मोड़ा हुआ (पात्र; स ३३७)।

वालिआफोस न [दे] कनक, सुवर्ण (दे ७, ६०)।

वालिंद पुं [वालीन्द्र] विद्याधर वंश का एक राजा (पउम ५, ४५)।

वालिखिल्ल पुं [वालिखिल्य] एक राजर्षि (पउम ३४, १८)। देखो **वालिहिल्ल**।

वालिहाण न [वालधान] पुच्छ, पूँछ (णाया १, ३; उवा)।

वालिहिल्ल देखो **वालहिल्ल** (गउड ३२०)।

वाली स्त्री [दे] वाद्य-विशेष, मुँह के पवन से बजाया जाता तृण-वाद्य (दे ७, ५३)।

°**वाली** स्त्री [पाली] रचना-विशेष, गाल आदि पर की जाती कस्तूरी आदि की छटा (कप्पू)। देखो **पाली**।

वालुअ पुं [वालुक] १ परमाधार्मिक देवों की एक जाति, जो नरक-जीवों को तप्त वालुका—बालू में चने की तरह भुनते हैं (सम २९)। २ धूली-सम्बन्धी (उप पृ २०५)।

वालुअ°, **वालुआ** स्त्री [वालुका] धूलि, बालू, रेत, रज (गउड)। °पुढवी स्त्री [°पृथिवी] तीसरी नरक-पृथिवी (पउम ११८, २)। °प्पभा, °प्पहा स्त्री [°प्रभा] तीसरी नरक-भूमि (ठा ७—पत्र ३८८; इक; अंत १५)। °भा स्त्री [°भा] वही अर्थ (उत्त ३६, १५७)।

वालुंक न [दे] पक्वान्न-विशेष, एक तरह का खाद्य; 'खीरदहिसूवकट्टरलंभे गुडसप्पिवडग-वालुंके' (पिंड ६३७)।

वालुंक न [वालुङ्क] ककड़ी, खीरा (अनु ६; कुप्र ५८)।

वालुंकी, **वालुक्की** स्त्री [वालुङ्की] ककड़ी का गाछ (गा १०; गा १० अ)।

वालुग° देखो **वालुअ°** (स १०२)।

वाव सक [वि + आप्] व्याप्त करना। वावेइ (हे ४, १४१)।

वाव अ [वाव] अथवा, या (विसे २०२०)।

वाव पुं [वाप] वपन, बोना (दे ६, १२६)।

वावइज्ज देखो **वावज्ज**। वावइज्जामि (स ७४१)।

वावंफ अक [कृ] श्रम करना। वावंफइ (हे ४, ६८)।

वावंफिर वि [करिष्णु] श्रम करनेवाला (कुमा)।

वावज्ज अक [व्या + पद्] मर जाना। वावज्जंति (भग)।

वावड पुं [दे] कुटुम्बी, किसान (दे ७, ५४)।

वावड वि [व्यापृत] १ व्याकुल (दे ७, ५४ टी)। २ किसी कार्य में लगा हुआ (हे १, २०६; प्राप्र; कस; सुर १, २६)।

वावड वि [व्यावृत्त] लौटाया हुआ, वापस किया हुआ (उप ५३४)।

वावडय स्त्रीन [दे] विपरीत मैथुन (दे ७, ५८)। स्त्री. °या (पाम्र)।

वावण न [व्यापन] व्याप्त करना (विसे ८६)।

वावणग वि [वामनक] ठिंगणो, ठिंगना, बौना, छोटे कद का (चउप्पन्न० पत्र १६१)।

वावणी स्त्री [दे] छिद्र, विवर (दे ७, ५५)।

वावण्ण देखो वावन्न (णाया १, १२)।

वावत्ति स्त्री [व्यापत्ति] विनाश, मरण (णाया १, ६—पत्र १६६; उप ५०६; स ३६५; ४३२; धर्मसं ६३४; ६७६)।

वावत्ति स्त्री [व्यापृति] व्यापार (उप ५०६)।

वावत्ति स्त्री [व्यावृत्ति] निवृत्ति (ठा ३, ४—पत्र १७४)।

वावन्न वि [व्यापन्न] विनाश-प्राप्त (ठा ५, २—पत्र ३१३, स २४१; सम्मत्त २८; सं ६०)।

वावय पुं [दे] आयुक्त, गाँव का मुखिया (दे ७, ५५)।

वावर अक [व्या + पृ] १ काम में लगना। २ सक. काम में लगाना। वावरेइ (हे ४, ८१), वावरइ (भवि); 'सयं गिहं परिच्चज्ज परिगिहम्मि वावरे' (उत्त १७, १८; सुख १७, १८)। वकृ. वावरंत (कुमा ६, ५१)। प्रयो., हेकृ. वावरावेउं (स ७६२)।

वावरण न [व्यापरण] कार्य में लगाना (भवि)।

वावल्ल देखो वावड = व्यापृत (उप पृ ८७)।

वावल्ल पुंन [दे. वावल्ल] शस्त्र-विशेष (सण)।

वावहारिअ वि [व्यावहारिक] व्यवहार से सम्बन्ध रखनेवाला (इक; विसे ६५६; जीवस ६५)।

वावाअ (?) अक [अव + काश्] अवकाश पाना, जगह प्राप्त करना। वावाअइ (धात्वा १५२)।

वावाअ सक [व्या + पादय्] मार डालना, विनाश करना। वावाएइ (स ३१; महा)। कर्म. वावाइज्जइ, वावाईयइ (स ६७३), भवि. वावाइज्जिस्सइ (पि ५४६)। संकृ. वावाइऊण (स ७५५)। कृ. वावाइयव्व (स १३५)।

वावाइअ वि [व्यापादित] मार डाला गया, विनाशित (सुपा २४१), 'अवावावि(?इ)ओ चेव विउत्तो खु एसो' (स ४११)।

वावायग वि [व्यापादक] हिंसक, विनाश-कर्ता (स २६७)।

वावायण न [व्यापादन] हिंसा, मार डालना, विनाश (स ३३; १०२; १०३; ६७५; सुर १२, २१६)।

वावायय देखो वावायग (स ७५०)।

वावार सक [व्या + पारय्] काम में लगाना। वकृ. वावारेंत (गउड २४४)। कृ. वावारियव्व (सुपा १६२)।

वावार पुं [व्यापार] व्यवसाय (ठा ३, १ टी—पत्र ११४; प्रासू ६१; १२१; नाट—विक्र १७)।

वावारण न [व्यापारण] कार्य में लगाना (विसे ३०७१; उप पृ ७१)।

वावारि वि [व्यापारिन्] व्यापारवाला (से १४, ६६; हम्मीर १३)।

वावारिद (शौ) वि [व्यापारित] कार्य में लगाया हुआ (नाट—शकु १२०)।

वावि अ [वापि] १ अथवा, या (पव ६७)। २ स्त्री. देखो वावी (पण्ह १, १—पत्र ८)।

वावि वि [व्यापिन्] व्यापक (विसे २१५, श्रा २८४; धर्मसं ५२५)।

वाविअ वि [दे] विस्तारित (दे ७, ५७)।

वाविअ वि [वापित] १ प्रापित, प्राप्त करवाया हुआ (से ६, ६२)। २ बोया हुआ; गुजराती में 'वावेलु'; 'जं आसी पुव्वभवे धम्मबीयं वावियं तए जीव' (आत्महि ८; दे ७, ८६)।

वाविअ वि [व्याप्त] भरा हुआ (कुमा ६, ६५)।

वावित्त वि [व्यावृत्त] व्यावृत्तिवाला, निवृत्त (धर्मसं ३२१)।

वावित्ति स्त्री [व्यावृत्ति] व्यावर्तन, निवृत्ति (धर्मसं १०५)।

वाविद्ध देखो वाइद्ध = व्यादिग्ध, व्याविद्ध (ठा ५, २—पत्र ३१३)।

वाविर देखो वावर। वाविरइ (षड्)।

वावी स्त्री [वापी] चतुष्कोण जलाशय-विशेष (औप; गउड; प्रामा)।

वावुड, **वावुद** (शौ) देखो वावड = व्यापृत (नाट—मृच्छ २०१, पि २१८; चारु ६)।

वावोणय न [दे] विकीर्ण, बिखरा हुआ (दे ७, ५६)।

वाशू (मा) स्त्री [वासू] नाटक की भाषा में बाला (मृच्छ २७)।

वास देखो वरिस = वृष्। वासंति (भग)। भूका. वासिसु (कप्प)। कृ. वासिउं (ठा ३, ३—पत्र १४१; पि ६३; ५७७)।

वास अक [वाश्] १ तिर्यंचों का—पशु पक्षियों का बोलना। २ आह्वान करना; 'खीरदुमम्मि वासइ वामत्थो वायसो चलियपक्खो' (पउम ५५, ३१), वासइ, वासए (भवि; कुप्र २२३)। वकृ. वासंत (कुप्र २२३; ३८७)।

वास सक [वासय्] १ संस्कार डालना। २ सुगन्धित करना। ३ वास करवाना। वासइ (भवि)। वकृ. वासंत, वासयंत (औप; कप्प)। कृ. वासणिज्ज (विसे १६७७; धर्मसं ३२६)।

वास देखो वरिस = वर्ष (सम २; कप्प, जी ३४; गउड, कुमा; भग ३, ६; सम १२; हे १, ४३; २, १०५; षड् ४६; सुपा ६७)। °त्ताण न [°त्राण] छत्र, छाता (धर्म ३; ओघ ३०)। °धर, °हर पुं [°धर] पर्वत-विशेष (उवा ७४; २५३; ठा २, ३; सम १२; इक)।

वास पुं [वास] १ निवास, रहना (आचा; उप ४८६, कुमा; प्रासू ३८)। २ सुगन्ध (कुमा; भवि)। ३ सुगन्धी द्रव्य-विशेष (गउड)। ४ सुगन्धी चूर्ण-विशेष; 'पणवन्न-वासवासं विहियं तोसाउ तियसेहिं' (सुपा ६७; दंस २)। ५ द्वीन्द्रिय जन्तु की एक जाति (पण्ण १—पत्र ४४)। °घर न [°गृह] शयन-गृह (णाया १, १६—पत्र

२०१)। °भवण न [°भवन] वही अर्थ (महा)। °रेणु पुं [°रेणु] सुगन्धी रज (औप)। °हर न [°गृह] शयन-गृह (सुर ६, २७; सुपा ३१२; भवि)।

वास पुं [व्यास] १ ऋषि-विशेष, पुराण-कर्ता एक मुनि (हे २, ४५; कप्पू)। २ विस्तार (भग २, ८ टी)।

वास न [वासस्] वस्त्र, कपड़ा (पाअ; वज्जा १६२; भवि)।

°वास देखो पास = पाश (गउड)।

°वास देखो पास = पार्श्व (प्राकृ ३०; गउड)।

वासंग पुं [व्यासङ्ग] आसक्ति, तत्परता; 'ताहे सा पडिबुद्धा विसं व मोत्तूण विसय-वासंगं' (उप १३१ टी; कुप्र ११८; उप पृ १२७)।

वासंठ } (अप) पुं [वसन्त] छन्द का एक **वासंत** } भेद (पिंग १६३; १६३ टि)।

वासंत पुं [वर्षान्त] वर्षा-काल का अन्त-भाग (उप ४८८)।

वासंतिअ वि [वासन्तिक] वसन्त-सम्बन्धी (मै ३)।

वासंतिअ } स्त्री [वासन्तिका, °न्ती] लता-**वासंतिआ** } विशेष (औप; कप्प; कुमा; पण्ण **वासंती** } १—पत्र ३२; णाया १, ९—पत्र १६०; पण्ह १, ४—पत्र ७९)।

वासंदी स्त्री [दे] कुन्द का पुष्प (दे ७, ५५)।

वासग वि [वासक] १ रहनेवाला (उप ७६८ टी)। २ वासना-कर्ता, संस्काराधायक (धर्मसं ३२६)। ३ शब्द करनेवाला। ४ पुं. द्वीन्द्रिय आदि जन्तु (आचा)।

वासण न [दे] पात्र, बरतन; गुजराती में 'वासण'; 'दिट्ठं च पयत्तट्ठावियं चंदणनामं-कियं हिरण्णवासणं' (स ९१; ९२)।

वासण न [वासन] वासित करना (दसनि ३, ३)।

वासणा स्त्री [वासना] संस्कार (धर्मसं ३२६)।

°वासणा स्त्री [दर्शन] अवलोकन, निरीक्षण (विसे १६७७; उप ४६७)। देखो पासणया।

वासय देखो वासग। °सज्जा स्त्री [°सज्जा] नायिका का एक भेद, वह नायिका जो नायक की प्रतीक्षा में सज-धज कर बैठी हो (कुमा)।

वासर पुंन [वासर] दिवस, दिन (पाअ; गउड; महा)।

वासव पुं [वासव] १ इन्द्र, देव-पति (पाअ; सुपा ३०४; चेइय ५८०)। २ एक राज-कुमार (विपा १, १—पत्र १०३)। °केउ पुं [°केतु] हरिवंश का एक राजा, राजा जनक का पिता (पउम २१, ३२)। °दत्त पुं [°दत्त] विजयपुर नगर का एक राजा (विपा २, ४)। °दत्ता स्त्री [°दत्ता] एक आख्यायिका (राज)। °धणु पुंन [°धनुष्] इन्द्र-धनुष (कुप्र ४५६)। °नयर न [°नगर] अमरावती, इन्द्र-नगरी (सुपा ६०९)। °पुरी स्त्री [°पुरी] वही अर्थ (उप पृ १७६)। °सुअ पुं [°सुत] इन्द्र का पुत्र, जयन्त (पाअ)।

वासवदत्ता स्त्री [वासवदत्ता] राजा चंड प्रद्योत की पुत्री और उदयन—वीणावत्सराज की पत्नी (उत्तनि ३)।

वासवार पुं [दे] १ तुरग, घोड़ा (दे ७, ५९)। २ श्वान, कुत्ता; 'विट्टालिज्जइ गंगा कयाइ किं वासवारेहिं' (चेइय १३४)।

वासवाल पुं [दे] श्वान, कुत्ता (दे ७, ६०)।

वासस न [वासस्] वस्त्र, कपड़ा; 'कुभोयणा कुवाससा' (पण्ह १, २—पत्र ४०)।

वासा देखो वरिसा (कुमा; पाअ; सुर २, ७८; गा २३१)। °रत्ति स्त्री. देखो वरिसा-रत्त (हे ४, ३९५)। °वास पुं [°वास] चतुर्मास में एक स्थान में किया जाता निवास (औप; काल; कप्प)। °वासिय वि [°वार्षिक] वर्षाकाल संबन्धी (आचा २, २, २, ८; ९)। °हू पु [°भू] भेक, मेढक (दे ७, ५७)।

वासाणिया स्त्री [दे. वासनिका] वनस्पति-विशेष (सूअ २, ३, १६)।

वासाणी स्त्री [दे] रथ्या, मुहल्ला (दे ७, ५५)।

वासि वि [वासिन्] १ निवास करनेवाला, रहनेवाला (सूअ १, ३, ९; उवा; सुपा ६१८; कुप्र ४९; औप)। २ वासना-कारक, संस्कार-स्थापक (विसे १६७७)।

वासि स्त्री [वासि] बसूला, बढई का एक अस्त्र—औजार; 'न हि वासिवड्ढईणं इहं अभेदो कहंचिदवि' (धर्मसं ४८९)। देखो वासी।

वासिक } वि [वार्षिक] वर्षाकाल-भावी **वासिक्क** } (सुज १२—पत्र २१९)।

वासिट्ठ न [वाशिष्ठ] १ गोत्र-विशेष (ठा ७—पत्र ३९०; कप्प; सुज्ज १०, १६)। २ पुंस्त्री. वाशिष्ठ गोत्र में उत्पन्न (ठा ७)। स्त्री. °ट्ठा, °ट्ठी (कप्प; उत्त १४, २९)।

वासिट्ठिया स्त्री [वाशिष्ठिका] एक जैन मुनि-शाखा (कप्प)।

वासित्तु वि [वर्षितृ] बरसनेवाला (ठा ४, ४—पत्र २६९)।

वासिद } वि [वासित] १ बसाया हुआ, **वासिय** } निवासित (मोह २१)। २ बासी रखा हुआ (अन्न आदि) (सुपा १२; ५३२)। ३ सुगन्धित किया हुआ (कप्प; पव १३३; महा)। ४ भावित, संस्कारित (आव)।

वासी स्त्री [वासी] बसूला, बढ़ई का एक अस्त्र (पण्ह १, १; पउम १४, ७८; कप्प; सुर १, २८; औप)। °मुह पुं [°मुख] बसूले के तुल्य मुँहवाला एक तरह का कीट, द्वीन्द्रिय जन्तु की एक जाति (उत्त ३६, १२९)।

वासुइ } पुं [वासुकि] एक महा-नाग, **वासुगि** } सर्पराज (से २, १३; गा ६९; गउड; ती ७; कुमा; सम्मत्त ७६)।

वासुदेव पुं [वासुदेव] १ श्रीकृष्ण, नारायण (पण्ह १, ४—पत्र ७२)। २ अर्ध-चक्रवर्त्ती राजा, त्रिखण्ड भूमि का अधीश (सम १७; १५२; १५३; अंत)।

वासुपुज्ज पुं [वासुपूज्य] भारतवर्ष में उत्पन्न बारहवें जिन भगवान् (सम ४३; कप्प; पडि)।

वासुली स्त्री [दे] कुन्द का फूल (दे ७, ५५)।

वाह सक [वाहय्] वहन कराना, चलाना। वाहइ, वाहेइ (भवि; महा)। कवकृ. वाहिज्जमाण (महा)। हेकृ. वाहिउं (महा)। कृ. वाह, वाहिय (हे २, ७८ आचा २, ४, २, ९)।

वाह पुंस्त्री [व्याध] लुब्धक, बहेलिया (हे १, १८७; पाअ)। स्त्री. °ही (गा १२१; पि ३८५)।

वाह पुं [वाह] १ अश्व, घोड़ा (पाअ, सूअ १, २, ३, ५; उप ७२८ टी; कुप्र १४७; हम्मीर १८)। २ जहाज, नौका; 'वाहोडुवाइ तरणं' (विसे १०२७)। ३ भारवहन, बोझ ढ़ोना (सूअ १, ३, ४, ५)। ४ परिमाण-विशेष,

आठ सौ आढ़क का एक मान (तंदु २९)। ५ शाकटिक, गाड़ी हाँकनेवाला (सूअ १, २, ३, ५)। °वाहिया स्त्री [°वाहिका] घुड़सवारी (धर्मवि ४)।

वाहगण } पुं [दे] मन्त्री, अमात्य, प्रधान
वाहगणय } (दे ७, ६१)।

वाहड वि [दे] भृत, भरा हुआ; 'बहुवाहडा अगाहा' (दस ७, ३९)।

वाहडिया स्त्री [दे] काँवर, बहँगी (उप पृ ३३७)।

वाहण पुंन [वाहन] १ रथ आदि यान; 'जह भिच्चवाहणा लोए' (गच्छ १, ३८; उवा; औप; कप्प)। २ जहाज, नौका, यानपात्र; गुजराती में 'वहाण' (उवा; सिरि ४२३; कुम्मा १६)। ३ न. चलाना; 'वाहवाहण-परिस्संतो' (कुप्र १४७)। ४ शकट, बोझ आदि ढोआना, भार लाद कर चलाना (पण्ह १, २—पत्र २९; द्र २९)। °साला स्त्री [°शाला] यान रखने का घर (औप)।

वाहणा स्त्री [वाहना] वहन कराना, बोझ आदि ढोआना (श्रावक २५८ टी)।

वाहणा स्त्री [दे] ग्रीवा, डोक, गला (दे ७ ५४)।

वाहणा स्त्री [उपानह्] जूता (औप; उवा; पि १४१)।

वाहणिय वि [वाहनिक] वाहन संबन्धी (उप ७२८ टी)।

वाहणिया स्त्री [वाहनिका] वहन कराना, चलाना; 'आसवाहणियाए' (स ३००)।

वाहत्तु देखो वाहर।

वाहय वि [वाहक] चलानेवाला, हाँकनेवाला (उत्त १, ३७)।

वाहय वि [व्याहत] व्याघात-प्राप्त (मोह १०७; उव)।

वाहर सक [व्या + हृ] १ बोलना, कहना। २ आह्वान करना। वाहरइ (हे ४, २५९; सुपा ३२२; महा)। कर्म वाहिप्पइ, वाहरिज्जइ (हे ४, २५३); 'वाहिप्पंति पहाणा गारुडिया' (सुर १६, ६१)। कवकृ. वाहिप्पंत (कुमा)। वकृ. वाहरंत (गा ५०३; सुर ६, १६६)। संकृ. वाहरिउं (वव ४)। हेकृ. वाहत्तुं (से ११, ११६)।

वाहरण न [व्याहरण] १ उक्ति, कथन (कुमा)। २ आह्वान (स २५२; ५०६)।

वाहराविय वि [व्याहारित] बुलवाया हुआ (कुप्र १५; महा)।

वाहरिअ देखो वाहित्त = व्याहृत (सुर १, १५०; ४, ६; सुपा १३२; महा)।

वाहलार वि [दे. वात्सल्यकार] १ स्नेही, अनुरागी। २ सगा; गुजराती में 'वाहलेसरी'; 'अह सत्थाहो तमन्नजायंपि। नियतणुजं मन्नंतो लालेइ वाहलारुव्व' (धर्मवि १२८)।

वाहलिया } स्त्री [दे] क्षुद्र नदी, छोटा जल-
वाहली } प्रवाह (वज्जा २२; ५४; दे ७, ३९)।

वाहा स्त्री [दे] वालुका, रेत (दे ७, ५४)।

वाहाया स्त्री [दे] वृक्ष-विशेष; 'समिसंगलिया ति वा वाहायासंगलिया ति वा अगत्थिसंगलिया ति वा' (अनु ५)।

वाहाविय वि [वाहित] चलाया हुआ (महा)।

वाहि देखो वाहर। संकृ. वाहित्ता (आक ३८; पि ५८२)।

वाहि पुंस्त्री [व्याधि] रोग, बीमारी; 'चउव्विहे वाही पन्नत्ते' (ठा ४, ४—पत्र २६५; पाअ; सुर ४, ७५; उवा; प्रासू १३३; महा); 'एयाओ सत्त वाहीओ दारुणाओ' (महा)।

वाहि वि [वाहिन्] वहन करनेवाला, ढोनेवाला; 'जहा खरो चंदणभारवाही' (उव)।

वाहिअ वि [वाहित] चलाया हुआ; 'वाहियं तम्मि वंसकुडंगे तं खग्गं' (महा); 'तो तेण तेण खग्गेण कोसखित्तेण वाहिओ घाओ' (सुपा ५२७)।

वाहिअ देखो वाहित्त = व्याहृत (हे २, ९९; षड्; महा; णाया १, १—पत्र ६३)।

वाहिअ वि [व्याधित] रोगी, बीमार (सिरि १०७८; णाया १, १३—पत्र १७९; विपा १, ७—पत्र ७५; पण्ह १, ३—पत्र ५४; कस)।

वाहिणी स्त्री [वाहिनी] १ नदी (धर्मवि ३)। २ सेना, लश्कर; 'सेणा वरूहिणी वाहिणी अणीअं चमू सिन्नं' (पाअ)। ३ सेना-विशेष, जिसमें ८१ हाथी, ८१ रथ, २४३ घोड़े और ४०५ प्यादें हों वह सैन्य (पउम ५६, ६)। °णाह पुं [°नाथ] सेना-पति (किरात १३)। °स पुं [°श] वही (किरात ११)।

वाहित्त वि [व्याहृत] १ उक्त, कथित (हे १, १२८; २, ९९; प्राप्र)। २ आहूत, शब्दित (पाअ; उत्त १, २०)।

वाहित्ति स्त्री [व्याहृति] १ उक्ति, वचन। २ आह्वान (अच्चु २)।

वाहिप्प° देखो वाहर।

वाहिम देखो वाह = वाहय।

वाहियाली स्त्री [वाह्याली] अश्व खेलने की जगह (स १३; सुपा ३२७; महा)।

वाहिल्ल वि [व्याधिमत्] रोगी (धम्म ८ टी)।

वाही देखो वाह = व्याध।

वाहुडिअ वि [दे] गत, चलित; 'तो वाहुडिउ जवेण' (कुप्र ४५८)। देखो बाहुडिअ।

वाहुय देखो वाहित्त = व्याहृत (औप)।

वि देखो अवि = अपि (हे २, २१८; कुमा; गा ११; १७; २३; कम्म ४, १६; ६०; ६६; रंभा)।

वि अ [वि] इन अर्थों का सूचक अव्यय— १ विरोध, प्रतिपक्षता; 'विगहा', 'विओग' (ठा ४, २; गच्छ १, ११; सुर २, २१५)। २ विशेष; 'विउस्सिय' (सूअ १, १, २, २३; भग १, १ टी)। ३ विविधता; 'वियक्खमाण', 'विउस्सग्ग' (ओघभा १८८; भग १, टी; आवम)। ४ कुत्सा, खराबी; 'विरूव' (उप ७२८ टी)। ५ अभाव; 'विइण्ह' (से २,१०)। ६ महत्त्व; 'विएअ' (गउड)। ७ भिन्नता; 'विएस' (महा)। ८ ऊँचाई, ऊर्ध्वता; 'विक्खेव' (ओघभा १६३)। ९ पादपूर्त्ति (पउम १७,९७)। १० पुं. पक्षी (से १,१, सुर १६,४३)। ११ वि. उद्दीपक, उत्तेजक। १२ अवबोधक, ज्ञापक; 'सम्मं सम्मत्तवियासउं वरं दिसउ भवियाणं' (विवे १४३)।

वि देखो बि = द्वि; 'ते पुण होज्ज विहत्था कुम्मापुत्तादओ जहन्नेणं' (विसे ३१६९)।

वि वि [विद्] जानकार, विज्ञ (आचा; विसे ५००)। °उच्छा स्त्री [°जुगुप्सा] विद्वान् की निन्दा, साधु की निन्दा (श्रा ६ टी—पत्र ३०)।

वि° स्त्री [विष्] पुरीष, विष्ठा (पण्ह २, १—६९; संति २; औप; विसे ७८१)।

विअ सक [विद्] जानना। वियसि (विसे १६००)। भवि. विच्छं, वेच्छं (पि ५२३; ५२६; प्राप्र; हे ३, १७१)। वकृ. **विअंत** (रंभा)। संकृ. **विइत्ता, विइत्ताणं, विइत्त** (आचा; दस १०, १८)।

विअ न [वियत्] आकाश, गगन (से ६, ४८)। °**चर** वि [°चर] आकाश-विहारी। °**चरपुर** न [°चरपुर] एक विद्याधर-नगर (इक)।

विअ वि [विद्] १ जानकार, विद्वान्; 'तं च भिक्खू परिन्नाय वियं तेसु न मुच्छए' (सूअ १, १, ४, २)। २ विज्ञान, जानकारी (राज)।

विअ देखो **इव** (हे २, १८२; प्राप्र; स्वप्न २७; कुमा; पउम ११, ८१; महा)।

विअ पुं [वृक] श्वापद जन्तु-विशेष, भेड़िया (नाट—उत्तर ७१)।

विअ पुं [व्यय] विगम, विनाश; 'पंचविहे छेयणे पन्नत्ते, तं जहा—उप्पाछेयणे वियच्छेदणे' (ठा ५, ३—पत्र ३४६)।

विअ वि [विगत] विनष्ट, मृत। °**च्चा** स्त्री [°र्चा] मृत आत्मा का शरीर (ठा १—पत्र १६)।

विअ देखो **अविअ** = अपिच (जीव १)।

विअइ वि [विजयिन्] जिसकी जीत हुई हो वह (मा २२)।

विअइ स्त्री [विगति] विगम, विनाश (ठा १—पत्र १६)।

विअइ देखो **विगइ** = विकृति (ठा १—पत्र १६; राज)।

विअइत्ता देखो **विअत्त** = वि + वर्तय्।

विअइल्ल पुं [विचकिल] १ पुष्प-वृक्ष विशेष। २ न. पुष्प-विशेष (हे १; १६६; कप्पू; वा २३; कुमा)। ३ वि. विकच, विकसित (सण)।

विअओलिअ वि [दे] मलिन (दे ७, ७२)।

विअंग सक [व्यङ्गय्] अंग से हीन करना—हाथ, कान आदि को काटना। वियंगेइ (णाया १, १४—पत्र १८५)।

विअंग वि [व्यङ्ग] अंग-हीन; 'वियंगमंगा' (पण्ह १, १—पत्र १८)।

विअंगिअ वि [दे] निन्दित (दे ७, ६६)।

विअंगिअ वि [व्यङ्गित] खण्डित, छिन्न (पण्ह १, ३—पत्र ४५; टी—पत्र ४६)।

विअंजण देखो **वंजण** = व्यञ्जन (प्राकृ ३१; सम्म ७२)।

विअंजिअ वि [व्यञ्जित] व्यक्त किया हुआ, प्रकट किया हुआ (सूअ २, १, २७; ठा ५, २—पत्र ३०८)।

विअंदूत वि [दे] १ अवरोपित। २ मुक्त (षड् १७७)।

विअंति स्त्री [व्यन्ति] अन्त क्रिया। °**कारय** वि [°कारक] अन्त-क्रिया करनेवाला, कर्मों का अन्त करनेवाला, मुक्ति-साधक (आचा १, ८, ४, ३)।

विअंभ अक [वि + जृम्भ्] १ उत्पन्न होना। २ विकसना। ३ जँभाई खाना। विअंभइ (हे ४, १५७; षड्; भवि)। वकृ. **विअंभंत, विअंभमाण** (धात्वा १५२; से १, ४३; गा ४२५; महा)।

विअंभ वि [विदम्भ] निष्कपट, सत्य; 'अयाणयं वियंभसुहस्सं' (स ६६०)।

विअंभण न [विजृम्भण] १ जँभाई, जम्हाई (स ३३६; सुपा १४६)। २ विकाश। ३ उत्पत्ति (भवि; माल ८४)।

विअंभिअ वि [विजृम्भित] १ प्रकाशित (गा ५६४)। २ उत्पन्न (माल ८६)। ३ न. जँभाई (गा ३५२)।

विअंसण वि [विवसन] वस्त्र-रहित, नग्न (प्राकृ ३२)।

विअंसय पुं [दे] व्याध, बहेलिया (दे ७, ७२)।

विअक्क सक [वि + तर्कय्] विचारना, विमर्श करना, मीमांसा करना। वकृ. **वियक्कंत, वियक्कमाण** (सुपा २६४; उप २२० टी)।

विअक्क पुंस्त्री [वितर्क] विमर्श, मीमांसा (औप; सम्मत्त १४१)। स्त्री. °**क्का** (सूअ १, १२, २१; पउम ६३, ६)।

विअक्किय वि [वितर्कित] विमर्शित, विचारित (सण)।

विअक्ख सक [वि + ईक्ष्] देखना। वकृ. **वियक्खमाण** (ओघभा १८८)।

विअक्खण वि [विचक्षण] विद्वान्, पण्डित, दक्ष (महा; प्रासू ४१; भवि; नाट—वेणी २४)।

विअग्ग वि [व्यग्र] व्याकुल (प्राकृ ३१)।

विअग्घ देखो **वग्घ** = व्याघ्र; '—महिसवि (?विय)ग्घछगलदीविया—' (पण्ह १, १—पत्र ७; पि १३४)।

विअग्घ पुं [वैयाघ्र] व्याघ्र-शिशु (पण्ह १, १—पत्र १८)।

विअज्जास देखो **विवज्जास** (नाट—मृच्छ ३२६)।

विअट्ट सक [विसं + वद्] अप्रमाणित करना, असत्य साबित करना। विअट्टइ (हे ४, १२६)।

विअट्ट अक [वि + वृत्] विचरना, विहरना। वकृ. 'गिम्हसमयंसि पत्ते वियट्टमाणे (सु?) वणेसु वणकरेणुविविहदिण्णकयपंसुघाओ तुमं' (णाया १, १—पत्र ६५)।

विअट्ट वि [विवृत्त] निवृत्त, व्यावृत्त; 'विअट्टछउमेणं जिणेणं' (सम १; भग; कप्प; औप; पडि)। °**भोइ** वि [°भोजिन्] प्रतिदिन भोजन करनेवाला (भग)।

विअट्ट पुं [विवर्त] प्रपञ्च (स १७८)।

विअट्ट, विअट्टिअ वि [विसंवदित] संवाद-रहित, अप्रमाणित; 'विअट्टं विसंवइअं' (पाअ; कुमा ६, ८८)।

विअट्ठ वि [विकृष्ट] १ दूर-स्थित। २ क्रिवि. दूर (णाया १, १ टी—पत्र १)।

विअड सक [वि + कटय्] १ प्रकट करना। २ आलोचना करना। वियडेइ (ठा १० टी—पत्र ४८५)। कवकृ. **वियडिज्जंत** (राज)।

विअड वि [व्यर्द] लज्जित, लज्जा-युक्त (णाया १, ८—पत्र १४३)।

विअड वि [विवृत] खुला हुआ, अनावृत (ठा ३, १—पत्र १२१; ५, २—पत्र ३१२)। °**गिह** न [°गृह] चारो तरफ खुला घर, स्थान-मण्डपिका (कप्प; कस)। °**जाण** न [°यान] खुला वाहन, ऊपर से खुला यान (णाया १, १ टी—पत्र ४३)।

विअड न [दे] १ प्रासुक जल, जीव-रहित पानी (सूअ १, ७, २१; ठा ३, ३—पत्र १३८; ५, २—पत्र ३१३; सम ३७; उत्त २, ४; कप्प)। २ मद्य, दारू (पिंड २३६)। ३ प्रासुक आहार, निर्दोष आहार; 'जं किंचि पावगं भगवं तं अकुव्वं वियडं भुंजित्था' (आचा १, ६, १, १८), 'वियडगं भोच्चा' कप्प)।

विअड वि [विकृत] विकार-प्राप्त (आचा; उत्त २, ४; कस; पि २१६)।

विअड वि [विकट] १ प्रकट, खुला (सूअ १, २, २, २२; पंचा १०, १८; पव १५३)। २ विशाल, विस्तीर्ण; '—अकोसायंतपउम-गंभीरवियडनाभे' (उवा; औप; गा १०३; गउड)। ३ सुन्दर, मनोहर (गउड)। ४ प्रभूत, प्रचुर (सूअ २, २, १८)। ५ पुं. एक ज्योतिष्क महाग्रह (ठा २, ३—पत्र ७८; सुज्ज २०)। ६ एक विद्याधर-राजा (पउम १०, २०)। °भोइ वि [°भोजिन्] प्रकाश में भोजन करनेवाला, दिन में ही भोजन करनेवाला (सम १६)। °वइ, °वाइ पुं [°पातिन्] पर्वत-विशेष (ठा ४, २—पत्र २२३; इक; ठा २, ३—पत्र ६६; ८०)।

विअड अक [विकटय्] विस्तीर्ण होना। वियडेइ (गउड ११६८)।

विअडण स्त्रीन [विकटन] १ अतिचारों की आलोचना। २ स्वाभिप्राय-निवेदन (पंचा २, २७)। स्त्री. °णा (ओघ ६१३; ७६१; पिंडभा ४१; श्रावक ३७६; पंचा १६, १६)।

विअडि स्त्री [वितटि] १ खराब किनारा। २ अटवी, जंगल (णाया १, १—पत्र ६३)।

विअड्डि स्त्री [वितर्दि] वेदिका, हवन-स्थान, वेदी, चौतरा (हे २, ३६; कुमा; प्राप्र)।

विअड्ढ वि [विदग्ध] १ निपुण, कुशल। २ पण्डित, विद्वान् (हे २, ४०; गउड; महा)।

विअड्ढग वि [विकर्षक] खींचनेवाला; 'महाघणविअट्ट(ड्ढ)का' (पण्ह १, ४—पत्र ७२)।

विअड्ढा स्त्री [विदग्धा] नायिका का एक भेद (कुमा)।

विअड्ढिम पुंस्त्री [विदग्धता] १ निपुणता। २ पाण्डित्य (कुप्र ४०५; वज्जा १३४)।

विअण पुंन [व्यजन] बेना, पंखा (प्राप्र; हे १, ४६; पण्ह १, १—पत्र ८)।

विअण वि [विजन] निर्जन, जन-रहित; 'लंघंति वियणकाणणं' (भवि)।

विअणा स्त्री [वेदना] १ ज्ञान। २ सुख-दुःख आदि का अनुभव। ३ विवाह। (प्राप्र; हे १, १४६)। ४ पीड़ा, दुःख, संताप (पाअ; गउड; कुमा)।

विअणिय वि [वितनित, वितत] विस्तीर्ण (भवि)।

विअणिय वि [विगणित] अनादृत, तिरस्कृत (भवि)।

विअण्ण वि [विपन्न] मृत (गा ५४६)।

विअण्ह वि [वितृष्ण] तृष्णा-रहित (गा ६३)।

विअत्त सक [वि + वर्तय्] घूम कर जाना। संकृ. वियत्तूण, वियइत्ता, विउत्ता (आचा १, ८, १, २)।

विअत्त वि [व्यक्त] १ परिस्फुट (सूअ १, १, २, २५)। २ अमुग्ध, विवेकी (सूअ १, १, २, ११)। ३ वृद्ध, परिणत-वयस्क; 'णिग्गंथाणं सखुड्डयविअत्ताणं' (सम ३५)। ४ पुं. भगवान् महावीर का चतुर्थ गणधर—प्रमुख शिष्य (सम १६)। ५ गीतार्थ मुनि (ठा ४, १ टी—पत्र २००)। °किच्च न [°कृत्य] गीतार्थ का कर्तव्य—अनुष्ठान (ठा ४, १ टी)।

विअत्त वि [विदत्त] विशेष रूप से दिया हुआ (ठा ४, १ टी—पत्र २००)।

विअत्त पुं [विवर्त] एक ज्योतिष्क महाग्रह (ठा २, ३ टी—पत्र ७६; सुज्ज १६ टी—पत्र २६६)।

विअद्द वि [वितर्द] हिंसक (आचा १, ६, ४, ५)।

विअद्ध देखो **विअड्ढ** = विदग्ध (पच ६०; नाट—मालती ५४)।

विअन्नु देखो **विन्नु** (सट्ठि ८)।

विअप्प सक [वि + कल्पय्] १ विचार करना। २ संशय करना। वियप्पइ, विअप्पेइ (भवि, गा ४७६)। वकृ. वियप्पंत (महा)। कृ. वियप्प (उप ७२८ टी)।

विअप्प पुं [विकल्प] १ विविध तरह की कल्पना; 'तं जयइ विरुद्धं पिव वियप्पजालं कइंदाण' (गउड)। २ वितर्क, विचार (महा)। ३ भेद, प्रकार; 'दव्वट्ठिओ अ पज्ज-वनओ अ, सेसा विअप्पा सिं' (सम्म ३)। देखो **विगप्प** = विकल्प।

विअप्पण न [विकल्पन] ऊपर देखो; 'एगंतुच्छेअम्मि वि सुहदुक्खविअप्पणमजुत्तं' (सम्म १८; स ६८४)।

विअप्पणा स्त्री [विकल्पना] ऊपर देखो (धर्मसं २१०)।

विअब्भ देखो **विदब्भ** (प्राकृ ३८; पउम २६, ८)।

विअम्ह देखो **विअंभ** = वि + जृम्भ्। विअ-म्हइ (प्राकृ ६४)।

विअय देखो **विजय** = विजय (औप; गउड)।

विअय वि [वितत] १ विस्तीर्ण, विशाल (महा)। २ प्रसारित, फैलाया हुआ (विसे २०६१; श्रावक २०३)। °पक्खि पुं [°पक्षिन्] मनुष्य-लोक से बाहर रहनेवाले पक्षी की एक जाति; 'नरलोगाओ बाहिं समुग्गपक्खी विअयपक्खी' (जी २२)। देखो **वितत** = वितत।

विअर सक [वि + चर्] विहरना, घूमना-फिरना। विअरइ (गउड ३८८)।

विअर सक [वि + तृ] देना, अर्पण करना। वियरइ (कस; भवि), वियरेज्जा (कप्प)। कर्म. वियरिज्जइ (उत्त १२, १०)। वकृ. वियरंत (काल)।

विअर पुं [दे] १ नदी आदि जलाशय सूख जाने पर पानी निकालने के लिए उसमें किया जाता गर्त्त, गुजराती में 'वियडो' (ठा ४, ४—पत्र २८१; णाया १, १—पत्र ६३; १, ५—पत्र ६६)। २ गर्त्त, खड्डा; 'तत्थ गुलस्स जाव अन्नेसिं च बहूणं जिब्भिदिय-पाउग्गाणं दव्वाणं पुंजे य निकरे य करेंति, करेत्ता वियरए खणंति···वियरे भरंति' (णाया १, १७—पत्र २२६)।

विअरण न [विचरण] विहार, चलना-फिरना (अजि १६)।

विअरण न [वितरण] प्रदान, अर्पण, (पंचा ७, ६; उप ५६७ टी; सण)।
विअरिअ वि [विचरित] जिसने विचरण किया हो वह, विहृत (महा); 'विमलीकयम्ह चक्खू जहत्थया वियरिया गुणा तुज्झं' (पिंड ४६३)।
विअल अक [भुज्] मोड़ना, वक्र करना। विअलइ (धात्वा १५२)।
विअल अक [वि + गल्] १ गल जाना, क्षीण होना। २ टपकना, झरना। वकृ. विअलंत (गा ३६८; सुर ४, १२७)।
विअल अक [ओजय्] मजबूत होना (संक्षि ३५)।
विअल वि [विकल] १ हीन, असंपूर्ण (पण्ह १, ३—पत्र ४०)। २ रहित, वर्जित, वन्ध्य (सा २)। ३ विह्वल, व्याकुल; 'विअलुद्धरणसहावा हुवंति जइ केवि सप्पुरिसा' (गा २८५)। देखो विगल = विकल।
विअल सक [विकलय्] विकल बनाना। वियलई (सण)।
विअल देखो विअड = विकट (से ८, २१)।
विअल देखो विदल = द्विदल (संबोध ४४)।
विअलंबल वि [दे] दीर्घ, लम्बा (दे ७, ३३)।
विअलिअ वि [विगलित] १ नाश-प्राप्त, नष्ट (से २, ४५; सण)। २ पतित, टपक कर गिरा हुआ; 'विअलिअं उच्चत्तं' (पाअ)।
विअल्ल अक [वि + चल्] १ क्षुब्ध होना। २ अव्यवस्थित होना; 'खलइ जीहा, मुहवयणु वियल्लइ' (भवि)।
विअस अक [वि + कस्] खिलना। विअसइ (प्राकृ ७६; हे ४, १९५)। वकृ. विअसंत, विअसमाण (औप; सुपा २०)।
विअसावय वि [विकासक] विकसित करनेवाला (गउड)।
विअसाविअ वि [विकासित] विकसित किया हुआ (सुपा २२५)।
विअसिअ वि [विकसित] विकास-प्राप्त (गा १३; पाअ; सुर २, २२२; ४, ५८; औप)।
विअह देखो विजह = वि + हा। संकृ. वियहित्तु (आचा १, १, ३, २)।
विआउआ स्त्री [विपादिका] रोग-विशेष, बिवाई, या बेवाई (दे ८, ७१)।
विआउरी स्त्री [विजनयित्री] ब्यानेवाली, प्रसव करनेवाली (णाया १, २—पत्र ७६)।
विआगर देखो वागर। वियागरेइ, वियागरंति (आचा २, २, ३, १; सूअ १, १४, १८), वियागरे, वियागरेज्जा (सूअ १, ६, २५; विसे ३३६; सूअ १, १४, १६)। वकृ. वियागरेमाण (आचा २, २, ३, १)।
विआघाय देखो वाघाय (आचा)।
विआण सक [वि + ज्ञा] जानना, मालूम करना। वियाणइ, विआणंति (भग; गा ४८), वियाणासि (पि ५१०), वियाणाहि, वियाणेहि (पण्ण १—पत्र ३६; महा)। कर्म. वियाणिज्जइ (सट्ठि १६)। वकृ. वियाणंत, वियाणमाण (औप; उव)। संकृ. वियाणिआ, वियाणिऊण, वियाणित्ता (दसचू १, १८; महा; औप; कप्प)। कृ. वियाणियव्व (उप पृ ६०)।
विआण न [विज्ञान] जानकारी, ज्ञान; 'एक्कंपि भाय ! दुलहं जिणमयविहिरियणसुवियाणं' (सट्ठि १६)। देखो विन्नाण।
विआण न [वितान] १ विस्तार, फैलाव (गउड १७६; ३८६; ५६२)। २ वृत्ति-विशेष। ३ अवसर। ४ यज्ञ (हे १, १७७; प्राप्र)। ५ पुंन. चन्द्रातप, चँदवा, आच्छादन-विशेष (गउड २००; ११८०; हे १, १७७; प्राप्र)।
विआणग वि [विज्ञायक] जानकार, विज्ञ (उप पृ ११६)।
विआणण न [विज्ञान] जानना, मालूम करना (स २६७; सुर ३, ७)।
वियाणय देखो विआणग (सम्म १६०; भग; औप; सुर ६, २१; सण)।
विआणिअ वि [विज्ञात] जाना हुआ, विदित (स २६७; सुपा ३६१; महा; सुर ४, २१४, १२, ७१; पिंग)।
विआय सक [वि + जनय्] जन्म देना, प्रसव करना; 'गुजराती में 'वियावु''; 'वियायइ पढमं जं पिउगिहे नारी' (उप ६६८ टी)। संकृ. विआय (राज)।
विआर सक [वि + कारय्] विकृत करना। विआरेदि (शौ) (मा ५१)।
विआर सक [वि + चारय्] विचारना, विमर्श करना। विआरेइ (प्राकृ ७१; भग), वियारिज (सत्त ३६)। वकृ. विआरयंत (श्रा १६)। कवकृ. वियारिज्जंत (सुपा १४८)। संकृ. विआरिअ (अभि ४४)। कृ. विआरणिज्ज (श्रा १४)।
विआर सक [वि + दारय्] फाड़ना, चीरना। विआरे (अप) (पिंग)। संकृ. वियारिऊण (श २६०)।
विआर पुं [विकार] विकृति; प्रकृति का भिन्न रूपवाला परिणाम (हे ३, २३; गउड; सुर ३, २६; प्रासू ४६)।
विआर पुं [विचार] १ तत्त्व-निर्णय (गउड; विचार १; दं १)। २ तत्त्व-निर्णय के अनुकूल शब्द-रचना (जी ५१)। ३ ख्याल, सोच; 'अण्णो बक्करकालो अण्णो कज्जविआरकालो' (कप्पू)। ४ दिशा-फरागत के लिए बाहर जाना (पव २; १०१)। ५ गमन की अनुकूलता (पव १०४)। ६ विचरण। ७ अवकाश; 'अंतेउरे य दिण्णवियारे जाते यावि होत्था' (विपा १, ५—पत्र ६३)। ८ विमर्श, मीमांसा। ९ मत, अभिप्राय (भवि)। °धवल पुं [धवल] एक राजा का नाम (उप ७२८ टी; महा)। °भूमि स्त्री [°भूमि] दिशा-फरागत जाने का स्थान (कप्प; उप १४२ टी)।
विआरण न [विचारण] १ विचार करना (सुपा ४६४; सार्ध ६०)। २ वि. विचार करनेवाला; 'जय जिणनाह समत्थवत्थुपरमत्थवियारण' (सुपा ५२)। ३ वि. विचरण करनेवाला; 'अंबरंतरविआरणिआहिं' (अजि २६)।
विआरण न [विदारण] चीरना, फाड़ना (सार्ध ४६; स २४१)।
विआरण देखो वागरण (कुप्र २४५)।
विआरण वि [वैदारण] विदारण-संबन्धी, विदारण से उत्पन्न होनेवाला। स्त्री. °णिआ (नव १६)।
विआरणा स्त्री [विचारणा] विचार, विमर्श (उप ७२८ टी; स २४७; पंचा ११, ३४)।

विआरणा स्त्री [वितारणा] विप्रतारण, ठगाई (उप ६११)।

विआरय वि [विचारक] विचार करनेवाला (पउम ८, ५)।

विआरि वि [विचारिन्] ऊपर देखो (औप)।

विआरिअ वि [विचारित] जिसका विचार किया गया हो वह (दे १, १६८)।

विआरिअ वि [विदारित] १ खोला हुआ, फाड़ा हुआ; 'दूरविआरिअमुहं महाकायं—सीहं' (णमि १२)। २ विदीर्ण किया हुआ, चीरा हुआ (भवि)।

विआरिअ वि [वितारित] १ अर्पित, दिया गया; 'वालि या सिरोहरा वियारिया दिट्ठी' (स ३३७)। २ ठगा हुआ, विप्रतारित; 'जइ पुण धुत्तेण अहं वियारिओ' (सुपा ३२४)।

विआरिआ स्त्री [दे] पूर्वाह्न का भोजन (दे ७, ७१)।

विआरिल्ल } वि [विकारवत्] विकारवाला,
विआरुल्ल } विकारयुक्त (प्राप्र; हे २, १५९)। स्त्री. °ल्ला (सुपा १६४)।

विआल देखो विआल = वि + चारय्। वकृ. वियालंत (उवर ८२)।

विआल देखो विआर = वि + दारय्। कृ. वियालणिय (सूअनि ३६; ३७)।

विआल पुं [विकाल] सन्ध्या, साँझ, सायंकाल (दे ७, ६१; कप्पू; विपा १, ५—पत्र ६३; हे ४, ३७७; ४२४; कस, भवि)। °चारि वि [°चारिन्] विकाल में घूमनेवाला (णाया १, १—पत्र ३८; १, ४; औप)।

विआल पुं [दे] चोर, तस्कर (दे ७, ६०)।

विआल वि [व्याल] दुष्ट; 'मोणं वियालं पडिपहे पेहाए, महिसं वियालं पडिपहे पेहाए, चिताचेल्लरयं वियालं पडिपहे पेहाए' (आचा २, १, ५, ४)। देखो वाल = व्याल।

विआल देखो विचाल (राज)।

विआलग देखो विआलय = विकालक (ठा २, ३—पत्र ७७)।

विआलणा देखो विआरण = विचारण (ओघ ६६; विसे १७६; पिंड ५६७)।

विआलणा देखो विआरणा = विचारणा (विसे १४७ टी; पिंड ५६७)।

विआलय वि [विदारक] विदारण-कर्त्ता (सूअनि ३६)।

विआलय पुं [विकालक] एक महाग्रह, ज्योतिष्क देव-विशेष (सुज्ज २०)।

विआलिउ न [दे] व्यालू, सायंकाल का भोजन; 'जा महु पुत्तहु करयलि लग्गइ सा अमिएण वियालिउ मग्गइ' (भवि)।

विआलुअ वि [दे] असहन, असहिष्णु (दे ७, ६८)।

विआव सक [वि + आप्] व्याप्त करना (प्रामा)।

विआवड देखो वावड = व्यापृत (ओघभा १९९; पउम २, ६)।

विआवत्त पुं [व्यावर्त्त] १ घोष और महाघोष इन्द्रों के दक्षिण दिशा के लोकपाल (ठा ४, १—पत्र १९८; इक)। २ ऋजुवालिका नदी के तीर पर स्थित एक प्राचीन चैत्य (कप्प)। ३ पुंन. एक देव-विमान (सम ३२)।

विआवाय पुं [व्यापात] भ्रंश, नाश (आचा १, ६, ५, ६ टि)।

विआविअ देखो वावढ = व्यापृत (धर्मसं ६७६)।

विआस पुं [विकाश] १ मुँह आदि की फाड़—खुलापन, 'थूलं वियासं मुहे' (सूअ १, ५, २, ३)। २ अवकाश (गउड २०१)।

विआस पुं [विकास] प्रफुल्लता (पि १०२; भवि)।

विआस देखो वास = व्यास (राज)।

विआसइत्तअ (शौ) वि [विकासयितृक] विकसित करनेवाला (पि ६००)।

विआसग वि [विकासक] ऊपर देखो (सुपा ६५८)।

विआसर वि [विकस्वर] विकसनेवाला, प्रफुल्ल (षड्)।

विआसि } वि [विकासिन्] ऊपर देखो
विआसिल्ल } (पि ४०५; सुपा ४०२; ६)।

विआह सक [व्या + ख्या] व्याख्या करना। कर्म. विआहिज्जंति (णंदि २२९)।

विआह पुं [विवाह] १ व्याह, परिणयन, शादी (गा ४७६; नाट—मालती ६)। २ विविध प्रवाह। ३ विशिष्ट प्रवाह। ४ वि. विशिष्ट संतानवाला (भग १, १ टी)। °पण्णत्ति स्त्री [°प्रज्ञप्ति] पाँचवाँ जैन अंग-ग्रन्थ (भग १, १ टी)।

विआह वि [विबाध] बाध-रहित (भग १, १ टी)। °पण्णत्ति स्त्री [°प्रज्ञप्ति] पाँचवाँ जैन अंग-ग्रन्थ (भग १, १ टी)।

विआह° स्त्री [व्याख्या] १ विशद रूप से अर्थ का प्रतिपादन। २ वृत्ति, विवरण। °पण्णत्ति स्त्री [°प्रज्ञप्ति] पाँचवाँ जैन अंग-ग्रन्थ (भग १, १ टी)।

विआहिअ वि [व्याख्यात] १ जिसकी व्याख्या की गई हो वह, वर्णित (श्रा २२)। २ उक्त, कथित; 'स एव भव्वसत्ताणं चक्खुभूए विआहिए' (गच्छ १, २६; भग)।

विइ स्त्री [वृति] रज्जु-बन्धन (औप)। देखो वइ = वृति।

विइअ वि [विदित] ज्ञात, जाना हुआ (पाअ; पिंड ८२; संबोध ४६; स १६२; महा)।

विइइन्न देखो विइकिण्ण (भग १, १ टी—पत्र ३७)।

विइंचिअ वि [विविक्त] विनाशित (स १३५)।

विइंत सक [वि + कृत्] काटना, छेदना। विइंतइ (णाया १, १४ टी—पत्र १८७)।

विइंत देखो विचिंत। वकृ. विइंतंत (गउड ६७८)।

विइकिण्ण वि [व्यतिकीर्ण] व्याप्त, फैला हुआ (भग १, १—पत्र ३६)।

विइक्कंत वि [व्यतिक्रान्त] व्यतीत, गुजरा हुआ (ठा ६—पत्र ४४५; उवा; कप्प)।

विइगिंछा } देखो वितिगिंछा (आचा;
विइगिच्छा } कस; उवा)।

विइगिट्ठ वि [व्यतिकृष्ट] दूर-स्थित, विप्रकृष्ट (बृह १)।

विइगिण्ण देखो विइकिण्ण (कस)।

विइज्जंत देखो वीअ = वीजय्।

विइज्जंत देखो विकिर।

विइण्ण वि [विकीर्ण] १ बिखरा हुआ; 'विइण्णकेसी' (उवा)। २ विक्षिप्त, फेंका हुआ (से १०, ३)। देखो विकिण्ण, विकिन्न।

विइण्ण वि [वितीर्ण] दिया हुआ, अर्पित (गा ३४६; ९१७; से ८, ६५; १०, ३; हे ४, ४४४; महा)।

विइण्ह वि [वितृष्ण] तृष्णा-रहित, निःस्पृह (से २, १०; प्राप्र; गा ६३; १७६)।

विइत्त देखो विचित्त (गउड; स २३६; ७४०)।

विइत्त देखो विवित्त (स ७४०)।

विइत्ता } देखो विअ = विद्।
विइत्ताणं }

विइत्तिद (शौ) देखो विचित्तिय (स्वप्न ३६)।

विइत्तु देखो विअ = विद्।

विइन्न देखो विइण्ण = वितीर्ण (सुर ४, ११)।

विइमिस्स वि [व्यतिमिश्र] मिश्रित, मिला हुआ (आचा)।

विउ वि [विद्, विद्वस्] विद्वान्, पण्डित, जानकार (गाया १, १६; उप ७६८ टी; सुर १, १३५; सूअ २, १, ६०; रंभा)। °प्पकड स्त्री [°प्रकृत] १ विद्वान् द्वारा प्रकान्त। २ विद्वान् द्वारा किया हुआ (भग ७, १० टी—पत्र ३२५; १८, ७—पत्र ७५०)।

विउअ वि [वियुत] वियुक्त, रहित; 'दव्वं पज्जवविउअं दव्व-विउत्ता य पज्जवा नत्थि' (सम्म १२)।

विउअ वि [विवृत] १ विस्तृत। २ व्याख्यात (हे १, १३१)।

विउअ (अप) देखो विओअ = वियोग (हे ४, ४१६)।

विउंचिआ स्त्री [दे. विचर्चिका] रोग-विशेष, पामा रोग का एक भेद; 'केवि विउंचिअपामासमन्निया सेवगा तस्स' (सिरि ११७)।

विउंज सक [वि + युज्] विशेष रूप से जोड़ना। विउंजंति (सूअ २, २, २१)।

विउक्कंति स्त्री [व्युत्क्रान्ति] उत्पत्ति; 'अविउक्कंतियं चयमाणे' (भग १, ७)।

विउक्कंति स्त्री [व्युत्क्रान्ति, व्यवक्रान्ति] मरण, मौत (भग १, ७)।

विउक्कम सक [व्युत् + क्रम्] १ परित्याग करना। २ उल्लंघन करना। ३ अक. च्युत होना, नष्ट होना, मरना। ४ उत्पन्न होना। विउक्कमंति (भग; ठा ३, ३—पत्र १४१)। संकृ. विउक्कम्म (सूअ १, १, १, ६; उत्त ५; १५; आचा १, ८, १, २)।

विउक्कस सक [व्युत् + कर्षय्] गर्व करना, बड़ाई करना। विउक्कसेज्जा, (सूअ १, १३, ६), विउक्कसे (आचा १, ६, ४, २)।

विउक्कस पुं [व्युत्कर्ष] गर्व, अभिमान (सूअ १, १, २, १२)।

विउच्छा देखो वि-उच्छा = विद्-जुगुप्सा।

विउच्छेअ पुं [व्यवच्छेद] विनाश (पंचा १७, १८)।

विउज्जम अक [व्युद् + यम्] विशेष उद्यम करना। वकृ. 'धणियंपि विउज्जमंताणं' (पउम १०२, १३७)।

विउज्झ अक [वि + बुध्] जागना। विउज्झइ (भवि; सण)।

विउट्ट सक [वि + कुट्टय्] विच्छेद करना, विनाश करना। हेकृ. विउट्टित्तए (ठा २, १—पत्र ५६; कस)।

विउट्ट सक [वि + त्रोटय्] तोड़ डालना। विउट्टइ (सूअ २, २, २०)। हेकृ. विउट्टित्तए (ठा २, १—पत्र ५६)।

विउट्ट अक [वि + वृत्] १ उत्पन्न होना। २ निवृत्त होना। विउट्टंति (सूअ २, ३, १), विउट्टेज्जा (ठा ८ टी—पत्र ४१८)।

विउट्ट सक [वि + वर्तय्] १ विच्छेद करना। २ घूमकर जाना। विउट्टंति (स १७८)। संकृ. विउट्टाणं (आचा १, ८, १, २)। हेकृ. विउट्टित्तए (ठा २, १—पत्र ५६)।

विउट्ट देखो विअट्ट = विवृत (कप्प)।

विउट्टण न [विवर्तन] निवृत्ति (ओघ ७९१)।

विउट्टण न [विकुट्टन] १ विच्छेद। २ आलोचना, अतिचार-विच्छेद (ओघ ७९१)। ३ वि. विच्छेद-कर्ता (धर्मसं ६६६)।

विउट्टणा स्त्री [विकुट्टना] १ विविध कुट्टन। २ पीड़ा, संताप (सूअ १, १२, २१)।

विउट्ठिअ वि [व्युत्थित] जो विरोध में खड़ा हुआ हो वह, विरोधी बना हुआ (सूअ १, १४, ८)।

विउड सक [वि + नाशय्] विनाश करना। विउडइ (हे ४, ३१)। कर्म. विउडिज्जंति (स ६७६)।

विउडण न [विनाशन] १ विनाश (स २७; ६९१)। २ वि. विनाश-कर्ता (स ३७; २८२)।

विउडिअ वि [विनाशित] नष्ट किया गया (पाअ; कुमा; उप ७२८ टी)।

विउण वि [विगुण] गुण-रहित, गुण-हीन (दे ६, ७८)।

विउत्त वि [वियुक्त] विरहित, वियोग-प्राप्त (सुर ३, १२३; १०, १४५; सुपा ११०; काल; सण)।

विउत्ता देखो विअत्त = वि + वर्तय्।

विउत्थिअ देखो विउट्ठिअ (कुप्र २२४; ३६६)।

विउद देखो विउअ = विवृत (प्राप्र)।

विउद्ध वि [विबुद्ध] १ जागृत (सुपा १४०)। २ विकसित (स ७६८)।

विउप्पकड वि [व्युत्प्रकट] अतिशय प्रकट—व्यक्त (भग ७, १० टी—पत्र ३२५)।

विउब्भाअ अक [व्युद् + भ्राज्] शोभना, दीपना, चमकना। वकृ. विउब्भाएमाण (भग ३, २—पत्र १७३)।

विउब्भाअ सक [व्युद् + भ्राजय्] शोभित करना। वकृ. विउब्भाएमाण (भग ३, २)।

विउम वि [विद्वस्] विद्वान्, विज्ञ; 'विउमं ता पयहिज्ज संथवं' (सूअ १, २, २, ११)।

विउर देखो विदुर (वेणी १३४)।

विउल वि [विपुल] १ प्रभूत, प्रचुर। २ विस्तीर्ण, विशाल (उवा; औप)। ३ उत्तम, श्रेष्ठ (भग ६, ३३)। ४ अगाध, गम्भीर (प्राप्र)। ५ पुं. राजगिर के समीप का एक पर्वत (पउम २, ३८)। °जस पुं [°यशस्] एक जिनदेव का नाम (उप ६८६ टी)। °मइ स्त्री [°मति] मनःपर्यव नामक ज्ञान का एक भेद (कम्म १, ८; आवम)। २ वि. उक्त ज्ञानवाला (कप्प; औप)। °अरी स्त्री [°करी] विद्या-विशेष (पउम ७, १३८)। देखो विपुल।

विउव देखो विउव्व = वैक्रिय (कम्म ३, २)।

विउवसिय देखो विओसिय = व्यवशमित (राज)।

विउवाय पुं [व्युत्पात] हिंसा, प्राणि-वध (सूम २, ४, ३)।

विउव्व सक [वि + कृ, वि + कुर्व्] १ बनाना—दिव्य सामर्थ्य से उत्पन्न करना। २ अलंकृत करना मण्डित करना। विउव्वइ, विउव्वए (भग; कप्प; महा; पि ५०८)। भूका. विउव्विसु। भवि. विउव्विस्सति (भग ३, १—पत्र १५६), विउव्विस्सामि (पि ५३३)। वकृ. **विउव्वमाण** (सुज २०)। कवकृ. विउव्विज्जमाण (ठा १०—पत्र ४७२)। संकृ. **विउव्विऊण, विउव्विऊणं, विउव्वित्ता,** विउव्विउं (महा; पि ५८५; भग; कस; सुपा ४७)। हेकृ. विउव्वित्तए (पि ५७८)।

विउव्व न [वैक्रिय] १ शरीर-विशेष, अनेक स्वरूपों और क्रियाओं को करने में समर्थ शरीर (पउम १०२, ६८; पव १६२; कम्म १, ३७)। २ कर्म-विशेष; वैक्रिय शरीर की प्राप्ति का कारण-भूत कर्म (कम्म १, ३३)। ३ वि. वैक्रिय शरीर से संबन्ध रखनेवाला (कम्म ४, २६)।

विउव्वणया, विउव्वणा स्त्री [विक्रिया, विकुर्वणा] १ बनावट, शक्ति-विशेष से किया जाता वस्तु-निर्माण (सूअनि १६३; औप; पउम ११७, ३१; पव २३०)। २ शक्ति-विशेष, वैक्रिय-करण शक्ति (देवेन्द्र २३०)।

विउव्वाढ वि [दे] १ विस्तीर्ण। दुःख-रहित (दे १, १२६)।

विउव्वि वि [वैक्रियिन्, विकुर्विन्] १ विकुर्वणा करनेवाला (उप ३५७ टी)। २ वैक्रिय-शरीरवाला (उत्त १३, ३२; सुख १३, ३२)।

विउव्विअ वि [विकृत, विकुर्वित] १ निर्मित, बनाया हुआ (भग; महा; औप; सुपा ८८)। २ अलंकृत, विभूषित (बृह १)।

विउव्विअ वि [वैक्रियिक] वैक्रिय शरीर से संबन्ध रखनेवाला (कम्म ४, २४)। देखो **वेउव्विअ**।

विउस सक [व्युत् + सृज्] फेंकना। विउसिज्जा (आचा २, ३, २, ५), विउसिरे (आचा २, १६, १)।

विउस वि [विद्वस्] विज्ञ, पण्डित (पाअ; उप पृ १०६; सुपा १०७; प्रासू ६३; भवि; महा)। 'विउसेहिं' (चेइय ७७४), 'विउसाणं' (सम्मत्त २१६)।

विउसग्ग देखो **विओसग्ग** (हे २, १७४; षड्)।

विउसमण न [व्युपशमन, व्यवशमन] १ उपशम, उपक्षय। २ सुरत का अवसान; 'ता से णं पुरिसे विउसमणकालसमयंसि केरिसए सायासोक्खं पच्चणुब्भवमाणे विहरति' (सुज्ज २०; भग १२, ६—पत्र ५७८)। ३ वि. विनाशक; 'सव्वदुक्खपावाण विउसमणं' (पण्ह २, १—पत्र १००)।

विउसमणया स्त्री [व्यवशमना] उपशम, क्रोध-परित्याग (भग १७, ३—पत्र ७२६)।

विउसमिय देखो **विओसमिय** (राज)।

विउसरण न [व्युत्सर्जन] परित्याग (दंस १)।

विउसरणया स्त्री [व्युत्सर्जना] ऊपर देखो (भग; णाया १, १—पत्र ४६)।

विउसव देखो **विओसव**। संकृ. **विउसवेत्ता** (कस १, ३५ टि)।

विउसवण देखो **विउसमण** (पण्ह २, ४—पत्र १३१)।

विउसविय देखो **विओसविय** (ठा ६—पत्र ३७०)।

विउसिज्जा देखो **विओसिज्जा** (आचा १, ६, २, २)।

विउसिरणया देखो **विउसरणया** (राय १२८)।

विउस्स सक [वि + उश्] विशेष बोलना। विउस्संति (सूअ १, १, २, २३)।

विउस्स अक [विद्वस्य्] विद्वान् की तरह आचरण करना। विउस्संति (सूअ १, १, २, २३)।

विउस्सग्ग देखो **विओसग्ग** (भग १, ६; उत्त ३०, ३०)।

विउस्सित्त वि [व्युत्सित, व्युत्सिक्त] अभिनिविष्ट, कदाग्रह-युक्त (सूअ १, १, १, ६)।

विउस्सिय वि [व्युषित] विशेष रूप से रहा हुआ (सूअ १, १, २, २३)।

विउस्सिय वि [व्युच्छ्रित] विविध तरह से आश्रित; 'संसारं ते विउस्सिया' (सूअ १, १, २, २३)।

विउह सक [व्यूह्] प्रेरणा करना। संकृ. **विउहित्ताण** (दस ५, १, २२)।

विउह वि [विबुध] १ पण्डित, विद्वान्। २ पुं. देव, सुर (हे १, १७७)। देखो **विबुह**।

विऊरिअ वि [दे] नष्ट, नाश-प्राप्त (दे ७, ७२)।

विऊसिर सक [व्युत् + सृज्] परित्याग करना; 'विऊसिरे विन्नु अगारबंधणं' (आचा २, १६, १)।

विऊह पुं [व्यूह] रचना-विशेष (पंचा ८, ३०)।

विएअ वि [वितेजस्] महान् प्रकाश, 'अचंतविएएणवि गरुयाण ण
णिव्वडंति संकप्पा।
विज्जुज्जुओ बहलत्तेण मोहेइ अच्छीइं' (गउड)।

विएऊण अ [दे] चुनकर, 'सुयसागरा विए-ऊण जेण सुयरयणमुत्तमं दिण्णं' (पण्ण १—पत्र ४)।

विएस पुं [विदेश] १ देशान्तर, परदेश (सिरि ४६७; महा)। २ कुत्सित ग्राम, खराब गाँव। ३ बन्धन-स्थान (गा ७६)।

विओअ पुं [वियोग] जुदाई, बिछोह, विरह (स्वप्न ६३; अभि ४६; हे १, १७७; सुर ४, १५२; महा)।

विओइअ वि [वियोजित] जुदा किया हुआ (से ६, ७१; गा १३२; स ६८; सुर १५, २१७)।

विओग देखो **विओअ** (सुर २, २१५; ४, १५१; महा)।

विओगिय वि [वियोगित] वियोग-प्राप्त (धर्मवि १३१)।

विओज सक [वि + योजय्] अलग करना। विओजयंति (सूअ १, ५, १, १६)।

विओजय वि [वियोजक] वियोग-कारक (स ७५०)।

विओदर पुं [वृकोदर] भीमसेन, एक पाण्डव (नाट—वेणी ३६)।

विओयण न [वियोजन] वियोग, बिछोह (सुर ११, ३२)।

विओरमण न [व्युपरमण] विराधना, विनाश; 'छक्कायविओरमणं' (ओघभा १६०; ओघ ३२६)।

विओल वि [दे] आविग्न, उद्वेग युक्त (दे ७, ६३)।

विओवाय पुं [व्यवपात] भ्रंश, नाश (आचा; सूअ १, ३, ३, ४)।

विओसग्ग पुं [व्युत्सर्ग] १ परित्याग। २ तप-विशेष, निरीहपन से शरीर आदि का त्याग (औप)।

विओसमण देखो **विउसमण** (पराह २, २—पत्र ११८; २, ५—पत्र १४६)।

विओसमिय वि [व्यवशमित] उपशान्त किया हुआ (कस ६, १ टि)।

विओसरणया देखो **विउसरणया** (औप)।

विओसव सक [व्यव + शमय्] उपशान्त करना, ठण्ढ़ा करना, दबा देना। संकृ. 'तं अहिगरणं अ- विओसवेत्ता' (कस)।

विओसविय } देखो **विओसमिय**; 'अवि-
विओसिय } ओसवियपाहुडे' (कस १, ३५, ४, ५); 'विओसवियं वा पुणो उदीरित्तए' (कस ६, १; ४, ५ टि)।

विओसिज्जा अ [व्युत्सृज्य] परित्याग कर (आचा १, ६, २, १)।

विओसिय वि [व्यवसित] पर्यवसित, समाप्त किया हुआ (सूअ १, १, ३, ५)।

विओसिय वि [विकोशित] कोश-रहित, निरावरण, नंगा; 'विउ(?ओ)सियवरासि—' (पराह १, ३—पत्र ४५)।

विओसिर देखो **विऊसिर** (पि २३५)।

विओह पुं [विबोध] जागरण, जागृति (भवि)।

विंख न [दे] वाद्य-विशेष (राज)।

विंचिणिअ वि [दे] १ पाटित, विदारित। २ धारा (दे ७, ६३)।

विंचुअ पुं [वृश्चिक] जन्तु-विशेष, बिच्छू (हे १, १२८, २, १६; ८९)।

विंछ अक [वि + घट्] अलग होना। विंछइ (प्राकृ ७१)।

विंछिअ } देखो **विंचुअ** (हे १, २६; २,
विंछुअ } १६; सुख ३६, १४८; पउम ३९, १७; प्राप्र; प्राकृ २३; गा २३७ अ)।

विंजण देखो **वंजण**; 'तेत्तीसविंजणाइं' (चंड)।

विंजण देखो **विअण** = व्यजन; गुजराती में 'विंजणो' (रंभा २०)।

विंझ पुं [विन्ध्य] १ पर्वत विशेष, विन्ध्याचल (गा ११५; गाया १, १—पत्र ६४)। २ व्याध, बहेलिया (हे १, २५; २, २६; प्राप्र)। ३ एक जैन मुनि (विसे २५१२)। ४ एक श्रेष्ठि-पुत्र (सुपा ५७८)।

विंट सक [वेष्टय्] वेष्टन करना, लपेटना, गुजराती में 'विंटवु''; 'विंटइ तं उज्जाणं हयगयरहसुहडकोडीहिं' (सुपा ५७३)। प्रयो, संकृ. विंटाविउं (सुपा १८६)।

विंट न [वृन्त] फल-पत्र आदि का बन्धन (हे १, १३९; प्राकृ ४; रंभा; प्रासू १०२)।

विंटल } न [दे] १ वशीकरण विद्या,
विंटलिअ } 'अन्नाईपि कुंडलवि(?टलवि)-टलाई करलाघवाइं कम्माइं' (सिरि ५७)। २ निमित्त आदि का प्रयोग (बृह १); 'विंटलियाणि पउंजंति' (गच्छ ३, १३)।

विंटलिआ स्त्री [दे] गठरी, पोटली; गुजराती में 'विंटलु''; 'ताव कुमरेण खित्ता तप्पुरओ वत्थविंटलिया', 'तीए विंटलियाए' (सुपा २९१)।

विंटिया स्त्री [दे] १ गठरी, पोटली (सुख २, ५; उप १४२ टी)। २ मुद्रिका, अंगुलीयक, गुजराती में 'वींटी'; 'उच्चारोवरि मुक्का कणयमयविंटिया नियया' (सुपा ६११), 'पडिवन्नाओ मणिविंढि(?टि)याहिं तह अंगुलीओ त्ति' (स ७६)।

विंतर पुं [व्यन्तर] १ बिच्छू आदि दुष्ट जन्तु (उप ५९४); 'दुट्ठाण को न बीहइ वितरसप्पाण व खलाणं' (वज्जा १२)। २ एक देव-जाति; 'निस्सूगाणं नराणं हि वितरा अवि किंकरा' (श्रा १२; दं २)।

विंताग़ी स्त्री [वृन्ताकी] बैंगन का गाछ।

विंद सक [विद्] १ जानना। २ प्राप्त करना; 'धम्मं च जे विंदति तत्थ तत्थ' (सूअ १, १४, २७)। वकृ. **विंदमाण** (गाया १, १—पत्र २९; विपा १, २—पत्र ३४)।

विंद देखो **वंद** = वृन्द (भवि; पि ३६८)।

विंदारग } देखो **वंदारय** (सुपा ५०३; नाट—
विंदारय } शकु ८८)। °**वर** पुं [°वर] इन्द्र (सम्मत्त ७५)।

विंदावण पुंन [वृन्दावन] मथुरा का एक वन (ती ७)।

विंदुरिल्ल वि [दे] १ उज्ज्वल, देदीप्यमान। २ मंजुल घोषवाला, कल-कंठ। ३ विद्राण, म्लान। ४ विस्तृत; 'घंटाहिं बिंदुरिल्लासुरतरुणीविमाणाणुसारं लहंती (कप्पू)।

विंद्र देखो **वंद्र** (प्राकृ ३६)।

विंद्रावण देखो **विंदावण** (प्राकृ ३६)।

विंध सक [व्यध्] बींधना, छेदना, बेधना। विंधइ, विंधेज्जा (पि ४८९; भग)। वकृ. **विंधंत** (सुर २, ६३)। संकृ. **विंधिअ** (नाट—मृच्छ २१३)। हेकृ. **विंधिउं** (स ६२)। कृ. **विंधेयव्व** (सुपा २६६)।

विंधण न [व्यधन] छेदन, बेधना; 'लक्खविंधणं'—(धर्मवि ५२)।

विंधिअ वि [विद्ध] जो बेधा गया हो वह, छिन्न (सम्मत्त १५८)।

विंभय देखो **विम्हय** = विस्मय (भवि)।

विंभर देखो **विम्हर**। विंभरइ (पि ३१३)।

विंभल वि [विह्वल] व्याकुल, घबड़ाया हुआ; 'विसविंभल' (उप ५९७ टी, कुप्र ६०; ५९८; भवि; ओघ ७३)।

विंभिअ वि [विस्मित] आश्चर्य-चकित 'ओधुणइ दीवओ विंभ (?भि)ओ व्व पवणाहओ सीसं' (वज्जा ६६; भवि)।

विंभिअ देखो **विअंभिअ**; 'सोहग्गविंभियासाए' (वज्जा ८६)।

विंसदि (शौ) स्त्री [विंशति] बीस, २० (प्रयौ २०)।

विकंथ सक [वि + कत्थ्] प्रशंसा करना। विकंथइज्जा (सूअ १, १४, २१)।

विकंप अक [वि + कम्प्] हिल जाना, चलित होना। वकृ. **विकंपमाणो** (सूअ १, १४, १४)।

विकंप सक [वि + कम्पय्] १ हिलाना, चलाना। २ त्याग करना, छोड़ना। ३ अपने मंडल से बाहर निकलना। ४ भीतर प्रवेश करना। विकंपइ (सुज्ज १, १)। संकृ. **विकंपइत्ता** (सुज्ज १, ६)।

विकंप वि [विकम्प] कम्प, हिलन (पंचा १८, १५)।

विकच वि [विकच] विकसित, प्रफुल्ल (दे ७, ८६)।
विकट्ट सक [वि + कृत्] काटना। वकृ. विकट्टंत (संथा ६३)।
विकट्टिय वि [विकृत्त] काटा हुआ (तंदु ४४)।
विकट्ठ देखो विअट्ठ (राज)।
विकड्ढ सक [वि + कृष्] खींचना। विकड्ढ (पराह १, १—पत्र १८)। वकृ. विकड्ढमाण (उवा)।
विकत्त देखो विकट्ट। विकत्तंति (सूत्र १, ५, २, २), विकत्ताहि (पराह १,१—पत्र १८)।
विकत्तु वि [विकर्तृ] विक्षेपक, विनाशक; 'अप्पा कत्ता विकत्ता य दुक्खाण य सुहाण य' (उत्त २०, ३७)।
विकत्थ देखो विकंथ। विकत्थइ, विकत्थसि (उवः कुप्र १२५)। वकृ. विकत्थंत (सुपा ३१६)।
विकत्थण न [विकत्थन] १ प्रशंसा, श्लाघा। २ वि. प्रशंसा-कर्ता (पुप्फ ३३०, धर्मवि ३६)।
विकत्थणा स्त्री [विकत्थना] प्रशंसा, श्लाघा (पिंड १२८)।
विकप्प देखो विअप्प (कस; पंचभा)।
विकप्पण न [विकल्पन] छेदन, काटना; 'पओउ(?पउ)लण-विकप्पणाणि य' (पराह १, १—पत्र १८)।
विकप्पणा देखो विअप्पणा (णाया १, १६—पत्र २१८)।
विकप्पिय देखो विगप्पिअ (राज)।
विकय देखो विगय = विकृत (पराह १, १—पत्र २३; १, ३—पत्र ४५)।
विकय देखो विकच (पिंग)।
विकर सक [वि + कृ] विकार पाना। कवकृ. विकीरंत (अच्चु ४७)।
विकरण न [विकरण] विक्षेपण, विनाश; 'कम्मरयविकरणकरं' (णाया १, ८—पत्र १५२)।
विकराल देखो विगराल (दे; राज)।
विकल देखो विअल = विकल; 'कला अविकला तुज्झ' (कुप्र ८; सिरि २२३; पंचा ६, ३६)। देखो विगल = विकल।
विकस देखो विअस। विकसइ (षड्)।
विकसिय देखो विअसिअ (कप्प)।
विकहा देखो विगहा (सम ४६)।
विकारिण वि [विकारिन्] विकार-युक्त; 'बालो अविकारिणो अबुद्धीओ' (पउम २६, ६०)।
विकासर देखो विआसर (हे १, ४३)।
विकिइ देखो विगइ = विकृति (विसे २६६८)।
विकिंचण देखो विगिंचण (ओघभा २०६ टी)।
विगिंचणया देखो विगिंचणया (ओघभा २०६ टी; ठा ८ टी—पत्र ४४१)।
विकिट्ट वि [विकृष्ट] १ उत्कृष्ट; 'विकिट्ठत-वसोसियंगो' (महा)। २ न. लगातार चार दिनों का उपवास (संबोध ५८)। देखो विगिट्ठ।
विकिण सक [वि + क्री] बेचना। विकिणइ (हे ४, ५२)।
विकिणण न [विक्रयण] विक्रय, बेचना (कुमा)।
विकिण्ण वि [विकीर्ण] १ व्याप्त, भरा हुआ (भग)। २—देखो विइण्ण, विकिन्न = विकीर्ण (दे)।
विकिदि देखो विगइ = विकृति (प्राकृ १२)।
विकिन्न वि [विकीर्ण] १ आकृष्ट (पराह १, १—पत्र १८)। २ देखो विइण्ण = विकीर्ण (पराह १, ३—पत्र ४५)।
विकिय देखो विगिय (ओघभा २८६ टी)।
विकिर अक [वि + कृ] १ बिखरना। २ सक. फेंकना। ३ हिलाना। कवकृ. विइज्जंत, विकिरिज्जमाण (गउड ३३४; राज)।
विकिरण देखो विकरण (तंदु ४१)।
विकिरिया स्त्री [विक्रिया] १ विविध क्रिया। २ विशिष्ट क्रिया (राजा)। देखो विक्किरिया।
विकीण देखो विकिण। विकीणइ, विकीणए (षड्)।
विकीरंत देखो विकर।
विकुच्छिअ वि [विकुत्सित] खराब, दुष्ट (भवि)।
विकुज्ज सक [विकुब्जय्] कुब्ज करना, दबाना। संकृ. विकुज्जिय (आचा २, ३, २, ६)।
विकुप्प अक [वि + कुप्] कोप करना। विकुप्पए (गा ६६७)।
विकुव्व देखो विउव्व = वि + कृ, कुर्व्। विकुव्वंति (पि ५०८)। भूका. विकुव्विंसु (पि ५१६)। भवि. विकुव्विसंति (पि ५३३)। वकृ. विकुव्वमाण; (ठा ३, १—पत्र १२०)।
विकुस पुं [विकुश] बल्वज आदि तृण (औप; णाया १, १ टी—पत्र ६)।
विकूड सक [वि + कूटय्] प्रतिघात करना। विकूडे (विसे ६३३)।
विकूण सक [वि + कूणय्] घृणा से मुंह मोड़ना। विकूणेइ (विवे १०६)।
विकोअ पुं [विकोच] विस्तार, फैलाव (धर्मसं ३६५; भग ५, ७ टी—पत्र २३६)।
विकोव देखो विगोव; 'जो पवयणं विकोवइ सो नेओ दीहसंसारी' (चेइय ८३०)।
विकोवण न [विकोपन] विकास, प्रसार, फैलाव; 'सीसमइविकोवणट्ठाए' (पिंड ६७)।
विकोवणया स्त्री [विकोपना] विपाक; 'इंदिअत्थविकोवणयाए' (ठा ६—पत्र ४४६)।
विकोविय वि [विकोविद] कुशल, निपुण (पिंड ४३१)।
विकोस वि [विकोश] कोश-रहित (तंदु २०)।
विकोस, विकोसाय अक [विकोशाय्] १ कोश-रहित होना, विकसना। २ फैलना। विकोसइ (हे ४, ४२)। वकृ. विकोसायंत (पराह १, ४—पत्र ७८)।
विकोसिअ वि [विकोशित] १ विकसित (कुमा)। २ कोश-रहित, नंगा (णाया १, ८—पत्र १३३)।
विक्क सक [वि + क्री] बेचना। वकृ. विक्कंत (पउम २६,६)। कवकृ. विक्कायमाण (दस ५, १, ७२)।
विक्कअ पुं [विक्रय] बेचना (अभि १८४; गउड; सं ४६)।
विक्कअ देखो विक्कव (षड्)।
विक्कइ वि [विक्रयिन्] बेचनेवाला (दे २, ९८)।

विक्कंत देखो विक्क।

विक्कंत वि [विक्रान्त] १ पराक्रमी, शूर (णाया १, १—पत्र २१; विसे १०५६; प्रासू १०७; कप्प)। २ पुं. पहली नरक-भूमि का बारहवाँ नरकेन्द्रक—नरक-स्थान विशेष (देवेन्द्र ५)।

विक्कंति स्त्री [विक्रान्ति] विक्रम, पराक्रम (णाया १, १६—पत्र २११)।

विक्कंभ देखो विक्खंभ = विष्कम्भ (देवेन्द्र ३०६)।

विक्कणग न [विक्रयण] विक्रय, बेचना (सुपा ६०६, सट्ठि ६ टी)।

विक्कम अक [वि + क्रम्] पराक्रम करना, शूरता दिखलाना। भवि. विक्कमिस्सदि (शौ) (पार्थ ६)।

विक्कम पुं [विक्रम] १ शौर्य, पराक्रम (कुमा)। २ सामर्थ्य (गउड)। ३ एक राजा का नाम (सुपा ५६६)। ४ राजा विक्रमादित्य (रंभा ७)। °**जस** पुं [°यशस्] एक राजा (महा)। °**पुर** न [°पुर] एक नगर का नाम (ती २१)। °**राय** पुं [°राज] एक राजा (महा)। °**सेण** पुं [°सेन] एक राज-कुमार (सुपा ५६२)। °**इच्च**, °**इत्त** पुं [°ादित्य] एक सुप्रसिद्ध राजा (गा ४६४ अ; सम्मत्त १४६; सुपा ५६२; गा ४६४)।

विक्कमण पुं [दे] चतुर चालवाला घोड़ा (दे ७, ६७)।

विक्कमि वि [विक्रमिन्] पराक्रमी, शूर (कुमा)।

विक्कव वि [विक्लव] व्याकुल, बेचैन (पव १६६; प्राप्र; संबोध २१)।

विक्कायमाण देखो विक्क।

विक्कि देखो विक्कइ; 'ते नाणविक्किणो पुण मिच्छत्तपरा, न ते मुणिणो' (संबोध १६)।

विक्किअ वि [दे] संस्कृत, सुधारा हुआ (दस ७, ४३)।

विक्किंत वि [विकृत्त] छिन्न, काटा हुआ (पण्ह १, ३—पत्र ५४)।

विक्किट्ठ देखो विकिट्ठ (संबोध ५८)।

विक्किण सक [वि + क्री] बेचना। विक्किणइ (प्राप्र)। कर्म. विक्किणीअंति (पि ५४८)। वकृ. **विक्किणंत, विक्किणित** (पि ३६७; सुपा २७६)। संकृ. **विक्किणिअ** (नाट—मृच्छ ६५)।

विक्किणिअ, **विक्किय** वि [विक्रीत] बेचा हुआ (सुपा ६४२; भवि)।

विक्किय देखो विउव्व = वैक्रिय; 'कयविक्कियरूवो सुरो व्व लक्खियसि' (सुपा १८७), 'कयविक्किय-कास्रो देवुव्व' (सम्मत्त १०४)।

विक्किर सक [वि + कृ] बिखेरना, छितराना, फैलाना। कवकृ. **विक्किरिज्जमाण** (राय १४)।

विक्किरिया स्त्री [विक्रिया] विकृति, विकार; 'तीए नयणाइएहिं विक्किरियं कुणइ' (सुपा ५१४)। देखो विकिरिया।

विक्कीय देखो विक्किय = विक्रीत (सुर ६, १६५; सुपा ३८५)।

विक्के सक [वि + क्री] बेचना। विक्केइ, विक्केअइ (हे ४, ५२; प्राप्र; धात्वा १५२)। कृ. **विक्केज्ज** (दे ६, ४०; ७, ६६)।

विक्केणुअ वि [दे] विक्रेय, बेचने योग्य (दे ७, ६६)।

विक्कोण पुं [विकोण] विकूणन, घृणा से मुँह सिकुड़ना (दे ३, २८)।

विक्कोस सक [वि + क्रुश्] चिल्लाना। विक्कोश (मा) (मृच्छ २७)।

विक्खंभ पुं [दे] १ स्थान, जगह (दे ७, ८८)। २ अंतराल, बीच का भाग (दे ७, ८८; से ६, ५७)। ३ विवर, छिद्र (से ३, १४)।

विक्खंभ पुं [विष्कम्भ] १ विस्तार (पण्ण १—पत्र ५२; ठा ४, २—पत्र २२६; दे ७, ८८; पाअ)। २ चौड़ाई, 'जंबुद्दीवे दीवे एगं जोयणसहस्सं आयामविक्खंभेण पण्णत्ते' (सम २)। ३ बाहुल्य, स्थूलता, मोटाई (सुज्ज १, १—पत्र ७)। ४ प्रतिबन्ध, निरोध (सम्यक्त्वो ८)। ५ नाटक का एक अंग (कप्पू)। ६ द्वार के दोनों तरफ के बीच का अन्तर (ठा ४, २—पत्र २२५)।

विक्खंभिअ वि [विष्कम्भित] निरुद्ध, रोका हुआ (सम्यक्त्वो ८)।

विक्खण न [दे] कार्य, काम, काज (दे ७, ६४)।

विक्खय वि [विक्षत] व्रण-युक्त, कृत-व्रण (भग ७, ६—पत्र ३०७)।

विक्खर सक [वि + कृ] १ छितरना, तितर-बितर करना। २ फैलाना। ३ इधर उधर फेंकना। विक्खरइ (कप्पू), विक्खरेज्जा (उत्त २०० टि)। कवकृ. **विक्खरिज्जमाण** (राज)।

विक्खवण न [विक्षपण] १ विनाश। २ वि. विनाशक; 'वज्जं ग्रसंखपडिवक्खविक्खवणं' (सुपा ४७)।

विक्खाइ स्त्री [विख्याति] प्रसिद्धि (भवि)।

विक्खाय वि [विख्यात] प्रसिद्ध, विश्रुत (पाअ; सुर १, ४६; रंभा; महा)।

विक्खास वि [दे] विरूप, खराब, कुत्सित (दे ७, ६३)।

विक्खिण्ण वि [दे] १ आयत, लम्बा। २ अवतीर्ण। ३ न. जघन (दे ७, ८८)।

विक्खिण्ण देखो विकिण्ण (कस)।

विक्खित्त वि [विक्षिप्त] १ फेंका हुआ (पाअ; कस; गउड)। २ भ्रान्त, पागल; 'पसुत्तविक्खित्तजणे परियणे' (उप ७२८ टी; दे १, १३३; महा)।

विक्खिर देखो विक्खर। विक्खिरेज्जा (उत्त)।

विक्खिरिअ वि [विकीर्ण] बिखरा हुआ, छितरा हुआ, फैला हुआ (सुर ५, २०६; सुपा २४६; गउड)।

विक्खिव सक [वि + क्षिप्] १ दूर करना। २ प्रेरना। ३ फेंकना। विक्खिवइ (महा)।

विक्खिवण न [विक्षेपण] १ दूरीकरण। २ प्रेरणा (पव ६४)।

विक्खेव पुं [विक्षेप] १ क्षोभ; 'छोहो विक्खेवो' (पाअ)। २ उचाट, ग्लानि, खेद (से ५, ३)। ३ ऊँचा फेंकना, ऊर्ध्व-क्षेपण (ओघभा १६३)। ४ फेंकना, क्षेपण (गा ५८२)। ५ शृंगार-विशेष, अवज्ञा से किया हुआ मण्डन (पण्ह २, ४—पत्र १३२)। ६ चित्त-भ्रम (स २८२)। ७ विलंब, देरी (स ७३५)। ८ सैन्य, लश्कर (स २४; ५७३)।

विक्खेवणी स्त्री [विक्षेपणी] कथा का एक भेद (ठा ४, २—पत्र २१०)।

विक्खेविया स्त्री [विक्षेपिका] व्याक्षेप, विक्षेप (वव ६)।

विक्खोड सक [दे] निन्दा करना; गुजराती में 'वखोडवु'। विक्खोडेइ (सिरि ८२५)।

विखंडिय वि [विखण्डित] खण्डित किया हुआ (पउम २२, ६२)।

विग देखो **विअ** = वृक (पण्ह १, १—पत्र ७; सण; णाया १, १—पत्र ६५)।

विगइ स्त्री [विकृति] १ विकार-जनक घृत आदि वस्तु (णाया १, ८—पत्र १२२; उव; सं ७२; श्रा २०)। २ विकार (उत्त ३२, १०१)।

विगइ स्त्री [विगति] विनाश (विसे २१४६)।

विगइंगाल वि [विगताङ्गार] राग-रहित (ओघ ५७६)।

विगइच्छ वि [विगतेच्छ] इच्छा-रहित, निःस्पृह (उप १३० टी; ६१३)।

विगंच देखो **विगिंच**। संकृ. **विगंचिउं, विगंचिऊण** (वव २; संबोध ५७)।

विगंचण देखो **विगिंचण**; 'काए कंडूयणं वज्जे तहा खेलविगंचणं' (संबोध ३)।

विगंचिअ देखो **विइंचिअ** (स १३५ टि)।

विगच्छ अक [वि + गम्] नष्ट होना। वकृ. **विगच्छंत** (सम्म १३४)।

विगज्झ देखो **विगह** = वि + ग्रह्।

विगड देखो **विअग** = विकट (पण्ह १, ४—पत्र ७८; औप)।

विगड देखो **विअड** = विवृत (ठा ३, १ टी—पत्र १२२)।

विगण सक [वि + गणय्] १ निन्दा करना। २ घृणा करना। कवकृ. **विगणिज्जंत** (तंदु १४)।

विगत्त सक [वि + कृत्] काटना, छेदना। संकृ. **विगत्तिऊणं** (सूअ १, ५, २, ८)।

विगत्त वि [विकृत्त] काटा हुआ, छिन्न (पण्ह १, १—पत्र १८)।

विगत्तग वि [विकर्तक] काटनेवाला (सूअ २, २, ६२)।

विगत्तणा स्त्री [विकर्तना] छेदन (उव)।

विगत्थय वि [विकत्थक] प्रशंसा करनेवाला, आत्मश्लाघा करनेवाला (भवि)।

विगप्प देखो **विअप्प** = वि + कल्पय्। वकृ. **विगप्पयंत, विगप्पमाण** (सुर ६, २२४; ३, १२४)।

विगप्प पुं [विकल्प] १ एक पक्ष में प्राप्ति; 'चसद्दो विगप्पेणं' (पंच ३, ४४)। २ देखो **विअप्प** = विकल्प (णाया १, १६—पत्र २१८; सुर ३, १०२; ४, २२२; सुपा १२६; जी २५)।

विगप्पण देखो **विअप्पण** (उत्तर २३, ३२; महा)।

विगप्पिअ वि [विकल्पित] १ उत्प्रेक्षित, कल्पित (पव २; उव)। २ चिन्तित, विचारित (पव १४५)। ३ काटा हुआ, छिन्न; 'हत्थपायपडिच्छिन्नं कन्ननासविगप्पिअं' (दस ८,५६)।

विगम पुं [विगम] विनाश (सुर ७, २२६; १२, १६)।

विगय वि [विकृत] विकार-प्राप्त (णाया १, २—पत्र ७६; १, ८—पत्र १३३)।

विगय वि [विगत] १ नाश-प्राप्त, विनष्ट (सम्म १३४; विसे ३३७७; पिंड ६१०)। २ पुं. एक नरक-स्थान (देवेन्द्र २६)। °**धूम** वि [°धूम] द्वेष-रहित (ओघ ५७६)। °**सोग** पुं [°शोक] एक महा-ग्रह, ज्योतिष्क देव-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७८), देखो **वीअ-सोग**। °**सोगा** स्त्री [°शोका] विजय-विशेष की एक नगरी (ठा २, ३—पत्र ८०)।

विगरण न [विकरण] परिष्ठापन, परित्याग (कस)।

विगरह सक [वि + गर्ह्] निन्दा करना। वकृ. **विगरहमाण** (सूअ २, ६, १२)।

विगराल वि [विकराल] भीषण, भयंकर (सुपा १८२; ५०५; सण)।

विगल सक [वि + गल्] टपकना, चूना। विगलइ (षड्)।

विगल पुं [विकल] १ विकलेन्द्रिय—दो, तीन या चार ज्ञानेन्द्रियवाला जन्तु (कम्म ३, १६; ४, ३; १५; १६; जी ४१)। २ देखो **विअल** = विकल (उव; उप पृ १८१; पंचा १४, ४७)। °**देस** पुं [°देश] नय-वाक्य (अज्झ ६२)।

विगलिंदिय पुं [विकलेन्द्रिय] दो, तीन या चार इन्द्रियवाला जन्तु (ठा २, २; ३, १—पत्र १२१)।

विगस अक [वि + कस्] खिलना, फूलना। विगसंति (तंदु ५३)। वकृ. **विगसंत** (णाया १, १—पत्र १६)।

विगह सक [वि + ग्रह्] १ लड़ाई करना। २ वर्ग-मूल निकालना। ३ समास आदि का समानार्थक वाक्य बनाना। संकृ. 'भूओ भूओ विगज्झ मूलतिगं' (पंचा २, १८)।

विगह देखो **विग्गह**; 'हासदवविवज्जिए विगहमुक्के' (गच्छ २, ३३)।

विगहा स्त्री [विकथा] शास्त्र-विरुद्ध वार्त्ता, स्त्री आदि की अनुपयोगी बात (भग; उव; सुर १४, ८८; सुपा २५२; गच्छ १, ११)।

विगाढ वि [विगाढ] १ विशेष गाढ, अतिशय निबिड (उत्त १०, ४ टी)। २ चारों ओर से व्याप्त (राज)।

विगाण न [विगान] १ वचनीय, लोकापवाद (दे ३, ३)। २ विप्रतिपत्ति, विरोध (धर्मसं २९६; चेइय ७५६)।

विगार पुं [विकार] विकृति, प्रकृति का अन्यथा परिणाम (उप ६८६ टी; विसे १६८८)।

विगारि वि [विकारिन्] विकृत होनेवाला (पिंड २८०; पउम १०१, ४८)।

विगाल देखो **विआल** = विकाल (सुर १, ११७)।

विगालिय वि [विगालित] विलम्बित, प्रतीक्षित; 'एत्तियमेत्तं कालं विमा (?गा)लियं जेण आसाए' (सुर ६, २३)।

विगाह सक [वि + गाह्] १ अवगाहन करना। २ प्रवेश करना। संकृ. **विगाहिआ** (सम ५०)।

विगिंच सक [वि + विच्] १ पृथक् करन, अलग करना। २ परित्याग करना। ३ विनाश करना। विगिंचइ, विगिंचए, विगिंचंति (आचा; कस; श्रावक २६२ टी; सूअ १, १, ४, १२; पिंड ३१६), विगिंच (सूअ १, १३, २१; उत्त ३, १३; पिंड ३९५)। वकृ. **विगिंचंत, विगिंचमाण** (श्रावक २६२ टी; आचा)। संकृ. **विगिंचिऊणं, विगिंचित्ता** (पिंड ३०५; आचा)।

हेक्. विगिंचिउं (पिंड ३६८)। कृ. विगिंचियव्व (पि ५७०)।

विगिंचण न [विवेचन] परिष्ठापन, परित्याग (पिंड ४८३; कस)।

विगिंचणआ, विगिंचणा, विगिंचाणआ स्त्री [विवेचना] १ निर्जरा, विनाश (ठा ८—पत्र ४४१)। २ परित्याग (ओघभा २०६; स ५१; ओघ ६०६; ८७)।

विगिच्छा स्त्री [विचिकित्सा] संदेह, संशय, वहम (श्रा ३; पडि)।

विगिट्ठ देखो विकिट्ठ; 'अन्ने तवं विगिट्ठं काउं थोवावसेससंसारा' (पउम २, ८३; ४, २७; गच्छ २, २५; उत्त ३६, २५३)। °खमग पुं [°क्षपक] तपस्वी साधु (राज)। °भत्तिय वि [°भक्तिक] लगातार चार या उससे अधिक दिनों का उपवास करनेवाला (कप्प)।

विगिय देखो विगय = विकृत (ओघभा २८६)।

विगिला, विगिलाअ अक [वि + ग्लै] विशेष ग्लान होना, खिन्न होना। विगिलाइ, विगिलाएज्जा (पि १३६; आचा २, २, ३, २८)।

विगुण वि [विगुण] १ गुण-रहित (सिरि १२३३; प्रासू ७१)। २ अननुगुण, प्रतिकूल (पंचा ६, ३२)।

विगुत्त वि [विगुप्त] १ तिरस्कृत, अवधीरित (श्रा १२)। २ जो खुला पड़ गया हो वह, जिसकी पोल खुल गई हो वह, जिसकी फजीहत हुई हो वह; 'सदुक्कयविगुत्तो' (श्रा १४; धर्मवि ७७)।

विगुप्प° देखो विगोव।

विगुव्वणा देखो विउव्वणा (ठा १—पत्र १६)।

विगुव्विय देखो विउव्विअ (पउम ३६, ३२)।

विगोइय वि [विगोपित] जिसका दोष प्रकट किया गया हो वह (सण)।

विगोव सक [वि + गोपय्] १ प्रकाशित करना। २ तिरस्कार करना। ३ फजीहत करना। भवि. 'न खु न खु चउवेयपुत्तगो भोदुं सुद्दविक्खं पव्वजिय अप्पाणं विगोविस्सं' (मोह १०)। कर्म. विगुप्पसु (धर्मवि १३४), विगुप्पहि (अप) (भवि)। संकृ. विगोवित्ता, विगोवइत्ता (कप्प; णाया १, १६—पत्र २४४)।

विगोवण न [विकोपन] विकास; 'तहवि य दंसिज्जंतो सीसमइविगोवणमदुट्ठो' (श्रावक २२८)।

विग्गह पुं [विग्रह] १ वक्रता, बाँक (ठा २, ४—पत्र ८६)। २ शरीर, देह (पाअ; स ७२६; सुपा १६)। ३ युद्ध, लड़ाई (स ६३४)। ४ समास आदि के समान अर्थवाला वाक्य (विसे १००२)। ५ विभाग (ठा १०)। ६ आकृति, आकार; 'वरवइरविग्गहए' (भग २, ८)। °गइ स्त्री [°गति] बाँकवाली गति, वक्र गति (ठा २, १—पत्र ५५; भग)।

विग्गहिय वि [वैग्रहिक] शरीर के अनुरूप; 'विग्गहिय उन्नयकुच्छी' (पण्ह १, ४—पत्र ७८)।

विग्गहीअ वि [विग्रहिक] युद्ध-प्रिय; 'जे विग्गहीए अन्नायभासी' (सूअ १, १३, ६)।

विग्गाहा (अप) स्त्री [विगाथा] छन्द-विशेष (पिंग)।

विग्गुत्त वि [दे] व्याकुल किया हुआ (भवि)।

विग्गुत्त देखो विगुत्त (धर्मवि ५८; ६८)।

विग्गोव देखो विगोव। संकृ. विग्गोवित्ता (कप्प; औप)।

विग्गोव पुं [दे] आकुलता, व्याकुलता (दे ७, ६४; भवि; वज्जा २३)।

विग्गोवणया स्त्री [विगोपना] १ तिरस्कार। २ फजीहत (उव)।

विग्घ पुंन [विघ्न] १ अन्तराय, व्याघात, प्रतिबन्ध (सुपा ३६५; कुमा; प्रासू ५४; १३५; कप्प; कम्म १, ६१; षड्)। २ कर्म-विशेष, आत्मा के वीर्य, दान आदि शक्तियों का घातक कर्म (कम्म १, ५२; ५३)। °कर वि [°कर] प्रतिबन्ध-कर्ता (कम्म १, ६१)। °ह वि [°घ्न] विघ्न-नाशक (श्रु ७५)। °वह वि [°वह] विघ्नवाला (सुर १, ४३)।

विग्घर वि [विगृह] गृह-रहित; 'तह उग्घर-विग्घरनिरंगणोवि न य इच्छियं लहइ' (णाया १, १० टी—पत्र १७१)।

विग्घिय वि [विघ्नित] विघ्न-युक्त (हम्मीर १४)।

विग्घुट्ठ वि [विघुष्ट] चिल्लाया हुआ (विपा १, २—पत्र २६)। देखो विघुट्ठ।

विघट्ट सक [वि + घट्टय्] १ वियुक्त करना। २ विनाश करना। विघट्टेइ (उत्त)।

विघट्टण न [विघट्टन] विनाश (नाट)।

विघडण देखो विहडण (राज)।

विघत्थ वि [विघस्त, विग्रस्त] १ विशेष रूप से भक्षित। २ व्याप्त; 'वाहिविघत्थस्स मत्तस्स' (महा; प्राप्र)।

विघर देखो विग्घर (उव)।

विघाय पुं [विघात] विनाश (कुमा)।

विघायग वि [विघातक] विनाश-कर्ता (धर्मसं ५२६)।

विघुट्ठ न [विघुष्ट] विरूप आवाज करना (पण्ह १, ३—पत्र ४५)। देखो विग्घुट्ठ।

विघुम्म अक [वि + घूर्णय्] डोलना। वकृ. विघुम्ममाण (सुर ३, १०६)।

विचक्खु वि [विचक्षुष्क] चक्षु-रहित, अन्धा (उप ७२८ टी)।

विचच्चिया स्त्री [विचर्चिका] रोग-विशेष, पामा (राज)।

विचलिर वि [विचलितृ] चलायमान होने-वाला (सण)।

विचल्लिय वि [विचलित] चंचल बना हुआ (भवि)।

विचार देखो विआर = वि + चारय्। विचारेंति (मृच्छ १०४)।

विचारग वि [विचारक] विचार-कर्ता (रंभा)।

विचारण देखो विआरण = विचारण (कुप्र ३६७)।

विचारणा देखो विआरणा = विचारणा (धर्मसं ३०६)।

विचाल न [विचाल] अन्तराल (दे ७, ८८)।

विचिअ वि [विचित] चुना हुआ (दे ७, ६१)।

विचिंत सक [वि + चिन्तय्] विचार करना। विचिंतेइ (महा)। वकृ. विचिंतेंत (सुर १२, १६६)। कृ. विचिंतियव्व, विचिंतिज्ज (पंचा ६, ४६; द्रव्य ५०)।

विचिंतण न [विचिन्तन] विचार, विमर्श (श्रु ६)।

विचिंतिअ वि [विचिन्तित] विचारित (सुर ८, ३)।

विचिंतिर वि [विचिन्तयितृ] विचार-कर्ता (श्रा १२; सण)।

विचिक्की स्त्री [दे] वाद्य-विशेष (राय ४६)।

विचिगिच्छा स्त्री [विचिकित्सा] संशय, धर्म-कार्य के फल की तरफ संदेह (सम्मत्त ६५)।

विचिट्ठिअ वि [विचेष्टित] १ जिसकी कोशिश की गई हो वह (सुपा ४७०)। २ न. चेष्टा, प्रयत्न (उप ३२० टी)।

विचिण, **विचिण्ण** } सक [वि + चि] १ खोज करना। २ फूल आदि चुनना। विचिणंति (पि ५०२)। वकृ. विचिण्णंत (मा ४६)।

विचित्त वि [विचित्र] १ विविध, अनेक तरह का; 'विचित्ततवो कम्मेहिं' (महा; राय; प्रासू ४२)। २ अद्भुत, आश्चर्यकारक; 'विहिणो विचित्तयं जाणिऊणं' (सुर १३, ४)। ३ अनेक रँगवाला, शबल (णाया १, ६; कप्प)। ४ अनेक चित्रों से युक्त (कप्प; सुज्ज २०)। ५ पुं. पर्वत-विशेष (पण्ह १, ५—पत्र ६४)। ६ वेणुदेव और वेणुदारि नामक इन्द्रों का एक लोकपाल (ठा ४, १—पत्र १९७)। °कूड पुं [°कूट] शीतोदा नदी के किनारे पर स्थित पर्वत-विशेष (इक)। °पक्ख पुं [°पक्ष] १ वेणुदेव और वेणुदारि नामक इन्द्रों का एक लोकपाल (ठा ४, १—पत्र १९७; इक)। २ चतुरिन्द्रिय जंतु की एक जाति (पण्ण १—पत्र ४६)।

विचित्ता स्त्री [विचित्रा] ऊर्ध्व लोक में रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (ठा ७—पत्र ४३७)। २ अधोलोक में रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (राज)।

विचित्तिय वि [विचित्रित] विचित्रता से युक्त (सण)।

विचुगिद (शौ) देखो विचिअ (नाट—मालती १४१)।

विचुन्नण न [विचूर्णन] चूर-चूर करना, टुकड़ा-टुकड़ा करना (द्र ३०)।

विचेयण वि [विचेतन] चैतन्य-रहित, निर्जीव (उप पृ ४१)।

विचेल वि [विचेल] वस्त्र-वर्जित, नंगा (पिंड ४७८)।

विच्च सक [वि + अय्] व्यय करना। विच्चेइ (ती ८)। देखो विव्व।

विच्च पुंन [दे] व्यूत, बुनने की क्रिया (राय ८२)।

विच्च न [दे. वर्त्मन्] १ बीच, मध्य; 'विच्चम्मि य सज्झाओ कायव्वो परमपयहेऊ' (पुप्फ ४२७), 'ठिओ अहं कुडकवाडविच्चे' (निसा १६)। २ मार्ग, रास्ता (हे ४, ४२१; कुमा; भवि)।

विच्च सक [दे] समीप में आना। विच्चइ (भवि)।

विच्चवण न [विच्यवन] भ्रंश, विनाश (विसे २९१)।

विच्चामेलिय वि [व्यत्याम्रेडित] १ भिन्न भिन्न अंशों से मिश्रित। २ अस्थान में ही छिन्न हो कर फिर ग्रथित, तोड़ कर साँधा हुआ (विसे ८५५)।

विच्चाय पुं [वित्याग] परित्याग; 'पुयम्मि वीयरायं भावो विप्फुरइ विसयविच्चाया' (संबोध ८)।

विच्चि स्त्री [वीचि] तरंग, कल्लोल (पउम १०६, ४१)।

विच्चु, **विच्चुअ** } देखो विंचुअ (उप ५९३; पि ५०; पण्ण १—पत्र ४६)।

विच्चुइ स्त्री [विच्युति] भ्रंश, विनाश (विसे १८०)।

विच्चोअय न [दे] उपधान, ओसीसा (दे ७, ६८)।

विच्छ° देखो विअ = विद्।

विच्छड्ड सक [वि + छर्दय्] परित्याग करना। वकृ. विच्छड्डेमाण (णाया १, १८—पत्र २३९)। संकृ. विच्छड्डइत्ता (कप्प)।

विच्छड्ड पुं [विच्छर्द] १ ऋद्धि, वैभव, संपत्ति (पाअ; दे ७, ३२ टी; हे २, ३६; षड्)। २ विस्तार (कुमा; सुपा १९२)।

विच्छड्ड पुं [दे] १ निवह, समूह (दे ७, ३२; गउड; से २, २; ६, ७२; गा ३८७)। २ ठाटबाट, सजधज, धूमधाम; 'महया विच्छड्डेणं सोहणलग्गम्मि गुरुपमोएणं। कमलावई उ रन्ना परिणीया' (सुर १, १६६; कुप्र ४१; सम्मत्त १९३; धर्मवि ८२)।

विच्छड्डि स्त्री [विच्छर्दि] १ विशेष वमन। २ परित्याग (प्राप्र)। ३ विस्तार; 'निम्मलो केवलालोअलच्छिविच्छि-(?च्छ)ड्डिकारओ' (सिरि १०९१)।

विच्छड्डिअ वि [विच्छर्दित] १ परित्यक्त; 'पामुक्कं विच्छड्डिअं अवहत्थिअं उज्झिअं चत्तं' (पाअ; णाया १, १; ठा ८; औप)। २ विक्षिप्त, फेंका हुआ (से १०, ४६)। ४ विच्छादित, आच्छादित (हम्मीर १७)।

विच्छड्डेमाण देखो विच्छड्ड = वि + छर्दय्।

विच्छद्दिअ देखो विच्छड्डिअ (नाट—मालती १२९)।

विच्छय वि [विक्षत] विविध तरह से पीड़ित (सूअ १, २, ३, ५)। देखो विक्खय।

विच्छल देखो विब्भल (षड् ४०)।

विच्छवि वि [विच्छवि] १ विरूप आकृति-वाला, कुडौल (पण्ह १, ३—पत्र ५४)। २ पुं. एक नरक-स्थान (देवेन्द्र २८)।

विच्छाइय वि [विच्छायित] निस्तेज किया हुआ (सुपा १६६)।

विच्छाय वि [विच्छाय] निस्तेज, कान्ति-रहित, फीका (सुर ४, १०६; कप्पू; प्रासू १३७; महा; गउड)।

विच्छाय सक [विच्छायय्] निस्तेज करना; 'विच्छाएइ मियंकं तुसारवरिसो अणुगुणोवि' (गउड)। वकृ. विच्छाअंत (कप्पू)।

विच्छिअ वि [दे] १ पाटित, विदारित। २ विचित, चुना हुआ। ३ विरल (दे ७, ९१)।

विच्छिअ देखो विंछिअ (उत्त ३६, १४८; पि ५०; ११८; ३०१)।

विच्छिंद सक [वि + छिद्] तोड़ना, अलग करना। विच्छिंदइ (पि ५०६)। भवि. विच्छिंदिहिति (पि ५३२)। वकृ. विच्छिंदमाण (भग ८, ३—पत्र ३६५)।

विच्छिण्ण वि [विच्छिन्न] अलग किया हुआ (विपा १, २ टि—पत्र २८; नाट—मुच्छ ८६)।

विच्छित्ति स्त्री [विच्छित्ति] १ विन्यास, रचना (पाअ; स ६१५; सुपा ५४; ८३; २६०; गउड)। २ प्रान्त भाग (सुर ३, ७०)। ३ अंगराग (गा ७८०)।

विच्छिन्न देखो विच्छिण्ण (विपा १, २ टी—पत्र २८)।

विच्छिव सक [वि + स्पृश्] विशेष रूप से स्पर्श करना। कवकृ. विच्छिप्पमाण (कप्प; औप)।

विच्छिव सक [वि + क्षिप्] फेंकना। संकृ. विच्छिविअ (नाट—चैत ३८)।

विच्छु, **विच्छुअ** } देखो विंचुअ (गा २३७; जी १८; उत्त ३६, १४८; प्रासू १६; णाया १, ८—पत्र १३३)।

विच्छुडिअ वि [विच्छुटित] १ बिछुड़ा हुआ, जो अलग हुआ हो, विरहित; 'जहवि हु कालवसेणं ससी समुद्दाओ कहवि विछु (?च्छु)डिओ' (वज्जा १५६)। २ मुक्त (राज)।

विच्छुरिअ वि [दे] अपूर्व, अद्भुत (षड्)।

विच्छुरिअ वि [विच्छुरित] १ खचित, जड़ा हुआ; 'खचिअं विच्छुरिअयं जडिअं' (पाअ)। २ संबद्ध, जोड़ा हुआ (से १४, ७६)। ३ व्याप्त (पउम २, १०१; सुपा ६; २१२; सुर २, २२१)।

विच्छुह सक [वि + क्षिप्] फेंकना, दूर करना। विच्छुहइ (से १०, ७३; गा ४२४ अ)। कृ. विच्छूढव्व (से १०, ५३)।

विच्छुह अक [वि + क्षुभ्] विक्षोभ करना, चंचल हो उठना। विच्छुहिरे (हे ३, १४२)।

विच्छूढ वि [विक्षिप्त] १ फेंका हुआ, दूर किया हुआ (से ६, १६)। २ प्रेरित (पाअ)।

विच्छूढ वि [दे] वियुक्त, विरहित, विघटित; 'विच्छूढा जूहाओ' (स ६७८)।

विच्छूढव्व देखो विच्छुह = वि + क्षिप्।

विच्छेअ पुं [दे] १ विलास। २ जघन (दे ७, ६०)।

विच्छेअ पुं [विच्छेद] १ विभाग, पृथक्करण (विसे १००६)। २ वियोग (गा ९१३)। ३ अनुबन्ध-विनाश, प्रवाह-निरोध (कप्पू)।

विच्छेअण न [विच्छेदन] ऊपर देखो (राज)।

विच्छेअय वि [विच्छेदक] विच्छेद-कर्ता (भवि)।

विच्छेइ वि [विच्छेदिन्] ऊपर देखो (कुप्र २२)।

विच्छेइअ वि [विच्छेदित] विच्छिन्न किया हुआ (नाट—विक्र ८२)।

विच्छोइय वि [दे] विरहित (भवि)।

विच्छोड देखो विच्छोल। संकृ. विच्छोडिवि (अप) (हे ४, ४३९)।

विच्छोम पुं [दे. विदर्भ] नगर-विशेष; 'विदर्भे विच्छोमो' (प्राकृ ३८)।

विच्छोय पुं [दे] विरह, वियोग (भवि)। देखो विच्छोह।

विच्छोल सक [कम्पय्] कँपाना। विच्छोलइ (हे ४, ४६)। वकृ. विच्छोलंत, विच्छोलिंत (कप्पू; सुर १०, १०७; १५, १३)।

विच्छोलिअ वि [कम्पित] कँपाया हुआ (कुमा; गउड)।

विच्छोलिअ वि [विच्छोलित] धौत, धोया हुआ; 'धोअं विच्छोलिअं' (पाअ)।

विच्छोव सक [दे] वियुक्त करना, विरहित करना;

'कालेण रूढपेम्मे परोप्परं
हिययनिव्वडियभावे।
अकलुणहियओ एसो
विच्छोवइ सत्तसंघाए'
(स १८६)।

विच्छोह पुं [दे] विरह, वियोग (दे ७, ६२; हे ४, २९६)।

विच्छोह पुं [विक्षोभ] १ विक्षेप; 'जे संमुहागअबोलतवलिअपिअपेसिअच्छिविच्छोहा' (गा २१०), 'पुलइयकवोलमूला विमुक्कडक्खविच्छोहा' (सम्मत्त १६१)। २ चंचलता (उप पृ १५८)।

विछल सक [वि + छलय्] छलित करना, ठगना। कर्म. विछलिज्जइ (महा)।

विछोय देखो विच्छोव। विछोयइ (स १८६ टि)।

विजइ वि [विजयिन्] विजेता, जीतनेवाला (कप्पू; नाट—विक्र ५)।

विजंभ देखो विअंभ = वि + जृम्भ्। वकृ. विजंभंत (काप्र १८६)।

विजढ वि [वित्यक्त] परित्यक्त (उत्त ३६, ८३; सुख ३६, ८३; ओघ २४६)।

विजण देखो विअण = विजन। 'लक्खण ! देसो इमो विजणो' (पउम ३३, १३; हे १, १७७; कुमा)।

विजय सक [वि + जि] १ जीतना, फतह करना। २ अक. उत्कर्ष से वर्तना, उत्कर्षयुक्त होना। विजयइ (पव २७६—गाथा १५९९); 'विजयतु ते पएसा विहरेइ जत्थ वीरजिणनाहो' (धर्मवि २२)। कृ. विजेतव्व (पै) (कुमा)।

विजय पुं [विजय] १ निर्णय, शास्त्र के अर्थ का ज्ञान-पूर्वक निश्चय (ठा ४, १—पत्र १८८; सुज्ज १०, २२)। २ अनुचिन्तन, विमर्श (औप)।

विजय पुं [विजय] आश्रय, स्थान (दस ६, ५६)।

विजय पुं [विजय] १ जय, जीत, फतह (कुमा; कम्म १, ५५; अभि ८१)। २ एक देव-विमान (अनु; सम ५७; ५८)। ३ विजय-विमान-निवासी देवता (सम ५६)। ४ एक मुहूर्त, अहोरात्र का बारहवाँ या सतरहवाँ मुहूर्त (सम ५१; सुज्ज १०, १३; कप्प; णाया १, ८—पत्र १३३)। ५ भगवान् नमिनाथजी का पिता (सम १५१)। ६ भारतवर्ष के बीसवें भावी जिनदेव (सम १५४; पव ४६)। ७ तृतीय चक्रवर्ती के पिता का नाम (सम १५२)। ८ आश्विन मास (सुज्ज १०, १६)। भारतवर्ष में उत्पन्न द्वितीय बलदेव (सम ८४; १५८ टी; अनु; पव २०९)। १० भारतवर्ष का भावी दूसरा बलदेव (सम १५४)। ११ ग्यारहवें चक्रवर्ती राजा का पिता (सम १५२)। १२ एक राजा (उप ७६८ टी)। १३ एक क्षत्रिय का नाम (विपा १, १—पत्र ४)। १४ भगवान् चन्द्रप्रभ का शासन-देव (संति ७)। १५ जंबूद्वीप का पूर्व द्वार। १६ उस द्वार का अधिष्ठाता देव (ठा ४, २—पत्र २२५)। १७ लवण समुद्र का पूर्व द्वार। १८ उस द्वार का अधिपति देव (ठा ४, २—पत्र

२२६; इक)। १६ क्षेत्र-विशेष, महाविदेह वर्ष का प्रान्त-तुल्य प्रदेश (ठा ८—पत्र ४३५; इक; जं ४)। २० उत्कर्ष; 'जएणं विजएणं वद्धावेइ (णाया १, १—पत्र ३०; औप; राय)। २१ पराभव करके ग्रहण करना (कुमा)। २२ विक्रम की प्रथम शताब्दी के एक जैन आचार्य (पउम ११८, ११७)। २३ अभ्युदय (राय)। २४ समृद्धि (राज)। २५ धात की खण्ड का पूर्व द्वार (इक)। २६ कालोद समुद्र, पुष्कर-वरद्वीप तथा पुष्करोद समुद्र का पूर्व द्वार (राज)। २७ रुचक पर्वत का एक कूट (ठा ८—पत्र ४३६; इक)। २८ एक राजकुमार (धम्म ११)। २९ छन्द-विशेष (पिंग)। ३० वि. जीतनेवाला; 'वरतुरए विहगाहिवविजयवेगघरे' (सम्मत्त २१६)। **°चरपुर** न [°चरपुर] एक विद्याधर-नगर (इक)। **°जत्ता** स्त्री [°यात्रा] विजय के लिए किया जाता प्रयाण (धर्मवि ५६)। **°ढक्का** स्त्री [°ढक्का] विजय-सूचक भेरी (सुपा २६८)। **°देव** पुं [°देव] अठारहवीं शताब्दी का एक जैन आचार्य (अज्झ १)। **°पुर** न [°पुर] नगर-विशेष (इक २२३; २२४; ३२६)। **°पुरा, °पुरी** स्त्री [°पुरी] पक्ष्मकावती नामक विजय-क्षेत्र की राजधानी (ठा २, ३—पत्र ८०; इक)। **°माण** पुं [°मान] एक जैन आचार्य (द्र ७०)। **°वंत** वि [°वत्] विजयी, विजेता (ति १४)। **°वत्त** न [°ावर्त] चैत्य-विशेष (कल्पटिप्पनक)। **°वद्धमाण** पुंन [°वर्धमान] ग्राम-विशेष (विपा १, १)। **°वेजयंती** स्त्री [°वैजयन्ती] विजय-सूचक पताका (औप)। **°सायर** पुं [°सागर] एक सूर्यवंशी राजा (पउम ५, ६२)। **°सिंह, °सीह** पुं [°सिंह] १ सुप्रसिद्ध प्राचीन जैनाचार्य (सुपा ६५८)। २ एक विद्याधर राज-कुमार (पउम ६, १५७)। **°सूरि** पुं [°सूरि] चन्द्रगुप्त के समय का एक जैन आचार्य (धर्मवि ४४)। **°सेण** पुं [°सेन] एक प्रसिद्ध जैन आचार्य जो आम्रदेव सूरि के शिष्य थे (पव २७६—गाथा १५६६)।

विजयंता }
विजयंती } स्त्री [वैजयन्ती] १ पक्ष की आठवीं रात (सुज्ज १०, १४)। २ एक रानी का नाम (उप ७२८ टी)।

विजया स्त्री [विजया] भगवान् शान्तिनाथ की दीक्षा-शिविका (विचार १२९)।

विजया स्त्री [विजया] १ भगवान अजित-नाथजी की माता का नाम (सम १५१)। २ पाँचवें बलदेव की माता (सम १५२)। ३ अंगारक आदि ग्रहों की एक पटरानी (ठा ४, १—पत्र २०४)। ४ विद्या-विशेष (पउम ७, १४१)। ५ पूर्व-रुचक पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८—पत्र ४३६)। ६ पाचवें चक्रवर्ती राजा की पटरानी—स्त्री-रत्न (सम १५२)। ७ विजय नामक देव की राजधानी (सम २१)। ८ वप्रा नामक विजय की राजधानी (ठा २, ३—पत्र ८०; इक)। ९ पक्ष की सातवीं रात (सुज्ज १०, १४)। १० एक श्रेष्ठिनी (सुपा ६२९)। ११ भगवान् विमलनाथजी की शासन-देवी (पव २७; संति १०)। १२ भगवान् सुमतिनाथजी की दीक्षा-शिबिका (सम १५१)। १३ एक पुष्करिणी (इक)।

विजल वि [विजल] १ जल-रहित (गउड)। २ न. जल-रहित पंक (दस ५, १, ४)। देखो विज्जल।

विजह सक [वि + हा] परित्याग करना। विजहइ (पि ५७७)। संकृ. **विजहित्तु** (उत्त ८, २)।

विजहणा स्त्री [विहान] परित्याग (ठा ३, ३—पत्र १३९)।

विजाइय वि [विजातीय] भिन्न जाति का, दूसरी तरह का (उप १२८ टी)।

विजाण देखो विआण = वि + ज्ञा। संकृ. **विजाणित्ता, विजाणिय** (कप्प)।

विजाणग }
विजाणय } वि [विज्ञायक] जाननेवाला, विज्ञ (आचा; सूअनि १४५)।

विजाणुअ वि [विज्ञ, विज्ञायक] ऊपर देखो (प्राकृ १८)।

विजादीअ (शौ) देखो विजाइय (नाट—चैत ८८)।

विजाय न [दे] लक्ष्य, निशाना; 'लक्खं विजायं' (पाअ)।

विजिअ वि [विजित] पराभूत, हारा हुआ (सुर ६, २५; स ७००)।

विजुत्त वि [वियुक्त] विरहित (धर्मसं १७४)।

विजुरि (अप) स्त्री [विद्युत्] बिजली (पिंग)।

विजेट्ठ वि [विज्येष्ठ] मध्यम; 'जेट्ठ विजेट्ठा कणिट्ठा य' (चेइय १५३)।

विजेतव्व देखो विजय = वि + जि।

विजोज सक [वि + योजय्] वियोग करना, अलग करना। संकृ. **विजोजिय** (पंच ५, १२९)।

विजोजण न [वियोजन] वियोग, विरह (मोह ९८)।

विजोजिअ वि [वियोजित] जुदा किया हुआ (कुप्र २८८)।

विजोयावइत्तु वि [वियोजयितृ] वियोजक, अलग करनेवाला (ठा ४, ३—पत्र २३८; २३९)।

विजोहा स्त्री [विज्जोहा] छन्द-विशेष (पिंग)।

विज्ज अक [विद्] होना। विज्जइ; विज्जए (षड्; कस; भग; महा), विज्जई (सूअ १, ११, ६)। वकृ. **विज्जंत; विज्जमाण** (सुर २, १७६; पंचा ६, ४७)।

विज्ज सक [वीजय्] पंखा चलाना, हवा करना। कर्म. विज्जिज्जइ (भवि)। कवकृ. **विज्जिज्जंत** (पउम ६१, ३७; वज्जा ३६)।

विज्ज पुं [वैद्य] चिकित्सक, हकीम (सुर १२, २४; नाट—विक्र ६५)।

विज्ज पुं. ब. [दे] देश-विशेष (पउम ९८, ६५)।

विज्ज पुं [विद्वस्, विज्ञ] पण्डित, जानकार (हे २, १५; कुमा; प्राकृ १८; सूअ १, ६, ५)।

विज्ज देखो वीरिअ (पउम ३७, ७०)।

विज्ज° देखो विज्जा। **°उभर** (अप) देखो विज्जा-हर (पि २१६)। **°त्थि** वि [°र्थिन्] छात्र, अभ्यासी (सम्मत्त १४३)।

विज्ज° देखो विज्जु (कुप्र ३६९)।

°विज्जंतअ देखो पिज्जंत (से २, २४; पि ६०३)।

विज्जय न [वैद्यक] चिकित्सा (उर ८, १०; भवि)।

विज्जल पुं [विजल] १ नरकावास-विशेष, एक नरक-स्थान (देवेन्द्र २८)। २ वि. जल-रहित (निचू १)।

विज्जल } न [दे. विजल] कर्दम, पंक,
विज्जुल } कांदो, कादा (आचा २, १, ५, ३; २, १०, २)।

विज्जलिया स्त्री [विद्युत्] बिजली (कुप्र २८५)।

विज्जा स्त्री [विद्या] १ शास्त्र-ज्ञान, यथार्थ ज्ञान, सम्यग् ज्ञान (उत्त २३, २; णंदि; धर्मवि ३६; कुमा; प्रासू ४३)। २ मन्त्र, देवी-अधिष्ठित अक्षर-पद्धति। ३ साधनावाला मन्त्र (पिंड ४६४; औप; ठा ३, ४ टी—पत्र १५६)। °अणुप्पवाय न [°अनुप्रवाद] जैन अंग ग्रन्थांश विशेष, दसवाँ पूर्व (सम २६)। °चारण पुं [°चारण] शक्ति-विशेष-संपन्न मुनि (भग २०, ६—पत्र ७६३)। °चारणलद्धि स्त्री [°चारणलब्धि] शक्ति-विशेष (भग २०, ६)। °णुप्पवाय देखो °अणुप्पवाय (राज)। °णुवाय न [°नुवाद] दसवाँ पूर्व (सिरि २०७)। °पिंड पुं [°पिण्ड] विद्या के बल से अर्जित भिक्षा (निचू १३)। °मंत वि [°वत्] विद्या-संपन्न (उप ४२५)। °लय पुंन [°लय] पाठशाला (प्रामा)। °सिद्ध वि [°सिद्ध] १ सर्व विद्याओं का अधिपति, सभी विद्याओं से संपन्न। २ जिसको कम से कम एक महाविद्या सिद्ध हो चुकी हो वह; 'विज्जाण चक्कवट्टी विज्जासिद्धो स, जस्स वेगावि सिज्झेज्ज महाविज्जा' (आवम)। °हर पुं [°धर] १ क्षत्रियों का एक वंश (पउम ५, २)। २ पुंस्त्री. उस वंश में उत्पन्न (महा)। स्त्री. °री (महा; उव)। ३ वि. विद्या-धारी, शक्ति विशेष-सम्पन्न (औप; राय; जं ४)। °हरगोवाल पुं [°धरगोपाल] एक प्राचीन जैन मुनि, जो सुस्थित और सुप्रतिबुद्ध आचार्य के शिष्य थे (कप्प)। °हरी स्त्री [°धरी] एक जैन मुनि-शाखा (कप्प)। °हार (अप) न [°धर] छन्द-विशेष (पिंग)।

विज्जावच्च (अप) देखो वेयावच्च (भवि)।

विज्जाहर वि [वैद्याधर] विद्याधर-संबन्धी; स्त्री. 'एसा विज्जाहरी माया' (महा)।

विज्जाडिय देखो विज्झडिय (राज)।

विज्जु पुं [विद्युत्] १ विद्याधर-वंश का एक राजा (पउम ५, १८)। २ देवों की एक जाति, भवनपति देवों का एक भेद (पण्ह १, ४—पत्र ६८)। ३ आमलकप्पा नगरी का निवासी एक गृहस्थ (णाया २—पत्र २५१)। ४ एक नरक-स्थान (देवेन्द्र २६)। ५ स्त्री. ईशानेन्द्र के सोम आदि लोकपालों की एक-एक अग्रमहिषी—पटरानी (ठा ४, १—पत्र २०४)। ६ चमर नामक इन्द्र की एक पटरानी (ठा ५, १—पत्र ३०२; णाया २—पत्र २५१)। ७ पुंस्त्री. बिजली; 'विज्जुणा, विज्जूए' (हे १, ३३; कुमा; गा १३५)। ८ सन्ध्या, शाम (हे १, ३३)। ९ वि. विशेष रूप से चमकनेवाला; 'विज्जुसोयामणिप्पभा' (उत्त २२, ७)। °कार देखो °यार (जीव ३—पत्र ३४२)। °कुमार पुं [°कुमार] एक देव-जाति (भग; इक)। °कुमारी स्त्री [°कुमारी] विदिग्रुचक पर रहनेवाली दिक्कुमारी देवी; 'चत्तारि विज्जुकुमारिमहत्तरियाओ पण्णत्ताओ' (ठा ४, १—पत्र १९८)। °जिब्भ (?), °जिब्भ पुं [°जिह्व] अनुवेलंधर नागराज का एक आवास-पर्वत (इक; राज)। °तेअ पुं [°तेजस्] विद्याधरवंश का एक राजा (पउम ५, १८)। °दंत पुं [°दन्त] १ एक अन्त-र्द्वीप। २ उसमें रहनेवाली मनुष्य-जाति (ठा ४, २—पत्र २२६)। °दत्त पुं [°दत्त] विद्याधरवंश का एक राजा (पउम ५, १८)। °दाढ पुं [°दंष्ट्र] विद्याधर-वंश में उत्पन्न एक राजा का नाम (पउम ५, १८)। °पह, °प्पभ, °प्पह पुं [°प्रभ] १ एक वक्षस्कार पर्वत का नाम (सम १०२ टी; ठा २, ३—पत्र ६६; ५, २—पत्र ३२६; जं ४; सम १०२; इक)। २ कूट-विशेष, विद्युत्प्रभ वक्षस्कार का एक शिखर (जं ४; इक)। ३ देव-विशेष, विद्युत्प्रभ नामक वक्षस्कार पर्वत का अधिष्ठाता देव (जं ४)। ४ अनुवेलंधर नागराज का एक आवास-पर्वत (ठा ४, २—पत्र २२६; इक)। ५ उस पर्वत का निवासी देव (ठा ४, २—पत्र २२६)। ६ देवकुरु वर्ष में स्थित एक महाद्रह (ठा ५, २—पत्र ३२६)। ७ न. एक विद्याधर-नगर (इक ३२६)। °मई स्त्री [°मती] एक स्त्री का नाम (पण्ह १, ४—पत्र ८५)। °मालि पुं [°मालिन्] १ पंचशैल द्वीप का अधिपति एक यक्ष (महा)। २ रावण का एक सुभट (से १३, ८४)। ३ ब्रह्मदेवलोक का इंद्र (राज)। °मुह पुं [°मुख] १ विद्याधर-वंश का एक राजा (पउम ५, १८)। २ एक अन्तर्द्वीप। ४ उसका निवासी मनुष्य (ठा ४, २—पत्र २२६; इक)। °मेह पुं [°मेघ] १ विद्युत्प्रधान मेघ, जल-रहित मेघ। २ बिजली गिरानेवाला मेघ (भग ७, ६—पत्र ३०५)। °यार पुं [°कार] बिजली करना, विद्युद्-रचना (भग २, ६)। °लआ, °लया स्त्री [°लता] विद्युत्, बिजली (नाट—वेणी ६६; काल)। °लइाइद न [°लतायित] बिजली की तरह आचरण (कप्पू)। °विल-सिअ न [°विलसित] १ छन्द-विशेष (अजि २१)। २ बिजली का विलास (से ४, ४०)। °सिहा स्त्री [°शिखा] एक रानी का नाम (महा)।

विज्जुआ स्त्री [विद्युत्] १ बिजली (नाट—वेणी ६६)। २ बलि नामक इन्द्र के सोम आदि चारों लोकपालों की एक-एक पटरानी; 'मित्तगा सुभद्दा विज्जुत्ता (? या) असणी' (ठा ४, १—पत्र २०४; इक)। ३ धरणेन्द्र की एक अग्र-महिषी (णाया २—पत्र २५१; इक)।

विज्जुआइत्तु वि [विद्युत्कर्तृ] बिजली करने-वाला (ठा ४, ४—पत्र २६९)।

विज्जुला } देखो विज्जु = विद्युत् (हे २,
विज्जुलिआ } १७३; षड् १६१; कुमा; प्राकृ
विज्जुली } ३६; प्राप्र; पि २४४)।

विज्जू देखो विज्जु। °माला स्त्री [°माला] छन्द-विशेष (पिंग)।

विज्जे अ [दे] १ मार्ग से, रास्ता से। २ लिए (भवि)।

विज्जोअ पुं [विद्योत] उद्योत, प्रकाश; 'जोव्वणं जीविअं रूवं विज्जुविज्जोअचंचलं' (हित ६)।

विज्जोइय } वि [विद्योतित] प्रकाशित;
विज्जोविय } चमका हुआ (उप पृ ३३; स ५७६)।

विज्झ सक [व्यध्] बींधना, वेध करना, भेदना। विज्झंति (सूअ १, ५, १, ९), विज्झसे (गा ४४१) संकृ. विद्धूण (सूअ १, ५, १, ९)। कृ. विज्झ (षड्)।

विज्झ अक [वि + घट्] अलग होना। विज्झइ (धात्वा १५२)।

विज्झ न [दे] बोझ, धक्का, ठेला; 'तो हत्थी तम्मि पडे विज्झं दाऊण कुमरमणु-मग्गे' (धर्मवि ८१),
'ताव वणवारणेण य विज्झाइ
(? इं) नरं अपावमाणेण
कुविएण विइण्णाइं धणियं
नग्गोहरुक्खम्मि' (स ११३)।

विज्झ वि [विद्ध] बिंधा हुआ; 'जइ तंपि तेण बाणेण विज्झसे जेण हं विज्झा' (गा ४४१)।

विज्झ देखो विज्झ = व्यध्।

विज्झडिय वि [दे] १ मिश्रित, व्याप्त; 'सीउण्हखरफरुसवायविज्झडिया' (भग ७, ६—पत्र ३०७; उव)।

विज्झल देखो विब्भल = विह्वल (भग ७, ६ टी—पत्र ३०८)।

विज्झव सक [वि + ध्यापय्] बुझाना, दीपक आदि को गुल करना, ठंढा करना। विज्झवइ (गउड; कुप्र ३६७)। कर्म. विज्झविज्जइ (गा ४०७; स ४८६)। संकृ. विज्झवेऊणं, विज्झविय (धर्मसं ९५८; स ४६६)। कृ. विज्झवियव्व (पउम ७८, ३७)।

विज्झवण स्त्रीन [विध्यापन] बुझाना, उप-शान्ति (स ४८६; सम्मत्त १६२; कुप्र २७०)। स्त्री. °णा (संथा १०९)।

विज्झविअ वि [विध्यापित] बुझाया हुआ, गुल किया हुआ, ठंढा किया हुआ (से ८, १६; १२, ७७; गा ३३३; पउम २०, ६२)।

विज्झा, **विज्झाअ** अक [वि + ध्यै] बुझना, ठंढा होना, गुल होना। विज्झाइ (गा ४३०; हे २, २८)। वकृ. विज्झाअंत (गा १०९)।

विज्झाअ, **विज्झाण** वि [विध्यात] १ बुझा हुआ, उपशान्त (से १, ३१; णाया १, १—पत्र ६६; १, १४—पत्र १९०; गउड; सुपा ४४८; प्रासू १३७; पउम ५, १८२)। २ संक्रम-विशेष; 'विज्झायनाम-गेणं संकममेतेण मुज्झंति' (सम्यक्त्वो २१)।

विज्झाव देखो विज्झव। विज्झावेइ (गा ८३६)।

विज्झावण देखो विज्झवण (उप २६४ टी)।

विज्झाविअ देखो विज्झविअ (महा)।

विज्झिडिय पुं [दे] मत्स्य की एक जाति (पण्ण १—पत्र ४७)।

विटंक देखो विडंक (माल २३४; राज)।

विट्टाल सक [दे] अस्पृश्य करना, उच्छिष्ट करना, बिगाड़ना, दूषित करना, अपवित्र करना। विट्टालिंति (सुख १, १५)। कर्म. 'विट्टालिज्जइ गंगा कयाइ किं वासवारेहिं' (चेइय १३४)। वकृ. विट्टालयंत (सिरि ११३२)।

विट्टाल पुं [दे] अस्पृश्य-संसर्ग, उच्छिष्टता, अपवित्रता; 'तुह घरम्मि चंडाली, विट्टालं कुणइ', 'सा घरबाहिं चिट्ठइ भुंजइ य, न तेण देव विट्टालो' (कुप्र २४३; हे ४, ४२२)।

विट्टालण न [दे] ऊपर देखो (स ७०१)।

विट्टालि वि [दे] बिगाड़नेवाला, अपवित्र करनेवाला। स्त्री. °णी (कप्पू)।

विट्टालिअ वि [दे] उच्छिष्ट किया हुआ, अपवित्र किया हुआ, बिगाड़ा हुआ (धर्मवि ४५; सिरि ७१६; सुपा ११५; ३६०; महा)।

विट्टी स्त्री [दे] गठरी, पोटली (ओघ ३२४)। देखो विंटिया।

विट्ठ वि [वृष्ट] बरसा हुआ (हे १, १३७; षड्)।

विट्ठ वि [विष्ट] १ प्रविष्ट, पैठा हुआ (सूअ १, ३, १, १३)। २ उपविष्ट, बैठा हुआ (पिंड ६००)।

विट्ठ वि [दे] सुप्तोत्थित, सो कर उठा हुआ (षड्)।

विट्ठअ न [विष्टप] भुवन, जगत् (मुच्छ १०९)।

विट्ठंभ सक [वि + ष्टम्भय्] १ रोकना। २ स्थापित करना, रखना। विट्ठंभंति (औप)। संकृ. विट्ठंभित्ता (औप)।

विट्ठंभणया स्त्री [विष्टम्भना] स्थापना (औप)।

विट्ठर पुंन [विष्टर] आसन; 'विट्ठरो' (प्राप्र; पउम ८०, ७; पाअ; सुपा ६०)।

विट्ठा स्त्री [विष्ठा] बीट, पुरीष, मल (पाअ; ओघभा २९८; प्रासू १५८)। °हर न [°गृह] मलोत्सर्ग-स्थान, टट्टी (पउम ७४, ३८)।

विट्ठि स्त्री [विष्टि] १ कर्म, काज, काम (दे २, ४३)। २ ज्योतिष-प्रसिद्ध एक करण, अर्ध तिथि (विसे ३३४८; स २९५; गण १९)। ३ भद्रा नक्षत्र (सुर १६, ९०)। ४ बेगार, मजूरी दिए बिना ही जबरदस्ती या बेमन का कराया जाता काम (उर ६, ११)।

विट्ठि स्त्री [वृष्टि] वर्षा, बारिश (हे १, १३७; प्राकृ ८; संक्षि ५; पउम २०, ८७; कुमा; रंभा)। देखो वुट्ठि।

विट्ठित वि [दे] अर्जित (षड्)।

विट्ठिय न [विस्थित] विशिष्ट स्थिति (भग ९, ३२ टी—पत्र ४६९)।

विड पुं [विट] १ भँडुआ (कुमा; सुर, ३, ११६; रंभा)।

विड न [विड] लवण-विशेष, एक तरह का नमक (दस ६, १८)।

विडंक पुंन [विटङ्क] कपोतपाली, प्रासाद आदि के आगे की ओर काठ का बना हुआ पक्षियों के रहने का स्थान, छतरी (णाया १, १—पत्र १२; दे ७, ८६; गउड)।

विडंकिआ स्त्री [दे] वेदिका, वेदी, चौतरा (दे ७, ६७)।

विडंग देखो विडंक (पण्ह १, १—पत्र ८)।

विडंग पुंन [विडङ्ग] १ औषध-विशेष। २ वि. अभिज्ञ, विदग्ध;
'विज्ज न एसो जरओ न
य वाही एस कोवि संभूओ।
उवसमइ सलोणेणं विडंगजोया-
मयरसेणं' (वज्जा १०४)।

विडंब सक [वि + डम्बय्] १ तिरस्कार करना, अपमान करना। २ दुःख देना। ३ नकल करना। विडंबइ, विडंबंति, विडंबेमि (भवि; कुप्र १९४; स ६९३)। वकृ.

विडंबंत (पउम ८, ३२)। कवकृ. विडंबिज्जंत (सुपा ७०)।

विडंब सक [वि + डम्बय्] विवृत करना, फैलाना। विडंबेइ (भग ३, २—पत्र १७३)।

विडंब पुंन [विडम्ब] १ तिरस्कार, अपमान (भवि)। २ माया जाल, प्रपंच; 'अणिच्चं च कामाण सेवाविडंबं' (श्रु ६; कप्पू)।

विडंबग वि [विडम्बक] विडंबना-जनक; 'जइवेसविडंबगा नवरं' (संबोध १४; उत्र)।

विडंबण न [विडम्बन] नीचे देखो (भवि)।

विडंबणा स्त्री [विडम्बना] १ तिरस्कार, अपमान (दे)। २ दुःख, कष्ट (पण्ह ४२)। ३ अनुकरण, नकल। ४ उपहास। ५ कपट-वेष (कप्पू)।

विडंबिय वि [विडम्बित] विडम्बना-प्राप्त (कप्प; गउड; ३०२)।

विडज्झमाण वि [विदह्यमान] जो जलाया जाता हो वह, जलता हुआ (आचा १, ६, ४, १)।

विडड्ढ देखो विदड्ढ (गा ६७१)।

विडप्प, विडय पुं [दे] राहु (दे ७, ६५; पाअ; गउड; वज्जा ९८; दे ७, ६५)।

विडव पुं [विटप] १ पल्लव (सुर ३, ४५)। २ शाखा (भवि ११०)। ३ पल्लव-विस्तार। ४ स्तम्ब गुच्छा (प्राप्र)।

विडवि पुं [विटपिन्] वृक्ष, पेड़, दरख्त (पाअ; सुपा ८८; गउड; सण)।

विडविड, विडविड्ड सक [रचय्] बनाना, निर्माण करना। विडविडइ, विडविड्डइ (हे ४, ९४; षड्)। भूका. विडविड्डीअ (कुमा)।

विडिअ वि [व्रीडित] लज्जित (से ११, ५०; पि ८१)।

विडिंचिअ, विडिंचिर वि [दे] विकराल, भीषण, भयंकर (दे ७, ६६)।

विडिम पुं [दे] १ बाल-मृग (दे ७, ८९)। २ गण्डक, गेंड़ा (दे ७, ८९; गउड)। ३ वृक्ष, पेड़; 'दुमा य पायवा रुक्खा आगमा विडिमा तरू' (दसनि १, ३५)। ४ शाखा (पण्ह २, ४—पत्र १३०; औप; तंदु २१)।

विडिमा स्त्री [दे] शाखा (पण्ह २, ४; तंदु २१; राज)।

विडुच्छअ वि [दे] निषिद्ध; प्रतिषिद्ध (षड्)।

विडुविल्ल वि [दे] भीषण, भयंकर (नाट—मालती १३७)।

विडूर पुं [विदूर] १ पर्वत-विशेष। २ देश-विशेष, जहाँ वैदूर्य रत्न पैदा होता है (कप्पू)।

विडोमिअ पुं [दे] गण्डक मृग, गेंड़ा (दे ७, ५७)।

विड्ड वि [दे] १ दीर्घ, लम्बा (दे ७, ३३)। २ प्रपंच, विस्तार (दे १, ४)।

विड्ड वि [व्रीड, व्रीडित] लज्जित, शरमिन्दा; 'लजिया विलिया विड्डा' (निर १, १; पि २४०)।

विड्डुर देखो विड्डिर; 'अकंडविड्डुरमेयं किं देव पारद्धं' (उप ७६८ टी)।

विड्डा स्त्री [व्रीडा] लज्जा, शरम (दे ७, ६१; पि २४०)।

विड्डार न [विड्डार] देखो विड्डेर (राज)।

विड्डिर न [दे] १ आभोग (दे ७, ९०)। २ आटोप, आडम्बर (पाअ)। ३ वि. रौद्र भयंकर (दे ७, ९०)।

विड्डिरिल्ला स्त्री [दे] रात्रि, निशा (दे ७, ६७)।

विड्डुम देखो विद्दुम (पाअ)।

विड्डुरी स्त्री [दे] आटोप, आडम्बर; 'किं लिंगविड्डुरीधारणेणं' (उव)।

विड्डुरिल्ल वि [वैडूर्यवत्] वैदूर्य रत्नवाला (सुपा ५९)।

विड्डेर न [दे. विड्डेर] नक्षत्र-विशेष, पूर्व द्वारवाले नक्षत्रों में पूर्व दिशा से जाने के बदले पश्चिम दिशा से जाने पर पड़ता नक्षत्र (विसे ३४०६)। देखो विड्डार।

विढज्ज (शौ) सक [वि + दह्] जलाना। संकृ. विढज्जिअ (पि २१२)।

विढणा स्त्री [दे] पार्ष्णि, फीली का नीचला भाग (दे ७, ६२)।

विढत्त वि [अर्जित] उपार्जित, पैदा किया हुआ (हे ४, २५८; गउड; श्रा १०; प्रासू ७४; भवि)।

विढत्ति स्त्री [अर्जिति] अर्जन, उपार्जन (श्रा १२)।

विढप्प अक [व्युत् + पद्] व्युत्पन्न होना। विढप्पंति (प्राकृ ६४)।

विढप्प° नीचे देखो।

विढव सक [अर्ज्] उपार्जन करना, पैदा करना। विढवइ (हे ४, १०८; महा; भवि)। कर्म. विढविज्जइ, विढप्पइ (हे ४, २५१; कुमा; भवि)।

विढवण न [अर्जन] उपार्जन (सुर १, २२१)।

विढविअ वि [अर्जित] पैदा किया हुआ (कुमा; सुपा २८०; महा)।

विढिअ वि [वेष्टित] लपेटा हुआ (सुपा ३८८)।

विणइ वि [विनयिन्] दूर करनेवाला; 'आरंभविणईणं' (आचा)।

विणइत्त वि [विनयवत्] विनयवाला, विनय को ही सर्व-प्रधान माननेवाला (सूअनि ११८)।

विणइत्तु वि [विनेतृ] विनीत बनानेवाला, विनय की शिक्षा देनेवाला (उत्त २९, ४)।

विणइत्तु देखो विणी = वि + नी।

विणइय वि [विनयित] शिक्षित किया हुआ, सिखाया हुआ (राज)। देखो विणय।

विणइल्ल देखो विणइत्त (कुमा)।

विणएत्तु देखो विणी = वि + नी।

विणट्ठ वि [विनष्ट] विनाश-प्राप्त (उव; प्रासू ३१; नाट—मृच्छ १५२)।

विणड सक [वि + नटय्, वि + गुप्] १ व्याकुल करना। २ विडम्बना करना। विणडेइ (गउड ६८), विणडंति (उव), विणडउ (हे ४, ३८५; पि १००)।

विणडिअ देखो विनडिअ (गा ६३० टी)।

विणण न [वान] बुनना (बृह १)।

विणभ सक [खेदय्] खिन्न करना। विणभइ (धात्वा १५३)।

विणम सक [वि + नम्] विशेष रूप से नमना। वकृ. विणमंत (नाट—मालवि ३४)।

विणमि देखो विनमि (राज)।

विणमिअ वि [विनत] विशेष रूप से नत (भग; औप; णाया १, १ टी—पत्र ५)।

विणमिअ वि [विनमित] नमाया हुआ (गउड)।

विणय पुं [विनय] १ अभ्युत्थान, प्रणाम आदि भक्ति, शुश्रूषा, शिष्टता, नम्रता (आचा; ठा ४, ४ टी—पत्र २८३; कुमा; उवा; औप; गउड; महा; प्रासू ८)। २ संयम, चारित्र (सम ५१)। ३ नरकावास-विशेष, एक नरक-स्थान (देवेन्द्र २९)। ४ अपनयन, दूरीकरण। ५ शिक्षा, सीख। ६ अनुनय। ७ वि. विनय-युक्त, विनीत। ८ निभृत, शान्त। ९ क्षिप्त, फेंका हुआ। १० जितेन्द्रिय, संयमी (हे १, २४५)। ११ पुं. शास्त्रानुसार प्रजा का पालन (गउड ६७)। °मंत वि [°वत्] विनय-युक्त (उप पृ १६६)।

विणय वि [विनत] १ विशेष रूप से नमा हुआ (औप)। २ पुंन. एक देव-विमान (सम ३७)।

विणय° देखो विणया। °तणय पुं [°तनय] गरुड पक्षी (वज्जा १२२)। °सुअ पुं [°सुत] वही अर्थ (पाअ)।

विणयइत्तु देखो विणइत्तु (सुख २९, ४)।

विणयंधर पुं [विनयन्धर] एक शेठ का नाम (उप ७२८ टी)।

विणयण न [विनयन] विनय-शिक्षा, शिक्षण; 'आयारदेसणाओ आयरिया, विणयणादुवज्झाया' (विसे ३२००)।

विणया स्त्री [विनता] गरुड की माता का नाम (गउड)। °तणय पुं [°तनय] गरुड पक्षी (से १४, ६१; सुपा ३५४)।

विणस देखो विणस्स। विणसइ (उर ७, ३; कुमा ८, २१)।

विणस्सिर वि [विनश्वर] विनाश-शील; नश्वर (दे १, ६०)।

विणस्स अक [वि + नश्] नष्ट होना, विध्वस्त होना। विणस्सइ, विणस्सए, विणस्से (उव; महा; धर्मसं ४०१)। भवि. विणस्सिहिसि (महा)। वकृ. **विणस्समाण** (उवा)। कृ. विणस्स (धर्मसं ४०२; ४०३)।

विणस्सर देखो विणासिर (पि ३१५)।

विणा अ [विना] सिवाय, बिना (गउड; प्रासू १०; १५६; दं १७)।

विणामिद (शौ) देखो विणमिअ = विनमित (नाट—मृच्छ २१८)।

विणायग पुं [विनायक] यक्ष, एक देव-जाति; 'तत्थेव आगओ सो विणायगो पूयणो नामं' (पउम ३५, २२)। २ गणपति, गणेश (सट्ठि ७८ टी)। ३ गरुड (पउम ७१, ६७)। °त्थ न [°ास्त्र] अस्त्र-विशेष, गरुडास्त्र (पउम ७१, ६७)।

विणास देखो विणस्स। विणासइ (भवि)।

विणास सक [वि + नाशय्] ध्वंस करना, नष्ट करना। विणासेइ (उव; महा)। भवि. विणासिही, विणासेहामि (पि ५२७; ५२८)। कर्म. विणासिज्जइ (महा)। कवकृ. विणासिज्जंत (महा)। कृ. विणासियव्व (सुपा १४५)।

विणास पुं [विनाश] विध्वंस (उव; हे ४, ४२४)।

विणासग वि [विनाशक] विनाश-कर्ता (द्र १७)।

विणासण न [विनाशन] १ विनाश, विध्वंस (भवि)। २ वि. विनाश-कर्ता (पण्ह २, १—पत्र ९९; दस ८, ३८)।

विणासिअ वि [विनाशित] विनाश-प्राप्त (पाअ; महा; भवि)।

विणि° देखो विणी।

विणिअंसण न [विनिदर्शन] खास उदाहरण, विशेष दृष्टान्त (से १२, ६९)।

विणिअंसण वि [विनिवसन] वस्त्र-रहित, नंगा (गा १२५)।

विणिइत्तु देखो विणइत्तु (उत्त २९, ४)।

विणिउत्त वि [विनियुक्त] कार्य में प्रवर्तित (उप पृ ७५)।

विणिओग पुं [विनियोग] १ उपयोग, ज्ञान (विसे २४३७)। २ कार्य में लगाना (पंचा ७, ६)। ३ विनिमय, लेनदेन (कुप्र २०९)।

विणिओय सक [विनि + योजय्] जोड़ना, लगाना। विणिओयइ (भवि)।

विणित देखो विणी = विनिर् + इ।

विणिकुट्टिय वि [विनिकुट्टित] कूट कर बैठाया हुआ; 'थंभविणिकुट्टियाहिं पवराहिं सालहंजीहिं' (सुपा १८८)।

विणिकम देखो विणिक्खम। विणिकमइ (गउड २७५; पि ४८१)।

विणिकस सक [विनि + कृष्] खींच कर निकालना। संकृ. विणिकस्स (सूअ १, ५, १, २२)।

विणिक्खंत वि [विनिष्क्रान्त] १ बाहर निकला हुआ। २ जिसने गृह-त्याग किया हो वह, संन्यस्त (उप १४७ टी; कुप्र ३६; महा)।

विणिक्खम अक [विनिस् + क्रम्] १ बाहर निकलना। २ सन्यास लेना। विणिक्खमइ (गउड ८५१; ११८१)। संकृ. विणिक्खिमित्ता (भग)।

विणिक्खमण न [विनिष्क्रमण] १ बाहर निकलना। २ संन्यास लेना (पंचा १८, २१)।

विणिक्खित्त वि [विनिक्षिप्त] फेंका हुआ (नाट—मृच्छ ११९)।

विणिगिण्ह सक [विनि + ग्रह्] निग्रह करना, दंड देना। वकृ. विणिगिण्हंत (उप पृ २३)।

विणिगूह सक [विनि + गूहय्] गुप्त रखना, ढकना। विणिगूहिज्जा (आचा २, १, १०, २)।

विणिग्गम पुं [विनिर्गम] निःसरण, बाहर निकलना (गउड)।

विणिग्गय वि [विनिर्गत] बाहर निकला हुआ, बाहर गया हुआ (से २, ५; महा; भवि)।

विणिघाय पुं [विनिघात] १ मरण, मौत। २ संसार, भव-भ्रमण (ठा ५, १—पत्र २९१)।

विणिच्छ सक [विनिस् + चि] निश्चय करना। विणिच्छइ (सण)। संकृ. विणिच्छिऊण (सण)।

विणिच्छय पुं [विनिश्चय] निश्चय, निर्णय, परिज्ञान (पण्ह १, १—पत्र १; ठा ३, ३; उव)।

विणिच्छिअ वि [विनिश्चित] निश्चित, निर्णीत (भग; उवा; कप्प; सुर २, २०२)।

विणिजुंज सक [विनि + युज्] जोड़ना, कार्य में लगाना, प्रवृत्त करना। विणिजुंजइ (कुप्र ३६१)।

विणिज्जंतण वि [विनियन्त्रण] १ नियन्त्रण-रहित। २ प्रकटित, खुला। ३ निर्व्याज, कपट-रहित (से ११, २१)।

विणिज्जमाण देखो विणी = वि + नी।

विणिज्जरण न [विनिर्जरण] निर्जरा, विनाश (विसे ३७७६; संबोध ५१)।

विणिज्जरा स्त्री [विनिर्जरा] ऊपर देखो (संबोध ४६)।

विणिज्जिअ वि [विनिर्जित] पराभूत, जिसका पराभव किया गया हो वह (महा; रंभा; नाट—विक्र ६०)।

विणिद्द वि [विनिद्र] खिला हुआ, विकसित (पाअ)।

विणिद्दलिय वि [विनिर्दलित] विदारित, तोड़ा हुआ (सण)।

विणिद्धुण सक [विनिर् + धू] कँपाना। वकृ. विणिद्धुणमाण (पि ५०३)।

विणिप्फन्न वि [विनिष्पन्न] संसिद्ध, संपन्न (उप ३६६)।

विणिप्फिडिअ वि [विनिस्फिटित] विनिर्गत, बाहर निकला हुआ; 'सालिग्गामाउ तओ वंदणहेउं विणिप्फिडिओ' (पउम १०५, २३)।

विणिबुड्ड देखो विणिवुड्ड (पि ५६६)।

विणिब्भिन्न वि [विनिर्भिन्न] विदारित; 'कुंतविणिब्भिन्नकरिकलहमुक्कसिक्कारपउरम्मि' (णमि १६)।

विणिमीलिअ वि [विनिमीलित] मीचा हुआ, मूँदा हुआ; 'अलिअपसुत्तअविणिमीलिअच्छ दे सुहअ मज्झ ओआसं' (गा २०)।

विणिमुक्क देखो विणिम्मुक्क (पि ५६६)।

विणिमुय देखो विणिम्मुय। वकृ. विणिमुयंत (औप; पि ५६०)।

विणिम्मविअ वि [विनिर्मित] विरचित, बनाया हुआ, कृत (उप ७२८ टी)।

विणिम्माण न [विनिर्माण] रचना, कृति (विसे ३३१२)।

विणिम्मिअ देखो विणिम्मविअ (गा १५६; २३५; पाअ; महा)।

विणिम्मुक्क वि [विनिर्मुक्त] परित्यक्त; 'सव्वकम्मविणिम्मुक्कं तं वयं बूम माहणं' (उत्त २५, ३४)।

विणिम्मुय वि [विनिर् + मुच्] छोड़ना, परित्याग करना। वकृ. विणिम्मुयमाण (णाया १, १—पत्र ५३; पि ४८५)।

विणिय देखो विणीअ (भवि)।

विणियट्ट देखो विणिवट्ट। विणियट्टिज्ज (दस ८, ३४)। वकृ. विणियट्टमाण (आचा १, ५, ४, ३)।

विणियट्ट वि [विनिवृत्त] १ पीछे हटा हुआ। २ प्रणष्ट; 'विणियट्ट' ति पणट्ठं' (चेइय ३४६)।

विणियट्टणया स्त्री [विनिवर्तना] निवृत्ति (उत्त २६, १)।

विणियत्त देखो विणियट्ट (सुपा ३३५; भवि; गा ७१; कुप्र १८२)।

विणियत्ति स्त्री [विनिवृत्ति] निवृत्ति, उपरम (कुप्र १८२; गउड)।

विणिरोह पुं [विनिरोध] प्रतिबन्ध, अटकाव (भवि)।

विणिवट्ट अक [विनि + वृत्] निवृत्त होना, पीछे हटना। वकृ. विणिवट्टमाण (आचा १, ५, ४, ३)।

विणिवट्टण देखो विनियट्टण (राज)।

विणिवट्टणया स्त्री [विनिवर्तना] निवर्तन, विराम (भग १७, ३—पत्र ७२७)।

विणिवडिअ वि [विनिपतित] नीचे गिरा हुआ (दे १, १५७)।

विणिवत्ति देखो विणियत्ति (उप ७२८ टी)।

विणिवाइ वि [विनिपातिन्] मार गिरानेवाला (गा ६३०)।

विणिवाइज्जंत देखो विणिवाए।

विणिवाइय न [विनिपातिक] एक तरह का नाटक (राज)।

विणिवाइय वि [विनिपातित] मार गिराया हुआ, व्यापादित (उप ६४८ टी; महा; स ५६; सिक्खा ८२)।

विणिवाए सक [विनि + पातय्] मार गिराना। कवकृ. विणिवाइज्जंत (पउम ४५, ८)।

विणिवाडिअ देखो विणिवाइय (दे १, १३८)।

विणिवाद } पुं [विनिपात] १ निपात,
विणिवाय } अन्तिम पतन, विनाश; 'परखग्गेण वि दिट्ठो विणिवादो किं न लोगम्मि' (धर्मसं १२५; १२६; स २६५; ७२२)। २ मरण, मौत (से १३, १६; गउड; गा १०२)। ३ संसार (राज)।

विणिवायण न [विनिपातन] मार गिराना (पउम ४, ४८)।

विणिवार सक [विन + वारय्] रोकना, निवारण करना, निषेध करना। विणिवारइ (भवि)। कवकृ. विणिवारीअंत (नाट—मृच्छ १५४)।

विणिवारण न [विनिवारण] १ निवारण, प्रतिषेध। २ वि. निवारण करनेवाला (पंचा ७, ३२)।

विणिवारि वि [विनिवारिन्] निवावरणकर्त्ता (पंचा ७, ३२)।

विणिवारिय वि [विनिवारित] प्रतिषिद्ध, निवारित (महा)।

विणिविट्ठ वि [विनिविष्ट] १ उपविष्ट, स्थित (कुप्र १५२); 'सकम्मविणिविट्ठसरिसकयचेट्ठो' (उव; वै ६०)। २ आसक्त, तल्लीन (आचा)।

विणिवित्त देखो विणियट्ट (उप ७८६)।

विणिवित्ति देखो विणियत्ति (विसे २६३६; उवर १२७; श्रावक २५१; २५२; पंचा १, १७)।

विणिवुड्ड वि [विनिमग्न] निमग्न, बुड़ा हुआ, तराबोर, सराबोर; 'तइया ठिओ सि जं किर पलोट्टसंरंभसेयविणिवुड्डो' (गउड ४६०)।

विणिवेइअ वि [विनिवेदित] जनाया हुआ, ज्ञापित (से १४, ४०)।

विणिवेस पुं [विनिवेश] १ स्थिति, उपवेशन। २ विन्यास, रचना (गउड)।

विणिवेसिअ वि [विनिवेशित] स्थापित, रखा हुआ (गा ६७४; सुर ३, ६५)।

विणिव्वर न [दे] पश्चात्ताप, अनुशय (दे ७, ६८)।

विणिव्ववण न [विनिर्वपन] शान्ति, दाहोपशम (गउड)।

विणिस्सरिय वि [विनिःसृत] बाहर निकला हुआ (सण)।

विणिस्सह वि [विनिस्सह] श्रान्त, थका हुआ; 'कइयावि थणपरिस्समविणिस्सहो दीहीयासु मज्जेइ' (सुपा ५६)।

विणिह° देखो विणिहण।

विणिहट्टु देखो विणिहा।

विणिहण सक [विनि + हन्] मार डालना। विणिहणेज्जा, विणिहंति (सूअ १, ११, ३७; १, ७, १६)। कर्म. विणिहम्मंति (उत्त ३, ६)।

विणिहय वि [विनिहत] जो मार डाला गया हो, व्यापादित (महा)।

विणिहा सक [विनि + धा] १ व्यवस्था करना। २ स्थापन करना। संकृ. विणिहट्टु, विणिहाय, विणिहित्तु (चेइय २६८; सूअ १, ७, २१; कप्प)।

विणिहाय देखो विणिघाय (णाया १, १४—पत्र १८६)।

विणिहिअ / **विणिहित्त** } वि [विनिहित] स्थापित (गा ३६१; सुपा ६२)।

विणिहित्तु देखो विणिहा।

विणी अक [विनिर् + इ] बाहर निकलना। विणिंति, विणेंति (गा ६५४; पि ४९३)। वकृ. विणिंत (गउड १३८)।

विणी सक [वि + नी] १ दूर करना, हटाना। २ विनय-ग्रहण कराना। विणिंति (णाया १, १—पत्र २६; ३०), विणिज्जामि, विणइज्ज, विणएज्ज, विणेउ (णाया १, १—पत्र २६; सूअ १, १३, २१; वि ४६०; णाया १, १—पत्र ३२)। भूका. विणइंसु (सूअ १, १२, ३)। भवि. विणेहिइ (पि ५२१)। वकृ. विणेमाण (णाया १, १—पत्र ३३)। कवकृ. विणिज्जमाण (णाया १, १—पत्र २६)। हेकृ. विणएत्तु (आचा १, ५, ६, ४; पि ५७७)।

विणीअ वि [विनीत] १ अपनीत, दूर किया हुआ, हटाया हुआ (णाया १, १—पत्र ३३); 'सव्वदव्वेसु विणीयतण्हे' (उत्त २६, १३)। २ विनय-युक्त, नम्र, शिष्ट (ठा ४; ४—पत्र २८५; सुपा ११६; उव)। ३ शिक्षित; 'भद्दो विणीअविणओ' (उव ६)।

विणीआ स्त्री [विनीता] अयोध्या नगरी (सम १५१; कप्प; पउम ३२, ५०; ती १)।

विणील वि [विनील] विशेष हरा रँग का (गउड)।

विणु (अप) देखो विणा (हे ४, ४२६; षड्; हम्मीर २८; कुलक १२; भवि; कम्म २, ६; २६; २७; ३, ५; कुमा)।

विणेअ वि [विनेय] शिक्षणीय, शिष्य, अन्तेवासी, चेला (सार्ध ७०; उप १०३१ टी)।

विणेमाण देखो विणी = वि + नी।

विणोअ सक [वि + नोदय्] १ खण्डित करना। २ दूर करना, हटाना। ३ खेल करना। ४ कुतूहल करना। विणोएइ, विणोयंति (गउड), विणोदेमि (शौ) (स्वप्न ५१)। भवि. विणोदइस्सामो (शौ) (पि ५२८)। वकृ. विणोदअंत (शौ) (नाट—उत्तर ६५)। कवकृ. विणोदीअमाण (शौ) (नाट—मालवि ४५)।

विणोअ पुं [विनोद] १ खेल, क्रीड़ा। २ कौतुक, कुतूहल (गउड; सिरि ५६; सुर ४, २१६; हे १, १४६)।

विणोइअ वि [विनोदित] विनोद-युक्त किया हुआ (सुर ११, २३८; सण)।

विणोदअंत देखो विणोअ = वि + नोदय्।

विणोयक / **विणोयग** } वि [विनोदक] कुतूहल-जनक (रंभा)।

विणोयण न [विनोदन] १ अपनयद, दूर करना; 'परिस्समविणोयणत्थं' (उप १०३१ टी; कुप्र १४७)। २ कुतूहल, कौतुक (गा ४८७)।

विण्ण देखो विण्णु (संक्षि १६)।

विण्णइदव्व देखो विण्णव।

विण्णत्त वि [विज्ञप्त] निवेदित (सुपा २२)।

विण्णत्ति स्त्री [विज्ञप्ति] १ निवेदन, प्रार्थना (कुमा)। २ ज्ञान (सूअ १, १२, १७)।

विण्णत्ति स्त्री [विज्ञप्ति] विज्ञान, विनिर्णय (णंदि १३४)।

विण्णय देखो विणइय (ठा १०—पत्र ५१६)।

विण्णय देखो विण्ण (विपा १, २—पत्र ३६; १, ८—पत्र ८४)।

विण्णव सक [वि + ज्ञपय्] १ बिनती करना, प्रार्थना करना। २ मालूम करना, विदित करना। ३ कहना। विण्णवइ, विण्णवेमि, विण्णवेमो (पि ५५३; ५५१)। भवि. विण्णविस्सं (रुक्मि ४१)। वकृ. विण्णवंत (काल)। संकृ. विण्णविअ (नाट—मृच्छ २६४)। हेकृ. विण्णविदुं (शौ) (अभि ५३)। कृ. विण्णइदव्व (शौ) (पि ५५१)।

विण्णवणा स्त्री [विज्ञापना] विज्ञापन, निवेदन (उवा)। देखो विन्नवणा।

विण्णा सक [वि + ज्ञा] जानना। संकृ. विण्णाय (दस ८, ५६)। कृ. विण्णेय (काल)।

विण्णाउ देखो विन्नाउ (राज)।

विण्णाण देखो विन्नाण (उवा; महा; षड्)।

विण्णाण न [विज्ञान] अवाय-ज्ञान, निश्चयात्मक ज्ञान (णंदि १७६)।

विण्णाणि वि [विज्ञानिन्] निपुण, विचक्षण (कुमा)।

विण्णाय वि [विज्ञात] १ जाना हुआ, विदित (पाअ, गउड १२०)। २ न. विज्ञान (कप्प)।

विण्णाव देखो विण्णव। विण्णावेमि, विण्णावेहि (मा ३८; ३६)।

विण्णास वि [वि + न्यासय्] स्थापना करना, रखना। वकृ. विण्णासंत (पउम ४३, २६)।

विण्णास देखो विन्नास (मा ५१)।

विण्णासणा स्त्री [विन्यासना] स्थापना (उप ३५४)।

विण्णु / **विण्णुअ** } वि [विज्ञ] पण्डित, जानकार, विद्वान् (भग; प्राकृ १८)।

विण्णेय देखो विण्णा।

विण्हावणक न [विस्नापनक] मन्त्र आदि द्वारा संस्कृत जल से कराया जाता स्नान (पण्ह १, २—पत्र ३०)।

विण्हि देखो वण्हि = वृष्णि (राज)।

विण्हु पुं [विष्णु] १ भगवान् श्रेयांसनाथ के पिता का नाम (सम १५१)। २ श्रवण नक्षत्र का अधिपति देव (ठा २,३—पत्र ७७)। ३ यदुवंश के राजा अन्धकवृष्णि का नववाँ पुत्र (अंत ३)। ४ एक जैन मुनि, विष्णुकुमार नामक मुनि (कुलक ३३)। ५ एक श्रेष्ठी (उप १०१४)। ६ वासुदेव, नारायण, श्रीकृष्ण। ७ व्यापक। ८ वह्नि, अग्नि। ९ शुद्ध। १० एक स्मृति-कर्ता मुनि (हे २,७५)। ११ आर्य जेहिल के शिष्य एक जैन मुनि (राज)। १२ स्त्री. ग्यारहवें जिनदेव की माता का नाम (सम १५१)। °कुमार पुं [°कुमार] एक विख्यात जैन मुनि (पडि)। °सिरी स्त्री [°श्री] एक सार्थवाह-पत्नी (महा)। देखो विन्हु।

वितंड देखो वितड्ड (आचा)।

वितण्ह वि [वितृष्ण] तृष्णा-रहित, निःस्पृह (उप २६४ टी)।

वितत पुं [वितत] १ वाद्य का एक प्रकार का शब्द (ठा २, ३—पत्र ६३)। २ एक महाग्रह (सुज्ज २०—पत्र २९५)। देखो विअत्त। ३ देखो विअय = वितत (ठा ४, ४—पत्र २७१)।

वितत न [दे] कार्य, काम काज (दे ७, ६४)।

वितत्त वि [वितृप्त] विशेष तृप्त (पराह १, ३—पत्र ६०)।

वितत्थ पुं [वित्रस्त] १ एक महाग्रह, ज्योतिष्क देव-विशेष (ठा २,३—पत्र ७८)। २ वि. भय-भीत, डरा हुआ (महा)।

वितत्था स्त्री [वितस्ता] एक महा-नदी (ठा ५, ३—पत्र ३५१)।

विदद्द वि [वितर्द] १ हिंसक। २ प्रतिकूल (आचा)।

वितर देखो विअर = वि + तृ। वितराम, वितरामो (पि १०; ४५५)।

वितर (अप) अक [वि + स्तारय्] विस्तार करना। वितर (पिंग)।

वितरण देखो विअरण = वितरण (राज)।

वितल वि [वितल] शबल, चितकबरा (राज)।

वितह वि [वितथ] मिथ्या, असत्य, झूठा (आचा; कप्प; सण)।

वितिकिच्छिअ वि [विचिकित्सित] फल की तरह संदेह वाला (भग)।

वितिकिण्ण देखो विइकिण्ण (निचू १९)।

वितिकंत देखो विइक्कंत (भग)।

वितिगिंछ सक [वि + चिकित्स्] १ विचार करना, विमर्श करना। २ संशय करना। ३ निन्दा करना। वितिगिंछइ (सूअ २, २, ४९; ५०; पि ७४; २१५)।

वितिगिंछा देखो वितिगिच्छा (आचा १, ३, ३, १; १, ५, ५, २; पि ७४)।

वितिगिंछिय देखो वितिकिच्छिअ (पि ७४; २१५)।

वितिगिच्छ देखो वितिगिंछ। वितिगिच्छामि (पि २१५; ३२७)।

वितिगिच्छा स्त्री [विचिकित्सा] १ संशय, शंका, भ्रम (सूअ १, ३, ३, ५; पि ७४)। २ चित्त-विप्लव, चित्त-भ्रम। ३ निन्दा (सूअ १, १०, ३; पि ७४)।

वितिगिच्छिअ देखो वितिकिच्छिअ (भग)।

वितिगिट्ठ देखो विइगिट्ठ (राज)।

वितिमिर वि [वितिमिर] १ अन्धकार-रहित, विशुद्ध, निर्मल (सम १३७; पराण १७—पत्र ५१९; ३६—पत्र ८४७; कप्प)। २ अज्ञान-रहित (औप)। ३ पुं. ब्रह्म-देवलोक का एक विमान-प्रस्तट (ठा ६—पत्र ३६७)।

वितिरिच्छ वि [वितिर्यञ्च्] वक्र, टेढ़ा (स ३३५; पि १५१; भग ३, २—पत्र १७३)।

वित्त वि [दे] दीर्घ, लम्बा (दे ७, ३३)।

वित्त न [वित्त] १ द्रव्य, धन (पाअ; सूअ १, २, १, २२; औप)। २ वि. प्रसिद्ध, विख्यात (सूअ २, ७, २; उत्त १, ४४)। °म वि [°वत्] धनी (द्र ५)।

वित्त न [वृत्त] १ छन्द, पद्य, कविता (सूअनि ३८; सम्मत्त ८३)। २ चरित्र, आचरण (सिरि १०९३)। ३ वृत्ति, वर्त्तन (हे १, १२८)। ४ वि. उत्पन्न, संजात (स ७३७; महा)। ५ अतीत, गुजरा हुआ (महा)। ६ दृढ़, मजबूत। ७ वर्त्तुल, गोल। ८ अधीत, पठित। ९ मृत (हे १, १२८)। १० संसिद्ध, पूर्ण (सुर ४, ३९; महा)। °प्पाय वि [°प्राय] पूर्ण-प्राय (सुर ७, ८४)। देखो वट्ट = वृत्त।

वित्त देखो वेत्त = वेत्र (सूअनि १०८)।

°वित्त देखो पित्त (उप ५२२)।

वित्तइ वि [दे] १ गर्वित, अभिमानी। २ पुं. विलसित, विलास। ३ गर्व, अहंकार (दे ७, ९१)।

वित्तंत पुं [वृत्तान्त] समाचार, खबर (पउम २३, १८; सुपा २०४; भवि)।

वित्तत्थ देखो वितत्थ (सुख ९, १; नाट—वेणी २९)।

वित्तविय देखो वट्टिअ, वत्तिअ = वर्तित (भवि)।

वित्तास सक [वि + त्रासय्] भयभीत करना, डराना। वित्तासए (उत्त २, २०)। वकृ. वित्तासंत (पउम २८, २६)।

वित्तास पुं [वित्रास] भय, त्रास, डर (सुपा ४४१)।

वित्तासण न [वित्रासन] भय-प्रदर्शन (आव)।

वित्तासिअ वि [वित्रासित] डरा कर भगाया हुआ (सुपा ६५२)।

वित्ति पुं [वेत्रिन्] दरवान, प्रतीहार (कम्म १, ९)।

वित्ति स्त्री [वृत्ति] १ जीविका, निर्वाह-साधन (णाया १, १—पत्र ३०; स ६७६; सुर २, ४९)। २ टीका, विवरण (सम ४९; विसे १४२२; सार्ध ७३)। ३ वर्त्तन, आचरण। ४ स्थिति। ५ कौशिकी आदि रचना-विशेष। ६ अन्तःकरण आदि का एक तरह का परिणाम (हे १, १२८)। °अ वि [°द] वृत्ति देनेवाला (औप; अंत; णाया १, १ टी—पत्र ३)। °आर वि [°कार] टीकाकार, विवरण-कर्त्ता (कप्पू)। °च्छेअ, °च्छेय [°च्छेद] जीविका-विनाश (आचा; सूअ १, ११, २०)। देखो वित्ती° = वृत्ति।

वित्तिअ वि [वित्तिक] वित्त से युक्त, धन-वाला, वैभवशाली (औप; अन्त; णाया १, १ टी—पत्र ३)।

वित्ती° देखो वित्त = वृत्त। °**कप्प** वि [°कल्प] सिद्धप्राय, पूर्ण-प्राय (तंदु ७)।

वित्ती° देखो वित्ति = वृत्ति। °**संखेव** पुं [°संक्षेप] बाह्य तप का एक भेद—खाने, पीने और भोगने की चीजों को कम करना (सम ११)। °**संखेवण** न [°संक्षेपण] वही अर्थ; 'वित्तीसंखेवणं रसच्चाओ' (नव २८; पडि)।

वित्तेस वि [वित्तेश] धनी, श्रीमंत (उव ७२८ टी)।

वित्थ पुंन [वित्त] सुवर्ण, सोना (से १, १)।

वित्थक्क अक [वि + स्था] १ स्थिर होना। २ विलम्ब करना। ३ विरोध करना। वकृ. वित्थक्कंत (से ३, ४, १३, ७०; ७४)।

वित्थक्क देखो विथक्क (स ६३४ टि)।

वित्थड, वित्थय वि [विस्तृत] १ विस्तार-युक्त, विशाल (भग; ओप; पाअ; वसु; भवि; गा ४०७)। २ संबद्ध, घटित (से १, १)।

वित्थर अक [वि + स्तृ] १ फैलना। २ बढ़ना। वित्थरइ (प्राकृ ७६; स २०१; ६८४; सिरि ६२७, मन २५)। वकृ. वित्थरंत (से ३, ३१; स ६८६)। हेकृ. वित्थरिउं (पि ५०५)।

वित्थर पुंन [विस्तर] १ विस्तार, प्रपंच (गउड)। २ शब्द-समूह (गउड ८६)।

वित्थर देखो वित्थड; 'तत्थ वित्थरा कज्ज-धुरा' (से ४, ४६), वित्थरं च तलवट्ट' (वज्जा १०४)।

वित्थरग वि [विस्तरक] १ फैलानेवाला। २ वृद्धिजनक (कुमा)।

वित्थरिअ देखो वित्थड (सुर ३, ५४; सुपा ३६८; पि ५०५; भवि; सण)।

वित्थार सक [वि + स्तारय्] फैलाना। वित्थारइ (भवि), वित्थारेदि (शौ) (नाट—शकु १०६)।

वित्थार पुं [विस्तार] फैलाव, प्रपञ्च (गउड; हे ४, ३९५; नाट—शकु ६)। °**रुइ** वि [°रुचि] सम्यक्त्व-विशेष वाला, सब पदार्थों को विस्तार से जानने की चाहवाला सम्यक्त्वी (पव १४६)।

वित्थारइत्तअ (शौ) वि [विस्तारयितृ] फैलानेवाला (अभि २८; पि ६००)।

वित्थारग वि [विस्तारक] फैलानेवाला (रंभा)।

वित्थारण न [विस्तारण] फैलाव; 'सीसमइ-वित्थारणमित्तत्थोयं कओ समुल्लावो' (सम्म १५५, सिरि १२०७)।

वित्थारिय वि [विस्तारित] फैलाया हुआ (सण; दे)।

वित्थिण्ण, वित्थिन्न वि [विस्तीर्ण] विस्तार-युक्त, विशाल (नाट—मृच्छ ६४; पाअ; भवि)।

वित्थिय देखो वित्थड (स ६६७; गा ४०७ अ)।

वित्थिर न [दे] विस्तार, फैलाव (षड्)।

वित्थुय देखो वित्थड (स ६१०)।

विथक्क वि [विष्ठित] जो विरोध में खड़ा हुआ हो, विरोधी बना हुआ (स ४६७; ६३४)।

विद् देखो विअ = विद्। वकृ. विदंत (उप २८० टी)। संकृ. **विदित्ता, विदित्ताणं** (सूअ १, ६, २८; पि ५८३)।

विदंड पुं [विदण्ड] कक्षा तक लम्बी लट्ठी (पव ८१)।

विदंसग देखो विदंसय (पण्ह १, १ टी—पत्र १५)।

विदंसण न [विदर्शन] अन्धकार-स्थित वस्तु का प्रकाशन (पण्ह १, १—पत्र ८)। देखो विदरिसण।

विदंसय वि [विदंशक] श्येन आदि हिंसक पक्षी (उत्त १६, ६५; सुख १६, ६५)।

विदड्ढ, विदद्ध वि [विदग्ध] १ पण्डित, विचक्षण (संक्षि ८)। २ विशेष दग्ध (पव १२५)। ३ अजीर्ण का एक भेद (राज)। देखो विड्ढ।

विदब्भ पुंस्त्री [विदर्भ] १ देश-विशेष, 'इओ य विदब्भदेसमंडणं कुंडिणं नयरं' (कुप्र ४८; गा ८६)। २ भगवान् सुपार्श्वनाथ के गणधर—मुख्य शिष्य का नाम (सम १५२)। ३ पुंस्त्री. विदर्भ देश की प्राचीन राजधानी, कुण्डिनपुर, जो आजकल 'नागपुर' के नाम से प्रसिद्ध है; 'दूरे विदब्भा' (कुप्र ७०)।

विदरिसण वि [विदर्शन] जिसके देखने से भय उत्पन्न हो वह वस्तु, विरूप आकारवाली विभीषिका आदि; 'एस णं तए विदरिसणे दिट्ठे' (उवा)। देखो विदंसण।

विदल न [विदल] वंश, बाँस (सुख १०, १; ठा ४, ४—पत्र २७१)।

विदल न [द्विदल] १ चना आदि वह शुष्क धान्य जिसके दो टुकड़े समान होते हैं,

'जम्मि हु पीलिज्जंते नेहो न
हु होइ बिंति तं विदलं।
विदलेवि हु उप्पन्नं नेहजुयं
होइ नो विदलं' (संबोध ४४)।

२ वि. जिसके दो टुकड़े किए गए हों वह (सूअनि ७१)।

विदलिद (शौ) वि [विदलित] खण्डित, चूर्णित (नाट—वेणी २६)।

विदाअ देखो विद्दाय = विद्रुत (से १३, २५)।

विदारग, विदारय वि [विदारक] विदारण-कर्त्ता; 'कम्मरयविदारगाइं' (पण्ह २, १—पत्र ६६; राज)।

विदालण न [विदारण] विविध प्रकार से चीरना, फाड़ना (पण्ह १, १—पत्र १४)।

विदिअ देखो विइअ (अभि १२३; पउम ३६, ६८)।

विदिण्ण देखो विइण्ण = वितीर्ण (विपा १, २—पत्र २२)।

विदिण्ण वि [विदीर्ण] फाड़ा हुआ, चीरा हुआ (नाट—मृच्छ २५५)।

विदित्ता, विदित्ताणं देखो विद् = विद्।

विदिन्न देखो विदिण्ण = वितीर्ण (विपा १, २ टी—पत्र २२; सुर ५, १८७)।

विदिस (अप) स्त्री [विदिशा] एक नगरी का नाम (भवि)।

विदिसा, विदिसी° स्त्री [विदिश] १ विदिशा, उपदिशा, कोण (आचा; पि ४१३; पण्ण १—२६)। २ विपरीत दिशा, असंयम (आचा)।

विदु देखो विउ (पंचा १६, ७)।

विदुगुंछा देखो विउच्छा (राज)।

विदुग्ग न [विदुर्ग] समुदाय (भग १, ८)।

विदुम वि [विद्वस्] विद्वान्, जानकार (सूअ १, २, ३, १७)।

विदुर वि [विदुर] १ विचक्षण, विज्ञ (कुमा)। २ धीर। ३ नागर, नागरिक (हे १, १७७)। ४ पुं. कौरवों के एक प्रख्यात मन्त्री (णाया १, १६—पत्र २०८)।

विदुल्लतंग न [विद्युल्लताङ्ग] संख्या-विशेष, हाहाहूहू को चौरासी लाख से गुनने पर जो संख्या लब्ध हो वह (इक)।

विदुलता स्त्री [विद्युल्लता] संख्या-विशेष, विद्युल्लतांग को चौरासी लाख से गुनने पर जो संख्या लब्ध हो वह (इक)।

विदुस देखो विदु; 'ण पमाणं अत्थि विदुसाणं' (धर्मसं ८८०)।

विदूसग } पुं [विदूषक] मसखरा, राजा के **विदूसय** } साथ रहनेवाला मुसाहब (सार्ध ६५; सम्मत्त ३०)।

विदेस देखो विएस=विदेश (णाया १, २—पत्र ७६; औप; पउम १, ६६; विसे १६७१; कुमा; प्रासू ४४)।

विदेसि कि [विदेशिन्] परदेशी (सुपा ७२)।

विदेसिअ वि [वैदेशिक] ऊपर देखो (सिरि ३६४)।

विदेह पुं [विदेह] १ राजा जनक (ती ३)। २ पुं. ब. देश-विशेष; बिहार का उत्तरीय प्रदेश जो आजकल 'तिरहुत' के नाम से प्रसिद्ध है; 'इहेव भारहे वासे पुव्वदेसे विदेहा णामं जणवया' (ती १७; अंत)। ३ पुंन. वर्ष-विशेष, महाविदेह-क्षेत्र (पव १६३)। ४ वि. विशिष्ट शरीरवाला। ५ निर्लेप, लेप-रहित। ६ पुं. अनंग, कामदेव। ७ गृह-वास (कप्प ११०)। ८ निषध पर्वत का एक कूट। ९ नीलवंत पर्वत का एक कूट (ठा ९—पत्र ४५४)। °जंबू स्त्री [°जम्बू] जम्बूवृक्ष-विशेष, जिसके नाम से यह जम्बू-द्वीप कहलाता है (जं ४; इक)। °जच्च पुं [°जार्च, °यात्य] भगवान् महावीर (कप्प ११०)। °दिन्ना स्त्री [°दत्ता] भगवान् महावीर की माता, रानी त्रिशला (कप्प)। °दुहिआ स्त्री [°दुहितृ] राजा जनक की पुत्री, सीता (ती ३)। °पुत्त पुं [°पुत्र] राजा कूणिक (भग ७, ८)।

विदेहदिन्न पुं [वैदेहदत्त] भगवान् महावीर (कप्प ११० टी)।

विदेहा स्त्री [विदेहा] १ भगवान् महावीर की माता, त्रिशला देवी (कप्प ११० टी)। २ जानकी, सीता (पउम ४६, १०)।

विदेहि पुं [वैदेहिन्] विदेह देश का अधिपति, तिरहुत का राजा (सूअ १, ३, ४, २)।

विदेही स्त्री [विदेही] राजा जनक की पत्नी, सीता की माता (पउम २६, २)।

विद्दंडिअ वि [दे] नाशित, नष्ट किया हुआ (दे ७, ७०)।

विद्दड्ढ पुं [विदग्ध] एक नरक-स्थान (देवेन्द्र २७)।

विद्दव सक [वि+द्रावय्] १ विनाश करना। २ हैरान करना, उपद्रव करना। ३ दूर करना, हटाना। ४ झरना, टपकना। विद्दवई (कुप्र २८०)। वकृ. विद्दवयंत (रयण ७२)। कवकृ. 'रज्जं रक्खइ न परेहिं विद्दविज्जंतं' (कुप्र २७; सुर १३, १७०)।

विद्दव पुं [विद्रव] १ उपद्रव, उपसर्ग; 'परचक्कचरडचोराइविद्दवा दूरमुवगया सव्वे' (कुप्र २०)। २ विनाश (णाया १, ९—पत्र १५७; धर्मवि २३)।

विद्दविअ वि [विद्रवित] १ विप्लावित (से ४, ६०)। २ दूर किया हुआ, हटाया हुआ (गा ८८)। ३ विनाशित (भवि; सण)।

विद्दा अक [वि+द्रा] खराब होना। विद्दाइ (से ४, २९)।

विद्दाण वि [विद्राण] १ म्लान, निस्तेज, फीका; 'विद्दाणमुहा ससोगिल्ला' (सुर ६, १२४), 'अदीणविद्दाणमुहकमलो' (यति ४३), 'दारिद्दमविद्दाणं नज्जइ आयारमित्तओ तुज्झ' (कुप्र १६५)। २ शोकातुर, दिलगीर; 'विद्दाणो परियणो' (स ४७३; उप ६०४; उप ३२० टी)।

विद्दाय वि [विद्रुत] १ विनष्ट (कुमा)। २ पलायित। ३ द्रव-युक्त, द्रव-प्राप्त (हे १, १०७; षड्)।

विद्दाय अक [विद्वस्य्] खुद को विद्वान् मानना। वकृ. विद्दायमाण (आचा)।

विद्दार देखो विड्डार (वव १)।

विद्दारण (अप) वि [विदारण] चीरनेवाला, फाड़नेवाला। स्त्री. °णी (भवि)।

विद्दाविअ देखो विद्दविअ (भवि)।

विद्दुम पुं [विद्रुम] १ प्रवाल, मूँगा (से २९; गउड; जी ३)। २ उत्तम वृक्ष (से २, २९)। °भ पुं [°भ] नववें बलदेव का पूर्व-जन्म का गुरु (पउम २०, १९३)।

विद्दुय वि [विद्रुत] अभिभूत, पीड़ित; 'अग्गिभयविद्दु (?द्द)या (णाया १, १—पत्र ६५)।

विद्दूणा स्त्री [दे] लज्जा, शरम (दे ७, ६५)।

विद्देस पुं [विद्वेष] द्वेष, मत्सर (पण्ह १, २—पत्र २६)।

विद्देस वि [विद्वेष्य] द्वेष-योग्य, अप्रिय (पण्ह १, २—पत्र २६)।

विद्देसण न [विद्वेषण] एक प्रकार का अभिचार-कर्म, जिससे परस्पर में शत्रुता होती है (स ६७८)।

विद्देसि वि [विद्वेषिन्] द्वेष-कर्ता (कुप्र ३६७)।

विद्देसिअ देखो विदेसिअ (श्रा १२)।

विद्देसिअ वि [विद्वेषित] द्वेष-युक्त (भवि)।

विद्ध सक [व्यध्] वींधना, छेद करना। विद्धइ (धात्वा १५३; नाट—रत्ना ७)। कवकृ. विद्धिज्जंत (वे ८८)। संकृ. विद्धूण (सूअ १, ५, १, ९)।

विद्ध वि [विद्ध] वींधा हुआ, वेध किया हुआ (से १, १३; भवि)।

विद्ध देखो वुड्ढ=वृद्ध (उत्त ३२, ३; हे १, १२८; भवि)।

विद्धंस अक [वि+ध्वंस्] विनष्ट होना। विद्धंसइ (ठा ३, १—पत्र १२३)। वकृ. विद्धंसमाण (सूअ १, १५, १८)।

विद्धंस सक [वि+ध्वंसय्] विनष्ट करना। भवि. विद्धंसेहिति (भग ७, ६—पत्र ३०५)।

विद्धंस पुं [विध्वंस] १ विनाश (सुर १, १२)। २ वि. विनाश-कर्ता; 'जहा से तिमिरविद्धंसे उत्तिट्ठंते दिवायरे' (उत्त ११, २४)।

विद्धंसण न [विध्वंसन] विनाश (णाया १, १—पत्र ४८, पराह १, ३—पत्र ५५; सूत्र १, २, २, १०; चेइय ६६४; उप पृ १८७)।

विद्धंसणया स्त्री [विध्वंसना] विनाश (भग)।

विद्धंसित वि [विध्वंसित] विनाशित (चंड ३, ५)।

विद्धंसिय } वि [विध्वस्त] विनष्ट (पउम
विद्धत्थ } ८, २३७; १६, ३०; पव १५५)।

विद्धि स्त्री [वृद्धि] १ बढ़ाव, बढ़ती (उप ७२८ टी; सुर ४, ११५)। २ समृद्धि (ठा १०—पत्र ५२५; विसे ३४०८)। ३ अभ्युदय। ४ संपत्ति। ५ अहिंसा (पराह २, १—पत्र ६६)। ६ कलान्तर, सूद (विपा १, १—पत्र ११)। ७ व्याकरण-प्रसिद्ध स्वर का विकार (विसे ३४८२)। ८ ओषधि-विशेष (राज)।

विद्धूण देखो विद्ध = व्यध्।

विधम्म देखो विहम्म (राज)।

विधम्मिय वि [विधर्मित] तिरस्कृत (विसे २३४६)।

विधवा देखो विहवा (निचू ८)।

विधा अ [वृथा] मुधा, निरर्थक, व्यर्थ (धर्मसं ४११)।

विधाण देखो विहाण = विधान (बृह १)।

विधाय देखो विहाय = विधातृ (राज)।

विधार सक [वि + धारय्] निवारण करना। संकृ. विधारेउं (पिंड १०२)।

विधि (शौ) देखो विहि (हे ४, २८२; ३०२)।

विधुर वि [विधुर] १ व्याकुल, विह्वल; 'नहि विधुरसहावा हुंति दुत्थेवि धीरा' (कुप्र ५४)। २ विषम, असमान (धर्मसं १२२३; १२२४)। देखो विहुर।

विधुव (शौ) देखो विहुण = वि + धू। विधुवेदि (पि ५०३)।

विधूण देखो विहुण = वि + धू। संकृ. विधूणित्ता (सूत्र २, ४, १०)।

विधूम पुं [विधूम] अग्नि, वह्नि (सूत्र १, ५, २, ८; वसु)।

विधूय वि [विधूत] क्षुरण, सम्यक् स्पृष्ट; 'विधूयकप्पे' (आचा १, ३, ३, ३; १, ६, ३, १)। देखो विहूअ।

विनड देखो विणड। विनडइ (भवि), 'अइ हिअअ पसिअ विरमसु दुल्लहपेम्मेण किं नु विनडेसि' (रुक्मि ५८)। कवकृ. विनडिज्जंत, विनडिज्जमाण (सुपा ६५५; १३४)।

विनडण न [विनटन] १ व्याकुल करना। २ विडम्बना (सुपा २०८)।

विनडिअ वि [विनटित] १ व्याकुल बना हुआ। २ विडम्बित; 'तराहाछुहाविनडिओ फलजलरहियम्मि सेलम्मि' (सम्मत्त १५६; सुपा २६०)।

विनमि पुं [विनमि] भगवान् ऋषभदेव का एक पौत्र (धरा १४)।

विनास देखो विणास = वि + नाशय्। विनासए (महा)।

विनिज्झा सक [विनि + ध्यै] देखना। विनिज्झाए (दस ५, १, १५)।

विनिबद्ध वि [विनिबद्ध] संबद्ध, बँधा हुआ (महा)।

विनिमय पुं [विनिमय] व्यत्यय, 'इअ सव्व-भासविनिमयपरिहिं' (कुमा)।

विनियट्ट देखो विणिवट्ट। वकृ. विनियट्ट-माण (आचा १, ५, ४, ३)।

विनियट्टण न [विनिवर्त्तन] निवृत्ति, विराम (आचा)।

विनिरय वि [विनिरत] लीन, आसक्त (कुप्र ६६)।

विनिहन्न सक [विनि + हन्] मार डालना, विनाश करना। विनिहन्निज्जा (उत्त २, १७)।

विनिहाय देखो विणिघाय (विपा १, २—पत्र ३१)।

विनीय देखो विणीअ (कस)।

विन्नत्त देखो विण्णत्त (काल)।

विन्नत्ति देखो विण्णत्ति (दं ४७; कुमा)।

विन्नप्प देखो विन्नव।

विन्नव देखो विण्णव। विन्नवइ, विन्नवेइ (पउम ३६, ११४; महा), विन्नवेजा (कप्प)। वकृ. विन्नवेमाण (कप्प)। संकृ. विन्नविउं, विन्नवित्ता (सुपा ३२३; पि ५८२)। कृ. विन्नप्प, विन्नवणीय, विन्नवियव्व (पउम ४६, ४६; मोह ८२; सुपा १६२; २१६; ३२१)।

विन्नवण न [विज्ञपन] निवेदन, विज्ञापन (सुपा २६७)।

विन्नवणा स्त्री [विज्ञापना] १ प्रार्थना, विनती (सूत्र १, ३, ४, १०)। २ महिला, नारी (सूत्र १, २, ३, २)। देखो विण्णवणा।

विन्नविय वि [विज्ञापित] निवेदित (महा)।

विन्ना देखो विण्णा = वि + ज्ञा। कृ. विन्नेय (भग; उप ३३६ टी)।

विन्ना देखो बिन्ना। °यड न [°तट] एक नगर का नाम (उप पृ ११२)।

विन्नाउ वि [विज्ञातृ] जाननेवाला (आचा)।

विन्नाण न [विज्ञान] १ सद्बोध, ज्ञान (भग; आचा)। २ कला, शिल्प; 'तं नत्थि किंपि विन्नाणं जेण धरिज्जइ काया' (वै ७), 'कुसुम-विन्नाणं' (कुमा; प्रासू ४३; ११२)। ३ मेधा, मति, बुद्धि; 'मेहा मई मणीसा विन्नाणं धी चिई बुद्धी' (पाअ)।

विन्नाणिय } देखो विण्णाय (उप १५० टी;
विन्नाय } सुर २, १३१; पि १०६; पाअ)।

विन्नाविय देखो विन्नविय (सुपा १४४)।

विन्नास पुं [विन्यास] १ रचना, विच्छित्ति; 'विन्नासो विच्छित्ती' (पाअ), 'वयणविन्नासो' (स ३०१; सुपा १७; २६६; महा)। २ स्थापना (भवि)।

विन्नासण न [विन्यासन] संस्थापन (स ३१८)।

विन्नासिअ वि [विन्यासित] संस्थापित (स ५६०)।

विन्नासिअ (अप) देखो विणासिअ (हे ४, ४१८)।

विन्नु देखो विण्णु (आचा); 'एगा विन्नू' (ठा १—पत्र १६)।

विन्नेय देखो विन्ना = वि + ज्ञा।

विन्हु पुं [विष्णु] एक जैन मुनि, जो आर्य-जेहिल के शिष्य थे (कप्प)। देखो विण्हु। °पअ न [°पद] आकाश (समु १५०)। °पदी स्त्री [°पदी] गंगा नदी (समु १५०)।

विपंची स्त्री [विपञ्ची] वाद्य-विशेष, वीणा (पराह १, ४—पत्र ६८; २, ५—पत्र १४६)।

विपक्क वि [विपक्व] पका हुआ (उप पृ २११)। देखो विवक्क।

विपक्ख देखो विवक्ख; 'निजियविपक्खलक्खो' (सुपा १०३; २४०)।

विपक्खिय वि [विपक्षिक] विरोधी, दुश्मन (संबोध ५६)।

विपच्चइय न [विप्रत्ययिक] बारहवें जैन अंग ग्रन्थ का सूत्र-विशेष (सम १२८)।

विपच्चमाण वि [विपच्यमान] १ जो पकाया जाता हो वह (श्रा २०; सं ८६), 'आमासु अप्पक्कासु विपच्चमाणासु मंसपेसीसु' (संबोध ४४)। २ दग्ध होता, जलता; 'तव्विरहानलजालाविपच्चमाणस्स मह निच्चं' (रयण ४१)।

विपज्जय देखो विवज्जय (राज)।

विपज्जास देखो विवज्जास (नाट—मृच्छ २२६)।

विपडिवत्ति देखो विप्पडिवत्ति (विसे २६१४; सम्मत्त २२८)।

विपडिसेह सक [विप्रति + सिध्] निषेध करना। कृ. विपडिसेहेयव्व (भग ५, ७—पत्र २३४)।

विपणोल्ल सक [विप्र + नोदय्] प्रेरणा करना। विपणोल्लए (आचा १, ५, २, २; पि २४४)।

विपण्ण देखो विवण्ण = विपन्न (चारु ८)।

विपत्ति देखो विवत्ति = विपत्ति (गा २८२ अ; राज)।

विपत्थाविद (शौ) वि [विप्रस्तावित] आरब्ध, जिसका प्रारंभ किया गया हो वह; 'एदाए चोरिआए एसम्ह घरे कलहो विपत्थाविदो' (हास्य १२१)।

विपरामुस सक [विपरा + मृश्] १ समारम्भ करना, हिंसा करना। २ पीड़ा उपजाना, हैरान करना। ३ अक. उत्पन्न होना, उपजना। विपरामुसइ, विपरामुसंति, विपरामुसह (आचा; पि ४७१)। देखो विप्परामुस।

विपराहुत्त वि [विपराङ्मुख] विशेष पराङ्मुख, अतिशय उदासीन (पउम ११५, २२)।

विपरिकम्म न [विपरिकर्मन्] शरीर की आकुञ्चन-प्रसारण आदि क्रिया (आचा २, ८, १)।

विपरिकुंचि वि [विपरिकुञ्चिन्] विपरिकुंचित नामक वन्दन-दोषवाला; 'देसकहावित्तंते कहेइ दरवंदिए विपरिकुंची' (बृह ३)।

विपरिकुंचिय देखो विप्पलिउंचिय (राज)।

विपरिखल अक [विपरि + स्खल्] १ स्खलित होना, गिरना। २ भूल करना। वकृ. विपरिखलंत (अच्चु २२)।

विपरिणम अक [विपरि + णम्] १ बदलना, रूपान्तर को प्राप्त होना। २ विपरीत होना, उलटा होना। विपरिणमे (पिंड ३२७)। वकृ. विपरिणममाण (भग ७, १०—पत्र ३२५)।

विपरिणय वि [विपरिणत] रूपान्तर को प्राप्त (पिंड २६५)।

विपरिणाम सक [विपरि + णमय्] १ विपरीत करना, उलटा करना। २ बदलवाना, रूपान्तर को प्राप्त करना। विपरिणामेइ (स ५१३)। हेकृ. विपरिणामित्तए (उवा)।

विपरिणाम पुं [विपरिणाम] १ रूपान्तर-प्राप्ति (आचा; औप)। २ उलटा परिणाम, विपरीत अध्यवसाय (धर्मसं ५११)।

विपरिणामिय वि [विपरिणमित] रूपान्तर को प्राप्त (भग ६, १ टी—पत्र २५१)।

विपरिधाव सक [विपरि + धाव्] इधर उधर दौड़ना। विपरिधावई (उत्त २३, ७०)।

विपरियास देखो विप्परियास (राज)।

विपरिवसाव सक [विपरि + वासय्] रखना। विपरिवसावेइ (गाया १, १२—पत्र १७५)। वकृ. विपरिवसावेमाण (गाया १, १२)।

विपरीअ देखो विवरीअ (सूअ १, १, ४, ५; गा ५४ अ)।

विपलाअ अक [विपरा + अय्] दूर भागना। वकृ. विपलाअंत (गा २६१)।

विपल्हत्थ देखो विवल्हत्थ (पि २८५)।

विपस्सि वि [विदर्शिन्] देखनेवाला (आचा)।

विपाग देखो विवाग (राज)।

विपिक्ख देखो विप्पेक्ख। वकृ. विपिक्खंत (राज)।

विपिण देखो विविण (कुमा)।

विपित्त वि [दे] विकसित, खिला हुआ (दे ७, ६१)।

विपुल देखो विउल (गाया १, १—पत्र ७५; कप्प; पराह २, १—पत्र ६६)। °वाहण पुं [°वाहन] भारतवर्ष में होनेवाला बारहवाँ चक्रवर्ती राजा (सम १५४)।

विप्प न [दे] पुच्छ, दुम, पूँछ (दे ७, ५७)।

विप्प पुं [विप्र] ब्राह्मण, द्विज (हे १, १७७; महा)।

विप्प पुं [विप्रुष्, विप्र] १ मूत्र और विष्ठा के बिन्दु। २ विष्ठा और मूत्र; 'मुत्तपुरीसाण विप्पुसो विप्पा अन्ने विडित्ति विट्ठा भासंति य पत्ति पासवणं' (विसे ७८१; औप; महा)।

विप्पइट्ठ देखो विप्पगिट्ठ (राज)।

विप्पइण्ण वि [विप्रकीर्ण] बिखरा हुआ, इधर उधर पटका हुआ (से २, ५; कस)।

विप्पइर सक [विप्र + कृ] इधर उधर पटकना, बिखेरना। विप्पइरामि (उवा)। वकृ. विप्पइरमाण (गाया १, ६—पत्र १५७)।

विप्पउंज सक [विप्र + युज्] १ विरुद्ध प्रयोग करना। २ विशेष रूप से जोड़ना; 'अदुवा वायाओ विप्पउंजंति' (आचा १, ८, १, ३)।

विप्पओअ } **विप्पओग** } पुं [विप्रयोग] अलहदा, अलग, जुदा, विरह, वियोग (उत्तर १५; स २८१; चंड; पउम ४५, ४६; जी ४३; उत्त १३, ८; महा)।

विप्पकड वि [विप्रकट] विशेष रूप से प्रकट (भग ७, १०—पत्र ३२४)।

विप्पकिर देखो विप्पइर। वकृ. विप्पकिरेमाण (गाया १, १—पत्र ३६)।

विप्पक्ख देखो विपक्ख (पि १६६)।

विप्पगब्भिय वि [विप्रगल्भित] अत्यन्त धृष्ट (सूअ १, १, २, ५)।

विप्पगरिस पुं [विप्रकर्ष] दूरी, आसन्नता का अभाव; 'देसाइविप्पगरिसा' (धर्मसं १२१७)।

विप्पगाल सक [नाशय्, विप्र + गालय्] नाश करना। विप्पगालइ (हे ४, ३१; पि ५५३)।

विप्पगालिअ वि [नाशित, विप्रगालित] नाशित (कुमा)।

विप्पगिट्ठ वि [विप्रकृष्ट] १ दूरवर्ती, दूरी पर स्थित (स २२६)। २ दीर्घ, लम्बा; 'णाइ-विप्पगिट्ठेहिं अद्धाणेहिं' (णाया १, १५)।

विप्पचय सक [विप्र + त्यज्] छोड़ना, त्याग करना। कृ. विप्पचइयव्व (तंदु ३५)।

विप्पच्चय पुं [विप्रत्यय] १ संदेह, संशय (उत्त २३, २४)। २ वि. प्रत्यय-रहित, अविश्वसनीय (उव)।

विप्पजढ वि [विप्रहीण] परित्यक्त (णाया १, २—पत्र ८४; पंचा १४, ६; पव १२३)।

विप्पजह सक [विप्र + हा] परित्याग करना, छोड़ देना। विप्पजहइ, विप्पजहंति, विप्पजहे (कस; उवा; सूअ २, १, ३८; उत्त ८; ४)। भवि विप्पजहिस्सामो (पि ५३०)। वकृ. **विप्पजहमाण** (ठा २, २—पत्र ५६; पि ५००)। संकृ विप्पजहित्ता, विप्पजहाय (उत्त २९, ७३; भग)। कृ. विप्पजहणिज्ज, **विप्पजहियव्व** (णाया १, १—पत्र ४८; पि ५७१; णाया १, १८—पत्र २४१)।

विप्पजह न [विप्रहाण] परित्याग। °**सेणिया** स्त्री [°श्रेणिका] बारहवें जैन अंग-ग्रन्थ का एक परिकर्म—अंश-विशेष (सम १२८)।

विप्पजहणा } स्त्री [विप्रहाणि] प्रकृष्ट
विप्पजहणा } त्याग, परित्याग (उत्त २९, ७३, औप; विसे ३०८६; पएण ३६—पत्र ८४७)।

विप्पजहिय वि [विप्रहीण] परित्यक्त (पि ५६५)।

विप्पजोग देखो **विप्पओअ** (चंड)।

विप्पडिइ अक [विपरि + इ] विपरीत होना, उलटा होना। विप्पडिएइ (सूअ १,१२,१०)।

विप्पडिघाय पुं [विप्रतिघात] प्रतिबन्ध, अटकाव (णाया १, १६—पत्र २४५)।

विप्पडिपह पुं [विप्रतिपथ] विपरीत मार्ग (उप १०३१ टी)।

विप्पडिवण्ण देखो **विप्पडिवन्न** (पव ७३ टी)।

विप्पडिवत्ति स्त्री [विप्रतिपत्ति] १ विरोध (विसे २४८०)। २ प्रतिज्ञा-भंग (उप ५१६)।

विप्पडिवन्न वि [विप्रतिपन्न] १ जिसने विशेष रूप से स्वीकार किया हो वह; 'मिच्छ-रूपज्जवेहिं परिवड्ढमाणेहिं २ मिच्छत्तं विप्प-डिवन्ने जाए जाए यावि होत्था' (णाया १, १३—पत्र १७८)। २ विरोध-प्राप्त, विरोधी बना हुआ (आचा १, ८, १, ३; सूअ १, ३, १, ११)।

विप्पडिवेअ } सक [विप्रति + वेदय्]
विप्पडिवेद } १ जानना। २ विचारना। विप्पडिवेएइ (आचा १, ५, ४, ४), विप्पडि-वेदेंति (सूअ २, १, १५)।

विप्पडिसिद्ध वि [विप्रतिषिद्ध] आपस में असंमत (उवर ३)।

विप्पडीव वि [विप्रतीप] प्रतिकूल (माल १७७)।

विप्पणट्ठ वि [विप्रनष्ट] पलायित, नाश-प्राप्त (स ३५३; उवा)।

विप्पणम } सक [विप्र + णम्] १ नमना।
विप्पणव } २ अक. तत्पर होना। विप्पणवंति (सूअ १, १२, १७)। वकृ. **विप्पणमंत** (राज)।

विप्पणस्स अक [विप्र + नश्] नष्ट होना, विनाश-प्राप्त होना। विप्पणस्सइ (कस) भवि. विप्पणस्सिहिइ (महानि ४)

विप्पणास पुं [विप्रणाश] विनाश (धर्मवि ५७)।

विप्पतार सक [विप्र + तारय्] ठगना। विप्पतारसि (धर्मवि १४७)। कर्म. विप्पता-रीअदि (शौ) (नाट—शकु ७५)।

विप्पदीअ } (शौ) देखो विप्पडीव (नाट—
विप्पदीव } मालती १०६; ११६; मृच्छ ४८)।

विप्पमाय पुं [विप्रमाद] विविध प्रमाद (सूअ १, १४, १)।

विप्पमुंच सक [विप्र + मुच्] छोड़ना, मुक्त करना। कर्म. विप्पमुच्चइ (उत्त २५, ४१)।

विप्पमुक्क वि [विप्रमुक्त] विमुक्त (औप; सुर २, २३७; सुपा ४४५)।

विप्पय न [दे] १ खल-भिक्षा। २ दान। ३ वि. वापित। ४ पुं. वैद्य (दे ७, ८९)।

विप्पयार सक [विप्र + तारय्] ठगना। विप्पयारंति, विप्पआरेमि (कुप्र ६; त्रि ८८)। कर्म. विप्पयारीअइ (कुप्र ४४)। संकृ. **विप्पआरिअ** (त्रि ८८)।

विप्पयारणा स्त्री [विप्रतारणा] वंचना, ठगाई (कुप्र ४४; मोह ९४)।

विप्पयारिअ वि [विप्रतारित] वञ्चित, ठगा हुआ (मोह १०१)।

विप्परद्ध वि [दे] विशेष पीड़ित; 'करचरण-दंतमुसलप्पहारेहिं विप्परद्धं समाणे तं चेव महद्दहं पाणीयं पादेउं (?पाउं) समोयरेति' (णाया १, १—पत्र ६४)। देखो **परद्ध**।

विप्परामुस देखो **विपरामुस**; 'आवंती केयावंती लोगंसि विप्परामुसंति अट्ठाए अणट्ठाए वा, एएसु चेव विप्परामुसंति' (आचा)।

विप्परिणम देखो **विपरिणम**। भवि. विप्परि-णमिस्सति (भग)।

विप्परिणय देखो **विपरिणय** (भग ५, ७ टी—पत्र २३६; काल)।

विप्परिणाम देखो **विपरिणाम** = विपरि + णमय्। विप्परिणामंति, विप्परिणामेंति (आचा)। संकृ. **विप्परिणामइत्ता** (भग)।

विप्परिणाम देखो **विपरिणाम** = विपरिणाम (आचा; भग ५, ७ टी—पत्र २३६)।

विप्परिणामिय देखो **विपरिणामिय** (भग ६, १—पत्र २५०)।

विप्परियास सक [विपरि + आसय्] व्यत्यय करना, उलटा करना। विप्परियासेइ (निचू ११)। वकृ. **विप्परियासंत** (निचू ११)।

विप्परियास पुं [विपर्यास] १ व्यत्यय, विपरीतता (आचा; सूअ १, ७, ११)। २ परिभ्रमण (सूअ १, १२, १३; १, १३; १२)।

विप्परियासणा स्त्री [विपर्यासना] व्यत्यय करना (निचू ११)।
विप्परुद्ध वि [विप्ररुद्ध] तिरस्कृत; 'हयनिह यविप्परुद्धो दूओ' (पउम ८, ८५)।
विप्पल देखो विप्प = विप्र (प्राकृ ३७)।
विप्पलंभ सक [विप्र + लभ्] ठगना। विप्पलंभेमि (स ५०९)।
विप्पलंभ पुं [विप्रलम्भ] १ वञ्चना, ठगाई (उप २४)। २ शृङ्गार की एक अवस्था—जिसमें उत्कृष्ट अनुराग होने पर भी प्रिय समागम नहीं होता (सुपा १६४)। ३ विपर्यास, व्यत्यय, वैपरीत्य (धर्मसं ३०४)। विरह, वियोग (कप्पू)।
विप्पलंभअ वि [विप्रलम्भक] प्रतारक, ठगनेवाला (मृच्छ ४७)।
विप्पलंभिअ वि [विप्रलम्भित] १ प्रतारित। २ विरहित (सुपा २१६)।
विप्पलद्ध वि [विप्रलब्ध] वञ्चित, प्रतारित (चारु ४५; सं ४१८; ६८०)।
विप्पलय पुंन [दे] विविधता, विचित्रता; 'तंदट्ठुं सो सव्वं जाणइ संबंधविप्पलयं' (धर्मवि १२७)।
विप्पलविद (शौ) न [विप्रलपित] निरर्थक वचन, बकवाद (स्वप्न ८१)।
विप्पलाअ देखो विपलाअ। भूका. विप्पलाइत्था (विपा १, २—पत्र २९)। वकृ. विप्पलायमाण (णाया १, १—पत्र ६५)।
विप्पलाअ } पुं [विप्रलाप] १ परिवेदन,
विप्पलाव } रोना, कन्दन; 'अविओगो विप्पलाओ' (तंदु ८७; रयण ६४)। २ निरर्थक वचन, बकवाद (उत्त १३, ३३)। ३ विरहालाप (पउम ४४, ६८)।
विप्पलिउंचिअ न [विपरिकुञ्चित] गुरु-वन्दन का एक दोष, संपूर्ण वन्दन न करके बीच में बातचीत करने लग जाना (पव २—गाथा १५२)।
विप्पलुंपग वि [विप्रलोपक] लूटनेवाला, लुटेरा (पण्ह १, ३—पत्र ४४)।
विप्पलोहण वि [विप्रलोभन] लुभानेवाला (स ७६३)।
विप्पव पुं [विप्लव] १ देश का उपद्रव, क्रान्ति। २ दूसरे राजा के राज्य आदि से भय (हे २, १०६)। ३ शरीर की विसंस्थुलता, अस्वस्थता (कुमा)।

विप्पवर न [दे] भल्लातक, भिलाँवा (दे ७, ६६)।
विप्पवस अक [विप्र + वस्] प्रवास में जाना, देशान्तर जाना। संकृ. विप्पवसिय (आचा २, ५, २, ३)।
विप्पवसिय वि [विप्रोषित] देशान्तर में गया हुआ, प्रवास में गया हुआ (णाया १, २—पत्र ७९, १, ७—पत्र ११५)।
विप्पवास पुं [विप्रवास] प्रवास, देशान्तर-गमन (प्रति १००)।
विप्पसन्न वि [विप्रसन्न] १ विशेष प्रसन्न, खुश। २ प्रसन्न-चित्त का मरण (उत्त ५, १८)।
विप्पसर अक [विप्र + सृ] फैलना। भूका. 'बहवे हत्थी····दिसो दिसं विप्पसरित्था' (पि ५१७)।
विप्पसाय सक [विप्र + सादय्] प्रसन्न करना। विप्पसायए (आचा १, ३, ३, १)।
विप्पसीअ अक [विप्र + सद्] प्रसन्न होना। विप्पसीएज्ज (उत्त ५, ३०; सुख ५, ३०)।
विप्पहय वि [विप्रहत] आहत, जखमी (सुर ६, २२१)।
विप्पहाइय वि [विप्रभाजित] विभक्त, बँटा हुआ (औप)।
विप्पहीण } वि [विप्रहीण] रहित, वर्जित
विप्पहूण } (सं ७७; स १६१; पि १२०; ५०३)।
विप्पावग वि [दे] हास्य-कर्ता, उपहास करनेवाला (सुख १, १३)।
विप्पिअ पुंन [विप्रिय] १ अप्रिय, अनिष्ट (णाया १, १८—पत्र २१३; गा २५०; से ४, ३६; हे ४, ४२३)। २ अपराध, गुनाह (पाअ)। °आरय वि [°कारक] १ अप्रिय-कर्ता। २ अपराध-कर्ता (हे ४, ३४३)।
विप्पिंडिअ वि [दे] नाशित (दे ७, ७०)।
विप्पीइ स्त्री [विप्रीति] अप्रीति (पण्ह १, ३—पत्र ४२)।
विप्पु स्त्री [विप्रुष्] बिन्दु, अवयव, अंश; 'मुत्तपुरीसाण विप्पुसा विप्पा' (औप; विसे ७८१)।
विप्पुअ वि [विप्लुत] उपद्रुत, उपद्रव-युक्त (दे ६, ७६)।

विप्पुस पुंन. देखो विप्पु; 'असुइस्स विप्पुसेणवि' (पिंड १६५)।
विप्पेक्ख सक [विप्र + ईक्ष्] निरीक्षण करना, देखना। वकृ. विप्पेक्खंत (पण्ह १, १—पत्र १८)।
विप्पेक्खिअ वि [विप्रेक्षित] निरीक्षित (पण्ह २, ४—पत्र १३१; भग ६, ३३—पत्र ४६६)।
विप्पोसहि स्त्री [विप्रौषधि] आध्यात्मिक-शक्ति-विशेष, जिसके प्रभाव से योगी के विष्ठा और मूत्र का बिन्दु ओषधि का काम करता है (पण्ह २, १—पत्र ९९; औप; विसे ७७९; संति २)।
विप्फंद अक [वि + स्पन्द्] इधर-उधर चलना, तड़फना। वकृ. विप्फंदमाण (आचा)।
विप्फंदिअ वि [विस्पन्दित] इधर-उधर भटका हुआ, परिश्रान्त;

'खज्जंतेण जलथले सकम्म-
विप्फंडि(?दि)एण जीवेण।
तिरियभवे दुक्खाइं छुहतण्हा-
ईणि भुत्ताइं।' (पउम ६५, ५२)।

विप्फरिस पुं [विस्पर्श] विरुद्ध स्पर्श (प्राप्र)।
विप्फाडग वि [विपाटक] चीरनेवाला, विदारक (पण्ह १, ४—पत्र ७२)।
विप्फाडिअ वि [दे. विपाटित] नाशित (दे ७, ७०)।
विप्फारिय वि [विस्फारित] १ विस्तारित (उप पृ १५२)। २ विकासित (सुपा ८३)।
विप्फाल सक [दे] पूछना, पृच्छा करना। विप्फालेइ (वव १)।
विप्फाल देखो विफाल। संकृ. विप्फालिय (राज)।
विप्फाल पुं [दे] पृच्छा, प्रश्न (वव १ टी)।
विप्फालणा स्त्री [दे] ऊपर देखो (वव १ टी)।
विप्फालिय देखो विप्फारिय (राज)।
विप्फुड वि [विस्फुट] स्पष्ट, व्यक्त (रंभा)।
विप्फुर अक [वि + स्फुर्] १ होना। २ विकसना। ३ तड़फड़ना। ४ फरकना, हिलना। विप्फुरइ (संबोध ३४; काल; भवि)। वकृ. विप्फुरंत (उत्त १९, ५४; पउम ६३, ३)।

विप्फुरण न [विस्फुरण] १ विजृम्भण, विकास (श्रावक २४५; सुर २, २३७)। २ स्पन्दन, हिलन (गउड)।

विप्फुरिय वि [विस्फुरित] विजृम्भित (सुपा २०४; सण)।

विप्फुल्ल वि [विफुल्ल] विकसित, प्रफुल्ल; 'तह तह सुण्हा विप्फुल्लगंडविवरंमुही हसइ' (वज्जा ४४)।

विप्फोडअ पुं [विस्फोटक] फोड़ा (नाट—शकु २७; पि ३११; प्राप्र)।

विफंद देखो विप्फंद। वकृ. **विफंदमाण** (आचा १, ४, ३, ३)।

विफाल सक [वि + पाटय्] १ विदारण करना। २ उखाड़ना। संकृ. **विफालिय** (आचा २, ३, २, ६)।

विफुट्ट अक [वि + स्फुट्] फटना। वकृ. 'चिंतंति किं विफुट्टंत चंडबंभंडयस्स रवो' (सुपा ४५)।

विफुरण देखो विप्फुरण (सुपा २५)।

विबंधक वि [विबन्धक] विशेष रूप से बाँधनेवाला (पंच २, १)।

विबद्ध वि [विबद्ध] १ विशेष बद्ध। २ माहित (सूअ १, ३, २, ६)।

विबाहग वि [विबाधक] विरोधी, बाधक (धर्मसं ४६६)।

विबुद्ध वि [विबुद्ध] जागृत (सिरि ६१५)।

विबुध (शौ) नीचे देखो (पि ३६१)।

विबुह पुं [विबुध] १ देव, त्रिदश (पाअ, सुर १, ४५)। २ पण्डित, विद्वान् (सुर १, ४५)। °**चंद** पुं [°चन्द्र] एक प्रसिद्ध जैनाचार्य (सुपा ६५८)। °**पहु** पुं [°प्रभु] इन्द्र (सुर १, १७२)। °**पुर** न [°पुर] स्वर्ग (सम्मत्त १७५)।

विबुहेसर पुं [विबुधेश्वर] इन्द्र (श्रावक ५३)।

विबोह पुं [विबोध] जागरण (पंचा १, ४२)।

विबोहग देखो विबोहय (कप्प)।

विबोहण न [विबोधन] ज्ञान कराना; 'अबुहजणविबोहणकरस्स' (सम १२३)।

विबोहय वि [विबोधक] १ विकासक; 'कुमुयवणविबोहयं' (कप्प ३८ टि)। २ ज्ञान-जनक (विसे १७४)।

विब्बोअ पुं [विब्बोक] विलास, लीला; 'हेला ललिअं लीला विब्बोअो विब्भमो विलासो य' (पाअ)। देखो बिब्बोअ।

विब्भंग देखो विभंग (भग; पव २२६, कम्म ४, १४; ४०)।

विब्भंगि वि [विभङ्गिन्] विभंग-ज्ञानवाला (भग)।

विब्भंत वि [विभ्रान्त] १ विशेष भ्रान्त, चक्कर में पड़ा हुआ (आचा १, ६, ४, ३)। २ पुं. प्रथम नरक-भूमि का सातवाँ नरकेन्द्रक—स्थान-विशेष (देवेन्द्र ४)।

विब्भंस पुं [विभ्रंश] अतिपात, हिंसा, प्राण-वियोजन (राज)।

विब्भट्ठ वि [विभ्रष्ट] विशेष भ्रष्ट (प्रति ४०)।

विब्भम पुं [विभ्रम] १ विलास (पाअ; गउड ५५; १६७; कुमा)। २ स्त्री की शृंगार के अंग-भूत चेष्टा-विशेष (गउड; गा ५)। ३ चित्त-भ्रम, पागलपन (राय)। ४ शृंगार-संबन्धी मानसिक अशान्ति (कप्पू)। ५ विशेष भ्रान्ति (सुपा ३२७; गउड)। ६ संदेह। ७ आश्चर्य। ८ शोभा (गउड)। ९ भूषणों का स्थान-विपर्यय (कुमा)। १० रावण का एक सुभट (पउम ५६, २६)। ११ मैथुन, अब्रह्म। १२ काम-विकार (पण्ह १, ४—पत्र ६६)।

विब्भल वि [विह्वल] १ व्याकुल, व्यग्र (सुर ८, ५७; १२, १६८)। २ व्यासक्त, तल्लीन। ३ पुं. विष्णु, नारायण (षड् ४०; हे २, ५८)।

विब्भलिअ वि [विह्वलित] व्याकुल किया हुआ (कुमा)।

विब्भवण न [दे] उपधान, ओसीसा (दे ७, ६८)।

विब्भाडिय वि [दे] नाशित (भवि)।

विब्भार देखो वेब्भार (पि २६६)।

विब्भिभडि पुं [दे] मत्स्य की एक जाति (विपा १, ८ टी—पत्र ८३)।

विब्भेइअ वि [दे] सूई से विद्ध (दे ७, ६७)।

विभंग पुं [विभङ्ग] १ विपरीत अवधिज्ञान, वितथ अवधिज्ञान, मिथ्यात्व-युक्त अवधिज्ञान (पव २२६ टी)। २ ज्ञान-विशेष (सूअ २, २, २५)। ३ विराधना, खण्डन। ४ मैथुन, अब्रह्म (पण्ह १, ४—पत्र ६६)। देखो विहंग = विभंग।

विभंगु पुंस्त्री [दे] तृण-विशेष; 'एरंडे कुरुविंदे करकरसुंठे तहा विभंगू य' (पण्ण १—पत्र ३३)।

विभंगुर वि [विभङ्गुर] विनश्वर (सुपा ६०५; प्रासू ६६; पुप्फ २२०)।

विभंज सक [वि + भञ्ज्] भाँग डालना, तोड़ना। संकृ. **विभंजिऊण** (काल)।

विभंतडी (अप) स्त्री [विभ्रान्ति] विशिष्ट भ्रम (हे ४, ४१४)।

विभग्ग वि [विभग्न] भाँगा हुआ, खण्डित (पउम ११३, २६)।

विभज सक [वि + भज्] १ बाँटना, विभाग करना। २ विकल्प से प्राप्त करना, पक्षतः प्राप्ति करना—विधान और निषेध करना। कर्म. **विभज्जंति** (तंदु २)। कवकृ. **विभज्जमाण** (णाया १, १—पत्र ६०; उप २६४ टी)। संकृ. **विभजिऊण** (धर्मवि १०५)। देखो विभज्ज।

विभजण न [विभजन] विभाग, भाग-बँटाई (पव ३८)।

विभज्ज देखो विभज। विभज्ज (कम्म ६, १०)।

विभज्जवाद, **विभज्जवाय** पुं [विभज्यवाद] स्याद्वाद, अनेकान्तवाद, जैन दर्शन (धर्मसं ६२१; सूअ १, १४, २२; उवर ६६)।

विभत्त वि [विभक्त] १ विभाग-युक्त, बाँटा हुआ (नाट—शकु ४६; कप्प)। २ भिन्न, अलग, जुदा; 'विभत्तं धम्मं झोसेमाणे' (आचा; कप्प; महा)। ३ न. विभाग (राज)।

विभत्ति स्त्री [विभक्ति] १ विभाग, भेद (भग १२, ५—पत्र ५७४; सूअनि ६६; उत्तनि ३६); 'लोगस्स पएसेसु अणंतरपरंपराविभत्तीहिं' (पंच २, ३६; ४०; ४१)। २ व्याकरण-प्रसिद्ध प्रत्यय-विशेष (ओघभा ४; चेइय २६८; सूअनि ६६)।

विभमण न [दे] उपधान, ओसीसा (दे ७, ६८ टी)।

विभय देखो **विभज**। विभए, विभयंति (कम्म ६, ३१; आचा; उत्त १३, २३)।

विभयणा स्त्री [विभजना] विभाग (सम्म १०१)।

विभर सक [वि + स्मृ] विस्मरण करना, भूल जाना। विभरइ (पि ३१३)।

विभव देखो **विहव** (उव; महा)।

विभवण न [विभवन] विरूप-करण, खराब करना (राज)।

विभाइम वि [विभाज्य] विभाग-योग्य (ठा ३, २—पत्र १३४)।

विभाइम वि [विभागिम] विभाग से बना हुआ (ठा ३, २—पत्र १३४)।

विभाग पुं [विभाग] अंश, बाँट (काल; सण)।

विभागिम देखो **विभाइम** = विभागिम (उप पृ १४१)।

विभाय देखो **विभाग** (रंभा)।

विभाय न [विभात] प्रकाश, कान्ति, तेज (सण)।

विभाय पुं [विभाव] परिचय; 'कस्स विसमदसाविभाओ न होइ' (स १६८)।

विभाव सक [वि + भावय्] १ विचार करना, ख्याल करना। २ विवेक से ग्रहण करना। ३ समझना। वकृ. **विभावंत, विभावेंत, विभावेमाण** (सुपा ३७७; उप ५६७ टी; कप्प)। कवकृ. **विभाविज्जंत, विभाविज्जमाण** (से ८, ३२; स ७५०)। हेकृ. **विभावेत्तए** (कस)। कृ. **विभावणीय** (पुप्फ २५४)।

विभाव देखो **विभव**; 'तओ महाविभावेणं पूइऊण पेसिया गया य' (महा)।

विभावसु पुं [विभावसु] १ सूर्य, रवि। २ रविवार (पउम १७, १०७)। देखो **विहावसु**।

विभाविय वि [विभावित] विचारित (सण)।

विभास सक [वि + भाष्] १ विशेष रूप से कहना, स्पष्ट कहना। २ व्याख्या करना। ३ विकल्प से विधान करना। विभासइ (पव ७३ टी)। कृ. **विभासियव्व** (उत्तनि ३६; पिंड १२४)। हेकृ. **विभासिउं** (विसे १०८५)।

विभासण न [विभाषण] व्याख्या, व्याख्यान (विसे १४२८)।

विभासय वि [विभाषक] व्याख्याता, व्याख्या-कर्त्ता (विसे १४२५)।

विभासा स्त्री [विभाषा] १ विकल्प-विधि, पाक्षिक प्राप्ति, भजना, विधि और निषेध का का विधान (पिंड १४३; १४४; १४५; २३५; ३०२; उप ४१५ टी; द्र १६)। २ व्याख्या, विवरण, स्पष्टीकरण (विसे १३८५; १४२१; पिंड ६३७)। ३ विज्ञापन, निवेदन (उप ६८०)। ४ विविध भाषण (पिंड ४३८)। ५ विशेषोक्ति (देवेन्द्र ३६७)। ६ परिभाषा, संकेत (कम्म १, २८; २६)। ७ एक महानदी (ठा ५, ३—पत्र ३५१)।

विभासिय वि [विभासित] प्रकाशित; उद्द्योतित (सम्मत्त ६२)।

विभिण्ण, **विभिन्न** देखो **विहिण्ण** = विभिन्न (गउड ५७०; ११८०; उत्त १६, ५५)।

विभीसण पुं [विभीषण] १ रावण का एक छोटा भाई (पउम ८, ६२)। २ विदेह वर्ष का एक वासुदेव (राज)।

विभीसावण वि [विभीषण] भय-जनक, भयंकर (भवि)।

विभीसिया स्त्री [विभिषिका] भय-प्रदर्शन (उव)।

विभु पुं [विभु] १ प्रभु, परमेश्वर (पउम ५, ११२)। २ नाथ, स्वामी, मालिक (पउम ७०, १२)। ३ इक्ष्वाकु वंश के एक राजा का नाम (पउम ५, ७)। ४ वि. व्यापक (विसे १६८५)।

विभूइ स्त्री [विभूति] १ ऐश्वर्य, वैभव (उव; औप)। २ ठाटबाट, धूमधाम; 'महाविभूईए चलिओ जिणजत्ताए' (सुर ३, ६२; महा)। ३ अहिंसा (पण्ह २, १—पत्र ६६)।

विभूसण न [विभूषण] १ अलंकार, गहना। २ शोभा; 'दिव्वालंकारविभूसणाइं' (उव; औप)।

विभूसा स्त्री [विभूषा] १ सिंगार की सजावट, शरीर पर अलंकार-वस्त्र आदि की सजावट (आचा १, २, १, ३; औप; जीव ३)। २ शरीर-शोभा; 'मेहुणाओ उवसंतस्स किं विभूसाइ कारिअं' (दस ६, २, ६५; ६६; ६७; उत्त १६, ६)।

विभूसिय वि [विभूषित] विभूषा-युक्त, अलंकृत, शोभित (भग; उत्त १६, ६; महा; विपा १, १—पत्र ७)।

विभेद, **विभेय** पुं [विभेद] १ भेदन, विदारण (धर्मसं ८२६); 'जयवारणकुंभविभेयक्खमे' (गउड; उप ७२८ टी)। २ भेद, प्रकार; 'उड्ढाहोतिरियविभेयं तिहुवणंपि' (चेइय ६६४)।

विभेयग वि [विभेदक] भेदनकर्त्ता; 'परमम्मविभेयगो' (धर्मवि ७६)।

विमइ स्त्री [विमति] छन्द-विशेष (पिंग)।

विमइअ वि [दे] भर्त्सित, तिरस्कृत (दे ७, ७१)।

विमउल वि [विमुकुल] विकसित, खिला हुआ (णाया १, १ टी—पत्र ३; औप)।

विमंतिय वि [विमन्त्रित] जिसके बारे में मसलहत—गुप्त युक्ति की गई हो वह (सुर ११, ६७)।

विमंसिअ वि [विमृष्ट, विमर्शित] विचारित, पर्यालोचित (सिरि १०४५)।

विमग देखो **विमय** (राज)।

विमग्ग सक [वि + मार्गय्] १ विचार करना। २ अन्वेषण करना, खोजना। ३ प्रार्थना करना, मांगना। ४ इच्छा करना, चाहना। विमग्गइ, विमग्गहा (उव; उत्त १२, ३८)। वकृ. **विमग्गंत, विमग्गमाण** (गा ३५१; सुर २, १७; से ४, ३६; महा)।

विमग्गिअ वि [विमार्गित] १ याचित, माँगा हुआ (सिरि १२७; सुर ४, १०७)। २ अन्वेषित, गवेषित (पाअ)।

विमज्झ न [विमध्य] अन्तराल (राज)।

विमण वि [विमनस्] १ विषण्ण, खिन्न, शोक-सन्तप्त (कप्प; सुर ३, १६८; महा)। २ शून्य-चित्त, सुन्न चित्तवाला (विपा १, २—पत्र २७)। ३ निराश, हताश (गा ७६)। ४ जिसका मन अन्यत्र गया हो वह (से ४, ३१; गउड)।

विमद्द सक [वि + मर्दय्] १ संघर्ष करना। २ मर्दन करना। कवकृ. **विमद्दिज्जमाण** (सिरि १०३८)।

विमद्द पुं [विमर्द] १ विनाश; 'ग्रासत्तपुरिसंतइदालिद्दविमद्दसंजणयं' (सुपा ३८; गउड)। २ संघर्ष (से ७२२; कुप्र ४६)।

विमद्दण न [विमर्दन] ऊपर देखो (भवि)।

विमन्न सक [वि + मन्] मानना, गिनना। वकृ. 'सव्वं तुविणं व तं विमन्नंतो' (सुर ४, २४०)।

विमय पुं [दे] पर्व-वनस्पति-विशेष (पराण १—पत्र ३३)।

विमर (अप) नीचे देखो। विमरइ (पिंग)।

विमरिस सक [वि + मृश्] विचारना। कृ. विमरिसिदव्व (शौ) (अभि १८४)।

विमरिस पुं [विमर्श] विकल्प, विचार (राज)।

विमल त्रि [विमल] १ मल-रहित, विशुद्ध, निर्मल (कप्प; औप; से ८, ४६; पउम ५१, २७; कुमा; प्रासू २; १५७; १६१)। २ पुं. इस अवसर्पिणी-काल में उत्पन्न तेरहवें जिनदेव (सम ४३; पडि)। ३ भारतवर्ष में होनेवाले बाईसवें जिन-भगवान् (सम १५४)। ४ एक प्राचीन जैन आचार्य और कवि जिन्होंने विक्रम की प्रथम शताब्दी में 'पउमचरिअ' नामक जैन रामायण बनाई है (पउम ११८, ११८)। ५ एक महाग्रह, ज्योतिष्क देव-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७८)। ६ भगवान् अजितनाथ का पूर्वजन्मीय नाम (सम१५१)। ७ पुंन. सहस्रार देवलोक के इन्द्र का एक पारियानिक विमान (ठा ८—पत्र ४३७)। ८ ब्रह्म-देवलोक में स्थित एक देव-विमान (सम १३; देवेन्द्र १४०)। ९ एक ग्रैवेयक देव-विमान (सम ४१; देवेन्द्र १४१)। १० लगातार छः दिनों का उपवास। ११ लगातार सात दिनों का उपवास (संबोध ५८)। १२ पुं. अहिंसा, दया (पराह २, १—पत्र ९९)। °**घोस** पुं [°घोष] एक कुलकर पुरुष (सम १५०)। °**चंद** पुं [°चन्द्र] एक जैन आचार्य (महा)। °**प्पहा** स्त्री [°प्रभा] भगवान् शीतलनाथजी की दीक्षा-शिविका (विचार १२९)। °**वर** पुं [°वर] आनत-प्राणत देवलोक के इन्द्र का एक पारियानिक विमान (ठा १०—पत्र ५१८)। °**वाहण** पुं [°वाहन] १ भारतवर्ष के भावी प्रथम जिनदेव, जिनके दूसरे नाम देवसेन तथा महापद्म होंगे (ठा ९—पत्र ४५९)। २ कुलकर पुरुष-विशेष (सम १०४; १५०; १५३; पउम; ३, ५५)। ३ भारतवर्ष का एक भावी चक्रवर्ती राजा (सम १५४)। ४ एक जैन, जो भगवान् अभिनन्दन के पूर्व जन्म में गुरु थे (पउम २०, १२; १७)। ५ भगवान् संभवनाथ का पूर्व-जन्मीय नाम (सम १५१)। °**सामि** पुं [°स्वामिन्] सिद्धचक्रजी का अधिष्ठायक देव (सिरि २०४)। °**सुंदरी** स्त्री [°सुन्दरी] षष्ठ वासुदेव की पटरानी (पउम २०, १८६)।

विमलण न [विमर्दन] मणि आदि को शाण पर घिसना, घर्षण (दे १, १४८)।

विमलहर पुं [दे] कलकल, कोलाहल (दे ७, ७२)।

विमला स्त्री [विमला] १ ऊर्ध्व दिशा (ठा १०—पत्र ४७८)। २ धरणेन्द्र के लोकपालों की अग्र-महिषियों के नाम (ठा ४, १—पत्र २०४)। ३ गीतरति और गीतयश नाम के गन्धर्वेन्द्रों की अग्र-महिषियों के नाम (ठा ४, १—पत्र २०४)। ४ चौदहवें जिनदेव की दीक्षा-शिविका (सम १५१)।

विमलिअ वि [विमर्दित] जिसका मर्दन किया गया हो वह, घृष्ट (से ६, ७)।

विमलिअ वि [दे] १ मत्सर से उक्त। २ शब्द-सहित, शब्दवाला (दे ७, ७२)।

विमलेसर पुं [विमलेश्वर] सिद्धचक्रजी का अधिष्ठायक देव (सिरि ७७३)।

विमलोत्तर पुं [विमलोत्तर] ऐरवत वर्ष का एक भावी जिनदेव (सम १५४)।

विमहिद (शौ) वि [विमथित] जिसका मथन किया गया हो वह (नाट—मालवि ४०)।

विमाउ स्त्री [विमातृ] सौतेली माँ (सत्त ३५; १७१)।

विमाण सक [वि + मानय्] अपमान करना, तिरस्कार करना। विमाणेज्जह (महा ५९)।

विमाण पुंन [विमान] १ देव का निवास-भवन (सम २; ८; ९; १०; १२; ठा ८; १०; उवा; कप्प; देवेन्द्र २५१; २५३; पराह १,४—पत्र ६८; ति १२)। २ देव-यान, आकाश-यान, आकाश में गति करने में समर्थ रथ (से ९, ७२; कप्प)। ३ अपमान, तिरस्कार। ४ वि. मान-रहित, प्रमाण-शून्य (से ६; ७२)। °**पविभत्ति** स्त्री [°प्रविभक्ति] जैन ग्रन्थ-विशेष (सम ६६)। °**भवण** न [°भवन] विमानाकार गृह (कप्प)। °**वासि** पुं [°वासिन्] देवों की एक उत्तम जाति, वैमानिक देव (पराह १, ४—पत्र ६८; ति १२)।

विमाणणा स्त्री [विमानना] अवगणना, तिरस्कार (चेइय १३२)।

विमाणिअ वि [विमानित] अपमानित (पिंड ४१३; कप्प; महा)।

विमिस्स अ [विमृश्य] विचार करके। °**गारि** वि [°कारिन्] विचार-पूर्वक करनेवाला (स १८४; ३२४)।

विमिस्स वि [विमिश्र] मिश्रित, मिला हुआ, युक्त (पंच २, ७; महा)।

विमिस्सण न [विमिश्रण] मिश्रण, मिलावट (सम्मत्त १७१)।

विमीसिय वि [विमिश्रित] विमिश्र, मिश्रित (भवि)।

विमुउल देखो विमउल (राज)।

विमुंच सक [वि + मुच्] १ छोड़ना, बन्धन-मुक्त करना। २ परित्याग करना। विमुंचइ (सण)। कर्म. विमुच्चई (आचा २, १, ६, ६)। वकृ. विमुंचंत (महा), विमुच [?मुंच] माण (णाया १, ३—पत्र ९५)। कृ. विमोत्तव्व (उप २६४ टी), विमोय (ठा २, १—पत्र ४७)।

विमुकुल देखो विमउल (पराह १, ४—पत्र ७२)।

विमुक्क वि [विमुक्त] १ छुटा हुआ, छुट्टा, बन्धन-रहित; 'जवविमुक्केण आसेण' (महा ४६; पात्र; आचानि ३४३)। २ परित्यक्त; 'विमुक्कजीयाण' (महा ७७)। ३ निःसंग, संग-रहित (आचा २, १६, ८)।

विमुक्ख पुं [विमोक्ष] छुटकारा, मुक्ति (से ११, ५६; आचानि २५८; २५६; अजि ५)।

विमुक्खण देखो **विमोक्खण** (उत्त १४, ४; कुप्र ३६६)।

विमुच्छिअ वि [विमूर्च्छित] मूर्छा-प्राप्त (से ११, ५६)।

विमुत्त देखो **विमुक्क** 'मुत्तिविमुत्तेसुवि' (पिंड ५६)।

विमुत्ति स्त्री [विमुक्ति] १ मोक्ष, मुक्ति (आचानि ३४३; कुप्र १६)। २ आचारांग सूत्र का अन्तिम अध्ययन (आचा २, १६, १२)। ३ अहिंसा (पराह २, १—पत्र ६६)।

विमुयण न [विमोचन] परित्याग (संबोध १०)।

विमुह वि [विमुख] १ पराङ्मुख, उदासीन (गउड; सुपा २८; भवि)। २ पुं. एक नरक-स्थान (देवेन्द्र २८)। ३ पुंन. आकाश, गगन (भग २०, २—पत्र ७७६)।

विमुह अक [वि + मुह्] घबराना, व्याकुल होना, बेचैन होना। वकृ. **विमुहिज्जंत** (से २, ४६; ११, ४६)।

विमुहिअ वि [विमुग्ध] घबराया हुआ (से ४, ४४; गा ७६२)।

विमुहिअ वि [विमुखित] पराङ्मुख किया हुआ (पराह १, ३—पत्र ५३)।

विमूढ वि [विमूढ] १ घबराया हुआ। २ अस्फुट, अस्पष्ट (गउड)।

विमूरण वि [विभञ्जक] तोड़नेवाला, खण्डन-कर्ता; 'जं मंगलं बाहुबलिस्स आसि तेअस्सिणो माणविमूरणस्स' (मंगल १०)।

विमोइय वि [विमोचित] छुड़ाया हुआ (णाया १, २—पत्र ८८; सण)।

विमोक्ख देखो **विमुक्ख** (से ३, ८)।

विमोक्खण न [विमोक्षण] १ छुटकारा, छुड़ाना, बन्धन-मोचन (आचा; सूअ २, ७, १०; पउम १०२, १८८; स ६८; ७४२)। २ वि. छुड़ानेवाला, विमुक्त करनेवाला; 'सव्वदुक्खविमोक्खणं' (सूअ १, ११, २; २, ७, १०)। स्त्री. °णी (उत्त २६, १)।

विमोक्खय वि [विमोक्षक] छुटकारा पाने-वाला; 'ते दुक्ख-विमोक्खया' (सूअ १, १, २, ५)।

विमोडण न [विमोटन] मोड़ना (दे)।

विमोत्तव्व देखो **विमुंच**।

विमोय सक [वि + मोचय्] छुड़ाना, मुक्त करना। संकृ. **विमोइऊण** (सण)।

विमोय देखो **विमुंच**।

विमोयग वि [विमोचक] छोड़नेवाला, दूर करनेवाला; 'न ते दुक्खविमोयगा' (सूअ १, ६, ३)।

विमोयण न [विमोचन] १ छुटकारा, मुक्ति। २ वि. छुड़ानेवाला; 'दुहसयविमोयणकाइं' (पराह २, १—पत्र ६६)।

विमोयणा स्त्री [विमोचना] छुटकारा (सूअ १, १३, २१)।

विमोह सक [वि + मोहय्] मुग्ध करना, मोह उपजाना। विमोहेइ (महा)। संकृ. **विमोहित्ता, विमोहेत्ता** (भग १०, ३—पत्र ४६८)।

विमोह देखो **विमोक्ख** (आचा)।

विमोह वि [विमोह] १ मोह-रहित (उत्त ५, २६)। २ पुं. विशेष मोह, घबराहट (सम्मत्त २२६)। ३ आचारांग सूत्र का एक अध्ययन (सम १५; ठा ६ टी—पत्र ४४५)।

विमोहण न [विमोहन] १ मोह उपजाना। (सुर ६, ३८)। २ वि. मोह उपजानेवाला (उप ७२८ टी)।

विमोहिअ वि [विमोहित] मोह-प्राप्त (महा २३; ५२)।

विम्ह न [वेश्मन्] गृह, घर (राज)।

विम्हइअ वि [विस्मित] आश्चर्य-चकित, चमत्कृत (सुर १, १६०)।

विम्हय अक [वि + स्मि] चमत्कृत होना, विस्मित होना, आश्चर्यान्वित होना। कृ. **विम्हयणिज्ज विम्हयणीअ** (हे १, २४८; अभि २०२)।

विम्हय पुं [विस्मय] आश्चर्य, चमत्कार (हे २, ७४; षड्; प्राप्र; उव; गउड; अवि १)।

विम्हर सक [स्मृ] याद करना। विम्हरइ (हे ४, ७४)।

विम्हर सक [वि + स्मृ] विस्मरण करना, याद न आना, भूल जाना। विम्हरइ (हे ४, ७५; प्राकृ ६३; षड्)। वकृ. **विम्हरंत** (श्रा १६)।

विम्हरण न [विस्मरण] विस्मृति (पव ६; संबोध ४३; सूक्त ८०)।

विम्हराइअ वि [दे] १ मूर्छित, मूर्छा-प्राप्त। २ विस्मापित (से ६, ४१)।

विम्हरावण वि [स्मरण] स्मरण करानेवाला, याद दिलानेवाला; 'बावरणवीरकहविम्हरा-वणा' (कुमा)।

विम्हरिअ वि [विस्मृत] भूला हुआ, याद न किया हुआ (कुमा; पाअ)।

विम्हल देखो **विब्भल** (उप ५३० टी)।

विम्हलिअ देखो **विब्भलिअ** (अच्चु २२)।

विम्हारिअ वि [विस्मारित] भुलाया हुआ (कुमा; श्रा २८)।

विम्हारिअ (अप) देखो **विम्हरिअ** (सण)।

विम्हाव सक [वि + स्मापय्] आश्चर्य-चकित करना। विम्हावेइ (महा; निचू ११)। वकृ. **विम्हावेंत** (उत्त ३६, २६२)।

विम्हावण न [विस्मापन] आश्चर्य उपजाना, विस्मय-करण (औप)।

विम्हावणा स्त्री [विस्मापना] ऊपर देखो (निचू ११)।

विम्हावय वि [विस्मापक] विस्मय-जनक (सम्मत्त १७४)।

विम्हाविअ वि [विस्मापित] आश्चर्यान्वित किया हुआ (धर्मवि १४७)।

विम्हिअ वि [विस्मित] विस्मय-प्राप्त, चमत्कृत (श्रा २८—पत्र १६०; उव)।

विम्हिय (अप) देखो **विम्हय**। विम्हियइ (सण)।

विम्हिर वि [विस्मेर] विस्मय पानेवाला, चमत्कृत होनेवाला (श्रा १२, २७)।

वियच्चा देखो **विअ-च्चा**।

वियट्ट अक [वि + वृत्] बरतना, होना। हेकृ. **वियट्टित्तए** (आचा २, २, २, ३)।

वियद्द पुं [व्यर्द, व्यट्ट] आकाश, गगन (भग २०, २—पत्र ७७६)।

विर सक [भञ्ज्] भाँगना, तोड़ना। विरइ (हे ४, १०६)।

विर अक [गुप्] व्याकुल होना। विरइ (हे ४, १५०), विरंति (कुमा)।

विर (अप) देखो **वीर** (सण)।

विरइ स्त्री [विरति] १ विराम, निवृत्ति । २ सावद्य—पाप कर्म से निवृत्ति, संयम, त्याग (उव; आचा)। ३ छन्दःशास्त्र-प्रसिद्ध विश्राम-स्थान, यति (चेइय ५०७)।

विरइअ वि [विरचित] १ कृत, निर्मित, बनाया हुआ। २ सजाया हुआ (पाअ; औप; कप्प; पउम ११८, १२१; कुमा; महा; रंभा; कप्पू)।

विरइअ देखो **विराइअ** (कप्प)।

विरइयव्व देखो **विरय** = वि + रचय्।

विरंचि पुं [विरञ्चि] ब्रह्मा, विधाता (कुप्र ४०३; त्रि ८७; सम्मत्त १६२)।

विरज्ज } अक [वि+रञ्ज्] १ रिक्त होना, **विरज्ज** } उदासीन होना। २ रँग-रहित होना। विरज्जइ (उव; उत्त २६, २; महा)। वकृ. **विरज्जंत, विरज्जमाण, विरज्जमाण** (से ४, १४; भवि; उत्त २६, २; गा १४६; २६६)।

विरत्त वि [विरक्त] १ उदासीन, विराग-प्राप्त (सम ५७; प्रासू १५५; १६६; महा)। २ विविध रँगवाला (आचा १, २, ३, ५)।

विरत्ति स्त्री [विरक्ति] वैराग्य, उदासीनता (उप पृ ३२)।

विरम अक [वि + रम्] निवृत्त होना, अटकना। विरमइ (गा ७०८), विरमेज्जा (आचा), विरम, विरमसु (गा ३४५; १४६)। प्रयो., हेकृ. **विरमावेउं** (गा ३४६)।

विरम पुं [विरम] विराम, निवृत्ति (गउड; गा ४५६; ६०६; सुर ७, १६३)।

विरमग देखो **वेरमग** (राज; प्रामा)।

विरमाण सक [प्रति + पालय्] पालन करना, रक्षण करना। विरमाणइ (धात्वा १५३)।

विरमाल सक [प्रति + ईक्ष्] राह देखना, बाट जोहना, प्रतीक्षा करना। विरमालइ (हे ४, १९३)। संकृ. **विरमालिअ** (कुमा)।

विरमालिअ वि [प्रतीक्षित] जिसकी प्रतीक्षा की गई हो वह (पाअ)।

विरय सक [वि + रचय्] १ करना, बनाना। २ सजाना, सजावट करना। विरएइ, विरअंति, विरअआमि; विरयइ (प्राकृ ७४; कप्पू; पि ५६०; सण)। वकृ. **विरयमाण** (सुर १६, १५)। संकृ. **विरइअ** (नाट)। हेकृ. **विरइउ°** (सुपा २)। कृ. **विरइयव्व** (पउम ६६, १६)।

विरय वि [विरत] १ निवृत्त, रुका हुआ, विराम-प्राप्त (उवा; गा ५४१; दं ४६)। २ पाप-कार्य से निवृत्त, संयमी, त्यागी (आचा; उव)। ३ न. विरति, विराम। ४ संयम, त्याग (दं ४६; कम्म २, २)। **°ाविरय** वि [°ाविरत] आंशिक संयम रखनेवाला, जैन उपासक, श्रावक (सम २६)।

विरय पुं [दे] छोटा जल-प्रवाह, छोटी नदी (दे ७, ३६); 'विरया तणुसरिआओ' (पाअ)।

विरय पुं [विरजस्] १ महाग्रह, ज्योतिष्क देव-विशेष (सुज्ज २०)। २ एक देव-विमान (देवेन्द्र १४१)।

विरयण स्त्रीन [विरचन] १ कृति, निर्माण। २ सजावट (नाट—मालती २८; कप्पू)। स्त्री. **°णा** (सुपा ६५, से १५, ७१); 'पडिट्टए विअ तसर-विरअणा' (कप्पू)।

विरया स्त्री [विरजा] १ गो-लोक में स्थित राधा की एक सखी। २ उसके शाप से बनी हुई एक नदी; 'लंघिअविरआसरिअं' (अच्चु ८६)।

विरल वि [विरल] १ अल्प, थोड़ा; 'परदुक्खे दुक्खिआ विरला' (हे २, ७२; ४, ४१२; उव; प्रासू १८०; गउड)। २ अनिबिड। ३ विच्छिन्न (गउड; उव)।

विरलि स्त्री [दे] वस्त्र-विशेष, डोरिया, डोरीवाला कपड़ा; 'विरलिमाई भूरिभेआ' (पव ८४ टी)।

विरलिअ वि [विरलित] विरल बना हुआ, विरल किया हुआ (गउड)।

विरली देखो **विराली** (राज)।

विरल्ल सक [तन्] विस्तारना, फैलाना। विरल्लइ, विरल्लेइ, विरल्लंति (हे ४, १३७; षड्; गउड)।

विरल्ल पुं [तान] विस्तार, फैलाव, (वव ४)।

विरल्लण न [तनन] विस्तार, फैलाव; 'अट्ठ-मयविरल्लणे सया रमइ' (उव)।

विरल्लिअ वि [तत] विस्तारवाला, विस्तारित (दे ७, ७१; पाअ; कुमा; णाया १, १७—पत्र २३२; ठा ४, ४—पत्र २७६); 'जह उल्ला साडीया आसुं सुक्कइ विरल्लिया संती' (विसे ३०३२)।

विरल्लिअ देखो **विरलिअ** (राज; भवि)।

विरल्लिअ वि [दे] जलार्द्र, भींजा हुआ (दे ७, ७१)।

विरस अक [वि + रस्] चिल्लाना, क्रन्दन करना। वकृ. **विरसंत** (सण)।

विरस वि [विरस] रस-रहित, शुष्क (णाया १, ५—पत्र १११; गउड; हे १, ७; सण)। २ विरुद्ध रसवाला (भग ७, ६—पत्र ३०५)। ३ पुं. रामभ्राता भरत के साथ जैन दीक्षा लेनेवाला एक राजा (पउम ८५, ३) ४ न. तप-विशेष, निर्विकृतिक तप (संबोध ५८)।

विरस न [दे] वर्ष, साल, बारह मास (दे ७, ६२)।

विरसमुह पुं [दे] काक, कौआ (दे ७, ४६)।

विरसिय वि [विरसित] रस-हीन, रस-विरहित (हम्मीर ५१)।

विरह सक [वि + रह्] १ परित्याग करना। २ अलग करना। कवकृ. **विरहिज्जंत** (नाट—शकु ८२)। कृ. **विरहियव्व** (शौ) (नाट—शकु ११७)।

विरह पुं [विरह] १ वियोग, विछोह, जुदाई (गउड; हे १, ८४; ११५; प्रासू १५६; कुमा; महा)। २ अन्तर, व्यवधान (भग)। ३ पुं. वृक्ष-विशेष; 'फुल्लंति विरहरुक्खा सोऊण पंचमुग्गारं' (संबोध ४७; श्रा ३५), 'धरा-विओ पचासन्ने विराहो नाम तरू, वाइऊण वीणं फुल्लाविओ सो' (कुप्र १३६), 'फुल्लंति विरहिणो विरहयव्व लहिऊण पंचमं केवि' (कुप्र २४८)। ४ अभाव। ५ विनाश (राज)। ६ हरिवंश में उत्पन्न एक राजा (पउम २२, ६८)।

विरह वि [विरथ] रथ-रहित (पउम १०, ६३)।

विरह पुंन [दे] १ एकान्त, विजन (दे ७, ६१; गाया १, २—पत्र ७६; पुप्फ ३४४); 'सामाए देवीए अंतराणि य छिद्दाणि य विरहाणि य पडिजागरमाणीओ २ विहरंति' (विपा १, ६—पत्र ८६)। २ कुसुंभ से रँगा हुआ कपड़ा (दे ७, ६१)।

विरहाल न [दे] कुसुम्भ से रँगा हुआ वस्त्र (दे ७, ६८)।

विरहि वि [विरहिन्] वियोगी, बिछुड़ा हुआ (कुमा)।

विरहिअ वि [विरहित] विरह-युक्त (भग; उव; हे ४, ३७७)।

विरा अक [वि + ली] १ नष्ट होना। २ द्रवित होना, पिघलना। ३ अटकना, निवृत्त होना। विराइ (हे ४, ५६)।

विराइ वि [विरागिन्] विरागवाला, विरक्त, उदासीन। स्त्री. °णी (नाट)।

विराइ वि [विराजिन्] शोभनेवाला, चमकता (से २, २६)।

विराइ वि [विराविन्] शब्द-युक्त, आवाज-वाला (से २, २६)।

विराइअ देखो **विराय** = विलीन (से २, २६)।

विराइअ वि [विराजित] सुशोभित (उवा; औप; महा)।

विराग पुं [विराग] १ राग का अभाव, वैराग्य, उदासीनता (सुज्ज १३; उप ७२८ टी)। २ वि. राग-रहित, वीतराग (पच्च १०४; औप)।

विराड पुं [विराट] देश-विशेष (उप ६४८ टी)। °**नयर** न [°नगर] नगर-विशेष (गाया १, १६—पत्र २०६)।

विराध (अप) पुं [विराध] एक राक्षस का नाम (पिंग)।

विराम पुं [विराम] उपरम, निवृत्ति, अवसान (गउड)।

विरामण न [विरमण] विरत करना, निवर्तन, विरमाना; 'वेरविरामणपज्जवसाणं' (पण्ह २, ४—पत्र १३१)।

विराय अक [वि + राज्] शोभना, चमकना। विरायए (पाअ)। वकृ. **विरायंत, विरायमाण** (कप्प; औप; गाया १, १ टी—पत्र २, सुर २, ७६)।

विराय वि [विलीन] १ विशीर्ण, विगलित, नष्ट (से ७, ६४; गउड, कुमा ६, ३८)। २ पिघला हुआ (पाअ)।

विराय देखो **विराग** (पण्ह २, ५—पत्र १४६; कुमा; सुपा २०५; वज्जा ६; कुप्र १११)।

विराल देखो **बिराल** (गाया १, १—पत्र ६५; पि २४१)।

विरालिआ स्त्री [विरालिका] १ पलाश-कन्द। २ पर्ववाला कन्द (दस ५, २, १८)। देखो **बिरालिआ**।

विराली स्त्री [विराली] १ वल्ली-विशेष (पव ४; श्रा २०; संबोध ४४)। २ चतुरिन्द्रिय जंतु की एक जाति (उत्त ३६, १४८; सुख ३६, १४८)। देखो **बिराली**।

विराव पुं [विराव] शब्द, आवाज (गउड)।

विरावि वि [विराविन्] आवाज करनेवाला (गउड)।

विराह सक [वि + राधय्] १ खण्डन करना, भाँगना, तोड़ना। विराहंति (उव)। वकृ. **विराहंत, विराहेंत** (सुपा ३२८; उव)।

विराहअ } वि [विराधक] खण्डन करनेवाला,
विराहग } तोड़नेवाला, भंजक (भग; गाया १, ११—पत्र १७१)।

विराहणा स्त्री [विराधना] खण्डन, भंग (सम ८; गाया १, ११ टी—पत्र १७३; पण्ह १, १—पत्र ६; ओघ ७८८)।

विराहिअ वि [विराधित] १ खण्डित, भग्न (भग)। २ अपराद्ध, जिसका अपराध किया गया हो वह; 'अविराहियवेरिएहिं' (पण्ह १, ३—पत्र ५३)। ३ पुं. एक विद्याधर-नरेश (पउम ७६, ७)।

विरिअ वि [भग्न] भाँगा हुआ, तोड़ा हुआ (कुमा)।

विरिअ देखो **वीरिअ** (सुअनि ६१; ६४; औप)।

विरिंच सक [वि + भज्] विभाग-ग्रहण करना, भाग लेना, बाँट लेना; 'सयणो वि य से रोगं न विरिंचइ, नेय नासेइ' (स १:७)।

विरिंच पुं [विरिञ्च] ब्रह्मा, विधाता (पाअ)।

विरिंचि पुं [विरिञ्चि] ऊपर देखो (सुर १२, ७८)।

विरिंचिअ वि [दे] १ विमल, निर्मल। २ विरक्त, उदासीन (दे ७, ६३)।

विरिंचिर पुं [दे] १ अश्व, घोड़ा। २ वि. विरल (दे ७, ६३)।

विरिंचिरा स्त्री [दे] धारा, प्रवाह (दे ७, ६३)।

विरिक्क वि [दे] पाटित, विदारित (दे ७, ६४)।

विरिक्क वि [विरिक्त] जो खाली हुआ हो वह (पउम ४५, ३२; सुपा ४२२)।

विरिक्क वि [विभक्त] १ बाँटा हुआ; 'जेणं चित्तयराणं सभा समभागेहि विरिक्का' (महा)। २ जिसने भाग बाँट लिया हो वह, अपना हिस्सा ले कर जो अलग हुआ हो वह; 'एगम्मि सरिएणवेसे दो भाउया वणिया; ते य परोप्परं विरिक्का' (ओघ ४६४ टी)।

विरिक्का स्त्री [दे] बिन्दु, लव, लेश (सुख २, २७)।

विरिचिर वि [दे] धारा से विरेचन करने वाला (षड्)।

विरिज्जय वि [दे] अनुचर, अनुगत (दे ७, ६६)।

विरिल्ल सक [वि + स्तृ] विस्तारना, फैलाना। विरिल्लइ (प्राकृ ७६)।

विरीअ (अप) देखो **विवरीअ** (पिंग)।

विरीह सक [प्रति + पालय्] पालन करना, रक्षण करना। विरीहइ (प्राकृ ७५; धात्वा १५३)।

विरु } अक [वि + रु] रोना, चिल्लाना।
विरुअ } वकृ. **विरुयमाण** (उप ३३६ टी)।

विरुअ न [विरुत] ध्वनि, पक्षी की आवाज, शब्द (गा ६४; से १, २३; नाट—मृच्छ १३६)।

विरुअ वि [दे. विरूप] १ खराब, कुडौल, दुष्ट रूपवाला, कुत्सित (दे ७, ६३; भवि)। २ विरुद्ध, प्रतिकूल (षड्)। देखो **विरूअ**।

विरुट्ठ पुं [विरुष्ट] नरक-स्थान विशेष (देवेन्द्र २८)।

विरुद्ध त्रि [विरुद्ध] विरोधवाला, विपरीत, प्रतिकूल, उलटा (औप; गउड)। °**यारि** वि [°चारिन्] विपरीत आचरण करनेवाला (उप ७२८ टी)।

विरुव देखो विरूव (दे ६, ७५)।

विरुह अक [वि + रुह्] विशेष रूप से उगना, अंकुरित होना। विरुहंति (उत्त १२, १३)।

विरुह देखो विरूह (पण्ण १—पत्र ३६; श्रा २०)।

विरूअ } वि [विरूप] १ कुरूप, भौंड़ा, **विरूव** } कुडौल, खराब, कुत्सित (गा २६३; भवि; स्वप्न ४४; सुर १, २६; उप ७२८ टी)। २ विरुद्ध, प्रतिकूल, उलटा (सुर ११, ८०)। ३ बहुविध, अनेक तरह का, नानाविध (आचा)।

विरूह पुंन [विरूढ] अंकुरित द्विदल-धान्य (पव ४)।

विरेअ सक [वि + रेचय्] १ मल को नीचे से निकालना। २ बाहर निकालना। विरेअइ (हे ४, २६)। वकृ. **विरेअंत** (कुमा ६, १७)।

विरेअण न [विरेचन] १ मल-निस्सारण, जुलाब (उवकु २५; णाया १, १३—पत्र १८१)। २ वि. भेदक, विनाशक; 'सयल-दुक्खविरेयणं समणत्तणंति' (स २७८; ६६३)।

विरेल्लिअ देखो विरिल्लिअ = तत (णाया १, १७ टी—पत्र २३४; गउड ४३५)।

विरोयण पुं [विरोचन] अग्नि, वह्नि (भत्त १२३)।

विरोल सक [मन्थ्] विलोडना, विलोड़न करना। विरोलइ (हे ४, १२१; षड्)।

विरोल सक [वि + लग्] १ अवलम्बन करना। २ आरोहण करना, चढ़ना। विरोलइ (धात्वा १५३)।

विरोलिअ वि [मथित] विलोडित (पाअ; कुमा; भवि)।

विरोह सक [वि + रोधय्] विरोध करना। विरोहंति (संबोध १७)।

विरोह पुं [विरोध] विरुद्धता, प्रतीपता, वैर, दुश्मनाई (गउड; नाट—मालती १३८; भवि)।

विरोहय वि [विरोधक] विरोध-कर्ता (भवि)।

विरोहि वि [विरोधिन्] दुश्मन, प्रतिपन्थी (पि ४०५; नाट—शकु १६)।

विरोहिय वि [विरोधित] विरोध-प्राप्त (वज्जा ७०)।

विल अक [व्रीड्] लज्जा करना, शरमिन्दा होना। संकृ. **विलिऊण** (स ३७५)।

विल न [विल] नमक-विशेष, एक तरह का नोन (आचा २, १, ६, ६)।

विलइअ वि [दे] १ अधिज्य, धनुष की डोरी पर चढ़ाया हुआ। २ दीन, गरीब (दे ७, ९२)। ३ ऊपर चढ़ाया हुआ, आरोपित 'आणा जस्स विलइआ सीसे सेसव्व हरिहरे-हिंपि' (धण २५), 'पढमं चिअ रहुवइणा उवरि हिअए तुलिओ भरोव्व विलइओ' (से ३, ५)।

विलओलग पुं [दे] लुंटाक, लुटेरा (राज)।

विलओली स्त्री [दे] १ विस्वर वचन। २ विलोकना, तलाशी (पण्ह १, ३—पत्र ५३)। देखो **बिलकोली°**।

विलंघ सक [वि + लङ्घ्] उल्लंघन करना। विलंघेंति (धर्मसं ८४२)। वकृ. **विलंघंत** (काल)।

विलंघण न [विलङ्घन] उल्लंघन, अतिक्रमण; 'ही ही सीलविलंघणं' (उप ५९७ टी)।

विलंघल (अप) देखो विहलंघल (सण)।

विलंघलिअ (अप) वि [विह्वलाङ्गित] व्याकुल शरीरवाला; 'मुच्छविलंघलिउ' (सण)।

विलंब देखो विडंब = वि + डम्बय्। वकृ. **विलंबमाण** (धर्मसं १००५)।

विलंब अक [वि + लम्ब्] १ देरी करना। २ सक. लटकाना, धारण करना। कर्म. विलंबीअदि (शौ) (नाट—विक्र ३१)। वकृ. **विलंबंत** (से ३, २६)। संकृ **विलंबिअ** (नाट—वेणी ७३)। कृ. **विलंबणिज्ज** (श्रा १४)।

विलंब पुं [विलम्ब] १ देरी, अशीघ्रता (गा ५८८)। २ तप-विशेष, पूर्वार्ध तप (संबोध ५८)। ३ न. नक्षत्र-विशेष, सूर्य के द्वारा परि-भोग कर छोड़ा हुआ नक्षत्र (विसे ३४०९)।

विलंबग वि [विलम्बक] धारण करनेवाला (सूअ १, ७, ८)।

विलंबणा देखो विडंबणा (प्रासू १०३)।

विलंबणा स्त्री [विडम्बना] निर्वर्तना, बनावट, कृति (अणु १३९)।

विलंबि न [विलम्बिन्] १ सूर्य के द्वारा भोकर छोड़ा हुआ नक्षत्र। २ सूर्य जिसपर हो उसके पीछे का तीसरा नक्षत्र (वव १)।

विलंबिअ वि [विलम्बित] १ विलम्ब-युक्त (कप्प)। २ न. नक्षत्र-विशेष (वव १)। ३ नाट्य-विशेष (राय)।

विलक्ख वि [विलक्ष] १ लज्जित, शरमिन्दा (से १०, ७०; सुर १२, ६६; सुपा १६८; ३२८; महा; भवि)। २ प्रतिभा-शून्य, मूढ (से १०, ७०)।

विलक्ख न [वैलक्ष्य] विलक्षता, लज्जा, शरम (सुर ३, १७६)।

विलक्खिम पुंस्त्री. ऊपर देखो; 'उवसमियविल-क्खिम—' (भवि)।

विलग्ग सक [वि + लग्] १ अवलम्बन करना, सहारा लेना। २ चढ़ना, आरोहण करना। ३ पकड़ना। ४ चिपटना। गुजराती में 'वळगवुं'। विलग्गसि, विलग्गेज्जासि (महा)। वकृ. **विलग्गंत** (पि ४८८)।

विलग्ग वि [विलग्न] १ लगा हुआ, चिपटा हुआ, संलग्न; 'जह लोहसिला अप्पंपि बोलए तह विलग्गपुरिसंपि' (संबोध १३; से ४, २; ३, १४२; गा १८८; ३५९; महा)। २ अवलम्बित (सुर १०; ११४)। ३ आरूढ; 'अन्नया आयरिया सिद्धसेलं तेण समं वंदगा विलग्गा' (सुख १, ३)।

विलज्ज अक [वि + लस्ज्] शरमाना। विलज्जामि (कुप्र ५७)।

विलट्ठि पुंस्त्री [वियष्टि] साढ़े तीन हाथ में चार अंगुल कम लट्ठी, जैन साधुओं का उप-करण-दंड (पव ८१)।

विलद्ध वि [विलब्ध] अच्छी तरह प्राप्त, सुलब्ध (पिंग)।

विलप्प पुं [विलाल्मन्] एक नरक-स्थान (देवेन्द्र २६)।

विलभ सक [खेदय्] खिन्न करना, खेद उपजाना। विलभेइ (प्राकृ ६७)।

विलमा स्त्री [दे] ज्या, धनुष की डोरी (दे ७, ३४)।

विलय पुं [दे] सूर्य का अस्त होना (दे ७, ६३; पाअ)।

विलय पुं [विलय] १ विनाश (कुप्र ५१; सुपा १६७; ती ३)। २ तल्लीनता (ती ३)। ३ पुं. एक नरक-स्थान (देवेन्द्र २६)।

विलया स्त्री [वनिता] स्त्री, महिला, नारी (पाअ; हे २, १२८; षड्; कुमा; रंभा; भवि)।

विलव अक [वि + लप्] रोना, कांदना, चिल्लाना। विलवइ (षड्; महा)। वकृ. विलवंत, विलवमाण (महा; णाया १, १—पत्र ४७)।

विलवण वि [विलपन] रोनेवाला, चिल्लानेवाला। °या स्त्री [°ता] विलाप, क्रन्दन (औप)।

विलविअ न [विलपित] विलाप, क्रन्दन (पाअ; औप)।

विलविर वि [विलपितृ] विलाप करनेवाला (कुमा; सण)।

विलस अक [वि + लस्] १ मौज करना। २ चमकना। विलसइ, विलसेमु (महा)। वकृ. विलसंत (कप्प; सुर १, २२८)।

विलसण न [विलसन] १ विलास, मौज (उप पृ १८१)। २ वि. मौज करनेवाला (सुर १, २२१ टि)।

विलसिय न [विलसित] १ चेष्टा-विशेष। २ दीप्ति, चमक (महा)।

विलसिर वि [विलसितृ] विलासी, विलास करनेवाला (सुपा २०४; २५४; धर्मवि १६; सण)।

विला देखो **विरा**; 'मयणं व मणो मुणिणोवि हंत सिग्घं चिय विलाइ' (भत्त १२७), 'ताविण व नवणीयं विलाइ सो उद्धरिज्जंतो' (कुप्र १०५)।

विलाल देखो **बिराल** (पि २४१)।

विलाव पुं [विलाप] क्रन्दन, बिलख-बिलख या विकल होकर रोना परिदेवन (उव)।

विलाविअ वि [विलापित] विलाप-युक्त (वै ८६; भवि)।

विलास पुं [विलास] १ स्त्री का नेत्र-विकार। २ स्त्री की शृंगार-चेष्टा विशेष, अंग और क्रिया-संबन्धी स्त्री की चेष्टा-विशेष (पण्ह २, ४—पत्र १३२; औप; गउड)। २ दीप्ति, चमक (कुमा; गउड)। ३ चेष्टा-विशेष, मौज (गउड)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष (सुपा ६२२)। °वई स्त्री [°वती] स्त्री, नारी, महिला (से १०,७१; गउड)।

विलासि वि [विलासिन्] १ मौजी, शौकीन (हास्य १३८; गउड)। २ चमकनेवाला। स्त्री. °णी; 'चंदविलासिणीओ चंदद्धसमललाडाओ' (औप)।

विलासिअ वि [विलासिक, °सित] विलास-युक्त (गा ४०५)।

विलासिणी स्त्री [विसिनी] १ नारी, स्त्री। २ वेश्या (गा २९३; ८०३ अ; गउड, नाट—रत्ना ६; पि ३४६; ३८७)। देखो **विलासि**।

विलिअ न [व्यलीक] १ कंदर्प-संबन्धी अपराध, वह अपराध जो काम के आवेग के कारण किया जाय, गुनाह (कुमा; गा ५३)। २ अकार्य (गा ५३)। ३ अप्रिय, विप्रिय (गा ५३; पाअ)। ४ अनृत, असत्य। ५ प्रतारणा, ठगाई। ६ गति-विपर्यय। ७ वि. अपराधी। ८ अकार्य-कर्ता। ९ विप्रिय-कर्ता। १० झूठ बोलनेवाला (हे १, ४६; १०१)।

विलिअ वि [व्रीडित] लज्जित, शरमिन्दा (पाअ; षड्)।

विलिअ न [दे. व्रीडित] लज्जा, शरम (दे ७, ६५; सण)।

विलिइअ वि [व्यलीकित] व्यलीक-युक्त; 'विलि (?लिइ)ए विडुं' (भग १५—पत्र ६८१; राज)।

विलिंग सक [वि + लिङ्ग्] आलिङ्गन करना, स्पर्श करना। विलिंगेज्ज (आचा २, ६; ३)।

विलिंजरा स्त्री [दे] धाना, भुने हुए जौ (दे ७, ६६)।

विलिंप सक [वि + लिप्] लेप करना, लेपना, पोतना। विलिंपइ (सण)। संकृ. विलिंपिऊण (सण)। हेकृ. विलिंपित्तए (कस)। प्रयो., वकृ. विलिंपावंत (निचू १७)।

विलिज्ज अक [वि + ली] १ नष्ट होना। २ पिघलना। विलिज्जइ; विलिज्जंति, विलिज्ज (हे ४, ५६; ४१८; भवि; अज्झ ५५, संबोध ५२; गच्छ २, २६)। वकृ. विलिज्जंत, विलिज्जमाण (पउम ६, २०, ३; २१, २२)।

विलित देखो **विलिअ** = व्रीडित (उप २९६)।

विलित्त वि [विलिप्त] लिपा हुआ, जिसको विलेपन किया गया हो वह (सुर ३, ६२; १०, १७; भवि)।

विलिव्विली स्त्री [दे] कोमल और निर्बल शरीरवाली स्त्री, नाजुक बदनवाली नारी (दे ७, ७०)।

विलिह सक [वि + लिख्] १ रेखा करना। २ चित्र बनना। ३ खोदना। विलिहइ (भवि)। वकृ. विलिहमाण (पउम ७, १२०)। कवकृ. विलिहिज्जमाण (कप्प)। हेकृ. विलिहिउं (कप्पू)।

विलिह सक [वि + लिह्] १ चाटना। २ चुम्बन करना। विलिहंतु (कप्पू)। वकृ. विलिहंत (गच्छ १, १७; भत्त १४२)।

विलिहण न [विलेखन] रेखा-करण (तंदु ५०)।

विलिहिअ वि [विलिखित] चित्रित (सुर १२, २०)।

विलीअ देखो **विलिअ** = व्रीडित; 'सोगविवसो विलीओ' (कुप्र १३५)।

विलीअ देखो **विलिअ** = व्यलीक; 'मज्झ विलीयं नरवइस्स परिवसइ किंपि चित्ते' (सुपा ३००)।

विलीइर वि [विलेतृ] द्रवण-शील, पिघलनेवाला (कुमा)।

विलीण वि [विलीन] १ पिघला हुआ, द्रवीभूत। २ विनष्ट; 'सोवि तुह झाणजलणे मयणो मयणं विअ विलीणो' (धण २५; पाअ; महा; भवि)। ३ जुगुप्सित (पण्ह १, १—पत्र १४)।

विलुंगयाम वि [दे] निर्ग्रन्थ, अकिंचन, साधु; 'एस विलुंगयामो सिजाए' (आचा २, १, २, ४)।

विलुंचण न [विलुञ्चन] उन्मूलन, जड़ से उखाड़ना (पण्ह १, १—पत्र २३)।

विलुंप सक [वि + लुप्] १ लूटना। २ काटना। ३ विनाश करना। विलुंपंति, विलुंपह (आचा; सूअ २, १, १६; पि ४७१); 'अत्थं चोरा विलुंपंति' (महा)। वकृ. विलुंपमाण (सुपा ५७४)। कवकृ. विलुप्पंत, विलुप्पमाण (पउम १६, ३१; सुपा ८०; सुर २, २१; उवा)।

विलुंप सक [काङ्क्ष्] अभिलाष करना, चाहना। विलुंपइ (हे ४, १९२)।

विलुंपइत्तु वि [विलोप्तृ] विलोप-कर्त्ता, काटनेवाला (सूअ २, २, ६)।

विलुंपय पुं [दे] कीट, कीड़ा (दे ७, ६७)।

विलुंपिअ वि [काङ्क्षित] अभिलषित (कुमा ७, ३८; दे. ७, ६६)।

विलुंपिअ पुं [दे. विलुप्त] आशित, कवलित, खाया हुआ; 'घत्थं कवलिअं असिअं विलुंपिअं वंफिअं खइअं' (पाअ)। देखो विलुत्त।

विलुंपित्तु देखो विलुंपइत्तु (आचा)।

विलुक्क [दे] छिपा हुआ (भवि)।

विलुक्क वि [विलुञ्चित] विमुण्डित, सर्वथा केश-रहित किया हुआ (पिंड २१७)।

विलुत्त वि [विलुप्त] १ काटा हुआ, छिन्न; 'विलुत्तकेसि' (पउम १०२, ५३; पण्ह १, ३—पत्र ५४)। २ लुण्टित, लुटा हुआ; 'इमाइ अडवीइ वाणियगसत्थो। मह पुरिसेहि विलुत्तो, पत्तं वित्तं तहि पउरं' (सुर ११, ४८)। ३ विनष्ट; 'तुमं उण जलविलुत्तप्पसाहणं जेव सुमरसि' (कप्पू)।

विलुत्तहिअअ वि [दे] जो समय पर काम करने को न जानता हो वह (दे ७, ७३)।

विलुप्पंत } **विलुप्पमाण** } देखो विलुंप।

विलुलिअ वि [विलुलित] उपमर्दित (से ६, १२)।

विलूण वि [विलून] काटा हुआ, छिन्न (सुपा ६)।

विलेवण न [विलेपन] १ शरीर पर लगाने का चन्दन, कुंकुम आदि पिष्ट द्रव्य (कुमा; उवा; पाअ)। २ लेपन-क्रिया (औप)।

विलेविअ वि [विलेपित] विलेपन-युक्त (सण)।

विलेविआ स्त्री [विलेपिका] पान-विशेष (राज)।

विलेहिअ वि [विलेखित] चित्रित किया हुआ (सुर १२, ११७)।

विलोअ सक [वि + लोक्] देखना। कर्म. विलोइज्जंति, विलोईअंति (पि ११)। कवकृ. विलोइज्जमाण (उप पृ ६७)। संकृ. विलोइऊण (काप्र १९५)।

विलोअ पुं [विलोक] आलोक, प्रकाश (उप पृ ३५८)।

विलोअ देखो विलोव (सुपा ४४०)।

विलोअण पुंन [विलोचन] आँख, नेत्र (काप्र १९१; गा ९७०; सुपा ५२६)।

विलोअण न [विलोकन] १ देखना, निरीक्षण। २ वि. देखनेवाला; 'लोयालोयविलोयणकेवलनाणेण नायभावस्स' (सुर ४, ८६)।

विलोट्ट अक [विसं + वद्] १ अप्रमाणित होना, झूठा साबित होना। २ उलटा होना, विपरीत होना। विलोट्टइ, विलोट्टए (हे ४, १२९; भवि; स ७१६)।

विलोट्ट } **विलोट्टिअ** } वि [विसंवदित] १ जो झूठा साबित हुआ हो (कुमा ६, ८८)। २ जो कहकर फिर गया हो, प्रतिज्ञा-च्युत; 'कन्नाए सयणमहिलाईलोयवरुओ विल्लिट्टो सो' (उप ५९७ टी)। ३ विरुद्ध बना हुआ; 'चउरो महनरवइणो विलोट्टि (? ट्टि) या चउदिसिं पि अइबलिणो' (सुपा ४५२)।

विलोड सक [वि + लोडय्] मंथन करना। विलोडेइ (कुप्र ३४७)।

विलोडिय वि [विलोडित] मथित (कुप्र ७८)।

विलोभ सक [वि + लोभय्] १ लुब्ध करना, लुभाना, आसक्त करना। २ लालच देना। ३ विस्मय उपजाना। कृ. विलोभणिज्ज (कुप्र १३८)।

विलोल देखो विलोड। वकृ. विलोलंत (उप पृ ८७)।

विलोल अक [वि + लुठ्] लेटना; 'विलोलंति महीतले विसूणियंगमंगा' (पण्ह १, १—पत्र १८)।

विलोल वि [विलोल] चंचल, अस्थिर (से २, १६; गउड; कप्पू)।

विलोव पुं [विलोप] लूट, डकैती; 'सत्थविलोवे जाए' (सुर १५, १८)।

विलोवण न [विलोपन] ऊपर देखो; 'परधणविलोवणाईणं' (उव)।

विलोवय वि [विलोपक] लूटनेवाला, लुटेरा; 'अद्धाणम्मि विलोवए' (उत्त ७, ५)।

विलोह देखो विलोभ। हेकृ. विलोहइदुं (शौ) (मा ४२)।

विलोहण वि [विलोभन] १ आश्चर्य-कारक। २ लुभानेवाला; 'मुद्धमइविलोहणं नेयं' (श्रावक १३२)।

विल्ल अक [वेल्ल्] चलना, हिलना; 'विल्लंति द्दुमपल्लवा' (रंभा)।

विल्ल देखो बिल्ल (हे १, ८५; राज)।

विल्ल वि [दे] १ अच्छ, स्वच्छ। २ विलसित, विलास-युक्त (दे ७, ८८)। ३ पुंन. सुगंधी द्रव्य-विशेष, जो धूप के काम में आता है; 'डज्झंतविल्लगुग्गुलुपवियंभियधूमसंघायं' (स ४३६)।

विल्लय देखो चिल्लअ (औप)।

विल्लय देखो वेल्लग (सुपा २७६)।

विल्लरी स्त्री [दे] केश, बाल (दे ७, ३२)।

विल्लल देखो विल्लल (इक)।

विल्लहल देखो वेल्लहल (प्रवि २३)।

विल्ली स्त्री [विल्ली] गुच्छ-वनस्पति-विशेष (पण्ण १—पत्र ३२)।

विल्ह वि [दे] धवल, सफेद (दे ७, ६१)।

विव देखो इव (हे २, १८२; गा २९०; ६०९ अ; कुमा)।

विवइ स्त्री [विपद्] विपत्ति, कष्ट, दुःख (उप ७७१; हे ४, ४००)। °गर वि [°कर] दुःख-जनक (कुमा)।

विवइ स्त्री [विवृति] व्याख्या, विवरण, टीका (कुप्र १९)। देखो विवदि।

विवइण्ण वि [विप्रकीर्ण] बिखरा हुआ (पउम ७८, २६; से ५, ५२; १३, ८६)।

विवंक वि [विवक्र] विशेष बाँका, टेढ़ा (स २५१)।

विवंचिआ स्त्री [विपञ्चिका] वाद्य-विशेष, वीणा (पाअ)।

विवक्क वि [विपक्व] १ अच्छी तरह पूर्ण किया हुआ। २ प्रकर्ष को प्राप्त, अत्यन्त पका हुआ। ३ उदय में आगत, फलाभिमुख; 'विवक्कतवबंभचेराणं देवाणं अवन्नं वदमाणे' (ठा ५, २—पत्र ३२१)।

विवक्ख पुं [विपक्ष] १ दुश्मन, रिपु, विरोधी; 'विवक्खदेवीहिं' (गउड; स ५६४; अच्चु ३१)। २ न्याय-शास्त्र-प्रसिद्ध विरुद्ध पक्ष, वह वस्तु जहाँ साध्य आदि का अभाव हो (दसनि १—गाथा १४२)। ३ विपरीत धर्म (अणु)। ४ वैधर्म्य, विसदृशता (ठा १ टी—पत्र १३)।

विवक्खा स्त्री [विवक्षा] कहने की इच्छा (पंच १, १० भास ३१; दसनि १, ७१)।

विवग्घ वि [विव्याघ्र] व्याघ्र के चमड़े से मढ़ा हुआ, व्याघ्र-चर्म-युक्त (आचा २, ५, १, ५)।

विवच्चास पुं [विपर्यास] विपर्यय, विपरीतता, व्यत्यास, उलटा (उत्त ३०, ४; सुख ३०, ४; ओघ २६८)।

विवच्छा स्त्री [विवत्सा] १ एक महानदी (ठा १०—पत्र ४७७)। २ वत्स-रहित स्त्री (राज)।

विवज्ज अक [वि + पद्] मरना, नष्ट होना। विवज्जइ, विवज्जामि (स ११६; पच्च १४; सुख २, ४५)। भवि. विवज्जिही (कुप्र १८६)। वकृ. विवज्जंत (नाट—रत्ना ७७)।

विवज्ज सक [वि + वर्जय्] परित्याग करना। विवज्जेइ (उव)। वकृ. विवज्जयंत, विवज्जमाण (उव; धर्मसं १०३२)। कृ. विवज्जणिज्ज, विवज्जणीअ (उप ५६७ टी; अभि १८३)।

विवज्ज वि [विवर्ज] १ रहित, वर्जित; 'मउडविवज्जाहरणं सव्वं से देइ भट्टस्स' (सुपा २७१)। २ परित्याग, परिहार (पिंड १२६)।

विवज्जग वि [विवर्जक] वर्जन करनेवाला (सूअ २, ६, ५)।

विवज्जण न [विवर्जन] परित्याग (रत्न २२)।

विवज्जणया, **विवज्जणा** स्त्री [विवर्जना] परित्याग, परिहार, वर्जन (सम ४४; उत्त ३२, २; दसचू २, ५)।

विवज्जत्थ वि [विपर्यस्त] विपरीत, उलटा (पंचा ११, ३७; कम्म १, ५१)।

विवज्जय पुं [विपर्यय] विपर्यास, व्यत्यास, वैपरीत्य (पाअ; उप १४२ टी; पव १३३; पंचा ६, ३०; कम्म १, ५५)।

विवज्जास पुं [विपर्यास] १ विपर्यय, व्यत्यय (पाअ; पंचा ८, ११)। २ भ्रम, मिथ्याज्ञान (सुर ६, १५४)।

विवज्जिअ वि [विवर्जित] रहित, वर्जित, परित्यक्त (उव; दं ३६; सुर ३, १५५; रंभा; भवि)।

विवट्ट अक [वि + वृत्] बरतना, रहना। विवट्टइ (हे ४, ११८)। वकृ. विवट्टमाण (कुमा ६, ८०; रंभा)।

विवडिय वि [विपतित] गिरा हुआ (पउम १६, २२; भग ७, ६ टी—पत्र ३१८)।

विवड्ढ अक [वि + वृध्] बढ़ना। वकृ. विवड्ढमाण (णाया १, १० टी—पत्र १७१)।

विवड्ढण वि [विवर्धन] बढ़ानेवाला; 'मयविवड्ढणं' (उत्त १६, ७)। स्त्री. °णी (उत्त १६, २)। देखो विवद्धण।

विवड्ढि स्त्री [विवृद्धि] बढ़ाव, वृद्धि (पंचा १८, १३)।

विवड्ढिअ वि [विवृद्ध] बढ़ा हुआ (नाट—पिंग)।

विवणि पुंस्त्री [विपणि] १ बाजार (सुपा ५३०)। २ हाट, दूकान; 'विवणी तह आवणो हट्टो' (पाअ)।

विवणीय वि [व्यपनीत] दूर किया हुआ, हटाया हुआ (कप्प)।

विवण्ण देखो **विवन्न** = विपन्न (उत्त २०, ४४; गा ५५० अ)।

विवण्ण वि [विवर्ण] १ कुरूप, कुडौल (से ५, ४७; दे ६७६)। २ फीका, निस्तेज, म्लान (णाया १, १—पत्र २८; से ८, ८७)।

विवण्ण वि [द्विपर्ण] १ दो पत्रवाला। २ पुं. वृक्ष, पेड़ (राज)।

विवत्त पुं [विवर्त्त] एक महाग्रह, ज्योतिष्क देव-विशेष (सुज्ज २०)।

विवत्ति स्त्री [विपत्ति] १ विनाश (णाया १, ६—पत्र १५७; विपा १, २—पत्र ३२; सुपा २३५; उव)। २ मरण, मौत (सुर २, ५१; स ११६)। ३ कार्य की असिद्धि (सुपा २३५; उव; बृह १)। ४ आपदा, कष्ट (सुपा २३५)।

विवत्तिअ वि [विवर्त्तित] फिराया हुआ, घुमाया हुआ (से ६, ८०)।

विवत्थ पुं [विवस्त्र] एक महाग्रह (सुज्ज २०)।

विवदि स्त्री [विवृति] १ विवरण, टीका। २ विस्तार (संक्षि ६)।

विवद्धण न [विवर्धन] वृद्धि, बढ़ाव (कप्प)। देखो विवड्ढण।

विवद्धणा स्त्री [विवर्धना] वृद्धि, बढ़ाव (उप ६७५)।

विवद्धि पुं [विवर्धि] देव-विशेष (अणु १४५)।

विवन्न देखो **विवण्ण** = विवर्ण (सुपा ३१६)।

विवन्न वि [विपन्न] १ नाश-प्राप्त, विनष्ट (णाया १, ६—पत्र १५७; स ३४५; सुपा ५०६)। २ मृत, मरा हुआ (पउम ४४, १०; उत्त १०, ४४; स ७५६; सूअनि १६२; धर्मवि १४४)।

विवय अक [वि + वद्] झगड़ा करना, विवाद करना। वकृ. विवयंत (सुपा ५४६; सम्मत्त २१५)।

विवय वि [दे] विस्तीर्ण (षड्)।

विवया स्त्री [विपद्] कष्ट, दुःख (उप ७२८ टी)।

विवर सक [वि + वृ] १ बाल सँवारना। २ विस्तारना। ३ व्याख्या करना। विवरइ (भवि), विवरेहि (स ७१७)। वकृ. 'केसे नियस्स विवरन्ती' (कुप्र २८५)।

विवर न [विवर] १ छिद्र (पात्र; गउड; प्रासू ७३)। २ कन्दरा, गुहा (से ६, ४६)। ३ एकान्त, विजन; 'कामज्झयाए गणियाए बहूणि अंतराणि य छिद्दाणि य विवराणि य पडिजागरमाणे २ विहरति' (विपा १ २—पत्र ३४)। ४ पुंन. आकाश (भग २०, २)।

विवरंमुह वि [विपराङ्मुख] विमुख, पराङ्मुख (पउम ७३, ३०; से ६,४२)।

विवरण न [विवरण] १ व्याख्यान, 'सोऊण सुमिणविवरणं' (सुपा ३८)। २ व्याख्या-कारक ग्रंथ, टीका (विसे ३४२२; पव—गाथा ३६; सम्मत्त ११६)। ३ बाल सँवारना (दे १, १५०; पत्र ३८)।

विवरामुह, **विवराहुत्त** } देखो विवरंमुह (भवि; से ११, ८५)।

विवरिअ वि [विवृत] व्याख्यात (विसे १३६६; स ७१७)। देखो विवुअ।

विवरिअ (अप) नीचे देखो (सण)।

विवरीअ वि [विपरीत] उलटा, प्रतिकूल (भग १, १ टी; गउड; कप्पू; जी १२; सुपा ६१०)। °ण्णु वि [°ज्ञ] उलटा, जाननेवाला (धर्मसं १२७४)।

विवरीर, **विवरेर** } (अप) ऊपर देखो; 'घइं विवरीरी बुद्धडी होइ विणासहो कालि' (हे ४, ४२४), 'माइ कज्जु विवरेरओ दीसइ' (भवि)।

विवरुक्ख, **विवरोक्ख** } वि [विपरोक्ष] परोक्ष, अ-प्रत्यक्ष; 'जावच्चिय दहवयणो विवरोक्खो आवलीए धूयाए' (पउम ६, ११)। २ न. अभाव; 'पासम्मि अहंकारो होहिइ कह वा गुणाण विवरुक्खे' (गउड ७६)। ३ परोक्षता, अप्रत्यक्षपन;

'इय ताहे भावागयपच्चक्खायंतणरवइगुणाण।
विवरोक्खम्मि वि जाया कईण संबोहणालावा'
(गउड १२०४)।

विवल अक [वि + वल्] मुड़ना, टेढ़ा होना (गउड ४२४)।

विवला, **विवलाअ** } अक [विपरा + अय्] पलायन करना, भाग जाना। विवलाइ, विवलायइ, विवलाअंति (गउड ६३४; ११७६; पि ५६७)। वकृ. विवलाअंत, विवलाअमाण (से ३, ६०; गा २६१; गउड १६६; से १५, १४; गउड ४७२)।

विवलाअ वि [विपलायित] भागा हुआ (से १, २; १४, ३०)।

विवलिअ वि [विवलित] मोड़ा हुआ, परावर्त्तित (गा ६८०; गउड ४२४; काप्र १६५)।

विवलीअ देखो विवरीअ; 'विवलीअभासए' (अणु)।

विवल्हत्थ वि [विपर्यस्त] विपरीत, उलटा (से ६, ८)।

विवस वि [विवश] १ अधीन, परायत्त, परतन्त्र (प्रासू १०७; कुमा; कम्म १, ५७)। २ बाध्य, लाचार (कुप्र १३५)।

विवह सक [वि + वह्] विवाह करना, शादी करना (प्रामा)।

विवहण न [विव्यधन] विनाश (णाया १, १—पत्र ६५)।

विवाइअ व [विपादित] व्यापादित, जो जान से मार डाला गया हो वह; 'छिद्देण विवाइओ वाली' (पउम ३, १०; उत्त १६, ५६; ६३)।

विवाउग वि [विवादक] विवाद-कर्ता (स ४५६)।

विवाग पुं [विपाक] १ कर्म-परिणाम, सुख-दुःखादि भोग रूप कर्म-फल (ठा ४, १—पत्र १८८; विपा १, १; उवा; सुपा ११०; सण; प्रासू १२२)। २ प्रकर्ष; 'वयविवाग-परिणामा' (ठा ४, ४ टी—पत्र २८३)। ३ पाककाल; 'जं से पुणो होइ दुहं विवागे' (उत्त ३२, ३३)। °विजय पुंन [°विचय] धर्मध्यान का एक भेद, कर्म-फल का अनु-चिन्तन (ठा ४, ४—पत्र १८८)। °सुय न [°श्रुत] ग्यारहवाँ जैन अङ्ग-ग्रंथ (सम १; विपा १, १; औप)।

विवागि वि [विपाकिन्] विपाकवाला (अज्झ ११३)।

विवाद, **विवाय** } पुं [विवाद] झगड़ा, तकरार, वाक्-कलह, जबानी लड़ाई (उवा; उव; स ३८५; सुपा २८२; ३६१)।

विवाय सक [वि + पादय्] मार डालना। विवाएमि (विसे २३८५)। वकृ. विवाएंत, विवायंत (पउम ५७, ३१; २७, ३७)।

विवाय देखो विवाग (सुर १२, १३६; स २७५; ३२१; सं ११८; सण)।

'सव्वं चिय सुहदुक्खं
पुव्वज्जियसुकयदुक्कयविवाया।
जायइ जियाण जं ता
को खेओ सकयउवभोगे'
(उप ७२८ टी)।

विवायण वि [विवादन] विवाद-कर्ता; 'ते दोवि विवायणा व्व रायकुले' (धर्मवि २०)।

विवाविड न [दे] अतिशय गौरव (संक्षि ४७)।

विवाह सक [वि + वाहय्] लग्न करना, शादी करना। विवाहेमो (कुप्र १३१)।

विवाह देखो विआह = विवाह (उवा; स्वप्न ५१; सम १; ८८)। °गणय पुं [°गणक] ज्योतिषी, जोशी (दे ६, १११)। °जन्न पुं [°यज्ञ] विवाह-उत्सव (मोह ४४)।

विवाह देखो विआह = विबाध (सम १; ८८)।

विवाह° देखो विआह° = व्याख्या (सम १; ८८)।

विवाहाविय वि [विवाहित] जिसकी शादी कराई गई हो वह (महा)।

विवाहिय वि [विवाहित] जिसकी शादी हुई हो वह (महा; सण)।

विविइसा स्त्री [विविदिषा] जानने की इच्छा, जिज्ञासा (अज्झ ६६)।

विविक्क देखो विवित्त (सूअ १, १, २, १७)।

विविच सक [वि + विच्] पृथक् करना, अलग करना। संकृ. विविचित्ता (सूअ २, ४, १०)।

विविण न [विपिन] जंगल, वन (गउड; नाट—चैत ७२)।

विवित्त वि [विविक्त] १ रहित, वर्जित। २ पृथग्भूत (दस ८, ५३; भग ६, ३३; उत्त २६, ३१; उव)। ३ विविध, अनेकविध; 'आसवेहिं विवित्तेहिं तिप्पमाणो हियासए। गंथेहिं विवित्तेहिं आउकालस्स पारए'
(आचा १, ८, ८, ६; १०)।

४ न. एकान्त, विजन; 'किंतु विवित्तमाइसउ ताम्रो' (स ७४३)।

विवित्त वि [विविक्त] १ विवेक-युक्त। २ संविग्न, भव-भीरु (वव ४)।

विविदिअ वि [विविदित] विशेष रूप से ज्ञात (पराह २, १—पत्र ९९)।

विविदिसा देखो विविइसा (पंचा ३, २७)।

विविद्धि पुं [विवृद्धि] उत्तर भाद्रपदा नक्षत्र का अधिष्ठाता देव (ठा २, ३—पत्र ७७)।

विविह वि [विविध] अनेक प्रकार का, बहुविध, भाँति भाँति का (आचा; राय, उव; महा)।

विवुअ वि [विवृत] १ विस्तृत। २ व्याख्यात (संक्षि ४)।

विवुज्झ अक [वि + बुध्] जागना। विवुज्झदि (शौ) (प्राप्र)।

विवुड्ढि देखो विवड्ढि (ओघभा १३९; स १३५)।

विवुद देखो विवुअ (प्राकृ ८; १२)।

विवुदि देखो विवदि (प्राकृ १२)।

विवुह देखो विबुह (सण)।

विवेअ देखो विवेग (कुमा; महा ५२; ७७)। °न्नु वि [°ज्ञ] विवेक-ज्ञाता (पउम ५३, ३८)।

विवेअ पुं [विवेप] विशेष कंप (सुपा १४)।

विवेइ वि [विवेकिन्] विवेकवाला (सुपा १४८; कुमा; सण)।

विवेग पुं [विवेक] १ परित्याग (सूअ १, २, १, ८; ठा २, ३; औप; आचानि ३०३)। २ ठीक-ठीक वस्तु-स्वरूप का निर्णय, विनिश्चय (औप कुमा)। ३ प्रायश्चित्त (आचा १, ५, ४, ४)। ४ पृथक्करण (औप)।

विवेगि देखो विवेइ (सुपा ५४३; कुप्र ४७)।

विवेच सक [वि + वेचय्] विवेचन करना, ठीक-ठीक निर्णय करना, विवेक करना। कर्म. विवेचिजइ (धर्मसं १३१०)। हेकृ. विवेचितुं (धर्मसं १३११)।

विवेयण न [विवेचन] विवेक, निर्णय (विसे १९४२)।

विवोल पुं [दे] विशेष कोलाहल, कलकल आवाज; 'विवोलेण सवणसुहयं' (स ५७१)।

विवोलिअ वि [दे] व्यतिक्रान्त, गुजरा हुआ; 'कहकहवि विवोलिया मे रयणी' (स ५०९)।

विवोह देखो विबोह (भवि)।

विव्व सक [वि + अय्] व्यय करना, खर्च करना; 'चिंतामणिप्पभावा संपजइ तस्स दविणमइपउरं। तं विव्वइ जिणभवणे' (सुपा ३८२)। कृ. 'विव्वेयव्वो' (सुपा ४२४; ५८९)। देखो विच्च = वि = अय्।

विव्वाय वि [दे] १ अवलोकित। २ विश्रान्त (दे ७, ८९)।

विव्वोअ देखो बिब्बोअ (कुमा)।

विव्वोयण [दे] देखो बिब्बोयण (कप्प)।

विस सक [विश्] प्रवेश करना। विसइ, विसंति (वज्जा २६, सण; गउड)। वकृ. विसंत (गउड)। संकृ. विसिऊण (गउड)।

विस सक [वि + शॄ] १ हिंसा करना। २ नष्ट करना। कवकृ. विसिज्जमाण, विसीरंत (विसे ३४३७; अच्चु ७४)।

विस पुंन [विष] १ जहर, गरल, हलाहल; 'झत्ति नट्ठो दुहावि विमोहविसो' (सम्मत्त २२९; उवा; गउड; प्रासू १२०; कुमा)। २ पानी, जल (से ८, ६३)। °नंदि पुं [°नन्दिन्] प्रथम बलदेव का पूर्वभवीय नाम (सम १५३)। °न्न [°ान्न] विष-मिश्रित अन्न (उप ६४८ टी)। °मइअ, °मय वि [°मय] विष का बना हुआ (हे १, ५०; षड्)। °व वि [°वत्] १ विषवाला, विष-युक्त। २ पुं. सर्प, साँप (से ७, ६७)। °हर पुं [°धर] साँप, सर्प (से २, २५; सुर १, २४९; महा)। °हरवइ पुं [°धरपति] शेष नाग (से ९, ७)। °हरिंद पुं [°धरेन्द्र] शेष नाग (गउड)। °हारिणी स्त्री [°हारिणी] पनीहारी, पानी भरनेवाली स्त्री (हे ४, ४३९)।

विस देखो बिस (गा ९५२; गउड)।

विस पुं [वृष] १ बैल, साँड़, वृषभ (सुर १, २४८; सुपा ३६३; ५९७; सुख ८, १३)। २ ज्योतिष-प्रसिद्ध एक राशि (सुपा १०८; विचार १०७)। ३ मूषक, चूहा (दे ७, ६१; षड्)। ४ धर्म। ५ बल-युक्त। ६ ऋषभ नामक औषध। ७ पुरुष-विशेष (सुपा ३६३)। ८ काम, कन्दर्प। ९ शुक्र-युक्त, वीर्य-युक्त। १० शृङ्गवाला कोई भी जानवर (सुपा ५९७)।

विसइ वि [विषयिन्] विषयवाला, विषय-युक्त (विसे २७६०)।

विसंक वि [विशङ्क] शंका-रहित, निःशंक (उप १३९ टी)।

विसंखल वि [विश्रृङ्खल] स्वच्छन्द, स्वैरी, निरंकुश, उद्धत (पाअ; स १८०; से ५, ६८)।

विसंखल सक [विश्रृङ्खलय्] निरंकुश करना, अव्यवस्थित कर डालना। संकृ. विसंखलेऊण (सुख २, १५)।

विसंघट्टिय वि [विसंघट्टित] वियुक्त, विघटित (कुप्र ९)।

विसंघड अक [विसं + घट्] अलग होना, जुदा होना। वकृ. विसंघडंत (गा ११५)।

विसंघडिय वि [विसंघटित] वियुक्त, जो जुदा हुआ हो वह (णाया १, ८—१४१; महा)।

विसंघाइय वि [विसंघातित] संहत किया हुआ (अणु १७६)।

विसंघाय सक [विसं + घातय्] संहत करना। कर्म. विसंघाइज्जइ (अणु १७६)।

विसंजुत्त वि [विसंयुक्त] वियुक्त, जो अलग हुआ हो (सम्म २२; सूअनि १२१ टी)।

विसंजोअ पुं [विसं + योजय्] वियुक्त करना, अलग करना। विसंजोएइ (भग)।

विसंजोअ, **विसंजोग** पुं [विसंयोग] वियोग, विघटन, पृथग्भाव, जुदाई (कम्म ५, ८२; पंच ३, ५४)।

विसंठुल वि [विसंस्थुल] १ विह्वल, व्याकुल (पाअ; से १४, ४१; हे २, ३२; ४, ४३६; मोह २२; धम्मो ५)। २ अव्यवस्थित (गा १४६; कुप्र ४१७; दे १, ३४)।

विसंतव पुं [द्विषन्तप] शत्रु को तपानेवाला, दुश्मन को हैरान करनेवाला (हे १, १७७)।

विसंथुल देखो विसंठुल (पउम ८, २००; स ५२१)।

विसंथुलिय वि [विसंस्थुलित] व्याकुल बना हुआ (सण)।

विसंधि पुं [विसन्धि] १ एक महाग्रह, ज्योतिष्क देव-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७८)। २ वि. बन्धन-रहित (राज)। °कप्प, °कप्पेल्लय पुं [°कल्प] एक महाग्रह (सुज्ज २०)।

विसंनिविट्ठ न [विसंनिविष्ट] विविध रथ्या, अनेक महल्ला (औप)।

विसंभ देखो वीसंभ (महा)।

विसंभणया देखो विस्संभणया (आचा १, ८, ६; ४)।

विसंभोइय वि [विसंभोगिक] जिसके साथ भोजन आदि का व्यवहार न किया जाय वह, मंडली-बाह्य, समाज-बाह्य (ठा ५, १—पत्र ३००)।

विसंभोग पुं [विसंभोग] साथ बैठकर भोजन आदि का अव्यवहार (ठा ३, ३)।

विसंभोगिय देखो विसंभोइय (ठा ३, ३—पत्र १३६)।

विसंवइय वि [विसंवदित] १ सबूत रहित, अप्रमाणित (पाअ; स ५७६)। २ विघटित, वियुक्त (से ११, ३६)।

विसंवय अक [विसं + वद्] १ अप्रमाणित होना, असत्य ठहरना, सबूत से सिद्ध न होना। २ विघटित होना, अलग होना। ३ विपरीत होना, अन्यथा होना। विसंवयइ, विसंवयंति (हे ४, १२६; उव); 'सो तारिसो धम्मो नियमेण फले विसंवयइ' (स ६४८; ७१६), 'चरिएण कहं विसंवयसि' (मन २६)। विसंवएज्जा (महानि ४)। वकृ. विसंवयंत (उव; उप ७६८ टी, धर्मसं ८८३)।

विसंवयण न [विसंवदन] विसंवाद, सबूत का अभाव (उप पृ २६८)।

विसंवाइ वि [विसंवादिन्] १ विघटित होनेवाला, विच्छिन्न होनेवाला (कुमा ६, ८६)। २ अप्रमाणित होनेवाला, सबूत से सिद्ध नहीं होनेवाला, असत्य ठहरनेवाला (कुप्र २६४; सम्मत्त १२३)।

विसंवाइअ वि [विसंवादित] विसंवाद-युक्त (दे १, ११४; से ३, ३०)।

विसंवाद देखो विसंवाय = विसंवाद (धर्मसं १४८)।

विसंवादण देखो विसंवायण (उत्त २६, ४८)।

विसंवादणा देखो विसंवायणा (ठा ४, १—पत्र १६६)।

विसंवाय वि [दे] मलिन, मैला (दे ७, ७२)।

विसंवाय पुं [विसंवाद] १ सबूत का अभाव, विरुद्ध सबूत, विपरीत प्रमाण; 'अण्णोण्ण-विसंवाओ' (संबोध १७; सुपा ६०८)। २ व्याघात (गा ६१६)। ३ विचलता (से ३, ३०)।

विसंवायग वि [विसंवादक] १ सबूत रहित, प्रमाण-रहित। २ ठगनेवाला, वंचक (सुपा ६०८)।

विसंवायण न [विसंवादन] नीचे देखो (उत्त २६, ४८; सुख २६, ४८)।

विसंवायणा स्त्री [विसंवादना] १ असत्य कथन। २ वंचना, ठगाई (ठा ४, १—पत्र २६६)।

विसंसरिय वि [विसंसृत] उठ गया हुआ; 'पहायसमए य विसंसरिएसुं थाणएसुं' (स ५३७)।

विसंहणा देखो विस्संभणया (आचा)।

विसकल वि [विशकल] नीचे देखो (राज)।

विसकलिय वि [विशकलित] टुकड़ा-टुकड़ा किया हुआ, खण्डित (आवम)।

विसग्ग पुं [विसर्ग] १ निसर्ग, त्याग; 'सिमिणेवि सुरयसंगमकिरियासंजणियवंजणविसग्गो' (विसे २२८)। २ विसर्जन, छुटकारा, छोड़ देना (पिं २१५)। ३ अक्षर-विशेष, विसर्जनीय वर्ण (पिंग)।

विसज्ज सक [वि + सृज्, सर्जय्] १ बिदा करना, भेजना। २ त्यागना। विसज्जेह (महा)। संकृ. विसज्जिऊण, विसज्जिअ (महा; अभि ४६)। हेकृ. विसज्जिदुं (शौ) (अभि ६०)। कृ. विसज्जिदव्व (शौ) (अभि ५०)।

विसज्जणा स्त्री [विसर्जना] बिदाई (वव ४)।

विसज्जिअ वि [विसृष्ट, विसर्जित] १ बिदा किया हुआ, भेजा हुआ (औप; अभि ११६; महा; सुपा १५८-५७)। २ त्यक्त; 'जीवेण जाणि उ विसज्जियाणि जाईसएसु देहाणि' (उव)।

विसट्ट अक [दल्] फटना, टूटना, टुकड़े-टुकड़े होना। विसट्टइ (हे ४, १७६; षड्) विसट्टंति (गउड); 'तस्स विसट्टउ हिअयं' (कुमा)। वकृ. विसट्टंत (स ५७६)।

विसट्ट अक [वि + कस्] विकसना, खिलना, फूलना। विसट्टइ (प्राकृ ७६), विसट्टंति (वज्जा १३८)। वकृ. विसट्टंत, विसट्टमाण (वज्जा ६०; ठा ४, ४—पत्र २६४)।

विसट्ट सक [वि + कासय्] विकसित करना, फुलाना, प्रफुल्ल करना। विसट्टइ (धात्वा १५३)।

विसट्ट अक [पत्] गिरना, स्खलित होना। विसट्टंति (सुख २, २६)।

विसट्ट वि [दे] १ विघटित, विश्लिष्ट (पाअ; गउड १००६)। २ विकसित, प्रफुल्ल, खिला हुआ (प्राकृ ७७; गउड ६६७; ८०५; कुमा; सुर ३, ४२; भत्त ३०)। ३ दलित, विशीर्ण, खण्डित, जिसका टुकड़ा-टुकडा हुआ हो वह (से ६, ३०; गउड ५५६; भवि)। ४ उत्थित (गउड ७)।

विसट्टण न [विकसन] विकास, प्रफुल्लता; 'देव ! पणयजणकल्लाणकंदुट्टविसट्टणुग्गंतमिहराणुगारिणो' (धर्म ५)।

विसड } **विसढ** } देखो विसम (षड्; हे १, २४१; कुमा; दे ७, ६२); 'ढंढेण तहा विसढा, विसढा जह सफलिया जाया' (उव)।

विसढ वि [दे] १ नीराग, राग-रहित। २ नीरोग, रोग-रहित (दे ७, ६२)। ३ विषोढ, सहन किया हुआ (उव)। ४ विशीर्ण, टुकड़े-टुकड़े किया हुआ (से ६, ६६)। ५ आकुल, व्याकुल (से ११, ८६)।

विसढ वि [विशठ] १ अत्यंत दंभी, अतिशय मायावी; 'देवेहि पाडिहेरं किं व कयं एत्थ विसढेहिं' (पउम १०२, ५२)। २ पुं. एक श्रेष्ठि-पुत्र (सुपा ५५०)।

विसण देखो वसण = वृषण (दे ६, ६२)।

विसण न [वेशन] प्रवेश (राज)।

विसण्ण वि [विसंज्ञ] संज्ञा-रहित, चैतन्य-वर्जित (से ६, ६८)।

विसण्ण देखो **विसन्न** = विषण्ण (महा; वसु; राज)।

विसत्त वि [विसत्त्व] सत्त्व-रहित (वव ६)।

विसत्थ देखो **वीसत्थ** (णाया १, १—पत्र १३; स्वप्न १६; उप ७२८ टी)।

विसद देखो **विसय** = विशद (पराह १, ४—पत्र ७२; कप्प; त्रि ६७)।

विसद्द पुं [विशब्द] १ विशिष्ट शब्द। २ वि. विशिष्ट शब्दवाला (गउड)।

विसन्न वि [विषण्ण] १ खिन्न, शोक-ग्रस्त, विषादयुक्त (पराह १, ३—पत्र ५५; सुर ६, १८०; श्रु १२)। २ आसक्त, तल्लीन (सूअ १, १२, १४)। ३ निमग्न; 'अंतरा चेव सेयंसि विसन्ने' (णाया १, १—पत्र ६३)। ४ पुं. असंयम (सूअ १, ४, १, २९)।

विसन्न देखो **विस-न्न**।

विसन्ना स्त्री [विसंज्ञा] विद्या-विशेष (पउम ७, १३९)।

विसप्प अक [वि + सृप्] फैलना, विस्तरना, व्याप्त होना। वकृ. **विसप्पंत, विसप्पमाण** (कप्प; भग; औप, तंदु ५३)।

विसप्प पुं [विसर्प] एक नरक-स्थान (देवेन्द्र २७)।

विसप्पि वि [विसर्पिन्] फैलनेवाला (सुपा ४४७)।

विसप्पिर वि [विसर्पितृ] ऊपर देखो (सण)।

विसम देखो **वीसम** = वि + श्रम्। विसमदु (रंभा ३१)।

विसम वि [विषम] १ ऊँचा-नीचा, उन्नतावनत (कुमा; गउड)। २ असम, असमान, अतुल्य (भग, गउड)। ३ अयुग्म, एकी संख्या, जैसे—एक, तीन, पाँच, सात आदि। ४ दारुण, कठिन, कठोर। ५ संकट, संकरा, कम चौड़ा, संकीर्ण (हे १, २४१; षड्)। ६ पुंन. आकाश (भग २०, २)। °**क्खर** वि [°क्षर] अपसिद्धान्तवाला, असत्य निर्णयवाला (से ४, २४)। °**लोअण** पुं [°लोचन] महादेव, शिव (वेणी ११७)। °**बाण** पुं [°बाण] कामदेव (सण)। °**सर** पुं [°शर] वही (स १; सुपा १६३; सण)।

विसमय न [दे] भल्लातक, भिलावाँ (दे ७, ६६)।

विसमय देखो **विस-मय**।

विसमिअ वि [विषमित] १ बीच-बीच में विच्छेदित (से ६, ८७)। २ विषम बना हुआ (गउड)।

विसमिअ वि [विस्मृत] भुला हुआ, अस्मृत (से ६, ८७)।

विसमिअ [विश्रमित] विश्रान्त किया हुआ, विश्राम-प्रापित (से ६, ८७)।

विसमिअ वि [दे] १ विमल, निर्मल। २ उत्थित (दे ७, ६२)।

विसमिर वि [विश्रमितृ] विश्राम करनेवाला। स्त्री. °री (गा ५२; प्राकृ ३०)।

विसम्म अक [वि + श्रम्] विश्राम करना, आराम करना। भवि. विसम्मिहिइ (गा ५७५)। कृ. **विसम्मिअव्व** (से ६, २)।

विसय वि [विशद] १ निर्मल, स्वच्छ (कुप्र ४१५; सट्ठि ७८ टी)। २ व्यक्त, स्पष्ट (पाअ)। ३ धवल, सफेद (औप)।

विसय पुंन [विशय] १ गृह, घर (उत्त ७, १)। २ संभव, संभावना (आचू १)।

विसय पुं [विषय] १ गोचर, इन्द्रिय आदि से जाना जाता पदार्थ—शब्द, रूप, रस आदि वस्तु (पाअ; कुमा; महा)। २ जनपद, देश (ओघभा ८; कुमा; पउम २७, ११; सुपा ३१, महा)। ३ काम-भोग, विलास; 'भोगपुरिसो समज्जियविसयसुहो' (ठा ३, १ टी—पत्र ११४; कम्म १, ५७; सुपा ३१; महा)। ४ बाबत, प्रकरण, प्रस्ताव; 'जोइसविसए' (उप ९८६ टी; ओघभा ६)। °**विहइ** पुं [°धिपति] देश का मालिक, राजा (सुपा ४६४)।

विसर सक [वि + सृज्] १ त्याग करना। २ विदा करना, भेजना। विसरइ (षड्)।

विसर अक [वि + सृ] सरकना, धसना, नीचे गिरना, खिसकना। वकृ. **विसरंत** (णाया १, ६—पत्र १५७; से १४, ५४)।

विसर सक वि + स्मृ] भूल जाना, याद न आना। विसरइ (प्राकृ ६३)।

विसर पुं [दे] सैन्य, सेना, लश्कर (दे ७, ६२)।

विसर पुं [विसर] समूह, यूथ, संघात (सुपा ३; सुर १, १८५; १०; १४)।

विसरण न [विशरण] विनाश (राज)।

विसरय पुंन [दे] वाद्य-विशेष (महा)।

विसरा स्त्री [विसरा] मच्छी पकड़ने का जाल-विशेष (विपा १, ८—पत्र ८५)।

विसरिअ वि [विस्मृत] याद नहीं आया हुआ (पि ३१३)।

विसरिया स्त्री [दे] सरट, कृकलास, गिरगिट (राज)।

विसरिस वि [विसदृश] असमान, विजातीय (सण)।

विसलेस पुं [विश्लेष] जुदाई, वियोग, पृथग्भाव (चंड)।

विसल्ल वि [विशल्य] शल्य-रहित (पउम ६३, ११; चेइय ३८७)। °**करणी** स्त्री [°करणी] विद्या-विशेष (सूअ २, २, २७)।

विसल्ला स्त्री [विशल्या] १ एक महौषधि (ती ५)। २ लक्ष्मण की एक स्त्री (पउम ६३, २९)।

विसस सक [वि + शस्] वध करना, मार डालना; 'विससेह महिसे' (मोह ७६)। कवकृ. **विससिज्जंत** (गउड ३१६)।

विसस देखो **विस्सस** = वि + श्वस्। कृ- **विससिअव्व** (सं १०८)।

विससिय वि [विशसित] वध किया हुआ, जो मार डाला गया हो वह (गउड; ४७५; ससम्मत्त १४०)।

विसह सक [वि + षह्] सहन करना। विसहंति (उव)। वकृ. **विसहंत** (से १२, २३; सुपा २३३)। हेकृ. **विसहिउं** (स ३४६)।

विसह वि [विषह] सहन करनेवाला, सहिष्णु; 'वसुंधरा इव सव्वफासविसहे' (कप्प; औप)।

विसह देखो **वसभ** (गउड)।

विसहण न [विषहण] १ सहन करना (धर्मसं ८६७)। २ वि. सहिष्णु (पव ७३ टी)।

विसहिअ वि [विषोढ] सहन किया हुआ (से ६, ३३)।

विसाअ (अप) स्त्री [विश्वा] छन्द-विशेष (पिंग)।

विसाइ वि [विषादिन्] विषाद-युक्त, शोक ग्रस्त (संबोध ३६)।

विसाण न [विषाण] १ हाथी का दाँत (पएह १, १—पत्र ८, अणु २१२)। २ शृंग, सींग (सुख ६, १; पाअ; औप)। ३ सूअर का दाँत (उवा)। ४ पुं. ब. देश-विशेष (पउम ६८, ६५)।

विसाण सक [विशाणय्] घिसना, शाण पर चढ़ाना। कर्म. विसाणीअदि (शौ) (नाट—मृच्छ १३६)।

विसाणि वि [विषाणिन्] १ सींगवाला। २ पुं. हाथी, हस्ती। ३ शृंगाटक, सिंघाड़ा। ४ ऋषभ नामक औषध (अणु १४२)।

विसाय सक [वि + स्वादय्] विशेष चखना, खाना। वकृ. विसाएमाण (णाया १, १—पत्र ३७; कप्प)।

विसाय पुं [विषाद] खेद, शोक, दिलगीरी, अफसोस (उव; गउड; सुपा १०४; हे १, १५५)। °वंत वि [°वत्] खिन्न, शोक-ग्रस्त (श्रा १४)।

विसाय वि [विसात] १ सुख-रहित (विवे १३६)। २ पुंन. एक देव-विमान (सम ३८)।

विसाय वि [विस्वाद] स्वाद-रहित; 'आम-यकारि विसायं मिच्छत्तं कयसणं व जं भुत्तं' (विवे १३६)।

विसार सक [वि + सारय्] फैलाना। वकृ. विसारंत (उत्त २२, ३४)।

विसार पुं [दे] सैन्य, सेना (षड्)।

विसार वि [विसार] सार-रहित, निःस्सार (गउड)।

विसारण न [विशारण] खण्डन (पिंड ५६०)।

विसारणिय वि [विस्मारणिक] स्मारणा-रहित, जिसको याद न दिलाया गया हो वह (काल)।

विसारय वि [दे] धृष्ट, ढीठ, साहसी (दे ७, ६६)।

विसारय वि [विशारद] विद्वान्, पण्डित, दक्ष (पएह, १, ३—पत्र ५३; भग; औप; सुर १, १३; प्रासू १६)।

विसारि वि [विसारिन्] फैलनेवाला, व्यापक (गउड)। स्त्री. °णी (कप्पू)।

विसारि पुं [दे] कमलासन, ब्रह्मा (दे ७, ६२)।

विसाल वि [विशाल] १ विस्तृत, बड़ा, विस्तीर्ण, चौड़ा (पाअ; सुर २, ११६; प्रति १०)। २ पुं. एक ग्रह-देवता, अठासी महा-ग्रहों में एक महाग्रह (ठा २, ३—पत्र ७८)। ३ एक इन्द्र, क्रन्दित-निकाय का उत्तर दिशा का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५)। ४ पुंन. देव-विमान विशेष (सम ३५; देवेन्द्र १३६; पव १६४)। ५ न. एक विद्याधर-नगर (इक)।

विसालय पुं [दे] जलधि, समुद्र (दे ७, ७१)।

विसाला स्त्री [विशाला] १ एक नगरी का नाम, उज्जयिनी, उज्जैन (सुपा १०३; उप ६८८)। २ भगवान् पार्श्वनाथ की दीक्षा-शिविका (विचार १२६)। ३ जंबूवृक्ष विशेष, जिससे यह जंबूद्वीप कहलाता है। ४ राजधानी-विशेष (इक)। ५ भगवान् महावीर की माता का नाम (सूअ १, २, ३, २२)। ६ एक पुष्करिणी (राज)।

विसालिस देखो विसरिस (उत्त ३, १४)।

विसासण वि [विशासन] विघातक, विना-शक; 'कुसुमयविसासणं' (सम्म १)।

विसासिअ वि [विशासित] १ मारित, हिंसित, जिसका वध किया हो वह। २ विशेष रूप से घर्षित। ३ विश्लेषित, वियुक्त किया हुआ। ४ मार भगाया हुआ (से ८, ६३)।

विसाह पुं [विशाख] स्कन्द, कार्तिकेय (पाअ)।

विसाहा स्त्री [विशाखा] १ नक्षत्र-विशेष (सम १०)। २ व्यक्ति-वाचक नाम, एक स्त्री का नाम (वज्जा १२२)। ३ एक विद्याधर-कन्या (महा)।

विसाहिअ वि [विसाधित] १ सिद्ध किया गया। २ न. संसिद्धि; 'खग्गविसाहिउ जहिं लहहुं पिय तहिं देसहिं जाहुं' (हे ४, ३८६; ४११)।

विसाही स्त्री [वैशाखी] १ वैशाख मास की पूर्णिमा। २ वैशाख मास की अमावस (सुज्ज १०, ६)।

विसि स्त्री [दे] करि-शारी, गज पर्याण (दे ७, ६१)।

विसि देखो बिसि (हे १, १२८; प्राप्र)।

विसिज्जमाण देखो विस = वि-शॄ।

विसिट्ठ वि [विशिष्ट] १ प्रधान, मुख्य (सूअ १, ६, ७; पएह २, १—पत्र ६६)। २ विशेष-युक्त (महा)। ३ विशेष शिष्ट, सुसभ्य (वज्जा १६०)। ४ युक्त, सहित (पएण २३—पत्र ६७१)। ५ व्यतिरिक्त, भिन्न, विलक्षण (विसे)। ६ पुं. एक इन्द्र, द्वीपकुमार-देवों का उत्तर दिशा का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८४)। ७ न. लगातार छः दिनों का उपवास (संबोध ५८)। °दिट्ठि स्त्री [°दृष्टि] अहिंसा (पएह २, १)।

विसिट्ठि स्त्री [विसृष्टि] विपरीत क्रम (सिरि ८७८)।

विसिण वि [दे] रोमश, प्रचुर रोमवाला (दे ७, ६४)।

विसिस सक [वि + शिष्] विशेषण-युक्त करना। कर्म. 'किरिया विस(?सि)स्सए पुण नाणाउ, सुए जओ भणिअं' (अज्झ ५८; ५६)।

विसिह पुं [विशिख] १ बाण, तीर (पाअ; पउम ८, १००; सुपा २२; किरात १३)। २ वि. शिखा-रहित (गउड ५३६)।

विसी देखो बिसी (हे १, १२८; प्राप्र)।

विसी स्त्री [विंशति] बीस, बीस का समूह; 'केत्ती(?त्ति)आओ भाअवदाणं विसीओ' (हास्य १३६)।

विसीअ अक [वि + सद्] १ खेद करना। २ निमग्न होना, डूबना। विसीयइ, विसीअंति, विसीअए, विसीयह (सूअ १, ३, ४, १; १, ३,४,५; ठा ४, ४—पत्र २७८; उव)। वकृ. विसीयंत (पि ३६७)।

विसीइय वि [विशीर्ण] १ जीर्ण, त्रुटित। २ न. टूटना, जर्जरित होना; 'संधीहिं विहडियं पिव विसीइयं सव्वअंगेहिं' (सुर १२, १६६)।

विसीरंत देखो विस = वि + शॄ।

विसील वि [विशील] १ ब्रह्मचर्य-रहित, व्यभिचारी (वसु; उप ५६७ टी)। २ खराब स्वभाववाला, विरूप आचरणवाला (उत्त ११, ५)।

विसुज्झ अक [वि + शुध्] शुद्धि करना। विसुज्झइ (उव)। वकृ. **विसुज्झंत, विसुज्झमाण** (उप ३२० टी; णाया १, १—पत्र ६४; उवा; औप; सुर १६, १६१)।

विसुणिअ वि [विश्रुत] विज्ञात (पण्ह १, ४—पत्र ८५)।

विसुत्त वि [विस्रोतस्] १ प्रतिकूल। २ खराब, दुष्ट (भवि)।

विसुत्तिया देखो **विसोत्तिया** (श्रावक ५६; दस ५, १, ६)।

विसुद्ध वि [विशुद्ध] १ निर्मल, निर्दोष (सम ११६; ठा ४, ४ टी—पत्र २८३; प्रासू २२; उव; हे ३, ३८)। २ विशद, उज्ज्वल (पण्ण १७—पत्र ४८६)। ३ पुं. ब्रह्मदेवलोक का एक प्रतर (ठा ६—पत्र ३६७)।

विसुद्धि स्त्री [विशुद्धि] निर्दोषता, निर्मलता (औप; गा ७३७)।

विसुमर सक [वि + स्मृ] भूल जाना, याद न आना। विसुमरइ, विसुमरामि (महा; पि ३१३), विसुमरेहि (स २०४)।

विसुमरिअ वि [विस्मृत] जिसका विस्मरण हुआ हो वह (स २६५; सुख २, २६; सुर १४, १७)।

विसुराविय वि [खेदित] खिन्न किया हुआ; 'अरईविलासविसुरावियाण निव्वडइ सोहग्गं' (गउड १११)।

विसुव न [विषुवत्] रात और दिन की समानतावाला काल, वह समय जब दिन और रात दोनों बराबर होते हैं (दे ७, ५०)।

विसूइआ स्त्री [विसूचिका] रोग-विशेष, हैजा (उव; सुर १६, ७२; आचा २, २, १, ४)।

विसूणिय वि [विशूनित] १ फुला हुआ, सुजा हुआ (पण्ह १, १—पत्र १८)। २ काटा हुआ, उत्कृत्त (सूअ १, ५, २, ६)।

विसूर देखो **विसुमर**। विसूरइ (प्राकृ ६३)।

विसूर अक [खिद्] खेद करना। विसूरइ (हे ४, १३२; प्राप्र; उव)। वकृ. **विसूरंत, विसूरमाण** (उव; गा ४१४; सुपा ३०२; गउड)। कृ. **विसूरियव्व** (गउड)।

विसूरण न [खेदन] १ खेद। २ पीड़ा (पण्ह १, ५—पत्र ६४)।

विसूरणा स्त्री [खेदना] खेद, अफसोस; दुःख (से ५, ३)।

विसूरिअ वि [खिन्न] खेद-युक्त, दिलगीर (से १०, ७६)।

विसूहिय पुंन [विष्वग्हित] एक देव-विमान (सम ४१)।

विसेढि स्त्री [विश्रेणि] १ विदिशा-सम्बन्धी श्रेणि, वक्र रेखा। २ वि. विश्रेणि में स्थित (णंदि; पि ६६; ३०४)।

विसेस सक [वि + शेषय्] विशेष-युक्त करना, गुण आदि द्वारा दूसरे से भिन्न करना, विशेषण से अन्वित करना, व्यवच्छेद करना। विसेसइ, विसेसेइ (भवि; सण; सूअनि ६१ टी; भग; विसे ७६; महा)। कर्म विसेसिज्जइ (विसे ३१११)। संकृ. **विसेसिउं** (विसे ३११४)। कृ. **विसेसणिज्ज, विसेस्स** (विसे २१५६; १०३५)।

विसेस पुंन [विशेष] १ प्रभेद, पार्थक्य, भिन्नता; 'ण संपरायंसि विसेसमत्थि' (सूअ २, ६, ४६; भग; विसे १०५, उव)। २ भेद, प्रकार; 'दसविहे विसेसे पन्नत्ते' (ठा १०, महा; उव)। ३ असाधारण, अमुक, व्यक्ति, खास (उव; जी ३६; महा; अभि २१०)। ४ पर्याय, धर्म, गुण (विसे २६७)। ५ अधिक, अतिशय, ज्यादा; 'तओ विसेसेण तं पुज्जं' (भग; प्रासू १७६; महा; जी ३६)। ६ तिलक। ७ साहित्यशास्त्र-प्रसिद्ध अलंकार-विशेष। ८ वैशेषिक-प्रसिद्ध अन्त्य पदार्थ (हे १, २६०)। °ण्णु [°ज्ञ] विशेष जानने वाला (सं ३२; महा)। °ओ अ [°तस्] खास करके (महा)।

विसेस पुं [विश्लेष] पृथक्करण (वव १)।

विसेसण न [विशेषण] दूसरे से भिन्नता बतानेवाला गुण आदि (उप ४४४; भास ८६; पंच १, १२; विसे ११५)।

विसेसणिज्ज देखो **विसेस** = वि + शेषय्।

विसेसय पुंन [विशेषक] तिलक, चन्दन आदि का मस्तक-स्थित चिह्न (पाअ; से १०, ७४; वेणी ४६; गा ६३८; कुप्र २५५)।

विसेसिअ वि [विशेषित] १ विशेषण-युक्त किया हुआ, भेदित (सम्म ३७, विसे २६८८)। २ अतिशयित (पाअ)।

विसेस्स देखो **विसेस** = वि + शेषय्।

विसोग वि [विशोक] शोक-रहित (आचा)।

विसोत्तिया स्त्री [विस्रोतसिका] १ विमार्ग-गमन, प्रतिकूल गति। २ मन का विमार्ग में गमन, अपध्यान, दुष्ट चिन्तन (आचा; विसे ३०१२; उव; धर्मसं ८१२)। ३ शंका (आचा)।

विसोपग } पुं न [दे. विंशोपक] कौड़ी का
विसोवग } बीसवाँ हिस्सा (धर्मवि ५७; पंचा ११, २२)।

विसोह सक [वि + शोधय्] १ शुद्ध करना, मल-रहित करना, निर्दोष बनाना। २ त्याग करना। विसोहइ, विसोहेइ (उव; सण; कस)। विसोहिज्ज (आचा २, ३, २, ३)। हेकृ. **विसोहित्तए** (ठा २, १—पत्र ५६)।

विसोह वि [विशोभ] शोभा-रहित (दे १, ११०)।

विसोहण न [विशोधन] शुद्धि-करण (कस)।

विसोहणया स्त्री [विशोधना] ऊपर देखो (ठा ८—पत्र ४४१)।

विसोहय वि [विशोधक] शुद्धि-कर्ता (सूअ १, ३, ३, १६)।

विसोहि स्त्री [विशोधि] १ विशुद्धि, निर्मलता, विशुद्धता (पउम १०२, १६६; उव; पिंड ६७१; सुपा १६२)। २ अपराध के योग्य प्रायश्चित्त (ओघ २)। ३ आवश्यक, सामयिक आदि षट्-कर्म (अणु ३१)। ४ भिक्षा का एक दोष, जिस दोषवाले आहार का त्याग करने पर शेष भिक्षा या भिक्षा-पात्र विशुद्ध हो वह दोष (पिंड ३६५)। °कोडि स्त्री [°कोटि] पूर्वोक्त विशोधि-दोष का प्रकार (पिंड ३६५)।

विसोहिय वि [विशोधित] १ शुद्ध किया हुआ। २ पुं. मोक्ष-मार्ग (सूअ १, १३, ३)।

विस्स देखो विस = विश् ; 'देवीए जेण समयं ग्रहंपि ग्रग्गीए विस्सामि' (सुर २, १२७)।

विस्स न [विस्र] १ कच्ची गन्ध अपक्व मांस आदि की बू। २ वि. कच्ची गन्धवाला (प्राप्र; अभि १८४)। °गंधि वि [°गन्धिन्] ग्रामगन्धि, अपक्व मांस के समान गंधवाला (अभि १८४)।

विस्स पुं [विश्व] १ एक नक्षत्र-देवता. उत्तराषाढ़ा नक्षत्र का अधिष्ठाता देव (ठा २, ३—पत्र ७७; अणु १४५; सुज्ज १०, १२)। २ स. सर्व, सकल, सब (विसे १६०३; सुर १२, ५६)। ३ पुंन. जगत्, दुनियाँ (सुपा १३६; सम्मत्त १६०; रंभा)। °इ पुं [°जिन्] यज्ञ विशेष (प्राकृ ६५)। °कम्म पुं [कर्मन्] शिल्पी-विशेष, देव-वर्धकि (स ६००; कुप्र ६)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष (सुपा ६३५)। °भूइ पुं [°भूति] प्रथम वासुदेव का पूर्व-भवीय नाम (सम १५३; पउम २०, १७१; भत्त १३७; ती ७)। °यम्म देखो °कम्म (स ६१०)। °वाइअ पुं [°वादिक] भगवान् महावीर का एक गण (ठा ६—पत्र ४५१)। °सेण पुं [°सेन] १ भगवान् शान्तिनाथजी का पिता, एक राजा (पम १५१; १५२)। २ अहोरात्र का एक मुहूर्त्त (सम ५१)। देखो वीस = विश्व।

विस्सअ (मा) देखो विम्हय = विस्मय (षड्)।

विस्संत देखो वीसंत (सुपा ५८३)।

विस्संतिअ न [विश्रान्तिक] मथुरा का एक तीर्थ (ती ७)।

विस्संद सक [वि + स्यन्द्] टपकना, झरना, चूना। विस्संदति (ठा ४, ४—पत्र २७६)।

विस्संभ सक [वि + श्रम्भ्] विश्वास करना। कृ. विस्संभणिज्ज (श्रा १४; उपपं १६)।

विस्संभ पुं [विश्रम्भ] विश्वास, श्रद्धा (प्रयौ ६६; महा)। °घाइ वि [°घातिन्] विश्वास-घातक (णाया १, २—पत्र ७६)।

विस्संभण न [विश्रम्भण] विश्वास (माल १६६)।

विस्संभणया स्त्री [विश्रम्भणा] विश्वास (आचा)।

विस्संभर पुं [विश्वम्भर] जन्तु-विशेष, भुजपरिसर्प की एक जाति (सूत्र २, ३, २५; ओघ ३२३)। २ मूषक, चूहा (ओघ ३२३)। ३ इन्द्र। ४ विष्णु, नारायण (नाट—चैत ३८)।

विस्संभरा स्त्री [विश्वम्भरा] पृथिवी, धरती (कुप्र २१३)।

विस्संभिय वि [विश्रब्ध] विश्वास-प्राप्त, विश्वासी (सुख १, १४)।

विस्संभिय वि [विश्वभृत्] जगत्-पूरक (उत्त ३, २)।

विस्सत्थ देखो वीसत्थ (नाट—शकु ५३)।

विस्सद्ध देखो वीसद्ध (अभि १६३; मुद्रा २२३)।

विस्सम अक [वि + श्रम्] थाक लेना। विस्समइ (प्राकृ २६)। कृ. विस्समिअ (नाट—मालती ११)।

विस्सम पुं [विश्रम] विश्राम, विश्रान्ति (स्वप्न १०६)।

विस्समिअ देखो विस्संत (सुपा ३७२)।

विस्सर सक [वि + स्मृ] भूलना। विस्सरइ (वाज्जा १५३)।

विस्सर वि [विस्वर] खराब आवाजवाला (सम ५०; पण्ह १, १—पत्र १८)।

विस्सरण न [विस्मरण] विस्मृति, याद न आना (पभा २४; कुल १४)।

विस्सरिय वि [विस्मृत] भुला हुआ (उप पृ ११३)।

विस्सस सक [वि + श्वस्] विश्वास करना, भरोसा करना। विस्ससइ (प्राकृ २६)। वकृ. विस्ससंत (श्रा १४)। कृ. विस्ससणिज्ज (श्रा १४; भत्त ६६)।

विस्ससिअ वि [विश्वस्त] विश्वास-युक्त, भरोसा-पात्र (श्रा १४; सुपा १८३)।

विस्साणिय वि [विश्राणित] दिया हुआ, अर्पित (उप १३८ टी)।

विस्साम देखो वीसाम (प्राकृ २६; नाट—शकु २७)।

विस्सामण न [विश्रामण] चप्पी, अंग-मर्दन आदि भक्ति, वैयावृत्त्य (ती ८)।

विस्सामणा स्त्री [विश्रामणा] ऊपर देखो (पव ३८; हित २०)।

विस्साव देखो विसाय = वि + स्वादय्। कृ. विस्सायणिज्ज (णाया १, १२—पत्र १७४)।

विस्सार सक [वि + स्मृ] भूल जाना। संकृ. 'कोऊहलपरा विस्सारिऊण रायसासणं अगणिऊण नियभूमिं पविट्ठा नयरिं' (महा)।

विस्सार सक [वि + स्मारय्] विस्मरण करवाना (नाट—मालती ११७)।

विस्सारण न [विसारण] विस्तारण, फैलाना (पव ३८)।

विस्सावसु पुं [विश्वावसु] एक गन्धर्व, देव-विशेष (पउम ७२, २६)।

विस्सास पुं [विश्वास] भरोसा, प्रतीति, श्रद्धा (सुख १, १०; सुपा ३५२; प्राप्र)।

विस्सासिय वि [विश्वासित] जिसको विश्वास कराया गया हो वह (सुपा १७७)।

विस्साहल पुं [विश्वाहल] अंग-विद्या का जानकार चतुर्थ रुद्र-पुरुष (विचार ४७३)।

विस्सुअ वि [विश्रुत] प्रसिद्ध, विख्यात (पाअ; औप; प्रासू १०७)।

विस्सुमरिय देखो विसुमरिअ (उप १२७)।

विस्सेणि, **विस्सेणी** } स्त्री [विश्रेणि, °णी] निःश्रेणि, सीढ़ी (आचा)।

विस्सेसर पुं [विश्वेश्वर] काशी-विश्वनाथ, काशी में स्थित महादेव की एक मूर्त्ति (सम्मत्त ७५)।

विस्सोअसिआ दखो विसोत्तिआ (हे २, ६८)।

विह सक [व्यध्] ताड़न करना। वकृ. विहमाण (उत्त २७, ३, सुख २७, ३)।

विह देखो विस = विष (आचा; पि २६३)।

विह पुंन [दे] १ मार्ग, रास्ता (ओघ ६०६)। २ अनेक दिनों में उल्लंघनीय मार्ग (आचा २, ३, १, ११; २, ३, ३, १४)। ३ अटवी-प्राय मार्ग (आचा २, ५, २, ७)।

विह पुंन [विहायस्] आकाश, गगन (भग २०, २—पत्र ७७५; दसनि १, २३); देखो विहग = विहायस्।

विह पुंस्त्री [विध] १ भेद, प्रकार (उवा; कप्प)। २ पुंन. आकाश, गगन (भग २०, २—पत्र ७७५; आचा १, ८, ४, ५; दसनि १, ३३)।

विहइ स्त्री [दे] वृन्ताकी, बैंगन का गाछ (दे ७, ६३)।

विहंग पुं [विहङ्ग] पक्षी, चिड़िया, पखेरू (पाअ; गउड; कप्प; सुर ३, २४५; प्रासू १७२)। °**णाह** पुं [°नाथ] गरुड़ पक्षी (गउड ८२३; ८२४; १०२२)।

विहंग पुं [विभङ्ग] विभाग, टुकड़ा, अंश (पण्ह १, ३—पत्र ५४; गउड ४०४)। देखो विभंग (गउड; भवि)।

विहंगम पुं [विहंगम] पक्षी, चिड़िया (गउड; मोह ३२; श्रु ७७; सण)।

विहंज सक [वि + भञ्ज्] भाँगना, तोड़ना, विनाश करना। संकृ. विहंजिवि (अप) (भवि)।

विहंजिअ वि [विभक्त] बाँटा हुआ; 'आगम-जुत्तिपमाणविहंजिओ' (भवि)।

विहंड सक [वि + खण्डय्] विच्छेद करना, विनाश करना। विहंडइ (भवि)।

विहंडण न [विखण्डन] १ विच्छेद, विनाश (सम्मत्त ३०)। २ वि. विच्छेद-कर्ता, विनाशक (सण)।

विहंडण वि [विभण्डन] भाँड़नेवाला, गालि-सूचक; 'भणसि रे जइ विहंडणं वअणं' (गा ६१२)।

विहंडिअ वि [विखण्डित] विनाशित (पिंग; सण)।

विहग पुं [विहग] पक्षी, चिड़िया (पउम १४, ८०; स ६६७; उत्त २०, ६०)। °**हिव** पुं [°धिप] गरुड़ पक्षी (सम्मत्त २१६)।

विहग पुंन [विहायस्] आकाश, गगन। °**गइ** स्त्री [°गति] १ आकाश में गमन (पंचा ३, ६)। २ कर्म-विशेष, आकाश में गति कर सकने में कारण-भूत कर्म (सम ६७; कम्म १, २४; ४३)।

विहट्ट देखो विघट्ट। विहट्टइ (भवि)।

विहट्टिअ वि [विघट्टित] खण्डित, द्विधाभूत (से २, ३२)।

विहड अक [वि + घट्] वियुक्त होना, अलग होना, टूट जाना। विहडइ, विहडेइ (महा; प्राकृ ७१)। वकृ. **विहडंत** (से ३, १४)।

विहड सक [वि + घटय्] तोड़ना, खण्डित करना। संकृ. विहडिऊण (सण)।

विहड देखो विहल = विह्वल (से ४, ५४)।

विहडण न [विघटन] १ अलग होना, वियोग (सुपा ११६; २४३)। २ अलग करना। ३ खोलना; 'तह भीणा जह मउलि-यलोयणउडविहडणे वि असमत्था' (वज्जा ८८)।

विहडण पुं [दे] अनर्थ (षड्)।

विहडणा स्त्री [विघटना] वियोजन, अलग करना; 'संघडणविहडणावावडेण विहिणा जणो नडिओ' (धर्मवि ४२)।

विहडप्फड वि [दे] १ व्याकुल, व्यग्र (हे २, १७४)। २ त्वरित, शीघ्र (भवि)।

विहडा स्त्री [विघटा] विभेद, अनैक्य, फाट-फुट; 'जह मह कुडुंबविहडा न घडइ कइयावि दंतकलहेण' (सुपा ४२१)।

विहडाव सक [वि + घटय्] वियुक्त करना, अलग करना। विहडावइ (महा)।

विहडावण न [विघटन] वियोजन (भवि)।

विहडाविय वि [विघटित] वियोजित (सार्ध ७१)।

विहडिय वि [विघटित] १ वियुक्त, विच्छिन्न (महा ३६, ५)। २ खुला हुआ (महा ३०, ३०)।

विहण देखो विहन्न। विहणंति (पि ४६०)। संकृ. **विहत्तु** (सूअ १, ५, १, २१)।

विहणु वि [दे] संपूर्ण, सकल (सण)।

विहण्ण न [दे] पिंजन, पींजना, धुनना (दे ७, ६३)।

विहत्त देखो विभत्त (से ७, १५; चेइय २७४; सुर १, ४७; सुपा ३६६)।

विहत्ति देखो विभत्ति (पउम २४, ५, उप पृ १४७)।

विहत्तु देखो विहण।

विहत्थ वि [विहस्त] १ व्याकुल, व्यग्र (से १२, ४६; कुप्र ४०६; सिरि ३८६; ८३६; सम्मत्त १६१)। २ कुशल, दक्ष; 'पहरणवि-हत्थहत्था' (कुप्र १०३; २०६)। ३ पुं. विशिष्ट हाथ, किसी वस्तु से युक्त हाथ; 'पढमं उत्तरिऊणं धवलो जा जाइ पाहुडवि-हत्थो' (सिरि ६६१); 'सद्दवभाणविहत्थो' (उव)। ४ क्लीब (सम्मत्त १६१)।

विहत्थि पुंस्त्री [वितस्ति] परिमाण-विशेष, बारह अंगुल का परिमाण (हे १, २१४; कुमा; अणु १५७)।

विहदि स्त्री [विधृति] १ विशेष धैर्य। २ वि. धैर्य-रहित (संक्षि ६)।

विहन्न, **विहम्म** } सक [वि + हन्] १ मारना, ताड़न करना। २ नाश करना। ३ अतिक्रमण करना। विहन्नई (उत्त २, २२)। कर्म. विहन्निज्जा (उत्त २, १)। वकृ. **विहम्ममाण, विहम्माण** (पि ५६२; उत्त २७, ३)। कवकृ. **विहम्ममाण** (सूअ १, ७, ३०)।

विहम्म वि [विधर्मन्] भिन्न धर्मवाला, विभिन्न, विलक्षण; 'मोत्तूणायसहावं वसेज्ज वत्थुं विहम्मम्मि' (विसे २२४१)।

विहम्म सक [विधर्मय्] धर्म-रहित करना। वकृ. विहम्मेमाण (विपा १, १—पत्र ११)।

विहम्म न [वैधर्म्य] १ विधर्मता, विरुद्ध-धर्मता। २ तर्कशास्त्र-प्रसिद्ध उदाहरण-भेद, वैधर्म्य-दृष्टान्त (सम्म १५३)।

विहम्माणा स्त्री [विधर्मणा, विहनन] कद-र्थना, पीड़ा (पण्ह १, ३—पत्र ५३; विसे २३५०)।

विहय वि [दे] पिंजित, धुना हुआ (दे ७, ६४)।

विहय वि [विहत] १ मारा हुआ, आहत (पउम २७, २८)। २ विनाशित (महा)।

विहय देखो विहग = विहग (गउड; सण)।

विहय देखो विहव = विभव (दे ३, २६; नाट—मालवि ३३)।

विहर अक [वि + हृ] १ क्रीड़ा करना, खेलना। २ रहना, स्थिति करना। ३ सक. गमन करना, जाना। विहरइ (हे ४, २५६; उवा; कप्प; उव), विहरंति (भग), विहरेज्ज (पव १०४)। भूका. विहरिंसु, विहरित्था (उत्त २३, ६; पि ३५०; ५१७)। भवि. विहरिस्सइ (पि ५२२)। वकृ. **विहरंत,**

विहरमाण (उत्त २३, ७; सुख २३, ७; ओघ १२४; महा; भग)। संकृ. **विहरित्ता, विहरिअ** (भग, नाट—वक्र १०२)। **विहरित्तए, विहरिउ°** (भग; ठा २, १—पत्र ५६; उव)। कृ. **विहरियव्व** (उप १३१ टी)।

विहर सक [प्रति + ईक्ष्] प्रतीक्षा करना, बाट जोहना। विहरइ (षड्)।

विहर देखो विहार (उप ८३३ टी)।

विहरण न [विहरण] विहार (कुप्र २२)।

विहरिअ न [दे] सुरत, संभोग (दे ७, ७०)।

विहरिअ वि [विहृत] जिसने विहार किया हो वह (ओघ २१०; उव; कुप्र १६६)।

विहल अक [वि + ह्वल्] व्याकुल होना। वकृ. **विहलंत** (स ४१५)।

विहल देखो विहड = वि + घट्। वकृ. **विहलंत** (से १४, २६)।

विहल वि [विह्वल] व्याकुल, व्यग्र (हे २, ५८; प्राकृ २४; पउम ८, २००; से ५, ५८; गा २८५; प्रासू ५; हास्य १४०; वज्जा २४; षड्; गउड)।

विहल देखो विअल = विकल (संक्षि ८)।

विहल वि [विफल] १ निष्फल, निरर्थक (गउड; सुपा ३६६)। २ असत्य, झूठा; 'मिच्छा मोहं विहलं अलिअं असच्चं असब्भूअं' (पात्र)।

विहल सक [विफलय्] निष्फल बनाना, निरर्थक करना। विहलंति (उव)।

विहलंखल } **विहलंघल** } वि [विह्वलाङ्ग] व्याकुल शरीरवाला (काप्र १६६; स २५५; सुख १८, ३५; सुर ६, १७३; सुपा ४४७); 'वियणाविहलंघला पडिया' (सुर १५, २०४)।

विहलिअ वि [विह्वलित] व्याकुल किया हुआ (कुमा ३, ४३; प्राप; महा)।

विहलिअ देखो विहडिय (से ७, ४६)।

विहलिअ वि [विफलित] विफल किया हुआ (सण)।

विहल्ल अक [वि + रु, वि + स्तृ ?] १ आवाज करना। २ सक. विस्तार करना। विहल्लइ (धात्वा १४३)।

विहल्ल पुं [विहल्ल] राजा श्रेणिक का एक पुत्र (पडि)।

विहव पुं [विभव] समृद्धि, संपत्ति, ऐश्वर्य (पात्र; गउड; कुमा; हे ४, ६०; प्रासू ७२; ७६)।

विहवण न [विभ्रवन] विनाश (राज)।

विहवा स्त्री [विधवा] जिसका पति मर गया हो वह स्त्री, राँड़ (औप; उव; गा ५३६; स्वप्न ५६; सुर १, ४३)।

विहवि वि [विभविन्] संपत्ति-शाली, धनाढ्य (कुमा; सुपा ४२२; गउड)।

विहव्व देखो विहव = विभव (नाट—मृच्छ ६६)।

विहस अक [वि + हस्] १ विकसना, खिलना, प्रफुल्ल होना। २ हास्य करना, मध्यम प्रकार का हास्य करना। विहसइ, विहसए, विहसेइ, विहसंति (प्राकृ २६; सण; कुमा; हे ४, ३६५)। विहसेज्ज, विहसेज्जा (कुमा ५, ८५)। भवि. विहसिहिइ, विहसेहिइ (कुमा ५, ८३)। वकृ. **विहसंत, विहसेंत** (से २, ३६; कुमा ३, ८८; ५, ८४)। संकृ **विहसिऊण, विहसिअ, विहसेऊण** (गउड ८४५; ६१५; नाट—शकु ६८; कुमा ५, ८२)। हेकृ. **विहसिउं, विहसेउं** (कुमा ५, ८२)।

विहसाव सक [वि + हासय्] १ हँसाना। २ विकसित करना। संकृ. **विहसाविऊण, विहसावेऊण** (प्राकृ ६१)।

विहसाविअ वि [विहासित] १ हँसाया हुआ। २ विकसित किया हुआ (प्राकृ ६१)।

विहसिअ वि [विहसित] १ विकसित, खिला हुआ; प्रफुल्ल; 'विहसियदिट्ठीए विहसियमुहीए' (महा; सम्मत्त ७६)। २ न. मध्यम प्रकार का हास्य (गउड ६६६; ७५१)।

विहसिर वि [विहसितृ] खिलनेवाला, विकसित होनेवाला।

विहसिव्विअ वि [दे] विकसित, खिला हुआ (दे ७, ६१)।

विहस्सइ देखो बिहस्सइ (पात्र; औप)।

विहा अक [वि + भा] शोभना, चमकना। विहादि (शौ) (पि ४८७)।

विहा सक [वि + हा] परित्याग करना। संकृ. **विहाय** (सूअ १, १४, १)।

विहा अ [वृथा] निरर्थक, व्यर्थ, मुधा (पंचा १२, ५)।

विहा स्त्री [विधा] प्रकार, भेद (कप्प; महा; अणु)।

विहा° देखो विहग = विहायस् (धर्मसं ६१६)।

विहाइ वि [विधायिन्] कर्ता, करनेवाला (चेइय ४०३; उप ७६८ टी; धर्मवि १३६)।

विहाउ वि [विधातृ] १ कर्ता, निर्माता (विसे १५६७, पंचा ६, ३६)। २ पुं. पणपन्नि-देवों के उत्तर दिशा का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५)।

विहाड सक [वि + घटय्] १ वियुक्त करना, अलग करना। २ विनाश करना। ३ खोलना, उघाड़ना। विहाडेइ, विहाडेंति (राय १०४; महा; भग); 'कम्मसमुग्गं विहाडेंति' (औप; राय)। संकृ. 'समुग्गयं तं **विहाडेउं**' (धर्मवि १५)। कृ. **विहाडेयव्व** (महा)।

विहाड वि [विघाट] विकट (राज)।

विहाड वि [विहाट] प्रकाश-कर्ता (सम्म २)।

विहाडण न [दे] अनर्थ (दे ७, ७१)।

विहाडिअ वि [विघटित] १ वियोजित, अलग किया हुआ (धर्मसं ७४२)। २ विनाशित (उप ५६७ टी)।

विहाडिअ वि [विघटित] उद्घाटित, खोला हुआ (उप पृ ५४; वसु)।

विहाडिर वि [विघटयितृ] अलग करनेवाला वियोजक (सण)।

विहाण पुं [दे] १ विधि, विधाता, दैव, भाग्य (दे ७, ६०); 'माणुसमयजूहवहं विहाणवाहो करेमाणो' (स १३०; भवि)। २ बिहान, प्रभात, सुबह (दे ७, ६०; से ३, ३१; भवि; हे ४, ३३०; ३६२; सिरि ५२५)। ३ पूजन अर्चन; 'अओ चेव कूरदेवयाविहाणनिमित्तं पयारिऊण परियणं एयाए वावाइओ हविस्सइ' (स २६६)।

विहाण न [विधान] १ शास्त्रोक्त रीति (उप ७६८; पव ३५)। २ निर्माण, रचना (पंचा-

७, ५; रंभा; महा)। ३ प्रकार, भेद (से ३, ३१; पण्ह १, १; भग)। ४ व्याकरणोक्त विधि-विशेष (पण्ह २, २—पत्र ११४)। ५ अवस्था-विशेष (सूअ २, १, ३२)। ६ विशेष; 'विहाणमग्गणं पडुच्च' (भग १, १ टी)। ७ रीति (महा)। ८ क्रम, परिपाटी (बृह १)।

विहाण न [विहान] परित्याग (राज)।

विहाणिय (अप) वि [विधायिन्] कर्ता, करनेवाला (सण)।

विहाय अक [वि + भा] १ शोभना। २ प्रकाशना, चमकना, दीपना। विहायंति (स १२)। वकृ. विहायंत (सिरि २९८)।

विहाय पुं [विघात] १ अवसान, अंत (से १, १६)। २ विरोधी, दुश्मन, परिपन्थी (से ८, ५४; स ४१२)।

विहाय देखो विभाग (गउड; से ६, ३२)।

विहाय वि [विभात] १ प्रकाशित, 'निसा विहाय त्ति उट्ठिओ कण्हो' (कुप्र २६८)। २ न. प्रभात, प्रातःकाल (से १२, १६)।

विहाय देखो विहग = विहायस् (श्रा २२)।

विहाय देखो विहा = वि + हा।

विहाय (अप) देखो विहिअ (भवि)।

विहार सक [वि + धारय्] १ अपेक्षा करना। २ विशेष रूप से धारण करना। वकृ. विहारंत (पउम ८, १५६)।

विहार पुं [विहार] १ विचरण, गमन, गति (पव १०४; उवा)। २ क्रीड़ा-स्थान (सम १००)। ३ देव-गृह, देव-मन्दिर (उत्त ३०, ७; कुमा)। ४ अवस्थान, अवस्थिति; 'असासयं दट्ठु इमं विहारं' (उत्त १४, ७)। ५ क्रीड़ा (ठा ८; कप्प)। ६ मुनि-वर्त्तन, मुनि-चर्या, साध्वाचार (वव १; णंदि; उव)। °भूमि स्त्री [°भूमि] १ स्वाध्याय-स्थान (आचा २, १, १, ८; कस; कप्प)। २ विचरण-भूमि (वव ४)। ३ क्रीड़ा-स्थान। ४ चैत्य की जगह (कप्प; राज)।

विहारि वि [विहारिन्] विहार करनेवाला (आचा; उव; श्रा १४)।

विहालिय देखो विहाडिअ; 'दुवारं विहालियं पासइ' (उप ६४८ टी)।

विहाव देखो विभाव = वि + भावय्। विहावइ, विहावेमि (भवि; रुक्मि ५७)। कवकृ. विहाविज्जमाण (स ४१)। कृ. विहावियव्व (उप ३४२)।

विहावण न [विधापन] निर्मापण, करवाना (चेइय ६६)।

विहावण न [विभावन] आलोचना, 'एवं विचिंतियव्वं गुणदोसविहावणं परमं' (पंचा ६, ४६)।

विहावरी स्त्री [विभावरी] रात्रि, निशा (पाअ; उप ७६८ टी; सुपा ३६३)।

विहावसु पुं [विभावसु] अग्नि, आग (पाअ)। देखो विभावसु।

विहाविअ वि [विभावित] दृष्ट, निरीक्षित; 'दिट्ठं विहाविअं' (पाअ; गा ५०७)।

विहाविअ वि [विधावित] उल्लसित, प्रस्फुरित (स ६७)।

विहास पुं [विहास] हँसी, उपहास (भवि)।

विहास, विहासाव देखो विहसाव। संकृ. विहासिऊण, विहासेऊण, विहासाविऊण, विहासावेऊण (प्राकृ ६१)।

विहासाविअ, विहासिअ देखो विहसाविअ (प्राकृ ६१)।

विहि पुं [विधि] १ ब्रह्मा, चतुरानन, विधाता (पाअ; अच्चु ३७; धर्मसं ९२६; कुमा)। २ पुंस्त्री. प्रकार, भेद (उवा); 'सव्वाहि नयविहीहिं' (पव १४९)। ३ शास्त्रोक्त विधान, अनुष्ठान, व्यवस्था (पंचा ६, ४८; औप)। ४ क्रम, सिलसिला, परिपाटी (बृह १)। ५ रीति। ६ नियोग, आदेश, आज्ञा। ७ आज्ञा-सूचक वाक्य। ८ व्याकरण का सूत्र-विशेष। ९ कर्म। १० हाथी को खाने का अन्न (हे १, ३५)। ११ दैव, भाग्य; 'अणुकूलो अहव विही किंवा तं जं न करेइ' (सुर ६, ८१; पाअ; कुमा; प्रासू ५८)। १२ नीति, न्याय। १३ स्थिति, मर्यादा (बृह १)। १४ कृति, करण (पंचा ११)। °न्नु वि [°ज्ञ] विधि का जानकार (णाया १, १—पत्र ११; सुर ८, ११८)। °वयण न [°वचन] विधि-वाक्य, विधि-वाद, विध्युपदेश (चेइय ७४४)। °वाय पुं [°वाद] वही पूर्वोक्त अर्थ (भास ७५; चेइय ७४४)।

विहिअ वि [विहित] १ कृत, अनुष्ठित, निर्मित (पाअ; महा)। २ चेष्टित (औप)। ३ शास्त्र में जिसका विधान हो वह, शास्त्रोक्त (पंचा १४, २७)।

विहिंस सक [वि + हिंस्] विविध उपायों से मारना, वध करना। विहिंसइ (आचा १, १, १, ४)। कृ. विहिंस (पण्ह १, २—पत्र ४०)।

विहिंस वि [विहिंस] हिंसा करनेवाला, 'अ-विहिंसे सुव्वए दंते' (आचा १, ६, ४, ३)।

विहिंसग वि [विहिंसक] वध करनेवाला (आचा; गच्छ १, १०)।

विहिंसण न [विहिंसन] विविध प्रकार से मारना (पण्ह १, १—पत्र १८)।

विहिंसा स्त्री [विहिंसा] १ विशेष हिंसा (पण्ह १, १—पत्र ५)। २ विविध हिंसा (सूअ १, २, १, १४)।

विहिण्ण, विहिन्न वि [विभिन्न] १ जुदा, अलग (से ७, ५३; १३, ८६; भवि)। २ खण्डित, भांग कर टुकड़ा-टुकड़ा बना हुआ (से ३, ६०)।

विहिम न [दे] जंगल, अरण्य (उप ८४२ टी)।

विहिमिहिय वि [दे] विकसित, प्रफुल्ल (षड्)।

विहियव्व देखो विहे = वि + धा।

विहिविल्ल सक [वि + रचय्] बनाना, निर्माण करना। विहिविल्लइ (प्राकृ ७४)।

विहीण वि [विहीन] १ वर्जित, रहित (प्रासू १७२)। २ त्यक्त (कुमा)।

विहीर सक [प्रति + ईक्ष्] प्रतीक्षा करना, बाट जोहना। विहीरइ (हे ४, १९३), विहीरह (स ४१८)।

विहीर वि [प्रतीक्ष] प्रतीक्षा करनेवाला (कुमा ७, ३८)।

विहीरिअ वि [प्रतीक्षित] जिसकी प्रतीक्षा की गई हो वह (पाअ)।

विहीसण देखो विभीसण (से ४, ५५)।

विहीसिया देखो विभीसिया (सुपा ५४१)।

विहु पुं [विधु] १ चन्द्र, चाँद (पाअ)। २ विष्णु, श्रीकृष्ण। ३ ब्रह्मा। ४ शंकर,

महादेव। ५ वायु, पवन। ६ कपूर (हे ३, १९)।

विहुअ वि [विधुत] कम्पित (गा ६६०; गउड)। २ उन्मूलित, उखाड़ा हुआ (से १, ५५)। ३ त्यक्त (गउड)।

विहुंडुअ पुं [दे] राहु, ग्रह-विशेष (दे ७, ६५)।

विहुण सक [वि + धू] १ कँपाना, हिलाना। २ दूर करना, हटाना। ३ त्याग करना। ४ पृथग् करना, अलग करना। विहुणइ, विहुणंति (भवि; पि ५०३), विहुणाहि (उत्त १०, ३)। कर्म. विहुव्वइ (पि ५३६)। वकृ. विहुणंत, विहुणमाण (सुपा २७२; पउम ६४, ३५)। कवकृ. विहुव्वंत (से ६, ३५; ७, २१)। संकृ. विहुणिय (सूअ १, २, १, १५; यति २१; स ३०८)।

विहुणण न [विधूनन] १ दूरीकरण (पउम १०१, १९)। २ व्यजन, पंखा (राज)।

विहुणिय वि [विधूत] देखो विहुअ (सुपा २५३; यति २१)।

विहुर वि [विधुर] १ विकल, व्याकुल, विह्वल (स्वप्न ६३; महा; कुमा; दे १, १५; सुपा ६२; गउड; सण)। २ क्षीण (गउड १०३६)। ३ विसदृश, विलक्षण, विषम; 'अवि-सिट्ठम्मिवि जोगम्मि बाहिरे होइ विहुरया' (ओघ ५१)। ४ विश्लिष्ट, वियुक्त (गउड ८३६)। ३ न. व्याकुल-भाव, विह्वलता; 'विलोट्टए विहुरम्मि' (स ७१६; वज्जा ३२; ६४; प्रासू ५८; भवि; सण)।

विहुराइअ वि [विधुरायित] व्याकुल बना हुआ (गउड १११ टी)।

विहुरिज्जमाण वि [विधुरायमाण] व्याकुल बनता (सुपा ४१६)।

विहुरिय वि [विधुरित] १ व्याकुल बना हुआ (सुर २, २१६; ६ ११५; महा)। २ वियुक्त बना हुआ, बिछुड़ा हुआ, विरहित (गउड)।

विहुरीकय वि [विधुरीकृत] व्याकुल किया हुआ (कुमा)।

विहुल देखो विहुर (पाअ)।

विहुल्ल वि [विफुल्ल] १ खिला हुआ। २ उत्साही; 'नियकज्जविहुल्ली' (भवि)।

विहुव्वंत देखो विहुण।

विहूअ वि [विधूत] १ कम्पित, (माल १७८)। २ वर्जित, रहित; 'नयविहिवि-हूयबुद्धी' (पउम ५५, ४)। देखो विधूय, विहुअ।

विहूइ देखो विभूइ (अच्चु १४; भवि)।

विहूण देखो विहुण। संकृ. विहूणिया (आचा १, ७, ८, २४; सूअ १, १, २, १२; पि ५०३)।

विहूण देखो विहीण (कुमा; उव)।

विहूणय न [विधूनक] व्यजन, पंखा (सूअ १, ४, २, १०)।

विहूसण देखो विभूसण (दे ६, १२७; सुपा १६१; कुप्र २६)।

विहूसा स्त्री [विभूषा] १ शोभा (सुपा ६२१; दे ६, ८३)। २ अलंकार आदि से शरीर की सजावट (पंचा १०, २१)।

विहूसिअ वि [विभूषित] विभूषा-युक्त, अलंकृत (भवि)।

विहे सक [वि + धा] करना, बनाना। विहेइ, विहेंति, विहेसि, विहेमि (धर्मसं १०११; स ६३४; ७१२; गउड; ३३२; कुमा ७, ६७)। संकृ. विहेऊण (पि ५८५)। हेकृ. विहेउं (हित १)। कृ. विहियव्व, विहेअ, विहेअव्व (सुपा १५८; हि २२; धम्मो ४; महा; सुपा १६३; श्रा १२; हि २; पउम ६६, १८; सुपा १५६)।

विहेड सक [वि + हेटय्] १ मारना, हिंसा करना। २ पीड़ा करना। वकृ. विहेडयंत (उत्त १२, ३९)। कवकृ. 'विहम्मणाहिं विहेड (?ट्ठ)यंता' (पण्ह १, ३—पत्र ५३)।

विहेडय वि [विहेठक] अनादर-कर्ता (दस १०, १०)।

विहेडि वि [विहेटिन्] १ हिंसा करनेवाला। २ पीड़ा करनेवाला; 'अंगे मंते अहिज्जंति पाणभूयविहेडिणो' (सूअ १, ८, ४)।

विहेडिय वि [विहेटित] पीड़ित (भत्त १३३)।

विहेढणा स्त्री [विहेठना] कदर्थना, पीड़ा (उव)।

विहोड सक [ताडय्] ताड़न करना। विहोडइ (हे ४, २७)।

विहोडिअ वि [ताडित] जिसका ताड़न किया गया हो वह (कुमा)।

विहोय (अप) देखो विहव (भवि)।

वी देखो वि = अपि, वि; 'एक्कं चिय जाव न वी, दुक्खं वोलेइ जणियपियविरहं' (पउम १७, १२)।

वीअ सक [वीजय्] हवा डालना, पंखा करना। वीअअंति अभि ८९), वीयंति (सुर १, ९६)। वकृ. वीअंत (गा ८६; सुर ७, ८८)। कवकृ. विइज्जंत, वीइज्जमाण (से ६, ३७; णाया १, १—पत्र ३३)।

वीअ वि [दे] १ विधुर, व्याकुल। २ तत्काल, तात्कालिक, उसी समय का (दे ६, ९३)।

वीअ देखो बीअ = द्वितीय (कुमा; गा ८६; २०९; ४०९; गउड)।

वीअ वि [वीत] विगत, नष्ट (भग; अज्झ ९६)। °कम्ह न [°कश्म ?] १ गोत्र-विशेष। २ पुंस्त्री. उस गोत्र में उत्पन्न (ठा ७—पत्र ३९०)। °धूम वि [°धूम] द्वेष-रहित (भग ७, १—पत्र २९१)। °ब्भय, °भय न [°भय] १ नगर-विशेष, सिन्धुसौवीर देश की प्राचीन राजधानी (धर्मवि १६; २१; इक; विचार ४८; महा)। २ वि. भय-रहित (धर्मवि २१)। °मोह वि [°मोह] मोह-रहित (अज्झ ९९)। °राग, °राय वि [°राग] राग-रहित, क्षीण-राग (भग; सं ४१)। °सोग पुं [°शोक] एक महाग्रह (सुज्ज २०; ठा २, ३—पत्र ७९)। °सोगा स्त्री [°शोका] सलिलावती नामक विजय-प्रान्त की राजधानी, नगरी-विशेष (णाया १, ८—पत्र १२१; इक; पउम २०, १४२)।

वीअजमण देखो बीअजमण (दे ६, ९३ टी)।

वीअण न [वीजन] १ हवा करना, पंखा से हवा करना (कप्पू)। २ क्लीन. पंखा, व्यजन (सुर १, ९६; कुप्र ३३३; महा)। स्त्री. °णी (औप; सूअ १, ९, ८; णाया १, १—पत्र ३२)।

वीआविय वि [वीजित] जिसको पंखा से हवा कराई गई हो वह (स ५४६)।

वीइ पुंस्त्री [वीचि] १ तरंग, कल्लोल (पात्र; औप)। २ आकाश, गगन (भग २०, २—७७५)। ३ संप्रयोग, संबन्ध (भग १०, २—पत्र ४९५)। ४ पृथग्‌भाव, जुदाई (भग १४, ६ टी—पत्र ६४४)। °दव्व न [°द्रव्य] प्रदेश से न्यून द्रव्य, अवयव-हीन वस्तु (भग १४, ६ टी—पत्र ६४४)।

वीइ स्त्री [विकृति] १ विरूप कृति, दुष्ट क्रिया। २ वि. दुष्ट क्रियावाला (भग १०, २—पत्र ४९५)। ३ देखो विगइ (कम्म ४, ५ टी)।

वीइंगाल वि [वीताङ्गार] राग-रहित (भग ७, १—पत्र २९२; पि १०२)।

वीइक्कंत वि [व्यतिक्रान्त] १ व्यतीत, गुजरा हुआ; 'बासीए राइंदिएहिं वीइक्कंतेहिं' (सम ८९)। २ जिसने उल्लंघन किया हो वह (भग १०, ३ टी—पत्र ४९९)।

वीइक्कम सक [व्यति + क्रम्] उल्लंघन करना। वकृ. **वीइक्कममाण** (कस)।

वीइज्जमाण देखो **वीअ**=वीजय्।

वीइमिस्स वि [व्यतिमिश्र] मिश्रित, मिला हुआ (आचा)।

वीइय वि [वीजित] जिसको हवा की गई हो वह (औप; महा)।

वीइवय सक [व्यति + व्रज्] १ परिभ्रमण करना। २ गमन करना, जाना। ३ उल्लंघन करना। वीइवयइ; वीइवइज्जा, वीइवएज्जा (सुज्ज २० टी; भग १०, ३—पत्र ४९८)। वकृ. **वीइवयमाण** (णाया १, १—पत्र ३१)। संकृ. **वीइवइत्ता, वीइवएत्ता** (भग २, ८; १०, ३—पत्र ४९९)।

वीई स्त्री. देखो **वीइ**=वीचि (पात्र; भग १०, २; २०, २)।

वीई अ [विविच्य] पृथग् होकर, जुदा होकर (भग १०, २—पत्र ४९५)।

वीई अ [विचिन्त्य] चिन्तन करके (भग १०, २—पत्र ४९५)।

वीईवय देखो **वीइवय**। वीईवयइ (भग; सुज्ज २० टी; भग ७, १०—पत्र ३२४)। वकृ. **वीईवयमाण** (राय १९; पि ७०; ५५१)।

वीचि देखो **वीइ**=वीचि (कप्प; भग १४, ६—पत्र ६४४)।

वीचि स्त्री [दे] लघु रथ्या, छोटा मुहल्ला (दे ७, ७३)।

वीज देखो **वीअ**=वीजय्। वीजइ, वीजेमि (हे ४, ५; षड्‌ मै ६६)।

वीजण देखो **वीअण** (कुमा)।

वीजिय देखो **वीइय** (स ३०८)।

वीडग
वीडय } देखो **बीडग** (स ६७)।

वीडय पुं [व्रीडक] लज्जा, शरम (गउड ७३१)।

वीडिअ वि [व्रीडित] लज्जित, शरमिन्दा (णाया १, ८—पत्र १४३)।

वीडिआ स्त्री [वीटिका] सजाया हुआ पान, बीड़ा (गउड)। देखो **बीडी**।

°वीढ देखो **पीढ** (गउड; उप पृ २२६; भवि)।

वीण सक [वि + चारय्] विचार करना। वीणइ, वीणेइ (धात्वा १५३; प्राकृ ७१)।

°वीण देखो **पीण** (सुर १३, १८१)।

वीणण न [दे] १ प्रकट करना (उप पृ ११८)। २ विदित करना, ज्ञापन (उप ७६५)।

वीणा स्त्री [वीणा] वाद्य-विशेष (औप; कुमा; गा ५६१; स्वप्न ६७)। °यरिणी स्त्री [°करी] वीणा-नियुक्त दासी; 'ता लहु वीणायरिणि सद्देहि, सद्दिया वीणायरिणी' (स ३०६)। °वायग वि [°वादक] वीणा बजानेवाला (महा)।

वीत देखो **वीअ**=वीत (ठा २, १—पत्र ५२; पण्ण १७—पत्र ४६४; सुज्ज २०—पत्र २९५)।

वीतिकंत
वीतिक्कंत } देखो **वीइक्कंत** (भग १०, ३—पत्र ४९८; णाया; १, १—पत्र २४, २९)।

वीतिवय
वीतीवय } देखो **वीइवय**। वीतिवयंति (भग)। वीतीवयइ (णाया १, १२—पत्र १७४)। वकृ. **वीतिवयमाण** (कप्प)। संकृ. **वीतिवइत्ता** (औप)।

वीमंस सक [वि + मृश्, मीमांस्] विचार करना, पर्यालोचन करना। संकृ. **वीमंसिय** (सम्मत्त ५६)।

वीमंसय वि [विमर्शक, मीमांसक] विचार-कर्ता (उव)।

वीमंसा स्त्री [विमर्श, मीमांसा] विचार, पर्यालोचन, निर्णय की चाह (सूअ १, १, २, १७; विसे २८९; ३९६; ५६५; उप ५२०)।

वीमंसिय वि [विमर्शित, मीमांसित] विचारित, पर्यालोचित (सम्मत्त ५४)।

वीर पुं [वीर] १ भगवान् महावीर (पण्ह १, १—पत्र २३; १, २; सुज्ज २०; जी १)। २ छन्द-विशेष (पिंग)। ३ साहित्य-प्रसिद्ध एक रस (अणु १३६)। ४ वि. पराक्रमी, शूर (आचा; सूअ १, ८, २३; कुमा)। ५ पुंन. एक देव-विमान (सम १२; इक)। ६ न. वैताढ्य पर्वत की उत्तर श्रेणी में स्थित एक विद्याधर-नगर (इक)। °कंत पुंन [°कान्त] एक देव-विमान (सम १२)। °कण्ह पुं [°कृष्ण] राजा श्रेणिक का एक पुत्र (निर १, १; पि ५२)। °कण्हा स्त्री [°कृष्णा] राजा श्रेणिक की एक पत्नी (अंत २५)। °कूड पुंन [°कूट] एक देव-विमान (सम १२)। °गत पुंन [°गत] एक देव-विमान (सम १२)। °जस पुं [°यशस्] भगवान् महावीर के पास दीक्षा लेनेवाला एक राजा (ठा ८—पत्र ४३०)। °ज्झय पुंन [°ध्वज] एक देव-विमान (सम १२)। °धवल पुं [°धवल] गुजरात का एक पसिद्ध राजा (ती २; हम्मीर १३)। °निहाण न [°निधान] स्थान-विशेष (महा)। °प्पभ न [°प्रभ] एक देव-विमान (सम १२)। °भद्द पुं [°भद्र] भगवान् पार्श्वनाथ का एक गण-धर (सम १३; कप्प)। °मई स्त्री [°मती] एक चोर-भगिनी (महा)। °लेस पुंन [°लेश्य] एक देव-विमान (सम १२)। °वण्ण पुंन [°वर्ण] एक देव-विमान (सम १२)। °वरण न [°वरण] प्रतिसुभट से युद्ध का स्वीकार, 'इस योद्धा से मैं लड़ूँगा' ऐसी युद्ध की माँग (कुमा ६, ४६; ५२)। °वरणी स्त्री

[°वरणी] प्रतिसुभट से प्रथम शस्त्र-प्रहार की याचना (सिरि १०२४)। °वलय न [°वलय] सुभट का एक आभूषण, वीरत्व-सूचक कड़ा (कप्प; तंदु २६)। °विराली स्त्री [°बिराली] वल्ली-विशेष (पएण १—पत्र ३३)। °सिंग पुंन [°शृङ्ग] एक देव-विमान (सम १२)। सिट्ठ पुंन [°सृष्ट] एक देव-विमान (सम १२)। °सेण पुं [°सेन] एक प्रसिद्ध वीर यादव का नाम (णाया १, ५—पत्र १००; अंत; उप ६४८ टी)। °सेणिय पुंन [°सैनिक, श्रेणिक] एक देव-विमान (सम १२)। °वित्त पुंन [°वित्त] देवविमान-विशेष (सम १२)। °सण न [°सन] आसन-विशेष, नीचे पैर रखकर सिंहासन पर बैठने के जैसा अवस्थान (णाया १, १—पत्र ७२; भग)। °सणिय वि [°सनिक] वीरासन से बैठनेवाला (ठा ५, १—पत्र २६६; कस; औप)।

वीरंगय पुं [वीराङ्गद] १ भगवान् महावीर के पास दीक्षा लेनेवाला एक राजा (ठा ८—पत्र ४३०)। २ एक राजकुमार (उप १०३१ टी)।

वीरण स्त्रीन [वीरण] तृण-विशेष, उशीर, खस (अणु २१२; पाअ)।

वीरल्ल पुं [वीरल्ल] श्येन पक्षी (पण्ह १, १—पत्र ८; १३)।

वीरिअ पुं [वीर्य] १ भगवान् पार्श्वनाथ का एक मुनि-संघ। २ भगवान् पार्श्वनाथ का एक गणधर (ठा ८—पत्र ४२६)। ३ पुंन. शक्ति, सामर्थ्य (उवा; ठा ३, १ टी—पत्र १०६)। ४ अन्तरंग शक्ति, आत्म-बल (प्रासू ४६; अज्भ ६५)। ५ पराक्रम (कम्म १, ५२)। ६ एक देव-विमान (देवेन्द्र १३१)। ७ शरीर-स्थित एक धातु, शुक्र। ८ तेज, दीप्ति (हे २, १०७; प्राप्र)।

वीरुणी स्त्री [वीरुणी] पर्व-वनस्पति विशेष, 'वीरुणा (? णी) तह इक्कडे य मासे यं' (पएण १—पत्र ३३)।

वीरुत्तरवडिंसग पुंन [वीरोत्तरावतंसक] एक देव-विमान (सम १२)।

वीरुहा स्त्री [वीरुधा] विस्तृत लता (कुप्र ६५; १३६)।

वीलण वि [दे] पिच्छिल, स्निग्ध, मसृण, चिकना (दे ७, ७३)।

वीलय देखो बीलय (दे ६, ६३)।

वीली स्त्री [दे] १ तरंग, कल्लोल (दे ७, ७३)। २ वीथी, पंक्ति, श्रेणी (षड्)।

वीवाह देखो विवाह = विवाह; 'एसा एक्का धूया वल्लहिया ता इमीए वीवाहं' (सुर ७, १२१; महा)।

वीवाहण न [विवाहन] विवाह करण, विवाह-क्रिया (उव ६८६ टी; सिरि १५१)।

वीवाहिग वि [वैवाहिक] विवाह-सम्बन्धी (धर्मवि १४७)।

वीवाहिय वि [विवाहित] जिसकी शादी की गई हो वह (महा)।

वीवी स्त्री [दे] वीचि; तरंग (षड्)।

वीस देखो विस्स = विस्र (सूअ २, २, ६६; संक्षि २०)।

वीस देखो विस्स = विश्व (सूअ १, ६, २२)। °उरी स्त्री [°पुरी] नगरी-विशेष (उप ५६२)। °सअ वि [°सृज] जगत्कर्ता (षड्)। °सेण पुं [°सेन] १ चक्रवर्ती राजा; 'जोहेसु णाए जह वीससेणे' (सूअ १, ६, २२)। २ पुं. अहोरात्र का १८ वाँ मुहूर्त (सुज्ज १०, १३)।

वीस°, वीसइ स्त्री [विंशति] १ संख्या-विशेष, बीस, २०। २ जिनकी संख्या बीस हों वे (कप्प; कुमा; प्राकृ ३१; संक्षि २१)। °म वि [°म] १ बीसवाँ; २० वाँ (सुपा ४५२; ४५७; पउम २०, २०८; पव ४६)। २ न. लगातार नव दिनों का उपवास (णाया १, १—पत्र ७२)। °हा अ [°धा] बीस प्रकार से (कम्म १, ५)।

वीसंत वि [विश्रान्त] १ विश्राम-प्राप्त, जिसने विश्रान्ति ली हो वह; 'परिस्संता वीसंता नग्गोहतरुतले' (कुप्र ६२; पउम ३३, १३; दे ७, ८६; पाअ; सण; उप ६४८ टी)।

वीसंदण न [विस्यन्दन] दही की तर और आटे से बनता एक प्रकार का खाद्य (पव ४; पभा ३३)।

वीसंभ देखो विस्संभ = वि + श्रम्भ्। वीसंभह (सूअनि २१ टी)।

वीसंभ देखो विस्संभ = विश्रम्भ (उव; प्राप्र; गा ४३७)।

वीसज्जिअ देखो विसज्जिअ (से ६, ७७; १५, ६३; पउम १०, ५२; धर्मवि ४६)।

वीसत्थ वि [विश्वस्त] विश्वास-युक्त (प्राप्र; गा ६०८)।

वीसद्ध वि [विश्रब्ध] विश्वास-युक्त (गा ३७६; अभि ११६; भवि; नाट—मृच्छ १६१)।

वीसम देखो विस्सम = वि + श्रम्। वीसमइ, वीसमामो (षड्; महा; पि ४८६)। वकृ. वीसममाण (पउम ३२, ४२; पि ४८६)।

वीसम देखो विस्सम = विश्रम (षड्)।

वीसम देखो वीस-म।

वीसमिर वि [विश्रमितृ] विश्राम करनेवाला (सण)।

वीसर देखो विस्सर = वि + स्मृ। वीसरइ (हे ४, ७५; ४२६; प्राकृ. ६३; षड्; भवि), वीसरेसि (रंभा)।

वीसर देखो वीस्सर = विस्वर; 'वीसरसरं रसतो जो सो जोणीमुहाओ निप्फिडइ' (तंदु १४)।

वीसरणालु वि [विस्मतृ] भूल जानेवाला (ओघ ४२५)।

वीसरिअ देखो विस्सरिय (गा ३६१)।

वीसव (अप) सक [वि + श्रमय्] विश्राम करवाना। वीसवइ (भवि)।

वीसस देखो विस्सस। वीससइ (पि ६४; ४६६)। वकृ. वीससंत (पउम ११३, ५)। कृ. वीससणिज्ज, वीससणीअ (उत्त २६, ४२; नाट—मालवि ५३)।

वीससा अ [विस्रसा] स्वभाव, प्रकृति (ठा ३, ३—पत्र १५२; भग; णाया १, १२)।

वीससिय वि [वैस्रसिक] स्वाभाविक (आवम)।

वीसा देखो वीसइ (हे १, २८; ६२; ठा ३, १—पत्र ११६; षड्)।

वीसा स्त्री [विश्वा] पृथिवी, धरती (नाट)।

वीसाण पुं [विष्वाण] आहार, भोजन (हे १, ४३)।

वीसाम पुं [विश्राम] १ विराम, उपरम। २ प्रवृत्त व्यापार का अवसान, चालू क्रिया का अंत (हे १, ४३; से २, ३१, महा)।

वीसामण देखो **विस्सामण** (कुप्र ३१०)।

वीसामणा देखो **विस्सामणा** (कुप्र ३१०)।

वीसाय देखो **विसाय** = वि + स्वादय्। कृ. **विसायणिज्ज** (पण्ण १७—पत्र ५३२)।

वीसार देखो **विस्सार** = वि + स्मृ। **वीसारेइ** (धर्मवि ५३१)।

विसारिअ वि [विस्मारित] भुलवाया हुआ (कुमा)।

वीसाल सक [मिश्रय्] मिलाना, मिलावट करना। **वीसालइ** (हे ४, २८)।

वीसालिअ वि [मिश्रित] मिलाया हुआ (कुमा)।

वीसावँ (अप) देखो **वीसाम** (कुमा)।

वीसास देखो **विस्सास** (प्राप्र; कुमा)।

वीसिया स्त्री [विंशिका] बीस संख्यावाला (वव १)।

वीसु न [दे] युतक, पृथग्, जुदा (दे ७, ७३)।

वीसुं अ [विष्वक्] १ समन्तात्, सब ओर से। २ समस्तपन, सामस्त्य (हे १, २४; ४३; ५२; षड्; कुमा; दे ७, ७३ टी)।

वीसुंभ देखो **वीसंभ** = वि + श्रम्भ्। **वीसुंभेज्जा** (ठा ५, २—पत्र ३०८; कस)।

वीसुंभ अक [दे] पृथग् होना, जुदा होना। **वीसुंभेज्जा** (ठा ५, २—पत्र ३०८; कस)।

वीसुंभण न [दे] पृथग्भाव, अलग होना (ठा ५, २ टी—पत्र ३१०)।

वीसुंभण न [विश्रम्भण] विश्वास (ठा ५, २ टी—पत्र ३१०)।

वीसुय देखो **विस्सुअ** (पण्ह १, ४—पत्र ६८)।

वीसेढि, वीसेणि } देखो **विसेढि** (भास १०; णंदि १८४)।

वीहि पुंन [व्रीहि] धान, धान्य-विशेष; 'सालीणि वा वीहीणि वा कोद्दवाणि वा कंगूणि वा' (सूअ २, २, ११; कस)।

वीहि, वीहिया, वीही } स्त्री [वीथि, °का, °थी] १ मार्ग, रास्ता (आचा; सूअ १, २, १, २१; प्रयौ १००; गउड ११८८)। २ श्रेणी, पंक्ति (स १४)। ३ क्षेत्र-भाग (ठा ९—पत्र ४६८)। ४ बाजार (उप २८; महा)।

वुअ वि [दे] १ बुना हुआ। २ बुनवाया हुआ; 'जन्न तयट्ठा कीय नेव वुयं जं न गहियमन्नेसिं' (पव १२५)। देखो **वूय**।

वुअ, वुइय } वि [वृत] १ प्रार्थित। २ प्रार्थना आदि से नियुक्त; '**वुओ**' (संक्षि ४)। ३ वेष्टित; 'कुकम्मवुइया' (सुपा ६३)।

वुइय वि [उक्त] कथित (उत्त १८, २६)।

वुंज (?) सक [उद् + नमय्] ऊँचा करना। वुंजइ (धात्वा १५४)।

वुंताकी स्त्री [वृन्ताकी] बैंगन का गाछ (दे ७, ६३)।

वुंद देखो **वंद** = वृन्द (गा ५५६; हे १, १३१)।

वुंदारय देखो **वंदारय** (दे १, १३२; कुमा; षड्)।

वुंदावण देखो **विंदावण** (हे १, १३१; प्राप्र; संक्षि ४; कुमा)।

वुंद्र देखो **वंद्र** (हे १, ५३; कुमा १, ३८)।

वुक्क देखो **बुक्क** = दे (सण)।

वुक्कंत वि [व्युत्क्रान्त] १ अतिक्रान्त, व्यतीत, गुजरा हुआ; 'वोलीणं वुक्कंतं अइच्छिअं वोलिअं अइक्कंतं' (पाअ), 'वुक्कंतो बहुकालो तुह पयसेवं कुणंतस्स' (सुपा ५६१)। २ विध्वस्त, विनष्ट (राज)। ३ निष्क्रान्त, बाहर निकला हुआ (निचू १६)। देखो **वोक्कंत**।

वुक्कंति स्त्री [व्युत्क्रान्ति] उत्पत्ति (राज)।

वुक्कम पुं [व्युत्क्रम] १ वृद्धि, बढ़ाव (सूअ २, ३, १)। २ उत्पत्ति (सूअ २, ३, १; २, ३, १७)।

वुक्कस सक [व्युत् + कृष्] पीछे खींचना, वापस लौटाना। **वुक्कसाहि** (आचा २, ३, १, ६)।

वुक्कार देखो **बुक्कार** (सण)।

वुक्कार सक [दे. बूत्कारय्] गर्जन करना। **वुक्कारेंति** (राय १०१)।

वुक्कारिय न [दे. बूत्कारित] गर्जना (स ५४८)।

वुग्गह पुं [व्युद्ग्रह] १ कलह, झगड़ा, विग्रह, लड़ाई (ठा ५, १—पत्र ३००; वव १; पव २६८)। २ धाड़, डाका (उप पृ २४५)। ३ बहकाव (संबोध ५२)। ४ मिथ्याभिनिवेश, कदाग्रह (राज)।

वुग्गहिअ वि [व्युद्ग्राहक] कलह-कारक, 'नय वुग्गहिअं कहं कहिज्जा' (दस १०, १०)।

वुग्गहिअ वि [व्युद्ग्राहिक] कलह-संबन्धी (दस १०, १०)।

वुग्गाह सक [व्युद् + ग्राहय्] बहकाना, भ्रान्त-चित्त करना। **वुग्गाहेमो** (महा)। वकृ. **वुग्गाहेमाण** (णाया १, १२—पत्र १७४; औप)।

वुग्गाहणा स्त्री [व्युद्ग्राहणा] बहकाव (ओघभा २५)।

वुग्गाहिअ वि [व्युद्ग्राहित] बहकाया हुआ, भ्रान्तचित्त किया हुआ (कस; चेइय ११७; सिरि १०८१)।

वुच° देखो **वय** = वच्।

वुच्चमाण वि [उच्यमान] जो कहा जाता हो वह (सूअ १, ६, ३१; भग; उप ५३० टी)।

वुच्चा अ [उक्त्वा] कह कर (सूअ २, २, ८१; पि ५८७)।

वुच्छ देखो **वच्छ** = वृक्ष (नाट—मृच्छ १५४)।

वुच्छ° देखो **वोच्छ°** (कम्म १, १)।

वुच्छ° देखो **वोच्छिंद**।

वुच्छिण्ण देखो **वुच्छिन्न** (राज)।

वुच्छित्ति देखो **वोच्छित्ति** (विसे २४०५)।

वुच्छिन्न वि [व्युच्छिन्न, व्यवच्छिन्न] १ अपगत, हटा हुआ। २ विनष्ट (उव)। ३ न. लगातार चौदह दिनों का उपवास (संबोध ५८)।

वुच्छेअ देखो **वोच्छेअ** (पव २७३; कम्म २, २२; सुपा २५४)।

वुच्छेयण देखो **वोच्छेयण** (ठा ६—पत्र ३५८)।

वुज्ज अक [त्रस्] डरना। **वुज्जइ** (प्राप्र)। देखो **वोज्ज**।

वुज्जण न [दे] स्थगन, आच्छादन, ढकना (धर्मसं १०२१ टी; ११०२)।

वुज्झंत वि [उह्यमान] पानी के वेग से खींचा जाता, बह जाता (पउम १०२, २४); 'गिरि-निज्झरणोदगेहि वुज्झंतो' (वै ८२)। देखो वह = वह ।

वुज्झण देखो वुज्जण (धर्मसं १०२१)।

वुज्झमाण देखो वुज्झंत (पउम ८३, ४)।

वुञ्ज (अप) देखो वञ्च = व्रज्। वुञ्जइ (हे ४, ३९२; कुमा)। संकृ. वुञ्जेप्पि, वुञ्जेप्पिणु (हे ४, ३९२)।

वुट्ठ अक [व्युत् + स्था] उठना, खड़ा होना। वुट्ठए (पि ३३७)।

वुट्ठ वि [वृष्ट] १ बरसा हुआ (हे १, १३७; विपा २, १—पत्र १०८; कुमा १, ८५)। २ न. वृष्टि (दस ८, ६)।

वुट्ठि देखो विट्ठि = वृष्टि (हे १, १३७; कुमा)। °काय पुं [°काय] बरसता जल-समूह (भग १४, २—पत्र ६३४; कप्प)।

वुट्ठिय वि [व्युत्थित] जो उठ कर खड़ा हुआ हो वह (भवि)।

°वुड देखो पुड = पुट; 'जंपइ कयंजलिवुडो' (पउम ६३, २२)।

वुड्ढ अक [वृध्] बढ़ना (संक्षि ३४)। वुड्ढंति (भग ५, ८)।

वुड्ढ सक [वर्धय्] बढ़ाना। वकृ. वुड्ढंत (द्र २३)।

वुड्ढ वि [वृद्ध] १ जरा अवस्थावाला, बूढ़ा (औप; सुर ३, १०४; सुपा २२७; सम्मत्त १५८; प्रासू ११६; सण)। २ बड़ा, महान् (कुमा)। ३ वृद्धि-प्राप्त। ४ अनुभवी, कुशल, निपुण। ५ पंडित, जानकार (हे १, १३१; २, ४०; ९०)। ६ निभृत, शान्त, निर्विकार (ठा ८)। ७ पुं. तापस, संन्यासी (णाया १, १५—पत्र १९३; अणु २४)। ८ एक जैन मुनि का नाम (कप्प)। °त्त, °त्तण न [°त्व] बुढ़ापा, जरावस्था (सुपा ३६०; २४२)। °वाइ पुं [°वादिन्] एक समर्थ जैनाचार्य जो सुप्रसिद्ध कवि सिद्धसेन दिवाकर के गुरु थे (सम्मत्त १४०)। °वाय पुं [°वाद] किंवदन्ती, कहावत, जनश्रुति (स २०७)। °सावग पुं [°श्रावक] ब्राह्मण (णाया १, १५—पत्र १९३; औप)। °णुग वि [°नुग] वृद्ध का अनुयायी (सं ३३)।

वुड्ढ वि [दे] विनष्ट (राज)।

वुड्ढि स्त्री [वृद्धि] १ बढ़ाव, बढ़ना (आचा; भग, उवा; कुमा; सण)। २ अभ्युदय, उन्नति। ३ समृद्धि, संपत्ति। ४ व्याकरण-प्रसिद्ध ऐकार आदि वर्णों की एक संज्ञा (सुपा १०३; हे १, १३१)। ५ समूह। ६ कलान्तर, सूद। ७ औषधि-विशेष। ८ पुं. गन्धद्रव्य-विशेष (हे १, १३१)। °कर वि [°कर] वृद्धि-कर्ता (सुर १, १२९; द्र २४)। °धम्मय त्रि [°धर्मक] बढ़नेवाला, वर्धन-शील (आचा)। °म वि [°मत्] वृद्धिवाला (विचार ४९७)।

वुणण न [दे] बुनना (सम्मत्त १७३)।

वुणिय वि [दे] बुना हुआ, 'अ-वुणिया खट्टा' (कुप्र २२३)।

वुण्ण वि [दे] १ भीत, त्रस्त (दे ७, ९४, विपा १,२—पत्र २४)। २ उद्विग्न (दे ७, ९४)।

वुत्त वि [उक्त] कथित (उवा; अनु ३; महा)।

वुत्त वि [उप्त] बोया हुआ (उव)।

वुत्त न [वृत्त] छन्द, कविता, पद्य (पिंग)। देखो वट्ट = वृत्त।

°वुत्त देखो पुत्त (प्रयौ २२)।

वुत्तंत पुं [वृत्तान्त] खबर, समाचार, हकीकत, बात (स्वप्न १५३; प्राप्र; हे १, १३१; स ३५)।

वुत्ति देखो वत्ति = वृत्ति; 'जायामायावुत्तिएणं' (सूअ २, १, ५०; प्राकृ ८)।

वुत्थ वि [उषित] बसा हुआ, रहा हुआ (पाअ; णाया १, ८—पत्र १४८; उव, धण ४३; उप पृ १२७; सुख २, १७, से ११, ८०; कुप्र १८७)।

वुद देखो वुअ = वृत (प्राकृ ८)।

वुदास पुं [व्युदास] निरास (विसे ३४७५)।

वुदि देखो वइ = वृति (प्राकृ ८)।

वुद्ध देखो वुड्ढ = वृद्ध (षड्)।

वुद्धि देखो वुड्ढि (ठा १०—पत्र ५२५; सम १७; संक्षि ४)।

वुन्न देखो वुण्ण (सुर ६, १२४; सुपा २५०; धमि १०; भवि; कुमा; हे ४, ४२१)।

वुप्पंत वि [उप्यमान] बोया जाता, 'पेच्छइ य मंगलसएहि वप्पिणं करिसगेहि वुप्पंतं' (श्राक २५; पि ३३७)।

वुप्पाय वि [व्युत् + पादय्] व्युत्पन्न करना, होशियार करना। वकृ. वुप्पाएमाण (णाया १, १२—पत्र १७४; औप)।

वुप्फ न [दे] शेखर, शिरः-स्थित (दे ७, ७४)।

वुब्भ° देखो वह = वह्।

वुब्भमाण देखो वुज्झमाण (कुप्र २२३)।

°वुर देखो पुर (अच्चु १६)।

°वुरिस देखो पुरिस = पुरुष (अउम ६५, ४५)।

वुल्लाह पुं [दे] अश्व की एक उत्तम जाति (सम्मत्त २१६)।

वुसह देखो वसभ (चारु ७; गा ४६०; ८२०; नाट—मृच्छ १०)।

वुसि स्त्री [वृषि] मुनि का आसन। °राइ, राइअ वि [राजिन्] संयमी, जितेन्द्रिय, त्यागी, साधु (निचू १६)। देखो वुसि, वुसी।

वुसि वि [वृषिन्] संविग्न, साधु, संयमी, मुनि; 'वुसि संविग्गो भणिओ' (निचू १६)।

वुसिम वि [वश्य] वश में आनेवाला, अधीन होनेवाला; 'निस्सारियं वुसिमं मन्नमाणा' (निचू १६)।

वुसी स्त्री [वृषी] मुनि का आसन। °म वि [°मत्] संयमी, साधु, मुनि; 'एस धम्मे वुसीमओ' (सूअ १, ८, १९; १, ११, १५; १, १५, ४; उत्त ५, १८; सुख ५, १८)। देखो वुसि।

वुस्सग्ग देखो विओसग्ग; 'सच्चित्ताणं पुप्फाइयाण दव्वाण कुणइ वुस्सग्गं' (उप १४२; संबोध ५१; ५२)।

वूढ देखो वुड्ढ = वृद्ध (सुपा ५१०; ५२०)।

वूढ वि [व्यूढ] १ धारण किया हुआ, 'सोआपरिमट्ठेण व वूढो तेणवि णिरंतरं रोमंचो' (से १,४२; धण २०; विचार २२९ णंदि ५२)। २ ढोया हुआ; मुणिवूढो सील-भरो विसयपसत्ता तरंति नो वोढुं (प्रवि १७; स १६२)। ३ बहा हुआ, वेग में खिंचा

गया (भत्त १२२)। ४ उपचित, पुष्ट (से ६, ५०)। ५ निःसृत, निकला हुआ;
'जम्मुहमहद्दहाओ दुवालसंगी महानई वूढा।
ते गणहरकुलगिरिणो सव्वे वंदामि भावेण'
(चेइय ४)।

वूणक पुं [दे] बालक, बच्चा (राज)।

वूय वि [दे] बुना हुआ; 'जं न तयट्टा वूयं नय किणियं नेय गहियमन्नेहिं' (सुपा ६४३)। देखो वुअ = (दे)।

वूह पुं [व्यूह] १ युद्ध के लिए की जाती सैन्य की रचना-विशेष (पण्ह १, ३—पत्र ४४; औप; स ६०३; कुमा)। २ समूह (सम १०६; कुप्र ५६)।

वे देखो वइ = वै (प्राकृ ८०; राज)।

वे अक [वि + इ] नष्ट होना। वेइ (विसे १७६४)।

वे } सक [व्ये] संवरण करना। वेइ,
वेअ } वेअइ, वेअए (षड्)।

वेअ सक [वेदय्] १ अनुभव करना, भोगना। २ जानना। वेअइ, वेएइ, वेएंति (सम्यक्त्वो ६; भग)। वकृ. **वेअंत, वेएमाण, वेयमाण** (सम्यक्त्वो ५; पउम ७५, ४५; सुपा २४३; णाया १, १—पत्र ६६; औप; पंच ५, १३२; सुपा ३६६)। कवकृ. **वेइज्जमाण** (भग; पण्ह १, ३—पत्र ५५)। संकृ. **वेयइत्ता** (सूअ १, ६, २७)। कृ. **वेय, वेअव्व, वेइयव्व** (ठा २, १—पत्र ४७; रयण २४; सुख ६, १; सुपा ६१४; महा)। देखो वेअ = (वेद्य), वेअणिज्ज, वेअणिय।

वेअ अक [वि + एज्] विशेष काँपना। वेयइ (णंदि ४२ टी)। वकृ. **वेयंत** (ठा ७—पत्र ३८३)।

वेअ अक [वेप्] काँपना। वकृ. **वेअमाण** (गा ३१२ अ)।

वेअ पुं [वेद] १ शास्त्र-विशेष, ऋग्वेद आदि ग्रंथ (विपा १, ५ टी—पत्र ६०; पाअ; उव)। २ कर्म-विशेष, मोहनीय कर्म का एक भेद, जिसके उदय से मैथुन की इच्छा होती है (कम्म १, २२; उप पृ ३५३)। ३ आचारांग आदि जैन ग्रन्थ (आचा १, ३, १, २)। ४ विज्ञ, जानकार (भग)। °व वि. [°वत्] वेदों का जानकार (आचा १, ३, १, २)। °वि, °विउ वि [°विद्] वही अर्थ (पि ४१३; आ २३)। °वत्त न [°व्यक्त] चैत्य-विशेष (आचा २, १५, ३५)। °ावत्त न [°ावर्त] देखो °वत्त (आचा २, १५, ५)।

वेअ न [वेद्य] कर्म-विशेष, सुख तथा दुःख का कारण-भूत कर्म (कम्म १, ३)।

वेअ पुं [वेग] शीघ्र गति, दौड़, तेजी (पाअ; से ५, ४३; कुमा; महा; पउम ६३, ३६)। २ प्रवाह। ३ रेतस्। ४ मूत्र आदि निःसारण-यन्त्र। ५ संस्कार-विशेष (प्राकृ ४१)। देखो वेग।

वेअंत पुं [वेदान्त] दर्शन-विशेष, उपनिषद् का विचार करनेवाला दर्शन (अच्चु १)।

वेअग वि [वेदक] १ भोगनेवाला, अनुभव करनेवाला (सम्यक्त्वो १२; संबोध ३३; श्रावक ३०६)। २ न. सम्यक्त्व का एक भेद (कम्म ३, १६)। ३ वि सम्यक्त्व-विशेष वाला जीव (कम्म ४, १३; २२)। °छिन्निय वि [छिन्नवेदक] जिसका पुरुष-चिह्न आदि काटा गया हो वह (सूअ २, २, ६३)।

वेअच्छ न [वैकक्ष] १ उत्तरासंग, छाती में यज्ञोपवीत की तरह पहना जाता वस्त्र, माला आदि। २ बन्ध-विशेष, मर्कट-बन्ध। ३ कन्धे के नीचे लटकना (णाया १, ८—पत्र १३३)।

वेअड सक [खच्] जड़ना। वेअडइ (हे ४, ८६; षड्)।

वेअडिअ वि [खचित] जड़ा हुआ, जड़ाऊ (कुमा; पाअ; भवि)।

वेअडिअ वि [दे] प्रत्युप्त, फिर से बोया हुआ (दे ७, ७७)।

वेअडिअ पुं [दे. वैकटिक] मोती वेधनेवाला शिल्पी, जौहरी (कप्पू)।

वेअड्डि देखो विअड्डि (औप)।

वेअड्ढ न [दे] भल्लातक, भिलावाँ (दे ७, ६६)।

वेअड्ढ पुं [वैताढ्य] पर्वत-विशेष (सुर ६, १७; सुपा ६२६; महा; भवि)।

वेअड्ढ न [वैदग्ध्य] विदग्धता, विचक्षणता (सुपा ६२६)।

वेअण न [वेतन] मजूरी का मूल्य, तनखाह (पाअ; विपा १, ३—पत्र ४२; उप पृ ३६८)।

वेअण न [वेपन] १ कम्प, काँपना (चेइय ४३५; नाट—उत्तर ६१)। २ वि. काँपनेवाला (चेइय ४३५)।

वेअण न [वेदन] अनुभव, भोग (आचा; कम्म २, १३)।

वेअणा देखो विअणा (उवा; हे १; १४६; प्रासू १०४; १३३; १७४)।

वेअणिज्ज } वि [वेदनीय] १ भोगने योग्य।
वेअणिय } २ न. कर्म-विशेष, सुख-दुःख आदि का कारण-भूत कर्म (आक; ठा २, ४; कप्प; कम्म १, १२)।

वेअय देखो वेअग (विसे ५२८)।

वेअरणी स्त्री [वैतरणी] १ नरक-नदी (कुप्र ४३२; उव)। २ परमाधार्मिक देवों की एक जाति, जो वैतरणी की विकुर्वणा करके उसमें नरक-जीवों को डालता है (सम २६)। ३ विद्या-विशेष (आवम)।

वेअल्ल देखो वेइल्ल = विचकिल; 'वेयल्लफुल्लनियरच्छलेण हसइव्व गिम्हरिऊ' (धर्मवि २०)।

वेअल्ल वि [दे] १ मृदु, कोमल (दे ७, ७५)। २ न. असामर्थ्य (दे ७, ७५; पाअ)।

वेअल्ल न [वैकल्य] विकलता, व्याकुलता (गउड)।

वेअव्व देखो वेअ = वेदय्।

वेअस पुं [वेतस] वृक्ष-विशेष, बेंत का पेड़ (हे १, २०७; षड्; गा ६४५)।

वेआगरण वि [वैयाकरण] व्याकरण-संबधी, संदेह-निराकरण से सम्बन्ध रखनेवाला (पंचभा)।

वेआर सक [दे] ठगना, प्रतारण करना। वेयारइ (भवि)। कर्म. वेआरिज्जसि (गा ६०६)। हेकृ. **वेआरिउं** (गा २८६; वज्जा ११४)।

वेआरणिय वि [वैदारणिक] विदारण-सम्बन्धी, विदारण से उत्पन्न (ठा २, १—पत्र ४०)।

वेआरणिय वि [दे] प्रतारण-सम्बन्धी, ठगने से उत्पन्न (ठा २, १—पत्र ४०)।
वेआरणिय वि [वैचारणिक] विचार-संबंधी (ठा २, १—पत्र ४०)।
वेआरिअ वि [दे] १ प्रतारित, ठगा हुआ (दे ७, ६५; पउम १४, ४६; सुपा १५२)। २ पुं. केश, बाल (दे ७, ६५)।
वेआल पुं [वेताल] १ भूत-विशेष, विकृत पिशाच, प्रेत (पण्ह १, ३—पत्र ४६; गउड; महा; पिंग)। २ छन्द-विशेष (पिंग)।
वेआल वि [दे] १ अन्धा। २ पुं. अंधकार (दे ७, ६५)।
वेआलग वि [विदारक] विदारण-कर्ता (सूअनि ३६)।
वेआलण न [विदारण] फाड़ना, चीरना (सूअनि ३६)।
वेआलि पुं [वैतालिन्] बन्दी, स्तुति-पाठक (उप ७२८ टी)।
वेआलिअ देखो वइआलिअ (पाअ; हे १, १५२; चेइय ७४६)।
वेआलिय वि [वैक्रिय] विक्रिया से उत्पन्न (सूअ १, ५, २, १७)।
वेआलिय वि [वैकालिक] विकाल-सम्बन्धी, अपराह्न में बना हुआ (दसनि १,६; १५)।
वेआलिय न [विदारक] विदारण-क्रिया (सूअनि ३६)।
वेआलिय देखो वइआलीअ (सूअनि ३८)।
वेआलिया स्त्री [वैतालिकी] वीणा-विशेष (जीव ३)।
वेआली स्त्री [वैताली] १ विद्या-विशेष, जिसके प्रभाव से अचेतन काष्ठ भी उठ खड़ा होता है—चेतन की तरह क्रिया करता है (सूअ २, २, २७)। २ नगरी-विशेष (णाया १, १६—पत्र २१७)।
वेइ स्त्री [वेदि] परिष्कृत भूमि-विशेष, चौतरा (कुमा; महा)।
वेइ वि [वेदिन्] १ जाननेवाला (चेइय ११६; गउड)। २ अनुभव करनेवाला (पंच ५, ११६)।
वेइअ वि [वेदित] १ अनुभूत (भग)। २ ज्ञात, जाना हुआ (दस ४, १; पउम ६६, ३)।
वेइअ देखो वेविअ = वेपित (गा ३६२ अ)।
वेइअ वि [वैदिक] १ वेदाश्रित, वेद-संबन्धी (ठा ३, ३—पत्र १५१)। २ वेदों का जानकार (दसनि ४, ३५)।
वेइअ वि [वेगित] वेलावाला, वेग-युक्त (णाया १, १—पत्र २६)।
वेइअ वि [व्येजित] १ कम्पित, काँपा हुआ (भग १, १ टी—पत्र १८)। २ कँपाया हुआ (राय ७४)।
वेइआ स्त्री [दे] पनीहारी, पानी ढोनेवाली स्त्री (दे ७, ७६)।
वेइआ स्त्री [वेदिका] १ परिष्कृत भूमि-विशेष, चौतरा (भग; कुमा; महा)। २ अंगुलि-मुद्रा, अंगूठी (दे ७, ७६ टी)। ३ वर्जनीय प्रतिलेखन का एक भेद, प्रत्युपेक्षणा का एक दोष (उत्त २६, २६; सुख २६, २६; ओघभा १६३)।
वेइज्ज अक [वि + एज्] काँपना। वकृ. वेइज्जमाण (भग १, १ टी—पत्र १८)।
वेइज्जमाण देखो वेअ = वेदय्।
वेइद्ध वि [दे] १ ऊँचा किया हुआ। २ विसंस्थुल। ३ आविद्ध। ४ शिथिल (दे ७, ६५)।
वेइल्ल देखो विअइल्ल (हे १, १६६; २, ६८; कुमा)।
वेउंठ देखो वेकुंठ (गउड)।
वेउट्टिया स्त्री [दे] पुनः पुनः, फिर-फिर (कप्प)।
वेउव्व देखो विउव्व = वि + कृ, कुर्व्। संकृ. वेउव्विऊण (सुपा ४२)।
वेउव्व वि [वैक्रिय] १ विकृत, विकार-प्राप्त (विसे २५७६ टी)। २ देखो विउव्व = वैक्रिय (कम्म ३, १६)। °लद्धि स्त्री [°लब्धि] शक्ति-विशेष, वैक्रिय शरीर उत्पन्न करने का सामर्थ्य (पउम ७०, २६)।
वेउव्वि देखो विउव्वि (पण्ह २, १—पत्र ६६; कप्प; औप; ओघभा ५७)।
वेउव्विअ देखो विउव्विअ = विकृत, विकुर्वित; 'वेउव्वियं असुइजंबालं अइचिक्कणं फासेइ' (स ७६२; सुपा ४७)।
वेउव्विअ वि [वैक्रिय, वैक्रियिक, वैकुर्विक] १ शरीर-विशेष, अनेक स्वरूपों और क्रियाओं को करने में समर्थ शरीर (सम १४१; भग, दं ८)। २ वैक्रिय शरीर बनाने की शक्तिवाला (सम १०३; पव—गाथा ६)। ३ विकुर्वणा से बनाया हुआ; 'विंझगिरिसमीवगयं एयं वेउव्वियं च मह भवणं' (सुपा १७८)। ४ वैक्रिय शरीरवाला (विसे ३७५)। ५ वैक्रिय शरीर से संबन्ध रखनेवाला (भग)। ६ विभूषित (भग १८, ५—पत्र ७४६)। °लद्धिअ वि [°लब्धिक] वैक्रिय शरीर उत्पन्न करने की शक्तिवाला (भग)। °समुग्घाय पुं [°समुद्घात] वैक्रिय शरीर बनाने के लिए आत्म-प्रदेशों को बाहर निकालना (अंत)।
वेउव्विया स्त्री [दे] पुनः-पुनः, फिर-फिर (कप्प)।
वेंकड पुं [वेङ्कट] दक्षिण देश में स्थित एक पर्वत (अच्चु १)। °णाह पुं [°नाथ] विष्णु की वेंकटाद्रि पर स्थित मूर्त्ति (अच्चु १)।
वेंगी स्त्री [दे] वृतिवाली, बाड़वाली (दे ७, ४३)।
वेंजण देखो वंजण (प्राकृ ३१)।
वेंट देखो विंट = वृन्त (गा ३५६; हे १, १३६; २, ३१; कुमा; प्राकृ ४)।
वेंटल देखो विंटल (ओघ ४२४)।
वेंटली देखो विंटलिआ; 'तओ तेण तस्स (करिणो) पुरओ वेंटलीकाऊण पक्खित्तमुत्तरीयं' (महा)।
वेंटिआ देखो विंटिया (ओघ २०३; ओघभा ७६; उप १४२ टी; वव १)।
वेंड पुं [वेतण्ड] हाथी, हस्ती (प्राकृ ३०)। देखो वेयंड।
वेंढसुरा स्त्री [दे] कलुष मदिरा (दे ७, ७८)।
वेंढि पुं [दे] पशु (दे ७, ७४)।
वेंढिअ वि [दे] वेष्टित, लपेटा हुआ (दे ७, ७६; महा)।
वेंभल देखो विंभल (पण्ह १, ३—पत्र ४५; पउम ५, १६२)।
वेकक्ख देखो वेअच्छ; 'वेकक्खउत्तरीआ' (कुमा)।
वेकच्छिया } देखो वेगच्छिया (ओघभा वेकच्छी } ३१८; ओघ ६७७)।
वेकिल्लिअ न [दे] रोमन्थ, चबी हुई चीज को फिर से चबाना (दे ७, ८२)।

वेकुंठ पुं [वैकुण्ठ] १ विष्णु, नारायण। २ इन्द्र, देवाधीश। ३ गरुड पक्षी। ४ अर्जक वृक्ष, सफेद बबँरी का गाछ। ५ लोक-विशेष, विष्णु का धाम (हे १, १९९)। ६ पुंन. मथुरा का एक वैष्णव तीर्थ (ती ७)।

वेग देखो **वेअ** = वेग (उवा; कप्प; कुमा)। °**वई** स्त्री [°वती] एक नदी का नाम (ती १५)। °**वंत** वि [°वत्] वेगवाला (सुर २, १६७)।

वेगच्छ देखो **वेअच्छ** (उवा)।

वेगच्छिया, **वेगच्छी** स्त्री [वैकक्षिका, °क्षा] कक्षा के पास पहना जाता वस्त्र, उत्तरासंग (पव ६२); 'कयतिलओ वेगच्छि आणाववहारपरूवं' (संबोध ६)।

वेगड स्त्रीन [दे] पोत-विशेष, एक तरह का जहाज; 'चउसट्ठी वेगडाणं' (सिरि ३८२)।

वेगर पुं [दे] द्राक्षा, लौंग आदि से मिश्रित चीनी आदि (उर ५, ६)।

वेगुन्न देखो **वइगुण्ण** (धर्मसं ८८४; सुपा २६०)।

वेग्ग देखो **विअग्ग** (प्राकृ ३०)।

वेग्ग देखो **वेग** (भवि)।

वेग्गल वि [दे] दूर-वर्त्ती; गुजराती में 'वेगळुं' (हे ४, ३७०)।

वेचित्त देखो **वइचित्त** (भास ३०; अज्झ ४६)।

वेच्च देखो **विच्च** = वि + अय्। वेच्चइ (हे ४, ४१९)।

वेच्छ° देखो **विअ** = विद्।

वेच्छा देखो **वेगच्छिया**। °**सुत्त** न [°सूत्र] उपवीत की तरह पहनी जाती साँकली (भग ६, ३३ टी—४७७; राय)।

वेजयंत पुंन [वैजयन्त] १ एक अनुत्तर देव-विमान (सम ५९; औप; अनु)। २-७ जंबू-द्वीप, लवण समुद्र, धातकी खण्ड, कालोद समुद्र, पुष्करवर द्वीप तथा पुष्करोद समुद्र का दक्षिण द्वार (ठा ४, २—पत्र २२५; जीव ३, २—पत्र २६०; ठा ४, २—पत्र २२६; जीव ३, २—पत्र ३२७; ३२९; ३३१; ३४७)। ८-१३ पुं. जंबूद्वीप, लवण समुद्र आदि के दक्षिण द्वारों के अधिष्ठाता देव (ठा ४, २—पत्र २२५; जीव ३, २—पत्र २६०; ठा ४, २—पत्र २२६; जीव ३, २—पत्र ३२७; ३२९; ३३१; ३४७)। १४ एक अनुत्तर देवविमान का निवासी देव (सम ५९)। १५ जंबू-मन्दर के उत्तर रुचक पर्वत का एक शिखर; 'विजए य वि(? वे) जयंते' (ठा ८—पत्र ४३६)। १६ वि. प्रधान, श्रेष्ठ (सूअ १, ६, २०)।

वेजयंती स्त्री [वैजयन्ती] १ ध्वजा, पताका (सम १३७; सूअ १, ६, १०; सुर १, ७०; कुमा)। २ षष्ठ बलदेव की माता का नाम (सम १५२)। ३ अंगारक आदि महाग्रहों की एक-एक अग्रमहिषी का नाम (ठा ४, १—पत्र २०४)। ४ पूर्व रुचक पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८—पत्र ४३६)। ५ विजय-विशेष की राजधानी (ठा २, ३—पत्र ८०)। ६ एक विद्याधर-नगरी (सुर ५, २०४)। ७ रामचन्द्रजी की एक सभा (पउम ८०, ३)। ८ भगवान् पद्मप्रभ की दीक्षा-शिबिका (सम १५१)। ९ उत्तर अंजनगिरि की दक्षिण दिशा में स्थित एक पुष्करिणी (ठा ४, २—पत्र २३०)। १० पक्ष की आठवीं रात्रि का नाम; 'विजया य विजयंता (? वेजयंती' (सुज्ज १०, १४)। ११ भगवान् कुन्थुनाथ की दीक्षा-शिबिका (विचार १२९)।

वेज्ज वि [वेद्य] भोगने योग्य, अनुभव करने योग्य (संबोध ३३)।

वेज्ज पुं [वैद्य] १ चिकित्सक, हकीम (गा २३७; उव)। २ वृक्ष-विशेष। ३ वि. पण्डित, विद्वान् (हे १, १४८; २, २४)। °**सत्थ** न [°शास्त्र] चिकित्सा-शास्त्र (स १७)।

वेज्जग, **वेज्जय** न [वैद्यक] १ चिकित्सा-शास्त्र (ओघ ६२२ टी; स ७११)। २ वैद्य-संबन्धी क्रिया, वैद्य-कर्म (अणु २३४; कुप्र १८१)।

वेज्झ वि [वेध्य] बींधने योग्य (नाट—साहित्य १५८)।

वेट्ठण देखो **वेढण** (नाट—मालती ११९)।

वेट्ठणग पुं [वेष्टनक] १ सिर पर बाँधी जाती एक तरह की पगड़ी। २ कान का एक आभूषण (राज)।

वेट्ठया देखो **विट्ठा** (सुर १६, १७५)।

वेट्ठि देखो **विट्ठि**; 'रायवेट्ठिं व मन्नंता' (उत्त २७, १३; प्राकृ ५)।

वेट्ठिद (शौ) देखो **वेढिअ** (नाट—मृच्छ ६२)।

वेड [दे] देखो **बेड** (दे ६, ९५; कुमा)।

वेडइअ पुं [दे] वाणिजक, व्यापारी (दे ७, ७८)।

वेडंबग देखो **विडंबग**; 'जह वेडंबगलिंगे' (संबोध १२)।

वेडस पुं [वेतस] वृक्ष-विशेष, बेंत का गाछ (पाअ; सम १५२; कप्प)।

वेडिअ पुं [दे] मणिकार, जौहरी (दे ७, ७७)।

वेडिकिल्ल वि [दे] संकट, सकरा, कमचौड़ा (दे ७, ७८)।

वेडिस देखो **वेडस** (प्राप्र; हे १, ४६; २०७; कुमा; गा ७६०)।

वेडुंबक, **वेडुंबग** वि [दे] नृपादि कुल में उत्पन्न (आव० परि नि० गा० ७६ आव० दीपिका भा० २ पत्र, ७०, २)।

वेडुज्ज, **वेडुरिअ** देखो **वेरुलिअ** (हे २, १३३; पाअ; नाट—मृच्छ १३९)।

वेड्ड वि [दे] गर्वित, अभिमानी (दे ७, ४१)।

वेड्ढ देखो **वेढ** = वेष्ट्। वेड्ढइ (प्राप्र)।

वेड्ढय पुं [वेष्टक] छन्द-विशेष (अजि ९)।

वेढ सक [वेष्ट्] लपेटना। वेढइ, वेढेइ (हे ४, २२१; उवा)। कर्म. वेढिज्जइ (हे ४, २२१)। वकृ. **वेढंत, वेढेमाण** (पउम ४९, २१; णाया १, ६)। कवकृ. **वेढिज्ज-माण** (सुपा ६४)। संकृ. **वेढित्ता, वढेत्ता, वेढिउं, वेढेउं** (पि ३०४; महा)। प्रयो. वेढावेइ (पि ३०४)।

वेढ पुं [वेष्ट] १ छन्द-विशेष (सम १०६; अणु २३३; णंदि २०९)। २ वेष्टन, लपेटन (गा ६६; २२१; से ६; १३)। ३ एक वस्तु-विषयक वाक्य-समूह, वर्णन-ग्रन्थ (णाया १, १६—पत्र २१८; १, १७—पत्र २२८; अनु)।

°**वेढ** देखो **पीढ** (गउड)।

वेढण न [वेष्टन] लपेटना (से १, ६०; ६, ४३; १२, ६५; गा ५६३; धर्मसं ४९७)।

वेढिअ वि [वेष्टित] लपेटा हुआ (उव; पाअ; सुर २, २३८)।

वेढिम वि [वेष्टिम] १ वेष्टन से बना हुआ (पण्ह २, ५—पत्र १५०; णाया १, १२—पत्र १७८; ओप)। २ पुंस्त्री. खाद्य-विशेष (पण्ह २, ५—पत्र १४८; राज)।

वेण पुं [दे] नदी का विषम घाट (दे ७, ७४)।

वेण (अप) देखो वयण = वचन (हे ४, ३२६)।

वेणइअ न [वैनयिक] १ विनय, नम्रता (ठा ५, २—पत्र ३३१; दस ६, १, १२; सट्ठि १०६ टी)। २ मिथ्यात्व-विशेष, सभी देवों और धर्मों को सत्य मानना (संबोध ५२)। ३ वि. विनय-संबन्धी (सम १०६; भग)। ४ विनय को ही प्रधान माननेवाला, विनय-वादी (सूअ १, ६, २७)। °वाद पुं [°वाद] विनय को ही मुख्य माननेवाला दर्शन (धर्मसं ६६५)।

वेणइगी } **वेणइया** } स्त्री [वैनयिकी] विनय से प्राप्त होनेवाली बुद्धि (उप पृ ३४०; णाया १, १—पत्र ११)।

वेणइया स्त्री [वैणकिया] लिपि-विशेष (सम ३५; पण्ण १—पत्र ६२)।

वेणा स्त्री [वेणा] महर्षि स्थूलभद्र की एक भगिनी (कप्प; पडि)।

वेणि स्त्री [वेणी] १ एक प्रकार की केश-रचना, बालों की गूथी हुई चोटी (उवा)। २ वाद्य-विशेष (सण)। ३ गंगा और यमुना का संगम-स्थान (राज)। °वच्छराय पुं [°वत्सराज] एक राजा (कुप्र ४४०)।

वेणिअ न [दे] वचनीय, लोकापवाद (दे ७, ७५; पड्)।

वेणी स्त्री [वेणी] देखो **वेणि** (से १, ३६; गा २७३; कप्पू)।

वेणु पुं [वेणु] १ वंश, बाँस (पाअ; कुमा; षड्)। २ एक राजा (कुमा)। ३ वाद्य-विशेष, बंसी (हे १, २०३)। °दालि पुं [°दालि] एक इन्द्र, सुपर्णकुमार देवों का उत्तरदिशा का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८४; इक)। °देव पुं [°देव] १ सुपर्णकुमार-नामक देव-जाति का दक्षिण दिशा का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८४)। २ देव-विशेष (ठा २, ३—पत्र ६७; ७६)। ३ गरुड पक्षी (सूअ १, ६, २१)। °याणुजाय पुं [°कालुजात] गणितशास्त्र-प्रसिद्ध दस योगों में द्वितीय योग, जिसमें चन्द्र, सूर्य और नक्षत्र वंशाकार से अवस्थान करते हैं (सुज्ज १२—पत्र २३३)।

वेणुणास } **वेणुसाअ** } पुं [दे] भ्रमर, भौंरा (दे ७, ७८; षड्)।

वेण्ण वि [दे] आक्रान्त (षड्)।

वेण्णा स्त्री [वेन्ना] नदी-विशेष। °यड न [°तट] नगर-विशेष (पउम ४८, ६३; महा)।

वेण्हु देखो **विण्हु** (संक्षि ३; प्राकृ ५)।

वेताली स्त्री [दे] १ तट, किनारा; 'जन्नं नावा पुव्ववेतालीउ दाहिणवेतालिं जलपहेणं गच्छति' (पण्ण १६—पत्र ४८०)। २ गली (आव० वृ० पत्र ३५५)।

वेत्त न [दे] स्वच्छ वस्त्र (दे ७, ७५)।

वेत्त पुं [वेत्र] वृक्ष-विशेष, बेंत का गाछ (पण्ण १—पत्र ३३; विपा १, ६—पत्र ६६)। °ासण न [°ासन] बेंत का बना हुआ आसन (पउम ६६, १४)।

वेत्तव्व वि [वेत्तव्य] जानने योग्य (प्राप्र)।

वेत्तिअ पुं [वैत्रिक] द्वारपाल, चपरासी (सुपा ७३)।

वेद देखो **वेअ** = वेदय्। वेदेइ, वेदंति, वेदेंति (भग; सूअ १, ७, ४; ठा २, ४—पत्र १००), वेदेज्ज (धर्मसं १६६)। भूका. वेदेंसु (ठा २, ४; भग)। भवि. वेदिस्संति (ठा २, ४; भग)। कवकृ. वेदेज्जमाण (ठा १०—पत्र ४७२)।

वेद देखो **वेअ** = वेद (पण्ह १, २—पत्र ४०; धर्मसं ८६२)।

वेदंत देखो **वेअंत** (धर्मसं ८६३)।

वेदक } **वेदग** } देखो **वेअग** (पण्ह १, २—पत्र २८, धर्मसं १६६)।

वेदणा देखो **विअणा** (भग; स्वप्न ८०; नाट—मालवि १४)।

वेदब्भी स्त्री [वैदर्भी] प्रद्युम्न कुमार की एक स्त्री का नाम (अंत १४)।

वेदस (शौ) देखो **वेडिस** (प्राकृ ८३; नाट शकु ६८)।

वेदि देखो **वेइ** = वेदि (पउम ११, ७३)।

वेदग पुं [वादक] एक इभ्य मनुष्य-जाति,

'अंबट्ठा य कलंदा य
वेदेहा वेदिगातिता (? इया)।
हरिता चुंचुणा चेव
छप्पेता इब्भजाइओ ॥'
(ठा ६—पत्र ३५८)।

वेदिय देखो **वेइअ** = वेदित (भग)।

वेदिस न [वैदिश] विदिशा की तरफ का नगर (अणु १४६)।

वेदुलिय देखो **वेरुलिअ** (चंड)।

वेदूणा स्त्री [दे] लज्जा, शरम (दे ७, ६५)।

वेदेसिय देखो **वइदेसिअ** (राज)।

वेदेह पुं [वैदेह] एक इभ्य मनुष्य-जाति (ठा ६—पत्र ३५८)। देखो **वइदेह**।

वेदेहि पुं [विदेहिन्] विदेह देश का राजा (उत्त ६, ६२)।

वेधम्म देखो **वइधम्म** (धर्मसं १८५)।

वेधव्व देखो **वेहव्व** (मोह ६६)।

वेन्ना देखो **वेण्णा** (उप पृ ११५)।

वेप्प वि [दे] भूत आदि से गृहीत, पागल (दे ७, ७४)।

वेप्पुअ न [दे] १ शिशुपन, बचपन। २ त्रि. भूत-गृहीत, भूताविष्ट (दे ७, ७६)।

वेफल्ल न [वैफल्य] निष्फलता (विसे ४१६; धर्मसं २२; अज्झ १३३)।

वेब्भल वि [विह्वल] व्याकुल (प्राप्र)।

वेब्भार } **वेभार** } पुं [वैभार] पर्वत-विशेष, राजगृही के समीप का एक पहाड़ (णाया १, १—पत्र ३३; सिरि ४)।

वेम देखो **वेमय**। वेमइ (प्राकृ ७४)।

वेम पुं [वेमन्] तन्तुवाय का एक उपकरण (विसे २१००)।

वेमइअ वि [भग्न] भाँगा हुआ (कुमा ६, ६८)।

वेमणस्स न [वैमनस्य] १ मनमुटाव, भीतरी द्वेष (उव)। २ दैन्य, दीनता (पण्ह १, १—पत्र ५)।

वेमय सक [भञ्ज्] भाँगना, तोड़ना। वेमयइ (हे ४, १०६; षड्)।

वेमाउअ } वि [वैमातृक] विमाता की **वेमाउग** } संतान (सम्मत्त १७१; मोह ८८)।

वेमाणि पंस्त्री [विमानिन्] विमान-वासी देवता, एक उत्तम देव-जाति (दं २)। स्त्री. °णिणी (पराग १७—पत्र ५००; पंचा २, १८)।

वेमाणिअ पुं [वैमानिक] एक उत्तम देव-जाति, विमानवासी देवता (भग; औप; पराह १, ५—पत्र ६३; जी २४)।

वेमाया स्त्री [विमात्रा] अनियत परिमाण (भग १, १० टी)।

वेम्मि क्रि [वच्मि] मैं कहता हूँ (चंड)।

वेयंड पुं [वेतण्ड] हस्ती, हाथी (स ६३०; ७३५)। देखो **वेंड**।

वेयावच्च } न [वैयावृत्त्य, वैयापृत्य] **वेयावडिय** } सेवा, शुश्रूषा (उव; कस; गाया १, ५; औप; ओघभा ३२१; आचा; गाया १, १—पत्र ७५; धर्मसं ६६५, श्रु ५३)।

वेर न [वैर] दुश्मनाई, शत्रुता (दे १, १५२; अंत १२; प्रासू १२३)।

वेर न [द्वार] दरवाजा (षड्)।

वेरग्ग न [वैराग्य] विरागता, उदासीनता (उव; रयण ३०; सुपा १७३; प्रासू ११६)।

वेरग्गिअ वि [वैराग्यिक] वैराग्य-युक्त, विरागी (उव; स १३५)।

वेरज्ज न [वैराज्य] १ वैरि-राज्य, विरुद्ध राज्य (सुख २, ३५; कस)। २ जहाँ पर राजा विद्यमान न हो वह राज्य। ३ जहाँ पर प्रधान आदि राजा से विरक्त रहते हों वह राज्य (कस; बृह १)।

वेरत्तिय वि [वैरात्रिक] रात्रि के तृतीय पहर का समय (उत्त २६, २०; ओघ ६६२)।

वेरमण न [विरमण] विराम, निवृत्ति (सम १०; भग; उवा)।

वेराड पुं [वैराट] भारतीय देश-विशेष, अलवर तथा उसके चारों ओर का प्रदेश (भवि)।

वेराय (अप) पुं [विराग] वैराग्य, उदासीनता (भवि)।

वेरि } देखो **वइरि** (गउड; कुमा; पि **वेरिअ** } ६१)।

वेरिज्ज वि [दे] १ असहाय, एकाकी। २ न. सहायता, मदद (दे ७, ७६)।

वेरुलिअ पुंन [वैडूर्य] १ रत्न की एक जाति, 'सुचिरं पि अच्छमाणो वेरुलिओ कायमणीअ उम्मीसो' (प्रासू ३२; पाअ), 'वेरुलिअं' (हे २, १३३, कुमा)। २ विमानावास-विशेष (देवेन्द्र १३२)। ३ शक्र आदि इन्द्रों का एक आभाव्य विमान (देवेन्द्र २६३)। ४ महाहिमवंत पर्वत का एक शिखर (ठा २, ३—पत्र ७०; ठा ८—पत्र ४३६)। ५ रुचक पर्वत का एक शिखर (ठा ८—पत्र ४३६)। ६ वि. वैडूर्य रत्नवाला (जीव ३, ४; राय)। °मय वि [°मय] वैडूर्य रत्नों का बना हुआ (पि ७०)।

वेरोयण देखो **वइरोअण** = वैरोचन (गाया २, १—पत्र २४७)।

वेल न [दे] दन्त-मांस, दाँत के मूल का मांस (दे ७, ७४)।

वेलंधर पुं [वेलन्धर] एक देव-जाति, नागराज-विशेष (सम ३३)। २ पर्वत-विशेष। ३ न. नगर-विशेष (पउम ५४, ३६)।

वेलंधर पुं [वैलन्धर] वेलन्धर-संबन्धी (पउम ५५, १७)।

वेलंब पुं [वेलम्ब] १ वायुकुमार नामक देवों के दक्षिण दिशा का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५; इक)। २ पाताल-कलश का अधिष्ठाता देव-विशेष (ठा ४, १—पत्र १६८; ४, २—पत्र २२६)।

वेलंब पुं [दे. विडम्ब] १ विडम्बना (दे ७, ७५; गउड)। २ वि. विडम्बना-कारक (पराह २, २—पत्र ११४)।

वेलंबग पुं [विडम्बक] १ विदूषक, मसखरा (औप; गाया १, १ टी—पत्र २; कप्प)। २ वि. विडम्बना करनेवाला (पुप्फ २२६)।

वेलक्ख न [वैलक्ष्य] लज्जा, शरम (गउड)।

वेलणय न [दे. व्रीडनक] १ लज्जा, शरम (दे ७, ६५ टी) २ पुं. साहित्य-प्रसिद्ध रस-विशेष, लज्जा-जनक वस्तु के दर्शन आदि से उत्पन्न होनेवाला एक रस (अणु १३५)।

वेलव सक [उपा + लभ्] १ उपालम्भ देना, उलाहना देना। २ कँपाना। ३ व्याकुल करना। ४ व्यावृत्त करना, हटाना। वेलवइ (हे ४, १५६; षड्)। वकृ. **वेलवंत** (से २, ८)। कवकृ. **वेलविज्जंत** (से १०, ६८)। कृ. **वेलवणिज्ज** (कुमा)।

वेलव सक [वञ्च्] १ ठगना २ पीड़ा करना। वेलवइ (हे ४, ६३)। कर्म. वेलविज्जंति (सुपा ४८२; गउड)।

वेलविअ वि [वञ्चित] १ प्रतारित, ठगा हुआ (पाअ; वज्जा १५२; विवे ७७; वे २६)। २ पीड़ित, हैरान किया हुआ (स्वा ११)।

वेला स्त्री [दे] दन्त-मांस, दाँत के मूल का मांस (दे ७, ७४)।

वेला स्त्री [वेला] १ समय, अवसर, काल (पाअ; कप्पू)। २ ज्वार, समुद्र के पानी की वृद्धि (पराह १, ३—पत्र ५५)। ३ समुद्र का किनारा (से १, ६२; औप; गउड)। ४ मर्यादा (सूअ १, ६, २६)। ५ वार, दफा (पंचा १२, २६)। °उल न [°कुल] बन्दर, जहाजों के ठहरने का स्थान (सुर १३, ३०; उप ५६७ टी)। °वासि पुं [°वासिन्] समुद्र-तट के समीप रहनेवाला वानप्रस्थ (औप)।

वेलाइअ वि [दे] मृदु, कोमल। २ दीन, गरीब (दे ७, ६६)।

वेलाव (अप) सक [वि + लम्बय्] देरी करना, विलम्ब करना। वेलावसि (पिंग)।

वेलिल्ल वि [वेलावत्] वेला-युक्त (कुमा)।

वेली स्त्री [दे] १ लता-विशेष, निद्राकरी लता (दे ७, ३४)। २ घर के चार कोणों में रखा जाता छोटा स्तम्भ (पव १३३)।

वेलु देखो **वेणु** (हे १, ४; २०३)।

वेलु पुं [दे] १ चोर, तस्कर। २ मुसल (दे ७, ६४)।

वेलुंक वि [दे] विरूप, खराब, कुत्सित (दे ७, ६३)।

वेलुग } पुंन [वेणुक] १ बेल का गाछ। २ **वेलुय** } बेल का फल (आचा २, १, ८, १४)। ३ वंश, बांस; 'वेलुयाणि तणाणि य' (पराण १—पत्र ४३; पि २४३)। ४

बांसकरिला, वनस्पति-विशेष (दस ५, २, २१)।

वेलुरिअ } देखो **वेरुलिअ** (प्राप्र; पि २४१;
वेलुलिअ } दे ७, ७७)।

वेलूणा स्त्री [दे] लज्जा, लाज (दे ७, ६५)।

वेल्ल अक [वेल्ल्] १ कांपना। २ लेटना। ३ सक. कंपाना। ४ प्रेरना। वेल्लइ (पि १०७)। वेल्लंति (गउड)। वकृ. **वेल्लंत, वेल्लमाण** (गउड; हे १, ६६; पि १०७)।

वेल्ल अक [रम्] क्रीड़ा करना। वेल्लइ (हे ४, १६८)। क. **वेल्लणिज्ज** (कुमा ७, १४)।

वेल्ल पुं [दे] १ केश, बाल। २ पल्लव। ३ विलास (दे ७, ६४)। ४ मदन-वेदना, काम-पीड़ा। ५ वि. अविदग्ध, मूर्ख (संक्षि ४७)। ६ न. देखो **वेल्लग** (सुपा २७६)।

वेल्लइअ देखो **वेल्लाइअ** (षड्)।

वेल्लग न [दे] १ एक तरह की गाड़ी, जो ऊपर से ढकी हुई होती है, गुजराती में 'वेल'। २ गाड़ी के ऊपर का तला (श्रा १२)।

वेल्लण न [वेल्लन] प्रेरणा (गउड)।

वेल्लय देखो **वेल्लग** (सुपा २८१; २८२)।

वेल्लरिअ पुं [दे] केश, बाल (षड्)।

वेल्लरिआ स्त्री [दे] वल्ली, लता (षड्)।

वेल्लरी स्त्री [दे] वेश्या, वारांगना (दे ७, ७६; षड्)।

वेल्लविअ देखो **वेल्लिअ** (से १, २६)।

वेल्लविअ वि [दे] विलिप्त, पोता हुआ (से १, २६)।

वेल्लहल } वि [दे] १ कोमल, मृदु (दे ७,
वेल्लहल्ल } ९६; षड्; गउड; सुपा ५६२; स ७०४)। २ विलासी (दे ७, ९६; षड्; सुपा ५२)। ३ सुन्दर (गा ५९८)।

वेल्ला स्त्री [दे. वल्ली] लता, वल्ली (दे ७, ९४)।

वेल्लालअ वि [दे] संकुचित, सकुचा हुआ (दे ७, ७९)।

वेल्लि देखो **वल्लि** (उव; कुमा)।

वेल्लिअ वि [वेल्लित] १ कँपाया हुआ (से ७, ५१)। २ प्रेरित (से ६, ६५)।

वेल्लिर वि [वेल्लितृ] काँपनेवाला (गउड)।

वेल्ली देखो **वल्लि** (गा ८०२; गउड)।

वेव अक [वेप्] काँपना। वेवइ (हे ४, १४७; कुमा; षड)। वकृ. **वेवंत, वेवमाण** (रंभा; कप्प; कुमा)।

वेवज्झ न [वैवाह्य] विवाह, शादी (राज)।

वेवण्ण न [वैवर्ण्य] फीकापन (कुमा)।

वेवय पुंन [वेपक] रोग-विशेष, कम्प (आचा)।

वेवाइअ वि [दे] उल्लसित, उल्लास-प्राप्त (दे ७, ७९)।

वेवाहिअ वि [वैवाहिक] संबन्धी, विवाह-संबन्धवाला (सुपा ४९६; कुप्र १७७)।

वेविअ वि [वेपित] १ कम्पित (गा ३६२; पाम्र)। २ पुं. एक नरक-स्थान (देवेन्द्र २७)।

वेविर वि [वेपितृ] काँपनेवाला (कुमा; हे २, १४५; ३, १३५)।

वेव्व अ [दे] आमन्त्रण-सूचक अव्यय (हे २, १९४; कुमा)।

वेव्व अ [दे] इन अर्थों का सूचक अव्यय— १ भय, डर। २ वारण, रुकावट। ३ विषाद, खेद। ४ आमन्त्रण (हे २, १९३; १९४; कुमा)।

वेस पुं [वेष] शरीर पर वस्त्र आदि की सजावट (कप्प; स्वप्न ५२; सुपा ३८६; ३८७; गउड; कुमा)।

वेस वि [द्वेष्य] विशेष रूप से वांछनीय (वव ३)।

वेस पुं [वेष] १ विरोध, वैर। २ घृणा, अप्रीति (गउड; भवि)।

वेस वि [वेष्य] वेषोचित, वेष के योग्य (भग २, ५—पत्र १३७; सुज्ज २०—पत्र २९१)।

वेस वि [द्वेष्य] १ द्वेष करने योग्य, अप्रीतिकर (पउम ८८, १६; गा १२६; सुर २, २०८; दे १, ४१)। २ विरोधी, शत्रु, दुश्मन (सुपा १५२; उप ७६८ टी)।

वेस देखो **वइस्स** = वैश्य (भवि)।

वेसइअ वि [वैषयिक] विषय से संबन्ध रखनेवाला (पि ६१)।

वेसंपायण देखो **वइसंपायण** (हे १, १५२; षड्)।

वेसंभ पुं [विश्रम्भ] विश्वास (पउम २८, ५४)।

वेसंभरा स्त्री [दे] गृहगोधा, छिपकली (दे ७, ७७)।

वेसक्खिज्ज न [दे] द्वेष्यत्व, विरोध, दुश्मनाई (दे ७, ७९)।

वेसण न [दे] वचनीय, लोकापवाद (दे ७, ७५)।

वेसण न [वेषण] जीरा आदि मसाला (पिंड ५४)।

वेसण न [वेसन] चना आदि द्विदल—दाल का आटा, बेसन (पिंड २५६)।

वेसमण पुं [वैश्रमण] १ यक्षराज, कुबेर (पाम्र; णाया १, १—पत्र ३९; सुपा १२८)। २ इन्द्र का उत्तर दिशा का लोकपाल (सम ८६; भग ३, ७—पत्र १९९)। ३ एक विद्याधर-नरेश (पउम ७, ९९)। ४ एक राजकुमार (विपा २, ३)। ५ एक शेठ का नाम (सुपा १२८; ६२७)। ६ अहोरात्र का चौदहवाँ मुहूर्त (सुज्ज १०, १३; सम ५१)। ७ एक देव-विमान (देवेन्द्र १४४)। ८ क्षुद्र हिमवान् आदि पर्वतों के शिखरों का नाम (ठा २, ३—पत्र ७०; ८०; ८—पत्र ४३६; ९—पत्र ४५४)। °**काइय** पुं [°कायिक] वैश्रमण की आज्ञा में रहनेवाली एक देव-जाति (भग ३, ७—पत्र १९९)। °**दत्त** पुं [°दत्त] एक राजा का नाम (विपा १, ९—पत्र ८८)। °**देवकाइय** पुं [°देवकायिक] वैश्रमण के अधीनस्थ एक देव-जाति (भग ३, ७—पत्र १९९)। °**प्पभ** पुं [°प्रभ] वैश्रमण के उत्पात-पर्वत का नाम (ठा १०—पत्र ४८२)। °**भद्द** पुं [°भद्र] एक जैन मुनि (विपा २, ३)।

वेसम्म न [वैषम्य] विषमता, असमानता (अज्झ ५; पव २१६ टी)।

वेसर पुंस्त्री [वेसर] १ पक्षि-विशेष (पण्ह १, १—पत्र ८)। २ अश्वतर, खच्चर। स्त्री °**री** (सुर ८, १९)।

वेसलग पुं [वृषल] शूद्र, अधम-जातीय मनुष्य (सूअ २, २, ५४)।

वेसवण पुं [वैश्रवण] देखो **वेसमण** (हे १, १५२; चंड; देवेन्द्र २७०)।

वेसवाडिय पुं [वेशवाटिक] एक जैन मुनि-गण (कप्प)।

वेसवार पुं [वेसवार] धनिया आदि मसाला (कुप्र ६८)।

वेसा देखो **वेस्सा** (कुमा; सुर ३, ११६, सुपा २३५)।

वेसाणिय पुं [वैषाणिक] १ एक अन्तर्द्वीप। २ अन्तर्द्वीप विशेष में रहनेवाली मनुष्य-जाति (ठा ४, २—पत्र २२५)।

वेसानर देखो **वइसानर** (सट्ठि ६ टी)।

वेसायण देखो **वेसियायण** (राज)।

वेसालिअ वि [वैशालिक] १ समुद्र में उत्पन्न। २ विशालाख्य जाति में उत्पन्न। ३ विशाल, बड़ा, विस्तीर्ण; 'मच्छा वेसालिया चेव' (सूअ १, १, ३, २)। ४ पुं. भगवान् ऋषभदेव (सूअ १, २, ३, २२)। ५ भगवान् महावीर (सूअ १, २, ३, २२; भग)।

वेसाली स्त्री [वैशाली] एक नगरी का नाम (कप्प; ३३०)।

वेसास देखो **वीसास**; 'को किर वेसासु वेसासो' (धर्मवि ६५)।

वेसासिअ वि [वैश्वासिक, विश्वास्य] विश्वास-योग्य, विश्वसनीय, विश्वास-पात्र (ठा ५, ३—पत्र ३४२; विपा १, १—पत्र १५; कप्प; औप; तंदु ३५)।

वेसाह देखो **वइसाह** (पाअ; वव १)।

वेसाही स्त्री [वैशाखी] १ वैशाख मास की पूर्णिमा। २ वैशाख मास की अमावस (इक)।

वेसि वि [द्वेषिन्] द्वेष करनेवाला (पउम ८, १८७; सुर ६, ११५)।

वेसिअ देखो **वइसिअ** (दे १, १५२)।

वेसिअ पुंस्त्री [वैशिक] १ वैश्य, वणिक् (सूअ १, ६, २)। २ न. जैनेतर शास्त्र-विशेष, काम-शास्त्र (अणु ३६; राज)।

वेसिअ वि [वैषिक] वेष-प्राप्त, वेष-संबन्धी (सूअ २, १, ५६; आचा २, १, ४, ३)।

वेसिअ वि [व्येषित] १ विशेष रूप से अभिलषित। २ विविध प्रकार से अभिलषित (भग ७, १—पत्र २६३)।

वेसिट्ठ देखो **वइसिट्ठ** (धर्मसं २७१)।

वेसिणी स्त्री [दे] वेश्या, गणिका (गा ४७४)।

वेसिया देखो **वेस्सा**; 'कामासत्तो न मुणइ गम्मागम्मंपि वेसियाणुव्व' (भत्त ११३; ठा ४, ४—पत्र २७१)।

वेसियायण पुं [वैश्यायन] एक बाल तापस (भग १५—पत्र ६६५; ६६६)।

वेसी स्त्री [वैश्या] वैश्य जाति की स्त्री (सुख ३, ४)।

वेसुम पुं [वेश्मन्] गृह, घर (प्राकृ २८)।

वेस्स देखो **वइस्स** = वैश्य (सूअ १, ६, २)।

वेस्स देखो **वेस** = द्वेष्य (उत्त १३, १८)।

वेस्स देखो **वेस** = वेष्य (राज)।

वेस्सा स्त्री [वेश्या] १ पण्यांगना, गणिका (विसे १०३०; गा १५६; ८९०)। २ ओषधि-विशेष; पाढ़ का गाछ (प्राकृ २६)।

वेस्सासिअ देखो **वेसासिअ** (भग)।

वेह सक [प्र + ईक्ष्] देखना, अवलोकन करना; 'जहा संगामकालंसि पिट्ठतो भीरु वेहइ' (सूअ १, ३, ३, १)।

वेह सक [व्यध्] बींधना, छेदना। वेहइ (पि ४८९)।

वेह पुं [वेध] १ वेधन, छेद (सम १२५; वज्जा १४२)। २ अनुबोध, अनुगम, मिश्रण। ३ द्यूत-विशेष, एक तरह का जुआ (सूअ १, ६, १७)। ४ अनुशय, अत्यन्त द्वेष (पण्ह १, ३—पत्र ४२)।

वेह पुं [वेधस्] विधि, विधाता (सुर ११, ५)।

वेहण न [वेधन] वेधन, छेद करना (राय १४६; धर्मवि ७१)।

वेहम्म देखो **वइधम्म** (उप १०३१ टी; धर्मसं १८५ टी)।

वेहल्ल पुं [विहल्ल] राजा श्रेणिक का एक पुत्र (अनु १, २; निर १, १)।

वेहव सक [वञ्च्] ठगना। वेहवइ (हे ४, ९३; षड्)।

वेहव न [वैभव] विभूति, ऐश्वर्य (भवि)।

वेहविअ पुं [दे] १ अनादर, तिरस्कार। २ वि. क्रोधी (दे ७, ९६)।

वेहविअ वि [वञ्चित] प्रतारित (दे ७, ९६ टी)।

वेहव्व न [वैधव्य] १ विधवापन, रँड़ापा, राँड़पन (गा ६३०; हे १, १४८; गउड; सुपा १३६)।

वेहाणस देखो **वेहायस** (आचा २, १०, २; ठा २, ४—पत्र ९३; सम ३३; णाया १, १६—पत्र २०२; भग)।

वेहाणसिय वि [वैहायसिक] फाँसी आदि से लटक कर मरनेवाला (औप)।

वेहायस वि [वैहायस] १ आकाश-सम्बन्धी, आकाश में होनेवाला। २ न. मरण-विशेष, फाँसी लगा कर मरना (पव १५७)। ३ पुं. राजा श्रेणिक का एक पुत्र (अनु)।

वेहारिय वि [वैहारिक] विहार-सम्बन्धी, विहार-प्रवण (सुख २, ४५)।

वेहास न [विहायस्] १ आकाश, गगन (णाया १, ८—पत्र १३४)। अन्तराल, बीच भाग (सूअ १, २, १, ८)।

वेहास देखो **वेहायस** (पव १५७; अनु १)।

वेहिम वि [वैधिक, वेध्य] तोड़ने योग्य, दो टुकड़े करने योग्य (दस ७, ३२)।

वेउंठ देखो **वेकुंठ** (समु १५०)।

वेंभव देखो **वेहव** (त्रि १०३)।

वोअस देखो **वोक्कस**। कवकृ. **वोयसिज्जमाण** (भग)।

वोइय वि [व्यपेत] वर्जित, रहित (भवि)।

वोंट देखो **विंट** = वृन्त (हे १, १३९)।

वोकिल्ल वि [दे] गृह-शूर, घर में वीर बनने-वाला, झूठा शूर (दे ७, ८०)।

वोक्किल्लिअ न [दे] रोमन्थ, चबी हुई चीज को पुनः चबाना (दे ७, ८२)।

वोक्क सक [वि + ज्ञपय्] विज्ञप्ति करना। वोक्कइ (हे ४, ३८)। वकृ. **वोक्कंत** (कुमा)।

वोक्क सक [व्या + हृ, उद् + नद्] पुकारना, आह्वान करना। वोक्कइ (षड्; प्राकृ ७४)।

वोक्क सक [उद् + नट्] अभिनय करना। वोक्कइ (प्राकृ ७४)।

वोक्कंत वि [व्युत्क्रान्त] १ विपरीत क्रम से स्थित (हे १, ११६)। २ अतिक्रान्त; 'पज्जवनयवोक्कंतं तं वत्थुं दव्वट्ठिअस्स वयणिज्जं' (सम्म ८)। देखो वुक्कंत।

वोक्कस सक [व्यप + कृष्] ह्रास प्राप्त करना, कमी करना। कवकृ. **वोक्कसिज्जमाण** (भग ५, ६—पत्र २२८)।

वोक्कस देखो वोक्कस (सूत्र १, ९, २)।

वोक्कस देखो वुक्कस = व्युत् + कृष्। वोक्कसाहि (आचा २, २, १, १४)।

वोक्का स्त्री [दे] वाद्य-विशेष; 'डक्कावोक्काए रवो वियंभिओ रायपंगणए' (सुपा २४२)। देखो वुक्का।

वोक्का स्त्री [व्याहृति] पुकार (उप ७६८ टी)।

वोक्कार देखो बोक्कार (सुर १, २४६)।

वोक्ख देखो वोक्क = उद् + नद्। वोक्खइ (धात्वा १५४)।

वोक्खंद पुं [अवस्कन्द] आक्रमण (महा)।

वोक्खारिय वि [दे] विभूषित; 'पवरदेवंगवत्थवोक्खारियकणयखंभं' (स २३६)।

वोगड वि [व्याकृत] १ कहा हुआ, प्रतिपादित (सूत्र २, ७, ३८; भग; कस)। २ परिस्फुट (आचानि २९२)।

वोगडा स्त्री [व्याकृता] प्रकट अर्थ वाली भाषा (पराण ११—पत्र ३७४)।

वोगसिअ वि [व्युत्क्षिप्त] निष्कासित, बाहर निकाला हुआ (तंदु २)।

वोच्च } सक [वद्] बोलना, कहना। वोचइ,
वोच्च } वोच्चइ (धात्वा १५४)।

वोच्चत्थ वि [व्यत्यस्त] विपरीत, उल्टा; 'हियनिस्सेस (?यस)बुद्धिवोच्चत्थे' (उत्त ८, ५; सुख ८, ५; विसे ८५३)।

वोच्चत्थ न [दे] विपरीत रत (दे ७, ५८)।

वोच्छ° देखो वय = वच्।

वोच्छिंद सक [व्युत्, व्यव + छिद्] १ भाँगना, तोड़ना, खण्डित करना। २ विनाश करना। ३ परित्याग करना। वोच्छिंदइ (उत्त २९, २)। भवि वोच्छिंदिहिंति (पि ५३२)। कर्म. वुच्छिज्जं, वोच्छिज्जइ, वोच्छिजए (कम्म २, ७; पि ५४६; काल)। भवि. वोच्छिज्जिहिति (पि ५४९)। वकृ. वोच्छिंदंत, **वोच्छिंदमाण** (से १५, ६२; ठा ६—पत्र ३५९)। कवकृ. वोच्छिज्जंत, वोच्छिज्जमाण (से ८, ५; ठा ३, १—पत्र ११६)।

वोच्छिण्ण देखो वोच्छिन्न (विपा १, २—पत्र २८)।

वोच्छित्ति स्त्री [व्यवच्छित्ति] विनाश; 'संसारवोच्छित्ती' (विसे १३३३)। °णय पुं [°नय] पर्याय-नय (गांदि)।

वोच्छिन्न देखो वुच्छिन्न (भग; कप्प; सुर ४, ६६)।

वोच्छेअ } पुं [व्युच्छेद, व्यवच्छेद]
वोच्छेद } १ उच्छेद, विनाश; 'संसारवोच्छेयकरे' (णाया १, १—पत्र ६०; धर्मसं २२८)। २ अभाव, व्यावृत्ति (कम्म ६, २३)। ३ प्रतिबन्ध, रुकावट, निरोध (उवा; पंचा १, १०)। ४ विभाग (गउड ७४०)।

वोच्छेयण न [व्युच्छेदन] १ विनाश (चेइय ५२४; पिंड ६६६)। २ परित्याग (ठा ६ टी—पत्र ३६०)।

वोज्ज देखो वुज्ज। वोज्जइ (हे ४, १९८ टी)।

वोज्ज सक [वीजय्] हवा करना। वोज्जइ (हे ४, ५; षड्)। वकृ **वोज्जंत** (कुमा)।

वोज्जिर वि [त्रसितृ] डरनेवाला (कुमा)।

वोज्झ देखो वह = वह्। भवि. 'तेणं कालेणं तेणं समएणं गंगासिंधूओ महानदीओ रहपहवित्थराओ अक्खसोयप्पमाणमेत्तं जणं वोज्झिहिंति' (भग ७, ६—पत्र ३०७)। कृ. 'नासानीसासवायवोज्झं...अंसुयं' (णाया १, १, १—पत्र २५; राय १०२; प्राप)।

वोज्झ } पुं [दे] बोझ, भार; 'असि-
वोज्झमल्ल } वोज्झं फलयवोज्झमल्लं च' (दे ७, ८०)।

वोज्झर वि [दे] १ अतीत। २ भीत, त्रस्त (दे ७, ६६)।

वोट्टि वि [दे] सक्त, लीन (षड्)।

वोड वि [दे] १ दुष्ट। छिन्न-कर्ण, जिसका कान कट गया हो वह (गा ५४९)। देखो बोड।

वोडही स्त्री [दे] १ तरुणी, युवति। २ कुमारी; 'सिक्खंतु वोडहीओ' (गा ३९२)। देखो वोद्रह।

वोड्ड वि [दे] मूर्ख; बेवकूफ (उव)।

वोढ वि [ऊढ] वहन किया हुआ (धात्वा १५४)।

वोढ वि [दे] देखो वोड (गा ५५० अ)।

वोढव्व देखो वह = वह्।

वोढु वि [वोढृ] वहन-कर्ता (महा)।

वोढुं देखो वह = वह्।

वोढूण अ [उढ्ढ्वा] वहन कर (पि ५८६)।

वोत्तव्व देखो वय = वच्।

वोत्तुआण अ [उक्त्वा] कह कर (षड्—पृ १५३)।

वोत्तुं } देखो वय = वच्।
वोत्तूण }

वोदाण न [व्यवदान] १ कर्म-निर्जरा, कर्मों का विनाश (ठा ३, ३—पत्र १५६; उत्त २९, १)। २ शुद्धि, विशेष रूप से कर्म-विशोधन (पंचा १५, ४; उत्त २९, १; भग)। ३ तप, तपश्चर्या (सूत्र १, १४; १७)। ४ वनस्पति-विशेष (पराण १—पत्र ३४)।

वोद्रह वि [दे] तरुण, युवा (दे ७, ८०); 'वोद्रहद्रहम्मि पडिआ' (हे २, ८०)। स्त्री. °ही; 'सिक्खंतुवोद्रहीओ' (हे २, ८०)।

वोभीसण वि [दे] वराक, दीन, गरीब (दे ७, ८२)।

वोम न [व्योमन्] आकाश, गगन (पाअ; विसे ६५६)। °बिन्दु पुं [°बिन्दु] एक राजा का नाम (पउम ७, ५३)।

वोमज्झ पुं [दे] अनुचित वेष (दे ७, ८०)।

वोमज्झिअ न [दे] अनुचित वेष का ग्रहण (दे ७, ८० टी)।

वोमिल पुं [व्योमिल] एक जैन मुनि (कप्प)।

वोमिला स्त्री [व्योमिला] एक जैन मुनि-शाखा (कप्प)।

वोय पुं [वोक] एक देश का नाम (पउम ९८, ६४)।

वोरच्छ वि [दे] तरुण, युवा (दे ७, ८०)।

वोरमण न [व्युपरमण] हिंसा, प्राणि-वध (पण्ह १, १—पत्र ५)।

वोरल्ली स्त्री [दे] १ श्रावण मास की शुक्ल चतुर्दशी तिथि में होनेवाला एक उत्सव। २ श्रावण मास की शुक्ल चतुर्दशी (दे ७, ८१)।

वोरविअ वि [व्यपरोपित] जो मार डाला गया हो वह; 'सक्कारित्ता जुयलं दिन्नं विइएण वोरविओ' (वव १)।

वोरुल्ली स्त्री [दे] रुई से भरा हुआ वस्त्र (पव ८४)।

वोल सक [गम्] १ गति करना, चलना। २ गुजारना, पसार करना। ३ अतिक्रमण करना, उल्लंघन करना। ४ अक. गुजरना, पसार होना। वोलइ (प्राकृ ७३; हे ४, १६२; महा; धर्मसं ७५४); 'कालं वोलेइ' (कुप्र २२४), वोलंति (वज्जा १४८; धर्मवि ५३)। वकृ. **वोलंत, वोलेंत** (कुमा; गा २१०; २२०; पउम ६, ५४; से १४, ७५; सुपा २२४; से ६, ६६)। संकृ. **वोलिऊण, वोलेत्ता** (महा; भाव)। कृ. **वोलेअव्व** (से २, १; स ३६३)। प्रयो., संकृ. **वोलाविउं, वोलावेउं** (सुपा १४०; गा ३४६ अ ?)। देखो **बोल** = व्यति + क्रम्।

वोल देखो **बोल** = दे (दे ६, ६०)।

वोलट्ट अक [व्युप + लुट्] छलकना। वकृ. **वोलट्टमाण** (भग)।

वोलाविअ वि [गमित] अतिक्रामित (वज्जा १४, सुपा ३३४; गा २१)।

वोलिअ } वि [गत] १ गया हुआ (प्राकृ
वोलीण } ७७)। २ गुजरा हुआ, जो पसार हुआ हो वह, व्यतीत (सुर ६, १९; महा; पव ३५; सुर ३, २५)। ३ अतिक्रान्त, उल्लंघित (पाअ; सुर २, १; कुप्र ४५; से १, ३; ४, ४८; गा ५७; २५२; ३४०; हे ४, २५८; कुमा; महा)।

वोल्ल सक [आ + क्रम्] आक्रमण करना। वोल्लइ (धात्वा १५४)।

वोल्लाह पुं [वोल्लाह] देश-विशेष (स ८१)।

वोल्लाह वि [वौल्लाह] देश-विशेष में उत्पन्न (स ८१)।

वोवाल पुं [दे] वृषभ, बैल (दे ७, ७९)।

वोसग्ग पुं [व्युत्सर्ग] परित्याग (विसे २६०५)।

वोसग्ग } अक [वि + कस्] १ विकसना,
वोसट्ट } खिलना। २ बढ़ना। वोसग्गइ, वोसट्टइ (षड्; हे ४, १९५; प्राकृ ७६)। वकृ. **वोसट्टमाण** (भग, गा ८२८)।

वोसट्ट सक [वि + कासय्] १ विकास करना। २ बढ़ाना। वोसट्टइ (धात्वा १५४)।

वोसट्ट वि [विकसित] विकास-प्राप्त (हे ४, २५८; प्राकृ ७७)।

वोसट्ट वि [दे] भर कर खाली किया हुआ (दे ७, ८१)।

वोसट्टिअ वि [विकसित] विकास-प्राप्त (कुमा)।

वोसट्ठ वि [व्युत्सृष्ट] १ परित्यक्त, छोड़ा हुआ (कप्प; कस; ओघ ६०५; उत्त ३५, १९; आचा २, ८, १; पंचा १८, ६)। २ परिष्कार-रहित, साफसूफ-वर्जित (सूअ १, १६, १)। ३ कायोत्सर्ग में स्थित (दस ५, १, ९१)।

वोसमिय वि [व्यवशमित] उपशमित, शान्त किया हुआ; 'खामिय वोसमियाइं अहिगरणाइं तु जे उदीरेंति। ते पावा नायव्वा' (ठा ६ टी—पत्र ३७१)।

वोसर } सक [व्युत् + सृज्] परित्याग
वोसिर } करना, छोड़ना। वोसरिमो, वोसिरइ, वोसिरामि (पव २३७; महा; भग; ओघ), वोसिरेज्जा, वोसिरे (पि २३५)। वकृ. **वोसिरंत** (कुप्र ८१)। संकृ. **वोसिज्ज, वोसिरित्ता** (सूअ १, ३, ३, ७; पि २३५)। कृ. **वोसिरियव्व** (पव ४६)।

वोसिर वि [व्युत्सर्जन] छोड़नेवाला (उप पृ २६८)।

वोसिरण न [व्युत्सर्जन] परित्याग (हे २, १७४; श्रा १२; श्रावक ३७९; ओघ ८५)।

वोसिरिअ देखो **वोसट्ठ** (पउम ४, ५२; धर्मसं १०५१; महा)।

वोसेअ वि [दे] उन्मुख-गत (दे ७, ८१)।

वोहित्त न [वहित्र] प्रवहण, जहाज, नौका (गा ७४६)। देखो **बोहित्थ**।

वोहार न [दे] जल-वहन (दे ७, ८१)।

व्वुड पुं [दे] विट, भड़ुआ (षड्)।

व्रंद देखो **वंद** = वृन्द (प्राप्र)।

व्रत्त (अप) देखो **वय** = व्रत (हे ४, ३९४)।

व्राक्रोस (अप) पुं [व्याक्रोश] १ शाप। २ निन्दा। ३ विरुद्ध चिन्तन (प्राकृ ११२)।

व्रागरण (अप) देखो **वागरण** (प्राकृ ११२)।

व्राडि (अप) पुं [व्याडि] संस्कृत व्याकरण और कोष का कर्ता एक मुनि (प्राकृ ११२)।

व्रास देखो **वास** = व्यास (हे ४, ३९९; प्राकृ ११२; षड्; कुमा)।

व्व देखो **इव** (हे २, १८२, कप्प; रंभा)।

व्व देखो **वा** = अ (प्राकृ २६)।

°व्वअ देखो **वय** = व्रत (कुमा)।

व्ववसिअ देखो **ववसिय** = व्यवसित (अभि १२४)।

°व्वाज देखो **वाय** = व्याज (मा २०)।

°व्वावार देखो **वावार** = व्यापार (मा ३६)।

°व्वावुड देखो **वावुड** (अभि २४९)।

°व्वाहि देखो **वाहि** (मा ४४)।

व्विव देखो **इव** (प्राकृ २६)।

व्वे अ [दे] संबोधन-सूचक अव्यय (प्राकृ ८०)।

॥ इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि वआराइसद्दसंकलणो
पंचतीसइमो तरंगो समत्तो ॥

श

शिआल (मा) पुं [श्याल] बहू का भाई, साला (प्राकृ १०२; मृच्छ २०४)।

श्चिट (मा) देखो चिट्ठ = स्था। श्चिटदि (धात्वा १५४; प्राकृ १०३)।

॥ इस सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि शआराइसद्दसंकलणो छत्तीसइमो तरंगो समत्तो ॥

स

स पुं [स] व्यञ्जन वर्ण-विशेष, इसका उच्चारण-स्थान दाँत होने से यह दन्त्य कहा जाता है (प्राप्र)। °अण, °गण पुं [°गण] पिंगल-प्रसिद्ध एक गण, जिसमें प्रथम के दो ह्रस्व और तीसरा गुरु अक्षर होता है (पिंग)। °गार° पुं [°कार] 'स' अक्षर (दर्सान १०, २)।

स देखो सं = सम् (षड्; पिंग)।

स पुं [श्वन्] श्वान, कुत्ता (हे १, ५२; ३, ५६; षड्)। °पाग पुं [°पाक] चण्डाल (उव)। °मुहि पुंस्त्री [°मुखि] कुत्ते की तरह आचरण, कुत्ते की तरह भषण—भूँकना (णाया १, ६—पत्र १६०)। °वच पुं [°पच] चाण्डाल (दे १, ६४)। °वाग, °वाय देखो °पाग (वै ५६; पाअ)।

स अ [स्वर्] सुरालय, स्वर्ग (विसे १८८३)।

स वि [सत्] १ श्रेष्ठ, उत्तम (उवा; कुमा; कुप्र १४१)। २ विद्यमान; 'नो य उप्पजए अ-सं' (सूअ १, १, १, १६)। °उरिस पुं [°पुरुष] श्रेष्ठ पुरुष, सज्जन (गउड)। °क्कय वि [°कृत] संमानित (पण्ह १, ४—पत्र ६८); देखो °किअ। °कह वि [°कथ] सत्य-वक्ता (सं ३२)। °किअ न [°कृत] सत्कार, संमान (उत्त १५, ५); देखो °कय। °ग्गइ स्त्री [°गति] उत्तम गति—१ स्वर्ग। २ मुक्ति, मोक्ष (भवि; राज)। °ज्जण पुं [°जन] भला आदमी, सत्पुरुष (उव; हे १, ११; प्रासू ७)। °त्तम वि [°त्तम] अतिशय साधु, सज्जनों में अतिश्रेष्ठ (सुपा ६५५; श्रा १४; सार्ध ३)। °त्थाम न [°स्थामन्] प्रशस्त बल (गउड)। °धम्मिअ वि [°धार्मिक] श्रेष्ठ धार्मिक (श्रा १२)। °न्नाण न [°ज्ञान] उत्तम ज्ञान (श्रा २७)। °प्पभ वि [°प्रभ] सुन्दर प्रभा वाला (राय)। °प्पुरिस पुं [°पुरुष] १ सज्जन, भला आदमी (अभि २०१; प्रासू १२)। २ किंपुरुष-निकाय के दक्षिण दिशा का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५)। ३ श्रीकृष्ण (कुप्र ४८)। °प्फल वि [°फल] श्रेष्ठ फलवाला (अच्चु ३१)। °ब्भाव पुं [°भाव] १ सम्भव, उत्पत्ति (उप ७२६)। २ सत्त्व, अस्तित्व (सम्म ३७; ३८; ३९)। ३ सुन्दर भाव, चित्त का अच्छा अभिप्राय; 'सब्भावो पुण उज्जुजणस्स कोडि विसेसेइ' (प्रासू ६; १७२; उव; हे २, १९७)। ४ भावार्थ, तात्पर्य (सुर ३, १०१)। ५ विद्यमान पदार्थ (अणु)। °ब्भावदायणा स्त्री [°भावदर्शन] आलोचना, प्रायश्चित्त के लिए निज दोष का गुर्वादि के समक्ष प्रकटीकरण (ओघ ७९१)। °ब्भाविअ वि [°भावित] सद्-भाव-युक्त (स २०१; ६९८)। °ब्भूअ वि [°भूत] १ सत्य, वास्तविक, सच्चा; 'सब्भूएहिं भावेहिं' (उवा)। २ विद्यमान (पंचा ४, २४)। °याचार पुं [°आचार] प्रशस्त आचरण (रयण १५)। °रूव वि [°रूप] प्रशस्त रूपवाला (पउम ८, ६)। °ल्लग पुं [°लग] प्रशस्त संवरण, इन्द्रिय-संयम (सूअ २, २, ५७)। °वाय पुं [°वाद] प्रशस्त वाद (सूअ २, ७, ५)। °वाया स्त्री [°वाच्] प्रशस्त वाणी (सूअ २, ७, ५)।

स पुं [स्व] १ आत्मा, खुद (उवा; कुमा; सुर २, २०९)। २ ज्ञाति, नात (हे २, ११४; षड्)। ३ वि. आत्मीय, स्वीय, निजी (उवा; ओघभा ६; कुमा; सुर ४, ६०)। ४ न. धन, द्रव्य (पंचा ८, ६; आचा २, १, १, ११)। ५ कर्म (आचा २, १६, ६)। °कडब्भि, °गडब्भि वि [°कृतभिद्] निज के किए हुए कर्मों का विनाशक (पि १९६; आचा १, ३, ४, १; ४)। °जण पुं [°जन] १ ज्ञाति, सगा। २ आत्मीय लोग (स्वप्न ६७; षड्)। °तंत वि [°तन्त्र] १ स्वाधीन, स्व-वश (विसे २११२; दे ३, ४३; अच्चु १)। २ न. स्वकीय सिद्धान्त (निचू ११)। °त्थ वि [°स्थ] १ तंदुरुस्त, स्वभाव-स्थित। २ सुख से अवस्थित (पाअ; पउम २६, ३१; स्वप्न १०६; सुर १०, १०४; सुपा २७९; महा; सण)। °पक्ख पुं [°पक्ष] १ सार्धमिक,

समान धर्मवाला (द्र १७)। २ तरफदार (कुप्र ११६)। ३ अपना पक्ष (सम्म २१)। °पाय न [°पात्र] निज का नाम, खुद की संज्ञा (राज)। °प्पभ वि [°प्रभ] निज से ही शोभनेवाला (सम १३७)। °ब्भाव, °भाव पुं [°भाव] प्रकृति, निसर्ग, 'कणियारतरू नवकणिणआरसुंदेरदरिअसब्भाओ' (कुमा ३, ४४; सम्म २१; सुर १, २७; ४, १२५);

'कुवियस्स आउरस्स य
वसणासत्तस्स आयरत्तस्स।
मत्तस्स मरंतस्स य
सब्भावा पायडा हुंति"
(प्रासू ६४)।

°भावन्नु वि [°भावज्ञ] स्वभाव का जानकार (पउम ८६, ४१)। °यण देखो °जण (उवा; हे २, ११४; सुर ४, ७६; प्रासू ७६; ६५)। °रूय, °रूव न [°रूप] स्वभाव (गउड; धर्मसं ६१३; कुमा; भवि; सुर २, १४२)। °संवेयण न [°संवेदन] स्वप्रत्यक्षज्ञान (धर्मसं ४४)। °हाअ, °हाव देखो °भाव (से ३, १५; ७, १७; गउड; सुर ३, २२; प्रासू २; १०३)। °हाववाद पुं [°भाववाद] स्वभाव से ही सब कुछ होता है ऐसा माननेवाला मत (उप १००३)। °हिअ न [°हित] १ निज का भला, स्वीय—अपनी भलाई। २ वि. निज का भला करनेवाला, स्वहितकर (सुपा ४१०)।

स° वि [स°] १ सहित, युक्त (सम १३७; भग; उवा; सुपा १६२; सण)। २ समान, तुल्य; 'सगुत्ते', 'सपक्खे' (कप्प, निर १, १)। °अण्ह वि [°तृष्ण] उत्कण्ठित, उत्सुक (से १२, ८८; गा ३४८; गउड; सुपा ३८४)। °अर वि [°कर] कर-सहित (से २, २६)। °अर वि [°गर] विष-युक्त, जहरीला (से २, २६)। °इण्ह देखो °अण्ह (सुपा ४१२)। °उण वि [°गुण] गुण-युक्त (सुपा १८५)। °उण्ण, °उन्न वि [°पुण्य] पुण्य-युक्त, पुण्य-शाली (महा; सुर २, ६८; सुपा ६३५)। °ओस वि [°तोष] सन्तुष्ट (उप ७२८ टी)। °ओस वि [°दोष] दोष-युक्त (उप ६२८ टी)। °काम वि [°काम] १ समृद्ध मनोरथवाला (स्वप्न ३०)। २ मनोरथ-युक्त, इच्छावाला (राज)। °कामणिज्जरा स्त्री [°कामनिर्जरा] कर्म-निर्जरा का एक भेद (राज)। °काममरण न [°काममरण] मरण-विशेष, पण्डित-मरण (उत्त ५, २)। °केय वि [°केत] १ गृहस्थ। २ प्रत्याख्यान-विशेष (पव ४)। °क्खर वि [°क्षर] विद्वान्, जानकार (वज्जा १५८; सम्मत्त १४३)। °गार वि [°गार] गृहस्थ (ओघभा २०)। °गार वि [°आकार] आकार-युक्त (धर्मवि ७२)। °गुण वि [°गुण] गुणवान्, गुणी (उव; सुपा ३४५; सुर ४, १६६)। °ग्ग वि [°ाग्र] श्रेष्ठ, उत्तम (से ६, ४७)। °ग्गह वि [°ग्रह] उपरक्त, ग्रहण-युक्त, दुष्ट ग्रह से आक्रान्त (पाअ; वव १)। °घिण वि [°घृण] दयालु (अच्चु ५०)। °चक्खु, °चक्खुअ वि [°चक्षुष्, °चक्षुष्क] नेत्रवाला, देखता (पउम ६७, २३; वसु; सं ७८; विपा १, १—पत्र ५)। °चित्त वि [°चित्त] चेतनावाला, सजीव (उवा; पडि)। °चेयण वि [°चेतन] वही अर्थ (विसे १७५३)। °च्चित्त देखो °चित्त (ओघ २२; सुपा ६२५; ६२६; पि १६६; ३५०)। °जिय देखो °ज्जीअ (सुर १२, २१०)। °जोइ वि [°ज्योतिष्] प्रकाश-युक्त (पि ४११; सूअ १, ५, १, ७)। °जोणिय वि [°योनिक] उत्पत्ति-स्थानवाला, संसारी (ठा २, १—पत्र ३८)। °ज्जीअ, °ज्जीव वि [°जीव] १ ज्या-युक्त, धनुष की डोरी-वाला। २ सचेतन, जीववाला (पि १६६; से १, ४५)। ३ न. कला-विशेष, मृत धातु वगैरह को सजीवन करने का ज्ञान (औप; राय; जं २ टी—पत्र १३७)। °ड्ढ वि [°ार्ध] डेढ़। °ड्ढकाल पुं [°ार्धकाल] तप-विशेष, पुरिमड्ढ तप (संबोध ५८)। °णप्पय, °णप्फद, °णप्फय वि [°नखपद] नख-युक्त पैरवाला, सिंह आदि श्वापद जंतु (सूअ २, ३, २३; ठा ४, ४—पत्र २७१; सूअ १, ५, २, ७; पण्ण १—पत्र ४६; पि १४८)। °णाह वि [°नाथ] स्वामी-वाला, जिसका कोई मालिक हो वह (विपा १, २—पत्र २७; रंभा; कुमा)। °त्तण्ह वि [°तृष्ण] तृष्णा-युक्त, उत्कण्ठित, उत्सुक (से १, ४६)। °त्तर वि [°त्वर] १ त्वरा-युक्त, वेगवाला। २ न. शीघ्र, जल्दी (सुपा १५६)। °द्ध वि [°ार्ध] अर्ध-सहित, डेढ़ (पउम ६८, ५४)। °धवा स्त्री [°धवा] सौभाग्यवती स्त्री, जिसका पति जीवित हो वह स्त्री (सुपा ३६५)। °नय वि [°नय] न्याय-युक्त, व्याजबी (सुपा ५०४)। °पक्ख वि [°पक्ष] १ पाँखवाला, पाँखों से युक्त (से २, १४)। २ सहायता करनेवाला, सहायक, मित्र (पव २३६; स ३६७)। ३ समान पार्श्ववाला, दक्षिण आदि तरफ से जो समान हो वह (निर १, १)। °पुन्न वि [°पुण्य] पुण्यशाली, पुण्यवान् (सुपा ३८४)। °प्पभ वि [°प्रभ] प्रभा-युक्त (सम १३७; भग)। °प्परिआव, °प्परिताव वि [°परिताप] परिताप—संताप से युक्त (श्रा ३७; षड्)। °प्पिसल्लग वि [°पिशाचक] पिशाच-गृहीत, पागल (पण्ह २, ५—पत्र १५०)। °प्पिवास वि [°पिपास] तृषातुर, सतृष्ण (हे २, ६७)। °प्पिह वि [°स्पृह] स्पृहावाला (दे ७, २६)। °प्फंद वि [°स्पन्द] चलायमान (दे ८, ८)। °प्फल, °फल वि [°फल] सार्थक (से १५, १४; हे २, २०४; प्राप; उप ७२८ टी)। °ब्बल वि [°बल] बलवान्, बलिष्ठ (पिंग)। °भल देखो °फल (हे १, २३६; कुमा)। °मण वि [°मनस्] १ मनवाला, विवेक-बुद्धिवाला (धण २२)। २ समान मनवाला, राग-द्वेष आदि से रहित, मुनि, साधु (अणु)। °मणक्ख वि [°मनस्क] पूर्वोक्त अर्थ (सूअ २, ४, २)। °मय वि [°मद] मद-युक्त (से १, १६; सुपा १८८)। °महिड्ढिअ वि [°महर्द्धिक] महान् वैभववाला (प्रासू १०७)। °मिरिईअ, °मिरीय वि [°मरीचिक] किरण-युक्त (भग; औप; ठा ४, १—पत्र ३२६)। °मेर वि [°मर्याद] मर्यादा-युक्त (ठा ३, २—पत्र १२६)। °यण्ह वि [°तृष्ण] तृष्णा-युक्त (गउड, सुपा ३८४)। °याण वि [°ज्ञान] सयाना, जानकार (सुपा ३८५)। °योगि वि [°योगिन्] १ व्यापार-युक्त, योगवाला। २ न. तेरहवाँ गुण-स्थानक (कम्म २, ३१)।

°रय वि [°रत] कामो (से १, २७)। °रहस वि [°रभस] वेग-युक्त, उतावला (गा ३५४; सुपा ६३२; कप्पू)। °राग वि [°राग] राग-सहित (ठा २, १—पत्र ५८)। °रागसंजत, °रागसंजय वि [°रागसंयत] वह साधु जिसका राग क्षीण न हुआ हो (पएण १७—पत्र ४६४; उवा)। °रूव वि [°रूप] समान रूपवाला (पउम ८, ६)। °लूण वि [°लवण] लावण्य-युक्त (सुपा २६३)। °लोग वि [°लोक] समान, सदृश (सट्ठि २१ टी)। °लोण देखो °लूण (गा ३१६; हे ४, ४४४; कुमा)। स्त्री. °लोणी (हे ४, ४२०)। °वक्ख देखो °पक्ख (गउड; भवि)। °वण वि [°व्रण] घाववाला, व्रण-युक्त (सुपा २८१)। °वय वि [°वयस्] समान उम्रवाला (दे ८, २२)। °वय वि [°व्रत] व्रती (सुपा ४५१)। °वाय वि [°पाद] सवा (स ४४१)। °वाय वि [°वाद] वाद-सहित (सूग्र २, ७, ५)। °वास वि [°वास] समान वासवाला, एक देश का रहनेवाला (प्रासू ७६)। °विज्ज वि [°विद्य] विद्यावान्, विद्वान् (उप पृ २१५)। °व्वण देखो °वण (गउड; श्रा १२)। °व्वेक्ख वि [°व्यपेक्ष] दूसरे की परवाह रखनेवाला, सापेक्ष (धर्मसं ११६७)। °व्वाव वि [°व्याप] व्याप्ति-युक्त, व्यापक (भग १, ६—पत्र ७७)। °व्विवर वि [°विवर] विवरण-युक्त, सविस्तर (सुपा ३६४)। °संक वि [°शङ्क] शंका-युक्त (दे २, १०६; सुर १६, ५५; कुप्र ४४५; गउड)। °संकिअ वि [°शङ्कित] वही (सुर ८, ४०)। °सत्ता स्त्री [°सत्त्वा] सगर्भा, गर्भिणी स्त्री (उत्त २१, ३)। °सिरिय, °सिरीय वि [°श्रीक] श्री-युक्त, शोभा-युक्त (पि ६८; णाया १, १; राय)। °सिह वि [°स्पृह] स्पृहावाला (कुमा)। °सिह वि [°शिख] शिखा-युक्त (राज)। °सूग वि [°शूक] दयालु (उव)। °सेस वि [°शेष] १ सावशेष, बाकी रहा हुआ (दे ८, ५६; गउड)। २ शेषनाग-सहित (गउड १५)। °सोग, सोगिल्ल वि [शोक] दिलगीर, शोक-युक्त (पउम ६३, ४; सुर ६, १२४)। °स्सिरिअ, °स्सिरीअ देखो °सिरिय (पि ६८; अभि १५६; भग; सम १३७; णाया १, ६—पत्र १५७)।

सअ सक [स्वद्] १ प्रीति करना। २ चखना, स्वाद लेना। सग्रइ (प्राकृ ७५; धात्वा १५४)।

सअ न [सदस्] सभा (षड्)।

सअअ न [दे] १ शिला, पत्थर का तख्ता। २ वि. घूर्णित (दे ८, ४६)।

सअक्खगत्त पुं [दे] कितव, जुआरी (दे ८, २१)।

सअज्जिअ, सअज्झिअ पुंस्त्री [दे] प्रातिवेश्मिक, पड़ोसी (गा ३३५)। स्त्री. °आ (गा ३६; ३६ अ); 'सअज्झिअं संठवंतीए' (गा ३६; पिंड ३४२)। देखो सइज्झिअ।

सअडिआ देखो सगडिआ (पि २०७)।

सअढ पुं [दे] लम्बा केश (दे ८, ११)।

सअढ पुं [शकट] १ दैत्य-विशेष (प्राप्र; संक्षि ७; हे १, १९६)। २ पुंन. यान-विशेष, गाड़ी (हे १, १७७; १८०)। °ारि पुं [°ारि] नरसिंह, श्रीकृष्ण (कुमा)। देखो सगड।

सअर देखो स-अर = स-कर, स-गर।

सअर देखो सगर (से २, २६)।

सआ अ [सदा] १ हमेशा, निरन्तर (प्राप्र; हे १, ७२; कुमा; प्रासू ४६)। °चार पुं [°चार] निरन्तर गति (रयण १५)।

सआ स्त्री [स्रज्] माला (षड्)।

सइ देखो सआ = सदा (पाग्र; हे १, ७२; कुमा)।

सइ अ [सकृत्] एक बार, एक दफा (हे १, १२८; सम ३५; सुर ८, २४४)।

सइ स्त्री [स्मृति] स्मरण, चिन्तन, याद (श्रा १६)। °काल पुं [°काल] भिक्षा मिलने का समय (दस ५, २, ६)।

सइ देखो स = स्व; 'सइकारियजिणपडिमाए' (सुपा ५१०; भवि)।

सइ देखो सय = शत; 'अस्सोयव्वं सोचावि फुट्टए जं न सइखंडं' (सुर १४, २)। °कोडि स्त्री [°कोटि] एक सौ करोड़, एक अब्ज—अरब (षड्)।

सइ देखो सइं = स्वयम् (काल; हे ४, ३९५; ४३०)।

सइ° देखो सई = सती (सुपा ३०१)।

सइअ वि [शतिक] सौ का परिमाणवाला (णाया १, १—पत्र ३७)। देखो सइग।

सइअ वि [शयित] सुप्त, सोया हुआ (दे ७, २८; गा २५४; पउम १०१, ६०)।

सइएल्लय देखो स = स्व; 'ताव य आगओ परिव्वायओ जक्खदेउलाओ सइएल्लए दालिद्द-पुरिसे घेत्तूण' (महा)।

सइं देखो सइ = सकृत् (आचा)।

सइं देखो सयं = स्वयम् (ठा २, ३—पत्र ६३; हे ४, ३३६; ४०२; भवि)।

सइग वि [शतिक] सौ (रुपया आदि) की कीमत का (दसनि ३, १३)।

सइज्झ, सइज्झिअ पुंस्त्री [दे] प्रातिवेश्मिक, पड़ोसी (दे ८, १०)। स्त्री. °आ (सुपा २७८; पिंड ३४२ टी; वज्जा ६४)।

सइज्झिअ न [दे] प्रातिवेश्य, पड़ोसिपन (दे ८, १० टी)।

सइण्ण न [सैन्य] सेना, लश्कर (षड्)।

सइत्तए देखो सय = शी।

सइदंसण वि [दे. स्मृतिदर्शन] मनो-दृष्ट, चित्त में अवलोकित, विचार में प्रतिभासित (दे ८, १६; पाग्र)।

सइदिट्ठ वि [दे. स्मृतिदृष्ट] ऊपर देखो (दे ८, १६)।

सइन्न देखो सइण्ण (हे १, १५१; कुमा)।

सइम वि [शततम] सौवाँ, १०० वाँ (णाया १, १६—पत्र २१४)।

सइर न [स्वैर] १ स्वेच्छा, स्वच्छन्दता (हे १, १५१; प्राप्र; णाया १, १८—पत्र २३६)। २ वि. मन्द, अलस (पाग्र)। ३ स्वैरी, स्वच्छन्दी (पाग्र; प्राप्र)।

सइरवसह पुं [दे. स्वैरवृषभ] स्वच्छन्दी साँढ़, धर्म के लिए छोड़ा जाता बैल (दे २, २५; ८, २१)।

सइरि वि [स्वैरिन्] स्वच्छन्दी, स्वेच्छाचारी (गच्छ १, ३८)।

सइरिणी स्त्री [स्वैरिणी] व्यभिचारिणी स्त्री, कुलटा (पउम ५, १०५)।

सइल देखो सेल (हे ४, ३२६)।

सइलंभ वि [दे. स्मृतिलम्भ] देखो सइ-दंसण (दे ८, १६; पाग्र)।

सइलासअ } **सइलासिअ** } पुं [दे] मयूर, मोर (दे ८, २०; षड्)।

सइव पुं [सचिव] १ प्रधान, मन्त्री, अमात्य (पात्र)। २ सहाय, मदद-कर्ता। ३ काला धतूरा (प्राकृ ११)।

सइसिलिंब पुं [दे] स्कन्द, कार्तिकेय (दे ८, २०)।

सइसुह वि [दे.स्मृतिसुख] देखो **सइदंसण** (दे ८, १६; पात्र)।

सई स्त्री [शची] इन्द्राणी, शक्रेन्द्र की एक पटरानी (ठा ८—पत्र ४२६; णाया २—पत्र २५३; पात्र; सुपा ६८; ६२२; कुप्र २३)। °स पुं [°श] इन्द्र (कुमा)। देखो **सची**।

सई स्त्री [सती] पतिव्रता स्त्री (कुप्रा २३; सिरि १४३)।

°सई स्त्री [°शती] सौ, १००; 'पंचसई' (धर्मवि १४)।

सईणा स्त्री [दे] अन्न-विशेष, तुवरी, रहर (ठा ५, ३—पत्र ३४३)।

सउ } **सउं** } (अप) देखो **सहु** (सण; भवि)।

सउंत पुं [शकुन्त] १ पक्षी, पाखी (पात्र)। २ पक्षि-विशेष, भास-पक्षी (स ४३६)।

सउंतला स्त्री [शकुन्तला] विश्वामित्र ऋषि की पुत्री और राजा दुष्यंत की गन्धर्व-विवाहिता पत्नी (हे ४, २६०)।

सउंदला (शौ) ऊपर देखो (अभि २६; ३०; पि २७५)।

सउण वि [दे] रूढ, प्रसिद्ध (दे ८, ३)।

सउण पुंन [शकुन] १ शुभाशुभ-सूचक बाहु-स्पन्दन, काक-दर्शन आदि निमित्त, सगुन; 'सुहजोगाई सउणो कंदिअसद्दाई इअरो उ' (धर्म २; सुपा १८५; महा)। २ पुं. पक्षी, पाखी (पात्र; गा २२०; २८५; करु ३४; सट्ठि ६ टी)। ३ पक्षि-विशेष (पएह १, १—पत्र ८)। °विउ वि [°विद्] सगुन का जानकार (सुपा २६७)। °रुअ न [°रुत] १ पक्षी की आवाज। २ कला-विशेष, सगुन का परिज्ञान (णाया १, १—पत्र ३८; जं २ टी—पत्र १३७)।

सउण देखो **स-उण**=स-गुण।

सउणि पुं [शकुनि] १ पक्षी, पखेरू, पाँखी (औप; हेका १०५; संबोध १७)। २ पक्षि-विशेष, चील पक्षी (पात्र)। ३ ज्योतिष-प्रसिद्ध एक स्थिर करण जो कृष्ण चतुर्दशी की रात में सदा अवस्थित रहता है (विसे ३३५०)। ४ नपुंसक-विशेष, चटक की तरह बारबार मैथुन-प्रसक्त क्लीब (पव १०६; पुप्फ १२७)। ५ दुर्योधन का मामा (णाया १, १६—पत्र २०८; सुपा २६०)।

सउणिअ देखो **साउणिअ** (राज)।

सउणिआ } **सउणिगा** } **सउणी** } स्त्री [शकुनिका, °नी] १ पक्षिणी, पक्षी की मादा (गा ८१०; आव १)। २ पक्षि-विशेष की मादा; 'सउणी जाया तुमं' (ती ८)।

सउण्ण देखो **स-उण्ण**=सपुण्य।

सउत्ती स्त्री [सपत्नी] एक पति की दूसरी स्त्री, समान पतिवाली स्त्री, सौत, सौतिन (सुपा ६८)।

सउन्न देखो **स-उन्न**।

सउम पुं [सद्मन्] १ गृह, घर। २ जल, पानी (प्राकृ २८)।

सउमार वि [सुकुमार] कोमल (से १०, ३४, षड्)।

सउर पुं [सौर] १ ग्रह-विशेष, शनैश्वर। २ यम, जमराज। ३ वृक्ष-विशेष, उदुम्बर का पेड़। ४ वि. सूर्य का उपासक। ५ सूर्य-संबन्धी (चंड; हे १, १६२)।

सउरि पुं [शौरि] विष्णु, श्रीकृष्ण (पात्र)।

सउरिस देखो **स-उरिस**=सत्पुरुष।

सउल पुं [शकुल] मत्स्य, मछली; 'सउला सहरा मीणा तिमी झसा अणिमिसा मच्छा' (पात्र)।

सउलिअ वि [दे] प्रेरित (दे ८, १२)।

सउलिआ } **सउली** } स्त्री [दे. शकुनिका, °नी] १ पक्षि-विशेष की मादा, चील पक्षी की मादा (ती ८, अणु १४१; दे ८, ८)। २ एक महौषधि (ती ५)। °विहार पुं [°विहार] गुजरात के भरौच शहर का एक प्राचीन जैन मन्दिर (ती ८)।

सउह पुं [सौध] १ राज-महल, राज-प्रासाद (कुमा)। २ न. रूपा, चाँदी। ३ पुं. पाषाण-विशेष। ४ वि. सुधा-संबन्धी, अमृत का (चंड; हे १, १६२)।

सएज्झिअ देखो **सइज्झिअ** (कुप्र १६३)।

सओस देखो **स-ओस**=स-तोष- स-दोष।

सं अ [शम्] सुख, शर्म (स ६११; सुर १६, ४२; सुपा ४१६)।

सं अ [सम्] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ प्रकर्ष। अतिशय (धर्मसं ८६७)। २ संगति। ३ सुन्दरता, शोभनता। ४ समुच्चय। ५ योग्यता, व्याजबोपन (षड्)।

संक सक [शङ्क्] १ संशय करना, संदेह करना। २ अक. भय करना, डरना। **संकइ**, **संकए**, **संकंति**; **संकसि**, **संकसे**, **संकह**, **संकत्थ**; **संकामि**, **संकामो**, **संकामु**, **संकाम** (संक्षि ३०); 'असंकिआइं संकंति' (सूअ १, १, २, १०; ११)। "जं सम्ममुज्जमंताण पाणि (?णी) णं संकए हु विही" (सिरि ६६६)। कर्म. **संकिज्जइ** (गा ५०६)। वकृ. **संकंत**, **संकमाण** (पव; रंभा ३३)। कृ. **संकणिज्ज** (उप ७२८ टी)।

संकंत वि [संक्रान्त] १ प्रतिबिम्बित (गा १; से १, ५७)। २ प्रविष्ट, घुसा हुआ (ठा ३, ३; कप्प; महा)। ३ प्राप्त। ४ संक्रमण-कर्ता। ५ संक्रांति-युक्त। ६ पिता आदि से दाय रूप से प्राप्त स्त्री का धन (प्राप्र)।

संकंति स्त्री [संक्रान्ति] १ संक्रमण, प्रवेश (पव १५५; अज्झ १५३)। २ सूर्य आदि का एक राशि से दूसरी राशि में जाना; 'आरब्भ कक्कसंकंतिदिवसओ दिवसनाहु व्व' (धर्मवि ६६)।

संकंदण पुं [संक्रन्दन] इन्द्र, देवाधीश (उप ५३० टी; उपपं १)।

संकट्टिअ वि [संकर्तित] काटा हुआ; 'धन्न-संकट्टितमीणा' (ठा ४, ४—पत्र २७६)।

संकट्ठ वि [संकष्ट] व्याप्त (राज)।

संकट्ठ देखो **संकिट्ठ** (राज)।

संकड वि [संकट] १ संकीर्ण, कम-चौड़ा, अल्प अवकाशवाला (स ३६२; सुपा ४१६; उप ८३३ टी)। २ विषम, गहन (पिंड ६३४)। ३ न. दुःख;

'धन्नाणवि ते धन्ना
पुरिसा निस्सीमसत्तिसंजुत्ता ।
जे विसमसंकडेसुवि पडियावि
चयंति ण धम्मं ॥'
(रयण ७३) ।

संकडिय वि [संकटित] संकीर्ण किया हुआ (कुप्र ३६०) ।

संकडिल्ल वि [दे] निश्छिद्र, छिद्र-रहित (दे ८, १५; सुर ४, १४३) ।

संकड्ढिय वि [संकर्षित] आकर्षित (राज) ।

संकण न [शङ्कन] शंका, संदेह (दस ६, ५६) ।

संकप्प पुं [संकल्प] १ अध्यवसाय, मनः-परिणाम, विचार (उवा; कप्प; उप १०३५) । २ संगत आचार, सदाचार (उप १०३५) । ३ अभिलाष, चाह (गउड) । °जोणि पुं [°योनि] कामदेव, कंदर्प (पाअ) ।

संकम सक [सं + क्रम्] १ प्रवेश करना । २ गति करना, जाना । संकमइ, संकमंति (पिंड १०८; सूअ २, ४, १०) । वकृ. संकममाण (सम ३६; सुज्ज २, १; रंभा) । हेकृ. संकमित्तए (कस) ।

संकम पुं [संक्रम] १ सेतु, पूल, जल पर से उतरने के लिए काष्ठ आदि से बाँधा हुआ मार्ग (से ६, ६५; दस ५, १, ४; पण्ह १, १) । २ संचार; गमन, गति; 'पाउल्लाइं संकमट्ठाए' (सूअ १, ४, २, १५; श्रावक २२३) । ३ जीव जिस कर्म-प्रकृति को बाँधता हो उसी रूप से अन्य प्रकृति के दल को प्रयत्न द्वारा परिणमाना; बँधी जाती कर्म-प्रकृति में अन्य कर्म-प्रकृति के दल को डाल कर उसे बँधी जाती कर्म-प्रकृति के रूप से परिणत करना (ठा ४, २—पत्र २२०) ।

संकमग वि [संक्रामक] संक्रमण-कर्ता (धर्मसं १३३०) ।

संकमण न [संक्रमण] १ प्रवेश; 'नवरं मुत्तूण घरं घरसंकमणं कयं तेहिं' (संबोध १४) । २ संचार, गमन (प्रासू १०५) । ३ चारित्र, संयम (श्रा ..) । ४ देखो संकम का तीसरा अर्थ (पंच ३, ४८) । ५ प्रतिबिम्बन (गउड) ।

संकर पुं [दे] रथ्या, मुहल्ला (दे ८, ६) ।

संकर पुं [शङ्कर] १ शिव, महादेव (पउम ५, १२२; कुमा; सम्मत्त ७६) । २ वि. सुख करनेवाला (पउम ५, १२२; दे १, १७७) ।

संकर पुं [संकर] १ मिलावट, मिश्रण (पण्ह १, ५—पत्र ६२) । २ न्यायशास्त्र-प्रसिद्ध एक दोष (उवर १७६) । ३ शुभाशुभ-रूप मिश्र भाव (सिरि ५०६) । ४ अशुचि-पुंज, कचरे का ढेर (उत्त १२, ६) ।

संकरण न [संकरण] अच्छी कृति (संबोध ६) ।

संकरिसण पुं [संकर्षण] भारतवर्ष का भावी नववाँ बलदेव (सम १५४) ।

संकरी स्त्री [शङ्करी] १ विद्या-विशेष (पउम ७, १४२; महा) । २ देवी-विशेष । ३ सुख करनेवाली (गउड) ।

संकल सक [सं + कलय्] संकलन करना, जोड़ना । संकलेइ (उव) ।

संकल पुंन [शृङ्खल] १ सांकल, निगड़ । २ लोहे का बना हुआ पाद-बन्धन, बेड़ी (विपा १, ६—पत्र ६६, धर्मवि १३६; सम्मत्त १६०; हे १, १८६) । ३ सिकड़ी, आभूषण-विशेष (सिरि ८११) ।

संकलण न [संकलन] मिश्रता, मिलावट (माल ८७) ।

संकला स्त्री [शृङ्खल] देखो संकल = शृङ्खल (स १७१; सुपा २६१; प्राप) ।

संकलिअ वि [संकलित] १ एकत्र किया हुआ (उप पृ ३४१; तंदु २) । २ युक्त; 'तत्थ य भमिओ तं पुण कायट्ठिईकालसंखसंकलिओ' (सिक्खा १०) । ३ योजित, जोड़ा हुआ (सिरि १३४०) । ४ संगृहीत (उव) । ५ न. संकलन, कुल जोड़ (वव १) ।

संकलिआ स्त्री [संकलिका] १ परंपरा (पिंड २३६) । २ संकलन । ३ सूत्रकृतांग सूत्र का पनरहवाँ अध्ययन (राज) ।

संकलिआ, संकली } स्त्री [शृङ्खलिका, °ली] सांकल, सिकड़ी, जंजीर, निगड़ (सूअ १, ५, २, २०; प्रामा) ।

संकहा स्त्री [संकथा] संभाषण, वार्तालाप (पउम ७, १५८; १०६, ६; सुर ३, १२६; उप पृ ३७८; पिंड १६४) ।

संका स्त्री [शङ्का] १ संशय, संदेह (पडि) । २ भय, डर (कुमा) । °लुअ वि [°वत्] शंकावाला, शंका-युक्त (गउड) ।

संकाम देखो संकम = सं + क्रम् । संकामइ (सुज्ज २, १; पंच ५, १४७) ।

संकाम सक [सं + क्रमय्] संक्रम करना, बँधी जाती कर्म-प्रकृति में अन्य प्रकृति के कर्म-दलों को प्रक्षिप्त कर उस रूप से परिणत करना । संकामेंति (भग) । भूका. संकामिसु; (भग) । भवि. संकामेस्संति (भग) । कवकृ. संकामिज्जमाण (ठा ३, १—पत्र १२०) ।

संकामण न [संक्रमण] १ संक्रम-करण (भग) । २ प्रवेश कराना (कुप्र १४०) । ३ एक स्थान से दूसरे स्थान में ले जाना (पंचा ७, २०) ।

संकामणा स्त्री [संक्रमणा] संक्रमण, पैठ (पिंड २८) ।

संकामणी स्त्री [संक्रमणी] विद्या-विशेष, जिससे एक से दूसरे में प्रवेश किया जा सके वह विद्या (णाया १, १६—पत्र २१३) ।

संकामिय वि [संक्रमित] एक स्थान से दूसरे स्थान में नीत (राज) ।

संकार देखो सक्कार = संस्कार (धर्मसं ३५४) ।

संकास वि [संकाश] १ समान, तुल्य, सरीखा (पाअ; णाया १, ५; उत्त ३४, ४; ५; ६; कप्प; पंच ३, ४०; धर्मवि १४६) । २ पुं. एक श्रावक का नाम (उप ४०३) ।

संकासिया स्त्री [संकाशिका] एक जैन मुनि-शाखा (कप्प) ।

संकि वि [शङ्किन्] शंका करनेवाला (सूअ १, १, २, ६; गा ८७३; संबोध ३४; गउड) ।

संकिअ वि [शङ्कित] १ शंकावाला, शंका-युक्त (भग; उवा) २ न. संशय, संदेह (पिंड ४६३; महा ६८) । ३ भय, डर (गा ३३३); 'संकिअमवि नेव दविअस्स' (श्रा १४) ।

संकिट्ठ वि [संकृष्ट] विलिखित, जोता हुआ, खेती किया हुआ (औप; णाया १, १ टी—पत्र १) ।

संकिट्ठ देखो संकिलिट्ठ (राज)।

संकिण्ण वि [संकीर्ण] १ सँकरा, तंग, अल्पावकाशवाला (पाअ; महा)। २ व्याप्त (राज)। ३ मिश्रित, मिला हुआ (ठा ४, २; भग २५, ७ टी—पत्र ६१६)। ४ पुं. हाथी की एक जाति (ठा ४, २—पत्र २०८)।

संकित देखो संकिअ (णाया १, ३—पत्र ६४)।

संकित्तण न [संकीर्तन] उच्चारण (स्वप्न १७)।

संकिन्न देखो संकिण्ण (ठा ४, २; भग २५, ७)।

संकिर वि [शङ्कितृ] शङ्का करने की आदत वाला, शंकाशील (गा २०६; ३३३; ५८२; सुर १२, १२५; सुपा ४६८)।

संकिलिट्ठ वि [संक्लिष्ट] संक्लेश-युक्त, संक्लेशवाला (उव औप; पि १३६)।

संकिलिस्स अक [सं + क्लिश्] १ क्लेश-पाना, दुःखी होना। २ मलिन होना। संकिलिस्सइ, संकिलिस्संति (उत्त २९, ३४; भग; औप)। वकृ. संकिलिस्समाण (भग १३, १—पत्र ५९६)।

संकिलेस पुं [संक्लेश] १ असमाधि, दुःख, कष्ट, हैरानी (ठा १०—पत्र ४८९; उव)। २ मलिनता, अविशुद्धि (ठा ३, ४—पत्र १५६; पंचा १५, ४)।

संकीलिअ वि [संकीलित] कील लगाकर जोड़ा हुआ (से १४, २८)।

संकु पुं [शङ्कु] १ शल्य अस्त्र। २ कीलक, खूँटा, कील; 'अंतोनिविट्ठसंकुव्व' (कुप्र ४०२; राय ३०; आवम)। °कण्ण न [°कर्ण] एक विद्याधर-नगर (इक)।

संकुइय वि [संकुचित] १ सकुचा हुआ, संकोच-प्राप्त (औप; रंभा)। २ न. संकोच (राज)।

संकुक पुं [शङ्कुक] वैताढ्य पर्वत की उत्तर श्रेणी का एक विद्याधर-निकाय (राज)।

संकुका स्त्री [शङ्कुका] विद्या-विशेष (राज)।

संकुच अक [सं + कुच्] सकुचना, संकोच करना। संकुचए (आचा; संबोध ४७) वकृ. **संकुचमाण, संकुचेमाण** (आचा)।

संकुचिय देखो संकुइय (दस ४, १)।

संकुड वि [संकुट] सँकरा, संकीर्ण, संकुचित; 'अंतो य संकुडा बाहिं वित्थडा चंदसूराणं' (सुज्ज १९)।

संकुडिअ वि [संकुटित] सकुचा हुआ, संकुचित (भग ७, ६—पत्र ३०७; धर्मसं ३८७; स ३५८; सिरि ७८६)।

संकुद्ध वि [संक्रुद्ध] क्रोध-युक्त (वज्जा १०)।

संकुय देखो संकुच। संकुयइ (वज्जा ३०)। वकृ. संकुयंत (वज्जा ३०)।

संकुल वि [संकुल] व्याप्त, पूर्ण भरा हुआ (से १, ५७; उव; महा; स्वप्न ५१; धर्मवि ५५; प्रासू १०)।

संकुलि, संकुली° देखो सक्कुलि (पि ७४; ठा ४, ४—पत्र २२६; पव २६२; आचा २, १, ४, ५)।

संकुसुमिअ वि [संकुसुमित] अच्छी तरह पुष्पित (राय ३८)।

संकेअ सक [सं + केतय्] १ इशारा करना। २ मसलहत करना। संकृ. संकेइय जोगिणिमेगं' (सम्मत्त २१८)।

संकेअ पुं [संकेत] १ इशारा, इंगित (सुपा ४१५; महा)। २ प्रिय-समागम का गुप्त स्थान (गा ६२६; गउड)। ३ वि. चिह्न-युक्त। ४ न. प्रत्याख्यान-विशेष (श्राव)।

संकेअ वि [साङ्केत] १ संकेत-संबन्धी। २ न. प्रत्याख्यान-विशेष (पव ४)।

संकेइअ वि [संकेतित] संकेत-युक्त (श्रा १४; धर्मवि १३४; सम्मत्त २१८)।

संकेल्लिअ वि [दे] सकेला हुआ, संकुचित किया हुआ (गा ६६४)।

संकेस देखो संकिलेस (उप ३१२; कम्म ५, ६३)।

संकोअ सक [सं + कोचय्] संकुचित करना। वकृ. संकोअंत (सम्मत्त २१७)।

संकोअ पुं [संकोच] संकोच, सिमट (राय १४० टी; धर्मसं ३६५; संबोध ४७)।

संकोअण न [संकोचन] संकोच, सकुचाना (दे ५, ३१; भग; सुर १, ७६; धर्मवि १०१)।

संकोइय वि [संकोचित] संकुचित किया हुआ, सकेला हुआ (उप ७२८ टी)।

संकोड पुं [संकोट] सकोड़ना, संकोच (पण्ह १, ३—पत्र ५३)।

संकोडणा स्त्री [संकोटना] ऊपर देखो (राज)।

संकोडिय वि [संकोटित] सकोड़ा हुआ, संकोचित (पण्ह १, ३—पत्र ५३; विपा १, ६—पत्र ६८; स ७४१)।

संख पुंन [शङ्ख] १ वाद्य-विशेष, शंख (णंदि; राय, जी १५; कुमा; दे १, ३०)। २ पुं. ज्योतिष्क ग्रह-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७८)। ३ महाविदेह वर्ष का प्रान्त-विशेष, विजय-क्षेत्र विशेष (ठा २, ३—पत्र ८०)। ४ नव निधि में एक निधि, जिसमें विविध तरह के बाजों की उत्पत्ति होती है (ठा ९—पत्र ४४९; उप ९८६ टी)। ५ लवण समुद्र में स्थित वेलन्धर-नागराज का एक आवास-पर्वत (ठा ४, २—पत्र २२६; सम ६८)। ६ उक्त आवास-पर्वत का अधिष्ठाता एक देव (ठा ४, २—पत्र २२६)। ७ भगवान् मल्लिनाथ के समय का काशी का एक राजा (णाया १, ८—पत्र १४१)। ८ भगवान् महावीर के पास दीक्षा लेनेवाला एक काशी-नरेश (ठा ८—पत्र ४३०)। ९ तीर्थंकर-नामकर्म उपार्जित करनेवाला भगवान् महावीर का एक श्रावक (ठा ९—पत्र ४५५; सम १५४; पव ४६; विचार ४७७)। १० नववें बलदेव का पूर्वजन्मीय नाम (पउम २०, १९१)। ११ एक राजा (उप ७३६)। १२ एक राज-पुत्र (सुपा ५९६)। १३ रावण का एक सुभट (पउम ५६,३४)। १४ छन्द-विशेष (पिंग)। १५ एक द्वीप। १६ एक समुद्र। १७ शंखवर द्वीप का एक अधिष्ठायक देव (दीव)। १८ पुंन. ललाट की हड्डी (धर्मवि १७; हे १, १०)। १९ नखी नामका एक गन्ध-द्रव्य। २० कान के समीप की एक हड्डी। २१ एक नाग-जाति। २२ हाथी के दाँत का मध्य भाग। २३ संख्या-विशेष, दस निखर्व की संख्यावाला (हे १, ३०)। २४ आँख के समीप का अवयव (णाया १, ८—पत्र १३३)। °उर देखो °पुर (ती ३; महा)। °णाभ पुं [°नाभ] ज्योतिष्क महाग्रह-विशेष (सुज्ज २०)। °णारी स्त्री [°नारी] छन्द-

विशेष (पिंग)। °धमग पुं [°ध्मायक] वानप्रस्थ की एक जाति (राज)। °धर पुं [°धर] श्रीकृष्ण, विष्णु (कुमा)। °पाल देखो °वाल (ठा ४, १—पत्र १९७)। °पुर न [°पुर] १ एक विद्याधर-नगर (इक)। २ नगर-विशेष जो आजकल गुजरात में संखेश्वर के नाम से प्रसिद्ध है (राज)। °पुरी स्त्री [°पुरी] कुरुजंगल देश की प्राचीन राजधानी, जो पीछे से अहिच्छत्रा के नाम से प्रसिद्ध हुई थी (सिरि ७८)। °माल पुं [°माल] वृक्ष की एक जाति (जीव ३—पत्र १४५)। °वण न [°वन] एक उद्यान का नाम (उवा)। °वण्णाभ पुं [°वर्णाभ] ज्योतिष्क महाग्रह-विशेष (सुज्ज २०)। °वन्न पुं [°वर्ण] जोतिष्क महाग्रह-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७८)। °वन्नाभ देखो °वण्णाभ (ठा २, ३—पत्र ७८)। °वर पुं [°वर] १ एक द्वीप। २ एक समुद्र (दीव; इक)। °वरोभास पुं [°वरावभास] १ एक द्वीप। २ एक समुद्र (दीव)। °वाल पुं [°पाल] नाग-कुमार-देवों के धरण और भूतानन्द नामक इन्द्रों के एक एक लोकपाल का नाम (इक)। °वालय पुं [°पालक] १ जैनेतर दर्शन का अनुयायी एक व्यक्ति (भग ७, १०—पत्र ३२३)। एक आजीविक मत का एक उपासक (भग ८, ५—पत्र ३७०)। °ल्ल वि [°वत्] शंखवाला (णाया १, ८—पत्र १३३)। °वई स्त्री [°वती] नगरी-विशेष (ती ५)।

संख वि [संख्य] संख्यात, गिना हुआ, गिनतीवाला (कम्म ४, ३६; ४१)।

संख न [सांख्य] १ दर्शन-विशेष, कपिलमुनि-प्रणीत दर्शन (णाया १, ५—पत्र १०५; सुपा ५६६)। २ वि. सांख्य मत का अनुयायी (औप; कुप्र २३)।

संख पुं [दे] मागध, स्तुति-पाठक (दे ८, २)।

संखइम वि [संख्येय] जिसकी संख्या हो सके वह (विसे ६७०; अणु ६१ टी)।

संखड न [दे] कलह, झगड़ा (पिंड ३२४; ओघ १५७)।

संखडि स्त्री [दे] १ विवाह आदि के उपलक्ष्य में नात-नातेदार आदि को दिया जाता भोज, जेवनार (आचा २, १,२,४; २,१,३, १; २; ३; पिंड २२८; ओघ १२; ८८; भास ६२)।

संखडि स्त्री [संस्कृति] ओदन-पाक (कप्प)।

संखणग पुं [शङ्खनक] छोटा शंख (उत्त ३६, १२९; पण्ण १—पत्र ४४; जीव १ टी—पत्र ३१)।

संखद्दह पुं [दे] गोदावरी ह्रद (दे ८, १४)।

संखबइल्ल पुं [दे] कृषक की इच्छानुसार उठ कर खड़ा होनेवाला बैल (दे ८, १६)।

संखम वि [संक्षम] समर्थ (उप ६८६ टी)।

संखय पुं [संक्षय] क्षय, विनाश (से ६, ४२)।

संखय वि [संस्कृत] संस्कार-युक्त; 'णय संखयमाहु जीवियं' (सूअ १, २, २, २१; १, २, ३, १०; पि ४९), 'असंखयं जीविय मा पमायए' (उत्त ४, १)।

संखलय पुं [दे] शम्बूक, शुक्ति के आकार-वाला जल-जन्तु विशेष (दे ८, १८)।

संखला देखो संकला (गउड; प्रामा)।

संखलि पुंस्त्री [दे] कर्ण-भूषण विशेष, शंख-पत्र का बना हुआ ताडंक (दे ८, ७)।

संखव सक [सं + क्षपय्] विनाश करना। संकृ. संखवियाण (उत्त २०, ५२)।

संखविअ वि [संक्षपित] विनाशित (अच्चु ८)।

संखा सक [सं + ख्या] १ गिनती करना। २ जानना। संकृ. संखाय (सूअ १, २, २, २१)। कृ. संखिज्ज, संखेज्ज (उवा; जी ४१; उव; कप्प)।

संखा अक [सं + स्त्यै] १ आवाज करना। २ संहत होना, सान्द्र होना, निबिड बनना। संखाइ, संखाअइ (हे ४, १५; षड्)।

संखा स्त्री [संख्या] १ प्रज्ञा, बुद्धि (आचा १, ६, ४, १)। २ ज्ञान (सूअ १, १३, ८)। ३ निर्णय (अणु)। ४ गिनती, गणना (भग; अणु; कप्प; कुमा)। ५ व्यवस्था (सूअ २, ७, १०)। °ईअ वि [°तीत] असंख्य (भग १, १ टी; जीव १ टी—पत्र १३; श्रा ४१)। °दत्तिय वि [°दत्तिक] उतनी ही भिक्षा लेने का व्रतवाला संयमी, जितनी कि अमुक गिने हुए प्रक्षेपों में प्राप्त हो जाय (ठा २, ४—पत्र १००; ५, १—पत्र २९९; औप)।

संखाण न [संख्यान] १ गिनती, गणना, संख्या। २ गणित-शास्त्र (ठा ४, ४—पत्र २६३; भग; कप्प; औप; पउम ८५, ६; जीवस १३५)।

संखाय वि [संस्त्यान] १ सान्द्र, सघन, निबिड (कुमा ६, ११)। २ आवाज करनेवाला। ३ संहत करनेवाला। ४ न. स्नेह। ५ निबिड-पन। ६ संहति, संघात। ७ आलस्य। ८ प्रतिशब्द, प्रतिध्वनि (हे १, ७४; ४, १५)।

संखाय देखो संखा = सं + ख्या।

संखाय वि [संखाय] संख्या-युक्त (सूअ १, १३, ८)।

संखायण न [शाङ्खायन] गोत्र-विशेष (सुज्ज १०, १६; इक)।

संखाल पुं [दे] हरिण की एक जाति, साँबर मृग (दे ८, ६)।

संखालग देखो संखालग = शङ्ख-वत्।

संखावई देखो संखावई = शङ्खावती।

संखाविय वि [संख्यापित] जिसकी गिनती कराई गई हो वह (सुपा ३६२; स ४१६)।

संखिग देखो संखिय = शाङ्खिक (स १७३; कुप्र १४६)।

संखिज्ज देखो संखा = सं + ख्या।

संखिज्जइ वि [संख्येयतम] संख्यातवाँ (अणु ६१)।

संखित्त वि [संक्षिप्त] संक्षेप-युक्त, छोटा किया हुआ (उवा; दं ३; जी ५१)।

संखिय वि [शाङ्खिक] १ मंगल के लिए चन्दन-गर्भित शंख को हाथ में धारण करने-वाला। शंख बजानेवाला (कप्प; औप)।

संखिय देखो संख = संख्य (स ४४१; पंच २, ११; जीवस १४६)।

संखिया स्त्री [शङ्खिका] छोटा शंख (जीव ३—पत्र १४६; जं २ टी—पत्र १०१; राय ४५)।

संखुड्ड अक [रम्] क्रीड़ा करना, संभोग करना। संखुड्डइ (हे ४, १६८)।

संखुड्डुण न [रमण] क्रीड़ा, सुरत-क्रीड़ा (कुमा)।

संखुत्त (अप) नीचे देखो (भवि)।

संखुद्ध वि [संक्षुब्ध] क्षोभ-प्राप्त (स ५६८; ६७४; सम्मत्त १५६; सुपा ५१७; कुप्र १७४)।

संखुभिअ } वि [संक्षुब्ध, संक्षुभित]
संखुहिअ } ऊपर देखो (सम १२५, पव २७२; पउम ३३, १०६; पि ३१९)।

संखेज्ज देखो संखा = सं + ख्या।

संखेज्जइ } देखो संखिज्जइ (अणु ६१;
संखेज्जइम } विसे ३९०)।

संखेत्त देखो संखित्त (ठा ४, २—पत्र २२६; चेइय ३२५)।

संखेव पुं [संक्षेप] १ अल्प, कम, थोड़ा (जी २५; ५१)। २ पिंड, संघात, संहति (ओघभा १)। ३ स्थान; 'तेरससु जीवसंखेवएसु' (कम्म ६, ३५)। ४ सामायिक, सम-भाव से अव-स्थान (विसे २७९६)।

संखेवण न [संक्षेपण] अल्प करना, न्यून करना (नव २८)।

संखेविय वि [संक्षेपिक] संक्षेप-युक्त। °दसा स्त्री.ब. [°दशा] जैन ग्रन्थ-विशेष (ठा १०—पत्र ५०५)।

संखोभ } सक [सं + क्षोभय्] क्षुब्ध
संखोह } करना। संखोहइ (भवि)। कवकृ. संखोभिज्जमाण (णाया १, ९—पत्र १५६)।

संखोह पुं [संक्षोभ] १ भय आदि से उत्पन्न चित्त की व्यग्रता, क्षोभ (उव; सुर २, २२; उप्पृ १३१; गु ३; त्रि ९४; गउड)। २ चंचलता (गउड)।

संखोहिअ वि [संक्षोभित] क्षुब्ध किया हुआ, क्षोभ-युक्त किया हुआ (से १, ४९; अभि ६०)।

संग न [शृङ्ग] १ सींग, विषाण (धर्मसं ६३; ६४)। २ उत्कर्ष (कुमा)। ३ पर्वत के ऊपर का भाग, शिखर। ४ प्रधानता, मुख्यता। ५ वाद्य-विशेष। ६ काम का उद्रेक (हे १, १३०)। देखो सिंग = शृङ्ग।

संग न [शाङ्ग] शृङ्ग-संबन्धी (विसे २८९)।

संग पुंन [सङ्ग] १ संपर्क, संबन्ध (आचा; महा; कुमा)। २ सोहबत; 'तह हीणायारज-इजणसंगं सङ्घाण पडिसिद्धं' (संबोध ३६; आचा; प्रसू ३०)। ३ आसक्ति, विषयादि-राग (गउड; आचा; उव)। ४ कर्म, कर्म-बन्ध (आचा)। ५ बन्धन; 'भोगा इमे संगकरा हवंति' (उत्त १३, २७)।

संगइ स्त्री [संगति] १ औचित्य, उचितता (सुपा ११०)। २ मेल (भवि)। ३ नियति (सूअ १, १, २, ३)।

संगइअ वि [साङ्गतिक] १ नियति-कृत, नियति-संबन्धी (सूअ १, १, २, ३)। २ परिचित; 'सुही ति वा सहाए ति वा संग(?गइ)ए ति वा' (ठा ४, ३—पत्र २४३; राज)।

संगंथ पुं [संग्रन्थ] १ स्वजन का स्वजन, सगे का सगा (आचा)। २ संबन्धी, श्वशुर-कुल से जिसका संबन्ध हो वह (पण्ह २, ४—पत्र १३२)।

संगच्छ सक [सं + गम्] १ स्वीकार करना। २ अक. संगत होना, मेल रखना। संगच्छइ (चेइय ७७९; षड्), संगच्छह (स १६)। कृ. संगमणीअ (नाट—विक्र १००)।

संगच्छण न [संगमन] स्वीकार, अंगीकार (उप ९३०)।

संगम पुं [संगम] १ मेल, मिलाप (पाअ; महा)। २ प्राप्ति; 'सग्गापवग्गसंगमहेऊ जिण-देसिओ धम्मो' (महा)। ३ नदी-मीलक, नदियों का आपस में मिलान (णाया १, १—पत्र ३३)। ४ एक देव का नाम (महा)। ५ स्त्री-पुरुष का संभोग (हे १, १७७)। ६ एक जैन मुनि का नाम (उव)।

संगमय पुं [संगमक] भगवान् महावीर को उपसर्ग करनेवाला एक देव (चेइय २)।

संगमी स्त्री [संगमी] एक दूती का नाम (महा)।

संगय वि [दे] मसृण, चिकना (दे ८, ७)।

संगय न [संगत] १ मित्रता, मैत्री (सुर ६, २०९)। २ संग, सोहबत (उव; कुप्र १३४)। ३ पुं. एक जैन मुनि का नाम (पुप्फ १८२)। ४ त्रि. युक्त, उचित (विपा १, २—पत्र २२)। ५ मिलित, मिला हुआ (प्रासू ३१; पंचा १, १; महा)।

संगयय न [संगतक] छन्द-विशेष (अजि ७)।

संगर देखो संकर = संकर (विसे २८८४)।

संगर न [संगर] युद्ध, रण, लड़ाई (पाअ; काप्र १९३; कुप ७३; धर्मवि ९३; हे ४, ३४५)।

संगरिगा स्त्री [दे] फली-विशेष, जिसकी तरकारी होती है, साँगरी (पव ४—गाथा २२९)।

संगल सक [सं + घटय्] मिलना, संघटित करना। संगलइ (हे ४, ११३)। संकृ. संगलिअ (कुमा)।

संगल अक [सं + गल्] गल जाना, हीन होना। वकृ. संगलंत (से १०, ३४)।

संगलिया स्त्री [दे] फली, फलिया, छीमी (भग १५—पत्र ६८०; अनु ४)।

संगह सक [सं + ग्रह्] १ संचय करना। २ स्वीकार करना। ३ आश्रय देना। संगहइ (भवि)। भवि. संगहिस्सं (मोह ९३)।

संगह पुं [दे] घर के ऊपर का तिरछा काठ (दे ८, ४)।

संगह पुं [संग्रह] १ संचय, इकट्ठा करना, बटोरना (ठा ७—पत्र ३८५; वव ३)। २ संक्षेप, समास (पाअ; ठा ३, १ टी—पत्र ११४)। ३ उपधि, वस्त्र आदि का परिग्रह (ओघ ६६९)। ४ नय-विशेष, वस्तु-परीक्षा का एक दृष्टिकोण, सामान्य रूप से वस्तु को देखना (ठा ७—पत्र ३९०; विसे २२०३)। ५ स्वीकार, ग्रहण (ठा ८—पत्र ४२२)। ६ कष्ट आदि में सहायता करना (ठा १०—पत्र ४९६)। ७ वि. संग्रह करनेवाला (वव ३)। ८ न. नक्षत्र-विशेष, दुष्ट ग्रह से आक्रान्त नक्षत्र (वव १)।

संगहण न [संग्रहण] संग्रह (विसे २२०३; संबोध ३७; महा)। °गाहा स्त्री [°गाथा] संग्रह-गाथा (कप्प ११८)। देखो संगिण्हण।

संगहणि स्त्री [संग्रहणि] संग्रह-ग्रन्थ, संक्षिप्त रूप से पदार्थ-प्रतिपादक ग्रंथ, सार-संग्राहक ग्रन्थ (संग १; धर्मसं ३)।

संगहिअ वि [संग्रहिक] संग्रहवाला, संग्रह-नय को माननेवाला (विसे २८५२)।

संगहिअ वि [संगृहीत] १ जिसका संचय किया गया हो वह (हे २, १९८)। २ स्वीकृत, स्वीकार किया हुआ (सरण)। ३ पकड़ा हुआ; 'संगहिओ हत्थी' (कुप्र ८१)। देखो **संगिहीअ**।

संगा सक [सं+गै] गान करना। कवकृ. **संगिज्जमाण** (उप ५९७ टी)।

संगा स्त्री [दे] वल्गा, घोड़े की लगाम (दे ८, २)।

संगाम सक [सङ्ग्रामय्] लड़ाई करना। संगामेइ (भग; तंदु ११)। वकृ. **संगामेमाण** (णाया १, १६—पत्र २२३, निर १, १)।

संगाम पुं [सङ्ग्राम] लड़ाई, युद्ध (आचा; पाम्र; महा)। °**सूर** पुं [°शूर] एक राजा का नाम (श्रु २८)।

संगामिय वि [साङ्ग्रामिक] संग्राम-संबंधी, लड़ाई से संबन्ध रखनेवाला (ठा ५, १—पत्र ३०२; औप)।

संगामिया स्त्री [साङ्ग्रामिकी] श्रीकृष्ण वासुदेव की एक भेरी, जो लड़ाई की खबर देने के लिए बजाई जाती थी (विसे १४७६)।

संगामुड्डामरी स्त्री [सङ्ग्रामोड्डामरी] विद्या-विशेष, जिसके प्रभाव से लड़ाई में आसानी से विजय मिलती है (सुपा १४४)।

संगार पुं [दे] संकेत (ठा ४, ३—पत्र २४३; णाया १, ३; ओघभा २२; सुख २, १७; सूअनि २६; धर्मसं १३८८ उप ३०६)।

संगाहि वि [संग्राहिन्] संग्रह-कर्ता (विसे १५३०)।

संगि वि [सङ्गिन्] संग-युक्त (भग; संबोध ७; कप्पू)।

संगिज्जमाण देखो **संगा**=सं+गै।

संगिण्ह देखो **संगह**=सं+ग्रह्। संगिण्हइ (विसे २२०३)। कर्म. संगिज्जंते (विसे २२०३)। वकृ. **संगिण्हमाण** (भग ५, ६—पत्र २३१)। संकृ. **संगिण्हित्ताणं** (पि ५८३)।

संगिण्हण न [संग्रहण] आश्रय-दान (ठा ८—पत्र ४४१)। देखो **संगहण**।

संगिल्ल वि [सङ्गवत्] बद्ध, संग-युक्त (पाम्र)।

संगिल्ल देखो **संगेल्ल** (राज)।

संगिल्ली देखो **संगेल्ली** (राज)।

संगिहीय वि [संगृहीत] १ आश्रित (ठा ८—पत्र ४४१)। २ देखो **संगहिअ**=संगृहीत।

संगीअ न [संगीत] १ गाना, गान-तान (कुमा)। २ वि. जिसका गान किया गया हो वह; 'तेण संगीओ तुह चेव गुणग्गामो' (सुपा २०)।

संगुण सक [सं+गुणय्] गुणकार करना। संगुणए (सुज्ज १०, ६ टी)।

संगुण वि [संगुण] गुणित, जिसका गुणकार किया गया हो वह (सुज्ज १०, ६ टी)।

संगुणिअ वि [संगुणित] ऊपर देखो (ओघ २१; देवेन्द्र ११६; कम्म ५, ३७)।

संगुत्त वि [संगुप्त] १ छिपाया हुआ, प्रच्छन्न रखा हुआ (उप ३३९ टी)। २ गुप्ति-युक्त, अकुशल प्रवृत्ति से रहित (पव १२३)।

संगेल्ल पुं [दे] समूह, समुदाय (दे ८, ४; वव १)।

संगेल्ली स्त्री [दे] १ परस्पर अवलम्बन; 'हत्थसंगेल्लीए' (णाया १, ३—पत्र ९३)। २ समूह, समुदाय (भग ९, ३३—पत्र ४७४; औप)।

संगोढण वि [दे] व्रणित, व्रण-युक्त (दे ८, १७)।

संगोप्फ } पुं [संगोफ] बन्ध-विशेष, मर्कट-
संगोफ } बन्ध रूप गुम्फन (उत्त २२, ३५)।

संगोल्ल न [दे] संघात, समूह (षड्)।

संगोल्ली स्त्री [दे] समूह, संघात (दे ८, ४)।

संगोव सक [सं+गोपय्] १ छिपाना, गुप्त रखना। २ रक्षण करना। संगोवइ (प्राकृ ६३)। वकृ. **संगोवमाण, संगोवेमाण** (णाया १, ३—पत्र ९१; विपा १, २—पत्र ३१)।

संगोवग वि [संगोपक] रक्षण-कर्ता (णाया १, १८—पत्र २४०)।

संगोवाव देखो **संगोव**। संगोवावसु (स ८९)।

संगोविअ वि [संगोपित] १ छिपाया हुआ (स ८९)। २ संरक्षित (महा)।

संगोवित्तु } वि [संगोपयितृ] संरक्षण-कर्ता
संगोवेत्तु } (ठा ७—पत्र ३८५)।

संघ सक [कथ्] कहना। संघइ (हे ४, २), संघसु (कुमा)।

संघ पुं [संघ] १ साधु, साध्वी, श्रावक और श्राविकाओं का समुदाय (ठा ४, ४—पत्र २८१; णंदि; महानि ४; सिग्घ १; ३; ५)। २ समान धर्मवालों का समूह (धर्मसं ९८८)। ३ समूह, समुदाय (सुपा १८०)। ४ प्राणि-समूह (हे १, १८७)। °**दास** पुं [°दास] एक जैन मुनि और ग्रंथ-कर्ता (ती ३; राज)। °**पालिय,** °**वालिय** पुं [°पालित] एक प्राचीन जैन मुनि, जो आर्यवृद्ध मुनि के शिष्य थे (कप्प; राज)।

संघअ वि [संहत] निबिड़, सान्द्र (से १०, २९)।

संघंस पुं [संघर्ष] १ घिसाव, रगड़। २ आघात, धक्का (णाया १, १—पत्र ६५; श्रा २८)।

संघट्ट सक [सं+घट्ट] १ स्पर्श करना, छूना। २ अक. आघात लगाना। संघट्टइ (भवि), संघट्टेइ (णाया १, ५—पत्र ११२; भग ५, ६—पत्र २२९), संघट्टए (दस ८, ७)। वकृ. **संघट्टंत** (पिंड ५७५)। संकृ. **संघट्टिऊण** (पव २)।

संघट्ट पुं [संघट्ट] १ आघात, धक्का, संघर्ष (उव; कुप्र १६; धर्मवि ५७; सुपा १४)। २ अर्ध जंघा तक का पानी (ओघभा ३४)। ३ दूसरा नरक का छठवाँ नरकेन्द्रक—स्थान विशेष (देवेन्द्र ६)। ४ भीड़; जमावड़ा (भवि)। ५ स्पर्श (राय)।

संघट्ट वि [संघट्टित] संलग्न (भवि)।

संघट्टण न [संघट्टन] १ संमर्दन, संघर्ष (णाया १, १—पत्र ७१; पिंड ५८९)। २ स्पर्श करना (राज)।

संघट्टणा स्त्री [संघट्टना] संचलन, संचार; 'गब्भे संघट्टणा उ उट्ठंतुवेसमाणीए' (पिंड ५८९)।

संघट्टा स्त्री [संघट्टा] वल्ली-विशेष (पण्ण १—पत्र ३३)।

संघट्टिय वि [संघट्टित] १ स्पृष्ट, छुआ हुआ (णाया १, ५—पत्र ११२; पडि)। २ संघर्षित, संमर्दित (भग १६, ३—पत्र ७६६; ७६७)।

संघड अक [सं + घट्] १ प्रयत्न करना। २ संबद्ध होना, युक्त होना। कृ. संघडियव्व (ठा ८—पत्र ४४१)। प्रयो. संघडावेइ (महा)।

संघड वि [संघट] निरन्तर; 'संघडदंसिणो' (आचा १; ४, ४, ४)।

संघडण देखो **संघयण** (चंड—पृ ४८; भवि)।

संघडणा स्त्री [संघटना] रचना, निर्माण (समु १५८)।

संघडिअ वि [संघटित] १ संबद्ध, युक्त (से ४, २४)। २ गठित, जटित (प्रासू २)।

संघदि (शौ) स्त्री [संहति] समूह (पि २६७)।

संघयण न [दे. संहनन] १ शरीर, काय (दे ८, १४; पाअ)। २ अस्थि-रचना, शरीर, के हाड़ों की रचना, शरीर का बांध (भग; सम १४६; १५५; उव; औप; उवा; कम्म १, ३८; षड्)। ३ कर्म-विशेष, अस्थि-रचना का कारण-भूत कर्म (सम ६७; कम्म १, २४)।

संघयणि वि [दे. संहननिन्] संहनन-वाला (सम १५५; अणु ८ टी)।

संघरिस देखो **संघंस** (उप २६४ टी)।

संघरिसिद (शौ) वि [संघर्षित] संघर्ष-युक्त; घिसा हुआ (मा ३७)।

संघस सक [सं + घृष्] संघर्ष करना। संघसिज्ज (आचा २, १, ७, १)।

संघस्सिद देखो **संघरिसिद** (नाट—मालवि २६)।

संघाइअ वि [संघातित] १ संघात रूप से निष्पन्न (से १३, ६१)। २ जोड़ा हुआ (आव)। ३ इकट्ठा किया हुआ (पडि)।

संघाइम वि [संघातम] ऊपर देखो (औप; आचा २, १२; १; पि ६०२; अणु १२; दसनि २, १७)।

संघाड देखो **संघाय** = संघात (ओघभा १०२; राज)।

संघाड, संघाडग पुं [दे. संघाट] १ युग्म, युगल (राय ६६; धर्मसं १०६५; उप पृ ३६७; सुपा ६०२; ६२३; ओघ ४११; उप २७५)। २ प्रकार, भेद; 'संघाडो त्ति वा लय त्ति वा पगारो त्ति वा एगट्ठा' (निचू)। ३ ज्ञाताधर्म-कथा नामक जैन अंग-ग्रन्थ का दूसरा अध्ययन (सम ३६)।

संघाडग देखो **सिंघाडग** (कप्प)।

संघाडणा स्त्री [संघटना] १ संबन्ध। २ रचना; 'अक्खरगुणमतिसंघाय (? ड)णाए' (सूअनि २०)।

संघाडी स्त्री [दे. संघाटी] १ युग्म, युगल (दे ८, ७; प्राकृ ३८; गा ४१६)। २ उत्तरीय वस्त्र-विशेष (टा ४, १—पत्र १८६; णाया १, १६—पत्र २०४; ओघ ६७७; विसे २३२६; पव ६२; कस)।

संघाणय पुं [शिङ्घानक] श्लेष्मा, नाक में से बहता द्रव पदार्थ (तंदु १३)।

संघातिम देखो **संघाइम** (णाया १, ३—पत्र १७६; पण्ह २, ५—पत्र १५०)।

संघाय सक [सं + घातय्] १ संहत करना, इकट्ठा करना, मिलाना। २ हिंसा करना, मारना। संघायइ, संघाएइ (कम्म १, ३६; भग ५, ६—पत्र २२६)। कृ. संघायणिज्ज (उत्त २६, ५६)।

संघाय पुं [संघात] १ संहति, संहत रूप से अवस्थान, निबिड़ता (भग; दस ४, १)। २ समूह, जत्था (पाअ; गउड; औप; महा)। ३ संहनन-विशेष, वज्रऋषभ-नाराच नामक शरीर-बन्ध; 'संघाएणं संठाणेणं' (औप)। ४ श्रुतज्ञान का एक भेद (कम्म १, ७)। ५ संकोच, सकुचाना (आचा)। ६ न. नामकर्म-विशेष, जिस कर्म के उदय से शरीर-योग्य पुद्गल पूर्व-गृहीत पुद्गलों पर व्यवस्थित रूप से स्थापित होते हैं (कम्म १, ३१; ३६)। °समास पुं [°समास] श्रुतज्ञान का एक भेद (कम्म १, ७)।

संघायण न [संघातन] १ विनाश, हिंसा (स १७०)। २ देखो 'संघाय' का छठवाँ अर्थ (कम्म १, २४)।

संघायणा स्त्री [संघातना] संहति। °करण न [°करण] प्रदेशों को परस्पर संहत रूप से रखना (विसे ३३०८)।

संघार पुं [संहार] १ बहु-जंतु-क्षय, प्रलय (तंदु ४५)। २ नाश (पउम ११८, ८०; उप १३६ टी)। ३ संक्षेप। ४ विसर्जन। ५ नरक-विशेष। ६ भैरव-विशेष (हे १, २६४; षड्)।

संघार (अप) देखो **संहर** = सं + हृ। संकृ. संघारि (पिंग)।

संघारिय वि [संहारित] मारित, व्यापादित (भवि)।

संघासअ पुं [दे] स्पर्धा, बराबरी (दे ८, १३)।

संघिअ देखो **संधिअ** = संहित (प्राप)।

संघिल्ल वि [संघवत्] संघ-युक्त, समुदित (राज)।

संघोडी स्त्री [दे] व्यतिकर, संबन्ध (दे ८, ८)।

संच (अप) देखो **संचिण**। संचइ (भवि)।

संच (अप) पुं [संचय] परिचय (भवि)।

संचइ, संचइग वि [संचयिन्] संचयवाला, संग्रही, संग्रह करनेवाला, (दसनि १०, १०; पव ७३ टी)।

संचइय वि [संचयित] संचय-युक्त (राज)।

संचक्कार पुं [दे] अवकाश, जगह;

'अविगणिय कुलकलंकं इय
कुहियकरंककारणे कीस।
वियरसि संचक्कारं तं
नारयतिरियदुक्खाण ॥''
(उप ७२८ टी)।

संचत्त वि [संत्यक्त] परित्यक्त (अज्झ १७८)।

संचय पुं [संचय] १ संग्रह (पण्ह १, ५—पत्र ९२; गउड, महा)। २ समूह (कप्प; गउड)। ३ संकलन, जोड़ (वव १)। °मास पुं [°मास] प्रायश्चित-संबन्धी मास-विशेष (राज)।

संचर सक [सं + चर्] १ चलना, गति करना। २ सम्यग् गति करना, अच्छी तरह चलना। ३ धीरे धीरे चलना। संचरइ (गउड ४२६; भवि)। वकृ. संचरंत (से २,

२४; सुर ३, ७६; नाट—चैत १३०)। कृ. **संचरणिज्ज, संचरिअव्व** (नाट—वेणी १४; से १४, २८)।

संचरण न [संचरण] १ चलना, गति। २ सम्यग् गति (गउड; पि १०२; कप्पू)।

संचरिअ वि [संचरित] चला हुआ, जिसने संचरण किया हो वह (उप पृ ३५८; रुक्मि ५६; भवि)।

संचलण न [संचलन] संचार, गति (गउड)।

संचलिअ वि [संचलित] चला हुआ (सुर ३, १४०; महा)।

संचल्ल सक [सं + चल्] चलना, गति करना। संचल्लइ (भवि)।

संचल्ल (अप) देखो संचलिय (भवि)।

संचल्लिअ देखो संचलिअ (महा)।

संचाइय वि [संशकित] जो समर्थ हुआ हो वह (भग ३, २ टी—पत्र १७८)।

संचाअ अक [सं + शक्] समर्थ होना। संचाएइ (भग; उवा; कस), संचाएमो (सूअ २, ७, १०; णाया १, १८—पत्र २४०)।

संचाअ पुं [संत्याग] परित्याग (पंचा १३, ३४)।

संचार सक [सं + चारय्] संचार कराना। संचारइ (भवि)। संकृ. संचारि (अप) (पिंग)।

संचार पुं [संचार] संचरण, गति (गउड; महा; भवि)।

संचारि वि [संचारिन्] गति करनेवाला (कप्पू)।

संचारिअ वि [संचारित] जिसका संचार कराया गया हो वह (भवि)।

संचारिम वि [संचारिम] संचार-योग्य, जो एक स्थान से उठा कर दूसरे स्थान में रखा जा सके वह (पिंड ३००; सुपा ३५१)।

संचारी स्त्री [दे] दूत-कर्म करनेवाली स्त्री (पाअ; षड्)।

संचाल सक [सं + चालय्] चलाना। संचालइ (भवि)। कवकृ. **संचालिज्जंत, संचालिज्जमाण** (से ६, ३६; णाया १, ९—पत्र १५६)।

संचालिअ वि [संचालित] चलाया हुआ (से ४, २७)।

संचिअ वि [संचित] संगृहीत (ओघ ३२९ भवि; नाट—वेणी ३७, सुपा ३५२)।

संचिंतण न [संचिन्तन] चिन्तन, विचार (हि २२)।

संचिंतणया स्त्री [संचिन्तना] ऊपर देखो (उत्त ३२, ३)।

संचिक्ख अक [सं + स्था] रहना, ठहरना, अच्छी तरह रहना, समाधि से रहना। संचिक्खइ (आचा १, ६, २, २)। संचिक्खे (उत्त २, ३३; ओघ ६९)।

संचिज्जमाण देखो संचिण।

संचिट्ठ देखो संचिक्ख। संचिट्ठइ (भग; उवा; महा)।

संचिट्ठण न [संस्थान] अवस्थान (पि ४८३)।

संचिण सक [सं + चि] १ संग्रह करना, इकट्ठा करना। २ उपचय करना। संचिणेइ, संचिणइ, संचिणंति (श्रु १०७; वि ५०२)। संकृ. संचिणित्ता (सूअ २, २, ६५; भग)। कवकृ. संचिज्जमाण (आचा २, १, ३, २)।

संचिणिय वि [संचित] संगृहीत (स ४०३)।

संचिन्न वि [संचीर्ण] आचरित (सण)।

संचुण्ण सक [सं + चूर्णय्] चूर-चूर करना, खंड-खंड करना, टुकड़ा-टुकड़ा करना। कवकृ. संचुण्णिज्जंत (पउम ५६, ४४)।

संचुण्णिअ, संचुन्निअ वि [संचूर्णित] चूर-चूर किया हुआ (महा; भवि; णाया १, १—पत्र ४७; सुर १२, २४१)।

संचेयणा स्त्री [संचेतना] अच्छी तरह सूध, भान; 'लद्धसचेयणाउ' (सिरि ६५७)।

संचोइय वि [संचोदित] प्रेरित (ठा ४, ३ टी—पत्र २३८)।

संछइय, संछण्ण, संछन्न वि [संछन्न] ढका हुआ (उप पृ १२३; सुर २, २४७; सुपा ५६२; महा; सण)।

संछाइय वि [संछादित] ढका हुआ (सुपा ५६२)।

संछाय सक [सं + छादय्] ढकना। वकृ. **संछायंत** (पउम ५६, ४७)।

संछुह सक [सं + क्षिप्] एकत्रित कर छोड़ना, इकट्ठा करना; 'संछुहई एगगेहम्मि' (पिंड ३११)।

संछोभ पुं [संक्षेप] अच्छी तरह फेंकना, क्षेपण (पंच ५, १५९; १८०)।

संछोभग वि [संक्षेपक] प्रक्षेपक (राज)।

संछोभण न [संक्षेपण] परावर्तन (राज)।

संजइ पुंस्त्री [संयति] उत्तम साधु, मुनि; 'संजईण दव्वलिगीणमंतरं मेरुसरिसवसरिच्छं' (संबोध ३६)।

संजई स्त्री [संयती] साध्वी (ओघ १६; महा; द्र २७)।

संजणग वि [संजनक] उत्पन्न करनेवाला (सुर ११, १६६)।

संजणण न [संजनन] १ उत्पत्ति। २ वि. उत्पन्न करनेवाला (सुर ६, १४२; सुपा ३८२)। स्त्री. °णी (रत्न २८)।

संजणय देखो संजणग (चेइय ६१५; सुपा ३८; सिक्खा २९)।

संजणिय वि [संजनित] उत्पादित (प्रासू १४९; सण)।

संजत्त सक [दे] तैयार करना। संजत्तेह (स २२)।

संजत्ता स्त्री [संयात्रा] जहाज की मुसाफिरी (णाया १, ८—पत्र १३२)।

संजत्ति स्त्री [दे] तैयारी; 'आणत्ता नियपुरिसा संजत्तिं कुणह गमणत्थं' (सुर ७, १३०; स ६३५; ७३५; महा)। देखो संजुत्ति।

संजत्तिअ वि [दे] तैयार किया हुआ (स ४४३)।

संजत्तिअ, संजत्तिग वि [सांयात्रिक] जहाज से यात्रा करनेवाला, समुद्र-मार्ग का मुसाफिर (सुपा ६५५; ती ९; सिरि ४३१; पव २७६; हे १, ७०; महा; णाया १, ८—पत्र १३५)।

संजत्थ वि [दे] १ कुपित, क्रुद्ध। २ पुं. क्रोध दे ८, १०)।

संजद देखो संजय = संयत (प्राप्र; प्राकृ १२; संक्षि ९)।

संजम अक [सं + यम्] १ निवृत्त होना। २ प्रयत्न करना। ३ व्रत-नियम करना। ४ सक. बाँधना। ५ काबू में करना। कर्म.

संजमिज्जंति (गउड २८६)। वकृ. संजमेंत, संजमयंत. संजममाण (गउड ८४०; दसनि १, १८०; उत्त १८, २६)। कवकृ. संजमीअमाण (नाट—विक्र ११२)। संकृ. संजमित्ता (सूअ १, १०, २)। हेकृ. संजमिउं (गउड ४८७)। कृ. संजमिअव्व, संजमितव्व (भग; गाया १, १—पत्र ६०)।

संजम सक [दे] छिपाना। संजमेसि (दे ८, १५ टी)।

संजम पुं [संयम] १ चारित्र, व्रत, विरति, हिंसादि पाप-कर्मों से निवृत्ति (भग; ठा ७; औप; कुमा; महा)। २ शुभ अनुष्ठान (कुमा ७, २२)। ३ रक्षा; अहिंसा (गाया १, १—पत्र ६०)। ४ इन्द्रिय-निग्रह। ५ बन्धन। ६ नियन्त्रण, काबू (हे १, २४५)। °संजम पुं [°संयम] श्रावक-व्रत (औप)।

संजमण न [संयमन] ऊपर देखो (धर्मवि १७; गा २६१; सुपा ५५३)।

संजमिअ वि [दे] संगोपित, छिपाया हुआ (दे ८, १५)।

संजमिअ वि [संयमित] बाँधा हुआ, बद्ध (गा ६४६; सुर ७, ५; कुप्र १८७)।

संजय अक [सं + यत्] १ सम्यक् प्रयत्न करना। २ सक. अच्छी तरह प्रवृत्त करना। संजयए, संजए (पव ७२; उत्त २, ४)।

संजय वि [संयत] साधु, मुनि, व्रती (भग; ओघभा १७; काल); 'ममावि मायावित्ताणि संजयाणि' (महा)। °पंता स्त्री [°प्रान्ता] साधु को उपद्रव करनेवाली देवी आदि (ओघभा ३७ टी)। °भद्दिगा स्त्री [°भद्रिका] साधु को अनुकूल रहनेवाली देवी आदि (ओघभा १७ टी)। °संजय वि [°संयत] किसी अंश में व्रती और किसी अंश में अव्रती, श्रावक (भग)।

संजय पुं [संजय] भगवान् महावीर के पास दीक्षा लेनेवाला एक राजा (ठा ८—पत्र ४३०)।

संजयंत पुं [संजयन्त] एक जैन मुनि (पउम ५, २१)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष (इक)।

संजर पुं [संज्वर] ज्वर, बुखार (अच्चु ६७)।

संजल अक [सं + ज्वल्] १ जलना। २ आक्रोश करना। ३ क्रुद्ध होना। संजले (सूअ १, ६, ३१; उत्त २, २४)।

संजलण वि [संज्वलन] १ प्रतिक्षण क्रोध करनेवाला (सम ३७)। २ पुं. कषाय-विशेष (कम्म १, १७)।

संजलिअ पुं [संज्वलित] तीसरी नरक भूमि का एक नरक-स्थान (देवेन्द्र ६)।

संजलिअ (अप) वि [संज्वलित] आक्रोश-युक्त (भवि)।

संजव देखो संजम = सं + यम्। संजवहु (अप) (भवि)।

संजव देखो संजम = (दे)। संजवइ (प्राकृ ६६)।

संजविअ देखो संजमिअ = (दे) (पाअ; भवि)।

संजविअ देखो संजमिअ = संयमित (भवि)।

संजा देखो संणा (हे २, ८३)।

संजाणय वि [संज्ञायक] विज्ञ, विद्वान्, जानकार (राज)।

संजात } देखो संजाय = संजात (सुर २,
संजाद } ११४; ४, १६०; प्राप्र; पि २०४)।

संजाय अक [सं + जन्] उत्पन्न होना। संजायइ (सण)।

संजाय वि [संजात] उत्पन्न (भग; उवा; महा; सण; पि ३३३)।

संजीवणी स्त्री [संजीवनी] १ मरते हुए को जीवित करनेवाली औषधि (प्रासू ८३)। २ जीवित-दात्री नरक-भूमि (सूअ १, ५, २, ६)।

संजीवि वि [संजिविन्] जिलानेवाला, जीवित करनेवाला (कप्पू)।

संजुअ वि [संयुत] सहित, संयुक्त (द्र २२; सिक्खा ४८; सुर ३, ११७; महा)। देखो संजुत।

संजुअ न [संयुग] १ लड़ाई, युद्ध, संग्राम (पाअ)। २ नगर-विशेष (राज)।

संजुंज सक [सं + युज्] जोड़ना। कर्म. 'अविसिट्ठे सब्भावे जलेण संजुअ(? ज)ती जहा वत्थं' (धर्मसं १८०)। कवकृ. संजुज्जंत (सम्म ५३)।

संजुत न [संयुत] छन्द-विशेष (पिंग)। देखो संजुअ = संयुत।

संजुता स्त्री [संयुता] छन्द-विशेष (पिंग)।

संजुत्त वि [संयुक्त] संयोगवाला, जुड़ा हुआ (महा; सण; पि ४०४; पिंग)।

संजुत्ति स्त्री [दे] तैयारी (सुर ४, १०२; १२, १०१; स १०३; कुप्र २००)। देखो संजत्ति।

संजुद्ध वि [दे] स्पन्द-युक्त, थोड़ा हिलने-चलनेवाला, फरकनेवाला (दे ८, ६)।

संजूह पुंन [संयूथ] १ उचित समूह (ठा १०—पत्र ४६५)। २ सामान्य, साधारणता। ३ संक्षेप, समास (सूअ २, २, १)। ४ ग्रन्थ-रचना, पुस्तक-निर्माण (अणु १४६)। ५ दृष्टिवाद के अठासी सूत्रों में एक सूत्र का नाम (सम १२८)।

संजोअ सक [सं + योजय्] संयुक्त करना, संबद्ध करना, मिश्रण करना। संजोएइ, संजोयइ (पिंड ६३८; भग; उव; भवि)। वकृ. संजोयंत (पिंड ६३६)। संकृ. संजोएऊण (पिंड ६३६)। कृ. संजोएअव्व (भग)।

संजोअ सक [सं + दृश्] निरीक्षण करना, देखना। संकृ. संजोइऊण (श्रु ३२)।

संजोअ पुं [संयोग] संबन्ध, मेल-मिलाप, मिश्रण (षड्; महा)।

संजोअण न [संयोजन] १ जोड़ना, मिलाना (ठा २, १—पत्र २६)। २ वि. जोड़नेवाला। ३ कषाय-विशेष, अनन्तानुबन्धि नामक क्रोधादि-चतुष्क (विसे १२२६; कम्म ५, ११ टी)। °धिकरणिया स्त्री [°धिकरणिकी] खड्ग आदि को उसकी मूठ आदि से जोड़ने की क्रिया (ठा २, १—पत्र ३६)।

संजोअणा स्त्री [संयोजना] १ मिलान, मिश्रण (पिंड ६३६)। २ भिक्षा का एक दोष, स्वाद के लिए भिक्षा-प्राप्त चीजों को आपस में मिलाना (पिंड १)।

संजोइय वि [संयोजित] मिलाया हुआ, जोड़ा हुआ (भग; महा)।

संजोइय वि [संदृष्ट] दृष्ट, निरीक्षित (भवि)।

संजोग देखो संजोअ = संयोग (हे १, २४५)।

संजोगि वि [संयोगिन्] संयोग-युक्त, संबन्धी (संबोध ४६)।

संजोगेत्तु वि [संयोजयितृ] जोड़नेवाला (ठा ८—पत्र ४२६)।

संजोत्त (अप) देखो संजोअ = स + योजय्। संकृ. **संजोत्तिवि** (भवि)।

संझ° नीचे देखो (णाया १, १—पत्र ४८)। °च्छेयावरण वि [°च्छेदावरण] १ सन्ध्या-विभाग का आवारक। २ पुं. चन्द्र, चाँद (अणु १२० टी)। °प्पभ पुंन [°प्रभ] शक्र के सोम-लोकपाल का विमान (भग ३, ७—पत्र १७५)।

संझा स्त्री [सन्ध्या] १ साँझ, साम, सायंकाल (कुमा; गउड; महा)। २ दिन और रात्रि का संधि-काल। ३ युगों का संधि-काल। ४ नदी-विशेष। ५ ब्रह्मा की एक पत्नी (हे १, ३०)। ६ मध्याह्न काल; 'तिसंझं' (महा)। °गय न [°गत] १ जिस नक्षत्र में सूर्य अनन्तर काल में रहनेवाला हो वह नक्षत्र। २ सूर्य जिसमें हो उससे चौदहवाँ या पनरहवाँ नक्षत्र। ३ जिसके उदय होने पर सूर्य उदित हो वह नक्षत्र। ४ सूर्य के पीछे के या आगे के नक्षत्र के बाद का नक्षत्र (वव १)। °छेयावरण देखो संझ-च्छेयावरण (पव २६८)। °णुराग पुं [°नुराग] साँझ के बादल का रँग (पण्ण २—पत्र १०६)। °वली स्त्री [°वली] एक विद्याधर-कन्या का नाम (महा)। °विगम पुं [°विगम] रात्रि, रात (निचू १६)। °विराग पुं [°विराग] साँझ का समय (जीव ३, ४)।

संझाअ सक [सं + ध्यै] ख्याल करना, चिन्तन करना, ध्यान करना। संझाअदि (शौ) (पि ४७६; ५५८)। वकृ. **संझायंत** (सुपा ३३६)।

संझाअ अक [संध्याय] संध्या की तरह आचरण करना। संझायइ (गउड ६३२)।

संटंक पुं [सटङ्क] अन्वय, संबन्ध (चेइइ ३६६)।

संठ वि [शठ] धूर्त, मायावी (कुमा; दे ६, १११)।

संठ (चूपै) देखो संढ (हे ४, ३२५)।

संठप्प देखो संठव।

संठव सक [सं + स्थापय्] १ रखना, स्थापना करना। २ आश्वासन देना, उद्वेग-रहित करना, सान्त्वना करना। संठवइ, संठवेइ (भवि; महा)। वकृ. **संठवंत** (गा ३६)। कवकृ. **संठविज्जंत** (सुर १२, ४१)। संकृ. **संठवेऊण** (महा), **संठप्प** (उव), **संठविअ** (पिंग)।

संठवण देखो संठावण (मृच्छ १५४)।

संठविअ वि [संस्थापित] १ रखा हुआ (हे १, ६७; प्राप्र; कुमा)। २ आश्वासित। ३ उद्वेग-रहित किया हुआ (महा)।

संठा अक [सं + स्था] रहना, अवस्थान करना, स्थिति करना। संठाइ (पि ३०६; ४८३)।

संठाण न [संस्थान] १ आकृति, आकार (भग; औप; पत्र २७६; गउड; महा; दं ३)। २ कर्म-विशेष, जिसके उदय से शरीर के शुभ या अशुभ आकार होता है वह कर्म (सम ६७; कम्म १, २४; ४०)। ३ संनिवेश, रचना (प्रासू ८७)।

संठाव देखो संठव। संकृ. **संठाविअ** (नाट—चैत ७५)।

संठावण न [संस्थापन] रखना; 'तेरिच्छ-संठावणं' (पव ३८)। देखो संथावण।

संठावणा स्त्री [संस्थापना] आश्वासन, सान्त्वना (से ११, १२१)। देखो संथावणा।

संठाविअ देखो संठविअ (हे १, ६७; कुमा; प्राप्र)।

संठिअ वि [संस्थित] १ रहा हुआ, सम्यक् स्थित (भग; उवा; महा; भवि)। २ न. आकार (राय)।

संठिइ स्त्री [संस्थिति] १ व्यवस्था (सुज्ज १, १)। २ अवस्था, दशा, स्थिति (उप १३६ टी)।

संड पुं [शण्ड, षण्ड] १ वृष, बैल, साँढ; 'मत्तसंडुव्व भमेइ विलसेइ अ' (श्रा १२; सुर १५, १४०)। २ पुंन. पद्म आदि का समूह, वृक्ष आदि की निबिड़ता (णाया १, १—पत्र १६; भग; कप्प; औप; गा ८; सुर ३, ३०; महा; प्रासू १४५); 'तियसतरुसंडो' (गउड)। ३ पुं. नपुंसक (हे १. २६०)।

संडास पुंन [संदंश] १ यन्त्र-विशेष, सँड़सी, चिमटा (सूअ १, ४, २, ११; विपा १, ६—पत्र ६८; स ६६६)। २ ऊरु-संधि, जाँघ और ऊरु के बीच का भाग (ओघ २०६; ओघभा १५५)। °तोंड पुं [°तुण्ड] पक्षि-विशेष, सँड़सी की तरह मुखवाला पाँखी (पण्ह १, १—पत्र १४)।

संडिज्झ } न [दे] बालकों का क्रीड़ा-स्थान
संडिब्भ } (राज; दस ५, १, १२)।

संडिल्ल पुं [शाण्डिल्य] १ देश-विशेष (उप १०३१ टी; सत्त ६७ टी)। २ एक जैन मुनि का नाम (कप्प; णंदि ४६)। ३ एक ब्राह्मण का नाम (महा)। देखो संडेल्ल।

संडी स्त्री [दे] वल्गा, लगाम (दे ८, २)।

संडेय पुं [षाण्डेय] षंढ-पुत्र, षंढ, नपुंसक; 'कुक्कुडसंडेयगामपउरा' (औप; णाया १, १ टी—पत्र १)।

संडेल्ल न [शाण्डिल्य] १ गोत्र-विशेष। २ पुंस्त्री. उस गोत्र में उत्पन्न (ठा ७—पत्र ३६०)। देखो संडिल्ल।

संडेव पुं [दे] पानी में पैर रखने के लिए रखा जाता पाषाण आदि (ओघ ३१)।

संडेवय (अप) देखो संडेय; 'गामइं कुक्कुड-संडेवयाइं' (भवि)।

संडोलिअ वि [दे] अनुगत, अनुयात (दे ८, १७)।

संढ पुं [षण्ढ] नपुंसक (प्राप्र; हे १, ३०; संबोध १६)।

संढी स्त्री [दे] साँढ़नी, ऊँटनी (सुपा ५८०)।

संढोइय वि [संढौकित] उपस्थापित (सुपा ३२३)।

संण वि [संज्ञ] जानकार, ज्ञाता (आचा १, ५, ६, १०)।

संणक्खर देखो संनक्खर (राज)।

संणज्ज न [सांनाय्य] मन्त्र आदि से संस्कारा जाता घी वगैरह (प्राकृ १६)।

संणज्झ अक [सं + नह्] १ कवच धारण करना, बखतर पहनना। २ तैयार होना। संणज्झइ (पि ३३१)।

संणडिअ वि [संनटित] व्याकुल किया हुआ, विडम्बित (वज्जा ७०)।

संणद्ध वि [संनद्ध] संनाह-युक्त, कवचित (विपा १, २—पत्र २३; गउड)।

संणय देखो संनय (राज)।

संणवणा स्त्री [संज्ञापना] संज्ञप्ति, विज्ञापन (उवा)।

संणा स्त्री [संज्ञा] १ आहार आदि का अभिलाष (सम ६; भग; पएण १, ३—पत्र ५५; प्रासू १७६)। २ मति, बुद्धि (भग)। ३ संकेत, इशारा (से ११, १३४ टी)। ४ आख्या, नाम। ५ सूर्य की पत्नी। ६ गायत्री (हे २, ४२)। ७ विष्ठा, पुरीष (उप १४२ टी)। ८ सम्यग् दर्शन (भग)। ९ सम्यग् ज्ञान। (राय १३३)। °इअ वि [°कृत] टट्टी फिरा हुआ, फरागत गया हुआ (दस १, १ टी)। °भूमि स्त्री [°भूमि] पुरीषोत्सर्जन की जगह (उप १४२ टी; दस १, १ टी)।

संणामिय वि [संनामित] अवनत किया हुआ (पंचा १९, ३६)।

संणाय वि [संज्ञात] १ ज्ञात, नात का आदमी (पंच १०, ३६)। २ स्वजन, सगा (उप ६५३)। देखो संनाय।

संणास पुं [संन्यास] संसार-त्याग, चतुर्थ आश्रम (नाट—चैत ९०)।

संणासि वि [संन्यासिन्] संसार-त्यागी, चतुर्थ-आश्रमी, यति, व्रती (नाट—चैत ८८)।

संणाह सक [सं + नाहय्] लड़ाई के लिए तैयार करना, युद्ध-सज्ज करना। संणाहेहि (औप ४०)।

संणाह पुं [संनाह] १ युद्ध की तैयारी (से ११, १३४)। २ कवच, बखतर (नाट—वेणी ६२)। °पट्ट पुं [°पट्ट] शरीर पर बाँधने का वस्त्र-विशेष (बृह ३)।

संणाहिय वि [सांनाहिक] युद्ध की तैयारी से सम्बन्ध रखनेवाला; 'संणाहियाए भेरीए सद्दं सोच्चा' (णाया १, १६—पत्र २१७)।

संणि वि [संज्ञिन्] १ संज्ञावाला, संज्ञा-युक्त। २ मनवाला प्राणी (सम २; भग; औप)। ३ श्रावक, जैन गृहस्थ (ओघ ८)। ४ सम्यग् दर्शनवाला, सम्यक्त्वी, जैन (भग)। ५ न. गोत्र-विशेष, जो वासिष्ठ गोत्र की शाखा है। ६ पुंस्त्री. उस गोत्र में उत्पन्न (ठा ७—पत्र ३९०)।

संणिक्खित्त देखो संनिक्खित्त (राज)।

संणिगास देखो संणियास (णाया १, १—पत्र ३२)।

संणिगास देखो संनिगास = संनिकर्ष (राज)।

संणिचय देखो संनिचय (राज)।

संणिचिय देखो संनिचिय (आचा २, १, २, ४)।

संणिज्झ देखो संनिज्झ (गउड)।

संणिणाय देखो संनिनाय (राज)।

संणिधाइ देखो संणिहाइ (नाट—मालती २९)।

संणिधाण देखो संनिहाण (नाट—उत्तर ४४)।

संणिपडिअ वि [संनिपतित] गिरा हुआ (विपा १, ६—पत्र ६८)।

संणिभ देखो संनिभ (राज)।

संणिय वि [संज्ञित] जिसको इशारा किया गया हो वह (सुपा ८८)।

संणियास पुं [संनिकाश] समान, सदृश (पउम २०, १८८)। देखो संनियास।

संणिरुद्ध वि [संनिरुद्ध] रुका हुआ, नियन्त्रित (आचा २, १, ४, ४)।

संणिरोह पुं [संनिरोध] अटकाव, रुकावट (से ५, ६४)।

संणिवय अक [संनि + पत्] पड़ना, गिरना। वकृ. संणिवयमाण (आचा २, १, ३, १०)।

संणिवाय पुं [संनिपात] सम्बन्ध (पंचा ७, १८)।

संणिविट्ठ देखो संनिविट्ठ (णाया १, १ टी—पत्र २)।

संणिवेस देखो संनिवेस (आचा १, ८, ६, ३; भग; गउड; नाट—मालती ५६)।

संणिसिज्जा } संणिसेज्जा } देखो संनिसिज्जा (राज)।

संणिह देखो संनिह (गा २५८; नाट—मृच्छ ६१)।

संणिहाइ वि [संनिधायिन्] समीप-स्थायी (माल ५२)।

संणिहाण देखो संनिहाण (राज)।

संणिहि देखो संनिहि (आचा २, १, २, ४)।

संणिहिअ वि [संनिहित] सहायता के लिए समीप-स्थित, निकट-वर्ती (महा)। देखो संनिहिअ।

संणेज्झ देखो संनेज्झ (गउड)।

संत देखो स = सत् (उवा; कप्प; महा)।

संत वि [शान्त] १ शम-युक्त, क्रोध-रहित (कप्प; आचा १, ८, ५, ४)। २ पुं. रस-विशेष; 'विणयंता चेव गुणा संतंतरसा किया उ भावंता' (सिरि ८८२)।

संत वि [श्रान्त] थका हुआ (णाया १, ४; उवा १०१; ११२; विपा १, १; कप्प; दे ८, ३६)।

संतइ स्त्री [संतति] १ संतान, अपत्य, लड़काबाला; 'दुट्ठसीला खु इत्थिया विणासेइ संतइं' (स ५०५; सुपा १०४)। २ अविच्छिन्न धारा, प्रवाह (उत्त ३६, ९; उप पृ १८१)।

संतच्छण न [संतक्षण] छिलना (सूअ १, ५, १; १४)।

संतच्छिअ वि [संतक्षित] छिला हुआ (पएह १, १—पत्र १८)।

संतट्ठ वि [संत्रस्त] डरा हुआ, भय-भीत (सुर ६, २०५)।

संतति देखो संतइ (स ६८४)।

संतत्त वि [संतत] १ निरन्तर, अविच्छिन्न। २ विस्तीर्ण;

'अच्छिनिमीलियमित्तं नत्थि सुहं
दुक्खमेव संततं।
नरए नेरइयाणं अहोनिसिं
पच्चमाणाणं।'
(सुर १४, ४६)।

संतत्त वि [संतप्त] संताप-युक्त (सुर १४, ५६; गा १३६; सुपा १६; महा)।

संतत्थ देखो संतट्ठ (उव; श्रा १८)।

संतप्प अक [सं + तप्] १ तपना, गरम होना। २ पीड़ित होना। संतप्पइ (हे ४, १४०; स २०)। भवि. संतप्पिस्सइ (स

६८१)। कृ. संतप्पियव्व (स ६८१)। वकृ. संतप्पमाण (सुज्ज ६)।

संतप्पिअ वि [संतप्त] १ संताप-युक्त (कुमा ६, १४)। २ न. संताप (स २०)।

संतमस न [संतमस] १ अन्धकार, अँधेरा (पात्र; सुपा २०५)। २ अन्ध-कूप, अँधेरा कुँआ (सुर १०, १५८)।

संतय देखो संतत्त = संतत (पात्र; भग)।

संतर सक [सं + तृ] तैरना, तैर कर पार करना। हेकृ. संतरित्तए (कस)।

संतरण न [संतरण] तैरना, तैर कर पार करना (ओघ ३८; चेइय ७४३; कुप्र २२०)।

संतस अक [सं + त्रस्] १ भय-भीत होना। २ उद्विग्न होना। संतसे (उत्त २, ११)।

संता स्त्री [शान्ता] सातवें जिन-भगवान् की शासन-देवता (संति ६)।

संताण पुं [संतान] १ वंश (कप्प)। २ अविच्छिन्न धारा, प्रवाह (विसे २३६७; २३६८; गउड; सुपा १६८)। ३ तंतु-जाल, मकड़ी आदि का जाल; 'मक्खडासंताणए' (आचा; पडि; कस)।

संताण न [संत्राण] परित्राण, संरक्षण (बृह १)।

संताणि वि [संतानिन्] १ अविच्छिन्न धारा में उत्पन्न, प्रवाह-वर्ती; 'संताणिणो न भिण्णो जइ संताणो न नाम संताणी' (विसे २३६८; धर्मसं २३५)। २ वंश में उत्पन्न, परंपरा में उत्पन्न; 'देव इह अत्थि पत्तो उज्जाणे पासनाहसंताणी। केसी नाम गणहरो' (धर्मवि ३)।

संतार वि [संतार] १ तारनेवाला, पार उतारनेवाला (पउम २, ४४)। २ पुं. संतरण, तैरना (पिंग)।

संतारिअ वि [संतारित] पार उतारा हुआ (पिंग)।

संतारिम वि [संतारिम] तैरने योग्य (आचा २, ३, १, १३)।

संताव सक [सं + तापय्] १ गरम करना, तपाना। २ हैरान करना। संतावेंति (सुज्ज ६)। वकृ. संतावित (सुपा २४८)। कवकृ. संताविज्जमाण (नाट—मृच्छ १३७)।

संताव पुं [संताप] १ मन का खेद (पण्ह १, ३—पत्र ५५; कुमा; महा)। २ ताप, गरमी (पण्ह १, ३—पत्र ५५; महा)।

संतावण न [संतापन] संताप, संतप्त करना (सुपा २३२)।

संतावणी स्त्री [संतापनी] नरक-कुम्भी (सूअ १, ५, २, ६)।

संतावय वि [संतापक] संताप-जनक (भवि)।

संतावि वि [संतापिन्] संतप्त होनेवाला, जलनेवाला (कप्पू)।

संताविय वि [संतापित] संतप्त किया हुआ (काल)।

संतास सक [सं + त्रासय्] भय-भीत करना, डराना। संतासइ (पिंग)।

संतास पुं [संत्रास] भय, डर (स ५४४)।

संतासि वि [संत्रासिन्] त्रास-जनक (उप ७६८ टी)।

संति स्त्री [शान्ति] १ क्रोध आदि का जय, उपशम, प्रशम (आचा १, १, ७, १, चेइय ५६४)। २ मुक्ति, मोक्ष (आचा १, २, ४, ४; सूअ १, १०, १; ठा ८—पत्र ४२५)। ३ अहिंसा (आचा १, ६, ५, ३)। ४ उपद्रव-निवारण (विपा १, ६—पत्र ६१; सुपा ३६४)। ५ विषयों से मन को रोकना। ६ चैन, आराम। ७ स्थिरता (उव ७२८ टी; संति १)। ८ दाहोपशम, ठंढाई (सूअ १, ३, ४, २०)। ९ देवी-विशेष (पंचा १९, २४)। १० पुं. सोलहवें जिनदेव का नाम (सम ४३; कप्प; पडि)। °उदअ न [°उदक] शान्ति के लिए मस्तक में दिया जाता मन्त्रित पानी (पि १६२)। °कम्म न [°कर्मन्] उपद्रव-निवारण के लिए किया जाता होम आदि कर्म (पण्ह १, २—पत्र ३०, सुपा २६२)। °कम्मंत न [°कर्मान्त] जहाँ शान्ति-कर्म किया जाता हो वह स्थान (आचा २, २, २, ६)। °गिह न [°गृह] शान्ति-कर्म करने का स्थान (कप्प)। °जल न [°जल] देखो °उदअ (धर्म २)। °जिण पुं [°जिन] सोलहवें जिन-देव (संति १)। °मई स्त्री [°मती] एक श्राविका का नाम (सुपा ६२२)। °य वि [°द] शान्ति-प्रदाता (उप ७२८ टी)। °सूरि पुं [°सूरि] एक जैनाचार्य और ग्रन्थकार (जी ५०)। °सेणिय पुं [°श्रेणिक] एक प्राचीन जैन मुनि (कप्प)। °हर न [°गृह] भगवान् शान्तिनाथजी का मन्दिर (पउम ६७, ५)। °होम पुं [°होम] शान्ति के लिए किया जाता हवन (विपा १, ५—पत्र ६१)।

संतिअ } वि [दे. सत्क] संबन्धी, संबन्ध **संतिग** } रखनेवाला; 'अम्मा-पिउसंतिए वद्धमाणे' (कप्प); 'नो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा सागारियसंतियं सेज्जासंथारयं आयाए अहिगरणं कट्टु संपव्वइत्तए' (कस; उव; महा; स २०६; सुपा २७८; ३२२; पण्ह १, ३—पत्र ४२)।

संतिज्जाघर देखो संति-गिह (महा ६८, ८)।

संतिण्ण वि [संतीर्ण] पार-प्राप्त, पार उतरा हुआ; 'संतिण्णं सव्वभया' (अजि १२)।

संतुट्ठ वि [संतुष्ट] संतोष-प्राप्त (स्वप्न २०; महा)।

संतुयट्ट वि [संत्वग्वृत्त] जिसने पार्श्व घुमाया हो वह, जिसने करवट बदली हो वह, लेटा हुआ (णाया १, १३—पत्र १७९)।

संतुलणा स्त्री [संतुलना] तुलना, तुल्यता, सरीखाई (सार्ध २०)।

संतुस्स अक [सं + तुष्] १ प्रसन्न होना। २ तृप्त होना। संतुस्सइ (सिरि ४०२)।

संतेज्जाघर देखो संतिज्जाघर (महा ६८, १४)।

संतो अ [अन्तर्] मध्य, बीच; 'अंतो संतो च मध्यार्थे' (प्राकृ ७९))।

संतोस सक [सं + तोषय्] १ प्रसन्न करना, खुशी करना। २ तृप्त करना। कर्म. संतोसीअदि (शौ) (नाट—रत्ना ४०)।

संतोस पुं [संतोष] तृप्ति, लोभ का अभाव; 'हरइ अणूवि परगुणो गरुयम्मिवि णियगुणे न संतोसो' (गउड; कुमा; पण्ह १, ५—पत्र ९३; प्रासू १७७; सुपा ४३९)।

संतोसि स्त्री [संतोषि] सन्तोष, तुष्टि, तृप्ति (उवा)।

संतोसि वि [संतोषिन्] १ सन्तोष-युक्त, लोभ-रहित, निर्लोभी, तृप्त (सूअ १, १२,

१५; सुपा ४३६)। २ आनन्दित, खुशी (कप्पू)।

संतोसिअ पुं [संतोषिक] संतोष, तृप्ति (उवा १६)।

संतोसिअ वि [संतोषित] संतुष्ट किया हुआ (महा; सण)।

संथ वि [संस्थ] संस्थित (विसे ११०१)।

संथड } वि [संस्तृत] १ आच्छादित, **संथडिय** } परस्पर के संश्लेष से आच्छादित (भग; ठा ४, ४)। २ घन, निबिड़ (आचा २, १, ३, १०)। ३ व्याप्त (उत्त २१, २२; ओघ ७४७)। ४ समर्थ। ५ तृप्त, जिसने पर्याप्त भोजन किया हो वह (कस, आचा २, ४, २, ३; दस ७, ३३)। ६ एकत्रित (आचा २, १, ६, १)।

संथण अक [सं + स्तन्] आक्रन्द करना। **संथणती** (सूअ १, २, ३, ७)।

संथर सक [सं + स्तृ] १ बिछौना करना, बिछाना। २ निस्तार पाना, पार जाना। ३ निर्वाह करना। ४ अक. समर्थ होना। ५ तृप्त होना। ६ होना, विद्यमान होना। संथरइ (भग २, १—पत्र १२७; उवा; कस); 'ण समुच्छे णो संथरे तणं' (सूअ १, २, २, १३; आचा), संथरिज्ज, संथरे, संथरेज्जा (कप्प; दस ५, २, २; आचा)। वकृ. **संथर°, संथरंत, संथरमाण** (उवर १४२; ओघ १८२; १८१; आचा २, ३, १, ८)। संकृ. **संथरित्ता** (भग; आचा)।

संथर पुं [संस्तर] निर्वाह (पिंड ३७५; ४००)।

संथर देखो **संथार** (सुर २, २४७)।

संथरण न [संस्तरण] १ निर्वाह (बृह १)। २ बिछौना करना (राज)।

संथव सक [सं + स्तु] १ स्तुति करना, श्लाघा करना। २ परिचय करना। संथवेज्जा (सूअ १, १०, ११)। कृ. **संथवियव्व** (सुपा २)।

संथव पुं [संस्तव] १ स्तुति, श्लाघा, 'संथवो थुई' (निचू २; वव ३; पिंड ४८४)। २ परिचय, संसर्ग (उवा; पिंड ३१०; ४८४; ४८५, श्रावक ८८)। ३ वि. स्तुति-कर्ता (णाया १, १६ टी—पत्र २२०; राज)।

संथवण न [संस्तवन] ऊपर देखो (संबोध ५६; उप ७६८ टी)।

संथवय वि [संस्तावक] स्तुति-कर्ता (णाया १, १६—पत्र २१३)।

संथविअ देखो **संठविअ** (पउम ८३, १०)।

संथार } पुं [संस्तार] १ दर्भ—कुश आदि **संथारग** } की शय्या, बिछौना (णाया १, १—**संथारय** } पत्र ३०, उवा; उव; भग)। २ अपवरक, कमरा (आचा २, २, ३, १)। ३ उपाश्रय, साधु का वास-स्थान (वव ४)। ४ संस्तार-कर्ता (पव ७१)।

संथाव देखो **संठाव**। वकृ. **संथावंत** (पउम १०३, २४)।

संथावण न [संस्थापन] सान्त्वना, समाश्वासन (पउम ११, २०; ४६, ८; ६५, ४७)। देखो **संठावण**।

संथावणा स्त्री [संस्थापना] संस्थापन, रखना (सा २४)। देखो **संठावणा**।

संथिद (शौ) देखो **संठिअ** (नाट—मृच्छ ३०१)।

संथुअ वि [संस्तुत] १ संबद्ध, संगत (सूअ १, १२, २)। २ परिचित (आचा १, २, १, १)। ३ जिसकी स्तुति की गई हो वह, श्लाघित (उत्त १, ४६; भवि)।

संथुइ स्त्री [संस्तुति] स्तुति, श्लाघा, प्रशंसा (चेइय ४६६; सुपा ६५०)।

संथुण सक [सं + स्तु] स्तुति करना, श्लाघा करना। संथुणइ (उव; यति ६)। वकृ. **संथुणमाण** (पउम ८३, १०)। कवकृ. **संथुणिज्जंत, संथुव्वंत** (सुपा १६०; आक ७)। संकृ. **संथुणित्ता** (पि ४६४)।

संथुल वि [संस्थुल] रमणीय, रम्य, सुन्दर (चारु १६)।

संथुव्वंत देखो **संथुण**।

संद अक [स्यन्द्] १ झरना, टपकना। संदंति (सूअ १, १२, ७)।

संद पुं [स्यन्द] १ झरन, प्रस्रव (से ७, ५६)। २ रथ; 'रवि-संडु(? दु)व्व भमंतो' (धर्मवि १४४)।

संद वि [सान्द्र] घन, निबिड़ (अच्चु ३७; विक्र २३)।

संदंस पुं [संदंश] दक्षिण हस्त; 'छिदाविओ निवेणं कोववसा तहवि तस्स संदंसो' (कुप्र २३२)।

संदंसण न [संदर्शन] दर्शन, देखना, साक्षात्कार (उप ३५७ टी)।

संदट्ट वि [संदष्ट] जो काटा गया हो वह, जिसको दंश लगा हो वह (हे २, ३४; कुमा ३, ८; षड्)।

संदट्ट } वि [दे] १ संलग्न, संयुक्त, **संदट्टय** } संबद्ध (दे ८, १८; गउड २३६)। २ न. संघट्ट, संघर्ष (दे ८, १८)।

संदड्ढ वि [संदग्ध] अति जला हुआ (सुर ६, २०५; सुपा ५६६)।

संदण पुं [स्यन्दन] १ रथ (पाअ; महा)। २ भारतवर्ष में अतीत उत्सर्पिणी-काल में उत्पन्न तेइसवाँ जिनदेव (पव ७)। ३ न. क्षरण, प्रस्रव। ४ वहन, बहना। ५ जल, पानी; 'जत्थ णं नई निच्चोयगा निच्चसंदणा' (कप्प)।

संदब्भ पुं [संदर्भ] रचना, ग्रंथन (उवर २०३; सण)।

संदमाणिया } स्त्री [स्यन्दमानिका, °नी] **संदमाणी** } एक प्रकार का वाहन, एक तरह की पालकी (औप; णाया १, ५—पत्र १०१; १, १ टी—पत्र ४३; औप)।

संदाण सक [कृ] अवलम्बन करना, सहारा लेना। संदाणइ (हे ४, ६७)। वकृ. **संदाणंत** (कुमा)। कवकृ. **संदाणिज्जंत** (नाट—मालती ११६)।

संदाणिअ वि [संदानित] बद्ध, नियन्त्रित (पाअ; से १, ६०; १३, ७१; सुपा ३; कुप्र ६६; नाट—मालती १६६)।

संदामिय वि [संदामित] ऊपर देखो (स ३१६; सम्मत्त १६०)।

संदाव देखो **संताव** = संताप (गा ८१७; ६६४; पि २७५; स्वप्न २७; अभि ६१; माल १७६)।

संदाव पुं [संद्राव] समूह, समुदाय (विसे २८)।

संदिट्ठ वि [संदिष्ट] १ जिसका अथवा जिसको सँदेशा दिया गया हो वह, उपदिष्ट, कथित (पाअ, उप ७२८ टी; ओघभा ३१;

भवि)। २ जिसको आज्ञा दी गई हो वह; 'हरिणेगमेसिणा सक्कवयणसंदिट्ठेण' (कप्प)। ३ छँटा हुआ, छिलका निकाला हुआ (चावल आदि) (राय ६७)।

संदिद्ध वि [संदग्ध] संशय-युक्त, संदेह-वाला (पाअ)।

संदिन्न न [संदत्त] उनतीस दिनों का लगातार उपवास (संबोध ५८)।

संदिय वि [स्यन्दित] क्षरित, टपका हुआ (सुर २, ७६)।

संदिर वि [स्यन्दितृ] झरनेवाला (सण)।

संदिस सक [सं+दिश्] १ संदेशा देना, समाचार पहुँचाना। २ आज्ञा देना। ३ अनुज्ञा देना, सम्मति देना। ४ दान के लिए संकल्प करना। संदिसइ (षड्; महा), संदिसह (पडि)। कवकृ. **संदिस्संत** (पिंड २३६)। प्रयो., संकृ. **संदिसाविऊण** (पंचा ५, ३८)।

संदिसण न [संदेसन] उपदेश, कथन; 'कुलनीइट्ठिइभंगप्पमुहाणेगप्पओससंदिसणं' (संबोध १५)।

संदीण पुं [संदीन] १ द्वीप-विशेष, पक्ष या मास आदि में पानी से सराबोर होता द्वीप। २ अल्पकाल तक रहनेवाला दीपक। ३ श्रुतज्ञान। ४ क्षोभ्य, क्षोभणीय (आचा १, ६, ३, ३)।

संदीवग वि [संदीपक] उत्तेजक, उद्दीपक; 'कामग्गिसंदीवगं' (रंभा)।

संदीवण न [संदीपन] १ उत्तेजना, उद्दीपन (संबोध ४८; नाट—उत्तर ५९)। २ वि. उत्तेजन का कारण, उद्दीपन करनेवाला (उत्तम ८८)।

संदीविय वि [संदीपित] उत्तेजित, उद्दीपित (भवि)।

संदुक्ख अक [प्र+दीप्] जलना, सुलगना। संदुक्खइ (षड्)।

संदुट्ठ वि [संदुष्ट] अतिशय दुष्ट (संबोध ११)।

संदुम अक [प्र+दीप्] जलना, सुलगना। संदुमइ (हे ४, १५२; कुमा)।

संदुमिअ वि [प्रदीप्त] जला हुआ, सुलगा हुआ (पाअ)।

संदेव पुं [दे] १ सीमा, मर्यादा। २ नदी-मेलक, नदी-संगम (दे ८, ७)।

संदेस पुं [संदेश] सँदेशा, समाचार (गा ३४२; ८३३; हे ४, ४३४; सुपा ३०१; ५१९)।

संदेह पुं [संदेह] संशय, शंका (स्वप्न ६६; गउड; महा)।

संदोह पुं [संदोह] समूह, जत्था (पाअ; सुर २, १४६; सिरि ५६४)।

संध सक [सं+धा] १ साँधना, जोडना। २ अनुसंधान करना, खोज करना। ३ वाँछना, चाहना। ४ वृद्धि करना, बढ़ाना। ५ करना; 'भग्गं व संधइ रहं सो' (कुप्र १०२), संधइ, संधए (आचा; सूअ १, १४, २१; १, ११, ३४; ३५)। भवि. संधिस्सामि, संधिहिसि (पि ५३०)। वकृ. **संधंत** (से ५, २४)। कवकृ. **संधिज्जमाण** (भग)। हेकृ. **संधिउं** (कुप्र ३८१)।

संध° देखो **संझ°** (देवेन्द्र २७०)।

संधण स्त्रीन [संधान] १ साँधा, संधि, जोड़ (धर्मसं १०१७)। २ अनुसंधान (पंचा १२, ४३)। स्त्री. °**णा** (आचानि १७५; सूअनि १६७; ओघ ७२७)।

संधणया स्त्री [संधना] साँधना, जोड़ना (वव १)।

संधय वि [संधक] संधान-कर्ता (दस ६, ४, ५)।

संधया देखो संध=सं+धा। संधयाती (सूअ २, ६, २)।

संधा स्त्री [संधा] प्रतिज्ञा, नियम (श्रा १२; उप पृ ३३३; सम्मत्त १७१)।

संधाण न [संधान] १ दो हाड़ों का संयोग-स्थान (सुर १२, ६)। २ संधि, सुलह (हम्मीर १५)। ३ मद्य, सुरा, दारू (धर्मसं ५९)। ४ जोड़, संयोग, मिलान (आचा; कुमा; भवि)। ५ अचार, नीबू आदि का मसाला दिया खाद्य-विशेष (पव ४)।

संधारण न [संधारण] सान्त्वना, आश्वासन (स ४१६)।

संधारिअ वि [दे] योग्य, लायक (दे ८, १)।

संधारिअ वि [संधारित] रखा हुआ, स्थापित (णाया १, १—पत्र ६६)।

संधाव सक [सं+धाव्] दौड़ना। संधावइ (उत्त २०, ४६)।

संधि पुंस्त्री [संधि] १ छिद्र, विवर। २ संधान, उत्तरोत्तर पदार्थ-परिज्ञान (सूअ १, १, १, २०; २१; २२; २३; २४)। ३ व्याकरण-प्रसिद्ध दो अक्षरों के संयोग से होने वाला वर्ण-विकार (पण्ह २, २—पत्र ११४)। ४ सेंध, चोरी के लिए भीत में किया जाता छेद (चारु ६०; महा; हास्य ११०)। ५ दो हाड़ों का संयोग-स्थान; 'थक्काओ सव्वसंधीओ' (सुर ४, १६५; १२, १६६; जी १२)। ६ मत, अभिप्राय; 'अहवा विचित्तसंधिणो हि पुरिसा हवंति' (स २९)। ७ कर्म, कर्म-संतति (आचा; सूअ १, १, १, २०)। ८ सम्यग् ज्ञान की प्राप्ति। ९ चारित्र-मोहनीय कर्म का क्षयोपशम। १० अवसर, समय, प्रसंग। ११ मीलन, संयोग (आचा)। १२ दो पदार्थों का संयोग-स्थान (विपा १, ३—पत्र ३९; महा)। १३ मेल के लिए कतिपय नियमों पर मित्रता-स्थापन, सुलह (कप्पू; कुमा ६, ४०)। १४ ग्रंथ का प्रकरण, अध्याय, परिच्छेद (भवि)। °**गिह** न [°गृह] दो भीतों के बीच का प्रच्छन्न स्थान (कप्प)। °**च्छेयग**, °**छेयग** वि [°च्छेदक] सेंध लगा कर चोरी करनेवाला (णाया १, १८—पत्र २३६; विपा १, ३—पत्र ३९)। °**पाल**, °**वाल** वि [°पाल] दो राज्यों की सुलह का रक्षक (कप्प; औप; णाया १, १—पत्र १९)।

संधिअ वि [दे] दुर्गन्धि, दुर्गन्धवाला (दे ८, ८)।

संधिअ वि [संहित] साँधा हुआ, जोड़ा हुआ (से १, ५४; गा ५३; स २६७; तंदु ३९; वज्जा ७०)।

संधिअ वि [संधित] प्रसारित (गउड)।

संधिआ देखो **संहिया** (ओघ ६२)।

संधिउं देखो संध=सं+धा।

संधित देखो संधिअ=संहित (भग)।

संधिविग्गहिअ पुं [सान्धिविग्रहिक] राजा की संधि और लड़ाई के कार्य में नियुक्त मन्त्री (कुमा)।

संधीर सक [सं + धीरय्] आश्वासन देना, धीरज देना। वकृ. संधीरंत (सुपा ४७६)।

संधीरविय वि [संधीरित] जिसको आश्वासन दिया गया हो वह, आश्वासित (सुर ४, १११)।

संधुक्क अक [प्र + दीप् , सं + धुक्ष्] १ जलना, सुलगना। २ सक. जलाना। ३ उत्तेजित करना। संधुक्कइ (हे ४, १५२; कुमा)। कर्म. संधुक्किज्जइ (वज्जा १३०)।

संधुक्कण न [संधुक्षण] १ सुलगना, जलना। २ प्रज्वालन, सुलगाना (भवि)। ३ वि. सुलगानेवाला (स २४१)।

संधुक्किअ वि [संधुक्षित] १ जलाया हुआ, सुलगाया हुआ (सुपा ५०१)। २ जला हुआ, प्रदीप्त, सुलगा हुआ (पाअ; महा; स २७)। ३ उत्तेजित; 'अविवेयपवणसंधुक्किओ पज्जलिओ मे मणम्मि कोवाणलो' (स २४१)।

संधुच्छिद (शौ) ऊपर देखो (नाट—मृच्छ २३३)।

संधुम देखो संदुम। संधुमइ (षड्)।

संधे देखो संध = सं + धा। संधेइ, संधेंति, संधेज्जा (आचा १, १, १, ५; पि ५००; सूअ १, ४, १, ५)। वकृ. संधेंत, संधेमाण (पउम ६८, ३१; पंचा १४, २७; आचा; पि ५००)।

संन देखो संण (आचा १, ५, ६, ४)।

संनक्खर न [संज्ञाक्षर] अकार आदि अक्षरों की आकृति (णंदि १८७)।

संनज्झ देखो संणज्झ। संनज्झइ (भवि)। संकृ. संनज्झिऊण (महा)। हेकृ. संनज्झिउं (स ३७९)।

संनण न [संज्ञान] इशारा करना, संज्ञा करना (उप २६०)।

संनत देखो संनय (पण्ह १, ४—पत्र ७८)।

संनद्ध देखो संणद्ध (औप; विपा १, २ टी—पत्र २३)।

संनय वि [संनत] नमा हुआ, अवनत (औप; वज्जा १५०)।

संनव सक [सं + ज्ञापय्] संभाषण से संतुष्ट करना। संनवेइ (राय १४०)।

संनह देखो संणज्झ। संनहइ (भवि), संनहह (धर्मवि २०)।

संनहण न [संनहन] संनाह (पउम १०, ६४)।

संनहिय देखो संणद्ध (सुपा २२)।

संना देखो संणा (ठा १—पत्र १९; पण्ह १, ३—पत्र ५५; पाअ; सुर ३, ६७; पिंड २४५; उप ७५१; द ३)।

संनाय वि [संज्ञात] पिछाना हुआ, पहिचाना हुआ; 'संनाया परियणेण' (महा)। देखो संणाय (पव १५३)।

संनाह देखो संणाह = सं + नाहय्। संनाहेइ (औप; तंदु ११)। संकृ. संनाहित्ता (तंदु ११)।

संनाह देखो संणाह = संनाह (महा)।

संनाहिय वि [संनाहित] तय्यार किया हुआ, सजाया हुआ (औप)।

संनाहिय देखो संणाहिय (णाया १, १६—पत्र २१७)।

संनि देखो संणि (सम २; ठा २, २—पत्र ५९; जी ४३; कम्म १, ६)।

संनिकास देखो संनिगास (ठा ९—पत्र ४५९, कप्प)।

संनिकिट्ठ वि [संनिकृष्ट] आसन्न, समीप में स्थित (सुख ४, ८)।

संनिक्खित्त वि [संनिक्षिप्त] डाला हुआ, रखा हुआ (कप्प)।

संनिगास वि [संनिकाश] १ समान, तुल्य (भग २, १; णाया १, १—पत्र २५; औप; स ३८१)। २ पुं. अपवाद (पंचू)। ३ पुंन. समीप, पास (पउम ३६, २८)।

संनिगास पुं [संनिकर्ष] संयोग; 'संजोग संनिगासो पडुच्च संबंध एगट्ठा' (णंदि १२८ टी)।

संनिचय पुं [संनिचय] १ निचय, समूह (आचा)। २ संग्रह (आचा १, २, ५, १)।

संनिचिय वि [संनिचित] निबिड़ किया हुआ (पव १५८; जीवस ११६)।

संनिजुंज सक [संनि + युज्] अच्छी तरह जोड़ना। कवकृ. संनिजुज्जंत (पिंड ४५५)।

संनिज्झ न [सांनिध्य] सहायता करने के लिए समीप में आगमन, निकटता (स ३८२)।

संनिनाय पुं [संनिनाद] प्रतिध्वनि, प्रतिशब्द (कप्प)।

संनिभ देखो संनिह (णाया १, १—पत्र ४८; उवा; औप १)।

संनिमहिअ वि [संनिमहित] १ व्याप्त, पूर्ण, भरा हुआ। २ पूजित; 'चंपा नाम नयरी पंडुरवरभवणसंनिमहिया' (औप; णाया १, १ टी—पत्र ३), 'अत्थि मगहा जणवओ गामसतसंनिमहिओ' (वसु)।

संनिय देखो संणिय (सिरि ८६०; भवि)।

संनियट्ट वि [संनिवृत्त] रुका हुआ, विरत। °चारि वि [°चारिन्] प्रतिषिद्ध का वर्जन करनेवाला (कप्प)।

संनियास देखो संनिगास (पउम ३३, ११६)।

संनिलयण न [संनिलयन] आश्रय, आधार; 'लोभवत्था संसारं अतिवयंति सव्वदुक्खसनिलयणं' (पण्ह १, ५—पत्र ९४)।

संनिवइय देखो संणिपडिअ (णाया १, १—पत्र ६५)।

संनिवाइ वि [संनिपातिन्] संयोगी, सम्बन्धी; 'सव्वक्खरसंनिवाइणो' (कप्प; औप; सम्मत्त १४४)।

संनिवाइ वि [संनिवादिन्] संगत बोलनेवाला, व्याजबी कहनेवाला (भग १, १—पत्र ११)।

संनिवाइय वि [सांनिपातिक] संनिपात रोग से सम्बन्ध रखनेवाला (णाया १, १—पत्र ५०; तंदु १६; औप ८७)। २ भाव-विशेष, अनेक भावों के संयोग से बना हुआ भाव (अणु ११३; कम्म ४, ६४; ६८)। ३ पुं. संनिपात, मेल, संयोग (अणु ११३)।

संनिवाइय वि [संनिपातिक] देखो संनिवाइ; 'सव्वक्खरसंनिवाइयाए' (औप ५६)।

संनिवाडिय वि [संनिपातित] विध्वस्त किया हुआ (णाया १, १६—पत्र २२३)।

संनिवाय पुं [संनिपात] संयोग, सम्बन्ध (कप्प; औप)।

संनिविट्ठ न [संनिविष्ट] १ मोहल्ला, रथ्या (औप)। २ वि. जिसने पड़ाव डाला हो वह, नगर के बाहर पड़ाव डालकर पड़ा हुआ (कस)। ३ संहत और स्थिर आसन से व्यवस्थित—बैठा हुआ (णाया १, ३—पत्र ९१; राय २७)।

संनिवेस पुं [संनिवेश] १ नगर के बाहर का प्रदेश, जहाँ आभीर वगैरह लोग रहते हों। २ गाँव, नगर आदि स्थान (भग १, १—पत्र ३६)। ३ यात्री आदि का डेरा, मार्ग का वास-स्थान, पड़ाव (उत्त ३०, १७)। ४ ग्राम, गाँव (सिरि ३८)। ५ रचना (उप पृ १४२)।

संनिवेसणया स्त्री [संनिवेशना] संस्थापन (उत्त २६, १)।

संनिवेसिल्ल वि [संनिवेशिन्] रचनावाला, (उप पृ १४२)।

संनिसन्न वि [संनिषण्ण] बैठा हुआ, सम्यक् स्थित (गाया १, १—पत्र १६; कुप्र १६६; श्रु १२; सण)।

संनिसिज्जा } स्त्री [संनिषद्या] आसन-
संनिसेज्जा } विशेष, पीठ आदि आसन (सम २१; उत्त १६, ३; उव)।

संनिह वि [संनिभ] समान, सदृश (प्रासू ६६; सण)।

संनिहाण न [संनिधान] १ ज्ञानावरणीय आदि कर्म (आचा)। २ कारक-विशेष, अधिकरण कारक, आधार (विसे २०६६; ठा ८—पत्र ४२७)। ३ सांनिध्य, निकटता (स ७१८; ७६१)। °सत्थ न [°शास्त्र] संयम, त्याग (आचा)। °सत्थ न [°शास्त्र] कर्म का स्वरूप बतानेवाला शास्त्र (आचा)।

संनिहि पुंस्त्री [संनिधि] १ उपभोग के लिए स्थापित वस्तु (आचा १, २, १, ४)। २ संस्थापन। ३ सुन्दर निधि (आचा १, २, ५, १)। ४ समीपता, निकटता (उप पृ १८६; स ६८०; कुप्र १३०)। ५ संचय, संग्रह (उत्त ६, १५; दस ३, ३; ८, २४)।

संनिहिअ पुं [संनिहित] अणपन्नि देवों के दक्षिण दिशा का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५)। देखो संणिहिअ (गाया १, १ टी—पत्र ४)।

संनेज्झ देखो संनिज्झ; 'उवगारि त्ति करेइ कुमरस्स सन्नेज्जं(? ज्झं)' (कुप्र २५; चेइय ७८३)।

संपअ } (अप) देखो संपया (पिंग; पि ४१३;
संपइ } हे ४, ३३५; कुमा)।

संपइ अ [संप्रति] १ इस समय, अधुना, अब (पाअ; महा; जी ५०; दं ४६; कुमा)। २ पुं. एक प्रसिद्ध जैन राजा, सम्राट् अशोक का पौत्र (कुप्र २; धर्मवि ३७; पुप्फ २६०)। °काल पुं [°काल] वर्तमान काल (सुपा ४४६)। °कालीण वि [°कालीन] वर्तमान-काल-सम्बन्धी (विसे २२२६)।

संपइण्ण वि [संप्रकीर्ण] व्याप्त (राज)।

संपउत्त वि [संप्रयुक्त] संयुक्त, संबद्ध, जोड़ा हुआ (ठा ४, १—पत्र १८७; सूअ २, ७, २, उवा; औप; धर्मसं ६६५; राय १४६)।

संपओग पुं [संप्रयोग] संयोग, संबन्ध (ठा ४, १—पत्र १८७; स ६१४; उप ७२८ टी; कुप्र ३७३; औप)।

संपकर देखो संपगर। संपकरेइ (उत्त २१, १६)।

संपक्क पुं [संपर्क] सम्बन्ध (सुपा ५८; सम्मत्त १४१)।

संपक्कि वि [संपर्किन्] संपर्कवाला, संबन्धी (कप्पू; काप्र १७)।

संपक्खाल पुं [संप्रक्षाल] तापस का एक भेद जो मिट्टी वगैरह घिस कर शरीर का प्रक्षालन करते हैं (औप)।

संपक्खालिय वि [संप्रक्षालित] धोया हुआ (धर्म ३)।

संपक्खित्त वि [संप्रक्षिप्त] प्रक्षिप्त, फेंका हुआ, डाला हुआ (पंच ५, १५७)।

संपगर सक [संप्र + कृ] करना। संपगरेइ (उत्त २१, १६)।

संपगाढ वि [संप्रगाढ] १ अत्यन्त आसक्त (उत्त २०, ४५; सूअ २, ६, २२)। २ व्याप्त (सूअ १, ५, १, १७)। ३ स्थित, व्यवस्थित (सूअ १, १२, १२)।

संपगिद्ध वि [संप्रगृद्ध] अति आसक्त (पण्ह १, ४—पत्र ८५)।

संपग्गहिअ वि [संप्रगृहीत] खूब प्रकर्ष से गृहीत, विशेष अभिमान-युक्त (दस ६, ४, २)।

संपज्ज अक [सं + पद्] १ संपन्न होना, सिद्ध होना। २ मिलना। संपज्जइ (षड्; महा)। भवि. संपज्जिस्सइ (महा)।

संपज्जलिअ पुं [संप्रज्वलित] तीसरा नरक का नववाँ नरकेन्द्रक, नरकावास-विशेष (देवेन्द्र ६)।

संपट्ठिअ देखो संपत्थिअ = संप्रस्थित (उप १४२ टी; औप; संबोध ५५; सुपा ७७; उपपृ १५८)।

संपड अक [सं + पद्] १ प्राप्त होना, मिलना; गुजराती में 'सांपडवु'। २ सिद्ध होना, निष्पन्न होना। संपडइ, संपडंति (वज्जा ११६; सम्मु १५८; वज्जा ५०)। वकृ. संपडंत (से १४, १; सुर १०, ६७)।

संपडिअ वि [दे संपन्न] लब्ध, मिला हुआ, प्राप्त (दे ८, १४; स २४..., ...)।

संपडिबूह सक [संप्रति + बृंह्] प्रशंसा करना, तारीफ करना। संपडिबूहति (सूअ २, २, ५५)।

संपडिलेह सक [संप्रति + लेखय्] प्रतिजागरण करना, प्रत्युपेक्षण करना, अच्छी तरह निरीक्षण करना। संपडिलेहए (उत्त २६, ४३)। कृ. संपडिलेहिअव्व (दसचू १, १)।

संपडिवज्ज सक [संप्रति + पद्] स्वीकार करना। संपडिवज्जइ (भग)।

संपडिवत्ति स्त्री [संप्रतिपत्ति] स्वीकार, अंगीकार (विसे २६१४)।

संपडिवाइअ वि [संप्रतिपादित] स्थित (उत्त २२, ४६; सुख २२, ४६)। २ स्थापित (दस २, १०)।

संपडिवाय सक [संप्रति + पादय्] संपादन करना, प्राप्त करना। संपडिवायए (दस ६, २, २०)।

संपणदिय } देखो संपणाइय (राज;
संपणद्दिय } कप्प)।

संपणा देखो संपण्णा (दे ८, ८)।

संपणाइय } वि [संप्रणादित] समी-
संपणादिय } चीन शब्दवाला; 'तुडियसद्दसंपणाइया' (जीव ३, ४—पत्र २२४; पत्र २२७ टी)।

संपणाम सक [संप्र + नामय्] अर्पण करना। संपणामए (उत्त २३, १७)।

संपणिपाअ } पुं [संप्रणिपात] प्रणाम,
संपणिवाय } समीचीन नमस्कार (पंचा ३, १८; चेइय २३७)।

संपणुण्ण वि [संप्रणुन्न] प्रेरित, उत्तेजित; 'अक्खंडचंडानिलसंपणुण्णविलोलजालासयसंकुलम्मि' (उवर्ग ४५)।

संपणुल्ल } सक [संप्र + नुद्] प्रेरणा
संपणोल्ल } करना। संकृ. संपणुल्लिया, संपणोल्लिया (दस ५, १, ३०)।

संपण्ण देखो संपन्न (णाया १, १—पत्र ६; हेका ३३१; नाट—मृच्छ ६)।

संपण्णा स्त्री [दे] घेवर या घीवर (मिष्टान्न-विशेष) बनाने का आटा, गेहूँ का वह आटा जिसका घृतपूर बनता है (दे ८, ८)।

संपत्त वि [संप्राप्त] १ सम्यक् प्राप्त (णाया १, १; उवा; विपा १, १; महा; जी ५०)। २ समागत, आया हुआ (सुपा ४१६)।

संपत्त पुंन [संपात्र] सुन्दर पात्र, सुपात्र (सुपा ४१६)।

संपत्ति स्त्री [संपत्ति] १ समृद्धि, वैभव, संपदा (पाअ; प्रासू ६६; १२८)। २ संसिद्धि। ३ पूर्ति; 'तव दोहलस्स संपत्ती भविस्सइ' (विपा १, २—पत्र २७)।

संपत्ति स्त्री [संप्राप्ति] लाभ, प्राप्ति (चेइय ८६४; सुपा २१०)।

संपत्तिआ स्त्री [दे] १ बाला, कुमारी; लड़की (दे ८, १८; वज्जा ११६)। पिप्पली-पत्र, पीपल की पत्ती (दे ८, १८)।

संपत्थिअ न [दे] शीघ्र, जलदी (दे ८, ११)।

संपत्थिय } वि [संप्रस्थित] १ जिसने
संपत्थित } प्रयाण किया हो वह, प्रयात, प्रस्थित (अंत २१; उप ६६६; सुपा १०७; ६५१; णाया १, २—पत्र ३२)। उपस्थित; "गहियाउहेहि जइवि हु रक्खिज्जइ पंजरोवरुच्छो (? रुद्धो)वि। तहवि हु मरइ निरुत्तं पुरिसो संपत्थिए काले ॥"
(पउम ११, ६१)।

संपदं अ [सांप्रतम्] १ युक्त, उचित (प्राकृ १२)। २ अधुना, अब (अभि ५६)।

संपदत्त वि [संप्रदत्त] दिया हुआ, अर्पित (महा; प्राप)।

संपदाण देखो संपयाण (णाया १, ८—पत्र १५०; आचा २, १५, ५)।

संपदाय पुं [संप्रदाय] गुरु-परंपरागत उपदेश, आम्नाय (संबोध ५३; धर्मसं १२३७)।

संपदावण न [संप्रदापन, संप्रदान] कारक-विशेष, 'ततिआ करणम्मि कता चउत्थी संपदावणे' (ठा ८—पत्र ४२७)।

संपदि देखो संपइ = संप्रति (प्राकृ १२)।

संपदि देखो संपत्ति = संपत्ति (संक्षि ६; पि २०४)।

संपधार देखो संपहार = संप्र + धारय्। संपधारेदि (शौ) (नाट—मृच्छ २१६)। कर्म. संपधारीअदु (शौ) (पि ५४३)।

संपधारणा स्त्री [संप्रधारणा] व्यवहार-विशेष, धारणा-व्यवहार (वव १०)।

संपधारिय वि [संप्रधारित] निश्चित, निर्णीत (सण)।

संपधूमिय वि [संप्रधूमित] धूप-वासित, धूप दिया हुआ (कस; कप्प; आचा २, २, १, १)।

संपन्न वि [संपन्न] १ संपत्ति-युक्त (भग; महा; कप्प)। २ संसिद्ध (विपा १, २—पत्र २६)।

संपप्प देखो संपाव।

संपबुज्झ अक [संप्र + बुध्] सत्य ज्ञान को प्राप्त करना। संपबुज्झंति (पंचा ७, २३)।

संपमज्ज सक [संप्र + मृज्] मार्जन करना, झाड़ना, साफ-सूफ करना। संपमज्जेइ (औप ४४)। संकृ. संपमज्जेत्ता, संपमज्जिय (औप; आचा २, १, ४, ५)।

संपमार सक [संप्र + मारय्] मूर्च्छित करना। संपमारए (आचा १, १, २, ३)।

संपय वि [सांप्रत] विद्यमान, वर्तमान; 'पाएण संपए च्चिय कालम्मि न याइदीहकालएणा' (विसे ५१६)।

संपयं देखो संपदं (पाअ; महा; सुपा ५६८)।

संपयट्ट अक [संप्र + वृत्] सम्यक् प्रवृत्ति करना। संपयट्टेज्जा (धर्मसं ६३१)। वकृ. संपयट्टंत (पंचा ८, १४)।

संपयट्ट वि [संप्रवृत्त] सम्यक् प्रवृत्त (सुर ४, ७६)।

संपया स्त्री [संपद्] १ समृद्धि, संपत्ति, लक्ष्मी, विभव (उवा; कुमा; सुर ३, ६८; महा; प्रासू ६६)। २ वाक्यों का विश्राम-स्थान (पव ६)। ३ प्राप्ति; 'बोहीलाभो जिणधम्मसंपया' (चेइय ६३१; पव ६२)। ६२)। ४ एक वणिक्-स्त्री का नाम (उप ५६७ टी)।

संपयाण न [संप्रदान] १ सम्यक् प्रदान, अच्छी तरह देना, समर्पण (आचा २, १५, ५; गा ६८; सुपा २६८)। २ कारक-विशेष, चतुर्थी-कारक, जिसको दान दिया जाय वह (विसे २०६६)।

संपयावण देखो संपदावण; चउत्थी संपयावणे' (अणु १३३)।

संपराइग } वि [सांपरायिक] संपराय-
संपराइय } संबन्धी. संपराय में उत्पन्न (ठा २, १—पत्र ३६; सूअ १, ८, ८; भग; श्रावक २२६)।

संपराय पुं [संपराय] १ संसार, जगत् (सूअ १, ५, २, २३; दस २, ५)। २ क्रोध आदि कषाय (ठा २, १—पत्र ३६)। ३ बादर कषाय, स्थूल कषाय (सूअ १, ८, ८)। ४ कषाय का उदय (औप)। ५ युद्ध, संग्राम, लड़ाई (णाया १, ६—पत्र १५७; कुप्र ४००; विक्र ८८; दस २, ५)।

संपरिकित्ति पुं [संपरिकीर्त्ति] राक्षस वंश का एक राजा, एक लंका-पति (पउम ५, २६०)।

संपरिक्ख सक [संपरि + ईक्ष्] सम्यक् परीक्षा करना। संकृ. संपरिक्खाए (संबोध २१)।

संपरिक्खित्त } वि [संपरिक्षिप्त] वेष्टित
संपरिखित्त } (भग; पउम, ३, २२; णाया १, १ टी—पत्र ४)।

संपरिफुड वि [संपरिस्फुट] सुस्पष्ट, अति व्यक्त (पउम ७८, १६)।

संपरिवुड वि [संपरिवृत] १ सम्यक् परिवृत, परिवार-युक्त (विपा १, १—पत्र १; उवा; औप)। २ वेष्टित (सूअ २, २, ५५)।

संपरी सक [संपरी + इ] पर्यटन करना, भ्रमण करना। संपरीइ (विसे १२७७)।

संपल (अप) अक [सं + पत्] आ गिरना। संपलइ (पिंग)।

संपलग्ग वि [संप्रलग्न] १ संयुक्त, मिला हुआ। २ जो लड़ाई के लिए भिड़ गया हो वह (णाया १, १८—पत्र २३६)।

संपलत्त वि [संप्रलपित] उक्त, कथित, प्रतिपादित (गाया १, २—पत्र ८६)।

संपललिय वि [संप्रललित] जिसका अच्छी तरह लालन हुआ हो वह; 'सुहसंपललिया' (औप)।

संपलिअ पुं [संपलित] एक जैन महर्षि (कप्प)।

संपलिअंक पुं [संपर्यङ्क] पद्मासन (भग; औप; कप्प; राय १४५)।

संपलित्त वि [संप्रदीप्त] प्रज्वलित, सुलगा हुआ (णाया १, १—पत्र ६३; पउम २२, १६; धर्मसं ६७०; सुपा २६८; महा)।

संपलिमज्ज सक [संपरि + मृज्] प्रमार्जन करना। वकृ. **संपलिमज्जमाण** (आचा १, ५, ४, ३)।

संपली सक [संपरि + इ] जाना, गति करना। संपलिंति (सूअ १, १, २, ७)।

संपवेय, **संपवेव** अक [संप्र + वेप्] काँपना। संपवेयए, संपवेवए (आचा २, १६, ३)।

संपवेस पुं [संप्रवेश] प्रवेश, पैठ (गउड)।

संपव्वय सक [संप्र + व्रज्] गमन करना, जाना। वकृ. **संपव्वयमाण** (आचा १, ५, ५, ३; ठा ६—पत्र ३५२)। हेकृ. **संपव्वइत्तए** (कस)।

संपसार पुं [संप्रसार] एकत्रित होना, समवाय (राज)।

संपसारग, **संपसारय** वि [संप्रसारक] १ विस्तारक, फैलानेवाला (सूअ १, २, २, २८)। २ पर्यालोचनकर्ता (आचा १, ५, ४, ५)।

संपसारि वि [संप्रसारिन्] ऊपर देखो (सूअ १, ६, १६)।

संपसिद्ध वि [संप्रसिद्ध] अत्यन्त प्रसिद्ध (धर्मसं ८३७)।

संपस्स सक [सं + दृश्] १ अच्छी तरह देखना। विचार करना। संकृ. **संपस्सिय** (दसचू १, १८)।

संपहार सक [संप्र + धारय्] १ चिंतन करना। २ निर्णय करना, निश्चय करना। संपहारेंति (सुख १, १५)। भूका. **संपहारिसु** (सूअ २, १, १४; २६)। संकृ. **संपहारिऊण** (स १०६)।

संपहार पुं [संप्रधार] निश्चय, निर्णय (पउम १६, २६; उप १०३१ टी; भवि)।

संपहार पुं [संप्रहार] युद्ध, लड़ाई (से ८, ४६)।

संपहारण न [संप्रधारण] निश्चय (पउम ४८, ६८)।

संपहाव सक [संप्र + धाव्] दौड़ना। संपहावेइ (आचा २, १, ३, ३)।

संपहिट्ठ वि [संप्रहृष्ट] हर्षित, प्रमुदित (उत्त १५, ३)।

संपा स्त्री [दे] काँची, मेखला, करधनी (दे ८, २)।

संपाइअव वि [संपादितवत्] जिसने सम्पादन किया हो वह (हे ४, २६५; विसे ६३४)।

संपाइम वि [संपातिम] १ भ्रमर, कीट, पतंग आदि उड़नेवाला जंतु (आचा; पिंड २४; सुपा ४६१; ओघ ३४८)। २ जानेवाला, गति-कर्ता; 'तिरिच्छसंपाइमा वा तसा पाणा' (आचा २, १, ३, ६; २, ३, १, १४)।

संपाइय वि [संपातित] १ आगत, आया हुआ। २ मिलित, मिला हुआ (भवि)।

संपाइय वि [संपादित] साधित, सिद्ध किया हुआ; 'संपाइयइट्ठफलि' (सण)।

संपाऊण सक [संप्र + आप्] अच्छी तरह प्राप्त करना। संपाउणइ, संपाउणंति (उत्त २६, ५६; पि ५०४)। भवि. संपाउणिस्सामो (णाया १, १८—पत्र २४१)। प्रयो. 'जेणप्पाणं परं चेव सिद्धिं संपाउणेज्जासि' (उत्त ११, ३२)।

संपाओ अ [संप्रातर्] १ जब प्रभात होय तब, प्रातःकाल। २ अति प्रभात, बड़ी सुबह। ३ हर प्रभात (ठा ३, १ टी—पत्र ११८)।

संपागड वि [संप्रकट] प्रकट, खुला; 'संपागडपडिसेवी' (ठा ४, १—पत्र २०३; उव)।

संपाड सक [सं + पादय्] १ सिद्ध करना, निष्पन्न करना। २ प्रार्थित वस्तु देना, दान करना। ४ प्राप्त करना, 'देइ सो जम्मग्गियं, संपाडेइ वत्थाभरणाइयं' (महा), 'संपाडेमि भयवओ आणं ति' (स ६८४), संपाडेउ (स ६६)। कृ. **संपाडेयव्व** (स २१४)।

संपाडग वि [संपादक] कर्ता, निर्माता; 'ता को अन्नो तस्सुन्नईए संपाडगो होज्जा' (उप १४२ टी)।

संपाडण न [संपादन] १ निष्पादन (स ७४८)। २ करण, निर्माण (पंचा ६, ३८), 'परत्थसंपाडणिकरसिअत्तं' (सा ११)।

संपाडिअ वि [संपादित] १ सिद्ध किया हुआ, निष्पादित (स २१४; सुर २, १७०)। २ प्राप्त किया हुआ (उप पृ १२४)। ३ दत्त, अर्पित (स २३५)।

संपातो देखो **संपाओ** (ठा ३, १—पत्र ११७)।

संपाद (शौ) देखो **संपाड** = सं + पादय्। संपादेदि (नाट—शकु ६५)। कृ. **संपादणीअ** (नाट—विक्र ६०)।

संपादइत्तअ (शौ) वि [संपादयितृ] संपादन-कर्ता, संपादक (पि ६००)।

संपादिअवद (शौ) देखो **संपाइअव** (पि ५६९)।

संपाय पुं [संपात] सम्यकपतन; 'सलिलसंपायकयकद्दमुप्पीलयं' (सुर ३, ११६)। २ संबन्ध, संयोग; 'सारीरमाणसाणेयदुक्खसंपायकलियं ति' (सुर ४, ७५; गउड) ३ व्यर्थ का झूठ, निरर्थक असत्य-भाषण (पण्ह १, ५—पत्र ६२)। संग, संगति (श्रा ६; पंचा १, ४१)। ५ आगमन (पंचा ७, ७२)। ६ चलन, हिलन (उत्त १८, २३; सुख १८, २३)।

संपाय देखो **संपाओ** (राज)।

संपायग वि [संपादक] संपादन-कर्ता (उप पृ २६; महा; चेइय ६०५)।

संपायग वि [संप्रापक] १ प्राप्त करनेवाला; 'रिसिगुणसंपायगो होइ' (चेइय ६०५)। २ प्राप्त करानेवाला (उप पृ २६)।

संपायण देखो **संपाडण** (सुर ४, ७३; सुपा २८; ३४३; चेइय ७६७)।

संपायणा स्त्री [संपादना] ऊपर देखो (पंचा १३, १७)।

संपाल सक [सं + पालय्] पालन करना। संपालइ (भवि)।

संपाव सक [सं+प्र + आप्] प्राप्त करना। संपावेइ (भवि)। संकृ. संपप्प (संवेग १२)। हेकृ. संपाविउं (सम १; भग; औप)।

संपाव सक [संप्र + आपय्] प्राप्त करवाना। संपावेइ (उवा)।

संपावण न [संप्रापण] प्राप्ति, लाभ (णाया १, १८—पत्र २४१; सुर १४, ५७)।

संपाविअ वि [संप्राप्त] प्राप्त, लब्ध (सुर २, २२६; सुपा १६५; सण)।

संपाविअ वि [संप्रापित] नीत, जो ले जाया गया हो वह (राज)।

संपासंग वि [दे] दीर्घ, लम्बा (दे ८, ११)।

संपिंडण न [संपिण्डन] १ द्रव्यों का परस्पर संयोजन (पिंड २)। २ समूह (ओघ ४०७)।

संपिंडिअ वि [संपिण्डित] पिण्डाकार किया हुआ, एकत्र किया हुआ (औप; जी ४७; सण)।

संपिक्ख देखो **संपेह** = संप्र + ईक्ष्। संपिक्खई (दसचू २, १२)।

संपिट्ठ वि [संपिष्ट] पिसा हुआ (सूअ १, ४, ८)।

संपिणद्ध वि [संपिनद्ध] नियन्त्रित; 'रज्जुपिणिद्धो व इंदकेतू विसुद्धणेगगुणसंपिणद्धं' (पण्ह २, ४—पत्र १३०)।

संपिहा सक [समपि + धा] आच्छादन करना, ढकना। संकृ. **संपिहित्ताणं** (पि ५८३)।

संपीड पुं [संपीड] संपीडन, दबाना (गउड)। देखो **संपील**।

संपीडिअ वि [संपीडित] दबाया हुआ (गउड १४४)।

संपीणिअ वि [संप्रीणित] खुश किया हुआ (सण)।

संपील पुं [संपीड] संघात, समूह (उत्त ३२, २६)।

संपीला स्त्री [संपीडा] पीड़ा, दुःखानुभव (उत्त ३२, ३६; ५२; ६५; ७८)।

संपुच्छ सक [सं + प्रच्छ्] पूछना, प्रश्न करना। संपुच्छदि (शौ) (नाट—विक्र २१)।

संपुच्छण स्त्रीन [संप्रच्छन, संप्रश्न] प्रश्न, पृच्छा (सूअ १, ६, २१; सुपा २१)। स्त्री. **°णी** (दस ३, ३)।

संपुंच्छणी स्त्री [संपुञ्छनी] झाड़ू, संमार्जनी (राय २१)।

संपुज्ज वि [संपूज्य] संमाननीय, आदरणीय (पउम ३३, ४७)।

संपुड पुं [संपुट] १ जुड़े हुए दो समान अंश वाली वस्तु, दो समान अंशों का एक दूसरे से जुड़ना, 'कवाडसंपुडघणम्मि' (धण ३), 'दलसंपुडे' (कप्पू; महा; भवि; से ७, ५६)। २ संचय, समूह (सूअ १, ५, १, २३)। **°फलग** पुं [°फलक] दोनों तरफ जिल्द बँधी पुस्तक, हिसाब की बही के समान किताब (पव ८०)।

संपुड सक [संपुटय्] जोड़ना, दोनों हिस्सों को मिलाना। संपुडइ (भवि)।

संपुडिअ वि [संपुटित] जुड़ा हुआ (णाया १, १—पत्र ६३)।

संपुण्ण वि [संपूर्ण] १ पूर्ण, पूरा (उवा; महा)। २ न. दश दिनों का लगातार उपवास (संबोध ५८)।

संपूअ सक [सं + पूजय्] सम्मान करना, अभ्यर्चना करना। संकृ. **संपूइऊण** (पंचा ८, ७)।

संपूजिय वि [संपूजित] अभ्यर्चित (महा)।

संपूयण न [संपूजन] पूजन, अभ्यर्चन (सूअ १, १०, ७; धर्मसं ६३४)।

संपूरिय वि [संपूरित] पूर्ण किया हुआ, 'संपूरियदोहला' (महा; सण)।

संपेल्ल पुं [संपीड] दबाव (पउम ८, २७२)।

संपेस सक [संप्र + इष्] भेजना। संपेसइ (महा; भवि)।

संपेस पुं [संप्रेष] प्रेषण, भेजना (णाया १, ८—पत्र १४७)।

संपेसण न [संप्रेषण] ऊपर देखो (णाया १, ८—पत्र १४६; स ३७६; गउड; भवि)।

संपेसिय वि [संप्रेषित] भेजा हुआ (सुर १६, ११५)।

संपेह सक [संप्र + ईक्ष्] देखना, निरीक्षण करना। संपेहइ, संपेहेइ (दसचू २, १२; पि ३२३; भग; उवा; कप्प)। संकृ. **संपेहाए, संपेहित्ता** (आचा १, २, ४, ४; १, ५, ३, २; सूअ २, २, १; भग)।

संपेहा स्त्री [संप्रेक्षा] पर्यालोचन (आचा १, २, २, ६)।

संफ न [दे] कुमुद, चन्द्र-कमल (दे ८, १)।

संफाल सक [सं + पाटय्] फाड़ना, चीरना। संफालइ (भवि)।

संफाली स्त्री [दे] पंक्ति, श्रेणि (दे ८, ५)।

संफास सक [सं + स्पृश्] स्पर्श करना, छूना; 'माइट्ठाणं संफासे' (आचा २, १, ३, ३; २, १, ५, ५; २, १, ६, २; ४; ५)।

संफास पुं [संस्पर्श] स्पर्श (आचा; उप ६४८ टी; पव २ टी; हे १, ४३; पडि)।

संफासण न [संस्पर्शन] ऊपर देखो; 'आणावीरियसंफासणभावतो' (पंचा १०, २८)।

संफिट्ठ पुं [दे] संयोग, मेलन (आ १६)।

संफुल्ल वि [संफुल्ल] विकसित (प्राकृ १४)।

संफुसिय वि [संमृष्ट] प्रमार्जित; 'दसणकरनियरसंफुसियदिसिमुहमला' (सुपा २६३)।

संब पुं [शाम्ब] १ श्रीकृष्ण वासुदेव का एक पुत्र (णाया १, ५—पत्र १००; अंत १४)। २ राजा कुमारपाल के समय का एक सेठ (कुप्र १४३)।

संब पुंन [शम्ब] वज्र, इन्द्र का आयुध (सुर १६, ५०)।

संबंध सक [सं + बन्ध्] १ जोड़ना। २ नाता करना। कर्म. संबज्झइ (चेइय ७२७)।

संबंध पुं [संबन्ध] १ संसर्ग, संग (भवि)। २ संयोग (कम्म १, ३५)। ३ नाता, सगाई, रिश्तेदारी (स्वप्न ४३)। ४ योजना, मेल (वव ५)।

संबंधि वि [संबन्धिन्] सम्बन्ध रखनेवाला (उवा; सम्म ११७; स ५३६)।

संबर पुं [शम्बर] मृग-विशेष, हरिण की एक जाति (पण्ह १, १—पत्र ७; दे ८, ६; कुप्र ४२६)।

संबल पुंन [शम्बल] १ पाथेय, रास्ते में खाने का भोजन; 'धन्नाणं चिय परलोयसंबलो मिलइ नन्नाणं' (सम्मत्त १५७; पाअ; सुर १६, ५०; दे ६, १०८; महा; भवि; सुपा ६४)। २ एक नागकुमार देव (आवम)।

संबलि देखो **सिंबलि** = शिम्बलि (आचा २, १, १०, ४)।

संबलि पुंस्त्री [शाल्मलि] वृक्ष-विशेष, सेमल का पेड़ (सुर २, २३४; ८, ५७)। देखो **सिंबलि**।

संबाधा देखो **संबाहा** (पउम २, ८६)।

संबाह सक [सं + बाध्] १ पीड़ा करना। २ दबाना, चप्पी करना। संबाहज्जा (निचू ३)।

संबाह पुं [संबाध] १ नगर-विशेष, जहाँ ब्राह्मण आदि चारों वर्णों की प्रभूत वस्ती हो वह शहर (उत्त ३०, १६)। २ पीड़ा; 'संबाहा बहवे भुज्जो दुरइक्कमा अजाणओ अपासओ' (आचा)। ३ वि. संकीर्ण, सकरा; 'संबाहं संकिण्णं' (पाअ)।

संबाहण न [संबाधन] देखो **संवाहण** (आचा १, ६, ४, २)।

संबाहणा स्त्री [संबाधना] देखो **संवाहणा** (औप)।

संबाहणी स्त्री [संबाधनी] विद्या-विशेष (पउम ७, १३७)।

संबाहा स्त्री [संबाधा] १ पीड़ा (आचा १, ५, ४, २)। २ अंग-मर्दन, चप्पी (निचू ३)।

संबाहिय वि [संबाधित] १ पीड़ित (सूअ १, ५, २, १८)। २ देखो **संवाहिय** (औप)।

संबुक्क पुं [शम्बूक] १ शंख (ठा ४, २—पत्र २१६; सुपा ५०; १६५)। २ रावण का एक भागिनेय—खरदूषण का पुत्र (पउम ४३, १८)। ३ एक गाँव का नाम (राज)। °**वट्टा** स्त्री [°वर्ता] शंख के आवर्त के समान भिक्षा-चर्या (उत्त ३०, १६)। देखो **संबूअ**।

संबुज्झ सक [सं + बुध्] समझना, ज्ञान पाना। संबुज्झइ, संबुज्झंति, संबुज्झह (महा; स ४८६; सूअ १, २, १, १; वै ७३)। वकृ. **संबुज्झमाण** (आचा १, १, २, ५)।

संबुद्ध वि [संबुद्ध] ज्ञान-प्राप्त (उवा; महा)।

संबुद्धि स्त्री [संबुद्धि] ज्ञान, बोध (अज्झ ३६)।

संबूअ पुं [शम्बूक] जल-शुक्ति, शुक्ति के आकार का जल-जंतु-विशेष (दे ८, १६; गउड)।

संबोधि स्त्री [संबोधि] सत्य धर्म की प्राप्ति (धर्मसं १३६६)।

संबोह सक [सं + बोधय्] १ समझाना, बुझाना। २ आमन्त्रण करना। ३ विज्ञप्ति करना। संबोहइ, संबोहेइ (भवि; महा)। कवकृ. **संबोहिज्जमाण** (णाया १, १४)। कृ. **संबोहेअव्व** (ठा ४, ३—पत्र २४३)।

संबोह पुं [संबोध] ज्ञान, बोध, समझ (आत्म २०)।

संबोहण न [संबोधन] १ ऊपर देखो (विसे २३३२; सुख १०, १; चेइय ७७५)। २ आमन्त्रण (गउड)। ३ विज्ञप्ति (णाया १, ८—पत्र १५१)।

संबोहि देखो **संबोधि** (उप पृ १७६, वै ७३)।

संबोहिअ वि [संबोधित] १ समझाया हुआ (यति ४८)। २ विज्ञापित (णाया १, ८—पत्र १५१)।

संभंत वि [संभ्रान्त] १ भीत, घबड़ाया हुआ, त्रस्त (उत्त १८, ७; महा; गउड)। २ पुंन. प्रथम नरक का पाँचवाँ नरकेन्द्रक—नरकस्थान-विशेष (देवेन्द्र ४)। ३ न. भय, घबराहट (महा)।

संभंति स्त्री [संभ्रान्ति] संभ्रम, उत्सुकता (भग १६, ५—पत्र ७०६)।

संभंतिय वि [सांभ्रान्तिक] संभ्रम से बना हुआ (भग १६, ५—पत्र ७०६)।

संभग्ग वि [संभग्न] चूर्णित (उत्त १६, ६१)।

संभण सक [सं + भण्] कहना। संकृ. **संभणिअ** (पिंग)।

संभणिअ वि [संभणित] कथित, उक्त (पिंग)।

संभम सक [सं + भ्रम्] १ अतिशय भ्रमण करना। २ अक. भय-भीत होना, घबड़ाना। वकृ. **संभमंत** (पि २७५)।

संभम पुं [संभ्रम] १ आदर; 'संभमो आयरो पयत्तो य' (पाअ)। २ भय, घबराहट, क्षोभ; 'संखोहो संभमो तासो' (पाअ; प्रासू १०५; महा)। ३ उत्सुकता (औप)।

संभर सक [सं + भृ] १ धारण करना। २ पोषण करना। ३ संक्षेप करना, संकोच करना। वकृ. **संभरमाण** (से ७, ४१)। संकृ. **संभार** (अप) (पिंग)।

संभर सक [सं + स्मृ] स्मरण करना, याद करना। संभरेइ, संभरिमो (महा; पि ४५५)। वकृ. **संभरंत, संभरमाण** (गा २६; सुपा ३१७; से ७, ४१)। कृ. **संभरणिज्ज, संभरणीय** (धम्मो १८; उप ५३८ टी)।

संभरण न [संस्मरण] स्मरण, याद (गा २२२; णाया १, १—पत्र ७१, दे ७, २५; उवकु १४)।

संभरणा स्त्री [संस्मरणा] ऊपर देखो (उप ५३० टी)।

संभराविअ वि [संस्मारित] याद कराया हुआ (दे ८, २५; कुप्र ४२१)।

संभरिअ वि [संस्मृत] याद किया हुआ (गउड; काप्र ८९२)।

संभल सक [सं + स्मृ] याद करना। संभलइ (उप पृ ११३)। कर्म. संभलिज्जइ (वज्जा ८०)। वकृ. **संभलि** (अप) (पिंग २६७)।

संभल सक [सं + भल्] १ सुनना; गुजराती में 'सांभळवुं'। २ अक. सम्भलना, सावधान होना। संभलइ (भवि); 'संभलसु मह पइन्न' (सम्मत्त २१७)। संकृ. **संभलि** (अप) (पिंग २८६)।

संभली स्त्री [दे. संभली] १ दूती (दे ८, ६; वव ५)। २ कुट्टनी, पर-पुरुष के साथ अन्य स्त्री का योग करानेवाली स्त्री (कुमा)।

संभव अक [सं + भू] १ उत्पन्न होना। संभावना होना, उत्कट संशय होना। संभवइ

(पि ४७५; काल; भवि)। वकृ. संभवंत (सुपा ५६)। कृ. संभव्व (श्रा १२; सूअनि ६५)।

संभव पुं [संभव] १ उत्पत्ति (महा; उव; हे ४, ३६५)। २ संभावना (भवि)। ३ वर्तमान अवसर्पिणी काल में उत्पन्न तीसरे जिनदेव का नाम (सम ४३; पडि)। ३ एक जैन मुनि जो दूसरे वासुदेव के पूर्व-जन्म के गुरु थे (पउम २०, १७६)। ५ कला-विशेष (औप)।

संभव पुं [दे] प्रसव-जरा, प्रसूति से होनेवाला बुढ़ापा (दे ८, ४)।

संभव (अप) देखो **संभम** = संभ्रम (भवि)।

संभवि वि [संभविन्] जिसका सम्भव हो वह (पंच ५, २५; भास ३५)।

संभविय देखो **संभूअ** (चेइय ५५६)।

संभव्व देखो **संभव** = सं + भू।

संभाणय न [संभाणक] गुजरात का एक प्राचीन नगर (राज)।

संभार सक [सं + भारय्] मसाला से संस्कृत करना, वासित करना। संभारेइ, संभारेंति, संभारेह (णाया १, १२—पत्र १७५; १७६)। संकृ. **संभारिय** (पिंड १६३)। कृ. **संभारणिज्ज** (णाया १, १२)।

संभार पुं [संभार] १ समूह, जत्था; 'उत्तुंगथंभसंभारभासमाणं करावए राया' (उप ६४८ टी; श्रावक १३०)। २ मसाला, शाक आदि में ऊपर डाला जाता मसाला (णाया १, १६—पत्र १६६)। ३ परिग्रह, द्रव्य-संचय (पराह १, ५—पत्र ६२)। ४ अवश्यतया कर्म का वेदन (सूअ २, ७, ११)।

संभारिअ वि [संस्मृत] याद किया हुआ (से १४, ६५)।

संभारिअ वि [संस्मारित] याद कराया हुआ (णाया १, १—पत्र ७१; सुर १४, २३५)।

संभाल सक [सं + भालय्] संभालना। संभालइ (भवि)।

संभाल पुं [संभाल] खोज, अन्वेषण; 'उदिए सूरम्मि जा न जणणोए पायपणामनिमित्तं समागओ ताव संभालो जाओ तस्स, न कत्थवि जाव पउत्ती कहंचि उवलद्धा' (उप २२० टी)।

संभालिय वि [संभालित] संभाला हुआ (सण)।

संभाव सक [सं + भावय्] १ संभावना करना। २ प्रसन्न नजर से देखना; 'न संभावसि अवरोहं' (मोह ६), संभावेमि (संवेग ४), सम्भावेहि मोह २६)। कर्म. संभावीअदि (शौ) (नाट—मृच्छ २३०)। वकृ. **संभावअंत** (नाट—शकु १३४)। संकृ. **संभाविअ** (नाट—शकु ६७)। कृ. **संभावणिज्ज, संभावणीय** (उप ७६८ टी; स ६१; श्रा २३)।

संभाव अक [लुभ्] लोभ करना, आसक्ति करना। संभावइ (हे ४, १५३; षड्)।

संभावणा स्त्री [संभावना] संभव (से ८,१६; गउड)।

संभावि वि [संभाविन्] जिसका संभव हो वह (श्रा १४)।

संभाविअ वि [संभावित] जिसकी संभावना की गई हो वह (नाट—विक्र ३४)।

संभास सक [सं + भाष्] बातचीत करना, आलाप करना। कृ. **संभासणीय** (सुपा ११५)।

संभास पुं [संभाष] संभाषण, वार्तालाप (उप पृ ११२; संबोध २१; सण; काल; सुपा ११५; ५४२)।

संभासण न [संभाषण] ऊपर देखो (भवि)।

संभासा स्त्री [संभाषा] संभाषण, बातचीत (औप)।

संभासि वि [संभाष] संभाषण, 'संभासिस्साणरिहो' (काल)।

संभासिय वि [संभाषित] जिसके साथ संभाषण—वार्तालाप किया गया हो वह (महा)।

संभिडण न [संभेदन] आघात (गउड)।

संभिण्ण, **संभिन्न** वि [संभिन्न] १ परिपूर्ण (पव १६८)। २ किंचिद् न्यून, कुछ कम (देवेन्द्र ३४२)। ३ व्याप्त। ४ बिलकुल भिन्न—भेदवाला (पराह २, १—पत्र ६६)। ५ खंडित (दसचू १, १३)। °सोअ वि [°श्रोतस्, °श्रोतृ] लब्धि-विशेषवाला, शरीर के कोई भी अंग से शब्द को स्पष्ट रूप से सुनने की शक्तिवाला (पराह २, १—पत्र ६६; औप)।

संभिन्न न [दे] आघात (गउड ६३४ टी)।

संभिय वि [संभृत] १ पुष्ट, 'आरंभसंभिया' (सूअ १, ६, ३)। २ संस्कार-युक्त, संस्कृत; 'बहुसंभारसंभिए' (णाया १, १६—पत्र १६६; स ६८; विसे २६३)।

संभु पुं [शम्भु] १ शिव, शंकर (सुपा २४०; सार्ध १३५; समु १५०)। २ रावण का एक सुभट (पउम ५६, २)। ३ छन्द-विशेष (पिंग)। °घरिणी स्त्री [°गृहिणी] गौरी, पार्वती (सुपा ४४२)।

संभुंज सक [सं + भुज्] साथ भोजन करना, एक मरडली में बैठकर भोजन करना। संभुंजइ (कस)। हेकृ. **संभुंजित्तए** (सूअ २, ७, १६; ठा २, १—पत्र ५६)।

संभुंजणा स्त्री [संभोजना] एकत्र भोजन-व्यवहार (पंचू)।

संभुल्ल वि [दे] दुर्जन, खल (दे ८, ७)।

संभूअ वि [संभूत] १ उत्पन्न, संजात (सुपा ४०; ५०७; महा)। २ पुं. एक जैन मुनि जो प्रथम वासुदेव के पूर्वजन्म में गुरु थे (सम १५३, पउम २०, १७६)। ३ एक प्रसिद्ध जैन महर्षि जो स्थूलभद्र मुनि के गुरु थे (धर्मवि ३८; सार्ध १३)। ४ व्यक्ति-वाचक नाम (महा)। °विजय पुं [°विजय] एक जैन महर्षि (कुप्र ४५३; विपा २, ५)।

संभूइ स्त्री [संभूति] १ उत्पत्ति (पउम १७ ६८; गा ६५४; सुर ११, १३५; पव २४४)। २ श्रेष्ठ विभूति (सार्ध १३)।

संभूस सक [सं + भूष्] अलंकृत करना। संभूसइ (सण)।

संभोअ पुं [संभोग] सुन्दर भोग (सुपा ४६८; कप्पू)। देखो **संभोग**।

संभोइअ वि [सांभोगिक] समान सामाचारी-क्रियानुष्ठान होने के कारण जिसके साथ खान-पान आदि का व्यवहार हो सके ऐसा साधु (ओघभा २०; पंचा ५, ४१; द्र ५०)।

संभोग पुं [संभोग] समान सामाचारीवाले साधुओं का एकत्र भोजनादि-व्यवहार (सम २१; औप; कस)।

संभोगि वि [संभोगिन्] देखो संभोइअ (कुप्र १७२)।

संभोगिय देखो संभोइय (ठा ३, ३—पत्र १३६)।

संमइ स्त्री [संमति] १ अनुमति (सूत्र १, ८, १४; विसे २२०६)। २ पुं. वायुकाय, पवन। ३ वायुकाय का अधिष्ठाता देव (ठा ५, १—पत्र २६२)।

संमज्ज पुं [संमार्ज] संमार्जन, साफ करना (विसे ६२५)।

संमज्जग पुं [संमज्जक] वानप्रस्थ तापसों की एक जाति (औप)।

संमज्जण न [संमार्जन] साफ करना, प्रमार्जन (अभि १५६)।

संमज्जणी स्त्री [संमार्जनी] झाड़ू (दे ६, ६७)।

संमज्जिय वि [संमार्जित] साफ किया हुआ (सुपा ५४; औप; भवि)।

संमट्ठ वि [संमृष्ट] १ प्रमार्जित, सफा किया हुआ (राय १००; औप, पव १३३)। २ पूर्ण भरा हुआ (जीवस ११६; पव १५८)।

संमड्ड पुं [संमर्द] १ युद्ध, लड़ाई (हे २, ३६)। २ परस्पर संघर्ष (हे २, ३६; कुमा)।

संमड्डिअ वि [संमर्दित] संघृष्ट (हे २, ३६)।

संमद्द सक [सं + मृद्] मर्दन करना। संकृ. संमद्दिआ (दस ५, २, १६)।

संमद्द देखो संमड्ड (उप १३६ टी; पाअ; दे १, ६३; सुपा २२२; प्राकृ ८६)।

संमद्दा स्त्री [संमर्दा] प्रत्युपेक्षणा-विशेष, वस्त्र के कोनों को मध्य भाग में रखकर अथवा उपधि पर बैठकर जो प्रत्युपेक्षणा—निरीक्षण की जाय वह (ओघ २६६; ओघभा १६२)।

संमय वि [संमत] १ अनुमत। २ अभीष्ट (उव)।

संमविय वि [संमापित] नापा हुआ (भवि)।

संमा अक [सं + मा] समाना, अटना। संमाइ (कुप्र २७७)।

संमाण सक [सं + मानय्] आदर करना, गौरव करना। संमाणइ, संमाणेइ, संमाणिति, संमाणेमो (भवि; उवा, महा; कप्प; पि ४७०)। भवि. संमाणेहिति (पि ५२८)। वकृ. **संमाणंत, संमाणेंत** (सुपा २२४; पउम १०५, ७६)। संकृ. **संमाणिऊण, संमाणेऊण, संमाणित्ता** (महा; कप्प)। कवकृ. **संमाणिज्जमाण** (काल)। कृ. **संमाणणिज्ज** (णाया १, १ टी—पत्र ४; उवा)।

संमाण पुं [संमान] आदर, गौरव (उव; हे ४, ३१६; नाट—मालवि ६३)।

संमाणण न [संमानन] ऊपर देखो (सुपा २०८)।

संमाणिय वि [संमानित] जिसका आदर किया गया हो वह (कप्प; महा)।

संमिद (शौ) वि [संमित] १ तुल्य, समान। २ समान परिमाणवाला (अभि १८६)।

संमिल अक [सं + मिल्] मिलना। संमिलइ (भवि)।

संमिलिअ वि [संमिलित] मिला हुआ (भवि)।

संमिल्ल अक [सं + मील्] सकुचाना, संकोच करना। संमिल्लइ (हे ४, २३२; षड्; धात्वा १५५)।

संमिस्स वि [संमिश्र] १ मिला हुआ, युक्त (महा)। २ उखड़ी हुई छालवाला (आचा २, १, ८, ६)।

संमील देखो संमिल्ल। संमीलइ (हे ४, २३२; षड्)।

संमीलिअ वि [संमीलित] संकुचित (से १२, १)।

संमीस देखो संमिस्स (सुर २, १११; सण)।

संमुइ पुं [संमुचि] भारतवर्ष में भविष्य में होनेवाला एक कुलकर पुरुष (ठा १०—पत्र ५१८)।

संमुच्छ अक [सं + मूर्च्छ्] उत्पन्न होना, 'एतासि णं लेसाणं अंतरेसु अण्णतरीओ छिण्णलेसाओ संमुच्छंति' (सुज्ज ६)।

संमुच्छण स्त्रीन [संमूर्च्छन] स्त्री-पुरुष के संयोग के बिना ही यूकादि की तरह होती जीवों की उत्पत्ति (धर्मसं १०१७)। स्त्री. °णा (धर्मसं १०३१)।

संमुच्छिम वि [संमूर्च्छिम] स्त्री-पुरुष के समागम के बिना उत्पन्न होनेवाला प्राणी (आचा; ठा ५, ३—पत्र ३३४ सम १४६; जी २३)।

संमुच्छिअ वि [संमूर्च्छित] उत्पन्न (सुज्ज ६)।

संमुज्झ अक [सं + मुह्] मोह करना, मुग्ध होना संमुज्झइ (संबोध ५२)।

संमुत्त देखो संमुत्त (राज)।

संमुस सक [सं + मृश्] पूर्ण रूप से स्पर्श करना। वकृ. **संमुसमाण** (भग ८, ३—पत्र ३६५)।

संमुह वि [संमुख] सामने आया हुआ (हे १, २६; ४, ३६५; ४१४; महा)। स्त्री. °ही (काप्र ७२३)।

संमूढ वि [संमूढ] जड़, विमूढ (पाअ; सुपा ५४०)।

संमेअ पुं [संमेत] १ पर्वत-विशेष जो आजकल 'पारसनाथ पहाड़' के नाम से प्रसिद्ध है (णाया १, ८—पत्र १५४; कप्प; महा; सुपा २११; ५८४; विवे १८)। २ राम का एक सुभट (पउम ५६, ३७)।

संमेल पुं [संमेल] परिजन अथवा मित्रों का जिमनवार, प्रीति-भोजन (आचा २, १, ४, १)।

संमोह पुं [संमोह] १ मूढता, अज्ञान (अणु; स ३५८)। २ मूर्च्छा (सिक्खा ४२)। ३ दुःख, कष्ट (से ३, १३)। ४ संनिपात रोग (उप १९०)।

संमोह न [सांमोह] १ मिथ्यात्व का एक भेद—रागी को देव, संगी—परिग्रही को गुरु और हिंसा को धर्म मानना (संबोध ५२)। २ वि. संमोह-संबन्धी (ठा ४, ४—पत्र २७४)। स्त्री. °हा, °ही (ठा ४, ४ टी—पत्र २७४; बृह १)।

संमोहण न [संमोहन] १ मोहित करना। २ मूर्च्छित करना (कुप्र २५०)।

संमोहा स्त्री [संमोहा] छन्द-विशेष (पिंग)।

संरंभ पुं [संरम्भ] १ हिंसा करने का संकल्प, 'संकप्पो संरंभो' (संबोध ४१; श्रा ७)। २ आटोप (कुमा १, २१; ६, ६२)। ३ उद्यम (कुमा ५, ७०)। ४ क्रोध, गुस्सा (पाअ)।

संरक्खग वि [संरक्षक] अच्छी तरह रक्षा करनेवाला (णाया १, १८—पत्र २४०)।
संरक्खण न [संरक्षण] समीचीन रक्षण (णाया १, १४; पि ३६१)।
संरक्खय देखो संरक्खग (उत्त २६, ३१)।
संरद्ध सक [सं + राध्] पकाना। कृ. संरद्धियव्व (कुप्र ३७)।
संरुंध सक [सं + रुध्] रोकना, अटकाना। कर्म. संरुंधिज्जइ, संरुज्झइ (हे ४, २४८)। भवि. संरुंधिहिइ, संरुज्झिहिइ (हे ४, २४८)।
संरोह पुं [संरोध] अटकाव (कुप्र ५१; पव २३८)।
संरोहणी स्त्री [संरोहणी] घाव को रुझानेवाली औषधि-विशेष (सुपा २१७)।
संलक्ख सक [सं + लक्षय्] पहिचानना। कर्म. संलक्खीअदि (शौ); (नाट—वेणी ७८)।
संलग्ग वि [संलग्न] लगा हुआ, संयुक्त (सुपा २२६)।
संलग्गिर वि [संलगितृ] संयुक्त होनेवाला, जुड़नेवाला (ओघ ६८)।
संलत्त वि [संलपित] संभाषित, उक्त, कथित (सुर ३, ६१; सुपा ३२६; ३८५; महा)।
संलप्प नीचे देखो।
संलव सक [सं + लप्] संभाषण करना। संलवइ, संलवेमि (महा; पव १४८)। वकृ. संलवमाण (णाया १, १—पत्र १३; कप्प)। कृ. संलप्प (राज)।
संलव पुं [संलाप] संभाषण, वार्तालाप (सुपनि ५८)।
संलाव सक [सं + लापय्] बातचीत करना। संलाविंति (कप्प)।
संलाव देखो संलव = संलाप (औप; से २, ३६; गउड; श्रा ६)।
संलाविअ वि [संलापित] १ उक्त, कथित। २ कहलवाया हुआ (गा १११)।
संलिद्ध वि [संश्लिष्ट] संयुक्त (संबोध १६)।
संलिह सक [सं + लिख्] १ निर्लेप करना। २ शरीर आदि का शोषण करना, कृश करना। ३ घिसना। ४ रेखा करना। संलिहिज्जा (आचा २, ३, २, ३)। संलिहे (उत्त ३६, २४६; दस ८, ४; ७)। संकृ. संलिहिय (कप्प)।
संलिहिय वि [संलिखित] जिसने तपश्चर्या से शरीर आदि का शोषण किया हो वह (स १३०)।
संलीढ वि [संलीढ] संलेखना-युक्त (णंदि २०६)।
संलीण त्रि [संलीन] जिसने इन्द्रिय तथा कषाय आदि को काबू में किया हो वह, संवृत (पव ६)।
संलीणया स्त्री [संलीनता] तप-विशेष, शरीर आदि का संगोपन (सम ११; नव २८; पव ६)।
संलुंच सक [सं + लुञ्च्] काटना। कवकृ. संलुंचमाण सुणएहिं (आचा १, ६, ३, ६)। संकृ. संलुंचिअ (दस ५, २, १४)।
संलेहणा स्त्री [संलेखना] शरीर, कषाय आदि का शोषण, अनशन-व्रत से शरीर-त्याग का अनुष्ठान (सह ११६; सुपा ६४८)। °सुअ न [°श्रुत] ग्रन्थ-विशेष (णंदि २०२)।
संलेहा स्त्री [संलेखा] ऊपर देखो (उत्त ३६, २५०; सुपा ६४८)।
संलोअ पुं [संलोक] १ दर्शन, अवलोकन (आचा २, १, ६, २; उत्त २४, १६; पव ६१)। २ दृष्टि-पात, दृष्टिप्रचार। ३ जगत्, संपूर्ण लोक। ४ प्रकाश (राज)। ५ वि. दृष्टि-प्रचारवाला, जिस पर दृष्टि पड़ सकती हो वह (उत्त २४, १६)।
संलोक सक [सं + लोक्] देखना। कृ. संलोकणिज्ज (सूअ १, ४, १, ३०)।
संवइयर पुं [संव्यतिकर] व्यतिसंबन्ध, विपरीत प्रसंग (उव)।
संवग्ग पुं [संवर्ग] १ गुणन, गुणाकार (वव १; जीवस १५४)। २ गुणित, जिसका गुणाकार किया गया हो वह (राज)।
संवच्छर पुं [संवत्सर] वर्ष, साल (उव; हे २, २१)। °पडिलेहणग न [°प्रतिलेखनक] वर्ष-गांठ, वर्ष की पूर्णता के दिन किया जाता उत्सव (णाया १, ८—पत्र १३१; भग; अंत)।
संवच्छरिय पुं [सांवत्सरिक] १ ज्योतिषी, ज्योतिष शास्त्र का विद्वान् (स ३४; कुप्र ३२)। २ वि. संवत्सर संबंधी, वार्षिक (धर्मवि १२६; पडि)।
संवच्छल देखो संवच्छर (हे २, २१)।
संवट्ट सक [सं + वर्तय्] १ एक स्थान में रखना। २ संकुचित करना। संवट्टेइ (औप)। संवट्टेज्जा (आचा १, ८, ६, ३)। संकृ. संवट्टइत्ता (ठा २, ४—पत्र ८६), संवट्टित्ता (आचा १, ८, ६, ३)।
संवट्ट पुं [संवर्त] १ पीड़ा (उप २६६)। २ भय-भीत लोगों का समवाय—समूह (उत्त ३०, १७)। ३ वायु-विशेष· तृण को उड़ानेवाला वायु (पण्ण १—पत्र २६)। ४ अपवर्तन (ठा २, ३—पत्र ६७)। ५ घेरा। ६ जहाँ पर बहुत गाँवों के लोग एकत्रित हो कर रहें वह स्थान, दुर्ग आदि (राज)। देखो संवत्त।
संवट्टइअ वि [संवर्तकित] तूफान में फँसा हुआ (उप पृ १४३)।
संवट्टग पुं [संवर्तक] वायु-विशेष (सुपा ४१)। देखो संवट्टय।
संवट्टण न [संवर्तन] १ जहाँ पर अनेक मार्ग मिलते हों वह स्थान (णाया १, २—पत्र ७६)। २ अपवर्तन (विसे २०४५)।
संवट्टय पुं [संवर्तक] अपवर्तन (ठा २, ३—पत्र ६७)। देखो संवट्टग।
संवट्टिअ वि [दे. संवर्तित] संवृत, संकोचित (दे ८, १२)।
संवट्टिअ वि [संवर्तित] १ पिंडीभूत, एकत्रित (वव १)। २ संवर्त-युक्त (हे २, ३०)।
संवड्ढ अक [सं + वृध्] बढ़ना। संवड्ढइ (महा)।
संवड्ढण देखो संवद्धण (अभि ४१)।
संवड्ढिअ वि [संवृद्ध] बढ़ा हुआ (महा)।
संवड्ढिअ वि [संवर्धित] बढ़ाया हुआ (नाट—रत्ना २२)।
संवत्त पुं [संवर्त] १ प्रलय काल (से ५, ७१; १०, २२)। २ वायु-विशेष; 'जुगंतसरिसं संवत्तवायं विउव्विऊण' (कुप्र ६६)। ३ मेघ। ४ मेघ का अधिपति-विशेष। ५ वृक्ष-विशेष, बहेड़ा का पेड़। ६ एक स्मृतिकार मुनि (संक्षि १०)। देखो संवट्ट = संवर्त।
संवत्तण देखो संवट्टण (हे २, ३०)।

संवत्तय वि [संवर्तक] १ अपवर्तन-कर्ता। २ पुं. बलदेव। ३ वडवानल (हे २, ३०; प्राप्र)।

संवत्तुवत्त पुं [संवर्तोद्वृत्त] उलट-पुलट (स १७४; २५८)।

संवद्धण न [संवर्धन] १ वृद्धि, बढ़ाव। २ वि. वृद्धि करनेवाला (भवि; स ७२७)।

संवय सक [सं + वद्] १ बोलना, कहना। २ प्रमाणित करना, सत्य साबित करना। संवयइ, संवएज्जा (कुप्र १८७; सूम्र १, १४, २०)। वकृ. संवयंत (धर्मसं ८८३)।

संवय वि [संवृत] आवृत, आच्छादित (कुप्र ३६)।

संवर सक [सं + वृ] १ निरोध करना, रोकना। २ कर्म को रोकना। ३ बँध करना। ४ ढकना। ५ गोपन करना। संवरइ, संवरसि, संवरेमि (भग; भवि; सण; हास्य १३०; पव २३६ टी); संवरेहि (कुप्र ३११)। वकृ. संवरेमाण (भग)। संकृ. संवरेवि (महा)।

संवर पुं [संवर] १ कर्म-निरोध, नूतन कर्म-बन्ध का अटकाव (भग; पराह १, १; नव १)। २. भारतवर्ष में होनेवाले अठारहवें जिनदेव (पव ४६; सम १५४)। ३ चौथे जिनदेव के पिता का नाम (सम १५०)। ४ एक जैन मुनि (पउम २०, २०)। ५ पशु-विशेष (कुप्र १०४)। ६ दैत्य-विशेष। ७ मत्स्य की एक जात (हे १, १७७)।

संवरण न [संवरण] १ निरोध, अटकाव (पंचा १, ४४), 'आायदाराण संवरणं' (श्रु ७)। २ गोपन (गा १९९; सुपा ३०१)। ३ संकोचन समेटन (गा २७०)। ४ प्रत्याख्यान, परित्याग (श्रोघ ३७; विसे २६१२; श्रावक ३३३)। ५ श्रावक के बारह व्रतों का अंगीकार (सम्मत्त १५२)। ६ अनशन, आहार परित्याग (उप पृ १७९)। ७ विवाह; लग्न, शादी (पउम ४९, २३)। ८ वि. रोकनेवाला (पव १२३)।

संवरिअ वि [संवृत] १ आसेवित, आराधित; 'एवमिणं संवरस्स दारं सम्मं संवरियं होइ' (पराह २, १—पत्र १०१)। २ संकोचित (दे ८, १२)। ३ आच्छादित (बृह ३)।

संवलण न [संवलन] मिलन (गउड; नाट—मालती ५७)।

संवलिअ वि [संवलित] १ व्याप्त (गा ७५; सुर ६, ७६; ८, ४३; रुक्मि ६०)। २ युक्त, मिलित, मिश्रित (सुर ३, ७८; धर्मवि १३६); 'सरसा वि दुमा दावाणलेण डज्झंति सुक्खसंवलिया' (वज्जा १४)।

संववहार पुं [संव्यवहार] व्यवहार (विसे १८५३)।

संवस अक [सं + वस्] १ साथ में रहना। २ रहना, वास करना। ३ सभोग करना। संवसइ (कस)। वकृ. संवसमाण (ठा ५, २—३१२; ३१४; गच्छ १, ३)। संकृ. संवसित्ता (गच्छ १, २)। हेकृ. संवसित्तए (ठा २, १—पत्र ५६)। कृ. संवसेयव्व (उप पृ १९)।

संवह सक [सं + वह्] १ वहन करना। २ अक. सज्ज होना, तय्यार होना। वकृ. संवहमाण (सुपा ४६४; णाया १; १३—पत्र १८०)। संकृ. संवहिऊण (सण)।

संवहण न [संवहन] १, ढोना, वहन करना। (राज)। २ वि. वहन करनेवाला (आचा २, ४, २, ३; दस ७, २५)।

संवहणिय वि [सांवहनिक] देखो संवाहणिय (उवा)।

संवहिअ वि [संव्यूढ] जो सज्ज हुआ हो वह, तय्यार बना हुआ; 'सामिअ पुरिअपोआ अम्हे सव्वेवि संवहिआ' (सिरि ५९६; सम्मत्त १५७)।

संवाइ वि [संवादिन्] प्रमाणित करनेवाला, सबूत देनेवाला (सुर १२, १७६)।

संवाइय वि [संवादित] १ खबर दिया हुआ, जनाया हुआ (स २९६)। २ प्रमाणित (स ३१५)।

संवाद } पुं [संवाद] १ पूर्वज्ञान को सत्य
संवाय } साबित करनेवाला ज्ञान, सबूत, प्रमाण (धर्मसं १४८; स ३२९; उप ७२८ टी)। २ विवाद, वाक्-कलह;
"इय जाओ संवाओ तेसिं पुत्तस्स कारणे गरुओ। त कीरेणं भणियं रायसमीवे समागच्छ॥' (सुपा ३६०)।

संवाय सक [सं + वादय्] खबर देना, समाचार कहना। संवाएमि, संवाएहि (स २९१; २९६)।

संवायय पुं [दे] १ नकुल, न्यौला। २ श्येन पक्षी (दे ८, ४८)।

संवास सक [सं + वासय्] साथ में रहने देना। हेकृ. संवासेउं (पंचा १०, ४८ टी)।

संवास पुं [संवास] १ सहवास, साथ में निवास (उव २२३; ठा ४, १—पत्र १९७; श्रोघ ६७; हित १७; पंचा ६, १३)। २ मैथुन के लिए स्त्री के साथ निवास (ठा ४, १—पत्र १९३)।

संवासिय (अप) वि [समाश्वासित] जिसको आश्वासन दिया गया हो वह; 'ति वयणिं वणवइ संवासिउ' (भवि)।

संवाह सक [सं + वाहय्] १ वहन करना। २ तय्यारी करना। अंग-मर्दन—चप्पी करना। संवाहइ (भवि)। कवकृ. संवाहिज्जंत (सुपा २००; ३४९)।

संवाह पुं [संवाह] १ दुर्ग-विशेष, जहाँ कृषक-लोग धान्य आदि को रक्षा के लिए ले जाकर रखते हैं (ठा २, ४—पत्र ८६; पराह १, ४—पत्र ६८; औप; कस)। २ लग्न, विवाह (सुपा २५५)। ३ गिरिशिखरस्थ ग्राम।

संवाहण न [संवाहन] १ अंग-मर्दन, चप्पी (पराह २, ४—पत्र १३१; सुर ४, २४७; गा ४६४)। २ संबाधन, विनाश (गा ४६४)। ३ पुं. एक राजा का नाम (उव)। ४ वि. वहन करनेवाला (आचा २, ४, २, १०)।

संवाहणा स्त्री [संवाहना] ऊपर देखो (कप्प; औप)।

संवाहणिय वि [सांवाहनिक] भार-वहन करने के काम में आता वाहन (उवा)।

संवाहय वि [संवाहक] चप्पी करनेवाला (चारु ३९)।

संवाहिअ वि [संवाहित] जिसका अंग-मर्दन—चप्पी किया गया हो वह (कप्प;

सुर ४, २४३)। २ वहन किया हुआ (भवि)।

संविकिण्ण वि [संविकीर्ण] अच्छी तरह व्याप्त (पराए २—पत्र १००)।

संविक्ख सक [संवि + ईक्ष्] सम भाव से देखना, रागादि-रहित हो कर देखना। वकृ. संविक्खमाण (उत्त १४, ३३)।

संविग्ग वि [संविग्न] संवेग-युक्त, भव-भीरु, मुक्ति का अभिलाषी, उत्तम साधु (उवः पंचा ५, ४९; सुर ८, १६६; ओघभा ४९)।

संविचिण्ण, संविचिन्न वि [संविचीर्ण] संविचरित, आसेवित (णाया १, ५ टी—पत्र १००; णाया १, ५—पत्र ६६)।

संविज्ज अक [सं + विद्] विद्यमान होना। संविज्जइ (सूअ १, ३, २, १८)।

संविट्ट सक [सं + वेष्टय्] १ वेष्टन करना, लपेटना। २ पोषण करना। संकृ. संविट्टमाण (णाया १, ३—पत्र ६१)।

संविढत्त वि [समर्जित] पैदा किया हुआ, उपार्जित (स ५)।

संविणीय वि [संविनीत] विनय-युक्त (ओघभा १३४)।

संवित्त देखो संवीअ (सूअ १, ३, १, १७)।

संवित्त वि [संवृत्त] १ संजात, बना हुआ (सुर ६, ८६)। २ वि. अच्छा आचरण-वाला। ३ बिलकुल गोल (सिरि १०६३)।

संवित्ति स्त्री [संवित्ति] संवेदन, ज्ञान (विसे १६२६; धर्मसं २६६)।

संविद सक [सं + विद्] जानना, 'जिच्चमाणो न संविदे' (उत्त ७, २२)।

संविद्ध वि [संविद्ध] १ संयुक्त (उवर १३३)। २ अभ्यस्त। ३ दृष्ट; 'संविद्धपहे' (आचा १, ५, ३, ६)।

संविधा स्त्री [संविधा] संविधान, रचना, बनावट (चारु १)।

संविधुग सक [संवि + धू] १ दूर करना। २ परित्याग करना। ३ अवगणना, तिरस्कार करना। संकृ. संविधुणिय, संविधुणित्ताणं (आचा १, ८, ६, ५; सूअ १, १६, ४; औप)।

संविभत्त वि [संविभक्त] बाँटा हुआ, 'देवगुरुसविभत्त भत्तं' (कुप्र १५३)।

संविभाअ, संविभाग पुं [संविभाग] १ विभाग करना, बाँट (णाया १, २—पत्र ८६; उवा; औप)। २ आदर, सत्कार (स ३३४)।

संविभागि वि [संविभागिन्] दूसरे को दे कर भोजन करनेवाला (उत्त ११, ६; दस ६, २, २३)।

संविभाव सक [संवि + भावय्] पर्या-लोचन करना, चिन्तन करना। संकृ. संवि-भाविऊण (राज)।

संविराय अक [संवि + राज्] शोभना। वकृ. संविरायंत (पउम ७, १४६)।

संविल्ल देखो संवेल्ल। वकृ. संविल्लंत (वै ४२)। संकृ. संविल्लिऊण (कुप्र ३१५)।

संविल्लिअ वि [संवेल्लित] चालित (उवा)।

संविल्लिअ देखो संवेल्लिअ = संवेष्टित (कुमा)।

संविल्लिअ देखो संवेल्लिअ = (दे) (उवा; जं १)।

संविह पुं [संविध] गोशाले का एक उपासक (भग ८, ६—पत्र ३६६)।

संविहाण न [संविधान] १ रचना, बनावट (सुपा ५८६; धर्मवि १२७; माल १५१; १६३)। २ भेद, प्रकार (वै १०)।

संवीअ वि [संवीत] १ व्याप्त (सूअ १, ३, १, १६)। २ परिहित, पहना हुआ; 'संवी-यदिव्ववसणो' (धर्मवि ६)।

संवुअ देखो संवुड (हे १, १३१; संक्षि ४; औप)।

संवुट्ट देखो संवुत्त (रंभा ४४)।

संवुड वि [संवृत] १ संकट, सकड़ा, अवि-वृत (ठा ३, १—पत्र १२१)। २ संवर-युक्त, सावद्य प्रवृत्ति से रहित (सूअ १, १, २, २६; पंचा १४, ६; भग)। ३ निरुद्ध, निरोध-प्राप्त (सूअ १, २, ३, १)। ४ आवृत। ५ संगोपित (हे १, १७७)। ६ न. कषाय और इन्द्रियों का नियन्त्रण (पराह २, ३—पत्र १२३)।

संवुड्ढ वि [संवृद्ध] बढ़ा हुआ (सूअ २, १, २६; औप)।

संवुत्त वि [संवृत्त] संजात, बना हुआ; 'पव्वइया ते संसारंतकरा संवुत्ता' (वसु; कुप्र ४३५; किरात १७; स्वप्न १७; अभि ८२; उत्तर १४१; महा; सए)।

संवुद देखो संवुड (प्राकृ ८; १२; प्राप्र)।

संवुदि स्त्री [संवृति] संवरण (प्राकृ ८; १२)।

संवूढ वि [संव्यूढ] १ तय्यार बना हुआ, सज्जित; 'जइ इह नगरनरिंदो सव्वबलेणंपि एइ संवूढो' (सुपा ५८५; सुर ६, १५२)। २ बह कर किनारे लगा हुआ, बह कर स्थित; 'तए णं ते मागंदियदारगा तेणं फलयखंडेणं उवु- (?व्वु)ज्झमाणा २ रयणदीवंतेण संवु-(?वू)ढा यावि होत्था' (णाया १, ६—पत्र १५७)।

संवेअ वि [संवेद्य] अनुभव-योग्य (विसे ३००७)।

संवेअ, संवेग पुं [संवेग] १ भय आदि के कारण से होती त्वरा—शीघ्रता (गउड)। २ भव-वैराग्य, संसार से उदासीनता। ३ मुक्ति का अभिलाष, मुमुक्षा (द्र ६३; सम १२६; भग; उव; सुर ८, १६५; सम्मत्त १६६; १६५; सुपा ५४१)।

संवेयण न [संवेदन] १ ज्ञान (धर्मसं ४४; कुप्र १४६)। २ वि. बोध-जनक। स्त्री. °णी (ठा ४, २—पत्र २१०)।

संवेयण वि [संवेजन] संवेग-जनक। स्त्री. °णी (ठा ४, २—पत्र २१०)।

संवेयग वि [संवेगन] ऊपर देखो (ठा ४, २—पत्र २१०)।

संवेल्ल सक [सं + वेल्ल्] चालित करना, कँपाना (से ७, २६)।

संवेल्ल सक [सं + वेष्ट्] लपेटना। संवेल्लइ (हे ४, २२२; संक्षि ३६)।

संवेल्ल सक [दे] सकेलना, समेटना, संकुचित करना। संवेल्लेइ (भग १६, ६—पत्र ७१२)। वकृ. संवेल्लेंत; संवेल्लेमाण (उवः भग १६, ६)। संकृ. संवेल्लेऊणं (महा)।

संवेल्लिअ वि [दे] संवृत, संकुचित; 'संवे-ल्लिअं मउलिअं' (पाअ; दे ८, १२; भग १६, ६—पत्र ७१२; राय ४५)।

संवेल्लिअ वि [संवेल्लित] चलित (से ७, २६)।

संवेल्लिअ वि [संवेष्टित] लपेटा हुआ (गा ६४६)।

संवेह पुं [संवेध] संयोग; 'अन्नन्नवण्णसंवेहरमणिज्जं गंधव्वं' (महा), 'अन्नन्नवन्नसंवेहमणहरं मोहणं पसूणंपि तग्गीयं सोऊणं' (धर्मवि ६५)।

संस अक [स्रंस्] खिसकना, गिरना। संसइ (हे ४, १९७; षड्)।

संस सक [शंस्] १ कहना। २ प्रशंसा करना। संसइ (चेइय ७३७; भवि), संसंति (सिरि १८७)। कृ. **संसणिज्ज** (पउम ११८, ११४)।

संस वि [सांश] अंश-युक्त, सावयव (धर्मसं ७०९)।

संसइ वि [संशयिन्] संशय-कर्ता, शंका-शील (विसे १५५७; सुर १३, ७; सुपा १४७)।

संसइअ वि [संशयित] संशयवाला, संदिग्ध (पाअ; विसे १५५७; सम १०६; सुर १२, १०८)।

संसइअ न [सांशयिक] मिथ्यात्व-विशेष (पंच ४, २; श्रा ६; संबोध ५२; कम्म ४, ५१)।

संसग्ग पुंस्त्री [संसर्ग] संबन्ध, संग, सोहबत (सुपा ३५८; प्रासू ३१; गउड)। स्त्री. °**ग्गी** (णाया १, १ टी—पत्र १७१; प्रासू ३३; सुपा १७१),

'एएणं चिय नेच्छंति
साहवो सज्जणेहिं संसग्गिं।
जम्हा विओगविहुरिय-
हिययस्स, न ओसवं अन्नं'
(सुर २, २१६)।

संसज्ज अक [सं + सञ्ज्] संबन्ध करना, संसर्ग करना। संसज्जंति (सम्मत्त २२०)।

संसज्जिम वि [संसक्तिमत्] बीच में गिरे हुए जीवों से युक्त (पिंड ५३८)।

संसट्ठ वि [संसृष्ट] १ खरण्टित, विलिप्त। २ न. खरण्टित हाथ से दी जाती भिक्षा आदि (औप)। देखो **संसिट्ठ**।

संसण न [शंसन] १ कथन। २ प्रशंसा। ३ आस्वादन; 'सुत्तविहीणं पुण सुयमपक्कफलसंसणसरिच्छं' (उप ६४८ टी; उवकु १९)।

संसणिज्ज देखो **संस** = शंस्।

संसत्त वि [संसक्त] १ संसर्ग-युक्त, संबद्ध (णाया १, ५—पत्र १११; औप; सं ६; उत्त २, १९)। २ श्वापद-जन्तु-विशेष (कप्प)।

संसत्ति स्त्री [संसक्ति] संसर्ग (सम्मत्त १५६)।

संसद्द पुं [संशब्द] शब्द, आवाज (सुर २, ११०)।

संसप्पग वि [संसर्पक] १ चलने-फिरनेवाला। २ पुं. चींटी आदि प्राणी (आचा १, ८, ८, ९)।

संसप्पिअ न [दे. संसर्पित] कूद कर चलना (दे ८, १५)।

संसमण न [संशमन] उपशम, शान्ति (पिंड ४५९)।

संसय पुं [संशय] संदेह, शंका (हे १, ३०; भग; कुमा; अभि ११०; महा; भवि)।

संसया स्त्री [संसद्] परिषत्, सभा (उत्त १, ४७)।

संसर सक [सं + सृ] परिभ्रमण करना। वकृ. **संसरंत, संसरमाण** (प्रवि १; वै ८८; संबोध ११; अच्चु ६७)।

संसरण न [संस्मरण] स्मृति, याद (श्रु ७)।

संसवण न [संश्रवण] श्रवण, सुनना (सुर १ २४२; रंभा)।

संसह सक [सं + सह्] सहन करना। संसहइ (धर्मसं ६८२)।

संसा स्त्री [शंसा] प्रशंसा, श्लाघा (पव ७१ टी; भग)।

संसाअ वि [दे] १ आरूढ। २ चूर्णित। ३ पीत। ४ उद्विग्न (षड्)।

संसार पुं [संसार] १ नरक आदि गति में परिभ्रमण, एक जन्म से जन्मान्तर में गमन (आचा; ठा ४, १—पत्र १९८; ४, २—पत्र २१६; दसनि ४, ४६; उत्त २६, १; उव; गउड; जी ४४)। २ जगत्, विश्व (उव; कुमा; गउड; पउम १०३, १४१)। °**वंत** वि [°वत्] संसारवाला, संसार-स्थित जीव, प्राणी (पउम २, ६२)।

संसारि, संसारिण वि [संसारिन्] नरक आदि योनि में परिभ्रमण करनेवाला जीव (जी २), 'संसारिणस्स जं पुण जीवस्स सुहं तु फरिसमादीणं' (पउम १०२, १७४)।

संसारिय वि [संसारिक] ऊपर देखो (स ४०२; उव)।

संसारिय वि [सांसारिक] संसार से संबन्ध रखनेवाला (पउम १०६, ४३; उप १४२ टी; स १७६; सिक्खा ७१; सण; काल)।

संसारिय वि [संसारित] एक स्थान से दूसरे स्थान में स्थापित, 'संसारियासु वलयबाहासु' (णाया १, ८—पत्र १३३)।

संसाहण स्त्रीन [दे] अनुगमन (दे ८, १६; दसनि ३८८)। स्त्री. °**णा** (वव १)।

संसाहण न [संकथन] कथन (सुपा ४१५)।

संसाहिय वि [संसाधित] सिद्ध किया हुआ (सुपा ३९७)।

संसि वि [शंसिन्] कहनेवाला (गउड)।

संसिअ वि [शंसित] १ श्लाघित (सुर १३, ६८)। २ कथित (उप पृ १६१)।

संसिअ वि [संश्रित] आश्रित (विपा १, ३—पत्र ३८; पण्ह १, ४—पत्र ७२; औप ४८; अणु १५१)।

संसिंच सक [सं + सिच्] १ पूरना, भरना। २ बढ़ाना। ३ सिंचन करना। कवकृ. **संसिच्चमाण** (आचा; पि ५४२)। संकृ. **संसिंचियाणं** (आचा १, २, ३, ४)।

संसिज्झ अक [सं + सिध्] अच्छी तरह सिद्ध होना। संसिज्झंति (स ७६७)।

संसिट्ठ देखो **संसट्ठ** (भग)। °**कप्पिअ** वि [°कल्पिक] खरण्टित हाथ अथवा भाजन से दी जाती भिक्षा को ही ग्रहण करने के नियमवाला मुनि (पण्ह २, १—पत्र १००)।

संसित्त वि [संसिक्त] सींचा हुआ (सुर ४, १४; महा; हे ४, ३९५)।

संसिद्धिअ वि [सांसिद्धिक] स्वभाव-सिद्ध (हे १, ७०)।

संसिलेस देखो **संसेस** (राज)।

संसिलेसिय देखो—**संसेसिय** (राज)।

संसीव सक [सं + सिव्] सीना, सिलाई करना। संसीविज्जा (आचा २, ५, १, १)।

संसुद्ध वि [संशुद्ध] १ विशुद्ध, निर्मल (सुपा ५७३)। २ न. लगातार उन्नीस दिन का उपवास (संबोध ५८)।

संसूयग वि [संसूचक] सूचना-कर्ता (रंभा)।

संसेइम वि [संसेकिम] संसेक से बना हुआ (निचू १५)। २ उबाली हुई भाजी जिस ठंढे जल से सिंची जाय वह पानी (ठा ३, ३—पत्र १४७; कप्प)। ३ तिल की धोवन (आचा २, १, ७, ८। ४ पिष्टोदक, आटा की धोवन (दस ५, १, ७५)।

संसेइम वि [संस्वेदिम] १ पसीने से उत्पन्न होनेवाला (पराह १, ४—पत्र ८५)।

संसेय अक [सं + स्विद्] बरसना; 'जावं च णं बहवे उराला बलाहया संसेयंति' (भग)।

संसेय पुं [संस्वेद] पसीना। °य वि [°ज] पसीने से उत्पन्न (सूअ १, ७, १; आचा)।

संसेय पुं [संसेक] सिंचन (ठा ३, ३)।

संसेविय वि [संसेवित] आसेवित (सुपा २२७)।

संसेस पुं [संश्लेष] सम्बन्ध, संयोग (आचा २, १३, १)।

संसेसिय वि [संश्लेषिक] संश्लेषवाला (आचा २, १३, १)।

संसोधण न [संशोधन] शुद्धि-करण (पिंड ४५९)। देखो संसोहण।

संसोधित वि [संशोधित] अच्छी तरह शुद्ध किया हुआ (सूअ १, १४, १८)।

संसोय सक [सं + शोचय्] शोक करना। कृ. संसोयणिज्ज (सुर १४, १८१)।

संसोहण न [संशोधन] विरेचन, जुलाब (आचा १, ६, ४, २)। देखो संसोधण।

संसोहा स्त्री [संशोभा] शोभा, श्री (सुपा ३७)।

संसोहि वि [संशोभिन्] शोभनेवाला (सुपा ४८)।

संसोहिय देखो संसोधित (राज)।

संह देखो संघ (नाट—विक्र २५)।

संहडण देखो संघयण (चंड)।

संहदि स्त्री [संहृति] संहार (संक्षि ९)।

संहय वि [संहत] मिला हुआ (पराह १, ४—पत्र ७८)।

संहर सक [सं + हृ] १ अपहरण करना। २ विनाश करना। ३ संवरण करना, संकेलना, समेटना। ४ ले जाना। संहरइ (पव २६१; हे १, ३०; ४, २५९)। कवकृ. संहरिज्जमाण (णाया १, १—पत्र ३७)।

संहर पुं [संभार] समुदाय, संघात; 'संघाओ संहरो निअरो' (पाअ)।

संहरण न [संहरण] संहार (श्रु ८७)।

संहार देखो संभार = सं + भारय्। कृ. संहारणिज्ज (णाया १, १२—पत्र १७६)।

संहार देखो संघार (हे १, २६४; षड्)।

संहारण न [संधारण] धारण, बनाये रखना, टिकाना; 'कायसंहारणट्ठाए' (आचा)।

संहाव देखो संभाव = सं+भावय्। वकृ. संहावअंत (शौ) (पि २७५)।

संहिदि देखो संहदि (प्राकृ १२)।

संहिच्च अ [संहत्य] साथ में मिलकर, एकत्रित होकर (णाया १, ३ टी—पत्र ९३)।

संहिय देखो संधिअ = संहित (कप्प; नाट—महावी २९)।

संहिया स्त्री [संहिता] १ चिकित्सा आदि शास्त्र; 'चिगिच्छासंहियाओ' (स १७)। २ अस्खलित रूप से सूत्र का उच्चारण; 'अक्खलियसुत्तुच्चारणरूवा इह संहिया मुणेयव्वा' (चेइय २७२)।

संहुदि स्त्री [संभृति] अच्छी तरह पोषण (संक्षि ४)।

सक देखो सग = शक (पराह १, १—पत्र १४)।

सकण्ण देखो सकन्न (राज)।

सकथ न [सकथ] तापसों का एक उपकरण (निर ३, १)।

सकधा देखो सकहा; 'चेइयखंभेसु जिणसकधा संणिक्खित्ता चिट्ठंति' (सुज्ज १८)।

सकयं अ [सकृत्] एक बार; 'किं सक (? क)यं वोलीणं' (सुर १६, ४५)।

सकन्न वि [सकर्ण] विद्वान्, जानकार (सुर ८, १४९, १२, ५४)।

सकल देखो सयल = सकल (पराह १, ४—पत्र ७८)।

सकहा स्त्री [सक्थिन्] अस्थि, हाड़ (सम ६३; सुपा ६५७; राय ८९)।

सकाम देखो स-काम = सकाम।

सकुंत पुं [शकुन्त] पक्षी (कुप्र ६८; अणु १४१)।

सकुण देखो सक्क = शक्। सकुणेमो (स ७६५)।

सकेय देखो स-केय = सकेत।

सक्क अक [शक्] सकना, समर्थ होना। सक्कइ सक्कए (हे ४, २३०; प्राप्र; महा)। भवि. सक्खं, सक्खामो, सक्किस्सामो (आचा; पि ५३१)। कृ. **सक्क, सक्कणिज्ज, सक्किअ** (सक्षि ६; सुर १, १३०; ४, २२७; स ११४; संबोध ४०; सुर १०, ८१)।

सक्क सक [सृप्] जाना, गति करना। सक्कइ (प्राकृ ६५; धात्वा १५५)।

सक्क सक [ष्वष्क्] गति करना, जाना। सक्कइ (पि ३०२)।

सक्क न [शल्क] छाल (दे ३, ३४)।

सक्क वि [शक्त] समर्थ, शक्ति-युक्त; 'को सक्को वेयणाविगमे' (विवे १०२; हे २, २)।

सक्क देखो सक्क = शक्।

सक्क पुं [शक्र] १ सौधर्म नामक प्रथम देवलोक का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५; उवा; सुपा २६९)। २ कोई भी इन्द्र, देव-पति (कुमा)। ३ एक विद्याधरराजा (पउम १२, ८२)। ४ छन्द-विशेष (पिंग)। °**गुरु** पुं [°गुरु] बृहस्पति (सिरि ४४)। °**प्पभ** पुं [°प्रभ] शक्र का एक उत्पात-पर्वत (ठा १०—पत्र ४८२)। °**सार** न [°सार] एक विद्याधर-नगर (इक)। °**वदार** (शौ) न [°ावतार] तीर्थ-विशेष (अभि १८३)। °**वयार** न [°ावतार] चैत्य-विशेष (स ४७७; द्र ६१)।

सक्क पुं [शाक्य] १ बुद्ध देव (पाअ)। २ वि. बौद्ध, बुद्ध का भक्त (विसे २४१९; श्रावक ८८; पव ९४; पिंड ४४५)।

सक्क (अप) देखो सग = स्वक (भवि)।

सक्कंदण पुं [संक्रन्दन] इन्द्र (सुर १, ६ टि; ४, १६०)।

सक्कणो (शौ) देखो सक्कुण। सक्कणोमि (अभि ९२; पि १४०), सक्कणोदि (नाट—रत्ना १०२)।

सक्कय देखो स-क्कय = सत्कृत।

सक्कय वि [संस्कृत] १ संस्कार-युक्त (पिंड १६१)। २ स्त्रीन. संस्कृत भाषा (कुमा; हे १, २८; २, ४); 'परमेट्ठिनमोक्कारं सक्कइ (?य)भासाए भणइ थुइसमए' (चेइय ४६८)। स्त्री. °या; 'सक्कया पायया चेव भणिईओ होंति दोण्णि वा' (अणु १३१)।

सक्कर न [शर्कर] खण्ड, टुकड़ा (उव)।

सक्कर° देखो सक्करा। °पुढवी स्त्री [°पृथिवी] दूसरी नरक-भूमि (पउम ११८, २)। °प्पभा स्त्री [°प्रभा] वही अर्थ (ठा ७—पत्र ३८८; इक)।

सक्करा स्त्री [शर्करा] १ चीनी, पक्की खाँड (णाया १, १७—पत्र २२६; सुपा ८४; सुर १, १४)। २ उपलखण्ड, पत्थर का टुकड़ा, कंकड़ (सूअ २, ३, ३६; अणु)। ३ बालु, रेती (महा)। °भ न [°भ] १ गोत्र-विशेष, जो गोतम गोत्र की एक शाखा है। २ पुंस्त्री. उस गोत्र में उत्पन्न (ठा ७—पत्र ३९०)। °भा स्त्री [°भा] दूसरी नरक-पृथिवी (उत्त ३६, १५७)।

सक्कार पुं [सत्कार] संमान, आदर, पूजा (भग; स्वप्न ८६; भवि; हे ४, २६०)।

सक्कार पुं [संस्कार] १ गुणान्तर का आधान। २ स्मृति का कारण-भूत एक गुण। ३ वेग। ४ शास्त्राभ्यास से उत्पन्न होती व्युत्पत्ति। ५ गुण-विशेष, स्थिति-स्थापन। ६ व्याकरण के अनुसार शब्द-सिद्धि का प्रकार। ७ गर्भा-धान आदि समय की जाती धार्मिक क्रिया। ८ पाक, पकाना (हे १, २८; २, ४; प्राक्त २१)।

सक्कार सक [सत्कारय्] सत्कार करना, सम्मान करना। सक्कारेइ, सक्कारिंति, सक्कारेमो (उवा; कप्प भग)। संकृ. **सक्कारित्ता** (भग; कप्प)। कृ. **सक्कारणिज्ज** (णाया १, १ टी—पत्र ४; उवा)।

सक्कारण न [सत्कारण] सत्कार, सम्मान (दस १०, १७)।

सक्कारि वि [सत्कारिन्] सत्कार करनेवाला, सम्मानकर्ता (गउड)।

सक्कारिय वि [सत्कारित] सम्मानित (सुख २, १३; महा)।

सक्कारिय वि [संस्कारित] संस्कार-युक्त किया हुआ (धर्मसं ८८३)।

सक्काल देखो सक्कार = संस्कार (हे १, २५४)।

सक्किअ देखो सक्क = शाक्य; 'अहं खु दाव कत्तव्वकरत्थीकिदसंकेदो विअ सक्किअसमणओ णिद्दं ण लभामि' (चारु ५६)।

सक्किअ देखो सक्क = शक्।

सक्किअ वि [शक्नित] जो समर्थ हुआ हो वह (श्रा २८; कुप्र ३)।

सक्किअ वि [स्वकीय] निज का, आत्मीय; 'सि (? स)क्कियमुवहिं च तहा पडिलेहंतो न बेमि सया' (कुलक ७; ६)।

सक्किअ देखो स-क्किअ = सत्कृत।

सक्किरिआ स्त्री [संस्क्रिया] संस्कार, संस्कृति (प्राक्त ३३)।

सक्कुण देखो सक्कुण। सक्कुणदि (शौ) (प्राक्त ६४), सक्कुणोमि (स २४; मोह ७)।

सक्कुलि स्त्री [शष्कुलि] १ कर्ण-विवर, कान का छिद्र (णाया १, ८—पत्र १३३)। २ तिलपापड़ी, एक तरह का खाद्य पदार्थ (पण्ह २, ५—पत्र १४८; दस ५, १, ७१; कस; विसे २६६)। °कण्ण पुं [°कर्ण] एक अन्तर्द्वीप। १ उसमें रहनेवाली मनुष्य-जाति (इक)।

सक्ख° देखो सक्क = शक्।

सक्ख न [सख्य] मैत्री, दोस्ती (उत्त १४, २७)।

सक्ख न [साक्ष्य] साक्षिपन, गवाही (सुपा २७६; संबोध १७)।

सक्खं अ [साक्षात्] प्रत्यक्ष, आँखों के सामने, प्रकट (हे १, २४; पि ११४)।

सक्खय देखो सक्कय = संस्कृत (जं २ टी—पत्र १०४)।

सक्खर देखो स-क्खर = साक्षर।

सक्खा देखो सक्खं (पंचा ६, ४०; सुर ५, २२१; १२, ३६; पि ११४)।

सक्खि वि [साक्षिन्] साक्षी, साखी, गवाह (पण्ह १, २—पत्र २६; धर्मसं १२००; कप्पू; श्रा १४; स्वप्न १३१)।

सक्खिअ देखो सक्ख = सख्य; 'कादंबरी-सक्खिअं अम्हाणं पढमसोहिदं इच्छीअदि' (अभि १८८)।

सक्खिज्ज न [साक्षित्व] गवाही, साख (श्रावक २६०)।

सक्खिण देखो सक्खि (हे २, १७४; षड्; सुर ६, ४४)।

सग [स्वक] देखो स = स्व (भग; पण्ण २१—पत्र ६२८; पउम ८२, ११७; उत्त २०, २६; २७; संबोध ५०; चेइय ५६१)।

सग देखो सत्त = सप्तन् (रयण ७२; उर ५, ३; २, २३)। °वण्ण, °वन्न स्त्रीन [°पञ्चाशत्] सत्तावन, पचास और सात (कम्म ६, ६०; श्रु १११; कम्म २, २०)। °वीस स्त्रीन [°विंशति] सत्ताईस (श्रा २८; रयण ७२; संबोध २६)। °सयरि स्त्री [°सप्तति] सतहत्तर (कम्म २, ६)। °सीइ स्त्री [°शीति] सतासी (कम्म २, १६)।

सग देखो सत्तम (कम्म ४, ७६)।

सग पुं [शक] १ एक अनार्य देश, अफगानिस्तान के उत्तर का एक म्लेच्छ देश (सूअनि ६६; पउम ६८, ६४; इक)। २ उस देश का निवासी (काल)। ३ एक सुप्रसिद्ध राजा जिसका शक-संवत् चलता है (विचार ४९५; ५१३)। °कूल न [°कूल] एक म्लेच्छ-देश का किनारा (काल)।

सग° स्त्री [स्रज्] माला; 'सगचंदणविस-सत्थाइजोगओ तस्स अह य दीसंति' (श्रावक १८६)।

सगड न [शकट] १ गाड़ी (उवा; आचा २, ३, १६)। २ पुं. एक सार्थवाह-पुत्र (विपा १, १—पत्र ४; १, ४—पत्र ५५)। °भद्दिआ स्त्री [°भद्रिका] जैनेतर ग्रन्थ-विशेष (णंदि १९४; अणु ३)। °मुह न [°मुख] पुरिमताल नगर का एक प्राचीन उद्यान (कप्प)। °वूह पुं [°व्यूह] कला-विशेष, गाड़ी के आकार से सैन्य की रचना (औप)। देखो सअढ।

सगडब्भि देखो स-गडब्भि = स्वकृतभिद् ।
सगडाल पुं [शकटाल] राजा नन्द का सुप्रसिद्ध मंत्री और महर्षि स्थूलभद्र का पिता (कुप्र ४४३) ।
सगडिया स्त्री [शकटिका] छोटी गाड़ी (भग; विपा १, १—पत्र ८; णाया १, १—पत्र ७४) ।
सगडी स्त्री [शकटी] गाड़ी (णाया १, ७—पत्र ११८) ।
सगण देखो स-गण = स-गण ।
सगन्न देखो सकन्न (कुप्र ४०३) ।
सगय न [दे] श्रद्धा, विश्वास (दे ८, ३) ।
सगर पुं [सगर] एक चक्रवर्ती राजा (सम ८२; उत्त १७, ३५) ।
सगल देखो सयल = सकल (णाया १, १६—पत्र २१३; भग; पंच १, १३; सुर १, ११६; पव २१६; सिक्खा ३७) ।
सगसग अक [सगसगाय्] 'सग-सग' आवाज करना । वकृ. **सगसगंत** (पउम ४२, ३१) ।
सगार देखो स-गार = सागार, साकार ।
सगार देखो स-गार = स-कार ।
सगास न [सकाश] पास, निकट, समीप (औप; सुपा ४५२; ४८८; महा) ।
सगुण देखो स-गुण = स-गुण ।
सगुणि देखो सउणि (पण्ह १, ४—पत्र ७८) ।
सगुत्त वि [सगोत्र] समान गोत्रवाला, एकगोत्रीय (कप्प) ।
सगेह न [दे] निकट, समीप (दे ८, ६) ।
सगोत्त देखो सगुत्त (कुप्र २१७) ।
सग्ग पुंन [स्वर्ग] देवों का आवास-स्थान (णाया १, ५—पत्र १०५; भग; सुपा २९३); 'वेरग्गं चेवमिह सग्गं' (श्रु ५८) । °**तरु** पुं [°तरु] कल्पवृक्ष (से ११, ११) । °**सामि** पुं [°स्वामिन्] इन्द्र (उप २६४ टी) । °**वहू** स्त्री [°वधू] देवांगना, देवी (उप ७२८ टी) ।
सग्ग पुं [सर्ग] १ मुक्ति, मोक्ष, ब्रह्म (औप) । २ सृष्टि, रचना (रंभा) ।
सग्ग देखो स-ग्ग = साग्र ।
सग्ग देखो सग = स्वक (उत्त २०, २६; राज) ।
सग्गइ देखो स-ग्गइ = सद्गति ।
सग्गह वि [दे] मुक्त, मुक्ति-प्राप्त (दे ८, ४ टी) ।
सग्गह देखो स-ग्गह = स-ग्रह ।
सग्गीय वि [स्वर्गीय] स्वर्ग-सम्बन्धी (विसे १८००) ।
सग्गु देखो सिग्गु (उप १०३१ टी) ।
सग्गोकस पुं [स्वर्गौकस्] देव, देवता (धर्म ६) ।
सग्घ सक [कथ] कहना । सग्घइ (षड्) ।
सग्घ वि [श्लाघ्य] प्रशंसनीय (सूअ १, ३, २, १६; विसे ३५७८) ।
सघिण देखो स-घिण = स-घृण ।
सचक्खु, **सचक्खुअ** देखो स-चक्खु = स-चक्षुष् ।
सचित्त देखो स-चित्त = स-चित्त ।
सचिव देखो सइव (सण) ।
सची देखो सई = शची (धर्मवि ६६; नाट—शकु ६७) । °**वर** पुं [°वर] इन्द्र (सिरि ४२) ।
सचेयण देखो स-चेयण = स-चेतन ।
सच्च न [सत्य] १ यथार्थ भाषण, अमृषा-कथन (ठा १०—पत्र ४८६; कुमा; पण्ह २, ५—पत्र १४८; स्वप्न २२; प्रासू १५०; १७७) । २ शपथ, सोगन । ३ सत्य युग । ४ सिद्धान्त (हे २, १३) । ५ वि. यथार्थ, सच्चा, वास्तविक; 'सच्चपरक्कमे' (उत्त १८, ४९; श्रा १२; ठा ४, १—पत्र १९६; कुमा) । ६ पुं. संयम, चारित्र (आचा; उत्त ६, २) । ७ जिनागम, जैन सिद्धान्त (आचा) । ८ अहोरात्र का दसवाँ मुहूर्त्त (सम ५१) । ९ एक वणिक्-पुत्र (उप ५१६) । °**उर** न [°पुर] भारत का एक प्राचीन नगर, जो आजकल 'साचोर' नाम से मारवाड़ में प्रसिद्ध है (ती ७; सिग्घ ७) । °**उरी** स्त्री [°पुरी] वही अर्थ (पडि) । °**णेमि**, °**नेमि** पुं [°नेमि] भगवान् अरिष्टनेमि के पास दीक्षा ले मुक्ति पानेवाला एक मुनि जो राजा समुद्रविजय का पुत्र था (अंत; अंत १४) । °**प्पवाय** न [°प्रवाद] छठवाँ पूर्व-ग्रंथ (सम २६) । °**भामा** स्त्री [°भामा] श्रीकृष्ण की एक पत्नी (अंत १५) । °**वाइ** वि [°वादिन्] सत्य-वक्ता (पउम ११, ३१) । °**संध** वि [°सन्ध] सत्य प्रतिज्ञावाला, प्रतिज्ञा-निर्वाहक (उप पृ ३३३; सुपा २८३) । °**सिरी** स्त्री [°श्री] पाँचवें आरे की अन्तिम श्राविका (विचार ५३४) । °**सेण** पुं [°सेन] ऐरवत वर्ष में होनेवाला एक जिनदेव (सम १५४) । °**हामा** देखो °**भामा** (पि १४) । °**ावाइ** देखो °**वाइ** (आचा १, ८, ६, ५; १, ८, ७, ५) ।
सच्चइ पुं [सत्यकि] १ आगामी काल में बारहवाँ तीर्थंकर होनेवाला एक साध्वी-पुत्र (ठा ९—पत्र ४५७; सम १५४; पव ४६) । २ विषय-लम्पट एक विद्याधर (उव; उर ७, १ टी) । ३ श्रीकृष्ण का संबन्धी एक व्यक्ति (रुक्मि ४६) । °**सुय** पुं [°सुत] ग्यारह रुद्रों में अन्तिम रुद्र पुरुष (विचार ४७३) ।
सच्चंकार वि [सत्यंकार] सत्य साबित करनेवाला, लेन-देन की सच्चाई के लिए दिया जाता बहाना; 'गहिओ संजमभारो सच्चंकारु व्व सिद्धीए' (धर्मवि १४; आप ६६; रयण ३४) ।
सच्चव सक [दृश्] देखना । सच्चवइ (हे ४, १८१; षड्; सण) । कर्म. सच्चविज्जइ (कुप्र ६८) ।
सच्चव सक [सत्यापय्] सत्य साबित करना । सच्चवइ (सुपा २९२) । कर्म. 'अलिअंपि सच्चविज्जइ पहुत्तणं तेण रमणिज्जं' (सुक्त ८५) ।
सच्चवण न [दर्शन] अवलोकन, निरीक्षण (कुमा; सुपा २२९) ।
सच्चवय वि [दर्शक] द्रष्टा (संबोध २४) ।
सच्चविअ वि [दृष्ट] देखा हुआ, विलोकित (गा ५३६; ८०९; सुर ४, २२५; पाअ; महा) ।
सच्चविअ वि [दे] अभिप्रेत, इष्ट (दे ८, १७; भवि) ।
सच्चा स्त्री [सत्या] १ सत्य वचन (पण्ण ११—पत्र ३७९) । २ श्रीकृष्ण की एक

पत्नी, सत्यभामा (कुप्र २५८)। ३ इन्द्राणी (चउप्पन्न० ऋषभ-चरित)। °मोस वि [मृषा] मिश्र-भाषा, सत्य से मिला हुआ झूठ वचन: 'सच्चामोसाणि भासइ' (सम ५०)।

सच्चित्त देखो स-च्चित्त = स-चित्त।

सच्चिल्लय वि [दे. सत्य] सच्चा, यथार्थ (दे ८, १४)।

सच्चीसग पुं [दे. सच्चीसक] वाद्य-विशेष (पउम १०२, १२३)। देखो वव्वीसक।

सच्चेविअ वि [दे] रचित, निर्मित (दे ८, १८)।

सच्छ वि [स्वच्छ] अति निर्मल (सुपा ३०)।

सच्छंद वि [स्वच्छन्द] १ स्वाधीन, स्व-वश (उव ३३६ टी; सुर १४, ८५)। २ न. स्वेच्छानुसार (गाया १, ८—पत्र १५२; औप; अभि ४६; प्रासू १७)। °गामि वि [°गामिन्] इच्छानुसार गमन करनेवाला, स्वैरी। स्त्री. °णी (सुपा २३५)। °चारि, °यारि वि [°चारिन्] स्वच्छन्दी, इच्छानुसार विहरण करनेवाला, स्वैरी। स्त्री. °णी (सं ३६; श्रा १६; गच्छ १, १०)।

सच्छर सक [दृश्] देखना (संक्षि ३६)।

सच्छह वि [दे. सच्छाय] सदृश, समान, तुल्य (दे ८, ६; गा ५; ४५; ३०८; ५३३; ५८०; ६८१; ७२१; सुर ३, २४६; धर्मवि ५७)।

सच्छाय वि [सच्छाय] १ समान छाया-वाला, तुल्य (गउड; कुप्र २३)। २ अच्छी कान्तिवाला (कुमा)। ३ सुन्दर छायावाला। ४ कान्ति-युक्त। ५ छाया-युक्त (हे १, २४९)।

सच्छाह वि [सच्छाय] जिसकी छाँही सुन्दर हो वह। २ छाँही वाला। ३ समान छाया-वाला, तुल्य, सदृश (हे १, २४९)।

सछत्ता स्त्री [सच्छत्रा] वनस्पति-विशेष (सूअ २, ३, १६)।

सजण देखो स-जण = स्व-जन।

सजिय देखो सज्जीव (सुर १२, २१०)।

सजुत्त देखो संजुत्त (पिंग)।

सजोइ देखो स-जोइ = स-ज्योतिष्।

सजोगि वि [सयोगिन्] १ मन आदि का व्यापारवाला। २ पुंन. तेरहवाँ गुण-स्थानक (पि ४११; सम २६; कम्म २, २; २०)।

सजोणिय देखो स-जोणिय = स-योनिक।

सज्ज अक [सञ्ज्] १ आसक्ति करना। २ सक. आलिंगन करना। सज्जइ (उत्त २५, २०), सज्जह (गाया १, ८—पत्र १४८)। वकृ. सज्जमाण (सूअ १, ७, २७; दसचू २, १०; उत्त १४; ६; उवर १२)। कृ. सज्जियव्व (पण्ह २, ५—पत्र १४९)।

सज्ज अक [सस्ज्] १ तय्यार होना। २ सक. तय्यार करना, सजाना। सज्जेइ, सज्जेंति (कुमा; गाया १, ८—पत्र १३२)। कर्म. सज्जीअंति (कप्पू)। कवकृ. सज्जिज्जंत (कप्पू)। संकृ. सज्जिऊण, सज्जेउं (स ६४; महा)। कृ. सज्जियव्व, सज्जेयव्व (सत्त ४०; स ७०)। प्रयो., संकृ. सज्जावेऊण (महा)।

सज्ज पुं [सर्ज] वृक्ष-विशेष (गाया १, १—पत्र २५; विसे २६८२; स १११; कुमा)।

सज्ज पुं [षड्ज] स्वर-विशेष (कुमा)।

सज्ज वि [सज्ज] तय्यार, प्रगुण (गाया १, ८—पत्र १४६; सुपा १२२; १६७; हेका ४६; पिंग)।

सज्ज, सज्जं } अ [सद्यस्] तुरन्त, जल्दी, शीघ्र; 'सज्जघायगं से कम्मगजोगं पउंजामि' (स १०८; सुख ८, १३; गा ५९७ अ; कस)।

सज्जंभव पुं [शय्यम्भव] एक प्रसिद्ध जैन महर्षि (सार्ध १२)।

सज्जण देखो स-ज्जण = सज्जन।

सज्जा देखो सेज्जा (राज)।

सज्जिअ वि [सज्जित] सजाया हुआ, तय्यार किया हुआ (औप; कुमा; महा)।

सज्जिअ वि [सर्जित] बनाया हुआ (दे १, १३८)।

सज्जिअ पुं [दे] १ नापित, नाई। २ रजक, धोबी। ३ वि. पुरस्कृत, आगे किया हुआ। ४ दीर्घ, लम्बा (दे ८, ४७)।

सज्जिआ स्त्री [सर्जिका] क्षार-विशेष, साजी खार; 'वत्थं सज्जियाखारेण अणुलिंपति' (गाया १, ५—पत्र १०६)।

सज्जीअ, सज्जीव } देखो स-ज्जीअ = स-जीव।

सज्जीहुव अक [सज्जी + भू] सज्ज होना, तय्यार होना। सज्जीहवेइ (श्रा १४)।

सज्जो देखो सज्ज = सद्यस् (सुपा ३६७)।

सज्जोक्क वि [दे] प्रत्यग्र, नूतन, ताजा (दे ८, ३)।

सज्झ वि [साध्य] १ साधनीय, सिद्ध करने योग्य। २ वश में करने योग्य; 'बलिओ हु इमो सत्तू ताव य सज्झो न पुरिसगारस्स' (सुर ८, २६; सा २४)। ३ तर्कशास्त्र-प्रसिद्ध अनुमेय पदार्थ, जैसे धूम से ज्ञातव्य वह्नि (पंचा १४, ३५)। ४ पुं. साध्यवाला, पक्ष (विसे १०७७)। ५ देवगण-विशेष। ६ योग-विशेष। ७ मन्त्र-विशेष (हे २, २६)।

सज्झ पुं [सह्य] १ पर्वत-विशेष (स ६७९)। २ वि. सहन-योग्य (हे २, २६; १२४)।

सज्झंतिय पुं [दे] ब्रह्मचारी (राज)।

सज्झंतिया स्त्री [दे] भगिनी, बहिन (राज)।

सज्झंतेवासि पुं [स्वाध्यायान्तेवासिन्] विद्या-शिष्य (सुख २, १५)।

सज्झमाण वि [साध्यमान] जिसकी साधना की जाती हो वह (रयण ४०)।

सज्झव सक [दे] ठीक करना, तन्दुरुस्त करना। सज्झवेहि, सज्झवेमि (सुख २, १५)।

सज्झस न [साध्वस] भय, डर (हे २, २६; कुमा)।

सज्झाइय वि [स्वाध्यायिक] १ जिसमें पठन आदि स्वाध्याय हो सके ऐसा शास्त्रोक्त देश, काल आदि (ठा १०—पत्र ४७५)। २ न. स्वाध्याय, शास्त्र-पठन आदि (पव २६८; णंदि २०७ टी)।

सज्झाय पुं [स्वाध्याय] शोभन अध्ययन, शास्त्र का पठन, आवर्तन आदि (औप; हे २, २६; कुमा; नव २९)।

सज्झाराय वि [सह्यराज] सह्याचल के राजा से सम्बन्ध रखनेवाला, सह्याद्रि के राजा का (पउम ५५, १७)।

सज्झिलग पुं [दे] भ्राता, भाई (उप २७५; २७७; पिंड ३२४)।

सज्झिलगा स्त्री [दे] भगिनी, बहिन (पिंड ३१६; उप २०७)।

सज्झिल्लग देखो सज्झिलग (राज)।

सट्ट पुंस्त्री [दे] १ सट्टा, विनिमय, बदला (सुपा २३३)। स्त्री. °ट्टी (सुपा २७५; वज्जा १४२)। २ वि. सटा हुआ; 'पीणुण्णय-सट्टइं···थणवट्टइं' (भवि)।

सट्ट } पुंन [सट्टक] १ एक तरह का नाटक
सट्टय } (कप्पू; रंभा १०), 'रंभं तं परिणेदि अट्ठमतियं एयम्मि सट्टे वरे' (रंभा १०)। २ खाद्य-विशेष (रंभा ३३)।

सट्ठ न [शाठ्य] शठता, धूर्तता (उप ७२८ टी; गुभा २४)।

सट्ठ (शौ) देखो छट्ठ (चारु ७; प्रबो ७३; पि ४४९)।

सट्ठि स्त्री [षष्टि] १ संख्या-विशेष, साठ, ६०। २ साठ संख्यावाला (सम ७४; कप्प; महा; पि ४४८)। °तंन, °तंत न [°तन्त्र] शास्त्र-विशेष, सांख्य-शास्त्र (भग; णाया १, ५—पत्र १०५; औप; अणु ३६)। °म वि [°तम] साठवाँ (पउम ६०, १०)।

सट्ठिक } वि [षष्टिक] १ साठ वर्ष की
सट्ठिय } वयवाला (तंदु १७; राज)। २
सट्ठीअ } पुंन. एक प्रकार का चावल (राज; श्रा १८)।

सड अक [सद्] १ सड़ना। २ विषाद करना, खिन्न होना। ३ सक. गति करना, जाना। सडइ (हे ४, २१९; प्राप्र; षड्; धात्वा १५५)।

सड अक [शट्] १ सड़ना। २ खेद करना। ३ रोगी होना। ४ सक. जाना। सडइ (विपा १, १—पत्र १६)।

सडंग न [षडङ्ग] शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द और ज्योतिष। °वि वि [°विद्] छः अंगों का जानकार (भग; औप; पि ३४१)।

सडण न [शटन] विशरण, सड़ना (पण्ह १, १—पत्र २३; णाया १, १—पत्र ४८)।

सडा देखो **सढा** (से १, ५०; पि २०७)।

सडिअ वि [सन्न, शटित] सड़ा हुआ, विशीर्ण (विपा १, ७—पत्र ७३; श्रा १४; कुमा)।

सडिअग्गिअ वि [दे] १ वर्धित, बढ़ाया हुआ। २ प्रेरित (षड्)।

सड्ड सक [शद्] १ विनाश करना। २ कृश करना। सड्डइ (धात्वा १५५)।

सड्ढ पुंस्त्री [श्राद्ध] १ श्रावक, जैन गृहस्थ (ओघ ६३; महा)। स्त्री. °ड्ढी (सुपा ६५४)। २ वि. श्रद्धेय वचनवाला, जिसका वचन श्रद्धेय हो वह (ठा ३, ३—पत्र १३९)। देखो सड्ढ = श्राद्ध।

सड्ढ देखो स-ड्ढ = सार्ध।

सड्ढइ पुं [श्राद्धकिन्] वानप्रस्थ तापस की एक जाति (औप)।

सड्ढा स्त्री [श्रद्धा] १ स्पृहा, अभिलाष, वांछा (विपा १, १ पत्र २)। २ धर्म आदि में विश्वास, प्रतीति। ३ आदर, सम्मान। ४ शुद्धि। ५ चित्त की प्रसन्नता (हे १, ४१; षड्)। देखो सद्धा।

सड्ढि वि [श्रद्धिन्] १ श्रद्धालु, श्रद्धावान् (ठा ६—पत्र ३५२; उत्त ५, ३१; पिंडभा ३३)। २ पुं. श्रावक, जैन गृहस्थ (कप्प)।

सड्ढिअ वि [श्राद्धिक] देखो सड्ढ = श्राद्ध (पि ३३३; राज)।

सड्ढी देखो सड्ढ = श्राद्ध।

सढ वि [शठ] १ धूर्त, मायावी, कपटी (कुमा; उप २६४ टी; ओघभा ५८; भग; कम्म १, ५८)। २ कुटिल, वक्र (पिंड ६३३)। ३ पुं. धत्तूरा। ४ मध्यस्थ पुरुष (हे १, १९९; संक्षि ८)।

सढ पुं [दे] १ पाल, जहाज का बादवान, गुजराती में 'सढ' (सिरि ३८७)। २ केश, बाल (दे ८, ४६)। ३ स्तम्ब, गुच्छा (दे ८, ४६; पाअ)। ४ वि. विषम (दे ८, ४६)।

सढय न [दे] कुसुम, फूल (दे ८, ३)।

सढा स्त्री [सटा] १ सिंह आदि की केसरा। २ जटा। ३ व्रती का केश-समूह। ४ शिखा (हे १, १९६)।

सढाल पुं [सटाल] सटावाला, सिंह (कुमा)।

सढि पुं [दे. सटिन्] सिंह (दे ८, १)।

सढिल वि [शिथिल] ढीला (हे १, ८९; कुमा)।

सण पुंन [शण] १ धान्य-विशेष (श्रा १८; पव १५४; पण्ह २, ५—पत्र १४८)। २ तृण-विशेष, पाट, जिसके तंतु रस्सी आदि बनाने के काम में लाए जाते हैं (णाया १, १—पत्र २४; पण्ण १—पत्र ३२; कप्पू)। °बंधण न [°बन्धन] सन का पुष्प-वृन्त (औप; णाया १, १ टी—पत्र ६)। °वाडिआ स्त्री [°वाटिका] सन का बगीचा (गा ९)।

सण पुं [स्वन] शब्द, आवाज (स ३७२)।

सणंकुमार पुं [सनत्कुमार] १ एक चक्रवर्ती राजा (सम १५२)। २ तीसरा देवलोक (अनु; औप)। ३ तीसरे देवलोक का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५)। °वडिंसग पुंन [°वितंसक] एक देव-विमान (सम १३)।

सणप्पय }
सणप्फद } देखो स-णप्पय = स-नखपद।
सणप्फय }

सणा अ [सना] सदा, हमेशा। °तण °यण वि [°तन] सदा रहनेवाला, नित्य, शाश्वत (सूअ २, ६, ४७); 'सिद्धाण सणायणओ परिणामिओ दव्वओवि गुणो' (संबोध २)।

सणाण न [स्नान] नहाना, नहान, अवगाहन (उवा)।

सणाह देखो स-णाह = स-नाथ।

सणाहि पुं [सनाभि] १ स्वजन, ज्ञाति; 'बंधू समणो सणाही य' (पाअ)। २ समान, सदृश (रंभा)।

सणि पुं [शनि] १ ग्रह-विशेष, शनैश्चर (पउम १७ ८१)। २ शनिवार (सुपा ५३२)।

सणिअ पुं [दे] १ साक्षी, गवाह। २ ग्राम्य, ग्रामीण (दे ८, ४७)।

सणिअं अ [शनैस्] धीरे, हौले (णाया १, १६—पत्र २२६; गा १००; हे २, १६८ गउड; कुमा)।

सणिंचर पुं [शनैश्चर] ग्रह-विशेष, शनि-ग्रह (पि ८४)। °संवच्छर पुं [°संवत्सर] वर्ष-विशेष (ठा ५, ३—पत्र ३४४)।

सणिचारि } पुं [शनैश्चारिन्] युगलिक
सणिंचारि } मनुष्यों की एक जाति (इक; भग ६, ७—पत्र २७६)।

सणिच्चर } देखो सणिंचर (ठा २, ३—
सणिच्छर } पत्र ७७; हे १, १४९; औप; कुमा; सुज्ज १०, २०; २०)।

सणिद्ध देखो सिणिद्ध (हे २, १०६; कुमा)।
सणिप्पवाय पुं [शनैःप्रपात] जीवों से भरी हुई पौद्गलिक वस्तु-विशेष (ठा २, ४—पत्र ८६)।
सणेह पुं [स्नेह] १ प्रेम, प्रीति (अभि २७; कुमा)। २ घृत, तैल आदि स्निग्ध रस। ३ चिकनाई, चिकनाहट (प्राप्र; हे २, १०२)।
सण्ण देखो सन्न (से १३, ७२)।
सण्णज्ज न [सान्नाय्य] मन्त्र आदि से संस्कारा जाता घृत आदि (प्राकृ १६)।
सण्णत्तिअ वि [दे] परितापित (दे ८, २८)।
सण्णविअ वि [दे] १ विन्तित। २ न. सांनिध्य, मदद के लिए समीप-गमन (दे ८, ५०)।
सण्णिअ वि [दे] आर्द्र, गीला (दे ८, ५)।
सण्णिर देखो सन्निर (राज)।
सण्णुमिअ वि [दे] १ संनिहित। २ मापित, नापा हुआ। ३ अनुनीत, अनुनय-युक्त (दे ८, ४८)।
सण्णुमिअ देखो सन्नुमिअ (दे, ८, ४८ टी)।
सण्णेज्झ पुं [दे] यक्ष-देवता (दे ८, ६)।
सण्ह वि [श्लक्ष्ण] १ मसृण, चिकना (कप्प; औप)। २ छोटा, बारीक (विपा १, ८—पत्र ८३)। ३ न. लोहा (हे २, ७५, षड्)। ४ पुं. वृक्ष-विशेष (पण्ण १—पत्र ३१)। °करणी स्त्री [°करणी] पीसने की शिला (भग १६, ३—पत्र ७६६)। °मच्छ पुं [°मत्स्य] मछली की एक जाति (विपा १, ८—पत्र ८३; पण्ण १—पत्र ४७)। °सण्हआ स्त्री [°श्लक्ष्णिका] आठ उच्छ्लक्ष्णश्लक्ष्णिका का एक नाप (इक)।
सण्ह वि [सूक्ष्म] १ छोटा, बारीक (कुमा)। २ न. कैतव, कपट। ३ अध्यात्म। ४ अलंकार-विशेष (हे २, ७५)। देखो सुहुम, सुहुम।
सण्हाई स्त्री [दे] दूती (दे ८, ६)।
सत देखो सय = शत (गा ३)। °क्कतु पुं [°क्रतु] इन्द्र (कप्प)। °ग्घी स्त्री [°घ्नी] अस्त्र-विशेष (पण्ह १, १—पत्र ८; वसु)। °द्दु स्त्री [°द्रु] एक महानदी (ठा ५, ३—पत्र ३५१)। °भिसया स्त्री [°भिषज्] नक्षत्र-विशेष (सम २६)। °रिसभ पुं [ऋषभ] अहोरात्र का इक्कीसवाँ मुहूर्त (सम २१)। °वच्छ पुं [°वत्स] पक्षि-विशेष (पण्ण १—पत्र ५२)। °वाइया स्त्री [°पादिका] त्रीन्द्रिय जन्तु की एक जाति (पण्ण १—पत्र ४५)।
सत देखो सत्त = सप्तन् (पिंग)। °र त्रि [°दशन्] सतरह, १७; 'जं चाणंतगुणंपि हु वण्णिज्जइ सतरभेअदसभेअं' (सिरि १२८८; कम्म २, १; १६)। °रसय न [°दशशत] एक सौ सतरह (कम्म २, १३)।
सतंत देखो स-तंत = स्व-तन्त्र।
सतत देखो सयय = सतत (राज)।
सतय देखो सयय = शतक (सम १५४)।
सतर न [सतर] दधि, दही (ओघ ४८)।
सति देखो सइ = स्मृति (ठा ४, १—पत्र १८७; औप)।
सती देखो सई = सती (कुप्र ६०)।
सतीणा देखो सईणा (ठा ५, ३—पत्र ३४३)।
सतेरा स्त्री [शतेरा] विदिग् रुचक पर रहने वाली एक विद्युत्कुमारी देवी (ठा ४, १—पत्र १९८; इक)।
सत्त वि [शक्त] समर्थ (हे २, २; षड्)।
सत्त वि [शप्त] शाप-ग्रस्त, जिसपर आक्रोश किया गया हो वह (पउम ३५, ६०; पव १०६ टी; प्रति ८६)।
सत्त देखो सच्च = सत्य (अभि १८६; पिंग)।
सत्त वि [सक्त] आसक्त, गृद्ध, लोलुप (सूअ १, १, १; ६; सुर ८, १३६; महा)।
सत्त पुंन [सत्र] : सदाव्रत, जहाँ हमेशा अन्न आदि का दान दिया जाता हो वह स्थान (कुप्र १७२)। २ यज्ञ (अजि ८)। °साला स्त्री [°शाला] सदाव्रत-स्थान, दान-क्षेत्र (सण)। °ागार न [°ागार] वही अर्थ (धर्मवि २६)।
सत्त वि [दे] गत, गया हुआ (षड्)।
सत्त पुंन [सत्त्व] १ प्राणी, जीव, चेतन (आचा; सुर २, १३६; सुपा १०३; धर्मसं ११८६)। २ अहोरात्र का दूसरा मुहूर्त (सम ५१)। ३ न. बल, पराक्रम। ३ मानसिक उत्साह (पिंड ६३३; अणु; प्रासू ७१)। ५ विद्यमानता (धर्मसं १०५)। ६ लगातार सात दिनों का उपवास (संबोध ५८)।
सत्त वि [सप्तन्] सात संख्यावाला, सात (विपा १, १—पत्र २; कप्प; कुमा; जी ३३; ४१)। °खित्ती, °खेत्ती स्त्री [°क्षेत्री] जिन-चैत्य, जिन-बिम्ब, जैन आगम, साधु, साध्वी, श्रावक और श्राविका ये सात धन-व्यय-स्थान (ती ८; श्रु १२६; राज)। °ग न [°क] सात का समुदाय (दं ३५; कम्म २, २६; २७; ६, १३)। °चत्ताल वि [°चत्वारिंश] सैंतालीसवाँ, ४७ वाँ (पउम ४७, ५८)। °चत्तालीस स्त्रीन [°चत्वारिंशत्] सैंतालीस, ४७ (सम ६७)। °च्छय पुं [°च्छद] वृक्ष-विशेष, सतवन का पेड़, सतौना (पाअ; से १, २३; णाया १, १६—पत्र २११; सण)। °ट्ठि स्त्री [°षष्टि] १ संख्या-विशेष, सड़सठ, ६७। २ सड़सठ संख्या वाला (सम १०६; कम्म १, २३; ३२; २, ६)। °ट्ठिधा अ [°षष्टिधा] सड़सठ प्रकार का (सुज्ज १२—पत्र २२०)। °णउइ देखो °णउइ (राज)। °तीसइम वि [°त्रिंशत्तम] सइतीसवाँ, ३७ वाँ (पउम ३७, ७१)। °तंतु पुं [°तन्तु] यज्ञ (पाअ)। °दस त्रि [°दशन्] सतरह, १७ (पउम ११७, ४७)। °वण्ण देखो वण्ण (राज)। °भूम वि [°भूम] सात तलावाला प्रासाद (श्रा १२)। °भूमिय वि [°भूमिक] वही पूर्वोक्त अर्थ (महा)। °म वि [°म] सातवाँ, ७ वाँ (कप्प)। स्त्री. °मा (जी २६)। °मासिअ वि [°मासिक] सात मास का (भग)। °मासिआ स्त्री [°मासिकी] सात मास में पूर्ण होनेवाली एक साधु-प्रतिज्ञा, व्रत-विशेष (सम २१)। °मिया, °मी स्त्री [°मिका, °मी] १ सातवीं, ७ वीं (महा; सम २६; [illegible] ३०; कम्म ३; ६; प्रासू १२१)। २ [illegible] विभक्ति (चेइय ६८२; राज)। °य देखो °ग (कम्म ६, ६६ टी)। °र वि [°त] सत्तरवाँ, ७० वाँ (पउम ७०, ७२)। °र त्रि [दशन्] सतरह, १७ (कम्म २, ३)। °रत्त पुं [°रात्र] सात रातदिन का समय (महा)। °रस त्रि [°दशन्] सतरह, १७ (भग)। °रस, °रसम वि [°दश] सतरहवाँ;

(कम्म २, १६; पउम १७. १२३; पव ४६)। °रह देखो °रस = °दशन् (षड्)। °रि स्त्री [°ति] सत्तर, ७० (सम ८१, कप्प; षड्)। °रिसि पुं [°ऋषि] सात नक्षत्रों का मंडल-विशेष (सुपा ३५४)। °वण्ण, °वन्न पुं [°पर्ण] १ वृक्ष-विशेष, सतौना (औप; भाग)। २ देव-विशेष (राय ८०)। °वन्नव-डिसय पुं [°पर्णावतंसक] सौधर्म देवलोक का एक विमान (राय ५६)। °विह वि [°विध] सात प्रकार का (जी १६; प्रासू १०४; पि ४५१)। °वीसइ, °वीसा स्त्री [°विंशति] सताईस, २७ (पि ४४५; भग)। °सइय वि [°शतिक] सात सौ की संख्या-वाला (णाया १, १—पत्र ६४)। °सट्ठ वि [°षष्ट] सड़सठवाँ, ६७वाँ (पउम ६७, ५१)। °सट्ठि देखो °ट्ठि (सम ७६)। °सत्त-मिया स्त्री [°सप्तमिका] प्रतिज्ञा-विशेष, नियम-विशेष (अंत)। °सिक्खावइय वि [°शिक्षाव्रतिक] सात शिक्षाव्रतवाला (णाया १, १२; औप)। °हत्तर वि [°सप्तत] सतहत्तरवाँ, ७७ वाँ (पउम ७७, ११८)। °हत्तरि स्त्री [°सप्तति] १ संख्या-विशेष, सतहत्तर की संख्या, ७७। २ सतहत्तर संख्या-वाला (सम ८५; भग; श्रा २८)। °हा अ [°धा] सात प्रकार का, सप्तविध (पि ४५१)। °हुत्तरि देखो °हत्तरि (नव ८)। °ईस (अप) देखो °वीसा (पि ४४५)। °णउइ स्त्री [°नवति] सतानबे, ६७ (सम ६८)। °णउय वि [°नवत] १ सतानबेवाँ, ६७ वाँ (पउम ६७, ३०)। २ जिसमें सतानबे अधिक हो वह, 'सत्ताणउयजोयणसए' (भग)। °रह (अप) देखो °रह (पिंग)। °वण्ण °वन्न स्त्रीन [°पञ्चाशत्] १ संख्या-विशेष, सतावन, ५७। २ सतावन संख्यावाला (पडि; पिंग; सम ७३; नव २)। स्त्री. °ण्णा, °न्ना (पिंग; पि २६५; ४४७)। °वन्न वि [°पञ्चाश] सतावनवाँ, ५७वाँ (पउम ५७, ३७)। °वीस न [°विंशति] १ संख्या-विशेष, सताईस। २ सताईस की संख्यावाला; 'एवं सत्तावीसं भंगा णेयव्वा' (भग)। °वीसइ स्त्री [°विंशति] वही पूर्वोक्त अर्थ (कुमा)। °वीसइम वि [°विंशतितम] सताईसवाँ, २७ वाँ (पउम २७, ४२)। °वीसइविह वि [°विंशतिविध] सताईस प्रकार का (पराग १७—पत्र ५३४)। °वीसा स्त्री. देखो °वीस (हे १, ४; षड्)। °सीइ स्त्री [°शीति] सतासी, ८७ (सम ६३)। °सीइम वि [°शीतितम] सतासीवाँ, ८७ वाँ; (पउम ८७, २१)।

सत्तंग वि [सप्ताङ्ग] १ राजा, मन्त्री, मित्र, कोश-भंडार, देश, किला तथा सैन्य ये सात राज्याङ्गवाला (कुमा)। २ न. हस्ति-शरीर के ये सात अवयव—चार पैर, सूँढ, पुच्छ और लिंग; 'सत्तंगपइट्ठियं' (उवा १०१)।

सत्तण्ह देखो स-त्तण्ह = स-तृष्ण।

सत्तत्थ वि [दे] अभिजात, कुलीन (दे ८; १०)।

सत्तम देखो सत्तम = सत्-तम।

सत्तर देखो स-त्तर = स-त्वर।

सत्तर देखो सत्त-र = सप्त-दशन्, दश।

सत्तल न [सप्तल] पुष्प-विशेष (गउड)।

सत्तला } स्त्री [सप्तला] लता-विशेष; नव-
सत्तली } मालिका का गाछ (पाअ; गा ६१६; पउम ५३, ७६)।

सत्तली स्त्री [ने. सप्तला] लता-विशेष, शेफालिका का गाछ (दे ८, ४)।

सत्तवीसंजोयण देखो सत्तावीसंजोअण (चंड)।

सत्ता स्त्री [सत्ता] १ सद्भाव, अस्तित्व (णंदि १३६ टी)। २ आत्मा के साथ लगे हुए कर्मों का अस्तित्व, कर्मों का स्वरूप से अप्रच्यव—अवस्थान (कम्म २, १; २५)।

सत्तावरी स्त्री [शतावरी] कन्द-विशेष, 'सत्ता-वरी विराली कुमारि तह थोहरी गलोई य' (पव ४; संबोध ४४; श्रा २०)।

सत्तावीसंजोअण पुं [दे] चन्द्र, चन्द्रमा (दे ८, २२); 'सत्तावीसंजोअणकरपसरो जाव अज्जवि न होइ' (वाअ १५)।

सत्ति स्त्री [दे] १ तिपाई, तीन पाया वाला गोल काष्ठ-विशेष। २ घड़ा रखने का पलंग की तरह ऊँचा काष्ठ-विशेष (दे ८, १)।

सत्ति स्त्री [शक्ति] १ अस्त्र-विशेष (कुमा)। २ त्रिशूल (पराह १, १—पत्र १८)। ३ सामर्थ्य (ठा ३, १—पत्र १०६; कुमा; प्रासू २६)। ४ विद्या विशेष (पउम ७, १४२)। °म, °मंत वि [°मत्] शक्तिवाला (ठा ६—पत्र ३५२; संबोध ८; उप १३६ टी)।

सत्ति पुं [सप्ति] अश्व, घोड़ा (पाअ)।

सत्तिअ वि [सात्त्विक] सत्त्व-युक्त, सत्त्व-प्रधान (सूअनि ६२; हम्मीर १६; स ४)।

सत्तिअणा स्त्री [दे] आभिजात्य, कुलीनता (दे ८, १६)।

सात्तिवण्ण } देखो सत्त-वण्ण (सम १५२;
सत्तिवन्न } पि १०३; विचार १४८)।

सत्तु पुं [शत्रु] रिपु, दुश्मन, वैरी (णाया १, १—पत्र; कप्पू; सुपा ७)। °इ वि [°जित्] १ शत्रु को जीतनेवाला। २ पुं. एक राजा का नाम (प्राकृ ६५)। °ग्घ वि [°घ्न] १ रिपु को मारनेवाला (प्राकृ ६५)। २ पुं. रामचन्द्र का एक छोटा भाई (पउम २५, १४)। °निहण [°निघ्न] वही पूर्वोक्त अर्थ (पउम १०, ६६)। °मद्दण वि [°मर्दन] शत्रु का मर्दन करनेवाला (सम १५२)। °सेण पुं [°सेन] एक अन्तकृद् मुनि (अंत ३)। °हण देखो °ग्घ (पउम ८०, ३८)।

सत्तु } पुं [सक्तु] सत्तू, सतुआ, भुजे
सत्तुअ } हुए यव आदि का चूर्ण (पि ३६७; निचू १; स २५३; सुर ५, २०६; सुपा ४०६; महा)।

सत्तुंज न [शत्रुञ्ज] १ एक विद्याधर-नगर (इक)। २ पुं. रामचन्द्रजी का एक छोटा भाई, शत्रुघ्न (पउम ३२, ४७)।

सत्तुंजय पुं [शत्रुञ्जय] १ काठियावाड़ में पालीताना के पास का एक सुप्रसिद्ध पर्वत जो जैनों का सर्व-श्रेष्ठ तीर्थ है (सुर ५, २०३)। २ एक राजा का नाम (राज)।

सत्तुंदम पुं [शत्रुन्दम] एक राजा का नाम (पउम ३८, ४५)।

सत्तुग देखो सत्तुअ (कुप्र १२)।

सत्तुत्तरि स्त्री [सप्तसप्तति] सतहत्तर, ७७ (कम्म ६, ४८)।

सत्थ वि [शस्त] प्रशस्त, श्लाघनीय (चेइय ५७२)।

सत्थ न [शस्त्र] हथियार, आयुध प्रहरण (आचा उप; भग; प्रासू १०५)। °कोस पुं

[°कोश] शस्त्र—औजार रखने का थैला (णाया १, १३—पत्र १८१)। °वज्झ वि [°वध्य] हथियार से मारने योग्य (णाया १, १६—पत्र १९९)। °विवाडण न [°विपाटन] शस्त्र से चीरना (णाया १, १६—पत्र २०२; भग)।

सत्थ वि [दे] गत, गया हुआ (दे ८, १)।

सत्थ देखो स-त्थ = स्व-स्थ।

सत्थ न [स्वास्थ्य] स्वस्थता (णाया १, ९—पत्र १६६)।

सत्थ पुं [सार्थ] १ व्यापारी मुसाफिरों का समूह (णाया १, १५—पत्र १९३; उत्त ३०, १७; बृह १; अणु; सुर १, २१४)। २ प्राणि-समूह (कुमा; हे १, ६७)। ३ वि. अन्वर्थ, यथार्थनामा (चेइय ५७२)। °वह, °वाह पुंस्त्री [°वाह] सार्थ का मुखिया, संघ-नायक (श्रु ५५; उवा; विपा १, २—पत्र ३१)। स्त्री. °ही (उवा; विपा १, २—पत्र ३१)। °वाहिक पुं [°वाहिन्] वही पूर्वोक्त अर्थ (भवि)। °ह देखो °वाह (धर्मवि ४१; सण)। °हिव पुं [°धिप] सार्थ-नायक (सुर २, ३२; सुपा ५९४)। °हिवइ पुं [°धिपति] वही अर्थ (सुपा ५९४)।

सत्थ पुंन [शास्त्र] हितोपदेशक ग्रन्थ, हित-शिक्षक पुस्तक, तत्त्व-ग्रंथ (विसे १३८४; कुमा); 'नाणामत्थे सुणंतोवि' (श्रा ४)। °ण्णु वि [°ज्ञ] शास्त्र का जानकार; 'सुमिणसत्थण्णू' (उप ९८६ टी; उप पृ ३२७)। °गार वि [°कार] शास्त्र-प्रणेता (धर्मसं १००३; सिक्खा ३१)। °त्थ पुं [°र्थ] शास्त्र-रहस्य (कुप्र ६; २०६; भवि)। °यार देखो °गार (स ४; धर्मसं ९८२)। °वि वि [°विद्] शास्त्र ज्ञाता (स ३१२)।

सत्थइअ वि [दे] उत्तेजित (दे ८, १३)।

सत्थर पुं [दे] निकर, समूह (दे ८, ४)।

सत्थर } पुंन [स्रस्तर] शय्या, बिछौना
सत्थरय } (दे ८, ४ टी; सुपा ५८३; पाअ; षड्; हास्य १३९; सुर ४, २४४)।

सत्थव देखो संथव = संस्तव (प्राकृ ३३; पि ७६)।

सत्थाम देखो स-त्थाम = स-स्थामन्।

सत्थाव देखो संथव = संस्तव (प्राकृ ३३)।

सत्थि अ. स्त्री [स्वस्ति] १ आशीर्वाद; 'सत्थि करेइ कविलो' (पउम ३५, ६२)। २ क्षेम, कल्याण, मंगल। ३ पुण्य आदि का स्वीकार (हे २, ४५; संक्षि २१)। °मई स्त्री [°मती] १ एक विप्र-स्त्री, क्षीरकदम्बक उपाध्याय की स्त्री (पउम ११, ९)। २ एक नगरी (उप ९८२)। ३ संनिवेश-विशेष (स १०३)। देखो सोत्थि।

सत्थिअ पुं [स्वस्तिक] १ माङ्गलिक विन्यास-विशेष, मंगल के लिए की जाती एक प्रकार की चावल आदि की रचना-विशेष (श्रा २७; सुपा ५२)। २ स्वस्तिक के आकार का आसन-बन्ध (बृह ३)। ३ एक देव-विमान (देवेन्द्र १४०)। °पुर न [°पुर] एक नगर का नाम (श्रा २७)। देखो सोत्थिअ।

सत्थिअ वि [सार्थिक] १ सार्थ-सम्बन्धी, सार्थ का मनुष्य आदि (कुप्र ६२; स १२९; सुर ९, १६६; सुपा ६५१; धर्मवि १२४)। २ पुं. सार्थ का मुखिया (बृह १)।

सत्थिअ न [सक्थिक] ऊरु, जाँघ (स २६२)।

सत्थिआ स्त्री [शस्त्रिका] छुरी (प्राप्र)।

सत्थिग देखो सत्थिअ = स्वस्तिक (पंचा ८, २३)।

सत्थिल्ल देखो सत्थिअ = सार्थिक (सुर १०, २०८)।

सत्थिल्लय देखो सत्थ = सार्थ (महा; भवि)।

सत्थु वि [शास्तृ] शास्ति-कर्ता, सीख देने-वाला (आचा; सूअ २, ५, ४; १, १३, २)।

सत्थुअ देखो संथुअ (प्राकृ ३३; पि ७६)।

सदा देखो सआ = सदा (राज)।

सदावरी देखो सयावरी = सदावरी (उत्त ३६, १३९)।

सदिस (शौ) देखो सरिस = सदृश (नाट—मृच्छ ११३)।

सद्द अक [शब्दय्] १ आवाज करना। २ सक. आह्वान करना, बुलाना। सद्दइ (पिंग)।

सद्द पुंन [शब्द] १ ध्वनि, आवाज (हे १, २६०; २, ७९; कुमा; सम १५); 'सद्दाणि विरूवरूवाणि' (सूअ १, ४, १, ६), 'सद्दाइं' (आचा २, ४, २, ४)। २ पुं. नय-विशेष (ठा ७—पत्र ३९०; विसे २१८१)। ३ छन्द-विशेष (पिंग)। ४ नाम, आख्या (महा)। ५ प्रसिद्धि (औप; णाया १, १ टी—पत्र ३)। °वेहि वि [°वेधिन्] शब्द के अनुसार निशाना मारनेवाला (णाया १, १८—पत्र २३६; गउड)। °वाइ पुं [°पातिन्] एक वृत्त वैताढ्य पर्वत (ठा २, ३—पत्र ६९; ८०;४,२—पत्र २२३; इक)।

सद्दल न [शाद्वल] हरित, हरा घास (पाअ; णाया १, १—पत्र २४; गउड)।

सद्दलिय वि [शाद्वलित] हरा घासवाला प्रदेश (गउड)।

सद्दह सक [श्रद् + धा] श्रद्धा करना, विश्वास करना, प्रतीति करना। सद्दहइ, सद्दहामि (हे ४, ९; भग; उवा)। भवि. सद्दहिस्सइ (पि ५३०)। वकृ. सद्दहंत, सद्दहमाण सद्दहाण (नव ३९; हे ४, ९; श्रु २३)। संकृ. सद्दहित्ता (उत्त २९, १)। कृ. सद्दहियव्व (उव; सं ८६; कुप्र १४९)।

सद्दहग देखो सद्दहाण (हे ४, २३८; कुमा)।

सद्दहणया } स्त्री [श्रद्धान] श्रद्धा, विश्वास,
सद्दहणा } प्रतीति (ठा ६—पत्र ३५५; पंचभा)।

सद्दहा देखो सड्ढा = श्रद्धा (सट्ठि १२७)।

सद्दहाण न [श्रद्धान] श्रद्धा, विश्वास (श्रावक ६२; पव ११९; हे ४, २३८)।

सद्दहाण देखो सद्दह।

सद्दहिअ वि [श्रद्धित] जिस पर श्रद्धा की गई हो वह, विश्वस्त (ठा ६—पत्र ३५५; पि ३३३)।

सद्दाइद (शौ) वि [शब्दायित] आहूत, बुलाया हुआ (नाट—मृच्छ २८९)।

सद्दाण देखो संदाण। सद्दाणइ (षड्)।

सद्दाल वि [शब्दवत्] शब्दवाला (हे २, १५९; पउम २०, १०; प्राप्र; सुर ३, ९६; पाअ; औप)।

सद्दाल न [दे] नूपुर (दे ८, १०; षड्)। °पुत्त पुं [°पुत्र] एक जैन उपासक (उवा)।

सद्दाव सक [शब्दय्, शब्दायय्] आह्वान करना, बुलाना। सद्दावेइ, सद्दाविंति, सद्दावेंति (औप; कप्प; भग)। सद्दावेहि

(स्वप्न ९२)। कर्म. सद्दावीअंति (अभि १२८)। संकृ. सद्दाविता, सद्दावेत्ता (पि ५८२; महा)।

सद्दाविअ वि [शब्दित, शब्दायित] आहूत, बुलाया हुआ (कप्प; महा; सुर ८, १३३)।

सद्दिअ वि [शब्दित] १ प्रसिद्ध (औप; णाया १, १ टी—पत्र ३)। २ आहूत (सुपा ४१३; महा)। ३ वार्तित, जिसको बात कही गई हो वह (कुमा ३, ३४)।

सद्दिअ वि [शाब्दिक] शब्द-शास्त्र का ज्ञाता (अणु २३४)।

सद्दूल पुं [शार्दूल] १ श्वापद पशु की एक जाति, बाघ (पाअ; पण्ह १, १—पत्र ७; दे १, २४; अभि ५५)। २ छन्द विशेष (पिंग)। °विक्कीडिअ न [°विक्रीडित] उन्नीस अक्षरों के पादवाला एक छन्द (पिंग)। °सट्ट पुंन [°साटक] छन्द-विशेष (पिंग)।

सद्ध देखो स-द्ध = सार्ध।

सद्ध न [श्राद्ध] १ पितरों की तृप्ति के लिए तर्पण, पिण्ड-दानादि (अच्चु १७; पुप्फ १६७)। २ वि. श्रद्धावाला, श्रद्धालु (उप ८६८)। देखो सड्ढ = श्राद्ध (उप १६६)। °पक्ख पुं [°पक्ष] आश्विन मास का कृष्ण पक्ष (दे ६, १२७)।

सद्ध देखो सज्झ = साध्य (नाट—चैत ३५)।

सद्धड पुं [श्राद्ध] व्यक्ति-वाचक नाम (महा)।

सद्धरा स्त्री [स्रग्धरा] एक्कीस अक्षरों के चरणवाला एक छन्द (पिंग)।

सद्धल पुं [सद्धल] एक प्रकार का हथियार, कुन्त, बर्छा (पण्ह १, १—पत्र १८)। देखो सव्वल।

सद्धस देखो सज्झस (प्राकृ २१; प्राप्र)।

सद्धा देखो सड्ढा (हे २, ४१; णाया १, १—पत्र ७४; प्रासू ४६; पाअ)। °ल वि [°वत्] श्रद्धावाला (चंड; श्रावक १७५)। °लु वि [°लु] वही अर्थ (संबोध ८)। स्त्री. °लुणी (गा ४०५)।

सद्धिअ वि [श्राद्धिक] श्रद्धावाला (पण्ह १, ३—पत्र ४४; वसु; ओघभा १९ टी)।

सद्धिं अ [सार्धम्] सहित, साथ (आचा; उवा; उत्त १६३)।

सद्धेय वि [श्रद्धेय] श्रद्धास्पद (विसे ४८२)।

सधम्म वि [सधर्मन्] समान धर्मवाला (स ७१२)।

सधम्मिअ देखो स-धम्मिअ = सद्-धार्मिक।

सधम्मिणी स्त्री [सधर्मिणी] पत्नी (दे २, १०६; सण)।

सधवा देखो स-धवा = स-धवा।

सनय देखो स-नय = स-नय।

सन्न वि [सन्न] १ क्लान्त (पाअ)। २ अवसन्न, मग्न (सूअ १, २, १, १०)। ३ खिन्न (पण्ह १, ३—पत्र ५५)।

सन्नाण देखो स-न्नाण = सज्ज्ञान।

सन्नाम सक [आ + दृ] आदर करना, संमान करना। सन्नामइ, सन्नामेइ (षड्; हे ४, ८३)।

सन्नामिअ वि [आदृत] संमानित (कुमा)।

सन्निअत्थ वि [दे] परिहित, पहना हुआ (सुपा ३६)।

सन्निउ (अप) देखो सणिअं (भवि)।

सन्निर न [दे] पत्र-शाक, भाजी (दस ५, १, ७०)।

सन्नुम सक [छादय्] आच्छादन करना, ढाकना। सन्नुमइ (हे ४, २१)।

सन्नुमिअ वि [छादित] ढका हुआ (कुमा)।

सन्ह देखो सण्ह = श्लक्ष्ण (कप्प)।

सप देखो सव = शप्। सपइ (विसे २२२७)।

सपक्ख देखो स-पक्ख = स-पक्ष।

सपक्ख देखो स-पक्ख = स्व-पक्ष।

सपक्खिं अ [सपक्षम्] अभिमुख, सामने (अंत १४)।

सपक्खी स्त्री [सपक्षी] एक महौषधि (ती ५)।

सपज्जा स्त्री [सपर्या] पूजा (अच्चु ७०)।

सपडिदिसिं अ [सप्रतिदिक्] अत्यन्त संमुख, ठीक सामने (अंत १४)।

सपत्तिअ वि [सपत्रित] बाण से अतिव्यथित (दे १, १३५)।

सपह देखो सवह (धर्मवि १२६)।

सपाग देखो स-पाग = श्व-पाक।

सपिसल्लग देखो सप्पिसल्लग (पि २३२)।

सप्प सक [सृप्] १ जाना, गमन करना। २ आक्रमण करना। सप्पइ (धात्वा १५५); 'घोरविसा वि हु सप्पा सप्पंति न बद्धवयणव्व' (सुर २, २४३)। वकृ. सप्पंत, सप्पमाण (गउड, कप्प)। कृ. सप्पणीअ (नाट—शकु १४७)।

सप्प पुंस्त्री [सर्प] १ साँप, भुजंगम (उवा; सुर २, १४३; जी २१, प्रासू १६, ३८; ११२)। स्त्री. °प्पी (राज)। २ पुं. अश्लेषा नक्षत्र का अधिष्ठाता देव (सुज्ज १०, १२, ठा २, ३—पत्र ७७)। ३ एक नरकस्थान (देवेन्द्र २७)। ४ छन्द-विशेष (पिंग)। °सिर पुं [°शिरस्] हस्त-विशेष, वह हाथ जिसकी उंगलियाँ और अंगूठा मिला हुआ हो और तला नीचा हो (दे ८, ७२)। °सुगंधा स्त्री [°सुगन्धा] वनस्पति-विशेष (पण्ण १—पत्र ३६)।

सप्पभ देखो स-प्पभ = स्व-प्रभ, सत्-प्रभ, स-प्रभ।

सप्पमाण देखो सप्प = सृप्; सव = शप्।

सप्परिआव } देखो स-प्परिआव = स-
सप्परिताव } परिताप।

सप्पि न [सर्पिस्] घृत, घी (पाअ; पव ४; सुपा १३; सिरि ११८४; सण)। °आसव, °यासव वि [°आस्रव] लब्धि-विशेषवाला, जिसका वचन घी की तरह मधुर होता है (पण्ह २, १—पत्र १००)।

सप्पि वि [सर्पिन्] १ जानेवाला, गति करनेवाला (कप्प)। २ रोगि-विशेष, हाथ में लकड़ी के सहारे से चल सकनेवाला रोगि-विशेष (पण्ह २, ५—पत्र १००)।

सप्पिसल्लग देखो स-प्पिसल्लग = स-पिशाचक।

सप्पु देखो सप्प = सर्प।

सप्पुरिस देखो स-प्पुरिस = सत्-पुरुष।

सप्फ न [शष्प] बाल तृण, नया घास (हे २, ५३; प्राप्र)।

सप्फ न [दे] कुमुद, कैरव; 'चंदुज्जयं तु कुमुअं गद्दहयं केरवं सप्फं' (पाअ)।

सप्फंद देखो स-प्फंद = स-स्पन्द।

सप्फल देखो **स-प्फल** = स-फल।

सप्फल देखो **स-प्फल** = सत्-फल।

सफर देखो **सभर** = शफर (वै २०)।

सफर पुंन [दे] मुसाफिरी; 'वडसफरपवहणाणं' (सिरि ३८२)।

सफल देखो **स-फल** = स-फल।

सफल सक [सफलय्] सार्थक करना। वकृ. **सफलंत** (सुपा ३७४)।

सफलिअ वि [सफलित] सफल किया हुआ (सुपा ३५६; उव)।

सब (अप) देखो **सव्व** = सर्व (पिंग)।

सबर पुं [शबर] १ एक अनार्य देश। २ उस देश में रहनेवाली एक अनार्य मनुष्य-जाति, किरात, भील (पण्ह १, १—पत्र १४; पाअ; गउड)। °**णिवसण** न [°निवसन] तमाल-पत्र (उत्तानि ३)। देखो **सवर**।

सबरी स्त्री [शबरी] १ भिल्ल जाति की स्त्री (णाया १, १—पत्र ३७; अंत; गउड; चेइय ४८२)। २ कायोत्सर्ग का एक दोष, हाथ से गुह्य-प्रदेश को ढककर कायोत्सर्ग करना (चेइय ४८२)।

सबल पुं [शबल] १ परमाधार्मिक देवों की एक जाति (सम २८)। २ वि. कर्बुर, चितकबरा (आचा; उप २८२; गउड)। ३ न. दूषित चारित्र। ४ वि. दूषित चरित्रवाला मुनि (सम ३६)।

सबलिय वि [शबलित] कर्बुरित (गउड)।

सबलीकरण न [शबलीकरण] सदोष करना, चारित्र को दूषित बनाना (ओघ ७७८)।

सब्ब (अप) देखो **सव्व** = सर्व (पिंग)।

सब्बल पुंन [दे] शस्त्र-विशेष; 'सरभसरसत्तिसब्बलकरालकोंतेसु' (पउम ८, ६५; धर्मवि ५६)।

सब्बल देखो **स-ब्बल** = स-बल।

सब्भ वि [सभ्य] १ सभासद, सदस्य (पाअ; सम्मत्त ११६)। २ सभोचित, शिष्ट; 'असब्भभासी' (दस ६, २, ८; सुर ६, २१५; स ६५०)।

सब्भाव देखो **स-ब्भाव** = सद्-भाव।

सब्भाव देखो **स-ब्भाव** = स्व-भाव।

सब्भाविय वि [साद्भाविक] पारमार्थिक, वास्तविक (दसनि १, १३५)।

सभ न. देखो **सभा**; 'सभाणि' (आचा २, १०; २)।

सभर पुंस्त्री [शफर] मत्स्य, मछली (कुमा)। स्त्री. °**री** (हे १, २३६; प्राकृ १४)।

सभर पुं [दे] गृध्र पक्षी (दे ८, ३)।

सभराइअ न [शफरायित] जिसने मत्स्य की तरह आचरण किया हो वह (कुमा)।

सभल देखो **स-भल** = स-फल।

सभा स्त्री [सभा] १ परिषद् (उवा; रयण ८३; धर्मवि ६)। २ गाड़ी के ऊपर की छत—ढक्कन (श्रा १२)।

सभाज सक [सभाजय्] पूजन करना। हेकृ. **सभाजइदुं** (शौ) (अभि १६०)।

सभाव देखो **स-भाव** = स्व-भाव।

सम अक [शम्] १ शान्त होना, उपशान्त होना। २ नष्ट होना। ३ आसक्त होना। समइ, समंति (हे ४, १६७; कुमा), 'जइ समइ सकराए पित्तं ता किं पटोलाए' (सिरि ६६६)। वकृ. **समेमाण** (आचा १, ४, १, ३)।

सम सक [शमय्] १ उपशान्त करना, दबाना। २ नाश करना। वकृ. 'दुट्ठदुरिए समंतो' (धर्मा ३)।

सम पुं [श्रम] १ परिश्रम, आयास। २ खेद, थकावट (काप्र ८४; सम्मत्त ७७; दे १, १३१; उप पृ ३५; सुपा ५२५; गउड; सण; कुमा)। °**जल** न [°जल] पसीना (पाअ)।

सम पुं [शम] शान्ति, प्रशम, क्रोध आदि का निग्रह (कुमा)।

सम वि [सम] १ समान, तुल्य, सरिखा (सम ७५; उव; कुमा; जी १२; कम्म ४, ४०; ६२)। २ तटस्थ, मध्यस्थ, उदासीन, राग-द्वेष से रहित (सूअ १, १३, ६; ठा ८)। ३ स. सर्व, सब (श्रु १२४)। ४ पुंन. एक देव-विमान (सम १३; देवेन्द्र १४०)। ५ सामायिक (संबोध ४५; विसे १४२१)। ६ आकाश, गगन (भग २०, २—पत्र ७७५)। °**चउरंस** न [°चतुरस्र] संस्थान-विशेष, चारों कोणों के समान शरीर की आकृति-विशेष (ठा ६—पत्र ३५७; सम १४६; भग; कम्म १, ४०)। °**चक्कवाल** न [°चक्रवाल] वृत्त, गोलाकार (सुज्ज ४)। °**ताल** न [°ताल] १ कला-विशेष (औप)। २ वि. समान तालवाला (ठा ७)। °**धम्मिअ** वि [°धर्मिक] समान धर्मवाला (उप ५३० टी)। °**पादपुत** पुंन [°पादपुत] आसन-विशेष, जिसमें दोनों पैर मिलाकर जमीन में लगाए जाते हैं वह आसन-बन्ध (ठा ५, १—पत्र ३००)। °**पासि** वि [°दर्शिन्] तुल्य दृष्टिवाला, समदर्शी (गच्छ १, २२)। °**प्पभ** पुंन [°प्रभ] एक देव-विमान (सम १३)। °**भाव** पुं [°भाव] समता (सुपा ३२०)। °**या** स्त्री [°ता] राग-द्वेष का अभाव, मध्यस्थता (उत्त ४, १०; पउम १४, ४०; श्रा २७)। °**वत्ति** पुं [°वर्तिन्] यमराज, जम (सुपा ४३३)। °**सरिस** वि [°सदृश] अत्यन्त तुल्य, सदृश, (पउम ४६, ५७)। °**सहिय** वि [°सहित] युक्त, सहित (पउम १७, १०५)। °**सुद्ध** पुं [°शुद्ध] एक राजा जो छठवें केशव का पिता था (पउम २०, १८२)।

समइअ वि [सामयिक] समय-संबन्धी, समय का (भग)।

समइअ वि [समयित] संकेतित (धर्मसं ५०५)।

समइअ न [समयिक] सामायिक नामक संयम-विशेष (कम्म ३, १८; ४, २१; २८)।

समइंछिअ देखो **समइच्छिअ** (से १२, ७२)।

समइक्कंत वि [समतिक्रान्त] व्यतीत, गुजरा हुआ (सुपा २३)।

समइच्छ सक [समति + क्रम्] १ उल्लंघन करना। २ अक. गुजरना, पसार होना। वकृ. **समइच्छमाण** (औप; कप्प)।

समइच्छिअ वि [समतिक्रान्त] १ गुजरा हुआ। २ उल्लंघित (उप ७२८ टी; दे ८, २०; स ४५)।

समईअ वि [समतीत] १ गुजरा हुआ (पउम ५, १५२)। २ पुं. भूत काल (जीवस १८१)।

समईअ देखो **समइअ** = समयिक (कम्म ४, ४२)।

समउ (अप) नीचे देखो (भवि)।

समं अ [समम्] साथ, सह (गा १०२; १६४; २६५; उत्त १६, ३; महा; कुमा)।

समंजस वि [समञ्जस] उचित, योग्य (आचा; गउड; भवि)।

समंत° देखो **समंता;** 'वसिओ अंगेसु समंत-पीणकणकब्बुरो सेओ' (गउड)।

समंत देखो सामन्त (उप पृ ३२७)।

समंत (अप) देखो समत्थ = समस्त (पिंग)।

समंतओ अ [समन्ततस्] सर्वतः, चारों तरफ (गा ६७३; सुर २, २३८)।

समंता, समंतेण अ [समन्तात्] ऊपर देखो (पाअ; भग; विपा १, २—पत्र २६; से ६, ५१; सुर २, २८; १३, १६५)।

समक्कंत वि [समाक्रान्त] १ जिसपर आक्रमण किया गया हो वह (से ५, ५७)। २ अवरुद्ध, रोका हुआ (से ८, ३३)।

समक्ख न [समक्ष] नजर के सामने, प्रत्यक्ष (गा ३७०; सुपा १५०; महा)। देखो **समच्छ**।

समक्खाय, समक्खिअ वि [समाख्यात] उक्त, कथित (उप २११ टी; ६६४, जी २५; श्रु १३३)।

समगं देखो **समयं** = समकम् (पव २३२; सुपा, ८७; सण)।

समग्ग वि [समग्र] १ सकल, समस्त (सुपा ६६)। २ युक्त, सहित (पण्ह १, ३—पत्र ४४; कुप्र ७)।

समग्गल वि [समर्गल] अत्यधिक (सिरि ८६७; सुपा ३६७; ४२०)।

समग्गल (अप) देखो **समग्ग** (पिंग)।

समग्घ वि [समर्घ] सस्ता, अल्प मूल्यवाला (सुपा ४४५; ४४७; सम्मत्त १४१)।

समच्चण न [समर्चन] पूजन, पूजा (सुपा ६)।

समच्चिअ वि [समर्चित] पूजित (पउम ११६, ११)।

समच्छ अक [सम् + आस्] १ बैठना। २ सक. अवलम्बन करना। ३ अधीन रखना। वकृ. **समच्छंत** (उप ६६८ टी)।

समच्छ वि [समक्ष] प्रत्यक्ष का विषय (संक्षि १५)। देखो **समक्ख**।

समच्छायग वि [समाच्छादक] ढकनेवाला (स ६६)।

समज्ज, समज्जिण सक [सम् + अर्ज्] पैदा करना, उपार्जन करना। समज्जइ, समज्जिणइ (सण; पव १०; महा)। वकृ. **समज्जिणमाण** (विपा १, १—पत्र १२)। संकृ. **समज्जिवि** (अप) (सण)।

समज्जिणिय, समज्जिय वि [समार्जित] उपार्जित (सण; ठा ३, १—पत्र ११४; सुपा २०५; सण)।

समज्झासिय वि [समध्यासित] अधिष्ठित (सुज्ज १०, १)।

समट्ठ वि [समर्थ] संगत अर्थ, व्याजबी, न्याय-युक्त (णाया १, १—पत्र ६२; उवा)। देखो **समत्थ** = समर्थ।

समण न [शमन] १ उपशमन, दबाना, शान्त करना (सुपा ३६६)। २ पथ्यानुष्ठान (उवर १४०)। ३ एक दिन का उपवास (संबोध ५८)। ४ वि. उपशमन करनेवाला, दबानेवाला (उप ७८२; पंचा ४, २६; सुर ४, २३१)।

समण देखो स-मण = स-मनस्।

समण देखो **सवण** = श्रवण (पउम १७, १०७; राज)।

समण पुं [समण] सर्वत्र समान प्रवृत्तिवाला, मुनि, साधु (अणु)।

समण पुं [श्रमण] १ भगवान् महावीर (आचा २, १५, ३)। २ पुंस्त्री, निर्ग्रन्थ मुनि साधु, यति, भिक्षु, संन्यासी, तापस; 'निग्गंथ-सक्कतावसगेरुयआजीवं पंचहा समणा' (पव ६४; अणु; आचा; उवा; कप्प; विपा १, १; धण २१; सुर १०, २२४)। स्त्री. °णी (भग; गच्छ १, १५)। °सीह पुं [°सिंह] १ एक जैन मुनि जो दूसरे बलदेव के पूर्वभवीय गुरू थे (पउम २०, १६२)। २ श्रेष्ठ मुनि (पण्ह २, ५—पत्र १४८)। °ोवासग, °ोवासय पुंस्त्री [°ोपासक] श्रावक, जैन गृहस्थ (उवा)। स्त्री. °सिया (उवा; णाया १, १४—पत्र १८७)।

समणंतरु (अप) न [समनन्तरम्] अनन्तर, बाद में, पीछे (सण)।

समणक्ख देखो स-मणक्ख = स-मनस्क।

समणुगच्छ, समणुगम सक [समनु + गम्] १ अनुसरण करना। २ अच्छी तरह व्याख्या करना। ३ अक. संबद्ध होना, जुड़ जाना। वकृ. **समणुगच्छमाण** (णाया १, १—पत्र २५)। कवकृ. **समणुगम्मंत, समणुगम्ममाण** (औप; सूअ २, २, ७६; णाया १, १—पत्र ३२; कप्प)।

समणुगय वि [समनुगत] १ अनुस्यूत (स ७२०)। २ अनुविद्ध, जुड़ा हुआ (पंचा ३, ४६)।

समणुचिण्ण वि [समनुचीर्ण] आचरित, विहित; 'तवो समणुचिण्णो' (पउम ६, १६४)।

समणुजाण सक [समनु + ज्ञा] १ अनुमोदन करना, अनुमति देना। २ अधिकार प्रदान करना। समणुजाणइ, समणुजाणाइ, समणुजाणेज्जा (आचा)। वकृ. **समणुजाणमाण** (आचा)।

समणुजाय वि [समनुजात] उत्पन्न, संजात (पउम १००, २४; सुपा ५७८)।

समणुनाय वि [समनुज्ञात] अनुमत, अनुमोदित (पउम ८, ७)।

समणुन्न वि [समनुज्ञ] अनुमोदन-कर्ता (आचा १, १, १, ५)।

समणुन्न वि [समनोज्ञ] १ सुन्दर, मनोहर। २ सुन्दर वेष आदिवाला (आचा १, ८, १, १)। ३ संविग्न, संवेग-युक्त मुनि (आचा १, ८, २, ६)। ४ समान समाचारीवाला—सांभोगिक मुनि (ठा ३, ३—पत्र १३६; द्व १)।

समणुन्ना स्त्री [समनुज्ञा] १ अनुमति, संमति २ अधिकार-प्रदान (ठा ३, ३—पत्र १३६)।

समणुन्नाय देखो **समणुनाय** (आचा २, १, १०, ४)।

समणुपत्त वि [समनुप्राप्त] संप्राप्त (सुर १, १८३; १०, १२०; सिरि ४३०; महा)।

समणुबद्ध वि [समनुबद्ध] निरन्तर रूप से व्याप्त (णाया १, ३—पत्र ६१; औप; उव)।

समणुभूअ वि [समनुभूत] अच्छी तरह जिसका अनुभव किया गया हो वह (वै ६२)।

समणुवत्त वि [समनुवृत्त] संवृत्त, संजात (पउम १०, १)।

समणुवास सक [समनु+वासय्] १ वासना-युक्त करना। २ सिद्ध करना। ३ परिपालन करना। 'आयट्ठं सम्मं समणुवासेज्जासि' (आचा १, २, १, ५; १, २, ४, ४; १, ५, ४, ५; १, ६, १, ६)।

समणुसट्ठ वि [समनुशिष्ट] अनुज्ञात, अनुमत (आचा २, १, १०, ४)।

समणुसास सक [समनु+शासय्] सम्यग् सीख देना, अच्छी तरह सिखाना। समणुसासयंति (सूत्र १, १४, १०)।

समणुसिट्ठ वि [समनुशिष्ट] अच्छी तरह शिक्षित (वसु)। देखो **समणुसट्ठ** (आचा २, १, १०, ४)।

समणुहो सक [समनु+भू] अनुभव करना। समणुहोइ (वव १)।

समण्णागय वि [समन्वागत] १ समन्वित, सहित; 'छत्तीसगुणसमण्णागएण' (गच्छ १, १२)। २ संप्राप्त (राय)।

समण्णाहार पुं [समन्वाहार] समागमन (राज)।

समण्णिय देखो **समन्निय** (काल)।

समतिक्कंत देखो **समइक्कंत** (णाया १, १—पत्र ६३)।

समतुरंग सक [समतुरंगाय्] समान अश्व की तरह आपस में आरोहण करना, आश्लेष करना। वकृ. **समतुरंगेमाण** (णाया १, ८—पत्र १३४; पव १७४ टी)।

समत्त वि [समस्त] १ संपूर्ण (पण्ह १, ४—पत्र ६८)। २ सकल, सब (विसे ४७२)। ३ समास-युक्त। ४ मिलित, मिला हुआ (हे २, ४५; षड्)।

समत्त वि [समाप्त] पूर्ण, पूरा, सिद्ध, जो हो चुका हो वह (उवा; औप)।

समत्ति स्त्री [समाप्ति] पूर्णता (उप १४२; ७२८ टी; विसे ४१५; पव—गाथा ६५; स ५३; सुपा २५३; ४३५)।

समत्थ सक [सम्+अर्थय्] १ साबित करना, सिद्ध करना। २ पुष्ट करना। ३ पूर्ण करना। कर्म. **समत्थीअइ** (स १६५);

'उण्हो त्ति समत्थिज्जइ
दाहेण सरोरुहाण हेमंतो।
चरिएहि एज्जइ जणो
संगोवंतोवि अप्पाणं'
(गा ७३०)।

समत्थ देखो **समत्त**=समस्त (से ४, २८; सुर १, १८१; १६, ५५)।

समत्थ वि [समर्थ] शक्त, शक्तिमान् (पाअ; ठा ४, ४—पत्र २८३; प्रासू २३; १८२; औप)।

समत्थि वि [समर्थिन्] प्रार्थक, चाहनेवाला (कुप्र ३५१)।

समत्थिअ वि [समर्थित] १ पूर्ण, पूरा किया हुआ (कुप्र ११५; सुपा २६६)। २ पुष्ट किया हुआ (सुर १६, ६५)। ३ प्रमाणित, साबित किया हुआ (अज्झ १२१)।

समद्धासिय वि [समाध्यासित] अधिष्ठित (स ३५; ६७६)।

समद्धि देखो **समिद्धि** (गा ४२६)।

समन्नागय देखो **समण्णागय** (ओघ ७६४; णाया १, १—पत्र ६४; औप; महा; ठा ३, १—पत्र ११७)।

समन्नि सक [समनु+इ] १ अनुसरण करना। २ अक. एकत्रित होना, मिलना। समन्नेइ, समन्निति (विसे २५१७; औप)।

समन्निअ वि [समन्वित] युक्त, सहित (हे ३, ४६; सुर ३, ९३०; ४, २२०; गउड)।

समन्ने° देखो **समन्नि**।

समप्प सक [सम्+अर्पय्] अर्पण करना, दान करना, देना। समप्पेइ (महा)। वकृ. **समप्पंत, समप्पअंत, समप्पेंत** (नाट—मृच्छ १०५; रत्ना ५५; पउम ७३, १४)। संकृ. **समप्पिअ, समप्पिऊण** (नाट—मृच्छ ३१५; महा)। हेकृ. **समप्पिउं** (महा)। कृ. **समप्पियव्व** (सुपा २५६)।

समप्प° देखो **समाव**=सम्+आप्।

समप्पण न [समर्पण] अर्पण, प्रदान (सुर ७, २२; कुप्र १३; वज्जा ६६)।

समप्पणया स्त्री [समर्पणा] ऊपर देखो (उप १७६)।

समप्पिय वि [समर्पित] दिया हुआ (महा; काल)।

समब्भस सक [समभि+अस्] अभ्यास करना। समब्भसह (द्रव्य ४७)।

समब्भहिअ वि [समभ्यधिक] अत्यन्त अधिक (से १५, ८५)।

समब्भास पुं [समभ्यास] निकट, पास (पउम ३३, १७)।

समब्भिडिय वि [दे] भिड़ा हुआ, लड़ा हुआ (पउम ८६, ४८)।

समभिआवण्ण वि [समभ्यापन्न] संमुख आया हुआ (सूत्र १, ४, २, १४)।

समभिजाण सक [समभि+ज्ञा] १ निर्णय करना। २ प्रतिज्ञा-निर्वाह करना। समभिजाणिया, समभिजाणाहि (आचा)। वकृ. **समभिजाणमाण** (आचा)।

समभिद्दव सक [समभि+द्रु] हैरान करना। समभिद्दवंति (उत्त ३२, १०)।

समभिधंस सक [समभि+ध्वंसय्] नष्ट करना। समभिधंसेज्ज, समभिधंसेति (भग)।

समभिपड सक [समभि+पत्] आक्रमण करना। हेकृ. **समभिपडित्तए** (अंत २१)।

समभिभूअ वि [समभिभूत] अत्यन्त पराभूत (उवा; धर्मवि ३४)।

समभिरूढ पुं [समभिरूढ] नय-विशेष (ठा ७—पत्र ३९०)।

समभिलोअ सक [समभि+लोक्] देखना, निरीक्षण करना। समभिलोएइ (भग १५—पत्र ६७०)। वकृ. **समभिलोएमाण** (पण्ण १७—पत्र ५१८)।

समभिलोइअ वि [समभिलोकित] विलोकित, दृष्ट (भग १५—पत्र ६७०)।

समय अक [सम्+अय्] समुदित होना, एकत्रित होना; 'सव्वे समयंति सम्मं चेगवसाओ नया विरुद्धावि' (विसे २२६७)।

समय पुं [समय] १ काल, वक्त, अवसर (आचा; सूअनि २६; कुमा)। २ काल-विशेष, सर्व-सूक्ष्म काल, जिसका दूसरा हिस्सा न हो सके ऐसा सूक्ष्म काल (अणु; इक; कम्म २, २३; २४; ३०)। ३ मत, दर्शन (प्राप)। ४ सिद्धान्त, शास्त्र, आगम (आचा; पिंड ६;

सूअनि २६; कुमा; दं २२)। ५ पदार्थ, चीज, वस्तु (सम्म १ टी. पृष्ठ ११४)। ६ संकेत, इशारा (सूअनि २६; पिंड ६; प्राप; से १, १६)। ७ समीचीन परिणति, सुन्दर परिणाम। ८ आचार, रिवाज। ६ एकवाक्यता (सूअनि २६)। १० सामायिक, संयम-विशेष (विसे १४२१)। °क्खेत्त, °खेत्त न [°क्षेत्र] कालोपलक्षित भूमि, मनुष्य-लोक, मनुष्य-क्षेत्र (भग; सम ६८)। °ज्ज, °ण्ण, °न्न वि [°ज्ञ] समय का जानकार (धण ३६; गा ४०५; पि २७६)।

समय देखो स-मय = स-मद।

समय } अ [समकम्] १ युगपत्, एक समयं } साथ (पव २१६ टी; विसे १६६६; १६६७; सुर १, ५; महा; गउड ११०६)। २ सह, साथ (गा ६१)।

समया देखो सम-या।

समया अ [समया] पास, नजदीक (सुपा १८८)।

समर सक [स्मृ] याद करना। कृ. समरणीय (चउ २७; नाट. शकु ६), समरियव्व (रयण २८)।

समर देखो सबर (हे १, २५८; षड्)। स्त्री. °री (कुमा)।

समर पुंन [समर] १ युद्ध, लड़ाई (से १३, ४७; उप ७२८ टी; कुमा)। २ छन्द-विशेष (पिंग)। ३ लोहकारशाला (उत्त० अध्य० १ गा० २६)। °इच्च पुं [°ादित्य] अवन्ती-देश का एक राजा (स ५)।

समर वि [स्मार] कामदेव-संबन्धी, कामदेव का (मन्दिर आदि); (उप ४५४)।

समरइत्तु वि [स्मर्तृ] स्मरण-कर्ता (सम १५)।

समरण न [स्मरण] स्मृति, याद (धर्मवि २०, श्राप ६८)।

समरसद्दय पुं [दे] समान उम्रवाला (दे ८, २२)।

समराइअ वि [दे] पिष्ट, पिसा हुआ (षड्)।

समरी देखो समर = शबर।

समरेत्तु देखो समरइत्तु (ठा ६—पत्र ४४४)।

समलंकर सक [समलम् + कृ] विभूषित करना। समलंकरेइ (आचा २, १५, ५)। संकृ. समलंकरेत्ता (आचा २, १५, ५)।

समलंकार सक [समलम् + कारय्] विभूषित करना, विभूषा-युक्त करना। समलंकारेइ (औप)। संकृ. समलंकारेत्ता (औप)।

समलद्ध (अप) वि [समालब्ध] विलिप्त (भवि)।

समल्लिअ अक [समा + ली] १ संबद्ध होना। २ लीन होना। ३ सक. आश्रय करना। समल्लियइ (आक ४७)। वकृ. समल्लिअंत (से १२, १०)।

समल्लीण वि [समालीन] अच्छी तरह लीन (औप)।

समवइण्ण वि [समवतीर्ण] अवतीर्ण (सुपा २२)।

समवट्ठाण न [समवस्थान] सम्यग् अवस्थिति (अज्झ १४७)।

समवट्ठिइ स्त्री [समवस्थिति] ऊपर देखो; 'कोई विंति मुणीणं सहावसमवट्ठिई हवे चरणं' (अज्झ १४६)।

समवत्ति देखो सम-वत्ति = सम-वर्तिन्।

समवय° देखो समवे।

समवसर देखो समोसर = समव + सृ (प्रामा)।

समवसरण देखो समोसरण (सूअनि ११६)।

समवसरिअ देखो समोसरिअ = समवसृत (धर्मवि ३०)।

समवसेअ वि [समवसेय] जानने योग्य, ज्ञातव्य (सा ४)।

समवाइ वि [समवायिन्] समवाय संबन्ध का, समवाय-संबन्धी (विसे १६२६; धर्मसं ४८७)।

समवाय पुं [समवाय] १ संबन्ध-विशेष, गुण-गुणी आदि का संबन्ध (विसे २१०८)। २ संबन्ध (पउम ३६, २५; धर्मसं ४८१; विवे ११६)। ३ समूह, समुदाय (सूअ २, १, २२; ओघ ४०७; अणु २७० टी; पिंड २; आरा २; विसे ३५६३ टी)। ४ एकत्र करना; 'काउं तो संघसमवायं' (विसे २५४६)। ५ जैन अंग-ग्रंथ-विशेष, चौथा अंग-ग्रंथ (सम १)।

समवे अक [समव + इ] १ शामिल होना। २ संबद्ध होना। समवेदि (शौ) (मोह ८३), समवयंति (विसे २१०६)।

समवेद (शौ) वि [समवेत] समुदित, एकत्रित (मोह ७८)।

समसम अक [समसमाय्] 'सम्' 'सम्' आवाज करना। वकृ. समसमंत (भवि)।

समसरिस देखो सम-सरिस।

समसाण देखो मसाण; 'समसाणे सुन्नवरे देवउले वावि तं वससु' (सुपा ४०८)।

समसीस वि [दे] १ सदृश, तुल्य। २ निर्भर (दे ८, ५०)। ३ न. स्पर्धा (से ३, ८)।

समसीसिआ } स्त्री [दे] स्पर्धा, बराबरी समसीसी } (सुपा ७; वज्जा २४; कप्पू; दे ८, १३; सुर १, ८; वज्जा ३२; १५४; विवे ४५; सम्मत्त १४५; कुप्र ३३४)।

समस्सअ सक [समा + श्रि] आश्रय करना। समस्सअइ (पि ४७३)। संकृ. समस्सइअ (पि ४७३)।

समस्सस अक [समा + श्वस्] आश्वासन प्राप्त करना, सान्त्वना मिलना। समस्ससंघ (शौ) (पि ४७१)। हेकृ. समस्ससिदुं (शौ) (नाट. शकु ११६)।

समस्ससिद (शौ) देखो समासत्थ (नाट—मृच्छ २५८)।

समस्सा स्त्री [समस्या] बाकी का भाग जोड़ने के लिए दिया जाता श्लोक-चरण या पद आदि (सिरि ८६८; कुप्र २७; सुपा १५५)।

समस्सास सक [समा + श्वासय्] सान्त्वना करना, दिलासा देना। समस्सासदि (शौ) (नाट)। वकृ. समस्सासअंत (अभि २२२)। हेकृ. समस्सासिदुं (शौ) (नाट—मृच्छ ८१)।

समस्सास पुं [समाश्वास] आश्वासन (विक्र ३५)।

समस्सासण न [समाश्वासन] ऊपर देखो (मै ७५)।

समस्सिअ वि [समाश्रित] आश्रय में स्थित, आश्रित (स ६३५; उप पृ ४७; सुर १३, २०४; महा)।

समहिअ वि [समधिक] विशेष ज्यादा (प्रासू १७८ महा; कुमा; सुर ४, १६६; सण)।

समहिगय वि [समधिगत] १ प्राप्त, मिला हुआ। २ ज्ञात (सण)।

समहिट्ठ सक [समधि + स्था] काबू में रखना, अधीन रखना। कवकृ. समहिट्ठिज्जमाण (राय १३२)।

समहिट्ठाउ वि [समधिष्ठातृ] अध्यक्ष, मुखी, अधिपति (आचा २, २, ३, ३; २, ७, १, २)।

समहिट्ठिअ वि [समधिष्ठित] आश्रित (उप ७२८ टी; सुपा २०६)।

समहिड्ढिय देखो **स-महिड्ढिय** = स-महर्द्धिक।

समहिणंदिय वि [समभिनन्दित] आनन्दित, खुशी किया हुआ (उप ५३० टी)।

समहिल वि [समखिल] सकल, समस्त (गउड)।

समहुत्त वि [दे] संमुख, अभिमुख (अणु २२२)।

समा स्त्री [समा] १ वर्ष, बारह मास का समय (जी ४१)। २ काल, समय (सम ६७; ठा २, १—पत्र ४७; कप्प)।

समाअम देखो **समागम** (अभि २०२; नाट, मालती ३२)।

समाइच्छ सक [समा + गम्] १ सामने आना। २ समादर करना, सत्कार करना। संकृ. समाइच्छिऊण (महा)।

समाइच्छिय वि [समागत] आदृत, सत्कृत (स ३७२)।

समाइट्ठ वि [समादिष्ट] फरमाया हुआ (महा)।

समाइद्ध वि [समाविद्ध] वेध किया हुआ (से ६, ३८)।

समाइण्ण वि [समाकीर्ण] व्याप्त (औप; सुर ४, २४१)।

समाइण्ण, समाइन्न वि [समाचीर्ण] अच्छी तरह आचरित (भग; उप ८१३; विचार ८६५)।

समाउट्ट अक [समा + वृत्] नम्र होना, नमना, अधीन होना। भूका. समाउट्टिंसु (सुअ २, १, १८)।

समाउट्ट वि [समावृत्त] विनम्र (वव १)।

समाउत्त वि [समायुक्त] युक्त, सहित (औप; सुपा ३०१)।

समाउल वि [समाकुल] १ समिश्र, मिश्रित (राय)। २ व्याप्त (सुपा ३०५)। ३ आकुल, व्याकुल (हे ४, ४४४; सुर ६, १७४)।

समाउलिअ वि [समाकुलित] व्याकुल बना हुआ (स ६६)।

समाएस पुं [समादेश] १ आज्ञा, हुकुम (उप १०२१ टी)। २ विवाह आदि के उपलक्ष में किए हुए जीमन में बचा हुआ वह खाद्य जिसको निर्ग्रन्थों में बाँटने का संकल्प किया गया हो (पिंड २२६; २३०)।

समाएसण न [समादेशन] आज्ञा, हुकुम (भवि)।

समाओग पुं [समायोग] स्थिरता (तंदु १४)।

समाओसिय वि [समातोषित] संतुष्ट किया हुआ (भवि)।

समाकरिस सक [समा + कृष्] खींचना। हेकृ. समाकरिसिउं (पि ५७५)।

समाकरिसण न [समाकर्षण] खींचाव (सुपा ४)।

समाकार सक [समा + कारय्] आह्वान करना, बुलाना। संकृ. समाकारिय (सम्मत्त २२६)।

समागच्छ° देखो **समागम** = समा + गम्।

समागत देखो **समागय** (सुर २, ८०)।

समागम सक [समा + गम्] १ सामने आना। २ आगमन करना। ३ जानना। समागच्छइ (महा)। भवि. समागमिस्सइ (पि ५२३)। संकृ समागच्छिअ (पि ५८१), 'विन्नाणेण समागम्म (उत्त २३, ३१)।

समागम पुं [समा + गम्] १ संयोग, संबन्ध (गउड; महा)। २ प्राप्ति (सुअ १, ७, ३०)।

समागमण न [समागमन] ऊपर देखो (महा)।

समागय वि [समागत] आया हुआ (पि ३६७ ए)।

समागूढ वि [समागूढ] समाश्लिष्ट, आलिंगित (पउम ३१, १२२)।

समाज पुं [समाज] समूह, संघात (धर्मवि १२३)। देखो **समाय** = समाज।

समाजुत्त न [समायुक्त] संयोजन, जोड़ना (राय ४०)।

समाढत्त वि [समारब्ध] १ आरब्ध, जिसका प्रारम्भ किया गया हो वह (काल; पि २२३; २८६)। २ जिसने आरम्भ किया हो वह; 'एवं भणिउं समाढत्तो' (सुर १, ६६)।

समाण सक [भुज्] भोजन करना, खाना। समाणइ (हे ४, ११०; कुमा)।

समाण सक [सम् + आप्] समाप्त करना, पूरा करना। समाणइ (हे ४, १४२), समाणेमि (स ३७९)।

समाण वि [समान] १ सदृश, तुल्य, सरिखा (कप्प)। २ मान-सहित, अहंकारी (से ३, ४६)। ३ पुंन. एक देव-विमान (सम ३५)।

समाण वि [सत्] विद्यमान, होता हुआ (उवा; विपा १, २—पत्र ३४)। स्त्री. °णी (भग; कप्प)।

समाण देखो **संमाण** = संमान (से ३, ४६)।

समाणअ वि [समापक] समाप्त करनेवाला (से ३, ४६)।

समाणण न [भोजन] भक्षण, खाना; 'तंबोल-समाणणपज्जाउलवयणाए' (स ७२)।

समाणत्त वि [समाज्ञप्त] जिसको हुकुम दिया गया हो वह (महा)।

समाणिअ देखो **संमाणिय** (से ३, २४)।

समाणिअ वि [समानीत] जो लाया गया हो वह, आनीत (महा; सुपा ५०५)।

समाणिअ वि [समाप्त] पूरा किया हुआ (से ६, ६२; णाया १, ८—पत्र १३३; स ३०१; कुमा ६, ६५)।

समाणिअ वि [दे] म्यान किया हुआ, म्यान में डाला हुआ; 'विलिएण तक्खणं चेव समाणियं मंडलग्गं' (स २४२)।

समाणिअ वि [भुक्त] भक्षित, खाया हुआ (स ३१५)।

समाणिआ स्त्री [समानिका] छन्द-विशेष (पिंग)।

समाणी सक [समा + नी] ले आना। समाणेइ (विसे १३२५)।

समाणो देखो **समाण = सत्**।

समाणु (अप) देखो **समं** (हे ४, ४१८; कुमा)।

समादह सक [समा + दह] जलाना, सुलगाना। वकृ. **समादहमाण** (आचा १, ६, २, १४)।

समादा सक [समा + दा] ग्रहण करना। संकृ. **समादाय** (आचा १, २, ६, ३)।

समादाण न [समादान] ग्रहण (राज)।

समादिट्ठ वि [समादिष्ट] फरमाया हुआ (मोह ८६)।

समादिस सक [समा + दिश्] आज्ञा करना। संकृ **समादिसिअ** (नाट)।

समादेस देखो **समाएस** (नाट—मालती ४६)।

समाधारणया स्त्री [समाधारणा] समान भाव से स्थापन (उत्त २६, १)।

समाधि देखो **समाहि** (ठा १०—पत्र ४७३)।

समापणा स्त्री [समापना] समाप्ति (विसे ३५६५)।

समाभरिअ वि [समाभरित] आभरण-युक्त (अणु २५३)।

समाय पुं [समाज] १ सभा, परिषत् (उत्त ३०, १७; अच्चु ४)। २ पशु-भिन्न अन्यों का समूह, संघात। ३ हाथी (षड्)।

समाय पुं [समाय] सामायिक, संयम-विशेष (विसे १४२१)।

समाय देखो **समवाय**; 'एते चेव य दोसा पूरिससमाएवि इत्थियाणंपि' (सूअनि ६३; राज)।

समायं देखो **समयं** (भग २६, १—पत्र ६४०)।

समायण्ण सक [समा + कर्णय्] सुनना। संकृ. **समायण्णिऊण** (महा)।

समायण्णण न [समाकर्णन] श्रवण (गउड)।

समायण्णिय वि [समाकर्णित] सुना हुआ (काल)।

समायय सक [समा + दद्] ग्रहण करना, स्वीकार करना। समाययंति (उत्त ४, २)।

समायय देखो **समागय** (भवि)।

समायर सक [समा + चर्] आचरण करना। समायरइ (उवा; उव), समायरेसि (निसा ५)। कृ. **समायरियव्व** (उवा)।

समायरिय वि [समाचरित] आचरित (गउड)।

समाया देखो **समादा**। संकृ. **समायाय** (आचा १, ३, १, ४)।

समायाय वि [समायात] समागत (उप ७२८ टी)।

समायार पुं [समाचार] १ आचरण (विपा १, १—पत्र १२)। २ सदाचार (अणु १०२)। ३ वि. आचरण करनेवाला (णंदि ५२)।

समार सक [समा + रचय्] १ ठीक करना, दुरुस्त करना। २ करना, बनाना। समारइ (हे ४, ९५; महा)। भूका. समारीअ (कुमा)। वकृ. **समारंत** (पउम ६८, ४०)।

समार सक [समा + रभ्] प्रारंभ करना। समारइ (षड्)।

समार वि [समारचित] बनाया हुआ, 'अद्धसमारम्मि जरकुडीरम्मि' (सुर २, ९९)।

समारंभ सक [समा + रभ्] १ प्रारम्भ करना। २ हिंसा करना। समारंभेज्जा (आचा)। वकृ. **समारंभंत, समारंभमाण** (आचा)। प्रयो. समारंभावेज्जा (आचा)।

समारंभ पुं [समारम्भ] १ पर-परिताप, हिंसा (आचा; पण्ह १, १—पत्र ५; श्रा ७); 'परितावकरो भवे समारंभो' (संबोध ४१)। २ प्रारंभ (कप्पू)।

समारचण } न [समारचन] १ ठीक करना, **समारण** } दुरुस्त करना; 'कारेइ जिणहराणं समारणं जुण्णभग्गपडियाणं' (पउम ११, ३)। २ वि. विधायक, कर्ता (कुमा)।

समारद्ध देखो **समाढत्त** (सुर १, १; स ७६४)।

समारभ } देखो **समारंभ = समा + रभ्**। **समारह** } समारभे, समारभेजा, समारभेजासि, समारहइ (सूअ १, ८, ५; पि ४६०; षड्)। संकृ. **समारब्भ** (पि ५६०)।

समारिय वि [समारचित] दुरुस्त किया हुआ (कुप्र ३३४)।

समारुह सक [समा + रुह्] आरोहण करना, चढ़ना। समारुहइ (भवि; पि ४८२)। वकृ. **समारुहंत** (गा ११)। संकृ. **समारुहिय** (महा)।

समारुहण न [समारोहण] आरोहण, चढ़ना (सुपा २५३)।

समारूढ वि [समारूढ] चढ़ा हुआ (महा)।

समारोव सक [समा + रोपय्] चढ़ाना। संकृ. **समारोविय** (पि ५९०)।

समालंकार } देखो **समलंकार = समलं +** **समालंके** } **कारय्**। समालंकारेइ, समालंकेइ (औप; आचा २, १५, १८)। संकृ. **समालंकारेत्ता, समालंकेत्ता** (औप; आचा २, १५, १८)।

समालंब पुं [समालम्ब] आलम्बन, सहारा (संबोध ४०)।

समालंभण न [समालम्भन] अलंकरण, विभूषा करना; 'मंगलसमालंभणाणि विरएमि' (अभि १२७)। देखो **समालभण**।

समालत्त वि [समालपित] उक्त, कथित; 'पवणंजओ समालत्तो' (पउम १५, ८८)।

समालभण न [समालभन] विलेपन, अंगराग (सुर १६, १४)। देखो **समालंभण**।

समालव सक [समा + लप्] विस्तार से कहना। समालवेज्जा (सूअ १, १४; २४)।

समालवणी स्त्री [समालपनी] वाद्य-विशेष, 'विणुवीणासमालवणिरवसुंदरं झल्लरिघोससंमीसखरमुहिसरं' (सुपा ५०)।

समालविय देखो **समालत्त** (भवि)।

समालह सक [समा + लभ्] १ विलेपन करना। २ विभूषा करना, अलंकार पहनना। संकृ. **समालहिवि** (अप) (भवि)।

समालहण देखो **समालभण** (सुपा १०८; दस ३, १ टी; नाट—शकु ७३)।

समालाव पुं [समालाप] बातचीत, संभाषण (पउम ३०, ३)।

समालिंगिअ वि [समालिङ्गित] आलिंगित, आश्लिष्ट (भवि)।

समालीढ वि [समाश्लिष्ट] ऊपर देखो (भवि)।

समालोच पुं [समालोच] विचार, विमर्श (उप ३६६)।

समालोयण न [समालोचन] सामान्य अर्थ का दर्शन (विसे २७६)।

समाव सक [सम् + आप्] पूरा करना। समावेइ (हे ४, १४२)। कर्म. समप्पइ (हे ४, ४२२)।

समावज्जिय वि [समावर्जित] प्रसन्न किया हुआ (महा)।

समावड अक [समा + पत्] १ संमुख आकर पड़ना, गिरना। २ लगना। ३ सम्बन्ध करना। समावडइ (भवि)।

समावडण न [समापतन] पड़ना, गिरना (गउड)।

समावडिय वि [समापतित] १ संमुख आकर गिरा हुआ (सुर २, ६; सुपा २०३)। २ बद्ध (ओप)। ३ जो होने लगा हो वह; 'समावडियं जुद्धं' (स ३८३; महा)।

समावण्ण वि [समापन्न] संप्राप्त (सम १३४; भग)।

समावत्ति स्त्री [समावाप्ति] समाप्ति, पूर्णता; 'ते य समावत्तीए विहरंता' (सुख २, ७)।

समावद सक [समा + वद्] बोलना, कहना। समावदेज्जा (आचा १, १५, ५४)।

समावन्न देखो **समावण्ण** (स ४७६; उवा; ठा २, १—पत्र ३८; दस ५, २, २)।

समावय देखो **समावद**। समावइज्जा (आचा २, १५, ५)।

समावय देखो **समावड**। वकृ. **समावयंत** (दस ६, ३, ८)।

समाविअ वि [समापित] पूर्ण किया हुआ (गा ६१; दे ७, ४५)।

समास अक [सम् + आस्] १ बैठना। २ रहना। समासइ (भवि)।

समास सक [समा + अस्] अच्छी तरह फेंकना। कर्म. समासिज्जंति (णंदि २२६)।

समास पुं [समास] १ संक्षेप, संकोच (जीवस १; जी २१)। २ सामायिक, संयम-विशेष (विसे २७६५)। ३ व्याकरण-प्रसिद्ध एक प्रक्रिया, अनेक पदों के मेल करने की रीति (पण्ह २, २—पत्र ११४; अणु, विसे १००३)। ४ समीप (दश वै० वृद्ध० पत्र)।

समासंग पुं [समासङ्ग] संयोग (गा ६६१ ?)।

समासंगय वि [समासंगत] संगत, सम्बद्ध (रंभा)।

समासज्ज देखो **समासाद**।

समासत्थ वि [समाश्वस्त] १ आश्वासन-प्राप्त (पउम १८, २८; से १२, ३७; सुख २, ६)। २ स्वस्थ बना हुआ (स १२०; सुर ६, ६६)।

समासय पुं [समाश्रय] आश्रय, स्थान (पउम ७, १६८; ४२, ३५)।

समासव सक [समा + स्रु] आना, आगमन करना। समासवदि (द्रव्य ३१)।

समासस देखो **समस्सस**। कृ. **समाससि-अव्व** (से ११, ६५)।

समासाद (शौ) सक [समा + सादय्] प्राप्त करना। समासादेहि (स्वप्न ३७)। कृ. **समासादइदव्व** (मा ३६)। संकृ. **समा-सज्ज, समासिज्ज** (आचा १, ८, ८, १; पि २१)।

समासादिअ वि [समासादित] प्राप्त (दस १, १ टी)।

समासासिय वि [समाश्वासित] जिसको आश्वासन दिया गया हो वह (महा)।

समासि सक [समा + श्रि] सम्यग् आश्रय करना। कर्म. समासिज्जइ, समासिज्जति (णंदि २२६)।

समासिज्ज देखो **समासाद**।

समासिय वि [समाश्रित] आश्रय-प्राप्त (पउम ८०, ६४)।

समासिय वि [समासित] उपवेशित, बैठाया हुआ (भवि)।

समासीण वि [समासीन] बैठा हुआ (महा)।

समाहट्टु देखो **समाहर**।

समाहड वि [समाहृत] १ विशुद्ध, निर्मल; 'असमाहडाए लेस्साए' (आचा २, १, ३, ६)। २ स्वीकृत (राज)।

समाहय वि [समाहत] आघात-प्राप्त, आहत (ओप; सुर ४, १२७; सण)।

समाहर सक [समा + हृ] ग्रहण करना। २ एकत्रित करना। संकृ. **समाहट्टु** (सूअ १, ८, २६; १, १०, १५), **समाहरिवि** (अप) (भवि)।

समाहविअ वि [समाहूत] आहुत, बुलाया हुआ (धर्मवि ६०)।

समाहाण न [समाधान] १ समाधि (उप ३२० टी)। २ औत्सुक्य-निवृत्ति रूप स्वास्थ्य, मानसिक शान्ति, चित्त-स्वस्थता (अणु १३६; सुपा ५४८)।

समाहार पुं [समाहार] १ समूह, 'छद्दव्व-समाहारो भाविज्जइ एस जियलोओ' (श्रु ११५)। °**दंद** पुं [°द्वन्द्व] व्याकरण-प्रसिद्ध समास-विशेष (चेइय ६६०)।

समाहारा स्त्री [समाहारा] १ दक्षिण रुचक पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८—पत्र ४३६; इक)। २ पक्ष की बारहवीं रात्रि (सुज्ज १०, १४)।

समाहि पुंस्त्री [समाधि] १ चित्त की स्वस्थता, मनोदुःख का अभाव (सम ३७, उत्त १६, १; सुख १६, १; चेइय ७७७)। २ स्वस्थता; 'साहाहि रुक्खो लभते समाहि छिन्नाहि सहाहि तमेव खाणुं' (उत्त १४, २६)। ३ धर्म। ४ शुभ ध्यान, चित्त की एकाग्रता-रूप ध्यानावस्था (सूअ १, १०, १; सुपा ८६)। ५ समता, राग आदि का अभाव (ठा १० टी—पत्र ४७४)। ६ श्रुतज्ञान। ७ चारित्र, संयमानुष्ठान (ठा ४, १—पत्र १६५)। ८ पुं. भरतक्षेत्र के सतरहवें भावी तीर्थंकर (सम १५४; पव ४६)। °**पडिमा** स्त्री [°प्रतिमा] समाधि-विषयक व्रत-विशेष (ठा ४, १)। °**पाण** न [°पान] शक्कर आदि का पानी (भत्त ४०)। °**मरण** न [°मरण] समाधि-युक्त मौत (पडि)।

समाहिअ वि [समाहित] १ समाधि-युक्त (सूअ १, २, २, ४; सूअनि १०६, उत्त १६, १५; पउम ६०, २४; ओप; महा)। २ अच्छी तरह व्यवस्थापित। ३ उपशमित (आचा १, ८, ६, ३)। ४ समर्पित (विसे ३५६३)। ५ शोभन, सुन्दर। ६ अबीभत्स। ७ निर्दोष (सूअ १, ३, १, १०)।

समाहिअ वि [समाहृत] गृहीत (आचा १, ८, ५, २)।

समाहिअ वि [समाख्यात] सम्यग् कथित (सूत्र १, ६, २६; आचा २, १६, ४)।

समाहुत्त (अप) नीचे देखो (भवि)।

समाहूअ वि [समाहूत] बुलाया हुआ, आकारित (सार्ध १०५)।

समाहे सक [समा + धा] स्वस्थ करना, 'सुक्कज्झाणं समाहेइ' (संबोध ५१)।

समि स्त्री [शमि] देखो समी (अणु; पाअ)।

समि, **समिअ** वि [शमिन्, °क] १ शम-युक्त। २ पुं. साधु, मुनि (सुपा ४३६; ६४२; उप १४२ टी)।

समिअ देखो संत = शान्त (सिरि ११०४)।

समिअ वि [समित] सम्यक् प्रवृत्ति करनेवाला, सावधान होकर गति आदि करनेवाला (भग; उप ६०४; कप्प; औप; उव; सूत्र १, १६, २; पव ७२)। २ राग-आदि से रहित (सूत्र १, ६, ४)। ३ उपपन्न (सुज्ज ६)। ४ सम्यग् गत (सूत्र १, ६, ४)। ५ सन्तत (ठा २, २—पत्र ५८)। ६ सम्यग् व्यवस्थित (सूत्र २, ५, ३१)।

समिअ वि [सम्यञ्च्] १ सम्यक् प्रवृत्तिवाला (भग २, ५—पत्र १४०)। २ अच्छा, सुन्दर, शोभन, समीचीन (सूत्र २, ५, ३१)।

समिअ वि [शमित] शान्त किया हुआ (विसे २४५८; औप; पण्ह २, ५—पत्र १४८; सण)।

समिअ वि [श्रमित] श्रम-युक्त (भग २, ५—पत्र १४०)।

समिअ वि [समिक] सम, राग-द्वेष-रहित; 'समियभावे' (पण्ह २, ५—पत्र १४६)।

समिअ न [साम्य] समता, रागादि का अभाव, सम-भाव (सूत्र १, १६, ५; आचा १, ८, ८, १४)।

समिअ वि [संमित] प्रमाणोपेत (णाया १, १—पत्र ६२; भग)।

समिअ वि [सामित] गेहूँ के आटा का बना हुआ पक्वान्न-विशेष, मण्डक (पिंड २४५)।

समिअं अ [सम्यग्] अच्छी तरह (आचा; पण्ह २, ३—पत्र १२३)।

समिआ स्त्री. अ. ऊपर देखो (भग २, ५—पत्र १४०; आचा १, ५, ५, ४), 'समियाए' (आचा १, ५, ५, ४)।

समिआ स्त्री [समिता] गेहूँ का आटा (णाया १, ८—पत्र १३२; सुख ४, ५)।

समिआ स्त्री [समिका, शमिका, शमिता] चमर आदि सब इन्द्रों की एक अभ्यन्तर परिषद् (भग ३, १० टी—पत्र २०२)।

समिइ स्त्री [समिति] १ सम्यक् प्रवृत्ति, उपयोग-पूर्वक गमन-भाषण आदि क्रिया (सम १०; ओघभा ३; उव; उप ६०२; रयण ४)। २ सभा, परिषद्; 'नत्थि किर देवलोगेवि देवसमिईसु ओगासो' (विवे १३६ टी; तंदु २५ टी)। ३ युद्ध, लड़ाई (रयण ४)। ४ निरन्तर मिलन (अणु ४२)।

समिइ स्त्री [स्मृति] १ स्मरण। २ शास्त्र-विशेष; मनुस्मृति आदि (सिरि ५५)।

समिइम वि [समितिम] गेहूँ के आटे की बनी हुई मंडक आहि वस्तु (पिंड २०२)।

समिंजग पुं [समिञ्जक] त्रीन्द्रिय जन्तु की एक जाति (उत्त ३६, १३६)।

समिक्ख सक [सम् + ईक्ष्] १ आलोचना करना, गुणदोष-विचार करना। २ पर्यालोचन करना, चिन्तन करना। ३ अच्छी तरह देखना, निरीक्षण करना। समिक्खए (उत्त २३, २५)। संकृ. समिक्ख (सूत्र १, ६, ४; उत्त ६, २; महा; उपपं २५)।

समिक्खा स्त्री [समीक्षा] पर्यालोचना (सूत्र १, ३, ३, १४)।

समिक्खिअ वि [समीक्षित] आलोचित (धर्मसं ११११)।

समिच्च देखो समे।

समिच्छण न [समीक्षण] समीक्षा (भवि)।

समिच्छिय देखो समिक्खिअ (भवि)।

समिज्झ अक [सम् + इन्ध्] चारों तरफ से चमकना। समिज्झाइ (हे २, २८)। वकृ. समिज्झन्त (कुमा ३, ४)।

समिता देखो समिआ = समिका (ठा ३, २—पत्र १२७; भग ३, १०—पत्र ३०२)।

समिद्ध वि [समृद्ध] १ अतिशय संपत्तिवाला (औप; णाया १, १ टी—पत्र १)। २ वृद्ध, बड़ा हुआ (प्रासू १३)।

समिद्धि स्त्री [समृद्धि] १ अतिशय संपत्ति। २ वृद्धि (हे १, ४४; षड्; कुमा; स्वप्न ६५; प्रासू १२८)। °ल वि [°ल] समृद्धिवाला (सुर १, ४६)।

समिर पुं [समिर] पवन, वायु (सम्मत्त १५६)।

समिरिईअ, **समिरीय** देखो स-मिरिईअ = समरीचिक।

समिला स्त्री [शमिला, सम्या] युग-कीलक, गाड़ी की धोंसरी में दोनों ओर डाला जाता लकड़ी का खीला (उप पृ १३८; सुपा २५८)।

समिल्ल देखो संमिल्ल। समिल्लइ (षड्)।

समिहा स्त्री [समिध्] काष्ठ, लकड़ी (अंत ११; पउम ११, ७६; पिंड ४४०)।

समी स्त्री [शमी] १ वृक्ष-विशेष, छोंकर का पेड़ (सूत्र १, २, २, १६ टी; उप १०३१ टी, वज्जा १५०)। २ शिंबा, छिमी, फली (पाअ)। °खलय न [दे] छोंकर की पत्ती, शमी वृक्ष का पत्र-पुट (सूत्र १, २, २, १६ टी; बृह १)।

समीअ देखो समीव (नाट—मालवि ५)।

समीकय वि [समीकृत] समान किया हुआ, 'जं किंचि अणगं तात तंपि समीकतं' (सूत्र १, ३, २, ८; गउड)।

समीचीण वि [समीचीन] साधु, सुन्दर, शोभन (नाट—चैत ४७)।

समीर सक [सम् + ईरय्] प्रेरणा करना। समीरए (आचा १, ८, ८, १७)।

समीर पुं [समीर] पवन, वायु (पाअ; गउड)।

समीरण पुं [समीरण] ऊपर देखो (गउड)।

समील देखो संमील। समीलइ (षड्)।

समीव वि [समीप] निकट, पास (पउम ६६, ८; महा)।

समीह सक [सम + ईह्] चाहना, वांछा करना। वकृ. समीहमाण (उप ३२० टी)।

समीहा स्त्री [समीहा] इच्छा, वांछा (उप १०३१ टी)।

समीहिय वि [समीहित] इष्ट, वांछित (महा)।

समीहिय देखो समिक्खिअ (वव ३)।

समुआचार पुं [समुदाचार] समीचीन आचरण (दे २, ६४)।

समुइअ वि [समुचित] योग्य, उचित (से १३, ६८; महा)।

समुइअ वि [समुदित] १ परिवृत, 'गुण-समुइओ' (उव; स २८६)। २ एकत्रित (विसे २६२४)।

समुइन्न वि [समुदीर्ण] उदय-प्राप्त (सुपा ६१४)।

समुईर देखो समुदीर। कर्म. 'जह वुड्ढगाण मोहो समुईरइ किंनु तरुणाण' (गच्छ ३, १५)।

समुक्कस देखो समुक्करिस (उत्त २३, ८८)।

समुक्कत्तिय वि [समुत्कर्तित] काट डाला हुआ (सुर १४, ४५)।

समुक्करिस पुं [समुत्कर्ष] अतिशय उत्कर्ष (उत्त २३, ८८; सुख २३, ८८)।

समुक्कस सक [समुत् + कृष्] १ उत्कृष्ट बनाना। २ अक. गर्व करना। समुक्कसेज्जा (ठा ३, १—पत्र ११७), समुक्कसंति (प्रासू १६५)।

समुक्किट्ठ वि [समुत्कृष्ट] उत्कृष्ट (ठा ३, १—पत्र ११७)।

समुक्कित्तण न [समुत्कीर्तन] उच्चारण (सुपा १४६)।

समुक्खअ वि [समुत्खात] उखाड़ा हुआ (गा २७६)।

समुक्खण सक [समुत् + खन्] उखाड़ना। समुक्खणइ (गा ६८४)। वकृ. समुक्खणंत (सुपा ५४१)।

समुक्खणण न [समुत्खनन] उन्मूलन, उत्पाटन (कुप्र १७४)।

समुक्खित्त वि [समुत्क्षिप्त] उठा कर फेंका हुआ (से ११, ७२)।

समुक्खिव सक [समुत् + क्षिप्] उठा कर फेंकना। समुक्खिवइ (पि ३१६; सण)।

समुग्ग पुं [समुद्ग] १ डिब्बा, संपुट (सम ६३; अणु; णाया १, १७ टी; धर्मवि १५; औप; पण्ण ३६—पत्र ८३७; महा)। २ पक्षि-विशेष (जी २२; ठा ४, ४—पत्र २७१)।

समुग्गद (शौ) वि [समुद्गत] समुद्भूत, समुत्पन्न (नाट—मालती ११६)।

समुग्गम पुं [समुद्गम] समुद्भव (नाट—रत्ना १३)।

समुग्गिअ वि [दे] प्रतीक्षित (दे ८, १३)।

समुग्गिण्ण वि [समुद्गीर्ण] उगामा हुआ, उत्तोलित, ऊपर उठाया हुआ (पउम १५, ७४)।

समुग्गिर सक [समुद् + गृ] ऊपर उठाना, उगामना। वकृ. समुग्गिरंत (पउम ६५, ४८)।

समुग्घडिअ वि [समुद्घाटित] खुला हुआ (धर्मवि १५)।

समुग्घाइअ वि [समुद्घातित] विनाशित (प्रासू १६५)।

समुग्घाय पुं [समुद्घात] कर्म-निर्जरा विशेष, जिस समय आत्मा वेदना, कषाय आदि से परिणत होता है उस समय वह अपने प्रदेशों को बाहर कर उन प्रदेशों से वेदनीय, कषाय आदि कर्मों के प्रदेशों की जो निर्जरा—विनाश करता है वह; ये समुद्घात सात हैं—वेदना, कषाय, मरण, वैक्रिय, तैजस, आहारक और केवलिक (पण्ण ३६—पत्र ७६३; भग; औप; विसे ३०५०)।

समुग्घायण न [समुद्घातन] विनाश (विसे ३०५०)।

समुग्घुट्ठ वि [समुद्घोषित] उद्घोषित (सुर ११, २६)।

समुघाय देखो समुग्घाय (दं ३)।

समुच्चय पुं [समुच्चय] विशिष्ट राशि, ढग, समूह (भग ८, ६—पत्र ३६५; भवि)।

समुच्चर सक [समुत् + चर्] उच्चारण करना, बोलना। समुच्चरइ (चेइय ६४१)।

समुच्चलिअ वि [समुच्चलित] चला हुआ (उप पृ ४८; भवि)।

समुच्चिण सक [समुत् + चि] इकट्ठा करना, संचय करना। समुच्चिणइ (गा १०४)।

समुच्चिय वि [समुच्चित] एक क्रिया आदि में अन्वित (विसे ५७६)।

समुच्छ सक [समुत् + छिद्] १ उन्मूलन करना, उखाड़ना। २ दूर करना। समुच्छे (सूअ १, २, २, १३)। भवि. समुच्छिहिति (सूअ २, ५, ४)। संकृ. समुच्छित्ता (सूअ २, ४, १०)।

समुच्छइय वि [समवच्छादित] सतत आच्छादित (पउम ६३, ७)।

समुच्छणी स्त्री [दे] संमार्जनी, झाड़ू (दे ८, १७)।

समुच्छल अक [समुत् + शल्] १ उछलना, ऊपर उठना। २ विस्तीर्ण होना। समुच्छले (गच्छ १, १५)। वकृ. समुच्छलंत (सुर २, २३६)।

समुच्छलिअ वि [समुच्छलित] १ उछला हुआ। २ विस्तीर्ण (गच्छ १, ६; महा)।

समुच्छारण न [समुत्सारण] दूर करना (अभि ६०)।

समुच्छिअ वि [दे] १ तोषित, संतुष्ट किया हुआ। २ समारचित। ३ न. अंजलि-करण, नमन (दे ८, ४६)।

समुच्छिद (शौ) वि [समुच्छ्रित] अति-उन्नत (पि २८७)।

समुच्छिन्न वि [समुच्छिन्न] क्षीण, विनष्ट (ठा ४, १ पत्र—१८७)।

समुच्छुंगिय वि [समुच्छृङ्गित] टोच पर चढ़ा हुआ (हम्मीर १५)।

समुच्छुग वि [समुत्सुक] अति-उत्कण्ठित (सुर २, २१५; ४, १७७)।

समुच्छेद, **समुच्छेय** पुं [समुच्छेद] सर्वथा विनाश (ठा ८—पत्र ४२५; राज)। °वाइ वि [°वादिन्] पदार्थ को प्रतिक्षण सर्वथा विनश्वर माननेवाला (ठा ८—पत्र ४२५; राज)।

समुज्जम अक [समुद् + यम्] प्रयत्न करना। वकृ. समुज्जमंत (पउम १०२, १७६; चेइय १५०)।

समुज्जम पुं [समुद्यम] १ समीचीन उद्यम। २ वि. समीचीन उद्यमवाला (सिरि २४८)।

समुज्जल वि [समुज्ज्वल] अत्यन्त उज्ज्वल (गउड; भवि)।

समुज्जाय वि [समुद्यात] १ निर्गत (विसे २६०६)। २ ऊँचा गया हुआ (कप्प)।

समुज्जोअ अक [समुद् + द्युत्] चमकना, प्रकाशना। वकृ. **समुज्जोयंत** (पउम ११६, १७)।

समुज्जोअ पुं [समुद्द्योत] प्रकाश, दीप्ति (सुपा ४०; महा)।

समुज्जोवय सक [समुद् + द्योतय्] प्रकाशित करना। वकृ. **समुज्जोवयंत** (स ३४०)।

समुज्झ सक [सम् + उज्झ्] त्याग करना। संकृ. **समुज्झिऊण** (वै ८७)।

समुट्ठा अक [समुत् + स्था] १ उठना। २ प्रयत्न करना। ३ ग्रहण करना। ४ उत्पन्न होना। संकृ. **समुट्ठिऊण** (सण), **समुट्ठाए, समुट्ठिऊण** (आचा १, २, २, १; १, २, ६, १; सण)।

समुट्ठाइ वि [समुत्थायिन्] सम्यग् यत्न करनेवाला (आचा)।

समुट्ठाइअ देखो **समुट्ठिअ** (स १२५)।

समुट्ठाण न [समुपस्थान] फिर से वास करना। °**सुय** न [°श्रुत] जैन शास्त्र-विशेष (णंदि २०२)।

समुट्ठाण न [समुत्थान] १ सम्यग् उत्थान। २ निमित्त, कारण (राज)। देखो **समुत्थाण**।

समुट्ठिअ वि [समुत्थित] १ सम्यक् प्रयत्न-शील (सूअ १, १४, २२)। २ उपस्थित। ३ प्राप्त (सूअ १, ३, २, ६)। ४ उठा हुआ, जो खड़ा हुआ हो वह (सुर १, ९६)। ५ अनुष्ठित, विहित (सूअ १, २, २, ३१)। ६ उत्पन्न (णाया १, ६—पत्र १५६)। ७ आश्रित (राज)।

समुड्डीण वि [समुड्डीन] उड़ा हुआ (वज्जा ६२; मोह ६३)।

समुण्णइय देखो **समुत्तइय** (राज)।

समुत्त न [संमुक्त] १ गोत्र-विशेष। २ पुंस्त्री. उस गोत्र में उत्पन्न; 'समुता (?त्ता)' (ठा ७—पत्र ३९०)। देखो **समुत्त**।

समुत्तइय वि [दे] गर्वित (पिंड ४६५)।

समुत्तर सक [समुत् + तॄ] १ पार जाना। २ अक. नीचे उतरना। ३ अवतीर्ण होना। समुत्तरइ (गउड ६४१; १०६६)। संकृ. **समुत्तरेवि** (अप) (भवि)।

समुत्तारावित्र वि [समुत्तारित] १ पार पहुँचाया हुआ। २ कूप आदि से बाहर निकाला हुआ (स १०२)।

समुत्तास सक [समुत् + त्रासय्] अति-शय भय उपजाना। समुत्तासेदि (शौ) (नाट—मालती ११६)।

समुत्तिण्ण वि [समवतीर्ण] अवतीर्ण (पउम १०६, ४२)।

समुत्तुंग वि [समुत्तुङ्ग] अति ऊँचा (भवि)।

समुत्तुग वि [दे] गर्वित (गउड)।

समुत्थ वि [समुत्थ] उत्पन्न (स ४८; ठा ४, ४ टी—पत्र २८०; सुर २, २२५; सुपा ४७०)।

समुत्थइउं देखो **समुत्थय** = समुत् + स्थगय्।

समुत्थण न [समुत्थान] उत्पत्ति (णाया १, ६—पत्र १५७)।

समुत्थय सक [समुत् + स्थगय्] आच्छा-दन करना, ढकना। हेकृ. **समुत्थइउं** (गा ३६४ अ; पि ३०६)।

समुत्थय वि [समवस्तृत] आच्छादित (कुप्र १६२)।

समुत्थल्ल वि [समुच्छलित] उछला हुआ (स ५७८)।

समुत्थाण न [समुत्थान] निमित्त, कारण (विसे २८२८)। देखो **समुट्ठाण**।

समुत्थिय देखो **समुट्ठिअ** (भवि)।

समुदय पुं [समुदय] १ समुदाय, संहति, समूह (औप; भग; उवर १८६)। २ समुन्नति, अभ्युदय (कुप्र २२)।

समुदाआर } **समुदाचार** } देखो **समुआचार** (स्वप्न ४५; नाट—शकु ७७; औप; स ५६५)।

समुदाण न [समुदान] १ भिक्षा (औप)। २ भिक्षा-समूह (भग)। ३ क्रिया-विशेष, प्रयोग-गृहीत कर्मों को प्रकृति-स्थित्यादि-रूप से व्यवस्थित करनेवाली क्रिया (सूअनि १६६)। ४ समुदाय (आव ४)। °**चर** वि [°चर] भिक्षा की खोज करनेवाला (पण्ह २, १—पत्र १००)।

समुदाण सक [समुदानय्] भिक्षा के लिए भ्रमण करना। संकृ. **समुदाणेऊण** (पण्ह २, १—पत्र १०१)।

समुदाणिअ देखो **सामुदाणिय** (औप; भग ७, १—पत्र २६३)।

समुदाणिगा स्त्री [सामुदानिकी] क्रिया-विशेष, समुदान-क्रिया (सूअनि १६८)।

समुदाय पुं [समुदाय] समूह (अणु २७० टी; विसे ६२१)।

समुदाहिय वि [समुदाहृत] प्रतिपादित, कथित (उत्त ३६, २१)।

समुदिअ देखो **समुइअ** = समुदित (सूअनि १२१ टी; सुर ७, ५६)।

समुदिण्ण देखो **समुइन्न** (राज)।

समुदीर सक [समुद् + ईरय्] १ प्रेरणा करना। २ कर्मों को खींच कर उदय में लाना, उदीरणा करना। वकृ. **समुदी [?दी] रेमाण** (णाया १, १७—पत्र २२६)। संकृ. **समुदीरिऊण** (सम्यक्त्वो ५)।

समुद्द पुं [समुद्र] १ सागर, जलधि (पाअ; णाया १, ८—पत्र १३३; भग; से १,२१; हे २,८०; कप्पू; प्रासू ६०)। २ अन्धकवृष्णि का ज्येष्ठ पुत्र (अंत ३)। ३ आठवें बलदेव और वासुदेव के पूर्व जन्म के धर्म-गुरु (सम १५३)। ४ वेलन्धर नगर का एक राजा (पउम ५४, ३६)। ५ शाण्डिल्य मुनि के शिष्य एक जैन मुनि (णंदि ४६)। ६ वि. मुद्रा-सहित (से १, २१)। °**दत्त** पुं [°दत्त] १ चौथे वासुदेव का पूर्वजन्मीय नाम (सम १५३)। २ एक मच्छीमार का नाम (विपा १, ८—पत्र ८२)। °**दत्ता** स्त्री [°दत्ता] १ हरिषेण वासुदेव की एक पत्नी (महा ४४)। २ समुद्रदत्तमच्छीमार की भार्या (विपा १, ८)। °**लिक्खा** स्त्री [°लिक्षा] द्वीन्द्रिय जंतु की एक जाति (पण्ण १—पत्र ४४)। °**विजय** पुं [°विजय] १ चौथे चक्रवर्त्ती राजा का पिता (सम १५२)। २ भगवान् अरिष्टनेमि का पिता (सम १५१; कप्प; अंत)। °**सुआ** स्त्री [°सुता] लक्ष्मी (समु १५२)। देखो **समुद्र**।

समुद्दणवणीअ न [दे. समुद्रनवनीत] १ अमृत, सुधा। २ चन्द्रमा (दे ८, ५०)।

समुद्दव सक [समुद् + द्रावय्] १ भयंकर उपद्रव करना। २ मार डालना। समुद्दवे (गच्छ २, ४)।

समुद्दहर न [दे] पानीय-गृह, पानी-घर (दे ८, २१)।

समुद्दाम वि [समुद्दाम] अति उद्दाम, प्रखर; "थुई समुद्दामसद्देण" (चेइय ६५०)।

समुद्दिस सक [समुद् + दिश्] १ पाठ को स्थिर-परिचित करने के लिए उपदेश देना। २ व्याख्या करना। ३ प्रतिज्ञा करना। ४ आश्रय लेना। ५ अधिकार करना। कर्म. समुद्दिस्सइ (उवा), समुद्दिस्सिज्जंति (अणु ३)। संकृ. **समुद्दिस्स** (आचा १, ८, २, १; २, २, १, ४; ५)। हेकृ. **समुद्दिसित्तए** (ठा २, १—पत्र ५६)।

समुद्देस पुं [समुद्देश] १ पाठ को स्थिर-परिचित करने का उपदेश (अणु ३)। २ व्याख्या, सूत्र के अर्थ का अध्यापन (वव १)। ३ ग्रंथ का एक विभाग, अध्ययन, प्रकरण, परिच्छेद (पउम २, १२०)। ४ भोजन; 'जत्थ समुद्देसकाले' (गच्छ २, ५६)।

समुद्देस वि [सामुद्देश] देखो **समुद्देसिय** (पिंड २३०)।

समुद्देसण न [समुद्देशन] सूत्रों के अर्थ का अध्यापन (णंदि २०९)।

समुद्देसिय वि [समुद्देशिक] १ समुद्देश-सम्बन्धी। २ विवाह आदि के उपलक्ष्य में किये गये जीमन में बचे हुए वे खाद्य पदार्थ जिनको सब साधु-संन्यासियों में बाँट देने का संकल्प किया गया हो (पिंड २२९)।

समुद्धर सक [समुद् + हृ] १ मुक्त करना। २ जीर्ण मन्दिर आदि को ठीक करना। समुद्धरइ (प्रासू ५)। वकृ. **समुद्धरंत** (सुपा ४७०)। संकृ. **समुद्धरेऊण** (सिक्खा ६०)। हेकृ. **समुद्धत्तुं** (उत्त २५, ८)।

समुद्धरण न [समुद्धरण] १ उद्धार। २ वि. उद्धार करनेवाला (सण)।

समुद्धरिअ वि [समुद्धृत] उद्धार-प्राप्त (गा ५९३; सण)।

समुद्धाइअ वि [समुद्धावित] समुत्थित, उठा हुआ (स ५६६; ५६७)।

समुद्धाय अक [समुद् + धाव्] उठना। वकृ. **समुद्धायंत** (पण्ह १, ३—पत्र ४५)।

समुद्धिअ देखो **समुद्धरिअ** (गच्छ ३, २९)।

समुद्धुर वि [समुद्धुर] दृढ़, मजबूत (उप १४२ टी)।

समुद्धुसिअ वि [समुद्धुषित] पुलकित, रोमाञ्चित; 'घणागमे कयंबकुसुमं व समुग्घु-(?द्धु)सियं सरीरं' (कुप्र २१०; स १८०; धर्मवि ४८)।

समुद्र पुं [समुद्र] १ एक देव-विमान (देवेन्द्र १४३)। २. देखो **समुद्द** (हे २, ८०)।

समुन्नइ स्त्री [समुन्नति] अभ्युदय (सार्ध ८२)।

समुन्नद्ध वि [समुन्नद्ध] संनद्ध, सज्ज;
'जं नमिया सयलनिवा
जिणस्स अचंतबलसमुन्नद्धा।
तेण विजएण रन्ना
नमित्ति नामं विणिम्मवियं'
(चेइय ६१३)।

समुन्नय वि [समुन्नत] अति ऊँचा (महा)।

समुपेह सक [समुत्प्र + ईक्ष्] १ अच्छी तरह देखना, निरीक्षण करना। २ पर्यालोचन करना, विचार करना। वकृ. **समुपेहमाण** (सूअ १, १३, २३)। संकृ. **समुपेहिया, समुपेहियाणं** (दस ७, ५५; महा)।

समुप्पज्ज अक [समुत् + पद्] उत्पन्न होना। समुप्पज्जइ (भग; महा)। समुप्पज्जिज्जा (कप्प)। भूका. **समुप्पज्जित्था** (भग)।

समुप्पण्ण } वि [समुत्पन्न] उत्पन्न (पि
समुप्पन्न } १०२; भग; वसु)।

समुप्पयण न [समुत्पतन] ऊँचा जाना, ऊर्ध्व-गमन, उड्डयन (गउड)।

समुप्पाअअ वि [समुत्पादक] उत्पत्ति-कर्ता (गा १८८)।

समुप्पाड सक [समुत् + पादय्] उत्पन्न करना। समुप्पाडेइ (उत्त २९, ७१)।

समुप्पाय पुं [समुत्पाद] उत्पत्ति, प्रादुर्भाव (सूअ १, १, ३, १०; आचा)।

समुप्पिंजल न [दे] अयश, अपकीर्त्ति। २ रज, धूलि (दे ८, ५०)।

समुप्पित्थ वि [दे] उत्त्रस्त, भय-भीत (सुर १३, ४४)।

समुप्पेक्ख } [समुपेह। वकृ. **समुप्पेक्ख-**
समुप्पेह } **माण, समुप्पेहमाण** (राज; आचा १, ४, ४, ४)। संकृ. **समुप्पेहं** (दस ७, ३)। देखो **समुवेक्ख**।

समुप्फालय वि [समुत्पाटक] उठाकर लाने-वाला, 'पहए जयसिरिसमुप्फालए मंगलतूरे' (स २२)।

समुप्फालिय वि [समुत्फालित] आस्फालित (भवि)।

समुप्फुंद सक [समा + क्रम्] आक्रमण करना। वकृ. **समुप्फुंदंत** (से ४, ४३)।

समुप्फोडण न [समुत्स्फोटन] आस्फालन (पउम ६, १८०)।

समुब्भड वि [समुद्भट] प्रचंड (प्रासू १०२)।

समुब्भव अक [समुद् + भू] उत्पन्न होना। समुब्भवंति (उप्पं २५)।

समुब्भव पुं [समुद्भव] उत्पत्ति (उव; भवि)।

समुब्भिय वि [समूर्च्छित] ऊँचा किया हुआ (सुपा ८८; भवि)।

समुब्भुय (अप) नीचे देखो (सण)।

समुब्भूअ वि [समुद्भूत] उत्पन्न (स ४७९; सुर २, २३५; सुपा २९५)।

समुयाण देखो **समुदाण** = समुदान (विपा १, २—पत्र २५; ओघ १८४)।

समुयाण देखो **समुदाण** = समुदानय्। वकृ. **समुयाणित** (सुख ३, १)।

समुयाणिअ देखो **समुदाणिय** (ओघ ५१२)।

समुयाय सक **समुदाय** (राज)।

समुल्लव सक [समुत् + लप्] बोलना, कहना। समुल्लवइ (सण)। वकृ. **समुल्लवंत** (सुर २, २६)। कवकृ. **समुल्लविज्जंत** (सु २, २१७)।

समुल्लवण न [समुल्लपन] कथन, उक्ति (से १२, ७४)।

समुल्लविअ वि [समुल्लपित] उक्त, कथित (सुर २, १५१; ५, २३८; प्रासू ७)।

समुल्लस अक [समुन् + लस्] उल्लसित होना, विकसना। समुल्लसइ (नाट—विक्र. ७१)। वकृ. **समुल्लसंत** (कप्प; सुर २, ८५)।

समुल्लसिय वि [समुल्लसित] उल्लास-प्राप्त (सण)।

समुल्लालिय वि [समुल्लालित] उछाला हुआ (णाया १, १८—पत्र २३७)।

समुल्लाव पुं [समुल्लाप] आलाप, संभाषण (विपा १, ७—पत्र ७८; महा; णाया १, १६—पत्र १९६)।

समुल्लास पुं [समुल्लास] विकास (गउड)।

समुवइट्ठ वि [समुपविष्ट] बैठा हुआ (उप २८८)।

समुवउत्त वि [समुपयुक्त] उपयोग-युक्त, सावधान (जीवस ३६३)।

समुवगय वि [समुपगत] समीप आया हुआ (वव ४)।

समुवज्जिय वि [समुपार्जित] उपार्जित, पैदा किया हुआ (सुपा १००; सण)।

समुवत्थिय वि [समुपस्थित] हाजिर, उपस्थित (उप ४३५)।

समुवयंत देखो **समुवे**।

समुवविट्ठ वि [समुपविष्ट] बैठा हुआ (राय ७५)।

समुवसंपन्न वि [समुपसंपन्न] समीप में समागत (धर्म ३)।

समुवहसिअ वि [समुपहसित] जिसका खूब उपहास किया गया हो वह (सण)।

समुवागय वि [समुपागत] समीप में आगत (णाया १, १६—पत्र १९६; सण)।

समुवे सक [समुपा + इ] १ पास में आना। २ प्राप्त करना। समुवेइ, समुवेंति (यति ४२; पि ४९३)। वकृ. **समुवयंत** (स ३७०)।

समुवेक्ख, **समुवेह** सक [समुत्प्र + ईक्ष्] १ निरीक्षण करना। २ व्यवहार करना, काम में लाना। वकृ. **समुवेक्खमाण**, **समुवेहमाण** (णाया १, १—पत्र ११; आचा १, ५, २, ३)।

समुव्वत्त वि [समुद्वृत्त] ऊँचा किया हुआ (से ११, ५१)।

समुव्वत्तिय वि [समुद्वर्तित] घुमाया हुआ, फिराया हुआ (सुर १३, ४३)।

समुव्वह सक [समुद् + वह्] १ धारण करना। २ ढोना। समुव्वहइ (भवि; सण)। वकृ. **समुव्वहंत** (से ६, २; नाट—रत्ना ८३)।

समुव्वहण न [समुद्वहन] सम्यग् वहन—ढोना (उव)।

समुव्विग्ग वि [समुद्विग्न] अत्यन्त उद्वेग-वाला (गा ४९२)।

समुव्वूढ वि [समुद्व्यूढ] १ विवाहित (उप पृ १२७)। २ उत्तानित, ऊँचा किया हुआ (से ११, ६०)।

समुव्वेल्ल वि [समुद्वेल्लित] अत्यन्त कँपाया हुआ, संचालित; 'गयजूहसमायड्ढियविसमसमुव्वेल्लकमलसंघायं' (पउम ६४, ५२)।

समुसरण देखो **समोसरण** (पिंड २)।

समुस्सय पुं [समुच्छ्रय] १ ऊँचाई, ऊर्ध्वता (सूअ २, ४, ७)। २ उन्नति, उत्तमता (सूअ १, १५, ७)। ३ कर्मों का उपचय (आचा)। ४ संघात, समूह, राशि, ढग (दस ६, १७; अणु २०)।

समुस्सविय वि [समुच्छ्रयित] ऊँचा किया हुआ (पउम ४०, ६)।

समुस्ससिय वि [समुच्छ्वसित] १ उल्लास-प्राप्त, 'समुस्ससियरोमकूवा' (कप्प)। २ उच्छ्वास-प्राप्त (पउम ६४, ३८)। देखो **समूससिअ**।

समुस्सिअ वि [समुच्छ्रित] ऊर्ध्व-स्थित, ऊँचा रहा हुआ (सूअ १,५,१,१५; पि ६४)।

समुस्सिणा सक [समुत् + श्रु] १ निर्माण करना, बनाना। २ संस्कार करना, सँवारना, जीर्ण मन्दिर आदि को ठीक करना। समुस्सिणासि, समुस्सिणामि (आचा १,८,२,१;२)।

समुस्सुग, **समुस्सुय** देखो **समूसुअ** (द्र ४८; महा)।

समुह देखो **संमुह** (हे १, २९; गा ६५६; कुमा; हेका ५१; महा; पाअ)।

समुहय वि [समुद्धत] समुद्घात-प्राप्त (श्रावक ९८)।

समुहि देखो **स-मुहि** = श्र-मुखि।

समूसण न [समूषण] त्रिकटुक—सूँठ, पीपल तथा मरिच या मिरचा (उत्तनि ३)।

समूसवय देखो **समुस्सविय** (पण्ह १, ३—पत्र ४५)।

समूसस अक [समुत् + श्वस्] १ ऊँचा जाना। २ उल्लसित होना। ३ ऊर्ध्व श्वास लेना। समूससंति (पि १४३)। वकृ. **समूससंत**, **समूससमाण** (गा ६०४; गउड; से ११, १३२)।

समूससिअ न [समुच्छ्वसित] १ निःश्वास (से ११, ५९)। २ देखो **समुस्ससिय** (णाया १, १—पत्र १३; कप्प; गउड)।

समूसिअ देखो **समुस्सिअ** (भग; औप; सूअ १, ५, १, ११ टी; पण्ह १, ३—पत्र ४५)।

समूसुअ वि [समुत्सुक] अति उत्कंठित (सुपा ४७७; नाट—विक्र ९२)।

समूह पुंन [समूह] समुदाय, राशि, संघात; 'मंतीहि य उवसमियं भुयंगमाणं समूहं व' (पउम १०६, १५; ओघ ४०७; गउड; भवि)।

समूह (अप) देखो **समुह** (भवि)।

समे सक [समा + इ] १ आगमन करना, आना, संमुख आना। २ जानना। ३ प्राप्त करना। ४ अक. संहत होना, इकट्ठा होना। समेइ, समेंति (भवि; विसे २२९६)। वकृ. **समेमाण** (आचा १, ८, १, २)। संकृ. **समिच्च**, **समेच्च** (सूअ १, १२, ११; पि ५९१; आचा १, ६, १, १६; पंच ३, ४५)।

समेअ, **समेत** वि [समेत] १ समागत, समायात; 'सीलवइं परिणेउं गिहं समेओ महिड्ढीए' (श्रा १६)। २ युक्त, सहित; 'तेहि समेतो अहयं वयामि जा कित्तियंपि भूभागं' (सुर १, १९८; ३, ८८; सुपा २५६; महा)।

समेर देखो **स-मेर** = स-मर्याद।

समोअर अक [समव + तृ] १ समाना, समावेश होना, अन्तर्भाव होना। २ नीचे

उतरना। ३ जन्म-ग्रहण करना। समोअरइ (अणु २४६; उव; विसे ६४५), समोअरंति सूअ २, २, ७६; अणु ५६)।

समोआर पुं [समवतार] अन्तर्भाव (अणु २४६)।

समोइन्न वि [समवतीर्ण] नीचे उतरा हुआ (सुर ७, १३४)।

समोगाढ वि [समवगाढ] सम्यग् अवगाढ (औप)।

समोच्छइअ वि [समवच्छादित] आच्छादित, अतिशय ढका हुआ (सुर १०, १५७)।

समोणम सक [समव+नम्] सम्यग् नमना—नीचा होना। वकृ. समोणमंत (औप; सुर ६, २३७)।

समोणय वि [समवनत] अति नमा हुआ (गा २८२)।

समोत्थइअ वि [समवस्थगित] आच्छादित, (से ६, ८४)।

समोत्थय वि [समवस्तृत] ऊपर देखो (उप ७७३ टी)।

समोत्थर सक [समव+स्तृ] १ आच्छादन करना, ढकना। २ आक्रमण करना। वकृ. समोत्थरंत (णाया १, १—पत्र २५; पउम ३, ७८)।

समोयार पुं [समवतार] अन्तर्भाव, समावेश (विसे ६५६; अणु)।

समोयारणा स्त्री [समवतारणा] अन्तर्भाव (विसे ६७३)।

समोयारिय वि [समवतारित] अन्तर्भावित, समावेशित (विसे ६५६)।

समोलइय वि [दे] समुत्क्षिप्त (गउड)।

समोलुग्ग वि [समवरुग्ण] रोगी, रोग-ग्रस्त (से ३, ४७)।

समोवअ सक [समव+पत्] १ सामने आना। २ नीचे उतरना। वकृ. समोवयंत, समोवयमाण (स १३६; ३३०)।

समोवइअ वि [समवपतित] नीचे उतरा हुआ (णाया १, १६—पत्र २१३)।

समोसढ्ढ, **समोसढ** वि [समवसृत] समागत, पधारा हुआ (सम्मत्त १२०; पि ६७; भग; णाया १, १—पत्र ३६; औप; सुपा ११)।

समोसर सक [समव+सृ] १ पधारना, आगमन करना। २ नीचे गिरना। समोसरेज्जा (औप; पि २३५)। हेकृ. समोसरिउं (औप)। वकृ. समोसरंत (से २, ३६)।

समोसर अक [समप+सृ] १ पीछे हटना। २ पलायन करना। समोसरइ (काप्र १६६), समोसर (हे २, १६७)। वकृ. समोसरंत (गा १६२)।

समोसरण पुंन [समवसरण] १ एकत्र मिलन, मेलापक, मेला (सुअनि ११७; राय १३३)। २ समुदाय, समवाय, समूह; 'समोसरणं निचय उवचय चए य जुम्मे य रासी य' (ओघ ४०७)। ३ साधु-समुदाय, साधु-समूह (पिंड २८५; २८८ टी)। ४ जहाँ पर उत्सव आदि के प्रसंग में अनेक साधु लोग इकट्ठे होते हों वह स्थान (सम २१)। ५ परतीर्थिकों का समुदाय, जैनेतर दार्शनिकों का समवाय (सूअ १, १२, १)। ६ धर्म-विचार, आगम-विचार (सूअ २, २, ८१; ८२)। ७ 'सूत्रकृताङ्ग सूत्र' के प्रथम श्रुतस्कंध का बारहवाँ अध्ययन (सूअनि १२०)। ८ पधारना, आगमन (उवा; औप; विपा १, ७—पत्र ७२)। ९ तीर्थंकर-देव की पर्षद्। १० जहाँ पर जिन-भगवान् उपदेश देते हैं वह स्थान (आवम; पंचा २, १७; ती ४३)। °तव पुं [°तपस्] तप-विशेष (पव २७१)।

समोसरिअ वि [समपसृत] १ पीछे हटा हुआ (गा ६५६; पउम १२, ६३)। २ पलायित (से १०, ५)।

समोसरिअ वि [समवसृत] समायात, समागत (से ७, ४१; उवा)।

समोसव सक [दे] टुकड़ा टुकड़ा करना। समोसवेंति (सूअ १, ५, २, ८)।

समोसिअ अक [समव+सद्] क्षीण होना, नाश पाना, नष्ट होना। वकृ. समोसिअंत (से ८, ७)।

समोसिअ पुं [दे] १ प्रातिवेश्मिक, पड़ोसी (दे ८, ४६; पाअ)। २ प्रदोष। ३ वि. वध्य, वध-योग्य (दे ८, ४६)।

समोहण सक [समुद्+हन्] समुद्घात करना, आत्म-प्रदेशों को बाहर निकाल कर उनसे कर्म-निर्जरा करना। समोहणइ, समोहणंति (कप्प; औप; पि ४६६)। संकृ. समोहणित्ता (भग; कप्प; औप)।

समोहय वि [समुद्धत] जिसने समुद्घात किया हो वह (ठा २, २—पत्र ६१)।

समोहय वि [समवहत] आघात-प्राप्त (सुर ७, २८)।

सम्म अक [श्रम्] १ खेद पाना। २ थकना। सम्मइ (उत्त १, ३७)।

सम्म अक [शम्] शान्त होना, ठण्ढा होना। सम्मइ (धात्वा १५५)।

सम्म न [शर्मन्] सुख (हे १, ३२; कुमा)।

सम्म वि [सम्यञ्च्] १ सत्य, सच्चा (सूअ १, ८, २३; कप्प; सम्म ८७; वसु)। २ अविपरीत, अविरुद्ध (ठा १—पत्र २७; ३, ४—पत्र १५६)। ३ प्रशंसनीय, श्लाघनीय (कम्म ४, १४; पत्र ६)। ४ शोभन, सुन्दर। ५ संगत, उचित, व्याजबी (सूअ २, ४, ३)। ६ न. सम्यग्-दर्शन (कम्म ४, ६; ४५)। °त्त न [°त्व] १ समकित, सम्यग्-दर्शन, सत्य तत्त्व पर श्रद्धा (उवा; उव; पव ६३; जी ५०; कम्म ४, १४)। २ सत्य, परमार्थ; 'सम्मत्तदंसिणो' (आचा; सूअ १, ८, २३)। °द्दिट्ठिय, °द्दिट्ठीय वि [°दृष्टिक] सत्य तत्त्व पर श्रद्धा रखनेवाला (ठा १—पत्र २७; २, २—पत्र ५६)। °द्दंसण न [°दर्शन] सत्य तत्त्व पर श्रद्धा (ठा १०—पत्र ५०३)। °द्दिट्ठि वि [°दृष्टि] देखो °द्दिट्ठिय (सूअनि १२१)। °न्नाण न [°ज्ञान] सत्य ज्ञान, यथार्थ ज्ञान (सम्म ८७; वसु)। °सुय न [°श्रुत] १ सत्य शास्त्र। २ सत्य शास्त्र-ज्ञान (णंदि)। °मिच्छद्दिट्ठि वि [°मिथ्यादृष्टि] मिश्र दृष्टिवाला, सत्य और असत्य तत्त्व पर श्रद्धा रखनेवाला (सम २६; ठा १—पत्र २८)। °वाय पुं [°वाद] १ अविरुद्ध वाद। २ दृष्टिवाद, बारहवाँ जैन अंग-ग्रंथ (ठा १०—पत्र ४६१)। ३ सामायिक, संयम-विशेष; 'सामाइयं समइयं सम्मावाओ समास संखेवो' (आव १)।

सम्मइ देखो सम्मुइ = सन्मति, स्वमति (उत्त २८, १७; आचा)।

सम्मइग देखो सामाइय (संबोध ४५)।

सम्मं अ [सम्यग्] अच्छी तरह (आचा; सूअ १, १४, ११; महा)।

सम्मुइ स्त्री [सन्मति] १ संगत मति। २ सुन्दर बुद्धि, विशद बुद्धि (उत्त २८, १७; सुख २८, १७; कप्प; आचा)। ३ पुं. एक कुलकर पुरुष (पउम ३, ५२)।

सम्मुइ स्त्री [स्वमति] स्वकीय बुद्धि (आचा)।

सम्हरिअ वि [संस्मृत] अच्छी तरह याद किया हुआ (अच्चु ३५)।

सय अक [शी, स्वप्] सोना, शयन करना। सयइ, सए, सएज्जा (कप्प; आचा १, ७, ८, १३; २, २, ३, २५; २६)। सयंति (भग १३, ६—पत्र १७)। वकृ. सयमाण (आचा २, २, ३, २६)। हेकृ. सइत्तए (पि ५७८)। कृ. देखो सयणिज्ज, सयणीअ।

सय अक [स्वद्] पचना, जीर्ण होना, माफिक आना। सयइ (आचा २, १, ११, १)।

सय अक [स्रु] झरना, टपकना। सयइ (सूअ २, २, ५६)।

सय सक [श्रि] सेवा करना। सयंति (भग १३, ६—पत्र ६१७)।

सय देखो स = सत्; 'वंदणिज्जो सयाणं' (स ६९५)।

सय देखो स = स्व (सूअ १, १, २, २३; णाया १, १४—पत्र १९०; आचा; उवा; स्वप्न १६)।

सय देखो सग = सप्तन्। °हत्तरि स्त्री [°सप्तति] सतहत्तर, ७७ (श्रा २८)।

सय अ [सदा] हमेशा, निरन्तर; 'असवुडो सय करेइ कंदप्पं' (उव)। °काल न [°काल] हमेशा, निरन्तर (सुपा ८५)।

सय पुंन [शत] १ संख्या-विशेष, सौ, १००। २ सौ की संख्यावाला (उवा; उव; गा १०१; जी २९; दं ९)। ३ बहुत, भूरि, अनल्प संख्यावाला (णाया १, १—पत्र ६५)। ४ अध्ययन, ग्रंथ-प्रकरण, ग्रन्थांश-विशेष; 'विवाहपन्नत्तीए एकासीतिं महाजुम्मसया पन्नत्ता' (सम ८८)। °कंत न [°कान्त] १ रत्न-विशेष। २ वि. शतकान्त रत्नों से बना हुआ (देवेन्द्र २६८)। °कित्ति पुं [°कीर्ति] एक भावी जिन-देव (पव ४६); 'सत्त (?य) कित्ती' (सम १५३)। °गुणिअ वि [°गुणित] सौगुना (श्रा १०; सुर ३, २३२)। °ग्घी स्त्री [°घ्नी] १ यन्त्र-विशेष, पाषाण-शिला-विशेष (सम १३७; अंत; औप)। २ चक्की; जाँता (दे ८, ५, टी)। °ज्जल न [°ज्वल] १ वरुण का विमान (देवेन्द्र २७०)। देखो सयंजल। २ रत्न की एक जाति। ३ वि. शतज्वल-रत्नों का बना हुआ (देवेन्द्र २६९)। ४ पुंन. विद्युत्प्रभ नामक वक्षस्कार पर्वत का एक शिखर (इक)। °दुवार न [°द्वार] एक नगर (अंत)। °धणु पुं [°धनुष्] १ ऐरवत वर्ष में होनेवाला एक कुलकर पुरुष (सम १५३)। २ भारत वर्ष में होनेवाला दसवाँ कुलकर पुरुष (ठा १०—पत्र ५१८)। °पई स्त्री [°पदी] क्षुद्र जन्तु की एक जाति (श्रा २३)। °पत्त देखो °वत्त (णाया १, १—पत्र ३८)। °पाग न [°पाक] एक सौ ओषधिओं से बनता एक तरह का उत्तम तेल (णाया १, १—पत्र १९; ठा ३, १—पत्र ११७)। °पुप्फा स्त्री [°पुष्पा] वनस्पति-विशेष, सोया का गाछ (पएण १—पत्र ३४; उत्तनि ३)। °पोर न [°पर्वन्] इक्षु, ऊख (पव १७४ टी)। °बाहु पुं [°बाहु] एक राजर्षि (पउम १०, ७४)। °भिसया, °भिसा स्त्री [°भिषज्] नक्षत्र-विशेष (इक; पउम २०, ३८)। °यम वि [°तम] सौवाँ, १०० वाँ (पउम १००, ६४)। °रह पुं [°रथ] एक कुलकर पुरुष (सम १५०)। °रिसह पुं [°वृषभ] अहोरात्र का तेईसवाँ मुहूर्त (सुज्ज १०, १३)। °वई देखो °पई (दे २, ९१)। °वत्त न [°पत्र] १ पद्म, कमल (पाअ)। २ सौ पत्तीवाला कमल, पद्म-विशेष (सुपा ४९)। ३ पुं. पक्षि-विशेष, जिसका दक्षिण दिशा में बोलना अपशुकन माना जाता है (पउम ७, १७)। °सहस्स पुंन [°सहस्र] संख्या-विशेष, लाख (सम २; भग; सुर ३, २१; प्रासू ९; १३४)। °सहस्सइम वि [°सहस्रतम] लाखवाँ (णाया १, ८—पत्र १३१)। °साहस्स वि [°साहस्र] १ लाख-संख्या का परिमाणवाला (णाया १, १—पत्र ३७)। २ लाख रुपया जिसका मूल्य हो वह (पव १११; दसनि ३, १३)। °साहस्सि वि [°सहस्रिन्] लखपति, लक्षाधीश (उप पृ ३१५)। °साहस्सिय वि [°साहस्रिक] देखो °साहस्स (स ३६९; राज)। °साहस्सी स्त्री [°सहस्री] लक्ष, लाख (पि ४४७; ४४८)। °सिक्कर वि [°शर्कर] शत खंडवाला, सौ टुकड़ावाला (सुर ४, २२; १५३)। °हा अ [°धा] सौ प्रकार से, सौ टुकड़ा हो ऐसा (सुर १४, २४२)। °हुत्तं अ [°कृत्वस्] सौ बार (हे २, १५८; प्राप्र; षड्)। °ाउ पुं [°ायुष्] १ एक कुलकर पुरुष का नाम (सम १५०)। २ मदिरा-विशेष (कुप्र १६०; राज)। °ाणिअ, °ाणीअ पुं [°ानीक] एक राजा का नाम (विपा १, ५—पत्र ६०; अंत; ती १०)।

सय° देखो सयं = स्वयं; 'सयपालणा य एत्थं' (पंचा ५, ३९)।

सयं देखो सइं = सकृत् (वै ८८)।

सयं अ [स्वयम्] आप, खुद, निज (आचा १, ९, १, ६; सुर २, १८७; भग, प्रासू ७८; अभि ५९; कुमा)। °कड वि [°कृत] खुद किया हुआ (भग)। °गाह पुं [°ग्राह] १ जबरदस्ती ग्रहण करना। २ विवाह-विशेष (ते १, ३४)। ३ त्रि. स्वय ग्रहण करनेवाला (वव १)। °पभ पुं [°प्रभ] १ ज्योतिष्क ग्रह-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७८)। २ भारतवर्ष में अतीत उत्सर्पिणी काल में उत्पन्न चौथा कुलकर पुरुष (सम १५०)। ३ आगामी उत्सर्पिणी काल में भारत में होनेवाला चौथा कुलकर पुरुष (सम १५३)। ४ आगामी उत्सर्पिणी काल में इस भारतवर्ष में होनेवाले चौथे जिन-देव (सम १५३)। ५ एक जैन मुनि जो भगवान् संभवनाथ के पूर्व-जन्म में गुरु थे (पउम २०, १७)। ६ एक हार का नाम (पउम ३६, ४)। ७ मेरु पर्वत (सुज्ज ५)। ८ नन्दीश्वर द्वीप के मध्य में पश्चिम-दिशा-स्थित एक अंजन-गिरि (पव

२६६ टी)। ६ न. एक नगर का नाम, राजा रावण के लिए कुबेर द्वारा बनाया हुआ एक नगर (पउम ७, १४६)। १० वि. आप से प्रकाश करनेवाला (पउम ३६, ४)। °पभा स्त्री [°प्रभा] १ प्रथम वासुदेव की पटरानी (पउम २०, १८६)। २ एक रानी का नाम (उप १०३१ टी)। °पह देखो °पभ (पउम ८, २२)। °बुद्ध वि [°बुद्ध] अन्य के उपदेश के बिना ही जिसको तत्त्व-ज्ञान हुआ हो वह (नव ४३)। °भु पुं [°भु] १ ब्रह्मा (पण्ह १, २—पत्र २८)। २ भारत में उत्पन्न तीसरा वासुदेव (सम ६४)। ३ सतरहवें जिनदेव का गणधर—मुख्य शिष्य (सम १५२)। ४ जीव, आत्मा, चेतन (भग २०, २—पत्र ७७६)। ५ एक महा-सागर, स्वयंभूरमण समुद्र; 'जहा सयंभू उदहीण सेट्ठे' (सूअ १, ६, २०)। ६ पुंन. एक देव-विमान (सम १२)। देखो °भू। °भुगेहिणी स्त्री [°भुगेहिनी] सरस्वती देवी (अच्चु २)। °भुरमण पुं [°भुरमण] देखो °भूरमण (पण्ह २, ४—पत्र १३०; पउम १०२, ६१; स १०७; सुज्ज १६; जी ३, २—पत्र ३६७; देवेन्द्र २५५)। °भुव, °भू पुं [°भू] १ अनादि-सिद्ध सर्वज्ञ; 'जय जय नाह सयंभुव' (स ६४७; उवर १२२)। २ ब्रह्मा (पाअ; पउम २८, ४८; ती ७; से १४, १७)। ३ तीसरा वासुदेव (पउम ५, १५५)। ४ रावण का एक योद्धा (पउम ५६, २७)। ५ भगवान् विमलनाथ का प्रथम श्रावक (विचार ३७८)। ६ कुच, स्तन (प्राकृ ४०)। देखो °भु। °भूरमण पुं [°भूरमण] १ समुद्र-विशेष। २ द्वीप-विशेष (जीव ३, २—पत्र २६७; ३७०)। ३ एक देव-विमान (सम १२)। °भूरमणभद्द पुं [°भूरमणभद्र] स्वयंभूरमण द्वीप का एक अधिष्ठाता देव (जीव ३, २—पत्र ३६७)। °भूरमणमहाभद्द पुं [°भूरमणमहाभद्र] वही अर्थ (जीव ३, २)। °भूरमणमहावर पुं [°भूरमणमहावर] स्वयंभूरमण-समुद्र का एक अधिष्ठायक देव (जीव ३, २—पत्र ३६७)। °भूरमणवर पुं [°भूरमणवर] वही अनन्तर उक्त अर्थ (जीव ३, २)। °वर पुं [°वर] कन्या का स्वेच्छानुसार वरण, एक प्रकार का विवाह जिसमें कन्या निमन्त्रित विवाहार्थियों में से अपनी इच्छानुसार अपना पति वरण कर ले (उव; गउड; अभि ३१)। °वरी स्त्री [°वरा] अपनी इच्छानुसार वरण करनेवाली (पउम १०६, १७)। °संबुद्ध वि [°संबुद्ध] स्वयं ज्ञात-तत्त्व (सम १)।

सयंजय पुं [शतञ्जय] पक्ष का तेरहवाँ दिवस (सुज्ज १०, १४)।

सयंजल पुं [शतञ्जल] १ एक कुलकर-पुरुष (सम १५०)। २ वरुण लोकपाल का विमान (भग ३, ७—पत्र १९८) देखो सय-ज्जल। ३ ऐरवत वर्ष में उत्पन्न चौदहवें जिनदेव (पव ७)।

सयंभरी स्त्री [शाकम्भरी] देश-विशेष (मुणि १०८७३)।

सयग देखो सयय (पव ४६; कम्म ५, १००)।

सयग्घी स्त्री [दे] जाँता, चक्की, पीसने का यन्त्र (दे ८, ५)।

सयड पुंन [शकट] १ गाड़ी (पउम २६, २१); 'सयडो गंती' (पाअ)। २ न. नगर-विशेष (पउम ५, २७)। °मुह न [°मुख] उद्यान-विशेष, जहाँ भगवान् ऋषभदेव को केवलज्ञान उत्पन्न हुआ था (पउम ४, १६)।

सयडाल देखो सगडाल (कुप्र ४४८)।

सयण देखो स-यण = स्व-जन।

सयण न [सदन] १ गृह, घर (गउड; सुपा ३६६)। २ अंग-ग्लानि, शरीर-पीड़ा (राज)।

सयण न [शयन] १ वसति, स्थान (आचा १, ६, १, ६)। २ शय्या, बिछौना (गउड; कुमा; गा ३३)। ३ निद्रा (कुमा ८, १७)। ४ स्वाप, सोना (पण्ह २, ४; सुपा ३६६)।

सयणिज्ज न [शयनीय] शय्या, बिछौना (णाया १, १४—पत्र १९०; गउड)।

सयणिज्जग देखो स-यण = स्व-जन; 'सेहस्स सयणिज्जगा आगया' (ओघभा ३० टी)।

सयणीअ देखो सयणिज्ज (स्वप्न ९२; ६८; सुर ३, ६०)।

सयण्ण देखो सकण्ण (महा)।

सयण्ह देखो स-यण्ह = स-तृष्ण।

सयत्त वि [दे] मुदित, हर्षित (दे ८, ५)।

सयन्न देखो सकन्न (सुपा २८२)।

सयय वि [सतत] निरन्तर (उव; सुर १, १३; महा)।

सयय पुं [शतक] १ वर्तमान अवसर्पिणी-काल में उत्पन्न ऐरवत वर्ष के एक जिन-देव (सम १५३)। २ आगामी उत्सर्पिणी में भारतवर्ष में होनेवाले एक जिनदेव के पूर्वजन्म नाम, जो भगवान् महावीर का श्रावक था (ठा ६—पत्र ४५५)। ३ न. सौ का समुदाय (गा ७०६; अच्चु १०१)।

सयर देखो सायर = सागर (विसे ११८७)।

सयरहं देखो सयराहं (स ७६२)।

सयरा देखो सक्करा; 'सयरं दहिं च दुद्धं तूरंतो कुणसु साहीणं' (पउम ११५, ८)।

सयराहं, सयराहा अ [दे] १ शीघ्र, जल्दी (दे ८, ११; कुमा; गउड; चेइय ६१०)। २ युगपत्, एक साथ (विसे ६५६)। ३ अकस्मात् (औप)।

सयरि देखो सत्त-रि = सप्तति (पि २४५; ४४६)।

सयरी स्त्री [शतावरी] वृक्ष-विशेष, शतावर का गाछ (पण्ण १—पत्र ३१)।

सयल न [शकल] खंड, टुकड़ा (दे १, २८)।

सयल वि [सकल] १ संपूर्ण, पूरा। २ सब, समग्र (गा ५३०; कुमा; सुपा १६७; दं ३६; जी १४; प्रासू १०८; १६४)। °चंद पुं [°चन्द्र] 'श्रुतास्वाद' का कर्ता एक जैन मुनि (श्रा १६६)। °भूसण पुं [°भूषण] एक केवलज्ञानी मुनि (पउम १०२, ५७)। °ादेस पुं [°ादेश] सर्वापेक्षी वाक्य, प्रमाण-वाक्य (अज्झ ६२)।

सयलि पुं [शकलिन्] मीन, मछली (दे ८, ११)।

सयहत्थिय वि [सौवहस्तिक] १ स्व-हस्त से उत्पन्न। २ न. शस्त्र-विशेष; 'महकालोवि नरिंदो मिल्हइ सयहत्थियं सहत्थेणं' (सिरि ४५१; ४५२)।

सयाचार देखो स-याचार = सदाचार।

सयाचार देखो सआ-चार = सदा-चार।

सयाण देखो स-याण = स-ज्ञान।

सयालि पुं [शतालि] भारतवर्ष के भावी

अठारहवें जिनदेव का पूर्वजन्मीय नाम (पव ४६; सम १५४)। देखो भयालि।

सयालु वि [शयालु] सोने की आदतवाला, आलसी (कुम)।

सयावरी स्त्री [सदावरी] त्रीन्द्रिय जन्तु की एक जाति (उत्त ३६, १३६; सुख ३६, १३६)।

सयावरी देखो सयरी = शतावरी (राज)।

सयास देखो सगास = सकाश (काल; अभि १२५; नाट—मृच्छ ५२)।

सयासव वि [शताश्रव, सदाश्रव] सूक्ष्म छिद्रवाला (भग)।

सय्यं देखो सज्ज = सद्यस्; 'सय्यंभवुत्ति सय्यं भवोयहीपारगो जओ तेणं' (धर्मवि ३८)।

सय्यंभव देखो सज्जंभव (धर्मवि ३८)।

सय्ह देखो सज्झ = सह्य (हे २, १२४; षड्)।

सर सक [सृ] १ सरना खिसकना। २ अवलम्बन करना, आश्रय लेना। ३ अनुसरण करना। सरइ (हे ४, २३४), सरेज्जा (उपपं २५)। कृ. सरणीअ (चउ २७), सरेअव्व (सुपा ४१४)।

सर सक [स्मृ] याद करना। सरइ (हे ४, ७४; गुरु १२; प्राप्र)। वकृ. सरंत (सुपा ५६४), सरमाण (णाया १, ६—पत्र १६५; पउम ८, १६४; सुपा ३३६)। हेकृ. सरित्तए (पि ५७८)। कृ. सरणीअ, सरेअव्व, सरियव्व (चउ २७; धम्मो २०; सुपा ३०७)। प्रयो. सरयंति (सूअ १, ५, १, १६)।

सर सक [स्वर्] आवाज करना। सरइ, सरंति (विसे ४६२)।

सर पुंन [शर] १ बाण; 'मज्झे सराणि वरिसयंति' (णाया १, १४—पत्र १६१; कुमा; सुर १, ६४; स्वप्न ५५)। २ तृण-विशेष; 'सो सरवणे निलोणो रहिओ तक्खिव्व पच्छन्नो' (धर्मवि ६२; पउण १—पत्र ३३; (कुप्र १०)। ३ छन्द-विशेष। ४ पाँच की संख्या (पिंग)। °पण्णी स्त्री [°पर्णी] तृण-विशेष, = मुञ्ज का घास (राज)। °पत्त न [°पत्र] अस्त्र-विशेष (विसे ५१३)। °पाय न [°पात] धनुष (सूअ १, ४, २, १३)। °ासण पुंन [°ासन] धनुष (विपा १, २—पत्र २४; पाअ; औप)। °ासणपट्टी, °ासणवट्टिया स्त्री [°ासनपट्टी, °ासनपट्टिका] १ धनुर्यष्टि, धनुर्दण्ड। २ धनुष खींचने के समय हाथ की रक्षा के लिए बाँधा जाता चर्मपट्ट—चमड़े का पट्टा (विपा १, २—पत्र २४; औप)। °ासरि न [°ाशरि] बाण-युद्ध (सिरि १०३२)।

सर पुं [स्मर] कामदेव (कुमा; से ६, ४३)।

सर वि [सर] गमन-कर्ता (दस ६, ३, ६)।

सर पुं [स्वर] १ वर्ण-विशेष, 'अ' से 'औ' तक के अक्षर (पण्ह २, २; विसे ४६१)। २ गीत आदि की ध्वनि; आवाज, नाद (सुपा ५६; कुमा)। ३ स्वर के अनुरूप फलाफल को बतानेवाला शास्त्र (सम ४६)।

सर पुंन [सरस्] तड़ाग, तालाब (से ३, ६; उवा; कप्प; कुमा; सुपा ३१६)। °पंति स्त्री [°पङ्क्ति] तड़ाग-पद्धति (ठा २, ४—पत्र ८६)। °रुह न [°रुह] कमल, पद्म (प्राप्र; हे १, १५६; कुमा)। °सरपंतिया स्त्री [°सरःपङ्क्ति] श्रेणि-बद्ध रहे हुए अनेक तालाब (पण्ह २, ५—पत्र १५०)।

सर देखो सरय = शरद् (गा ७१२)। °दिंदु पुं [°इन्दु] शरद् ऋतु का चन्द्र (सुर २, ७०; १६, २४६)।

सरऊ स्त्री [सरयू] नदी-विशेष (ठा ५, १—पत्र ३०८; ती ११; कस)।

सरंग (अप) पुं [सारङ्ग] छन्द-विशेष (पिंग)।

सरंब पुं [शरम्ब] हाथ से चलनेवाले सर्प की एक जाति (पण्ह १, १—पत्र ८)।

सरक्ख सक [सं + रक्ष्] अच्छी तरह रक्षण करना। सरक्खए (सूअ १, १, ४, ११ टि)।

सरक्ख वि [सरजस्क, सरक्ष] १ शैव-धर्मी, शिव-भक्त, भौत, शैव (ओघ २१८; विसे १०४०; उप ६७७)। २ वि. रजो-युक्त (आव ४)।

सरक्ख पुंन [सद्रजस्] १ धूलि, रज; 'ससरक्खेहिं पाएहिं' (दस ५, १, ७)। २ भस्म (पिंड ३७; ओघ ३५६)।

सरग देखो सरय = शरक (णाया १, १८—पत्र २४१)।

सरग वि [शारक] शर-तृण से बना हुआ (शूर्प आदि) (आचा २, १, ११, ३)।

सरग्गिका (अप) स्त्री [सारङ्गिका] छन्द-विशेष (पिंग)।

सरड पुं [सरट] कृकलास, गिरगिट (णाया १, ८—पत्र १३३; ओघ ३२३; पुप्फ २६७; दे ८, ११; उप पृ २६८; सुपा १७७)।

सरडु } न [शलाटु, °क] वह फल जिसमें
सरडुअ } अस्थि—गुठली न बँधी हो, कोमल फल (पिंड ४५; आचा २, १, ८, ६; पि ८२; २५६)।

सरण पुंन [शरण] १ त्राण, रक्षा (आचा; सम १; प्रासू १५६; कुमा)। २ त्राण-स्थान (आचा कुमा २, ४५)। ३ गृह, आश्रय, स्थान; 'निवायसरणप्पईवमिव चित्तं' (संबोध ५१)। °दय वि [°दय] त्राण-कर्ता (भग; पडि)। °ागय वि [°ागत] शरणापन्न (प्रासू ५)।

सरण न [स्मरण] स्मृति, याद (ओघ ८; विसे ५१८; महा; उप ५६२; औप; वि ६)।

सरण न [स्वरण] आवाज करना, ध्वनि करना (विसे ४६१)।

सरण न [सरण] गमन (राज)।

सरणि पुंस्त्री [सरणि] १ मार्ग, रास्ता (पाअ; सुपा २; कुप्र २२); 'सरलो सरणी समगं कहिओ' (सार्ध ७५)। २ आलवाल, क्यारी (गउड)।

सरण्ण वि [शरण्य] शरण-योग्य, त्राण के लिए आश्रयणीय (सम १५३, पण्ह १, ४—पत्र ७२; सुपा २६१; अच्चु १५; संबोध ४८)।

सरत्ति अ [दे] शीघ्र, जल्दी, सहसा (दे ८, २)।

सरद देखो सरय = शरत (प्राप्र)।

सरन्न देखो सरण्ण (सुपा १८३)।

सरभ देखो सरह = शरभ (भग; णाया १, १—पत्र ६५; पण्ह १, १—पत्र ७; गा ७४२; पिंग)।

सरभेअ वि [दे] स्मृत, याद किया हुआ (दे ८, १३)।

सरमय पुं.ब. [शर्मक] देश-विशेष (पउम ९८, ६५)।

सरय पुंन [शरद्] ऋतु-विशेष, आसोज—आश्विन तथा कार्तिक का महीना (पण्ह २, २—पत्र ११४; गउड; से १,२७; गा ५३४; स्वप्न ७०; कुमा; हे १, १८); 'मुय माणं माण पियं पियसरयं जाव वच्चए सरयं' (वज्जा ७४)। °चंद पुं [°चन्द्र] शरद् ऋतु का चाँद (णाया १, १—पत्र ३०)। देखो सर = शरद्।

सरय पुं [शरक] काष्ठ-विशेष, अग्नि उत्पन्न करने के लिए अरणि का काष्ठ जिससे घिसा जाता है वह (णाया १, १८—पत्र २४१)।

सरय पुंन [सरक] १ मद्य-विशेष, गुड़ तथा धातकी का बना हुआ दारू (पण्ह २, ५—पत्र १५०; सुपा ४८५; गा ५५१ अ; कुप्र १०)। २ मद्य-पान (वज्जा ७४)।

सरय देखो स-रय = स-रत।

सरय (अप) पुं [सरस] छन्द-विशेष (पिंग)।

सरल पुं [सरल] १ वृक्ष-विशेष (पण्ण १—पत्र ३४)। २ ऋजु, माया-रहित (कुमा; सण)। ३ सीधा, अवक्र (कुमा; गउड)।

सरलिअ वि [सरलित] सीधा किया हुआ (कुमा; गउड)।

सरली स्त्री [दे] चीरिका, क्षुद्र कीट-विशेष, झींगुर (दे ८, २)।

सरलीआ स्त्री [दे] १ जन्तु-विशेष, साही, जिसके शरीर में काँटे होते हैं। २ एक जात का कीड़ा (दे ८, १५)।

सरव पुं [शरप] भुजपरिसर्प की एक प्रकार (सूअ २, ३, २५)।

सरस वि [सरस] रस-युक्त (औप; अंत; गउड)। °रण्ण पुं [°रण्य] समुद्र, सागर (से ६, ४३)।

सरसिज } न [सरसिज] कमल, पद्म
सरसिय } (हम्मीर ५१; रंभा)।

सरसिरुह न [सरसिरुह] कमल, पद्म (उप ७२८ टी; सम्मत्त ७६)।

सरसी स्त्री [सरसी] बड़ा तालाब—तड़ाग (औप; उप पृ ३८; सुपा ४८५)। °रुह न [°रुह] कमल (सम्मत्त १२०; १३६)।

सरस्सई स्त्री [सरस्वती] १ वाणी, भारती, भाषा (पाअ; औप)। २ वाणी की अधिष्ठात्री देवी (सुर १, १५)। ३ गीतरति नामक इन्द्र की एक पटरानी (ठा ४, १—पत्र २०४; णाया २—पत्र २५२)। ४ एक राज-पत्नी (विपा २, २—पत्र ११२)। ५ एक जैन साध्वी जो सुप्रसिद्ध कालकाचार्य की बहिन थी (काल)।

सरह पुं [शरभ] १ शिकारी पशु की एक जाति (सुपा ६३२)। २ हरिवंश का एक राजा (पउम २२, ९८)। ३ लक्ष्मण के एक पुत्र का नाम (पउम ९१, २०)। ४ एक सामन्त नरेश (पउम ८, १३२)। ५ एक वानर (से ४, ६)। ६ छन्द-विशेष (पिंग)।

सरह पुं [दे] १ वृक्ष-विशेष, वेतस या बेंत का पेड़ (दे ८, ४७)। २ सिंह, पञ्चानन (दे ८, ४७; सुर १०, २२२)।

सरह (अप) वि [श्लाघ्य] प्रशंसनीय (पिंग)।

सरहस देखो स-रहस = स-रभस।

सरहा स्त्री [सरघा] मधु-मक्षिका (दे २, १००)।

सरहि पुंस्त्री [शरधि] तूणीर, तीर रखने का भाथा—तरकस (से ७०)।

सरा स्त्री [दे] माला (दे ८, २)।

सराग देखो स-राग = स-राग।

सराडि स्त्री [शराटि, शराडि] पक्षी की एक जाति (गउड)।

सराव पुं [शराव] मिट्टी का पात्र-विशेष, सकोरा, पुरवा (दे २, ४७; सुपा २९६)।

सरासण देखो सर-ासण = शरासन।

सराह वि [दे] दर्पोद्धुर, गर्व से उद्धत (दे ८, ५)।

सराहय पुं [दे] सर्प, साँप (दे ८, १२)।

सरि वि [सदृश] सदृश, सरीखा, तुल्य (भग; णाया १, १—पत्र ३९; अंत ५; हे १, १४२; कुमा)।

सरि स्त्री [सरित्] नदी (से २, २६; सुपा ३५४; कुप्र ४३; भत्त १२३; महा)। °नाह पुं [°नाथ] समुद्र (धर्मवि १०१)। देखो सरिआ।

सरिअ वि [स्मृत] याद किया हुआ (पउम ३०, ५४; सुपा २२१; ४६२)।

सरिअ देखो सरि = सदृश; 'सोभेमाणा सरियं संपत्थिया थिरजसा देविंदा' (औप)।

सरिअं न [सृतम्] अलं, पर्याप्त, बस; 'बहुभणिएण सरिअं' (रयण ५०)।

सरिआ स्त्री [सरित्] नदी (कुमा; हे १, १५; महा)। °वइ पुं [°पति] समुद्र (से ७, ४१; ९, २)।

सरिआ स्त्री [दे] माला, हार (पण्ह १, ४—पत्र ६८; कुप्र ३; सुपा ३४३)।

सरिक्ख } वि [सदृक्ष] सदृश, समान,
सरिच्छ } तुल्य (प्राकृ ८६; प्राप्र; हे १, १४२; २, १७; कुमा)।

सरित्तु वि [स्मर्तृ] स्मरण-कर्ता (ठा ६—पत्र ४४४)।

सरिभरी स्त्री [दे] समानता, सरीखाई, गुजराती में 'सरभर'; 'तओ जाया दोण्हवि सरिभरी' (महा १०)।

सरिर देखो सरीर (पव २०५)।

सरिवाय पुं [दे] आसार, वेगवाली वृष्टि (दे ८, १२)।

सरिस वि [सदृश] समान, सरीखा, तुल्य (हे १, १४२; भग; उव; हेका ४८)।

सरिस पुंन [दे] १ सह, साथ;

'का समसीसी तियसिंदयाण
वडवालणस्स सरिसम्मि।
उवसमियसिहीपसरो
मयरहरो इंधणं जस्स।'
(वज्जा १५४)।

"आढत्तो संगामो बलवइणा तेण सरिसोत्ति' (महा)। २ तुल्यता, समानता (संक्षि ४७); "अंतेउरसरिसेणं पलोइयं नरवरिंदेण' (महा)।

सरिसरी देखो सरिभरी (महा)।

सरिसव पुं [सर्षप] सरसों (चंड; ओघ ४०६; सं ४४; कुमा; कम्म ४, ७४; ७५; ७७; णाया १, ५—पत्र १०७)।

सरिसाहुल वि [दे] समान, सदृश (दे ८, ६)।

सरिस्सव देखो सरीसव (पउम २०, ९२)।

सरी स्त्री [दे] माला, हार (सुपा २३१)।
सरीर पुंन [शरीर] देह, काय, तनु (सम ६७; उवा; कुमा; जी १२); 'कइ णं भंते सरीरा पण्णत्ता' (पण्ण १२)। °णाम, °नाम पुंन [°नामन्] कर्म-विशेष, शरीर का कारण-भूत कर्म (राज; सम ६७)। °बंधण न [°बन्धन] कर्म-विशेष (सम ६७)। °संघायण न [°संघातन] नाम कर्म का एक भेद (सम ६७)।
सरीरि पुं [शरीरिन्] जीव, आत्मा (पउम ११२; १७)।
सरीसव, सरीसिव पुं [सरीसृप] १ सर्प, सांप (खा ११; सूअ १, २, २, १४)। २ सर्प की तरह पेट से चलनेवाला प्राणी (सम ६०)।
सरूय, सरूव देखो स-रूय = स्व-रूप।
सरूव देखो स-रूव = सद्-रूप, स-रूप।
सरूवि पुं [स्वरूपिन्] जीव, प्राणी (ठा २, १—पत्र ३८)।
सरेअव्व देखो सर = स्मृ, स्मृ।
सरेवय पुं [दे] १ हंस। २ घर का जल-प्रवाह, मोरी (दे ८, ४८)।
सरोअ न [सरोज] कमल, पद्म (कुमा; अच्चु ४२; सुपा ५६; २११; कुप्र २८८)।
सरोरुह न [सरोरुह] ऊपर देखो (प्राप्र; कुमा; कुप्र ३०४)।
सरोवर न [सरोवर] बड़ा तालाव (सुपा २६०; महा)।
सलभ देखो सलह = शलभ (राज)।
सलली स्त्री [दे] सेवा (दे ८, ३)।
सलह सक [श्लाघ्] प्रशंसा करना। सलहइ (हे ४, ८८)। कर्म. सलहिज्जइ (पि १३२)। कृ. सलहिज्ज (कुमा)। देखो सलाह।
सलह पुं [शलभ] १ पतङ्ग (पाअ; गउड; सुपा १४२)। २ एक वणिक्-पुत्र (सुपा ६१७)।
सलहण न [श्लाघन] प्रशंसा, श्लाघा (गा ११४; पि १३२)।
सलहत्थ पुं [दे] कुड़छी आदि का हाथा (दे ८, ११)।
सलहिअ वि [श्लाघित] प्रशंसित (कुमा)।

सलहिज्ज देखो सलह = श्लाघ्।
सलाग न [शालाक्य] चिकित्सा शास्त्र—आयुर्वेद का एक अंग, जिसमें श्रवण आदि शरीर के ऊर्ध्व भाग के सम्बन्ध में चिकित्सा का प्रतिपादन हो वह शास्त्र (विपा १, ७—पत्र ७५)।
सलागा, सलाया स्त्री [शलाका] १ सली, सलाई (सूअ १, ४, २, १०; कप्पू)। २ पल्य-विशेष, एक प्रकार की नाप (जीवस १३६; कम्म ४, ७३; ७५)। °पुरिस पुं [°पुरुष] २४ जिनदेव, १२ चक्रवर्ती, ६ वासुदेव। ६ प्रतिवासुदेव तथा ६ बलदेव ये ६३ महापुरुष (संबोध ११)।
सलाह देखो सलह = श्लाघ्। सलाहइ (प्राकृ २८)। वकृ. सलाहमाण (गा २४६; सम्म १५६)। कृ. सलाहणिज्ज, सलाहणिय, सलाहणीअ (प्राकृ २८, णाया १, १६—पत्र २०१; सुर ७, १७१, रयण ३५; पउम ८२, ७३; पि १३२)।
सलाहण न [श्लाघन] श्लाघा, प्रशंसा (गा ११४; उप पृ १०६)।
सलाहा स्त्री [श्लाघा] प्रशंसा (प्राप्र; हे २, १०१; षड्)।
सलाहिअ देखो सलहिअ (कुमा)।
सलिल पुंन [सलिल] पानी, जल; 'सलिला ण संदंति ण वंति वाया' (सूअ १, १२, ७; कुमा; प्रासू ३५)। °णिहि पुं [°निधि] सागर, समुद्र (से ६, ६)। °नाह पुं [°नाथ] वही (पउम ६, ६६)। °बिल न [°बिल] भूमि-निर्झर, जमीन से बहता झरना (भग ७, ६—पत्र ३०५)। °रासि पुं [°राशि] समुद्र (पाअ)। °वाह पुं [°वाह] मेघ (पउम ४२, ३४)। °हर पुं [°धर] वही (से ६, ६४)। °वई, °वती स्त्री [°वती] विजय-क्षेत्र-विशेष (राज; णाया १, ८—पत्र १२१)। °वत्त न [°वर्त] वैताढ्य पर्वत पर उत्तर दिशा-स्थित एक विद्याधर-नगर (इक)।
सलिला स्त्री [सलिला] महानदी, बड़ी नदी (सम १२२)।
सलिलुच्छय वि [सलिलोच्छय] प्लावित, डुबोया हुआ (पाअ)।

सलिस अक [स्वप्] सोना, शयन करना। सलिसइ (षड्)।
सलूण देखो स-लूण = स-लवण।
सलोग पुं [श्लोक] श्लाघा, प्रशंसा (सूअ १, १३, १२)। देखो सिलोग।
सलोग देखो स-लोग = स-लोक।
सलोण देखो स-लोण = स-लवण।
सलोय देखो सलोग = श्लोक (सूअ १, ६, २२)।
सल्ल पुंन [शल्य] १ अस्त्र-विशेष, तोमर, साँग; 'तओ सल्ला पण्णत्ता' (ठा ३, ३—पत्र १४७)। २ शरीर में घुसा हुआ काँटा, तीर आदि (सूअ २, २, ; पंचा ६, १६; प्रासू २०)। ३ पापानुष्ठान, पाप-क्रिया; 'पावडियसव्वसल्लो' (उव; सूअ १, १५, २४)। ४ पापानुष्ठान से लगनेवाला कर्म (सूअ १, १५, २४; वव १)। ५ पुं. भरत के साथ दीक्षा लेनेवाले एक राजा का (पउम ८५, २)। ६ न. छन्द-विशेष (पिंग)। °ग वि [°क] शल्यवाला, शूल आदि शल्य से पीडित (पण्ह २, ५—पत्र १५०)। °ग न [°ग] परिज्ञान, जानकारी (सूअ २, २, ५७)।
सल्ल पुंस्त्री [दे] हाथ से चलनेवाले सर्प-जातीय जन्तु की एक जाति (सूअ २, ३, २५)।
सल्लइय वि [शल्यकित] शल्य-युक्त, जिसको शल्य पैदा हुआ हो वह (णाया १, ७—पत्र ११६)।
सल्लई स्त्री [सल्लकी] वृक्ष-विशेष (णाया १, ७ टी—पत्र ११६; उप १०३१ टी; कुमा; धर्मवि १३०; सुपा २६१)।
सल्लग देखो सल्ल-ग = शल्य-क, शल्य-ग।
सल्लग देखो स-ल्लग = सत्-लग।
सल्लहत्त पुंन [शाल्यहत्य] आयुर्वेद का एक अंग, जिसमें शल्य निकालने का प्रतिपादन किया गया हो वह शास्त्र (विपा १, ७—७५)।
सल्ला स्त्री [शल्या] एक महौषधि (ती ५)।
सल्लिअ वि [शल्यित] शल्य-पीडित (सुर १२, १५२; सुपा २२७; महा; भवि)।
सल्लिह देखो संलिह = सं + लिख्। सल्लिहदि (आरा ३५)।

सल्लुद्धरण न [शल्योद्धरण] १ शल्य को बाहर निकालना (विपा १, ८—पत्र ८६)। २ आलोचना, प्रायश्चित्त के लिए गुरु के पास दूषण-निवेदन (ओघ ७९१)।

सल्लेहणा देखो संलेहणा (आरा ३५; भवि)।

सल्लेहिय वि [संलेखित] क्षीण, 'सल्लेहिया कसाया करंति मुणिणो ण चित्तसंखोहं' (आरा ३६)।

सव सक [शप्] १ शाप देना, आक्रोश करना, गाली देना। २ आह्वान करना। सवइ (गा ३२४; ४००)। सविमो, सवसु (कुमा)। कर्म. सप्पए (विसे २२२७)। वकृ. सवमाण (उव)। कवकृ. सप्पमाण (पण्ह १, ३—पत्र ५४)।

सव सक [सू] उत्पन्न करना, जन्म देना। सवइ (हे ४, २३३; षड्)।

सव देखो सो = मु। सवइ, सवए (षड्)।

सव सक [स्रु] झरना, टपकना, चूना। सवइ (विसे १३६८)।

सव पुं [श्रवस्] १ कान। २ ख्याति; 'सवोपूओ' (प्राप्र)।

सव न [शव] शव, मुरदा, मृत शरीर (पाअ; स ७६३; सण)।

सवंती स्त्री [स्रवन्ती] नदी (उप १०३१ टी)।

सवक्क देखो सवत्ती (सुपा ३३७; ६०१; सूक्त ४६; महा; कुप्र १७०)।

सवक्ख देखो स-वक्ख = स-पक्ष।

सवग्गीय वि [सवर्गीय] सवर्ग-संबन्धी (हास्य १३०)।

सवच देखो स-वच = श्व-पच।

सवज्झा देखो सपज्झा (चेइय २०४; कप्पू)।

सवडंमुह } वि [दे] अभिमुख, संमुख;
सवडहुत्त } 'सहसा सवडंमुहो चलिओ' (महा, दे ८, २१; पउम ७२, ३२; भवि), 'उच्छाओ नहयलं विमाणत्थो अह ताण सवडहुत्तो रणरसतण्हालुओ सहसा' (पउम ८, ४७), 'वच्चइ य दाहिणदिसं लंकानयरी-सवडहुत्तो' (पउम ८, १३४)।

सवण देखो समण = श्रमण (आरा ३६, भवि)।

सवण पुं [श्रवण] १ कर्ण, कान (पाअ; सुपा १२८)। २ नक्षत्र-विशेष (सम ८, १५; सुज्ज १०, ५)। ३ न. आकर्णन, सुनना (भग; सुर १, २४६)। देखो सवन।

सवण न [शपन] आह्वान (विसे २२२७)।

सवण देखो स-वण = स-व्रण।

सवण न [सवन] कर्मों में प्रेरणा (राज)।

सवणता } स्त्री [श्रवणता] १ आकर्णन,
सवणया } श्रवण, सुनना (ठा २, १—पत्र ४६; ६—पत्र ३५५; णाया १, १—पत्र २६; भग; औप)। २ अवग्रह-ज्ञान (णंदि १७४)।

सवण्ण वि [सवर्ण] समान वर्णवाला (पउम २, ३१)।

सवण्ण न [सावर्ण्य] समान-वर्णता (प्रयौ २०)।

सवत्त पुं [सपत्न] १ दुश्मन, शत्रु, रिपु; (से ३, ५७; उप १०३१ टी; गउड)। २ वि. विरुद्ध (ओघ २७६)। ३ समान, तुल्य; 'सयवत्तसवत्तनयणरमणिज्जा' (कुप्र २); 'सयमेव ससिसवत्तं छत्तं उवरिं ठियं तस्स' (कुप्र ११६)।

सवत्तिणी देखो सवत्ती; 'सवि (? व)त्तिणी' (पिंड ५१०)।

सवत्तिया स्त्री [सपत्निका] नीचे देखो (उवा)।

सवत्ती स्त्री [सपत्नी] पति की दूसरी स्त्री (उवा; काप्र ८७१; स्वप्न ५७; ठा ४, ३—पत्र २४२; हेका ४५)।

सवन (मा) पुं [श्रवण] एक ऋषि का नाम (मोह १०६)। देखो सवण = श्रवण।

सवन्न देखो सवण्ण (हम्मीर १७)।

सवय देखो स-वय = स-वयस, स-व्रत।

सवर देखो सबर (पउम ६८, ६५; इक, कप्पू, पि २५०)।

सवरिआ देखो सपज्झा (नाट—वेणी २६)।

सवल देखो सबल (दे २, ५५; कुमा; हे १, २३७; रंभा)।

सवलिआ स्त्री [दे] भरोच का एक प्राचीन जैन मन्दिर (मुणि १०८९६)।

सवह पुं [शपथ] १ आक्रोश-वचन, गाली (णाया १, १—पत्र २६; देवेन्द्र ३५)। २ सोगन्ध, सौंह (गा ३३३; महा)। ३ दिव्य, दोषारोप की शुद्धि के लिए किया जाता अग्नि-प्रवेश आदि (पउम १०१, ७)।

सवाय पुं [दे] श्येन पक्षी (दे ८, ७)।

सवाग }
सवाय } देखो स-वाग = श्व-पाक।

सवाय देखो स-वाय = स-पाद, स-वाद, सद्-वाच्।

सवार न [दे] सुबह, प्रभात, गुजराती में 'सवार' (बृह १)।

सवास पुं [दे] ब्राह्मण (दे ८, ५)।

सवास देखो स-वास = स-वास।

सविअ वि [शप्त] शाप-ग्रस्त, आक्रुष्ट (दे १, १३; पाअ)।

सविउ पुं [सवितृ] १ सूर्य, रवि (ओघ ६६७)। २ हस्त-नक्षत्र का अधिपति देव (सुज्ज १०, १२)। ३ हस्त नक्षत्र (अणु)।

सविक्ख वि [सापेक्ष] अपेक्षा रखनेवाला (सम्मत्त ७६)।

सविज्ज देखो स-विज्ज = स-विद्य।

सविट्ठा स्त्री [श्रविष्ठा] नक्षत्र-विशेष, धनिष्ठा नक्षत्र (राज)।

सविण देखो सुमिण = स्वप्न (पव ६८)।

सवितु देखो सविउ (ठा २, ३—पत्र ७७)।

सविस न [दे] सुरा, दारू (दे ८, ४)।

सविह न [सविध] पास, निकट (पाअ)।

सव्व वि [सव्य] वाम, बाँया (औप; उप पृ १३०)।

सव्व वि [श्रव्य] श्रवण-योग्य, 'सव्वक्खरसंनिवाई' (भग १, १—पत्र ११)।

सव्व स [सर्व] १ सब, सकल, समस्त। २ संपूर्ण (हे ३, ५८; ५९)। °अ, °त्र [°तस्] १ सब से। २ सब ओर से (हे १, ३७; कुमा; आचा)। °ओभद्द वि [°तोभद्र] १ सब प्रकार से सुखी। २ न. सब प्रकार से सुख (पंचू १)। ३ चक्र-विशेष, शुभाशुभ के ज्ञान का साधन-भूत एक चक्र (ति ६)। ४ महाशुक्र देवलोक में स्थित एक विमान (सम ३२)। ५ पाँचवाँ ग्रैवेयक विमान

(पव १६४)। ६ एक नगर का नाम (विपा १, ५—पत्र ६१) ७ अच्युतेन्द्र का एक पारियानिक विमान (ठा १०—पत्र ५१८; औप)। ८ दृष्टिवाद का एक सूत्र (सम १२८)। ९ पुं. यक्ष की एक जाति (राज)। १० देव-विमान-विशेष (देवेन्द्र १३६; १४१)।

°ओभद्दा स्त्री [°तोभद्रा] प्रतिमा-विशेष, एक व्रत (औप; ठा २, ३—पत्र ६४; अंत २९)। °कामसमिद्ध पुं [°कामसमृद्ध] पक्ष का छठवाँ दिवस, षष्ठी तिथि (सुज्ज १०, १४)। °कामा स्त्री [°कामा] विद्या-विशेष, जिसकी साधना से सर्व इच्छाएँ पूर्ण होती हैं (पउम ७, १०७)। °गय वि [°गत] व्यापक (अच्चु १०)। °गा स्त्री [°गा] उत्तर रुचक पर्वत पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८—पत्र ४३७)। °गुत्त पुं [°गुप्त] एक जैन मुनि (पउम २०, १९)। °ज्ज वि [°ज्ञ] १ सर्व पदार्थों का जानकार। २ पुं. जिन भगवान्। ३ बुद्धदेव। ४ महादेव। ५ परमेश्वर (हे २, ८३; षड्; प्राप्र)। °ट्ठ पुं [°र्थ] १ अहोरात्र का उनतीसवाँ मुहूर्त्त (सुज्ज १०, १३)। २ पुंन. सहस्रार देवलोक का एक विमान (सम १०५)। ३ अनुत्तर देवलोक का सर्वार्थसिद्ध-नामक एक विमान (पव १९०)। ४ पुं. सब अर्थ (आचा १, ८, ८, २५)। °ट्ठसिद्ध पुंन [°र्थसिद्ध] १ अहोरात्र का उनतीसवाँ मुहूर्त्त (सम ५१) २ एक सर्व-श्रेष्ठ देव-विमान, अनुत्तर देवलोक का पाँचवाँ विमान (सम २; भग; अंत; औप)। ३ पुं. ऐरवत वर्ष में उत्पन्न होनेवाले छठवें जिनदेव (पव ७)। °ट्ठसिद्धा स्त्री [°र्थसिद्धा] भगवान् धर्मनाथजी की दीक्षा-शिविका (विचार १२९)। °ट्ठसिद्धि स्त्री [°र्थसिद्धि] एक देव-विमान (देवेन्द्र १३७)। °ण्णु देखो °ज्ज (हे १, ५६; षड्; औप)। °त्त देखो °त्थ (सुमु १५०)। °त्तो देखो °ओ (प्राप्र)। °त्थ अ [°त्र] सब स्थान में, सब में (गउड; प्रासू ३६; ६८)। °दंस, °दरिसि वि [°दर्शिन्] १ सब वस्तुओं को देखनेवाला। २ पुं. जिन भगवान्, अर्हन् (राज; भग; सम १; पडि)। °देव पुं [°देव] १ एक प्रसिद्ध जैन आचार्य (सार्ध ८०)। २ राजा कुमारपाल के समय का एक सेठ (कुप्र १४३)। °दंसि देखो °दंसि (चेइय ३५९)। °द्धा स्त्री [°द्धा] सब काल, अतीत आदि सर्व समय (भग)।

°धत्ता स्त्री [°धत्ता] व्यापक, सर्व-ग्राहक (विसे ३४९१)। °न्नु देखो °ज्ज (सम १; प्रासू १७०; महा)। °प्पग वि [°त्मक] १ व्यापक। २ पुं. लोभ (सूअ १, १, २, १२)। °प्पभा स्त्री [°प्रभा] उत्तर रुचक पर्वत पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (राज)। °भक्ख वि [°भक्ष] सबको खानेवाला, सर्व-भोजी; 'अग्गिमिव सव्वभक्खे' (णाया १, २—पत्र ७९)। °भद्दा स्त्री [°भद्रा] प्रतिज्ञा-विशेष, व्रत-विशेष (पव २७१)। °भावविउ पुं [°भावविद्] आगामी काल में भारत वर्ष में होनेवाले बारहवें जिन-देव (सम १५३)। °य वि [°द] सब देनेवाला (पण्ह २, १—पत्र ९९)। °या अ [°दा] हमेशा, सदा (रंभा)।

°रयण पुं [°रत्न] १ एक महा-निधि (ठा ९—पत्र ४४९)। २ पुंन. पर्वत-विशेष का एक शिखर (इक)। °रयणा स्त्री [°रत्ना] ईशानेन्द्र की वसुमित्रा नामक इन्द्राणी की एक राजधानी (इक)। °रयणामय वि [°रत्नमय] १ सब रत्नों का बना हुआ (पि ७०; जीव ३, ४)। २ चक्रवर्त्ती का एक निधि (उव ९८६ टी)। °विग्गहिअ वि [°विग्रहिक] सर्व-संक्षिप्त, सबसे छोटा (भग १३, ४—पत्र ६०६)। °विरइ स्त्री [°विरति] पाप-कर्म से सर्वथा निवृत्ति, पूर्ण संयम (विसे २६८४)। °संगय [°सङ्गत] मृत्यु (पउम—पत्र० ३२१, पर्व ११०, गा० ४४)। °संजम पुं [°संयम] पूर्ण संयम (राय)। °सह वि [°सह] सब सहन करनेवाला, पूर्ण सहिष्णु (पउम १४, ७९)।

°सिद्धा स्त्री [°सिद्धा] पक्ष की चौथी, नववीं और चौदहवीं रात्रि-तिथि (सुज्ज १०, १५)। °सो अ [°शस्] सब ओर से, सब प्रकार से (उत्त १, ४; आचा)। °स्स न [°स्व] सकल द्रव्य, सब धन (स ४५९; अभि ४०; कप्पू)। °हा अ [°था] सब प्रकार से, सब तरह से (गा ८९७; महा; प्रासू ३; १८१)। °ाणंद पुं [°ानन्द] ऐरवत क्षेत्र के एक भावी जिन-देव (सम १५४)। °ाणुभूइ पुं [°ानुभूति] १ भारत वर्ष में होनेवाले पाँचवें जिन भगवान् (सम १५३)। २ भगवान् महावीर का एक शिष्य (भग १५—पत्र ६७८)। °ाम्हा स्त्री [°ास्त्रा] विद्या-विशेष (पउम ७, १४४)। °ाव वि [°ाप] संपूर्ण (भग)। °ासण पुं [°ाशन] अग्नि, आग (हे ४, ३६५)।

सव्वंकस वि [सर्वंकष] १ सर्वातिशायी, सर्व से विशिष्ट (कप्पू)। २ न. पाप (आव)।

सव्वंग वि [सर्वाङ्ग] १ संपूर्ण (ठा ८, [illegible]—पत्र २०८)। सर्व-शरीर-व्यापी (राज)। °सुंदर वि [°सुन्दर] १ सर्व अंगों में श्रेष्ठ। २ पुंन. तप-विशेष (राज; पव २७१)।

सव्वंगिअ, सव्वंगीण वि [सर्वाङ्गीण] सर्व अवयवों में व्याप्त (हे २, १५१; कुमा; से १५, ५४); 'सव्वंगीणाभरणं पत्तेयं तेण ताण कयं' (कुप्र २३५; धर्मवि १४६)।

सव्वण देखो स-व्वण = स-व्रण।

सव्वराइअ वि [सार्वरात्रिक] संपूर्ण रात्रि से सम्बन्ध रखनेवाला, सारी रात का (सूअ २, २, ५५; कप्प)।

सव्वरी स्त्री [शर्वरी] रात्रि, रात (पाअ; गा ६५३; सुपा ४६१)।

सव्वल पुं [दे. शर्वल] कुन्त, बर्छा (राज; काल)। देखो सब्बल।

सव्वला स्त्री [दे. शवला] कुशी, लोहे का एक हथियार (दे ८, ६)।

सव्ववेक्ख देखो स-व्ववेक्ख = स-व्यपेक्ष।

सव्वाव देखो सव्व-ाव = सर्वाप।

सव्वाव देखो स-व्वाव = स-व्याप।

सव्वावंति अ [दे] सर्व, सब, संपूर्ण; 'एयावंति सव्वावंति लोगंसि' (आचा); 'सव्वावंति च णं तीसे णं पुक्खरिणीए' (सूअ २, १, ५); 'सव्वावंति च णं लोगंसि' (सूअ २, ३, १); 'सव्वं ति सव्वावंति फुसमाणकालसमयंसि जावतियं खेत्तं फुसइ' (भग १, ६—पत्र ७७)।

सव्विड्ढि स्त्री [सर्वर्द्धि] संपूर्ण वैभव (णाया १, ८—पत्र १३१)।

सव्विवर देखो स-व्विवर = स-विवर।

सव्वोसहि स्त्री [सर्वौषधि] १ लब्धि-विशेष, जिसके प्रभाव से शरीर की कफ आदि सब चीज औषधि का काम करती है (पराह २, १—पत्र ९९)। २ वि. लब्धि-विशेष को प्राप्त (राज)।

सस अक [श्वस्] श्वास लेना, साँसना। ससइ (पराण १)। वकृ. ससंत (गाया १, १—पत्र ६३; गा ५४६; सुर १२, १६४; नाट—मृच्छ २२०)।

सस पुं [शश] खरगोश (गाया १, १—पत्र २४; ...)। °इंध पुं [°चिह्न] चन्द्रमा (गउड)। °हर पुं [°धर] चन्द्रमा (गाया १, ११; सुर १६, ९०; हे ३, ८५; कुमा; वज्जा १६; रंभा)।

ससंक पुं [शशाङ्क] १ चन्द्रमा, चाँद (कप्प; सुर १६, ५५; सुपा २०; कप्पू; रंभा)। २ नृप-विशेष (पउम ५, ४३; ८५, २)। °धम्म पुं [°धर्म] विद्याधर-वंश का एक राजा (पउम ५, ४४)।

ससंक देखो स-संक = स-शङ्क।

ससंकिअ देखो स-संकिअ = स-शङ्कित।

ससंग देखो ससंक = शशाङ्क।

ससंवेयण देखो स-संवेयण = स्व-संवेदन।

ससक्ख वि [ससाक्ष्य] साक्षीवाला (राय १४०)।

ससग पुं [शशक] देखो सस = शश (उव)।

ससण पुं [श्वसन] १ शुण्डा-दण्ड, हाथी की सूँड (नंदु २०; औप)। २ वायु, पवन। ३ न. निश्वास (राज)।

ससत्ता देखो स-सत्ता = स-सत्त्वा।

ससरक्ख वि [सरजस्क, सरक्ष] १ रजो-युक्त, धूलवाला (आचा २, १, ६, ३; २, २, ३, ६३; आव ४)। २ पुं. बौद्ध मत का साधु (सुख १८, ४३; महा)।

ससाइअ वि [दे] निष्पिष्ट, पिसा हुआ (दे ८, २)।

ससा स्त्री [स्वसृ] बहन, भगिनी (पिंड ३१७; हे ३, ३५; कुमा)।

ससि पुं [शशिन्] १ चन्द्रमा, चाँद (सुज्ज २०—पत्र २९१; उव, कप्प; कुमा; पि ४०५)। २ एक विद्यार्थी का नाम (पउम ५, ९४)। ३ चन्द्र नाड़ी, वाम नाड़ी (सिरि ३६१)। ४ एक देव-विमान (देवेन्द्र १४३)। ५ छन्द-विशेष (पिंग)। ६ एक राजा का नाम (उव)। ७ दक्षिण रुचक पर्वत का एक कूट (ठा ८—पत्र ४३६)। °अंत पुं [°कान्त] चन्द्रकान्त मणि (अच्चु ५८)। °कला स्त्री [°कला] चन्द्र की कला, सोलहवाँ भाग (गउड)। °कंत देखो °अंत (कुमा; सण)। °पभ, °पह पुं [°प्रभ] १ आठवें जिनदेव, भगवान् चन्द्रप्रभ। २ इक्ष्वाकु वंश का एक राजा (पउम ५, ५)। °प्पहा स्त्री [°प्रभा] एक रानी, कर्पूरमंजरी की माता (पउम ६, ९१; कप्पू)। °मणि पुंस्त्री [°मणि] चन्द्रकान्त मणि (से ६, ६७)। °लेहा स्त्री [°लेखा] चन्द्र की कला (सुपा ६०३)। °वक्कय न [°वल्कक] आभूषण-विशेष (औप)। °वेग पुं [°वेग] एक राज-कुमार (उप १०३१ टी)। °सेहर पुं [°शेखर] महादेव, शिव (सुपा ३३)।

ससिअ न [श्वसित] श्वास, साँस (से १२, ३२)।

ससिण देखो ससि (कप्पू)।

ससिणिद्ध वि [संस्निग्ध, सस्निग्ध] स्नेह-युक्त (आचा २, १, ७, ११; कप्प)।

ससित्थ न [ससिक्थ] आटा आदि से लिप्त हाथ या बरतन आदि का धोवन (पडि)।

ससिरिय } देखो स-सिरिय = स-श्रीक।
ससिरीय }

ससिह देखो स-सिह = स-स्पृह, स-शिख।

ससुर पुं [श्वशुर] ससुर, पति और पत्नी का पिता (पउम १८, ८; हेका ३२; कुमा; सुपा ३७७)।

ससूग देखो स-सूग = स-शूक।

ससेस देखो स-सेस = स-शेष।

ससोग } देखो स-सोग = स-शोक।
ससोगिल्ल }

सस्स न [शस्य] १ क्षेत्र-गत धान्य (गा ६८९; महा; सुपा ३२)। २ वि. प्रशंसनीय, श्लाघ्य (सुपा ३२)। देखो सास = शस्य।

सस्सवण वि [सश्रवण] सकर्ण, निपुण (सुपा ६४५)।

सस्सिय पुं [शस्यिक] कृषीवल, कृषक (राज)।

सस्सिरिअ देखो स-स्सिरिअ = स-श्रीक।

सस्सिरिली देखो सिस्सिरिली (उत्त ३६, ९८)।

सस्सिरीअ देखो स-स्सिरीअ = स-श्रीक।

सस्सू स्त्री [श्वश्रू] सास, पति या पत्नी की माता (प्राकृ ३८; सिरि ३५५)।

सह अक [राज्] शोभना, विराजना। सहइ (हे ४, १००; पाअ; कुमा; सुपा ४)।

सह अक [सह्] सहन करना। सहइ, सहंति (उव; महा; कुमा), सहइरे, सहेइरे (पि ४५८) वकृ. सहंत, सहमाण (महा; षड्)। संकृ. सहिअ (महा)। हेकृ. सहिउं, सोढुं (महा; धात्वा १५५; १५७)। कृ. सहिअव्व, सोढव्व (धात्वा १५५; सुर १४, ८०; गा १८; कप्पू; उप ७२८ टी; धात्वा १५७)।

सह सक [आ + ज्ञा] हुकुम करना, आदेश करना, फरमाना। सहइ (धात्वा १५५)।

सह वि [दे] १ योग्य, लायक (दे ८, १)। २ सहाय, मदद-कर्ता (सूअ १, ३, २, ६)।

सह वि [स्वक] देखो स = स्व (आचा)। °देस पुं [°देश] स्वदेश, स्वकीय देश (पिंग)। °संबुद्ध वि [°संबुद्ध] १ निज से ही ज्ञान को प्राप्त। २ पुं. जिन-देव (औप)।

सह वि [सह] १ समर्थ, शक्तिमान् (पाअ; से ५, २३)। २ सहिष्णु, सहन-कर्ता (आचा)। ३ पुं. युगलिक मनुष्य की एक जाति (इक; राज)। ४ अ. साथ, संग (स्वप्न ३४; आचा, जी ४३; प्रासू ३८)। ५ युगपत्, एक साथ (राज)। °कार पुं [°कार] १ आम का पेड़ (कप्प)। २ साथ मिलकर काम करना। ३ मदद, साहाय्य (हे १, १७७)। °कारि वि [°कारिन्] १ साहाय्य-कर्ता (पंचा ११, १२)। २ कारण-विशेष (विसे ११६८; श्रावक २०९)। °गत, °गय वि [°गत] संयुक्त (पराण, २२—पत्र ६३७; उव)। °गारि, °गारिअ देखो °कारि (धर्मसं २०९; उप ४७२; उवर ७६)। °चर देखो

°यर (कुमा)। °चरण न [°चरण] सहचर, साथ रहना, मेलाप; 'रयणनिहाणेहिं भवउ सहचरणं' (श्रु ८४)। °ज पुं [°ज] १ स्वभाव (कुमा; पिंग)। २ वि. स्वाभाविक (चेइय ४३१)। °जाय वि [°जात] एक साथ उत्पन्न (णाया १, ५—पत्र १०७)। °देव पुं [°देव] १ एक पाण्डव, माद्री-पुत्र (धर्मवि ८१)। २ राजगृह नगर का एक राजा (उप ६४८ टी)। °देवा स्त्री [°देवा] ओषधि-विशेष (धर्मवि ८१)। °देवी स्त्री [°देवी] १ चतुर्थ चक्रवर्ती की माता (सम १५२; महा)। २ एक महौषधि (ती ५)। °धम्मआरिणी स्त्री [°धर्मचारिणी] पत्नी, भार्या (प्रति २२)। °पंसुकीलिअ वि [°पांशुक्रीडित] बाल-मित्र (सुपा २५४; णाया १, ५—पत्र १०७)। °य देखो °ज (चेइय ४४६; राज)। °यर वि [°चर] १ सहाय, साहाय्य-कर्ता। २ वयस्य, दोस्त। ३ अनुचर (पाअ; कुप्र २। अच्चु ९०; नाट—शकु ६१)। °यरी स्त्री [°चरी] पत्नी, भार्या (कुप्र १५१; से ८, ६६)। °यार देखो °कार (पाअ; हे १, १७७)। °राग वि [°राग] राग-सहित (पउम १४, ३३)। °र देखो °कार (पउम ५३, ७९)।

सह° देखो सहा = सभा (कुमा)।

सहउल्थिया स्त्री [दे] दूती (दे ८, ६)।

सहगुह पुं [दे] घूक, उल्लू, पक्षि-विशेष (दे ८, १६)।

सहडामुह न [शकटामुख] वैताढ्य की उत्तर श्रेणि में स्थित एक विद्याधर-नगर (इक)।

सहण अ [दे] सह, साथ में (सूत्र० चूर्णि० गा० २५७)।

सहण न [सहन] १ तितिक्षा, मर्षण। २ वि. सहिष्णु, सहन करनेवाला (सं २९)।

सहर पुंस्त्री [शफर] मत्स्य, मछली (पाअ; गउड)। स्त्री. °री (हे १, २३६; गउड)।

सहर वि [दे] साहाय्य-कर्ता, सहाय; 'न तस्स माया न पिया न भाया, कालम्मि तम्मि (?म्मी) सहरा भवंति' (वै ४३)।

सहल वि [सफल] फल-युक्त, सार्थक (उप १०३१ टी; हे १, २३६; कुमा; स्वप्न १९)।

सहस देखो सहस्स (श्रा ४४; पि ६२; ६६)। °किरण पुं [°किरण] सूर्य, रवि (सम्मत्त ७६)। °क्ख पुं [°क्ष] १ इन्द्र (सुपा १३०)। २ रावण का एक योद्धा (पउम ५६, २९)। ३ छन्द-विशेष (पिंग)।

सहसकार पुं [सहसाकार] १ विचार किए विना करना (आचा)। २ आकस्मिक क्रिया, अकस्मात् करना (भग २५, ७—पत्र ९१९)। ३ वि. विचार किए विना करनेवाला (आचा)।

सहसत्ति अ. अकस्मात्, शीघ्र, जल्दी, तुरन्त (पाअ; प्राकृ ८१)।

सहसा अ [सहसा] अकस्मात्, शीघ्र, जल्दी (पाअ; प्रासू १५१; भवि)। °वित्तासिय न [°वित्रासित] अकस्मात् स्त्री के नेत्र-स्थगन आदि क्रीड़ा (उत्त १६, ६)।

सहस्स पुंन [सहस्र] १ संख्या-विशेष, दस सौ, १०००। २ वि. हजार की संख्यावाला (जी २७; ठा ३, १ टी—पत्र ११९; प्रासू ४; कुमा)। ३ प्रचुर, बहुत (कप्प; आवम; हे २, १९८)। °किरण पुं [°किरण] १ सूर्य, रवि (सुपा ३७)। २ एक राजा (पउम १०, ३४)। °क्ख पुं [°क्ष] इन्द्र, देवाधिपति (कप्प; उत्त ११, २३)। °णयण, °नयण पुं [°नयन] १ इन्द्र (उव; हम्मीर ५०; महा)। २ एक विद्याधर राज-कुमार (पउम ५, ६७)। °पत्त न [°पत्र] हजार दल-वाला कमल (कप्प)। °पाग पुंन [°पाक] हजार ओषधि से बनता एक प्रकार का तैल (णाया १, १—पत्र १९; ठा ३, १—पत्र ११७)। °रस्सि पुं [°रश्मि] सूर्य, रवि (णाया १, १—पत्र १७; भग; रयण ८३)। °लोयण पुं [°लोचन] इन्द्र (स ६२२)। °सिर वि [°शिरस्] १ प्रभूत मस्तक-वाला। २ पुं विष्णु (हे २, १९८)। °वत्त देखो °पत्त (से ६, ३८; सुपा ४६)। °सो अ [°शस्] हजार-हजार, अनेक हजार (श्रा १२)। °हा अ [°धा] सहस्र प्रकार से (सुपा ५३)। °हुत्तं अ [°कृत्वस्] हजार बार (प्राप्र; हे २, १५८)। देखो सहस, सहास।

सहस्संबवण न [सहस्राम्रवण] एक उद्यान, आम के प्रभूत पेड़ोंवाला वन (णाया, १, ८—पत्र १५२; अंत; उवा)।

सहस्सार पुं [सहस्रार] १ आठवाँ देवलोक (सम ३५; भग; अंत)। २ आठवें देवलोक का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५)। ३ एक देव-विमान (देवेन्द्र १३५)। °वडिंसय पुंन [°ावतंसक] एक देव-विमान (सम ३५)।

सहा स्त्री [सभा] समिति, परिषद् (कुमा; स १२६; ५१६; सुपा ३८४)। °सय वि [°सद्] सभ्य, सदस्य (पाअ; स ३८५)।

सहा देखो साहा = शाखा (गा २३०)।

सहाअ देखो स-हाअ = स्व-भाव।

सहाअ पुं [सहाय] साहाय्य-कर्ता (णाया १, २—पत्र ८८; पाअ; से ३, ३; स्वप्न १०६; महा; भग)।

सहाइ वि [साहायिन्] ऊपर देखो (सिरि. ९७; सुपा ५९३)।

सहाइया स्त्री [सहायिका] मदद करनेवाली (उवा)।

सहार देखो सह-यार = सह-कार।

सहाव देखो स-हाव = स्व-भाव।

सहास देखो सहस्स (भवि)। °हुत्तो अ [°कृत्वस्] हजार बार (षड्)।

सहासय देखो सहा-सय = सभा-सद।

सहि वि [सखि] मित्र, दोस्त (पाअ; उर २, ६)। देखो सही°।

सहि° देखो सही (कुमा)।

सहिअ वि [सोढ] सहन किया हुआ (से १, ५५; धात्वा १५५)।

सहिअ वि [सहित] १ युक्त, समन्वित (उव; कुमा; सुपा ६१)। २ हित-युक्त (सूअ १, २, २, २३)। ३ पुं. ज्योतिष्क ग्रह-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७७)।

सहिअ पुं [सभिक] द्यूत-कारक, जुआ खेलनेवाला (दे ६, ४२; पाअ; सुपा ४८८)।

सहिअ देखो स-हिअ = स्व-हित।

सहिअ देखो सह = सह्।

सहिअ, सहिअय वि [सहृदय] १ सुन्दर चित्त-वाला। २ परिपक्व बुद्धिवाला (हे १, २६९; दे १, १; काप्र ५२१)।

सहिआ देखो सही (महा)।

सहिज्ज वि देखो सहाअ = सहाय; 'हुंति सहिज्जा विहुरे कुवियावि सहोयरा चेव' (सुपा ४२७; महा; कुप्र १२)। स्त्री. °ज्जी (सुपा १६ टि)।

सहिण देखो सण्ह + श्लक्ष्ण (आचा २, ५, १, ७; स २६४; ३२९; ३३३)।

सहिण्हु } वि [सहिष्णु] सहन करने की
सहिर } आदतवाला (राज; पि ५६६)। स्त्री. °री (गा ४७; पि ५६६)।

सही स्त्री [सखी] सहेली, संगिनी (स्वप्न १४१; कुमा)।

सहो° देखो सहि। °वाय पुं [°वाद] मित्रता-सूचक वचन (सूअ १, ६, २७)।

सहीण वि [स्वाधीन] स्वायत्त, स्व-वश (पउम २७, १७; उत्त; दस ८, ६)।

सहु वि [सह] समर्थ, शक्तिमान् (ओघ; ७७; ओघभा ६८; उवर १४२; वव ४)।

सहु (अप) देखो संघ (संक्षि ३६)।

सहुं (अप) अ [सह] साथ, संग (हे ४, ४१९; कुमा)।

सहेज्ज देखो सहिज्ज (महा)।

सहेर (अ) पुं [शेखर] षट्पद छन्द का एक भेद (पिंग)।

सहेल वि [सहेल] हेला-युक्त, अनायास होनेवाला, सरल, गुजराती में 'सहेलु' (प्रवि ११)।

सहोअर वि [सहोदर] १ तुल्य, सदृश (से ६, ४)। २ पुं. सगा भाई (पाअ; काल)।

सहोअरी स्त्री [सहोदरी] सगी बहिन (राज)।

सहोढ वि [सहोड] चोरी के माल से युक्त, स-मोष (पिंड ३८०; णाया १, २—पत्र ८६)।

सहोदर देखो सहोअर (सुपा २४०; महा)।

सहोसिअ वि [सहोषित] एक-स्थान-वासी (दे १, ४६)।

साअड्ढ सक [कृष्] १ चाष करना, कृषि करना। २ खींचना। साअड्ढइ (हे ४, १८७; षड्)।

साअड्ढिअ वि [कृष्ट] खींचा हुआ (कुमा ७, ३१)।

साअद (शौ) देखो सागद (अभि १०२; नाट—मृच्छ ४; पि १८५)।

साइ वि [शायिन्] सोनेवाला, शयन-कर्ता (सूअ १, ४, १, २८; आचा; दस ४, २६)।

साइ वि [सादि] १ आदि-सहित, उत्पत्ति-युक्त (सम्म ६१)। २ न. संस्थान-विशेष, शरीर की आकृति-विशेष जिस शरीर में नाभि से नीचे के अवयव पूर्ण और नाभि के ऊपर के अवयव हीन हों ऐसी शरीराकृति (सम १४९; अणु)। ३ कर्म-विशेष, सादि-संस्थान की प्राप्ति का कारण-भूत कर्म (कम्म १, ४०)।

साइ न [साचि] १ सेमल का पेड़, शाल्मली वृक्ष। २ संस्थान-विशेष, देखो साइ = सादि का दूसरा और तीसरा अर्थ (जीव १ टी—पत्र ४३)।

साइ पुंस्त्री [स्वाति] १ नक्षत्र-विशेष (सम २९; कप्प); 'सा साई तं च जलं पत्तविसेसेण अंतरं गरुयं' (प्रासू ३९)। २ पुं. भारतवर्ष में होनेवाले एक जिनदेव का पूर्वजन्मीय नाम (सम १५४)। ३ एक जैन मुनि (णंदि ४९)। ४ हैमवत-वर्ष के शब्दापाती पर्वत का अधिष्ठायक देव (ठा २, ३—पत्र ६९; ८०)।

साइ पुं [सादिन्] घुड़सवार (उप ७२८ टी)।

साइ पुंस्त्री [साति] १ अच्छी चीज के साथ खराब चीज का मिश्रण, उत्तम वस्तु के साथ हीन वस्तु की मिलावट (सूअ २, २, ६५)। २ अविश्रम्भ, अविश्वास। ३ असत्य वचन, झूठ (पण्ह १, २—पत्र २६)। ४ सातिशय द्रव्य, अपेक्षा-कृत अच्छी चीज (राज ११४)। °जोग पुं [°योग] १ मोहनीय कर्म (सम ७१)। २ अच्छी चीज से हीन चीज की मिलावट (राय ११४ टी)। °संपओग पुं [°संप्रयोग] वही अर्थ (राय १४)।

साइ पुंस्त्री [दे] केसर, 'सालतले सारिठिआ अच्चइ चंडि ससाइपउमेहिं' (दे ८, २२)।

साइज्ज सक [स्वादु, सात्मी + कृ] १ स्वाद लेना, खाना। २ चाहना, अभिलाष करना। ३ स्वीकार करना, ग्रहण करना। ४ आसक्ति करना। ५ अनुमोदन करना। ६ उपभोग करना। साइज्जइ, साइज्जामो (आचा; कस; कप्प—टी; भग २५—पत्र ६८०; औप), साइज्जेज्ज (आचा २, १, ३, २)। भवि. साइज्जिस्सामि (आचा)। हेकृ. साइज्जित्तए (औप)।

साइज्जण न [स्वादन] अभिष्वङ्ग, आसक्ति (विसे २६८५)।

साइज्जणया स्त्री [स्वादना] उपभोग, सेवा (ठा ३, ३ टी—पत्र १४७)।

साइज्जिअ वि [दे] अवलम्बित (दे ८, २६)।

साइज्जिअ वि [स्वादित] १ उपभुक्त (कप्प—टी)। २ उपभुक्त-सम्बन्धी। स्त्री. °या (कप्प)।

साइम वि [स्वादिम] पान, सुपारी आदि मुखवास (ठा ४, २—पत्र २१९; आचा; उवा; औप; सम २९)।

साइय वि [सादिक] आदिवाला (कम्म १, ६; नव ३६)।

साइय देखो सागय = स्वागत (सुर ११, २१७)।

साइय न [दे] संस्कार (दे ८, २५)।

साइयंकार वि [दे] स-प्रत्यय, विश्वस्त (पिंडभा ४२)।

साइरेग वि [सातिरेक] साधिक, सविशेष (सम २; भग)।

साइसय वि [सातिशय] अतिशयवाला (महा; सुपा ३९७)।

साई देखो सई = शची (इक)।

साउ वि [स्वादु] स्वादवाला, मधुर (पिंड १२८; उप ६७८; से २, १८; कुमा; हे १, ५)।

साउग वि [स्वादुक] स्वादिष्ठ भोजनवाला, मधुर भोजनवाला; 'कुलाइं जे धावइ साउगाइं' (सूअ १, ७, २३)।

साउज्ज न [सायुज्य] सहयोग, साहाय्य (अच्चु ६५)।

साउणिअ वि [शाकुनिक] १ पक्षि-घातक, पक्षियों के वध का काम करनेवाला (पण्ह १, १; २—पत्र २६; अणु १२६ टि; विपा १, ८—पत्र ८३)। २ शकुन-शास्त्र का जानकार (सुपा २६७; कुप्र ५)। ३ श्येन पक्षी द्वारा शिकार करनेवाला (अणु १२६ टि)।

साउअ देखो साउग (राज)।

साउय वि [सायुष्] आयुवाला, प्राणी (ठा २, १—पत्र ३८)।

साउल वि [संकुल] व्याप्त, भरपूर (सुर १०, १८)।

साउलय वि [साकुलत] आकुलता युक्त, व्याकुल, व्यग्र; 'इंदियसुहसाउलओ परिहिंडई सो वि संसारे' (पउम १०२, १६७)।

साउली स्त्री [दे] १ वस्त्राञ्चल (गा २६६)। २ वस्त्र, कपड़ा (गा ६०५)। देखो साहुली।

साउल्ल पुं [दे] अनुराग, प्रेम (हे ८, २४; षड्)।

साएज्ज देखो साइज्ज। साएज्जइ (भवि ११, २)।

साएय न [साकेत] अयोध्या नगरी (इक; सुपा ५५०; पि ६३)। °पुर न [°पुर] वही अर्थ (उप ७२८ टी)। °पुरी स्त्री [°पुरी] वही (पउम ४, ४)। देखो साकेय।

साएया स्त्री [साकेता] अयोध्या नगरी (पउम २०, १०; णाया १, ८—पत्र १३१)।

सांतवण न [सान्तपन] व्रत-विशेष (प्रबो ७३)।

साक देखो साग (दे ६, १३०)।

साकेय न [साकेत] १ नगर-विशेष, अयोध्या (ती १०)। २ वि. गृहस्थ-संबन्धी। ३ न. प्रत्याख्यान-विशेष (पव ४)।

साकेय वि [साङ्केत] १ संकेत का, संकेत-संबन्धी। २ न. प्रत्याख्यान का एक भेद (पव ४)।

साग पुं [शाक] १ वृक्ष-विशेष (पउम ४२, ७; दे १, २७)। २ तक्र-सिद्ध बड़ा आदि खाद्य; 'सागो सो तक्कसिद्धं जं' (पव २५९)। ३ शाक, तरकारी (पि २०२; ३६४)।

सागडिअ वि [शाकटिक] गाड़ीवान, गाड़ी चला कर निर्वाह करनेवाला (सुर १६, २२३; स २६२; उत्त ५, १४; श्रा १२)।

सागय न [स्वागत] १ शोभन आगमन, प्रशस्त आगमन (भग)। २ अतिथि-सत्कार, आदर, बहु-मान (सुपा २५६)। ३ कुशल (कुमा)।

सागर पुं [सागर] १ समुद्र (पण्ह १, ३—पत्र ४४; प्रासू १३४)। २ एक राज-पुत्र (उप ६३७)। ३ राजा अन्धकवृष्णि का एक पुत्र (अंत ३)। ४ एक वणिक्—व्यापारी (उप ५४८ टी)। ५ सातवें बलदेव तथा वासुदेव के पूर्व भव के धर्म-गुरु (सम १५३)। ६ पुंन. कूट-विशेष (इक)। ७ समय-परिमाण-विशेष, दश-कोटाकोटि-पल्योपम-परिमित काल (नव; ६; जी ३६; पव २०५)। ८ एक देव-विमान (सम २)। °कंत पुंन [°कान्त] एक देव-विमान (सम २)। °चंद पुं [°चन्द्र] १ एक जैन आचार्य (काल)। २ एक व्यक्तिवाचक नाम (उव; पडि; राज)। °चित्त पुंन [°चित्र] कूट-विशेष (इक)। °दत्त पुं [°दत्त] १ एक जैन मुनि (सम १५३)। २ तीसरे बलदेव का पूर्वजन्मीय नाम (सम १५३)। ३ एक श्रेष्ठि-पुत्र (महा)। ४ एक सार्थवाह का नाम (विपा १, ७)। ५ हरिषेण चक्रवर्ती का एक पुत्र (महा ४४)। °दत्ता स्त्री [°दत्ता] १ भगवान् धर्मनाथजी की दीक्षा-शिबिका (सम १५१)। २ भगवान् विमलनाथजी की दीक्षा-शिबिका (विचार १२९)। °देव पुं [°देव] हरिषेण चक्र-वर्ती का एक पुत्र (महा)। °वूह पुं [°व्यूह] सैन्य की रचना-विशेष (महा)। देखो सायर = सागर।

सागरिअ देखो सागारिय (पिंड ५९८; पव ११२)।

सागरोवम पुंन [सागरोपम] समय-परिमाण विशेष, दस-कोटाकोटि-पल्योपम-परिमित काल (ठा २, ४—पत्र ९०; सम २, ८; ९; १०; ११; उव; पि ४४८)।

सागार वि [साकार] १ आकार-सहित, आकृतिवाला। २ विशेषांश को ग्रहण करने की शक्ति, विशेष-ग्रहण, ज्ञान (औप; भग; सम्म ६५)। ३ अपवाद-युक्त (भग ७, २—पत्र २९५; उप ७२८ टी)। °पस्सि वि [°दर्शिन्] ज्ञानवाला (पण्ण ३०—पत्र ७५९)।

सागार वि [सागार] गृह-युक्त, गृहस्थ (आवम)।

सागारि, सागारिय वि [सागारिन्, °रिक] १ गृह का मालिक, उपाश्रय का मालिक, साधु को स्थान देनेवाला गृहस्थ, शय्यातर (पिंड ३१०; आचा २, २, ३, ५; सूअ १, ९, १६; ओघ १६६)। २ सूतक, प्रसव और मरण की अशुद्धि, अशौच (सूअ १, ९, १६)। ३ गृहस्थ से युक्त; 'सागारिए उवस्सए' (आचा २, २, १, ४; ५)। ४ न. मैथुन (आचा १, ९, १, ६)। ५ वि. शय्यातर गृहस्थ का, उपाश्रय के मालिक से संबन्ध रखनेवाला; 'सागारियं पिंडं भुंजेमाणे' (सम ३९)।

सागेय देखो साकेय = साकेत (णाया १, ८—पत्र १३१; उप ७२८ टी)।

साड सक [शाटय्, शातय्] सड़ाना, विनाश करना। हेकृ. साडेत्तए (विपा १, १—पत्र १६)।

साड पुं [शाट, शात] १ शाटन, विनाश (विसे ३३२१)। २ शाटक, उत्तरीय वस्त्र, चद्दर (पव ३८)। ३ वस्त्र, कपड़ा; 'एगसाडे अदुवा अचेले' (आचा; सुपा ११)।

साडअ, साडग पुंन [शाटक] वस्त्र, कपड़ा (सुपा १५३; राज)।

साडण न [शाटन, शातन] १ विशरण, विनाश (विसे ३३१९; स ११९)। २ छेदन (सूअनि ७२)।

साडणा स्त्री [शाटना, शातना] खण्ड-खण्ड होकर गिराने का कारण, विनाश-कारण (विपा १, १—पत्र १६)।

साडिअ वि [शाटित, शातित] सड़ाकर गिराया हुआ, विनाशित (सुर १५, ३; दे ७, ८)।

साडिआ स्त्री [शाटिका] वस्त्र, कपड़ा (औप; कप्प)।

साडिल्ल देखो साड = शाट; 'नियसियआजाणु-मलिणसाडिल्लो' (सुपा ११)।

साडी स्त्री [शाटी] वस्त्र, कपड़ा (कुप्र ४१२)।

साडी स्त्री [शकटी] गाड़ी। °कम्म पुंन [°कर्मन्] गाड़ी बनाना, बेचना, चलाना आदि शकट-जीविका (उवा; श्रा २२)।

साडीया देखो साडिआ; 'जह उल्ला साडीया आसुं सुक्कइ विरल्लिया संती' (विसे ३०३२)।

साडोल्लय देखो साडअ (णाया १, १८—पत्र २३५)।

साण सक [शाणय्] शाण पर चढ़ाना, तीक्ष्ण करना। साणिज्जदि (शौ) (नाट)।

साण पुंस्त्री [श्वान] १ कुत्ता (पाअ; पण्ह १, १—पत्र ७; प्रासू १६६; हे १, ५२)। स्त्री. °णी (सुपा ११४)। २ पुं. छन्द-विशेष (पिंग)।

साण वि [श्यान] निबिड, घनीभूत (गा ६८२)।

साण पुं [शाण, शान] शस्त्र को घिस कर तीक्ष्ण करने का यन्त्र (गउड; रंभा)।

साण वि [शाण] सन का बना हुआ, पाट का बना हुआ। स्त्री. °णी (दस ५, १, १८)।

साण देखो सासायण (कम्म ३, २१)।

साणइअ वि [दे. शाणित] उत्तेजित (दे ८, १३)।

साणय न [शाणक] सन का बना हुआ वस्त्र (ठा ५, ३—पत्र ३३८; कस)।

साणि स्त्री [शाणि] सन का बना हुआ कपड़ा (दस ५, १, १८)।

साणिअ वि [दे] शान्त (षड्)।

साणी देखो साण = श्वान।

साणी स्त्री [शाणी] देखो साणि; 'साणीपावारपिहियं' (दस ५, १, १८)।

साणु पुंन [सानु] पर्वत पर का समान भूमि-वाला प्रदेश (पाअ; सुर ७, २१४; स ३६५)। °मंत पुं [°मत्] पर्वत (उप १०३१ टी)। °लट्ठिया स्त्री [°यष्टिका] ग्राम-विशेष (राज)।

साणुक्कोस वि [सानुक्रोश] दयालु (ठा ४, ४—पत्र २८५; पण्ह १, ४—पत्र ७२; स्वप्न २६; ४६; वसु)।

साणुप्पग न [सानुप्रग] प्रातःकाल, प्रभात-समय (बृह १)।

साणुबंध वि [सानुबन्ध] निरन्तर, अविच्छिन्न प्रवाहवाला (उप ७७२)।

साणुबीय वि [सानुबीज] जिसमें उत्पादन-शक्ति नष्ट न हुई हो वह बीज (आचा २, १, ८, ३)।

साणुवाय वि [सानुवात] अनुकूल पवन-वाला (उव)।

सणुसय वि [सानुशय] अनुताप-युक्त (अभि १११; गउड)।

साणूर न [दे] देव गृह, देव-मन्दिर (दे ८, २४)।

सात न [सात] १ सुख (ठा २, ४)। २ वि. सुखवाला। स्त्री. °ता (पण्ण ३५—पत्र ७८६)। °वेयणिज्ज न [°वेदनीय] सुख का कारण-भूत कर्म (ठा २, ४—पत्र ६६)।

साति देखो साइ = स्वाति, सादि, साचि, साति (सम २; ठा २, ३—पत्र ८०; ६—पत्र ३५७; जीव १—पत्र ४२; पण्ह १, २—पत्र २६; सम ७१)।

सातिज्जणया देखो साइज्जणया (ठा ३, ३—पत्र १४७)।

साद पुं [साद] अवसाद, खेद (दे १, १६८)।

सादिव्व वि [सदैव] देवता-प्रयुक्त, देव-कृत (पव २६८)।

सादिव्व देखो सादेव्व (पिंड ४२७)।

सादीअ देखो साइय = सादिक (भग; औप)।

सादीणगंगा स्त्री [सादीनगङ्गा] आजीविक मत में उक्त एक परिमाण (भग १५—पत्र ६७४)।

सादेव्व न [सादिव्य] देव का अनुग्रह—सांनिध्य; 'सादेव्वाणि य देवयाओ करेंति सच्चवयणे रयाणं' (पण्ह २, २—पत्र ११४; उप ८०३)।

सादूदूलसट्ट (अप) देखो सद्दूल-सट्ट (पिंग)।

साध देखो साह = साधय्। साधेंति (सुज्ज १०, १७)।

साधग देखो साहग (धर्मसं १४२; ३२३)।

साधम्म देखो साहम्म (धर्मसं ८७७)।

साधम्मिअ देखो साहम्मिअ (पउम ३५, ७४)।

साधारण देखो साहारण = साधारण (त्रि ८२)।

साधारणा स्त्री [संधारणा] वासना, धारणा, स्मरणशक्ति (णंदि १७६)।

साधीण देखो साहीण (नाट—मालती १११)।

सापद (शौ) देखो सावय = श्वापद (नाट—शकु ३०)।

साफल्ल } देखो साहल्ल (विसे २५३२;
साफल्लया } उप ७६८ टी; धर्मवि ६६; स ७०८; ७०६)।

साबाह वि [साबाध] आबाधा-सहित (उप ३३६ टी)।

साभरग पुं [दे. साभरक] रुपया, सोलह आने का सिक्का (पव १११)।

साभव्व देखो साहव्व (विसे १३६)।

साभाविअ } देखो साहाविअ (सूअनि ११;
साभाविय } कप्प; श्रावक २५८ टी)।

साम पुंन [सामन्] १ शत्रु को वश करने का उपाय-विशेष, एक राज-नीति (णाया १, १—पत्र ११; प्रासू ६७)। २ प्रिय वाक्य (कुमा; महा १४)। ३ एक वेद-शास्त्र (भग; कप्प)। ४ मैत्री, मित्रता (विसे ३४८१)। ५ शर्करा आदि मिष्ट वस्तु; 'महुरपरिणामं सामं' (आव १)। ६ सामायिक, संयम-विशेष (संबोध ४५); 'सामं समं च सम्मं इगमवि सामाइयस्स एगट्ठा' (आव १)। °कोट्ठ पुं [°कोष्ठ] ऐरवत वर्ष में उत्पन्न एकीसवें जिनदेव (सम १५३)। देखो सामि-कुट्ठ।

साम पुं [श्याम] १ कृष्ण वर्ण, काला रंग। २ हरा वर्ण, नीला रंग। ३ वि. काला वर्ण-वाला। ४ हरा वर्णवाला (आचा; कुमा; सुर ४, ४४)। ५ पुं. परमाधमी देवों की एक जाति (सम २८; सूअनि ७२)। ६ एक जैन मुनि, श्यामार्य (णंदि ४६)। ७ न. तृण-विशेष, गन्ध-तृण (सूअ २, २, ११)। ८ पुंन. आकाश, गगन (भग २०, २—पत्र ७७६)। °हत्थि पुं [°हस्तिन्] भगवान् महावीर का शिष्य एक मुनि (भग १०, ४—पत्र ५०१)।

सामइअ वि [प्रतीक्षित] जिसकी प्रतीक्षा की गई हो वह (कुमा)।

सामइअ देखो सामाइअ (विसे २६२४; २६३३; २६३४; २६३६)।

सामइअ } पुं [सामयिक] १ एक गृहस्थ
सामइग } का नाम (सूअनि १६१)। २ वि. समय-सम्बन्धी (पंच ५, १६६)। ३ सिद्धान्त का जानकार (पिंडभा ६)। ४ आगम-आश्रित, सिद्धान्त-आश्रित (ठा ३, ३—पत्र १५१)। ५ बौद्ध विद्वान् (दसनि ४, ३५)।

सामइग देखो सामाइअ (विसे २७१६)।

सामइगि वि [सामायिकिन्] सामायिक-वाला (विसे २७१६)।

सामंत पुंन [सामन्त] १ निकट, समीप, पास; 'तस्स णं अदूरसामंते' (णाया १, २—पत्र ७८; उवा; कप्प)। २ पुं अधीन राजा (महा; काल)। ३ अपने देश के अनन्तर देश का राजा, समीप देश का राजा (कप्प)।

सामंती स्त्री [दे] सम-भूमि (दे ८, २३)।

सामंतोवणिवाइय न [सामन्तोपनिपातिक] अभिनय का एक भेद (राय ५४)।

सामंतोवणिवाइया } स्त्री [सामन्तोपनिपा-
सामंतोवणीआ } तिकी] क्रिया-विशेष, चारों तरफ से इकट्ठे हुए जन-समुदाय में होनेवाली क्रिया—कर्म बन्ध का कारण (ठा २, १—पत्र ४०; नव १८)।

सामंतोवायणिय पुंन [सामन्तोपपातनिक] अभिनय-विशेष (ठा ४, ४—पत्र २८५)।

सामक्ख देखो समक्ख; संभरियं चिय वयणं, 'ज त अणरएणमित्तसामक्खं। भणियं अईयकाले' (पउम १०, ८४)।

सामग देखो सामय = श्यामाक (राज)।

सामग्ग सक [श्लिष्] आलिङ्गन करना। सामग्गइ (हे ४, १९०)।

सामग्ग } न [सामग्र्य] सामग्री, संपू-
सामग्गिअ } र्णता, सकलता (से ६, ४७; आचा २, १, १, ६; महा)।

सामग्गिअ वि [श्लिष्ट] आलिङ्गित (कुमा)।

सामग्गिअ वि [दे] १ चलित। २ अव-लम्बित। ३ पालित, रक्षित (दे ८, ५३)।

सामग्गी स्त्री [सामग्री] १ समस्तता। २ कारण-समूह (सम्मत्त २२४; महा; कप्पू; रंभा)।

सामच्छ सक [दे] मन्त्रणा करना, पर्या-लोचन करना। संकृ. सामच्छिऊण (पउम ४२, ३५)।

सामच्छ न [सामर्थ्य] समर्थता, शक्ति (हे २, २२; कुमा)।

सामच्छण देखो सामत्थण (राज)।

सामज्ज न [साम्राज्य] सार्वभौम राज्य, बड़ा राज्य (उप ३५७ टी)।

सामण } वि [श्रामण, °णिक] श्रमण-
सामणिय } संबन्धी (राज)।

सामणिय देखो सामण्ण = श्रामण्य (सूअ १, ७, २३; दस ७, ५६)।

सामणेर पुं [श्रामणेर] श्रमण का अपत्य, साधु की संतान (सूअ १, ४, २, १३)।

सामण्ण न [श्रामण्य] श्रमणता, साधुपन (भग; दस २, १; महा)।

सामण्ण पुं [सामान्य] १ अणपन्नी देवों का एक इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५)। २ न. वैशेषिक दर्शन में प्रसिद्ध सत्ता पदार्थ (धर्मसं २५६)। ३ वि. साधारण (गा ८६१; ६६६; नाट—रत्ना ८१)।

सामत्थ देखो सामच्छ (दे)। संकृ. सामत्थे-ऊण (काल)।

सामत्थ देखो सामच्छ = सामर्थ्य (हे २, २२; कुमा; ठा ३, १—पत्र १०६; सुपा २८२; प्रासू १४४)।

सामत्थ } न [दे] पर्यालोचन, मन्त्रणा;
सामत्थण } 'कास हरामोत्ति अज्ज दव्वं इति सामत्थं करेंति गुज्झं' (पएह १, ३—पत्र ४६; पिंड १२१; बृह १)।

सामन्न देखो सामण्ण = श्रामण्य (भग; कप्प; सुर १, १)।

सामन्न देखो सामण्ण = सामन्य (उव; स ३२५; धर्मवि ५६; कम्म १, १०; ३१)।

सामय सक [प्रति + ईक्ष्] प्रतीक्षा करना, बाट जोहना (हे ४, १९३; षड्)।

सामय पुं [श्यामाक] धान्य-विशेष, साँवा (हे १, ७१; कुमा)।

सामरि पुंस्त्री [दे. शाल्मलि] शाल्मली वृक्ष, सेमर का पेड़ (दे ८, २; पाअ)।

सामरिस वि [सामर्ष] ईर्ष्यालु, असहिष्णु (सुर २, ६०)।

सामल वि [श्यामल] १ काला, कृष्ण वर्ण-वाला (से १, ५६; सुर ३, ६५; कुमा)। २ पुं. एक वणिग—बनिया (सुपा ५५५)।

सामलइअ वि [श्यामलित] काला किया हुआ (से ८, ६६)।

सामलय वि [श्यामलक] १ काला। २ काला पानीवाला (से १, ५६)। ३ पुं. वनस्पति-विशेष (राज)।

सामला स्त्री [श्यामला] १ कृष्ण वर्णवाली स्त्री। २ सोलह वर्ष की स्त्री, श्यामा (वज्जा ११२)।

सामलि पुंस्त्री [शाल्मलि] सेमल का गाछ (सूअ १, ६, १८; उत्त; औप)।

सामलिअ देखो सामलइअ (सुर ४, १२७)।

सामली देखो सामला (गउड; गा १२३; २३८; ७६४; सुपा १८५)।

सामलेर पुं [शाबलेय] काबरचित गौ—चित-कबरी गाय का वत्स (अणु २१७)।

साम स्त्री [श्यामा] १ तेरहवें जिनदेव की माता (सम १५१)। २ तृतीय जिनदेव की प्रथम शिष्या (सम १५२)। ३ रात्रि, रात (सूअ २, १, ५६; से १, ५६; ओघ ३८७)। ४ शक्र की एक अग्र-महिषी—पटरानी (पउम १०२, १५६)। ५ प्रियंगु वृक्ष (पएण १—पत्र ३३; १७—पत्र ५२६; अनु ४)। ६ एक महौषधि (ती ५)। ७ लता-विशेष, साम-लता (औप)। ८ सोम लता (से १, ५६)। ९ नारी, स्त्री (से १, ५६; अणु १३६)। १० श्याम वर्णवाली स्त्री (कुमा)। ११ सोलह वर्ष की उम्रवाली स्त्री (वज्जा १०४) १२ सुन्दर स्त्री, रमणी (से १, ५६; गउड)। १३ यमुना नदी। १४ नील का गाछ। १५ गुग्गुल का गाछ। १६ गुडूची, गला। १७ गुन्द्रा। १८ कृष्णा। १९ अम्बिका। २० कस्तूरी। २१ वटपत्री। २२ वन्दा की लता। २३ हरी पुनर्नवा। २४ पिप्पली का गाछ। २५ हरिद्रा, हलदी। २६ नील दूर्वा। २७ तुलसी। २८ पद्मबीज।

२६ गौ. गैया। ३० छाया। ३१ शिंसपा, सीसम का पेड़। ३२ पक्षि-विशेष (हे १, २६०)। °स पुं [°श] रात्रि-भोजन (सूअ २, १ ५६; आचा १, २, ५, १)।

सामाइअ न [सामायिक] संयम-विशेष, सम-भाव, राग-द्वेष-रहित अवस्थान (विसे २६६६; २६८०; २६८१; २६६०; कस; औप नव)।

सामाइअ वि [सामाजिक] समाज का, समूह से संबन्ध रखनेवाला, सभ्य (उत्त ११, २६; सुख ११, २६)।

सामाइअ वि [श्यामायित] रात्रि-सदृश (गा ५६०)।

सामाग पुं [श्यामाक] भगवान् महावीर के समय का एक गृहस्थ, जिसके ऋजुवालिका नदी के किनारे पर स्थित क्षेत्र में भगवान् महावीर को केवलज्ञान हुआ था (कप्प)। देखो सामाय = श्यामाक।

सामाजिअ देखो सामाइअ = सामाजिक (हास्य ११८)।

सामाण देखो समाण = समान; 'लोहो हलिद्दखंजणकद्दमकिमिरागसामाणो' (कम्म १, २०; पुप्फ २८७)।

सामाण पुंन [सामान] एक देव-विमान (सम ३३)।

सामाणिअ वि [सामानिक] १ संनिहित, निकट-वर्ती, नजदीक में स्थित (विसे २६७६)। २ पुं. इन्द्र के समान ऋद्धिवाले देवों की एक जाति (सम ३७; ठा ३, १—पत्र ११६; उवा; औप; पउम २, ४१)।

सामाय अक [श्यामाय्] काला होना। सामाइ, सामायइ, सामायंति (गउड)। वकृ. सामायंत (गउड)।

सामाय देखो सामय = श्यामाक (राज)।

सामाय पुं [सामाय] संयम-विशेष, सामायिक (विसे १४२१; संबोध ४५)।

सामायारि वि [समाचारिन्] आचरण करनेवाला (उव)।

सामायारी स्त्री [सामाचारी] साधु का आचार—क्रिया-कलाप (गच्छ १, १५; उव; उप ६६६)।

सामास देखो सामा-स = श्यामा-श।

सामासिय वि [सामासिक] समास-संबन्धी (अणु १४७)।

सामि } वि [स्वामिन्] १ नायक, अधि-
सामिअ } पति। २ ईश्वर, मालिक (सम ८६; विपा १, १ टी—पत्र ११; उव; कुमा प्रासू ८८)। स्त्री. °णी (महा)। ३ पुं. प्रभु, भगवान् (कुमा १, १; ७, ३७; सुपा ३५)। ४ राजा, नृप। ५ भर्ता, पति (महा)। °कुट्ठ पुं [°कुष्ठ] ऐरवत वर्ष में उत्पन्न एक्कीसवें जिन-देव (पव ७)। देखो साम-कोट्ठ। °त्त न [°त्व] मालकियत, आधिपत्य (सम ८६; सं २२)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष (उप ५६७ टी)।

सामिअ वि [दे] दग्ध, जलाया हुआ (दे ८, २३)।

सामिअ वि [शमित] शान्त किया हुआ (सुपा ३५)।

सामिद्धि स्त्री [समृद्धि] १ अति संपत्ति। २ वृद्धि (प्राप्र; हे १, ४४; कुमा)।

सामिधेय न [सामिधेय] काष्ठ-समूह (अंत ११; स ५६१)।

सामिली न [स्वामिलिन्] १ गोत्र-विशेष, जो वत्स गोत्र की एक शाखा है। २ पुंस्त्री. उस गोत्र में उत्पन्न (ठा ७—पत्र ३६०)।

सामिसाल देखो सामि (पउम ८, ६८; सुपा २६३; भवि; सण)। स्त्री. °ली (स ३०६)।

सामिहेय देखो सामिधेय (स ३४०; ३४४; महा)।

सामीर वि [सामीर] समीर-संबन्धी (गउड)।

सामुंडुअ पुं [दे] तृण-विशेष, वह तृण, जिसकी कलम की जाती है (पाअ)।

सामुग्ग वि [सामुद्ग] संपुटाकारवाला; 'सामुग्गनिमग्गगूढजाणू' (औप)।

सामुच्छेइय वि [सामुच्छेदिक] वस्तु को एकान्त क्षणिक माननेवाला एक मत और उसका अनुयायी (ठा ७—पत्र ४१०; विसे २३८६)।

सामुदाइय वि [सामुदायिक] समुदाय का, समुदाय से संबन्ध रखनेवाला (णाया १, १६—पत्र २०८)।

सामुदाणिय वि [सामुदानिक] १ भिक्षा-संबन्धी, भिक्षा से लब्ध (ठा ४, १—पत्र २१२; सूअ २, १, ५६)। २ भिक्षा, भैक्ष (भग ७, १ टी—पत्र २६३)।

सामुद्द पुं [दे] इक्षु-समान तृण-विशेष (दे ८, २३)।

सामुद्द } वि [सामुद्र, °क] १ समुद्र-
सामुद्दय } सम्बन्धी, सागर का (णाया १, ८—पत्र १४५; भग ५, २—पत्र २११; दस ३, ८)। २ न. छन्द-विशेष (सूअनि १३६)।

सामुद्दिअ न [सामुद्रिक] १ शास्त्र-विशेष, शरीर पर के चिह्नों का शुभाशुभ फल बतलानेवाला शास्त्र (श्रा १२)। २ शरीर की रेखा आदि चिह्न; 'सामुद्दियलक्खणाण लक्खंपि' (संबोध ४२)। ३ वि. सामुद्रिक शास्त्र का ज्ञाता (कुप्र ५)।

सामुयाणिय देखो सामुदाणिय (उत्त १७, १६)।

साय देखो साइज्ज = स्वाद्, सात्मी + कृ। सायए (आचा २, १३, १), साएज्जा (वव १)।

साय देखो साग = शाक; 'भोत्तव्वं संजएण समियं न सायसूयाहियं' (पण्ह २, ३—पत्र १२३; पण्ण १—पत्र ३४)।

साय न [सात] १ सुख (भग; उव)। २ सुख का कारण-भूत कर्म (कम्म १, १३; ५५)। ३ एक देव-विमान (सम ३८)। °वाइ वि [°वादिन्] सुख-सेवन से ही सुख की उत्पत्ति माननेवाला (ठा ८—पत्र ४२५)। °वाहण पुं [°वाहन] एक प्रसिद्ध राजा (काल)। °गारव पुंन [°गौरव] १ सुख-शीलता (सम ८)। २ सुख का गर्व (राज)। °सुक्ख न [°सौख्य] अतिशय सुख (जीव ३)। देखो साअ = सात।

साय पुं [स्वाद] रस का अनुभव (विसे ७६६; पउम ३३, १०; उप ७६८ टी)।

साय न [दे] १ महाराष्ट्र देश का एक नगर। २ दूर (दे ८, ५१)।

सायं अ [सायम्] १ सन्ध्या-समय, शाम (पाअ; गउड; कप्पू)। २ सत्य, सच्चा (ठा

१०—पत्र ४६५)। °कार पुं [°कार] १ सत्य। २ सत्य-करण (ठा १०—पत्र ४६५)। °तण वि [°तन] सन्ध्या-समय का (विक्र १६)।

सायंदूर न [दे] नगर-विशेष (दे ८, ५१ टी)।

सायंदूला स्त्री [दे] केतकी, केवड़े का गाछ (दे ८, २५)।

सायकुंभ न [शातकुम्भ] १ सुवर्ण, सोना। २ वि. सुवर्ण का बना हुआ (सुपा २०१)।

सायग पुं [सायक] बाण, तीर (सुपा ६५१)।

सायग वि [स्वादक] स्वाद लेनेवाला (दस ४, २६)।

सायणा स्त्री [शातना] खण्डन, छेदन (सम ५८)।

सायणी स्त्री [शायनी, स्वापनी] मनुष्य की दस दशाओं में दसवीं—९० से १०० वर्ष की उम्रवाली—दशा (तंदु १६)।

सायत्त वि [स्वायत्त] स्वाधीन, स्वतन्त्र (स २७६)।

सायय देखो **सायग** (पाअ; स ५४८)।

सायर पुं [सागर] १ समुद्र (सुपा ५६; ८८; जी ४४; गउड; प्रासू ८७; १४४; प्राप्र; हे २, १८२)। २ ऐरवत वर्ष में होनेवाले चौथे जिन-देव (पव ७)। ३ मृग-विशेष। ४ संख्या-विशेष (प्राप्र)। ५ एक सेठ का नाम (सुपा २८०)। °**घोस** पुं [°घोष] एक जैन मुनि जो आठवें बलदेव के पूर्वजन्म में गुरु थे (पउम २०, १९३)। °**भद्द** पुं [°भद्र] इक्ष्वाकुवंश का एक राजा (पउम ५, ४)। देखो **सागर** = सागर।

सायर वि [सादर] आदर-युक्त (गउड; सुर २, २४५)।

सायार देखो **सागार** = साकार (सम्म ६४; पउम ६, ११८)।

सार सक [प्र + हृ] प्रहार करना। सारइ (हे ४, ८४)। वकृ. **सारंत** (कुमा)।

सार सक [स्मारय्] याद दिलाना। सारे (वव १)।

सार सक [सारय्] १ ठीक करना, दुरुस्त करना। २ प्रख्यात करना, प्रसिद्ध करना। ३ प्रेरणा करना। ४ उन्नत करना, उत्कृष्ट बनाना। ५ सिद्ध करना। ६ अन्वेषण करना, खोजना। ७ सरकाना, खिसकाना, एक स्थान से अन्य स्थान में ले जाना। सारइ (सुपा १५४), सारंति, सारयइ (सूअ १, २, २, २६; २, ६, ४); 'सारेहि वीणं' (स ३०६), सारेह (सूअ १, ३, ३, ६)। कर्म. 'हंसाण सरेहि सिरि सारिज्जइ अह सराण हंसेहिं' (गा ९५३; काप्र ८६२)। कवकृ. **सारिज्जंत** (सुपा ५७)।

सार सक [स्वरय्] १ बुलवाना। २ उच्चारण-योग्य करना। सारंति (विसे ४६२)।

सार वि [शार] १ शबल, चितकबरा (पाअ; गउड ३७८; ५३०)। २ पुं. सार, पासा, खेलने के लिए काठ आदि का चौपहल रंगबिरंगा साँचा (सुपा १५४)।

सार पुंन [सार] १ धन, दौलत (पाअ; से २, १; २६; मुद्रा २६७)। २ न्याय्य, न्याय-युक्त; 'एयं खु नाणिणो सारं जं न हिंसइ किंचण' (सूअ १, १, ४, १०)। ३ बल, पराक्रम (पाअ; से ३, २७)। ४ परमार्थ (आचानि २३९)। ५ प्रकर्ष (आचानि २४०)। ६ फल (आचानि २४१)। ७ परिणाम (ठा ४, ४ टी—पत्र २८३)। ८ रस, निचोड़ (कप्पू)। ९ एक देव-विमान (देवेन्द्र १४३)। १० स्थिर अंश (से ३, २७; गउड)। ११ पुं. वृक्ष-विशेष (पण्ण १—पत्र ३४)। १२ छन्द-विशेष (पिंग)। १३ वि. श्रेष्ठ, उत्तम; 'जह चंदो ताराणं गुणाण सारा तहेह दया' (धम्मो ६; से २, २६)। °**कंता** स्त्री [°कान्ता] षड्ज ग्राम की एक मूर्छना (ठा ७—पत्र ३९३)। °**य** वि [°द] सार देनेवाला (से ६, ४०)। °**वई** स्त्री [°वती] छन्द विशेष (पिंग)। °**वंत** वि [°वत्] सार-युक्त (ठा ७—पत्र ३९४; गउड)। °**वंती** देखो °**वई** (पिंग)।

सारइय वि [शारदिक] शरद् ऋतु का (उत्त १०, २८; पण्ण १७—पत्र ५२९; ती ५; उवा)।

सारंग वि [शार्ङ्ग] १ सींग का बना हुआ। २ न. धनुष। ३ आर्द्रक, आदी (हे २, १००; प्राप्र)। ४ विष्णु का धनुष (हे २, १००; सुपा ३४८)। °**पाणि** पुं [°पाणि] विष्णु (प्राकृ २७)।

सारंग पुं [सारंग] १ सिंह, मृगेन्द्र (सुर १, ११; सुपा ३४८)। २ चातक पक्षी (पाअ; से ६, ८२)। ३ हरिण, मृग (से ६, ८२; कप्पू)। ४ हाथी। ५ भ्रमर। ६ छत्र। ७ राजहंस। ८ चित्र-मृग, चितकबरा हरिण। ९ वाद्य-विशेष। १० शंख। ११ मयूर। १२ धनुष। १३ केश। १४ आभरण, अलंकार। १५ वस्त्र। १६ पद्म, कमल। १७ चन्दन। १८ कपूर। १९ फूल। २० कोयल। २१ मेघ (सुपा ३४८)। °**रूअक**, °**रूपक** (अप) पुंन [°रूपक] छन्द-विशेष (पिंग)।

सारंग न [साराङ्ग] प्रधान दल, श्रेष्ठ अवयव (पण्ह २, ५—पत्र १५०; सुपा ३४८)।

सारंगि पुं [शार्ङ्गिन्] विष्णु, श्रीकृष्ण (कुमा)।

सारंगिका, **सारंगिक्का** } स्त्री [सारङ्गिका] छन्द-विशेष (पिंग)।

सारंगी स्त्री [सारङ्गी] १ हरिणी (पाअ)। २ वाद्य-विशेष (सुपा १३२)।

सारंभ देखो **संरंभ** (ठा ७—पत्र ४०१)।

सारकल्लाण पुं [सारकल्याण] वलयाकार वनस्पति-विशेष (पण्ण १—पत्र ३४)। देखो **सालकल्लाण**।

सारक्ख सक [सं + रक्ष्] परिपालन करना, अच्छी तरह रक्षण करना। सारक्खइ (तंदु १३)। वकृ. **सारक्खंत**, **सारक्खमाण** (पि ७६; उवा)।

सारक्खण न [संरक्षण] सम्यग् रक्षण, त्राण (णाया १, २—पत्र ९०; सूअ १, ११, १८; औप)।

सारक्खणया स्त्री [संरक्षणा] ऊपर देखो (पि ७६)।

सारक्खि वि [संरक्षिन्] संरक्षण-कर्ता (पि ७६)।

सारक्खिअ वि [संरक्षित] जिसका संरक्षण किया गया हो वह (पण्ह २, ४—पत्र १३०)।

सारक्खेत्तु वि [संरक्षितृ] संरक्षण-कर्ता (ठा ७—पत्र ३८६)।

सारग देखो सारय = स्मारक (आचा; औप)।

सारज्ज न [स्वाराज्य] स्वर्ग का राज्य (विसे १८८३)।

सारण पुं [सारण] १ एक यादव-कुमार (अंत ३; कुप्र १०१)। २ रावणाधीन एक सामन्त राजा (पउम ८, १३३)। ३ रावण का मन्त्री (से १२, ६४)। ४ रावण का एक सुभट (से १४, १३)। ५ न. ले जाना, प्रापण (ओघ ४४८)।

सारण न [स्मारण] १ याद कराना (ओघ ४४८)। २ वि. याद दिलानेवाला। स्त्री. °णिया, °णी (ठा १०—पत्र ४७३)।

सारणा न [स्मारणा] १ याद दिलाना (सुर १५, २४८; विचार २३८; काल)।

सारणि } स्त्री [सारणि, °णी] १ आलवाल,
सारणी } नीक, कियारी (धण २६; कुप्र ५८)। २ परंपरा (सम्मत्त ७७)।

सारत्थ न [सारथ्य] सारथिपन (णाया १, १६; पउम २४, ३८)।

सारदा देखो सारया (रंभा)।

सारदिअ देखो सारइय (अभि ६६)।

सारमिअ वि [दे] स्मारित, याद कराया हुआ (दे ८, २५)।

सारमेअ पुं [सारमेय] श्वान, कुत्ता (उप ७६८ टी; कुप्र ३६३; सम्मत्त १८६; प्रासू १५८)।

सारमेई स्त्री [सारमेयी] कुत्ती, शुनी (सुर १४; १५५)।

सारय वि [शारद] शरद् ऋतु का (सम १५३; पराह १, ४—पत्र ६८; विसे १४६६; अजि १३; कप्प; औप)।

सारय वि [सारक] १ श्रेष्ठ करनेवाला (से ३, ४८)। २ साधक, सिद्ध करनेवाला (कप्प; से ६, ४८)।

सारय वि [स्मारक] १ याद करनेवाला। २ याद दिलानेवाला (भग; आचा १, ४, ४, १; कप्प)।

सारय वि [स्वारत] आसक्त, खूब लीन (आचा १, ४, ४, १)।

सारय देखो सार-य।

सारया स्त्री [शारदा] सरस्वती देवी (सम्मत्त १४०)।

सारव देखो सार = सारय्। भवि. सारविस्सं (वव १)।

सारव सक [समा + रच्] साफ करना, ठीक-ठाक करना, दुरुस्त करना। सारवइ (हे ४, ६५); 'सारवह सयलसरणीओ' (सुर १५, ८२)। वकृ. सारवेंत (गउड)। कवकृ. सारविज्जंत (सण)।

सारव सक [समा + रभ्] शुरूआत करना, प्रारम्भ करना। सारवइ (षड्)।

सारवण न [समारचन] संमार्जन, साफ करना (ओघ ७३)।

सारविअ वि [समारचित] दुरुस्त किया हुआ, साफ किया हुआ (दे ८, ४६; कुमा; ओघभा ८)।

सारस पुं [सारस] १ पक्षि-विशेष (कप्प; औप; स्वप्न ७०; कुमा; सण)। २ छन्द-विशेष (पिंग)।

सारसी स्त्री [सारसी] १ षड्ज ग्राम की एक मूर्छना (ठा ७—पत्र ३६३)। मादा सारस-पक्षी। ३ छन्द-विशेष (पिंग)।

सारस्सय पुं [सारस्वत] १ लौकान्तिक देवों की एक जाति (णाया १, ८—पत्र १५१; पि ३५३)।

सारह न [सारघ] मधु, शहद (पाअ; दे ८, २७)।

सारहि पुं [सारथि] रथ हांकनेवाला (सम १; पाअ; महा)।

साराडि पुंस्त्री [दे] पक्षि-विशेष, शरारि पक्षी (दे ८, २४)।

साराय अक [साराय्] सार-रूप होना। वकृ. सारायंत (उप ७२८ टी)।

साराव सक [सारय्] चिपकवाना, लगवाना, सील कराना। संकृ. 'साराविऊण लक्खं नीरंधत्तं तत्थ कयं' (धर्मवि ५)।

सारि स्त्री [शारि] १ पक्षि-विशेष, मैना (गा ५५२)। २ पासा खेलने का रंग-बिरंगा साँचा (गा १३८)। ३ युद्ध के लिए गज-पर्याण (दे ७, ६१; भवि)।

सारि देखो सारी (दे) (पाअ)।

सारिअ वि [सारिक] सारवाला; 'आरोग्ग-सारिअं माणुसत्तणं सच्चसारिओ धम्मो' (श्रा १८)।

सारिअ वि [सारित] चिपकाया हुआ, सील किया हुआ; तत्तो कुंभीए निक्खिविऊण तीए सम्मं मुहं पूरिऊण उवरि लक्खाए सारियाए' (सम्मत्त २२६)।

सारिआ } स्त्री [सारिका] मैना, पक्षि-
सारिइआ } विशेष (गा ५८६; पाअ; दे ८, २४)।

सारिक्ख न [सादृक्ष्य] समानता, सरीखाई (हे २, १७; कुमा; धर्मसं ४२५; सम्मु १८०; विसे ४६६)।

सारिक्ख } वि [सदृक्ष] समान, सरीखा;
सारिच्छ } 'सारिक्खविप्पलंभा तह भेदे किमिह सारिक्खं' (धर्मसं ४२५; सम्मु १७६; प्राप; हे १, ४४; कुमा; गा ३०; ६४)।

सारिच्छ देखो सारिक्ख = सादृक्ष्य (हे २, १७; सुर १२, १२२)।

सारिच्छिआ स्त्री [दे] दूर्वा, दूब (दे ८, २७)।

सारिज्जंत देखो सार = सारय्।

सारिस देखो सरिस = सदृश (संक्षि २; वज्जा ११४)।

सारिस } न [सादृश्य] समानता, सरीखाई
सारिस्स } (राज; नाट—रत्ना ७६)।

सारी स्त्री [दे] वृसी, ऋषि का आसन (दे ८, २२; ६१)। २ मृत्तिका, मिट्टी (दे ८, २२ टी)।

सारी स्त्री [शारी] देखो सारि = शारि; 'सज्जिओ कंचणगुडासारीहिं...हत्थी' (कुप्र १२०)।

सारीर वि [शारीर] शरीर का, शरीर-संबन्धी (उवः सुर ४, ७५)।

सारीरिय वि [शारीरिक] ऊपर देखो (सुर १२, १०; सण)।

सारूवि } पुं [सारूपिन्, °क] जैन साधु
सारूविअ } के समान वेष को धारण करने-वाला रजोहरण-वर्जित स्त्री-रहित गृहस्थ,

साधु और गृहस्थ के बीच की अवस्थावाला जैन पुरुष (संबोध ३१; ५४; बृह १; वव ४)।

सारूविअ न [सारूप्य] समान-रूपता (सूअ २, ३, २; २१)।

सारेच्छ देखो सारिच्छ = सादृक्ष्य (गउड)।

सारोहि वि [संरोहिन्] संरोहण-कर्ता (पि ७६)।

साल पुं [साल, शाल] १ ज्योतिष्क महाग्रह-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७८)। २ वृक्ष-विशेष, साखू का पेड़ (सम १५२; औप; कुमा)। ३ वृक्ष, पेड़। ४ किला, प्राकार (सुपा ४६७)। ५ एक राजा; 'साल महासाल-सालिभद्दो य' (पडि)। ६ पक्षि-विशेष (पण्ह १, १ टी—पत्र १०)। ७ पुंन. एक देव-विमान (सम ३५)। °कोट्ठय न [°कोष्ठक] चैत्य-विशेष (राज)। °वाहण, °हण [°वाहन] एक सुप्रसिद्ध राजा (विचार ५३१; हे १, २११; प्राप; पि २४४; षड्; कुमा)।

साल देखो सार = सार (सुपा ३८४; णाया १, १६—पत्र १६६)। °इय वि [°चित] सार-युक्त (णाया १, १६)।

साल न [शाला] घर, गृह; 'मायामहमालंपि हु कालेणं सयलमुच्छन्नं' (सुपा ३८४)।

साल पुं [श्याल] साला, बहू का भाई (मोह ८८; सिरि ६८८; भवि; नाट—मृच्छ ३५)।

साल पुं. देखो साला = (दे), 'जस्स सालस्स भग्गस्स'; 'परित्तजीवे उ से साले' (पण्ण १—पत्र ३७; ठा ८—पत्र ४२६)। °मंत वि [°वत्] शाखावाला (णाया १, १ टी—पत्र ४; औप)।

साल° देखो साला = शाला। °गिह, °घर न [°गृह] १ भित्ति-रहित घर (निचू ८)। २ बरामदावाला घर (राय)।

सालइय देखो सारइय = शारदिक (णाया १, १६—पत्र १६६)।

सालंकायण न [शालङ्कायन] १ कौशिक गोत्र का एक शाखा-गोत्र। २ पुंस्त्री. उस गोत्रवाला (ठा ७—पत्र ३६०)।

सालंकी स्त्री [दे] सारिका, मैना (दे ८, २४)।

सालंगणी स्त्री [दे] सीढ़ी, निःश्रेणी (दे ८, २६; कुप्र १२०)।

सालंब वि [सालम्ब] अवलम्बन-युक्त, आश्रय-युक्त (गउड; राज)।

सालकल्लाण पुं [शालकल्याण] वृक्ष-विशेष (भग ८, ३ टी—पत्र ३६४)। देखो सारकल्लाण।

सालक्किआ स्त्री [दे] सारिका, मैना (षड्)।

सालग न [दे] १ वृक्ष की बाहरी छाल (निचू १५)। २ लम्बी शाखा (आव १)। ३ रस; 'अंबसालगं वा अंबदालगं वा भोत्तए वा पायए वा' (आचा २, ७, २, ७)।

सलणय न [सारणक] कढ़ी के समान एक तरह का खाद्य (भवि)।

सालभंजी देखो सालहंजी (धर्मवि १४७; कुमा)।

सालस वि [सालस] आलस्य-युक्त, अलसी (गउड; सुपा २५१)।

सालहंजिया, सालहंजी स्त्री [शालभञ्जिका, °ञ्जी] काष्ठ आदि की बनाई हुई पुतली (सुपा ४३; ५४)।

सालहिआ, सालही स्त्री [दे] सारिका, मैना (पाअ; श्रा २८, दे ८, २४)।

साला स्त्री [शाला] १ गृह, घर। २ भित्ति-रहित घर (कुमा; उप ७२८ टी)। ३ छन्द-विशेष (पिंग)।

साला स्त्री [दे] शाखा (दे ८, २२; पण्ह १, ३—पत्र ५४; दस ७, ३१; राय ८८)।

सालाइय देखो सलाग (राज)।

सालाणय वि [दे] १ स्तुत, जिसकी स्तुति की गई हो वह। २ स्तुत्य, स्तुति-योग्य (दे ८, २७)।

सालाहण देखो साल-हण = शाल-वाहन।

सालि पुंन [शालि] १ व्रीहि, धान, चावल (सूअ २, २, ११; गा ५६६; ६६१; कुमा; गउड)। २ वलयाकार वनस्पति-विशेष, वृक्ष-विशेष (पण्ण १—पत्र ३४)। °भद्द पुं [°भद्र] एक प्रसिद्ध श्रेष्ठि-पुत्र, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी (उव; पडि)। °भसेल, °भसेल्ल पुं [दे] धान के कणिश—बाल का तीक्ष्ण अग्रभाग (राज; उवा)। °रक्खिआ स्त्री [°रक्षिका] धान का रक्षण करनेवाली स्त्री, कलम-गोपी (पाअ)। °वाहण पुं [°वाहन] एक सुप्रसिद्ध राजा (सम्मत्त १३७)। देखो साल-वाहण। °सच्छिय पुं [°साक्षिक] मत्स्य की एक जाति (पण्ण १—पत्र ४७)। °सित्थ पुं [°सिक्थ] मत्स्य-विशेष (आरा ६३)।

°सालि वि [°शालिन्] शोभनेवाला (गउड; कुमा)।

सालिआ स्त्री [शालिका] घर का कमरा, 'एहिह सुवंति घरमज्झिमसालिआसु' (कप्पू)।

सालिआ देखो साडिआ (राज)।

सालिणिआ, सालिणी स्त्री [शालिनिका, °नी] १ शोभनेवाली; 'पीणसोणिथ-णसालिणिआहिं' (अजि २६)। २ छन्द-विशेष (पिंग)।

सालिभंजिया स्त्री [शालिभञ्जिका] पुतली (पउम १६, ३७)।

सालिय पुं [शालिक] तन्तुवाय, जुलाहा (विसे २६०१)।

सालिय वि [शाल्मलिक] शाल्मलि वृक्ष का, सेमल के गाछ का; 'एगं सालियापोंडं बद्धो आमेलगो होइ' (उत्तनि ३)।

सालिस देखो सारिस = सदृश (णाया १, १—पत्र १३; ठा ४, ४—पत्र २६५; कप्प)।

सालिहीपिउ पुं [शालिहीपितृ] एक जैन गृहस्थ (उवा)।

साली स्त्री [श्याली] पत्नी-भगिनी, भार्या की बहन (दे ६, १४८)।

सालुअ पुंन [शालूक] जल-कन्द विशेष, कमल-कन्द (आचा २, १, ८, ३; दस ५, २, १८)।

सालुअ न [दे] १ शम्बूक, शंख। २ सूखे यव आदि धान्य का अग्र भाग (दे ८, ५२)।

सालूर पुंस्त्री [शालूर] १ भेक, मेंढक (पाअ; सुर २, ७४; सुपा ६२; सार्ध १०६; सूक्त २०)। स्त्री. °री (गा ३६१)। २ न. छन्द-विशेष (पिंग)।

साव सक [श्रावय्] सुनाना। सावेंति (औप)। वकृ. सावंत, सावित, सावेंत (औप; राज; पउम १०, ५७)।

साव पुं [शाप] १ सराप, आक्रोश (औप; कुमा; प्रति ६६)। २ शपथ, सौगंध (प्राप्र; हे १, २३१)।

साव पुं [शाव] बालक, बच्चा (समु १५६; प्राकृ ८५)।

साव पुं [स्वाप] स्वपन, शयन, सोना (विसे १७५५)।

साव (अप) देखो सव्व = सर्व (हे ४, ४२०)।

सावइज्ज देखो सावएज्ज (कप्प)।

सावइत्तु वि [श्रावयितृ] सुनानेवाला (सूअ २, २, ७६)।

सावएज्ज न [स्वापतेय] धन, द्रव्य (कप्प)।

सावक्क न [सापत्न्य] सपत्नीपन, सौतिनपन (कुप्र २५५)।

सावक्क वि [सापत्न] सौतेली माँ की संतान (धर्मवि ४७)।

सावक्का स्त्री [सपत्नी] सौतेली माँ, विमाता; गुजराती में 'सावकी'; 'सावक्का सुयजणणी पासत्था गहिय वायए लेहं' (धर्मवि ४७)।

सावग पुंन [श्रावक] १ जैन उपासक, अर्हद्-भक्त गृहस्थ (ठा १०—पत्र ४६६; उवा; णाया १, २—पत्र ६०)। २ ब्राह्मण। ३ वृद्ध श्रावक (णाया १, १५—पत्र १६३; अणु २४); 'तओ सागरचंदो कमलामेला य···गहियाणुव्वयाणि सावगाणि संवुत्ताणि' (आक ३१)। ४ वि. सुननेवाला। ५ सुनानेवाला (हे १, १७७)। °धम्म पुं [°धर्म] प्राणातिपात-विरमण आदि बारह व्रत, जैन गृहस्थ का धर्म (णाया १,१४—पत्र १६१)।

सावज्ज वि [सावद्य] पाप-युक्त, पापवाला (भग; उव; ओघ ७६३; विसे ३४६६; सुर ४, ८२)।

सावण न [श्रावण] १ सुनाना (उप ७२८ टी; सुपा २८८)। २ पुं. मास-विशेष, सावन का महीना (पउम ६७, ७; कप्प; हे ४, ३५७; ३६६)। ३ वि. श्रवणेन्द्रिय-सम्बन्धी, श्रावण-प्रत्यक्ष का विषय, जो कान से सुना जाय वह (धर्मसं १२८१)।

सावणा स्त्री [श्रावणा] सुनाना (कुप्र ६०)।

सावणी स्त्री [स्वापनी] देखो सायणी (ठा १०—पत्र ५१६)।

सावतेज्ज, **सावतेय** } देखो सावएज्ज (णाया १, १—पत्र ३६; औप; सूअ २, १, ३६)।

सावत्त देखो सावक्क (दे १, २५; भवि; सिरि ४६; कप्पू)।

सावत्थिगा स्त्री [श्रावस्तिका] एक जैन मुनि-शाखा (कप्प—पृ ८१)।

सावत्थी स्त्री [श्रावस्ती] कुणाल देश की प्राचीन राजधानी (णाया १, ८—पत्र १४०; उवा)।

सावन्न (अप) देखो सामन्न = सामान्य (भवि)।

सावय देखो सावग (भग; उवा; महा); 'एयं कहेहि सुंदर सवित्थरं सच्चसावओ तुहयं' (पउम ५३, २६)।

सावय पुं [श्वापद] शिकारी पशु, हिंसक जानवर (णाया १, १—पत्र ६५; गउड; प्रासू १५४; महा; सण)।

सावय पुं [दे] १ शरभ, श्वापद पशु-विशेष (दे ८, २३)। २ बालों की जड़ में होनेवाला एक तरह का क्षुद्र कीट (जी १६)।

सावय पुं [शावक] बालक, बच्चा, शिशु (नाट)।

सावरी स्त्री [शावरी] विद्या-विशेष (सूअ २, २, २७)।

सावसेस वि [सावशेष] अवशिष्ट, बाकी बचा हुआ; 'जावाऊ सावसेसं' (उव)।

सावहाण वि [सावधान] अवधान-युक्त, सचेत (नाट; रंभा)।

साविअ वि [शापित] १ जिसको शाप दिया गया हो वह। २ जिसको सौगंध दिया गया हो वह (णाया १, १—पत्र २६; भग १५—पत्र ६८२; स १२६)।

साविअ वि [श्रावित] सुनाया हुआ (भग १५—पत्र ६८२; णाया १, १—पत्र २६; पउम १०२, १५; ६६; सार्ध १८)।

साविआ स्त्री [श्राविका] जैन गृहस्थ-धर्म पालनेवाली स्त्री (भग; णाया १, १६—पत्र २०४; कप्प; महा)।

साविक्ख वि [सापेक्ष] अपेक्षा-युक्त, अपेक्षा-वाला (श्रा ६; संबोध ४१)।

साविगा देखो साविआ (ठा १०—पत्र ४६६; णाया १, २—पत्र ६०; महा)।

साविट्ठी स्त्री [श्राविष्ठी] १ श्रावण मास की पूर्णिमा। २ श्रावण की अमावस (सुज्ज १०; ६; इक)।

सावित्ती स्त्री [सावित्री] ब्रह्मा की पत्नी (उप ५६७ टी; कुप्र ४०३)।

साविह पुं [श्वाविध] श्वापद पशु-विशेष, साही (दे २, ५०; ८, १५)।

सावेक्ख देखो साविक्ख (पउम १००, ११; उप ८७०)।

सास सक [शास्] १ सजा करना। २ सीख देना। ३ हुकुम करना। भूका. सासित्था (कुप्र १४)। कर्म. सासिज्जइ, सीसइ (नाट—मृच्छ २००, कुप्र ३६६)। वकृ. सास°, सासंत (उत्त १, ३७; औप; पि ३६७)। हेकृ. सासणीअ (नाट—विक्र १०४)। कवकृ. सासिज्जंत (उप १४६ टी)।

सास सक [कथय्] कहना। सासइ (षड्)। कर्म. सासइ (प्राकृ ७७)।

सास पुं [श्वास] १ साँस (गा १४१; १४७)। २ रोग-विशेष, श्वास-रोग (णाया १, १३—पत्र १८१; उवा; विपा १, १)। °हरा स्त्री [°धरा] जीवन धारण करनेवाली (दश० वृ० हारि० पत्र ६४, २)।

सास पुंन [शस्य, सस्य] १ क्षेत्र-गत धान्य (पण्ह १, ४—पत्र ७२; स १३१); 'सासा अकिट्ठजाया' (पउम ३३, १४)। २ वृक्ष आदि का फल। ३ वि. वध-योग्य (हे १, ४३)। देखो सस्स = शस्य।

सासग पुंन [सस्यक] रत्न की एक जाति, 'पुलगवइरिंदनीलसासगककेयणलोहियक्ख—' (कप्प)।

सासग पुं [सासक] वृक्ष-विशेष, बीयक नाम का पेड़ (णाया १, १—पत्र २४)।

सासण न [शासन] १ द्वादशांगी, बारह जैन अंग-ग्रन्थ, आगम, सिद्धान्त, शास्त्र; 'अणुसासणमेव पक्कमे' (सूअ १, २, १, ११; अणु ३८; सम्म १; विसे ८६४)। २ प्रतिपादन (णंदि; उप ३ ३७४)। ३ शिक्षा, सीख

(अरण)। ४ आज्ञा, हुकुम (पण्ह २, १—पत्र १०१; महा)। ५ ग्रास, निर्वाह-साधन; 'जीवंतसामिपडिमाए सासणं विअरिऊण भत्तीए' (कुलक २३)। ६ वि. प्रतिपादक, प्रतिपादन-कर्ता (सम्म १; गण २२; णंदि ४८)। ७ प्रतिपाद्य, जिसका प्रतिपादन किया जाय वह (पण्ह २, १—पत्र ६६)। °देवी स्त्री [°देवी] शासन की अधिष्ठात्री देवी (कुमा)। °सुरा स्त्री [°सुरी] वही अर्थ (पंचा ८, ३२)।

सासण देखो **सासायण** (कम्म २, २; ५; १४; ४, १८; २६; ५, ११; ६, ५६; पंच २, ४२)।

सासणा स्त्री [शासना] शिक्षा (पण्ह २, १—पत्र १००)।

सासणावण न [शासन] आज्ञापन (स ४६३)।

सासय वि [शाश्वत] नित्य, अविनश्वर (भग; पाअ; से २, ३; सुर ३, ५८; प्रासू १४१)।

सासय पुं [स्वाश्रय] निज का आधार (से २, ३)।

सासव पुं [सर्षप] सरसों (आचा २, १, ८, ३)। °नालिया स्त्री [°नालिका] कन्द-विशेष (आचा २, १, ८, ३)।

सासवूल पुं [दे] कपिकच्छू का पेड़, कौंछ, किवाँच, कवाछ (दे ८, २५)।

सासाण } न [सास्वादन] १ गुण-स्थानक-विशेष, द्वितीय गुण-स्थान (कम्म ४, १३; ४६)। २ वि. द्वितीय गुण-स्थान में वर्तमान जीव (सम्य १६; सम्म २६)।
सासायण

सासि वि [श्वासिन्] श्वास-रोगवाला (तंदु ५०)।

सासिउ (शौ) वि [शासितृ] शासन-कर्ता, शिक्षा-कर्ता (अभि २१४)।

सासिल्ल देखो **सासि** (विपा १, ७—पत्र ७३)।

सासुया देखो **सासू** (सुर ६, १५७; ६, २३३; सिरि ६४६)।

सासुर न [श्वाशुर] श्वशुर-गृह (सुर ८, १६४)।

सासुर (अप) देखो **ससुर** = श्वशुर (भवि)।

सासू स्त्री [श्वश्रू] सासू, पति तथा पत्नी की माता (पाअ; पउम १७, ४; गा ३३६)।

सासूय वि [सासूय] असूया-युक्त, मत्सरी (सुर ३, १६७; उप ७२८ टी)।

सासेरा स्त्री [दे] यान्त्रिक नाचनेवाली, यन्त्र की बनी हुई नर्त्तकी (राज)।

साह सक [कथय्, शास्] कहना। साहइ, साहेइ (हे ४, २; उव; काल; महा)। साहसु, साहेसु (महा)। भवि. साहिस्सइ, साहिस्सामो (महा; आचा १, ४, ४, ४)। वकृ. **साहेंत, साहयंत** (हेका ३८; काप्र ३०; सुर ६, १३२)। कवकृ. **साहिज्जंत, साहिप्पंत, साहिय्यंत, साहियमाण** (चंड; सुर १, ३०; सुपा २०५; चंड; सुपा २६३; उप पृ ४२; चंड)। संकृ. **साहिऊण, साहेत्ता** (काल)। हेकृ. **साहिउं** (काल; महा)। कृ. **साहियव्व, साहेअव्व** (महा; सुर १, १५४)।

साह देखो **सलाह** = श्लाघ्। कृ. **साहणीअ** (प्राप)।

साह सक [साध्] १ सिद्ध करना, बनाना। २ वश में करना। साहइ, साहेइ, साहेंति (भग; कप्प; उव; प्रासू २७; महा)। वकृ. **साहंत, साहिंत, साहेमाण** (सिरि ६२८; महा; सुर १३; ८२)। कवकृ. **साहिज्जमाण** (नाट)। हेकृ. **साहिउं** (महा)। कृ. **साहणिज्ज, साहणीअ, साहियव्व** (मा ३६; पउम ३७, ३०; सुर ३, २८)।

साह पुं [दे] १ वालुका, बालू। २ उलूक, उल्लू। ३ दधिसर, दही की मलाई (दे ८, ५१)। ४ प्रिय, पति (संक्षि ४७)।

साह (अप) देखो **सव्व** = सर्व (हे ४, ३६६; कुमा)।

साहंजण } पुं [दे] गोक्षुर, गोखरू (दे ८, २७)।
साहंजय

साहंजणी स्त्री [साभाञ्जनी] नगरी-विशेष (विपा १, ४—पत्र ५४)।

साहग वि [साधक] सिद्धि करनेवाला, साधना करनेवाला (णाया १, ८ टी—पत्र १५५; कप्प; नव २५; सुपा ८४; धर्मसं ७०; हि २०)।

साहग वि [शासक, कथक] कहनेवाला (सुर १२, ३०; स ३६१)।

साहज्ज न [साहाय्य] सहायता, मदद (विसे २६५८; गण ६; रयण १४; सिरि ३६८, कुप्र १२)।

साहट्ट सक [सं + वृ] संवरण करना, समेटना। साहट्टइ (हे ४, ८२)।

साहट्टिअ वि [संवृत] समेटा हुआ, संहत किया हुआ, पिंडीकृत (कुमा)।

साहट्टु अ [संहृत्य] समेट कर, संकुचित कर; 'दाहिणं जाणुं धरणितलंसि साहट्टु' (कप्प), 'साहट्टु पायं रीएज्जा' (आचा २, ३, १, ६); 'वियडेण साहट्टु य जे सिणाई' (सूअ १, ७, २१)।

साहट्ठ वि [संहृष्ट] पुलकित (राज)।

साहण सक [सं + हन्] संघात करना, संहत करना, चिपकाना। साहणंति (भग)। कर्म. साहन्नंति (भग १२, ४—पत्र ५६१)। कवकृ. **साहण्णंत, साहन्नंत** (राज; ठा २, ३—पत्र ६२)। संकृ. **साहणित्ता** (भग)।

साहण न [साधन] १ उपाय, कारण, हेतु (विसे १७०६)। २ सैन्य, लश्कर (कुमा; सुर १०, १२१)। ३ वि. सिद्ध करनेवाला; 'जह जीवाण पमाओ अणत्थसयसाहणो होइ' (हि १३; सुर ४, ७०)। स्त्री. °णा, °णी (हे ३, ३१; षड्)।

साहणण न [संहनन] संघात, अवयवों का आपस में चिपकना (भग ८, ६—पत्र ३६५; १२, ४—पत्र ५६७)।

साहणिअ पुं [साधनिक] सेना-पति (सुपा २६२)।

साहणिज्ज देखो **साह** = साध्।

साहणा देखो **साहण** = साधन।

साहणीअ देखो **साह** = श्लाघ्, साध्।

साहण्णंत देखो **साहण** = स + हन्।

साहत्थिं अ [स्वहस्तेन] १ अपने हाथ से। २ साक्षात् (णाया १, ६—पत्र १६३; उवा)।

साहत्थिया } स्त्री [स्वाहस्तिकी] क्रिया-विशेष, अपने हाथ से गृहीत जीव आदि द्वारा हिंसा करने से होनेवाला कर्म-बन्ध (ठा २, १—पत्र ४०; नव १८)।
साहत्थी

साहन्नंत देखो साहण = सं + हन् ।

साहम्म न [साधर्म्य] १ समान धर्म, तुल्य धर्म (सम्म १५३; पिंड १३६)। २ सादृश्य, समानता (विसे २५८६; श्रोघ ४०४; पंचा १४, ३५)।

साहम्मि वि [सधर्मिन्, साधर्मिन्] समान धर्मवाला, एक-धर्मी (पिंड १३६; १४६; १४७) स्त्री. °णी (श्राचा २, १, १, १२; महा)।

साहम्मिअ } वि [साधर्मिक] ऊपर देखो
साहम्मिग } (श्रोघ १५; ७७६; श्रौप; उत्त २६, १; कस; सुपा ११२; पंचा १६, २२)।

साहय देखो साहग = साधक (उप ३६०; स ४५; काल)।

साहय देखो साहग = शासक, कथक (सम्म १४३)।

साहय वि [संहृत] संक्षिप्त, समेटा हुआ (पण्ह १, ४—पत्र ७८; श्रौप; तंदु २०)।

साहर सक [सं + वृ] संवरण करना। साहरइ (हे ४, ८२)।

साहर सक [सं + हृ] १ संकोच करना, संक्षेप करना, सकेलना, समेटना। २ स्थानान्तर में ले जाना। ३ प्रवेश कराना। ४ छिपाना। ५ व्यापार-रहित करना। साहरइ, साहरे, साहरंति (भग ५, ४—पत्र २१८; कप्प; उव; सूत्र १, ८, १७; पि ७६)। साहरिज्ज (भग ५, ४)। भवि. साहरिज्जिस्सामि (कप्प)। कवकृ. साहरिज्जमाण (कप्प; श्रौप)। संकृ. साहरित्ता (कप्प)। हेकृ. साहरित्तए (भग ५, ४—पत्र २१८)।

साहरण न [संहरण] एक स्थान से दूसरे स्थान में ले जाना, स्थानान्तर-नयन (पिंड ६०६, ६०७)।

साहरय वि [दे] गत-मोह, मोह-रहित (दे ८, २६)।

साहरिअ वि [संहृत] १ स्थानान्तर में नीत (सम ८६; कप्प)। २ अन्यत्र क्षिप्त (पिंड ५२०)। ३ संलीन किया हुआ, संकोचित (श्रौप)।

साहरिअ वि [संवृत] संवरण-युक्त (कुमा; पाश्र)।

साहल्ल न [साफल्य] सफलता (श्रोघ ७३)।

साहव देखो साहु = साधु; 'श्रह पेच्छइ साहवं तहिं वालिं' (पउम ६, ६१; ७७, ६४)।

साहव न [साधव] साधुता, साधुपन (पउम १, ६०)।

साहव्व न [स्वाभाव्य] स्वभावता, स्वभावपन (धर्मसं ६६)।

साहस न [साहस] १ बिना विचार किया जाता काम (उव, महा)। २ पुं. एक विद्याधर नरेन्द्र, साहस-गति (पउम ४७, ४७)। °गइ पुं [°गति] वही श्रर्थ (पउम ४७, ४५; महा)।

साहस देखो साहस्स = साहस्र (राज)।

साहसि वि [साहसिन्] साहस कर्म करनेवाला, साहसिक; 'ते धीरा साहसिणो उत्तमसत्ता' (उप ७२८ टी; किरात १४)।

साहसिअ वि [साहसिक] ऊपर देखो (श्रौप; सूत्र २, २, ६२; चारु ३७; कुप्र ४१६)।

साहस्स वि [साहस्र] १ जिसका मूल्य हजार (मुद्रा, रुपया श्रादि) हो वह वस्तु (दसनि ३, १०; उव; महा)। २ हजार का परिमाणवाला; 'जोयणसयसाहस्सो वित्थिण्णो मेरुनाभीश्रो' (जीवस १८५)। ३ न. हजार (जीवस १८५)। °मल्ल पुं [°मल्ल] व्यक्तिवाचक नाम (उव)।

साहस्सिय वि [साहस्रिक] १ हजार का परिमाणवाला (णाया १, १—पत्र ३७; कप्प)। २ हजार श्रादमी के साथ लड़नेवाला मल्ल (राज)।

साहस्सी स्त्री [साहस्री] हजार, दस सौ; 'गिहत्थाण श्रणेगाश्रो साहस्सीश्रो समागया' (उत्त २३, १६; सम २६; उवा; श्रौप, उत्त २२, २३; हे ३, १२३)।

साहा स्त्री [श्लाघा] प्रशंसा (सम ५१)।

साहा श्र [स्वाहा] देवता के उद्देश से द्रव्य-त्याग का सूचक श्रव्यय, श्राहुति-सूचक शब्द (ठा ८—पत्र ४२७; श्रोघभा ५७)।

साहा स्त्री [शाखा] १ एक ही श्राचार्य की संतति में उत्पन्न अमुक मुनि की सन्तान-परम्परा, श्रवान्तर संतति (कप्प)। २ वृक्ष की डाल, डाली (श्राचा २, १, ७, ६; उव; श्रौप; प्रासू १०२)। ३ वेद का एक देश (सुख ४, ६)। °भंग पुं [°भङ्ग] शाखा का टुकड़ा, पल्लव (श्राचा २, १, ७, ६)। °मय, °मिअ, °मिग पुं [°मृग] वानर, बन्दर (पाश्र; ती २; सुपा २६२; ६१८)। °र, °ल वि [°वत्] १ शाखावाला, शाखा-युक्त (धम्म १२ टी; सुपा ४७४)। २ पुं. वृक्ष, पेड़ (सुपा ६३८)।

साहाणुसाहि पुं [दे] शक देश का सम्राट्, बादशाह; 'पत्तो सगकूलं नाम कूल, तत्थ जे सामंता ते साहिणो भण्णंति जो सामंताहिवई सयलनरिंदवंदचूडामणी सो साहाणुसाही भण्णइ' (काल)।

साहार सक [सं + धारय्] श्रच्छी तरह धारण करना। साहारइ (भवि)।

साहार पुं [सहकार] श्राम का गाछ; 'होसइ किल साहारो साहारे श्रंगणम्मि वड्ढंते' (वज्जा १३०; सुपा ६३८)।

साहार पुं [दे. साधुकार] साहुकार, महाजन (धम्म १२ टी)।

साहार पुं [सदाधार, सहकार] श्रच्छा श्राधार, सहारा, श्रवलम्बन, सहायता, मदद, उपकार; 'परचित्तरंजणेणं न वेसमेत्तेण साहारो' (उव; पुप्फ २२५), 'भुंजंतो श्राहारं गुणोवयारसरीरसाहारं' (श्रोघ ५८३; स ४२५; वज्जा १३०; सण)।

साहार वि [साहकार] श्राम के गाछ से उत्पन्न, श्राम्र-वृक्ष-सम्बन्धी (कप्पू)।

साहार } पुंन [साधारण] १ वनस्पति-
साहारण } विशेष, जहाँ एक शरीर में श्रनन्त जीव हों वह वनस्पति, कन्द श्रादि। २ कर्म-विशेष, जिसके उदय से साधारण-वनस्पति में जन्म होय वह कर्म (कम्म २, २८; पण्ह १, १—पत्र ८; कम्म १, २७; जी ८; पण्ण १—पत्र ४२)। ३ कारण (श्राचू १)। ४ पुं. साधारण वनस्पति-काय का जीव (पण्ण १—पत्र ४२)। ५ वि. सामान्य। ६ समान, तुल्य (पण्ह १—पत्र ४२)। ७ पुंन. उपकार, सहायता, मदद; 'साहारणट्ठा जे केइ गिलाणम्मि उवट्ठिए। पभू ण कुणई किच्चं' (सम ५१)। °सरीरनाम न [°शरीर-

नामन्] देखो ऊपर का दूसरा अर्थ (सम ६७)।

साहारण न [संधारण] ठीक तरह से धारण करना, टिकाना; 'अभिक्कमे पडिक्कमे संकुचए पसारए कायसाहारणट्ठाए' (आचा १, ८, ८, १५)।

साहारण न [स्वाधारण] सहारा करना, उपकार करना (सम ५१)।

साहारण न [संहरण] संकोचन, समेटन (विसे ३०५२)।

साहारिअ वि [संधारित] ठीक तरह धारण किया हुआ (भवि)।

साहाविअ वि [स्वाभाविक] स्वभाव-सिद्ध, नैसर्गिक, कुदरती (गा २२५; गउड; कप्प; सुपा ४६३)।

साहि पुं [शाखिन्] वृक्ष, पेड़ (पाअ; सण; उप पृ १५३)।

साहि पुं [दे] १ शक देश का सामन्त राजा, 'पत्तो सगकूलं नाम कूलं। तत्थ जे सामंता ते साहिणो भण्णंति' (भग)। २ देखो **साही** (दे ८, ६; से १२, ६२)।

साहि (अप) देखो **सामि** = स्वामिन् (पिंग)।

साहिअ वि [कथित, शासित, स्वाख्यात] कहा हुआ, उक्त, प्रतिपादित (सुपा २७६; सुर १, २०४; काल; पाअ; आचा)।

साहिअ वि [साधित] सिद्ध किया हुआ, निष्पादित (अंत १३; सुर ६, ६६; भवि)।

साहिअ वि [साधिक] सविशेष, सातिरेक (कप्प; सुपा २७६)।

साहिअ वि [स्वाहित] स्वहित से विरुद्ध, निज का अहित (सुपा २७६)।

साहिकरण वि [साधिकरण] १ अधिकरण-युक्त (निचू १०)। २ कलह करता, झगड़ता (ठा ३—पत्र ३५२)।

साहिकरणि वि [साधिकरणिन्] अधिकरण-युक्त, शरीर आदि अधिकरणवाला (भग १६, १—पत्र ६६८)।

साहिगरण देखो **साहिकरण** (राज)।

साहिगरणि देखो **साहिकरणि** (भग १६, १ टी—पत्र ६६६)।

साहिज्ज देखो **साहज्ज** (अंत १३; सुपा २०५; गउड; कुप्र १३)।

साहिज्जंत देखो **साह** = कथय्।

साहिज्जमाण देखो **साह** = साध्।

साहिण (अप) वि [कथिन्] कहनेवाला (सण)।

साहित्त न [साहित्य] अलंकार-शास्त्र (सुपा १०३; ४५३)।

साहिप्पंत, **साहिय्यमाण**, **साहिय्यंत** } देखो **साह** = कथय्।

साहिर वि [शासितृ, कथयितृ] शासन करनेवाला, कहनेवाला (गउड)।

साहिलय न [दे] मधु, शहद (दे ८, २७)।

साही स्त्री [दे] १ रथ्या, मुहल्ला (दे ८, ६; से १२, ६२)। २ वर्तनी, मार्ग, रास्ता (पिंड ३३४)। ३ राजमार्ग (से १२, ६२)। ४ खिड़की, छोटा दरवाजा (ओघ ६२२)।

साहीण वि [स्वाधीन] स्वायत्त, स्वतन्त्र (पाअ; गा १६७; चारु ४३; सुर ३, ५६; प्रासू ६६)।

साहीय देखो **साहिअ** = साधिक; 'तेत्तीस उयहिनामा साहीया हुंति अजयसम्माणं' (जीवस २२३)।

साहु पुं [साधु] १ मुनि, यति (विसे ३६००; आचा; सुपा ३४२)। २ सज्जन, सत्पुरुष; 'साहवो सुअणा' (पाअ)। ३ वि सुन्दर, शोभन, अच्छा (आचा; स्वप्न ६७; कुप्र ४५६)। °**कम्म** न [°कर्मन्] तप-विशेष, निर्विकृतिक तप (संबोध ५८)। °**कार**, °**क्कार** पुं [°कार] धन्यवाद, साधुवाद, प्रशंसा (वेणी ११४; ठा ४, ४ टी—पत्र २८३; पउम ५६, २३; से १३, १६; महा; भवि; विक्र १०६)। °**नाह** पुं [°नाथ] श्रेष्ठ मुनि, आचार्य (सुपा ५४५)। °**वाय** पुंन [°वाद] प्रशंसा; 'जायं च साहुवायं' (सिरि ३३४; स ३८५; सुपा ३७०)।

साहुई स्त्री [साध्वी] १ स्त्री-साधु, श्रमणी, यतिनी। २ सती स्त्री। ३ अच्छी (प्राकृ २८)।

साहुणी स्त्री [साध्वी] स्त्री-साधु, यतिनी (काल; उप १०१४; सुपा ६७, ३३२; सार्ध २६; कुप्र २१४)।

साहुलिआ, **साहुली** } स्त्री [दे] १ वस्त्र, कपड़ा (दे ८, ५२; गा ६०६ अ; कप्पू; पाअ; सुपा २२०; २४६)। २ शिरोवस्त्र-खंड (रंभा)। ३ शाखा, डाली (दे ८, ५२; षड्; पाअ)। ४ भ्रू, भौं। ५ भुज, हाथ। ६ पिकी, कोयल। ७ सदृश, समान। ८ सखी, सहचरी (दे ८, ५२)। ९ मयूर-पिच्छ (स ५२३ टि)।

साहेज्ज देखो **साहज्ज** (दे ७, ८६; सुपा १५२; गउड; महा; उत्तर २८)।

साहेज्ज वि [दे] अनुगृहीत (दे ८, २६)।

साहेमाण देखो **साह** = साध्।

सिअ देखो **सिव** = शिव (संक्षि १७)।

सिअ वि [श्रित] आश्रित (से ६, ४८; उत्त १३, १५; सूअ १, ७, ८)।

सिअ देखो **सिआ** = स्यात् (भग; श्रावक १२८; धर्मसं २५८; ११११; गण ५; कुप्र १५६)।

सिअ वि [शित] तीक्ष्ण धारवाला (सुपा ४७५)।

सिअ वि [स्वित] अच्छी तरह प्राप्त (विसे ३४४५)।

सिअ पुं [सित] १ शुक्ल वर्ण। २ वि. श्वेत, सफेद, शुक्ल (औप; उव; नाट—विक्र ७१; सुपा ११; भवि)। ३ बद्ध, बँधा हुआ (विसे ३०२६)। ४ न. नाम-कर्म का एक भेद, श्वेत-वर्ण का कारण-भूत कर्म (कम्म १, ४०)। °**किरण** पुं [°किरण] चन्द्र, चाँद (उप १३३ टी)। °**गिरि** पुं [°गिरि] वैताढ्य पर्वत की उत्तर श्रेणि में स्थित एक विद्याधर-नगर (इक)। °**ज्झाण** न [°ध्यान] सर्व-श्रेष्ठ ध्यान, शुक्ल ध्यान (सुपा १)। °**पक्ख** पुं [°पक्ष] शुक्ल पक्ष (सुपा १७१)। °**यर** पुं [°कर] चन्द्रमा (उप ७२८ टी)। °**वड** पुं [°पट] पाल, जहाज का बादबान; 'संकोइओ सियवडो पारद्धा देवयाण विन्नत्ती' (उप ७२८ टी)। °**वास** पुं [°वासस्] श्वेताम्बर जैन (ती १५)।

सिअ (अप) देखो **सिरी** = श्री (भवि)। °**वंत** वि [°मत्] लक्ष्मी-संपन्न, धनाढ्य (भवि)।

सिअअ देखो **सिचय** (गा ८७७; ८६८; कप्पू)।

सिअंग पुं [दे] वरुण देवता (दे ८, ३१)।

सिअंबर पुं [श्वेताम्बर] जैनों का एक सम्प्रदाय, श्वेताम्बर जैन (सुपा ६५८)।

सिअल्लि पुंस्त्री [दे] वृक्ष-विशेष (स २५६)। देखो **सीअल्लि**।

सिआ देखो **सिवा** = शिवा (से १३, ६५)।

सिआ अ [स्यात्] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ प्रशंसा, श्लाघा। २ अस्तित्व, सत्ता। ३ संशय, संदेह। ४ प्रश्न। ५ अवधारण, निश्चय। ६ विवाद। ७ विचारणा (हे २, १०७)। ८ अनेकान्त, अनिश्चय, कदाचित् (सूअ १, १०, २३; बृह १; पएण ५—पत्र २३७)। °वाइ पुं [°वादिन्] जिनदेव, अर्हन् देव (कुमा)। °वाय पुं [°वाद] अनेकान्त दर्शन, जैन दर्शन (हे २, १०७; चंड; षड्)।

सिआ स्त्री [सिता] १ लेश्या-विशेष, शुक्ल-लेश्या (पव १५२)। २ द्राक्षा आदि का संग्रह (राज)।

सिआल पुं [शृगाल, सृगाल] १ पशु-विशेष, सियार, गीदड़ (णाया १, १—पत्र ६५)। २ दैत्य-विशेष। ३ वासुदेव। ४ निष्ठुर। ५ खल, दुर्जन (हे १, १२८; प्राप्र)।

सिअली स्त्री [दे] डमर, देश का भीतरी या बाहरी उपद्रव (दे ८, ३२)।

सिआली स्त्री [शृगाली] मादा सियार (नाट; पि ५०)।

सिआलीस स्त्रीन [षट्चत्वारिंशत्] छेआलीस, चालीस और छः (विसे ३४६ टी)।

सिआसिअ पुं [सितासित] १ बलभद्र, बलराम। २ वि. श्वेत और कृष्ण (प्राप्र)।

सिइ पुं [शिति] १ हरा वर्ण। २ वि. हरा वर्णवाला। °पावरण पुं [°प्रावरण] बलराम, बलभद्र (कुमा)।

सिइ स्त्री [दे. शिति] सीढ़ी, निःश्रेणि (पिंड ४७३; वव १०)।

सिउं (अप) देखो **समं** (भवि)।

सिउंठा स्त्री [दे.असिकुण्ठा] साधारण वनस्पति-विशेष (पएण १—पत्र ३५)।

सिएअर वि [सितेतर] कृष्ण, काला (पाअ)।

सिंकला देखो **संकला** (अच्चु ४०)।

सिंखल न [दे] नूपुर (दे ८, १०; कुप्र ६८)।

सिंखला देखो **संकला** (से १, १४; प्राप; नाट—मृच्छ ८६)।

सिंग न [शृङ्ग] १ लगातार छब्बीस दिनों के उपवास (संबोध ५८)। २—देखो **संग** = शृङ्ग (उवा; पाअ; राय ४६; कप्प, उप ५९७ टी; सुपा ४३२; विक्र ८६; गउड; हे १, १३०)। °णाइय न [°नादित] प्रधान काज (पंचभा ३)। °पाय न [°पात्र] सींग का बना हुआ पात्र (आचा २, ६, १, ५)। °माल पुं [°माल] वृक्ष-विशेष (राज)। °वंदण न [°वन्दन] ललाट से नमन (बृह ३)। °वेर न [°वेर] १ आर्द्रक, आदी। २ शुण्ठी, सोंठ (उत्त ३६, ९७; दस ५, १, ७०; भास ८ टी; पएण १—पत्र ३५)।

सिंग त्रि [दे] कृश, दुर्बल (दे ८, २८)।

सिंगय वि [दे] तरुण, जवान (दे ८ ३१)।

सिंगरीडी देखो **सिंगिरीडी** (राज)।

सिंगा स्त्री [दे] फली, फलियाँ (भास ८ टी)।

सिंगार पुं [शृङ्गार] १ नाट्यशास्त्र-प्रसिद्ध रस-विशेष, 'सिंगारो णाम रसो रइसंजोगाभिलाससंजणणो' (अणु)। २ वेष, भूषण आदि की सजावट, भूषण आदि की शोभा (औप; विपा १, २)। ३ लवङ्ग, लौंग। ४ सिन्दूर। ५ चूर्ण, चून। ६ काला अगरु। ७ आर्द्रक, आदी। ८ हाथी का भूषण। ९ अलंकार, भूषण (हे १, १२८; प्राप्र)। १० वि. अतिशय शोभावाला; 'तए णं समणस्स भगवओ महावीरस्स वियट्टभोइस्स सरीरयं ओरालं सिंगारं कल्लाणं सिवं धन्नं मंगल्लं अणलंकिअविभूसिअं······चिट्ठइ' (भग)।

सिंगार सक [शृङ्गारय्] सिंगार करना, सजावट करना। सिंगारइ (भवि)।

सिंगारि वि [शृङ्गारिन्] सिंगार करनेवाला, शोभा करनेवाला (सिरि ८४४)।

सिंगारिअ त्रि [शृङ्गारित] सिंगारा हुआ, सजाया हुआ (सिरि १५८)।

सिंगारिअ वि [शृङ्गारिक] शृङ्गार-युक्त (उवा)।

सिंगि वि [शृङ्गिन्] १ सींगवाला (सुख ८, १३; दे ७, १६)। २ पुं. मेष, भेड़। ३ पर्वत। ४ भारतवर्ष का एक सीमा-पर्वत। ५ मुनि-विशेष। ६ वृक्ष (अणु १४२)।

सिंगिणी स्त्री [दे] गौ, गैया (दे ७, ३१)।

सिंगिया स्त्री [शृङ्गिका] पानी छिड़कने का पात्र-विशेष, पिचकारी (सुपा ३२८)।

सिंगिरीडी स्त्री [शृङ्गिरीटी] चतुरिन्द्रिय जन्तु की एक जाति (उत्त ३६, १४८)।

सिंगी स्त्री [शृङ्गी] देखो **सिंगिया** (सुपा ३२८)।

सिंगेरिवम्म न [दे] वल्मीक (दे ८, ३३)।

सिंघ सक [शिङ्घ्] सूँघना। सिंघइ (कुप्र ८१)। संकृ. सिंघिउं (धर्मवि ८४)। हेकृ. सिंघेउं (धर्मवि ८४)।

सिंघ देखो **सिंह** (हे १, २६; विपा १, ४—पत्र ५५; षड्)।

सिंघल देखो **सिंहल** (सुर १३, २९; सुपा १५; पि २६७)।

सिंघाडग } पुंन [शृङ्गाटक] १ सिंघाड़ा,
सिंघाडय } पानी-फल (पएण १—पत्र ३६; आचा २, १, ८, ५)। २ त्रिकोण मार्ग (पएह १, ३—पत्र ५४; औप; णाया १, १ टी—पत्र ३; कप्प)। ३ पुं. राहु (सुज्ज २०)।

सिंघाण पुंन [शिङ्घाण] १ नासिका-मल, श्लेष्मा (ठा ५, ३—पत्र ३४२; सम १०; पएह २, ५—पत्र १४८; औप; कप्प; कस; दस ८, १८; पि २६७)। २ पुं. काला पुद्गल-विशेष (सुज्ज २०)।

सिंघासण देखो **सिंहासण** (स ११७)।

सिंघुअ पुं [दे] राहु (दे ८, ३१)।

सिंच सक [सिच्] सींचना, छिड़कना। सिंचइ (हे ४, ९६; महा)। भूका. सिंचिअ (कुमा)। भवि. सिंचिस्सं (पि ५२६)। कृ. सिंचेयव्व (सुर ७, २३५)। कवकृ. सिच्चंत, सिच्चमाण (पि ५४२; उप २११ टी; स ३४९)।

सिंचण न [सेचन] छिड़काव (सूअ १, ४, १, २१; मोह ३१)।

सिंचाण पुं [दे] पक्षि-विशेष, श्येन पक्षी, बाज; गुजराती में 'सिंचाणो' (सण)।

सिंचाविअ वि [सेचित] छिड़कवाया हुआ (उप १०३१ टी; स २८०; ५४१)।

सिंचिअ वि [सिक्त] सींचा हुआ, छिड़का हुआ (कुमा)।

सिंज अक [शिञ्ज्] अस्फुट आवाज करना। वकृ. सिंजंत (सुपा ५०; सण)। कृ. सिंजिअव्व (गा ३९२)।

सिंजण न [शिञ्जन] १ अस्पष्ट शब्द, भूषण की आवाज। २ वि. अस्पष्ट आवाज करनेवाला (सुपा ४)।

सिंजा स्त्री [शिञ्जा] भूषण का शब्द (कप्पू; प्राप)।

सिंजिणी स्त्री [शिञ्जिनी] धनुर्गुण, धनुष की डोरी (गा ५४)।

सिंजिय न [शिञ्जित] अव्यक्त आवाज (उप १०३१ टी; कप्पू)।

सिंजिर वि [शिञ्जितृ] अस्फुट आवाज करनेवाला, 'सद्दालं सिंजिरं करिरं' (पाअ)।

सिंझ पुंन [सिध्मन्] कुष्ठ रोग-विशेष (भग ७, ६—पत्र ३०७)।

सिंड वि [दे] मोटित, मोड़ा हुआ (दे ८, २९)।

सिंढ पुं [दे] मयूर, मोर (दे ८, २०)।

सिंढा स्त्री [दे] नासिका-नाद, नाक की आवाज (दे ८, २९)।

सिंदाण न [दे] विमान (उप १४२ टी)।

सिंदी स्त्री [दे] खजूरी, खजूर का गाछ (दे ८, २९; पाअ; आवम)।

सिंदीर न [दे] नूपुर (दे ८, १०)।

सिंदु स्त्री [दे] रज्जु, रस्सी (दे ८, २८)।

सिंदुरय न [दे] १ रज्जु, रस्सी। २ राज्य (दे ८, ५४)।

सिंदुवण पुं [दे] अग्नि, आग (दे ८, ३२)।

सिंदुवार पुं [सिन्दुवार] वृक्ष-विशेष, निर्गुण्डी, सम्हालु का गाछ (गउड; कुमा; उप १०१९; कुप्र ११७)।

सिंदूर न [दे] राज्य (दे ८, ३०)।

सिंदूर न [सिन्दूर] १ सिंदूर, रक्त-वर्ण, चूर्ण-विशेष (पउम २, ३८; गउड; महा)। २ पुं. वृक्ष-विशेष (हे १, ८५; संक्षि ३)।

सिंदूरिअ वि [सिन्दूरित] सिन्दूर-युक्त किया हुआ (गा ३००)।

सिंदोल न [दे] खजूर, फल-विशेष (पाअ)।

सिंदोला स्त्री [दे] खजूरी, खजूर का पेड़ (दे ८, २९)।

सिंधव न [सैन्धव] १ सिंध देश का लवण, सेंधा नोन (गा ६७९; कुमा)। २ पुं. घोड़ा (हे १, १४९)।

सिंधविया स्त्री [सैन्धविका] लिपि-विशेष (विसे ४६४ टी)।

सिंधु स्त्री [सिन्धु] १ नदी-विशेष, सिन्धु नदी (धर्मवि ८३; जं ४—पत्र २९०; सम २७)। २ नदी; 'सरिआ तरंगिणी निण्णया नई आवगा सिंधू' (पाअ)। ३ सिन्धु नदी की अधिष्ठायिका देवी (जं ४)। ४ पुं. समुद्र, सागर (पाअ; कुप्र २२; सुपा १; २६४)। ५ देश-विशेष; सिन्ध देश (मुद्रा २४२; भवि; कुमा)। ६ द्वीप-विशेष। ७ पद्म-विशेष (जं ४—पत्र २९०)। °णाद न [°नद] नगर-विशेष (पउम ८, १६८)। °णाह पुं [°नाथ] समुद्र (समु १५१)। °देवी स्त्री [°देवी] सिन्धु नदी की अधिष्ठायिका देवी (उप ७२८ टी)। °देवीकूड पुं [°देवीकूट] क्षुद्र हिमवंत पर्वत का एक शिखर (जं ४—पत्र २९५)। °प्पवाय पुंन [°प्रपात] कुण्ड-विशेष, जहाँ पर्वत से सिन्धु नदी गिरती है (ठा २, ३—पत्र ७२)। °राय पुं [°राज] सिन्ध देश का राजा (मुद्रा २४२)। °वइ पुं [°पति] १ समुद्र, सागर (स २०२)। २ सिन्ध देश का राजा (कुमा)। °सोवीर पुं [°सौवीर] सिन्धु नदी के समीप का देश-विशेष (भग १३, ६; महा)।

सिंधुर पुं [सिन्धुर] हस्ती, हाथी (सुपा ८३; सम्मत्त १८७; कुमा)।

सिंप देखो सिंच। सिंपइ (हे ४, ९६)। कर्म. सिप्पइ (हे ४, २५५) कवकृ. सिप्पंत (कुमा ७, ६०)।

सिंपिअ देखो सिंचिअ (कुमा)।

सिंपुअ वि [दे] पागल, भूत-गृहीत, भूताविष्ट (दे ८, ३०)।

सिंबल पुं [शाल्मल] सेमल का गाछ (रंभा २०)।

सिंबलि देखो संबलि = शाल्मलि (हे १, १४६; ८, २३; पाअ; सुर १४, ४३; पि १०९; संथा ८५; उत्त १९, ५२)।

सिंबलि स्त्री [शिम्बलि, शिम्बा] कलाय आदि की फली, छीमी, फलियाँ (भग १५—पत्र ६८०; आचा २, १, १०, ३; दस ५, १, ७३)। °थालग पुंन [°स्थालक] १ फली की थाली। २ फली का पाक (आचा २, १, १०, ३)। देखो संबलि।

सिंबलिका स्त्री [सिम्बलिका] टोकरी (जिन-दत्ताख्यान)।

सिंबा स्त्री [शिम्बा] फली, छीमी; 'कोसी समी य सिंबा' (पाअ)।

सिंबाडी स्त्री [दे] नाक की आवाज (दे ८, २९)।

सिंबीर न [दे] पलाल, घास (दे ८, २८)।

सिंभ पुं [श्लेष्मन्] श्लेष्मा, कफ (हे २, ७४; तंदु १४; महा)।

सिंभलि देखो सिंबलि = शाल्मलि (सुपा ८४)।

सिंभि वि [श्लेष्मिन्] श्लेष्म-युक्त, श्लेष्म-रोगी (सुपा ५७६)।

सिंभिय वि [श्लैष्मिक] श्लेष्म-सम्बन्धी (तंदु १९; णाया १, १—पत्र ५०; औप; पि २६७)।

सिंह पुं [सिंह] १ श्वापद पशु-विशेष, मृग-राज, केसरी (प्रासू १५४; १६९)। २ एक राज-कुमार (उप ९८६ टी)। ३ एक राजा (रयण २६)। ४ भगवान् महावीर का एक शिष्य, मुनि-विशेष (राज)। ५ व्रत-विशेष, त्रिविधाहार को संलेखना—परित्याग (संबोध ५८)। °अलोअण (अप) न [°अवलोकन] १ सिंह की तरह पीछे देखना। २ छन्द-विशेष (पिंग)। °उर न [°पुर] पंजाब देश का एक प्राचीन नगर (भवि)। °कण्णी स्त्री [°कर्णी] वनस्पति-विशेष (पण्ण १—पत्र ३५)। °केसर पुं [°केसर] एक प्रकार का उत्तम मोदक—लड्डू (उप २११ टी)। °दत्त पुं [°दत्त] १ व्यक्ति-वाचक नाम। २ वि. सिंह से दिया हुआ (हे १, ९२)। °दुवार न [°द्वार] राज-द्वार (मोह १०३)।

°विलोक पुं [°विलोक] १ सिंह की तरह पीछे की तरफ देखना। २ छन्द-विशेष (पिंग)। °ासण न [°ासन] आसन-विशेष, राजासन, राज-गद्दी (महा)। देखो सीह।

सिंहल पुं [सिंहल] १ देश-विशेष, सिंहल-द्वीप, लंका-द्वीप (इक; सुर १३, २५; २७)। २ पुंस्त्री. सिंहल-द्वीप का निवासी (औप)। स्त्री. °ली (औप; णाया १, १—पत्र ३७)।

सिंहलिआ स्त्री [दे] शिखा, चोटी (पाअ)।

सिंहिणी स्त्री [सिंहिनी] छन्द-विशेष (पिंग)।

सिंहीभूय न [सिंहीभूत] व्रत-विशेष, चतुर्विध आहार की संलेखना—परित्याग (संबोध ५८)।

सिकता } स्त्री [सिकता] बालू, रेत (अणु
सिकया } २७० टी; पउम ११२, १७; विसे १७३६)।

सिक्क पुं [सृक्क] होंठ का अन्त भाग (दे १, २८)।

सिक्कग पुंन [शिक्यक] सिकहर, सीका, छींका, रस्सी की बनी डोलनुमा एक चीज जो छत में लटकायी जाती है और उसमें चीजें रख दी जाती हैं जिससे उसमें चीटियाँ न चढ़ें और उसे बिल्ली न खाय (राय ६३; उवा; निचू १; श्रावक ९३ टी)।

सिक्कड पुंन [दे] खटिया, मचिया; 'कोव-भवणम्मि जरजिन्नसिक्कडे पडइ जरियव्व' (सुपा ६)।

सिक्कय देखो सिक्कग (राय ६३; श्रावक ९३ टी; स ५८३)।

सिक्करा स्त्री [शर्करा] खंड, टुकड़ा; 'सय-सिक्करो' (स ६९३)।

सिक्करिअ न [सीत्कृत] अनुराग से उत्पन्न आवाज (गा ३९२)।

सिक्करिआ स्त्री [दे. शीकरी] जहाज का आभरण-विशेष (सिरि ३८७)।

सिक्कार पुं [सीत्कार] १ अनुराग की आवाज (गा ७२१; भवि; सण; नाट—मृच्छ १३६)। २ हाथी की चिल्लाहट; 'कुंतविणिभिन्नकरि-कलहमुक्कसिक्कारपउरम्मि⋯समरम्मि' (णमि १६)।

सिक्किआ स्त्री [शिक्या, शिक्यिका] रस्सी की बनी हुई एक चीज जो चढ़ने के काम में आती है (सिरि ४२४)।

सिक्ख सक [शिक्ष्] सीखना, पढ़ना, अभ्यास करना। सिक्खइ (गा ४७७; ५२४), सिक्खंतु, सिक्खह (गा ३९२; गुण ४)। भवि. सिक्खिस्सामि (स्वप्न ६७)। वकृ. सिक्खंत, सिक्खमाण (नाट—मृच्छ १४१; पि ३९७; सूअ १, १४, १)। संकृ. सिक्खिअ (नाट—रत्ना २१)। हेकृ. सिक्खिउं (गा ८९२)।

सिक्ख देखो सिक्खाव। वकृ. सिक्खयंत (पउम ८२, ९२)। कृ. सिक्खणीअ (पउम ३२, ५०)।

सिक्खग वि [शिक्षक] शिक्षा-कर्ता, 'दुक्खाणं सिक्खगं तं परिणदमिह मे दुक्कयं (रंभा)।

सिक्खग पुं [शैक्षक] नूतन शिष्य (सूअनि १२८)।

सिक्खण न [शिक्षण] १ अभ्यास, पाठ (कुप्र २३०)। २ सीख, उपदेश (सुर ८, ५१)। ३ अध्ययन, पाठन (सिरि ७८१)।

सिक्खव देखो सिक्खाव। सिक्खवेसु (गा ७५०; ९४८)। कवकृ. सिक्खविज्जमाण (सुपा ३१५)। कृ. सिक्खवियव्व (सुपा २०७)।

सिक्खवअ वि [शिक्षक] शिक्षा देनेवाला, पढ़ानेवाला, शिक्षक (प्राकृ ६१)।

सिक्खविअ वि [शिक्षित] १ सिखाया हुआ, पढ़ाया हुआ (गा ३५२)। २ न. शिक्षा देना, अभ्यास कराना, अध्यापन (सुपा २५)।

सिक्खा स्त्री [शिक्षा] १ सजा, दण्ड (कुप्र ११०)। २ वेद का एक अङ्ग, वर्णों के उच्चारण सम्बन्धी ग्रंथ-विशेष, अक्षरों के स्वरूप को बतलानेवाला शास्त्र; 'सिक्खावा-गरणछंदकप्पडढो' (धर्मवि ३८, औप; कप्प; अंत)। ३ शास्त्र और आचार सम्बन्धी शिक्षण, अभ्यास, सीख, सिखाई, उपदेश (औप; बृह १; महा; कुप्र १९७)। °वय न [°व्रत] व्रत-विशेष, जैन गृहस्थ के सामायिक आदि चार व्रत (औप; महा; सुपा ५४०)। °वय न [°पद] शिक्षा-स्थान (औप)।

सिक्खा (अप) स्त्री [शिखा] छन्द-विशेष (पिंग)।

सिक्खाण न [शिक्षाण] आचार-सम्बन्धी उपदेश देनेवाला शास्त्र (कप्प)।

सिक्खाव सक [शिक्षय्] सिखाना, पढ़ाना, अभ्यास कराना। सिक्खावेइ (पि ५५६)। भवि. सिक्खावेहिति (औप)। संकृ. सिक्खा-वेत्ता (औप)। हेकृ. सिक्खावित्तए, सिक्खावेत्तए; सिक्खावेउं (ठा २, १—पत्र ५६; कस; पंचा १०, ४८ टी)।

सिक्खावअ देखो सिक्खवअ (गा ३५८; प्राकृ ६१)।

सिक्खावण न [शिक्षण] सिखाना, सीख, हितोपदेश (सुख २, १६; प्राकृ ६१; कप्पू)।

सिक्खावणा स्त्री [शिक्षणा] ऊपर देखो (सूअनि १२७; उप १५० टी)।

सिक्खाविअ वि [शिक्षित] सिखाया हुआ (भग; पउम ९७, २२; णाया १, १—पत्र ६०; १, १८—पत्र २३६)।

सिक्खिअ वि [शिक्षित] सिखा हुआ, जानकार, विद्वान् (णाया १, १४—पत्र १८७; औप)।

सिक्खिर वि [शिक्षितृ] सीखने की आदतवाला, अभ्यासी (गा ६६१)।

सिखा स्त्री [शिखा] छन्द-विशेष (पिंग)।

सिखि देखो सिहि-शिखिन् (नाट—विक्र ३४)।

सिगया देखो सिकया (राज)।

सिगाल देखो सिआल (सण)।

सिगाली देखो सिआली = शृगाली (चारु ११)।

सिग्ग त्रि [दे] १ श्रान्त, थका हुआ (दे ८, २८; ओघ २३)। २ पुंन. परिश्रम, थकावट (वव ४)।

सिग्गु पुं [शिग्रु] वृक्ष-विशेष, सहिजना का पेड़ (दे ६, २०; पाअ)।

सिग्घ न [शीघ्र] १ जल्दी, तुरंत। २ वि. शीघ्रता-युक्त, त्वरा-युक्त (पाअ; स्वप्न ५४; चंड; कप्पू; महा; सुर १, २१०; ४, ६६; सुपा ५८०)।

सिचय पुं [सिचय] वस्त्र, कपड़ा (पाअ; गा २६१; कुप्र ४३३)।

सिच्चंत } देखो सिंच = सिच्।
सिच्चमाण }

सिच्छा स्त्री [स्वेच्छा] स्वच्छन्द (सुपा ३१६)।

सिज्ज अक [स्विद्] पसीना होना। सिज्जइ (षड् २०३)। वकृ. सिज्जंत (नाट—उत्तर ६१)।

सिज्ज° देखो सिज्जा (सम्मत्त १७०)।

सिज्जंभण पुं [शय्यंभण] एक सुप्रसिद्ध प्राचीन जैन महर्षि (कप्प—पृ ७८; णंदि)।

सिज्जंस देखो सेज्जंस = श्रेयांस (कप्प; पडि; आचा २, १५, ३)।

सिज्जा स्त्री [शय्या] १ बिछौना (सम १५; उवा; सुपा ५७३)। २ उपाश्रय, वसति (ओघ १६७)। °तरी, °यरी स्त्री [°तरी] उपाश्रय की मालकिन (ओघ १६७; पि १०१)। °वाली स्त्री [°पाली] बिछौना का काम करनेवाली दासी (सुपा ६४१)। देखो सेज्जा।

सिज्जिअ (अप) वि [सृष्ट] उत्पन्न किया हुआ, बनाया हुआ (पिंग)।

सिज्जिर वि [स्वेत्तृ] जिसको पसीना हुआ करता हो वह, पसीनावाला (गा ४०७; ४०८; ७७४; कुमा)। स्त्री. °री (हे ४,२२४)।

सिज्जूर न [दे] राज्य (दे ८, ३०)।

सिज्झ अक [सिध्] १ निष्पन्न होना, बनना। २ पकना। ३ मुक्त होना। ४ मंगल होना। ५ सक. गति करना, जाना। ६ शासन करना। सिज्झइ (हे ४, २१७; भग; महा) सिज्झंति (कप्प)। भूका. सिज्झिंसु (भग; पि ५१६)। भवि सिज्झिहिइ, सिज्झिस्संति, सिज्झिहिंति, सिज्झिही (उवा; भग; पि ५२७; महा)। वकृ. सिज्झंत (पिंड २५१)।

सिज्झ देखो सिंभ (राज)।

सिज्झणया } स्त्री [सेधना] १ सिद्धि, मुक्ति,
सिज्झणा } मोक्ष, निर्वाण (सम १४७; उप १३१; ७६६; पव ८८, धर्मवि १५१; विसे ३०३७)। २ निष्पत्ति, साधना;

'सव्वो परोवयारं करेइ
नियकज्जसिज्झणाभिरओ।
निरविक्खो नियकज्जे
परोवयारी हवइ धन्नो ॥'
(रयण ४६)।

सिट्ठ वि [श्रेष्ठ] अति उत्तम (उप ८७६)।

सिट्ठ वि [सृष्ट] १ रचित, निर्मित (उप ७२८ टी; रंभा)। २ युक्त। ३ निश्चित। ४ भूषित। ५ बहुल, प्रचुर। ६ त्यक्त (हे १, १२८)।

सिट्ठ वि [शिष्ट] १ कथित, उक्त, उपदिष्ट (सुर १, १६५; २, १८४; जी ५०; वज्जा १३६)। २ सज्जन, भलामानस, प्रतिष्ठित (उप ७६८ टी; कुप्र ६४; सिरि ४५; सुपा ४७०)। °यार पुं [°चार] भलमनसी, सदाचार (धर्म १)।

सिट्ठ वि [दे] सो कर उठा हुआ (षड्)।

सिट्ठि स्त्री [सृष्टि] १ विश्व-निर्माण, जगद्-रचना (सुपा १११; महा)। २ निर्माण, रचना। ३ स्वभाव। ४ जिसका निर्माण होता हो वह (हे १, १२८)। ५ सीधा क्रम, अविपरीत क्रम; 'चक्काइं जंतजोगेणं सिट्ठि-विसिट्ठिकमेणं एगंतरियं भमंताइं' (सिरि ८७८)।

सिट्ठि पुं [दे. श्रेष्ठिन्] नगर-सेठ, नगर का मुख्य साहूकार, महाजन (कप्प; सुपा ५८०)। °पय न [°पद] नगर-सेठ की पदवी (सुपा ३४२)। देखो सेट्ठि।

सिट्ठिणी स्त्री [श्रेष्ठिनी] श्रेष्ठि-पत्नी, सेठानी (सुपा १२)।

सिड्ढी स्त्री [दे] सीढ़ी, निःश्रेणि (अज्झ ७०)।

सिढिल वि [शिथिर, शिथिल] १ श्लथ, ढीला। २ अदृढ़, जो मजबूत न हो वह। ३ मन्द (हे १, २१५; २५४; प्राप्र; कुमा; प्रासू १०२; गउड)।

सिढिल सक [शिथिलय्] शिथिल करना। सिढिलेइ, सिढिलंति, सिढिलेंति (उव; वज्जा १०; से ६ ६५) सढिलेहि (वेणी २४३; पि ४६८)। वकृ. सिढिलेंत (से ५, ४२)।

सिढिलाविअ वि [शिथिलित] शिथिल कराया हुआ (प्राकृ ६१)।

सिढिलिअ वि [शिथिलित] शिथिल किया हुआ (कुमा; गउड; भवि)।

सिढिलीकय वि [शिथिलीकृत] शिथिल किया हुआ (सुर २, १६; १७३)।

सिढिलीभूय वि [शिथिलीभूत] शिथिल बना हुआ (पउम ५३, २४)।

सिण देखो सण = शण (जी १०; सुपा १८६; गा ७६८)।

सिणगार देखो सिंगार = शृङ्गार; 'सिणगार-चारुवेसो' (संबोध ४७); 'कारिअसुरसुंदरसि-णगारं' (सिरि ११८)।

सिणा अक [स्ना] स्नान करना, नहाना। सिणाइ (सूअ १, ७, २१; प्राकृ २८)। संकृ. सिणाइत्ता (सूअ २, ७, १७)। हेकृ. सिणाइत्तए (औप)।

सिणाउ पुंस्त्री [स्नायु] नाडी-विशेष, वायु वहन करनेवाली नाड़ी (प्राकृ २८)।

सिणाण उ [स्नान] नहान, अवगाहन (नम ३५; ओघ ४६६; रयण १४)।

सिणात देखो सिणाय = स्नात (ठा ४, १—पत्र १९३; ५, ३—पत्र २२६)।

सिणाय देखो सिणा। सिणायंति (दस ६, ६३)। वकृ. सिणायंत (दस ६, ६२; पि १३३)।

सिणाय } वि [स्नात, °क] १ प्रधान,
सिणायग } श्रेष्ठ (सूअ २, २, ५६)। २
सिणायय } मुनि-विशेष, केवलज्ञान प्राप्त मुनि, केवली भगवान् (भग २५, ६; णंदि १३८ टी; ठा ३, २—पत्र १२६; धर्मसं १३५८; उत्त २५, ३४)। ३ बुद्ध शिष्य, बोधि सत्त्व (सूअ २, ६, २९)।

सिणाव सक [स्नपय्] स्नान कराना। सिणावेदि (शौ) (नाट—चैत ४४)। सिणावंति, सिणावेंति (आचा २, २, ३, १०; पि १३३)।

सिणि स्त्री [सृणि] अंकुश (सुपा ५३७; सिरि १०५८)।

सिणिज्झ अक [स्निह्] प्रीति करना। सिणिज्झइ (प्राकृ २४)। कर्म. सिप्पइ (हे ४, २५५)। कवकृ. सिप्पंत (कुमा ७, ६०)।

सिणिद्ध वि [स्निग्ध] १ प्रीति-युक्त, स्नेह-युक्त (स्वप्न ५३; प्रासू ६२)। २ आर्द्र, रस-युक्त (कुमा)। ३ मसृण, कोमल। ४ चिकना। ५ न. भात का माँड़ (हे २, १०९; प्राप्र)।

सिणेह देखो सणेह (भग; णाया १, १३—पत्र १८१; स्वप्न १५; कुमा; प्रासू ६)।

सिणेहालु वि [स्नेहवत्] स्नेहवाला (स ७६३)।

सिण्ण वि [स्विन्न] स्वेद-युक्त (गा २४४)।

सिण्ण देखो सिन्न = शीर्ण (नाट—मृच्छ २१०)।

सिण्ह पुंन [शिश्न] पुंश्चिह्न, पुरुष-लिंग (प्राप्र; दे ४, ५)।

सिण्हा स्त्री [दे] १ हिम, आकाश से गिरता जल-कण (दे ८, ५३)। २ अवश्याय, कुहरा, कुहासा (दे ८, ५३; पाअ)।

सिण्हालय पुंन [दे] फल-विशेष (अनु ६)।

सिति देखो सिइ = (दे) (वव १०)।

सित्त वि [सिक्त] सींचा हुआ (सुर ४, १४५; कुमा)।

सित्तुंज देखो सेत्तुंज (सूक्त ५२)।

सित्थ न [दे] गुण, धनुष की डोरी; 'सित्थं व असोत्तगयं मह मणं देव दूमेइ' (कुप्र ५४; पाअ)।

सित्थ, सित्थय न [सिक्थ] १ धान्य-कण (पण्ह १, ३—पत्र ५५; कप्प; औप; अणु १४२)। २ मोम (दे १, ५२; पाअ; उप ७२८ टी)। ३ ओषधि-विशेष, नीली, नील (हे २, ७७)। ४ पुंन. कवल, ग्रास; 'मासे मासे उ जा अज्जा एगसित्थेण पारए' (गच्छ ३, २८; प्राप्र)।

सित्था स्त्री [दे] १ लाला। २ जीवा, धनुष की डोरी (दे ८, ५३)।

सित्थि पुं [दे] मत्स्य, मछली (दे ८, २८)।

सिद्ध वि [दे] परिपाटित, विदारित, चीरा हुआ (दे ८, ३०)।

सिद्ध वि [सिद्ध] १ मुक्त, मोक्ष-प्राप्त, निर्वाण-प्राप्त (ठा १—पत्र २५; भग; कप्प; विसे ३०२७; २६; सम्म ८६; जी २५; सुपा २४४; ३४२)। २ निष्पन्न, बना हुआ (प्रासू १५)। ३ पका हुआ (सुपा ६३३)। ४ शाश्वत, नित्य (चेइय ६७६)। ५ प्रतिष्ठित, लब्ध-प्रतिष्ठ (चेइय ६७६; सम्म १)। ६ निश्चित, निर्णीत (सम्म १)। ७ विख्यात, प्रसिद्ध (चेइय ६८०)। ८ शब्द-विशेष, साध्य-विलक्षण शब्द (भास ८६)। ९ साबित किया हुआ। १० प्रतीत, ज्ञात (पंचा ११, २६)। ११ पुं. विद्या, मंत्र, कर्म, शिल्प आदि में जिसने पूर्णता प्राप्त की हो वह पुरुष (ठा १—पत्र २५; विसे ३०२८; वज्जा ६८)। १२ समय-परिमाण विशेष, स्तोक-विशेष (कप्प)। १३ न. लगातार पनरह दिनों के उपवास (संबोध ५८)। १४ पुंन. महाहिमवंत आदि अनेक पर्वतों के शिखरों का नाम (ठा ८—पत्र ४३६; ९—पत्र ४५४; इक)। °क्खर पुंन [°क्षर] नमो अरिहंताणं' यह वाक्य (भवि)। °गंडिया स्त्री [°गण्डिका] सिद्ध-संबन्धी एक ग्रन्थ-प्रकरण (भग)। °चक्क न [°चक्र] अर्हन् आदि नव पद (सिरि ३४)। °न्न न [°न्न] पकाया हुआ अन्न (सुपा ६३३)। °पुत्त पुं [°पुत्र] जैन साधु और गृहस्थ के बीच की अवस्थावाला पुरुष (संबोध ३१; निचू १)। °मणोरम पुं [°मनोरम] पक्ष का दूसरा दिन (सुज्ज १०, १४)। °राय पुं [°राज] विक्रम की बारहवीं शताब्दी का गुजरात का एक सुप्रसिद्ध राजा, जो सिद्धराज जयसिंह के नाम से प्रसिद्ध था (कुप्र २२; वाग्भ १५)। °वाल पुं [°पाल] बारहवीं शताब्दी का गुजरात का एक प्रसिद्ध जैन कवि (कुप्र १७६)। °सेण पुं [°सेन] एक सुप्रसिद्ध प्राचीन जैन महाकवि और तार्किक आचार्य (सम्मत्त १४१)। °सेणिया स्त्री [°श्रेणिका] बारहवें जैन अंग-ग्रन्थ का एक अंश (णंदि)। °सेल पुं [°शैल] शत्रुञ्जय पर्वत, सौराष्ट्र देश में पालीताना के पास का जैन महा-तीर्थ (सुख १, ३; सिरि ५५२)। °हेम न [°हैम] आचार्य हेमचन्द्र विरचित प्रसिद्ध व्याकरण-ग्रन्थ (मोह २)।

सिद्धंत पुं [सिद्धान्त] १ आगम, शास्त्र (उव; बृह १; णंदि)। २ निश्चय (स १०३)।

सिद्धत्थ पुं [दे] रुद्र, देव-विशेष (दे ८, ३१)।

सिद्धत्थ वि [सिद्धार्थ] १ कृतार्थ, कृतकृत्य (पउम ७२, ११)। २ पुं. भगवान् महावीर के पिता का नाम (सम १५१; कप्प; पउम २, २१; सुर १, १०)। ३ ऐरवत वर्ष के भावी दूसरे जिन-देव (सम १५४)। ४ एक जैन मुनि जो नववें बलदेव के दीक्षा-गुरु थे (पउम २०, २०६)। ५ वृक्ष-विशेष (सुपा ७७; पिंड ५९१)। ६ सर्षप, सरसों (अणु २३; कुप्र ४६०; पव १५४; हे ४, ४२३; उप पृ ९६)। ७ भगवान् महावीर के कान से कील निकालनेवाला एक वणिक् (चेइय ९९)। ८ एक देव-विमान (सम ३८; आचा २, १५, २; देवेन्द्र १४५)। ९ यक्ष-विशेष (आक)। १० पाटलिसंड नगर का एक राजा (विपा १, ७—पत्र ७२)। ११ एक गाँव का नाम (भग १५—पत्र ६६४)। °पुर न [°पुर] अंग देश का एक प्राचीन नगर (सुर २, ६८)। °वण न [°वन] वन-विशेष (भग)।

सिद्धत्था स्त्री [सिद्धार्था] १ भगवान् अभिनन्दन-स्वामी की माता का नाम (सम १५१)। २ एक विद्या (पउम ७, १४५)। ३ भगवान संभवनाथजी की दीक्षा-शिविका (विचार १२९)।

सिद्धत्थिया स्त्री [सिद्धार्थिका] १ मिष्ट-वस्तु-विशेष (पण्ण १७—पत्र ५३३)। २ आभरण-विशेष, सोने की कंठी (औप)।

सिद्धय पुं [सिद्धक] १ वृक्ष-विशेष, सिंदुवार वृक्ष, सम्हालु का गाछ। २ शाल वृक्ष (हे १, १८७)।

सिद्धा स्त्री [सिद्धा] १ भगवान् महावीर की शासन-देवी, सिद्धायिका (संति १०)। २ पृथिवी-विशेष, मुक्ति-स्थान, सिद्ध-शिला (सम २२)।

सिद्धाइया स्त्री [सिद्धायिका] भगवान् महावीर की शासन-देवी (गण १२)।

सिद्धाययण पुंन [सिद्धायतन] १ शाश्वत मन्दिर—देव-गृह। २ जिन-मन्दिर (ठा ४, २—पत्र २२६; इक; सुर ३, १२)। ३ अमुक पर्वतों के शिखरों का नाम (इक; जं ४)।

सिद्धालय पुंन [सिद्धालय] मुक्त-स्थान, सिद्ध-शिला (औप; पउम ११, १२१; इक)। स्त्री. °या (ठा ८—पत्र ४४०; सम २२)।

सिद्धि स्त्री [सिद्धि] १ सिद्ध-शिला, पृथिवी-विशेष, जहाँ मुक्त जीव रहते हैं (भग; उव; ठा

८—पत्र ४४०; औप; इक)। २ मुक्ति, निर्वाण, मोक्ष (ठा १—पत्र २५; पडि; औप; कुमा)। ३ कर्म-क्षय (सूअ २, ५, २५; २६)। ४ अणिमा आदि योग की शक्ति (ठा १)। ५ कृतार्थता, कृतकृत्यता (ठा १—पत्र २५; कप्प; औप)। ६ निष्पत्ति; 'न कयाइ दुव्विणीओ सकज्जसिद्धिं समाणेइ' (उव)। ७ सम्बन्ध (दसनि १, १२२)। ८ छन्द विशेष (पिंग)। °गइ स्त्री [°गति] मुक्ति-स्थान में गमन (कप्प; औप; पडि)। °गंडिया स्त्री [°गण्डिका] ग्रन्थ-प्रकरण-विशेष (भग ११, ९—पत्र ५२१)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष (कुप्र २२)।

सिन्न वि [शीर्ण] जीर्ण, गला हुआ (सुपा ११; विवे ७० टी)।

सिन्न देखो सिण्ण = स्विन्न (सुपा ११)।

सिन्न स्त्रीन [सैन्य] १ मिला हुआ हाथी-घोड़ा आदि। २ सेना का समुदाय (हे १, १५०; कुमा)। स्त्री. 'ता अन्नदिणे नयरे पवेढियं सत्तुसिन्नाए' (सुर १२, १०४)।

सिप्प देखो सिंप। सिप्पइ (षड्)।

सिप्प न [दे] पलाल, पुआल, तृण-विशेष (दे ८, २८)।

सिप्प न [शिल्प] कारु-कार्य, कारीगरी, चित्रादि-विज्ञान, कला, हुनर, क्रिया-कुशलता (पण्ह १; ३—पत्र ५५; उवा; प्रासू ८०)। २ तेजस्काय, अग्नि-संघात। ३ अग्नि का जीव। ४ पुं. तेजस्काय का अधिष्ठाता देव (ठा ५, १—पत्र २६२)। °सिद्ध पुं [°सिद्ध] कला में अतिकुशल (आवम)। °ाजीव वि [°ाजीव] कारीगर, कला—हुनर से जीविका-निर्वाह करनेवाला (ठा ५, १—पत्र ३०३)।

सिप्पा स्त्री [सिप्रा] नदी-विशेष, जो उज्जैन के पास से गुजरती है (स २६३; उप पृ २१८; कुप्र ५०)।

सिप्पि वि [शिल्पिन्] कारीगर, हुनरी, चित्र आदि कला में कुशल (औप; मा ४)।

सिप्पि स्त्री [शुक्ति] सीप, घोंघा (हे २, १३८; उवा; षड्; कुमा; प्रासू ३६; पि ३८५)।

सिप्पिअ वि [शिल्पिक] शिल्पी, कारीगर (महा)।

सिप्पिर न [दे] तृण-विशेष, पलाल, पुआल (पण्ण १—पत्र ३३; गा ३३०)।

सिप्पी स्त्री [दे] सूची, सूई (षड्)।

सिप्पीर देखो सिप्पिर (गा ३३० अ; पि २११)।

सिबिर देखो सिविर (पउम १०, २७)।

सिब्भ देखो सिंभ (चंड)।

सिभा स्त्री [शिफा] वृक्ष का जटाकार मूल (हे १, २३६)।

सिम स [सिम] सर्व, सब (प्रामा)।

सिम° देखो सीमा; 'जाव सिमसंनिहाणं पत्तो नगरस्स बाहिरुज्जाणे' (सुपा १६२)।

सिमसिम } अक [सिमसिमाय्] 'सिम
सिमसिमाय } सिम' आवाज करना। सिमसिमायंति (वज्जा ८२)। वकृ. सिमसिमंत (गा ५६१ अ)।

सिमिण देखो सुमिण (हे १, ४६; २५९)।

सिमिर (अप) देखो सिविर (भवि)।

सिमिसिम } देखो सिमसिम। वकृ.
सिमिसिमाअ } सिमिसिमंत, सिमिसिमाअंत (गा ५६०; पि ५५८)।

सिमिसिमिय वि [सिमिसिमितृ] 'सिम सिम' आवाज करनेवाला (पउम १०५, ५५)।

सिर सक [सृज्] १ बनाना, निर्माण करना। २ छोड़ना, त्याग करना। सिरइ (पि २३५), सिरामि (विसे ३५७९)।

सिर न [शिरस्] १ मस्तक, माथा, सिर (पाअ; कुमा; गउड)। २ प्रधान, श्रेष्ठ। ३ अग्र भाग (हे १, ३२)। °क्क न [°क] शिरस्त्राण, मस्तक का बख्तर (दे ५, ३१; कुमा; कुप्र २९२)। °ताण, °त्ताण न [°त्राण] वही पूर्वोक्त अर्थ (कुमा; स ३८५)। °बत्थि स्त्री [°बस्ति] चिकित्सा-विशेष, सिर में चर्म-कोश देकर उसमें संस्कृत तैल आदि पूरने का उपचार (विपा १, १—पत्र १४), 'सिरावेढेहि (?सिरबत्थीहि)य' (णाया १, १३—पत्र १८१)। °मणि देखो सिरो-मणि (सुपा ५३२)। °य पुं [°ज] केश, बाल (भग; कप्प; औप; स ५७८)। °हर न [°गृह] मकान के ऊपर की छत, चन्द्रशाला (दे ३, ४६)। देखो सिरो°।

सिर° देखो सिरा (जी १०)।

°सिरय } देखो सिर = शिरस् (कप्प; पण्ह
°सिरस } १, ४—पत्र ६८; औप)।

सिरसावत्त वि [शिरसावर्त, शिरस्यावर्त] मस्तक पर प्रदक्षिणा करनेवाला, शिर पर परिभ्रमण करता (णाया १, १—पत्र १३; कप्प; औप)।

सिरा स्त्री [शिरा, सिरा] १ रग, नस, नाड़ी (णाया १, १३—पत्र १८१; जी १०; जीव १)। २ धारा, प्रवाह (कुमा; उप पृ ३६६)।

सिरि° देखो सिरी (कुमा; जी ५०; प्रासू ५२; ८०; कम्म १, १; पि ९८)। °उत्त पुं [°पुत्र] भारतवर्ष में होनेवाला एक चक्रवर्ती राजा (सम १५४)। °उर न [°पुर] नगर-विशेष (उप ५५०)। °कंठ पुं [°कण्ठ] १ शिव, महादेव (कुमा)। २ वानरद्वीप का एक राजा (पउम ६, ३)। °कंत पुंन [°कान्त] एक देव-विमान (सम २७)। °कंता स्त्री [°कान्ता] १ एक राज-पत्नी (पउम ८, १८७)। २ एक कुलकर-पत्नी (सम १५०)। ३ एक राज-कन्या (महा)। ४ एक पुष्करिणी (इक)। °कंदलग पुं [°कन्दलक] पशु-विशेष, एक-खुरा जानवर की एक जाति (पण्ण १—पत्र ४९)। °करण न [°करण] १ न्यायालय, न्याय-मन्दिर। २ फैसला (सुपा ३६१)। °करणीय वि [°करणीय] श्री करण-संबन्धी (सुपा ३६१)। °कूड पुंन [°कूट] हिमवंत पर्वत का एक शिखर (राज)। °खंड न [°खण्ड] चन्दन (सुर २, ५६; कप्पू)। °गरण देखो °करण (सुपा ४२५)। °गीव पुं [°ग्रीव] राक्षस-वंश का एक राजा, एक लंका-पति (पउम ५, २६१)। °गुत्त पुं [°गुप्त] एक जैन महर्षि (कप्प)। °घर न [°गृह] भंडार, खजाना (णाया १, १—पत्र ५३; सूअनि ५५)। °घरिअ वि [°गृहिक] भंडारी, खजानची (विसे १४२५)। °चंद पुं [°चन्द्र] १ एक प्रसिद्ध जैनाचार्य और ग्रन्थकार (पव ४६; सुपा ६५८)। २ ऐरवत क्षेत्र में होनेवाले एक

जिनदेव (सम १५४; पव ७)। ३ आठवें बलदेव का पूर्वभवीय नाम (पउम २०, १९१)। °चंदा स्त्री [°चन्द्रा] १ एक पुष्करिणी (इक)। २ एक राज-पत्नी (उप ६८६ टी)। °ड्ढ पुं [°आढ्य] एक जैन मुनि (कप्प)। °णयर न [°नगर] वैताढ्य की दक्षिण-श्रेणी का एक विद्याधरनगर (इक)। देखो °नयर। °णिकेतण न [°निकेतन] वैताढ्य की उत्तर-श्रेणी में स्थित एक विद्याधर-नगर (इक)। °णिलय न [°निलय] वैताढ्य पर्वत की दक्षिण-श्रेणि में स्थित एक नगर (इक)। देखो °निलय। °णिलया स्त्री [°निलया] एक पुष्करिणी (इक)। °णिहुवय पुं [°कामुक] विष्णु, श्रीकृष्ण (कुमा)। °ताली स्त्री [°ताली] वृक्ष-विशेष (कप्पू)। °दत्त पुं [°दत्त] ऐरवत वर्ष में उत्पन्न पाँचवें जिन-देव (पव ७)। °दाम न [°दामन्] १ शोभावाली माला (जं ५)। २ आभरण-विशेष (आवम)। ३ पुं. एक राजा (विपा १, ६—पत्र ६४)। °दामकंड, °दामगंड पुंन [°दामकाण्ड] १ शोभावाली मालाओं का समूह (जं ५)। २ एक देव-विमान (सम ३९)। °दामगंड पुंन [°दामगण्ड] १ शोभावाली मालाओं का दण्डाकार समूह (जं ५)। °देवी स्त्री [°देवी] १ देवी-विशेष (राज)। २ लक्ष्मी (धर्मवि १४७)। °देवीनंदण पुं [°देवी-नन्दन] कामदेव (धर्मवि १४७)। °नंदण पुं [°नन्दन] १ कामदेव। २ वि. श्री से समृद्ध (सुपा २३४; धम्म १२ टी)। °नयर न [°नगर] दक्षिण देश का एक शहर (कुमा)। देखो °णयर। °निलय पुं [°निलय] वासुदेव (पउम ३८, ४०)। देखो °णिलय। °पट्ट पुं [°पट्ट] नगर-सेठाई का सूचक एक राज-चिह्न (सुपा २८३)। °पव्वय पुं [°पर्वत] पर्वत विशेष (वज्जा ९८)। °पह पुं [°प्रभ] एक प्रसिद्ध जैन आचार्य और ग्रन्थकार (धर्मवि १५२)। °पाल देखो °वाल (सिरि ३४)। °फल पुं [°फल] बिल्व-वृक्ष (कुमा)। देखो °हल। °भूइ पुं [°भूति] भारतवर्ष में होनेवाले छठवें चक्रवर्ती राजा (सम १५४)। °म देखो °मंत (उप पृ ३७४)। °मई स्त्री [°मती] १ इन्द्र-नामक विद्याधर-राज की एक पत्नी (पउम ६, ३)। २ एक राज-पत्नी (महा)। ३ एक सार्थवाह-कन्या (महा)। °मंगल पुं [°मङ्गल] दक्षिण भारत का एक देश (उप ७६८ टी)। °मंत वि [°मत्] १ शोभावाला, शोभा-युक्त (कुमा)। २ पुं. तिलक वृक्ष। ३ अश्वत्थ वृक्ष। ४ विष्णु। ५ शिव, महादेव। ६ श्वान, कुत्ता (हे २, १५९; षड्)। °मलय न [°मलय] वैताढ्य की दक्षिण-श्रेणी में स्थित एक विद्याधर-नगर (इक)। °महिअ पुंन [°महिक] एक देव-विमान (सम २७)। °महिआ स्त्री [°महिता] एक पुष्करिणी (इक)। °माल पुं [°माल] एक प्रसिद्ध वंश (कुप्र १४३)। °मालपुर न [°मालपुर] एक नगर (ती १५)। °यंठ देखो °कंठ (गउड)। °यंदल देखो °कंदलग (पण्ह १, १—पत्र ७)। °वइ पुं [°पति] श्रीकृष्ण, वासुदेव (सम्मत्त ७५)। °वच्छ पुं [°वत्स] १ जिनदेव आदि महापुरुषों के हृदय का एक ऊँचा अवयवाकार चिह्न (औप; सम १५३; महा)। २ महेन्द्र देवलोक के इन्द्र का एक पारियानिक विमान (ठा ८—पत्र ४३७)। ३ एक देव-विमान (सम ३९; देवेन्द्र १४०; औप)। °वच्छा स्त्री [°वत्सा] भगवान् श्रेयांसनाथजी की शासन-देवी (संति ९)। °वडिंसय न [°अवतंसक] सौधर्म देवलोक का एक विमान (राज)। °वण न [°वन] एक उद्यान (अंत ४)। °वण्णी स्त्री [°पर्णी] वृक्ष-विशेष (पण्ण १—पत्र ३१)। °वत्त (अप) देखो °मंत (भवि)। °वद्धण पुं [°वर्धन] एक राजा (पउम ५, २६)। °वय पुं [°वद्] पक्षि-विशेष (दे १, ६७; ८, ५२ टी)। °वारिसेण पुं [°वारि-षेण] ऐरवत वर्ष में होनेवाले चौबीसवें जिनदेव (पव ७)। °वाल पुं [°पाल] १ एक प्रसिद्ध जैन राजा (सिरि ३१७)। २ राजा सिद्धराज के समय का एक जैन महाकवि (कुप्र २१९)। °संभूआ स्त्री [°संभूता] पक्ष की छठवीं रात (सुज्ज १०, १४)। °सिचय पुं [°सिचय] ऐरवत वर्ष में उत्पन्न दूसरे जिनदेव (पव ७)। °सेण पुं [°षेण] एक राजा (उप ९८६ टी)। °सेल पुं [°शैल] हनूमान (पउम १७, १२०)। °सोम पुं [°सोम] भारतवर्ष में होनेवाला सातवाँ चक्रवर्ती राजा (सम १५४)। °सोमणस पुंन [°सौमनस] एक देव-विमान (सम २७)। °हर न [°गृह] भंडार (श्रा २८)। °हर पुं [°धर] १ भगवान् पार्श्वनाथ का एक मुनि-गण। २ भगवान् पार्श्वनाथ का एक गणधर—मुख्य शिष्य (कप्प)। ३ भारतवर्ष में अतीत उत्सर्पिणी काल में उत्पन्न सातवें जिनदेव। ४ ऐरवत वर्ष में वर्तमान अवसर्पिणी काल में उत्पन्न बीसवें जिनदेव (पव ७; उप ९८६ टी)। ५ वासुदेव (पउम ४७, ४९; षड्)। °हर वि। [°हर] श्री को हरण करनेवाला (कुमा)। °हल न [°फल] बिल्व फल (पाअ), देखो °फल।

सिरिअ पुं [श्रीक, श्रीयक] स्थूलभद्र का छोटा भाई और नन्द राजा का एक मन्त्री (पडि)।

सिरिअ न [स्वैर्य] स्वच्छन्दता (मै ७३)।

सिरिंग पुं [दे] विट, लम्पट, कामुक (दे ८, ३२)।

सिरिदह पुंस्त्री [दे] पक्षियों का पान-पात्र (पाअ; दे ८, ३२)।

सिरिमुह त्रि [दे] मद-मुख, जिसके मुह में मद हो वह (दे ८, ३२)।

सिरिया देखो सिरी (सम १५१)।

सिरिली स्त्री [दे. श्रीली] कन्द-विशेष (उत्त ३६, ९८)।

सिरिवच्छीव पुं [दे] गोपाल, ग्वाला (दे ८, ३३)।

सिरिवय पुं [दे] हंस पक्षी (दे ८, ३२)।

सिरिवय देखो सिरि-वय।

सिरिस पुं [शिरीष] १ वृक्ष-विशेष, सिरसा का पेड़ (सम १५२; हे १, १०१)। २ न. सिरसा का फूल (कुमा)।

सिरी स्त्री [श्री] १ लक्ष्मी, कमला (पाअ; कुमा)। २ संपत्ति, समृद्धि, विभव (पाअ; कुमा)। ३ शोभा (औप; राय; कुमा)। ४

पद्मह्रद की अधिष्ठात्री देवी (ठा २, ३—पत्र ७२)। ५ उत्तर रुचक पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८—पत्र ४३७)। ६ देव प्रतिमा-विशेष (णाया १, १ टी—पत्र ४३)। ७ भगवान् कुन्थुनाथ जी की माता का नाम (पव ११)। ८ एक श्रेष्ठि-कन्या (कुप्र १५२)। ९ एक श्रेष्ठि-पत्नी (कुप्र २२८)। १० देव, गुरु आदि के नाम के पूर्व में लगाया जाता आदर-सूचक शब्द (पव ७; कुमा; पि ६८)। ११ वाणी। १२ वेष-रचना। १३ धर्म आदि पुरुषार्थ। १४ प्रकार, भेद। १५ उपकरण, साधन। १६ बुद्धि, मती। १७ अधिकार। १८ प्रभा, तेज। १९ कीर्ति, यश। २० सिद्धि। २१ वृद्धि। २२ विभूति। २३ लवंग, लौंग। २४ सरल वृक्ष। २५ बिल्व-वृक्ष। २६ ओषधि-विशेष। २७ कमल, पद्म (हे २, १०४) देखो सिअ, सिरि°, सी = श्री।

सिरीस देखो सिरिस (णाया १, ९—पत्र १६०, औप; कुमा)।

सिरीसिव पुं [सरीसृप] सर्प, साँप (सूअ १, ७, १५; पि ८१; १७७)।

सिरो° देखो सिर = शिरस्। °धरा (शौ) देखो °हरा (पि ३४७)। °मणि पुं [°मणि] प्रधान, अग्रणी, मुख्य; 'अलससिरोमणी' (गा ६७०; सुपा ३०१; प्रासू २७)। °रुह पुं [°रुह] केश, बाल (पात्र)। °विअणा स्त्री [°वेदना] सिर की पीड़ा (हे १, १५६)। °वत्थि देखो सिर-वत्थि (राज)। °हरा स्त्री [°धरा] ग्रीवा, गला, डोक (पात्र; णाया १, ३; स ८; अभि २२४)।

सिल° देखो सिला (कुमा)। °प्पवाल न [°प्रवाल] विद्रुम (औप)।

सिलंब देखो सिलिंब (पात्र)।

सिलंच पुं [दे] उञ्छ, गिरे हुए अन्न-कणों का ग्रहण (दे ८, ३०)।

सिला स्त्री [शिला] १ सिल, चट्टान, पत्थर (पात्र, प्रास; कप्प; कुमा)। २ ओला (दस ८, ६)। °जउ पुंन [°जतु] शिलाजित, पर्वतों से उत्पन्न होनेवाला द्रव्य-विशेष, जो दवा के काम में आता है, शिला-रस (उप ७२८ टी; धर्मवि १४१)।

सिलाइच्च पुं [शिलादित्य] वलभीपुर का एक प्रसिद्ध राजा (ती १५)।

सिलागा देखो सलागा (सं ८४)।

सिलाघ (शौ) नीचे देखो। कृ. सिलाघणीअ (प्रयौ ६७)।

सिलाह सक [श्लाघ्] प्रशंसा करना। कृ. सिलाहणिज्ज (रयण १९)।

सिलाहा स्त्री [श्लाघा] प्रशंसा (मै ८८)।

सिलिंद पुं [शिलिन्द] धान्य-विशेष (पव १५६; संबोध ४३; श्रा १८; दसनि ६, ८)।

सिलिंध पुंन [शिलीन्ध्र] १ वृक्ष-विशेष, छत्रक वृक्ष, भूमिस्फोट वृक्ष (णाया १, १—पत्र २५; ९—पत्र १६०; औप; कुमा)। २ पुं. पर्वत-विशेष (स २५२)। °निलय पुं [°निलय] पर्वत-विशेष (स ४२४)।

सिलिंब पुं [दे] शिशु, बच्चा (दे ८, ३०; सुर ११, २०६; सुपा ३४)।

सिलिट्ठ वि [श्लिष्ट] १ मनोज्ञ, सुन्दर; 'अइक्कंतविसप्पमाणमउयसुकुमालकुम्मसंठियसिलिट्ठचरणा' (पण्ह १, ४—पत्र ७९)। २ संगत, सुयुक्त (औप)। ३ आलिङ्गित। ४ संसृष्ट। ५ श्लेषालंकार-युक्त (हे २, १०६; प्राप्र)।

सिलिपइ देखो सिलिवइ (राज)।

सिलिम्ह पुंस्त्री [श्लेष्मन्] श्लेष्मा, कफ (हे २, ५५; १०६; पि १३६)। देखो सेम्ह।

सिलिया स्त्री [शिलिका] १ चिरैता आदि तृण, ओषधि-विशेष। २ पाषाण-विशेष, शस्त्र को तीक्ष्ण करने का पाषाण (णाया १, १३—पत्र १८१)।

सिलिसिअ देखो सिलिट्ठ (कुमा ७, ९५)।

सिलिवइ वि [श्लीपादिन्] श्लीपद नामक रोगवाला, जिससे पैर फूला हुआ और कठिन हो जाता है उस रोग से युक्त (आचा; बृह १)।

सिलीमुह पुं [शिलीमुख] १ बाण, तीर (पात्र; सुर ६, १४)। २ रावण का एक योद्धा (पउम ५६, ३६)।

सिलीस देखो सिलेस = श्लिष्। सिलीसइ (भवि)। सिलीसंति (सूअ २, २, ५५)।

सिलुच्चय पुं [शिलोच्चय] १ मेरु पर्वत (सुज ५)। २ पर्वत, पहाड़ (रंभा)।

सिलेच्छिअ पुं [शिलैच्छिक] मत्स्य-विशेष (जीव १ टी पत्र ३६)।

सिलेम्ह देखो सिलिम्ह (षड्)।

सिलेस सक [श्लिष्] आलिङ्गन करना, भेंटना। सिलेसइ (हे ४, १९०)।

सिलेस पुं [श्लेष] १ वज्रलेप आदि संधान (सूअनि ८५)। २ आलिङ्गन, भेंट (सुर १६, २४३)। ३ संसर्ग। ४ दाह (हे २, १०६; षड्)। ५ एक शब्दालंकार (सुर १, ३९; १६, २४३)।

सिलेस देखो सिलिम्ह (अनु ५)।

सिलोअ, **सिलोग** पुं [श्लोक] १ कविता, पद्य, काव्य (मुद्रा १९८; सुपा ५६४; अजि ३; महा)। २ यश, कीर्ति (सूअ १, १३, २२; हे २, १०६)। ३ कला-विशेष, कवित्व, काव्य बनाने की कला (औप)।

सिलोच्चय देखो सिलुच्चय (पात्र; सुर १, ७; राज)।

सिल्ल पुं [दे] १ कुन्त, बरछा, शस्त्र-विशेष (सुपा ३११; कुप्र २८; काल; सिरि ४०३)। २ पोत-विशेष, एक प्रकार का जहाज (सिरि ३८३)।

सिल्ला देखो सिला। °र पुं [°कार] शिलावट, पत्थर गढ़नेवाला शिल्पी (ती १५)।

सिल्हग न [सिह्लक] गन्ध-द्रव्य-विशेष (राज)।

सिल्हा स्त्री [दे] शीत, जाड़ा (से १२, ७)।

सिव न [शिव] १ मङ्गल, कल्याण। २ सुख (पात्र; कुमा; गउड)। ३ अहिंसा (पण्ह २, १—पत्र ९९)। ४ पुंन. मुक्ति, मोक्ष (पात्र; सम्मत्त ७६; सम १; कप्प; औप; पडि)। ५ वि. मङ्गल-युक्त, उपद्रव-रहित (कप्प; औप; सम १; पडि)। ६ पुं. महादेव (णाया १, १—पत्र ३९; पात्र; कुमा; सम्मत्त ७६)। ७ जिनदेव, तीर्थंकर, अर्हन् (पउम १०९, १२)। ८ एक राजर्षि, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी (ठा ८—पत्र ४३०; भग ११, ९)। ९ पाँचवें वासुदेव तथा बलदेव का पिता (सम १५२)। १० देव-विशेष (राय; अणु)। ११ पौष मास का लोकोत्तर नाम (सुज्ज १०, १९)।

१२ एक देव-विमान (देवेन्द्र १४३)। १३ छन्द-विशेष (पिंग)। °कर न [°कर] १ शैलेशी अवस्था की प्राप्ति। २ मुक्ति-मार्ग (सूअनि ११५)। °गइ स्त्री [°गति] १ मुक्ति, मोक्ष। २ वि. मुक्त, मुक्ति-प्राप्त (राज)। ३ पुं भारतवर्ष में अतीत उत्सर्पिणी-काल में उत्पन्न चौदहवें जिन-देव (पव ७)। °तित्थ न [°तीर्थ] काशी, बनारस (हे ४, ४४२)। °नंदा स्त्री [°नन्दा] आनन्द-श्रावक की पत्नी (उवा)। °भूइ पुं [°भूति] १ एक जैन महर्षि (कप्प)। २ बोटिक मत—दिगंबर जैन संप्रदाय का स्थापक एक मुनि (विसे २५५१)। °रत्ति स्त्री [°रात्रि] फाल्गुन (गुजराती माघ) मास की कृष्ण चतुर्दशी तिथि (सट्ठि ७८ टी)। °सेण पुं [°सेन] ऐरवत वर्ष में उत्पन्न एक अर्हन् (सम १५३)।

सिवंकर पुं [शिवङ्कर] पाँचवे केशव का पिता (पउम २०, १८२)।

सिवक } पुं [शिवक] १ घड़ा तैयार होने
सिवय } के पूर्व की एक अवस्था (विसे २३१६)। २ वेलन्धर नागराज का एक आवास-पर्वत (इक)।

सिवा स्त्री [शिवा] १ भगवान नेमिनाथ जी की माता का नाम (सम १५१)। २ सौधर्म देवलोक के इन्द्र की एक अग्र-महिषी (ठा ८—पत्र ४१६; णाया २—पत्र २५३)। ३ पनरहवें जिनदेव की प्रवर्तिनी—मुख्य साध्वी (पव ९)। ४ शृगाली, मादा सियार (अणु; वज्जा ११८)। ५ पार्वती (पाअ)।

सिवाणंदा देखो सिव-नंदा (उवा)।

सिवासि पुं [शिवाशिन्] भरतक्षेत्र में अतीत उत्सर्पिणी-काल में उत्पन्न बारहवें जिनदेव (पव ७)।

सिविण देखो सुमिण (हे १, ४६; प्राप्र; रंभा; कुमा; कप्पू)।

सिविया स्त्री [शिविका] सुखासन, पालकी, डोली (कप्प; औप; महा)।

सिविर न [शिविर] १ स्कन्धावार, सैन्य-निवास-स्थान, छावनी (कुमा)। २ सैन्य, सेना, लश्कर (सुपा ६)।

सिव्व सक [सीव्] सीना, साँधना। सिव्वइ (षड्; विसे १३६८)। भवि. सिव्विस्सामि (आचा १, ६, ३, १)।

सिव्व देखो सिव = शिव (प्राकृ २६; संक्षि १७)।

सिव्विअ वि [स्यूत] सिया हुआ (पव ६२)।

सिव्विणी } स्त्री [दे] सूची, सूई (दे ८,
सिव्वी } २९)।

सिस देखो सिलेस = श्लिष्। सिसइ (षड्)।

सिसिर न [दे] दधि, दही (दे ८, ३१; पाअ)।

सिसिर पुं [शिशिर] १ ऋतु-विशेष, माघ तथा फागुन का महिना (उप ७२८ टी; हे ४, ३५७)। २ माघ मास का लोकोत्तर (सुज्ज १०, १९)। ३ फागुन मास; 'सिसिरो फग्गुण-माहो' (पाअ)। ४ वि. जड़, ठंढा, शीतल (पाअ; उप ७६८ टी)। ५ हलका (उप ७६८ टी)। ६ न. हिम (उप ९८६ टी)। °किरण पुं [°किरण] चन्द्रमा (धर्मवि ५)। °महीहर पुं [°महीधर] हिमालय पर्वत (उप ९८६ टी)।

सिसिरली देखो सिस्सिरिली (राज)।

सिसु पुंन [शिशु] बालक, बच्चा (सुपा ५८८; सम्मत्त १२२); 'सा खाइ पायमेक्कं सिसूणि बीयं पढमपहरे' (कुप्र १७३)। °आल पुं [°काल] बाल्य, बाल-काल (नाट—चैत ३७)। °नाग पुं [°नाग] क्षुद्र कीट-विशेष, अलस (उत्त ५, १०)। °पाल पुं [°पाल] एक प्रसिद्ध राजा (णाया १, १६—पत्र २०८; सूअ १, ३, १, १; उप ६४८ टी; कुप्र २५६)। °यव पुंन [°यव] तृण-विशेष (पण्ण १—पत्र ३३)। °वाल देखो °पाल (सूअ १, ३, १, १ टी)।

सिस्स पुंस्त्री [शिष्य] १ चेला, छात्र, विद्यार्थी (णाया १, १—पत्र ६०; सूअनि १२७)। स्त्री. °स्सा, °स्सिणी (मा ६; णाया १, १४—पत्र १८८)।

सिस्स देखो सीस = शीर्ष (सत्त ५०)।

सिस्सिरिली स्त्री [दे] कन्द-विशेष (उत्त ३६, ९८)।

सिह सक [स्पृह्] इच्छा करना, चाहना। सिहइ (हे ४, ३४; प्राकृ २३)। कृ. सिहणिज्ज (दे ८, ३१ टी)।

सिह पुं [दे] भुजपरिसर्प की एक जाति (सूअ २, ३, २५)।

सिहंड पुं [शिखण्ड] शिखा, चूला, चोटी (पाअ; अभि १५१)।

सिहंडइल्ल पुं [दे] १ बालक, शिशु। २ दधिसर, दही की मलाई। मयूर, मोर (दे ८, ५४)।

सिहंडहिल्ल पुं [दे] बालक, बच्चा (षड्)।

सिहंडि वि [शिखण्डिन्] १ शिखाधारी (भत्त १००; औप)। २ पुं. मयूर-पक्षी, मोर (पाअ; उप ७२८ टी)। ३ विष्णु (सुपा १४२)।

सिहण देखो सिहिण (रंभा)।

सिहर न [शिखर] १ पर्वत के ऊपर का भाग, शृङ्ग (पाअ; गउड; सुर ४, ५६; से ६, २८)। २ अग्रभाग (णाया १, ६)। ३ लगातार अठाईस दिनों के उपवास (संबोध ५८)। °अग्ग वि [°चग] शिखरों से प्रसिद्ध (से ६, १८)।

सिहरि पुं [शिखरिन्] १ पहाड़, पर्वत (पाअ; सुपा ४६)। २ वर्षधर पर्वत-विशेष (ठा २, ३—पत्र ६६; सम १२; ४३)। ३ पुंन. कूट-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७०)। °वइ पुं [°पति] हिमालय पर्वत (से ८, ६२)।

सिहरिणी } स्त्री [दे. शिखरिणी] मार्जिता
सिहरिल्ला } खाद्य-विशेष, दही-चीनी आदि से बनता एक तरह का मिष्ट खाद्य (दे १, १५४; ८, ३३; पण्ह २, ५—पत्र १४८; पव ४; पभा ३३; कस; सण)।

सिहली } स्त्री [शिखा] १ चोटी, मस्तक
सिहा } पर के बालों का गुच्छा (पंचा १०, ३२; पव १५३; पाअ; णाया १, ५—पत्र १०८; संबोध ३१)। २ अग्नि की ज्वाला (पाअ; कुमा; गउड)।

सिहाल वि [शिखावत्] शिखावाला, शिखा-युक्त (गउड)।

सिहि पुं [शिखिन्] १ अग्नि, आग (गा १३; पाअ; सुपा ५१६)। २ मयूर, मोर (पाअ; हेका ४५; गा ५२; १७३)। ३ रावण का एक सुभट (पउम ५६, ३०)। ४ पर्वत। ५ ब्राह्मण। ६ मुर्गा। ७ केतु

ग्रह । ८ वृक्ष । ६ अश्व । १० चित्रक-वृक्ष । ११ मयूरशिखा-वृक्ष । १८ बकरे का रोम । १३ वि. शिखा-युक्त (अणु १४२) ।

सिहि पुं [दे] कुक्कुट, मुर्गा (दे ८, २८) ।

सिहिअ वि [स्पृहित] अभिलषित (कुमा) ।

सिहिण पुंन [दे] स्तन, थन (दे ८, ३१; सुर १, ६०; पाअ; षड्; रंभा; सुपा ३२; भवि; हम्मीर ५०; सम्मत्त १६) ।

सिहिणी स्त्री [शिखिनी] छन्द-विशेष (पिंग) ।

सिही (अप) स्त्री [शिखी] छन्द-विशेष (पिंग) ।

सी (अप) स्त्री [श्री] छन्द-विशेष (पिंग) । देखो **सिरी** ।

सीअ अक [सद्] १ विषाद करना, खेद करना । २ थकना । ३ पीड़ित होना, दुःखी होना । ४ फलना, फल लगना । सीअइ, सीअंति (पि ४८२; गा ८७४); 'जया सोवम्मि सीयइ' (पिंड ८२), 'सीयंति य सव्वअंगाइं' (सुर १२, २) । वकृ. सीअंत (पाअ ५०७; सुपा ५१०; कुप्र ११८) ।

सीअ न [दे] सिक्थक, मोम (दे ८, ३३) ।

सीअ वि [स्वीय] स्वकीय, निज का; 'सीयतेयलेस्सापडिसाहरणट्ठयाए', 'सीओसिणा तेयलेस्सा' (भग १५—पत्र ६६६) ।

सीअ देखो सिअ = सित; 'सीआसीअं' (प्राप्र) ।

सीअ पुंन [शीत] १ स्पर्श-विशेष, ठंढा स्पर्श (ठा १—पत्र २५; पव ८६) । २ हिम, तुहिन (से ३, ४७) । ३ शीत-काल (राज) । ४ ठंढ, जाड़ा (ठा ४, ४—पत्र २८७; औप; गउड; उत्त २, ६) । ५ कर्म-विशेष, शीत स्पर्श का कारण-भूत कर्म (कम्म १, ४१; ४२) । ६ वि. शीतल, ठंढा (भग; औप; णाया १, १ टी—पत्र ४) । ७ पुं. प्रथम नरक का एक नरक-स्थान (देवेन्द्र ४) । ८ न. तप-विशेष, आयंबिल तप (संबोध ५८) । ६ वि. अनुकूल (सूअ १, २ २, २२) । १० न. सुख (आचा) । °**घर** न [°गृह] चक्रवर्ती का वर्धकि-निर्मित वह घर, जहाँ सर्व ऋतु में स्पर्श की अनुकूलता होती है (वव ३) । °**च्छाय** वि [°च्छाय] शीतल छायावाला (औप; णाया १, १ टी—पत्र ४) । °**परीसह** पुं [°परीषह] शीत को सहना (उत्त २, १) । °**फास** पुं [°स्पर्श] ठंढ, जाड़ा, सर्दी (आचा) । °**सोआ** स्त्री [°स्रोता, °स्रोता] नदी-विशेष (इक; ठा ३, ४—पत्र १६१) । °**ालोअ** पुं [°ालोक] १ चन्द्रमा । २ शीतकाल, हिम-ऋतु (से ३, ४७) ।

सीअ° देखो सीआ = शीता । °**प्पवाय** पुं [°प्रपात] द्रह-विशेष, जहाँ शीता नदी पहाड़ पर से गिरती है (ठा २, ३—पत्र ७२) ।

सीअ° देखो सीआ = सीता (कुमा) ।

सीअउरय पुं [दे. शीतोरस्क] गुल्म-विशेष; 'पत्तउरसीयउरए हवइ तह जवासए य बोधव्वे' (पण्ण १—पत्र ३२) ।

सीअण न [सदन] हैरानी (सम्मत्त १६६) ।

सीअणय न [दे] १ दुग्ध-पारी, दूध दोहने का पात्र । २ श्मशान, मसान (दे ८, ५५) ।

सीअर पुं [शीकर] १ पवन से क्षिप्त जल, फुहार, जल-कण (हे १, १८४; गउड; कुमा; सण) । २ वायु, पवन (हे १, १८४; प्राकृ ८४) ।

सीअरि वि [शीकरिन्] शीकर-युक्त (गउड) ।

सीअल पुं [शीतल] १ वर्तमान अवसर्पिणी काल के दसवें जिन-देव (सम ४३; पडि) । २ कृष्ण पुद्गल-विशेष (सुज्ज २०) । ३ वि. ठंढा (हे ३, १०; कुमा; गउड; रयण ५७) ।

सीअलिया स्त्री [शीतलिका] १ ठंढी, शीतला; 'सीयलियं तेअलेस्सं निसिरामि' (भग १५—पत्र ६६६) । २ लूता-विशेष (राज) ।

सीअल्लि पुंस्त्री [दे] १ हिमकाल का दुर्दिन । २ वृक्ष-विशेष (दे ८, ५५) ।

सीआ स्त्री [शीता] १ एक महा-नदी (सम २७; १०२; इक) । २ ईषत्प्राग्भारा-नामक पृथिवी, सिद्ध-शिला (इक) । ३ शीताप्रपात द्रह की अधिष्ठात्री देवी (जं ४) । ४ नील पर्वत का एक शिखर । ५ माल्यवत् पर्वत का एक कूट (इक) । ६ पश्चिम रुचक पर रहनेवाली दिक्कुमारी देवी (ठा ८—पत्र ४३६) । °**मुह** न [°मुख] एक वन (जं ४) ।

सीआ स्त्री [सीता] १ जनक-सुता, राम-पत्नी (पउम ३८, ५६) । २ चतुर्थ वासुदेव की माता का नाम (पउम २०, १८४; सम १५२) । ३ लाङ्गल-पद्धति, खेत में हल चलाने से होती भूमि-रेखा (दे २, १०४) । ४ ईषत्प्राग्भारा नामक पृथिवी (उत्त ३६, ६२; चेइय ७२५) । ५-६ नील तथा माल्यवत् पर्वतों के शिखर-विशेष (इक) । ७ एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८) ।

सीआ देखो सिबिया (कप्प; औप; सम १५१) ।

सीआण देखो मसाण = श्मशान (हे २, ८६; वव ७) ।

सीआर देखो सिक्कार (णाया १, १—पत्र ६३) ।

सीआला स्त्री [सप्तचत्वारिंशत्] सैंतालीस, ४७; (कम्म ६, २१) ।

सीआलीस स्त्रीन. ऊपर देखो (पि ४४५; ४४८) । स्त्री. °**सा** (सुज्ज २, ३—पत्र ५१) ।

सीआव सक [सादय्] शिथिल करना, 'सीयावेइ विहारं' (गच्छ १, २३) ।

सीइआ स्त्री [दे] झड़ी, निरन्तर वृष्टि (दे ८, ३४) ।

सीइय वि [सन्न] खिन्न, परिश्रान्त (स ८५) ।

सीई स्त्री [दे] सीढ़ी, निःश्रेणि (पिंड ६८) ।

सीउग्गय वि [दे] सुजात (दे ८, ३४) ।

सीउट्ठ न [दे] हिम-काल का दुर्दिन (षड्) ।

सीउण्ह न [शीतोष्ण] १ ठंढा तथा गरम । २ अनुकूल तथा प्रतिकूल (सूअ १, २, २, २२; पि १३३) ।

सीउल्ल देखो सीउट्ठ (षड्) ।

सीओअ° देखो सीओआ । °**प्पवाय** पुं [°प्रपात] कुण्ड-विशेष, जहाँ शीतोदा नदी पहाड़ से गिरती है (जं ४—पत्र ३०७) । °**दीव** पुं [°द्वीप] द्वीप-विशेष (जं ४—पत्र ३०७) ।

सीओआ स्त्री [शीतोदा] १ एक महा-नदी (ठा २, ३—पत्र ७२; इक; सम २७; १०२) । २ निषध पर्वत का एक कूट (ठा ६—पत्र ४५४) ।

सीकोत्तरी स्त्री [दे] नारी, स्त्री, महिला (सिरि ३६०) ।

सीत देखो सीअ = शीत (ठा ३, ४—पत्र १६१)।

सीता देखो सीआ = शीता, सीता (ठा ८—पत्र ४३६; ६—पत्र ४५४)।

सीतालीस देखो सीआलीस (सुज्ज २, ३—पत्र ५१)।

सीतोद° देखो सीओअ° (ठा २, ३—पत्र ७२)।

सीतोदा } देखो सीओआ (पराह २, ४—
सीतोया } पत्र १३०; सम ८४)।

सीदण न [सदन] शैथिल्य, प्रमत्तता (पंचा १२, ४६)।

सीधु देखो सीहु (णाया १, १६—पत्र २०६ उवा)।

सीभर देखो सीअर (प्राप्र; कुमा; हे १, १८४; षड्)।

सीभर वि [दे] समान, तुल्य (अरा १३१)।

सीमआ स्त्री [सीमन्] १ मर्यादा। २ अवधि। ३ स्थिति। ४ क्षेत्र। ५ वेला, समय। ६ अराडकोष, पोता (षड्)। देखो सीमा।

सीमंकर पुं [सीमङ्कर] १ इस अवसर्पिणी काल में उत्पन्न एक कुलकर पुरुष का नाम (पउम ३, ५३)। २ ऐरवत क्षेत्र के भावी द्वितीय कुलकर (सम १५३)। ३ वि. मर्यादा-कर्ता (सूअ २, १, १३)।

सीमंत पुं [सीमन्त] १ बालों में बनाई हुई रेखा-विशेष (से ६, २०; गउड; उप ७२८ टी)। २ अपर काय (गउड ८५)। ३ ग्राम से लगी हुई भूमि का अन्त, सीमा, गाँव का पर्यन्त भाग (गउड २७३; २७७; उप ७२८ टी)। ४ सीमा का अन्त, हद; 'एसो च्चिय सीमंतो गुणाण दूरं फुरंताण' (गउड)।

सीमंत पुं [सीमान्त] १ सीमा का अन्त भाग, गाँव का पर्यन्त भाग (गउड ३६७; ४०५)। २ हद्द (गउड ८८६)।

सीमंत सक [दे. सीमान्तय्] बेचना। संकृ. सीमंतिऊण (राज)।

सीमंतग } पुं [सीमन्तक] प्रथम नरक-भूमि
सीमंतय } का एक नरका-वास, नरक-स्थान (निचू १; ठा ३, १—पत्र १२६; सम ६८)। °प्पभ पुं [°प्रभ] सीमन्तक नरकावास की पूर्व तरफ स्थित एक नरकावास (देवेन्द्र २०)। °मज्झिम पुं [°मध्यम] सीमन्तक की उत्तर तरफ स्थित एक नरकावास (देवेन्द्र २०)। °विसिट्ठ पुं [°विशिष्ट] सीमन्तक की दक्षिण दिशा में स्थित एक नरकावास (देवेन्द्र २१)। °वत्त पुं [°वर्त] सीमन्तक की पश्चिम तरफ का एक नरकावास (देवेन्द्र २१)।

सीमंतय न [दे] सीमंत—बालों की रेखा-विशेष में पहना जाता अलंकार-विशेष (दे ८, ३५)।

सीमंतिअ वि [सीमन्तित] खरिडत, छिन्न (पाअ)।

सीमंतिणी स्त्री [सीमन्तिनी] स्त्री, नारी, महिला (पाअ; उप ७२८ टी; सम्मत्त १९१; सुपा ७)।

सीमंधर पुं [सीमन्धर] १ भारतवर्ष में उत्पन्न एक कुलकर पुरुष (पउम ३, ५३)। २ ऐरवत वर्ष का एक भावी कुलकर (सम १५३)। ३ पूर्व-विदेह में वर्तमान एक अर्हन् देव (काल)। ४ एक जैन मुनि, जो भगवान् सुमतिनाथ के पूर्व जन्म में गुरु थे (पउम २०, १७)। ५ भगवान् शीतलनाथ जी का मुख्य श्रावक (विचार ३७८)। ६ वि. मर्यादा को धारण करनेवाला, मर्यादा का पालक (सूअ २, १, १३)।

सीमा स्त्री [सीमा] देखो सीमआ (पाअ; गा १६८; ७५१; काल; गउड)। °गार पुं [°कार] जलजन्तु-विशेष, ग्राह का एक भेद (पराह १, १—पत्र ७)। °धर वि [°धर] मर्यादा धारक (पडि; हे ३, १३४)। °ल वि [°ल] सीमा के पास का, सीमा के निकट-वर्ती; 'सीमाला नरवइणो सव्वे ते सेवमावन्ना' (सुपा २२२; ३५२; ४६३; धर्मवि ५६)।

सीर पुंन [सीर] हल, जिससे खेत जोतते हैं (पउम ११३, ३२; कुमा; पडि); 'संसयवसुहासीरो' (धर्मवि १६)। °धारि पुं [°धारिन्] बलदेव, बलभद्र, राम (पउम २०, १६३)। °पाणि पुं [°पाणि] वही (दे २, २३; कुमा)। °सीमंत पुं [°सीमन्त] हल से फाड़ी हुई जमीन की रेखा (दे)।

सीरि पुं [सीरिन्] बलभद्र, बलदेव (पाअ)।

सीरिअ वि [दे] भिन्न, 'सीरिओ भिन्नो' (पाअ)।

सील सक [शीलय्] १ अभ्यास करना, आदत डालना। २ पालन करना: 'सीलेज्जा सीलमुज्जलं' (हित १६); 'सव्वसीलं सीलह पव्वज्जगहणेणं' (श्रा १६)। देखो सीलाव।

सील न [शील] १ चित्त का समाधान, 'सीलं चित्तसमाहाणलक्खणं भएणए एयं' (उप ५६७ टी)। २ ब्रह्मचर्य (प्रासू २२; ५१; १५४; १६६; श्रा १६; हित १६)। ३ प्रकृति, स्वभाव; 'सीलं पयई' (पाअ); 'कलहसीलं' (कुमा)। ४ सदाचार, चारित्र, उत्तम वर्तन (कुमा; पंचा १४, १; पराह २, १—पत्र ६६)। ५ चरित्र, वर्तन (हे २, १८४)। ६ अहिंसा (पराह २, १—पत्र ६६)। °इ पुं [°जित्] क्षत्रिय परिव्राजक का एक भेद (औप)। °ड्ढ वि [°ढ्य] शील-पूर्ण (ओघ ७८४)। °परिघर पुंन [°परिगृह] १ चारित्र-स्थान। २ अहिंसा (पराह २, १—पत्र ६६)। °मंत, °व वि [°वत्] शील-युक्त (आचा; ओघ ७७७; श्रा ३६)। °व्वय न [°व्रत] अणुव्रत, जैन श्रावक के पालने योग्य अहिंसा आदि पाँच व्रत (भग)। °सालि वि [°शालिन्] शील से शोभनेवाला (सुपा २४०)।

सीलाव सक [शीलय्] तंदुरुस्त करना। कर्म. सीलप्पए (वव १)।

सीलुट्ट न [दे] त्रपुस, खीरा, ककड़ी (दे ८, ३५; पाअ)।

सीव सक [सीव्] सीना, सिलाई करना, साँधना। भवि. सीविस्सामि (आचा)। संकृ. सीविऊण (स ३५०)।

सीवणा स्त्री [सीवना] सीना, सिलाई (उप पृ. २८८)।

सीवणी स्त्री [दे] सूची, सूई (गउड)। देखो सिव्विणी।

सीवण्णी } स्त्री [श्रीपर्णी] वृक्ष-विशेष (ओघ
सीवन्नी } ४४६ टी; पिंड ८१; ८२; उप १०३१ टी)।

सीविअ देखो सिव्विअ (से १४, २८; दे ४, ७; ओघभा ३१५)।

सीस सक [शिष्] १ वध करना, हिंसा करना। २ शेष करना, बाकी रखना। ३ विशेष करना। सीसइ (हे ४, २३६; षड्)।

सीस सक [कथय्] कहना। सीसइ (हे ४, २; भवि)।

सीस न [सीस] धातु-विशेष, सीसा (दे २, २७)।

सीस देखो **सिस्स** = शिष्य (हे १, ४३; कुमा; दं ४७; गाया १, ५—पत्र १०३)।

सीस पुंन [शीर्ष] १ मस्तक, माथा (स्वप्न ६०; प्रासू ३)। २ स्तबक, गुच्छा (आचा २, १, ८, ६)। ३ छन्द-विशोष (पिंग)। °**अ** न [°क] शिरस्त्राण (वेणी ११०)। °**घडी** स्त्री [°घटी] सिर की हड्डी (तंदु ३८)। °**पकंपिअ** न [°प्रकम्पित] संख्या-विशेष, महालता को चौरासी लाख से गुनने पर जो संख्या लब्ध हो वह (इक)। °**पहेलिअ** स्त्रीन [°प्रहेलिक] संख्या-विशेष, शीर्षप्रहेलिकांग को चौरासी लाख से गुनने पर जो संख्या लब्ध हो वह (इक)। स्त्री. °**आ** (ठा २, ४—पत्र ८६, सम ६०; अणु ६६)। °**पहेलियंग** न [प्रहेलिकाङ्ग] संख्या-विशेष, चूलिका को चौरासी लाख से गुनने पर जो संख्या लब्ध हो वह (ठा २, ४—पत्र ८६; अणु ६६)। °**पूरग**, °**पूरय** पुं [°पूरक] मस्तक का आभरण (राज; तंदु ४१)। °**रूपक**, °**रूअ** (अप)। पुंन [°रूपक] छन्द-विशेष (पिंग)। °**वेढ** पुं [°वेष्ट] गीले चमड़े आदि से मस्तक को लपेटना (सम ५०)।

सीस° देखो **सास** = शास्।

सीसक्क न [दे. शीर्षक] शिरस्त्राण, मस्तक का कवच (दे ८, ३४; से १५, ३०)।

सीसम पुंन [दे] सीसम का गाछ, शिशपा (उप १०३१ टी)।

सीसय वि [दे] प्रवर, श्रेष्ठ (दे ८, ३४)।

सीसय न [सीसक] देखो **सीस** = सीस (महा)।

सीसवा स्त्री [शिंशपा] सीसम का गाछ (पण्ण १—पत्र ३१)।

सीह देखो **सिग्घ** = शीघ्र (राज)।

सीह पुं [सिंह] १ श्वापद जन्तु-विशेष, केसरी, मृग-राज (पण्ह १, १—पत्र ७; प्रासू ५१; १७१)। २ वृक्ष-विशेष, सहिजने का पेड़ (हे १, १४४; प्राप्र)। ३ राशि-विशेष, मेष से पाँचवीं राशि (विचार १०६)। ४ एक अनुत्तर देवलोक-गामी जैन मुनि (अनु २)। ५ एक जैन मुनि, जो आर्य-धर्म के शिष्य थे (कप्प)। ६ भगवान् महावीर का शिष्य एक मुनि (भग १५—पत्र ६८५)। ७ एक विद्याधर सामन्त राजा (पउम ८, १३२)। ८ एक श्रेष्ठि-पुत्र (सुपा ५०६)। ६ एक देव-विमान (सम ३३; देवेन्द्र १४०)। १० एक जैन आचार्य, जो रेवतीनक्षत्र नामक आचार्य के शिष्य थे (णंदि ५१)। ११ छन्द-विशेष (पिंग)। °**उर** न [°पुर] नगर-विशेष (सण)। °**कंत** पुंन [°कान्त] एक देव-विमान (सम ३३)। °**कडि** पुं [°कटि] रावण का एक योद्धा (पउम ५६, २७)। °**कण्ण** पुं [°कर्ण] एक अन्तर्द्वीप (इक)। °**कण्णी** स्त्री [°कर्णी] कन्द-विशेष (उत्त ३६, १००)। °**केसर** पुं [°केसर] १ आस्तरण-विशेष, जटिल कम्बल (गाया १, १—पत्र १३)। २ मोदक-विशेष (अंत ६; पिंड ४८२)। °**गइ** पुं [°गति] अमितगति तथा अमितवाहन नामक इन्द्र का एक-एक लोकपाल (ठा ४, १—पत्र १६८)। °**गिरि** पुं [°गिरि] एक प्रसिद्ध जैन महर्षि (उव; उप १४२ टी; पडि)। °**गुहा** स्त्री [°गुहा] एक चोर-पल्ली (गाया १, १८—पत्र २३६)। °**चूड** पुं [°चूड] विद्याधर-वंश का एक राजा (पउम ५, ४६)। °**जस** पुं [°यशस्] भरत चक्रवर्ती का एक पौत्र (पउम ५, ३)। °**णाय** पुं [°नाद] सिंहगर्जन, सिंह की गर्जना के तुल्य आवाज (भग)। °**णिक्कीलिय** न [°निक्रीडित] १ सिंह की गति। २ तप-विशेष (अंत २८)। °**णिसाइ** देखो °**निसाइ** (राज)। °**दुवार** न [°द्वार] राज-द्वार, राज-प्रासाद का मुख्य दरवाजा (कुप्र ११६)। °**द्धय** पुं [°ध्वज] १ विद्याधरवंश का एक राजा (पउम ५, ४३)। २ हरिषेण चक्रवर्ती के पिता का नाम (पउम ८, १४४)। °**नाय** देखो °**णाय** (पण्ह १, ३—पत्र ४५)। °**निकीलिय**, °**निक्कीलिय** देखो °**णिक्कीलिय** (पव २७१; अंत २८; गाया १, ८—पत्र १२२)। °**निसाइ** वि [°निषादिन्] सिंह की तरह बैठनेवाला (सुज्ज १०, ८ टी)। °**णिसिज्जा** स्त्री [°निषद्या] भरत चक्रवर्ती द्वारा अष्टापद पर्वत पर बनवाया हुआ जैन मन्दिर (ती ११)। °**पुच्छ** न [°पुच्छ] पृष्ठ-वध्र, पीठ की चमड़ी (सूअनि ७७)। °**पुच्छण** न [°पुच्छन] पुरुष-चिह्न का तोड़ना, लिंग-त्रोटन (पण्ह २, ५—पत्र १५१)। °**पुच्छिय** वि [°पुच्छित] १ जिसका पुरुष-चिह्न तोड़ दिया गया हो वह। २ जिसको कृकाटिका से लेकर पुत-प्रदेश—नितम्ब तक की चमड़ी उखाड़ कर सिंह के पुच्छ के तुल्य की जाय वह (औप)। °**पुरा**, °**पुरी** स्त्री [°पुरी] नगरी-विशेष, विजय-क्षेत्र की एक राजधानी (ठा २, ३—पत्र ८०; इक)। °**मुह** पुं [°मुख] १ अन्तर्द्वीप-विशेष। २ उसमें रहनेवाली मनुष्य-जाति (ठा ४, २—पत्र २२६; इक)। °**रव** पुं [°रव] सिंह-गर्जना, सिंह-नाद, सिंह की तरह आवाज (पउम ४४, ३५)। °**रह** पुं [°रथ] गन्धार देश के पुंड्र-वर्धन नगर का एक राजा (महा)। °**वाह** पुं [°वाह] विद्याधर-वंश का एक राजा (पउम ५, ४३)। °**वाहण** पुं [°वाहन] राक्षस-वंश का एक राजा (पउम ५, २६३)। °**वाहणा** स्त्री [°वाहना] अम्बिका देवी (राज)। °**विक्कमगइ** पुं [°विक्रमगति] अमितगति तथा अमितवाहन नामक इन्द्र का एक-एक लोकपाल (ठा ४, १—पत्र १६८; इक)। °**वीअ** पुंन [°वीत] एक देव-विमान (सम ३३)। °**सेण** पुं [°सेन] चौदहवें जिनदेव का पिता, एक राजा (सम १५१)। २ भगवान् अजितनाथ का एक गणधर (सम १५२)। ३ राजा श्रेणिक का एक पुत्र (अनु २)। ४ राजा महासेन का एक पुत्र (विपा १, ६—पत्र ८६)। ५ ऐरवत क्षेत्र में उत्पन्न एक जिनदेव (राज)। °**सोआ** स्त्री [°स्रोता] एक नदी (ठा २, ३—पत्र ८०)। °**विलोइअ** न [°विलोकित] सिंहावलोकन, सिंह की तरह चलते हुए पीछे की तरफ

देखना (महा)। °सण न [°सन] आसन-विशेष, सिंहाकार आसन, सिंहाङ्कित आसन, राजासन (भग)। देखो सिंह।

सीह वि [सैंह] सिंह-संबन्धी। स्त्री. °हा (णाया १, १—पत्र ३१)।

°**सीह** पुं [°सिंह] श्रेष्ठ, उत्तम (सम १; पडि)।

सीहंडय पुं [दे] मत्स्य, मछली (दे ८, २८)।

सीहणही स्त्री [दे] १ वृक्ष-विशेष, करौंदी का गाछ। २ करौंदी का फल (दे ८, ३५)।

सीहपुर वि [सैंहपुर] सिंहपुर-संबन्धी (पउम ५५, ५३)।

सीहर देखो सीअर (हे १, १८४; कुमा)।

सीहरय पुं [दे] आसार, जोर की वृष्टि (दे ८, १२)।

सीहल देखो सिंहल (पण्ह १, १—पत्र १४; इक; पउम ६६, ५५)।

सीहलय पुं [दे] वस्त्र आदि को धूप देने का यन्त्र (दे ८, ३४)।

सीहलिआ स्त्री [दे] १ शिखा, चोटी। २ नवमालिका, नवारी का गाछ (दे ८, ५५)।

सीहलिपासग पुंन [दे] ऊन का बना हुआ कंकण, जो वेणी बाँधने के काम में आता है (सूअ १, ४, २, ११)।

सीही स्त्री [सिंही] स्त्री-सिंह, सिंह की मादा (नाट)।

सीहु पुंन [सीधु] १ मद्य, दारू। २ मद्य-विशेष (पण्ह २, ५—पत्र १५०; दे १, ४६; पाअ; गा ५४५; मा ४३)।

सु अ [सु] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ प्रशंसा, श्लाघा (विसे ३४४३; सूअनि ८८)। २ अतिशय, अत्यन्तता (श्रु १६)। ३ समीचीनता (सट्ठि १६)। ४ अतिशय योग्यता (पिंग)। ५ पूजा। ६ कष्ट, मुश्किली। ७ अनुमति। ८ समृद्धि (षड् १२२; १२३; १३५)। ९ अनायास (ठा ५, १—पत्र २६६)।

सुअ अक [स्वप्] सोना। सुअइ (हे ४, १४६; प्राकृ ६६; पि ४९७; उव), सुयामि (निसा १); 'खणंपि मा सुय वीसत्थो' (आत्महि ६)। कर्म. सुप्पइ (हे २, १७९)। वकृ. सुयंत, सुयमाण (सुर ५, २१६; सुपा ५०५; महा ३७, १२; पि ४९७)। हेकृ. सोउं (पि ४९७)। कृ. सोएव्वा (अप) (हे ४, ४३८)।

सुअ सक [श्रु] सुनना। वकृ. सुअंत (चात्वा १५६)।

सुअ पुं [सुत] पुत्र, लड़का (सुर १, १०; प्रासू ८६; कुमा; उव)।

सुअ पुं [शुक] १ पक्षि-विशेष, तोता (पण्ह १, १—पत्र ८; उत्त ३४, ७; सुपा ३१)। २ रावण का मन्त्री (से १२, ६३)। ३ रावणाधीन एक सामंत राजा (पउम ८, १३३)। ४ एक परिव्राजक (णाया १, ५—पत्र १०५)। ५ एक अनार्य देश (पउम २७, ७)।

सुअ वि [श्रुत] १ सुना हुआ, आकर्णित (हे १, २०९; भग; ठा १—पत्र ६)। २ न. ज्ञान-विशेष, शब्द-ज्ञान, शास्त्र-ज्ञान (विसे ७९; ८१; ८५; ८६; ९४; १०४; १०५; णंदि; अणु)। ३ शब्द, ध्वनि, आवाज। ४ क्षयोपशम, श्रुतज्ञान के आवरक कर्मों का नाश-विशेष। ५ आत्मा, जीव; 'तं तेण तओ तम्मि व सुणेइ सो वा सुअं तेणं' (विसे ८१)। ६ आगम, शास्त्र, सिद्धान्त (भग; णंदि; अणु; से ४, २७; कम्म ४, ११; १४; २१; बृह १; जी ८)। ७ अध्ययन, स्वाध्याय (सम ५१; से ४, २७)। ८ श्रवण (प्राकृ ७०)। °केवलि पुं [°केवलिन्] चौदह पूर्व-ग्रंथों का जानकार मुनि (राज)। °क्खंध, °खंध पुं [°स्कन्ध] १ अंग-ग्रन्थ का अध्ययन-समूहात्मक महान् अंश—खण्ड (सूअ २, ७, ४०; विपा १, १—पत्र ३)। २ बारह अंग-ग्रंथों का समूह। ३ बारहवाँ अंग-ग्रंथ, दृष्टिवाद (राज)। °णाण देखो °नाण (ठा २, १ टी—पत्र ५१)। °णाणि वि [°ज्ञानिन्] शास्त्र-ज्ञान-संपन्न, शास्त्रों का जानकार (भग)। °णिस्सिय न [°निश्रित] मति-ज्ञान का एक भेद (णंदि)। °तिहि स्त्री [°तिथि] शुक्ल पंचमी तिथि (रयण २)। °थेर पुं [°स्थविर] तृतीय और चतुर्थ अंग-ग्रंथ का जानकार मुनि (ठा ३, २)। °देवया स्त्री [°देवता] जैन शास्त्रों की अधिष्ठात्री देवी (पडि)। °देवी स्त्री [°देवी] वही (सुपा १; कुमा)। °धम्म पुं [°धर्म] १ जैन अंग-ग्रंथ (ठा २, १—पत्र ५२)। २ शास्त्र-ज्ञान (आवम)। ३ आगमों का अध्ययन, शास्त्राभ्यास (णंदि)। °धर वि [°धर] शास्त्रज्ञ (सुपा ६५२; पण्ह २, १—पत्र ९९)। °नाण पुंन [°ज्ञान] शास्त्रज्ञान (ठा २, १—पत्र ४९; भग)। °नाणि देखो °णाणि (वव १०)। °निस्सिय देखो °णिस्सिय (ठा २, १—पत्र ४९)। °पंचमी स्त्री [°पञ्चमी] कार्तिक मास की शुक्ल पंचमी तिथि (भवि)। °पुव्व वि [°पूर्व] पहले सुना हुआ (उप १४२ टी)। °सागर पुं [°सागर] ऐरवत क्षेत्र के एक भावी जिनदेव (सम १५४)।

सुअ वि [स्मृत] याद किया हुआ (भग)।

सुअंध पुं [सुगन्ध] १ अच्छी गन्ध, खुशबू (गा १४)। २ वि. सुगन्धी (से ८, ६२; सुर १, २८)।

सुअंधि वि [सुगन्धि] सुन्दर गन्धवाला (से १, ६२; दे ८, ८)। देखो सुगंधि।

सुअक्खाय वि [स्वाख्यात] अच्छी तरह कहा हुआ (सूअ २, १, १५; १६; २०; २९)।

सुअच्छ वि [स्वच्छ] निर्मल, विशुद्ध (भवि)।

सुअण पुं [सुजन] सज्जन, भला आदमी (गा २२४; पाअ; प्रासू ८; ४०; सुर २, ४६; गउड)।

सुअण न [स्वपन] सोना, शयन (सुक्त ३१)।

सुअणा स्त्री [दे] अतिमुक्तक, वृक्ष-विशेष (दे ८, ३८)।

सुअणु वि [सुतनु] १ सुन्दर शरीरवाला। २ स्त्री. नारी, महिला (गा २६६; ३८४; ५६६; पि ३४६; गउड)।

सुअण्ण देखो सुवण्ण (प्राकृ ३०)।

सुअम वि [सुगम] सुबोध (प्राकृ ११)।

सुअर वि [सुकर] जो अनायास से हो सके वह, सरल (अभि ६६)।

सुअर पुं [शूकर] सूअर, वराह (विपा १, ७—पत्र ७५; नाट—मृच्छ २२२)।

सुअरिअ न [सुचरित] सदाचार, सद्वर्तन (अभि २५३)।

सुअलंकिय वि [स्वलंकृत] अच्छी तरह विभूषित (णाया १, १—पत्र १६)।

सुआ स्त्री [सुता] पुत्री, लड़की (गा ३०२; ८६३ (कुमा)।

सुआ (शौ) अक [शी] शयन करना, सोना। सुआदि (प्राकृ ९४)।

सुआ स्त्री [स्रुच्] यज्ञ का उपकरण-विशेष, घी आदि डालने की कड़छी या कलछी (उत्त १२, ४३; ४४)।

सुआइक्ख वि [स्वाख्येय] सुख से—अनायास से कहने योग्य (ठा ५, १—पत्र २९६)।

सुआउत्त वि [स्वायुक्त] अच्छी तरह ख्याल रखनेवाला (उव)।

सुइ पुं [शुचि] १ पवित्रता, निर्मलता; 'जिणधम्मठिया मुणिणो य वच्छ दीसंति सुइरहिया' (सुपा १६६)। २ वि. श्वेत, सफेद (कुमा)। ३ पवित्र, निर्मल (औप; कप्प; श्रा १२; महा; कुमा)। ४ स्त्री. शक्र की एक अग्र-महिषी (इक)।

सुइ स्त्री [श्रुति] १ श्रवण, आकर्णन, सुनना (उत्त ३, १; वसु; विसे १२५)। २ कर्ण, कान (गा ६४१; सुर ११, १७४; सम्मत्त ८४; सुपा ४६; २४७)। ३ वेद-शास्त्र (पाअ; अच्चु ४; कुमा)। ४ शास्त्र, सिद्धान्त (संथा ७; प्रासू ४६)।

सुइ स्त्री [स्मृति] स्मरण (विपा १, २—पत्र ३४)।

सुइअ देखो सूइअ = सूचिक (दे १, ६६)।

सुइण देखो सुमिण (सुर ६, ८२; उप ७२८ टी; हे ४, ४३४)।

सुइदि स्त्री [सुकृति] १ पुण्य। २ मङ्गल, कल्याण। ३ सत्-कर्म (प्राप्र; पि २०४)।

सुइयारिणिया स्त्री [दे. सूतिकारिणी] सूति-कर्म करनेवाली स्त्री (सुपा ५७८)।

सुइर न [सुचिर] अत्यन्त दीर्घ काल, बहु काल (गा १३७; ४९०; सुपा १; १२७; महा)।

सुइल देखो सुक्क = शुक्ल (हे २, १०६)।

सुइव्व वि [श्वस्तन] आगामी कल से संबन्ध रखनेवाला, कल होनेवाला (पिंड २४१)।

सुई स्त्री [दे] बुद्धि, मति (दे ८, ३६)।

सुई स्त्री [शुकी] शुक पक्षी की मादा, मैना (सुपा ३९०)।

सुउज्जुयार वि [सुऋजुकार] अतिशय संयम में रहनेवाला, सुसंयमी (सूअ १, १३, ७)।

सुउज्जुयार वि [सुऋजुचार] अतिशय सरल आचरणवाला (सूअ १, १३, ७)।

सुउमार } देखो सुकुमाल (स्वप्न ६०;
सुउमाल } कुमा)।

सुउरिस पुं [सुपुरुष] सज्जन, भला आदमी (प्राप्र; हे १, ८; कुमा)।

सुए अ [श्वस्] आगामी कल (स ३६; वै ४१)।

सुंक न [शुल्क] १ मूल्य (णाया १, ८—पत्र १३१; विपा १, ९—पत्र ९३)। २ चुंगी, विक्रेय वस्तु पर लगता राज-कर (धम्म १२ टी; सुपा ४४७)। ३ वर-पक्ष के पास से कन्या पक्षवालों को लेने योग्य धन (विपा १, ९—पत्र ९४)। °ठाण न [°स्थान] चुंगी-घर (धम्म १२ टी)। °पालय वि [°पालक] चुंगी पर नियुक्त राज-पुरुष (सुपा ४४७)। देखो सुक्क = शुल्क।

सुंकअ } पुंन [दे] किशारु, धान्य आदि का
सुंकल } अग्र भाग (दे ८, ३८)।

सुंकलि पुंन [दे] तृण-विशेष (पण्ण १—पत्र ३३)।

सुंकविय वि [शुल्कित] जिसकी चुंगी दी गई हो वह (सुपा ४४७)।

सुंकाणिअ पुं [दे] नाव का डांड़ खेनेवाला व्यक्ति, पतवार चलानेवाला (सिरि ३८५)।

सुंकार पुं [सूत्कार] अव्यक्त शब्द-विशेष (सुर २, ८; गउड)।

सुंकिअ वि [शौल्किक] शुल्क लेनेवाला, चुंगी पर नियुक्त पुरुष (उप पृ १२०)।

सुंख देखो सुक्ख = शुष्क (संक्षि १६)।

सुंग देखो सुक्क = शुल्क (हे २, ११; कुमा)।

सुंगायण न [शौङ्गायन] गोत्र-विशेष (सुज्ज १०, १६)।

सुंघ सक [दे] सूँघना। वकृ. सुंघंत (सिरि ६२२)।

सुंघिअ वि [दे] घ्रात, सूँघा हुआ (दे ८, ३७)।

सुंचल न [दे] काला नमक, 'सुंठिसुंचलाईयं' (कुप्र ४१४)।

सुंठ पुंन [शुण्ठ] पर्व-वनस्पति-विशेष (पण्ण १—पत्र ३३)।

सुंठय पुंन [शुण्ठक] भाजन-विशेष, 'मीरासु य सुंठएसु य कंडूसु य पयंडएसु य पयंति' (सूअनि ७६)।

सुंठी स्त्री [शुण्ठी] सूँठ या सोंठ (पभा १५; कुप्र ४१४; पंचा ५, ३०)।

सुंड वि [शौण्ड] १ मत्त, मद्यप, दारू पीने-वाला (हे १. १६०; प्राकृ १०; संक्षि ६)। २ दक्ष, कुशल (कुमा)। देखो सोंड।

सुंडा देखो सोंडा (आचा २, १, ३, २; आवम)।

सुंडिअ पुं [शौण्डिक] कलवार, दारू बेचने-वाला (प्राकृ १०; संक्षि ६)।

सुंडिआ स्त्री [शौण्डिका] मदिरा-पान में आसक्ति (दस ५, २, ३८)।

सुंडिक देखो सुंडिअ (दे ६, ७५)।

सुंडिकिणी स्त्री [सौण्डिकी] कलवार की स्त्री (प्रयौ १०६)।

सुंडीर देखो सोंडीर (भवि)।

सुंद पुं [सुन्द] राजा रावण का एक भागि-नेय, खरदूषण का पुत्र (पउम ४३, १८)।

सुंदर वि [सुन्दर] १ मनोहर, चारु, शोभन (पण्ह १, ४; सुपा १२८; २६५; कप्पू; काप्र ४०८)। २ पुं. एक सेठ का नाम (सुपा ६४३)। ३ तेरहवें जिनदेव का पूर्वजन्मीय नाम (सम १५१)। ४ न. तप-विशेष, तेला, तीन दिनों का लगातार उपवास (संबोध ५८)। °बाहु पुं [°बाहु] सातवें जिनदेव का पूर्वजन्मीय नाम (सम १५१)।

सुंदरिअ देखो सुंदर (हे २, १०७)।

सुंदरिम पुंस्त्री. देखो सुंदेर (कुप्र २२१)।

सुंदरी स्त्री [सुंदरी] १ उत्तम स्त्री (प्रासू ५७; वि १८)। २ भगवान् ऋषभदेव की एक पुत्री (ठा ५, २—पत्र ३२६; सम ६०; पउम

३, १२८; वि १८)। ३ रावण की एक पत्नी (पउम ७४, ६)। ४ छन्द-विशेष (पिंग)। ५ मनोहरा, शोभना; 'सुंदरी णं देवाणुप्पिया गोसालस्स मंखलिपुत्तस्स धम्म-पएणत्ती' (उवा)।

सुंदेर, सुंदेरिम न [सौन्दर्य] सुन्दरता, शरीर का मनोहरपन (प्राप्र; हे १, ५७; कुमा; सुपा ४; ६२२; धम्म ११ टी)।

सुंब न [शुम्ब] १ तृण-विशेष (ठा ४, ४—पत्र २७१; सुख १०, १)। २ तृण-विशेष की बनी हुई डोरी—रस्सी (विसे १५४)।

सुंभ पुं [शुम्भ] १ एक गृहस्थ जो शुंभा नामक इन्द्राणी का पूर्व-जन्म में पिता था (णाया २, २—पत्र २५१)। २ दानव-विशेष (पि ३६०; ३६७ ए)। °वडेंसय न [°वतंसक] शुम्भा देवी का एक भवन (णाया २, २)। °सरी स्त्री [°श्री] शुम्भा देवी की पूर्व-जन्मीय माता (णाया २, २)।

सुंभा स्त्री [शुम्भा] बलि नामक इन्द्र की एक पटरानी (णाया २, २—पत्र २५१)।

सुंसुमा स्त्री [सुसुमा] धन सार्थवाह की कन्या का नाम (णाया १, १८—पत्र २३५)।

सुंसुमार पुं [सुंसुमार, शिशुमार] १ जल-चर प्राणी की एक जाति, सूँस, सोंस या सूसर (णाया १, ४, पि ११७)। २ द्रह-विशेष (भत्त ६६)। ३ पर्वत-विशेष। ४ न. एक अरण्य (स ८६)। देखो सुसु-मार।

सुक देखो सुअ = शुक (सुपा २३४)। °प्पहा स्त्री [°प्रभा] भगवान् सुविधिनाथ की दीक्षा-शिविका (विचार १२६)।

सुकइ पुं [सुकवि] अच्छा कवि (गा ५००; ६००; महा)।

सुकंठ वि [सुकण्ठ] १ सुन्दर कण्ठवाला। २ पुं. एक वणिक्-पुत्र (श्रा १६)। ३ एक चोर-सेनापति (महा)।

सुकच्छ पुं [सुकच्छ] विजय-क्षेत्र-विशेष (ठा २, ३—पत्र ८०; इक)। °कूड पुंन [°कूट] शिखर-विशेष (इक; राज)।

सुकड देखो सुकय (चउ ५८)।

सुकण्ह पुं [सुकृष्ण] एक राज-पुत्र (निर १, १; पि ५२)।

सुकण्हा स्त्री [सुकृष्णा] राजा श्रेणिक की एक पत्नी (अंत २५)।

सुकद देखो सुकय (संक्षि ६)।

सुकम्माण वि [सुकर्मन्] अच्छा कर्म करने-वाला (हे ३, ५६; षड्)।

सुकय न [सुकृत] १ पुण्य (पएह १, २—पत्र २८; पाअ)। २ उपकार (से १, ४६)। ३ वि. अच्छी तरह निर्मित (राज)। °जाणुअ, °ण्णु, °ण्णुअ वि [°ज्ञ] सुकृत का जानकार, उपकार की कदर करनेवाला (प्राकृ १८; उप ७६८ टी)।

सुकयत्थ वि [सुकृतार्थ] अत्यन्त कृतकृत्य (प्रासू १५५)।

सुकर देखो सुयर (आचा १, ६, १, ८)।

सुकाल पुं [सुकाल] राजा श्रेणिक का एक पुत्र (निर १, १)।

सुकाली स्त्री [सुकाली] राजा श्रेणिक की एक पत्नी (अंत २५)।

सुकिअ देखो सुकय (हे ४, ३२६; भवि)।

सुकिट्ठ वि [सुकृष्ट] अच्छी तरह जोता हुआ (पउम ३, ४५)।

सुकिट्ठि पुं [सुकृष्टि] एक देव-विमान (सम ६)।

सुकिदि वि [सुकृतिन्] १ पुण्य-शाली। २ सत्कर्म-कारी (रंभा)।

सुकिल, सुकिल्ल देखो सुक्क = शुक्ल (हे २, १०६; पि १३६)।

सुकुमार, सुकुमाल वि [सुकुमार] १ अति कोमल। २ सुन्दर कुमार अवस्थावाला (महा; हे १, १७१; पि १२३; १६०)।

सुकुमालिअ वि [दे] सुघटित, सुन्दर बना हुआ (दे ८, ४०)।

सुकुल पुंन [सुकुल] उत्तम कुल (भवि)।

सुकुसुम न [सुकुसुम] १ सुन्दर फूल। २ वि. सुन्दर फूलवाला (हे १, १७७; कुमा)।

सुकुसुमिय वि [सुकुसुमित] जिसको अच्छी तरह फूल आया हो वह (सुपा ५६८)।

सुकोसल पुं [सुकोशल] १ ऐरवत-वर्ष के एक भावी जिनदेव (सम १५४; पव ७)। २ एक जैन मुनि (पउम २२, ३६)।

सुकोसला स्त्री [सुकोशला] एक राज-कन्या (उप १०३१ टी)।

सुक्क अक [शुष्] सूखना। सुक्कइ (विसे ३०३२; पव ७०), सुक्कंति (दे ८, १८ टी)।

सुक्क वि [शुष्क] सूखा हुआ (हे २, ५; णाया १, ६—पत्र ११४; उवा; पिंड २७६; सुर ३, ६५; १०, २२३; धात्वा १५६)।

सुक्क न [शुल्क] १ चुंगी, बेचने की वस्तु पर लगता राज-कर (णाया १, १—पत्र ३७; कुमा; श्रा १४; सम्मत्त १५६)। २ स्त्री-धन विशेष। ३ वर पक्ष से कन्या पक्षवालों को लेने योग्य धन। ४ स्त्री को संभोग के लिए दिया जाता धन। ५ मूल्य (हे २, ११)। देखो सुंक।

सुक्क पुं [शुक्र] १ ग्रह-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७८; सम ३६; वज्जा १००)। २ पुंन. एक देव-विमान (सम ३३; देवेन्द्र १४३)। ३ न. वीर्य, शरीरस्थ धातु-विशेष (ठा ३, ३—पत्र १४४; धर्मसं ६८४; वज्जा १००)।

सुक्क पुं [शुक्ल] १ वर्ण-विशेष, सफेद रँग। २ सफेद वर्णमाला, श्वेत (हे २, १०६; कुमा; सम २६)। ३ न. शुभ ध्यान-विशेष (औप)। ४ वि. जिसका संसार अर्ध पुद्गल-परावर्त काल से कम रह गया हो वह (पंचा १, २)। °ज्झाण, °झाण न [°ध्यान] शुभ ध्यान-विशेष (सम ६; सुपा ३७; अंत)। °पक्ख पुं [°पक्ष] १ जिसमें चन्द्र की कला क्रमशः बढ़ती है वह आधा महीना (सम २६; कुमा)। २ हंस पक्षी। ३ काक, कौआ। ४ बगला, बक पक्षी (हे २, १०६)। °पक्खिय वि [°पाक्षिक] वह आत्मा जिसका संसार अर्ध पुद्गल-परावर्त से कम रह गया हो (ठा २, २—पत्र ५६)। °लेस देखो °लेस्स (भग)। °लेसा देखो °लेस्सा (सम ११; ठा १—पत्र २८)। °लेस्स वि [°लश्या] शुक्ल लेश्यावाला (पएण १७—पत्र ५११)। °लेस्सा स्त्री [°लेश्या] आत्मा का अध्यव-साय-विशेष, शुभतम आत्म-परिणाम (पएह २, ४—पत्र १३०)।

सुक्कड, सुक्कय देखो सुकय (सम १२५; पउम १५, १००)।

सुक्कव सक [शोषय्] सुखाना। वकृ. **सुक्कवेमाण** (णाया १, ६—पत्र १०४)।

सुक्काणय न [दे] जहाज के आगे का ऊँचा काष्ठ; गुजराती में 'सुकान' (सिरि ४२४)।

सुक्काभ न [शुक्राभ] १ एक लोकान्तिक देव-विमान (पव २६७)। २ वैताढ्य पर्वत की दक्षिण श्रेणि में स्थित एक विद्याधर-नगर (इक)।

सुक्किअ देखो **सुकय** (भवि)।

सुक्किय देखो **सुक्कीअ** (राज)।

सुक्किल, **सुक्किलय**, **सुक्किल्ल** देखो **सुक्क** = शुक्ल (भग; औप; हे २, १०६; पंच ५, ३३; अणु १०६); 'मुत्तं सुक्किलवत्थं' (गच्छ २, ४६; कप्प; सम ४१ धर्मसं ४५४)। स्त्री. 'एगो सुक्किलियाणं एगो सबलाणं वग्गो कओ' (आक ७)।

सुक्कीअ वि [सुक्रीत] अच्छी तरह खरीदा हुआ. 'सुक्कीअं वा सुविक्कीअं (दस ७, ४५)।

सुक्ख देखो **सुक्क** = शुष्। वकृ. **सुक्खंत** (गा ४१४; वज्जा १४६)।

सुक्ख देखो **सुक्क** = शुष्क (हे २, ५; गा २६३, मा ३१; उप ३२० टी)।

सुक्ख न [सौख्य] सुख (कप्प; कुमा; सार्ध ५१, प्रासू २८; १४५)।

सुक्खव देखो **सुक्कव**। कर्म. सुक्खवीअंति (पि ३५६; ५४३)।

सुक्खिअ वि [स्वाख्यात] अच्छी तरह कहा हुआ, प्रतिज्ञात; 'तओ सुद्दवइयराजपरो जं ते सुक्खियमासि बुद्धिलेण अद्धलक्खं, तन्निमित्त-मेसो पेसिओ चालीससाहस्सो हारो त्ति वोत्तु' समप्पिउं च हारकरंडियं गओ दासचेडो' (महा)।

सुखम (पै) देखो **सण्ह** = सूक्ष्म; 'सुखमवरिसो' (प्राकृ १२४)।

सुग देखो **सुअ** = शुक (उप ६७२; स ८६; उर ५, ७; कुप्र ४३८; कुमा)।

सुगइ स्त्री [सुगति] १ अच्छी गति (ठा ३, ३—पत्र १४६)। २ सन्मार्ग, अच्छा मार्ग (सुअनि ११५)। ३ वि. अच्छी गति को प्राप्त (आवम)।

सुगंध देखो **सुअंध** (कप्प; कुमा; औप; सुर २, ५८)।

सुगंधा स्त्री [सुगन्धा] पश्चिम विदेह का एक विजयक्षेत्र (इक)।

सुगंधि देखो **सुअंधि** (औप)। °**पुर** न [°पुर] वैताढ्य की उत्तर श्रेणि में स्थित एक विद्या-धर-नगर (इक)।

सुगण वि [सुगण] अच्छी तरह गिननेवाला (षड्)।

सुगम वि [सुगम] १ अल्प परिश्रम से जाया जा सके वैसा. सुगमग्ग (ओघभा ७५)। २ सुबोध (चेइय १६३)।

सुगय वि [सुगत] १ अच्छी गतिवाला (ठा ४, १—पत्र २०२; कुप्र १००)। २ सुस्थ। ३ धनी। ४ गुणी (ठा ४, १—पत्र २०२; राज; हे १, १७७)। ५ पुं. बुद्धदेव (पाअ; पव ६४)।

सुगय वि [सौगत] बुद्ध-भक्त, बौद्ध (सम्मत्त १२०)।

सुगर वि [सुकर] सुख-साध्य, अल्प परिश्रम से हो सके ऐसा (आचा १, ६, १, ८)।

सुगरिट्ठ वि [सुगरिष्ठ] अति बड़ा (श्रु १६)।

सुगिज्झ वि [सुग्राह्य] सुख से ग्रहण करने योग्य (पउम ३१, ५४)।

सुगिम्ह पुं [सुग्रीष्म] १ चैत्र मास की पूर्णिमा (ठा ५, २—पत्र २१३)। २ फाल्गुन का उत्सव (दे ८, ३६)।

सुगिर वि [सुगिर्] अच्छी वाणीवाला (षड्)।

सुगिहिय, **सुगिहीय** वि [सुगृहीत] विख्यात, विश्रुत (स ६६; १३)।

सुगी देखो **सुई** = शुकी (कुमा)।

सुगुत्त पुं [सुगुप्त] एक मंत्री का नाम (महा)।

सुगुरु पुं [सुगुरु] उत्तम गुरु (कुमा)।

सुग्ग न [दे] १ आत्म-कुशल (दे ८, ५६; सण)। २ वि. निर्विघ्न, विघ्न-रहित। ३ विसर्जित (दे ८, ५६)।

सुग्गइ देखो **सुगइ** (सुपा १६१; सं ८१)।

सुग्गय देखो **सुगय** = सुगत (ठा ४, १—पत्र २०२)।

सुग्गाह अक [प्र + सृ] फैलना। सुग्गाहइ (धात्वा १५६)।

सुग्गीव पुं [सुग्रीव] १ नागकुमार देवों के इन्द्र भूतानन्द के अश्व-सैन्य का अधिपति (ठा ५, १—पत्र ३०२)। २ भारतवर्ष में होनेवाला नववाँ प्रतिवासुदेव राजा (सम १५४)। ३ राक्षस-वंश का एक राजा, एक लङ्का-पति (पउम ५, २६०)। ४ नववें जिनदेव के पिता का नाम (सम १५१)। ५ राजा वालि का छोटा भाई (पउम ६, ६; से १, ४६; १४, ३६)। ६ एक राजा का नाम (सुर ३, २४)। ७ न. नगर-विशेष (उत्त १६, १)।

सुघ (अप) देखो **सुह** = सुख (हे ४, ३९६)।

सुघट्ठ वि [सुघृष्ट] अच्छी तरह घिसा हुआ (राय ८० टी)।

सुघरा स्त्री [सुगृहा] मादा-पक्षी की एक जाति, जो अपना घोंसला खूब सुन्दर बनाती है (आवू १)।

सुघोस पुं [सुघोष] १ एक कुलकर-पुरुष (सम १५०)। २ एक पुरोहित का नाम (उप ७२८ टी)। ३ पुंन. सनत्कुमार देवलोक का एक विमान (सम १२)। ४ लान्तक नामक देवलोक का एक विमान (सम १७)। ५ वि. सुन्दर आवाजवाला (जीव ३, १; भवि)। ६ एक नगर का नाम (विपा २, ८)।

सुघोसा स्त्री [सुघोषा] १ गीतरति नामक गन्धर्वेन्द्र की एक पटरानी (ठा ४, १—पत्र २०४)। २ गीतयशनामक गन्धर्व की एक पटरानी (ठा ४, १—पत्र २०४)। ३ सुधर्मेन्द्र की प्रसिद्ध घंटा (पण्ह २, ५—पत्र १४६; सुपा ४५)। ४ वाद्य-विशेष (राय ४६)।

सुचंद पुं [सुचन्द्र] ऐरवत वर्ष में उत्पन्न दूसरे जिन-देव (सम १५३)।

सुचरिअ न [सुचरित] १ सदाचरण, सदा-चार (कप्प; गउड)। २ वि. सदाचरण संपन्न (गउड)। ३ अच्छी तरह आचरित (पउम ७५, १८; णाया १, १६—पत्र २०५)।

सुचिण्ण, **सुचिन्न** वि [सुचीर्ण] १ सम्यग् आच-रित; 'तवसंजमो सुचिण्णोत्ति' (पउम ६, ६२; ६४, ३२; ठा ४, २—पत्र २१०)। २ न. पुण्य (औप; उवा)।

सुचिर न [सुचिर] अत्यन्त चिर काल, सुदीर्घ काल (सुपा २७; महा; प्रासू ३२)।

सुचोइअ वि [सुचोदित] प्रेरित (उत्त १, ४४)।

सुच्च वि [शोच्य] अफसोस करने योग्य, 'सुच्चा ते जियलोए जिणवयणं जे नरा न याणंति' धर्मवि १७)।

सुच्चा देखो सुण = श्रु।

सुजंपिअ न [सुजल्पित] आशीर्वाद (णाया १, १—पत्र ३६)।

सुजड पुं [सुभट] एक विद्याधर-नरेश (पउम १०, २०)।

सुजस पुं [सुयशस्] १ एक जिनदेव का नाम (उप १०-१ टी)। २ वि. यशस्वी (श्रा १६)।

सुजसा स्त्री [सुयशस्] १ चौदहवें जिन-देव की माता (सम १५१)। २ एक राज-पत्नी (उप ६८६ टी)।

सुजह वि [सुहान] सुख से जिसका त्याग हो सके वह (उत्त ८, ६)।

सुजाइ वि [सुजाति] प्रशस्त जातिवाला, जात्य (महा)।

सुजाण वि [सुज्ञ] सयाना, अच्छा जानकार (सिरि ९६१; प्रासू १३; सुपा ५८८)।

सुजाय वि [सुजात] १ सुन्दर जाति में उत्पन्न, कुलीन, खानदानी (उप ७२८ टी)। २ अच्छी तरह उत्पन्न, सुन्दर रूप से उत्पन्न (ठा ४, २—पत्र २०८; औप; जीव ३, ४; उवा)। ३ न. सुन्दर जन्म (श्राव)। ४ पुं. एक राज कुमार (विपा २, ३)। ५ पुंन. एक एक देव-विमान (देवेन्द्र २७२)।

सुजाया स्त्री [सुजाता] १ कालवाल आदि लोकपालों की पटरानियों के नाम (ठा ४, १—पत्र २०४; इक)। २ राजा श्रेणिक की एक पत्नी (अंत २५)।

सुजिट्ठा स्त्री [सुज्येष्ठा] एक महासती राज-कुमारी, जो चेटकराज की पुत्री थी (पडि)।

सुजुत्ति स्त्री [सुयुक्ति] सुन्दर युक्ति (सुपा १११)।

सुजेट्ठा देखो सुजिट्ठा (राज)।

सुजोसिअ वि [सुजुष्ट] अच्छी तरह सेवित (सूअ १, २, २, २६)।

सुजोसिअ वि [सुजोषित] सुष्ठु क्षपित, सम्यग् विनाशित (सूअ १, २, २, २६)।

सुज्ज पुं [सूर्य] १ सूरज, रवि। २ आक का पेड़। ३ दैत्य-विशेष (हे २, ६४; प्राप्र)। ४ पुंन. एक देव-विमान (सम १५)। °**कंत** पुंन [°कान्त] एक देव-विमान (सम १५)। °**ज्झय** पुंन [°ध्वज] देव-विमान-विशेष (सम १५)। °**प्पभ** पुंन [°प्रभ] एक देव-विमान (सम १५)। °**लेस** पुंन [°लेश्य] एक देव-विमान (सम १५)। °**वण्ण** पुंन [°वर्ण] देव-विमान विशेष (सम १५)। °**सिंग** पुंन [°शृङ्ग] एक देव-विमान (सम १५)। °**सिट्ठ** पुंन [°सृष्ट] एक देव-विमान का नाम (सम १५)। °**सिरी** स्त्री [°श्री] एक ब्राह्मण-कन्या (महानि २)। °**सिव** पुं [°शिव] एक ब्राह्मण का नाम (महानि २)। °**हास** पुं [°हास] तलवार की एक उत्तम जाति (पउम ४३, १६)। °**भ** न [°भ] वैताढ्य की उत्तम-श्रेणि में स्थित एक विद्याधर-नगर (इक)। °**वत्त** पुंन [°वर्त] एक देव-विमान (सम १५)। देखो °**सूर, सूरिअ** = सूर, सूर्य।

सुज्जाण वि [सुज्ञान] सुजान, सयाना, सुज्ञ (षड्; पिंग)।

सुज्जुत्तरवडिंसग पुंन [सूर्योत्तरावतंसक] एक देव-विमान (सम १५)।

सुज्झ अक [शुध्] शुद्ध होना। सुज्झइ (महा)। संकृ. सुज्झिऊण (सम्यक्त्वो ८)।

सुज्झंत वि [दृश्यमान] सूझता, दीख पड़ता, मालूम होता; 'अन्नंपि जं असुज्झंतं। भुंजंत-एण रत्ति' (पउम १०३, २५)।

सुज्झणया स्त्री [शोधना] शुद्धि (उप ८०४)।

सुज्झय न [दे] १ रौप्य, चाँदी। २ पुं. रजक, धोबी (दे ८, ५६)।

सुज्झरय पुं [दे] रजक, धोबी (दे ८, ३६)।

सुज्झवण न [शोधन] शुद्धि, प्रक्षालन (उप ६८५)।

सुज्झाइ वि [सुध्यायिन्] शुभ ध्यान करने-वाला (संबोध ५२)।

सुज्झाइय वि [सुध्यात] अच्छी तरह चिन्तित (राज)।

सुट्ठिअ वि [सुस्थित] १ सम्यक् स्थित (कप्प)। २ पुं. लवण समुद्र का अधिष्ठायक देव (णाया १, १६—पत्र २१७)। ३ आर्यसुहस्ति आचार्य का शिष्य एक जैन महर्षि (कप्प)।

सुट्ठु, **सुट्ठुं** अ [सुष्ठु] १ अच्छा, शोभन, सुन्दर (आचा; भग; स्वप्न २३; सुर २, १७८)। २ अतिशय, अत्यन्त (सुर ४, २४; प्रासू १३७)।

सुठिअ देखो सुढिअ (पाअ)।

सुढ सक [स्मृ] याद करना। सुढइ (प्राकृ ६३)।

सुढिअ वि [दे] १ श्रान्त, थका हुआ (दे ८, ३६; गउड; सुपा १७६; ५३०; सुर १०, २१८)। २ संकुचित अंगवाला (महा)।

सुण सक [श्रु] सुनना। सुणइ, सुणेइ (हे ४, ५८; २४१; महा)। सुणउ, सुणेउ, सुणाउ (हे ३, १५८)। भवि. सुणिस्सइ, सुणिस्सामो; सोच्छिइ, सोच्छिहिइ; सोच्छं, सोच्छिस्सं, सोच्छिमि, सोच्छिहिमि, सोच्छिस्सामि, सोच्छिहामि (पि ५३१; औप; हे ३, १७२)। कर्म. सुणिज्जइ, सुव्वइ, सुव्वए, सुम्मइ, सुणीअइ (हे ४, २४२; कुमा; महा; पि ५३६)। वकृ. सुणंत, सुणिंत, सुणमाण, सुणेमाण (हेका १०५; सुर ११, ३७; पि ५६१; विपा १, १; सुर ३, ७६)। कवकृ. सुम्मंत, सुव्वंत, सुव्वमाण (सुर ११, १६६; ३, ११; से २, १०; ६, ४६)। संकृ. सुणिअ, सुणिऊण, सुणित्ता, सुणेत्ता, सोऊण, सोउआण, सोउआणं, सोउं, सोच्चा, सोच्चं, सुच्चा (अभि ११६; षड्; हे ४, २४१; पि ५८२; हे ४, २३७; २, १४६; कुमा; हे २, १५; पि ११४; ३४९; ५८७)। हेकृ. सोउं (कुमा)। कृ. सुणेयव्व, सोअव्व (भग; पण्ह १, १—पत्र ५; से २, १०; गउड; अजि ३८)।

सुणइ देखो सुणय।

सुणंद पुं [सुनन्द] १ एक राजर्षि (धम्म)। २ भगवान् वासुपूज्य को प्रथम भिक्षा-दाता गृहस्थ (सम १५१)। ३ पुंन. एक देव-विमान (सम २६)। देखो सुनंद।

सुणंदा स्त्री [सुनन्दा] १ भगवान् पार्श्वनाथ की मुख्य श्राविका (कप्प)। २ तृतीय चक्रवर्ती

की पटरानी—तीसरा स्त्री-रत्न (सम १५२; महा)। ३ भूतानन्द आदि इन्द्रों के लोकपालों की अग्रमहिषियों के नाम (ठा ४, १—पत्र २०४; इक)।

सुणक्खत्त पुं [सुनक्षत्र] १ एक जैन मुनि (अनु २)। २ भगवान् महावीर का शिष्य एक मुनि (भग १५—पत्र ६७८)।

सुणक्खत्ता स्त्री [सुनक्षत्रा] पक्ष की दूसरी रात (सुज्ज १, १४)।

सुणग देखो सुणय (आचा; पि २०६)।

सुणण न [श्रवण] सुनना (स ५३)।

सुणय } पुंस्त्री [शुनक] १ कुक्कुर, कुत्ता (हे
सुणह } १, ५२; गा ५५०; ६८८, ६९०; णाया १, १—पत्र ६५; गा १३८; १७५; सुर २, १०३; ६, २०४; श्रा १६; कुप्र १५३; रंभा)। स्त्री. सुणई, सुणिआ (कुमा; गा ६८६)। २ पुं. छन्द-विशेष (पिंग)।

सुणहिल्लया स्त्री [शुनकी] कुत्ती, मादा-कुक्कुर (वज्जा ८६)।

सुणावण न [श्रावण] सुनाना (विसे २४८५)।

सुणाविअ वि [श्रावित] सुनाया हुआ (सुपा ६०२)।

सुणासीर पुं [सुनासीर] इन्द्र, देव-राज (पाअ; हम्मीर १२)।

सुणाह देखो सुनाभ (राज)।

सुणिअ देखो सुण।

सुणिअ वि [श्रुत] सुना हुआ (कुमा; रयण ४४)।

सुणिअ पुं [शौनिक] कसाई (सिरि १०७७)।

सुणिउण देखो सुनिउण (राज)।

सुणिप्पकंप देखो सुनिप्पकंप (राज)।

सुणिम्मिय वि [सुनिर्मित] चारु रूप से बना हुआ (कप्प)।

सुणिव्वुय वि [सुनिर्वृत] अत्यन्त स्वस्थ (णाया १, १—पत्र ३२)।

सुणिसंत वि [सुनिशान्त] अच्छी तरह सुना हुआ, 'इहमेगेसिं आयारगोयरे णो सुणिसंते भवति' (आचा १, ८, १, २; २, २, २, १०; ३; १५)।

सुणुसुणाय सक [सुनसुनाय्] 'सुन्' 'सुन्' आवाज करना। वकृ. सुणुसुणायंत (महा)।

सुण्ण न [शून्य] १ निर्जन स्थान (गउड ५२४)। २ वि. रिक्त, रीता, खाली (स्वप्न ३१ गउड)। ३ निष्फल, व्यर्थ, निष्प्रयोजन (गउड ८४२; ६७२)। ४ न. तप-विशेष, एकाशन-व्रत (संबोध ५७)। देखो सुन्न।

सुण्णआर देखो सुण्णार (दे ३, ५४)।

सुण्णइअ } वि [शून्यित] शून्य किया
सुण्णविअ } हुआ (से १०, ४०; गउड; गा २६, १६६; ६०६)।

सुण्णार पुं [सुवर्णकार] सुनार, सोनी (दे ५, ३६)।

सुण्ह देखो सण्ह = सूक्ष्म (हे १, ११८; कुमा)।

सुण्हसिअ वि [दे] स्वपन-शील, सोने की आदतवाला (दे ८, ३९; षड)।

सुण्हा स्त्री [सास्ना] गौ का गल-कम्बल (हे १, ७५; कुमा)। °ल पुं [°ल] वृषभ, बैल (कुमा)। °लंछिय पुं [°लाञ्छित] १ भगवान् ऋषभदेव। २ महादेव (कुमा)।

सुण्हा स्त्री [स्नुषा] पुत्र-वधू (णाया १, ७—पत्र ११७; सुर ४, ६८)।

सुतणु स्त्री [सुतनु] नारी, स्त्री (सुर २, ८६)।

सुतरं अ [सुतराम्] निश्चित अर्थ के अतिशय का सूचक अव्यय (विसे ८६१)।

सुतवस्सिय न [सुतपस्य] सुन्दर तप, तपश्चर्या का सुन्दर अनुष्ठान (राज)।

सुतवस्सि वि [सुतपस्विन्] अच्छा तपस्वी (सम ५१)।

सुतार वि [सुतार] १ अत्यन्त निर्मल। २ अति-शय ऊँचा। ३ अच्छा तैरनेवाला। अत्युच्च आवाजवाला (हे १, १७७)।

सुतारया } स्त्री [सुतारा] १ भगवान् सुविधि-
सुतारा } नाथजी की शासन-देवी (संति ६)। २ सुग्रीव की पत्नी (पउम १०, ६)। ३ आभूषण-विशेष (कुमा)।

सुतितिक्ख वि [सुतितिक्ष] सुख से सहन करने योग्य (ठा ५, १—पत्र २९६)।

सुतोसअ वि [सुतोष्य] सुख से तुष्ट करने योग्य (दस ५, २, ३४)।

सुत्त सक [सूत्रय्] बनाना। सुत्तइ (सुपा २३५)।

सुत्त देखो सुअ = श्रुत, 'पच्चक्खमोहिमण-केवलं च परोक्खं मइसुत्तं' (जीवस १४१)।

सुत्त देखो सोत्त = स्रोतस् (भवि)।

सुत्त देखो सोत्त = श्रोत्र (रंभा; भवि)।

सुत्त वि [सुप्त] सोया, शयित (ठा ५, २—पत्र ३१६, स्वप्न १०४; प्रासू ६८; श्रा २५)।

सुत्त वि [सूक्त] १ सुचारु रूप से कहा हुआ। २ न. सुभाषित, सुन्दर वचन 'मुकइव्व सुत्त-उत्तीए' (सुपा ३३)।

सुत्त न [सूत्र] सूता, धागा, वस्त्र तन्तु (विपा १, ८—पत्र ८५; सुपा २८१)। २ नाटक का प्रस्ताव (मोह ४८; सुपा १)। ३ शास्त्र-विशेष (भग; ठा ४, ४—पत्र २८३; जी ३६)। °आर पुं [°कार] ग्रथकार (कप्पू)। °कंठ पुं [°कण्ठ] ब्राह्मण, विप्र (पउम ४, ८५)। °कड न [°कृत] द्वितीय जैन आगम-ग्रंथ (सूयनि २)। °ग न [°क] यज्ञोपवीत (ओप)। °धार पुं [°धार] देखो °हार (सुपा १; मोह ४८)। °फासियणिज्जुत्ति स्त्री [°स्पर्शिकनिर्युक्ति] सूत्र की व्याख्या (अणु)। °रुइ स्त्री [°रुचि] शास्त्र-श्रद्धा (ओप)। °हार पुं [°धार] १ प्रधान नट, नाटक का मुख्य पात्र (प्रासू १६३)। २ सुतार, बढई (कम्म १, ४८)।

सुत्ति स्त्री [शुक्ति] सीप, घोंघा (हे २, १३८; कुमा)। °मई स्त्री [°मती] चेदि देश की प्राचीन राजधानी (णाया १, १६—पत्र २०८)।

सुत्ति स्त्री [सूक्ति] सुन्दर वचन, सुभाषित। °वत्तिया स्त्री [°प्रत्यया] एक जैन मुनि-शाखा (कप्प—पृ ७६ टि राज)।

सुत्तिअ देखो सोत्तिअ = मौत्तिक (वव ६)।

सुत्तिय वि [सूत्रित] सूत्र-निबद्ध (राज)।

सुत्थ वि [सुस्थ] १ स्वस्थ, तन्दुरुस्त। २ सुखी (संक्षि १२; गा ४७८; महा; चेइय २६६; उत १०३१ टी)।

सुत्थ न [सौस्थ्य] १ तंदुरुस्ती, स्वस्थता। २ सुखिपन (संक्षि १२; कुप्र १७६; सुपा १८; १२८; स १३५; उप ६०२; धर्मवि २२)।

सुत्थिय देखो सुट्ठिअ (सुपा ६३२)।

सुत्थिर वि [सुस्थिर] अतिशय स्थिर, अति-निश्चल (प्राकृ १६; सुपा ३४८; कुमा)।

सुथेव वि [सुस्तोक] अत्यल्प (पउम ८, १५२)।

सुदंती स्त्री [सुदती] सुन्दर दांतवाली (उप ७६८ टी)।

सुदंसण पुं [सुदर्शन] १ भगवान् अरनाथ के पिता का नाम (सम १५१)। २ तीसरे वासुदेव तथा बलदेव के धर्म-गुरु (सम १५३)। ३ भारतवर्ष में होनेवाला पाचवाँ बलदेव (सम १५४)। ४ धरणेन्द्र के हस्ति-सैन्य का अधिपति (ठा ५, १—पत्र ३०२)। ५ एक अन्तकृद् मुनि (अंत १८)। ६ मेरु पर्वत (सूअ १, ६, ६; सुज्ज ५)। ७ एक विख्यात श्रेष्ठी (पडि; वि १६)। ८ देव-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७६)। ९ विष्णु का चक्र (सुपा ३१०)। १० भगवान् अरनाथ का पूर्वभवीय नाम। ११ भगवान् पार्श्वनाथ का पूर्वजन्मीय नाम (सम १५१)। १२ पुंन. एक देव-विमान (देवेन्द्र १३६)। १३ वि. जिसका दर्शन सुन्दर हो वह (वि १६)। १४ न. पश्चिम रुचक पर्वत का एक शिखर (ठा ८—पत्र ४३६)।

सुदंसणा स्त्री [सुदर्शना] १ जम्बू नामक एक वृक्ष, जिससे यह द्वीप जंबूद्वीप कहलाता है (सम १३; पण्ह २, ४—पत्र १३०)। २ भगवान् महावीर की ज्येष्ठ बहिन का नाम (आचा २, १५, ३; कप्प)। ३ धरण आदि इन्द्रों के कालवाल आदि लोकपालों की एक-एक अग्रमहिषी (ठा ४, १—पत्र २०४)। ४ काल तथा महाकाल-नामक पिशाचेन्द्रों की अग्रमहिषियों के नाम (ठा ४, १—पत्र २०४)। ५ भगवान् ऋषभदेव की दीक्षा-शिबिका (विचार १२६)। ६ चतुर्थ बलदेव की माता (सम १५२)।

सुदक्खिन्न वि [सुदाक्षिण्य] दाक्षिण्यवाला (धम्म १५; सं ३१)।

सुदच्छ वि [सुदक्ष] अति चतुर (सुपा ५१७)।

सुदरिसण देखो सुदंसण (हे २, १०५; पउम २०, १७६; १६०; पव १६४; इक)।

सुदाम पुं [सुदाम] अतीत उत्सर्पिणी-काल में उत्पन्न भारतवर्ष का दूसरा कुलकर पुरुष (सम १५०)।

सुदारु न [सुदारु] सुन्दर काष्ठ (गउड)।

सुदारुण पुं [दे] चंडाल (दे ८, ३६)।

सुदिट्ठ वि [सुदृष्ट] सम्यग् विलोकित (गा २२५)।

सुदिप्प अक [सु + दीप्] अतिशय चमकना। वकृ. सुदिप्पंत (सुपा ३५१)।

सुदीह, **सुदीहर** वि [सुदीर्घ] अत्यन्त लम्बा (सुर २, २५; ३, १६८)। °कालीय वि [°कालिक] सुदीर्घ-काल-सम्बन्धी (सुर १५, २२०)। °दंसि वि [°दर्शिन्] परिणाम का विचार कर कार्य करनेवाला (सं ३२)।

सुदुक्कर वि [सुदुष्कर] जो अत्यन्त दुःख से किया जा सके वह, अति मुश्किल (उप पृ १६०)।

सुदुक्खत्त वि [सुदुःखार्त] अति दुःख से पीड़ित (सुर ७, ११)।

सुदुक्खिअ वि [सुदुःखित] अत्यन्त दुःखित (सुपा ३०४)।

सुदुग्ग वि [सुदुर्ग] जहाँ दुःख से गमन किया जा सके वह (पउम ३०, ४६)।

सुदुच्चअ वि [सुदुस्त्यज] मुश्किल से जिसका त्याग हो सके वह, 'सहावो वि सुदुच्चओ' (श्रा १२)।

सुदुत्तार वि [सुदुस्तार] कठिनता से जिसको पार किया जा सके वह (औप; पि ३०७)।

सुदुद्धर वि [सुदुर्धर] अति दुःख से जो धारण किया जा सके वह (श्रा ४६; प्रासू ४८)।

सुदुन्निवार वि [सुदुर्निवार] अति कठिनाई से जिसका निवारण किया जा सके वह (सुपा ६४)।

सुदुप्पिच्छ वि [सुदुर्दर्श] अतिशय मुश्किल से देखने योग्य (सुर १२, १६६)।

सुदुब्भेअ वि [सुदुर्भेद] अति दुःख से जिसका भेदन हो सके वह (उप २५३ टी)।

सुदुम्माणिआ स्त्री [दे] रूपवती स्त्री (दे ८, ४०)।

सुदुल्लह वि [सुदुर्लभ] अत्यन्त दुर्लभ (राज)।

सुदूसह वि [सुदुःसह] अत्यन्त दुःख से सहन करने योग्य (सुर ६, १५८)।

सुदेव पुं [सुदेव] उत्तम देव (सुपा २५६)।

सुद्द पुं [शूद्र] मनुष्य की अधम जाति, चतुर्थ वर्ण (विपा १, ५—पत्र ६१; पउम ३, ११७; श्रु १३)।

सुद्दय पुं [शूद्रक] एक राजा का नाम (मोह १०५; १०६)।

सुद्दिणी (अप) स्त्री [शूद्रा] शूद्रजातीय स्त्री (पिंग)।

सुद्ध पुं [दे] गोपाल, ग्वाला (दे ८, ३३)।

सुद्ध वि [शुद्ध] १ शुक्ल, उज्वल; 'वइसाह-सुद्धपंचमिरत्तीए सोहणं लग्गं' (सुर ४, १०१; कुप्र ७०; पंचा ६, ३४)। २ पवित्र। ३ निर्दोष। ४ केवल, किसी से अमिश्रित। ५ न. सेंधा नून—नमक। ६ मरिच, मिर्चा (हे १, २६०)। ७ लगातार १८ दिनों के उपवास (संबोध ५८)। ८ पुं. छन्द-विशेष (पिंग)। °गंधारा स्त्री [°गन्धारा] गन्धार-ग्राम की एक मूर्च्छना (ठा ७—पत्र ३६३)। °दंत पुं [°दन्त] १ भारतवर्ष में होनेवाले चौथे जिनदेव (सम १५४)। २ एक अनुत्तर-गामी जैन मुनि (अनु २)। ३ एक अन्तर्द्वीप। ४ उसमें रहनेवाली एक मनुष्य-जाति (इक)। °पक्ख पुं [°पक्ष] शुक्ल पक्ष (पउम ६, २७)। °प्प पुं [°त्मन्] पवित्र आत्मा (कप्प)। °प्पवेस वि [°प्रवेश्य] पवित्र और प्रवेश के लिए उचित (भग)। °प्पवेस वि [°त्मवेश्य] पवित्र तथा वेशोचित (भग)। °वाय पुं [°वात] वायु-विशेष, मन्द पवन (जी ७)। °वियड न [°विकट] उष्ण जल (कप्प)। °सज्जा स्त्री [°षड्जा] षड्ज ग्राम की एक मूर्च्छना (ठा ७—पत्र ३६३)।

सुद्धंत पुं [शुद्धान्त] अन्तःपुर (उप ७६८ टी; कुप्र ५४; कुम्मा २६; कस)।

सुद्धवाल वि [दे] शुद्ध-पूत, शुद्ध और पवित्र (दे ८, ३८)।

सुद्धि स्त्री [शुद्धि] १ शुद्धता, निर्दोषता, निर्मलता (सम्मत्त २३०; कुमा)। २ पता,

खबर, खोई हुई चीज की प्राप्तिः 'वद्धाविऊह पियाइ सूद्धीए' (सुपा ५१७; कुप्र २०२; सम्मत्त १७२; कुम्मा ६)।

सुद्धेसणिअ वि [शुद्धैषणिक] निर्दोष आहार की खोज करनेवाला (पण्ह २, १—पत्र १००)।

सुद्धोअण पुं [शुद्धोदन] बुद्धदेव के पिता का नाम। °तणय पुं [°तनय] बुद्ध देव (सम्म १४५)। देखो सुद्धोदण।

सुद्धोअणि पुं [शौद्धोदनि] बुद्धदेव (पाअ)।

सुद्धोदण देखो सुद्धोअण। °पुत्त पुं [°पुत्र] बुद्ध देव (कुप्र ४४०)।

सुधम्म पुं [सुधर्मन्] १ भगवान् महावीर का पट्टधर शिष्य (कुमा)। २ एक जैन मुनि (विपा २, ४)। ३ तीसरे बलदेव के गुरु—एक जैन मुनि (पउम २०, २०५)। ४ एक जैन मुनि, जो सातवें बलदेव के पूर्व-जन्म में गुरु थे (पउम २०, १९३)। ५ एक जैनाचार्य; 'तह अज्जमंगुसूरि अज्जसुधम्मं च धम्मरयं' (सार्ध २२)। देखो सुहम्म।

सुधा देखो छुहा = सुधा (कुमा)।

सुनंद पुं [सुनन्द] १ भारतवर्ष के भावी दसवें जिनदेव के पूर्वभव का नाम (सम १५४)। २ एक जैन मुनि (पउम २०, २०)। देखो सुणंद।

सुनक्खत्त देखो सुणक्खत्त (भग १५—पत्र ६७८; ६८७)।

सुनट्टिरी स्त्री [सुनर्तिनी] अच्छी तरह नृत्य करनेवाली स्त्री (सुपा २८९)।

सुनयण पुं [सुनयन] १ राजा रावण के अधीनस्थ एक विद्याधर सामन्त राजा (पउम ८, १३३)। २ वि. सुन्दर लोचनवाला (आवम)।

सुनाभ पुं [सुनाभ] अमरकंका नगरी के राजा पद्मनाभ का पुत्र (णाया १, १६—पत्र २१४)।

सुनिउण वि [सुनिपुण] १ अत्यन्त सूक्ष्म (सम ११४)। २ अति चतुर (सुर ४, १३६)।

सुनिगुण वि [सुनिगुण] अतिशय निश्चित गुणवाला (सम ११४)।

सुनिग्गल वि [सुनिर्गल] चिर-स्थायी (विसे ७६६)।

सुनिच्छय वि [सुनिश्चय] दृढ़ निर्णयवाला (सुपा ४६८)।

सुनिप्पकंप वि [सुनिष्प्रकम्प] अत्यन्त निश्चल (सुपा ६५३)।

सुनिम्मल वि [सुनिर्मल] अतिशय निर्मल (पउम २८, ६२)।

सुनिरूविय वि [सुनिरूपित] अच्छी तरह तलासा हुआ (सुपा ५२३)।

सुनिविन्न वि [सुनिर्विण्ण] अतिशय खिन्न (सुर १४, ५८; उव)।

सुनिव्वुड देखो सुणिव्वुय (द्र ४७)।

सुनिसाय वि [सुनिशात] अत्यन्त तीक्ष्ण (सुपा ५७०)।

सुनिसिअ वि [सुनिशित] ऊपर देखो (दस १०, २)।

सुनिस्संक वि [सुनिःशङ्क] बिलकुल शङ्का-रहित (सुपा १८८)।

सुनीविआ स्त्री [सुनीविका] सुन्दर नीवी — वस्त्र-ग्रन्थिवाली स्त्री (कुमा)।

सुनेत्ता स्त्री [सुनेत्रा] पाँचवें वासुदेव की पटरानी (पउम २०, १८६)।

सुन्न न [शून्य] १ बिन्दी (सुर १६, १४६)। २—देखो सुण्ण (प्रासू १०; महा; भग; आचा; सं ३६; रंभा)। °वत्तिया स्त्री [°प्रत्ययिका, °पत्रिका] एक जैन मुनि-शाखा (कप्प)।

सुन्नयार देखो सुण्णआर (सुपा ५६४; धर्मवि १२)।

सुन्नार देखो सुण्णार (सुपा ५६२)।

सुन्हा देखो सुण्हा (वा ३७; भवि)।

सुप सक [मृज्] मार्जन करना, शोधन करना। सुपइ (प्राप्र)।

सुपइट्ठ वि [सुप्रतिष्ठ] १ न्याय-मार्ग में स्थित। २ प्रतिज्ञा-शूर (कुमा १, २८)। ३ अतिशय प्रसिद्ध। ४ जिसकी स्थापना विधि-पूर्वक की गई हो वह (कुमा २, ४०)। ५ पुं. भगवान् महावीर के पास दीक्षा लेकर मुक्ति पानेवाला एक गृहस्थ (अंत १८)। ६ अंग-विद्या का जानकार पाँचवाँ रुद्र पुरुष (विचार ४७३)। ७ भगवान् सुपार्श्वनाथ के पिता का नाम (सुपा ३९)। ८ भाद्रपद मास का लोकोत्तर नाम (सुज्ज १०, १९)। ९ पात्र-विशेष (राय)। १० न. एक नगर का नाम (विपा १, ९—पत्र ८८)। °भ पुंन [°भ] एक देव-विमान (सम १४; पव २६७)।

सुपइट्ठिय वि [सुप्रतिष्ठित] अच्छी तरह प्रतिष्ठा-प्राप्त (भग; राय)।

सुपक्क वि [सुपक्व] अच्छी तरह पका हुआ (प्रासू १०२; नाट—मृच्छ ५७)।

सुपडाय वि [सुपताक] सुन्दर ध्वजावाला (कुमा)।

सुपडिबुद्ध वि [सुप्रतिबुद्ध] १ सुन्दर रीति से प्रतिबोध को प्राप्त (आचा १, ५, २, ३)। २ पुं. एक जैन महर्षि (कप्प)।

सुपडिवत्त वि [सुपरिवृत्त] जो अच्छी तरह हुआ हो वह (पउम ६४, ४५)।

सुपणिहिय वि [सुप्रणिहित] सुन्दर प्रणि-धानवाला (पण्ह २, ३—पत्र १२३)।

सुपण्ण देखो सुप्पन्न (राज)।

सुपण्ण, सुपन्न पुं [सुपर्ण] गरुड पक्षी (नाट; कुप्र ६३)।

सुपन्नत्त वि [सुप्रज्ञप्त] १ सुन्दर रूप से कथित (आचा १, ८, १, ३)। २ सम्यग् आसेवित (दस ४, १)।

सुपभ देखो सुप्पभ (राज)।

सुपम्ह पुं [सुपक्ष्मन्] १ एक विजय-क्षेत्र (ठा २, ३—पत्र ८०)। २ पुंन. एक देव-विमान (सम १५)।

सुपरिकम्मिय वि [सुपरिकर्मित] सुन्दर संस्कारवाला (णाया १, ७—पत्र ११६)।

सुपरिक्खिय, सुपरिच्छिय वि [सुपरीक्षित] अच्छी तरह जिसकी परीक्षा की गई हो वह (उव; प्रासू १५)।

सुपरिणिट्ठिय, सुपरिनिट्ठिअ वि [सुपरिनिष्ठित] अच्छी तरह निपुण (राज; भग)।

सुपरिप्फुड वि [सुपरिस्फुट] सुस्पष्ट (पउम ४५, २९)।

सुपरिस्संत वि [सुपरिश्रान्त] अतिशय थका हुआ (पउम १०२, ४५)।

सुपरुन्न वि [सुप्ररुदित] जिसने जोर से रोने का आरम्भ किया हो वह (णाया १, १८—पत्र २४०)।

सुपवित्त वि [सुपवित्र] अत्यन्त विशुद्ध (सुपा ३५४)।

सुपवित्तिय [सुपवित्रित] अत्यन्त पवित्र किया हुआ (सुपा ३)।

सुपव्व पुं [सुपर्वन्] १ देव। २ न. सुन्दर पर्व (कुप्र ४२)।

सुपसाइअ वि [सुप्रसादित] अच्छी तरह प्रसन्न किया हुआ (रंभा)।

सुपसिद्ध वि [सुप्रसिद्ध] अति विख्यात (सिरि)।

सुपस्स वि [सुदर्श] सुख से देखने योग्य (ठा ४, ३—पत्र २५२; ५, १—पत्र २६६)।

सुपह पुं [सुपथ] शुभ मार्ग (उवः सुपा ३७७)।

सुपहाय न [सुप्रभात] माङ्गलिक प्रातःकाल (हे २, २०४)।

सुपावय वि [सुपापक] अतिशय पापी (उत्त १२ १४)।

सुपास पुं [सुपार्श्व] १ भारतवर्ष में उत्पन्न सातवें जिन भगवान् (सम ४३; कप्प; सुपा २)। २ भगवान् महावीर के पिता का भाई (ठा ६—पत्र ४५५; विचार ४७८)। ३ एक कुलकर पुरुष का नाम (सम १५०)। ४ भारतवर्ष के भावी तीसरे जिनदेव (सम १५३)। ५ ऐरवत क्षेत्र में उत्पन्न एक जिन-देव (सम १५३)। ६ ऐरवत क्षेत्र में आगामि उत्सर्पिणी-काल में होनेवाले अठारहवें जिनदेव (सम १५४; पव ७)। ७ भारतवर्ष के भावी दूसरे जिनदेव का पूर्वजन्मीय नाम (सम १५४)।

सुपासा स्त्री [सुपार्श्वा] एक जैन साध्वी (ठा ६—पत्र ४५७)।

सुपीअ पुं [सुपीत] अहोरात्र का पाँचवाँ मुहूर्त (सम ५१)।

सुपुंख पुंन [सुपुङ्ख] एक देव-विमान (सम २२)।

सुपुंड पुंन [सुपुण्ड्र] एक देव-विमान (सम २२)।

सुपुप्फ पुंन [सुपुष्प] एक देव-विमान (सम ३८)।

सुपुरिस पुं [सुपुरुष] सज्जन, साधु पुरुष (हे २, १८४; गउड; प्रासू ३)।

सुपेसल वि [सुपेशल] अति मनोहर (उत्त १२, १३)।

सुप्प अक [स्वप्] सोना। सुप्पइ (हे २, १७९)।

सुप्प पुंन [शूर्प] सूप छाज. सिरकी का बना एक पात्र जिससे अन्न पछोरा जाता है (उवा; पराह १, १—पत्र ८)। °णह वि [°नख] सूप के जैसे नखवाला (गाया १, ८—पत्र १३३)। °णहा, °णही स्त्री [°नखा] रावण की बहिन का नाम (प्राकृ ४२)।

सुप्पइट्ठ देखो सुपइट्ठ (राज)।

सुप्पइट्ठिय देखो सुपइट्ठिय (राज)।

सुप्पइण्णा, **सुप्पइन्ना** स्त्री [सुप्रतिज्ञा] दक्षिण रुचक पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (राज; इक)।

सुप्पइत्तिय न. शीतहारक वस्त्र-विशेष (भव० वृ० पत्र ३६५, श्लो. ४०, ४६)।

सुप्पंजल वि [सुप्राञ्जल] अत्यन्त ऋजु—सीधा (कप्पू)।

सुप्पडिआणंद वि [सुप्रत्यानन्द] उपकृत पुरुष के किये हुए उपकार को माननेवाला (ठा ४, ३—पत्र २४८)।

सुप्पडिआर न [सुप्रतिकार] उपकार का बदला, प्रत्युपकार (ठा ३, १—पत्र ११७)।

सुप्पडिबुद्ध देखो सुपडिबुद्ध (राज)।

सुप्पडिलग्ग वि [सुप्रतिलग्न] अच्छी तरह लगा हुआ, अवलम्बित (सुपा ५६१)।

सुप्पणिहाण न [सुप्रणिधान] शुभ ध्यान (ठा ३, १—पत्र १२१)।

सुप्पणिहिय देखो सुपणिहिय (पराह २, १—पत्र १०१)।

सुप्पन्न वि [सुप्रज्ञ] सुन्दर बुद्धिवाला (सूत्र १, ६, ३३)।

सुप्पबुद्ध पुंन [सुप्रबुद्ध] एक ग्रैवेयक-विमान (देवेन्द्र १३६; पव १९४)।

सुप्पबुद्धा स्त्री [सुप्रबुद्धा] दक्षिण रुचकपर रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८—पत्र ४३६; इक)।

सुप्पभ पुं [सुप्रभ] १ वर्तमान अवसर्पिणी-काल में उत्पन्न चतुर्थ बलदेव (सम ७१)। २ आगामी उत्सर्पिणी में होनेवाला चौथा बल-देव (सम १५४)। ३ भारतवर्ष का भावी तीसरा कुलकर पुरुष (सम १५३)। ४ हरि-कान्त तथा हरिसह नामक इन्द्रों के एक-एक लोकपाल का नाम (ठा ४, १—पत्र १९७; इक)। ५ पुंन. एक देव-विमान (देवेन्द्र १४१)। °कंत पुं [°कान्त] हरिकान्त तथा हरिसह नामक इन्द्रों के एक-एक लोकपाल का नाम (ठा ४, १—पत्र १९७)।

सुप्पभा स्त्री [सुप्रभा] १ तीसरे बलदेव की माता (सम १५२)। २ धरण आदि दक्षिण-श्रेणि के कई इन्द्रों के लोकपालों को एक-एक अग्रमहिषी का नाम (ठा ४, १—पत्र २०४)। ३ घनवाहन नामक विद्याधर-नरेश की पत्नी (पउम ५, १३८)। ४ भगवान् अजितनाथ की दीक्षा-शिविका (विचार १२९; सम १५१)।

सुप्पभूय वि [सुप्रभूत] अति प्रचुर (पउम ५५, ३६)।

सुप्पसण्ण, **सुप्पसन्न** वि [सुप्रसन्न] अत्यन्त प्रसाद-युक्त (नाट—मालती १६१; भवि)।

सुप्पसार वि [सुप्रसार्य] सुख से पसारने योग्य (सुख २, २९)।

सुप्पसारिय वि [सुप्रसारित] अच्छी तरह पसारा हुआ (औप)।

सुप्पसिद्ध देखो सुपसिद्ध (सम १५१; पि ३५०)।

सुप्पसूय वि [सुप्रसूत] सम्यग् उत्पन्न (औप)।

सुप्पहूय (अप) देखो सुप्पभूय (भवि)।

सुप्पाडोस पुं [दे] अच्छा पड़ोस (श्रा २७)।

सुप्पिय वि [सुप्रिय] अत्यन्त प्रिय (उत्त ११; ८; सुपा ४६५)।

सुप्पुरिस देखो सुपुरिस (रयण २४)।

सुफणि स्त्रीन [सुफणि] जिसमें तक्र आदि उबाला जाय ऐसा बटुवा आदि पात्र (सूत्र १, ४, २, १०)।

सुबंधु पुं [सुबन्धु] १ दूसरे बलदेव का पूर्वजन्मीय नाम (सम १५३)। २ भारतवर्ष का भावी सातवाँ कुलकर (सम १५३)।

सुबंभ पुंन [सुब्रह्मन्] एक देव-विमान (सम १६)।

सुबंभण पुं [सुब्राह्मण] प्रशस्त विप्र (पि २५०)।

सुबद्ध वि [सुबद्ध] अच्छी तरह बँधा हुआ (उव)।

सुबल पुं [सुबल] १ सोम-वंश का एक राजा (पउम ५, ११)। २ पहले बलदेव का पूर्व-जन्मीय नाम (पउम २०, १९०)।

सुबलिट्ठ वि [सुबलिष्ट] अतिशय बलवान् (श्रु १८)।

सुबहु वि [सुबहु] अति प्रभूत (उव)।

सुबहुल वि [सुबहुल] ऊपर देखो (कप्पू)।

सुबाहु पुं [सुबाहु] १ एक राज-कुमार (विपा २, १—पत्र १०३)। २ स्त्री. रुक्मिराज की एक कन्या (णाया १, ८—पत्र १४०)।

सुबुद्धि स्त्री [सुबुद्धि] १ सुन्दर प्रज्ञा (श्रा १४)। २ पुं. राम-भ्राता भरत के साथ दीक्षा लेनेवाला एक राजा (पउम ८५, ३)। ३ एक मन्त्री (महा)।

सुब्भ वि [शुभ्र] १ सफेद, श्वेत (सुपा ५०९)। २ न. एक प्रकार की चाँदी (राय ७५)।

सुब्भ न [शौभ्र्य] सफेदी, श्वेतता (संबोध ५२)।

सुब्भि पुं [सुरभि] १ सुगन्ध, खुशबू (सम ४१; भग; णाया १, १२)। २ वि. सुगन्धी, सुगन्ध-युक्त (उत्त ३६, २८; आचा १, ६, २, ३)। ३ मनोहर, मनोज्ञ, सुन्दर (णाया १, १२—पत्र १७४)।

सुब्भिक्ख न [सुभिक्ष] सुकाल (सुपा ३५८)।

सुब्भु स्त्री [सुभ्रू] नारी, महिला (रंभा)।

सुभ पुं [शुभ] १ भगवान् पार्श्वनाथ का प्रथम गणधर (ठा ८—पत्र ४२९; सम १३)। २ भगवान् नमिनाथ का प्रथम गणधर (सम १५२)। ३ एक मुहूर्त्त (पउम १७, ८२)। ४ न. नाम-कर्म का एक भेद (सम ६७; कम्म १, २६)। ५ मंगल, कल्याण। ६ वि. मंगल-जनक, मांगलिक, प्रशस्त (कप्प; भग; कम्म १, ४२; ४३)। °**घोस** पुं [°घोष] भगवान् पार्श्वनाथ का द्वितीय गणधर (सम १३)। °**णुधम्म** पुं [°नुधर्मन्] राक्षस-वंश का एक राजा (पउम ५, २६२)। देखो **सुह** = शुभ।

सुभंकर न [शुभंकर] वरुण नामक लोकान्तिक देवों का विमान (राज)। देखो **सुहंकर**।

सुभग वि [सुभग] १ आनन्द-जनक (कप्प)। २ सौभाग्य-युक्त, वल्लभ, जन-प्रिय (सुज्ज २०)। ३ न. पद्म-विशेष (सुज्ज २, ३, १८; राय ८२)। ४ कर्म-विशेष (सम ६७; कम्म १, २६; ५०; धर्मसं ६२० टी)।

सुभगा स्त्री [सुभगा] १ लता-विशेष (पएण १—पत्र ३३)। २ सुरूप नामक भूतेन्द्र की एक पटरानी (ठा ४, १—पत्र २०४; णाया २—पत्र २५३; इक)।

सुभग्ग वि [सुभाग्य] भाग्य-शाली, जिसका भाग्य अच्छा हो वह (उव ७३१ टी)।

सुभड देखो **सुहड** (नाट—मालती १३८)।

सुभणिय वि [सुभणित] वचन-कुशल (उव)।

सुभद्द पुं [सुभद्र] १ इक्ष्वाकु-वंश का एक राजा (पउम २८, १३६)। २ दूसरे वासुदेव तथा बलदेव के धर्म-गुरु (सम १५३)। ३ पुंन. एक देव-विमान (देवेन्द्र १४१)। ४ ४ नगर-विशेष (उप १०३१ टी)।

सुभद्दा स्त्री [सुभद्रा] १ दूसरे बलदेव की माता (सम १५२)। २ प्रथम स्त्री-रत्न, भरत चक्रवर्त्ती की अग्र-महिषी (सम १५२)। ३ बलि नामक इन्द्र के सोम आदि चारों लोक-पालों की एक-एक अग्रमहिषी का नाम (ठा ४, १—पत्र २०४)। ४ भूतानन्द आदि इन्द्रों के कालवाल नामक लोकपाल की एक-एक अग्र-महिषी का नाम (ठा ४, १—पत्र २०४)। ५ प्रतिमा-विशेष, एक व्रत (ठा ४, १—पत्र २०४)। ६ राम के भाई भरत की पत्नी (पउम २८, १३६)। ७ राजा कोणिक की स्त्री (औप)। ८ राजा श्रेणिक की एक स्त्री (अंत २५)। ९ एक सती स्त्री (पडि)। १० एक सार्थवाह-पत्नी (विपा १, २—पत्र २२)। ११ जम्बूवृक्ष-विशेष, जिससे यह द्वीप जंबू द्वीप कहलाता है (इक)।

सुभय देखो **सुभग** (भग १२, ६—पत्र ५७८)।

सुभरिय वि [सुभृत] अच्छी तरह भरा हुआ, भरपूर, परिपूर्ण (उव)।

सुभा स्त्री [शुभा] १ वैरोचन बलीन्द्र की एक अग्र-महिषी (ठा ५, १—पत्र ३०२)। २ एक विजय-क्षेत्र (ठा २, ३—पत्र ८०)। ३ रावण की एक पत्नी (पउम ७४, १०)।

सुभासिय देखो **सुहासिय** (उत्त २०, ५१; दस ९, १, १७)।

सुभासिर वि [सुभाषितृ] सुन्दर बोलने-वाला। स्त्री. °री (सुपा ५९८)।

सुभिक्ख देखो **सुब्भिक्ख** (उत्त; सार्ध ३६)।

सुभिच्च पुं [सुभृत्य] अच्छा नौकर (सुपा ४६५; हे ४, ३३४)।

सुभीम वि [सुभीम] अति भयंकर (सुर ७, २३३)।

सुभीसण पुं [सुभीषण] रावण का एक सुभट (पउम ५६, ३१)।

सुभूम पुं [सुभूम] १ भारतवर्ष में उत्पन्न आठवाँ चक्रवर्त्ती राजा (ठा २, ४—पत्र ६९)। २ भारतवर्ष के भावी दूसरा कुलकर पुरुष (सम १५३)। भगवान् अमरनाथ का प्रथम श्रावक (विचार ३७८)।

सुभूसण पुं [सुभूषण] विभीषण का एक पुत्र (पउम ६७, १६)।

सुभोगा स्त्री [सुभोगा] अधोलोक में रहने वाली एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८—पत्र ४३७; इक)।

सुभोयण न [सुभोजन] व्रत-विशेष, एकाशन तप (संबोध ५८)।

सुम न [सुम] पुष्प, फूल (सम्मत्त १६०)। °**सर** पुं [°शर] कामदेव (रंभा)।

सुमइ पुं [सुमति] १ पाँचवाँ जिन भगवान् (सम ४३)। २ ऐरवत क्षेत्र में होनेवाला दसवाँ कुलकर पुरुष (सम १५३)। ३ एक जैन उपासक (महानि ४)। ४ वि. शुभ बुद्धि वाला (गउड)। ५ पुं. एक नैमित्तिक विद्वान् (सुर ११, १३२)।

सुमंगल पुं [सुमङ्गल] ऐरवत वर्ष में होने वाले प्रथम जिनदेव (सम १५४)।

सुमंगला स्त्री [सुमङ्गला] १ भगवान् ऋषभ-देव की एक पत्नी (पउम ३, ११९)। २ सूर्यवंशीय राजा विजयसागर की पत्नी (पउम ५, ७२)।

सुमग्ग पुं [सुमार्ग] अच्छा रास्ता (सुपा ३३०)।

सुमण } न [सुमनस्] १ पुष्प, फूल
सुमणस } (हे १, ३२; सुपा ८६)। २ पुं. देव, सुर (सुपा ८६; ३३४)। ३ वि. सुन्दर मनवाला, सज्जन (सुपा ३३४; पउम ३६, १३०; ७७. १७; रयण ३)। ४ हर्षवान्, आनन्दित, सुखी (ठा ३, २—पत्र १३८)। ५ पुंन. एक देव-विमान (देवेन्द्र १३६)। °भद्द पुं [°भद्र] १ भगवान् महावीर के पास दीक्षा लेकर मुक्ति पाने वाला एक गृहस्थ (अंत १८)। २ आर्य संभूतिविजय के एक शिष्य, एक जैन मुनि (कप्प)।

सुमणसा स्त्री [सुमनस्] वल्ली-विशेष (पएण १—पत्र ३३)।

सुमणा स्त्री [सुमनस्] १ भगवान् चन्द्रप्रभ की प्रथम शिष्या (सम १५२; पव ६)। २ भूतानन्द आदि इन्द्रों के एक-एक लोकपाल की एक-एक अग्र-महिषी का नाम (ठा ४, १—पत्र २०४)। ३ राजा श्रेणिक की एक पत्नी (अंत २५)। ४ एक जम्बू वृक्ष का नाम (इक)। ५ शक्र की पद्मा नामक इन्द्राणी की एक राजधानी (इक)। ६ मालती का फूल (स्वप्न ६१)।

सुमणो° देखो **सुमण** (उप पृ १८)।

सुमणोहर वि [सुमनोहर] अत्यन्त मनोहर (उप पृ १८)।

सुमर सक [स्मृ] याद करना। सुमरइ (हे ४, ७४)। भवि. सुमरिस्ससि (पि ५२२)। कर्म. सुमरिज्जइ (हे ४, ४२६; पि ५३७)। वकृ. सुमरंत (सुर ६, ६४; सुपा ४०८; पउम ७८, ४६)। कवकृ. सुमरिज्जंत (पउम ५, १८६; नाट—मालती ११०)। संकृ. सुमरिअ, सुमरिऊण (कुमा; काल)। हेकृ. सुमरिउं, सुमरित्तए (पि ४६५; ५७८)। कृ. सुमरियव्व, सुमरेयव्व, सुमरणीअ (सुपा ५५३; ६८२; २१७; अभि १२०)।

सुमर पुं [स्मर] कामदेव (नाट—चैत ८१)।

सुमरण पुंन [स्मरण] याद, स्मृति (कुमा; हे ४, ४२६; वसु; प्राप; सुपा ७१; १५६; ३६७; मं ३२४)। स्त्री. °णा (स ६७०; सुपा २२०)।

सुमराव सक [स्मारय्] याद दिलाना। वकृ. सुमरावंत (कुप्र ५६)।

सुमराविय वि [स्मारित] याद कराया हुआ (सुर १४, ४८; २४३)।

सुमरिअ देखो **सुमर**=स्मृ।

सुमरिअ वि [स्मृत] याद किया हुआ (पाअ)।

सुमरुया स्त्री [सुमरुत्] भगवान् महावीर के पास दीक्षा लेकर मुक्ति पानेवाली राजा श्रेणिक की एक पत्नी (अंत २५)।

सुमहुर वि [सुमधुर] अति मधुर (विपा १, ७—पत्र ७७)।

सुमाणस वि [सुमानस] प्रशस्त मनवाला, सज्जन (पउम १०२, २७)।

सुमाणुस पुं [सुमानुष] सज्जन, उत्तम मनुष्य (सुपा २५६)।

सुमालि पुं [सुमालिन्] एक राज-कुमार (पउम ६. २२०)।

सुमिण पुंन [स्वप्न] १ स्वप्न, सपना (हे १, ४६; कुमा; महा; पडि; सुर ३, ६१; ६७)। २ स्वप्न के फल को बतलानेवाला शास्त्र (स्वप्न ४६)। °पाढय वि [°पाठक] स्वप्न के फल बतानेवाले शास्त्रों का जानकार (णाया १, १—पत्र २०)। देखो **सुविण**।

सुमित्त पुं [सुमित्र] १ भगवान् मुनिसुव्रत-स्वामी का पिता—एक राजा (सम १५१)। २ द्वितीय चक्रवर्त्ती का पिता (सम १५२)। ३ चतुर्थ बलदेव के पूर्व जन्म का नाम (पउम २०, १६०)। ४ छठवें बलदेव के धर्मगुरु एक जैन मुनि (पउम २०, २०५)। ५ एक वणिक् का नाम (उप ७२८ टी)। ६ अच्छा मित्र; 'सुमित्तो व्व जिणधम्मो' (सुपा २३४)। ७ भगवान् शान्तिनाथ को प्रथम भिक्षा देनेवाले एक गृहस्थ का नाम (सम १५१)।

सुमित्ता स्त्री [सुमित्रा] लक्ष्मण की माता और राजा दशरथ की एक पत्नी (पउम २५, ४)। °तणय पुं [°तनय] लक्ष्मण (से ४, १५; १४, ३२)।

सुमित्ति पुं [सौमित्रि] सुमित्रा का पुत्र—लक्ष्मण (पउम ४५, ३६)।

सुमुइय वि [सुमुदित] अति-हर्षित (औप)।

सुमुखी देखो **सुमुही** (पिंग)।

सुमुणिअ वि [सुज्ञात] अच्छी तरह जाना हुआ (सुपा २८२)।

सुमुह पुं [सुमुख] १ भगवान् नेमिनाथ के पास दीक्षा लेकर मुक्ति पानेवाला एक राज-कुमार (अंत ३)। २ राक्षस-वंश का एक राजा, एक लंका-पति (पउम ५, २६१)। ३ न. छन्द-विशेष (अजि २०)।

सुमुही स्त्री [सुमुखी] छन्द-विशेष (पिंग)।

सुमेघा स्त्री [सुमेघा] ऊर्ध्व लोक में रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८—पत्र ४३७)।

सुमेरु पुं [सुमेरु] मेरु-पर्वत (पाअ; पउम ७५, ३८)।

सुमेहा देखो **सुमेघा** (इक)।

सुमेहा स्त्री [सुमेधा] सुन्दर बुद्धि (उप पृ ३६८)।

सुम्मंत देखो **सुण**=श्रु।

सुम्ह पुं. व. [सुह्म] देश-विशेष (हे २, ७४)।

सुर पुं [सुर] १ देव, देवता (पएह १, ४—पत्र ६८; कप्प; जी ३३; कुमा)। २ एक राजा का नाम (उप ७६५)। °अण न [°वन] नन्दन-वन (से ६, ८६)। °अरु पुं [°तरु] कल्प वृक्ष (नाट)। °करडि पुं [°करटिन्] ऐरावण हाथी (सुपा १७६)। °करि पुं [°करिन्] वही अर्थ (सुपा २६१)। °कुंभि पुं [°कुम्भिन्] वही (सुपा २०१)। °कुमर पुं [°कुमार] भगवान् वासुपूज्य का शासन-यक्ष (पव २६)। °कुसुम न [°कुसुम] लवंग, लौंग (पि १४)। °गय पुं [°गज] इन्द्र-हस्ती, ऐरावण (पाअ; से २, २२)। °गिरि पुं [°गिरि] मेरु पर्वत (सुपा २; ३१; ३५४; सण)। °गिह देखो °घर (उप ७६८ टी)। °गुरु पुं [°गुरु] १ बृहस्पति (पाअ; सुपा १७६)। २ नास्तिक मत का प्रवर्तक एक आचार्य (मोह १०१)। °गोव पुं [°गोप] कीट-विशेष, इन्द्रगोप (णाया १, ६—पत्र १६०; पाअ)। °घर न [°गृह] १ देव-मन्दिर (कुप्र ४)। २ देव-विमान (सण)। °चमू स्त्री [°चमू] देव-सेना (सुपा ४५)। °चाव पुं [°चाप] इन्द्र-धनुष (गा ५८५; ८०८; सुपा १२४)। °जाल न [°जाल] इन्द्रजाल (राज)। °णई स्त्री [°नदी] गंगा नदी (पाअ)। °णाह पुं [°नाथ] इन्द्र (गा ८६४; दे)। °तरंगिणि

स्त्री [°तरङ्गिणी] गंगा नदी (सण)। °तरु देखो °अरु (सण)। °ताण पुं [°त्राण] यवननृप, सुलतान (ती १५)। °दारु न [°दारु] देवदार की लकड़ी (स ६३३)। °धंसी स्त्री [°ध्वंसिनी] विद्या-विशेष (पउम ७, १३७)। °धणु, °धणुह न [°धनुष्] इन्द्र-धनुष (कुमा; सण)। °नई देखो °णई (श्रु ७७)। °नाह देखो °णाह (सण)। °पहु पुं [°प्रभु] इन्द्र, देव-राज (सुपा ५०२; उप १४२ टी; सण)। °पुर न [°पुर] देव-पुरी, अमरावती, स्वर्ग (पउम ५०, १ सण)। °पुरी स्त्री [°पुरी] वही अर्थ (पाअ; कुमा)। °प्पिअ पुं [°प्रिय] एक यक्ष (अंत)। °बंदी स्त्री [°बन्दी] देवी, देव-स्त्री (से ६, ५०)। °भवण न [°भवन] देव-प्रासाद (भग; सण)। °मंति पुं [°मन्त्रिन्] बृहस्पति (सुपा ३२६)। °मंदिर न [°मन्दिर] १ देहरा, मन्दिर (कुप्र ४)। २ देव-विमान (सण)। °मुणि पुं [°मुनि] नारद मुनि (पउम ६०, ८)। °रमण न [°रमण] रावण का एक बगीचा (पउम ४६, ३७)। °राय पुं [°राज] इन्द्र (सुपा ४५; सिरि २४)। °रिउ पुं [°रिपु] दैत्य, दानव (पाअ)। °लोअ पुं [°लोक] स्वर्ग (महा)। °लोइय वि [°लौकिक] स्वर्गीय (पुप्फ २५८)। °लोग देखो °लोअ (पउम ५२, १८)। °वइ पुं [°पति] १ इन्द्र, देव-राज (पाअ; सुपा ४४; ४८; ८८; ४०२)। २ इन्द्र नामक एक विद्याधर-नरेश (पउम ७, २७)। °वण्ण पुंन [°वर्ण] एक देव विमान (सम १०)। °वधू देखो °वहू (पि ३८७)। °वन्नी स्त्री [°पर्णी] पुंनाग वृक्ष (पाअ)। °वर पुं [°वर] उत्तम देव (भग)। °वरिंद पुं [°वरेन्द्र] इन्द्र, देव-राज (श्रा ४७)। °वहू स्त्री [°वधू] देवाङ्गना, देवी (कुमा)। °वारण पुं [°वारण] ऐरावण हस्ती (उप २११ टी)। °संगीय न [°संगीत] नगर-विशेष (पउम ८, १८)। °सरि स्त्री [°सरित्] भागीरथी, गङ्गा नदी (गउड; उप पृ ३६; सुपा ३३; २८६)। °सिहरि पुं [°शिखरिन्] मेरु पर्वत (सण)। °सुंदर पुं [°सुन्दर] रथचक्रवाल-नगर का एक विद्याधर-नरेश (पउम ८, ४१)। °सुंदरी स्त्री [°सुन्दरी] १ देव-वधू, देवाङ्गना (सुर ११, ११५; सुपा २००)। २ एक राज-पुत्री (सुर १७, १४३)। ३ एक राज-कुमारी (सिरि ५३)। °सुरहि स्त्री [°सुरभि] काम-धेनु (रयण १३)। °सेल पुं [°शैल] मेरु-पर्वत (सुपा १३०)। °हत्थि पुं [°हस्तिन्] ऐरावण हाथी (से ६, ६)। °उह न [°ायुध] वज्र (पाअ)। °ादेव पुं [°ादेव] एक श्रावक का नाम (उवा)। °ादेवी स्त्री [°ादेवी] पश्चिम रुचक पर रहनेवाली एक दिशा-कुमारी देवी (ठा ८—पत्र ४३६; इक)। °ारि पुं [°ारि] राक्षसवंश का एक राजा, एक लंका-पति (पउम ५, २६२)। °ालय पुंन [°ालय] स्वर्ग (पाअ; सुअ १, ६, ६; सुपा ५६६)। °ाहिराय पुं [°ाधिराज] इन्द्र (उप १४२ टी)। °ाहिव पुं [°ाधिप] इन्द्र (से १५, ५३)। °ाहिवइ पुं [°ाधिपति] वही (सुपा ४६)।

सुरइ स्त्री [°सुरति] सुख (पण्ह १, ४—पत्र ६८)।

सुरइय वि [सुरचित] अच्छी तरह किया हुआ (पण्ह १, ४—पत्र ६८)।

सुरंगणा स्त्री [सुराङ्गना] देव-वधू (सुपा २४६)।

सुरंगा स्त्री [°सुरङ्गा] सुरंग, जमीन के भीतर का मार्ग (उप पृ २६; महा; सुपा ४५४)।

सुरंगि पुंस्त्री [दे] वृक्ष-विशेष, शिग्रु वृक्ष, सहिजना का गाछ (दे ८, ३७)।

सुरजेट्ठ पुं [दे] वरुण देवता (दे ८, ३१)।

सुरट्ठ पुं. व. [सुराष्ट्र] एक भारतीय देश जो आजकल काठियावाड़ के नाम से प्रसिद्ध है (णाया १, १६—पत्र २०८; हे २, ३४; पिंड २०२)।

सुरणुचर वि [स्वनुचर] सुख से करने योग्य (ठा ५, १—पत्र २६६)।

सुरत }
सुरद } देखो सुरय (पउम १६, ८०; संक्षि ६; प्राकृ १२)।

सुरभि पुंस्त्री [सुरभि] १ वसन्त ऋतु। २ स्त्री. गौ, गैया (कुम्मा १४)। ३ वि. सुगन्ध-युक्त, सुगंधी (सम ६०; गा ८६१; कप्प; कुम्मा १४)। ४ पुंन. एक देव-विमान (देवेन्द्र १४०)। °गंध वि [°गन्ध] सुगन्धी (आचा)। °पुर न [°पुर] नगर-विशेष (राज)। देखो सुरहि।

सुरमणीअ वि [सुरमणीय] अत्यन्त मनोहर (सुर ३, ११२)।

सुरम्म वि [सुरम्य] ऊपर देखो (औप)।

सुरय न [सुरत] मैथुन, स्त्री-संभोग (सुर १३, २०; गा १५५; काप्र ११३)।

सुरयण न [सुरत्न] सुन्दर रत्न (सुपा ३२७)।

सुरयणा स्त्री [सुरचना] सुन्दर रचना (सुपा ३२)।

सुरस त्रि [सुरस] १ सुन्दर रसवाला (णाया १, १२—पत्र १७४)। २ न. तृण विशेष (दे १, ५४)। °लया स्त्री [°लता] तुलसी-लता (दे ५, १४)।

सुरसुर पुं [सुरसुर] ध्वनि-विशेष, 'सुर सुर' आवाज (ओघ २८९)।

सुरसुर अक [सुरसुराय्] 'सुर सुर' आवाज करना। वकृ. सुरसुरंत (गा ७४)।

सुरह सक [सुरभय्] सुगन्धित करना। सुरहेइ (कुमा; प्रासू ६)।

सुरह पुंन [सौरभ] सुन्दर गन्ध, खुशबू; 'गंधोव्विअ सुरहो मालईइ मलणं पुण विणासो' (भत्त १२१)।

सुरह पुं [सुरथ] साकेतपुर का एक राजा (महा)।

सुरहि पुंस्त्री [सुरभि] १ वसंत ऋतु (रंभा; पाअ; कप्पू)। २ चैत्र मास (गा १०००)। ३ वृक्ष-विशेष, शतद्रु वृक्ष (आचा २, १, ८, ३)। ४ स्त्री. गौ, गैया (रयण १३; धर्मवि ६५; पाअ; प्रासू १६८)। ५ न. नाम-कर्म का एक भेद, जिसके उदय से प्राणी के शरीर में सुगन्ध उत्पन्न होती है (कम्म १, ४१)। ६ वि. सुगन्ध-युक्त (उवा; कुमा; गा ३१७; ३६६; सुर ३, ३६; हे २, १५५)। देखो सुरभि।

सुरा स्त्री [सुरा] मदिरा, दारू (उवा)। °रस पुं [°रस] समुद्र-विशेष (दीव)।

सुरिंद पुं [सुरेन्द्र] १ इन्द्र, देव-स्वामी (सुर २, १५३; गउड; सुपा ४४)। २ एक

विद्याधर नरेश (पउम ७, २६)। °दत्त पुं [°दत्त] एक राज-कुमार (उप ६३६)।

सुरिंदय पुं [सुरेन्द्रक] विमानेन्द्रक, देव-विमान-विशेष (देवेन्द्र १३१)।

सुरी स्त्री [सुरी] देवी (कुमा)।

सुरुंगा देखो सुरंगा (पउम ८, १५८)।

सुरुग्घ पुं [स्रुघ्न] देश-विशेष (हे २, ११३; षड्)। °ज वि [°ज] देश-विशेष में उत्पन्न (कुमा)।

सुरुट्ठ वि [सुरुष्ट] अत्यन्त रोष-युक्त (पउम ६८, २५)।

सुरूया स्त्री [सुरूपा] एक इन्द्राणी (णाया २—पत्र २५२)। देखो सुरूवा।

सुरूव पुं [सुरूप] १ भूत-निकाय के दक्षिण दिशा का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५)। २ न. सुन्दर रूप। ३ वि. सुन्दर रूपवाला (उवा; भग)।

सुरूवा स्त्री [सुरूपा] १ सुरूप तथा प्रतिरूप नामक भूतेन्द्रों की एक एक अग्र-महिषी (ठा ४, १—पत्र २०४)। २ भूतानन्द नामक इन्द्र की एक अग्र-महिषी (इक)। ३ एक दिशा-कुमारी देवी (ठा ४, १—पत्र १९८; ६—पत्र ३६१)। ४ एक कुलकर-पत्नी (सम १५०)। ५ सुन्दर रूपवाली (महा)।

सुरेस पुं [सुरेश] १ देव-पति, इन्द्र। २ उत्तम देव (सुपा ६१४)।

सुरेसर पुं [सुरेश्वर] इन्द्र, देव-राज (सुपा २७; कुप्र ४)।

सुलक्खणि वि [सुलक्षणिन्] उत्तम लक्षण-वाला (धर्मवि १४२)।

सुलग्ग वि [सुलग्न] अच्छी तरह लगा हुआ (महा)।

सुलद्ध वि [सुलब्ध] सम्यक् प्राप्त (णाया १, १—पत्र २४; उवा)।

सुलब्भ } वि [सुलभ] सुख से प्राप्त हो सके
सुलभ } वह (श्रा १२; सुख २, १५; महा)।

सुलस पुं [सुलस] पर्वत-विशेष (इक)।

सुलस न [दे] कुसुम्भ-रक्त वस्त्र (दे ८, ३७)।

सुलसमंजरी } स्त्री [दे] तुलसी (दे ८, ४०;
सुलसा } पाअ)।

सुलसा स्त्री [सुलसा] १ नववें जिनदेव की प्रथम शिष्या (सम १५२)। २ भगवान् महावीर की एक श्राविका, जिसका आत्मा आगामि काल में तीर्थंकर होगा (ठा ९—पत्र ४५५; सम १५४)। ३ नाग नामक गृहपति की स्त्री (अंत ४)। ४ शक्र की एक अग्र-महिषी, एक इन्द्राणी (पउम १०२, १५९)। ५ शंखपुर के राजा सुन्दर की पत्नी (महा)।

सुलह देखो सुलभ (स्वप्न ४८; महा; दं ४६)।

सुलाह पुं [सुलाभ] अच्छा नफा (सुपा ४४६)।

सुली स्त्री [दे] उल्का, आकाश से गिरती आग (दे ८, ३६)।

सुलसुल } अक [सुलसुलाय्] 'सुल' 'सुल'
सुलसुलाय } आवाज करना। सुलसुलायइ (तंदु ४१)। वकृ. सुलसुलिंत, सुलसुलेंत (तंदु ४४; महा)।

सुलूह वि [सुरूक्ष] अत्यन्त लूखा—रूखा (सूअ १, १३, १२)।

सुलोअ देखो सिलोअ = श्लोक (भवि १६)।

सुलोयण पुं [सुलोचन] एक विद्याधर-नरेश (पउम ५, ६६)।

सुलोल वि [सुलोल] अति चपल (कप्पू)।

सुल्ल न [शूल्य] शूला-प्रोत मांस (दे ८, ३६; पाअ)।

सुव अक [स्वप्] सोना। सुवइ, सुवंति (हे १, ६४; षड्; महा; रंभा)। भवि. सुविस्सं (पि ५२६)। वकृ. सुवंत, सुवमाण (पाअ; से १, २१; भग)। संकृ. सुविऊण (कुप्र ५६)।

सुव देखो स = स्व (हे २, ११४; षड्; कुमा)।

सुव (अप) देखो सुअ = श्रुत, सुत (भवि)।

सुवंस पुं [सुवंश] १ अच्छा वंस। २ वि. सुन्दर कुल में उत्पन्न, खानदानी (हे ४, ४१९)।

सुवग्गु पुं [सुवल्गु] एक विजय-क्षेत्र, जिसकी राजधानी खड्गपुरी है (ठा २, ३—पत्र ८०; इक)।

सुवच्छ पुं [सुवत्स] १ व्यन्तर-देवों का एक इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५)। २ एक विजय-क्षेत्र, प्रान्त-विशेष, जिसकी राजधानी कुंडला नगरी है (ठा २, ३—पत्र ८०; इक)।

सुवच्छा स्त्री [सुवत्सा] १ अधोलोक में रहनेवाली एक दिशा-कुमारी देवी (ठा ८—पत्र ४३७)। २ सौमनस पर्वत पर रहनेवाली एक देवी (इक)।

सुवज्ज पुं [सुवज्र] १ एक विद्याधर-वंशीय राजा (पउम ५, १६)। २ पुंन. एक देव-विमान (सम २५)।

सुवट्टिय वि [सुवर्तित] अतिशय गोल किया हुआ (राज)।

सुवण न [स्वपन] शयन (ओघ ८७; पंचा १, ४५; उप ७६२)।

सुवण्ण पुं [सुपर्ण] १ गरुड़ पक्षी (उत्त १४; ४७)। २ भवनपति देवों की एक जाति (औप)। ३ आदित्य, सूर्य (गउड)। °कुमार पुं [°कुमार] भवनपति देवों की एक जाति (इक)।

सुवण्ण पुं [दे] अर्जुन वृक्ष (दे ८, ३७)।

सुवण्ण न [सुवर्ण] १ सोना, हेम (उवा; महा; णाया १, १७; गउड)। २ पुं. भवन-पति देवों की एक जाति (भग)। ३ सोलह कर्म-माषक का एक बाँट (अणु १५५)। ४ सुन्दर वर्ण। ५ वि. सुन्दर वर्णवाला (भग)। °आर, °कार पुं [°कार] सोनी, सुनार (दे महा)। °कुंभ पुं [°कुम्भ] प्रथम बलदेव के धर्म-गुरु एक जैन मुनि (पउम २०, २०५)। °कुसुम न [°कुसुम] सुवर्ण-यूथिका लता का फूल (राय ३१)। °कूला स्त्री [°कूला] नदी-विशेष (सम २७; इक)। °गुलिया स्त्री [°गुलिका] एक दासी का नाम (महा)। °सिला स्त्री [°शिला] एक महौषधि (ती ५; राज)। °गर पुं [°कर] सोने की खान (णाया १, १७—पत्र २२८)। °र पुं [°कार] सोनी (उप पृ ३५१)। देखो सुवन्न = सुवर्ण।

सुवण्णबिंदु पुं [दे] विष्णु (दे ८, ४०)।

सुवण्णिअ वि [सौवर्णिक] सुवर्ण-मय, सोने का बना हुआ (हे १; १६०; षड्; प्राकृ ३६)।

सुवत्त देखो सुव्वत्त (राज)।

सुवन्न न [सुवर्ण] १ सोना (सं ५०; प्रासू २; कुप्र १; कुमा)। २ वि. सुन्दर अक्षरवाला (कुप्र १)। °कुमार पुं [°कुमार] भवनपति देवों की एक जाति (भग; सम ८३)। °कूलप्पवाय पुं [°कूलप्रपात] एक ह्रद जहाँ से सुवर्णकूला नदी बहती है (ठा २, ३—पत्र ७२)। °गार पुं [°कार] सोनी (णाया १, ८—पत्र १४०; उप पृ ३५३)। °जूहिया स्त्री [°यूथिका] लता-विशेष (पराग १७—पत्र ५२६)। °यार देखो °गार (सुपा ५६५)। देखो सुवण्ण = सुवर्ण।

सुवन्न वि [सौवर्ण] सोने का बना हुआ (कुप्र ४)।

सुवन्नालुगा स्त्री [दे] दतवन करने का पात्र—लोटा आदि (कुप्र १४०)।

सुवप्प पुं [सुवप्र] एक विजय-क्षेत्र (ठा २, ३—पत्र ८०)।

सुवयण न [सुवचन] सुन्दर वचन (भग)।

सुवर, सुवँर (अप) देखो सुमर। सुवरइ, सुवँरहि (भवि; पि २५१)।

सुवहु देखो सुबहु (प्राप)।

सुवाय पुंन [सुवात] एक देव-विमान (सम १०)।

सुवास पुं [सुवर्ष] १ सुन्दर वृष्टि (उप ८४६)। २ छन्द-विशेष (पिंग)।

सुवासणी देखो सुवासिणी (धर्मवि १२३)।

सुवासव पुं [सुवासव] एक राज-कुमार (विपा २, ४)।

सुवासिणी स्त्री [दे. सुवासिनी] जिसका पति जीवित हो वह स्त्री (सिरि १५६)।

सुवाहा अ [स्वाहा] देवता को हविष आदि अर्पण का सूचक अव्यय (सिरि १६७)।

सुविआज्जअ वि [सुव्यर्जित] विशेष रूप से उपार्जित (तंदु ५६)।

सुविअड्ढ वि [सुविदग्ध] अत्यन्त चतुर (नाट—रत्ना ६)।

सुविइय वि [सुविदित] अच्छी तरह ज्ञात (उव; सुपा ४०४)।

सुविउ वि [सुविद्] अच्छा जानकार (श्रा २८)।

सुविउल वि [सुविपुल] अति विशाल (उव)।

सुविक्कम पुं [सुविक्रम] भूतानन्द नामक इन्द्र के हस्ति-सैन्य का अधिपति (ठा ५, १—पत्र ३०२; इक)।

सुविक्खाय वि [सुविख्यात] सुप्रसिद्ध (सुर ६, ६४)।

सुविगा स्त्री [सुकिका, शुकी] मैना (उप ६७३; ६७५)।

सुविज्जा स्त्री [सुविद्या] उत्तम विद्या (प्रासू ५३)।

सुविण देखो सुमिण (सुर ३, १८१; महा; रंभा)। °न्नु वि [°ज्ञ] स्वप्न-शास्त्र का जानकार (उप पृ ११६; सुर १०, ६८)।

सुविणट्ठ वि [सुविनष्ट] बिलकुल नष्ट (गा ७४०)।

सुविणिच्छिय वि [सुविनिश्चित] अच्छी तरह निर्णीत (उव)।

सुविणिम्मिय वि [सुविनिर्मित] अच्छी तरह बनाया हुआ (णाया १, १—पत्र १२)।

सुविणीय वि [सुविनीत] १ अतिशय दूर किया हुआ (उत्त १, ४७)। २ अत्यन्त विनय-युक्त (दस ६, २, ६)।

सुवित्त न [सुवृत्त] अत्यन्त गोलाकार। २ सदाचार, अच्छा आचरण (सुर १, २१)।

सुवित्थड वि [सुविस्तृत] अति विस्तारयुक्त (अजि ४०; प्रासू १२८; द्र ३८)।

सुवित्थिन्न वि [सुविस्तीर्ण] ऊपर देखो (सुर १, ४५; १२, १)।

सुविधि देखो सुविहि (सम ४३)।

सुविभज्ज वि [सुविभज] जिसका विभाग अनायास हो सके वह (ठा ५, १—पत्र २६६)।

सुविभत्त वि [सुविभक्त] अच्छी तरह विविक्त (णाया १, १ टी—पत्र ५; औप; भग)।

सुविम्हिअ वि [सुविस्मित] अतिशय आश्चर्यान्वित (उत्त २०, १३)।

सुवियक्खण वि [सुविचक्षण] अति चतुर (सुपा १५०)।

सुवियाण न [सुविज्ञान] अच्छा ज्ञान, सुन्दर जानकारी, पंडिताई (सट्ठि १६)।

सुविर वि [स्वप्तृ] स्वपन-शील, सोने की आदतवाला (ओघभा १३३; दे ८, ३६)।

सुविरइय वि [सुविरचित] अच्छी तरह घटित, सुघटित (उवा २०६)।

सुविराइय वि [सुविराजित] सुशोभित (सुपा ३१०)।

सुविराहिय वि [सुविराधित] अतिशय विराधित (उव)।

सुविलास वि [सुविलास] सुन्दर विलासवाला (सुर ३, ११४)।

सुविवेइय वि [सुविवेचित] सम्यग् विवेचित (उव)।

सुविवेच सक [सुवि + विच्] अच्छी तरह व्याख्या करना। संकृ. सुविवेचित (?य) (धर्मसं १३११)।

सुविसट्ट वि [सुविकसित] अच्छी तरह विकसित (सुर ३, १११)।

सुविसत्थ पुं [दे] व्यभिचारी पुरुष (वज्जा ६८)।

सुविसाय पुंन [सुविसात] एक देव-विमान (सम ३८)।

सुविहाणा स्त्री [सुविधाना] विद्या-विशेष (पउम ७, १३७)।

सुविहि पुं [सुविधि] १ नववाँ जिन भगवान् (सम ८५; पडि)। २ पुंस्त्री. सुन्दर अनुष्ठान (पराह २, ५ टी—पत्र १४६)। ३ न. रामचन्द्र तथा लक्ष्मण का एक यान; 'चंकमणं हवइ सुविहि-नामेणं' (पउम ८०, ४)।

सुविहिअ वि [सुविहित] सुन्दर आचरण-वाला, सदाचारी (सम १२५; भास १; उव; स १३०; सार्ध ११५; द्र ३२)।

सुवीर पुं [सुवीर] १ यदुराज का एक पौत्र (अंत)। २ पुंन. एक देव-विमान (सम १२)।

सुवीसत्थ वि [सुविश्वस्त] अच्छी तरह विश्वासप्राप्त (सुर ६, १५६; सुपा २११)।

सुवुण्णा स्त्री [दे] संकेत, इशारा (दे ८, ३७)।

सुवुरिस देखो सुपुरिस (गउड)।

सुवे अ [श्वस्] आगामी कल (हे २, ११४; चंड; कुमा)।

सुवेल पुं [सुवेल] १ पर्वत-विशेष (से ८, ८०)। २ न. नगर-विशेष (पउम ५४,४३)।

सुवो देखो सुवे (षड्; प्राप)।

सुव्व न [शुल्व] १ तांबा, ताम्र (ती २)। २ रज्जु रस्सी। ३ जल-समीप। ४ आचार। ५ यज्ञ का कार्य (हे २, ७९)।

सुव्वंत देखो सुण।

सुव्वत देखो सुव्वय (ठा २, ३—पत्र ७८)।

सुव्वत्त वि [सुव्यक्त] स्फुट, सुस्पष्ट (अंत २०; औप; नाट—मृच्छ २८)।

सुव्वमाण देखो सुण।

सुव्वय पुं [सुव्रत] १ भारतवर्ष में उत्पन्न बीसवें जिनदेव, मुनिसुव्रत स्वामी (ती ८; पव ३५)। २ ऐरवत वर्ष के एक भावी जिनदेव (सम १५४)। ३ छठवें जिनदेव के गणधर (१५२)। ४ एक जैन मुनि जो तीसरे बलदेव के पूर्व जन्म में गुरु थे (पउम २०, १९२)। ५ आठवें बलदेव के धर्म-गुरु (पउम २०, २०६)। ६ भगवान् पार्श्वनाथ का मुख्य श्रावक (कप्प)। ७ एक ज्योतिष्क महा-ग्रह (राज)। ८ एक दिवस का नाम (आचा २, १५, ५; कप्प)। ९ न. एक गोत्र (कप्प)। १० वि. सुन्दर व्रतवाला (पव ३५)। °ग्गि पुं [°ग्नि] एक दिवस का नाम (कप्प)।

सुव्वया स्त्री [सुव्रता] १ भगवान् धर्मनाथ की माता (सम १५१)। २ एक जैन साध्वी (सुर १५, २४७; महा)।

सुव्विआ स्त्री [दे] अम्बा, माता (दे ८, ३८)।

सुस देखो सूस; 'सुसइ व पंकं न वहंति निज्झरा वरहिणो न नच्चंति' (वज्जा १३४; भवि)। कृ. सुसियव्व (सुर ४, २२९)।

सुसंगद वि [सुसंगत] अति-संबद्ध (प्राकृ १२)।

सुसंजमिअ वि [सुसंयमित] अति-नियन्त्रित (दे)।

सुसंडिआ स्त्री [दे] शूला-प्रोत मांस (दे ८, ३९)।

सुसंतय वि [सुसरक] अति सुन्दर; 'अहो जणा कुणह तवं सुसंतयं' (पउम ८८, ५१)।

सुसंनिविट्ठ वि [सुसंनिविष्ट] अच्छी तरह स्थित (सुपा १३३)।

सुसंपरिग्गहिय वि [सुसंपरिगृहीत] खूब अच्छी तरह ग्रहण किया हुआ (राय ६३)।

सुसंपिणद्ध वि [सुसंपिनद्ध] खूब अच्छी तरह बँधा हुआ (राय)।

सुसंभंत वि [सुसंभ्रान्त] अतिशय व्याकुल (उत्त २०, १३)।

सुसंभिअ वि [सुसंभृत] अच्छी तरह संस्कृत (स १८९; उप ६४८ टी)।

सुसंमय वि [सुसंमत] अच्छी तरह संमति-युक्त (सुर १०, ८२)।

सुसंवुअ } वि [सुसंवृत] १ परिगत, **सुसंवुड** } व्याप्त। २ अच्छी तरह पहना हुआ (णाया १, १—पत्र १९; पि २१९)। ३ जितेन्द्रिय। ४ रुका हुआ (उत्त २, ४२)।

सुसंहय वि [सुसंहत] अतिशय संश्लिष्ट (औप)।

सुसज्ज वि [सुसज्ज] अच्छी तरह तय्यार (सुपा ३११)।

सुसण्णप्प देखो सुसन्नप्प (राज)।

सुसद्द वि [सुशब्द] १ सुन्दर आवाजवाला। २ प्रसिद्ध, विख्यात (सुपा ५६९)।

सुसन्नप्प वि [सुसंज्ञाप्य] सुख-बोध्य (कस)।

सुसमत्थ वि [सुसमर्थ] सुशक्त, अतिशय सामर्थ्यवाला (सुर १, २३२)।

सुसमदुस्समा } स्त्री [सुषमदुष्षमा] काल-**सुसमदूसमा** } विशेष, अवसर्पिणी-काल का तीसरा और उत्सर्पिणी का चौथा आरा (इक; ठा २, ३—पत्र ७६)।

सुसमसुसमा स्त्री [सुषमसुषमा] काल-विशेष, अवसर्पिणी का पहला और उत्सर्पिणी का छठवाँ आरा (इक; ठा १—पत्र २७)।

सुसमा स्त्री [सुषमा] १ काल-विशेष, अवसर्पिणी का दूसरा और उत्सर्पिणी का पाँचवाँ आरा (ठा २, ३—पत्र ७६; इक)। २ छन्द-विशेष (पिंग)।

सुसमाहर सक [सुसमा + हृ] अच्छी तरह ग्रहण करना। सुसमाहरे (सूअ १, ८, २०)।

सुसमाहिअ वि [सुसमाहित] अच्छी तरह समाधिसंपन्न (दस ५, १, ६; उत्त २०, ४)।

सुसमिद्ध वि [सुसमृद्ध] अत्यन्त समृद्ध (नाट—मृच्छ १५९)।

सुसर पुंन [सुस्वर] १ एक देव-विमान (सम १७)। २ न. नामकर्म का एक भेद, जिसके उदय से सुन्दर स्वर की प्राप्ति हो वह कर्म (सम ६७; कम्म १, २६; ५१)। देखो सुस्सर, सुस्सूर।

सुसा स्त्री [स्वसृ] बहिन, भगिनी (सूअ १, ३, १, १ टी)।

सुसा देखो सुण्हा = स्नुषा (कुमा)।

सुसागय न [सुस्वागत] सुन्दर स्वागत (भग)।

सुसागर पुंन [सुसागर] एक देव-विमान (सम २)।

सुसाण न [श्मशान] मुर्दाघाट, मरघट (णाया १, २—पत्र ७९; हे २, ८६; स ५६७; श्रा १४; महा)।

सुसामण्ण न [सुश्रामण्य] अच्छा साधुपन (उवा)।

सुसाय वि [सुस्वाद] स्वादिष्ठ, सुन्दर स्वाद-वाला (पउम ८२; ९९; १०२, १२२)।

सुसाल पुंन [सुशाल] एक देव-विमान (सम ३५)।

सुसावग } पुं [सुश्रावक] अच्छा श्रावक—**सुसावय** } जैन गृहस्थ (कुमा; पडि; द्र २१)।

सुसाहय देखो सुसंहय (पण्ह १, ४—पत्र ७९)।

सुसाहु पुं [सुसाधु] उत्तम मुनि (पण्ह २, १—पत्र १०१; उव)।

सुसिअ वि [शुष्क] सूखा हुआ (सुपा २०४; कुप्र १३)।

सुसिअ वि [शोषित] सुखाया हुआ (महा; वज्जा १५०; कुप्र १३)।

सुसिक्खिअ वि [सुशिक्षित] अच्छी तरह शिक्षा को प्राप्त (मा २०)।

सुसिणिद्ध वि [सुस्निग्ध] अत्यन्त स्नेह-युक्त (सुर ४, १९९)।

सुसित्थ देखो सुत्थ = सौस्थ्य (संक्षि १२)।

सुसिन्न वि [सुशीर्ण] अति सड़ा हुआ (सुपा ४९६)।

सुसिर वि [शुषिर] १ पोला, खाली। छूंछा (उप ७२८ टी; कुप्र १९२)। २ पुंन. एक देव-विमान (सम ३७)।

सुसिलिट्ठ वि [सुश्लिष्ट] सुसंगत, अति संबद्ध (सुर १०, ८२; पंचा १८, २३)।

सुसिस्स पुं [सुशिष्य] उत्तम चेला (उप पृ ४०१)।

सुसीअ वि [सुशीत] अति शीतल (कुमा)।

सुसीम न [सुसीम] नगर-विशेष (उप ७२८ टी)।

सुसीमा स्त्री [सुसीमा] १ भगवान् पद्मप्रभ की माता (सम १५१)। २ कृष्ण वासुदेव की एक पत्नी (अंत १५)। ३ वत्स नामक विजय-क्षेत्र की एक राजधानी (ठा २, ३—पत्र ८०)।

सुसील न [सुशील] १ उत्तम स्वभाव (पउम १४, ४४)। २ वि. उत्तम स्वभाववाला, सदाचारी (प्रासू ८)। °**वंत** वि [°वत्] सदाचारी (पउम १४, ४४; प्रासू ३६)।

सुसु पुं [शिशु] बच्चा, बालक। °**मार** पुं [°मार] जलचर प्राणी की एक जाति, महिषाकार मत्स्य-विशेष (पि ११७)। °**मारिया** स्त्री [°मारिका] वाद्य-विशेष (राय ४६)। देखो **सुंसुमार**।

सुसुज्ज पुंन [सुसूर्य] एक देव-विमान (सम १५)।

सुसुमार पुं [सुसुमार] जलचर जन्तु की एक जाति (जी २०)। देखो **सुसु-मार**।

सुसुगंध वि [सुसुगन्ध] १ अत्यन्त सुगन्धी (पउम ६, ४१; गउड)। २ पुं. अत्यन्त खुशबू (गउड)।

सुसुर देखो **ससुर** (धर्मवि ११४; सिरि ३३४; ३४५; ३४७; ६८८)।

सुसुहंकर पुं [सुशुभङ्कर] छन्द का एक भेद (पिंग)।

सुसूर पुंन [सुसूर] एक देव-विमान (सम १०)।

सुसेण पुं [सुषेण] १ सुग्रीव का श्वसुर (से ४, ११; १३, ८४)। २ एक मंत्री (विपा १, ४—पत्र ५४)। ३ भरत चक्रवर्ती का मन्त्री (राज)।

सुसेणा स्त्री [सुषेणा] एक बड़ी नदी (ठा ५, ३—पत्र ३५१)।

सुसोह वि [सुशोभ] अच्छी शोभावाला (सुपा २७५)।

सुसोहिय वि [सुशोभित] शोभा-संपन्न, समलंकृत (उप ७२८ टी)।

सुस्स अक [शुष्] सूखना। सुस्से (सूअ १, २, १, १६)। वकृ. **सुस्संत** (स १६६)।

सुस्समण पुं [सुश्रमण] उत्तम साधु (उव)।

सुस्सर वि [सुस्वर] सुन्दर आवाजवाला (सुपा २८६)। देखो **सुसर**।

सुस्सरा स्त्री [सुस्वरा] गीतरति तथा गीतयश नाम के गन्धर्वेन्द्रों की एक एक अग्रमहिषी का नाम (ठा ४, १—पत्र २०४; इक)।

सुस्सार वि [सुसार] सार-युक्त (भवि)।

सुस्सावग, **सुस्सावय** } देखो **सुसावग** (उव; श्रा १२)।

सुस्सील देखो **सुसील** (सुपा ११०; ५०८)।

सुस्सुअ देखो **सुसुअ** (राज)।

सुस्सुयाय अक [सुसुकाय्, सूत्कारय्] सु सु आवाज करना, सूत्कार करना। संकृ. **सुस्सुयाइत्ता** (उत्त २७, ७)।

सुस्सू स्त्री [श्वश्रू] सासू (बृह २)।

सुस्सूस सक [शुश्रूष्] सेवा करना। सुस्सूसइ (उव; महा)। वकृ. **सुस्सूसंत, सुस्सूसमाण** (कुलक ३४; भग; औप)। हेकृ. **सुस्सूसिदुं** (शौ) (मा ३६)।

सुस्सूसअ वि [शुश्रूषक] सेवा करनेवाला (कप्पू)।

सुस्सूसण न [शुश्रूषण] सेवा, शुश्रूषा (कुप्र २४७; रत्न २१)।

सुस्सूसणया, **सुस्सूसणा** } स्त्री [शुश्रूषणा] ऊपर देखो (उत्त २६, १; औप; णाया १, १३—पत्र १७८)।

सुस्सूसा स्त्री [शुश्रूषा] ऊपर देखो (सुपा १२७)।

सुह देखो **सोह**=शुभ्। सुहइ (वज्जा १४; पिंग)।

सुह सक [सुखय्] सुखी करना। सुहइ (पिंग), सुहेदि (शौ) (अभि ८६)।

सुह देखो **सुभ** (हे ३, २६; ३०; कुमा; सुपा ३६०; कम्म १, ५०)। °**अ** वि [°द] मंगलकारी (कुमा)। °**कम्मि** वि [°कर्मिक] पुण्यशाली (भवि)। °**काम** वि [°काम] मङ्गल की चाहवाला (सुपा ३२६)। °**गर** वि [°कर] मङ्गल-जनक (कुमा)। °**णामा** स्त्री [°नामा] पक्ष की पाँचवीं, दसवीं तथा पनरहवीं रात्रि-तिथि (सुज्ज १०, १५)। °**त्थि** वि [°ार्थिन्] १ शुभेच्छक (भग)। २ शुभ अर्थवाला (णाया १, १—पत्र ७४)। °**द** देखो °**अ** (कुमा)।

सुह न [सुख] १ आनन्द, चैन, मजा। २ आराम, शान्ति (ठा ३, १—पत्र ४७; ३, १—पत्र ११४; भग; स्वप्न २३; प्रासू १३३; हे १, १७७; कुमा)। ३ निर्वाण, मुक्ति। ४ वि. जितेन्द्रिय (विसे ३४४३; ३४४४)। ५ सुख-प्रद, सुख-जनक (णाया १, १२—पत्र १७४; आचा; कम्म १, ५१)। ६ अनुकूल (णाया १, १२)। ७ सुखी (हे ३, १६)। °**अ** वि [°द] सुख-दायक (सुर २, ६५; सुपा ११२; कुमा)। °**इत्तअ** वि [°वत्] सुखी (पि ६००)। °**कर** वि [°कर] सुख-जनक (हे १, १७७)। °**कामि** वि [°कामिन्] सुखाभिलाषी (ओघ ११६)। °**त्थि** वि [°ार्थिन्] वही अर्थ (आचा)। °**द** वि [°द] सुख-दाता (वे १०३; कुमा)। °**दाय** वि [°दाय] वही (पउम १०३, १६२)। °**फंस** वि [°स्पर्श] कोमल (पात्र)। °**यर** देखो °**कर** (हे १, १७७; कुमा; सुपा ३)। °**संझा** स्त्री [°सन्ध्या] सुख-जनक सायंकाल (कप्पू)। °**वह** वि [°वह] १ सुख-जनक (श्रा २८; उव; सं ६७)। २ पुंन. एक पर्वत-शिखर (ठा २, ३—पत्र ८०)। °**ासण** न [°ासन] आसन-विशेष, पालकी (सुर २, ६०; सुपा २७८; कप्प)। °**ासिया** स्त्री [°ासिका] सुख से बैठना, सुखी स्थिति (प्रासू ८५)।

सुहउत्थिआ स्त्री [दे] दूती (दे ८, ६)।

सुहंकर वि [सुखकर] सुख-कारक (सिरि ३६, कुमा)।

सुहंकर वि [शुभकर] १ शुभ कारक (कुमा)। २ पुं. एक वणिक् का नाम (उप ५०७ टी)।

सुहंभर वि [सुखम्भर] सुखी (गउड)।

सुहग देखो सुभग (रयण ४०; गा ६; नाट—मालवि २८)।

सुहड पुं [सुभट] योद्धा (सुर २, २६; कुमा; प्रासू ७४; सण)।

सुहड वि [सुहृत] अच्छी तरह हरण किया हुआ (दस ७, ४१)।

सुहत्थ वि [सुहस्त] १ अच्छा हाथवाला, हाथ की लघुतावाला, हाथ से शीघ्र-शीघ्र काम करने में समर्थ (से १२, ५५)। २ दाता, दानशील (भवि)।

सुहत्थि पुं [सुहस्तिन्] १ गन्ध-हस्ती (णाया १, १—पत्र ७४; उवा)। २ एक जैन महर्षि (कप्प; पडि)।

सुहद्द न [सौहार्द] १ स्नेह। २ मित्रता (भवि)।

सुहम न [सूक्ष्म] १ फूल, पुष्प (दसनि १, ३६)। २ देखो सण्ह; सुहुम = सूक्ष्म (हे २, १०१; चंड)।

सुहम्म पुं [सुधर्मन्] १ भगवान् महावीर का पट्टधर शिष्य (विपा १, १—पत्र १)। २ बारहवें जिनदेव का प्रथम शिष्य (सम १५२)। ३ एक यक्ष का नाम (विपा १, १—पत्र ४; १, २—पत्र २१)। °सामि पुं [°स्वामिन्] भगवान् महावीर का पट्टधर शिष्य (भग)। देखो सुधम्म।

सुहम्म° देखो सुहम्मा। °वइ पुं [°पति] इन्द्र (महा)।

सुहम्ममाण वि [सुहन्यमान] जो अच्छी तरह मारा जाता हो वह (पि ५४०)।

सुहम्मा स्त्री [सुधर्मा] चमर आदि इन्द्रों की सभा, देव-सभा (सम १५; भग)।

सुहय देखो सुह-अ = सुख-द, शुभ-द।

सुहय देखो सुभग (गउड; सण; हेका २७२; कुमा)।

सुहय वि [सुहत] अच्छी तरह जो मारा गया हो वह (कुप्र २२६)।

सुहर वि [सुभर] सुख से भरने योग्य (दस ८, २५)।

सुहरअ देखो सुहराय (षड्)।

सुहरा स्त्री [दे. सुगृहा] पक्षि-विशेष, सुघरी (से ८, ३६)।

सुहराय पुं [दे] १ वेश्या का घर। २ चटक, गैरैया पक्षी (दे ८, ५६)।

सुहल्ली स्त्री [दे] सुख, आनन्द (दे ८, ३६)।

सुहव देखो सुभग (वज्जा ९६; संक्षि ६)। स्त्री. °वी (प्राकृ ३७)।

सुहा अक [सु + भा] अच्छा लगना, 'न सुहाइ गोमईए सासू' (कुप्र ३५२)।

सुहा देखो छुहा = सुधा (स २८२; कुमा; सण)। °कम्मत न [°कर्मान्त] चूने का कारखाना (आचा २, २, २, ९)। °हार पुं [°हार] देव, देवता (स ७५५)।

सुहा, सुहाअ, सुहाव अक [सुखाय्] १ सुख पाना। २ सक. सुखी करना। सुहाइ, सुहाअई, सुहावइ, सुहावेइ (भवि; गा ६१७; पि ५५८; से १२, ८६; वज्जा १६४; भवि; उव)। वकृ. सुहाअंत (से १, २८; नाट—रत्ना ६१)।

सुहाव देखो सहाव = स्वभाव (गा ५०८; वज्जा १०)।

सुहावण वि [सुखायन] सुख-जनक (सण; भवि)।

सुहावय वि [सुखायक] ऊपर देखो (वज्जा ४६४; भवि)।

सुहासिय वि [सुभाषित] १ सम्यग् उक्त (पण्ह १, १—पत्र १)। २ न. सुन्दर वचन, सूक्त (स ७६१; सुपा ५१४)।

सुहि वि [सुखिन्] सुख-युक्त (सुपा ३१२; ४३१)।

सुहि, सुहिअ पुं [सुहृद्] मित्र, दोस्त (ठा ४, ३—पत्र २४३; णाया १, २—पत्र ९०; उत्त २०, ९; सुर ४, ७६; सुपा १०७; ४१६; प्रयौ ३६; सुर ३, १५४; भवि)।

सुहिअ वि [सुखित] सुखी, सुख-युक्त (से २, ८; गा ४१८; कुप्र ४०६; उव; कुमा)।

सुहिअ वि [सुहित] १ तृप्त (से २, ८)। २ सुन्दर हितवाला (धर्म २)।

सुहिट्ठ वि [सुहृष्ट] अति हर्षित (उप ७२८ टी)।

सुहिर देखो सुसिर; 'भवनामंतो पुहहि अंतो सुहिरं व चरणाघाएहिं' (धर्मवि १२४; रंभा)।

सुहिरण्णा, सुहिरण्णिया, सुहिरन्निया स्त्री [सुहिरण्या, °ण्यिका] वनस्पति-विशेष, पुष्प-प्रधान वृक्ष-विशेष (राय ३१; राज; पण्ह १७—पत्र ५२६)।

सुहिरीमण वि [सुह्रीमनस्] अत्यन्त लज्जालु, अतिशय शरमिन्दा (सूअ १, ४, २, १७; राज)।

सुहिल्लिया देखो सुहेल्लि; 'सुहिल्लियं अट्ठियं रसं मुणओ' (भत्त १४२)।

सुही वि [सुधी] पंडित, विद्वान् (सिरि ४०)।

सुहुम वि [सूक्ष्म] १ बारीक, अत्यन्त छोटा। २ तीक्ष्ण (हे १, ११८; २, ११३; कुमा; जी १४)। ३ पुं. भारत वर्ष के एक भावी कुलकर पुरुष (सम १५३)। ४ एकेन्द्रिय जीव-विशेष (ठा ८; कम्म ४, २; ५)। ५ न. कर्म-विशेष (सम ६७)। °संपराग, °संपराय पुंन [°संपराय] १ चारित्र-विशेष (ठा ५, २—पत्र ३२२)। २ दशवाँ गुण-स्थानक (सम २६)। देखो सण्ह, सुहम = सूक्ष्म।

सुहुय वि [सुहुत] अच्छी तरह होम किया हुआ (उत्त २८० टी; कप्प; औप)।

सुहेल्लि स्त्री [दे. सुखकेलि] सुख, आनन्द, मजा (दे ८, ३६; पाअ; गा १०८; २११; २६१; २८८; ३६८; ५५६; ८६४; स ७२)।

सुहेसि वि [सुखैषिन्] सुखाभिलाषी (सुपा २२७)।

सू अ. निन्दा-सूचक अव्यय (नाट)।

सूअ सक [सूचय्] १ सूचना करना। २ जानना। ३ लक्ष करना। सूएइ, सूअंति, सूएमो (विसे १३६८; स २४८; गउड; पिंड ४१७)। कर्म. सूइज्जइ (गा ३२९)। वकृ. सूयंत, सूयअंत (गउड; स ३६६)। कवकृ. सूइज्जंत (चेइय ९०५)। कृ. सूएअव्व (से १०, २८)।

सूअ पुं [सूद] रसोइया (महा)।

सूअ पुं [सूत] १ सारथि, रथ हाँकनेवाला (पाअ)। २ वि. प्रसूत, जिसने जन्म दिया हो वह; 'मु(? सू)यगोव्व अदूरए' (सूअ १, ३, २, ११)। °गड पुंन [°कृत] दूसरा जैन अंग-ग्रन्थ (सूअनि २)।

सूअ पुं [शूक] धान्य आदि का तीक्ष्ण अग्र भाग (गउड; गा ५६८)।

सूअ वि [शून] फुला हुआ, सूजनवाला; 'सूय-मुहं सूयहत्थं सूयपायं' (विपा १, ७—पत्र ७३)।

सूअ पुं [सूप] दाल (पव ६१, टी; उवा; पण्ह २, ३—१२३; सुपा ५७)। °आर, °यार, °ार पुं [°कार] रसोइया (स १७; कुप्र ६६; ३७; श्रावक ६३ टी)। °ारिणी स्त्री [°कारिणी] रसोई बनानेवाली स्त्री (पउम ७७, १०६)।

सूअ देखो सुत्त = सूत्र। °गड पुंन [°कृत] दूसरा जैन अंग-ग्रन्थ; 'आयारो सूयगडो' (सूअ २, १, २७; सम १)।

सूअअ, सूअक, सूअग वि [सूचक] १ सूचना करनेवाला (वेणी ४५; श्रा ११; सुर २, २२६)। २ पुं. पिशुन, खल, दुर्जन (पण्ह १, २—पत्र २८)। ३ गुप्त दूत, जासूस (प्राप्र)।

सूअग, सूअय न [सूतक] सूतक, जनन और मरण की अशुद्धि (पंचा १३, ३८; वव १)।

सूअण न [सूचन] सूचना (उव; सुर २, २३३)।

सूअर पुं [शूकर] सूअर, वराह (उवा; विपा १, ३—पत्र ५३; प्रयौ ७०)। °वल्ल पुं [°वल्ल] अनन्तकाय वनस्पति-विशेष (पव ४; श्रा २०)।

सूअरिअ वि [दे] यन्त्र-पीडित (दे ८, ४१ टी)।

सूअरिया, सूअरी स्त्री [दे] यन्त्र-पीड़ना (सुर १३, १५७; दे ८, ४१)।

सूअल न [दे] किशारु, धान्य का तीक्ष्ण अग्र भाग (दे ८, ३८)।

सूआ स्त्री [सूचा] सूचन, सूचना (पिंड ४३७; उप ५०; सूअनि २)। °कर वि [°कर] सूचक (उप ७६८ टी)।

सूआ, सूइ स्त्री [सूति] प्रसव, प्रसूति, जन्म (पउम २६, ८५; १, ६१; सुपा २३)। °कम्म न [°कर्मन्] प्रसव-क्रिया (सुर १०, १; सुपा ४०)। °हर न [°गृह] प्रसूति-गृह (पउम २६, ८५)।

सूइ स्त्री [सूचि] देखो सूई (आचा; सम १४६; राय २७)।

सूइअ वि [सूचित] जिसकी सूचना की गई हो वह (महा)। २ उक्त, कथित (पाअ)। ३ व्यञ्जनादि-युक्त (खाद्य) (दस ५, १, ६८)।

सूइअ वि [सूत] प्रसूत, जिसने जन्म दिया हो वह, ब्यायी; 'सारणं सूइअं गाविं' (दस ५, १, १२)।

सूइअ पुं [सूचिक] दरजी (कुप्र ४०१)।

सूइअ पुं [दे] चण्डाल (दे ८, ३६)।

सूइय न [सुप्त] निद्रा; 'सेज्जं अत्थरिऊण अलियसूइयं काऊण अच्छंति' (महा)।

सूइय वि [दे. सूप्य, सूपिक] भीजा हुआ (खाद्य); 'अवि सूइयं वा सुक्कं वा' (आचा)।

सूइया स्त्री [सूतिका] प्रसूति-कर्म करनेवाली स्त्री (सम्मत्त १४५)।

सूई स्त्री [सूची] कपड़ा सीने की सलाई, सूई (पण्ह १, ३—पत्र ४४; गा ३६४; ५०२)। २ परिमाण-विशेष, एक अंगुल लम्बी एक प्रदेशवाली श्रेणी (अणु १५८)। ३ दो तख्तों के जोड़ने के काम में आती एक तरह की पतली कील (राय २७; ८२)। °फलय न [°फलक] तख्ते का वह हिस्सा, जहाँ सूची-कीलक लगाया गया हो (राय ८२)। °मुह पुं [°मुख] १ पक्षि-विशेष (पण्ह १, १—पत्र ८)। २ द्वीन्द्रिय जन्तु की एक जाति (पण्ण १—पत्र ४४)। ३ न. जहाँ सूची-कीलक तख्ते का छेद कर भीतर घुसता है उसके समीप की जगह (राय ८२)।

सूई स्त्री [दे] मंजरी (दे ८, ४१)।

सूई° देखो सूइ = सूति (सुपा २६५)।

सूड सक [भञ्ज्, सूद्] भाँगना, तोड़ना, विनाश करना। सूडइ (हे ४, १०६)। कर्म. सूडिज्जंतु (पण्ह १, २—पत्र २६)।

सूडण न [सूदन] १ भञ्जन, विनाश (गउड)। २ वि. विनाशक (पव २७१)।

सूण वि [शून] सूजा हुआ, सूजन से फुला हुआ (पउम १०३, १४८; गा ६३६; स ३७१; ४८०)।

सूण°, सूणा स्त्री [सूना] वध-स्थान (निर १, १; मा ३४; कुप्र २७६)। °वइ पुं [°पति] कसाई (दे २, ७०)।

सूणिय वि [शूनिक] १ सूजन का रोगवाला, जिसका शरीर सूज गया हो वह। २ न. सूजन (आचा)।

सूणु पुं [सूनु] पुत्र, लड़का (कुप्र ३१६)।

सूतक देखो सूअय = सूतक (वव १)।

सूप देखो सूअ = सूप (पण्ह २, ५—पत्र १४८)।

सूभग देखो सुभग; 'सूभग दूभगनामं सूसर तह दूसरं चेव' (धर्मसं ६२०; श्रावक २३)।

सूभग देखो सोभग्ग (पिंड ५०२)।

सूमाल देखो सुउमाल (पण्ह १, ४—पत्र ७८; णाया १, १—पत्र ४७; १, १६—पत्र २००; कप्प; सुर १३, ११८; कुप्र ५५)।

सूर सक [भञ्ज्] तोड़ना, भाँगना। सूरइ (हे ४, १०६)।

सूर वि [शूर] १ पराक्रमी, वीर (ठा ४, ३—पत्र २३७; कप्प; सुपा २२२; ४१२; प्रासू ७१)। २ पुं. एक राजा (सुपा ६२२)। ३ पुंन. एक देव-विमान (देवेन्द्र १४३)। °सेण पुं [°सेन] एक भारतीय देश, जिसकी प्राचीन राजधानी मथुरा थी (विचार ४६; पउम ६८, ६६; ती १४; विक्र ६१; सत्त ६७ टी)। २ ऐरवत वर्ष के एक भावी जिन-देव (सम १५४)। ३ एक जैनाचार्य (उप ७२८ टी)। ४ भगवान् आदिनाथ का एक पुत्र (ती १४)।

सूर पुं [सूर, सूर्य] १ सूर्य, रवि (हे २, ६४; ठा २, ३—पत्र ८५; उव; सुपा २२२; ६२२; कप्प; कुमा)। २ सतरहवें जिन-देव का पिता (सम १५१)। ३ इक्ष्वाकु-वंश का एक राजा (पउम ५, ६)। ४ एक लंका-पति (पउम ५, २६३)। ५ एक द्वीप का नाम (सुज्ज १६)। ६ एक राजा (सुपा ५५६)। ७ छन्द का एक भेद (पिंग) ८ पुंन. एक देव-विमान (सम १०)। °अंत, °कंत पुं [°कान्त] १ मणि-विशेष (स ६, ५०; पउम ३, ७५; पण्ण १—पत्र २६; उत्त ७७)। २ पुंन. एक देव-विमान (देवेन्द्र १४४; सम १०)। °कूड पुंन [°कूट] एक देव-विमान—देव-भवन (सम १०)। °ज्झय पुंन [°ध्वज] एक देव-विमान (सम १०)।

°दीव पुं [°द्वीप] द्वीप-विशेष (इक)। °देव पुं [°देव] आगामि उत्सर्पिणी-काल में होनेवाले भारतवर्ष के दूसरे जिनदेव (सम १५३)। °पन्नत्ति स्त्री [°प्रज्ञप्ति] एक जैन उपाङ्ग-ग्रंथ (ठा ३, २—पत्र १२६)। °परिवेस पुं [°परिवेष] मेघ आदि से होता सूर्य का वलयाकार मंडल (अणु १२०)। °पव्वय पुं [°पर्वत] पर्वत-विशेष (ठा २, ३—पत्र ८०)। °पाया स्त्री [°पाका] सूर्य के किरण से होनेवाली रसोई (कुप्र ६६)। °प्पभ पुंन [°प्रभ] एक देव-विमान (सम १०)। °प्पभा, °प्पहा स्त्री [°प्रभा] १ सूर्य की एक अग्र-महिषी (इक, णाया २—पत्र २५२)। २ ग्यारहवें जिनदेव की दीक्षा-शिविका (सम १५१)। ३ आठवें जिनदेव की दीक्षा-शिविका (विचार १२६)। °मल्लिया स्त्री [°मल्लिका] वनस्पति-विशेष (राय ७६)। °मालिया स्त्री [°मालिका] आभरण-विशेष (औप)। °लेस पुंन [°लेश्य] एक देव-विमान (सम १०)। °वक्कय न [°वक्रक] आभूषण-विशेष (औप)। °वर पुं [°वर] १ एक द्वीप। २ एक समुद्र (सुज्ज १९)। °वरोभास पुं [°वरावभास] १ द्वीप-विशेष। २ समुद्र-विशेष (सुज्ज १९)। °वल्ली स्त्री [°वल्ली] लता-विशेष (पण्ण १—पत्र ३३)। °वेग पुं [°वेग] एक राज-कुमार (उप १०३१ टी)। °सिंग पुंन [°शृङ्ग] एक देव-विमान (सम १०)। °सिट्ठ पुंन [°सृष्ट] एक देव-विमान (सम १०)। °सिरी स्त्री [°श्री] सातवें चक्रवर्ती की स्त्री (सम १५२)। सुअ पुं [°सुत] शनैश्चर-ग्रह (हाट—मृच्छ १९२)। °ाभ पुंन [°ाभ] एक देव-विमान (सम १४; पव २६७)। °ावत्त पुंन [°ावर्त] एक देव-विमान (सम १०)। देखो सुज्ज।

सूरंग पुं [दे] प्रदीप, दीपक (दे ८, ४१; षड्)।

सूरंगय पुं [सुराङ्गज] एक राजा (उप १०३१ टी)।

सूरण पुं [दे. सूरण] कन्द-विशेष, सूरन, ओल (दे ८, ४१; पण्ण १—पत्र ३६, उत्त ३६ ९९; पंचा ५, २०)।

सूरद्धय पुं [दे] दिन, दिवस (दे ८, ४२; षड्)।

सूरल्लि पुंस्त्री [दे] १ मध्याह्न, दुपहर का समय (दे ८, ५७; षड्)। २ कीट-विशेष, मशक के समान आकृतिवाला कीट (दे ८, ५७)। ३ तृण-विशेष, ग्रामणी नामक तृण (दे ८, ५७; जीव ३, ४; राय)।

सूरि पुं [सूरि] आचार्य (जी १; सण)।

सूरिअ वि [भग्न] भाँगा हुआ (कुमा)।

सूरिअ देखो सुज्ज (हे २, १०७; सम ३६; भग; उप ७२८ टी)। °कंत पुं [°कान्त] प्रदेशि-नामक राजा का पुत्र (भग ११, ९—पत्र ५१४; कुप्र १४८)। °कंता स्त्री [°कान्ता] प्रदेशी राजा की पत्नी (कुप्र १४६)। °पाग पुंस्त्री [°पाक] सूर्य के ताप से होनेवाली रसोई (कुप्र ७०)। स्त्री. °गा (कुप्र ६८)। °लेस्सा स्त्री [°लेश्या] सूर्य की प्रभा (सुज्ज ५—पत्र ७६)। °ाभ पुं [°ाभ] १ प्रथम देवलोक का एक देव (राय १४; धर्मवि ९)। २ पुंन. एक देव-विमान। ३ न. सूर्याभ देव का सिंहासन (राय १४)। °ावत्त पुं [°ावर्त] मेरु पर्वत (सुज्ज ५; इक)। °ावरण पुं [°ावरण] मेरु पर्वत (सुज्ज ५; इक)।

सूरिल्ल पुं [दे] श्वशुर पक्ष (?), 'महंतं मे सओयणं ति साहिऊण सुरिलस्स समागओ चेव' (स ५१०)।

सूरिस देखो सुउरिस (हे १, ८)।

सूरुत्तरवडिंसग पुंन [सूरोत्तरावतंसक] एक देव-विमान (सम १०)।

सूरुल्लि देखो सूरल्लि (राय ८० टी)।

सूरोद पुं [सूरोद] एक समुद्र (सुज्ज १९)।

सूरोदय न [सूरोदय] नगर-विशेष (पउम ८, १८६)।

सूरोवराग पुं [सूरोपराग] सूर्य-ग्रहण (भग)।

सूल पुंन [शूल] १ लोहे का सुतीक्ष्ण काँटा, शूली (विपा १, ३—पत्र ५३; औप)। शस्त्र-विशेष, त्रिशूल (पण्ह १, १—पत्र १८; कुमा)। ३ रोग-विशेष (प्रासू १०५)। ४ बबूल आदि का तीक्ष्ण अग्र भागवाला काँटा (कुप्र ३७)। पुं. ब. देश-विशेष (पउम ९८, ६५)। °पाणि पुं [°पाणि] यक्ष-विशेष (कम्म ५)। °धर पुं [°धर] शिव, महादेव (पिंग)।

सूलच्छ न [दे] पल्वल, छोटा तालाब (दे ८, ४२)।

सूलत्थारी स्त्री [दे] चण्डी, पार्वती (दे ८, ४२)।

सूला स्त्री [शूला] शूली, सुतीक्ष्ण लोह-कंटक (गा ६४; उप ३३९ टी; धर्मवि १३७)। °इय वि [°चित, °तिग] शूली पर चढ़ाया हुआ (णाया १, ९—पत्र १५७, १६३; राय १३४)।

सूला स्त्री [दे] वेश्या, वारांगना (दे ८, ४१)।

सूलि वि [शूलिन्] १ शूल-रोगवाला; 'जह विदलं सूलीणं' (वि ३)। २ पुं शिव, महादेव (पाअ)।

सूलिआ स्त्री [शूलिका] शूली, जिसपर वध्य को चढ़ाया जाता है (पण्ह १, १—पत्र ८)।

सूव पुं [सूप] दाल (उवा; ओघ ७१४; चारु ६; पिंड ६२४; पंचा १०, ३७)। °यार, °ार पुं [°कार] रसोइया, रसोई बनानेवाला नौकर (पउम ११३, ७; सुर १६, ३८; उप ३०२)।

सूस अक [शुष्] सूखना। सूसइ, सूसंति, सूसइरे (हे ४, २३६; प्राकृ ६८; कुमा ३७४; हे ३, १४२)।

सूसर वि [सुस्वर] १ सुन्दर आवाजवाला (सुर १६, ४६)। २ न. नामकर्म का एक भेद, जिसमे सुन्दर स्वर की प्राप्ति हो वह कर्म (धर्मसं ६२०; श्रावक २३; कम्म १, २२)। °परिवादिणी स्त्री [°परिवादिनी] एक तरह की वीणा (पण्ह २, ५—पत्र १४९)।

सूसास वि [सोच्छ्वास] ऊर्ध्व श्वासवाला (हे १, १५७; कुमा)।

सूसिय वि [शोषित] सुखाया हुआ (सुर १५, २४८)।

सूसुअ वि [सुश्रुत] १ अच्छी तरह सुना हुआ। २ अच्छी तरह ज्ञात (वज्जा १०६)। ३ पुं. वैद्यक ग्रन्थ-विशेष (वज्जा १०६)।

सूहअ } सूहव } देखो सुभग (संक्षि २०; हे १, ११३; १९२)।

से° देखो सेअ = श्वेत। °वड पुं [°पट] श्वेताम्बर जैन (सम्मत्त १३७)।

से अ [दे] इन अर्थों का सूचक अव्यय— १ वाक्य का उपन्यास। २ प्रश्न (भग १, १; उवा)। ३ प्रस्तुत वस्तु का परामर्श (उत्त २, ४०; जं १)। ४ अनन्तरता (ठा १०—पत्र ४९५)।

से } सेअ } अक [शी] सोना। सेइ, सेअइ (षड्)।

सेअ सक [सिच्] सींचना। सेअइ (हे ४, ९६)।

सेअ पुं [दे] गणपति, गणेश (दे ८, ४२)।

सेअ पुं [सेय] १ कर्दम, कादो, पंक (सूअ २, १, २; णाया १, १—पत्र ६३)। २ एक अधम मनुष्य-जाति; 'चंडाला मुट्ठिया सेया जे अन्ने पावकम्मिणो' (ठा ७—पत्र ३९३)।

सेअ पुं [स्वेद] पसीना (गा २७८; दे ४, ४९; कुमा)।

सेअ पुं [सेक] सेचन, सींचना (मै ६५; गा ७९९; हेका ९९; अभि ३३)।

सेअ न [श्रेयस्] १ शुभ, कल्याण (भग)। २ धर्म। ३ मुक्ति, मोक्ष (हे १, ३२)। ४ वि. अति प्रशस्त, अतिशय शुभ; 'इय संजमोवि सेओ' (पंचा ७,१४; कुमा; पंच ९६)। ५ पुं. अहोरात्र का दूसरा मुहूर्त (सुज्ज १०, १३)।

सेअ वि [सैज] सकम्प, कम्प-युक्त (भग ५, ७—पत्र २३४)।

सेअ वि [श्वेत] १ शुक्ल, सफेद (णाया १, १—पत्र ५३; अभि ३३; उव)। २ पुं. एक इन्द्र, कुभंड-निकाय के दक्षिण दिशा का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५)। ३ शक्र की नट-सेना का अधिपति (इक)। ४ आमलकल्पा नगरी का एक राजा, जिसने भगवान् महावीर के पास दीक्षा ली थी (ठा ८—पत्र ४३०; राय ९)। °कंठ पुं [°कण्ठ] भूतानन्द नामक इन्द्र के महिष-सैन्य का अधिपति (ठा ५, १—पत्र ३०२; इक)। °पड, °वड पुं [°पट] श्वेताम्बर जैन, जैन का एक संप्रदाय (सुपा ६४१; विसे २५८५; धर्मसं ११०९)।

सेअ वि [एष्यत्] आगामी, भविष्य; 'पभू णं भंते केवली सेयकालंसि वि तेसु चेव आगासपदेसेसु हत्थं वा जाव आगाहित्ताणं चिट्ठित्तए' (भग ५, ४—पत्र २२३; ठा १०—पत्र ४९५; अण २१)। °ाल पुं [°काल] भविष्य काल (भग; उत्त २९, ७१)।

सेअंकर पुं [श्रेयस्कर] ज्योतिष्क ग्रह-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७८)।

सेअंकार पुं [श्रेयस्कार] श्रेयः-करण, 'श्रेयस्' का उच्चारण (ठा १०—पत्र ४९५)।

•सेअंबर पुं [श्वेताम्बर] १ एक जैन संप्रदाय (सं २; सम्मत्त १२३; सुपा ५६६)। २ न. सफेद वस्त्र (पउम ६६, ३०)।

सेअंस पुं [श्रेयांस] १ एक राज-कुमार (धण १५)। २ चतुर्थ वासुदेव तथा बलदेव के पूर्व जन्म के धर्म गुरु—एक जैन मुनि (सम १५३; पउम २०, १७६)। देखो सेज्जंस।

सेअंस देखो सेअ = श्रेयस् (ठा ४, ४—पत्र २६५)।

सेअण न [सेचन] सेक, सींचना (कुमा; अभि ४७; णाया १, १३—पत्र १८१; सुपा ३०६)। °वह पुं [°पथ] नीक (आचा २, १०, २)।

सेअणग } सेअणय } पुं [सेचनक] १ राजा श्रेणिक का एक हाथी (उप २६४ टी; णाया १, १—पत्र २५)। २ वि. सींचनेवाला (कुमा)। देखो सेचणय।

सेअविअ वि [सेवनीय] सेवा-योग्य, 'ण सिक्खती सेयवियस्स किंचि' (सूअ १, ५, १, ४)।

सेअविया स्त्री [श्वेतविका] केकयार्ध देश की प्राचीन राजधानी (विचार ५०; पव २७५; इक)।

सेआ स्त्री [श्वेतता] सफेदपन (सुज्ज १, १)।

सेआ देखो सेवा (नाट—चैत ९२)।

सेआल देखो सेवाल = शैवाल (मे २, ३१)।

सेआल देखो सेअ-ाल = एष्यत्-काल।

सेआल पुं [दे] १ गाँव का मुखिया। २ सांनिध्य करनेवाला यक्ष आदि (दे ८, ५८)। ३ कृषक, खेती करनेवाला गृहस्थ (पाअ)।

सेआली स्त्री [दे] दूर्वा, दूब, दूभ (दे ८, २७)।

सेआलुअ पुं [दे] मनौती की सिद्धि के लिए उत्सृष्ट बैल (दे ८, ४४)।

सेइअ न [स्वेदित] पसीना (भवि)।

सेइआ } सेइगा } स्त्री [सेतिका] परिमाण-विशेष, दो प्रसृति की एक नाप (तंदु २९; उप पृ ३३७; अणु १५१)।

सेउ पुंन [सेतु] १ बांध, पुल (से ६, १७; कुप्र २२०; कुमा)। २ आलवाल, कियारी, थाँवला। ३ कियारी के पानी से सींचने योग्य खेत (औप; णाया १, १ टी—पत्र १)। ४ मार्ग (औप; णाया १, १ टी—पत्र १; कप्प ८९)। °बंध पुं [°बन्ध] पुल बाँधना (से ६, १७)। °वह पुं [°पथ] पुलवाला मार्ग (से ८, ३८)।

सेउ वि [सेक्तृ] सेचक, सिंचन करनेवाला (कप्प ८९)।

सेउय वि [सेवक] सेवा-कर्ता (कप्प ९)।

सेंदूर देखो सिंदूर (प्राप्र; संक्षि ३)।

सेंधव देखो सिंधव (विक्र ८९)।

सेंभ देखो सिंभ (उव; पि २६७)।

सेंभिय देखो सिंभिय (भग; पि २६७)।

सेंवाडय पुं [दे] चुटकी की आवाज (दे ८, ४३)।

सेचणय न [सेचनक] सिंचन, छिड़काव (मोह २७)। देखो सेअणय।

सेचाण (अप) पुं [श्येन] छन्द-विशेष (पिंग)। देखो सेण = श्येन।

सेच्च न [शैत्य] शीतपन, ठंढापन (प्राप्र)।

सेज्ज° देखो सेज्जा। °वइ पुं [°पति] वसति-स्वामी गृहस्थ (पव ८४)।

सेज्जंभव देखो सिज्जंभव (कप्प; दसनि १, १२)।

सेज्जंस पुं [श्रेयांस] १ ग्यारहवें जिनदेव का नाम (सम ८८; कप्प)। २ एक राज-पुत्र,

जिसने भगवान् आदिनाथ को इक्षु-रस से प्रथम पारणा कराया था (कप्प; कुप्र २१२)। ३ मार्गशीर्ष मास का लोकोत्तर नाम (सुज्ज १०, १९)। ४ भगवान् महावीर का पिता, राजा सिद्धार्थ (आचा २, १५, ३)। देखो सिज्जंस, सेअंस = श्रेयांस।

सेज्जंस देखो सेअंस = श्रेयस् (आवम)।

सेज्जा स्त्री [शय्या] १ सेज, बिछौना (से १, ५७; कुमा)। २ मकान, घर, वसति, उपाश्रय (पव १; २ सुख १, १५)। °यर पुं [°तर] गृह-स्वामी, उपाश्रय का मालिक, साधु को रहने के लिए स्थान देनेवाला गृहस्थ (ओघ २४२; पव ११२; पंचा १७, १७)। °वाल पुं [°पाल] शय्या का काम करनेवाला चाकर (सुपा ५८७)। देखो सिज्जा।

सेज्जारिअ न [दे] अन्दोलन, हिंडोले में झूलना (दे ८, ४३)।

सेट्ठि पुं [दे. श्रेष्ठिन्] गाँव का मुखिया, सेठ, महाजन (दे ८, ४२; सम ५१; णाया १, १—पत्र १९; उवा)।

सेडिय न [दे] तृण-विशेष (पण्ण १—पत्र ३३)।

सेडिया स्त्री [दे. सेटिका] सफेद मिट्टी, खड़ी (आचा २, १, ६, ३)।

सेढि स्त्री [श्रेणि] देखो सेढी = श्रेणी (सुर ३, १७; ५, १९६)।

सेढिया } देखो सेडिया (दस ५, १, ३४;
सेढी } जो ३)।

सेढी स्त्री [श्रेणी] १ पंक्ति (सम १४२; महा)। २ राशि (अणु)। ३ असंख्य योजन-कोटाकोटी की एक नाप (अणु १७३)। देखो सेणि।

सेण पुं [श्येन] १ पक्षि-विशेष (पउम ८, ७९; दे ७, ८४; वै ७४)। २ विद्याधर-वंश का एक राजा (पउम ५, १५)।

सेण देखो सेण्ण; 'मरणरवइणो मरणे मरंति सेणाइं इंदियमयाइं' (आरा ६०)।

सेणा स्त्री [सेना] १ भगवान् संभवनाथजी की माता (सम १५१)। २ लश्कर, सैन्य (कुमा)। ३ एक जैन साध्वी, जो महर्षि स्थूलभद्र की बहिन थी (कप्प; पडि)। ४ वह लश्कर जिसमें ३ हाथी, ३ रथ, ९ घोड़े और १५ प्यादे हों (पउम ५६, ५)। °णिय, °णी, °णीय पुं [°नी] सेना-पति, लश्कर का मुखिया; 'सेणाणिओवि ताहे घेत्तूण जिणेसरं सुरवइस्स' (पउम ३, ७७; सुपा ३००; धर्मवि ८४; पउम ९४, १०)। °मुह न [°मुख] वह सेना जिसमें ६ हाथी, ६ रथ, २७ घोड़े और ४५ प्यादे हों (पउम ५६, ५)। °वइ पुं [°पति] सेना का मुखिया, सेना-नायक (कप्प; पउम ३७, २; सम २७; सुपा ७५५)। °हिवइ पुं [°धिपति] वही पूर्वोक्त अर्थ (सुपा ७३)।

सेणावच्च न [सैनापत्य] सेनापतिपन, सेना का नेतृत्व (कप्प; औप)।

सेणि स्त्री [श्रेणि] १ पंक्ति। २ समूह (महा)। ३ कुम्भकार आदि मनुष्य-जाति (णाया १, १—पत्र ३७)।

सेणिअ पुं [श्रेणिक] १ मगध देश का एक प्रख्यात राजा (णाया १, १—पत्र ११; ३७; ठा ९—पत्र ४५५; सम १५४; उवा; अंत; पउम २, १५; कुमा)। २ एक जैन मुनि (कप्प)।

सेणिआ स्त्री [सेणिका] एक जैन मुनि-शाखा (कप्प)।

सेणिआ } स्त्री [सेनिका] छन्द का एक
सेणिका } भेद (पिंग)।

सेणिग देखो सेणिअ (संबोध ३५)।

सेणिग पुं [सैनिक] लश्करी सिपाही (स ३८१)।

सेणी स्त्री [श्रेणी] देखो सेणि (महा; णाया १, १)।

सेण्ण देखो सिन्न = सैन्य (णाया १, ८—पत्र १४६; गउड)।

सेत्त देखो सित्त = सिक्त (कुप्र १६)।

सेत्त (अप) देखो सेअ = श्वेत (पिंग)।

सेत्तुंज पुं [शत्रुञ्जय] एक प्रसिद्ध पर्वत (णाया १, १६—पत्र २२६; अंत)।

सेद देखो सेअ = स्वेद (दे ४, ३४; स्वप्न ३९)।

सेध देखो सेह = सेह (जीव २—पत्र ५२)।

सेन्न देखो सिन्न = सैन्य (हे १, १५०; कुमा; सण; सुर १२, १०४ टि)।

सेप्फ } देखो सेम्ह (हे २, ५५; षड्; कुमा;
सेफ } प्राकृ २२)।

सेफ पुंन [शेफ] पुरुष-चिह्न, लिंग (प्राकृ १४)।

सेभालिआ स्त्री [शेफालिका] लता-विशेष (हे १, २३६; प्राकृ १४)।

सेमुसी } स्त्री [शेमुषी] मेधा, बुद्धि (राज;
सेमुही } उप पृ ३३३; हम्मीर १४, २२)।

सेम्ह पुंस्त्री [श्लेष्मन्] कफ, सेम्हा गरुई' (प्राकृ २२; पि २६७)।

सेर वि [स्वैर] स्वच्छन्दी, स्वतन्त्र, स्वेच्छ (स्वप्न ७७; विक्र ३७)।

सेर वि [स्मेर] विकस्वर (हे २, ७८; कुमा)।

सेर पुं [दे] सेर, परिमाण-विशेष (पिंग)।

सेरंधी स्त्री [सैरन्ध्री] स्त्री-विशेष, अन्य के घर में रहकर शिल्प-कार्य करनेवाली स्वतन्त्र स्त्री (कप्पू)।

सेराह पुं [दे] अश्व की एक उत्तम जाति (सम्मत्त २१६)।

सेरिभ पुं [दे] धुर्य वृषभ, गाड़ी का बैल (दे ८, ४४)।

सेरिभ देखो सेरिह (सुख ८, १३; दे ८, ४४ टी)।

सेरिय पुंस्त्री [दे] वाद्य-विशेष, 'करडिभंभ-सेरियहुडुक्कहिं' (सण)।

सेरियय पुं [दे] गुल्म-विशेष (पण्ण १—पत्र ३२)।

सेरिह पुंस्त्री [सैरिभ] भैंसा, महिष (गा १७२; ७४२; नाट—मृच्छ १३५)। स्त्री. °ही (पाअ)।

सेरी स्त्री [दे] १ लम्बी आकृति। २ भद्र आकृति (दे ८, ५७)। ३ रथ्या, मुहल्ला (सिरि ३१८)। ४ यन्त्र-निर्मित नर्तकी (राज)।

सेरीस पुंन [सेरीश] एक गाँव का नाम (ती ११)।

सेल पुं [शैल] १ पर्वत, पहाड़ (से २, ११; प्रासू; सुर ३, २२९)। २ पाषाण, पत्थर (उप १०३१)। ३ न. पत्थरों का समूह (से ६, ३१)। °कार पुं [°कार] पत्थर घड़नेवाला शिल्पी, शिलावट (अणु १४९)। °गिह न [°गृह] पर्वत में बना हुआ घर (कप्प)। °जाया स्त्री [°जाया] पार्वती

(रंभा)। °त्थंभ पुं [°स्तम्भ] पाषाण का खंभा (कम्म १, १८)। °पाल, °वाल पुं [°पाल] १ धरण तथा भूतानन्द नामक इन्द्रों का एक एक लोकपाल (ठा ४, १—पत्र १६७; इक)। २ एक जैनेतर धर्मावलम्बी पुरुष (भग ७, १०—पत्र ३२३)। °स न [°स] वज्र (से ३, २७)। °सिहर न [°शिखर] पर्वत का शिखर (कप्प)। °सुआ स्त्री [°सुता] पार्वती (पाअ)।

सेलग } पुं [शैलक] १ एक राजर्षि (णाया सेलय } १, ५—पत्र १०४; १११)। २ एक यक्ष (पि १५६; णाया १, ६—पत्र १६४)। °पुर न [°पुर] एक नगर (णाया १, ५)।

सेलयय न [शैलकज] एक गोत्र (ठा ७—पत्र ३६०; राज)।

सेला स्त्री [शैला] तीसरी नरक-पृथिवी (ठा ७—पत्र ३८८; इक)।

सेलाइच्च पुं [शैलादित्य] वलभीपुर का एक प्रसिद्ध राजा (ती १५)।

सेलु पुं [शैलु] श्लेष्म-नाशक वृक्ष-विशेष (पएण १—पत्र ३१)।

सेलूस पुं [दे] कितव, जुआड़ी (दे ८, २१)।

सेलेय वि [शैलेय] पर्वत में उत्पन्न, पर्वतीय (धर्मवि १४०)।

सेलेस पुं [शैलेश] मेरु पर्वत (विसे ३०६५)।

सेलेसी स्त्री [शैलेशी] मेरु की तरह निश्चल साम्यावस्था, योगी की सर्वोत्कृष्ट अवस्था (विसे ३०६५; ३०६७; सुपा ६५५)।

सेलोदाइ पुं [शैलोदायिन्] एक जैनेतर धर्मावलम्बी गृहस्थ (भग ७, १०—पत्र ३२३)।

सेल्ल देखो सेल = शैल; 'न हु भिज्जइ ताण मणं सेल्लं मिव सलिलपूरेणं' (वज्जा ११२)।

सेल्ल पुं [दे] १ मृग-शिशु। २ शर, बाण (दे ८, ५७)। ३ कुन्त, बर्छी (कुमा; हे ४, ३८७)।

सेल्ल पुं [शैल्य] एक राजा (णाया १, १६—पत्र २०८)।

सेल्लग पुं [शैल्यक] भुजपरिसर्प की एक जाति, जन्तु-विशेष (पण्ह १, १—पत्र ८)।

सेल्लि स्त्री [दे] रज्जु, रस्सी (उत्त २७, ७)।

सेव सक [सेव्] १ आराधन करना। २ आश्रय करना। ३ उपभोग करना। सेवइ, सेवए (आचा; उव; महा)। भूका. सेवित्था, सेविंसु (आचा)। वकृ. सेवमाण (सम ३६; भग)। कवकृ. सेविज्जंत, सेविज्जमाण (सुर १२, १३६; कप्प)। संकृ. सेविअ, सेवित्ता (नाट—मृच्छ २४५; आचा)। कृ. सेवेयव्व (सुपा ५५७; कुमा), सेवणिय (सुपा १६७)।

सेवग देखो सेवय (पंचा ११, ४१)।

सेवड देखो से° = श्वेत।

सेवण न [सेवन] १ सीना, सिलाई करना (उप पृ १२३)। २ सेवा (उत्त ३५, ३)।

सेवणया } स्त्री [सेवना] सेवा (उत्त २६, सेवणा } १; उप ८०१)।

सेवय वि [सेवक] १ सेवा-कर्ता (कुप्र ४०२)। २ पुं. नौकर, भृत्य (पाअ; कुप्र ४०२; सुपा ५३२)।

सेवल न [शैवल] सेवार, सेवाल, एक प्रकार की घास जो नदियों में लगती है (पाअ)।

सेवा स्त्री [सेवा] १ भजन, पर्युपासना, भक्ति। २ उपभोग। ३ आश्रय। ४ आराधन (हे २, ६६; कुमा)।

सेवाड } न [शैवाल] १ सेवार, सेवाल, सेवाल } घास विशेष (उप पृ १३६; पाअ; जी ६)। २ पुं. एक तापस, जिसको गौतम स्वामी ने प्रतिबोध किया था (कुप्र २६३)। °दाइ पुं [°दायिन्] भगवान् महावीर के समय का एक अजैन पुरुष (भग ७, १०—पत्र ३२३)।

सेवाल पुं [दे] पङ्क, कादा, काँदो (दे ८, ४३; षड्)।

सेवालि पुं [शैवालिन्] एक तापस, जिसको गौतम स्वामी ने प्रतिबोध किया था (उप १४२ टी)।

सेवालिय वि [शैवालिक, °त] सेवालवाला, शैवाल-युक्त; 'सेवालियभूमितले फिल्लुसमाणा य थामथामम्मि' (सुर २, १०५)।

सेवि वि [सेविन्] सेवा-कर्ता (उवा)।

सेवित्त वि [सेवितृ] ऊपर देखो (सम १५)।

सेविय वि [सेवित] जिसकी सेवा की गई हो वह (काल)।

सेव्वा देखो सेवा (हे २, ६६; प्राप्र)।

सेस पुं [शेष] १ शेष-नाग, सर्प-राज (से २, २८)। २ छन्द का एक भेद (पिंग)। ३ वि. अवशिष्ट, बाकी का (ठा ३, १ टी—पत्र ११४; दसनि १, १३४; हे १, १८२; गउड)। °मई, °वई स्त्री [°वती] १ सातवें वसुदेव की माता (सम १५२)। २ दक्षिण रुचक पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८—पत्र ४३६; इक)। ३ वल्ली-विशेष (पएण १—पत्र ३३)। ४ भगवान् महावीर की दौहित्री—पुत्री की पुत्री (आचा २, १५, १६)। °वंत न [°वत्] अनुमान का एक भेद (अणु २१२)। °राअ पुं [°राज] छन्द-विशेष (पिंग)।

सेसव न [शैशव] बाल्यावस्था (दे ७, ७६)।

सेसा स्त्री [शेषा] निर्माल्य (उप ७२८ टी; सिरि ५५५)।

सेसिअ वि [शेषित] १ बाकी बचाया हुआ (गा ६६१)। २ अल्प किया हुआ, खतम किया हुआ (विसे ३०२६)।

सेसिअ वि [श्लेषित] संबद्ध किया हुआ, चिपकाया हुआ (विसे ३०३६)।

सेह अक [नश्] पलायन करना, भागना। सेहइ (हे ४, १७८; कुमा)।

सेह सक [शिक्षय्] १ सिखाना, सीख देना। २ सजा करना। सेहंति (सूअ १, २, १, १६)। कवकृ. सेहिज्जंत (सुपा ३४५)।

सेह पुं [दे. सेह] भुजपरिसर्प की एक जाति, साही, जिसके शरीर में काँटे होते हैं (पण्ह १, १—पत्र ८; पएण १—पत्र ५३)।

सेह पुं [शैक्ष] १ नव-दीक्षित साधु (सूअ १, ३, १, ३; सम ५८; ओघ १६५; ३७८; उव; कस)। २ जिसको दीक्षा दी जानेवाली हो वह (पव १०७)। ३ शिष्य, चेला (सुख १, १३)।

सेह पुं [सेध] सिद्धि (उवा)।

सेहंब वि [सेधाम्ल] खाद्य-विशेष, वह खाद्य जिसमें पकने पर खटाई का संस्कार किया जाय (उवा; पण्ह २, ५—पत्र १५०)।

सेहणा स्त्री [शिक्षणा] शिक्षा, सजा, कदर्थना; 'वहबंधमारणसेहणाओ काओ परिग्गहे नत्थि' (उव)।

सेहर पुं [शेखर] १ शिखा; 'फलसेहरा' (पिंड १६५; पाअ)। २ छन्द-विशेष (पिंग)। ३ मस्तक-स्थित माला (कुमा)।

सेहरय पुं [दे] चक्रवाक पक्षी (दे ८, ४३)।

सेहालिआ देखो सेभालिआ (स्वप्न ६३; गा ४१२; कुमा; हे १, २३६)।

सेहाली स्त्री [शेफाली] लता-विशेष (दे ५, ४)।

सेहाव देखो सेह = शिक्षय्। सेहावेइ (पि ३२३)। भवि. सेहावेहिति (औप)। संकृ. सेहावेत्ता (पि ५८२)। हेकृ. सेहावेत्तए (कस)। कृ. सेहावेयव्व (भत्त १६०)।

सेहाविअ वि [शिक्षित] सिखाया हुआ (भग; णाया १, १—पत्र ६०; पि ३२३)।

सेहि देखो सिद्धि (आचा)।

सेहिअ वि [सैद्धिक] १ मुक्ति-सम्बन्धी। २ निष्पत्ति-संबन्धी (सूअ १, १, २, २)।

सेहिऊ वि [दे] गत, गया हुआ (दे ८, १)।

सो सक [सु] १ दारू बनाना। २ पीड़ा करना। ३ मन्थन करना। ४ अक. स्नान करना। सोइ (षड्)।

सो, सोअ अक [स्वप्] सोना, सूतना। सोइ, सोअइ (धात्वा १५७; प्राकृ ६६)।

सोअ सक [शुच्] १ शोक करना। २ शुद्धि करना। सोअइ, सोएइ, सोइंति, सोयंति (से १, ३८; हे ३, ७०; आचा; अज्झ १७४; १७५; सूअ २, २, ५५)। वकृ. सोइंत, सोएंत (उप १४६ टी; पउम ११८, ३५)। कवकृ. सोइज्जंत (सण)। कृ. सोअणिज्ज, सोअणीअ, सोइयव्व (अभि १०५; सूक्त ४७; पउम ३०, ३५)। देखो सोच = शुच्।

सोअ न [शौच] १ शुद्धि, पवित्रता, निर्मलता (आचा; औप; सुर २, ६२; उप ७६८ टी; सुपा २८१)। २ चोरी का अभाव, पर-द्रव्य का अग्रहण (सम १२०; नव २३; श्रा ३१)।

सोअ पुं [शोक] अफसोस, दिलगीरी (सुर १, ५३; गउड; कुमा; महा)।

सोअ न [श्रोत्र] कान, श्रवणेन्द्रिय (आचा; भग; औप; सुर १, ५३)। °मय वि [°मय] श्रोत्रेन्द्रिय-जन्य (ठा १०—पत्र ४७६)।

सोअ पुंन [स्रोतस्] १ प्रवाह (आचा; गा ६६२)। २ छिद्र (औप)। ३ वेग (णाया १, ८)।

सोअण न [स्वपन] शयन (उव)।

सोअण न [शोचन] १ शोक, दिलगीरी (सूअ २, २, ५५; संबोध ४६)। २ शुद्धि, प्रक्षालन (स ३४८)।

सोअणया, सोअणा स्त्री [शोचना] १ ऊपर देखो (औप; अज्झ १७४)। २ दीनता, दैन्य (ठा ४, १—पत्र १८८)।

सोअमल्ल न [सौकुमार्य] सुकुमारता, अति-कोमलता (हे १, १०७; प्राप्र; कुमा)।

सोअर पुं [सोदर] सगा भाई (प्रबो २६; सुपा १६३; रंभा)।

सोअरा स्त्री [सोदरा] सगी बहन (कुमा)।

सोअरिअ वि [शौकरिक] १ शूकरों का शिकार करनेवाला (विपा १, ३—पत्र ५४)। २ शिकारी, मृगया करनेवाला। ३ कसाई (पिंड ३१४; उव; सुपा २१४)।

सोअरिअ वि [सोदर्य] सहोदर, एक उदर से उत्पन्न (सूअ १, १, १, ५)।

सोअल्ल देखो सोअमल्ल (संक्षि २)।

सोअविय स्त्रीन [शौच] शुद्धि, पवित्रता (सूअ २, १, ५७)। स्त्री. °या (आचा)।

सोअव्व देखो सुण = श्रु।

सोआमणी, सोआमिणी स्त्री [सौदामनी, °मिनी] १ विद्युत, बिजली (उत्त २२, ७; पउम ७४, १४; स १२; महा; पाअ)। २ एक दिक्कुमारी देवी (इक; ठा ४, १—पत्र १६८)।

सोइअ न [शोचित] चिन्ता, विचार (सुर ८, १४; सुपा २६६)। देखो सोचिय।

सोइंदिय न [श्रोत्रेन्द्रिय] श्रवणेन्द्रिय, कान (भग)।

सोइंधिअ देखो सोगंधिअ (इक)।

सोउ वि [श्रोतृ] सुननेवाला (स ३; प्रासू २)।

सोउणिअ देखो सोवणिअ (सूअ २, २, २८; पि १५२)।

सोउमल्ल देखो सोअमल्ल (अभि २१३; सुर ८, १२५)।

सोंड देखो सुंड (पाअ)। °मगर पुं [°मकर] मगर की एक जाति (पण्ण १—पत्र ४८)।

सोंडा स्त्री [शुण्डा] १ सुरा, दारू (आचा २, १, ३, २)। २ हाथी की नाक, सूँढ (उवा)।

सोंडिअ पुं [शौण्डिक] दारू बेचनेवाला, कलवार (अभि १८८)।

सोंडिया स्त्री [शुण्डिका] दारू का पात्र-विशेष (ठा ८—पत्र ४१७)।

सोंडीर वि [शौण्डीर] १ शूर, वीर, पराक्रमी (कप्प; सुर २, १३४; सुपा ६०)। २ गर्व-युक्त, गर्वित (महा)।

सोंडीर न [शौण्डीर्य] १ पराक्रम, शूरता। २ गर्व (हे २, ६३; षड्)।

सोंडीरिम पुंस्त्री [शौण्डीरिमन्] ऊपर देखो (सुपा २६२)।

सोंदज्ज (शौ) देखो सुंदेर (पि ८४)।

सोक देखो सुक = शुष्क (षड्)।

सोक्ख देखो सुक्ख = सौख्य (प्राकृ १०; गा १५८; सुपा ७०; कुमा)।

सोक्ख देखो सुक्ख = शुष्क (षड्)।

सोग देखो सोअ = शोक (पउम २०, ४५; सुर २, १४०; स २५५; प्रासू ८३; उव)।

सोगंध, सोगंधिअ न [सौगन्ध्य] १ लगातार चौबीस दिनों के उपवास (संबोध ५८)। २ सुगन्धिपन, सुगन्ध; 'सोगंधिय-परिकलियं तंबोलं' (सम्मत्त २२०)।

सोगंधिअ न [सौगन्धिक] १ रत्न-विशेष, रत्न की एक जाति (णाया १, १—पत्र ३१; पण्ण १—पत्र २६; उत्त ३६, ७७; कप्प; कुम्मा १५)। २ रत्नप्रभा नामक नरक-पृथिवी का एक सौगन्धिक-रत्न-मय काण्ड (सम ८६)। ३ कह्लार, पानी में होनेवाला श्वेत कमल (सूअ २, ३, १८; राय ८२)। ४ पुं. नपुंसक का एक भेद, अपने लिंग को सूँघनेवाला नपुंसक (पव १०६; पुप्फ १२८)। ५ पुंन. एक देव-विमान (देवेन्द्र १४२)। ६ वि. सुगन्धवाला, सुगन्धी (उवा; सम्मत्त २२०)।

सोगंधिया स्त्री [सौगन्धिका] नगरी-विशेष (णाया १, ५ पत्र १०५)।
सोगमल्ल देखो सोअमल्ल (दस २, ५)।
सोग्गइ देखो सुग्गइ (उत्त २८, ३; पउम २६, ६०; स २५०)।
सोग्गाह (?) अक [प्र+सृ] पसरना, फैलना। सोग्गाहइ (धात्वा १५६)।
सोच्च देखो सोअ = शुच्। वकृ. सोचंत, सोच्चमाण (नाट—मृच्छ २८१; णाया १, १—पत्र ४७)। संकृ. 'सोचिऊण हत्थपाए आरोग्गमणिरयणेण ओमजिओ राया' (स ५६७)। कृ. सोच्च (उव)।
सोचिअ वि [शौचित] शुद्ध किया हुआ, प्रक्षालित (स ३४८)।
सोच्च देखो सोच्च।
सोच्चं | **सोच्चा** | **सोच्छं°** | देखो सुण = श्रु।
सोच्छिअ देखो सोत्थिअ (इक)।
सोजण्ण } **सोजन्न** } न [सौजन्य] सुजनता, सज्जनता, भलमनसी (उप ७२८ टी; सुर २, ६१)।
सोज्ज देखो सोरिअ = शौर्य (प्राकृ १९)।
सोज्झ वि [शोध्य] शुद्धि-योग्य, शोधनीय (सुज्ज १०, ६ टी)।
सोज्झय पुं [दे] रजक, धोबी (पाअ)। देखो सुज्झय।
सोडिअ देखो सोंडिअ (कर्पूर ३४)।
सोडीर वि [शौटीर] देखो सोंडीर = शौण्डीर (कप्प; औप; मोह १०४; कप्पू; चारु ६३)।
सोडीर न [शौटीर्य] देखो सोंडीर = शौण्डीर्य (कुमा; से ३, ४; ५, ३; १३, ७९; ८७; प्राकृ १९)।
सोढ वि [सोढ] सहन किया हुआ (उप २६४ टी; धात्वा १५७)।
सोढव्व } **सोढुं** } देखो सह = सह्।
सोण वि [शोण] लाल, रक्त वर्णवाला (पाअ)।
सोणंद न [दे. सौनन्द] त्रिकाष्ठिका, तिपाई (पण्ह १, ४—पत्र ७८; औप; तंदु २०)।
सोणहिअ वि [शौनकिक] १ श्वान-पालक। २ कुत्तों से शिकार करनेवाला (स २५३)।
सोणार देखो सुण्णार (गा १९१; पि ६६; १५२)।
सोणि स्त्री [श्रोणि] कटी, कमर (कप्प; उप १५६)। °सुत्तग न [°सूत्रक] कटी-सूत्र, करधनी (औप)।
सोणिअ पुं [शौनिक] कसाई (दे ६, ६२)।
सोणिअ न [शोणित] रुधिर, खून (उवा; भवि)।
सोणिम पुंस्त्री [शोणिमन्] रक्तता, लाली (विक्र २८)।
सोणी स्त्री [श्रोणी] देखो सोणि (पण्ह १, ४—पत्र ६८; ७९)।
सोणीअ देखो सोणिअ = शोणित, 'भुंजंते मंससोणीअं ण छणे ण पमज्जए' (आचा १, ८, ८, ९; पि ७३)।
सोण्ण न [स्वर्ण] सोना, सुवर्ण (प्राकृ ३०; संक्षि २१)।
सोण्ह देखो सुण्ह = सूक्ष्म (षड्; गा ७२३)।
सोण्हा देखो सुण्हा = स्नुषा (संक्षि १५; प्राकृ ३७; गा १०७; काप्र ८६३)।
सोत्त न [श्रोत्र] कान, श्रवणेन्द्रिय (आचा; रंभा; विक्र ६८)।
सोत्त देखो सोअ = स्रोतस् (हे २, ९८; गा ५५१; से १, ५८; कुमा)।
सोत्ति देखो सुत्ति = शुक्ति (षड्; उप ६४८ टी)।
सोत्तिअ पुं [श्रोत्रिय] वेदाभ्यासी ब्राह्मण (पिंड ४३९; नाट—मृच्छ १३४; प्राप)।
सोत्तिअ वि [सौत्रिक] १ सूत्र-निर्मित, सूते का बना हुआ (ओघभा ८९; ओघ ७०५)। २ सूते का व्यापारी (अणु १४९)।
सोत्तिअ पुं [शौक्तिक] द्वीन्द्रिय जन्तु-विशेष (पण्ण १—पत्र ४४)।
सोत्तिअमई } **सोत्तिअवई** } स्त्री [शुक्तिकावती] केकय देश की प्राचीन राजधानी (राज; इक)।
सोत्ती स्त्री [दे] नदी (दे ८, ४४; षड्)।
सोत्थि पुंन [स्वस्ति] १ एक देव-विमान (देवेन्द्र १३३)। २—देखो सत्थि (संक्षि २१; गा २४४; अभि १२८; नाट—रत्ना १०)।
सोत्थिअ पुं [स्वस्तिक] १ ज्योतिष्क ग्रह-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७८)। २ न. शाक-विशेष, एक प्रकार की हरित वनस्पति (पण्ण १—पत्र ३४)। ३—देखो सत्थिअ, सोवत्थिअ = स्वस्तिक (पण्ह १, ४—पत्र ६८; णाया १, १—पत्र ५४)।
सोदाम पुं [सोदाम] देखो सोदामि (इक)।
सोदामणी देखो सोआमणी (पउम २६, ८१)।
सोदामि पुं [सोदामिन्] चमरेन्द्र के अश्व-सैन्य का अधिपति (ठा ५, १—पत्र ३०२)।
सोदामिणी देखो सोआमिणी (नाट—मालती ८)।
सोदास पुं [सौदास] एक राजा (पउम २२, ८१)।
सोध (शौ) देखो सउह = सौध (पि ६१ ए)।
सोपार } **सोपारय** } पुं. ब. [सोपार, °क] देश-विशेष (पउम ९८, ६४; सुपा २७५)। २ न. नगर-विशेष (सार्ध ३६; ती ११)।
सोबंधव वि [सौबन्धव] सुबन्धु नामक कवि का बनाया हुआ ग्रंथ (गउड)।
सोभ अक [शुभ्] शोभना, चमकना। सोभंति (सुज्ज १९) भूका. सोभिंसु, सोभेंसु (सुज्ज १९)। भवि. सोभिस्संति (सुज्ज १९)। वकृ. सोभंत (णाया १, १—पत्र २५; कप्प; औप)।
सोभ सक [शोभय्] शोभाना, शोभा-युक्त करना। सोभेइ (भग)। वकृ. सोभयंत (पि ४९०)। संकृ. सोभित्ता (कप्प)।
सोभग वि [शोभक] १ शोभनेवाला। २ शोभानेवाला (कप्प)।
सोभग्ग देखो सोहग्ग (स्वप्न ४५)।
सोभण देखो सोहण = शोभन (पउम ७८, ५६; स्वप्न ४९)।
सोभा देखो सोहा = शोभा (प्राकृ १७; उत्त २१, ८; कप्प; सुज्ज १९)।

सोभिय देखो सोहिअ = शोभित (णाया १, १ टी—पत्र ३)।

सोम पुं [सोम] १ चन्द्र, चाँद, एक ज्योतिष्क महाग्रह (ठा २, ३—पत्र ७७; विसे १८८३; गउड)। २ भगवान् पार्श्वनाथ का पाँचवाँ गणधर (सम १३; ठा ८—पत्र ४२९)। ३ एक प्रसिद्ध क्षत्रिय-वंश (पउम ५, २)। ४ चतुर्थ बलदेव और वासुदेव का पिता (ठा ६—पत्र ४४७; पउम २०, १८२)। ५ एक विद्याधर नर-पति, जो ज्योतिःपुर का स्वामी था (पउम ७, ४३)। ६ एक सेठ का नाम (सुपा ५६७)। ७ एक ब्राह्मण का नाम (णाया १, १६—पत्र १९६)। ८ चमरेन्द्र, बलीन्द्र, सौधर्मेन्द्र तथा ईशानेन्द्र के एक-एक लोकपाल के नाम (ठा ४, १—पत्र २०४; भग ३, ७—पत्र १९४)। ९ लता-विशेष, सोमलता। १० उसका रस। ११ अमृत (षड्)। १२ आर्य-सुहस्ति सूरि का एक शिष्य—जैन मुनि (कप्प)। १३ पुंन. देव-विमान-विशेष (देवेन्द्र १३३; १४३; १४५)। १४ वि. कीर्तिमान्, यशस्वी (कप्प)। °काइय पुं [°कायिक] सोम लोकपाल का आज्ञाकारी देव (भग ३, ७—पत्र १९५)। °ग्गहण न [°ग्रहण] चन्द्र-ग्रहण (हे ४, ३९६)। °चंद पुं [°चन्द्र] १ ऐरवत क्षेत्र में उत्पन्न सातवें जिन-देव (सम १५३)। २ आचार्य हेमचन्द्र का दीक्षा समय का नाम (कुप्र २१)। °जस पुं [°यशस्] एक राजा (सुर २, १३४)। °णाह देखो °नाह (राज)। °दत्त पुं [°दत्त] १ एक ब्राह्मण का नाम (णाया १, १६—पत्र १९६)। २ एक जैन मुनि, जो भद्र-बाहु-स्वामी का शिष्य था (कप्प)। ३ भगवान् चन्द्रप्रभ स्वामीको प्रथम भिक्षा-दाता गृहस्थ (सम १५१)। ४ राजा शतानीक का एक पुरोहित (विपा १,५—पत्र ६०)। °देव पुं [°देव] १ सोम नामक लोकपाल का सामानिक देव (भग ३, ७—पत्र १९५)। २ भगवान् पद्मप्रभ को प्रथम भिक्षा-दाता गृहस्थ (सम १५१)। °नाह पुं [°नाथ] सौराष्ट्र देश की सुप्रसिद्ध महादेव-मूर्त्ति (ती १५; सम्मत्त ७५)। °प्पभ, °प्पह पुं [°प्रभ] १ क्षत्रियों के सोमवंश का आदि पुरुष, बाहु-बलि का एक पुत्र (पउम ५, १०; कुप्र २१२)। २ तेरहवीं शताब्दी का एक जैन आचार्य और ग्रंथकार (कुप्र ११५)। ३ चमरेन्द्र के सोम-लोकपाल का उत्पात-पर्वत (ठा १०—पत्र ४८२)। °भूइ पुं [°भूति] एक ब्राह्मण का नाम (णाया १, १६—पत्र १९६)। °भूइय न [°भूतिक] एक कुल का नाम (कप्प)। °य न [°क] एक गोत्र, जो कौत्स गोत्र की शाखा है (ठा ७—पत्र ३९०)। °व °वा, वि [°प, °पा] सोम-रस पीनेवाला (षड्)। °सिरी स्त्री [°श्री] एक ब्राह्मणी (अंत)। °सुंदर पुं [°सुन्दर] एक प्रसिद्ध जैनाचार्य तथा ग्रन्थकार (संति १४; कुलक ४४)। °सूरि पुं [°सूरि] एक जैनाचार्य, आराधना-प्रकरण का कर्ता एक जैनाचार्य (आप ७०)।

सोम वि [सौम्य] १ अरौद्र, अनुग्र (ठा ६; भग १२, ६—पत्र ५७८)। २ नीरोग, रोग-रहित (भग १२, ६)। ३ प्रशस्त, श्लाघ्य (कप्प)। ४ प्रिय-दर्शन, जिसका दर्शन प्रिय मालूम हो वह। ५ मनोहर, सुन्दर। ६ शान्त आकृतिवाला (ओघभा २२; उव; सुपा १८०; ६२२)। ७ शोभा-युक्त, दीप्तिमान् (जं २)। देखो सोम्म।

सोमइअ वि [दे] सोने की आदतवाला (दे ८, ३९)।

सोमंगल पुं [सौमङ्गल] द्वीन्द्रिय जन्तु की एक जाति (उत्त ३६, १२९)।

सोमणंतिय वि [स्वापनान्तिक, स्वाप्नान्तिक] १ सोने के बाद किया जाता प्रति-क्रमण—प्रायश्चित्त-विशेष। २ स्वप्न-विशेष में किया जाता प्रतिक्रमण (ठा ६—पत्र ३७९)।

सोमणस पुं [सौमनस] १ महाविदेह-वर्ष का एक वक्षस्कार-पर्वत (ठा २, ३—पत्र ६९; सम १०२; जं ४)। २ उस पर्वत पर रहनेवाला एक महर्द्धिक देव (जं ४)। ३ पक्ष का आठवाँ दिन (सुज्ज १०, १४) ४ पुंन. सनत्कुमार नामक इन्द्र का एक पारि-यानिक विमान (ठा ८—पत्र ४३७; औप)। ५ एक देव-विमान, छठवाँ ग्रैवेयक-विमान (देवेन्द्र १३७; १४३; पव १९४)। ६ सौमनस-पर्वत का एक शिखर (ठा २, ३—पत्र ८०)। ७ न. मेरु-पर्वत का एक वन (ठा २, ३—पत्र ८०)।

सोमणस न [सौमनस्य] १ सुन्दर मन, संतुष्ट मन (राय; कप्प)।

सोमणसा स्त्री [सौमनसा] १ जम्बू-वृक्ष विशेष, जिससे यह द्वीप जम्बूद्वीप कहलाता है (इक)। २ एक राजधानी (इक)। ३ सौमनस वन की एक वापी (जं ४)। ४ पक्ष की पाँचवीं रात्रि (सुज्ज १०, १४)।

सोमणसिय वि [सौमनस्यित] १ संतुष्ट मनवाला। २ प्रशस्त मनवाला (कप्प)।

सोमणस्स देखो सोमणस = सौमनस्य (कप्प; औप)।

सोमणस्सिय देखो सोमणसिय (कप्प; औप; णाया १, १—पत्र १३)।

सोमल्ल देखो सोअमल्ल (प्राकृ २०; ३०)।

सोमहिंद न [दे] उदर, पेट (दे ८, ४५)।

सोमहिंडु पुं [दे] पंक, कादा (दे ८, ४३)।

सोमा स्त्री [सोमा] १ शक्र के सोम आदि चारों लोकपालों की एक-एक पटरानी का नाम (ठा ४, १—पत्र २०४)। २ सातवें जिनदेव की प्रथम शिष्या (सम १५२; पव ९)। ३ सोम लोकपाल की राजधानी (भग ३, ७—पत्र १९५)।

सोमा स्त्री [सौम्या] उत्तर दिशा (ठा १०—पत्र ४७८; भग १०, १—४९३)।

सोमाण न [श्मशान] मसान, मरघट (दे ८, ४५)।

सोमाणस पुं [सोमानस] सातवाँ ग्रैवेयक विमान (पव १९४)।

सोमार } देखो सुकुमार (गा १८९; स
सोमाल } ३५६; मै ७; षड्; प्राप्र; हे १, १७१; कुमा; प्राकृ २०; ३८; भवि)।

सोमाल न [दे] मांस (दे ८, ४४)।

सोमित्ति पुं [सौमित्रि] राम-भ्राता लक्ष्मण (गा ३५)।

सोमित्ति स्त्री [सुमित्रा] लक्ष्मण की माता। °पुत्त पुं [°पुत्र] लक्ष्मण; 'रामसोमित्ति-पुत्ता' (पउम ३८, ५७)। °सुय पुं [°सुत] वही अर्थ (पउम ७२, ३)।

सोमिल पुं [सोमिल] एक ब्राह्मण (अंत ६)।

सोमेत्ति देखो सोमित्ति = सौमित्रि (से १२. ८८)।

सोमेसर पुं [सोमेश्वर] सौराष्ट्र का सोमनाथ महादेव (सम्मत्त ७५)।

सोम्म वि [सौम्य] १ रमणीय, सुन्दर (से १, २७)। २ ठंढा, शीतल (से ४, ८)। ३ शीतल प्रकृतिवाला, शान्त स्वभाववाला (से ५, १६; विसे १७३१)। ४ प्रिय-दर्शन, जिसका दर्शन प्रिय लगे वह। ५ जिसका अधिष्ठाता सोम-देवता हो वह। ६ भास्वर, कान्तिवाला। ७ पुं. बुध ग्रह। ८ शुभ ग्रह। ९ वृष आदि सम राशि। १० उदुम्बर वृक्ष। ११ द्वीप-विशेष। १२ सोम-रस पीनेवाला ब्राह्मण (प्राप्र)। देखो सोम = सौम्य।

सोज्जि (अप) अ [स एव] वही (प्राकृ १२१)।

सोरट्ठ पुं [सौराष्ट्र] १ एक भारतीय देश, सोरठ, काठियावाड़ (इक; ती १५)। २ वि. सोरठ देश का निवासी (श्रावक ९३)। ३ न. छन्द-विशेष (पिंग)।

सोरट्ठिया स्त्री [सौराष्ट्रिका] १ एक प्रकार की मिट्टी, फिटकिरी (आचा २, १, ६, ३; दस ५, १, ३४)। २ एक जैन मुनि-शाखा (कप्प)।

सोरब्भ, **सोरंभ**, **सोरभ** न [सौरभ] सुगन्ध, खुशबू (विक्र ११३; कुप्र २२३; भवि; उप ९८६ टी)।

सोरसेणी स्त्री [शौरसेनी] शूरसेन देश की प्राचीन भाषा, प्राकृत भाषा का एक भेद (विक्र ६७)।

सोरह देखो सोरभ (गउड)।

सोरिअ न [शौर्य] शूरता, पराक्रम (प्राप्र; प्राकृ १९)।

सोरिअ न [शौरिक] १ कुशावर्त देश की प्राचीन राजधानी (इक)। २ एक यक्ष (विपा १, ८—पत्र ८२)। °दत्त पुं [°दत्त] १ एक मच्छीमार का पुत्र (विपा १, १—पत्र ४; विपा १, ८)। २ एक राजा (विपा १, ८—पत्र ८२)। °पुर न [°पुर] एक नगर (विपा १, ८)। °वडिंसग न [°वतंसक] एक उद्यान (विपा १, ८—पत्र ८२)।

सोलस त्रि. ब. [षोडशन्] १ संख्या-विशेष, सोलह, १६। २ सोलह संख्यावाला (भग ३५, १—पत्र ९६४; ९६७; उवा; सुर १; ३५; प्रासू ७७; पि ४४३)। ३ वि. सोलहवाँ, १६ वाँ (राज)। °म वि [°श] १ सोलहवाँ, १६ वाँ (णाया १, १६—पत्र १९६; सुर १६, २५१; पव ४६)। २ लगातार सात दिनों के उपवास (णाया १, १—पत्र ७२)। °य न [°क] सोलह का समूह (उत ३१, १३)। °विह वि [°विध] सोलह प्रकार का (पि ४५१)।

सोलसिआ स्त्री [षोडशिका] रस-मान-विशेष, सोलह पलों की एक नाप (अणु १५२)।

सोलह देखो सोलस (नाट; भवि)।

सोलहावत्तय पुं [दे] शंख (दे ८, ४६)।

सोल्ल सक [पच्] पकाना। सोल्लइ (हे ४, ९०; धात्वा १५६)। वकृ. सोल्लंत (विपा १, ३—पत्र ४३)।

सोल्ल सक [क्षिप्] फेंकना। सोल्लइ (हे ४, १४३; षड्)। कर्म. सोल्लिज्जइ (कुमा)।

सोल्ल सक [ईर्, सम् + ईर्] प्रेरणा करना। सोल्लइ (धात्वा १५६; प्राकृ ६६)।

सोल्ल न [दे] माँस (दे ८, ४४)। देखो सुल्ल = शूल्य।

सोल्ल वि [पक्व] पकाया हुआ (उवा; विपा १, २—पत्र २७; १, ८—पत्र ८५; ८६; औप)।

सोल्लिय वि [पक्व] १ पकाया हुआ, 'इंगालसोल्लियं' (औप)। २ न. पुष्प-विशेष (औप)।

सोव देखो सुव = स्वप्। सोवइ, सोवंति (हे १, ६४; उव; भवि; पि १५२)।

सोवक्कम, **सोवक्कम** वि [सोपक्रम] निमित्त-कारण से जो नष्ट या कम हो सके वह कर्म, आयु, आपदा आदि (सुपा ४५२; ४५६)।

सोवचिय वि [सोपचित] उपचय-युक्त, स्फीत, पुष्ट (कप्प)।

सोवच्चल पुंन [सौवर्चल] एक तरह का नोन, काला नमक (दस ३, ८; चंड)।

सोवण न [स्वपन] शयन, सोना (उप पृ २३७)।

सोवण न [दे] १ वास-गृह, शय्या-गृह, रतिमन्दिर (दे ८, ५८; स ५०३; पाअ)। २ स्वप्न। ३ पुं. मल्ल (दे ८, ५८)।

सोवण (अप) देखो सोवण्ण (भवि)।

सोवणिअ वि [शौवनिक] १ श्वान-पालक, कुत्तों को पालनेवाला। २ कुत्तों से शिकार करनेवाला (सूअ २, २, ४२)।

सोवणी स्त्री [स्वापनी] विद्या-विशेष (पि ७८)।

सोवण्ण वि [सौवर्ण] स्वर्ण-निर्मित, सोने का (महा; सम्मत्त १७३)।

सोवण्णमक्खिआ स्त्री [दे] मधुमक्षिका की एक जाति, एक तरह की शहद की मक्खी (दे ८, ४६)।

सोवण्णिअ, **सोवण्णिग** वि [सौवर्णिक] सोने का, सुवर्ण-घटित (प्रति ७; स ४५८)। °पव्वय पुं [°पर्वत] मेरु पर्वत (पउम २, १८)।

सोवण्णेअ पुंस्त्री [सौपर्णेय] गरुडपक्षी। स्त्री. °आ, °ई (षड्)।

सोवत्थ न [दे] १ उपकार। २ वि. उपभोग्य, उपभोगयोग्य (दे ८, ४५)।

सोवत्थि, **सोवत्थिअ** वि [सौवस्तिक] १ माङ्गलिक वचन बोलनेवाला, मागध आदि स्वस्ति-वाचक (ठा ४, २—पत्र २१३; औप)। २ पुं. ज्योतिष्क महाग्रह-विशेष (ठा २, ३—पत्र ७८)। ३ त्रीन्द्रिय जन्तु की एक जाति (पराग १—पत्र ४५)।

सोवत्थिअ पुं [स्वस्तिक] १ साथिया, एक मङ्गलचिह्न (औप)। २ पुंन. विद्युत्प्रभ नामक वक्षस्कार पर्वत का एक शिखर (इक)। ३ पूर्व रुचक-पर्वत का एक शिखर (राज)। ४ एक देव-विमान (देवेन्द्र १४१)। देखो सत्थिअ, सोत्थिअ = स्वस्तिक।

सोवन्न देखो सोवण्ण (अंत १७; श्रा २८; सिरि ८११; भवि)।

सोवन्निअ देखो सोवण्णिअ (णाया १, १—पत्र ५२)।

सोवरिअ देखो सोअरिअ = शौकरिक (सूअ २, २, २८)।

सोवरी स्त्री [शाम्बरी] विद्या-विशेष (सूत्र २, २, २७)।

सोववत्तिअ वि [सोपपत्तिक] सयुक्तिक, युक्ति-युक्त (उप ७२८ टी)।

सोवाअ वि [सोपाय] उपाय-साध्य (गउड)।

सोवाग पुं [श्वपाक] चाण्डाल, डोम (आचा; ठा, ४, ४—पत्र २७१; उत्त १३, ६; उव; सुपा ३७०; कुप्र २६२; उर १, १५)।

सोवागी स्त्री [श्वापाकी] विद्या-विशेष (सूत्र २, २, २७)।

सोवाण न [सोपान] सीढ़ी, निसेनी, पैड़ी (सम १०६; गा २७८; उव; सुर १, ६२)।

सोवासिणी देखो सवासिणी (भवि)।

सोविअ वि [स्वापित] सुलाया हुआ, शायित; 'कमलकिसलयरइए सत्थरए सोविओ तेण' (सुर ४, २४४; उप १०३१ टी)।

सोविदल्ल पुंस्त्री [सौविदल्ल] अन्तःपुर का रक्षक (गउड)। स्त्री. °ल्ली (सुपा ७)।

सोवीर पुं ब. [सौवीर] १ देश-विशेष (पव २७५; सूत्र , ५, १, १—टी)। २ न. काञ्जिक, काँजी (ठा ३, ३—पत्र १४७; पाद्य)। ३ अञ्जन-विशेष, सौवीर देश में होता सुरमा (जी ४)। ४ मद्य-विशेष (कस)।

सोवीरा स्त्री [सौवीरा] मध्यम ग्राम की एक मूर्छना (ठा ७—पत्र ३९३)।

सोव्व वि [दे] पतित-दन्त, जिसका दांत गिर गया हो वह (दे ८, ४५)।

सोस सक [शोषय्] सुखाना, शोषण करना। सोसइ (भवि)। वकृ. सोसयंत (कप्प)।

सोस देखो सुस्स। सोसउ (हे ४, ३६५)।

सोस पुं [शोष] १ शोषण (गउड; प्रासू ६४)। २ रोग-विशेष, दाह रोग (लहुअ १५)।

सोसण पुं [दे] पवन, वायु (दे ८, ४५)।

सोसण न [शोषण] १ सुखाना। २ कामदेव का एक बाण (कप्पू)। ३ त्रि. शोषण-कर्ता, सुखानेवाला (पउम २८, ५ ; कुप्र ४७)।

सोसणया, **सोसणा** स्त्री [शोषणा] शोषण (उवा; उत्त ३ , ५)।

सोसणी स्त्री [दे] कटी, कमर (दे ८, ४५)।

सोसविअ वि [शोषित] सुखाया हुआ (हे ३, १५०, उव)।

सोसाव देखो सोस = शोषय्। हेकृ. सोसावेदुं (शौ) (नाट)।

सोसास वि [सोच्छ्वास] ऊर्ध्व श्वास-युक्त (षड्)।

सोसिअ देखो सोसविअ (हे ३, १५०; सुर ३, १ ६; महा)।

सोसिअ वि [सोच्छ्रित] ऊँचा किया हुआ (कप्प)।

सोसिल्ल वि [शोफवत्] शोफ युक्त, सूजन रोगवाला (विपा १, ७—पत्र ७३)।

सोह अक [शुभ्] शोभना, चमकना। सोहइ, सोहए सोहंति (हे १, १८७; पाअ; कुमा)। वकृ. सोहंत, सोहमाण (कप्प; सुर ३, १११; नाट—उत्तर ८)।

सोह सक [शोभय्] शोभा-युक्त करना। सोहेइ (उवा)।

सोह सक [शोधय्] १ शुद्धि करना। २ खोज करना, गवेषणा करना। ३ संशोधन करना। सोहेइ (उव)। वकृ. 'लूसिअं सगिहं दट्ठुं सोहिंतो दइअं निअं' (श्रा १२)। सोहेमाण (उवा; विपा १, १—पत्र ७)। कवकृ. सोहिज्जंत (उप ७२८ टी)। कृ. सोहणीअ, सोहेयव्व (णाया १, १६—पत्र २०२; नाट—शकु ६६; सुपा ६५७)। संकृ. सोहइत्ता (उत्त २९, १)।

सोह देखो सउह = सौध (रुक्मि ६१; प्रति ४१; नाट—मालती १३८)।

सोहंजण पुं [दे. शोभाञ्जन] वृक्ष-विशेष, सहिंजने का पेड़ (दे ८, ३७; कप्पू)।

सोहग देखो सोभग (कप्प ३८ टी)।

सोहग पुं [शोधक] धोबी, रजक (उप पृ २४१)। देखो सोहय = शोधक।

सोहग्ग न [सौभाग्य] १ सुभगता, लोक-प्रियता (औप; प्रासू ६६)। २ पति-प्रियता (सुर ३, १८१; प्रासू ८५)। ३ सुन्दर भाग्य (उप पृ ४७; १०८)। °कप्परुक्ख पुं [°कल्पवृक्ष] तप-विशेष (पव २७१)। °गुलिया स्त्री [°गुटिका] सौभाग्य-जनक मन्त्र-विशेष से संस्कृत गोली (सुपा ५९७)।

सोहग्गंजण न [सौभाग्याञ्जन] सौभाग्य-जनक अंजन (सुपा ५९७)।

सोहग्गिअ वि [सौभागित] भाग्य-शाली, सुन्दर भाग्यवाला (उप पृ ४७; १०८)।

सोहण पुं [शोभन] १ एक प्रसिद्ध जैन मुनि (सम्मत्त ७५)। २ वि. शोभा-युक्त, सुन्दर (सुर १, १४७; ३, १८५; प्रासू १३२)। स्त्री. °णा, °णी (प्राकृ ४२)। °वर न [°वर] वैताढ्य की उत्तर श्रेणि का एक विद्याधर-नगर (इक)।

सोहण न [शोधन] १ शुद्धि, सफाई (उप ५९७ टी; सुज्ज १०, ६ टी; कप्प)। २ वि. शुद्धि-जनक (श्रा ६)।

सोहणी स्त्री [दे] संमार्जनी, झाड़ू (दे ८, १७)।

सोहद न [सौहृद] १ मित्रता। २ बन्धुता (अभि २१८; अच्चु ५०)।

सोहम्म देखो सुधम्म, सुहम्म = सुधर्मन् (सम १९)।

सोहम्म पुं [सौधर्म] प्रथम देवलोक (सम २; राय; अणु)। °कप्प पुं [°कल्प] पहला देवलोक, स्वर्ग-विशेष (महा)। °वइ पुं [°पति] प्रथम देवलोक का स्वामी, शक्रेन्द्र (सुपा ५१)। °वडिंसय पुंन [°ावतंसक] एक देव-विमान (सम ८; २५; राय ५९)। °सामि पुं [°स्वामिन्] प्रथम देवलोक का इन्द्र (सुपा ५१)।

सोहम्म° देखो सुहम्मा (महा)।

सोहम्मण देखो सोहण = शोभन; 'रयणंपि गुणुक्करिसं उवेइ सोहम्मणगुणेणं' (कम्म ६, १ टी)।

सोहम्मिंद पुं [सौधर्मेन्द्र] शक्र, प्रथम देव-लोक का स्वामी (महा)।

सोहम्मिय वि [सौधर्मिक] सौधर्म-देवलोक का (सण)।

सोहय वि [शोधक] शुद्धि-कर्ता, सफाई करनेवाला (विसे ११६९)। देखो सोहग = शोधक।

सोहय देखो सोहग = शोभक (उप पृ २१६)।

सोहल वि [शोभावत्] शोभा-युक्त (सण; भवि)।

सोहा स्त्री [शोभा] १ दीप्ति, चमक (से १, ४८; कुमा; सुपा ३१; रंभा)। २ छन्द-विशेष (पिंग)।

सोहाव सक [शोधय्] सफा कराना। सोहावेह (स ५११)।

सोहाविय वि [शोधित] साफ कराया हुआ (स ६२)।

सोहि स्त्री [शुद्धि, शोधि] १ निर्मलता (णाया १, ५—पत्र १०५; संबोध १२)। २ आलोचना, प्रायश्चित्त (ओघ ७९१; ७९७; आचा)।

सोहि वि [शोधिन्] शुद्धि-कर्ता (औप)।

सोहि वि [शोभिन्] शोभनेवाला (संबोध ४८; कप्पू; भवि)। स्त्री. °णी (नाट—रत्ना १३)।

सोहि पुंस्त्री [दे] १ भूत काल। २ भविष्य काल (दे ८, ५८)।

सोहिअ न [दे] पिष्ट, आटा, चावल आदि का चूर्ण (षड्)।

सोहिअ वि [शोभित] शोभा-युक्त (सुर ३, ७२; महा; औप; भग)।

सोहिअ वि [शोधित] शुद्ध किया हुआ (पण्ह २, १; भग)।

सोहिद देखो सोहद (नाट—शकु १०६)।

सोहिर वि [शोभितृ] शोभनेवाला (गा ५११)।

सोहिल्ल वि [शोभावत्] शोभा-युक्त (गा ५४७; सुर ३, ११; ८, १०८; हे २, १५९; चंड; भवि; सण)।

सौअरिअ देखो सोअरिअ = सौदर्य (चंड)।

सौंअरिअ न [सौन्दर्य] सुन्दरता (हे १, १)।

सौह देखो सउह = सौध (रुक्मि ५६; नाट—मालती १३६)।

°स्स देखो स = स्व (गा २२९)।

°स्सास देखो सास = श्वास (गा ८५६)।

°स्सिरी देखो सिरी = श्री (गा ६७७)।

°स्सेअ देखो सेअ = स्वेद (अभि २१०)।

॥ इअ सिरिपाइअसद्दमहण्णवम्मि सयाराइसद्दसंकलणो

सत्ततीसइमो तरंगो समत्तो ॥

ह

ह पुं [ह] १ कंठ-स्थानीय व्यञ्जन वर्ण-विशेष (प्राप; प्रामा)। २ अ. इन अर्थों का सूचक अव्यय—संबोधन; 'से-भिक्खू गिलाइ, से हंद ह णं तस्साहरह' (आचा २, १, ११, १; २; पि २७५)। ३ नियोग। ४ क्षेप, निन्दा। ५ निग्रह। ६ प्रसिद्धि। ७ पादपूर्ति (हे २, २१७)।

ह देखो हा = अ. (हे १, ६७)।

हइ स्त्री [हति] हनन, वध, मारण (श्रा २७)।

हं अ. [हम्] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ क्रोध (उवा)। २ असम्मति (स्वप्न २१)।

हंजय पुं [दे] शरीर-स्पर्श-पूर्वक किया जाता शपथ—सौगंध (दे ८, ६१)।

हंजे अ. इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ दासी का आह्वान (हे ४, २८१; कुमा; पिंग)। २ सखी का आमन्त्रण (स ६२२; सम्मत्त १७२)।

°हंड देखो खंड (हम्मीर १७)।

°हंडण देखो भंडण (गा ६१२; पि ५८८)।

हंत देखो हंता (धर्मसं २०२; राय २६; सण; कप्पू; पि २७५)।

हंतव्व } देखो हण।
हंता }

हंता अ [हन्त] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ अभ्युपगम, स्वीकार (उवा; औप; भग; तंदु १४; अणु १६०; णाया १, १—पत्र ७४)। २ कोमल आमन्त्रण (भग; अणु १६०; तंदु १४; औप)। ३ वाक्य का आरम्भ। ४ प्रत्यवधारण। ५ संप्रेषण। ६ खेद। ७ निर्देश (राज)। ८ हर्ष। ९ अनुकम्पा (राय)। १० सत्य (उवा)।

हंतु वि [हन्तृ] मारनेवाला (आचा; भग; पउम ५१, १६; ७३, १६; विसे २६१७)।

हंतूण देखो हण।

हंदि अ. 'ग्रहण करो' इस अर्थ का सूचक अव्यय (हे २, १८१; कुमा; आचा २, १, ११, १; २; पि २७५)।

हंदि अ. इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ विषाद, खेद। २ विकल्प। ३ पश्चात्ताप। ४ निश्चय। ५ सत्य। ६ 'लो', 'ग्रहण करो' (पात्र; हे २, १८०; षड्; कुमा)। ७ आमन्त्रण, संबोधन (पिंड २१०; धर्मसं ४४)। ८ उपदर्शन (पंचा ३, १२; दसनि ३, ३७)।

हंभो देखो हंहो (सुर ११, २३४; आचा; सूअ २, २, ८१)।

हंस देखो हस्स = ह्रस्व (प्राप्र)।

हंस पुं [हंस] १ पक्षि-विशेष (णाया १, १—पत्र ५३; पण्ह १, १—पत्र ८; कुमा; प्रासू १३; १६९)। २ रजक, धोबी; 'वत्थ-धोवा हवंति हंसा वा' (सूअ १, ४, २, १७)। ३ संन्यासि-विशेष (से १, २६; औप)। ४ सूर्य, रवि (सिरि ५४७)। ५ मणि-विशेष, हंसगर्भ नामक रत्न की एक-जाति (पण्ण १—पत्र २६)। ६ छन्द का एक भेद (पिंग)। ७ निर्लोभी राजा। ८

विष्णु। ६ परमेश्वर, परमात्मा। १० मत्सर। ११ मन्त्र-विशेष। १२ शरीर-स्थित वायु की चेष्टा-विशेष। १३ मेरु पर्वत। १४ शिव, महादेव। १५ अश्व की एक जाति। १६ श्रेष्ठ। १७ अगुआ। १८ विशुद्ध। १९ मन्त्र-वर्ण-विशेष (ह २, १८२)। २० पतंग, चतुरिन्द्रिय जन्तु-विशेष (अणु ३४)। °गब्भ पुं [°र्भ] रत्न की एक जाति (णाया १, १—पत्र ३१; १७—पत्र २२६; कप्प; उत्त ३६, ७७)। °तूली स्त्री [°तूली] बिछौने की गद्दी (सुर ३, १८८; ६, १२८)। °दीव पुं [°द्वीप] द्वीप-विशेष (पउम ५४, ४५)। °लक्खण वि [°लक्षण] १ शुक्ल, सफेद (अंत)। २ विशद, निर्मल (जं २)।

हंसय पुंन [हंसक] नूपुर (पाअ; सुपा ३२७)।

हंसल पुं [दे] आभूषण-विशेष (अणु)। देखो **हांसल**।

हंसी स्त्री [हंसी] १ हंस पक्षी की मादा (पाअ)। २ छन्द का एक भेद (पिंग)।

हंसुलय पुं [हंस] अश्व की एक उत्तम जाति (सम्मत्त २१६)।

हंहो अ [हंहो] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ संबोधन, आमन्त्रण (सुख २३, १; धर्मवि ५५; उव ५९७ टी)। २ तिरस्कार (धम्म ११ टी)। ३ दर्प, गर्व। ४ दंभ, कपट। ५ प्रश्न (हे २, २१७)।

हकुव न [हकुव] फल-विशेष (अनु ५)।

हक्क सक [नि + षिध्] निषेध करना, निवारण करना। हक्कइ (हे ४, १३४; षड्)। वकृ. **हक्कमाण** (कुमा)।

हक्क सक [दे] हाँकना—१ पुकारना, आह्वान करना। २ प्रेरणा करना। ३ खदेड़ना। हक्कई (सुपा १८३)। वकृ. **हक्कंत** (सुर १५, २०३; सुपा ५३८)। कवकृ. **हक्किज्जंत** (सुपा २५३)। संकृ. **हक्किय, हक्किउं, हक्किऊण** (सुर २, २३१; सुपा २४८; महा)।

हक्का स्त्री [दे] हाँक—१ पुकार, बुलाहट, आह्वान। २ प्रेरणा; 'धवलो धुरम्मि जुत्तो न सहइ उच्चारियं हक्कं' (वज्जा ३८; पिंग; सुपा १५१; सिरि ४१०; उप पृ ७८)।

हक्कार सक [आ + कारय्] पुकारना, आह्वान करना, बुलाना। हक्कारइ (महा; भवि)। हक्कारह (सुपा १८८)। कर्म. हक्कारिज्जंतु (सुर १, १२६; सुपा २९२)। वकृ. **हक्कारेंत, हक्कारेमाण** (सुर ३, ६८; णाया १, १८—पत्र २४०)। संकृ. **हक्कारिऊण, हक्कारेऊण** (कुम्म ८; सुपा २२०)। प्रयो. हक्कारावइ (सुपा ११८)।

हक्कार सक [दे] ऊँचे फैलाना। कर्म. हक्कारिज्जंति (सिरि ४२४)।

हक्कार पुं [हाकार] १ युगलिकों के समय की एक दण्डनीति (ठा ७—पत्र ३९८)। २ हाँकने की आवाज (सुर १, २४६)।

हक्कारण न [आकारण] आह्वान (स २६४; कुप्र ११६)।

हक्कारिअ वि [आकारित] आहूत (सुपा २९९; ओघ ६२२ टी; महा)।

हक्किअ वि [दे] हाँका हुआ—१ खदेड़ा हुआ; 'हक्किओ करी' (महा); 'जेण तओ पासत्थाइतेणसेणावि हक्किया सम्मं' (सार्ध १०३)। २ आहूत (कुप्र १४१)। ३ प्रेरित (सुपा २९१)। ४ उन्नत (षड्)।

हक्किअ वि [निषिद्ध] निवारित (कुमा)।

हक्कोद्ध वि [दे] अभिलषित (दे ८, ६०)।

हक्खुत्त वि [दे] उत्पाटित, उठाया हुआ, उत्क्षिप्त (दे ८, ६०; पउम ११७, ५; पाअ; स ६१४)।

हक्खुव सक [उत् + क्षिप्] १ ऊँचा करना, उठाना। २ फेंकना। हक्खुवइ (हे ४, १४४); 'तणुयरदेहो देवो हक्खुवइ व किं महासेलं' (विसे ६६५)।

हक्खुविअ वि [उत्क्षिप्त] उत्पाटित (कुमा)।

हच्चा स्त्री [हत्या] वध, घात (कुप्र १५७; धर्मवि १७)।

हट्ट पुं [हट्ट] १ आपाण, बाजार (गा ७८४; भवि)। २ दूकान (सुपा ११; १८६)। °गाई, °गावी स्त्री [°गवी] व्यभिचारिणी स्त्री, कुलटा (सुपा ३०१; ३०२)।

हट्टिगा } स्त्री [हट्टिका] छोटी दूकान (मोह
हट्टी } ९२; सुपा १८६)।

हट्ठ वि [हृष्ट] १ हर्ष-युक्त, आनन्दित। २ विस्मित (उवा; विपा १, १; औप; राय)। ३ नीरोग, रोग-रहित; 'हट्ठेण गिलाणेण व अमुगतवो अमुगदिणम्मि नियमेणं कायव्वो' (पव ४—गाथा १९२)। ४ शक्तिशाली जवान, समर्थ तरुण (कप्प)। ५ दृढ़, मजबूत (ओघ ७५)।

°**हट्ठ** देखो **भट्ठ** (गा ६५४ अ)।

हट्ठमहट्ठ वि [दे] १ नीरोग। २ दक्ष, चतुर (दे ८, ६१)। ३ स्वस्थ युवा (षड्)।

हड वि [दे. हृत] जिसका हरण किया गया हो वह (दे ८, ५९; कप्प)।

हडक } (मा) देखो **हिअय = हृदय** (प्राकृ
हडक्क } १०५; १०२; प्राप; नाट—मृच्छ ६१; पि ५०; १५०)।

हडप्प } पुं [दे] १ पात्र-विशेष, द्रम्म
हडप्फ } आदि का पात्र। २ ताम्बूल आदि का पात्र (औप)। ३ आभरण का करण्डक (णाया १, १ टी—पत्र ५७; ५८)।

हडहड पुं [दे] १ अनुराग, प्रेम (दे ८, ७४; षड्)। २ ताप (दे ८, ७४)।

हडहड पुं [हडहड] 'हड-हड' आवाज (सिरि ७७९)।

हडाहड वि [दे] अत्यर्थ, अत्यन्त (विपा १, १—पत्र ५; णाया १, १६—पत्र १९९)।

हडि पुं [हडि] काष्ठ का बन्धन-विशेष, काठ की बेड़ी (णाया १, २—पत्र ८६; विपा १, ६—पत्र ६६; औप; कम्म १, २३)।

हड्ड न [दे] हाड़, अस्थि (दे ८, ५९; तंदु ३८; सुपा ३५५; श्रु १००)।

हढ पुं [हठ] १ बलात्कार (पाअ; पण्ह १, ३—पत्र ४४; दे १, १९)। २ जल में होनेवाली वनस्पति-विशेष, कुम्भी, जलकुम्भी, काई; 'वायाइद्धो व्व हढो अट्ठिअप्पा भविस्ससि' (उत्त २२, ४४; सूअ २, ३, १८; पण्ण १—पत्र ३४)।

हण सक [हन्] १ वध करना। २ जाना, गति करना। हणइ, हणिआ (कुमा; आचा)। भूका. हणिसु, हणीअ (आचा; कुमा)। भवि. हणिही (कुमा)। कर्म. हणिज्जइ, हणिज्जए, हम्मए, हन्नइ, हम्मइ (हे ४, २४४; कुमा; प्रासू १६; आचा)।

भवि. हम्मिहिइ, हणिहिइ (हे ४, २४४)। वकृ. हणंत (आचा; कुमा)। कवकृ. हण्णु, हणिज्जमाण, हम्मंत, हम्ममाण (सूत्र १, २, २, ५; श्रा १४; सुर १, ६६; विपा १, २—पत्र २४; पि ५४०)। संकृ. हंता, हंतूण, हंतूणं, हत्तूण, हणिऊण, हणिअ (आचा; प्रासू १४७, प्राकृ ३४; नाट)। हेकृ. हंतुं, हणिउ° (महा; उप पृ ४८)। कृ. हंतव्व (से ३, ३; हे ४, २४४; आचा)।

हण सक [श्रु] सुनना। हणइ (हे ४, ५८)।

हण वि [दे] दूर, अनिकट (दे ८, ५६)।

हण देखो हणण; 'हणदहणपयणमारण—' (पउम ८, २३२)।

°हण देखो धण = धन (गा ७१५; ८०१)।

हणण न [हनन] १ मारण, वध, घात (सुपा २४५; सण)। २ विनाश (पण्ह २, ५—पत्र १४८)। ३ वि. वध-कर्ता। स्त्री. °णी (कुप्र २२)।

हणिअ वि [हत] जिसका वध किया गया हो वह (श्रा २७; कुमा; प्रासू १६; पिंग)।

हणिअ देखो हण = हन्।

हणिअ वि [श्रुत] सुना हुआ (कुमा)।

हणिद देखो हिणिद (गा ६६३)।

हणिर वि [हन्तृ] वध करनेवाला (सुपा ६०७)।

हणिहणि, हणिहणिं अ [अहन्यहनि] १ प्रतिदिन, हमेशा (पण्ह २, ३—पत्र १२२)। २ सर्वथा, सब तरह से (पण्ह २, ५—पत्र १४८)।

हणु वि [दे] सावशेष, बाकी बचा हुआ (दे ८, ५६; सण)।

हणु पुंस्त्री [हनु] चिबुक, होठ के नीचे का भाग, ठुड्डी, ठोढ़ी, दाढ़ी (आचा; पण्ह १, ४—पत्र ७८)। °अ, °म, °मंत, °यंत पुं [°मत्] हनुमान्, रामचन्द्रजी का एक प्रख्यात अनुचर, पवन तथा अञ्जनासुन्दरी का पुत्र (पउम १, ५६; १७, १२१; ४७, २६; हे २, १४६; कुमा; प्राप्र; पउम १६, १५; ५६, २१)। °रुह, °रूह न [°रुह] नगर-विशेष (पउम १, ६१; १७, ११८)। °व, °वंत देखो °म (पउम ४७, २५; ५०, ६; उप पृ ३७६)।

हणुया स्त्री [हनुका] १ ठुड्डी, ठोढ़ी, दाढ़ी (अनु ५)। २ दंष्ट्रा-विशेष दाढ़ा-विशेष (उवा)।

हणू स्त्री [हनू] देखो हणु (पि ३९८; ३९९)।

हण्णु देखो हण = हन्।

हत्त देखो हय = हत (पि १९४; ५६५)।

°हत्तरि देखो सत्तरि (पि २६४)।

हत्तु वि [हर्तृ] हरण-कर्ता (प्राकृ २०)।

हत्तूण देखो हण = हन्।

हत्थ वि [दे] १ शीघ्र, जल्दी करनेवाला (दे ८, ५९)। २ क्रिवि. जल्दी (ओप)।

हत्थ पुंन [हस्त] १ हाथ; 'अत्थित्तणेण हत्थं पसारियं जस्स कण्हेणं' (वज्जा १०६; आचा; कप्प; कुमा; दं ६)। २ पुं. नक्षत्र-विशेष (सम १०; १७)। ३ चौबीस अंगुल का एक परिमाण। ४ हाथी की सूँढ (हे २, ४५; प्राप्र)। ५ एक जैन मुनि (कप्प)। °कप्प न [°कल्प] नगर-विशेष (णाया १, १६—पत्र २२६; पिंड ४६१)। °कम्म न [°कर्मन्] हस्त-क्रिया, दुश्चेष्टा-विशेष (सूत्र १, ९, १७; ठा ३, ४—पत्र १६२; सम ३९; कस)। °ताड, °ताल पुं [°ताड] हाथ से ताड़न (राज; कस ४, ३ टि)। °पहेलिअ स्त्रीन [°प्रहेलिक] संख्या-विशेष, शीर्षप्रकम्पित को चौरासी लाख से गुणने पर जो संख्या लब्ध हो वह (इक)। °प्पाहुड न [°प्राभृत] हाथ से दिया हुआ उपहार (दे ८, ७३)। °मालय न [°मालक] आभरण-विशेष (ओप)। °लहुत्तण न [°लघुत्व] १ हस्त-लाघव। २ चोरी (पण्ह १, ३—पत्र ४३)। °सीस न [°शीर्ष] नगर-विशेष (णाया १, १६—पत्र २०८)। °ाभरण न [°ाभरण] हाथ का गहना (भग)। °ायाल पुं [°ताड] देखो °ताड (कस)। °ालंब पुं [°ालम्ब] हाथ का सहारा, मदद (से १, १६; सुर ४, ७१; कस)।

हत्थंकर पुं [हस्तङ्कर] वनस्पति-विशेष (आचा २, १०, २)।

हत्थंदु, हत्थंदुय पुंन [हस्तान्दुक] हाथ बाँधने का काठ आदि का बन्धन-विशेष (पिंड ५७३; विपा १, ६—पत्र ६६)।

हत्थच्छुहणी स्त्री [दे] नव-वधू, नवोढ़ा (दे ८, ६५)।

हत्थड (अप) देखो हत्थ (हे ४, ४४५; पि ५९९)।

हत्थय न [हस्तक] कलाप-समूह (दश० अगस्त्य० सूत्र ५१ पत्र ८१)।

हत्थल पुं [दे] १ क्रीड़ा के लिए हाथ में ली हुई चीज। २ वि. हस्त-लोल, चञ्चल हाथ-वाला (दे ८, ७३)।

हत्थल वि [हस्तल] १ खराब हाथवाला। २ पुं. चोर, तस्कर (पण्ह १, ३—पत्र ४३)।

हत्थलिज्ज देखो हत्थिलिज्ज (राज)।

हत्थल्ल वि [दे] क्रीड़ा से हाथ में लिया हुआ (दे ८, ६०)।

हत्थल्लिअ वि [दे] हस्तापसारित, हाथ से हटाया हुआ (दे ८, ६४)।

हत्थल्ली स्त्री [दे] हस्त-बृसी, हाथ में स्थित आसन-विशेष (दे ८, ६१)।

हत्थार न [दे] सहायता, मदद (दे ८, ६०)।

हत्थारोह पुं [हस्त्यारोह] हस्तिपक, हाथी का महावत (विपा १, २—पत्र २३)।

हत्थावार न [दे] सहायता, मदद (भवि)।

हत्थाहत्थि स्त्री [हस्ताहस्तिका] हाथोंहाथ, एक हाथ से दूसरे हाथ (गा १७६)।

हत्थाहत्थि अ. ऊपर देखो (गा २२६, ५८१; पुप्फ ४६३)।

हत्थि पुंस्त्री [हस्तिन्] १ हाथी (गा ११६; कुमा; अभि १८७)। स्त्री. °णी (णाया १, १—पत्र ६३)। २ पुं. नृप-विशेष (ती १४)। °आरोह पुं [आरोह] हाथी का महावत (धर्मवि १६)। °कण्ण, °कन्न पुं [°कर्ण] १ एक अन्तर्द्वीप। २ वि. उसका निवासी मनुष्य (इक ठा ४, २—पत्र २२६)। °कप्प न [°कल्प] देखो हत्थ-कप्प (राज)। °गुलगुलाइय न [°गुलगुलायित] हाथी का शब्द-विशेष (राय)। °णागपुर न [°नागपुर] नगर-विशेष, हस्तिनापुर (उप ६४८ टी; सण)। °तावस पुं [°तापस]

बौद्ध साधु-विशेष, हाथी को मारकर उसके मांस से जीवन-निर्वाह करने के सिद्धान्तवाला संन्यासी (औप; सूअनि १६०)। °नायपुर देखो °नागपुर (भवि)। °पाल पुं [°पाल] भगवान् महावीर के समय का पावापुरी का एक राजा (कप्प)। °पिप्पली स्त्री [°पिप्पली] वनस्पति-विशेष (उत्त ३४, ११)। °मुह पुं [°मुख] १ एक अन्तर्द्वीप। २ वि. उसका निवासी मनुष्य (ठा ४, २—पत्र २२६; इक)। °रयण न [°रत्न] उत्तम हाथी (औप)। °राय पुं [°राज] उत्तम हाथी (सुपा ४२६)। °वाउय पुं [°व्यापृत] महावत (औप)। °वाल देखो °पाल (कप्प)। °विजय न [°विजय] वैताढ्य की उत्तर श्रेणि का एक विद्याधर-नगर (इक)। °सीस न [°शीर्ष] एक नगर, जो राजा दमदन्त की राजधानी थी (उप ६४८ टी)। °सुंडिया देखो °सोंडिगा (राज)। °सोंड पुं [°शौण्ड] त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष (पराग १—पत्र ४५)। °सोंडिगा स्त्री [°शुण्डिका] आसन-विशेष (ठा ५, १ टी—पत्र २६६)।

हत्थिअचक्खु न [दे] वक्र अवलोकन (दे ८, ६५)।

हत्थिअग वि [हस्तीय, हस्त्य] हाथ का, हाथ-संबन्धी (पिंड ४२४)।

हत्थिणउर, हत्थिणपुर, हत्थिणाउर, हत्थिणापुर न [हस्तिनापुर] नगर-विशेष (ठा १०—पत्र ४७७; सुर १०, १५५; महा; गउड; सुर १, ६४; नाट—शकु ७४; अंत)।

हत्थिणी देखो हत्थि।

हत्थिमल्ल पुं [दे] इन्द्र-हस्ती, ऐरावण हाथी (दे ८, ६३)।

हत्थियार न [दे] १ हथियार, शस्त्र (धर्मसं १०२२; ११०४; भवि)। २ युद्ध, लड़ाई; 'ता उट्ठेहि संपयं करेहि हत्थियारं ति', 'देव, कोइसं देवेण सह हत्थियारकरणं' (स ६३७; ६३८)।

हत्थिलिज्ज न [हस्तिलीय] एक जैन-मुनि-कुल (कप्प)।

हत्थिवयय पुं [दे] ग्रह-भेद (दे ८, ६३)।

हत्थिहत्थिल्ल पुं [दे] वेप (दे ८, ६४)।

हत्थुत्तरा स्त्री [हस्तोत्तरा] उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र (कप्प)।

हत्थुल्ल देखो हत्थ (हे २, १६४; षड्)।

हत्थोडी स्त्री [दे] १ हस्ताभरण, हाथ का आभूषण। २ हस्त-प्राभृत, हाथ से दिया जाता उपहार (दे ८, ७३)।

हथलेव पुं [दे] हस्त-ग्रहण, पाणि-ग्रहण (सिरि १५८)।

हद देखो हय = हत (प्राप्र; प्राकृ १२)।

हद, हद्द पुं [दे] बालक का मल-मूत्रादि (पिंड ४७१)।

हद्धय पुं [दे] हास, विकास (दे ८, ६२)।

हद्धि, हद्धी अ [हा धिक्] १ खेद। २ अनुताप (प्राकृ ७६; षड्; स्वप्न ६१; नाट—शकु ६६; हे २, १६२)।

हमार (अप) वि [अस्मदीय] हमारा, हमसे संबन्ध रखनेवाला (पिंग)।

हमिर देखो भमिर (पि १८८)।

हम्म सक [हन्] वध करना। हम्मइ (हे ४, २४४; कुमा; संक्षि ३४; प्राकृ ६८)।

हम्म सक [हम्म्] जाना। हम्मइ (हे ४, १६२)।

हम्म न [हर्म्य] क्रीड़ा-गृह (से ६, ४३)।

हम्म° देखो हण = हन्।

हम्मार देखो हमार (पिंग)।

हम्मिअ वि [हम्मित] गत, गया हुआ (स ७४३)।

हम्मिअ न [दे. हर्म्य] गृह, प्रासाद, महल (दे ८, ६२; पाअ; सुर ६, १५०; आचा २, २, १, १०)।

हम्मीर पुं [हम्मीर] विक्रम की तेरहवीं शताब्दी का एक मुसलमान राजा (ती ५; हम्मीर २७; पिंग)।

हय वि [हत] जो मारा गया हो वह (औप; से २, ११; महा)। °माकोड पुं [°मर्कोट] एक विद्याधर-नरेश (पउम १०, २०)। °स वि [°श] निराश (पउम ६१, ७४; गा २८१; हे १, २०६; २, १६५; उव)।

हय पुं [हय] अश्व, घोड़ा (औप; से २, ११; कुमा)। °कंठ पुं [°कण्ठ] रत्न-विशेष, अश्व के कंठ जितना बड़ा रत्न (राय ६७)। °कण्ण, °कन्न पुं [°कर्ण] १ एक अन्तर्द्वीप। २ वि. उसका निवासी मनुष्य (इक; ठा ४, २—पत्र २२६)। ३ एक अनार्य देश (पव २७४)। °मुह पुं [°मुख] १ एक अन्तर्द्वीप (इक)। २ एक अनार्य देश (पव २७४)।

हय देखो हिअ = हृत (महा; भवि; राय ४४)।

हय देखो हर = ग्रह। °पोंडरीय पुं [°पुण्डरीक] पक्षि-विशेष (पराह १, १—पत्र ८)।

°हय देखो भय (गा ३८०)।

हयमार पुं [दे. हतमार] कणेर का गाछ (पाअ)।

हर सक [हृ] १ हरण करना, छीनना। २ प्रसन्न करना, खुश करना। हरइ (हे ४, २३४; उव; महा)। कर्म. हरिज्जइ, हीरइ, हरीअइ, हीरिज्जइ (हे ४, २५०; धात्वा १५७)। वकृ. हरंत (पि ३६७)। कवकृ. हीरंत, हीरमाण (गा १०५; सुर १२, १११; सुपा ६३५)। संकृ. हरिऊण (महा)। हेकृ. हरिउं (महा)। कृ. हिज्ज, हेज्ज (पिंड ४४६; ४५३)।

हर सक [ग्रह्] ग्रहण करना, लेना। हरइ (हे ४, २०६)।

हर सक [ह्वद्] आवाज करना। °हरइ (से ५, ७१)।

हर पुं [हर] १ महादेव, शंकर (सुपा ३६३; कुमा; षड्; हे १, ५१; गा ६८७; ७६४)। २ छन्द-विशेष (पिंग)। °मेहल न [°मेखल] कला-विशेष (सिरि ५६)। °वल्लहा स्त्री [°वल्लभा] गौरी, पार्वती (सुपा ५६७)।

हर पुं [ह्रद] द्रह, बड़ा जलाशय (से ६, ६५)।

हर देखो घर = गृह; 'ता वच्च पहिय मा मग्ग वासयं एत्थ मज्झ हरे' (वज्जा १००; कुमा; सुपा ३६३; हे २, १४४)।

°हर देखो धर = धृ। कृ. °हरेअव्व (से ६, ३)।

°हर देखो भर = भर (पउम १००, ५४; सुपा ४३२)।

°हर वि [°हर] हरण-कर्ता (सण)।

°हर वि [°धर] धारण करनेवाला (गा ३१५; ३६५)।

हरअई } स्त्री [हरीतकी] १ हर्रे का गाछ। हरडई } २ फल-विशेष, हर्रे (षड्; हे १, ६६; कुमा)।

हरण न [हरण] १ छीनना (सुपा १८; ४३६; कुमा)। २ वि. छीननेवाला (कुप्र ११४; धर्मवि ३)।

हरण न [ग्रहण] स्वीकार (कुमा)।

हरण न [स्मरण] स्मृति, याद;

'अलिअकुविअंपि कअमंतुअंव
मं जेसु सुहअ अणुणंतो।
ताण दिअहाण हरणे रुआमि,
ण उणो अहं कुविआ'
(गा ६४१)।

°हरण देखो भरण (गा ५२७ अ)।

हरतणु पुं [हरतनु] खेत में बोये हुए गेहूँ, जौ आदि के बालों पर होता जल-बिन्दु (कप्प; चेइय ३७३; जी ५)।

हरद देखो हरय (भग)।

हरपच्चुअ वि [दे] १ स्मृत, याद किया हुआ। २ नाम के उद्देश से दिया हुआ (दे ८, ७४)।

हरय पुं [ह्रद] बड़ा जलाशय, द्रह (आचा; भग; पण्ह २, ५—पत्र १४६; उत्त १२, ४५; ४६; हे २, १२०)।

हरहरा स्त्री [दे] युक्त प्रसंग, योग्य अवसर, उचित प्रस्ताव;

'निद्धूमगं च गामं महिला-
थूभं च सुण्णयं दट्ठुं।
नीयं च काया ओलिंति
जाया भिक्खस्स हरहरा'
(विसे २०६४)।

हरहराइय न [हरहरायित] 'हर हर' आवाज (पण्ह १, ३—पत्र ४५)।

हराविअ वि [हारित] हराया हुआ, जिसका पराभव किया गया हो वह (हे ४, ४०६)।

हरि पुं [दे हरि] शुक, तोता (दे ८, ५६)।

हरि पुं [हरि] १ विद्युत्कुमार-देवों की दक्षिण दिशा का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८४)। २ एक महाग्रह (ठा २, ३—पत्र ७८)। ३ इन्द्र, देव-राज (कुमा; कुप्र २३; सम्मत्त २२६; श्रु ८६)। विष्णु, श्रीकृष्ण (गा ४०६; ४११; सुपा १४३)। ५ रामचन्द्र (से ६, ३१)। ६ सिंह, मृगेन्द्र (से ६, ३१; कुमा; कुप्र ३४६)। ७ वानर, बन्दर (से ४, २५; ६, २२; धर्मवि ५१; सम्मत्त २२२)। ८ अश्व, घोड़ा (उप १०३१ टी; ती ८; कुप्र २३; सुख ४, ६)। ९ भारत के साथ जैन दीक्षा लेनेवाला एक राजा (पउम ८५, ४)। १० ज्योतिषशास्त्र-प्रसिद्ध एक योग; 'गुरुहरि-विट्ठे गंडविइवाए' (संबोध ५४)। ११ छन्द का एक भेद (पिंग)। १२ सर्प, साँप। १३ भेक, मण्डूक। १४ चन्द्र। १५ सूर्य। १६ वायु, पवन। १७ यम, जमराज। १८ हर, महादेव। १९ ब्रह्मा। २० किरण। २१ वर्ष-विशेष। २२ मयूर, मोर। २३ कोकिल, कोयल। २४ भर्तृहरि नामक एक विद्वान्। २५ पीला रँग। २६ पिंगल वर्ण। २७ हरा रँग। २८ वि. पीत वर्णवाला। २९ पिंगल वर्णवाला (हे ३, ३८)। ३० हरा वर्णवाला; 'हरिमणिसरिच्छछणिअच्छइ' (अच्चु ३२)। ३१ पुंन. महाहिमवंत पर्वत का एक शिखर (ठा ८—पत्र ४३६)। ३२ विद्युत्प्रभ पर्वत का एक शिखर (ठा ६; इक)। ३३ निषध पर्वत का एक शिखर (ठा ६—पत्र ४५४; इक)। ३४ हरिवर्ष-क्षेत्र का मनुष्य-विशेष (कप्प)। °अंद पुं [°श्चन्द्र] स्वनाम प्रसिद्ध एक राजा (हे २, ८७; षड्; गउड; कुमा)। °अंदण न [°चन्दन] १ चन्दन की एक जाति (से ७, ३७; गउड; सुर १६, १४)। २ पुं. एक तरह का कल्प-वृक्ष (सुपा ८७; गउड)। देखो °चंदण। °अण्ण देखो °अंद (संक्षि १७)। °आल पुंन [°ताल] १ पीत वर्णवाली उपधातु-विशेष, हरताल (णाया १, १—पत्र २४; जी ३; पव १५५; कुमा; उत्त ३४, ८; ३६, ७५)। २ पुं. पक्षि-विशेष (हे २, १२१)। देखो °ताल। °एस पुं [°केश] १ चंडाल (ओघ ७६६; सुख ६, १; महा)। २ एक चण्डाल मुनि (उत्त १२)। °एसबल पुं [°केशबल] चण्डालकुलोत्पन्न एक मुनि (उव; उत्त १२, १)। °एसिज्ज वि [°केशीय] १ चण्डाल-संबन्धी। २ हरि-केशबल नामक मुनि का (उत्त १२)। °कंखि न [°काङ्क्षिन्] नगर-विशेष (ती २७)। °कंत पुं [°कान्त] विद्युत्कुमार देवों की दक्षिण दिशा का इन्द्र (इक)। °कंतपवाय, °कंतप्पवाय पुं [°कान्ताप्रपात] एक द्रह (ठा २, ३—पत्र ७२; टी—पत्र ७५)। °कंता स्त्री [°कान्ता] १ एक महा-नदी (ठा २, ३—पत्र ७२; सम २७; इक)। २ महाहिमवान् पर्वत का एक शिखर (इक; ठा ८—पत्र ४३६)। °केलि पुं [°केलि] भारतीय देश-विशेष (कप्पू)। °केसबल देखो °एसबल (कुलक ३१)। °केसि पुं [°केशिन्] एक जैन मुनि (श्रु १४०)। °गीअ न [°गीत] छन्द का एक भेद (पिंग)। °ग्गीव पुं [°ग्रीव] राक्षस-वंश का एक राजा (पउम ५, २६०)। °चंद पुं [°चन्द्र] १ विद्याधर-वंश का एक राजा (पउम ५, ४४)। २ एक विद्याधर-कुमार (महा)। °चंदण पुं [°चन्दन] १ एक अन्तकृद् जैन मुनि (अंत १८)। २ देखो °अंदण (प्रासू १४५; स ३४६)। °णयर न [°नगर] वैताढ्य की दक्षिण-श्रेणि में स्थित एक विद्याधर-नगर (इक)। °ताल पुं [°ताल] द्वीप-विशेष (इक)। देखो °आल। °दास पुं [°दास] एक वणिक् का नाम (पउम ५, ८३)। °धणु न [°धनुष्] इन्द्र-धनुष (उप ५९७ टी)। °पुरी स्त्री [°पुरी] इन्द्र-पुरी, अमरावती, स्वर्ग (सुपा ६३५)। °भद्द पुं [°भद्र] एक सुविख्यात जैन आचार्य तथा ग्रन्थकार (चेइय ३४; उप १०३९; सुपा १)। °मंथ पुं [°मन्थ] धान्य-विशेष, काला चना (श्रा १८; पव १५६; संबोध ४३)। °मेला स्त्री [°मेला] वृक्ष-विशेष (औप)। °वइ पुं [°पति] वानर-पति, सुग्रीव (से १, १६)। °वंस पुं [°वंश] एक सुप्रसिद्ध क्षत्रिय-कुल (कप्प, पउम ५, २)। °वस्स, °वास पुं [°वर्ष] १ क्षेत्र-विशेष (अणु १६१; ठा २, ३—पत्र ६७; सम १२; पउम १०२, १०६; इक)। २ पुंन. महाहिमवान् पर्वत का एक शिखर (ठा ८—पत्र ४३६)। ३ निषध पर्वत का एक शिखर (ठा ६—पत्र ४५४; इक)। °वाहण पुं [°वाहन] १ मथुरा का एक

राजा (पउम १२, २)। २ नन्दीश्वर द्वीप के अपरार्ध का अधिष्ठाता देव (जीव ३, ४)। °सह देखो °स्सह (राज)। °सेण पुं [°षेण] १ दशवाँ चक्रवर्ती राजा (सम ८८; १५२)। २ भगवान् नमिनाथजी का प्रथम श्रावक (विचार ३७८)। °स्सह पुं [°सह] १ विद्युत्कुमार-देवों की दक्षिण दिशा का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८४; इक)। माल्यवन्त पर्वत का एक शिखर (ठा ६—पत्र ४५४)।

हरि पुं [हरित्] १ हरा रँग, वर्ण-विशेष। २ वि. हरा रँगवाला (णाया १, १६ पत्र २२८)। ३ स्त्री. एक महा-नदी (सम २७; इक; ठा २, ३—पत्र ७२)। ४ षड्ज ग्राम की एक मूर्च्छना (ठा ७—पत्र ३६३)। °पवात, °प्पवाय पुं [°प्रपात] एक द्रह, जहाँ से हरित् नदी निकलती है (ठा २, ३—पत्र ७२; टी—पत्र७५)।

हरि° देखो हिरि° (भग; पि ६८; उत्त ३२, १०३)।

हरिअ पुं [°हरित] १ वर्ण-विशेष; हरा रँग। २ वि. हरा वर्णवाला (औप; णाया १, १ टी—पत्र ४; १, ७—पत्र ११६; से ८, ४६; गा ६६५)। ३ पुं. एक आर्य मनुष्य-जाति (ठा ६—पत्र ३५८)। ४ पुंन. वनस्पति-विशेष, हरा तृण, सब्जी (पएण १—पत्र ३०, औप; पाअ; पंच २, ५०; दस १०, ३)।

हरिअ देखो हिअ = हृत (कस; महा)।

°हरिअ देखो भरिअ = भरित (गा ६३२)।

हरिअग } न [हरितक] जीरा आदि के
हरिअय } पत्तों से बना हुआ भोज्य विशेष (पव २५६; सुज २० टी)।

हरिआ स्त्री [हरिता] दूर्वा, दूब, तृण-विशेष (से ७, ५६; ६, ३१)।

हरिआ देखो हिरि (कुमा)।

हरिआल देखो हरि-आल।

हरिआली स्त्री [दे. हरिताली] दूर्वा, दूब (दे ८, ६४; पाअ; अंत; कप्प; अणु २३)।

हरिएस देखो हरि-एस।

हरिचंदण देखो हरि-चंदण।

हरिचंदण न [दे. हरिचन्दन] कुंकुम, केसर (दे ८, ६५)।

हरिडय पुं [हरितक] कोंकण देश-प्रसिद्ध वृक्ष-विशेष (पएण १—पत्र ३१)।

हरिण पुं [हरिण] १ हिरन, मृग (कुमा)। २ छन्द का एक भेद (पिंग)। °च्छी स्त्री [°ाक्षी] सुन्दर नेत्रवाली स्त्री (कप्पू)। °ारि पुं [°ारि] सिंह (उप पृ २६)। °ाहिव पुं [°ाधिप] वही (हे ३, १८०)।

हरिणंक पुं [हरिणाङ्क] चन्द्र, चाँद (हे ३, १८०; कप्पू; सण)।

हरिणंकुस पुं [हरिणाङ्कुश] चौथे बलदेव के गुरु एक जैन मुनि (पउम २०, २०५)।

हरिणगवेसि देखो हरिणेगमेसि (पउम ३, १०४)।

हरिणी स्त्री [हरिणी] १ मादा हिरन, हिरनी (पाअ)। २ छन्द-विशेष (पिंग)।

हरिणेगमेसि पुं [हरिनैगमेषिन्] शक्र के पदाति-सैन्य का अधिपति देव (ठा ५, १—३०२; अंत ७; इक)।

हरिद्दा देखो हलिद्दा (पि ३७५)।

हरिमंथ पुं [दे] काला चना, अन्न-विशेष (श्रा १८; पव १५६; संबोध ४३; दे ८, ७० टि)। देखो हिरिमंथ।

हरिमिग्ग पुं [दे] लगुड, लट्ठी, लाठी, डंडा (दे ८, ६३)।

हरियंदपुर न [हरिचन्द्रपुर] गंधर्वनगर (चउप्पन्न० ऋषभचरित्र)।

हरिली देखो हिरिली (उत्त ३६, ९८)।

°हरिल्ल वि [°भरवत्] भारवाला, बोझवाला (गा ५४५)।

हरिस अक [हृष्] खुशी होना। हरिसइ (हे ४, २३५; प्राप्र; षड्); 'हरिसिज्जइ कयतावो रुद्दज्झाणोवगयचित्तो' (संबोध ४६)।

हरिस सक [हृष्] हर्ष से रोम खड़ा करना, 'लोमादियं पि ण हरिसे सुन्नागारगओ मुणी' (सूअ १, २, २, १६)।

हरिस पुं [हर्ष] १ सुख। २ आनन्द, प्रमोद, खुशी (हे २, १०५; प्राप्र; कुमा; भग)। ३ आभूषण-विशेष (औप)। °उर पुं [°पुर] एक जैन गच्छ (सुपा ६५८)। °ाल वि [°वत्] हर्ष-युक्त (प्राकृ ३५)।

हरिसण पुं [हर्षण] ज्योतिष-प्रसिद्ध एक योग (सुपा १०८)।

हरिसाइय वि [हर्षित] हर्ष-प्राप्त (पउम ६१, ७२)।

हरिसाल देखो सरिस-ाल = हर्ष-वत्।

हरिसिअ वि [हर्षित] हर्ष-प्राप्त, आनन्दित (औप; भवि; महा; सण)।

हरी देखो हिरी (सूअ १, १३, ६; भग)।

हरीडई देखो हरडई (प्राकृ १२)।

हरे अ [अरे] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ आक्षेप, निन्दा। २ संभाषण। ३ रति-कलह (हे २, २०२; कुमा; स ४३०; पि ३३८)।

हरेडगी देखो हरीडई (पंचा १०, २५)।

हरेणुया स्त्री [हरेणुका] प्रियंगु, मालकाँगनी (उत्तनि ३)।

हरेस सक [ह्रेष्] गति करना (नाट—वेणी ६७)।

हल न [हल] हर, जिससे खेत जोतते हैं (उवा; औप)। °उत्तय पुंन [°युक्तक] हल जोतना; 'असुभे समयम्मि कओ तेणं हलउत्तओ खित्ते' (सुपा २३७; २३६; सुर २, ७७)। °कुड्डाल, °कुद्दाल पुं [°कुदाल] हल के ऊपर का भाग (उवा)। °धर पुं [°धर] बलदेव, राम (पएण १७—पत्र ५२६; दे २, ५५)। °धारण पुं [°धारण] बलभद्र, राम (पउम ११७, ६)। °वाहग वि [°वाहक] हालिक, हल जोतनेवाला (श्रा २३)। °हर देखो °धर (सम ११३; पव—गाथा ४८; औप; कुप्र २५७)। °ाउह पुं [°ायुध] बलभद्र, राम (पउम ३८, २३; ७६, २६)।

°हल देखो फल = फल (सुपा ३६६; भवि; त्रि १०३)।

हलअ (मा) देखो हिअय = हृदय (चारु ११; नाट—मृच्छ २१)।

हलउत्तय देखो हल उत्तय।

हलद्दा } देखो हलिद्दा (हे १, ८८; कुमा;
हलद्दी } षड्)।

हलप्प वि [दे] बहु-भाषी, वाचाल (दे ८, ६१)।

हलबोल पुं [दे] कलकल, शोरगुल, कोलाहल (दे ८, ६४; पाअ, कुमा; सुपा ८७; १३२; हट्ठि १४०; कुप्र ३६२; सिरि ४३३; सम्मत्त १२२)।

हलहर देखो हल-हर = हल-धर।

हलहल देखो हलहड = (दे) । (गा २१) ।

हलहल } पुंन [दे] १ तुमुल, कोलाहल,
हलहलअ } शोरगुल (दे ८, ७४; से १२, ८६)। २ कौतुक, कुतूहल (दे ८, ७४; स ७०४)। ३ त्वरा, हड़बड़ी, हलफल, शीघ्रता; 'हलहलग्रो तरा' (पाग्र; स ७०४)। ४ औत्सुक्य, उत्कंठा (गा २१; ७८०)।

हलहलिअ वि [दे] कम्पित, कांपा हुआ (निग)।

हला ग्र [हला] सखी का ग्रामन्त्रण, हे सखि (हे २, १९५; स्वप्न ४०; ग्रभि २६; कुमा; गा ४३०; सुपा ३४६)।

हलाहल न [हलाहल] एक प्रकार का उग्र जहर, विष-विशेष (प्रासू ३८)।

हलाहला स्त्री [दे] बंभणिका, बाम्हनी, जन्तु-विशेष (दे ८, ६३)।

हलि पुं [हलिन्] बलराम, बलभद्र (पउम ७०, ३५; कुप्र १०१)।

हलिअ वि [हालिक] हल जोतनेवाला, कृषक (हे १; ६७; पाग्र; प्राप्र; गा १०७; ३१७; ३६०)।

°हलिअ देखो फलिअ (गा ६)।

हलिआ स्त्री [हलिका] १ छिपकली। २ बाम्हनी, जन्तु-विशेष (कप्प)।

हलिआर देखो हरि-आल = हरि-ताल (हे २, १२१; षड्)।

हलिद्द पुं [हरिद्र, हारिद्र] १ वृक्ष-विशेष (हे १, २५४; गा ८६३)। २ वर्ण-विशेष, पीला रंग। ३ न. नाम-कर्म का एक भेद, जिसके उदय से जीव का शरीर हल्दी के समान पीला होता है, वह कर्म (कम्म १, ४०)। °पत्त पुं [°पत्र] चतुरिन्द्रिय जन्तु की एक जाति (पराण १—पत्र ४६)। °मच्छ पुं [°मत्स्य] मछली की एक जाति (पराण १—पत्र ४७)।

हलिद्दा } स्त्री [हरिद्रा] ग्रौषधि-विशेष, हल्दी
हलिद्दी } (हे १, ८८; २५४; गा ५८; ८०; २४६)।

हलिसागर पुं [हलिसागर] मत्स्य की एक जाति (पराण १—पत्र ४७)।

हलुअ वि [लघुक] हलका (हे २, १२२; स ७४५)।

हलूर वि [दे] सतृष्ण, सस्पृह (दे ८, ६२)।

हले ग्र [हले] हे सखि, सखी का संबोधन (हे २, १९५; कुमा)।

हल्ल ग्रक [दे] हिलना, चलना। हल्लंति (सट्ठि ६८)। वकृ. हल्लंत (उत्रकु २१; सुपा ३४; २२३; वज्जा ४०; से ८, ४५)।

हल्ल पुं [हल्ल] एक ग्रनुत्तर-गामी जैन मुनि (ग्रनु २ पडि)।

हल्लअ न [हल्लक] पद्म-विशेष, रक्त कह्लार (विक्र २३)।

हल्लपविअ वि [दे] त्वरित, शीघ्र (षड्)।

हल्लप्फल न [दे] १ हलफल, हड़बड़ी, ग्रौत्सुक्य, त्वरा, शीघ्रता (हे २, १७४; स ६०२; कुमा)। २ ग्राकुलता; 'ग्रह उवसंते करिणो हल्लप्फलए' (सुपा ६३६)। ३ वि. कम्पनशील, काँपता, चञ्चल; 'पास-ट्ठिग्रोवि दीवो सहसा हल्लप्फलो जाग्रो' (वज्जा ६६)।

हल्लप्फलिअ वि [दे] १ शीघ्र, जल्दी। २ न. ग्राकुलता, व्याकुलपन (दे ८, ५९)। ३ वि. व्याकुल (धर्मवि ५६)।

हल्लफल देखो हल्लप्फल (गा ७६)।

हल्लफलिअ देखो हल्लप्फलिअ; 'विमलो ग्राह लोहेण, तो हल्लफलिग्रो इमं' (श्रा १२)।

हल्लाविय वि [दे] हिलाया हुग्रा (सुर ३, १०६)।

हल्लिअ वि [दे] हिला हुग्रा, चलित (दे ८, ६२; भवि)।

हल्लिर वि [दे] चलन-शील, हिलनेवाला (स ५७८; कुप्र ३५१)।

हल्लीस पुं [दे] रासक, मण्डलाकार होकर स्त्रियों का नाच (दे ८, ६१; भवि)।

हलुत्ताल } न [दे] शीघ्रता, जल्दी, त्वरा;
हलुत्तावल } गुजराती में 'उतावळ' (भवि; सुर १५, ८८)।

हलुप्फलिय देखो हल्लप्फलिअ (जय १२)।

हल्लोहल देखो हल्लप्फल (उप पृ ७७; श्रा १६; हे ४; ३९६; उप ७२८ टी; सुख १८, ३७; महा; भवि)।

हल्लोहलिअ देखो हल्लप्फलिअ (सिरि ६६४; ६३४; भवि)।

हल्लोहलिय पुंस्त्री [दे] सरट, गिरगिट। स्त्री. °या (कप्प)।

हव ग्रक [भू] १ होना। २ सक. प्राप्त करना। हवइ, हवेइ, हवंति (हे ४, ६०; कप्प; उव; महा; ठा ३, १—पत्र १०६); 'किं इक्खुवाडमज्झट्ठिग्रो नलो हवइ महुरत्तं' (धर्मवि १७), हवेज्ज, हवेज्जा (पि ४७५)। वकृ. हवंत, हवेमाण (षड्)।

°हव देखो भव = भव (उप ४६४)।

हवण न [हवन] होम (विसे १५६२)।

हवि पुंन [हविस्] १ घृत, घी। २ हवनीय वस्तु (स ६; ७१४; दसनि १, १०४)।

हविअ वि [दे] ग्रक्षित, चुपड़ा हुग्रा (दे ५, २२; ८, ६२)।

हव्व वि [हव्य] हवनीय पदार्थ, होम-योग्य वस्तु (सुपा १३३)। °वह पुं [°वह] ग्रग्नि, ग्राग (उप ५६७ टी; सुपा ४१६; गउड)। °वाह पुं [°वाह] वही (ग्राचा; पाग्र; सम्मत्त २२८; वेणी १६२; दस ६, ३५)।

हव्व वि [अर्वाच्] १ ग्रवर, पर से ग्रन्य; 'नो हव्वाए नो पाराए' (ग्राचा; सूत्र २, १, १; ८; १०; १६; २४; २८; ३३)। २ न. शीघ्र, जल्दी (णाया १, १—पत्र ३१; उवा; सम ५६; विपा १, १—पत्र ८; ती १०; ग्रौप; कप्प; कस)। ३ न. गृहवास (सूत्र-कृ० २-१-६ चूर्णि)।

°हव्व देखो भव्व = भव्य (गा ३६०; ४२०; ४७६)।

हस ग्रक [हस्] १ हँसना, हास्य करना। २ सक. उपहास करना, मजाक करना। हसइ, हसेइ, हसए, हसंति, हससि, हससे, हसित्था, हसह, हसामि, हसमि, हसामो, हसामु, हसाम, हसेम, हसेमु (हे ३, १३९; १४०; १४१; १४२; १४३; १४४; १५४; १५८; कुमा)। हसेउ हसंतु, हससु, हसेज्जसु, हसेज्जहि, हसेज्जे, हसेज्ज, हसेज्जा (हे ३, १५८; १७३; १७५; १७६)। भवि. हसिहिइ हसिस्सामो, हसिहिमो, हसिहिस्सा, हसिहित्था,

हसिस्सं (हे ३, १६६; १६७; १६८; १६९)। कर्म. हसीअइ, हसिज्जइ, हसिज्जंति (हे ३, १६०; १४२)। वकृ. हसंत, हसेंत, हसमाण (औप; हे ३, १५८; १८१; षड्)। कवकृ. हसिज्जंत, हसीअंत, हसीअमाण, हसिज्जमाण, हसेज्जमाण (हे ३, १६०; उप ५६७ टी; सुर १४, १८०)। संकृ. हसिऊण, हसेऊण, हसिउआण, हसिउआणं, हसेउआण, हसेउआणं, हसिऊणं (हे ३, १५७; पि ५८४; ५८५)। हेकृ. हसिउं, हसेउं (हे ३, १५७)। कृ. हसिअव्व, हसेअव्व, हसणीअ (पगह २, ५—पत्र १४६; हे ३, १५७; षड्; संक्षि ३४; नाट—मृच्छ ११४)।

हस अक [ह्रस्] हीन होना, कम होना। हसइ (पंच ५, ५३)।

हस पुं [हास] हास्य (उप १०३१ टी)।

हसण स्त्रीन [हसन] हास्य, हँसी (भग; उत्त ३६, २६२; पंचा २, ८)। स्त्री. °णा (उप पृ २७५)।

हसहस अक [हसहसाय्] १ उत्तेजित होना। २ सुलगना; 'सिंगाररसत्तु (?) इया मोहमईफुंफुमा हसहसेइ' (सुख १, ८)। वकृ. हसहसित (दसनि ३, ३५)। संकृ. हसहसेऊण (राज)।

हसाव देखो हास = हासय्। हसावइ, हसावेइ (हे ३, १४९)।

हसिअ वि [हसित] १ जिसका उपहास किया गया हो वह (उव ११३)। २ न. हास्य, हँसी (उव २२४)।

हसिअ वि [ह्रसित] ह्रास-प्राप्त, हीन (पंच ५, ५३)।

हसिर वि [हसितृ] हास्य-कर्ता, हँसने की आदतवाला (प्राप्र; गा १७४; उप ७२८ टी; सुर २, ७८; कुमा)। स्त्री. °री (गउड)।

हसिरिआ स्त्री [दे] हास, हँसी (दे ८, ६२)।

हस्स अक [ह्रस्] कम होना, न्यून होना, क्षीण होना। वकृ. हस्समाण (णंदि ८२ टी)।

हस्स देखो हस = हस्। हस्सइ (धात्वा १५७)। कर्म. हस्सइ (धात्वा १५७; हे ४, २४९)।

हस्स न [हास्य] १ हँसी (आचा १, २, १, २; पव ७२; नाट—मृच्छ ६२)। २ पुं. महाक्रन्दित नामक देवों का दक्षिण दिशा का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५)। °गय न [°गत] कला-विशेष (स ६०३)। °रइ पुं [°रति] इन्द्र-विशेष, महाक्रन्दित-निकाय का उत्तर दिशा का इन्द्र (ठा २, ३—पत्र ८५)।

हस्स वि [ह्रस्व] १ लघु, छोटा (सूअ २, १, १५; पव ५४)। २ वामन, खर्व (पाअ)। ३ अल्प, थोड़ा (भग; पंच ५, १०१; कम्म ५, ८४)। ४ पुं. एक मात्रावाला स्वर (पराण ३६—पत्र ८४६; विसे ३०६८)।

हस्सण वि [हर्षण] हर्ष-कारक 'रोमहस्सणो जुद्धसंमद्दो' (विक्र ८७)।

हस्सिर देखो हसिर; 'अ-हस्सिरे सदा दंते' (उत्त ११, ४; सुख ११, ४)।

हहह } अ [हहह, °हा] १ इन अर्थों का
हहहा } सूचक अव्यय—१ आश्चर्य (प्रयौ ७४)। २ खेद, विषाद (सिरि ६१२)।

हहा पुं [हहा] १ गन्धर्व देवों की एक जाति (हे ३, १२९)। २ अ. खेद-सूचक अव्यय (सिरि २९८; ७६७)।

हा अ [हा] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ विषाद, खेद (सुर १, ६६; स्वप्न २७; गा २१८; ७५४; ६६०; प्रासू २०)। २ शोक, दिलगीरी। ३ पीड़ा। ४ कुत्सा, निन्दा (हे १, ६७; २, २१७)। °कंद पुं [°क्रन्द] हाहाकार (पिंग)। °रव पुं [°रव] वही अर्थ (सुर २, १११)।

हा सक [हा] १ त्याग करना। २ गति करना। ३ क्षीण करना, हीन करना, कम करना। हाइ (षड्)। कर्म. हायइ, हायंति (भग; उव), हिज्जइ (भवि), हिज्जउ (प्रयौ १०७)। कवकृ. हायंत (णाया १, १० टी—पत्र १७१), हीयमाण (काल)। संकृ. हाउं (उवकु १०; ११), हिच्चा, हिच्चाणं (आचा १, ४, ४, १; पि ५८७), हेच्च, हेच्चा (सूअ १, २, ३, १, उत्त १८, ३५), हेच्चाण, हेच्चाणं (पि ५८७)। कृ. हेअ (स ५६५; पंचा ६, २७; अच्चु ८; गउड)।

°हा देखो भा—स्त्री (गउड)।

हाअ देखो हा—सक। हाअइ, हाअए (षड्)।

हाअ सक [हादय्] अतिसार रोग को उत्पन्न करना। हाएज्ज (पिंड ६४६)।

°हाअ देखो भाअ = भाग (से ८, ८२; षड्)।

°हाअ देखो घाय = घात (से ७, ५९)।

°हाअ देखो भाव = भाव (से ३, १५)।

हाउ देखो भाउ; 'मह वअणं मइरागंधिअंति हाआ तुहं भणइ' (गा ८७२)।

हांसल देखो हंसल (राज)।

हाकंद देखो हा-कंद।

हाकलि स्त्री [हाकलि] छन्द का एक भेद (पिंग)।

हाडहड न [दे] तत्काल, तत्क्षण (वव १)।

हाडहडा स्त्री [दे] आरोपणा का एक भेद, प्रायश्चित-विशेष (ठा ५, २—पत्र ३२५, निचू २०)।

हाणि स्त्री [हानि] क्षति, अपचय (भवि)।

हाम अ [दे] इस तरह, इस प्रकार, एवं; 'हाम भणए' (प्राकृ ८१)।

हायण पुं [हायन] वर्ष, संवत्सर (औप; णाया १, १ टी—पत्र ५७)।

हायणी स्त्री [हायनी] मनुष्य की दस दशाओं में छठवीं अवस्था (ठा १०—पत्र ५१९; दंदु १०)।

हार सक [हारय्] १ नाश करना। २ हारना, पराभव पाना। हारेइ, हारसु (उव; महा)। वकृ. हारंत (सुपा १५४)।

हार पुं [हार] १ माला, अठारह सर की मोती आदि की माला (कप्प; राय १०२; उवा; कुमा; भवि)। २ हरण, अपहरण (वव १)। ३ द्वीप-विशेष। ४ समुद्र-विशेष (जीव ३, ४—पत्र ३६७)। ५ हरण-कर्ता; 'अदत्त-हारा' (आचा १, २, ३, ५)। °पुड पुंन [°पुट] धातु-विशेष, लोहा (आचा २, ६, १, १)। °भद्द पुं [°भद्र] हार-द्वीप का अधिष्ठाता एक देव (जीव ३, ४—पत्र ३६७)। °महाभद्द पुं [°महाभद्र] हार-द्वीप का एक अधिष्ठाता देव (जीव ३, ४)। °महावर पुं [°महावर] हार-समुद्र का एक

अधिष्ठायक देव; 'हारसमुद्दे हारवर-हारवर-(?हार)महावरा एत्थ दो देवा महिड्डीया' (जीव ३, ४—पत्र ३६७)। °वर पुं [°वर] १ हार-समुद्र का एक अधिष्ठाता देव। २ द्वीप-विशेष। ३ समुद्र-विशेष। ४ हारवर-समुद्र का एक अधिष्ठाता देव (जीव ३, ४)। °वरभद्द पुं [°वरभद्र] हारवर-द्वीप का एक अधिष्ठायक देव (जीव ३, ४)। °वरमहाभद्द पुं [°वरमहाभद्र] हारवर-द्वीप का एक अधिष्ठाता देव (जीव ३, ४)। °वरमहावर पुं [°वरमहावर] हारवर-समुद्र का एक अधिष्ठायक देव (जीव ३, ४)। °वरावभास पुं [°वरावभास] १ एक द्वीप। २ एक समुद्र (जीव ३, ४)। °वरावभास-भद्द पुं [°वरावभासभद्र] हारवराभास-द्वीप का एक अधिष्ठाता देव (जीव ३, ४)। °वरावभासमहाभद्द पुं [°वरावभासमहाभद्र] हारवरावभास-द्वीप का एक अधिष्ठायक देव (जीव ३, ४)। °वरावभासमहावर पुं [°वरावभासमहावर] हारवराभास-समुद्र का एक अधिष्ठाता देव (जीव ३, ४)। °वरावभासवर पुं [°वरावभासवर] हार-वरावभास-समुद्र का एक अधिष्ठायक देव (जीव ३, ४—पत्र ३६७)।

°हार देखो भार (सुपा ३६१; भवि)।

हारअ वि [हारक] नाश-कर्ता (अभि १११)।

हारण वि [हारण] ऊपर देखो; 'धम्मत्थ-कामभोगाण हारणं कारणं दुहसयाणं' (पुप्फ २६२; धम्म १० टी)।

हारव देखो हार=हारय्। हारवइ (हे ४, ३१)। भवि. हारविस्सइ (स ५६६)।

हारविअ वि [हारित] नाशित (कुमा; सुपा ५१२)।

हारा स्त्री [दे] लिक्षा, जन्तु-विशेष (दे ८, ६६)।

°हारा देखो धारा (कप्प; गा ७८५)।

हारि स्त्री [हारि] १ हार, पराजय (उप पृ ५२)। २ पंक्ति, श्रेणि (कुप्र ३४४)। ३ छन्द-विशेष (पिंग)।

हारि वि [हारिन्] १ हरण-कर्ता (विसे ३२४५; कुमा)। २ मनोहर, चित्ताकर्षक (गउड)।

हारिअ न [हारीत] १ गोत्र-विशेष, जो कौत्स गोत्र की एक शाखा है। २ पुंस्त्री. उस गोत्र में उत्पन्न (ठा ७—पत्र ३६०; णंदि ४६; कप्प)। °मालागारी स्त्री [°मालाकारी] एक जैन मुनि-शाखा (कप्प)।

हारिअ वि [हारित] १ हारा हुआ, द्यूत आदि में पराजित (सुपा ३६६; महा; भवि)। २ खोया हुआ, गुमाया हुआ (वव १; सुपा १६६)।

हारियंद वि [हारिचन्द्र] हरिचन्द्र का, हरिचन्द्र-कवि का बनाया हुआ (गउड)।

हारिया स्त्री [हारीता] एक जैन मुनि-शाखा (राज)। देखो हारिअ-मालागारी।

हारियायण न [हारितायन] एक गोत्र (कप्प)।

हारी स्त्री [हारी] देखो हारि=हारि (उप पृ ५२; कुप्र ३४४; पिंग)।

हारीय पुं [हारीत] १ मुनि-विशेष। २ न. गोत्र-विशेष (राज)। °बंध पुं [°बन्ध] छन्द-विशेष (पिंग)।

हारोस पुं [हारोष] १ अनार्य देश-विशेष। २ वि. उस देश का निवासी (पण्ण १—पत्र ५८)।

हाल पुं [दे. हाल] राजा सातवाहन, गाथा-सप्तशती का कर्ता (दे ८, ६६; २, ३६, गा ३; वज्जा ६४)।

हाला स्त्री [हाला] मदिरा, दारू (पाअ; कुप्र ४०७; रंभा)।

हालाहल पुं [दे] मालाकार, माली (दे ८, ७५)।

हालाहल पुंस्त्री [हालाहल] १ जन्तु-विशेष, ब्रह्मसर्प, बाम्हनी (दे ६, ९०; पाअ; गा ६२)। स्त्री. °ला (दे ८, ७५)। २ त्रीन्द्रिय जन्तु-विशेष (पण्ण १—पत्र ४५)। ३ पुंन. स्थावर विष-विशेष (दस ६, १, ७; गच्छ २, ४)। ४ पुं. रावण का एक सुभट (पउम ५६, ३३)।

हालाहला स्त्री [हालाहला] एक आजीविक-मतानुयायिनी कुम्हारिन (भग १५—पत्र ६५६)।

हालिअ देखो हलिअ=हालिक (हे १, ६७; प्राप्र)।

हालिज्ज न [हालीय] एक जैन मुनि-कुल (कप्प)।

हालिद्द पुं [हारिद्र] १ हल्दी के तुल्य रंग, पीला वर्ण (अणु १०६; ठा ५, १—पत्र २६१)। २ वि. पीला, जिसका रंग पीला हो वह (पण्ण १—पत्र २५; सूअ २, १, १५; भग; औप)। ३ पुंन. एक देव-विमान (देवेन्द्र १३२)।

हालिया स्त्री [हालिका] देखो हलिआ (राज)।

हालुअ वि [दे] क्षीब, मत्त (दे ८, ६६)।

हाव सक [हापय्] १ हानि करना। २ त्याग करना। ३ परिभव करना। ४ लोप करना; 'थंडिलसामायारिं हावेइ' (वव १), हावए (उत्त ५, २३; सट्ठि २१ टी)। हाव-इज्जा (दस ८, ४१)। वकृ. हावेंत (विसे २७४६)।

हाव पुं [हाव] मुख का विकार-विशेष (पण्ह २, ४—पत्र १३२; भवि)।

हाव वि [दे] जंघाल, द्रुतगामी, वेग से दौड़ने-वाला (दे ८, ७५)।

°हाव देखो भाव=भाव; 'ईसरहावेण' (अच्चु २५)।

हावण वि [हापन] हानि करनेवाला (हे २, १७८)।

हाविर वि [दे] १ जंघाल, द्रुतगामी। २ दीर्घ, लम्बा। ३ मन्थर। ४ विरत (दे ८, ७५)।

हास देखो हस=हस्। वकृ. 'न हासमाणो वि गिरं वइज्जा' (दस ७, ५४)।

हास सक [हासय्] हँसाना। हासेइ (हे ३, १४९)। कर्म. हासीअइ, हासिज्जइ (हे ३, १५२)। वकृ. हासेंत (औप)। कवकृ. हासिज्जंत (सुपा ५७)।

हास पुं [हास] १ हास्य, हँसी (औप; गच्छ २, ४२; उव; गा ११, ३३२)। २ कर्म-विशेष, जिसके उदय से हँसी आवे वह कर्म (कम्म १, २१; ५७)। ३ अलंकार-शास्त्रोक्त रस-विशेष (अणु १३५)। °कर वि [°कर] हास्य-कारक (सुपा २४३)। °कारि वि [°कारिन्] वही (गउड)।

हास पुं [ह्रास] क्षय, हानि (धर्मसं ११६४)।
हास देखो **हरिस** = हर्ष (ओप)।
हासंकर देखो **हास-कर** (सुपा ७८)।
हासकुहय वि [हास्यकुहक] हास्य-जनक कौतुक-कर्ता (दस १०, २०)।
हासण वि [हासन] १ हास्य करानेवाला (पव ७३ टी)। २ हास्य-कर्ता (आचा २, १५, ५)।
हासा स्त्री [हासा] एक देवी (महा)।
हासाविअ } वि [हासित] हँसाया हुआ
हासिअ } (गा १२३; षड्; कुमा; हे ३, १५६)।
हासि वि [हासिन्] हास्य-कर्ता (आचा २, १५, ५)।
हासिअ वि [हास्य] हँसने योग्य, 'चडुआरअं पई मा हु पुत्ति जणहासिअं कुणसु' (गा ६०५; हे ३, १०५)।
°**हासिअ** देखो **भासिअ** = भाषित (नाट—विक्र ६१)।
हासीअ न [दे. हास्य] हास, हँसी (दे ८, ६२)।
हाहक्कार देखो **हाहा-कार**; 'हाहक्कारमुहरवा' (पउम १७, १०)।
हाहा पुं [हाहा] गन्धर्व देवों की एक जाति (सुपा ५६; कुमा; धर्मवि ४८)। २ अ. विलाप, हाहाकार, शोकध्वनि (पाअ; भग ७, ६—पत्र ३०५)। °**कय** न [°कृत] हाहाकार, शोक-शब्द (णाया १, ६—पत्र १५७)। °**कार** पुं [°कार] वही (महा; भवि; वेणी १३६)। °**भूअ** वि [°भूत] हाहाकार को प्राप्त (भग ७, ६—पत्र ३०५)। °**रव** पुं [°रव] हाहाकार (महा; सुपा १३६; भवि)। °**हूहु** [°हूहु] संख्या-विशेष, 'हाहाहूहूअंग' को चौरासी लाख से गुनने पर जो संख्या लब्ध हो वह (इक)। °**हूहूअंग** न [°हूहूअङ्ग] संख्या-विशेष, 'अमम' को चौरासी लाख से गुनने पर जो संख्या लब्ध हो वह (इक)।
हि अ [हि] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ अवधारण, निश्चय (स्वप्न १०)। २ हेतु, कारण (कुमा ८, १७; कप्पू)। ३ एवम्, इस तरह (गउड ३२४; सण)। ४ विशेष। ५ प्रश्न। ६ संभ्रम। ७ शोक। ८ असूया। ९ पाद-पूरण (कुमा; गउड; गा २४२; २६५; ६०२; ६४८; पिंग; हे २, २१७)।
हिअ वि [हृत] १ अपहृत, छीना हुआ (णाया १, १६—पत्र २१५; पउम ५, ७३; ३०, २०; सुर ६, १७५)। २ नीत, जो दूसरी जगह ले जाया गया हो वह (पाअ; हे १, १२८)। ३ विनष्ट, स्फोटित (पिंड ४१५)। ४ आकृष्ट, खींचा हुआ; 'हियहियए' (राय)।
हिअ न [हित] १ मङ्गल, कल्याण। २ उपकार, भलाई (उत्त १, ६; पउम ६५, २१; उव; ठा ४, ४ टी—पत्र २८३; प्रासू १४)। ३ वि. हित-कारक, उपकारी (उत्त १, २८; २९; उव ३२६; ४५०; प्रासू १४)। ४ स्थापित, निहित (भत्त ७८)। °**कर** वि [°कर] १ हितकारक (ठा ६)। २ पुं. दो उपवास (संबोध ५८)। ३ एक वणिक् का नाम (पउम ५, २८)। °**कार** वि [°कार] हित-कारक (श्रु १४६)। °**यर** देखो °**कर** (पउम ६५, २१)।
°**हिअ** देखो **हिअय** = हृदय (हे १, २६९; कुमा; आचा; कप्प)। °**इट्ठ** वि [°इष्ट] मनः-प्रिय (पउम ८५, २३)। °**उड्डावण** वि [°उड्डायन] चित्ताकर्षण का साधन (णाया १, १४—पत्र १८७)। २ चित्त को शून्य बनानेवाला (विपा १, २—पत्र ३६)।
°**हिअ** न [घृत] घी (सुख १८, ४३)।
हिअउल्ल (अप) देखो **हिअय** = हृदय (कुमा)।
हिअंकर पुं [हितंकर] राम-पुत्र कुश के पूर्व जन्म का नाम (पउम १०४, २९)।
हिअड } (अप) देखो **हिअय** = हृदय (हे
हिअडुल्ल } ४, ३५०; पि ५९९; सण)।
हिअय न [हृदय] १ अन्तःकरण, हिया, मन (हे १, २६९; स्वप्न ३३; कुमा; गउड; दं ४६; प्रासू ४४)। २ वक्षस्, छाती (से ४, २१)। ३ पर ब्रह्म (प्राप्र)। °**गमणीअ** वि [°गमनीय] हृदयंगम, मनोहर (सम ६०)। °**हारि** वि [°हारिन्] चित्ताकर्षक (उप ७२८ टी)।
हिअय देखो **हिअ** = हित; 'कुद्धेहि जेहि जणो अयाणगो हिअयमग्गम्मि' (उप ७६८ टी)।
हिअयंगम वि [हृदयंगम] मनोहर, चित्ताकर्षक (दे १, १)।
हिआली स्त्री [हृदयाली] काव्य-समस्या-विशेष, गूढार्थक काव्य-विशेष (वज्जा १२४)।
हिइ स्त्री [हृति] १ अपहरण। २ न. स्थानान्तर में ले जाना (संक्षि ५)।
हिएसय वि [हितैषक] हितेच्छु, हित चाहनेवाला (उत्त १४, २८)।
हिएसि वि [हितैषिन्] ऊपर देखो (उत्त १३, १५; उप ७२८ टी; सुपा ४०४; पुप्फ १०)।
हिओ अ [ह्यस्] गत कल (प्रति ५६; प्राप्र; पि १३४)।
हिंग पुं [दे] जार, उपपति (दे १, ४)।
हिंगु पुंन [हिङ्गु] १ वृक्ष-विशेष, हींग का गाछ (पण्ण १—पत्र ३४)। २ हींग; 'डाए लोणे हिंगू संकामण फोडणे धूमे' (पिंड २५०; स २५८; चारु ७)। °**सिव** पुं [°शिव] व्यन्तर देव-विशेष (दसनि १, ६६)।
हिंगुल पुंन [हिङ्गुल] पार्थिव धातु-विशेष, हिंगुल, सिंगरफ (पण्ण १—पत्र २५; ती २; जी ३; सुख ३६, ७५)।
हिंगुलु पुंन [हिङ्गुलु] ऊपर देखो (उत्त ३६, ७५; कप्प)।
हिंगोल पुंन [दे] मृतक-भोजन, किसी के मरण के उपलक्ष्य में दी जाती जमीन, श्राद्ध। २ यक्ष आदि के यात्रा के उपलक्ष्य में किया जाता जीमनवार (आचा २, १, ४, १)।
हिंचिअ न [दे] एक पैर से चलने की बाल-क्रीड़ा (दे ८, ६८)।
हिंजीर न [हिञ्जीर] शृंखलक, सिकरी, साँकल (दे ६, ११६; गउड)।
हिंड सक [हिण्ड्] १ भ्रमण करना। २ जाना, चलना। हिंडइ (सुपा ३८४; महा), हिंडिज्जा (ओघ २५४)। कर्म. हिंडिज्जइ (प्रासू ४०)। वकृ. **हिंडंत** (गा १३८)। कृ. **हिंडि-**

यव्व (उप पृ ५०; महा)। संकृ. हिंडिय (महा)। हेकृ. हिंडिउं (महा)।

हिंडग वि [हिण्डक] १ भ्रमण करनेवाला (पंचा १८, ८)। २ चलनेवाला (अणु १२६)।

हिंडण न [हिण्डन] १ परिभ्रमण, पर्यटन (पउम ६७, १८; स ४६)। २ गमन, गति (उप १०१७)। ३ वि. भ्रमण-शील (दे २, १०६)।

हिंडि स्त्री [हिण्डि] परिभ्रमण, पर्यटन; 'वासुदेवाइणो हिंडी राय-वंसुब्भवाण वि। ताणणेवि कहं हुंता न हुंतं जइ कम्मयं (कर्म १६)।

हिंडि पुं [हिण्डिन्] रावण का एक सुभट (पउम ५६, ३३)।

हिंडिअ वि [हिण्डित] १ चला हुआ, चलित, गत (महा ३४)। जहाँ पर जाया गया हो वह; 'हिंडियं असेसं गामं' (महा ६१)। ३ न. गति, गमन, विहार (णाया १, ६—पत्र १६५; ओघ २५४)।

हिंडुअ पुं [दे. हिण्डुक] आत्मा, जीव, जन्मान्तर माननेवाला आत्मा, हिन्दु (भग २०, २—पत्र ७७६)।

हिंडोल न [दे] १ खेत में पशुओं को रोकने की आवाज। २ क्षेत्र की रक्षा का यन्त्र (दे ८, ६६)।

हिंडोल देखो हिंदोल (स ५२१)।

हिंडोलण न [दे] १ रत्नावली, रत्नमाला। २ क्षेत्र की रक्षा की आवाज, खेत में पशु आदि को रोकने का शब्द (दे ८, ३६)।

हिंडोलय देखो हिंडोल (दे ८, ६६)।

हिंताल पुं [हिन्ताल] वृक्ष-विशेष (उप १०३१ टी; कुमा)।

हिंद सक [ग्रह्] स्वीकार करना, ग्रहण करना। हिंदइ (प्राकृ ७०; धात्वा १५७)। कर्म. हिंदिज्जइ (धात्वा १५७)। संकृ. हिंदिऊण (प्राकृ ७०; धात्वा १५७)।

हिंदोल सक [हिन्दोलय्] झूलना। वकृ. हिंदोलअंत (कप्पू)।

हिंदोल पुं [हिन्दोल] हिंडोला, झूलना, दोला (कप्पू)।

हिंदोलग न [हिन्दोलन] झूलना; दोलन (कप्पू)।

हिंबिअ न [दे] एक पैर से चलने की बाल-क्रीडा (दे ८, ६८)।

हिंस सक [हिंस्] १ वध करना। २ पीड़ा करना। हिंसइ, हिंसई (आचा; पव १२१)। भूका. हिंसिसु (आचा; पव १२१)। भवि. हिंसिस्सइ, हिंसिस्संति, हिंसेही (वि ५१६; आचा; पव १२१)। वकृ. हिंसमाण (आचा)। कृ. हिंस, हिंसियव्व (उप ६२५; पण्ह १, १—पत्र ५; २, १—पत्र १००; उव)।

हिंस वि [हिंस्र] १ हिंसा करनेवाला, हिंसक (उत्त ७, ५, पण्ह १, १—पत्र ५; विसे १७६३; पंचा १, २३; उप ६२५; स ५०)। °प्पदाण, °प्पयाण न [°प्रदान] हिंसा के साधन-भूत खड्ग आदि का दान (औप; राज)।

हिंस° देखो हिंसा (पण्ह १, १—पत्र ५)। °प्पेहि वि [°प्रेक्षिन्] हिंसा को देखनेवाला (ठा ५, १—पत्र ३००)।

हिंसअ } वि [हिंसक] हिंसा करनेवाला
हिंसग } (भग; ओघ ७५२; उत्त ३६, २५६; उव; कुप्र २६)।

हिंसण न [हिंसन] हिंसा; 'अहिंसणं सव्व-जियाण धम्मो' (सत्त ४२)।

हिंसा स्त्री [हिंसा] १ वध, घात (उवा; महा; प्रासू १४३)। २ वध, बन्धन आदि से जीव को की जाती पीड़ा, हैरानी (ठा ४, १—पत्र १८८)।

हिंसा स्त्री [हेषा] अश्व का शब्द, 'गयगज्जि हयहिंसं च तप्पुरओ केवि कुव्वंता' (सुपा १६४)।

हिंसिय वि [हिंसित] हिंसा-प्राप्त (राज)।

हिंसिय न [हेषित] अश्व-शब्द (पउम ६, १८०; दस ३, १ टी)।

हिंसी स्त्री [हिंसी] लता-विशेष (गउड)।

हिंदु पुं [दे] हिन्दू, हिन्दुस्तान का निवासी (पिंग)।

हिक्का स्त्री [दे] रजकी, धोबिन (दे ८, ६६)।

हिक्का स्त्री [हिक्का] रोग-विशेष, हिचकी (सुपा ४८६)।

हिक्कास पुं [दे] पङ्क; कादा (दे ८, ६६)।

हिक्किअ न [दे] हेषा-रव, अश्व-शब्द (दे ८, ६८)।

हिज्ज देखो हर = हृ।

हिज्ज° देखो हा।

हिज्जा } अ [दे. ह्यस्] गत कल (षड्;
हिज्जो } दे ८, ६७, पाअ; प्रयौ १३; पि १३४)।

हिज्जो अ [दे] आगामी कल (दे ८, ६७)।

हिट्ठ वि [दे] आकुल (दे ८, ६७)।

हिट्ठ देखो हेट्ठ (सुर ४, २२५; महा; सुपा ६८)।

हिट्ठ देखो हट्ठ = हृष्ट (उव; सम्मत्त ७५)।

हिट्ठाहिड वि [दे] आकुल (दे ८, ६७)।

हिट्ठिम देखो हेट्ठिम (सिरि ७०८; सुज्ज १०, ५ टी)।

हिट्ठिल्ल देखो हेट्ठिल्ल (सम ८७)।

हिडिंब पुं [हिडिम्ब] १ एक विद्याधर राजा (पउम १०, २०)। २ एक राक्षस (वेणी १७७)। ३ देश-विशेष (पउम ६८, ६५)।

हिडिंबा स्त्री [हिडिम्बा] एक राक्षसी, हिडिम्ब राक्षस की बहिन (हे ४, २९९)।

हिडोलणय देखो हिंडोलण (दे ८, ७६)।

हिड्डु वि [दे] वामन, खर्व (दे ८, ६७)।

हिणिद वि [भणित] उक्त, कथित; 'खणपा-हुणिआ देअरजाआ ए सुहअ किं ति दे ह-(हि)णिदा' (गा ६६३)।

हिण्ण सक [ग्रह्] ग्रहण करना। हिण्णइ (धात्वा १५७)।

हिण्ण (अप) देखो हीण (पिंग)।

°हिण्ण देखो भिण्ण (गा ५६३)।

हितअ } (पै) देखो हिअअ = हृदय (प्राप्र;
हितप } षड्; वाग्र १६; पि २५४; हे ४, ३१०; कुमा; प्राकृ १२४)।

हित्थ वि [दे] १ लज्जित (दे ८, ६७; धण ६)। २ त्रस्त, भय-भीत (दे ८, ६७; हे २, १३६; प्राप्र; गा ३८६; ७६३; सुर १६, ६१; कुमा)। ३ हिंसित, मारा हुआ; 'हित्थो व ण हित्थो मे सत्तो, भणियँ व न भणियं मोसं' (वव १)।

हित्था स्त्री [दे] लज्जा, शरम (दे ८, ६७)।

हिदि अ [हृदि] हृदय में 'हिदि निरुद्धवाउव्व' (विसे २२०)।

हिद्ध वि [दे] स्रस्त, खिसका हुआ, खिसक कर गिरा हुआ (षड्)।

हिम न [हिम] १ तुषार, आकाश से गिरता जल-कण (पाअ; आचा; से २, ११)। २ चन्दन, श्रीखण्ड (से २, ११)। ३ शीत, ठंढी, जाड़ा (बृह १)। ४ बर्फ, जमा हुआ जल (कप्प; जी ५)। ५ पुं. छठवीं नरक-पृथिवी का पहला नरकेन्द्रक—नरक-स्थान (देवेन्द्र १२)। ६ ऋतु-विशेष, मार्गशीर्ष तथा पौष का महीना (उप ७२८ टी)। °कर पुं [°कर] चन्द्रमा, चाँद (सुपा ५१)। °गिरि पुं [°गिरि] हिमाचल पर्वत (कुमा; भवि; सण)। °धाम पुं [°धामन्] वही (धम्म ६ टी)। °नग पुं [°नग] वही (उप पृ ३४८)। °यर देखो °कर (पाअ)। °व, °वंत पुं [°वत्] १ वर्षधर पर्वत-विशेष; 'हिमवो य महाहिमवो' (पउम १०२, १०५; उवा; कप्प; इक)। २ हिमाचल पर्वत (पि ३९६)। ३ राजा अन्धकवृष्णि का एक पुत्र (अंत ३)। ४ एक प्राचीन जैन मुनि, जो स्कन्दिलाचार्य के शिष्य थे; 'हिमवंतखमासमणे वंदे' (णंदि ५२)। °वाय पुं [°पात] तुषार-पतन (आचा)। °सीयल पुं [°शीतल] कृष्ण पुद्गल-विशेष (सुज्ज २०)। °सेल पुं [°शैल] हिमालय पर्वत (उप २११ टी)। °गम पुं [°गम] ऋतु-विशेष, हेमन्त ऋतु (गा ३३०)। °णी स्त्री [°नी] हिम-समूह (कुप्र ३९७)। °यल पुं [°चल] हिमालय पर्वत (सुपा ६३२)। °लय पुं [°लय] वही अर्थ (पउम १०, १३; गउड)।

हिर देखो किर=किल (हे २, १८६; कुमा)।

हिरडी स्त्री [दे] चील पक्षी की मादा (दे ८, ६८)।

हिरण्ण, हिरन्न न [हिरण्य] १ रजत, चाँदी (उवा; कप्प)। २ सुवर्ण, सोना (आचा; कप्प)। ३ द्रव्य, धन (सूअ १, ३, २, ८)। °क्ख पुं [°क्ष] एक दैत्य (से ४, २२)। °गब्भ पुं [°गर्भ] १ ब्रह्मा। २ प्रथम जिन भगवान् (पउम १०९, १२);

'गब्भट्ठिअस्स जस्स उ
हिरण्णवुट्ठी सकंचणा पडिया।
तेणं हिरण्णगब्भो
जयम्मि उवगिज्जए उसभो।'
(पउम ३, ६८)।

हिरि अक [ह्री] लज्जित होना। हिरिआमि (अभि २५५)।

हिरि° देखो हिरी (णाया १, १६—पत्र २१७; षड्)। °म वि [°मत्] लजालु, शरमिन्दा (उत्त ११, १३; ३२, १०३; पिंड ५२६)। °बेर पुं [°बेर] तृण-विशेष, सुगन्धवाला (पाअ; उत्तनि ३)।

हिरि पुं [हिरि] भालूक भालू का शब्द (पउम ४५)।

हिरिअ वि [ह्रीत] लज्जित (हे २, १०४)।

हिरिआ स्त्री [ह्रीका] लज्जा, शरम (उप ७०६; कुमा)।

हिरिंब न [दे] पल्वल, क्षुद्र तलाव (दे ८, ६९)।

हिरिमंथ पुं [दे] चना, अन्न-विशेष (दे ८, ७०)। देखो हरिमंथ।

हिरिली स्त्री [दे] कन्द-विशेष (उत्त ३६, ९८)।

हिरिविंग पुं [दे] लगुड, लट्ठी (दे ८, ६३)।

हिरी स्त्री [ह्री] १ लज्जा, शरम (आचा; हे २, १०४)। २ महापद्म-ह्रद की अधिष्ठात्री देवी (ठा २, ३—पत्र ७२)। ३ उत्तर रुचक-पर्वत पर रहनेवाली एक दिक्कुमारी देवी (ठा ८—पत्र ४३७)। ४ सत्पुरुष नामक किंपुरुषेन्द्र की एक अग्र महिषी (ठा ४, १—पत्र २०४)। ५ महाहिमवान् पर्वत का एक कूट (इक)। ६ देवप्रतिमा-विशेष (णाया १, १ टी—पत्र ४३)।

हिरीअ देखो हिरिअ (हे २, १०४)।

हिरे देखो हरे (प्राप्र)।

हिला स्त्री [दे] भुजा, हाथ;

'बचामो पेच्छंता घणदलपावरण-
साहुलिहिलाओ।'
(पृथ्वी० चं०-शांतिसूरि)
साहुलिहिलाओ त्ति शाखाभुजाः।
(पृथ्वी० चं० प्रथमभव, संकेतकार रत्नप्रभकृत)।

हिला, हिल्ला स्त्री [दे] वालुका, बालू, रेती (दे ८, ६६)।

हिल्लिय पुंस्त्री [दे] कीट-विशेष, त्रीन्द्रिय जन्तु की एक जाति (पण्ण १—पत्र ४५)।

हिल्लिरी स्त्री [दे] मछली पकड़ने का जाल-विशेष (विपा १, ८—पत्र ८५)।

हिल्लूरी स्त्री [दे] लहरी, तरङ्ग (दे ८, ६७)।

हिल्लोडण न [दे] खेत में पशुओं को रोकने की आवाज (दे ८, ६९)।

हिव देखो हव=भू। हिवइ (हे ४, २३८)।

हिसोहिसा स्त्री [दे] स्पर्धा (दे ८, ६९)।

ही अ [ही] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ विस्मय, आश्चर्य (सिरि ४७३)। २ दुःख (उप ५९७ टी)। ३ विषाद, खेद। ४ शोक, दिलगीरी (श्रा १६; कुप्र ४३६; कुमा; रंभा; मन ३७)। ५ वितर्क (सिरि २६८)। ६ कन्दर्प का अतिरेक। ७ प्रशान्त-भाव का अतिशय (अणु १३९)।

ही देखो हिरी (विसे २६०३)। °म वि [°मत्] लज्जाशील, लज्जालु (सूअ १, २, २, १८)।

हीं अ [ह्रीँ] मंत्राक्षर-विशेष, मायाबीज (सिरि १२१०)।

हीण वि [हीन] १ न्यून, कम, अपूर्ण (उवा; णाया १, १४—पत्र १९०)। २ रहित, वर्जित; 'हयं नाणं कियाहीणं' (हे २, १०४)। ३ अधम, हलका। ४ निन्द्य, निन्दनीय (प्रासू १२५; उप ७२८ टी)। ५ पुं. प्रतिवादि-विशेष (हे १, १०३)। °जाइल्ल वि [°जातिक] अधम जाति का, नीच जाति का (उप ७२८ टी)। °वाइ पुं [°वादिन्] वादि-विशेष (सुपा २८२)।

हीण वि [ह्रीण] भीत (विपा १, २ टी—पत्र २८)।

हीमाणहे, हीमादिके (शौ) अ. १ विस्मय, आश्चर्य। २ निर्वेद (हे ४, २८२; कुमा; प्राकृ ९८; मुच्छ २०२; २०६)।

हीयमाण देखो हा।

हीयमाणग, हीयमाणय न [हीयमानक] अवधिज्ञान का एक भेद, क्रमशः कम होता जाता अवधिज्ञान (ठा ६—पत्र ३७०, णंदि)।

हीर देखो **हर** = हर (हे १, ५१; कुमा; षड्)।

हीर पुं [हीर] १ विषम भंग, असमान छेद (पराण १—पत्र ३७)। २ बारीक कुत्सित तृण, कन्द आदि में होती बारिक रेखा (जीव ३, ४; जी १२)। ३ पुंन. हीरा, मणि-विशेष (स २०२; सिरि ११८६; कप्पू)। ४ तृण-विशेष (पिंग)। ५ दाढा का अग्र भाग (से ४, १४)।

हीर पुंन [दे] १ सूई की तरह तीक्ष्ण मुँह वाला काष्ठ आदि पदार्थ (दे ८, ७०; कस)। २ भस्म (दे ८, ७०)। ३ प्रान्त, अन्त भाग (गउड)।

हीरंत देखो **हर** = हृ।

हीरणा स्त्री [दे] लाज, शरम (दे ८, ६७; षड्)।

हीरमाण देखो **हर** = हृ।

हील सक [हेलय्] १ अवज्ञा करना, तिरस्कार करना। २ निन्दा करना। ३ कदर्थन करना, पीड़ना। हीलइ (उव; सुख २, १६), हीलंति (दस ६, १, २; प्रासू २६)। वकृ. हीलंत (सट्ठि ८६)। कवकृ. हीलिज्जंत, हीलिज्जमाण (उप पृ १३३; णाया १, ८—पत्र १४४; प्रासू १६५)। कृ. हीलणिज्ज (णाया १, ३), हीलियव्व (पण्ह २, १—पत्र १००; २, ५—पत्र १५०)।

हीलण स्त्रीन [हेलन] १ अवज्ञा, तिरस्कार। २ निन्दा (सुपा १०४)। स्त्री. °णा (पण्ह २, १—पत्र १००; औप; उव; दस ६, १, ७; सट्ठि १००)।

हीला स्त्री [हेला] ऊपर देखो (उव; उप पृ २१६; उप १४२ टी)।

हीलिअ वि [हीलित] १ निन्दित। २ अपमानित, तिरस्कृत (सुख २, १७; ओघ ५२६; कस; दस ६, १, ३)। ३ पीड़ित, कदर्थित (आचा २, १६, ३)।

हीसमण न [दे. हेषित] हेषारव, अश्व—घोड़े का शब्द (दे ८, ६८; हे ४, २५८)।

हीही, **हीहीभो** (शौ) अ. विदूषक का हर्ष-सूचक अव्यय (हे ४, २८५; कुमा; प्राकृ ९७; मोह ४१)।

हु अ [खलु] इन अर्थों का द्योतक अव्यय—१ निश्चय (हे २, १९८; से १, १५; कुमा; प्राकृ ७८; प्रासू ५४)। २ ऊह, वितर्क (हे २, १९८; कुमा; प्राकृ ७८)। ३ संशय, संदेह (हे २, १९८; कुमा)। ४ संभावना (हे २, १९८; कुमा; प्राकृ ७८)। ५ विस्मय, आश्चर्य (हे २, १९८; कुमा)। ६ किन्तु, परन्तु (प्रासू १०१)। ७ अपि, भी; 'हु अविसद्दत्थम्मि व त्ति' (धर्मसं १४० टी)। ८ वाक्य की शोभा (पंचा ७, ३५)। ९ पादपूर्ति, पाद-पूरण (पउम ८, १४६; कुमा)।

हु, **हुअ** देखो **हव** = भू। हुअइ, हुएइ, हुंति, हुइरे, हुअइरे, हुज्ज, हुएज्ज, हुएइरे, हुएज्जइरे (पि ४७६; हे ४, ६१; पि ४५८; ४६६)। भवि. हुक्खामि, होक्खामि, हुक्खं (उत्त २, १२; सुख २, १२)। वकृ. हुंत (हे ४, ६१; सं ३४)।

हुअ देखो **हुण**—हु। हुअइ (प्राकृ ६६)। वकृ. हुअंत (धात्वा १५७)।

हुअ वि [हुत] १ होमा हुआ, हवन किया हुआ (सुपा २६३; स ५५; प्राकृ ६६)। २ न. होम, हवन (सूअ १, ७, १२; प्राकृ ६६)। °वह पुं [°वह] अग्नि, आग (गा २११; पाअ; णाया १, १—पत्र ६३; गउड)। °स पुं [°श] अग्नि (गउड; अज्झ १५०; भवि; हि १३)। °सन पुं [°शन] वही अर्थ (भग; से ५,५७; पाअ)।

हुअ देखो **हूअ**—भूत (प्राप्र; कुमा; भवि; सण)।

हुअंग देखो **भुअंग**; 'चंदनलट्ठिव्व हुअंगदूमिआ किं णु दूमेसि' (गा ६२६)।

°**हुअग** देखो **भुअग** (गा ८०६; पि १८८)।

हुं अ [हुम्] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ दान। २ पृच्छा, प्रश्न (हे २, १९७; प्राप्र, कुमा)। ३ निवारण (हे २, १९७; कुमा)। ४ निर्धारण (प्राप्र; रंभा)। ५ स्वीकार (श्रा १२; कुप्र ३४५)। ६ हुङ्कार, 'हुं' शब्द; 'हुं करंति घुग्घव्व' (सुपा ४६२)। ७ अनादर (सिरि १५३)।

हुंकय पुं [दे] अंजलि, प्रणाम (दे ८, ७१)।

हुंकार पुं [हुङ्कार] १ अनुमति-प्रकाशक शब्द, हाँ (विसे ५६५; से १०, २४; गा ३५६; आत्मानु ६)। २ 'हुं' आवाज, 'हुं' ऐसा शब्द (हे ४, ४२२; कप्पू; सुर १, २४६)।

हुंकारिय न [हुङ्कारित] 'हुं' ऐसी की हुई आवाज (स ३७७)।

हुंकुरव पुं [दे] अंजलि, प्रणाम (दे ८, ७१)।

हुंड न [हुण्ड] १ शरीर की आकृति-विशेष, शरीर का बेढब अवयव (ठा ६—पत्र ३५७; सम ४४; १४९)। २ कर्म-विशेष, जिसके उदय से शरीर का अवयव असंपूर्ण बेढब—प्रमाण-शून्य अव्यवस्थित हो वह कर्म (कम्म १, ४०)। ३ वि. बेढब अंगवाला (विपा १, १—पत्र ५)। °वसप्पिणी स्त्री [°वसर्पिणी] वर्तमानहीन समय (विचार ५०३)।

हुंडी स्त्री [दे] घटा (पाअ)।

हुंबउट्ठ पुं [दे] वानप्रस्थ तापस की एक जाति (औप; भग ११, ९—पत्र ५१५; ५१९)।

हुंहुय अक [हुंहुं + कृ] 'हुं' 'हुं' आवाज करना। वकृ. हुंहुयंत (चेइय ४९०)।

°**हुच्च** देखो **पहुच्च** = प्र + भू।

हुट्ट देखो **होट्ठ** (आचा; पि ८४; ३३८)।

हुड पुं [दे] १ मेष, मेढ़ा (दे ८, ७०)। २ श्वान, कुत्ता (मृच्छ २५३)।

हुडुअ पुं [दे] प्रवाह (दे ८, ७०)।

हुडुक्क पुंस्त्री [दे. हुडुक्क] वाद्य-विशेष (औप; कप्पू; सण; विक्र ८७)। स्त्री. °क्का (राय; सुपा ५०; १७५; २४२)।

हुडुम पुं [दे] पताका, ध्वजा (दे ८, ७०; पाअ)।

हुड्डु पुंस्त्री [दे] होड़, बाजी, पण, शर्त, दाँव। स्त्री. °ड्डा (दे ८, ७०; सुपा २७६; पव ३८); 'हुड्डाहुड्डं सुयंतेहिं' (सम्मत्त १४३)। देखो **होड्डु**।

हुण सक [हु] होम करना। हुणइ (हे ४, २४१; भग ११, ९—पत्र ५१६; कुमा)। कर्म. हुव्वइ, हुणिज्जइ, हुणिज्जए (हे ४, २४२; कुमा)। कवकृ. हुणिज्जमाण (सुपा ६७)। संकृ. हुणिऊण, हुणेऊण, हुणित्ता (षड्; भग ११, ९—पत्र ५१६)।

हुणण न [हवन] होम (सुपा ६३)।

हुणिअ देखो हुअ = हुत (सुपा २१७; मोह १०७)।

हुत्त वि [दे] अभिमुख, संमुख (दे ८, ७०; हे २, १५८; गउड; भवि)।

हुत्त देखो हूअ = हूत (हे २, ९९)।

°हुत्त देखो हूअ = भूत (गा २४५; ८९६)।

°हुमआ देखो भुमआ (गा ५०५; पि १८८)।

हुर देखो फुर = स्फुर्। वकृ. 'कंतीए हुरंतीए' आदि (कुप्र ४२०)।

हुरड पुंस्त्री [दे] तृण आदि से कुछ कुछ पकाया हुआ चना आदि धान्य, होला—होरहा (सुपा ३८९; ४७३)।

हुरत्था अ [दे] बाहर (आचा १, ८, २, १; ३, २, १, ३, २; कस।

हुरुडी स्त्री [दे] विपादिका, रोग-विशेष (दे ८, ७१)।

हुल सक [क्षिप्] फेंकना। हुलइ (हे ४, १४३; षड्)।

हुल सक [मृज्] मार्जन-करना, साफ करना। हुलइ (हे ४, १०५; षड्)।

हुलण वि [मार्जन] सफा करनेवाला (कुमा ६, ६८)।

हुलण न [क्षेपण] फेंकना (कुमा)।

हुलिअ वि [दे] १ शीघ्र, वेग-युक्त; 'मइ पवणहुलिए' (दे ८, ५९)। २ न. शीघ्र, जल्दी, तुरंत (पण्ह १, १—पत्र १४; स ३५०; उप ७२८ टी)।

हुलुभुलि स्त्री [दे] कपट, दम्भ (नाट—मृच्छ २८२)।

हुलुव्वी स्त्री [दे] प्रसव-परा, निकट-भविष्य में प्रसव करनेवाली स्त्री (दे ८, ७१)।

°हुल्ल देखो फुल्ल = फुल्ल (भवि)।

हुव देखो हुण = हु। हुवइ (प्राकृ ६९)।

हुव देखो हव = भू। हुवंति (हे ४, ६०; प्राप्र)। भूका. हुवीअ (कुमा ५, ८८)। भवि. हुविस्संति (पि ५२१)। वकृ. हुवंत, हुवमाण, हुवेमाण (षड्)। संकृ. हुविअ (नाट—चैत ५७)।

हुव (अप) देखो हूअ = भूत (भवि)।

हुव (अप) देखो हुअ = हुत (भवि)।

हुव्व देखो हुण = हु।

°हुव्वंत देखो धुव्वंत = धुव = धाव् (से ६, ३४)।

हुस्स देखो हस्स = ह्रस्व (आचा; औप; सम्मत्त १६०)।

हुहुअ पुंन [हुहुक] देखो हूहूअ (अणु ९९; १७९)।

हुहुअंग पुंन [हुहुकाङ्ग] देखो हूहूअंग (अणु ९९; १७९)।

हुहुरु अ [हुहुरु] अनुकरण-शब्द-विशेष, 'हुहुरु' ऐसा शब्द (हे ४, ४२३; कुमा)।

हूअ देखो भूअ = भूत (हे ४, ६४; कुमा; श्रा १४; १६; महा; सार्ध १०५)।

हूअ वि [हूत] आहूत, आकारित (हे २, ९९)।

हूअ देखो हुअ = हुत; 'मन्ने पंचसरो पुरा भगवया ईसेण हूओ सयं, कोहंधेण सआसुगोवि सधणुद्दंडोवि णित्तानले' (रंभा २५)।

हूण पुं [हूण] १ एक अनार्य देश। २ वि. उसका निवासी मनुष्य (पण्ह १, १—पत्र १४; कुमा)।

हूण देखो हीण = हीन (हे १, १०३; षड्)।

हूम पुं [दे] लोहार (दे ८, ७१)।

हूसण देखो भूसण (गा ६५५; पि १८८)।

हूहू पुं [हूहू] गन्धर्व देवों की जाति (धर्मवि ४८; सुपा ५९)।

हूहूअ पुंन [हूहूक] संख्या-विशेष, 'हूहूअंग' को चौरासी लाख से गुनने पर जो संख्या लब्ध हो वह (ठा २, ४—पत्र ८६; अणु २४७)।

हूहूअंग पुंन [हूहूकाङ्ग] संख्या-विशेष, 'अवव' को चौरासी लाख से गुनने पर जो संख्या लब्ध हो वह (ठा २, ४—पत्र ८६; अणु २४७)।

हे अ [हे] इन अर्थो का सूचक अव्यय—१ संबोधन। २ आह्वान। ३ असूया, ईर्ष्या (हे २, २१७ टि; पि ७१; ४०३; भवि)।

हेअ देखो हा = हा।

°हेअ देखो भेअ = भेद (गा ८२७)।

हेअंगवीण न [हैयङ्गवीन] १ नवनीत, मक्खन। २ ताजा घी (नाट—साहित्य २३६)।

हेआल पुं [दे] हस्त-विशेष से निषेध; साँप के फरण की तरह किए हुए हाथ से निवारण (दे ८, ७२)।

हेउ पुं [हेतु] १ कारण, निमित्त; 'हेऊइं' (राय २६; उवा; पण्ह २, २—पत्र ११४; कप्प; गउड; जी ५१; महा; पि ३५८)। २ अनुमान-वाक्य, पंचावयव वाक्य (उत्त ९, ८; सुख ९, ८)। ३ अनुमान का साधन (धर्मसं ७७; ठा ४, ४ टी—पत्र २८३)। ४ प्रमाण (अणु)। °वाय पुं [°वाद] १ बारहवाँ जैन अंग-ग्रन्थ दृष्टिवाद (ठा १०—पत्र ४९१)। २ तर्कवाद, युक्तिवाद (सम्म १४०; १४२)।

हेउअ वि [हैतुक] १ हेतुवाद को माननेवाला, तर्कवादी; 'जो हेउवायपक्खम्मिहेउओ आगमे य आगमिओ' (सम्म १४२; उवर १५१)। २ हेतु का, हेतु से संबन्ध रखनेवाला। स्त्री. °उई (विसे ५२२)।

हेऊ, हेऊणं } देखो हा = हा।

हेज्ज देखो हर = हृ।

हेट्ठ स्त्री [अधस्] नीचे, गुजराती में 'हेठ'; 'नग्गोहहेट्ठम्मि' (सुर १, २०५; पि १०७; हे २, १४१; कुमा; गउड); 'हेट्ठओ' (महा)। स्त्री. °ट्ठा (औप; महा; पि १०७; ११४)। °मुह वि [°मुख] अवाङ्मुख; जिसने मुँह नीचा किया हो वह (विपा १, ६—पत्र ६८; दे १, ९३; भवि)। °वणि वि [°अवनी] महाराष्ट्र देश का निवासी, मरहट्टा—मरहठा (पिंड ६१९)।

हेट्ठिम, हेट्ठिल्ल } वि [अधस्तन] नीचे का (सम १६; ४१; भग; हे २, १६३; सम ८७; षड्; औप)।

हेडा स्त्री [दे] १ घटा, समूह (सुपा ३८६; ५३०)। २ द्यूत आदि खेलने का स्थान, अखाड़ा (धम्म १२ टी)।

हेडिस, हेदिस } (अशो) देखो एरिस (पि १२१)।

हेपिअ वि [दे] उन्नत, ऊँचा (षड्)।

हेम न [हेम] १ सुवर्ण, सोना (पाअ; जं ४; औप; संक्षि १७)। २ धत्तूरा। ३ मासे का परिमाण। ४ पुं. काला घोड़ा। ५ वि. पंडित (संक्षि ७)। ६ पुं. एक विद्याधर राजा (पउम १०, २१)। °चंद पुं [°चन्द्र] १-२ विक्रम की बारहवीं शताब्दी के दो

सुप्रसिद्ध जैन आचार्य तथा ग्रन्थकार (दे ८, ७७; सुपा ६५८)। ३ विक्रम की पनरहवीं शताब्दी का एक जैन मुनि (सिरि १३४१)। °जाल न [°जाल] सुवर्णकी माला (औप)। °तिलय पुं [°तिलक] विक्रम की चौदहवीं शताब्दी का एक जैनाचार्य (सिरि १३४०)। °पुर न [°पुर] एक विद्याधर-नगर (इक)। °मय वि [°मय] सोने का बना हुआ (सुपा ८८)। °महिहर पुं [°महिधर] मेरु पर्वत (गउड)। °मालिणी स्त्री [°मालिनी] एक दिक्कुमारी देवी (इक)। °व पुं [°वत्] फाल्गुन मास (सुज १० १९)। °विमल पुं [°विमल] एक जैन आचार्य (कुम्मा ३५)। °भ पुं [°भ] चौथी नरक-पृथिवी का एक नरक-स्थान (निर १, १)।

हेमंत पुं [हेमन्त] १ ऋतु-विशेष, मगसिर या अगहन तथा पोस या पूस महिना (पाअ; आचा; कप्प; कुमा)। २ शीतकाल (दस ३, १२)।

हेमंत वि [हैमन्त] हेमन्त ऋतु में उत्पन्न (सुज्ज १२—पत्र २१९)।

हेमंतिअ वि [हैमन्तिक] ऊपर देखो (कप्प; औप; गा ६६; राय ३८)।

हेमग वि [हैमक] हिम का, हिम-संबन्धी (ठा ४, ४—पत्र २८७)।

हेमवइ } पुंन [हैमवत] १ वर्ष-विशेष, क्षेत्र-
हेमवय } विशेष (इक; सम १२; जं ४—पत्र २९९; ३००; ठा २, ३ टी—पत्र ६७; पउम १०२, १०६)। २ हिमवंत पर्वत का एक शिखर। ३ कूट-विशेष (इक)। ४ वि. हिमवंत पर्वत का (राय ७४; औप)। ५ पुं. हैमवत क्षेत्र का अधिष्ठाता देव (जं ४—पत्र ३००)।

हेम्म देखो हेम (संक्षि १७)।

हेर सक [दे] १ देखना, निरीक्षण करना। २ खोजना, अन्वेषण करना। वकृ. हेरंत (पिंग)। संकृ हेरऊण (धर्मवि ५४)।

हेरंब पुं [दे] १ महिष, भैंसा। २ डिण्डिम, वाद्य-विशेष (दे ८, ७६)।

हेरण्णवय पुंन [हैरण्यवत] १ वर्ष-विशेष, एक युगलिकक्षेत्र (इक; पउम १०२, १०६)। २ रुक्मि पर्वत का एक शिखर। ३ शिखरी पर्वत का एक शिखर (इक २१८)।

हेरण्णिअ पुं [हैरण्यिक] सुवर्णकार (उप पृ २१०)।

हेरन्नवय देखो हेरण्णवय (ठा २, ३—पत्र ६७; ७९)।

हेरिअ पुं [हेरिक] गुप्त चर, जासूस (सुपा ४६४; ५८६)।

हेरिंब पुं [दे. हेरम्ब] विनायक, गणेश (दे ८, ७२; षड्)।

हेरुयाल सक [दे] क्रुद्ध करना, गुस्सा उपजाना। हेरुयालंति (णाया १, ८—पत्र १४४)।

हेला स्त्री [हेला] १ स्त्री की शृङ्गार-संबन्धी चेष्टा-विशेष (पाअ)। २ अनादर (पाअ; से १, ५५)। ३ अनायास, अल्प प्रयास, सहलाई, सरलता (से १, ५५; कप्पू; प्रवि ११; पि ३७५)।

हेला स्त्री [दे. हेला] वेग, शीघ्रता (दे ८, ७१; कप्पू; प्रवि ११; पि ३७५)।

हेलिय पुं [हैलिक] एक तरह की मछली (जीव १ टी—पत्र ३६)।

हेलुअ न [दे] क्षुत, छींक (दे ८, ७२)।

हेलुका स्त्री [दे] हिक्का, हिचकी (दे ८, ७२)।

हेल्लि (अप) अ [हले] सखी का आमन्त्रण, हे सखि (हे ४, ४२२; ३७९; पि १०७)।

हेवं (अशो) देखो एवं (पि ३३६)।

हेवाग पुं [हेवाक] स्वभाव, आदत (राज)।

हेसमण वि [दे] उन्नत, ऊँचा (षड्)।

हेसा स्त्री [हेषा] अश्व-शब्द (सुपा २८८; श्रा २७)।

हेसिअ न [हेषित] ऊपर देखो (दे ८, ६८; पउम ५४, ३०; औप; महा; भवि)।

हेसिअ न [दे. हेषित] रसित, चीत्कार (षड्)।

हेहंभूअ वि [दे] गुण-दोष के ज्ञान से रहित और निर्दम्भ, अज्ञ किन्तु निखालस (वव १)।

हेहय पुं [हैहय] १ एक राजा (राज)। २ °डिंब पुं [°डिम्ब] एक विद्याधर राजा (पउम १०, २०)।

हो देखो हव=भू। होइ, होअइ, होअए, होएइ, होंति, होइरे, होअइरे (हे ४, ६०; षड्; कप्प; उव; महा; पि ४५८; ४७६)। होज, होजा, होएज, होएजा, होउ (हे ३, १५९; १७७; भग; प्राप्र; पि ४६६)। भूका. होत्था, होहीअ (कप्प; प्राप्र)। भवि. होहिइ, होहिंति, होहामि, होहिमि, होस्सं, होस्सामि, होक्खइ, होक्खं (हे ३, १६६; १६७; १६९; प्राप्र; पि ५२१), होसइ (अप) (हे ४, ३८८)। कर्म. होइजइ, होइज्जए, होईअइ (षड : पि ४७६) वकृ. होंत, होमाण (हे ३, १८०; ४, ३५५; ३७२; कुमा; पि ४७६)। संकृ. होऊण, होऊणं, होअऊण, होइऊण, हविय, होत्ता (गउड, पि ५८५; ५८६; कुमा)। हेकृ. होउं, होत्तए (महा; पि ४७५; कप्प)। कृ. होयव्व (कप्प, महा, उव; प्रासू १६; ६१)।

हो अ [हो] इन अर्थों का सूचक अव्यय—१ विस्मय, आश्चर्य (पाअ; नाट—मृच्छ ११२)। २ संबोधन, आमन्त्रण (संक्षि ४७; उप ५९७ टी)।

होउ वि [होतृ] होम-कर्ता (गा ७२७)।

होंड देखो हुंड (विचार ५०७)।

होट्ठ पुं [ओष्ठ] होंठ, ओठ (आचा)।

होडु देखो हुडु; 'तो हं छोडेमि होडुओ' (सुपा २७७, २७८)।

होढ पुं [होड] मोष, चोरी की वस्तु (णाया १, २—पत्र ८६; पिंड ३८०)।

होण देखो हूण=हूण (पव २७४; विचार ४३)।

होत्तिय पुं [होत्रिक] १ वानप्रस्थ तापसों का एक वर्ग, अग्निहोत्रिक वानप्रस्थ (औप; भग ११, ९—पत्र ५१५)। २ न. तृण-विशेष (पएण १—पत्र ३३)।

होम पुं [होम] हवन, अग्नि में मन्त्र-पूर्वक घृत आदि का प्रक्षेप (अभि १५९)।

होम सक [होमय्] होम करना। हेकृ. होमिउं (ती ८)।

होमिअ वि [होमित] हवन किया हुआ, 'अणत्थपंडियकुकव्वहविहोमिओ' (स ७१४)।

होरंभा स्त्री [होरम्भा] वाद्य-विशेष, महा-ढक्का, बड़ा ढोल (राय ४६)।

होरण न [दे] वस्त्र, कपड़ा (दे ८, ७२; गा ७७१)।

होरा स्त्री [होरा] १ खडी या खली से की हुई रेखा (गा ४३५)। २ ज्योतिष-शास्त्र में उक्त लग्न (मोह १०१)। ३ होराज्ञापक शास्त्र (स ६०२)।

होल पुंस्त्री [दे] १ वाद्य-विशेष, होलं वाएह मे इत्थ' (धर्मवि ४४); 'आढत्तं मजपाणं वायावेइ होलं' (सुख ३, १)। २ पक्षि-विशेष; 'होलाहगिद्धकुक्कुडहंसबगाईसु सउणजाईसु। जं खुहवसेण खद्धा किमिमाई तेवि खामेमि' (खा १३)। ३ एक तरह की गाली, अपमान-सूचक शब्द—मूर्ख, बेवकूफ (आचा २, ४, १, ६; ११; दस ७,१४;१६)। °वाय पुं [°वाद] दुर्वचन बोलना, गाली-प्रदान (सूअ १, ९, २७)।

होलिया स्त्री [होलिका] होली, फागुन मास का पर्व-विशेष (सट्ठि ७८ टी)।

होस° देखो **हो** = भू।

हृद देखो **दह** (पिंड ८४, पि ३६६ ए)।

ह्रस्स देखो **रहस्स** = ह्रस्व (पि ३५४)।

ह्रास देखो **हास** = ह्रास (णंदि २०६ टी)।

॥ इअ पाइअसद्दमहण्णवम्मि हआराइसद्दसंकलणो अट्ठतीसइमो तरंगो समत्तो। समत्तो अ तस्समत्तीए एस गंथो॥

पसत्थी [प्रशस्तिः]

आसाइ पच्छिमाए भारह-वासे इहत्थि अइ-रम्मो। गुज्जर-णामा देसो पुव्वं लाढो त्ति विक्खाओ ॥१॥
तस्सुत्तर-दिसि-भाए पुरं पुराणं पुराणमइ-पवरं। राहणपुरं ति अच्छइ सच्छाण जिणिंद-भवणाणं ॥२॥
चंगाणं तुङ्गाणं धय-वड-सेअंवलेहिं चलिरेहिं। पडिसेहंतं पिव जं णिअ-वासि-जणे अहम्माओ ॥३॥
णिअ-पाय-ण्णासेणं वासेण य वास-याल-पेरंतं। जं पुण कयं पवित्तं जय-गुरु-पमुहेहिं सूरीहिं ॥४॥ [कुलयं]
तव्वत्थव्वो आसी सिट्ठी सिरिमाल-वंस-वर-रयणं। णामेण तिअमचंदो दक्खिण्ण-दयाइ-गुण-कलिओ ॥५॥
आवय-संपत्तीणं संपत्तीए वि जेण णिअचित्ते। दिण्णो णेव कयाई विसाय-हरिसाण अवयासो ॥६॥ [जुग्गं]
अणवज्ज-कज्ज-सज्जा धम्म-मणा धम्मपत्ती से धणिअं। सीलाइ-गुण-प्पहाणा पहाणदेवि त्ति अ अहेसि ॥७॥
तेसिं दो तणुजम्मा आबल्लं लद्ध-धम्म-सक्कारा। जिट्ठो हरगोविंदो कणिट्ठओ वुड्ढिचंदो ओ ॥८॥
सत्थ-विसारय-जइणायरिएहिं विजयधम्म-सूरीहिं। कासीइ महेसीहिं विज्जागारम्मि संठविए ॥९॥
गंतूण सोअरेहिं तेहिं बेहिंपि तत्थ सत्थाणं। सक्कय-पययमयाणं अब्भासो काउमारद्धो ॥१०॥
खण-दिट्ठ-णट्ठ-भावं संसारं सार-वज्जिअं णाउं। एअंतिअ-अच्चंतिअ-सोक्खं मोक्खं च चाय-फलं ॥११॥
पडिवज्जिअ पव्वज्जं अणुओ पणुअ-राग-विद्देसो। विहरइ नं पालिंतो विसालविजओ त्ति पत्तभिहो ॥१२॥ [जुग्गं]
जेट्ठो उण सत्थाणं णाय-व्वायरणमाइ-विसयाणं। वढणज्झावाण-संसोहणाइ-कज्जेसु दिण्ण-मणो ॥१३॥
लंकाइ सिंहलेसुं पाली-भासाइ सुगय-समयाणं। अब्भास-परिक्खासुं पारं पत्तोप्प-कालेणं ॥१४॥
कलिकायाए णाए वायरणे चेव लद्ध-तित्थ-पओ। खायाइ परिक्खाए उत्तिण्णो उच्च-कक्खाए ॥१५॥
तत्थेव विस्सविज्जालयम्मि सव्वुत्तमाइ सेणीए। पायय-सक्कय-सत्थज्झावण-कज्जम्मि विणिउत्तो ॥१६॥
तेण य पायय-भासाहिहाण गंथस्स विक्खमाणेणं। चिर-कालाउ अभावं आयर जोग्गस्स विवुहाणं ॥१७॥
वाणारसीइ वरिसे सिअहय-हय-अंक-रयणिरयण-मिए। विहिओ उवक्कमो विक्कमाओ एअस्स गंथस्स ॥१८॥
कलिकायाए जाया पावय-वसु-अंक-इंदु-परिगणिए। वरिसे भद्दय-मासे सिअ-सत्तमीए समत्ती ओ ॥१९॥
तस्स सुभद्दादेवी-णामाइ सधम्मिणीइ एत्थ बहुं। आयरिअं साहिज्जं विज्जज्झयणाणुरत्ताए ॥२०॥
आरंभं काऊणं आरिस-भासाउ आ अवब्भंसा। जो सद्दो जहिं अत्थे जत्थ ग्गंथे उ उवलद्धो ॥२१॥
वण्णाणमणुक्कमेणं सो सद्दो तम्मि अत्थए लिहिओ। तग्गन्थ-ठाण-दंसण-पुव्वं णिउणं णिरूवेत्ता ॥२२॥
पाईण-पाइआणं भासाण बहुत्त-भेअ-भिण्णाणं। सद्दण्णव-पारं जे गया तयट्ठो ण एस समो ॥२३॥
जे उण अण-पत्तट्ठा सयं तयब्भासिणो य अ-सहाया। ताणं हत्थालंबण-दाणाएवस्स णिम्माणं ॥२४॥
जइ थेवोवि हवेज्जा तेसिं गन्थेणणेण उवयारो। ता एत्तिअमेत्तेणं मण्णे आयास-साहल्लं ॥२५॥
अण्णाणेण मईए भमेण वा एत्थ किंचि जमसुद्धं। तं सोहिंतु पसायं काऊण सयासया स-यणा ॥२६॥

॥ समाप्त ॥